Holy Bible

Aionian Edition®

हिंदी समकालीन संस्करण-स्वतंत्र उपलब्धि

Hindi Contemporary Version Bible

AionianBible.org

दुनिया का पहला पवित्र बाइबल रिवर्स ट्रांसलेशन

कॉपी और प्रिंट करने के लिए **100%** मुफ्त

इस रूप में भी जाना जाता है “ बैंगनी बाइबिल ”

Holy Bible Aionian Edition ®

हिंदी समकालीन संस्करण-स्वतंत्र उपलब्धि
Hindi Contemporary Version Bible

CC Attribution ShareAlike 4.0, 2018-2024
Source text: eBible.org
Source version: 2/21/2024
Source copyright: CC Attribution ShareAlike 4.0, International
Biblica, Inc., 1978, 2009, 2016, 2019
Original work available for free at www.biblica.com and open.bible

Formatted by Speedata Publisher 4.19.2 (Pro) on 4/23/2024
100% Free to Copy and Print
TOR Anonymously
https://AionianBible.org

Published by Nainoia Inc
https://Nainoia-Inc.signedon.net

We pray for a modern public domain translation in every language
Report content and format concerns to Nainoia Inc
Volunteer help is welcome and appreciated!

Celebrate Jesus Christ's victory of grace!

प्रस्तावना

हिन्दी at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation*! What is an *un-translation*? Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aïdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aïdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is eternal! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to eternal life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of eternal punishment. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The eleventh word, *eleēsē*, reveals the grand conclusion of grace in Romans 11:32. Take the time to understand these eleven words. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by-nd/4.0, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read online at AionianBible.org, with Android, and TOR network. Why purple? King Jesus' Word is royal… and purple is the color of royalty!

विषय - सूची

पुराना नियम

उत्पत्ति 11
निर्गमन 39
लैव्यव्यवस्था 62
गिनती 80
व्यवस्था विवरण 105
यहोशू 128
न्यायियों 141
रूत 156
1 शमूएल 159
2 शमूएल 180
1 राजा 197
2 राजा 217
1 इतिहास 236
2 इतिहास 253
एज्रा 274
नहेमायाह 280
एस्तेर 289
अय्यूब 294
भजन संहिता 311
नीतिवचन 351
सभोपदेशक 365
श्रेष्ठगीत 370
यशायाह 373
यिर्मयाह 400
विलापगीत 436
यहेजकेल 440
दानिय्येल 470
होशे 479
योएल 484
आमोस 486
ओबद्याह 490
योना 491
मीका 493
नहूम 496
हबक्कूक 498
सपन्याह 500
हाग्गै 502
जकर्याह 503
मलाकी 508

नए नियम

मत्ती 513
मरकुस 533
लूका 546
यूहन्ना 567
प्रेरितों के काम 583
रोमियों 604
1 कुरिन्थियों 613
2 कुरिन्थियों 622
गलातियों 628
इफिसियों 631
फिलिप्पियों 634
कुलुस्सियों 636
1 थिस्सलुनीकियों 638
2 थिस्सलुनीकियों 640
1 तीमुथियुस 641
2 तीमुथियुस 644
तीतुस 646
फिलेमोन 647
इब्रानियों 648
याकूब 655
1 पतरस 658
2 पतरस 661
1 यूहन्ना 663
2 यूहन्ना 666
3 यूहन्ना 667
यहूदा 668
प्रकाशित वाक्य 669

अनुबंध
पाठक गाइड
शब्दकोष
मैप्स
नियति
रेखांकन, Doré

पुराना नियम

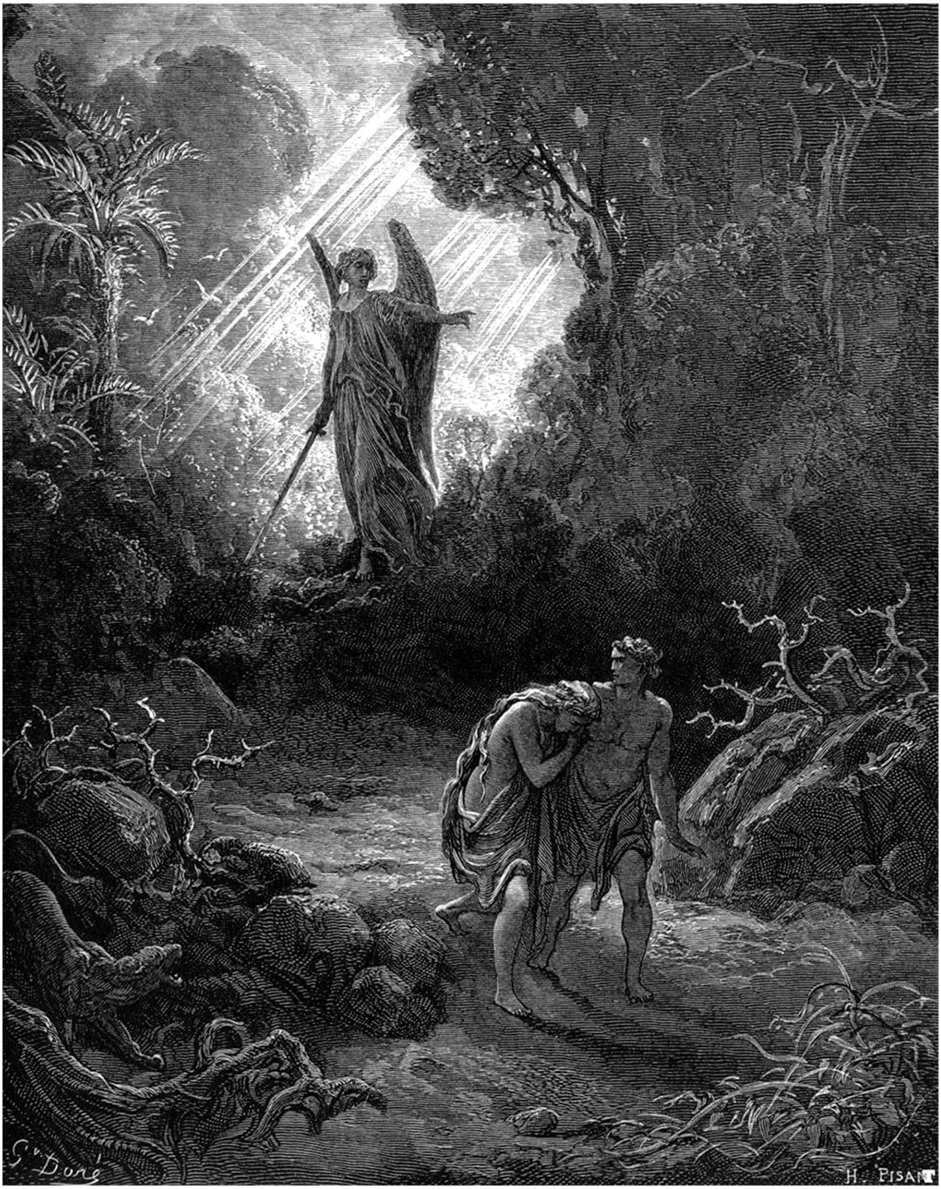

तब उन्होंने आदम को एदेन के बगीचे से बाहर कर दिया तथा एदेन के बगीचे की निगरानी के लिए करूबों को और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को रख दिया ताकि कोई जीवन के वृक्ष को छू न सके.

उत्पत्ति 3:24

उत्पत्ति

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश एवं पृथ्वी को रचा. 2 पृथ्वी बिना आकार के
तथा खाली थी, और पानी के ऊपर अंधकार था तथा परमेश्वर का आत्मा
जल के ऊपर मंडरा रहा था. 3 उसके बाद परमेश्वर ने कहा, “प्रकाश हो जाए,”
और प्रकाश हो गया. 4 परमेश्वर ने प्रकाश को देखा कि अच्छा है. परमेश्वर ने
प्रकाश को अंधकार से अलग किया. 5 परमेश्वर ने प्रकाश को “दिन” तथा
अंधकार को “रात” कहा और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार पहला दिन
हो गया. 6 फिर परमेश्वर ने कहा, “जल के बीच ऐसा विभाजन हो कि जल दो
भागों में हो जाए.” 7 इस प्रकार परमेश्वर ने नीचे के जल और ऊपर के जल
को अलग किया. यह वैसा ही हो गया. 8 परमेश्वर ने इस अंतर को “आकाश”
नाम दिया. और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार दूसरा दिन हो गया. 9
फिर परमेश्वर ने कहा, “आकाश के नीचे का पानी एक जगह इकट्ठा हो जाए
और सूखी भूमि दिखाई दे” और वैसा ही हो गया. 10 परमेश्वर ने सूखी भूमि को
“धरती” तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको “सागर” कहा और परमेश्वर ने देखा
कि वह अच्छा है. 11 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से हरी घास तथा पेड़
उगने लगें: और पृथ्वी पर फलदाई वृक्षों में फल लगने लगें.” और वैसा हो
गया. 12 पृथ्वी हरी-हरी घास, बीजयुक्त पौधे, जिनमें अपनी-अपनी जाति का
बीज होता है तथा फलदाई वृक्ष, जिनके फलों में अपनी-अपनी जाति के बीज
होते हैं, उगने लगे. परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है. 13 फिर शाम हुई, फिर
सुबह हुई—इस प्रकार तीसरा दिन हो गया. 14 फिर परमेश्वर ने कहा, “दिन को
रात से अलग करने के लिए आकाश में ज्योतियां हों, और ये चिन्हों, समयों,
दिनों एवं वर्षों के लिए होगा. 15 और आकाश में ज्योतियां हों, जिससे पृथ्वी
को प्रकाश मिले,” और ऐसा ही हो गया. 16 परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां
बनाई—बड़ी ज्योति को दिन में तथा छोटी ज्योति को रात में राज करने हेतु
बनाया. और परमेश्वर ने तारे भी बनाये. 17 इन सभी को परमेश्वर ने आकाश में
स्थिर किया कि ये पृथ्वी को रोशनी देते रहें, 18 ताकि दिन और रात अपना
काम पूरा कर सकें और रोशनी अंधकार से अलग हो. और परमेश्वर ने देखा
कि यह अच्छा है. 19 और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार चौथा दिन
हो गया. 20 फिर परमेश्वर ने कहा, “पानी में पानी के जंतु और आकाश में
उडनेवाले पक्षी भर जायें.” 21 परमेश्वर ने बडे-बडे समुद्री-जीवों तथा सब
जातियों के जंतुओं को भी बनाया, और समुद्र को समुद्री-जीवों से भर दिया तथा
सब जाति के पक्षियों की भी सृष्टि की और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा
है. 22 इन्हें परमेश्वर ने यह कहकर आशीष दी, “समुद्र में सभी जंतु, तथा
पृथ्वी में पक्षी भर जायें.” 23 तब शाम हुई, फिर सुबह हुई—पांचवां दिन हो
गया. 24 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से प्रत्येक जाति के जीवित प्राणी
उत्पन्न हों: पालतू पशु, रेंगनेवाले जंतु तथा हर एक जाति के वन पशु उत्पन्न
हों.” 25 परमेश्वर ने हर एक जाति के वन-पशुओं को, हर एक जाति के पालतू
पशुओं को तथा भूमि पर रेंगनेवाले हर एक जाति के जीवों को बनाया. और
परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है. 26 फिर परमेश्वर ने कहा, “हम अपने
स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में मनुष्य की रचना करें कि वे सागर की
मछलियों, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं, भूमि पर रेंगनेवाले हर एक जीव
तथा सारी पृथ्वी पर राज करें.” 27 इसलिये परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य
को बनाया, परमेश्वर के ही स्वरूप में परमेश्वर ने उन्हें बनाया; नर और नारी
करके उसने उन्हें बनाया. 28 परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष दी, “फूलो फलो
और संख्या में बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ और सब पर अधिकार कर लो.
सागर की मछलियों, आकाश के पक्षियों व पृथ्वी के सब रेंगनेवाले जीव-
जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो.” 29 तब परमेश्वर ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारे
खाने के लिए बीज वाले पौधे और बीज वाले फल के पेड़ आदि दिये हैं जो
तुम्हारे भोजन के लिये होंगे. 30 और पृथ्वी के प्रत्येक पशुओं, आकाश के सब
पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जीव-जन्तुओं को—प्रत्येक प्राणी को
जिसमें जीवन का श्वास है—मैं प्रत्येक हरे पौधे भोजन के लिये देता हूं.” और
वैसा ही हो गया. 31 परमेश्वर ने अपनी बनाई हर चीज़ को देखा, और वह बहुत
ही अच्छी थी. और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार छठवां दिन हो गया.

2 इस प्रकार परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी के लिए सब कुछ बनाकर अपना
काम पूरा किया. 2 सातवें दिन परमेश्वर ने अपना सब काम पूरा कर लिया
था; जो उन्होंने शुरू किया था; अपने सभी कामों को पूरा करके सातवें दिन
उन्होंने विश्राम किया. 3 परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी तथा उसे पवित्र
ठहराया, क्योंकि यह वह दिन था, जब उन्होंने अपनी रचना, जिसकी उन्होंने
सृष्टि की थी, पूरी करके विश्राम किया. 4 यही वर्णन है कि जिस प्रकार याहवेह
परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया. 5 उस समय तक पृथ्वी में कोई
हरियाली और कोई पौधा नहीं उगा था, क्योंकि तब तक याहवेह परमेश्वर ने
पृथ्वी पर बारिश नहीं भेजी थी. और न खेती करने के लिए कोई मनुष्य था. 6
भूमि से कोहरा उठता था जिससे सारी भूमि सींच जाती थी. 7 फिर याहवेह
परमेश्वर ने मिट्टी से मनुष्य को बनाया तथा उसके नाक में जीवन की सांस फूंक
दिया. इस प्रकार मनुष्य जीवित प्राणी हो गया. 8 याहवेह परमेश्वर ने पूर्व दिशा
में एदेन नामक स्थान में एक बगीचा बनाया और उस बगीचे में मनुष्य को रखा.
9 याहवेह परमेश्वर ने सुंदर पेड़ और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए और
बगीचे के बीच में जीवन का पेड़ और भले या बुरे के ज्ञान के पेड़ भी लगाया.
10 एदेन से एक नदी बहती थी जो बगीचे को सींचा करती थी और वहां से नदी
चार भागों में बंट गई. 11 पहली नदी का नाम पीशोन; जो बहती हुई हाविलाह
देश में मिल गई, जहां सोना मिलता है. 12 (उस देश में अच्छा सोना है. मोती
एवं सुलेमानी पत्थर भी वहां पाए जाते हैं.) 13 दूसरी नदी का नाम गीहोन है.
यह नदी कूश देश में जाकर मिलती है. 14 तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है; यह
अश्शूर के पूर्व में बहती है. चौथी नदी का नाम फरात है. 15 याहवेह परमेश्वर ने
आदम को एदेन बगीचे में इस उद्देश्य से रखा कि वह उसमें खेती करे और
उसकी रक्षा करे. 16 याहवेह परमेश्वर ने मनुष्य से यह कहा, “तुम बगीचे के
किसी भी पेड़ के फल खा सकते हो; 17 लेकिन भले या बुरे के ज्ञान का जो पेड़
है उसका फल तुम कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम इसमें से खाओगे,
निश्चय तुम मर जाओगे.” 18 इसके बाद याहवेह परमेश्वर ने कहा, “आदम का
अकेला रहना अच्छा नहीं है. मैं उसके लिए एक सुयोग्य साथी बनाऊंगा.” 19
याहवेह परमेश्वर ने पृथ्वी में पशुओं तथा पक्षियों को बनाया और उन सभी को
मनुष्य के पास ले आए, ताकि वह उनका नाम रखे; आदम ने जो भी नाम रखा,
वही उस प्राणी का नाम हो गया. 20 आदम ने सब जंतुओं का नाम रख दिया.
किंतु आदम के लिए कोई साथी नहीं था, जो उसके साथ रह सके. 21 इसलिये
याहवेह परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाला; जब वह सो गया, याहवेह
परमेश्वर ने उसकी एक पसली निकाली और उस जगह को मांस से भर दिया.
22 फिर याहवेह परमेश्वर ने उस पसली से एक स्त्री बना दी और उसे आदम के
पास ले गए. 23 आदम ने कहा, “अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस
में का मांस है; उसे ‘नारी’ नाम दिया जायेगा, क्योंकि यह ‘नर’ से निकाली गई
थी.” 24 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला
रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे. 25 आदम एवं उसकी पत्नी नग्न तो थे पर
लजाते न थे.

3 याहवेह परमेश्वर के बनाये सब जंतुओं में सांप सबसे ज्यादा चालाक था.
उसने स्त्री से कहा, “क्या सच में परमेश्वर ने तुमसे कहा, ‘तुम इस बगीचे के

किसी भी पेड़ का फल न खाना'?" 2 तब स्त्री ने उत्तर दिया, "हम बगीचे के
वृक्षों के फलों को खा सकते हैं, 3 लेकिन बगीचे के बीच में जो पेड़ है, उसके
बारे में परमेश्वर ने कहा है 'न तो तुम उसका फल खाना और न ही उसको छूना,
नहीं तो तुम मर जाओगे.'" 4 सांप ने स्त्री से कहा, "निश्चय तुम नहीं मरोगे! 5
परमेश्वर यह जानते हैं कि जिस दिन तुम इसमें से खाओगे, तुम्हारी आंखें खुल
जाएंगी तथा तुम्हें भले और बुरे का ज्ञान हो जाएगा और तुम परमेश्वर के समान
हो जाओगे." 6 जब स्त्री ने उस पेड़ के फल की ओर देखा कि वह खाने में
अच्छा तथा देखने में सुंदर और बुद्धि देनेवाला है, तब उसने उस पेड़ के फलों में
से एक लेकर खाया. और उसने यह फल अपने पति को भी दिया, जो उसके
पास ही था. उसने भी उसे खाया. 7 तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उन्हें
महसूस हुआ कि वे नंगे हैं. इसलिये उन्होंने अंजीर की पत्तियां जोड़कर कपड़े
बनाए और अपने नंगेपन को ढक दिया. 8 जब आदम और स्त्री ने दिन के ठण्डे
समय में याहवेह परमेश्वर के आने की आवाज बगीचे में सुनी, तब आदम और
उसकी पत्नी पेड़ों के बीच में छिप गये. 9 किंतु याहवेह परमेश्वर ने आदम को
बुलाया और पूछा, "तुम कहां हो?" 10 आदम ने उत्तर दिया, "आपके आने का
शब्द सुनकर हम डर गये और हम छिप गये क्योंकि हम नंगे हैं." 11 याहवेह ने
कहा, "किसने तुमसे कहा कि तुम नंगे हो? कहीं ऐसा तो नहीं, कि तुमने उस
पेड़ का फल खा लिया हो, जिसको खाने के लिए मैंने मना किया था?" 12
आदम ने कहा, "साथ में रहने के लिए जो स्त्री आपने मुझे दी है, उसी ने मुझे उस
पेड़ से वह फल दिया, जिसे मैंने खाया." 13 यह सुन याहवेह परमेश्वर ने स्त्री से
पूछा, "यह क्या किया तुमने?" स्त्री ने उत्तर दिया, "सांप ने मुझे बहकाया,
इसलिये मैंने वह फल खा लिया." 14 याहवेह परमेश्वर ने सांप से कहा, तूने
ऐसा करके गलत किया, "इसलिये तू सभी पालतू पशुओं से तथा सभी वन्य
पशुओं से अधिक शापित है! तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी
चाटता रहेगा. 15 मैं तेरे तथा स्त्री के बीच, तेरी संतान तथा स्त्री की संतान के बीच
बैर पैदा करूंगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, तथा तू उसकी एड़ी को डसेगा."
16 स्त्री से परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारी गर्भावस्था के दर्द को बहुत बढ़ाऊंगा;
तुम दर्द के साथ संतान को जन्म दोगी. यह होने पर भी तुम्हारी इच्छा तुम्हारे
पति की ओर होगी, और पति तुम पर अधिकार करेगा." 17 फिर आदम से
परमेश्वर ने कहा, "तुमने अपनी पत्नी की बात सुनकर उस पेड़ से फल खाया,
'जिसे खाने के लिये मैंने तुम्हें मना किया था,' "इस कारण यह पृथ्वी जिस पर
तुम रह रहे हो, श्रापित हो गई है; तुम जीवन भर कड़ी मेहनत करके जीवन
चलाओगे. 18 तुम खेती करोगे लेकिन उसमें कांटे और जंगली पेड़ उगेंगे, और
तुम खेत की उपज खाओगे. 19 तुम अपने पसीने ही की रोटी खाया करोगे और
अंततः मिट्टी में मिल जाओगे क्योंकि तुम मिट्टी ही हो, मिट्टी से ही बने हो." 20
आदम ने अपनी पत्नी को हव्वा नाम दिया, क्योंकि वही सबसे पहली माता थी.
21 आदम तथा उसकी पत्नी के लिए याहवेह परमेश्वर ने चमड़े के वस्त्र बनाकर
उन्हें पहना दिये. 22 फिर याहवेह परमेश्वर ने सोचा, "आदम और हव्वा ने भले
और बुरे के ज्ञान का फल तो खा लिया, अब वे जीवन के पेड़ से फल खाकर
सदा जीवित न रह जाएं." 23 इस कारण याहवेह परमेश्वर ने उन्हें एदेन के
बगीचे से बाहर कर दिया, ताकि वे भूमि पर खेती करें, और फल उपजायें. 24
तब उन्होंने आदम को एदेन के बगीचे से बाहर कर दिया तथा एदेन के बगीचे
की निगरानी के लिए करूबों को और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार
को रख दिया ताकि कोई जीवन के वृक्ष को छू न सके.

4 जब आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ दाम्पतिक संबंध में प्रवेश किया,
तब हव्वा गर्भवती हुई तथा उसने कयीन को जन्म दिया. हव्वा ने कहा,
"याहवेह की सहायता से मैंने एक पुरुष को जन्म दिया है." 2 फिर हव्वा ने
कयीन के भाई हाबिल को जन्म दिया. हाबिल भेड़-बकरियों का चरवाहा था,
किंतु कयीन खेती करता था. 3 कुछ दिनों बाद याहवेह को भेंट चढ़ाने के उद्देश्य
से कयीन अपनी खेती से कुछ फल ले आया. 4 और हाबिल ने अपने भेड़-
बकरियों में से पहला बच्चा भेंट चढ़ाया तथा चर्बी भी भेंट चढ़ाई. याहवेह ने
हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, 5 परंतु कयीन और उसकी भेंट को
याहवेह ने ग्रहण नहीं किया. इससे कयीन बहुत क्रोधित हुआ तथा उसके मुख
पर उदासी छा गई. 6 इस पर याहवेह ने कयीन से पूछा, "तू क्यों क्रोधित हुआ?
क्यों तू उदास हुआ? 7 अगर तू परमेश्वर के योग्य भेंट चढ़ाता तो क्या तेरी भेंट
ग्रहण न होती? और यदि तू सही न करे, तो पाप द्वार पर है, और उसकी लालसा
तेरी ओर रहेगी. पर तू उस पर प्रभुता करना." 8 हाबिल अपने भाई कयीन के
खेत में गया तब कयीन ने हाबिल से कुछ कहा और कयीन ने हाबिल को मार
दिया. 9 तब याहवेह ने कयीन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहां है?" उसने उत्तर
दिया, "पता नहीं. क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?" 10 याहवेह ने कहा,
"तूने यह क्या किया? भूमि से तेरे भाई का रक्त मुझे पुकार रहा है. 11 अब तू
उस भूमि की ओर से शापित है, क्योंकि इस खेत में तेरे भाई का खून गिरा है.
12 जब तू खेती करेगा, तुझे इसकी पूरी उपज नहीं मिलेगी; तू अब पृथ्वी पर
अकेला और बेसहारा होगा." 13 कयीन ने याहवेह से कहा, "मेरा दंड मेरी
सहन से बाहर है. 14 आपने आज मुझे यहां से निकाल दिया है, मैं आपके सामने
से छिप जाऊंगा; मैं अकेला और बेसहारा होकर घुमूंगा तो मैं जिस किसी के
सामने जाऊंगा, वे मुझे मार देंगे." 15 यह सुन याहवेह ने उससे कहा, "यदि
ऐसा हुआ, तो जो कोई कयीन की हत्या करेगा, उससे सात गुणा बदला लिया
जाएगा." याहवेह ने कयीन के लिए एक विशेष चिन्ह ठहराया, ताकि कोई
उसकी हत्या न कर दे. 16 इसके बाद कयीन याहवेह के पास से चला गया और
नोद देश में बस गया, जो एदेन बगीचे के पूर्व में है. 17 कयीन की पत्नी ने हनोख
को जन्म दिया. कयीन ने एक नगर बसाया और उस नगर को अपने पुत्र के नाम
पर हनोख रखा. 18 हनोख से इराद का जन्म हुआ, इराद से महूजाएल का तथा
महूजाएल से मेथूशाएल का, मेथूशाएल से लामेख का जन्म हुआ. 19 लामेख
की दो पत्नियां थीं, एक का नाम अदाह तथा दूसरी का नाम ज़िल्लाह था. 20
अदाह ने जाबाल को जन्म दिया; वह जानवरों के पालने वालों और तंबुओं में
रहनेवालों का नायक बना. 21 उसके भाई का नाम यूबाल था; वह वीणा और
बांसुरी बजाने वालों का नायक बना. 22 ज़िल्लाह ने तूबल-कयीन को जन्म
दिया, जो कांसे एवं लोहे के सामान बनाता था. तूबल-कयीन की बहन का नाम
नामाह था. 23 लामेख ने अपनी पत्नियों से कहा, "अदाह और ज़िल्लाह सुनो;
तुम मेरी पत्नियां हो, मेरी बात ध्यान से सुनो, मैंने एक व्यक्ति को मारा है, क्योंकि
उसने मुझ पर आक्रमण किया था. 24 जब कयीन के लिए सात गुणा बदला
लिया गया था, तब तो लामेख के लिए सत्तर बार सात गुणा होगा." 25 हव्वा ने
एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शेत यह कहकर रखा, "कयीन
द्वारा हाबिल की हत्या के बाद परमेश्वर ने हाबिल के बदले मेरे लिए एक और
संतान दिया है." 26 शेत के भी एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका उसने एनोश नाम
रखा. उस समय से लोगों ने याहवेह से प्रार्थना करना शुरू किया.

5 यह आदम के वंशजों का प्रलेख है: जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की,
तो उन्होंने मनुष्य को अपने ही रूप में बनाया. 2 परमेश्वर ने मनुष्य को नर
तथा नारी कहकर उन्हें आशीष दी और परमेश्वर ने उनका नाम आदम रखा. 3
जब आदम 130 वर्ष के हुए, तब एक पुत्र पैदा हुआ, जिनका रूप स्वयं उन्हीं
के समान था; उनका शेत नाम रखा गया. 4 शेत के जन्म के बाद आदम 800
वर्ष के हुए, उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 5 इस प्रकार आदम कुल 930
साल जीवित रहे, फिर उनकी मृत्यु हो गई. 6 जब शेत 105 वर्ष के थे, तब
एनोश का जन्म हुआ. 7 एनोश के बाद उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए तथा
शेत 807 वर्ष और जीवित रहे. 8 जब शेत कुल 912 साल जीवित रहे, तब

उनकी मृत्यु हो गई. 9 जब एनोश 90 वर्ष के हुए, तब केनान का जन्म हुआ.
10 केनान के जन्म के बाद एनोश 815 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और
पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 11 जब एनोश कुल 905 साल जीवित रहे, तब उनकी
मृत्यु हो गई. 12 जब केनान 70 वर्ष के हुए, तब माहालालेल का जन्म हुआ.
13 माहालालेल के जन्म के बाद, केनान 840 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके
और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 14 इस प्रकार केनान कुल 910 वर्ष के हुए, और
उनकी मृत्यु हो गई. 15 जब माहालालेल 65 वर्ष के हुए, तब यारेद का जन्म
हुआ. 16 यारेद के जन्म के बाद, माहालालेल 830 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 17 जब माहालालेल 895 वर्ष के थे, तब
उनकी मृत्यु हो गई. 18 जब यारेद 162 वर्ष के हुए, तब हनोख का जन्म हुआ.
19 हनोख के जन्म के बाद, यारेद 800 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और
पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुईं. 20 जब यारेद कुल 962 साल जीवित रहे, तब उनकी
मृत्यु हो गई. 21 जब हनोख 65 वर्ष के हुए, तब मेथुसेलाह का जन्म हुआ. 22
मेथुसेलाह के जन्म के बाद हनोख 300 वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलते
रहे. उसके अन्य पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 23 हनोख कुल 265 साल जीवित
रहे. 24 हनोख परमेश्वर के साथ साथ चलते रहे. और वे नहीं रहे, क्योंकि
परमेश्वर ने उन्हें अपने पास उठा लिया. 25 जब मेथुसेलाह 187 वर्ष के हुए,
तब लामेख का जन्म हुआ. 26 लामेख के जन्म के बाद, मेथुसेलाह 782 वर्ष
और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए. 27 जब मेथुसेलाह
कुल 969 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो गई. 28 जब लामेख 182
वर्ष के हुए, तब एक पुत्र का जन्म हुआ, 29 जिनका नाम उन्होंने नोहा यह
कहकर रखा, “यह बालक हमें हमारे कामों से तथा मेहनत से, और इस शापित
भूमि से शांति देगा.” 30 नोहा के जन्म के बाद लामेख 595 वर्ष और जीवित
रहे, तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुए. 31 जब लामेख कुल 777 साल
जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हुई. 32 नोहा के 500 वर्ष की आयु में शेम, हाम
तथा याफेत का जन्म हुआ.

6 फिर जब पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी और उनके पुत्रियां पैदा
हुई, 2 तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों के पुत्रियों को देखा कि वे सुंदर हैं.
और उन्होंने उन्हें अपनी इच्छा अनुसार अपनी-अपनी पत्नियां बना लिया. 3
यह देखकर याहवेह ने निर्णय लिया, “मेरा आत्मा मनुष्य से हमेशा बहस करता
न रहेगा क्योंकि मनुष्य केवल मांस मात्र है, वह 120 वर्ष ही जीवित रहेगा.”
4 उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे. जब परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्यों की
पुत्रियों के संतान हुए वे बहुत बलवान और शूरवीर थे. 5 जब याहवेह ने मनुष्यों
को देखा कि वे हमेशा बुराई ही करते हैं, कि उन्होंने जो कुछ भी सोचा था या
कल्पना की थी वह लगातार और पूरी तरह से बुराई थी. 6 तब याहवेह पृथ्वी
पर आदम को बनाकर पछताए और मन में अति दुखित हुए. 7 और याहवेह ने
सोचा, “मैं पृथ्वी पर से मनुष्य को मिटा दूंगा—हर एक मनुष्य, पशु, रेंगते जंतु
तथा आकाश के पक्षी, जिनको बनाकर मैं पछताता हूं.” 8 लेकिन नोहा पर
याहवेह का अनुग्रह था. 9 नोहा और उनके परिवार का अभिलेख इस प्रकार है:
नोहा एक धर्मी और निर्दोष व्यक्ति थे. वे परमेश्वर के साथ साथ चलते थे. 10
उनके तीन पुत्र थे शेम, हाम तथा याफेत. 11 परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी पर
बहुत बुराई और उपद्रव बढ़ गया है. 12 परमेश्वर ने पृथ्वी को देखा कि वह भ्रष्ट
हो गई है; क्योंकि समस्त मानवों ने पृथ्वी पर अपना आचरण भ्रष्ट कर लिया
था. 13 इसलिये परमेश्वर ने नोहा से कहा, “मैं पूरी पृथ्वी के लोग और जो कुछ
भी उसमें है सबको नाश कर दूंगा, क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई
है. 14 इसलिये नोहा से याहवेह ने कहा कि तुम अपने लिए गोपेर पेड़ की
लकड़ी का एक बड़ा जहाज़ बनाना; जहाज़ में कई अलग-अलग भाग बनाना,
और भीतर बाहर उस पर राल लगाना. 15 जहाज़ की लंबाई एक सौ पैंतीस
मीटर, चौड़ाई तेईस मीटर तथा ऊंचाई चौदह मीटर रखना. 16 इसके लिए एक
छत बनाना. जहाज़ में एक खिड़की बनाना, जो ऊपर की ओर छत से आधा
मीटर नीचे होगी, जहाज़ के एक तरफ दरवाजा रखना. जहाज़ में पहली, दूसरी
तथा तीसरी मंजिलें बनाना. 17 क्योंकि मैं पृथ्वी को जलप्रलय से नाश कर दूंगा
और कोई न बचेगा; सबको जिनमें जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे से मैं
नाश करनेवाला हूं. 18 लेकिन मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा बांधूंगा—जहाज़ में
तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पत्नी तथा तुम्हारी बहुओं सहित प्रवेश करना. 19 और
प्रत्येक जीवित प्राणी के दो-दो अर्थात् नर एवं मादा को जहाज़ में ले जाना, ताकि
वे तुम्हारे साथ जीवित रह सकें. 20 पक्षी भी अपनी-अपनी जाति के, पशु
अपनी-अपनी जाति के, भूमि पर रेंगनेवाले जंतु अपनी-अपनी जाति के सभी
जातियों के जोड़े जहाज़ में रखना, ताकि वे जीवित रह सकें. 21 और खाने के
लिए सब प्रकार का भोजन रखना, जो सबके लिए होगा.” 22 नोहा ने वैसा ही
किया, जैसा परमेश्वर ने उनसे कहा.

7 फिर याहवेह ने नोहा से कहा, “तुम और तुम्हारा पूरा परिवार जहाज़ में
जाओ, क्योंकि इस पृथ्वी पर केवल तुम ही धर्मी हो. 2 तुम अपने साथ उन
पशुओं के सात-सात जोड़े नर एवं मादा ले लो, जो शुद्ध माने जाते हैं तथा उन
पशुओं का भी एक-एक जोड़ा, जो शुद्ध नहीं माने जाते. 3 इसी प्रकार आकाश
के पक्षियों के सात जोड़े—नर तथा मादा, ले लो. 4 क्योंकि अब से सात दिन
के बाद, मैं पृथ्वी पर जल बरसाऊंगा, चालीस दिन तथा चालीस रात तक
जल बरसाता रहूंगा और भूमि पर मेरे द्वारा रचे गये सभी जीवित प्राणी नष्ट हो
जायेंगे.” 5 नोहा ने याहवेह की सब बातों को माना. 6 जब पृथ्वी पर जलप्रलय
शुरू हुआ, तब नोहा छः सौ वर्ष के थे. 7 नोहा, उनकी पत्नी, उनके पुत्र, तथा
उनकी बहुएं प्रलय से बचने के लिए जहाज़ में चले गए. 8 शुद्ध तथा अशुद्ध
पशु, पक्षी तथा भूमि पर रेंगनेवाले जंतु, 9 नर एवं मादा को जोड़ों में नोहा ने
जहाज़ में लिया, जैसा परमेश्वर ने नोहा से कहा था. 10 सात दिन बाद पृथ्वी पर
पानी बरसना शुरू हुआ. 11 नोहा के छः सौ वर्ष के दूसरे महीने के सत्रहवें दिन
महासागर के सोते फूट पड़े तथा आकाश को खोल दिया गया. 12 और पृथ्वी
पर चालीस दिन तथा चालीस रात लगातार बरसात होती रही. 13 ठीक उसी
दिन नोहा, उनके पुत्र शेम, हाम तथा याफेत, नोहा की पत्नी तथा उनकी तीनों
बहुएं जहाज़ में चले गए. 14 और उनके साथ सब जाति के वन्य पशु, पालतू
पशु, रेंगनेवाले जंतु, सभी प्रकार के पक्षी और वे सभी जिनके पंखे हैं, जहाज़ में
गए. 15 इस प्रकार वे सभी, जिसमें जीवन था, दो-दो नोहा के पास जहाज़ में
पहुंच गए. 16 नोहा को परमेश्वर के आदेश के अनुसार, जो जहाज़ में पहुंचे, वे
सभी प्राणियों के नर एवं मादा थे. जहाज़ में आए सबके अंदर जाते ही याहवेह ने
द्वार बंद कर दिया. 17 पृथ्वी पर चालीस दिन तथा चालीस रात तक पानी
बरसता रहा. पानी ऊपर होता गया और जहाज़ भी ऊपर उठता गया. 18 पानी से
पूरी पृथ्वी डूब गई, और जहाज़ पानी के ऊपर तैरता रहा. 19 जल पृथ्वी पर
इतना बढ़ गया कि आकाश के नीचे के बड़े-बड़े पहाड़ भी डूब गए. 20 पानी
पहाड़ के लगभग सात मीटर ऊंचा हो गया. 21 पृथ्वी पर का सब कुछ नाश हो
गया; प्रत्येक जीवित प्राणी जो भूमि पर चलती थी—पक्षी, पशु, जंगली जानवर,
वे सभी प्राणी जो पृथ्वी पर तैरते हैं, और पूरी मानव जाति. 22 थल के सभी
जीवित प्राणी मर गये. 23 इस प्रकार याहवेह ने पृथ्वी के सभी मनुष्य, पशु,
रेंगनेवाले जंतु आकाश के पक्षी, सभी को नाश कर दिया. केवल नोहा और
उनका परिवार तथा जो जीव-जन्तु जहाज़ में थे, वही बचे. 24 150 दिन पृथ्वी
पानी से ढकी रही.

8 फिर परमेश्वर ने नोहा और सभी जंगली जानवरों और घरेलू पशुओं को याद
किया जो जहाज़ में थे और एक हवा चलाई. तब पानी सूखने लगे और धीरे

धीरे पानी कम होने लगा. 2 आकाश से पानी बरसना रोक दिया गया, और
पृथ्वी के नीचे से पानी का बहना भी रोक दिया गया. 3 इसलिये जलप्रलय धीरे
धीरे पृथ्वी से हट गए, 150 दिन पूरे होते-होते पानी कम हो चुका था. 4
सातवें महीने के सत्रहवें दिन जहाज़ अरारात पर्वत पर जा टिका. 5 दसवें महीने
तक जल उतरता गया, और दसवें महीने के पहले दिन पर्वत का ऊपरी हिस्सा
दिखने लगा. 6 चालीस दिन पूरा होने पर नोहा ने जहाज़ की खिड़की को खोल
दिया, जो उन्होंने बनाई थी. 7 उन्होंने एक कौवे को बाहर छोड़ दिया, जो
पृथ्वी पर इधर-उधर उड़ते और जहाज़ में आते जाते रहा. 8 फिर नोहा ने एक
कबूतर को यह देखने के लिये छोड़ा कि पृथ्वी से पानी कम हुआ या नहीं. 9
लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह नहीं मिली क्योंकि पानी अभी भी
ज़मीन को ढका था; इसलिये वह वापस जहाज़ में आ गया. नोहा ने अपना हाथ
बढ़ाकर कबूतर को वापस जहाज़ के अंदर ले लिया. 10 सात दिन बाद नोहा ने
फिर कबूतर को छोड़ दिया. 11 कबूतर अपनी चोंच में जैतून का एक कोमल
पत्ता लेकर जहाज़ में लौट आया. यह देखकर नोहा समझ गये कि पृथ्वी पर से
पानी कम हो गया है. 12 नोहा ने सात दिन बाद फिर से कबूतर को बाहर छोड़ा
लेकिन इस बार कबूतर वापस नहीं आया. 13 नोहा के जन्म का छः सौ और
एक वर्ष के पहले महीने के पहले दिन पानी पृथ्वी पर से सूख गया. तब नोहा ने
जहाज़ की छत को हटा दिया और उन्होंने देखा कि ज़मीन सूख गई है. 14 दूसरे
महीने के सत्ताईसवें दिन ज़मीन पूरी तरह सूख गई. 15 तब परमेश्वर ने नोहा से
कहा, 16 "जहाज़ से तुम सब बाहर आ जाओ; तू और तेरी पत्नी और तेरे
बेटे और उनकी पत्नियां. 17 और सभी पशु, सभी पक्षी व जानवर, पृथ्वी पर
रेंगनेवाले सभी को भी बाहर लाकर छोड़ दो ताकि ये जानवर अनेक जानवर
उत्पन्न करेंगे, और फलवंत होकर पृथ्वी को फिर भर देंगे." 18 नोहा, उनके
पुत्र, नोहा की पत्नी तथा उनकी बहुएं सब बाहर आ गईं. 19 सभी पशु, रेंगनेवाले
जंतु, सभी पक्षी—सभी प्राणी जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, जहाज़ से बाहर आ गये. 20
फिर नोहा ने याहवेह के लिए एक वेदी बनाई और हर एक शुद्ध पशु तथा हर एक
शुद्ध पक्षी में से वेदी पर होमबलि चढ़ाई. 21 और याहवेह बलिदान की सुगंध से
प्रसन्न हुए और खुद से कहा, "अब मैं मनुष्य के कारण पृथ्वी को शाप नहीं
दूंगा. यद्यपि मानव छोटी उम्र से ही बुरी बातें सोचता है; इसलिये जैसा मैंने अभी
किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे प्राणियों को नाश नहीं करूंगा. 22
"जब तक पृथ्वी है, फसल उगाना तथा काटना, ठंड एवं गर्मी, धूपकाल और
शीतकाल, दिन और रात अखंड होते रहेंगे."

9 तब परमेश्वर ने नोहा तथा उनके पुत्रों को यह आशीष दी, "फूलो फलो और
पृथ्वी में भर जाओ. 2 पृथ्वी के हर एक पशु एवं आकाश के हर एक पक्षी
पर, भूमि पर रेंगनेवाले जंतु पर तथा समुद्र की समस्त मछलियों पर तुम्हारा भय
बना रहेगा—ये सभी तुम्हारे अधिकार में कर दिए गए हैं. 3 सब चलनेवाले जंतु,
जो जीवित हैं, तुम्हारा आहार होंगे; इस प्रकार मैं तुम्हें सभी कुछ दे रहा हूं, जिस
प्रकार मैंने तुम्हें पेड़ पौधे दिए. 4 "एक बात का ध्यान रखना कि मांस को लहू
के साथ मत खाना. 5 मैं तुम्हारे जीवन, अर्थात् लहू, का बदला ज़रूर लूंगा. मैं
उस जानवर का जीवन मांगूंगा जो किसी व्यक्ति को मारेगा. प्रत्येक मनुष्य
से दूसरे मनुष्य के खून का बदला ज़रूर लूंगा. 6 "जो कोई मनुष्य का रक्त
बहाएगा, मनुष्य द्वारा ही उसका रक्त बहाया जाएगा; क्योंकि परमेश्वर ने अपने
रूप में मनुष्य को बनाया है. 7 अब तुम पृथ्वी में रहो; फूलो फलो और बढ़ो और
बस जाओ." 8 फिर परमेश्वर ने नोहा तथा उनके पुत्रों से कहा: 9 "मैं तुम्हारे
वंश के साथ पक्का वायदा करता हूं. 10 यही नहीं किंतु उन सबके साथ जो इस
जहाज़ से बाहर आये हैं—पक्षी, पालतू पशु तथा तुम्हारे साथ पृथ्वी के हर एक
पशु, से भी वायदा करता हूं. 11 मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरी करूंगा
कि अब मैं जलप्रलय के द्वारा सभी प्राणियों और पृथ्वी को कभी नाश नहीं
करूंगा." 12 परमेश्वर ने और कहा, "जो वायदा मैंने तुम्हारे साथ तथा तुम्हारे
साथ के जीवित प्राणियों के साथ किया है, यह पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर रहेगा
और 13 इस बात का सबूत तुम बादलों में मेघधनुष के रूप में देखोगे, यही मेरे
एवं पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा. 14 जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादल
फैलाऊंगा और बादल में मेघधनुष दिखाई देगा, 15 तब मैं अपने वायदे को याद
करूंगा, जो मेरे और तुम्हारे बीच किया गया है कि अब कभी भी दुबारा पृथ्वी
को इस तरह जलप्रलय से नाश नहीं करूंगा. 16 जब भी यह मेघधनुष दिखेगा,
मैं परमेश्वर और पृथ्वी पर रहनेवाले प्रत्येक प्राणी के बीच की हुई सनातन वाचा
को याद करूंगा." 17 परमेश्वर ने नोहा से कहा, "जो वायदा मैंने अपने तथा
पृथ्वी के हर एक जीवधारी के बीच किया है, यही उसका चिन्ह है." 18
जहाज़ से नोहा के साथ उनके पुत्र शेम, हाम तथा याफेत बाहर आये. (हाम
कनान का पिता था.) 19 ये नोहा के तीन पुत्र थे तथा इन्हीं के द्वारा फिर से
पृथ्वी मनुष्य से भर गई. 20 नोहा खेती करना शुरू किए, उन्होंने एक दाख की
बारी लगाई. 21 एक दिन नोहा दाखमधु पीकर नशे में हो गये और अपने तंबू में
नंगे पड़े थे. 22 कनान के पिता हाम ने अपने पिता को इस हालत में देखकर
अपने दोनों भाइयों को बुलाया. 23 शेम तथा याफेत ने एक वस्त्र लिया, और
दोनों ने उल्टे पांव चलते हुए अपने पिता के नंगे देह को ढक दिया. इस समय
उनके मुख विपरीत दिशा में थे, इसलिये उन्होंने अपने पिता के नंगेपन को न
देखा. 24 जब नोहा का नशा उतर गया तब उन्हें पता चला कि उनके छोटे बेटे
ने उनके साथ क्या किया है. 25 और नोहा ने कहा, "शापित है कनान! वह
अपने भाइयों के दासों का भी दास होगा." 26 नोहा ने यह भी कहा, "धन्य हैं
याहवेह, शेम के परमेश्वर! कनान शेम का ही दास हो जाए. 27 परमेश्वर याफेत
के वंश को विस्तृत करे; वह शेम के तंबुओं में रहे, और कनान उसका दास हो
जाए." 28 जलप्रलय के बाद नोहा 350 वर्ष और जीवित रहे. 29 जब नोहा
कुल 950 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो गई.

10 शेम, हाम और याफेत नोहा के पुत्र थे, जलप्रलय के बाद इनकी संतान
पैदा हुईं. 2 याफेत के पुत्र: गोमर, मागोग, मेदिया, यावन, तूबल, मेशेख
तथा तिरास थे. 3 गोमर के पुत्र: अश्केनाज, रिफात तथा तोगरमाह थे. 4 यावन
के पुत्र: एलिशाह, तरशीश, कित्तिम तथा दोदानिम थे. 5 (और उनके वंशज
मल्लाह बनकर प्रत्येक की अपनी भाषा, गोत्र और राष्ट्र होकर विभिन्न देशों में
बंट गये.) 6 हाम के पुत्र: कूश, मिस्र, पूट तथा कनान हुए. 7 कूश के पुत्र: सेबा,
हाविलाह, सबताह, रामाह और सबतेका. रामाह के पुत्र: शीबा और देदान. 8
कूश उस निमरोद का पिता था जो पृथ्वी पर पहले वीर व्यक्ति के रूप में मशहूर
हुआ. 9 वह याहवेह की दृष्टि में पराक्रमी, शिकारी था, और ऐसा कहा जाने
लगा, "निमरोद के समान याहवेह की दृष्टि में पराक्रमी शिकारी!" 10 उसके
राज्य की शुरूआत शीनार देश में, बाबेल, ऐरेख, अक्काद तथा कालनेह से हुई.
11 वहां से वे अश्शूर में गये, वहां उन्होंने नीनवेह, रेहोबोथ-इर तथा कलाह नगर
बनाए. 12 तथा रेसेन नगर को बनाए, जो नीनवेह तथा कलाह के बीच का एक
बड़ा नगर है. 13 मिस्र के पुत्र: लूदिम, अनामिम, लेहाबिम, नाफ़तुहि, 14
पथरूस, कस्लूह (जिनसे फिलिस्तीनी राष्ट्र निकले) और काफ़तोर 15 कनान
का पहला पुत्र सीदोन, फिर हित्ती, 16 यबूसी, अमोरी, गिर्गाशी, 17 हिव्वी,
आरकी, सीनी, 18 अरवादी, ज़ेमारी, हामाथी. (बाद में कनानी परिवार भी
बढ़ते गए. 19 कनान के वंश की सीमा सीदोन से होकर गेरार से होती हुई
अज्जाह तक थी तथा सोदोम, अमोराह, अदमाह तथा ज़ेबोईम से लाशा तक
थी.) 20 ये सभी गोत्रों, भाषाओं, देशों तथा उनके राष्ट्रों के अनुसार हाम के वंश
में से थे. 21 शेम याफेत के बड़े भाई थे; वे एबर के वंश के गोत्रपिता हुए. 22
शेम के पुत्र: एलाम, अशहूर, अरफाक्साद, लूद तथा अराम थे. 23 अराम के
पुत्र: उज़, हूल, गेथर तथा माश थे. 24 अरफाक्साद शेलाह का पिता था, शेलाह

एबर का. 25 एबर के दो पुत्र हुए: एक का नाम पेलेग अर्थात् बांटना, क्योंकि
उनके समय में पृथ्वी का बंटवारा हुआ. उनके भाई का नाम योकतान था. 26
योकतान के पुत्र: अलमोदाद, शेलेफ, हासारमेबेथ, जेराह, 27 हादरोम, उजाल,
दिखलाह, 28 ओबाल, अबीमाएल, शीबा, 29 ओफीर, हाविलाह और योबाब.
ये सभी योकतान के पुत्र थे. 30 (ये जहां रहते थे, वहां की सीमा मेषा से लेकर
पूर्व के पहाड़ के सेफार तक थी.) 31 ये सभी अपने गोत्रों, भाषाओं, देशों
तथा राष्ट्रों के अनुसार शेम वंश के थे. 32 अपनी-अपनी संतान और जाति के
अनुसार, ये नोहा के बेटों के वंशज हैं. जलप्रलय के बाद, जाति-जाति के लोग
इनसे निकलकर पृथ्वी में फैल गए.

11 पूरी पृथ्वी पर एक ही भाषा तथा एक ही बोली थी. 2 उस समय लोग
पूर्व दिशा की ओर चलते हुए, शीनार देश में मैदान देखकर रुक गये और
वहीं रहने लगे. 3 वे आपस में कहने लगे, "हम सब मिलकर अच्छी ईंट
बनाकर आग में पकायें." उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंटों का और चुने के
स्थान पर मिट्टी के गारे को काम में लिया. 4 और उन्होंने कहा, "आओ, हम
अपने लिए एक नगर और मीनार बनाएं; मीनार इतनी ऊंची बनाएं कि आकाश
तक जा पहुंचे, ताकि हम प्रसिद्ध हो जाएं. अन्यथा हम सारी पृथ्वी में इधर-उधर
हो जायेंगे." 5 याहवेह उस नगर तथा मीनार को देखने उतर आए, जिसे लोग
बना रहे थे. 6 याहवेह ने सोचा, "ये लोग एक झुंड हैं, इनकी एक ही भाषा है,
और इन्होंने सोचकर काम करने की शुरूआत की है; अब आगे भी इस प्रकार
और काम करेंगे, तो इनके लिए कोई काम मुश्किल नहीं होगा. 7 आओ, हम
उनकी भाषा में गड़बड़ी लाएं ताकि वे एक दूसरे की बात को समझ न सकें." 8
इस प्रकार याहवेह ने उन्हें अलग कर दिया और वे पृथ्वी पर अलग-अलग
जगह पर चले गये और नगर व मीनार का काम रुक गया. 9 इसी कारण इस
स्थान का नाम बाबेल पड़ा, क्योंकि यहीं याहवेह ने भाषा में गड़बड़ी डाली थी
तथा यहीं से याहवेह ने उन्हें पूरी पृथ्वी पर फैला दिया. 10 शेम के वंश का
विवरण यह है: जलप्रलय के दो साल बाद अरफाक्साद का जन्म हुआ तब शेम
100 साल के थे. 11 अरफाक्साद के जन्म के बाद शेम 500 वर्ष और जीवित
रहे. इनके अतिरिक्त उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 12 जब अरफाक्साद
35 साल के हुए, तब शेलाह का जन्म हुआ. 13 शेलाह के जन्म के बाद
अरफाक्साद 403 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.
14 जब शेलाह 30 वर्ष के हुए, तब एबर का जन्म हुआ. 15 एबर के जन्म के
बाद शेलाह 403 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 16
जब एबर 34 वर्ष के हुए, तब पेलेग का जन्म हुआ. 17 पेलेग के जन्म के बाद
एबर 430 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 18 जब
पेलेग 30 वर्ष के हुए, तब रेउ का जन्म हुआ. 19 रेउ के जन्म के बाद पेलेग
209 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 20 जब रेउ
32 वर्ष के हुए, तब सेरुग का जन्म हुआ. 21 सेरुग के जन्म के बाद रेउ 207
वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 22 जब सेरुग 30 वर्ष
के हुए, तब नाहोर का जन्म हुआ. 23 नाहोर के जन्म के बाद सेरुग 200 वर्ष
और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 24 जब नाहोर 29 वर्ष के
हुए, तब तेराह का जन्म हुआ. 25 तेराह के जन्म के बाद नाहोर 119 वर्ष और
जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं. 26 जब तेराह 70 वर्ष के हुए,
तब अब्राम, नाहोर तथा हारान का जन्म हुआ. 27 तेराह के वंशज ये हैं: तेराह से
अब्राम, नाहोर तथा हारान का जन्म हुआ; हारान ने लोत को जन्म दिया. 28
हारान की मृत्यु उनके पिता के जीवित रहते उसकी जन्मभूमि कसदियों के ऊर
में हुई. 29 अब्राम तथा नाहोर ने विवाह किया. अब्राम की पत्नी का नाम सारय
तथा नाहोर की पत्नी का नाम मिलकाह था, जो हारान की पुत्री थी. हारान की
अन्य पुत्री का नाम यिसकाह था. 30 सारय बांझ थी. उनकी कोई संतान न थी.
31 तेराह ने अपने पुत्र अब्राम तथा अपने पोते लोत को, जो हारान का पुत्र था
तथा अब्राम की पत्नी सारय को अपने साथ लिया और वे सब कसदियों के ऊर
से हारान नामक जगह पहुंचे और वहीं रहने लगे. 32 हारान में तेराह की मृत्यु
हो गई, तब वे 205 वर्ष के थे.

12 फिर याहवेह ने अब्राम से कहा, "अपने पिता के घर तथा अपने
रिश्तेदारों को छोड़कर उस देश को चला जा, जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा. 2
"मैं तुमसे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, मैं तुम्हें आशीष दूंगा; मैं तुम्हारा नाम बड़ा
करूंगा, और तुम एक आशीष होंगे. 3 जो तुम्हें आशीष देंगे, मैं उन्हें आशीष
दूंगा तथा जो तुम्हें शाप देगा; मैं उन्हें शाप दूंगा. तुमसे ही पृथ्वी के सब लोग
आशीषित होंगे." 4 इसलिये याहवेह के आदेश के अनुसार अब्राम चल पड़े;
लोत भी उनके साथ गये. जब अब्राम हारान से निकले, तब वे 75 वर्ष के थे. 5
अब्राम अपने साथ उनकी पत्नी सारय, उनका भतीजा लोत, उनकी पूरी संपत्ति
तथा हारान देश में प्राप्त दास और दासियों को लेकर कनान देश पहुंचे. 6 वहां
से अब्राम शेकेम में मोरेह के बांज वृक्ष तक पहुंच गए. उस समय उस देश में
कनानी लोग रहते थे. 7 याहवेह ने अब्राम को दर्शन दिया और कहा, "तुम्हारे
वंश को मैं यह देश दूंगा." तब अब्राम ने उस स्थान पर याहवेह के सम्मान में, जो
उन पर प्रकट हुए थे, एक वेदी बनाई. 8 फिर अब्राम वहां से बेथेल के पूर्व में
पर्वत की ओर बढ़ गए, वहीं उन्होंने तंबू खड़े किए. उनके पश्चिम में बेथेल
तथा पूर्व में अय नगर थे. अब्राम ने वहां याहवेह के सम्मान में वेदी बनाई और
आराधना की. 9 वहां से अब्राम नेगेव की ओर बढ़े. 10 उस देश में अकाल
पड़ा, तब अब्राम कुछ समय के लिये मिस्र देश में रहने के लिये चले गए,
क्योंकि उनके देश में भयंकर अकाल पड़ा था. 11 जब वे मिस्र देश के पास
पहुंचे, तब अब्राम ने अपनी पत्नी सारय से कहा, "सुनो, मुझे मालूम है कि तुम
एक सुंदर स्त्री हो. 12 जब मिस्र के लोगों को यह पता चलेगा कि तुम मेरी पत्नी
हो, तो वे मुझे मार डालेंगे और तुम्हें जीवित छोड़ देंगे. 13 इसलिये तुम यह
कहना कि तुम मेरी बहन हो, ताकि तुम्हारे कारण मेरी भलाई हो और वे मुझे
नहीं मारें." 14 जब अब्राम मिस्र देश पहुंचे, तब मिस्रियों ने सारय को देखा कि
वह बहुत सुंदर है. 15 और फ़रोह के अधिकारियों ने भी सारय को देखा, तो
उन्होंने फ़रोह को उसकी सुंदरता के बारे में बताया और सारय को फ़रोह के
महल में लाया गया. 16 फ़रोह ने सारय के कारण अब्राम के साथ अच्छा
व्यवहार किया. उसने उसे भेड़ें, बैल, गधे-गधियां, ऊंट तथा दास-दासियां दिए.
17 पर याहवेह ने अब्राम की पत्नी सारय के कारण फ़रोह तथा उसके घर पर
बड़ी-बड़ी विपत्तियां डाली. 18 इसलिये फ़रोह ने अब्राम को बुलवाया और
उनसे कहा, "तुमने मेरे साथ यह क्या किया? तुमने मुझसे यह बात क्यों छिपाई
कि यह तुम्हारी पत्नी है? 19 तुमने यह क्यों कहा, 'यह मेरी बहन है'? इस
कारण मैंने उसे अपनी पत्नी बनाने के उद्देश्य से अपने महल में रखा! इसलिये
अब तुम उसे अपने साथ लेकर यहां से चले जाओ!" 20 तब फ़रोह ने अपने
अधिकारियों को अब्राम के बारे में आदेश दिया और उन्होंने अब्राम को उनकी
पत्नी और उनकी सब संपत्ति के साथ विदा किया.

13 अब्राम अपनी पत्नी, सारी संपत्ति और लोत को लेकर कनान देश के
नेगेव में आए. 2 अब्राम के पास बहुत पशु, सोने तथा चांदी होने के
कारण वे बहुत धनी हो गये थे. 3 वे नेगेव से बेथेल तक पहुंच गए, जहां वे पहले
रहते थे अर्थात् बेथेल तथा अय के बीच में. 4 और जहां उन्होंने पहले एक वेदी
बनाई थी वहां अब्राम ने याहवेह से प्रार्थना की. 5 लोत के पास भी बहुत भेड़-
बकरियां और पशु थे. उन्होंने भी अब्राम के पास अपने तंबू लगाए. 6 पर ज़मीन
की कमी के कारण वे दोनों एक साथ न रह पा रहे थे क्योंकि उनके पास बहुत
अधिक संपत्ति थी. 7 और अब्राम तथा लोत के चरवाहों के बीच आपस में

लड़ाई हो जाती थी. और उस समय उस देश में कनानी एवं परिज्ज़ी लोग भी
रहते थे. 8 इसलिये अब्राम ने लोत से कहा, "हम दोनों के बीच और हमारे
चरवाहों के बीच झगड़ा न हो, क्योंकि हम एक ही परिवार के हैं. 9 इसलिये
हम दोनों अलग हो जाते हैं. यदि तुम बायीं दिशा में जाना चाहते हो, तो मैं दायीं
ओर चला जाऊंगा और यदि तुम दायीं दिशा में जाना चाहते हो, तो मैं बायीं
ओर चला जाऊंगा." 10 लोत ने यरदन नदी व उसके आस-पास की हरियाली
को देखा; वह चारों तरफ फैली थी और ज़ोअर की दिशा में यरदन नदी भी पानी
से भरी थी. वह याहवेह का बगीचा, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी. (यह
याहवेह के द्वारा सोदोम व अमोराह को नाश करने के पहले की बात है.) 11
इसलिये लोत ने यरदन घाटी को जो, पूर्व दिशा की ओर है, चुन लिया. इस
प्रकार लोत तथा अब्राम एक दूसरे से अलग हो गए. 12 अब्राम कनान देश में
बस गए तथा लोत यरदन घाटी के नगरों में. लोत ने अपने तंबू सोदोम नगर के
निकट खड़े किए. 13 सोदोम के पुरुष दुष्ट थे और याहवेह की दृष्टि में वे बहुत
पापी थे. 14 लोत से अब्राम के अलग होने के बाद याहवेह ने अब्राम से कहा,
"तुम जिस स्थान पर खड़े हो, वहां से चारों ओर देखो. 15 क्योंकि यह सारी
भूमि, जो तुम्हें दिख रही है, मैं तुम्हें तथा तुम्हारे वंश को हमेशा के लिए दूंगा.
16 मैं तुम्हारे वंश को भूमि की धूल के कण के समान असंख्य बना दूंगा, तब
यदि कोई इन कणों को गिन सके, तो तुम्हारे वंश को भी गिन पायेगा. 17 अब
उठो, इस देश की लंबाई और चौड़ाई में चलो फिरो, क्योंकि यह मैं तुम्हें दूंगा."
18 इसलिये अब्राम ने हेब्रोन में ममरे के बांज वृक्ष के पास अपने तंबू खड़े किए
और उन्होंने वहां याहवेह के लिए एक वेदी बनाई.

14 शीनार देश के राजा अमराफेल, एलासार के राजा आरिओख, एलाम के
राजा खेदोरलाओमर और गोईम के राजा तिदाल ने अपने शासनकाल में,
2 एकजुट होकर सोदोम के राजा बेरा, अमोराह के राजा बिरशा, अदमाह के
राजा शीनाब, ज़ेबोईम के राजा शेमेबेर तथा बेला (अर्थात् ज़ोअर) के राजा
के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया. 3 ये सभी एक साथ होकर सिद्दिम घाटी (अर्थात्
लवण-सागर) के पास इकट्ठे हो गए. 4 बारह वर्ष तक तो वे खेदोरलाओमर
के अधीन रहे, किंतु तेरहवें वर्ष में उन्होंने विरोध किया. 5 चौदहवें वर्ष में
खेदोरलाओमर तथा उसके मित्र राजाओं ने आकर अश्तेरोथ-करनाइम में रेफाइम
को, हाम में ज़ुज़ीम को, शावेह-किरयथाईम में एमियों को, 6 तथा सेईर पर्वत में
निर्जन प्रदेश के पास एल-पारान तक होरियों को भी हरा दिया. 7 इसके बाद वे
मुड़े और एन-मिशपत (अर्थात् कादेश) आ गए और पूरे अमालेकियों को तथा
हज़ज़ोन-तामार में रह रहे अमोरियों को भी हरा दिया. 8 तब सोदोम, अमोराह,
अदमाह, ज़ेबोईम तथा बेला (अर्थात् ज़ोअर) के राजा बाहर निकल गए और
उन्होंने सिद्दिम की घाटी में उनके विरुद्ध युद्ध किया. 9 यह लड़ाई एलाम के राजा
खेदोरलाओमर, गोईम के राजा तिदाल, शीनार के राजा अमराफेल तथा एलासार
के राजा आरिओख—ये चार राजा उन पांच राजाओं से लड़ रहे थे. 10 सिद्दिम
घाटी में सब जगह गड्ढे थे. जब सोदोम तथा अमोराह के राजा युद्ध से भाग रहे थे,
तो कुछ लोग गड्ढों में जा गिरे और बाकी बचे लोग पर्वत पर की बस्ती में भाग
गए. 11 तब चारों राजाओं ने सोदोम तथा अमोराह से सब कुछ ले लिया और
खाने का सब सामान भी ले गए. 12 वे अपने साथ अब्राम के भतीजे लोत एवं
उसकी पूरी संपत्ति भी ले गए, क्योंकि लोत उस समय सोदोम में रह रहा था.
13 और युद्ध क्षेत्र से भागकर एक व्यक्ति ने इब्री अब्राम को ये बातें बताई. अब्राम
तो उस समय ममरे नामक व्यक्ति, जो अमोरी जाति का था, उसके बड़े बलूत
पेड़ों के पास रहता था. ममरे, एशकोल एवं ऐनर का भाई था; और इन्होंने
अब्राम से वाचा बांधी थी. 14 जब अब्राम को यह पता चला कि लोत को बंदी
बना लिया गया है, तो उसने अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और 318 जो
युद्ध सीखे हुए वीर थे, साथ लेकर दान नामक स्थान तक उनका पीछा किया.
15 रात्रि में अब्राम ने अपने लोगों को उनके ऊपर हमला करने के लिये बांट
दिया और अब्राम तथा उनके सेवकों ने उन्हें पराजित कर दिया तथा दमेशेक के
उत्तर में स्थित होबाह नगर तक उनका पीछा किया. 16 अब्राम ने उन लोगों से
सब सामान वापस ले लिया और लोत, उसके सभी लोग और उसकी संपत्ति भी
उनसे ले ली. 17 जब अब्राम खेदोरलाओमर तथा उनके मित्र राजाओं को हरा
कर लौट रहे थे, सोदोम का राजा शावेह घाटी (जिसे राजा की घाटी भी कहा
जाता है) में अब्राम से मिलने आया. 18 शालेम के राजा मेलखीज़ेदेक, जो
परमेश्वर के पुरोहित थे, भोजन एवं दाखरस लेकर आये. 19 उन्होंने अब्राम को
आशीष देते हुए कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी को बनानेवाले, परम प्रधान परमेश्वर
की ओर से तुम धन्य हो, 20 धन्य हैं परम प्रधान परमेश्वर, जिन्होंने आपके
शत्रुओं को आपके अधीन कर दिया है." अब्राम ने मेलखीज़ेदेक को सबका
दशमांश दिया. 21 सोदोम के राजा ने अब्राम से कहा, "मुझे इन्सानों को दे
दीजिए, सामान सब आप रख लीजिए." 22 सोदोम के राजा को अब्राम ने उत्तर
दिया, "मैंने स्वर्ग और पृथ्वी के अधिकारी, याहवेह परमेश्वर के सामने शपथ
ली है, 23 कि मैं आपकी संपत्ति में से एक भी वस्तु, यहां तक कि एक धागा या
जूती का बंधन तक न लूंगा, ताकि इन चीज़ों को देकर आप यह न कहने लगें,
'मैंने अब्राम को धनी बनाया है.' 24 मैं आपसे कुछ नहीं लूंगा पर सिर्फ खाना,
जिसे मेरे लोगों ने खा लिया है और उनका हिस्सा, जो मेरे साथ गये थे याने
ऐनर, एशकोल तथा ममरे का हिस्सा, मैं आपको नहीं लौटाऊंगा. उन्हें उनके
हिस्सा रखने दीजिये."

15 इन बातों के बाद अब्राम को एक दर्शन में याहवेह का यह संदेश मिला:
"अब्राम, भयभीत न हो, मैं तुम्हारी ढाल, और तुम्हारा सबसे बड़ा
प्रतिफल हूं." 2 अब्राम ने उत्तर दिया, "हे प्रभु याहवेह, आप मुझे क्या दे सकते
हैं, क्योंकि मेरी कोई संतान नहीं है, और मेरा वारिस दमेशेक का एलिएज़र
होगा?" 3 अब्राम ने यह भी कहा, "आपकी ओर से तो मुझे कोई संतान नहीं
मिली; इसलिये मेरे घर में एक सेवक मेरा वारिस होगा." 4 तब अब्राम के पास
याहवेह का यह वचन आया, "तुम्हारा वारिस यह दास नहीं, परंतु एक पुत्र जो
तुम्हारा ही मांस और खून है, तुम्हारा वारिस होगा." 5 याहवेह अब्राम को बाहर
ले गए और अब्राम से कहने लगे, "आकाश की ओर देखो. और तारों की
गिनती करो." याहवेह ने अब्राम से कहा, "ऐसे ही तुम्हारा वंश होगा, जिनको
कोई गिन नहीं पायेगा." 6 अब्राम ने याहवेह पर विश्वास किया; याहवेह ने इस
बात को उसकी धार्मिकता मानी. 7 याहवेह ने अब्राम को आश्वासन दिया "मैं
वही याहवेह हूं, जिसने तुम्हें कसदियों के ऊर नगर से बाहर निकाला, ताकि
तुम्हें यह देश मिले और तुम इस देश पर अधिकार करे." 8 अब्राम ने कहा, "हे
प्रभु याहवेह, मैं कैसे जानूं कि आप मुझे यह देश देंगे?" 9 इसलिये परमेश्वर ने
अब्राम से कहा, "मेरे लिए तीन वर्ष की एक कलोर, तीन वर्ष की एक बकरी,
तीन वर्ष का एक मेढ़ा, एक पिण्डुक तथा एक कबूतर का बच्चा ले आओ."
10 अब्राम याहवेह के लिए ये सब ले आए, इन सभी चीज़ों को काटकर दो-दो
टुकड़े किए तथा हर एक टुकड़े को आमने-सामने रख दिये, पर उन्होंने पक्षियों
के टुकड़े नहीं किए. 11 इन टुकड़ों को देख गिद्ध नीचे उतर आए, किंतु अब्राम
ने उन्हें भगा दिया. 12 जब सूरज डूब रहा था, तब अब्राम गहरी नींद में सो गए
और पूरा अंधेरा हो गया. 13 तब याहवेह ने अब्राम से कहा, "यह सच है
तुम्हारे वंश के लोग पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, जहां उन्हें दास बना लिया
जाएगा, और वे उन्हें चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे. 14 फिर जिस देश के वे दास
होंगे, उस देश के लोगों को मैं दंड दूंगा, फिर तुम्हारे वंश के लोग वहां से बहुत
धन लेकर निकलेंगे. 15 पर तुम्हारा अंत बहुत शांति से होगा और तुम अपनी पूरे
बुढ़ापे की आयु में अपने पुरखों के पास दफनाए जाओगे. 16 तुम्हारा वंश,
चौथी पीढ़ी में यहां फिर लौट आयेगा, क्योंकि अमोरियों का अधर्म अब तक

पूरा नहीं हुआ." 17 शाम ढलकर रात बहुत हो गई थी तब एक अंगीठी जिससे
धुआं निकल रहा था और उसमें से एक जलता हुआ पतीला उन टुकड़ों के बीच
में से गुजरा. 18 और उसी दिन याहवेह ने अब्राम से एक वाचा बांधी और कहा,
"मैं तुम्हारे वंश को मिस्र के नदी से लेकर फरात महानदी तक दूंगा, 19 जो कि
केनी, कनिज्ज़ी, कदमोनी, 20 हित्ती, परिज्ज़ी, रेफाइम, 21 अमोरी, कनानी,
गिर्गाशी तथा यबूसियों का देश है."

16 अब्राम की पत्नी सारय निःसंतान थी. उसकी हागार नामक एक दासी थी,
जो मिस्री थी; 2 सारय ने अब्राम से कहा, "मैं तो मां नहीं बन सकती
क्योंकि मैं बांझ हूं इसलिये कृपा करके आप मेरी दासी को स्वीकारें, संभवतः
उसके द्वारा संतान का सुख पा सकूं." अब्राम ने सारय के इस बात को मान
लिया. 3 अब्राम को कनान देश में रहते हुए दस साल हो चुके थे. अब्राम की
पत्नी सारय ने अपनी दासी हागार को अब्राम की पत्नी होने के लिए उनको सौंप
दिया. 4 अब्राम ने हागार के साथ शारीरिक संबंध बनाए; इस प्रकार हागार
गर्भवती हुई तब हागार सारय को तुच्छ समझने लगी. 5 सारय ने अब्राम से
कहा, "मेरे साथ हो रहे उपद्रव का कारण आप हैं. मैंने अपनी दासी को केवल
वारिस पाने के लिए आपको सौंपा था लेकिन हागार गर्भवती होते ही मुझे
तुच्छ समझने लगी. अब याहवेह ही आपके तथा मेरे बीच न्याय करें." 6
अब्राम ने सारय से कहा, "सुनो, तुम्हारी दासी पर तुम्हारा ही अधिकार है. तुम
जैसा चाहो उसके साथ करो." तब सारय हागार को तंग करने लगी. हागार
परेशान होकर सारय के सामने से भाग गई. 7 जब याहवेह के दूत ने उसे निर्जन
प्रदेश में एक सोते के पास देखा जो शूर के मार्ग पर था. 8 तब स्वर्गदूत ने
उससे पूछा, "हे सारय की दासी हागार, तुम कहां से आ रही हो? और कहां
जा रही हो?" हागार ने उत्तर दिया, "मैं अपनी स्वामिनी सारय के पास से
भागकर आई हूं." 9 याहवेह के दूत ने कहा, "अपनी स्वामिनी के पास वापस
चली जाओ और उसके अधीन में रहो." 10 और याहवेह के दूत ने कहा, "मैं
तुम्हारे वंश को बहुत बढाऊंगा, इतना कि उनकी गिनती करना मुश्किल होगा."
11 याहवेह के दूत ने यह भी कहा: "देखो, तुम गर्भवती होगी और एक पुत्र
को जन्म दोगी. उसका नाम तुम इशमाएल रखना, क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे
रोना सुना है. 12 वह जंगली गधे की प्रकृति का पुरुष होगा; सभी से उसकी
दुश्मनी होगी और सबको उससे दुश्मनी होगी, और वह अपने संबंधियों के साथ
शत्रुतापूर्ण वातावरण में जीवन व्यतीत करेगा." 13 तब हागार ने याहवेह का
जिन्होंने उससे बात की थी, यह नाम रखा: "अत्ता-एल-रोई," (अर्थात् आप
मुझे देखनेवाला परमेश्वर हैं) उसने यह भी कहा, "मैंने अब उसको देखा है जो
मुझे देखता है." 14 इस घटना के कारण उस कुएं का नाम बएर-लहाई-रोई
पड़ा, जो कादेश तथा बेरेद के बीच में है. 15 अब्राम से हागार का एक बेटा
हुआ तथा अब्राम ने हागार से जन्मे अपने इस बेटे का नाम इशमाएल रखा. 16
अब्राम छियासी वर्ष के थे, जब इशमाएल पैदा हुआ.

17 जब अब्राम निन्यानबे वर्ष के हुए तब याहवेह उन पर प्रकट हुए और
उनसे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; तुम मेरे सामने विश्वासयोग्यता
से चलो और निर्दोष रहो. 2 मैं अपने और तुम्हारे बीच अपना करार स्थापित
करूंगा और तुम्हारे वंश को बहुत बढाऊंगा." 3 तब अब्राम ने झुककर परमेश्वर
को प्रणाम किया और परमेश्वर ने उनसे कहा, 4 "तुम्हारे साथ मेरी वाचा यह है:
तुम अनेक जातियों के गोत्रपिता होंगे. 5 अब से तुम्हारा नाम अब्राम न रहेगा,
पर अब्राहाम होगा; क्योंकि मैंने तुम्हें अनेक जातियों का गोत्रपिता बनाया है. 6
मैं तुम्हें बहुत फलवंत करूंगा; तुम्हें जाति-जाति का मूल बनाऊंगा, और तुम्हारे
वंश में राजा पैदा होंगे. 7 मैं तेरे और आनेवाले तेरे वंश के साथ पीढ़ी-पीढ़ी की
यह वाचा बांधूंगा कि मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का परमेश्वर रहूंगा.
8 यह कनान देश, जिसमें तुम पराये होकर रहते हो, यह देश तुमको और तुम्हारे
बाद तुम्हारे वंशजों को सदाकाल के लिये अधिकार में दे दूंगा; और मैं उनका
परमेश्वर रहूंगा." 9 परमेश्वर ने अब्राहाम से फिर कहा, "तुम और तुम्हारे बाद
तुम्हारे वंश के लोग मेरी वाचा को सच्चाई से मानते रहना. 10 तुम्हारे और
तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश के साथ मेरी वाचा यह है, जिसे तुम्हें मानना ज़रूरी है:
तुम्हारे बीच में प्रत्येक पुरुष का ख़तना किया जाये. 11 और यह ख़तना तुम्हारे
खलड़ी (त्वचा) का किया जाये. यही मेरे एवं तुम्हारे बीच की गई वाचा का
चिन्ह होगा. 12 तुम्हारे वंश में सभी पीढ़ियों में हर लड़के के आठ दिन के होने
पर उसका ख़तना करना, तुम्हारे घर का वह सेवक जिसका जन्म तुम्हारे घर में
हुआ है अथवा जिसे किसी परदेशी से मूल्य देकर खरीदा गया हो, चाहे वे
तुम्हारे वंश में से न हों. 13 तुम्हारे घर में पैदा हुए हों या फिर पैसा देकर खरीदे
गये हों, उन सबका ख़तना करना ज़रूरी है. तुम्हारे मांस में मेरी यह वाचा
सदाकाल की वाचा है. 14 परंतु जो पुरुष बिना ख़तना किए रहेगा, उसे समाज से
अलग कर दिया जाएगा, क्योंकि उसने मेरी वाचा को तोड़ा है." 15 परमेश्वर ने
अब्राहाम से यह भी कहा, "तुम्हारी पत्नी सारय को तुम अब सारय नहीं कहना;
परंतु अब उसका नाम साराह होगा. 16 मैं उसे आशीष दूंगा और मैं तुम्हें उसके
द्वारा एक बेटा दूंगा. मैं उसे आशीष दूंगा. जिससे वह जाति-जाति की मूलमाता
होगी; और राजाओं का जन्म उसके वंश में होगा." 17 यह सुनकर अब्राहाम ने
झुककर प्रणाम किया; वह हंसने लगा और मन में कहने लगा, "क्या सौ साल
के व्यक्ति से बेटा पैदा हो सकता है? साराह, जो नब्बे साल की है, क्या वह बेटा
जन्म दे सकती है?" 18 और अब्राहाम ने परमेश्वर से कहा, "अच्छा हो कि
इशमाएल आपसे आशीष पाये!" 19 तब परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा, "नहीं!
तुम्हारी पत्नी साराह से एक बेटा होगा, और तुम उसका नाम यित्सहाक रखना.
मैं उसके साथ ऐसी वाचा बांधूंगा, जो उसके बाद आनेवाली पीढ़ी-पीढ़ी तक
सदाकाल की वाचा होगी. 20 और इशमाएल के बारे में, मैंने तुम्हारी बात सुनी
है: मैं उसे ज़रूर आशीष दूंगा; मैं उसे फलवंत करूंगा और उसको संख्या में बहुत
बढ़ाऊंगा. वह बारह शासकों का पिता होगा, और मैं उससे एक बड़ी जाति
बनाऊंगा. 21 परंतु मैं अपनी वाचा यित्सहाक के साथ बांधूंगा, जिसे साराह तेरे
लिए अगले साल इसी समय जन्म देगी." 22 जब परमेश्वर अब्राहाम से अपनी
बात कह चुके, तब वे चले गए. 23 तब अब्राहाम ने उसी दिन परमेश्वर के
आदेश के अनुसार अपने पुत्र इशमाएल तथा अपने उन सेवकों का, जिनका
जन्म उनके परिवार में हुआ था या जिन्हें अब्राहाम ने धन देकर खरीदा था,
परिवार के हर एक पुरुष लेकर परमेश्वर के कहे अनुसार उनका ख़तना किया.
24 अब्राहाम के खलड़ी के खतने के समय उनकी उम्र निन्यानवे वर्ष थी, 25
और खतने के समय उनका पुत्र इशमाएल तेरह वर्ष का था. 26 अब्राहाम तथा
उनके पुत्र इशमाएल का ख़तना एक ही दिन किया गया. 27 और उनके परिवार
के सब पुरुष, जो उनके घर में पैदा हुए थे अथवा जो किसी विदेशी से धन देकर
खरीदे गये थे, उन सबका ख़तना उनके साथ किया गया.

18 याहवेह ने ममरे के बांज वृक्षों के पास अब्राहाम को दर्शन दिया, तब
अब्राहाम दिन की कड़ी धूप में अपने तंबू के द्वार पर बैठे हुए थे. 2
अब्राहाम ने आंखें ऊपर उठाकर देखा कि उनके सामने तीन व्यक्ति खड़े हैं. जब
उन्होंने इन व्यक्तियों को देखा, तब वे उनसे मिलने के लिये तंबू के द्वार से
दौड़कर उनके पास गए, और झुककर उनको प्रणाम किया. 3 अब्राहाम ने उनसे
कहा, "मेरे स्वामी, यदि मुझ पर आपकी कृपादृष्टि हो, तो अपने सेवक के
यहां रुके बिना न जाएं. 4 आप इस पेड़ के नीचे बैठिये, मैं पानी लेकर आता
हूं, ताकि आप अपने पांव धो सकें." 5 मैं आपके लिए भोजन तैयार करता
हूं, ताकि आप खाकर तरो ताजा हो सकें और फिर अपनी आगे की यात्रा में
जाएं—क्योंकि आप अपने सेवक के यहां आए हैं. उन्होंने अब्राहाम से कहा,

“वैसा ही करो, जैसा कि तुमने कहा है.” 6 अब्राहाम जल्दी तंबू में साराह के पास गए और कहा, “तुरंत, तीन माप मैदा गूंधकर कुछ रोटियां बनाओ.” 7 अब्राहाम दौड़कर अपने गाय-बैल के झुंड के पास गए और एक कोमल अच्छा बछड़ा छांट कर अपने सेवक को दिया और उससे कहा, जल्दी से खाना तैयार करो. 8 फिर अब्राहाम ने दही, दूध तथा बछड़ा जो तैयार करवाया था, उनको खिलाया. जब वे तीनों भोजन कर रहे थे, अब्राहाम पेड़ की छाया में उनके पास खड़े रहे. 9 उन्होंने अब्राहाम से पूछा, “तुम्हारी पत्नी साराह कहां है?” अब्राहाम ने कहा, “वह तंबू में है.” 10 इस पर उनमें से एक ने कहा, “अगले वर्ष, इसी वसन्त ऋतु समय में, मैं निश्चय वापस आऊंगा, तब तुम्हारी पत्नी साराह पुत्रवती होगी.” अब्राहाम की पीठ तंबू की ओर थी, और तंबू के द्वार पर साराह यह बात सुन रही थी. 11 अब्राहाम तथा साराह बहुत बूढ़े थे, और साराह बच्चा पैदा करने की उम्र को पार कर चुकी थी. 12 इसलिये साराह मन ही मन हंसते हुए सोचने लगी, “मैं कमजोर हो चुकी और मेरे स्वामी बहुत बूढ़े है, अब क्या यह खुशी हमारे जीवन में आयेगी?” 13 तब याहवेह ने अब्राहाम से प्रश्न किया, “साराह यह कहकर क्यों हंस रही है कि क्या मैं वास्तव में एक बच्चे को जन्म दूंगी, जबकि मैं तो एक बूढ़ी हूं? 14 क्या याहवेह के लिए कोई काम कठिन है? मैं अगले साल इसी निर्धारित समय तुमसे मिलने आऊंगा, तब साराह पुत्रवती होगी.” 15 तब साराह डर गयी, और यह कहकर झूठ बोलने लगी, “मैं नहीं हंसी थी.” तब परमेश्वर के दूत ने कहा, “तुम ज़रूर हंसी थी.” 16 इसके बाद वे व्यक्ति जाने के लिए उठे और सोदोम की ओर देखने लगे, अब्राहाम उनको विदा करने के लिए उनके साथ साथ चल रहे थे. 17 तब याहवेह ने सोचा, “जो काम मैं करनेवाला हूं, क्या मैं अब्राहाम से छिपा रखूं? 18 अब्राहाम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति होगी तथा उससे ही पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी 19 क्योंकि मैंने उन्हें इसलिये चुना कि वे अपने बच्चों एवं घर के लोगों को सही और न्याय की बात सिखायें और वे याहवेह के मार्ग में स्थिर रहें, ताकि याहवेह अब्राहाम से किए गए वायदे को पूरा करें.” 20 तब याहवेह ने बताया, “सोदोम तथा अमोराह की चिल्लाहट बढ़ गई है, उनका पाप बहुत बढ़ गया है 21 इसलिये मैं वहां जाकर देखूंगा कि उनके काम उस चिल्लाहट के मुताबिक बुरे हैं या नहीं. यदि नहीं, तो मैं समझ लूंगा.” 22 फिर उनमें से दो व्यक्ति वहां से मुड़कर सोदोम की ओर चले गए, जबकि अब्राहाम याहवेह के सामने रुके रहे. 23 अब्राहाम ने याहवेह से कहा: “क्या आप सचमुच बुरे लोगों के साथ धर्मियों को भी नाश करेंगे? 24 यदि उस नगर में पचास धर्मी हों, तो क्या आप उस नगर को नाश करेंगे? क्या उन पचास धर्मियों के कारण बाकी सब लोग बच नहीं सकते? 25 इस प्रकार का काम करना आपसे दूर रहे—दुष्ट के साथ धर्मी को मार डालना, दुष्ट और धर्मी के साथ एक जैसा व्यवहार करना. ऐसा करना आपसे दूर रहे! क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?” 26 याहवेह ने कहा, “यदि मुझे सोदोम शहर में पचास धर्मी व्यक्ति मिल जाएं, तो मैं उनके कारण पूरे शहर को छोड़ दूंगा.” 27 अब्राहाम ने फिर कहा: “हालांकि मैं केवल मिट्टी और राख हूं, फिर भी मैंने प्रभु से बात करने की हिम्मत की है, 28 यदि वहां पचास में से पांच धर्मी कम हो जायें, तो क्या आप पांच धर्मी कम होने के कारण पूरे नगर का नाश करेंगे?” याहवेह ने उत्तर दिया, “यदि मुझे वहां पैंतालीस भी मिल जाएं, तो मैं उस नगर को नाश नहीं करूंगा.” 29 एक बार फिर अब्राहाम ने याहवेह से कहा, “यदि वहां चालीस ही धर्मी पाए जाएं तो?” याहवेह ने उत्तर दिया, “उन चालीस के कारण भी मैं नाश न करूंगा.” 30 तब अब्राहाम ने कहा, “प्रभु, आप मुझ पर नाराज न होएं, पर मुझे बोलने दें. यदि वहां तीस ही धर्मी पाए जाएं तो?” याहवेह ने उत्तर दिया, “यदि मुझे वहां तीस भी मिल जाएं, तो मैं नाश न करूंगा.” 31 अब्राहाम ने कहा, “प्रभु, मैंने आपसे बात करने की हिम्मत तो कर ही ली है; यह भी हो सकता है कि वहां बीस ही पाए जाएं तो?” याहवेह ने उत्तर दिया, “मैं उन बीस के कारण उस नगर को नाश न करूंगा.” 32 फिर अब्राहाम ने कहा, “हे प्रभु, आप क्रोधित न हों, आखिरी बार आपसे विनती करता हूं. यदि वहां दस ही पाए जाएं तो?” याहवेह ने उत्तर दिया, “मैं उन दस के कारण उस नगर को नाश न करूंगा.” 33 जब याहवेह अब्राहाम से बात कर चुके, तो वे वहां से चले गये, और अब्राहाम अपने घर वापस चला गया.

19 संध्या होते-होते वे दो स्वर्गदूत सोदोम पहुंचे. इस समय लोत सोदोम के प्रवेश द्वार पर ही बैठे हुए थे. स्वर्गदूतों पर दृष्टि पड़ते ही लोत उनसे भेंटकरने के लिए खड़े हुए और उनको झुककर दंडवत किया. 2 और कहा, “हे मेरे प्रभुओ, आप अपने सेवक के घर पर आएं. आप अपने पैर धोकर रात्रि यहां ठहरें और तड़के सुबह अपनी यात्रा पर आगे जाएं.” किंतु उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं, रात तो हम यहां नगर के चौक में व्यतीत करेंगे.” 3 किंतु लोत उनसे विनतीपूर्वक आग्रह करते रहे. तब वे लोत के आग्रह को स्वीकार कर उसके साथ उसके घर में चले गए. लोत ने उनके लिए भोजन, खमीर रहित रोटी, तैयार की और उन्होंने भोजन किया. 4 इसके पूर्व वे बिछौने पर जाते, नगर के पुरुष, सोदोम के लोगों ने आकर लोत के आवास को घेर लिया, ये सभी युवा एवं वृद्ध नगर के हर एक भाग से आए थे. 5 वे ऊंची आवाज में पुकारकर लोत से कहने लगे, “कहां हैं वे पुरुष, जो आज रात्रि के लिए तुम्हारे यहां ठहरे हुए हैं? उन्हें बाहर ले आओ कि हम उनसे संभोग करें.” 6 लोत बाहर निकले और उन्होंने द्वार को बंद कर 7 उनसे निवेदन किया, “हे मेरे भाइयो, मेरा आग्रह है, ऐसा अनैतिक कार्य न करें. 8 देखिए, मेरी दो बेटियां हैं, जिनका संसर्ग किसी पुरुष से नहीं हुआ है. मैं उन्हें यहां बाहर ले आता हूं. आप उनसे अपनी अभिलाषा पूरी कर लीजिए; बस, इन व्यक्तियों के साथ कुछ न कीजिए, क्योंकि वे मेरे अतिथि हैं.” 9 किंतु वे चिल्लाने लगे, “पीछे हट! यह परदेशी हमारे मध्य आ बसा है और देखो, अब हमारा शासक बनना चाहता है! हम तुम्हारी स्थिति उन लोगों से भी अधिक दयनीय बना देंगे.” वे लोत पर दबाव डालने लगे और दरवाजे को तोड़ने के लिये आगे बढ़ने लगे. 10 पर उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर लोत को आवास के भीतर खींच लिया और द्वार बंद कर दिया. 11 उन अतिथियों ने उन सभी को, जो द्वार पर थे, छोटे से लेकर बड़े तक, अंधा कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि द्वार को खोजते-खोजते वे थक गए. 12 तब उन दो अतिथियों ने लोत से कहा, “यहां तुम्हारे और कौन-कौन संबंधी हैं? दामाद, पुत्र तथा तुम्हारी पुत्रियां अथवा इस नगर में तुम्हारे कोई भी रिश्तेदार हो, उन्हें इस स्थान से बाहर ले जाओ, 13 क्योंकि हम इस स्थान को नष्ट करने पर हैं. याहवेह के समक्ष उसके लोगों के विरुद्ध चिल्लाहट इतनी ज्यादा हो गई है कि याहवेह ने हमें इसका सर्वनाश करने के लिए भेजा है.” 14 लोत ने जाकर अपने होनेवाले उन दामादों से बात की, जिनसे उनकी बेटियों की सगाई हो गई थी. उन्होंने कहा, “उठो, यहां से निकल चलो, याहवेह इस नगर का सर्वनाश करने पर हैं!” किंतु लोत के दामादों ने समझा कि वे मजाक कर रहे हैं. 15 जब पौ फटने लगी, तब उन स्वर्गदूतों ने लोत से आग्रह किया, “उठो! अपनी पत्नी एवं अपनी दोनों पुत्रियों को, जो इस समय यहां हैं, अपने साथ ले लो, कहीं तुम भी नगर के साथ उसके दंड की चपेट में न आ जाओ.” 16 किंतु लोत विलंब करते रहे. तब उन अतिथियों ने उनका, उनकी पत्नी तथा उनकी दोनों पुत्रियों का हाथ पकड़कर उन्हें सुरक्षित बाहर ले गये, क्योंकि याहवेह की दया उन पर थी. 17 जब वे उन्हें बाहर ले आए, तो उनमें से एक ने उन्हें आदेश दिया, “अपने प्राण बचाकर भागो! पलट कर मत देखना तथा मैदान में कहीं मत रुकना! पहाड़ों पर चले जाओ, अन्यथा तुम सभी इसकी चपेट में आ जाओगे.” 18 किंतु लोत ने उनसे आग्रह किया, “हे मेरे प्रभुओ, ऐसा न करें! 19 जब आपके सेवक ने आपकी कृपादृष्टि प्राप्त कर ही ली है और आपने मेरे जीवन को

सुरक्षा प्रदान करने के द्वारा अपनी प्रेममय कृपा को बढाया है; तो पर्वतों में जा
छिपना मेरे लिए संभव न होगा, क्योंकि इसमें इस महाविनाश से हमारा घिर
जाना निश्चित ही है तथा मेरी मृत्यु हो जाएगी. 20 तब देखिए, यहां पास में एक
नगर है, जहां दौड़कर जाया जा सकता है और यह छोटा है. कृपया मुझे वहीं
जाने की अनुमति दे दीजिए. यह बहुत छोटा नगर भी है. तब मेरा जीवन सुरक्षित
रहेगा.” 21 उन्होंने लोत से कहा, “चलो, मैं तुम्हारा यह अनुरोध भी मान लेता
हूं; मैं इस नगर को, जिसका तुम उल्लेख कर रहे हो, नष्ट नहीं करूंगा. 22 किंतु
बिना देर किए, भागकर वहां चले जाओ, क्योंकि जब तक तुम वहां पहुंच न
जाओ, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकूंगा.” (इसी कारण उस नगर का नाम
ज़ोअर पड़ा.) 23 लोत के ज़ोअर पहुंचते-पहुंचते सूर्योदय हो चुका था. 24 तब
याहवेह ने सोदोम तथा अमोराह पर आकाश से गंधक एवं आग की बारिश की.
25 याहवेह ने उन नगरों को, उस संपूर्ण मैदान, भूमि के सभी उत्पादों तथा उन
नगरों के सभी निवासियों को पूरी तरह नाश कर दिया. 26 परंतु लोत के पत्नी ने
मुड़कर पीछे देखा और परिणामस्वरूप वह नमक का खंभा बन गई. 27 अगले
दिन अब्राहाम बड़े सुबह उठे और उस जगह को गये, जहां वे याहवेह के सामने
खड़े हुए थे. 28 उन्होंने सोदोम, अमोराह तथा संपूर्ण मैदान की ओर दृष्टि की,
तो उन्हें संपूर्ण प्रदेश से धुआं उठता दिखाई दिया, जो ऐसा उठ रहा था, जैसा
भट्टी का धुआं. 29 जब परमेश्वर ने मैदान के नगरों का सर्वनाश किया, तो
उन्होंने अब्राहाम को याद किया और उन्होंने लोत को उस विपदा में से सुरक्षित
बाहर निकाल लिया, उन नगरों को नाश कर दिया, जहां लोत निवास करते थे.
30 लोत अपनी दोनों बेटियों के साथ ज़ोअर को छोड़कर पहाड़ों में रहने
चले गये, क्योंकि वह ज़ोअर में रहने से डरते थे. वे और उनकी दोनों बेटियां
गुफाओं में रहते थे. 31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “हमारे पिता तो
बूढ़े हो गये हैं और यहां आस-पास ऐसा कोई पुरुष नहीं है, जो हमें बच्चा दे
सके—जैसे कि पूरी धरती पर यह रीति है. 32 इसलिये आ, हम अपने पिता को
दाखमधु पिलाएं और उनके साथ संभोग करें और अपने पिता के द्वारा अपने
परिवार के वंशक्रम आगे बढ़ाएं.” 33 उस रात उन्होंने अपने पिता को दाखमधु
पिलाया, और बड़ी बेटी अपने पिता के पास गयी और उसके साथ सोई. लोत
को यह पता न चला कि कब वह उसके साथ सोई और कब वह उठकर चली
गई. 34 उसके दूसरे दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “कल रात मैं अपने पिता
के साथ सोई थी. आ, आज रात उन्हें फिर दाखमधु पिलाएं, तब तुम जाकर
उनके साथ सोना, ताकि हम अपने पिता के ज़रिये अपने परिवार के वंशक्रम को
आगे बढ़ा सकें.” 35 इसलिये उन्होंने उस रात भी अपने पिता को दाखमधु
पिलाया और छोटी बेटी अपने पिता के पास गयी और उसके साथ सोई. लोत
को फिर पता न चला कि कब वह उनके साथ सोई और कब वह उठकर चली
गई. 36 इस प्रकार लोत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं. 37 बड़ी
बेटी ने एक बेटे को जन्म दिया, और उसने उसका नाम मोआब रखा; वह आज
के मोआबी जाति का गोत्रपिता है. 38 छोटी बेटी का भी एक बेटा हुआ, और
उसने उसका नाम बेन-अम्मी रखा; वह आज के अम्मोन जाति का गोत्रपिता है.

20 फिर अब्राहाम नेगेव देश की ओर गये तथा कादेश और शूर के बीच
में रहने लगे, कुछ समय तक वे गेरार में रहे, 2 और वहां अब्राहाम ने
अपनी पत्नी साराह के विषय में कहा, “वह मेरी बहन है.” और गेरार के राजा
अबीमेलेक ने साराह को बुलवाया तथा अपने महल में रखा. 3 परंतु एक रात
परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक से कहा, “तू एक मृत व्यक्ति की तरह है,
क्योंकि जिस स्त्री को तुमने ले लिया है, वह एक विवाहित स्त्री है.” 4 फिर
अबीमेलेक ने परमेश्वर से कहा, “हे प्रभु, क्या आप एक निर्दोष जाति को नाश
करेंगे? 5 क्या अब्राहाम ने मुझसे नहीं कहा, ‘वह मेरी बहन है,’ और क्या
साराह ने भी नहीं कहा, ‘वह मेरा भाई है’? मैंने यह काम साफ विवेक और
स्वच्छ मन से किया है.” 6 तब स्वप्न में ही परमेश्वर ने उससे कहा, “मुझे
मालूम है कि तुमने यह काम साफ मन से किया है, इसलिये मैंने तुमको मेरे विरुद्ध
में पाप करने से रोक रखा है. इसी कारण से मैंने तुम्हें उसे छूने नहीं दिया है. 7
अब तुम उनकी पत्नी को उन्हें लौटा दो, क्योंकि वे एक भविष्यद्वक्ता हैं. वे
तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे और तुम जीवित रहोगे. पर यदि तुम उनकी पत्नी को न
लौटाओगे, तो तुम यह निश्चित जान लो कि तुम और तुम्हारे सारे लोग मर
जायेंगे.” 8 अबीमेलेक ने अगले दिन बड़े सुबह अपने सब कर्मचारियों को
बुलवाया, और उन्हें सब बातें बताई, जिसे सुनकर वे बहुत डर गये. 9 तब
अबीमेलेक ने अब्राहाम को भीतर बुलवाया और उनसे कहा, “तुमने हमसे ये
क्या किया? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुमने मेरे और मेरे राज्य को इस
मुसीबत में डाल दिया है? तुमने मेरे साथ ऐसा काम किया है जो कभी नहीं
करना चाहिए.” 10 अबीमेलेक ने अब्राहाम से यह भी पूछा, “ऐसा करने का
कारण क्या है?” 11 अब्राहाम ने कहा, “मैंने अपने मन में सोचा, ‘इस नगर में
निश्चित रूप से कोई परमेश्वर से नहीं डरता, और वे लोग मुझे मेरी पत्नी के
कारण मार डालेंगे.’ 12 इसके बावजूद, वह सही में मेरी बहन ही है, मेरे पिता
की बेटी है, पर मेरी मां की बेटी नहीं है; और वह मेरी पत्नी हो गई. 13 और
जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने को कहा, तब मैंने ही
अपनी पत्नी से यह कहा, ‘तुम इस प्रकार से अपना प्रेम मेरे प्रति दिखा सकती
हो: जहां भी हम जाएं, तुम मेरे बारे में यही कहना, “यह मेरा भाई है.”’”
14 तब अबीमेलेक ने भेड़, बछड़े, सेवक तथा सेविकाएं लाकर अब्राहाम को
दिया, और उनकी पत्नी साराह को भी उन्हें लौटा दिया. 15 और अबीमेलेक ने
अब्राहाम से कहा, “मेरा पूरा देश तुम्हारे सामने है; तुम जहां चाहे, वहां रह
सकते हो.” 16 साराह से उसने कहा, “मैं तुम्हारे भाई को चांदी के एक हजार
टुकड़े दे रहा हूं. यह तेरे साथ के लोगों के सामने उस अपराध की भरपाई है,
जिसे मैंने तेरे विरुद्ध किया है; तू पूरी तरह से निर्दोष है.” 17 तब अब्राहाम ने
परमेश्वर से प्रार्थना की, और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नी तथा उसकी
सेविकाओं को चंगा किया कि वे फिर से संतान पैदा करने लगें, 18 क्योंकि
याहवेह ने अब्राहाम की पत्नी साराह के कारण अबीमेलेक के परिवार की सभी
स्त्रियों की कोखों को बंद कर दिया था.

21 याहवेह ने अपने कहे वचन के मुताबिक साराह पर अनुग्रह किया, और
उन्होंने साराह से जो वायदा किया था, उसे पूरा किया. 2 साराह गर्भवती
हुई और उसने अब्राहाम के बुढ़ापे में, परमेश्वर के नियुक्त किए गये समय में एक
बेटे को जन्म दिया. 3 अब्राहाम ने साराह से जन्मे इस पुत्र का नाम यित्सहाक
रखा. 4 जब उसका बेटा यित्सहाक आठ दिन का हुआ, तब अब्राहाम ने
परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका ख़तना किया. 5 यित्सहाक के जन्म के
समय अब्राहाम की आयु एक सौ वर्ष की थी. 6 साराह ने कहा, “मुझे परमेश्वर
ने हंसी से भर दिया और जो कोई यह बात सुनेगा, वह भी मेरे साथ हंसेगा.” 7
और उसने यह भी कहा, “अब्राहाम से कौन कहता था कि साराह बच्चे को दूध
पिला पायेगी? किंतु मैंने उनके बुढ़ापे में उनको एक पुत्र दिया.” 8 साराह का
बेटा बड़ा होता गया और उसका दूध छुड़ाया गया, और जिस दिन यित्सहाक का
दूध छुड़ाया गया, उस दिन अब्राहाम ने एक बड़ा भोज दिया. 9 पर साराह ने
देखा कि मिस्री हागार का बेटा, जो अब्राहाम से जन्मा था, उपहास कर रहा है,
10 तो साराह ने अब्राहाम से कहा, “इस दासी तथा इसके पुत्र को यहां से निकाल
दो, क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र यित्सहाक के साथ वारिस कभी नहीं हो
सकता.” 11 इस बात ने अब्राहाम को बहुत दुखित कर दिया, क्योंकि यह बात
अपने पुत्र इशमाएल के सम्बन्ध में थी. 12 किंतु परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा,
“उस लड़के और दासी के बारे में सोचकर परेशान मत हो जो कुछ साराह तुमसे
कहे, उसे सुन लो क्योंकि तुम्हारे वंशज यित्सहाक के माध्यम से नामित होंगे.

13 दासी के पुत्र से भी मैं एक जाती बनाऊंगा, क्योंकि वह तुम्हारा है.” 14
तब अब्राहाम ने जल्दी उठकर खाना और पानी देकर हागार और उसके पुत्र
को वहां से चले जाने को कहा हागार वहां से निकल गई और बेअरशेबा के
सुनसान रास्ते में भटकती रही. 15 और जब पानी खत्म हो गया, उसने अपने
बेटे को एक झाड़ी की छांव में लेटा दिया. 16 वह स्वयं एक तीर की दूरी में
जाकर बैठ गई, क्योंकि वह सोच रही थी, “मैं अपने बेटे का रोना और उसकी
परेशानी नहीं देख पाऊंगी.” और वहां बैठते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी. 17
परमेश्वर ने उस बेटे का रोना सुना और स्वर्ग से परमेश्वर के दूत ने हागार से
पूछा, “हे हागार, क्या हुआ तुम्हें? डरो मत; क्योंकि जहां तेरा बेटा पड़ा है, वहां
से परमेश्वर ने उसके रोने को सुन लिया हैं. 18 अब उठो, अपने बेटे को उठाओ,
क्योंकि मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊंगा.” 19 यह कहते हुए परमेश्वर ने
हागार को एक कुंआ दिखाया. उसने उस कुएं से पानी लेकर अपने बेटे को
पिलाया. 20 वह बेटा परमेश्वर के अनुग्रह से बड़ा हो गया और वह धनुर्धारी
बना. 21 वह पारान के निर्जन देश में रहता था. उसकी माता ने उसके लिए मिस्र
देश से ही शादी के लिए लड़की ढूंढ ली. 22 अबीमेलेक तथा उसकी सेना के
सेनापति फीकोल ने अब्राहाम से कहा, “आपके सब कामों में परमेश्वर की
आशीष रही है. 23 इसलिये आप हमसे वायदा कीजिये कि आप मुझे, मेरे
वंशजों से अथवा मेरी भावी पीढ़ियों से कभी धोखा नहीं करेंगे, लेकिन आप
हम सब पर दया करना-जैसा मैंने आपसे किया था.” 24 अब्राहाम ने कहा, “मैं
आपसे वायदा करता हूं.” 25 और अब्राहाम ने अबीमेलेक से उस कुएं के विषय
में कहा, जिसे अबीमेलेक के सेवकों ने ले लिया था. 26 अबीमेलेक ने उत्तर
दिया, “न तो आपने मुझे इसके विषय में कभी बताया, न आज तक मैंने इस
विषय में सुना है और न मुझे यह बात मालूम है.” 27 अब्राहाम ने अबीमेलेक
को भेंट में भेड़ें एवं बछड़े दिए तथा दोनों ने वायदा किया. 28 फिर अब्राहाम ने
सात मेमनों को अलग किया, 29 अबीमेलेक ने अब्राहाम से पूछा, “क्या
मतलब है इन सात मेमनों को अलग करने का?” 30 अब्राहाम ने कहा, “कि
आप ये सात मेमने लें ताकि यह हमारे बीच सबूत होगा, कि यह कुंआ मैंने खोदा
है.” 31 इसलिये अब्राहाम ने उस स्थान का नाम बेअरशेबा रखा, क्योंकि यहां
उन दोनों ने यह शपथ ली थी. 32 अतः उन दोनों ने बेअरशेबा में यह वाचा
स्थापित की. फिर अबीमेलेक तथा उसका सेनापति फीकोल फिलिस्तिया देश
चले. 33 अब्राहाम ने बेअरशेबा में एक झाऊ का पेड़ लगाया और वहां उसने
याहवेह, सनातन परमेश्वर की आराधना की. 34 और बहुत समय तक अब्राहाम
फिलिस्तिया देश में रहा.

22 कुछ समय के बाद, परमेश्वर ने अब्राहाम की परीक्षा ली. परमेश्वर ने
उनसे कहा, “हे अब्राहाम!” उन्होंने उत्तर दिया, “हे प्रभु! मैं यहां हूं.”
2 परमेश्वर ने कहा, “अपने एकलौते पुत्र यित्सहाक को, जो तुम्हें प्रिय है, साथ
लेकर मोरियाह देश को जाओ. वहां उसे एक पर्वत पर, जिसे मैं बताऊंगा,
होमबलि करके चढ़ाओ.” 3 अगले दिन अब्राहाम ने सुबह जल्दी उठकर अपने
गधे पर काठी कसी. उन्होंने अपने साथ दो सेवकों तथा अपने पुत्र यित्सहाक
को लिया. जब उन्होंने होमबलि के लिये पर्याप्त लकड़ी काट ली, तब वे उस
स्थान की ओर चले, जिसके बारे में परमेश्वर ने उन्हें बताया था. 4 तीसरे
दिन अब्राहाम ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और दूर से उस जगह को देखा. 5
अब्राहाम ने अपने सेवकों से कहा, “गधे के साथ यहीं रुको. मैं और मेरा बेटा
वहां जायेंगे और परमेश्वर की आराधना करके तुम्हारे पास लौट आएंगे.” 6
अब्राहाम ने होमबलि के लिए तैयार की गई लकड़ियां लीं और यित्सहाक को
पकड़ा दिया और स्वयं आग एवं छुरा ले लिया. जब दोनों आगे जा रहे थे, 7
तब यित्सहाक ने अपने पिता अब्राहाम से पूछा, “पिताजी?” अब्राहाम ने उत्तर
दिया, “हां, बेटा?” यित्सहाक ने कहा, “आग और लकड़ी तो यहां है, पर
होमबलि के लिए मेमना कहां है?” 8 अब्राहाम ने जवाब दिया, “हे मेरे पुत्र,
परमेश्वर खुद होमबलि के लिये मेमने का इंतजाम करेंगे.” और वे दोनों एक
साथ आगे बढ़ गये. 9 जब वे उस स्थल पर पहुंचे, जिसे परमेश्वर ने उन्हें बताया
था, तब वहां अब्राहाम ने एक वेदी बनाई और उस पर लकड़ियां रखीं. उन्होंने
अपने पुत्र यित्सहाक को बांधकर उसे उन लकड़ियों के ऊपर वेदी पर लिटा
दिया. 10 फिर अब्राहाम ने अपने बेटे को मार डालने के लिये हाथ में छुरा
लिया. 11 पर स्वर्ग से याहवेह के दूत ने उन्हें पुकारकर कहा, “हे अब्राहाम! हे
अब्राहाम!” अब्राहाम ने कहा, “हे प्रभु! मैं यहां हूं.” 12 याहवेह ने कहा, “उस
लड़के पर हाथ मत उठाओ; उसे कुछ मत करो. अब मुझे यह मालूम हो चुका है
कि तुम परमेश्वर का भय मानते हो, क्योंकि तुम मेरे लिये अपने एकलौते पुत्र
तक को बलिदान करने के लिये तैयार हो गये.” 13 उसी समय अब्राहाम ने
अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो झाड़ी में एक मेढ़ा दिखा जिसका सींग झाड़ी में
फंसा हुआ था. अब्राहाम जाकर उस मेढ़े को लाए और अपने पुत्र के बदले में
उसे होमबलि चढ़ाए. 14 अब्राहाम ने उस जगह का नाम “याहवेह यिरेह” रखा
अर्थात् याहवेह उपाय करनेवाले. इसलिये आज भी यह कहा जाता है, “याहवेह
के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा.” 15 फिर स्वर्ग से याहवेह के दूत ने दूसरी
बार अब्राहाम को पुकारकर कहा, 16 “याहवेह अपनी ही शपथ खाकर कहते
हैं, क्योंकि तुमने यह किया है और अपने एकलौते पुत्र तक को बलिदान करने
के लिये तैयार हो गये, 17 तो मैं निश्चय रूप से तुम्हें आशीष दूंगा और तुम्हारे
वंश को आकाश के तारे और समुद्र के बालू के कण के समान अनगिनत करूंगा.
तुम्हारा वंश अपने शत्रुओं के शहरों को अपने अधिकार में ले लेगा, 18 और
तुम्हारे वंश के ज़रिये पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी, क्योंकि तुमने मेरी
बात को माना है.” 19 तब अब्राहाम अपने सेवकों के पास लौट आये और
वे सब बेअरशेबा चले गए. और अब्राहाम बेअरशेबा में रहने लगे. 20 कुछ
समय के बाद, अब्राहाम को यह बताया गया, “मिलकाह भी मां बन गई है;
उसने तुम्हारे भाई नाहोर के लिये बेटों को जन्म दिया है: 21 बड़ा बेटा उज़,
उसका भाई बुज़, केमुएल (अराम का पिता), 22 फिर केसेद, हाज़ो, पिलदाश,
यिदलाफ तथा बेथुएल.” 23 बेथुएल रेबेकाह का पिता हुआ. अब्राहाम के भाई
नाहोर से मिलकाह के द्वारा ये आठ पुत्र पैदा हुए. 24 नाहोर की रखैल रियूमाह
के भी ये पुत्र हुए: तेबाह, गाहम, ताहाश तथा माकाह.

23 साराह एक सौ सत्ताईस वर्ष की हुई. 2 तब उसकी मृत्यु किरयथ-अरबा
(अर्थात् हेब्रोन) में हुई, जो कनान देश में है. अब्राहाम साराह के लिए
विलाप किया और रोया. 3 तब अब्राहाम ने अपनी पत्नी के शव के पास से
उठकर हित्तियों से कहा; 4 “मैं तो तुम्हारे बीच एक परदेशी और अजनबी हूं.
मुझे कब्रस्थान के लिये बिक्री में कुछ ज़मीन दीजिये ताकि मैं अपने मृत लोगों
को गाड़ सकूं.” 5 हित्तियों ने अब्राहाम से कहा, 6 “महोदय, आप हमारी बात
सुनें. आप हमारे बीच में एक बड़े प्रधान हैं. आप जहां चाहें अपनी पत्नी को
हमारे अच्छे कब्रों में गाड़ सकते हैं. हममें से कोई भी आपको अपनी पत्नी को
गाड़ने के लिये अपनी कब्र देने से मना नहीं करेगा.” 7 तब अब्राहाम उठे
और उस देश के लोगों को अर्थात् हित्तियों को झुककर प्रणाम किया 8 और
उनसे कहा, “यदि आप चाहते हैं कि मैं अपनी पत्नी को मिट्टी दूं, तब मेरी एक
बात और मान लीजिये और आप ज़ोहार के पुत्र एफ्रोन से मेरी तरफ से बात
कीजिये 9 ताकि वह माखपेलाह की गुफा को, जो उसकी है और उसके खेत
की आखिरी छोर में है, दाम लेकर मुझे बेच दे. उससे कहिये कि वह उस
जगह का पूरा दाम लेकर मुझे बेच दे ताकि वह तुम्हारे बीच में हमारे लिये
एक कब्रस्थान की जगह हो.” 10 हित्ती एफ्रोन अपने लोगों के साथ वहां
बैठा था. जो हित्ती उसके शहर के फाटक पर एकत्रित हुए थे, उनके सामने
एफ्रोन ने अब्राहाम से कहा, 11 “हे मेरे स्वामी; मेरी बात सुनिये; मैं आपको वह

गुफा खेत सहित मेरे संबंधियों के सामने दे रहा हूं. आप इसमें अपनी पत्नी को
गाड़ दीजिये.” 12 अब्राहाम ने फिर से उन लोगों को झुककर प्रणाम किया
13 और लोगों के सुनते में एफ्रोन से कहा, “मेरी बात सुनिये, आपको मैं उस
खेत का दाम चुकाऊंगा, आप इसे स्वीकार कर लीजिये ताकि मैं अपनी पत्नी
को वहां गाड़ सकूं.” 14 यह सुन एफ्रोन ने अब्राहाम से कहा, 15 “हे मेरे
स्वामी, मेरी बात सुनिये; इस खेत का दाम सिर्फ चार सौ शेकेल चांदी है, पर यह
आपके और मेरे लिए कुछ नहीं है. आप अपनी पत्नी को मिट्टी दे दीजिये.” 16
अब्राहाम ने एफ्रोन की बात मानकर उसको उतने मूल्य की चांदी तौलकर दे दी,
जितना उसने हित्तियों के सुनते में कहा था: चार सौ शेकेल चांदी जो उस समय
व्यापारियों के बीच में चलती थी. 17 इसलिये उन्होंने एफ्रोन का वह खेत और
गुफा, जो माखपेलाह में ममरे के पास था, और खेत के सभी पेड़ जो उसमें और
उसके चारों ओर सीमा के अंदर थे, 18 सब अब्राहाम को दे दिया. जितने हित्ती
शहर के फाटक पर एकत्रित हुए थे, उन सभों के सामने वह संपत्ति अब्राहाम के
अधिकार में पक्की रीति से आ गई. 19 उसके बाद अब्राहाम ने अपनी पत्नी
साराह को माखपेलाह के खेत की गुफा में गाड़ दिया, जो कनान देश में ममरे के
पास (अर्थात् हेब्रोन) में था. 20 इस प्रकार हित्तियों के द्वारा वह खेत और उसमें
की गुफा कब्रस्थान के रूप में अब्राहाम के अधिकार में दे दी गई.

24 अब्राहाम बहुत बूढ़े हो गये थे, और याहवेह ने उन्हें सब प्रकार से
आशीषित किया था. 2 अब्राहाम ने अपने पुराने सेवक से, जो घर की
और पूरे संपत्ति की देखभाल करता था, कहा, “तुम अपना हाथ मेरी जांघ के
नीचे रखो. 3 मैं चाहता हूं कि तुम स्वर्ग एवं पृथ्वी के परमेश्वर याहवेह की शपथ
खाओ कि तुम इन कनानियों की पुत्रियों में से, जिनके बीच हम रह रहे हैं, मेरे
बेटे की शादी नहीं कराओगे, 4 परंतु तुम मेरे देश में मेरे रिश्तेदारों में से मेरे बेटे
यित्सहाक के लिए पत्नी लाओगे.” 5 उस सेवक ने अब्राहाम से पूछा, “उस
स्थिति में मैं क्या करूं, जब वह स्त्री इस देश में आना ही न चाहे; क्या मैं आपके
पुत्र को उस देश में ले जाऊं, जहां से आप आए हैं?” 6 इस पर अब्राहाम ने कहा,
“तुम मेरे पुत्र को वहां कभी नहीं ले जाना. 7 याहवेह, जो स्वर्ग के परमेश्वर हैं,
जो मुझे मेरे पिता के परिवार और मेरी जन्मभूमि से लाये हैं और जिन्होंने शपथ
खाकर मुझसे यह वायदा किया, ‘यह देश मैं तुम्हारे वंश को दूंगा’—वे ही
स्वर्गदूत को तुम्हारे आगे-आगे भेजेंगे और तुम मेरे पुत्र के लिए वहां से एक पत्नी
लेकर आओगे. 8 अगर कन्या तुम्हारे साथ आने के लिए मना करे, तब तुम मेरी
इस शपथ से मुक्त हो जाओगे. लेकिन ध्यान रखना कि तुम मेरे पुत्र को वापस
वहां न ले जाना.” 9 इसलिये उस सेवक ने अपने स्वामी अब्राहाम की जांघ के
नीचे अपना हाथ रखा और इस बारे में शपथ खाकर अब्राहाम से वायदा किया.
10 तब उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंट के झुंड में से दस ऊंटों को लिया और
उन पर अपने स्वामी की ओर से विभिन्न उपहार लादा और नाहोर के गृहनगर
उत्तर-पश्चिम मेसोपोतामिया की ओर प्रस्थान किया. 11 नगर के बाहर पहुंचकर
उसने ऊंटों को कुएं के पास बैठा दिया; यह शाम का समय था. इसी समय स्त्रियां
पानी भरने बाहर आया करती थीं. 12 तब सेवक ने प्रार्थना की, “याहवेह, मेरे
स्वामी अब्राहाम के परमेश्वर, मेरे काम को सफल करें और मेरे स्वामी अब्राहाम
पर दया करें. 13 आप देख रहे हैं कि मैं इस पानी के सोते के निकट खड़ा हूं,
और इस नगरवासियों की कन्याएं पानी भरने के लिए निकलकर आ रही हैं. 14
आप कुछ ऐसा कीजिए कि जिस कन्या से मैं यह कहूं, ‘अपना घड़ा झुकाकर
कृपया मुझे पानी पिला दे,’ और वह कन्या कहे, ‘आप पानी पी लीजिए, और
फिर मैं आपके ऊंटों को भी पानी पिला दूंगी’—यह वही कन्या हो जिसे आपने
अपने सेवक यित्सहाक के लिए चुना है. इसके द्वारा मुझे यह विश्वास हो जाएगा
कि आपने मेरे स्वामी पर अपनी करुणा दिखाई है.” 15 इसके पूर्व कि उसकी
प्रार्थना खत्म होती, रेबेकाह नगर के बाहर अपने कंधे पर घड़ा लेकर पानी भरने
आई. वह मिलकाह के पुत्र बेथुएल की पुत्री थी और मिलकाह अब्राहाम के भाई
नाहोर की पत्नी थी. 16 रेबेकाह बहुत सुंदर थी, कुंवारी थी; अब तक किसी
पुरुष से उसका संसर्ग नहीं हुआ था. वह नीचे सोते पर गई, अपना घड़ा पानी से
भरा और फिर ऊपर आ गई. 17 सेवक दौड़कर उसके निकट आया और उससे
कहा, “कृपया अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी पिला दो.” 18 रेबेकाह ने कहा,
“हे मेरे प्रभु लीजिए, पीजिये” और उसने तुरंत घड़े को नीचे करके उसे पानी
पिलाया. 19 जब वह सेवक को पानी पिला चुकी, तब रेबेकाह ने उससे कहा,
“मैं आपके ऊंटों के लिए भी पानी लेकर आती हूं, जब तक वे पूरे तृप्त न हो
जाएं.” 20 उसने बिना देर किए घड़े का पानी हौदे में उंडेलकर वापस सोते पर
और पानी भरने गई, और उसके सारे ऊंटों के लिये पर्याप्त पानी ले आई. 21
जब यह सब हो रहा था, बिना एक शब्द कहे, उस सेवक ध्यान से रेबेकाह को
देखकर सोच रहा था कि याहवेह ने उसकी यात्रा को सफल किया है या नहीं.
22 जब ऊंटों ने पानी पी लिया, तब सेवक ने आधा शेकेल सोने की एक नथ
और दस शेकेल सोने के दो कंगन निकाला. 23 और रेबेकाह को देकर उससे
पूछा, “तुम किसकी बेटी हो? कृपया मुझे बताओ, क्या तुम्हारे पिता के घर में
इस रात ठहरने के लिए जगह है?” 24 रेबेकाह ने उत्तर दिया, “मैं नाहोर तथा
मिलकाह के पुत्र बेथुएल की बेटी हूं.” 25 और उसने यह भी कहा, “हमारे यहां
घास और चारा बहुत है, और रात में ठहरने के लिये जगह भी है.” 26 तब उस
सेवक ने झुककर और यह कहकर याहवेह की आराधना की, 27 “धन्य हैं
याहवेह, मेरे स्वामी अब्राहाम के परमेश्वर, जिन्होंने मेरे स्वामी के प्रति अपने
प्रेम और करुणा को नहीं हटाया. याहवेह मुझे सही जगह पर लाये जो मेरे स्वामी
के रिश्तेदारों का ही घर है.” 28 वह कन्या दौड़कर अपने घर गई और अपनी
माता के घर के लोगों को सब बातें बताई. 29 रेबेकाह के भाई लाबान दौड़कर
कुएं के पास गए जहां सेवक था. 30 जब उसने नथ और अपनी बहन के हाथों
में कंगन देखा और जो बात सेवक ने कही थी, उसे सुनी, तब वह उस सेवक के
पास गया, और देखा कि वह सेवक सोते के निकट ऊंटों के बाजू में खड़ा है.
31 लाबान ने सेवक से कहा, “हे याहवेह के आशीषित जन, मेरे साथ चलिए!
आप यहां बाहर क्यों खड़े हैं? मैंने घर को, और ऊंटों के ठहरने के लिये भी
जगह तैयार की है.” 32 वह सेवक लाबान के साथ घर आया और ऊंटों पर से
सामान उतारा गया. ऊंटों के लिये पैरा और चारा लाया गया. सेवक तथा उसके
साथ के लोगों के लिये पैर धोने हेतु पानी दिया गया. 33 तब सेवक को खाना
दिया गया, पर उसने कहा, “मैं तब तक भोजन न करूंगा, जब तक कि मैं अपने
आने का प्रयोजन न बता दूं.” लाबान ने कहा, “ठीक है, बता दें.” 34 तब उसने
कहा, “मैं अब्राहाम का सेवक हूं. 35 याहवेह ने मेरे स्वामी को बहुत आशीष दी
हैं, जिससे वे धनवान हो गए हैं. याहवेह ने उन्हें बहुत भेड़-बकरी और पशु, सोना
और चांदी, सेवक और सेविकाएं तथा ऊंट और गधे दिये हैं. 36 मेरे स्वामी की
पत्नी साराह को वृद्धावस्था में एक बेटा पैदा हुआ, और अब्राहाम ने उसे अपना
सब कुछ दे दिया है. 37 और मेरे स्वामी ने मुझे शपथ दिलाकर कहा, ‘तुम मेरे
पुत्र की पत्नी बनने के लिए कनानियों की किसी बेटी को, जिनके बीच मैं रहता
हूं, न लाना, 38 पर तुम मेरे पिता के परिवार, मेरे अपने वंश में जाना, और
मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी लाना.’ 39 “तब मैंने अपने स्वामी से पूछा, ‘यदि
वह युवती मेरे साथ आना नहीं चाहेगी, तब क्या?’ 40 “मेरे स्वामी ने कहा,
‘याहवेह, जिनके सामने मैं ईमानदारी से चलता आया हूं, वे अपने स्वर्गदूत को
तुम्हारे साथ भेजेंगे और तुम्हारी यात्रा को सफल करेंगे, ताकि तुम मेरे पुत्र के लिए
मेरे अपने वंश और मेरे पिता के परिवार से एक पत्नी ला सको. 41 तुम मेरे इस
शपथ से तब ही छूट पाओगे, जब तुम मेरे वंश के लोगों के पास जाओगे, और
यदि वे उस कन्या को तुम्हारे साथ भेजने के लिए मना करें—तब तुम मेरे शपथ
से छूट जाओगे.’ 42 “आज जब मैं कुएं के पास पहुंचा, तो मैंने यह प्रार्थना की,

‘याहवेह, मेरे स्वामी अब्राहाम के परमेश्वर, मैं जिस उद्देश्य से यहां आया हूं, वह
काम पूरा हो जाये. 43 देखिये, मैं इस कुएं के किनारे खड़ा हूं. यदि कोई कन्या
निकलकर पानी भरने के लिये आती है और मैं उससे कहता हूं, “कृपा करके
मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी पिला दे,” 44 और यदि वह मुझसे कहती है,
“पीजिये, और मैं आपके ऊंटों के लिये भी पानी लेकर आती हूं,” तो वह वही
कन्या हो, जिसे याहवेह ने मेरे मालिक के बेटे के लिये चुना है.’ 45 “इसके
पहले कि मैं अपने मन में यह प्रार्थना खत्म करता, रेबेकाह अपने कंधे पर घड़ा
लिये निकलकर आई. वह नीचे सोते के पास जाकर पानी भरने लगी, और मैंने
उससे कहा, ‘कृपया मुझे थोड़ा पानी पिला दो.’ 46 “तब उसने तुरंत अपने कंधे
में से घड़े को झुकाकर कहा, ‘पी लीजिये, और फिर मैं आपके ऊंटों को भी
पानी पिला दूंगी.’ तब मैंने पानी पिया, और उसने ऊंटों को भी पानी पिलाया.
47 “तब मैंने उससे पूछा, ‘तुम किसकी बेटी हो?’ “उसने कहा, ‘मैं बेथुएल की
बेटी हूं, जो नाहोर तथा मिलकाह के पुत्र है.’ “तब मैंने उसके नाक में नथ तथा
उसके हाथों में कंगन पहना दिए, 48 और मैंने झुककर याहवेह की आराधना
की. मैंने याहवेह, अपने मालिक अब्राहाम के परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने
मुझे सही मार्ग में अगुवाई की, ताकि मैं अपने मालिक के भाई की नतनिन को
अपने मालिक के बेटे के लिये पत्नी के रूप में ले जा सकूं. 49 इसलिये अब,
यदि आप मेरे मालिक के प्रति दया और सच्चाई दिखाना चाहते हैं, तो मुझे
बताईये; और यदि नहीं, तो वह भी बताईये, कि किस रास्ते पर मुड़ना है.” 50
यह सब सुनकर लाबान एवं बेथुएल ने कहा, “यह सब याहवेह की ओर से हुआ
है; हम तुमसे अच्छा या बुरा कुछ नहीं कह सकते. 51 रेबेकाह तुम्हारे सामने है;
इसे अपने साथ ले जाओ, ताकि वह तुम्हारे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए,
जैसा कि याहवेह ने निर्देश दिया है.” 52 उनकी बातों को सुनकर अब्राहाम के
सेवक ने भूमि पर झुककर याहवेह को दंडवत किया. 53 तब सेवक ने सोने और
चांदी के गहने तथा वस्त्र निकालकर रेबेकाह को दिए; उसने रेबेकाह के भाई और
उसकी माता को भी बहुमूल्य वस्तुएं दीं. 54 फिर उसने तथा उसके साथ के
लोगों ने खाया पिया और वहां रात बिताई. अगले दिन सुबह जब वे सोकर
उठे तो सेवक ने कहा, “मुझे अपने स्वामी के पास वापस जाने के लिए विदा
कीजिये.” 55 पर रेबेकाह के भाई और उसकी मां ने कहा, “कन्या को हमारे
साथ कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दो; तब उसे ले जाना.” 56 पर
सेवक ने उनसे कहा, “मुझे मत रोकिए; क्योंकि याहवेह ने मेरी इस यात्रा को
सफल किया है. मुझे अपने स्वामी के पास लौट जाने के लिये विदा कीजिए.”
57 तब उन्होंने कहा, “हम रेबेकाह को बुलाकर इसके बारे में उससे पूछते हैं.”
58 तब उन्होंने रेबेकाह को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तुम इस व्यक्ति के साथ
जाओगी?” उसने कहा, “हां, मैं जाऊंगी.” 59 इसलिये उन्होंने अपनी बहन
रेबेकाह को उसकी परिचारिका और अब्राहाम के सेवक और उसके लोगों
के साथ विदा किया. 60 और उन्होंने रेबेकाह को आशीर्वाद देते हुए कहा,
“हे हमारी बहन, तुम्हारा वंश हजारों हजार की संख्या में बढ़े; तुम्हारा वंश
अपने शत्रुओं के नगर पर अधिकार करने पाये.” 61 तब रेबेकाह और उसकी
परिचारिकाएं तैयार हुईं और ऊंटों पर चढ़कर उस व्यक्ति के साथ गईं और वह
सेवक रेबेकाह को लेकर रवाना हो गया. 62 यित्सहाक बएर-लहाई-रोई से
आकर अब नेगेव में निवास कर रहे थे. 63 एक शाम जब वे चिंतन करने मैदान
में गये थे, तब उन्होंने ऊंटों को आते हुए देखा. 64 रेबेकाह ने भी आंख उठाकर
यित्सहाक को देखा और वह अपने ऊंट पर से नीचे उतरी 65 और सेवक से
पूछा, “मैदान में वह कौन व्यक्ति है, जो हमसे मिलने आ रहे हैं?” सेवक ने उत्तर
दिया, “वे मेरे स्वामी हैं.” यह सुनकर रेबेकाह ने अपना घूंघट लिया और अपने
आपको ढांप लिया. 66 तब सेवक ने यित्सहाक को वे सब बातें बताई, जो उसने
किया था. 67 तब यित्सहाक रेबेकाह को अपनी मां साराह के तंबू में ले आया,
और उसने रेबेकाह से शादी की. वह उसकी पत्नी हो गई, और उसने उससे प्रेम
किया; इस प्रकार यित्सहाक को उसकी माता की मृत्यु के बाद सांत्वना मिली.

25 अब्राहाम ने केतुराह नामक एक और स्त्री से विवाह कर लिया था. 2
उससे अब्राहाम के जो पुत्र हुए, उनका नाम था ज़िमरान, योकशान,
मेदान, मिदियान, इशबक और शुआह. 3 योकशान शीबा तथा देदान के पिता थे.
देदान के वंश में असशुरिम, लेतुशिम तथा लेउम्मिम लोगों का जन्म हुआ. 4
मिदियान के पुत्र: एफाह, एफ़र, हनोख, अविदा तथा एलदाह थे. ये सब केतुराह
से पैदा हुए थे. 5 अब्राहाम ने अपनी पूरी संपत्ति यित्सहाक को सौंप दी थी. 6
किंतु अब्राहाम ने अपनी रखैलों की संतानों को अपने जीवनकाल में ही उपहार
देकर उन्हें अपने पुत्र यित्सहाक से दूर पूर्व के देश में भेज दिया था. 7 अब्राहाम
की उम्र एक सौ पचहत्तर साल की थी. 8 तब अब्राहाम ने अपनी पूरी वृद्धावस्था
में आखिरी सांस ली, एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में उनकी पूरी आयु में मृत्यु हुई;
और वे अपने लोगों में जा मिले. 9 उनके पुत्र यित्सहाक और इशमाएल ने उन्हें
ममरे के पास माखपेलाह के गुफा में मिट्टी दी, जो हित्ती ज़ोहार के पुत्र एफ्रोन के
खेत में थी, 10 यह वही खेत था, जिसे अब्राहाम ने हित्तियों से खरीदा था. वहां
उनकी पत्नी साराह के पास अब्राहाम दफनाया गया. 11 अब्राहाम की मृत्यु के
बाद, परमेश्वर ने उनके पुत्र यित्सहाक को आशीष दी, जो उस समय बएर-
लहाई-रोई में रहता था. 12 अब्राहाम के पुत्र इशमाएल, जो साराह के मिस्र की
दासी हागार से पैदा हुआ था, उसकी वंशावली इस प्रकार है. 13 जन्म के
अनुसार इशमाएल के बेटों का नाम इस प्रकार है: इशमाएल का बड़ा बेटा
नेबाइयोथ, फिर केदार, अदबील, मिबसाम, 14 मिशमा, दूमाह, मास्सा, 15
हदद, तेमा, येतुर, नाफिश और केदेमाह. 16 ये इशमाएल के पुत्र थे, और ये उन
बारह जाति के प्रधानों के नाम हैं जो उनके बंदोबस्त और छावनियों के अनुसार
रखे गये. 17 इशमाएल एक सौ सैंतीस वर्ष तक जीवित रहा. तब उसकी मृत्यु हो
गई, और वह अपने लोगों में जा मिला. 18 उसके वंशज मिस्र देश के पूर्वी
सीमा के नजदीक अश्शूर की दिशा में हाविलाह से लेकर शूर तक के क्षेत्र में
बस गए और वे उनसे संबंधित सभी गोत्रों से बैर रखते थे. 19 अब्राहाम के
पुत्र यित्सहाक की वंशावली इस प्रकार है: अब्राहाम से यित्सहाक का जन्म
हुआ. 20 पद्दन-अरामवासी अरामी बेथुएल की पुत्री और अरामी लाबान की
बहन रेबेकाह से विवाह करते समय यित्सहाक की आयु चालीस वर्ष थी. 21
यित्सहाक ने अपनी पत्नी की ओर से याहवेह से प्रार्थना की, क्योंकि वह बांझ
थी. याहवेह ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसकी पत्नी रेबेकाह गर्भवती हुई. 22
बच्चे उसके गर्भ में एक दूसरे को धक्का देते रहते थे. तब रेबेकाह ने कहा, “यह
क्या हो रहा है मेरे साथ?” और वह याहवेह से पूछने गई. 23 याहवेह ने उससे
कहा, “तुम्हारे गर्भ में दो जातियां हैं, तुममें से दो जनता के लोग निकलकर
अलग होंगे; एक समूह के लोग दूसरे से अधिक बलवान होंगे, और बड़ा छोटे
की सेवा करेगा.” 24 जब उसके प्रसव का समय आया. उसके गर्भ में जुड़वां
बच्चे थे. 25 जो पहला बेटा हुआ वह लाल था, और उसका पूरा शरीर बालों से
भरा था; इस कारण उसका नाम एसाव रखा गया. 26 इसके बाद, उसके भाई
का जन्म हुआ, जो अपने हाथ से अपने भाई एसाव की एड़ी पकड़े हुए था; तब
उसका नाम याकोब रखा गया. जब रेबेकाह ने बच्चों को जन्म दिया, तब
यित्सहाक की उम्र साठ वर्ष थी. 27 दोनों बच्चे बड़े होते गये, और एसाव खुले
मैदान का एक कुशल शिकारी बन गया, जबकि याकोब घर में तंबुओं के बीच
रहकर संतुष्ट रहता था. 28 एसाव यित्सहाक का प्रिय था क्योंकि यित्सहाक को
आखेट का मांस बहुत अच्छा लगता था, पर याकोब रेबेकाह का प्रिय था. 29
एक बार जब याकोब धीमी आंच में कुछ पका रहा था, तब एसाव बाहर मैदान
से आया और वह बहुत भूखा था. 30 उसने याकोब से कहा, “मुझे बहुत भूख
लगी है; तुम जो पका रहे हो, जल्दी करके उसमें से मुझे कुछ खाने को दो.”

(यही कारण है कि उसे एदोम भी कहा गया.) 31 किंतु याकोब ने उससे कहा, “पहले आप अपने पहलौठे का अधिकार मुझे दे दो.” 32 एसाव ने कहा, “देख, भूख से मेरे प्राण निकल रहे हैं; पहलौठे के अधिकार से मुझे क्या फायदा है?” 33 पर याकोब ने कहा, “तो पहले आप मुझसे शपथ खाईये.” तब एसाव ने शपथ खाकर अपने पहलौठे का अधिकार याकोब के हाथ बेच दिया. 34 तब याकोब ने एसाव को कुछ रोटी और पकाई हुई दाल दी. एसाव ने खाया पिया, और उठकर चला गया. इस प्रकार एसाव ने अपने पहलौठे के अधिकार को तुच्छ समझा.

26 उस देश में अकाल पड़ा. ऐसा ही अकाल अब्राहाम के समय में भी पड़ा था. यित्सहाक गेरार में फिलिस्तीनियों के राजा अबीमेलेक के पास गया. 2 याहवेह ने यित्सहाक को दर्शन देकर कहा, “मिस्र देश को मत जाओ; लेकिन उस देश में रहो, जहां मैं बताऊंगा. 3 कुछ समय के लिये इस देश में रहो, और मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हें आशीष दूंगा. मैं यह पूरा देश तुम्हें और तुम्हारे वंश को दूंगा और तुम्हारे पिता अब्राहाम से किए अपने वायदे को मैं पूरा करूंगा, 4 मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के समान अनगिनत करूंगा और यह पूरा देश उन्हें दूंगा, और तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जनता आशीषित होंगी, 5 क्योंकि अब्राहाम ने मेरी बात मानी और मेरी आज्ञाओं, नियमों और निर्देशों का ध्यान रखते हुए उसने वह सब किया जिसे मैंने उसे करने को कहा था.” 6 इसलिये यित्सहाक गेरार में ही रहने लगे. 7 जब उस स्थान के लोगों ने उससे उसके पत्नी के बारे में पूछा, तो उसने कहा, “वह मेरी बहन है,” क्योंकि वह यह कहने से डरता था, “वह मेरी पत्नी है.” वह सोचता था, “इस स्थान के लोग रेबेकाह के कारण शायद मुझे मार डालेंगे, क्योंकि वह सुंदर है.” 8 जब यित्सहाक को वहां रहते हुए काफ़ी समय हो गया, तो एक दिन फिलिस्तीनियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की से नीचे झांककर देखा कि यित्सहाक अपनी पत्नी रेबेकाह से प्रेम कर रहा है. 9 इसलिये अबीमेलेक ने यित्सहाक को बुलवाया और कहा, “निश्चय ही वह तुम्हारी पत्नी है! फिर तुमने यह क्यों कहा, ‘वह मेरी बहन है’?” यित्सहाक ने उत्तर दिया, “क्योंकि मैंने सोचा कि उसके कारण कहीं मुझे अपनी जान गंवानी न पड़े.” 10 तब अबीमेलेक ने कहा, “तुमने हमसे यह क्या किया? हमारी प्रजा में से कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के साथ सो सकता था, और तुम हमको पाप का भागीदार बनाते हो.” 11 इसलिये अबीमेलेक ने सब लोगों को आज्ञा दी: “जो कोई इस पुरुष तथा उसकी पत्नी की हानि करेगा, वह निश्चित रूप से मार डाला जाएगा.” 12 यित्सहाक ने उस देश में खेती की और उसे उसी वर्ष सौ गुणा उपज मिली, क्योंकि याहवेह ने उसे आशीष दी. 13 वह धनवान हो गया; उसका धन बढ़ता गया और वह बहुत धनवान हो गया. 14 उसके पास इतनी भेड़-बकरी, पशु और सेवक हो गये कि फिलिस्तीनी उससे जलन करने लगे. 15 इसलिये उन सभी कुंओं को, जो उसके पिता अब्राहाम के सेवकों ने उसके पिता के समय में खोदे थे, फिलिस्तीनियों ने मिट्टी से पाटकर बंद कर दिया. 16 तब अबीमेलेक ने यित्सहाक से कहा, “तुम हमारे पास से दूर चले जाओ, क्योंकि तुम हमसे बहुत ज्यादा बलवान हो गये हो.” 17 इसलिये यित्सहाक वहां से चला गया और गेरार घाटी में तंबू खड़ा करके वहां रहने लगा. 18 यित्सहाक ने उन कुंओं को फिर खोदवाया, जो उसके पिता के समय में खोदे गये थे, और जिन्हें फिलिस्तीनियों ने अब्राहाम की मृत्यु के बाद मिट्टी से पाट दिया था, और उसने उन कुंओं के वही नाम रखे जो उसके पिता ने रखे थे. 19 यित्सहाक के सेवकों को घाटी में खुदाई करते समय वहां एक मीठे पानी का कुंआ मिला. 20 इस पर गेरार के चरवाहों ने यित्सहाक के चरवाहों से झगड़ा किया और कहा, “यह पानी हमारा है!” इसलिये यित्सहाक ने उस कुएं का नाम ऐसेक रखा, क्योंकि उन्होंने उससे झगड़ा किया था. 21 तब उन्होंने दूसरा कुंआ खोदा, पर उन्होंने उस पर भी झगड़ा किया; इसलिये यित्सहाक ने उस कुएं का नाम सितनाह रखा. 22 तब वह वहां से चला गया और एक और कुंआ खोदा, और इस पर किसी ने झगड़ा नहीं किया. यित्सहाक ने यह कहकर उस कुएं का नाम रेहोबोथ रखा, “अब याहवेह ने हमें बहुत स्थान दिया है और हम लोग इस देश में उन्नति करेंगे.” 23 फिर यित्सहाक वहां से बेअरशेबा चला गया. 24 उसी रात याहवेह ने उसे दर्शन देकर कहा, “मैं तुम्हारे पिता अब्राहाम का परमेश्वर हूं. मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं; मैं तुम्हें अपने सेवक अब्राहाम के कारण आशीष दूंगा और तुम्हारे वंश को बढ़ाऊंगा.” 25 तब यित्सहाक ने वहां एक वेदी बनाई और याहवेह की आराधना की. वहां उसने अपना तंबू खड़ा किया और वहां उसके सेवकों ने एक कुंआ खोदा. 26 इसी बीच अबीमेलेक गेरार से यित्सहाक से मिलने आये. उनके साथ उनका सलाहकार अहुज्ज़ाथ और उनकी सेना के सेनापति फीकोल भी थे. 27 यित्सहाक ने उनसे पूछा, “आप लोग मेरे पास क्यों आये हैं, जबकि आपने मुझसे बैर करके मुझे दूर जाने को कहा था?” 28 उन्होंने उत्तर दिया, “हमने साफ-साफ देखा कि याहवेह तुम्हारे साथ है; इसलिये हमने कहा, ‘तुम्हारे और हमारे बीच में शपथपूर्वक वाचा होनी चाहिये.’ इसलिये हम तुमसे एक संधि करना चाहते हैं 29 कि तुम हमारी कोई हानि नहीं करोगे, जैसे कि हमने भी तुम्हारी कोई हानि नहीं की, पर हमेशा तुमसे अच्छा व्यवहार किया और शांतिपूर्वक तुम्हें जाने को कहा. और अब तुम याहवेह के आशीषित भी हो.” 30 तब यित्सहाक ने उनके लिये एक भोज का आयोजन किया, और उन्होंने खाया और पिया. 31 अगले दिन वे बड़े सबेरे उठकर एक दूसरे के साथ शपथ खाई. तब यित्सहाक ने उन्हें विदा किया, और वे शांतिपूर्वक चले गये. 32 उस दिन यित्सहाक के सेवकों ने आकर उसे उस कुएं के बारे में बताया, जिसे उन्होंने खोदा था. उन्होंने कहा, “हमें पानी मिल गया है!” 33 यित्सहाक ने उस कुएं का नाम शिबाह रखा, और आज तक उस नगर का नाम बेअरशेबा है. 34 जब एसाव चालीस वर्ष के हुए, तो उसने हित्ती बएरी की बेटी यूदित, और हित्ती एलोन की पुत्री बसेमाथ से भी विवाह किया. 35 ये स्त्रियां यित्सहाक और रेबेकाह के दुःख का कारण बनीं.

27 जब यित्सहाक वृद्ध हो गये थे और उनकी आंखें इतनी कमजोर हो गईं कि वह देख नहीं सकते थे, तब उन्होंने अपने बड़े बेटे एसाव को बुलाया और कहा, “हे मेरे पुत्र.” उन्होंने कहा, “क्या आज्ञा है पिताजी?” 2 यित्सहाक ने कहा, “मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि कब मर जाऊंगा. 3 इसलिये अब तुम अपना हथियार—अपना तरकश और धनुष लो और खुले मैदान में जाओ और मेरे लिये कोई वन पशु शिकार करके ले आओ. 4 और मेरी पसंद के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना कि मैं उसे खाऊं और अपने मरने से पहले तुम्हें आशीष दूं.” 5 जब यित्सहाक अपने पुत्र एसाव से बातें कर रहे थे, तब रेबेकाह उनकी बातों को सुन रही थी. जब एसाव खुले मैदान में शिकार लाने के लिए चला गया, 6 तब रेबेकाह ने अपने पुत्र याकोब से कहा, “देख, मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से यह कहते हुए सुना है, 7 ‘शिकार करके मेरे लिये स्वादिष्ट भोजन बनाकर ला कि मैं उसे खाऊं और अपने मरने से पहले याहवेह के सामने तुम्हें आशीष दूं.’ 8 इसलिये, हे मेरे पुत्र, अब ध्यान से मेरी बात सुन और जो मैं कहती हूं उसे कर: 9 जानवरों के झुंड में जाकर दो अच्छे छोटे बकरे ले आ, ताकि मैं तुम्हारे पिता के लिए उनके पसंद के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दूं. 10 तब तुम उस भोजन को अपने पिता के पास ले जाना, ताकि वह उसे खाकर अपने मरने से पहले तुम्हें अपनी आशीष दें.” 11 याकोब ने अपनी माता रेबेकाह से कहा, “पर मेरे भाई के शरीर में पूरे बाल हैं, लेकिन मेरी त्वचा चिकनी है. 12 यदि मेरे पिता मुझे छुएंगे तब क्या होगा? मैं तो धोखा देनेवाला ठहरूंगा और आशीष के बदले अपने ऊपर शाप लाऊंगा.” 13 तब उसकी मां ने कहा, “मेरे पुत्र, तुम्हारा शाप मुझ पर आ जाए.

मैं जैसा कहती हूं तू वैसा ही कर; जा और उनको मेरे लिये ले आ.” 14 इसलिये
याकोब जाकर उनको लाया और अपनी मां को दे दिया, और उसने याकोब के
पिता की पसंद के अनुसार स्वादिष्ट भोजन तैयार किया. 15 तब रेबेकाह ने अपने
बड़े बेटे एसाव के सबसे अच्छे कपड़े घर से लाकर अपने छोटे बेटे याकोब को
पहना दिए. 16 उसने बकरी के खालों से उसके चिकने भाग और गले और गले
के चिकने भाग को भी ढंक दिया. 17 तब उसने अपनी पकाई स्वादिष्ट मांस को
और रोटी लेकर याकोब को दी. 18 अपने पिता के पास जाकर याकोब ने कहा,
“पिताजी.” यित्सहाक ने उत्तर दिया, “हां बेटा, कौन हो तुम?” 19 याकोब ने
अपने पिता को उत्तर दिया, “मैं आपका बड़ा बेटा एसाव हूं. मैंने वह सब किया
है, जैसा आपने कहा था. कृपया बैठिये और मेरे शिकार से पकाया भोजन
कीजिये और मुझे अपनी आशीष दीजिये.” 20 यित्सहाक ने अपने पुत्र से पूछा,
“मेरे पुत्र, यह तुम्हें इतनी जल्दी कैसे मिल गया?” याकोब ने कहा, “याहवेह
आपके परमेश्वर ने मुझे सफलता दी.” 21 तब यित्सहाक ने याकोब से कहा,
“हे मेरे पुत्र, मेरे पास आ, ताकि मैं तुम्हें छूकर जान सकूं कि तू सही में मेरा पुत्र
एसाव है या नहीं.” 22 तब याकोब अपने पिता यित्सहाक के पास गया, जिसने
उसे छुआ और कहा, “आवाज तो याकोब की है किंतु हाथ एसाव के हाथ जैसे
हैं.” 23 यित्सहाक ने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ में वैसे ही बाल थे
जैसे एसाव के थे. इसलिए यित्सहाक उसे आशीष देने के लिए आगे बढ़ा. 24
यित्सहाक ने पूछा, “क्या तू सही में मेरा पुत्र एसाव है?” याकोब ने उत्तर दिया,
“मैं हूं.” 25 तब यित्सहाक ने कहा, “हे मेरे पुत्र, अपने शिकार से पकाये कुछ
भोजन मेरे खाने के लिये ला, ताकि मैं तुम्हें अपनी आशीष दूं.” याकोब अपने
पिता के पास खाना लाया और उसने खाया; और वह दाखरस भी लाया और
उसने पिया. 26 तब उसके पिता यित्सहाक ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, यहां आ
और मुझे चूम.” 27 इसलिये याकोब उसके पास गया और उसे चूमा. जब
यित्सहाक को उसके कपड़ों से एसाव की गंध आई, इसलिये उसने उसे आशीष
देते हुए कहा, “मेरे बेटे की खुशबू याहवेह की आशीष से मैदान में फैल गई
है. 28 अब परमेश्वर तुम्हें आकाश की ओस, पृथ्वी की अच्छी उपज तथा
अन्न और नये दाखरस से आशीषित करेंगे. 29 सभी राष्ट्र तुम्हारी सेवा करेंगे,
जाति-जाति के लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे, तुम अपने भाइयों के ऊपर शासक
होंगे; तुम्हारी मां के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे. जो तुम्हें शाप देंगे वे स्वयं शापित
होंगे और जो तुम्हें आशीष देंगे वे आशीष पायेंगे.” 30 जैसे ही यित्सहाक
याकोब को आशीष दे चुके तब उनका भाई एसाव शिकार करके घर आया. 31
उन्होंने जल्दी स्वादिष्ट खाना तैयार किया और अपने पिता से कहा “पिताजी,
उठिए और स्वादिष्ट खाना खाकर मुझे अपनी आशीष दीजिए.” 32 उसके पिता
यित्सहाक ने उनसे पूछा, “कौन हो तुम?” उसने कहा, “मैं आपका बेटा हूं,
आपका बड़ा बेटा एसाव.” 33 यह सुन यित्सहाक कांपते हुए बोले, “तो वह
कौन था, जो मेरे लिए भोजन लाया था? और मैंने उसे आशीषित भी किया, अब
वह आशीषित ही रहेगा!” 34 अपने पिता की ये बात सुनकर एसाव फूट-फूटकर
रोने लगा और अपने पिता से कहा, “पिताजी, मुझे आशीष दीजिए, मुझे भी!”
35 यित्सहाक ने कहा, “तुम्हारे भाई ने धोखा किया और आशीष ले ली.” 36
एसाव ने कहा, “उसके लिए याकोब नाम सही नहीं है? दो बार उसने मेरे साथ
बुरा किया: पहले उसने मेरे बड़े होने का अधिकार ले लिया और अब मेरी
आशीष भी छीन ली!” तब एसाव ने अपने पिता से पूछा, “क्या आपने मेरे लिए
एक भी आशीष नहीं बचाई?” 37 यित्सहाक ने एसाव से कहा, “मैं तो उसे
तुम्हारा स्वामी बना चुका हूं. और सभी संबंधियों को उसका सेवक बनाकर उसे
सौंप दिया और उसे अन्न एवं नये दाखरस से भरे रहने की आशीष दी हैं.
अब मेरे पुत्र, तुम्हारे लिए मैं क्या करूं?” 38 एसाव ने अपने पिता से पूछा,
“पिताजी, क्या आपके पास मेरे लिए एक भी आशीष नहीं? और वह रोता हुआ
कहने लगा कि पिताजी मुझे भी आशीष दीजिए!” 39 तब यित्सहाक ने कहा,
“तुम्हारा घर अच्छी उपज वाली भूमि पर हो और उस पर आकाश से ओस
गिरे. 40 तुम अपनी तलवार की ताकत से जीवित रहोगे. तुम अपने भाई की
सेवा करोगे; किंतु हां, किंतु तुम आज़ादी के लिए लड़ोगे, और तुम अपने ऊपर
पड़े उसके प्रतिबन्ध को तोड़ फेंकोगे.” 41 एसाव अपने भाई याकोब से नफ़रत
करने लगा और मन में ऐसा सोचने लगा, “पिता की मृत्यु शोक के दिन नज़दीक
है, उनके बाद मैं याकोब की हत्या कर दूंगा.” 42 जब रेबेकाह को अपने बड़े
बेटे की ये बातें बताई गईं तब उसने सेवक भेजकर अपने छोटे पुत्र याकूब को
बुलवाकर उससे कहा, “तुम्हारे भाई एसाव के मन में तुम्हारे लिए बहुत नफ़रत
हैं. सुनो, तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने का षड्‍यंत्र कर रहा है. 43 इसलिये तुम
यहां से भागकर मेरे भाई लाबान के यहां चले जाओ. 44 वहां जाकर कुछ समय
रहो, जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा खत्म न हो जाए. 45 जब तुम्हारे भाई का
गुस्सा खत्म होगा, और भूल जायेगा कि तुमने उसके साथ क्या किया, तब मैं
तुम्हें वहां से बुला लूंगी. मैं एक ही दिन तुम दोनों को क्यों खो दूं?” 46 एक
दिन रेबेकाह ने यित्सहाक से कहा, “हेथ की इन पुत्रियों ने मेरा जीवन दुःखी
कर दिया है. यदि याकोब भी हेथ की पुत्रियों में से किसी को, अपनी पत्नी बना
लेगा तो मेरे लिए जीना और मुश्किल हो जाएगा?” इसलिये याकोब को उसके
मामा के घर भेज दो.

28 इसलिये यित्सहाक ने याकोब को आशीष दी और कहा: “कनानी
कन्याओं से शादी मत करना. 2 पर पद्दन-अराम में अपने नाना बेथुएल
के यहां चले जाओ. और वहां अपने मामा लाबान की पुत्रियों में से किसी से
विवाह कर लेना. 3 सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दया तुम पर बनी रहे तथा सुख
और शांति से आगे बढ़ो. 4 परमेश्वर तुम्हें वे आशीषें दें, जिन्हें उन्होंने अब्राहाम
को दी थी, तुम्हें और तुम्हारे वंश को, उस देश का अधिकारी बनाये.” 5 इन
सब आशीषित वचन के साथ यित्सहाक ने याकोब को विदा किया. याकोब
अपनी और एसाव की माता रेबेकाह के भाई अरामवासी लाबान के यहां चले
गए, जो पद्दन-अराम के बेथुएल के पुत्र थे. 6 एसाव को मालूम हो गया था कि
यित्सहाक ने याकोब को आशीष देकर पद्दन-अराम में भेजा है ताकि वह अपने
लिए पत्नी चुने, और आदेश भी दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न करे, 7
और याकोब अपने पिता एवं माता की बात को मानते हुए पद्दन-अराम में चले
गये. 8 तब एसाव को यह समझ में आ गया, कि उसके पिता को कनान देश की
कन्याएं पसंद नहीं हैं. 9 इसलिये एसाव ने अपनी पत्नियों के अलावा अब्राहाम
के पुत्र इशमाएल की पुत्री माहालाथ से, जो नेबाइयोथ की बहन थी, विवाह कर
लिया. 10 याकोब बेअरशेबा से हारान की ओर गए. 11 जब वह एक जगह
पहुंचा तब रात को उन्हें वहां रुकना पड़ा, क्योंकि तब तक सूरज ढल चुका था.
उन्होंने एक पत्थर अपने सिर के नीचे रखा और लेट गए. 12 तब उन्होंने एक
स्वप्न देखा: एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, उसका दूसरा सिरा स्वर्ग तक पहुंचा
हुआ था. उन्होंने देखा कि परमेश्वर के स्वर्गदूत इस पर चढ़ रहे और उतर रहे हैं.
13 उन्होंने देखा कि ऊपर याहवेह खड़े हैं, और कह रहे हैं, “मैं ही याहवेह हूं,
तुम्हारे पिता अब्राहाम तथा यित्सहाक का परमेश्वर. जिस भूमि पर तुम इस समय
लेटे हुए हो, मैं वह भूमि तुम्हें तथा तुम्हारे वंश को दूंगा. 14 तुम्हारा वंश भूमि की
धूल के समान आशीषित होकर पृथ्वी के चारों दिशाओं में फैल जायेगा. पृथ्वी
पर सभी लोग तुम्हारे और तुम्हारे वंश के द्वारा आशीषित होंगे. 15 मैं तुम्हारे
साथ रहूंगा और जहां कहीं तुम जाओगे, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा. और तुम्हें इसी
देश में लौटा ले आऊंगा. जब तक मैं अपनी बात पूरी न कर लूं तब तक तुम्हें न
छोड़ूंगा.” 16 अचानक याकोब की नींद खुल गई और कहा, “निश्चय इस
स्थान पर याहवेह की उपस्थिति है और मुझे यह मालूम ही न था.” 17 याकोब
भयभीत होकर कहने लगे, “अनोखा है यह स्थान! यह परमेश्वर के भवन के

अलावा कुछ और नहीं हो सकता; ज़रूर यह स्वर्ग का द्वार ही होगा.” **18**
याकोब ने उस पत्थर को, जिसे उसने अपने सिर के नीचे रखा था, एक स्तंभ के
जैसे खड़ा कर उस पर तेल डाला, **19** याकोब ने उस स्थान का नाम बेथेल
रखा; जबकि उस स्थान का नाम लूज़ था. **20** फिर याकोब ने प्रण लिया, “यदि
परमेश्वर की उपस्थिति मेरे साथ साथ बनी रहेगी, और मुझे सुरक्षित रखेंगे, मुझे
भोजन एवं वस्त्रों की कमी नहीं होगी **21** और मुझे मेरे पिता के घर तक सुरक्षित
पहुंचा देंगे, तो याहवेह ही मेरे परमेश्वर होंगे. **22** यह पत्थर, जिसे मैंने स्तंभ
बनाकर खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन होगा तथा आप मुझे जो कुछ देंगे,
निश्चयतः मैं उसका दशमांश आपको ही समर्पित करूंगा.”

29 याकोब अपनी यात्रा में आगे बढ़ते गए और पूर्वी देश में जा पहुंचे. **2** तब
उन्हें मैदान में एक कुंआ और भेड़-बकरियों के तीन झुंड बैठे नज़र आये
और उन्होंने देखा कि जिस कुएं से भेड़-बकरियों को पानी पिलाते थे उस कुएं
पर बड़ा पत्थर रखा हुआ था. **3** जब भेड़-बकरियां एक साथ इकट्ठी हो जातीं
तब कुएं से पत्थर हटाकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाया जाता था, फिर पत्थर
कुएं पर वापस लुढ़का दिया जाता था. **4** याकोब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे
भाइयो, आप कहां से आए हैं?” उन्होंने कहा, “हम हारान के हैं.” **5** याकोब ने
पूछा, “क्या आप नाहोर के पोते लाबान को जानते हैं?” उन्होंने कहा, “हां,
हम जानते हैं.” **6** फिर याकोब ने पूछा, “क्या वे ठीक हैं?” उन्होंने कहा,
“वे ठीक हैं और उनकी बेटी राहेल अपनी भेड़ों के साथ यहां आ रही है.”
7 याकोब ने कहा, “देखो, सूरज अभी भी ऊंचा है, अभी तो शाम नहीं हुई
फिर इतनी जल्दी भेड़-बकरियों को क्यों इकट्ठा कर रहे हो, अभी उन्हें पानी
पिलाकर चरने दो.” **8** लेकिन उन्होंने कहा, “नहीं, सब भेड़-बकरियां एक
साथ आने पर ही कुएं से पत्थर हटाकर भेड़-बकरियों को जल पिलाया जाता
है.” **9** जब वे बात कर रहे थे, राहेल अपने पिता की भेड़ें लेकर वहां आ गई,
क्योंकि वह पशु चराया करती थी. **10** जब याकोब ने अपनी माता के भाई
लाबान की पुत्री तथा भेड़-बकरी को देखा, तो उन्होंने जाकर कुएं के मुख से
पत्थर हटाया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाने लगे. **11** तब याकोब ने राहेल
को चुंबन दिया और रोने लगे. **12** याकोब ने राहेल को बताया, कि वह उसके
पिता के संबंधी हैं, और रेबेकाह के पुत्र हैं. राहेल दौड़ती हुई अपने पिता को यह
बताने गई. **13** जब लाबान ने अपनी बहन के पुत्र याकोब के बारे में सुना, वह
भी दौड़कर उनसे मिलने आये. उन्होंने याकोब को चुंबन दिया और उन्हें अपने
घर पर लाए. याकोब ने लाबान को अपने बारे में बताया. **14** लाबान ने याकोब
से कहा, “निःसंदेह तुम मेरी ही हड्डी एवं मांस हो.” याकोब वहां एक महीने रुके.
15 तब लाबान ने याकोब से कहा, “यद्यपि तुम मेरे संबंधी हो, यह अच्छा नहीं
कि मेरे लिए तुम बिना वेतन के काम करते रहो! इसलिये तुम वेतन लेकर ही
काम करना!” **16** लाबान की दो पुत्रियां थीं. बड़ी का नाम लियाह तथा छोटी
का नाम राहेल था. **17** लियाह की आंखें धुंधली थी पर राहेल सुंदर थी. **18**
याकोब राहेल को चाहने लगे, याकोब ने लाबान से कहा, “आपकी छोटी बेटी
राहेल को पाने के लिए मैं सात वर्ष आपकी सेवा करने को तैयार हूं.” **19**
लाबान ने कहा, “मैं राहेल को किसी अन्य पुरुष को देने से तुमको देना बेहतर
है. तुम यहीं हमारे साथ रहो.” **20** इसलिये याकोब ने राहेल को पाने के लिए
सात वर्ष सेवा की, लेकिन उसे यह समय बहुत कम लगा क्योंकि वह राहेल से
बहुत प्रेम करता था. **21** फिर याकोब ने लाबान से कहा, “सात वर्ष हो गये; अब
आपकी बेटी राहेल मुझे दीजिए ताकि उससे मेरी शादी हो जाये.” **22** लाबान ने
अपने समाज के लोगों को बुलाकर सबको खाना खिलाया. **23** शाम को उसने
अपनी बेटी लियाह को याकोब को सौंप दी और याकोब ने उसके साथ विवाह
किया. **24** लाबान ने अपनी दासी ज़िलपाह को भी लियाह को उसकी दासी होने
के लिए दिया. **25** जब याकोब को मालूम पड़ा कि वह तो लियाह थी, याकोब
ने लाबान से पूछा, “यह क्या किया आपने मेरे साथ? मैं आपकी सेवा राहेल के
लिए कर रहा था? फिर आपने मेरे साथ ऐसा धोखा क्यों किया?” **26** लाबान ने
कहा, “हमारे समाज में बड़ी को छोड़ पहले छोटी की शादी नहीं कर सकते.
27 विवाह के उत्सव को पूरे सप्ताह मनाते रहो और मैं राहेल को भी तुम्हें विवाह
के लिए दूंगा; परंतु तुम्हें और सात वर्ष तक मेरी सेवा करनी पड़ेगी.” **28**
इसलिये याकोब ने ऐसा ही किया. और समारोह का वह सप्ताह पूरा किया, तब
लाबान ने याकोब को राहेल पत्नी स्वरूप सौंप दी. **29** लाबान ने अपनी दासी
बिलहाह को भी राहेल की दासी होने के लिए उसे सौंप दिया. **30** याकोब राहेल
के पास गया और उसे राहेल लियाह से अधिक प्रिय थी. और उसने लाबान के
लिए और सात साल सेवा की. **31** जब याहवेह ने देखा कि लियाह को प्यार
नहीं मिल रहा, याहवेह ने लियाह को गर्भ से आशीषित किया और राहेल को
बांझ कर दिया. **32** लियाह गर्भवती हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया और
उसका नाम रियूबेन यह कहकर रखा, “याहवेह ने मेरे दुःख को देखा, और अब
मेरे पति ज़रूर मुझसे प्रेम करेंगे.” **33** लियाह का एक और पुत्र पैदा हुआ. उसने
कहा, “क्योंकि याहवेह ने यह सुन लिया कि मैं प्रिय नहीं हूं और मुझे यह एक
और पुत्र दिया.” उसने उसका नाम शिमओन रखा. **34** लियाह फिर से गर्भवती
हुई और जब उसका एक पुत्र पैदा हुआ तब उसने कहा, “अब मेरे पति मुझसे
जुड़ जायेंगे क्योंकि मैनें उनके तीन पुत्रों को जन्म दिया है.” इसलिये लियाह ने
तीसरे बेटे का नाम लेवी रखा. **35** उसने एक और बेटे को जन्म दिया और कहा,
“अब मैं याहवेह की स्तुति करूंगी,” इसलिये उसने उस बेटे का नाम यहूदाह
रखा. उसके बाद लियाह के बच्चे होने बंद हो गए.

30 राहेल ने यह देखा कि याकोब के लिए उसके द्वारा कोई संतान नहीं
हुई, तो उसे अपनी बहन से नफ़रत हो गई. वह याकोब से झगड़ने लगी,
“मुझे संतान दीजिए, नहीं तो मैं मर जाऊंगी!” **2** यह सुन याकोब गुस्से से
चिल्लाए और कहा, “क्या मैं परमेश्वर के स्थान में हूं कि तुम्हारी बंद कोख
खोलूं?” **3** यह सुन उसने कहा, “तो मेरी दासी बिलहाह के पास जाइए, ताकि
उसके द्वारा मैं मां बन सकूं.” **4** इसलिये राहेल ने याकोब को पत्नी स्वरूप में
अपनी दासी सौंप दी, और याकोब ने बिलहाह से वैवाहिक संबंध बनाया.
5 बिलहाह गर्भवती हुई और उसका एक बेटा हुआ. **6** तब राहेल ने कहा,
“परमेश्वर ने मेरा न्याय किया और मेरी दुहाई सुन ली और मुझे बेटा दिया.”
उसने उसका नाम दान रखा. **7** फिर राहेल की दासी बिलहाह से एक और बेटा
हुआ. **8** तब राहेल ने कहा, “मैंने अपनी बहन के साथ बड़ा संघर्ष किया है और
अब मैं जीत गई हूं.” इसलिये इस बेटे का नाम नफताली रखा गया. **9** जब
लियाह ने देखा कि उसके और बच्चे होने रुक गये है, तब उसने अपनी दासी
ज़िलपाह को याकोब को पत्नी स्वरूप में दे दी. **10** लियाह की दासी ज़िलपाह ने
याकोब से एक बेटे को जन्म दिया. **11** लियाह ने सोचा, “कैसी धन्यता है
यह!” इसलिये उस बेटे का नाम गाद रखा. **12** लियाह की दासी ज़िलपाह से
एक और बेटा हुआ. **13** तब लियाह ने सोचा, “मैं धन्य हूं और स्त्रियां मुझे धन्य
कहेंगी.” इसलिये इस पुत्र का नाम आशेर रखा. **14** खेत में गेहूं की कटाई के
समय रियूबेन जब खेत में गया उसे दूदाईम नामक कुछ विशेष पौधा मिला,
जिन्हें वह अपनी मां लियाह के पास ले आया. राहेल ने लियाह से कहा, “मुझे
भी थोड़ा दूदाईम दे दो.” **15** लियाह ने राहेल से कहा, “क्या यह काफ़ी नहीं
कि तुमने मुझसे मेरा पति छीन लिया? और अब मेरे पुत्र द्वारा लाए दूदाईम भी
लेना चाहती हो?” तब राहेल ने उससे कहा, “यदि तुम मुझे यह पौधा दोगी, तो
मैं आज की रात तुम्हें याकोब के साथ व्यतीत करने दूंगी.” **16** जब शाम को
याकोब खेत से आये तब लियाह ने याकोब से कहा, “मैंने आपको अपने बेटे
द्वारा लाए गये दूदाईम देकर किराये में लिया है.” **17** परमेश्वर ने लियाह की
सुन ली. उसने गर्भधारण किया तथा याकोब को पांचवां पुत्र दिया. **18** इस पर

लियाह ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है क्योंकि मैंने अपनी दासी
मेरे पति को दी.” और इसलिये उसका नाम इस्साखार रखा. **19** फिर लियाह ने
छठे पुत्र को जन्म दिया. **20** लियाह ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे एक उत्तम भेंट
से सम्मानित किया है. अब मेरे पति मेरी कद्र करेंगे, क्योंकि मैंने उनको छः पुत्र
दिये हैं.” और इसलिये उस पुत्र का नाम ज़ेबुलून रखा. **21** फिर कुछ समय बाद
लिया की एक बेटी हुई, उसका नाम दीनाह रखा. **22** इसके बाद परमेश्वर ने
राहेल पर दया की. परमेश्वर ने उसे गर्भधारण करने के लिए सक्षम किया. **23**
उसे एक बेटा हुआ, और उसने कहा, “परमेश्वर ने मेरा कलंक मिटा दिया है.”
24 यह कहते हुए उसे योसेफ़ नाम दिया कि याहवेह मुझे एक और पुत्र दें. **25**
जब राहेल ने योसेफ़ को जन्म दिया, तब याकोब ने लाबान से कहा, “अब मुझे
मेरे देश जाने दीजिए. **26** मुझे मेरी पत्नियां एवं संतान दे दीजिए, जिसके लिए
मैंने इतने वर्ष आपकी सेवा की है. जो सेवा मैं आपके लिए करता रहा हूं, वह
आपको मालूम है.” **27** किंतु लाबान ने कहा, “याहवेह की ओर से मुझे यह
मालूम हुआ है, कि मुझे जो आशीष मिली है, वह तुम्हारे ही कारण मिली है.
इसलिये तुम मुझसे नाराज नहीं हो, तो मेरे यहां ही रहो.” **28** लाबान ने कहा,
“सेवा के बदले तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हें वही दूंगा.” **29** किंतु याकोब ने
लाबान से कहा, “मैंने आपकी सेवा कैसे की है, यह बात आपसे छिपी नहीं है,
और आपके पशु की देखरेख भी मैंने कैसे की हैं. **30** पहले पशु कम थे लेकिन
अब बहुत ज्यादा हो गये हैं. मैंने जो भी काम किया, उसमें याहवेह ने आशीष दी
है. लेकिन अब मैं अपने घराने के बारे में सोचना चाहता हूं.” **31** तब लाबान
ने पूछा, “तुम्हारी मजदूरी क्या होगी?” याकोब ने कहा, “आप मुझे कुछ
न दीजिए. लेकिन, आप चाहें तो आपके पशुओं की चरवाही तथा देखभाल
करता रहूंगा: **32** आज मैं भेड़-बकरियों में से, धारी वाले सब एक तरफ और
बिना धारी वाले एक तरफ करके अलग करूंगा और इस तरह दोनों को अलग
रखकर उनकी देखरेख करूंगा. **33** जब आप मेरी मजदूरी देने आएंगे तब इन
भेड़-बकरियों को जो अलग करके रखी हैं आप देखना और यदि इन भेड़-
बकरियों में से कोई धारी वाली और चितकबरी न हो वह दिखे तो उसे चोरी
किया हुआ मान लेना.” **34** लाबान ने उत्तर दिया, “ठीक हैं, तुम जैसा चाहते हो
वैसा करो.” **35** पर उस दिन लाबान ने धारी वाले तथा धब्बे युक्त बकरों
तथा सभी चित्तीयुक्त एवं धब्बे युक्त बकरियों को अलग कर दिया तथा हर
एक, जिस पर श्वेत रंग पाया गया तथा भेड़ों में से सभी काली भेड़ अलग कर
इन सभी को अपने पुत्रों को सौंप दिया. **36** तब उन्होंने अपने व याकोब के
बीच तीन दिन की यात्रा की दूरी बना ली. अब याकोब लाबान की बच गई
भेड़-बकरियों की चरवाही करने लगे. **37** कुछ समय बाद याकोब ने चिनार,
बादाम तथा अर्मोन वृक्ष की टहनियां लेकर उनकी छाल छील कर उन पर
सफेद धारियां बनाई इससे उन टहनियों के अंदर का सफेद भाग दिखने लगा.
38 फिर याकोब ने इन छड़ियों को हौदों में सजा दिया, ताकि वे सीधे भेड़-
बकरियों के सामने हों जहां वे भेड़ें पानी पिया करती थीं. **39** वे छड़ियों के
सामने समागम किया और बकरियां गाभिन हुईं, और जब बच्चे होते थे तो वे
धारीयुक्त, चित्तीयुक्त अथवा धब्बे युक्त होते थे. **40** याकोब उनको अलग करते
जाते थे. साथ ही वे भेड़ों का मुख लाबान की धारीयुक्त तथा पूरी काली भेड़ों
की ओर कर देते थे. इस प्रकार वह अपने पशु तथा लाबान के पशु को अलग
रखते थे. **41** जब ताकतदार भेड़े समागम करते थे, याकोब उन्हीं के समक्ष
नांदों में वे छड़ियां रख देते थे, कि उनका समागम उन्हीं छड़ियों के समक्ष हो,
42 किंतु जब उनके समक्ष दुर्बल भेड़ें होती थीं, तब वह उन छड़ियों को उनके
समक्ष नहीं रखते थे. परिणामस्वरूप, समस्त दुर्बल भेड़ें लाबान के पक्ष में तथा
सशक्त भेड़ें याकोब के पक्ष में आ जाती थी. **43** इसलिये याकोब बहुत धनी हो
गये, उनके पास बहुत भेड़-बकरियां दास-दासियां, ऊंट तथा गधे भी थे.

31 याकोब के कानों में यह समाचार पड़ा कि लाबान के पुत्र बड़बड़ा रहे थे,
“याकोब ने तो वह सब हड़प लिया है, जो हमारे पिता का था और अब
वह हमारे पिता ही की संपत्ति के आधार पर समृद्ध बना बैठा है.” **2** यहां याकोब
ने पाया कि लाबान की अभिवृत्ति उनके प्रति अब पहले जैसी नहीं रह गई थी.
3 इस स्थिति के प्रकाश में याहवेह ने याकोब को आदेश दिया, “अपने पिता एवं
अपने संबंधियों के देश को लौट जाओ. मैं इसमें तुम्हारे पक्ष में हूं.” **4** इसलिये
याकोब ने राहेल तथा लियाह को वहीं बुला लिया, जहां वे भेड़-बकरियों के
साथ थे. **5** उन्होंने उनसे कहा, “मैं तुम्हारे पिता की अभिवृत्ति स्पष्ट देख रहा हूं;
अब यह मेरे प्रति पहले जैसी सौहार्दपूर्ण नहीं रह गई; किंतु मेरे पिता के परमेश्वर
मेरे साथ रहे हैं. **6** तुम दोनों को ही यह उत्तम रीति से ज्ञात है कि मैंने यथाशक्ति
तुम्हारे पिता की सेवा की है. **7** इतना होने पर भी तुम्हारे पिता ने मेरे साथ छल
किया और दस अवसरों पर मेरे पारिश्रमिक में परिवर्तन किए हैं; फिर भी
परमेश्वर ने उन्हें मेरी कोई हानि न करने दी. **8** यदि उन्होंने कहा, ‘चित्तीयुक्त
पशु तुम्हारे पारिश्रमिक होंगे,’ तो सभी भेड़ चित्तीयुक्त मेमने ही पैदा करने
लगे; यदि उन्होंने कहा, ‘अच्छा, धारीयुक्त पशु तुम्हारा पारिश्रमिक होंगे,’
तो भेड़ धारीयुक्त मेमने उत्पन्न करने लगे. **9** यह तो परमेश्वर का ही कृत्य
था, जो उन्होंने तुम्हारे पिता के ये पशु मुझे दे दिए हैं. **10** “तब पशुओं के
समागम के अवसर पर मैंने एक स्वप्न देखा कि वे बकरे, जो संभोग कर रहे थे,
वे धारीयुक्त, चित्तीयुक्त एवं धब्बे युक्त थे. **11** परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में
मुझसे कहा, ‘याकोब,’ मैंने कहा, ‘क्या आज्ञा है, प्रभु?’ **12** और उसने कहा,
‘याकोब, देखो-देखो, जितने भी बकरे इस समय संभोग कर रहे हैं, वे धारीयुक्त
हैं, चित्तीयुक्त हैं तथा धब्बे युक्त हैं; क्योंकि मैंने वह सब देख लिया है, जो
लाबान तुम्हारे साथ करता रहा है. **13** मैं बेथेल का परमेश्वर हूं, जहां तुमने उस
शिलाखण्ड का अभ्यंजन किया था, जहां तुमने मेरे समक्ष संकल्प लिया था;
अब उठो. छोड़ दो इस स्थान को और अपने जन्मस्थान को लौट जाओ.’” **14**
राहेल तथा लियाह ने उनसे कहा, “क्या अब भी हमारे पिता की संपत्ति में
हमारा कोई अंश अथवा उत्तराधिकार शेष रह गया है? **15** क्या अब हम उनके
आंकलन में विदेशी नहीं हो गई हैं? उन्होंने हमें बेच दिया है, तथा हमारे अंश
की धनराशि भी हड़प ली है. **16** निःसंदेह अब तो, जो संपत्ति परमेश्वर ने हमारे
पिता से छीन ली है, हमारी तथा हमारी संतान की हो चुकी है. तो आप वही
कीजिए, जिसका निर्देश आपको परमेश्वर दे चुके हैं.” **17** तब याकोब ने अपने
बालकों एवं पत्नियों को ऊंटों पर बैठा दिया, **18** याकोब ने अपने समस्त पशुओं
को, अपनी समस्त संपत्ति को, जो उनके वहां रहते हुए संकलित होती गई थी
तथा वह पशु धन, जो पद्दन-अराम में उनके प्रवासकाल में संकलित होता चला
गया था, इन सबको लेकर अपने पिता यित्सहाक के आवास कनान की ओर
प्रस्थान किया. **19** जब लाबान ऊन कतरने के लिए बाहर गया हुआ था, राहेल
ने अपने पिता के गृहदेवता—प्रतिमाओं की चोरी कर ली. **20** तब याकोब ने भी
अरामी लाबान के साथ प्रवंचना की; याकोब ने लाबान को सूचित ही नहीं किया
कि वे पलायन कर रहे थे. **21** इसलिये याकोब अपनी समस्त संपत्ति को लेकर
पलायन कर गए. उन्होंने फरात नदी पार की और पर्वतीय प्रदेश गिलआद की
दिशा में आगे बढ़ गए. **22** तीसरे दिन जब लाबान को यह सूचना दी गई कि
याकोब पलायन कर चुके हैं, **23** तब लाबान ने अपने संबंधियों को साथ लेकर
याकोब का पीछा किया. सात दिन पीछा करने के बाद वे गिलआद के पर्वतीय
प्रदेश में उनके निकट पहुंच गए. **24** परमेश्वर ने अरामी लाबान पर रात्रि में
स्वप्न में प्रकट होकर उसे चेतावनी दी, “सावधान रहना कि तुम याकोब से कुछ
प्रिय-अप्रिय न कह बैठो.” **25** लाबान याकोब तक जा पहुंचा. याकोब के
शिविर पर्वतीय क्षेत्र में थे तथा लाबान ने भी अपने शिविर अपने संबंधियों सदृश
गिलआद के पर्वतीय क्षेत्र में खड़े किए हुए थे. **26** लाबान ने याकोब से कहा,

“यह क्या कर रहे हो तुम? यह तो मेरे साथ छल है! तुम तो मेरी पुत्रियों को ऐसे
लिए जा रहे हो, जैसे युद्धबन्दियों को तलवार के आतंक में ले जाया जाता है.
27 क्या आवश्यकता थी ऐसे छिपकर भागने की, मुझसे छल करने की? यदि
तुमने मुझे इसकी सूचना दी होती, तो मैं तुम्हें डफ तथा किन्नोर की संगत पर
गीतों के साथ सहर्ष विदा करता! 28 तुमने तो मुझे सुअवसर ही न दिया कि
मैं अपने पुत्र-पुत्रियों को चुंबन के साथ विदा कर सकता. तुम्हारा यह कृत्य
मूर्खतापूर्ण है. 29 मुझे यह अधिकार है कि तुम्हें इसके लिए प्रताड़ित करूं; किंतु
तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने कल रात्रि मुझ पर प्रकट होकर मुझे आदेश दिया है
कि मैं तुमसे कुछ भी प्रिय-अप्रिय न कहूं. 30 ठीक है, तुम्हें अपने पिता के
निकट रहने की इच्छा है, मान लिया; किंतु क्या आवश्यकता थी तुम्हें मेरे गृह-
देवताओं की चोरी करने की?” 31 तब याकोब ने लाबान को उत्तर दिया, “मेरे
इस प्रकार आने का कारण थी मेरी यह आशंका, कि आप मुझसे अपनी पुत्रियां
बलात छीन लेते. 32 किंतु आपको जिस किसी के पास से वे गृहदेवता प्राप्त
होंगे, उसे जीवित न छोड़ा जाएगा. आपके ही संबंधियों की उपस्थिति में आप
हमारी संपत्ति में से जो कुछ आपका है, ले लीजिए.” याकोब को इस तथ्य का
कोई संज्ञान न था कि राहेल ने उन गृह-देवताओं की मूर्तियों को चुराई हैं. 33
इसलिये लाबान याकोब के शिविर के भीतर गया, उसके बाद लियाह के शिविर
में, और उसके बाद परिचारिकाओं के शिविर में. किंतु वह देवता उसे वहां प्राप्त
न हुआ. तब वह लियाह के शिविर से निकलकर राहेल के शिविर में गया. 34
राहेल ने ही वे गृहदेवता छिपाए हुए थे, जिन्हें उसने ऊंट की काठी में रखा हुआ
था. वह स्वयं उन पर बैठ गई थी. लाबान ने समस्त शिविर में खोज कर ली
थी, किंतु उसे कुछ प्राप्त न हुआ था. 35 उसने अपने पिता से आग्रह किया,
“पिताजी, आप क्रुद्ध न हों. मैं आपके समक्ष खड़ी होने के असमर्थ हूं; क्योंकि
इस समय मैं रजस्वला हूं.” तब लाबान के खोजने पर भी उसे वे गृह-देवताओं
की मूर्तियां नहीं मिलीं. 36 तब याकोब का क्रोध उद्दीप्त हो उठा. वह लाबान से
तर्क-वितर्क करने लगे, “क्या अपराध है मेरा?” क्या पाप किया है मैंने, जो
आप इस प्रकार मेरा पीछा करते हुए आ रहे हैं? 37 आपने मेरी समस्त वस्तुओं
में उन देवताओं की खोज कर ली है, किंतु आपको कोई भी अपनी वस्तु प्राप्त
हुई है? आपके तथा मेरे संबंधियों के समक्ष यह स्पष्ट हो जाए, कि वे हम दोनों
के मध्य अपना निर्णय दे सकें. 38 “इन बीस वर्षों तक मैं आपके साथ रहा हूं.
आपकी भेड़ों एवं बकरियों में कभी गर्भपात नहीं हुआ. अपने भोजन के लिए
मैंने कभी आपके पशुवृन्द में से मेढ़े नहीं उठाए. 39 जब कभी किसी वन्य पशु
ने हमारे पशु को फाड़ा, मैंने उसे कभी आपके वृन्द में सम्मिलित नहीं किया;
इसे मैंने अपनी ही हानि में सम्मिलित किया था. चाहे कोई पशु दिन में चोरी
हुआ अथवा रात्रि में, आपने मुझसे भुगतान की मांग की. 40 मेरी स्थिति तो ऐसी
रही कि दिन में मुझ पर ऊष्मा का प्रहार होता रहा तथा रात्रि में ठंड का. मेरे नेत्रों
से निद्रा दूर ही दूर रही. 41 इन बीस वर्षों में मैं आपके परिवार में रहा हूं; चौदह
वर्ष आपकी पुत्रियों के लिए तथा छः वर्ष आपके भेड़-बकरियों के लिए. इन
वर्षों में आपने दस बार मेरा पारिश्रमिक परिवर्तित किया है. 42 यदि मेरे पिता के
परमेश्वर, अब्राहाम तथा यित्सहाक के परमेश्वर का भय मेरे साथ न होता, तो
आपने तो मुझे रिक्त हस्त ही विदा कर दिया होता. परमेश्वर ने मेरे कष्ट एवं मेरे
हाथों के परिश्रम को देखा है, और उसका प्रतिफल उन्होंने मुझे कल रात में
प्रदान कर दिया है.” 43 यह सब सुनकर लाबान ने याकोब को उत्तर दिया, “ये
स्त्रियां मेरी पुत्रियां हैं, ये बालक मेरे बालक हैं, ये भेड़-बकरियां भी मेरी ही हैं,
तथा जो कुछ तुम्हें दिखाई दे रहा है, वह मेरा ही है; किंतु अब मैं अपनी पुत्रियों
एवं इन बालकों का क्या करूं, जो इनकी सन्तति हैं? 44 इसलिये आओ, हम
परस्पर यह वाचा स्थापित कर लें, तुम और मैं, और यही हमारे मध्य साक्ष्य हो
जाए.” 45 इसलिये याकोब ने एक शिलाखण्ड को स्तंभ स्वरूप खड़ा किया.
46 याकोब ने अपने संबंधियों से कहा, “पत्थर एकत्र करो.” इसलिये उन्होंने
पत्थर एकत्र कर एक ढेर बना दिया तथा उस ढेर के निकट बैठ उन्होंने भोजन
किया. 47 लाबान ने तो इसे नाम दिया येगर-सहदूथा किंतु याकोब ने इसे गलएद
कहकर पुकारा. 48 लाबान ने कहा, “पत्थरों का यह ढेर आज मेरे तथा तुम्हारे
मध्य एक साक्ष्य है.” इसलिये इसे गलएद तथा मिज़पाह नाम दिया गया, 49
क्योंकि उनका कथन था, “जब हम एक दूसरे की दृष्टि से दूर हों, याहवेह ही
तुम्हारे तथा मेरे मध्य चौकसी बनाए रखें. 50 यदि तुम मेरी पुत्रियों के साथ
दुर्व्यवहार करो अथवा मेरी पुत्रियों के अतिरिक्त पत्नियां ले आओ, यद्यपि कोई
मनुष्य यह देख न सकेगा, किंतु स्मरण रहे, तुम्हारे तथा मेरे मध्य परमेश्वर साक्ष्य
हैं.” 51 लाबान ने याकोब से कहा, “इस ढेर को तथा इस स्तंभ को देखो, जो
मैंने तुम्हारे तथा मेरे मध्य में स्थापित किया है. 52 यह स्तंभ तथा पत्थरों का ढेर
साक्ष्य है, कि मैं इसके निकट से होकर तुम्हारी हानि करने के लक्ष्य से आगे
नहीं बढ़ूंगा, वैसे ही तुम भी इस ढेर तथा इस स्तंभ के निकट से होकर मेरी हानि
के उद्देश्य से आगे नहीं बढोगे. 53 इसके लिए अब्राहाम के परमेश्वर, नाहोर के
परमेश्वर तथा उनके पिता के परमेश्वर हमारा न्याय करें.” इसलिये याकोब ने
अपने पिता यित्सहाक के प्रति भय-भाव में शपथ ली. 54 फिर याकोब ने उस
पर्वत पर ही बलि अर्पित की तथा अपने संबंधियों को भोज के लिए आमंत्रित
किया. उन्होंने भोजन किया तथा पर्वत पर ही रात्रि व्यतीत की. 55 बड़े तड़के
लाबान उठा, अपने पुत्र-पुत्रियों का चुंबन लिया तथा उन्हें आशीर्वाद दिया. फिर
लाबान स्वदेश लौट गया.

32 जब याकोब अपने देश की ओर निकले तब रास्ते में उनकी भेंट परमेश्वर
के दूत से हुई. 2 उन्हें देखकर याकोब ने कहा, “यह परमेश्वर का शिविर
है!” उन्होंने उस जगह को माहानाईम नाम दिया. 3 याकोब ने अपने भाई एसाव
के पास एदोम के सेईर देश में दूत भेजे, 4 और उनसे कहा कि मेरा स्वामी
एसाव से यह कहना कि आपके सेवक याकोब कहता है, “मैं लाबान के यहां
पराये होकर अब तक वहीं रहा. 5 अब मेरे पास बैल, गधे तथा स्त्री-पुरुष व
दासियां हैं. मेरे अधिपति एसाव के पास दूत भेजने का कारण यह था कि आपकी
कृपादृष्टि मुझ पर बनी रहे.” 6 जब वे दूत लौटकर याकोब के पास आए और
उन्हें बताया, “हम आपके भाई से मिले. वे आपसे मिलने यहां आ रहे हैं और
उनके साथ चार सौ व्यक्तियों का झुंड भी है.” 7 यह सुन याकोब बहुत डर गये
एवं व्याकुल हो गए. उन्होंने अपने साथ चल रहे लोगों को दो भागों में बांट
दिया तथा भेड़-बकरियों, गाय-बैलों तथा ऊंटों के दो समूह बना दिए. 8 यह
सोचकर कि, अगर एसाव आकर एक झुंड पर आक्रमण करेगा, तो दूसरा झुंड
बचकर भाग जायेगा. 9 याकोब ने कहा, “हे याहवेह, मेरे पिता अब्राहाम तथा
यित्सहाक के परमेश्वर, आपने ही मुझे अपने देश जाने को कहा और कहा
कि मैं तुम्हें आशीषित करूंगा. 10 आपने मुझे जितना प्रेम किया, बढाया और
आशीषित किया, मैं उसके योग्य नहीं हूं, क्योंकि जाते समय मेरे पास एक छड़ी
ही थी जिसको लेकर मैंने यरदन नदी पार की थी और 11 अब मैं इन दो समूहों
के साथ लौट रहा हूं. प्रभु, मेरी बिनती है कि आप मुझे मेरे भाई एसाव से बचाएं.
मुझे डर है कि वह आकर मुझ पर, व इन माताओं और बालकों पर आक्रमण
करेगा. 12 आपने कहा था कि निश्चय मैं तुम्हें बढाऊंगा तथा तुम्हारे वंश की
संख्या सागर तट के बालू समान कर दूंगा.” 13 याकोब ने रात वहीं बिताई.
और उन्होंने अपनी संपत्ति में से अपने भाई एसाव को उपहार देने के लिए
अलग किया: 14 दो सौ बकरियां तथा बीस बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस मेढ़े,
15 तीस दुधार ऊंटनियां तथा उनके शावक, चालीस गायें तथा दस सांड, बीस
गधियां तथा दस गधे. 16 याकोब ने पशुओं के अलग-अलग झुंड बनाकर अपने
सेवकों को सौंप दिए, और उन्होंने अपने सेवकों से कहा, “मेरे आगे-आगे
चलते जाओ तथा हर एक झुंड के बीच थोड़ी जगह छोड़ना.” 17 जो सबसे

आगे था उनसे कहा: “जब तुम मेरे भाई एसाव से मिलोगे और वह तुमसे पूछेगा,
‘कौन है तुम्हारा स्वामी और कहां जा रहे हो? और ये सब पशु, जो आगे जा रहे
हैं, किसके हैं?’ 18 तब तुम उनसे कहना, ‘ये सभी आपके भाई याकोब के हैं,
जो उपहार में उनके अधिपति एसाव को दिए जा रहे हैं. और याकोब हमारे पीछे
आ रहे हैं.’” 19 याकोब ने यही बात दूसरे तथा तीसरे तथा उन सभी को कही,
जो उनके पीछे-पीछे आ रहे थे. 20 “तुम यह कहना, ‘आपके सेवक याकोब
पीछे आ रहे हैं.’” क्योंकि याकोब ने सोचा, “इतने उपहार देकर मैं एसाव को
खुश कर दूंगा. इसके बाद मैं उनके साथ जाऊंगा. तब ज़रूर, वह मुझे स्वीकार
कर लेंगे.” 21 और इसी तरह सब उपहार आगे बढ़ते गये, और याकोब तंबू में
रहे. 22 उस रात याकोब उठे और अपनी दोनों पत्नियों, दोनों दासियों एवं
बालकों को लेकर यब्बोक के घाट के पार चले गए. 23 याकोब ने सबको नदी
की दूसरी तरफ भेज दिया. 24 और याकोब वहीं रुक गये. एक व्यक्ति वहां
आकर सुबह तक उनसे मल्ल-युद्ध करता रहा. 25 जब उस व्यक्ति ने यह देखा
कि वह याकोब को हरा नहीं सका तब उसने याकोब की जांघ की नस को छुआ
और मल्ल-युद्ध करते-करते ही उनकी नस चढ़ गई. 26 यह होने पर उस व्यक्ति
ने याकोब से कहा, “अब मुझे जाने दो.” किंतु याकोब ने उस व्यक्ति से कहा,
“नहीं, मैं आपको तब तक जाने न दूंगा, जब तक आप मुझे आशीष न देंगे.”
27 तब उसने याकोब से पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” उसने कहा, “याकोब.”
28 तब उस व्यक्ति ने उनसे कहा, “अब से तुम्हारा नाम याकोब नहीं बल्कि
इस्राएल होगा, क्योंकि परमेश्वर से तथा मनुष्यों से संघर्ष करते हुए तुम जीत गए
हो.” 29 तब याकोब ने उस व्यक्ति से कहा, “कृपया आप मुझे अपना नाम
बताइए.” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “क्या करोगे मेरा नाम जानकर?” और तब
उस व्यक्ति ने वहीं याकोब को आशीष दी. 30 जहां यह सब कुछ हुआ याकोब
ने उस स्थान का नाम पनीएल रखा, यह कहकर कि “मैंने परमेश्वर को आमने-
सामने देखा, फिर भी मेरा जीवन बच गया!” 31 जब याकोब पनीएल से निकले
तब सूरज उसके ऊपर उग आया था. वह अपनी जांघ के कारण लंगड़ा रहे
थे. 32 इस घटना का स्मरण करते हुए इस्राएल वंश आज तक जांघ की पुट्ठे
की मांसपेशी को नहीं खाते क्योंकि उस व्यक्ति ने याकोब के जांघ की इसी
मांसपेशी पर छुआ था.

33 याकोब ने देखा कि दूर एसाव अपने चार सौ साथियों के साथ आ रहे थे;
याकोब ने अपने बालकों को लियाह, राहेल तथा दोनों दासियों को दो
भागों में कर दिये. 2 उन्होंने दोनों दासियों तथा उनके बालकों को सबसे आगे
कर दिया, उनके पीछे लियाह और उसकी संतान तथा राहेल और योसेफ़ सबसे
पीछे थे. 3 याकोब सबसे आगे थे और एसाव को देखते ही सात बार भूमि पर
गिरकर दंडवत किया और एसाव के पास पहुंचे. 4 एसाव दौड़ते हुए आए और
याकोब को गले लगाया और चुंबन किया. और दोनो रोने लगे. 5 एसाव ने स्त्रियों
एवं बालकों को देखा. उसने पूछा, “तुम्हारे साथ ये सब कौन हैं?” याकोब ने
कहा ये बालक, “जो परमेश्वर ने अपनी कृपा से आपके दास को दिये हैं.”
6 और दासियां अपने-अपने बालकों के साथ पास आईं और झुककर प्रणाम
किया. 7 वैसे ही लियाह अपने बालकों के साथ पास आई, उसने भी झुककर
प्रणाम किया और फिर राहेल के साथ योसेफ़ भी आया और प्रणाम किया. 8
एसाव ने याकोब से पूछा, “ये गाय, बैल मुझे क्यों दिया, समझ में नहीं आया.”
याकोब बोले, “मेरे अधिपति, मैं इसके द्वारा आपकी दया पाना चाहता हूं.” 9
एसाव ने कहा, “हे मेरे भाई मेरे पास सब कुछ है. और जो कुछ तुम्हारा है, उसे
अपने ही पास रहने दो.” 10 याकोब ने कहा, “नहीं! यदि आपका अनुग्रह मुझ
पर है, तो मेरी ओर से इन उपहारों को स्वीकार कर लीजिए; क्योंकि आपको
देखकर लगा कि मैंने परमेश्वर के दर्शन पा लिये, और आपने मुझे दिल से
स्वीकारा भी है. 11 कृपा कर आप मेरे द्वारा प्रस्तुत इस भेंट को स्वीकार कर
लीजिए, जो मैं आपके लिए लाया हूं, क्योंकि मेरे प्रति परमेश्वर अत्यंत कृपालु
रहे हैं तथा मेरे पास बहुत है.” जब याकोब ने ज़बरदस्ती की, एसाव ने वह भेंट
स्वीकार कर ली. 12 फिर एसाव ने कहा, “चलो, यहां से अपने घर चलें. मैं
तुम्हारे आगे-आगे चलूंगा.” 13 इस पर याकोब ने एसाव से कहा, “मेरे स्वामी,
आप जानते हैं कि बालक कमजोर हैं भेड़-बकरी एवं गायें जो दूध देनेवाली हैं,
उनका ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है. 14 इसलिये मेरे स्वामी, आप आगे चलिये
और मैं आपके पीछे-पीछे धीरे से, भेड़-बकरी एवं गायों का ध्यान रखते हुए
उनकी रफ़्तार में चलूंगा.” 15 तब एसाव ने याकोब से कहा, “मैं अपने साथियों
को आपके पास छोड़ देता हूं.” तब याकोब ने कहा, “क्या इसकी ज़रूरत है?
मुझ पर मेरे स्वामी की दया बनी रहे, यही काफ़ी है.” 16 इसलिये एसाव
उसी दिन सेईर चले गये. 17 याकोब सुक्कोथ की दिशा में आगे बढ़े. वहीं
उन्होंने अपने लिए एक घर बनाया तथा पशुओं के रहने के लिए प्रबंध किया.
इसलिये इस स्थान का नाम सुक्कोथ पड़ गया. 18 पद्दन-अराम से यात्रा करते
हुए याकोब कनान देश के शेकेम नगर पहुंचे और उन्होंने नगर के पास तंबू खड़े
किए. 19 जिस स्थान पर उन्होंने तंबू खड़े किए, उस ज़मीन को उन्होंने शेकेम
के पिता, हामोर के पुत्रों से एक सौ चांदी की मुद्राएं देकर खरीदा था. 20 फिर
याकोब ने वहां एक वेदी बनाई, जिसे उन्होंने एल-एलोहे-इस्राएल नाम रखा.

34 लियाह की पुत्री दीनाह उस देश की लड़कियों के साथ स्त्रियों को देखने
के लिए बाहर गई. 2 उस देश के शासक हिव्वी हामोर के पुत्र शेकेम ने
उसे देखा, वह उसे अपने साथ ले गया उसने उसे पकड़ लिया और उसने उसके
साथ बलात्कार किया. 3 याकोब की पुत्री दीनाह से उसे प्रेम था और उसके प्रति
उसका व्यवहार अच्छा था. 4 शेकेम ने अपने पिता हामोर से कहा, “मेरा
विवाह इस युवती से कर दीजिए.” 5 जब याकोब को पता चला कि शेकेम ने
उनकी पुत्री को दूषित कर दिया है, उस समय उनके पुत्र पशुओं के साथ मैदान में
थे; इसलिये याकोब उनके लौटने तक शांत रहे. 6 इसी समय शेकेम का पिता
हामोर याकोब से मिलने आये. 7 जब याकोब के पुत्र लौटे और उन्हें सब बात
पता चली तब वे बहुत उदास और नाराज हुए, क्योंकि उसने याकोब की पुत्री से
संभोग द्वारा इस्राएल में मूर्खता का काम कर डाला था, एक ऐसा काम, जो
अनुचित था. 8 किंतु हामोर ने उनसे कहा, “मेरा पुत्र शेकेम आपकी पुत्री को
चाहता है. कृपया उसका विवाह मेरे पुत्र से कर दीजिए. 9 हमारे साथ वैवाहिक
संबंध बना लीजिए आप हमें अपनी पुत्रियां दीजिए और आप हमारी पुत्रियां
लीजिए. 10 इस प्रकार आप हमारे साथ इस देश में मिलकर रह पायेंगे. आप इस
देश में रहिये, व्यवसाय कीजिए तथा संपत्ति प्राप्त करते जाइए.” 11 शेकेम ने
दीनाह के पिता तथा उसके भाइयों से यह भी कहा, “यदि मैंने आपकी कृपादृष्टि
प्राप्त कर ली है, तो आप अपने मन की बात कह दीजिए कि मैं उसे पूरा कर
सकूं. 12 आप वधू के लिए जो भी मांगेंगे उसे मैं पूरा करूंगा. किंतु मेरा विवाह
उसी युवती से कीजिए.” 13 तब याकोब के पुत्रों ने शेकेम को तथा उसके पिता
हामोर को छलपूर्ण उत्तर दिया, क्योंकि शेकेम ने उनकी बहन दीनाह को दूषित
कर दिया था. 14 उन्होंने उन्हें उत्तर दिया, “यह हमारे लिए संभव नहीं है
कि हम किसी ख़तना रहित को अपनी बहन दे सकें. क्योंकि यह हमारे लिए
शर्मनाक है. 15 एक ही शर्त पर यह बात हो सकती है: आपके देश के हर एक
पुरुष का ख़तना किया जाए, ताकि आप हमारे समान हो जाएं. 16 तब हममें
पुत्रियों का लेना देना हो सकेगा और हम आपके बीच रह सकेंगे, और हम एक
ही लोग बन जाएंगे. 17 यदि आपको हमारी बात सही नहीं लगी, तो हम अपनी
पुत्री को लेकर यहां से चले जाएंगे.” 18 उनकी यह बात हामोर तथा उसके पुत्र
शेकेम को पसंद आई. 19 याकोब की पुत्री शेकेम को बहुत पसंद थी कि उसने
इस काम को करने में देरी नहीं की. अपने पिता के परिवार में वह सम्मानित
व्यक्ति था. 20 इसलिये हामोर एवं उसके पुत्र शेकेम ने नगर में जाकर नगर के

सब लोगों से कहा, **21** “ये लोग हमारे साथ हैं, इसलिये हम इन्हें इस देश में रहने देंगे, इनके साथ व्यापार करेंगे, क्योंकि हमारा देश इनके लिए पर्याप्त है. हम इनकी कन्याएं लें तथा अपनी कन्याएं इन्हें दे. **22** ये एक ही शर्त पर हमारे साथ रहने के लिए सहमत हुए हैं, कि हम सभी पुरुषों का ख़तना किया जाए, जैसा उनका किया जाता है कि हम सभी एक हो जाएं. **23** तब इनका पशु धन, इनकी संपत्ति तथा इनके समस्त पशु हमारे ही तो हो जाएंगे न? बस, हम उनसे यहां सहमत हो जाएं, कि वे हमारे साथ ही निवास करने लगें.” **24** उन सभी ने, जो नगर से निकल रहे थे, हामोर तथा उसके पुत्र शेकेम की बात मान ली. उस नगर द्वार से बाहर निकलते हुए हर एक पुरुष का ख़तना कर दिया गया. **25** तीन दिन बाद, जब नगर का हर एक पुरुष पीड़ा में था, याकोब के दोनों बेटे शिमओन और लेवी ने, जो दीनाह के भाई थे, अचानक हमला कर दिया तथा हर एक पुरुष की हत्या कर दी. **26** उन्होंने तलवार से हामोर तथा उसके पुत्र शेकेम की हत्या की और शेकेम के घर से दीनाह को लेकर आये. **27** और याकोब के अन्य पुत्रों ने नगर को लूट लिया, क्योंकि उन्होंने उनकी बहन को दूषित कर दिया था. **28** उन्होंने नगर के लोग भेड़-बकरी, उनके पशु, गधे, नगर में जो कुछ उनका था जो कुछ खेतों में था, सभी कुछ ले लिया. **29** उन्होंने उनकी पूरी संपत्ति पर अधिकार करके उसे लूट लिया, यहां तक कि उन्होंने उनकी पत्नियों एवं उनके बालकों को बंदी बनाकर सभी कुछ, जो उनके घरों में था, लूट लिया. **30** यह सब देख याकोब ने शिमओन तथा लेवी से कहा, “तुमने तो मुझे इन देशवासियों के लिए दुश्मन बनाकर कनानियों एवं परिज्ज़ियों के बीच विपत्ति में डाल दिया है. यदि वे सब एकजुट होकर मुझ पर आक्रमण कर देंगे, तो मैं नष्ट हो जाऊंगा, मैं और मेरा संपूर्ण परिवार, क्योंकि हम गिनती में कम हैं.” **31** उन्होंने कहा, “क्या हमारी बहन से उन्होंने जो एक वेश्या के समान बर्ताव किया; क्या वह सही था?”

35 परमेश्वर ने याकोब से कहा, “उठो और जाकर बेथेल में बस जाओ. वहां परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाओ, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भाग रहा था.” **2** इसलिये याकोब ने अपने पूरे घर-परिवार तथा उन सभी व्यक्तियों को, जो उनके साथ थे, कहा, “इस समय तुम्हारे पास जो पराए देवता हैं, उन्हें दूर कर दो और अपने आपको शुद्ध कर अपने वस्त्र बदल दो. **3** उठो, हम बेथेल को चलें ताकि वहां मैं परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाऊं, जिन्होंने संकट की स्थिति में मेरी दोहाई सुनी तथा जहां-जहां मैं गया जिनकी उपस्थिति मेरे साथ साथ रही.” **4** यह सुन उन्होंने याकोब को सब पराए देवता दे दिए, जो उन्होंने अपने पास रखे थे. इसके अलावा कानों के कुण्डल भी दिये. याकोब ने इन सभी को उस बांज वृक्ष के नीचे दफना दिया, जो शेकेम के पास था. **5** जब वे वहां से निकले तब पूरे नगर पर परमेश्वर का भय छाया हुआ था. किसी ने भी याकोब के पुत्रों का पीछा नहीं किया. **6** इस प्रकार याकोब तथा उनके साथ के सभी लोग कनान देश के लूज़ (अर्थात् बेथेल) नगर पहुंच गए. **7** याकोब ने वहां एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम एल-बेथेल रखा, क्योंकि इसी स्थान पर परमेश्वर ने स्वयं को उन पर प्रकट किया था, जब वह अपने भाई से बचकर भाग रहे थे. **8** उसी समय रेबेकाह की धाय दबोरा की मृत्यु हो गई, उसे बेथेल के बाहर बांज वृक्ष के नीचे दफ़ना दिया. उस वृक्ष का नाम अल्लोन-बाकूथ रखा गया (अर्थात् रोने का बांज वृक्ष). **9** जब याकोब पद्दन-अराम से आए, परमेश्वर दुबारा याकोब पर प्रकट हुए. परमेश्वर ने उनको आशीष दी. **10** और कहा, “तुम्हारा नाम याकोब है, अब से तुम्हारा नाम इस्राएल होगा.” इस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें इस्राएल नाम दे दिया. **11** परमेश्वर ने उनसे यह भी कहा, “मैं एल शद्दय अर्थात् सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; तुम फूलो फलो और बढ़ते जाओ. तुम एक राष्ट्र तथा एक जनता का समूह भी होंगे, तुम्हारे वंश में राजा पैदा होंगे. **12** जो देश मैंने अब्राहाम तथा यित्सहाक को दिया था, वह मैं तुम्हें भी दूंगा, तथा यही देश तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूंगा.” **13** इसके बाद परमेश्वर उस स्थान से ऊपर चढ़ गए, जिस स्थान पर उन्होंने याकोब से बातचीत की थी. **14** याकोब ने उस स्थान पर, जहां परमेश्वर से उनकी बात हुई थी, वहां खंभा खड़ा किया—यह एक पत्थर था. याकोब ने इस पर पेय बलि चढ़ाई तथा उस पर तेल भी उंडेला. **15** जिस स्थान पर परमेश्वर ने उनसे बात की थी, उस स्थान का नाम उन्होंने बेथेल रखा. **16** फिर वे बेथेल से चलना शुरू करके एफ़राथा नामक जगह के पास थे, कि राहेल की तबियत खराब हो गई. **17** जब वह इस प्रसव पीड़ा में ही थी, धाय ने कहा, “डरो मत, अब तो तुम एक और पुत्र को जन्म दे चुकी हो.” **18** जब उसके प्राण निकल ही रहे थे, उसने इस पुत्र का नाम बेन-ओनी रखा. किंतु उसके पिता ने उसे बिन्यामिन कहकर पुकारा. **19** और वहां इस प्रकार राहेल की मृत्यु हुई तथा उसे एफ़राथा (अर्थात् बेथलेहेम) में दफ़ना दिया. **20** याकोब ने उसकी कब्र पर एक स्तंभ खड़ा किया, राहेल की कब्र का यह स्तंभ आज तक वहां स्थित है. **21** फिर इस्राएल ने अपनी यात्रा शुरू की और उन्होंने ऐदेर के स्तंभ से आगे बढ़कर तंबू डाला. **22** जब इस्राएल उस देश में रह रहे थे, तब रियूबेन ने अपने पिता की रखेल बिलहाह से संभोग किया, जो इस्राएल से छिपा न रहा. याकोब के पुत्र संख्या में बारह थे. **23** इनमें लियाह के पुत्र: याकोब का बड़ा बेटा रियूबेन, फिर शिमओन, लेवी, यहूदाह, इस्साखार तथा ज़ेबुलून थे. **24** राहेल के पुत्र: योसेफ़ तथा बिन्यामिन. **25** राहेल की दासी बिलहाह के पुत्र: दान तथा नफताली. **26** लियाह की दासी ज़िलपाह के पुत्र: गाद तथा आशेर. पद्दन-अराम में ही याकोब के ये पुत्र पैदा हुए थे. **27** याकोब अपने पिता यित्सहाक के पास पहुंच गए, जो किरयथ-अरबा (अर्थात् हेब्रोन) के ममरे में रहते थे. अब्राहाम तथा यित्सहाक यहीं रहते थे. **28** यित्सहाक की आयु एक सौ अस्सी वर्ष की हुई. **29** तब उनकी मृत्यु हुई. उनके पुत्र एसाव तथा याकोब ने उन्हें वहीं दफनाया जहां उनके पिता को दफनाया गया था.

36 एसाव (अर्थात् एदोम) के वंशज इस प्रकार है: **2** एसाव ने कनान देश की ही कन्याओं से विवाह कर लिया. हित्ती एलोन की पुत्री अदाह, अनाह की पुत्री तथा हिव्वी ज़िबेओन की पौत्री ओहोलिबामाह थे. **3** इसके अलावा उन्होंने इशमाएल की पुत्री नेबाइयोथ की बहन बसेमाथ से भी विवाह किया था. **4** एसाव से अदाह ने एलिफाज़ को जन्म दिया तथा बसेमाथ ने रियुएल को जन्म दिया, **5** ओहोलिबामाह ने योउश, यालम तथा कोराह को जन्म दिया. कनान देश में ही एसाव के ये पुत्र पैदा हुए. **6** इसके बाद एसाव अपनी पत्नियों, पुत्र-पुत्रियों, अपने संपूर्ण घर-परिवार, अपने पशु, तथा अपनी समस्त संपत्ति को लेकर, जो उसने कनान देश में पाई थी, अपने भाई याकोब से दूर देश में जाकर रहा. **7** उन दोनों की संपत्ति इतनी अधिक थी कि दोनों का एक साथ रहना मुश्किल था; वह भूमि दोनों परिवारों के पोषण के लिए काफ़ी नहीं थी. उनके पास अत्यधिक पशु थे. **8** इसलिये एसाव (अर्थात् एदोम) सेईर के पर्वतीय क्षेत्र में रहने लगे. **9** सेईर के पर्वतीय क्षेत्र में बसे हुए एदोमियों के वंश एसाव की पीढ़ियां इस प्रकार हैं. **10** एसाव के पुत्र थे: एसाव की पत्नी अदाह से जन्मे एलिफाज़, एसाव दूसरी की पत्नी बसेमाथ का पुत्र रियुएल. **11** एलिफाज़ के पुत्र: तेमान, ओमर, ज़ेफो, गाताम तथा केनाज़ थे. **12** एसाव के पुत्र एलिफाज़ की दासी का नाम तिम्ना था, जिसने एलिफाज़ से अमालेक को जन्म दिया. ये एसाव की पत्नी अदाह की संतान हैं. **13** रियुएल के पुत्र थे: नाहाथ, ज़ेराह, शम्माह तथा मिज्ज़ाह. ये एसाव की पत्नी बसेमाथ द्वारा पैदा हुए थे. **14** अनाह की पुत्री, ज़िबेओन की पौत्री, एसाव की पत्नी ओहोलिबामाह के पुत्र योउश, यालम तथा कोराह थे. **15** एसाव के पुत्रों में प्रमुख ये थे: एसाव के बड़े बेटे एलिफाज़ के पुत्र: तेमान, ओमर, ज़ेफो, केनाज़, **16** कोराह, गाताम, अमालेक. एदोम देश में एलिफाज़ के ये पुत्र थे; ये सभी अदाह वंश के थे. **17** एसाव के पुत्र

रियुएल के पुत्र: नाहाथ, ज़ेराह, शम्माह, मिज्जाह. ये वे प्रधान हैं, जो एदोम देश
में रियुएल द्वारा जन्मे थे—ये वे हैं, जो एसाव की पत्नी बसेमाथ से पैदा हुए थे.
18 एसाव की पत्नी ओहोलिबामाह से पुत्र हैं: योउश, यालम, कोराह. ये एसाव
की पत्नी अनाह की पुत्री ओहोलिबामाह के द्वारा जन्मे हैं. **19** ये एसाव (अर्थात्
एदोम) के पुत्र तथा उनके प्रधान हैं. **20** ये उस देश के होरी सेईर के पुत्र हैं:
लोतन, शोबल, ज़िबेओन, अनाह, **21** दिशोन, एज़र तथा दिशान. ये सभी
एदोम देश के वे प्रधान हैं. जो होरियों के वंश के सेईर के पुत्र हैं. **22** लोतन के
पुत्र: होरी तथा होमाम, तथा तिम्ना लोतन की बहन थी. **23** शोबल के पुत्र थे:
अलवान, मानाहाथ, एबल, शेफो तथा ओनम. **24** ज़िबेओन के पुत्र ये है:
अइयाह तथा अनाह (यह वही अनाह है, जिसने निर्जन देश में, अपने पिता
ज़िबेओन के गधों को चराते हुए गर्म पानी के झरने की खोज की थी.) **25**
अनाह की संतान हैं: दिशोन तथा ओहोलिबामाह, जो अनाह की पुत्री थी. **26**
दिशोन के पुत्र: हेमदान, एशबान, इथरान तथा चेरन. **27** एज़र के पुत्र: बिलहान,
त्सावन और आकन. **28** दिशान के पुत्र: उज़ और अरान. **29** वे प्रधान, जो
होरियों वंश के, ये है: लोतन, शोबल, ज़िबेओन, अनाह, **30** दिशोन, एज़र तथा
दिशान. सेईर देश में होरी जाति के लोग प्रधान बने. **31** इसके पहले कि इस्राएल
पर किसी राजा का शासन होता, एदोम देश पर राज्य करनेवाले राजा ये थे: **32**
बेओर का पुत्र बेला एदोम का राजा बना, तथा उसके द्वारा शासित नगर का
नाम था दिनहाबाह. **33** बेला के मरने के बाद, उसके स्थान पर बोज़राहवासी
ज़ेराह का पुत्र योबाब राजा बना. **34** योबाब के मरने के बाद, उसके स्थान पर
तेमानियों के देश का व्यक्ति हुशम राजा बना. **35** हुशम के मरने के बाद, उसके
स्थान पर बेदद का पुत्र हदद राजा बना. उसने मोआब देश में मिदियानी सेना को
हरा दिया. उसके द्वारा शासित नगर का नाम था आविथ. **36** हदद के मरने के
बाद, उसके स्थान पर मसरेकाह का सामलाह राजा बना. **37** सामलाह के मरने
के बाद, फरात नदी पर बसे रेहोबोथ का निवासी शाऊल उनके स्थान पर राजा
बना. **38** शाऊल के मरने के बाद, उसके स्थान पर अखबोर का पुत्र बाल-हनन
राजा बना. **39** अखबोर के पुत्र बाल-हनन के मरने के बाद, उसके स्थान पर
हदद राजा बना. उस नगर का नाम पाऊ था तथा उसकी पत्नी का नाम मेहेताबेल
था. वह मातरेद की पुत्री, और मातरेद मेत्साहब की पुत्री थी. **40** एसाव के वंश
में जो प्रधान थे उनके नाम: तिम्ना, अलवाह, यथेथ, **41** ओहोलिबामाह, एलाह,
पिनोन, **42** केनाज़, तेमान, मिबज़ार, **43** मगदिएल, इराम. ये सभी एदोम देश
के प्रधान हुए. एक प्रदेश में जो रहा, उस प्रदेश का नाम भी वही था जो उनका
पारिवारिक नाम था. यह एसाव, जो एदोमियों का गोत्रपिता था, उसका परिवार
है.

37 याकोब कनान देश में रहते थे. वहीं तो उनके पिता परदेशी होकर रहे थे.
2 यह है याकोब के परिवार का इतिहास. याकोब के वंश में योसेफ़ जब
सत्रह वर्ष के थे वह अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियों को चराते थे, उनके
पिता की पत्नियों बिलहाह तथा ज़िलपाह के पुत्र भी उनके साथ ही थे. योसेफ़
अपने पिता को अपने भाइयों की गलत आदतों के बारे में बताया करते थे. **3**
इस्राएल अपने सभी बच्चों से ज्यादा योसेफ़ को प्यार करते थे; क्योंकि वह
उनके बुढ़ापे की संतान थी. याकोब ने योसेफ़ के लिए रंग बिरंगा वस्त्र बनवाया
था. **4** योसेफ़ के भाइयों ने देखा कि उनके पिता उनसे ज्यादा योसेफ़ को प्यार
करते हैं; इसलिये वे योसेफ़ से नफ़रत करने लगे. **5** योसेफ़ ने एक स्वप्न देखा
था, जिसे उसने अपने भाइयों को बताया. योसेफ़ के भाई योसेफ़ से ज्यादा
नफ़रत करने लगे. **6** योसेफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "कृपया मेरा स्वप्न
सुनिए. **7** हम सब खेत में पूला बांध रहे थे. मैंने देखा कि मेरा पूला उठकर सीधा
खड़ा हो गया. और आपके पूले मेरे पूले के आस-पास एकत्र हो गये और मेरे
पूले को प्रणाम करने लगे." **8** यह सुन उनके भाई कह उठे, "तो क्या तुम हम
पर अधिकार करने का विचार कर रहे हो? क्या तुम सच में हम पर अधिकार
कर लोगे?" इसके बाद वे योसेफ़ से और ज्यादा नफ़रत करने लगे. **9** फिर
योसेफ़ ने दूसरा सपना देखा. योसेफ़ ने कहा, "मैंने दूसरा सपना देखा है; मैंने
सूरज, चांद और ग्यारह नक्षत्रों को मुझे प्रणाम करते देखा." **10** यह स्वप्न
योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों को बताया, जिसे सुन उनके पिता ने उसे डांटते
हुए कहा, "यह कैसा स्वप्न देखते हो तुम! क्या यह वास्तव में संभव है कि मैं,
तुम्हारी माता एवं तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हें प्रणाम करेंगे?" **11**
योसेफ़ के भाई उससे लगातार ईर्ष्या करते रहे. किंतु योसेफ़ के पिता ने इन सभी
बातों को अपने मन में रखा. **12** योसेफ़ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों
को चराने के लिए शेकेम गए थे. **13** इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, "तुम्हारे भाई
शेकेम में भेड़-बकरी चरा रहे हैं न? मैं तुम्हें उनके पास भेजना चाहता हूं."
योसेफ़ ने कहा, "मैं चला जाता हूं." **14** याकोब ने योसेफ़ से कहा, "तुम जाओ
और अपने भाइयों का हाल पता करके आओ और मुझे बताओ." योसेफ़ को
याकोब ने हेब्रोन घाटी से रवाना किया. और योसेफ़ शेकेम पहुंचे, **15** जब
योसेफ एक मैदान में इधर-उधर देख रहे थे, तब एक व्यक्ति उन्हें मिला, जिसने
उससे पूछा, "क्या ढूंढ रहे हो तुम?" **16** योसेफ़ ने कहा, "मैं अपने भाइयों को
ढूंढ़ रहा हूं. क्या आप कृपा कर मुझे बताएंगे वे अपनी भेड़-बकरियां कहां चरा
रहे हैं?" **17** उस व्यक्ति ने कहा, "वे तो यहां से जा चुके हैं, क्योंकि मैंने उन्हें
यह कहते सुना था, 'चलो, अब दोथान जायें.'" इसलिये योसेफ़ अपने भाइयों
को ढूंढ़ते दोथान पहुंचे. **18** जब भाइयों ने दूर से योसेफ़ को आते देखा, उसके
नज़दीक आने के पहले ही उन्होंने उसको मार डालने का विचार किया. **19**
उन्होंने कहा, "यह लो, आ गया स्वप्न देखनेवाला! **20** चलो, उसकी हत्या कर
यहां किसी गड्ढे में फेंक दें, और हम कह देंगे, कि उसे किसी जंगली जानवर ने
खा लिया; फिर हम देखते हैं उसके स्वप्न का क्या होता है." **21** किंतु रियूबेन
योसेफ़ को बचाना चाहता था. इसलिये रियूबेन ने कहा "हम योसेफ़ को जान से
नहीं मारेंगे; **22** बल्कि हम उसे बंजर भूमि के किसी गड्ढे में डाल देते हैं,"
रियूबेन ने ऐसा इसलिये कहा कि वह योसेफ़ को बचाकर पिता को सौंप देना
चाहता था. **23** जैसे ही योसेफ़ अपने भाइयों के पास आये, उन्होंने योसेफ़ का
रंग बिरंगा वस्त्र, जो वह पहने हुए थे उतार दिया, **24** और योसेफ़ को एक
सूखे गड्ढे में डाल दिया, गड्ढा खाली था; उसमें पानी नहीं था. **25** यह करके वे
भोजन करने बैठे. तभी उन्होंने देखा कि गिलआद की ओर से इशमाएलियों का
एक समूह आ रहा था. उनके ऊंटों पर सुगंध गोंद, बलसान तथा गन्धरस लदे
हुए थे. यह सब वे मिस्र ले जा रहे थे. **26** यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा,
"अपने भाई की हत्या कर उसे छुपाने से हमें कुछ नहीं मिलेगा. **27** हम इसे इन
इशमाएलियों को बेच दें. हम इसकी हत्या न करें; अंततः वह हमारा भाई ही है,
हमारा अपना खून." भाइयों को यह बात ठीक लगी. **28** उसी समय कुछ
मिदियानी व्यापारी वहां से निकले, तब उन्होंने उनकी सहायता से योसेफ़ को गड्ढे
से ऊपर खींच निकाला और उसे इशमाएलियों को बीस चांदी के सिक्कों में
बेच दिया. **29** जब रियूबेन उस गड्ढे पर लौटा, तब उसने देखा कि योसेफ़ वहां
नहीं हैं. यह देख उसने अपने वस्त्र फाड़ लिए. **30** उसने अपने भाइयों के पास
जाकर पूछा, "वह तो वहां नहीं हैं! मुझे समझ नहीं आ रहा, अब मैं क्या
करूं?" **31** भाइयों ने एक बकरी को मारा और उसके खून में योसेफ़ के सुंदर
अंगरखे को डुबो दिया **32** और उस वस्त्र को अपने पिता के पास ले जाकर कहा,
"हमें यह वस्त्र मिला; क्या यह आपके पुत्र का वस्त्र तो नहीं?" **33** याकोब ने वस्त्र
देखकर कहा, "यह मेरे पुत्र का ही वस्त्र है. किसी जंगली पशु ने उसे खा लिया
है." **34** तब याकोब ने अपने वस्त्र फाड़े, टाट पहन लिए और कई दिनों तक
अपने बेटे के लिए रोते रहे. **35** सबने याकोब को दिलासा देने की कोशिश की,
पर याकोब का दुःख कम न हुआ, और वे योसेफ़ के लिए रोते ही रहे. याकोब ने

कहा, "मैं मरने के दिन तक (शीयोल तक) अपने पुत्र योसेफ़ के शोक में डूबा रहूंगा." (Sheol h7585) 36 वहां, मिदियानियों ने मिस्र पहुंचकर योसेफ़ को पोतिफर को बेच दिया, जो फ़रोह का एक अधिकारी, अंगरक्षकों का प्रधान था.

38 जब उन्हीं दिनों यहूदाह अपने भाइयों के बीच से निकलकर हीराह नामक अदुल्लामवासी व्यक्ति के साथ रहने चले गये. 2 तब शुआ नामक एक कनानी व्यक्ति की पुत्री से मिले और उन्होंने उससे विवाह कर लिया और उससे प्रेम किया; 3 और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका एर नाम रखा. 4 उसने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम ओनान रखा. 5 उसने एक और पुत्र को जन्म दिया, जिसका शेलाह नाम रखा. तब यहूदाह केज़ीब में रहते थे. 6 यहूदाह ने एर, का विवाह तामार नामक स्त्री से किया. 7 यहूदाह का बड़ा बेटा याहवेह के दृष्टि में दुष्ट था; इसलिये याहवेह ने उसे मार डाला. 8 यहूदाह ने ओनान से कहा, "अपने भाई की पत्नी के साथ देवर का कर्तव्य पूरा करके अपने भाई के लिए संतान पैदा करो." 9 ओनान ने कहा, ये संतान मेरी नहीं होगी; इसलिये जब कभी वह समागम करता, अपना वीर्य भूमि पर गिरा देता था कि उससे उसके भाई के लिए कोई संतान पैदा न हो सके. 10 उसका यह काम याहवेह को अच्छा नहीं लगा, इसलिये याहवेह ने उसके प्राण ले लिए. 11 यह देख यहूदाह ने अपनी बहू तामार से कहा, "जब तक मेरा पुत्र शेलाह, विवाह के योग्य न हो जाए, अपने पिता के घर विधवा बनकर रहना." यहूदाह को डर था कि इस पुत्र की भी मृत्यु उसके भाइयों के समान हो जाए. इसलिये तामार अपने पिता के घर चली गई. 12 बहुत समय बाद शुआ की पुत्री अर्थात् यहूदाह की पत्नी की मृत्यु हो गई. यहूदाह अपने शोक के समय के बाद अपनी भेड़ों के ऊन कतरने वालों के पास तिमनाह को गया. उसके साथ उसका मित्र अदुल्लामी हीराह भी था. 13 जब तामार को यह बताया गया, "तुम्हारे ससुर तिमनाह जा रहे हैं," 14 तब तामार ने अपने विधवा के वस्त्र उतार दिए, और अपना मुंह घूंघट से छिपाकर एक चादर लपेट ली तथा तिमनाह के मार्ग पर एनाइम के प्रवेश द्वार पर बैठ गई. यह इसलिये किया क्योंकि उसका देवर शेलाह जवान हो चुका था तथा उससे उसका विवाह नहीं किया गया था. 15 वहां से निकलते हुए उसे देख यहूदाह ने उसे वेश्या समझा, क्योंकि उसने मुंह ढक रखा था. 16 इसलिये यहूदाह उसके पास गया और उससे कहा, "मुझे तुम्हारे साथ संभोग करना है." यहूदाह को यह मालूम नहीं था कि वह उसकी ही बहू थी. उसने पूछा, "क्या मजदूरी दोगे?" 17 यहूदाह ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें अपने झुंड में से एक बकरी भिजवा दूंगा." तब तामार ने कहा, "उसे भिजवाने तक उसके बदले में क्या दोगे?" 18 यहूदाह ने पूछा, "क्या चाहती हो?" उसने उत्तर दिया, "तुम्हारी मुद्रामोहर, तुम्हारा बाजूबन्द तथा तुम्हारे हाथ की लाठी." तब यहूदाह ने उसे ये देकर उससे संभोग किया और चला गया. तामार यहूदाह से गर्भवती हो गई. 19 तामार ने घर जाकर अपना विधवा वस्त्र वापस पहन लिया. 20 जब यहूदाह ने अपने अदुल्लामी मित्र के हाथ वह शावक बकरी उस स्त्री के लिए भेजी, तो वहां उसे वह स्त्री नहीं मिली. 21 उसने आस-पास लोगों से पूछा, "वह वेश्या कहां है, जो एनाइम मार्ग पर बैठा करती है?" उन्होंने कहा, "यहां कोई वेश्या कभी थी ही नहीं." 22 इसलिये वह यहूदाह के पास लौट गया और उसे बताया, "वह मुझे नहीं मिली. इतना ही नहीं, वहां लोगों ने बताया कि वहां तो कभी कोई वेश्या थी ही नहीं." 23 यह सुन यहूदाह ने उससे कहा, "तब तो उसे वे चीज़ें रख लेने दो अन्यथा तुच्छ हम ही बन जाएंगे. मैंने तो उसके लिए बकरी भिजवा दी थी, किंतु हम उसका पता नहीं लगा सके." 24 लगभग तीन माह बाद यहूदाह को बताया गया, "तुम्हारी बहू ने व्यभिचार किया है और वह गर्भवती है." यहूदाह ने कहा, "उसे बाहर लाओ ताकि उसे जला दें!" 25 जब उसे बाहर ला रहे थे, तो उसने अपने ससुर को यह संदेश भेजा, "मैं उस व्यक्ति से गर्भवती हूं जिसकी ये वस्तुएं हैं." तामार ने कहा, "देखो, कि यह मुद्रामोहर, बाजूबन्द तथा लाठी किसकी है?" 26 यहूदाह ने ये वस्तुएं देखते ही पहचान लीं और कहा, "वह तो मुझसे कम दोषी है, क्योंकि मैंने ही उसे शेलाह की पत्नी होने से रोका था." यहूदाह ने उससे पुनः संभोग नहीं किया. 27 जब प्रसव का समय आया तब पता चला कि उसके गर्भ में जुड़वां बच्चे हैं. 28 जब प्रसव पीड़ा हो रही थी एक ने हाथ बाहर निकाला तो धाय ने उसके हाथ में यह कहते हुए लाल डोरी बांध दी, "कि यह पहले जन्मा है." 29 लेकिन उसने अपना हाथ अंदर खींच लिया और उसके भाई का जन्म उससे पहले हुआ. तब धाय ने कहा, "तुम ही पहले बाहर निकलने में समर्थ हुए!" इसलिये उसका नाम पेरेज़ रखा. 30 फिर उसके भाई का जन्म हुआ, जिसके हाथ पर वह लाल डोर बांधी गई थी. उसका नाम ज़ेराह रखा.

39 जब योसेफ़ को मिस्र ले गये, तब फ़रोह के अंगरक्षकों के प्रधान मिस्री पोतिफर ने उसे उन इशमाएलियों से मोल ले लिया जो उसे वहां लाए थे. 2 योसेफ़ पर याहवेह की कृपा थी, इसलिये वह सफल व्यक्ति बन गये. वह मिस्री स्वामी के घर में रहते थे. 3 योसेफ़ के स्वामी ने यह समझ लिया था कि योसेफ़ पर याहवेह की कृपा है, वह जो भी काम करते हैं, याहवेह उस काम को सफल कर देते थे. 4 इस कारण योसेफ़ उनके कृपापात्र बन उनकी सेवा में लग गये. पोतिफर ने उन्हें अब अपने पूरे घर का तथा संपत्ति का अधिकारी बना दिया था. 5 और जब से योसेफ़ को संपत्ति का अधिकारी बनाया याहवेह ने योसेफ़ के कारण उस मिस्री घर को बहुत आशीष दी. याहवेह की आशीष पोतिफर के घर में और उसके खेतों में थी. 6 इसलिये पोतिफर ने अपनी पूरी संपत्ति योसेफ़ को सौंप दी. पोतिफर अपने भोजन के अलावा किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं देता था. योसेफ़ सुंदर व रूपवान युवक थे, 7 और कुछ समय बाद पोतिफर की पत्नी योसेफ़ के प्रति गलत सोच रखने लगी और उससे कहा, "मुझसे समागम करो!" 8 किंतु योसेफ़ ने मना किया और अपनी स्वामिनी से कहा, "यह समझने की कोशिश कीजिए कि इस घर में मेरे स्वामी किसी भी विषय की चिंता नहीं करते, उन्होंने तो अपनी पूरी संपत्ति ही मेरे पास छोड़ दी है. 9 इस घर में कोई भी मुझसे बड़ा नहीं है. मेरे स्वामी ने मुझे आपके अलावा किसी भी वस्तु से अलग नहीं रखा है, क्योंकि आप उनकी पत्नी हैं. इसलिये यह कैसे संभव है कि मैं ऐसी दुष्टता कर परमेश्वर के विरुद्ध पाप करूं?" 10 वह दिन-प्रतिदिन योसेफ़ से समागम के लिए आग्रह करती रही, योसेफ़ न तो समागम के लिए तत्पर हुए और न ही उसके पास रहने के लिए तैयार हुए. 11 एक दिन जब घर में कोई भी सेवक नहीं था और योसेफ़ घर में अपने काम करने गये. 12 पोतिफर की पत्नी ने योसेफ़ के वस्त्र पकड़ लिए और उनसे आग्रह करने लगी, "मुझसे संभोग करो!" योसेफ़ अपना वस्त्र उसी के हाथ में छोड़कर भागकर बाहर आ गये. 13 जब उस स्त्री ने देखा कि योसेफ़ अपना वस्त्र उसके हाथों में छोड़कर बाहर भाग गए, 14 उसने सब सेवकों को बुलाया और कहा, "यह देखो, मेरे पति ने इस इब्री को हमारी देखभाल के लिए रखा है लेकिन वह मुझे दूषित करने मेरे पास आया तब मैं चिल्ला पड़ी. 15 जैसे ही उसने मेरी चिल्लाहट सुनी, वह अपना वस्त्र मेरे साथ छोड़कर बाहर भाग गया." 16 योसेफ़ का वह वस्त्र अपने पति के लौटने तक अपने पास रखा. 17 पति के आने पर उसने बताया: "आप जिस इब्री दास को यहां लाए हैं, वह मेरा अपमान करने यहां आया था. 18 जैसे ही मैं चिल्लाई, वह अपना वस्त्र छोड़कर बाहर भाग गया." 19 जब योसेफ़ के स्वामी ने अपनी पत्नी की यह बात सुनी, 'आपके सेवक ने मुझसे ऐसा व्यवहार किया' तब उसे बहुत गुस्सा आया. 20 योसेफ़ के स्वामी ने उसे कारागार में डाल दिया, यह वही स्थान था जहां राजा के अपराधी रखे जाते थे. योसेफ़ इसी कारागार में थे, 21 किंतु योसेफ़ पर याहवेह की कृपा थी और इसलिये कारागार के अधिकारी योसेफ़ का पूरा ध्यान रखते थे. 22

कारागार के अधिकारी ने योसेफ़ को कारागार की पूरी जवाबदारी सौंप दी;
कारागार में जो कुछ होता था योसेफ़ के कहने से ही होता था. 23 कारागार के
अधिकारी जानते थे कि योसेफ़ पर याहवेह की कृपा है और योसेफ़ जो कुछ
करते थे, याहवेह उस काम को सफल करते थे.

40 कुछ समय बाद राजा फ़रोह के कटोरा-वाहक और उनके खाना बनानेवाले
ने अपने स्वामी फ़रोह के विरुद्ध कुछ गलती की. 2 और प्रधान खानसामे
और प्रधान पिलाने वाले दोनों पर राजा गुस्सा हुए, 3 इसलिये राजा ने उन दोनों
को कारावास में डाल दिया, जहां योसेफ़ भी बंदी थे. 4 अंगरक्षकों के प्रधान ने
योसेफ़ के हाथ उन दोनों को सौंप दिया. योसेफ़ उनका ध्यान रखते थे. और वे
दोनों कुछ समय तक कारावास में रहे, 5 तब एक रात दोनों ने अलग-अलग
सपना देखा, और हर एक सपने का अपना अलग-अलग अर्थ था. 6 जब सुबह
योसेफ़ वहां आए और उन दोनों को देखा कि वे उदास थे. 7 योसेफ़ ने जो उसके
साथ उसके स्वामी के घर में कारावास में थे, उनसे पूछा: "आप दोनो ऐसे उदास
क्यों हैं?" 8 उन्होंने कहा, "हम दोनों ही ने स्वप्न देखा है, किंतु कोई भी नहीं
है, जो उसका मतलब बता सके." यह सुनकर योसेफ़ ने कहा, "क्या आप नहीं
जानते कि स्वप्न की व्याख्या परमेश्वर की ओर से होती है? कृपया आप मुझे
अपना स्वप्न बताएं." 9 तब प्रधान पिलाने वाले ने योसेफ़ से कहा, "अपने
स्वप्न में मैंने देखा कि मेरे पास एक दाखलता है, 10 जिसमें तीन शाखाएं हैं.
जैसे ही इन पर कलियां खिली, उनमें फूल खिलें और अंगूर लगकर पक गए.
11 और मैं फ़रोह का प्याला मेरे हाथ में था, और मैंने अंगूर लेकर प्याले में रस
निचोड़ा. फिर मैंने प्याला फ़रोह के हाथों में दिया." 12 स्वप्न सुनकर योसेफ़
ने कहा, "वे तीन शाखाएं तीन दिन हैं. 13 और तीन दिन में फ़रोह आपको
वापस बुला लेंगे और आपका काम दुबारा आपको सौंप देंगे और आप फिर से
पिलाने का काम शुरू करेंगे. 14 योसेफ़ ने उनसे कहा जब आप फ़रोह राजा के
पास जायेंगे तब मुझे मत भूलना, लेकिन राजा को मेरे बारे में बताना और मुझे
कारावास से बाहर निकलवाना. 15 मुझे अपने घर इब्रियों के देश से ज़बरदस्ती
से लाया गया था और यहां पर भी मैंने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है जिसके
लिये मुझे इस काल-कोठरी में डाला गया." 16 फिर प्रधान खाना बनानेवाले ने
देखा कि दूसरे नौकर के स्वप्न की व्याख्या उनके पक्ष में थी, तब उसने योसेफ़
से कहा, "मैंने भी एक स्वप्न देखा है: मैंने देखा कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की
तीन टोकरियां रखी हैं. 17 सबसे ऊपर की टोकरी में फ़रोह के लिए तैयार किए
गए सभी प्रकार के व्यंजन थे, टोकरी सिर पर रखी हुई थी; पक्षी उसमें से खाते
जा रहे थे." 18 स्वप्न सुनकर योसेफ़ ने अर्थ बताया: "वे तीन टोकरियां तीन
दिन हैं. 19 इन तीन दिनों में फ़रोह तुम्हारा सिर काट देंगे और शरीर को पेड़ पर
लटका देंगे और पक्षी आकर तुम्हारे शरीर को नोचेंगे." 20 यही हुआ. तीसरे
दिन फ़रोह का जन्मदिन था उसने अपने सभी सेवकों को भोज दिया उस दिन
प्रधान पिलाने वाले और प्रधान पकाने वाले दोनों को कारावास से बाहर लाया
गया. 21 प्रधान पिलाने वाले को फिर से उसकी जवाबदारी दे दी गई; वह फ़रोह
के हाथ में फिर से प्याला देने लगे. 22 लेकिन प्रधान पकाने वाले को फांसी पर
लटका दिया; सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा योसेफ़ ने बताया था. 23 यह सब
देखकर भी प्रधान पिलाने वाले ने योसेफ़ को याद न किया; पर भूल गया.

41 पूरे दो साल बाद फ़रोह ने एक स्वप्न देखा: वे नील नदी के किनारे खड़े
हैं. 2 नदी में से सात सुंदर एवं मोटी गायें निकली और घास चरने लगीं.
3 फिर और सात गायें नील नदी में से निकलीं, जो कुरूप तथा पतली थीं. ये
नदी के किनारे उन मोटी गायों के पास आकर खड़ी हो गईं. 4 और कुरूप एवं
दुर्बल गायों ने उन सुंदर एवं मोटी गायों को खा लिया. इससे फ़रोह की नींद
खुल गई. 5 जब उन्हें फिर नींद आई, तब उन्होंने एक और स्वप्न देखा: एक
ही तने में से सात बालें उगीं, जो अच्छी और मोटी मोटी थीं. 6 फिर सात और
बालें उगीं जो पतली और मुरझाई हुई थीं, 7 तब पतली बालों ने मोटी बालों
को निगल लिया. इससे फ़रोह की नींद खुल गई और वह समझ गये कि यह
स्वप्न था. 8 सुबह होने पर राजा मन में बेचैन हुए, इसलिये इनका अर्थ जानने
के लिए मिस्र देश के सब ज्योतिषियों एवं पंडितों को बुलवाया और फ़रोह ने
उन्हें अपने दोनों स्वप्न बताये लेकिन कोई भी उनका अर्थ नहीं बता पाया. 9
तब प्रधान पिलाने वाले ने फ़रोह से कहा, "आज मुझे अपनी गलती याद आ रही
है. 10 एक बार फ़रोह अपने नौकरों से क्रुद्ध हुए और मुझे और प्रधान खानसामे
को अंगरक्षकों के नायक के घर के बंदीगृह में डाला. 11 हमने उस कारावास में
स्वप्न देखा, और दोनों ही स्वप्न का अपना अलग अर्थ था. 12 एक इब्री युवक
वहां था, वह अंगरक्षकों के नायक का सेवक था. जब हमने उसे अपना स्वप्न
बताया उसने हमारे हर एक के स्वप्न की व्याख्या की. 13 जैसा उसने बताया था
वैसा ही हुआ: फ़रोह ने मुझे तो अपना पद सौंप दिया, और खानसामें को प्राण-
दंड दे दिया." 14 यह सुनकर फ़रोह ने कहा कि योसेफ़ को मेरे पास लाओ.
उन्होंने जल्दी योसेफ़ को कारागार से बाहर निकाला. और उसके बाल कटाकर
उसके कपड़े बदलकर फ़रोह के पास लेकर आये. 15 फ़रोह ने योसेफ़ से कहा,
"मैंने एक स्वप्न देखा है, उसका अर्थ कोई नहीं बता पा रहे हैं, लेकिन मैंने
तुम्हारे बारे में सुना है कि तुम स्वप्न का अर्थ बता सकते हो." 16 योसेफ़ ने यह
सुनकर फ़रोह से कहा, "अर्थ मैं नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर ही देंगे." 17 तब
फ़रोह ने कहा, "मैंने स्वप्न में देखा कि मैं नील नदी के किनारे खड़ा हूं. 18 वहां
मैंने सात मोटी एवं सुंदर गायों को नील नदी से निकलते देखा. और वे घास चर
रही थीं. 19 तभी मैंने देखा कि सात और गायें निकलीं—जो दुबली, पतली
और कुरूप थीं. ऐसी कुरूप गायें मैंने मिस्र देश में कभी नहीं देखीं. 20 दुर्बल
एवं कुरूप गायों ने उन सात मोटी एवं सुंदर गायों को खा लिया. 21 इतना होने
पर भी यह समझ नहीं पाये कि इन्होंने उन सात मोटी गायों को कैसे खा लिया;
लेकिन वे अब भी वैसी ही कुरूप बनी हुई थीं. और मेरी नींद खुल गई. 22
"मैंने एक और स्वप्न देखा: एक ही तने में से सात मोटी एवं अच्छी बालें उगीं.
23 तभी मैंने देखा कि कमजोर और मुरझाई, और पूर्वी वायु से झुलसी बालें
उगीं. 24 तथा कमजोर बालों ने उन मोटी बालों को निगल लिया. मैंने अपने
ज्योतिषियों से ये स्वप्न बताये, लेकिन अर्थ कोई नहीं बता पाया." 25 तब
योसेफ़ ने फ़रोह से कहा, "आपके दोनों स्वप्न एक ही हैं. इनमें परमेश्वर ने
फ़रोह को बताया हैं कि परमेश्वर क्या करने जा रहे हैं. 26 सात सुंदर और मोटी
गायें सात वर्ष हैं, सात अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं; दोनों ही स्वप्न एक ही हैं.
27 कमजोर एवं कुरूप गायें, सात वर्ष हैं, और मुरझाई हुई बालें जो देखी वे भी
सात वर्ष; वे अकाल के होंगे. 28 "जैसा मैंने फ़रोह को बताया, ठीक वैसा ही
होगा; परमेश्वर ने आपको यह दिखा दिया है कि जल्दी ही क्या होनेवाला है.
29 मिस्र देश में सात वर्ष बहुत ही अच्छी फसल होगी, 30 और उसके बाद सात
वर्ष का अकाल होगा. तब मिस्र देश के लोग सारी उपज को भूल जायेंगे, और
अकाल से देश का नाश होगा. 31 अकाल इतना भयानक होगा कि अच्छी
फसल और उपज किसी को याद तक नहीं रहेगी. 32 फ़रोह आपने एक ही बात
के विषय दो बार स्वप्न देखे; यह इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर निश्चय
ही ऐसा होने देंगे और परमेश्वर जल्दी ही इसे पूरा करेंगे. 33 "इसलिये फ़रोह
जल्दी किसी समझदार एवं बुद्धिमान व्यक्ति को मिस्र देश का अधिकारी बनाएं.
34 और फ़रोह सारे मिस्र देश में सर्वेक्षकों को नियुक्त करे और सात वर्ष जो
अच्छी फसल और उपज का है, उस समय भूमि की उपज का पंचमांश इकट्ठा
करें. 35 तब अच्छी फसल के सात वर्षों में सारी भोजन वस्तु एकत्रित की जाये
और अनाज को फ़रोह के अधिकार में भंडार नगरों में सुरक्षित रखते जायें. 36
और यह भोजन सात वर्ष के अकाल से बचने के लिए पूरे मिस्र देश को देने के

लिए इकट्ठा करे ताकि लोग भोजन के अभाव में नहीं मरें." 37 फ़रोह तथा
सब कर्मचारियों को लगा कि यह जवाबदारी योसेफ़ को ही दी जाये. 38
फ़रोह ने अपने सेवकों से पूछा, "क्या हमें ऐसा कोई व्यक्ति मिल सकता है
जिसमें परमेश्वर का आत्मा हो?" 39 फिर फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "इसलिये
कि परमेश्वर ने ही तुम पर यह सब प्रकट किया है, तुम यह जवाबदारी लो
क्योंकि तुम जैसा समझदार तथा बुद्धिमान कोई नहीं. 40 और तुम मेरे महल के
अधिकारी होंगे तथा मेरी प्रजा तुम्हारे ही आदेश का पालन करेगी. मैं सिंहासन
पर बैठने के कारण राजा होकर तुमसे बड़ा रहूंगा." 41 और फ़रोह ने योसेफ़ से
कहा, "मैंने तुम्हें सारे मिस्र देश पर अधिकार दे दिया है." 42 यह कहते हुए
फ़रोह ने अपनी राजमुद्रा वाली अंगूठी उतारकर योसेफ़ को पहना दी, और
मलमल के वस्त्र तथा गले में सोने की माला भी पहना दी. 43 फिर फ़रोह ने
योसेफ़ को अपने दूसरे रथ में चढ़ाकर सम्मान दिया. रथों के आगे-आगे चल रहे
अधिकारी बोल रहे थे, "घुटने टेको!" इस प्रकार फ़रोह ने योसेफ़ को संपूर्ण
मिस्र का अधिकार सौंप दिया. 44 और फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "फ़रोह तो मैं
हूं, किंतु अब से सारे मिस्र देश में बिना तुम्हारी आज्ञा के कोई भी न तो हाथ उठा
सकेगा और न ही पांव." 45 फ़रोह ने योसेफ़ का नया नाम ज़ाफेनाथ-पानियाह
रखा तथा उनका विवाह ओन के पुरोहित पोतिफेरा की पुत्री असेनाथ से कर
दिया. इस प्रकार अब योसेफ़ समस्त मिस्र देश के प्रशासक हो गए. 46 जब
योसेफ़ को मिस्र के राजा फ़रोह के पास लाया गया, तब वे तीस वर्ष के थे. फ़रोह
से अधिकार पाकर योसेफ़ समस्त मिस्र देश का निरीक्षण करने के लिए निकले.
47 पहले सात वर्षों में बहुत उपज हुई. 48 और योसेफ़ ने इन सात वर्षों में बहुत
भोजन वस्तुएं जमा की, जो मिस्र देश में उत्पन्न हो रही थीं. वह सब अन्न
योसेफ़ नगरों में जमा करते गए. जिस नगर के पास खेत था उसकी उपज वहीं
जमा करते गए. 49 इस तरह योसेफ़ ने सागर तट के बालू समान अनाज जमा
कर लिया कि उसको गिनना ही छोड़ दिया, क्योंकि उपज असंख्य हो चुकी
थी. 50 इससे पहले कि अकाल के वर्ष शुरू हों, ओन के पुरोहित पोतिफेरा की
पुत्री असेनाथ से योसेफ़ के दो पुत्र पैदा हुए. 51 पहले बेटे का नाम योसेफ ने
मनश्शेह रखा क्योंकि उन्होंने विचार किया, "परमेश्वर ने सभी कष्टों एवं मेरे
पिता के परिवार को भुलाने में मेरी सहायता की है." 52 उन्होंने दूसरे पुत्र का
नाम एफ्राईम रखा, क्योंकि उनका कहना था, "दुःख मिलने की जगह इस देश
में परमेश्वर ने मुझे फलवंत किया." 53 जब मिस्र देश में फसल के वे सात वर्ष
खत्म हुए, 54 तब अकाल के सात वर्षों की शुरूआत हुई, जैसा योसेफ़ ने कहा
था. सभी देशों में अकाल था, किंतु मिस्र देश में अन्न की कोई कमी न थी. 55
जब मिस्र देश में भोजन की कमी होने लगी तब लोग फ़रोह से भोजन मांगने
लगे. फ़रोह ने मिस्र की प्रजा से कहा, "तुम योसेफ़ के पास जाओ. वह जो कुछ
कहे, वही करना." 56 जब पूरे देश में अकाल पड़ा, तब योसेफ़ ने अपने भंडार
खोलकर मिस्रवासियों को अन्न बेचना शुरू किया, क्योंकि अकाल भयानक
था. 57 पृथ्वी के अलग-अलग देश से लोग योसेफ़ से अन्न खरीदने आने लगे,
क्योंकि सारी पृथ्वी पर अकाल भयंकर हो चुका था.

42 जब याकोब को यह पता चला कि मिस्र देश में अन्न मिल रहा है, तो
उन्होंने अपने बेटों से कहा, "क्यों एक दूसरे का मुख ताक रहे हो? 2
मिस्र देश में अन्न मिल रहा है. जाओ और वहां से अन्न खरीद कर लाओ, कि
हम जीवित रह सकें." 3 तब योसेफ़ के दस भाई अन्न खरीदने मिस्र देश आये.
4 किंतु याकोब ने योसेफ़ के भाई बिन्यामिन को नहीं भेजा क्योंकि उन्हें यह डर
था कि कहीं उस पर कोई कष्ट न आ पड़े. 5 इसलिये इस्राएल के पुत्र अन्न
खरीदने मिस्र पहुंचे, क्योंकि कनान देश में भी अकाल था. 6 योसेफ़ मिस्र देश
के प्रशासक थे. वही पूरे राष्ट्र को अन्न बेचते थे. योसेफ़ के भाई वहां पहुंचे और
उनको प्रणाम किया और उनका मुह ज़मीन की ओर था. 7 योसेफ़ अपने भाइयों
को देखते ही पहचान गए; लेकिन अनजान बनकर वह अपने भाइयों से कठोरता
से बात कर रहे थे. योसेफ़ ने उनसे पूछा, "तुम लोग कहां से आए हो?" उन्होंने
कहा, "कनान देश से, अन्न खरीदने के लिए आए हैं." 8 योसेफ़ ने तो अपने
भाइयों को पहचान लिया था, किंतु भाइयों ने उन्हें नहीं पहचाना था. 9 तब
योसेफ़ को अपने स्वप्न याद आये, जो उन्होंने उनके विषय में देखे थे. उन्होंने
अपने भाइयों से कहा, "तुम लोग भेदिए हो और तुम यहां हमारे देश की दुर्दशा
देखने आए हो." 10 उन्होंने कहा, "नहीं, अधिपति महोदय, आपके ये सेवक
अन्न खरीदने यहां आए हैं. 11 हम सभी एक ही पिता की संतान हैं. हम, सीधे
और सच्चे लोग हैं, कोई जासूस नहीं." 12 योसेफ़ ने फिर भी उनसे कहा, "मैं
नहीं मान सकता. तुम लोग अवश्य हमारे देश की दुर्दशा देखने आए हो!" 13
किंतु वे बार-बार कहते रहे, "आपके ये सेवक बारह भाई हैं, जो एक ही पिता
की संतान हैं, हम कनान के रहनेवाले हैं. हमारा छोटा भाई हमारे पिता के साथ
ही है. हमारा एक भाई अब जीवित नहीं है." 14 योसेफ़ ने उनसे कहा, "कुछ
भी हो, मैं जानता हूं कि तुम लोग जासूस ही हो! 15 अब तुम्हें जांचने का एक
ही तरीका हैं: फ़रोह के जीवन की शपथ, तुम्हारे छोटे भाई को यहां आना होगा.
16 तुममें से कोई जाकर अपने भाई को यहां लेकर आओ; फ़रोह की शपथ, तब
तक तुम सभी बंदी बनकर यहीं रहोगे, और तुमने कितना सच कहा है वह पता
चल जायेगा." 17 तब योसेफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए बंदीगृह में डाल दिया.
18 तीसरे दिन योसेफ़ ने उनसे कहा, "यदि जीवित रहना चाहते हो, तो तुम्हें यह
करना होगा; क्योंकि मुझमें परमेश्वर का भय है: 19 यदि तुम सच्चे हो, तो तुममें
से एक भाई कारागार में रहे और बाकी तुम लोग वापस घर जाओ और अपने
परिवार को अकाल से बचाने के लिए अन्न ले जाओ. 20 और अपने छोटे भाई
को यहां लेकर आना, ताकि वह तुम्हारे शब्दों को साबित कर सके और तुम्हारी
मृत्यु न हो!" उन्होंने इस बात को माना. 21 तब वे आपस में बात करने लगे,
"हम अपने भाई के प्रति दोषी हैं, क्योंकि जब वह हमसे लगातार दया मांगी,
और उसके प्राणों की वेदना दिख रही थी, किंतु हमने ही अपना मन कठोर बना
लिया था. यही कारण कि आज हम पर यह कष्ट आ पड़ा है." 22 रियूबेन ने
कहा, "क्या मैं नहीं कह रहा था, लड़के के विरुद्ध कोई अपराध मत करो? तुमने
मेरी बात न सुनी. अब समय आ गया है; उसकी हत्या का बदला पाने का." 23
उन्हें मालूम नहीं पड़ा कि योसेफ़ उनकी बात को समझ रहे थे. 24 योसेफ़
उनके सामने से अलग जाकर रोने लगे; फिर वापस आकर उन्होंने उन्हीं के
सामने शिमओन को पकड़ा और बांध दिया. 25 फिर योसेफ़ ने आदेश दिया कि
उनके बोरों को अन्न से भर दिया जाए और जो दाम दिया है, वह भी उसी के
बोरे में रख दिया जाए. और योसेफ़ ने कहा कि उनकी यात्रा के लिए आवश्यक
सामान भी उन्हें दे दिया जाए. 26 तब भाइयों ने अपने-अपने गधों पर अन्न के
बोरे रखे और वहां से चल पड़े. 27 जब रास्ते में गधे को चारा देने के उद्देश्य से
उनमें से एक ने बोरा खोला, तो उसे वही रुपया दिखा जिसे उसने उन्हें दिया था.
28 यह उसने अपने भाइयों को बताया, "मैंने जो रुपया दिया था वह मेरे बोरे में
मिला है." वे सभी आश्चर्य करने लगे. और कांपने लगे तथा एक दूसरे की ओर
देखते हुए कहने लगे, "परमेश्वर ने हमारे साथ यह क्या कर दिया है?" 29 जब
वे कनान देश में अपने पिता याकोब के पास पहुंचे, तब उन्होंने अपने पिता
को पूरी घटना बताई. 30 और कहा, "उस देश का अधिपति हमसे कठोर
होकर बात कर रहा था. उसने हमें अपने देश का जासूस समझा. 31 हमने उन्हें
समझाया, 'हम सच्चे लोग हैं; जासूस नहीं. 32 और बताया कि हम बारह भाई
हैं, एक ही पिता की संतान. एक भाई अब जीवित नहीं रहा, तथा हमारा छोटा
भाई पिता के साथ कनान देश में ही है.' 33 "उस देश के अधिपति ने हमसे
कहा, 'तुम्हारी सच्चाई तब प्रकट होगी जब तुम अपने भाइयों में से एक को मेरे
पास छोड़कर जाओगे; और अब अकाल में अपने परिवारों के लिए अन्न

लेकर जाओ. 34 जब तुम अपने छोटे भाई को मेरे पास लाओगे, तब मालूम
पड़ेगा कि तुम जासूस नहीं हो, फिर मैं तुम्हारे भाई को छोड़ दूंगा और तुम इस
देश में व्यापार कर सकोगे.'" 35 जब वे अपने-अपने बोरे खाली कर रहे थे,
उन सभी ने देखा कि सबके बोरों में उनके रुपये की थैलियां रखी हुई है! जब
उन्होंने तथा उनके पिता ने रुपये की थैली देखी, तब वे डर गए. 36 उनके पिता
याकोब ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने तो मुझसे मेरी संतान ही छीन ली है.
योसेफ़ नहीं रहा और अब तुम लोग बिन्यामिन को ले जा रहे हो. यह सब
मेरे विरुद्ध ही हो रहा है!" 37 रियूबेन ने अपने पिता को यह आश्वासन दिया,
"अगर मैं बिन्यामिन को यहां वापस न लाऊं, तो आप मेरे दोनों पुत्रों की हत्या
कर देना. आप बिन्यामिन को मेरे हाथों में सौंप दीजिए, मैं उसे वापस लाऊंगा."
38 किंतु याकोब कहते रहे, "मेरा पुत्र तुम्हारे साथ न जाएगा; क्योंकि उसके
भाई की मृत्यु हो ही चुकी है, इसलिये वह अकेला ही रह गया है. यदि इस यात्रा
में उसके साथ कुछ अनर्थ हुआ तो तुम इस बुढ़ापे में मुझे घोर वेदना के साथ कब्र
में नीचे उतारोगे." **(Sheol h7585)**

43 देश में अब भी अकाल बहुत भयंकर था. 2 जब उनके द्वारा मिस्र देश
से लाया हुआ अन्न खत्म होने लगा, तब उनके पिता ने कहा, "जाओ,
थोड़ा और अनाज खरीद कर लाओ." 3 किंतु यहूदाह ने उनसे कहा, "बड़ी
गंभीरता पूर्वक उस प्रशासक ने हमें चेतावनी दी थी, 'यदि तुम अपने साथ अपने
भाई को न लाओ तो मुझे अपना मुख न दिखाना.' 4 अन्न मोल लेने हम तब
ही वहां जायेंगे, जब आप हमारे साथ हमारे भाई को भी भेजेंगे. 5 यदि आप
उसे हमारे साथ नहीं भेजेंगे, तो हम भी नहीं जाएंगे. क्योंकि उस अधिपति ने
कहा था, 'मेरे सामने ही न आना, यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न होगा.'" 6
इस्राएल ने कहा, "क्यों तुम लोगों ने उसे यह बताकर मेरा अनर्थ कर दिया कि
तुम्हारा एक भाई और भी है?" 7 किंतु उन्होंने अपने पिता को यह बताया,
"वह व्यक्ति ही हमसे हमारे विषय में तथा हमारे संबंधियों के विषय में पूछ रहा
था, 'क्या तुम्हारा पिता अब भी जीवित है? क्या तुम्हारा कोई अन्य भाई भी
है?' हम केवल उसके प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे. हमें क्या मालूम था कि वह हमसे
ऐसा कहेंगे 'अपने उस भाई को यहां ले आओ?'" 8 यहूदाह ने अपने पिता
इस्राएल से कहा, "इस लडके को मेरे साथ भेज दीजिए, तब हम यहां से जाएंगे,
ताकि अकाल में हमारी मृत्यु न हो जाए और आप, और हमारे बच्चे नहीं मरें
और सब जीवित रह सकें. 9 मैं इस लड़के की जवाबदारी अपने ऊपर लेता हूं;
अगर उसे आपके पास लौटा न लाऊं, तो मैं सदा-सर्वदा आपका दोषी बना
रहूंगा. 10 यदि हम देरी न करते तो हम वहां दो बार जाकर आ गए होते." 11
यह सुन उनके पिता इस्राएल ने उनसे कहा, "अगर यही बात है, तो ठीक है,
यही करो. लेकिन आप लोग अपने-अपने बोरों में उस व्यक्ति के लिए उपहार
स्वरूप बलसान, मधु, गोंद, गन्धरस, पिस्ता तथा बादाम ले जाओ. 12 दो गुणा
रुपया भी ले जाओ और जो रुपया तुम्हारे बोरे में वहां से आया था वह भी वापस
कर देना, शायद भूल हो गई होगी. 13 अपने भाई को अपने साथ ले जाओ, देरी
न करो. 14 प्रार्थना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस व्यक्ति के दिल में दया
डाले ताकि वह तुम्हारे उस भाई बिन्यामिन को छोड दे. अगर बिछडना ही है,
तो ऐसा ही होने दो." 15 तब उन्होंने उपहार, दो गुणा रुपया तथा अपने साथ
बिन्यामिन को लिया और मिस्र के लिए रवाना हुए, और योसेफ़ के पास पहुंचे.
16 जब योसेफ़ ने अपने भाइयों के साथ बिन्यामिन को देखा, तब उन्होंने अपने
घर के सेवक से कहा, "इन लोगों को मेरे घर ले जाओ, एक पशु का वध कर
भोजन तैयार करो. ये सभी दोपहर का भोजन मेरे साथ करेंगे." 17 सेवक से
जैसा कहा गया उसने वैसा ही किया और इन भाइयों को योसेफ़ के घर पर ले
गए. 18 योसेफ़ के घर आकर सब डर गए. सबने सोचा, "जो रुपया हम सबके
बोरे में था, वे हम लोगों को अपराधी सिद्ध करने लिए उनका उपयोग करेंगे.
तब वे हम लोगों के गधों को ले लेंगे और हम लोगों को दास बनाएंगे." 19
इसलिये घर के पास आकर उन्होंने योसेफ़ के गृह सेवक से कहा, 20 "महोदय,
विश्वास कीजिए, जब हम पिछले बार भी मात्र अनाज खरीदने ही आये थे 21
तब हमने धर्मशाला पहुंचकर अपने-अपने बोरे खोले, तो हमने देखा कि जो
रुपया हमने यहां अनाज के लिए दिया था वह वापस हमारे बोरे में रखा गया; तब
हम वह रुपया अपने साथ लाए हैं. 22 दुबारा खरीदने के लिए भी रुपया लाए हैं.
हमें कुछ भी नहीं पता कि किसने रुपया हमारे बोरों में रखा था." 23 उस सेवक
ने उनसे कहा, "शांत हो जाइए, डरिये नहीं, आपके परमेश्वर, तुम्हारे पिता के
परमेश्वर ने आपके बोरों में रुपया रखा होगा. मुझे तो रुपया मिल चुका है." यह
कहते हुए वह शिमओन को उनके पास बाहर लाए. 24 जब सेवक उन्हें योसेफ़
के घर के भीतर ले गये, उसने उन्हें पांव धोने के लिए पानी दिया, सबने अपने
पांव धोए, सेवक ने उनके गधों को चारा भी दिया. 25 दोपहर में योसेफ़ के घर
पहुंचने से पहले योसेफ़ को देने के लिए जो भेंट वे लाए थे उन्हें तैयार किया
क्योंकि योसेफ़ इन सबके साथ खाना खाने आनेवाले थे. 26 योसेफ़ के घर
पहुंचते ही जो भेंट वे उनके लिए लाए थे उन्हें उनको दिया और प्रणाम किया.
27 योसेफ़ ने सबका हाल पूछा और कहा, "क्या तुम्हारे बूढ़े पिता जिनके विषय
में तुमने मुझे बताया था वह जीवित हैं?" 28 उन्होंने कहा, "हमारे पिता ठीक
हैं, अभी तक जीवित हैं." और आदर के साथ सिर झुकाकर प्रणाम किया. 29
तब योसेफ़ ने बिन्यामिन को देखा, योसेफ़ ने पूछा, "क्या यही तुम्हारा छोटा
भाई है, जिसके विषय में तुमने मुझसे बताया था?" योसेफ़ ने कहा, "मेरे पुत्र,
तुम पर परमेश्वर की कृपा बनी रहे." 30 यह कहकर योसेफ़ एकदम उठकर
चले गए, क्योंकि अपने भाई को देखकर प्यार से उनकी आंखें भर आईं और
एकांत में जाकर रोने लगे. 31 वे अपना मुंह धोकर वापस बाहर आये और अपने
आपको संभाला और कहा, "खाना परोसो." 32 योसेफ़ खाना खाने अलग बैठ
गए और भाइयों को दूसरी ओर अलग बिठाया, क्योंकि मिस्री और इब्री एक
साथ भोजन नहीं कर सकते. 33 योसेफ़ के भाइयों को उनके सामने ही अपनी-
अपनी आयु के क्रम से पंक्ति में बैठा गया; सबके पहले सबसे बड़ा, फिर उसका
छोटा, फिर उसका छोटा. सभी भाई एक दूसरे को आश्चर्य से देखते रहे. 34
योसेफ़ ने अपने लिए परोसे गए भोजन में से सबको दिया, लेकिन बिन्यामिन को
पांच गुणा ज्यादा दिया गया. सबने योसेफ़ के साथ भरपेट खाया और पिया.

44 योसेफ़ ने अपने घर के भंडारी को आदेश दिया: "इनके बोरों को जितना
वे ले जा सकते हैं उतने अन्न से भर दो और हर एक का दिया गया धन
उसी के बोरे में डाल देना. 2 तब सबसे छोटे भाई के बोरे में मेरा चांदी का
कटोरा तथा अन्न के लिए लिया गया धन भी रख देना." भंडारी ने योसेफ़ के
आदेश के अनुरूप ही किया. 3 भोर होते ही उन्हें उनके अपने-अपने गधों के
साथ विदा कर दिया गया. 4 वे नगर के बाहर निकले ही थे कि योसेफ़ ने अपने
घर के भंडारी को आदेश दिया, "उठो, उनका पीछा करो. जब तुम उन तक
पहुंच जाओ, तो उनसे कहना, 'भलाई का बदला तुम बुरे से क्यों दे रहे हो? 5
क्या यह वही पात्र नहीं है, जिससे हमारे स्वामी पीते हैं, जिससे वह भावी जानते
हैं? आप लोगों ने यह उचित नहीं किया है.'" 6 वह भंडारी उन तक जा पहुंचा
और उनसे वही सब कह दिया. 7 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "मेरे स्वामी, आप
यह क्या कह रहे हैं? आपके सेवक ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते! 8 आप
देख लीजिए कि वह राशि, जो हमारे साथ चली गई थी, कनान देश से हमने
आपको लौटा दी है. तो हम आपके स्वामी के आवास से चांदी अथवा स्वर्ण
क्यों चुराते? 9 जिस किसी के पास वह पात्र पाया जाए, उसे प्राण-दंड दे दिया
जाए, और हम सभी आपके अधिपति के दास बन जाएंगे." 10 भंडारी ने उनसे
कहा, "ठीक है, जैसा तुम लोगों ने कहा है, वैसा ही होगा, जिसके पास से वह
पात्र पाया जाएगा, वह मेरा दास हो जाएगा, शेष निर्दोष होंगे." 11 शीघ्र ही

उन्होंने अपने-अपने बोरे नीचे उतारे. हर एक ने अपना बोरा खोल दिया. **12**
उसने खोजना प्रारंभ किया, सबसे बड़े से सबसे छोटे के क्रम में, और कटोरा
बिन्यामिन के बोरे में पाया गया. **13** यह देख हर एक ने अपने-अपने वस्त्र फाड़
डाले, गधों पर सामग्री लादी और नगर को लौट गए. **14** जब यहूदाह तथा
उसके भाई योसेफ़ के आवास पर पहुंचे, योसेफ़ वहीं थे. वे उनके समक्ष नत
हुए. **15** योसेफ़ ने उनसे कहा, “यह क्या किया है आप लोगों ने? क्या आपको
यह बोध नहीं कि मैं अपने इस पद पर होने के कारण वास्तव में भविष्य ज्ञात
कर सकता हूं?” **16** इसका उत्तर यहूदाह ने दिया, “हम अपने स्वामी से क्या
कहें? हमारे पास तो कहने के लिए शब्द ही नहीं हैं. हम स्वयं को निर्दोष
प्रमाणित ही नहीं कर सकते. परमेश्वर ही ने आपके सेवकों की पापिष्ठता ज्ञात
कर ली है. देखिए, हम अपने अधिपति के दास होने के लिए तैयार हैं; हम सभी
तथा वह जिसके बोरे में वह कटोरा पाया गया है.” **17** योसेफ़ ने उत्तर दिया,
“मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता. मेरा दास वही व्यक्ति बनाया जाएगा, जिसके
बोरे में वह कटोरा पाया गया है. शेष आप सभी अपने पिता के पास शांतिपूर्वक
लौट जाएं.” **18** यह सुन यहूदाह योसेफ़ के निकट गए और उनसे आग्रह किया,
“मेरे अधिपति महोदय, क्या आप अपने सेवक को अपने कानों में कुछ कहने
की अनुमति प्रदान करेंगे? कृपया आप मुझ अपने सेवक पर क्रुद्ध न हों, क्योंकि
आप तो पद में फ़रोह के समान हैं. **19** मेरे अधिपति, आपने अपने सेवकों से
पूछा था, ‘क्या तुम्हारे पिता अथवा भाई हैं?’ **20** हमने अपने अधिपति को उत्तर
दिया था, ‘हमारे वयोवृद्ध पिता हैं तथा उनकी वृद्धावस्था में एक बालक भी है.
हां, उसके भाई की मृत्यु हो चुकी है. अब वह अपनी माता का एकमात्र पुत्र रह
गया है. वह अपने पिता का अत्यंत प्रिय पुत्र है.’ **21** “तब महोदय ने अपने इन
सेवकों को आदेश दिया था, ‘उस पुत्र को यहां ले आओ, कि मैं उसे देख सकूं.’
22 किंतु हमने अपने अधिपति से निवेदन किया था, ‘यह किशोर अपने पिता से
दूर नहीं रह सकता, क्योंकि यदि उसे पिता से दूर किया जाएगा, तो उसके पिता
की मृत्यु हो जाएगी.’ **23** किंतु आपने तो अपने इन सेवकों से कहा था, ‘यदि
तुम्हारा वह कनिष्ठ भाई तुम्हारे साथ यहां नहीं आएगा, तो तुम मेरा मुख न
देखोगे.’ **24** तब हुआ यह कि जब हम लौटकर अपने पिता के यहां पहुंचे, हमने
उन्हें अपने अधिपति, आप का आदेश सुना दिया. **25** “हमारे पिता का आदेश
था, ‘पुनः मिस्र जाकर हमारे उपभोग के लिए कुछ अन्न ले आओ.’ **26** हमने
प्रतिवाद किया, ‘हम वहां बिना हमारे कनिष्ठ भाई के नहीं जा सकते; क्योंकि
हम अधिपति की उपस्थिति में बिना अपने कनिष्ठ भाई के प्रवेश कर हीं नहीं
सकेंगे.’ **27** “आपके सेवक हमारे पिता ने हमें स्मरण दिलाया, ‘तुम्हें स्मरण ही
है कि मेरी पत्नी से मुझे दो पुत्र पैदा हुए थे, **28** एक तो मैं खो चुका हूं. निश्चय ही
वह कोई हिंसक पशु द्वारा फाड डाला गया है, तब से मैंने उसे नहीं देखा है. **29**
अब यदि तुम इस कनिष्ठ को भी मुझसे दूर ले जाना चाह रहे हो और यदि उसका
भी कुछ अनिष्ट हो जाता है, तो इस वृद्धावस्था में तुम मुझ पर विषादपूर्ण मृत्यु ले
आओगे.’ **(Sheol h7585)** **30** “इसलिये अब आपके सेवक मेरे पिता के पास
लौटूंगा और यदि यह किशोर हमारे साथ न होगा तो; वस्तुस्थिति यह है कि हमारे
पिता का प्राण इस किशोर के प्राणों से संयुक्त है, **31** जब वह यह पाएंगे, कि हम
इस किशोर को साथ लेकर नहीं लौटे हैं, तो उनके प्राण ही निकल जाएंगे. हम,
आपके सेवक, हमारे पिता को उनकी वृद्धावस्था में घोर शोक के साथ अधोलोक
भेज देंगे. **(Sheol h7585)** **32** मैं आपका सेवक, अपने पिता के समक्ष इस
किशोर के लिए प्रतिभूति होकर आया हूं. मैंने पिता को आश्वासन दिया था,
‘यदि मैं उसे लौटाकर आपके समक्ष लाने में असमर्थ पाया जाऊं, तो मैं अपने
पिता के समक्ष सदा-सर्वदा के लिए दोषी बना रहूंगा.’ **33** “तब हे स्वामी, अब
कृपा कर इस किशोर के स्थान पर मुझे अपना दास बना लीजिए. **34** क्योंकि मैं
अब अपने पिता के समक्ष कैसे जा सकता हूं, यदि यह किशोर हमारे साथ न
होगा? मुझे भय है कि इससे मेरे पिता पर अनिष्ट ही आ पड़ेगा!”

45 यहां तक आकर योसेफ़ का नियंत्रण टूट गया. वह वहां उपस्थित सभी
व्यक्तियों के समक्ष चिल्ला उठे, “सब यहां से बाहर चले जाएं.”
सब वहां से बाहर चले गए. तब योसेफ़ ने स्वयं को अपने भाइयों पर अपने
वास्तविक रूप में प्रकट किया. **2** योसेफ़ का क्रंदन इतना प्रबल था कि बाहर
मिस्री अधिकारियों ने इसे सुन लिया तथा इसके विषय में फ़रोह के परिवार ने
भी सुन लिया. **3** तब योसेफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं योसेफ़ हूं! क्या मेरा
पिताजी अब भी जीवित हैं?” किंतु उनके भाई अवाक रह गए थे, उनके लिए
योसेफ़ के समक्ष कुछ भी कहना असंभव हो गया था. **4** तब योसेफ़ ने अपने
भाइयों से अनुरोध किया, “मेरे निकट आइए” वे उनके निकट गए तब योसेफ़ ने
उनसे कहा, मैं आपका भाई योसेफ़ हूं, जिसे आप लोगों ने मिस्र देश से आनेवाले
व्यापारियों के हाथों में बेच दिया था! **5** अब आप न तो स्वयं के लिए शोकित
हों और न ही क्रुद्ध, कि आपने मुझे यहां के लिए विक्रीत कर दिया था; क्योंकि
परमेश्वर ही मुझे आपके पूर्व यहां ले आए हैं, कि जीवन बचाए जाएं. **6** क्योंकि
दो वर्ष से संपूर्ण देश में अकाल व्याप्त है तथा यह पांच वर्ष और भी व्याप्त रहेगा.
तब इन वर्षों में न तो हल चलाए जा सकेंगे और न ही किसी प्रकार की कटनी
संभव हो सकेगी. **7** परमेश्वर ने मुझे आप लोगों के पूर्व ही यहां भेज दिया था,
कि वह आप लोगों के लिए पृथ्वी पर एक शेषांश बचा रखें, आपको एक बडा
बचाव द्वारा जीवित रखा जा सके. **8** “इसलिये, वास्तव में, मुझे यहां आप लोगों
के द्वारा नहीं, परंतु परमेश्वर द्वारा भेजा गया था. परमेश्वर ने ही मुझे फ़रोह के
पिता का स्थान दिया है, मुझे फ़रोह की समस्त गृहस्थी का प्रभारी तथा पूरे मिस्र
देश पर प्रशासक नियुक्त कर दिया है. **9** अब आप लोग अविलम्ब मेरे पिता के
पास जाकर उनसे कहें, ‘आपके पुत्र योसेफ़ का यह आग्रह है: परमेश्वर ने मुझे
समग्र मिस्र देश का प्रशासक नियुक्त किया है. आप यहां मेरे पास आ जाएं. अब
विलंब न करें. **10** आप लोग आकर गोशेन प्रदेश में बस जाएं और मेरे निकट ही
आप, आपकी संतान, आपकी संतान की संतान, आपके पशुवृन्द, आपकी
भेड़-बकरी तथा आपकी संपूर्ण संपत्ति भी. **11** वहां मैं आपके लिए भोजन की
व्यवस्था करता रहूंगा, क्योंकि अकाल अभी पांच वर्ष और रहेगा, जिसके
कारण आप वहां आपकी संपूर्ण गृहस्थी के साथ पूर्णतः साधन विहीन हो जाएंगे.’
12 “अब आप लोग स्वयं देख लीजिए और यहां स्वयं मेरा भाई बिन्यामिन भी
यह देख रहा है कि यह स्वयं मैं आपसे कह रहा हूं. **13** अब आप लोग जाइए
और जाकर मिस्र में मेरे इस वैभव का उल्लेख वहां मेरे पिता से कीजिए तथा उस
सबका भी, जो स्वयं आपने यहां देखा है. आवश्यक है कि अब आप अति शीघ्र
जाएं और मेरे पिता को यहां ले आएं.” **14** तब योसेफ़ अपने भाई बिन्यामिन को
गले लगाकर रोते रहे तथा बिन्यामिन भी उनसे गले लगकर रोते रहे. **15** फिर
योसेफ़ ने अपने सभी भाइयों का चुंबन लिया और उनके साथ रोते रहे; इसके
बाद ही उनके भाइयों ने योसेफ़ के साथ बात करना आरंभ किया. **16** फ़रोह के
परिवार में भी यह समाचार सुना गया कि योसेफ़ के भाई आए हुए हैं, जिसे
सुनकर फ़रोह तथा उसके दासों में उल्लास की लहर दौड़ गई. **17** तब फ़रोह ने
योसेफ़ के समक्ष प्रस्ताव रखा, “अपने भाइयों से यह कहो, ‘अपने-अपने गधों
पर सामान रखें और कनान देश चले जाएं, **18** वहां से अपने पिता एवं समस्त
गृहस्थी लेकर यहां मेरे पास आ जाएं, मैं उन्हें मिस्र देश का सर्वोत्तम ही प्रदान
करूंगा और उनका भोजन इस देश की प्रचुरता में से ही होगा.’ **19** “और अब,
योसेफ़ तुम्हारे लिए आदेश यह है; ‘ऐसा करो: यहां मिस्र देश से स्त्रियों एवं
बालकों के लिए वाहन ले जाओ और अपने पिता को यहां ले आओ. **20** अपने
सामान की चिंता न करना, क्योंकि मिस्र देश में जो कुछ सर्वोत्तम है, वह सब
तुम्हारा ही है.’” **21** इस्राएल के पुत्रों ने ठीक यही किया. फ़रोह के आदेश के

अनुरूप योसेफ़ ने उन्हें वाहन प्रदान कर दिए तथा यात्रा के लिए आवश्यक
सामग्री भी दी. 22 योसेफ़ ने हर एक को एक-एक जोड़ी वस्त्र भी दिया, किंतु
बिन्यामिन को तीन सौ चांदी मुद्राएं और पांच जोड़ी वस्त्र दिये. 23 अपने पिता के
लिए योसेफ़ ने ये सभी वस्तुएं भेजीं: दस गधे, जिन पर मिस्र की सर्वोत्तम वस्तुएं
रख दी गई थीं, दस गधियां, जिन पर भोज्य सामग्री तथा अन्न रख दिया गया
था, कि यात्रा के समय उनके पिता का भरण-पोषण होता रहे. 24 इस प्रकार
योसेफ़ ने अपने भाइयों को कनान देश के लिए भेज दिया. जब वे विदा हो ही
रहे थे, तब योसेफ़ ने उनसे आग्रह किया, "यात्रा मध्य आपस में झगड़ना नहीं."
25 इसलिये वे मिस्र देश से अपने पिता के पास कनान में पहुंच गए, 26 उन्होंने
अपने पिता को सूचित किया, "योसेफ़ जीवित है! और सत्य तो यह है कि वह
समस्त मिस्र देश का प्रशासक है." यह सुन याकोब अवाक रह गए—उन्हें अपने
पुत्रों की बातों पर विश्वास ही न हुआ. 27 तब उन्होंने अपने पिता को योसेफ़
की कही हुई वह सारी बातें बताई जो उन्होंने उनसे कही थीं. जब उन्होंने
योसेफ़ द्वारा भेजें वाहन देखे, जो उनको ले जाने के लिए भेजे गए थे, तब उनके
पिता याकोब के जी में जी आया. 28 तब इस्राएल ने कहा, "मैं आश्वस्त हूं! मेरा
पुत्र योसेफ़ जीवित है, अपनी मृत्यु के पूर्व वहां जाकर मैं उसे देखूंगा."

46 इस्राएल अपनी पूरी संपत्ति लेकर वहां से रवाना हुए. जब वे बेअरशेबा
पहुंचे, उन्होंने अपने पिता यित्सहाक के परमेश्वर को बलि चढ़ाई. 2
उस रात परमेश्वर ने इस्राएल को दर्शन में कहा "हे, याकोब! याकोब!" उसने
कहा, "कहिये, क्या आज्ञा है?" 3 उन्होंने कहा, "मैं परमेश्वर, तुम्हारे पिता का
परमेश्वर हूं; मिस्र जाने से मत डरो, तुम वहां जाओ और मैं वहां तुमसे एक बड़ी
जाति बनाऊंगा. 4 मिस्र तक मैं तुम्हारे साथ साथ चलूंगा और निश्चयतः मैं
ही तुम्हें वहां से लौटा भी लाऊंगा. तुम्हारी मृत्यु के समय योसेफ़ तुम्हारे पास
होगा." 5 तब इस्राएल के पुत्रों ने अपने पिता याकोब, अपने-अपने बालकों एवं
अपनी-अपनी पत्नियों को उस गाड़ी में बैठा दिया, जिसे फ़रोह ने भेजी थी. 6
इन्होंने अपने साथ अपने पशु एवं पूरी संपत्ति ले ली थी, जो कनान देश में
उन्होंने अर्जित थी. याकोब तथा उनके सभी लोग मिस्र देश पहुंच गये. 7 याकोब
अपने पुत्र तथा उनके पौत्र, उनकी पुत्रियां तथा उनकी पौत्रियां—सभी को अपने
साथ मिस्र लेकर आये. 8 इस्राएल के पुत्रों के नाम (याकोब तथा उनके पुत्र) जो
मिस्र देश में आए थे: रियूबेन, याकोब का बड़ा बेटा. 9 रियूबेन के पुत्र: हनोख,
पल्लू, हेज़रोन तथा कारमी. 10 शिमओन के पुत्र: येमुएल, यामिन, ओहद,
याकिन, ज़ोहार, तथा एक कनानी स्त्री से पैदा शाऊल. 11 लेवी के पुत्र: गेरशोन,
कोहाथ तथा मेरारी. 12 यहूदाह के पुत्र: एर, ओनान, शेलाह, पेरेज़ तथा ज़ेराह
(किंतु एर तथा ओनान की मृत्यु कनान देश में ही हो चुकी थी). पेरेज़ के पुत्र:
हेज़रोन एवं हामुल. 13 इस्साखार के पुत्र: तोला, पुव्वाह, याशूब तथा शिम्रोन.
14 ज़ेबुलून के पुत्र: सेरेद, एलोन तथा याहलील. 15 ये सभी लियाह के पुत्र
थे जो याकोब से पद्दन-अराम में पैदा हुए थे; इनके अतिरिक्त उनकी एक
पुत्री दीनाह भी थी. उनके पुत्र-पुत्रियों की संख्या तैंतीस थी. 16 गाद के पुत्र:
ज़िफिओन, हग्गी, शूनी, एज़बोन, एरी, अरोदी तथा अरेली. 17 आशेर के पुत्र:
इमनाह, इशवाह, इशवी, बेरियाह तथा उनकी बहन सेराह. बेरियाह के पुत्र: हेबेर
तथा मालखिएल. 18 ये सभी ज़िलपाह से जन्मे पुत्र हैं. ज़िलपाह लाबान द्वारा
अपनी पुत्री लियाह को दी गईं दासी थी. उससे याकोब के सोलह जन पैदा हुए
थे. 19 याकोब की पत्नी राहेल: योसेफ़ तथा बिन्यामिन जन्मे. 20 मिस्र देश में
योसेफ़ के दो पुत्र मनश्शेह तथा एफ्राईम जन्मे. ये सभी योसेफ़ की पत्नी असेनाथ
से जन्मे थे जो ओन के पुरोहित पोतिफेरा की पुत्री थी. 21 बिन्यामिन के पुत्र:
बेला, बेकेर, अशबेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पिम, हुप्पिम तथा अर्द. 22
ये राहेल द्वारा याकोब के पुत्र हैं, जो चौदह व्यक्ति थे. 23 दान का पुत्र: हुशीम.
24 नफताली के पुत्र: यहसेल, गूनी, येसेर तथा शिल्लेम. 25 ये सभी अपनी पुत्री
राहेल को लाबान द्वारा दी गईं दासी बिलहाह से जन्मे याकोब के पुत्र थे. ये सभी
कुल सात व्यक्ति थे. 26 याकोब के परिवार के लोग जो मिस्र देश में आ गए
थे—जो उनके वंश में जन्मे थे. इनमें याकोब की बहुएं गिनी गयी नहीं थीं. ये
सभी छियासठ व्यक्ति थे 27 योसेफ़ के पुत्र, जो मिस्र देश में जन्मे हुए थे वह दो
थे. याकोब के पूरे परिवार के लोग जो मिस्र देश में आये थे, वे कुल सत्तर थे.
28 याकोब ने यहूदाह को पहले योसेफ़ के पास गोशेन के लिए मार्गदर्शन पाने के
लिए भेजा. जब यहूदाह गोशेन प्रदेश में पहुंच गया, 29 तब योसेफ़ ने अपना रथ
तैयार करवाया कि वह अपने पिता इस्राएल से भेंट करने गोशेन पहुंच जाएं. जैसे
ही उनके पिता उनके पास आये, वह उनके गले लगकर बहुत देर तक रोते रहे.
30 फिर इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, "अब मैं शांतिपूर्वक अपने प्राण त्याग सकता
हूं, क्योंकि मैंने तुम्हें देख लिया है, कि तुम जीवित हो." 31 योसेफ़ ने अपने
भाइयों तथा अपने पिता के सभी लोगों से कहा, "मैं जाकर फ़रोह को बताता हूं,
'कनान देश से मेरे भाई तथा मेरे पिता का परिवार यहां पहुंच चुका है. 32 वे
सभी चरवाहे हैं; और पशु पालते हैं. वे अपने साथ पशु, भेड़-बकरी तथा अपनी
पूरी संपत्ति लेकर आए हैं.' 33 योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों से कहा कि
अगर फ़रोह आप लोगों से पूछे, 'आप लोग क्या करते हैं?' 34 तो कहना कि
हम चरवाहे हैं, और 'हमारे पूर्वज यही काम करते थे.' इससे आपके लिए गोशेन
में रहना आसान हो जाएगा. क्योंकि मिस्र के लोग चरवाहों से नफ़रत करते हैं."

47 योसेफ़ ने जाकर फ़रोह को बताया, "मेरे पिता तथा मेरे भाई अपने सब
भेड़-बकरी, पशु तथा अपनी पूरी संपत्ति लेकर कनान देश से आ चुके हैं
तथा वे गोशेन देश में हैं." 2 योसेफ़ ने अपने पांच भाइयों को फ़रोह के सामने
प्रस्तुत किया. 3 फ़रोह ने उनके भाइयों से पूछा, "आप लोग क्या काम करते
हैं?" उन्होंने फ़रोह से कहा, "हम हमारे पूर्वजों की ही तरह पशु पालते हैं. 4
अब इस देश में कुछ समय के लिये रहने आए हैं, क्योंकि कनान में भयंकर
अकाल होने के कारण आपके दासों के पशुओं के लिए चारा नहीं है. तब कृपा
कर हमें गोशेन में रहने की अनुमति दे दीजिए." 5 फ़रोह ने योसेफ़ से कहा,
"तुम्हारे पिता एवं तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आए हैं, 6 पूरा मिस्र देश तुम्हारे लिए
खुला है; अपने पिता एवं अपने भाइयों को गोशेन के सबसे अच्छे भाग में रहने
की सुविधा दे दो. और भाइयों में से कोई समझदार हो तो उसे मेरे पशुओं की
देखभाल की पूरी जवाबदारी दे दो." 7 फिर योसेफ़ पिता याकोब को भी फ़रोह
से मिलाने लाए. याकोब ने फ़रोह को आशीष दी. 8 फ़रोह ने याकोब से पूछा,
"आपकी उम्र क्या है?" 9 याकोब ने फ़रोह को बताया "मेरी तीर्थ यात्रा के वर्ष
एक सौ तीस रहे हैं. मेरी आयु बहुत छोटी और कष्टभरी रही है और वह मेरे
पूर्वजों सी लंबी नहीं रही है!" 10 याकोब फ़रोह को आशीष देकर वहां से चले
गये. 11 योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों को फ़रोह की आज्ञा अनुसार मिस्र में
सबसे अच्छी जगह रामेसेस में ज़मीन दी. 12 योसेफ़ ने अपने पिता, अपने
भाइयों तथा पिता के पूरे परिवार को उनके बच्चों की गिनती के अनुसार भोजन
उपलब्ध कराया. 13 पूरे देश में अकाल के कारण भोजन की कमी थी. मिस्र
देश तथा कनान देश अकाल के कारण भूखा पड़ा था. 14 मिस्र देश तथा कनान
देश का सारा धन योसेफ़ ने फ़रोह के राजमहल में अनाज के बदले इकट्ठा कर
लिया था. 15 जब लोगों के पास अनाज खरीदने के लिए रुपया नहीं था तब
वह योसेफ़ के पास आकर बिनती करने लगे, "हमें खाने को भोजन दीजिए. हम
आपकी आंखों के सामने क्यों मरें? हमारा रुपया सब खत्म हो गया है." 16
योसेफ़ ने कहा, "यदि तुमारा रुपया खत्म हो गया हैं तो तुम अपने पशु हमें देते
जाओ और हम तुम्हें उसके बदले अनाज देंगे." 17 इसलिये वे अपने पशु
योसेफ़ को देने लगे; और योसेफ़ उन्हें उनके घोड़े, पशुओं, भेड़-बकरी तथा
गधों के बदले में अनाज देने लगे. योसेफ़ ने उस वर्ष उनके समस्त पशुओं के
बदले में उनकी भोजन की व्यवस्था की. 18 जब वह वर्ष खत्म हुआ तब अगले

वर्ष वह योसेफ़ के पास आए और उनसे कहा, “स्वामी यह सच्चाई आपसे छुपी
नहीं रह सकती कि हमारा सारा रुपया खर्च हो गया हैं और पशु भी आपके हो
गये है; अब हमारा शरीर और हमारी ज़मीन ही बच गई है. 19 क्या हम और
हमारी ज़मीन आपकी आंखों के सामने नाश हो जायेंगी? अब भोजन के बदले
आप हमारी ज़मीन को ही खरीद लीजिए, और हम अपनी ज़मीन के साथ फ़रोह
के दास बन जाएंगे. हमें सिर्फ बीज दे दीजिये कि हम नहीं मरें परंतु जीवित रहें
कि हमारी भूमि निर्जन न हो.” 20 इस प्रकार योसेफ़ ने मिस्र देश की पूरी ज़मीन
फ़रोह के लिये खरीद ली. सभी मिस्रवासियों ने अपनी भूमि बेच दी क्योंकि
अकाल भयंकर था और ज़मीन फ़रोह की हो गई. 21 योसेफ़ ने मिस्र के एक
छोर से दूसरे छोर तक लोगों को, दास बना दिया. 22 सिर्फ पुरोहितों की भूमि
को नहीं खरीदा, क्योंकि उनको फ़रोह की ओर से निर्धारित भोजन मिलता था
और वह उनके जीने के लिये पर्याप्त था, इसलिये उन्होंने अपनी ज़मीन नहीं
बेची. 23 योसेफ़ ने लोगों से कहा, “मैंने फ़रोह के लिए आपको तथा आपकी
भूमि को आज खरीद लिया है, अब आपके लिये यह बीज दिया है कि आप
अपनी ज़मीन पर इस बीज को बोना और खेती करना. 24 और जब उपज
आयेगी उसमें से फ़रोह को पांचवां भाग देना होगा और शेष चार भाग आपके
होंगे; ज़मीन में बोने के बीज के लिये और आप, आपके परिवार और आपके
बच्चों के भोजन के लिये होंगे.” 25 तब लोगों ने कहा, “आपने हमारा जीवन
बचा लिया; यदि हमारे स्वामी की दया हम पर बनी रहे और हम फ़रोह के दास
बने रहेंगे.” 26 योसेफ़ ने जो नियम बनाया था कि उपज का पांचवां भाग फ़रोह
को देना ज़रूरी है वह आज भी स्थापित है. सिर्फ पुरोहितों की भूमि फ़रोह की
नहीं हुई. 27 इस्राएल मिस्र देश के गोशेन नामक जगह पर रह रहे थे, वहां वे
फलते फूलते धन-संपत्ति अर्जित करते गये और संख्या में कई गुणा बढ़ते गये.
28 मिस्र में याकोब को सत्रह साल हो चुके थे, और वे एक सौ सैंतालीस वर्ष तक
रहे. 29 जब इस्राएल मरने पर थे, उन्होंने अपने पुत्र योसेफ़ को पास बुलाया
और कहा, “यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी जांघ के नीचे अपना हाथ
रखकर शपथ लो, कि तुम मुझसे करुणा और विश्वास का बर्ताव करोगे और मुझे
मिस्र में नहीं दफ़नाओगे, 30 जब मैं चिर-निद्रा में अपने पूर्वजों से जा मिलूं, तब
मुझे मिस्र देश से ले जाना और पूर्वजों के साथ उन्हीं के पास मुझे दफ़नाना.”
योसेफ़ ने कहा, “मैं ऐसा ही करूंगा जैसा आपने कहा है.” 31 याकोब ने कहा,
“मुझसे वायदा करो!” योसेफ़ ने उनसे वायदा किया और इस्राएल खाट के
सिरहाने की ओर झुक गए.

48 कुछ दिन बाद योसेफ़ को बताया गया, “आपके पिता की तबियत ठीक
नहीं है.” यह सुन योसेफ़ अपने दोनो पुत्रों; मनश्शेह तथा एफ्राईम को
लेकर अपने पिता से मिलने निकल पड़े. 2 किसी ने याकोब को बता दिया,
“योसेफ़ आपसे मिलने आ रहे हैं.” तब इस्राएल अपनी सारी शक्ति समेटकर
खाट से उठकर बैठ गये. 3 और योसेफ़ से बात करने लगे और कहा, “कनान
देश के लूज़ में सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे दर्शन देकर आशीष दी. 4 और
कहा, ‘मैं तुम्हें फलवंत करूंगा और तुझे राज्य-राज्य के समूह का मुखिया
बनाऊंगा और यह देश तुम्हें और बाद में तुम्हारे वंश को सदाकाल के लिये
दूंगा.’ 5 “तुम्हारे ये दोनो पुत्र, जिनका जन्म मिस्र में मेरे आने से पहले हुआ
है, वे मेरी संतान हैं; एफ्राईम तथा मनश्शेह मेरे कहलाएंगे, जैसे रियूबेन तथा
शिमओन मेरे हैं. 6 किंतु तुम्हारी संतान, जो इन दोनों के बाद जन्मेगी, वह
तुम्हारी कहलाएगी. वे अपने भाइयों के प्रदेशों के भीतर मीरास प्राप्त करेंगे. 7
जब मैं पद्दन से आ रहा था और एफ़राथा पहुंचने ही वाले थे कि राहेल की मृत्यु
का दुःख मुझ पर आन पड़ा. मैंने उन्हें एफ़राथा के रास्ते अर्थात् बेथलेहेम में
दफनाया.” 8 योसेफ़ के पुत्रों को देखकर इस्राएल ने पूछा, “कौन हैं ये?” 9
योसेफ़ ने अपने पिता से कहा, “ये मेरे पुत्र हैं, जो मुझे इस देश में परमेश्वर ने
दिये.” तब याकोब ने कहा, “मेरे पास उन्हें लाओ, कि मैं उन्हें आशीष दूं.” 10
इस्राएल की आंखें उम्र के कारण कमजोर हो गयीं थीं कि वे देख नहीं सकते
थे. योसेफ़ अपने पुत्रों को अपने पिता के पास ले गए. याकोब ने उन्हें चूमा और
उन्हें गले लगाया. 11 योसेफ़ को देखते हुए इस्राएल ने कहा, “मैंने यह न सोचा
था कि तुम्हें फिर से देख पाऊंगा, किंतु परमेश्वर ने मुझे तुम्हारी संतान तक देखने
का सौभाग्य दिया.” 12 योसेफ़ ने अपने पुत्रों को अपने पिता की गोद से उतारा
और झुककर मुंह के बल प्रणाम किया. 13 फिर योसेफ़ दोनों को इस्राएल के
नजदीक ले गये; दाएं हाथ से वह एफ्राईम तथा बाएं हाथ से मनश्शेह को पकड़े
हुए थे. एफ्राईम इस्राएल के बाईं ओर था तथा मनश्शेह इस्राएल के दाईं ओर. 14
किंतु इस्राएल ने अपना दायां हाथ छोटे बेटे एफ्राईम के सिर पर तथा अपना बायां
हाथ मनश्शेह के सिर पर रखा. याकोब ने जानबूझकर ऐसा किया. 15 योसेफ़
को आशीष देते हुए इस्राएल ने कहा, “परमेश्वर, जिसके सम्मुख मेरे पूर्वज
अब्राहाम तथा यित्सहाक चलते थे, वही परमेश्वर, जीवन भर आज तक मेरा
चरवाहा बनकर रहे हैं, 16 वह स्वर्गदूत, जिसने हर पल मेरी रक्षा की है, वही
दोनों बच्चों को आशीषित करें. और ये दोनों मेरे, मेरे पिता अब्राहाम तथा मेरे
पिता यित्सहाक, के नाम को ऊंचा करें. और पृथ्वी में बढ़ते जाये.” 17 जब
योसेफ़ ने देखा कि उनके पिता ने अपना दायां हाथ एफ्राईम के सिर रखा है तो
उन्हें अच्छा नहीं लगा वे अपने पिता का दायां हाथ पकड़कर एफ्राईम के सिर
पर से हटाकर मनश्शेह के सिर पर रखने लगे. 18 योसेफ़ ने अपने पिता से कहा,
“वह नहीं, पिताजी, बड़ा बेटा यह है; आप अपना दायां हाथ इस पर रख
दीजिए.” 19 किंतु उनके पिता ने कहा, “मुझे पता है मेरे पुत्र; यह भी महान बन
जाएगा, और बढ़ेगा तो भी उसका छोटा भाई उससे महान हो जाएगा तथा उससे
कई जातियां निकलेंगी.” 20 उस दिन इस्राएल ने उन्हें आशीष दी और कहा,
“इस्राएल के लोग तुम्हारा नाम लेकर ऐसे कहेंगे: ‘परमेश्वर तुम्हें एफ्राईम तथा
मनश्शेह के समान बना दें.’” यह कहते हुए याकोब ने एफ्राईम को मनश्शेह से
अधिक श्रेष्ठ स्थान दे दिया. 21 फिर इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, “सुनो, अब मेरी
मृत्यु का समय आ गया है, लेकिन परमेश्वर तुम्हारे साथ साथ रहेंगे और तुम्हें
अपने पूर्वजों के देश में वापस ले जाएंगे. 22 मैं तुम्हें तुम्हारे भाइयों से बढ़कर
हिस्सा ज्यादा दे रहा हूं—वह भाग, जो मैंने अमोरियों से अपनी तलवार एवं
धनुष के द्वारा पाया था.”

49 तब याकोब ने अपने बेटों को बुलाकर उनसे कहा: “तुम सब एक साथ
आओ, ताकि तुम्हें बता सकूं कि तुम्हारे साथ अब क्या-क्या होगा. 2
“याकोब के पुत्रो, सुनो तथा अपने पिता इस्राएल की बातों पर ध्यान दो. 3
“रियूबेन, तुम तो मेरे बड़े बेटे, मेरे बल एवं मेरे पौरुष का फल हो, प्रतिष्ठा और
शक्ति का उत्तम भाग तुम ही हो. 4 जो अशांत पानी के समान उग्र हैं, इसलिये
तुम महान न बनोगे, क्योंकि तुमने अपने पिता के बिछौने को अशुद्ध किया. 5
“शिमओन तथा लेवी भाई-भाई हैं; उनकी तलवारें हिंसा का साधन हैं. 6 ऐसा
कभी न हो कि मुझे उनकी सभा में जाना पड़े, मैं उनकी सभाओं से न जुड़ूं,
क्योंकि गुस्से में उन्होंने मनुष्यों को मार डाला तथा सनक में उन्होंने बैलों की
नसें काट दी. 7 शापित है उनका क्रोध जो भीषण हैं और उनका ऐसा गुस्सा, जो
निर्दयी और क्रूर है! मैं उन्हें याकोब में बांट दूंगा. और उन्हें इस्राएल में तितर-
बितर कर दूंगा. 8 “यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे; तुम्हारा हाथ
तुम्हारे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तुम्हारे पिता की अन्य संतान तुम्हारे सम्मान
में झुक जाएंगे. 9 यहूदाह तो जवान सिंह के समान है; हे मेरे पुत्र, तुम अपने
शिकार पर खड़े शेर के समान हो जो आराम करने के लिए लेटता है, किसमें उसे
छेड़ने का साहस है? 10 यहूदाह से राजदंड कभी भी अलग न होगा और न ही
उसके वंश से शासन का राजदंड, दूर होगा, जब तक वह न आ जाये और राज्य-
राज्य के लोग उसके अधीन रहेंगे. 11 अपने गधे को दाखलता से बांध देता है,

तथा गधे के बच्चे को उत्तम दाखलता पर बांधेगा; उसने अपना वस्त्र दाखमधु में
धोया है, तथा बाहरी वस्त्र दाखरस में धोया है. **12** उसकी आंखें दाखमधु से
चमकीली तथा, उसके दांत दूध से भी अधिक सफेद होंगे. **13** "ज़ेबुलून सागर
के किनारे रहेगा और इसका समुद्री तट जहाजों के लिए सुरक्षित होगा, और
उसकी सीमा सीदोन देश तक फैल जायेगी. **14** "इस्साखार एक बलवंत गधा है,
वह पशुओं के बाड़े के बीच रहता है. **15** जब उसने देखा कि आराम करने की
जगह ठीक है, कि भूमि सुखदाई है, तब उसने अपने कंधे को बोझ उठाने के
लिए झुका दिया और वह बेगार का दास बन जायेगा. **16** "दान अपने लोगों का
न्याय इस्राएल के एक गोत्र जैसा करेगा. **17** दान मार्ग का एक सांप होगा, पथ
पर एक सर्प! वह घोड़े की एड़ी को डसता है, और सवार अचानक गिर जाता
है. **18** "हे याहवेह, मैं आपके उद्धार की बाट जोहता हूं. **19** "गाद पर छापामार
छापा मारेंगे, किंतु वह भी उनकी एड़ी पर मारेगा. **20** "आशेर का अन्न बहुत
उत्तम होगा और वह राजसी भोजन उपलब्ध कराएगा. **21** "नफताली छोड़ी हुई
हिरणी के समान है जो सुंदर बच्चों को जन्म देती है. **22** "योसेफ़ तो फल से
भरी एक शाखा है जो सोते के पास लगी हुई फलवंत लता की एक शाखा है जो
बाड़े के सहारे चढ़ी हैं. **23** धनुष चलानेवाले ने धनुष चलाया और तीर छोड़ा
और लगकर दर्द हुआ. **24** परंतु उसका धनुष दृढ़ रहा, उसकी बांहें मजबूत रहीं,
यह याकोब के सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से था, जो इस्राएल के चरवाहे
तथा चट्टान हैं. **25** तुम्हारे पिता के परमेश्वर की ओर से, जो तुम्हारे सहायक हैं
तथा उस सर्वशक्तिमान से जो स्वर्गीय आशीषों से तुम्हें आशीषित करेंगे, वे
आशीषें, जो नीचे गहराइयों से आती हैं, स्तनों तथा गर्भ की आशीषें देगा. **26**
तुम्हारे पिता की आशीषें तो मेरे पूर्वजों के पहाड़ों से बढ़कर हैं ये अनंत पर्वतों से
संबंधित आशीषों से बढ़कर हैं. ये ही आशीषें योसेफ़ पर प्रकट होकर उसके सिर
का मुकुट बनें, जो सब भाइयों से प्रतिष्ठित हुआ है. **27** "बिन्यामिन एक क्रूर
भेड़िया है; सवेरे वह अहेर का सेवन करता है, शाम को वह लूट सामग्री बांटा
करता है." **28** ये सभी इस्राएल के बारह गोत्र हैं उनके पिता ने उनके बारे में तब
कहा जब वह उन्हें आशीष दे रहे थे, और उनमें से एक-एक को इन्हीं वचनों
से आशीष दी. **29** तब इस्राएल ने कहा, "मुझे मेरे पूर्वजों की उसी गुफ़ा में
दफनाना, जो एफ्रोन हित्ती के खेत में है, **30** कनान देश में उस कब्रस्थान में, जो
माखपेलाह के खेत में, ममरे के पास है, जिसे अब्राहाम ने हित्ती एफ्रोन से खरीदा
था. **31** वहां उन्होंने अब्राहाम तथा उनकी पत्नी साराह को दफनाया था, वहीं
उन्होंने यित्सहाक तथा उनकी पत्नी रेबेकाह को दफनाया तथा वहीं मैंने लियाह
को भी दफनाया है; **32** वह खेत गुफ़ा सहित हित्तियों से खरीदा है." **33** जब
याकोब अपने पुत्रों को ये आदेश दे चुके, तब उन्होंने अपने पैर अपने बिछौने पर
कर लिए तथा आखिरी सांस ली, वे अपने पूर्वजों से जा मिले.

50 योसेफ़ अपने पिता से लिपट कर बहुत रोये. **2** योसेफ़ ने अपने सेवकों
से, जो वैद्य थे उनसे कहा कि वे पिता के शव में सुगंध द्रव्य भर दें. वैद्यों
ने इस्राएल के शव का संलेपन किया. **3** इस काम में चालीस दिन लग जाते थे.
मिस्रवासियों ने याकोब के लिए सत्तर दिन तक शोक मनाया. **4** जब शोक के
दिन पूरे हुए तब योसेफ़ ने जाकर फ़रोह के परिवार से कहा, "यदि आपका
अनुग्रह मुझ पर है तो फ़रोह से कहिये, **5** 'मेरे पिता ने मरने से पहले मुझसे यह
शपथ करवाई: उन्होंने कहा, मैं मरने पर हूं मुझे कनान देश में उस कब्र में
दफनाना, जो मैंने अपने लिये खोदी है, इसलिये मुझे अपने पिता के शव को
कनान देश ले जाने की आज्ञा दें ताकि मैं वहां जाकर अपने पिता को दफनाकर
लौट आऊं.'" **6** फ़रोह ने कहा, "जाकर अपने पिता को जैसी उन्होंने तुमसे
शपथ करवाई थी, वैसे दफनाकर आओ." **7** इसलिये योसेफ़ अपने पिता के
शव को लेकर रवाना हुए और फ़रोह के सब सेवक उनके साथ गये. उनके साथ
उनके परिवार के तथा मिस्र देश के सारे प्रधान थे. **8** योसेफ़ का पूरा परिवार,
उनके भाई तथा उनके पिता का परिवार भी था. वे गोशेन में बच्चों और अपने
भेड़-बकरी तथा पशुओं को छोड़कर गये. **9** उनके साथ घोड़े तथा रथ और
लोगों की बड़ी भीड़ थी. **10** जब वे अताद के खलिहान तक जो यरदन के पार
है, पहुंचे; तब वे बड़े दुःखी हुए और रोने लगे; उन्होंने वहां अपने पिता के लिए
सात दिन का शोक रखा. **11** जब कनान के लोगों ने अताद के खलिहान में यह
विलाप देखा तो कहा, "मिस्रवासियों के लिए यह वास्तव में गहरा शोक है."
इसलिये यरदन पार उस स्थान का नाम अबेल-मिस्रईम रखा गया. **12** इस प्रकार
याकोब के पुत्रों ने उनके लिए ठीक वैसा ही किया, जैसा याकोब ने कहा था:
13 याकोब के पुत्रों ने उन्हें कनान देश में ममरे के पास माखपेलाह के खेत की
गुफा में दफना दिया, जो अब्राहाम ने कब्रस्थान के लिए हित्ती एफ्रोन से खरीदी
थी. **14** अपने पिता को दफनाने के बाद योसेफ़ मिस्र देश लौट गए. उनके साथ
उनके भाई भी लौट गए तथा वे सब भी, जो उनके साथ यहां आए थे. **15** जब
योसेफ़ के भाइयों ने सोचा, "हमारे पिता का निधन हो चुका है, अब यदि योसेफ़
हमसे नफरत करके पिछली बातों का बदला लेगा तो हम क्या करेंगे?" **16**
इसलिये उन्होंने योसेफ़ से कहा: "पिता ने हमसे कहा था कि **17** 'योसेफ़ से
कहना कि कृपा कर अपने भाइयों के अत्याचार और गलतियों को माफ कर दो
जो उन्होंने तुमसे किए थे,' इसलिये अब, कृपा कर अपने पिता के परमेश्वर के
नाम से हमारी गलतियों को माफ कर दो." योसेफ़ उनकी यह बात सुनकर रोने
लगे. **18** तब उनके भाई भी रोने लगे और योसेफ़ के सामने झुककर कहने लगे,
"हम सभी आपके दास हैं." **19** किंतु योसेफ़ ने उनसे कहा, "आप लोग मत
डरो. क्या मैं कोई परमेश्वर हूं? **20** मैं जानता हूं कि आप लोगों ने भले ही मेरी
हानि की योजना बनाई हो, लेकिन परमेश्वर ने उसे अच्छे के लिये किया कि
बहुतों का जीवन बचा लिया गया! **21** इसलिये भयभीत न हो; मैं स्वयं तुम्हें
और तुम्हारे बच्चों को भोजन दूंगा." इस प्रकार योसेफ़ ने अपने भाइयों को
सांत्वना दी और उनसे कोमलता से बातें की. **22** योसेफ़ मिस्र में अपने पिता
के पूरे परिवार के साथ रहे. योसेफ़ की उम्र एक सौ दस वर्ष हुई. **23** योसेफ़
ने एफ्राईम की तीसरी पीढ़ी भी देखी तथा मनश्शेह के पोते, जो माखीर के
पुत्र थे, उन्हें भी जन्म के बाद योसेफ़ के घुटनों पर रखा गया. **24** योसेफ़ ने
अपने भाइयों को कहा, "मैं अब मरने पर हूं, लेकिन परमेश्वर अवश्य आप
सब की रक्षा करेंगे और वही तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएंगे, जिसकी
शपथ उन्होंने अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से की थी." **25** तब योसेफ़ ने
इस्राएल के पुत्रों से शपथ ली, "परमेश्वर आप सभी की मदद के लिये आएंगे
और तब आप लोग मेरी हड्डियों को यहां से लेकर जाना." **26** योसेफ़ की मृत्यु
एक सौ दस वर्ष में हुई. उनके शव को सुगंध द्रव्य से भरा गया और उन्हें मिस्र
देश में ही एक संदूक में रख दिया गया.

निर्गमन

1 याकोब के साथ मिस्र में अपने-अपने घराने के साथ आकर रहनेवाले
इस्राएलियों के नाम निम्न लिखित हैं: 2 रियूबेन, शिमओन, लेवी और
यहूदाह; 3 इस्साखार, ज़ेबुलून तथा बिन्यामिन; 4 दान एवं नफ़ताली; गाद एवं
आशेर. 5 याकोब के वंश में सत्तर जन थे, योसेफ़ पहले ही मिस्र में थे. 6 वहां
योसेफ़ और उनके सभी भाई तथा पूरी पीढ़ी के लोगों की मृत्यु हो गई थी. 7
इस्राएली बहुत फलवंत थे और वे बढ़ते चले गए, और बहुत सामर्थ्यी होकर
पूरे देश में भर गए. 8 फिर मिस्र में एक नया राजा बना, जो योसेफ़ को नहीं
जानता था. 9 उसने अपनी प्रजा से यह कहा, "इस्राएल के लोग संख्या में और
बल में हमसे अधिक हैं. 10 इसलिये हम समझदारी से रहें, ये लोग तो बढ़ते
जाएंगे! ऐसा न हो कि युद्ध की स्थिति में हमारे शत्रुओं के साथ मिलकर, हमसे
ही युद्ध करने लगें और देश छोड़कर चले जाएं." 11 इस विचार से उन्होंने
इस्राएलियों को कड़ी मेहनत कराने के उद्देश्य से ठेकेदार नियुक्त कर दिए. तब
फ़रोह के लिए पिथोम तथा रामेसेस नामक भण्डारगृह नगरों को बनाए. 12
जितना इस्राएलियों को कष्ट दिया गया, उतने ही वे बढ़ते और देश में फैलते
गए, इसलिये इस्राएली मिस्रवासियों के लिए डर का कारण बन गये. 13 मिस्री
इस्राएलियों से कठोर मेहनत कराते रहे. 14 इस प्रकार मिस्रियों ने इस्राएलियों
के जीवन को दुःखपूर्ण कर दिया. उन्हें गारे तथा ईंट के लिए कड़ी मेहनत करनी
पड़ती थी. सभी कामों में उन्हें दुःखी कर सताया जाता था. 15 यह देख मिस्र
देश के राजा ने इब्री धायों को बुलवाया. इनमें एक का नाम शिफ्राह तथा दूसरी
का पुआह था. 16 राजा ने उनसे कहा, "इब्री स्त्रियों का प्रसव कराते समय जैसे
ही तुम्हें यह पता चली कि लड़का है, तुम उसकी हत्या कर देना; किंतु यदि वह
पुत्री हो, तो उसे जीवित रहने देना." 17 किंतु धायें परमेश्वर का भय मानने
वाली थीं. इस कारण उन्होंने राजा की बात नहीं मानी; वे पुत्रों को जीवित
छोड़ती चली गईं. 18 इसलिये राजा ने धायों को बुलवाया और उनसे पूछा,
"तुम ऐसा क्यों कर रही हो? क्यों लड़कों को जीवित छोड़ रही हो?" 19
उन्होंने फ़रोह को उत्तर दिया, "इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के समान नहीं होती; वे
हृष्ट-पुष्ट होती हैं, इसलिये हमारे पहुंचने से पहले ही प्रसव कर चुकी होती हैं."
20 इस कारण परमेश्वर की दया उन धायों पर बनी रही, इस्राएली बढ़ते और
शक्तिशाली होते गए. 21 धायों के मन में परमेश्वर का भय था, इस कारण
परमेश्वर ने उनको अपने परिवार दिये. 22 फिर फ़रोह ने सब लोगों से कहा,
"हर नवजात पुत्र को, जो तुम्हारे आस-पास जन्म लेता है, उन्हें नील नदी में
फेंक दिया करना, किंतु पुत्री को जीवित रहने देना."

2 लेवी गोत्र के एक व्यक्ति ने लेवी गोत्र की एक कन्या से विवाह किया. 2
उस कन्या ने गर्भधारण किया और एक बच्चे को जन्म दिया, और वह बहुत
सुंदर था, उसने उसे तीन महीने तक छिपाए रखा. 3 किंतु जब बच्चे को छिपाए
रखना उसके लिए मुश्किल हो गया तब उसने एक टोकरी बनाई और उस पर
तारकोल और पीच का लेप किया. उसने बच्चे को टोकरी में रख उस टोकरी
को नील नदी के किनारे लंबी घासों के बीच में रख दिया. 4 उस बच्चे की
बहन बच्चे के साथ क्या होगा यह देखने के लिए दूर खड़ी हुई थी. 5 फ़रोह की
पुत्री नील नदी में स्नान करने आई और उसकी दासियां नदी के किनारे चल रही
थीं. फ़रोह की पुत्री की नजर उस टोकरी पर पड़ी. उसने अपनी दासियों को
वह टोकरी लाने को कहा. 6 उस टोकरी को खोलने पर उसकी नजर उस बच्चे
पर पड़ी, जो उस समय रो रहा था. बच्चे पर उसको दया आई और वह समझ
गई कि यह किसी इब्री का ही बच्चा है. 7 उस बच्चे की बहन ने फ़रोह की पुत्री
से पूछा, "क्या मैं जाकर इसके लिए इब्री धायों में से किसी को ले आऊं जो इसे
दूध पिला सके?" 8 फ़रोह की पुत्री ने उससे कहा, "जाओ!" तब वह लड़की
जाकर बच्चे की मां को ही बुला लाई. 9 फ़रोह की पुत्री ने उससे कहा, "इस
बच्चे को ले जाओ और इसका पालन पोषण करो. इसके लिए मैं तुम्हें मजदूरी
दूंगी." तब वह स्त्री उस बच्चे को ले गई और उसका पालन पोषण किया. 10
जब बच्चा बड़ा हो गया तब वह बच्चे को फ़रोह की पुत्री के पास ले गई और
फ़रोह की पुत्री ने उसे अपना पुत्र मान लिया. उसने उसका नाम मोशेह रखा.
उसका मतलब था, "मैंने उसे जल में से पाया है." 11 जब मोशेह जवान हुए,
तब वह अपने लोगों से मिलने उनके पास गए तो देखा कि वे कड़ी मेहनत कर
रहे थे. उसी समय उन्होंने देखा कि एक मिस्री किसी इब्री को मार रहा था. 12
इसलिये मोशेह ने उस मिस्री को मार दिया और उसे रेत में छिपा दिया. 13
अगले दिन मोशेह ने देखा कि दो इब्री आपस में लड़ रहे हैं. इसलिये मोशेह ने
उनसे पूछा, "क्यों आपस में लड़ रहे हो?" 14 उस व्यक्ति ने मोशेह को जवाब
दिया, "किसने तुम्हें हम पर राजा और न्याय करनेवाला ठहराया है? कहीं
तुम्हारा मतलब कल उस मिस्री जैसे मेरी भी हत्या का तो नहीं है?" यह सुनकर
मोशेह डर गए और उन्होंने सोचा, "अब यह भेद खुल चुका है." 15 जब
फ़रोह को यह मालूम हुआ, तब उसने मोशेह की हत्या करने को सोचा, किंतु
मोशेह फ़रोह के सामने से भागकर मिदियान देश में रहने लगे, वहां एक कुंआ
था. 16 मिदियान के पुरोहित की सात पुत्रियां थीं. वे उस कुएं में जल भरने आईं
तथा उन्होंने अपने पिता की भेड़-बकरियों के लिए नांदों में जल भरा. 17 तभी
कुछ चरवाहे आए और उन कन्याओं को वहां से भगा दिया; तब मोशेह वहां
आए और उन कन्याओं का बचाव किया तथा उनकी भेड़-बकरियों को जल
पिलाया. 18 जब वे घर लौटीं, तो उनके पिता रियुएल ने उनसे पूछा, "आज
इतनी जल्दी कैसे घर लौट आई हो?" 19 उन्होंने उत्तर दिया, "एक मिस्री ने
उन चरवाहों से हमारी रक्षा की. यही नहीं, उसने कुएं से जल निकालकर हमें
और हमारी भेड़-बकरियों को भी पिलाया." 20 रियुएल ने अपनी पुत्रियों से
पूछा, "वह व्यक्ति कहां है? तुम उसे वहीं क्यों छोड़ आई? उसे भोजन के लिए
बुला लाओ!" 21 मोशेह उनके साथ रहने के लिए तैयार हो गए. रियुएल ने
अपनी पुत्री ज़ीप्पोराह का विवाह मोशेह के साथ कर दिया. 22 उन्होंने एक पुत्र
को जन्म दिया. मोशेह ने उसका नाम गेरशोम रखा, उसका मतलब था, "मैं
परदेश में एक अजनबी हूं." 23 उस लंबे समयकाल के बाद मिस्र देश के राजा
की मृत्यु हो गई. इस्राएली अपने दासत्व में कराह रहे थे और दुहाई दे रहे थे. वे
सहायता की गुहार कर रहे थे और उनके दासत्व की यह गुहार परमेश्वर तक
पहुंची. 24 परमेश्वर ने उनकी कराहट सुनी, और अब्राहाम, यित्सहाक तथा
याकोब के साथ की गई अपनी वाचा को याद किया. 25 परमेश्वर ने इस्राएल
की ओर दृष्टि की तथा उनकी स्थिति पर ध्यान दिया.

3 मोशेह अपने ससुर, मिदियान के पुरोहित येथ्रो की भेड़-बकरियां चराते हुए
निर्जन क्षेत्र के पश्चिम में परमेश्वर के पर्वत होरेब पर पहुंच गए. 2 वहां उन
झाड़ियों के बीच में से आग की लौ में याहवेह के दूत ने उनको दर्शन दिया,
उन्होंने देखा कि झाड़ी जल रही थी, पर भस्म नहीं होती. 3 इसलिये मोशेह ने
सोचा, "मैं जाकर जलती हुई झाड़ी को देखूं कि झाड़ी जलकर भस्म क्यों नहीं
होती." 4 जब याहवेह ने यह देखा कि मोशेह यह देखने आगे बढ़ रहे हैं,
परमेश्वर ने उस झाड़ी से उन्हें बुलाया, "मोशेह, मोशेह!" उन्होंने उत्तर दिया,
"कहिए प्रभु." 5 याहवेह ने कहा, "पास न आओ, अपनी पैरों से जूते उतार
दो, क्योंकि यह स्थान, जिस पर तुम खड़े हो, पवित्र है." 6 याहवेह ने यह
कहा, "मैं ही तुम्हारे पूर्वजों के पिता अर्थात् अब्राहाम का, यित्सहाक तथा
याकोब का परमेश्वर हूं." यह सुन मोशेह ने अपना मुंह छिपा लिया, क्योंकि वह
परमेश्वर की ओर देखने से डरता था. 7 याहवेह परमेश्वर ने मोशेह से कहा,
"मिस्र देश में मेरे लोगों की हालत मैंने देखी है; उनके कष्टकर मेहनत कराने
वालों के कारण उनका रोना मैंने सुना है और उनके कष्ट को जानता हूं, 8

इसलिये अब मैं उन्हें मिस्रियों के अधिकार से छुड़ाने उतर आया हूं, ताकि उन्हें
उस देश से निकालकर एक उत्तम देश में ले जाऊं, जहां दूध एवं मधु बहता है,
जो कनानियों, हित्तियों, अमोरियों, परिज्ज़ियों, हिव्वियों तथा यबूसियों का
देश है. 9 अब सुन लो: इस्राएलियों की प्रार्थना मुझ तक पहुंची है; इसके
अलावा मिस्रियों द्वारा उन पर किए जा रहे अत्याचार भी मैंने देख लिए हैं. 10
इसलिये अब मैं तुम्हें फ़रोह के पास भेजूंगा कि तुम मेरी प्रजा इस्राएलियों को
मिस्र देश से निकाल लाए." 11 किंतु मोशेह ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूं जो
फ़रोह के पास जाऊं और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकालूं?" 12 किंतु
परमेश्वर ने मोशेह से कहा, "मैं तुम्हारे साथ साथ रहूंगा, तथा इस बात का सबूत
स्वयं मैं हूं, जब तुम मेरी प्रजा को मिस्र देश से निकाल चुके होंगे, तब तुम
इसी पर्वत पर परमेश्वर की आराधना करोगे." 13 यह सुन मोशेह ने परमेश्वर
को उत्तर दिया, "यदि मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूं, 'तुम्हारे ही
पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है.' और वे मुझसे पूछें, 'क्या है
उस परमेश्वर का नाम?' तो मैं उन्हें क्या नाम बताऊं?" 14 परमेश्वर ने मोशेह
को उत्तर दिया, "मैं वही हूं, जो मैं हूं." परमेश्वर ने आगे यह कहा, "तुम्हें
इस्राएलियों से यह कहना होगा: जिसका नाम 'मैं हूं है, उन्हीं ने मुझे भेजा है.'"
15 फिर परमेश्वर ने मोशेह से कहा, "तुम इस्राएलियों से यह कहना 'याहवेह,
तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब के परमेश्वर ही ने
मुझे तुम्हारे पास भेजा है.' "यही मेरा स्थिर नाम है, सब पीढ़ी से पीढ़ी तक
स्मरण रखने का मेरा नाम यही है. 16 "अब तुम जाओ और इस्राएलियों से
कहो: 'याहवेह परमेश्वर जो तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अब्राहाम, यित्सहाक
तथा याकोब के परमेश्वर जो मुझ पर प्रकट हुए और मुझसे कहा कि मैंने तुम पर
नजर रखी है, और मिस्र देश में तुम्हारे साथ जो कुछ किया गया है उसको मैंने
देखा है. 17 इसलिये मैंने यह वायदा किया कि मैं तुम्हें मिस्र देश में हो रहे कष्ट से
बाहर निकालूंगा और कनानियों, हित्तियों, अमोरियों, परिज्ज़ीर, हिव्वियों
तथा यबूसियों के देश में ले आऊंगा, जहां दूध एवं मधु की धारा बहती है.' 18
"इस्राएल के प्रधान तुम्हारी बातों को सुनेंगे. तब तुम इस्राएल के प्रधानों के साथ
मिस्र देश के राजा के सामने जाना और उससे कहना कि याहवेह, जो इब्रियों के
परमेश्वर हैं, हम पर प्रकट हुए हैं. अब हमें तीन दिन की यात्रा की दूरी तक
निर्जन प्रदेश में जाने दे, ताकि हम याहवेह को, जो हमारे परमेश्वर हैं, बलि
अर्पित कर सकें; 19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र देश का राजा तुम्हें तब तक
जाने नहीं देगा, जब तक उसे एक शक्तिशाली हाथ मजबूर न करे. 20 इसलिये
मैं अब अपना हाथ बढ़ाकर मिस्र देश में अलग-अलग तरीकों के चमत्कारी
कार्य करके उन पर वार करूंगा, तब ही वे तुम्हें जाने देंगे. 21 "मैं अपनी इस
प्रजा को मिस्रियों से अनुग्रहित करवाऊंगा; जब तुम वहां से निकलोगे, तुम
खाली हाथ न निकलोगे. 22 हर एक इब्री स्त्री अपने पास रह रहे मिस्री पड़ोसी
स्त्री से सोने, चांदी के जेवर तथा वस्त्र मांगकर अपने पुत्र-पुत्रियों को पहना दे. इस
प्रकार तुम मिस्रियों को लूट लेना."

4 यह सुन मोशेह ने पूछा, "क्या होगा जब वे मेरी बात का न विश्वास करें
और न मानें, और कहें, 'यह असंभव है कि याहवेह तुम पर प्रकट हुए
हों?'" 2 याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम्हारे हाथ में क्या है?" मोशेह ने उत्तर
दिया, "एक लाठी." 3 याहवेह ने कहा, "उसे भूमि पर डाल दो!" तब मोशेह ने
उसे भूमि पर डाल दी. वह लाठी सांप बन गई, मोशेह डरकर दूर चले गए. 4
याहवेह ने मोशेह से कहा, "अपना हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ लो!" तब
मोशेह ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया और वह उनके हाथ में आते ही
लाठी बन गई! 5 याहवेह ने कहा, "यह देखकर वे विश्वास करेंगे कि तुम्हारे
पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब के परमेश्वर ही, तुम पर
प्रकट हुए हैं." 6 फिर याहवेह ने मोशेह से दुबारा कहा "अब अपना हाथ वस्त्र
के भीतर अपनी छाती पर रखो." मोशेह ने अपना हाथ अपनी छाती पर रखकर
बाहर निकाला, तुरंत उनका हाथ कुष्ठ के कारण हिम जैसा श्वेत हो गया. 7 तब
याहवेह ने उनसे कहा, "अपना हाथ वापस अपनी छाती पर रखो!" मोशेह ने
अपना हाथ वापस अपनी छाती पर रखा; और जब उन्होंने अपना हाथ छाती से
बाहर निकाला, वह वापस पहले जैसा सही हो गया. 8 "यदि वे तुम्हारी बात का
विश्वास न करें या उस पहले वाले चिन्ह को न मानें, हो सकता है कि वे दूसरे
चिन्ह पर विश्वास कर लें. 9 किंतु यदि वे इन दोनों चिन्हों पर भी विश्वास न
करें और तुम्हारी बात को भी न माने, तब तुम नील नदी से कुछ जल लेकर
सूखी भूमि पर डाल देना; नील नदी से लिया गया वह जल सूखी भूमि पर डालते
ही खून बन जाएगा." 10 तब मोशेह ने याहवेह से कहा, "याहवेह परमेश्वर,
मुझे माफ करें, मैं अच्छी तरह से बोल नहीं सकता हूं, पहले भी नहीं बोल
सकता था, और न जब से आपने अपने दास से बात की थी, मेरी ज़ुबान तुतली
और धीमी है!" 11 याहवेह ने उनसे पूछा, "किसने मनुष्य का मुंह बनाया है?
कौन उसे गूंगा या बहिरा बनाता है? कौन है जो उसको बोलने की शक्ति या
देखने के लिए रोशनी देता है? क्या मैं, स्वयं याहवेह नहीं? 12 अब जाओ. मैं,
हां, मैं तुम्हें बोलने की मदद करूंगा, और बताऊंगा, कि तुम्हें क्या बोलना है."
13 किंतु मोशेह ने मना किया और कहा, "प्रभु, अपने दास को माफ कर दे,
कृपया आप किसी दूसरे को भेज दीजिए." 14 याहवेह मोशेह से नाराज हुए.
उन्होंने मोशेह से कहा, "तुम्हारा भाई, अहरोन, जो लेवी है, वह तुमसे मिलने
यहीं आ रहा है. तुम्हें देखकर वह खुश हो जाएगा. 15 तुम उसे यह सब बताना
और उसके मुंह में बातें डालना इसके अलावा मैं—हां मैं, तुम दोनों की बोलने में
सहायता करूंगा, मैं तुम दोनों को सही मार्ग पर चलना सिखाऊंगा. 16 वह
तुम्हारी ओर से लोगों से बात करेगा व तुम अहरोन के परमेश्वर समान होंगे.
17 इस लाठी को तुम अपने हाथ में ही रखना, इसी से तुम अद्भुत काम कर
पाओगे." 18 मोशेह वहां से आकर अपने ससुर येथ्रो से मिलने गए और उनसे
कहा, "कृपया मुझे जाने दीजिए ताकि मैं मिस्र देश में अपने भाई-बंधुओं से
मिलकर पता करूं कि उनमें से कोई अब भी ज़िंदा है या नहीं." येथ्रो ने उनसे
कहा, "तुम शांति से जाओ." 19 मिदियान देश में ही मोशेह को याहवेह की
ओर से यह आदेश मिल चुका था, "मिस्र देश को लौट जाओ, क्योंकि उन सभी
की मृत्यु हो चुकी है, जो तुम्हारी हत्या करना चाहते थे." 20 फिर मोशेह अपनी
पत्नी एवं पुत्रों को गधे पर बैठाकर मिस्र देश को लौट गए. परमेश्वर के कहे
अनुसार मोशेह परमेश्वर की लाठी अपने हाथ में ली हुई थी. 21 याहवेह ने
मोशेह से कहा, "मिस्र देश पहुंचकर तुम वे सभी चिन्ह फ़रोह को दिखाना जो
मैंने तुम्हारे वश में किए हैं, परंतु मैं फ़रोह के मन को कठोर कर दूंगा, और वह
इस्राएलियों को जाने न देगा. 22 तब तुम फ़रोह से कहना, 'याहवेह का संदेश
यह है: इस्राएल मेरा पुत्र—मेरा पहलौठा है. 23 यह मेरा आदेश है कि मेरे
पुत्र को जाने दो, कि वह मेरी आराधना कर सके; परंतु तुम उन्हें जाने नहीं दे
रहे हो. इस कारण मैं तुम्हारे बड़े बेटे को मार दूंगा.'" 24 मार्ग में सराय पर
याहवेह मोशेह के पास आए कि उनको मार दें. 25 लेकिन ज़ीप्पोराह ने एक
नुकीले पत्थर से अपने पुत्र की खलड़ी को काटकर मोशेह के पैरों पर डाल
दिया और कहा, "आप लहू बहानेवाले मेरे दूल्हा हैं!" 26 इसलिये याहवेह ने
मोशेह को नहीं छुआ. यही वह समय था जब ज़ीप्पोराह ने कहा था, "आप
वास्तव में रक्त बहानेवाले दूल्हा हैं," क्योंकि उसी समय ख़तना किया था. 27
याहवेह ने अहरोन से कहा, "निर्जन प्रदेश में जाकर मोशेह से मिलो." और
अहरोन परमेश्वर के पर्वत पर गये और मोशेह से मिले. अहरोन ने मोशेह का
चुंबन किया. 28 मोशेह ने अहरोन को वह सब बातें बताईं जिन्हें कहने के लिये
याहवेह ने उसे भेजा था. मोशेह ने वह अद्भुत चिन्ह भी बताए, जिन्हें याहवेह ने
मोशेह को करने की आज्ञा दी थी. 29 मोशेह तथा अहरोन ने इस्राएलियों के सब

प्रधानों को बुलाया. 30 अहरोन ने उनको वह सब बात बताई, जो याहवेह ने
मोशेह से कही थी. फिर उन्होंने सब लोगों के सामने वह चिन्ह भी दिखाये. 31
चिन्ह देखकर लोगों ने उनका विश्वास किया और जब उन्हें यह पता चला कि
याहवेह ने इस्राएलियों की ओर कान लगाया है और उनके दुखों की ओर ध्यान
दिया है, तब उन्होंने झुककर प्रणाम किया और परमेश्वर की आराधना की.

5 इसके बाद मोशेह तथा अहरोन गये व फ़रोह से कहा, "याहवेह, जो इस्राएल
के परमेश्वर हैं, उनका कहना है, 'मेरी प्रजा को जाने दो कि वे निर्जन प्रदेश
में जाकर मेरे सम्मान में एक उत्सव मना सकें.'" 2 किंतु फ़रोह ने उत्तर दिया,
"कौन है याहवेह, जिसकी बात मैं मानूं और इस्राएल को यहां से जाने दूं? मैं
याहवेह को नहीं जानता और मैं इस्राएल को यहां से जाने नहीं दूंगा." 3 यह
सुनकर उन्होंने कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हमसे कहा है. इसलिये कृपा कर
हमें निर्जन प्रदेश में तीन दिन की यात्रा पर जाने दीजिए, कि हम याहवेह, अपने
परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाएं, ऐसा न हो कि वे हमसे नाराज़ हो जाएं और हम
पर महामारी या तलवार से वार करें." 4 किंतु मिस्र देश के राजा ने उन्हें उत्तर
दिया, "मोशेह और अहरोन, तुम लोग इस प्रजा को उनके काम से दूर क्यों
करना चाह रहे हो? जाओ, तुम सब अपना अपना काम करो!" 5 फ़रोह ने उनसे
दुबारा कहा, "सुनो, देश में लोग बहुत बढ़ गये हैं और अब तुम उन्हें उनके काम
से अलग करना चाहते हो!" 6 उसी दिन फ़रोह ने अपने दासों के निरीक्षकों
और अधिकारियों से कहा: 7 "अब तक तुम इन लोगों को ईंट बनाने का
सामान, भूसा, सब कुछ लाकर देते थे. लेकिन अब से ये लोग खुद अपना
सामान लायेंगे; 8 और उतनी ही ईंट बनाएंगे जितनी पहले बनाते थे; इससे कम
नहीं किया जायेगा; ये लोग आलसी हैं, इसलिये यहां से जाने के लिए पूछ रहे
हैं, 'हम अपने परमेश्वर के लिए बलि अर्पित कर सकें.' 9 इनके काम और बढ़ा
दो और उन्हें ज्यादा व्यस्त कर दो, ताकि उनका ध्यान कहीं ओर न जाए." 10
दास-स्वामियों और निरीक्षकों ने बाहर जाकर लोगों से कहा, "फ़रोह ने कहा
है, 'अब से तुम्हें ईंट बनाने का सामान; भूसा, नहीं दिया जायेगा. 11 यह
तुम्हें ही लाना होगा—और तुम्हारे काम में कोई कमी न हो.'" 12 इस कारण
इस्राएली लोग पूरे मिस्र देश में फैल गये, और ईंट बनाने का सामान: भूसा,
ढूंढने की कोशिश करने लगे. 13 काम करनेवालों की देखरेख करनेवाले उन
पर ज्यादा दबाव डालते हुए कहने लगे, "ईंटों की गिनती में कमी नहीं होनी
चाहिए, पहले जितनी बनाते थे उतनी ही अब भी बनानी हैं." 14 इस्राएलियों के
ऊपर नियुक्त फ़रोह के दास-स्वामियों ने इस्राएली निरीक्षकों की पिटाई की और
उनसे ईंटों की गिनती पूछते रहे! 15 इन सब सताव के कारण इस्राएलियों का
पर्यवेक्षक फ़रोह के पास जाकर पूछने लगे, "आप सेवकों से ऐसा व्यवहार क्यों
कर रहे हैं? 16 ईंट बनाने का सामान कुछ नहीं दिया जा रहा है, फिर भी कहा
जा रहा है, 'ईंट बनाओ, ईंट बनाओ!' और सेवकों की पिटाई की जा रही है;
जबकि दोष तो आपके लोगों का है." 17 फ़रोह ने उत्तर दिया, "तुम लोग
आलसी हो—अत्यंत आलसी; इसलिये यह कह रहे हो, 'हमें जाने दीजिए कि
हम यहां से जाकर याहवेह को बलि अर्पित करें.' 18 अब जाओ और अपने
काम करो. तुम्हें कुछ नहीं दिया जाएगा, लेकिन जितना तुम पहले बनाते थे
उतनी ही ईंट अब भी बनाओगे." 19 इस्राएली लोग यह समझ गए थे कि
उनकी परेशानी बहुत बढ़ गई है; क्योंकि उन्हें कहा गया था कि रोज जितनी ईंटें
बनाने के लिए बोला गया है, उसमें कोई कमी नहीं आएगी. 20 जब वे फ़रोह
के पास से बाहर आए, तो उनको मोशेह एवं अहरोन मिले, जो वहां उन्हीं के
लिए रुके हुए थे. 21 इस्राएलियों ने मोशेह तथा अहरोन से कहा, "अब याहवेह
ही हमें बचा सकते हैं: क्योंकि आप ही के कारण मिस्री हमसे नफ़रत करने लगे
हैं, आप ही ने हमें उनके हाथों में छोड़ दिया है." 22 तब मोशेह याहवेह के पास
गए और उनसे बिनती की, "आपने अपने लोगों को परेशानी में डालने के लिए
मुझे क्यों चुना है? 23 जब मैंने फ़रोह से याहवेह के बारे में बात की, तब से
फ़रोह ने इस्राएलियों को परेशान करना शुरू किया. इस स्थिति में आपने अपने
लोगों को नहीं बचाया!"

6 इस पर याहवेह ने मोशेह से कहा, "अब तुम देखना कि मैं फ़रोह के साथ
क्या करूंगा; मेरे पराक्रमी हाथ की वजह से उसे तुम सबको छोड़ना ही
पड़ेगा, मेरे पराक्रमी हाथ की वजह से ही फ़रोह इतना परेशान हो जाएगा, कि
वह अपने देश से सबको निकाल देगा." 2 परमेश्वर ने मोशेह से यह भी कहा,
"मैं ही याहवेह हूं; 3 अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब पर मैं ही सर्वसामर्थी
होकर प्रकट हुआ था; परंतु, याहवेह के नाम से कभी अपने आपको प्रकट नहीं
किया. 4 मैंने कनान देश, जहां वे पराये होकर रहते थे, उनको देने का पक्का
वायदा भी किया था. 5 परमेश्वर ने इस्राएलियों का रोना सुना है, क्योंकि
मिस्रियों ने उन्हें बंदी बना रखा है और मुझे मेरा वायदा जो मैं ने इस्राएलियों से
किया था याद है. 6 "इस कारण इस्राएलियों से यह कहना: 'मैं ही याहवेह हूं.
मैं ही तुम्हें मिस्रियों की परेशानी से निकालूंगा. मैं तुम्हें उनके बंधन से छुड़ाऊंगा.
मैं तुम्हें अपनी बाहों में लेकर तथा उन्हें दंड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा. 7 फिर
तुम मेरे लोग ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर. और तुम्हें तसल्ली मिलेगी कि
मैं ही याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसने तुम्हें मिस्रियों के दबाव और बोझ
से निकाला है. 8 मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा, जिसे देने का शपथ मैंने हाथ
उठाकर अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से ली थी, और वह देश तुम्हारा ही
हो जाएगा. मैं ही वह याहवेह हूं.'" 9 मोशेह ने वह सब बात जो याहवेह ने कही
थी, सबको बता दी, लेकिन इस्राएलियों ने फ़रोह के द्वारा हो रहे अत्याचार के
कारण इन पर विश्वास नहीं किया. 10 याहवेह मोशेह के पास आए और उनसे
कहा, 11 "जाकर मिस्र देश के राजा फ़रोह से कहो कि वह इस्राएलियों को इस
देश से बाहर जाने दे." 12 मोशेह ने याहवेह से कहा, "इस्राएलियों ने मेरी
बात नहीं मानी है, तो फ़रोह कैसे मेरी बात मानेगा, मैं तो हकलाता बात करता
हूं." 13 फिर याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन से इस्राएल एवं मिस्र के राजा
फ़रोह के लिए यह आदेश दिया कि इस्राएली मिस्र देश से निकाले जाएं. 14
इस्राएल के परिवार के मुखिया इस प्रकार थे: इस्राएल का पहला बेटा रियूबेन.
रियूबेन के पुत्र: हनोख, पल्लू, हेज़रोन, कारमी; ये सभी रियूबेन के परिवार
के लोग हैं. 15 शिमओन के पुत्र: येमुएल, यामिन, ओहद, याकिन, ज़ोहार
तथा शाऊल, जो एक कनानी स्त्री से जन्मे थे; ये सभी शिमओन के परिवार के
लोग हैं. 16 लेवी के पुत्रों के नाम: गेरशोन, कोहाथ तथा मेरारी. (लेवी की
कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई.) 17 गेरशोन के पुत्र उनके परिवारों के
अनुसार: लिबनी और शिमेई. 18 कोहाथ के पुत्र: अमराम, इज़हार, हेब्रोन तथा
उज्ज़िएल. (कोहाथ की कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई.) 19 मेरारी के
पुत्र: माहली तथा मूशी. ये उनकी पीढ़ियों के अनुसार लेवियों के परिवार हैं.
20 अमराम ने अपने पिता की बहन से विवाह किया, जिससे अहरोन एवं मोशेह
पैदा हुए. (अमराम की कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई.) 21 इज़हार के
पुत्र: कोराह, नेफ़ेग तथा ज़ीकरी. 22 उज्ज़िएल के पुत्र: मिषाएल, एलज़ाफन
तथा सिथरी. 23 अहरोन ने अम्मीनादाब की पुत्री, नाहशोन की बहन एलिशेबा
से विवाह किया, जिसने नादाब, अबीहू, एलिएज़र तथा इथामार को जन्म दिया.
24 कोराह के पुत्र: अस्सिर, एलकाना तथा अबीयासाफ़. कोराह के वंशजों
के परिवार ये हैं. 25 अहरोन के पुत्र एलिएज़र ने पुतिएल की पुत्री से विवाह
किया, जिससे फिनिहास पैदा हुए. ये लेवी वंश के कुलों के मुखिया थे. 26 ये
अहरोन तथा मोशेह थे, जिन्हें याहवेह द्वारा कहा गया था, "इस्राएलियों को
अपनी समझदारी से मिस्र देश से निकाल लाओ." 27 मोशेह और अहरोन, जो
इस्राएलियों को मिस्र देश से निकालने के लिए फ़रोह से बार-बार कहते रहे. 28

जिस दिन याहवेह ने मिस्र देश में मोशेह से बात की, 29 और कहा, "मैं ही
याहवेह हूं. और जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं, वह सब तुम मिस्र देश के राजा
फ़रोह से कहना." 30 लेकिन मोशेह ने याहवेह से कहा, "मैं अच्छी तरह बोल
नहीं सकता; फ़रोह मेरी बात क्यों सुनेगा?"

7 यह सुनकर याहवेह ने मोशेह से कहा, "अब देखना कि मैं तुम्हें कैसे फ़रोह
के सामने ईश्वर-समान बना देता हूं. और तुम्हारा भाई अहरोन तुम्हारा प्रवक्ता
होगा. 2 जो जो बात मैं तुम्हें बताऊंगा, वह सब बात तुम अहरोन से कहना और
अहरोन वही सब फ़रोह से कह देगा, तब फ़रोह इस्राएलियों को अपने देश से
जाने देगा. 3 लेकिन मैं फ़रोह के मन को कठोर बना दूंगा, ताकि मैं मिस्र देश में
और ज्यादा चिन्ह और अद्भुत काम कर सकूं. 4 फिर भी फ़रोह उन सब बातों
पर ध्यान नहीं देगा. तब मैं मिस्र देश को बड़ा कष्ट और दंड दूंगा और मिस्र
से इस्राएल के लोगों को बाहर निकालूंगा. 5 मिस्र के लोग यह जान जाएंगे
कि मैं ही याहवेह हूं, जिसने मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाया है और मैंने ही
इस्राएलियों को उसके बीच से निकाला है." 6 तब मोशेह एवं अहरोन ने ऐसा
ही किया—जैसा याहवेह ने उनसे कहा था. 7 जब मोशेह और अहरोन फ़रोह के
पास गए, तब मोशेह की उम्र अस्सी वर्ष तथा अहरोन की तेरासी वर्ष थी. 8 तब
याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आदेश दिया, 9 "जब फ़रोह तुमसे
चमत्कार दिखाने को कहे, तब तुम अहरोन से कहना, 'अपनी लाठी फ़रोह के
सामने डाल दे, ताकि वह सांप बन जाए.'" 10 इसलिये मोशेह तथा अहरोन
फ़रोह के पास गए और ठीक वही किया, जो याहवेह ने कहा था. अहरोन ने
अपनी लाठी फ़रोह एवं उसके सेवकों के सामने डाल दी और वह सांप बन गई.
11 यह देख फ़रोह ने भी पंडितों तथा ओझों को बुलवाया और मिस्र देश के
जादूगरों ने भी वैसा ही किया. 12 उन सबने अपनी-अपनी लाठी फेंकी जो सांप
बन गईं. पर अहरोन की लाठी ने उन सभी की लाठियों को निगल लिया. 13
इससे फ़रोह का मन और कठोर हो गया और उसने उनकी बात नहीं मानी, जैसा
ही याहवेह ने कहा था. 14 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह का मन बहुत
कठोर हो गया है, वह लोगों को जाने नहीं देगा. 15 सुबह जब फ़रोह नदी की
ओर जाएगा, तब तुम नदी पर उनसे मिलना और तुम्हारे हाथ में वही लाठी
रखना, जो सांप बन गई थी. 16 तुम फ़रोह से यह कहना 'याहवेह ने, जो इब्रियों
के परमेश्वर हैं, मुझे तुमको यह कहने के लिए भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दो
कि वे निर्जन प्रदेश में जाकर मेरी आराधना कर सकें; लेकिन अभी तक तुमने
यह बात नहीं मानी है. 17 याहवेह ने यह कहा है कि तुम जान जाओगे कि मैं ही
याहवेह हूं, तुम देखना कि नदी के जल पर मैं इस लाठी से, जो मेरे हाथ में है,
मारूंगा और पानी खून बन जाएगा. 18 और उसमें सब मछलियां मर जायेंगी और
नदी से बदबू आएगी और मिस्र के लोग नील नदी से पानी नहीं पी पायेंगे.'" 19
फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "अहरोन से यह कहो: 'अपनी लाठी मिस्र देश
की नदियों, नालों, तालाबों और जल-कुंडों की ओर बढ़ाए ताकि सारा पानी
लहू बन जाये—चाहे पानी बर्तन में हो या पत्थर के पात्र में.'" 20 मोशेह तथा
अहरोन ने वैसा ही किया, जैसा याहवेह ने उनसे कहा. उन्होंने लाठी उठाई और
नील नदी के जल पर मारा. फ़रोह एवं उसके सेवक यह सब देख रहे थे. एकदम
नील नदी का पूरा पानी लहू बन गया. 21 नील नदी में जो मछलियां थी, मर
गईं. नदी में इतनी दुर्गंध थी कि मिस्र के लोग नील नदी का पानी नहीं पी सकते
थे. पूरे मिस्र देश में रक्त फैल गया. 22 अपने तंत्र मंत्र से मिस्र के जादूगरों ने भी
यही कर दिखाया; तौभी फ़रोह का मन और कठोर हो गया और उसने उनकी
बात नहीं मानी. 23 फ़रोह पर इन सब बातों का कोई असर नहीं हुआ और वह
अपने घर चला गया. 24 मिस्र के लोग पीने के पानी के लिए नील नदी के पास
गड्ढे खोदने लगे, क्योंकि नील नदी का पानी पीने योग्य नहीं रहा था. 25
याहवेह द्वारा नील नदी के पानी को लहू बनाए सात दिन हो चुके थे.

8 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह से कहो कि, याहवेह की ओर से यह
आदेश है, 'मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें. 2 यदि तुम
उन्हें जाने न दोगे, तो पूरा देश मेंढकों से भर जायेगा. 3 नील नदी मेंढकों से भर
जाएगी, मेंढक नदी में से निकलकर तुम्हारे घरों में, तुम्हारे बिछौनों पर, तुम्हारे
सेवकों के घरों में और पूरी प्रजा के घरों में भी भर जाएंगे—यहां तक कि
तुम्हारे तंदूरों में तथा तुम्हारे आटा गूंथने के बर्तनों में भी भर जायेंगे! 4 तुम पर,
तुम्हारी प्रजा पर तथा तुम्हारे सभी सेवकों पर मेढक चढ़ जायेंगे.'" 5 फिर
याहवेह ने मोशेह से कहा, "अहरोन से कहो, 'अपने हाथ में वह लाठी लेकर
उसे नदियों, तालाबों तथा नालों की ओर बढ़ाए, ताकि मेंढक मिस्र देश में भर
जाएं.'" 6 तब अहरोन ने यही किया. मेंढक ऊपर तक आ गए तथा समस्त मिस्र
देश पर छा गए. 7 जादूगरों ने भी अपनी गुप्त कला से वही कर दिखाया, वे भी
मिस्र देश में मेंढक ले आए. 8 फ़रोह ने मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया और
उनसे कहा, "याहवेह से बिनती करो कि वह इन मेंढकों को मुझसे तथा मेरी
प्रजा से दूर कर दें, तब मैं तुम लोगों को यहां से जाने दूंगा, ताकि याहवेह को
बलि चढ़ा सको." 9 मोशेह ने फ़रोह को उत्तर दिया, "तुम ही मुझे बताओ कि
कब मैं आपके लिये प्रार्थना करूं कि ये मेंढक तुम्हारे तथा तुम्हारे घरों से निकल
जाएं और सिर्फ नील नदी में रह जाएं?" 10 फ़रोह ने जवाब दिया, "कल
प्रार्थना करना." मोशेह बोले, "वैसा ही होगा, जैसा तुमने कहा है, ताकि तुमको
यह मालूम हो जाए, कि याहवेह, हमारे परमेश्वर, के तुल्य दूसरा कोई नहीं है.
11 मेंढक तुमसे, तुम्हारे घरों से, तुम्हारे सेवकों तथा तुम्हारी प्रजा से दूर कर दिए
जाएंगे और केवल नील नदी में दिखेंगे." 12 यह कहकर मोशेह तथा अहरोन
फ़रोह के पास से चले गए. फिर मोशेह ने मेढकों के जाने के बारे में जैसा फ़रोह
ने कहा था, याहवेह से प्रार्थना की. 13 याहवेह ने मोशेह की बात मानी, और
घरों से, महल तथा खेतों के सब मेंढक मर गये. 14 तब लोगों ने मरे हुए सब
मेंढकों को एक तरफ इकट्ठा किया, जिससे पूरे देश में बदबू फैल गई. 15 जैसे
ही फ़रोह ने यह देखा कि मेंढक सब मर गये और परेशानी सब दूर हो गई, उसने
अपना मन फिर कठोर कर लिया और उनकी बात नहीं सुनी. 16 फिर याहवेह
ने मोशेह से कहा, "अहरोन से कहो कि वह अपनी लाठी बढ़ाए तथा ज़मीन पर
मारे, ताकि पूरा मिस्र देश पिस्सुओं से भर जायें." 17 अहरोन ने लाठी को
ज़मीन पर मारा, जिससे पिस्सू मनुष्यों एवं पशुओं पर छा गए और पूरे मिस्र देश
की भूमि की धूल पिस्सू बन गई. 18 ऐसा ही जादू-टोना दिखाने वाले जादूगरों ने
भी करने की कोशिश की, लेकिन नहीं कर पाये; तब मनुष्यों एवं पशुओं को
पिस्सू ने परेशान कर दिया. 19 तब जादूगरों ने फ़रोह से कहा "यह तो सचमुच
परमेश्वर का काम है!" इस पर फ़रोह का मन और कठोर हो गया, जैसा याहवेह
ने कहा था, इसलिये उसने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया. 20 फिर याहवेह ने
मोशेह से कहा, "सुबह जल्दी उठकर फ़रोह से मिलने जाना जब वह नदी की
ओर जाए तब उससे कहना, 'याहवेह का आदेश है: मेरे लोगों को जाने दे, कि
वे मेरी आराधना करें. 21 अगर तुम मेरी प्रजा को जाने न दो, तो मैं तुम पर,
तुम्हारे सेवकों, तुम्हारी प्रजा तथा तुम्हारे घरों में कीटों के झुंड को भेजूंगा. मिस्र
के लोगों का घर और पूरा मिस्र कीटों से भर जाएगा. 22 "'लेकिन गोशेन देश,
जहां मेरी प्रजा रहती है; वहां कीट नहीं होगा, ताकि तुम्हें यह मालूम हो जाए
कि मैं, याहवेह हूं, और इस देश में मेरा अधिकार है. 23 मैं कल अपनी प्रजा
तथा तुम्हारी प्रजा को अलग कर दूंगा.'" 24 अगले दिन याहवेह ने वही किया.
फ़रोह के राजमहल में तथा उसके सेवकों के घरों को, कीटों से भर दिया. पूरा
मिस्र देश कीटों के कारण नाश हो गया. 25 फ़रोह ने मोशेह तथा अहरोन को
बुलवाया और उनसे कहा कि तुम लोग जाओ और "अपने परमेश्वर को बलि
चढ़ाओ, लेकिन मिस्र में ही रहना इससे बाहर मत जाना." 26 लेकिन मोशेह ने
जवाब दिया, "हम, याहवेह अपने परमेश्वर को बलि मिस्र में रहकर नहीं कर

सकते हैं. यदि हम मिस्रियों के सामने बलि अर्पण करेंगे, तो क्या वे हमारा पथराव न कर देंगे? 27 हमें तो निर्जन देश में तीन दिन की दूरी पर जाना ही होगा, कि हम वहां याहवेह, अपने परमेश्वर, को उन्हीं के आदेश के अनुसार बलि अर्पित कर सकें.” 28 फ़रोह ने उत्तर दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें जाने देता हूं, कि तुम निर्जन प्रदेश में जाकर याहवेह, अपने परमेश्वर को बलि चढ़ाओ, लेकिन बहुत दूर न जाना. वहां मेरे लिए भी प्रार्थना करना.” 29 यह सुन मोशेह ने उत्तर दिया, “अब मैं यहां से जा रहा हूं. और मैं याहवेह से बिनती करूंगा, कि कीटों को फ़रोह, उसके सेवकों तथा उसकी प्रजा से दूर कर दें; ऐसा न हो कि फ़रोह वापस चालाकी से प्रजा को रोकने की कोशिश करे.” 30 तब मोशेह फ़रोह के पास से चले गए और याहवेह से बिनती की और 31 याहवेह ने कीटों के समूहों को फ़रोह, उसके सेवकों तथा उसकी प्रजा से हटा लिया, और एक भी न बचा. 32 फिर फ़रोह ने अपना मन कठोर कर लिया और प्रजा को जाने नहीं दिया.

9 फिर परमेश्वर ने मोशेह से कहा, “जाकर फ़रोह को यह बता दो, ‘इब्रियों के परमेश्वर याहवेह ने यह कहा है, “मेरी प्रजा को यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें.” 2 यदि तुम उन्हें जाने नहीं दोगे 3 तो याहवेह का हाथ तुम्हारे पशुओं, घोड़ों, गधों, ऊंटों, गायों एवं भेड़-बकरियों पर बढ़ेगा और बड़ी महामारी फैल जायेगी. 4 याहवेह मिस्रियों के पशुओं में महामारी फैलायेंगे, लेकिन इस्राएल के पशुओं को कुछ नहीं होगा—जिसके कारण इस्राएल वंश के एक भी पशु की मृत्यु न होगी.’” 5 याहवेह ने एक समय ठहराकर यह कह दिया: “अगले दिन याहवेह इस देश में महामारी फैलायेंगे.” 6 तब याहवेह ने अगले दिन वही किया—मिस्र देश के सभी पशु मर गए; किंतु इस्राएल वंश में एक भी पशु नहीं मरा. 7 फ़रोह ने सच्चाई जानने के लिए सेवक को भेजा. तब उन्होंने देखा कि इस्राएल में एक भी पशु की मृत्यु नहीं हुई थी. यह देख फ़रोह का मन और कठोर हो गया, उसने प्रजा को जाने नहीं दिया. 8 फिर याहवेह ने मोशेह और अहरोन से कहा, “अपने-अपने हाथों में मुट्ठी भरके राख लेना, और उस राख को फ़रोह के सामने आकाश की ओर फेंकना. 9 यह राख पूरे देश पर रेत में बदल जाएगी, जिससे पूरे मिस्रवासियों एवं पशुओं के शरीर पर फोड़े फुंसी हो जायेंगे.” 10 इसलिये मोशेह तथा अहरोन ने भट्टे से राख उठाई और फ़रोह के सामने गए. मोशेह ने राख को आकाश की ओर उछाला, जिसके कारण मनुष्यों और पशुओं के शरीर पर फोड़े निकल आए. 11 इन फोड़ों के कारण जादूगर मोशेह के सामने खड़े न रह सके, क्योंकि फोड़े न केवल मिस्रवासियों की देह पर निकल आए थे किंतु जादूगरों के शरीर भी फोड़े से भर गये थे! 12 याहवेह ने फ़रोह के मन को कठोर बना दिया, और फ़रोह ने मोशेह की बात नहीं मानी; यह बात याहवेह ने मोशेह से पहले ही कह दी थी. 13 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “सुबह जल्दी उठकर फ़रोह के पास जाकर यह कहना, ‘याहवेह, इब्रियों के परमेश्वर की यह आज्ञा है कि मेरी प्रजा को यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें. 14 क्योंकि इस बार मैं और ज्यादा परेशानियां तुम पर, तुम्हारे सेवकों पर तथा तुम्हारी प्रजा पर डाल दूंगा, जिससे तुम्हें यह मालूम हो जाए कि पूरे पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई भी नहीं है. 15 क्योंकि अब तक मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुम और तुम्हारी प्रजा पर बहुत बड़ी विपत्तियां डालकर तुम्हें मिटा देता. 16 तुम्हारी उत्पत्ति के पीछे मेरा एकमात्र उद्देश्य था कि तुमको मेरे प्रताप का प्रदर्शन करूं, और सारी पृथ्वी में मेरे नाम का प्रचार हो. 17 लेकिन तुमने मेरी प्रजा को यहां से जाने की अनुमति न देकर अपने आपको महान समझा है! 18 अब देखना, कल इसी समय मैं बड़े-बड़े ओले बरसाऊंगा—ऐसा मिस्र देश में आज तक नहीं देखा गया है, 19 इसलिये अब सबको बता दो कि मैदानों से अपने पशुओं को तथा जो कुछ इस समय खेतों में रखा हुआ है, सुरक्षित स्थान पर ले जाएं. अगर कोई मनुष्य या पशु, ओले गिरने से पहले अपने घरों में न पहुंचें, वे अवश्य मर जायेंगे.’” 20 तब फ़रोह के उन सेवकों ने, जिन्होंने याहवेह की बात पर ध्यान दिया वे सब जल्दी अपने-अपने लोगों एवं पशुओं को लेकर घर चले गये 21 और जिन्होंने उस बात पर ध्यान नहीं दिया, वे सेवक एवं उनके पशु मैदान में ही रह गए. 22 याहवेह ने मोशेह को आदेश दिया, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाओ, ताकि पूरे मिस्र देश पर, मनुष्य एवं पशु, और मैदान के हर एक वृक्ष पर ओले गिरना शुरू हो जाएं.” 23 मोशेह ने अपनी लाठी आकाश की ओर बढ़ाई, और याहवेह ने आकाश से बादल गरजाये और ओले बरसाए और ओलों के साथ बिजली भी पृथ्वी पर गिरने लगी. 24 ओलों के साथ बिजली भी गिर रही थी; ऐसी दशा मिस्र देश में इससे पहले कभी नहीं हुई थी. 25 ओले उन सब पर गिरे, जो मैदानों में थे—ओले पौधे तथा वृक्ष पर भी गिरे जो पूरे नष्ट हो गये. 26 केवल गोशेन प्रदेश में जहां इस्राएली रहते थे, ओले नहीं गिरे. 27 तब फ़रोह ने मोशेह एवं अहरोन को बुलवाया और उनके सामने मान लिया: “मैंने पाप किया है, याहवेह ही महान परमेश्वर हैं, मैं तथा मेरी प्रजा अधर्मी हैं. 28 तुम याहवेह से बिनती करो! बहुत हो चुका गरजना और ओले बरसना. मैं तुमको यहां से जाने दूंगा, तुम यहां मत रुको.” 29 मोशेह ने फ़रोह को उत्तर दिया, “जैसे ही मैं नगर से बाहर निकलूंगा, मैं अपनी भुजाएं याहवेह की ओर उठाऊंगा; तब आग तथा ओले गिरना रुक जाएंगे, तब तुमको मालूम हो जाएगा कि पृथ्वी पर याहवेह का ही अधिकार है. 30 लेकिन तुम तथा तुम्हारे सेवकों के विषय में मुझे मालूम है कि अब भी तुममें याहवेह परमेश्वर के प्रति भक्ति नहीं है.” 31 (इस समय सन एवं जौ की फसल नष्ट हो चुकी थी, क्योंकि जौ की बालें आ चुकी थीं तथा सन में कलियां खिल रही थीं; 32 लेकिन गेहूं नष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसका उपज देर से होता है.) 33 तब मोशेह फ़रोह के पास से निकलकर नगर के बाहर चले गए और उन्होंने याहवेह की ओर अपने हाथ उठाए; और तुरंत बादल गरजना एवं ओला गिरना रुक गया, भूमि पर हो रही वर्षा भी रुक गई. 34 जैसे ही फ़रोह ने देखा कि ओले गिरना तथा बादल गरजना रुक गया, उन्होंने पाप किया और उसने और उसके सेवकों ने अपना मन कठोर कर लिया. 35 कठोर मन से फ़रोह ने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया—मोशेह को याहवेह ने पहले ही बता दिया था कि फ़रोह किस प्रकार अपने मन को फिर कठोर करेंगे.

10 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “फ़रोह के पास जाओ. मैंने ही उसका तथा उसके सेवकों का मन कठोर कर दिया है, ताकि मैं उनके बीच में अपने चिन्ह को दिखाऊं, 2 कि तुम खुद अपने पुत्र एवं पोतों से कह सको कि मैंने किस तरह से मिस्रवासियों को अपमानित करते हुए उनके बीच अपने चिन्ह दिखाए ताकि तुम लोग सुरक्षित मिस्र से निकल सको और समझ सको कि मैं ही याहवेह हूं.” 3 मोशेह एवं अहरोन ने फ़रोह के पास जाकर उससे यह कहा, “याहवेह, जो इब्रियों के परमेश्वर हैं, तुमसे कहते हैं, ‘तुम कब तक परमेश्वर के सामने अपने आपको नम्र नहीं करोगे? मेरी प्रजा को यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी आराधना कर सकें. 4 और यदि तुम मेरी प्रजा को जाने नहीं दोगे तो, कल मैं तुम्हारे देश में टिड्डियां ले आऊंगा. 5 वे देश में ऐसे भर जाएंगी कि किसी को भी भूमि दिखाई न देगी. ये टिड्डियां वह सब नष्ट कर देंगी, जो कुछ ओलों के गिरने से बचा हुआ है और मैदान में लगे हर पेड़ को भी सूखा देंगी. 6 फिर तुम्हारे तथा तुम्हारे सेवकों तथा पूरे मिस्रवासियों के घरों में टिड्डियां भर जाएंगी. ऐसा तो तुम्हारे पिता ने और उनके पूर्वजों ने जन्म से लेकर अब तक कभी नहीं देखा होगा.’” यह कहने के बाद मोशेह फ़रोह के पास से चले गए. 7 फ़रोह के मंत्रियों ने फ़रोह से पूछा, “और कब तक यह व्यक्ति हमारे लिए परेशानी का कारण बनेगा? इन्हें जाने दो ताकि वे याहवेह, अपने परमेश्वर की आराधना कर सकें. क्या आपको नहीं मालूम कि मिस्र देश नष्ट हो चुका है?” 8 मोशेह तथा अहरोन को फ़रोह के पास लाया गया. फ़रोह ने उनसे कहा, “जाओ और

याहवेह, अपने परमेश्वर की आराधना करो! कौन-कौन हैं, जो तुम्हारे साथ
जाएंगे?” 9 मोशेह ने उत्तर दिया, “हमारे साथ हमारे बालक और हमारे वृद्ध,
हमारे पुत्र-पुत्रियां, हमारे पशु एवं भेड़-बकरियां सब जायेंगे, क्योंकि हम याहवेह
के सम्मान में उत्सव मनाएंगे.” 10 फ़रोह ने कहा, “याहवेह तुम्हारे साथ रहें,
लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हारे मन में कोई ओर योजना छिपी हुई है! 11
केवल पुरुषों को ही लेकर याहवेह की वंदना करो, क्योंकि यही तुम्हारी इच्छा
है.” ऐसा कहकर वहां से मोशेह तथा अहरोन को उनके सामने से निकाल दिया.
12 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “मिस्र की ओर अपना हाथ बढ़ाओ कि
टिड्डियां आकर मिस्र देश पर छा जाएं तथा हर पौधे को नष्ट कर दें.” 13 तब
मोशेह ने अपनी लाठी मिस्र देश की ओर बढ़ाई तब याहवेह ने मिस्र देश में
पूरा दिन और पूरी रात तेज हवा चलाई. और सुबह हवा के साथ टिड्डियां भी
आईं. 14 टिड्डियां पूरे मिस्र देश पर फैल गईं, वे असंख्य थीं. इससे पहले इतनी
टिड्डियां कभी देखी नहीं गई थीं. और न ही इसके बाद ये ऐसी बड़ी संख्या में
देखी जाएंगी. 15 इन टिड्डियों ने पूरे देश की धरती को भर दिया था, जिससे देश
में अंधेरा सा हो गया. इन्होंने देश के हर पौधे को तथा सभी वृक्षों के फलों को,
जो ओलों से बचे थे नष्ट कर दिया. इस कारण पूरे मिस्र देश में वृक्षों तथा मैदान
के पौधों में कोई भी फल फूल न बचे. 16 तब फ़रोह ने जल्दी से मोशेह तथा
अहरोन को बुलवाया और उनसे कहा, “मैंने याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तथा
तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है. 17 इसलिये कृपा कर मेरे पाप क्षमा कर दो और
याहवेह, अपने परमेश्वर से विनती करो, कि वह इस मृत्यु को मुझसे दूर कर
दें.” 18 मोशेह फ़रोह के पास से बाहर चले गए और उन्होंने याहवेह से विनती
की, 19 तब याहवेह ने हवा की दिशा को बदलकर, टिड्डियों को लाल सागर में
डाल दिया—तब पूरे देश में एक भी टिड्डी नहीं बची. 20 किंतु याहवेह ने फ़रोह
के मन को कठोर बना दिया. उसने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया. 21 तब
याहवेह ने मोशेह से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाओ, ताकि पूरे
मिस्र देश पर अंधेरा छा जाए—इतना गहरा अंधकार कि उसे स्पर्श कर सके.”
22 तब मोशेह ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया और पूरे मिस्र देश में
तीन दिनों के लिए घोर अंधकार छाया रहा. 23 कोई भी एक दूसरे को देख
नहीं पाया और कोई भी अपनी जगह से तीन दिन तक नहीं हटा, लेकिन पूरे
इस्राएलियों के घर में रोशनी थी. 24 फ़रोह ने मोशेह को बुलवाया और कहा,
“जाओ, याहवेह की वंदना करो! लेकिन अपने पशुओं और भेड़-बकरी यहीं
छोड़ जाना. तुम्हारे बालक भी तुम्हारे साथ जा सकते हैं.” 25 किंतु मोशेह ने
उत्तर दिया, “हमें बलि तथा होमबलि के लिए पशु और भेड़-बकरी ले जाना
ज़रूरी है ताकि हम याहवेह अपने परमेश्वर को बलि चढ़ा सकें. 26 इसलिये
हमारे पशु भी हमारे ही साथ जाएंगे; हम कुछ भी यहां नहीं छोड़ेंगे. जब तक
हम अपनी जगह नहीं पहुंच जाते, हमें नहीं मालूम कि हमें याहवेह हमारे
परमेश्वर की आराधना किस प्रकार करनी होगी.” 27 किंतु याहवेह ने फ़रोह का
मन कठोर बना दिया. वह उन्हें जाने नहीं दे रहा था. 28 फ़रोह ने उनसे कहा,
“दूर हो जाओ मेरे सामने से! फिर मत आना मेरे सामने! जिस दिन तुम मेरा मुंह
देखोगे, तुम अवश्य मर जाओगे!” 29 मोशेह ने जवाब दिया, “ठीक कहा
तुमने! अब मैं तुम्हारा मुंह कभी न देखूंगा!”

11 याहवेह ने मोशेह से कहा, “फ़रोह तथा मिस्र पर मैं एक और कष्ट भेजूंगा.
इसके बाद वह तुम्हें यहां से जाने देगा; और वह ज़रूर तुम्हें यहां से
निकालेगा. 2 इस्राएलियों से यह कहो कि प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री अपने-अपने
पड़ोसी से सोना एवं चांदी मांग ले.” 3 याहवेह ही ने मिस्रियों को इस्राएलियों
के प्रति दयालु बना दिया. इसके अलावा मोशेह भी मिस्र देश में फ़रोह के सेवकों
तथा मिस्री लोगों में महान बने थे. 4 मोशेह ने कहा, “याहवेह का संदेश है,
‘आधी रात को मैं मिस्र देश के बीच में से निकल जाऊंगा. 5 और मिस्र देश के
हर पहले बेटे की मृत्यु हो जाएगी. फ़रोह के पहले बेटे से लेकर चक्की पीसने
वाली का पहला बेटा और सब पशुओं का भी पहिलौठा मर जाएगा. 6 तब पूरे
देश में दुःख का माहौल होगा; ऐसा न तो कभी इससे पहले हुआ, न ऐसा फिर
कभी होगा. 7 पर इस्राएली मनुष्यों पर और उनके किसी पशु पर कोई कुत्ता न
भौंकेगा ताकि यह समझ आ जाये कि यह याहवेह ही हैं जिन्होंने इस्राएलियों
तथा मिस्रियों के बीच अंतर रखा है.’ 8 तुम्हारे ये सभी सेवक मेरे पास आकर
मुझे प्रणाम करेंगे और कहेंगे, आप चले जाइए और अपने सब लोगों को भी
अपने साथ ले जाइए!” यह कहते हुए मोशेह बहुत गुस्से में फ़रोह के पास
से निकल गए. 9 इसके बाद याहवेह ने मोशेह से कहा, “फ़रोह तो अब भी
तुम्हारी न सुनेगा, क्योंकि मैं मिस्र देश में और अद्भुत काम दिखाना चाहता हूं.”
10 मोशेह तथा अहरोन ने सभी चमत्कार फ़रोह को दिखाए. फिर भी याहवेह
ने फ़रोह का मन कठोर बनाए रखा, और फ़रोह इस्राएलियों को मिस्र देश से
निकलने के लिए रोकता रहा.

12 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन से कहा, 2 “तुम्हारे लिए यह महीना साल
का पहला महीना होगा. 3 सब इस्राएलियों को बता दो कि इस महीने
की दस तारीख को अपने-अपने परिवार के लिए एक-एक मेमना चुनकर अलग
कर ले. 4 यदि एक परिवार एक पूरे जानवर को खाने के लिए बहुत छोटा
है, तो उसे पड़ोस में दूसरे परिवार के साथ विभाग करना. प्रत्येक परिवार के
आकार के अनुसार जानवर को विभाजित करें जितना वे खा सकते हैं. 5 मेमना
एक साल का नर हो, मेमने में कोई दोष न हो और यह भेड़ में से या बकरियों में
से लिया जा सकता है. 6 लेकिन इसी महीने के चौदहवें दिन तक मेमने का
खास ध्यान रखना. फिर पूरे इस्राएली लोग मिलकर सूरज ढलने पर इसे बलि
चढ़ाना. 7 वे जिस घर में मेमने को खाएंगे, उस घर के दरवाजे के दोनों तरफ
और दरवाजे के माथे पर मेमने का खून लगाएं. 8 ज़रूरी है कि इस मेमने का
मांस उसी रात को आग में भूनकर, बिना खमीर की रोटी और कड़वी सब्जी के
साथ खाएं. 9 यह मांस न तो कच्चा खाएं और न उबाल कर, इसको आग में
भूनकर इसके सिर, पांव तथा अंतड़ियां खानी है. 10 इसमें से दूसरे दिन के लिए
कुछ भी नहीं बचाना और अगर बच जाता है तो उसे पूरा आग में जलाकर राख
कर देना. 11 इसको खाते समय कमर पर कमरबंध बांधे, पांवों में जूते पहनकर
हाथ में अपनी लाठी लेकर जल्दी से खाना; यही याहवेह का फ़सह पर्व होगा.
12 “क्योंकि उस रात मैं मिस्र देश में से होकर निकलूंगा और मिस्र देश की सभी
पहली संतान—चाहे मनुष्य का हो या पशु का, सबको मार दूंगा; मैं ही याहवेह
हूं और मैं मिस्र देश के सब देवताओं का भी न्याय करूंगा. 13 जिस घर के
दरवाजे पर मेमने के रक्त का निशान होगा उस घर को मैं छोड़ दूंगा किंतु मिस्र
का नाश होगा. 14 “याद रहे कि यह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार दिन हो. यह
दिन याहवेह के उत्सव के रूप में मनाया करना और—यह तुम्हारी पीढ़ी से
पीढ़ियों के लिए हमेशा मनाए जाते रहने के लिए एक नियम बनाया जाए. 15
पहले दिन सब अपने-अपने घर से खमीर निकालकर फेंक देना और सात दिन
तक बिना खमीर की रोटी खाना. अगर कोई इन सात दिनों में खमीर वाली रोटी
खाएगा तो उसे इस्राएलियों के बीच से काट दिया जाएगा. 16 पहले और सातवें
दिन पवित्र सभा होगी. इन दोनों दिनों में कोई भी काम न करना; केवल वे ही
व्यक्ति काम करें जिन्हें खाना बनाना हो. 17 “तुम्हारा अखमीरी रोटी का पर्व
मनाना ज़रूरी है; क्योंकि यही वह दिन है, जिस दिन मैंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर
निकाला. यह एक यादगार दिन बनकर इन सब बातों को याद करते हुए यह
उत्सव पीढ़ी से पीढ़ी तक मनाया जाए. 18 पहले महीने की चौदहवी तारीख को
शाम को बिना खमीर रोटी खाना होगा और यही खाना इक्कीसवीं तारीख की
शाम तक खाना. 19 इन सात दिनों में तुम्हारे घर में खमीर न रखना. और यदि
कोई व्यक्ति खमीर वाला भोजन करता हुआ पाया गया, तो उसे इस्राएली प्रजा में

से मिटा दिया जाएगा—चाहे वह विदेशी हो या स्वदेशी. 20 किसी भी प्रकार का
खमीर वाला भोजन करना मना है. अपने घरों में बिना खमीर की रोटी ही
खाना.'' 21 तब मोशेह ने इस्राएलियों के सब प्रधानों को बुलाया और उनसे
कहा, ''जाकर अपने-अपने परिवारों के अनुसार एक-एक मेमना अलग कर
लो, और फ़सह के मेमने की बलि करना. 22 जूफ़ा नामक झाड़ी का गुच्छा
लेकर उसे मेमने के रक्त में डुबोना, और दरवाजे के दोनों तरफ तथा ऊपर
लगाना. तुममें से कोई भी सुबह तक इस दरवाजे से बाहर नहीं निकले, 23
क्योंकि याहवेह उस समय मिस्रियों को मारते हुए निकल रहे होंगे. जिस घर के
दरवाजे के दोनों तरफ और माथे पर मेमने का खून दिखेगा, उसे छोड़ते हुए आगे
निकल जाएंगे और अंदर आकर किसी को नहीं मारेंगे. 24 ''हमेशा तुम तथा
तुम्हारी संतान इसे एक यादगार दिन के रूप में मनाया करना. 25 जब तुम उस
देश में जाओगे, जिसे याहवेह तुम्हें देंगे, वहां भी तुम इन बातों को मानना. 26
जब तुम्हारे बालक तुमसे यह पूछें, 'क्या मतलब है इस पर्व का जो मनाया जाता
है?' 27 तब तुम उन्हें उत्तर देना, 'यह याहवेह के लिए फ़सह का बलिदान है,
जिन्होंने मिस्रियों को मारते हुए हम इस्राएलियों को सुरक्षित रखा, अतः इसी
कारण यह पर्व मनाया जाता है.''' फिर लोगों ने झुककर प्रणाम किया और
परमेश्वर की आराधना की! 28 इस्राएलियों ने वैसा ही किया; जैसा याहवेह ने
मोशेह एवं अहरोन से कहा था. 29 लगभग आधी रात को याहवेह ने मिस्र देश में
सभी पहिलौठों को मार दिया, फ़रोह से लेकर तथा जो बंदीगृह में थे और
पशुओं के भी पहलौठे को मार दिया. 30 रात में फ़रोह, उसके सेवक तथा सब
मिस्रवासी जाग उठे क्योंकि पूरे मिस्र देश में रोने का शब्द सुनाई दे रहा था, कोई
भी ऐसा परिवार न था, जहां किसी की मृत्यु न हुई हो. 31 अतः फ़रोह ने रात में
ही मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया और उनसे कहा, ''यहां से निकल जाओ
और जैसा तुम चाहते हो, तुम इस्राएलियों समेत जाकर याहवेह की वंदना करो.
32 अपने पशु एवं भेड़-बकरी भी अपने साथ ले जाओ, और मुझे आशीर्वाद देते
जाना.'' 33 मिस्रवासी इस्राएलियों को जल्दी अपने बीच से भेज देना चाहते थे,
क्योंकि उनको डर था कि कहीं उनकी भी मृत्यु न हो जाये. 34 इससे पहले
कि इस्राएलियों का गूंधा हुआ आटा खमीर हो जाये, उन्होंने उसे कटोरे में
रखकर और कपड़ों में बांधकर अपने कंधों पर उठा लिया. 35 इस्राएल वंश ने
बिलकुल वही किया, जैसा उनसे मोशेह ने कहा था. उन्होंने मिस्र के लोगों से
सोने-चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिए थे. 36 याहवेह ने इस्राएलियों को मिस्र
के लोगों के मन में उनके प्रति ऐसी मनोवृत्ति दी कि मिस्रवासी इस्राएलियों की
इच्छा पूरी करते गए. इस प्रकार इस्राएलियों ने पूरे मिस्रवासियों को लूट लिया.
37 इस्राएली रामेसेस नामक स्थान से पैदल चलकर सुक्कोथ तक पहुंचे. इनमें
स्त्रियों और बच्चों के अलावा छः लाख पुरुष थे. 38 इन इस्राएलियों के साथ
बहुत से मिश्रित वर्ग के लोग भी निकले और भेड़-बकरी, गाय-बैल और बहुत से
पशु थे. 39 उन्होंने गूंधे हुए आटे से, जो वे मिस्र देश से अपने साथ लाए थे,
अपने लिए अखमीरी रोटियां बनाईं. क्योंकि वे मिस्र देश से बहुत जल्दी में
निकाले गए थे, उनको वहां रुकने की और हिम्मत नहीं थी. वे तुरंत वहां से
निकले और उन्हें अपने लिए खाना बनाने का भी समय नहीं मिला. 40 मिस्र
देश में इस्राएली चार सौ तीस वर्ष तक रहे. 41 जिस दिन चार सौ तीस वर्ष पूरे
हुए, उसी दिन याहवेह की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई. 42 जिस रात वे
सब मिस्र से निकले वह रात उनके लिए विशेष रात कहलाई, यह याहवेह की
महिमा की रात थी. जिसे, इस्राएल के सभी लोगों को तथा उनकी पूरी पीढ़ियों
को, उस दिन को महत्व देना ज़रूरी था. 43 याहवेह ने मोशेह एवं अहरोन को
फ़सह का नियम समझाया: ''इस्राएलियों के अलावा कोई भी परदेशी इस भोजन
को न खाए. 44 लेकिन जिस व्यक्ति को दाम देकर दास के रूप में खरीदा हो
और उसका ख़तना कर लिया हो, वह व्यक्ति इस भोजन को खा सकता है. 45
कोई भी परदेशी और मज़दूर इसमें शामिल न किया जाए. 46 ''खाना एक ही
घर में रहकर खाया जाए, और मांस का कोई भी टुकड़ा घर के बाहर न ले जाया
जाए और मेमने की हड्डी भी न तोड़ी जाए. 47 सभी इस्राएली इस उत्सव में
शामिल हों. 48 ''यदि कोई परदेशी मेहमान इस फ़सह में शामिल होना चाहता है
तो, पहले सारे पुरुषों का ख़तना करके याहवेह के उस पर्व में उसे साथ लिया जा
सकता है; तब वह उस देश के ही लोग समान हो जाएगा; लेकिन कोई भी बिना
ख़तना किए इसमें शामिल न हो. 49 नियम स्वदेशी और विदेशी सबके लिए एक
जैसा ही हो.'' 50 सभी इस्राएलियों ने जैसा मोशेह तथा अहरोन को याहवेह ने
आदेश दिया वैसा ही किया. 51 यह वही दिन था, जब याहवेह ने इस्राएलियों
को मिस्र देश से बाहर निकाला था.

13 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा: 2 ''मनुष्य एवं पशु की पहली संतान मेरे
लिए अलग करो. सब बच्चे, जो इस्राएल में पहिलौठे हैं, चाहे मनुष्य के
हों, या पशु के, उन सभी पर मेरा ही अधिकार होगा.'' 3 मोशेह ने लोगों से
कहा, ''यह दिन याद रखना, जब तुम मिस्र से निकले थे—जब तुम ग़ुलामी में थे
तब याहवेह ही ने अपने सामर्थ्यी हाथों द्वारा उस जगह से तुम्हें बाहर निकाला;
इस कारण खमीर वाली कोई भी चीज़ न रखना. 4 अबीब के महीने में आज के
दिन तुम निकले हो. 5 जब याहवेह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से किए गए वायदे के
अनुसार कनानी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी तथा यबूसी जाति के देशों में पहुंचा देंगे,
जहां दूध एवं मधु की धाराएं बहती हैं, तब तुम्हें इस दिन को मनाना ज़रूरी होगा.
6 सात दिन बिना खमीर की रोटी खाना और सातवें दिन याहवेह के लिए उत्सव
का दिन होगा. 7 सातों दिन बिना खमीर की रोटी ही खाना. तुम्हारे बीच खमीर
की कोई भी चीज़ न हो और पूरे देश से भी खमीर की कोई वस्तु न लाना. 8 तुम
अपने बच्चों को भी सच्चाई बताना, 'यह सब इसलिये किया जाता है, क्योंकि
जब हम मिस्र देश से निकले तब याहवेह ने हमारे लिए यह सब किया था.' 9
इस कारण तुम्हें भी इस दिन को उतना ही मनाना और याद रखना होगा, और
याहवेह के नियम और व्यवस्था को कभी नहीं भूलना. यह हमेशा अपने माथे
पर याद कराने वाली बात ठहरे और तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह होगा, क्योंकि
याहवेह ने अपनी सामर्थ्य के द्वारा तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था. 10 इस
कारण हर वर्ष इस विधि का सही समय पर पालन करना. 11 ''तब याहवेह
पूर्वजों से किए गए वायदे के अनुसार तुम्हें कनानियों के देश में पहुंचा कर
तुम्हें उसका अधिकार देंगे, 12 तब घर की हर पहली संतान को याहवेह को
अर्पित करना ज़रूरी होगा, हर पशु का भी पहिलौठा याहवेह का होगा. हर एक
पहिलौठे नर पर परमेश्वर का अधिकार होगा. 13 गधी के पहिलौठे के बदले में
मेमने को अलग कर सकते हो, और अगर मेमना न देना चाहो तो गदही के
पहिलौठे का गला तोड़ देना. पर हर एक पहिलौठे पुत्र का बदला देकर छुड़ाना.
14 ''जब, तुम्हारे पुत्र इसके बारे में तुमसे पूछें तब तुम बताना, 'जब तुम गुलाम थे
तब याहवेह ने कैसे अपनी सामर्थ्य से तुम्हें मिस्र देश से निकाला. 15 मिस्र देश से
फ़रोह हमें निकलने नहीं दे रहा था, तब याहवेह ने मिस्र देश में प्रत्येक पहिलौठे
को मार दिया—चाहे वह मनुष्य का था या पशु का. इसलिये पशु के पहलौठे नर
को याहवेह के लिए बलि करते हैं, किंतु मनुष्य के पहिलौठे को बदला देकर
छुड़ा देते हैं.' 16 अब यह तुम्हारे हाथ पर चिन्ह के समान होगा तथा तुम्हारे
माथे पर टीका समान होगा—क्योंकि याहवेह ने हमें मिस्र देश से अपने सामर्थ्यी
हाथों के द्वारा निकाला था.'' 17 जब फ़रोह ने प्रजा को वहां से जाने को कहा,
तब परमेश्वर उन्हें फिलिस्तीनियों के देश में से होकर नहीं ले गए, यह रास्ता
बहुत छोटा था. लेकिन परमेश्वर का कहना था, ''लड़ाई देखकर लोग मिस्र देश
वापस चले न जाएं.'' 18 परमेश्वर उन्हें घुमाकर रेगिस्तानी रास्ते से लाल सागर
की ओर ले गए ताकि मिस्र देश से निकलकर इस्राएली युद्ध के लिए तैयार होकर
आगे बढ़ें. 19 मोशेह ने अपने साथ योसेफ़ की अस्थियां भी ले लीं थी. क्योंकि

योसेफ़ ने इस्राएलियों से शपथ करवाई थी, “निश्चय परमेश्वर तुम्हारी दशा पर
ध्यान देंगे और जब तुम यहां से जाओ तब मेरी अस्थियों को भी अपने साथ
ले जाना.” 20 इस्राएलियों ने सुक्कोथ से चलना शुरू किया और एथाम में
रुक गये, जो रेगिस्तान के किनारे पर ही था. 21 याहवेह उन्हें मार्ग दिखाकर
उनके आगे-आगे चले; दिन में बादल तथा रात में आग की रोशनी देकर उनको
चलाया, ताकि वे दिन में तथा रात में भी आराम से चल सकें. 22 दिन में बादल
और रात में आग का खंभा लोगों के आगे-आगे चलता रहा याहवेह ने उनसे
कभी दूर न हुए.

14 याहवेह ने मोशेह से कहा, 2 “इस्राएलियों को आदेश दो, कि वे मुड़
जाएं तथा पी-हाहीरोथ के पास, जो मिगदोल तथा सागर के बीच में है,
अपना तंबू डालें. तंबू सागर तट पर बाल-जेफोन के विपरीत खड़े करना 3 ताकि
फ़रोह यह समझे कि इस्राएली देश के उलझन से मरुस्थल में भटक रहे हैं. 4 तब
मैं फ़रोह के मन को कठोर कर दूंगा और वह इस्राएलियों का पीछा करता हुआ
आएगा. तब मैं फ़रोह तथा उसकी सेना के द्वारा मेरी महिमा कराऊंगा, जिससे
मिस्रवासियों को यह मालूम हो जाएगा कि मैं ही याहवेह हूं.” 5 जब मिस्र
के राजा को यह मालूम पड़ा कि वे लोग भाग गए हैं, तब फ़रोह तथा उसके
सेवकों का मन बदल गया. वे आपस में कहने लगे: “हमने यह क्या कर दिया;
हमने इस्राएलियों को जाने दिया?” 6 फ़रोह ने अपना रथ तैयार करवाया और
अपनी सेना को अपने साथ लिया. 7 फ़रोह ने छः सौ अच्छे रथ अपने साथ
लिए तथा अपने अधिकारियों को कहा कि मिस्र देश के सभी रथ एवं उनके
चालक भी साथ आएं. 8 याहवेह ने मिस्र देश के राजा फ़रोह का मन कठोर
बना दिया. इस्राएली निश्चिंत होकर चले जा रहे थे; फ़रोह ने उनका पीछा
किया. 9 पर मिस्री अपने सब घोड़ों, रथों, चालकों तथा सेना को साथ लेकर
इस्राएलियों का पीछा करते हुए सागर तट पर उनके तंबू के पास जा पहुंचे, जो
पी-हाहीरोथ में बाल-जेफोन के विपरीत था. 10 जब फ़रोह उनके निकट पहुंचा
तो इस्राएलियों ने देखा कि मिस्री उनका पीछा करते हुए आ रहे हैं, तब वे बहुत
डर गए और याहवेह को पुकारने लगे. 11 वे मोशेह से लड़ने लगे, और कहने
लगे, “क्या मिस्र देश में कब्र नहीं थी, जो आप हमें यहां ले आए हैं, कि हमारी
मृत्यु यहां मरुभूमि में हो जाए? आपने हमसे ऐसा क्यों किया—क्यों आप हमें
मिस्र देश से निकाल लाए? 12 क्या हमने मिस्र में आपसे नहीं कहा था, ‘हमें
यहीं रहने दीजिए, कि हम मिस्रियों की सेवा करते रहें’? इस निर्जन प्रदेश में
मरने से अच्छा था कि हम मिस्रियों की सेवा करते रहते!” 13 मोशेह ने लोगों
से कहा: “मत डरो! स्थिर खड़े रहो और याहवेह का अद्भुत काम देखो, जो वह
तुम्हारे लिए करेंगे; क्योंकि तुम आज जिन मिस्रियों को देख रहे हो, इसके बाद
उन्हें फिर कभी भी न देखोगे. 14 तुम चुप रहो, याहवेह ही तुम्हारे लिए लड़ेंगे.”
15 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “क्यों मेरी दोहाई दे रहे हो? इस्राएलियों से
कहो कि वे आगे बढ़ें. 16 तुम्हारे लिए मेरा आदेश है कि अपनी लाठी समुद्र के
ऊपर बढ़ाओ और जल दो भाग हो जाएंगे, जिससे इस्राएली सूखी भूमि से होकर
चले जाएंगे. 17 मैं मिस्रियों के मन को कठोर बना दूंगा और वे उनका पीछा
करते हुए आएंगे. तब मैं फ़रोह की सेना, उसके रथों एवं सवारियों के ज़रिये
अपनी महिमा करवाऊंगा. 18 जब फ़रोह की सेना, उसके रथों एवं सवारियों
के ज़रिये मेरी महिमा होगी तब मिस्र के लोग समझ जायेंगे कि मैं ही याहवेह
हूं.” 19 फिर परमेश्वर का स्वर्गदूत, जो अब तक इस्राएलियों के आगे-आगे जा
रहा था, उनके पीछे आ गया तथा बादल भी आगे से हटकर उनके पीछे आ गए.
20 इस प्रकार स्वर्गदूत और बादल इस्राएलियों तथा मिस्रियों के बीच आ गए.
बादल के कारण एक ओर तो अंधकार था, लेकिन रात में उन्हें रोशनी भी
मिलती रही. 21 मोशेह ने समुद्र के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और याहवेह ने रात
भर तेज हवा बहाई और समुद्र को दो भाग करके जल को पीछे हटा दिया,
जिससे बीच की ज़मीन सूखी हो गयी. 22 इस्राएली सूखी ज़मीन पर चलकर
दूसरी ओर आ गए, क्योंकि जल उनके दोनों ओर दीवार बनकर खड़ा हो गया
था. 23 तब मिस्रियों ने इस्राएलियों का पीछा किया और फ़रोह के सभी घोड़े,
उसके रथ तथा उनके चालक उनका पीछा करते हुए समुद्र के बीच आ गये. 24
सुबह के समय याहवेह ने आग तथा बादल में से होकर मिस्री सेना को देखा.
25 और उनके रथों के पहिये फंसा दिये ताकि वे आगे बढ़ नहीं पायें. मिस्री
आपस में कहने लगे, “चलो, हम इस्राएलियों का पीछा करना छोड़कर भाग
चलें—क्योंकि स्वयं याहवेह उनकी ओर से हमारे विरुद्ध लड़ रहे हैं.” 26
फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “समुद्र के ऊपर अपना हाथ बढ़ा दो कि जल
मिस्रियों, उनके रथों और उनके घुड़सवारों के ऊपर लौट आये.” 27 मोशेह ने
समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और सुबह होने पर समुद्र पहले जैसा बहने लगा.
तब तक मिस्री जल के बीच में आ गये थे. वे जब भाग रहें थे, तब याहवेह ने
उन्हें समुद्र के बीच में ही डुबो दिया. 28 समुद्र के बहाव ने रथों, चालकों तथा
फ़रोह की पूरी सेना को डुबो दिया, जो इस्राएलियों का पीछा करते हुए समुद्र में
पहुंची थी. उनमें से एक भी व्यक्ति जीवित न रहा. 29 किंतु इस्राएली समुद्र के
बीच में से सूखी भूमि पर चलते हुए पार हो गए. 30 याहवेह ने उस दिन इस्राएल
को मिस्रियों से बचाया. इस्राएलियों ने समुद्र में मिस्रियों के शव देखे. 31 जब
इस्राएलियों ने उस ताकतवर काम पर ध्यान दिया, जो याहवेह ने मिस्रियों से
किया, वे याहवेह के प्रति श्रद्धापूर्ण डर से भर गए और उन्होंने याहवेह तथा उनके
दास मोशेह पर विश्वास किया.

15 तब मोशेह तथा इस्राएलियों ने याहवेह के लिए यह गीत गाया: “मैं
याहवेह के लिए गीत गाऊंगा, क्योंकि वे अति महान परमेश्वर हैं. घोड़ों
एवं चालकों को उन्होंने समुद्र में डाल दिया. 2 “याहवेह मेरा बल और मेरा
गीत हैं, वही मेरा उद्धार बना हैं. यही हैं मेरे परमेश्वर, मैं उनकी स्तुति करूंगा; मेरे
पिता के परमेश्वर, उनकी मैं प्रशंसा करूंगा, 3 याहवेह योद्धा हैं और उनका नाम
याहवेह है. 4 याहवेह ने फ़रोह के रथों एवं उसकी सेना को समुद्र में फेंक दिया;
उसके सभी अधिकारी लाल सागर में डूब गए, 5 वे पत्थर के समान गहराइयों
में डूब गये, और गहरा पानी ने उन्हें ढंक दिया. 6 हे याहवेह, आपका दायां हाथ
सामर्थ्य से भरा है. और आपका बायां हाथ शत्रु को चूर-चूर कर देता है. 7
“शत्रुओं को अपने बडे पराक्रम से आप पराजित कर देते हैं, जो आपके विरुद्ध
सिर उठाते हैं; आप उन पर अपना क्रोध प्रकट करते हैं. और उन्हें भूसे के
समान जला देते है. 8 आपके नथुनों की सांस से समुद्र का जल इकट्ठा हो
गया और जल का बहाव रुक जाता है. बढ़ता पानी दीवार की तरह उठ खड़ा
हुआ, समुद्र के हृदय में गहरा जल जमा हो गया! 9 शत्रु ने कहा था, ‘मैं पीछा
करूंगा, मैं उन्हें पकड़ लूंगा और लूटकर चीज़ों को बांट लूंगा तब मुझे तसल्ली
मिलेगी, मैं तलवार निकालूंगा और अपने हाथ से उन्हें नष्ट कर दूंगा.’ 10 आपने
अपना सांस फूंका तब सागर ने उन्हें ढंक लिया. वे महा समुद्र में सीसे के समान
डूब गए. 11 हे याहवेह, देवताओं में आपके तुल्य कौन है? कौन है आपके
समान, पवित्रता में सर्वोपरि, स्तुति के योग्य और अनोखे काम करनेवाले? 12
“आपने अपना दायां हाथ बढ़ाया और पृथ्वी ने उन्हें निगल लिया. 13 आपने
अपनी कृपा से छुड़ाए हुए लोगों को चलाया, आप अपने सामर्थ्य से उन्हें
अपनी पवित्रता के स्थान में ले गए. 14 देश-देश के लोग यह सब सुनकर
घबरा जाएंगे; फिलिस्तीनियों पर डर छा जाएगा, 15 एदोम के प्रधान निराश हो
जायेंगे; मोआब के ताकतवर कांपने लगेंगे; कनान के निवासी उदास हो जाएंगे.
16 याहवेह, जब तक आपकी प्रजा वहां से निकल न जाए, जब तक आपके द्वारा
बचाये हुए लोग वहां से आ न जाए तब तक उनमें डर बना रहेगा; आपके बाहों
की ताकत से वे अब पत्थर समान बन जाएंगे; 17 आप उन्हें लाकर अपने पहाड़
पर बसाएंगे. उस स्थान पर, हे याहवेह, जो आपने अपने लिए अलग किया है;

वही पवित्र स्थान, जिसे आपने अपने हाथों से बनाया है. **18** "याहवेह का राज्य सदा-सर्वदा स्थिर रहेगा." **19** जब फ़रोह के घोड़े, उसके रथों तथा चालकों के साथ सब समुद्र में डूब गए और याहवेह समुद्र के जल को उनके ऊपर ले आए—लेकिन इस्राएली समुद्र के बीच से सूखी भूमि पर चलते हुए निकल गए. **20** तब अहरोन की बहन मिरियम ने, जो नबिया थी, खंजरी उठाई और उसके साथ सभी स्त्रियां अपने-अपने हाथों में खंजरी लेकर नाचने लगीं. **21** मिरियम खुशी से गाने लगी, "याहवेह का गीत गाओ, क्योंकि वे अति महान हैं; उन्होंने तो घोड़ों को चालकों सहित समुद्र में डूबा दिया." **22** फिर मोशेह इस्राएलियों को लाल सागर से शूर के निर्जन देश में ले गए. वे तीन दिन पानी ढूंढ़ते रहे, किंतु उन्हें कहीं भी पानी का सोता नहीं दिखा. **23** वे माराह नामक स्थान पर पहुंचे, किंतु माराह का पानी कड़वा था; इस कारण इस स्थान का नाम माराह पड़ा; **24** इसलिये लोग मोशेह पर बड़बड़ाने लगे. वे कहने लगे, "हम क्या पिएंगे?" **25** मोशेह ने याहवेह को पुकारा और याहवेह ने उन्हें एक लकड़ी का टुकड़ा दिखाया. जब मोशेह ने उस पेड़ को पानी में डाला, पानी मीठा बन गया. उसी जगह याहवेह ने उनके लिए एक नियम और विधि बनाई. **26** याहवेह ने उनसे कहा, "यदि तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के वचन को पूरे मन से मानोगे और सही काम करोगे, उनकी बातों पर ध्यान दोगे तथा उनके सब नियमों को मानोगे तो मिस्रियों के साथ घटित, ऐसी कोई परेशानी तुम पर नहीं आने दूंगा; क्योंकि मैं याहवेह राफ़ा हूं, अर्थात् चंगा करनेवाला हूं." **27** तब वे एलिम नामक स्थान पर पहुंचे, जहां बारह झरने तथा सत्तर खजूर के पेड़ थे. इस्राएलियों ने जल के स्रोतों के पास ही अपना पड़ाव डाला.

16 फिर इस्राएली एलिम से चलकर सिन नामक निर्जन देश पहुंचे. यह एलिम एवं सीनायी के बीच में था. मिस्र देश से निकले दो महीने तथा पन्द्रह दिन हो चुके थे. **2** इस निर्जन क्षेत्र में सभी इस्राएली मोशेह तथा अहरोन से नाराज होने लगे. **3** इस्राएली कहने लगे, "अच्छा होता कि याहवेह ने हम लोगों को मिस्र में ही मार डाला होता, वहां हम मांस की हांडियों के पास बैठते थे और पेट भरकर रोटी खाते थे; आप तो हमें इस निर्जन देश में इसलिये ले आए हैं कि हम सारे लोग भूख से मर जाएं." **4** इस पर याहवेह ने मोशेह से कहा, "सुनो, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग से रोटी बरसाऊंगा, और प्रतिदिन लोग बाहर जाकर रोज अपनी ज़रूरत के अनुसार रोटी बटोर लें, मैं उन्हें जांचूंगा और देखूंगा कि वे मेरी आज्ञा मानते हैं या नहीं. **5** छठे दिन जब वह बटोरे हुए भोजन वस्तु से खाना बनाएं तब वह अन्य दिनों से दुगना होगा." **6** मोशेह एवं अहरोन ने सब इस्राएलियों को कहा, "शाम को तुम समझ जाओगे कि याहवेह ही ने तुम्हें मिस्र देश से निकाला है. **7** सुबह तुम्हें याहवेह का तेज दिखाई देगा, क्योंकि याहवेह ने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है—हम कौन हैं, जो तुम इतना गुस्सा दिखा रहे हो?" **8** मोशेह ने कहा, "अब याहवेह तुम्हें शाम को मांस और सुबह रोटी देंगे, क्योंकि याहवेह ने उनके विरुद्ध तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया हैं. हम कौन होते हैं? तुम्हारा गुस्सा हम पर नहीं, परंतु याहवेह पर होता है." **9** फिर मोशेह ने अहरोन से कहा, "सभी इस्राएलियों से कहो, 'याहवेह के पास आओ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है.'" **10** जब अहरोन सभी इस्राएलियों से बात कर रहे थे, तब उन्होंने निर्जन देश की ओर देखा और उनको याहवेह का तेज बादल में दिखाई दिया. **11** याहवेह ने मोशेह से कहा, **12** "मैंने इस्राएलियों का बड़बड़ाना सुन लिया है; उन्हें बता दो, 'शाम को तुम्हें मांस और सुबह तुम्हें रोटी, पेट भरकर मिलेगी; तब तुम जान जाओगे कि मैं ही याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं.'" **13** सायंकाल बटेरें उड़ती हुई आईं और छावनी को ढक लिया तथा सुबह छावनी के आस-पास ओस की एक परत पड़ी हुई दिखी. **14** जब ओस की परत उठ गई, तब उन्होंने देखा कि ज़मीन पर एक पतली परत पड़ी हुई है, जैसे बर्फ. **15** वे आपस में कहने लगे, "क्या है यह?" वे समझ नहीं पा रहे थे कि वह क्या चीज़ है! मोशेह ने बताया, "यही है वह रोटी, जो तुम्हारे खाने के लिए याहवेह ने दी है. **16** और याहवेह की आज्ञा है, 'हर व्यक्ति जितना खा सके उतना ही ले सब व्यक्ति अपने-अपने तंबू में हर व्यक्ति के लिये एक ओमेर के हिसाब से ले.'" **17** इस्राएलियों ने वैसा ही किया. किसी ने कम तो किसी ने ज्यादा लिया. **18** जिसने अधिक मात्रा में इकट्ठा कर लिया, उसने कुछ भी ज्यादा नहीं पाया और जिसने कम इकट्ठा किया, उसे कोई कमी न हुई. **19** मोशेह ने उनसे कहा, "कोई भी व्यक्ति इस भोजन को दूसरे दिन के लिए मत रखना." **20** लेकिन कुछ लोगों ने मोशेह की बात नहीं मानी; और दूसरे दिन के लिए कुछ बचा रखा. दूसरे दिन उन्होंने देखा कि उसमें पूरे कीड़े पड़ गए और बदबू आने लगी. मोशेह ने उन पर गुस्सा किया. **21** फिर रोज सुबह जितनी उनको ज़रूरत होती थी उतना ही वे लेते थे. **22** और छठवें दिन हर व्यक्ति ने अगले दिन का भी खाना अपने-अपने लिए लिया और सभी ने जाकर मोशेह को बताया. **23** यह सुनकर मोशेह ने उन्हें समझाया: "याहवेह ने यही कहा था: क्योंकि 'कल विश्राम दिन है जो याहवेह को समर्पित महा पवित्र दिन, इसलिये आज ही जो कुछ पकाना है पका लो, और जो कुछ उबालना है उबाल लो और जो बच जाता है उसे अगले दिन के लिए अलग रख देना.'" **24** उन्होंने बचा हुआ अगले दिन के लिए अलग रख दिया—जैसे मोशेह ने कहा. इसमें न तो बदबू आई और न कीड़े लगे. **25** फिर मोशेह ने उनसे कहा, "आज तुम इसे खा लो, क्योंकि आज याहवेह को समर्पित विश्राम का पवित्र दिन है; आज बाहर खाना नहीं मिलेगा. **26** तुम्हें छः दिन ऐसा ही करना होगा किंतु सातवें दिन, विश्राम का दिन है, उस दिन यह नहीं मिलेगा." **27** कुछ व्यक्ति सातवें दिन भी खाना बटोरने गये लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला. **28** तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "तुम और कब तक मेरे आदेशों और नियमों को नहीं मानोगे? **29** यह विश्राम का दिन, याहवेह ने, अलग किया हुआ दिन है; याहवेह ही तुम्हें छठे दिन दो दिन का खाना देते हैं. और सातवें दिन सब अपने-अपने घर पर ही रहें—सातवें दिन कोई भी व्यक्ति अपने घर से बाहर न जाए." **30** इस्राएलियों ने सातवें दिन विश्राम का दिन मानना शुरू किया. **31** इस्राएलियों ने इस वस्तु को मन्ना नाम दिया. यह धनिये के बीज जितना सफेद और स्वाद शहद से बने पुओं के जैसा मीठा था. **32** फिर मोशेह ने उनसे कहा, "याहवेह की यह आज्ञा है: 'पीढ़ी से पीढ़ी तक सबको यह बताने और दिखाने के लिए एक ओमेर माप मन्ना रख लो ताकि तुम उनको बता सको कि जब मैं ने तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाया तब निर्जन देश में यही खाना खिलाया था.'" **33** मोशेह ने अहरोन से कहा, "एक बर्तन में मन्ना लेकर याहवेह के सामने रखना ताकि आनेवाली पीढ़ियों के लिए वह यादगार रहे." **34** याहवेह के द्वारा मोशेह को दिए गए आदेश के अनुसार अहरोन ने मन्ना को वाचा के संदूक के पास रख दिया. **35** इस्राएली मन्ना तब तक खाते रहे जब तक उस प्रदेश में नहीं आ गए जहां उन्हें बसना था. वे कनान की सीमा जब तक नहीं पहुंच गए, तब तक उसे खाते रहे. **36** (एक माप ओमेर एफाह का दसवां भाग है.)

17 फिर इस्राएल के सभी लोग सिन के निर्जन देश से निकले और एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई चरणों में यात्रा करते गए, जैसा याहवेह ने आज्ञा दी थी. उन्होंने रेफीदीम में तंबू डाले. यहां उनको पीने के लिए पानी नहीं मिला. **2** फिर वे मोशेह से यह कहते हुए झगड़ा करना शुरू कर दिया, "हमें पीने के लिए पानी दें!" मोशेह ने उनसे कहा, "क्यों मुझसे लड़कर याहवेह की परीक्षा करते हो?" **3** लेकिन लोग बहुत प्यासे थे और वे मोशेह से कहते रहे, "आप हमें मिस्र देश से क्यों लाए हैं—क्या हमारे बच्चे और हमारे पशु प्यास से मर जायें?" **4** तब मोशेह ने याहवेह से कहा, "मैं इन लोगों का क्या करूं? कुछ देर में तो ये मेरे ऊपर पथराव ही कर डालेंगे." **5** तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "अपने साथ इस्राएल के कुछ लोगों को ले लो और उसी लाठी को जिससे नील

नदी पर मारा था, लेकर आगे बढ़ो 6 और मैं होरेब पर्वत की एक चट्टान पर
तुम्हारे पास खड़ा रहूंगा. तुम उस चट्टान पर अपनी लाठी से मारना, तब उसमें
से पानी निकलेगा ताकि लोग उससे पी सकें.” मोशेह ने वैसा ही किया. 7
और उन्होंने उस स्थान का नाम मस्साह तथा मेरिबाह रख दिया, क्योंकि यहां
इस्राएलियों ने बहस की और यह कहते हुए याहवेह को परखा था, “हमारे साथ
याहवेह हैं या नहीं?” 8 तब रेफीदीम में अमालेक इस्राएलियों से लड़ने लगे. 9
मोशेह ने यहोशू से कहा, “अपनी ओर से युद्ध के लिए कुछ पुरुषों को अलग
करे, ताकि वे जाकर अमालेकियों से युद्ध करें. कल मैं परमेश्वर की लाठी
लेकर इस पहाड़ी के ऊपर खड़ा रहूंगा.” 10 यहोशू ने वैसा ही किया और वे
अमालेकियों से लड़ने गए उस समय मोशेह, अहरोन तथा हूर पहाड़ी के ऊपर
पहुंच गए. 11 जब मोशेह का हाथ ऊपर रहता, इस्राएली जीत जाते, और जब
मोशेह अपना हाथ नीचे करते, अमालेक जीत जाते. 12 जब मोशेह के हाथ थक
गये तब उन्होंने एक पत्थर लाकर वहां रखा और मोशेह उस पर बैठ गए और
अहरोन और हूर ने उनके दोनों हाथों को ऊपर उठाए रखा. शाम तक मोशेह का
हाथ ऊपर रहा. 13 इस प्रकार यहोशू ने अमालेकियों को तलवार की ताकत से
हरा दिया. 14 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “इस बात को याद रखने के
लिए किताब में लिख दो और यहोशू को पढ़कर सुनाना कि मैं पृथ्वी पर से
अमालेकियों को मिटा डालूंगा.” 15 मोशेह ने एक वेदी बनाई और उसका
नाम याहवेह निस्सी रखा. 16 मोशेह ने कहा, “याहवेह पीढ़ी से पीढ़ी तक
अमालेकियों से युद्ध करते रहेंगे, क्योंकि उन्होंने याहवेह के सिंहासन के विरुद्ध
हाथ उठाया हैं.”

18 मिदियान के पुरोहित, मोशेह के ससुर येथ्रो को यह सब बात मालूम पड़ी
कि कैसे परमेश्वर ने मोशेह तथा अपनी प्रजा इस्राएलियों को याहवेह ने
मिस्र देश से बाहर निकाला. 2 मोशेह ने अपनी पत्नी ज़ीप्पोराह और दोनों बेटों
को उनके पिता येथ्रो के पास छोड़ दिया था, 3 उनके एक पुत्र का नाम गेरशोम
रखा क्योंकि मोशेह ने कहा, “मैं दूसरे देश में परदेशी हो गया!” 4 दूसरे पुत्र का
नाम एलिएज़र रखा, क्योंकि मोशेह ने यह कहा था, “मेरे पिता के परमेश्वर मेरे
सहायक रहे हैं, जिन्होंने मुझे फ़रोह की तलवार से बचाया है.” 5 इस निर्जन
प्रदेश में जहां इस्राएलियों ने परमेश्वर के पर्वत पर तंबू डाला हुआ था, वहां
मोशेह के ससुर, मोशेह की पत्नी तथा दोनों पुत्रों को अपने साथ लेकर आया. 6
येथ्रो ने मोशेह से कहा, “मैं येथ्रो, तुम्हारा ससुर, तुम्हारी पत्नी एवं दोनों पुत्रों को
लेकर तुमसे मिलने आया हूं.” 7 यह सुन मोशेह अपने ससुर से मिलने तंबू से
बाहर आये, उनको प्रणाम करके चुंबन किया, और एक दूसरे का हाल पूछा और
मोशेह उन्हें अपने तंबू में ले गए. 8 मोशेह ने अपने ससुर को सब बातें बताई, जो
इस्राएलियों के लिए याहवेह ने फ़रोह तथा मिस्रियों के साथ की थी. मोशेह ने
उन्हें सब परेशानियां भी बताईं, जिनका सामना उन्होंने इस यात्रा में किया था,
तथा यह भी कि याहवेह ने किस तरह से उनको रास्ते भर बचाया. 9 येथ्रो ने जब
सुना कि याहवेह ने कैसे इस्राएलियों को संभाला. वे बहुत खुश हुए, कि याहवेह
ने इस्राएलियों पर अपनी भलाई की और मिस्रियों से छुड़ाया. 10 तब येथ्रो ने
कहा, “धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने तुम्हें मिस्रियों एवं फ़रोह के अधिकार से
छुड़ाया और उनके बंधन से आज़ाद कराया. 11 अब मैं जान गया हूं कि याहवेह
ही अन्य सभी देवताओं से अधिक शक्तिशाली और बड़े हैं. यह तो उसी समय
प्रमाणित हो गया था, जब मिस्रियों ने इस्राएलियों पर अपना अहंकार दिखाया
था.” 12 तब मोशेह के ससुर येथ्रो ने परमेश्वर के लिए होमबलि एवं मेल बलि
चढ़ाई तथा अहरोन सभी इस्राएलियों और मोशेह के ससुर के साथ मिलकर
परमेश्वर के आगे भोजन करने आये. 13 दूसरे दिन मोशेह लोगों के न्याय करने
के लिये न्यायाधीश के आसन पर बैठे हुए थे और लोग सुबह से शाम तक मोशेह
के आस-पास खड़े रहे. 14 जब मोशेह के ससुर ने मोशेह को देखा, तो उन्होंने
मोशेह से पूछा, “तुम यह सब इस प्रकार क्यों कर रहे हो? जब ये सारे लोग
सुबह से शाम तक तुम्हारे आस-पास खड़े थे, तुम अकेले ही सब क्यों संभाल
रहे हो?” 15 मोशेह ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आते हैं क्योंकि वे अपने
लिए परमेश्वर की इच्छा जानना चाहते हैं. 16 यदि किसी व्यक्ति की अपने
पड़ोसी से कोई बहस होती है और वे मेरे पास आते हैं, तब मैं उस व्यक्ति तथा
उसके पड़ोसी के विषय में फैसला करके उनको परमेश्वर के नियम तथा उनकी
विधियां बता देता हूं.” 17 मोशेह के ससुर ने जवाब दिया: “तुम्हारा काम सही
नहीं हैं. 18 तुम और ये लोग जो तुम्हारे साथ हैं, परेशान हो जाएंगे, क्योंकि यह
काम बहुत बड़ा है और तुम अकेले यह सब नहीं कर पाओगे. 19 इसलिये मेरी
बात सुनो, मैं तुम्हें यह सलाह देना चाहता हूं कि परमेश्वर तुम्हारे साथ रहें—तुम
परमेश्वर के सम्मुख लोगों के प्रतिनिधि रहो और उनके विवाद परमेश्वर के
सम्मुख लाओ. 20 तुम उन्हें नियमों और व्यवस्था की बातें सिखाते जाओ और
उन्हें किस तरह रहना हैं और उनकी आदतें कैसी हों यह सिखाओ, और कौन-
कौन से काम उन्हें करने हैं यह बताते जाओ. 21 साथ ही तुम इन लोगों में से
कुछ ऐसे लोगों को चुन लो—जो सच्चाई से परमेश्वर के भय और श्रद्धा में जीने
वाले हों, तथा अन्याय के लाभ से नफरत करते हों. इस प्रकार के व्यक्तियों को
अलग करके, लोगों को झुंड में बांटकर, जवाबदारी उनको दे दो, जो हजार-
हजार, सौ-सौ, पचास-पचास तथा दस-दस लोगों का झुंड हो. 22 ये ज़िम्मेदार
व्यक्ति ही उन लोगों की बात सुनें और सुलझायें और जो बात न सुलझ पाए तब
ही वे तुम्हारे पास आएं. तब तुम्हारा बोझ हल्का हो जाएगा और पूरे लोगों पर
अच्छी तरह नियंत्रण रख पाओगे. 23 यदि परमेश्वर ऐसा करने की आज्ञा देते हैं,
तो ऐसा ही करना, तब तुम्हारा काम आसान हो जाएगा तथा ये लोग भी शांति से
अपनी जगह पहुंच सकेंगे.” 24 मोशेह ने अपने ससुर की बात पर ध्यान दिया
और वैसा ही किया. 25 सभी इस्राएलियों में से उन्होंने सक्षम व्यक्तियों को
अगुआ बनाया; जो हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास तथा दस-दस लोगों के
समूह के ऊपर अधिकारी थे. 26 वे अधिकारी सभी समय लोगों का न्याय करते
थे, केवल बहुत मुश्किल विवाद ही मोशेह के पास लाते थे, लेकिन साधारण
मामलों का समाधान वे ही करते थे. 27 मोशेह ने अपने ससुर को विदा कर
दिया. वह विदा होकर अपने घर लौट गये.

19 इस्राएलियों के मिस्र छोड़ने के तीसरे महीने के पहले दिन वे सीनायी के
रेगिस्तान में आए, उसी दिन जब उन्हें मिस्र से निकलकर दो महीने पूरे हो
गये थे. 2 पहले वे रेफीदीम नामक स्थान में गये, फिर वहां से वह सीनायी के
निर्जन देश में आये, फिर उन्होंने अपना पड़ाव निर्जन देश में डाला जो पर्वत
के सामने था. 3 मोशेह परमेश्वर के पास पर्वत पर गये, याहवेह ने मोशेह को
पर्वत से बुलाया. याहवेह ने मोशेह से कहा, “याकोब के घराने से व इस्राएल से
कहना: 4 ‘तुमने देखा है कि मैंने मिस्रियों के साथ क्या-क्या किया, और किस
प्रकार मैं तुम्हें उकाब के तरह पंखों में बैठाकर यहां अपने पास ले आया हूं. 5
अब यदि तुम वास्तव में मेरे आदेशों को मानोगे, तथा मेरी वाचा का पालन
करोगे, तब सब जनता के बीच तुम मेरी अपनी प्रजा कहलाओगे—क्योंकि
पूरी पृथ्वी ही मेरी है. 6 तुम मेरे लिये राजकीय पुरोहित तथा पवित्र राष्ट्र माने
जाओगे.’ तुम यह बातें इस्राएल से कहना!” 7 तब मोशेह पर्वत से उतरे और
सभी अधिकारियों को बुलवाया और उनसे याहवेह की सब बातें बताई जो पर्वत
पर याहवेह ने कही थी. 8 फिर सब मिलकर एक साथ बोले, “हम सब बात
मानेंगे जो याहवेह ने कहा है!” मोशेह ने जाकर लोगों का जवाब याहवेह को
बता दिया. 9 याहवेह ने मोशेह से कहा, “अब सुनो, मैं एक बादल के अंधियारें
में से होकर तुमसे बात करूंगा और जब मैं तुमसे बात करूंगा, तब सब लोग मेरी
आवाज को सुनें और उनका विश्वास तुम पर बढ़ जाये.” तब मोशेह ने परमेश्वर
को वे सभी बातें बताई जो लोगों ने कहीं थीं. 10 याहवेह ने मोशेह से कहा,

“लोगों के पास जाओ और उन्हें आज और कल पवित्र करना. वे सब अपने-अपने वस्त्र धोएं, **11** और तीसरे दिन अपने आपको तैयार करें; क्योंकि तीसरे दिन याहवेह सीनायी पर्वत पर लोगों के सामने उतरेंगे. **12** और तुम लोगों के चारों तरफ बाड़ा बांध देना और कोई भी पर्वत पर न चढ़े और इसकी सीमा को भी न छुए और यदि कोई उसे छुएगा वह मर जायेगा. **13** और कोई भी उस व्यक्ति को न छुए. अगर कोई उस व्यक्ति को छुएगा उसे पत्थर से या तीर से मार दिया जाये—चाहे वह पशु हो या मनुष्य, उसे जीवित नहीं छोड़ा जाए. जब तुरही का शब्द देर तक सुनाई दे, तब सब पर्वत के पास आ जाएं.” **14** तब मोशेह पर्वत से उतरकर लोगों के बीच आ गए और लोगों को पवित्र किया और सबने अपने वस्त्र धो लिए. **15** लोगों से मोशेह ने कहा, “तीसरे दिन के लिए अपने आपको तैयार करो. इस समय स्त्री-पुरुष आपस में न मिलें.” **16** तीसरे दिन, सुबह होते ही, पर्वत पर अंधकार छा गया, बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, फिर नरसिंगे की तेज आवाज सुनाई दी और सभी लोग कांपने लगे. **17** मोशेह सभी को परमेश्वर से मिलाने छावनी से बाहर लाए. वे सभी पर्वत के नीचे खड़े हुए. **18** पूरा सीनायी पर्वत धुएं से भरा था, क्योंकि याहवेह आग में होकर उतरे थे और धुआं ऊपर उठ रहा था, जिस प्रकार भट्टी का धुआं ऊपर उठता है. पूरा पर्वत बहुत कांप रहा था. **19** फिर जब नरसिंगे का शब्द तेज होता गया, तब मोशेह ने परमेश्वर से बात की और परमेश्वर ने उन्हें जवाब दिया. **20** याहवेह सीनायी पर्वत के ऊपर उतरे और परमेश्वर ने मोशेह को ऊपर आने को कहा और मोशेह ऊपर गए. **21** तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “नीचे जाकर सबसे कहो कि मुझे देखने की इच्छा में सीमा पार न कर दें, और सब नष्ट न हो जाएं. **22** और पुरोहित भी, जो मेरे पास आने के लिए अलग किए गए हैं, वे भी अपने आपको पवित्र करें, ताकि याहवेह उन्हें नष्ट न करें.” **23** मोशेह ने याहवेह से कहा, “लोग सीनायी पर्वत पर नहीं आएंगे, क्योंकि आप पहले ही बता चुके हैं कि पर्वत के आस-पास बाड़ा लगाकर उसे पवित्र रखना.” **24** याहवेह ने मोशेह से कहा, “तुम नीचे जाओ और फिर तुम और अहरोन दोनों पर्वत पर आना. परंतु इस्राएली और पुरोहित सीमा पार न करने पाएं.” **25** मोशेह पर्वत से नीचे आए और लोगों को सब बातें बताईं.

20 तब परमेश्वर ने कहा: **2** “मैं ही हूं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर, जिसने तुम्हें मिस्र देश के बंधन से छुड़ाया. **3** “मेरे अलावा तुम किसी दूसरे को ईश्वर नहीं मानोगे. **4** तुम अपने लिए न तो आकाश की, न पृथ्वी की, और न जल की किसी वस्तु की मूर्ति बनाना. **5** न इनमें से किसी को दंडवत करना और न उसकी आराधना करना—मैं, याहवेह, जो तुम्हारा परमेश्वर हूं, जलन रखनेवाला परमेश्वर हूं, जो मुझे अस्वीकार करते हैं, मैं उनके पापों का प्रतिफल उनके बेटों को, पोतों और परपोतों को तक दूंगा, **6** किंतु उन हजारों पीढ़ियों पर, जिन्हें मुझसे प्रेम है तथा जो मेरे आदेशों का पालन करते हैं, अपनी करुणा प्रकट करता रहूंगा. **7** तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के नाम का गलत इस्तेमाल नहीं करोगे, क्योंकि याहवेह उस व्यक्ति को बिना दंड दिए नहीं छोड़ेंगे, जो याहवेह का नाम व्यर्थ में लेता है. **8** शब्बाथ को पवित्र दिन के रूप में मानने को याद रखो. **9** छः दिन मेहनत करते हुए तुम अपने सारे काम पूरे कर लोगे, **10** मगर सातवां दिन याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का शब्बाथ है; इस दिन तुम कोई भी काम नहीं करोगे; तुम, तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां, तुम्हारे पुरुष अथवा महिला सेवक न तुम्हारे सारे पशु अथवा तुम्हारे यहां रहनेवाले विदेशी, तुम्हारे सेवक-सेविकाएं भी तुम्हारे समान विश्राम करें. **11** क्योंकि याहवेह ने इन छः दिनों में आकाशमंडल और पृथ्वी, तथा समुद्र और सभी की सृष्टि की, तथा सातवें दिन याहवेह ने कोई काम नहीं किया; तब याहवेह ने सातवें दिन को पवित्र ठहराया. **12** तुम अपने पिता एवं अपनी माता का आदर करना, ताकि वह देश, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हें देनेवाले हैं, उसमें तुम बहुत समय तक रह पाओ. **13** तुम मानव हत्या नहीं करना. **14** तुम व्यभिचार नहीं करना. **15** तुम चोरी नहीं करना. **16** तुम अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देना. **17** तुम अपने पड़ोसी के घर का लालच नहीं करना; तुम अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच नहीं करना; न किसी सेवक, सेविका का; अथवा उसके बैल अथवा गधे का—उसकी किसी भी वस्तु का लालच नहीं करना.” **18** सभी इस्राएली बादल के गरजने तथा बिजली के चमकने तथा नरसिंगे के शब्द एवं पर्वत से धुंआ उठते हुए देखते रहे, और डरते और कांपते हुए दूर खड़े रहे. **19** उन्होंने मोशेह से कहा, “स्वयं आप ही हमसे बात कीजिए, किंतु परमेश्वर को हमसे बात न करने दीजिए. कहीं ऐसा न हो, कि हम मर जाएं.” **20** मोशेह ने लोगों से कहा, “डरो मत; क्योंकि परमेश्वर यहां इसलिये आए हैं कि वह तुम्हें जांचें, ताकि उनके प्रति तुम्हारे मन में भय और श्रद्धा हो और तुम पाप न करो.” **21** तब लोग दूर ही खड़े रहे, किंतु मोशेह उस घने बादल की ओर बढ़ते गए, जहां परमेश्वर की उपस्थिति थी. **22** तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “इस्राएलियों से यह कहना कि तुमने देखा कि याहवेह ने स्वर्ग से कैसे बात की है. **23** तुम मेरे सिवाय किसी भी अन्य देवता को न मानना, और अपने लिए न चांदी की, न सोने की मूर्ति बनाना. **24** “मेरे लिए तुम मिट्टी से वेदी बनाना. इसी पर तुम गाय-बैलों तथा बछड़ों की होमबलि एवं मेल बलि चढ़ाना. और मेरी महिमा करना और मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा. **25** यदि तुम्हें पत्थर से वेदी बनानी पड़े, तो ऐसा पत्थर लेना जिस पर कभी हथियार नहीं चलाया गया हो, **26** सीढ़ियों से वेदी पर चढ़ना नहीं, चढ़े तो लोग तुम्हारी नग्नता को देख सकेंगे.”

21 “ये और जो नियम, तुम्हें उनको बताने हैं वे ये है: **2** “यदि तुम दास के लिए किसी इब्री को खरीदो तब वह छः वर्ष तक सेवा करे; और सातवें वर्ष वह दाम बिना चुकाए भी जा सकता है. **3** यदि वह अकेला ही आया हो, तो अकेला ही जाये. यदि वह किसी स्त्री का पति है, तो उसकी पत्नी भी उसी के साथ लौट जाएगी. **4** यदि उस दास की पत्नी होने के लिए स्त्री को मालिक ने भेजा हो और उस स्त्री के पुत्र-पुत्रियां पैदा हो गई हों, तो दास अकेला ही जाये किंतु उसकी पत्नी एवं संतान मालिक के ही रहेंगे. **5** “यदि वह दास कहे कि मुझे तो, मेरे मालिक, मेरी पत्नी एवं मेरी संतान प्रिय हैं; मैं जाना नहीं चाहता, तो **6** उसका मालिक उसे लेकर परमेश्वर के पास आए, और उस दास को दरवाजे के पास ले जाये और उसका मालिक उसके कान को सुई से छेद दे. इसके बाद वह दास उस मालिक का सेवक हो जाएगा. **7** “यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी होने के लिए देता है, तो उसे दासी के समान न छोड़े. **8** यदि उसका मालिक, जिसने उसे खरीदा है, उससे प्रसन्न नहीं है, तो मालिक उसे दाम देकर छोड़ दे. लेकिन मालिक को यह अधिकार नहीं है कि वह दासी को विदेशियों में बेच दे, क्योंकि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है. **9** यदि वह व्यक्ति इस दासी को अपने पुत्र की पत्नी होने के लिए चाहता है, तो उसे बेटियों के समान हक भी देना ज़रूरी है. **10** यदि वह किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लेता है, तो वह इस दासी को भोजन, वस्त्र तथा उसके वैवाहिक अधिकारों से दूर नहीं रख सकता. **11** यदि मालिक उसके विषय में उन तीनों अधिकारों को पूरा न करे, तब वह दासी बिना दाम दिये उसे छोड़कर जा सकती है. **12** “यदि कोई व्यक्ति किसी पर ऐसा हमला करे कि उसकी मृत्यु हो जाए, तब अवश्य उस व्यक्ति को मृत्यू-दंड ही दिया जाए. **13** किंतु यदि यह हत्या पहले से नियोजित नहीं की गई हो, किंतु यह मृत्यु परमेश्वर की इच्छा से हुई हो, तब मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी जगह बनाऊंगा, जहां तुम भागकर जा सकोगे. **14** किंतु यदि कोई व्यक्ति किसी को पूर्व नियोजित तरीके से छलपूर्वक, गुस्से से उसकी हत्या कर देता है, तो तुम उस व्यक्ति को, मेरी वेदी से मृत्यु दंड देने के लिए ले जा सकते हो. **15** “यदि कोई अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे, तो उसे मृत्यु दंड दिया जाए. **16** “जो किसी मनुष्य का अपहरण करता है, चाहे वह अपहृत

को बेच दें या उसके पास हो, तो भी उसे मृत्यु दंड दिया जाए. 17 “जो अपने
पिता अथवा अपनी माता को शाप देता है, उसे निश्चयतः मृत्यु दंड दिया जाए.
18 “यदि दो व्यक्तियों में झगड़ा हो जाए, वह एक दूसरे को पत्थर अथवा घूंसे
से मारे, जिससे उसकी मृत्यु न हुई हो लेकिन वह चल फिर न सके, 19 यदि वह
व्यक्ति लाठी के सहारे चल फिर सके, तब जिसने उसको मारा था, वह दंड के
योग्य न होगा—लेकिन उसे ठीक होने तक उसके देखरेख का ख़र्चा उसे देना
होगा. 20 “यदि कोई व्यक्ति दंड देते हुए अपने दास या दासी पर लाठी से मार दे
और उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसे उसके लिए सजा दी जाए. 21 किंतु यदि वह
व्यक्ति मार खाने के बाद एक-दो दिन बाद ठीक हो जाये, तो उसे सजा न दी
जाये; क्योंकि दास या दासी उसी की संपत्ति है. 22 “यदि लोगों के झगडे में
गर्भवती स्त्री को चोट लग जाये और उसका समय से पूर्व प्रसव हो जाए, किंतु
कोई नुकसान न हुआ हो, तो निश्चयतः उस व्यक्ति को, जिसने मारा है, उस स्त्री
का पति जो भी मांगे और पंच जो भी फैसला करें और जो भी निर्णय होता है वह
उसे चुकाए. 23 और यदि चोट ज्यादा है तो, पंच प्राण के बदले प्राण का भी
फैसला कर सकते हैं, 24 आंख के लिए आंख, दांत के लिए दांत, हाथ के लिए
हाथ, पैर के लिए पैर, 25 दाह के लिए दाह, घाव के लिए घाव तथा मार के
बदले मार का दंड हो. 26 “यदि किसी व्यक्ति की मार से उसके दास अथवा
दासी की आंख नष्ट हो जाये, तो उसे उसकी आंख के बदले उस दास अथवा
दासी को छोड़ दे. 27 यदि झगड़े में उसके दास अथवा दासी का दांत टूट जाये,
तो उसे इस नुकसान के कारण उस दास अथवा दासी को छोड़ देना होगा. 28
“यदि कोई बैल के सींग से किसी पुरुष अथवा स्त्री की मृत्यु हो जाती है, तो
निश्चयतः उस बैल को पत्थर से मार दें तथा उसके मांस को काम में न लें;
लेकिन उस बैल के मालिक को कोई दंड न दिया जाए. 29 किंतु यदि कोई ऐसा
बैल है, जो हमेशा लोगों को सींग मारकर नुकसान पहुंचाता है और बैल के
मालिक को बताया गया हो और बैल को बांधकर नहीं रखा और उस बैल ने
किसी पुरुष अथवा स्त्री की हत्या कर दी है, तो इस स्थिति में वह बैल तथा उसके
मालिक, दोनों ही का पथराव किया जाए. 30 यदि बैल का स्वामी छुड़ाई
देना चाहे तो धनराशि जो इसके लिए ठहराई गई है, पूरा देकर छूट सकता है.
31 चाहे बैल ने पुत्र को मार डाला हो अथवा पुत्री को, उसके साथ नियम के
अनुसार फैसला किया जाएगा. 32 यदि बैल किसी दास अथवा दासी को मार
डाले, तो बैल के मालिक को उस दास अथवा दासी के मालिक को चांदी के
तीस सिक्के देने होंगे, तथा बैल का पथराव किया जाए. 33 “यदि कोई व्यक्ति
गड्ढा खोदे और उसे न ढंके और उस गड्ढे में कोई बैल अथवा गधा जा गिरे, 34 तो
उस गड्ढे के मालिक को इसका दाम चुकाना होगा और वह मृत पशु गड्ढे वाले का
हो जाएगा. 35 “यदि किसी व्यक्ति का बैल अन्य व्यक्ति के बैल को मारे और
बैल मर जाये तो बचे जीवित बैल को बेचकर उसका दाम आपस में बांट लें और
मरे हुए बैल को भी आधा-आधा बांट लें. 36 अथवा यदि वह बैल हमेशा ही
सबको सींग मारता है और उसके मालिक ने उसे बांधकर नहीं रखा, तो निश्चय
वह व्यक्ति बैल के बदले बैल ही दे. तब मृत बैल उसकी संपत्ति हो जाएगी.

22 “यदि कोई व्यक्ति किसी बैल अथवा भेड़-बकरी की चोरी कर उसको
मार दे अथवा उसको बेच दे, तो उसे उस बैल के बदले पांच बैल तथा
भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी देने होंगे. 2 “यदि चोर चोरी करते हुए
पकड़ा जाए और उसे मारते समय उसकी मृत्यु हो जाए, तब उस स्थिति में
उसकी मृत्यु का दोष किसी पर न आए. 3 किंतु सूर्य निकलने के बाद उसने
चोरी की हो तो मृत्यु का दोष लगेगा. “ज़रूरी होगा कि चोर उस नुकसान को
भर दे. यदि वह नहीं भर सकता है, तो वह इस चोरी के कारण बेच दिया जाए.
4 यदि चोरी की गई वस्तु—बैल, गधा, अथवा भेड़-बकरी—ज़िंदा उसके पास
है तो, उसे उसका दो गुणा दाम देना होगा. 5 “यदि कोई व्यक्ति अपना पशु
खुला छोड़ दे, और वह किसी का खेत अथवा दाख की बारी खा जाएं, तो वह
अपने ही खेत तथा दाख की बारी में से सबसे अच्छा हिस्सा उन्हें दे. 6 “यदि
कोई आग जलाए और आग फैलकर झाड़ियों में लग जाये और जमा किया
हुआ अनाज, तथा पूरी उपज और खेत जलकर राख हो जाए, तो जिस व्यक्ति ने
आग लगाई, वह खेत के नुकसान को चुकाए. 7 “यदि कोई अपने पड़ोसी को
धन अथवा सोना-चांदी संभालने के लिये देता है और कोई इन चीज़ों की चोरी
कर लेता है, और चोर पकडा जाता है, तो चोर को उसका दो गुणा धन देना होगा
8 यदि चोर पकड़ा न जाये, तब उस घर के मालिक को फैसला करनेवालों के
सामने लाया जाये, ताकि यह मालूम हो जाये कि कहीं उसने ही पड़ोसी के धन
पर हाथ न धरा हो. 9 चाहे वह बैल, गधे, भेड़-बकरी, वस्त्र अथवा किसी भी
खोई हुई वस्तु के संबंध में हो, जिसके विषय में कोई यह कहे, ‘यह तो मेरा है!’
जब किसी चीज़ को लेकर आपस में झगड़ा करें कि यह मेरा है तब फैसला
करनेवाले सही फैसला करके दोषी को सजा दें और दोषी व्यक्ति दो गुणा दाम
उसको लौटाये. 10 “यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को गधा, बैल, भेड़-बकरी
अथवा अन्य कोई भी पशु उसके घर रखने के लिए देता है, और तब उस पशु
की मृत्यु हो जाती है, और किसी ने नहीं देखा कि कैसे मरा था, और क्या हुआ
11 तब याहवेह के सामने उन दोनों से पूछें कि उसने अपने पड़ोसी की संपत्ति पर
अधिकार तो नहीं कर लिया है, तब उस पशु के मालिक को उसकी बात पर
विश्वास करना होगा. और उसे कोई दाम नहीं चुकाना होगा. 12 किंतु यदि
वास्तव में चोरी की गई है, तब उसे अपने पड़ोसी को दाम चुकाना होगा. 13
यदि पशु को कोई जंगली जानवर मारकर टुकड़े-टुकडे कर दे तो उस पशु के
लिए किसी को भी दाम नहीं चुकाना होगा. 14 “यदि कोई व्यक्ति अपने
पड़ोसी से कोई पशु अपनी मदद के लिए लेता है, और जब उसका मालिक वहां
नहीं हो और तब उस पशु को चोट लगे या उसकी मृत्यु हो जाये तो उसे उसका
दाम चुकाना होगा. 15 और यदि मालिक के सामने ही पशु को कुछ भी होता है
तो पशु का दाम चुकाने की ज़रूरत नहीं है. 16 “यदि कोई पुरुष किसी कुंवारी
को भ्रष्ट करता है, और उसके साथ संभोग करता है, तो वह उसका मोल देकर
उसके साथ विवाह करे. 17 और यदि उस लड़की का पिता विवाह के लिए
तैयार नहीं होता है, तब उस पुरुष को कुंवारियों के लिए तय किया गया दाम
देना होगा. 18 “तुम तांत्रिक स्त्री को जीवित न रहने देना. 19 “यदि कोई व्यक्ति
किसी पशु के साथ मैथुन करे, निश्चयतः उस व्यक्ति को मार दिया जाए. 20
“जो कोई याहवेह को छोड़े और किसी और देवता को बलि चढ़ाये उसे नष्ट कर
दिया जाए. 21 “तुम किसी अनजान व्यक्ति को परेशान न करना और न उस पर
अत्याचार करना—क्योंकि तुम भी मिस्र देश में अनजान थे. 22 “तुम किसी
विधवा अथवा अनाथ बालक को दुःख न देना. 23 यदि तुम उन्हें किसी भी तरह
से दुःख दोगे और उस दुःख में वे मुझे पुकारेंगे, तो मैं निश्चयतः उन्हीं की पुकार
सुनूंगा. 24 और मैं बहुत क्रोधित होऊंगा और तुम्हें तलवार से मार दूंगा और
तुम्हारी पत्नी विधवा तथा तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे. 25 “यदि तुम मेरे
लोगों में से किसी को रकम उधार में दोगे तो उनसे ब्याज मत लेना. 26 यदि तुम
कभी अपने पड़ोसी या भाई बहनों से पहनने के लिए कपड़ा मांगो तो शाम से
पहले उन्हें वापस दे देना. 27 क्योंकि हो सकता हैं उसके पास पहनने के लिए
एक ही जोड़ा कपड़ा हो और, यदि वह मुझे पुकारे तब, मैं उसी की सुनूंगा,
क्योंकि मैं दयालु परमेश्वर हूं. 28 “तुम परमेश्वर की निंदा न करना, और न
अपने प्रधानों को शाप देना. 29 “अपनी उपज तथा अपने फलों में से भेंट
अर्पण करने में देरी न करना. “तुम अपने पुत्रों में से पहिला मुझे अर्पण करना.
30 और बैलों तथा गायों के पहलौठे भी मुझे अर्पण करना, बच्चा सात दिन तक
मां के साथ रहें और आठवें दिन वह मुझे अर्पण किया जाए. 31 “तुम लोग मेरे

लिए अपने आपको पवित्र रखना. जो पशु मैदान में मरा हुआ मिले, उसका मांस
न खाना; तुम उसे कुत्तों को खिला देना.

23 “तुम झूठी बात न फैलाना. बुरे व्यक्ति की सहायता के लिए झूठी गवाही
न देना. 2 “बुराई करने के लिए न तो भीड़ में जाना, और न किसी
झगड़े में भीड़ के साथ मिलकर झूठ कहना; 3 मुकदमे में अनुचित रूप से गरीब
का पक्ष न लेना. 4 “यदि तुम्हें अपने शत्रु का बैल अथवा गधा भटकता हुआ
मिले, तो तुम उसे उसके मालिक को लौटा देना. 5 यदि तुम्हें अपने शत्रु का गधा
बोझ से दबा हुआ दिखे, तो उसे वहां मत छोड़ना और सुनिश्चित उसे बोझ
से छुड़ाने की कोशिश करना. 6 “मुकदमे में गरीब हैं यह सोचकर न्याय न
बिगाड़ना. 7 झूठे आरोपों से दूर ही रहना और निर्दोष तथा धर्मी की हत्या न
करना, क्योंकि मैं किसी दोषी को निर्दोष न जाने दूंगा. 8 “तुम कभी घूस नहीं
लेना, क्योंकि घूस उस व्यक्ति को, जिसको दृष्टि हैं, अंधा बना देती है तथा
धर्मियों के शब्दों को खराब कर देती है. 9 “पराये लोगों पर अत्याचार नहीं
करना, तुम पराये लोगों की भावनाओं को जानते हो, क्योंकि मिस्र देश में तुम
भी पराये थे. 10 “तुम अपनी भूमि पर छः वर्ष तक खेती करना और उपज को
एक साथ इकट्ठा करना, 11 लेकिन सातवें वर्ष में कुछ नहीं करना सब कुछ
वैसा ही छोड़ देना. तुममें जो गरीब हैं, वह उस वर्ष की उपज लें, और जो बच
जाता हैं, वह पशुओं को खाने दें. अंगूर और जैतून के बगीचे को भी ऐसे ही
छोड़ देना. 12 “छः दिन तक तुम काम करना, लेकिन सातवें दिन कोई काम न
करना, जिससे तुम्हारे बैल तथा गधे भी आराम कर सकें. तुम्हारे दास तथा
तुम्हारे बीच में रह रहे विदेशी भी आराम कर सकें. 13 “मैंने जो कुछ तुमसे
कहा है, उन बातों का ध्यान रखना. दूसरे देवताओं के नामों का आव्हान न
करना; न ही उनके बारे में अपने मुंह से कुछ कहना. 14 “हर साल तीन बार मेरे
लिए उत्सव मनाना. 15 “तुम बिना खमीर की रोटी का उत्सव मनाना; सात दिन
तक बिना खमीर का खाना खाना, मेरे बताये अनुसार अबीब महीने के निश्चित
समय पर ही यह उत्सव मनाना. क्योंकि इसी महीने में तुम मिस्र देश से निकले
थे. “तुममें से कोई भी मेरे सामने खाली हाथ न आए. 16 “जब फसल तैयार
हो जाये, तब कटनी का उत्सव मनाना. खेत में उगाई गई फसल की पहली
उपज जब तैयार हो जाये, तब कटनी का उत्सव मनाना. “और पूरी उपज
को एक साथ एक जगह पर जमा करके संग्रह का उत्सव मनाना. 17 “तुममें
से हर एक पुरुष साल में इन तीन अवसरों पर प्रभु याहवेह के पास जाएगा.
18 “किसी भी बलि पशु को खमीर वाली रोटी के साथ याहवेह को भेंट न
चढ़ाना. “और न भेंट की वस्तु दूसरे दिन के लिए बचाना. 19 “तुम अपने खेत
की उपज का पहला भाग याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के घर में ले आना.” तुम
बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में नहीं पकाना. 20 “सुनो, मैं एक
स्वर्गदूत तुम्हारी अगुवाई करने के लिए तुम्हारे आगे-आगे भेज रहा हूं. वह मार्ग
में तुम्हारी रक्षा करेगा तथा वही तुम्हें उस स्थान में पहुंचाएगा, जिसे मैंने तुम्हारे
लिए तैयार किया है. 21 तुम उस स्वर्गदूत के सामने सावधान रहना, उसकी
बातों को मानना, कोई विरोध नहीं करना, क्योंकि वह तुम्हारी गलती को माफ
नहीं करेगा, क्योंकि उसमें मेरा नाम रहता है. 22 यदि तुम दीनता से उसकी
बातों को मानोगे तथा वह सब करोगे जो मैंने कहा है, तब मैं तुम्हारे शत्रुओं का
शत्रु तथा तुम्हारे विरोधियों का विरोधी बन जाऊंगा. 23 क्योंकि मेरा स्वर्गदूत
तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हें अमोरियों, हित्तियों, परिज्ज़ियों, कनानियों,
हिव्वियों तथा यबूसियों के देश में पहुंचाएगा. 24 तुम उनके देवताओं की
आराधना मत करना, न उनकी सेवा करना, और न उनकी बातों को मानना. तुम
उनके पूजा स्थान को नाश कर देना और उनके पूजा के पत्थरों को टुकड़े-टुकड़े
कर देना. 25 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर ही की आराधना करना और याहवेह
तुम्हारे अन्न और जल को आशीष देंगे. मैं तुम्हारे बीच से रोगों को दूर कर दूंगा.
26 तुम्हारे देश में न तो गर्भपात होगा, न कोई स्त्री बांझ होगी; और मैं तुम्हारी
आयु को पूरी करूंगा. 27 “जिन-जिन लोगों के बीच तुम जाओगे मेरा डर
सबके बीच छा जायेगा और सबको भ्रमित कर दूंगा और सब शत्रु पीठ दिखाकर
भाग जाएंगे. 28 मैं तुम्हारे आगे-आगे बर्रों को भेजूंगा जो तुम्हारे सामने से
हिव्वियों, कनानियों तथा हित्तियों को भगा देंगे. 29 मैं उन्हें तुम्हारे आगे से एक
ही वर्ष में न निकालूंगा, नहीं तो पृथ्वी में लोग कम पड़ते जायेंगे और जंगली
पशु बढ़ते जायेंगे जिससे परेशानी बढ़ जायेगी. 30 मैं उनको थोड़ा-थोड़ा करके
निकालूंगा जब तक तुम देश को अपने अधिकार में न कर लो. 31 “मैं लाल
सागर से फिलिस्तीनियों के सागर तक तथा निर्जन प्रदेश से फरात नदी तक तुम्हें
दे दूंगा. और उस देश के लोगों को भी तुम्हें सौंप दूंगा और तुम ही उन्हें अपने
सामने से निकाल देना. 32 तुम उनके देवताओं के साथ कोई भी वायदा नहीं
करना. 33 वे तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे, क्योंकि वे तुम्हें मेरे विरुद्ध पाप करने
के लिए मजबूर करेंगे; और यदि तुम उनके देवताओं की सेवा करोगे, तो तुम
मुसीबत में पड़ जाओगे.”

24 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “तुम और अहरोन, नादाब, अबीहू और
इस्राएल के सत्तर अगुए याहवेह के पास ऊपर आकर दूर से याहवेह को
दंडवत करना. 2 केवल मोशेह ही याहवेह के पास जायेंगे और कोई नहीं.
अन्य लोगों में से कोई भी पास नहीं आये, अन्य कोई जन उनके साथ ऊपर न
आये.” 3 मोशेह नीचे उतर आए तथा जब उन्होंने लोगों को याहवेह द्वारा
कही सब बातें बताई तब सबने एक साथ कहा कि याहवेह की कही सब बातों
के अनुसार ही हम करेंगे. 4 तब मोशेह ने याहवेह की कही सब बातों को
लिख लिया. मोशेह ने सुबह जल्दी उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी बनाई,
और इस्राएल के बारह गोत्रों के अनुसार बारह खंभे भी खड़े किए. 5 उन्होंने
इस्राएलियों में से जवानों को भेजा और उन्होंने याहवेह के लिए होमबलि तथा
मेल बलि चढ़ाई. 6 मोशेह ने आधा रक्त बर्तन में रखा और आधा वेदी पर
छिड़क दिया. 7 फिर मोशेह ने वाचा की किताब लेकर सबको पढ़कर सुनाया.
उसे सुनकर लोगों ने कहा “हम याहवेह की सब बात मानेंगे और उनके साथ
चलेंगे!” 8 तब मोशेह ने रक्त लेकर लोगों पर छिड़का और कहा, “यह उस
वाचा का रक्त है, जो तुम्हारे साथ याहवेह ने बांधी हैं.” 9 फिर मोशेह, अहरोन,
नादाब तथा अबीहू और इस्राएल के सत्तर अगुओं को साथ लेकर ऊपर गए. 10
वहां उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया. उनके पांव के नीचे आकाश
के जैसा साफ नीलमणि था. 11 परमेश्वर ने उन लोगों पर अपना हाथ नहीं
बढ़ाया. उन्होंने परमेश्वर को देखा और खाया पिया. 12 याहवेह ने मोशेह से
कहा, “तुम यहां पर्वत के ऊपर मेरे पास आओ और, मैं तुम्हें मेरे नियम लिखी
हुई पट्टिया दूंगा, उसे लेकर तुम इन सबको सिखाना.” 13 तब मोशेह यहोशू को
साथ लेकर परमेश्वर के पर्वत पर गए. 14 किंतु मोशेह ने अगुओं से कहा, “तुम
लोग हमारे वापस आने तक यहीं रहना. अहरोन तथा हूर यहां तुम्हारे साथ हैं.
यदि कोई विवाद हो तो उनको बताना.” 15 यह कहकर मोशेह पर्वत पर चले
गए और बादल ने पर्वत को ढक दिया. 16 सीनायी पर्वत पर याहवेह का प्रकाश
छा गया. छः दिन तक बादल उस पर्वत को ढके रहा. सातवें दिन याहवेह ने
बादलों के बीच से मोशेह को बुलाया. 17 इस्राएलियों को याहवेह का प्रकाश,
पर्वत पर भस्म करनेवाली आग के समान दिख रहा था. 18 मोशेह पर्वत पर
बादलों के बीच से होते हुए चढ़ गए और चालीस दिन और चालीस रात वहां
रहे.

25 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा: 2 “इस्राएलियों से कहो कि वे मेरे लिए
भेंट लाएं. और तुम यह भेंट उन्हीं से लेना जो अपनी इच्छा से दे. 3 “ये
हैं भेंटें जिन्हें तुम उनसे प्राप्त करोगे: “सोना, चांदी, कांसे; 4 नीले, बैंगनी तथा

लाल सूक्ष्म मलमल; बकरे के रोम; 5 मेमने की रंगी हुई लाल खाल, सूंस
की खाल, बबूल की लकड़ी, 6 दीपक के लिए तेल; अभिषेक का तेल एवं
सुगंधधूप के लिए सुगंध द्रव्य; 7 एफ़ोद तथा सीनाबंद में जड़ने के लिए सुलेमानी
गोमेद नाग तथा अन्य नग, 8 “और मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाना. ताकि मैं
उनके बीच रहूं. 9 पवित्र निवास स्थान के लिये जैसा मैं तुमको बताऊं वैसा ही
सामान लेना और उसी तरीके से बनाना. 10 “उन्हीं बबूल की लकड़ी से एक
संदूक बनाना, जिसकी लंबाई एक सौ दस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई और ऊंचाई
सत्तर-सत्तर सेंटीमीटर हों. 11 और संदूक के अंदर और बाहर सोना लगाना.
और संदूक के ऊपर चारों तरफ सोने की किनारी लगाना. 12 इसके चारों पायों
पर लगाने के लिए सोने के चार कड़े बनाना; सोने के कड़ों को चारों कोनों पर
लगाना—दो कड़े एक तरफ और, दो कड़े दूसरी तरफ हों. 13 फिर बबूल की
लकड़ी से डंडे बनवाना, उस पर भी सोना लगाना. 14 डंडों को दोनों तरफ
के कड़ों में डालना ताकि संदूक को उठाना आसान हो. 15 डंडे को संदूक
की कड़ों में से न हटाना. 16 मैं तुम्हें एक साक्षी पट्टिया दूंगा, उसे उस संदूक
में रखना. 17 “सोने से करुणासन बनाना, जो एक सौ दस सेंटीमीटर लंबा
तथा सत्तर सेंटीमीटर चौड़ा होगा. 18 सोने के पत्रों से दो करूबों को बनाकर
करुणासन के दोनों ओर लगाना. 19 एक करूब एक तरफ तथा दूसरा करूब
दूसरी तरफ लगाना. ये करूब करुणासन के साथ ऐसे जुड़े हों, मानो यह एक ही
हो. 20 करूबों के पंख ऊपर से ऐसे खुले हों जिससे करुणासन उनसे ढका रह
सके और वे एक दूसरे के आमने-सामने तथा उनके मुंह करुणासन की ओर झुके
हुए हों. 21 करुणासन को संदूक के ऊपर लगाना और साक्षी पट्टिया जो मैं
तुम्हें दूंगा उसे संदूक के अंदर रखना. 22 और मैं करुणासन के ऊपर से तुमसे
मिलूंगा और इस्राएलियों के लिए जितनी आज्ञा मैं तुम्हें दूंगा वह संदूक के अंदर
रखना. 23 “तुम बबूल की लकड़ी से एक मेज़ बनाना. जो नब्बे सेंटीमीटर
लंबी, पैंतालीस सेंटीमीटर चौड़ी और साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर ऊंची होगी. 24
मेज़ पर पूरा सोना लगाना मेज़ की किनारी भी सोने की बनाना. 25 मेज़ के चारों
ओर सोने की साढ़े सात सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी लगाना और चारों तरफ से इस
पट्टी को सोने से मढ़ना. 26 मेज़ के लिए सोने के चार कड़े बनाना और मेज़ के
चारों पैरों के ऊपर के कोनों पर इन सोने के कड़ों को लगाना. 27 कड़े पट्टी के
पास लगाना ताकि मेज़ उठाने के लिये डंडे इन कड़ों में डाले जा सकें. 28 डंडे
बबूल की लकड़ी से बनाकर उस पर सोना चढ़ाना. डंडे के सहारे से ही मेज़ को
उठाया जाए. 29 तुम धूप के लिए थालियों, तवों, कटोरियों तथा सुराहियां,
चम्मच सब सोने से बनवाना. 30 मेज़ पर मेरे सामने भेंट की रोटी हमेशा रखना.
31 “फिर शुद्ध सोने का एक दीपस्तंभ बनाना. उसके आधार तथा उसके डंडे को
बनाना, और उसमें फूलों के समान प्याले बनाना. प्यालों के साथ कलियां और
खिले हुए पुष्प हों. ये सभी चीज़ें सोना पीटकर एक ही इकाई में परस्पर जुड़ी
हुई हो. 32 दीये से छः डालियां निकलें, तीन एक तरफ और तीन दूसरी तरफ
रखना. 33 हर डाली में बादाम के फूल जैसी तीन कलियां और एक गांठ हों,
और एक फूल दीये से बाहर निकली हुई, पूरी छः डालियों को इसी आकार से
बनाना. 34 दीये की डंडी में चार फूल बनाना, जिसमें बादाम के फूल के समान
कलियां तथा पंखुड़ियां बनाना. 35 दीये से निकली हुई छः डालियों में से दो-दो
डालियों के नीचे एक-एक गांठ हों और दीये समेत एक ही टुकड़े से बने हो.
36 कलियां, शाखाएं और दीप का स्तंभ शुद्ध सोने को पीटकर बने हो. 37 “सात
दीये बनाना और सातों दीयों को जलाए रखना ताकि वे रोशनी दे सकें. 38
चिमटियां तथा इन्हें रखने के बर्तन भी सोने के हों. 39 ये पूरा सामान लगभग
पैंतीस किलो सोने से बना हो. 40 सावधानी से इन सभी चीज़ों को बिलकुल
वैसा ही बनाना जैसा तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया था.

26 “फिर पवित्र स्थान के लिए कुशल कारीगरों द्वारा दस पर्दे बनाना, जो
बंटी हुई मलमल और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से बने हों
और उस पर कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के चित्र हों. 2 हर पर्दे की लंबाई
बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर हो. हर
पर्दा एक ही नाप का हो. 3 पांच पर्दों को एक साथ जोड़ना और इसी प्रकार
दूसरे पांच पर्दे भी एक साथ जुड़े. 4 फिर पहले पांच पर्दे के किनारी पर तथा
इसी तरह दूसरी पांच पर्दे के किनारी पर भी नीले रंग का फंदा बनाना. 5 एक
पर्दे में पचास फंदे और दूसरे में भी पचास फंदे. वे फंदे एक दूसरे के सामने
बनाना. 6 फिर, सोने के पचास अंकुड़े बनवाना. और उन अंकुड़ों से दोनों पर्दों
को मिलाना, जिससे पवित्र स्थान मिलकर एक हो जाए. 7 “फिर बकरे के रोमों
से ग्यारह पर्दे बनवाना जो पवित्र स्थान के ऊपर का हिस्सा है. 8 हर पर्दे की
लंबाई साढ़े तेरह मीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर हो. ग्यारहों पर्दे
एक ही नाप के हों. 9 उन पर्दों में पांच को जोड़कर एक पर्दा बनवाना. और
बाकी छः पर्दों को जोड़कर एक और पर्दा बनवाना. छठे पर्दे को तंबू के सामने
मोड़ देना. 10 और दोनों अलग-अलग पर्दों की एक-एक किनारी पर पचास-
पचास फंदे लगाना. 11 फिर कांसे के पचास अंकुड़े बनवाना. उन अंकुड़ों में
फंदे लगवाना और तंबू के दोनों तरफ इस प्रकार जोड़ना कि वे एक बन जाए.
12 पर्दों का जो भाग बचा है, उसका आधा भाग पवित्र स्थान के पीछे लटका
देना 13 और पर्दों की लंबाई में बचा हुआ भाग पवित्र स्थान के दोनों तरफ
ढकने के लिए पैंतालीस-पैंतालीस सेंटीमीटर दोनों ओर लटका हुआ छोड़ देना.
14 तंबू के लिए लाल रंग से रंगी हुई भेडों की खाल का एक ओढ़ना बनवाना
और फिर उसके ऊपर लगाने के लिए सूस के चमड़े का एक और ओढ़ना
बनवाना. 15 “फिर पवित्र स्थान को खड़ा करने के लिए बबूल की लकड़ी के
तख्ते बनवाना. 16 हर तख्ते की लंबाई साढ़े चार मीटर और चौड़ाई साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर की हो. 17 तख्ते को जोड़ने के लिए दो समानांतर चूल्हे हों.
पवित्र स्थान के सब तख्ते इसी तरह बनवाना. 18 पवित्र स्थान के लिए बीस
तख्ते दक्षिण की ओर बनवाना. 19 उनके नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां
बनवाना जो तख्तों के नीचे रखी जायेंगी. हर तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के
लिए दो कुर्सियां बनवाना. 20 और इसी प्रकार उत्तर की ओर भी बीस तख्ते
बनवाना. 21 और चांदी की चालीस कुर्सियां, हर एक तख्ते के नीचे दो कुर्सियां
बनवाना. 22 पवित्र स्थान के पीछे पश्चिम की ओर छः तख्ते बनवाना. 23 और
पीछे के भाग के कोनों के लिए दो तख्ते बनवाना. 24 कोने के दोनों तख्ते एक
साथ जोड़ देना चाहिए. तले में दोनों तख्तों की खूंटियां चांदी के एक ही आधार
में लगेंगी और दोनों भाग ऊपर से जुड़े हों, और नीचे का भाग अलग हो. 25
इस प्रकार आठ तख्ते बनवाना, जिनके नीचे चांदी की सोलह कुर्सियां हों, हर
तख्ते के नीचे दो कुर्सियां हों. 26 “फिर बबूल की लकड़ी की छड़ें बनवाना.
अर्थात् पवित्र स्थान की एक तरफ के तख्तों के लिए पांच छड़ें हों, 27 और
तथा पवित्र स्थान की दूसरी तरफ के तख्तों के लिए पांच कड़े तथा पवित्र स्थान
के पश्चिमी दिशा के तख्ते के लिए पांच कड़े बनवाना. 28 तख्ते के एक तरफ
से दूसरी तरफ जाने के लिए तख्ते के बीच में कड़े बनवाना. 29 तख्तों के ऊपर
सोना लगवाना और कड़े में भी सोना लगवाना. लकड़े की डंडियों को भी
सोना लगवाना. 30 “इसी प्रकार पवित्र स्थान को बनाना, जैसे तुमको पर्वत पर
दिखाया गया था. 31 “फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से और बंटी
हुई मलमल से एक बीच वाला पर्दा बनवाना, जिस पर कढ़ाई के काम द्वारा
करूबों के रूप बने हुए हों. 32 बबूल की लकड़ी के चार खंभे बनवाना और
उनके ऊपर सोना लगाना. इन खंभों पर पर्दों के लिए सोने की कड़ियां और
चांदी की चार कुर्सियां बनवाना. 33 बीचवाले पर्दे को अंकुड़ियों के नीचे
लटकाकर उसकी आड़ में साक्षी पत्र का संदूक अंदर रखना. बीचवाले पर्दे के

एक तरफ पवित्र स्थान तथा दूसरी तरफ परम पवित्र स्थान होगा. **34** परम पवित्र स्थान में साक्षी पत्र के संदूक के ऊपर करुणासन को रखना. **35** पर्दे के बाहर पवित्र स्थान के उत्तरी भाग में मेज़ रखना और उसके दक्षिण की ओर मेज़ के सामने दीया रखना. **36** "तंबू के द्वार के लिए नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों का तथा बंटी हुई बारीक़ सनी वाले कपड़ो की कढ़ाई का काम किया हुआ एक पर्दा बनवाना. **37** इस पर्दे को लटकाने के लिए बबूल की लकड़ी के सोने से मढ़े हुए पांच खंभे बनवाना. उनकी कुण्डियां सोने की हों और उनके लिए कांसे की पांच कुर्सियां बनवाना.

27 "बबूल की लकड़ी से एक वेदी बनवाना, तथा उसकी ऊंचाई एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर हो, वह वेदी चौकोर हो, सवा दो मीटर लंबी और सवा दो मीटर चौड़ी हो. **2** उसके चारों कोनों पर सींग बनवाना, वेदी और सींग एक ही टुकड़े से बने हों और उसमें कांसा लगवाना. **3** वेदी से राख उठाने का बर्तन, फावड़े, कटोरे, कांटे और अंगीठियां कांसे से बनवाना. **4** वेदी के लिए कांसे की जाली की एक झंझरी बनवाना और जाली के चारों कोनों पर कांसे के चार कड़े बनवाना. **5** उसे वेदी के नीचे इस प्रकार लगवाना कि वह वेदी की आधी ऊंचाई तक आए. **6** वेदी के लिए डंडे बबूल की लकड़ी के ही बनवाना और उसमें कांसे लगवाना. **7** वे डंडे कड़ों में डालें ताकि जब वेदी को उठाएं तब डंडे उसके दोनों ओर हों. **8** वेदी को तख्तों से इस प्रकार बनाना कि वह अंदर से खोखली रहे. जैसे तुमको पर्वत पर दिखाया गया था, ठीक वैसी ही बनाना. **9** "फिर पवित्र स्थान के आंगन को बनवाना. आंगन के दक्षिण हिस्से में बंटी हुई बारिक सनी के कपड़े का पर्दा हो, जिनकी लंबाई पैंतालीस मीटर हो. **10** तथा बीस खंभे और कांसे की बीस कुर्सियां बनवाना. खंभों के कुण्डे और पट्टियां चांदी की हों. **11** इसी प्रकार उत्तरी हिस्से के लिए भी पैंतालीस मीटर लंबे पर्दे बनवाना. उनके लिए बीस खंभे और कांसे की बीस कुर्सियां बनवाना. मीनारों के कड़े और पट्टियां चांदी की हों. **12** "आंगन का पश्चिमी हिस्सा साढ़े बाईस मीटर लंबा हो तथा उसके लिए पर्दे, दस खंभे और दस कुर्सियां बनवाना. **13** आंगन का पूर्वी किनारा भी साढ़े बाईस मीटर का हो. **14** द्वार के एक तरफ के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के हों, और तीन खंभे और तीन कुर्सियां हों, **15** दूसरी ओर के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के हों, तथा तीन खंभे और तीन कुर्सियां हों. **16** "आंगन के द्वार के लिए नौ मीटर लंबा नीले, बैंगनी और लाल रंग का कपड़ा तथा बंटा हुआ मलमल का पर्दा बनवाना उसमें चार खंभे और चार कुर्सियां हों. **17** आंगन के चारों ओर के सब खंभे चांदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों. उनके कुण्डे चांदी के और उनकी खानें कांसे की हों. **18** आंगन की लंबाई पैंतालीस मीटर तथा चौड़ाई साढ़े बाईस मीटर तथा ऊंचाई दो मीटर तीस सेंटीमीटर ऊंचे हों और उनकी कुर्सियां कांसे की हों. **19** पवित्र स्थान के उपयोग का सारा सामान, उसकी सब खूंटियां और आंगन की सब खूंटियां कांसे की हों. **20** "इस्राएलियों को कहना कि वे दीये के लिए जैतून का निकाला हुआ शुद्ध तेल लायें, जिससे दिया हमेशा जलता रहे, **21** जो मिलनवाले तंबू के बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षी पर्दे के सामने हैं. अहरोन और उसके पुत्र, सुबह से शाम तक, उस दीये को याहवेह के सामने जलता हुआ रखें. यह इस्राएलियों के लिए पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला आदेश है.

28 "इस्राएलियों में से अपने भाई अहरोन और उसके पुत्र नादाब और अबीहू, एलिएज़र और इथामार को बुलाना, ताकि वे मेरे लिए पुरोहित का काम करें. **2** अपने भाई अहरोन के लिए, उसकी मर्यादा और शोभा के लिए, पवित्र वस्त्र बनवाना. **3** उन सब कुशल शिल्पकारों को, जिन्हें मैंने इस काम के लिए चुना है, वे अहरोन के अभिषेक के लिए वस्त्र बनाएं, जिसे पहनकर वह मेरे लिए पुरोहित का काम कर सके. **4** उन्हें वक्षपेटिका, एफ़ोद, अंगरखा, बेलबूटेदार कुर्ता, पगड़ी और कमरबंध आदि वस्त्र बनाना होगा. वे तुम्हारे भाई अहरोन और उसके पुत्रों के लिए पवित्र वस्त्र बनाएं, वे इन्हें पहनकर मेरे लिए पुरोहित का काम करें. **5** वे सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े और मलमल का उपयोग करें. **6** "तुम एक कुशल शिल्पकार द्वारा सोने के तारों से, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों तथा बंटी हुई मलमल से, एफ़ोद बनवाना. **7** एफ़ोद को जोड़ने के लिए कंधों की पट्टियां बनाना और कंधे की इन पट्टियों को एफ़ोद के कंधे से उसके दोनों भाग जोड़ देना. **8** कमरबंध एफ़ोद के साथ बुना हुआ हो और एक ही प्रकार की सामग्री से बना हो, अर्थात् सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से और बंटी हुई मलमल से बनाना. **9** "सुलेमानी दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना, **10** उनके जन्म के अनुसार, एक मणि पर छः नाम और दूसरी मणि पर बाकी छः नाम खुदवाना. **11** जिस प्रकार जौहरी मुद्राओं को खोदता है, उसी प्रकार इन दोनों मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना. उन्हें सोने के खांचों में जड़वा देना. **12** इन दोनों मणियों को इस्राएल के पुत्रों के यादगार मणियों के रूप में एफ़ोद के कंधे में लगवाना. अहरोन अपने दोनों कंधों पर उनके नाम याहवेह के सामने याद कराने वाली ये मणि हो. **13** फिर सोने के खाने बनवाना. **14** और रस्सियों के समान गुंथी हुई कुन्दन की दो जंजीरें बनवाना और इन गुंथी हुई जंजीरों को खांचों में लगवाना. **15** "तुम एक कुशल शिल्पकार द्वारा न्याय की पेटी बनवाना, उसे बेलबूटेदार एफ़ोद के समान बनवाना. उसे सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े तथा बंटी हुई मलमल से बनवाना. **16** वक्ष पटल को मोड़कर दो भाग बनाना. और इसका आकार चौकोर हो, और यह साढ़े बाईस सेंटीमीटर लंबा तथा साढ़े बाईस सेंटीमीटर चौड़ा हो. **17** उसमें मणियों की चार पंक्तियां लगवाना. पहली पंक्ति में एक माणिक्य, एक पुखराज और एक मरकत हो. **18** दूसरी पंक्ति में एक लाल मणि, एक नीलम और एक हीरा हो. **19** तीसरी पंक्ति में एक तृणमणि, एक यशब और एक याकूत. **20** चौथी पंक्ति में एक स्वर्णमणि, एक सुलेमानी और एक सूर्यकांत मणि इन्हें नक्काशी किए हुए सोने के खांचों में लगवाना. **21** इस्राएल के बारह पुत्रों के अनुसार बारह मणियां हों. हर मणि पर बारह गोत्रों में से एक नाम लिखा हो जिस तरह मोहरों पर होता है. **22** "वक्षपेटिका के लिए बंटी हुई डोरियों के रूप में सोने की गुंथी हुई जंजीर बनवाना. **23** वक्षपेटिका के लिए सोने के दो कड़े भी बनवाना और इन दोनों कड़ों को वक्षपेटिका के दोनों सिरों पर लगवाना. **24** इसके बाद सोने की इन दोनों डोरियों को वक्षपेटिका के सिरों में लगे हुए दोनों कड़ों में लगवाना. **25** दोनों डोरियों के दूसरे सिरों को नक्काशी किए हुए दोनों खांचों में जुड़वाना. उन्हें एफ़ोद के कंधों में सामने की ओर लगवाना. **26** फिर सोने के दो और कड़े बनवाकर इन्हें वक्षपेटिका के सिरों पर अंदर की ओर एफ़ोद से सटाकर लगवाना. **27** दो कड़े बनवाना और उन्हें एफ़ोद के कंधों की तरफ़ की छोर के सामने की तरफ़ से मिला देना, जो एफ़ोद के बुनी हुई पट्टी के पास से हो. **28** वक्ष पटल को उसके कड़ों के द्वारा एफ़ोद के कड़ों से एक नीले रंग की रस्सी द्वारा बांधना, जिससे यह अब एफ़ोद के बुने हुए भाग पर जुड़ जायें ताकि वक्ष पटल एवं एफ़ोद एक दूसरे से जुड़े रहेंगे. **29** "जब अहरोन पवित्र स्थान में जाएगा, तब वह न्याय पेटी पर लिखे इस्राएल के नाम अपने हृदय पर लगाकर रखें जिससे याहवेह के सामने हमेशा उसे याद करते रहे. **30** न्याय पेटी में उरीम और थुम्मीम को रखना, जिससे अहरोन उन्हें अपने हृदय पर लिए हुए याहवेह के सामने आए. इस प्रकार अहरोन याहवेह के सामने आते समय इस्राएल को हमेशा अपने हृदय पर लगाए रखे. **31** "एफ़ोद का पूरा अंगरखा नीले कपड़े का बनवाना. **32** बीच में सिर के लिए एक छेद हो और उस छेद के चारों ओर गिरेबां जैसी एक गोट हो, जिससे वह फटे नहीं. **33** इस वस्त्र की किनारी पर नीली, बैंगनी तथा लाल सूक्ष्म बंटी हुई सन के रेशों से अनार बनवाना. सोने की

घंटियां भी बनवाना और इन्हें वस्त्र की किनारी के चारों ओर अनारों के बीच में
लगा देना. 34 अंगरखे के निचले घेरे में एक अनार के बाद सोने की एक घंटी
हो, फिर एक अनार के बाद फिर एक सोने की घंटी. 35 अहरोन सेवा करते
समय उसे पहन लेगा जब वह याहवेह के सामने पवित्र स्थान में जाएगा और
उसमें से निकल आएगा, तो घण्टियों का शब्द सुनाई देगा, ऐसा नहीं होने पर
उसकी मृत्यु हो जाएगी. 36 “शुद्ध सोने की एक पट पर मुहर के समान ये अक्षर
खोदे जायें: याहवेह के लिए पवित्र 37 तुम उसे नीला फीता से सामने की ओर
पगड़ी में बांधना 38 अहरोन उसे अपने सिर पर रखे और इससे वह इस्राएलियों
द्वारा चढ़ाए पवित्र चढ़ावों का दोष अहरोन अपने ऊपर उठाए रखे. वह उस
पटिए को सदा अपने सिर पर उठाए रखे, जिससे याहवेह उससे खुश रहे. 39
“कुर्ता और पगड़ी मलमल के और कमरबंध बेलबूटेदार हों. 40 अहरोन के
पुत्रों की मर्यादा और शोभा के लिए कुर्ता, कमरबंध ओर टोपी बनवाना. 41
अपने भाई अहरोन और उसके पुत्रों को उन्हें पहनाना और उनका पुरोहित के
रूप में अभिषेक करना. उन्हें पवित्र करना, जिससे वे मेरे लिए पुरोहित का काम
कर सकें. 42 “उनके शरीर ढकने के लिए मलमल के जांघिये बनवाना. 43
उनकी लंबाई कमर से जांघ तक हो जब अहरोन और उसके पुत्र मिलनवाले तंबू
में जायें अथवा पवित्र स्थान में सेवा करने के लिए वेदी के पास जायें, तब वे उस
वस्त्र को पहनें, जिससे वे अपराधी न बनें और उनकी मृत्यु न हो. “यह उसके
और उसके बाद होनेवाले उसके वंश के लिए स्थिर आदेश है.

29 “अब तुम उनको पवित्र करने के लिए एक निर्दोष बछड़ा तथा दो मेढ़ों
को लाना. 2 उनको लेकर बिना खमीर रोटी तथा तेल से बनी बिना
खमीर की पूरियां, तेल लगाई हुई बिना खमीर की रोटियां जिन्हें मैदे से तैयार
किया गया हो, लेना. 3 इन सभी को तुम एक टोकरी में रखकर तथा बछड़े एवं
मेढ़ों के साथ चढ़ाना. 4 तब तुम अहरोन और उसके पुत्रों को मिलनवाले तंबू
के द्वार पर लाकर उनको नहलाना. 5 और अहरोन को कुर्ता तथा एफ़ोद का
परिधान, एफ़ोद तथा वक्ष पटल पहनाकर उसे एफ़ोद के फ़ीते से बांध देना; 6
उसके सिर पर वह पगड़ी रखना तथा उस पगड़ी पर पवित्र मुकुट रख देना. 7
तब अभिषेक का तेल लेकर उसके सिर पर डालकर उसका अभिषेक करना.
8 फिर उसके पुत्रों को कुर्ते पहनाना. 9 अहरोन तथा उनके पुत्रों की कमर
बांधकर उनके सिर पर टोपियां रख देना. ऐसे पुरोहित पद पर हमेशा उनका
अधिकार हो जाएगा. “इस तरह अहरोन तथा उसके पुत्रों का अभिषेक करना.
10 “इसके बाद बछड़े को मिलनवाले तंबू के सामने लाना और अहरोन के पुत्र
उस बछड़े के सिर पर अपना हाथ रखें. 11 तब उस बछड़े को याहवेह के सामने
मिलनवाले तंबू के द्वार पर बलि चढ़ाना. 12 तुम उस बछड़े का लहू अपनी
उंगली पर लेकर वेदी के सींगों पर लगाना और बाकी बचे हुए लहू को वेदी पर
डाल देना. 13 उसकी अंतड़ियां के ऊपर की तथा कलेजे के ऊपर की चर्बी,
तथा दोनों गुर्दों के ऊपर की चर्बी को वेदी पर जला देना. 14 किंतु बैल,
उसकी खाल, मांस और इस प्रक्रिया में उत्पन्न गोबर को छावनी के बाहर अग्नि
में जला देना, क्योंकि यह पापबलि है. 15 “फिर एक मेढ़ा भी लेना और
अहरोन तथा उसके पुत्र अपना हाथ उस मेढ़े के सिर पर रखें; 16 फिर उस मेढ़े
की बलि करके उसके लहू को एक साथ लेकर वेदी के आस-पास छिड़क देना.
17 फिर उस मेढ़े के टुकड़े-टुकड़े करके, उसके आंतरिक अंगों तथा टांगों
को धोकर, इन सबको सिर के साथ रख देना. 18 और पूरे मेढ़े को वेदी पर
जला देना. यह याहवेह के लिए होमबलि होगी, और याहवेह के लिए अग्नि में
समर्पित सुखदायक सुगंध होगा. 19 “इसके बाद दूसरा मेढ़ा अर्थात् संस्कार का
मेढ़ा प्रस्तुत किया जाये और अहरोन और उनके पुत्र उस मेढ़े के सिर पर अपने
हाथ रखें. 20 फिर उस मेढ़े को बलि करना, उसका कुछ रक्त लेकर अहरोन के
दहिने कान पर तथा उनके दाएं हाथ एवं पांव के दाएं अंगूठों पर लगा देना तथा
बाकी बचे हुए लहू को वेदी के चारों ओर छिड़क देना. 21 फिर वेदी से थोड़ा
लहू और अभिषेक का तेल लेकर अहरोन और उसके पुत्रों के ऊपर और उनके
कपड़ों पर छिड़क देना; इससे अहरोन और उसके कपड़े तथा उसके पुत्र और
उनके कपड़े पवित्र हो जायेंगे. 22 “मेढ़े को अभिषेक वाला मानकर उसकी
चर्बी, उसकी पूंछ, अंतड़ियां तथा कलेजे के ऊपर की चर्बी, दोनों गुर्दे तथा
उसकी चर्बी और मेढ़े की दायीं जांघ लेना—क्योंकि यह अभिषेक का मेढ़ा है,
23 और एक रोटी, तेल से चुपड़ी एक पूरी, बिना खमीर रोटी की टोकरी में से
एक पपड़ी, जो याहवेह के सामने रखी गई थी; 24 ये सभी वस्तुएं अहरोन एवं
उसके पुत्रों के हाथों में रखकर इन्हें याहवेह को चढ़ाने की भेंट मानकर याहवेह
के आगे लहराया जाए. 25 फिर वह इन वस्तुओं को लेकर होमबलि के लिए
वेदी पर जलाए ताकि यह याहवेह के लिए सुखदायक सुगंध हो. यह याहवेह के
लिए अग्निबलि होगी. 26 फिर अहरोन के अभिषेक के मेढ़े की छाती को
लेकर याहवेह के सामने लहर की भेंट के रूप में लहराए. और वह तुम्हारा
हिस्सा होगा. 27 “मेढ़े के लहराए जाने की भेंट वाली छाती तथा उठाए जाने
की भेंट वाला जांघ, जिसे लहराया गया था, और जिसे अभिषेक के मेढ़े में से
चढ़ाया था, जो अहरोन एवं उसके पुत्रों के हिस्से में से था, पवित्र करना. 28
यह इस्राएल वंश से सदा के लिए अहरोन एवं उसके पुत्रों के लिए उनका हिस्सा
होगा, क्योंकि यह उठाए जाने की भेंट है; यह इस्राएलियों की ओर से उनकी
मेल बलियों में से याहवेह के लिए उठाए जाने की भेंट हो. 29 “अहरोन के बाद
अहरोन के पवित्र कपड़े उसके पुत्र के होंगे, ताकि इन्हीं कपड़ों में उनको पवित्र
एवं अभिषेक किया जा सके. 30 अहरोन के बाद उसके पुत्रों में से जो पुरोहित
बनेगा जब वह पवित्र स्थान में सेवा करने मिलनवाले तंबू में जाएगा तब अहरोन
के कपड़ो को उसे सात दिन तक पहनना होगा. 31 “फिर अभिषेक के उस मेढ़े
को तथा उसके मांस को एक पवित्र स्थान पर पकाना. 32 अहरोन एवं उसके
पुत्र, उस मेढ़े के मांस एवं उस टोकरी की रोटी दोनों को मिलनवाले तंबू के द्वार
पर खाएं. 33 इस प्रकार वे अभिषेक तथा पवित्र की गई वस्तुओं को खाएं,
जिनके द्वारा प्रायश्चित किया गया था. लेकिन सामान्य व्यक्ति इसे न खाएं,
क्योंकि ये वस्तुएं पवित्र हैं. 34 यदि अभिषेक के मांस में से कुछ मांस एवं
रोटी बच जाती है तो उसे आग में जला देना, क्योंकि ये पवित्र वस्तुएं हैं. 35
“अहरोन तथा उसके पुत्रों के साथ वही करना जो उनके साथ करने के लिए मैंने
तुमसे कहा हैं; सात दिन तक उनको पवित्र करते रहना. 36 रोज तुम पापबलि के
लिए एक बछड़ा प्रायश्चित के लिए चढ़ाना. प्रायश्चित करने के समय वेदी को
भी साफ़ करना. और उसे पवित्र करने के लिए उसका अभिषेक करना. 37 सात
दिन तक वेदी के लिए तुम प्रायश्चित करके उसे पवित्र करना तब यह वेदी महा
पवित्र हो जाएगी. जो कोई इस वेदी को छुएगा पवित्र हो जाएगा. 38 “और
एक-एक साल के दो मेमने वेदी पर रोज चढ़ाना. 39 एक मेमना सुबह तथा
दूसरा शाम को चढ़ाना. 40 पहले मेमने के साथ पेरकर निकाले गए एक लीटर
तेल में मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा तथा पेय बलि के लिए एक लीटर दाखरस
चढ़ाना 41 तथा दूसरे मेमने के साथ शाम को अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना
होगा, जो याहवेह के लिए चढ़ाया गया एक सुखदायक सुगंध हो जाए. 42
“यह याहवेह के सामने, मिलनवाले तंबू के द्वार पर जहां मैं तुमसे मिलकर बातें
करूंगा, तुम्हारी समस्त पीढ़ियों द्वारा याहवेह के लिए मिलनवाले तंबू के द्वार पर
नियमित रूप से होमबलि चढ़ाई जाएगी. 43 वहां मैं इस्राएलियों से मिलूंगा और
वह तंबू मेरे तेज से पवित्र किया जायेगा. 44 “मैं मिलनवाले तंबू और वेदी को
पवित्र करूंगा और अहरोन एवं उसके पुत्रों को भी पुरोहित के रूप में सेवा के
लिए पवित्र करूंगा. 45 मैं इस्राएलियों के साथ रहूंगा तथा मैं उनका परमेश्वर
ठहरूंगा. 46 तब वे जान लेंगे कि मैं याहवेह उनका परमेश्वर हूं, जिसने उन्हें
मिस्र देश से निकाला ताकि मैं उनके साथ रहूं. मैं याहवेह उनका परमेश्वर हूं.

30 “धूप जलाने के लिए बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाना. 2 वेदी
चौकोर हो, उसकी लंबाई तथा चौड़ाई पैंतालीस-पैंतालीस सेंटीमीटर
तथा ऊंचाई नब्बे सेंटीमीटर की हो, उसकी सींग उसी टुकड़े में से बनाए. 3
वेदी के अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे, चारों ओर सोना लगवाना—सींग में भी सोना
लगवाना. इसके चारों ओर तुम सोने की किनारी लगवाना. 4 इसकी किनारियों
के नीचे सोने के दो-दो कड़े लगवाना. और इसको इन डंडे के द्वारा उठाने के
लिए ही दोनों तरफ कड़े लगवाना जो आमने-सामने हो. 5 डंडे बबूल की
लकड़ी से बनाकर उसमें सोना लगाना. 6 वेदी को उस पर्दे के सामने रखना, जो
साक्षी पट्टिया के संदूक के पास है, अर्थात् करुणासन के आगे जो साक्षी पत्र के
ऊपर है, वहीं मैं तुमसे मिला करूंगा. 7 “अहरोन इसी वेदी पर सुगंधधूप जलाया
करे, वह हर रोज सुबह दीये को ठीक करके फिर दिया जलाए. 8 अहरोन शाम
के समय जब दीयों को जलाए तब धूप भी जलाए; यह धूप याहवेह के सामने
पीढ़ी से पीढ़ी तक लगातार जलाया जाए. 9 तुम उस वेदी पर और किसी प्रकार
की धूप न जलाना और न उस पर होमबलि अथवा अन्नबलि चढ़ाना तथा न तुम
इस वेदी पर कोई पेय बलि उण्डेलना. 10 साल में एक बार अहरोन इस वेदी के
सींगों पर प्रायश्चित किया करेगा. वह वर्ष में एक ही बार पीढ़ी से पीढ़ी तक
पापबलि के लहू से प्रायश्चित किया करेगा. यह याहवेह के लिए परम पवित्र है.”
11 याहवेह ने मोशेह से कहा 12 “जब तुम इस्राएलियों को गिनने लगो, और
जिनकी गिनती हो चुकी हो वे अपने लिए याहवेह को प्रायश्चित दें ताकि गिनती
करते समय कोई परेशानी न आ जाये. 13 हर एक व्यक्ति, जिसको गिना जा रहा
है, वह व्यक्ति पवित्र स्थान की नाप के अनुसार याहवेह के लिए चांदी का आधा
शेकेल दे. एक शेकेल बीस गेराह है. 14 हर एक पुरुष, जो बीस वर्ष से ऊपर का
हो चुका है, और जिसकी गिनती की जा रही है, वह याहवेह को भेंट दे. 15
जब कभी तुम अपने प्रायश्चित के लिए याहवेह को भेंट दो तब न तो धनी
व्यक्ति आधे शेकेल से ज्यादा दे और न गरीब आधे शेकेल से कम दे. 16 तुम
इस्राएलियों से प्रायश्चित का रुपया लेकर मिलनवाले तंबू के कामों में लेना ताकि
यह इस्राएलियों के लिए याहवेह के सामने यादगार बन जाए, और अपने प्राण
का प्रायश्चित भी हो जाए.” 17 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, 18 “तुम्हें कांसे
की एक हौद भी बनानी होगी. उसका पाया कांसे का बनाना. यह हाथ-पैर धोने
के लिए काम में लिया जायेगा. उसे मिलनवाले तंबू और वेदी के बीच में रखकर
उसमें पानी भरना. 19 अहरोन तथा उसके पुत्र इसी पानी में अपने हाथ एवं पांव
धोया करें. 20 जब-जब वे मिलनवाले तंबू में जायें तब-तब वे हाथ-पांव धोकर
ही जाएं, और जब वे वेदी के समीप याहवेह की सेवा करने या धूप जलाने जाएं;
21 तब वे हाथ-पांव धोकर ही जाएं ऐसा नहीं करने से वे मर जायेंगे. अहरोन एवं
उसके वंश को पीढ़ी से पीढ़ी के लिए सदा यही विधि माननी है.” 22 और
याहवेह ने मोशेह से कहा 23 “तुम उत्तम से उत्तम सुगंध द्रव्य, पवित्र स्थान की
माप के अनुसार साढ़े पांच किलो, गन्धरस, पौने तीन किलो सुगंधित दालचीनी,
पौने तीन किलो सुगंधित अगर, 24 साढ़े पांच किलो दालचीनी तथा पौने चार
लीटर जैतून का तेल. 25 इन सबको लेकर अभिषेक का पवित्र तेल तैयार
करना, ऐसा कार्य जैसा इत्र बनानेवाले का हो; और यह अभिषेक का पवित्र तेल
कहलायेगा. 26 और इसी तेल से मिलनवाले तंबू, साक्षी पत्र के संदूक, 27
मेज़ और उसकी सारी चीज़ें, दीया और उसकी सारी चीज़ें, तथा सुगंधधूप
वेदी, 28 होमबलि की वेदी, पाए के साथ हौदी का अभिषेक करना. 29 तुम
इन सबको पवित्र करना, ताकि ये सब अति पवित्र हो जाएं. जो कोई इनको
छुएगा, वह पवित्र हो जाएगा. 30 “तुम अहरोन एवं उसके पुत्रों को अभिषेक
करके पवित्र करना, ताकि वे मेरे पुरोहित होकर मेरी सेवा किया करें. 31 तुम
इस्राएलियों से यह कहना, ‘यह पीढ़ी से पीढ़ी तक मेरे लिए पवित्र अभिषेक का
तेल होगा. 32 यह किसी भी मनुष्य के शरीर पर न डालना और न ही तुम कभी
भी इसके समान कोई और तेल बनाना. यह पवित्र तेल है. यह तुम्हारे लिए पवित्र
रहेगा. 33 जो कोई उस पवित्र तेल के समान कोई और तेल बनाने की कोशिश
करे या उसमें से किसी अन्य व्यक्ति को दे, तो उसे अपने लोगों के बीच से
निकाल दिया जाये.’” 34 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “तुम गन्धरस, नखी,
गन्धाबिरोजा, सुगंध द्रव्य तथा शुद्ध लोबान, ये सब बराबर मात्रा में लेना, और 35
इन्हें लेकर एक सुगंधधूप बनाना—जैसे लवण के साथ, विशुद्ध तथा पवित्र हवन
सामग्री को बनाता है. 36 इसमें से छोटा टुकड़ा लेकर बारिक पीसकर थोड़ा
मिलनवाले तंबू में साक्षी पत्र के आगे रखना, जहां मैं तुमसे भेंट करूंगा. वह
तुम्हारे लिए परम पवित्र होगा. 37 जो धूप तुम बनाओगे, उसमें अपनी इच्छा से
कुछ मिलावट न करना बल्कि इसे याहवेह के लिए पवित्र रखना. 38 जो कोई
धूप के लिए अपनी मर्जी से कुछ भी मिलायेगा तो उसे निकाल दिया जाये.”

31 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, 2 “सुनो, मैंने यहूदाह गोत्र के हूर के
पौत्र, उरी के पुत्र बसलेल को नाम लेकर बुलाया है. 3 मैंने उसे मेरे
आत्मा से प्रवीणता, समझ, बुद्धि और सब कामों की समझ देकर भर दिया है, 4
ताकि वह सोना, चांदी एवं कांसे पर कलात्मक रचना कर सके, 5 जड़ने के
उद्देश्य से पत्थर काटने में कुशल तथा लकड़ी के खोदने में बुद्धि से कलाकारी
का काम कर सके. 6 और मैंने उसके साथ दान गोत्र के अहीसामक के पुत्र
ओहोलियाब को सहायक चुना है. “तथा उन सभी में जो योग्य हैं, उनको मैं
समझ देता हूं कि वे वह सब बनाएं, जो मैंने तुमसे कहा. 7 “जैसे मिलनवाले
तंबू, साक्षी पत्र का संदूक, उसके ऊपर करुणासन, और तंबू का सारा सामान, 8
मेज़ तथा उसका सारा सामान, सोने का दीया तथा उसका सारा सामान, तथा धूप
वेदी, 9 होमबलि की वेदी तथा उसका सारा सामान, तथा पाया सहित उसकी
हौदी, 10 बुने हुए वस्त्र, तथा पुरोहित अहरोन तथा उसके पुत्रों के पवित्र वस्त्र, जो
वे पुरोहित का काम करते वक्त पहनेंगे; 11 अभिषेक का तेल और सुगंधित धूप,
जो पवित्र स्थान के लिए है, “इन सब चीज़ों को वे परमेश्वर की आज्ञा के
अनुसार तैयार करें.” 12 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, 13 “तुम इस्राएलियों
से कहना, ‘तुम मेरे विश्राम दिन को मानना; क्योंकि यह तुम्हारे पीढ़ी से पीढ़ी
तक मेरे एवं तुम्हारे बीच में एक चिन्ह होगा, ताकि तुम यह जान लो कि मैं ही
याहवेह हूं, जो तुम्हें पवित्र करता हूं. 14 “‘तुम्हें विश्राम दिन को मानना ही है,
क्योंकि यह तुम्हारे लिए पवित्र है. और जो इसे अपवित्र करेगा, वह निश्चय मार
डाला जायेगा; जो कोई विश्राम दिन पर कोई भी काम करेगा, वह व्यक्ति उसके
समाज में से मिटा दिया जाए. 15 छः दिन तुम काम कर सकते हो, परंतु सातवां
दिन पूरा विश्राम का दिन होगा जो याहवेह के लिए पवित्र है. 16 इस्राएलियों में
इस दिन को विश्राम दिन मानकर उनकी सारी पीढ़ी हमेशा इस वाचा को याद
रखते हुए इस दिन को माने. 17 यह मेरे तथा इस्राएलियों के बीच में पक्का वादा
और चिन्ह है; क्योंकि छः दिनों में याहवेह ने स्वर्ग तथा पृथ्वी को बनाया,
लेकिन सातवें दिन उन्होंने आराम किया.’” 18 जब याहवेह सीनायी पर्वत पर
मोशेह से बात कर चुके, तब परमेश्वर ने मोशेह को अपने हाथ से लिखी हुई
साक्षी की दो पत्थर की पट्टियां दीं.

32 जब लोगों ने देखा कि पर्वत से आने में मोशेह विलम्ब कर रहे हैं, तब
लोगों ने अहरोन के पास जाकर उनसे कहा, “हमारे लिए एक देवता
बनाइए जो हमारे आगे-आगे चलकर हमारी अगुवाई करे, क्योंकि मोशेह हमें
मिस्र से तो निकालकर ले आये, परंतु अब मोशेह का कोई पता नहीं. अब आगे
क्या होगा नहीं मालूम.” 2 यह सुनकर अहरोन ने कहा, “अपनी-अपनी
पत्नियों और पुत्र, पुत्रियों के गहने उतारकर यहां ले आओ.” 3 सभी अपने-
अपने कानों से गहने उतारकर अहरोन के पास ले आए. 4 अहरोन ने उनसे
सोना ले लिया और एक औज़ार से उसे बछड़े का एक रूप ढाल लिया, सबने

यह नारा लगाया: “इस्राएल, यह है तुम्हारे देवता, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल
लाए है.” 5 तब अहरोन ने इस बछड़े के लिए एक वेदी बनाई और कहा,
“कल याहवेह के लिए एक उत्सव होगा.” 6 दूसरे दिन वे सब जल्दी उठ गए
और उन्होंने होमबलि चढ़ाई, और वे मेल बलियां लाए और खाने-पीने बैठ गए;
और खड़े होकर रंगरेलियां मनाने लगे. 7 याहवेह ने मोशेह से कहा, “जल्दी
नीचे जाओ, क्योंकि लोगों ने, जिन्हें तुम मिस्र देश से निकालकर लाए, अपने
आपको अपवित्र कर दिया है. 8 वे इतनी जल्दी उन सब विधियों को भूल
गये, जिन्हें मैंने बताई थी. उन्होंने अपने लिए एक बछड़ा बनाया और उसकी
उपासना करने लगे. उन्होंने इसके लिए बलि चढ़ाई और कहा, ‘इस्राएल,
तुम्हारे देवता यही है जो तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाए हैं!’” 9 याहवेह ने
मोशेह से कहा, “मैंने इन लोगों को देख लिया कि उन्होंने क्या किया है;
ये हठीले लोग हैं. 10 तुम अब मुझे मत रोकना मेरा गुस्सा उनके लिए बहुत
बढ़ गया है और उन्हें नष्ट कर डालूंगा. लेकिन मैं तुम्हारे द्वारा एक बड़ी जाति
बनाऊंगा.” 11 तब मोशेह, याहवेह अपने परमेश्वर से बिनती करने लगे, “हे
याहवेह, आपकी क्रोधाग्नि उन पर क्यों भड़क रही है जिनको आपने अपनी
सामर्थ्य और बड़ी शक्ति से मिस्र से निकाला है? 12 मिस्रियों को यह कहने का
क्यों दें, कि याहवेह उन्हें मिस्र से इसलिये निकाल ले गये कि उन्हें पहाड़ पर
मार डालें, और उन्हें पृथ्वी के ऊपर से मिटा डालें? आप अपने गुस्से को शांत
करें और लोगों को नष्ट करने की सोच छोड़ दीजिए. 13 अपने दास अब्राहाम,
यित्सहाक तथा इस्राएल से अपने नाम से की गई शपथ को याद कीजिये. आपने
उनसे कहा था, ‘मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों जितना बढ़ा दूंगा, और सारा
देश तुम्हें दूंगा और वे इस देश के अनंत अधिकारी होंगे.’” 14 यह सुनकर
याहवेह ने पछताया और अपने लोगों पर वह विपत्ति न लाई, जिसकी उन्होने
धमकी दी थी. 15 और मोशेह मुड़कर पर्वत से नीचे उतर आए. वह अपने हाथों
में व्यवस्था की दो पट्टियां लिए हुए थे. इन पट्टियों में दोनों तरफ लिखा हुआ
था, आगे और पीछे. 16 ये पट्टियां परमेश्वर ने बनाई थी और उसमें जो खोदकर
लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था. 17 जब यहोशू ने लोगों के
चिल्लाने की आवाज सुनी; तब उन्होंने मोशेह से कहा, “छावनी से लड़ाई की
आवाज सुनाई दे रही है.” 18 किंतु मोशेह ने कहा, “यह न तो जीत की खुशी
की आवाज हैं, और न हार के दुःख की, लेकिन मुझे तो गाने की आवाज सुनाई
दे रही है.” 19 और जैसे ही मोशेह पड़ाव के पास पहुंचे, उन्होंने बछड़े के
सामने लोगों को नाचते हुए देखा. गुस्से में मोशेह ने याहवेह की दी हुई पट्टियां
नीचे फेंक दीं और पटियां चूर-चूर हो गई. 20 मोशेह ने वह बछड़ा जिसे लोगों
ने बनाया था, उसे आग में जला दिया और उसकी राख लेकर पानी में मिला
दिया, तथा वह पानी इस्राएलियों को पीने के लिए मजबूर किया. 21 मोशेह ने
अहरोन से कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उनसे इतना
बड़ा पाप करवाया?” 22 अहरोन ने जवाब दिया, “मेरे प्रभु आप नाराज मत
होइए, आप इन लोगों को अच्छी तरह जानते हो कि ये पाप करने के लिये
कितने इच्छुक रहते हैं! 23 उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिए एक ऐसे देवता
बनाइए, जो हमारी अगुवाई कर सके; क्योंकि मोशेह, जो हमें मिस्र से निकाल
लाए, उनका कुछ पता नहीं.’ 24 तब मैंने उनसे कहा, ‘जिस किसी के पास
सोना है, वह उसे यहां ले आए.’ वे सोना मेरे पास ले आए, मैंने सोने को आग में
डाला और आग से यह बछड़ा बाहर निकल आया.” 25 मोशेह ने देखा कि
लोग जंगलीपन पर उतर आये हैं और अहरोन ने उन्हें इतनी छूट दे दी कि वह
अपने बैरियों के हास्य पात्र बन गये. 26 तब मोशेह ने छावनी के द्वार पर खड़े
होकर कहा, “जो कोई याहवेह की ओर का है, वह मेरे पास आए!” सभी लेवी
वंश के लोग मोशेह के पास आ गए. 27 मोशेह ने उनसे कहा, “इस्राएल का
परमेश्वर, याहवेह यों कहते हैं, ‘तुममें से हर एक पुरुष अपनी-अपनी तलवार
उठाए, छावनी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाए, और जाते-जाते तुममें से हर
एक व्यक्ति अपने भाई को, मित्र तथा पड़ोसी को मारता हुए जाए.’” 28 तब
लेवियों ने वही किया, जैसा मोशेह ने कहा. उस दिन लगभग तीन हजार लोग
मारे गए. 29 फिर मोशेह ने कहा, “आज तुम्हें याहवेह के लिए अलग किया
गया है, क्योंकि हर एक ने अपने पुत्र तथा अपने भाई का विरोध किया और
इसलिये याहवेह ने तुमको आशीष दी है.” 30 अगले दिन मोशेह ने लोगों से
कहा कि तुम सबने बहुत बड़ा पाप किया है. और मैं अब याहवेह के सम्मुख
प्रायश्चित करने जा रहा हूं. 31 यह कहकर मोशेह याहवेह के पास गए और
कहा, “लोगों ने बहुत बड़ा पाप किया है. उन्होंने अपने लिए सोने का देवता
बनाया. 32 लेकिन आप चाहें तो उनका पाप क्षमा कर दीजिए—यदि नहीं,
तो कृपा कर मेरा नाम अपनी उस किताब से हटा दीजिए, जो आपने लिखी
है!” 33 याहवेह ने मोशेह से कहा, “अपनी किताब से मैं उसी व्यक्ति का
नाम मिटाऊंगा जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है. 34 किंतु अब तुम जाओ. इन
लोगों को उस जगह पर ले जाओ जो मैंने तुमसे कहा था; मेरा स्वर्गदूत तुम्हारे
आगे-आगे चलेगा. लेकिन जब उनको दंड देने का समय आएगा, मैं उनके
पाप का दंड उन्हें ज़रूर दूंगा.” 35 याहवेह ने लोगों के बीच एक महामारी
भेजी, क्योंकि उन लोगों ने अहरोन से कहकर बछड़ा बनवाया था और उसकी
उपासना की थी.

33 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “इन लोगों को, जिन्हें मैं मिस्र देश
से छुड़ाकर लाया हूं—उन्हें उस देश में ले जाओ, जिसका वायदा मैंने
अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से किया था. 2 मैं तुम्हारे आगे स्वर्गदूत
भेजूंगा. मैं उन कनानियों, अमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, हिव्वियों तथा
यबूसियों को वहां से निकाल दूंगा. 3 और तुम्हें ऐसे देश में ले जाऊंगा, जिसमें
दूध और मधु की धारा बहती है. और मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा, क्योंकि तुम
लोग पापी हो और कहीं गुस्से में होकर मैं तुमको नाश न कर दूं.” 4 याहवेह
की इन क्लेशकारी बातों को सुनकर लोग दुःखी हुए और रोने लगे, और किसी
ने भी गहने नहीं पहने; 5 क्योंकि मोशेह से याहवेह ने कहा था, “इस्राएलियों
से कह दो कि तुम हठीले हो. और यदि मैं तुम्हारे साथ एक क्षण भी चलूं, तो हो
सकता है कि तुम्हें मैं नाश कर दूं, इसलिये अब तुम सब अपने गहने उतार दो
और मुझे सोचने दो कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूं.” 6 इस्राएलियों ने जो गहने
पहने थे उन्हें होरेब पर्वत में उतार दिये. 7 मोशेह ने छावनी से दूर एक तंबू खड़ा
किया और उसका नाम मिलनवाले तंबू, रखा. जिस किसी को भी याहवेह
से मिलने की इच्छा होती, वे छावनी के बाहर मिलनवाले तंबू के पास चले
जाते. 8 और जब मोशेह मिलनवाले तंबू में जाने के लिए उनके सामने से होकर
निकलते, तब सब लोग खड़े हो जाते और मोशेह को तब तक देखते रहते, जब
तक मोशेह मिलनवाले तंबू के अंदर न चले जाते. 9 जैसे ही मोशेह मिलनवाले
तंबू में चले जाते, बादल का खंभा मिलनवाले तंबू के द्वार पर रुक जाता था और
याहवेह मोशेह से बातें करते थे. 10 तब सब लोग मिलनवाले तंबू पर बादल का
खंभा देखकर सब अपने-अपने तंबू से दंडवत करते थे. 11 याहवेह मोशेह से इस
प्रकार बात करते, जैसे अपने मित्र से बात कर रहे हों. फिर मोशेह वापस छावनी
में आ जाते थे; परंतु नून के पुत्र यहोशू, जो मोशेह के सेवक था, वह मिलनवाले
तंबू को नहीं छोड़ता था. 12 मोशेह ने याहवेह से कहा, “आपने मुझे यह
जवाबदारी दी कि इन लोगों को उस देश में ले जाऊं! लेकिन आपने मुझे यह
नहीं बताया कि आप किसे मेरे साथ वहां भेजेंगे. और आपने यह आश्वासन भी
दिया है कि तुम्हें तो मैं तुम्हारे नाम से जानता हूं और मेरा अनुग्रह तुम्हारे साथ है.
13 अब, मुझ पर आपका अनुग्रह हैं तो, मुझे आपकी गति समझा दीजिए, ताकि
मैं आपको समझ सकूं तथा आपका अनुग्रह जो मुझ पर हैं, वह हमेशा रहे और
यह भी याद रखे कि यह जाति भी आपके लोग है.” 14 याहवेह ने कहा,

“तुम्हारे साथ मेरी उपस्थिति बनी रहेगी तथा मैं तुम्हें शांति और सुरक्षा दूंगा.”
15 यह सुन मोशेह ने कहा, “यदि आप हमारे साथ नहीं होंगे, तो हमें यहां से
आगे नहीं जाने दें. 16 अब यदि आपकी उपस्थिति हमारे साथ नहीं रहेगी, तो
सब लोग यह कैसे जानेंगे कि आपका अनुग्रह मुझ पर और इन लोगों के साथ
है? और कौन सी ऐसी बात है जो हमें दूसरे लोगों के सामने अलग दिखाएगी?”
17 याहवेह ने मोशेह से कहा, “मैं तुम्हारी इस बात को भी मानूंगा, जो तुमने
मुझसे कही; क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो और मेरा अनुग्रह तुम्हारे साथ हैं और
तुम्हारा नाम मेरे हृदय में बसा है.” 18 यह सुन मोशेह ने कहा, “मुझे अपना
प्रताप दिखायें!” 19 याहवेह ने कहा, “मैं तुम्हारे सामने से चलते हुए अपनी
भलाई तुम्हें दिखांऊगा और मेरे नाम की घोषणा करूंगा और मैं जिस किसी पर
चाहूं, कृपादृष्टि करूंगा, और जिस किसी पर चाहूं; करुणा.” 20 फिर याहवेह ने
कहा, “तुम मेरा मुख नहीं देख सकते, क्योंकि कोई भी मनुष्य मुझे देखने के
बाद जीवित नहीं रह सकता!” 21 फिर याहवेह ने कहा, “जहां मैं हूं, इस स्थान
के पासवाली चट्टान पर खड़ा होना. 22 जब मेरा प्रताप वहां से होकर आगे
बढ़ेगा, मैं तुम्हें चट्टान की दरार में छिपा दूंगा और वहां से निकलने तक तुम्हें
अपने हाथ से ढांपे रखूंगा. 23 फिर मैं अपना हाथ हटा लूंगा. तुम उस समय मेरी
पीठ को देख पाओगे—मेरा मुख तुम्हें दिखाई नहीं देगा.”

34 याहवेह ने मोशेह से कहा, “पहले के ही समान दो पट्टियां मेरे पास
लाओ; मैं दुबारा उन दोनों पर वही वचन लिखूंगा जो प्रथम पट्टियों पर
लिखे थे और जिन्हें तुमने तोड़ दिए थे. 2 सबेरे तुम तैयार रहना और सीनायी
पर्वत पर चढ़ आना, वहां मेरे समक्ष तुम प्रस्तुत होना. 3 कोई भी व्यक्ति तुम्हारे
साथ न आए और न किसी भी व्यक्ति को पर्वत पर लाना—यहां तक कि भेड़-
बकरी तथा अन्य पशुओं को भी पर्वत के सामने चरने न दिया जाए.” 4 इसलिये
मोशेह ने पत्थर की दो पट्टियां तराशी और उन्हें लेकर सबेरे सीनायी पर्वत पर
गए, जैसा याहवेह ने कहा था; वह उन पट्टियों को अपने हाथ में लिये थे. 5 तब
याहवेह बादल में मोशेह के पास खड़े हो गए तथा अपने नाम “याहवेह” की
घोषणा की. 6 याहवेह मोशेह के पास से होकर निकले और कहा, “याहवेह,
जो याहवेह परमेश्वर वह, दयालु, कृपालु, क्रोध करने में धीरजवंत तथा अति
करुणामय एवं सत्य से परिपूर्ण हैं, 7 हजारों पीढ़ियों तक करुणा करनेवाले, जो
अधर्म, अपराध और पाप का क्षमा करनेवाले हैं; परंतु दोषी को किसी भी स्थिति
में बिना दंड दिए नहीं छोड़ते. पूर्वजों के अधर्म का दंड उनके बेटों, पोतों और
परपोतों तक को देते हैं.” 8 मोशेह ने भूमि पर झुककर आराधना की. 9 उन्होंने
कहा, “हे प्रभु, यदि आपकी दया मुझ पर है, तो आप हमारे साथ चलिये, यद्यपि
ये लोग पापी और हठीले हैं, तो भी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कीजिये तथा
हमें अपना मानकर स्वीकार कीजिये.” 10 फिर याहवेह ने कहा, “सुनो, मैं एक
वाचा बांधता हूं कि मैं सब लोगों के सामने अनोखे काम करूंगा, जो इससे पहले
पृथ्वी पर और न किसी जाति के बीच में कभी हुए हैं. वे सब लोग जो तुम्हारे
बीच रहते हैं, इन कामों को देखेंगे, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ एक भयानक काम
करूंगा. 11 आज जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं, तुम उसे मानना. तुम्हारे बीच से
अमोरियों, कनानियों, हित्तियों, परिज्ज़ियों, हिव्वियों तथा यबूसियों को मैं
निष्कासित कर दूंगा. 12 इसलिये ध्यान रखना; जिस देश में तुम रहने जा रहे
हो, तुम उस देश के लोगों से वाचा नहीं बांधो, कहीं ऐसा न हो कि यही तुम्हारे
लिए फंदा बन जाए. 13 लेकिन तुम उनकी वेदी गिरा देना, उनके पूजा के खंभों
को तोड़ देना तथा उनकी अशेरा नामक मूर्ति को काट डालना. 14 तुम किसी
भी देवता को दंडवत नहीं करना, क्योंकि याहवेह, जिसका नाम जलनशील है,
वह वास्तव में जलनशील परमेश्वर हैं! 15 “ऐसा न हो कि तुम उस देश के लोगों
से वाचा बांधो और वे देवताओं के संग व्यभिचार पूजा करके तुम्हें न्योता दें, और
देवताओं को बलि चढ़ाई हुई वस्तु को खाने के लिए कहें. 16 तुम उनकी
बेटियों को अपने बेटों की पत्नियां न बनाना, क्योंकि उनकी बेटियां देवताओं
के संग व्यभिचार करनेवाली होंगी और तुम्हारे बेटों को भी उस राह पर ले
जाएंगी. 17 “तुम कभी कोई देवताओं की मूर्ति न बनाना. 18 “तुम खमीर रहित
रोटी का उत्सव मनाया करना. तुम सात दिन बिना खमीर रोटी खाना, इसे
अबीब महीने में मनाना, क्योंकि तुम अबीब महीने में ही मिस्र देश से निकले थे.
19 “किसी भी स्त्री का पहलौठा मेरा है. पहलौठा जानवर भी; तुम्हारी गाय,
बकरियों या भेड़ों से जो पहलौठा उत्पन्न होता है, वे सब मेरे है. 20 गधे के
पहलौठे के बदले मेमने का पहलौठा दे सकते हो. यदि तुम यह न करो, तो तुम्हें
उसकी गर्दन तोड़नी होगी. तुम्हें अपने पहले बेटों को बदला देकर छुड़ाना होगा.
“मेरे पास कोई भी खाली हाथ न आये. 21 “तुम छः दिन तो काम करना, परंतु
सातवें दिन कोई काम न करना, न खेत जोतने के समय न फसल कटने के
समय. 22 “गेहूं की पहली उपज की कटनी के समय सप्ताहों के उत्सव को
मनाना और साल के अंत में जमा करने का पर्व भी मनाना. 23 तुममें से हर एक
पुरुष साल में इन तीन अवसरों पर इस्राएल के परमेश्वर प्रभु याहवेह के सम्मुख
उपस्थित हों. 24 क्योंकि मैं वहां से सारी जनता को निकालूंगा और तुम्हारे
राज्य की सीमाओं को बढ़ाऊंगा, और जब तुम साल में तीन बार याहवेह अपने
परमेश्वर के पास आओगे, तब कोई भी तुम्हारी ज़मीन का लालच न करेगा. 25
“तुम मेरी बलि के रक्त को किसी भी खमीर के साथ न चढ़ाना और फ़सह के
पर्व की बलि में से सुबह तक के लिए कुछ न बचाना. 26 “तुम अपने खेत की
उपज का पहला भाग याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के घर में ले आना. “तुम बकरी
के बच्चे को उसकी मां के दूध में नहीं पकाना.” 27 फिर याहवेह ने मोशेह से
कहा, “मेरी इस बात को लिख लो, क्योंकि इसी बात के अनुसार मैंने तुमसे
तथा इस्राएलियों से वायदा किया है.” 28 मोशेह याहवेह के साथ चालीस दिन
तथा चालीस रात रहे. उन्होंने न तो रोटी खाई और न पानी पिया. उन्होंने उन
पट्टियों पर परमेश्वर की वाचा अथवा दस आज्ञाएं लिखीं. 29 सीनायी पर्वत से
उतरते समय, मोशेह के हाथ में साक्षी की दोनों पट्टियां थीं, तथा याहवेह के
साथ रहने के कारण उनके चेहरे से किरणें निकल रही थीं, पर वे यह बात नहीं
जानते थे. 30 जब अहरोन तथा सभी इस्राएलियों ने उनकी ओर देखा, तब
उन्होंने उनके चेहरे पर किरणें देखीं और वे उनके पास जाने के लिए डर रहे थे.
31 किंतु मोशेह ने उन्हें अपने पास बुलाया; अहरोन एवं सभी प्रधान मोशेह के
पास गए. 32 सभी इस्राएलियों को भी पास बुलाकर मोशेह ने उन्हें सीनायी पर्वत
पर याहवेह द्वारा कही बातों को मानने के लिए कहा. 33 जब मोशेह अपनी बात
पूरी कह चुके, तब उन्होंने अपने मुंह को ढंक लिया. 34 मोशेह जब कभी भी
याहवेह के पास जाते तब मुंह बिना ढंके जाते, लेकिन जब बाहर लोगों के पास
आते और जो आज्ञा याहवेह ने दी हैं उन्हें वैसा ही इस्राएलियों से कह देते,
35 तब इस्राएली मोशेह का चेहरा देखते थे कि कैसे मोशेह के चेहरे से किरणें
निकलती थीं. फिर जब तक मोशेह याहवेह के पास अंदर न जाते, तब तक
अपना चेहरा ढंक कर रखते थे.

35 मोशेह ने सभी इस्राएलियों से कहा, “जो काम याहवेह ने करने के लिए
कहा वह यह है: 2 छः दिन तुम काम करना, लेकिन सातवां दिन पवित्र
और याहवेह के लिए परम विश्राम का दिन मानना. जो कोई इस दिन काम करते
हुए पाया जाए, उसे मार डाला जाए. 3 किसी भी घर में विश्राम के दिन आग
तक न जलाएं.” 4 मोशेह ने सभी इस्राएलियों को कहा, “याहवेह कहते हैं 5
कि तुम सब मिलकर याहवेह के लिए भेंट लाओ. जो कोई अपनी इच्छा से देना
चाहे वे; “सोना, चांदी, कांसे; 6 नीले, बैंगनी तथा लाल सूक्ष्म मलमल; बकरे
के रोम; 7 मेढ़े की रंगी हुई लाल खाल; सूंस की खाल बबूल की लकड़ी; 8
दीपक के लिए तेल; अभिषेक का तेल एवं सुगंधधूप के लिए सुगंध द्रव्य; 9
सुलेमानी गोमेद नाग तथा अन्य नग एफ़ोद तथा सीनाबंद में जड़ने के लिए दें.

10 "तुममें से जो कुशल कारीगर हैं, वे आये और याहवेह ने जिन चीज़ों को बनाने की आज्ञा दी है, उन चीज़ों को बनाएं: 11 "तंबू, ओहार समेत निवास उसकी घुंडी, उसके लिए आवश्यक तख्ते, बड़े, छड़, खंभे तथा कुर्सियां; 12 संदूक, डंडों समेत करुणासन, बीच वाला पर्दा; 13 मेज़ और उसके सभी सामान और डंडे, भेंट की रोटी; 14 प्रकाश के लिए दीया, उससे संबंधित पात्र, दीप एवं उनके लिए आवश्यक तेल; 15 धूप वेदी डंडों समेत, अभिषेक का तेल तथा सुगंधधूप; आंगन के प्रवेश द्वार के लिए पर्दा; 16 होमबलि की वेदी और उसकी कांसे की झंझरी, उसके डंडे तथा उसके सामान; कांसे की हौदी, 17 आंगन के लिए पर्दा, खंभे और कुर्सियां, और आंगन के द्वार का पर्दा; 18 निवास और आंगन दोनों की खूंटियां तथा रस्सियां; 19 पवित्र स्थान में सेवा के अवसर पर बुने हुए वस्त्र, अहरोन तथा उनके पुत्रों के लिए पवित्र वस्त्र, जो पुरोहित के पद पर कार्य करते समय पहना जायेगा." 20 इसके बाद इस्राएल के सारे लोग मोशेह के पास से चले गये. 21 जिसका मन आनंद से भर गया वे अपनी इच्छा से मिलनवाले तंबू के बनाने के कार्य के लिये और सेवकाई में और पवित्र वस्त्र बनाने के लिए याहवेह के लिए भेंट लाने लगे. 22 तब वे सभी स्त्री-पुरुष, अपनी इच्छा से अपने-अपने गहने, नथुनी, अंगूठी, कंगन और सोने के गहने लाए और हर एक पुरुष ने याहवेह को सोना भेंट किया. 23 हर व्यक्ति, जिसके पास नीले बैंगनी तथा लाल वस्त्र, बकरे के रोम, लाल रंग में रंगी गई मेढ़े की खाल तथा सूंस की खाल थी, सब ले आए. 24 और जो चांदी तथा कांसे भेंट करना चाहते थे उन्होंने याहवेह के लिए वह दी, जिनके पास बबूल की लकड़ी थी, जो सेवकाई में काम आ सके उन्होंने वही दिया. 25 प्रत्येक निपुण स्त्रियां अपने हाथों से कात कर जो उनके पास था उसे ले आईं—नीले, बैंगनी तथा लाल सूत और सन, 26 और जो स्त्रियां इच्छुक थीं और कातने में निपुण थीं, उन्होंने बकरे के रोम के सूत काते. 27 प्रधान जन सुलेमानी गोमेद और दूसरे वे सारे रत्न जो एफ़ोद और सीनाबंद के लिये थे, वे ले आये. 28 लोग सुगंध द्रव्य और जैतून का तेल दीपकों के लिए, अभिषेक के तेल के लिए तथा सुगंधित धूप बनाने के लिए ले आए. 29 सभी इस्राएली स्त्री-पुरुष जिनकी इच्छा थी, याहवेह के लिये मोशेह को दी गई आज्ञा के अनुसार सारे कार्य करने के लिये याहवेह के लिए भेंट लाए. 30 तब मोशेह ने इस्राएलियों से कहा, "सुनो, याहवेह ने यहूदाह गोत्र से हूर के पौत्र उरी के पुत्र बसलेल को चुना है, 31 और परमेश्वर ने उन्हें अपने आत्मा से प्रवीणता, समझ, बुद्धि और सब कामों की समझ देकर भर दिया है. 32 ताकि वह सोना, चांदी एवं कांसे पर कलात्मक रचना कर सकें, 33 और जड़ने के उद्देश्य से पत्थर काटने में कुशल तथा लकड़ी के खोदने में बुद्धि से कलाकारी का काम कर सकें. 34 याहवेह ने बसलेल तथा दान के गोत्र के अहीसामक के पुत्र ओहोलियाब को दूसरों को सिखाने की शक्ति दी. 35 याहवेह ने उन्हें कौशल से भर दिया है कि वह एक कारीगर के किए जानेवाले सारे कामों को कर सके; खोदने, गढ़ने, नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के मलमल पर कशीदाकारी करने और बुनने वाले वस्त्र को नए-नए तरीके से बनाएं.

36 बसलेल, ओहोलियाब और उन सारे लोगों को जिन्हें याहवेह ने कौशल, समझ, बुद्धि और ज्ञान दिया है कि वह पवित्र स्थान को बनाने के कार्य को कैसे करना है. वे उन कामों को उसी प्रकार से करेंगे जैसे याहवेह ने आज्ञा दी है." 2 तब मोशेह ने बसलेल, ओहोलियाब और उन सारे लोगों को जिन्हें याहवेह ने कौशल दिया, और जो अपनी इच्छा से सेवकाई करना चाहते थे, बुलवाया. 3 इन्होंने मोशेह से इस्राएलियों द्वारा पवित्र स्थान को बनाने के लिये जो भी भेंट लाई गई थी, उन चीज़ों को लिया, और लोग सुबह दर सुबह स्वेच्छा से वस्तुएं लाते गये. 4 पवित्र स्थान को बनाने में जितने भी योग्य कारीगर थे वह अपने कार्य को छोड़ मोशेह के पास आये. 5 उन्होंने मोशेह से कहा, "पवित्र स्थान, जैसे याहवेह ने कहा है, वैसे बनाने में जितने सामान की ज़रूरत थी, लोग उससे कहीं ज्यादा हमारे पास ला रहे हैं." 6 तब मोशेह ने आज्ञा दी और इस बात की पूरी छावनी में घोषणा हुई कि कोई भी स्त्री या पुरुष अब पवित्र स्थान के लिये भेंट स्वरूप कुछ न लाये. इस प्रकार लोगों को कुछ और न लाने के लिये पाबंद किया गया. 7 क्योंकि अब उनके पास ज़रूरत से ज्यादा सामान हो गया था. 8 फिर पवित्र स्थान बनाया गया जिसमें दस पर्दे बनाये गये थे, जो बंटी हुई मलमल और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से बने थे, और इन पर्दों पर कुशल कारीगरों द्वारा करूबों का चित्र बुना हुआ था. 9 हर पर्दे की लंबाई बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी. हर पर्दा एक ही नाप का था. 10 उन्होंने पांच पर्दों को एक साथ जोड़कर पांच पांच के दो पर्दे बनाए. 11 पहले पांच पर्दों की किनारी पर तथा इसी तरह दूसरे पांच पर्दों की किनारी पर नीले रंग का फंदा बनाया. 12 एक पर्दे में पचास फंदे और दूसरे में भी पचास फंदे. वे फंदे एक दूसरे के सामने बनाया. 13 फिर सोने की पचास अंकुड़े बनाईं और दोनों पर्दों को एक दूसरे से जोड़ दिया; इस प्रकार पवित्र स्थान बन गया. 14 फिर बकरे के रोमों से ग्यारह पर्दे बनाए जो पवित्र स्थान के ऊपर का हिस्सा था. 15 हर एक पर्दे की लंबाई साढ़े तेरह मीटर तथा चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी. सभी ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे. 16 उन्होंने ऐसे पांच पर्दों को एक साथ तथा बाकी छः पर्दों को एक साथ जोड़कर बड़ा कर दिया. 17 और दोनों अलग-अलग पर्दों की एक-एक किनारी पर पचास-पचास फंदे लगाए. 18 और दोनों पर्दों को जोड़ने के लिए कांसे के पचास अंकुड़े बनाए और उन कड़ों पर पर्दा लगाकर पूरा एक हिस्सा बना दिया. 19 तंबू के लिए लाल रंग से रंगी हुई भेडों की खाल का एक ओढ़ना बनाया, और फिर उसके ऊपर लगाने के लिए सूस के चमड़े का एक और ओढ़ना बनाया. 20 फिर पवित्र स्थान को खड़ा करने के लिए बबूल की लकड़ी के तख्ते बनाए. 21 हर तख्ते की लंबाई साढ़े चार मीटर तथा चौड़ाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर थी. 22 तख्ते को जोड़ने के लिए दो समानांतर चूलें थीं. पवित्र स्थान के सब तख्ते इसी तरह बनवाये. 23 उन्होंने पवित्र स्थान के दक्षिण दिशा के लिए बीस तख्ते बनाए. 24 उनके नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाईं, जो तख्तों के नीचे रखी गई थीं. हर तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिए दो कुर्सियां बनवाईं. 25 और इसी प्रकार उत्तर की ओर भी बीस तख्ते बनाये, 26 और चांदी की चालीस कुर्सियां हर एक तख्ते के नीचे दो कुर्सियां बनाईं. 27 पवित्र स्थान के पीछे पश्चिम की ओर छः तख्ते बनाए. 28 और पीछे के भाग के कोनों के लिए दो तख्ते बनाए. 29 कोने के दोनों तख्ते एक साथ जोड़ दिए. तले में दोनों तख्तों की खूंटियां चांदी के एक ही आधार में लगाई और दोनों भाग ऊपर से जुड़ा हुआ और नीचे का भाग अलग था. 30 इस प्रकार आठ तख्ते बनवाये, जिसके नीचे चांदी की सोलह कुर्सियां थीं, हर तख्ते के नीचे दो कुर्सियां थीं. 31 फिर बबूल की लकड़ी की छड़ें बनाए, पवित्र स्थान की एक तरफ के तख्तों के लिए पांच छड़ें बनवाए 32 तथा पवित्र स्थान की दूसरी तरफ के तख्तों के लिए पांच कड़े तथा पवित्र स्थान के पश्चिमी दिशा के तख्ते के लिए पांच कड़े बनाए. 33 तख्ते के एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए तख्ते के बीच में कड़े बनाए. 34 तख्तों के ऊपर सोना लगवाया और कड़े में भी सोना लगवाया. लकड़ी की डंडीयों को भी सोना लगवाया. 35 फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से और बंटी हुई मलमल से एक बीच वाला पर्दा बनाए, जिस पर कढ़ाई के काम द्वारा करूबों के रूप बनाए. 36 उसने बबूल की लकड़ी के चार खंभे बनाए और उसके ऊपर सोना लगाया. इन खंभों पर पर्दों के लिए सोने की कड़ियां और चांदी की चार कुर्सियां बनाए. 37 तंबू के द्वार के लिए नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों का, तथा बंटी हुई बारीक़ सनी वाले कपड़ों की कढ़ाई का काम किया हुआ एक पर्दा बनवाया. 38 और पांच खंभे बनाए. खंभे के ऊपर

और नीचे के हिस्से में सोना लगाया, उनकी पट्टियां सोने से बनाई गई तथा
उनकी पांचों कुर्सियां कांसे की बनाई.

37 फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी से संदूक बनाया. इसकी लंबाई एक
सौ दस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई और ऊंचाई सत्तर-सत्तर सेंटीमीटर थी. 2
संदूक के अंदर और बाहर सोना लगाया और चारों तरफ सोने की किनारी
लगाई. 3 इसके चारों पायों पर लगाने के लिए सोने के चार कड़े बनाए—दो
कड़े एक तरफ और, दो कड़े दूसरी तरफ थे. 4 उसने बबूल की लकड़ी के डंडे
बनाए और उस पर सोना लगाया तथा इन्हें संदूक के दोनों तरफ लगे कड़ों में
डाल दिया ताकि संदूक को उठाना आसान हो. 6 फिर सोने से करुणासन बनाया
जो एक सौ दस सेंटीमीटर लंबा तथा सत्तर सेंटीमीटर चौड़ा था. 7 उन्होंने
सोने के पत्रों से दो करूबों को करुणासन के दोनों तरफ बनाया. 8 एक करूब
एक तरफ तथा दूसरा करूब दूसरी तरफ बनाया और करूब को करुणासन के
साथ एक ही टुकड़े से बनाया. 9 करूबों के पंख ऊपर से ऐसे खुले थे जिससे
करुणासन उनसे ढंका रहा और वे एक दूसरे के आमने-सामने करुणासन की ओर
थे, तथा उनका मुंह करुणासन की ओर झुका हुआ था. 10 बसलेल ने बबूल की
लकड़ी की एक मेज़ बनाई, जो नब्बे सेंटीमीटर लंबी, पैंतालीस सेंटीमीटर चौड़ी
थी तथा साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर ऊंची थी. 11 उसमें सोना लगाकर उसके चारों
ओर इसकी किनारियां सोने की बनाई. 12 उन्होंने इसके चारों ओर साढ़े सात
सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी बनाई—इस पट्टी के चारों ओर सोने की किनारियां लगाई
गईं. 13 मेज़ के लिए सोने के चार कड़े बनाये और इन कड़ों को मेज़ के चारों
पैरों के ऊपर के कोनों पर इन सोने के कड़ों को लगा दिया. 14 कड़े पट्टी के
पास लगाये ताकि मेज़ उठाने के लिये डंडे इन कड़ों में डाले जा सकें. 15 डंडे
बबूल की लकड़ी के बनाए गए थे तथा ऊपर सोना लगा दिया गया. 16 इस
मेज़ पर रखे जानेवाले समान अर्थात्, थालियां, तवे, कटोरियां तथा पेयार्पण
डालने के लिए बर्तन, ये सब सोने के बनाए. 17 फिर उन्होंने शुद्ध सोने का एक
दीपस्तंभ बनाया. उसे पीटकर आधार तथा उसके डंडे को बनाया, और उसने
फूलों के समान दिखनेवाले प्याले बनाए. प्यालों के साथ कलियां और खिले
हुए पुष्प थे. ये सभी चीज़ें एक ही इकाई में परस्पर जुड़ी हुई थीं. 18 दीये से
छः डालियां निकलीं, तीन एक तरफ और तीन दूसरी तरफ रखीं. 19 हर डाली
में कलियों और फूलों के साथ बादाम के फूलों के आकार के तीन पुष्पकोष
और एक गांठ थे. पूरे छः डालियों को, जो दीये से निकलीं, इसी आकार से
बनाई. 20 दीये की डंडी में चार फूल बने थे, जिसमें बादाम के फूल के समान
कलियां तथा पंखुड़ियां बनी थीं. 21 दीये से निकली हुई छः डालियों में से दो-
दो डालियों के नीचे एक-एक गांठ और दीये समेत एक ही टुकड़े से बने थे. 22
ये सभी कलियां, शाखाएं और दीप का स्तंभ शुद्ध सोने को पीटकर बने थे. 23
उन्होंने वे सातों दीये, इनके बुझाने के साधन तथा रखने के बर्तन सोने से बनाए.
24 दीये और उसके साथ सभी सामान को लगभग पैंतीस किलो सोने से बनाया
गया. 25 फिर बबूल की लकड़ी से धूप वेदी बनाई; यह चौकोर थी, जिसकी
लंबाई पैंतालीस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई भी पैंतालीस सेंटीमीटर थी, व ऊंचाई
नब्बे सेंटीमीटर, तथा इसकी सींग एक ही टुकड़े से बनाई गई थी. 26 पूरी धूप
वेदी का ऊपरी हिस्सा इसके चारों परत तथा इसके सींग और चारों ओर की
किनारी सोने की बनाई. 27 इसकी किनारियों के नीचे सोने के दो-दो कड़े
लगाए. इसको इन डंडे के द्वारा उठाने के लिए ही दोनों तरफ आमने-सामने कड़े
लगवाया. 28 इन डंडों को बबूल की लकड़ी से बनाकर उसमें सोने की परत
चढ़ाई. 29 बसलेल ने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगंध द्रव्य भी बनाया, जिस
प्रकार से कोई निपुण इत्र बनानेवाला बनाता है.

38 और बसलेल ने बबूल की लकड़ी से होमबलि के लिए चौकोर वेदी
बनाई. यह दो मीटर पच्चीस सेंटीमीटर लंबी तथा इतनी ही चौड़ी थी.
इसकी ऊंचाई एक मीटर सैंतीस सेंटीमीटर थी. 2 और इसके चारों कोनों पर
एक-एक सींग बनाया, जो वेदी के साथ एक ही टुकड़े में कांसे से बनाये गये. 3
डोल, बेलचे, छिड़काव कटोरे, कांटे तथा तवे जैसी वेदी में काम आनेवाली
सभी चीज़ों को कांसे से बनाया. 4 वेदी के लिए कांसे की जाली की एक झंझरी
बनाई, जो वेदी की आधी ऊंचाई पर लगाई गई थी. 5 कांसे की झंझरी के चारों
कोनों पर चार कड़े लगाए, ताकि इनके बीच से डंडों को लगा सकें. 6 डंडे
बबूल की लकड़ी से बनाकर उस पर कांसे लगवा दी. 7 उसने उन डंडों को उन
कड़ों में डाल दिया ताकि वेदी को उठाया जा सके. वेदी भीतर से खोखली थी
और तख्ते जोड़कर बनाई गई थी. 8 इसकी हौदी और पाये दोनों कांसे के
बनाए. इसे उन स्त्रियों के दर्पणों से बनाया, जो मिलनवाले तंबू के द्वार पर सेवा
करती थीं. 9 फिर पवित्र स्थान के आंगन को बनाया. आंगन के दक्षिण हिस्से में
बंटी हुई बारिक सनी के कपड़े का पर्दा था, जिसकी लंबाई पैंतालीस मीटर थी,
10 तथा बीस खंभे और कांसे की बीस कुर्सियां बनवाई. खंभों के कुण्डे और
पट्टियां चांदी की थी. 11 आंगन के उत्तरी दिशा के लिए भी पैंतालीस मीटर लंबे
पर्दे बनाए गए और इसके लिए कांसे के बीस खंभे और बीस कुर्सियां बनाई गईं.
मीनारों की कड़ियां तथा उसकी पट्टियां चांदी की थीं. 12 पश्चिम दिशा के पर्दे
साढ़े बाईस मीटर लंबे थे, तथा इसके लिए दस खंभे एवं दस कुर्सियां बनाई गई
थी. मीनारों की कड़ियां तथा पट्टियां चांदी की थी. 13 पूर्वी दिशा के पर्दे भी
साढ़े बाईस मीटर लंबे थे. 14 द्वार के एक तरफ के पर्दे छः मीटर पचहत्तर
सेंटीमीटर के थे, और तीन खंभे और तीन कुर्सियां बनाई गयीं. 15 आंगन के
प्रवेश द्वार की दूसरी ओर के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के थे, तथा और
तीन खंभे और तीन कुर्सियां बनाई गयीं. 16 आंगन के चारों ओर के पर्दे सूक्ष्म
बंटी हुई सन के थे. 17 मीनारों की कुर्सियां कांसे की बनाई गई थी, मीनारों
की कड़ियां तथा उनकी पट्टियां चांदी की थीं. उनका ऊपरी हिस्सा चांदी
का था तथा आंगन के सभी मीनारों पर चांदी की पट्टियां लगाई गई थीं. 18
आंगन के प्रवेश द्वार के पर्दे सन के उत्तम रेशों के नीले, बैंगनी तथा लाल कपड़े
के बने थे. इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी. इसकी लंबाई नौ मीटर तथा ऊंचाई
सवा दो मीटर थी, जो आंगन के दूसरे पर्दे के बराबर थी. 19 इनके चारों खंभे
तथा उनकी चारों कुर्सियां कांसे की थीं. इनकी कड़ियां तथा ऊपरी हिस्सा
तथा उनकी पट्टियां चांदी की थीं. 20 पवित्र स्थान और उसके चारों ओर के
आंगन की सभी खूंटियां कांसे की थीं. 21 मोशेह के आदेश के अनुसार बनाए
गए पवित्र स्थान और वाचा के पवित्र स्थान के निर्माण में जो जो सामग्रियां
उपयोग में आई थीं, उन सभी की गिनती, जो पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार
के नेतृत्व में लेवियों द्वारा की गई, वह इस प्रकार है: 22 जिन वस्तुओं को बनाने
की आज्ञा याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई थी, वह यहूदाह गोत्र के बसलेल ने
बना दी—बसलेल उरी के पुत्र, हूर के पोते थे. 23 उनके साथ दान गोत्र के
अहीसामक के पुत्र ओहोलियाब थे, जो नक्काशी और शिल्पकार तथा कढ़ाई
करने तथा सूक्ष्म बंटी हुई सन और नीले, बैंगनी तथा लाल वस्त्रों के बनाने में
निपुण थे. 24 पवित्र स्थान को बनाने में जितना सोना भेंट चढ़ा था, वह सोना
पवित्र स्थान की तौल के अनुसार कुल एक हजार दो किलो था. 25 इस्राएलियों
ने पवित्र स्थान के लिए जो चांदी भेंट दी थी, वह पवित्र स्थान की तौल के
अनुसार लगभग तीन हजार पांच सौ बीस किलो थी. 26 जो इस्राएली बीस वर्ष
की उम्र से ज्यादा के थे, वे संख्या में कुल छः लाख तीन हजार पांच सौ पचास
व्यक्ति थे, उन्होंने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार आधा शेकेल, अर्थात् छः
ग्राम भेंट दी. 27 पवित्र स्थान तथा बीच के पर्दों के लिए लगभग साढ़े तीन
हजार किलो चांदी उपयोग की गई थी—एक सौ कुर्सियां साढ़े तीन हजार किलो

चांदी से बनीं—एक कुर्सी के लिए लगभग पैंतीस किलो चांदी लगी. 28 जो
बीस किलो चांदी बच गई, उससे मीनारों के लिए कड़ियां बनाई और ऊपरी
हिस्से की पट्टियां भी बना दीं. 29 भेंट में चढ़ाया गया कांस्य लगभग दो हजार
सवा चार सौ किलो था. 30 उससे मिलनवाले तंबू के द्वार के लिए कुर्सियां,
कांसे की वेदी तथा इसकी जाली तथा वेदी का सारा सामान, 31 आंगन के चारों
ओर की कुर्सियां तथा उसके द्वार की कुर्सियां तथा निवास और आंगन के चारों
ओर की खूंटियां भी बनाई गईं.

39 नीले, बैंगनी और लाल रंग के सूत से पवित्र स्थान में सेवा के अवसर
पर पहनने के लिए वस्त्र बनाए, और अहरोन के लिए पवित्र वस्त्र, जैसा
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, वैसा ही बनाया. 2 उन्होंने एफ़ोद को सुनहरे
और नीले बैंगनी तथा लाल रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बंटे हुए सन के कपड़े
का बनाया. 3 उन्होंने सोने को पीटकर उसकी पत्तियां बनाई तथा इन्हें काटकर
इनके धागे बनाए ताकि इन्हें नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के सूत के उत्तम रेशों में
बुना जा सके, जो एक कुशल कारीगर का काम था. 4 उन्होंने एफ़ोद के जोड़ने
के लिए कंधों की पट्टियां बनाईं और कंधे की इन पट्टियों को एफ़ोद के कंधे पर
टांका 5 कमरबंध एफ़ोद के साथ बुना हुआ बनाया, और एक ही प्रकार की
सामग्री से बनाया, अर्थात् सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों और
बंटी हुई मलमल से बनाया, जैसा ही याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 6
उन्होंने सुलेमानी गोमेद को सोने की महीन जालियों में जड़ा और उनमें इस्राएली
पुत्रों के नाम मुहर जैसे खोदकर सोने के खानों में लगा दिये. 7 इन दोनों मणियों
को इस्राएल के पुत्रों के यादगार मणियों के रूप में एफ़ोद के कंधों में लगाया,
जैसा मोशेह को याहवेह ने आज्ञा दी थी. 8 उन्होंने एक कुशल शिल्पकार द्वारा
न्याय की पेटी बनवाई, उसे बेलबूटेदार एफ़ोद के समान बनवाया. उसे सुनहरे,
नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े तथा बंटी हुई मलमल से बनवाया. 9
इसे मोड़कर दो भाग बनाए, और इसका आकार चौकोर था, यह साढ़े बाईस
सेंटीमीटर लंबा तथा साढ़े बाईस सेंटीमीटर चौड़ा था. 10 इस पर उन्होंने मणियों
की चार पंक्तियां बनाई. पहली पंक्ति में एक माणिक्य, एक पुखराज और एक
मरकत थे. 11 दूसरी पंक्ति में एक लाल मणि, एक नीलम और एक हीरा लगाए.
12 तीसरी पंक्ति में एक तृणमणि, एक यशब और एक याकूत. 13 चौथी पंक्ति में
एक स्वर्णमणि, एक सुलेमानी और एक सूर्यकांत मणि; इन्हें नक्काशी किए हुए
सोने के खांचों में लगा दिये. 14 ये इस्राएल के बारह पुत्रों के अनुसार बारह
मणियां थी. हर मणि पर बारह गोत्रों में से एक नाम लिखे गये, जिस तरह एक
कारीगर मुहर पर खोदता है. एक मणि पर इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक का
नाम था. 15 वक्षपेटिका के लिए बंटी हुई डोरियों के रूप में सोने की गुंथी हुई
जंजीर बनवाया. 16 वक्षपेटिका के लिए सोने के दो कड़े भी बनवाये, और इन
दोनों कड़ों को वक्षपेटिका के दोनों सिरों पर लगवाये. 17 इसके बाद सोने की
इन दोनों डोरियों को वक्षपेटिका के सिरों में लगे हुए दोनों कड़ों में लगवाये.
18 उन्होंने दोनों डोरियों के दूसरे सिरों को नक्काशी किए हुए दोनों खांचों में
जुड़वाये. उन्हें एफ़ोद के कंधों में सामने की ओर लगवाये. 19 उन्होंने फिर सोने
के दो और कड़े बनाकर इन्हें वक्षपेटिका के सिरों पर अंदर की ओर एफ़ोद से
सटाकर लगवाये. 20 फिर उन्होंने दो कड़े बनाए और उन्हें एफ़ोद के कंधों की
तरफ़ की छोर के सामने की तरफ़ से मिला दिया, जो एफ़ोद की बुनी हुई पट्टी के
पास से थी. 21 उन्होंने वक्ष पटल को उसके कड़ों के द्वारा एफ़ोद के कड़ों से
एक नीले रंग की रस्सी द्वारा बांध दिया, जिससे यह अब एफ़ोद के बुने हुए भाग
पर जुड़ गया, जिससे वक्ष पटल एवं एफ़ोद एक दूसरे से जुड़े रहते थे. यह सब
याहवेह द्वारा मोशेह से कहे गये वचन के अनुसार किया गया. 22 फिर उन्होंने
एफ़ोद का पूरा अंगरखा नीले कपड़े का बनवाया. 23 इस वस्त्र के बीच में एक
छेद था. छेद के चारों ओर एक कोर बनाया ताकि वह फट न पाए. 24 इस वस्त्र
की किनारी पर नीली, बैंगनी तथा लाल, सूक्ष्म बंटी हुई सन के रेशों से अनार
बनाए. 25 उन्होंने सोने की घंटियां भी बनाईं और इन्हें वस्त्र की किनारी के
चारों ओर अनारों के बीच में लगा दिया. 26 वस्त्र में एक अनार, फिर एक घंटी,
और एक अनार फिर एक घंटी लगाई गई कि वह वस्त्र पहनकर सेवा का काम
करें. यह वैसा ही किया जैसा याहवेह ने मोशेह से कहा था. 27 अहरोन एवं
उनके पुत्रों के लिए उन्होंने मलमल के कुर्ते, 28 पगड़ियां एवं टोपियां और
जांघिया बनाई. 29 उन्होंने नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के मलमल से पगड़ी
बनाई, जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 30 शुद्ध सोने की एक पट पर
मुहर के समान ये अक्षर खोदे गए: याहवेह के लिए पवित्र. 31 उन्होंने उसमें
एक नीला फीता लगाया कि वह पगड़ी के ऊपर रहे—जैसा याहवेह ने मोशेह
को आज्ञा दी थी. 32 इस प्रकार मिलनवाले तंबू और पवित्र स्थान का काम पूरा
हुआ. इस्राएलियों ने सब कुछ वैसा ही किया, जैसे जैसे याहवेह ने मोशेह को
आज्ञा दी थी. 33 फिर वे पवित्र स्थान की सब वस्तुएं मोशेह के पास लाए:
अर्थात् तंबू, इसकी अंकुड़ियों, तख्ते, छड़ें, खंभे तथा कुर्सियां; 34 मेढ़े की
खालों का ओढ़ना जो लाल रंग से रंगी गई थी, सूंस की खाल का ओढ़ना तथा
पर्दा; 35 संदूक, डंडों समेत करुणासन, बीच वाला पर्दा; 36 मेज़ और उसके
सभी सामान, भेंट की रोटी, 37 सारे सामान सहित, दीवट उसकी सजावट के
दीपक, और दीये के लिए तेल, 38 सोने की वेदी और अभिषेक का तेल,
सुगंधधूप और तंबू के द्वार का पर्दा; 39 कांसे की वेदी और उसकी कांसे की
झंझरी, उसके डंडे तथा उसके सामान; कांसे की हौदी; 40 आंगन के द्वार का
पर्दा, उसके खंभे और कुर्सियां सहित आंगन का पर्दा; उसकी डोरियां, उसकी
खूंटियां; तथा मिलनवाले तंबू के पवित्र स्थान का सारा सामान; 41 पवित्र स्थान
में सेवा के अवसर पर पहनने के बुने हुए वस्त्र, अहरोन तथा उनके पुत्रों के लिए
पवित्र वस्त्र, जो पुरोहित के पद पर कार्य करते समय पहनकर जाना था. 42 इस
प्रकार इस्राएलियों ने वह सब काम पूरा किया, जिसकी याहवेह ने मोशेह को
आज्ञा दी थी. 43 मोशेह ने उन सब कामों को जांचा जो उन्होंने किया था, और
सब काम जैसी याहवेह की आज्ञा थी, उसी के अनुसार ही किया गया था. फिर
मोशेह ने सबको आशीष दी.

40 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा: 2 "पहले महीने के पहले दिन मिलनवाले
तंबू के पवित्र स्थान को खड़ा कर देना. 3 उसमें साक्षी पत्र के संदूक को
रखकर बीचवाले पर्दे के पीछे रख देना. 4 मेज़ का सारा सामान लेकर उसे अंदर
ले आना, फिर दीप स्तंभों को ले आना और दीयों को जला देना. 5 साक्षी पत्र
के संदूक के सामने सोने की वेदी को, जो धूप के लिए है, उसे रखना और पवित्र
स्थान के पर्दे को लगा देना. 6 "और पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार पर, अर्थात्
मिलनवाले तंबू के सामने, होमबलि की वेदी को रखना. 7 मिलनवाले तंबू और
वेदी के बीच हौद में पानी भरकर रखना. 8 तुम इसके चारों तरफ आंगन बनाना
और आंगन के द्वार पर पर्दा लगाना. 9 "फिर अभिषेक का तेल लेकर पवित्र
स्थान और जो कुछ उसमें हैं, सबका अभिषेक करना और पवित्र करना. 10 तुम
होमबलि की वेदी और उसके सब सामान को अभिषेक करना, तब वेदी महा
पवित्र हो जायेगी. 11 और पाए समेत हौदी का भी अभिषेक करके पवित्र करना.
12 "फिर अहरोन एवं उनके पुत्रों को मिलनवाले तंबू के द्वार पर नहलाना. 13
और अहरोन को पवित्र वस्त्र पहनाना, और उनका अभिषेक करके उनको पवित्र
करना, ताकि वह मेरे लिए पुरोहित होकर मेरी सेवा करे. 14 फिर उनके पुत्रों को
उनके वस्त्र पहनाना. 15 और उनका भी अभिषेक उसी प्रकार करना, जिस प्रकार
उनके पिता का किया था, ताकि वे भी मेरी सेवा कर सकें. उनका यह अभिषेक
उनकी पीढ़ी से पीढ़ी तक पुरोहित होकर मेरी सेवा का चिन्ह रहेगा." 16 मोशेह
ने सब काम वैसे ही किया, जैसा याहवेह ने उनको आज्ञा दी थी. 17 दूसरे साल
के पहले महीने के पहले दिन में पवित्र स्थान को खड़ा किया गया. 18 मोशेह ने

जब पवित्र स्थान को खड़ा किया, तब कुर्सियों पर तख्ते रखकर उनमें कड़े
डाले और मीनारों को खड़ा किया. 19 मोशेह ने पवित्र स्थान के ऊपर तंबू
बिछाया और तंबू के ऊपर ओढ़नी लगाई जैसे याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी
थी. 20 मोशेह ने साक्षी पट्टियों को संदूक में रखा और संदूक में डंडों को
लगाकर उसके ऊपर करुणासन से ढंका. 21 मोशेह ने संदूक को पवित्र स्थान में
रखवाया और बीचवाले पर्दे को टांग दिया और साक्षी पत्र के संदूक को अंदर पर्दे
की आड़ में किया, जैसे याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 22 फिर मिलनवाले
तंबू में पवित्र स्थान के उत्तर दिशा पर बीच के पर्दे के बाहर मेज़ लगवाया. 23
मेज़ पर मोशेह ने रोटियों को याहवेह के सम्मुख जमाया, जैसा याहवेह ने मोशेह
को आज्ञा दी थी. 24 मोशेह ने मिलनवाले तंबू में मेज़ के सामने दक्षिण दिशा में
दीपस्तंभ को रख दिया. 25 और दीयों को याहवेह के सामने जला दिया, जैसा
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 26 फिर मोशेह ने मिलनवाले तंबू के भीतर,
बीच के पर्दे के सामने, सोने की वेदी को रखा. 27 और उस पर सुगंधित धूप
जलाया, जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 28 मोशेह ने फिर पवित्र स्थान
के द्वार पर पर्दा लगाया, 29 और मिलनवाले तंबू के पवित्र स्थान के द्वार पर
होमबलि की वेदी रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई, जैसी याहवेह
ने उन्हें आज्ञा दी थी. 30 मिलनवाले तंबू और वेदी के बीच हौदी रखी, और
उसमें पानी भर दिया. 31 इसमें से पानी लेकर मोशेह, अहरोन तथा उनके पुत्र
अपने हाथ एवं पांव धोते थे. 32 जब भी वे मिलनवाले तंबू तथा वेदी के पास
जाते थे, वे अपना हाथ-पांव धोकर ही जाते थे, जैसी याहवेह ने मोशेह को आज्ञा
दी थी. 33 पवित्र स्थान और वेदी के चारों ओर आंगन बनाया और आंगन
के द्वार पर पर्दा लगाया. इस प्रकार मोशेह ने काम पूरा किया. 34 तब बादल
मिलनवाले तंबू पर फैल गया और याहवेह का तेज पवित्र स्थान में भर गया. 35
मोशेह तंबू में न जा सके, क्योंकि मिलनवाले तंबू के ऊपर बादल था और
याहवेह का तेज पवित्र स्थान में भरा हुआ था. 36 इस्राएलियों की पूरी यात्रा में,
जब-जब बादल पवित्र स्थान के ऊपर से उठता, तब-तब वे वहां से निकलते. 37
अगर बादल पवित्र स्थान से नहीं हटता, तब तक इस्राएली लोग कुछ नहीं
करते; जब तक बादल उठ नहीं जाता. 38 इस्राएलियों की सारी यात्राओं में
याहवेह उनके लिए दिन में पवित्र स्थान के ऊपर बादल से उनको छाया देते,
और रात में बादल में आग से उन्हें रोशनी दिखाई देती थी.

लैव्यव्यवस्था

1 याहवेह ने मोशेह को आह्वान कर उन्हें मिलनवाले तंबू में से यह आदेश दिया, 2 "इस्राएल की प्रजा को यह आदेश दो: 'जब कभी तुममें से कोई व्यक्ति याहवेह के लिए बलि अर्पण करें, वह यह बलि किसी गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से लेकर आए. 3 "'यदि उसकी होमबलि ढोरों से है, तो वह एक निर्दोष नर पशु को बलि करे, वह इस निर्दोष नर पशु को मिलनवाले तंबू के प्रवेश द्वार पर बलि करे कि वह याहवेह द्वारा स्वीकृत हो. 4 वह व्यक्ति अपना हाथ इस पशु के सिर पर रखे कि यह उसके पक्ष में प्रायश्चित बलि के रूप में स्वीकार की जाए. 5 वह याहवेह के सामने इस बछड़े को बलि करे और अहरोन के पुत्र, जो पुरोहित हैं, इसके रक्त को उस वेदी के चारों ओर छिड़क दें, जो मिलनवाले तंबू के प्रवेश पर स्थित है. 6 फिर तुम इस पशु की खाल उतारकर इसे टुकड़ों में काट देना. 7 अहरोन के पुत्र, जो पुरोहित हैं, वेदी पर अग्नि रखें और इस अग्नि पर लकड़ियों को सजाकर रखें. 8 अहरोन के पुत्र, जो पुरोहित हैं; टुकड़ों, सिर और चर्बी को जलती हुई लकड़ियों पर, जो वेदी पर हैं, सजाकर रखें. 9 किंतु तुम उस पशु की आंतों और टांगों को जल से धोना और पुरोहित इन सभी को होमबलि के लिए वेदी पर दहन करे. यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध की होमबलि होगी. 10 "'किंतु यदि उसकी होमबलि भेड़-बकरियों में से है, तो वह एक निर्दोष नर पशु को अर्पण करे. 11 वह उसका वध याहवेह के सामने वेदी के उस ओर करे, जो उत्तरी दिशा की ओर है, और अहरोन के पुत्र, जो पुरोहित हैं, इसके रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दें. 12 फिर वह इसके सिर और इसकी चर्बी को टुकड़ों में काट दे, और पुरोहित इन्हें उन लकड़ियों पर जो अग्नि पर हैं, सजाकर रखें, 13 किंतु आंतों और पैरों को वह जल से धोए और पुरोहित इन सभी को होमबलि के लिए वेदी पर जलाए, यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध की होमबलि होगी. 14 "'किंतु यदि वह याहवेह के लिए पक्षियों की होमबलि चढ़ाता है, तो वह अपनी बलि के लिए कपोत अथवा कबूतर के बच्चे लेकर आए. 15 पुरोहित इसे वेदी पर लाए; उसका सिर मरोड़ कर उसका वध करे, तथा उसे वेदी पर जलाए. इसका रक्त वेदी की एक ओर बहाए जाए. 16 वह उसके गले की थैली और परों को वेदी के पूर्वी ओर, जो राख डालने का स्थान है, फेंक दे. 17 फिर वह उसके पंख पकड़कर फाड़े, किंतु उसे अलग न करे और पुरोहित इन सभी को होमबलि के लिए वेदी पर जलाए. यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध की होमबलि होगी.

2 "'जब याहवेह के लिए बलि के रूप में कोई अन्नबलि लेकर आए, तो यह भेंट महीन आटे की हो. वह इस पर तेल उण्डेले और लोबान रखे. 2 फिर वह इसे अहरोन के पुत्रों के पास, जो पुरोहित हैं, लाए. वह उसमें से एक मुट्ठी भर महीन आटा, तेल एवं लोबान ले. पुरोहित उसको स्मरण दिलाने वाले भाग के रूप में वेदी पर जलाए. यह अग्निबलि याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगी. 3 अन्नबलि का बचा हुआ भाग अहरोन व उनके पुत्रों के लिए निर्धारित है; यह याहवेह के लिए अग्निबलियों का परम पवित्र भाग है. 4 "'यदि तुम्हारी बलि भट्टी में पकी हुई अन्नबलि हो, तो यह सबसे अच्छे आटे से बनी हो. यह तेल में गूंधी हुई, खमीर रहित रोटी या तेल से चुपड़ी हुई खमीर रहित पपड़ी हो. 5 यदि तुम्हारी बलि तवे पर पकी हुई अन्नबलि है, तो यह तेल में गूंधे हुए खमीर रहित, महीन आटे की हो. 6 तुम इसे टुकड़े-टुकड़े कर इस पर तेल उण्डेलना. यह एक अन्नबलि है. 7 यदि तुम्हारी बलि कड़ाही में पकी हुई अन्नबलि है, तो यह तेल में गूंधे हुए महीन आटे की हो. 8 जब तुम याहवेह के सामने इन वस्तुओं से बनी अन्नबलि लेकर आओ, तो यह पुरोहित के पास लाया जाए और वह इसे वेदी पर लेकर आए. 9 फिर पुरोहित इस अन्नबलि से इसका स्मरण दिलाने वाला भाग लेकर वेदी पर अग्निबलि के रूप में जलाए. यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध की अग्निबलि होगी. 10 अन्नबलि का बचा हुआ भाग अहरोन व उनके पुत्रों के लिए निर्धारित है; यह याहवेह के लिए अग्निबलियों का परम पवित्र भाग है. 11 "'कोई भी अन्नबलि, जो तुम याहवेह के सामने लेकर आओ, वह खमीर के साथ न बनाई जाये, क्योंकि तुम याहवेह को न तो खमीर की और न ही मधु की अग्निबलि भेंट करना. 12 तुम इन्हें याहवेह के सामने पहली उपज की बलि के रूप में भेंट करना. किंतु ये वेदी पर याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए भेंट न की जाएं. 13 तुम अपनी सब अन्न बलियों में नमक चढ़ाना. तुम्हारी अन्नबलि से तुम्हारे परमेश्वर की वाचा का नमक अलग न रहे, अपनी सब बलियों के साथ तुम नमक भेंट करना. 14 "'यदि तुम याहवेह को पहले फल की बलि भेंट करो, तो अपनी पहले फल बलि में अग्निबलि के लिए अग्नि में भुने गए नए अन्न की बालें लेकर आना. 15 तुम इस पर तेल लगाना और लोबान रखना; यह एक अन्नबलि है. 16 पुरोहित इसके स्मरण के लिए निर्धारित अंश, छिलका निकाला गया अन्न, तेल और इसके सारे लोबान के साथ जलाकर अग्निबलि के रूप में याहवेह को भेंट कर दे.

3 "'यदि उसकी बलि एक मेल बलि है और यदि वह गाय-बैलों से एक पशु की बलि करता है, चाहे वह नर हो अथवा मादा, तो वह निर्दोष पशु को याहवेह के सामने भेंट करे. 2 वह अपना हाथ इस बलि के सिर पर रखे और मिलनवाले तंबू के द्वार पर इसका वध करे, फिर अहरोन के पुत्र, जो पुरोहित हैं, इसका रक्त वेदी के चारों ओर छिड़क दें. 3 मेल बलि के अर्पण द्वारा वह याहवेह को अग्निबलि स्वरूप यह अर्पित करे; अर्थात् वह चर्बी जो आंतों को ढांपती है और वह चर्बी, जो आंतों पर लिपटी हुई है, 4 दोनों गुर्दों के साथ उनकी चर्बी जो कमर पर होती है, तथा कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन्हें वह गुर्दों सहित अलग कर दे. 5 फिर अहरोन के पुत्र इसे वेदी पर अग्निबलि के ऊपर रखकर जलाएं जो आग पर रखी हुई है. यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध की अग्निबलि है. 6 "'किंतु यदि याहवेह के लिए मेल बलि के रूप में उसकी बलि भेड़-बकरियों में से है, तो वह इसमें से निर्दोष नर अथवा मादा को बलि करे. 7 यदि वह बलि के लिए एक मेमने को भेंट कर रहा है, तो वह इसे याहवेह को इस प्रकार भेंट करें: 8 वह इस बलि के सिर पर अपना हाथ रखे और मिलनवाले तंबू के सामने इसका वध करे, अहरोन के पुत्र इसके रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दें. 9 मेल बलि की बलि से वह याहवेह के लिए अग्निबलि के रूप में यह अर्पित करे: इसकी चर्बी व मोटी पूंछ को वह रीढ़ से अलग करेगा, वह चर्बी जो आंतों को ढांपती है, वह संपूर्ण चर्बी, जो आंतों पर है, 10 दोनों गुर्दे उस चर्बी के साथ जो कमर पर है तथा कलेजे के ऊपर की झिल्ली जिसे वह गुर्दों सहित अलग करेगा. 11 फिर पुरोहित इसे वेदी पर अग्नि में आहार स्वरूप जलाए. यह याहवेह के लिए अग्निबलि है. 12 "'यदि वह बलि में एक बकरी भेंट कर रहा है, तो वह इसे याहवेह के सामने भेंट करे, 13 वह अपना हाथ इसके सिर पर रखे और मिलनवाले तंबू के सामने इसका वध करे, अहरोन के पुत्र इसके रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दें. 14 इसमें से वह याहवेह के लिए अग्निबलि के रूप में ये प्रस्तुत करे: वह चर्बी जो आंतों को ढांपती है, वह पूरी चर्बी जो आंतों पर है, 15 दोनों गुर्दे उस चर्बी के साथ जो कमर पर है, तथा कलेजे के ऊपर की झिल्ली जिसे वह गुर्दों सहित अलग करेगा. 16 फिर पुरोहित इसे वेदी पर आहार स्वरूप, जलते हुए धुएं में भेंट करे; सुखद-सुगंध के लिए एक अग्निबलि. पूरी चर्बी याहवेह की है. 17 "'यह तुम्हारी पीढ़ियों तथा तुम्हारे निवासों में एक हमेशा की विधि है, तुम चर्बी को और रक्त को कभी न खाओगे.'"

4 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी: 2 "इस्राएल की प्रजा को यह आज्ञा दो,
'यदि कोई व्यक्ति अनजाने में उन कार्यों को करता है, जो याहवेह की
व्यवस्थाओं में मना हैं— 3 "'यदि कोई अभिषिक्त पुरोहित पाप करता है,
जिससे कि वह प्रजा पर भी दोष ले आता है, तब वह उस पाप के लिए, जो उसने
किया है, याहवेह के सामने एक निर्दोष बछड़े को पापबलि के रूप में भेंट करे!
4 उस बैल को वह याहवेह के सामने, मिलनवाले तंबू के द्वार पर, लेकर आए,
अपना हाथ उस बैल के सिर पर रखे और याहवेह के सामने उसका वध करे.
5 फिर वह अभिषिक्त पुरोहित उस बैल के रक्त में से कुछ रक्त लेकर उसे
मिलनवाले तंबू में लेकर आए, 6 पुरोहित अपनी उंगली उस रक्त में डुबोकर
उसमें से कुछ रक्त को सात बार याहवेह के सामने पवित्र स्थान के पर्दे के सामने
छिड़के. 7 पुरोहित कुछ रक्त को सुगंधधूप वेदी के सींगों पर भी डाले, जो
याहवेह के सामने मिलनवाले तंबू में है. पुरोहित बैल के पूरे रक्त को होमबलि की
वेदी के आधार पर उंडेल दे, जो मिलनवाले तंबू के द्वार पर है. 8 वह पापबलि
के लिए प्रयोग किए जानेवाले बैल की पूरी चर्बी उससे हटा दे; वह चर्बी, जो
आंतों को ढकती है, वह पूरी चर्बी, जो आंतों पर है, 9 दोनों गुर्दे उस चर्बी
के साथ, जो कमर पर है तथा कलेजे के ऊपर की झिल्ली, जिसे वह गुर्दों
सहित अलग करेगा. 10 ठीक वैसे ही जैसे वह मेल बलि के लिए प्रयोग किए
जानेवाले बैल से हटाई गई; पुरोहित होमबलि की वेदी पर इसे धुएं में भेंट करे,
11 किंतु बैल की खाल और इसका सारा मांस, सिर, टांगें, आंतें तथा इस प्रक्रिया
में उत्पन्न गंदगी, 12 तथा बैल के शेष अंश को छावनी के बाहर, एक साफ़
स्थान पर, जहां राख फेंक दी जाती है, लेकर आए. यहां वह लकड़ियों पर
इसको जलाए. 13 "'यदि इस्राएली प्रजा कोई विसंगत कार्य करे, जिसके विषय
में सभा अनजान है, और वे उन कार्यों के कारण दोषी ठहरें, जो याहवेह की
ओर से मना हैं; 14 जब सभा के सामने पाप प्रकट हो जाए, तब सभा पापबलि
के लिए ढोरों में से एक बैल को मिलनवाले तंबू के सामने लेकर आए. 15 सभा
के प्रधान याहवेह के सामने अपना हाथ बैल के सिर पर रखें और वह याहवेह के
सामने बैल का वध करे. 16 अभिषिक्त पुरोहित बैल के रक्त में से कुछ रक्त
मिलनवाले तंबू में लेकर आए. 17 पुरोहित अपनी उंगली बैल के रक्त में डुबाकर
उसमें से कुछ रक्त को सात बार याहवेह के सामने पवित्र स्थान के पर्दे के सामने
छिड़के. 18 पुरोहित कुछ रक्त को उस वेदी की सींगों पर भी डाले, जो याहवेह
के सामने मिलनवाले तंबू में है, पुरोहित बैल के सारे रक्त को होमबलि की वेदी
के आधार पर उंडेल दे, जो मिलनवाले तंबू के द्वार पर है. 19 वह उस बैल से
उसकी सारी चर्बी को हटाकर उस चर्बी को वेदी पर जलाए. 20 वह इस बैल
के साथ भी ठीक वैसा ही करे, जैसा उसने पापबलि के बैल के साथ किया था.
पुरोहित प्रजा के लिए प्रायश्चित करे; और उन्हें क्षमा की जाएगी. 21 फिर वह
इस बैल को छावनी के बाहर लेकर आए और इसको उसी प्रकार जलाए, जैसे
उसने पहले बैल को जलाया था; यह सभा के लिए पापबलि है. 22 "'जब कोई
प्रधान पुरुष अनजाने में पाप करता है, यानी वे कार्य करता है, जो याहवेह अपने
परमेश्वर की ओर से मना हैं, और जब उसे पाप-बोध होता है, 23 और जो पाप
उसने किया है, वह प्रकट हो जाता है, तो वह अपनी बलि के लिए एक निर्दोष
रोमयुक्त बकरा लेकर आए, 24 वह अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रखे और
उस स्थान पर उसको बलि कर दे, जहां वे याहवेह के सामने होमबलि के पशु
को बलि करते हैं; यह एक पापबलि है. 25 फिर पुरोहित अपनी उंगली से उस
पापबलि से कुछ रक्त लेकर होमबलि की वेदी की सींगों पर लगाए और इसके
बचे हुए रक्त को वह होमबलि की वेदी के आधार पर उंडेल दे. 26 वह इसकी
सारी चर्बी को ठीक वैसे ही वेदी पर जला दे, जैसे उसने मेल बलि को की थी.
इस प्रकार पुरोहित उस प्रधान द्वारा किए गए पाप के लिए प्रायश्चित करे; और
उसे क्षमा प्रदान कर दी जाएगी. 27 "'जब कोई जनसाधारण व्यक्ति अनजाने में
उन कार्यों को करने के द्वारा पाप करता है, जो याहवेह ने न करने की आज्ञा दी
है, और इसके द्वारा वह दोषी हो जाता है, 28 तथा उसका वह पाप, जो उससे हो
गया है उस पर प्रकट कर दिया जाता है, तो वह अपने उस पाप की बलि के
लिए, जो उसने किया है, एक निर्दोष बकरी लेकर आए. 29 वह अपना हाथ
उस पापबलि के सिर पर रखे तथा होमबलि के स्थान पर इस पापबलि का
बलिदान करे दे. 30 फिर पुरोहित अपनी उंगली से इसके कुछ रक्त को लेकर
होमबलि वेदी की सींगों पर लगाए और इसके बचे हुए रक्त को होमबलि की
वेदी के आधार पर उंडेल दे. 31 फिर वह इसकी सारी चर्बी को हटा दे, ठीक
जैसे मेल बलि पर से चर्बी हटाई गई थी, पुरोहित याहवेह को सुखद-सुगंध के
लिए इसे वेदी पर अग्नि में भेंट कर दे. इस प्रकार पुरोहित उसके लिए प्रायश्चित
करेंगे, और उसे पाप क्षमा दी जाएगी. 32 "'किंतु यदि वह बलि स्वरूप एक
मेमना पापबलि के लिए लेकर आता है, तो यह एक निर्दोष मादा हो. 33 वह
अपना हाथ उस पशु के सिर पर रखे तथा पापबलि के लिए इसकी बलि उस
स्थान पर कर दे, जहां होमबलि पशु को बलि किया जाता है. 34 पुरोहित इस
पापबलि के कुछ रक्त में से अपनी उंगली से होमबलि की वेदी के सींगों पर
लगाए और इसके बचे हुए रक्त को वह वेदी के आधार पर उंडेल दे. 35 फिर
वह इसकी सारी चर्बी को हटा दे, ठीक जैसे मेल बलि के मेमने से चर्बी हटाई
गई थी, पुरोहित इसे याहवेह को होमबलि के लिए वेदी पर अग्नि में भेंट कर दे.
इस प्रकार पुरोहित उसके इस पाप के लिए उसका प्रायश्चित करेगा और उसे
क्षमा दे दी जाएगी.

5 "'यदि कोई व्यक्ति किसी पाप का गवाह है, जिसे उसने होते हुए देखा है,
अथवा उसे इसका अहसास है और सार्वजनिक रूप से शपथ दिए जाने के
बाद भी वह इसके विषय में मौन रहता है, तो वह उस अपराध का भार स्वयं
उठाएगा. 2 "'यदि कोई व्यक्ति किसी अशुद्ध वस्तु का स्पर्श करे, चाहे वह
किसी अशुद्ध जंगली पशु का शव हो, अथवा किसी अन्य पालतू पशु का शव
अथवा किसी ऐसे अशुद्ध जीव का शव हो जो रेंगता हो, और यदि वह इससे
अनजान है कि वह अशुद्ध हो चुका है, किंतु इसके बाद उसे इसका अहसास हो
जाता है, तो वह दोषी हो जाएगा. 3 यदि वह किसी मानव मलिनता का स्पर्श
करे, चाहे वह किसी भी प्रकार की मलिनता हो और वह इससे अशुद्ध हो जाता है
और वह इससे अनजान है, किंतु इसके बाद उसे इसका अहसास हो जाता है, तो
वह दोषी हो जाएगा. 4 अथवा यदि कोई व्यक्ति बिना सोचे विचारे, भले अथवा
बुरे की शपथ लेता है, चाहे कोई भी विषय हो, कोई व्यक्ति बिना सोचे विचारे,
शपथ लेता है तथा यह उसे मालूम नहीं है, और इसके बाद यह उस पर प्रकट हो
जाता है, तो इसमें से किसी एक विषय में वह दोषी हो जाएगा. 5 जब इसमें
से किसी भी विषय के दोष का उसे अहसास होता है, और वह उस पाप को
स्वीकार करे, जो उसने किया है, 6 तो जो पाप उसने किया है, उसके लिए वह
याहवेह के सामने अपनी दोष बलि लेकर आए. वह भेड़-बकरियों से एक मादा
मेमना, अथवा एक बकरी पापबलि के लिए लेकर आए कि पुरोहित उसके द्वारा
उसके पाप के लिए प्रायश्चित करे. 7 "'किंतु यदि उसके लिए एक मेमना भेंट
करना संभव नहीं है, तो जो पाप उसने किया है, उसके लिए वह याहवेह के
सामने अपनी दोष बलि के लिए दो कपोत अथवा दो कबूतर के बच्चे लेकर
आए; एक पापबलि के लिए और दूसरा होमबलि के लिए. 8 वह इसे पुरोहित
के पास लाए, वह सर्वप्रथम उसे भेंट करे, जो पापबलि के लिए निर्धारित है. वह
इसका सिर इसके गर्दन के पास से मरोड़ दे, किंतु पूरी तरह अलग न करे. 9 वह
पापबलि का कुछ रक्त वेदी के दूसरे सिरे पर छिड़क दे, जबकि बचा हुआ रक्त
वेदी के आधार पर बहा दिया जाए. यह एक पापबलि है. 10 फिर वह विधि के
अनुसार होमबलि के रूप में दूसरे पक्षी को तैयार करे, कि पुरोहित उसके द्वारा
उसके पाप के लिए, जो उस व्यक्ति ने किया है, प्रायश्चित करे, और उसका यह

पाप क्षमा कर दिया जाएगा. 11 "'किंतु यदि उसके लिए दो कपोत अथवा दो
कबूतर के बच्चे भी भेंट करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं, तो जो पाप उसने
किया है, उसकी बलि के लिए वह डेढ़ किलो महीन आटा पापबलि के लिए
लेकर आए. किंतु इस पर तेल न लगाए और न ही इस पर लोबान रखे, क्योंकि
यह एक पापबलि है. 12 वह इसे पुरोहित के पास लेकर आए और पुरोहित इसमें
से मुट्ठी भर महीन आटे को इसके स्मरण दिलाने वाले भाग के रूप में लेकर
याहवेह की अन्य अग्निबलियों के साथ वेदी पर जलाए. यह एक पापबलि है.
13 इस प्रकार पुरोहित इनमें से किसी भी पाप के लिए, जो उस व्यक्ति ने किया
है, प्रायश्चित करे, और उसका यह पाप क्षमा कर दिया जाएगा. इसका शेष
भाग अन्नबलि के समान पुरोहित का होगा.'" 14 फिर याहवेह ने मोशेह को
यह आदेश दिया: 15 "यदि कोई व्यक्ति विश्वासघात करे तथा अनजाने में
याहवेह की पवित्र वस्तुओं के संदर्भ में पाप करे, तो वह अपने द्वारा किए गए
विश्वासघात के लिए याहवेह के सामने दोष बलि के रूप में भेड़-बकरियों में से
एक निर्दोष मेढ़े भेंट करे, जिसका मूल्य पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार
चांदी का एक शेकेल हो; यह दोष बलि है. 16 उसने जिस पवित्र वस्तु के संदर्भ
में पाप किया है, उसके लिए वह नुकसान की भरपाई करे. वह इसमें इसके
पांचवें भाग को जोड़कर पुरोहित को सौंप दे. पुरोहित दोष बलि के मेढ़े के साथ
उसके लिए प्रायश्चित करे, और उसका यह पाप क्षमा कर दिया जाएगा. 17
"यदि कोई व्यक्ति पाप करता है, और कोई भी वह कार्य करता है, जो याहवेह
की ओर से मना किया गया है, यद्यपि वह इससे अनजान है, तो भी वह दोषी है
और अपने दंड का भार उठाएगा. 18 फिर वह दोष बलि के लिए भेड़-बकरियों
में से उपयुक्त मूल्य का एक निर्दोष मेंढ़ा ले आए कि पुरोहित उस व्यक्ति द्वारा
किए गए उस विश्वासघात के लिए, जो उसने अनजाने में किया है, प्रायश्चित
करे, और उसका यह विश्वासघात क्षमा कर दिया जाएगा. 19 यह एक दोष
बलि है; निःसंदेह वह याहवेह की दृष्टि में दोषी था."

6 याहवेह ने मोशेह को कहा, 2 "जब कोई व्यक्ति पाप करे, याहवेह के विरुद्ध
विश्वासघात करे, तथा अपने पड़ोसी द्वारा सौंपी गई धरोहर अथवा सुरक्षा
के संदर्भ में उससे छल करे, अथवा उसे लूटे, अथवा अपने पड़ोसी को सताए,
3 अथवा उसे कोई खोई हुई वस्तु प्राप्त हुई हो और वह इसके विषय में झूठ बोल
कर झूठी शपथ खाए, यानी इनमें से किसी भी कार्य को करने के द्वारा पाप करे;
4 इसका प्रावधान यह होगा: जब वह पाप करे और उसे इसका अहसास हो
जाए, तब वह लूटी गई सामग्री, अथवा वह जो उत्पीड़न से प्राप्त किया गया है,
अथवा जो धरोहर उसे सौंपी गई थी, अथवा जो खोई हुई वस्तु उसे प्राप्त हुई
थी, 5 अथवा किसी ऐसी वस्तु के संदर्भ में जिसके लिए उसने झूठी शपथ
खाई थी; उसे इसकी पूरी भरपाई करनी होगी, और उसे इसका पांचवां भाग
अतिरिक्त देना होगा. जिस दिन वह अपनी दोष बलि भेंट करे, उस दिन वह उस
व्यक्ति को ये सब वस्तुएं लौटा दे जिसकी ये वस्तुएं थीं. 6 तब वह उपयुक्त
मूल्य का निर्दोष मेढ़ा दोष बलि के रूप में याहवेह के लिए भेड़-बकरियों में से
पुरोहित के पास लेकर आए, यह दोष बलि है, 7 और पुरोहित याहवेह के सामने
उसके लिए प्रायश्चित सम्पन्न करे. इस प्रकार उसे इनमें से किसी भी दोष के
लिए क्षमा प्रदान कर दी जाएगी." 8 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया, 9
"अहरोन और उनके पुत्रों को यह आदेश दो, 'होमबलि के लिए विधि यह है:
होमबलि पूरी रात से लेकर सुबह तक वेदी वेदी के चूल्हे पर ही रहे, और वेदी
पर अग्नि जलती रहे. 10 पुरोहित अपने सफ़ेद मलमल के वस्त्र और अपनी देह
पर मलमल की जांघिया पहने; वह वेदी की राख, जो अग्नि द्वारा जलाई गई है,
उठाए और उसे वेदी की एक ओर रख दे. 11 इसके बाद वह अपने ये वस्त्र उतार
दूसरे वस्त्र पहने और राख को छावनी के बाहर एक स्वच्छ स्थान पर ले जाए.
12 वेदी पर अग्नि जलती रहे. यह बुझने न पाए, किंतु पुरोहित हर सुबह इस पर
लकड़ियां रख दे; इन पर होमबलि को रखे, और इस पर मेल बलि के चर्बी
वाले भाग को अग्नि में जलाया करे. 13 वेदी पर अग्नि लगातार जलती रहे. यह
बुझने न पाए. 14 "'अन्नबलि के लिए विधि यह है: अहरोन के पुत्र इसे याहवेह
के लिए वेदी के सामने प्रस्तुत करें. 15 उनमें से एक पुरोहित इस अन्नबलि में से
एक मुट्ठी भर आटा, तेल तथा इस पर रखे सारे लोबान को ले, और इसे वेदी की
अग्नि में जलाए. यह याहवेह को स्मरण बलि के लिए भेंट की गई सुखद-सुगंध
है. 16 इसमें से जो भाग बच जाए, अहरोन और उसके पुत्र उसका इस्तेमाल
करें. इसका इस्तेमाल पवित्र स्थान में बिना खमीर की रोटी के रूप में किया
जाए; उन्हें इसका इस्तेमाल मिलनवाले तंबू के आंगन में ही करना है. 17 इसे
खमीर के साथ पकाया न जाए; मैंने इसे उनके भाग के रूप में अपनी होमबलि में
से प्रदान किया है, यह पापबलि तथा दोष बलि के समान परम पवित्र है. 18
अहरोन के पुत्रों में से हर एक इसका इस्तेमाल करे; याहवेह को भेंट की गई
होमबलियों में से तुम्हारी पीढ़ियों के लिए यह हमेशा की विधि है. जो कोई इन
बलियों को छुएगा, वह अपने आप पवित्र हो जाएगा.'" 19 याहवेह ने मोशेह
को यह भी आदेश दिया, 20 "जब कभी अहरोन की पौरोहितिक परंपरा के
अंतर्गत किसी पुरोहित का अभिषेक किया जाए, तो अहरोन और उनके पुत्र
याहवेह को यह बलि भेंट करें; उस बलि में नियमित अन्नबलि के रूप में सबसे
उत्तम डेढ़ किलो आटा भेंट किया जाए; आधा सुबह और आधा शाम को. 21
इसे तवे पर तेल के साथ पकाया जाए. जब यह पूरी तरह पक जाए, तब तुम उसे
लाकर टुकड़ों में याहवेह को सुखद-सुगंध के रूप में अन्नबलि चढ़ाना. 22
उसके पुत्रों में से जो उसके स्थान पर पुरोहित अभिषिक्त किया जाएगा, वह उस
भेंट चढ़ाए. यह याहवेह के लिए अग्नि में जलाई हुई हमेशा की विधि के रूप में
भेंट पूरी अन्नबलि भेंट हो. 23 पुरोहित की हर एक अन्नबलि; यह पूरी तरह से
जलाई जाए. इसको खाया न जाए." 24 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया,
25 "अहरोन और उसके पुत्रों को यह आदेश दो, 'पापबलि के लिए विधि यह
है: जिस स्थान पर होमबलि के लिए निर्धारित पशु का वध किया जाता है, उसी
स्थान पर याहवेह के सामने पापबलि के लिए निर्धारित पशु का वध किया जाए;
यह परम पवित्र है. 26 इसको वही पुरोहित खाए, जो इसे पाप के लिए भेंट
करता है. ज़रूरी है कि इसको सिर्फ़ पवित्र स्थान में ही खाया जाए; मिलाप वाले
तंबू के आंगन में ही. 27 जो कोई इसके मांस को छू लेगा, वह पवित्र हो जाएगा;
यदि उसके रक्त के छींटे किसी वस्त्र पर आ पड़ें, तो ज़रूरी है कि इसे किसी
पवित्र स्थान में ही धो दिया जाए. 28 मिट्टी के जिस बर्तन में इसे पकाया गया
था, उसे तोड़ दिया जाए; यदि इसे पीतल के बर्तन में पकाया गया हो, तो उस
पात्र को रगड़-रगड़ कर पानी से धो दिया जाए. 29 अहरोन के पुत्रों में से हर
एक पुरुष इसको खा सकता है; यह परम पवित्र है. 30 किंतु, किसी पापबलि को
न खाया जाए, जिसका रक्त पवित्र स्थान के मिलनवाले तंबू में प्रायश्चित के लिए
लाया गया है, उसको, इस अग्नि में जला दिया जाए.

7 "'दोष बलि जो कि परम पवित्र है, उसके लिए तय की गयी विधि यह है:
2 जिस स्थान पर वे होमबलि के लिए निर्धारित पशु का वध करते हैं, उसी
स्थान पर दोष बलि के लिए निर्धारित पशु का भी वध किया जाए और वह
उसके रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दे. 3 फिर वह इसकी सारी चर्बी
अर्थात् मोटी पूंछ तथा वह चर्बी, जो आंतों को ढकती है, 4 दोनों गुर्दे चर्बी के
साथ, जो कमर पर है, तथा कलेजे की ऊपर की झिल्ली, गुर्दों सहित अलग
कर भेंट करें. 5 पुरोहित याहवेह को इसे होमबलि के रूप में वेदी पर अग्नि में
जला दे; यह दोष बलि है. 6 पुरोहितों में से हर एक पुरुष इसको खा सकता
है. इसको पवित्र स्थान में ही खाया जाए; यह परम पवित्र है. 7 "'दोष बलि
पापबलि के ही समान है, उनके लिए एक ही विधि है; इसको वही पुरोहित
खाए, जो इसके द्वारा प्रायश्चित पूरा करता है. 8 वह पुरोहित, जो किसी व्यक्ति

के लिए होमबलि भेंट करता है, होमबलि के उस पशु की खाल, जो उसने भेंट
की है, स्वयं के लिए रख ले. 9 उसी प्रकार हर एक अन्नबलि, जो तंदूर या
कड़ाही में, अथवा तवे पर पकाया गया है, वे सभी कुछ उसी पुरोहित की होगी,
जो उसे भेंट करता है. 10 हर एक अन्नबलि, चाहे तेल मिली हो, या तेल रहित,
अहरोन के सभी पुत्रों को समान मात्रा में मिलेगी. 11 "'उन मेल बलियों के
लिए, जो याहवेह के सामने चढ़ाई जाएं, उनके लिए विधि यह है: 12 "'यदि
वह इसे आभार के रूप में भेंट करता है, तो वह आभार-बलि के साथ तेल से
सनी हुई खमीर रहित रोटी, तेल से चुपड़ी पपड़ी तथा तेल से सनी हुई मैदे की
रोटी भेंट करे. 13 आभार के रूप में भेंट की गई अपनी मेल बलियों के बलि
पशु के साथ वह खमीर युक्त रोटी भी भेंट करे. 14 वह ऐसी हर एक बलि में से
एक-एक रोटी याहवेह को अंशदान के रूप में भेंट करे; यह उसी पुरोहित की
होगी, जो मेल बलि के पशु के रक्त को छिड़कता है. 15 आभार के रूप में भेंट
की गई मेल बलियों की बलि के मांस को उसकी बलि के दिन ही खा लिया
जाए. वह प्रातः तक इसमें से कुछ भी बचाकर न रखे. 16 "'किंतु यदि उसकी
बलि एक मन्नत अथवा स्वेच्छा बलि है, तो उसको उस दिन खाया जाए जिस
दिन उसने इसे अर्पित किया हो, तथा शेष अंश को अगले दिन खाया जा सकता
है. 17 किंतु यदि उस बलि के मांस में से तीसरे दिन कुछ बचा रह गया है, तो
अग्नि में उसे जला दिया जाए. 18 इसलिये यदि वह मेल बलि के पशु के मांस
को तीसरे दिन खा लेता है, जिसने उसे भेंट किया है, न तो वह बलि स्वीकार
होगी और न ही उसके लिए लाभदायक. यह एक आपत्तिजनक कार्य है, और
जो कोई व्यक्ति इसको खाता है, वह स्वयं अपना दोष उठाएगा. 19 "'जिस
मांस का स्पर्श किसी अपवित्र वस्तु से हो जाए, उसको खाया न जाए; इसे अग्नि
में जला दिया जाए. हर एक, जो शुद्ध है इसको खा सकता है, 20 किंतु अपनी
अशुद्धता में कोई व्यक्ति मेल बलियों की बलि के उस मांस को खा लेता है, जो
याहवेह का है, तो उसे लोगों के मध्य से हटा दिया जाए. 21 यदि कोई व्यक्ति
किसी अशुद्ध वस्तु का स्पर्श कर लेता है; चाहे वह मानव मलिनता हो अथवा
कोई अशुद्ध पशु अथवा कोई अशुद्ध घृणित वस्तु हो, और वह मेल बलियों की
बलि के उस मांस को खा लेता है, जो याहवेह को अर्पित है, तो उसे उसके
लोगों के मध्य से हटा दिया जाए.'" 22 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया,
23 "इस्राएल की प्रजा को यह आदेश दो, 'तुम किसी बैल, भेड़ अथवा बकरी
की चर्बी को न खाना. 24 उस पशु की चर्बी को भी, जिसकी स्वाभाविक मृत्यु
हो चुकी है, या जो वन-पशुओं द्वारा मार डाला गया है. तुम उसे किसी अन्य
उपयोग के लिए तो रख सकते हो, किंतु निश्चयतः उसको खाना मना है. 25 जो
व्यक्ति उस पशु की चर्बी को खाता है, जिसे याहवेह को अग्निबलि के रूप में
भेंट किया गया है, उसे उसके लोगों के मध्य से हटा दिया जाए. 26 तुम अपने
घर में किसी पशु अथवा पक्षी के रक्त को न खाना. 27 जो भी व्यक्ति किसी भी
रक्त को खाता है, उसे भी उसके लोगों के मध्य से हटा दिया जाए.'" 28
याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया, 29 "इस्राएल की प्रजा को यह आदेश
दो, 'वह व्यक्ति, जो याहवेह को अपनी मेल बलियां भेंट करता है, याहवेह को
उसी मेल बलि में से एक हिस्सा अपनी भेंट के रूप में चढ़ाए, 30 और वह स्वयं
अपने हाथों में याहवेह को होमबलि के लिए चर्बी एवं छाती लेकर आए, कि
छाती याहवेह के सामने लहराने की बलि के रूप में भेंट की जाए. 31 पुरोहित
चर्बी को तो वेदी पर अग्नि में जला दे, किंतु छाती अहरोन और उनके पुत्रों की
है. 32 तुम अपनी मेल बलियों की बलियों में से दाहिनी जांघ पुरोहित को दे
देना. 33 अहरोन के पुत्रों के मध्य से जो पुत्र मेल बलियों के रक्त और चर्बी
को भेंट करता है, दाहिनी जांघ उसके अंशदान के रूप में उसी की होगी. 34
क्योंकि इस्राएल की प्रजा से मैंने उनकी मेल बलियों की बलियों में से लहराने
की बलि के रूप में भेंट की गई छाती, और अंशदान की जांघ को लेकर उसे
पुरोहित अहरोन और उनके पुत्रों को दिया गया है. यह इस्राएल की प्रजा से
सर्वदा के लिए पुरोहित अहरोन और उनके पुत्रों को अधिकार के रूप में दे दिया
है.'" 35 यह वह अंश है, जो याहवेह की अग्निबलियों में से अहरोन और
उनके पुत्रों के लिए है; जिस दिन से उसने उन्हें याहवेह के सामने पौरोहितिक
सेवा के लिए प्रस्तुत किया. 36 जिस दिन उनका अभिषेक किया गया, उस दिन
याहवेह ने इस्राएल की प्रजा से उन्हें यह वस्तुएं देने का आदेश दिया है. पीढ़ियों
से पीढ़ियों तक सर्वदा के लिए यह उनका अधिकार है. 37 उपरोक्त विधि;
होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोष बलि, संस्कार बलि तथा मेल बलियों के
भेंट के लिए है. 38 इसके विषय में आदेश याहवेह ने मोशेह को सीनायी पर्वत
पर उस दिन दिए थे, जिस दिन याहवेह ने इस्राएल की प्रजा को सीनायी की
मरुभूमि में याहवेह के लिए अपनी बलियां प्रस्तुत करने का आदेश दिया था.

8 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया कि 2 वह अपने साथ अहरोन
और उनके पुत्र, और साथ में उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पापबलि के
लिए निर्धारित बैल, दो मेढ़े और एक टोकरी में खमीर रहित रोटी ले, 3 और
मिलनवाले तंबू के द्वार पर सारी सभा को इकट्ठा करे. 4 तब मोशेह ने याहवेह के
आदेश के अनुसार वैसा ही किया. जब सभा मिलनवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठी
हुई, 5 तब मोशेह ने सभा को इस प्रकार संबोधित किया, "जिस कार्य को पूरा
करने का आदेश याहवेह ने दिया है, वह यह है." 6 फिर मोशेह ने अहरोन और
उनके पुत्रों को अपने निकट बुलाया और जल से उनको नहलाया. 7 मोशेह ने
अहरोन को कुर्ता तथा एफ़ोद पहनाकर उस पर कलात्मक रूप से बुनी हुई कोष
बांध दी. 8 फिर उन्होंने अहरोन को सीनाबंद पहनाया और उसमें उरीम एवं
थुम्मीम लगा दिए. 9 उन्होंने उसके सिर पर पगड़ी भी पहना दी, और उस
पगड़ी के सामने की ओर सोने के टीके अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया, ठीक
जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था. 10 मोशेह ने अभिषेक का तेल
लेकर पवित्र स्थान और उसके भीतर जो कुछ भी था, उसका अभिषेक कर उन्हें
परम पवित्र किया. 11 उन्होंने कुछ तेल वेदी पर सात बार छिड़क दिया, वेदी
और इसके सारे पात्रों, चिलमची और उसके आधार को पवित्र करने के लिए
उनका अभिषेक किया. 12 फिर उन्होंने अभिषेक का कुछ तेल अहरोन के सिर
पर उंडेलकर उन्हें पवित्र करने के लिए उनका अभिषेक किया. 13 इसके बाद
मोशेह ने अहरोन के पुत्रों को अपने पास बुलाया और उन्हें अंगरखे पहनाकर
उन पर कटिबंध बांधे तथा उन्हें टोपियां पहना दीं; ठीक वैसा ही, जैसा आदेश
याहवेह ने मोशेह को दिया था. 14 मोशेह पापबलि के लिए निर्धारित बैल
लेकर आए और अहरोन और उनके पुत्रों ने पापबलि के इस बैल के सिर पर
अपने हाथ रखे. 15 मोशेह ने इस बैल का वध किया और वेदी को पाप दोष से
हटाने के लिए अपनी उंगली से उसका कुछ रक्त लेकर वेदी के सींगों पर
लगाया. उसके बाद इसके बचे हुए रक्त को वेदी के आधार पर उंडेल दिया और
प्रायश्चित पूरा करने के लिए उसे परम पवित्र किया. 16 मोशेह ने आंतों की
सारी चर्बी, कलेजे के ऊपर की झिल्ली तथा दोनों गुर्दों के साथ उनकी चर्बी
को लिया और उसे वेदी पर अग्नि में जलाकर भेंट कर दिया. 17 किंतु बैल,
उसकी खाल, मांस और इस प्रक्रिया में उत्पन्न गोबर इन चीज़ों को छावनी के
बाहर अग्नि में जला दिया; ठीक जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था,
वैसा ही. 18 फिर मोशेह ने होमबलि के लिए तय मेढ़े को प्रस्तुत किया. अहरोन
और उनके पुत्रों ने उस मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखे. 19 मोशेह ने मेढ़े को
बलि की, और इसके रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दिया. 20 उन्होंने इस
मेढ़े को टुकड़े किए और इसके सिर, टुकड़ों और ठोस चर्बी को जला दिया.
21 मोशेह ने आंतों और टांगों को जल से धोकर पूरे मेढ़े को वेदी पर अग्नि में
जलाकर भेंट कर दिया. सुखद-सुगंध के लिए यह एक होमबलि; हां याहवेह को
भेंट एक अग्निबलि थी; ठीक जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था, वैसा

ही. 22 इसके बाद मोशेह ने दूसरा मेढ़ा, अर्थात् संस्कार का मेढ़ा प्रस्तुत किया, और अहरोन और उनके पुत्रों ने उस मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखे. 23 मोशेह ने मेढ़े को बलि किया; और अहरोन के दायें कान, उनके दायें हाथ और दायें पैर के अंगूठे पर उसका कुछ रक्त लगा दिया. 24 मोशेह ने अहरोन के पुत्रों को भी पास बुलाकर उनके दायें कान, उनके दायें हाथ के अंगूठे और दायें पैर के अंगूठे पर उसका कुछ रक्त लगा दिया. उसके बाद मोशेह ने शेष रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़क दिया. 25 मोशेह ने उस मेढ़े की चर्बी, मोटी पूंछ, आंतों पर की चर्बी, कलेजे के ऊपर की झिल्ली, दोनों गुर्दे तथा उनकी चर्बी और दायीं जांघ ली; 26 उन्होंने याहवेह के सामने रखी खमीर रहित रोटी की टोकरी से एक खमीर रहित रोटी, तेल सनी हुई रोटी और एक पपड़ी ली और उन्हें चर्बी के भाग एवं दायीं जांघ पर रख दिया. 27 ये सभी वस्तुएं अहरोन एवं उसके पुत्रों के हाथों में रखकर इन्हें याहवेह को चढ़ाने की भेंट मानकर याहवेह के आगे लहराया. 28 मोशेह ने इन्हें उनके हाथों से लेकर होमबलि के साथ इन्हें वेदी पर जला दिया. ये याहवेह को भेंट की गयी सुखद-सुगंध के लिए अग्निबलि के रूप में संस्कार की बलि थी. 29 मोशेह ने मेढ़े की छाती भी ली, यह संस्कार के मेढ़े में से मोशेह का अंश था, और इसे याहवेह के सामने लहराने की बलि के रूप में प्रस्तुत किया; ठीक जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था, वैसा ही. 30 मोशेह ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के रक्त में से कुछ रक्त लेकर इसे अहरोन, उनके वस्त्रों, उनके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर छिड़क दिया. इस प्रकार मोशेह ने अहरोन, उनके वस्त्रों, उनके पुत्रों और उनके पुत्रों के वस्त्रों को परम पवित्र किया. 31 इसके बाद मोशेह ने अहरोन और उनके पुत्रों को यह आदेश दिया "मिलनवाले तंबू के द्वार पर मांस को उबालो और इसे उस रोटी के साथ खाओ, जो रोटी संस्कार बलि की टोकरी में है, ठीक जैसा आदेश मैंने दिया था कि, अहरोन और उनके पुत्र इसको खाएं. 32 शेष मांस और रोटी को तुम अग्नि में जला देना. 33 सात दिनों के लिए तुम मिलनवाले तंबू के द्वार के बाहर न जाना, जब तक तुम्हारा संस्कार का क्रिया काल पूरा न हो जाए; क्योंकि तुम्हारा संस्कार का क्रिया काल सात दिन का होगा. 34 तुम्हारे लिए प्रायश्चित पूरा करने के लिए वही किया जाना ज़रूरी है, जैसा आज किया गया है, ठीक जैसा आदेश याहवेह ने दिया है. 35 इसके अतिरिक्त तुम्हें मिलनवाले तंबू के द्वार पर सात दिनों के लिए दिन-रात ठहरे रहना है, याहवेह द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करना ज़रूरी है कि तुम्हारी मृत्यु न हो, क्योंकि मुझे ऐसा ही आदेश दिया गया है." 36 इस प्रकार अहरोन और उनके पुत्रों ने वे सारे कार्य किए, जिनका आदेश याहवेह ने मोशेह के द्वारा दिया था.

9 फिर आठवें दिन मोशेह ने अहरोन, उनके पुत्रों और इस्राएल के प्रधानों को बुलाया. 2 मोशेह ने अहरोन को यह आदेश दिया, "अपने लिए गाय-बैलों से पापबलि के लिए एक निर्दोष बछड़ा और होमबलि के लिए एक निर्दोष मेढ़ा लो, और उन्हें याहवेह को भेंट करो. 3 उसके बाद तुम इस्राएल की प्रजा को यह आदेश दो, 'पापबलि के लिए एक बकरा और होमबलि के लिए एक साल का निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेमना, 4 मेल बलि के लिए याहवेह के सम्मुख भेंट चढ़ाने के हेतु एक बैल व एक मेढ़ा तथा तेल से सनी हुई अन्नबलि लो; क्योंकि आज याहवेह तुम पर प्रकट होंगे.'" 5 फिर वे उन सब वस्तुओं को मिलनवाले तंबू के सामने ले आए, जिसका आदेश मोशेह ने उन्हें दिया था, और सारी सभा निकट आकर याहवेह के सामने खड़ी हो गई. 6 मोशेह ने उन्हें संबोधित किया, "ये हैं वे कार्य, जिन्हें करने का आदेश याहवेह ने तुम्हें दिया है कि याहवेह के प्रताप का तुम पर प्रकाशन हो." 7 इसके बाद मोशेह ने अहरोन को यह आदेश दिया, "वेदी के निकट आ जाओ, और अपनी पापबलि और होमबलि भेंट करो कि तुम स्वयं के लिए और प्रजा के लिए प्रायश्चित पूरा कर सको; इसके बाद प्रजा के लिए बलि अर्पण करो कि उनके लिए प्रायश्चित पूरा कर सको, ठीक जैसा आदेश याहवेह ने दिया है." 8 फिर अहरोन ने वेदी के निकट आकर अपनी पापबलि के लिए निर्धारित उस बछड़े का वध किया. 9 अहरोन के पुत्रों ने उनके सामने रक्त प्रस्तुत किया और उन्होंने इसमें अपनी उंगली डुबोकर कुछ रक्त वेदी की सींगों पर लगाया और शेष रक्त को वेदी के आधार पर उंडेल दिया. 10 फिर उन्होंने पापबलि के लिए निर्धारित चर्बी, गुर्दे, और कलेजे के ऊपर की झिल्ली को वेदी पर अग्नि में जला दिया, ठीक जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था. 11 किंतु उन्होंने खाल और मांस को छावनी के बाहर अग्नि में जला दिया. 12 इसके बाद उन्होंने होमबलि के पशु का वध किया; अहरोन के पुत्रों ने उन्हें रक्त सौंप दिया और उन्होंने इसे वेदी के चारों ओर छिड़क दिया. 13 उन्होंने होमबलि के पशु को टुकड़ों में उसके सिर के साथ अहरोन को सौंप दिया और अहरोन ने उन्हें वेदी पर अग्नि में जलाकर भेंट कर दिया. 14 उन्होंने आंतों और टांगों को भी धो करके उन्हें होमबलि के साथ वेदी पर अग्नि में जलाकर भेंट कर दिया. 15 फिर उन्होंने प्रजा के लिए निर्धारित बलि को प्रस्तुत किया. उन्होंने उस बकरे को लेकर, जो प्रजा के लिए निर्धारित पापबलि के लिए था, इसका वध करके पहले बलि के पशु समान भेंट कर दिया. 16 उन्होंने होमबलि के पशु को भी प्रस्तुत कर विधि के अनुसार इसे भेंट किया. 17 इसके बाद उन्होंने अन्नबलि को प्रस्तुत किया, प्रातःकाल की होमबलि के अतिरिक्त उन्होंने इसमें से भी मुट्ठी भर भाग लेकर वेदी पर अग्नि में जलाकर भेंट किया. 18 इसके बाद उन्होंने प्रजा के लिए मेल बलि के लिए निर्धारित बैल और मेढ़े का वध किया, और अहरोन के पुत्रों ने अहरोन को रक्त सौंप दिया, जिसे उन्होंने वेदी के चारों ओर छिड़क दिया. 19 उन्होंने बैल तथा मेढ़े की चर्बी के भाग, मोटी पूंछ, वह चर्बी जो आंतों को ढकती है, गुर्दे और कलेजे के ऊपर की झिल्ली भी उन्हें सौंप दी, 20 उन्होंने चर्बी के भाग को छाती पर रखा और अहरोन ने उन्हें वेदी पर अग्नि में जलाकर भेंट कर दिया. 21 किंतु छाती और दायीं जांघ को अहरोन ने लहराने की बलि के रूप याहवेह के सामने प्रस्तुत किया; ठीक जैसा मोशेह ने आदेश दिया था. 22 इसके बाद अहरोन ने प्रजा की ओर अपने हाथ उठाकर उनके लिए आशीष वचन बोले और पापबलि, होमबलि और मेल बलि भेंट करने के बाद नीचे उतर आए. 23 मोशेह और अहरोन मिलनवाले तंबू में चले गए, और जब उन्होंने मिलनवाले तंबू से बाहर आकर प्रजा के लिए आशीष वचन बोले, तो याहवेह का प्रताप सारी प्रजा को दिखाई दिया. 24 तब याहवेह की उपस्थिति की अग्नि ने प्रकट होकर होमबलि और वेदी पर की चर्बी के भागों को भस्म कर दिया. यह देख सारी प्रजा जय जयकार के नारे के साथ भूमि की ओर नतमस्तक हो गई.

10 अहरोन के पुत्र नादाब और अबीहू ने अपने-अपने धूपदान लिए और उनमें अग्नि रखने के बाद लोबान भी रखा. इस प्रकार उन्होंने याहवेह के सामने बिना आज्ञा की अपवित्र अग्नि भेंट की; याहवेह की ओर से इसका आदेश न था. 2 याहवेह की उपस्थिति से अग्नि निकलकर उन्हें भस्म कर दिया, और याहवेह के सामने ही उनकी मृत्यु हो गई. 3 मोशेह ने अहरोन से कहा, "याहवेह के यही विचार थे, "'उनके द्वारा, जो मेरे निकट आते हैं, मैं पवित्र ठहराया जाऊं, तथा सारी प्रजा के सामने मेरी महिमा हो.'" इस पर अहरोन शांत ही रहे. 4 मोशेह ने अहरोन के चाचा उज्ज़िएल के पुत्र मिषाएल और एलज़ाफन को भी बुलाकर उन्हें यह आदेश दिया, "निकट आ जाओ और अपने भाइयों के लाश पवित्र स्थान के सामने से हटा लो और छावनी के बाहर ले जाओ." 5 तब वे निकट आए और लाशों को उनके अंगरखों सहित छावनी से बाहर ले गए, ठीक जैसा मोशेह ने आदेश दिया था. 6 इसके बाद मोशेह ने अहरोन और उनके पुत्र एलिएज़र और इथामार को यह आदेश दिया, "अपने सिर के बालों को न मुंडाओ और न ही अपने वस्त्र फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम्हारी मृत्यु हो जाए और याहवेह का क्रोध सारी सभा पर भड़क उठे. केवल तुम्हारे

भाई अर्थात् इस्राएल की सारी प्रजा याहवेह के द्वारा लगाई हुई इस आग के लिए
विलाप करे. 7 तुम तो मिलनवाले तंबू के द्वार से बाहर भी न जाना, अन्यथा
तुम्हारी भी मृत्यु हो जाएगी, क्योंकि तुम पर याहवेह के तेल का अभिषेक है.”
तब उन्होंने मोशेह के आदेश के अनुसार ही किया. 8 इसके बाद याहवेह ने
अहरोन को यह आदेश दिया, 9 “जब तुम मिलनवाले तंबू में प्रवेश करो, तो न
तो तुम और न ही तुम्हारे पुत्र दाखरस अथवा दाखमधु का उपभोग करें, कि
तुम्हारी मृत्यु न हो जाए. यह तुम्हारी आनेवाली सारी पीढ़ियों के लिए हमेशा के
लिए विधि है, 10 कि तुम पवित्र और अपवित्र के बीच, शुद्ध और अशुद्ध के बीच
भेद कर सको. 11 इस्राएल की प्रजा को उन सारी विधियों की शिक्षा देनी
अनिवार्य है, जिनको याहवेह ने तुम्हें मोशेह के द्वारा दिया है.” 12 फिर मोशेह ने
अहरोन और उनके दोनों बचे हुए पुत्रों, एलिएज़र और इथामार को यह आदेश
दिया, “याहवेह को अग्नि में अर्पित अन्नबलि में से शेष रह गए भाग, जो खमीर
रहित है, उसको लेकर वेदी के निकट ही खाओ, क्योंकि यह परम पवित्र है.
13 तुम इसको पवित्र स्थान में ही खाना, क्योंकि यह याहवेह को अर्पित बलि में
से तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों के लिए निर्धारित भाग है, क्योंकि मुझे ऐसा ही
आदेश दिया गया है. 14 किंतु तुम तथा तुम्हारी सन्तति लहराने की बलि स्वरूप
भेंट, छाती और जांघ को किसी स्वच्छ स्थान में खा सकते हो; क्योंकि यह
इस्राएल की प्रजा की मेल बलियों में से तुम्हारे और तुम्हारे पुत्रों एवं पुत्रियों के
लिए निर्धारित भाग के रूप में तुम्हें दिया गया है. 15 वे अग्निबलि के लिए
निर्धारित चर्बी के भाग के साथ जांघ को ऊंचा उठाते, और छाती को लहराते
हुए याहवेह के सामने लहराने की बलि के रूप में लाएंगे; यह तुम्हारे और तुम्हारे
पुत्रों के लिए स्थायी भाग है, ठीक जैसा आदेश याहवेह ने दिया था वैसा ही.”
16 किंतु मोशेह ने पापबलि के लिए निर्धारित बकरे के विषय में खोजबीन की,
तो मालूम हुआ कि उसको तो जलाया जा चुका है! इसलिये मोशेह अहरोन के
बचे हुए पुत्रों एलिएज़र तथा इथामार पर क्रोधित हो गए. मोशेह ने उनसे यह
प्रश्न किया, 17 “तुमने पापबलि के पशु को पवित्र स्थान में क्यों नहीं खाया?
क्योंकि यह तो परम पवित्र है, तथा याहवेह ने यह तुम्हें प्रजा के दोष अपने ऊपर
उठाकर और याहवेह के सामने उनके लिए प्रायश्चित पूरा करने के लिए दिया
था. 18 इसका तो रक्त तक पवित्र स्थान के भीतरी कक्ष में नहीं लाया गया,
ज़रूरी था कि तुम इसको पवित्र स्थान में खाते; ठीक जैसा आदेश मैंने दिया
था.” 19 किंतु अहरोन ने मोशेह को उत्तर दिया, “सुनिए, आज ही उन्होंने
याहवेह के सामने अपनी पापबलि और होमबलि चढ़ाई है, फिर भी मेरे साथ यह
सब घटित हो गया है! यदि आज मैं पापबलि के पशु को खा लेता, तो क्या यह
याहवेह की दृष्टि में भला होता?” 20 जब मोशेह ने यह सुना, तो यह उन्हें सही
ही जान पड़ा.

11 याहवेह ने मोशेह और अहरोन को आदेश दिया, 2 “इस्राएल की प्रजा
को यह आदेश दो, ‘पृथ्वी पर के सारे पशुओं में से 3 कोई भी पशु,
जिसके खुर अलग हैं, जिसके खुर फटे हों और वह पागुर करता है, तुम्हारे लिए
भोज्य है. 4 “‘परंतु वे पशु, जो पागुर करते हैं अथवा जिनके खुर चिरे हैं, उनमें
से ये पशु तुम्हारे खाने योग्य नहीं हैं: ऊंट, क्योंकि यह पागुर तो करता है, किंतु
इसके खुर चिरे नहीं, यह तुम्हारे लिए अशुद्ध है; 5 इसी प्रकार चट्टानी बिज्जू
क्योंकि यद्यपि यह पागुर करता है, परंतु इसके खुर चिरे नहीं होते, यह तुम्हारे
लिए अशुद्ध है; 6 इसी प्रकार खरगोश भी, यह पागुर तो करता है, परंतु इसके
खुर चिरे नहीं होते, यह तुम्हारे लिए अशुद्ध है, 7 और सूअर क्योंकि यद्यपि
इसके खुर चिरे अर्थात् इसके खुर दो भागों में तो हैं, किंतु यह पागुर नहीं करता;
तब यह तुम्हारे लिए अशुद्ध है. 8 तुम्हें न तो उनके मांस को खाना है और न ही
उनके शवों का स्पर्श; वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं. 9 “‘तुम इन जलचरों को खा
सकते हो: समुद्र अथवा नदियों के वे सारे जलचर जिनके पक्ष और शल्क हैं,
तुम उनको खा सकते हो. 10 किंतु समुद्र और नदियों के वे जलचर, अर्थात्
जल के वे जंतु, जो समूहों में रहते हैं और जल के समस्त प्राणी, जिनके न तो
पंख हैं और न छिलके, वे तुम्हारे लिए घृणित हैं, 11 और क्योंकि वे तुम्हारे
लिए घृणित हैं, तुम उनके मांस को खा नहीं सकते और उनके शव तुम्हारे लिए
घृणित वस्तु हों. 12 जल के कोई भी जीव, जिसके पक्ष और शल्क नहीं हैं,
वह तुम्हारे लिए घृणित है. 13 “‘पक्षियों में से तुम्हारे लिए घृणित ये हैं; और
जिनको खाना मना है; वे ये है: गरूड, गिद्ध, काला गिद्ध, 14 लाल चील और
काली चील और समस्त प्रकार की चीलें, 15 समस्त प्रकार के कौवे, 16
शुतुरमुर्ग, उल्लू, सागर काक और शिकारे की सभी प्रजातियां, 17 छोटी प्रजाति
के उल्लू, जलकौए और बड़ी प्रजाति के उल्लू, 18 बख़ारी उल्लू, जल मुर्गी
और शवभक्षी गिद्ध, 19 छोटा गरूड, सभी प्रकार के बगुले, टिटिहरी और
चमगादड़. 20 “‘सभी प्रकार के पंख वाले कीड़े, जो अपने चारों पैरों पर
चलते हैं, तुम्हारे लिए घृणित हैं. 21 फिर भी वे उड़ते हुए कीड़े, जो अपने चारों
पैरों पर चलते हैं, तथा जिनके पैरों के ऊपर एक मुड़ी हुई टांग होती है, जिसके
बल पर वे भूमि पर कूदते हैं, उनको तुम खा सकते हो. 22 तुम उनमें से इनको
खा सकते हो: सभी प्रकार की टिड्डियां, सभी प्रकार के पतंगे, सभी प्रकार के
झींगुर और सभी प्रकार के टिड्डे. 23 किंतु सभी प्रकार के उड़ते हुए कीड़े, जो
चार पैरों पर चलते हैं, वे तुम्हारे लिए घृणित हैं. 24 “‘इन सभी जीवों के कारण
भी तुम अशुद्ध हो जाओगे; जो कोई इनके शव को छू लेगा, वह संध्या तक
अशुद्ध रहेगा, 25 और जो कोई इनके शव को हटाता है, वह अपने वस्त्रों को धो
डाले, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 26 “‘उन पशुओं के विषय में, जिनके खुर
चिरे तो हैं किंतु पूरी तरह दो भागों में नहीं हैं, और पागुर भी नहीं करते, वे
तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं. जो कोई उनको छू लेगा, वह अशुद्ध हो जाएगा. 27 सभी
चौपायों में वे प्राणी, जो अपने पंजों पर चलते हैं, तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं, जो
कोई उनके शव को छू लेगा, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा, 28 और जो कोई इनके
शव को हटाता है, वह अपने वस्त्रों को धो ले. वह शाम तक अशुद्ध रहेगा; वे पशु
तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं. 29 “‘भूमि पर जो जंतु रेंगते हैं, वे तुम्हारे लिए अशुद्ध
हैं. वे ये है: छछूंदर, चूहा, सभी प्रकार की गोह, 30 छिपकली, मगरमच्छ,
टिकटिक, साण्डा और गिरगिट. 31 वे जंतु, जो रेंगते हैं, इनमें से वे सभी
तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं. जो कोई इनके शव को छू लेता है, वह शाम तक अशुद्ध
रहेगा. 32 इनमें से उनका शव यदि किसी वस्तु पर गिर जाता है, तो वह वस्तु
अशुद्ध हो जाएगी, चाहे वह लकड़ी की हो अथवा वस्त्र, खाल अथवा टाट की
और किसी भी कार्य में इस्तेमाल की जाती हो. इसे जल में रख देना और शाम
तक यह अशुद्ध रहे, इसके बाद यह वस्तु शुद्ध मानी जाए. 33 यदि किसी मिट्टी के
पात्र में इन जंतुओं का शव गिर जाता है, उस पात्र में जो कुछ भी हो, वह अशुद्ध
हो जाएगा. उस पात्र को तोड़ दिया जाए. 34 यदि इस पात्र का जल किसी भी
खाने की वस्तु पर गिर जाए, तो वह खाना अशुद्ध माना जाएगा, और इसी प्रकार
यदि यह जल किसी पीने के पदार्थ पर गिर जाए, तो वह पीने का पदार्थ अशुद्ध
माना जाएगा. 35 कोई भी वस्तु, जिस पर इन जंतुओं के शव का भाग गिर जाए,
वह वस्तु अशुद्ध मानी जाएगी; चाहे वह कोई भट्टी हो अथवा चूल्हा, इसे चूर-
चूर कर दिया जाए; वे अशुद्ध हैं, और तुम्हारे लिए अशुद्ध बनी रहेंगी. 36 फिर
भी झरना अथवा जल कुंड, जहां जल इकट्ठा किया जाता है, वह तो शुद्ध रहेगा,
किंतु जो कोई इनके शव को छू लेगा, वह अशुद्ध होगा. 37 जिस बीज को बोया
जाना है, यदि इन जंतुओं के शव का कोई भाग उन बीजों में गिर जाता है, तो
उस बीज को स्वच्छ ही माना जाएगा. 38 किंतु यदि उन बीजों पर जल डाला
गया है और इन जंतुओं के शव का कोई भाग उस पर गिर जाता है, तो वे बीज
तुम्हारे लिए अशुद्ध होंगे. 39 “‘यदि उन पशुओं में से, जो तुम्हारे लिए खाने
योग्य हैं, किसी पशु की मृत्यु हो जाए और कोई उसके शव को छू ले, तो वह

व्यक्ति शाम तक अशुद्ध रहेगा. 40 जो इस पशु के शव में से कुछ भाग को खा
लेता है, वह व्यक्ति भी अपने वस्त्रों को धो डाले और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा.
जो इसके शव को हटाए, वह व्यक्ति भी अपने वस्त्रों को धो डाले और वह शाम
तक अशुद्ध रहेगा. 41 "'हर एक जंतु, जो भूमि पर रेंगता है, वह तुम्हारे लिए
घृणित है और उसको खाया न जाए. 42 वे जंतु, जो भूमि पर रेंगते हैं, उसमें से
हर एक जो अपने पेट पर रेंगता है, जो चार पैरों पर चलता है और जो बहुत पैर
वाले हैं, तुम उनको न खाना, क्योंकि वे घृणित हैं. 43 कोई भी जंतु, जो रेंगता
है, उसके द्वारा तुम स्वयं को घृणित न करना और न ही स्वयं को अशुद्ध करना,
जिससे कि तुम अशुद्ध हो जाओ. 44 क्योंकि मैं वही याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर
हूं, इसलिये स्वयं को शुद्ध करो और पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं. उन जंतुओं
के द्वारा स्वयं को अशुद्ध न करना, जो भूमि पर रेंगते हैं. 45 क्योंकि मैं ही
याहवेह हूं, जिसने तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाला, कि तुम्हारा परमेश्वर हो
जाऊं; इसलिये ज़रूरी है, कि तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं. 46 "'पशुओं
तथा पक्षियों और हर एक प्राणी, जो जल में हैं तथा जो भूमि पर रेंगते हैं, उनके
लिए यही विधि है, 47 जिससे शुद्ध अथवा अशुद्ध और खाने तथा न खाने की
वस्तुओं में भेद किया जा सके.'"

12 याहवेह ने मोशेह को कहा, 2 "इस्राएल की प्रजा को यह आदेश दो:
'जब कोई स्त्री पुत्र को जन्म दे, तो वह सात दिन के लिए अशुद्ध रहेगी,
जैसे ऋतुस्राव में अशुद्ध रहती है. 3 आठवें दिन उस बालक के खाल का ख़तना
कर दिया जाए. 4 वह स्त्री रक्तस्राव के नियत तैंतीस दिन तक शुद्ध होने की क्रिया
में रहेगी, जब तक उसके शुद्ध होने के दिन पूरे न हो जाएं, वह न तो किसी पवित्र
वस्तु को छुएगी और न ही पवित्र स्थान में प्रवेश करेगी. 5 किंतु यदि वह पुत्री
को जन्म दे, तो वह दो सप्ताह तक अशुद्ध रहेगी, जैसे वह ऋतुस्राव में होती है.
वह स्त्री रक्तस्राव के नियत छियासठ दिन तक शुद्ध होने की क्रिया में रहेगी. 6
"'जब उस स्त्री की शुद्ध होने की क्रिया पूर्ण हो जाए, चाहे वह पुत्र के लिए
हो अथवा पुत्री के लिए, वह मिलनवाले तंबू के द्वार पर पुरोहित के सामने
होमबलि के लिए एक वर्ष का मेमना तथा पापबलि के लिए एक कबूतर का
बच्चा अथवा एक कपोत का बच्चा लेकर आए. 7 तब पुरोहित इसे उस स्त्री के
प्रायश्चित्त पूरा करने के लिए याहवेह को भेंट करे. और वह अपने रक्तस्राव से
शुद्ध हो जाएगी. "'यह विधि हर एक प्रसूता के लिए है, चाहे वह पुत्र को जन्मे
अथवा पुत्री को. 8 किंतु यदि वह स्त्री एक मेमना खरीदने में असमर्थ है, तो वह
दो कपोत अथवा दो कबूतर के बच्चे लेकर आए; एक होमबलि के लिए और
अन्य पापबलि के लिए. इस प्रकार पुरोहित उस स्त्री के लिए प्रायश्चित्त पूरा करे
और वह स्त्री पवित्र हो जाएगी.'"

13 याहवेह ने मोशेह और अहरोन को यह आदेश दिया, 2 "यदि किसी
व्यक्ति की त्वचा पर सूजन, चकत्ते अथवा कोई चमकीला धब्बा हो,
और यदि यह उसकी त्वचा पर कोढ़ का संक्रमण बन जाए, तब उस व्यक्ति को
पुरोहित अहरोन अथवा उनके किसी पुरोहित पुत्र के सामने लाया जाए. 3
पुरोहित उस व्यक्ति की त्वचा पर के धब्बे का निरीक्षण करेगा और यदि उस
संक्रमित स्थान के रोएं सफेद हो गए हों, और संक्रमण त्वचा से गहरा ज्ञात होता
हो, तो यह निश्चित ही कोढ़ का संक्रमण है. फिर जब पुरोहित उस व्यक्ति का
निरीक्षण पूरा कर ले, तब उसे अशुद्ध घोषित कर दे. 4 यदि त्वचा पर का धब्बा
सफेद तो है, किंतु संक्रमण त्वचा से गहरा मालूम नहीं होता है, और इस स्थान
के रोएं भी सफेद नहीं हुए हैं, तो पुरोहित उस संक्रमित व्यक्ति को सात दिन के
लिए अलग रखे. 5 सातवें दिन पुरोहित उस व्यक्ति का निरीक्षण करे और यदि
उसे प्रतीत हो कि संक्रमण तो ज्यों का त्यों है, किंतु वह त्वचा में फैला नहीं है,
तो पुरोहित उस व्यक्ति को और सात दिन के लिए अलग रखे. 6 सातवें दिन
पुरोहित दोबारा उस व्यक्ति का निरीक्षण करे; यदि संक्रमित स्थान का सुधार होने
के कारण उसका रंग हल्का हो गया है, और वह त्वचा पर नहीं फैला है; तो
पुरोहित उसे शुद्ध घोषित कर दे; यह एक चकत्ते मात्र है. वह व्यक्ति अपने वस्त्र
धो ले और शुद्ध हो जाए. 7 किंतु यदि पुरोहित के सामने शुद्ध प्रमाणित होने के
बाद वह धब्बा त्वचा पर फैलने लगे, तो वह व्यक्ति स्वयं को दोबारा पुरोहित के
सामने प्रस्तुत करे. 8 पुरोहित इसका निरीक्षण करे और यदि उसे यह जान पड़े
कि त्वचा पर धब्बा फैल रहा है, तो पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर
दे; यह कोढ़ का रोग है. 9 "यदि कोढ़ का संक्रमण किसी पुरुष पर है, तो उसे
पुरोहित के सामने लाया जाए. 10 पुरोहित उसका निरीक्षण करे. यदि उसकी
त्वचा में सफेद रंग की सूजन है और उसके उस स्थान के रोएं भी सफेद हो गए
हैं तथा सूजन में खुला घाव है, 11 तो यह उस व्यक्ति की त्वचा पर पुराना कोढ़
का रोग है, पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर दे, किंतु वह उस व्यक्ति
को इसलिये दूसरे लोगों से अलग न करे, कि वह अशुद्ध है. 12 "यदि कोढ़
त्वचा में और अधिक फूट जाए और कोढ़ उस व्यक्ति के सिर से लेकर पांव तक
पूरी देह में फैल जाए, जहां तक पुरोहित इसको देख सके, 13 जब पुरोहित
इसको बारीकी से देख ले कि कोढ़ उस व्यक्ति के पूरे शरीर में फैल गया है, तो
वह उस व्यक्ति को इस रोग से शुद्ध घोषित कर दे; क्योंकि यह पूरी तरह से
सफेद रंग का हो गया है, इसलिये वह व्यक्ति शुद्ध होगा. 14 किंतु यदि उसे
त्वचा पर घाव दिखाई दें, तो वह व्यक्ति अशुद्ध होगा. 15 पुरोहित त्वचा के उस
घाव को ध्यान से देखे और उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर दे; बिना चमड़ी
का मांस अशुद्ध है और यह कोढ़ का रोग है. 16 किंतु यदि त्वचा का घाव
दोबारा सफेद रंग का हो जाए, तो वह व्यक्ति पुरोहित के सामने आए, 17
पुरोहित इसको ध्यान से देखे और यदि वह धब्बा सफेद रंग का हो गया है, तो
पुरोहित उस संक्रमित व्यक्ति को शुद्ध घोषित कर दे; वह शुद्ध है. 18 "जब किसी
व्यक्ति की त्वचा पर फोड़ा हो गया है और वह फोड़ा स्वस्थ हो जाए, 19 तथा
उस फोड़े के स्थान पर सफेद अथवा लालिमा युक्त सफेद रंग की सूजन हो
जाए, तब पुरोहित को इसको दिखवाया जाए; 20 पुरोहित इसको ध्यान से देखे;
यदि उसे यह लगे कि यह त्वचा में फैल रहा है और इसके रोएं भी सफेद हो गए
हैं, तब पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर दे; यह कोढ़ का संक्रमण है,
जिसकी शुरुआत फोड़े से हुई है. 21 किंतु यदि पुरोहित इसको ध्यान से देखे और
पाए, कि त्वचा के रोएं सफेद नहीं हुए हैं, और यह त्वचा में फैल नहीं रहा है
तथा त्वचा का रंग हल्का हो रहा है, तो पुरोहित उस व्यक्ति को सात दिन अलग
रखे; 22 यदि यह त्वचा में और अधिक फैल रहा है, तो पुरोहित उस व्यक्ति को
अशुद्ध घोषित कर दे; यह एक संक्रमण है. 23 किंतु यदि सफेद रंग का धब्बा
त्वचा पर तो है, परंतु यह त्वचा में फैल नहीं रहा है, तो यह फोड़े का चिन्ह मात्र
है, तब पुरोहित उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित कर दे. 24 "यदि किसी की त्वचा
अग्नि से जल गई है, और त्वचा पर घाव से एक सफेद अथवा लालिमा युक्त
सफेद धब्बा हो गया है, 25 तो पुरोहित इसको ध्यान से देखे और यदि इस धब्बे
पर के रोएं सफेद हो गए हैं और संक्रमण त्वचा से गहरा मालूम होता हो, तो यह
कोढ़ का रोग है. जिसकी शुरुआत जलने के घाव से हुई है, पुरोहित उस व्यक्ति
को अशुद्ध घोषित कर दे; यह कोढ़ का संक्रमण है. 26 किंतु यदि पुरोहित इसको
जांचता है और यह पाता है कि उस धब्बे पर के रोएं सफेद नहीं हुए हैं और
संक्रमण त्वचा से गहरा नहीं है, परंतु इसका रंग हल्का पड़ गया है, तो पुरोहित
उस व्यक्ति को सात दिन अलग रखे. 27 सातवें दिन पुरोहित उसको दोबारा
जांचे. यदि यह त्वचा में फैल रहा है, तो पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित
कर दे; यह कोढ़ का संक्रमण है. 28 किंतु यदि धब्बा तो त्वचा पर ज्यों का त्यों
है, परंतु वह त्वचा में फैला नहीं हैं परंतु उसका रंग हल्का पड़ गया है, तो यह
जलने के घाव से उत्पन्न सूजन है; पुरोहित उस व्यक्ति को तब शुद्ध घोषित कर

दे, क्योंकि यह तो जलने से उत्पन्न हुआ चिन्ह मात्र है. 29 “यदि किसी पुरुष
अथवा महिला के सिर या दाढ़ी पर रोग का संक्रमण हो, 30 तो पुरोहित इसका
निरीक्षण करे और यदि संक्रमण त्वचा में गहरा मालूम हो और उस स्थान के रोम
महीन भूरे रंग के हो गए हों, तो पुरोहित उसे अशुद्ध घोषित कर दे, यह सेहुंआ है,
सिर एवं दाढ़ी का कोढ़. 31 किंतु यदि पुरोहित इस घाव के संक्रमण की जांच
करे और यह पाए कि संक्रमण त्वचा से गहरा नहीं है और न ही उस स्थान में
काले रोएं हैं, तो पुरोहित उस व्यक्ति को घाव के संक्रमण के कारण सात दिन
अलग रखे. 32 सातवें दिन पुरोहित संक्रमण की जांच करे और यदि सेहुंआ
त्वचा में नहीं फैला है और उस स्थान पर भूरे रोएं भी नहीं हैं, तथा सेहुंए के
कारण संक्रमण त्वचा से गहरा नहीं है, 33 तो वह व्यक्ति अपना सिर मुंडा ले
किंतु वह अपने सेहुंए पर उस्तरा न चलाए. तब पुरोहित उस व्यक्ति को सात दिन
और अलग रखे. 34 फिर सातवें दिन पुरोहित उस सेहुंए की जांच करे; यदि
सेहुंआ त्वचा में और अधिक नहीं फैल रहा है और यह त्वचा में गहरा मालूम
नहीं होता, तो पुरोहित उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित कर दे; वह व्यक्ति अपने वस्त्रों
को धोकर शुद्ध हो जाए. 35 किंतु यदि उसके शुद्ध होने के बाद वह सेहुंआ उसकी
त्वचा में और अधिक फैलता जाता है, 36 तो पुरोहित उसकी जांच करे और
यदि यह पाए कि यह त्वचा में फैल गया है, तो वह रोम के भूरे होने की प्रतीक्षा
न करे; वह व्यक्ति अशुद्ध है. 37 किंतु यदि उसकी जांच के अनुसार सेहुंए में
कोई बदलाव नहीं है, किंतु उसमें काले रोएं उग आए हैं, तो वह सेहुंआ स्वस्थ
हो गया है, वह व्यक्ति शुद्ध है और पुरोहित उसे शुद्ध घोषित कर दे. 38 “जब
किसी पुरुष अथवा स्त्री की त्वचा पर सफेद चमकदार धब्बे हों, 39 तो पुरोहित
इसकी जांच करे और यदि त्वचा पर यह चमकदार धब्बे हल्के सफेद रंग के
हों, तो यह दाद हैं, जो त्वचा में फूट निकले हैं; वह व्यक्ति शुद्ध है. 40 “यदि
किसी पुरुष के बाल झड़ गए हों, तो वह गंजापन है, किंतु वह शुद्ध है. 41 किंतु
यदि उसके सिर के सामने के और सिर के दोनों ओर के बाल झड़ गए हैं और
उसका माथा चंदला हो गया है, तो वह शुद्ध है. 42 परंतु यदि उसका सिर अथवा
माथा चंदला हो गया है और उस पर लालिमा युक्त सफेद रंग का संक्रमण हो
गया है, तो यह कोढ़ है, जो उसके चंदूले माथे और सिर से फूट निकला है. 43
तब पुरोहित इसकी जांच करे और यदि सिर अथवा बाल के संक्रमण की सूजन
त्वचा पर कोढ़ की लालिमा युक्त सफेद रंग की सूजन के समान है, 44 तो वह
व्यक्ति कोढ़ का रोगी है, तब अशुद्ध है. निश्चित ही पुरोहित उसे अशुद्ध घोषित
कर दे; क्योंकि संक्रमण उसके सिर पर हुआ है. 45 “वह व्यक्ति, जो कोढ़ के
रोग से संक्रमित हुआ है, उसके वस्त्र फाड़ दिए जाएं, उसका सिर उघाड़ दिया
जाए और वह अपने मुख का निचला भाग ढक कर ऊंचे स्वर में कहे, ‘अशुद्ध!
अशुद्ध!’ 46 अपने संक्रमण की पूरी अवधि में वह अशुद्धि की स्थिति में ही
होगा; वह अशुद्ध है तथा अकेले में रहेगा; उसका निवास छावनी के बाहर ही
होगा. 47 “यदि किसी वस्त्र में कोढ़ की फफूंदी पाई जाती है, चाहे वह वस्त्र ऊनी
हो अथवा मलमल का, 48 मलमल अथवा ऊन के ताने-बाने का हो, चमड़ा हो
या चमड़े से बनी कोई वस्तु हो, 49 यदि यह संक्रमण वस्त्र अथवा चमड़े के वस्त्र
में अथवा ताने में अथवा बाने में हो, या चमड़े से बनी किसी वस्तु में हरे रंग
की अथवा लालिमा हो, तो यह कोढ़ है और इसे पुरोहित को दिखाया जाना
आवश्यक है. 50 तब पुरोहित उस चिन्ह की जांच करे और इस संक्रमित वस्तु
को सात दिन अलग रखे. 51 सातवें दिन पुरोहित इस चिन्ह की दोबारा जांच
करे और यदि संक्रमण वस्त्र में, ताने में अथवा बाने में अथवा चमड़े में फैल गया
हो और चाहे वह चमड़ा किसी भी काम के लिए इस्तेमाल किया जाता हो,
तो यह असाध्य कुष्ठ रोग का लक्षण है. यह अशुद्ध है. 52 जिस वस्त्र, ताने-
बाने, ऊन, मलमल अथवा चमड़े की किसी वस्तु में यह संक्रमण पाया जाए,
तो आवश्यक है कि उसको जला दिया जाए, क्योंकि यह असाध्य कोढ़ है;
आवश्यक है कि इसको अग्नि में जला दिया जाए. 53 “किंतु यदि पुरोहित
इसकी जांच करे और यह पाए कि संक्रमण वस्त्र में, ताने-बाने में अथवा चमड़े
की वस्तु में नहीं फैला है, 54 तो पुरोहित उस संक्रमित वस्त्र को धोने का आदेश
दे तथा और सात दिन के लिए उसे अलग कर दे. 55 जब जिस वस्त्र में संक्रमण
पाया गया है और उसको धो लिया गया है, तो पुरोहित इसकी दोबारा जांच करे
और यदि इस वस्तु में मौजूद धब्बे में कोई बदलाव नहीं हुआ है और यह फैला
भी नहीं है, तो यह अशुद्ध ही माना जाएगा, और आवश्यक है कि तुम अग्नि में
इसको जला दे, चाहे यह फफूंद पीछे के भाग में हो अथवा आगे. 56 यदि
पुरोहित इसकी जांच करे और उसे यह मालूम हो कि धोने के बाद इसकी चमक
कम नहीं हुई है, तब पुरोहित उसे उस वस्त्र या चमड़े में से फाड़कर निकाल दे;
57 किंतु यदि यह चिन्ह वस्त्र, ताने अथवा बाने और चमड़े पर दोबारा उभर आए,
तो यह उसमें फैल रहा है. आवश्यक है कि उस संक्रमित वस्तु को आग में जला
दिया जाए. 58 जब तुमने उस संक्रमित वस्त्र, ताने अथवा बाने अथवा चमड़े की
वस्तु को धो दिया है, तो इसको दूसरी बार धो दिया जाए और यह शुद्ध माना
जाएगा.” 59 यह किसी कोढ़ से संक्रमित ऊन या मलमल के वस्त्र, ताने अथवा
बाने अथवा चमड़े की किसी वस्तु को शुद्ध अथवा अशुद्ध घोषित करने की विधि
है.

14 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया, 2 “किसी कोढ़ी के शुद्ध हो
जाने की पुष्टि की विधि यह है: जब उसे पुरोहित के सामने लाया जाए, 3
पुरोहित छावनी के बाहर जाकर इसकी जांच करे और यदि उस कोढ़ी की व्याधि
स्वस्थ हो गयी है, 4 तब पुरोहित उस व्यक्ति के लिए, जिसको शुद्ध किया जाना
है, दो जीवित शुद्ध पक्षी, देवदार की लकड़ी, जूफ़ा और लाल डोरी लाने का
आदेश दे. 5 फिर पुरोहित बहते हुए जल पर मिट्टी के एक पात्र में एक पक्षी को
बलि करने का आदेश भी दे. 6 इसके बाद वह उस जीवित पक्षी को देवदार की
लकड़ी, लाल डोरी और जूफ़ा के साथ लेकर उन्हें, तथा उस जीवित पक्षी को
उस पक्षी के लहू में डूबा दे, जिसे बहते हुए जल पर बलि किया गया था. 7
पुरोहित इसे सात बार उस व्यक्ति पर छिड़क दे, जिसे कोढ़ से शुद्ध किया जा रहा
है. फिर पुरोहित उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित कर दे और उस जीवित पक्षी को
खुले मैदान में छोड़ दे. 8 “फिर वह व्यक्ति जिसे शुद्ध किया जा रहा है, अपने
वस्त्रों को धो डाले, अपने सारे बाल मुंडवा ले और स्नान करके शुद्ध हो जाए.
इसके बाद वह छावनी में तो प्रवेश कर सकता है किंतु सात दिन तक वह अपने
घर से बाहर ही निवास करे. 9 सातवें दिन वह अपने सिर के बाल, दाढ़ी तथा
भौंहें, और हां, अपने समस्त बाल मुंडवा ले; अपने वस्त्रों को धो डाले और
स्नान कर स्वच्छ हो जाए. 10 “आठवें दिन वह एक वर्षीय दो निर्दोष नर
मेमने, एक वर्षीय निर्दोष मादा भेड़, अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ पांच
किलो मैदा और एक तिहाई लीटर तेल ले; 11 फिर जो पुरोहित उस व्यक्ति को
शुद्ध घोषित कर रहा है, वह मिलनवाले तंबू के प्रवेश स्थल पर उस व्यक्ति और
इन वस्तुओं को याहवेह के सामने भेंट करे. 12 “फिर पुरोहित एक नर मेमने
और एक तिहाई लीटर तेल को दोष बलि स्वरूप लेकर लहराने की बलि के रूप
में याहवेह के सामने भेंट करे. 13 इसके बाद पुरोहित उस नर मेमने का पवित्र
स्थान के उस स्थान में वध करे, जहां पापबलि और होमबलि वध की जाती हैं;
क्योंकि दोष बलि, पापबलि के समान पुरोहित का निर्धारित अंश है; यह परम
पवित्र है. 14 पुरोहित उस दोष बलि के रक्त का कुछ भाग लेकर उसे उस व्यक्ति
के दाएं कान के सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे और दाएं पांव के अंगूठे पर लगा
दे, जिसको शुद्ध किया जा रहा है. 15 इसके बाद पुरोहित उस एक तिहाई तेल में
से कुछ भाग लेकर उसे अपने बायीं हथेली पर उंडेल दे; 16 फिर पुरोहित
अपनी बायीं हथेली में रखे बचे हुए तेल में अपने दाएं हाथ की उंगली डुबाकर
याहवेह के सामने उस तेल में से कुछ तेल को सात बार छिड़क दे. 17 अब जो

तेल उसकी हथेली में बचा रह गया है, पुरोहित शुद्ध होनेवाले व्यक्ति के दाएं कान
के सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे और दाएं पांव के अंगूठे पर लगा दे, जिन पर
दोष बलि का रक्त लगा हुआ है; 18 जबकि पुरोहित की हथेली में रखे बचे हुए
तेल को पुरोहित उस व्यक्ति के सिर पर भी लगा दे, जिसे शुद्ध किया जा रहा है.
फिर पुरोहित उस व्यक्ति की ओर से याहवेह के सामने प्रायश्चित करे. 19
“इसके बाद पुरोहित पापबलि भेंट करे, और उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित करे,
जिसे उसकी अशुद्धता से परिशोधन किया जा रहा है. यह सब करने के बाद वह
होमबलि पशु का वध कर दे. 20 पुरोहित उस होमबलि एवं अन्नबलि को वेदी
पर भेंट कर दे. इस प्रकार पुरोहित उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित करे, और वह
व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा. 21 “किंतु यदि वह व्यक्ति दरिद्र और लाने के लायक न
हो, तो वह अपने लिए प्रायश्चित के लिए, हिलाने की बलि के रूप में भेंट दोष
बलि के लिए एक नर मेमना और अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ डेढ़ किलो
मैदा और एक तिहाई लीटर तेल, 22 दो कबूतर अथवा दो कबूतर के बच्चे; एक
पापबलि के लिए तथा एक होमबलि के लिए, इनमें से वह जो कुछ भी देने में
समर्थ हो, ले लें. 23 “आठवें दिन अपने शुद्ध होने के लिए वह इन्हें मिलनवाले
तंबू के द्वार पर याहवेह के सामने पुरोहित के पास लेकर आए. 24 पुरोहित दोष
बलि के इस मेमने और एक तिहाई लीटर तेल को ले और याहवेह के सामने
लहराने की बलि के रूप में भेंट करे. 25 फिर पुरोहित दोष बलि के इस मेमने
का वध करे; पुरोहित इस दोष बलि के लहू में से कुछ लहू को लेकर उस व्यक्ति
के दाएं कान के सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे और दाएं पांव के अंगूठे पर लगा
दे, जिसको शुद्ध किया जाना है. 26 पुरोहित अपनी बायीं हथेली में कुछ तेल
उण्डेले; 27 और अपनी दाएं हाथ की उंगली से अपनी बायीं हथेली में रखे तेल
में से कुछ तेल को सात बार याहवेह के सामने छिड़के. 28 अब पुरोहित जो तेल
उसकी हथेली में बचा रह गया है, उससे कुछ तेल जिस व्यक्ति को शुद्ध किया
जा रहा है उसके दाएं कान के सिरे पर लगाएगा, कुछ तेल व्यक्ति के दाएं हाथ
के अंगूठे और उसके दाएं पैर के अंगूठे पर लगाएगा. दोष बलि के खून लगे
स्थान पर ही पुरोहित तेल लगाएगा. 29 पुरोहित की हथेली में रखे बचे हुए तेल
को पुरोहित उस व्यक्ति के सिर पर लगा दे, जिसको शुद्ध किया जा रहा है कि
पुरोहित उस व्यक्ति की ओर से याहवेह के सामने प्रायश्चित करे. 30 इसके बाद
पुरोहित एक कबूतर अथवा एक युवा कबूतर, जो भी वह व्यक्ति देने में समर्थ
हो, भेंट करे; 31 अन्नबलि के साथ, पापबलि के लिए एक तथा होमबलि के
लिए एक. फिर पुरोहित उस व्यक्ति की ओर से याहवेह के सामने प्रायश्चित करे,
जिसको शुद्ध किया जाना है. 32 “यह उस व्यक्ति के लिए एक विधि है, जिसमें
कोढ़ रोग का संक्रमण है और जिसके अपने शुद्ध होने की आवश्यकताओं के
लिए साधन सीमित हैं.” 33 फिर याहवेह ने मोशेह और अहरोन को यह आदेश
दिया 34 “जब तुम कनान देश में प्रवेश करो, जिसका अधिकारी मैंने तुम्हें
बनाया है, तुम्हारे आधिपत्य देश के एक आवास में कोढ़ रोग की फफूंदी मैं लगा
दूंगा, 35 तब वह गृहस्वामी पुरोहित के पास आकर यह सूचना देगा, ‘मुझे अपने
घर में कोढ़ रोग के समान एक चिन्ह दिखाई दिया है.’ 36 इससे पहले कि
पुरोहित उस घर में जाकर उस चिन्ह की जांच करे, वह यह आदेश दे कि वे
उस घर को खाली कर दें, ऐसा न हो कि उस आवास में मौजूद सारी वस्तुएं
अशुद्ध हो जाएं. उसके बाद पुरोहित उस आवास में प्रवेश कर उसकी जांच करे.
37 वह उस चिन्ह की जांच करे और यदि घर की दीवारों पर यह चिन्ह हरी
अथवा लाल सतह से नीचे दबी हुई प्रतीत हो, 38 तो पुरोहित उस घर से बाहर
निकलकर प्रवेश द्वार पर आकर उस घर को सात दिन के लिए उसे बंद कर दे.
39 सातवें दिन पुरोहित उसको दोबारा जांचे. यदि वास्तव में वह चिन्ह घर की
दीवारों में फैल गया है, 40 तो पुरोहित उन्हें यह आदेश दे कि वे उन चिन्हयुक्त
पत्थरों को निकालकर नगर से बाहर कूड़े के ढेर पर फेंक दें. 41 इसके बाद
पुरोहित उस संपूर्ण घर को भीतर से खुरचवा दे और वे उस खुरचन को नगर के
बाहर अशुद्ध स्थान पर फेंक दें. 42 फिर वे दूसरे पत्थर लेकर उन्हें निकाले गए
पत्थरों के स्थान पर लगा दें और गारा लेकर उस आवास की पुनः लीपाई-पोताई
कर दें. 43 “किंतु यदि उसके द्वारा पत्थरों को निकालवाए जाने, घर को खुरचे
जाने तथा पुनः पलस्तर लीपे पोते जाने के बाद उस घर में वह फफूंदी फूट पड़ती
है, 44 तो पुरोहित उसमें प्रवेश कर उसकी जांच करे. यदि उसे यह प्रतीत होता है
कि वास्तव में वह चिन्ह आवास में फैल गया है, तो यह उस आवास में एक
असाध्य रोग है; यह अशुद्ध है. 45 इसलिये उस आवास को ढाह दिया जाए, वह
उसके पत्थर, लकड़ी और संपूर्ण पलस्तर को नगर के बाहर अशुद्ध स्थान पर ले
जाए. 46 “इसके अतिरिक्त, यदि कोई व्यक्ति उस समय में उस घर में प्रवेश
कर ले, जिसे पुरोहित ने बंद कर दिया था, तो वह व्यक्ति शाम तक अशुद्ध रहेगा.
47 इसी प्रकार जो कोई व्यक्ति उस घर में विश्राम करता है, या भोजन कर लेता
है, वह भी अपने वस्त्रों को शुद्ध करे. 48 “यदि इसके विपरीत, पुरोहित उस
आवास में प्रवेश कर निरीक्षण करे, और यह पाए कि उस घर की पुनः पलस्तर
करने के बाद वह फफूंदी वास्तव में नहीं फैली है, तो पुरोहित उस आवास को
शुद्ध घोषित कर दे, क्योंकि यह रोग उसमें पुनः प्रकट नहीं हुआ है. 49 तब
पुरोहित उस आवास को शुद्ध करने के लिए दो पक्षी, देवदार की लकड़ी, जूफ़ा
और लाल डोरी लेकर, 50 एक पक्षी को बहते हुए जल पर मिट्टी के एक पात्र में
बलि करे. 51 इसके बाद वह उस जीवित पक्षी के साथ देवदार की लकड़ी,
जूफ़ा और लाल डोरी को उस बलि किए हुए पक्षी के रक्त तथा बहते हुए जल में
डुबाकर उस घर पर सात बार छिड़के. 52 इस प्रकार वह उस घर का शुद्धीकरण
उस पक्षी के लहू तथा बहते हुए जल के साथ साथ देवदार की लकड़ी, जूफ़ा
तथा लाल डोरी के साथ करे. 53 फिर वह उस जीवित पक्षी को नगर के बाहर
खुले मैदान में छोड़ दे. इस प्रकार वह उस घर के लिए प्रायश्चित पूरा करे और
वह आवास शुद्ध हो जाएगा.” 54 किसी भी प्रकार के कोढ़ के रोग के लिए यही
विधि है; सेहुंआ के लिए, 55 कोढ़ से संक्रमित वस्त्र अथवा घर के लिए, 56
सूजन के लिए, पपड़ी के लिए अथवा किसी भी प्रकार के चमकदार धब्बे के
लिए; 57 उन पर यह प्रकट हो जाए कि क्या अशुद्ध है अथवा क्या शुद्ध. कोढ़
रोग के लिए यही विधि है.

15 याहवेह ने मोशेह और अहरोन को ये आदेश दिए: 2 “इस्राएल वंशजों
को यह आदेश दो, ‘यदि किसी व्यक्ति की देह से कोई स्राव हो रहा हो,
वह स्राव अशुद्ध है. 3 यह उसकी अशुद्धता ही मानी जाएगी, चाहे उसकी देह से
स्राव हो रहा हो, अथवा स्राव रुक गया हो. 4 “‘स्रावग्रस्त व्यक्ति जिस बिछौने
पर विश्राम करता है, वह बिछौना अशुद्ध हो जाता है, और हर एक वस्तु जिस पर
वह बैठ जाता है, वह भी अशुद्ध हो जाती है. 5 इसके अलावा यदि कोई व्यक्ति
उसके बिछौने को छू लेता है, तो वह व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोकर स्नान करे
और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 6 यदि कोई व्यक्ति उस वस्तु पर बैठ जाता है
जिस पर वह स्रावग्रस्त व्यक्ति बैठता रहा है, तो वह अपने वस्त्रों को धोकर स्नान
करे तथा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 7 “‘और यदि कोई व्यक्ति उस स्रावग्रस्त
व्यक्ति को छू लेता है, तो वह व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोकर स्नान करे, तथा वह
शाम तक अशुद्ध रहे. 8 “‘अथवा वह स्रावग्रस्त व्यक्ति किसी शुद्ध व्यक्ति पर
थूक देता है, तो वह शुद्ध व्यक्ति भी अपने वस्त्रों को धोकर स्नान करे तथा वह
शाम तक अशुद्ध रहे. 9 “‘हर एक काठी, जिस पर वह सवारी करता है, वह
काठी अशुद्ध हो जाती है. 10 यदि कोई व्यक्ति उन वस्तुओं में से किसी को भी
छू लेता है, जो स्रावग्रस्त व्यक्ति के नीचे रही हैं, तो वह शाम तक अशुद्ध रहेगा
और जो कोई व्यक्ति उनका वहन करता है, तो वह अपने वस्त्रों को धो डाले,
स्नान करे तथा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 11 “‘इसी प्रकार स्रावग्रस्त व्यक्ति
अपने हाथों को बिना धोए यदि किसी व्यक्ति को छू लेता है, तो वह व्यक्ति

अपने वस्त्रों को धोकर स्नान करे तथा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 12 “‘यदि
स्रावग्रस्त व्यक्ति किसी मिट्टी के पात्र को छू लेता है, तो उस पात्र को तोड़ डाला
जाए, किंतु यदि पात्र लकड़ी का है, तो उसे जल में धोया जाए. 13 “‘जब
स्रावग्रस्त व्यक्ति अपने स्राव से शुद्ध हो गए है, तो वह अपने शुद्ध होने के लिए
सात दिनों की गिनती कर ले; तब वह अपने वस्त्रों को धो डाले और बहते हुए
जल में स्नान करे, तब वह शुद्ध हो जाएगा. 14 आठवें दिन वह अपने लिए दो
कपोत अथवा कबूतर के दो बच्चे लेकर मिलनवाले तंबू के द्वार पर याहवेह के
सामने आए और इन्हें पुरोहित को दे दे; 15 पुरोहित इनमें से एक को पापबलि के
लिए तथा दूसरे को होमबलि के लिए भेंट करे. इस प्रकार पुरोहित उसके लिए
उसके स्राव के कारण याहवेह के सामने प्रायश्चित पूरा करे. 16 “‘यदि किसी
व्यक्ति का वीर्य-उत्सर्जन हो गया है, तो वह स्नान के द्वारा सारे शरीर को धो
डाले और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 17 जहां तक वस्त्र अथवा चर्मवस्त्र का
संबंध है, जिस पर वीर्य गिरा हुआ हो, उस वस्त्र को जल से धो डाला जाए तथा
वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 18 यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से संभोग करे और इस
प्रक्रिया में उसका वीर्य-उत्सर्जन हुआ हो, तो वे दोनों स्नान करें-वे शाम तक
अशुद्ध रहेंगे. 19 “‘जब किसी स्त्री से स्राव हो रहा हो, और यदि वह स्राव रक्त है,
तो वह स्त्री अपनी ऋतुस्राव-अशुद्धता की अवधि में सात दिन के लिए होगी, और
जो कोई उस स्त्री को छुए, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 20 “‘हर एक वह वस्तु
अशुद्ध होगी जिस पर वह अपने ऋतुस्राव-अशुद्धता की अवधि में लेटती है, तथा
वह वस्तु भी जिस पर वह बैठती है. 21 जो कोई भी उसके बिछौने को छू लेता
है, वह अपने वस्त्रों को धोकर स्नान करे, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 22 जो
कोई उस वस्तु को छू लेता है जिस पर वह बैठती है, तो वह अपने वस्त्रों को धो
डाले तथा स्नान करे, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 23 चाहे यह उसका बिछौना
अथवा कोई भी वस्तु है जिस पर वह बैठती है, यदि कोई उसको छू लेता है, तो
वह शाम तक अशुद्ध रहेगा. 24 “‘यदि कोई पुरुष उसके साथ वास्तव में संभोग
कर लेता है, और इस प्रकार उस स्त्री की ऋतुस्राव की अशुद्धता उस पुरुष पर आ
जाती है, तो वह सात दिनों के लिए अशुद्ध होगा, और हर एक बिछौना जिस पर
वह लेटता है, अशुद्ध हो जाएगा. 25 “‘यदि किसी स्त्री को रक्त का स्राव उसके
ऋतुस्राव-अशुद्धता की अवधि में ही नहीं बल्कि उसके अलावा भी अनेक दिनों
तक होता रहे, तो वह ऋतुस्राव की अशुद्धता की अवधि के समान अपने इस
अशुद्ध स्राव में भी अशुद्ध रहेगी. 26 कोई भी वह बिछौना जिस पर वह अपने
स्राव के पूरे दिनों में लेटती है, वह उसके ऋतुस्राव के अशुद्ध बिछौने के समान
होगा और हर एक वह वस्तु जिस पर वह बैठती है, वह उसके ऋतुस्राव के
समान अशुद्ध होगी. 27 उसी प्रकार जो कोई उसको छू लेता है, वह अशुद्ध होगा
और वह अपने वस्त्रों को धो डाले तथा स्नान करे, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा.
28 “‘जब वह स्त्री अपने स्राव से शुद्ध हो जाती है, तो वह अपने शुद्ध होने के लिए
सात दिनों की गिनती कर ले, उसके बाद वह शुद्ध होगी. 29 आठवें दिन वह
अपने लिए दो कपोत अथवा दो कबूतर के बच्चे लेकर उन्हें मिलनवाले तंबू के
द्वार पर पुरोहित के सामने लाए. 30 पुरोहित उनमें से एक को पापबलि तथा दूसरे
को होमबलि के लिए भेंट करे. इस प्रकार उसके स्राव के कारण पुरोहित उसके
लिए याहवेह के सामने प्रायश्चित करे.’ 31 “‘इस प्रकार तुम इस्राएल वंशजों
को उनकी अशुद्धता से अलग रखोगे, ऐसा न हो कि वे मेरे मिलनवाले तंबू को,
जो उनके बीच में है, अशुद्ध करें और उनकी अशुद्धता के कारण उनकी मृत्यु हो
जाए.’ ” 32 यह विधि उस व्यक्ति के लिए है, जिसका स्राव हो रहा है और जिस
व्यक्ति का वीर्य-उत्सर्जन हो गया है; जिससे वह अशुद्ध हो जाता है, 33 और उस
स्त्री के लिए भी, जो अपनी ऋतुस्राव-अशुद्धता के कारण अस्वस्थ है. हां, उसके
लिए, जिससे स्राव हो रहा हो, चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री; अथवा उस पुरुष के
लिए भी, जो उस स्त्री से संभोग कर लेता है, जो अशुद्धता की स्थिति में है.

16 जब अहरोन के दोनों पुत्रों की मृत्यु के बाद, उनके याहवेह की उपस्थिति
में प्रवेश के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी, तब मोशेह को याहवेह का यह
संदेश प्राप्त हुआ. 2 याहवेह ने मोशेह से कहा, “अपने भाई अहरोन को चेता दो
कि वह पर्दे के भीतर परम पवित्र स्थान में संदूक के ऊपर के करुणासन के
सामने कभी भी अपनी इच्छा से प्रवेश न करे; नहीं तो उसकी मृत्यु हो जाएगी;
क्योंकि मैं करुणासन पर बादलों में प्रकट हुआ करूंगा. 3 “इन निर्देशों का पूरी
तरह से पालन करने के बाद ही अहरोन परम पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा:
पापबलि के लिए एक बछड़ा और होमबलि के लिए एक मेढ़ा लाना है. 4 वह
मलमल का पवित्र अंगरखा पहने, अपनी देह पर मलमल की जांघिया पहने,
मलमल का कमरबंध कसे और मलमल की पगड़ी बांधे. ये पवित्र वस्त्र हैं.
पुरोहित इन्हें पूर्ण स्नान के बाद ही पहने. 5 वह इस्राएली सभा से पापबलि के
लिए दो बकरे और होमबलि के लिए एक मेढ़ा ले. 6 “इसके बाद अहरोन उस
बछड़े को पापबलि के लिए भेंट करे, जो उसके स्वयं के लिए तय की गई है कि
इसके द्वारा वह स्वयं के लिए तथा अपने परिवार के लिए प्रायश्चित पूरा करे. 7
इसके बाद वह दो बकरे ले, और उन्हें मिलनवाले तंबू के प्रवेश पर याहवेह के
सामने प्रस्तुत करे. 8 अहरोन उन दोनों बकरों के लिए पासे फेंके, एक पासा तो
याहवेह के लिए तथा दूसरा अज़ाज़ेल बकरे के लिए. 9 फिर अहरोन उस बकरे
को, जिस पर याहवेह के लिए पासा पड़ा था पापबलि के रूप में भेंट कर दे. 10
किंतु वह बकरा, जिस पर अज़ाज़ेल बकरे के लिए पासा पड़ा, वह याहवेह के
सामने जीवित लाया जाए कि उस पर प्रायश्चित पूरा करके उसे निर्जन प्रदेश में
अज़ाज़ेल के लिए छोड़ दिया जाए. 11 “फिर अहरोन पापबलि के बछड़े को,
जो स्वयं उसके लिए तय है, भेंट करे और वह स्वयं के लिए एवं अपने परिवार
के लिए प्रायश्चित पूरा करे. वह पापबलि के इस बछड़े का वध करे, जो स्वयं
उसके लिए तय है. 12 वह याहवेह के सामने वेदी पर से कोयलों से भरा हुआ
धूपदान और दो मुट्ठी भर बहुत ही महीन पीसा हुआ सुगंधधूप पर्दे के अंदर लेकर
आए. 13 वह इस धूप को याहवेह के सामने आग पर डाल दे कि धुएं का बादल
करुणासन को ढांक ले, जो साक्षी पट्टिया की संदूक पर है, नहीं तो उसकी मृत्यु
हो जाएगी. 14 इसके अलावा वह इस बैल का लहू लेकर उसे पूर्व दिशा की ओर
करुणासन के सामने अपनी उंगली से छिड़क दे; हां, करुणासन के समक्ष इसके
कुछ रक्त को अपनी उंगली से सात बार छिड़क दे. 15 “फिर अहरोन पापबलि
के उस बकरे की बलि करे, जो प्रजा के लिए है और इसके लहू को पर्दे के
भीतर लाकर इसके साथ वैसा ही करे, जैसा उसने बछड़े के लहू के साथ किया
था; इसे करुणासन के सामने लाकर करुणासन पर छिड़क दे. 16 वह परम पवित्र
स्थान के लिए इस्राएल वंशजों की अशुद्धता तथा उनके सारे पापों के संबंध में
किए गए अपराध के लिए प्रायश्चित पूरा करे, और इसी प्रकार वह मिलनवाले
तंबू के लिए भी करे, जो उनकी अशुद्धताओं के बीच उनके साथ रहता है.
17 जब वह प्रायश्चित पूरा करने के लिए परम पवित्र स्थान में जाता है, तब
तक मिलनवाले तंबू में कोई भी व्यक्ति न रहने पाए, जब तक वह बाहर न आ
जाए कि वह अपने लिए, अपने परिवार तथा इस्राएल की सारी सभा के लिए
प्रायश्चित पूरा कर सके. 18 “फिर वह बाहर उस वेदी के पास जाए, जो याहवेह
के सामने है, और इसके लिए प्रायश्चित पूरा करे. वह बछड़े का कुछ लहू और
बकरे का कुछ लहू लेकर इसे वेदी के सभी सींगों पर लगा दे, 19 तथा अपनी
उंगली से इस पर सात बार लहू को छिड़क कर इसको पवित्र करे, और इस
प्रकार वह इस्राएल वंशजों की अशुद्धियों की स्थिति में से इसे पवित्र करे. 20
“वह परम पवित्र स्थान, मिलनवाले तंबू तथा वेदी के लिए प्रायश्चित पूरा करने
के बाद, एक जीवित बकरे को भेंट करे. 21 अहरोन उस जीवित बकरे के सिर
पर अपने दोनों हाथ रखकर इस्राएल वंशजों के सारे अधर्म के कामों और उनके
सारे अपराधों, और पापों को स्वीकार करे और इन्हें इस बकरे के सिर पर

लादकर इसे इस कार्य के लिए नियुक्त व्यक्ति के द्वारा निर्जन प्रदेश में छोड़ दे.
22 यह बकरा बीहड़ जगह में उनके सारे अधर्म के कामों को उठा लेगा; वह
व्यक्ति उस बकरे को निर्जन प्रदेश में छोड़कर आए. 23 “इसके बाद अहरोन
मिलनवाले तंबू में आकर उन मलमल के कपड़ों को उतार दे, जो उसने परम
पवित्र स्थान में प्रवेश करने के पहले पहने थे, वह उन वस्त्रों को वहीं छोड़ दे.
24 वह पवित्र स्थान में ही स्नान कर अपने वस्त्र पहन ले और पवित्र स्थान से
बाहर आकर अपने लिए तय होमबलि और प्रजा के लिए तय होमबलि चढ़ाकर
स्वयं के लिए तथा प्रजा के लिए प्रायश्चित पूरा करे. 25 फिर वह पापबलि की
चर्बी को वेदी पर आग में जलाकर भेंट कर दे. 26 “वह व्यक्ति, जो अज़ाज़ेल
को छोड़कर आया था, अपने वस्त्रों को धो डाले, स्नान करे; इसके बाद वह
छावनी में प्रवेश करे. 27 ज़रूरी है कि पापबलि के बैल को तथा पापबलि के
बकरे को, जिनका लहू परम पवित्र स्थान में प्रायश्चित पूरा करने के लिए लाया
गया था, छावनी से बाहर ले जाए. वे उनकी खाल, उनके मांस और उनके गोबर
को आग में जला दें. 28 वह व्यक्ति, जो उनको जलाता है, अपने वस्त्रों को धो
डाले, स्नान करे; इसके बाद ही छावनी में प्रवेश करे. 29 “तुम्हारे लिए सदा की
विधि यह होगी: सातवें महीने में, उस महीने के दसवें दिन अपने-अपने जीव को
दुःख देने के अंतर्गत तुम—स्वदेशी अथवा विदेशी जो तुम्हारे बीच में रहते
हैं—कोई भी कार्य न करना; 30 क्योंकि यही वह दिन है, जिस दिन तुम्हारे शुद्ध
करने के लिए प्रायश्चित पूरा किया जाएगा, और तुम याहवेह के सामने अपने
सारे पापों से शुद्ध हो जाओगे. 31 यह तुम्हारे लिए एक विशेष विश्राम शब्बाथ
होगा कि तुम अपने-अपने जीव को दुःख दो; यह एक सदा की विधि है. 32
मलमल के पवित्र वस्त्र पहनकर प्रायश्चित प्रक्रिया वह पुरोहित पूरा करेगा, जिसे
उसके पिता के स्थान पर पुरोहित सेवा के लिए संस्कृत तथा अभिषिक्त किया
गया है. 33 वह परम पवित्र स्थान के लिए, मिलनवाले तंबू के लिए और वेदी के
लिए प्रायश्चित पूरा करेगा. वही पुरोहित, सभी पुरोहितों और सभा की सारी प्रजा
के लिए भी प्रायश्चित पूरा करेगा. 34 “यह तुम्हारे लिए सदा की विधि होगी कि
इस्राएली प्रजा के लिए उसके सभी पापों के कारण वर्ष में एक बार प्रायश्चित पूरा
किया जाए.” मोशेह ने ठीक वैसा ही किया, जैसा याहवेह ने आदेश दिया था.

17 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी: 2 “अहरोन, उसके पुत्रों तथा
इस्राएल वंशजों को यह संदेश दो, ‘यह वह आदेश है, जो याहवेह के
द्वारा निकाला गया है: 3 इस्राएल वंशजों में से कोई भी पुरुष, जो किसी बछड़े,
मेमने अथवा किसी बकरे का वध छावनी के भीतर अथवा छावनी के बाहर
करे, 4 और वह इसे मिलनवाले तंबू के द्वार पर याहवेह के तंबू के सामने याहवेह
के लिए बलि के रूप में भेंट करने के लिए न लाए, तो उस व्यक्ति को हत्या का
आरोपी माना जाएगा. उस व्यक्ति ने लहू बहाया है और उस व्यक्ति को प्रजा से
बाहर निकाल दिया जाए. 5 ऐसा करने का कारण यह है कि इस्राएल वंशज
उनकी वे बलियां, जिनका बलिदान वे खुले मैदान में कर रहे थे, इन बलियों
को पुरोहित के पास मिलनवाले तंबू के द्वार पर याहवेह के सामने लाकर उन्हें
याहवेह को मेल बलि के रूप में भेंट करें. 6 पुरोहित लहू को मिलनवाले तंबू के
द्वार पर स्थित याहवेह की वेदी पर छिड़क दे और चर्बी को सुखद-सुगंध के रूप
में आग में जलाकर याहवेह को भेंट कर दे. 7 अब इसके बाद वे अपना बलि
बकरा-देवता को भेंट न किया करें, जिनका यह काम व्यभिचार के समान था.
यह उनके लिए तथा उनकी सारी पीढ़ियों के लिए सदा की एक विधि होगी.’ 8
“तुम उन्हें यह संदेश देना, ‘इस्राएल वंशजों में से, अथवा विदेशियों में से यदि
कोई व्यक्ति, जो उनके बीच में रहते हैं, बलि अथवा होमबलि भेंट करें, 9 और
उसे मिलनवाले तंबू के द्वार पर याहवेह के लिए भेंट करने के लिए न लाए, तो
उस व्यक्ति को भी प्रजा से बाहर निकाल दिया जाए. 10 “‘इस्राएल वंशजों में
से अथवा विदेशियों में से कोई व्यक्ति, जो उनके बीच में रहता है, तथा लहू को
खाता हो, मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध हो जाऊंगा, जिसने लहू को खाया है, तथा उसे
प्रजा से बाहर कर दूंगा, 11 क्योंकि देह का जीवन लहू में रहता है और मैंने तुम्हें
यह इसलिये दिया है कि, तुम इसके द्वारा वेदी पर प्रायश्चित पूरा कर सको.’ 12
अतःएव, मैंने इस्राएल वंशजों को यह आदेश दिया, ‘न तुममें से कोई, और न ही
कोई विदेशी, जो तुम्हारे बीच में रहता है, लहू को खाए.’ 13 “इस्राएल वंशजों
में से अथवा विदेशियों में से किसी व्यक्ति के हाथ में, जो उनके बीच में रहते हैं,
यदि शिकार में कोई खाने योग्य पक्षी अथवा खाने योग्य पशु आ जाए, तो वह
उसके लहू को बह जाने दे, तथा इस लहू को धूलि से ढांक दे. 14 क्योंकि सभी
प्राणियों की देह का जीवन लहू में रहता है. इसलिए मैंने इस्राएल वंशजों को यह
आदेश दिया है, ‘यह ज़रूरी है कि तुम किसी भी देह के लहू को न खाया करो,
क्योंकि देह का जीवन लहू में ही रहता है; उसे, जो इसको खाएगा, वह बाहर
कर दिया जाएगा.’ 15 “‘यदि कोई व्यक्ति, स्वदेशी अथवा विदेशी, उस पशु
को खा ले, जिसे वन्य पशुओं द्वारा फाड़ डाला गया हो, तो वह अपने वस्त्रों को
धोकर, स्नान करे, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा; इसके बाद वह शुद्ध हो जाएगा.
16 किंतु यदि वह उनको न ही धोता और न ही स्नान करता है, तो वह अपने दोष
का भार स्वयं उठाएगा.’”

18 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया, 2 “इस्राएल वंशजों को यह
संदेश दो, ‘मैं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं. 3 तुम मिस्र देश के कार्यों के
अनुसार व्यवहार नहीं करोगे, जहां तुम रहा करते थे, और न ही कनान देश के
कार्यों का, जहां मैं तुम्हें लिए जा रहा हूं; तुम उनकी विधियों का पालन नहीं
करोगे. 4 तुम मेरे नियमों का पालन करना, और मेरी विधियों का पालन करते
हुए उनका अनुसरण करना. मैं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं. 5 तुम मेरे नियमों
और विधियों का पालन करोगे; जो इनका अनुसरण करेगा, वह इनके कारण
जीवित रहेगा; मैं ही वह याहवेह हूं. 6 “‘तुममें से कोई भी अपने कुटुंबी से
संभोग न करे; मैं ही वह याहवेह हूं. 7 “‘अपनी माता से संभोग करके तुम
अपने पिता का अपमान न करना. वह तुम्हारी जन्म देनेवाली माता है; तुम उससे
संभोग न करना. 8 “‘तुम अपने पिता की पत्नी से संभोग न करना; यह तुम्हारे
पिता का अपमान होगा. 9 “‘तुम अपनी बहन से संभोग न करना, चाहे वह
तुम्हारे पिता से पैदा हुई हो अथवा तुम्हारी माता से पैदा हुई हो, चाहे उसका
पालन पोषण तुम्हारे साथ हुआ हो अथवा किसी अन्य परिवार में; तुम उनसे
संभोग न करना. 10 “‘अपनी पोती अथवा अपनी नातिन से संभोग न करना,
तुम उनसे संभोग न करना क्योंकि यह तुम्हारा स्वयं का ही अपमान होगा. 11
“‘तुम अपनी सौतेली माता की कन्या से संभोग न करना, तुम्हारे पिता से जन्मी
कन्या से, वह तुम्हारी सौतेली बहन है, तुम उससे संभोग न करना. 12 “‘तुम
अपने पिता की बहन से संभोग न करना; वह तुम्हारे पिता की कुटुंबी है. 13
“‘तुम अपनी मौसी से संभोग न करना क्योंकि वह तुम्हारी माता की कुटुंबी है.
14 “‘तुम अपने पिता के भाई का अपमान उसकी पत्नी से संभोग करने के द्वारा न
करना, न इसका प्रयास ही करना, वह तुम्हारी चाची है. 15 “‘तुम अपनी बहू
से संभोग न करना; वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है, तुम उससे संभोग न करना. 16
“‘तुम अपने भाई की पत्नी से संभोग न करना; यह तुम्हारे भाई का अपमान
होगा. 17 “‘तुम किसी महिला और उसकी पुत्री से भी संभोग न करना और न
ही उसके पुत्र की कन्या से और न ही उसकी पुत्री की कन्या से संभोग करना; वे
कुटुंबी हैं. यह व्यभिचार है. 18 “‘तुम अपनी पत्नी की बहन से विवाह न करना,
जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, तुम उससे संभोग न करना. 19 “‘तुम किसी
महिला के मासिक स्राव की अशुद्धता के काल में संभोग के उद्देश्य से न जाना.
20 “‘तुम अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ संभोग करके उसके साथ स्वयं को
भ्रष्ट न करना. 21 “‘तुम अपनी संतानों में से किसी को भी मोलेख को भेंट न
करना और न ही अपने परमेश्वर के नाम को कलंकित करना; मैं ही वह याहवेह

हूं. 22 "'तुम स्त्री से संभोग करने के समान किसी पुरुष से संभोग न करना; यह
एक घृणित कार्य है. 23 "'तुम किसी पशु से भी संभोग करके स्वयं को भ्रष्ट न
करना और न ही कोई स्त्री संभोग के उद्देश्य से किसी पशु के सम्मुख जाए; यह
अनर्थ है. 24 "'इन कार्यों में से किसी भी कार्य को करने के द्वारा तुम स्वयं को
भ्रष्ट न करना; क्योंकि इन्हीं कार्यों के कारण सभी जनता ने, जिन्हें मैं तुम्हारे
सामने से खदेड़ने पर हूं, स्वयं को भ्रष्ट कर लिया है. 25 क्योंकि देश भ्रष्ट
हो गया है, इसलिये मैं इसकी दण्डाज्ञा इस पर ले आया और देश ने इसके
निवासियों को निकाल फेंका. 26 किंतु तुम मेरी विधियों और नियमों का पालन
करना और ये घृणित कार्य न करना, न तो स्वदेशी और न ही तुम्हारे बीच रह रहे
विदेशी, जो तुम्हारे बीच में रहते हैं; 27 क्योंकि तुम्हारे सामने इस देश के
निवासियों ने ये समस्त घृणित कार्य किए हैं, और देश भ्रष्ट हो गया है; 28 ऐसा
न हो कि तुम इसे भ्रष्ट कर दो और यह तुम्हें निकाल फेंके, जिस प्रकार इसने
उस जनता को निकाल फेंका था, जो तुम्हारे सामने था. 29 "'यदि कोई इन
घृणित कार्यों में से कोई भी कार्य करता है, तो उन्हें जो ऐसा करते हैं, प्रजा से
बाहर कर दिया जाए. 30 तब तुम मेरे आदेश का पालन करो कि तुम किसी भी
घिनौनी रीति का पालन न करो, जिनका पालन तुम्हारे सामने होता रहा था, कि
तुम उनसे स्वयं को अशुद्ध न कर बैठो; मैं ही वह याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं.'"

19 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश दिया, 2 "इस्राएल वंशजों की पूरी सभा
को यह आदेश दो, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर
पवित्र हूं. 3 "'तुममें से हर एक अपने माता-पिता का सम्मान करे और मेरे
शब्बाथों का पालन करे; मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं. 4 "'मूरतों की ओर
न फिरना, और न स्वयं के लिए धातु के देवता गढ़ना; मैं याहवेह ही तुम्हारा
परमेश्वर हूं. 5 "'जब तुम याहवेह को मेल बलि भेंट करो, तो इसे इस रीति से
भेंट करो कि वह स्वीकार किए जाओ. 6 जिस दिन तुम इसे भेंट करो, उसी दिन
तथा उसके अगले दिन इसको खाया जाए, किंतु जो तीसरे दिन तक बचा हुआ
है, उसको आग में जला दिया जाए. 7 पर तीसरे दिन तक बचा हुआ मांस को
खाया जाना स्वीकार नही किया जाएगा, क्योंकि यह अशुद्ध है. 8 ऐसा हर एक
व्यक्ति, जो इसको खाता है, वह अपने अधर्म का भार स्वयं उठाएगा, क्योंकि
उसने याहवेह की पवित्र वस्तु को अशुद्ध किया है, तब उस व्यक्ति को प्रजा से
बाहर निकाल दिया जाए. 9 "'जब तुम अपने देश में पहुंचने के बाद, उपज
इकट्ठा करोगे, तो तुम अपने खेतों के कोने-कोने तक की उपज इकट्ठा न कर
लेना, न ही उपज की सिल्ला. 10 न ही अपनी अंगूर की बारी से सारे अंगूर
इकट्ठा कर लेना, और न ही अपनी अंगूर की बारी के नीचे गिरे हुए फलों को
इकट्ठा करना; तुम उन्हें दरिद्रों तथा विदेशियों के लिए छोड़ देना. मैं याहवेह ही
तुम्हारा परमेश्वर हूं. 11 "'तुम चोरी न करना. "'न ही धोखा देना. "'न एक
दूसरे से झूठ बोलना. 12 "'तुम मेरे नाम की झूठी शपथ न लेना और इस प्रकार
अपने परमेश्वर का नाम अशुद्ध न करना; मैं ही याहवेह हूं. 13 "'तुम अपने
पड़ोसी को न लूटना. "'न ही उसकी किसी वस्तु को ज़बरदस्ती छीनना. भाड़े
पर लाए गए किसी मज़दूर की मजदूरी तुम्हारे पास रात से सुबह तक रखी न रह
जाए. 14 "'तुम किसी बहिरे को शाप न देना, न ही अंधे के सामने ठोकर का
पत्थर रखना, परंतु अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना; मैं ही याहवेह हूं.
15 "'तुम निर्णय देने में अन्याय न करना; तुम दरिद्र के प्रति भेद-भाव न करना,
न ही ऊंचे लोगों का सम्मान तुम्हारे निर्णय को प्रभावित करने पाए, परंतु तुम
अपने पड़ोसी का सही प्रकार से न्याय करना. 16 "'तुम अपने लोगों के बीच
निंदा करते न फिरना. "'यदि तुम्हारे पड़ोसी का जीवन खतरे में हो तो तुम शांत
न बने रहना; मैं ही याहवेह हूं. 17 "'अपने भाई से घृणा न करना; तुम अपने
पड़ोसी को फटकार अवश्य लगाना; ऐसा न हो कि उसके पाप के दोष तुम पर
आ जाए. 18 "'बदला न लेना, और न ही अपने लोगों की संतान से कोई बैर
रखना, परंतु तुम अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करना, जैसा प्रेम तुम्हें स्वयं
से है; मैं ही याहवेह हूं. 19 "'मेरी विधियों का पालन करना. "'तुम अपने
पशुओं में दो भिन्न प्रकार के पशुओं का मेल न कराना; "'तुम अपने खेत में दो
भिन्न प्रकार के बीज न बोना. "'न ही वह वस्त्र पहनना, जिसमें दो प्रकार की
सामग्रियों का मिश्रण किया गया हो. 20 "'यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री से, जो
दासी है और किसी अन्य की मंगेतर है, तथा किसी भी प्रकार से उसका दाम
नहीं चुकाया गया, न ही उसे स्वतंत्र किया गया है, सहवास कर लेता है, तब
उन्हें दंड तो दिया जाएगा किंतु मृत्यु दंड नहीं, क्योंकि वह स्त्री उस समय
दासत्व में थी. 21 वह व्यक्ति मिलनवाले तंबू के द्वार पर दोष बलि के लिए एक
मेढ़ा याहवेह को भेंट करे. 22 फिर पुरोहित दोष बलि के उस मेढ़े के साथ
याहवेह के सामने उस व्यक्ति तथा उसके द्वारा किए गए पाप के लिए प्रायश्चित
पूरा करे, तब उसके द्वारा किया गया पाप क्षमा कर दिया जाएगा. 23 "'जब तुम
उस देश में प्रवेश करके सभी प्रकार के खानेवाले फलों के वृक्षों को उगाओगे,
तो याद रहे कि इन बोए हुए वृक्षों के फल तुम्हारे लिए वर्जित होंगे. पहले तीन
वर्षों के लिए ये फल तुम्हारे लिए वर्जित होंगे; इनको न खाया जाए. 24 किंतु
चौथे वर्ष इसके सारे फल याहवेह की स्तुति में भेंट पवित्र फल होंगे. 25 पांचवें
वर्ष तुम इनको खा सकते हो कि यह तुम्हें बहुत मात्रा में फल दे सके; याहवेह
तुम्हारा परमेश्वर मैं ही हूं. 26 "'तुम किसी भी वस्तु को लहू के साथ न खाना.
"'न ही शकुन विचारना अथवा जादू-टोना करना. 27 "'तुम अपनी कनपटी के
बाल न कतरना और न अपनी दाढ़ी को किनारों से काटना. 28 "'मृतकों के
लिए तुम अपनी देह में कोई चीरा न लगवाना, न ही कोई चिन्ह गुदवाना: मैं ही
याहवेह हूं. 29 "'अपनी पुत्री को वेश्या बनाकर उसे भ्रष्ट न करना, ऐसा न हो
कि देश में वेश्यावृत्ति भर जाए, और यह कामुकता से परिपूर्ण हो जाए. 30
"'तुम मेरे शब्बाथों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान का सम्मान; मैं ही
याहवेह हूं. 31 "'तुम ओझाओं और तांत्रिकों की ओर न फिरना; उनकी खोज
करने के द्वारा तुम स्वयं को दूषित न कर लेना. मैं ही याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं.
32 "'तुम बूढ़े व्यक्ति के सामने खड़े हुआ करो, और बूढ़ों की उपस्थिति का
सम्मान करना, तथा अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं ही याहवेह हूं. 33 "'जब
कोई अपरिचित तुम्हारे बीच तुम्हारे देश में रहता है, तो तुम उसके साथ अन्याय
न करना. 34 जो अपरिचित तुम्हारे बीच में रह रहा है, तुम्हारे लिए वह तुम्हारे
मध्य एक स्वदेशी के समान हो, और तुम उससे वैसा ही प्रेम करना; जैसा तुम
स्वयं से करते हो, क्योंकि मिस्र देश में तुम परदेशी थे; मैं याहवेह ही तुम्हारा
परमेश्वर हूं. 35 "'तुम न्याय करने, नापतोल तथा मात्रा में अन्याय न करना. 36
तुम्हारी तुला, बाट, किलो और लीटर यथार्थ हों; मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर
हूं, जो तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाया हूं. 37 "'फिर तुम मेरी विधियों और
सभी नियमों का पालन करना और उनको मानते रहना; मैं ही याहवेह हूं.'"

20 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 2 "इस्राएल वंशजों को तुम ये
आदेश भी देना: 'इस्राएल वंशजों में से कोई भी व्यक्ति अथवा इस्राएल में
रह रहे परदेशियों में से कोई भी, जो अपनी संतान में से किसी को भी मोलेख
को भेंट करता है, निश्चयतः उसका वध कर दिया जाए; उस देश के निवासी उस
पर पथराव करें. 3 मैं भी उस व्यक्ति से मुंह फेर लूंगा और उसे प्रजा से निकाल
बाहर कर दूंगा, क्योंकि उसने अपनी संतानों में से कुछ को मेरे पवित्र स्थान को
अशुद्ध और मेरे पवित्र नाम को भ्रष्ट करने के लिए मोलेख के लिए भेंट किया है.
4 यदि उस देश के निवासी उस व्यक्ति को अनदेखा कर दें, जिसने अपनी संतान
में से किसी को मोलेख को भेंट किया है, और उसका वध न करें, 5 तो मैं स्वयं
उस व्यक्ति एवं उसके परिवार से मुंह फेर लूंगा और उन्हें प्रजा से निकाल बाहर
कर दूंगा; उस व्यक्ति को और उन सभी लोगों को, जो मोलेख के प्रति श्रद्धा
दिखा करके मेरे साथ विश्वास को तोड़ने में उस व्यक्ति का साथ देते हैं. 6

"'जहां तक उस व्यक्ति का प्रश्न है, जो तांत्रिकों और ओझाओं की ओर फिर गया हो, मेरे साथ विश्वास तोड़ने में उनका साथ देता है, मैं उस व्यक्ति से भी मुंह फेर लूंगा और उसे मेरी प्रजा से अलग कर दूंगा. 7 "'इसलिये तुम स्वयं को शुद्ध करो और पवित्र बनो, क्योंकि मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं. 8 तुम मेरी विधियों का पालन करते हुए उनको मानना; मैं ही वह याहवेह हूं, जो तुम्हें शुद्ध करता हूं. 9 "'यदि कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अपने पिता अथवा अपनी माता को शाप देता है, तो निश्चय ही उसका वध कर दिया जाए; उसने अपने पिता और माता को शाप दिया है; उसके लहू का दोष उसी पर होगा. 10 "'यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की पत्नी से व्यभिचार करता है, तो जिसने अपने मित्र की पत्नी के साथ व्यभिचार किया है, निश्चय ही उस व्यभिचारी और उस व्यभिचारिणी दोनों का वध किये जाए. 11 "'यदि कोई व्यक्ति अपने पिता की पत्नी से सहवास कर लेता है, तो उसने अपने पिता का अपमान किया है; इसलिये अवश्य है कि उन दोनों का वध कर दिया जाए; उन दोनों के लहू का दोष उन्हीं पर होगा. 12 "'यदि कोई व्यक्ति अपनी बहू से सहवास करता है, तो निश्चय ही उन दोनों का वध कर दिया जाए; उन्होंने पारिवारिक व्यभिचार किया है, उनके लहू का दोष उन्हीं पर होगा. 13 "'यदि कोई पुरुष किसी पुरुष के साथ वैसा ही सहवास करता है जैसा किसी स्त्री के साथ, तो उन्होंने एक घृणित काम किया है; निश्चित ही उन दोनों का वध कर दिया जाए. उनके लहू का दोष उन्हीं पर होगा. 14 "'यदि कोई पुरुष किसी स्त्री एवं उसकी माता से विवाह करता है, तो यह महापाप है; उसको एवं उन दोनों स्त्रियों को आग में जला दिया जाए, कि तुम्हारे बीच कोई महापाप न रह जाए. 15 "'यदि कोई व्यक्ति किसी पशु से सहवास करता है, तो निश्चित ही उस व्यक्ति का वध कर दिया जाए, और निश्चित ही उस पशु का भी. 16 "'यदि कोई स्त्री किसी पशु से सहवास करती है, तो तुम उस स्त्री एवं पशु का वध कर देना; निश्चित ही उनका वध कर दिया जाए. उनके लहू का दोष उन्हीं पर होगा. 17 "'यदि कोई अपनी बहन से अर्थात् अपने पिता की पुत्री अथवा अपनी सौतेली माता की पुत्री से विवाह करता है, जिसके कारण वह उस कन्या को बिना वस्त्र के देख लेता है, तथा वह कन्या उसको बिना वस्त्र के देख लेती है, तो यह लज्जा जनक कार्य है, और उन्हें लोगों के बीच में से निकाल दिया जाए. वह व्यक्ति, जिसने अपनी बहन की लज्जा को उघाड़ा है; अपने अधर्म का बोझ स्वयं उठाएगा. 18 "'यदि कोई व्यक्ति किसी ऋतुमती से संभोग कर उसकी लज्जा को उघाड़ता है, उसने उसके ऋतुस्राव के स्रोत को उघाड़ा है और उस स्त्री ने अपने रक्त प्रवाह को उघाड़ा है, उन दोनों को लोगों के बीच में से निकाल दिया जाए. 19 "'तुम अपनी मौसी अथवा अपनी फूफी की लज्जा को न उघाड़ना, क्योंकि ऐसे व्यक्ति ने अपने कुटुंबी को नग्न किया है; वे अपने अधर्म का बोझ स्वयं उठाएंगे. 20 "'यदि कोई व्यक्ति अपनी चाची से संभोग करता है, तो उसने अपने चाचा की लज्जा को उघाड़ा है; वे अपने पाप का बोझ स्वयं उठाएंगे. उनकी मृत्यु निसंतान होगी. 21 "'यदि कोई व्यक्ति अपनी भाभी से विवाह करता है, यह घिनौना काम है, उसने अपने भाई की लज्जा को उघाड़ा है. वे निसंतान ही रह जाएंगे. 22 "'तुम मेरी सभी विधियों और मेरे सभी नियमों का पालन करते हुए उनका अनुसरण करना, कि वह देश तुम्हें निकाल न फेंके, जिसमें मैं तुम्हें बस जाने के लिए ले जा रहा हूं. 23 इसके अलावा तुम उन जनताओं की रीति रस्मों पर मत चलना, जिन्हें मैं तुम्हारे सामने से निकाल दूंगा, क्योंकि उन्होंने ये सब कुकर्म किए, इसलिये मैंने उनसे घृणा की है. 24 अतःएव मैंने तुम्हें आदेश दिया, "तुम्हें उनके देश पर अधिकार कर लेना है, मैं स्वयं इस देश को तुम्हारे अधिकार में कर दूंगा, जहां दूध और शहद की बहुतायत है." मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसने तुम्हें उन लोगों से अलग किया है. 25 "'तुम्हें शुद्ध एवं अशुद्ध पशुओं, शुद्ध एवं अशुद्ध पक्षियों के बीच भेद स्पष्ट रखना होगा; किसी पशु, पक्षी अथवा कोई भी प्राणी, जो भूमि पर रेंगता है, जिसे मैंने उसकी अशुद्धता के कारण तुमसे अलग किया है, उसके कारण तुम स्वयं को अशुद्ध न करना. 26 इस प्रकार ज़रूरी है कि तुम मेरे प्रति पवित्र रहो, क्योंकि मैं ही याहवेह हूं, जो पवित्र हूं; मैंने तुम्हें मेरी प्रजा होने के लिए लोगों से अलग किया है. 27 "'यदि कोई तांत्रिक एवं ओझा है, तो निश्चित ही उसका वध कर दिया जाए. उन पर पथराव किया जाए, उनके लहू का दोष उन्हीं पर है.'"

21 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, "अहरोनवंशी पुरोहितों को यह आज्ञा दो: 'कोई पुरोहित अपने लोगों के बीच किसी मृतक के लिए स्वयं को अशुद्ध न करे, 2 केवल उसके निकटतम संबंधियों के अर्थात् माता, पिता, उसके पुत्र, पुत्री, भाई, 3 तथा उसकी कुंवारी बहन, जो उस पर आश्रित है, क्योंकि अब तक उसके कोई पति हुआ ही नहीं; इनके लिए वह पुरोहित स्वयं को अशुद्ध कर सकता है. 4 घर का मालिक होने के कारण वह स्वयं को अशुद्ध न करे; हां, इस प्रकार वह स्वयं को भ्रष्ट न करे. 5 "'वे अपना सिर न मुंडवाएं, न ही अपनी दाढ़ी के किनारे कतरें, न ही अपनी देह में चीरा लगायें. 6 वे अपने परमेश्वर के प्रति पवित्र रहें और अपने परमेश्वर के नाम को अशुद्ध न करें क्योंकि वे आग के बीच से याहवेह, अपने परमेश्वर का भोजन अर्थात् बलि भेंट कर रहे होते हैं; इसलिये ज़रूरी है कि वे पवित्र रहें. 7 "'वे वेश्यावृत्ति से अशुद्ध स्त्री से विवाह न करे, न ही उस स्त्री से जिसका उसके पति से तलाक हो गया है, क्योंकि पुरोहित उसके परमेश्वर के लिए पवित्र है. 8 तुम उसे पवित्र करना, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर को भोजन भेंट करता है, वह तुम्हारे लिए पवित्र रहे, क्योंकि मैं याहवेह, जो तुम्हें पवित्र करता हूं, पवित्र हूं. 9 "'पुरोहित की कोई पुत्री, यदि स्वयं को वेश्यावृत्ति से अशुद्ध करती है, तो वह अपने पिता को अशुद्ध करती है; उसे आग में जला दिया जाए. 10 "'वह पुरोहित, जो अपने भाइयों में प्रधान है, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल उंडेला गया है, जिसे पुरोहित वस्त्र धारण करने के लिए पवित्र किया गया है, वह पुरोहित अपने सिर को न उघाड़े, न ही अपने वस्त्र फाड़े; 11 न ही वह किसी शव के निकट जाए, न ही स्वयं को अपने पिता और अपनी माता के लिए अशुद्ध करे; 12 वह पवित्र स्थान से बाहर न जाए और न अपने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अपवित्र करे क्योंकि परमेश्वर के अभिषेक का तेल उस पर है; मैं ही याहवेह हूं. 13 "'वह कुंवारी कन्या से ही विवाह करे. 14 वह इनमें किसी से विवाह न करे: एक विधवा अथवा जिसका तलाक हो गया हो, अथवा उस कन्या से जो वेश्यावृत्ति द्वारा अशुद्ध हो गई हो, परंतु वह अपने लोगों में से ही किसी कुंवारी से विवाह करे, 15 कि वह अपने लोगों में अपनी संतानों को अशुद्ध न कर दे; क्योंकि मैं ही याहवेह हूं, जो उसे पवित्र करता हूं.'" 16 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 17 "अहरोन को यह संदेश दो, 'तुम्हारी संतानों में से उनकी पीढ़ियों तक कोई भी व्यक्ति, जिसमें कोई अंग खराब पाया जाता है, वह अपने परमेश्वर को भोजन भेंट करने का प्रयास न करे. 18 हां, इनमें से कोई भी व्यक्ति, यह प्रयास न करे: अंधा, लंगड़ा, चपटी नाक वाला, या अधिक अंग वाला हो, 19 जिसका पांव अथवा बांह की कोई हड्डी टूटी हो, 20 कुबड़ा, बौना, जिसकी आंख में कोई खराबी हो, जो खुजली से पीड़ित हो अथवा उसकी त्वचा पर चकते हों तथा जिसके अंडकोश कुचले हुए हों. 21 अहरोन की संतानों में से कोई व्यक्ति, जिसमें कोई खराबी हो, वह आग में याहवेह को बलि भेंट करने का प्रयास न करे; इसलिये कि उस व्यक्ति में वह खराबी है, वह अपने परमेश्वर के भोजन को भेंट करने का प्रयास न करे. 22 वह परम पवित्र तथा पवित्र स्थान, दोनों ही स्थानों के अपने परमेश्वर के भोजन को खा तो सकता है, 23 किंतु वह पर्दे के भीतर न जाए और न ही वेदी के निकट, क्योंकि उसके अंगों में खराबी है, और इसके द्वारा वह मेरे पवित्र स्थानों को अशुद्ध न कर बैठे. क्योंकि मैं ही

याहवेह हूं, जो उन्हें पवित्र करता हूं.’" 24 इस प्रकार मोशेह ने अहरोन, उनके
पुत्रों और सारे इस्राएल के घराने को ये आज्ञाएं दीं.

22 याहवेह ने मोशेह को ये आदेश दिए, 2 "अहरोन और उसके पुत्रों को
इस्राएल के घराने के उन उपहारों के प्रति, जो उपहार वे मुझे भेंट करते
हैं, सावधान रहने को बता दो; कि इसके द्वारा वे मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न
कर दें; मैं ही याहवेह हूं. 3 "उन्हें यह आज्ञा दो, ‘तुम्हारी सारी पीढ़ियों तक,
यदि तुम्हारे बीच में से कोई भी व्यक्ति जब वह अशुद्ध है, तब उन भेंटों के समीप
आ जाता है, जो इस्राएल के घराने के द्वारा मुझे भेंट किए गए थे, तो उस व्यक्ति
को मेरे सामने से अलग कर दिया जाए; मैं ही वह याहवेह हूं. 4 "‘अहरोन के
घराने में से कोई भी व्यक्ति, जो कोढ़ी है, अथवा जिसे किसी प्रकार का स्राव हो
रहा हो, तब तक मेरी पवित्र भेंटों में से कुछ न खाए, जब तक वह शुद्ध न हो
जाए. और यदि कोई व्यक्ति उस वस्तु को छू लेता है, जो किसी शव को छूने के
द्वारा अशुद्ध हो गई है, अथवा यदि किसी व्यक्ति का वीर्य स्खलन हुआ है, 5
अथवा यदि कोई व्यक्ति किसी अशुद्ध वस्तु को छू लेता है और उसके द्वारा वह
अशुद्ध हो जाता है, अथवा वह किसी अन्य अशुद्ध व्यक्ति के द्वारा अशुद्ध हो जाता
है, तो चाहे उसकी कैसी भी अशुद्धता हो; 6 तो वह व्यक्ति, जो ऐसी किसी भी
वस्तु को छू लेता है, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा और स्नान करने तक वह पवित्र
भेंटों में से किसी वस्तु को न खाए. 7 किंतु सूर्य अस्त होने पर वह व्यक्ति शुद्ध
हो जाएगा; इसके बाद वह पवित्र भेंटों में से खा सकता है, क्योंकि यह उसका
भोजन है. 8 वह उस मरे हुए पशु के मांस को न खाए, जिसकी स्वाभाविक मृत्यु
हुई हो, अथवा जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला हो, ऐसा करके वह
स्वयं को अशुद्ध न बनाए; क्योंकि मैं ही याहवेह हूं. 9 "‘वे मेरे इस नियम का
पालन करें कि उन्हें पाप का भार न उठाना पड़े और मेरे नियम को अपवित्र
करने के द्वारा उनकी मृत्यु न हो जाए; क्योंकि मैं ही याहवेह हूं, जो उन्हें पवित्र
करता हूं. 10 "‘कोई भी, जो पुरोहित के परिवार के बाहर का हो, किसी पवित्र
भेंट को न खाए; किसी पुरोहित के साथ रह रहा कोई पराए कुल का रहवासी,
अथवा किराये पर लिया गया कोई मज़दूर पवित्र भेंट में से न खाए. 11 किंतु
यदि कोई पुरोहित धन देकर किसी दास को खरीद लेता है, तो वह दास पवित्र
भेंट में से खा सकता है, और वे सब भी जिनका जन्म उसके परिवार में हुआ है,
उसके भोजन से खा सकते हैं. 12 यदि किसी पुरोहित की पुत्री का विवाह किसी
ऐसे व्यक्ति से हो जाए, जो पुरोहित न हो, तो वह कन्या उन चढ़ाई हुई भेंटों में से
न खाए. 13 किंतु यदि किसी पुरोहित की पुत्री विधवा हो जाए, अथवा उसका
तलाक हो जाए, और वह युवावस्था में ही निःसंतान ही अपने पिता के घर लौट
आए, तो वह अपने पिता के भोजन में से खा सकती है; किंतु कोई व्यक्ति जो
पुरोहित न हो वह इसमें से न खाए. 14 "‘यदि कोई व्यक्ति अनजाने में पवित्र
भेंटों में से खा ले, तो वह इसका पांच गुणा मिलाकर उस पवित्र भेंट को पुरोहित
को दे दे. 15 वे इस्राएल के घराने द्वारा याहवेह को चढ़ाई हुई पवित्र भेंटों को
अपवित्र न करें 16 और इस प्रकार उनकी पवित्र भेंटों को खाने के द्वारा दंड
उठाने का कारण न बनें; क्योंकि मैं ही याहवेह हूं, जो उन्हें पवित्र करता हूं.’"
17 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 18 "अहरोन, उसके पुत्रों और सारे इस्राएल
के घराने को यह आज्ञा दो, ‘इस्राएल के घराने में से कोई व्यक्ति अथवा इस्राएल
में कोई परदेशी जब बलि चढ़ाए, चाहे यह बलि किसी शपथ के लिए हो,
अथवा उनकी स्वेच्छा बलि हो, वे याहवेह को वह होमबलि के रूप में चढ़ाएं.
19 वह तुम्हारे लिए ग्रहण योग्य हो सके, तो ज़रूरी है कि यह बलि निर्दोष
नर पशु की हो, चाहे बछड़ा अथवा मेढ़ा अथवा बकरा. 20 उस पशु को न
चढ़ाया जाए, जिसमें कोई खराबी हो, क्योंकि तुम्हारे पक्ष में यह याहवेह द्वारा
ग्रहण नहीं होगा. 21 जब कोई व्यक्ति बैलों अथवा भेड़-बकरियों में से किसी
विशेष शपथ को पूरा करने, अथवा स्वेच्छा बलि के लिए याहवेह को मेल
बलि चढ़ाता है, तो ज़रूरी है कि ग्रहण करने के लिए यह निर्दोष हो; ध्यान रहे
कि इसमें कोई खराबी न हो. 22 ऐसे पशुओं को, जो अंधे हों, जिनकी हड्डी
टूटी हो, जो विकलांग हों, जिसके घावों से स्राव हो रहा हो, जिन्हें चकते हो
गए अथवा खाज-खुजली वाले हों, याहवेह को न चढ़ाना और न ही उन्हें
वेदी पर अग्निबलि स्वरूप याहवेह के लिए चढ़ाना. 23 तुम किसी ऐसे बछड़े
अथवा मेमने को स्वेच्छा बलि के लिए चढ़ा सकते हो, जिसका कोई अंग बड़ा
अथवा छोटा हो गया हो, किंतु किसी शपथ के लिए यह ग्रहण नहीं होगा. 24
किसी भी ऐसे पशु को जिसके अंडकोश चोटिल, कुचले, फटे अथवा कटे हों,
याहवेह को न चढ़ाना, और न ही अपने देश में उनकी बलि देना, 25 और न ही
किसी विदेशी से इसे परमेश्वर के भोजन के रूप में चढ़ाने के लिए ग्रहण करना;
क्योंकि उनमें तो उनका बिगड़ा आकार है ही. उनमें दोष है वे तुम्हारे पक्ष में
ग्रहण नहीं होंगे.’" 26 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 27 "जब किसी बछड़े,
भेड़ अथवा बकरी का जन्म हो, यह सात दिन तक अपनी माता के साथ में रहे,
और आठवें दिन के बाद से यह याहवेह के लिए अग्निबलि के रूप में ग्रहण हो
जाएगा. 28 किंतु चाहे यह बछड़ा हो अथवा भेड़, तुम माता तथा उसके बच्चे
दोनों का एक ही दिन में वध न करना. 29 "जब तुम याहवेह को आभार-बलि
चढ़ाओ, तो तुम इसे इस प्रकार भेंट करो कि यह याहवेह को ग्रहण हो. 30
इसको उसी दिन खा लिया जाए, तुम सुबह तक इसमें से कुछ भी बचाकर न
रखना; मैं ही याहवेह हूं. 31 "तुम मेरी आज्ञाओं का पालन कर उनका अनुसरण
करना; मैं ही याहवेह हूं. 32 तुम मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध न करना; मैं इस्राएल
के घराने में पवित्र किया जाऊंगा; मैं ही याहवेह हूं, जो तुम्हें पवित्र करता हूं, 33
तुम्हें मिस्र से निकालकर लाया हूं, कि तुम्हारे लिए तुम्हारा परमेश्वर हो जाऊं; मैं
ही याहवेह हूं."

23 याहवेह ने मोशेह को दोबारा आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह
आज्ञा दो: ‘ये याहवेह के वे ठहराए हुए उत्सव हैं, जिन्हें तुम पवित्र
समारोह घोषित करोगे; मेरे द्वारा निर्धारित उत्सव ये हैं: 3 "‘छः दिन तो कार्य
किया जा सकता है, किंतु सातवां दिन पूर्ण विश्राम का दिन, शब्बाथ है, एक
पवित्र समारोह. तुम कोई कार्य न करना; यह तुम्हारे सारे घराने में याहवेह के
लिए एक शब्बाथ होगा. 4 "‘ये याहवेह के ठहराए गए उत्सव हैं—पवित्र
समारोह, जिनकी घोषणा तुम्हें उनके तय किए गए समय पर करनी है. 5 याहवेह
के फ़सह का निर्धारित समय पहले माह के चौदहवें दिन संध्या समय है. 6 उसी
माह के पन्द्रहवें दिन याहवेह के लिए खमीर रहित रोटी का उत्सव होगा; सात
दिन तक खमीर रहित रोटी ही खाई जाए. 7 पहले दिन पवित्र सभा होगी तथा
तुम किसी भी प्रकार की मेहनत न करना. 8 किंतु सातों दिनों तुम याहवेह को
अग्निबलि चढ़ाना. सातवें दिन पवित्र सभा होगी, इस दिन तुम किसी भी प्रकार
की मेहनत न करना.’" 9 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 10 "इस्राएल के
घराने को यह आज्ञा दो, ‘जब तुम उस देश में प्रवेश करो, जो मैं तुम्हें देनेवाला हूं
तथा उसकी उपज इकट्ठी करो, तो तुम अपनी पहली उपज की पूलियों को
पुरोहित के सामने लेकर आना. 11 पुरोहित इन पूलियों को याहवेह के सामने
हिलाने की बलि के रूप में चढ़ाए कि यह तुम्हारे लिए ग्रहण किया जाए; पुरोहित
इसे शब्बाथ के अगले दिन हिलाए. 12 उसी दिन, जिस दिन पूलियों को हिलाने
की मुद्रा बलि के रूप में चढ़ाया जाए, एक वर्षीय नर मेमने की होमबलि याहवेह
को चढ़ाई जाए. 13 इसके साथ अन्नबलि में तेल और तीन किलो मैदा मिलाकर
याहवेह के लिए सुखदायी सुगंध के रूप में आग में चढ़ाया जाए. इसके अलावा
उसके साथ पेय बलि के लिए एक लीटर दाखरस भी. 14 उस दिन तक तथा
जब तक तुम्हारे परमेश्वर के लिए निर्धारित बलि न चढ़ा दी जाए, तब तक न
तो रोटी और न ही भुने अथवा कच्चे अन्न को खाया जाए. यह तुम्हारे सारे
घराने में तुम्हारी सारी पीढ़ियों के लिए सदा-सर्वदा के लिए एक विधि है. 15

"‘तुम शब्बाथ के अगले दिन से, जब लहराने की बलि के रूप में चढ़ाने के
लिए पुलियां लाई जाएं, गिनती करना; ये पूरे सात शब्बाथ होंगे. 16 सातवें
शब्बाथ के अगले दिन से पचास दिनों की गिनती करना; फिर याहवेह को नया
अन्नबलि चढ़ाया जाए. 17 तुम अपने निवास स्थानों से लहराने की बलि के
रूप में चढ़ाने के लिए दो किलो मैदे की रोटियां लाना; जो याहवेह को प्रथम
फल के रूप में चढ़ाने के लिए खमीर के साथ बनाई जाएं. 18 रोटियों के साथ
साथ सात एक-एक वर्षीय निर्दोष मेमने, पशुओं से एक बछड़ा और दो मेढ़े
चढ़ाना; ये सब याहवेह के लिए होमबलि हैं, जो उनकी अन्नबलि तथा उनकी
पेय बलि सहित अग्निबलि द्वारा याहवेह को सुखद-सुगंध होंगे. 19 पापबलि के
लिए एक बकरा और मेल बलि के लिए एक-एक वर्षीय दो मेमने भी अर्पित
करना. 20 पुरोहित इन्हें लहराने की बलि के समान बलि चढ़ाने के लिए पहली
उपज की रोटियों और मेमनों के साथ याहवेह के सामने लहराए. ये याहवेह के
लिए पवित्र तथा पुरोहित का ठहराया हुआ भाग हैं. 21 उसी दिन तुम एक पवित्र
समारोह भी मनाने की घोषणा करना. उस दिन किसी भी प्रकार का परिश्रम न
करना. यह तुम्हारे सारे घरानों में तुम्हारी सारी पीढ़ियों के लिए सदा-सर्वदा के
लिए एक विधि है. 22 "‘जब तुम अपने देश में उपज इकट्ठी करो, तो तुम अपने
खेतों से कोने-कोने तक की उपज इकट्ठा न करना, न ही अपनी उपज की
सिल्ला इकट्ठी करना; तुम उन्हें दीनों तथा विदेशियों के लिए छोड़ देना. मैं
याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं.’" 23 याहवेह ने मोशेह को दोबारा आज्ञा दी,
24 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो, ‘सातवें माह का प्रथम दिन शब्बाथ का
विश्राम दिन होगा, तुरही फूंकने के द्वारा इसका स्मरण दिलाना. यह एक पवित्र
समारोह है. 25 इस दिन तुम किसी प्रकार का परिश्रम न करना, और याहवेह को
अग्निबलि चढ़ाना.’" 26 याहवेह ने मोशेह को निर्देश दिया, 27 "इस माह का
दसवां दिन प्रायश्चित का दिन होगा, यह तुम्हारे लिए पवित्र समारोह होगा और
इस दिन अपने हृदयों को नम्र बनाकर याहवेह को अग्निबलि चढ़ाई जाए. 28
इस दिन तुम किसी भी प्रकार का परिश्रम न करना, क्योंकि यह प्रायश्चित
का दिन है कि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने तुम्हारे लिए प्रायश्चित पूरा
किया जाए. 29 जो व्यक्ति इस दिन स्वयं को नम्र नहीं करता, उसे उसके
परिवार से बाहर निकाल दिया जाए. 30 जो व्यक्ति इस दिन परिश्रम करता है,
मैं उस व्यक्ति को उसके परिवार के बीच से नाश कर दूंगा. 31 तुम इस दिन
किसी भी प्रकार का परिश्रम नहीं करोगे. यह तुम्हारे सारे घरानों में तुम्हारी
सारी पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए एक विधि है. 32 यह तुम्हारे लिए संपूर्ण
विश्राम का शब्बाथ है, इस दिन तुम अपने हृदयों को नम्र करोगे; माह के नौवें
दिन शाम से शाम तक शब्बाथ का पालन करोगे." 33 याहवेह ने मोशेह को
दोबारा आज्ञा दी, 34 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो, ‘सातवें माह के
पन्द्रहवें दिन से याहवेह के लिए सात दिनों के लिए झोपड़ी का उत्सव होगा.
35 प्रथम दिवस पवित्र समारोह होगा; तुम इस दिन किसी भी प्रकार का परिश्रम
नहीं करोगे. 36 तुम इन सातों दिन याहवेह को अग्निबलि चढ़ाना. आठवें
दिन तुम पवित्र समारोह का आयोजन करोगे और इस दिन याहवेह को एक
अग्निबलि चढ़ाओगे; यह एक औपचारिक आयोजन होगा. तुम किसी भी
प्रकार का परिश्रम नहीं करोगे. 37 "‘ये याहवेह के वे नियत उत्सव हैं, जिन्हें
तुम याहवेह के लिए अग्निबलियां प्रस्तुत करने के लिए पवित्र सभा घोषित
करना. होमबलियां, अन्नबलियां, अन्य बलियां तथा पेय बलियां, हर एक
अपने-अपने नियत दिन पर अर्पित करने के लिए हैं. 38 ये दिन याहवेह के
शब्बाथों के अलावा तथा ये बलियां तुम्हारी उन भेंटों, शपथ और स्वेच्छा बलि
के अतिरिक्त हैं, जो तुम याहवेह के लिए चढ़ाते हो. 39 "‘सातवें माह के
पन्द्रहवें दिन, जब तुम देश की उपज इकट्ठी कर चुकोगे, तब सात दिनों के लिए
याहवेह के लिए उत्सव मनाना. इसमें प्रथम दिन तथा आठवां दिन शब्बाथ
होगा. 40 प्रथम दिन तुम स्वयं अपने लिए हरे-भरे वृक्षों के फल, खजूर वृक्ष की
शाखाएं, घने वृक्षों की शाखा और नदी के किनारे के मजनूं वृक्ष लेकर सात दिन
तक याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने आनंद करना. 41 तुम हर साल याहवेह
के लिए सात दिन यह उत्सव मनाओगे. यह उत्सव सातवें माह में मनाया जाए.
यह तुम्हारी सारी पीढ़ियों में हमेशा के लिए एक विधि है. 42 तुम सात दिन
झोंपड़ियों में रहोगे; इस्राएल के सारे मूल निवासी झोंपड़ियों में रहेंगे, 43 ताकि
तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों को यह अहसास हो जाए कि जब मैंने इस्राएल के
घराने को मिस्र से निकाला था, मैंने उन्हें झोंपड़ियों में टिकाया था. मैं ही
याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं.’" 44 इस प्रकार मोशेह ने इस्राएल के घराने के
सामने याहवेह के निर्धारित उत्सवों का विवरण दिया.

24 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 2 "इस्राएलियों को कहना
कि वे दीये के लिए जैतून का निकाला हुआ शुद्ध तेल लायें, जिससे दिया
हमेशा जलता रहे, 3 अहरोन इसे शाम से सुबह तक नियमित रूप से मिलनवाले
तंबू में साक्षी पर्दे के बाहर याहवेह के सामने सजाकर रखा करे; यह तुम्हारी सारी
पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए एक विधि है. 4 अहरोन दीपकों को याहवेह के
सामने कुन्दन के दीपदान पर सजाकर नियमित रूप से रखे. 5 "इसके बाद तुम
मैदा लेकर इससे बारह बाटियां बनाना; हर एक बाटी दो किलो मैदे से बनाई
जाए. 6 तुम इन्हें याहवेह के सामने कुन्दन की मेज़ पर क्रमानुसार दो पंक्तियों में
रखना; हर एक पंक्ति में छः-छः. 7 हर एक पंक्ति पर शुद्ध लोबान रखना कि यह
बाटी के लिए स्मरण दिलाने वाली याहवेह के लिए अग्निबलि हो जाए. 8 वह
हर एक शब्बाथ इसे याहवेह के सामने सुव्यवस्थित रीति से नियमित रूप से रखे;
इस्राएल के घराने के लिए यह एक हमेशा की विधि है. 9 यह भोजन अहरोन
तथा उनके पुत्रों के लिए होगा, और वे इसको पवित्र स्थान में ही खाएंगे क्योंकि
यह याहवेह की अग्निबलियों में से उनके लिए परम पवित्र है, उनका सदैव का
भाग है." 10 तभी अचानक यह हुआ कि एक इस्राएली स्त्री का पुत्र, जिसका
पिता एक मिस्री था, इस्राएल के घराने के बीच जा पहुंचा और छावनी में ही उस
इस्राएली स्त्री के पुत्र और एक इस्राएली पुरुष के बीच मार-पीट हो गई. 11 उस
इस्राएली स्त्री के पुत्र ने परमेश्वर की निंदा करके परमेश्वर को शाप दिया. तब उसे
मोशेह के सामने लाया गया. उस युवक की माता का नाम शेलोमीथ था, जो दान
के गोत्र के दिबरी की पुत्री थी. 12 उन्होंने उसे हवालात में रख लिया कि उसके
सामने याहवेह की आज्ञा स्पष्ट की जा सके. 13 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को
आज्ञा दी, 14 "जिसने परमेश्वर को शाप दिया है, उसे छावनी से बाहर लाया
जाए, और जिन्होंने उसे ऐसा कहते हुए सुना है, वे उसके सिर पर अपने हाथ
रखें; इसके बाद सारी सभा उसका पथराव करे. 15 इस्राएल के घराने को यह
आज्ञा दी जाए, ‘जो अपने परमेश्वर को शाप देता है, वह स्वयं अपने पाप का
बोझ उठाएगा. 16 उसे, जो याहवेह के नाम की निंदा करता है; निश्चित ही मृत्यु
दंड दिया जाए; निःसंदेह सारी सभा उसका पथराव करे. चाहे कोई परदेशी हो या
देशी, इस प्रकार जब कोई याहवेह के नाम की निंदा करता है, तो उसे मृत्यु दंड
दिया ही जाएगा. 17 "‘यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे मनुष्य की हत्या कर देता
है, तो निश्चित ही उसे मृत्यु दंड दिया जाए. 18 यदि कोई व्यक्ति किसी पशु की
हत्या कर देता है, तो वह इसके नुकसान की भरपाई करे, प्राण के बदले प्राण.
19 यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को चोट पहुंचाता है, तो जैसा उसने किया है,
उसके साथ ठीक वैसा ही किया जाए: 20 अंग-भंग के बदले अंग-भंग; आंख
के बदले आंख, दांत के बदले दांत; जैसे उसने एक व्यक्ति को चोट पहुंचाई है,
उसे भी ठीक वैसे ही चोट पहुंचाई जाए. 21 इसी प्रकार वह व्यक्ति जिसने
किसी पशु की हत्या की थी, वह इसके नुकसान की भरपाई करेगा, किंतु उसे,
जो किसी मनुष्य की हत्या कर देता है, मृत्यु दंड दिया जाए. 22 तुम्हारे बीच
एक ही नियम हो, परदेशी तथा देशी, दोनों के लिए एक, क्योंकि मैं याहवेह ही

तुम्हारा परमेश्वर हूं.'" 23 इसके बाद मोशेह ने इस्राएल के घराने को आदेश दिया और वे उस व्यक्ति को छावनी के बाहर ले आए, जिसने परमेश्वर को शाप दिया था, उसका पथराव किया. इस प्रकार इस्राएल के घराने ने वैसा ही किया, ठीक जैसी आज्ञा याहवेह ने मोशेह को दी थी.

25 याहवेह ने मोशेह को सीनायी पर्वत पर आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो: 'जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे, जो मैं तुम्हें दूंगा, तब याहवेह के लिए उस देश में एक शब्बाथ होगा. 3 तुम छः वर्ष तो अपने खेत में बीज बोओगे और अंगूर की बारी की छंटाई तथा उसकी उपज इकट्ठा करोगे, 4 किंतु सातवें वर्ष में भूमि के लिए शब्बाथ-विश्राम होगा याहवेह के लिए शब्बाथ; न तो तुम अपने खेतों में बीज बोना और न ही अपनी अंगूर की बारी की छंटाई करना. 5 उपज इकट्ठा करने के बाद अपने आप उगी हुई उपज इकट्ठा न करना; यह भूमि के लिए शब्बाथ वर्ष होगा. 6 शब्बाथ काल में भूमि से उत्पन्न उपज तुम सभी के भोजन के लिए होंगी—तुम्हारे लिए, तुम्हारे दासों और दासियों के लिए, मजदूरों के लिए, तुम्हारे बीच रह रहे विदेशियों के लिए, तुम्हारे पशुओं और तुम्हारे देश के जंगली पशुओं के लिए; यह उपज सभी के भोजन के लिए होगी. 8 "'तुम सात शब्बाथ वर्षों की भी गिनती करना; सात गुणा सात वर्ष, कि ये सात शब्बाथ वर्ष अर्थात् उनचास वर्ष हों. 9 सातवें माह के दसवें दिन ऊंची आवाज से तुरही फूंकोगे. प्रायश्चित दिवस पर पूरे देश में तुरही फूंकोगे. 10 तुम्हें पचासवें वर्ष को पवित्र करना होगा और सारे देश के निवासियों के लिए छुटकारे की घोषणा करनी होगी. यह वर्ष तुम्हारे लिए योवेल वर्ष कहलाएगा और तुममें से हर एक की पैतृक संपत्ति अपने-अपने परिवार को लौट आएगा. 11 पचासवां वर्ष योवेल वर्ष के रूप में मनाया जाए; इस वर्ष न तो तुम बीज बोना, न अपने आप उगी हुई फसल इकट्ठी करोगे और न उन अंगूर की लताओं से अंगूर इकट्ठा करोगे, जिन्हें छांटा न गया हो. 12 क्योंकि यह योवेल है; यह तुम्हारे लिए पवित्र होगा. तुम खेतों की उपज को खा सकते हो. 13 "'इस योवेल वर्ष में तुममें से हर एक अपनी पैतृक भूमि को लौट जाएगा. 14 "'यदि तुम अपने पड़ोसी को कुछ भी बेचो अथवा उससे कुछ भी खरीदो, तो तुम एक दूसरे से छल न करना. 15 जब तुम अपने पड़ोसी से भूमि खरीदो, तो उसका मूल्य पिछले योवेल के बाद के वर्षों के अनुसार होना आवश्यक है, तथा बेचनेवाला भी इसका मूल्य अगले योवेल के पहले के वर्षों का ध्यान रखकर करे. 16 यदि अगले योवेल तक के वर्षों की संख्या अधिक है, तो मूल्य बढ़ेगा, यदि वर्षों की संख्या कम है, तो मूल्य भी कम होगा. वस्तुतः वह व्यक्ति, जो भूमि को बेच रहा है, तुम्हें कटनियों की संख्या बेच रहा है. 17 इसलिये तुम एक दूसरे से छल न करना, परंतु अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा की भावना रखना; क्योंकि मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं. 18 "'इसलिये तुम मेरी विधियों को मानना और मेरी आज्ञाओं का पालन कर उन्हें व्यवहार में लाना कि इस प्रकार तुम इस देश में सुरक्षापूर्वक निवास कर सको. 19 तब भूमि अपनी उपज उत्पन्न करेगी, ताकि तुम इसको भरपेट खाया करो, और इस प्रकार तुम इस देश में सुरक्षापूर्वक रह सको. 20 किंतु यदि तुम्हारा विचार यह हो, "यदि हमने सातवें वर्ष बीज नहीं बोया और उपज इकट्ठा नहीं की तो हम उस वर्ष क्या खाएंगे?" 21 तब छठे वर्ष में मैं तुम्हारे लिए अपनी आशीषों को आदेश दूंगा कि भूमि तीन वर्षों के लिए पर्याप्त उपज उत्पन्न करे. 22 जब तुम आठवें वर्ष बीज बोओगे, तो तब भी तुम बीते वर्षों में इकट्ठा की गई उपज को खा सकोगे, आठवें वर्ष की उपज आने पर भी तुम नौवें वर्ष तक इसको खा सकोगे. 23 "'भूमि सदा के लिए बेची न जाए, क्योंकि भूमि तो मेरी है; तुम तो मेरे साथ परदेशी और बाहरी मात्र हो. 24 जब भी भूमि को खरीदो, तो खरीददार यह ध्यान रखे कि बेचनेवाले को इसके छुड़ाने का अधिकार है. 25 "'यदि तुम्हारा कोई संबंधी इतना निर्धन हो जाता है कि उसे अपनी संपत्ति के अंश को बेचना पड़ता है, तो उसके नज़दीकी छुड़ाने वाला आकर उस संपत्ति को खरीद ले, जो उसके संबंधी द्वारा बेची गई है. 26 और यदि उस व्यक्ति का कोई छुड़ाने वाला नहीं है, किंतु वह स्वयं ही इतना समृद्ध हो गया है, और अपनी भूमि को छुड़ाने के लिए उसके पास पर्याप्त धन है, 27 तो वह इसके बेचे गए वर्षों से गिनती करे और जिस व्यक्ति को उसने यह बेचा था, उसे इसका बाकी मूल्य चुका दे, और इस प्रकार उसे अपनी संपत्ति दोबारा प्राप्त हो जाएगी. 28 किंतु, यदि उसके पास इसे दोबारा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त धन नहीं है, तब जो कुछ उसने बेचा है, वह सब योवेल वर्ष तक उसके खरीददार के पास ही रहेगा; किंतु योवेल वर्ष में यह छूटकर इसके असली स्वामी के पास लौट जाएगा. 29 "'इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति शहरपनाह वाले नगर में अपने घर को बेचता है, तो उसके छुड़ाने का अधिकार उसके बेचने के दिन से एक वर्ष तक मान्य रहेगा; छुड़ाने का उसका अधिकार पूरे एक वर्ष तक बना रहेगा. 30 किंतु यदि पूरे एक वर्ष की अवधि में इसको नहीं खरीदा गया, तब उस शहरपनाह वाले नगर में उस घर का अधिकार स्थायी रूप से उसके खरीददार और उसकी आनेवाली सभी पीढ़ियों का हो जाएगा; यह घर योवेल वर्ष में छुड़ाया नहीं जाएगा. 31 किंतु बिना शहरपनाह वाले गांवों के घरों को खेतों के बराबर समझा जाए; इनको छुड़ाया जा सकता है, और वे योवेल वर्ष में छुड़ा दिए जाएंगे. 32 "'जहां तक लेवियों के नगरों का संबंध है, लेवियों को अपने नगरों के घरों के, जो उनकी संपत्ति हैं, छुड़ाने का स्थायी अधिकार है. 33 इसलिये जो कुछ भी लेवियों का है, उसको छुड़ाया जा सकता है और नगर में उनकी संपत्ति से बेचा गया वह घर योवेल वर्ष में छुड़ा दिया जाएगा, क्योंकि इस्राएल के घराने के बीच लेवियों के नगरों के घर उनकी संपत्ति हैं. 34 किंतु उनके नगरों के चारों ओर की चराई की भूमि को न बेचा जाए, क्योंकि यह उनकी स्थायी संपत्ति है. 35 "'यदि तुम्हारा कोई भाई-बन्धु कंगाल हो जाए, और यदि वह अपना हाथ तुम्हारे सामने फैलाए, तो तुम उसकी ठीक उसी प्रकार सहायता करना, मानो वह कोई विदेशी अथवा यात्री हो ताकि वह तुम्हारे साथ रह सके. 36 उससे ब्याज अथवा लाभ न लिया जाए, बल्कि तुम अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा रखना कि तुम्हारा भाई-बन्धु तुम्हारे साथ रह सके. 37 तुम उसे न तो अपना धन ब्याज पर दोगे और न ही भोजन लाभ कमाने के लालच से. 38 मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकालकर लाया हूं, कि तुम्हें कनान देश प्रदान करूं, और तुम्हारे लिए तुम्हारा परमेश्वर हो जाऊं. 39 "'यदि तुम्हारा कोई भाई-बन्धु इतना कंगाल हो जाए कि स्वयं को तुम्हें बेच दे, तो तुम उससे दास के समान सेवा न लेना. 40 वह तुम्हारे साथ मजदूरी पानेवाले व्यक्ति के समान रहे, मानो कि वह कोई यात्री हो. वह तुम्हारे साथ योवेल वर्ष तक काम करेगा. 41 फिर वह तुम्हारे अधिकार से मुक्त हो जाएगा, वह और उसके साथ उसकी संतान अपने गोत्र और अपने पूर्वजों की संपत्ति को लौट जाएगी. 42 क्योंकि इस्राएल तो मेरे सेवक हैं, जिन्हें मैं मिस्र से निकालकर लाया था; उनको दास के समान बेचा न जाए. 43 तुम उस पर कठोरता पूर्वक शासन न करना, बल्कि अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा बनाए रखना. 44 "'जहां तक तुम्हारे दास-दासियों का संबंध है, तुम अपने पड़ोसी गैर-यहूदी देशों से दास और दासियां प्राप्त कर सकते हो. 45 तुम अपने बीच रह रहे यात्रियों से भी दासों को कर सकते हो तथा उनके गोत्रों से भी जिनका जन्म तुम्हारे देश में ही हुआ है, और वे तुम्हारे बीच ही रह रहे हैं; वे भी तुम्हारी संपत्ति हो सकते हैं. 46 तुम उन्हें संपत्ति के समान अपने पुत्रों के अधिकार में स्थायी मीरास के रूप में भी दे सकते हो; तथा उनका प्रयोग स्थायी दासों के समान कर सकते हो. किंतु तुम इस्राएल के घराने में से अपने भाई-बंधुओं पर कठोरता पूर्वक शासन न करना. 47 "'यदि तुम्हारे साथ का कोई विदेशी अथवा यात्री धनी हो जाए, और तुम्हारा कोई भाई-बन्धु कंगाल तथा वह स्वयं को उस विदेशी अथवा यात्री, या उस विदेशी के कुल को बेच दे, 48 तो उसके बिकने के बाद उसको

निकाला जा सकता है. उसके भाई-बंधुओं में से कोई एक भाई उसको छुड़ा
सकता है, 49 उसका चाचा अथवा उसके चाचा का पुत्र और उसके परिवार से
कोई उसका कोई सगा संबंधी उसको छुड़ा सकता है, अथवा यदि वह धनी हो
जाए, तो वह स्वयं को ही छुड़ा सकता है. 50 वह अपने खरीददार के साथ
अपने बिकने के दिन से लेकर योवेल वर्ष तक के समय की गिनती करे; उसके
बिकने का मूल्य उसके द्वारा पिछले वर्षों के अनुसार हो. उसके द्वारा उसके
स्वामी के साथ बिताया गया समय किसी मज़दूर द्वारा बिताए गए समय के समान
ही है. 51 किंतु यदि योवेल वर्ष तक अभी अनेक वर्ष बाकी हैं, तो वह अपने
छुड़ाए जाने के लिए अपने बिकने के दाम के बराबर में लौटा दे. 52 और यदि
योवेल वर्ष में अभी कुछ ही वर्ष बाकी रह गए हैं, तो वह अपने स्वामी के साथ
इनकी गिनती करे और उन वर्षों के अनुसार अपने छुड़ाने के मूल्य को लौटा दे.
53 वह उसके साथ हर एक वर्ष मज़दूर के अनुसार ही रहेगा और वह तुम्हारे
सामने उस पर कठोरता पूर्वक शासन न करे. 54 “‘किंतु यदि इनमें से किसी भी
रीति से उसको छुड़ाया नहीं गया, तो योवेल वर्ष में वह छूट जाएगा; वह और
उसके साथ उसकी संतान भी. 55 क्योंकि इस्राएल का घराना मेरा दास है; ये
मेरे वे दास हैं, जिन्हें मैं मिस्र देश से छुड़ाकर लाया हूं. मैं याहवेह ही तुम्हारा
परमेश्वर हूं.

26 “‘न तो तुम अपने लिए मूरतें बनाओगे और न ही किसी खुदी हुई मूरत
अथवा पवित्र पत्थर बनाओगे और न ही उसके सामने झुकने के उद्देश्य
से किसी पत्थर में से मूरत गढ़ोगे; क्योंकि मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं. 2
“‘तुम मेरे शब्बाथों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान का सम्मान; मैं ही
याहवेह हूं. 3 “‘यदि तुम मेरी विधियों का पालन करोगे और मेरी आज्ञाओं का
पालन कर उन्हें व्यवहार में लाओगे, 4 तो मैं वर्षा ऋतु में तुम्हें बारिश दिया
करूंगा, जिसके परिणामस्वरूप भूमि अपनी उपज और मैदान के वृक्ष फल
उत्पन्न करेंगे. 5 तुम्हारी दांवनी तुम्हारी अंगूर की उपज इकट्ठा करने तक
चलेगी और तुम्हारी अंगूर की उपज, बीज बोने तक. इस प्रकार तुम भरपेट
भोजन करोगे और इस प्रकार तुम इस देश में सुरक्षापूर्वक निवास कर सकोगे. 6
“‘देश में मेरे द्वारा दी गई शांति बसेगी, जिससे कि तुम आराम कर सको. कोई
तुम्हें भयभीत न करेगा. मैं उस देश से हिंसक पशुओं को भी दूर कर दूंगा और
तुम्हारे देश में कोई भी तलवार से मारा न जाएगा. 7 किंतु तुम अपने शत्रुओं का
पीछा करोगे और वे तलवार के वार से तुम्हारे सामने मारे जाएंगे; 8 तुममें से
पांच एक सौ को और एक सौ दस हज़ार को खदेड़ डालेंगे और तुम्हारे शत्रु
तलवार के वार से तुम्हारे सामने मारे जाएंगे. 9 “‘फिर मैं तुम्हारी ओर कृपादृष्टि
करूंगा और तुम्हें फलवंत कर तुम्हारी संख्या बहुत बढ़ाऊंगा और तुम्हारे साथ
की गई मेरी वाचा को पूरी करूंगा. 10 तुम पुरानी उपज को खाओगे और नई
उपज को स्थान देने के उद्देश्य से पुरानी को हटा दोगे. 11 इसके अलावा मैं
तुम्हारे बीच निवास करूंगा और मेरा प्राण तुमसे घृणा न करेगा. 12 मैं तुम्हारे
बीच चला फिरा भी करूंगा. मैं तुम्हारा परमेश्वर हो जाऊंगा और तुम मेरी प्रजा.
13 मैं याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाया है
कि तुम मिस्रियों के दास न बने रह जाओ, मैंने तुम्हारे जूए की पट्टियों को तोड़
दिया है और तुम्हें सीधा होकर चलने में समर्थ किया है. 14 “‘किंतु यदि तुम
मेरी न सुनोगे और इन सारी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे, 15 यदि तुम
मेरी विधियों को नकार दोगे; तुम्हारे प्राण मेरे निर्णयों को इतना तुच्छ जानें
कि तुम मेरी सारी आज्ञाओं का पालन करना ही छोड़ दो और इस प्रकार मेरी
वाचा को तोड़ ही डालो, 16 तो निश्चित ही मैं तुम्हारे साथ यह करूंगा कि मैं
तुमको अचानक ही आतंक, क्षय रोग और ज्वर-पीड़ित कर दूंगा, जिसके
कारण तुम्हारी आंखें धुंधली हो जाएंगी तथा तुम्हारे प्राण मुरझा जाएंगे, तुम्हारा
बीजारोपण भी व्यर्थ ही होगा क्योंकि तुम्हारे शत्रु इसको खा लेंगे. 17 मैं तुम्हारे
विरुद्ध हो जाऊंगा, जिससे तुम्हारे शत्रु तुम्हें हरा देंगे और जो तुमसे घृणा करते हैं,
वे तुम पर शासन करेंगे. जब तुम्हारा पीछा कोई भी न कर रहा होगा, तब भी तुम
भागते रहोगे. 18 “‘इतना सब होने पर भी यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो
मैं तुम्हें तुम्हारे पापों का सात गुणा दंड दूंगा. 19 मैं तुम्हारे बल के घमण्ड को
समाप्त कर दूंगा और तुम्हारे आकाश को लोहे के समान और तुम्हारी भूमि को
कांसे के समान बना दूंगा. 20 तुम्हारे द्वारा की गई मेहनत बेकार होगी क्योंकि
तुम्हारी भूमि अपनी उपज पैदा न करेगी और न ही देश के वृक्ष अपना फल
उत्पन्न करेंगे. 21 “‘इतना होने पर भी यदि तुम अपना स्वभाव मेरे विरुद्ध ही
रखोगे और मेरी आज्ञा न मानोगे, तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार तुम पर महामारी
में सात गुणा वृद्धि कर दूंगा. 22 मैं तुम पर जंगली जानवर भेज दूंगा, जो तुम्हें
संतानहीन बना डालेंगे और तुम्हारे पशुओं को नष्ट कर डालेंगे. वे तुम्हारी संख्या
इतनी कम कर देंगे, कि तुम्हारे रास्ते निर्जन रह जाएंगे. 23 “‘यदि इस ताड़ना
के बाद भी तुम मेरी ओर न मुड़े, बल्कि मेरे विरुद्ध शत्रुता भाव ही बनाए रखा,
24 तो मैं भी तुमसे शत्रुता भाव रखूंगा और मैं, हां मैं, तुम्हारे पापों के कारण तुम
पर सात गुणा आक्रमण करूंगा. 25 मैं तुम पर एक तलवार भेजूंगा, जो वाचा को
तोड़ने का पूरा बदला लेगी. जब तुम अपने नगरों में इकट्ठे होंगे, मैं तुम्हारे
बीच महामारी भेजूंगा, और तुम शत्रुओं के अधीन कर दिए जाओ. 26 जब मैं
तुम्हारे भोजन के आधार को दूर कर दूंगा, तब दस महिलाएं एक ही चूल्हे पर
रोटी सेकेंगी और वे इन्हें तोल-तोल कर छोटी संख्या में बांट देंगी, कि तुम
उनको खाओगे, परंतु तृप्त न होंगे. 27 “‘इतना सब होने पर भी यदि तुम मेरी
आज्ञा का पालन नहीं करोगे, बल्कि मेरे विरुद्ध शत्रु सा व्यवहार ही बनाए रखोगे,
28 तब मैं अत्यंत क्रोधित होकर तुमसे शत्रुता रखूंगा और मैं, हां मैं, तुम्हारे पापों
के लिए तुम्हें सात गुणा दंड दूंगा. 29 तुम अपने पुत्रों के मांस को खाओगे और
हां, तुम अपनी पुत्रियों के मांस को खाओगे. 30 मैं तुम्हारे ऊंचे पूजा स्थलों को
नाश कर, तुम्हारी धूप वेदियों को तोड़ दूंगा, मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी मूर्तियों
के ढेर पर फेंक दूंगा, और मेरा आत्मा तुमसे घृणा करेगा. 31 मैं तुम्हारे नगरों को
भी उजाड़ दूंगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को सूना कर दूंगा, मैं तुम्हारी सुखद-
सुगंध को स्वीकार नहीं करूंगा. 32 मैं तुम्हारे नगरों को सूना बना दूंगा जिससे
कि तुम्हारे शत्रु जो वहां बसने आएंगे, इसे देख भयभीत हो जाएंगे. 33 तुम
जाति-जाति के बीच बिखर जाओगे और तलवार तुम्हारा पीछा करेगी, तुम्हारा
देश निर्जन और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे. 34 तुम्हारे इस भूमि पर निवास
करने की स्थिति में, भूमि को जो विश्राम तुम्हारे शब्बाथों में प्राप्त नहीं हुआ था,
वह उस विश्राम अब, इस पूरे खाली समय की अवधि में, प्राप्त होगा. इस
प्रकार भूमि को अपने शब्बाथ प्राप्त हो जाएंगे. जब तुम अपने शत्रुओं के देश में
जाओगे, तब सूनेपन की अवस्था में भूमि अपने शब्बाथों का आनंद उठाएगी.
36 “‘तुममें जो बचे रह गए होंगे, मैं उनके शत्रुओं के देश में उनका मनोबल
इतना कमजोर कर दूंगा कि वे हवा के द्वारा छितराए पत्ते की खड़खड़ाहट
सुनकर भाग खड़े होंगे. जब कोई उनका पीछा भी नहीं कर रहा होगा, तो भी वे
भाग खड़े होंगे, मानो कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो और वे गिर-
गिर पड़ेंगे. 37 वे लड़खड़ा कर एक दूसरे पर ऐसे गिरेंगे, मानो वे तलवार से
भाग रहे हों, जबकि कोई भी उनका पीछा नहीं कर रहा होगा; तुम्हारे शत्रुओं के
सामने खड़ा होने के लिए तुम्हारे अंदर शक्ति न बचेगी. 38 तुम बंधुआई में देशों
के बीच नाश हो जाओगे और तुम्हारे शत्रुओं का देश तुम्हें चट कर डालेगा; 39
तुममें से जो बचे रह जाएंगे, वे अपने और उनके पुरखों के अधर्म के कारण
उनके शत्रुओं के देश में गल जाएंगे. 40 “‘यदि वे अपनी और अपने पूर्वजों के
उन अधर्मों को स्वीकार कर लेंगे, जो उन्होंने अपने विश्वासघात और मेरे विरुद्ध
शत्रु के भाव की स्थिति में की थी, 41 जिससे मैंने भी उनके विरुद्ध हो उन्हें उनके
शत्रुओं के देश में बसा दिया; अथवा उनका खतना-रहित हृदय इस प्रकार दब

जाए कि वे अपने अधर्मों के लिए प्रायश्चित्त कर लें, 42 तो मैं याकोब के
साथ अपनी वाचा को, यित्सहाक के साथ अपनी वाचा को और अब्राहाम के
साथ अपनी वाचा को, और इस देश को भी स्मरण करूंगा. 43 किंतु उनके
निकल जाने के कारण यह देश सूना हो जाएगा, कि यह भूमि अपने शब्बाथों के
नुकसान की पूर्ति कर ले. इसी अवधि में वे अपने अधर्मों के लिए प्रायश्चित
करेंगे; क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों को नकार दिया था और मेरी विधियों से घृणा
की थी. 44 इतना होने पर भी, जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे, तब भी मैं
उनको नहीं छोड़ूंगा और न ही उनसे इतनी घृणा करूंगा कि मैं उनका नाश कर दूं
और उनके साथ अपनी वाचा को भंग करूं. मैं ही याहवेह, उनका परमेश्वर हूं.
45 मैं उनके उन पूर्वजों से की गई वाचा को स्मरण करूंगा, जिन्हें मैं जातियों के
देखते-देखते मिस्र से निकालकर लाया था कि मैं उनका परमेश्वर हो जाऊं. मैं ही
याहवेह हूं.'" 46 यही वे विधियां, व्यवस्था और नियम हैं, जिन्हें याहवेह ने,
मोशेह के द्वारा सीनायी पर्वत पर अपने और इस्राएल के घराने के बीच ठहराईं.

27 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा
दो: 'जब कोई किसी व्यक्ति को याहवेह के लिए भेंट करने की विशेष
मन्नत माने, तो उस व्यक्ति के ठहराए हुए मूल्य को इस प्रकार तय किया जाए:
3 बीस वर्ष से साठ वर्ष तक की आयु के पुरुष के लिए पवित्र स्थान के शेकेल के
अनुसार चांदी के पचास शेकेल; 4 यदि कोई स्त्री है, तो उसके लिए तीस शेकेल;
5 पांच वर्ष से बीस वर्ष तक की आयु के युवक के लिए बीस शेकेल तथा युवती
के लिए दस शेकेल; 6 एक माह से पांच वर्ष तक की आयु के बालक के लिए
चांदी के पांच शेकेल तथा बालिका के लिए चांदी के तीन शेकेल; 7 साठ वर्ष
और इससे ऊपर की आयु के पुरुष के लिए पन्द्रह शेकेल तथा स्त्री के लिए दस
शेकेल. 8 किंतु यदि कोई इतना कंगाल है कि वह ठहराया हुआ मूल्य न दे पाए,
तो उसे पुरोहित के सामने ले जाए और पुरोहित उसका मूल्य तय करे. पुरोहित
उस व्यक्ति के साधनों के अनुसार ही उसका मूल्य तय करेगा, जिसने मन्नत
मानी है. 9 "'यदि मन्नत के रूप में याहवेह को एक पशु भेंट किया जाना है, तो
याहवेह को चढ़ाया गया पशु पवित्र माना जाएगा. 10 वह न तो इसको बदले, न
तो अच्छे के लिए बुरा और न ही बुरे के लिए अच्छा. किंतु यदि कोई ऐसा
बदला कर भी लेता है, तो वह पशु और उसके बदले दूसरा पशु दोनों ही पवित्र
माने जाएंगे. 11 किंतु यदि मन्नत का पशु अशुद्ध हो और याहवेह को बलि देने
योग्य न हो, तो वह उस पशु को पुरोहित के सामने लाए. 12 पुरोहित उसे अच्छा
या बुरा ठहराए और जो पुरोहित तय करेगा, वही मान्य होगा. 13 यदि वह
उसको छुड़ाना चाहे, तो तय मूल्य के अलावा उसका पांचवा भाग भी चुकाए.
14 "'यदि कोई अपना घर पवित्र कर याहवेह के लिए अलग करे, तो पुरोहित
द्वारा इसको अच्छा या बुरा ठहराया जाए और जो पुरोहित तय करेगा, वह मान्य
होगा. 15 यदि वह व्यक्ति, जिसने इसे पवित्र किया है, वह अपने घर को छुड़ाना
चाहे, तो तय मूल्य के अलावा उसका पांचवा भाग भी चुकाए, जिससे वह घर
उसका हो जाएगा. 16 "'यदि कोई अपनी पैतृक संपत्ति के खेतों को याहवेह के
लिए पवित्र करे, तो उसका मूल्य उसमें लगे बीज के अनुसार ठहराया जाए; बोने
के लिए दस एफाह बीज के लिए चांदी के पचास शेकेल. 17 यदि वह योवेल
वर्ष से ही अपना खेत पवित्र करे, तो ठहराया गया मूल्य पूरा-पूरा दिया जाए; 18
किंतु यदि वह योवेल वर्ष के बाद अपना खेत पवित्र करे, तो पुरोहित आनेवाले
योवेल वर्ष तक जितने वर्ष बचे हैं, उनकी संख्या के अनुसार खेत का ठहराया
हुआ मूल्य कम कर दे. 19 यदि वह व्यक्ति, जिसने इसे पवित्र किया है, स्वयं
इसे छुड़ाना चाहता है, तो ठहराए गए मूल्य के अलावा उसका पांचवा अंश भी
चुकाए, कि वह खेत उसे लौटा दिया जाए. 20 किंतु यदि वह उस खेत को नहीं
छुड़ाना चाहता और उसे किसी दूसरे को बेच देता है, तब उस खेत को नहीं
छुड़ाया जा सकता. 21 यदि योवेल वर्ष में वह खेत छूट जाता है, तो वह याहवेह
के लिए पवित्र खेत के समान अलग माना जाएगा. वह खेत पुरोहित की संपत्ति
हो जाएगा. 22 "'यदि कोई व्यक्ति याहवेह के लिए ऐसा खेत पवित्र करे, जिसे
उसने खरीदा हो और जो उसकी पैतृक संपत्ति का भाग न हो, 23 तो पुरोहित
योवेल वर्ष तक जितने वर्ष रह गए हों, उसके आधार पर उस खेत का मूल्य तय
करे. और उस दिन पुरोहित तुम्हारे इस बेचने के दाम को याहवेह के लिए पवित्र
दान के स्वरूप दे दे. 24 योवेल वर्ष में वह खेत उस व्यक्ति को छोड़ दिया जाए
जिससे उसने वह खेत खरीदा था, अर्थात् उस व्यक्ति को, जो उस खेत का
असली स्वामी है. 25 तुम्हारा हर एक बेचने का दाम ठहराए गए पवित्र स्थान के
शेकेल के अनुसार ही हो. और एक शेकेल बीस गेरा का हो. 26 "'किंतु पशुओं
के पहलौठे पर सिर्फ याहवेह का अधिकार है, कोई भी उसे समर्पण न करे; चाहे
वह बैल हो अथवा मेढ़ा, उस पर याहवेह का अधिकार है. 27 किंतु अशुद्ध
पशुओं के पहिलौठे के लिए वह ठहराए गए मूल्य के अलावा पांचवा अंश भी
जोड़कर भुगतान कर उसको छुड़ा ले, यदि इसको छुड़ाया न गया हो, तो वह
तुम्हारे ठहराए गए मूल्य पर बेच दिया जाए. 28 "'परंतु यदि कोई व्यक्ति अपनी
सारी संपत्ति में से, जो कुछ भी याहवेह के लिए अलग करता है—मनुष्य, पशु
या पैतृक संपत्ति में से खेत; उसको न तो बेचा जाए और न ही उसको छुड़ाया
जाए. जो कुछ याहवेह को पूरी तरह से समर्पित है, वह याहवेह के लिए परम
पवित्र है. 29 "'जो मनुष्य याहवेह के लिए अलग किया गया है, उसे छुड़ाया न
जाए. ज़रूरी है कि उसका वध कर दिया जाए. 30 "'भूमि का दसवां अंश, चाहे
वह खेत की उपज का हो या वृक्षों के फलों का, उस पर याहवेह का अधिकार
है. वह याहवेह के लिए पवित्र है. 31 इसलिये यदि कोई अपने दसवें अंश का
कुछ छुड़ाना चाहे, तो वह उसमें उसके ठहराए गए मूल्य का पांचवा अंश भी
जोड़ दे. 32 गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का हर एक दसवां पशु, जो चरवाहे
की लाठी के नीचे से निकलता है, वह याहवेह के लिए पवित्र है. 33 वह उनमें
अच्छे और बुरे पशु में भेद न करे और न उनको बदले. किंतु यदि कोई ऐसे बदल
भी लेता है, तो वह पशु और उसके बदले के पशु दोनों ही पवित्र माने जाएंगे.
इनको छुड़ाये न जाए.'" 34 यही वे आदेश हैं, जिन्हें याहवेह ने मोशेह को
इस्राएल के घराने के लिए सीनायी पर्वत पर दिए.

गिनती

1 इस्राएल के घराने के मिस्र देश से निकल जाने के बाद दूसरे वर्ष के दूसरे महीने की पहली तारीख पर सीनायी के निर्जन प्रदेश में मिलनवाले तंबू में याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी: 2 "इस्राएल के घराने की सारी सभा की, उनके परिवारों की, उनके पितरों के अनुसार हर एक पुरुष की, व्यक्तिगत रूप से गिनती करना. 3 यह आलेख उन सभी का होगा, जिनकी अवस्था बीस वर्ष तथा इससे अधिक की है, इस्राएल में जो भी युद्ध के लिए योग्य हैं, तुम तथा अहरोन उनके दल के अनुसार उनकी गिनती करोगे. 4 इसके अलावा तुम्हारे साथ हर एक गोत्र का एक व्यक्ति पितरों का प्रधान रहेगा. 5 "तुम्हारी सहायता के लिए ठहराए गए पुरुषों के नाम ये हैं: "रियूबेन से शेदेउर का पुत्र एलिज़ुर; 6 शिमओन से ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल; 7 यूदाह से अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन; 8 इस्साखार से ज़ुअर का पुत्र नेथानेल; 9 ज़ेबुलून से हेलोन का पुत्र एलियाब; 10 योसेफ़ के पुत्रों में से: एफ्राईम में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा; मनश्शेह में से पेदाहज़ुर का पुत्र गमालिएल; 11 बिन्यामिन से गिदयोनी का पुत्र अबीदान; 12 दान से अम्मीशद्दाय का पुत्र अहीएज़र; 13 आशेर से ओखरन का पुत्र पागिएल; 14 गाद से देउएल का पुत्र एलियासाफ़; 15 नफताली से एनन का पुत्र अहीरा." 16 ये वे व्यक्ति थे, जिनका चुनाव सारी सभा में किया गया. ये पैतृक गोत्रों के प्रधान तथा इस्राएल के गोत्र के प्रमुख थे. 17 फिर मोशेह तथा अहरोन ने इन चुने हुए व्यक्तियों को अपने साथ लिया, 18 तथा उन्होंने सारी सभा को इकट्ठा कर लिया, यह दूसरे महीने की पहली तारीख थी. फिर सभी ने अपने पूर्वजों के नाम के अनुसार और अपने गोत्रों एवं परिवारों के अनुसार, जितने भी बीस वर्ष अथवा इससे अधिक आयु के थे, व्यक्तिगत रूप से अपना अपना पंजीकरण करवाया, 19 ठीक जैसा याहवेह ने मोशेह को आदेश दिया था. इस प्रकार मोशेह द्वारा सीनायी निर्जन प्रदेश में यह जनगणना पूरी हुई. 20 इस्राएल के प्रथमजात रियूबेन के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके पितरों के कुटुंब, एवं परिवारों के अनुसार. 21 इस प्रकार रियूबेन के गोत्र के 46,500 पुरुष नामांकित कर लिए गए. 22 शिमओन के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार; 23 शिमओन के गोत्र से 59,300. 24 गाद के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 25 गाद के गोत्र से 45,650. 26 यहूदाह के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 27 यहूदाह के गोत्र से 74,600. 28 इस्साखार के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 29 इस्साखार के गोत्र से 54,400. 30 ज़ेबुलून के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 31 ज़ेबुलून के गोत्र से 57,400. 32 योसेफ़-पुत्र: एफ्राईम के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 33 एफ्राईम के गोत्र से 40,500. 34 योसेफ़-पुत्र मनश्शेह के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 35 मनश्शेह के गोत्र से 32,200. 36 बिन्यामिन के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 37 बिन्यामिन के गोत्र से 35,400. 38 दान के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 39 दान के गोत्र से 62,700. 40 आशेर के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 41 आशेर के गोत्र से 41,500. 42 नफताली के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार, 43 नफताली के गोत्र से 53,400. 44 ये सभी वे हैं, जो मोशेह तथा अहरोन और इस्राएल के बारह गोत्र के प्रधानों द्वारा जो अपने-अपने परिवारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस गणना में गिने गए थे. 45 फिर उनके पितरों के अनुसार बीस वर्ष तथा इससे अधिक अवस्था के युद्ध के लिए योग्य इस्राएल के सभी पुरुषों की गिनती की गई. 46 गणित पुरुषों की संख्या कुल 6,03,550 हुई. 47 किंतु लेवियों के गोत्र की गिनती उनके पितरों के अनुसार उनमें नहीं की गई. 48 क्योंकि याहवेह मोशेह को यह संदेश दे चुके थे: 49 "मात्र लेवी गोत्र की गिनती न की जाए, वे इस्राएल के घराने की गिनती में शामिल नहीं होंगे. 50 किंतु तुम लेवियों को साक्षी के तंबू, इससे संबंधित सारी सज्जा तथा इसकी सारी सामग्री के लिए नियुक्त करोगे. वे ही साक्षी के तंबू तथा इससे संबंधित सारी वस्तुओं को उठाया करेंगे, वे ही इनके रख रखाव के अधिकारी होंगे. इसके अलावा वे साक्षी के तंबू के आस-पास पड़ाव डाला करेंगे. 51 जब कभी साक्षी के तंबू को यात्रा के पहले गिराना आवश्यक हो, तब लेवी ही इसे गिराएंगे, तथा जब कभी पड़ाव डालना ज़रूरी हो जाए, तो लेवी ही इसे खड़ा करेंगे. इस अवसर पर यदि कोई सामान्य व्यक्ति निकट आ जाए, उसे मृत्युदण्ड दिया जाए. 52 सारा इस्राएल अपने-अपने दल के अनुसार डेरा डालेगा, हर एक अपने-अपने ठहराए गए समूह में तथा अपने-अपने झंडे के निकट डेरा डाला करेगा. 53 किंतु लेवी हमेशा ही साक्षी के तंबू के आस-पास ही पड़ाव डाला करेंगे कि इस्राएल के घराने पर मेरा क्रोध न भड़के. तब लेवी ही साक्षी के तंबू के अधिकारी होंगे." 54 इस्राएल के घराने ने यही किया, जैसा याहवेह द्वारा मोशेह को आज्ञा दी गई थी.

2 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा दी: 2 "इस्राएल के वंश प्रत्येक अपने-अपने झंडे के नीचे ही पड़ाव डाला करेंगे. ये झंडे उनके पिता के गोत्रों की निशानी होंगे. वे मिलनवाले तंबू के आस-पास उसकी ओर मुख किए हुए अपने-अपने शिविर खड़े करेंगे." 3 वे, जो अपने शिविर सूर्योदय की दिशा, पूर्व में स्थापित करेंगे, वह होगा यहूदाह गोत्र, वे अपने शिविर अपने झंडे के नीचे स्थापित करेंगे. यहूदाह के गोत्र का प्रधान होगा अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन. 4 उनके सैनिकों की संख्या है 74,600. 5 उनके निकट होगा इस्साखार का शिविर. इस्साखार के गोत्र का प्रधान होगा ज़ुअर का पुत्र नेथानेल. 6 उसके सैनिकों की संख्या है 54,400. 7 इसके बाद होगा ज़ेबुलून का शिविर. ज़ेबुलून गोत्र का प्रधान होगा हेलोन का पुत्र एलियाब 8 उसके सैनिकों की संख्या है 57,400. 9 यहूदाह के शिविर के लिए गिने गए सैनिक, जिन्हें उनके दलों के अनुसार तैयार किया गया था, वे गिनती में 1,86,400 थे. वे सबसे पहले कूच करेंगे. 10 दक्षिण दिशा: ये रियूबेन के झंडे के नीचे उसके सैनिकों का शिविर होगा तथा रियूबेन गोत्र का प्रधान शेदेउर का पुत्र एलिज़ुर होगा. 11 उसके सैनिकों की संख्या है 46,500. 12 इसके पास वाला शिविर होगा शिमओन गोत्र का, तथा उनका प्रधान होगा ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल. 13 इनके सैनिकों की संख्या है 59,300. 14 इसके बाद गाद का गोत्र, और इनका प्रधान था देउएल का पुत्र एलियासाफ़. 15 इसके सैनिकों की संख्या है 45,650. 16 रियूबेन के शिविर के गिने गए सैनिकों की संख्या है 1,51,450. ये कूच करते हुए दूसरे स्थान पर रहा करेंगे. 17 इनके बाद मिलन वाला तंबू और लेवियों का शिविर कूच करेगा. लेवियों का शिविर

सारे शिविरों के बीच होगा. जिस प्रकार वे अपने शिविर स्थापित करते हैं,
उसी क्रम में वे कूच करेंगे; अपने-अपने झंडों के साथ. 18 पश्चिमी दिशा में:
उनके झंडे के नीचे एफ्राईम गोत्र की सेना का शिविर होगा. इनका प्रधान होगा
अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा. 19 उसकी सेना की, गिन कर लिखी गई संख्या है
40,500. 20 उसके पास होंगे मनश्शेह के गोत्र. उनका प्रधान था पेदाहज़ुर
का पुत्र गमालिएल. 21 उनके सैनिकों की संख्या है 32,200. 22 इसके बाद
बिन्यामिन गोत्र के लोग. उनका प्रधान था गिदयोनी का पुत्र अबीदान. 23 उसके
सैनिकों की संख्या 35,400 गिनी गई. 24 एफ्राईम गोत्र के दलों के अनुसार
की गई सैनिकों की गिनती में संख्या है, 1,08,100. यात्रा के अवसर पर वे
तीसरे स्थान पर रहेंगे. 25 उत्तर दिशा में उनके झंडे के नीचे दान गोत्र के सैनिकों
का स्थान होगा. इनका प्रधान था अम्मीशद्दाय का पुत्र अहीएज़्र. 26 उसके
सैनिकों की संख्या है 62,700. 27 इनसे लगा हुआ दूसरा शिविर आशेर
गोत्र का होगा. इनका प्रधान था ओखरन का पुत्र पागिएल. 28 इसके गिने हुए
सैनिकों की संख्या है 41,500 29 इसके बाद होगा नफताली गोत्र का शिविर.
इनका प्रधान था एनन का पुत्र अहीरा. 30 उसके सैनिक गिनती में 53,400
थे. 31 दान के सैनिकों की संख्या हुई 1,57,600. वे सभी अपने-अपने झंडे
के नीचे सबसे पीछे चला करेंगे. 32 ये ही थे सारे इस्राएली, जिनकी गिनती
उनके गोत्रों के अनुसार की गई थी. वे सभी, जिनकी गिनती उनके दलों के
अनुसार की गई थी, संख्या में 6,03,550 थे. 33 किंतु इस गिनती में लेवी
नहीं गिने गए, क्योंकि यह मोशेह को दी गई याहवेह की आज्ञा थी. 34 इस्राएल
के घराने ने यह प्रक्रिया पूरी कर ली. वे मोशेह को दी गई याहवेह की आज्ञा के
अनुसार शिविर डाला करते थे, इसी क्रम में अपने-अपने गोत्र के अनुसार अपने-
अपने गोत्र और कुटुंब में यात्रा करते थे.

3 जब याहवेह ने मोशेह से सीनायी पर्वत पर बातें कीं, तब मोशेह तथा अहरोन
की पीढ़ियां इस प्रकार थीं: 2 अहरोन के पुत्रों के नाम: जेठा पुत्र नादाब
फिर अबीहू, एलिएज़र तथा इथामार. 3 अहरोन के ये पुत्र अभिषिक्त पुरोहित
थे. इन्हें अहरोन ने ही पुरोहित होने के लिए अभिषिक्त किया था. 4 इनमें नादाब
तथा अबीहू की मृत्यु उस परिस्थिति में याहवेह के ही सामने हो गई थी, जब
उन्होंने सीनायी के निर्जन प्रदेश के रास्ते याहवेह को भेंट चढ़ाई, किंतु उन्होंने
अपवित्र आग का उपयोग किया. ये दोनों निस्संतान थे. इस कारण एलिएज़र
तथा इथामार ही अपने पिता अहरोन के जीवनकाल में पुरोहित का काम करते
रहे. 5 फिर याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 6 "लेवी गोत्र को बुलाकर उन्हें
अहरोन की उपस्थिति में ले जाओ ताकि वे पुरोहित अहरोन की सहायता के
लिए तैयार रहें. 7 वे मिलनवाले तंबू के सामने उपस्थित रहते हुए अहरोन तथा
सारे इस्राएल के लिए अपनी सेवा किया करें, जिससे यह उनके लिए साक्षी के
तंबू की सेवा हो. 8 इस्राएलियों से ज़िम्मेदारियों को निभाने के अलावा वे
मिलनवाले तंबू की वस्तुओं का ध्यान रखेंगे, यह उनकी साक्षी के तंबू संबंधित
सेवा होगी. 9 इस प्रबंध के अंतर्गत तुम सारे लेवियों को अहरोन तथा उनके पुत्रों
के अधीन कर दोगे, वे सारे इस्राएल में से उन्हें सौंप दिए गए हैं. 10 इस प्रकार
तुम अहरोन तथा उसके पुत्रों को नियुक्त कर दोगे, कि वे पुरोहित के रूप में सेवा
करते रहें, किंतु जो भी साधारण व्यक्ति साक्षी के तंबू के निकट आ जाए, उसे
प्राण-दंड दे दिया जाए." 11 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश भी दिया, 12
"अब यह देखो, मैंने लेवी को, सारे इस्राएल में से प्रत्येक पहलौठे के स्थान पर,
अर्थात् उस संतान के स्थान पर, जो गर्भ का प्रथम फल होता है, अलग कर
लिया है, कि लेवी सिर्फ मेरे होकर रहें. 13 क्योंकि सभी पहलौठे मेरे हैं. जिस
दिन मैंने मिस्र देश में सारे पहिलौठों को मारा, मैंने इस्राएल के घराने में से सभी
पहिलौठों को अपने लिए अलग कर लिया था; मनुष्यों एवं पशुओं, दोनों में से.
वे मेरे रहेंगे. मैं याहवेह हूं." 14 इसके बाद याहवेह ने सीनायी के निर्जन प्रदेश में
मोशेह को यह आज्ञा दी, 15 "तुम लेवी के वंश की, उनके गोत्र तथा उनके
परिवारों के अनुसार, गिनती करोगे; हर एक नर बालक की जिसकी आयु एक
महीने से अधिक है." 16 इसलिये मोशेह ने उन्हें जैसी आज्ञा दी थी, याहवेह
की आज्ञा के अनुसार उनकी गिनती की. 17 उनके नामों के अनुसार लेवी के
पुत्र इस प्रकार थे: गेरशोन, कोहाथ, तथा मेरारी. 18 परिवारों के अनुसार
गेरशोन के पुत्र: लिबनी तथा शिमेई. 19 परिवारों के अनुसार कोहाथ के पुत्र:
अमराम, इज़हार, हेब्रोन तथा उज्ज़िएल. 20 परिवारों के अनुसार मेरारी के पुत्र:
माहली तथा मूशी ये ही हैं. लेवियों के परिवार उनके पितरों के घरानों के
अनुसार. 21 गेरशोन से लिबनियों तथा शिमेईयों के परिवारों का गोत्र निकला
और ये गेरशोनियों का परिवार कहलाए. 22 जब एक माह से ऊपर की अवस्था
के नर गिने गए; उनकी संख्या 7,500 थी. 23 गेरशोनियों के परिवारों के
लिए यह तय किया गया कि वे साक्षी के तंबू के पीछे पश्चिम दिशा में अपने
शिविर डाला करेंगे. 24 गेरशोनियों के घराने का प्रधान था लाएल का पुत्र
एलियासाफ़. 25 गेरशोन-वंशजों के लिए मिलनवाले तंबू के संबंध में निर्धारित
कार्य था साक्षी के तंबू का आंगन, उसके आवरण तथा मिलनवाले तंबू के द्वार
का पर्दा, 26 आंगन के पर्दे, उस आंगन के द्वार का पर्दा, जो वेदी एवं साक्षी के
तंबू के चारों ओर है, उसकी डोरियां, जो इनसे संबंधित विधियों के अनुसार
प्रयोग की जाती हैं. 27 कोहाथ से अमरामियों का, इज़हारियों का, हेब्रोनियों
का तथा उज्जिएलियों के परिवारों का कुल निकला; ये ही कोहाथियों के
परिवार थे. 28 जब एक महीने से अधिक आयु के हर एक पुरुष की गिनती
की गई, तो संख्या 8,600 पाई गई. ये पवित्र स्थान से संबंधित कार्य किया
करते थे. 29 इनके शिविर डालने के लिए ठहराया हुआ स्थान साक्षी के तंबू
का दक्षिणी इलाका था. 30 कोहाथियों के गोत्रों के परिवारों का प्रधान था
उज्ज़िएल का पुत्र एलिज़ाफ़ान. 31 इनके लिए ठहराई हुई ज़िम्मेदारी थी:
वाचा का संदूक, मेज़, दीवट, वेदियां, उन्हीं के द्वारा उपयोग किए जानेवाले
पवित्र स्थान के सारे बर्तन, पर्दे तथा उनसे संबंधित सारी सेवाएं. 32 लेवियों का
प्रमुख प्रधान था पुरोहित अहरोन का पुत्र एलिएज़र. इसे ही पवित्र स्थान से
संबंधित सारी सेवाओं की देखभाल करनी होती थी. 33 मेरारी से माहलियों
तथा मुशियों के परिवारों का कुल निकला, जो मेरारी के परिवार कहलाए. 34
जब एक महीने से ऊपर की आयु के पुरुष गिने गए; उनकी संख्या 6,200 थी.
35 मेरारी के कुल के परिवारों का प्रधान था अबीहाइल का पुत्र ज़ूरिएल.
इनके शिविर के लिए ठहराया हुआ स्थान साक्षी के तंबू के उत्तर में था. 36
मेरारी के वंशजों के लिए ठहराया हुआ कार्य यह था: साक्षी के तंबू के चौखट,
उसकी छड़ें, उसके खंभे, उसके आधारपात्र, उसका सारा सामान तथा इन
सबसे संबंधित सारे कार्य, 37 तथा आंगन के आस-पास के खंभे तथा उनके
आधारपात्र, उनकी खूंटियां तथा उनकी डोरियां. 38 वे, जिन्हें सूर्योदय की
दिशा, साक्षी के तंबू के पूर्व में मिलनवाले तंबू के सामने शिविर डालने के लिए
नियुक्त किया गया था, वे मोशेह एवं अहरोन तथा उनके पुत्र हैं. वे पवित्र स्थान
से संबंधित कार्यों की रखवाली करेंगे, जो इस्राएल के प्रति उनका कर्तव्य होगा.
किंतु यदि कोई साधारण व्यक्ति पवित्र स्थान के निकट आए, तो उसको मार
दिया जायेगा. 39 याहवेह द्वारा मोशेह एवं अहरोन को दी गई आज्ञा के अंतर्गत,
जो गिनती उनके परिवारों के अनुसार की गई थी, हर एक महीने से ऊपर की
आयु के पुरुष की गिनती से प्राप्त कुल संख्या थी 22,000. 40 इसके बाद
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "इस्राएल में एक महीने से अधिक आयु के हर
एक पुरुष की गिनती करो तथा उनके नामों की सूची बनाओ. 41 इस्राएल के
घराने के पहिलौठों के तथा इस्राएल के पशुओं के पहिलौठों के स्थान पर तुम
मेरे लिए लेवियों को अलग कर लोगे. मैं ही वह याहवेह हूं." 42 इसलिये
मोशेह ने इस्राएल के घराने के सभी पहिलौठों की गिनती की, जैसा कि उन्हें

याहवेह की ओर से आज्ञा दी गई थी. 43 ये सभी एक महीने से अधिक आयु
के पुरुष थे, जिनकी गिनती नामों एवं संख्या के आधार पर की गई. इनकी
संख्या कुल 22,273 हुई. 44 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 45
"इस्राएल के घराने के सभी पहिलौठों के स्थान पर, लेवियों एवं उनके पशुओं
को अलग कर लो. लेवी मेरे होंगे. मैं ही वह याहवेह हूं. 46 इस्राएल के घराने
के 273 पहिलौठों की छुड़ौती के लिए, जो लेवियों की संख्या से अधिक हैं,
47 तुम प्रति व्यक्ति पांच शेकेल लोगे; तथा ये शेकेल पवित्र स्थान के मानक
शेकेल होंगे एक शेकेल में बीस गेराह. 48 तुम यह छुड़ौती की राशि अहरोन
तथा उसके पुत्रों को सौंप दोगे." 49 इसलिये मोशेह ने उन व्यक्तियों से, जो
लेवियों की संख्या के अलावा थे, वह छुड़ौती की राशि इकट्ठी कर ली, उनके
अलावा, जो लेवियों की संख्या के अलावा थे. 50 इस्राएल के पहिलौठों से
उन्होंने पवित्र स्थान के मानक शेकेल में धनराशि इकट्ठी कर ली, जो 1,365
शेकेल थी. 51 यह राशि मोशेह ने अहरोन एवं उसके पुत्रों को, याहवेह के
आदेश के अनुसार, जैसा आदेश उन्होंने मोशेह को दिया था, सौंप दी.

4 इसके बाद याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा दी: 2 "लेवी के
घराने में से, परिवारों के अनुसार कोहाथ के घराने की गिनती उनके कुल
और परिवारों के अनुसार करो. 3 तीस से पचास वर्ष की आयु के सभी पुरुषों
की गणना करोगे. ये वे सभी होंगे, जो मिलनवाले तंबू में सेवा करने के लिए चुने
जाते हैं. 4 "कोहाथ के घराने के लिए मिलनवाले तंबू में परम पवित्र वस्तुओं के
उपयोग से संबंधित कार्य यह होगा. 5 जब यात्रा के लिए छावनी कूच करने पर
हो, तब अहरोन एवं उसके पुत्र भीतर जाकर ढंकने वाले पर्दे को उतारेंगे और
साक्षी पत्र के संदूक को इससे ढांक देंगे. 6 इसके बाद वे इस पर सूंस की खाल
फैला देंगे तथा इस पर वे संपूर्ण नीले रंग के वस्त्र को फैलाकर संदूक के दोनों डंडे
उनके स्थानों में पिरो देंगे. 7 "उपस्थिति रोटी की मेज़ पर भी वे एक संपूर्ण नीले
रंग का वस्त्र फैला देंगे और इस पर वे बर्तन, बलि के कटोरे तथा पेय बलि की
सुराहियां रख देंगे. उस पर वहां सदैव रखी जाने के लिए नियत रोटी भी रखी
जाना ज़रूरी है. 8 इन सबके ऊपर वे एक लाल रंग का वस्त्र फैला देंगे तथा
इसके भी ऊपर होगी सूंस की खाल. इसके बाद वे इसके डंडे उनके स्थान पर
पिरो देंगे. 9 "फिर वे एक नीले रंग के वस्त्र से दीवट को इसके दीपों एवं इन्हें
बुझाने के उपकरण के साथ ही ढांक देंगे, इसके अलावा इसके साथ उपयोग
होनेवाले बर्तन, तेल के बर्तन, जो इसके साथ ही इस्तेमाल किए जाते हैं. 10 इन
सभी बर्तनों को वे सूंस की खाल से ढांक देंगे तथा इसे वे उठानेवाले डंडों पर
रख देंगे. 11 "सोने की वेदी पर वे एक नीले रंग का वस्त्र फैला देंगे इसके बाद वे
इसे सूंस की खाल से ढांक कर और फिर डंडों को इसमें पिरो देंगे. 12 "इसके
बाद वे पवित्र स्थान में प्रयोग के लिए ठहराए गए सभी बर्तन लेकर उन्हें एक
नीले रंग के वस्त्र में रख देंगे, इसे सूंस की खाल से ढांक देंगे, और तब उठाने के
डंडे इसमें पिरो देंगे. 13 "वे वेदी की राख को हटाकर उसे एक बैंगनी वस्त्र से
ढांक देंगे. 14 वे इसके साथ ही इससे संबंधित सारे बर्तन उस पर रख देंगे: अग्नि
पात्र, अंगीठियां, कांटे, फावड़े, चिलमचियां तथा वेदी से संबंधित पात्र तथा इन
सब पर वे सूंस की खाल फैला देंगे और तब उठाने के डंडे उसके स्थान पर पिरो
देंगे. 15 "जब अहरोन एवं उसके पुत्र पवित्र वस्तुओं तथा पवित्र स्थान के वस्त्रों
को ढांक चुकें, और छावनी कूच के लिए तैयार हो, कोहाथ के पुत्र उनको उठाने
जाएं, वे यह ध्यान रखें कि किसी भी पवित्र वस्तु से वे छू न जाएं; नहीं तो
उनकी मृत्यु तय है. कोहाथ के घराने की यह ज़िम्मेदारी है कि वे मिलनवाले
तंबू की इन वस्तुओं को उठाया करें. 16 "अहरोन के पुत्र पुरोहित एलिएज़र
को, दीपों के लिए उपयोग में लाए जानेवाले तेल, सुगंधधूप, नित्य अन्नबलि,
अभिषेक के तेल; अर्थात् पूरे साक्षी के तंबू तथा उसमें रखी वस्तुओं, पवित्र
स्थान तथा संबंधित वस्तुओं की पूरी ज़िम्मेदारी होगी." 17 इसके बाद याहवेह
ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा दी, 18 "यह ध्यान रखना कि लेवियों
में से कोहाथियों के परिवार नष्ट न हो जाएं. 19 किंतु जब वे पवित्र वस्तुओं
के निकट जाएं, तो उनके जीवन की सुरक्षा की दृष्टि से यह अवश्य किया
जाए: अहरोन तथा उसके पुत्र उनके साथ भीतर जाकर हर एक को उसके लिए
ठहराया हुआ कार्य सौंप दें; 20 किंतु किसी भी परिस्थिति में, कोहाथियों भीतर
जाकर एक क्षण के लिए भी पवित्र वस्तुओं पर दृष्टि करना उनके लिए घातक
सिद्ध होगा." 21 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 22 "अब गेरशोन
के घराने की गिनती उनके परिवारों एवं कुल के अनुसार करो. 23 तीस से
पचास वर्ष की आयु के सभी पुरुषों की गिनती करनी है. ये सभी वे होंगे, जो
मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए चुने जाते हैं. 24 "गेरशोनियों के परिवारों के
लिए ठहराई हुई सेवा इस प्रकार है: सेवा करना तथा भार उठाना. 25 वे साक्षी
तंबू, अर्थात् मिलनवाले तंबू के पर्दे एवं ढकने वाले वस्त्र, सूंस के चमड़े का पर्दा,
मिलनवाले तंबू के द्वार के लिए पर्दा, 26 उस आंगन के पर्दे जो साक्षी तंबू
और वेदी के चारों ओर है, उसके द्वार का पर्दा, पर्दों की डोरें तथा काम में
आनेवाले सभी सामान तथा वह सब जो सामान्यतः किया जाता है, वे करते रहेंगे.
27 गेरशोनियों के लिए जो भी सेवाएं, तथा सामग्री सामान उठाने से संबंधित
जवाबदारी ठहराई गई है, उनको वे सिर्फ अहरोन एवं उसके पुत्र के आदेश पर
ही किया करेंगे, तथा तुम भार उठाने से संबंधित जवाबदारी उन्हें सौंप दोगे. 28
गेरशोनियों का उनके परिवारों के अनुसार मिलनवाले तंबू में किए जाने के
कार्यों का विवरण यही है, तथा उनकी सेवाओं के विषय में निर्देश पुरोहित
अहरोन के पुत्र इथामार द्वारा प्रदान किए जाएंगे. 29 "मेरारी के पुत्रों की गिनती
उनके परिवारों के अनुसार उनके पितरों के घराने में करोगे. 30 तीस से पचास
वर्ष की आयु के सभी पुरुषों की गिनती करनी है. ये वे होंगे, जिन्हें मिलनवाले
तंबू में सेवा के लिए भर्ती किया जाता है. 31 उनके द्वारा मिलनवाले तंबू की
सेवा में उठाने का कार्य इस प्रकार किया जाएगा: साक्षी तंबू के पल्ले, छड़ें,
खंभे, तथा आधार, 32 आंगन के चारों ओर के खंभे, उनके आधार, उनकी
खूंटियां, उनकी डोरियां तथा उनके उपकरण, उनके उपयोग से जुड़ी हर चीज़.
तुम हर एक व्यक्ति को उसका नाम लेकर वे वस्तुएं सौंपोगे, जिनका भार वह
उठाया करेगा. 33 मिलनवाले तंबू में पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार के निर्देश
में मेरारी के वंशजों के परिवारों द्वारा की जाने के लिए निर्धारित सेवा यही
होगी." 34 फिर मोशेह अहरोन, तथा सारी सभा के प्रधानों ने कोहाथ के घराने
के परिवारों के अंतर्गत उनके पितरों और कुलों के अनुसार उनकी गिनती
की. 35 वे सभी, जो आयु में तीस से पचास वर्ष के पुरुष हैं, जिनकी नियुक्ति
मिलनवाले तंबू की सेवा के लिए की गई थी, इसमें गिने गए. 36 परिवारों के
अनुसार इनकी कुल संख्या 2,750 थी. 37 ये सभी कोहाथियों के परिवारों से
गिने गए लोग थे; हर एक, जो मिलनवाले तंबू में सेवारत था, जिनकी गिनती
मोशेह एवं अहरोन ने मोशेह को याहवेह द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार की
थी. 38 गेरशोन के परिवारों के अंतर्गत पितरों और कुलों के अनुसार सभी
व्यक्तियों की गिनती की गई. 39 वे व्यक्ति, जिनकी आयु तीस वर्ष से ऊपर
तथा तीस से पचास वर्ष है, हर एक पुरुष, जिसे मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए
चुना गया, 40 परिवारों के अंतर्गत, पितरों और कुलों के अनुसार गिने गए
व्यक्तियों की संख्या 2,630 थी. 41 ये गेरशोन के घराने के परिवारों के गिने
गए समस्त व्यक्ति थे; हर एक, जो मिलनवाले तंबू में सेवा करता था. जिनकी
गिनती याहवेह के आदेश के अंतर्गत मोशेह तथा अहरोन ने की. 42 मेरारी के
घराने की उनके परिवारों के अंतर्गत उनके पितरों और कुलों के अनुसार गिने
गए. 43 हर एक पुरुष, जिसकी आयु तीस वर्ष से अधिक तथा तीस से पचास
वर्ष है, जिसे मिलनवाले तंबू की सेवा के लिए चुना गया था, 44 परिवारों
के अनुसार उनकी संख्या थी 3,200. 45 ये मेरारी के घराने के परिवारों

के अनुसार गिने गए समस्त व्यक्ति हैं, जिनकी गिनती मोशेह तथा अहरोन ने
याहवेह के मोशेह को दिए आदेश के अंतर्गत की थी. 46 मोशेह, अहरोन तथा
इस्राएल के प्रधानों द्वारा सभी लेवी पुरुषों की, 47 हर एक पुरुष जिनकी आयु
तीस से पचास वर्ष है, जो मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए उनके परिवारों तथा
पितरों और कुलों के अनुसार गिनती की गई. 48 उनकी संख्या 8,580 थी.
49 यह गिनती मोशेह को याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा के अंतर्गत की गई. हर एक
व्यक्ति की गिनती की गई, जो सेवा करता था, अथवा भार उठानेवाला था. इस
प्रकार ये सभी गिने गए व्यक्ति थे; मोशेह को याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा यही है.

5 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो कि
वे हर एक कुष्ठरोगी, हर एक ऐसे व्यक्ति को, जिसे स्राव हो रहा हो तथा हर
एक को, जो किसी शव को छूने के कारण अशुद्ध हो चुका है, 3 उसे शिविर के
बाहर कर दें, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष; तुम इन्हें शिविर के बाहर इसलिये
कर दोगे कि वह शिविर, जहां मैं इनके बीच निवास करता हूं, दूषित न हो
जाए." 4 इस्राएल के घराने ने यही किया तथा ऊपर लिखे व्यक्तियों को शिविर
के बाहर कर दिया; ठीक जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. इस्राएल के
घराने ने इस आज्ञा का पालन किया. 5 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 6
"इस्राएल के घराने को यह सूचित करो: 'जब कोई स्त्री अथवा पुरुष किसी के
साथ गलत व्यवहार करता है, जो याहवेह के विरुद्ध विश्वासघात है, अर्थात् वह
व्यक्ति दोषी है, 7 तब वह अपना पाप स्वीकार करे, अपनी इस भूल की पूरी-
पूरी भरपाई करे, तथा इसके अलावा उस राशि में उसका पांचवा अंश भी जोड़े
और उस व्यक्ति को सौंप दे, जिसके साथ उसने यह दुर-व्यवहार किया है. 8
किंतु उस स्थिति में, जब उस व्यक्ति का कोई संबंधी नहीं हो, जिसके साथ दुर-
व्यवहार हुआ है, तब भरपाई याहवेह को दी जाए जिसे पुरोहित स्वीकार करेगा.
यह उस मेढ़े के अतिरिक्त होगी, जो प्रायश्चित के लिए ठहराया जाता है. 9
सारी पवित्र भेंट वस्तुओं से संबंधित सारा दसवां अंश, जो इस्राएल का घराना
पुरोहित को दिया करता है, वह पुरोहित का होगा. 10 इस प्रकार हर एक व्यक्ति
द्वारा चढ़ाई गई पवित्र भेंटें पुरोहित की होंगी, जो कुछ कोई भी व्यक्ति पुरोहित
को भेंट करता है, वह पुरोहित ही का हो जाता है.'" 11 इसके बाद याहवेह ने
मोशेह को यह आज्ञा दी, 12 "इस्राएल के घराने को यह सूचित करो: यदि
किसी व्यक्ति की पत्नी बुरी चाल चलकर वैवाहिक जीवन में विश्वासघात कर
देती है, 13 किसी ने उससे संभोग किया है, और उसके पति को इस बात की
कोई भी जानकारी नहीं है, तथा वह उजागर नहीं है, जबकि वह अपवित्र हो
चुकी है, (किंतु इस विषय में कोई गवाह भी नहीं है. उसे संभोग करते हुए किसी
ने भी नहीं देखा है), 14 यदि पति को पत्नी पर संदेह हो जाता है, क्योंकि उसने
स्वयं को अपवित्र कर लिया है. दूसरी स्थिति में, पति अपनी पत्नी पर संदेह
करने लगता है, उसे पत्नी पर संदेह हो जाता है, जबकि पत्नी ने स्वयं को दूषित
किया ही नहीं है, 15 तब पति अपनी पत्नी को पुरोहित के सामने लाएगा. वह
अपनी पत्नी से संबंधित भेंट चढ़ाने के लिए एक एफाह का दसवां भाग जौ का
आटा साथ लाएगा. वह इस पर न तो तेल उण्डेलेगा और न लोबान डालेगा,
क्योंकि यह संदेह के लिए अर्पित की जा रही बलि है. यह स्मरण अन्नबलि है,
अधर्म के स्मरण की बलि. 16 "'इसके बाद वह स्त्री को अपने निकट बुलाकर
याहवेह के सामने खड़ा कर देगा. 17 पुरोहित मिट्टी के पात्र में पवित्र जल लेकर
साक्षी तंबू की भूमि पर से कुछ धूल लेकर उस जल में मिला देगा. 18 फिर
पुरोहित उस स्त्री को याहवेह के सामने खड़ा करेगा तथा उस स्त्री के बाल खोल
देने की आज्ञा देगा. इसके बाद वह स्मरण की अन्नबलि उसके हाथों में दे देगा,
जो वास्तव में संदेह की बलि है. पुरोहित के हाथों में इस समय वह कड़वाहट
का जल होगा, जो शाप लगने का कारण होता है. 19 पुरोहित उस स्त्री को शपथ
लेने का आदेश देकर कहेगा, "अपने पति के साथ वैवाहिक जीवन में रहते हुए
यदि किसी पराए पुरुष ने तुम्हारे साथ संभोग नहीं किया है तथा तुम यदि कुकर्म
में अपवित्र नहीं हुई हो, तो इस कड़वाहट के जल से आनेवाले शाप का तुम पर
कोई प्रभाव न होगा. 20 किंतु, यदि अपने पति के साथ होते हुए भी, वैवाहिक
जीवन में भ्रष्ट हो चुकी हो, यदि तुमने अपने पति के अलावा किसी पराए पुरुष
से संभोग करने के द्वारा स्वयं को अपवित्र कर लिया है"— 21 फिर पुरोहित
उस स्त्री को शाप की शपथ लेने का आदेश देगा, और उससे कहेगा, "याहवेह
लोगों के बीच तुम्हें इस झूठी शपथ का शाप बना दें, याहवेह तुम्हारी जांघ को
गला दें, तुम्हारा पेट फूल जाए, 22 जब तुम यह जल जो श्राप लानेवाला है,
पियोगी तो तुम्हारा पेट फूल जाएगा, तथा तुम्हारी जांघ गल जाएगी." "'वह स्त्री
कहेगी, "आमेन, आमेन." 23 "'तब वह पुरोहित ये शाप एक चमड़े के पत्र पर
लिख देगा और इन्हें उस कड़वाहट के जल में धो देगा. 24 इसके बाद वह यह
शाप लानेवाला कड़वाहट का जल उस स्त्री को पीने के लिए दे देगा; वह इसे पी
लेगी और यह जल कड़वाहट पैदा कर देगा. 25 फिर पुरोहित उस स्त्री के हाथों
से वह संदेह की अन्नबलि ले लेगा तथा इसे याहवेह के सामने हिलाएगा और
इसे वेदी पर ले जाएगा. 26 वह इसमें से एक मुट्ठी भर स्मरण अन्नबलि लेकर
वेदी की आग में डालकर इसे जलाएगा तथा उस स्त्री को वह जल पीने की आज्ञा
देगा. 27 जब वह उसे जल पिलाया जा चुके तब यह होगा, कि यदि उसने अपने
वैवाहिक जीवन में विश्वासघात किया है; वह शाप लानेवाला जल उसके पेट में
जाकर कड़वाहट पैदा करेगा, उसका पेट फूल जाएगा तथा उसकी जांघ गल
जाएगी और वह स्त्री अपने लोगों के बीच शापित घोषित हो जाएगी. 28 किंतु
यदि उस स्त्री ने स्वयं को अपवित्र नहीं किया है, वह शुद्ध है, वह इससे निर्दोष
होकर गर्भधारण करती रहेगी. 29 "'संदेह से संबंधित विधि यही होगी: यदि
वैवाहिक जीवन में होते हुए कोई स्त्री भ्रष्ट होकर स्वयं को अपवित्र कर लेती है,
30 अथवा यदि किसी पुरुष में अपनी पत्नी के प्रति संदेह के भाव पैदा हो जाते हैं,
वह स्त्री को याहवेह के सामने उपस्थित करेगा तथा पुरोहित यह सारी प्रक्रिया की
विधि उसके साथ पूरी करेगा. 31 इसके अलावा, वह पुरुष दोष मुक्त रहेगा,
किंतु वह स्त्री अपने अधर्म का भार स्वयं उठाएगी.'"

6 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को बुलाकर उन्हें यह
आज्ञा दो: 'जब कोई स्त्री अथवा कोई पुरुष नाज़ीरी संकल्प करता है, तथा
यह संकल्प समर्पण के विषय में हो कि वह स्वयं को याहवेह के लिए समर्पित
करता है, 3 वह दाखमधु से अलग रहे, सिरके का सेवन न करे, चाहे वह अंगूर
के रस से बना हुआ हो अथवा किसी नशीले द्रव्य का. वह अंगूर के रस का भी
सेवन न करे, वह न तो वाटिका से लाए गए अंगूरों का सेवन करे और न ही
सुखाए हुए अंगूरों का. 4 अपने पूरे संकल्प किए हुए समय में वह किसी भी
ऐसी वस्तु को न खाए, जो अंगूर से बनी हो, यहां तक कि न तो अंगूर के बीज
से लेकर अंगूर के छिलकों का. 5 "'जब तक उसके संकल्प का समय है,
उसके सिर पर उस्तरा न फेरा जाएगा. जिस समय के लिए उसने संकल्प किया
है वह याहवेह के लिए अलग तथा पवित्र बना रहेगा; वह अपने बाल लंबे होते
जाने देगा. 6 "'याहवेह के लिए अलग रहने के समय में वह कभी भी किसी
शव के पास नहीं जाएगा. 7 वह स्वयं को अपने माता-पिता अथवा भाई-बहन
की मृत्यु होने पर भी अशुद्ध नहीं करेगा क्योंकि वह अपनी देह सहित परमेश्वर
के लिए अलग किया गया है. 8 अलग रहने के पूरे समय तक वह याहवेह के
लिए पवित्र है. 9 "'किंतु यदि उसके निकट ही किसी व्यक्ति की मृत्यु अचानक
हो गई हो, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने समर्पित बालों को अशुद्ध कर देता
है, तब वह उस दिन, जब वह स्वयं को अलग कर लेता है, अपने बाल मुंडवा
ले. 10 आठवें दिन वह दो पण्डुक अथवा दो कबूतर के बच्चे तंबू के द्वार पर
लाकर पुरोहित को सौंप देगा. 11 पुरोहित एक पक्षी को पापबलि के लिए तथा
अन्य पक्षी होमबलि के लिए भेंट करके उसके लिए प्रायश्चित विधि पूरी करेगा,

क्योंकि वह उस व्यक्ति के शव के कारण अशुद्ध हो गया था. उसी दिन वह
व्यक्ति अपने सिर को पवित्र करेगा, **12** तथा वह याहवेह के सामने नाज़री होने
की अवधि को भेंट करेगा. फिर वह एक वर्ष का मेमना दोष बलि के रूप में भेंट
करेगा. उसके संकल्प की पूरी अवधि उसके अशुद्ध हो जाने के कारण मान्य
नहीं होगी. **13** "'संकल्प लेने के दिन पूरे होने पर उस नाज़ीर के लिए विधि
इस प्रकार है: वह अपनी भेंट मिलनवाले तंबू के द्वार पर ले आएगा. **14** वह
अपनी यह भेंट याहवेह को चढ़ाएगा: एक वर्ष का निर्दोष मेमना, एक वर्ष की
भेड़ पापबलि के लिए, तथा एक निर्दोष मेढ़ा मेल बलि के लिए. **15** इनके
अलावा मैदे की तेल मिली हुई अखमीरी रोटी एक टोकरी, तथा अखमीरी
पपड़ियां, जिन पर तेल चुपड़ दिया गया हो. इनके साथ अन्नबलि तथा अर्घ भी.
16 "'यह सब पुरोहित याहवेह के सामने लाकर भेंट करेगा; इनमें अखमीरी
रोटियां भी शामिल होंगी. पुरोहित अन्नबलि एवं अर्घ भी भेंट करेगा. **17** वह
याहवेह को मेल बलि के लिए अखमीरी रोटी की टोकरी के साथ मेढ़ा भी भेंट
करेगा. इसी प्रकार अन्नबलि एवं अर्घ भी. **18** "'इसके बाद वह नाज़ीर अपने
सिर के बाल मिलनवाले तंबू के प्रवेश द्वार पर जाकर मुंडवाएगा, तथा अपने भेंट
किए हुए बालों को उस आग में डाल देगा, जो मेल बलियों के बलि पशु के
नीचे जलती है. **19** "'जब वह नाज़ीर अपना सिर मुंडवा चुके, तब पुरोहित
उसके हाथों में उस मेढ़े के कंधे, जो इस समय उबाले जा चुके होंगे, टोकरी से
एक अखमीरी रोटी तथा एक अखमीरी पपड़ी रख देगा. **20** इसके बाद पुरोहित
इन्हें याहवेह के सामने हिलाने की बलि के रूप में हिलाएगा. हिलाने के लिए
ठहराए हुए भेंट के मेढ़े का सीना तथा ऊपर उठाकर भेंट करने के लिए ठहराई
हुई जांघ उस पुरोहित के लिए पवित्र होगी. यह सब हो जाने के बाद उस नाज़ीर
के लिए दाखमधु पीना वर्जित न रहेगा.' **21** "'यही है उस नाज़ीर से संबंधित
विधि, उसके अलावा, जो कुछ उसके लिए संभव है! जो अपने अलग रहने के
द्वारा याहवेह के सामने संकल्प लेता है, उसने जो कुछ संकल्प किया है, उसे वह
अपने अलग रहने की विधि के अनुसार अवश्य पूरी करे.'" **22** फिर याहवेह
ने मोशेह को यह आज्ञा दी, **23** "अहरोन एवं उसके पुत्रों को यह आज्ञा दो,
'जब तुम इस्राएल के घराने को आशीर्वाद दो, तो उनसे इस प्रकार कहना: **24**
"'"याहवेह तुम्हें आशीष प्रदान करें, तथा तुम्हें सुरक्षित रखें; **25** याहवेह तुम पर
अपने मुख का प्रकाश चमकाकर तुम पर अनुग्रह करें; **26** याहवेह तुम्हारी ओर
मुड़कर तुम्हें शांति प्रदान करें."' **27** "जब वे इस्राएल के घराने पर मेरा नाम
रखेंगे, तब मैं उनका भला करूंगा."

7 जिस दिन मोशेह ने पवित्र स्थान से संबंधित सारा काम पूरा किया, उन्होंने
इसका अभिषेक किया, इसे उसकी सारी वस्तुओं सहित पवित्र किया; वेदी
एवं उस पर के सारे बर्तन. मोशेह ने इनका अभिषेक किया तथा इसके बाद
इनको पवित्र किया. **2** फिर इस्राएल के प्रधानों ने, जो उनके पितरों के प्रधान
थे, भेंटें चढ़ाईं. ये सभी गोत्रों के प्रधान थे, वे ही जो गिने गए व्यक्तियों के नेता
ठहराए गए थे. **3** जब उन्होंने याहवेह के सामने अपनी भेंटें प्रस्तुत की, तब वे ये
चारों ओर से बंद छः गाड़ियां, बारह बैल, दो नेताओं के बीच एक गाड़ी तथा
प्रधान के लिए एक बैल. ये सभी उन्होंने पवित्र स्थान के सामने भेंट कर दी. **4**
फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, **5** "उन लोगों से ये भेंटें स्वीकार कर
लो कि इनका प्रयोग मिलनवाले तंबू के कार्यों के लिए किया जा सके. ये
तुम लेवियों को दे दोगे, हर एक व्यक्ति को उसके लिए ठहराए गए कार्य के
अनुसार." **6** फिर मोशेह ने वे गाड़ियां तथा वे बैल लेवियों को सौंप दिए. **7** दो
गाड़ियां एवं चार बैल गेरशोन के घराने को, जो उनकी सेवाओं के अनुसार थे,
8 चार गाड़ियां तथा आठ बैल मेरारी के घराने को, उनके कार्य के अनुसार सौंप
दिए. वे ये सेवा पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार की देखभाल में करते थे. **9**
मोशेह ने कोहाथ के घराने को कुछ भी नहीं दिया, क्योंकि उनकी जवाबदारी
थी, पवित्र वस्तुओं से संबंधित कार्य, जिनका भार वे अपने कंधों पर उठाया
करते थे. **10** प्रधानों ने वेदी का अभिषेक किया और वेदी के लिए चढ़ाई भेंट
अर्पित की तथा प्रधानों ने अपनी-अपनी भेंटें वेदी के सामने चढ़ा दी. **11** फिर
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "वेदी के समर्पण के लिए प्रतिदिन एक ही प्रधान
अपनी भेंट चढ़ाए." **12** जिस व्यक्ति ने पहले दिन भेंट चढ़ाई, वह यहूदाह गोत्र
से अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन था. **13** भेंट में उसने अन्नबलि के लिए चांदी
की एक परात एवं एक चांदी की कटोरी भेंट की, जिनमें तेल मिला हुआ मैदा
भरा गया था. पात्र पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल तथा
कटोरी सत्तर शेकेल की थी; **14** सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
धूपदान; **15** होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का नर
मेमना; **16** पापबलि के लिए एक बकरा; **17** मेल बलि के लिए दो बछड़े, पांच
मेढ़े, पांच बकरे तथा पांच एक वर्ष के नर मेमने. यही अम्मीनादाब के पुत्र
नाहशोन द्वारा चढ़ाई गई भेंट थी. **18** दूसरे दिन इस्साखार गोत्र के प्रधान ज़ुअर
के पुत्र नेथानेल ने भेंट चढ़ाई. **19** उसकी भेंट यह थी: एक सौ तीस शेकेल की
एक चांदी की परात, सत्तर शेकेल की एक चांदी की कटोरी; ये दोनों ही पवित्र
स्थान की तौल के शेकेल के अनुसार थे. इन दोनों ही में अन्नबलि के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था; **20** सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
धूपदान; **21** होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर
मेमना; **22** पापबलि के लिए एक बकरा; **23** मेल बलि चढ़ाने के लिए दो
बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक वर्ष के पांच नर मेमने. यह थी ज़ुअर के पुत्र
नेथानेल द्वारा चढ़ाई गई भेंटें. **24** तीसरे दिन ज़ेबुलून के गोत्र से हेलोन के पुत्र
एलियाब ने भेंटें चढ़ाईं. **25** उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस
शेकेल की चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल की चांदी की कटोरी में अन्नबलि
के लिए तेल मिला हुआ मैदा; **26** सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
धूपदान; **27** होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर
मेमना; **28** पापबलि के लिए एक बकरा; **29** मेल बलि के लिए दो बछड़े, पांच
मेढ़े, पांच बकरे, और एक वर्ष के पांच नर मेमने भेंट किए. यह सब हेलोन के
पुत्र एलियाब ने भेंट किए. **30** चौथे दिन शेदेउर के पुत्र एलिज़ुर ने जो रियूबेन
गोत्र का प्रधान था, अपनी भेंटे चढ़ाई. **31** उसने पवित्र स्थान की तौल के
अनुसार एक सौ तीस शेकेल की चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल का चांदी
का कटोरा और इन दोनों ही में ज़ैतून के तेल मिला हुआ महीन आटा, **32**
सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान; **33** होमबलि के लिए
एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का नर मेमना; **34** पापबलि के लिए एक
बकरा; **35** मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, और एक
वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. शेदेउर के पुत्र एलिज़ुर द्वारा यह भेंट चढ़ाई गई.
36 पांचवें दिन ज़ुरीशद्दाय के पुत्र शेलुमिएल ने जो शिमओन गोत्र का प्रधान था,
उसने भेंट चढ़ाई. **37** उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस
शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल की चांदी की कटोरी में अन्नबलि के
रूप में तेल मिला हुआ मैदा, **38** सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
धूपदान; **39** होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का नर
मेमना; **40** पापबलि के लिए एक बकरा; **41** मेल बलि चढ़ाने के लिए दो
बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, और एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह
ज़ुरीशद्दाय के पुत्र शेलुमिएल द्वारा चढ़ाई गई थी. **42** छठवें दिन देउएल के पुत्र
एलियासाफ़ ने, जो गाद के गोत्र का प्रधान था, भेंट चढ़ाई. **43** उसने पवित्र
स्थान की नाप के अनुसार एक सौ तीस शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल
चांदी का कटोरा तथा सत्तर शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा **44**
दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप; **45** होमबलि के लिए एक बछड़ा,
एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर मेमना; **46** पापबलि के लिए एक बकरा; **47**

मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक वर्ष के पांच नर
मेमने चढ़ाए. यह भेंट देउएल के पुत्र एलियासाफ़ द्वारा चढ़ाई गई थी. 48 सातवें
दिन अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा ने जो एफ्राईम गोत्र का प्रधान था, भेंट चढ़ाई.
49 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल चांदी की परात
तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर शेकेल चांदी की कटोरी में तेल
मिला हुआ मैदा 50 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप; 51 होमबलि के
लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर मेमना; 52 पापबलि के लिए
एक बकरा; 53 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक
वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा द्वारा चढ़ाई गई
थी. 54 आठवें दिन पेदाहज़ुर के पुत्र गमालिएल ने जो मनश्शेह के गोत्र का
प्रधान था, भेंट चढ़ाई: 55 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस
शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा दोनों ही जैतून
के तेल मिले महीन आटे से भरे हुए; 56 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित
धूप; 57 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर मेमना;
58 पापबलि के लिए एक बकरा; 59 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच
मेढ़े, पांच बकरे, तथा एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह पेदाहज़ुर के पुत्र
गमालिएल द्वारा चढ़ाई गई भेंट थी. 60 नौवें दिन गिदयोनी का पुत्र अबीदान जो
बिन्यामिन के गोत्र का प्रधान था अपनी भेंट लाया: 61 उसने पवित्र स्थान की
तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का
कटोरा तथा सत्तर शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा तथा 62 दस
शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप; 63 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक
मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर मेमना; 64 पापबलि के लिए एक बकरा; 65 मेल
बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक वर्ष के पांच नर मेमने
चढ़ाए. यह गिदयोनी के पुत्र अबीदान द्वारा चढ़ाई गई भेंट थी. 66 दसवें दिन
अम्मीशद्दाय के पुत्र अहीएज़र ने, जो दान के गोत्र का प्रधान था, भेंट चढ़ाई. 67
उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल चांदी की परात तथा
सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा और दोनों ही में बेहतरीन आटे में जैतून का तेल
मिला हुआ; 68 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप; 69 होमबलि के
लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर मेमना; 70 पापबलि के लिए
एक बकरा; 71 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक
वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह अम्मीशद्दाय के पुत्र अहीएज़र द्वारा चढ़ाई गई
थी. 72 ग्यारहवें दिन ओखरन का पुत्र पागिएल ने जो आशेर के गोत्र का प्रधान
था अपनी भेंट चढ़ाई. 73 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस
शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा और दोनों ही में
बेहतरीन आटे में ज़ैतून का तेल मिला हुआ; 74 दस शेकेल सोने के धूपदान में
सुगंधित धूप; 75 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर
मेमना; 76 पापबलि के लिए एक बकरा; 77 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो
बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह ओखरन के
पुत्र पागिएल द्वारा चढ़ाई गई थी. 78 बारहवें दिन, नफताली गोत्र से एनन का पुत्र
अहीरा जो प्रधान था, 79 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस
शेकेल चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर शेकेल
चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा; 80 दस शेकेल सोने के धूपदान में
सुगंधित धूप; 81 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक नर
मेमना; 82 पापबलि के लिए एक बकरा; 83 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो
बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह एनन के
पुत्र अहीरा द्वारा चढ़ाई गई थी. 84 इस्राएल के प्रधानों द्वारा वेदी का अभिषेक
किए जाने के समय चढ़ाई गई संस्कार भेंट यह थी: बारह चांदी की परात, बारह
चांदी की कटोरियां, बारह सोने के धूपदान; 85 हर एक चांदी की परात पवित्र
स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल, हर एक चांदी की कटोरी सत्तर
शेकेल! तब पवित्र स्थान की तौल के अनुसार सारे बर्तन कुल 2,400 शेकेल
हुए. 86 सुगंधित धूप के साथ बारह सोने के हर एक धूपदान, पवित्र स्थान की
नाप के अनुसार दस शेकेल; तब कुल एक सौ बीस शेकेल. 87 होमबलि के
लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेढ़े, अन्नबलि के लिए बारह एक वर्ष के नर
मेमने तथा पापबलि के लिए बारह बकरे. 88 मेल बलि के लिए कुल चौबीस
बछड़े, कुल साठ मेढ़े, कुल साठ बकरे तथा एक वर्ष के साठ नर मेमने. यह
अभिषेक के बाद वेदी के लिए चढ़ाई गई भेंट थी. 89 जब मोशेह मिलनवाले
तंबू में याहवेह से बातचीत करने गए, तब उन्होंने वाचा के संदूक के ऊपर
करुणासन से, दोनों करूबों के बीच से, एक आवाज सुनी, जो उन्हें संबोधित
कर रही थी; इस प्रकार याहवेह ने उनसे यह बातें की थी.

8 तब याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "अहरोन को यह आज्ञा दो, 'जब-
जब तुम दीपों को दीपदान पर रखो, ये सातों दीप सामने की तरफ़ प्रकाश
देंगे.'" 3 अहरोन ने यही किया. उसने दीपों को दीपदान के सामने की ओर
रखा, जैसा याहवेह ने मोशेह द्वारा आज्ञा दी थी. 4 इस दीपदान की बनावट इस
प्रकार की गई थी: यह पीटे हुए सोने से बनाया गया था. यह इसके आधार से
दीप फूलों तक पीटे हुए सोने से बना था. यह ठीक याहवेह द्वारा मोशेह को दिए
गए नमूने के अनुसार था, तब उसने दीपदान को उसी के अनुसार बनाया था. 5
याहवेह ने मोशेह को दोबारा आज्ञा दी: 6 "सारे इस्राएल के घराने में से लेवियों
को अलग करो तथा उन्हें पवित्र करो. 7 उनके शुद्ध करने की प्रक्रिया यह होगी:
उन पर पवित्र जल का छिड़काव करो, तथा वे अपनी पूरी देह पर उस्तरा
चलाएं, वस्त्रों को धो डालें और वे स्वच्छ हो जाएंगे. 8 फिर वे एक बछड़ा
लेकर तेल से सने मैदे के साथ अन्नबलि के रूप में चढ़ाएं तथा एक अन्य बछड़ा
तुम पापबलि के रूप में चढ़ाओगे. 9 तुम लेवियों को इस प्रकार मिलनवाले तंबू
के सामने प्रस्तुत करोगे. तुम समस्त इस्राएल को इकट्ठा करोगे, 10 तथा लेवियों
को याहवेह के सामने प्रस्तुत करोगे तथा इस्राएल के घराने लेवियों पर अपने
हाथ रखेंगे. 11 अहरोन लेवियों को याहवेह के सामने इस्राएलियों की ओर
हिलायी हुई भेंट चढ़ाएगा ताकि वे याहवेह की सेवा के लिए ठहर सकें. 12
"फिर लेवी अपने हाथ उन बछड़ों पर रखेंगे और एक को याहवेह के लिए
पापबलि तथा अन्य को होमबलि के रूप में भेंट कर देंगे ताकि इससे यह लेवियों
के लिए प्रायश्चित बलि होगी. 13 तुम लेवियों को अहरोन तथा उसके पुत्रों के
सामने खड़ा होने के लिए कहोगे, कि वे याहवेह के सामने हिलाने की भेंट के
लिए अर्पण किए जाएं. 14 इस प्रकार तुम लेवियों को इस्राएल के घराने से
अलग करोगे. लेवी मेरे रहेंगे. 15 "यह सब पूरा हो जाने पर लेवी जाकर
मिलनवाले तंबू में अपनी-अपनी ठहराई गई सेवाओं में लग सकते हैं; मगर
ज़रूरी है कि तुम उन्हें पवित्र कर उन्हें हिलाने वाली भेंट के रूप में अर्पण करोगे;
16 क्योंकि वे इस्राएल के घराने में से पूरी तरह मुझे दे दिए गए हैं. मैंने ही उन्हें
इस्राएल के घराने में से हर एक स्त्री के गर्भ के पहलौठों के स्थान पर अपने लिए
ले लिया है. 17 क्योंकि इस्राएल के घराने में से हर एक पहलौठा मेरा है; चाहे
मनुष्य हो अथवा पशु. जिस दिन मैंने मिस्र देश में हर एक पहलौठे को मारा था,
मैंने लेवियों को अपने लिए अलग कर लिया था. 18 किंतु मैंने लेवियों को
इस्राएल के घराने के हर एक पहिलौठों के स्थान पर ले लिया है. 19 मैंने लेवी
वंशजों को इस्राएल के घराने में से अहरोन तथा उसके पुत्रों को भेंट के रूप में दे
दिया है कि वे इस्राएल के घराने के लिए मिलनवाले तंबू की सेवा किया करें तथा
इस्राएल के घराने के लिए प्रायश्चित करें, कि इस्राएल के घराने पर पवित्र स्थान
के निकट आने पर महामारी न आ पड़े." 20 फिर मोशेह, अहरोन तथा इस्राएल
के घराने की पूरी सभा ने लेवियों के संबंध में यही किया जैसा आदेश याहवेह ने
मोशेह को लेवियों के संबंध में दिया था. 21 दूसरी ओर, लेवियों ने भी स्वयं को

अपने पापों से पवित्र किया तथा अपने वस्त्र धो डाले. अहरोन ने उन्हें याहवेह के
सामने हिलायी हुई भेंट के रूप में चढ़ाया. अहरोन ने उन्हें शुद्ध करने के उद्देश्य से
उनके लिए प्रायश्चित भी किया. 22 इसके बाद लेवी मिलनवाले तंबू में अहरोन
एवं उसके पुत्रों के साथ अपनी-अपनी ठहराई हुई सेवाएं करने के लिए प्रवेश
हुए, जैसा कि लेवियों के विषय में मोशेह को याहवेह की आज्ञा थी. यह सब
वैसा ही पूरा कर दिया गया. 23 इसके बाद याहवेह ने मोशेह से कहा, 24 "लेवी
सेवा के लिए यह विधि लागू होगी: पच्चीस वर्ष की आयु से ऊपर वे मिलनवाले
तंबू में सेवा प्रारंभ किया करेंगे. 25 पचास वर्ष की अवस्था होने पर वे यह सेवा
समाप्त कर सेवा निवृत्त हो जाएंगे. 26 हां, तब मिलनवाले तंबू में अपने भाइयों
की सहायता अवश्य कर सकते हैं ताकि सेवा बिना किसी रुकावट के चलती
रहे, किंतु वे स्वयं कोई कार्य नहीं करेंगे."

9 मिस्र देश से निकलने के बाद दूसरे वर्ष के पहले महीने में सीनायी के निर्जन
प्रदेश में याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 2 "अब यह संभव है कि
इस्राएल का घराना ठहराए गए समय पर फ़सह उत्सव को मनाया करे. 3 इसी
माह के चौदहवें दिन पर गोधूली के अवसर पर ठहराए गए समय पर तुम फ़सह
उत्सव मनाया करोगे. तुम यह इसकी सारी विधियों एवं नियमों के अनुसार
करोगे." 4 फिर मोशेह ने सारे इस्राएल के घराने को फ़सह उत्सव मनाने का
आदेश दिया, 5 इस्राएल के घराने ने पहले माह के चौदहवें दिन सूर्यास्त के समय
में सीनायी के निर्जन प्रदेश में मोशेह को दिए गए याहवेह के आदेश के अनुसार
इस उत्सव को मनाया. 6 किंतु उनमें कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे, जो शव को छूने के
कारण इस अवसर पर अशुद्ध हो चुके थे. परिणामस्वरूप वे उस दिन उनके लिए
फ़सह उत्सव न मना सके; तब वे उसी समय मोशेह तथा अहरोन से पूछताछ
करने पहुंचे. 7 उन्होंने अपना पक्ष इस प्रकार रखा, "यद्यपि हम शव छूने के
कारण इस समय अपवित्र हैं, हमें अन्य इस्राएल के घराने के साथ याहवेह को
भेंट चढ़ाने से दूर क्यों रखा जा रहा है?" 8 मोशेह ने उन्हें उत्तर दिया, "धीरज
रखो. मैं इस विषय में याहवेह की इच्छा मालूम करूंगा." 9 याहवेह ने मोशेह से
कहा, 10 "इस्राएल के घराने को सूचित करो, 'यदि तुम्हारे बीच कोई व्यक्ति
शव को छूने से अपवित्र हो जाता है, अथवा यदि कोई यात्रा में दूसरे स्थान पर
है, वह फिर भी याहवेह के लिए फ़सह उत्सव को मना सकेगा, 11 परंतु द्वितीय
महीने की चौदहवीं तिथि पर सूर्यास्त के समय में. वे इसको खमीर रहित रोटी
तथा कड़वे साग-पात के साथ खाने के द्वारा मना सकेंगे. 12 वे कोई भी अंश
सुबह के समय तक बचा न रहने देंगे, और न ही पशु की कोई हड्डी तोड़ी जाए. वे
फ़सह उत्सव की सभी विधियों का पालन करेंगे. 13 किंतु वह व्यक्ति, जो
सांस्कारिक रूप से शुद्ध है तथा जो यात्रा पर भी नहीं है और फिर भी वह फ़सह
उत्सव को नहीं मनाता है, उस व्यक्ति को अपने लोगों के बीच से मिटा दिया
जाए, क्योंकि उसने ठहराए गए अवसर पर याहवेह के लिए बलि नहीं चढ़ाई.
वह व्यक्ति स्वयं ही अपने पाप का भार उठाएगा. 14 "'तुम्हारे बीच रह रहे
विदेशी एवं देशी सभी लोगों के लिए एक ही विधि लागू होगी. यदि तुम्हारे बीच
में कोई विदेशी रह रहा है, और वह फ़सह उत्सव से संबंधित विधियां एवं नियम
के अनुसार याहवेह के लिए फ़सह उत्सव को मनाने की इच्छा रखता है, तो उसे
यह करने दिया जाए.'" 15 जिस दिन पवित्र निवास स्थान, यानी साक्षी तंबू, की
स्थापना पूरी हुई एक विशेष बादल ने उस पवित्र निवास स्थान को छा लिया.
सूर्यास्त के बाद से लेकर सुबह तक यह पवित्र निवास स्थान पर आग के समान
दिखाई देता रहा. 16 यह दृश्य नित्य होने लगा: दिन के समय बादल छा जाना,
तथा रात में आग का दर्शन. 17 इस्राएलियों की पूरी यात्रा में जब-जब बादल
साक्षी तंबू के ऊपर से उठता, तब-तब वे वहां से कूच करने का संदेश हुआ करता
था, तथा जहां कहीं वह बादल रुक जाता था, वहां इस्राएली डेरा डाल देते थे.
18 याहवेह के आदेश पर ही इस्राएली कूच कर देते तथा याहवेह के आदेश पर
ही वे डेरा डाला करते थे. जब यह बादल साक्षी तंबू पर स्थिर रहता था तब वे
डेरा डाले रहते थे. 19 यहां तक कि जब यह बादल बहुत समय के लिए साक्षी
तंबू पर ठहरा रहता था, वे वहीं डेरा डाले रहते थे. 20 यदि वह बादल साक्षी तंबू
पर कुछ ही दिन के लिए ठहरा रहता था, तो वे याहवेह के आदेश के अनुसार
डेरा डाले रहते थे और जब चलने के लिए याहवेह का आदेश होता था, वे कूच
कर देते थे. 21 यदि किसी परिस्थिति में यह बादल सिर्फ शाम के समय से सुबह
तक ठहरता था और यदि यह बादल सुबह उठ जाता था, तो वे कूच कर देते थे;
अथवा यदि यह दिन में तथा रात में ठहरा रहता था, जब कभी यह बादल उठता
था, वे कूच कर देते थे. 22 चाहे यह बादल साक्षी तंबू पर दो दिन ठहरे, या एक
महीना, या इससे भी अधिक, इस्राएली डेरा डाले हुए रहते थे, कूच नहीं करते
थे; किंतु जब यह बादल ऊपर उठ जाता था, वे कूच कर देते थे. 23 वे याहवेह
के आदेश पर डेरा डालते थे, याहवेह के ही आदेश पर कूच करते थे. वे याहवेह
के आदेश के प्रति सतर्क थे, उस आदेश के विषय में, जो मोशेह द्वारा याहवेह ने
दिया था.

10 याहवेह ने मोशेह से और कहा: 2 "पीटी गई चांदी की परत से दो
तुरहियां बनाओ, तुम इनका प्रयोग सभा को बुलाने में करोगे, कि वे कूच
के लिए शिविर को तैयार करें. 3 जब ये दोनों साथ साथ बजाए जाएंगे, तब सारी
सभा तुम्हारे सामने मिलनवाले तंबू के द्वार पर हो जाएगी. 4 किंतु यदि सिर्फ एक
ही तुरही बजाई जाएगी, तब प्रधान तथा इस्राएल के दलों के प्रधान तुम्हारे सामने
इकट्ठा होंगे. 5 किंतु जब तुम चेतावनी का बिगुल बजाओगे, तब शिविर के
पूर्वी दिशा के शिविर कूच करेंगे. 6 जब कभी तुम दोबारा चेतावनी का बिगुल
बजाओगे, वे शिविर, जो दक्षिण दिशा में हैं, कूच करेंगे; आवश्यक है कि उनका
कूच शुरू करने के लिए चेतावनी का बिगुल बजाया जाए. 7 जब कभी सभा
इकट्ठी की जाए, तुम बिना किसी चेतावनी नाद के तुरही बजाओगे. 8 "अहरोन
के पुरोहित पुत्र इसके अलावा तुरही नाद करेंगे; यह तुम्हारी आनेवाली सभी
पीढ़ियों के लिए हमेशा की विधि है. 9 जब तुम अपने विरोधी से युद्ध करो,
जिसने तुम पर आक्रमण किया है, तब तुम इन तुरहियों से चेतावनी का बिगुल
बजाओगे, कि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने तुम्हारा स्मरण किया जाए और
शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा हो सके. 10 इसके अलावा आनंद के अवसरों पर,
तुम्हारे ठहराए गए आनंद मनाने के अवसरों पर, तुम्हारे ठहराए गए उत्सवों पर
तथा हर एक महीने की पहली तारीख पर तुम अपनी होमबलियों, अपनी मेल
बलियों के अवसर पर तुरही फूंकोगे; तब वे तुम्हारे परमेश्वर के सामने एक
स्मरण का कार्य करेंगे. मैं ही हूं वह याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर." 11 दूसरे वर्ष के
दूसरे महीने में बीसवीं तारीख को यह बादल साक्षी तंबू से ऊपर की ओर उठ
गया. 12 इस्राएल के घराने ने सीनायी के निर्जन प्रदेश से अपनी यात्राएं शुरू कर
दी. यह बादल पारान के निर्जन प्रदेश में जा ठहर गया. 13 यह ऐसा पहला
अवसर था, जब उन्होंने मोशेह को दिए गए याहवेह के आदेश के अनुसार यात्रा
शुरू की थी. 14 यहूदाह के वंश की छावनी के झंडे, उनके सैन्य व्यवस्था के
अनुसार चल रहे थे. अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन सेनापति था. 15 तब ज़ुअर
का पुत्र नेथानेल इस्साखार गोत्र की सेना का सेनापति था. 16 ज़ेबुलून गोत्र की
सेना का सेनापति था हेलोन का पुत्र एलियाब. 17 इसके बाद साक्षी तंबू उतारा
गया और गेरशोन तथा मेरारी के पुत्रों ने साक्षी तंबू को उठाते हुए कूच किया.
18 इनके बाद रियूबेन गोत्र की छावनी के झंडे के साथ शेदेउर के पुत्र एलिज़ुर
के नेतृत्व में सेना ने कूच किया. 19 इनके साथ थे शिमओन के गोत्र की सेना,
जिनका सेनापति था ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल. 20 गाद के गोत्र की सेना का
सेनापति था देउएल का पुत्र एलियासाफ़. 21 इनके बाद कोहाथियों ने पवित्र
वस्तुओं के साथ कूच किया, कि उनके वहां पहुंचने के पहले ही साक्षी तंबू
खड़ा किया जा सके. 22 इसके बाद एफ्राईम गोत्र के घराने की सेना ने उनकी

छावनी के झंडे के साथ चलना शुरू किया. उनका सेनापति अम्मीहूद का पुत्र
एलीशामा था. 23 मनश्शेह गोत्र के घराने की सेना का सेनापति पेदाहज़ुर का पुत्र
गमालिएल था, 24 बिन्यामिन गोत्र की सेना का सेनापति गिदियोनी का पुत्र
अबीदान था. 25 इसके बाद उनकी सेना के अनुसार दान गोत्र के घराने की
छावनी का झंडा था. कूच करते हुए यह सारी छावनी के लिए प्राण रक्षक सेना
हुई. इस सेना का सेनापति अम्मीशद्दाय का पुत्र अहीएज़र था. 26 आशेर गोत्र के
घराने की सेना का सेनापति ओखरन का पुत्र पागिएल था. 27 नफताली गोत्र के
घराने की सेना का सेनापति एनन का पुत्र अहीरा था. 28 कूच करते हुए इस्राएल
के घराने की सेनाओं के अनुसार यही क्रम हुआ करता था. 29 अंत में मोशेह ने
अपनी पत्नी के भाई, होबाब से, अर्थात् अपने मिदियानी ससुर रियुएल के पुत्र से
कहा, “हम उस स्थान की ओर आगे बढ़ रहे हैं, जिसका वर्णन याहवेह ने इन
शब्दों में किया था: ‘यह मैं तुम्हें दे दूंगा.’ तुम भी हमारे साथ आ जाओ. हम
तुम्हारा ध्यान रखेंगे; क्योंकि याहवेह ने इस्राएल की भलाई की प्रतिज्ञा की है.”
30 किंतु होबाब ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं आपके साथ नहीं जा सकता; मेरे लिए
सही यही है कि मैं अपने संबंधियों के पास अपने देश लौट जाऊं.” 31 तो
मोशेह ने उससे निवेदन किया, “कृपा कर हमारा साथ मत छोड़ो. तुम जानते हो
कि इस मरुभूमि मे पड़ाव डालने के लिए अच्छी जगह कहां-कहां होगी; तुम तो
हमारे लिए हमारी आंखें हो सकोगे. 32 हम आश्वासन देते हैं कि यदि तुम हमारे
साथ चलोगे, तो जितनी भी भलाई याहवेह हमारे लिए करेंगे, उसमें हम तुमको
शामिल कर लेंगे.” 33 इस प्रकार उन्होंने याहवेह के पर्वत से अपनी यात्रा प्रारंभ
की और तीन दिन यात्रा करते रहे. याहवेह की वाचा का संदूक तीन दिनों तक
उनके आगे-आगे रहा कि इस्राएल के डेरे के लिए सही विश्राम का स्थान तय
किया जा सके. 34 जब उन्होंने छावनी के स्थान से यात्रा शुरू की थी, दिन के
समय याहवेह का बादल उनके ऊपर-ऊपर बना रहता था. 35 इसके बाद, जब
भी संदूक के साथ यात्रा आरंभ करते थे, मोशेह का यह वचन था: “याहवेह
सक्रिय हो जाइए! आपके शत्रु बिखर जाएं; जिन्हें आपसे घृणा है आपके सामने
से भाग जाएं.” 36 जब भी संदूक ठहर जाता, मोशेह कहते थे, “याहवेह,
हज़ारों हज़ार इस्राएलियों के निकट लौट आइए.”

11 अब इस्राएली कठिन परिस्थिति में याहवेह के सामने शिकायत करने
लगे. जब याहवेह को उनका बड़बड़ाना सुनाई पड़ा, तब उनका क्रोध
भड़क उठा और उनके बीच में याहवेह की आग जल उठी, परिणामस्वरूप
छावनी के किनारे जल गए. 2 लोगों ने मोशेह से विनती की और मोशेह ने
याहवेह से विनती की, जिससे यह आग शांत हो गई. 3 उन्होंने उस स्थान का
नाम दिया ताबेराह, क्योंकि उनके बीच याहवेह की आग जल उठी थी. 4
इस्राएलियों के बीच में जो सम्मिश्र लोग मिस्र देश से साथ हो लिए थे, वे अन्य
भोजन वस्तुओं की कामना करने लगे. उनके साथ मिलकर इस्राएल का घराना
भी रोने और बड़बड़ाने लगा, “हमारे खाने के लिए कौन हमें मांस देगा! 5 मिस्र
देश में तो हमें बहुतायत से खाने के लिए मुफ्त में मछलियां मिल जाती थीं. हमें
वहां के खीरे, खरबूजे, कंद, प्याज तथा लहसुन स्मरण आ रहे हैं. 6 यहां तो
हमारा जी घबरा रहा है; अब तो यहां यह मन्ना ही मन्ना बचा रह गया है!” 7
मन्ना का स्वरूप धनिया के बीज के समान तथा रंग मोती के समान था. 8 लोग
इसे इकट्ठा करने जाते थे, इसे चक्की में पीसते अथवा ओखली में कूट लिया
करते थे. इसके बाद इसे बर्तन में उबाल कर इसके व्यंजन बना लिया करते थे.
इसका स्वाद तेल में तले हुए पुए के समान था. 9 रात में जब ओस पड़ती थी,
सारे पड़ाव पर इसी के साथ मन्ना भी पड़ा करता था. 10 मोशेह को इस्राएलियों
का रोना सुनाई दे रहा था; हर एक गोत्र अपनी-अपनी छावनी के द्वार पर खड़ा
हुआ था. याहवेह का क्रोध बहुत अधिक भड़क उठा. यह मोशेह के लिए चिंता
का विषय हो गया. 11 मोशेह ने याहवेह से विनती की, “आपने अपने दास से
यह बुरा व्यवहार क्यों किया है? क्यों मुझ पर आपकी कृपादृष्टि न रही है, जो
आपने इन सारे लोगों का भार मुझ पर लाद दिया है? 12 क्या मैंने इन लोगों को
गर्भ में धारण किया है? क्या मैंने इन्हें जन्म दिया है, जो आप मुझे यह आदेश दे
रहे हैं ‘इन्हें अपनी गोद में लेकर चलो, जैसे माता अपने दूध पीते बच्चे को
लेकर चलती है’ उस देश की ओर जिसे देने की प्रतिज्ञा आपने इनके पूर्वजों से
की थी? 13 इन सबके लिए मैं मांस कहां से लाऊं? वे लगातार मेरे सामने
शिकायत कर कहते हैं, ‘हमें खाने के लिए मांस दो!’ 14 मेरे लिए यह संभव
नहीं कि मैं इन सबका भार अकेला उठाऊं; मेरे लिए यह असंभव बोझ सिद्ध हो
रहा है. 15 इसलिये यदि आपका व्यवहार मेरे प्रति यही रहेगा तथा मुझ पर
आपकी कृपादृष्टि बनी है, तो आप इसी क्षण मेरे प्राण ले लीजिए ताकि मैं अपनी
दुर्दशा का सामना करने के लिए जीवित ही न रहूं.” 16 यह सुन याहवेह ने
मोशेह को यह आज्ञा दी: “इस्राएल में से मेरे सामने सत्तर पुरनिये इकट्ठे करो. ये
लोग ऐसे हों, जिन्हें तुम जानते हो, जो लोगों में से पुरनिये और अधिकारी हैं.
इन्हें तुम मिलनवाले तंबू के सामने अपने साथ लेकर खड़े रहना. 17 तब मैं वहां
आकर तुमसे बातचीत करूंगा मैं तुम्हारे अंदर की आत्मा को उनके अंदर कर
दूंगा. वे तुम्हारे साथ मिलकर इन लोगों का भार उठाएंगे; तब तुम अकेले इस
बोझ को उठानेवाले न रह जाओगे. 18 “लोगों को आज्ञा दो: ‘आनेवाले कल
के लिए स्वयं को पवित्र करो. कल तुम्हें मांस का भोजन प्राप्त होगा; क्योंकि
तुम्हारा रोना याहवेह द्वारा सुन लिया गया है. तुम कामना कर रहे थे, “कैसा
होता यदि कोई हमें मांस का भोजन ला देता! हम मिस्र देश में ही भले थे!”
याहवेह अब तुम्हें मांस का भोजन देंगे और तुम उसको खाओगे भी. 19 तुम एक
दिन नहीं, दो दिन नहीं, पांच दिन नहीं, दस दिन नहीं, बीस दिन नहीं, 20
बल्कि एक पूरे महीने खाओगे, कि यह तुम्हारे नथुनों से बाहर निकलने लगेगा
तथा स्वयं तुम्हारे लिए यह घृणित हो जाएगा; क्योंकि तुमने याहवेह को, जो
तुम्हारे बीच में रहता है तुच्छ समझा. तुम उनके सामने यह कहते हुए रोते रहे:
“हम मिस्र देश से क्यों निकलकर आए?”’” 21 किंतु मोशेह ने इस पर कहा,
“जिन लोगों का यहां वर्णन हो रहा है, वे छः लाख पदयात्री हैं; फिर भी आप
कह रहे हैं, ‘मैं उन्हें मांस का भोजन दूंगा, कि वे एक महीने तक इसको खाते
रहें!’ 22 क्या सारी भेड़-बकरियों एवं पशुओं का वध किया जाने पर भी इनके
लिए काफ़ी होगा? क्या समुद्र की सारी मछलियों को इकट्ठा किया जाने पर भी
इनके लिये काफ़ी होगा?” 23 याहवेह ने मोशेह को उत्तर दिया, “क्या याहवेह
का हाथ छोटा हो गया है? अब तो तुम यह देख ही लोगे कि तुम्हारे संबंध में मेरा
वचन पूरा होता है या नहीं.” 24 मोशेह बाहर गए तथा याहवेह के ये शब्द
लोगों के सामने दोहरा दिए. इसके अलावा उन्होंने लोगों में से चुने हुए वे सत्तर
भी अपने साथ लेकर उन्हें मिलनवाले तंबू के चारों ओर खड़ा कर दिया. 25
तब याहवेह उस बादल में प्रकट हुए और मोशेह के सामने आए. याहवेह ने
मोशेह पर रहनेवाले आत्मा की सामर्थ्य को लेकर उन सत्तर पर समा दिया, जब
आत्मा उन सत्तर प्रधानों पर उतरा तब उन सत्तर ने भविष्यवाणी की, किंतु
उन्होंने इसको दोबारा नहीं किया. 26 किंतु इनमें से दो प्रधान अपने-अपने
शिविरों में ही छूट गए थे; एक का नाम था एलदाद तथा अन्य का मेदाद, आत्मा
उन पर भी उतरी. ये दोनों के नाम पुरनियों की सूची में थे, किंतु ये उन सत्तर के
साथ मोशेह के बुलाने पर तंबू के निकट नहीं गए थे, इन्होंने अपने-अपने
शिविरों में ही भविष्यवाणी की. 27 एक युवक ने दौड़कर मोशेह को सूचना दी,
“शिविरों में एलदाद एवं मेदाद भविष्यवाणी कर रहे हैं.” 28 यह सुन नून का
पुत्र यहोशू, जो बचपन से ही मोशेह का सहायक हो चुका था, कहने लगा, “मेरे
गुरु मोशेह, उन्हें रोक दीजिए!” 29 किंतु मोशेह ने उससे कहा, “क्या तुम मेरे
लिए उनसे ईर्ष्या कर रहो? मेरी इच्छा है कि याहवेह अपने आत्मा को अपनी
सारी प्रजा पर उतरने दें, तथा सभी भविष्यद्वक्ता हो जाएं!” 30 इसके बाद मोशेह

तथा इस्राएल के वे प्रधान अपने-अपने शिविरों को लौट गए. 31 याहवेह की
ओर से एक ऐसी प्रचंड आंधी आई, कि समुद्रतट से बटेरें आकर छावनी के
निकट गिरने लगीं. इनका क्षेत्र छावनी के इस ओर एक दिन की यात्रा की दूरी
तक तथा उस ओर एक दिन की यात्रा की दूरी तक; छावनी के चारों ओर था. ये
बटेरें ज़मीन से लगभग एक मीटर की ऊंचाई तक उड़ती हुई पाई गईं. 32 इन
बटेरों को इकट्ठा करने में लोगों ने सारा दिन, सारी रात तथा अगला सारा दिन
लगा दिया. जिस व्यक्ति ने कम से कम इकट्ठा किया था उसका माप था लगभग
एक हज़ार छः सौ किलो. इन्हें लोगों ने सुखाने के उद्देश्य से फैला दिया. 33 जब
वह मांस उनके मुख में ही था, वे इसे चबा भी न पाए थे कि याहवेह का क्रोध
इन लोगों के प्रति भड़क उठा और उन्होंने इन लोगों पर अत्यंत घोर महामारी
ड़ाल दी. 34 इसके फलस्वरूप वह स्थान किबरोथ-हत्ताआवह नाम से मशहूर
हो गया, क्योंकि उस स्थान पर इस्राएलियों ने अपने मृतकों को भूमि में गाड़ा
था, जिन्होंने इस भोजन के लिए लालसा की थी. 35 किबरोथ-हत्ताआवह से
लोगों ने हाज़ोरौथ की ओर कूच किया तथा वे वहीं डेरा डाले रहे.

12 मोशेह ने कूश देश की स्त्री से विवाह किया था, और उनका इस स्त्री से
विवाह करना मिरियम तथा अहरोन का उनके विरुद्ध हो जाने का कारण
बन गया. 2 उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया, "क्या यह सच है कि याहवेह ने
सिर्फ मोशेह के द्वारा ही बातचीत की है? क्या उन्होंने हमारे द्वारा भी बातें नहीं
की?" याहवेह ने उनकी ये बातें सुन लीं. 3 (सब जानते थे कि मोशेह अपने
स्वभाव में बहुत ही विनीत थे; पृथ्वी पर किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक.) 4
इसलिये अचानक याहवेह ने मोशेह, अहरोन तथा मिरियम से कहा, "तुम तीनों
मिलनवाले तंबू के पास आ जाओ." तब वे तीनों बाहर आ गए. 5 तब याहवेह
बादल के खंभे में उतरकर उस तंबू के द्वार पर खड़े हो गए और अहरोन तथा
मिरियम को बुलाया. जब वे दोनों पास आ गए, 6 तब याहवेह ने कहा, "अब
तुम मेरी बात सुनो: "यदि तुम्हारे बीच कोई भविष्यद्वक्ता है, मैं, याहवेह, उस पर
दर्शन के द्वारा स्वयं को प्रकट करूंगा, मैं स्वप्न में उससे बातचीत करना सही
समझूंगा. 7 किंतु मेरे सेवक मोशेह के साथ नहीं; मेरे सारे परिवार में वही
विश्वासयोग्य है. 8 मोशेह के साथ मेरी बातचीत आमने-सामने हुआ करती है,
इतना ही नहीं, हमारी बातचीत में कुछ भी गुप्त नहीं होता है, और न पहेली के
समान, उसे तो मुझ याहवेह का स्वरूप दिखाई देता है. फिर तुम्हें मेरे सेवक
मोशेह के विरुद्ध यह सब कहते हुए भय क्यों न लगा?" 9 तब याहवेह का क्रोध
उन पर भड़क गया और वह उन्हें छोड़कर चले गए. 10 जब तंबू के ऊपर का
वह बादल गायब हो गया, तब उन्होंने देखा कि मिरियम कोढ़ से भरकर हिम के
समान सफेद हो चुकी थी. जब अहरोन ने मिरियम की ओर दृष्टि की, तो पाया
कि वह कोढ रोग से भर गई थी. 11 इस पर अहरोन ने मोशेह से विनती की,
"मेरे गुरु, मेरी आपसे विनती है, यह पाप हम पर न लगने दीजिए. यह हमारी
निरी मूर्खता थी, जो हम यह पाप कर बैठे. 12 ओह, उसे उस स्थिति में न छोड़
दीजिए, जो मृत-जात शिशु के समान, मानो प्रसव होते-होते उसकी आधी देह
गल गई हो!" 13 मोशेह ने याहवेह की दोहाई दी, "परमेश्वर, मेरी प्रार्थना है,
उसे शुद्ध कर दीजिए!" 14 किंतु याहवेह का मोशेह को उत्तर यह था: "यदि
उसके पिता ने उसके मुंह पर थूक दिया होता, तो क्या वह सात दिन तक लज्जा
की स्थिति में न रहती? रहने दो उसे इस लज्जा की स्थिति में छावनी के बाहर
सात दिनों तक. इसके बाद वह छावनी में स्वीकार कर ली जाए." 15 तब
मिरियम को सात दिनों के लिए छावनी के बाहर कर दिया गया. प्रजा ने उस
स्थान से तब तक कूच नहीं किया, जब तक मिरियम को छावनी में वापस न ले
लिया गया. 16 किंतु इसके बाद इस्राएली प्रजा ने हाज़ोरौथ से कूच किया तथा
पारान नामक मरुभूमि में डेरा डाल दिया.

13 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "भेद लेने के उद्देश्य से अपने कुछ
व्यक्ति कनान देश को भेज दो; कनान जो मैं इस्राएल के घराने को देने जा
रहा हूं. हर एक गोत्र से एक-एक प्रधान को भेजना." 3 फिर मोशेह ने याहवेह
के आदेश के अनुसार इन्हें पारान के निर्जन प्रदेश से भेज दिया. ये सभी इस्राएल
के घराने के प्रधान थे. 4 उनके नाम इस प्रकार थे: रियूबेन के गोत्र से ज़क्कूर
का पुत्र शम्मुआ; 5 शिमओन के गोत्र से होरी का पुत्र शाफात; 6 यहूदिया के
गोत्र से येफुन्नेह का पुत्र कालेब; 7 इस्साखार के गोत्र से योसेफ़ का पुत्र यिगाल;
8 एफ्राईम के गोत्र से नून का पुत्र होशिया; 9 बिन्यामिन के गोत्र से राफू का पुत्र
पालती; 10 ज़ेबुलून के गोत्र से सोदी का पुत्र गद्दिएल; 11 योसेफ़ के गोत्र से
अर्थात् मनश्शेह के गोत्र से सुसी का पुत्र गद्दी; 12 दान के गोत्र से गमेली का पुत्र
अम्मिएल; 13 आशेर के गोत्र से मिखाएल का पुत्र सेथुर; 14 नफताली के गोत्र
से वोफसी का पुत्र नाहबी; 15 तथा गाद के गोत्र से माखी का पुत्र गेउएल. 16 ये
नाम उन व्यक्तियों के हैं, जिन्हें मोशेह ने उस देश का भेद लेने के उद्देश्य से भेजा
था. (मोशेह नून के पुत्र होशिया को यहोशू बुलाते थे.) 17 कनान देश में भेद लेने
के उद्देश्य से भेजते हुए मोशेह ने उन्हें यह आज्ञा दी, "तुम उस नेगेव प्रदेश में
जाओ; उसके बाद पर्वतीय प्रदेश में जाना. 18 देखना कि वह देश किस प्रकार
का है, वहां के निवासी बलवान हैं या कमजोर, संख्या में कम हैं या बहुत. 19
वह देश, जहां लोग निवास करते हैं, कैसा है वह देश, अच्छा या बुरा? कैसे हैं वे
नगर, जहां वे निवास करते हैं, क्या ये नगर खुले में हैं अथवा वे क़िले में बसे हैं?
20 वहां की भूमि कैसी है, उपजाऊ या बंजर? वहां वृक्ष हैं या नहीं? इसके बाद
तुम उस देश के कुछ फल साथ ले आने की कोशिश करना." (यह अंगूरों की
पहली पकी फसल का समय है.) 21 तब वे चले गए. उन्होंने ज़िन के निर्जन
प्रदेश से लेकर लबो-हामाथ के रेहोब तक उस प्रदेश का भेद लिया. 22 उन
लोगों ने जब नेगेव में प्रवेश किया, वे हेब्रोन पहुंच गए, जहां अनाक के घराने
के अहीमान, शेशाइ तथा तालमाई निवास करते थे. (हेब्रोन नगर मिस्र देश के
ज़ोअन के सात वर्ष पहले बन चुका था.) 23 इसके बाद वे एशकोल घाटी में जा
पहुंचे. वहां उन्होंने एक डाली काट ली, जिसमें अंगूरों का एक ही गुच्छा था.
इसे उन्होंने एक लाठी पर लादा और दो व्यक्तियों ने उसको उठा लिया. इसके
अलावा वे कुछ अनार एवं अंजीर भी ले आए. 24 वह स्थान एशकोल घाटी के
नाम से मशहूर हो गया, क्योंकि इस्राएल के घराने वहां से वह अंगूर का गुच्छा
साथ ले गए थे. 25 चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौटे. 26 वे
पारान के निर्जन प्रदेश के कादेश में मोशेह, अहरोन तथा इस्राएल के घराने की
सारी सभा के सामने उपस्थित हुए. उन्होंने उस देश के फल उनके सामने दिखाते
हुए सारी सभा के सामने अपना संदेश रख दिया. 27 अपने संदेश में उन्होंने यह
कहा: "आपके द्वारा बताए गए देश में हम गए थे. इसमें कोई संदेह नहीं कि इस
देश में दूध एवं मधु का भण्डार है. हम वहां से ये फल भी लाए हैं. 28 किंतु, उस
देश के निवासी बलवान हैं, नगर किले में बसे हैं, तथा आकार में बहुत बड़े हैं.
इसके अलावा हमने वहां अनाक के घराने के लोग भी देखे हैं. 29 वहां नेगेव में
तो अमालेक का निवास है, तथा पर्वतीय क्षेत्र में हित्ती, यबूसी तथा अमोरियों
का; समुद्र के पास वाले क्षेत्र में तथा यरदन के इस ओर कनानी निवास करते
हैं." 30 मोशेह के सामने ही कालेब ने लोगों को शांत हो जाने की विनती की
तथा उन्हें इस प्रकार कहा, "हर परिस्थिति में हमें वहां जाकर इस देश पर
अधिकार कर लेना अच्छा होगा, क्योंकि हम निश्चय उस पर अधिकार कर
लेंगे." 31 किंतु अन्य पुरुष, जो कालेब के साथ वहां गए थे, कहने लगे, "हम
लोग उन लोगों पर आक्रमण करने योग्य हैं ही नहीं, क्योंकि वे लोग हमारी
अपेक्षा ज्यादा बलवान हैं." 32 इस प्रकार उन्होंने इस्राएल के घराने के सामने
उस देश की, जिसका वे भेद लेकर आए थे, खराब राय दी! वे कह रहे थे,
"जिस देश में हम भेद लेने के उद्देश्य से गए थे, एक ऐसा देश है, जो अपने

निवासियों को निगल लेता है. हमने वहां जितने भी पुरुष देखे, वे सभी बड़े
डीलडौल वाले पुरुष ही थे. 33 हमने तो वहां नैफ़िलिन भी देखे हैं, (अनाक की
संतान भी नैफ़िलिन के संबंधी ही हैं). उनकी ओर दृष्टि करते हुए हम अपनी दृष्टि
में टिड्डियों के समान लग रहे थे, तथा जब वे हमें देखते थे तो वे हमें टिड्डियां
समझ रहे थे."

14 तब सारा समुदाय ऊंची आवाज में रोने लगा. उस रात वे सभी रोते रहे.
2 हर एक इस्राएली मोशेह तथा अहरोन के विरुद्ध बड़बड़ा रहा था. एक
स्वर में उन्होंने मोशेह तथा अहरोन से कहा, "अच्छा होता हमारी मृत्यु मिस्र
देश में ही हो गई होती, यदि वहां नहीं तो इस निर्जन प्रदेश में! 3 याहवेह हमें
क्यों इस देश में ले जाने पर उतारू हैं, क्या तलवार से मरवाने के लिए? हमारी
पत्नियां एवं हमारे बच्चे वहां उनकी लूट सामग्री होकर रह जाएंगे. क्या भला न
होगा कि हम मिस्र देश ही लौट जाएं?" 4 उन्होंने आपस में यह विचार-विमर्श
किया, "चलो, हम अपने लिए एक प्रधान को नियुक्त करें और लौट जाएं, मिस्र
देश को." 5 यह सुन मोशेह एवं अहरोन सारी इस्राएली मण्डली के सामने मुंह
के बल गिर पड़े. 6 नून के पुत्र यहोशू तथा येफुन्नेह के पुत्र कालेब ने, जो इस
देश में भेद लेने के लिए गए थे, अपने वस्त्र फाड़ दिए. 7 सारे इस्राएल के घराने
को संबोधित कर उन्होंने कहा, "वह देश, जिसकी सारी भूमि का हमने भेद
लिया है, बहुत ही उपजाऊ भूमि है. 8 यदि याहवेह की हम पर कृपादृष्टि बनी
रहती है, तो वह हमें इस देश में ले जाएंगे तथा यह हमें दे देंगे; ऐसा देश जिसमें
दूध एवं मधु का भण्डार है. 9 बस याहवेह के प्रति विद्रोह न करो. उस देश के
निवासियों से भयभीत न हो जाओ, क्योंकि उन्हें तो हमारा शिकार होना ही है.
उन पर से उनकी सुरक्षा हटाई जा चुकी है, तथा याहवेह हमारे साथ हैं. मत डरो
उनसे." 10 किंतु सारी मण्डली उन पर पथराव करने पर उतारू हो गई. तब
मिलनवाले तंबू पर सारे इस्राएल के घराने पर याहवेह की ज्योति प्रकाशमान हुई.
11 याहवेह ने मोशेह से प्रश्न किया, "और कब तक ये लोग मेरा तिरस्कार करते
रहेंगे? कब तक वे मुझमें विश्वास न करेंगे, जबकि मैं उनके बीच में ये सारे चिन्ह
दिखा चुका हूं? 12 मैं उन पर महामारी डालकर उनको बाहर निकाल दूंगा.
इसके बाद मैं तुमसे एक ऐसे राष्ट्र को उत्पन्न करूंगा, जो इनसे अधिक संख्या में
और बलवान होगा." 13 किंतु मोशेह ने निवेदन करते हुए याहवेह से कहा,
"तब तो मिस्रवासी इस विषय में सुन ही लेंगे, क्योंकि आपने अपने भुजबल के
द्वारा इन लोगों को उनके बीच में से निकाला है. 14 वे इसका वर्णन यहां के
निवासियों से करेंगे. उन्हें यह मालूम है कि आप याहवेह, हम लोगों के बीच में
ही हैं. याहवेह, जब आपका बादल उन पर छाया करता था, यह उनके द्वारा
आमने-सामने देखा जा चुका है, तथा यह भी कि आप दिन के समय बादल का
खंभा तथा रात में आग का खंभा बनकर इनके आगे-आगे चल रहे हैं. 15 यदि
आप इस राष्ट्र को इस रीति से खत्म कर देंगे, मानो यह जनता एक ही व्यक्ति है,
तब जिन राष्ट्रों ने आपकी कीर्ति के विषय में सुन रखा है, यही कहेंगे, 16 'यह
इसलिये हुआ है कि याहवेह इस राष्ट्र को अपनी शपथ के साथ की गई प्रतिज्ञा के
अनुसार उस देश में ले जाने में सफल नहीं रह पाए हैं, इसलिये उन्होंने इस
राष्ट्र को निर्जन प्रदेश में ही मार डाला.' 17 "किंतु अब, मेरे प्रभु, आपसे मेरी
यह विनती है, आपकी सामर्थ्य की महिमा आपके कहने के अनुसार हो: 18
'याहवेह क्रोध करने में धीरजवंत तथा अति करुणामय, वह अधर्म एवं अपराध
के लिए क्षमा करनेवाले हैं, किंतु वह किसी भी स्थिति में दोषी को बिना दंड दिए
नहीं छोड़ते. वह पूर्वजों के अधर्म का दंड उनके बेटों, पोतों और परपोतों तक
को देते हैं.' 19 याहवेह, आपके कभी न बदलनेवाले प्रेम की बहुतायत के
अनुसार, मेरी विनती है, अपनी प्रजा के अपराध को क्षमा कर दीजिए, ठीक
जिस प्रकार आप मिस्र से निकालने से लेकर अब तक अपनी प्रजा को क्षमा
करते रहे हैं." 20 फिर याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम्हारी विनती के अनुसार
मैं उन्हें क्षमा कर चुका हूं. 21 किंतु याद रहे, शपथ मेरे जीवन की, सारी धरती
याहवेह की महिमा से भर जाएगी, 22 उन सभी व्यक्तियों ने, जिन्होंने मेरी
महिमा और मेरे द्वारा दिखाए गए चिन्हों को देख लिया है, जो मैंने मिस्र देश में
तथा यहां निर्जन प्रदेश में दिखाए हैं, फिर भी दस अवसरों पर मेरे आदेशों की
उपेक्षा की और मेरी परीक्षा की है, 23 वे किसी भी रीति से उस देश को देख न
पाएंगे, जिसकी शपथ मैंने उनके पूर्वजों से की थी, वैसे ही वे भी इस देश को न
देख पाएंगे, जिन्होंने मेरा इनकार किया है. 24 किंतु मेरे सेवक कालेब में, एक
अलग आत्मा है और जिसने पूरी-पूरी रीति से मेरा अनुसरण किया है, उसे ही मैं
उस देश में ले जाऊंगा, जिसका वह भेद ले चुका है, उसके वंशज उस देश पर
अधिकार कर लेंगे. 25 इस समय उन घाटियों में अमालेकियों तथा कनानियों
का निवास है. कल तुम लाल सागर के मार्ग से निर्जन प्रदेश की ओर कूच
करना." 26 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को संबोधित किया: 27 "बताओ,
मैं कब तक इस कुटिल सभा के प्रति सहानुभूति दिखाता रहूं, जो मेरे विरुद्ध
बड़बड़ा रहे हैं? इस्राएल के घराने के अपशब्द मेरे कानों तक पहुंच चुके हैं, वे
अपशब्द, जो वे मेरे विरुद्ध कह रहे हैं. 28 तुम उनसे यह कहो, 'मेरे जीवन की
शपथ,' यह याहवेह का वचन है, 'ठीक जैसा जैसा तुमने मेरे सुनने में बातें की
हैं,' निश्चित ही तुम्हारे लिए मैं ठीक वैसा ही कर दूंगा. 29 तुम्हारे शव इस
निर्जन प्रदेश में धराशाई पड़े रहेंगे; उन सब की जिनकी गिनती की जा चुकी है.
बीस वर्ष से ऊपर की आयु के सभी व्यक्ति, जिन्होंने मेरे विरुद्ध आवाज उठाकर
बड़बड़ की है. 30 निश्चित ही तुम सब उस देश में प्रवेश नहीं करोगे, जिसमें
तुम्हें बसा देने की शपथ मैंने तुमसे की थी; सिर्फ येफुन्नेह के पुत्र कालेब तथा
नून के पुत्र यहोशू के अलावा. 31 हां, तुम्हारी संतान, जिनके विषय में तुमने
कहा था कि वे उनके भोजन हो जाएंगे, उन्हें मैं उस देश में ले जाऊंगा. वे ही उस
देश पर अधिकार करेंगे, जिसे तुमने ठुकरा दिया है. 32 किंतु तुम्हारे लिए तो
यही तय हो चुका है तुम्हारे शव इस निर्जन प्रदेश में पड़े रहेंगे. 33 तुम्हारे वंशज
चालीस वर्ष इस निर्जन प्रदेश में चरवाहे होंगे तथा वे तुम्हारे द्वारा किए गए
इस विश्वासघात के लिए कष्ट भोगेंगे और तुम्हारे शव निर्जन प्रदेश में पड़े पाए
जाएंगे. 34 यह उसी अनुपात में होगा, जितने दिन तुमने उस देश का भेद लिया
था; चालीस दिन-भेद लेने के, एक दिन के लिए इस निर्जन प्रदेश में एक वर्ष,
कुल चालीस वर्ष. तब तुम अपने पाप के कारण कष्ट भोगोगे और मुझसे विरोध
का परिणाम समझ जाओगे. 35 मैं, याहवेह ने, यह घोषणा कर दी है, मैं इस पूरी
बुरी सभा के साथ निश्चित ही यह करूंगा, जो मेरे विरुद्ध एकजुट हो गए हैं. इसी
निर्जन प्रदेश में नष्ट हो जाएंगे; यहीं उनकी मृत्यु हो जाएगी." 36 वैसे उन लोगों
की नियति, जिन्हें मोशेह ने उस देश का भेद लेने के उद्देश्य से भेजा था और
जिन्होंने लौटने पर उस देश का उलटा चित्रण किया था, जिन्होंने सारी सभा को
बड़बड़ाने के लिए उभार दिया था, 37 ये वे ही थे, जिन्होंने उस देश का अत्यंत
भयानक चित्र प्रस्तुत किया था, याहवेह ही के सामने महामारी से उनकी मृत्यु हो
गई. 38 किंतु नून के पुत्र यहोशू तथा येफुन्नेह के पुत्र कालेब ही उनमें से जीवित
रहे, जो उस देश का भेद लेने के लिए गए हुए थे. 39 जब मोशेह ने सभी
इस्राएलियों के सामने यह बातें दोहराई, वे घोर विलाप करने लगे. 40 फिर भी,
वे बड़े तड़के उठे और इस विचार से, "निश्चयतः हमने पाप किया है. अब हम
यहां तक पहुंच चुके हैं, हम याहवेह के प्रतिज्ञा किए हुए देश को चले जाएंगे!"
41 किंतु मोशेह ने आपत्ति की, "तुम लोग याहवेह के आदेश का उल्लंघन करने
पर उतारू क्यों हो? यह कार्य हो ही नहीं सकता! 42 मत जाओ वहां, नहीं तो
तुम शत्रुओं द्वारा हरा दिए जाओगे, क्योंकि अब तुम पर याहवेह का आश्रय नहीं
रहा, 43 वहां तुम स्वयं को अमालेकियों एवं कनानियों के सामने पाओगे और
तुम तलवार से मार दिए जाओगे, क्योंकि तुमने याहवेह का अनुसरण करने को
तुच्छ जाना है. यहां याहवेह तुम्हारे साथ न रहेंगे." 44 किंतु वे मोशेह की

चेतावनी को न मानते हुए उस पर्वतीय क्षेत्र के टीले पर चढ़ गए. न तो मोशेह ने
छावनी छोड़ी थी और न ही वाचा के संदूक को छावनी के बाहर लाया गया था.
45 तब उस पर्वतीय क्षेत्र के निवासी अमालेकी तथा कनानी उन पर टूट पड़े और
होरमाह नामक स्थान तक उनका पीछा करते हुए उनको मारते चले गए.

15 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो:
'जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे, जहां तुम्हें बस जाना है, जो मैं तुम्हें
देने जा रहा हूं, 3 तब तुम वहां याहवेह के लिए अपनी भेड़-बकरियां और गाय-
बैलों में से आग के द्वारा बलि चढ़ाना; होमबलि अथवा विशेष मन्नत पूरी
करने के लिए या स्वेच्छा बलि या निर्धारित अवसरों से संबंधित बलि, कि यह
याहवेह के सामने सुगंध हो जाए. 4 वह, जो याहवेह को भेंट बलि अर्पण करेगा,
वह डेढ़ किलो मैदे को एक लीटर तेल में मिलाएगा. 5 हर एक मेमने की बलि
अथवा होमबलि के साथ तुम पेय बलि के लिए एक लीटर दाखमधु भेंट करोगे.
6 "'अथवा मेढ़े की बलि चढ़ाने के लिए तुम तीन किलो मैदा, 1.30 लीटर
तेल में मिलाओगे. 7 पेय बलि के रूप में तुम याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए
एक लीटर दाखमधु चढ़ाओगे. 8 "'जब तुम याहवेह को विशेष मन्नत पूरी
करने के रूप में या मेल बलि स्वरूप होमबलि या बलि के लिए बछड़े को तैयार
करो, 9 तब तुम उस बछड़े के साथ पांच किलो मैदे के साथ 1.9 लीटर तेल
का मिश्रण चढ़ाओगे. 10 इसके अलावा तुम डेढ़ लीटर दाखमधु याहवेह के
लिए सुखद-सुगंध चढ़ाओगे. 11 हर एक बछड़े, हर एक मेढ़े, हर एक मेमने
अथवा हर एक बकरे के लिए यही विधि ठहराई गई है. 12 हर एक पशु की
संख्या के अनुसार हर एक के लिए यही किया जाना ज़रूरी है. 13 "'हर एक,
जो देश का निवासी है, इस विधि के अनुसार यह किया करेगा, कि आग के द्वारा
भेंट यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध हो जाए. 14 यदि तुम्हारे बीच कोई
परदेशी है, चाहे थोड़े समय से या स्थायी रूप से, पीढ़ी-पीढ़ी से, और वह
अग्निबलि भेंट करना चाहता है, कि यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध हो जाए,
वह भी ठीक यही करेगा. 15 पूरी सभा के लिए, चाहे तुम हो अथवा कोई
परदेशी, एक ही विधि लागू होगी. यही तुम्हारी सारी पीढ़ियों के लिए स्थायी
विधि होगी. याहवेह के सामने तुम सब परदेशी के समान हो. 16 तुम्हारे लिए
तथा उस परदेशी के लिए एक ही नियम तथा एक ही विधि होनी ज़रूरी है.'"
17 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी, 18 "इस्राएल के घराने को संबोधित
कर उन्हें आदेश दो, 'जब तुम उस देश में प्रवेश करो, जहां मैं तुम्हें ले जा रहा हूं,
19 और जब तुम उस देश की उपज को खाने लगो, उसका एक अंश तुम याहवेह
को भेंट करोगे. 20 यह खलिहान का अर्पित किया हुआ अंश होगा. यह तुम
याहवेह को चढ़ाओगे. 21 अपने पहले गूंधे हुए आटे के अंश को तुम अपनी
सारी पीढ़ियों में याहवेह को भेंट करते रहोगे. 22 "'किंतु भूल से तुम इन
आदेशों के पालन में असफल हो जाते हो, जो याहवेह ने मोशेह को बताए हैं,
23 अर्थात् वह सभी, जो याहवेह ने तुम्हें मोशेह के द्वारा आज्ञा देकर पालन करने
का आदेश दिया है, उस दिन से ले, जब ये आदेश दिए गए थे, तुम्हारी सारी
पीढ़ियों तक, 24 यदि यह भूल से किया गया हो तथा जिसके विषय में सारी
इस्राएली सभा को कोई जानकारी नहीं हो पाई है, तब सारी सभा गाय-बैलों से
होमबलि के लिए एक बछड़ा भेंट करेगी, इसकी अन्नबलि तथा पेय बलि के
साथ यह याहवेह के लिए नियम के अनुसार एक सुखद-सुगंध हो जाएगा. 25
फिर पुरोहित सारे इस्राएल के घराने की ओर से प्रायश्चित बलि भेंट करेगा और
इससे उन्हें क्षमा दी जाएगी; क्योंकि यह अनजाने में की गई भूल थी; इसलिये
उन्होंने यह भेंट चढ़ाई है. आग के द्वारा याहवेह को अर्पित बलि तथा अपनी
भूल के लिए भेंट पापबलि. 26 इस प्रकार इस्राएल के घराने की सारी सभा को
क्षमा दे दी जाएगी-इसमें वह परदेशी भी शामिल होगा, जो उनके बीच रह रहा
होगा, क्योंकि सभी इस्राएलियों में यह अनजाने में हुआ कार्य था. 27 "'इसके
अलावा यदि कोई व्यक्ति भूल से पाप कर बैठता है, वह एक वर्षीय बकरी
पापबलि के लिए भेंट करे. 28 पुरोहित याहवेह के सामने जाकर उस व्यक्ति के
लिए प्रायश्चित करे, जो भूल से पाप कर बैठता है, जो रास्ते से भटक जाता है,
पुरोहित ऐसे व्यक्ति के लिए प्रायश्चित करे, कि उस व्यक्ति को क्षमा प्राप्त हो
जाए. 29 कोई भी व्यक्ति, जो भूल से कोई भी पाप कर बैठता है, उस पर एक
ही नियम लागू किया जाए; वह, जो स्वदेशी है, और वह जो तुम्हारे बीच रह
रहा विदेशी है. 30 "'किंतु वह व्यक्ति, जो ढिठाई करता है, चाहे वह स्वदेशी
हो या तुम्हारे बीच रह रहा विदेशी, वह यह करते हुए याहवेह की निंदा कर रहा
होता है, ऐसा व्यक्ति अपने लोगों के बीच से नाश कर दिया जाए. 31 उसने
याहवेह के आदेश को तुच्छ समझा और उनके आदेश को टाला है. उसे पूरी
तरह नाश कर दिया जाए; इसके लिए वह स्वयं ही दोषी होगा.'" 32 जब
इस्राएली निर्जन प्रदेश में रहते थे, एक ऐसे व्यक्ति से उनकी भेंट हुई, जो शब्बाथ
के दिन ईंधन-लकड़ी इकट्ठी कर रहा था. 33 जिन्होंने उसे यह करते देखा, वे
उसे मोशेह, अहरोन तथा सारी सभा के सामने ले आए. 34 जब तक उसके
विषय में कोई निर्णय नहीं लिया गया, तब तक उसे बंदी बनाकर रखा गया. 35
याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी: "अवश्य है कि उस व्यक्ति को निश्चित ही
मृत्यु दंड दिया जाए. छावनी के बाहर ले जाकर सारी सभा उस पर पत्थराव
करे." 36 तब सारी सभा ने उसे छावनी से दूर ले जाकर पत्थराव कर दिया,
जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी. 37 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा भी
दी, 38 "सारे इस्राएल को आज्ञा दो कि वे अपने-अपने वस्त्रों के किनारों पर
पीढ़ी से पीढ़ी फुंदने लगाया करें तथा फुन्दनों के कोनों पर नीली डोरी हो. 39
यह फुंदना तुम्हारे लिए याहवेह की आज्ञा का चिन्ह होगा, कि तुम अपनी-
अपनी मान्यताओं के अनुसार चलने न लगो, जैसा करके तुमने परमेश्वर के साथ
दाम्पत्य विश्वासघात के समान काम किया था. 40 तुम्हें मेरी सारी आज्ञाओं का
पालन करना याद रहे, और तुम अपने परमेश्वर के सामने पवित्र बने रहो. 41 मैं
तुम्हारा वही परमेश्वर, याहवेह हूं, मैंने तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाला है, कि
मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं. मैं ही तुम्हारा वह याहवेह परमेश्वर हूं!"

16 इस समय कोराह, जिसका पिता इज़हार था, जिसका पिता कोहाथ था,
जो लेवी का पुत्र था; तथा दाथान और अबीराम, जो एलियाब के पुत्र थे,
तथा ओन, जो पेलेथ का पुत्र था, आज्ञा न माननेवाले हो गए. 2 इन्होंने मोशेह
के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई. इनके साथ इस्राएल में से 250 व्यक्ति भी
शामिल हो गए, जो सभा के चुने हुए तथा नामी प्रधान थे. 3 ये सभी मोशेह एवं
अहरोन के विरोध में एकजुट होकर उनसे कहने लगे, "आप लोग तो बहुत ऊंचे
उड़ने लगे हैं! इस्राएली समाज में हममें से हर एक ही पवित्र व्यक्ति है तथा उन
सभी के बीच परमेश्वर का वास है. फिर आप ही स्वयं को याहवेह की प्रजा में
सबके ऊपर क्यों दिखाते हैं?" 4 जब यह बातें मोशेह ने सुनी, वह मुंह के बल
गिर पड़े. 5 तथा उन्होंने कोराह एवं उसकी सारी मण्डली को संबोधित करते
हुए कहा, "कल सुबह याहवेह यह स्पष्ट कर देंगे कि वह किसके पक्ष में हैं,
कौन पवित्र है तथा वही उसे अपने निकट बुलाएंगे. याहवेह जिस किसी को
चुनेंगे, उसे ही अपने निकट बुला लेंगे. 6 तुम्हें यह करना होगा: तुम सभी कोराह
के घराने के लोग धूपदान तैयार रखना, 7 तुम कल याहवेह के सामने उनमें आग
रख उस पर धूप डाल देना. जिस किसी को याहवेह चुनेंगे, वही होगा वह
पवित्र व्यक्ति. ओ तुम लेवी के घराने, फूले जा रहे हो!" 8 इसके बाद मोशेह ने
यह कहा, "लेवी के घराने, अब यह सुन लो! 9 क्या तुम्हारी समझ से यह
कोई छोटा विषय है कि सारे इस्राएल के घराने में से इस्राएल के परमेश्वर ने
तुम्हें अलग करना सही समझा है, कि वह तुम्हें अपने पास रखें, ताकि याहवेह
के साक्षी तंबू संबंधी सेवा किया करें, तथा इस्राएल की सारी सभा के सामने
उपस्थित होकर उनकी सेवा करें, 10 तथा याहवेह ने तुम्हें और तुम्हारे सभी

भाइयों को, जो लेवी के घराने के हैं, तुम्हारे साथ अपने पास रखा है? 11 फिर
तुम एवं तुम्हारे ये सारे साथी आज वस्तुतः स्वयं याहवेह के विरुद्ध खड़े हो गए
हो. अहरोन है ही कौन, जो तुम उसके विरुद्ध बड़बड़ा रहे हो?” 12 मोशेह ने
आज्ञा दी कि एलियाब के पुत्र दाथान तथा अबीराम उनके सामने लाए जाएं.
उन्होंने उत्तर दिया, “हम नहीं आएंगे! 13 क्या यह कोई छोटा विषय है कि
आप हमें एक ऐसे देश से, जिसमें दूध और मधु का भण्डार है, निकालकर यहां
निर्जन प्रदेश में मरने के लिए ले आए हैं, कि आप स्वयं को हम पर शासक बना
बैठें? 14 इसके अलावा, आप हमें ऐसे किसी देश में नहीं ले आए हैं, जहां दूध
और मधु का भण्डार है, और न ही आपने हमें ऐसी मीरास दी है, जहां खेत तथा
अंगूरों के बगीचे हैं. क्या मतलब है आपका, आप इनकी आंखें निकालना चाह
रहे हैं? हम वहां नहीं आएंगे!” 15 मोशेह बहुत ही क्रोधित हो गए. उन्होंने
याहवेह से कहा, “उनकी भेंट स्वीकार न कीजिए. मैंने न तो उनसे एक गधा भी
लिया है, न मैंने उनमें से एक की भी कोई हानि की है.” 16 मोशेह ने कोराह
को आज्ञा दी, “कल तुम तथा तुम्हारे सभी साथी याहवेह के सामने उपस्थित
होंगे—तुम तथा तुम्हारे साथी एवं अहरोन. 17 तुममें से हर एक अपने-अपने
धूपदान में धूप रखे और हर एक अपना अपना धूपदान याहवेह के सामने ले
आए, ये सब 250 धूपदान होंगे, तुम्हारे और अहरोन के धूपदान भी होंगे.”
18 तब इनमें से हर एक ने अपना अपना धूपदान लिया, उसमें आग रखी तथा
आग पर धूप. तब वे सभी मोशेह एवं अहरोन के साथ मिलनवाले तंबू के सामने
खड़े हो गए. 19 कोराह ने मिलनवाले तंबू के सामने सारे इस्राएल के घराने को
इकट्ठा कर लिया. तब याहवेह का प्रताप सारी इस्राएली सभा पर प्रकाशमान
हुआ. 20 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को संबोधित किया, 21 “तुम दोनों
स्वयं को इस समूह से अलग कर लो कि मैं इन्हें पलक झपकते ही भस्म कर
दूं.” 22 यह सुन वे दोनों मुंह के बल गिर पड़े. उन्होंने याहवेह से विनती की,
“परमेश्वर, आप, जो सभी मनुष्यों की आत्माओं के परमेश्वर हैं, क्या आप इस
व्यक्ति के पाप का दंड पूरे समाज को दे देंगे?” 23 याहवेह ने मोशेह को उत्तर
दिया, 24 “सारी इस्राएली सभा को आज्ञा दो, ‘वे कोराह, दाथान तथा अबीराम
के तंबुओं से दूर चले जाएं.’ ” 25 फिर मोशेह दाथान एवं अबीराम की ओर बढ़े
और इस्राएल के पुरनिये उनके पीछे-पीछे चलने लगे. 26 मोशेह ने इस्राएली
सभा को आज्ञा दी, “कृपा कर इन दुष्ट व्यक्तियों के शिविरों से दूर हो जाओ
तथा उनकी किसी भी वस्तु को नहीं छूना, नहीं तो तुम भी उनके सारे पापों के
साथ समेट लिए जाओगे.” 27 तब वे कोराह, दाथान तथा अबीराम के तंबुओं से
दूर हट गए. दाथान तथा अबीराम बाहर आकर अपनी-अपनी पत्नियों तथा
बच्चों के साथ शिविर के द्वार पर खड़े हो गए. 28 मोशेह ने घोषणा की, “अब
तुम्हें यह अहसास हो जाएगा, कि ये सारे काम करने की जवाबदारी मुझे स्वयं
याहवेह द्वारा सौंपी गई है, यह मेरी बनाई योजना नहीं हैं. 29 यदि इन व्यक्तियों
का निधन अन्य मनुष्यों के समान स्वाभाविक रीति से हो जाए या इनकी नियति
सारी मानव जाति के समान हो, तब समझ लेना कि मैं याहवेह का भेजा हुआ
नहीं हूं. 30 किंतु यदि याहवेह आज कुछ असाधारण काम कर दिखाते हैं, यदि
आज भूमि अपना मुख खोल इन्हें, इनकी सारी संपत्ति को निगल लेती है, कि वे
जीवित ही भूमि में समा जाएं, तब तुम्हें यह निश्चय हो जाएगा, कि इन लोगों ने
याहवेह को तुच्छ समझा है.” **(Sheol h7585)** 31 जैसे ही मोशेह का यह कहना
समाप्त हुआ, उनके नीचे भूमि फटकर खुल गई; 32 पृथ्वी ने, मानो अपना मुंह
खोल, उन्हें निगल लिया; उनके घर-परिवारों को, कोराह के सभी संबंधियों को
उन सब की संपत्ति सहित. 33 तब वे तथा उनकी सारी संपदा जीवित ही भूमि के
गर्भ में समा गए और भूमि उनके ऊपर अपनी पहले की सी स्थिति में आ गई, वे
इस्राएल की सभा के बीच से मिट गए. **(Sheol h7585)** 34 उनके आस-पास के
सारे इस्राएली उनकी चिल्लाहट सुनकर वहां से भाग गए, इस भय से, “कहीं
भूमि हमें भी अपना कौर न बना ले!” 35 तब याहवेह की ओर से भेजी गई आग
ने उन ढाई सौ व्यक्तियों को भस्म कर दिया, जो धूप भेंट कर रहे थे. 36 याहवेह
ने मोशेह को आज्ञा दी, 37 “पुरोहित अहरोन के पुत्र एलिएज़र को आज्ञा दो, कि
वह इस जलती हुई आग के बीच में से धूपदानों को इकट्ठा कर ले, क्योंकि वे
पवित्र वस्तुएं हैं. उनमें के जलते हुए अंगारों को इधर-उधर बिखरा दो. 38 उन
व्यक्तियों ने अपने प्राणों के मूल्य पर यह पाप किया है, उनके धूपदानों को
इकट्ठा कर उन्हें पीट-पीटकर पत्रक बना लो ताकि वे वेदी पर मढ़ने के लिए
इस्तेमाल किए जाएं. वे पवित्र वस्तुएं हैं, क्योंकि उन्होंने इन्हें याहवेह को भेंट
किया था. यह इस्राएल के घराने के सामने एक चिन्ह हो जाएगा.” 39 तब उन
व्यक्तियों के द्वारा भेंट धूपदानों को, जो इस आग में नाश हो चुके थे, एलिएज़र
ने इकट्ठा किया और उन्होंने इन्हें पीट-पीटकर वेदी पर मढ़ने का पत्रक बना
डाला. 40 यह सारे इस्राएल के सामने एक चेतावनी थी, कि कोई भी व्यक्ति,
जो अहरोन के वंश का नहीं है, वह याहवेह के सामने आकर धूप न चढ़ाए,
कि उसकी दशा वह न हो जो कोराह एवं उसके साथियों की हुई, ठीक जैसी
पूर्वघोषणा मोशेह के द्वारा याहवेह ने की थी. 41 किंतु दूसरे ही दिन सारा इस्राएल
का घराना मोशेह एवं अहरोन के विरोध में इस प्रकार बड़बड़ाने लगा. “तुम
दोनों ही के कारण याहवेह के इन चुने हुओं की मृत्यु हुई है.” 42 किंतु उसी
समय हुआ यह, कि जब सारी सभा मोशेह एवं अहरोन के विरोध में खड़ी हो
चुकी थी, वे मिलनवाले तंबू की दिशा में आगे बढ़ रहे थे, यह सामने देखा गया
कि मिलनवाले तंबू पर वह बादल छा गया तथा वहां याहवेह का प्रताप प्रकट हो
गया. 43 फिर मोशेह एवं अहरोन मिलनवाले तंबू के सामने जा खड़े हुए. 44
याहवेह ने मोशेह को संबोधित कर कहा, 45 “इस सभा से दूर चले जाओ कि मैं
इन्हें इसी क्षण भस्म कर दूं.” वे यह सुन मुंह के बल गिर पड़े. 46 मोशेह ने
अहरोन को आज्ञा दी, “अपने धूपदान में वेदी की आग डालकर उस पर धूप
डाल दो और बिना देर किए इसे सभा के निकट लाकर उनके लिए प्रायश्चित
करो, क्योंकि याहवेह का क्रोध उन पर भड़क चुका है, महामारी शुरू हो चुकी
है.” 47 अहरोन ने ठीक यही किया. वह दौड़ता हुआ सभा के बीच जा पहुंचा,
क्योंकि यह दिख रहा था कि लोगों के बीच में महामारी शुरू हो चुकी थी. फिर
अहरोन ने धूप जलाकर लोगों के लिए प्रायश्चित किया. 48 वह मरे हुओं और
जीवितों के बीच में खड़ा हो गया, जिससे महामारी शांत हो गई. 49 किंतु फिर
भी, जिनकी मृत्यु इस महामारी से हुई थी उनकी संख्या 14,700 हो चुकी
थी. यह उनके अलावा थी, जो कोराह के कारण हो चुकी थी. 50 फिर अहरोन
मोशेह के पास लौट गया, जो इस समय मिलनवाले तंबू के द्वार पर खड़े हुए थे,
क्योंकि अब महामारी शांत हो चुकी थी.

17 फिर याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 “इस्राएल के घराने को आज्ञा
दो कि हर एक पूर्वजों के घराने से वे एक-एक लाठी लेकर आएं; उनके
पिता के सारे घर-परिवारों से एक-एक प्रधान. हर एक लाठी पर तुम उस नायक
का नाम लिख देना. 3 लेवी वंश की ओर से जो लाठी आएगी उस पर अहरोन
का नाम लिख देना; क्योंकि हर एक गोत्र के प्रधान के नाम से एक-एक लाठी
ठहराई गई है. 4 फिर तुम ये लाठियां मिलनवाले तंबू के साक्षी पत्र के संदूक के
सामने खड़ी कर देना, जहां मैं तुमसे भेंट करूंगा. 5 तब होगा यह कि उस व्यक्ति
की लाठी, जो मेरा चुना हुआ होगा, अंकुरित होने लगेगी. इस कार्य के द्वारा मैं
इस्राएलियों द्वारा मुझ पर की जा रही बड़बड़ाहट को कम कर सकूंगा, क्योंकि
इस्राएली इस समय बड़बड़ा रहे हैं.” 6 फिर मोशेह ने इस्राएल के घराने से तथा
उसके सारे प्रधानों से यह कहकर उनमें से हर एक से एक-एक लाठी इकट्ठी कर
ली. ये हर एक प्रधान की उसके गोत्र के अनुसार इकट्ठी की गई बारह लाठियां
थीं, अहरोन की लाठी भी इनमें से एक थी. 7 मोशेह ने ये लाठियां साक्षी के तंबू
में याहवेह के सामने खड़ी कर दीं. 8 अगले दिन मोशेह साक्षी के तंबू में गए.

वहां उन्होंने ध्यान दिया कि लेवी के गोत्र में से अहरोन की लाठी अंकुरित हो
चुकी थी तथा उसमें कलियां आ गईं तथा फूल खिल रहे थे, और उसमें पके
बादाम भी आ गए थे. 9 मोशेह याहवेह की उपस्थिति में से वे सारी लाठियां
उठाकर इस्राएल के घराने के सामने ले आए. उन सभी ने यह देखा और हर एक
ने अपनी-अपनी लाठी उठाकर रख ली. 10 किंतु याहवेह ने मोशेह को आज्ञा
दी, "अहरोन की लाठी को साक्षी के संदूक के सामने रख दो कि यह उन
विद्रोहियों के लिए एक चिन्ह होकर रह जाए, कि तुम उनके द्वारा मेरे विरोध में
की जा रही बड़बड़ाहट ही समाप्त कर दो और वे अकाल मृत्यु के कौर न हो
जाएं." 11 मोशेह ने याहवेह की आज्ञा के एक-एक वचन का पालन किया. 12
इसके बाद इस्राएल के घराने ने मोशेह से कहा, "सुनिए, हम तो नाश हुए जा रहे
हैं, हमारी मृत्यु हो रही है, हम सभी की मृत्यु! 13 हर एक व्यक्ति, जो साक्षी तंबू
के निकट आएगा, उसके लिए मृत्यु दंड अवश्य आनी है. क्या हमारा विनाश
निश्चित ही है?"

18 लेवियों के लिए ठहराई गई ज़िम्मेदारी: इसके बाद याहवेह ने अहरोन से
कहा, "तुम, तुम्हारे पुत्र एवं तुम्हारा घराना पवित्र स्थान से संबंधित अधर्म
का भार उठाएंगे, वैसे ही तुम, तुम्हारे पुत्र तुम्हारे साथ पुरोहित ज़िम्मेदारियों से
संबंधित अधर्म के लिए भार उठाएंगे. 2 किंतु लेवी के गोत्र, अर्थात् तुम, अपने
पिता के गोत्र में से अपने भाइयों को भी अपने साथ ले आना कि जब तुम एवं
तुम्हारे पुत्र तुम्हारे साथ साक्षी के तंबू के सामने ठहरे हुए हों, तब वे तुम्हारे साथ
ही सेवा में शामिल हो जाएं. 3 इस प्रकार वे तुम्हारे प्रति एवं साक्षी तंबू के प्रति
अपनी ज़िम्मेदारी को उठाएंगे, किंतु वे पवित्र स्थान की वस्तुओं और वेदी के
पास नहीं आएंगे, नहीं तो उनकी एवं तुम्हारी मृत्यु तय है. 4 वे तुम्हारे साथ
मिलकर मिलनवाले तंबू से संबंधित सभी कार्यों को भी निभायेंगे; किंतु किसी
भी अन्य व्यक्ति को तुम्हारे निकट आने की अनुमति नहीं है. 5 "पवित्र स्थान
एवं वेदी से संबंधित कार्यों को निभाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि इस्राएल के
घराने पर दोबारा क्रोध न आने पाए. 6 यह ध्यान रहे, स्वयं मैंने सारे इस्राएल में
से तुम्हारे साथी लेवियों को अपने लिए अलग कर लिया है. वे तुम्हारे लिए भेंट
हैं. वे याहवेह को समर्पित हैं, कि वे मिलनवाले तंबू से संबंधित सेवाएं समर्पित
करते रहें. 7 किंतु तुम तथा तुम्हारे साथ तुम्हारे पुत्र तुम्हारे पुरोहित पद में, वेदी से
संबंधित कार्य में, तुम्हारे सहायक रहेंगे, जबकि तुम इन सेवकों से सम्बद्ध रहोगे,
यह पुरोहित पद तुम्हारे लिए मेरे द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी है, किंतु यदि कोई भी
दूसरा व्यक्ति वेदी अथवा पर्दे के निकट जा पहुंचता है, उसके लिए मृत्युदण्ड
ठहराया गया है." 8 इसके बाद याहवेह ने अहरोन पर यह स्पष्ट किया, "अब
तुम यह भी समझ लो: स्वयं मैंने तुम्हें उन सारी भेंटों का ज़िम्मेदार नियुक्त किया
है, जो इस्राएल के घराने के द्वारा मुझे भेंट की जाती है. ये सभी मैंने तुम्हें तथा
तुम्हारे पुत्रों को हमेशा का अंश बनाकर दे दिया है. 9 यह तुम्हारे लिए निर्धारित
अंश होगा, जो अति पवित्र भेंटों में से आग से बचा रखी जाती है. यह इस्राएल
के घराने के द्वारा प्रस्तुत हर एक भेंट में से तुम्हारा अंश होगा, हर एक अन्नबलि
में से, हर एक पापबलि में से, हर एक दोष बलि में से, जो वे मुझे अर्पण करेंगे,
तुम्हारे लिए, तुम्हारे पुत्रों के लिए अति पवित्र भेंटें होंगी. 10 तुम इनको अति
पवित्र भेंटों के रूप में खाया करोगे. यह हर एक पुरुष के लिए पवित्र अंश होगा.
11 "इनके अलावा यह भी तुम्हारा ही अंश होगा: उनके द्वारा अर्पण भेंटें तथा
इस्राएल के घराने द्वारा लहर की भेंटें. यह मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों
के लिए तुम्हारे साथ हमेशा का अंश ठहरा दिया है. तुम्हारे घर-परिवार का हर
एक सदस्य जो सांस्कारिक रीति से पवित्र है इसको खा सकता है. 12 "सारे नए
तेल में से सबसे अच्छा, नए दाखरस में से सबसे अच्छा, नई उपज में से, पहले
फलों में से, जो उनके द्वारा याहवेह को अर्पण किए जाते हैं, मैं तुम्हें दे रहा हूं.
13 इनके देश में जो सबसे पहला पका फल होगा, जिसे वे याहवेह को अर्पण
करने के लिए लाते हैं, तुम्हारा होगा. तुम्हारे घर-परिवार का हर एक सदस्य जो
सांस्कारिक रीति से पवित्र है, इसको खा सकता है. 14 "इस्राएल देश में बलि
के लिए ठहराई गई हर एक वस्तु तुम्हारी होगी. 15 हर एक जीवधारी का
पहलौठा, चाहे वह मनुष्य का हो या पशु का, जिसे वे याहवेह को अर्पण करने
लाते हैं, तुम्हारा होगा; फिर भी मनुष्य का पहलौठा तुम दाम लेकर छोड़ दोगे,
वैसे ही अपवित्र घोषित पशुओं के पहलौठे को भी तुम दाम लेकर छोड़ देना. 16
एक महीने के ऊपर की आयु के पशु के लिए तुम अपने आंकलन के आधार पर
छुड़ाने का मूल्य तय करोगे; जो पवित्र स्थान की तौल के अनुसार चांदी के पांच
शेकेल होंगे, जो बीस गेराह के बराबर होता है. 17 "किंतु बैल, भेड़ अथवा
बकरी के पहलौठे को दाम लेकर मत छोड़ना, ये सब पवित्र पशु हैं. तुम इनका
रक्त वेदी पर छिड़कोगे तथा उनकी चर्बी अग्निबलि में जला दोगे, जो याहवेह
के सामने सुखद-सुगंध हो जाएगा. 18 इन पशुओं का मांस तुम्हारे खाने के लिए
होगा, जिस प्रकार लहराए जानेवाली बलि की छाती तथा दायीं जांघ. 19 वे
सभी पवित्र भेंटें, जो इस्राएली याहवेह को चढ़ाते हैं, मैंने तुम्हारे लिए एवं तुम्हारे
पुत्र-पुत्रियों के लिए हमेशा का अंश ठहरा दिया है. यह तुम्हारे तथा तुम्हारे साथ
तुम्हारे वंशजों की याहवेह के सामने हमेशा की नमक की वाचा होगी." 20
इसके बाद याहवेह ने अहरोन से उसके सामने कहा, "जो देश इस्राएल के घराने
को दिया जा रहा है, उसमें तुम्हारी कोई भी मीरास नहीं रहेगी, और उसमें न ही
तुम्हारा कोई भाग होगा. तुम्हारा भाग मैं हूं, इस्राएल के घराने के बीच में मैं ही
तुम्हारी मीरास हूं. 21 "याद रहे, लेवी के वंशजों को मैंने उनके द्वारा मिलनवाले
तंबू में की जा रही सेवा के प्रतिफल के रूप में, पूरा दसवां अंश मीरास समान दे
दिया है. 22 इस्राएली इसके बाद मिलनवाले तंबू के पास नहीं आएंगे; नहीं तो
इसके दोषी होने के कारण वे इसका दंड जो मृत्यु है, भोगेंगे. 23 मिलनवाले
तंबू से संबंधित सेवाएं सिर्फ लेवियों का कार्य है. अपने अधर्म का दंड वे ही
भोगेंगे. यह तुम्हारी सारी पीढ़ियों के लिए ठहराया गया हमेशा का नियम है.
इस्राएल के घराने के बीच उनके लिए कोई भी हिस्सा नहीं बांटा है. 24 क्योंकि
इस्राएलियों का दसवां अंश, जो वे भेंट के रूप में याहवेह को चढ़ाते हैं, मैंने
लेवियों को दे दिया है; इसलिये मैंने उनके विषय में यह कहा है 'इस्राएल के
घराने के बीच में उनके लिए कोई भी हिस्सा नहीं रखा गया है.'" 25 इसके
बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 26 "इसके अलावा तुम लेवियों को यह
सूचित करोगे: 'जब तुम इस्राएल के घराने से वह दसवां अंश ग्रहण करते हो, जो
मैंने उनसे लेकर तुम्हें तुम्हारे हिस्से के रूप में दिया है, तब तुम उसमें से एक अंश
याहवेह को भेंट करोगे; दसवें अंश में से दसवां अंश. 27 तुम्हारी यह भेंट
खलिहान पर से इकट्ठी की गई अन्न, या दाखरस कुंड की पूरी उत्पाद मानी
जाएगी. 28 इस प्रकार तुम भी याहवेह को अपने दसवें अंश में से एक अंश भेंट
के रूप में चढ़ाओगे, जो तुमने इस्राएल के घराने से प्राप्त किया था. तुम इस अंश
में से पुरोहित अहरोन को याहवेह के लिए चढ़ाई भेंट दिया करोगे. 29 अपनी
सभी भेंटों में से याहवेह के लिए ठहराई गई हर एक भेंट चढ़ाओगे; उन सब में
से, जो सबसे उत्तम है, जो उनमें एक पवित्र अंश है.' 30 "तुम उन्हें सूचित
करोगे, 'जब तुमने इसमें से सबसे उत्तम भेंट दिया है, तब जो शेष रह जाएगा,
वह लेवियों के लिए खलिहान का उत्पाद तथा दाखरस कुंड का उत्पाद माना
जाएगा. 31 तुम इसको कहीं भी खा सकते हो, तुम तथा तुम्हारे घर-परिवार;
क्योंकि यह मिलनवाले तंबू के लिए तुम्हारे द्वारा की जा रही सेवा के बदले में
होगा. 32 जब तक तुम इसमें से सर्वोत्तम भेंट करते रहोगे, तुम दोषी नहीं पाए
जाओगे; किंतु तुम किसी भी रीति से उन पवित्र भेंटों को अपवित्र नहीं करोगे;
जो इस्राएल के घराने के द्वारा चढ़ाई गई हैं, नहीं तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है.'"

19 इसके बाद याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को आज्ञा दी: 2 "इस व्यवस्था
की विधि जो याहवेह ने दी, वह इस प्रकार है: इस्राएल के घराने को

आज्ञा दो कि वे एक ऐसी बछिया लेकर आएं, जो लाल रंग की हो, जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो तथा जिस पर जूआ कभी भी न रखा गया हो. **3** तुम ऐसी बछिया पुरोहित एलिएज़र को सौंपोगे. फिर यह बछिया छावनी के बाहर ले जाई जाएगी, तथा एलिएज़र की उपस्थिति में उसका वध किया जाए. **4** इसके बाद पुरोहित एलिएज़र उसके रक्त की कुछ मात्रा अपनी उंगली में लेकर कुछ रक्त मिलनवाले तंबू के सामने की ओर सात बार छिड़केगा. **5** इसके बाद उसके देखते-देखते वह बछिया जला दी जाएगी. **6** इस अवसर पर पुरोहित देवदार की लकड़ी, जूफ़ा झाड़ी तथा लाल रंग की डोरी उस भस्म हो रही बछिया में डाल देगा. **7** फिर पुरोहित अपने वस्त्र धोकर स्नान करेगा और शिविर में लौट आएगा, किंतु शाम तक वह सांस्कारिक रूप से अपवित्र रहेगा. **8** वह व्यक्ति, जो बछिया को जलाता है, वह अपने वस्त्रों को धोएगा तथा स्नान करेगा तथा शाम तक सांस्कारिक रूप से अपवित्र रहेगा. **9** "इसके बाद एक ऐसा व्यक्ति, जो सांस्कारिक रूप से शुद्ध है, उस बछिया की राख इकट्ठा कर शिविर के बाहर स्वच्छ स्थान पर रख देगा. इस्राएलियों की सभा इसका इस्तेमाल अपवित्रता दूर करने के लिए उसी प्रकार करेंगे, जिस प्रकार जल अशुद्धता दूर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं; यह पाप शुद्धि के लिए प्रयोग होगा. **10** वह व्यक्ति, जो बछिया की राख इकट्ठा करता है, अपने वस्त्रों को धोएगा तथा वह शाम तक सांस्कारिक रूप से अपवित्र रहेगा. यह इस्राएलियों के लिए तथा उनके बीच रह रहे विदेशियों के लिए हमेशा की विधि रहेगी. **11** "यदि कोई व्यक्ति किसी के शव से छू जाए तो वह सांस्कारिक रूप से सात दिन तक अपवित्र रहेगा. **12** वह अपनी इस अपवित्रता को तीसरे दिन तथा सातवें दिन जल से दूर करेगा और उसकी अपवित्रता दूर हो जाएगी; किंतु यदि वह तीसरे एवं सातवें दिन स्वयं को शुद्ध न कर सके, वह अपवित्र ही रह जाएगा. **13** कोई भी जब किसी मरे हुए व्यक्ति की देह को छू लेता है और शुद्ध होने की प्रक्रिया पूर्ण नहीं करता, वह याहवेह के मिलनवाले तंबू को अपवित्र करता है; ऐसे व्यक्ति को इस्राएल से निकाल दिया जाए. इसलिये कि उस पर अपवित्रता से छुड़ानेवाले जल का छिड़काव नहीं किया गया था, वह अपवित्र ही रहेगा, उस पर उसकी अपवित्रता बनी हुई है. **14** "शिविर में हुई किसी व्यक्ति की मृत्यु से संबंधित विधि यह है: हर एक व्यक्ति, जो उस शिविर में प्रवेश करता है, तथा हर एक, जो उस शिविर का निवासी है, सात दिन तक अशुद्ध रहेगा. **15** हर एक बर्तन, जिस पर न तो ढक्कन रखा हुआ हो और न जिसका मुख बांधकर बंद किया गया हो, अपवित्र माना जाएगा. **16** "इसके अलावा यदि कोई व्यक्ति खुले मैदान अथवा खेत में किसी ऐसे व्यक्ति को छू लेता है, जो तलवार द्वारा मारा गया है या जिसकी मृत्यु स्वाभाविक रीति से हो चुकी है, अथवा उस व्यक्ति का स्पर्श किसी मनुष्य की हड्डी या किसी कब्र से हो जाता है, वह व्यक्ति सात दिन तक सांस्कारिक रूप से अपवित्र समझा जाएगा. **17** "उस अशुद्ध व्यक्ति के लिए वे जलाई गई पापबलि की राख लेकर एक बर्तन में बहते हुए जल के साथ मिलाएंगे. **18** फिर सांस्कारिक रूप से शुद्ध व्यक्ति एक जूफ़ा लेकर इस मिश्रण में डुबोएगा और उसके शिविर पर, सारी सामग्री पर तथा उन सभी व्यक्तियों पर, जो वहां उपस्थित थे, तथा उस व्यक्ति पर छिड़काव कर देगा, जिसका स्पर्श उस हड्डी से या उस मारे हुए व्यक्ति से या स्वाभाविक रूप से मरे हुए व्यक्ति से या कब्र से हो गया था. **19** तब वह शुद्ध व्यक्ति अशुद्ध व्यक्ति पर तीसरे दिन भी छिड़काव करेगा तथा सातवें दिन भी. सातवें दिन वह उस अशुद्धता से पवित्र करने की प्रक्रिया पूरी कर चुकेगा. वह अपने वस्त्रों को धोएगा तथा स्नान करेगा तथा वह शाम तक पूरी तरह से शुद्ध हो जाएगा. **20** किंतु वह व्यक्ति, जो सांस्कारिक रूप से अशुद्ध है और वह स्वयं को अपनी अशुद्धि से पवित्र नहीं करता, वह व्यक्ति इस्राएली समाज से निकाल दिया जाएगा, क्योंकि उसने याहवेह के पवित्र स्थान को दूषित किया है. उस पर अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल का छिड़काव नहीं किया गया है, वह अपवित्र है. **21** तब यह उनके लिए एक सदा की विधि होगी. "वह जो इस जल का छिड़काव करता है, अपने वस्त्र धोएगा, जो कोई उस जल को छूता है, शाम तक सांस्कारिक रूप से अपवित्र रहेगा. **22** इसके अलावा हर एक वस्तु, जो उस अशुद्ध व्यक्ति द्वारा छुई गई हो, वह अपवित्र होगी, तथा वह व्यक्ति जो उसे छूता है शाम तक अपवित्र रहेगा."

20 पहले महीने में सारे इस्राएल के घराने के लोग ज़िन के निर्जन प्रदेश में पहुंच गए. उन्होंने कादेश में पड़ाव डाला. यहां मिरियम की मृत्यु हो गई और उसे वहीं मिट्टी दी गई. **2** इस्राएल के घराने के पीने के लिए वहां जल उपलब्ध ही न था. वे लोग मोशेह तथा अहरोन के विरोध में एकजुट हो गए. **3** लोगों ने मोशेह से यह कहते हुए झगड़ा करना शुरू कर दिया, "सही होता कि हम भी उसी अवसर पर नाश हो गए होते, जब हमारे भाई याहवेह के सामने नाश हुए जा रहे थे! **4** क्यों आप याहवेह की प्रजा को इस निर्जन प्रदेश में ले आए हैं, कि हम और हमारे पशु सभी मृत्यु के कौर हो जाएं? **5** क्यों आपने हमें मिस्र देश से निकलने के लिए मजबूर किया; क्या इस बेमतलब के स्थान में लाकर छोड़ने के लिए? यह तो अन्न या, अंजीरों या दाख-लताओं या अनारों का देश है ही नहीं, और न ही यहां हमारे लिए पीने का पानी उपलब्ध है!" **6** यह सुन मोशेह तथा अहरोन इस्राएली सभा के सामने से निकलकर मिलनवाले तंबू के प्रवेश के सामने आकर मुंह के बल गिर पड़े. यहां उन्हें याहवेह की महिमा के दर्शन हुआ. **7** याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, **8** "अपनी लाठी अपने साथ लेकर तुम और तुम्हारा भाई अहरोन, सारी सभा को इकट्ठा कर उनकी दृष्टि में उस चट्टान से बात करो कि वह अपना जल निकाल दे. ऐसा करके तुम उस चट्टान में से उनके लिए जल निकालोगे कि सारी सभा तथा उनके पशु जल पी सकें." **9** फिर मोशेह ने याहवेह के सामने से वह लाठी उठा ली, ठीक जैसा आदेश उन्हें याहवेह की ओर से मिला था. **10** मोशेह एवं अहरोन ने सारी सभा को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया और उनसे कहा, "विद्रोहियो, अब मेरी सुनो. क्या अब हमें तुम्हारे लिए इस चट्टान से जल निकालना होगा?" **11** यह कहते हुए मोशेह ने अपनी बांह ऊंची उठाकर अपनी लाठी से उस चट्टान पर दो बार वार किया और बहुत मात्रा में जल निकलने लगा. सारी सभा एवं पशुओं ने अपनी प्यास बुझा ली. **12** किंतु याहवेह ने मोशेह एवं अहरोन से कहा, "तुमने मुझमें विश्वास न करके इस्राएल के घराने के सामने मेरी पवित्रता की पुष्टि नहीं की, इसलिये तुम इस सभा को मेरे द्वारा दिए हुए देश में नहीं ले जाओगे." **13** यह मेरिबाह का सोता था जहां इस्राएल के घराने ने याहवेह से झगड़ा किया था और यहां याहवेह ने स्वयं को उनके बीच पवित्र सिद्ध कर दिया. **14** मोशेह ने कादेश से एदोम के राजा को संदेशवाहकों के द्वारा यह संदेश भेजा: "आपके भाई इस्राएल की विनती यह है: आप तो हम पर आई कठिनाइयों को जानते हैं. **15** हमारे पूर्वजों ने मिस्र देश में प्रवास किया और हम वहां बहुत समय तक रहते रहे. मिस्रियों ने हमारे साथ तथा हमारे पूर्वजों के साथ क्रूरतापूर्वक व्यवहार किया, **16** हमने इस पर याहवेह की गुहार लगाई और उन्होंने हमारी सुन ली, तथा अपना एक स्वर्गदूत भेजकर हमें मिस्र देश से निकाल लिया. "अब हम कादेश तक आ पहुंचे हैं, जो आपके देश की सीमा से लगा हुआ है. **17** कृपया हमें अपने देश में से होकर निकल जाने की अनुमति दे दीजिए. हम न तो आपके किसी खेत में से होकर जाएंगे और न किसी दाख की बारी में से; यहां तक कि हम तो किसी कुएं के जल का भी उपयोग नहीं करेंगे. हम सिर्फ राजमार्ग का ही प्रयोग करेंगे, जब तक हम आपकी सीमा से पार न हो जाएं, हम न दायीं ओर जाएंगे, न बायीं ओर." **18** किंतु इस विषय में एदोम का जवाब था: "आप लोग हमारे देश में से होकर नहीं जाएंगे, नहीं तो हम आपको तलवार से रोकेंगे." **19** इस्राएलियों ने उससे दोबारा विनती की: "हम सिर्फ राजमार्ग से ही यात्रा करेंगे और यदि हमारे पशु आपका ज़रा सा भी जल पिएंगे, तब हम इसका मूल्य भुगतान कर देंगे. हमें

सिर्फ यहां से पैदल ही पैदल जाने की अनुमति दे दीजिए, इसके अलावा कुछ
भी नहीं." 20 किंतु उसका उत्तर यही था: "तुम यहां से होकर नहीं जाओगे."
तब एदोम उनके विरुद्ध एक मजबूत सेना तथा पक्के इरादे के साथ खड़ा हो गया.
21 एदोम ने इस्राएल को अपने देश में से होकर जाने की अनुमति नहीं दी;
इसलिये इस्राएल ने उस देश से होकर जाने का विचार छोड़ दिया. 22 इस्राएल
के घराने ने कादेश से कूच किया, और पूरी इस्राएली सभा होर पर्वत तक पहुंच
गई. 23 एदोम की सीमा पर होर पर्वत पर याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को
सूचित किया, 24 "अहरोन को उसके पूर्वजों में मिल जाना है; क्योंकि वह उस
देश में प्रवेश नहीं करेगा, जो मैंने इस्राएल के घराने को दिया है, क्योंकि तुम
दोनों ने मेरिबाह के जल पर मेरे आदेश का विद्रोह किया था. 25 अहरोन तथा
उसके पुत्र एलिएज़र को होर पर्वत पर ले जाओ. 26 वहां अहरोन के पुरोहित
वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलिएज़र को पहना देना. फिर अहरोन अपने लोगों में
मिल जाएगा; वहां उसका देहांत हो जाएगा." 27 तब मोशेह ने ठीक वही किया,
जैसा याहवेह ने आदेश दिया था: वे सारी सभा की दृष्टि में होर पर्वत पर चढ़ गए.
28 जब मोशेह ने वे कपड़े अहरोन से उतारकर उसके पुत्र एलिएज़र को पहनाए,
तब अहरोन ने वहां पर्वत शिखर पर अपने प्राणों को त्याग दिया. इसके बाद
मोशेह एवं एलिएज़र पर्वत से नीचे उतर गए, 29 जब सारी सभा को यह मालूम
चला कि अहरोन की मृत्यु हो चुकी है, तब सारे इस्राएल के घराने ने तीस दिन
अहरोन के लिए विलाप किया.

21 जब नेगेव निवासी कनानी अराद के राजा ने यह सुना कि इस्राएली
अथारीम मार्ग से बढ़े चले आ रहे हैं, तब उसने इस्राएल पर आक्रमण कर
दिया, तथा कुछ को बंदी बना लिया. 2 फिर इस्राएल ने याहवेह के सामने यह
शपथ की: "यदि आप वास्तव में शत्रुओं को हमारे अधीन कर देंगे, तो हम इनके
नगरों को पूरी तरह से नाश कर देंगे." 3 याहवेह ने उनकी दोहाई स्वीकार कर
ली और कनानियों को उनके अधीन कर दिया. इस्राएलियों ने उनके नगरों को
पूरी तरह से नाश कर दिया. परिणामस्वरूप वह स्थान होरमाह के नाम से मशहूर
हो गया. 4 इसके बाद उन्होंने होर पर्वत से कूच किया और लाल सागर का मार्ग
लिया कि उन्हें एदोम से होते हुए जाना न पड़े. इस यात्रा ने प्रजा का धीरज खत्म
कर दिया. 5 प्रजा ने परमेश्वर एवं मोशेह के विरुद्ध बड़बड़ाना शुरू कर दिया,
"आपने हमें मिस्र देश से क्यों निकाला है, कि हम इस निर्जन प्रदेश में अपने प्राण
गवां दें? यहां तो न भोजन है न जल! और जो नीरस भोजन हमें दिया जा रहा है,
वह हमारे लिए घृणित हो चुका है." 6 याहवेह ने उन लोगों के बीच में विषैले
सांप भेज दिए, जिनके द्वारा डसे जाने पर अनेक इस्राएलियों की मृत्यु हो गई. 7
तब वे लोग मोशेह के पास आकर कहने लगे, "हमने पाप किया है, क्योंकि
हमने याहवेह तथा आपके विरुद्ध बड़बड़ाया है. आप उनसे हमारे लिए विनती
कीजिए कि वह इन सांपों को हमसे दूर कर दें." मोशेह ने लोगों के लिए विनती
की. 8 तब याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "विषैले सांप की प्रतिमा बनाकर एक
खंभे पर खड़ी कर दो तब होगा यह, कि जो कोई सांप का डसा हुआ व्यक्ति
आकर इस प्रतिमा को देखेगा, वह जीवन प्राप्त करेगा." 9 मोशेह ने सांप की
प्रतिमा गढ़ कर एक खंभे पर खड़ी कर दी. तब यह होने लगा कि यदि कोई सांप
का डसा हुआ व्यक्ति आकर उस कांसे के सांप की ओर देख लेता था, तो मृत्यु
से बच जाता था. 10 फिर इस्राएलियों ने यात्रा शुरू की और ओबोथ नामक
स्थान पर शिविर डाल दिया. 11 ओबोथ से कूच कर उन्होंने इये-आबारिम के
निर्जन प्रदेश में डेरा डाला, जो पूर्व दिशा की ओर मोआब के सामने है. 12 वहां
से कूच कर उन्होंने ज़ेरेद की वादी में डेरा डाल दिया. 13 वहां से यात्रा करते हुए
उन्होंने आरनोन के दूसरी ओर डेरा डाला. यह वह स्थान था, जो अमोरियों की
सीमा पर निर्जन प्रदेश में है. आरनोन मोआब की सीमा तय करता है, मोआबियों
एवं अमोरियों के बीच की. 14 इस बात का वर्णन याहवेह के युद्ध, नामक ग्रंथ
में इस रीति से किया गया है: "सूफाह वाहेब तथा आरनोन की वादियां, 15 तथा
वादियों की वे ढलान, जो आर के क्षेत्र तक फैली होती है, तथा जो मोआब की
सीमा तक पहुंची हुई है." 16 वहां से वे बीर तक पहुंचे, उस कुएं तक, जहां
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी, "इकट्ठा करो लोगों को, कि मैं उनके लिए
जल दे सकूं." 17 फिर इस्राएलियों ने यह गीत गाया: "कुएं भरने लगो, सभी!
यह गाएं. 18 वह कुंआ, जिसको प्रधानों ने खोदा था, जिसे कुलीन व्यक्तियों ने
खोदा है, जिसके लिए राजदंड तथा उनकी लाठियों का प्रयोग किया गया था."
फिर उन्होंने निर्जन प्रदेश से मत्तानाह की ओर कूच किया और 19 मत्तानाह से
नाहालिएल की ओर और फिर वहां से बामोथ की ओर, 20 बामोथ से उस घाटी
की ओर, जो मोआब देश में है तथा पिसगाह पर्वत शिखर, जो निर्जन प्रदेश के
सामने है. 21 यहां पहुंचकर इस्राएल ने अमोरियों के राजा सीहोन के लिए
अपने संदेशवाहक को इस संदेश के साथ भेजे: 22 "हमें अपने देश में से होकर
जाने की अनुमति दे दीजिए. हम न तो मार्ग के खेतों में प्रवेश करेंगे और न अंगूर
के बगीचों में. हम कुंओं का जल भी न पियेंगे. हम आपके देश को पार करते
हुए सिर्फ राजमार्ग का ही प्रयोग करेंगे." 23 किंतु राजा सीहोन ने इस्राएल को
अपनी सीमा में से होकर जाने की अनुमति ही न दी, बल्कि उसने अपनी सारी
प्रजा को इकट्ठा कर निर्जन प्रदेश में इस्राएल पर आक्रमण कर दिया. याहज़
नामक स्थान पर दोनों में युद्ध छिड़ गया. 24 इस्राएल ने उन पर तलवार के प्रहार
से अम्मोन देश की सीमा तक, आरनोन से यब्बोक तक के क्षेत्र पर अधिकार
कर लिया, क्योंकि जाज़ेर अम्मोन के घराने की सीमा पर था. 25 इस्राएल ने
इन सभी नगरों पर अधिकार कर लिया तथा हेशबोन एवं इसके सभी गांवों में,
जो अमोरियों के नगर थे, इस्राएली वहां रहने लगे. 26 हेशबोन अमोरियों के
राजा सीहोन का मुख्यालय था, जिसने मोआब के पहले के राजा से युद्ध कर
उससे आरनोन तक उसका सारा देश छीन लिया था. 27 तब यह कहावत मशहूर
हो गई: "हेशबोन आ जाइए! हम इसको दोबारा बनाएंगे; कि सीहोन का नगर
स्थापित कर दिया जाए. 28 "हेशबोन से एक आग की लपट निकली, सीहोन
के नगर से एक आग की लौ. इसने मोआब के आर को भस्म कर लिया, उन्हें,
जो आरनोन के प्रमुख शिखर थे. 29 मोआब, धिक्कार है तुम पर! तुम तो खत्म
हो चुके, खेमोश के निवासियो! उसने अमोरी राजा सीहोन को अपने पुत्रों को
भगौड़े बनाकर तथा पुत्रियों को बंदी बनाकर उसे सौंप दिया है. 30 "किंतु हमने
उन्हें धूल में मिला दिया है; दीबोन तक हेशबोन नाश होकर खंडहर बन चुके हैं,
इसके बाद हमने नोपाह तक, जो मेदेबा की सीमा तक फैला हुआ क्षेत्र का है,
उजाड़ दिया है." 31 इस प्रकार इस्राएल अमोरियों के देश में बस गया. 32
मोशेह ने याज़र की जासूसी करने की आज्ञा दी. उन्होंने जाकर वहां के गांवों
को अपने अधिकार में कर लिया, तथा वहां निवास कर रहे अमोरियों को वहां
से खदेड़ दिया. 33 तब वे मुड़कर बाशान के मार्ग से आगे बढ़ गए. बाशान
का राजा ओग अपनी सारी सेना लेकर उनसे युद्ध करने एद्रेइ पहुंच गया. 34
याहवेह की ओर से मोशेह को यह आश्वासन मिला, "तुम्हें उससे डरने की कोई
आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैंने उसे, उसकी सारी सेना तथा प्रजा को, तुम्हारे
अधीन कर दिया है. तुम उसके साथ वही सब करोगे, जो तुमने हेशबोन निवासी
अमोरियों के राजा सीहोन के साथ किया था." 35 फिर उन्होंने बाशान के राजा
ओग को, उसके पुत्रों तथा उसकी सारी प्रजा का नाश कर दिया, जिससे वहां
कोई भी बचा न रह गया, और इस्राएलियों ने उस देश पर अधिकार कर लिया.

22 इसके बाद इस्राएली यात्रा करते हुए मोआब के मैदानों में आ पहुंचे, जो
यरदन पार येरीख़ो के सामने है, यहां उन्होंने डेरा डाल दिया. 2 ज़ीप्पोर
के पुत्र बालाक की जानकारी में वह सब था, जो इस्राएल द्वारा अमोरियों के
साथ किया गया था. 3 तब मोआब देश इस्राएलियों की विशाल संख्या के
कारण बहुत ही डर गया, इस्राएल मोआब के लिए आतंक का विषय हो गया. 4

मोआब ने मिदियान के प्राचीनों के सामने अपने विचार इस प्रकार रखे, “अब
तो यह विशाल जनसमूह हमारे आस-पास की वस्तुओं को इस प्रकार चट कर
जाएगा, जिस प्रकार बैल मैदान के घास को चट कर जाता है.” इस अवसर पर
ज़ीप्पोर का पुत्र बालाक जो मोआब देश का राजा था, 5 उसने पेथोर नगर को,
जो फरात नदी के निकट है, उस नगर का रहवासी, बेओर के पुत्र बिलआम के
पास अपने दूतों के द्वारा यह आमंत्रण भेजा: “सुनिए, मिस्र देश से यह जनसमूह
यहां आ गया है. ये लोग इतनी बड़ी संख्या में हैं कि वे भूमि पर छा गए हैं
और इन्होंने हमारे देश के सामने ही पड़ाव डाल रखा है. 6 तब कृपा कर
यहां पधारिए, मेरी ओर से इन्हें शाप दीजिए, क्योंकि ये हमारी तुलना में बहुत
ही शक्तिशाली हैं. तब मेरे लिए यह संभव हो जाएगा कि मैं उन्हें पराजित
कर हमारे देश से बाहर खदेड़ सकूं. क्योंकि इतना मुझे मालूम है कि आप
जिनको आशीर्वाद देते हैं, वे फलवंत हो जाते हैं, तथा जिन्हें आप शाप देते हैं, वे
शापित ही रह जाते हैं.” 7 फिर मोआब तथा मिदियान के प्राचीन अपने साथ
भविष्य बताने का उपहार लेकर उपस्थित हुए. बिलआम के घर पर पहुंचकर
उन्होंने उसके सामने बालाक का आग्रह दोहरा दिया. 8 बिलआम ने उनके
सामने प्रस्ताव रखा, “आप यहां रात्रि के लिए ठहर कर विश्राम कीजिए. जब
याहवेह मुझसे बातें करेंगे, मैं आपको उनका संदेश दे दूंगा.” मोआब के वे प्रधान
बिलआम के यहां ठहर गए. 9 परमेश्वर बिलआम पर प्रकट हुए तथा उससे प्रश्न
किया, “कौन हैं ये व्यक्ति, जो तुम्हारे साथ हैं?” 10 बिलआम ने परमेश्वर को
उत्तर दिया, “ज़ीप्पोर के पुत्र बालाक ने, जो मोआब का राजा है, मेरे लिए संदेश
भेजा है: 11 ‘सुनिए, मिस्र से ये लोग निकलकर आए हुए हैं. ये लोग तो भूमि पर
छा गए हैं. अब आकर मेरी ओर से इन्हें शाप दे दो. तब संभवतः मैं उनसे युद्ध
कर उन्हें यहां से खदेड़ सकूंगा.’” 12 परमेश्वर ने बिलआम को आज्ञा दी, “मत
जाओ उनके साथ. तुम उन लोगों को शाप नहीं दोगे, क्योंकि वे लोग आशीषित
लोग हैं.” 13 फिर सुबह होते ही बिलआम ने बालाक के प्रधानों को उत्तर दिया,
“आप लोग अपने देश लौट जाइए, क्योंकि याहवेह ने मुझे आप लोगों के साथ
जाने के लिए मना कर दिया है.” 14 मोआब के उन प्रधानों ने लौटकर बालाक
को यह सूचना दे दी, “बिलआम ने हमारे साथ यहां आने से मना कर दिया
है.” 15 फिर बालाक ने दोबारा इन प्रधानों से अधिक संख्या में तथा अधिक
सम्मानजनक प्रधानों को बिलआम के पास भेज दिया. 16 बिलआम के सामने
जाकर उन्होंने विनती की, “ज़ीप्पोर के पुत्र बालाक की विनती है, ‘आपको मेरे
पास आने में कोई भी बाधा न हो, 17 विश्वास कीजिए मैं आपको अपार धन से
सम्मानित कर दूंगा, आप जो कुछ कहेंगे, मैं वही करने के लिए तैयार हूं. बस,
आप कृपा कर यहां आ जाइए और मेरी ओर से इन लोगों को शाप दे दीजिए.’”
18 बिलआम ने बालाक के लोगों को उत्तर दिया, “यदि बालाक मेरे घर को
चांदी और सोने से भर भी दें, मेरे लिए कुछ भी करना संभव न होगा, चाहे यह
विनती छोटी हो या बड़ी. मैं याहवेह, मेरे परमेश्वर के आदेश के विपरीत कुछ
नहीं कर सकता. 19 फिर अब, आप रात्रि में मेरे यहां विश्राम कीजिए. मैं मालूम
करूंगा, कि याहवेह इस विषय में मुझसे और क्या कहना चाहेंगे.” 20 रात में
परमेश्वर ने बिलआम के सामने आकर उसे आज्ञा दी, “यदि वे तुम्हें अपने
साथ ले जाने के उद्देश्य से आ ही गए हैं, तो जाओ उनके साथ; किंतु तुम सिर्फ
वही कहोगे, जो मैं तुमसे कहूंगा, वही करना.” 21 फिर सुबह बिलआम उठा,
अपनी गधी की काठी कसी तथा मोआब के प्रधानों के साथ चल दिया. 22
बिलआम के उनके साथ चले जाने पर परमेश्वर अप्रसन्न हो गए. याहवेह का
दूत बिलआम के मार्ग में शत्रु के समान विरोधी बनकर खड़ा हो गया. बिलआम
अपनी गधी पर बैठा हुआ था, तथा उसके साथ उसके दो सेवक भी थे. 23 जैसे
ही गधी की दृष्टि हाथ में तलवार लिए हुए, मार्ग में खड़े हुए याहवेह के दूत पर
पड़ी, वह मार्ग छोड़ खेत में चली गई. बिलआम ने गधी को प्रहार किए, कि वह
दोबारा मार्ग पर आ जाए. 24 फिर याहवेह का दूत अंगूर के बगीचे के बीच की
संकरी पगडंडी पर जा खड़ा हुआ, जिसके दोनों ओर दीवार थी. 25 जब गधी
की दृष्टि याहवेह के दूत पर पड़ी वह दीवार से सट गई, जिससे बिलआम का पैर
दीवार से दब गया. बिलआम ने दोबारा उस गधी पर प्रहार किया. 26 याहवेह
का वह दूत आगे चला गया तथा एक ऐसे संकरे स्थान पर जा खड़ा हुआ जहां न
तो दाएं मुड़ने का कोई स्थान था, न बाएं मुड़ने का. 27 जब उस गधी ने याहवेह
के दूत को देखा तो वह बिलआम के नीचे पसर गई. बिलआम क्रोधित हो गया
तथा उसने अपनी लाठी से उस गधी पर वार किया. 28 तब याहवेह ने उस गधी
को बोलने की क्षमता प्रदान कर दी. वह बिलआम से कहने लगी, “मैंने ऐसा
क्या किया है, जो आपने मुझ पर इस प्रकार तीन बार वार किया है?” 29
बिलआम ने उसे उत्तर दिया, “इसलिये कि तुमने मुझे हंसी का पात्र बना रखा है!
यदि मेरे हाथ में तलवार होती, मैं अब तक तुम्हारा वध कर चुका होता.” 30
उस गधी ने उसे उत्तर दिया, “क्या मैं आपकी वही गधी नहीं रही हूं, जिस पर
आप आजीवन यात्रा करते रहे हैं, जैसे कि आज भी? क्या मैंने भी आपके साथ
कभी ऐसा व्यवहार किया है?” बिलआम ने उत्तर दिया, “नहीं तो?” 31 फिर
याहवेह ने बिलआम को वह दृष्टि प्रदान की, कि उसे याहवेह का वह दूत दिखाई
देने लगा, जो मार्ग में तलवार लिए हुए खड़ा था. बिलआम उसके सामने गिर
पड़ा. 32 याहवेह के दूत ने बिलआम से पूछा, “तुमने तीन बार इस गधी पर वार
क्यों किया है? यह समझ लो कि मैं तुम्हारा विरोध करने आ गया हूं, क्योंकि
तुम्हारी चाल मुझसे ठीक विपरीत है. 33 इस गधी ने मुझे देख लिया और इन
तीनों बार मुझसे दूर चली गई; यदि उसने ऐसा न किया होता तो निश्चित ही इस
समय मैं तुम्हारा नाश कर चुका होता, और उसे जीवित ही रहने देता.” 34
बिलआम ने याहवेह के उस दूत के सामने यह स्वीकार किया, “मैंने पाप किया
है. मैं इस बात से अनजान था, कि मार्ग में खड़े हुए आप मेरा सामना कर रहे थे.
फिर अब, यदि यह आपके विरुद्ध हो रहा है, मैं लौट जाना चाहूंगा.” 35 किंतु
याहवेह के दूत ने बिलआम से कहा, “अब तो तुम इन लोगों के साथ चले
जाओ, किंतु तुम वही कहोगे, जो मैं तुम्हें कहने के लिए प्रेरित करूंगा.” फिर
बिलआम बालाक के उन प्रधानों के साथ चला गया. 36 जब बालाक को यह
मालूम हुआ, कि बिलआम आ रहा है, वह उससे भेंट करने मोआब के उस नगर
के लिए निकल पड़ा, जो आरनोन की सीमा पर स्थित है; सीमा के दूर वाले छोर
पर. 37 भेंट होने पर बालाक ने बिलआम से कहा, “क्या मैंने आपको अत्यंत
आवश्यक विनती के साथ आमंत्रित न किया था? आप फिर क्यों न आए? क्या
मेरे लिए आपका उचित सम्मान करना असंभव था?” 38 बिलआम ने बालाक
को उत्तर दिया, “देखिए अब तो मैं आपके लिए प्रस्तुत हूं. क्या मुझमें ऐसी कोई
क्षमता है, कि मैं कुछ भी कह सकूं? मैं तो वही कहूंगा, जो परमेश्वर मेरे मुख
में डालेंगे.” 39 यह कहते हुए बिलआम बालाक के साथ चला गया और वे
किरयथ-हुज़ोथ नामक स्थल पर पहुंचे. 40 वहां बालाक ने बछड़ों तथा भेड़ों
की बलि भेंट की. इसका कुछ अंश उसने बिलआम तथा उसके साथ आए
प्रधानों को दे दिया. 41 सुबह होते ही बालाक बिलआम को बामोथ-बाल के
पूजा-स्थल पर ले गया, जहां से इस्राएली प्रजा का एक अंश दिखाई दे रहा था.

23 तब बिलआम ने बालाक से विनती की, “मेरे लिए यहां सात वेदियां
बनवाइए, और वहां मेरे लिए सात बछड़े एवं सात मेढ़े तैयार रखिए.” 2
बालाक ने यही किया. फिर बालाक एवं बिलआम ने मिलकर हर एक वेदी पर
एक-एक बछड़ा एवं मेढ़ा भेंट किया. 3 फिर बिलआम ने बालाक से विनती
की, “आप अपनी होमबलि के निकट ठहरे रहिए, मैं याहवेह के सामने जाऊंगा,
हो सकता है कि याहवेह मुझसे भेंट करने आएं. वह मुझ पर, जो कुछ स्पष्ट
करेंगे, मैं आप पर प्रकट कर दूंगा.” यह कहकर बिलआम एक सुनसान पहाड़ी
पर चला गया. 4 यहां बिलआम ने परमेश्वर से बातें करनी शुरू की, “मैंने

सात वेदियां बनवाई हैं, और मैंने हर एक पर एक-एक बछड़ा तथा मेढ़ा भेंट
चढ़ाया है.” 5 याहवेह ने बिलआम को वह वचन सौंप दिया और उसे आज्ञा दी,
“बालाक के पास जाओ तथा उससे यही कह देना.” 6 फिर बिलआम बालाक
के पास लौट गया. बालाक अपनी होमबलि के पास खड़ा हुआ था, उसके साथ
मोआब के सारे प्रधान भी थे. 7 बिलआम ने अपना वचन शुरू किया, “अराम
देश से बालाक मुझे यहां ले आया है, बालाक, जो पूर्वी पर्वतों में से मोआब
का राजा है, उसका आदेश है, ‘मेरी ओर से याकोब को शाप दो; यहां आकर
इस्राएल की बुराई करो.’ 8 मैं उन्हें शाप कैसे दे दूं, जिन्हें परमेश्वर ने शापित
नहीं किया? मैं उनकी बुराई कैसे करूं, जिनकी बुराई याहवेह ने नहीं की है? 9
मैं यहां चट्टानों के शिखर से उन्हें देख रहा हूं, मैं यहां पहाड़ियों से उन्हें देख रहा
हूं; ये वे लोग हैं, जो सबसे अलग हैं, ये अन्य देशों में मिलाए नहीं जा सकते.
10 किसमें क्षमता है, याकोब के धूलि के कणों की गिनती करने की, या इस्राएल
के एक चौथाई भाग की गिनती करने की भी? मेरी कामना यही है कि मैं धर्मी
की मृत्यु को प्राप्त हो जाऊं. हां, ऐसा ही हो मेरा अंत!” 11 यह सुन बालाक ने
बिलआम से कहा, “आपने मेरे साथ यह क्या कर डाला है? मैंने तो आपको यहां
इसलिये आमंत्रित किया था, कि आप मेरे शत्रुओं को शाप दें, किंतु आपने तो
वस्तुतः उन्हें आशीर्वाद दे दिया है!” 12 बिलआम ने उत्तर दिया, “क्या, ज़रूरी
नहीं कि मैं वही कहूं, जो याहवेह ने मुझे बोलने के लिए सौंपा है?” 13 फिर
बालाक ने बिलआम से आग्रह किया, “कृपा कर आप इस दूसरी जगह पर आ
जाइए, जहां से ये लोग आपको दिखाई दे सकें, हालांकि यहां से आप उनका
पास वाला छोर ही देख सकेंगे, पूरे समूह को नहीं. आप उन्हें वहीं से शाप दे
दीजिए.” 14 तब बालाक बिलआम को ज़ोफिम के मैदान में, पिसगाह की चोटी
पर ले गया. वहां उसने सात वेदियां बनवाई और हर एक पर एक-एक बछड़ा
तथा एक-एक मेढ़ा भेंट चढ़ाया. 15 फिर वहां बिलआम ने बालाक से कहा,
“आप यहीं होमबलि के निकट ठहरिए और मैं वहां आगे जाकर याहवेह से भेंट
करूंगा.” 16 वहां याहवेह ने बिलआम से भेंट की तथा उसके मुख में अपने
शब्द भर दिए और याहवेह ने बिलआम को यह आज्ञा दी, “बालाक के पास
लौटकर तुम यह कहोगे.” 17 बिलआम बालाक के पास लौट आया, जो इस
समय होमबलि के निकट खड़ा हुआ था, तथा मोआब के प्रधान भी उसके पास
खड़े हुए थे. बालाक ने उससे पूछा, “क्या कहा है याहवेह ने तुमसे?” 18
तब बिलआम ने उसे सौंपा गया वचन दोहरा दिया: “उठो, बालाक, सुन लो;
ज़ीप्पोर के पुत्र, मेरी ओर ध्यान दो! 19 परमेश्वर मनुष्य तो हैं नहीं, कि झूठी
बात करें, न ही वह मानव की संतान हैं, कि उन्हें अपना मन बदलना पड़े. क्या,
यह संभव है कि उन्होंने कुछ कहा है? और उन्हें वह पूरा करना असंभव हो
गया? 20 सुन लीजिए, मुझे तो आदेश मिला है इन्हें आशीर्वाद देने का; जब
याहवेह ने आशीर्वाद दे दिया है, तो उसे पलटा नहीं जा सकता. 21 “याहवेह ने
याकोब में अनर्थ नहीं पाया, न उन्हें इस्राएल में विपत्ति दिखी है; याहवेह, जो
उनके परमेश्वर हैं, उनके साथ हैं; उनके साथ राजा की ललकार रहती है. 22
परमेश्वर ही हैं, मिस्र से उन्हें निकालने वाले; उनमें जंगली सांड के समान ताकत
है. 23 कोई अपशकुन नहीं है याकोब के विरुद्ध, न ही इस्राएल के विरुद्ध कोई
भावी घोषणा. सही अवसर पर याकोब के विषय में कहा जाएगा, इस्राएल के
विषय में कहा जाएगा, ‘याहवेह ने कैसा महान कार्य किया है!’ 24 देखो, सिंहनी
के समान यह दल उभर रहा है, एक शेर के समान यह स्वयं को खड़ा कर रहा
है; जब तक वह आहार को खा न ले, वह विश्राम न करेगा, हां, तब तक, जब
तक वह मारे हुओं का लहू न पी ले.” 25 यह सुन बालाक ने बिलआम से कहा,
“ऐसा करो, अब न तो शाप दो और न ही आशीर्वाद!” 26 किंतु बिलआम ने
बालाक को उत्तर दिया, “क्या मैंने आपको बताया न था, जो कुछ याहवेह
मुझसे कहेंगे, वही करना मेरे लिए ज़रूरी है?” 27 तब बालाक ने बिलआम से
विनती की, “कृपा कर आइए, मैं आपको एक दूसरी जगह पर ले चलूंगा. हो
सकता है यह परमेश्वर को ठीक लगे और आप मेरी ओर से उन्हें शाप दे दें.”
28 फिर बालाक बिलआम को पेओर की चोटी पर ले गया, जहां से उजाड़ क्षेत्र
दिखाई देता है. 29 बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, “अब आप यहां मेरे
लिए सात वेदियां बना दीजिए तथा मेरे लिए यहां सात बछड़े एवं सात मेढ़े तैयार
कीजिए.” 30 बालाक ने ठीक वैसा ही किया, जैसा बिलआम ने विनती की थी.
उसने हर एक वेदी पर एक-एक मेढ़ा चढ़ाया.

24 जब बिलआम ने यह ध्यान दिया कि इस्राएल को आशीर्वाद देने पर
याहवेह प्रसन्न होते हैं, उसने पूर्व अवसरों के समान शकुन ज्ञात करने का
प्रयास नहीं किया. उसने निर्जन प्रदेश की ओर अपना मुख स्थिर किया. 2 जब
बिलआम ने दृष्टि की, तो उसे गोत्र के अनुसार व्यवस्थित इस्राएली डेरे डाले हुए
दिखाई दिए. परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा. 3 उसने अपना वचन शुरू कर
दिया: “बेओर के पुत्र बिलआम की वाणी, उस व्यक्ति की वाणी, जिसे दृष्टि दी
गई है, 4 यह उसकी वाणी है, जो परमेश्वर के वचन सुनता है, जो सर्वशक्तिमान
का दर्शन देखा करता है, वह भूमि पर दंडवत पड़ा है, उसकी दृष्टि खुली है: 5
“याकोब कैसे सुंदर लग रहे हैं, तुम्हारे शिविर, इस्राएल, तुम्हारे डेरे! 6 “जो
फैली हुई घाटी के समान है, जो नदी तट के बगीचे के समान है, जो याहवेह
द्वारा रोपित अगरू पौधे के समान, जो जल के निकट के देवदार वृक्ष के समान
है. 7 जल उसके जल पात्रों से हमेशा बहता रहेगा, उसका बीज जल भरे खेतों
के निकट होगा. “उसका राजा, अगाग से भी अधिक महान होगा, उसका राज्य
बढ़ता जाएगा. 8 “परमेश्वर उसे मिस्र देश से निकाल लाए; उसके लिए परमेश्वर
जंगली सांड के सींग के समान हैं, वह उन राष्ट्रों को चट कर जाएगा, जो उसके
विरुद्ध हैं, उनकी हड्डियां चूर-चूर हो जाएंगी, वह अपने बाणों से उन्हें नाश कर
देगा. 9 वह शेर के समान लेटता तथा विश्राम करता है, किसमें साहस है कि इस
शेर को छेड़ें? “सराहनीय हैं वे सब, जो उसे आशीर्वाद देते हैं, शापित हैं, वे सब
जो उसे शाप देते हैं!” 10 बिलआम के प्रति बालाक का क्रोध भड़क उठा,
अपने हाथ पीटते हुए बिलआम से कहा, “मैंने तुम्हें अपने शत्रुओं को शाप देने
के उद्देश्य से यहां बुलाया था और अब देख लो, तुमने उन्हें तीनों बार आशीष ही
देने की हठ की है. 11 इसलिये अब भाग जाओ यहां से अपने देश को. मैंने
चाहा था, तुम्हें बहुत ही सम्मानित करूंगा; किंतु देख लो, याहवेह ने यह सम्मान
भी तुमसे दूर ही रखा है.” 12 बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, “क्या, मैंने
आपके द्वारा भेजे गए दूतों के सामने यह स्पष्ट न किया था, 13 ‘चाहे बालाक
मेरे घर को चांदी-सोने से भर दे, मेरे लिए याहवेह के आदेश के विरुद्ध अपनी
ओर से अच्छाई या बुराई करना असंभव होगा. मैं तो वही कहूंगा, जो याहवेह
मुझसे कहेंगे’? 14 फिर अब यह सुन लीजिए: मैं अपने लोगों के बीच में लौट
रहा हूं, मैं आपको चेतावनी दूंगा कि भविष्य में ये लोग आपकी प्रजा के साथ
क्या-क्या करने पर हैं.” 15 उसने अपना वचन इस प्रकार शुरू किया: “बेओर
के पुत्र बिलआम की वाणी, उस व्यक्ति की वाणी, जिसे दृष्टि प्रदान कर दी गई
है, 16 उस व्यक्ति की वाणी, जो परमेश्वर का वचन सुनता है, जिसे उन परम
प्रधान के ज्ञान की जानकारी है, जो सर्वशक्तिमान के दिव्य दर्शन देखता है, वह
है तो भूमि पर दंडवत, किंतु उसकी आंखें खुली हैं: 17 “मैं उन्हें देख अवश्य
रहा हूं, किंतु इस समय नहीं; मैं उनकी ओर दृष्टि तो कर रहा हूं, किंतु वह निकट
नहीं है. याकोब से एक तारा उदय होगा; इस्राएल से एक राजदंड उभरेगा, जो
मोआब के मुंह को कुचल देगा, वह शेत के सभी वंशजों को फाड़ देगा. 18
एदोम अधीनता में जा पड़ेगा; सेईर भी, जो इसके शत्रु हैं, अधीन हो जाएंगे. 19
याकोब के घराने में से एक महान अधिकारी हो जाएगा, वही इस नगर के बचे
हुए भाग को नाश कर देगा.” 20 उसने अमालेकियों की ओर दृष्टि की और यह
वचन शुरू किया: “अमालेक उन राष्ट्रों में आगे था, किंतु उसका अंत विनाश ही

है.” 21 इसके बाद बिलआम ने केनियों की ओर अपनी दृष्टि उठाई, तथा
अपना वचन इस प्रकार ज़ारी रखा: “तुम्हारा निवास तो अति दृढ़ है, तुम्हारा
बसेरा चट्टान की सुरक्षा में बसा है; 22 यह होने पर भी केनी उजड़ हो जाएगा;
अश्शूर तुम्हें कब तक बंदी रखेगा?” 23 इसके बाद बिलआम ने अपने वचन में
यह कहा: “परमेश्वर द्वारा ठहराए गए के अलावा जीवित कौन रह सकता है?
24 किंतु जहाज़ कित्तिम तट से आते रहेंगे; वे अश्शूर को ताड़ना देंगे, एबर को
ताड़ना देंगे, इस प्रकार उनका अंत भी नाश ही होगा.” 25 इसके बाद बिलआम
अपने नगर को लौट गया तथा बालाक भी अपने स्थान पर लौट गया.

25 जब इस्राएली शित्तीम में डेरे डाले हुए थे, तब वे मोआब की उन युवतियों
के साथ कुकर्म करने लगे, 2 जिन्होंने उन्हें देवताओं के लिए बलि
अर्पण-उत्सव में आमंत्रित करना शुरू कर दिया था. इस्राएलियों ने उनके देवताओं
के सामने भोजन करना एवं दंडवत करना शुरू कर दिया था. 3 इस प्रकार
इस्राएलियों ने पेओर के बाल के साथ स्वयं को जोड़ लिया था. इससे याहवेह
इस्राएल पर क्रोधित हो गए. 4 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, “दिन के प्रकाश
में याहवेह के सामने सारी प्रजा के प्रधानों को फांसी दे दो, ताकि इस्राएल पर से
याहवेह का भड़का हुआ क्रोध शांत हो सके.” 5 फिर मोशेह ने इस्राएल के
न्यायियों को आदेश दिया, “तुममें से हर एक अपने-अपने गोत्र के ऐसे हर एक
व्यक्ति को मार डालें, जो पेओर के बाल का भक्त हो चुका है.” 6 उसी समय
यह देखा गया: सारी इस्राएली प्रजा एवं मोशेह के देखते-देखते, जब वे सब
मिलनवाले तंबू के द्वार के सामने रो रहे थे, तब एक इस्राएली व्यक्ति अपने
संबंधियों के सामने एक मिदियानी स्त्री ले आया. 7 जब पुरोहित अहरोन के पौत्र
एलिएज़र के पुत्र फिनिहास ने यह देखा, तब वह सारी सभा के सामने उठा,
अपने हाथ में एक बर्छी ली, 8 उस शिविर के भीतर जाकर उस इस्राएली पुरुष
तथा मिदियानी स्त्री, दोनों को बेध डाला, बर्छी दोनों ही की देह को बेध कर पार
निकल गई. इससे इस्राएल पर आई यह महामारी थम गई; 9 महामारी से मरने
वालों की संख्या 24,000 पहुंच गई. 10 याहवेह ने मोशेह पर यह सत्य प्रकट
किया, 11 “पुरोहित अहरोन के पुत्र एलिएज़र के पुत्र फिनिहास ने इस्राएल के
घराने पर भड़के मेरे क्रोध को शांत कर दिया है. उन लोगों के बीच वही था
जिसमें वही जलन थी, जो मुझमें थी. इसलिए मैंने अपनी जलन में इस्राएल के
घराने को नाश नहीं कर डाला. 12 तुम उसे सूचित करो: यह समझ लो कि मैं
उसके साथ अपनी शांति की वाचा स्थापित कर रहा हूं. 13 इसका संबंध उससे
तथा उसके वंशजों से है, यह सदा के लिए पुरोहित पद की वाचा है, क्योंकि
उसमें उसके परमेश्वर के लिए जलन थी. उसने इस्राएल के घराने के लिए
प्रायश्चित पूरा कर दिया है.” 14 उस इस्राएली व्यक्ति का नाम, जिसको उस
मिदियानी स्त्री के साथ मारा गया था, ज़िमरी था, जिसका पिता सालू था, जो
शिमओन के गोत्र से उनके घराने का प्रधान था. 15 उस मारी गई मिदियानी स्त्री
का नाम कोज़बी था, वह ज़ुर नामक व्यक्ति की पुत्री थी, जो मिदियानी प्रजा
में घराने का प्रधान था. 16 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 17
“मिदियानियों के प्रति शत्रुता बनाए रखो तथा उनका नाश कर दो. 18 क्योंकि
वे तुम्हारे साथ छल करते हुए तुम्हारे शत्रु बने रहे हैं, इसी के विषय में उन्होंने
पेओर की घटना में तुमसे छल किया तथा कोज़बी, मिदियानी प्रधान की पुत्री के
संदर्भ में भी, जो उनकी जाति की थी, जिसको पेओर की घटना के कारण
महामारी के दिन मारा गया था.”

26 इस महामारी के बाद याहवेह ने मोशेह तथा पुरोहित अहरोन के पुत्र
एलिएज़र को आज्ञा दी, 2 “पितरों के अनुसार बीस वर्ष से अधिक
आयु के हर एक इस्राएली की, जो युद्ध के लिए सक्षम हो, गिनती करो.” 3 फिर
मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने मोआब के मैदानों में उन्हें यरदन तट पर, जो
येरीख़ो के निकट है, यह आज्ञा दी, 4 “बीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों
की गिनती की जाए, जैसा कि याहवेह द्वारा मोशेह को आदेश दिया गया है.”
इस अवसर पर मिस्र देश से निकाले गए इस्राएल वंशज ये थे: 5 इस्राएल का
पहलौठा, रियूबेन, रियूबेन के पुत्र हनोख से हनोखी परिवार; पल्लू से पल्लुई
परिवार; 6 हेज़रोन से हेज़रोनी परिवार; कारमी से कारमी परिवार; 7 रियूबेन
के परिवार में यह ही परिवार समूह थे, और इनसे जो गिने गये वे 43,730 थे.
8 पल्लू का पुत्र एलियाब था, 9 एलियाब के तीन पुत्र थे—नमूएल, दाथान और
अबीराम. याद रखो कि दाथान और अबीराम वे दो नेता थे, जो मोशेह और
अहरोन के विरोधी हो गए थे. वे कोराह के अनुयायी थे और कोराह याहवेह का
विरोधी हो गया था. 10 वही समय था जब भूमि विभाजित हो गई थी और
कोराह एवं उसके सभी अनुयायियों को निगल गई थी. कुल दो सौ पचास पुरुष
मर गये थे. यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए एक संकेत और चेतावनी थी.
11 किंतु कोराह के सारे वंशज नहीं मरे. 12 शिमओन के गोत्र के ये परिवार थे:
नमूएल से नमूएल के परिवार; यामिन से यामिन परिवार; याकिन से याकिन
परिवार; 13 ज़ेराह से जेराही परिवार; शाऊल से शाऊल परिवार. 14 शिमओन
के परिवार समूह में वे परिवार थे; इसमें कुल 22,200 पुरुष थे. 15 गाद
के परिवार समूह के ये परिवार हैं: ज़ेफोन से ज़ेफोन परिवार; हग्गी से हग्गी
परिवार; शूनी से शूनी परिवार; 16 ओजनी से ओजनी परिवार; एरी से एरी
परिवार; 17 अरोद से अरोद परिवार; अरेली से अरेली परिवार; 18 गाद के
परिवार समहू के वे परिवार थे; इनमें कुल 40,500 पुरुष थे. 19 यहूदाह के
दो पुत्र एर और ओनान, कनान में मर गए थे. 20 यहूदाह के परिवार समूह
के ये परिवार हैं: शेलाह से शेलाह परिवार; पेरेज़ से पेरेज़ परिवार; ज़ेराह से
ज़ेराह परिवार; 21 पेरेज़ के ये परिवार हैं: हेज़रोन से हेज़रोनी परिवार; हामुल
से हामूली परिवार. 22 यहूदाह के परिवार समूह के वे परिवार थे. इनके
कुल पुरुषों की संख्या 76,500 थी. 23 इस्साखार के परिवार समूह के
परिवार ये थे: तोला से तोला परिवार; पुव्वाह से पुव्वा परिवार; 24 याशूब से
याशूब परिवार; शिम्रोन से शिम्रोन परिवार; 25 इस्साखार के परिवार समूह के
वे परिवार थे; इनमें कुल पुरुषों की संख्या 64,300 थी. 26 ज़ेबुलून के
परिवार समूह के परिवार ये थे: सेरेद से सेरेद परिवार; एलोन से एलोन परिवार;
याहलील से याहलील परिवार; 27 ज़ेबुलून के परिवार समूह के वे परिवार थे;
इनमें कुल पुरुषों की संख्या 60,500 थी. 28 योसेफ़ के दो पुत्र मनश्शेह और
एफ्राईम थे. हर एक पुत्र अपने परिवारों के साथ परिवार समूह बन गया था. 29
मनश्शेह के परिवार में ये थे: माखीर से माखीर परिवार (माखीर गिलआद का
पिता था); गिलआद से गिलआद परिवार; 30 गिलआद के परिवार ये थे:
ईएज़ेर से ईएज़ेर परिवार; हेलेक से हेलेकी परिवार; 31 अस्रीएल से अस्रीएल
परिवार; शेकेम से शेकेमी परिवार; 32 शेमीदा से शेमीदा परिवार; हेफ़ेर से हेफ़ेर
परिवार; 33 (हेफ़ेर का पुत्र ज़लोफेहाद था. किंतु उसका कोई पुत्र न था; केवल
पुत्री थी. उसकी पुत्रियों के नाम महलाह, नोआ, होगलाह, मिलकाह, और
तिरज़ाह थे.) 34 मनश्शेह परिवार समूह के ये परिवार हैं; इनमें कुल पुरुष
52,700 थे. 35 एफ्राईम के परिवार समूह के ये परिवार थे: शूतेलाह से
शूतेलाही परिवार; बेकेर से बेकेरी परिवार; तहान से तहानी परिवार; 36 एरान
शूतेलाह परिवार का था: उसका परिवार एरनी था. 37 एफ्राईम के परिवार
समूह में ये परिवार थे; कुल पुरुषों की संख्या इसमें 32,500 थी. वे ऐसे सभी
लोग हैं जो योसेफ़ के परिवार समूहों के हैं. 38 बिन्यामिन के परिवार समूह के
परिवार ये थे: बेला से बेला परिवार; अशबेल से अशबेली परिवार; अहीराम से
अहीरामी परिवार; 39 शपूआमि से शपूआमि परिवार; हूपाम से हूपामी परिवार.
40 बेला के परिवार में अर्द और नामान थे: अर्द से अर्दी परिवार; नामान से
नामानी परिवार; 41 बिन्यामिन के परिवार समूह के ये सभी परिवार थे; इसमें

पुरुषों की कुल संख्या 45,600 थी. 42 दान के परिवार समूह में ये परिवार
थे: शूहाम से शूहाम परिवार समूह. दान के परिवार समूह से वह परिवार समूह
था: 43 शूहाम परिवार समूह में बहुत से परिवार थे. इनमें पुरुषों की कुल संख्या
64,400 थी. 44 आशेर के परिवार समूह के ये परिवार हैं: इमनाह से इम्नी
परिवार; इशवी से इशवी परिवार; बेरियाह से बेरिय परिवार; 45 बेरियाह के ये
परिवार हैं: हेबेर से हेबेरी परिवार; मालखिएल से मालखिएल परिवार. 46
आशेर की एक पुत्री सेराह नाम की थी. 47 आशेर के परिवार समूह में वे
परिवार थे; इसमें पुरुषों की संख्या 53,400 थी. 48 नफताली के परिवार
समूह के ये परिवार थे: यहसेल, जिससे यहसेली परिवार; गूनी, जिससे गूनी
परिवार; 49 येसेर, जिससे येसेरी परिवार; शिल्लेम, जिससे शिल्लेमी परिवार.
50 नफताली के परिवार समूह के ये परिवार थे. इसमें पुरुषों की कुल संख्या
45,400 थी. 51 इस प्रकार इस्राएल के पुरुषों की कुल संख्या 6,01,730
थी. 52 याहवेह ने मोशेह से कहा, 53 "हर एक परिवार समूह के लिये, जिन्हें
गिना गया है, मीरास में पर्याप्त भूमि दी जाएगी. 54 बड़ा परिवार समूह अधिक
भूमि पाएगा, और छोटा परिवार समूह कम भूमि पाएगा. किंतु हर एक परिवार
समूह को भूमि मिलेगी जिसके लिए मैंने वचन दिया है, और जो भूमि वे पाएंगे
वह उनकी गिनी गई संख्या के बराबर होगी. 55 हर एक परिवार समूह को
लाटरी के आधार पर निश्चय करके धरती दी जाएगी और उस प्रदेश का वही
नाम होगा जो उस परिवार समूह का होगा. 56 वह प्रदेश बड़े और छोटे परिवार
समूहों को पासे फेंककर मीरास बांट दिया जाएगा." 57 लेवी का परिवार समूह
भी गिना गया. लेवी के परिवार समूह के ये परिवार हैं: गेरशोन से गेरशोनी
परिवार; कोहाथ से कोहाथ परिवार; मेरारी से मेरारी परिवार. 58 लेवी के
परिवार समूह से ये परिवार भी थे: लिबनी परिवार, हेब्रोनी परिवार, माहली
परिवार, मूशी परिवार, कोहाथ परिवार, (अमराम कहात के परिवार समूह
का था; 59 अमराम की पत्नी का नाम योकेबेद था. वह भी लेवी के परिवार
समूह की थी. उसका जन्म मिस्र में हुआ था. अमराम और योकेबेद के दो पुत्र
अहरोन और मोशेह थे. उनकी एक पुत्री मिरियम भी थी. 60 नादाब, अबीहू,
एलिएज़र तथा इथामार का पिता था अहरोन. 61 किंतु नादाब और अबीहू मर
गए; क्योंकि उन्होंने याहवेह को उस आग से भेंट चढ़ाई जो उनके लिए स्वीकृत
नहीं थी.) 62 लेवी परिवार समूह के सभी पुरुषों की संख्या 23,000 थी.
किंतु ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों के साथ नहीं गिने गए थे. वे भूमि नहीं पा
सके, जिसे अन्य लोगों को देने का वचन याहवेह ने दिया था. 63 मोशेह और
पुरोहित एलिएज़र ने इन सभी लोगों को गिना. उन्होंने इस्राएल के लोगों को
मोआब के मैदान में गिना. यह येरीख़ो से यरदन नदी के पार था. 64 बहुत समय
पहले, मोशेह और पुरोहित अहरोन ने इस्राएल के लोगों को सीनायी मरुभूमि में
गिना था. किंतु वे सभी लोग मर चुके थे. मोआब के मैदान में मोशेह ने जिन
लोगों को गिना, वे पहले गिने गए लोगों से भिन्न थे. 65 यह इसलिये हुआ कि
याहवेह ने इस्राएल के लोगों से यह कहा था कि वे सभी मरुभूमि में मरेंगे. जो
केवल दो जीवित बचे थे; येफुन्नेह का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू!

27 तब योसेफ़ के पुत्र मनश्शेह के परिवार से माखीर के पुत्र गिलआद के
पुत्र हेफेर के पुत्र ज़लोफेहाद की पुत्रियां, जिनके नाम महलाह, नोहा,
होगलाह, मिलकाह तथा तिरज़ाह थे, 2 मोशेह, एलिएज़र तथा प्रधानों एवं सारी
सभा की उपस्थिति में मिलनवाले तंबू के द्वार पर एकत्र हुईं. उन्होंने यह विनती
की, 3 "हमारे पिता की मृत्यु तो बंजर भूमि में ही हो चुकी थी. वह उनमें
शामिल नहीं थे, जो कोराह के साथ मिलकर याहवेह के विरुद्ध हो गए थे, उनकी
मृत्यु उन्हीं के पाप में हो गई. उनके कोई पुत्र न था. 4 उनके कोई पुत्र न होने के
कारण भला उनके परिवार में से उनका नाम क्यों मिट जाए? कृपया हमारे
भाइयों के बीच में से हमें एक भाग दिया जाए." 5 फिर मोशेह ने यह विषय
याहवेह के सामने रख दिया, 6 तब याहवेह ने मोशेह को यह उत्तर दिया, 7
"ज़लोफेहाद की पुत्रियों ने सुसंगत विषय प्रस्तुत किए हैं. ज़रूरी है कि तुम उन्हें
उनके पिता के भाइयों के बीच में एक मीरास का अंश प्रदान करो. तुम उनके
पिता की मीरास उनके नाम लिख दोगे. 8 "तुम इस्राएल के घराने को यह भी
सूचित करोगे, 'यदि किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाए, जिसके कोई पुत्र ही
नहीं है, तब उसकी मीरास उसकी पुत्री के नाम कर देना. 9 यदि उसके कोई
पुत्री भी न हो, तब तुम उसकी मीरास उसके भाइयों के नाम कर दोगे. 10 यदि
उसके कोई भाई भी नहीं हो, तब तुम उसके पिता के भाइयों को उसकी मीरास
प्रदान कर दोगे. 11 यदि उसके पिता के कोई भाई भी न हो, तब तुम उसकी
मीरास उसके परिवार में उसके ही निकटतम संबंधी को प्रदान कर दोगे, वह
मीरास उसकी हो जाएगी. यह इस्राएल के घराने के लिए न्याय की विधि होगी,
ठीक जैसा आदेश याहवेह द्वारा मोशेह को दिया गया था.'" 12 इसके बाद
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "तुम इस अबारिम पर्वत पर जाओ और उस देश
पर दृष्टि डाल लो, जो मैंने इस्राएल के घराने को दे दिया है. 13 जब तुम इस देश
को देख लोगे, तुम भी अपने भाई अहरोन के समान अपने लोगों में मिला लिए
जाओगे, 14 इसलिये, कि तुमने ज़िन के निर्जन प्रदेश में उस सोते के पास सारी
सभा के सामने उनके द्वारा पैदा की गई विद्रोह की स्थिति में मेरी पवित्रता को
प्रतिष्ठित करने के मेरे आदेश के विपरीत तुमने काम किया था." (कादेश के ज़िन
के निर्जन प्रदेश में यही था वह मेरिबाह का सोता.) 15 फिर मोशेह ने याहवेह से
विनती की, 16 "सभी मनुष्यों की आत्माओं के परमेश्वर, याहवेह, इस सभा के
लिए एक अगुए को नियुक्त कर दें. 17 वही उनके हक में सही रहेगा. वही
उनका अगुआ होकर इस देश में प्रवेश करवाएगा, जिससे याहवेह की प्रजा की
स्थिति वैसी न हो जाए, जैसी बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों की हो जाती है."
18 मोशेह के लिए याहवेह का उत्तर यह था, "नून के पुत्र यहोशू पर अपना हाथ
रख दो-वह एक ऐसा व्यक्ति है, जिसमें पवित्र आत्मा का वास है. 19 उसे
पुरोहित एलिएज़र तथा सारी सभा के सामने खड़ा करना और उन सबके सामने
उसे नियुक्त करना. 20 अपने अधिकार का एक भाग तुम उस पर दे देना, कि
इस्राएल के घराने की सारी सभा में उसके प्रति आज्ञाकारिता की भावना भर
जाए. 21 इसके अलावा, वह पुरोहित एलिएज़र पर निर्भर रहेगा, कि एलिएज़र
उरीम के द्वारा उसके लिए याहवेह की इच्छा मालूम किया करेगा. उसी के
आदेश पर वे कूच करेंगे, उसी की आज्ञा पर वे प्रवेश कर सकेंगे, दोनों ही स्वयं
वह तथा इस्राएली, अर्थात् सारी सभा." 22 मोशेह ने याहवेह की आज्ञा का पूरा-
पूरा पालन किया. उन्होंने यहोशू को अपने साथ ले जाकर पुरोहित एलिएज़र
तथा सारी सभा के सामने खड़ा कर दिया. 23 तब मोशेह ने योशुआ पर अपने
हाथ रखे और उसे उत्तराधिकारी नियुक्त किया, ठीक जैसी आज्ञा उन्हें याहवेह
से प्राप्त हुई थी.

28 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा
दे दो: 'मुझे भेंट चढ़ाने के लिए तुम सावधान रहोगे, ठीक समय पर आग
द्वारा चढ़ाया मेरा भोजन, एक सुखद-सुगंध.' 3 तुम उन्हें यह साफ़-साफ़ कहोगे:
यह वह भेंट है, जो तुम याहवेह को आग के माध्यम से भेंट करोगे: एक वर्ष के
दो मेमने, जो दोषहीन होने अवश्य हैं, जिन्हें तुम प्रतिदिन नियमित होमबलि में
भेंट करोगे. 4 तुम एक मेमना भोर को, तथा दूसरा शाम के समय में; 5 इसके
अलावा अन्नबलि के लिए डेढ़ किलो मैदा, जिसे पेरकर निकाले गए एक लीटर
तेल में मिलाया गया हो. 6 यह सीनायी पर्वत पर एक सुखद-सुगंध के लिए
ठहराया गया था, कि यह याहवेह के लिए एक भेंट हो जाए. 7 इसके बाद पेय
बलि के लिए, हर एक मेमने के साथ एक लीटर दाखमधु होगी. तुम पवित्र
स्थान में याहवेह के लिए बलि उंडेल दोगे. 8 वह अन्य मेमना तुम शाम के समय
में भेंट करोगे. इसकी विधि ठीक वैसी ही होगी, जैसी सुबह की अन्नबलि की

थी. तथा उसी प्रकार जैसी पेय बलि की थी. तुम इसे आग में भेंट करोगे,
जो याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगी. 9 "'इसके बाद शब्बाथ पर याहवेह
के लिए होमबलि में एक वर्ष के, दोष रहित दो मेमने भेंट किए जाएं, तथा
अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा तथा इसकी पेय बलि. 10
यह नियमित रूप से भेंट की जाती होमबलि एवं इसकी पेय बलि के अलावा
हर शब्बाथ के लिए ठहराई गई होमबलि होगी. 11 "'फिर तुम्हारे हर एक
महीने की शुरुआत में तुम याहवेह के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: दो बछड़े
एवं बैल, दोषहीन एक-एक वर्ष के सात मेमने, 12 तथा हर एक बैल के साथ
अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ पांच किलो मैदा; तथा हर एक बछड़े के
साथ अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा, 13 हर एक मेमने के
साथ तेल मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा अन्नबलि के लिए, होमबलि के लिए ये
आग के द्वारा याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए भेंट किए जाएं. 14 इनके लिए
भेंट की जाने के लिए पेय बलि होगी, एक बछड़े के साथ तीन लीटर दाखमधु,
मेढ़े के साथ दो लीटर दाखमधु तथा एक मेमने के साथ एक लीटर दाखमधु. यह
पूरे वर्ष के हर एक माह में भेंट की जाने के लिए निर्धारित बलियां हैं. 15
याहवेह के लिए पापबलि होगी एक बकरा, जिसे नियमित होमबलि के अलावा
इसकी पेय बलि के साथ भेंट किया जाएगा. 16 "'इसके बाद पहले महीने की
चौदहवीं तारीख पर याहवेह का फ़सह होगा. 17 इस माह के चौदहवें दिन
उत्सव होगा. सात दिन खमीर रहित रोटी को ही खाया जाएगा. 18 पहले दिन
पवित्र सभा होगी; तथा तुम किसी भी प्रकार की मेहनत न करना. 19 उस दिन
तुम याहवेह के लिए आग के द्वारा बलि भेंट होमार्पण चढ़ाना. उसमें ये भी
शामिल हों: दो बछड़े, एक मेढ़ा तथा एक वर्ष के सात निर्दोष मेमने. 20 उनका
अन्नबलि हर एक बैल के साथ तेल मिला हुआ पांच किलो मैदा; तथा हर एक
मेढ़े के साथ अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा, 21 हर एक
मेमने के साथ तेल में मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा अन्नबलि के लिए. 22 इसके
अलावा अपने प्रायश्चित के लिए पापबलि स्वरूप एक बकरा. 23 तुम ये सभी
बलियां नियमित प्रस्तुत की जा रही भोर की होमबलियों के अलावा भेंट करोगे.
24 तुम सातों दिन, प्रतिदिन इसी रीति से बलियां भेंट किया करोगे; आग के
द्वारा चढ़ाया वह भोजन, जो याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगा. यह नियमित
होमबलि के अलावा इसकी पेय बलि के साथ भेंट किया जाएगा. 25 तथा
सातवें दिन पवित्र सभा होगी, इस दिन तुम किसी भी प्रकार की मेहनत न करना.
26 "'पहले फल के दिन भी, जब तुम अपने सप्ताहों के उत्सव में याहवेह को
नई अन्नबलि भेंट करोगे, तब तुम पवित्र सभा करोगे. तुम कोई मेहनत न करोगे.
27 तुम याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: दो बछड़े,
एक मेढ़ा एक वर्ष के सात मेमने; 28 उनकी अन्नबलि होगी, हर एक बछड़े के
साथ तेल मिला हुआ अढ़ाई किलो मैदा तथा हर एक मेढ़े के साथ दो किलो 29
तथा हर एक मेमने के साथ एक किलो तेल मिला हुआ मैदा. 30 इसके अलावा
अपने प्रायश्चित के लिए एक बकरा. 31 नियमित होमबलि एवं इससे संबंधित
अन्नबलि के अलावा तुम उन्हें उनकी पेय बलि के साथ भेंट करोगे. ज़रूरी है
कि ये निर्दोष हों.

29 "'पहले महीने की पहली तारीख पर तुम पवित्र सभा आयोजित करोगे.
इस दिन तुम कोई भी मेहनत न करोगे. यह वह दिन होगा, जिसे तुम
तुरही बजाने के लिए प्रयोग करोगे. 2 तुम याहवेह को सुखद-सुगंध भेंट करने के
लिए यह होमबलि भेंट करोगे: एक बछड़ा, एक मेढ़ा तथा सात एक वर्ष के
निर्दोष मेमने. 3 इनके अलावा उनकी अन्नबलि भी; तेल मिला हुआ मैदा;
बछड़ों के साथ ढाई किलो, मेढ़े के साथ दो किलो; 4 तथा हर एक मेमने के
साथ एक-एक किलो तेल मिला हुआ मैदा, 5 साथ में अपने प्रायश्चित के
लिए पापबलि में एक बकरा. 6 नए चांद के लिए होमबलि तथा इससे संबंधित
अन्नबलि के लिए नियमित होमबलि तथा अन्नबलि तथा उससे संबंधित पेय
बलियां, जैसा उनके विषय में याहवेह ने आज्ञा दी थी, वैसे भेंट किए जाएं. 7
"'इसी महीने की दसवीं तारीख पर तुम एक पवित्र सभा आयोजित करोगे; तुम
स्वयं को नम्र करोगे, तुम किसी प्रकार की मेहनत नहीं करोगे. 8 सुखद-सुगंध
के लिए तुम याहवेह के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: एक बछड़ा, एक मेढ़ा
तथा एक वर्ष के सात निर्दोष मेमने. 9 उनके साथ अन्नबलि होगी: तेल मिला
हुआ मैदा; बछड़े के साथ ढाई किलो, मेढ़े के साथ दो किलो; 10 तथा हर एक
मेमने के साथ एक-एक किलो मैदा. 11 प्रायश्चित के लिए पापबलि, नियमित
होमबलि तथा अन्नबलि एवं पेय बलियां के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा भी भेंट किया जाए. 12 "'इसके बाद सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख
पर तुम एक पवित्र सभा आयोजित करोगे. तुम इसमें कोई भी मेहनत न करोगे,
और याहवेह के लिए सात दिन उत्सव मनाओगे. 13 तुम याहवेह के लिए
सुखद-सुगंध के लिए आग के द्वारा यह होमबलि भेंट करो: तेरह बछड़े, दो मेढ़े,
चौदह एक वर्ष के निर्दोष मेमने. 14 उन तेरह बछड़ों के साथ यह अन्नबलि
होगी: तेल मिला हुआ मैदा ढाई किलो, मेढ़े के साथ तेल मिला हुआ मैदा दो
किलो, 15 तथा हर एक मेमने के साथ एक-एक किलो तेल मिला हुआ मैदा.
16 नियमित होमबलि, अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा पापबलि के लिए
एक बकरा भेंट किया जाए. 17 "'इसके बाद अगले दिन पशुओं में से बारह
बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष मेमने. 18 इनके अलावा अन्नबलि
और पेय बलि चढ़ाना; जो बछड़ों, मेढ़ों तथा मेमनों के लिए उनकी संख्या के
अनुरूप, नियम के अनुसार हो. 19 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि
के लिए एक बकरा तथा इसके साथ अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां. 20
"'तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष मेमने. 21 इनके
अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों, मेढ़ों तथा मेमनों के साथ
उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के अनुसार हो. 22 तथा नियमित होमबलि के
अलावा पापबलि के लिए एक बकरा तथा इसके लिए अन्नबलि तथा उनकी
पेय बलियां. 23 "'चौथे दिन दस बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने. 24 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों, मेढ़ों तथा
मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के अनुसार हो. 25 नियमित
होमबलि, अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा पापबलि के लिए एक बकरा भेंट
किया जाए. 26 "'पांचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने. 27 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों, मेढ़ों तथा
मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के अनुसार हो. 28 नियमित
होमबलि तथा अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा एक बकरा पापबलि के लिए
चढ़ाया जाएगा. 29 "'छठवें दिन आठ बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह
निर्दोष मेमने. 30 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के अनुसार हो. 31
तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक बकरा तथा इसके लिए
अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां. 32 "'सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े, एक
वर्ष के चौदह निर्दोष मेमने. 33 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना
जो बछड़ों, मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो. 34 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक बकरा
तथा इसके लिए अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां. 35 "'आठवें दिन तुम एक
पवित्र सभा आयोजित करोगे. इस दिन तुम कोई भी मेहनत न करोगे. 36 किंतु
तुम होमबलि, आग के द्वारा भेंट बलि चढ़ाओगे, जो याहवेह के लिए सुखद-
सुगंध होगी: एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष के, निर्दोष सात मेमने. 37 बछड़े,
मेढ़े तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुसार उनकी अन्नबलि तथा उनकी
पेय बलि. 38 नियमित होमबलि तथा अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा एक

बकरा पापबलि के लिए चढ़ाया जाएगा. 39 "'ठहराए गए अवसरों पर तुम ये
सब याहवेह के सामने प्रस्तुत करोगे. तुम्हारी संकल्प की गई तथा स्वेच्छा
बलियों के अलावा तुम्हारी होमबलियां, अग्निबलियां, पेय बलियां तथा मेल
बलियां भी चढ़ाना होंगे.'" 40 मोशेह ने यह सब याहवेह द्वारा उन्हें दी गई
आज्ञा के अनुसार इस्राएल के घराने पर प्रकट कर दिया.

30 इसके बाद मोशेह इस्राएलियों के गोत्रों के प्रधानों के सामने आए और
उन्होंने उनसे कहा: "याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा यह है: 2 यदि कोई
व्यक्ति याहवेह के लिए कोई संकल्प लेता है, अथवा वह स्वयं को शपथ लेकर
किसी ज़रूरी वाचा से बांध लेता है, वह अपनी शपथ को नहीं तोड़ेगा. वह
अपने मुख से बोले हुए वचनों के अनुसार करेगा. 3 "यदि कोई स्त्री याहवेह के
लिए संकल्प करती है, वह युवावस्था में अपने पिता के घर में ही निवास करते
हुए स्वयं को ज़रूरी वाचा में बांध लेती है, 4 और उसका पिता उसके इस
संकल्प और वाचा को सुन लेता है, जिसमें उसने स्वयं को बांध लिया है. उसके
पिता को इस विषय में कोई आपत्ति नहीं होती, तब उसके सारे संकल्प मान्य
रहेंगे, तथा वे सारी वाचाएं स्थायी हो जाएंगी. 5 किंतु यदि उसका पिता इन
संकल्पों को सुनकर उन्हें मना कर देता है, जैसे ही वह इन संकल्पों की सुनता
है, उसका कोई भी संकल्प, जिसे उसने वाचा में बांधकर रखा है, प्रभावी न रह
जाएगा; याहवेह भी उसे क्षमा कर देंगे क्योंकि उसके पिता ने उसे इनके विषय में
मना कर दिया था. 6 "फिर भी, यदि उसके द्वारा लिया गया संकल्प एवं सोच-
विचार बिना कहे गए वचन में सीमित स्थिति में ही उसे विवाह करना पड़ जाता
है, 7 और उसके पति को इस बात का पता चल जाता है, किंतु उस अवसर पर
यह सुनने पर भी उसकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है, तब उसके द्वारा
किए गए संकल्प तथा वाचा स्थिर बने रहेंगे, जिनमें उसने स्वयं को बांधा हुआ
है. 8 किंतु यदि उस अवसर पर उसके पति को इसका पता चल जाता है, वह
अपनी पत्नी को इस विषय में मना कर देता है, तब वह अपनी पत्नी के संकल्प
को खत्म कर देगा, जिसमें उसने स्वयं को बांध लिया था, जो उसके द्वारा बिना
सोचे समझे कहा गया वचन था. याहवेह उसे इस विषय में क्षमा कर देंगे. 9
"किंतु, यदि संकल्प किसी विधवा या किसी तलाकशुदा स्त्री द्वारा किया गया है,
तो उसने जितने भी संकल्पों और मन्‍नतों में बांधी हुई रहेगी, 10 "किंतु यदि वह
विवाहित स्थिति में अपने पति के आवास में ही है, और उसने संकल्प किए
है, शपथ ली हुईं है, 11 और उसके पति को इसका पता चल चुका है, किंतु
उसने इस पर उससे कुछ भी नहीं किया, उसने उसे इस विषय में कुछ मना
भी नहीं किया, तब उसके सारे संकल्प सदा बने रहेंगे, तथा उसकी वे सभी
वाचाएं जिनमें उसने स्वयं को बांधकर रखा था, सदा बने रहेंगे. 12 किंतु यदि
उसका पति इन्हें सुनते ही इन्हें खत्म कर देता है, तब उस स्त्री के द्वारा लिया गया
संकल्प एवं उसके द्वारा स्वयं पर लगाई हुई वाचा खत्म हो जाएंगी; उसके पति
द्वारा वे खत्म कर दिए गए हैं. याहवेह उन्हें क्षमा कर देंगे. 13 हर एक संकल्प
तथा हर एक वाचा जो उसने स्वयं को विनम्र रखने के लिए शुरू की है, उसके
पति के द्वारा सदा के लिए रखा जा सकता है, या खत्म किया जा सकता है. 14
किंतु यदि वास्तव में उसका पति दैनिक जीवन में इसका वर्णन ही नहीं करता है,
तब इसके द्वारा पति अपनी पत्नी से किए गए संकल्पों एवं वाचाओं की पुष्टि
करता है, जो उसने जवाबदारी के रूप में स्वयं पर लागू किए हुए हैं. उसने
इस विषय का ज्ञान होने पर भी अपनी कोई भी प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की है.
इसलिये यह उसके द्वारा की गई पुष्टि होगी. 15 किंतु यदि उसने यह सुनने के
बाद, इन्हें तोड़ दिया हो, तो वही अपनी पत्नी के दोष का भार उठाएगा." 16 ये
वे विधियां हैं, जो याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई हैं, जिनका संबंध पति-पत्नी के
पारस्परिक संबंध से, तथा पिता-पुत्री के पारस्परिक संबंध से है, जब पुत्री
युवावस्था तक पिता के घर पर रह रही होती है.

31 फिर मोशेह के लिए याहवेह का आज्ञा थी, 2 "मिदियानियों से
इस्राएलियों का पूरा बदला ले डालो, इसके बाद तुम अपने पूर्वजों में
मिला लिए जाओगे." 3 मोशेह ने लोगों को आज्ञा दी, "अपने बीच लोगों को
युद्ध के लिए तैयार करो, कि वे मिदियान पर आक्रमण कर मिदियान पर याहवेह
का बदला पूरा करें. 4 इस्राएल के सारे गोत्रों से हर एक कुल में से एक-एक
हज़ार को तुम युद्ध के लिए भेजोगे." 5 इसलिये सारी इस्राएली प्रजा में से हर
एक गोत्र से एक-एक हज़ार योद्धा भर्ती किए गए; बारह हज़ार युद्ध के लिए तैयार
योद्धा. 6 मोशेह ने इन्हें हर एक गोत्र से एक-एक हज़ार योद्धा को युद्ध के लिए
भेज दिया. पुरोहित एलिएज़र का पुत्र फिनिहास युद्ध के लिए इनके साथ था. वह
अपने हाथ में पवित्र पात्र एवं तुरहियां लिए हुए था कि इनसे चेतावनी नाद किया
जा सके. 7 उन्होंने याहवेह द्वारा मोशेह को दिखाए गए आदेश के अनुसार
मिदियान पर आक्रमण कर दिया तथा हर एक पुरुष की हत्या कर दी. 8 उन्होंने
अन्य लोगों के साथ मिदियान के इन पांच राजाओं का भी वध कर दिया: एवी,
रेकेम, ज़ुर, हूर, तथा रेबा. इनके अलावा इस्राएलियों ने बेओर के पुत्र बिलआम
का वध भी तलवार से कर दिया. 9 इस्राएलियों ने मिदियानी स्त्रियों एवं बालकों
को तथा पशुओं एवं भेड़ों को बंदी बनाकर उनकी सारी सामग्री लूट ली. 10
इसके बाद उन्होंने उनके द्वारा बसाए गए सभी नगरों को जला दिया तथा उनके
शिविरों को आग में झोंक दिया. 11 तब उन्होंने लूट की सारी सामग्री, सारे बंदी
मनुष्यों तथा पशुओं को ले जाकर 12 मोशेह, पुरोहित एलिएज़र तथा इस्राएलियों
की सारी सभा के सामने इन बंदियों, पशुओं तथा लूट की सामग्री को प्रस्तुत कर
दिया. वे इस अवसर पर मोआब के मैदानों में डेरे डाले हुए थे, जो येरीख़ो के
सामने यरदन नदी के तट पर हैं. 13 उनसे भेंट करने के उद्देश्य से मोशेह, पुरोहित
एलिएज़र तथा सभा के सारे प्रधान शिविर के बाहर निकल आए. 14 मोशेह
सैन्य अधिकारियों से अप्रसन्‍न थे—वे जो हज़ारों पर तथा सैकड़ों पर नियुक्त
किए गए थे—जो युद्ध से लौट रहे थे. 15 मोशेह ने उनसे प्रश्न किया, "क्या तुमने
सभी स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया है? 16 ये ही तो थीं वे, जिन्होंने पेओर
में बिलआम की सलाह पर इस्राएलियों को याहवेह के विरुद्ध बलवा के लिए
उकसाया था, जिसके कारण याहवेह की सभा में महामारी फैल गई थीं. 17
इसलिये अब हर एक बालक का वध कर डालो तथा हर एक विवाहित स्त्री का
भी. 18 हां, उन कन्याओं को अपने लिए जीवित छोड़ देना, जिनका किसी पुरुष
से यौन संपर्क नहीं हुआ है. 19 "सात दिन शिविर के बाहर डेरा डालना ज़रूरी
है. जिस किसी ने किसी व्यक्ति का वध किया है, जिस किसी ने किसी मरे हुए
व्यक्ति को छुआ है, स्वयं को तथा अपने बंदियों को तीसरे एवं सातवें दिन पवित्र
करे. 20 तुम स्वयं को, हर एक वस्त्र को, हर एक चमड़े की वस्तु को, बकरे के
रोम से बनी वस्तुओं को तथा लकड़ी की सभी वस्तुओं को पवित्र करोगे." 21
फिर पुरोहित एलिएज़र ने उन्हें जो युद्ध कर लौटे थे, संबोधित करते हुए कहा,
"याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई आज्ञा यह है: 22 सिर्फ सोना, चांदी, कांसा,
लोहा, रांगा तथा सीसा, 23 हर एक वस्तु, जिसे आग में से होकर निकाला जा
सकता है, तुम आग में से निकालोगे कि वह शुद्ध हो जाए, किंतु जो वस्तु आग में
से निकाली नहीं जा सकती, उनको पवित्र करने के लिए तुम इन्हें जल से शुद्ध
करोगे. 24 पवित्र करने के लिए तुम सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोओगे, इसके
बाद तुम शिविरों में प्रवेश कर सकते हो." 25 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,
26 "तुम, पुरोहित एलिएज़र तथा प्रजा में गोत्रों के प्रधान सारे लूट के सामान की
गिनती करें, चाहे ये मनुष्य हों अथवा पशु. 27 तब सारी लूट की सामग्री का
बंटवारा युद्ध में गए योद्धाओं तथा सारी सभा के बीच कर दिया जाए. 28 योद्धाओं
पर याहवेह के लिए कर ठहराया जाए, जो युद्ध में गए थे, पांच सौ व्यक्तियों तथा
पशुओं, गधों तथा भेड़ों के लिए एक-एक प्राणी अलग रखते जाना. 29 इसे
उनके आधे भाग के दसवें अंश से लेकर याहवेह को चढ़ाने के उद्देश्य से पुरोहित

एलिएज़र को दे देना. 30 इस्राएलियों के आधे भाग के दसवें अंश से हर एक
पचास व्यक्तियों, पशुओं, गधों, भेड़ों, सभी पशुओं में से एक-एक लेकर उन
लेवियों को सौंप देना, जो याहवेह के साक्षी तंबू के अधिकारी हैं." 31 मोशेह
तथा पुरोहित एलिएज़र ने मोशेह को दी गई याहवेह की आज्ञा का पूरा-पूरा
पालन किया. 32 सैनिकों द्वारा लूटी गई सामग्री में से शेष यह था: 6,75,000
भेड़ें, 33 72,000 पशु, 34 61,000 गधे 35 तथा 32,000 स्त्रियां जिनका
किसी पुरुष से यौन संपर्क नहीं हुआ था. 36 वे, जो युद्ध पर गए थे, उनके आधे
का दसवां अंश इस प्रकार था: भेड़ों की संख्या 3,37,500, 37 इनमें से
याहवेह के लिए निकाली भेड़ें 675; 38 पशुओं की संख्या 36,000 जिनमें
से याहवेह का भाग था 72; 39 गधों की संख्या 30,500 थी, जिनमें याहवेह
का भाग था 61; 40 इनमें मनुष्य प्राणी थे 16,000, जिनमें याहवेह का
ठहराया गया भाग था 32. 41 मोशेह ने पुरोहित एलिएज़र को याहवेह के लिए
ठहराया भाग सौंप दिया, ठीक जैसी याहवेह की आज्ञा थी. 42 मोशेह ने जिन
इस्राएलियों को, जो युद्ध से लौटे थे, उनके आधे भाग के दसवें अंश के संबंध में:
43 सारी इस्राएली सभा के आधे भाग का दसवां अंश था 3,37,500 भेड़ें, 44
36,000 पशु, 45 30,500 गधे 46 तथा मानव प्राणी थे 16,000. 47
तथा इस्राएलियों के आधे भाग के दसवें अंश में से, मोशेह ने हर एक पचास में
से, चाहे मनुष्य हों अथवा पशु, लेकर उन लेवियों को सौंप दिया, जो याहवेह
के साक्षी तंबू के अधिकारी थे, ठीक जैसा मोशेह को याहवेह ने आज्ञा दी थी.
48 फिर वे अधिकारी—हज़ारों के सेनापति, सैकड़ों के प्रधान—मोशेह के
पास आए. 49 उन्होंने मोशेह से विनती की, "आपके सेवकों ने हमें सौंपे गए
योद्धाओं की गिनती कर ली है. कोई भी व्यक्ति छूट नहीं रहा. 50 इसलिये हममें
से हर एक व्यक्ति याहवेह को भेंट करने के लिए सोने के गहने-बाजूबंद, कंगन,
अंगूठियां, कर्णफूल, गले के हार लेकर आया है, जैसा जैसा जिसे प्राप्त हुआ है
कि हम याहवेह के सामने अपने लिए प्रायश्चित कर सकें." 51 मोशेह तथा
पुरोहित एलिएज़र ने उनसे ये सोने के गहने इकट्ठे कर लिए, जो उनके द्वारा
लाए गए थे. 52 भेंट में दिए गए सारे गहनों का तौल, जो उन्होंने याहवेह को
चढ़ाया था, जो हज़ारों तथा सैकड़ों के अधिकारियों द्वारा प्राप्त हुआ था,
16,750 शेकेल हुआ. 53 योद्धाओं ने अपने लिए लूट सामग्री इकट्ठी कर ली
थी. 54 मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने, हज़ारों एवं सैंकड़ों पर चुने हुए
अधिकारियों से सोने के गहने स्वीकार कर लिए तथा इन्हें मिलनवाले तंबू पर
ले गए, कि यह याहवेह के सामने इस्राएलियों के लिए चिन्ह हो जाए.

32 इस समय तक रियूबेन तथा गाद के वंशजों का पशु धन बहुत विशाल
संख्या में हो चुका था. फिर जब उन्होंने याज़र देश तथा गिलआद देश
का विचार किया, तो उन्होंने इसे हर एक रीति से पशु धन के लिए उपयुक्त
पाया. 2 रियूबेन के वंशज तथा गाद के वंशज मोशेह, पुरोहित एलिएज़र तथा
सभा के प्रधानों के पास अपनी विनती ले पहुंच गए. 3 "अतारोथ, दीबोन,
याज़र, निमराह, हेशबोन, एलिआलेह, सेबाम, नेबो तथा बेओन, 4 वह देश,
जिसे याहवेह ने इस्राएली सभा के लिए हरा दिया है, पशु धन के लिए अच्छा है
और हम, आपके सेवक पशुधनधारी हैं." 5 तब उन्होंने यह भी कहा, "यदि
हम पर आपकी कृपादृष्टि बनी है, हम, आपके सेवकों को यह भूमि का भाग दे
दिया जाए; हमें अपने साथ यरदन के पार न ले जाइए." 6 किंतु मोशेह ने
इनकार किया, "कैसे संभव है कि तुम्हारे भाई तो युद्ध में जाएंगे और तुम लोग
यहां आराम से बैठे रहोगे? 7 तुम लोग यहीं इस्राएलियों को याहवेह द्वारा दिए
गए देश के लिए यरदन पार करने में हतोत्साहित क्यों कर रहे हो? 8 तुम्हारे
पूर्वजों ने भी उस अवसर पर यही किया था, जब मैंने उन्हें कादेश-बरनेअ से
उस देश का भेद लेने के उद्देश्य से भेजा था. 9 वे एशकोल घाटी में थे और वहां
से उन्होंने उस देश को देखा, लौटकर उन्होंने इस्राएलियों को हतोत्साहित कर
दिया, कि वे उस देश में प्रवेश न करें, जो उन्हें याहवेह द्वारा दिया जा चुका था.
10 परिणाम यह हुआ कि उस दिन याहवेह का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने
यह शपथ ले ली: 11 'मिस्र देश से निकलकर आए बीस वर्ष तथा इससे अधिक
आयु का कोई भी व्यक्ति उस देश का दर्शन ही न कर पाएगा जिसे देने के शपथ
मैंने अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से की थी; क्योंकि उन्होंने पूरी तरह से
मेरा अनुसरण नहीं किया; 12 सिर्फ कनिज्ज़ी येफुन्नेह के पुत्र कालेब, तथा
नून के पुत्र यहोशू के सिवाय, क्योंकि ये दो ही याहवेह का अनुसरण करने में
ईमानदार बने रहे थे.' 13 याहवेह का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा और उन्होंने
उन्हें निर्जन प्रदेश में चालीस वर्षों तक भटकते रहने के लिए छोड़ दिया, कि वह
सारी पीढ़ी, जिन्होंने याहवेह के विरुद्ध यह बुराई की थी, नाश हो जाए. 14
"अब देख लो, तुम लोग पापियों की संतान होकर अपने-अपने पूर्वजों के
समान व्यवहार कर रहे हो, कि याहवेह के भड़के हुए क्रोध को इस्राएल के
विरुद्ध और अधिक भड़का सको. 15 क्योंकि यदि तुम रियूबेन और गाद के
वंशजों का अनुसरण करना छोड़ दोगे, तो वह एक बार फिर उन्हें निर्जन प्रदेश में
अकेला छोड़ देंगे और तुम दोनों इन सब लोगों को नाश कर दोगे." 16 तब वे
मोशेह की उपस्थिति में आकर कहने लगे, "हम यहां अपने पशु धन के लिए
भेड़शालाओं का तथा अपनी संतान के लिए नगर बनाएंगे. 17 किंतु स्वयं हम
इस्राएलियों के आगे-आगे युद्ध के लिए शस्त्रों से तैयार हो जाया करेंगे, जब तक
हम उन्हें उस देश में न पहुंचा दें, जबकि हमारी संतान इस देश के वासियों के
कारण गढ़ नगरों में निवास कर रही होगी. 18 हम उस समय तक अपने-अपने
घरों में नहीं लौटेंगे, जब तक हर एक इस्राएली अपने-अपने भाग के अधिकार
को प्राप्त नहीं कर लेता है. 19 क्योंकि हम यरदन के उस पार तथा उससे भी
दूर तक किसी भी भाग के अधिकार का दावा नहीं करेंगे, क्योंकि हमारा
उत्तराधिकार हमें यरदन के इसी ओर, पूर्व दिशा में मिल चुका है." 20 यह सुन
मोशेह ने उत्तर दिया, "यदि तुम यही करोगे; तुम याहवेह के सामने स्वयं को युद्ध
के लिए तैयार कर लोगे, 21 तुम सभी युद्ध के लिए सशस्त्र योद्धा याहवेह के
सामने यरदन नदी पार करोगे, जब तक तुम याहवेह के सामने से उनके शत्रुओं
को खदेड़ न दोगे, 22 तथा वह देश याहवेह के सामने अधीन न हो जाए; यह
पूरा हो जाने के बाद ही तुम लौट सकोगे, तथा याहवेह एवं इस्राएल के प्रति इस
वाचा से छूट जाओगे और यह देश याहवेह के सामने तुम्हारा निज भाग हो
जाएगा. 23 "किंतु यदि तुम ऐसा न करो, तो देख लेना, तुम याहवेह के प्रति पाप
कर चुके होगे; यह तय समझो कि तुम्हारा पाप ही तुम्हें पकड़वा देगा. 24
अपनी संतान के लिए नगरों का निर्माण करो, भेड़ों के लिए भेड़-शालाएं भी
तथा वही करो, जिसकी प्रतिज्ञा तुमने की है." 25 गाद एवं रियूबेन के वंशजों ने
मोशेह से कहा, "आपके सेवक ठीक वही करेंगे, जैसा आदेश हमारे स्वामी देंगे.
26 हमारी संतान, हमारी पत्नियां, हमारा पशु धन तथा हमारे सारे पशु गिलआद के
इन्हीं नगरों में रह जाएंगे. 27 जब आपके सेवक, हर एक, जो युद्ध के लिए
तैयार है, युद्ध के लिए याहवेह के सामने इस नदी के पार जाएगा-ठीक जैसा
हमारे स्वामी का आदेश है." 28 तब मोशेह ने इनके विषय में पुरोहित एलिएज़र
तथा नून के पुत्र यहोशू तथा इस्राएलियों के गोत्रों के प्रधानों को आदेश दिया.
29 मोशेह ने उनसे कहा, "यदि गाद एवं रियूबेन के ये वंशज, हर एक, जो युद्ध
के लिए तैयार है, याहवेह के सामने यरदन नदी को पार करेगा तथा वह देश
तुम्हारे वश में कर दिया जाता है, तब तुम उन्हें स्वामित्व के लिए गिलआद प्रदान
कर दोगे. 30 किंतु यदि वे शस्त्रों से तैयार हो तुम्हारे साथ नदी के पार न जाएं,
तब उन्हें कनान देश में ही तुम्हारे बीच भूमि बांटी जाएगी." 31 गाद एवं रियूबेन
के वंशजों ने उत्तर दिया, "आपके इन सेवकों को याहवेह ने जैसा आदेश दिया
है, हम ठीक वैसा ही करेंगे. 32 हम स्वयं याहवेह की उपस्थिति में सशस्त्र कनान
देश में प्रवेश करेंगे तथा हमारी निज भूमि हमारे लिए यरदन के इसी पार रहेगी."

33 इसलिये मोशेह ने गाद, रियूबेन तथा योसेफ़ के पुत्र मनश्शेह के आधे गोत्र को
अमोरियों के राजा सीहोन तथा बाशान के राजा ओग का राज्य, सारे देश इनके
नगर तथा इनकी सीमाएं तथा निकटवर्ती देशों के नगर दे दिए. 34 गाद के
वंशजों ने दीबोन, अतारोथ, अरोअर, 35 अतारोथ-षोपान, याज़र, योगबेहाह
36 बेथ-निमराह तथा बेथ-हारान को गढ़ नगरों के रूप में बना दिया, साथ ही
भेड़ों के लिए भेड़-शालाएं भी बना दीं. 37 रियूबेन के वंशजों ने हेशबोन,
एलिआलेह, किरयथाईम, 38 नेबो, बाल-मेओन (इन नामों को बदल दिया
गया) और सिबमाह नगर बसाए. उन नगरों को उन्होंने नए नाम दिए, जिनका वे
निर्माण करते रहे थे. 39 मनश्शेह के पुत्र माखीर के वंशजों ने गिलआद जाकर
उस पर अधिकार कर लिया और उसमें रह रहे अमोरियों को वहां से निकाल
दिया. 40 तब मोशेह ने गिलआद को मनश्शेह के पुत्र माखीर के नाम कर दिया
और वे वहां बस गए. 41 मनश्शेह के पुत्र याईर ने जाकर इस क्षेत्र के नगरों पर
अधिकार कर लिया और उन्हें हव्वोथ-याईर नाम दे दिया. 42 नोबाह ने जाकर
केनाथ तथा इसके गांवों पर अधिकार करके उसे अपना ही नाम, नोबाह, दे
दिया.

33 यह उस यात्रा का वर्णन है, जो इस्राएलियों द्वारा मिस्र देश से निकलकर
उनकी सेना के द्वारा मोशेह तथा अहरोन के नेतृत्व में की गई थी. 2
याहवेह के आदेश पर मोशेह ने उनकी यात्रा के प्रारंभिक स्थानों का लेखा रखा
था. ये यात्राएं उनके प्रारंभिक स्थानों के अनुसार लिख दी गई हैं: 3 उन्होंने
पहले महीने की पन्द्रहवीं तारीख पर रामेसेस से अपनी यात्रा शुरू की. दूसरे
दिन, फ़सह उत्सव के बाद इस्राएलियों ने सारे मिस्रवासियों के देखते-देखते बड़ी
निडरता से कूच कर दिया. 4 इस समय मिस्रवासी याहवेह द्वारा मारे गए अपने
सारे पहलौठों को मिट्टी देने में व्यस्त थे; याहवेह ने मिस्रवासियों के देवताओं पर
भी दंड दिए थे. 5 इसके बाद इस्राएलियों ने रामेसेस से यात्रा शुरू कर सुक्कोथ
में अपने डेरे डाले. 6 उन्होंने सुक्कोथ से यात्रा की और एथाम में डेरे डाले, यह
स्थान निर्जन प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है. 7 उन्होंने एथाम से यात्रा शुरू की
और पी-हाहीरोथ की दिशा में लौटे, जो बाल-जेफोन के सामने है. उन्होंने
मिगदोल में डेरे डाले. 8 उन्होंने पी-हाहीरोथ से यात्रा शुरू की और लाल सागर
से होते हुए निर्जन प्रदेश में जा पहुंचे, और उन्होंने एथाम के निर्जन प्रदेश में तीन
दिन की यात्रा की और माराह में डेरे डाल दिए. 9 माराह से यात्रा शुरू कर वे
एलिम पहुंचे. एलिम में बारह जल के सोते तथा सत्तर खजूर के पेड़ थे. उन्होंने
वहीं डेरा डाल दिया. 10 एलिम से यात्रा शुरू कर उन्होंने लाल सागर तट पर
डेरे डाले. 11 लाल सागर तट से यात्रा शुरू कर उन्होंने सिन के निर्जन प्रदेश में
डेरे डाले. 12 सिन के निर्जन प्रदेश से कूच कर उन्होंने दोफकाह में डेरे डाले.
13 दोफकाह से यात्रा शुरू कर उन्होंने अलूष में डेरे डाले. 14 अलूष से यात्रा
शुरू कर उन्होंने रेफीदीम में डेरे डाले. यही वह स्थान था, जहां उनके लिए पीने
का पानी उपलब्ध न था. 15 उन्होंने रेफीदीम से यात्रा शुरू कर सीनायी के
निर्जन प्रदेश में डेरे डाले. 16 उन्होंने सीनायी के निर्जन प्रदेश से यात्रा शुरू की
और किबरोथ-हत्ताआवह में डेरे डाले. 17 उन्होंने किबरोथ-हत्ताआवह से यात्रा
शुरू की और हाज़ोरौथ में डेरे डाले. 18 उन्होंने हाज़ोरौथ से यात्रा शुरू की तथा
रिथमाह में डेरे डाले. 19 उन्होंने रिथमाह से यात्रा शुरू की और रिम्मोन-पेरेज़
में डेरे डाले. 20 उन्होंने रिम्मोन-पेरेज़ से यात्रा शुरू की और लिबनाह में डेरे
डाल दिए. 21 लिबनाह से यात्रा शुरू कर उन्होंने रिस्साह पहुंचकर वहां डेरे
डाल दिए. 22 रिस्साह से यात्रा शुरू कर उन्होंने केहेलाथाह पहुंचकर डेरे डाल
दिए. 23 उन्होंने केहेलाथाह से कूच किया, यात्रा करते हुए शेफर पर्वत पहुंचकर
वहां डेरे डाल दिए. 24 शेफर पर्वत से यात्रा शुरू कर हारादाह पहुंचे, और वहां
उन्होंने डेरे डाल दिए. 25 उन्होंने हारादाह से यात्रा शुरू की, और मखेलौथ
पहुंचकर डेरे डाल दिए. 26 उन्होंने मखेलौथ से यात्रा शुरू की और ताहाथ
पहुंचकर डेरे डाल दिए. 27 उन्होंने ताहाथ से यात्रा शुरू की और तेराह पहुंचकर
डेरे डाल दिए. 28 उन्होंने तेराह से यात्रा शुरू की और मितखाह पहुंचकर डेरे
डाल दिए. 29 उन्होंने मितखाह से यात्रा शुरू की और हाषमोनाथ पहुंचकर डेरे
डाल दिए. 30 हाषमोनाथ से यात्रा शुरू कर वे मोसेराह पहुंचे, और वहां उन्होंने
डेरे डाल दिए. 31 मोसेराह से यात्रा शुरू कर उन्होंने बेने-जाआकन पहुंचकर डेरे
डाल दिए. 32 उन्होंने बेने-जाआकन से यात्रा शुरू कर होर-हग्गीदगाद पहुंचकर
डेरे डाल दिए. 33 उन्होंने होर-हग्गीदगाद से कूच कर योतबाथाह पहुंचकर डेरे
डाल दिए. 34 उन्होंने योतबाथाह से यात्रा शुरू की और आबरोनाह पहुंचकर डेरे
डाल दिए. 35 उन्होंने आबरोनाह से यात्रा शुरू की और एज़िओन-गेबेर में डेरे
डाल दिए. 36 उन्होंने एज़िओन-गेबेर से यात्रा शुरू की और ज़िन के निर्जन
प्रदेश अर्थात् कादेश में पहुंचकर डेरे डाल दिए. 37 उन्होंने कादेश से यात्रा शुरू
की और होर पर्वत पहुंचकर वहां डेरे डाल दिए. यह स्थान एदोम की सीमा पर
है. 38 इसके बाद पुरोहित अहरोन याहवेह के आदेश पर होर पर्वत पर चढ़ गया
और वहीं उसकी मृत्यु हो गई. यह इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने का
चालीसवां वर्ष था. यह पांचवें महीने की पहली तारीख थी. 39 अहरोन की
आयु इस अवसर पर एक सौ तेईस वर्ष थी, जब होर पर्वत पर उसकी मृत्यु हुई.
40 इसी समय कनान देश के नेगेव में कनानी राजा अराद को यह मालूम हो
चुका था कि इस्राएली इस दिशा में आ रहे हैं. 41 फिर उन्होंने होर पर्वत से
प्रस्थान किया, और ज़ालमोनाह में डेरे डाल दिए. 42 उन्होंने ज़ालमोनाह से
यात्रा शुरू की और पुनोन में डेरे डाल दिए. 43 उन्होंने पुनोन से यात्रा शुरू की
और ओबोथ में डेरे डाल दिए. 44 ओबोथ से यात्रा शुरू कर उन्होंने मोआब
देश की सीमा पर स्थित स्थान इये-आबारिम पर डेरे डाल दिए. 45 इय्यीम-
आबारिम से कूच कर उन्होंने दीबोन-गाद में डेरे डाले. 46 दीबोन-गाद से यात्रा
शुरू कर उन्होंने आलमोन-दिबलाथाइम में डेरे डाले. 47 आलमोन-दिबलाथाइम
से यात्रा शुरू कर उन्होंने नेबो के पास वाले अबारिम पर्वतों के पास डेरा डाला.
48 अबारिम पर्वतों से कूच कर येरीख़ो के सामने मोआब में यरदन के मैदानों
में डेरे डाल दिए. 49 मोआब के मैदानों में उन्होंने यरदन तट पर डेरे डाले
थे, जिसका फैलाव बेथ-यशिमोथ से लेकर आबेल-शित्तिम तक था. 50 फिर
याहवेह यरदन तट पर येरीख़ो के सामने मोआब के मैदानों में मोशेह के सामने
आए और उनसे यह बातें कीं: 51 "इस्राएलियों पर यह स्पष्ट कर दो, 'जब तुम
यरदन पार कर कनान देश में प्रवेश करोगे, 52 तुम अपने सामने आए हर एक
कनानवासी को खदेड़ दोगे, उनकी ढाली हुई सारी धातु की मूर्तियों को नष्ट कर
दोगे तथा उनके सभी पूजा स्थलों को भी. 53 तुम इस देश को अधिकार में
करके इसमें बस जाओगे; क्योंकि यह देश मैंने तुम्हें अधिकार करने के लक्ष्य से
दिया है. 54 तुम अपने-अपने परिवारों के अनुसार पासा फेंक देश को बांट
लेना. बड़े गोत्र को भूमि का बड़ा भाग तथा छोटे को भूमि का छोटा भाग. पासा,
जो भी दिखाए वही उसका अंश होगा. तुम्हारा उत्तराधिकार तुम्हारे पितरों के
कुलों के अनुसार ही होगा. 55 "'किंतु यदि तुम उस देश के निवासियों को वहां
से न खदेड़ोगे, तब तो वे, जो वहां रह जाएंगे, तुम्हारी आंखों की किरकिरी तथा
तुम्हारे पंजरों में कीलों के समान साबित हो जाएंगे. तब उस देश में, जहां तुम
बस जाओगे, वे ही तुम्हारे संकट का कारण साबित होंगे. 56 जो कुछ मैंने उनके
साथ करने का वचन किया है, मैं वही सब तुम्हारे साथ करूंगा.'"

34 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 2 "तुम इस्राएलियों को यह
आदेश दो: 'जब तुम कनान देश में प्रवेश करो, तो यही वह देश होगा, जो
तुम्हारे उत्तराधिकार के लिए ठहराया गया है—हां, कनान देश उसकी सीमाओं
सहित: 3 "'तुम्हारे देश का दक्षिण क्षेत्र ज़िन के निर्जन प्रदेश से एदोम की
सीमा तक पूर्व में लवण-सागर तक होगी. 4 तब तुम्हारी सीमा मुड़कर दक्षिण
से अक्रब्बीम की चढ़ाई की ओर होगी और ज़िन की दिशा में बढ़ती जाएगी

और इसका अंत होगा कादेश-बरनेअ का दक्षिण. यह हाज़ार अद्दार पहुंचकर
आज़मोन से 5 मिस्र की नदी की ओर हो जाएगी और सागर तट पर जाकर खत्म
हो जाएगी. 6 पश्चिमी सीमा के विषय में, महासागर अर्थात् इसका सारा तट
यही तुम्हारी पश्चिमी सीमा होगी. 7 तुम्हारी उत्तरी सीमा: तुम अपनी सीमा रेखा
भूमध्य-सागर से लेकर होर पर्वत तक डालोगे. 8 तब तुम होर पर्वत से लबो-
हामाथ तक सीमा रेखा डालोगे और सीमा का समापन होगा ज़ेदाद पर. 9 सीमा
रेखा ज़िफरोन की दिशा में आगे बढ़ेगी और इसका समापन होगा हाज़ार-एनान
पर; यह होगी तुम्हारी उत्तरी सीमा. 10 पूर्वी सीमा के लिए तुम हाज़ार-एनान से
शेफम तक रेखा डालोगे, 11 सीमा रेखा शेफम से रिबलाह, जो एइन के पूर्व में
है, की दिशा में बढ़ेगी. यह सीमा नीचे की ओर आगे बढ़कर किन्नेरेथ झील की
ढलान पर पहुंचेगी. 12 फिर सीमा यरदन की दिशा में जाएगी और लवण-सागर
पर जा समाप्त हो जाएगी. "'यही होगी हर एक दिशा से सीमाओं के अनुसार
तुम्हें दिया गया वह देश.'" 13 फिर मोशेह ने इस्राएलियों को यह आदेश दिया:
"यही है, वह देश, जिसका बंटवारा तुम्हें पासा फेंककर अधिकार के लिए
करना है, जिसे याहवेह ने साढ़े नौ गोत्रों को देने का आदेश दिया है. 14 रियूबेन
गोत्र के वंशजों ने अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना अंश प्राप्त कर
लिया है, वैसे ही गाद गोत्र के वंशजों ने और मनश्शेह के आधे गोत्र ने भी अपना
अंश प्राप्त कर लिया है. 15 यरदन के इसी ओर, येरीख़ो के सामने भूमि के भाग
पर सूर्योदय की दिशा, पूर्व में, इन ढाई गोत्रों ने अपना अपना निर्धारित भाग
प्राप्त कर लिया है." 16 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 17 "मीरास के रूप में
भूमि बांटने के लिए चुने गए व्यक्ति ये हैं: पुरोहित एलिएज़र तथा नून के पुत्र
यहोशू. 18 मीरास बांटने के लिए तुम हर एक गोत्र में से एक प्रधान चुनोगे. 19
"चुने गए व्यक्ति ये हैं: "यूदाह गोत्र से येफुन्नेह का पुत्र कालेब; 20 शिमओन
के वंशजों में से अम्मीहूद का पुत्र शमुएल; 21 बिन्यामिन के वंशजों में से
कीसलोन का पुत्र एलिदाद; 22 दान के वंशजों में से योगली का पुत्र बुक्की
प्रधान था; 23 योसेफ़ के वंशजों में से, मनश्शेह के वंशजों का प्रधान था एफ़ोद
का पुत्र हन्निएल; 24 योसेफ के पुत्र एफ्राईम के गोत्र में से नेता शिफतन के पुत्र
केमुएल थे; 25 एफ्राईम के वंशजों में से प्रधान था पारनाख का पुत्र एलिज़ाफ़ान;
26 इस्साखार के वंशजों में से चुना गया प्रधान था, अज्जान का पुत्र पालतिएल;
27 आशेर के वंशजों से चुना गया प्रधान था शेलोमी का पुत्र अहीहूद; 28
नफताली के वंशजों में से चुना गया प्रधान था अम्मीहूद का पुत्र पेदेहेल." 29 ये
सब वे हैं, जिन्हें इस्राएलियों को कनान देश में मीरास की भूमि बांटने का आदेश
दिया गया था.

35 इसके बाद याहवेह ने मोआब के मैदानों में येरीख़ो के सामने मोशेह को ये
निर्देश दिए, 2 "इस्राएलियों को यह आदेश दे देना कि वे अपनी मीरास
में से अपने निज भाग की भूमि में से लेवियों को दे दें, कि वे उनमें रह सकें. तुम
लेवियों को नगरों के आस-पास चराइयां भी दे दोगे. 3 वे नगर उनके रहने के
लिए हो जाएंगे तथा चराइयां उनके पशुओं, भेड़ों तथा सारे पशुओं के लिए. 4
"वे, चराइयां, जो इन नगरों के चरागाह, जो तुम लेवियों को दे दोगे, उनका
फैलाव होगा नगर की दीवार से लेकर बाहर की ओर चारों ओर साढ़े चार सौ
मीटर होगा. 5 तुम नगर के बाहर, उत्तर दिशा में नौ सौ मीटर, दक्षिण दिशा में नौ
सौ मीटर, पूर्व दिशा में नौ सौ मीटर, तथा पश्चिम दिशा में नौ सौ मीटर प्रमाण
नापोगे, जिससे वह नगर इस पूरे क्षेत्र के बीच में हो जाएगा. यह क्षेत्र उस नगर से
संबंधित उनकी चराई हो जाएगा. 6 "वे नगर, जो तुम लेवियों को दे दोगे, छः
शरण शहर होंगे, जो तुम उस ख़ूनी के लिए रख दोगे, जो भागकर यहां आएगा.
इनके अलावा तुम बयालीस नगर और भी दे दोगे. 7 लेवियों को दिए गए सारे
नगरों की संख्या होगी अड़तालीस; और इनके साथ उनकी चराइयां भी शामिल
हैं. 8 यह ध्यान रहे कि तुम वे नगर, जो इस्राएलियों से लेकर लेवियों को दोगे,
बहुत बड़े क्षेत्रफल के कुलों से अधिक नगर तथा छोटे क्षेत्रफल के कुलों से कम
नगर बांट दोगे, हर एक गोत्र अपनी-अपनी मीरास के अनुपात में कुछ नगर
लेवियों के लिए दान करेगा." 9 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, 10
"इस्राएलियों से यह कहो: 'जब तुम यरदन पार कर कनान देश में प्रवेश करोगे,
11 तब तुम स्वयं वे नगर ठहराना, जो तुम्हारे शरण शहर होंगे, कि जब किसी
व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति की हत्या भूल से हो गई हो, वह भागकर इन नगरों में
आ छिपे. 12 ये नगर तुम्हारे लिए पलटा लेनेवाले से सुरक्षा के शरण होंगे, कि
सभा के सामने बिना न्याय का कार्य पूरा हुए उस हत्यारे को प्राण-दंड न दे दिया
जाए. 13 वे नगर, जो तुम इस उद्देश्य से दोगे, तुम्हारे लिए छः शरण शहर नगर
लिखे होंगे. 14 तीन नगर तो तुम यरदन के पार दोगे तथा तीन कनान देश में; ये
सभी शरण शहर होंगे. 15 ये छः नगर इस्राएलियों के लिए तथा विदेशी के लिए
तथा उनके बीच बसे लोगों के लिए शरण नगर ठहरेंगे, कि वह व्यक्ति, जिससे
किसी की हत्या भूल से हो गई है, भागकर यहां शरण ले. 16 "'किंतु यदि उसने
वार के लिए लोहे का इस्तेमाल किया था, जिससे वह मृत्यु का कारण हो गया,
वह व्यक्ति हत्यारा है. हत्यारे का दंड मृत्यु ही है. 17 यदि उस व्यक्ति ने हाथ में
पत्थर लेकर उससे वार किया था, कि उसकी मृत्यु हो जाए और उसकी मृत्यु हो
ही गई, वह व्यक्ति हत्यारा है; हत्यारे को निश्चित ही मृत्यु दंड दिया जाए. 18
अथवा उसने अपने हाथ में कोई लकड़ी की वस्तु लेकर वार किया हो, कि
इससे उसकी मृत्यु हो जाए और परिणामस्वरूप इस व्यक्ति की मृत्यु हो ही गई
है, 19 तो वह व्यक्ति हत्यारा है; हत्यारे को निःसंदेह मृत्यु दंड दिया जाए. 20
यदि घृणा के कारण उसने उस व्यक्ति को धक्का दे दिया है या घात लगाकर
कोई वस्तु उस पर फेंकी है, जिससे उसकी मृत्यु हो गई, 21 या शत्रुता में उसने
उस पर अपने हाथ से ही वार कर दिया हो, परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई
है; तो जिस व्यक्ति ने ऐसा वार किया है, उसे निश्चित ही मृत्यु दंड दे दिया जाए;
वह हत्यारा है, जैसे ही बदला लेनेवाला उसे पाए, उसकी हत्या कर दे. 22
"'किंतु यदि बिना किसी शत्रुता के, उसके द्वारा भूल से धक्का लगने पर या
बिना घात लगाए उसने उस पर कोई वस्तु फेंक दी हो, 23 या कोई भी पत्थर की
घातक वस्तु को उसने बिना स्थिति का ध्यान रखे ऊंचे स्थान से नीचे गिरा दिया
है और उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, जबकि न तो उससे उसकी शत्रुता थी
और न उसकी मंशा उसकी हानि करने की थी, 24 इस स्थिति में सारी सभा
इन्हीं नियमों के आधार पर हत्यारे तथा बदला लेनेवाले के बीच न्याय करेगी.
25 सारी सभा हत्यारे को बदला लेनेवाले से छुड़ाकर उसे शरण शहर में लौटा
देगी, जहां वह तत्कालीन, पवित्र तेल से अभिषिक्त महापुरोहित की मृत्यु तक
निवास करता रहेगा. 26 "'किंतु यदि हत्यारा किसी भी अवसर पर अपने इस
शरण शहर की सीमा से बाहर निकल जाए, जहां वह भागकर आया हुआ था 27
और इस स्थिति में बदला लेनेवाला उसे नगर सीमा के बाहर पकड़ लेता है और
वहीं उसकी हत्या कर देता है, तो बदला लेनेवाले को हत्या का दोषी नहीं माना
जा सकेगा. 28 क्योंकि सही तो यही था कि वह शरण शहर में ही महापुरोहित
की मृत्यु होने तक सीमित रहता. महापुरोहित की मृत्यु के बाद ही वह अपने
मीरास के नगर को लौट सकता था. 29 "'ये सभी तुम्हारे लिए सारी पीढ़ियों के
लिए तुम्हारे सारे घरों में न्याय की विधि होगी. 30 "'कोई भी व्यक्ति यदि
किसी की हत्या कर देता है, गवाहों की गवाही के आधार पर हत्यारे को मृत्यु
दंड दिया जाए, किंतु एक व्यक्ति की गवाही पर किसी को भी मृत्यु दंड न दिया
जाए. 31 "'इसके अलावा, हत्या के दोषी से तुम उसके प्राण दान के बदले
मूल्य स्वीकार नहीं करोगे. तुम उसे निश्चय ही मृत्यु दंड दोगे. 32 "'तुम उस
व्यक्ति से बदले में मूल्य नहीं लोगे, जो अपने शरण शहर से भागा हुआ है, कि
वह महापुरोहित की मृत्यु के पहले ही अपने देश जाकर रह सके. 33 "'इसलिये
तुम उस देश को अपवित्र न करो, जिसमें तुम रह रहे हो; क्योंकि रक्त भूमि को

अपवित्र करता है और उस भूमि के लिए कोई भी प्रायश्चित किया जाना संभव
नहीं है, जिस पर रक्त बहा दिया गया है, सिवाय उसी के रक्त के, जिसके द्वारा
वह रक्त बहाया गया था. **34** तुम उस देश में निवास करते हो, तुम उसे अपवित्र
नहीं करोगे, जिसके बीच में मेरा निवास है; क्योंकि मैं, वह याहवेह हूं, जिनका
निवास इस्राएलियों के बीच में है.'"

36 योसेफ़ के पुत्रों के परिवारों में से मनश्शेह के पौत्र, माखीर के पुत्र
गिलआद के वंशजों के प्रधानों ने मोशेह, प्रधानों, जो इस्राएलियों के
परिवारों के प्रधान थे, के सामने आकर विनती की: **2** "याहवेह ने मेरे स्वामी
को आज्ञा दी है, कि इस्राएलियों को मीरास में भूमि दे दी जाए. मेरे स्वामी को
याहवेह से आज्ञा प्राप्त हुई थी, कि हमारे भाई ज़लोफेहाद की मीरास उसकी
पुत्रियों को दे दी जाए. **3** किंतु यदि वे इस्राएलियों में से किसी दूसरे गोत्र के पुत्रों
में विवाह करती हैं, उनकी मीरास तो उस गोत्र में मिल जाएगी, जो उनके पतियों
के है. **4** इस प्रकार योवेल वर्ष में उन युवतियों के गोत्र की मीरास हमारे पूर्वजों
की मीरास में से घटती चली जाएगी." **5** इसलिये मोशेह ने याहवेह की आज्ञा
के अनुसार इस्राएलियों को आदेश दिया, "योसेफ़ गोत्र के वंशज सही बात
कह रहे हैं. **6** याहवेह ने ज़लोफेहाद की पुत्रियों के विषय में यह आदेश दिया
है, 'उन्हें अपनी इच्छा के वर से विवाह कर लेने दिया जाए; सिर्फ ध्यान रहे
कि वे अपने पिता के गोत्र के परिवार में ही विवाह करें.' **7** परिणामस्वरूप
इस्राएलियों में मीरास एक गोत्र से दूसरे गोत्र में न मिल सकेगी. ज़रूरी है कि हर
एक इस्राएली अपने-अपने पिता के गोत्र की मीरास को अपने अधिकार में बनाए
रखे. **9** इस प्रक्रिया से कोई भी मीरास एक गोत्र से अन्य गोत्र में न मिल पाएगी;
क्योंकि इस्राएलियों के लिए ज़रूरी है कि हर एक अपनी-अपनी मीरास को
अपने ही अधिकार में बनाए रखे." **10** जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया
था, ज़लोफेहाद की पुत्रियों ने ठीक वैसा ही किया. **11** महलाह, तिरज़ाह,
होगलाह, मिलकाह, तथा नोहा ने, जो ज़लोफेहाद की पुत्रियां थी, अपने ही गोत्र
में से अपनी-अपनी पसंद के वर से विवाह कर लिया. **12** उन्होंने योसेफ़ के पुत्र
मनश्शेह के पुत्रों के परिवार में से ही विवाह कर लिया, जिससे उनकी मीरास
उन्हीं के गोत्र में उनके पिता के परिवारों ही के अधिकार में बनी रही. **13** ये
सभी वे आदेश तथा नियम हैं, जो मोशेह के द्वारा याहवेह ने इस्राएलियों को
येरीख़ो के पास यरदन नदी के निकट मोआब के मैदानों में दिए थे.

व्यवस्था विवरण

1 मोशेह द्वारा सारे इस्राएल को कहे गए वचन, जो यरदन के पूर्व निर्जन
प्रदेश—अराबाह—में दिये गये, जो सूफ के सामने के मैदान में पारान,
तोफेल, लाबान, हाज़ोरौथ और दी-ज़ाहाब के पास है. 2 (होरेब पर्वत से सेईर
पर्वत होते हुए कादेश-बरनेअ तक यात्रा में सिर्फ ग्यारह दिन ही लगते हैं.) 3
चालीसवें साल के, ग्यारहवें महीने के पहले दिन मोशेह ने इस्राएलियों को वह
सब कह दिया, जिसका आदेश उन्हें याहवेह से मिला था. 4 इस समय वह
हेशबोनवासी अमोरियों के राजा सीहोन और अशतारोथ और एद्रेइ के शासक
बाशान के राजा ओग को हरा चुके थे. 5 जब वे यरदन के पूर्व मोआब देश में ही
थे, मोशेह ने व्यवस्था की व्याख्या करना यह कहते हुए शुरू किया कि: 6 होरेब
पर्वत पर याहवेह हमारे परमेश्वर ने यह कहा था, "पूरी हुई इस पर्वत पर तुम्हारी
शांति. 7 अब अपनी यात्रा शुरू करो. तुम्हें अमोरियों के पहाड़ी प्रदेश, अराबाह
के पास के सारे क्षेत्रों को जो पर्वतों और नेगेव की घाटियों और सागर के
किनारे के इलाकों तक, कनानियों के देश और महानद फरात तक फैले हुए
लबानोन की ओर निशाना करना है. 8 यह समझ लो, कि मैंने यह ज़मीन तुम्हारे
सामने रख दी है. इसमें प्रवेश करो और उस ज़मीन पर अपना अधिकार कर लो,
जिसे देने की प्रतिज्ञा मैं, याहवेह ने, तुम्हारे पूर्वज अब्राहाम, यित्सहाक और
याकोब से और उनके बाद उनके घराने से की थी." 9 उसी समय मैं तुम पर यह
प्रकट कर चुका था, "मुझमें यह सामर्थ्य नहीं कि मैं अकेला तुम्हारा भार उठा
सकूं. 10 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारी गिनती इस हद तक बढ़ा दी है, कि
अब तुम्हीं देख लो, कि तुम आकाश के तारों के समान अनगिनत हो चुके
हो. 11 याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर तुम्हारी गिनती में हज़ार गुणा और
बढ़ाकर तुम्हें समृद्ध बना दें; ठीक जैसी प्रतिज्ञा उन्होंने तुमसे की है! 12 मैं
अकेला ही कैसे तुम्हारा बोझ और तुम्हारे विवादों के बोझ को उठा सकता हूं?
13 अपने ही गोत्रों में से बुद्धिमान, समझदार और अनुभवी व्यक्तियों को चुन
लो, तो मैं उन्हें तुम्हारे लिए मुखिया बना दूंगा." 14 तुम्हारा उत्तर था, "आपका
प्रस्ताव बढ़िया है." 15 फिर मैंने तुम्हारे गोत्रों के अध्यक्षों को, जो बुद्धिमान
और अनुभवी व्यक्ति थे, तुम्हारे लिए अगुए बना दिये. इन्हें हजार-हजार, सौ-
सौ, पचास-पचास तथा दस-दस लोगों के समूह के ऊपर अधिकारी नियुक्त
किए. 16 उसी समय मैंने तुम्हारे न्यायाध्यक्षों को ये आदेश दिए: "अपनी जाति
के लोगों के विवाद ध्यान से सुनो और उन्हें निष्पक्ष न्याय दो, चाहे यह विवाद
दो सहजातियों के बीच हो या किसी सजातीय और उनके बीच रह रहे परदेशी
के बीच. 17 न्याय में पक्षपात कभी न हो. सामान्य और विशेष का विवाद तुम
एक ही नज़रिए से करोगे. तुम्हें किसी भी मनुष्य का भय न हो, क्योंकि न्याय
परमेश्वर का है. वे विवाद, जो कठिन महसूस हों, तुम मेरे सामने लाओगे, ताकि
मैं खुद उन्हें सुनूं." 18 तुम्हें क्या-क्या करना है, यह मैं तुम पर पहले ही स्पष्ट
कर चुका हूं. 19 ठीक जैसा आदेश याहवेह हमारे परमेश्वर ने दिया था, हमने
होरेब पर्वत से कूच किया और उस विशाल और भयानक निर्जन प्रदेश से होते
हुए, जो खुद तुमने अमोरियों के पर्वतीय क्षेत्र के मार्ग पर देखा था; हम कादेश-
बरनेअ पहुंच गए. 20 मैंने तुम्हें सूचित किया, "तुम अमोरियों के पर्वतीय प्रदेश
में आ पहुंचे हो, जो याहवेह, हमारे परमेश्वर हमें देने पर हैं. 21 देख लो, याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर ने यह ज़मीन तुम्हारे सामने रख दी है. आगे बढ़ो और उस पर
अधिकार कर लो. यही तो याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुमसे कह
रखा है. तुम न तो भयभीत होना और न ही निराश." 22 यह सुन तुम सभी मेरे
पास आ गए और मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा, "सही होगा कि हम अपने पहले
वहां कुछ व्यक्तियों को उस देश का पता करने के उद्देश्य से भेज दें, कि वे उस
देश का समाचार लेकर हमें सही स्थिति बताएं, ताकि हम सही रास्ते से उन
नगरों में प्रवेश कर सकें." 23 यह प्रस्ताव मुझे सही लगा. मैंने हर एक गोत्र से
एक-एक व्यक्ति लेकर तुममें से बारह व्यक्ति चुन दिए. 24 वे पर्वतीय प्रदेश की
ओर चले गए. वे एशकोल घाटी में जा पहुंचे और उसका भेद ले लिया. 25
इसके बाद उन्होंने उस देश के कुछ फल इकट्ठे किए और वे हमें दिखाने के
लिए ले आए. वे जो विवरण लेकर आए थे, वह इस प्रकार था: "वह देश जो
याहवेह, हमारे परमेश्वर हमें देने जा रहे हैं, वास्तव में एक बढ़िया देश है." 26
फिर भी तुम आगे बढ़ने के लिए तैयार न हुए, बल्कि तुमने तो याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर के आदेश के विरुद्ध विद्रोह ही कर दिया. 27 तुम अपने-अपने शिविर में
यह कहते हुए बड़बड़ाते रहे, "क्योंकि याहवेह को हमसे घृणा है, इसलिये तो
वह हमें मिस्र देश से यहां ले आए हैं, कि हमें अमोरियों के द्वारा नाश करवा दें.
28 हम वहां कैसे जा सकते हैं? हमारे बंधुओं ने तो यह सूचित कर हमारा मनोबल
खत्म कर दिया है, 'वहां के निवासी डीलडौल में हमसे बहुत बड़े और शक्तिमान
हैं. नगर विशाल हैं और शहरपनाहें गगन को चूमती हैं, इसके अलावा हमने वहां
अनाक के वंशज भी देखे हैं.'" 29 फिर मैंने तुम्हें आश्वस्त किया, "न तो इससे
हैरान हो जाओ और न डरो. 30 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर, जो तुम्हारे अगुए हैं,
खुद तुम्हारी ओर से युद्ध करेंगे; ठीक जैसा उन्होंने तुम्हारे देखते ही देखते मिस्र
देश में तुम्हारे लिए किया था. 31 और निर्जन प्रदेश में भी, जहां तुमने देख
लिया, कि कैसे याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर पूरे मार्ग में, जिस पर चलते हुए तुम
यहां तक आ पहुंचे हो, इस रीति से तुम्हें उठाए रहा, जिस प्रकार कोई व्यक्ति
अपने पुत्र को उठाता है." 32 मगर इतना सब होने पर भी, तुमने याहवेह, अपने
परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, 33 जो तुम्हारे ही मार्ग पर तुम्हारे आगे-
आगे चलते हुए जा रहे हैं, कि तुम्हारे लिए ऐसा सही स्थान तय करें, जहां तुम
पड़ाव डाल सको. वह रात में तो आग के द्वारा और दिन में बादल के द्वारा
तुम्हारे मार्गदर्शक हुआ करते थे. 34 याहवेह ने तुम्हारी बड़बड़ाहट सुन ली. वह
क्रोधित हो गए और तब उन्होंने यह शपथ ली: 35 "इस बुरी पीढ़ी में से एक भी
व्यक्ति उस अच्छे देश को देख न सकेगा, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने तुम्हारे पूर्वजों से
की थी, 36 सिवाय येफुन्नेह के पुत्र कालेब के; वह इस देश में प्रवेश करेगा. उसे
और उसकी संतान को मैं यह देश दे दूंगा, जिस पर उसके कदम पड़े थे; क्योंकि
उसका मन पूरी तरह याहवेह के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा है." 37 तुम्हारे
कारण याहवेह मुझ पर ही क्रोधित हो गए और उन्होंने मुझसे कहा, "तुम भी
उस देश में प्रवेश न करोगे. 38 मगर नून का पुत्र यहोशू, जो तुम्हारा सेवक है,
उस देश में प्रवेश करेगा. तुम उसकी हिम्मत बनाए रखो. वही इस्राएल को उस
देश पर अधिकार करने के लिए प्रेरित करेगा. 39 इनके अलावा तुम्हारे बालक,
जिनके लिए तुम यह कहते रहे हो, कि वे तो उनके शिकार हो जाएंगे, और
तुम्हारी वह संतान, जिन्हें आज सही गलत का पता ही नहीं है, उस देश में प्रवेश
करेंगी; मैं उन्हें यह देश दे दूंगा और वे इस पर अधिकार कर लेंगे. 40 मगर तुम
मुड़कर लाल सागर पथ पर निर्जन प्रदेश की ओर लौट जाओ." 41 तब तुमने
मेरे सामने यह स्वीकार किया, "हमने याहवेह के विरुद्ध पाप किया है; अब हम
पहाड़ी प्रदेश पर चढ़ेंगे, और ठीक जैसा आदेश याहवेह हमारे परमेश्वर ने दिया
है, उन जातियों से युद्ध करेंगे." तुममें से हर एक ने हथियार धारण कर लिए.
तुम्हें तो पहाड़ी क्षेत्र में जाकर हमला करना सरल प्रतीत हो रहा था. 42 मगर
मुझे याहवेह की ओर से यह आदेश मिला: "उनसे यह कहो, 'न तो वहां जाना
और न ही उनसे युद्ध करना, क्योंकि इसमें मैं तुम्हारे साथ नहीं हूं; नहीं तो तुम
अपने शत्रुओं द्वारा हरा दिए जाओगे.'" 43 इसलिये मैंने तुम्हारे सामने ये बातें
रख दीं, मगर तुमने इसकी उपेक्षा करके याहवेह के आदेश के विरुद्ध विद्रोह
कर दिया. अपने हठ में तुम उस पर्वतीय क्षेत्र में पहुंच गए. 44 उस क्षेत्र के
अमोरी बाहर निकल आए और तुम्हें इस रीति से खदेड़ दिया मानो तुम्हारे पीछे
मधुमक्खियां लगी हों. वे तो तुम्हें सेईर से होरमाह तक कुचलते गए. 45 तुम

लौट आए और याहवेह के सामने रोते रहे; मगर याहवेह पर तुम्हारे इस रोने का कोई असर न पड़ा. 46 फलस्वरूप तुम्हें कादेश में ही लंबे समय तक ठहरना पड़ा. ऐसे ही रहे वहां तुम्हारे दिन.

2 याहवेह के आदेश के अनुसार तब हमने लाल सागर की दिशा में कूच किया, जो निर्जन प्रदेश की ओर गया है. हम लंबे समय तक सेईर पर्वत के चारों ओर घूमते रहे. 2 फिर याहवेह ने मुझसे कहा, 3 "बहुत हो चुका तुम्हारा इस पर्वत के चारों ओर घूमना; अब उत्तर दिशा की ओर घूम जाओ. 4 तब तुम इन लोगों को आदेश दो: 'तुम अपने भाइयों सेईरवासियों, एसाव वंशजों के क्षेत्र से होकर निकल जाओ; उन पर तुम्हारा भय होगा, तब तुम बहुत सावधान रहना. 5 उन्हें उकसाना मत, क्योंकि मैं तुम्हें उनकी भूमि से ज़रा भी नहीं दूंगा, इतनी भी नहीं कि तुम उस पर पैर रख सको; क्योंकि एसाव को मैं सेईर पर्वत मीरास के रूप में दे चुका हूं. 6 तुम रुपया देकर उनसे भोजन ख़रीदोगे, कि तुम अपनी भूख मिटा सको; तुम जल भी रुपया देकर ख़रीदोगे, कि तुम जल पीकर अपनी प्यास बुझा सको.'" 7 क्योंकि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे हर एक काम में आशीष प्रदान की है. इस विशाल निर्जन प्रदेश में तुम्हारा भटकना वह जानता है. याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर इन चालीस सालों में तुम्हारे साथ साथ रहे हैं; तुम्हें किसी भी रूप में कुछ भी कम नहीं हुआ है. 8 फिर हम सेईरवासी अपने भाइयों से दूर ही दूर, अराबाह मार्ग से दूर, एलाथ और एज़िओन-गेबेर से दूर ही दूर रहते हुए वहां से निकल गए. 9 फिर याहवेह ने मुझे आदेश दिया, "मोआब को उत्पीड़ित न करना, न ही उन्हें युद्ध के लिए उकसाना, क्योंकि मैं तुम्हें रहने के लिए वहां ज़रा सी भूमि भी न दूंगा, क्योंकि मैं लोत की संतानों को आर निज भाग के रूप में दे चुका हूं." 10 (यहां के मूल निवासी एमिम थे, जो डीलडौल में अनाकियों के समान लंबे और अनगिनत थे. 11 अनाकियों के समान उन्हें रेफाइम भी माना जाता है, मगर मोआबी उन्हें एमिम ही कहकर पुकारते हैं. 12 इसके पहले सेईर में होरी लोग ही बसे थे, मगर एसाव के वंशजों ने आकर देखते ही देखते उनसे यह देश छीनकर उन्हें नाश कर दिया और उनके स्थान पर वहां रहने लगे, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार इस्राएलियों ने याहवेह के दिए हुए उस देश के साथ किया था.) 13 याहवेह ने कहा, "अब ज़ेरेद नदी को पार करने के लिए तैयार हो जाओ." तब हम ज़ेरेद नदी के पार चले गए. 14 कादेश-बरनेअ से यात्रा शूरू कर ज़ेरेद नदी के पार उतरने के बीच का समय था अड़तीस साल, जब तक इस पीढ़ी के सारे योद्धा इस्राएली समुदाय से नाश न हो गए, जैसा याहवेह द्वारा ली गई शपथ में कहा गया था. 15 इसके अलावा याहवेह का हाथ उनके विरुद्ध हो चुका था, कि उन्हें छावनी से नाश कर दिया जाए, कि वे सभी मिट जाएं. 16 फिर जब इस्राएली समुदाय से अंत में सभी योद्धा मिट गए, 17 तब याहवेह ने मुझसे कहा, 18 "आज तुम आर अर्थात् मोआब की सीमा के पार निकल जाओगे. 19 जब तुम वहां अम्मोनियों के सामने पहुंच जाओगे, तब न तो तुम उन्हें सताना और न उन्हें उकसाना, क्योंकि मैं तुम्हें अम्मोनियों की भूमि में से निज भूमि के लिए कुछ भी न दूंगा; क्योंकि यह मैं लोत के वंशजों को मीरास के रूप में दे चुका हूं." 20 (इसे रेफाइम का देश भी माना जाता है, क्योंकि इसके पूर्व यहां उन्हीं का निवास था; मगर अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुम्मिम पुकारते हैं. 21 ये लोग वह प्रजाति हैं, जो बलवान, अनगिनत और डीलडौल में लंबे हैं, अनाकियों के समान, मगर याहवेह ने इन रेफ़ाइयों को अम्मोनियों के सामने से नाश कर दिया. फलस्वरूप वे इन्हें हटाकर उनके देश में बस गए. 22 ठीक जैसा उन्होंने एसाव के वंशजों के लिए किया था, जो सेईर में रहते थे. याहवेह ने उनके सामने से होरियों को नाश कर दिया था. वे इन्हें वहां से निकालकर उनके स्थान पर बस गए और आज तक वे उसी स्थान पर रह रहे हैं. 23 वैसे ही अव्वी भी अज्जाह तक विभिन्न ग्रामों में बस गए हैं, काफ़तोरवासी आए और उन्हें नाश कर उनके नगरों में बस गए.) 24 "अब कूच करो और आरनोन घाटी में से होकर आगे बढ़ो. देखो, मैंने अमोरी सीहोन, जो हेशबोन का राजा है, उसे और उसके देश को तुम्हारे अधीन कर दिया है. उससे युद्ध करना शुरू करके उसके देश पर अधिकार करना शुरू कर दो. 25 आज से मैंने सारी पृथ्वी के जनताओं पर, तुम्हारा भय और थरथराहट पैदा कर दी है, कि वे जैसे ही तुम्हारा नाम सुनेंगे, वे तुम्हारे कारण डर और शिथिल होने की स्थिति में जा पड़ेंगे." 26 फिर मैंने केदेमोथ के निर्जन प्रदेश से हेशबोन के राजा सीहोन के दूतों के द्वारा संधि का संदेश भेजा, 27 "मुझे अपने देश की भूमि पर से होकर आगे बढ़ने की आज्ञा दे दीजिए. मैं सिर्फ राजमार्ग पर ही यात्रा करूंगा; मैं इस मार्ग से न तो बाएं मुड़ुंगा न दाएं. 28 आप मुझे खाने के लिए भोजन और पीने के लिए जल बेचेंगे. सिर्फ कृपा कर आप हमें यहां से पैदल निकल जाने की अनुमति दे दीजिए, 29 ठीक जिस प्रकार सेईरवासी एसाव और आर के निवासी मोआबियों ने हमें यह सुविधा प्रदान की थी, कि हम यरदन को पार कर उस देश में पहुंच सकें, जो याहवेह, हमारे परमेश्वर हमें दे रहे हैं." 30 मगर हेशबोन का राजा सीहोन हमें अपने देश में से होकर निकल जाने देने के बारे में राज़ी न हुआ; क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने उसकी आत्मा को कठोर बनाकर उसके हृदय को इस उद्देश्य से हठीला बना दिया था, कि उसे तुम्हारे अधीन कर दें; जैसा वह आज भी है. 31 याहवेह ने मुझे संकेत दिया, "अब देखो, मैंने सीहोन और उसके देश को तुम्हारे अधीन करने का काम शुरू कर दिया है. भूमि अपने अधिकार में लेना शुरू कर दो, कि उसका देश तुम्हारे अधिकार में आ जाए." 32 तब सीहोन अपनी सारी सेना को लेकर हमसे युद्ध करने के उद्देश्य से याहज़ नामक स्थान पर आ गया, 33 याहवेह, हमारे परमेश्वर ने उसे हमारे अधीन कर दिया, हमने उसे और उसके पुत्रों को सारी सेना के साथ हरा दिया. 34 तब हमने उसी समय उसके हर एक नगर को अपने अधीन कर नगर के सारे स्त्री-पुरुषों और बालकों को पूरी तरह से नाश कर दिया. हमने एक भी उत्तरजीवी शेष न रहने दिया. 35 हमने सिर्फ पशु और नगरों से प्राप्त सामग्री को अपने लिए रख लिया. 36 आरनोन घाटी की सीमा के अरोअर से और घाटों में स्थित नगर से गिलआद तक कोई भी नगर ऐसा न था, जिसकी दीवार हमारे सामने छोटी साबित हुई हो. याहवेह, हमारे परमेश्वर ने सभी को हमारे अधीन कर दिया. 37 तुम सिर्फ अम्मोन के वंशजों के देश के निकट नहीं गए और न ही यब्बोक नदी के तट तक और न पर्वतीय क्षेत्रों तक, जहां कहीं याहवेह, हमारे परमेश्वर ने हमें न जाने का आदेश दिया था.

3 फिर हमने मुड़कर बाशान के मार्ग से आगे बढ़ गए. बाशान का राजा ओग अपनी सारी सेना लेकर हमसे युद्ध करने एद्रेइ जा पहुंचा. 2 मगर याहवेह ने मुझे यह आश्वासन दिया, "उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैंने उसे, उसकी सारी सेना तथा प्रजा को तुम्हारे अधीन कर दिया है. तुम उसके साथ वही सब करोगे, जो तुमने हेशबोन निवासी अमोरियों के राजा सीहोन के साथ किया था." 3 इसी प्रकार याहवेह, हमारे परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को भी उसकी सारी सेना सहित हमारे अधीन कर दिया. हम उनका नाश इस सीमा तक करते चले गए कि कोई भी जीवित न रहा. 4 उस समय हमने उसके सारे नगर अपने अधिकार में कर लिए; एक भी नगर ऐसा न रहा, जो हमने उनसे न छीना हो: साठ नगर, बाशान में ओग का साम्राज्य अर्थात् अरगोब का सारा क्षेत्र. 5 इन सभी नगरों की दीवारें ऊंची-ऊंची थीं, इनमें फाटक और छड़ें थीं. इनके अलावा कुछ नगर ऐसे भी थे, जिनकी दीवारें न थीं. 6 हमने इन सभी को पूरी तरह गिरा दिया, ठीक जिस प्रकार हमने हेशबोन के राजा सीहोन के साथ किया था-पुरुषों, स्त्रियों और बालकों को हर एक नगर में पूरी तरह नाश कर डाला. 7 मगर हमने सभी पशुओं और नगरों से इकट्ठा की गई सामग्री को अपने लिए रख लिया. 8 इस प्रकार हमने यरदन के पार के दो अमोरी राजाओं की अधीनता से, आरनोन की घाटी से लेकर हरमोन पर्वत तक की भूमि को

अपने अधिकार में ले लिया. 9 (सीदोनवासी हरमोन को सिरिओन और अमोरी
इसे सेनीर कहकर पुकारते हैं.) 10 इनके अलावा पठार के सारे नगर, सारे
गिलआद, सारे बाशान, सलेकाह और एद्रेइ, जो बाशान में ओग के राज्य में
थे. 11 (रेफाइम के बचे हुए भाग में केवल बाशान का राजा ही शेष रह गया
था. उल्लेखनीय बात यह है कि उसकी चारपाई लौह की थीं; यह अब तक
अम्मोनियों के रब्बाह में स्थापित है. यह लगभग चार मीटर लंबी और डेढ़
मीटर चौड़ी है.) 12 फिर हमने उसी समय इस देश को अपने अधिकार में
कर लिया. यह आरनोन की घाटी अरोअर से गिलआद के आधे क्षेत्र और
इसमें स्थित नगरों का क्षेत्र है, जो मैंने रियूबेन और गाद के घराने को दे दिया.
13 बचा हुआ गिलआद, सारा बाशान अर्थात् जो ओग का साम्राज्य था, मैंने
मनश्शेह के आधे गोत्र को दे दिया. (यह था अरगोब का पूरा क्षेत्र. सारे बाशान
के बारे में कहा जाता है, कि यह रेफाइम का देश है. 14 मनश्शेह के पुत्र याईर ने
गेशूरियों और माकाहथियों की सीमाओं तक पूरा क्षेत्र अपने अधिकार में कर
लिया, अर्थात् अपने नाम के अनुरूप बाशान और हव्वोथ-याईर, जो उसका
आधुनिक नाम है.) 15 माखीर को मैंने गिलआद दे दिया. 16 रियूबेन और गाद
के घराने को मैंने गिलआद का वह क्षेत्र दे दिया, जो आरनोन की घाटी तक
फैला है (इसकी सीमा घाटी के बीच तक थी) और यब्बोक नदी तक, जो
अम्मोनियों की सीमा भी थी. 17 इसके अलावा अराबाह भी, जिसकी सीमा
यरदन हो गई, किन्नेरेथ से लेकर अराबाह सागर तक, लवण-सागर, जिसके पूर्व
में पिसगाह की ढलान की तलहटी है. 18 इसके बाद मैंने उस समय तुम्हें यह
आदेश दिया, “याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें यह देश अपने अधिकार में
करने के उद्देश्य से दे दिया. तुम्हारे सारे वीर योद्धा शस्त्रों से सुसज्जित हो इस्राएल
वंशज तुम्हारे भाइयों के आगे-आगे नदी पार करेंगे. 19 मगर तुम्हारी पत्नियां,
तुम्हारे बालक और तुम्हारे पशु मुझे मालूम है कि तुम्हारे पास बहुत पशु धन है,
तुम्हारे साथ उसी समय तक उन्हीं नगरों में रहेंगे, जो मैंने तुम्हें दे दिए हैं, 20
जब तक याहवेह तुम्हारे बंधुओं को तुम्हारे समान शांति और विश्राम न दे दें, और
वे भी उस देश को अपने अधिकार में न कर लें, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
तुम्हें यरदन पार देने पर हैं. यह सब होने पर तुममें से हर एक मेरे द्वारा तुम्हें सौंपी
गई संपत्ति को लौटाओगे.” 21 उस समय मैंने यहोशू को यह आदेश दिया,
“तुमने तो खुद ही यह देख लिया है, कि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने इन दो
राजाओं के साथ क्या किया है; यही सब याहवेह उन सभी साम्राज्यों के साथ भी
करेंगे, जिनसे होकर तुम निकलोगे. 22 तुम उनसे कदापि भयभीत न होना;
क्योंकि यह युद्ध वह है, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारी ओर से लड़ेंगे.”
23 मैंने उस समय याहवेह से यह विनती की: 24 “प्रभु याहवेह, आपने अपने
सेवक पर अपनी महिमा और सामर्थ्य दिखाना शुरू किया है. क्योंकि स्वर्ग और
पृथ्वी पर कौन है ऐसा देवता, जो आपके समान ऐसे काम और सामर्थ्य से भरे
काम पूरे कर सके? 25 प्रभु, मेरी विनती है, कृपा कर मुझे यरदन के पार जाकर
उस श्रेष्ठ देश को सिर्फ देख लेने दीजिए, उस सुहावने पर्वतीय प्रदेश और लबानोन
को.” 26 मगर याहवेह तुम्हारे कारण मुझसे क्रोधित थे. उन्होंने मेरी इस विनती
को अनसुनी की. उन्होंने कहा, “बहुत हो चुका, अब मुझसे इस विषय का
वर्णन न करना. 27 पिसगाह पर्वत शिखर पर चले जाओ, पश्चिम, उत्तर, पूर्व
और दक्षिण दिशा की ओर दृष्टि कर उसको देख लो, क्योंकि यरदन के पार तो
तुम जा ही न सकोगे. 28 हां, यहोशू को नियुक्त करो, उसे प्रोत्साहित करो, उसे
दृढ बनाओ, क्योंकि वही इन लोगों का अगुआ होकर यरदन के पार जाएगा
और वही उन्हें मीरास में वह देश प्रदान करेगा, जिसे तुम देखने पर हो.” 29 तब
हम बेथ-पिओर के पास की घाटी में ही ठहरे रहे.

4 हे इस्राएल, उन विधियों और नियमों को ध्यान से सुन लो, जिनका पालन
करने की शिक्षा मैं तुम्हें दे रहा हूं, कि तुम जीवित रहते हुए उस देश में प्रवेश
कर उस पर अधिकार कर लो, जो तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह तुम्हें दे रहे
हैं. 2 तुम मेरी बातों में, जिसका आदेश मैं तुम्हें आज दे रहा हूं, न तो कुछ
जोड़ोगे और न ही घटाओगे, कि तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों का
पालन कर सको, जो मैंने भेज रखा है. 3 यह तो तुमने खुद ही देख लिया है कि
याहवेह ने बाल-पिओर के साथ क्या किया है. जितनों ने बाल-पिओर के पीछे
चलने का निश्चय किया, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने उन्हें तुम्हारे बीच से नाश
कर दिया, 4 मगर तुम, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के प्रति सच्चे बने रहे,
तुममें से सबके सब आज भी जीवित हो. 5 याद रहे, मैं तुम्हें नियमों और
विधियों की शिक्षा दे चुका हूं, ठीक जैसा, मेरे लिए याहवेह, मेरे परमेश्वर का
आदेश था, कि तुम्हारा चालचलन उस देश में, जहां तुम उस पर अधिकार के
उद्देश्य से प्रवेश करने पर हो, इन्हीं के अनुसार हो. 6 तब इनका पालन करो;
क्योंकि इनका पालन करना और इन पर चलना ही उन लोगों की दृष्टि में
तुम्हारी समझ और बुद्धिमानी होगी, जो इन विधियों का वर्णन सुनेंगे और तब
उनके शब्द होंगे, “निश्चय यह सम्पन्न राष्ट्र एक बुद्धिमान और ज्ञानवान राष्ट्र
है.” 7 क्योंकि किस सम्पन्न राष्ट्र का ऐसा ईश्वर है, जो उसके ऐसे पास रहता
है, जैसे याहवेह, हमारे परमेश्वर उस मौके पर होते हैं, जब हम उन्हें पुकारते हैं?
8 अथवा ऐसा कौन सम्पन्न राष्ट्र है, जिसकी विधियां और नियम ऐसे रीत हैं जैसे
इस सारी व्यवस्था के हैं, जो आज मैं तुम्हारे सामने रखने जा रहा हूं? 9 सिर्फ
सावधानी बनाए रखो और बड़ी ही चौकसी से अपने भले की सुरक्षा बनाए रखो,
कि तुम्हारी आंखों से खुद तुम्हारे द्वारा देखा गया घटनाक्रम गायब न हो जाए,
कि आजीवन वे तुम्हारे हृदय से न निकलें, बल्कि तुम अपने पुत्र और पोतों
को इन्हें सिखाते रहो. 10 वह दिन भूल न जाओ जिस दिन तुम होरेब पर्वत
पर याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के सामने उपस्थित हुए थे, जब याहवेह ने मुझे
संबोधित किया, “मेरे सामने लोगों को इकट्ठा करो, कि मैं उन्हें अपनी आवाज
सुना सकूं, कि फलस्वरूप उनमें आजीवन मेरे प्रति श्रद्धा और भय बना रह जाए;
और वे अपनी संतान को इसकी शिक्षा दे सकें.” 11 तुम सब पास आकर पर्वत
के नीचे इकट्ठा हो गए. पर्वत पर आग की लपटें आकाश चूम रही थीं. हर जगह
अंधकार, मेघ और घना धुआं फैल चुका था. 12 तब याहवेह ने आग में से तुमसे
बातें की. तुम्हें शब्द और आवाज तो सुनाई दे रहे थे, मगर किसी भी प्रकार का
स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा था-वहां सिर्फ आवाज ही सुनाई दे रही थी. 13 वहां
याहवेह ने अपनी उस वाचा की घोषणा, जिसके पालन करने का आदेश उन्होंने
तुम्हें दिया था, अर्थात् वे दस आदेश. ये आदेश याहवेह ने दो पट्टियों पर उकेर
दिए थे. 14 उस समय याहवेह का यही आदेश था, कि मैं तुम्हें इन विधियों और
नियमों की शिक्षा दूं, कि तुम उस देश में पहुंचकर इनका पालन कर सको, जिस
देश में जाकर तुम उस पर अधिकार करने पर हो. 15 इसलिये बहुत सावधान
रहो, क्योंकि जिस दिन होरेब पर्वत पर याहवेह आग के बीच से तुमसे अभिमुख
हुए थे. तुम्हें उनका कोई भी स्वरूप दिखाई नहीं दिया था, 16 कि तुम्हारा
चरित्र दूषित न हो जाए और तुम अपने लिए किसी भी स्वरूप में मूर्ति न ढाल
लो, नर अथवा नारी के रूप में, 17 अथवा पृथ्वी तल पर के किसी पशु की
मूर्ति, अथवा आकाश में उड़ते पक्षी की, 18 या किसी रेंगते जंतु की, किसी
मछली की मूर्ति न ढाल लो जो पृथ्वी सतह से नीचे जल में पाई जाती है. 19
सावधान रहो, कि तुम अपनी दृष्टि आकाश की ओर उठाकर सूर्य, चंद्रमा और
तारों; हां, नक्षत्रों की ओर उठाकर उनकी ओर आकर्षित हो जाओ और उनकी
आराधना और स्तुति करना शुरू कर दो. इन्हें तो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने सारी
पृथ्वी की जनताओं के हित में प्रदान किए हैं. 20 मगर सच यह है कि मिस्र देश
में से याहवेह मानो आग की भट्टी से तुम्हें निकालकर लाए हैं, कि तुम जैसा
आज देख ही रहे हो, तुम याहवेह ही की संपत्ति होकर रहो. 21 तुम्हारे कारण मैं
याहवेह के क्रोध का शिकार हो गया! उन्होंने यह शपथ ली, कि मैं यरदन नदी

के पार नहीं जा सकूंगा, कि मैं उस उत्तम देश में प्रवेश नहीं करूंगा, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास के रूप में दे रहे हैं. **22** मेरी मृत्यु इसी देश में होनी तय है. मैं यरदन नदी के पार नहीं जाऊंगा पर तुम लोग जाओगे और इस श्रेष्ठ भूमि पर अधिकार करोगे. **23** इसलिये सावधान रहो; कि तुम उस वाचा को भुला न डालो, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे साथ बांधी है. इसलिये अपने लिए उनमें से किसी भी प्रकार की मूर्ति न बनाना, जिसके लिए याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की ओर से मनाही की गई है. **24** क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर भस्म करनेवाली आग हैं, एक जलन रखनेवाला परमेश्वर. **25** जब तुम्हारे संतान उत्पन्न होगी और फिर उनकी भी संतान पैदा होगी और उस देश में तुम पीढ़ी से पीढ़ी तक निवास कर चुके होगे और तब अपना चालचलन बिगाड़कर किसी भी वस्तु की मूर्ति बना लो, जो कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में गलत है और इसके द्वारा तुम उनको क्रोध से भर दो, **26** तो मैं तुम्हारे विरुद्ध गवाह होने के लिए आज आकाश और पृथ्वी को बुला रहा हूं, कि तुम निःसंदेह उस देश में, जहां तुम यरदन के पार उतरकर उस पर अधिकार करने पर हो, शीघ्र ही पूरी तरह नाश हो जाओगे. **27** याहवेह तुम्हें राष्ट्रों के बीच तितर-बितर कर देंगे. याहवेह तुम्हें जिन जनताओं में ठहराएंगे, तुम वहां थोड़ी गिनती में होकर रह जाओगे. **28** तुम उन राष्ट्रों में ऐसे देवताओं की उपासना करेंगे, जो लकड़ी और पत्थर की सिर्फ मानव की कलाकृति हैं, जो देख न सकते है, न सुन सकते है, और न ही सूंघने और भोजन करने की क्षमता. **29** मगर तुम उसी परिस्थिति में याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के खोजने वाले हो जाओगे; वहां तुम उन्हें पा भी लोगे, यदि तुम सच्चाई से पूरे हृदय से उनकी खोज करोगे. **30** जब तुम संकट की स्थिति में जा पड़ो और ये सारी मुसीबतें तुम्हें आ घेरें, तब अंततः तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की ओर लौट आओगे और तुम्हें उनकी आवाज भी सुनाई पड़ेगी. **31** क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर दयालु-कृपालु परमेश्वर हैं; न वह तुम्हें छोड़ देंगे, न तुम्हें नाश कर देंगे और न ही वह तुम्हारे पूर्वजों से शपथपूर्वक की गई वाचा को भुला देंगे. **32** अच्छा चलो, अब कुछ पहले के युगों के बारे में जान लो, जब परमेश्वर ने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया था. इसके विषय में आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक पूछताछ कर डालो. क्या ऐसे अद्भुत काम कहीं और हुए हैं? या ऐसा कुछ भी कभी सुना गया है? **33** क्या किसी भी दूसरे राष्ट्र ने आग के बीच में से परमेश्वर को बातचीत करते हुए सुना और फिर भी जीवित रह गए? **34** या क्या याहवेह तुम्हारे परमेश्वर जैसा कोई परमेश्वर भी हुआ है, जिसने विपत्तियों, अद्भुत चिन्हों, चमत्कारों द्वारा, युद्ध द्वारा, अपने भुजबल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा एक राष्ट्र के बीच में से अपने लिए एक राष्ट्र को तुम्हारे ही देखते-देखते निकालकर लिया हो? **35** यह सब तुम्हारे सामने इसलिये दिखाया गया, कि वह, जो याहवेह हैं, वही परमेश्वर हैं; कोई भी नहीं है उनके अलावा. **36** वह स्वर्ग से तुमसे बातें करते रहे कि तुम्हें शिक्षा देकर अनुशासित कर सकें. यहां पृथ्वी पर उन्होंने यह सही समझा कि तुम उनकी उस बड़ी आग पर नज़र कर सको. तब तुमने आग के बीच से उनकी बातें सुन लीं. **37** यह सिर्फ इसलिये कि तुम्हारे पूर्वजों से याहवेह को प्रेम था, इसलिये उन्होंने उनके वंशजों को उनके बाद अपना लिया. उन्होंने तो व्यक्तिगत रूप से अपनी बड़ी सामर्थ्य के द्वारा तुम्हें मिस्र देश से निकाला है, **38** उन्होंने तुम्हारे सामने से ऐसी जनताओं को खदेड़ दिया, जो तुमसे गिनती में भी बहुत थे और शक्ति में तुमसे बहुत बलशाली भी, कि वह तुम्हें मीरास के लिए उनके देश प्रदान कर दें; जैसा आज तुम्हारे सामने साफ़ ही है. **39** इसलिये आज यह समझ लो: जो याहवेह हैं, वही ऊपर आकाश और स्वर्ग में और यहां नीचे धरती पर परमेश्वर हैं, दूसरा कोई भी नहीं. **40** इसलिये तुम उनके नियमों और उनके आदेशों का पालन करोगे, जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, कि तुम्हारा हित होता रहे और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों का भी, और तुम उस देश में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें स्थायी रूप से प्रदान कर रहे हैं, लंबी आयु तक रह सको. **41** फिर मोशेह ने यरदन के पार पूर्व दिशा में तीन नगरों को इस उद्देश्य से अलग किया, **42** कि किसी व्यक्ति से बिना किसी मन मुटाव के असावधानी में किसी की बिना योजना के हत्या हो गई हो, ऐसा व्यक्ति भागकर इनमें से किसी नगर में आकर बस जाए, कि वह जीवित रह सके. **43** निर्जन प्रदेश में बेज़र, जो रियूबेन के घराने को दिए गए पठार पर हैं, गाद-वंशजों को दिए गए गिलआद में रामोथ और मनश्शेह-वंशजों का दिया गया बाशान का गोलान. **44** इस्राएलियों के सामने, जो विधि मोशेह ने तय की थी, वह यह है. **45** जब इस्राएल मिस्र देश से निकलकर यरदन नदी की पूर्व दिशा की घाटी में बेथ-पिओर नगर के सामने आ चुके थे, **46** तब मोशेह ने उन्हें ये अध्यादेश अधिनियम और आज्ञाएं दीं. यह वह क्षेत्र था, जहां हेशबोन नगर में अमोरियों के राजा सीहोन का शासन था. मिस्र से आते हुए मोशेह और इस्राएलियों ने उसे हरा दिया था. **47** उन्होंने उसके देश का और बाशान के राजा ओग के देश पर अधिकार कर लिया. ये दो अमोरी राजा थे, जो यरदन नदी के पूर्व में रहते थे. **48** इस देश की सीमा आरनोन की घाटी की सीमा से शुरू होकर सियोन पर्वत (अर्थात् हरमोन पर्वत) तक फैली थी, **49** इसमें यरदन नदी के पूर्व का क्षेत्र भी शामिल था, जो पिसगाह पर्वत के ढलानों से लगे अराबाह सागर तक फैला था.

5 फिर मोशेह ने सारे इस्राएल को बुलाकर कहा: सुनो, इस्राएल, आज मैं तुम्हारे सामने ये विधियां और नियम इस उद्देश्य से पेश कर रहा हूं, कि तुम इन्हें सुनकर कर सावधानीपूर्वक इनका पालन करें. **2** होरेब पर्वत पर याहवेह, हमारे परमेश्वर ने हमसे वाचा बांधी थी. **3** यह वाचा याहवेह ने हमारे पूर्वज से नहीं, बल्कि हम सभी के साथ, जो आज यहां जीवित हैं, बांधी है. **4** उस पर्वत पर याहवेह ने आग में होकर तुमसे आमने-सामने बातें की. **5** उस अवसर पर मैं याहवेह और तुम्हारे बीच खड़ा हुआ था. तुम तो निकट आने के विचार से ही डर गए थे, तब मैं तुम्हारे लिए याहवेह की बातों को स्पष्ट करते हुए घोषित करता जा रहा था. आग के भय से तुम ऊपर नहीं जाना चाह रहे थे. याहवेह ने कहा था: **6** "मैं ही हूं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर, जिसने तुम्हें मिस्र देश के बंधन से छुड़ाया. **7** "मेरे अलावा तुम किसी दूसरे को ईश्वर नहीं मानोगे. **8** तुम अपने लिए न तो आकाश की, न पृथ्वी की, और न जल की किसी वस्तु की मूर्ति बनाना. **9** न इनमें से किसी को दंडवत करना और न उसकी आराधना करना; मैं, याहवेह, जो तुम्हारा परमेश्वर हूं, जलन रखनेवाला परमेश्वर हूं, जो मुझे अस्वीकार करते हैं, मैं उनके पापों का प्रतिफल उनके बेटों, पोतों और परपोतों तक को दूंगा, **10** किंतु उन हजारों पीढ़ियों पर, जिन्हें मुझसे प्रेम है तथा जो मेरे आदेशों का पालन करते हैं, अपनी करुणा प्रकट करता रहूंगा. **11** तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के नाम का गलत इस्तेमाल नहीं करोगे, क्योंकि याहवेह उस व्यक्ति को बिना दंड दिए नहीं छोड़ेंगे, जो याहवेह का नाम व्यर्थ में लेता है. **12** शब्बाथ को पवित्र दिन के रूप में मानना, जैसा कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर का आदेश है. **13** छः दिन मेहनत करते हुए तुम अपने सारे काम पूरे कर लोगे, **14** मगर सातवां दिन याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का शब्बाथ है; इस दिन तुम कोई भी काम नहीं करोगे; तुम, तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां, तुम्हारे पुरुष अथवा महिला सेवक न तुम्हारे गधे अथवा तुम्हारे सारे पशु अथवा तुम्हारे यहां रहनेवाले विदेशी, कि तुम्हारे सेवक-सेविकाएं भी तुम्हारे समान विश्राम कर सकें. **15** तुम्हें याद रखना है कि तुम खुद मिस्र देश में दास थे और याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें वहां से अपनी बलवंत भुजा बढ़ाकर निकाला है; इसलिये याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें आदेश दिया है, कि शब्बाथ दिवस का पालन किया जाए. **16** याहवेह, अपने परमेश्वर के आदेश के अनुसार अपने पिता अपनी माता का आदर करना, कि तुम लंबी आयु के हो जाओ और उस देश में तुम्हारा भला हो, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें दे रहे हैं. **17** तुम मानव हत्या नहीं करना. **18**

तुम व्यभिचार नहीं करना. 19 तुम चोरी नहीं करना. 20 तुम अपने पड़ोसी के
विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देना. 21 तुम अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच नहीं
करना, और न तुम अपने पड़ोसी के घर का, उसके खेत का, न किसी सेवक,
सेविका का; अथवा उसके बैल अथवा गधे का; उसकी किसी भी वस्तु का
लालच नहीं करना.” 22 यह सब याहवेह ने उस पर्वत पर आग, बादल और
गहरे अंधकार में से ऊंचे शब्द में तुम सभी से, अर्थात् इकट्ठी हुई महासभा से,
कहे थे, इसमें उन्होंने और कुछ भी नहीं जोड़ा. इसके बाद उन्होंने यह सब दो
पट्टियों पर उकेर कर मुझे दे दिया. 23 और फिर, जब तुमने उस तमस में से वह
स्वर सुना, जब वह पर्वत आग में धधक रहा था, तब तुम सभी गोत्रपिता और
प्रधान मेरे पास आ गए, 24 और तुमने मुझसे विनती की, “सुनिए, याहवेह,
हमारे परमेश्वर ने हम पर अपना तेज, अपनी प्रभुता दिखा दी है, हमने आग के
बीच से उनकी आवाज भी सुन ली है; आज हमने साक्षात देख लिया है, कि
परमेश्वर मनुष्य से बातचीत करते हैं, फिर भी मनुष्य जीवित रह जाता है. 25
मगर अब, क्या यह ज़रूरी है कि हमारी मृत्यु हो? क्योंकि यह प्रचंड आग हमें
चट करने पर है; अब यदि हमें याहवेह, हमारे परमेश्वर का स्वर और अधिक
सुनना पड़ जाए, तो हमारी मृत्यु तय है. 26 क्योंकि, क्या यह कभी भी सुना
गया है, कि किसी मनुष्य ने उस आग के बीच से जीवित परमेश्वर की आवाज
सुनी हो, जिस प्रकार हमने सुनी और जीवित रह गया हो? 27 आप ही पास
जाकर सुन लीजिए, कि याहवेह हमारे परमेश्वर क्या कह रहे हैं; इसके बाद यहां
लौटकर हमारे सामने वह बात दोहरा दीजिए, जो याहवेह हमारे परमेश्वर ने
आपसे वहां कही है, हम वह सब सुनकर उसका पालन करेंगे.” 28 याहवेह ने
तुम्हारे द्वारा मेरे सामने रखा प्रस्ताव सुना, तब याहवेह ने मुझसे कहा, “मैंने
इन लोगों द्वारा भेजा प्रस्ताव सुन लिया है, जो उन्होंने तुम्हारे सामने प्रस्तुत
किया है. उनकी यह बात सही है. 29 सही होगा कि उनमें ऐसी सच्चाई हो कि
उनके हृदय में मेरे प्रति भय बना रहे, और वे हमेशा ही मेरे आदेशों का पालन
करते रहें, कि उनका और उनकी संतान का सदा-सर्वदा भला ही होता रहे! 30
“जाकर उन्हें आदेश दो, अपने-अपने शिविरों में लौट जाओ. 31 मगर तुम यहां
मेरे ही पास खड़े रहो, कि मैं तुम्हारे सामने वे सभी आदेश, नियम और विधियां
स्पष्ट कर सकूं, जिनकी तुम्हें उन्हें शिक्षा देनी है, कि वे इनका उस देश में जाकर
पालन कर सकें, जिस देश मैं उन्हें अधिकार करने के लिए दे रहा हूं.” 32 तब
तुम सावधानीपूर्वक उन सभी आदेशों का पालन करोगे, जिसका आदेश याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने दिया है; न तो तुम दाएं मुड़ोगे, न बाएं. 33 जो मार्ग याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिखाया है, तुम सिर्फ उसी पर आगे बढ़ते जाओगे, कि
तुम जीवित रह सको और तुम्हारा भला हो, कि तुम जिस देश पर अधिकार
करोगे, उसमें तुम लंबी आयु के होते जाओ.

6 तुम्हारे परमेश्वर द्वारा दिए गए आदेश, नियम और विधियां इस प्रकार हैं,
जिनकी शिक्षा तुम्हें देने का आदेश याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने मुझे दिया है,
कि उनका अनुपालन तुम उस देश में कर सको, तुम जिसका अभिग्रहण करने के
उद्देश्य से जा रहे हो. 2 यह इसलिये, कि तुम, तुम्हारी संतान और उनकी भी
संतान, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय बनाए रखें, मेरे द्वारा लाए
गए नियम और आदेशों का जीवन भर पालन करते रहें, और तुम लंबी आयु के
हो जाओ. 3 इस्राएलियो, ज़रूरी है कि तुम इसे बड़े यत्न से सुनो और इसका
पालन करने के विषय में सावधान रहो, कि उस देश में, जहां दूध और मधु की
बहुतायत है तुम्हारा भला हो, तुम्हारा वंश बहुत बढ़ जाए; ठीक जैसी याहवेह,
तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुमसे प्रतिज्ञा की है. 4 सुनो, इस्राएलियो! याहवेह
हमारे परमेश्वर अद्वितीय याहवेह हैं. 5 तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर से अपने सारे
हृदय, सारे प्राण, सारे मस्तिष्क तथा सारी शक्ति से प्रेम करो. 6 ये आदेश, जो
आज मैं तुम्हारे सामने स्पष्ट कर रहा हूं, तुम्हारे हृदय में बैठ जाए. 7 तुम ये
आदेश अपनी संतान को सिखाया करना. जब तुम अपने घर में बैठे हुए हो, तब
तुम इनका उल्लेख करोगे, जब तुम मार्ग में आगे बढ़ रहे हो, और जब तुम
विश्राम के लिए लेटोगे या जब तुम नींद से उठोगे. 8 तुम इन्हें अपने हाथ पर
चिन्ह के रूप में बांध लोगे, ये तुम्हारे माथे पर टीका होंगे. 9 तुम उन्हें अपने
घर की चौखटों पर और अपने द्वारों पर लिखोगे. 10 तब याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर जब तुम्हें उस देश में ले आएंगे, जिसके विषय में उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों
अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब से प्रतिज्ञा की थी, कि वह तुम्हें यह देश देंगे,
जिस देश में विशाल और भव्य नगर हैं, जिनका निर्माण तुम्हारे द्वारा नहीं किया
गया, 11 जहां घर उत्तम वस्तुओं से भरे होंगे जो तुम्हारे द्वारा इकट्ठा नहीं की गई
होंगी, पत्थरों में खोदकर बनाए गए कुंड; जिनको तुमने नहीं बनाया होगा,
अंगूर के बगीचे और ज़ैतून के पेड़; जिन्हें तुमने नहीं लगाया, जिनको खाकर
तुम बहुत तृप्त होगे, 12 तब सावधान रहना, कि तुम उन याहवेह को, जो तुम्हें
मिस्र देश से, दासत्व के जीवन से, निकालकर लाए हैं, भुला न दो. 13 श्रद्धा
तुम सिर्फ याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के प्रति रखोगे, तुम आराधना सिर्फ उनकी
करोगे, और शपथ उन्हीं की लिया करोगे. 14 तुम पराए देवताओं का अनुगमन
नहीं करोगे; तुम्हारे पड़ोसी राष्ट्रों के किसी भी देवता का; 15 क्योंकि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर, जिनकी उपस्थिति तुम्हारे बीच में है, जलन रखनेवाले परमेश्वर
हैं; नहीं तो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर का कोप तुम्हारे विरुद्ध भड़क उठेगा और
वह तुम्हें पृथ्वी पर से मिटा डालेंगे. 16 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर को न
परखना; जैसा तुमने मस्साह में किया था. 17 चाहिए कि तुम याहवेह, अपने
परमेश्वर द्वारा दिए आदेशों, घोषणाओं और नियमों का पालन सावधानीपूर्वक
करो. 18 तुम वही करोगे, जो याहवेह की दृष्टि में सही और उचित है, कि
इसमें तुम्हारा भला हो और तुम जाकर उत्तम देश पर अधिकार करो, जिसे
देने की प्रतिज्ञा याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों से की थी. 19 यह तुम याहवेह के
आदेश के अनुसार अपने सभी शत्रुओं को अपने सामने से खदेड़ने के द्वारा
करोगे. 20 भविष्य में जब तुम्हारी संतान तुमसे यह प्रश्न करे: “क्या मतलब है
इन घोषणाओं, नियमों और विधियों का, जो याहवेह, हमारे परमेश्वर द्वारा दिए
गए हैं?” 21 तब उनके लिए तुम्हारा उत्तर होगा, “मिस्र देश में हम फ़रोह के
दास थे, तब याहवेह ने हमें अपनी सामर्थी भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल
लिया. 22 इसके अलावा याहवेह ने हमारे सामने मिस्र, फ़रोह और उसके सारे
परिवार के विरुद्ध अद्भुत और विपत्ति भरे चिन्हों और चमत्कारों को दिखाया.
23 उन्होंने हमें वहां से निकाल लिया, कि हमें उस देश में प्रवेश कराएं, जिस देश
की प्रतिज्ञा उन्होंने हमारे पूर्वजों से की थी. 24 तब याहवेह ने इन सभी नियमों
को पालन करने का आदेश दिया और हम हमारे परमेश्वर से डरें कि हमारा
भला हो और हम जीवित रहें, जैसा कि अभी भी दिखता ही है. 25 यदि हम
सावधानीपूर्वक इन आदेशों का पालन करते रहें, ठीक जैसा उन्होंने आदेश दिया
है, तो हम याहवेह अपने परमेश्वर के सामने निर्दोष रहेंगे.”

7 जब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें उस देश में प्रवेश करा देंगे, तुम जिस
देश पर अधिकार करने पर हो और याहवेह तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारे सामने
से अमोरियों, कनानियों, हित्तियों, परिज़्ज़ियों, हिव्वियों, यबूसियों तथा
गिर्गाशियों जैसी अनेक जनताओं को, जो तुमसे अधिक मजबूत और गिनती में
तुमसे अधिक हैं, वहां से निष्कासित कर देंगे, 2 और जब याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर, उन्हें तुम्हें सौंपेंगे और तुम उन्हें हरा दोगे, तब तुम उन्हें पूरी तरह नाश
कर दोगे. तुम उनके साथ किसी भी प्रकार की वाचा स्थापित नहीं करोगे, न
उनके प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति ही दिखाओगे. 3 इसके अलावा, तुम
उनके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करोगे; न उनके पुत्रों को अपनी पुत्रियां
दोगे और न अपने पुत्रों के लिए उनकी पुत्रियों को अपनाओगे, 4 क्योंकि वे
तुम्हारे पुत्रों को मेरा अनुसरण करने से भटका देंगी, कि तुम पराए देवताओं की

उपासना करने लगोगे. तब तो याहवेह का क्रोध तुम पर भड़क जाएगा, और वह
बिना देरी के तुम्हें नाश कर देंगे. 5 उनके विषय में तुम्हारी नीति यह होगी: तुम
उनकी वेदियां ध्वस्त कर दोगे, उनके लिए पवित्र उनके खंभों को तोड़ दोगे,
उनके लिए पवित्र अशेराह खंभों को काट डालोगे, और उनकी मूर्तियों को भस्म
कर दोगे. 6 क्योंकि तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के लिए अलग की गई प्रजा
हो, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें पृथ्वी के सारे राष्ट्रों में से अपनी निज प्रजा
होने के लिया चुना है. 7 याहवेह ने तुम्हें अपना प्रेम पात्र इसलिये नहीं बना
लिया और तुम्हें इसलिये नहीं चुन लिया, कि तुम अन्य राष्ट्रों की तुलना में
गिनती में अधिक थे, वस्तुतः तुम तो सभी राष्ट्रों की तुलना में बहुत कम ही थे. 8
मगर यह इसलिये कि याहवेह ने तुमसे प्रेम किया और अपनी उस प्रतिज्ञा को
पूरी की, जो उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथपूर्वक की थी. याहवेह ने तुम्हें अपनी
समर्थ भुजा के द्वारा निकाला था, दासत्व के जीवन से मुक्त किया; मिस्र के राजा
फ़रोह के बंधन से. 9 तब यह समझ लो, कि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ही,
परमेश्वर हैं. वह विश्वासयोग्य परमेश्वर हैं, वह सहस्र पीढ़ी तक अपनी वाचा
और अपार प्रेम उन पर स्थायी रखते हैं, जो उनसे प्रेम करते और उनके आदेशों
का पालन करते हैं. 10 लेकिन वे उन लोगों को दंडित करने और उन्हें नष्ट करने
में संकोच नहीं करेंगे, जो उनसे घृणा करते हैं; वे उन लोगों से विलंब न करते
हुए मुह तोड़ बदला लेंगे, जो उनसे नफरत करते हैं. 11 फिर आज मैं तुम्हें जैसा
आदेश दे रहा हूं, तुम उन आदेशों, नियमों और विधियों का पालन करोगे. 12
फिर इसका परिणाम यह होगा कि जब तुमने इन विधियों के प्रति सावधानी रखी
और उनका पालन करते रहे हो, तो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर भी तुम्हारे साथ
अपनी वाचा का पालन करेंगे, अपना अपार प्रेम तुम पर बनाए रखेंगे, जैसे
उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों से प्रतिज्ञा की थी. 13 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुमसे प्रेम
करेंगे, तुम्हें समृद्धि देंगे और तुम्हारी गिनती में बढ़ौत्तरी करेंगे. वह तुम्हारे गर्भ के
फल को, तुम्हारी भूमि की उपज—तुम्हारे नए अंगूरों के रस और तुम्हारे जैतून
के तेल—को आशीषित करेंगे. उस देश में जिसकी प्रतिज्ञा उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों
से की थी, तुम्हारे पशुओं में वृद्धि होती रहेगी और तुम्हारी भेड़-बकरियों के
मेमनों में भी वृद्धि होगी. 14 तुम सभी राष्ट्रों की तुलना में अधिक समृद्ध होओगे.
तुममें अथवा तुम्हारे पशुओं में कोई भी नर अथवा मादा बांझ न होगी. 15
याहवेह तुम्हारे बीच से सभी रोगों को निरस्त कर देंगे. वह तुम पर मिस्र देश की
कोई भी भयंकर बीमारी हावी न होने देंगे, जो तुमने मिस्र देश में देखी थी; मगर
वह इन रोगों को उन पर प्रभावी कर देंगे, जो तुमसे घृणा करते हैं. 16 तुम उन
सभी राष्ट्रों को मिटा डालोगे, जिन्हें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें सौंपने पर हैं.
तुम्हारी आंखों में उनके प्रति ज़रा भी कृपा न आएगी और न तुम उनके देवताओं
की उपासना करोगे; क्योंकि यही तुम्हारे लिए फंदा हो जाएगा. 17 यदि तुम्हारे
मन में यह विचार आए, "ये जनता तो हमसे अधिक मजबूत हैं. हम कैसे उन्हें
यहां से निकालेंगे?" 18 तब तुम उनसे भयभीत न होओगे. सही होगा कि तुम
यह याद करो कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने फ़रोह और सारे मिस्र के साथ
क्या किया था. 19 खुद तुम्हारे द्वारा देखी गईं वे भयानक विपत्तियां, वे चिन्ह,
चमत्कार और मजबूत भुजा और बढ़ाए हुए हाथ, जिसके द्वारा याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर ने तुम्हें निकाल लिया. याहवेह तुम्हारे परमेश्वर उन सभी राष्ट्रों के साथ,
जो आज तुम्हारे लिए भय का विषय हैं, वही सब करेंगे. 20 इसके अलावा
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर उनका मन कच्चा कर देंगे, जिससे कि वे, जो बचे हैं
और तुमसे छिपे हुए हैं, नाश हो ही जाएंगे. 21 तुम उनसे भयभीत न होओगे,
क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे बीच में हैं, वह, जो सर्वशक्तिमान और
भय-योग्य परमेश्वर हैं. 22 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे सामने से इन सारी
जनताओं को धीरे धीरे खदेड़ते चले जाएंगे. तुम्हारे लिए उन्हें शीघ्रतापूर्वक
समाप्त करना असंभव होगा, क्योंकि उस स्थिति में वन्य पशुओं की गिनती
बहुत बढ़ जाएगी. 23 मगर याहवेह तुम्हारे परमेश्वर उन्हें तुम्हें सौंपते जाएंगे
और उनको बहुत व्याकुल कर देंगे, जिससे वे नाश हो जाएंगे. 24 याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर, उनके राजाओं को तुम्हारे हाथों में सौंप देंगे, कि तुम पृथ्वी पर
से उनका अस्तित्व ही मिटा दो. कोई भी इस योग्य न पाया जाएगा कि तुम्हारा
सामना कर सके और तुम उन्हें नाश कर दोगे. 25 तुम उनकी ढली हुई मूर्तियों
को दाह कर दोगे. तुम उन मूर्तियों के चांदी और सोने का लालच नहीं करोगे
और न इन्हें अपने पास रख लोगे, नहीं तो यह तुम्हारे लिए फंदा सिद्ध होगा,
क्योंकि यह याहवेह तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है. 26 तुम कोई भी
घृणित वस्तु अपने घर में लेकर न आओगे, नहीं तो तुम खुद उसके समान ही
विनाश के योग्य हो जाओगे. तुम इससे पूरी तरह घृणा करोगे, क्योंकि यह वह
वस्तु है, जो अशुद्ध है.

8 वे सभी आदेश, जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, यह ज़रूरी है कि तुम
सावधानीपूर्वक उनका पालन करोगे, कि तुम जीवित रह सको, गिनती में
बढ़ते जाओ और जाकर उस देश पर अधिकार कर लो, जिसे देने की शपथपूर्वक
प्रतिज्ञा याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों से की थी. 2 उस पूरे मार्ग को कभी न भुलाना,
जिस पर तुम्हें याहवेह तुम्हारे परमेश्वर इन चालीस सालों में निर्जन प्रदेश से होते
हुए लेकर आए हैं, कि वह इसके द्वारा तुम्हें नम्र बना सकें. वह तुम्हें परखते रहे,
कि तुम्हारे हृदय की थाह ले सकें. कि तुम उनके आदेशों का पालन करोगे भी
या नहीं. 3 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें नम्र बना दिया, उन्होंने तुम्हें भूखा
ही रहने दिया और तुम्हें खाने के लिए मन्ना प्रदान किया जो तुम्हारे लिए एकदम
नई वस्तु थी, तुम्हारे लिए और तुम्हारे पूर्वजों के लिए भी. इसका उद्देश्य यह था
कि तुम यह पहचान लो कि मनुष्य का जीवन सिर्फ भोजन पर नहीं, बल्कि
याहवेह के मुख से निकले हुए हर एक शब्द पर भी निर्भर है. 4 इन चालीस
सालों में तुम्हारे द्वारा पहने गए वस्त्र न तो जर्जर हुए, और न तुम्हारे पांवों में कभी
सूजन आई. 5 तब अपने हृदय में यह सच्चाई अच्छी तरह से बैठा लो, कि
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम पर उसी प्रकार अनुशासन कर रहे थे, जिस प्रकार
पिता अपने पुत्र पर. 6 तब तुम याहवेह अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन
करोगे, कि तुम उनकी नीतियों का पालन करो और उनके प्रति श्रद्धा और भय
बनाए रखो. 7 क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें एक उत्तम देश में ले जा
रहे हैं. वह देश, जो नदियों, झरनों और जल-स्रोतों का देश है, जिनका बहाव
घाटियों और पहाड़ियों के बीच है; 8 इस देश में गेहूं, जौ उत्पन्न होते हैं; यह
अंगूर की लताओं, अंजीर, अनार, जैतून और शहद का देश है; 9 इस देश में
तुम्हें भोजन का कोई अभाव न होगा; तुम्हें किसी भी वस्तु का अभाव न होगा.
यह ऐसा देश है, जिसकी चट्टानों में लौह के भंडार हैं, इसकी पहाड़ियों में से
तांबा प्राप्त किया जा सकता है. 10 जब तुम भोजन के बाद तृप्त हो जाओ, तो
तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर की स्तुति करोगे, कि उन्होंने तुम्हें यह उत्तम देश
प्रदान किया है. 11 यह ध्यान रहे कि तुम आज मेरे द्वारा प्रस्तुत उनके आदेशों,
अध्यादेशों और नियमों का पालन न करने के द्वारा तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
को भुला न दो; 12 नहीं तो तृप्त हो जाने के बाद और जब तुमने अपने घरों का
उत्तम निर्माण कर लिया है, जब तुम उनमें निवास करने लगो, 13 जब तुम्हारे
पशु और भेड़-बकरी बढ़ने लगें, तुम्हारे सोने और चांदी में वृद्धि होने लगे और
तुम्हारी पूरी संपत्ति में ही वृद्धि हो जाए, 14 तब तो तुम्हारे हृदय में घमण्ड का
आना स्वाभाविक ही होगा और तुम याहवेह अपने परमेश्वर को, जिन्होंने तुम्हें
मिस्र देश से, उस दासत्व के जीवन से निकाल लिया है, भुला दो. 15 जिन्होंने
तुम्हें उस बड़े और भयानक निर्जन प्रदेश से यहां लाया है, जहां विषैले सांप और
बिच्छू थे, भूमि सूखी थी, जहां जल नहीं मिलता था, वहां याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर ने ही उस चकमक की चट्टान में से जल निकाला. 16 निर्जन प्रदेश में
उन्होंने तुम्हें मन्ना का भोजन दिया, जो तुम्हारे पूर्वज जानते भी न थे, कि वे तुम्हें

नम्र बना दें, कि वह तुम्हारी जांच करें, कि इससे अंततः तुम्हारा ही भला हो. 17
नहीं तो यह संभव है कि तुम मन में यह मान लो, “यह तो मेरी ही शक्ति और
मेरी ही क्षमता से कमाई मेरी संपत्ति है.” 18 मगर तुम याहवेह, अपने परमेश्वर
को नहीं भुलाओगे, क्योंकि यह उन्हीं का दिया हुआ है, जिससे तुमने इस
संपत्ति को इकट्ठा किया है, कि जैसा आज तुम्हारे सामने साफ़ ही है, उन्होंने यह
तुम्हारे पूर्वजों से शपथपूर्वक की गई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिया किया है. 19
यदि भविष्य में तुम पराए देवताओं का अनुगमन कर उनकी उपासना और वंदना
करने लगो और याहवेह अपने परमेश्वर को भुला दो, तो आज मैं तुम्हारे विषय में
यह घोषणा कर रहा हूं: तुम निःसंदेह नाश हो जाओगे. 20 जैसे उन जनताओं को
याहवेह ने तुम्हारे सामने से खदेड़ कर नाश किया था, वैसी ही होगी तुम्हारी
स्थिति, क्योंकि तुमने याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों की उपेक्षा की.

9 सुनो, इस्राएल: आज तुम यरदन नदी को पार करोगे, कि तुम वहां, उन
जनताओं को बाहर करो, जो गिनती में तुमसे विशाल और तुमसे अधिक
शक्तिशाली हैं. उनके नगर फैले हुए और गढ़ गगन को चूमते हैं. 2 वे डीलडौल
में तुमसे अधिक ऊंचे और वे अनाकों की संतान हैं, तुम इन्हें जानते हो, तुम
इनके विषय में सुनते रहे हो: “कौन ठहर सकता है अनाक के पुत्रों के सामने?”
3 इसलिये आज यह समझ लो, कि यह याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ही हैं, जो भस्म
करनेवाली आग का रूप धारण कर तुम्हारे आगे-आगे नदी पार कर रहे हैं. वही
तुम्हारे सामने उन्हें दबा देंगे, कि वे नाश हो जाएं, कि तुम उन्हें शीघ्र ही वहां से
खदेड़ कर नाश कर दो; ठीक जैसा आदेश तुम्हें याहवेह द्वारा दिया गया है. 4
जब याहवेह तुम्हारे परमेश्वर उन्हें तुम्हारे सामने से खदेड़ देंगे, तब अपने मन में
यह विचार तक आने न देगा: “यह तो मेरी धार्मिकता ही थी, जिसके कारण
याहवेह ने मुझे इस देश पर अधिकार करने की क्षमता दी है.” सच तो यह है कि
इन जनताओं की दुष्टता के कारण याहवेह उन्हें तुम्हारे सामने से उनकी मातृभूमि
से दूर करते जा रहे हैं. 5 तुम्हें उन राष्ट्रों पर अधिकार इसलिये मिल नहीं पा
रहा, कि तुम धर्मी हो या तुम्हारा मन सीधा है; बल्कि इसलिये कि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर उन्हें तुम्हारे सामने से इसलिये निकाल रहे हैं, कि ये राष्ट्र दुष्ट राष्ट्र
हैं, कि याहवेह उस प्रतिज्ञा को पूरा करें, जो उन्होंने शपथ के साथ तुम्हारे पूर्वज
अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब के साथ की थी. 6 इसलिये यह अच्छी तरह
से समझ लो कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे अधिकार के लिए यह उत्तम
देश इसलिये नहीं दे रहे कि तुम भले लोग हो, वास्तव में तुम तो हठी जाति हो.
7 यह सच कभी न भुलाना कि निर्जन प्रदेश में तुम किस तरह से याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर को मिस्र देश से निकाल लाने के दिन से लेकर इस स्थान तक पहुंचने
तक क्रोधित करते रहे हो. तुम याहवेह के विरुद्ध विद्रोही बने रहे हो. 8 यहां तक
की, होरेब पर्वत के निकट भी तुमने याहवेह को ऐसा उकसा दिया था, कि अपने
गुस्से में वे तुम्हें मिटा ही देते. 9 जब मैं उस पर्वत पर गया हुआ था, जहां
चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा था, कि वे पत्थर की पट्टियां पाऊं; वे
वाचा की पट्टियां, जिन पर याहवेह ने वह वाचा गढ़ दी थी, जो उन्होंने तुम्हारे
साथ बांधी थीं; तब मैंने न तो वहां भोजन ही किया और न जल पिया. 10
याहवेह ने वहां मुझे परमेश्वर की उंगली से लिखी पत्थर की दो पट्टियां सौंपीं.
उन पर वह पूरी बातें गढ़ीं थीं, जो तुम्हारे वहां इकट्ठा होने पर पर्वत पर आग के
बीच से याहवेह ने दिया था. 11 चालीस दिनों और चालीस रातों के पूरा होने
पर याहवेह ने मुझे दो पत्थर की पट्टियां सौंप दीं, वे वाचा की पट्टियां. 12 तब
याहवेह ने मुझे आदेश दिया, “अब बिना देर यहां से कूच करो, क्योंकि तुम्हारे
इन लोगों ने, जिन्हें तुम मिस्र देश से निकालकर लाए हो, खुद को अशुद्ध कर
लिया है. कितनी जल्दी वे उस मार्ग से हट गए हैं, जो मेरे द्वारा बताया गया था.
उन्होंने तो अपने लिए एक मूर्ति ढाल ली है.” 13 याहवेह ने मुझ पर प्रकट
किया, “मैं इनको पहचान गया हूं. इसमें कोई शक नहीं कि ये हठीले लोग हैं!
14 अब मुझे मत रोको, कि मैं इन्हें नाश करके पृथ्वी पर से उनकी याद ही मिटा
डालूं. तब मैं तुमसे एक ऐसे राष्ट्र का उद्भव करूंगा, जो इनसे अधिक शक्तिशाली
और गिनती में विशाल भी होगा.” 15 और मैं मुड़कर पर्वत से नीचे उतर आए.
मैं अपने हाथों में वे दो वाचा की पट्टियां लिए हुए था. 16 तब मैंने दृष्टि की तो
पाया कि वास्तव में तुमने याहवेह अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था! तुमने
अपने लिए बछड़े की एक मूर्ति ढाल रखी थी. तुम बड़े ही शीघ्र उस मार्ग से
भटक चुके थे, जो तुम्हारे लिए याहवेह द्वारा बताया गया था. 17 मैंने तुम्हारे
देखते-देखते उन पत्थर की पट्टियों को फेंककर उन्हें चूर-चूर कर डाला. 18
उन पहले के चालीस दिनों और चालीस रातों के समान मैं याहवेह के सामने
पड़ा रहा; मैंने न तो भोजन किया, न जल का पान; क्योंकि तुमने वह भीषण
पाप कर डाला था, जो याहवेह की दृष्टि में बुरा था. इससे तुमने याहवेह का कोप
भड़का डाला था. 19 मैं याहवेह के असंतोष और भीषण कोप की कल्पना से ही
भयभीत हो गया था, जो अब तुम्हारे सर्वनाश के लिए आने पर था; मगर इस
अवसर पर भी याहवेह ने मेरी विनती पर ध्यान दिया. 20 अहरोन पर तो याहवेह
इतने क्रुद्ध थे, कि वह उसे नाश कर देने पर उतारू हो गए; तब मैंने उसी अवसर
पर अहरोन के लिए विनती की. 21 तुम्हारे द्वारा बनाई उस पाप की मूरत, उस
बछड़े को लेकर मैंने उसे आग में जला दिया, उसे कुचल-कुचल कर इतना पीस
डाला, कि वह धूल समान बारीक़ हो गया. मैंने यह धूल उस नदी में बहा दी, जो
उस पर्वत से निकल रही थी. 22 तुम लोगों ने याहवेह के कोप को दोबारा
ताबेराह, मस्साह और किबरोथ-हत्ताआवह में भड़काया. 23 जब कादेश-बरनेअ
में याहवेह ने तुम्हें इस आदेश के साथ भेजा था, “जाओ उस देश पर अधिकार
कर लो, जो मैं तुम्हें दे चुका हूं.” तब तुमने याहवेह, अपने परमेश्वर के आदेश
के विरुद्ध विद्रोह कर दिया. तुमने न तो उनमें विश्वास किया और न उनके आदेश
पर ध्यान दिया. 24 मैंने तो तुम्हें जिस दिन से देखा और पहचाना है, याहवेह के
प्रति विद्रोह ही देखा है. 25 तब मैं चालीस दिन और चालीस रात याहवेह के
सामने ही पड़ा रहा, क्योंकि याहवेह अपनी यह इच्छा बता चुके थे, कि वह
तुम्हें नाश कर देंगे. 26 मैंने याहवेह से प्रार्थना की, “प्रभु याहवेह, अपनी ही
प्रजा को नाश न कीजिए, ये तो आपकी ही मीरास हैं, जिन्हें आप ही ने अपनी
महानता के द्वारा छुड़ाया है, जिन्हें आपने अपनी समर्थ भुजा के द्वारा मिस्र देश
से निकाला है. 27 अपने सेवक अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब को याद
कीजिए; इस प्रजा के हठ, पाप और दुष्टता की अनदेखी कर दीजिए. 28 नहीं
तो, जिस देश से आपने हमें निकाला है, वे आपका मज़ाक इस प्रकार करेंगे
‘याहवेह इन्हें उस प्रतिज्ञा के देश में ले जाने में असमर्थ हो गया था और उसे
लोगों से घृणा हो गई थी, इसलिये उसने निर्जन प्रदेश में ही उनका नाश कर
दिया.’ 29 फिर भी, वे हैं तो आपकी ही प्रजा; हां, आपकी मीरास, जिन्हें आपने
अपने अद्भुत सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाला.”

10 फिर याहवेह ने मुझसे कहा: “पहले की पट्टियों के समान दो पट्टियां
और बनाओ और मेरे सामने इस पर्वत पर आ जाओ. लकड़ी का एक
संदूक भी बनाओ. 2 मैं इन पत्थर की पट्टियों पर वही सब लिख दूंगा, जो उन
पटलों पर लिखा गया था, जिन्हें तुमने तोड़ दिया है. इन पटलों को तुम उस
संदूक में रख दोगे.” 3 फिर मैंने बबूल की लकड़ी से एक संदूक बनाया फिर दो
पट्टियां काटी और अपने हाथों में वे दो पट्टियां लेकर पर्वत पर चढ़ गया. 4
याहवेह ने उन दो पट्टियों पर वही लिख दिया, जो उन पहले की पट्टियों पर
लिखा गया था: वे दस आदेश, जो तुम्हारे वहां इकट्ठा होने के अवसर पर पर्वत
पर अग्नि में से गए थे. ये पटल याहवेह ने मुझे सौंप दिए. 5 फिर मैं पर्वत से
लौट आया और दोनों पट्टियों को उस संदूक में रख दिया, जिसे मैंने बनाया था.
याहवेह के आदेश के अनुसार वे वहीं हैं. 6 (इस अवसर पर इस्राएलियों ने बेने-
जआकन के कुंओं से मोसेराह की ओर कूच किया. यहां अहरोन की मृत्यु हो

गई और उसे वहीं गाड़ दिया गया. उसके स्थान पर उसके पुत्र एलिएज़र ने पौरोहितिक सेवा शुरू की. 7 वहां से वे गुदगोदाह की दिशा में आगे बढ़े, फिर गुदगोदाह से योतबाथाह की ओर. यह नदियों की भूमि थी. 8 इस अवसर पर याहवेह ने यह तय कर दिया की लेवी गोत्र के लोग ही याहवेह की वाचा का संदूक उठाया करेंगे, वे ही याहवेह की उपस्थिति में ठहरे रहेंगे, कि उनकी सेवा करें और उनकी महिमा में उनके गीत गाया करें, जो आज तक होता आया है. 9 यही कारण है कि लेवी गोत्र के लिए न तो कोई भाग दिया गया है और न ही उनके भाइयों के साथ उनकी कोई मीरास है. खुद याहवेह इस वंश की मीरास हैं, जैसी प्रतिज्ञा याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा की गई थी.) 10 पहले की अवधि के समान मैं पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा. इस अवसर पर भी याहवेह ने मेरी प्रार्थना सुन ली; उन्होंने तुम्हें नाश करने का विचार ही त्याग दिया. 11 तब याहवेह ने मुझे आदेश दिया, “इन लोगों के अगुए होकर यात्रा शुरू करो, कि वे उस देश में प्रवेश करके उस पर अधिकार कर लें, जो देश इन्हें देने की प्रतिज्ञा मैंने शपथ के साथ उनके पूर्वजों से की थी.” 12 तब इस्राएल, तुमसे याहवेह की क्या अपेक्षा है, इसके अलावा कि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय का भाव रखो, उनसे प्रेम करो, याहवेह, अपने परमेश्वर की सेवा अपने पूरे हृदय और अपने पूरे प्राण से करो, 13 और याहवेह के आदेशों और नियमों का पालन करो, जो तुम्हारी ही भलाई के उद्देश्य से मैं तुम्हें दे रहा हूं? 14 याद रहे, आकाश, सबसे ऊंचा स्वर्ग, पृथ्वी और वह सब, जो पृथ्वी में है, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर का ही है. 15 फिर भी, याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों पर अपना प्रेम बनाए रखा. उनके बाद उनके वंशजों को उन्होंने चुना, अर्थात् अन्य सभी की अपेक्षा तुम सबको, जैसा आज तुम्हारे सामने स्पष्ट है. 16 इसलिये अपने हृदय का ख़तना करो और अब तो हठ करना छोड़ दो. 17 क्योंकि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ही देवताओं से अति महान परमेश्वर हैं. वह अधिराजों के अधिराज हैं, महान, सर्वशक्तिमान, भय-योग्य परमेश्वर. उनके व्यवहार में न तो भेद-भाव है और न ही घूस की कोई संभावना. 18 वह अनाथों और विधवाओं का न्याय करते हैं. वह परदेशी के प्रति अपने प्रेम के निमित्त उसे भोजन और वस्त्र प्रदान करते हैं. 19 तब तुम भी परदेशी के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करो; क्योंकि तुम खुद मिस्र देश में परदेशी ही थे. 20 तुममें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा हो. तुम उन्हीं की सेवा करोगे, उन्हीं के अनुरूप रहोगे और शपथ सिर्फ उन्हीं के नाम की लिया करोगे. 21 याहवेह ही तुम्हारी स्तुति के योग्य हैं, वही तुम्हारे परमेश्वर हैं, जिन्होंने तुम्हारे लिए ये अद्भुत और अचंभे के काम किए हैं, जिनके तुम गवाह हो. 22 जब तुम्हारे पूर्वज मिस्र में गए थे, तब वे गिनती में कुल सिर्फ सत्तर व्यक्ति ही थे, मगर अब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें ऐसे अनगिनत बना दिया है, जैसे आकाश के तारे.

11 इसलिये ज़रूरी है कि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर से प्रेम करो और हमेशा उनके निर्देशों, नियमों, अध्यादेशों का और आदेशों का पालन करो. 2 आज यह भी समझ लो: मैं तुम्हारी संतानों से बातें नहीं करता हूं, जिन्होंने न तो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के अनुशासन-शिक्षण को समझा है, न उन्होंने इसे देखा है न उन्होंने याहवेह की महानता को: उनके शक्तिशाली हाथ को, न उनकी बढ़ाई हुई भुजा को; 3 उनके द्वारा दिखाए गए चिन्ह, उनके द्वारा किए अद्भुत काम, जो उन्होंने मिस्र देश में मिस्र के राजा फ़रोह के और मिस्र की सारी प्रजा के सामने किए; 4 मिस्र की सेना के साथ, उसके घोड़ों और रथों के साथ, जब वे तुम्हारा पीछा करते चले जा रहे थे, कैसे याहवेह ने उन्हें लाल सागर के जल में डुबोकर पूरी तरह से नाश कर डाला था. 5 और उन्होंने निर्जन प्रदेश में तुम्हारे साथ क्या-क्या किया था, जब तक तुम यहां न पहुंच गए, 6 और याहवेह ने दाथान और अबीराम के साथ, जो एलियाब के पुत्र और रियूबेन के पोते थे, क्या किया था, जब धरती ने अपना मुख खोल उन्हें, सारे इस्राएल के बीच से, उनके घर-परिवारों को, उनके शिविरों को और उनके साथ आ रहे हर एक जीवधारी को कौर बना लिया. 7 मगर तुम तो याहवेह द्वारा किए हर एक महान काम के गवाह हो. 8 फिर तुम आज मेरे द्वारा भेजे हर एक आदेश का पालन करोगे, कि तुम मजबूत हो जाओ और आगे बढ़कर उस देश पर अधिकार कर सको, जिसे पार करने के बाद तुम उस पर अधिकार करने पर हो, 9 कि तुम उस देश में, जिसमें दूध और शहद की बहुतायत है, जिसे उन्हें और उनके वंशजों को देने की शपथ याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों से की थी, तुम लंबी उम्र के हो सको. 10 क्योंकि जिस देश के अधिकार के लक्ष्य से तुम वहां प्रवेश करने पर हो, वह मिस्र देश समान नहीं है, तुम जहां से निकलकर यहां आ पहुंचे हो, जहां तुम बीज बोते और सब्जी के बगीचे के समान अपने पैरों का प्रयोग सिंचाई के लिए किया करते थे. 11 वस्तुतः जिस देश पर अधिकार करने के उद्देश्य से तुम उसमें प्रवेश करने ही पर हो, वह पहाड़ियों और घाटियों का देश है, जो आकाश से हुई बारिश का जल जमा करता रहता है. 12 यह एक ऐसा देश है, जिसकी देखभाल याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर करते हैं; इस देश पर याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि सदैव लगी रहती है, साल के शुरू से लेकर साल के अंत होने तक. 13 यह तय है कि यदि तुम मेरे द्वारा आज दिए जा रहे इन आदेशों का पालन करोगे, अर्थात् याहवेह अपने परमेश्वर से प्रेम करोगे, और उन्हीं की सेवा अपने पूरा हृदय और अपने पूरा प्राणों से करोगे, 14 तो वह उपयुक्त मौसम में तुम्हारी भूमि के लिए बारिश भेजेंगे, शुरूआती और अंतिम बारिश, ताकि तुम अपने अन्न, नई दाखमधु और अपना तेल इकट्ठा कर सको. 15 वह तुम्हारे पशुओं के लिए मैदानों में घास उत्पन्न करते रहेंगे. तुम भरपूर खाकर तृप्त हो जाओगे. 16 यह ध्यान रहे कि तुम्हारे हृदय के साथ छल न कर दिया जाए, कि तुम पराए देवताओं की ओर होकर उनकी सेवा और उपासना न करने लगो. 17 नहीं तो याहवेह का कोप तुम पर भड़क उठेगा. तब वह आकाश को इस प्रकार रोक देंगे, कि बारिश के अभाव में भूमि अपनी उपज न दे सकेगी; फलस्वरूप तुम याहवेह द्वारा उत्तम देश से शीघ्र ही नाश हो जाओगे. 18 तुम मेरे ये आदेश हृदय में रखोगे, अपनी आत्मा में उतार लोगे; तुम इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बांध लोगे, ये तुम्हारे माथे पर टीका होंगे. 19 तुम ये आदेश अपनी संतान को सिखाया करना. जब तुम अपने घर में बैठे हुए हो, तब तुम इनका उल्लेख करोगे, जब तुम मार्ग में आगे बढ़ रहे हो और जब तुम विश्राम के लिए लेटोगे या जब तुम नींद से उठोगे. 20 तुम उन्हें अपने घर की चौखटों पर और अपने द्वारों पर लिखोगे, 21 कि उस देश में, जिसे देने की प्रतिज्ञा याहवेह ने शपथपूर्वक तुम्हारे पूर्वजों से की थी, आकाश और पृथ्वी के बने रहने तक तुम्हारी संतान गिनती में बढ़ती जाएं. 22 क्योंकि यदि तुम बड़ी सच्चाई से आदेशों का पालन करते रहोगे, जो मैं तुम्हें पालन करने का आदेश दे रहा हूं—याहवेह, अपने परमेश्वर से प्रेम करने का, उनकी पूरी नीतियों का पालन करने का और उनसे पूरी तरह सच्चा बने रहने का. 23 तब याहवेह इन सभी राष्ट्रों को तुम्हारे सामने से खदेड़ देंगे और तुम ऐसे राष्ट्रों को उनके देश से दूर कर दोगे, जो गिनती में तुमसे अधिक और तुमसे अधिक शक्तिशाली हैं. 24 ऐसा हर एक भूभाग, जिससे तुम्हारे पांवों के तलवे छुएंगे, तुम्हारी संपत्ति हो जाएगा. तुम्हारी सीमा निर्जन प्रदेश से लेकर लबानोन तक और उस नदी, यानी फरात से पश्चिम सागर तक. 25 कोई भी व्यक्ति तुम्हारे सामने ठहर न सकेगा. याहवेह तुम्हारे परमेश्वर, अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप, उस पूरे देश पर, जिसे तुम्हारे पैर छुएंगे, तुम्हारा भय, तुम्हारा आतंक भर देंगे. 26 अब सुनो, आज मैं तुम्हारे सामने एक आशीर्वाद और एक शाप प्रस्तुत कर रहा हूं— 27 आशीर्वाद उस स्थिति में, जब तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों का पालन करोगे, जिनका आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं; 28 और शाप उस स्थिति में, जब तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर

के आदेशों को ठुकराओगे, उस मार्ग से भटक जाओगे, जिसका आदेश मैं आज
तुम्हें दे रहा हूं, और उन पराए देवताओं का अनुसरण शुरू कर दोगे, जिन्हें तुम
जानते भी न थे. 29 और तब उस समय, जब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें उस
देश में पहुंचा देंगे, जिस पर अधिकार करने के लिए तुम उसमें प्रवेश करने पर
हो, तुम आशीर्वाद तो गेरिज़िम पर्वत पर से और शाप एबल पर्वत पर से घोषित
करोगे. 30 ये पर्वत यरदन नदी के पार हैं, पश्चिम दिशा में कुछ ही दूरी पर यह
कनानियों का देश है, जो अराबाह में गिलगाल के सामने, मोरेह के बांज वृक्षों
के निकट, निवास करते हैं. 31 क्योंकि अब तुम इस यरदन नदी को पार कर
उस देश पर अधिकार करने पर ही हो, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान
कर रहे हैं. तुम इस पर अधिकार करके इसमें निवास करने लगोगे. 32 जो जो
आदेश और विधान मैं आज तुम्हारे सामने स्पष्ट कर रहा हूं, तुम उनको पूरा करने
में सावधान रहोगे.

12 उस देश में, जो याहवेह तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुम्हें अधिकार
करने के लिए दे दिया है, ये नियम और विधि तुम आजीवन—जब तक
तुम इस पृथ्वी पर जीवित रहोगे, बड़ी सावधानीपूर्वक पालन करते रहोगे. 2 तुम
उन सारे स्थानों को पूरी तरह ध्वस्त कर दोगे, जहां तुम्हारे द्वारा उन राष्ट्रों से
छीने गए, उन स्थानों पर वे राष्ट्र अपने देवताओं की उपासना किया करते थे;
पर्वत शिखरों पर, टीलों पर और हर एक हरे वृक्ष की छाया में. 3 तुम उनकी
वेदियों को ध्वस्त कर दोगे, उनके पूज्य खंभों को चूर-चूर कर दोगे, उनकी
अशेराओं का दाह कर दोगे, उनके देवताओं की उकेरी हुई मूर्तियों को काट
डालोगे और उस स्थान से उनका नाम ही मिटा दोगे. 4 तुम, याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर के संदर्भ में इनकी रीति के अनुसार कभी कुछ न करोगे. 5 मगर ज़रूरी
है कि तुम याहवेह की वंदना उसी स्थान पर करोगे, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर
तुम्हारे समस्त गोत्रों को ठहराए हुए स्थानों में से चुनेंगे, कि वह वहां अपने
घर के लिए अपनी प्रतिष्ठा की स्थापना करें, तुम उसी स्थान को जाओगे; 6
तुम उसी स्थान पर अपनी होमबलि, अपनी बलियां अपने दसवां अंश, अपने
कामों के दान, मन्नत्तों की भेंटें, स्वैच्छिक भेंटे और पशुओं और भेड़ों के
पहिलौठे लेकर आओगे. 7 वही होगा वह स्थान, जहां तुम और तुम्हारा परिवार
याहवेह तुम्हारे परमेश्वर की उपस्थिति में भोजन करोगे. वहीं तुम अपनी सारी
उपलब्धियों के लिए, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा पूरी हुई हैं, उल्लास
करोगे. 8 वहां तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे, जो तुम आज यहां कर रहे हो.
अब तक तो तुममें से हर एक को जैसा भी सही लगता था करता जाता था, 9
क्योंकि अब तक तुम अपने स्थायी घर, उस मीरास तक नहीं पहुंचे हो, जो
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहे हैं, जहां तुम्हें विश्राम प्राप्त हो
सकेगा. 10 जब तुम यरदन नदी को पार करके उस देश में निवास करने लगो,
जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास के लिए प्रदान कर रहे हैं, जहां वह
तुम्हारे सारे निकटवर्ती शत्रुओं से तुम्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे, कि तुम्हें इस ओर से
शांति प्राप्त हो जाए. 11 तब वह स्थान, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर अपनी
प्रतिष्ठा के लिए चुनेंगे—तुम वहीं वह सब लेकर आओगे, जिसका मैं तुम्हें
आदेश दे चुका हूं: होमबलियां, तुम्हारी शेष बलियां, तुम्हारे दसवां अंश, तुम्हारे
हाथों के अनुदान, मन्नतों की भेंटें और स्वैच्छिक भेंटें. 12 तुम याहवेह अपने
परमेश्वर की उपस्थिति में उल्लास करोगे; तुम, तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां, तुम्हारे
सेवक-सेविकाएं और तुम्हारे नगर की सीमा में रह रहे लेवीगोत्रज, क्योंकि
तुम्हारे साथ उन्हें कुछ भी अंश अथवा मीरास बांटी नहीं गई है. 13 सावधान
रहना कि तुम अपनी इच्छा से किसी भी स्थान पर होमबलि न करने लगो; 14
मगर तुम होमबलि उसी स्थान पर चढ़ाओगे, जो स्थान याहवेह तुममें से किसी
एक गोत्र के स्थान में चुनेंगे और तुम वहीं वह सब करोगे, जिसका आदेश मैं
तुम्हें दे रहा हूं. 15 फिर भी, तुम अपने नगर की सीमा के भीतर पशु का वध कर
सकते हो, और उसके मांस का उपभोग कर सकते हो; अपनी इच्छा अनुसार,
जैसा भी याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें समर्थ बनाएं, जैसा कि उनका आशीर्वाद
तुम्हारे साथ है ही; तुम चाहे सांस्कारिक रीति से शुद्ध हो अथवा अशुद्ध, तुम
उसका उपभोग कर सकते हो, चाहे वह हिरण हो अथवा छोटा मृग. 16 सिर्फ
यह ध्यान रहे कि तुम इनका रक्त न खाओगे, रक्त को भूमि पर जल की तरह
बहा दिया जाना ज़रूरी है. 17 तुम्हारे अन्न, अंगूर के रस, तेल का दसवां अंश,
भेड़-बकरी अथवा पशुओं के पहिलौठे, मन्नत की भेंट, तुम्हारी स्वैच्छिक भेंट
और तुम्हारी हस्तकृति के अनुदान का उपभोग, तुम्हारी नगर सीमा के भीतर
करना अनुमति नहीं है. 18 इनका उपभोग तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के
सामने उसी स्थान पर करोगे, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर नामित करेंगे. तुम,
तुम्हारी संतान, तुम्हारे सेवक-सेविकाएं और तुम्हारे नगर में निवास कर रहा
लेवीगोत्रज और तुम याहवेह अपने परमेश्वर के सामने अपने सारे कामों में खुश
होओगे. 19 सावधान रहना कि तुम आजीवन अपने देश में उस लेवी को भुला न
दो. 20 जब याहवेह तुम्हारे परमेश्वर, तुमसे की गई अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप
तुम्हारी सीमा का आवर्धन करें, वहां तुम मन में इच्छा करो, "मुझे तो मांस का
भोजन करना है," तब तुम अपनी इच्छा अनुसार ऐसा भोजन अवश्य कर सकते
हो. 21 यदि वह स्थान, जिसे याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने अपनी प्रतिष्ठा-स्थापना
के लिए चुना है, तुम्हारे लिए बहुत दूर है, तब तो तुम अपने भेड़-बकरी या पशु
में से, जो तुम्हें याहवेह द्वारा ही प्रदान किया गया है. 22 मेरे आदेश के अनुसार
पशु का वध कर सकते हो, और उसका उपभोग अपने नगर की सीमा के भीतर
किसी भी स्थान पर कर सकते हो. 23 सिर्फ यह ध्यान रखना कि तुम लहू का
उपभोग न करोगे, क्योंकि लहू ही जीवन है. तुम मांस के साथ जीवन को नहीं
खा सकते. 24 तुम लहू का उपभोग नहीं करोगे; तुम इसे भूमि पर जल के
समान उंडेल दोगे. 25 खुद अपने ही कल्याण के निमित्त और तुम्हारे बाद
तुम्हारी संतान के लिए तुम लहू को नहीं खाओगे. यह करके तुम वह करोगे, जो
याहवेह की दृष्टि में सही है. 26 तुम याहवेह द्वारा नामित उस स्थान पर तुम सिर्फ
वे वस्तुएं लेकर जाओगे, जो तुम्हारे लिए पवित्र हैं और तुम्हारी मन्नत्तों से
संबंधित भेंटें भी. 27 तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की वेदी पर होमबलि, मांस
और रक्त अर्पित करोगे. तुम्हारी बलियों का रक्त याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की
वेदी पर उंडेल दिया जाएगा और तुम मांस का उपभोग कर लोगे. 28 बड़ी
सावधानीपूर्वक मेरे इन आदेशों को सुनो, कि तुम्हारा और तुम्हारी संतान का
भला हमेशा के लिए हो; क्योंकि ऐसा करने के द्वारा तुम वही कर रहे होगे, जो
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में सही है. 29 जब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
तुम्हारे सामने उन राष्ट्रों को नाश कर देंगे, जिन्हें तुम दूर करने जा रहे हो और
उन्हें वंचित कर तुम उनके देश में बस जाने पर हो, 30 सावधान रहना कि
तुम्हारे सामने विनाश होने के बाद तुम उनका अनुसरण करने में उलझ न जाओ,
कि उनके देवताओं के विषय में इस प्रकार पूछताछ न करने लगो, "ये राष्ट्र
अपने देवताओं की उपासना किस प्रकार किया करते थे? हम भी वैसा ही करना
चाहेंगे." 31 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति यह बिलकुल न करोगे,
क्योंकि उन्होंने तो अपने देवताओं के लिए वह सब किया है, जो याहवेह की
दृष्टि में घृणित है. वे तो अपने पुत्र-पुत्रियों तक को उन देवताओं के लिए दाह कर
देते हैं. 32 तुम सावधानीपूर्वक इन आदेशों का पालन करना, जो मैं तुम्हें दे रहा
हूं; इनमें न तो तुम कुछ भी संलग्न करोगे और न ही इसमें से कुछ निकालोगे.

13 यदि तुम्हारे बीच में किसी भविष्यद्वक्ता अथवा किसी ऐसे व्यक्ति का
उद्भव हो, जो स्वप्नों द्वारा भावी घोषित करता है, और वह चिन्ह और
अद्भुत काम प्रदर्शित करे, 2 और चिन्ह और अद्भुत काम उस विषय में सच
साबित हो जाएं; इस विषय में उसने कहा हो, "चलो, हम इन देवताओं का
अनुगमन करें, हम इनकी सेवा करें," (जबकि ये देवता परकीय देवता हैं) 3 तुम

उस भविष्यद्वक्ता, उस स्वप्नदर्शी की घोषणा पर ध्यान न दोगे; क्योंकि इसके
द्वारा याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर यह ज्ञात करने के उद्देश्य से तुम्हारी परीक्षा ले रहे
होंगे, कि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे प्राण
से प्रेम करते भी हो, अथवा नहीं. 4 अनुगमन तुम याहवेह अपने परमेश्वर का
करोगे और उन्हीं पर तुम्हारी श्रद्धा और भय बनाए रखोगे, तुम उनके आदेशों का
पालन करोगे, उनका स्वर सुनोगे, उन्हीं की वंदना करोगे और उन्हीं से सम्बद्ध
रहोगे. 5 मगर उस भविष्यद्वक्ता अथवा उस स्वप्नदर्शी का वध कर दिया जाए,
क्योंकि उसने याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह की योजना की है और
तुम्हें उस आदेश से विमुख करने के लिए फुसलाया है, जिसके पालन का आदेश
तुम्हें याहवेह ने दिया था, जिन्होंने तुम्हें मिस्र देश से, हां, दासत्व के जीवन से
निर्गत किया है. इसलिये ज़रूरी है, कि तुम अपने बीच से दुष्टता को खत्म कर
दो. 6 यदि तुम्हारा भाई, तुम्हारा पुत्र अथवा पुत्री, तुम्हारी प्रिय पत्नी, तुम्हारा
घनिष्ठ मित्र तुम्हें गुप्त रीति से फुसलाते हुए यह कहे: "चलो, इन देवताओं की
वंदना करें." (जिन्हें न तो तुम जानते हो और न ही इन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने कभी
जाना था, 7 उन देवताओं की वंदना, जो तुम्हारे पड़ोसी लोगों के देवता हैं, पास
के या दूर के पृथ्वी के एक छोर से दूसरे तक), 8 तुम उससे कदापि सहमत न हो
जाना. तुम उसकी ओर ध्यान ही न देना; उसके उपर करुणा-दृष्टि न करोगे, न तो
तुम उसकी रक्षा करोगे और न ही उसे कहीं छिपा दोगे. 9 ज़रूरी है कि तुम
उसका वध कर दो. उसके वध में तुम्हारा ही हाथ पहला होगा, इसके बाद देश
के अन्य लोगों का. 10 इस प्रकार तुम उसका पथराव कर दोगे, क्योंकि उसने
तुम्हें उन याहवेह तुम्हारे परमेश्वर से विमुख करने का प्रयास किया था, जिन्होंने
तुम्हें मिस्र देश से, उस दासत्व के जीवन से निर्गत किया है. 11 परिणामस्वरूप
समस्त इस्राएल इसके विषय में सुनेगा, उन पर आतंक छा जाएगा और तुम्हारे
बीच पुनः ऐसा कुकर्म नहीं हो सकेगा. 12 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा बस
जाने के लिए तुम्हें दिए जा रहे किसी नगर में तुम किसी व्यक्ति को यह कहते
हुए सुनो कि 13 तुम्हारे ही बीच में से कुछ निकम्मे व्यक्तियों ने जाकर उस नगर
के निवासियों को यह कहकर भटका दिया है, "चलो हम इन देवताओं की
वंदना करें," (जिन्हें तुम जानते ही नहीं), 14 तब तुम पूछताछ करोगे, खोज
करोगे, और हर जगह सावधानीपूर्वक बात का परीक्षण करोगे. यदि बात सच है
और यह साबित हो जाता है, कि यह कुकर्म तुम्हारे बीच में हुआ है, 15 तब तुम
उन नगरवासियों को ज़रूर ही तलवार के वार से मार दोगे, नगर का पूरा विनाश
होना ज़रूरी है, सभी कुछ, जो उस नगर में बसा है, पशु भी तलवार से घात कर
दिए जाएं. 16 तब तुम नगर के बीच में चौक पर सारी लूट सामग्री एकत्र कर
उसे होमबलि स्वरूप याहवेह अपने परमेश्वर के लिए दाह कर दोगे. यह हमेशा
के लिए खंडहर हो जाएगा. वह कभी भी दोबारा बनाया न जाएगा. 17 उन
वस्तुओं में से कुछ भी तुम्हारे हाथ में न रह जाए, जो विनाश के लिए तय हो
चुकी हैं, कि याहवेह का कोप शांत हो जाए, वह तुम पर कृपा और करुणा
प्रदर्शित कर तुम्हें समृद्ध बना दें; ठीक जैसी शपथ के साथ उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों
से वायदा किया था. 18 यदि तुम, याहवेह अपने परमेश्वर का स्वर सुनकर उन
सारे आदेशों का पालन करोगे, जो मैं आज तुम्हें सौंप रहा हूं, और वही करते
रहोगे, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में सही है.

14 तुम लोग याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की संतान हो; इसलिये किसी मरे हुए
व्यक्ति के लिए शोक व्यक्त करने के उद्देश्य से तुम न तो अपनी देह का
चीर-फाड़ करोगे और न ही अपने बालों को काटोगे, 2 क्योंकि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर के लिए तुम एक पवित्र, अलग, लोक समूह हो. याहवेह ने तुम्हें
सारी पृथ्वी के सारे मनुष्यों में से अपनी निज सम्पत्ति बनाने के लिए चुन लिया
है. 3 तुम किसी भी घृणित वस्तु का सेवन नहीं करोगे. 4 तुम निम्न लिखित
प्राणियों का उपभोग कर सकते हो: बैल, भेड़, बकरे, 5 हिरण, चिंकारा, मृग,
वन्य बकरा, साकिन, कुरंग, पर्वतीय भेड़. 6 कोई भी पशु, जिसके खुर अलग
हैं, जिसके खुर फटे हों और वह पागुर करता है, तुम्हारे लिए भोज्य है. 7 फिर
भी इन पशुओं में, जो पागुर ज़रूर करते हैं, जिनके खुर भी अलग हैं. तुम्हारे
लिए भोज्य नहीं है: ऊंट, खरगोश और पत्थर-बिज्जू. ये पागुर ज़रूर करते हैं
मगर इनके खुर अलग नहीं होते. ये तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं. 8 सूअर के खुर
अलग ज़रूर होते हैं, मगर वह पागुर नहीं करता, तुम्हारे लिए अशुद्ध है. तुम न
तो इनके मांस खाओगे न इनके शव को छुओगे. 9 वे सारे जलचर जिनके पंख
और शल्क हैं, तुम उनको खा सकते हो. 10 मगर कोई भी प्राणी, जिसके न तो
पंख हैं और न छिलके; ये खाने योग्य नहीं, तुम्हारे लिए ये अशुद्ध हैं. 11
कोई भी शुद्ध पक्षी तुम्हारे खाने के योग्य हैं. 12 मगर इन पक्षियों को तुम नहीं
खाओगे: गरूड़, गिद्ध और काला गिद्ध, 13 लाल चील, बाज और सभी प्रकार
की चीलें. 14 समस्त प्रकार के कौवे, 15 शुतुरमुर्ग, उल्लू, सागर काक और
शिकारे की सभी प्रजातियां, 16 छोटी प्रजाति के उल्लू, जलकौए और बड़ी
प्रजाति के उल्लू, 17 बखारी उल्लू, जल मुर्गी और शवभक्षी गिद्ध, 18 छोटा
गरूड़, सभी प्रकार के बगुले, टिटिहरी और चमगादड़. 19 सभी पंखयुक्त पतंगे
तुम्हारे लिए अशुद्ध घोषित किए गए हैं; इनको खाना मना है. 20 तुम किसी भी
शुद्ध पक्षी का उपभोग करने के लिए स्वतंत्र हो. 21 तुम किसी भी ऐसे जानवर
को नहीं खाओगे, जिसकी मृत्यु हो चुकी हो. तुम इसे अपने किसी विदेशी
नगरवासी को दे सकते हो, अथवा किसी नगरवासी को बेच सकते हो, कि वही
उसको खा ले, क्योंकि याहवेह अपने परमेश्वर के लिए तुम पवित्र लोग हो. तुम
मेमने को उसी की माता के दुग्ध में नहीं उबालोगे. 22 यह ज़रूरी है कि तुम जो
कुछ रोपित करो, भूमि के उस उत्पाद का दसवां अंश हर साल चढ़ाया करो. 23
उस स्थान पर, जिसे याहवेह तुम्हारे परमेश्वर अपनी प्रतिष्ठा करने के लिए चुनेंगे,
तुम अपने अन्न के, नए अंगूर के रस के, तेल के, तुम्हारे भेड़-बकरी और गाय-
बैलों के पहिलौठे के, दसवां अंश का उपभोग याहवेह अपने परमेश्वर की
उपस्थिति में करोगे कि तुम सदा-सर्वदा के लिए याहवेह अपने परमेश्वर के प्रति
श्रद्धा पालन करना सीख सको. 24 जब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें समृद्धि
प्रदान करें और यदि वह स्थान, जिसे याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा अपनी
प्रतिष्ठा के लिए स्थापित किया गया है, (इतनी दूर है कि तुम्हारे लिए दशमांश
वहां ले जाना मुश्किल सिद्ध हो रहा है), 25 तब तुम उस दशमांश का विनिमय
धनराशि से कर लेना, उस राशि को सुरक्षा के लिए अपने ही साथ रखकर
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा नामित स्थान पर प्रवास करना. 26 इस धनराशि
का उपयोग तुम स्वेच्छानुरूप कर सकते हो: बछड़ों, भेड़ों, अंगूर का रस
अथवा दाखमधु के खरीदने के लिए अथवा अपनी इच्छित वस्तु के खरीदने के
लिए. तुम सपरिवार याहवेह, अपने परमेश्वर की उपस्थिति में खुश होते हुए
इनको खा सकोगे. 27 यह भी ध्यान रहे कि तुम्हारे नगर में निवास कर रहे लेवी
की उपेक्षा न कर बैठो, क्योंकि तुम्हारी मीरास में उसका कोई भाग नहीं है. 28
हर एक तीन साल के अंत में ज़रूरी है कि तुम अपनी उपज का पूरा दसवां अंश
अपने नगर में इकट्ठा करना. 29 तब लेवी, (इसलिये कि तुम्हारे बीच मीरास में
उसका कोई अंश नहीं है), विदेशी, अनाथ, विधवा, जो तुम्हारे ही नगरवासी हैं,
आएंगे, इसमें से अपने उपभोग के लिए प्राप्त कर सकेंगे और संतुष्ट हो जाएंगे.
तब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे सारे परिश्रम को आशीषित कर तुम्हें समृद्धि
प्रदान करेंगे.

15 हर सात साल काल के पूरा होने पर तुम ऋण माफ कर दिया करोगे. 2
माफ करने की प्रक्रिया इस प्रकार है: हर एक ऋणदाता अपने पड़ोसी को
दी गई ऋणराशि को माफ कर देगा; वह अपने पड़ोसी और अपने इस्राएली भाई
को ऋण लौटाने के लिए मजबूर नहीं करेगा, क्योंकि यह याहवेह की ओर से
माफ घोषित किया जा चुका है. 3 हां, किसी विदेशी से तुम ऋण ली हुई राशि ले

सकते हो, मगर तुम्हारे द्वारा अपने इस्राएली भाई को दी गई राशि को तुम माफ
ज़रूर करोगे. 4 मगर तुम्हारे बीच गरीब कोई भी न पाया जाए, क्योंकि उस देश
में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे अधिकार में देने के लक्ष्य से मीरास-
स्वरूप प्रदान कर रहे हैं, याहवेह तुम्हें निःसंदेह समृद्ध बना देंगे, 5 यदि तुम सिर्फ
आज्ञाकारिता के भाव में याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के वचनों को सुनोगे, कि
आज मेरे द्वारा प्रस्तुत इन सभी आदेशों का पालन करो. 6 क्योंकि अपनी
प्रतिज्ञा के अनुसार याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हें समृद्धि प्रदान करेंगे, कि तुम
अनेक राष्ट्रों को ऋण दिया करोगे, मगर तुम ऋण कभी न लोगे. तुम अनेक राष्ट्रों
पर शासन करोगे, मगर वे तुम पर शासन नहीं करेंगे. 7 यदि तुम्हारे बीच तुम्हारा
ही कोई इस्राएली भाई गरीब है, जो उस देश में किसी नगर का निवासी है, जो
देश याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें दे रहे हैं, तो तुम उसके प्रति अपना हृदय कठोर
नहीं कर लोगे और न ही अपनी मुट्ठी बंद नहीं रखोगे; 8 तुम इसकी अपेक्षा,
जिस किसी रूप में उसे आवश्यकता है, उसे खुले मन से और उदारतापूर्वक
उधार दो या मदद करो. 9 सावधान रहना कि तुम्हारे हृदय में इस अवसर पर यह
घृणित, हीन और स्वार्थ-भरा विचार न आ जाए: "सातवां साल! ऋण मुक्त करने
का साल निकट है!" और तुम्हारी अभिवृत्ति उस गरीब इस्राएली भाई के प्रति
द्वेष भरी हो जाए, परिणामस्वरूप तुम उसे कुछ भी न दो. उस स्थिति में वह
तुम्हारे विरुद्ध याहवेह की दोहाई देगा और तुम खुद पर पाप ले आओ. 10 तुम
उसे उदारतापूर्वक दोगे, उसे देते हुए तुम्हारे हृदय में ज़रा भी वेदना न हो; क्योंकि
तुम्हारे इस काम के लिए याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे सारे कामों में, सारी
ज़िम्मेदारियों को निभाने में समृद्धि प्रदान करेंगे. 11 देश में गरीबों का अस्तित्व
तो कभी समाप्त ही न होगा; इसलिये मेरा आदेश तुम्हारे लिए यह है, तुम अपने
इस्राएली भाई के प्रति पूरी तरह से उदार भाव दिखाओगे; वह भाई, जो तुम्हारे
देश में गरीब और साधन विहीन है. 12 यदि तुम्हारा संबंधी, इब्री पुरुष या स्त्री
तुम्हें बेची गई है, तो वह छः साल तक तो तुम्हारी सेवा करेंगे, मगर सातवें साल
तुम उसे छोड़ दोगे. 13 जब तुम उसे छोड़ दोगे, तब तुम उसे खाली हाथ विदा
नहीं करोगे. 14 तुम उसे अपनी भेड़-बकरियों से, अपने खलिहान से और
अपने अंगूर के रसकुंड में से उदारतापूर्वक देकर ही विदा करोगे; याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें जैसे आशीष दी है, वैसे ही तुम भी उसी परिमाण में उन्हें
दो. 15 यह बात तुम न भूलोगे, कि तुम खुद मिस्र देश में दास थे और याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें वहां से छुड़ाया; यही कारण है कि मैं आज तुम्हें यह
आदेश दे रहा हूं. 16 भविष्य में, यदि वह सेवक तुमसे यह कहे, "मैं आपको
छोड़कर जाना नहीं चाहता," क्योंकि उसे तुमसे प्रेम हो चुका है, और तुम्हारे
परिवार से और उसे तुम्हारे साथ सहजता भी महसूस होती है, 17 इस स्थिति में
तुम द्वार की चौखट पर एक सूए के द्वारा उसके कान को दरवाजे पर लगाकर
छेदना. इससे वह पूरी तरह तुम्हारा होकर रह जाएगा. यही तुम्हें अपनी सेवा के
बारे में भी करना होगा. 18 तुम्हारी दृष्टि में उसे मुक्त कर देना कोई कठिन काम
न हो. उसने इन छः सालों में वैतनिक श्रमिक की अपेक्षा दोगुनी सेवा दी है. तब
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे हर एक काम में तुम्हें समृद्धि प्रदान करेंगे. 19
तुम याहवेह, अपने परमेश्वर को अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों में से
हर एक पहिलौठे नर को समर्पित कर दोगे. तुम न पहिलौठे बछडे से मेहनत
कराओगे और न ही भेड़-बकरियों के पहिलौठे मेमने का ऊन कतरोगे. 20 तुम
अपने परिवार के साथ हर साल याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने उस स्थान पर
इनका उपभोग करोगे, जो याहवेह द्वारा चुना जाएगा. 21 मगर यदि इसमें किसी
प्रकार का दोष हो, जैसे विकलांगता, अंधापन या दूसरा कोई भी स्पष्ट दोष, तो
तुम इसे याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के लिए बलि अर्पित नहीं करोगे. 22 तुम नगर
द्वारों के भीतर इसका उपभोग करोगे. शुद्ध अथवा सांस्कारिक रूप से अशुद्ध
दोनों ही इसका उपभोग करोगे, जिस प्रकार हिरण अथवा चिंकारे का उपभोग
किया जाता है. 23 सिर्फ ध्यान रहे कि तुम उसके लहू का सेवन नहीं करोगे;
तुम्हें लहू को जल समान भूमि पर उंडेल देना होगा.

16 अबीब तुम्हारे लिए उत्सव का महीना हो. तुम इस महीने में याहवेह,
अपने परमेश्वर के सम्मान में फ़सह उत्सव मनाया करो. क्योंकि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने अबीब माह में रात में तुम्हें मिस्र देश से निकाला था. 2 तुम
याहवेह द्वारा अपनी प्रतिष्ठा की स्थापना के लिए नामित स्थान पर अपने भेड़-
बकरियों और गाय-बैलों में से याहवेह तुम्हारे परमेश्वर को फ़सह बलि अर्पण
करोगे. 3 इस भोजन में खमीर बिलकुल न मिला हो. सात दिनों तक तुम खमीर
रहित भोजन—दुःख का भोजन—का उपभोग ही करोगे; क्योंकि मिस्र देश से
तुम्हारा निकलना जल्दी में हुआ था. इस उत्सव का एकमात्र उद्देश्य यही है कि
तुम जीवन भर मिस्र से निकलने के दिन को याद रख सको. 4 इन सात दिनों में
तुम्हारी सारी सीमा के भीतर खमीर देखा ही न जाए. जिस पशु की बलि पहले
दिन शाम में दी जाती है, उसका मांस सुबह तक बाकी न रह जाए. 5 तुम्हें किसी
भी नगर में बलि चढ़ाने की इजाज़त नहीं है जो तुम्हें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
द्वारा दिए जा रहे हैं; 6 सिवाय उस स्थान के, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर उनके
सम्मान की स्थापना के निमित्त नामित करेंगे. तुम शाम को सूरज डूबने के समय
में फ़सह बलि अर्पित चढ़ाओगे; उसी समय पर, जिस समय पर तुम मिस्र देश से
निकले थे. 7 तुम इसे उसी स्थान पर पकाओगे और उसका उपभोग करोगे,
जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर चुनेंगे. सुबह तुम अपने-अपने शिविरों को लौट
जाओगे. 8 छः दिन तुम खमीर रहित रोटी को ही खाओगे; सातवें दिन याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर के लिए एक पवित्र सभा होगी, इस दिन तुम किसी भी प्रकार
की मेहनत न करना. 9 तुम्हें तैयार उपज को इकट्ठी करने के लिए शुरू के
दिन से सात सप्ताह गिनने होंगे. 10 तब तुम्हें सप्ताहों के उत्सव को मनाना
होगा. याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के लिए उनसे प्राप्त हुई आशीषों के अनुपात में
स्वैच्छिक भेंट लेकर उपस्थित होना होगा. 11 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के
सामने, उस स्थान पर उल्लसित होओगे, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर अपनी
प्रतिष्ठा की स्थापना के लिए चुनेंगे; तुम, तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां, तुम्हारे सेवक-
सेविकाएं और तुम्हारे नगर में निवास कर रहे लेवीगोत्रज, साथ ही वह परदेशी,
अनाथ, विधवा, जो तुम्हारे बीच में निवास करते हैं. 12 तुम इस बात को भूल न
जाना, कि तुम मिस्र देश में दास थे. इन नियमों के पालन के विषय में तुम
सावधान रहोगे. 13 कुटीरों का उत्सव मनाने का अवसर होगा, खलिहान से
और अंगूरों के रसकुंड से उत्पाद एकत्र कर चुकने के सात दिन बाद. 14 इस
उत्सव में तुम आनंद मनाओगे—तुम, तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां, सेवक-सेविकाएं,
लेवीगोत्रज, परदेशी, अनाथ और तुम्हारे नगर की विधवाएं. 15 सात दिन तुम
उस स्थान में, जो याहवेह द्वारा चुना गया है, यह उत्सव मनाओगे, क्योंकि
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे सारी उत्पाद में, तुम्हारे हर एक उद्यम में
समृद्ध करेंगे, कि तुम हर एक पक्ष में उल्लसित हो जाओ. 16 तुममें से हर एक
पुरुष साल में इन तीन अवसरों पर, अर्थात् खमीर रहित रोटियों का उत्सव,
सप्ताहों का उत्सव और कुटीरों का उत्सव पर, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के
सामने उस स्थान पर उपस्थित होगा, जिसे याहवेह नामित करेंगे. ध्यान रहे कि
कोई भी याहवेह के सामने खाली हाथ उपस्थित न हो: 17 हर एक व्यक्ति
अपनी क्षमता के अनुसार भेंट प्रस्तुत करेगा, जैसा जैसा याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
ने तुम्हें प्रदान किया है. 18 उन नगरों में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें,
तुम्हारे गोत्रों के अनुसार प्रदान कर रहे हैं, तुम वहां न्यायाध्यक्ष और अधिकारी
नियुक्त करोगे, वे ही सच्चाई से प्रजा का न्याय किया करेंगे. 19 तुम न्याय में
विकृति न आने दोगे; तुम भेद-भाव नहीं करोगे और घूस नहीं लोगे; क्योंकि
घूस बुद्धिमानों को अंधा कर देती और धर्मियों के शब्दों को खराब कर देती है.
20 तुम न्याय और सिर्फ न्याय ही का पालन करो, कि तुम जीवित रह सको और

उस देश पर अधिकार कर सको, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर
रहे हैं. 21 जब तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के लिए वेदी को बनाओ, तो अशेरा
खंभे के रूप में किसी वृक्ष को न लगाना, 22 वस्तुतः तुम अपने लिए किसी भी
ऐसे खंभे को नहीं बनाओगे, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है.

17 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर को ऐसा कोई बछड़ा अथवा भेड़ अर्पित
नहीं करोगे, जिसमें किसी प्रकार का कलंक अथवा कोई दोष है,
क्योंकि यह याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है. 2 यदि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए तुम्हारे नगरों में तुम्हारे बीच में कोई ऐसा
पुरुष अथवा स्त्री है, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की वाचा को तोड़कर उनकी
दृष्टि में गलत काम करे, 3 जाकर पराए देवताओं की सेवा-उपासना करने लगे
अथवा सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों की वंदना करने लगे, जो किसी रीति से मेरा
आदेश नहीं है, 4 यदि तुम्हें इसकी सूचना दी गई है अथवा तुमने इस विषय में
सुना हुआ है; तब तुम इसकी सूक्ष्म छानबीन करोगे. देख लेना कि सूचना सत्य
ही है, और इस्राएल में यह घटना घटित हुई ही है, 5 तब तुम उस पुरुष अथवा
स्त्री को, जिसके द्वारा वह मृत्यु दंड के योग्य कृत्य किया गया है, नगर के बाहर
ले जाकर उसका पथराव करोगे. 6 मृत्यु दंड के लिए तय व्यक्ति को दो या तीन
गवाहों के सबूत पर मृत्यु दंड दिया जाए; सिर्फ एक गवाह के सबूत पर किसी को
मृत्यु दंड न दिया जाए. 7 उसे मृत्यु देने की प्रक्रिया में गवाहों के हाथ पहले होंगे
इसके बाद दूसरों के हाथ. अपने बीच से तुम यह बुराई इस तरह से साफ़ करोगे.
8 यदि कोई विषय बहुत दुष्कर होने के कारण बिना निर्णय के रह जाता है, जैसे
हत्याएं, विभिन्न प्रकार के वाद, विभिन्न प्रकार के हमले और तुम्हारे न्यायालय
में लाई गई विभिन्न विवादित स्थितियां; तब तुम उस स्थान को जाओगे, जिसे
याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने चुना है. 9 वहां तुम लेवी पुरोहित के सामने जाओगे
अथवा न्यायाध्यक्ष के सामने, जो उस अवसर पर उस पद पर काम करते होंगे,
तुम उन्हीं से पूछताछ करोगे और वे तुम्हें उस विवाद पर निर्णय देंगे. 10 याहवेह
द्वारा नामित उस स्थान से लौटकर तुम वही करोगे, जिसका आदेश वे तुम्हें देंगे
और तुम उनके द्वारा दिए गए निर्देशों के पालन करने के विषय में सतर्क रहोगे.
11 तुम्हें उनके द्वारा निर्देशित विधान की शर्तों का और उनके द्वारा घोषित निर्णय
का निष्पादन करना होगा. उस आदेश से विमुख तुम नहीं होओगे, न तो दाएं
और न बाएं. 12 वह व्यक्ति, जो दुराग्रह में न तो उस पुरोहित के आदेश की
अनसुनी करता है, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के द्वारा उनकी सेवा के लक्ष्य से
उस पद पर नियुक्त किया गया है और न ही उस न्यायाध्यक्ष की, उस व्यक्ति को
प्राण-दंड दिया जाए. तुम इस्राएल से इस बुराई को खत्म करोगे. 13 फलस्वरूप
सभी लोग हर जगह इसके बारे में सुनेंगे और उन पर आतंक छा जाएगा और वे
इसके बाद दोबारा ऐसी दुष्टता नहीं करेंगे. 14 जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे,
जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें देने पर हैं, तुम उसका अभिग्रहण कर लो और
उसमें बस जाओ; और तुम वहां यह विचार करने लगो: "हम भी निकटवर्ती
देशों के समान अपने लिए राजा चुनेंगे," 15 निश्चित ही तुम अपने लिए वह
राजा नियुक्त करोगे, जिसे याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तय करेंगे. वह तुम्हारी ही
जाति का होगा, जिसे तुम अपने लिए राजा नियुक्त करोगे; तुम किसी विदेशी को
अपने लिए राजा नियुक्त नहीं करोगे, जो तुम्हारा स्वजातीय नहीं है. 16 इसके
अलावा, वह अपने घोड़ों की गिनती में वृद्धि नहीं करेगा और न ही वह प्रजा के
लोगों को मजबूर करेगा, कि वे मिस्र देश में जाकर घोड़ों की गिनती में वृद्धि
करें; क्योंकि तुम्हारे लिए याहवेह का आदेश है, "तुम कभी भी वहां नहीं
लौटेंगे." 17 वह अपनी पत्नियों की गिनती में वृद्धि नहीं करेगा, नहीं तो उसका
मन लक्ष्य से फिर जाएगा. वह अपने लिए सोने-चांदी में भी वृद्धि का यत्न न करे.
18 जब वह अपने राज सिंहासन पर विराजमान हो, वह चर्मपत्र पर लेवी पुरोहित
के सामने खुद अपने हाथ से व्यवस्था की एक नकल बनाएगा. 19 राजा के
लिए यह तय किया गया है, कि वह आजीवन इसका वाचन करे, कि वह
व्यवस्था में लिखे आदेशों और नियमों का सावधानीपूर्वक पालन कर सके और
याहवेह अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा का अभ्यास कर सके, 20 ताकि वह अपने
हृदय में यह विचार न करने लगे, कि वह अपनी प्रजा के लोगों से उत्तम है और
वह आदेशों से दूर न हो सके; न दायें न बायें, जिससे कि वह और उसके वंशज
इस्राएल पर उसके साम्राज्य में लंबे समय तक शासन कर सके.

18 लेवी पुरोहितों का, अर्थात् समस्त लेवी गोत्र का, शेष इस्राएली गोत्रों के
साथ कोई भी मीरास प्रदान नहीं की गई है. उनका भोजन होगा याहवेह
को समर्पित भेंटें और याहवेह का अंश. 2 अपने देशवासियों में उनकी मीरास
कुछ भी नहीं होगी, याहवेह ही अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप उनकी मीरास हैं. 3
प्रजाजनों के पुरोहितों के प्रति जवाबदारी इस प्रकार होगी: उनकी ओर से, जो
बलि चढ़ाते हैं; चाहे वह बैल हो या भेड़, वे इसका कांधा, दो कपोल और पेट
उस पुरोहित को दे दिया करेंगे. 4 तुम उसे अपनी उपज का प्रथम उत्पाद भेंट में
दिया करोगे; तुम्हारे अन्न का, अंगूर के रस का, तेल का और तुम्हारी भेड़ों के
कतरे गए ऊन का, 5 याद रहे, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने सारे गोत्रों में से
उसे और उसके वंशजों को याहवेह के सम्मान के लिए तत्पर रहकर सेवा
करने के लिए चुना है. 6 यदि इस्राएल राष्ट्र के किसी भी नगर से कोई लेवी
स्वेच्छानुरूप अपना निवास स्थान छोड़कर उस स्थान पर जा पहुंचता है, जो
याहवेह द्वारा चुना गया है, 7 तब वह याहवेह, उनके परमेश्वर के सम्मान के
लिए अपने साथी लेवीगोत्रजों के समान, जो याहवेह के सामने सेवा के लिए
तैयार रहते हैं, सेवारत हो जाएगा. 8 उन सभी के उपयोग के लिए तय भाग
के समान होगा, अलावा उस अंश के, जो उन्हें अपने पूर्वजों की संपत्ति की
बिक्री से मिला है. 9 जब तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा दिए उस देश
में प्रवेश करोगे, तुम उन राष्ट्रों की घृणित प्रथाओं का अनुसरण करना नहीं
सीखोगे. 10 तुममें से एक भी व्यक्ति ऐसा न पाया जाए, जो अपने पुत्र अथवा
पुत्री को उनकी प्रथा के अनुसार आग के संस्कार के लिए इस्तेमाल करता है,
जो भविष्यवाणी का प्रयोग करता है, जो जादू-टोना करता है, जो शगुन व्याख्या
करता है, या ओझा-सम्पर्क करता है, 11 या वह, जो सम्मोहन का प्रयोग करता
है, या प्रेतसाधक या प्रेतवादी या वह, जो मृत आत्मा को बुलाकर पूछताछ
करता है. 12 क्योंकि कोई भी, जो यह सब करता है, याहवेह के सामने घृणित
है. इन्हीं घृणित कामों के कारण याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर उन्हें तुम्हारे सामने
से खदेड़ देंगे. 13 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने निर्दोष रहोगे. 14
क्योंकि वे राष्ट्र, जिन्हें तुम उनके देश से वंचित करने पर हो, उनके आदेशों का
पालन करते हैं, जो जादू-टोना करते और भावी प्रकट करते हैं; मगर तुम वह हो,
जिन्हें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने यह सब करने से निषिद्ध किया है. 15 याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे बीच में, तुम्हारे ही देशवासियों में से तुम्हारे लिए मेरे
समान एक भविष्यवक्ता को उठाएंगे. तुम उसी के आदेशों का पालन करोगे. 16
यह परिणाम तुम्हारी उस विनती के अनुसार ही है जो तुमने उस सभा के दिन
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर से होरेब पर्वत पर की. तुमने मांगा था, "मुझे याहवेह
हमारे परमेश्वर की आवाज दोबारा सुननी न पड़े, हमें यह भीषण आग देखनी
न पड़े, नहीं तो हमारी तो मृत्यु हो जाएगी." 17 याहवेह ने मुझ पर प्रकट
किया, "सही ही है उनकी प्रार्थना. 18 उन्हीं के देशवासियों में से मैं तुम्हारे
समान एक भविष्यद्वक्ता का उद्भव करूंगा. वही उनके लिए मेरे विचार कहेगा.
वही मेरे सभी आदेशों का उद्बोधन उनके लिए करेगा. 19 तब यह होगा कि
जो कोई उसके द्वारा मेरी ओर से दिए गए आदेशों की उपेक्षा करेगा, खुद मैं
उसे उत्तरदायी ठहराऊंगा. 20 मगर यदि कोई भविष्यद्वक्ता घमण्ड से भरा,
दुस्साहसी संदेश मेरे नाम में भेजता है, जो मैंने उसे संबोधन के लिए भेजा ही न
था, अथवा यदि वह पराए देवताओं की ओर से बातचीत करता है, तो वह

भविष्यद्वक्ता मृत्यु दंड के योग्य है.” 21 तुम यह विचार कर सकते हो, “हमें
यह मालूम कैसे होगा कि वह संदेश याहवेह द्वारा भेजा संदेश नहीं है?” 22 जब
कभी कोई भविष्यद्वक्ता याहवेह की ओर से संदेश भेजने का दावा करता है, वह
संदेश सच नहीं होता, उसकी यह घोषणा सच साबित नहीं होती, जो याहवेह
द्वारा भेजी नहीं गई थी. उस भविष्यद्वक्ता ने दुस्साहस भरा संदेश दिया था उस
भविष्यद्वक्ता से तुम्हें कोई भय न हो.

19 जब याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर जनताओं को नाश करेंगे, जिनकी भूमि
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहे हैं, जिस भूमि से तुम उन्हें
दूर कर दोगे, और उनके नगरों और घरों में जा बसोगे, 2 तुम्हें उस देश में, जो
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें अधिकार करने के उद्देश्य से दे रहे हैं, अपने लिए
तीन नगर अलग कर देने होंगे. 3 तुम्हें अपने लिए मार्गों का निर्माण करना
होगा. तुम पूरे भाग को, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें संपत्ति के रूप में प्रदान
करेंगे, तीन भागों में बांटोगे, जिससे की हत्यारा पलायन कर यहां शरण ले सके.
4 उस व्यक्ति के लिए, जो पलायन कर इन नगरों में आश्रय लेता है, कि वह
जीवित रह सके, विधान यह है: यदि किसी व्यक्ति से अपने साथी की हत्या
जानबूझकर नहीं होती, जिसके हृदय में उस साथी के प्रति घृणा नहीं थी. 5
उदाहरणार्थ, जब कोई व्यक्ति अपने साथी के साथ कुल्हाड़ी ले वन में लकड़ी
काटने गया हो, वह लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी का वार करता है और
उसी समय कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उस साथी को जा लगती है, और उसकी
मृत्यु हो जाती है, वह व्यक्ति पलायन कर इनमें से किसी एक नगर को चला
जाए, कि उसके प्राण सुरक्षित रह सकें. 6 नहीं तो, हत्या का बदला लेनेवाला
क्रोध में उसका पीछा करे और मार्ग लंबा होने के कारण उसे पकड़कर उसकी
हत्या ही कर डाले-जबकि वह मृत्यु दंड के योग्य नहीं था, क्योंकि उसके मन
में मृतक के प्रति कोई बैर था ही नहीं. 7 तब मेरा यह आदेश है, तुम्हें अपने
लिए इस उद्देश्य से तीन नगर अलग करना ज़रूरी है. 8 यदि याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर तुम्हारी सीमा का आवर्धन करें; ठीक जैसी प्रतिज्ञा उन्होंने पूर्वजों
से शपथ के साथ की थी, और वह तुम्हें वे सारे देश दे देते हैं, 9 यदि तुम
सावधानीपूर्वक इस पूरा आदेश का पालन करते हो, जो आज मैं तुम्हें दे रहा
हूं—याहवेह, अपने परमेश्वर से प्रेम करो और हमेशा उन्हीं की नीतियों का
पालन करते रहो—तो तुम इन तीन नगरों के अलावा तीन अन्य नगर भी शामिल
कर लोगे. 10 परिणामस्वरूप तुम्हारे देश में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें
मीरास-स्वरूप प्रदान कर रहे हैं, तुम पर मनुष्य हत्या का दोष न आ पड़े और
तुम्हारे बीच में किसी निर्दोष को मृत्यु दंड न दे दिया जाए. 11 मगर यदि कोई
व्यक्ति अपने पड़ोसी के प्रति बैर के कारण घात लगाकर बैठकर उस पर प्रहार
करके उसकी मृत्यु हो जाती है, तब वह इनमें से किसी एक नगर को पलायन
कर जाता है, 12 तब नगर के पुरनिए उसे वहां से लेकर मृत्यु दंड के लिए हत्या
का बदला लेनेवाले को सौंप देंगे. 13 तुम उस पर ज़रा भी कृपा नहीं करोगे.
तुम्हें इस्राएल राष्ट्र में से निर्दोष की हत्या को शुद्ध करते हुए उसका दोष दूर
करना है, कि तुम्हारा भला हो. 14 उस देश में, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
तुम्हें मीरास के रूप में दे रहे हैं, कि तुम इस पर अधिकार कर लो, तुम अपने
पड़ोसी की उन सीमा-चिन्हों के साथ छेड़-छाड़ नहीं करोगे, जो पहले ही
उनके पूर्वजों द्वारा तय की जा चुकी थी. 15 किसी व्यक्ति द्वारा किए गए किसी
भी पाप के काम या पाप के बारे में सिर्फ एक व्यक्ति का गवाह होना स्वीकार
नहीं हो सकता; एक बात की पुष्टि के लिए दो या तीन गवाहों की ज़रूरत
होती है. 16 यदि कोई झूठा गवाह उठकर किसी पर किसी गलत काम का
आरोप लगाए, 17 तो दोनों विवादी याहवेह के सामने और उन पुरोहितों और
न्यायाध्यक्षों के सामने उपस्थित होंगे, जो उस अवसर पर न्यायी होंगे. 18
न्यायाध्यक्ष बारीकी से पूछताछ करेंगे और यदि यह मालूम हो जाए, कि वह
झूठा गवाह है और उसने अपने भाई पर झूठा आरोप लगाया है, 19 तब तुम
उसके साथ वही करोगे, जो उसके भाई के प्रति उसकी मंशा थी. अपने बीच की
बुराई तुम इसी तरह से निकालोगे. 20 बाकी लोग यह सुनकर डर जाएंगे और
ऐसी स्थिति तुम्हारे बीच फिर कभी न होगी. 21 इस विषय में कृपा दिखाई न
जाए: प्राण का बदला प्राण से, आंख का आंख से, दांत का दांत से, हाथ का हाथ
से, पैर का पैर से किया जाए.

20 जब तुम शत्रुओं से युद्ध करो और तुम्हें यह दिखाई दे कि उनके घोड़े,
रथ और सैनिक तुमसे गिनती में अधिक हैं, भयभीत न हो जाना, क्योंकि
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर जिन्होंने तुम्हें मिस्र देश से निर्गत किया है, तुम्हारे साथ
हैं. 2 युद्ध के लिए जाने के पूर्व पुरोहित तुम्हारे सामने उपस्थित लोगों से बातें
करेगा. 3 वह उनसे कहेगा: “हे इस्राएल: सुनो, आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध
के लिए आए हो. मन के कच्चे न हो जाओ. न डरना; न उनके सामने थरथरा
जाना, 4 क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर वह हैं, जो तुम्हारी रक्षा के लिए
तुम्हारी ओर से तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करेंगे.” 5 अधिकारी भी सैनिकों से यह
कहें: “क्या तुममें से कोई ऐसा है, जिसने घर को नया नया बनाया है, और अब
तक उसका समर्पण नहीं कर सका है? वह अपने घर को लौट जाए; नहीं तो
उसकी मृत्यु के बाद कोई दूसरा व्यक्ति इसका समर्पण करेगा. 6 क्या तुममें से
कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने अंगूर का बगीचा लगाया है और वह अब तक
अंगूरों को खा नहीं सका है? वह अपने घर को लौट जाए, नहीं तो कोई दूसरा
व्यक्ति अंगूरों का उपभोग करने लगेगा. 7 क्या तुममें कोई ऐसा है, जिसके
विवाह की बात चल रही है, मगर विवाह नहीं हुआ? वह अपने घर को लौट
जाए, नहीं तो उसकी मृत्यु की स्थिति में कोई अन्य पुरुष उस स्त्री से विवाह कर
लेगा.” 8 इसके बाद अधिकारी सैनिकों से यह भी कहेंगे: “तुममें क्या कोई
ऐसा भी है, जो भयभीत और डरपोक है? वह अपने घर को लौट जाए, कि
उसके प्रभाव से अन्य भाइयों के भी हृदय पिघल न जाएं.” 9 जब अधिकारी
सैनिकों से अपनी बातें कह चुकें, तब वे सैनिकों के ऊपर सेनापति ठहरा दें. 10
जब तुम उस नगर के निकट पहुंचो, जिस पर तुम हमला करने पर हो, तब तुम
उनके सामने संधि करने का प्रस्ताव रखोगे. 11 यदि वह संधि के लिए राज़ी हो
जाए, और तुम्हारा स्वागत करे, तब सारे नगरवासी तुम्हारे लिए बेगार होकर
तुम्हारी सेवा करेंगे. 12 मगर यदि वह नगर संधि के लिए राज़ी न हो, बल्कि
तुमसे युद्ध करने को तैयार हो जाए, तब तुम उसकी घेराबंदी करोगे. 13 जब
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर उसे तुम्हारे अधीन कर देंगे, तब तुम हर एक पुरुष का
तलवार से वध कर दोगे. 14 स्त्रियां, बालक, पशु और नगर की समस्त सामग्री
तुम अपने लिए लूट की सामग्री स्वरूप रख लेना. शत्रुओं से प्राप्त सामग्री, जो
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान करेंगे, तुम अपने प्रयोग के लिए रख लोगे.
15 उन नगरों के प्रति, जो तुम्हारे देश से बहुत दूर रहे, तुम्हारी यही नीति होगी,
वे नगर जो तुम्हारे देश से निकटवर्ती हैं, उनके प्रति नहीं. 16 सिर्फ उन देशों के
नगरों के, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास-स्वरूप प्रदान कर रहे हैं, तुम
किसी भी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ोगे. 17 जिन्हें तुम पूरी तरह से नाश कर
दोगे, वे ये हैं: हित्ती, अमोरी, कनानी, परिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी; जैसा कि
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर का तुम्हारे लिए आदेश है. 18 इसलिए कि वे तुम्हें
अपनी सारी घृणित प्रथाएं सिखा न दें, जो वे अपने उन देवताओं के सम्मान में
करते रहे हैं, कि इनका पालन कर तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप
करो. 19 जब तुम युद्ध के उद्देश्य से किसी नगर की घेराबंदी कर रहे हो, कि उसे
अधीन कर लो और यह प्रक्रिया लंबी होती जा रही हो, तब तुम वृक्षों का
काटना शुरू नहीं करोगे; क्योंकि इनसे तुम्हें तुम्हारा भोजन प्राप्त हो सकेगा. तुम
वृक्षों को नहीं काटोगे. क्या भूमि से उगा हुआ वृक्ष कोई मनुष्य है, कि तुम
उसकी घेराबंदी करो? 20 सिर्फ वे वृक्ष ही काटे जा सकते हैं, जिनके संबंध में

तुम्हें यह निश्चय है कि वे फलदायी वृक्ष नहीं है, कि तुम इनकी लकड़ी से उस
नगर के विरुद्ध उसके गिरने तक घेराबंदी के उपकरणों को बना सको, जो तुमसे
युद्ध के लिए उठा है.

21 उस देश की भूमि पर, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें स्वामित्व के
उद्देश्य से प्रदान कर रहे हैं, वहां यदि कोई मरा हुआ व्यक्ति खुले मैदान में
पड़ा हुआ दिखाई दे और यह मालूम न हो कि किसने उस पर यह प्रहार किया
है, 2 तब तुम्हारे पुरनिए और तुम्हारे न्यायाध्यक्ष जाकर उस शव से निकटवर्ती
नगरों की दूरी मापेंगे. 3 तब उस नगर के पुरनिए, जो निकटतम है, गाय-बैलों
से एक ऐसी बछिया लेंगे, जिससे कोई काम न लिया गया हो, न हल में, न बोने
में 4 तब वे पुरनिए उस बछिया को एक ऐसी घाटी में ले जाएंगे, जहां जल
प्रवाहित हो रहा हो और वे उस घाटी में उस बछिया की गर्दन तोड़ देंगे. 5
तब लेवी पुरोहित निकट आ जाएंगे, क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने उन्हें
याहवेह के सम्मान में उनकी सेवा के उद्देश्य से चुना है; हर एक विवाद और हर
एक हमला उन्हीं के द्वारा सुलझाया जाना तय किया गया है. 6 मरे हुए व्यक्ति
से पास वाले नगर के पुरनिए उस बछिया पर, जिसकी गर्दन उस घाटी में तोड़ी
गई है, अपने-अपने हाथ धोएंगे, 7 तब वे यह घोषित करेंगे: "ये हमारे हाथ
नहीं थे, जिन्होंने इसकी हत्या की है, न ही हमारे नेत्रों ने यह होते देखा है.
8 याहवेह, आपके ही द्वारा बचाई हुई आपकी प्रजा इस्राएल को क्षमा प्रदान
कीजिए और अपनी प्रजा इस्राएल पर निर्दोष की हत्या आरोपित न कीजिए."
तब उन्हें हत्या-आरोप से क्षमा प्राप्त हो जाएगी, 9 यह है वह प्रक्रिया जिसके
द्वारा तुम अपने बीच में से निर्दोष की हत्या का दोष परिमार्जित करोगे, जब तुम
वह करते हो, जो याहवेह की दृष्टि में उपयुक्त है. 10 जब कभी तुम अपने शत्रुओं
से युद्ध करते हो और याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें उन पर विजय प्रदान करते हैं
और तुम उन्हें बंदी बनाकर ले आते हो, 11 उन बंदियों में तुम्हारी दृष्टि में कोई
रूपवती स्त्री आ जाती है, तुम उसकी ओर आकर्षित हो जाते हो, यहां तक कि
तुम उससे विवाह करने पर उद्यत हो जाते हो, 12 तो तुम उस स्त्री को अपने घर
पर ले आओगे, उसके बालों का मुंडन करोगे और उसके नाखून क़तर दोगे. 13
वह अपने बन्दीत्व के वस्त्रों को त्याग देगी, और तुम्हारे घर में रहने लगेगी. वह
एक माह तक अपने माता-पिता के लिए शोक मनाएगी. यह पूरा होने पर तुम्हारे
बीच यौन संबंध हो सकता है, तुम उसके पति और वह तुम्हारी पत्नी हो जाएगी.
14 पर, यदि तुमने उसमें कोई असंतोष का कारण पाया है, तब तुम उसे मुक्त कर
सकते हो कि वह अपनी इच्छा अनुसार कहीं भी चली जाए. तुम निश्चयतः
उसको रुपयों में नहीं बेचोगे, क्योंकि तुम पहले ही उसे अपमानित कर चुके हो.
15 यदि किसी व्यक्ति की दो पत्नियां हैं, एक उसकी प्रेम पात्र और अन्य, जो प्रिय
नहीं है; दोनों ही से उसे संतान प्राप्त हुई है; यदि प्रथमजात संतान उसे उस पत्नी
से प्राप्त हुई है, जो उसे प्रिय नहीं है, 16 तब, जिस अवसर पर वह अपना इच्छा
पत्र तैयार करता है, वह उस संतान को, जो उसकी प्रिय पत्नी से पैदा हुआ है,
अप्रिय पत्नी की संतान को छोड़ उस संतान को पहिलौठे का स्थान नहीं दे
सकता. 17 वह उस पत्नी के पहिलौठे संतान को अपनी संपत्ति में से अन्यों की
अपेक्षा दो गुणा भाग प्रदान कर पहिलौठे का अधिकार पूरा करेगा. क्योंकि वही
उसके शौर्य का पहिला फल है, पहिलौठे का अधिकार उसी का है. 18 यदि
किसी व्यक्ति का पुत्र हठी और विद्रोही स्वभाव का है, जो अपने माता-पिता के
प्रति आज्ञाकारी नहीं है, और जब वे उसकी ताड़ना करते हैं, तब भी वह उनकी
नहीं सुनता, 19 इस स्थिति में उसे माता-पिता अपने नगर के पुरनियों के सामने
नगर प्रवेश द्वार पर ले जाएं. 20 तब वे उन पुरनियों को सूचित करेंगे, "हमारा
यह पुत्र हठी और विद्रोही प्रवृत्ति का है. वह हमारी आज्ञाओं का पालन नहीं
करता, वह पेटू और पियक्कड़ है." 21 तब नगर के सारे पुरुष उसका पथराव
करके उसे मार डालेंगे. इस प्रकार तुम अपने बीच से उस बुराई को निकाल दोगे,
और सारा इस्राएल इसके विषय में सुनकर भयभीत हो जाएगा. 22 यदि किसी
व्यक्ति ने ऐसा पाप कर्म कर दिया है, जिसका दंड मृत्यु है, उसे मृत्यु दंड दे दिया
गया है, उसे वृक्ष पर लटका दिया गया है, 23 उसका शव सारी रात वृक्ष पर
लटका न रहे. निश्चयतः तुम उसे उसी दिन गाड़ दोगे क्योंकि वह व्यक्ति जिसे
लटका दिया गया है, वह परमेश्वर का शापित व्यक्ति है, जिससे तुम याहवेह
अपने परमेश्वर द्वारा मीरास के रूप में दिए हुए देश को दूषित न कर दो.

22 तुम अपने इस्राएली भाई के किसी बैल अथवा भेड़ को भटकते देखकर
उसकी उपेक्षा नहीं करोगे. निश्चयतः तुम उसे उसके स्वामी के घर पर
छोड़ दोगे. 2 यदि वह इस्राएली तुम्हारे निकट नहीं रहता, अथवा यदि तुम
उससे परिचित नहीं हो, तब तुम उस पशु को अपने ही घर पर ले आओगे और
वह उस समय तक तुम्हारी देखरेख में रहेगा, जब तक उसका स्वामी उसकी
खोज करता हुआ तुम्हारे घर तक न आ पहुंचे. तब तुम उसे लौटा दोगे. 3 यही
तुम उसके गधे के साथ, उसके वस्त्र के साथ, उसकी किसी भी खोई हुई वस्तु के
साथ करोगे, जो तुम्हें प्राप्त हो गई है. तुम इनकी अनदेखी न करो. 4 यदि
तुम्हारे किसी स्वदेशी का गधा अथवा बैल मार्ग में गिर पड़ा है, तो तुम उसकी
उपेक्षा नहीं करोगे. तुम्हें उन्हें उठाकर खड़ा करने में सहायता करनी ही होगी.
5 कोई भी स्त्री-पुरुष के वस्त्र धारण नहीं करेगी और न ही कोई पुरुष स्त्री के;
क्योंकि जो कोई यह करता है, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के लिए घृणित है. 6
यदि तुम्हें मार्ग में किसी वृक्ष में अथवा भूमि पर किसी पक्षी का नीड़ मिल जाए,
जिसमें उसके चूज़े अथवा अंडे हों, और माता पक्षी उन चूज़ों अथवा अण्डों
को सहेजे बैठी हो, 7 तुम उस माता पक्षी को उसके चूज़ों से अलग नहीं करोगे,
ताकि तुम्हारा भला हो और तुम्हारी उम्र बहुत बढ़ जाए. 8 जब तुम नए घर का
निर्माण करो, तो तुम अपने लिए छत के लिए एक मुण्डेर ज़रूर बनवाना, जिससे
कि तुम खुद पर हत्या का दोष न ले आओ, यदि कोई छत से नीचे आ गिरे. 9
अपने अंगूर के बगीचे में तुम दो विभिन्न प्रकार के बीजों को नहीं बोओगे, नहीं
तो उन दोनों बीजों की समग्र उपज दूषित हो जाएगी. 10 अपने हल में तुम बैल
और गधे को साथ साथ नहीं जोतोगे. 11 तुम ऐसा वस्त्र धारण नहीं करोगे, जो
ऊन और सन के मिश्रण से तैयार किया गया है. 12 तुम अपने बाहरी वस्त्र के
चारों कोनों पर फुन्दनों को बनाया करोगे. 13 यदि कोई पुरुष विवाह करता,
पत्नी से शारीरिक संबंध करता और उससे अलग हो जाता है, 14 इसके बाद उस
पर निंदनीय कामों का आरोप लगाता है; यहां तक कि वह सार्वजनिक रूप से
उस पर ये सारे लांछन भी लगाने लगता है, "मैंने इस स्त्री से विवाह किया मगर
संबंध के समय पर मुझे उसमें कुंवारीपन के कोई लक्षण प्राप्त न हुए." 15 तब
कन्या के माता-पिता कन्या के कुंवारीपन का सबूत लेकर नगर प्रवेश पर नगर
पुरनियों के सामने प्रस्तुत करेंगे. 16 कन्या का पिता पुरनियों से कहेगा, "मैंने
इस पुरुष से अपनी पुत्री का विवाह किया, मगर वह उसे अप्रिय लगने लगी है.
17 यह भी देखिए कि वह हमारी पुत्री पर लज्जास्पद लांछन लगा रहा है! वह
यहां तक घोषित कर रहा है मुझे आपकी पुत्री में कुंवारीपन का चिह्न प्राप्त नहीं
हुआ." मगर यह देखिए: यह है हमारी पुत्री के कुंवारीपन का सबूत. माता-पिता
उस वस्त्र को उन पुरनियों के सामने फैला देंगे, 18 फिर नगर पुरनिए उस व्यक्ति
को प्रताड़ित करेंगे. 19 वे उस पुरुष पर चांदी के एक सौ शेकेल का जुर्माना
आरोपित करेंगे, जिसे लेकर वे उस कन्या के पिता को सौंप देंगे. कारण यह है
कि उस पुरुष ने इस्राएल की उस कुंवारी कन्या को सार्वजनिक रूप से कलंकित
किया है. वह आजीवन उसकी पत्नी रहेगी, उनका तलाक कभी न होगा. 20
मगर यदि इसके विपरीत उस पुरुष का यह आरोप सत्य साबित हो जाता है, वह
कन्या कुंवारी नहीं थी, 21 तब वे उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर
लाएंगे और उस नगर के पुरुष उसको पथराव करके मार डालेंगे, क्योंकि उसने

इस्राएल में यह अनाचार किया और अपने पिता के घर में ही वेश्यावृत्ति की है.
यह करने के द्वारा तुम अपने बीच से बुराई को दूर कर दोगे. 22 यदि कोई पुरुष
किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी के साथ संबंध बनाते हुए पाया जाए, तो दोनों ही
मृत्यु दंड के योग्य हैं; वह पुरुष, जो उस स्त्री से संबंध बना रहा था और वह स्त्री
भी. उस प्रकार तुम इस्राएल में से बुराई को दूर करोगे. 23 यदि किसी कुंवारी
कन्या जिसकी सगाई हो चुकी है, उससे कोई अन्य पुरुष नगर सीमा के भीतर ही
संबंध बनाता है, 24 तब तुम उन दोनों को नगर फाटक से बाहर ले जाओगे और
दोनों ही को पथराव करके मार दोगे; कन्या का इसलिये कि उसने नगर में
होने पर भी सहायता की गुहार नहीं लगाई और पुरुष का इसलिये कि उसने
पड़ोसी की स्त्री का शीलभंग किया है. यह करके तुम अपने बीच से अनिष्ट का
बहिष्कार कर दोगे. 25 मगर इसके विपरीत यदि कोई पुरुष किसी विवाह के
लिये वचनबद्ध जवान स्त्री को बाहर खेत में पाकर उसके साथ साथ बलात्कार
करता है, तो उस पुरुष को मृत्यु दंड दिया जाए. 26 उस कन्या को कोई दंड न
दिया जाए; उसने मृत्यु दंड के योग्य कोई अनाचार नहीं किया है. यह स्थिति
वैसी है, जिसमें मानो किसी व्यक्ति ने घात लगाकर अपने पड़ोसी की हत्या कर
दी हो, 27 जब खेत में उसने उस अकेली कुंवारी कन्या को पाया, उसने तो
सहायता की गुहार लगाई थी, मगर उसकी रक्षा के लिए वहां कोई भी न था. 28
यदि कोई पुरुष ऐसी कुंवारी को पाता है, जिसकी सगाई नहीं हुई है, वह उसे
पकड़कर उससे संबंध बनाता है, और यह काम प्रकट हो जाता है, 29 तब वह
संबंध बनानेवाला व्यक्ति कन्या के पिता को चांदी के पचास शेकेल देगा और
वह कन्या उसकी पत्नी हो जाएगी; क्योंकि उस पुरुष ने उसका शीलभंग किया
है. वह आजीवन उससे विवाह विच्छेद नहीं कर सकेगा. 30 कोई भी पुरुष
अपने पिता की पत्नी से विवाह नहीं करेगा; कि वह ऐसा करने के द्वारा अपने
पिता के प्रति लज्जा का कारण न हो जाए.

23 कोई भी, जो नपुंसक है, जिसका लिंग काट डाला गया है, याहवेह की
सभा में प्रवेश नहीं करेगा. 2 कोई भी, जो अवैध जन्मा है, याहवेह की
सभा में प्रवेश नहीं करेगा; दसवीं पीढ़ी तक उसके वंशज याहवेह की सभा में
प्रवेश नहीं करेंगे. 3 कोई भी अम्मोनी अथवा मोआबी याहवेह की सभा में
प्रवेश नहीं करेगा, दसवीं पीढ़ी तक उनके वंशज याहवेह की सभा में प्रवेश नहीं
करेंगे. 4 क्योंकि मिस्र देश से यहां आते हुए उन्होंने तुम्हारे लिए अन्न-जल का
प्रावधान न होने दिया, और इसके अलावा, उन्होंने मेसोपोतामिया के पेथोर नगर
के बेओर के पुत्र बिलआम को पारिश्रमिक देते हुए तुम्हें शाप देने के लिए बुलाया
था. 5 फिर भी याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने बिलआम की ओर ध्यान देना सही न
समझा, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने बिलआम के शाप को तुम्हारे लिए समृद्धि में
परिणत कर दिया; क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर को तुमसे प्रेम है. 6 तुम
आजीवन न तो उनके भले की और न समृद्धि की कामना करोगे. 7 तुम किसी
एदोमी से घृणा नहीं करोगे, क्योंकि वह तुम्हारा भाई ही है; तुम किसी मिस्रवासी
से भी घृणा न करोगे, क्योंकि तुम उसके देश में प्रवासी होकर रहे थे. 8 उनकी
तीसरी पीढ़ी के वंशज याहवेह की सभा में शामिल हो सकते हैं. 9 ज़रूरी है
कि जब तुम युद्ध के लिए कूच करो, तुम सांस्कारिक रूप से शुद्ध रहो. 10
यदि छावनी में कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसे रात में स्वाभाविक वीर्यपात हुआ है,
वह छावनी के बाहर चला जाए; छावनी में प्रवेश न करे. 11 सायंकाल वह
स्नान करे और सूर्यास्त पर वह छावनी में प्रवेश कर सकता है. 12 ज़रूरी है
कि छावनी के बाहर ही शौच के लिए एक स्थान तय किया जाए. 13 तुम्हारे
उपकरण में एक बेलचा भी हो, कि जब तुम शौच के लिए वहां बैठो, इससे भूमि
को खोदो और इसके बाद मल को भूमि में दबा दो. 14 क्योंकि याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर तुम्हारे छावनी के बीच विचरण करते हैं, कि तुम्हें विजय प्रदान करें,
तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे सामने हराएं, तब ज़रूरी है कि छावनी में पवित्रता
बनाई रखी जाए. याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारे बीच कुछ भी अभद्र
दिखाई न दे, नहीं तो वह तुमसे दूर चले जाएंगे. 15 वह दास, जो अपने स्वामी
के दासत्व से भागकर तुम्हारे आश्रय में आया हुआ है, तुम उसे उसके स्वामी को
नहीं लौटाओगे. 16 वह तुम्हारे ही बीच में निवास करेगा, उसी स्थान पर जो
अपने लिए उपयुक्त समझा है, तुम उसके साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं करोगे. 17
इस्राएल राष्ट्र की पुत्रियां या पुत्र मंदिर वेश्या नहीं बनेंगे. 18 तुम याहवेह, अपने
परमेश्वर को न तो वेश्यावृत्ति का वेतन भेंट करोगे और न ही पुरुष वेश्या द्वारा
कमाई गई राशि को मन्नत की भेंट स्वरूप अर्पित करोगे. ये दोनों ही याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं. 19 तुम अपने स्वजातीय को कुछ भी
ब्याज पर नहीं दोगे; न धन, न खाद्य पदार्थ और न कोई ऐसी वस्तु, जिस पर
ब्याज लिया जा सकता है. 20 हां, किसी विदेशी से तुम ब्याज ले सकते हो,
मगर अपने देशवासियों से नहीं, जिससे कि उस देश में, तुम जिस पर अधिकार
करने के उद्देश्य से प्रवेश कर रहे हो, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे हर एक
उपक्रम में तुम्हें समृद्धि प्रदान करें. 21 जब कभी तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के
लिए मन्नत मानो, तुम उसे पूरा करने में विलंब नहीं करोगे. क्योंकि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर निश्चयतः तुमसे यह ले ही लेंगे, मगर तब तुम उनके सामने पापी
बन जाओगे. 22 फिर भी दूसरी स्थिति में तुम मन्नत ही न मानो तब तुम्हारे पक्ष
में यह पाप नहीं होगा. 23 ठीक जिस प्रकार तुमने स्वेच्छानुरूप याहवेह, अपने
परमेश्वर से मन्नत मानी थी, जो कुछ आपके मुख से मुखरित हो चुका है, तुमने
जो शपथ की है, उसे पूरा करने के विषय में तुम सावधान रहना. 24 जब कभी
तुम अपने पड़ोसी के अंगूर के बगीचे में जाओ, तुम अपनी पूरी संतुष्टि तक अंगूर
खा सकते हो, मगर तुम अंगूर को अपनी टोकरी में रखकर नहीं लाओगे. 25
जब कभी तुम अपने पड़ोसी के खेत में खड़ी उपज के अवसर पर प्रवेश करो,
तो अपने हाथों में तुम बालें ज़रूर तोड़ सकते हो, मगर तुम उस उपज पर हंसिया
नहीं चला सकते.

24 यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री को स्वीकार कर उससे विवाह करने के बाद
भी उसमें संतुष्ट नहीं हो पाता, क्योंकि उसने उसमें कुछ अभद्र पाया है;
तब वह उसे विवाह विच्छेद पत्र देकर उसे विदा कर देता है, 2 और वह वहां से
जाकर किसी अन्य पुरुष से विवाह कर लेती है, 3 इसके बाद यह अन्य पुरुष भी
उस स्त्री के विरुद्ध हो जाता है और उसे विवाह विच्छेद पत्र देकर विदा कर देता
है; अथवा स्थिति यह हो, कि इस अन्य पति की मृत्यु हो जाती है, जिसने उससे
विवाह किया था, 4 इस स्थिति में उसके उस प्रथम पति को यह आज्ञा नहीं दी
जाएगी, कि वह उससे पुनः विवाह कर अपना ले, क्योंकि अब वह दूषित
हो चुकी है. यह याहवेह के सामने घृणित है. तुम उस देश में, जो याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास के रूप में दे रहे हैं, तुम उस देश पर यह पाप नहीं
लगाओगे. 5 कोई भी नवविवाहित व्यक्ति न तो युद्ध पर जाएगा और न ही उसे
कोई दूसरी जवाबदारी सौंपी जाएगी. एक वर्ष के लिए उसे घर पर रहने की
आज़ादी होना है. वह अपने घर पर ही रहकर एक साल तक अपनी नवविवाहित
पत्नी के सुख का ध्यान रखेगा. 6 कोई भी व्यक्ति किसी की चक्की अथवा
चक्की का ऊपरी पत्थर बंधक के रूप में नहीं रखेगा, यह किसी के जीवन को
बंधक रखना होगा. 7 यदि किसी व्यक्ति ने अपने किसी इस्राएली स्वजातीय का
अपहरण इस उद्देश्य से किया है, कि उसे अपना दास बनाए अथवा उसे बेच दे,
और जब वह अपहरणकर्ता पकड़ा जाता है, तो उसका वध कर दिया जाए. 8
कुष्ठ रोग से संक्रमण के प्रति सावधान रहना. बड़ी ही सावधानीपूर्वक तुम लेवी
पुरोहितों की शिक्षा का पालन करना. मैंने ही उन्हें इसके विषय में आदेश दिया
है. इनका पालन करने में तुम सावधान रहोगे. 9 वह सब तुम्हारी याद से मिटने न
पाए, जो मिस्र देश से निर्गमन के मार्ग पर याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा मिरियम
के साथ किया गया था. 10 जब तुम अपने पड़ोसी को किसी भी प्रकार का ऋण

देते हो, तुम इससे संबंधित बंधक लेने के लिए उसके घर में प्रवेश नहीं करोगे. 11 तुम घर के बाहर ही ठहरे रहना, वह ऋणी ही भीतर जाकर बंधक लाकर तुम्हें सौंपेगा. 12 यदि वह गरीब है, तुम उसके बंधक को, जो उसका वस्त्र ही होगा, रात में अपने पास न रख लेना. 13 सूर्यास्त बेला में तुम निश्चित ही उसे वह बंधक लौटा देना, कि वह उस वस्त्र को ओढ़ कर सो सके और तुम्हारे प्रति उसके हृदय से आशीर्वाद निकले. याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की दृष्टि में यह तुम्हारे प्रति धर्म समझा जाएगा. 14 तुम किसी पारिश्रमिक के लिए लाए गए कंगाल और दीन सेवक पर अत्याचार नहीं करोगे; चाहे वह तुम्हारा स्वदेशी भाई हो अथवा विदेशी, जो तुम्हारे देश में रह रहा है. 15 तुम उसे उसी दिन सूर्यास्त के पहले उसकी मजदूरी दे दोगे, क्योंकि वह गरीब व्यक्ति है और उसे इसकी ज़रूरत होगी, कि वह तुम्हारे विरुद्ध याहवेह की दोहाई न दे और यह तुम्हारे विरुद्ध पाप हो जाए. 16 पुत्र के पाप का दंड उसके पिता को न मिले, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए. 17 तुम्हारे बीच परदेशी और अनाथ को उसके न्याय के अधिकार से वंचित न किया जाए. किसी विधवा का वस्त्र बंधक न रखा जाए. 18 ज़रूरी है कि तुम यह कभी विस्मृत न करो कि तुम खुद मिस्र देश में दास थे और याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें वहां से खरीदा है. इन्हीं बातों के प्रकाश में मैं तुम्हें ये आदेश दे रहा हूं. 19 जब तुम खेत में उपज की कटनी करो और खेत में से किसी पूली को साथ ले जाना भूल जाओ; तो तुम उसे उठाने के लिए लौटकर न जाओगे. वह पूली विदेशी, अनाथ और विधवा के लिए होगी कि इसके द्वारा याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे सारे उपक्रमों में समृद्धि प्रदान करें. 20 जब तुम अपने जैतून वृक्ष में से एक बार फल एकत्र कर चुको, तुम डालियों से पुनः फल एकत्र न करने लगना, शेष फल प्रवासी अनाथ और विधवा के लिए तय होंगे. 21 जब तुम अपने अंगूर के बगीचे से अंगूर एकत्र करो, तुम लौटकर दोबारा अंगूर एकत्र नहीं करोगे; बचे हुए अंगूर परदेशी, अनाथ और विधवा के लिए तय रहेंगे. 22 ज़रूरी है कि तुम यह कभी न भूलोगे, कि तुम मिस्र देश में दास बने हुए थे, यही वह कारण है कि मैं तुम्हें यह सब करने का आदेश दे रहा हूं.

25 यदि दो व्यक्ति अपना विवाद लेकर न्यायालय को जाते हैं, और न्यायाध्यक्ष उनके विवाद पर अपना निर्णय दे देते हैं, निर्दोष को न्याय प्राप्त हो जाता है और दुष्ट को दंड. 2 तब यदि न्याय के अंतर्गत दुष्ट को पीटा जाना तय किया गया है, तब न्यायाध्यक्ष उसे भूमि पर लेट जाने का आदेश देगा और उसी न्यायाध्यक्ष की उपस्थिति में उतने ही वार किए जाएं जितने निर्णय के अनुसार उसके कुकर्म के लिए घोषित किए गए थे. 3 संभवतः उस पर चालीस प्रहार किए जाएं, मगर इससे अधिक नहीं, उसे यदि इनसे अधिक प्रहार किए जाएं तो वह तुम सब की नजर में अपमानित हो जाएगा. 4 तुम दांवनी करते बैल के मुख को मुखबन्धनी न बांधना. 5 जब सब भाई एक ही परिवार में निवास कर रहे हैं और उनमें से एक की मृत्यु हो जाती है, जबकि उसके कोई संतान नहीं है, तब उसकी पत्नी का विवाह परिवार के बाहर किसी अपरिचित व्यक्ति से न किया जाए. उस स्त्री के पति का भाई उससे विवाह कर मृत पति के भाई की जवाबदारी पूरी करेगा. 6 इस संयोग से पैदा पहलौठा उस मृत भाई का नाम धारण करेगा, जिससे कि मृत भाई का नाम इस्राएल से खत्म न हो जाए. 7 मगर यदि वह व्यक्ति अपने भाई की पत्नी को स्वीकार करना न चाहे, तो उसके भाई की पत्नी नगर प्रवेश द्वार पर नगर पुरनियों के सामने जाएगी और उन्हें यह सूचित करेगी, "मेरे पति का भाई अपने मरे हुए भाई का नाम इस्राएल में स्थायी रखने के विषय में सहमत नहीं है. वह मेरे साथ पति के भाई की जवाबदारी निभाने के लिए तैयार नहीं है." 8 तब नगर पुरनिए उसे वहां उपस्थित होने का आदेश देंगे, उसे समझाने का प्रयास करेंगे. यदि वह हठ करते हुए कहे, "मैं उस स्त्री से विवाह नहीं करना चाहता," 9 तब उसके भाई की पत्नी पुरनियों की उपस्थिति में ही उसके पांवों से उसकी चप्पल उतारेगी और उसके मुख पर थूक कर कहेगी, "ऐसे व्यक्ति के साथ यही किया जाता है, जो अपने भाई के वंश को बनाए रखना नहीं चाहता." 10 इस्राएल में उसका नाम प्रचलित हो जाएगा, "बैथ हलूज़ हन्नाएल, अर्थात् उसका घर जिसकी चप्पल उतारी गई है." 11 यदि दो इस्राएली व्यक्तियों में हाथापाई हो रही है और उनमें से एक की पत्नी अपने पति की रक्षा के उपक्रम में निकट आकर अन्य व्यक्ति के अंडकोश को दबोच लेती है, 12 तब तुम उस स्त्री पर बिना कृपा दिखाए उसका हाथ काट डालोगे. 13 तुम अपनी झोली में एक ही माप, भिन्न-भिन्न माप नहीं रखोगे; एक गुरुतर और अन्य लघुतर. 14 तुम अपने घर में एक ही माप के भिन्न-भिन्न माप नहीं रखोगे; एक गुरुतर और एक लघुतर. 15 तुम्हारे माप पूरा और सही-सही ही हों, कि उसे देश में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहे हैं, तुम लंबी आयु पाओ. 16 क्योंकि जो कोई ये सारे काम करता है, जिसका पालन करना गलत है, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के लिए घृणित है. 17 यह याद रखना कि मिस्र से निकलकर मार्ग में अमालेक ने तुम्हारे साथ क्या किया था. 18 कैसे उस स्थिति में, जब तुम शांत और शिथिल हो चुके थे उन्होंने उन लोगों पर हमला किया था; जो समूह में सबसे पीछे थे उन्हें परमेश्वर का ज़रा भी भय न था. 19 फिर अब तो होगा यह कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें उस देश में, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास के रूप प्रदान कर रहे हैं, कि तुम उस पर अधिकार करो, तुम्हारे पास वाले सारे शत्रुओं से विश्रान्ति प्रदान कर चुके होंगे, तुम पृथ्वी पर से अमालेक की याद ही मिटा दोगे; यह तुम भुला न देना!

26 इसके बाद, यह होगा कि जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें मीरास-स्वरूप प्रदान कर रहे हैं, तुम उसका अधिग्रहण करोगे और उसमें बस जाओगे, 2 तब तुम उस स्थान पर, जिसे याहवेह तुम्हारे परमेश्वर अपनी प्रतिष्ठा के लिए चुनेंगे, उस देश की सारी प्रथम उपज का एक अंश एक टोकरी में लेकर जाओगे. 3 तुम उस समय पदासीन पुरोहित की उपस्थिति में जाकर कहोगे, "याहवेह, मेरे परमेश्वर के सामने आज मैं यह घोषित कर रहा हूं, कि मैंने उस देश में प्रवेश कर लिया है, जिसे प्रदान करने की प्रतिज्ञा याहवेह ने मेरे पूर्वजों से की थी." 4 तब वह पुरोहित तुम्हारे हाथ से वह टोकरी लेकर याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की वेदी के सामने रख देगा. 5 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने उत्तर में कहोगे: "मेरे पूर्वज अस्थिरवासी अरामी जाति के थे. वे मिस्र देश में प्रवासी रहे, वहां अल्प संख्यक थे, मगर वहां विशाल, मजबूत और असंख्यक राष्ट्र हो गए. 6 लेकिन मिस्रवासियों ने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया और अत्याचार पूरा हो गया. हम पर कठोर श्रम लाद दिया गया. 7 तब हमने अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह की दोहाई दी, और याहवेह ने हमारी सुन ली. उन्होंने हमारे अत्याचार और श्रम पीड़ा पर दृष्टि की. 8 तब याहवेह ने हमें मिस्र देश से अपनी मजबूत, बढ़ाई हुई भुजा, भयंकर आतंक, चिन्ह और चमत्कारों के द्वारा निर्गत किया. 9 वह हमें इस स्थान पर ले आए हैं, हमें यह देश प्रदान कर दिया है, ऐसा देश, जिसमें दूध और शहद की बहुतायत है; 10 अब देखिए, याहवेह, आपके द्वारा दी इस भूमि की पहली उपज मैं यहां ले आया हूं." तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने यह प्रस्तुत कर दोगे और तुम याहवेह, अपने परमेश्वर का स्तवन करोगे. 11 तुम, वह लेवीगोत्रज और वह परदेशी, जो तुम्हारे बीच रह रहा है, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा दी सारी उत्तम वस्तुओं के लिए अपने परिवार के साथ उल्लास मनाओगे. 12 जब तृतीय साल में, जो दसवें अंश का साल है, तुम अपना समग्र दसवां अंश दे चुको, तब तुम यह उस लेवी को, उस प्रवासी को, अनाथ, और विधवा को दे दोगे, जिससे वे तुम्हारे साथ नगर में इसका उपभोग करते हुए संतुष्ट रह सकें. 13 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर की उपस्थिति में तुम्हारे

वचन ऐसे हों: “मैंने आपके आदेश के अनुरूप अपने घर में से पवित्र अंश लेकर मुझे दिए गए आपके आदेश के अनुसार लेवियों, यहां प्रवास कर रहे विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को दे दिया है. न तो मैंने आपके आदेशों की आज्ञा टाली है, न ही उन्हें भुलाया है 14 मैंने इसका उपभोग न तो विलाप की स्थिति में किया है, न मैंने अशुद्धता की अवस्था में इसको छुआ है, और न मैंने इसमें से कुछ किसी मरे हुए को समर्पित किया है. मैंने शब्दश; याहवेह अपने परमेश्वर के आदेश का पालन किया है. 15 अपने पवित्र निवास स्थान स्वर्ग से दृष्टि कीजिए और अपनी प्रजा इस्राएल को और उस भूमि को, जो आपने हमारे पूर्वजों को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार प्रदान की है, जिसमें दूध और शहद की बहुतायत है, समृद्धि प्रदान कीजिए.” 16 आज याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें यह आदेश दे रहे हैं कि तुम इन नियमों और आदेशों का पालन करो; तब तुम्हें पूरे हृदय और पूरे प्राणों से इनके पालन करने के विषय में सावधानी रखनी ही होगी. 17 आज तुमने यह घोषणा कर दी है कि याहवेह ही तुम्हारे परमेश्वर हैं और यह भी कि तुम उनके द्वारा दी गई नीतियों का पालन करोगे; उनकी आज्ञाओं, उनके आदेशों और उनके नियमों का पालन करोगे और उन्हीं की सुनोगे. 18 आज याहवेह ने तुम्हें अपनी प्रजा, अपना कीमती धन घोषित कर दिया है, तुमसे की गई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार और यह कि ज़रूरी है कि तुम उसके सारे आदेशों का पालन करो. 19 और यह कि वह तुम्हें उन सभी जनताओं से, जो उनके द्वारा स्थापित किए गए हैं, उच्चतर बनाए रखेंगे, स्तुति के लिए कीर्ति के लिए और सम्मान के लिए और तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के लिए पवित्र प्रजा हो जाओगे; जैसा खुद उन्होंने कहा है.

27 तब मोशेह और इस्राएल के पुरनियों ने प्रजा को ये आदेश दिए: “जो आदेश मैं आज तुम्हें दे रहा हूं, तुम्हें उन सभी का पालन करना है. 2 जब तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा प्रदान किए जा रहे उस देश में पदार्पण करने के उद्देश्य से यरदन नदी को पार करोगे, तुम बड़े आकार की चट्टानें लेकर उन पर चूना पोत कर वहां स्थापित कर दोगे, 3 और यरदन पार करने पर उन पर इन पूरे विधान को अंकित कर दोगे, कि तुम उस देश में प्रवेश कर सको, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहे हैं, एक ऐसा देश, जहां दूध और शहद की बहुतायत है, ठीक जैसी प्रतिज्ञा याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने की थी. 4 तब आगे यह होगा: तुम जब यरदन नदी पार कर चुको, तुम इन शिलाओं को एबल पर्वत पर स्थापित कर दोगे, जैसा आज तुम्हारे लिए मेरा आदेश है, तुम उन पर चूना पोत दोगे. 5 इसके अलावा, तुम वहां याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए पत्थरों की वेदी का निर्माण करोगे. इन पत्थरों पर किसी लोहे के उपकरण का प्रयोग न किया जाए. 6 याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए, जो वेदी बनाओगे, वह काटे हुए पत्थरों से बनाई जाए. इसी पर तुम याहवेह अपने परमेश्वर के लिए होमबलि भेंट करोगे. 7 तुम मेल बलि अर्पित करोगे और भोजन वहीं करोगे और वहीं याहवेह अपने परमेश्वर के सामने उल्लास मनाओगे. 8 तुम उन शिलाओं पर इस विधि का हर एक शब्द बहुत स्पष्ट रूप से लिख दोगे.” 9 तब मोशेह के साथ समस्त लेवी पुरोहितों ने इकट्ठा हो सारे इस्राएल राष्ट्र से कहा, “शांत हो सारी इस्राएल, तुम ध्यान से यह सुनो. आज तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए एक राष्ट्र हो चुके हो. 10 तब तुम याहवेह अपने परमेश्वर का आज्ञापालन करोगे, उनके आदेशों का और नियमों का पालन करोगे, जो आज मैं तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूं.” 11 उसी दिन मोशेह ने प्रजा को ये आदेश दिए: 12 जब तुम यरदन नदी को पार करोगे, गेरिज़िम पर्वत पर खड़े होकर लोगों के लिए आशीर्वाद देने के लिए तय व्यक्ति इन गोत्रों से होंगे: शिमओन, लेवी, यहूदाह, इस्साखार, योसेफ़ और बिन्यामिन. 13 शाप उच्चारण के लिए एबल पर्वत पर खड़े व्यक्ति इन गोत्रों से होंगे: रियूबेन, गाद, आशेर, ज़ेबुलून, दान और नफ़ताली. 14 तब लेवीगोत्रज समस्त इस्राएल के सामने उच्च स्वर में यह घोषणा करेंगे: 15 “शापित है वह व्यक्ति जो, याहवेह के सामने घृणित मूर्ति, ढाली हुई मूर्ति का निर्माण करता है, जो शिल्पी की कलाकृति-मात्र ही होती है और उसे गुप्त स्थान में प्रतिष्ठित कर देता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 16 “शापित है वह, जो अपने माता-पिता को सम्मान नहीं देता.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 17 “शापित है वह, जो अपने पड़ोसी की सीमा के चिन्हों को बदल देता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 18 “शापित है वह, जो किसी अंधे को मार्ग से भटकाता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 19 “शापित है वह, जो किसी विदेशी, अनाथ और विधवा के लिए योजनायुक्त न्याय को बिगाड़ देता है.” तब सारी सभा इसके उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 20 “शापित है वह, जो अपने पिता की पत्नी के साथ संबंध बनाता है, उसने अपने पिता को लज्जित किया है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 21 “शापित है वह, जो किसी भी पशु के साथ संबंध बनाता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 22 “शापित है वह, जो अपनी सौतेली बहन के साथ संबंध बनाता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 23 “शापित है वह, जो अपनी सास के साथ संबंध बनाता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 24 “शापित है वह, जो अपने पड़ोसी को एकांत में पाकर उस पर प्रहार कर देता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 25 “शापित है वह, जो किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या के उद्देश्य से घूस लेता है.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!” 26 “शापित है वह, जो इस विधान संहिता का पालन करने के द्वारा इनकी पुष्टि नहीं करता.” तब सारी सभा उत्तर में कहेगी, “आमेन!”

28 अब भविष्य यह होगा, कि यदि तुम सावधानीपूर्वक याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहोगे, जो आदेश मैं आज तुम्हें सौंप रहा हूं, याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें पृथ्वी के सारे राष्ट्रों से अति महान बनाए रखेंगे. 2 तुम इन सभी सुख समृद्धि से अभिभूत हो जाओगे, ये तुम तक पहुंच जाएंगी, सिर्फ यदि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बने रहोगे: 3 याहवेह तुम्हारे नगरों और खेतों को आशीष प्रदान करेंगे. 4 याहवेह तुम्हारे बच्चों को आशीर्वाद देंगे. वे तुम्हारी भूमि की फसल आशीषित होगी, और तुम्हारे जानवरों के बच्चे आशीषित होंगे. 5 आशीषित रहेगी तुम्हारी टोकरी और तुम्हारा आटा गूंथने का कटोरा. 6 आशीषित रहोगे तुम, जब तुम कुछ करोगे और धन्य रहोगे तुम, जब तुम लौटकर आओगे. 7 याहवेह तुम्हारे उठे हुए शत्रुओं को हराने की योजना करेंगे; वे एक मार्ग से तुम पर हमला करने तो आएंगे. मगर तुम्हारे सामने भागते हुए सात दिशाओं में बिखर जाएंगे. 8 याहवेह तुम्हारे अन्नभण्डारों को, तुम्हारे हर एक उपक्रम को और उस देश को, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहे हैं, समृद्धि का आदेश देंगे. 9 याहवेह तुम्हें अपने ही लिए पवित्र प्रजा-स्वरूप प्रतिष्ठित करेंगे; जैसी प्रतिज्ञा वह तुमसे खुद कर चुके हैं, यदि तुम याहवेह अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हुए उनकी नीतियों का पालन करते रहोगे. 10 परिणामस्वरूप सारी पृथ्वी के लोग इस बात के गवाह होंगे कि तुम वह प्रजा हो, जिसका सम्मान याहवेह के नाम से है. इससे उन पर तुम्हारा आतंक स्थापित हो जाएगा. 11 याहवेह, तुम्हारी संतान में, तुम्हारे पशुओं की सन्तति में और तुम्हारी भूमि के उत्पाद में, तुम्हारी समृद्धि को उस देश में, जो याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों को देने की प्रतिज्ञा की थी, पूरा करेंगे. 12 याहवेह अपने बड़े भंडार को तुम्हारे लिए उपलब्ध कर देंगे; आकाश अपनी तय ऋतु में भूमि पर वृष्टि करेगा, तुम्हारे सारे काम सफल होंगे और तुम अनेक राष्ट्रों को ऋण दोगे, मगर खुद तुम्हें किसी से ऋण लेने की ज़रूरत न होगी. 13 याहवेह तुम्हें सबसे ऊंचा ही बनाए रखेंगे, पूंछ नहीं; तुम ऊंचाई पर ही रहोगे, अधीन कभी नहीं, यदि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करोगे, जो आज मैं तुम्हें सौंप रहा हूं; कि तुम सावधानीपूर्वक उनका पालन करते रहो, 14

कि तुम इनसे, इनमें से किसी के मर्म से ज़रा भी विचलित न होओ, और पराए देवताओं की उपासना-सेवा में लीन हो जाओ. 15 मगर यदि स्थिति यह हो जाए, कि आज तुम मेरे द्वारा दिए जा रहे, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों और नियमों का पालन न करो, तो ये सारे शाप तुम्हें आ घेरेंगे, और तुम पर प्रभावी हो जाएंगे: 16 तुम अपने नगर में शापित होंगे, तुम अपने देश में शापित होंगे. 17 शापित होंगी तुम्हारी टोकरी और तुम्हारे गूंथने का पात्र. 18 शापित होंगी तुम्हारी अपनी संतान, तुम्हारी भूमि की उपज, तुम्हारे पशुओं और भेड़ों की वृद्धि. 19 शापित होगा तुम्हारा कूच और तुम्हारा लौटकर आना. 20 तुम्हारे सारे कामों में तुम्हारे कामों के दुराचार और तुम्हारे द्वारा याहवेह का त्याग किए जाने के कारण याहवेह तुम पर शाप, डर और कुंठा डाल देंगे, कि तुम नाश हो जाओ और तेजी से तुम्हारा विनाश हो जाए. 21 याहवेह तुम पर महामारी सम्बद्ध कर देंगे, जब तक वह तुम्हें उस देश से नाश न कर दें, जिसमें अधिकार करने के लिये तुम उसमें प्रवेश कर रहे हो. 22 याहवेह तुम पर क्षय रोग, बुखार, सूजन, बड़ी जलन और तलवार का प्रहार प्रभावी करेंगे, जब तक तुम मिट न जाओ. 23 तुम्हारे सिर के ऊपर विशाल आकाश कांसे और पांवों के नीचे की धरती लोहा हो जाएगी. 24 याहवेह, तुम पर बालू और धूल की बारिश करेंगे; ये आकाश से तुम पर ये तब तक बरसते रहेंगे जब तक तुम नाश न हो जाओ. 25 याहवेह, ऐसा करेंगे, कि तुम अपने शत्रुओं द्वारा हरा दिए जाओगे. उन पर हमला करने तो तुम एक मार्ग से जाओगे, मगर तुम सात दिशाओं में पलायन करोगे. सारी पृथ्वी के राज्यों के लिए तुम आतंक का पर्याय हो जाओगे. 26 तुम्हारे शव आकाश के सारे पक्षियों और पृथ्वी के पशुओं का आहार हो जाएंगे और उन्हें खदेड़ने के लिए वहां कोई भी न रहेगा. 27 मिस्र देश के समान याहवेह तुम पर फोड़ों, बतौरियों का वार करेंगे और उसके अलावा चकत्ते और खुजली का भी, जिनसे तुम्हें छुड़ौती प्राप्त हो ही न सकेगी. 28 याहवेह तुम पर पागलपन, अंधेपन और हृदय की घबराहट का वार कर देंगे. 29 परिणामस्परूप तुम दिन-दोपहरी टटोलते रहोगे, जिस प्रकार अंधा टटोलता रहता है. तुम्हारे कामों से तुम्हें कोई लाभ न मिलेगा, बल्कि तुम लगातार उत्पीड़ित भी किए जाओगे और लूटते जाओगे, मगर वहां तुम्हारी रक्षा के लिए कोई भी न रह जाएगा. 30 जिस कन्या से तुम्हारी सगाई होगी, कोई अन्य पुरुष शीलभंग करेगा; तुम अपने घर का निर्माण तो करोगे, मगर उसमें निवास न कर सकोगे. तुम अंगूर के बगीचे तो लगाओगे मगर अंगूरों का उपभोग न कर सकोगे. 31 तुम्हारे बछड़े का वध तुम्हारे सामने तो होगा मगर तुम उसका उपभोग न कर सकोगे. तुम्हारा गधा तुमसे छीन लिया जाएगा. और तुम उसे पुनः प्राप्त न कर सकोगे. तुम्हारी भेड़ें तुम्हारे शत्रुओं की संपत्ति हो जाएंगी और कोई भी तुम्हारी रक्षा के लिए वहां न रहेगा. 32 तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां तुम्हारे देखते-देखते बंधुआई में चले जाएंगे और तुम हमेशा उनकी लालसा करते रह जाओगे, मगर इसके लिए तुम कुछ भी न कर सकोगे. 33 तुम्हारी भूमि का उत्पाद विदेशियों का आहार हो जाएगा और तुम आजीवन उत्पीड़ित और दमित किए जाते रहोगे. 34 तुम्हारे सामने जो कुछ आएगा उसे देख तुम विक्षिप्त हो जाओगे. 35 याहवेह तुम्हारे पैरों और घुटनों में ऐसे पीड़ादायक फोड़े उत्पन्न कर देंगे, जिनसे तुम स्वस्थ नहीं हो सकोगे, वस्तुतः तुम सिर से पांव तक घावों से भर जाओगे. 36 याहवेह तुम्हें और उस राजा को, जो तुम्हारे द्वारा प्रतिष्ठित किया गया होगा, एक ऐसे राष्ट्र में भेज देंगे, जिसे न तो तुम जानते हो और न ही जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने जाना था. उस राष्ट्र में तुम काठ और पत्थर की मूर्तियों की सेवा-उपासना करोगे. 37 तब तुम उन लोगों के बीच, जिनके बीच में याहवेह तुम्हें हकाल देंगे, भय, लोकोक्ति और उपहास का विषय होकर रह जाओगे. 38 तुम विपुल बीज बोओगे, मगर फसल काटने के अवसर पर तुम बहुत अल्प एकत्र कर सकोगे, क्योंकि टिड्डियां इसे चट कर जाएंगी. 39 तुम द्राक्षा उद्यानों का रोपण और कृषि ज़रूर करोगे, मगर तुम न तो द्राक्षा एकत्र कर सकोगे और न ही द्राक्षारस का सेवन कर सकोगे, इन्हें कीट चट कर जाएंगे. 40 तुम्हारे देश की सारी सीमा में ज़ैतून वृक्ष तो होंगे, मगर तुम ज़ैतून तेल का प्रयोग अभ्यंजन के लिए नहीं कर सकोगे, क्योंकि ज़ैतून फलों का अवपात हो जाएगा. 41 तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां पैदा ज़रूर होंगे, मगर वे तुम्हारे होकर न रह सकेंगे, क्योंकि उन्हें बन्दीत्व में ले जाया जाएगा. 42 कीट तुम्हारे सारे वृक्षों और भूमि की उपज में समा जाएंगे. 43 तुम्हारे बीच प्रवास कर रहा विदेशी तुमसे अधिक उन्नत होता जाएगा, मगर खुद तुम्हारा ह्रास ही ह्रास होता चला जाएगा. 44 वह विदेशी ही तुम्हें ऋण देने की स्थिति में होगा, मगर तुम उसे ऋण देने की स्थिति में न रहोगे. वह तो शीर्ष पर पहुंच जाएगा, मगर तुम निम्नतम स्तर पर रह जाओगे. 45 इस प्रकार ये सारे शाप तुम पर प्रभावी हो जाएंगे, तुम्हारा पीछा करते रहेंगे, तुम्हें पकड़ लेंगे, कि तुम पूरी तरह नाश हो जाओ, क्योंकि तुमने याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं किया, उनके अध्यादेशों को पूरा नहीं किया, जो खुद उन्हीं ने तुम्हें प्रदान किए हैं. 46 ये शाप तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों के लिए चिन्ह और अलौकिक घटनाएं होकर रह जाएंगे. 47 इसलिये कि तुमने इन सारी समृद्धि के लिए याहवेह, अपने परमेश्वर की वंदना न तो सहर्ष भाव में की और न सच्चे हृदय के साथ, 48 इसलिये तुम याहवेह द्वारा उत्प्रेरित अपने शत्रुओं के सेवक होकर रह जाओगे; जब तुम भूख, प्यास, नंगाई और सब प्रकार के अभाव की स्थिति में रहोगे. याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारी गर्दन पर लोहे का जूआ तब तक रखे रहेंगे, जब तक वह तुम्हें नाश न कर दें. 49 याहवेह दूरस्त देश को तुम पर हमला के लिए प्रेरित करेंगे; हां, पृथ्वी के छोर से, जिस प्रकार गरूड़ झपटता है, वह ऐसा राष्ट्र होगा, जिसकी भाषा तुम समझ नहीं पाओगे, 50 वह रौद्र स्वरूप राष्ट्र होगा. उसके हृदय में न तो वृद्धों के प्रति सम्मान होगा, न बालकों के प्रति करुणा. 51 इसके अलावा वह राष्ट्र तब तक तुम्हारे पशुओं के बच्चों और भूमि की उपज का उपभोग करता रहेगा, जब तक तुम नाश न हो जाओ. अर्थात् वह राष्ट्र तुम्हारे उपभोग के लिए न तो अन्न छोड़ेगा, न नया द्राक्षारस न नया तेल, न तुम्हारे पशुओं की सन्तति और न ही भेड़ों के मेमने, जिससे तुम नाश हो ही जाओगे. 52 वह राष्ट्र तुम्हारे सारे नगरों में की घेराबंदी कर लेगा और उसके हमला के परिणामस्वरूप वे उस पूरे देश में, जो तुम्हें याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया था, जिन शहरपनाहों पर तुम्हें पूरा भरोसा रहा था, भंग कर देंगे. 53 शत्रुओं द्वारा की गई घेराबंदी और उसके द्वारा दी गई प्रताड़ना के कारण तुम अपनी निज संतान को खाने लगोगे, तुम्हारे अपने पुत्र-पुत्रियों के मांस को, जो तुम्हें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए हैं. 54 उस समय वह व्यक्ति, जो तुम्हारे बीच में बहुत शालीन और संवेदनशील माना जाता है, वही अपने सहनागरिकों, अपनी प्रिय पत्नी और अपनी शेष संतान के प्रति निर्मम हो जाएगा, 55 वह अपनी संतान के मांस में से किसी को कुछ न देगा, क्योंकि अभाव इतना ज्यादा हो जाएगा. ऐसी भयावह हो जाएगी वह स्थिति, जब तुम्हारे वे शत्रु तुम्हारे सारे नगरों में तुम पर अत्याचार करते रहें. 56 तुम्हारे बीच वह स्त्री, जो बहुत शालीन और सुकुमारी मानी जाती है, जो इतनी परिष्कृत और सुकुमारी है, कि वह अपने पांव तक भूमि पर नहीं पड़ने देती, वही अपने प्रिय पति और पुत्र-पुत्री के प्रतिकूल हो जाएगी. 57 वह उन्हें न तो अपने गर्भ की ममता दिखाएगी और न नवजात शिशु की, क्योंकि शत्रुओं द्वारा घेरे गए तुम्हारे नगर की स्थिति ऐसी शोचनीय हो चुकी होगी, कि वह खुद इन्हें छिप-छिप कर खाती रहना चाहेगी. 58 यदि तुम इस व्यवस्था में लिखित विधि के सब वचनों का पालन के प्रति सावधान न रहोगे, इस सम्मान्य और उदात्त नाम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा न रखो, 59 तब याहवेह तुम पर और तुम्हारे वंशजों पर अभूतपूर्व महामारियां ले आएंगे. ये महामारियां बहुत पीड़ादायी और स्थायी प्रकृति की और चिरकालिक और दयनीय व्याधियां होंगी. 60 याहवेह, तुम्हारे

परमेश्वर मिस्र देश पर प्रभावी की गई सारी व्याधियां तुम पर प्रभावी कर देंगे, जो
तुम्हारे लिए भयावह बनी हुई थीं, वे तुम पर संलग्न हो जाएंगी. **61** यहां तक
कि वे सारी व्याधियां और वे सारी महामारियां, जिनका उल्लेख इस विधान
अभिलेख में नहीं किया गया है, याहवेह तुम पर प्रभावी कर देंगे, कि तुम्हारा
विनाश हो जाए. **62** तब तुम्हारी गिनती कम रह जाएगी, जबकि एक समय तुम
ऐसे अनगिनत थे, जैसे आकाश के तारे. कारण यह है, कि तुम याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी हो गए थे. **63** जिस प्रकार एक समय याहवेह की
तुष्टि तुम्हारे जनसंख्या के बढ़ने और समृद्धि में थी, उसी प्रकार याहवेह की तुष्टि
होगी तुम्हें नाश कर देने और मिटा देने में. तुम जिस देश पर अधिकार करने के
उद्देश्य से उसमें प्रवेश कर रहे हो, तुम वहां से निकाल दिए जाओगे. **64** इसके
अलावा, याहवेह ही तुम्हें हर जगह बिखरा देंगे; पृथ्वी के एक छोर से अन्य
छोर तक. वहां तुम पराए देवताओं—पत्थर और लकडी के देवताओं के सेवक
बन जाओगे, तुम्हारे पूर्वजों से सर्वथा अज्ञात देवताओं के. **65** इन जनताओं के
बीच निवास करते हुए तुम्हें ज़रा भी शांति प्राप्त न होगी. मगर हां, वहां याहवेह
तुम्हें एक चिंतित हृदय प्रदान करेंगे. तुम्हारी दृष्टि क्षीण होती जाएगी और तुममें
साहस न रह जाएगा. **66** तुम हमेशा संशय की स्थिति में रहोगे, तुम दिन में और
रात में आतंक से भरे रहोगे, तुम्हारे जीवन का कोई निश्चय न रह जाएगा. **67**
प्रातः तुम विचार करोगे, "उत्तम होगा यह प्रातः नहीं, संध्या होती!" वैसे ही तुम
संध्याकाल में यह कामना करते रहोगे: "उत्तम होता कि यह प्रभात होता!" यह
उस आतंक के कारण होगा, जिसने तुम्हें भर रखा है, उस दृश्य के कारण, जो
तुम्हारे सामने छाया रहता है. **68** याहवेह, जो तुम्हें जलयानों में मिस्र देश में
लौटा ले जाएंगे; उस मार्ग से जिसके विषय में मैंने कहा था, अब तुम इसे फिर
कभी न देखोगे. तब तुम वहां खुद को अपने शत्रुओं के सामने पुरुष और स्त्री,
दास-दासियों स्वरूप बिकने के लिए प्रस्तुत कर दोगे, मगर तुम्हें वहां कोई
खरीददार प्राप्त न होगा.

29 याहवेह ने होरेब पर्वत पर दी हुई वाचा के अलावा मोआब देश में
इस्राएलियों के साथ जिस वाचा की स्थापना का आदेश मोशेह को दिया
था, उसका विस्तार यह है. **2** मोशेह ने सारी इस्राएल का आह्वान कर उनसे
कहा: याहवेह ने मिस्र देश में फ़रोह, उसके परिचारकों और पूरे देश के साथ जो
कुछ किया, तुम उसके गवाह हो. **3** खुद तुमने उन भीषण विपत्तियों को देखा
है, वे अद्भुत चिन्ह और वे अलौकिक काम भी. **4** फिर भी आज तक याहवेह ने
तुम्हें न तो समझने का मन, न देखने वाली आंखें और न सुनने के कान प्रदान
किए हैं. **5** फिर भी याहवेह कहते हैं, "मैं तुम्हें चालीस साल तक इस निर्जन
प्रदेश में साथ लेकर चलता रहा हूं, इस अवधि में न तो तुम्हारे वस्त्र पुराने हुए और
न ही तुम्हारे जूते. **6** आहार के लिए तुम्हें रोटी प्राप्त न हुई और न ही पेय के
लिए अंगूरों का रस अथवा दाखमधु, कि तुम यह समझ सको कि मैं याहवेह ही
तुम्हारा परमेश्वर हूं." **7** जब तुम इस स्थान तक पहुंचे, तब हेशबोन का राजा
सीहोन और बाशान का राजा ओग, हमसे युद्ध के लक्ष्य से आ गए; मगर हमने
उन्हें हरा दिया. **8** हमने उनका साम्राज्य अपने अधिकार में करके वह भूभाग
रियूबेन गोत्र को, गाद गोत्र को और मनश्शेह गोत्र को मीरास में दे दिया. **9**
इसलिए इस वाचा के मर्म का पालन करने का ध्यान रखना, कि तुम अपने सारे
कामों में समृद्ध होते चले जाओ. **10** तुम सभी आज याहवेह अपने परमेश्वर की
उपस्थिति में खड़े हुए हो—तुम्हारे प्रधान, तुम्हारे गोत्र, तुम्हारे पुरनिए और
तुम्हारे अधिकारी और, पूरे इस्राएल की प्रजा, **11** तुम्हारे बालक, तुम्हारी पत्नियां
और तुम्हारी छावनी में ठहरे विदेशी प्रवासी भी, जो तुम्हारे प्रयोग के लिए
लकडी काटता है, और वह, जो तुम्हारे लिए जल भरता है. **12** आज तुम
याहवेह अपने परमेश्वर के साथ वाचा स्थापित कर सको, उनकी प्रतिज्ञा में
संयुक्त हो सको, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर आज तुम्हारे साथ स्थापित कर रहे
हैं, **13** कि वह आज तुम्हें अपनी प्रजा के रूप में प्रतिष्ठित कर सके, कि वह
तुम्हारे परमेश्वर हो सकें, ठीक जैसा वह तुम पर प्रकट कर चुके हैं, और जैसी
प्रतिज्ञा वह तुम्हारे पूर्वज अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब से कर चुके हैं. **14** मैं
आज यह वाचा की स्थापना और यह शपथ सिर्फ तुम्हीं से नहीं कर रहा हूं, **15**
बल्कि दोनों ही से, जो आज यहां याहवेह हमारे परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े
हुए हैं और उनसे भी, जो आज यहां उपस्थित नहीं हैं. **16** क्योंकि तुम्हें तो यह
मालूम ही है कि मिस्र देश में हमारा जीवन किस प्रकार का था, और हम किस
प्रकार के राष्ट्रों के बीच से होकर यहां पहुंचे हैं. **17** तुम तो उनकी घृणित प्रथाएं
और उनकी उन मूर्तियों को देख चुके हो, जो लकड़ी, पत्थर, चांदी और सोने
की हैं. वे उनकी जीवनशैली का अंग थी. **18** ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच कोई
स्त्री, कोई पुरुष, कोई परिवार अथवा कोई गोत्र ऐसा है, जिसका हृदय याहवेह
हमारे परमेश्वर से दूर हो उन राष्ट्रों के देवताओं की ओर लग चुका है. संभाल
जा, कि तुम्हारे बीच में विषैले फल के वृक्ष नागदौन के मूल का अंकुरण न हो
जाए. **19** जब इस प्रकार का व्यक्ति इस शाप के विवरण पर विचार करेगा, वह
अपने हृदय में खुद को बधाई देते हुए विचार करेगा, "मैं तो मनमानी करते हुए
भी सुरक्षित ही रहूंगा!" इसके द्वारा वह व्यक्ति सिंचित भूमि और सूखी भूमि,
दोनों ही पर विनाश ले आएगा. **20** याहवेह उसे कभी भी क्षमा करना न चाहेंगे,
परंतु याहवेह का कोप और उनकी जलन उस व्यक्ति के प्रति भड़क उठेगी
और इस अभिलेख में लिखित हर एक शाप उस व्यक्ति पर प्रभावी हो जाएगा
और याहवेह उस व्यक्ति का नाम ही आकाश के नीचे से मिटा देंगे. **21** तब
याहवेह इस्राएल के सारे गोत्रों में से सिर्फ उसे उन शापों के अनुसार, जो विधियां
अभिलेख में लिखी हैं, आपदा के लिए नामित कर देंगे. **22** तब वह पीढ़ी जो
भावी है, तुम्हारी वह सन्तति, जो तुम्हारे बाद अस्तित्व में आएगी, और सुदूर
देश के प्रवासी विदेशी जब इस देश पर आई हुई आपदाओं और व्याधियों को,
जिन्हें याहवेह ने उन पर लायें हैं, देखेंगे. **23** पूरा देश गंधक और लवण में
परिणत हो चुका है. यह अब प्रज्वलित उजाड़ क्षेत्र रह गया है. न इसमें रोपण
किया जा सकता है, न इसमें किसी प्रकार की उपज की संभावना है, और न इस
भूमि पर घास ही उगती है, ठीक सोदोम और अमोराह, अदमाह और ज़ेबोईम के
विध्वंस के समान, जिनका विनाश याहवेह ने अपने कोप और आक्रोश में किया
था. **24** सारी जनताओं के सामने यही प्रश्न होगा: "क्यों किया है याहवेह ने यह
सब इस देश के साथ? क्या कारण है इस कोप के उद्वेग का?" **25** तब लोग
उत्तर देंगे, "उन्होंने याहवेह, उनके पूर्वजों के परमेश्वर से स्थापित वाचा भंग
कर दी थी, जिसकी स्थापना याहवेह ने उस अवसर पर की थी, जब उन्होंने
इस्राएलियों को मिस्र देश से निर्गत किया था. **26** उन्होंने विमुख होकर परकीय
देवताओं की सेवा-उपासना शुरू कर दी. ये वे देवता थे जिन्हें इन्होंने पहले कभी
न जाना था, जिन्हें याहवेह ने इन्हें कभी सौंपा ही न था. **27** इसलिये याहवेह
का कोप इस देश पर उद्दीप्त हो उठा, और इस अभिलेख में उल्लेखित हर एक
शाप उन पर प्रभावी हो गया. **28** तब याहवेह ने अपने कोप और आक्रोश और
उग्र क्रोध में उन्हें इस देश से उन्मूलित कर दिया है, और उन्हें अन्य देश में
बिखरा दिया है, जैसा कि आज स्पष्ट ही है." **29** गुप्त बात याहवेह हमारे
परमेश्वर की हैं, मगर वे बात, जो प्रकट हैं, चिरकाल के लिए हमारे और हमारी
सन्तति के लिए नियत हैं, कि हम इस विधान के मर्म का पालन कर सकें.

30 तब भविष्य में, जब तुम इन आशीषों और शापों का अनुभव कर चुको,
जिनका उल्लेख यहां मैंने इस समय तुम्हारे सामने किया है, और तुम्हें
इन सबका स्मरण उन देशों में हो, जहां याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने निकाल दिया
है, **2** और वहां तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर की ओर उन्मुख होते हो, तुम और
तुम्हारे वंशज अपने पूरे हृदय और प्राणों से आज मेरे द्वारा प्रस्तुत सारे आदेशों के
प्रति आज्ञाकारी हो जाते हो, **3** तब याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें बंधुआई से

मुक्त करेंगे. वह तुम पर सहानुभूति प्रकट करेंगे और तुम्हें उन सभी राष्ट्रों में से
लेकर इकट्ठा करेंगे, जहां-जहां याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बिखरा दिया था.
4 यदि तुम्हारे लोग पृथ्वी के छोर पर भी जा पड़े होंगे, याहवेह तुम्हारे परमेश्वर
उन्हें वहां से भी लौटा ले आएंगे. **5** याहवेह तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें उसी देश में ले
आएंगे, जो तुम्हारे पूर्वजों के अधिकार में था. तब उस देश पर तुम्हारा अधिकार
हो जाएगा. याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें समृद्धि प्रदान करेंगे और तुम्हारी
गिनती तुम्हारे पूर्वजों से भी अधिक हो जाएगी. **6** इसके अलावा, याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों के हृदय का ख़तना करेंगे कि तुम
याहवेह अपने परमेश्वर से अपने पूरा हृदय और अपने पूरा प्राण से प्रेम करने
लगो, और इससे तुम जीवित रह सको. **7** याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे
शत्रुओं पर ये शाप प्रभावी कर देंगे; उन पर, जिन्हें तुमसे घृणा है, जिन्होंने तुम
पर अत्याचार किए हैं. **8** तुम याहवेह के आदेशों का पालन दोबारा करने लगोगे
और मेरे द्वारा आज प्रस्तुत किए जा रहे सारे आदेशों का पालन करोगे. **9** तब
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे सारे उपक्रमों में, तुम्हारी संतान उत्पत्ति में,
तुम्हारे पशुओं में और तुम्हारी भूमि की उपज में बहुल समृद्धि प्रदान करेंगे,
क्योंकि तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के निमित्त स्थायी रूप से उनकी तुष्टि का
विषय हो जाओगे; ठीक जैसी उनकी तुष्टि तुम्हारे पूर्वजों में हो गई थी, **10** यदि
तुम याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के आदेशों और अध्यादेशों के पालन के विषय में
आज्ञाकारी बनोगे, जो इस व्यवस्था के अभिलेख में लिखे हैं, यदि तुम याहवेह
अपने परमेश्वर की ओर अपने पूरे हृदय और प्राणों से लग जाओगे. **11** बात यह
है कि आज तुम्हें मेरे द्वारा प्रदान किया जा रहा आदेश तुम्हारे लिए न तो अनोखा
है, न ही दूर. **12** यह आदेश आकाशमंडल में नहीं है कि तुम कहो, “कौन वहां
जाकर हमारे लिए उसे लेकर आएगा, कि वह हमें सुनाया जाए, कि हम उसका
पालन कर सकें?” **13** वैसे ही, यह सागर पार भी नहीं है, कि तुम यह कहो,
“कौन जाएगा सागर पार कि उसे हमारे लिए लेकर आए, कि हम उसे सुन
सकें और उसका पालन कर सकें?” **14** वस्तुतः परमेश्वर का वचन तुम्हारे
बहुत करीब है; तुम्हारे मुख में तथा तुम्हारे हृदय में, कि तुम इसका पालन कर
सको. **15** आज यह समझ लो, कि मैंने जीवन और समृद्धि और मृत्यु और
आपदा का प्रस्ताव रखा है. **16** तुम्हारे लिए आज जो मेरा आदेश है: याहवेह,
अपने परमेश्वर से प्रेम करते रहो, उन्हीं की नीतियों का पालन करो, और
उनके आदेशों, अध्यादेशों और नियमों का पालन करो, कि तुम जीवित रह
सको, तुम्हारी गिनती में वृद्धि होती जाए, और याहवेह तुम्हारे परमेश्वर जिस
देश में, तुम्हें प्रवेश कर रहे हैं, उस पर तुम अधिकार कर लोगे, और याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें आशीष और समृद्धि प्रदान करें. **17** मगर यदि तुम्हारा हृदय
फिर जाए, तुम अनाज्ञाकारी हो जाओ, पराए देवताओं की ओर मुडकर उनकी
उपासना और सेवा करने लगो, **18** मैं आज तुम्हारे सामने यह घोषणा कर रहा हूं,
तुम निःसंदेह नाश हो जाओगे. तुम यरदन पार कर जिस देश पर अधिकार करने
के उद्देश्य से प्रवेश कर रहे हो, उस देश में अपनी आयु के दिनों में कोई वृद्धि न
कर सकोगे. **19** आज मैं आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध गवाह बना रहा हूं,
कि मैंने तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु, आशीष और शाप प्रस्तुत किए हैं,
कि तुम याहवेह अपने परमेश्वर से प्रेम करने और उनके आदेशों का पालन
करने, **20** उनसे दृढतापूर्वक लगे रहने के द्वारा तुम और तुम्हारे वंशज जीवन को
चुन लो, क्योंकि वही तुम्हारे जीवन और दीर्घायु हैं. इससे तुम अपने पूर्वजों
अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब से याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा की गई शपथ
के कारण उस देश में निवास करते रह सको.

31 इन सबके बाद मोशेह ने सारे इस्राएल से यह कहा: **2** “मेरी उम्र एक सौ
बीस साल की हो चुकी है; अब मुझमें वह पहले के समान क्षमता नहीं
रह गई है. याहवेह ने मुझे आदेश दिया है, ‘तुम इस यरदन नदी को पार नहीं
करोगे.’ **3** याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ही तुम्हारे आगे हो यरदन नदी को पार
करेंगे. तुम्हारे वहां पहुंचने के पहले वह इन जनताओं को नाश कर देंगे और तुम
उन्हें उनके देश से वंचित कर दोगे. जो तुम्हारा अगुआ हो यरदन नदी पार
करेगा, वह व्यक्ति यहोशू है ठीक जैसा याहवेह ने तय कर दिया है. **4** याहवेह
का व्यवहार उनके साथ वही होगा, जो अमोरियों के राजा सीहोन और ओग के
साथ था, जब उन्होंने उन्हें और उनके देश को नाश किया था. **5** याहवेह उन्हें
तुम्हारे सामने समर्पित कर देंगे. उनके साथ तुम्हारी नीति वही होगी, जो मेरे द्वारा
स्पष्ट किए गए सारे आदेशों में है. **6** दृढ और साहसी बने रहना. तुम उनसे न
भयभीत होना, न कांपने लगना; क्योंकि जो तुम्हारे साथ चल रहे होंगे, वह
याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हैं. वह न तो तुम्हें निराश करेंगे और न ही तुम्हारा त्याग
करेंगे.” **7** इसके बाद मोशेह ने यहोशू को समस्त इस्राएल के सामने बुलाकर
उन्हें आदेश दिया, “सुदृढ होकर साहसी बन जाओ, क्योंकि तुम्हीं इन लोगों के
साथ उस देश में जाओगे, जिसे प्रदान करने की प्रतिज्ञा याहवेह ने तुम्हारे पूर्वजों
से की थी, और तुम्हीं वह देश इन्हें मीरास के रूप में प्रदान करोगे. **8** वह,
याहवेह ही हैं, जो तुम्हारे अगुए होंगे. वह तुम्हारे साथ साथ रहेंगे, वह न तुम्हें
निराश करेंगे और न ही तुम्हारा साथ छोड़ेंगे. तुम न तो भयभीत होना और न
हतोत्साहित.” **9** इसके बाद मोशेह ने इस व्यवस्था को लिखकर पुरोहितों को,
जो लेवी वंशज थे, जो याहवेह की वाचा का संदूक उठाने के लिए तय किए गए
थे, और इस्राएल के सारी पुरनियों को सौंप दिया. **10** इसके बाद मोशेह ने उन्हें
यह आदेश दिया, “हर एक सात साल के बीतने पर, जो ऋण-माफ़ करने का
साल होता है, कुटीर उत्सव के अवसर पर, **11** जब सारा इस्राएल याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर के सामने उस स्थान पर उपस्थित होता है, जिसे वह खुद चुनेंगे,
तब तुम यह व्यवस्था इस ढंग से पढ़ोगे, कि इसे सारा इस्राएल सुन ले. **12** पुरुषों,
स्त्रियों, बालकों और तुम्हारे नगरों में निवास कर रहे उस विदेशी को एकत्र करो,
कि वे इसे सुनें और याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा धारण करना सीख लें,
और इस व्यवस्था के समग्र मर्म का सावधानीपूर्वक पालन किया करें. **13** इसके
अलावा उनके वे बालक, जिन्हें इस विषय का कोई बोध नहीं है, यह सुनकर
तुम जिस देश पर अधिकार करने के लिए यरदन नदी पार करने पर हो, उस देश
में तुम जब तक जीवित रहोगे तब तक याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा
रखना सीख सकें.” **14** इसके बाद याहवेह ने मोशेह को सूचित किया, “सुनो,
तुम्हारे प्राण त्यागने का समय निकट है; यहोशू को अपने साथ लेकर मिलनवाले
तंबू में उपस्थित हो जाओ, कि मैं उसे तेरे स्थान पर नियुक्त कर सकूं.” तब
मोशेह और यहोशू ने स्वयं को वहां मिलनवाले तंबू में प्रस्तुत किया. **15** छावनी
में याहवेह बादल के खंभे में प्रकट हुए. यह मेघ-स्तंभ छावनी के प्रवेश पर ठहर
गया. **16** याहवेह ने मोशेह से कहा, “सुनो, तुम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के
लिए मिल जाने पर हो. ये लोग तो उस देश के पराए देवताओं से प्रभावित हो,
मेरे साथ मेरे द्वारा स्थापित की गई वाचा भंग कर, मेरा त्याग कर देंगे, और मेरे
साथ वैवाहिक विश्वासघात कर देंगे. **17** उस स्थिति में उनके विरुद्ध मेरा कोप
भड़क जाएगा. उस स्थिति में मैं उनसे अपना मुखमंडल छिपाकर उनका त्याग
कर दूंगा, और वे काल का कौर हो जाएंगे. उन पर अनेक अनिष्ट और कष्ट आ
पड़ेंगे, परिणामस्वरूप, वे कह उठेंगे, ‘क्या, हमारे बीच हमारे परमेश्वर की
अनुपस्थिति नहीं, हम पर इन विपत्तियां आने की वजह?’ **18** मगर इतना तो
निश्चित है, कि इस स्थिति में मैं उनसे विमुख हो ही जाऊंगा, क्योंकि उन्होंने
परकीय देवताओं की ओर उन्मुख होने का कुकर्म किया है. **19** “इसलिए अब,
इस गीत की रचना करो और यह सारे इस्राएलियों को सिखा दो, कि यह गीत
उनके होंठों पर बस जाए, कि यह गीत इस्राएलियों के प्रति मेरे लिए गवाह हो
जाए. **20** क्योंकि जब वे मेरे साथ इस देश में प्रवेश करेंगे, जहां, दुग्ध और मधु
का बाहुल्य है, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने उनके पूर्वजों से की थी, जब वे वहां इनके

उपभोग से तृप्त हो जाएंगे, जहां वे समृद्ध हो जाएंगे, तब वे पराए देवताओं की
ओर उन्मुख होकर उनकी उपासना करने लगेंगे, मेरी उपेक्षा करते हुए मेरी वाचा
को भंग कर देंगे. 21 फिर होगा यह कि अनेक विपत्तियां और आपदाएं उन्हें छा
लेंगी, तब यह गीत उनके सामने एक गवाह हो जाएगा, क्योंकि उनके वंशज इस
गीत को भुला न पाएंगे. मुझे तो आज ही यह मालूम है कि कौन सी योजना
उनके मन में अंकुरित हो रही है, जबकि अभी तक मैंने उन्हें पराए देश में प्रवेश
नहीं करवाया है.” 22 तब मोशेह ने उसी दिन इस गीत की रचना की और इसे
इस्राएलियों को सिखा दिया. 23 इसके बाद याहवेह ने नून के पुत्र यहोशू को
आदेश दिया, “मजबूत हो जाओ और साहस बनाए रखो, क्योंकि तुम्हीं हो,
जो इन इस्राएलियों को उस देश में लेकर जाओगे, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने उनसे
की थी. मैं तुम्हारे साथ रहूंगा.” 24 जब मोशेह ने व्यवस्था के इन शब्दों को
एक पुस्तक में लिखना समाप्त कर लिया, 25 मोशेह ने उन लेवियों को, जो
याहवेह की वाचा के संदूक को उठाने के लिए चुने गए हैं, यह आदेश दिया, 26
“व्यवस्था के इस ग्रंथ को लेकर याहवेह, अपने परमेश्वर की वाचा के संदूक के
पास रख दो, कि यह वहां तुम्हारे लिए गवाह के रूप में बना रहे. 27 मुझे तुम्हारा
विद्रोह और तुम्हारा हठ मालूम है. अब यह समझ लो: जब आज मैं तुम्हारे बीच
जीवित हूं, तुम याहवेह के प्रति इस प्रकार विद्रोही रहे हो; तो मेरी मृत्यु के बाद
और कितने अधिक न हो जाओगे! 28 अब अपने-अपने गोत्रों के सारे पुरनियों
और अधिकारियों को मेरे सामने ले आओ, कि मैं उन्हें यह बातें सुना दूं और
आकाश और पृथ्वी को उनके विरुद्ध गवाह बना दूं. 29 क्योंकि मुझे यह मालूम
है कि मेरी मृत्यु के बाद तुम भ्रष्ट हो जाओगे और उस नीति से दूर हो जाओगे,
जिसका मैंने तुम्हें आदेश दिया है. अंततः तुम पर कष्ट आ ही पड़ेगा; क्योंकि तुम
वही कर रहे होगे, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है. तुम अपने हाथों के कामों के
द्वारा याहवेह के क्रोध को भड़का दोगे.” 30 तब मोशेह ने इस्राएल की सारी
प्रजा को सुनाते हुए इस गीत के सारे शब्द पढ़ दिए:

32 आकाशमंडल, यहां ध्यान दो, मुझे सम्भाषण का अवसर प्रदान करो;
पृथ्वी मेरे मुख से मुखरित शब्द सुने. 2 मेरी शिक्षा वृष्टि-समान टपके,
मेरा सम्भाषण कोमल घास पर लघु बूंदों के समान, वनस्पति पर वृष्टि फुहार
समान और ओस की बूंदों समान पड़े. 3 क्योंकि मेरी घोषणा है याहवेह के
सम्मान; हमारे परमेश्वर की महानता की स्तुति करो! 4 वह चट्टान! त्रुटिहीन है
उनकी रचना, क्योंकि उनकी सारी युक्तियां नीतियुक्त ही हैं; विश्वासयोग्य
परमेश्वर, अन्याय विहीन, न्यायपूर्ण और सत्यनिष्ठ हैं वह. 5 याहवेह के प्रति
उनका पालन विकृत रहा है, उनके दोष पूरा होने के कारण वे उनकी संतान नहीं
रह गए, परंतु अब वे हैं पतनोन्मुख और कुटिल पीढ़ी! 6 ओ मूर्खो, और
मन्दमति लोगो, क्या तुम यही प्रतिफल दे रहे हो याहवेह को? क्या वह तुम्हारे
पिता नहीं, जो तुम्हें यहां तक ले आए हैं? तुम उन्हीं की कृति हो और उन्हीं के
द्वारा तुम प्रतिष्ठित किए गए हो? 7 अतीत के उन दिनों का स्मरण करो; सारी
पीढ़ियों के सालों का विचार करो. अपने पिता से विवेचना करो, तो वह तुम्हें
अवगत करा देंगे, तुम्हारे पुरनिए, और वे इसका उल्लेख करेंगे. 8 जब सर्वोच्च
ने राष्ट्रों में उनकी मीरास आवंटित की, जब उन्होंने आदम के वंशजों को
वर्गीकृत किया, उन्होंने राष्ट्रों की सीमाएं इस्राएलियों की गिनती के आधार पर
तब तय कर दीं. 9 क्योंकि याहवेह की संपदा है उनकी प्रजा; याकोब उनकी
मीरास का आवंटन है. 10 एक मरुभूमि में उनकी उससे भेंट हुई, वस्तुतः वह
सांय-सांय करता निर्जन क्षेत्र था. उन्होंने उसके आस-पास बाड़ खड़ी कर दी,
वह उसकी देखभाल करते रहे; यहां तक कि उन्होंने उसकी सुरक्षा अपनी आंख
की पुतली-समान की, 11 उस गरूड़-समान, जो अपने नीड़ को हिला कर अपने
बच्चों को जगाता, उनके ऊपर मंडराता रहता है, वह अपने डैने फैलाकर उन्हें
उठा लेता है, और अपने डैनों पर ही ले जाता है. 12 सिर्फ याहवेह ही उसके
दिग्दर्शक थे; याहवेह को किसी परकीय देवता की ज़रूरत न थी. 13 याहवेह
ने उसे अपने देश के ऊंचे क्षेत्रों में विचरण करने योग्य बना दिया था. उसके
उपयोग के लिए भूमि की उपज उपलब्ध थी. याहवेह ने उसके लिए चट्टान में
से मधु परोस दी, और वज्र चट्टान में से तेल भी! 14 गाय-दुग्ध-दही, भेड़-
बकरियों का दूध, और मेमनों और बाशान प्रजाति के मेढ़ों, और बकरों का
वसा, इसके अलावा सर्वोत्कृष्ट गेहूं! और तुमने लाल रंग के बेहतरीन दाखमधु
का सेवन किया. 15 मगर यशुरून स्वस्थ होकर उद्दंड हो गया; तुम तो हृष्ट-पुष्ट
और आकर्षक हो गए थे. तब उसने अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर ही का परित्याग
कर दिया, उसे अपने उद्धार की चट्टान से ही घृणा हो गई. 16 विदेशी देवताओं
के द्वारा उन्होंने याहवेह को ईर्ष्यालु बना दिया, घृणित मूर्तियों के द्वारा उन्होंने
याहवेह के कोप को उद्दीप्त कर दिया. 17 उन्होंने प्रेत आत्माओं को बलि
अर्पित की, जो परमेश्वर ही नहीं होती. उन परकीय देवताओं को, जो उनके
लिए अज्ञात ही हैं, नए देवता, जिनका अस्तित्व हाल ही में प्रकट हुआ है,
जिन्हें तुम्हारे पूर्वज जानते भी न थे. 18 तुमने उस चट्टान की उपेक्षा की, जिसने
तुम्हें पाला पोसा. 19 यह सब याहवेह की दृष्टि में आ गया और उन्हें उनसे
घृणा हो गई, क्योंकि यह उत्तेजना उन्हीं के पुत्र-पुत्रियों द्वारा की गई थी. 20
तब याहवेह ने कहा, “मैं उनसे अपना मुख छिपा लूंगा, मैं देखना चाहूंगा कि
कैसा होता है, उनका अंत; क्योंकि वे विकृत पीढ़ी हैं; ऐसी सन्तति हैं, जो
विश्वासयोग्य हैं ही नहीं. 21 उन्होंने मुझे उसके द्वारा ईर्ष्यालु बना दिया, जो
ईश्वर है ही नहीं; उन्होंने अपनी मूर्तियों द्वारा मुझे उत्तेजित किया है. तब अब मैं
उन्हें उनके द्वारा ईर्ष्या पैदा करूंगा जिन्हें राष्ट्र ही नहीं माना जा सकता; एक मूर्ख
राष्ट्र के द्वारा मैं उन्हें क्रोध के लिए उकसाऊंगा. 22 क्योंकि मेरी क्रोध की अग्नि
प्रज्वलित हो चुकी है, वह अधोलोक के निम्नतम स्तर तक प्रज्वलित है. पृथ्वी
की उपज इसने भस्म कर दी है, और पर्वतों की नींव तक इसने ज्वलित कर दी
है. (Sheol h7585) 23 “उन पर तो मैं विपत्तियों के ढेर लगा दूंगा उन पर
मैं अपने बाणों का प्रहार करूंगा. 24 वे दुर्भिक्ष के प्रभाव से नाश हो जाएंगे,
महामारी उन्हें चट कर जाएगी और बड़ा दयनीय होगा उनका विनाश; मैं उन पर
वन्य पशुओं के दांत प्रभावी कर दूंगा, धूलि में रेंगते जंतुओं का विष भी. 25 घर
के बाहर तलवार द्वारा निर्वंश किए जाएंगे; वे घर के भीतर भयाक्रान्त होंगे.
युवक और युवतियां, दूध पीते शिशु और वृद्ध. 26 मैं कह सकता था, मैं उन्हें
काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, मैं मनुष्यों के बीच से उनकी स्मृति ही मिटा
दूंगा, 27 यदि मुझे शत्रु की ओर से उत्तेजना का भय न होता, कि उनके विरोधी
गलत अनुमान लगाकर यह कहें, ‘विजय तो हमारे बाहुबल का परिणाम है;
इसमें याहवेह का कोई योग नहीं था.’” 28 क्योंकि वे ऐसे राष्ट्र हैं, जिसमें बुद्धि
का नितांत अभाव है, कुछ भी समझ नहीं है उनमें. 29 यदि उनमें बुद्धिमता होती
वे यह समझ लेते, उन्हें अपने अंत का अंतर्बोध हो जाता! 30 भला यह कैसे
संभव हो सकता है, कि सिर्फ एक व्यक्ति एक सहस्र को खदेड़ दे, और दो
व्यक्ति दस सहस्र को, यदि उनकी उस चट्टान ने अपने हाथ उन्हें न सौंपे होते,
और याहवेह ने उन्हें उनके अधीन न किया होता? 31 बात यह है कि उनकी
चट्टान हमारी चट्टान के तुल्य नहीं है, यहां तक कि हमारे शत्रु तक यह मानते हैं.
32 उनकी द्राक्षालता का मूल है सोदोम की द्राक्षालता और अमोराह के खेत.
उनके द्राक्षा विषैली कोटि के द्राक्षा हैं, द्राक्षा पुंज कड़वे हैं. 33 क्योंकि उनका
द्राक्षारस सर्पों का विष है, नागों का घातक ज़हर. 34 “क्या यह सब मेरे भंडार
में संग्रहीत नहीं है; मेरे कोष में मोहर के द्वारा सुरक्षित? 35 प्रतिशोध मेरा दायित्व
है; प्रतिदण्ड मैं दूंगा. वह अवसर आएगा, जब उनका पैर तो फिसलेगा ही;
क्योंकि उनका विपदा दिवस आसन्न है, और द्रुत गति है उन पर आ रही नियति
की.” 36 क्योंकि जब याहवेह यह देखेंगे कि उनकी प्रजा की शक्ति का ह्रास
हो चुका है, और दास अथवा स्वतंत्र कोई शेष न रहा है, याहवेह तब उनके

सेवकों पर कृपा करेंगे और वह अपनी प्रजा का प्रतिशोध ज़रूर लेंगे. 37 याहवेह
प्रश्न करेंगे: "कहां हैं उनके देवता; वह चट्टान, जिसमें उन्होंने आश्रय लिया था?
38 वे देवता, जो उनकी बलियों की वसा का सेवन करते रहे थे, और उनकी भेंट
से दाखमधु का पान किया था? वे तुम्हारी सहायता के लिए सक्रिय हो जाएं! हो
जाएं वे तुम्हारा आश्रय-स्थल! 39 "ध्यान से देख लो कि मैं ही याहवेह हूं, कोई
भी मेरे अलावा नहीं है—ये देवता भी नहीं; मेरे ही आदेश पर मृत्यु होती है और
जीवन का प्रदाता भी मैं ही हूं, घाव मेरे द्वारा किए गए हैं, और मैं ही घाव भर भी
देता हूं! कोई भी ऐसा नहीं है, जो मेरे हाथों से कुछ छीन सके. 40 मैं ही हूं, जो
स्वर्ग की ओर अपना हाथ बढ़ाकर यह कहता हूं: शपथ मेरे जीवन की, 41 जब
मैं अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लूंगा, जब मैं अपने विरोधियों को उसका प्रतिफल
दूंगा, मैं अपनी तलवार पर धार लगा उसे चमकाऊंगा और मेरा हाथ न्याय को
पुष्ट करेगा. 42 मैं अपने बाणों को रक्त से मदमस्त कर दूंगा, मेरी तलवार मारे
गये लोगों और बंदियों के रक्त के साथ मांस को, शत्रुओं के लंबे-लंबे केशवाले
अधिकारियों के सिरों को ग्रास लेगी." 43 राष्ट्रों, याहवेह की प्रजा के साथ
उल्लास मनाओ, क्योंकि वह अपने सेवकों की हत्या का प्रतिशोध लेंगे; अपने
शत्रुओं से वह प्रतिशोध लेंगे, इससे वह अपने देश और अपनी प्रजा के लिए
प्रायश्चित पूरा कर देंगे. 44 इसके बाद मोशेह ने जाकर सारी इस्राएली प्रजा के
सामने उन्हें सुनाते हुए इस गीत रचना का पठन किया; उन्होंने और उनके साथ
नून के पुत्र होशिया (यहोशू) ने. 45 जब मोशेह सारी इस्राएलियों के सामने
समग्र गीत का पाठन कर चुके, 46 उन्होंने इस्राएलियों को आदेश दिया, "इन
शब्दों को तुम हृदय में रख लो. ये मैं तुम्हें चेतावनी स्वरूप सौंप रहा हूं. तुम
अपनी सन्तति को इन्हें सावधानीपूर्वक पालन करने का आदेश दोगे; इस विधान
का पूरी तरह पालन करने का. 47 क्योंकि यह कोई निरर्थक वक्तव्य नहीं
है. वस्तुतः यही तुम्हारे जीवन है. इसी के मर्म के द्वारा उस देश में तुम अपने
जीवन के दिनों का आवर्धन करोगे, जिसमें तुम यरदन पार करके प्रवेश करने
पर हो, जिसका तुम अधिग्रहण करोगे." 48 उसी दिन याहवेह ने मोशेह को
यह आदेश दिया, 49 "अब तुम अबारिम के नेबो पर्वत पर चढ़ जाओ, जो
येरीख़ो के सम्मुख मोआब देश में है. वहां जाकर तुम कनान देश पर दृष्टिपात
करो, जो मैं अभिग्रहण के लिए इस्राएल को प्रदान कर रहा हूं. 50 तब तुम
जिस पर्वत पर चढ़ोगे, वहीं अपने प्राण विसर्जित कर देना और अपने पूर्वजों
में सम्मिलित हो जाना, जिस प्रकार तुम्हारे भाई अहरोन ने होर पर्वत पर जा
अपने प्राण विसर्जित किए थे, और वह अपने पूर्वजों में सम्मिलित हो गया. 51
क्योंकि तुमने समस्त इस्राएलियों के बीच में मेरिबाह-कादेश के जल-स्रोतों पर
ज़िन के निर्जन प्रदेश में मेरे साथ विश्वासघात किया, इस्राएलियों के बीच में मेरे
लिए उपयुक्त पवित्रता का व्यवहार नहीं किया. 52 तुम दूर ही से उस देश का
दर्शन कर सकोगे; मगर उसमें प्रवेश नहीं करोगे, उस देश में, जो मैं इस्राएलियों
को प्रदान कर रहा हूं."

33 अपनी मृत्यु के पहले मोशेह ने, जो परमेश्वर के जन थे, इस्राएलियों को
इन शब्दों में आशीर्वाद दिए. 2 उन्होंने कहा: "याहवेह सीनायी से आ
गए और सेईर से उन पर सूर्योदय के समान प्रकट हुए; पारान पर्वत से उन्होंने
अपनी रोशनी बिखेरी, और वह दस हज़ार पवित्र प्राणियों के बीच में दिखाई
दिए, उनके दाएं हाथ से उन पर बिजली कौंध गई. 3 वस्तुतः वह तो अपनी
प्रजा से प्रेम ही करते हैं. याहवेह, आपके सभी पवित्र प्राणी आपके अधीन हैं, वे
आपके चरणों में बैठ, आपकी आज्ञा स्वीकार करते हैं. 4 मोशेह से हमें व्यवस्था
प्राप्त हुआ है, यह याकोब के वंशजों का खजाना है. 5 जब सारी प्रजा के प्रधान
इकट्ठा हुए थे, जब इस्राएल के सारे गोत्र वहां थे, याहवेह यशुरून में शासक थे.
6 "रियूबेन जीवित रहे, उसकी मृत्यु न हो, और न ही उसके गोत्र की गिनती
कम हो." 7 यहूदाह के लिए मोशेह के वचन थे: "याहवेह, यहूदाह की विनती
सुनिए, उसे अपने लोगों तक ले आइए. उसके हाथों को मजबूत कर दीजिए,
आप ही उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी सहायता बने रहें!" 8 लेवी के विषय में
मोशेह के वचन थे, "याहवेह, आपका थुम्मीम और आपका उरीम आपके
विश्वासयोग्य लोगों के अधिकार में बना रहे, जिसे आप मस्साह में परख चुके
हैं, जिसके साथ आपने मेरिबाह जल के सोते पर वाद-विवाद किया था; 9
जिसने अपने पिता और अपनी माता के विषय में कहा था, 'वे मेरे लिए कोई
नहीं हैं.' उसने अपने भाइयों को भी नहीं अपनाया, और न ही अपनी ही संतान
को, क्योंकि वे आपके आदेश के पालक बने रहे, उन्होंने आपकी वाचा का
सम्मान बनाए रखा. 10 वे ही हैं, जो याकोब को आपके नियमों की शिक्षा
देंगे, और इस्राएल को आपके विधान की. वे आपके सामने धूप जलाएंगे, और
आपकी वेदी पर पूरी होमबलि भी. 11 याहवेह, उसकी संपदा को समृद्धि प्रदान
कीजिए, उसके हाथों के परिश्रम को स्वीकार कीजिए; उसके शत्रुओं की कमर
को चूर-चूर कर दीजिए, कि वे कभी उठ न सकें." 12 बिन्यामिन के विषय में
मोशेह ने कहा: "याहवेह का प्रिय, यह गोत्र उनके द्वारा दी गई सुरक्षा में रहता
रहे, याहवेह उसे हमेशा सुरक्षा प्रदान करते रहते हैं, मानो वे याहवेह के दोनों
कांधों के बीच सुरक्षित हैं." 13 योसेफ़ के संबंध में मोशेह ने कहा: "याहवेह
द्वारा उसका देश समृद्धि प्राप्त करता जाए, स्वर्ग की सर्वोत्तम वस्तुओं और ओस
के द्वारा, और वह जल जो पृथ्वी की गहराई से उत्पन्न होता है; 14 सूर्य के
प्रभाव से उत्पन्न उत्तम फल, और ऋतुओं में प्राप्त उत्तम उपज; 15 सदा से
प्रतिष्ठित पर्वतों से प्राप्त फल और सदा की पहाड़ियों से प्राप्त सर्वोत्तम वस्तुएं;
16 पृथ्वी की भरपूरी में से सर्वोत्तम वस्तुएं, और उनकी कृपादृष्टि, जो जलती हुई
झाड़ी में प्रकट हुई. यह सब योसेफ़ के सिर पर उतर जाए, उसके सिर पर जो
अपने भाइयों से अधिक यशस्वी हुआ. 17 उसका वैभव वैसा ही है, जैसा सांड
के पहिलौठे का; उसके सींग जंगली सांड के सींगों समान हैं. इनके प्रयोग से
वह राष्ट्रों को घायल करेगा, उन्हें एक ही समय पर पृथ्वी के छोर तक हकाल
देगा. ये ही हैं एफ्राईम के दस हज़ार; यही हैं मनश्शेह के हज़ार." 18 मोशेह के
वचन ज़ेबुलून के लिए ये थे, "ज़ेबुलून, तुम्हारी यात्राएं तुम्हारे लिए खुशी का
विषय बनी रहें. इस्साखार, तुम अपने शिविरों में ही उल्लास करते रहो. 19 वे
लोगों को पर्वतों पर आमंत्रित करेंगे वहां वे उपयुक्त बलि चढ़ाएंगे; वे महासागर
से उत्पन्न की भरपूरी के स्वामी होंगे, वे बालू में छुपे हुए खजाने प्राप्त करेंगे."
20 गाद के लिए मोशेह ने कहा: "धन्य है गाद का विस्तार! गाद का जीवन सिंह
के समान है, वह भुजा को फाड़ देता है और खोपड़ी को भी. 21 उसने तो सबसे
अच्छी भूमि अपने लिए चुन ली है, क्योंकि वही शासक के लिए तय अंश
आरक्षित था; उसने गोत्रपिताओं के साथ आकर, इस्राएल के लिए याहवेह के
नियमों और याहवेह के न्याय का पालन किया." 22 दान के विषय में मोशेह
ने कहा: "दान तो सिंह का बच्चा है, जो बाशान से छलांग लगाता है." 23
नफताली के लिए मोशेह के वचन थे: "नफताली, तुम याहवेह की दी हुई समृद्धि
में उनकी कृपादृष्टि में संतुष्ट हो; तुम जाकर सागर और दक्षिण क्षेत्र पर अधिकार
कर लो." 24 आशेर के लिए मोशेह ने कहा: "आशेर तो याकोब के अन्य पुत्रों
से अधिक धन्य है; उसे उसके भाइयों की भी कृपादृष्टि प्राप्त हो. उसके पांव
तेल में जा पड़े. 25 तुम्हारे फाटकों पर लोहे और कांस्य की शलाकाएं होंगी,
तुम्हारा बल उतना ही होगा, जितने होंगे उम्र के साल. 26 "कोई भी नहीं है
यशुरून के परमेश्वर के तुल्य, जो तुम्हारी सहायता के लिए आकाशमंडल में
और अपनी भव्यता में बादलों में आना-जाना करते हैं. 27 वह परमेश्वर, जो
सनातन हैं, एक आसरा हैं, और उसके नीचे हैं वे भुजाएं, जो हमेशा के लिए हैं,
याहवेह ने ही उस शत्रु को तुम्हारे सामने से खदेड़ दिया, और आदेश दिया, 'नाश
हो जाओ!' 28 इसलिये अब इस्राएल का रहना सुरक्षा में है; याकोब का स्रोत
अब अलग हो गया है. अब वह उस देश में बस चुका है, जो अन्न और नए

अंगूरों के रस से भरा एक देश है, उस पर तो आकाश भी ओस वृष्टि करता है.
29 इस्राएल! तुम धन्य हो, कौन है तुम्हारे समान, जिसे याहवेह ने ही मुक्त किया
है? जो तुम्हारी सहायता की ढाल हैं, और तुम्हारे वैभव की तलवार! तब तुम्हारे
सामने तुम्हारे शत्रु दुबक जाएंगे, तब तुम उनके पूजा स्थलों को रौंद डालोगे."

34 इसके बाद मोशेह मोआब के मैदानों से नेबो पर्वत पर चले गए, जो
येरीख़ो के सामने पिसगाह की चोटी पर है. यहां याहवेह ने उनकी
दृष्टि में उस पूरे देश को दिखा दिया; गिलआद से लेकर दान तक, 2 पूरा
नफताली और एफ्राईम और मनश्शेह और सारा यहूदिया, पश्चिमी सागर तक, 3
नेगेव और येरीख़ो की घाटी में मैदान, खजूर वृक्षों का नगर, ज़ोअर तक. 4
तब याहवेह ने उनसे कहा, "यही है वह ज़मीन, जिसे देने की शपथ के साथ
प्रतिज्ञा मैंने अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब से यह कहते हुए की थी, 'यह मैं
तुम्हारे वंशजों को दे दूंगा.' यह मैंने तुम्हें दिखाया है, मगर तुम खुद वहां नहीं
जाओगे." 5 याहवेह के सेवक मोशेह की मृत्यु मोआब देश में हो गई; याहवेह
की भविष्यवाणी के अनुसार. 6 उन्हें मोआब देश की उस घाटी में बेथ-पिओर
के सामने गाड़ दिया गया. आज तक किसी व्यक्ति को यह मालूम न हो सका
कि मोशेह की कब्र किस स्थान पर है. 7 हालांकि मोशेह की उम्र मृत्यु के समय
एक सौ बीस साल की थी, न तो उनकी आंखें धुंधली हुई थीं और न ही उनके
बल में कोई कमी आई थी. 8 इस्राएल वंशज मोशेह के लिए मोआब के मैदानों
में तीस दिन तक विलाप करते रहे. तीस दिन के बाद उनका मोशेह के लिए
विलाप करना खत्म हुआ. 9 इस अवसर पर नून के पुत्र यहोशू बुद्धि की आत्मा
से भरे हुए थे, क्योंकि मोशेह ने उन पर अपने हाथ रखे थे. इस्राएलियों द्वारा वह
स्वीकार कर लिए गए, और वही करने लगे जैसा आदेश याहवेह द्वारा मोशेह को
दिया गया था. 10 इसके बाद इस्राएल में मोशेह के समान कोई भी भविष्यद्वक्ता
नहीं हुआ, जिससे याहवेह की बातचीत आमने-सामने हुआ करती थी, 11
याहवेह ने उन्हें इसलिए चुना था कि मिस्र देश में फ़रोह, उसके सारे सेवकों और
उसके सारे देश में चिन्ह और चमत्कार करें 12 और उस अपार शक्ति और
भयंकर आतंक को प्रदर्शित करें, जो मोशेह ने सारी इस्राएल के सामने किए थे.

यहोशू

1 याहवेह के सेवक मोशेह के मरने के बाद याहवेह ने नून के पुत्र यहोशू से
कहा, 2 “मोशेह, मेरे सेवक की मृत्यु हो चुकी है; अब तुम उठो और इन
सभी लोगों के साथ यरदन नदी के उस पार जाओ, जिसे मैं इस्राएलियों को दे
रहा हूं. 3 और, जहां-जहां तुम पांव रखोगे, वह जगह मैं तुम्हें दूंगा, ठीक जैसा
मैंने मोशेह से कहा था. 4 लबानोन के निर्जन प्रदेश से महानद फरात तक, और
हित्तियों के देश से लेकर महासागर तक, सब देश तुम्हारा होगा. और 5 कभी
भी कोई तुम्हारा विरोध न कर सकेगा. ठीक जिस प्रकार मैं मोशेह के साथ रहा
हूं, उसी प्रकार तुम्हारे साथ भी रहूंगा. मैं न तो तुम्हें छोड़ूंगा और न त्यागूंगा. 6
इसलिये दृढ़ हो जाओ, क्योंकि तुम ही इन लोगों को उस देश पर अधिकारी
ठहराओगे, जिसको देने का वादा मैंने पहले किया था. 7 “तुम केवल हिम्मत
और संकल्प के साथ बढ़ते जाओ और मेरे सेवक मोशेह द्वारा दिए गये नियम
सावधानी से मानना; उससे न तो दाईं ओर मुड़ना न बाईं ओर, ताकि तुम हमेशा
सफल रहो. 8 तुम्हारे मन से व्यवस्था की ये बातें कभी दूर न होने पाए, लेकिन
दिन-रात इसका ध्यान करते रहना, कि तुम उन बातों का पालन कर सको, जो
इसमें लिखी गयी है; तब तुम्हारे सब काम अच्छे और सफल होंगे. 9 मेरी बात
याद रखो: दृढ़ होकर हिम्मत के साथ आगे बढ़ो; न घबराना, न उदास होना.
क्योंकि याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं; चाहे तुम कहीं भी जाओ,
याहवेह तुम्हारे साथ हैं.” 10 फिर यहोशू ने अधिकारियों को यह आदेश दिया:
11 “छावनी में जाकर लोगों को यह आज्ञा दो, ‘तीन दिन के भीतर तुम्हें यरदन
नदी को पार करके उस देश में जाना है, जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें
देनेवाले हैं, तब अपने लिए भोजन वस्तुएं तैयार कर रखो.’” 12 यहोशू ने
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र से कहा, 13 “याहवेह के सेवक मोशेह
के आदेश को मत भूलना, जो उन्होंने कहा था, ‘याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें
आराम के लिए एक स्थान देंगे.’ 14 तुम्हारी पत्नियां, तुम्हारे बालक तथा तुम्हारे
पशु उस भूमि पर रहेंगे, जो मोशेह द्वारा यरदन के उस पार दी गई है, किंतु
तुम्हारे सब योद्धाओं को अपने भाई-बंधुओं के आगे जाना होगा, ताकि वे उनकी
सहायता कर सकें. 15 जब तक याहवेह तुम्हारे भाई-बंधुओं को आराम न दें,
तथा वे भी उस भूमि को अपने अधिकार में न कर लें, जो याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर उन्हें देंगे. फिर तुम अपने देश को लौट सकोगे और उस भूमि पर
अधिकार कर सकोगे, जो याहवेह के सेवक मोशेह ने तुम्हें यरदन के उस पार दी
है.” 16 उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, “आपने जो कहा है, हम उसको मानेंगे,
आप हमें जहां भेजेंगे, हम वहां जाएंगे. 17 जिस प्रकार हम मोशेह की सब बातों
को मानते थे, उसी प्रकार आपकी भी सब बातो को मानेंगे. बस इतना हो, कि
याहवेह, परमेश्वर आपके साथ वैसे ही बने रहें, जैसे वह मोशेह के साथ थे. 18
यदि कोई भी, आपकी बातों का विरोध करेगा या, आपके द्वारा दिए गए समस्त
आदेशों का पालन न करेगा, उसको मार दिया जाएगा!”

2 नून के पुत्र यहोशू ने शित्तीम नामक स्थान से दो व्यक्तियों को चुपके से
येरीख़ो में यह कहकर भेजा कि, “जाओ, उस देश का भेद लो.” वे गये
और एक नगरवधू के घर में जाकर ठहरे, जिसका नाम राहाब था. 2 किसी ने
येरीख़ो के राजा को बताया, “आज रात इस्राएल वंशज हमारे देश की जानकारी
लेने यहां आ रहे हैं.” 3 येरीख़ो के राजा ने राहाब को संदेश भेजा, “जो पुरुष
तुम्हारे यहां आए हुए हैं, उन्हें बाहर लाओ. वे हमारे देश का भेद लेने आए हैं.”
4 किंतु वह उन दोनों को छिपा चुकी थी. उसने राजा के सेवकों को उत्तर दिया,
“जी हां, यह सच है कि यहां दो व्यक्ति आए थे, किंतु मुझे मालूम नहीं कि वे
कहां से आए थे. 5 और रात को, जब फाटक बंद हो रहा था तब, वे दोनों चले
गए. मुझे मालूम नहीं कि वे किस ओर गए हैं. जल्दी उनका पीछा करेंगे तो
आप उन्हें पकड़ लेंगे.” 6 राहाब ने उन्हें छत पर ले जाकर उन्हें सनई की
लकड़ियों के नीचे छिपा दिया, जो उसने छत पर इकट्ठा कर रखी थी. 7 तब वे
उनका पीछा करने के उद्देश्य से यरदन के घाट के मार्ग पर चल पड़े. जैसे ही ये
व्यक्ति पीछा करने के लिए नगर के बाहर निकले, नगर का द्वार बंद कर दिया
गया. 8 इससे पहले कि वे सोने के लिए जाते, राहाब ने छत पर उनके पास
आकर उनसे कहा, 9 “मैं समझ गई हूं कि याहवेह ने यह देश आपके अधीन
कर दिया है. समस्त देशवासियों पर आप लोगों का डर छा चुका है, वे आपके
कारण घबरा गए हैं. 10 हमने सुना हैं कि कैसे याहवेह ने लाल सागर का जल
सुखा दिया था, जब आप लोग मिस्र देश से निकल रहे थे, तथा यह भी कि
यरदन के पार अमोरियों के दो राजाओं, सीहोन तथा ओग के राज्यों को आप
लोगों ने पूरा नष्ट कर दिया. 11 यह सुनकर हमारे हृदय कांप गए थे. आप लोगों
के कारण हममें से किसी भी व्यक्ति में साहस न रह गया, क्योंकि ऊपर स्वर्ग में
और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर ही हैं याहवेह, आपके परमेश्वर. 12 “आप मुझे
अब, याहवेह के सामने वचन दीजिए कि, जैसे मैंने आपको बचाया है, वैसे ही
आप भी मेरे पिता के कुल के साथ दयावान रहेंगे. 13 आप मेरे माता-पिता तथा
भाई बहनों और उनके समस्त संबंधियों को मृत्यु से बचायेंगे.” 14 तब गुप्तचरों
ने राहाब को आश्वासन दिया, “यदि आप लोगों के प्राण ले लिए जाएंगे, तो
हमारे भी प्राण ले लिए जाएंगे. यदि आप हमारे यहां आने के उद्देश्य को गुप्त
रखेंगी, तो उस समय, जब याहवेह हमें यह देश दे देंगे, आप लोगों के प्रति
हमारा व्यवहार दयावान एवं सच्चा होगा.” 15 राहाब का घर शहरपनाह पर था.
उसने खिड़की में से रस्सी के द्वारा उन दोनों को बाहर उतार दिया. 16 राहाब ने
उन दोनों से यह कहा, “आप पहाड़ की तरफ चले जाइए, कि जो आपका
पीछा कर रहे हैं, आपको न देख सकें. वहां आप तीन दिन तक छिपे रहना, जब
तक वे लौट न आएं. फिर आप अपने मार्ग की ओर चले जाना.” 17 उन पुरुषों
ने राहाब से कहा, “हम उस वायदे को पूर्ण कर पाएंगे, जो हमने आपसे किया है,
18 जब इस देश पर हमला करते समय हमें इस खिड़की में यह लाल रस्सी बंधी
हुई मिले, जिससे आपने हमें नीचे उतारा है. और आप इस घर में अपने माता-
पिता, भाई-बंधुओं तथा अपने पिता के परिवार के सब लोगों को एक साथ
रखिए. 19 जो कोई घर से बाहर निकलेगा, उसकी मृत्यु का दोष उसी पर होगा,
हम पर नहीं; किंतु जो कोई आपके साथ घर में होगा और यदि उसे मार दें तो,
उसकी मृत्यु का दोष हम पर होगा. 20 इसके अलावा, यदि आप हमारे यहां
आने के विषय में किसी को भी बताएंगे, तो हम आपको नहीं बचा पाएंगे.” 21
राहाब ने उत्तर दिया, “जैसा आपने कहा है, वैसा ही होगा.” यह कहकर उसने
उन्हें विदा कर दिया. वे अपने मार्ग पर चले गए. राहाब ने वह लाल रस्सी
खिड़की में बंधी रहने दी. 22 वहां से वे पर्वतीय क्षेत्र में निकल गए और वहां
तीन दिन तक उनसे छिपे रहे, जब तक वे लोग जो उनका पीछा कर रहे थे, लौट
न गए, जिन्हें उनकी खोज करने के लिए कहा गया था, इन भेदियों को सारे
मार्ग पर ढूंढ़ते रहे और उन्हें नहीं पाया. 23 तब वे दोनों पर्वतीय क्षेत्र से नीचे
उतरकर लौट गए. नदी पार कर वे नून के पुत्र यहोशू के पास पहुंचे और उन्हें
सब बात बताई. 24 उन्होंने यहोशू से कहा, “इसमें कोई शक नहीं कि याहवेह
ने यह देश हमें दे दिया है. इस कारण सारे लोग हमसे डर गए हैं.”

3 दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर यहोशू एवं इस्राएल वंशज शित्तीम से चलकर
यरदन गए और उसे पार करने के पहले उन्होंने वहां पड़ाव डाला. 2 तीन
दिन बाद नायक शिविर के बीच से होते हुए गए, 3 और उन्होंने लोगों को कहा,
“जब याहवेह परमेश्वर की वाचा के संदूक को लेवीय पुरोहित उठाए हुए देखो,
तब अपने-अपने स्थान से उठकर उसके पीछे-पीछे चलना. 4 किंतु तुम्हारे तथा
संदूक के बीच लगभग एक किलोमीटर की दूरी रहे. इसके पास न जाना, तुम

ध्यान रखना कि तुम्हें किस दिशा में आगे बढ़ना है, क्योंकि इस मार्ग पर तुम
पहले कभी नहीं गए हो.” 5 लोगों से यहोशू ने कहा, “अपने आपको पवित्र
करो, क्योंकि कल याहवेह तुम्हारे बीच आश्चर्य के काम करेंगे.” 6 पुरोहितों से
यहोशू ने कहा, “आप वाचा का संदूक लेकर लोगों के आगे-आगे चलें.” तब
उन्होंने वाचा का संदूक उठाया और लोगों के आगे-आगे चलने लगे. 7 याहवेह
ने यहोशू से कहा, “आज वह दिन है, जब मैं तुम्हें इस्राएल की दृष्टि में आदर
का पात्र बनाऊंगा, और उन्हें यह मालूम हो जाएगा कि जिस प्रकार मैं मोशेह
के साथ था, ठीक वैसे ही तुम्हारे साथ भी रहूंगा. 8 तुम्हें वाचा का संदूक
उठानेवाले को बताना होगा: ‘जब तुम यरदन नदी में पहुंचो तब, तुम जल में सीधे
खड़े रहना.’” 9 तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, “यहां आकर याहवेह,
अपने परमेश्वर का संदेश सुनो. 10 तब तुम समझ पाओगे कि जीवित परमेश्वर
तुम्हारे बीच में हैं; और वही तुम्हारे सामने से कनानियों, हित्तियों, हिव्वियों,
परिज्ज़ियों, गिर्गाशियों, अमोरियों तथा यबूसियों को भगा देंगे. 11 ध्यान
रखना, कि प्रभु की वाचा का संदूक तुम्हारे आगे यरदन में पहुंच रहा है. 12 तब
इस्राएल के हर एक गोत्र से बारह व्यक्ति अलग करो जो हर गोत्र से एक-एक
पुरुष हो. 13 जैसे ही याहवेह की वाचा का संदूक उठानेवाले पुरोहितों के पांव
यरदन में पड़ेंगे, यरदन का जल बहना रुक जाएगा तथा एक जगह इकट्ठा हो
जाएगा.” 14 यह फसल काटने का समय था. इस समय यरदन नदी में बाढ़ की
स्थिति हुआ करती है. जब इस्राएल वंशज यरदन पार करने के लिए निकले, तब
पुरोहित वाचा का संदूक लेकर लोगों के आगे जा रहे थे. पुरोहितों के पांव जैसे
ही जल में पड़े, 16 ऊपर से आ रहा जल बहना रुक गया, और दीवार सा ऊंचा
उठ गया. यह आदम नामक नगर था, जो ज़ारेथान के पास है. इससे अराबाह
सागर, जो लवण-सागर की ओर जाता है, वहां का जल पूरा सूख गया. और
इस्राएली येरीख़ो की ओर पार हो गए. 17 याहवेह की वाचा का संदूक लेकर
पुरोहित यरदन नदी के बीच में सूखी भूमि पर तब तक खड़े रहे जब तक सब
इस्राएलियों ने यरदन नदी को पार न किया.

4 जब सब इस्राएली वंशज यरदन के पार हो गए, तब याहवेह ने यहोशू से
कहा, 2 “हर गोत्र से एक-एक व्यक्ति करके बारह व्यक्ति अलग करो, 3
और उनसे कहो, ‘यरदन से बारह पत्थर, उस स्थान से उठाओ जहां पुरोहित
खड़े थे. इन पत्थरों को अपने साथ ले जाओ और उन्हें उस स्थान पर रख
देना, जहां तुम आज रात ठहरोगे.’” 4 तब यहोशू ने इस्राएल के हर गोत्र से
एक-एक व्यक्ति चुने और ऐसे बारह व्यक्तियों को अलग किया 5 और उनसे
कहा, “तुम्हारे परमेश्वर याहवेह की वाचा के संदूक के आगे यरदन के बीच में
जाकर इस्राएल के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक-एक पत्थर अपने कंधे पर
रखे. 6 यह तुम्हारे लिए यादगार होगा. जब तुम्हारे बच्चे इन पत्थरों के बारे में
पूछें, 7 तब तुम उन्हें बताना, ‘याहवेह की वाचा के संदूक के सामने यरदन का
जल बहना रुक गया था; और जब इसे यरदन के पार ले जाया जा रहा था तब
यरदन का जल दो भाग हो गया था.’ तो ये पत्थर हमेशा के लिए यादगार बन
जाएंगे.” 8 इस्राएल वंशजों ने वही किया, जैसा यहोशू ने उनसे कहा था.
उन्होंने यरदन के बीच से बारह पत्थर उठा लिए; इस्राएल के गोत्रों की गिनती
के अनुसार. उन्होंने वे पत्थर ले जाकर तंबू में रख दिए. 9 यहोशू ने भी बारह
पत्थर यरदन के बीच उस जगह पर रखे, जहां पुरोहित वाचा का संदूक लिए
खड़े थे, जो आज तक वहीं हैं. 10 याहवेह द्वारा यहोशू को कहे अनुसार, संदूक
लिए हुए पुरोहित यरदन के मध्य में तब तक खड़े रहे, जब तक सब लोगों ने
नदी को पार न कर लिया. यह उस आदेश के अनुसार था, जो मोशेह द्वारा यहोशू
को दिया गया था. 11 जब सभी पार हो गए, तब याहवेह की वाचा के संदूक
को लिए हुए पुरोहित सब लोगों के आगे चले. 12 मोशेह के कहे अनुसार
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह का आधा गोत्र युद्ध के लिए हथियार लेकर इस्राएल
वंशजों के आगे चला. 13 इनकी संख्या लगभग चालीस हजार थी, जो युद्ध के
लिए पूरे तैयार थे. याहवेह की उपस्थिति में ये युद्ध के लिए आगे बढ़े और
येरीख़ो के पास मैदान में पहुंचे. 14 यह वह दिन था, जब याहवेह ने यहोशू को
इस्राएलियों के बीच आदर के साथ ऊपर उठाया. जिस प्रकार अपने जीवनकाल
में मोशेह आदर के योग्य थे. 15 याहवेह ने यहोशू से कहा, 16 “वाचा का संदूक
उठानेवाले पुरोहितों से कहो कि वे यरदन नदी से बाहर आ जाएं.” 17 तब
यहोशू ने पुरोहितों से कहा, “यरदन से बाहर आ जायें.” 18 उस समय ऐसा
हुआ, कि जैसे ही याहवेह की वाचा का संदूक लिए पुरोहित यरदन से बाहर
आए तथा उनके पांव सूखी भूमि पर पड़े, यरदन नदी फिर से पहले जैसी बहने
लगी. 19 यह पहले महीने का दसवां दिन था, जब लोग यरदन नदी पार कर
निकल आए, और गिलगाल में येरीख़ो के पूर्व में अपने पड़ाव डाल दिया. 20
यरदन में से उठाए गए वे बारह पत्थर यहोशू ने गिलगाल में खड़े कर दिए. 21
इस्राएल वंशजों से यहोशू ने कहा, “जब भविष्य में तुम्हारे बच्चे अपने पिता से
यह पूछे, ‘क्या अर्थ है इन पत्थरों का?’ 22 तब तुम अपने बच्चे को यह
बताना, ‘इस्राएल ने यरदन नदी को सूखी भूमि पर चलते हुए पार किया था.’ 23
क्योंकि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने नदी पार करने तक यरदन के जल को
सुखाए रखा था; ठीक जिस प्रकार याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने लाल सागर को
सूखा दिया था, जब तक हम पार न हो गए थे; 24 पृथ्वी के सभी मनुष्यों को
यह मालूम हो जाए कि याहवेह का हाथ कितना महान है, ताकि याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर के प्रति तुम्हारें मन में आदर और भय हो.”

5 जब यरदन के पश्चिम में अमोरियों के सभी राजाओं तथा सभी कनानी
राजाओं ने यह सुना कि किस प्रकार याहवेह ने इस्राएल वंशजों के लिए
उनके यरदन नदी से पार हो जाने तक यरदन का जल सुखाए रखा था, उनका
हृदय घबरा गया, और उनसे बिलकुल भी सामना करने का साहस न था. 2 फिर
याहवेह ने यहोशू से कहा, “चकमक पत्थर की छुरियां बनाओ और इस्राएलियों
का ख़तना करना फिर से शुरू करो.” 3 तब यहोशू ने चकमक की छुरियां बनाई
और गिबियाथ-हारालोथ नामक स्थान पर इस्राएलियों का ख़तना किया. 4
यहोशू द्वारा उनका ख़तना करने के पीछे कारण यह था: वे सभी, जो मिस्र से
निकले हुए थे, सभी पुरुषों और सभी योद्धाओं की मृत्यु, मिस्र से आने के बाद,
निर्जन प्रदेश में, रास्ते में ही हो चुकी थी. 5 मिस्र से निकले सभी व्यक्तियों का
ख़तना बाद में हुआ, किंतु वे सभी जिनका जन्म मिस्र से निकलने के बाद मार्ग में
निर्जन प्रदेश में हुआ था, उनका ख़तना नहीं हुआ था. 6 इस्राएल वंशज चालीस
वर्ष तक निर्जन प्रदेश में फिरते रहे, जब तक पूरा राष्ट्र, अर्थात् वे योद्धा, जो मिस्र
से निकले थे, नष्ट न हो गए, क्योंकि उन्होंने याहवेह के आदेश को नहीं माना.
याहवेह ने शपथ ली थी, कि वह उन्हें वह देश देखने तक न देंगे, जहां दूध और
मधु बहती है, जिसे देने का वायदा याहवेह ने पूर्वजों से किया था. 7 उनकी
जगह पर याहवेह ने उनकी संतान को बढ़ाया, जिनका ख़तना यहोशू ने किया;
क्योंकि मार्ग में उनका ख़तना नहीं किया गया था. 8 जब सबका ख़तना हो
चुका, और वे ठीक होने तक अपने तंबू में ही रहे. 9 तब याहवेह ने यहोशू से
कहा, “आज मैंने तुम पर मिस्र का जो कलंक लगा था, उसे दूर कर दिया है.”
तभी से आज तक यह स्थान गिलगाल नाम से जाना जाता है. 10 जब इस्राएल
वंशज गिलगाल में पड़ाव डाले हुए थे, उन्होंने माह के चौदहवें दिन येरीख़ो के
मरुभूमि में फ़सह उत्सव मनाया. 11 फ़सह उत्सव के अगले ही दिन उन्होंने उस
देश की भूमि की कुछ उपज, खमीर रहित रोटी तथा सुखाए हुए अन्न खाए. 12
जिस दिन उन्होंने उस भूमि की उपज का आहार किया, उसके दूसरे ही दिन से
मन्ना गिरना बंद हो गया. इस्राएल वंशजों को मन्ना फिर कभी न मिला. और
कनान देश की उपज ही उनका आहार हो चुकी थी. 13 जब यहोशू येरीख़ो के
निकट थे, उन्होंने जब दृष्टि ऊपर उठाई, उन्हें अपने सामने हाथ में नंगी तलवार

लिए हुए एक व्यक्ति खड़ा हुआ दिखा. यहोशू उनके पास गए और उनसे पूछा,
“आप हमारी तरफ के हैं या हमारे शत्रु के?” **14** उन्होंने उत्तर दिया, “मैं किसी
भी पक्ष का नहीं हूं; मैं याहवेह की सेना का अधिपति, और अब यहां आया हूं.”
यहोशू ने भूमि पर गिरकर दंडवत किया और कहा, “महोदय, मेरे प्रभु का उनके
सेवक के लिए क्या आदेश है?” **15** याहवेह के दूत ने यहोशू को उत्तर दिया,
“पांव से अपनी जूती उतार दो, क्योंकि तुम जिस जगह पर खड़े हो, वह पवित्र
स्थान है.” यहोशू ने वैसा ही किया.

6 इस्राएलियों के कारण येरीख़ो नगर के फाटक बंद कर लिये गये थे. न तो
कोई बाहर जा सकता था, न कोई अंदर आ सकता था. **2** यहोशू से याहवेह
ने कहा, “देखो, मैंने उसके राजा और उसकी सेनाओं के साथ, येरीख़ो को
तुम्हारे अधीन कर दिया है. **3** तुम्हें सब योद्धाओं के साथ एक बार नगर को पूरा
घूमना होगा. यह तुम्हें छः दिन तक करना होगा. **4** संदूक के आगे-आगे सात
पुरोहित नरसिंगे लिए हुए होंगे. सातवें दिन तुम्हें नगर के चारों ओर सात बार
घूमना होगा. पुरोहित तुरही फूकंते रहेंगे. **5** जब वे नरसिंगा देर तक फूकेंगे, और
तुम्हें तुरही का शब्द सुनाई देगा, तब सभी लोग ऊंची आवाज से जय जयकार
करेंगे. तब येरीख़ो की दीवार गिर जाएगी, और सभी व्यक्ति नगर में सीधे प्रवेश
कर पाएंगे.” **6** नून के पुत्र यहोशू ने पुरोहितों को बुलाकर उनसे कहा, “याहवेह
के वाचा के संदूक को उठा लो और आप में से सात पुरोहित नरसिंगे लिए
हुए उसके आगे-आगे चलें.” **7** लोगों से यहोशू ने कहा “चलो, आगे बढ़ो.
तुम्हें नगर के चारों ओर घूमना है. सैनिक याहवेह के संदूक के आगे-आगे
चलें.” **8** यहोशू ने दिये आदेश के मुताबिक, नरसिंगे लिए हुए सात पुरोहित
आगे बढ़कर याहवेह के समक्ष नरसिंगे फूंकने लगे, और उनके पीछे याहवेह का
संदूक था. **9** नरसिंगे फूंकते हुए पुरोहितों के आगे सैनिक बढ़ गए, और पीछे-
पीछे पुरोहित नरसिंगे फूंकते हुए चल रहे थे. **10** यहोशू सैनिकों को यह आदेश
दे चुके थे, “जब तक मैं तुम्हें जय जयकार करने को न कहूं, तब तक तुममें से
कोई भी न तो जय जयकार करना, न तुम्हारा शब्द सुनाई दे और न तुम्हारे मुख
से कोई भी आवाज निकले. तुम मेरे कहने पर ही जय जयकार करना.” **11** इस
प्रकार यहोशू ने याहवेह के संदूक को लेकर नगर के चारों और घुमाया. फिर वे
लौट आए तथा तंबू में रात बिताई. **12** अगले दिन प्रातः यहोशू शीघ्र उठे. और
पुरोहितों ने याहवेह के संदूक को उठा लिया. **13** याहवेह के संदूक के आगे-
आगे चल रहे सात पुरोहित सात नरसिंगे लिए हुए लगातार नरसिंगे फूंकते हुए
बढ़ते चले जा रहे थे. अग्रगामी सैनिक उनके आगे चल रहे थे और याहवेह के
संदूक के पीछे हथियार लिए हुए सैनिक चल रहे थे, सात पुरोहित लगातार
नरसिंगे फूंकते जा रहे थे. **14** दूसरे दिन भी वे नगर के चारों ओर घूमकर वापस
तंबू में लौट आए. छः दिन उन्होंने इसी प्रकार किया. **15** सातवें दिन वे सबेरे उठ
गए, तथा उसी रीति से, परंतु सात बार, नगर के चारों ओर घूमे; केवल सातवें
दिन ही वे सात बार घूमे. **16** सातवीं बार जब पुरोहितों ने नरसिंगे फूंके, तब
यहोशू ने लोगों से कहा, “जय जयकार करो! क्योंकि याहवेह ने यह नगर हमें
दे दिया है. **17** समस्त नगर एवं सभी कुछ जो नगर में है, उस पर याहवेह का
अधिकार है. केवल राहाब तथा जितने लोग उसके घर में होंगे, जीवित रहेंगे,
क्योंकि उसने उन दोनों को छिपा रखा था, जिनको हमने भेजा था. **18** तुम सब
अर्पित की हुई वस्तुओं से दूर रहना, तुम उसका लालच न करना, ऐसा न हो कि
तुम उनमें से अपने लिए कुछ वस्तु रख लो, और इस्राएलियों पर शाप और
कष्ट का कारण बन जाओ. **19** सोना, चांदी, कांस्य तथा लौह की सभी वस्तुएं
याहवेह के लिए पवित्र हैं. ये सभी याहवेह के भंडार में रखी जाएंगी.” **20**
पुरोहितों ने नरसिंगें फूंके, और लोगों ने जय जयकार किया, और नगर की
दीवार गिर गई, और लोग नगर में घुस गए. और नगर पर हमला किया. **21**
नगर की हर एक वस्तु को उन्होंने पूरा नष्ट कर दिया. स्त्री-पुरुष, युवा और वृद्ध,
बैल, भेड़ें तथा गधे, सभी तलवार से मार दिए गए. **22** उन दोनों व्यक्तियों को,
जिन्हें यहोशू ने नगर की छानबीन करने भेजा था, उनको यहोशू ने आदेश दिया,
“राहाब तथा उसका सब कुछ वहां से निकाल लाओ, ताकि उससे किया गया
वायदा पूरा हो.” **23** तब वे दो व्यक्ति ने राहाब, उसके पिता, उसकी माता,
उसके भाई तथा उसकी पूरी संपत्ति को वहां से निकाल लाए. उन्होंने उसके
संबंधियों को भी वहां से निकाला और इन सभी को इस्राएल के पड़ाव के बाहर
स्थान दिया. **24** उन्होंने नगर को तथा नगर की सब वस्तुओं को आग में जला
दिया. केवल सोना, चांदी, कांस्य तथा लौह की वस्तुएं याहवेह के भवन के
भंडार में रख दी. **25** राहाब और उसके पिता का पूरा परिवार तथा उसकी पूरी
संपत्ति को यहोशू ने नष्ट नहीं किया. वे आज तक इस्राएल के बीच रह रहे हैं,
क्योंकि उसने यहोशू द्वारा येरीख़ो का भेद लेने भेजे गये लोगों को छिपा रखा
था. **26** तब यहोशू ने उनसे पवित्र शपथ करके कहा: “याहवेह के सम्मुख वह
व्यक्ति शापित है, जो इस नगर येरीख़ो का फिर से निर्माण करेगा. “इसकी नींव
रखने के समय वह अपना बड़ा बेटा खो देगा, तथा इसके पूरा हो जाने पर छोटा
बेटा मर जायेगा.” **27** याहवेह यहोशू के साथ थे तथा उनकी प्रशंसा पूरे देश में
फैल गई.

7 किंतु इस्राएल वंश ने चढ़ाई हुई वस्तुओं पर लालच किया. यहूदाह गोत्र
से आखान, जो कारमी का पुत्र और ज़िमरी का पोता और ज़ेराह का परपोता
था, उसने चढ़ाई हुई वस्तुओं में से कुछ अपने लिए रख लीं. इस्राएल के प्रति
याहवेह का क्रोध भड़क उठा. **2** यहोशू ने येरीख़ो से कुछ व्यक्ति को अय
नामक स्थान में भेजा अय बेथेल के पूर्व में बेथ-आवेन के पास है. यहोशू ने
उनसे कहा, “जाकर उस जगह की जानकारी लो.” उन्होंने जाकर अय की
जानकारी ली. **3** और उन्होंने यहोशू को आकर बताया, “ज़रूरी नहीं कि सभी
लोग जाकर आक्रमण करें. केवल दो या तीन हजार लोग काफ़ी है अय पर
आक्रमण करने के लिए. क्योंकि वहां कम ही लोग हैं.” **4** तब केवल तीन
हजार व्यक्ति ही वहां गए; किंतु अय के निवासियों से उन्हें डरकर भागना पड़ा.
5 अय के निवासियों ने लगभग छत्तीस लोगों को मार दिया. उन्होंने शबारीम
तक उनका पीछा किया और वहां उनको मार दिया. जब इस्राएल के लोगों ने
यह देखा तो वे बहुत भयभीत हो उठे और हिम्मत छोड़ दिये. **6** इस पर यहोशू ने
अपने वस्त्र फाड़ डाले. वह याहवेह की संदूक के पास जाकर भूमि पर मुख के
बल गिरे और शाम तक वहीं पड़े रहे. उनके साथ इस्राएल के बुजुर्ग भी थे.
उन्होंने भी अपने सिर पर धूल डाल ली. **7** यहोशू ने प्रभु याहवेह से बिनती
की, “हे याहवेह परमेश्वर, आप इन लोगों को यरदन से पार क्यों लाए, क्या
इसलिये कि हम अमोरियों के अधीन कर दिया जाए और हम नष्ट कर दिए
जाएं? अच्छा होता कि हम यरदन के पार ही बस जाते! **8** प्रभु, अब मैं क्या
कहूं, इस्राएल अपने शत्रुओं के सामने से पीठ दिखाकर भागे है? **9** अब कनानी
और इस देश के सभी लोग यह सुनकर हमें घेर लेंगे और पृथ्वी से हमारा नाम
मिटा डालेंगे. तब आप अपनी महिमा के लिए क्या करेंगे?” **10** तब याहवेह ने
यहोशू को उत्तर दिया, “उठो! मुख के बल क्यों पड़े हुए हो? **11** इस्राएल ने पाप
किया है. उन्होंने मेरी बात नहीं मानी, जो मैंने उनसे कही थी. उन्होंने चढ़ाई हुई
वस्तुएं अपने लिए रख ली हैं. उन्होंने चोरी की है, उन्होंने छल किया है. **12**
इस कारण इस्राएल अपने शत्रुओं के सामने ठहर नहीं सके. और शत्रुओं के
सामने से भाग गये, क्योंकि वे शापित हो चुके हैं. मैं उस समय तक तुम्हारे साथ
न रहूंगा, जब तक तुम अपने पास से वे अर्पण की हुई वस्तुएं नष्ट नहीं कर देते.
13 “उठो! लोगों को पवित्र करो और उनसे कहो, ‘कल के लिए स्वयं को पवित्र
करो, क्योंकि याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने यह कहा है, तुम उस समय तक
अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सकोगे, जब तक तुम अपने बीच में से चढ़ाई हुई
वस्तुएं हटा नहीं दोगे. **14** “‘सुबह तुम अपने-अपने गोत्र के अनुसार सामने

आओगे. वह गोत्र जिसे याहवेह पकड़ेंगे वे, परिवार के साथ सामने आएंगे. और
वह घराना, जिसे याहवेह इशारा करेंगे एक-एक करके सामने आएंगे. 15 तब
वह व्यक्ति, जो पकड़ा जाएगा, जिसके पास चढ़ाई हुई वस्तुएं हैं, उसको आग में
डाल दिया जाएगा, वह और सब कुछ, जो उसका है; क्योंकि उसने याहवेह कि
वाचा को तोड़ा है, तथा उसने इस्राएल में निंदनीय काम किया है.'" 16 सुबह
जल्दी उठकर यहोशू ने इस्राएल को गोत्रों के अनुसार इकट्ठा किया. फिर यहूदाह
गोत्र को बुलाया गया, 17 और उन्हें एक साथ बुलाया, फिर ज़ेरहियों के घराने
को बुलाया. फिर उन्होंने ज़ेरहियों के घराने को व्यक्तियों के अनुसार एक साथ
बुलाया. 18 फिर उन्होंने व्यक्तियों के आधार पर उसके घराने को अलग किया,
और आखान चुना गया, जो कारमी का पुत्र, ज़िमरी का पोता और ज़ेराह का
परपोता था; वह यहूदाह के गोत्र से था. 19 आखान से यहोशू ने कहा, "मेरे पुत्र,
मेरी विनती है, कि याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के महिमा को स्वीकार करो,
और उनकी वंदना करो. मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है. मुझसे कुछ न
छिपाना." 20 आखान ने यहोशू को उत्तर दिया, "यह सच है कि मैंने जो कुछ
किया है, उसके द्वारा मैंने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है.
21 मैंने लूटी हुई वस्तुओं में से एक बाह्य वस्त्र, दो किलो चांदी तथा आधा किलो
सोने की ईंट को छिपा लिया था. मैंने इन्हें अपने तंबू की भूमि में छिपा रखा है.
चांदी सबके नीचे रखी गई है." 22 यहोशू ने कुछ दूतों को आखान के तंबू में
भेजा. उन्होंने छिपाई गई वस्तुएं निकाली और चांदी सबके नीचे थी. 23 तंबू से
निकालकर सब कुछ वे यहोशू के पास ले आए और इन वस्तुओं को याहवेह के
सामने रख दिया. 24 तब यहोशू एवं समस्त इस्राएल मिलकर ज़ेराह के पुत्र
आखान को तथा उस चांदी, सोना तथा वस्त्र, उसके पुत्र-पुत्रियों, उसके बैल,
गधे, भेड़ें, उसका तंबू और उसकी पूरी संपत्ति को आकोर की घाटी में ले गए.
25 और उससे यहोशू ने कहा, "तुम हम पर यह संकट क्यों ले आए? आज
याहवेह तुम्हें संकट में डाल रहे हैं." और समस्त इस्राएल ने उनका पत्थराव
किया, और उन्हें आग में डाल दिया. 26 उन्होंने उसके ऊपर पत्थरों का ऊंचा
ढेर लगा दिया, जो आज तक वहां है. तब याहवेह का गुस्सा शांत हो गया. इस
कारण उस स्थान का नाम आकोर घाटी पड़ गया.

8 फिर याहवेह ने यहोशू से कहा, "डरो मत और न घबराओ! अपने साथ
सब योद्धाओं को लेकर अय पर आक्रमण करो. मैंने अय के राजा, प्रजा और
उसके नगर और उसके देश को तुम्हें दे दिया है. 2 अय तथा उसके राजा के
साथ तुम्हें वही करना होगा, जो तुमने येरीख़ो तथा उसके राजा के साथ किया
था. लूट की सामग्री तथा पशु तुम अपने लिए रख सकते हो." 3 तब यहोशू
अपने समस्त योद्धाओं को लेकर अय पर आक्रमण के लिए निकल पड़े. यहोशू
ने तीस हजार वीर योद्धा चुने और उन्हें रात को हीं वहां भेज दिया. 4 उनसे
यहोशू ने कहा, "तुम नगर के पीछे छिप जाना, नगर से ज्यादा दूर न जाना. तुम
सब सावधान एवं तत्पर रहना. 5 तुम्हारे वहां पहुंचने पर मैं अपने साथ के
योद्धाओं को लेकर नगर पर आक्रमण करूंगा. जब नगर के लोग सामना करने के
लिए आगे बढ़ेंगे, तब हम उनके सामने से भागेंगे. 6 और जब वे पीछा करते हुए
नगर से दूर आ जाएंगे तब वे सोचेंगे, 'ये लोग पहले के समान हमें पीठ दिखाकर
भाग रहे हैं.' 7 तब तुम अपने छिपने के स्थान से उठकर नगर को अपने अधीन
कर लेना; याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर नगर को तुम्हें सौंप देंगे. 8 फिर तुम उसमें
आग लगा देना. तुम्हें यह याहवेह के वचन के अनुसार करना होगा. याद रखना,
कि तुम्हारे लिए यह मेरा आदेश है." 9 यह कहते हुए यहोशू ने उन्हें भेज दिया.
वे अपने छिपने के जगह पर गए और वे बेथेल तथा अय के बीच में छिपे रहे,
यह स्थान अय के पश्चिम में था. यहां यहोशू रात में सैनिकों के साथ तंबू में ही
रहे. 10 सुबह जल्दी उठकर यहोशू सैनिकों एवं इस्राएल कि नेता को साथ
लेकर अय पहुंचे. 11 तब सभी सैनिक यहोशू के साथ नगर में पहुंचे, और
उन्होंने अय के उत्तर में तंबू डाल दिया. उनके तथा अय नगर के बीच केवल
एक घाटी ही की दूरी थी. 12 तब यहोशू ने लगभग पांच हज़ार सैनिकों को
बेथेल एवं अय के पश्चिम में खड़े कर दिए. 13 और खास सेना को नगर के
उत्तर में, तथा कुछ सैनिकों को पश्चिम में खड़ा किया और यहोशू ने रात घाटी
में बिताई. 14 जब अय के राजा ने यहोशू के सैनिकों को देखा; वे जल्दी नगर
के लोगों को लेकर इस्राएल से युद्ध करने निकल पड़े. युद्ध मरुभूमि के मैदान में
था. लेकिन राजा को नहीं मालूम था कि नगर के पीछे इस्राएली सैनिक छिपे हैं.
15 यहां यहोशू और उनके साथ के सैनिकों ने उनके सामने कमजोर होने का
दिखावा किया. वे पीठ दिखाते हुए निर्जन प्रदेश में भागने लगे. 16 इनका पीछा
करने के लिए नगरवासियों को तैयार किया था. वे यहोशू का पीछा करते हुए
नगर से दूर होते गए. 17 अब अय में और बेथेल में कोई भी पुरुष न बचा, सब
पुरुष इस्राएल का पीछा करने जा चुके थे. नगर को बचाने के लिए कोई नहीं
था. 18 तब याहवेह ने यहोशू से कहा, "जो बर्छी तुम अपने हाथ में लिए हुए
हो, उसे अय की ओर उठाओ, क्योंकि मैं इसे तुम्हें दे रहा हूं." तब यहोशू ने वह
बर्छी, जो अपने हाथ में लिए हुए थे, नगर की ओर उठाई. 19 जब घात में बैठे
सैनिक अपनी-अपनी जगह से बाहर आ गए और यहोशू ने वह बर्छी आगे
बढ़ाई, तब ये सैनिक दौड़कर नगर में जा घुसे, और उस पर हमला किया और
उन्होंने नगर में आग लगा दी. 20 दूसरी ओर जब उनका पीछा करते लोगों ने
मुड़कर पीछे देखा, तो नगर से धुआं आकाश की ओर उठ रहा था. अब उनके
लिए शरण लेने की कोई जगह न आगे थी, न पीछे, क्योंकि वे लोग, जो उन्हें
पीठ दिखाकर निर्जन प्रदेश में भाग रहे थे, वे उनके विरुद्ध हो गए थे. 21 जब
यहोशू के साथ के इस्राएली सैनिकों ने देखा कि घात लगाए सैनिकों ने नगर पर
हमला किया है, और नगर से उठ रहा धुआं आकाश में पहुंच रहा है, तब उन्होंने
अय के पुरुषों को मारना शुरू कर दिया. 22 वे सैनिक, जो नगर में थे, उनका
सामना करने आ पहुंचे, तब अय के सैनिकों को इस्राएलियों ने घेर लिया.
उन्होंने सबको ऐसा मारा कि न तो कोई बच सका और न कोई भाग पाया. 23
और वे अय के राजा को पकड़कर यहोशू के पास जीवित ले आए. 24 जब
इस्राएलियों ने निर्जन प्रदेश में पीछा करते हुए अय के सब सैनिकों को तलवार
से मार दिया, तब सारे इस्राएली वापस अय नगर में आ गए. 25 अय नगर में
स्त्री-पुरुषों की संख्या बारह हजार थी. 26 यहोशू ने अपने हाथ की बर्छी उस
समय तक नीची नहीं की जब तक उन्होंने अय के सभी लोगों को मार न दिया.
27 इस्राएलियों ने लूटे हुए सामान में से अपने लिए केवल पशु ही रखे, जैसा कि
याहवेह ने यहोशू से कहा था. 28 यहोशू ने अय को पूरा जला दिया, जो आज
तक निर्जन पड़ा है. 29 उन्होंने अय के राजा को शाम तक वृक्ष पर लटकाए
रखा और शाम होनें पर शव को वहां से उतारकर नगर के बाहर फेंक दिया, तथा
उसके ऊपर पत्थरों का ऊंचा ढेर लगा दिया, जो आज तक वहीं है. 30 फिर
यहोशू ने मोशेह द्वारा लिखी व्यवस्था में से इस्राएल वंश को दिए गए निर्देशों
के अनुसार एबल पर्वत में ऐसे पत्थरों को लेकर वेदी बनाई, जिन पर किसी
भी वस्तु का प्रयोग नहीं किया गया था. इस वेदी पर उन्होंने याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर के लिए होमबलि तथा मेल बलि चढ़ाई. 32 सब इस्राएलियों के सामने
यहोशू ने मोशेह के द्वारा लिखी हुई व्यवस्था की नकल कराई. 33 उस समय सब
इस्राएली अपने धर्मवृद्धों, अधिकारियों तथा न्याय करनेवालो के साथ और
याहवेह के वाचा का संदूक उठानेवाले दोनों ओर खड़े हुए थे; दूसरे लोग जो
वहां रहते थे तथा जन्म से ही जो इस्राएली थे, उनमें आधे गेरिज़िम पर्वत के पास
तथा आधे एबल पर्वत के पास खड़े थे. और यह याहवेह के सेवक मोशेह को
पहले से कही गई थी कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दे. 34 इसके बाद यहोशू
ने सबके सामने व्यवस्था की सब बातें जैसी लिखी हुई थी; आशीष और शाप
की, सबको पढ़के सुनायी. 35 उसमें से कोई भी बात न छूटी, जो यहोशू ने उस

समय सब इस्राएली, जिसमें स्त्रियां, बालक एवं उनके बीच रह रहे पराये भी थे,
न सुनी हो.

9 जब उन सब राजाओं ने, जो यरदन पार, पर्वतीय क्षेत्र में तथा भूमध्य-
सागर के तट पर लबानोन के निकट के निवासियों, हित्ती, अमोरी, कनानी,
परिज्ज़ी, हिव्वी तथा यबूसियों ने इन घटनाओं के विषय में सुना, 2 वे यहोशू
तथा इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए एक साथ हो गए. 3 जब गिबयोन
निवासियों ने वह सब सुना जो यहोशू ने येरीख़ो तथा अय के साथ किया था, 4
उन्होंने भी चालाकी की, व अपनी यात्रा राजदूतों के रूप में शुरू की. उन्होंने
अपने गधों पर फटे पुराने बोरे, दाखमधु की कुप्पी बांध दी और 5 पुरानी चप्पलें
तथा फटे पुराने कपड़े पहन लिये. उनकी रोटी भी सूख चुकी थी जो चूर-चूर हो
रही थी. 6 वे यहोशू के पास गिलगाल में पहुंचे. उन्होंने यहोशू तथा इस्राएलियों
से कहा, “हम दूर देश से आ रहे हैं. आप हमसे दोस्ती कर लीजिए.” 7 किंतु
इस्राएलियों ने हिव्वियों से कहा, “क्या पता, आप हमारे ही देश के निवासी हो;
अतः हम आपसे दोस्ती क्यों करें?” 8 किंतु उन्होंने यहोशू से कहा, “हम तो
आपके सेवक हैं.” तब यहोशू ने उनसे पूछा, “तुम लोग कौन हो और कहां से
आए हो?” 9 उन्होंने उत्तर दिया, “हम बहुत दूर देश से आए हैं, क्योंकि हमने
याहवेह, आपके परमेश्वर की प्रशंसा सुनी है. हमने उनके बारे में जो उन्होंने मिस्र
में किया था, सब सुन रखा है. 10 हमने यह भी सुना है कि उन्होंने अमोरियों के
दो राजाओं के साथ क्या किया, जो यरदन के उस पार थे; हेशबोन का राजा
सीहोन और बाशान का राजा ओग, जो अशतारोथ पर थे. 11 तब हमारे बुज़ुर्गों
तथा देशवासियों ने कहा कि यात्रा के लिए ‘अपने साथ ज़रूरी सामान ले लो,
और उनसे मिलने जाओ तथा उनसे कहना, “हम आपके सेवक हैं, तब आप
हमसे दोस्ती कर लीजिए.”’ 12 यात्रा शुरू करते समय हम गर्म रोटी लेकर घर
से निकले थे; किंतु अब देखिए, ये रोटियां सूख चुकी हैं. 13 और दाखमधु की
ये थैली जब हम भर रहे थे, नई थीं; किंतु अब देखिए, ये फट गई हैं. हमारे वस्त्र
और चप्पलें फट रही हैं.” 14 तब इस्राएलियों ने याहवेह से पूछे बिना ही उनकी
बात मान ली. 15 यहोशू ने उनके साथ दोस्ती कर ली, और कहा कि उनकी
हत्या न की जाएगी, सभा के प्रधानों ने उनसे यह वायदा किया. 16 जब वे उनसे
दोस्ती कर चुके, फिर तीन दिन बाद उन्हें पता चला कि वे तो उनके पड़ोसी ही
थे, और वे उन्हीं के देश में रह रहे थे. 17 इस्राएल वंश के लोग तीसरे दिन
गिबयोन, कफ़ीराह, बएरोथ तथा किरयथ-यआरीम पहुंच गए. 18 और उस
शपथ के कारण, जो सभा के प्रधानों ने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के सामने
उनके साथ खाई थी, उनकी हत्या न कर सके. सब लोग इस कारण प्रधानों पर
नाराज होने लगे. 19 लोगों के सामने प्रधान यह कहते रहेः “हमने याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर की शपथ ली है. अब तो हम उनको छू भी नहीं सकते. 20
हम इतना तो कर सकते हैं कि उन्हें जीवित रहने दें, अन्यथा उनसे की गई शपथ
हम पर भारी पड़ेगी.” 21 प्रधानों ने लोगों से कहा: “उन्हें जीवित रहने दो!”
तब गिबियोनियों को इस्राएली सभा के लिए लकड़हारे तथा पानी भरने वाले
बनकर रहना पड़ा, जैसा उनके विषय में प्रधानों ने बताया था. 22 तब यहोशू ने
गिबियोनियों को बुलाकर उनसे पूछा, “जब तुम लोग हमारे ही देश में रह रहे थे,
तो तुमने हमसे झूठ क्यों बोला कि, ‘हम दूर देश से आए है!’ 23 तब अब तुम
लोग शापित हो गए हो, और तुम मेरे परमेश्वर के भवन के लिए हमेशा लकड़ी
काटने तथा पानी भरने वाले ही रहोगे.” 24 तब उन्होंने यहोशू से कहा, “इसके
पीछे कारण यह है, कि आपके सेवकों को यह बताया गया था, कि याहवेह
परमेश्वर ने अपने सेवक मोशेह को आदेश दिया था कि यह पूरा देश आपको
दिया जाएगा, और आप इन निवासियों को मार दें. इसलिये अपने आपको बचाने
के लिए हमें ऐसा करना पड़ा. 25 अब देखिए, हम आपके ही हाथों में हैं. हमारे
साथ आप वही कीजिए, जो आपको सही और अच्छा लगे.” 26 तब यहोशू ने
गिबियोनियों को बचाया और उनकी हत्या नहीं की. 27 किंतु यहोशू ने उसी
दिन सोच लिया था कि वे अब से इस्राएली सभा के लिए तथा याहवेह द्वारा बताये
जगह पर उनकी वेदी के लिए लकड़ी काटेंगे तथा उनके लिए पानी भरा करेंगे.

10 फिर दूसरे दिन जब येरूशलेम के राजा अदोनी-त्सेदेक ने यह सुना कि
यहोशू ने अय नगर को अपने अधीन कर उसे पूरा नष्ट कर दिया है; ठीक
जैसा उन्होंने येरीख़ो एवं उसके राजा के साथ किया था; वैसा ही उन्होंने अय
और उसके राजा के साथ भी किया, तथा गिबयोनवासियों ने इस्राएल के साथ
संधि कर ली और अब वे उसी देश में रह रहे हैं, 2 अदोनी-त्सेदेक और साथ के
लोग डर गऐ, क्योंकि गिबयोन एक प्रतिष्ठित नगर था, और अय से अधिक बड़ा
था तथा उसके लोग भी वीर थे. 3 तब येरूशलेम के राजा अदोनी-त्सेदेक ने
हेब्रोन के राजा होहाम, यरमूथ के राजा पिरआम, लाकीश के राजा याफिया तथा
एगलोन के राजा दबीर को यह संदेश भेजा कि, 4 “यहां आकर मेरी मदद
कीजिए,” ताकि हम गिबयोन पर हमला करें, “क्योंकि उसने यहोशू तथा
इस्राएल वंश से दोस्ती कर ली है.” 5 तब अमोरियों के पांच राजा येरूशलेम,
हेब्रोन, यरमूथ लाकीश तथा एगलोन के राजा एक साथ मिल गए. उन्होंने
अपनी-अपनी सेनाएं लेकर गिबयोन के पास तंबू खड़े किए तथा गिबयोन से
लड़ाई शुरू की. 6 तब गिबयोनवासियों ने गिलगाल में यहोशू को यह संदेश
भेजा, “अपने सेवकों को अकेला मत छोड़िए. हमारी मदद के लिए तुरंत
आइए. और हमें बचाइए. अमोरियों के सभी राजा, जो पर्वतीय क्षेत्र के हैं, एक
होकर हमारे विरुद्ध खड़े हैं.” 7 यह सुन यहोशू, उनके साथ युद्ध के लिए तैयार
व्यक्ति तथा शूर योद्धा लेकर गिलगाल से निकले. 8 याहवेह ने यहोशू से कहा,
“उनसे मत डरना, क्योंकि मैंने उन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया है. उनमें से एक
भी तुम्हारे सामने ठहर न सकेगा.” 9 तब गिलगाल से पूरी रात चलकर यहोशू ने
उन पर अचानक हमला कर दिया. 10 याहवेह ने शत्रु को इस्राएलियों के सामने
कमजोर कर दिया, तथा गिबयोन पर बड़ा विरोध किया. और बेथ-होरोन के
मार्ग की चढ़ाई पर उनका पीछा किया और अज़ेका तथा मक्केदा तक उनको
मारते गए. 11 वे इस्राएलियों से बेथ-होरोन की ढलान तक भागते रहे, याहवेह ने
उन पर अज़ेका से बड़े-बड़े पत्थर समान ओले फैंके, जिससे उनकी मृत्यु हो
गई. और जो ओले से मरे वे कम थे, लेकिन तलवार से मारे गए लोग ज्यादा थे.
12 जिस दिन याहवेह ने अमोरियों को इस्राएल वंश के अधीन कर दिया था, उस
दिन यहोशू ने याहवेह से बात की और इस्राएलियों के सामने कहा, “सूर्य,
गिबयोन पर और चंद्रमा अय्जालोन घाटी पर रुक जाए.” 13 तब सूर्य एवं,
चंद्रमा रुक गये, जब तक इस्राएली राष्ट्र की सेना ने अपने शत्रुओं से बदला न
लिया. यह घटना याशार की किताब में लिखी है. सूर्य लगभग पूरा दिन आकाश
के बीच रुका रहा, 14 इससे पहले और इसके बाद फिर कभी ऐसा नहीं हुआ
कि, जब याहवेह ने किसी मनुष्य का ऐसा आग्रह स्वीकार किया हो; क्योंकि
यह वह समय था, जब याहवेह इस्राएल की ओर से युद्ध कर रहे थे. 15 फिर
यहोशू एवं उनके साथ सब इस्राएली गिलगाल चले गए. 16 जब पांचों राजा
भागकर मक्केदा की गुफा में छिपे थे, 17 यहोशू को यह बताया गया: “पांचों
राजा मक्केदा की गुफा में छिपे हुए हैं.” 18 यहोशू ने उनसे कहा, “गुफा के
मुख पर बड़ा गोल पत्थर रख दो और वहां कुछ पहरेदार बिठा दो, 19 और तुम
वहां मत रुकना. तुम अपने शत्रुओं का पीछा करना और उन पर वार करना, जो
सबसे पीछे हैं, उन्हें मौका देना कि वे अपने नगर में जा पाएं, क्योंकि याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है.” 20 जब यहोशू एवं
इस्राएल वंश उनको मार चुके और उनमें से कुछ लोग बच गए, वे नगर के गढ़
में चले गए, 21 तब सभी इस्राएली मक्केदा के पड़ाव में यहोशू के पास सुरक्षित
लौट आए. इसके बाद फिर किसी में भी यह साहस न रहा कि इस्राएल के विरुद्ध

कुछ कहें. 22 तब यहोशू ने कहा, "गुफा का पत्थर हटा दो और पांचों राजाओं
को मेरे पास लाओ." 23 वे गुफा में से उन पांच राजाओं को निकाल लाए; वे
येरूशलेम, हेब्रोन, यरमूथ लाकीश तथा एगलोन के राजा थे. 24 जब इन्हें यहोशू
के पास लाया गया, तब यहोशू ने सब इस्राएलियों को बुलाया तथा योद्धाओं के
प्रमुखों को, जो उनके साथ युद्ध पर गए थे, उनसे कहा, "इन राजाओं की गर्दनों
पर पैर रखो." और वे उनके पास गए और उनकी गर्दन पर अपने पैर रखे. 25
तब यहोशू ने सब इस्राएली प्रजा को बोला, "न तो डरना और न निराश होना,
बहादुर तथा साहसी बनना, क्योंकि याहवेह शत्रुओं की यही दशा करेंगे, जिन-
जिन से तुम युद्ध करोगे." 26 फिर यहोशू ने उनको मार दिया तथा उनके शवों
को पांच वृक्षों पर लटका दिया; शाम तक उनके शव पेड़ों पर लटके रहे. 27
सूर्य ढलने पर यहोशू के आदेश पर उन्होंने वे शव उतारकर उसी गुफा में रख
दिए, जहां वे छिपे थे. उन्होंने गुफा पर बड़े-बड़े पत्थरों का ढेर लगा दिया, जो
आज तक वैसा ही है. 28 मक्केदा नगर को यहोशू ने उसी दिन अपने अधीन
कर लिया और नगरवासियों तथा राजा को तलवार से मार दिया. और कोई भी
जीवित न रहा. यहोशू ने मक्केदा के राजा के साथ ठीक वही किया, जैसा
उन्होंने येरीख़ो के राजा के साथ किया था. 29 तब यहोशू तथा उनके साथ सब
इस्राएली मक्केदा से होते हुए लिबनाह पहुंचे, और उन्होंने लिबनाह से युद्ध
किया. 30 याहवेह ने लिबनाह नगर तथा उसके राजा को इस्राएल के अधीन कर
दिया. यहोशू ने नगर के हर व्यक्ति को तलवार से मार दिया, किसी को भी
जीवित न छोड़ा. राजा के साथ भी यहोशू ने वही किया, जो उन्होंने येरीख़ो के
राजा के साथ किया था. 31 तब यहोशू और उनके साथ सब इस्राएली लिबनाह
से होते हुए लाकीश पहुंचे. उन्होंने वहां उनसे लड़ाई की. 32 याहवेह ने लाकीश
को इस्राएल के अधीन कर दिया. दूसरे दिन यहोशू ने हर एक व्यक्ति को तलवार
से मार दिया. 33 लाकीश की मदद के लिए गेज़ेर का राजा होराम आया. यहोशू
ने उसे और उसकी सेना को भी मार दिया. यहोशू ने किसी को भी जीवित न
छोड़ा. 34 यहोशू और उनके साथ सभी इस्राएली लाकीश से होकर एगलोन
पहुंचे. उन्होंने उसके पास तंबू डाले और उनसे लड़ाई की. 35 उन्होंने उसी दिन
उस पर अधिकार कर लिया तथा सभी को तलवार से मार दिया. 36 फिर यहोशू
और उनके साथ सभी इस्राएली एगलोन से हेब्रोन पहुंचे. उन्होंने उनसे युद्ध किया.
37 और उन पर अधिकार कर उन्हें नष्ट कर दिया, तथा उसके राजा और सभी
लोगों को तलवार से मार दिया, और किसी को भी जीवित न छोड़ा; यहोशू
ने नगर को तथा हर एक नगरवासी को पूरी तरह नष्ट कर दिया. 38 उसके
बाद यहोशू तथा उनके साथ सब इस्राएली दबीर को गए, और उन्होंने उन पर
आक्रमण कर दिया. 39 यहोशू ने उसके राजा तथा नगर को अपने अधीन करके
तलवार से मार दिया. और कोई भी जीवित न रहा. ठीक जैसा उन्होंने हेब्रोन में
किया था, दबीर तथा उसके राजा के साथ भी वही किया, जैसा उन्होंने लिबनाह
तथा उसके राजा के साथ भी किया था. 40 इस प्रकार यहोशू ने, पर्वतीय क्षेत्र,
नेगेव, तथा उनके राजाओं को भी नष्ट कर दिया, और किसी को भी जीवित न
छोड़ा; ठीक जैसा याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का आदेश था. 41 यहोशू ने
कादेश-बरनेअ से लेकर गाज़ा तक तथा गोशेन से लेकर गिबयोन तक पूरे देश
को अपने अधीन कर लिया. 42 यहोशू ने एक ही बार में इन सभी राजाओं तथा
उनकी सीमाओं को अपने अधिकार में ले लिया, क्योंकि याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर उनके लिए युद्ध कर रहे थे. 43 इसके बाद यहोशू तथा उनकी सेना
गिलगाल में अपने पड़ाव में लौट आए.

11 जब हाज़ोर के राजा याबीन को यह बात मालूम पड़ी, उसने मादोन के
राजा योबाब को, शिम्रोन तथा अकशाफ नगर के राजाओं, 2 उत्तर के
पर्वतीय क्षेत्र के राजाओं, किन्नेरेथ के दक्षिण, अराबाह में यरदन नदी की घाटी
के राजाओं, तराई के राजाओं तथा पश्चिमी समुद्रतट के राजाओं के पास अपने
दूत भेजे. 3 उसने यरदन के दोनों तटों पर बसे कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज़्ज़ी
तथा पर्वतीय यबूसी लोगों को, मिज़पाह के हरमोन पर्वत की तराई के निवासी
हिव्वी लोगों के लिए भी दूत भेजे. 4 ये भी एक साथ अपनी-अपनी सेनाएं
लेकर निकले. वे बहुत लोग थे. इनमें ज्यादा घोड़े तथा रथ थे. 5 इन सभी राजा
ने एक साथ मिलकर मेरोम की नदी के किनारे पर अपने पड़ाव डाल दिए, ताकि
वे इस्राएल पर आक्रमण कर सके. 6 याहवेह ने यहोशू से कहा, "इन लोगों से
मत डरना, क्योंकि कल इसी समय मैं इस्राएल के सामने इन सभी को मार दूंगा.
तुम उनके घोड़े के घुटनों की नस काटकर उन्हें लंगड़ा बनाना, तथा उनके रथों
को जला देना." 7 तब यहोशू तथा उनके साथ सब योद्धाओं ने मेरोम नदी के
निकट उन पर अचानक हमला कर दिया. 8 और याहवेह ने उन्हें इस्राएल के
अधीन कर दिया. इस्राएली बृहत्-सीदोन से मिसरेफोत-मयिम तक तथा पूर्व में
मिज़पाह घाटी तक उनका पीछा करते चले गए. उन्होंने उनको ऐसा मारा, कि
उनमें से एक भी योद्धा जीवित न रहा. 9 याहवेह ने यहोशू को जैसा बताये उसके
अनुसार ही यहोशू ने किया: घोड़े लंगड़े कर दिये तथा रथ जला दिए गए. 10
फिर यहोशू ने उसी समय हाज़ोर नगर पर हमला किया तथा उसके राजा को
तलवार से मार दिया, क्योंकि वह इन सभी राज्यों का राजा था. 11 उन्होंने इस
नगर के हर व्यक्ति को तलवार से मार दिया और सब कुछ पूरा नष्ट कर दिया;
उनमें एक भी व्यक्ति जीवित न रहा. फिर उन्होंने हाज़ोर को जला दिया. 12
यहोशू ने इन सभी नगरों और राजाओं को अपने अधिकार में कर लिया और
तलवार से उनको मार दिया, जैसा याहवेह के सेवक मोशेह का आदेश था. 13
परंतु इस्राएलियों ने उस नगर को नहीं जलाया, जो टीलों पर बसा था केवल
हाज़ोर को यहोशू ने जलाया, 14 इन सभी नगरों से लूटा हुआ सामान एवं पशु
इस्राएल वंश ने अपने लिए रख लिया; उन्होंने हर एक मनुष्य को तलवार से
मार दिया और इस तरह उन्होंने सब कुछ नष्ट कर दिया. उन्होंने किसी को भी
जीवित न छोड़ा; 15 जैसा याहवेह ने अपने सेवक मोशेह को तथा मोशेह ने
यहोशू को कहा था. यहोशू ने याहवेह द्वारा मोशेह को दी गयी किसी भी बात
को अधूरा नहीं छोड़ा. 16 इस प्रकार यहोशू ने उस समस्त भूमि पर अपना
अधिकार कर लिया: नेगेव का संपूर्ण पर्वतीय क्षेत्र, समस्त गोशेन क्षेत्र, अराबाह,
तराइयां, इस्राएल का पर्वतीय क्षेत्र तथा तराई, 17 सेईर की दिशा में उन्नत पर्वत
हालाक, हरमोन पर्वत की तराई से लबानोन घाटी में बाल-गाद तक. यहोशू ने
इन सभी राजाओं को मार दिया. 18 इन राजाओं के साथ यहोशू का युद्ध लंबे
समय तक चलता रहा. 19 गिबयोन निवासी हिव्वियों के अलावा कोई भी ऐसा
नगर न था जिसने इस्राएल वंश के साथ संधि की हो. 20 यह याहवेह की इच्छा
थी: उन्होंने इनके मन को ऐसा कठोर कर दिया, कि वे इस्राएल से युद्ध करते
रहे, ताकि उनको मिटा डाले. याहवेह यही चाहते थे कि इस्राएल उन पर दया
किए बिना, उन्हें नष्ट करता जाए, जैसा कि मोशेह का आदेश था. 21 इसके बाद
यहोशू ने पर्वतीय क्षेत्र से, हेब्रोन, दबीर, अनाब तथा यहूदिया के समस्त पर्वतीय
क्षेत्र से अनाकियों को मार दिया. यहोशू ने उन्हें उनके नगरों सहित पूरा नाश कर
दिया. 22 अज्जाह, गाथ तथा अशदोद के अलावा इस्राएल देश में कहीं भी
अनाकी शेष न बचे. 23 इस प्रकार यहोशू ने पूरे देश पर अपना अधिकार कर
लिया, जैसा कि याहवेह ने मोशेह से कहा. यहोशू ने इस्राएल को उनके गोत्रों के
अनुसार बांट दिया. फिर देश में लड़ाई रुक गई.

12 ये हैं जो राजा यरदन के पूर्व अराबाह में थे, जिनको इस्राएलियों ने
मारकर उनकी भूमि ली, इन राज्यों की सीमा आरनोन घाटी से लेकर
हरमोन पर्वत तक तथा पूरे यरदन घाटी तक थी: 2 सीहोन अमोरियों का राजा
था, जिसका मुख्यालय हेशबोन में था. उसका शासन आरनोन घाटी से लेकर
अम्मोनियों के देश के यब्बोक नदी तक फैला था. इसमें घाटी के बीच से
गिलआद का आधा भाग शामिल था. 3 उसका शासन पूर्व अराबाह प्रदेश जो

किन्‍नेरेथ झील से अराबाह सागर तक, और पूर्व में बेथ-यशिमोथ तक तथा,
दक्षिण में पिसगाह की ढलानों की तराई तक फैला था. 4 ओग बाशान का राजा
जो रेफाइम में बचे हुए लोगों में से एक था. वह अश्तारोथ तथा एद्रेइ से शासन
करता था. 5 उसके शासन का क्षेत्र हरमोन पर्वत, सलेकाह, गेशूरियों तथा
माकाहथियों की सीमा तक पूरा बाशान तथा गिलआद का आधा क्षेत्र था, जो
हेशबोन के राजा सीहोन की सीमा तक फैला था. 6 मोशेह, याहवेह के सेवक
तथा इस्राएल वंश ने उन्हें हरा दिया तथा याहवेह के सेवक, मोशेह ने ये क्षेत्र
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र को निज भाग में दे दिया. 7 यरदन के
पश्चिम में जो ज़मीन है, वो लबानोन घाटी में, बाल-गाद से लेकर सेईर में
हालाक पर्वत तक के देश हैं, जिनके राजाओं को यहोशू एवं इस्राएलियों ने मार
दिया था, और यहोशू ने उस भाग को इस्राएली गोत्रों में बाट दिया. 8 इस भाग में
पर्वतीय क्षेत्र, तराइयां, अराबाह, ढलानें, निर्जन प्रदेश तथा नेगेव और इस क्षेत्र
के मूल निवासी हित्ती, अमोरी, कनानी, परिज्ज़ी, हिव्वी तथा यबूसी: मारे
गये राजा ये थे: 9 येरीख़ो का राजा एक बेथेल का निकटवर्ती अय का राजा
एक 10 येरूशलेम का राजा एक हेब्रोन का राजा एक 11 यरमूथ का राजा एक
लाकीश का राजा एक 12 एगलोन का राजा एक गेज़ेर का राजा एक 13 दबीर
का राजा एक गेदेर का राजा एक 14 होरमाह का राजा एक अराद का राजा एक
15 लिबनाह का राजा एक अदुल्लाम का राजा एक 16 मक्केदा का राजा एक
बेथेल का राजा एक 17 तप्पूआह का राजा एक हेफेर का राजा एक 18 अफेक
का राजा एक शारोन का राजा एक 19 मादोन का राजा एक हाज़ोर का राजा
एक 20 शिमरोन-मरोन का राजा एक अकशाफ का राजा एक 21 तानख का
राजा एक मगिद्दो का राजा एक 22 केदेश का राजा एक कर्मेल के योकनआम
का राजा एक 23 नाफ़ात-दोर में दोर का राजा एक गिलगाल में गोयिम का राजा
एक 24 तथा तिरज़ाह के राजा एक ये पूरे एकतीस राजा थे.

13 जब यहोशू बहुत बूढ़े हो चुके थे, तब याहवेह ने उनसे यह कहा: "तुम
बूढ़े हो चुके हो, और भूमि का एक बड़ा अंश अब भी तुम्हारें अधिकार
में नहीं आया हैं. 2 "वह देश जो रह गए है: "फिलिस्तीनियों की समस्त भूमि
तथा गेशूरियों का देश; 3 मिस्र के पूर्व में स्थित शीहोर से लेकर उत्तर में एक्रोन
की सीमा तक, जो कनान देश माना जाता था, हालांकि यह प्रदेश फिलिस्तीनियों
के पांच शासकों के कब्जे में था. उनके नगर थे: गाज़ा, अशदोद, अश्कलोन,
गाथ, एक्रोन; तथा दक्षिण में अव्वी, 4 कनानियों का पूरा देश तथा मेआराह, जो
सीदोनियों का राज्य था, यह अमोरियों के अफेक की सीमा तक फैला था;
5 गिबलियों का देश लबानोन, बाल-गाद से नीचे की ओर हरमोन पर्वत से
लेकर लबो-हामाथ तक. 6 "मैं इस्राएलियों के सामने से लबानोन के पर्वतीय
क्षेत्र के पूरे निवासियों को, जो मिसरेफोत-मयिम तक बसे हैं, सीदोनियों को,
सबको भगा दूंगा. और मेरे कहे अनुसार यह देश इस्राएलियों को मीरास में दिया
जायेगा, 7 और यह देश नौ गोत्रों तथा मनश्शेह के आधा गोत्र को दे मीरास में
दिया जाएगा." 8 मनश्शेह के आधा गोत्र के साथ रियूबेन तथा गाद के गोत्रों ने
यरदन के पूर्व में मोशेह द्वारा अपना हिस्सा ले लिया, ठीक जैसा याहवेह के
सेवक मोशेह ने उन्हें दिया था: 9 आरनोन घाटी की सीमा तक अरोअर से तथा
उस नगर से, जो घाटी के बीच में है, तथा मेदेबा से लेकर दीबोन तथा पूरे पठार
तक; 10 अमोरियों का राजा, जो हेशबोन में शासन करता था, अम्मोन की
सीमा तक उसके सब नगर; 11 गिलआद, गेशूरियों तथा माकाहथियों का पूरा
देश; पूरा हरमोन पर्वत तथा सलेकाह तक पूरा बाशान; 12 बाशान में ओग का,
जो अश्तारोथ तथा एद्रेइ में राज करता था और रेफाइम में केवल वही बच गया
था; क्योंकि मोशेह ने उनको मारकर उनकी प्रजा को देश से निकाल दिया था.
13 लेकिन इस्राएल वंश ने गेशूरियों अथवा माकाहथियों को देश से बाहर नहीं
निकाला था. आज तक वे इस्राएलियों के बीच ही रह रहे हैं. 14 मोशेह ने
केवल लेवी के गोत्र को कोई हिस्सा नहीं दिया. इस्राएल के परमेश्वर याहवेह के
आदेश के अनुसार, उनके लिए चढ़ाये जानेवाली अन्‍नबलि ही उनका हिस्सा हैं.
15 मोशेह ने रियूबेन गोत्र को उनके कुलों के अनुसार हिस्सा दिया: 16 अर्थात्
आरनोन कि घाटी की सीमा से लगे हुए अरोअर, जिसमें वह नगर भी है, और
जो घाटी के बीच में है, उसमें मेदेबा का पूरा मैदान शामिल है; 17 हेशबोन तथा
मैदानी क्षेत्र के नगर ये हैं: दीबोन, बामोथ-बाल तथा बेथ-बाल-मेओन, 18
यहत्स, केदेमोथ तथा मेफाअथ 19 किरयथाईम, सिबमाह, ज़ेरेथ-शहर, जो
घाटी की पहाड़ी पर है, 20 बेथ-पिओर, पिसगाह की ढलान, बेथ-यशिमोथ, 21
मैदान में स्थित सभी नगर, हेशबोन में अमोरियों का राजा सीहोन जिसको मोशेह
ने मारा था उसके सब नगर; मोशेह ने मिदियानी प्रधान एवी, रेकेम, ज़ुर, हूर तथा
रेबा को भी पराजित किये थे. 22 इस्राएलियों ने बेओर के पुत्र बिलआम को भी,
जो भविष्य बताया करता था, सबके साथ तलवार से मार दिया. 23 रियूबेन
वंशजों के लिए यरदन नदी सीमा थी. रियूबेन के पुत्रों तथा उनके परिवारों के
अनुसार यही नगर तथा गांव उनका हिस्सा था. 24 मोशेह ने गाद के गोत्र को
उनके परिवारों के अनुसार हिस्सा दिया; 25 तथा उनकी सीमा में याज़र तथा
गिलआद के सभी नगर तथा अरोअर तक अम्मोनियों का आधा देश, जो रब्बाह
के पूर्व में है, 26 तथा हेशबोन से रामथ-मिज़पाह, बटोनीम और माहानाईम से
दबीर की सीमा तक; 27 तथा बेथ-हाराम की घाटी में बेथ-निमराह, सुक्कोथ
तथा ज़ेफोन, हेशबोन के राजा सीहोन का बचा हुआ राज्य, जिसकी सीमा यरदन
नदी थी तथा पूर्व में यरदन के किन्‍नेरेथ सागर के सीमा तक. 28 गाद के पुत्रों
को, उनके गोत्रों के अनुसार दिया गया हिस्सा नगर एवं गांव यही थे. 29 मोशेह
ने मनश्शेह के आधे गोत्र को यह भाग उनके परिवारों के अनुसार दिया: 30
उनकी सीमा माहानाईम से लेकर बाशान के राजा, ओग का पूरा राज्य, याईर का
पूरा नगर, जो बाशान में, साठ नगर; 31 गिलआद का आधा भाग, अश्तारोथ
तथा एद्रेइ (बाशान में ओग राजा के नगर थे ये). ये सभी मनश्शेह के पुत्र माखीर
वंश को उनके परिवारों के अनुसार बांट दिया गया. 32 ये येरीख़ो के पूर्व में
यरदन के पार, मोआब के मैदानों में मोशेह द्वारा बांटी गई थी. 33 लेवी के गोत्र
को मोशेह ने कोई हिस्सा नहीं दिया. मोशेह ने उन्हें बताया कि, याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर ही उनका हिस्सा हैं, जैसा याहवेह ने उनसे कहा था.

14 पुरोहित एलिएज़र तथा नून के पुत्र यहोशू तथा इस्राएल के परिवारों के
मुखियों द्वारा कनान देश में इस्राएलियों को दिया गया हिस्सा इस प्रकार
है. 2 उनके भाग के लिए चिट्ठी डालकर, नाम चुनकर मीरास का निर्णय लिया
गया. साढ़े नौ गोत्रों के संबंध में याहवेह ने मोशेह को यही आदेश दिया था. 3
मोशेह तो ढाई गोत्रों को यरदन के पार हिस्सा दे चुके थे. उनके साथ मोशेह ने
लेवी गोत्र को कोई भी हिस्सा नहीं दिया, 4 क्योंकि योसेफ़ के दो गोत्र थे;
मनश्शेह तथा एफ्राईम. इस देश में लेवी के वंश को कोई भी हिस्सा नहीं दिया
गया था. उन्हें केवल रहने के लिए ही जगह दी गई थी. उनके चराइयां एवं
उनके पशु ही उनकी संपत्ति थी. 5 इस विषय में इस्राएल वंश ने ठीक वही किया
जैसा याहवेह द्वारा मोशेह को आदेश दिया गया था. 6 जब गिलगाल में यहूदाह
गोत्र के लोग यहोशू के पास आए, और कनिज्ज़ी येफुन्‍नेह के पुत्र कालेब ने
यहोशू से आग्रह किया, "कादेश-बरनेअ में परमेश्वर के दास मोशेह से आपके
तथा मेरे संबंध में की गई याहवेह की प्रतिज्ञा आपको मालूम है. 7 जब याहवेह
के सेवक मोशेह ने मुझे कादेश-बरनेअ से इस देश की जानकारी लेने भेजा था,
तब मेरी आयु चालीस वर्ष की थी. और मैं उनके लिए सही सूचना लाया. 8
फिर भी उन लोगों ने, जो मेरे साथ वहां आये थे उनको डरा दिया; किंतु मैंने
याहवेह अपने परमेश्वर की बात को पूरा किया. 9 तब उस दिन मोशेह ने यह
कहते हुए शपथ ली: 'निश्चय जिस भूमि पर तुम्हारे पांव पड़े हैं, हमेशा के लिए
तुम्हारे तथा तुम्हारे बच्चों के लिए हो जाएंगे, क्योंकि तुमने पूरे मन से याहवेह,

मेरे परमेश्वर की इच्छा अनुसार काम किया है.’ 10 “जब इस्राएली मरूभूमि
में भटक रहे थे, तब याहवेह ने मोशेह को इस बारे में बताया था कि, अपने
वायदे के अनुसार याहवेह ने मुझे पैंतालीस वर्ष जीवित रखा है. आज मेरी उम्र
पचासी वर्ष की हो चुकी है. 11 मुझमें आज भी वैसा ही बल है, जैसा उस
समय था, जब मोशेह ने मुझे वहां भेजा था. युद्ध के लिए मुझमें जैसा बल उस
समय था, आज भी उतनी ही ताकत है. 12 तब मुझे याहवेह के उस दिन दिए
गए वचन के अनुसार यह देश दे दीजिए, क्योंकि आपको मालूम था कि वहां
अनाकियों के लोग रहते थे. यह बहुत बड़ा भी हैं. यदि याहवेह मेरे साथ रहेंगे
तो मैं उनकी प्रतिज्ञा के अनुसार उन अनाकियों को निकाल भगाऊंगा.” 13
यहोशू ने येफुन्नेह के पुत्र कालेब के लिए आशीष की बातें कहीं और उसे हिस्से
में हेब्रोन दे दिया. 14 इस प्रकार आज तक हेब्रोन येफुन्नेह कालेब का भाग है,
क्योंकि उसने पूरे मन से याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर को माना था. 15 हेब्रोन
इससे पहले किरयथ-अरबा के नाम से जाना जाता था, क्योंकि अनाकियों में
सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति का नाम अरबा था. इसके बाद सारे देश में
लड़ाई की स्थिति थम गई.

15 यहूदाह गोत्र को उनके परिवारों के अनुसार बंटवारे में एदोम की सीमा
मिली, जो ज़िन के वन के निर्जन प्रदेश में दक्षिण दिशा की ओर है. 2
उनकी दक्षिण सीमा लवण-सागर के दक्षिण छोर से, उस खाड़ी से, जो दक्षिण की
ओर मुड़ती है; 3 और यह अक्रब्बीम चढ़ाई की ओर होती हुई ज़िन की ओर
बढ़ जाती है, फिर कादेश-बरनेअ के दक्षिण से बढ़ते हुए हेज़रोन पहुंचती है, और
अद्दार की ओर से कारका की ओर बढ़ जाती है. 4 यह आज़मोन की ओर से
मिस्र की सरिता की ओर बढ़ती है तथा समुद्र में जाकर मिल जाती है; यह
दक्षिण सीमा में थी. 5 यरदन के मुहाने तक लवण-सागर पूर्वी सीमा थी; और
उत्तरी सीमा समुद्र की खाड़ी से थी, जो यरदन के मुहाने पर है. 6 फिर सीमा
उत्तर दिशा से बढ़कर बेथ-होगलाह तक और उत्तर में बेथ-अराबाह से आगे
बढ़ते हुए रियूबेन के पुत्र बोहन की शिला तक पहुंची. 7 सीमा फिर आकोर
की घाटी से दबीर तक बढ़ी, और उत्तर में गिलगाल की ओर मुड़ गई, जो
अदुम्मीम की चढ़ाई के पास, घाटी के दक्षिण में है. यह सीमा आगे बढ़ते हुए
एन-शेमेश के सीमा तक पहुंचकर एन-रोगेल पर खत्म हो गई. 8 इसके बाद यह
सीमा बेन-हिन्नोम की घाटी के यबूसी ढाल तक पहुंची, जो दक्षिण दिशा में
अर्थात् येरूशलेम में हे, और यह सीमा पश्चिम में हिन्नोम की घाटी के पास पर्वत
के शिखर तक पहुंची. जो हिन्नोम की घाटी के पश्चिमी में है, जो उत्तर की
ओर रेफाइम की घाटी के अंतिम छोर पर है. 9 पर्वत शिखर से सीमा आगे
बढ़कर नेफतोआह के झरने की ओर मुड़कर एफ्रोन पर्वत के नगरों की ओर बढ़
जाती है, तत्पश्चात सीमा बालाह अर्थात् किरयथ-यआरीम की ओर मुड़ जाती
है. 10 फिर सीमा बालाह से पश्चिम दिशा में सेईर पर्वत की ओर मुड़ जाती
है, और आगे बढ़ते हुए उत्तर में यआरीम पर्वत के अर्थात् कसालोन के ढाल
पर पहुंचती है और आगे बेथ-शेमेश में जो तिमनाह पहुंचती है. 11 तब सीमा
एक्रोन के उत्तर की ओर बढ़कर शिक्केरोन की ओर जाती है और बालाह पर्वत
की ओर से यबनेएल समुद्र पर जाकर समाप्त हुई. 12 पश्चिमी सीमा भूमध्य
सागर थी. जो यहूदाह गोत्रजों के लिए उनके परिवारों के अनुसार दिया गया
उसकी यही सीमा थी. 13 यहोशू ने येफुन्नेह के पुत्र कालेब को यहूदाह गोत्र के
बीच एक भाग दिया. याहवेह की ओर से यहोशू को यही आदेश मिला था कि
कालेब को किरयथ-अरबा अर्थात् हेब्रोन दिया जाए. (अरबा अनाक के पूर्व-
पिता का नाम था.) 14 कालेब ने अनाक के तीन पुत्रों; शेशाइ, अहीमान तथा
तालमाई को वहां से निकाल दिया, 15 फिर कालेब ने दबीर वासियों पर हमला
किया. दबीर का पुराना नाम किरयथ-सेफेर था. 16 कालेब ने घोषणा की,
“जो कोई किरयथ-सेफेर पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लेगा, मैं
उसका विवाह अपनी पुत्री अक्सा से कर दूंगा!” 17 कालेब के भाई केनज़ के
पुत्र ओथनीएल ने किरयथ-सेफेर को अधीन कर लिया, तब कालेब ने उसे
अपनी पुत्री अक्सा उसकी पत्नी होने के लिए दे दी. 18 विवाह होने के बाद
जब अक्सा अपने पति से बात कर रही थी, उसने उसे अपने पिता से एक
खेत मांगने के लिए कहा. जब वह अपने गधे पर से उतर गई, तब कालेब
ने उससे पूछा, “तुम्हें क्या चाहिए?” 19 उसने उत्तर दिया, “मुझे आपके
आशीर्वाद की ज़रूरत है. जैसे आप मुझे नेगेव क्षेत्र दे ही चुके हैं, और यदि हो
सके तो मुझे जल के सोते भी दे दीजिए.” तब कालेब ने उसे ऊपर का सोता,
नीचे का सोता दोनों दे दिया. 20 यहूदाह गोत्र के कुलों का उनके परिवारों के
अनुसार जो बंटवारा किया वे ये हैं: 21 दक्षिण में एदोम की सीमा से लगे प्रदेश में
यहूदाह गोत्र के कुलों को दिये गये नगर थे: कबज़ीएल, एदर तथा यागूर, 22
कीनाह, दीमोनाह, अदआदाह, 23 केदेश, हाज़ोर, यिथनान, 24 ज़ीफ़, तेलेम,
बालोथ, 25 हाज़ोर हदत्ताह, केरिओथ-हेज़रोन अर्थात् हाज़ेर, 26 अमाम,
शेमा, मोलादाह, 27 हाज़र-गद्दाह, हेशमोन, बेथ-पेलेट, 28 हाज़र-शूआल,
बेअरशेबा, बिज़योथयाह, 29 बालाह, इय्यीम, एज़ेम, 30 एलतोलद, कसील,
होरमाह, 31 ज़िकलाग, मदमन्नाह, सनसन्नाह, 32 लबाओथ, शिलहीम, एइन
तथा रिम्मोन; उनके गांवों सहित कुल उनतीस नगर. 33 पश्चिम तलहटी में:
एशताओल, ज़ोराह, अशनाह, 34 ज़ानोहा, एन-गन्नीम, तप्पूआह, एनाम, 35
यरमूथ, अदुल्लाम, सोकोह, अज़ेका, 36 शअरयिम, अदीथयिम, गदेरा तथा
गदेरोथायिम और उनके गांवों के साथ चौदह नगर. 37 सेनान, हदाशा, मिगदल-
गाद, 38 दिलआन, मिज़पाह, योकथएल, 39 लाकीश, बोत्सकथ, एगलोन, 40
कब्बोन, लहमास, किथलीश, 41 गदेरोथ, बेथ-दागोन, नामाह तथा मक्केदा;
गांवों सहित सोलह नगर. 42 लिबनाह, एतेर, आशान, 43 यिफ्ताह, अशनाह,
नज़ीब, 44 काइलाह, अकज़ीब तथा मारेशाह और गांवों सहित नौ नगर. 45
एक्रोन इसके गांवों तथा नगरों सहित; 46 एक्रोन से लेकर समुद्र तक, अपने-
अपने गांवों के साथ, जितने नगर अशदोद की ओर है; 47 अशदोद तथा उसके
समस्त गांवों का क्षेत्र; मिस्र की सरिता, भूमध्य सागर के तटवर्ती क्षेत्र से लेकर
गांवों सहित अशदोद के नगर; गांवों सहित अज्जाह एवं उसके नगर. 48
पर्वतीय क्षेत्र में: शामीर, यत्तिर, सोकोह, 49 दन्नाह, किरयथ-सन्नाह अर्थात्
दबीर, 50 अनाब, एशतमोह, अनीम, 51 गोशेन, होलोन तथा गिलोह; गांवों
सहित ग्यारह नगर. 52 अरब, दूमाह, एशआन, 53 यानूम, बेथ-तप्पूआह,
अफेकाह, 54 हुमटा, किरयथ-अरबा अर्थात् हेब्रोन तथा ज़ीओर; गांवों सहित
नौ नगर. 55 माओन, कर्मेल, ज़ीफ़, युताह, 56 येज्रील, योकदआम, ज़ानोहा,
57 कयीन, गिबियाह तथा तिमनाह; इनके गांवों सहित दस नगर. 58 हलहूल,
बेथ-त्सूर, गेदोर, 59 माराथ, बेथ-अनोथ, एलतेकोन; इनके गांवों सहित छः
नगर. 60 किरयथ-बाल अर्थात् किरयथ-यआरीम तथा रब्बाह, इनके गांवों
सहित दो नगर. 61 निर्जन प्रदेश में: बेथ-अराबाह, मिद्दीन, सकाकाह, 62
निबशान, लवण का नगर तथा एन-गेदी; इनके गांवों सहित छः नगर जो. 63
यहूदाह गोत्रज येरूशलेम के ही रहनेवाले यबूसियों को निकाल न सके. इस
कारण यबूसी अब तक यहूदाह गोत्रजों के साथ हैं.

16 योसेफ़ को येरीख़ो नगर के पास यरदन नदी से लेकर येरीख़ो के जल के
सोते तक और पूर्व में निर्जन प्रदेश तक भूमि दी गई जो येरीख़ो से लेकर
पर्वतीय क्षेत्र से होते हुए बेथेल तक थी. 2 यह सीमा बेथेल से लूज़ तक थी और
आगे बढ़ते हुए अटारोथ के अर्कीयों की सीमा तक थी. 3 यह पश्चिम से होते
हुए यफलेतियों की सीमा से आगे बढ़ते हुए बेथ-होरोन तथा गेज़ेर से होती हुई
भूमध्य-सागर तट पर खत्म होती है. 4 इस प्रकार योसेफ़ के पुत्र मनश्शेह तथा
एफ्राईम को उनका हिस्सा मिला. 5 उनके परिवारों के अनुसार एफ्राईम वंश के
मीरास की सीमाएं इस प्रकार थी: पूर्व में उनकी सीमा अटारोथ-अद्दार से लेकर

उच्चतर बेथ-होरोन तक थी. 6 यह सीमा पश्चिम की ओर बढ़ती गई: जो उत्तर
में मिकमथाथ, फिर पूर्व में तानथ-शिलोह की ओर मुड़ गई, फिर बढ़ते हुए
यानोहा में जा पहुंची. 7 यानोहा से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए अटारोथ और
नाराह पहुंचकर येरीख़ो पहुंच गई और वहां से निकलकर यरदन पर खत्म हुई.
8 फिर तप्पूआह से यह सीमा पश्चिम में कानाह नदी की और बढ़ जाती है और
भूमध्य-सागर पर जाकर मिल जाती है. एफ्राईम गोत्र के परिवारों के अनुसार
उनका हिस्सा यही है, 9 इसके अलावा कुछ ऐसे गांव एवं नगर भी हैं, जो
मनश्शेह की विरासत की सीमा के अंदर थे, जो एफ्राईम वंश को दे दिए गए थे.
10 लेकिन उन्होंने उन कनानियों को बाहर नहीं निकाला, जो गेज़ेर में रह रहे
थे. तब आज तक कनानी एफ्राईम वंश के बीच दास बनकर रह रहे हैं.

17 फिर मनश्शेह के गोत्र के लिए भूमि का बंटवारा किया गया. मनश्शेह
के बड़े बेटे माखीर को गिलआद तथा बाशान नामक स्थान दिया गया,
क्योंकि वह एक योद्धा था. 2 तब मनश्शेह के शेष पुत्रों के लिए उनके परिवारों
के अनुसार भूमि बांटी गई: अबीएज़ेर, हेलेक, अस्रीएल, शेकेम, हेफेर तथा
शेमीदा के पुत्रों के लिए; ये सभी उनके परिवारों के अनुसार योसेफ़ के पुत्र
मनश्शेह के पुरुष वंशज थे. 3 हेफेर, जो गिलआद का बेटा माखीर का पोता
और मनश्शेह का परपोता था, उसके पुत्र ज़लोफेहाद का कोई पुत्र न था—केवल
बेटियां ही थी. उसकी पुत्रियों के नाम: महलाह, नोआ, होगलाह, मिलकाह
तथा तिरज़ाह है. 4 ये सभी, पुरोहित एलिएज़र, नून के पुत्र यहोशू तथा प्रधानों
के पास गईं तथा उनसे निवेदन किया, "याहवेह की ओर से मोशेह को यह कहा
गया था कि वह हमें हमारे भाई-बंधुओं के साथ हमारा हिस्सा दे." तब उन्होंने
याहवेह के कहे अनुसार उन्हें उनके पिता के भाइयों के बीच हिस्सा दे दिया. 5
इसके अलावा गिलआद तथा बाशान मनश्शेह के हिस्से में दस अंश आए. यह
यरदन के पार हैं, 6 तथा मनश्शेह गोत्र के पुत्रों के साथ पुत्रियों को भी हिस्सा
दिया. गिलआद पर अब मनश्शेह के पुत्रों का अधिकार हो गया. 7 मनश्शेह
प्रदेश की सीमा आशेर से शेकेम के पूर्व में मिकमथाथ तक थी. फिर यह सीमा
दक्षिण की ओर मुड़ जाती है जहां एन-तप्पूआह का नगर है. 8 तप्पूआह देश
मनश्शेह की संपत्ति थी, किंतु मनश्शेह की सीमा पर बसा नगर तप्पूआह एफ्राईम
वंश की संपत्ति थी. 9 तब सीमा दक्षिण में कानाह नदी की ओर बढ़ जाती है,
ये नगर मनश्शेह के नगरों के बीच होने पर भी, एफ्राईम ही की संपत्ति थी.
मनश्शेह की सीमा, नदी के उत्तर में थी जो भूमध्य-सागर पर जाकर खत्म होती
थी. 10 दक्षिण हिस्सा एफ्राईम का, तथा उत्तरी हिस्सा मनश्शेह का था. इनकी
सीमा समुद्र तक थी. ये उत्तर में आशेर तथा पूर्व में इस्साखार तक पहुंचती थी.
11 इस्साखार तथा आशेर के भूमि प्रदेश के अंदर में ही मनश्शेह को ये दिए गये:
बेथ-शान तथा इसके चारों ओर के गांवों, इब्लीम तथा इसके चारों ओर के
गांवों, दोर तथा इसके चारों ओर के गांवों, एन-दोर तथा इसके चारों ओर के
गांवों, तानख तथा इसके चारों ओर के गांवों, मगिद्दो तथा इसके चारों ओर
के गांवों. (और तीसरा नगर नाफ़ोथ था.) 12 मनश्शेह इन नगरों को अपने
अधिकार में न कर सके, क्योंकि कनानी ज़बरदस्ती इन नगरों में रह रहे थे. 13
जब इस्राएल वंश बलवंत हो गए, तब उन्होंने कनानियों को मज़दूर बना दिया;
उन्होंने इन्हें देश से पूरी तरह बाहर न निकाला. 14 योसेफ़ गोत्रजों ने यहोशू से
कहा, "आपने क्यों एक ही बार में हमें हिस्सा दे दिया, जबकि हम वह गोत्र हैं,
जिसे याहवेह ने अब तक आशीष दी है, और हमारे गोत्र की संख्या बहुत ज्यादा
है." 15 यहोशू ने उन्हें उत्तर दिया, "यदि तुम्हारे गोत्र की संख्या ज्यादा है,
तो अच्छा होगा कि तुम लोग पर्वतीय वन में जाकर वन को साफ़ करें और
परिज़्ज़ियों तथा रेफाइम के प्रदेश में अपने लिए जगह बना लें, क्योंकि तुम्हारे
लिए एफ्राईम का पर्वतीय क्षेत्र बहुत छोटा है." 16 योसेफ़ गोत्रजों ने उन्हें उत्तर
दिया, "पर्वतीय क्षेत्र भी हमारे लिए पूरा न होगा तथा उन सभी के पास लोहे के
रथ हैं, जो कनानी तराई-घाटी की भूमि में रहते हैं; जो बेथ-शान और चारों ओर
के गांवों में तथा जो येज्रील घाटी में हैं." 17 यहोशू ने योसेफ़—एफ्राईम तथा
मनश्शेह—गोत्रों से कहा, "तुम लोग बहुत बलवान हो. तुम लोगों का फैसला
एक ही बार में न होगा. 18 यह पर्वतीय क्षेत्र है, तुम इसे साफ़ करो और यह पूरा
तुम्हारा ही होगा; और तुम कनानियों को निकाल बाहर करोगे, यद्यपि उनके
पास लोहे के रथ हैं और वे ताकतवर भी हैं."

18 फिर सब इस्राएली एक साथ शीलो में इकट्ठे हुए. उन्होंने वहां मिलनवाले
तंबू को खड़ा किया. पूरा देश उनके वश में हो चुका था, 2 फिर भी
इस्राएल के सात गोत्र अब भी ऐसे थे, जिन्हें उनका हिस्सा नहीं मिला था. 3 तब
यहोशू ने इस्राएल वंश से कहा, "याहवेह, तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने जो भूमि
तुम्हें दे दी है, उसे अधिकार में करने के लिए कब तक टालते रहोगे? 4 हर गोत्र
से तीन-तीन व्यक्तियों को इस कार्य की जवाबदारी दें, ताकि वे जाकर इस देश
को देखें और अपनी इच्छा से अपने गोत्र के लिए विरासत चुन ले, और आकर
मुझे बताये. 5 यहूदाह गोत्र अपनी ही सीमा के दक्षिण में, तथा योसेफ़ का गोत्र
उत्तर में रहेगा. 6 तुम देश को सात भागों में बांटकर पूरी जानकारी मुझे देना. मैं,
याहवेह हमारे परमेश्वर से तुम्हारे लिए बिनती करूंगा. 7 तुम्हारे बीच लेवियों
को कोई भाग नहीं दिया गया है, क्योंकि याहवेह की ओर से मिला हुआ
पुरोहित पद ही उनका भाग है. रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र को पूर्व
में यरदन के दूसरी ओर हिस्सा मिल चुका है, जो, याहवेह के सेवक मोशेह द्वारा
उन्हें दिया गया था." 8 तब जिनको देश का हाल लिखने के लिए चुना गया था,
वे उस देश में जाकर उसका नक्शा तैयार करने जब निकले, उनके लिए यहोशू
का आदेश इस प्रकार था: "तुम उस देश को अच्छी तरह देखें, और आकर मुझे
बताएं; तब मैं शीलो में तुम्हारे लिए याहवेह से बिनती कर निर्णय लूंगा." 9 तब
वे लोग उस देश में गए और पूरे देश में घूमें, तथा नगरों के अनुसार सात भागों में
इसके बारे में पुस्तक में लिखा, और वे शीलो के पड़ाव में यहोशू के पास वापस
आए. 10 यहोशू ने उधर उनके लिए याहवेह से बिनती की, और इस्राएल के
लिए उनके भागों के अनुसार भूमि को बांट दिया. 11 भूमि का सबसे पहला
हिस्सा बिन्यामिन गोत्र को मिला. उनके परिवारों की संख्या के अनुसार चिट्ठी
डाली गई, उन्हें यहूदाह तथा योसेफ़ के गोत्रों के बीच की भूमि पर अधिकार
दिया गया. 12 उत्तर दिशा में उनकी सीमा यरदन से होते हुए, येरीख़ो के उत्तरी
ढाल से होकर, पर्वतीय क्षेत्र से होते हुए, पश्चिम दिशा में मिल जाती है, और
बेथ-आवेन पर जाकर रुक जाती है. 13 वहां से लूज़ की ओर से होकर बेथेल से
दक्षिण दिशा में बढ़ती है. जहां से अटारोथ-अद्दार, जो पहाड़ी के निकट है, और
बेथ-होरोन के दक्षिण में है. 14 वहां से पश्चिम से होकर दक्षिण की ओर मुड़
जाती है, और किरयथ-बाल पर जाकर समाप्त होती है, जो नगर यहूदाह गोत्र के
अधीन था, और पश्चिमी सीमा में है. 15 दक्षिण की सीमा किरयथ-यआरीम से
शुरू होकर, पश्चिम दिशा से बढ़ते हुए नेफतोआह जल के सोते तक पहुंचती है.
16 वह सीमा बढ़ती हुई बेन-हिन्नोम घाटी में स्थित पहाड़ी के पास पहुंचती है,
जो उत्तर में रेफाइम की घाटी में है; और हिन्नोम, दक्षिण में यबूसियों का ढाल है,
जो एन-रोगेल की ओर बढ़ जाती है. 17 यह उत्तर दिशा से होती हुई एन-शेमेश
से गलीलोथ पहुंचती है, जो अदुम्मीम चढ़ाई के पास है. वहां से सीमा रियूबेन
के पुत्र बोहन की शिला की ओर बढ़ती है. 18 यह सीमा अराबाह के ढाल की
ओर बढ़कर. उत्तर की ओर से होकर घाटी में पहुंचती है. 19 सीमा आगे बढ़कर
बेथ-होगलाह की बाहरी सीमा से होती हुई, उत्तर की ओर जाती है, जो लवण-
सागर की उत्तरी खाड़ी में जाकर यरदन नदी के दक्षिणी मुहाने पर मिल जाती है.
20 यरदन नदी इसकी पूर्वी सीमा थी. यह उनके परिवारों एवं इसकी चारों ओर
की सीमा के अनुसार बिन्यामिन वंश का हिस्सा था. 21 बिन्यामिन के गोत्र
तथा उनके परिवारों के अनुसार उन्हें दिये गये नगर यह थे: येरीख़ो, बेथ-

होगलाह, एमेक-कत्सीत्स, 22 बेथ-अराबाह, सेमाराइम, बेथेल, 23 अव्वीम,
पाराह, ओफ़राह, 24 कफर-अम्मोनी, ओफनी तथा गेबा; ये सभी बारह नगर,
उनके गांवों सहित. 25 गिबयोन, रामाह, बएरोथ, 26 मित्सपेह, कफीराह,
मोत्साह, 27 रेकेम, यिरपएल, थरअलाह, 28 त्सेलाह, एलेफ तथा यबूसी नगर,
अर्थात् येरूशलेम, गिबियाह तथा किरयथ—ये चौदह नगर, उनके गांवों सहित.
बिन्यामिन वंश को, उनके परिवारों के अनुसार मिला हुआ हिस्सा यह था.

19 दूसरा पासा शिमओन गोत्र के नाम पड़ा, शिमओन वंशजों के कुलों
के नाम, उनके परिवारों के अनुसार. उनकी मीरास यहूदाह गोत्रजों की
मीरास के मध्य हो गई. 2 परिणामस्वरूप, मीरास के रूप में: उन्हें बेअरशेबा
अथवा शीबा, मोलादाह, 3 हाज़र-शूआल, बालाह, एज़ेम, 4 एलतोलद, बतूल,
होरमाह, 5 ज़िकलाग, बेथ-मरकाबोथ, हाज़र-सूसाह, 6 बेथ-लबाओथ तथा
शारूहेन; उनके गांवों सहित तेरह नगर. 7 एइन, रिम्मोन, एतेर तथा आशान;
चार नगर उनके गांवों सहित. 8 इनके अतिरिक्त इन सभी नगरों के आस-पास
के गांव भी, जो बालथ-बएर, नेगेव की सीमा तक फैले हुए थे. यह शिमओन
गोत्र के कुलों की उनके परिवारों के अनुसार दी गयी मीरास थी. 9 शिमओन
को दी गयी यह मीरास यहूदाह को दी गयी मीरास में से ली गई थी, क्योंकि
यहूदाह को दिया गया क्षेत्र उनके लिए अत्यंत विशाल हो गया था. इस प्रकार
शिमओन वंशजों ने यहूदाह की मीरास के मध्य अपनी मीरास प्राप्त की. 10
पासा फेंकने पर तीसरा अंश ज़ेबुलून वंशजों के लिए उनके परिवारों के अनुसार
निकला. उनकी मीरास की सीमा सारीद तक जा पहुंची. 11 इसके बाद सीमा
पश्चिम में मरालाह की दिशा में बढ़ गई, तब इसने दब्बेशेथ का स्पर्श किया और
फिर सीमा योकनआम की निकटवर्ती सरिता तक पहुंची. 12 तब सीमा सारीद
से मुड़कर पूर्व में सूर्योदय की दिशा में आगे बढ़ते हुए किसलोथ-ताबोर को स्पर्श
किया. यह आगे बढ़ी और दाबरथ तथा याफिया पहुंची. 13 वहां से यह पूर्व में
सूर्योदय की दिशा में बढ़ती चली गई और गाथ-हेफ़ेर, एथ-काज़ीन पहुंची, और
रिम्मोन की ओर बढ़ गई, जो नेआह तक विस्तृत है. 14 यह सीमा उत्तर में
हन्नाथोन की परिक्रमा कर यिफतह-एल की घाटी में जाकर समाप्त हो गई.
15 इसमें कट्टाथ, नहलाल, शिम्रोन, यिदअला तथा बेथलेहेम भी सम्मिलित
हैं; ये बारह नगर, इनके गांवों के साथ. 16 ये नगर इनके गांवों के सहित
ज़ेबुलून वंशजों को उनके परिवार के अनुसार प्राप्त मीरास थी. 17 चौथा पासा
इस्साखार के पक्ष में पड़ा-यिस्साकार के गोत्र के पक्ष में, उसके परिवारों के
अनुसार. 18 इसकी सीमा में था: येज़्रील तथा इसमें सम्मिलित थे कसुल्लोथ,
शूनेम, 19 हफारयिम, सियोन, अनाहरथ, 20 रब्बीथ, किशयोन, एबेज़, 21
रेमेथ, एन-गन्नीम, एन-हद्दाह तथा बेथ-पत्सेत्स, 22 सीमा ताबोर, शहत्सीमा
तथा बेथ-शेमेश पहुंची और उनकी सीमा यरदन पर जा समाप्त हो गई; ये इनके
गांवों के सहित सोलह नगर थे. 23 ये नगर इनके गांवों के सहित इस्साखार गोत्र
को उनके परिवारों के अनुसार दी गयी मीरास थी. 24 पांचवां पासा आशेर गोत्र
के नाम उनके परिवारों के अनुसार पड़ा. 25 उनकी सीमा थी, हेलकथ, हली,
बेटेन, अकशाफ, 26 अलम्मेलेख, अमआद तथा मिशआल; यह पश्चिम में
कर्मेल तथा शीहोर-लिबनाथ तक पहुंची थी. 27 तब यह पूर्व की ओर बेथ-
दागोन की ओर मुड़कर ज़ेबुलून पहुंच गई और वहां से यिफतह-एल घाटी को
और फिर उत्तर की ओर बेथ-एमेक तथा नईएल को; वहां से यह उत्तर में काबूल
28 एबदोन, रेहोब, हम्मोन तथा कानाह होते हुए बढ़कर वृहत्तर सीदोन पहुंचती
है. 29 वहां सीमा रामाह तथा गढ़नगर सोर की ओर बढ़ती है, फिर यह सीमा
होसाह की ओर बढ़ती है और अंततः अकज़ीब क्षेत्र में समुद्र पर जाकर समाप्त
हो जाती है. 30 तब इसमें उमाह, अफेक तथा रेहोब, भी सम्मिलित थे; बाईस
नगर जिनके साथ सम्मिलित थे इनके गांव. 31 यह आशेर गोत्र को, उनके
परिवारों के अनुसार दी गयी मीरास थी; ये नगर तथा उनके साथ इनके गांव
भी. 32 छठा पासा नफताली वंशजों के पक्ष में पड़ा; नफताली वंशजों के लिए
उनके परिवारों के अनुसार. 33 उनकी सीमा प्रारंभ हुई थी हेलेफ से, सानन्नीम
के बांज वृक्ष से अदामी-नेकेब, यबनेएल से लेकर लक्कूम तक और यरदन नदी
पर जाकर समाप्त हो गई. 34 उसके बाद सीमा पश्चिम में अज़नोथ-ताबोर की
ओर मुड़ गई और बढ़ते हुए वहां से हुक्कोक पहुंची. वहां से वह ज़ेबुलून की
ओर बढ़ी, जो दक्षिण में है. वहां उसने पश्चिम में आशेर को स्पर्श किया तथा पूर्व
में यरदन तटवर्ती यहूदिया को. 35 वहां ये गढ़नगर थे: ज़िद्दीम, ज़ेर, हम्माथ,
रक्कथ, किन्नेरेथ, 36 अदामा, रामाह, हाज़ोर, 37 केदेश, एद्रेइ, एन-हाज़ेर,
38 यिरओन, मिगदल-एल, होरेम, बेथ-अनात तथा बेथ-शेमेश; इनके गांवों
सहित ये उन्नीस नगर. 39 यह उनके परिवारों के अनुसार नफताली गोत्र को दी
गयी मीरास थी; ये सभी नगर, उनके गांवों के साथ. 40 सातवां पासा दान गोत्र
के कुलों के पक्ष में उनके परिवारों के अनुसार पड़ा. 41 उनकी मीरास की
सीमा थी: ज़ोराह तथा एशताओल, ईर-शेमेश, 42 शअलब्बीन, अय्जालोन,
यिथला, 43 एलोन, तिमनाह, एक्रोन, 44 एलतकेह, गिब्बथोन, बालाथ, 45
येहुद, बेने-बरक, गथ-रिम्मोन, 46 मे-यरकोन अर्थात् यरकोन की जल राशि,
रक्कोन तथा योप्पा से लगी हुई सीमा. 47 (दान के वंशजों की सीमा इनके भी
आगे गई है; क्योंकि दान वंशजों ने लेशेम पर आक्रमण किया और उसे अधीन
कर लिया. तत्पश्चात उन्होंने उस पर तलवार का प्रहार किया, उन पर अधिकार
कर वे उसमें बस गए और उसे अपने पूर्वज के नाम के आधार पर लेशेम-
दान नाम दिया.) 48 ये नगर उनके गांवों के साथ दान के गोत्र की, उनके
परिवारों के अनुसार उनकी मीरास हो गए. 49 जब मीरास के लिए सीमा के
अनुसार बंटवारे की प्रक्रिया पूर्ण हो गई, इस्राएल वंशजों ने नून के पुत्र यहोशू को
अपने मध्य एक मीरास प्रदान की. 50 याहवेह के आदेश के अनुसार उन्होंने
यहोशू को वही नगर प्रदान किया, जिसकी उन्होंने याचना की थी—एफ्राईम के
पर्वतीय प्रदेश में तिमनथ-सेरह. यहोशू ने इस नगर का निर्माण किया और वहीं
बस गए. 51 ये ही हैं वे क्षेत्र, जो पुरोहित एलिएज़र, नून के पुत्र यहोशू तथा
इस्राएल वंशजों के गोत्रों के परिवारों के प्रधानों ने शीलो में याहवेह के समक्ष
मिलनवाले तंबू के प्रवेश पर आवंटित की. इस प्रकार समस्त भूमि का विभाजन
सम्पन्न हो गया.

20 फिर याहवेह ने यहोशू से कहा: 2 "इस्राएल वंश से कहो, कि मैंने मोशेह
के द्वारा जैसा तुमसे कहा था, कि अपने लिए शरण के शहर बनाओ, 3
ताकि यदि किसी व्यक्ति से अनजाने में किसी की हत्या हो जाए, तब विरोधियों
से अपने आपको बचाने के लिए उस शरण के शहर में जाकर छिप सके. 4 वो
व्यक्ति अपनी भूल-चूक को बुजुर्गों को बताए और वे उसे नगर के अंदर ले लें,
और उसे ठहरने को जगह दे, ताकि वह उनके साथ रहने लगे. 5 यदि हत्या का
विरोधी उसका पीछा करता है, तो वे उस व्यक्ति को विरोधी के हाथ में न छोड़े,
क्योंकि उससे यह हत्या जानबूझकर नहीं हुई है, और न उनके बीच कोई
दुश्मनी थी. 6 हत्यारा उस नगर में तब तक रह सकता है, जब तक वह सभा में
न्याय के लिए खड़ा न हो जाए, या जब तक उस समय के महापुरोहित की मृत्यु
न हो जाए. उसके बाद ही वह हत्यारा अपने घर जा सकता है." 7 इसके लिए
उन्होंने नफताली के पर्वतीय प्रदेश के गलील में केदेश, एफ्राईम के पर्वतीय
प्रदेश में शेकेम तथा यहूदिया के पर्वतीय प्रदेश में किरयथ-अरबा, अर्थात् हेब्रोन
को शरण के शहर निश्चित किया. 8 और यरदन के पार येरीख़ो के पूर्व में
रियूबेन के गोत्र के मैदानी निर्जन प्रदेश में बेज़र, गाद के गोत्र के गिलआद के
रामोथ तथा मनश्शेह गोत्र के बाशान के गोलान भी चुने गये. 9 ये सभी नगर उन
इस्राएली तथा विदेशी लोगों के लिए हैं, जिनसे अनजाने में किसी की हत्या हो
जाती है, वह यहां आ जाए और सुरक्षित रहें ताकि विरोधी उसको मार न सके,

जब तक सभा के सामने खूनी को नहीं लाया जाता तब तक वह व्यक्ति शरण
शहर में ही रह सकता है!

21 लेवी परिवारों के प्रमुख पुरोहित एलिएज़र, नून के पुत्र यहोशू तथा
इस्राएली गोत्रों के मुखियों के पास गए. 2 कनान देश के शीलो में
उन्होंने उनसे यह बात कही, "मोशेह के द्वारा याहवेह ने हमसे कहा कि हमें
हमारे निवास के लिए नगर दिया जाएगा. और इन नगरों के आस-पास हमारे
पशुओं को चराने की जगह भी होगी." 3 तब इस्राएल वंश ने याहवेह के आदेश
के अनुसार लेवियों को अपने हिस्से में से नगर दिये, जिनके आस-पास की
चरागाह की भूमि भी थी. 4 पहला नाम कोहाथ के परिवारों का आया, जो
अहरोन वंश के लेवियों में से थे. यहूदाह, शिमओन तथा बिन्यामिन गोत्र को
बांटी गई भूमि में से तेरह नगर उन्हें मिले. 5 कोहाथ के कुछ लोगों को एफ्राईम,
दान तथा मनश्शेह के आधे गोत्र की भूमि में से दस नगर मिले. 6 गेरशोन वंश
को इस्साखार, आशेर, नफताली गोत्रों की भूमि में से, तथा बाशान में मनश्शेह
के आधे गोत्र की भूमि में से, कुल तेरह नगर मिले. 7 मेरारी वंश को उनके
परिवारों के अनुसार रियूबेन, गाद तथा ज़ेबुलून के गोत्रों से बारह नगर मिले. 8
इस्राएलियों ने लेवियों को पशु चराने के लिए भी नगर दिए, जैसा मोशेह को
याहवेह का आदेश था. 9 उन्होंने कुछ नगर यहूदाह तथा शिमओन गोत्र के
कुलों को दिए: 10 ये अहरोन वंश, जो कोहाथियों के परिवारों में से लेवी
वंश के थे, पहला नाम उन्हीं का आया था. 11 तब उन्होंने उन्हें यहूदिया के
पर्वतीय प्रदेश में उनके आस-पास के जगह चरागाह सहित किरयथ-अरबा नगर
दे दिया—अरबा नामक व्यक्ति अनाक अर्थात् हेब्रोन का पिता था. 12 परंतु नगर
के खेत तथा इसके गांव उन्होंने येफुन्नेह के पुत्र कालेब को दे दिए, कि ये उनकी
अपनी भूमि हो. 13 उन्होंने अहरोन के वंशजों को ये नगर दिए: हेब्रोन (जो
शरण शहर था), और लिबनाह, 14 यत्तिर, एशतमोह, 15 होलोन, दबीर, 16
एइन, युताह और बेथ-शेमेश को उनके चराइयों के साथ ये नगर भी दे दिए गए
इस प्रकार दो गोत्रों के हिस्से में से यह नौ नगर दिए गए, 17 बिन्यामिन गोत्र से:
गिबयोन, गेबा, 18 अनाथोथ आलमोन को चराइयों सहित चार नगर दिये गए.
19 इस प्रकार अहरोन वंश के पुरोहितों के लिए कुल तेरह नगर उनके चराइयों
सहित अलग कर दिए गए. 20 तब कोहाथ वंश को, जो लेवी थे, तथा कोहाथ
के बचे हुए पुरोहितों को एफ्राईम गोत्र से नगर दिये: 21 उन्होंने इन्हें एफ्राईम के
पर्वतीय प्रदेश से शेकेम (जो मनुष्य के हत्यारे के लिए ठहराए शरण शहर) और
गेज़ेर 22 किबज़यिम तथा बेथ-होरोन और इसके चराइयों के साथ; चार नगर
दिये. 23 दान के गोत्र से: एलतके, गिब्बथोन, 24 अय्जालोन गथ-रिम्मोन;
उनके चराइयों के साथ चार नगर दिये. 25 मनश्शेह के आधे गोत्र में से: उन्होंने
उन्हें तानख और गथ-रिम्मोन; उनके चराइयों के साथ, दो नगर दिये. 26
कोहाथ वंश के बचे हुए परिवारों को दस नगर चराइयों सहित दिए गए. 27
गेरशोन वंश को, जो लेवी गोत्र से थे: मनश्शेह के आधे गोत्र में से बाशान का
गोलान (जो हत्यारे के लिए निश्चित शरण शहर था) और उसके चराइयों सहित,
बएशतरा उसके चराइयों सहित, दो नगर दिए. 28 इस्साखार के गोत्र में से:
किशयोन, दाबरथ, 29 यरमूथ और एन-गन्नीम उसके चराइयों सहित; चार नगर
दिये. 30 आशेर के गोत्र से: मिशआल, अबदोन, 31 हेलकथ तथा रेहोब उनके
चराइयों सहित चार नगर दिए; 32 नफताली गोत्र से: उन्होंने उन्हें गलील में
केदेश (जो हत्यारे के लिए निश्चित शरण शहर था), हम्मोथ-दोर तथा करतान;
उनके चराइयों सहित तीन नगर दिये. 33 उनके परिवारों के अनुसार गेरशोन
वंश को कुल तेरह नगर, उनके चराइयों सहित दिये. 34 मेरारी वंश के परिवारों
को, जो लेवी गोत्र से बचे हुए थे: उन्होंने ज़ेबुलून के गोत्र से: योकनआम,
करता, 35 दिमना तथा नहलाल, सबको चराइयों सहित; चार नगर दे दिए. 36
रियूबेन के गोत्र से: उन्होंने उन्हें बेज़र, यहत्स, 37 केदेमोथ तथा मेफाअथ
उनके चराइयों सहित चार नगर दिए; 38 गाद के गोत्र से: उन्होंने उन्हें रामोथ-
गिलआद (जो हत्यारे के लिए निश्चित शरण शहर था) उसके चराई के सहित,
माहानाईम, 39 हेशबोन तथा याज़र; उनके चराइयों सहित कुल चार नगर दिए.
40 ये सभी नगर उनके परिवारों के अनुसार मेरारी वंश, और बचे हुए लेवियों के
हो गए. उनके हिस्से में कुल बारह नगर आए. 41 इस्राएल वंश के मध्य लेवियों
के हिस्से में उनके चराइयों सहित अड़तालीस नगर आए. 42 इन सभी नगरों के
चारों और हरियाली थी; यह इन सभी नगरों के लिए सच था. 43 याहवेह ने
इस्राएल को वह पूरा देश दे दिया, जिसकी शपथ उन्होंने उनके पूर्वजों से की
थी. 44 उन्होंने इस देश पर अपना अधिकार कर लिया और वे इसमें रहने लगे.
याहवेह द्वारा उन्हें चारों ओर से शान्तिपूर्ण वातावरण मिला—जैसी शपथ याहवेह
ने उनके पूर्वजों से की थी. कोई भी शत्रु उनके सामने ठहर न सका—याहवेह ने
सभी शत्रु उनके अधीन कर दिए. 45 इस्राएल वंश से याहवेह द्वारा किया गया
एक भी वायदा पूरा हुए बिना न रहा. सब वायदे याहवेह ने पूरे किए.

22 तब यहोशू ने रियूबेन और गाद के गोत्र तथा मनश्शेह के आधे गोत्र को
बुलवाया 2 और उनसे कहा, "याहवेह के सेवक मोशेह ने जो आज्ञाएं
तुम्हें दी थीं, तुमने उन सबका पालन किया, तथा मेरी भी सब बातों को माना है.
3 तुमने बीते दिनों से आज तक अपने भाई-बंधुओं की बुराई नहीं की, परंतु
तुमने याहवेह, अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए आदेशों को माना है. 4 और अब,
उनसे की गई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे भाई-
बंधुओं को शान्तिपूर्ण और आरामदायक वातावरण दिया. अब तुम अपने तंबू में
जाओ, जिसका अधिकार तुम्हें दिया गया है, जो तुम्हें यरदन के पार याहवेह के
सेवक मोशेह द्वारा मिला है. 5 तुम मोशेह द्वारा दिये आदेशों व नियमों को
सावधानी से मानते रहना, और याहवेह अपने परमेश्वर से प्रेम करना, उनकी
विधियों को मानना, उनके प्रति एक मन होकर रहना, तथा उनकी सेवा पूरे हृदय
से करते रहना." 6 यह कहते हुए यहोशू ने उन्हें आशीष देकर विदा किया और
वे सब अपने-अपने तंबू में चले गए. 7 मोशेह ने मनश्शेह के आधे गोत्र को
बाशान में संपत्ति दी थी, किंतु अन्य आधे गोत्र को यहोशू ने यरदन के पश्चिम में
उनके बंधुओं के साथ भूमि दी थी. यहोशू ने उन्हें उनके तंबू में जाने को कहा
और यहोशू ने उन्हें आशीष देकर विदा किया. 8 यहोशू ने कहा, "अपने-अपने
तंबू में से संपत्ति एवं पशु, चांदी, सोना, कांसा, लोहा तथा वस्त्र को लेकर आओ,
और अपने भाई-बंधुओं के साथ शत्रुओं से लूटी गई सामग्री बांट लो." 9 तब
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र अपने-अपने घर को चले गये और
कनान देश में शीलो पर जाकर इस्राएल वंश से अलग हो गए, और गिलआद देश
की ओर बढ गए, जहां उनकी संपत्ति थी, जिसे उन्होंने मोशेह के द्वारा याहवेह
से पाया था. 10 जब वे यरदन पहुंचे, जो कनान देश में है, रियूबेन, गाद तथा
मनश्शेह के आधे गोत्र के लोगों ने यरदन के तट पर एक वेदी बनाई, जो बहुत
बड़ी थी. 11 जब इस्राएलियों को यह पता चला, तो वे कहने लगे, "देखो,
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र ने कनान देश के द्वार पर एक वेदी
बनाई है, जो यरदन में उस ओर है, जो इस्राएल के वंश की संपत्ति है." 12 जब
इस्राएल वंश ने यह सुना तब पूरा इस्राएल शीलो में उनसे युद्ध करने के इच्छा से
जमा हुआ. 13 तब इस्राएल वंश ने एलिएज़र के पुत्र फिनिहास को गिलआद देश
में रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के आधे गोत्र से मिलने के लिए भेजा. 14 उसके
साथ उन्होंने दस प्रधान भी भेजे जो इस्राएल के हर गोत्र के परिवार की ओर से
एक-एक था. उनमें से हर एक इस्राएल के पूर्वजों के घरानों का प्रधान था. 15
इन सबने गिलआद में रियूबेन, गाद गोत्र तथा मनश्शेह के आधे गोत्र से मिलकर
उनसे कहा, 16 "याहवेह की पूरी प्रजा की ओर से यह संदेश है: 'इस्राएल के
परमेश्वर के प्रति तुमने गलत काम क्यों किया? तुमने उनके वचन पर चलना
छोड़ दिया और तुमने अपने लिए एक वेदी बनाई है. तुमने याहवेह के विरुद्ध पाप

किया है! 17 क्या पेओर का अपराध कम था, जिससे हम अब तक बाहर न आ
सके, जिसके कारण याहवेह के लोगों में महामारी फैल गई थी; 18 क्या, तुम्हें
भी याहवेह के पीछे चलना छोड़ना पड़ रहा है? "'यदि आज तुम लोग याहवेह
के विरुद्ध विद्रोह करोगे तो वह इस्राएल की सारी प्रजा से रुठ जाएंगे. 19 फिर भी,
यदि तुम्हारा यह देश अशुद्ध है, तो इस देश से चले जाओ, जो याहवेह के अधीन
है, जहां याहवेह की उपस्थिति है और हमारे मध्य आकर बस जाओ. बस,
याहवेह हमारे परमेश्वर की वेदी के बदले अपने लिए वेदी बनाकर याहवेह तथा
हमारे विरुद्ध विद्रोह मत करो. 20 क्या, तुम्हें याद नहीं कि ज़ेराह के पुत्र आखान
ने भेंट की हुई वस्तुओं के संबंध में छल किया, और पूरे इस्राएल पर दंड आया?
उसकी गलती के कारण केवल उसकी ही मृत्यु नहीं हुई.'" 21 यह सुन रियूबेन
तथा गाद गोत्र और मनश्शेह के आधे गोत्र ने इस्राएल के परिवारों के प्रधानों को
उत्तर दिया, 22 "सर्वशक्तिमान हैं परमेश्वर याहवेह! सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं,
याहवेह! वह सर्वज्ञानी हैं, और इस्राएल को भी यह मालूम हो जाए, कि यदि यह
विद्रोह के उद्देश्य से किया गया है, और यदि यह याहवेह के प्रति धोखा है तो,
आज आप हमें न छोड़ें! 23 यदि हमने इस वेदी को याहवेह से अलग होने के
लिए किया है, या इसलिये कि इस पर होमबलि अन्नबलि अथवा मेल बलि
चढ़ाएं तो, स्वयं याहवेह हमसे इसका हिसाब लें. 24 "यह करने के पीछे हमारी
यह इच्छा थी: भविष्य में कहीं वह समय न आ जाए, जब आपके बच्चे हमारे
बच्चों से कहें, 'इस्राएल के परमेश्वर याहवेह से तुम्हारा क्या लेना देना है? 25
क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे तथा हमारे बीच में यरदन को एक सीमा बना दिया है.
तुम, जो रियूबेन तथा गाद वंश के हो; याहवेह में तुम्हारा कोई भाग नहीं है.'
ऐसा कहकर आपकी संतान हमारी संतान को याहवेह के प्रति जो भय और आदर
के योग्य है उससे दूर कर देगी तो? 26 "इसलिये हमने सोचा है, 'हम एक वेदी
बनाये जो होमबलि और मेल बलि के लिए नहीं,' 27 परंतु इसलिये कि यह
आपके तथा हमारे और हमारी आनेवाली पीढ़ियों के बीच गवाह हो, कि हम
अपनी होमबलियों, तथा मेल बलियों के द्वारा याहवेह के समक्ष उनकी सेवा-
आराधना करेंगे, और आपकी संतान हमारी संतान से कभी यह न कहे, 'तुम्हारे
याहवेह से हमारा कोई लेना देना नहीं है.' 28 "तब हमने यह विचार भी किया,
कि हो सकता है कि भविष्य में यदि वे हमसे अथवा हमारी पीढ़ी के लोगों से
यह पूछे, तब उनके लिए हमारा उत्तर होगा, 'हमारे पूर्वजों द्वारा बनाया याहवेह
की वेदी देख लो, जो न तो होमबलि के लिए है और न ही मेल बलि के लिए,
परंतु यह हमारे और तुम्हारे बीच एक गवाह बनने के लिए है.' 29 "कभी ऐसा
न हो कि हम याहवेह हमारे परमेश्वर की वेदी को छोड़कर होमबलि, अन्नबलि
तथा मेल बलि चढ़ाने के लिए दूसरी वेदी बनाकर याहवेह से दूर हो जायें, उनके
पीछे चलना छोड़ दें." 30 जब पुरोहित फिनिहास, सभा के नेताओं तथा इस्राएल
के परिवारों के प्रधानों ने, जो उस समय वहां थे, रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह के
वंश से जब यह सब सुना, तब वे खुश हो गये. 31 एलिएज़र के पुत्र फिनिहास ने
रियूबेन, गाद तथा मनश्शेह वंश को बताया, "आज हमें विश्वास हो गया हैं कि
याहवेह हमारे साथ है, क्योंकि तुमने याहवेह की दृष्टि में कोई बुरा नहीं किया हैं.
तुमने इस्राएल वंश को याहवेह के द्वारा सजा पाने से बचा लिया है." 32 तब
एलिएज़र के पुत्र पुरोहित फिनिहास तथा सभी प्रधान, रियूबेन तथा गाद वंश के
देश गिलआद से इस्राएल वंश के देश कनान को लौट गए और उन्हें सब बात
बता दी. 33 सब बात सुनकर इस्राएल वंशी खुश हो गए. उन्होंने परमेश्वर की
महिमा की. और उन्होंने उस देश को, जिसमें रियूबेन तथा गाद वंश के लोग रह
रहे थे, नष्ट करने के उद्देश्य से उनसे युद्ध करने का विचार छोड़ दिया. 34
रियूबेन एवं गाद वंश ने उस वेदी को एद अर्थात् स्मारक नाम दिया, क्योंकि यह
वेदी याहवेह परमेश्वर तथा उनके मध्य एक यादगार थी.

23 जब याहवेह ने इस्राएल को उनके पड़ोसी राष्ट्रों के शत्रुओं से बचाया,
बहुत समय बीत गया और यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया. 2 तब यहोशू ने
समस्त इस्राएल के नेताओं, प्रधानों, प्रशासकों तथा अधिकारियों को बुलाया
और उनसे कहा, "मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूं. 3 तुमने वह सब देख लिया है, जो
याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे लिए सभी राष्ट्रों के साथ किया है, वास्तव में
यह याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ही थे, जो तुम्हारी ओर से लड़ रहे थे. 4 यह याद
रखो कि मैंने यरदन से लेकर भूमध्य सागर तक के देशों को तुम्हारे गोत्रों का
भाग बनाया है, बचे हुए भाग को छोड़ दिया है. 5 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर उन्हें
तुम्हारे बीच से निकाल देंगे, और उन्हें तुमसे अलग कर देंगे और तुम उनके देश
पर अधिकार कर लोगे, ठीक जैसा याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने कहा था. 6
"दृढ़ होकर मोशेह द्वारा लिखे व्यवस्था और नियमों का पालन करना; इससे न
तो दाईं ओर और न ही बाईं ओर मुड़ना. 7 तुम इन लोगों से मत मिलना,
जो अब तक तुम्हारे बीच में हैं; तुम उनके देवताओं का नाम मत लेना और न
उन देवताओं की शपथ लेना, न उनकी आराधना करना और न उनको दंडवत
करना. 8 बल्कि तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास में बने
रहना; जैसा तुम आज तक करते आए हो. 9 "याद रहेः याहवेह ने बड़े एवं
बलवंत लोगों को तुम्हारे बीच से निकाला है, और कोई तुम्हारे सामने ठहर न
सका. 10 तुममें से एक ही व्यक्ति हजार शत्रुओं को मारने के लिए काफ़ी है;
क्योंकि तुमसे किए वायदे के अनुसार याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारी ओर से
लडते आये हैं. 11 इसलिये याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम दृढ़
बना रहे. 12 "यदि तुम उन लोगों से दोस्ती बढ़ाओगे, जो अब तक तुम्हारे बीच
में रह रहे हैं, तुम्हारे तथा उनके बीच गहरे संबंध हो जाएंगे, उनसे वैवाहिक
संबंध स्थापित करोगे, 13 तो निश्चयतः याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर इन राष्ट्रों को
तुम्हारे बीच से नहीं निकालेंगे; ये जनता तुम्हारे लिए जाल तथा फंदा, तुम्हारी
पसलियों पर लगी चाबुक तथा आंखों की चुभन साबित होगें, अंत में यह
अच्छी भूमि जो याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने दी है नष्ट हो जाएगी. 14 "अब
मेरी मृत्यु समय निकट है, जिस मार्ग पर पृथ्वी के सभी को चलना है. हृदय
तथा प्राणों की गहराई में तुम जान लो, कि याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के मुंह से
निकली हुई हर बात बिना पूरी हुई न रही है. तुम्हारे लिए कही हुई सब बातें पूरी
हुई है. 15 फिर जिस प्रकार तुम्हारे विषय में याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा कही
गई सब भली बातें पूरी हुई है, उसी प्रकार याहवेह सभी कष्ट तुम पर तब तक
डालते रहेंगे, जब तक तुम इस देश से, जो तुम्हें याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर द्वारा
दिया गया है, नष्ट न हो जाए; 16 अगर तुम तुम्हारे परमेश्वर की वाचा तोड़ोगे,
जिसका आदेश उन्होंने तुम्हें दिया था, और तुम दूसरे देवताओं की वंदना करोगे,
उनके सम्मान में झुकोगे! तब याहवेह का दंड तुम पर आएगा और तुरंत ही तुम
याहवेह की ओर से दिए गये इस उत्तम देश से नष्ट हो जाओगे."

24 यहोशू ने इस्राएल के सभी गोत्रों को शेकेम में जमा किया और इस्राएल के
नेताओं, उनके प्रधानों, उनके प्रशासकों एवं अधिकारियों को बुलाया,
और वे सभी परमेश्वर के सामने उपस्थित हुए. 2 सभी को यहोशू ने कहा,
"याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है, 'पहले तो तुम्हारे पूर्वज
अब्राहाम तथा नाहोर के पिता तेराह, फरात नदी के पार रहा करते थे, वे दूसरे
देवताओं की उपासना करते थे. 3 तब मैंने उस नदी के पार से तुम्हारे पूर्वज
अब्राहाम को पूरे कनान देश में घुमाया. मैंने उसके वंश को बढ़ाया, उसे पुत्र
यित्सहाक दिया. 4 फिर यित्सहाक को दो पुत्र दिए: याकोब तथा एसाव. एसाव
को मैंने सेईर पर्वत दे दिया, परंतु याकोब तथा उनके पुत्र मिस्र देश चले गए. 5
"'तब मैं, याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को उनके बीच भेजा. मैंने मिस्र देश पर
विपत्तियां भेजी, फिर मैं तुम्हें वहां से निकाल लाया. 6 बाद में मैंने तुम्हारे पूर्वजों
को मिस्र देश से निकाला और तुम लोग सागर तट पर जा पहुंचे. मिस्रवासी भी

रथों तथा घोड़ों को लेकर तुम्हारा पीछा करते हुए लाल सागर तक पहुंच गए.
7 तुम्हारी पुकार सुनकर मैंने तुम्हारे एवं मिस्रियों के बीच में अंधकार कर दिया
और समुद्र उनके ऊपर छा गया, और वे सब उसमें डूब गए. स्वयं तुमने अपने
आंखों से यह सब देखा, कि मैंने मिस्र देश में क्या-क्या किया है. तुम निर्जन
प्रदेश में बहुत समय तक रहे. 8 "'फिर मैं तुम्हें अमोरियों के देश में ले आया,
जो यरदन के दूसरी ओर रहते थे. उन्होंने तुमसे युद्ध किया और मैंने उन्हें तुम्हारे
अधीन कर दिया. तुमने उनके देश पर अधिकार कर लिया. तुम्हारे सामने मैंने
उन्हें नाश कर दिया. 9 तब मोआब के राजा ज़ीप्पोर के पुत्र बालाक इस्राएल से
युद्ध के लिए तैयार हुआ. उसने बेओर के पुत्र बिलआम को बुलाया कि वह तुम्हें
शाप दे, 10 किंतु मैंने बिलआम की एक न सुनी. वह तुम्हें आशीष पर आशीष
देता गया. इस प्रकार मैंने तुम्हें उसके हाथों से बचा लिया. 11 "'तुम लोगों ने
यरदन नदी पार की और येरीख़ो जा पहुंचे. येरीख़ो के प्रधानों ने तुमसे युद्ध किया.
इनके अलावा अमोरियों, परिज़्ज़ियों, कनानी और हित्तियों, गिर्गाशियों,
हिव्वियों तथा यबूसियों ने भी तुमसे युद्ध किया और सबको मैंने तुम्हारे अधीन
कर दिया. 12 तब मैंने तुम्हारे आगे-आगे बर्रे भेज दिए, उन्होंने अमोरियों के उन
दो राजाओं को तुम्हारे सामने से भगा दिया. यह विजय न तो तुम्हारी तलवार की
और न तुम्हारे धनुष की थी. 13 मैंने तुम्हें एक ऐसा देश दिया है, जिसके लिए
तुमने कोई मेहनत नहीं की; ऐसे नगर, जिनको तुमने नहीं बनाया, जहां अब तुम
रह रहे हो. तुम उन दाख की तथा जैतून की बगीचे के फलों को खा रहे हो,
जिनको तुमने नहीं लगाया!' 14 "अब याहवेह के प्रति आदर, भय और पूर्ण मन
तथा सत्य से उनकी सेवा करो, उन देवताओं को छोड़ो, जिनकी उपासना तुम्हारे
पूर्वज उस समय तक करते रहे, जब वे उस नदी के पार और मिस्र देश में रहते
थे. आराधना केवल याहवेह ही की करो. 15 यदि इस समय तुम्हें याहवेह की
सेवा करना अच्छा नहीं लग रहा है, तो आज ही यह निर्णय कर लो कि किसकी
सेवा करोगे तुम; उन देवताओं की, जिनकी उपासना तुम्हारे पूर्वज फरात नदी के
पार किया करते थे या अमोरियों के उन देवताओं की, जिनके देश में तुम अब
रह रहे हो. जहां तक मेरा और मेरे परिवार की बात है, हम तो याहवेह ही की
सेवा-वन्दना करेंगे." 16 यह सुन उपस्थित लोगों ने कहा, "ऐसा कभी न
होगा कि हम याहवेह को छोड़, उन देवताओं की सेवा-वन्दना करें. 17 हमारे
परमेश्वर याहवेह ही हैं, जिन्होंने हमें तथा हमारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर
निकाला है. वही हैं, जिन्होंने हमारे सामने अनोखे काम किए, तथा हमारी पूरी
यात्रा में हम सबके साथ थे, जो हमें मार्ग में मिले थे, और हमारी रक्षा की. 18
याहवेह ने ही हमारे बीच से अमोरियों को और सब जातियों को निकाले, तब
तो हम भी याहवेह ही की सेवा-वन्दना करेंगे, क्योंकि वही हैं हमारा परमेश्वर."
19 तब यहोशू ने लोगों से कहा, "याहवेह की सेवा-वन्दना करने की ताकत तुम
लोगों में नहीं है. वह पवित्र परमेश्वर हैं. वह ईर्ष्या रखनेवाला परमेश्वर हैं; वह
न तो तुम्हारे अपराधों को और न ही तुम्हारे पापों को क्षमा करेंगे. 20 अब यदि
तुम याहवेह को छोड़कर उन देवताओं की उपासना करोगे, तो हालांकि अब तक
तुम्हारा भला ही किया है, फिर भी वह तुम्हारे विरुद्ध हानि करेंगे और तुम नाश हो
जाओगे." 21 प्रजा ने यहोशू से कहा, "ऐसा नहीं होगा. हम याहवेह ही की
सेवा-वन्दना करेंगे." 22 तब यहोशू ने उनसे कहा, "अपने आपके गवाह तुम
खुद हो, कि तुमने याहवेह के पक्ष में निर्णय लिया है कि तुम उन्हीं की सेवा-
वन्दना करते रहोगे." उन्होंने जवाब दिया, "हम गवाह हैं." 23 इस पर यहोशू
ने कहा, "तो अपने बीच से दूसरे देवताओं को दूर हटा दो और अपना हृदय
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की ओर कर दो." 24 लोगों ने यहोशू को उत्तर
दिया, "सेवा-आराधना तो हम याहवेह, हमारे परमेश्वर ही की करेंगे और हम
उन्हीं के आदेशों का पालन भी करेंगे." 25 यहोशू ने उस दिन लोगों के साथ
पक्का वादा किया तथा शेकेम में उनको नियम एवं विधि बताई. 26 यहोशू ने
वह सब परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया. फिर उन्होंने एक बड़ा
पत्थर लेकर याहवेह के पवित्र स्थान के निकट, बांज वृक्ष के नीचे खड़ा कर
दिया. 27 यहोशू ने सब लोगों से कहा, "देखो, यह पत्थर अब हमारे लिए गवाह
होगा, क्योंकि इसने याहवेह द्वारा हमसे कही बातों को सुन लिया है. इसलिये
अब यही तुम्हारा गवाह होगा, यदि तुम्हारा मन परमेश्वर के विरुद्ध हो जाएं." 28
यह कहकर यहोशू ने लोगों को भेज दिया. और सभी अपने-अपने घर पर चले
गए. 29 इसके बाद याहवेह के सेवक नून के पुत्र यहोशू की मृत्यु हो गई. इस
समय उनकी आयु एक सौ दस वर्ष कि थी. 30 उन्होंने उन्हें तिमनथ-सेरह में,
उन्हीं की भूमि पर दफना दिया. वह जगह एफ्राईम के पर्वतीय क्षेत्र में गाश पर्वत
के उत्तर दिशा में है. 31 इस्राएल जन यहोशू तथा यहोशू के बाद पुरनियों के सारे
जीवनकाल में याहवेह की सेवा और स्तुति करते रहे. ये उन सभी महान कामों
को अनुभव किये थे, जो याहवेह द्वारा इस्राएल की भलाई के लिए किए गए थे.
32 योसेफ़ की वे अस्थियां, जो इस्राएल वंश मिस्र देश से अपने साथ ले आए थे,
उन्होंने इन्हें शेकेम में गाड़ दिया. यह वह ज़मीन थी, जिसे याकोब ने शेकेम के
पिता हामोर के पुत्रों से चांदी की एक सौ मुद्राएं देकर खरीदी थी. यह ज़मीन
अब योसेफ़ वंश की मीरास हो गयी थी. 33 फिर अहरोन के पुत्र एलिएज़र की
मृत्यु हो गई. उन्होंने उसे गिबियाह में गाड़ दिया. यह उसके पुत्र फिनिहास का
नगर था, जो एफ्राईम के पर्वतीय प्रदेश में उसे मिला था.

न्यायियों

1 यहोशू की मृत्यु के बाद इस्राएलियों ने याहवेह से यह प्रश्न किया, “कनानियों
से युद्ध करने सबसे पहले किसका जाना सही होगा?” 2 याहवेह ने उत्तर
दिया, “सबसे पहले यहूदाह जाएगा; यह याद रहे कि यह जगह मैंने उसके
अधिकार में दे दी है.” 3 यहूदाह वंशजों ने अपने भाई शिमओन वंशजों से
कहा, “हमें दी गई जगह में आ जाओ, कि हम कनानियों से युद्ध करें तथा समय
आने पर मैं तुम्हें दी गई जगह में आकर युद्ध करूंगा.” शिमओन वंशज इसके
लिए राज़ी हो गये. 4 यहूदाह वंशजों ने आक्रमण किया और याहवेह ने कनानी
और परिज़्ज़ी उनके अधीन कर दिए, बेज़ेक में उन्होंने दस हज़ार सैनिकों को
मार गिराया. 5 बेज़ेक में उन्होंने अदोनी-बेज़ेक से युद्ध किया और कनानियों
तथा परिज़्ज़ियों को मार दिया; 6 मगर अदोनी-बेज़ेक भाग निकला, उन्होंने
उसका पीछा किया, उसे पकड़ लिया और उसके हाथों और पैरों के अंगूठे
काट दिए. 7 अदोनी-बेज़ेक ने उनसे कहा, “सत्तर राजा, जिनके हाथ-पैर के
अंगूठे काट दिए गए होते थे, मेरी मेज़ की चूर-चार इकट्ठा करते थे. परमेश्वर ने
मेरे द्वारा किए गए काम का बदला मुझे दे दिया है.” वे उसे येरूशलेम ले आए,
जहां उसकी मृत्यु हो गई. 8 तब यहूदाह गोत्रजों ने येरूशलेम पर हमला किया,
उसे अपने अधीन कर लिया, उसके निवासियों को तलवार से मार दिया और
नगर में आग लगा दी. 9 इसके बाद यहूदाह गोत्रज उन कनानियों से युद्ध करने
निकल पड़े, जो नेगेव के पहाड़ी इलाकों में तथा तराई में रह रहे थे. 10 सो
यहूदाह ने उन कनानियों पर हमला कर दिया, जो हेब्रोन में रह रहे थे. हेब्रोन का
पुराना नाम किरयथ-अरबा था. उन्होंने शेशाइ, अहीमान और तालमाई को हरा
दिया. 11 इसके बाद वे वहां से दबीर निवासियों की ओर बढ़े; दबीर का पुराना
नाम किरयथ-सेफेर था. 12 कालेब ने घोषणा की, “जो कोई किरयथ-सेफेर पर
आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लेगा, मैं उसका विवाह अपनी पुत्री
अक्सा से कर दूंगा.” 13 कालेब के छोटे भाई केनज़ के पुत्र ओथनीएल ने
किरयथ-सेफेर को अधीन कर लिया, तब कालेब ने उसे अपनी पुत्री अक्सा
उसकी पत्नी होने के लिए दे दी. 14 विवाह होने के बाद जब अक्सा अपने पति
से बात कर रही थी, उसने उसे अपने पिता से एक खेत मांगने के लिए कहा.
जब वह अपने गधे पर से उतर गई, तब कालेब ने उससे पूछा, “तुम्हें क्या
चाहिए?” 15 उसने उत्तर दिया, “मुझे आपके आशीर्वाद की ज़रूरत है! जैसे
आप मुझे नेगेव क्षेत्र दे ही चुके हैं, और यदि हो सके तो वैसे मुझे जल के सोते
भी दे दीजिए.” तब कालेब ने उसे ऊपर का सोता, नीचे का सोता दोनों दे दिया.
16 मोशेह के ससुर के वंशज अर्थात् केनीवासी खजूर वृक्षों के नगर से यहूदिया
के लोगों के साथ यहूदिया के निर्जन प्रदेश के इलाके में चले गए. यह जगह
अराद के पास दक्षिण में है. वे वहां के निवासियों के साथ ही बस गए. 17 तब
यहूदाह वंशजों ने अपने भाई शिमओन वंशजों के साथ जाकर सेफथ में निवास
कर रहे कनानियों को मार दिया, और नगर का पूरा विनाश कर दिया. सो इस
नगर का नाम होरमाह पड़ गया. 18 यहूदाह ने अज्जाह, अश्कलोन तथा एक्रोन
नगरों को इनकी सीमा सहित अपने अधीन कर लिया. 19 याहवेह यहूदाह की
ओर थे, उन्होंने पहाड़ी इलाके को अपने अधीन कर लिया; किंतु वे घाटी के
रहनेवालों को निकाल न सके, क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे. 20 उन्होंने
कालेब को हेब्रोन दे दिया, जैसी मोशेह ने उनसे प्रतिज्ञा की थी. कालेब ने वहां से
अनाक के तीन पुत्रों को खदेड़ दिया था. 21 मगर बिन्यामिन के वंशजों ने
येरूशलेम में रह रहे यबूसियों को वहां से नहीं निकाला. परिणामस्वरूप यबूसी
आज तक बिन्यामिन के वंशजों के साथ येरूशलेम में ही रह रहे हैं. 22 इसी
तरह योसेफ़ के परिवार ने बेथेल पर हमला कर दिया. याहवेह उनकी ओर थे.
23 योसेफ़ के परिवार ने बेथेल का भेद लिया. बेथेल नगर का पुराना नाम लूज़
था. 24 भेद लेने गए जासूसों ने नगर से बाहर आ रहे एक व्यक्ति को देखा.
उन्होंने उससे विनती की, “कृपया हमें नगर में जाने का रास्ता दिखाएं. हम तुम
पर कृपा करेंगे.” 25 सो उसने उन्हें नगर में जाने का रास्ता दिखा दिया. उन्होंने
पूरे नगर को तलवार से मार दिया, मगर उस व्यक्ति और उसके परिवार को छोड़
दिया. 26 वह व्यक्ति हित्तियों के देश में चला गया, जहां एक नगर बसाया गया,
जिसका नाम उसने लूज़ रखा, जिसे आज तक इसी नाम से जाना जाता है. 27
मगर मनश्शेह ने न तो बेथ-शान और इसके गांवों को अपने अधीन कर लिया
और न ही तानख और इसके गांवों को, न दोर तथा इसके निवासियों और इसके
गांवों को, न इब्लीम और इसके निवासियों और गांवों को, न मगिद्दो और
इसके निवासियों और गांवों को. इस कारण कनानी निडर होकर उस देश में
रहते रहे. 28 तब वह समय भी आया, जब इस्राएली सामर्थ्यी हो गए. तब
उन्होंने कनानियों को जबरन मजदूरी पर तो लगा दिया और उन्हें पूरी रीति से
न निकाला. 29 गेज़ेर में रह रहे कनानियों को एफ्राईम के वंशजों ने नहीं
निकाला. इस कारण कनानी गेज़ेर में उन्हीं के बीच रहते रहे. 30 ज़ेबुलून ने
कितरोनवासियों को नहीं निकाला और न नहलोलवासियों को, इस कारण
कनानी उनके बीच में रहते रहे और उन्हें जबरन मज़दूर बनना पड़ा. 31 आशेर
ने न तो अक्को के, न सीदोन के, न अहलाब के, न अकज़ीब के, न हेलबा
के, न अफेक के, न रेहोब के निवासियों को निकाला. 32 इस कारण अशेरी
कनानियों के बीच में ही रहते रहे, जो इस क्षेत्र के मूल निवासी थे. उन्हें बाहर
निकाला ही न गया था. 33 नफताली ने बेथ-शेमेश के निवासियों को नहीं
निकाला, और न ही बेथ-अनात के निवासियों को. वे कनानियों के बीच में ही
रहते रहे, जो इस देश के मूल निवासी थे. बेथ-शेमेश तथा बेथ-अनात के निवासी
उनके लिए जबरन मज़दूर होकर रह गए. 34 इसके बाद अमोरियों ने दान के
वंशजों को पहाड़ी इलाके में रहने के लिए मजबूर कर दिया, क्योंकि अमोरियों
ने उन्हें घाटी में प्रवेश करने ही न दिया. 35 अमोरी अय्जालोन तथा शआलबीम
में हेरेस पर्वत पर जबरन रहते रहे, मगर जब योसेफ़ के वंशज सामर्थ्यी हो गए,
तब इन्हें भी जबरन उनका मज़दूर हो जाना पड़ा. 36 अमोरियों की सीमा
अक्रब्बीम की चढ़ाई से शुरू होकर सेला होते हुए ऊपर की ओर बढ़ती है.

2 याहवेह का दूत गिलगाल से बोकीम आया. उसने उनसे कहा, “तुम्हें मिस्र
देश से निकालकर मैं उस देश में ले आया हूं, जिसकी शपथ मैंने तुम्हारे
पूर्वजों से की थी. मैंने कहा था, ‘तुमसे की गई अपनी वाचा मैं कभी न तोड़ूंगा.
2 तुमसे आशा यह की गई थी कि तुम इस देश के मूल निवासियों से कोई वाचा
न बांधोगे. तुम उनकी वेदियां तोड़ डालोगे.’ 3 इस कारण मैंने यह भी कहा, ‘मैं
उन्हें तुम्हारे सामने से न निकालूंगा. वे तुम्हारे पंजर के कांटे हो जाएंगे तथा उनके
देवता तुम्हारे लिए फंदा.’” 4 जब याहवेह के दूत ने सारे इस्राएल के वंश से यह
कहा, लोग ऊंची आवाज में रोने लगे. 5 इस कारण उन्होंने उस स्थान नाम
बोकीम रखा. उन्होंने वहां याहवेह को बलि चढ़ाई. 6 जब यहोशू सभा को विदा
कर चुके, इस्राएल के वंश अपनी-अपनी मीरास को लौट गए, कि वे देश को
अपने अधीन कर लें. 7 ये यहोशू तथा यहोशू के बाद पुरनियों के सारे जीवन में
याहवेह की सेवा और स्तुति करते रहे. ये उन सभी महान कामों के चश्मदीद
गवाह थे, जो याहवेह द्वारा इस्राएल की भलाई के लिए किए गए थे. 8 याहवेह
का दास यहोशू, नून के पुत्र की मृत्यु हो गई. इस समय उनकी उम्र एक सौ दस
वर्ष की थी. 9 उन्होंने उन्हें उन्हीं की मीरास की सीमा के अंदर तिमनथ-हेरेस
में गाड़ दिया. यह स्थान गाश पर्वत के उत्तर में एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में है.
10 वह सारी पीढ़ी भी अपने पुरखों के साथ मिट्टी में जा मिली. उसके बाद
एक नई पीढ़ी का उदय हुआ, जिसे न तो याहवेह का ज्ञान था, न ही उन्हें यह
मालूम था कि याहवेह ने इस्राएल की भलाई के लिए क्या-क्या किया था. 11
इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में गलत है. उन्होंने बाल

की उपासना शुरू कर दी. 12 उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर, याहवेह को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाए थे, छोड़ दिया. उन्होंने उन देवताओं का अनुसरण करना शुरू कर दिया, जो उन लोगों के देवता थे, जो उनके आस-पास रह रहे थे. वे उन्हीं देवताओं की उपासना करने लगे. यह करके उन्होंने याहवेह का क्रोध भड़का दिया. 13 उन्होंने याहवेह को छोड़कर बाल तथा अश्तोरेथ की उपासना शुरू कर दी. 14 इस्राएल पर याहवेह का क्रोध भड़क उठा. याहवेह ने उन्हें उनके अधीन कर दिया, और वे उन्हें लूटने लगे. याहवेह ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों में बेच दिया, जो उनके आस-पास रहते थे. इस कारण वे अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सके. 15 वे जहां कहीं जाते, याहवेह का हाथ उनकी हानि ही के लिए उठा रहता था. यह सब वही था, जिसकी चेतावनी याहवेह दे चुके थे, जिसकी शपथ याहवेह ले चुके थे. इस्राएली बड़ी मुश्किल में आ पड़े थे. 16 तब याहवेह ने न्यायियों का उदय किया. इन न्यायियों ने इस्राएल के वंशजों को उन लोगों से छुड़ाया, जो उनके साथ लूटपाट कर रहे थे. 17 इतना होने पर भी उन्होंने अपने प्रशासकों की आज्ञाओं का पालन नहीं किया. वे पराए देवताओं की उपासना करने के द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध व्यभिचार, अर्थात् विश्वासघात, करते रहे. याहवेह के आदेशों का पालन करने की अपने पूर्वजों की नीतियों से वे जल्द ही दूर हो गए. उन्होंने अपने पूर्वजों के समान व्यवहार करना छोड़ दिया. 18 जब कभी याहवेह ने उनके लिए प्रशासक का उदय किए, याहवेह उस प्रशासक के साथ साथ रहे और वह प्रशासक जीवन भर उन्हें उनके शत्रुओं से छुटकारा दिलाया करता था; इसलिये कि याहवेह उनके शत्रुओं द्वारा उन पर की जा रही ताड़ना से हुई पीड़ा की कराहट के कारण, करुणा से दुःखी हो जाते थे. 19 मगर होता यह था, कि जब उस प्रशासक की मृत्यु होती थी, वे पराए देवताओं का अनुसरण करने के द्वारा, उनकी उपासना करने के द्वारा तथा उनके सामने झुककर नमन करने के द्वारा अपने पुरखों से कहीं अधिक बुराई करने में लौट जाते थे. न तो उन्होंने अपने इन बुरे कामों को छोड़ा, न ही अपने हठीले स्वभाव को. 20 इस पर इस्राएल के विरुद्ध याहवेह का क्रोध भड़क उठा. याहवेह ने विचार किया “इसलिये कि इस देश ने मेरी उस वाचा का उल्लंघन किया है, जिसकी आज्ञा मैंने उनके पुरखों को दी थी, उन्होंने मेरे आदेश का भी उल्लंघन किया है, 21 मैं उन जनताओं को भी उनके सामने से नहीं निकालूंगा, जिन्हें यहोशू अपनी मृत्यु के पहले छोड़ गए थे. 22 मैं उन देशों के द्वारा इस्राएल को परखूं, कि वे अपने पुरखों के समान याहवेह के आदेशों का पालन करते हैं, या नहीं.” 23 इस कारण याहवेह ने ही उन जनताओं को वहां रहने दिया तथा उन्हें वहां से जल्द ही नहीं निकाला. याहवेह ने इन्हें यहोशू के अधीन भी न होने दिया था.

3 उन जनताओं को याहवेह ने नहीं हटाया कि याहवेह इनके द्वारा इस्राएल की नयी पीढ़ी को, जो कनान के किसी भी युद्ध में शामिल नहीं हुए थे, परख सके, 2 और उन्हें युद्ध की कला में शिक्षित किया जा सके, जिन्हें इसके पहले युद्ध का कोई अनुभव न हो सका था. 3 वे जनता ये थे: फिलिस्तीनी, (जिनका शासन पांच नगरों में बंट कर हो रहा था), बाल-हरमोन पर्वत से लेकर लबो-हामाथ तक लबानोन पर्वत पर रह रहे सभी कनानी, सीदोनी तथा हिव्वी. 4 ये सभी इस्राएल को परखने के लिए रखे गए थे, कि यह स्पष्ट हो जाए, कि वे याहवेह के आदेशों, जो उनके पुरखों को याहवेह ने मोशेह के द्वारा दिए थे, उनका पालन करते हैं या नहीं. 5 इस्राएल के वंशज कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज़्ज़ी, हिव्वी तथा यबूसियों के बीच रहते रहे. 6 वे उनकी बेटियों को अपनी पत्नी बनाने के लिए ले लेते थे, तथा अपनी बेटियों को उनके बेटों को दे दिया करते थे, तथा उनके देवताओं की सेवा-उपासना भी करते थे. 7 इस्राएल वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में बुरा था. उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुलाकर, बाल तथा अशेरा की सेवा-उपासना करना शुरू कर दिया.

8 याहवेह का क्रोध इस्राएल के विरुद्ध भड़क उठा. इस कारण याहवेह ने उन्हें मेसोपोतामिया के राजा कूशन-रिशाथईम के हाथों में बेच दिया. इस्राएल वंशज आठ साल कूशन-रिशाथईम के दासत्व में रहे. 9 मगर जब इस्राएल वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, याहवेह ने इस्राएल वंशजों के लिए एक छुड़ानेवाले का उदय किया, कि वह इस्राएल वंशजों को छुड़ाए: कालेब के छोटे भाई केनज़ के पुत्र ओथनीएल को. 10 याहवेह का आत्मा उस पर उतरा, और उसने इस्राएल पर शासन किया. जब वह युद्ध के लिए आगे बढ़ा, याहवेह ने मेसोपोतामिया के राजा कुशान-रिशाथईम को उसके अधीन कर दिया. फलस्वरूप, कूशन-रिशाथईम ओथनीएल के अधीन हो गया. 11 इसके बाद देश में चालीस सालों तक शांति बनी रही, फिर केनज़ के पुत्र ओथनीएल की मृत्यु हो गई. 12 एक बार फिर इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में गलत था. इस कारण याहवेह ने इस्राएल के विरुद्ध मोआब के राजा एगलोन की शक्ति बढ़ा दी, क्योंकि उन्होंने वह किया था, जो याहवेह की नज़र में गलत था. 13 एगलोन ने अम्मोन के वंशजों तथा अमालेक के वंशजों से मित्रता कर ली. उसने हमला कर इस्राएल को हरा दिया तथा खजूर वृक्षों के नगर को अपने वश में कर लिया. 14 इस्राएल के वंशज अठारह वर्ष मोआब के राजा एगलोन के दासत्व में रहे. 15 तब इस्राएल के वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, और याहवेह ने उनके लिए एक छुड़ानेवाले का उदय किया, बिन्यामिन के वंशज गेरा का पुत्र एहूद का. वह बांए हाथ से काम करता था. इस्राएलियों ने उसी के द्वारा मोआब के राजा एगलोन को कर की राशि भेजी थी. 16 एहूद ने अपने लिए दोधारी तलवार बना रखी थी, जिसकी लंबाई लगभग आधा मीटर थी. इसे उसने अपने बाहरी वस्त्र के भीतर दाईं जांघ पर बांध रखा था. 17 उसने मोआब के राजा एगलोन को कर राशि भेंट की. एगलोन बहुत ही मोटा व्यक्ति था. 18 जब एहूद उसे कर राशि भेंट कर चुका, उसने उन सभी व्यक्तियों को भेज दिया, जो उसके साथ आए थे. 19 एहूद स्वयं गिलगाल की मूर्तियों के पास पहुंचने के बाद वहां से लौट आया और राजा को कहा, “महाराज, मुझे आपको एक गुप्त संदेश देना है.” राजा ने आदेश दिया, “शांति!” तब सभी सेवक कमरे से बाहर चले गए. 20 एहूद राजा के निकट गया. राजा इस समय छत पर बने अपने ठण्डे कमरे में अकेला बैठा हुआ था. एहूद ने राजा से कहा, “मुझे परमेश्वर की ओर से आपके लिए भेजा हुआ एक संदेश देना है.” सो राजा अपने आसन से उठ खड़ा हुआ. 21 एहूद ने अपने बाएं हाथ से दाईं जांघ पर बंधी हुई तलवार निकाली और राजा के पेट में भोंक दी. 22 फ़लक के साथ मुठिया भी भीतर चली गई और चर्बी ने फ़लक को ढक लिया. एहूद ने एगलोन के पेट से तलवार बाहर नहीं निकाली. पेट में से मल बाहर निकल आया. 23 एहूद बाहर बरामदा में चला गया, उसने अपने पीछे छत के कमरे के दरवाजे बंद कर दिए और ताला लगा दिया. 24 जब वह जा चुका, राजा के सेवक आए और उन्होंने देखा कि दरवाजे पर ताला लगा हुआ है, उन्होंने सोचा, “महाराज ठण्डे कमरे में आराम कर रहे होंगे.” 25 वे लोग इतनी देर तक इंतजार करते-करते व्याकुल हो गए. फिर भी जब छत के कमरे का दरवाजा न खुला, उन्होंने चाबी लेकर दरवाजा खोला तो देखा कि उनका स्वामी भूमि पर मरा पड़ा हुआ था. 26 यहां, जब वे इंतजार कर रहे थे, एहूद निकल भागा. वह मूर्तियों के पास से निकलकर सईरा जा पहुंचा. 27 वहां उसने एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में तुरही फूंका. इस्राएल के वंशज पहाड़ी इलाके से उसका पीछा करते हुए नीचे आए और वह उनका अगुआ बन गया. 28 उसने घोषणा की, “मेरे पीछे चले आओ, क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे शत्रु मोआबियों को तुम्हारे अधीन कर दिया है.” सो वे उसके साथ गए और जाकर यरदन के घाटों को, जो मोआब के परे थे, अपने अधीन कर लिया और किसी को भी पार जाने न दिया. 29 उस समय उन्होंने लगभग दस हज़ार मोआबियों को मार डाला. ये सभी हृष्ट-पुष्ट पुरुष थे. इनमें से एक भी बचकर निकल न सका. 30

इस प्रकार उस दिन इस्राएल ने मोआब को अपने अधीन कर लिया. इसके बाद देश में अस्सी साल तक शांति बनी रही. 31 एहूद के बाद अनात के पुत्र शमगर ने बैलों को हांकने की छड़ी का प्रयोग कर छः सौ फिलिस्तीनियों को मार डाला और इस प्रकार उसने भी इस्राएल को छुटकारा दिलाया.

4 एहूद की मृत्यु के बाद एक बार फिर इस्राएल वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में गलत था. 2 याहवेह ने उन्हें कनान के राजा याबीन के हाथों में बेच दिया. वह हाज़ोर में शासन करता था. उसकी सेना का सेनापति सीसरा था, जो हरोशेथ-हग्गोयिम में रहता था. 3 उसकी सेना में नौ सौ लोहे के रथ थे. उसने बीस साल तक इस्राएल वंशजों को बहुत ही निर्दयता से सताया. तब इस्राएल वंशजों ने याहवेह से सहायता की गुहार लगाई. 4 इस समय लप्पीदोथ की पत्नी दबोरा, जो भविष्यद्वक्तिन थी, इस्राएल पर शासन कर रही थी. 5 वह एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेथेल के बीच एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठा करती थी. इस्राएल वंशज न्याय पाने के लिए उसी के पास आया करते थे. 6 उसने नफताली के केदेश से अबीनोअम के पुत्र बाराक को बुलवाया और उससे कहा, "सुनो, याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का आदेश यह है: 'ताबोर पर्वत पर नफताली वंशजों में से तथा ज़ेबुलून वंशजों में से दस हज़ार व्यक्तियों को इकट्ठा करो. 7 मैं तुम्हारे सामने याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को उसके रथों और उसकी सेना समेत कीशोन नदी पर ले आऊंगा और उसे तुम्हारे अधीन कर दूंगा.'" 8 बाराक ने उसे उत्तर दिया, "यदि आप मेरे साथ चलेंगी तो मैं जाऊंगा, नहीं तो नहीं जाऊंगा." 9 दबोरा ने उसे उत्तर दिया, "मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलूंगी, लेकिन याद रहे, तुम जिस अभियान पर जा रहे हो, उसका श्रेय तुम्हें न मिलेगा, क्योंकि उस स्थिति में याहवेह सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देंगे." इस प्रकार दबोरा ने बाराक के साथ केदेश के लिए कूच किया. 10 बाराक ने केदेश के लिए ज़ेबुलून और नफताली के लोगों को बुला लिया. दस हज़ार पुरुष सैनिक उसके साथ हो लिए. दबोरा भी उनके साथ गई. 11 इस समय केनी हेबेर केनियों से अलग हो गया था. ये मोशेह के ससुर होबाब के वंशज थे. हेबेर ने अपनी छावनी सानन्नीम के बांज पेड़ के पास डाल रखी थी. यह स्थान केदेश के पास है. 12 जब सीसरा को सूचना दी गई कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पर्वत पर पहुंच गया है, 13 उसने हरोशेथ-हग्गोयिम से लेकर कीशोन नदी तक अपने नौ सौ लोहे के रथों और सभी सैनिकों को इकट्ठा कर लिया. 14 दबोरा ने बाराक को आदेश दिया, "उठो! आज ही वह दिन है, जिसमें याहवेह ने सीसरा को तुम्हारे अधीन कर दिया है. देख लो, याहवेह तुम्हारे आगे जा चुके हैं?" तब बाराक दस हज़ार लोगों को लेकर ताबोर पर्वत से नीचे उत्तर गया. 15 याहवेह ने बाराक की तलवार की धार से सीसरा, उसके सभी रथ तथा उसकी पूरी सेना को हरा दिया. सीसरा अपने रथ से उतर गया और पैदल ही भाग गया. 16 बाराक ने हरोशेथ-हग्गोयिम तक रथों और सेना का पीछा किया. सीसरा की पूरी सेना तलवार का कौर हो गई एक भी सैनिक न बच पाया. 17 सीसरा पैदल ही भागते हुए केनी हेबेर की पत्नी याएल की छावनी में जा पहुंचा, क्योंकि हाज़ोर के राजा याबीन तथा केनी हेबेर के परिवारों के बीच शांति की वाचा थी. 18 याएल सीसरा से भेंटकरने आई और उससे कहा, "मेरे स्वामी, मेरे निकट आइए, मेरे निकट आइए. डरिए मत." सीसरा उसकी छावनी के अंदर चला गया. याएल ने उसे एक कंबल ओढ़ा दिया. 19 सीसरा ने उससे विनती की, "कृपा कर मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी दो. मैं प्यासा हूं." उसने उसे दूध का बर्तन खोलकर उसे पीने दिया; दोबारा कंबल ओढ़ा दिया. 20 सीसरा ने याएल से कहा, "तंबू के दरवाज़े पर खड़ी रहना. यदि कोई तुमसे पूछे, 'अंदर कोई है?' तुम कह देना, 'नहीं.'" 21 मगर हेबेर की पत्नी ने छावनी की एक खूंटी और एक हथौड़ी उठाई, और चुपके से जाकर वह खूंटी उसकी कनपटी में ठोक दी. खूंटी उसके सिर से पार निकलकर ज़मीन में धंस गई और उसकी मृत्यु हो गई. वह बहुत ही थक कर गहरी नींद में सोया हुआ था. 22 जब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ वहां आया, याएल उससे भेंटकरने तंबू के बाहर निकल आई और उससे कहा, "यहां आइए, मैं आपको वह आदमी दिखाऊंगी, जिसे आप ढूंढ रहे हैं." बाराक उसके साथ अंदर गया और देखा कि सीसरा वहां मरा पड़ा हुआ था, और तंबू की खूंटी उसकी कनपटी में धंसी हुई थी. 23 उस दिन परमेश्वर ने कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों के सामने हरा दिया. 24 इसके बाद इस्राएली कनान के राजा याबीन पर लगातार सामर्थ्यी ही होते चले गए और अंत में उन्होंने कनान के राजा याबीन को खत्म ही कर दिया.

5 उस दिन दबोरा तथा अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया: 2 "धन्य हैं याहवेह! जब इस्राएल में अगुओं ने अगुवाई की, जब प्रजा अपनी इच्छा के अनुसार तैयार हो गई. 3 "सुन लो, राजाओं; ध्यान दो शासको! मेरा गीत याहवेह को समर्पित है, मैं याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति गाऊंगी. 4 "याहवेह, जब आप सेईर से बाहर निकले, जब आपने एदोम क्षेत्र से चलना शुरू किया, पृथ्वी कांप उठी, आकाश टूट पड़ा, यहां तक कि बादलों से बारिश शुरू हो गई. 5 याहवेह के सामने पहाड़ हिल गए. यहां तक कि सीनायी पहाड़ भी, याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के सामने. 6 "अनात के पुत्र शमगर के दिनों में, याएल के दिनों में, सड़कें सुनी पड़ीं थी, यात्रियों ने दूसरे मार्ग अपना लिए थे. 7 इस्राएल देश में अब ग्रामीण नहीं बचे थे, जब तक मैं, दबोरा ने शासन न संभाला था, जब तक मैं, इस्राएल के लिए एक मां के समान उभर न आई. 8 नए देवता चुने गए, दरवाजों के अंदर ही युद्ध छिड़ गया, इस युद्ध में न ढाल थी, न बर्छी, जबकि इस्राएल में चालीस हज़ार सैनिक थे. 9 मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के पक्ष में है, जिन्होंने अपने आपको अपनी इच्छा से युद्ध सेवा भेंट दी. धन्य हैं याहवेह! 10 "तुम, जो सफ़ेद गधों पर यात्रा करते हो, तुम, जो आलीशान गलीचों पर बैठा करते हो, और तुम, जो पैदल हो, गाओ! 11 पनघटों के बीच में पानी भरनेवाली स्त्रियों की जो आवाज आ रही है उस पर ध्यान दो, वहां वे याहवेह के नीतियुक्त कामों का वर्णन करेंगे, इस्राएल में अपने ग्रामीणों के लिए किए गए महान कार्य. "तब याहवेह के लोग फाटकों की ओर चले गए. 12 'जागो, दबोरा, जागो! जागो-जागो, तुम्हारे मुख से गीत फूट पड़ें! उठो बाराक! तुम बंदियों को आगे ले जाओ, अबीनोअम के पुत्र.' 13 "तब वे, जो जीवित रह गए थे, अधिकारियों से मिलने आए. याहवेह के लोग योद्धा के समान मेरे पास आए. 14 एफ्राईम से वे लोग नीचे उतर आए, जिनका मूल अमालेक में है. ओ बिन्यामिन, तुम्हारे लोगों के साथ तुम्हारा अनुगमन करते हुए, माखीर से सेनापति नीचे उतर आए. ज़ेबुलून से वे आए, जो अपने झंडे लिए हुए थे. 15 यिस्साकार के शासक दबोरा के साथ थे. इस्साखार बाराक के प्रति ईमानदार बना रहा. रियूबेन की टुकड़ियों के बीच में हृदय के पक्के इरादे पाए गए. घाटी में वे उसके पीछे लपक पड़े. 16 चरवाहों द्वारा भेड़ों के लिए किए जा रहे बांसुरी के गीत को सुनते हुए तुम भेड़शालाओं में ही क्यों ठहरे रहे? रियूबेन की टुकड़ियों के बीच में बारीकी से हृदय की थाह ली गई. 17 गिलआद यरदन के पार ही ठहरा रहा, क्या कारण था कि दान जहाजों में ही ठहरा रहा? आशेर सागर के किनारे पर बैठा देखा गया, और वह समुद्र के किनारे ही ठहरा रहा. 18 ज़ेबुलून वंशजों ने अपने प्राणों की चिंता न की; नफताली मैदान के टीलों पर ठहरा रहा. 19 "राजा आए, उन्होंने युद्ध किया, तब तानख में मगिद्दो जलाशय के पास कनान के राजाओं ने युद्ध किया, पर वे इस्राएल के लोगों की कोई चांदी न ले जा सके! 20 तारों ने आकाश से युद्ध किया. अपनी-अपनी कक्षाओं से उन्होंने सीसरा से युद्ध किया. 21 कीशोन की धारा उन्हें बहा ले गई, पुराने समय से चली आ रही नदी की धारा—कीशोन की धारा. मेरे प्राण, दृढ़ निश्चय कर आगे बढ़ो. 22 तब घोड़े की टाप सुने गए, उनके शूरवीर घोड़ों के टाप. 23 याहवेह के दूत ने आदेश दिया, 'मेरोज को शाप दो. इसके

निवासियों को शाप दो. क्योंकि वे याहवेह की सहायता के लिए नहीं आए;
योद्धाओं के विरुद्ध याहवेह की सहायता के लिए.' 24 "स्त्रियों में परम धन्य है
याएल. केनी हेबेर की पत्नी; शिविर में रहनेवाली स्त्रियों में सबसे ज्यादा स्तुति के
योग्य. 25 सीसरा ने विनती तो जल की थी, किंतु उसने उसे दूध दे दिया; एक
राजसी आलीशान कटोरे में उसने उसको दही दे दिया. 26 उसने एक हाथ में तंबू
की खूंटी उठाई और दाएं हाथ में मज़दूर का हथौड़ा, उसने सीसरा का सिर
कुचल डाला. उसने उसकी कनपटी को तोड़ते हुए छेद डाला. 27 वह उसके
पैरों के बीच झुका, वह गिरा और धराशायी हो गया. वह उसके पैरों के बीच
झुका, वह गिरा, जहां वह झुक गया था, वह वहीं मरा पड़ा रहा. 28 "सीसरा
की मां खिड़की में से झांकती हुई रो रही थी. 'सीसरा के रथ के लौटने में देरी
क्यों हो रही है? घोड़े की टापों में यह देरी क्यों? रथ लौट क्यों नहीं रहे?' 29
उसकी चतुर राजपुत्रियां उसे इसका उत्तर देंगी, वह मन ही मन अपना प्रश्न
दोहराती रही: 30 'क्या, उन्हें अब तक लूट का सामान नहीं मिला? क्या, वे
सामान का बंटवारा नहीं कर रहे? हर एक योद्धा के लिए एक या दो कन्याएं.
सीसरा के लिए रंगे हुए वस्त्र, रंगे हुए तथा कसीदा किए हुए वस्त्र; उनके गले पर,
जो लूट में से, दोहरी कशीदाकारी किए हुए वस्त्र?' 31 "याहवेह, आपके सभी
शत्रु इसी प्रकार नष्ट हों! मगर आपके भक्त जो आपसे प्रेम रखते हैं, वह प्रताप के
साथ उदय होते हुए सूर्य के समान हों." इसके बाद देश में चालीस साल तक
शांति बनी रही.

6 इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़रों में गलत था; इस
कारण याहवेह ने उन्हें सात सालों के लिए मिदियानियों के वश में कर दिया.
2 मिदियान की ताकत इस्राएल पर प्रबल होती गई. इस कारण से मिदियान के
डर से इस्राएल के वंशजों ने पहाड़ों में मांदें, गुफाएं और गढ़ को अपने निवास
बना लिए थे. 3 जब इस्राएली बीज बोते थे, मिदियानी अमालेकियों तथा पूर्वी
देश के क्षेत्रों के लोगों के साथ मिलकर इस्राएलियों पर हमला कर करते थे. 4
उनके विरुद्ध शिविर डालकर अज्जाह तक उनकी उपज को नष्ट कर देते थे. इस
कारण इस्राएल में न तो भोजन सामग्री बची रह जाती थी, न भेड़ें, न बैल, न गधे.
5 जब वे अपने पशुओं और छावनियों के साथ आते, वे टिड्डी दल के समान
लगते थे. उनके ऊंट अनगिनत थे. देश में प्रवेश करते हुए उनका लक्ष्य सिर्फ
विनाश ही हुआ करता था. 6 मिदियान के द्वारा इस्राएल की अर्थ व्यवस्था बहुत
ही कमजोर हो चुकी थी. इस कारण सहायता के लिए इस्राएलियों ने याहवेह की
दोहाई दी. 7 जब मिदियानियों के कारण इस्राएलियों ने याहवेह की दोहाई दी,
8 याहवेह ने इस्राएल के वंशजों के लिए एक भविष्यद्वक्ता भेजा, जिसने उनसे
कहा, "यह याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश है, मैं ही था जिसने मिस्र से,
दासत्व के घर से, तुम्हें निकाला. 9 मैंने मिस्रियों के अधिकार से, तुम्हारे सभी
अत्याचारियों के हाथों से, तुम्हें छुड़ा लिया, उन्हें तुम्हारे सामने से दूर हटाकर
तुम्हें उनका देश दे दिया. 10 मैंने तुम्हें यह आश्वासन दिया, 'मैं याहवेह, तुम्हारा
परमेश्वर हूं. जिन अमोरियों के देश में तुम रह रहे हो, ज़रूरी नहीं कि तुम उनके
देवताओं से डर जाओ.' मगर तुमने मेरे आदेश का पालन नहीं किया." 11
याहवेह का दूत उस बांज वृक्ष के नीचे आकर बैठ गया, जो ओफ़राह में था. यह
वृक्ष अबीएज़री योआश की संपत्ति थी. गिदोन इस समय मिदियानियों से छिपाने
के लिये अंगूर पेरने के कोल्हू में गेहूं को भूसी से अलग कर रहा था. 12 याहवेह
के दूत ने गिदोन पर प्रकट होकर उसका अभिवादन किया, "वीर योद्धा, याहवेह
तुम्हारे पक्ष में है." 13 गिदोन ने उससे कहा, "माफ कीजिए मेरे स्वामी, यदि
याहवेह हमारे पक्ष में हैं, तो हमारे साथ यह सब क्यों हो रहा है? कहां गए वे सभी
अद्भुत काम जिनका वर्णन हमारे पूर्वजों ने हमसे किया था? वे कहते थे, 'क्या
वह याहवेह ही न थे, जिन्होंने हमें मिस्र देश से निकाल लिया है?' किंतु अब तो
याहवेह ने हमें छोड़ दिया है, और हमें मिदियानियों के हाथों में सौंप दिया है."
14 तब याहवेह ने गिदोन से कहा, "अपनी इसी शक्ति में जाकर मिदियानियों के
अधिकार से इस्राएलियों को छुड़ाओ. तुम्हारे लिए यह मेरा आदेश है, मैं हूं तुम्हें
भेजने वाला." 15 गिदोन ने याहवेह को उत्तर दिया, "माफ कीजिए मेरे प्रभु, मैं
इस्राएल को कैसे छुड़ा सकता हूं? आप ही देखिए, मेरा परिवार मनश्शेह गोत्र में
सबसे छोटा माना जाता है, तथा इसके अलावा अपने पिता के परिवार में मैं
सबसे छोटा हूं." 16 जवाब में याहवेह ने कहा, "मगर मैं जो तुम्हारे साथ रहूंगा.
तुम सारी मिदियानी सेना को ऐसे हरा दोगे जैसे सिर्फ एक व्यक्ति को." 17
गिदोन ने याहवेह से कहा, "यदि आप मुझसे संतुष्ट हुए हैं, तो मुझे एक चिन्ह
दिखाकर साबित कर दीजिए, कि आप वही हैं, जो आप कह रहे हैं कि आप हैं.
18 कृपया मेरे लौटने तक आप यहीं ठहरिए, कि मैं आपको अपनी भेंट चढ़ा
सकूं." उसने कहा, "तुम्हारे लौटने तक मैं यहीं ठहरूंगा." 19 गिदोन गया,
और उसने एक एफाह आटे की अखमीरी रोटियां और एक मेमने के मांस का
व्यंजन तैयार कर एक टोकरी में रखा और एक बर्तन में रसा लेकर बांज वृक्ष के
नीचे गया, और वहां इन्हें स्वर्गदूत के सामने परोस दिया. 20 परमेश्वर के दूत ने
उससे कहा, "अखमीरी रोटी तथा मांस के व्यंजन को चट्टान पर सजा दो और
रसा इनके ऊपर डाल दो." गिदोन ने ऐसा ही किया. 21 तब स्वर्गदूत ने अपने
हाथ की छड़ी को आगे बढ़ाकर अखमीरी रोटी व मांस के व्यंजन को छुआ.
चट्टान से आग निकली और अखमीरी रोटी व मांस को चट कर गई. इसके
बाद याहवेह का दूत उसकी नज़रों से गायब हो गया. 22 जब गिदोन को यह
अहसास हुआ कि वह याहवेह का दूत ही था, वह कह उठा, "हाय, याहवेह
परमेश्वर, मैंने तो याहवेह के दूत को आमने सामने देख लिया है." 23 याहवेह ने
उसे आश्वासन दिया, "तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी. भयभीत न होओ, तुम्हारा भला
हो." 24 इस कारण गिदोन ने वहां याहवेह के लिए एक वेदी बनाई तथा उसे
नाम दिया, याहवेह शालोम हैं. आज तक यह वेदी अबीएज़रियों के ओफ़राह में
बनी हुई है. 25 उसी रात याहवेह ने गिदोन से कहा, "अपने पिता का दूसरा बैल
जो सात वर्ष का है, उसे लेकर जाओ. अपने पिता के बाल की वेदी गिरा दो तथा
उसने निकट खड़े अशेरा को गिरा दो. 26 फिर याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए
इसी गढ़ के ऊपर अच्छी सी वेदी को बनाओ. इसके बाद उस बैल की होमबलि
चढ़ाओ और उसके लिए अशेरा खंभे की लकड़ी का इस्तेमाल करना, जिसे तुम
पहले ही काट चुके होगे." 27 सो गिदोन अपने साथ दस सेवकों को लेकर वहां
गया और वही किया, जैसा याहवेह ने आदेश दिया था. अपने पिता के परिवार
तथा नगरवासियों के भय से उसने यह रात के समय किया. 28 बड़े तड़के, जब
नगरवासियों ने देखा कि बाल की वेदी गिर पड़ी थी, उसके निकट स्थापित की
हुई अशेरा काट डाली गई थी, तथा निर्माण की हुई वेदी पर वह बैल को चढ़ाया
गया था. 29 वे आपस में सोचने विचारने लगे, "किसने किया है यह?" उनकी
खोज तथा पूछताछ के फलस्वरूप, उन्हें सूचित किया गया, "यह योआश के पुत्र
गिदोन ने किया है." 30 फिर नगरवासियों ने योआश को आदेश दिया, "बाहर
लाओ अपने पुत्र को, कि उसे मृत्यु दंड दिया जाए, क्योंकि उसने बाल की वेदी
गिरा दी, तथा उसके पास की अशेरा को काट डाला है." 31 किंतु योआश ने
अपने उन सभी विरोधियों से कहा, "आपका उद्देश्य बाल के लिए विरोध करना
है, या उसे सुरक्षा प्रदान करना? जो कोई बाल का विरोध करेगा, सुबह तक
उसका वध कर दिया जाएगा, यदि बाल वास्तव में देवता है, वह स्वयं अपने बारे
में बोलेगा, क्योंकि किसी ने उसकी वेदी गिरा दी है." 32 सो उस दिन योआश
ने गिदोन को यरूबाल नाम दे दिया, जिसका मतलब है, "बाल ही उसका विरोध
करे," क्योंकि गिदोन ने बाल की वेदी गिरा दी थी. 33 कुछ समय बाद सभी
मिदियानी, अमालेक तथा पूर्वी देशों के लोग एकजुट हो गए यरदन पार कर
उन्होंने येज्रील घाटी में शिविर खड़े कर दिए. 34 याहवेह का आत्मा गिदोन पर
उतरा; गिदोन ने तुरही फूंकी और उसने अपने पीछे चलने के लिए अबीएज़ियों

को बुलाया. 35 उसने मनश्शेह गोत्र के सारे प्रदेश में दूत भेजे, और पीछे चलने
के लिए उनको भी बुलाया. उसने आशेर, ज़ेबुलून तथा नफताली के गोत्रों में भी
दूत भेज दिए, वे उससे भेंटकरने आ गए. 36 गिदोन ने परमेश्वर से विनती की,
“यदि आप मेरे द्वारा इस्राएल को छुड़वा रहे हैं, जैसा कि आपने ही कहा है, 37
देखिए, मैं खलिहान में ऊन की कतरन छोड़ दूंगा; यदि ओस ऊन की कतरन पर
ही पाई जाएगी, और सारी भूमि सूखी; तो मैं इससे समझ लूंगा कि आप अपने
वचन के अनुसार मेरे द्वारा इस्राएल को छुड़ाएंगे.” 38 ऐसा ही पाया गया! जब
गिदोन ने अगले दिन उसे निचोड़ा, उसने इसमें से एक कटोरे भर जल इकट्ठा कर
लिया. 39 इसके बाद गिदोन ने परमेश्वर से विनती की, “कृपया मुझ पर क्रोध न
करें; मैं एक बार और विनती करना चाहूंगा. इस बार ऊन की कतरन सूखी बनी
रहे, तथा सारी भूमि पर ओस पाई जाए.” 40 परमेश्वर ने उस रात वैसा ही
किया; केवल ऊन की कतरन सूखी रही मगर सारी भूमि ओस से भीगी हुई थी.

7 तब यरूबाल, अर्थात् गिदोन, तथा उसके साथ के सारे योद्धा तड़के उठे और
उन्होंने हरोद के सोते के पास पड़ाव डाल दिया; मिदियानी उनके उत्तर में
घाटी की मोरेह पहाड़ी पर पड़ाव डाले हुए थे. 2 याहवेह ने गिदोन से कहा,
“मिदियानियों को तुम्हारे वश में कर देने के उद्देश्य से तुम्हारे साथ के इन लोगों
की संख्या बहुत अधिक है. ऐसा न हो इस्राएल अहंकार में यह डींग मारने लगे,
‘अपनी ही शक्ति से हमने छुटकारा प्राप्त किया है!’ 3 इस कारण अब मेरे पास
आओ, लोगों को घोषणा करके यह सुना दो, ‘जो कोई डरा हुआ है, और डर से
कांप रहा है, वह गिलआद पहाड़ से लौटकर चला जाए.’” इस घोषणा पर
बाईस हज़ार लोग लौटकर चले गए. बचे रह गए, दस हज़ार. 4 याहवेह ने
गिदोन से कहा, “अब भी गिनती में ये लोग बहुत ज्यादा हैं. उन्हें जल के पास
ले आओ कि मैं उन्हें वहां तुम्हारे लिए परख सकूं. मैं जिस किसी के विषय में
कहूंगा, ‘यह जाएगा तुम्हारे साथ,’ वही तुम्हारे साथ जाएगा; किंतु जिस किसी
के विषय में मैं यह कहूं ‘यह तुम्हारे साथ नहीं जाएगा,’ वह तुम्हारे साथ नहीं
जाएगा.” 5 इस प्रकार गिदोन उस सबको जल के निकट ले आया. याहवेह ने
गिदोन को आदेश दिया, “तुम उन्हें, जो कुत्ते के समान जीभ से जल पिएंगे,
उनसे अलग कर लेना, जो घुटने टेककर जल पिएंगे.” 6 उन व्यक्तियों की
गिनती, जिन्होंने चुल्लू में जल लेकर जीभ की सहायता से जल पिया था, तीन
सौ हुई; मगर बचे हुए वे थे, जिन्होंने घुटने टेककर जल पिया था. 7 याहवेह ने
गिदोन से कहा, “मैं इन्हीं तीन सौ व्यक्तियों के द्वारा तुम्हें छुटकारा दिलाऊंगा,
जिन्होंने चुल्लू में जल लेकर जीभ की सहायता से पिया था. मैं मिदियानियों को
तुम्हारे अधीन कर दूंगा. इसलिये अब इन बचे हुओं को लौट जाने दो.” 8 इन
लोगों ने अपने भोजन सामग्री और अपने नरसिंगे उठा लिए. बाकियों को गिदोन
ने विदा कर दिया, और इस्राएली अपनी-अपनी घर को लौट गए, मगर इन तीन
सौ को उसने अपने साथ रखा. मिदियानियों का पड़ाव नीचे घाटी में था. 9 उसी
रात याहवेह ने गिदोन को आदेश दिया, “उठो, जाकर पड़ाव पर हमला कर दो,
क्योंकि मैंने उसे तुम्हारे अधीन कर दिया है. 10 हां, यदि तुम्हें वहां जाने में डर
लग रहा हो, तो अपने सेवक पुराह को लेकर वहां पड़ाव को जाओ. 11 वहां
जाकर सुनो कि वे क्या-क्या बातें कर रहे हैं. इससे तुम्हें हौसला मिलेगा कि तुम
पड़ाव पर हमला कर सको.” सो गिदोन अपने सेवक पुराह को लेकर सेना के
पड़ाव की सीमा चौकी पर जा पहुंचा. 12 इस समय मिदियानी, अमालेक तथा
पूर्वी देशों से आए हुए सैनिक घाटी में अपनी-अपनी छावनियों में लेटे हुए थे.
वे टिड्डी दल के समान अनगिनत थे. उनके ऊंट भी अनगिनत थे, जैसे सागर
किनारे की रेत. 13 जब गिदोन सीमा चौकी पर पहुंचा, एक सैनिक अपने मित्र
से अपने स्वप्न के बारे में बता रहा था; वह कह रहा था, “सुनो, मैंने एक स्वप्न
देखा है. जौ की एक रोटी लुढ़कती हुई आई और मिदियानी पड़ाव में प्रवेश
कर गई, एक तंबू तक पहुंचकर उसने उस पर ऐसा हमला किया, कि वह तंबू
भूमि पर बिछ गया.” 14 उसके मित्र ने उत्तर में कहा, “इस्राएली योआश के
पुत्र गिदोन की तलवार के अलावा यह और कोई नहीं हो सकता. परमेश्वर ने
मिदियान तथा उसकी पूरी छावनी को उसके वश में कर दिया है.” 15 जब
गिदोन ने इस स्वप्न तथा इसके फल के बारे में सुना, वह परमेश्वर की स्तुति में
वहीं दंडवत हो गया. वह इस्राएली छावनी को लौट गया और वहां यह घोषणा
कर दी, “उठो-उठो याहवेह ने मिदियानी पड़ाव को तुम्हारे वश में कर दिया
है.” 16 तब गिदोन ने उन तीन सौ को तीन दलों में बांटकर उन सभी के हाथों
में नरसिंगे और खाली मटकियां दे दीं, जिनमें मशालें रखी हुई थी. 17 उसने
उन्हें आदेश दिया, “मेरी ओर देखते रहना तथा वैसा ही करते जाना जैसा जैसा
मैं करूंगा, और सुनो, जब मैं उनकी छावनी के पास पहुंचूंगा, तो जो मैं करूंगा,
वही तुम भी करना. 18 जब मैं और मेरे साथी नरसिंगा फूंकें, तब तुम भी पूरी
छावनी के आस-पास नरसिंगा फूंकते हुए नारा लगाना, ‘याहवेह के लिए और
गिदोन के लिए!’” 19 इस कारण आधी रात को, जब उन्होंने पहरेदार चुने,
गिदोन और उसके साथ के सौ व्यक्ति छावनी के पास पहुंच गए. उन्होंने नरसिंगे
फूंके और अपने हाथों की मटकियों को फोड़ डाला. 20 जब तीनों दलों ने
नरसिंगे फूंकते हुए अपनी-अपनी मटकियां फोड़ीं, उन्होंने मशालें अपने बाएं
हाथ में तथा नाद करने के लिए नरसिंगे दाएं हाथ में पकड़े थे. उन्होंने नारा
लगाया, “तलवार याहवेह के लिए और गिदोन के लिए.” 21 हर एक व्यक्ति
अपने-अपने स्थान पर पड़ाव के आस-पास घेरा बनाए हुए खड़ा था. पड़ाव के
सभी लोग भागने लगे. वे सब भागते हुए चिल्लाते जा रहे थे. 22 जब उन तीन
सौ ने नरसिंगे फूंके, याहवेह ने मिदियानियों के हर एक सैनिक की तलवार
उसके साथी पर चलवा दी; ऐसा सारी सेना में हो गया. सेना ज़ेरेराह के बेथ-
शित्ताह तक भागती चली गई; और आगे तब्बाथ के निकट आबेल-मेहोलाह
की सीमा तक. 23 नफताली, आशेर तथा मनश्शेह के गोत्रों से इस्राएलियों
को बुलाया गया और उन्होंने भी मिदियानियों का पीछा किया. 24 गिदोन ने
एफ्राईम के सारे पहाड़ी इलाके में यह संदेश लेकर अपने दूत भेज दिए: “आकर
मिदियान पर आक्रमण करके उनसे बेथ-बाराह तथा यरदन तक के जलाशय
छीन लो.” इसलिए एफ्राईम से सभी पुरुष आ गए और उन्होंने बेथ-बाराह तथा
यरदन तक सारे जलाशयों पर अधिकार कर लिया. 25 उन्होंने मिदियान के दो
हाकिमों ओरेब तथा ज़ेब, को पकड़ लिया. जब वे मिदियानियों का पीछा कर
रहे थे, ओरेब का वध ओरेब की चट्टान पर तथा ज़ेब का वध ज़ेब के दाख के
कुंड पर कर दिया. उन्होंने यरदन पार से ओरेब तथा ज़ेब के सिर लाकर गिदोन
के सामने रख दिए.

8 एफ्राईमवासियों ने गिदोन से कहा, “आपने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों
किया?” आपने मिदियानियों से युद्ध के लिए अपने साथ चलने के लिए हमें
आमंत्रित ही नहीं किया! वे गुस्से में गिदोन से विवाद करते रहे. 2 किंतु गिदोन ने
उन्हें उत्तर दिया, “आप लोगों ने जो किया है, उसकी तुलना में मेरा किया हुआ
कुछ भी नहीं है. क्या यह सच नहीं कि भूमि पर से बीने गए एफ्राईम के अंगूर
अबीएज़ेर की लता से तोड़े गए अंगूरों से गुणों में कहीं ज्यादा अच्छे होते हैं? 3
परमेश्वर ने मिदियान के शासक ओरेब तथा ज़ेब को तुम्हें सौंप दिया हैं. आप
लोगों की तुलना में मैंने किया ही क्या है?” इस पर गिदोन के विरुद्ध उनका क्रोध
शांत हो गया. 4 तब गिदोन तथा उसके साथ के तीन सौ व्यक्ति यरदन तट पर
पहुंचे और उन्होंने यरदन नदी पार की. वे पीछा करते हुए बहुत ही थक चुके थे.
5 सुक्कोथवासियों से गिदोन ने विनती की, “मेरे साथ आ रहे इन व्यक्तियों को
कृपा कर रोटियां दे दीजिए, वे बहुत ही थक चुके हैं, क्योंकि मैं मिदियानियों
के राजाओं, सेबा तथा ज़लमुन्ना का अभी भी पीछा कर रहा हूं.” 6 सुक्कोथ
के शासकों ने उत्तर में कहा, “क्या ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना को तुम वश में कर
चुके हो, तो हम तुम्हारी सेना को रोटी दें?” 7 ठीक है, “गिदोन ने उनसे कहा,

जब याहवेह ज़ेबह तथा ज़लमुन्‍ना को मेरे वश कर देंगे, तब मैं तुम्हारे शरीरों को
जंगली कंटीली झाड़ियों तथा कांटों में रौंद दूंगा.” 8 वहां से वह पनीएल
पहुंचा और उनसे भी यही विनती की. पनीएल निवासियों का भी ठीक वही
उत्तर था, जो सुक्कोथवासियों का. 9 इस कारण गिदोन ने पनीएल निवासियों
से कहा, “जब मैं यहां सुरक्षित लौटूंगा, मैं इस खंभे को गिरा दूंगा.” 10 ज़ेबह
तथा ज़लमुन्‍ना अपनी सेनाओं के साथ कारकोर में थे. ये लगभग पन्द्रह हज़ार
सैनिक थे. ये सब वे थे, जो पूर्वी देशों के वंशजों की पूरी सेना में से बच गए थे.
युद्ध में मारे गये तलवारधारियों की गिनती एक लाख बीस हज़ार हो गई थी. 11
गिदोन ने उनका मार्ग लिया, जो नोबाह तथा योगबेहाह के पहले छावनियों में
रहते थे, और उन पर उस समय हमला कर दिया, जिस समय की उन्होंने उम्मीद
ही न की थी. 12 जब ज़ेबह तथा ज़लमुन्‍ना भागे, गिदोन ने उनका पीछा किया,
और मिदियान के उन दो राजाओं—ज़ेबह तथा ज़लमुन्‍ना को—जा पकड़ा, इससे
सारी सेना तितर-बितर हुई. 13 योआश का पुत्र गिदोन युद्ध के बाद हेरेस की
चढ़ाई से होता हुआ लौटा, 14 उसने सुक्कोथ के एक युवक को पकड़ा और
उससे पूछताछ की. उस युवक ने उसे सुक्कोथ के शासकों तथा पुरनियों, कुल
सतहत्तर व्यक्तियों के नाम लिख दिए. 15 फिर उधर पहुंचकर सुक्कोथवासियों
से गिदोन ने कहा, “इन्हें देखो! ये हैं ज़ेबह और ज़लमुन्‍ना, जिनके विषय में
तुमने मेरा मज़ाक उड़ाया था, ‘क्या ज़ेबह और ज़लमुन्‍ना तुम्हारे अधिकार में
आ चुके हैं?’” 16 गिदोन ने नगर के पुरनियों को पकड़ा और निर्जन प्रदेश
की कंटीली झाड़ियां लेकर सुक्कोथ के इन व्यक्तियों को उनके द्वारा किए
गए गलत व्यवहार की अच्छी सजा दे डाली. 17 पनीएल के खंभे को उसने
गिरा दिया, और नगरवासियों की हत्या कर डाली. 18 तब उसने ज़ेबह तथा
ज़लमुन्‍ना से पूछा, “तुमने जिन व्यक्तियों की हत्या ताबोर में की थी, वे किस
प्रकार के व्यक्ति थे?” उन्होंने उत्तर दिया, “आपके ही समान हर एक का रूप
राजकुमार के समान था.” 19 गिदोन ने उनसे कहा, “वे मेरे भाई थे; मेरी माता
की संतान. जीवित याहवेह की शपथ, यदि तुमने उन्हें जीवित छोड़ा होता, मैं
तुम्हारा वध न करता.” 20 गिदोन ने अपने बड़े बेटे, येथेर को आदेश दिया,
“उठो, इन्हें खत्म कर दो.” किंतु उस युवक ने तलवार ही न खींची, क्योंकि
वह कम उम्र का युवा था. 21 यह देख ज़ेबह तथा ज़लमुन्‍ना ने विनती की,
“आप खुद ही उठकर हम पर वार कीजिए. पुरुष जैसा होता है, वैसा ही होता है
उसका बल.” सो गिदोन ने ही उठकर ज़ेबह तथा ज़लमुन्‍ना का वध किया तथा
उनके ऊंटों की गर्दनों से चन्द्रहार गहने उतार लिए. 22 इस्राएली प्रजा ने गिदोन
से विनती की, “आप हम पर शासन कीजिए, आप दोनों—आप और आपका
पुत्र—क्योंकि आपने हमें मिदियानियों से छुड़ाया है.” 23 मगर गिदोन ने उन्हें
उत्तर दिया, “आप लोगों पर शासन न तो मैं करूंगा और न ही मेरा पुत्र. आप पर
शासन स्वयं याहवेह करेंगे.” 24 फिर भी गिदोन ने उनसे कहा, “आप में से हर
एक से मेरी एक विनती है, अपनी लूट की सामग्री में से मुझे एक-एक बाली दे
दो.” (इशमाएली कानों में सोने की बालियां पहनते थे.) 25 इस्राएलियों ने
उससे कहा, “ये हम आपको ज़रूर देंगे.” इसके लिए उन्होंने एक कपड़ा बिछा
दिया और हर एक व्यक्ति ने लूट में से एक-एक बाली वहां डाल दी. 26 जब इन
सोने की बालियों को तौला गया, तो इनका भार बीस किलो था. यह लूट में
मिले चन्द्रहारों, कुण्डलों, मिदियानी राजाओं द्वारा पहने जानेवाले बैंगनी वस्त्रों
तथा ऊंटों के चन्द्रहारों के अलावा था. 27 इनसे गिदोन ने एक एफ़ोद को
बनाकर अपने नगर ओफ़राह में रख दिया. सारे इस्राएल ने इसकी उपासना करने
के द्वारा याहवेह के प्रति व्यभिचार, अर्थात् विश्वासघात, का पाप किया. यह
एफ़ोद गिदोन तथा उसके परिवार के लिए फंदा साबित हुआ. 28 मिदियान
इस्राएल के वंशजों के वश में हो चुका था. इसके बाद उन्होंने सिर नहीं उठाया.
गिदोन के जीवनकाल में चालीस साल तक शांति बनी रही. 29 तब योआश का
पुत्र यरूबाल जाकर अपने ही घर में रहने लगा. 30 गिदोन के सत्तर पुत्र थे,
क्योंकि उनको अनेक पत्नियां थीं. 31 शेकेम में उनकी उप-पत्नी से भी एक पुत्र
था. उन्होंने उसका नाम अबीमेलेक रखा था. 32 योआश के पुत्र गिदोन की
मृत्यु पूरे बुढ़ापे में हुई. उसे अबीएज़रियों के ओफ़राह नगर में उसके पिता
योआश की गुफा की कब्र में रखा गया. 33 जैसे ही गिदोन का निधन हुआ,
इस्राएल वंशजों ने बाल की उपासना करने के द्वारा याहवेह के प्रति व्यभिचार
अर्थात् विश्वासघात का पाप किया. उन्होंने बाल-बेरिथ को अपने देवता के रूप
में मान लिया. 34 ऐसा करने के द्वारा उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुला
दिया, जिन्होंने उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं से छुटकारा दिलाया था. 35
यहां तक कि, उन्होंने तो यरूबाल अर्थात् गिदोन के परिवार के प्रति भी कृपा न
दिखाई, जबकि गिदोन ने इस्राएल के प्रति अनेक उपकार किए थे.

9 यरूबाल का पुत्र अबीमेलेक अपने मामाओं से भेंटकरने शेकेम गया. वहां
उसने अपने नाना के सारे घराने को इकट्ठा कर उनसे कहा, 2 “शेकेम के
सारे अगुओं के सामने आप मुझे बताइए, ‘क्या बेहतर है, यरूबाल के सत्तर पुत्र
आप पर शासन करें या सिर्फ एक व्यक्ति?’ आप लोग यह न भूलें कि मैं आपकी
ही हड्डी और आपका ही मांस हूं.” 3 उसकी माता के भाइयों ने उसकी यह बात
शेकेम के अगुओं के सामने दोहरा दी. वे अबीमेलेक का अनुसरण करने के लिए
तैयार हो गए. उनका विचार था, “वह हमारा ही संबंधी है.” 4 उन्होंने उसे
बाल-बेरिथ के मंदिर में से चांदी के सत्तर सिक्के दे दीं, जिनसे अबीमेलेक ने
नीच और लुच्चे लोगों को अपने पीछे होने के उद्देश्य से भाड़े पर ले लिया.
5 फिर वह ओफ़राह में अपने पिता के घर पर गया और वहां अपने भाइयों
को—यरूबाल के सत्तर पुत्रों को—एक ही चट्टान पर ले जाकर मार दिया, किंतु
यरूबाल का छोटा पुत्र योथाम बचा रह गया, क्योंकि वह छिप गया था. 6 सभी
शेकेमवासी एवं सभी बेथ-मिल्लोवासी इकट्ठे हो गए तथा उन्होंने शेकेम में
खंभे के बांज वृक्ष के पास अबीमेलेक का राजाभिषेक कर दिया. 7 जब योथाम
को इसकी सूचना दी गई, वह गेरिज़िम पर्वत शिखर पर जा खड़ा हुआ. वहां से
उसने ऊंची आवाज में कहा, “सुनो, शेकेम के शासको, कि परमेश्वर भी तुम्हारी
सुनें. 8 वृक्षों ने अपने लिए राजा चुनने की योजना बनाई. उन्होंने जैतून वृक्ष से
कहा, ‘हम पर शासन करो!’ 9 “जैतून वृक्ष ने उत्तर में कहा, ‘क्या मैं अपना
वह अमूल्य तेल बनाना रोक दूं; जिसके द्वारा देवता तथा मनुष्य सम्मानित किए
जाते हैं; और अन्य वृक्षों के ऊपर जाकर लहराता रहूं?’ 10 “वृक्षों ने अंजीर
वृक्ष से विनती की, ‘आइए, हम पर शासन कीजिए!’ 11 “मगर अंजीर वृक्ष ने
उन्हें उत्तर दिया, ‘क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे फल उगाना छोड़ दूं और
अन्य पेड़ों के ऊपर जाकर लहराता रहूं?’ 12 “तब वृक्षों ने अंगूर की बेल से
विनती की, ‘आइए, हम पर शासन कीजिए!’ 13 “किंतु अंगूर की बेल ने उत्तर
में कहा, ‘क्या मैं अपना दाखमधु बनाना छोड़ दूं, जो देवताओं और मनुष्यों
को आनंदित कर देती है और अन्य पेड़ों के ऊपर जाकर लहराती रहूं?’ 14
“अंत में सभी वृक्षों ने झड़बेरी से कहा, ‘आइए, हम पर शासन कीजिए!’ 15
“झड़बेरी ने वृक्षों से उत्तर में कहा, ‘यदि आप लोग सच में मेरा राजाभिषेक
करना चाह रहे हैं, तो आकर मेरी छाया में आसरा ले लीजिए; और अगर नहीं,
तो झड़बेरी से आग निकलें और लबानोन के देवदार के पेड़ भस्म हो जाएं.’ 16
“क्या, आप लोगों ने सच्चे मन से अबीमेलेक को राजा बनाया है, तथा ऐसा
करने के द्वारा आप लोगों ने यरूबाल एवं उसके परिवार का भला किया है? क्या
आपने वही किया है जिसके लिए वह योग्य था? 17 तुम्हारी भलाई के लिए मेरे
पिता ने युद्ध किया, अपने प्राण खतरे में डाले तथा आप लोगों को मिदियानियों
की अधीनता से छुड़ाया; 18 किंतु आज आप लोगों ने मेरे पिता के परिवार के
विरुद्ध विद्रोह कर दिया है, आपने उस एक ही चट्टान पर उनके सत्तर पुत्रों का
वध कर दिया और आपने उनकी सेविका के पुत्र अबीमेलेक को शेकेम पर राजा

बना दिया है, केवल इसलिये कि वह आपका संबंधी है! 19 यदि आप लोगों
ने आज यरूबाल तथा उनके परिवार के साथ निष्कपट भाव से, सच्चाई में
व्यवहार किया है, तो अबीमेलेक में ही आपका आनंद हो तथा वह भी आप में
ही प्रसन्‍न रहे. 20 किंतु यदि नहीं, तो अबीमेलेक द्वारा आग भेजी जाए और
शेकेम तथा बेथ-मिल्लो के लोग इसमें भस्म हो जाएं, और शेकेम तथा बेथ-
मिल्लो के अगुओं की ओर से आग निकलकर अबीमेलेक को भस्म कर दे."
21 यह कहकर योथाम वहां से भाग निकला. वहां से वह बएर जा पहुंचा और
अपने भाई अबीमेलेक के डर से वहीं रहने लगा. 22 अबीमेलेक इस्राएल
पर तीन साल तक शासन करता रहा. 23 तब परमेश्वर ने अबीमेलेक तथा
शेकेमवासियों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी. परिणामस्वरूप शेकेमवासियों
ने अबीमेलेक से विश्वासघात किया, 24 इसलिये कि यरूबाल के सत्तर पुत्रों से
की गई हिंसा का बदला लिया जा सके, और उनके खून का दोष उनके भाई
अबीमेलेक पर लगाया जा सके, जिसने उनकी हत्या की थी तथा शेकेम के
व्यक्तियों पर भी, जिन्होंने उसे अपने भाइयों की हत्या के लिए उकसाया था.
25 उसके लिए शेकेम के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों पर अपने लोगों को घात
में लगा दिए, जो वहां से निकलते हुए यात्रियों को लूट करते थे. इसकी सूचना
अबीमेलेक को दे दी गई. 26 एबेद का पुत्र गाअल अपने संबंधियों के साथ
शेकेम गया. वह शेकेमवासियों का विश्वासपात्र बन गया. 27 उन्होंने अपने
अंगूर के बगीचों में जाकर अंगूर इकट्ठे किए, अंगूर रौन्दे और अपने देवता के
मंदिर में उत्सव मनाया. वहां उन्होंने भोजन किया, पेय पान किया और फिर
अबीमेलेक को शाप भी दिया. 28 तब एबेद के पुत्र गाअल ने कहा, "कौन होता
है अबीमेलेक, और कौन होता है शेकेम, कि हम इनकी सेवा करें? क्या वह
यरूबाल का पुत्र नहीं, क्या ज़बुल उसका सहायक नहीं? हां, शेकेम के पिता
हामोर के साथियों की सेवा अवश्य करो, किंतु हम भला अबीमेलेक की सेवा
क्यों करें? 29 अच्छा होता कि ये लोग मेरे अधिकार में होते! तब मैं अबीमेलेक
को ही हटा देता. तब उसने अबीमेलेक से कहा, 'अपनी सेना को बढ़ाकर
मुझसे युद्ध के लिए आ जाओ.'" 30 जब नगर अध्यक्ष ज़बुल ने एबेद के पुत्र
गाअल का यह बातें सुनी वह क्रोध से भड़क गया. 31 उसने तोरमाह नगर को
अबीमेलेक के पास अपने दूत भेजे. संदेश यह था: "देखिए, एबेद का पुत्र
गाअल तथा उसके संबंधी शेकेम आ गए हैं. यहां वे नगर को आपके विरुद्ध
उकसा रहे हैं. 32 इस कारण अब आप अपनी सेना को लेकर रात में मैदान में
घात लगा दीजिए. 33 सूरज उगते ही आप नगर पर टूट पड़िए. जब गाअल
अपनी सेना के साथ आप पर हमला करेगा, आप उसके साथ वही कीजिए, जो
आपको सही लगे." 34 अबीमेलेक तथा उसके साथ के सारे सैनिक रात में चार
दल बनाकर शेकेम के लिए घात लगाकर छिप गए. 35 एबेद का पुत्र गाअल
जाकर नगर द्वार पर खड़ा हो गया. अबीमेलेक तथा उसके सैनिक घात से
बाहर आए. 36 यह देखकर गाअल ने ज़बुल से कहा, "देखो, लोग पहाड़ की
चोटियों से नीचे आ रहे हैं!" किंतु ज़बुल ने उसे उत्तर दिया, "आपको तो पर्वतों
की छाया ही सेना जैसी दिखाई दे रही है." 37 गाअल ने दोबारा बताया, "देश
के बीचों-बीच से लोग नीचे आ रहे हैं, तथा शकुन शास्त्रियों का एक दल बांज
वृक्ष के मार्ग से आ रहा है." 38 इसे सुन ज़बुल ने उससे कहा, "क्या हुआ
आपकी उन डींगों का, जब आप कह रहे थे, 'कौन है अबीमेलेक, कि हम
उसकी सेवा करें?' क्या ये वे ही लोग नहीं जिनसे आप घृणा करते रहे? अब
जाइए और कीजिए उनसे युद्ध!" 39 गाअल गया और शेकेम के पुरुषों की
अगुवाई करके अबीमेलेक से युद्ध किया. 40 अबीमेलेक ने गाअल को खदेड़
दिया, और गाअल तथा सैनिक भागने लगे. नगर द्वार के सामने अनेक सैनिक
जो भाग रहे थे, वे घायल होकर मर गये. 41 अबीमेलेक अरूमाह में ही ठहरा
रहा, किंतु ज़बुल ने गाअल तथा उसके संबंधियों को भगा दिया कि वे शेकेम में
न रह सकें. 42 दूसरे दिन शेकेम के नागरिक मैदान में निकल आए. इसकी
सूचना अबीमेलेक को दे दी गई. 43 तब उसने अपनी सेना को तीन भागों में
बांट दिया और वे घात लगाकर बैठ गए. जब उसने देखा कि लोग नगर से बाहर
आ रहे हैं, उसने उन पर आक्रमण कर उनको मार दिया. 44 फिर अबीमेलेक
तथा उसके सैनिक दौड़कर नगर फाटक पर जा पहुंचे. दूसरे दो दल दौड़-दौड़
कर उनको मारते चले गए, जो नगर से बाहर आ गए थे. 45 अबीमेलेक दिन
भर शेकेम से युद्ध करता रहा. उसने शेकेम पर अधिकार कर लिया, और सभी
नगरवासियों को मार दिया. उसने नगर को पूरी तरह से गिराकर नगर क्षेत्र में
नमक बिखेर दिया. 46 जब शेकेम के मीनार पर रहनेवाले सभी अधिकारियों ने
यह सब सुना, वे एल-बरिथ मंदिर के भीतरी कमरे में इकट्ठे हो गए. 47
अतः अबीमेलेक अपनी सेना के साथ ज़लमोन पर्वत पर चला गया. 48 वहां
अबीमेलेक ने कुल्हाड़ी लेकर वृक्ष की एक शाखा काटी, उसे अपने कंधे पर
उठा लिया और अपने साथ के सैनिकों को आदेश दिया, "जैसा तुमने मुझे करते
देखा है, तुम भी वैसा ही करो." 49 सभी ने अपने लिए एक-एक शाखा काटी,
और अबीमेलेक के पीछे-पीछे चले गए. उन सबने ये शाखाएं भीतरी कमरों में
रख दीं और उसमें आग लगा दी. वहां सभी अगुए इकट्ठे थे, इस कारण शेकेम
के मीनार के कमरे में जो थे उन सभी अधिकारियों की मृत्यु हो गई, ये लगभग
एक हज़ार स्त्री-पुरुष थे. 50 इसके बाद अबीमेलेक तेबेज़ नगर को गया, नगर
की घेराबंदी की और उसे अपने वश में कर लिया. 51 किंतु नगर के बीच
में एक मजबूत मीनार था. नगर के बचे हुए सभी स्त्री-पुरुषों ने एवं अगुओं ने
भागकर उसी में सहारा लिया और दरवाजे बंद कर लिए और वे सब मीनार की
छत पर चढ़ गए. 52 अबीमेलेक ने आकर उस मीनार पर हमला किया. वह
मीनार में आग लगाने के उद्देश्य से द्वार के पास आया ही था, 53 कि एक स्त्री ने
चक्की का ऊपरी पाट अबीमेलेक के ऊपर गिरा दिया. इससे उसकी खोपड़ी
कुचल गई. 54 उसने तुरंत अपने युवा हथियार ढोनेवाले को बुलाकर आदेश
दिया, "अपनी तलवार निकालो और आज़ाद करो मुझे इस स्थिति से, ताकि मेरे
संबंध में यह न कहा जाए: 'एक स्त्री ने उसकी हत्या कर दी.'" सो उस युवा ने
उसे तलवार से बेध दिया, उसकी मृत्यु हो गई. 55 जब इस्राएलियों ने देखा कि
अबीमेलेक की मृत्यु हो गई है, वे सब अपने-अपने घर लौट गए. 56 इस प्रकार
परमेश्वर ने अबीमेलेक से उस दुष्टता का बदला ले लिया, जो उसने अपने सत्तर
भाइयों की हत्या करने के द्वारा अपने पिता के विरुद्ध की थी. 57 इसके अलावा
परमेश्वर ने शेकेम निवासियों की सारी दुष्टता का भी बदला ले लिया, और
यरूबाल के पुत्र योथाम का शाप उनके सिर पर आ पड़ा.

10 अबीमेलेक की मृत्यु के बाद इस्साखार प्रदेश से दोदो के पोते, पुआह के
पुत्र तोला का उदय इस्राएल के छुड़ानेवाले के रूप में हुआ. वह एफ्राईम
के पहाड़ी इलाके के शामीर नगर का निवासी था. 2 उसने तेईस वर्ष इस्राएल पर
शासन किया, इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई और शामीर में उसे गाड़ा गया. 3
उसके बाद गिलआदवासी याईर का उदय हुआ. उसने बाईस वर्ष इस्राएल पर
शासन किया. 4 उसके तीस पुत्र थे, जो तीस गधों पर यात्रा करते थे. गिलआद
प्रदेश में तीस नगर उनके अधिकार में थे. जो आज तक हव्वोथ-याईर नाम से
मशहूर हैं. 5 याईर की मृत्यु होने पर उसे कामोन में गाड़ा गया. 6 इस्राएल के
वंशजों ने दोबारा वही किया, जो याहवेह की नज़रों में गलत था. उन्होंने बाल
तथा अश्तोरेथ, अराम के, सीदोन के, मोआब के, अम्मोन वंशजों के तथा
फिलिस्तीनियों के देवताओं की सेवा-उपासना करना शुरू कर दिया. उन्होंने
याहवेह को भुला दिया, और उनकी सेवा-वन्दना का त्याग कर दिया. 7 याहवेह
का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा. याहवेह ने उन्हें फिलिस्तीनियों तथा अम्मोन
वंशजों के हाथों में बेच दिया. 8 उस पूरे साल वे इस्राएल वंशजों को सताते और
पीसते रहे. वे गिलआद में यरदन के पार बसे हुए इस्राएल के वंशजों को अठारह

वर्ष तक सताते रहे. 9 अम्मोन वंशज यरदन पार कर यहूदिया, बिन्यामिन प्रदेश
तथा एफ्राईम वंशजों से भी युद्ध करते रहे, इससे इस्राएल वंशज बहुत ही संकट में
पड़ गए थे. 10 तब इस्राएल वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, "हमने आपके
विरुद्ध पाप किया है. हमने वास्तव में अपने परमेश्वर को छोड़कर बाल देवताओं
की सेवा-उपासना की है." 11 याहवेह ने इस्राएल संतानों को उत्तर दिया,
"क्या मैं ही वह न था, जिसने तुम्हें मिस्रियों, अमोरियों, अम्मोनियों तथा
फिलिस्तीनियों की बंधुआई से, 12 और, जब सीदोनी, अमालेक तथा माओनी
तुम्हें सता रहे थे, तुमने मेरी दोहाई दी, और क्या मैंने तुम्हें उनकी अधीनता से
नहीं छुड़ाया? 13 यह सब होने पर भी तुमने मुझे भुला दिया और अन्य देवताओं
की सेवा-उपासना की, इस कारण अब मैं तुम्हें न छुड़ाऊंगा. 14 जाओ, उन्हीं
देवताओं की दोहाई दो, जिन्हें तुमने अपने लिए चुन रखा है. उन्हें ही तुम्हें
तुम्हारे संकट के अवसर पर सहायता करने दो." 15 इस्राएल वंशजों ने याहवेह
से विनती की, "हमने पाप किया है. हमारे साथ वही कीजिए, जो आपको सही
लगे; मगर आज हमें कृपा कर छुटकारा दे दीजिए." 16 उन्होंने अपने बीच से
सारे पराए देवता हटा दिए और वे याहवेह की सेवा-वन्दना करने लगे. अब
याहवेह से इस्राएल की दुर्दशा देखी न गई. 17 वहां अम्मोन वंशजों को बुलाया
गया और उन्होंने गिलआद में पड़ाव खड़े कर दिए. इस्राएल वंशज इकट्ठे हुए
और उन्होंने मिज़पाह में पड़ाव खड़े किए. 18 गिलआद के नायक आपस में
विचार करने लगे: "कौन होगा वह व्यक्ति, जो अम्मोन वंशजों से युद्ध शुरू
करेगा? वही बनेगा गिलआद वासियों का प्रधान."

11 गिलआदवासी यिफ्ताह एक बहादुर योद्धा था; किंतु वह एक वेश्या का
पुत्र था. उसके पिता का नाम गिलआद था. 2 गिलआद की पत्नी से भी
पुत्र पैदा हुए. जब ये पुत्र बड़े हुए, तब उन्होंने उसे यह कहते हुए घर से निकाल
दिया: "तुम तो पराई स्त्री से जन्मे हो, इस कारण हमारे पिता की मीरास में तुम्हारा
कोई भाग न होगा." 3 तब यिफ्ताह अपने भाइयों से दूर भागकर तोब देश में
रहने लगा. वहां निकम्मे, खराब लोग उसके साथी बनते चले गए, जो उसके
साथ साथ रहते थे. 4 कुछ समय बाद अम्मोन वंशजों ने इस्राएलियों से युद्ध छेड़
दिया. 5 जब अम्मोन वंशज इस्राएल से युद्ध कर रहे थे, गिलआद के अगुए लोग
तोब देश से यिफ्ताह को लेने जा पहुंचे. 6 उन्होंने यिफ्ताह से विनती की,
"आकर हमारे सेनापति का कार्यभार संभाल लो, कि हम अम्मोनियों से युद्ध कर
सकें." 7 गिलआद के अगुओं को यिफ्ताह ने उत्तर दिया, "क्या आप ही नहीं
थे, जिन्होंने घृणा करके मुझे मेरे पिता के घर से बाहर निकाल दिया था? अब,
जब आप पर संकट आ पड़ा है, तो आप लोग मेरे पास क्यों आए हैं?" 8
गिलआद के अगुओं ने यिफ्ताह को उत्तर दिया, "तुम्हारे पास हमारे लौटने का
कारण सिर्फ यह है कि तुम हमारे साथ चलो और अम्मोन वंशजों से युद्ध कर सारे
गिलआद वासियों के प्रधान बन जाओ." 9 इस पर यिफ्ताह ने गिलआद के
अगुओं से प्रश्न किया, "अर्थात् यदि आप मुझे अम्मोन वंशजों से युद्ध करने के
उद्देश्य से वापस ले जाते हैं, और याहवेह उन्हें मेरे अधीन कर देते हैं, तो मैं
आपका प्रधान बन जाऊंगा?" 10 गिलआद के पुरनियों ने यिफ्ताह को उत्तर
दिया, "स्वयं याहवेह हमारे बीच गवाह हैं, निश्चय ही हम ठीक वैसा ही करेंगे
जैसा तुमने अभी कहा है." 11 सो यिफ्ताह गिलआद के पुरनियों के साथ चला
गया. प्रजाजनों ने उसे अपने ऊपर अधिनायक एवं प्रधान नियुक्त कर दिया.
यिफ्ताह ने मिज़पाह में याहवेह के सामने पूरी वाचा दोहरा दी. 12 यिफ्ताह ने
तब अम्मोन वंशजों के राजा को इस संदेश के साथ दूत भेज दिए: "मैंने आपकी
ऐसी क्या हानि कर दी है, जिसके निमित्त आप हमारे देश से युद्ध करने आ गए
हैं?" 13 अम्मोन वंशजों के राजा ने यिफ्ताह के दूतों को उत्तर दिया, "मिस्र से
निकलकर आते हुए इस्राएल ने आरनोन से लेकर यब्बोक तथा यरदन तक की
भूमि पर कब्जा कर लिया था. इसलिये अब सही होगा कि शांतिपूर्वक यह भूमि
हमें लौटा दी जाए." 14 यिफ्ताह ने अम्मोन वंशजों के राजा के लिए दोबारा दूत
भेजे. 15 उन्होंने राजा से यों कहने को आदेश दिया, "यिफ्ताह का संदेश यह
है: इस्राएल ने न तो मोआब की भूमि पर कब्जा किया है, और न ही अम्मोन
वंशजों की. 16 क्योंकि जब इस्राएल मिस्र देश से निकला, वह निर्जन प्रदेश में
से लाल सागर पहुंचा और वहां से कादेश को. 17 वहां पहुंचकर इस्राएल ने
एदोम के राजा के लिए दूतों से यह संदेश भेजा था: 'कृपा कर हमें आपके देश में
से होकर आगे जाने की आज्ञा दीजिए!' किंतु एदोम के राजा ने इस विनती की
ओर तनिक भी ध्यान न दिया. उन्होंने यही विनती मोआब के राजा से भी की,
किंतु वह भी इसके लिए राज़ी न हुआ. इस कारण इस्राएल कादेश में ही रुक
गया. 18 "तब उन्होंने निर्जन प्रदेश में से यात्रा की. इसके लिए उन्हें एदोम और
मोआब देशों में प्रवेश न करते हुए, घूमकर आगे बढ़ना पड़ा, और वे मोआब देश
के पूर्व में पहुंच गए. उन्होंने आरनोन के दूसरी ओर छावनी डाल दी और
मोआब की सीमा में प्रवेश किया ही नहीं. आरनोन मोआब की सीमा पर था. 19
"इसके बाद इस्राएल ने अमोरियों के राजा सीहोन को, जो हेशबोन से शासन
कर रहे थे, दूतों द्वारा यह संदेश भेजा, 'कृपया हमें अपने देश में से होकर हमारे
देश में पहुंचने की आज्ञा दीजिए.' 20 किंतु सीहोन ने इस्राएल पर भरोसा ही न
किया, कि वह उसके देश की सीमा से होकर निकल जाएगा. इस कारण सीहोन
ने अपनी सेना तैयार की, यहत्स में छावनी डाल दी और इस्राएल से युद्ध करने
लगा. 21 "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने सीहोन तथा उसकी सारी सेना को
इस्राएल के अधीन कर दिया; उन्होंने उन्हें हरा दिया. फलस्वरूप उस देश के
निवासी तथा सारे अमोरी देश इस्राएल के अधिकार में आ गए. 22 आरनोन से
लेकर यब्बोक तक तथा निर्जन प्रदेश से लेकर यरदन तक का सारा क्षेत्र उनका
हो गया. 23 "अब आप ही बताइए, जब याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने ही
अमोरियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से हटा दिया है, क्या आपका इस
पर कोई अधिकार रह जाता है? 24 क्या आप स्वयं उस पर अधिकार नहीं किए
हुए हैं, जो आपने अपने देवता खेमोश से पाया है? इसलिये, इसी प्रकार जो
जगह याहवेह, हमारे परमेश्वर द्वारा हमारे सामने खाली करवाई गई है, हम
उस पर अधिकार बनाए रखेंगे. 25 क्या आप ज़ीप्पोर के पुत्र मोआब के राजा
बालाक से बढ़कर हैं? क्या उसने कभी भी इस्राएल का सामना करने का साहस
किया था अथवा क्या उसने कभी भी इस्राएल से युद्ध किया? 26 जब इस्राएल
तीन सौ वर्षों से हेशबोन और उसके गांवों में, अरोअर तथा उसके गांवों में तथा
आरनोन के तटवर्ती नगरों में रहता रहा, आपने उन्हें उसी समय वापस कब्जा
करने की कोशिश क्यों नहीं की? 27 इन बातों के प्रकाश में मैंने आपके विरुद्ध
कोई पाप नहीं किया है, बल्कि आप ही मुझसे युद्ध करने की भूल कर रहे हैं.
याहवेह, जो न्यायाध्यक्ष हैं, वही आज इस्राएल वंशजों तथा अम्मोन वंशजों के
बीच न्याय करें." 28 किंतु अम्मोन वंशजों के राजा ने यिफ्ताह द्वारा भेजे संदेश
को न माना. 29 इसी समय याहवेह का आत्मा यिफ्ताह पर उतरी. वह गिलआद
एवं मनश्शेह में से होता हुआ आगे बढ़ा. इसके बाद वह मिज़पाह के गिलआद में
से होता हुआ, वह अम्मोन वंशजों के क्षेत्र में जा पहुंचा. 30 यिफ्ताह ने याहवेह
के सामने यह शपथ ली, "यदि आप वास्तव में अम्मोन वंशजों को मेरे अधीन
कर देंगे, 31 जब मैं अम्मोन वंशजों से सुरक्षित लौट आऊंगा, तब मेरे निवास के
द्वारों में से जो कोई मुझसे भेंटकरने बाहर आएगा, वह याहवेह का हो जाएगा-
मैं उसे होमबलि के रूप में चढ़ा दूंगा." 32 यिफ्ताह ने आगे बढ़कर अम्मोन
वंशजों पर हमला कर दिया. याहवेह ने उन्हें उसके अधीन कर दिया. 33
अरोअर से लेकर मिन्निथ के प्रवेश तक बीस नगरों में तथा आबेल-केरामिन
तक उसने घोर संहार किया. इस प्रकार अम्मोन वंशज, इस्राएल वंशजों के
सामने हार गए. 34 जब यिफ्ताह अपने आवास मिज़पाह लौटा, उसने देखा, कि
उसकी पुत्री डफ बजाती हुई उससे भेंटकरने आ रही थी. वह यिफ्ताह

की एकलौती संतान थी. उसके अलावा उसके न तो कोई पुत्र था, न कोई पुत्री.
35 जैसे ही उसकी नज़र अपनी पुत्री पर पड़ी, उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले
और कहा, “हाय, मेरी पुत्री! तुमने तो मुझे खत्म ही कर दिया. तुम मेरे शोक
का कारण हो गई हो. मैंने याहवेह को वचन दिया है, जिसे मैं मना नहीं कर
सकता.” 36 यह सुन उसकी पुत्री ने यिफ्ताह को उत्तर दिया, “पिताजी, आपने
शपथ याहवेह से की है. मेरे साथ आप वही कीजिए, जैसा आपने कहा है;
क्योंकि याहवेह ने आपके द्वारा अम्मोन वंशजों, आपके शत्रुओं से बदला लिया
है.” 37 उसने अपने पिता से यह भी कहा, “जैसा आपने कहा है, मेरे साथ वैसा
ही किया जाए; सिर्फ मुझे दो महीने के लिए अकेली छोड़ दिया जाए, कि मैं
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर जाकर अपने कुंवारी ही रह जाने के लिए
रोऊंगी.” 38 “जाओ,” यिफ्ताह ने कहा और उसने दो महीने के लिए अपनी
पुत्री को विदा कर दिया. वह चली गई और पहाड़ों पर अपने कुंवारी रह जाने
के लिए रोती रही. 39 दो महीने पूरे होने पर वह लौटी और यिफ्ताह ने उसके
विषय में अपनी शपथ पूरी की, किसी पुरुष से उसका संबंध न हुआ था. इस्राएल
में इसकी याद में एक प्रथा प्रचलित हो गई: 40 इस्राएली कन्याएं हर साल
गिलआदवासी यिफ्ताह की पुत्री की याद में चार दिन विलाप करती हैं.

12

तब एफ्राईमवासियों ने सेना इकट्ठा किया. उन्होंने ज़ेफोन जाकर यिफ्ताह
से यह कहके झगड़ा किया, “क्या मतलब था आपका हमें अपने साथ
लिए बिना अम्मोन वंशजों से युद्ध के लिए जाने का? हम आपके साथ आपके
घर में आग लगा देंगे.” 2 यिफ्ताह ने उन्हें उत्तर दिया, “अम्मोन वंशजों के
साथ मेरा और मेरे साथियों का बड़ा झगड़ा हो गया था. मैंने आपको बुलाया तो
था, किंतु आपने आकर मुझे उनसे नहीं छुड़ाया. 3 जब मैंने देखा कि मुझे
छुड़ाने में आपकी रुचि नहीं है, मैंने अपनी जान हथेली में लेकर अम्मोन वंशजों
पर हमला किया, और याहवेह ने उन्हें हमारे वश में कर दिया. आप लोग अब
मुझसे झगड़ा करने क्यों आए हैं?” 4 इस कारण यिफ्ताह ने गिलआद के सारे
सैनिकों को इकट्ठा किया और एफ्राईम से युद्ध करके गिलआद के सैनिकों ने
उन्हें हरा दिया, क्योंकि एफ्राईमवासियों ने गिलआद वासियों पर आरोप लगाया
था, “तुम गिलआदवासी तो एफ्राईम के भगोड़े हो. तुम तो एफ्राईम तथा मनश्शेह
के ही वासी हो.” 5 गिलआद वासियों ने एफ्राईम के पास वाले यरदन के
घाट अपने वश में कर लिए. जब कभी कोई व्यक्ति एफ्राईम से भागने की
कोशिश में कहता था, “मुझे पार जाने दो,” गिलआदवासी उससे प्रश्न करते
थे, “क्या तुम एफ्राईमवासी हो?” यदि वह उत्तर देता था, “नहीं,” 6 तब
गिलआदवासी उसे आदेश देते थे; कहो, “शिब्बोलेथ.” किंतु वह उच्चारण
करता था, “सिब्बोलेथ,” क्योंकि उसके लिए इस शब्द का शुद्ध उच्चारण
संभव नहीं होता था. यह होने पर गिलआदवासी उसे वहीं पकडकर यरदन के
घाटों में मार दिया करते थे. उस समय इस प्रक्रिया में एफ्राईम के बयालीस हज़ार
व्यक्तियों को मार दिया गया. 7 यिफ्ताह छः साल तक इस्राएल का शासन
करता रहा. इसके बाद गिलआदवासी यिफ्ताह की मृत्यु हो गई. उसे गिलआद
के ही एक नगर में गाड़ दिया गया. 8 यिफ्ताह के बाद बेथलेहेम के इबज़न
ने इस्राएल के शासन की जवाबदारी संभाली. 9 उसके तीस पुत्र और तीस
ही पुत्रियां थी, जिनका विवाह उसने बाहर के गोत्र में किया था. इसी प्रकार
उसने अपने पुत्रों का विवाह बाहरी गोत्रों में कर दिया था. उसने इस्राएल का
शासन सात सालों तक किया. 10 इसके बाद इबज़न की मृत्यु हो गई, और उसे
बेथलेहेम में गाड़ दिया गया. 11 उसके बाद ज़ेबुलूनवासी एलोन इस्राएल का
शासक हुआ. उसने दस साल तक इस्राएल पर शासन किया. 12 ज़ेबुलूनवासी
एलोन की मृत्यु हुई और उसे ज़ेबुलून देश में अय्जालोन में गाड़ दिया गया. 13
उसके बाद पीराथोनवासी हिल्लेल का पुत्र अबदोन इस्राएल का शासक हुआ.
14 उसके चालीस पुत्र और तीस पोते थे, जो सत्तर गधों पर आना-जाना करते
थे. उसने आठ साल इस्राएल का शासन किया. 15 पीराथोनवासी हिल्लेल के
पुत्र अबदोन की मृत्यु हो गई. उसे एफ्राईम देश के पिराथोन में अमालेकियों के
पहाड़ी इलाके में गाड़ दिया गया.

13

एक बार फिर इस्राएल वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़रों
में गलत था. इस कारण याहवेह ने चालीस सालों के लिए उन्हें
फिलिस्तीनियों के वश में कर दिया. 2 दान के गोत्र से एक ज़ोराहवासी आदमी
था, जिसका नाम मानोहा था. उसकी पत्नी बांझ थी. उससे कोई संतान न हुई थी.
3 इस स्त्री के सामने याहवेह के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, “सुनो! तुम, जो
बांझ हो, जिसके कोई संतान पैदा न हुई है, गर्भधारण करोगी और एक पुत्र
को जन्म दोगी. 4 अब तुम्हें यह सावधानी रखनी होगी कि तुम न तो अंगूर
का रस पीओगी न दाखमधु, और न ही सांस्कारिक रूप से किसी भी अशुद्ध
भोजन खाओगी. 5 क्योंकि तुम्हें याद रखना होगा कि तुम गर्भधारण करके एक
पुत्र को जन्म दोगी. गर्भधारण के समय से ही वह परमेश्वर के लिए नाज़ीर
होगा, इसलिये उसके सिर पर उस्तरा कभी न फेरा जाए. वही इस्राएल को
फिलिस्तीनियों से छुड़ाने में नेतृत्व करेगा.” 6 स्त्री ने जाकर अपने पति को
बताया: “परमेश्वर का एक पुरुष मेरे पास आया था. उसका स्वरूप परमेश्वर के
एक दूत के समान था—बहुत ही भयानक! न तो मैंने उससे यह पूछा कि वह
कहां से आया है, और न ही उसने मुझे अपना नाम बताने की ज़रूरत समझी. 7
उसने मुझे बताया, ‘सुनो! तुम गर्भधारण करके एक पुत्र को जन्म दोगी. अब से
तुम अंगूर का रस, दाखमधु और सांस्कारिक रूप से किसी भी अशुद्ध वस्तु का
सेवन नहीं करोगी, क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक वह बालक परमेश्वर के
लिए नाज़ीर होगा.’” 8 यह सुन मानोहा ने याहवेह से विनती करते हुए कहा,
“प्रभु, आपके द्वारा भेजे गए परमेश्वर के दूत को हमारे पास दोबारा भेज दीजिए,
कि आनेवाले शिशु के लिए हमें क्या-क्या करना सही होगा वह हमें सिखा
सके.” 9 परमेश्वर ने मानोहा की विनती सुन ली, और परमेश्वर का दूत दोबारा
उस स्त्री के पास आया. इस समय वह खेत में बैठी हुई थी. उसका पति मानोहा
उस समय उसके साथ न था. 10 सो वह स्त्री दौड़ी-दौड़ी गई और अपने पति को
इसकी ख़बर दी, “सुनिए, उस दिन जो व्यक्ति मुझे दिखाई दिया था, मुझ पर
दोबारा प्रकट हुआ है.” 11 मानोहा उठकर अपनी पत्नी के साथ चला गया. उस
व्यक्ति के निकट पहुंचकर उसने प्रश्न किया, “क्या आप ही वह हैं, जिसने इस
स्त्री से बातचीत की थी?” “हां, मैं ही हूं.” उसने उत्तर दिया. 12 मानोहा ने आगे
पूछा, “जब आपकी कही हुई बातें पूरी होंगी, मेरे पुत्र की जीवनशैली कैसी
होगी और क्या होगा उसका कार्य?” 13 याहवेह के दूत ने मानोहा को उत्तर
दिया, “मैंने स्त्री से जो कुछ कहा है, वह उसी का ध्यान रखे. 14 वह अंगूर की
किसी उपज को न खाए, न अंगूर का रस पिए न दाखमधु, और न सांस्कारिक
रूप से किसी भी अशुद्ध वस्तु को खाए. ज़रूरी है कि वह मेरे द्वारा दिए गए
आदेशों का पालन करे.” 15 तब मानोहा ने याहवेह के दूत से विनती की, “हम
विनती करके आपको यहां रोकना चाहते हैं कि हम आपके लिए भोजन तैयार
करें.” 16 याहवेह के दूत ने मानोहा से कहा, “मैं रुक तो जाऊंगा, किंतु भोजन
नहीं करूंगा. हां, जब तुम भोजन तैयार कर ही रहे हो, तो इसे याहवेह को
होमबलि चढ़ा देना.” मानोहा को यह बोध ही न था कि वह याहवेह का दूत था.
17 मानोहा ने याहवेह के दूत से पूछा, “आपका नाम क्या है? आपकी कही हुई
बातें पूरी होने पर हम आपका आदर-सत्कार करना चाहते हैं.” 18 याहवेह के
दूत ने उसे उत्तर दिया, “क्यों पूछ रहे हो मेरा नाम, क्या इसलिये कि तुम्हें यह
सब देख हैरानी हो रही है?” 19 इस कारण मानोहा ने उसी चट्टान पर याहवेह
को मेमना और अन्नबलि चढ़ाई. जब मानोहा और उसकी पत्नी यह सब देख ही
रहे थे, याहवेह ने एक अद्भुत काम कर दिखाया: 20 जब वेदी से लपटें आकाश

की ओर उठ रही थी, याहवेह का दूत वेदी की आग की लौ में होकर ऊपर चढ़
गया. यह देख मानोहा और उसकी पत्नी ने दंडवत होकर वंदना की. 21 इसके
बाद याहवेह का दूत उन पर दोबारा प्रकट न हुआ. अब मानोहा को यह समझ
गया कि वह याहवेह का दूत था. 22 मानोहा ने अपनी पत्नी से कहा, “अब
हमारी मृत्यु तय है, हमने परमेश्वर को साक्षात देख लिया है.” 23 किंतु उसकी
पत्नी ने उससे कहा, “यदि याहवेह का उद्देश्य हमारी मृत्यु ही होती तो वह हमारे
द्वारा चढ़ाई होमबलि एवं अन्‍नबलि स्वीकार क्यों करते? या वह क्यों हम पर
यह सब प्रकट करते? अथवा वह हमारे सामने इन सब की घोषणा करते?” 24
उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया, और उसका नाम शिमशोन रखा. बालक बड़ा
हुआ. उस पर याहवेह की कृपादृष्टि थी. 25 उस समय याहवेह का आत्मा उसे
माहानेह-दान में, जो ज़ोराह तथा एशताओल के बीच में है, आत्मा उसे उभारने
लगे.

14 एक समय पर, जब शिमशोन तिमनाह नगर को गया हुआ था, उसने वहां
एक फिलिस्तीनी कन्या देखी. 2 वहां से लौटने पर उसने अपने माता-
पिता से कहा, “तिमनाह में मैंने एक फिलिस्तीनी लड़की देखी है; उससे मेरा
विवाह कर दीजिए.” 3 उसके माता-पिता ने उत्तर में उससे कहा, “तुम्हारे
संबंधियों में, अथवा हमारे सजातियों में क्या कोई भी लड़की नहीं है, कि तुम्हें
ख़तना रहित फिलिस्तीनियों में की पुत्री से विवाह करने की सूझी है?” किंतु
शिमशोन ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरा विवाह उसी से कर दीजिए, मुझे वही भा गई
है.” 4 यद्यपि उसके माता-पिता को यह मालूम न था कि यह याहवेह की योजना
थी, क्योंकि वह फिलिस्तीनियों से बदले का अवसर खोज रहा था, इस समय
फिलिस्ती इस्राएल पर शासन कर रहे थे. 5 शिमशोन अपने माता-पिता के साथ
तिमनाह गया. जब वे तिमनाह के अंगूरों के बगीचों तक पहुंचे, एक जवान शेर
दहाड़ता हुआ उस पर लपका. 6 बड़ी सामर्थ्य के साथ याहवेह का आत्मा उस
पर उतरा. शिमशोन ने उसे इस रीति से फाड़ डाला, जैसे कोई एक मेमने को
फाड़ देता है, जबकि शिमशोन के हाथों में कोई भी हथियार न था. इस काम की
चर्चा उसने अपने माता-पिता से नहीं की. 7 उसने जाकर उस स्त्री से बातचीत
की. वह उसे प्रिय लगी. 8 कुछ समय बाद उस कन्या से विवाह करने के लिए
वह तिमनाह लौटा. शेर का शव देखने के लिए मार्ग से मुड़ा. उसने देखा कि शेर
के शव में मधुमक्खियों का छत्ता तथा उसमें शहद लगा हुआ था. 9 उसने अपने
हाथों में वह शहद ले लिया और उसे खाता हुआ आगे बढ़ गया. जब वह अपने
माता-पिता के पास पहुंचा, उसने उन्हें भी वह शहद दिया और उन्होंने भी उसे
खाया, किंतु शिमशोन ने उन्हें यह न बताया कि उसने यह मधु शेर के शव में से
निकाला था. 10 तब उसका पिता उस स्त्री के घर पर पहुंचा. शिमशोन ने वहां
एक भोज आयोजित किया, जैसा कि वहां के युवकों की रीति थी. 11 जब
उन्होंने देखा और उन्होंने उसके साथ साथ रहने के लिए तीस युवक चुन दिए.
12 शिमशोन ने उनसे कहा, “मैं तुम्हारे विचारने के लिए एक पहेली देता हूं; यदि
तुम विवाहोत्सव के सात दिन के भीतर यह पहेली का समझ बूझ कर मुझे इसका
उत्तर दे दोगे, तो मैं तुम्हें मलमल के तीस बाहरी वस्त्र और तीस जोड़े कपड़े दूंगा.
13 मगर, यदि तुम इसका उत्तर न दे सको, तो तुम्हें मुझे तीस बाहरी वस्त्र और
तीस जोड़े कपड़े देना पड़ेंगे.” उन्होंने उत्तर दिया, “पेश करो अपनी पहेली,
हम सुन रहे हैं.” 14 शिमशोन ने कहा, “खानेवाले में से भोजन, तथा बलवंत में
से मिठास.” तीन दिन बीत गए मगर इस पहेली का उत्तर वे न दे सके. 15 चौथे
दिन उन्होंने शिमशोन की पत्नी से कहा, “अपने पति को फुसलाओ, कि वह उस
पहेली का मतलब हमें बता दे. अगर नहीं, तो हम तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर
को आग लगा देंगे, क्या हमें आमंत्रित करने में तुम्हारी मंशा हमें कंगाल कर देने
की थी? क्या यही सच नहीं?” 16 शिमशोन की पत्नी उसके सामने रोने लगी.
और उसने शिमशोन से कहा, “तुम तो मुझसे नफरत करते हो. तुम्हें मुझसे प्रेम है
ही नहीं. मेरे जाति वाले युवाओं के सामने तुमने पहेली प्रस्तुत की, और मुझे
इसका हल नहीं बताया.” शिमशोन ने साफ़ किया, “देखो, इसका हल तो मैंने
अपने माता-पिता तक को नहीं बताया है, क्या मैं यह तुम्हें बता दूं?” 17 फिर
भी सातों दिन, जब तक विवाहोत्सव चलता रहा, वह रोती रही. अंत में सातवें
दिन शिमशोन ने उसे पहेली का हल बता ही दिया; उसकी पत्नी ने उसे इस सीमा
तक तंग कर दिया था. उसने जाकर अपने जाति वाले युवकों को पहेली का
उत्तर जा सुनाया. 18 सातवें दिन सूरज डूबने के पहले, उन नगरवासियों ने
जाकर शिमशोन से कहा, “क्या हो सकता है शहद से मीठा? कौन है शेर से
अधिक बलवान? “शिमशोन ने उनसे कहा, “यदि तुमने मेरी बछिया से खेत न
जोता होता, तो मेरी पहेली का उत्तर बिन सुलझा ही रहता.” 19 तब बड़ी ही
सामर्थ्य के साथ याहवेह का आत्मा शिमशोन पर उतरी. वह अश्कलोन गया,
तीस व्यक्तियों को मार गिराया, उनका सामान इकट्ठा कर उसने वे कपड़े उन्हें
दिए, जिन्होंने उस पहेली का उत्तर दे दिया था. उसका क्रोध भड़कता हुआ वह
अपने पिता के घर को लौट गया. 20 शिमशोन की पत्नी उसके उस साथी को दे
दी गई, जो उसका मित्र था.

15 कुछ समय बाद, गेहूं की कटनी के समय पर शिमशोन एक मेमना लेकर
अपनी पत्नी से भेंटकरने गया: उसने उसके पिता से कहा, “मुझे अपनी
पत्नी के कमरे में जाने की अनुमति दीजिए.” किंतु उसके ससुर ने उसे अनुमति
नहीं दी. 2 उसके ससुर ने उससे कहा, “मुझे तो यह लगा कि तुम्हें उससे
घोर नफरत हो गई है; इसलिये मैंने उसे तुम्हारे साथी को दे दिया है. सुनो,
क्या उसकी छोटी बहन उससे अधिक सुंदर नहीं है? अपनी पत्नी के स्थान पर
तुम उसकी छोटी बहन को ले लो.” 3 इस पर शिमशोन ने कहा, “अब यदि
फिलिस्तीनियों का कोई नुकसान होता है, तो मुझे दोष न देना.” 4 शिमशोन ने
जाकर तीन सौ लोमड़ियां पकड़ी, दो-दो लोमड़ियों की पूछो को बांधकर उनके
बीच एक-एक मशाल बांध दी. 5 जब उसने मशालों को जला लिया, उसने
लोमड़ियों को फिलिस्तीनियों की खड़ी उपज में छोड़ दिया. इससे उनकी
पुलियां तथा खड़ी हुई उपज जल गई. इसके अलावा उनके अंगूर के बगीचे
और जैतून के बगीचे भी नष्ट होते गए. 6 फिलिस्तीनी पूछताछ करने लगे,
“किसने किया है यह?” और उन्हें बताया गया, “शिमशोन, तिमनी के दामाद ने,
क्योंकि तिमनी ने उसकी पत्नी उसके साथी को दे दी है.” इसलिये फिलिस्तीनी
आए और उसकी पत्नी और ससुर को जला दिया. 7 शिमशोन ने उनसे कहा,
“तुमने जो कदम उठाया है, उसके कारण मैं शपथ खाता हूं कि जब तक मैं तो
इसका बदला नहीं लूंगा, तब तक मैं शांति से नहीं बैठूंगा.” 8 फिर उसने बड़ी
निर्दयता से उनको मार डाला और उसके बाद जाकर एथाम की चट्टान की गुफा
में रहने लगा. 9 फिलिस्तीनियों ने यहूदिया में पड़ाव डाल दिए, और उधर के
लेही नगर पर हमला कर दिया. 10 यहूदिया के रहनेवालों ने उनसे पूछा, “हम
पर हमला क्यों?” उन्होंने उत्तर दिया, “शिमशोन को बांधकर ले जाने के लिए
हम आए हैं, ताकि हम उससे बदला लें.” 11 इसलिये यहूदिया के रहनेवाले तीन
हज़ार लोग एथाम की चट्टान पर जाकर शिमशोन से कहने लगे, “क्या तुम भूल
गए कि फिलिस्तीनी हमारे शासक हैं? तुमने हमारे साथ यह क्या कर डाला है?”
शिमशोन ने उन्हें उत्तर दिया, “जैसा उन्होंने मेरे साथ किया, वैसा ही मैंने भी
उनके साथ किया है.” 12 यहूदिया के रहनेवालों ने उससे कहा, “तुम्हें बंदी
बनाकर फिलिस्तीनियों को सौंप देने के लिए हम यहां आए हैं.” शिमशोन
ने उनसे कहा, “बस, मुझसे शपथ लो, कि तुम मेरी हत्या न करोगे.” 13
उन्होंने उसे आश्वासन दिया, “नहीं, नहीं, हम तुम्हें अच्छी तरह से बांधकर
फिलिस्तीनियों को सौंप देंगे. मगर हम तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे.” तब उन्होंने
शिमशोन को दो नई रस्सियां लेकर बांध दिया और उसे गुफा में से बाहर ले आए.
14 जब वे लेही पहुंचे, फिलिस्तीनी उससे मिलने के लिए चिल्लाते हुए आ गए.

याहवेह का आत्मा सामर्थ्य में शिमशोन पर उतरा. उसकी बांधी गई रस्सियां ऐसी हो गईं जैसे आग में जला हुआ सन. उसके बंधन उसके हाथों से गिर पड़े. **15** उसे वहीं एक गधे के जबड़े की हड्डी मिली, जिसे उसने उठा लिया और उससे एक हज़ार फिलिस्तीनियों को मार डाला. **16** तब शिमशोन ने कहा, “गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने उनके ढेर पर ढेर लगा दिए. गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने एक हज़ार व्यक्तियों को मार दिया.” **17** यह कहकर उसने गधे के जबड़े की हड्डी फेंक दी. वह स्थान रामात-लेही नाम से मशहूर हो गया. **18** तब वह बहुत ही प्यासा हो गया. उसने इन शब्दों में याहवेह की दोहाई दी, “आपने अपने सेवक को यह महान विजय दी है; अब क्या मैं इस प्यास के कारण इन खतना-रहित लोगों द्वारा मारा जाऊंगा?” **19** तब परमेश्वर ने लेही की भूमि के उस गड्ढे को ऐसा फाड़ दिया, कि उसमें से जल निकलने लगा. जब शिमशोन ने उसे पिया, उसमें दोबारा बल आ गया और वह फिर से ताजा हो गया. इस घटना के कारण उसने उस स्थान को एन-हक्कोरे नाम दिया. लेही में यह आज तक बना हुआ है. **20** फिलिस्तीनियों के शासनकाल में शिमशोन ने बीस साल तक इस्राएल पर शासन किया.

16 जब शिमशोन अज्जाह गया हुआ था, वहां उसकी नज़र एक वेश्या पर पड़ी, उसने उसके साथ संबंध बनाए. **2** अज्जावासियों को बताया गया: “शिमशोन यहां आया हुआ है.” यह सुन उन्होंने उस स्थान को घेर लिया और सारी रात नगर के फाटक पर घात लगाए बैठे रहे. सारी रात वे चुपचाप रहे. उनकी योजना थी: “हम सुबह होने का इंतजार करेंगे, और भोर में हम उसकी हत्या कर देंगे.” **3** शिमशोन आधी रात तक सोता रहा, फिर वह उठा, नगर द्वार के पल्लों को तथा दोनों मीनारों को पकड़ा, उन्हें उनकी छड़ों सहित उखाड़कर अपने कंधों पर रखा और उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के सामने है. **4** इसके बाद, कुछ समय में उसे सोरेक घाटी की एक स्त्री से प्रेम हो गया, जिसका नाम दलीलाह था. **5** फिलिस्तीनी के प्रधान दलीलाह से भेंटकरने आए और उसे आज्ञा दी, “उसे फुसला कर यह मालूम करो कि उसकी इस महान शक्ति का राज़ क्या है, और यह भी कि उसे कैसे बांधा जा सकता है, ताकि उसे वश में किया जाए. यह होने पर हमसे हर एक तुम्हें ग्यारह सौ चांदी के सिक्के देगा.” **6** दलीलाह ने शिमशोन से पूछा, “कृपया मुझे बताइए, आपकी महान शक्ति का राज़ क्या है, आपको दबाने के लिए किस प्रकार बांधा जा सकता है?” **7** शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, “यदि वे मुझे सात ऐसी तांतों से बांध दें, जिन्हें सुखाया नहीं गया है, तो मैं निर्बल हो जाऊंगा—किसी भी दूसरे मनुष्य के समान साधारण.” **8** फिलिस्तीनी प्रधानों ने सात नई तांतें लाकर दलीलाह को दे दी, जो सुखाई नहीं गई थी. दलीलाह ने शिमशोन को इनसे बांध दिया. **9** उसने एक कमरे में कुछ व्यक्ति घात में बैठा रखे थे. वह चिल्लाई, “शिमशोन, फिलिस्तीनी तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं!” किंतु शिमशोन ने उन तांतों को ऐसे तोड़ दिया जैसे आग लगते ही धागा टूट जाता है. उसका बल रहस्य ही बना रहा. **10** दलीलाह ने शिमशोन से कहा, “देखिए, आपने मेरे साथ छल किया है. आपने झूठ कहा है. कृपया मुझे बताइए कि आपको किस प्रकार बांधा जा सकता है.” **11** शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, “यदि वे मुझे ऐसी रस्सियों से बांधें, जिनका उपयोग पहले किया नहीं गया है, मैं किसी भी अन्य व्यक्ति के समान निर्बल रह जाऊंगा.” **12** तब दलीलाह ने वैसा ही किया. उसने शिमशोन को नई रस्सियों से बांध दिया. यह करने के बाद वह चिल्लाई, “शिमशोन! फिलिस्तीनी तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं!” ये लोग कमरे में इसकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे. शिमशोन ने अपनी बाहों पर बांधी गई इन रस्सियों को ऐसे तोड़ दिया, मानो उसकी बांहें धागों से बांधी गई हों. **13** दलीलाह ने शिमशोन से कहा, “अब तक मेरे साथ झूठ और छल ही करते रहे हैं. मुझे बताइए आपको बांधा कैसे जा सकता है.” शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, “यदि मेरी सात लटों को बुनकर खूंटी की सहायता से जकड़ दें, तो मैं निर्बल और किसी भी दूसरे व्यक्ति के समान हो जाऊंगा!” **14** सो जब शिमशोन सो रहा था, दलीलाह ने उसकी सात लटों को वस्त्र में बुन दिया और उन्हें खूंटी में फंसा दिया. फिर वह चिल्लाई, “शिमशोन आपको पकड़ने के लिए फिलिस्तीनी आ रहे हैं!” शिमशोन नींद से जाग उठा और करघे की खूंटी समेत वस्त्र को खींचकर ले गया. **15** तब दलीलाह ने शिमशोन से कहा, “यह कैसे संभव है कि आप मुझसे यह कहें, ‘मुझे तुमसे प्रेम है,’ जब आपका हृदय मेरे प्रति सच्चा ही नहीं है? तीन बार आपने मुझसे छल किया है, और मुझसे यह छिपाए रखा है कि आपकी अपार शक्ति का राज़ क्या है.” **16** तब वह उसे हर दिन सताने लगी. वह शिमशोन को इतना मजबूर करने लगी कि शिमशोन की नाक में दम आ गया. **17** सो शिमशोन ने उसके सामने वह सब प्रकट कर दिया, जो उसके हृदय में था. उसने दलीलाह को बताया, “मैं अपनी माता के गर्भ से परमेश्वर के लिए नाज़ीर हूं. मेरे सिर पर कभी भी उस्तरा नहीं लगाया गया है. यदि उस्तरे से मेरे केश साफ़ कर दिए जाएं, तो मैं निर्बल होकर साधारण मनुष्य समान हो जाऊंगा.” **18** जब दलीलाह को यह अहसास हुआ कि शिमशोन ने उस पर अपने हृदय के सारे राज़ बता दिए हैं, उसने फिलिस्तीनी प्रधानों को यह संदेश देते हुए बुलवा लिया, “एक बार और आ जाइए, क्योंकि उसने मुझे सारा राज़ बता दिया है.” तब फिलिस्तीनी प्रधान उसके पास आए और अपने साथ वे सिक्के भी ले आए. **19** उसने शिमशोन को अपने घुटनों पर सुला लिया, एक आदमी को बुलवाकर उसकी सात लटों पर उस्तरा चलवा दिया; शक्ति उसमें से जाती रही और दलीलाह उसे अपने वश में करने लगी! **20** वह चिल्लाई, “शिमशोन, फिलिस्तीनी आपको पकड़ने आ रहे हैं!” वह अपनी नींद से जाग उठा. उसने सोचा, “इसके पहले के अवसरों के समान मैं अब भी एक झटके में स्वयं को आज़ाद कर लूंगा.” किंतु उसे यह मालूम ही न था कि याहवेह उसे छोड़ गए हैं. **21** फिलिस्तीनी आए और उन्होंने उसे पकड़कर उसकी आंखें निकाल डालीं. वे उसे अज्जाह ले गए और उसे कांसे की बेड़ियों में जकड़ दिया. वह कारागार में चक्की चलाने लगा. **22** उसके सिर पर उस्तरा फेरे जाने के बाद अब उसके बाल दोबारा बढ़ने लगे. **23** फिलिस्तीनी प्रधानों ने अपने देवता दागोन के सम्मान में आनंद उत्सव और विशेष बलि का आयोजन किया. उनका विचार था, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथों में सौंप दिया है.” **24** जब लोगों ने शिमशोन को देखा, उन्होंने अपने देवता की स्तुति में कहा, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु को हमारे वश में कर दिया है, वह हमारे देश को नाश करता रहा, उसने हमारी प्रजा के बहुतों को मार गिराया है.” **25** जब वे इस प्रकार के उल्लास में लीन थे, उन्होंने प्रस्ताव किया, “शिमशोन को बुलवाया जाए कि वह हमारा मनोरंजन करे.” तब उन्होंने कारागार से शिमशोन को बुलवाया और वह उनका मनोरंजन करने लगा. उन्होंने शिमशोन को मीनारों के बीच में खड़ा कर दिया. **26** वहां शिमशोन ने उस बालक से कहा, जो उसे चलाने के लिए उसका हाथ पकड़ा करता था, “मुझे उन मीनारों को छूने दो, जिन पर यह भवन टिका है, कि मैं उनका टेक ले सकूं.” **27** इस समय वह भवन स्त्री-पुरुषों से भरा हुआ था, सभी फिलिस्तीनी शासक भी वहीं थे. छत पर लगभग तीन हज़ार स्त्री-पुरुष शिमशोन द्वारा किया जा रहा मनोरंजन का कार्य देख रहे थे. **28** जब शिमशोन ने याहवेह की यह दोहाई दी, “प्रभु याहवेह, कृपा कर मुझे याद कीजिए. परमेश्वर, बस एक ही बार मुझे शक्ति दे दीजिए, कि मैं फिलिस्तीनियों से अपनी दोनो आंखों का बदला ले सकूं.” **29** शिमशोन ने दो बीच के मीनारों को पकड़ लिया, जिन पर पूरा भवन टिका था. उसने उन्हें मजबूती से जकड़ कर उन पर अपना सारा बोझ डाल दिया. उसका दायां हाथ एक खंभे को तथा बायां हाथ दूसरे को पकड़ा हुआ था. **30** शिमशोन ने विचार किया, “सही होगा कि मेरी मृत्यु फिलिस्तीनियों के साथ ही हो जाए!” वह

अपनी पूरी शक्ति लगाकर झुक गया. तब यह हुआ कि वह भवन, प्रधानों और
वहां जमा हुआ लोगों पर आ गिरा. इस प्रकार उनकी गिनती, जिनकी हत्या
शिमशोन ने स्वयं अपनी मृत्यु के साथ की थी, उनसे अधिक हो गई, जिनकी
हत्या शिमशोन ने अपने जीवन भर में की थी. 31 तब उसके भाई और उसके
पिता के परिवार के सभी सदस्य वहां आ गए और उसे वहां से उठाकर ज़ोराह
तथा एशताओल के बीच उसके पिता मानोहा की गुफा की कब्र में ले जाकर रख
दिया. शिमशोन ने बीस साल इस्राएल का शासन किया था.

17 एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह नामक एक व्यक्ति था. 2 उसने
अपनी माता को बताया, "जो ग्यारह सौ चांदी के सिक्के मैंने आपसे
लिए थे, जिनके कारण आपने मुझे सुनाकर शाप दिया था, देख लीजिए, वे मेरे
पास हैं—उन्हें मैंने ही लिये थे." उसकी माता ने कहा, "याहवेह मेरे पुत्र को
आशीषित करें!" 3 उसने ग्यारह सौ सिक्के अपनी माता को लौटा दिए. उसकी
माता ने कहा, "मैं ये सारे सिक्के अपने हाथों से अपनी पुत्र के लिए याहवेह को
भेंट में दे देती हूं, कि इनसे एक खोदी हुई और चांदी से ढाली गई मूर्ति बनाई
जाए. इस काम के लिए अब मैं ये तुम्हें ही सौंप रही हूं." 4 जब उसने अपनी
माता को सिक्के लौटाए, उसकी माता ने दो सौ सिक्के लेकर सुनार को दे दिए,
कि वह उनसे खोदी हुई और चांदी ढाली हुई मूर्ति को बनाए. उस स्त्री ने इसे
मीकाह के घर में स्थापित कर दिया. 5 इस व्यक्ति मीकाह ने एक वेदी बनाकर
रखी थी. उसने एफ़ोद तथा परिवार से संबंधित मूर्तियों को बनाया. उसने अपने
एक पुत्र को पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित किया. 6 उन दिनों में इस्राएल देश में राजा
नहीं होता था. हर एक व्यक्ति वही करता था, जो उसे सही लगता था. 7
यहूदाह गोत्र के यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर में एक जवान लेवी रह रहा था.
8 यह व्यक्ति यहूदिया के बेथलेहेम को छोड़कर, रहने के लायक जगह को
खोजने निकल पड़ा. खोजते हुए वह एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह के घर
तक पहुंच गया. 9 मीकाह ने उससे पूछा, "आप कहां से आ रहे हैं?" उसने
उत्तर दिया, "मैं लेवी हूं, और मैं यहूदिया के बेथलेहेम से आ रहा हूं. जहां कहीं
मुझे सही जगह मिलेगी, मैं वहीं बस जाऊंगा." 10 मीकाह ने उसके सामने
प्रस्ताव रखा, "आप मेरे यहां रह सकते हैं; आप मेरे लिए पिता और पुरोहित की
भूमिका भी कर सकते हैं. मैं आपको वार्षिक दर से दस चांदी के सिक्के, एक
जोड़ा कपड़ा और भोजन दिया करूंगा." 11 लेवी इस पर सहमत हो गया.
जवान लेवी मीकाह के लिए उसके पुत्रों में से एक के समान हो गया. 12
तब मीकाह ने लेवी को शुद्ध किया, जवान लेवी उसके लिए पुरोहित बन गया
तथा वह मीकाह के ही घर में रहने लगा. 13 मीकाह ने कहा, "अब मुझे यह
विश्वास हो गया है कि याहवेह मुझे धनी बना देंगे; क्योंकि एक लेवी मेरे लिए
पुरोहित हो गया है."

18 उन दिनों इस्राएल का कोई राजा न था. उन्हीं दिनों में दान वंशजों ने
अपने बसने के लिए सही ज़मीन की खोज करने शुरू कर दी. अब तक
उन्हें इस्राएल के गोत्रों के बीच कोई ज़मीन नहीं दी गई थी. 2 अतः दान
वंशजों ने अपने पूरे गोत्र की तरफ़ से पांच आदमी भेजे. ये व्यक्ति ज़ोराह तथा
एशताओल नामक नगरों से थे. इन्हें वहां गुप्त रूप से जाकर भेद लेना था. उन्हें
आदेश दिया गया था, "जाओ, उस देश की छानबीन करो और उसका भेद
लो!" वे लोग खोजते हुए एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह के घर तक आ
पहुंचे, और वे वहीं ठहर गए. 3 जब वे मीकाह के घर के पास पहुंचे, उन्होंने
उस जवान लेवी की आवाज पहचान ली. उन्होंने उसे अलग ले जाकर उससे
पूछा, "कौन तुम्हें यहां ले आया है? तुम यहां क्या कर रहे हो? तुम्हारे पास यहां
क्या है?" 4 लेवी ने उन्हें उत्तर दिया, "मीकाह ने मेरे लिए इतना सब किया है!
उन्होंने मुझे नौकरी पर रखा है. अब मैं उनका पुरोहित हूं." 5 उन्होंने लेवी से
विनती की, "कृपया परमेश्वर से यह मालूम कर हमें बता दीजिए, कि हम जिस
काम से निकले हैं, वह पूरा होगा या नहीं." 6 पुरोहित ने उन्हें उत्तर दिया,
"आप लोग शांतिपूर्वक जाइए. आपके इस काम पर याहवेह का अनुग्रह है." 7
वे पांचों वहां से अपनी यात्रा पर निकल गए; और लायीश नामक नगर को
आए; और पाया कि वहां के रहनेवाले सुरक्षा में रह रहे थे. वे सीदोनवासियों के
समान शांत और सुरक्षित थे; पूरे देश में किसी भी चीज़ की कमी न थी; वे
समृद्ध लोग थे. वे सीदोनिवासियों से दूर थे, इस कारण किसी के साथ उनका
कोई लेनदेन न था. 8 जब वे ज़ोराह तथा एशताओल में अपने भाइयों के पास
लौटे, तो उन्होंने उससे पूछा, "क्या समाचार लाए हो?" 9 उन्होंने उत्तर दिया,
"उठिए, चलिए, हम उन पर हमला करें. हमने उस देश का मुआयना कर लिया
है. यह समृद्ध देश है. क्या अब भी आप चुपचाप बैठे रहेंगे? न तो चलने में देरी
कीजिए, न वहां प्रवेश करने में, न उस देश को अपने अधीन करने में. 10 जैसे
ही आप उस देश में प्रवेश करेंगे, आपकी भेंट ऐसे लोगों से होगी, जो आप पर
किसी प्रकार से शक नहीं करेंगे. यह देश बहुत फैला हुआ है. यह देश परमेश्वर
ने आपके अधीन कर दिया है, जहां पृथ्वी की किसी भी वस्तु की कमी नहीं
है." 11 इस तरह दान गोत्र के छः सौ योद्धा ज़ोराह तथा एशताओल से निकल
पड़े. 12 उन्होंने यहूदिया में जाकर किरयथ-यआरीम नामक स्थान पर अपना
पड़ाव खड़ा कर दिया. इस कारण वे आज तक उस जगह को माहानेह-दान के
नाम से जानते हैं; यह किरयथ-जियारिम के पश्चिम में स्थित है. 13 वहां से
निकलकर वे एफ्राईम प्रदेश के पहाड़ी इलाके में मीकाह के घर के पास जा
पहुंचे. 14 तब उन पांच व्यक्तियों ने, जो लायीश का भेद लेने के लिए भेजे गए
थे, अपने साथियों से कहा, "क्या आप जानते हैं कि इन घरों में एक एफ़ोद,
गृह-देवताओं की मूर्तियां, एक खुदी हुई और एक ढाली गई मूर्ति रखी है? इस
कारण अच्छी तरह से सोच-विचार कर लीजिए कि क्या करना सही है." 15 वे
वहां के जवान लेवी वंशज पुरोहित के घर पर गए, जो उसे मीकाह द्वारा दिया
गया था. उन्होंने उसका कुशल समाचार पूछा. 16 दान वंशज छः सौ योद्धा,
प्रवेश फाटक पर खड़े रहे. 17 तब वे पांच पुरुष, जो इसके पहले यहां भेद लेने
आ चुके थे, वहां जाकर अंदर चले गए और जाकर खोदी हुई मूर्ति, एफ़ोद,
गृहदेवता और ढली हुई मूर्ति उठा ली. इस समय पुरोहित उन छः सौ योद्धाओं के
साथ प्रवेश फाटक पर खड़ा हुआ था. 18 जब ये लोग मीकाह के घर में जाकर
खोदी हुई मूर्ति, एफ़ोद, गृहदेवता और ढली हुई मूर्ति उठा रहे थे, पुरोहित ने उनसे
कहा, "आप लोग यह क्या कर रहे हैं?" 19 उन्होंने उससे कहा, "चुप रहो!
अपना हाथ अपने मुंह पर रखो. हमारे साथ चलकर हमारे लिए पिता और
पुरोहित बन जाओ. तुम्हारे लिए क्या अच्छा है; एक ही व्यक्ति के परिवार के
लिए पुरोहित बने रहना या इस्राएल के एक गोत्र और परिवार के लिए पुरोहित
होकर रहना?" 20 पुरोहित ने प्रसन्न हृदय से खोदी हुई मूर्तियां, एफ़ोद और
गृहदेवता की मूर्तियां अपने साथ लीं और उन लोगों के साथ चल दिया. 21 वे
लौट गए. उनके बालक, उनके पशु और उनकी सारी मूल्यवान वस्तुएं उनके
आगे-आगे जा रही थीं. 22 जब वे मीकाह के घर से कुछ दूर जा चुके थे,
मीकाह के पड़ोसी इकट्ठे हुए और वे दान वंशजों के समूह के पास जा पहुंचे.
23 उन्होंने दान वंशजों को पुकारा, जिन्होंने मुड़कर मीकाह से पूछा, "क्या हो
गया है आपको, जो आप इस तरह इकट्ठा हो गए हैं?" 24 मीकाह ने उत्तर दिया,
"आपने मेरे द्वारा बनाए देवता और मेरे पुरोहित को ले लिया है, और आप इन्हें
लेकर चले जा रहे हैं, तो मेरे लिए क्या बचा है? फिर आप यह कैसे पूछ सकते
हैं, 'क्या हो गया है?'" 25 दान वंशजों ने उनसे कहा, "सही यह होगा कि
आपकी आवाज हमारे बीच सुनी ही न जाए, नहीं तो हमारे क्रोधी स्वभाव के
लोग आप पर हमला कर देंगे और आप अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे, तथा
आपके परिवार के लोग भी मारे जाएंगे." 26 यह कहकर दान वंशजों का समूह

आगे बढ़ गया. यहां जब मीकाह ने यह देखा कि दान वंशज उनसे कहीं अधिक
शक्तिशाली हैं, वह अपने घर लौट गया. 27 मीकाह द्वारा बनी हुई वस्तुएं तथा
मीकाह के पुरोहित को साथ लिए हुए दान वंशज लायीश नामक स्थान पर
पहुंचे. यहां के निवासी कोमल स्वभाव के थे, जिन्होंने इन पर कोई भी शक
नहीं किया. दान वंशजों ने उन्हें तलवार से मारकर, उनके नगर में आग लगाकर
उसे भस्म कर दिया. 28 उनकी रक्षा के लिए वहां कोई नहीं आया, क्योंकि यह
नगर सीदोन से दूर बसा हुआ नगर था. इनका किसी से भी लेनदेन न था. यह
घाटी में बसा हुआ नगर था, जो बेथ-रीहोब के पास था. 29 दान वंशजों ने नगर
का नाम अपने मूल पुरुष के नाम पर दान रखा, जो इस्राएल के पुत्र थे. इसके
पहले इस नगर का नाम लायीश था. 30 इसके बाद दान वंशजों ने अपने लिए
खोदी हुई मूर्ति बना ली. मनश्शेह का पौत्र, गेरशोम का पुत्र योनातन तथा उसके
पुत्र दान वंशजों के लिए पुरोहित बन गए तथा इस्राएल के बंधुआई में जाने तक
इसी पद पर रहते हुए सेवा करते रहे. 31 उन्होंने मीकाह की खोदी हुई मूर्ति को
अपने लिए स्थापित कर लिया और यह मूर्ति तब तक रही, जब तक शीलो में
परमेश्वर का भवन बना रहा.

19 उन दिनों में, जब इस्राएल का कोई राजा न था. एफ्राईम के दूर के पहाड़ी
इलाके में एक लेवी निवास करता था. वह यहूदियों के बेथलेहेम नगर से
एक स्त्री ले आया कि वह स्त्री उसकी उप-पत्नी हो जाए. 2 किंतु उसकी उप-पत्नी
ने इस संबंध का विश्वासघात किया. वह उसे छोड़ अपने पिता के यहां यहूदिया
के बेथलेहेम में चली गई जहां वह चार महीने तक रहती रही. 3 इस पर उसका
पति अपने साथ एक सेवक और एक जोड़ा गधे लेकर उससे मिलने निकल
पड़ा, कि उसे प्रेमपूर्वक समझा कर अपने साथ लौटा ले आए. उसने अपने पति
को अपने पिता के घर में ठहरा लिया. जब उसके पिता ने उसके पति को देखा
तो वह आनंदित हुआ. 4 उस लेवी के ससुर ने उसे रोक लिया. लेवी वहां तीन
दिन ठहरा रहा. वे वहां खाते-पीते ठहरे रहे. 5 चौथे दिन वे बड़े तड़के उठ गए,
और लेवी यात्रा के लिए तैयार हुआ. स्त्री के पिता ने अपने दामाद से विनती की,
"थोड़ा भोजन करके शरीर में ताकत आने दो, फिर चले जाना." 6 तब वे दोनों
बैठ गए. उन्होंने साथ साथ खाया पिया. स्त्री के पिता ने लेवी से कहा, "कृपया
यहां और एक रात बिताने के लिए राज़ी हो जाओ, और अपने हृदय को आनंद
करने दो." 7 एक बार फिर वह व्यक्ति यात्रा के लिए निकलने लगा, मगर
उसके ससुर की विनती पर उसे दोबारा वहीं रात बितानी पड़ी. 8 पांचवें दिन
बड़े तड़के वह यात्रा के लिए निकलने लगा. स्त्री के पिता ने उससे विनती की,
"कृपा कर अपना जी ठंडा करो और शाम तक और ठहर जाओ." सो उन दोनों
ने भोजन किया. 9 जब वह व्यक्ति अपने सेवक और उप-पत्नी के साथ यात्रा के
लिए निकलने लगा, स्त्री के पिता, उसके ससुर ने उससे कहा, "देखो, दिन ढल
ही चुका है. अब रात यहीं बिता लो. देख, दिन खत्म ही हो चुका है. अपने जी
को ठंडा कर लो. कल सुबह जल्दी उठकर यात्रा शुरू करना कि तुम अपने घर
पहुंच सको." 10 मगर वह व्यक्ति अब वहां रात बिताने के लिए तैयार न था. सो
वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा. चलते हुए वे येबूस अर्थात् येरूशलेम के पास
एक जगह पर पहुंचे. उसके साथ एक जोड़ा लकड़ी कसे हुए गधे थे, तथा
उसकी उप-पत्नी भी उसके साथ थी. 11 येबूस पहुंचते हुए दिन लगभग ढल ही
चुका था. सेवक ने अपने स्वामी से कहा: "कृपया हम यहीं रुक कर इस नगर
में चले जाएं तथा यबूसियों के इस नगर में रात बिता लें." 12 मगर उसके
स्वामी ने उससे कहा, "हम इन विदेशियों के नगर में आसरा नहीं लेंगे. ये
इस्राएल वंशज नहीं हैं. हां, हम गिबियाह तक चले चलते हैं." 13 अपने सेवक
से उसने कहा, "आओ, हम इनमें से किसी एक जगह को चलें. हम गिबियाह
अथवा रामाह में रात बिताएंगे." 14 इस कारण वे वहां से आगे बढ़ गए, और
गिबियाह पहुंचते हुए सूरज भी ढल गया; गिबियाह बिन्यामिन इलाके में था. 15
वे नगर में प्रवेश के लिए मुड़े कि नगर में ठहर सकें. नगर में प्रवेश कर वे नगर
चौक की खुली जगह में जाकर बैठ गए; क्योंकि किसी ने भी उन्हें रात बिताने
के लिए अपने घर में न बुलाया. 16 खेत में दिन का काम खत्म कर एक बूढ़ा
व्यक्ति उसी ओर आ रहा था. यह व्यक्ति एफ्राईम के पहाड़ी इलाके से ही था
और गिबियाह में रह रहा था, जबकि यह बिन्यामिन वंशजों का नगर था. 17
जब उस बूढ़े व्यक्ति की नज़र नगर चौक में इन यात्रियों पर पड़ी, उसने पूछा,
"आप कहां जा रहे हैं और आप कहां से आए हैं?" 18 उसने उत्तर में कहा,
"हम लोग यहूदिया के बेथलेहेम से एफ्राईम के पहाड़ी इलाके की एक दूर
की जगह को जा रहे हैं, क्योंकि मैं वहीं का रहनेवाला हूं. मैं यहूदिया के
बेथलेहेम नगर को गया हुआ था. ठहरने की जगह देने के लिए किसी ने मुझे
नहीं बुलाया. 19 मेरे पास अपने गधों के लिए चारा और हमारे लिए भोजन
तथा अंगूर का रस है. आपकी सेविका तथा आपके सेवक के साथ जो युवक है,
हमें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है." 20 बूढ़े व्यक्ति ने उनसे कहा,
"शांति तुम पर बनी रहे. मैं तुम्हारी सभी ज़रूरतें पूरी करूंगा, मगर इस खुले
चौक में रात न बिताना." 21 सो वह उन्हें अपने घर ले गया, गधों को चारा
दिया, उन्होंने अपने पांव धोए और भोजन किया. 22 जब वे आनंद कर ही रहे
थे, नगर के कुछ लुच्चे लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया. वे दरवाजे पर
वार कर रहे थे. उन्होंने उस घर के स्वामी, उस बूढ़े व्यक्ति से कहा, "उस
व्यक्ति को बाहर भेजो कि हम उसके साथ शारीरिक संबंध बना सकें." 23 इस
पर घर के स्वामी ने बाहर आकर उनसे कहा, "नहीं, मेरे भाइयो, ऐसा कुकर्म न
करो. यह व्यक्ति मेरा मेहमान है, ऐसा मूर्खता भरा कदम न उठाओ! 24 यहां मेरी
कुंवारी बेटी है और मेरे अतिथि की उप-पत्नी भी. तुम उन्हें भ्रष्ट कर सकते हो
और जैसा तुम्हें सही लगे, कर सकते हो; किंतु इस व्यक्ति के साथ यह शर्मनाक
काम मत करो!" 25 किंतु वे तो उसकी सुनने के लिए तैयार ही न थे. इस कारण
लेवी ने अपनी उप-पत्नी को पकड़कर उनके सामने खड़ा कर दिया. वे सुबह
होने तक पूरी रात उसके साथ बलात्कार तथा दुर्व्यवहार करते रहे. सुबह होने पर
उन्होंने उसे छोड़ दिया. 26 जब सूरज उग ही रहा था, वह स्त्री उस बूढ़े व्यक्ति
के दरवाजे पर जा गिरी, जहां पूरी तरह रोशनी होने तक उसका स्वामी ठहरा
हुआ था. 27 जब इस स्त्री का स्वामी सुबह उठा, उसने द्वार खोले और वह
अपनी यात्रा के लिए निकला, उसने देखा कि उसकी उप-पत्नी सीढ़ियों पर पड़ी
हुई थीं; उसने अपने हाथों से डेवढ़ी थाम रखी थी. 28 लेवी ने उसे पुकारा,
"उठो, अब हमें चलना है." किंतु उसे उससे कोई उत्तर न मिला; वह मर चुकी
थी. लेवी ने उसे गधे पर लाद दिया और अपने घर लौट गया. 29 घर पहुंचकर
उसने चाकू लेकर अपनी उप-पत्नी के शरीर के बारह टुकड़े कर दिए और उन्हें
इस्राएल के सभी प्रदेशों में भेज दिए. 30 जिस किसी ने यह देखा, उसने यही
कहा, "जब से इस्राएल मिस्र देश से निकलकर यहां पहुंचा है, उस दिन से न तो
ऐसा कभी हुआ है, न ही ऐसा कभी देखा गया. इस पर विचार करो. हमें कुछ
करना चाहिए! और उसके विरुद्ध आवाज उठाई जाए!"

20 फलस्वरूप दान से बेअरशेबा तक सारे इस्राएली, जिनमें गिलआदवासी
भी शामिल थे, बाहर निकल आए. उन्होंने एकजुट होकर मिज़पाह में
याहवेह के सामने सभा रखी. 2 लोगों के सभी प्रमुखों और यहां तक के सभी
गोत्रों के प्रमुखों ने, जो तलवार चलाने में निपुण चार लाख पैदल सैनिक थे,
परमेश्वर के लोगों की इस सभा में एक प्रण लिया. 3 यहां बिन्यामिन वंशजों ने
यह सुन लिया था कि इस्राएल वंशज मिज़पाह में इकट्ठा हुए हैं. इस्राएलियों ने
उस लेवी से पूछा, "हमें बताओ, यह कुकर्म हुआ कैसे?" 4 जिस स्त्री की हत्या
कर दी गई थी, उसका पति, जो लेवी था, कहने लगा, "यात्रा करते हुए में
अपनी उप-पत्नी के साथ गिबियाह पहुंचा, जो बिन्यामिन प्रदेश में है, जहां हमें
रात बितानी ज़रूरी हो गई थी. 5 मगर गिबियाह के पुरुष मेरे विरुद्ध चढ़ आए

और उन्होंने रात में मेरे कारण उस घर को घेर लिया. वे तो मेरी हत्या करना
चाह रहे थे, किंतु उन्होंने मेरी उप-पत्नी के साथ बलात्कार किया, फलस्वरूप
उसकी मृत्यु हो गई. **6** मैंने अपनी उप-पत्नी के शव को लिया, उसके टुकड़े
किए और उसके इन टुकड़ों को इस्राएल के सभी प्रदेशों में भेज दिया, क्योंकि
उन्होंने इस्राएल में यह कामुक, शर्मनाक काम किया है. **7** इस्राएल के सभी
वंशजों, इस विषय में अपनी राय और सलाह दीजिए.” **8** सारी प्रजा एकजुट हो
गई. उन्होंने निश्चय किया, “हममें से कोई भी न तो अपने तंबू को और न ही
अपने घर को लौटेगा. **9** गिबियाह के संबंध में हमारा निर्णय है कि पासा फेंकने
के द्वारा हम मालूम करेंगे कि गिबियाह पर आक्रमण के लिए कौन जाएगा. **10**
हम इस्राएल के हर एक गोत्र से सौ में से दस व्यक्ति अपने साथ ले लेंगे, अर्थात्
एक हज़ार में से एक सौ, अर्थात् दस हज़ार में से एक हज़ार, कि वे सेना के
खाने-पीने की व्यवस्था करें. जब वे सेना बिन्यामिन प्रदेश के गेबा में पहुंचे, वे
उन्हें इस्राएल देश में किए गए सभी शर्मनाक कामों के लिए दंड दें.” **11** इस
प्रकार इस्राएल के सारे योद्धाओं ने एकजुट होकर इस नगर को घेर लिया. **12**
तब इस्राएल के गोत्रों ने सारे बिन्यामिन गोत्र के लिए अपने प्रतिनिधियों द्वारा
यह संदेश भेजा, “तुम्हारे बीच यह कैसा दुष्टता भरा काम किया गया है? **13**
गिबियाह में रह रहे उन निकम्मे व्यक्तियों को हमें सौंप दो, कि हम उन्हें मृत्यु
दंड दें, और इस्राएल में हुई इस दुष्टता को मिटा डाले.” मगर बिन्यामिन वंशजों
ने अपने इस्राएली भाइयों की एक न सुनी. **14** बिन्यामिन वंशज अपने-अपने
नगरों से आकर गिबियाह में इकट्ठे हुए कि वे इस्राएल वंशजों से युद्ध करें. **15**
उस दिन विभिन्न नगरों से बिन्यामिन के तलवार चलाने में निपुण जो योद्धा
इकट्ठे हुए, उनकी गिनती छब्बीस हज़ार थी. इनके अलावा गिबियाह नगर के
ही सात सौ योद्धा इनमें शामिल हो गए. **16** इनमें सात सौ शूर योद्धा ऐसे थे, जो
अपने बाएं हाथ के इस्तेमाल के प्रवीण थे. इनमें से हर व्यक्ति एक बाल तक
पर भी अचूक निशाना साध सकता था. **17** दूसरी ओर बिन्यामिन वंशजों के
अलावा इस्राएली सेना में चार लाख कुशल शूर योद्धा थे. **18** सारी इस्राएली
सेना बेथेल गई कि परमेश्वर की इच्छा जान सके. उन्होंने परमेश्वर से पूछा,
“बिन्यामिन वंशजों से युद्ध करने सबसे पहले हमारी ओर से कौन जाएगा?”
याहवेह ने उत्तर दिया, “सबसे पहले यहूदाह का जाना सही होगा.” **19** इसलिये
इस्राएल वंशजों ने बड़े तड़के जाकर गिबियाह के विरुद्ध पड़ाव डाला. **20**
इस्राएल वंशज बिन्यामिन के विरुद्ध युद्ध के लिए निकले. उन्होंने गिबियाह के
विरुद्ध युद्ध के लिए मोर्चा बांध दिया. **21** बिन्यामिन के सैनिक गिबियाह नगर से
बाहर आए और इस्राएल के बाईस हज़ार योद्धाओं को मार गिराया. **22** किंतु
इस्राएल के सैनिकों ने अपना मनोबल बनाए रखते हुए दूसरे दिन भी उसी स्थान
पर मोर्चा लिया, जहां पहले दिन लिया था. **23** इस्राएल वंशज जाकर शाम
तक याहवेह के सामने रोते रहे. उन्होंने याहवेह से पूछा, “क्या हम अपने
बंधु बिन्यामिन वंशजों पर दोबारा हमला करें?” याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया,
“जाकर उन पर हमला करो.” **24** दूसरे दिन इस्राएल वंशजों ने बिन्यामिन
वंशजों पर हमला कर दिया. **25** गिबियाह नगर से बिन्यामिन वंशजों ने बाहर
जाकर इस्राएली सेना के अठारह हज़ार सैनिकों को मार गिराया. ये सभी तलवार
चलाने में कुशल थे. **26** इसलिये इस्राएल वंशज और सभी प्रजा के लोग बेथेल
गए और वहां जाकर रोते रहे. वे सारे दिन शाम तक याहवेह के सामने भूखे रहे.
वहां उन्होंने याहवेह को होमबलि और मेल बलि भेंट की. **27** इस्राएल वंशजों ने
याहवेह से प्रश्न किया. (उन दिनों परमेश्वर के वाचा का संदूक बेथेल में ही था.)
28 अहरोन का पोता, एलिएज़र का पुत्र फिनिहास संदूक के सामने सेवा के लिए
चुना गया था. इस्राएल वंशजों ने याहवेह से पूछा, “क्या हम अब भी अपने बंधु
बिन्यामिन पर हमला करने जाएं या यह विचार त्याग दें?” याहवेह ने उत्तर
दिया, “जाओ, कल मैं उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप दूंगा.” **29** फिर इस्राएल
ने गिबियाह नगर के आस-पास सैनिकों को घात लगाने के लिए बैठा दिया.
30 तीसरे दिन इस्राएल वंशजों ने बिन्यामिन वंशजों पर हमला करने के लिए
गिबियाह के विरुद्ध मोर्चा बांधा, जैसा उन्होंने इसके पहले भी किये थे. **31** जब
बिन्यामिन वंशज उनकी सेना पर हमला करने बाहर आए, पीछे हटती इस्राएली
सेना उन्हें नगर से दूर ले जाने लगी. बिन्यामिन वंशज इस्राएली सैनिकों पर पहले
जैसे ही वार करने लगे. प्रमुख मार्गों पर, जो बेथेल तथा गिबियाह को जाते थे,
तथा खेतों में लगभग तीस इस्राएली सैनिक मार डालें गए. **32** बिन्यामिन वंशजों
का विचार था, “पहले जैसे ही वे हमारे सामने मार गिराए जा रहे हैं.” मगर
इस्राएली सैनिकों ने कहा, “आओ, हम भागना शुरू करें कि उन्हें नगर से दूर
मुख्य मार्गों पर ले आएं.” **33** तब सभी इस्राएली सैनिक अपने-अपने स्थानों से
निकलकर बाल-तामार नामक स्थान पर युद्ध में शामिल हो गए. वे भी, जो घात
लगाए बैठे थे, बाहर निकल आए, वे भी जो मआरोह-गीबा में थे. **34** जब सारे
इस्राएल से चुने गए दस हज़ार सैनिकों ने गिबियाह पर हमला किया, युद्ध बहुत
ही प्रचंड हो गया; मगर बिन्यामिन वंशजों को यह तनिक भी अहसास न था कि
महाविनाश उनके पास आ चुका था. **35** याहवेह ने इस्राएल के सामने बिन्यामिन
को मार गिराया. उस दिन इस्राएल ने पच्चीस हज़ार एक सौ बिन्यामिनी सैनिकों
को मार गिराया. ये सभी तलवार चलाने में निपुण थे. **36** बिन्यामिन वंशजों को
अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी. जब इस्राएली सैनिक बिन्यामिन वंशजों से
पीछे हट गये, क्योंकि वे पूरी तरह उन सैनिकों पर निर्भर थे, जो गिबियाह के
विरुद्ध घात लगाए बैठे हुए थे, **37** तब घात लगाए सैनिक बड़ी ही तेजी से
गिबियाह नगर पर टूट पड़े. वे सारे नगर में फैल गए और पूरे नगर को तलवार से
मार डाला. **38** इस्राएली सैनिकों और घात लगाए सैनिकों के बीच पहले से तय
किया गया संकेत यह था कि वे नगर में आग लगाकर धुएं का बहुत बड़ा बादल
उठाएंगे, **39** तब यह देखते ही इस्राएली सेना का प्रमुख दल को युद्ध-भूमि में
लौट आना है. बिन्यामिन सैनिकों ने लगभग तीस इस्राएली सैनिकों को मार
गिराया था. उनका विचार था, “निश्चित ही पहले के युद्ध के समान ये लोग
हमसे हार चुके हैं.” **40** मगर जैसे ही नगर के ऊपर धुएं का खंभा उठने लगा,
बिन्यामिन वंशजों ने मुड़कर देखा कि पूरा नगर धुएं में आकाश की ओर उठ रहा
है. **41** इस्राएली सैनिक पलट कर वार करने लगे और बिन्यामिन वंशज भयभीत
हो गए, क्योंकि उन्हें साफ़ दिख रहा था कि उन पर महाविनाश आ पड़ा है. **42**
अब वे इस्राएली सेना को पीठ दिखाकर निर्जन प्रदेश की ओर भागने लगे; किंतु
वे विनाश से बच न सके. उन्होंने, जो नगरों से निकल आए थे, उन्हें अपने बीच
में मारना शुरू कर दिया. **43** उनका पीछा करते हुए उन्होंने बिन्यामिन वंशजों
को घेर लिया, बिना रुके गिबियाह के पास पूर्व में, खदेड़ कर उन्हें रौंद डाला.
44 इस युद्ध में बिन्यामिन के अट्ठारह हज़ार सैनिक गिरे. ये सभी वीर योद्धा थे.
45 बाकी पीठ दिखाकर निर्जन प्रदेश में रिम्मोन की चट्टान की ओर भागे, मगर
इनमें से पांच हज़ार मुख्य मार्गों पर पकड़ लिए गए, और उन्हें गीदोम नामक
स्थान पर पकड़कर उनमें से दो हज़ार का वध कर दिया गया. **46** इसलिये उस
दिन वध किए सैनिकों की सारी गिनती पच्चीस हज़ार हो गई. से सभी कुशल
हज़ार सैनिक थे-तलवार चलाने में निपुण. **47** मगर छः सौ सैनिक मुड़कर निर्जन
प्रदेश में रिम्मोन की चट्टान की दिशा में भागे. वे रिम्मोन की चट्टान के निकट
चार महीने तक रहते रहे. **48** तब इस्राएली सेना बिन्यामिन वंशजों के नगरों की
ओर बढ़ें और सभी को तलवार से वध कर दिया. सारे नगर नाश कर दिए गए,
उन्होंने जो भी मिला, नगरवासी और पशुओं सभी का वध कर दिया. उन्हें
जितने नगर मिलते गए, वे उनमें आग लगाते चले गए.

21 इस्राएल वंशजों ने मिज़पाह में यह संकल्प लिया था, “हममें से कोई भी
अपनी पुत्री बिन्यामिन वंशज को विवाह में नहीं देगा.” **2** इसलिये प्रजा
के लोग बेथेल जाकर शाम तक परमेश्वर के सामने बैठे रहे, और ऊंची आवाज

में रोते रहे. 3 वे इसी विषय पर विचार करते रहे थे, “याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर, इस्राएल में क्यों ऐसी स्थिति आ गई, कि आज इस्राएल में से एक गोत्र
मिट गया है?” 4 दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठकर एक वेदी बनाई तथा उस
पर होमबलि तथा मेल बलि भेंट की. 5 इस्राएल वंशजों ने यह पूछताछ की,
“इस्राएल के सारे गोत्रों में से ऐसा कौन है, जो इस सभा में याहवेह के सामने
नहीं आया है?” क्योंकि उन्होंने बड़ी गंभीरता पूर्वक यह शपथ ली थी, “जो
कोई मिज़पाह में याहवेह के सामने उपस्थित न होगा, उसे निश्चित ही प्राण-दंड
दिया जाएगा.” 6 इस्राएल वंशज अपने बंधु बिन्यामिन वंशजों के लिए खेदित
होकर यही विचार कर रहे थे, “आज इस्राएल में से एक गोत्र मिटा दिया गया है.
7 अब वे, जो बाकी रह गए हैं, उनकी पत्नियों के लिए हम क्या करें, क्योंकि
हमने याहवेह के सामने यह शपथ ले रखी है, कि हममें से कोई भी विवाह के
लिए उन्हें अपनी पुत्रियां नहीं देगा?” 8 जब वे पूछताछ कर रहे थे, “इस्राएल
के गोत्रों में वह कौन है, जो मिज़पाह में याहवेह के सामने उपस्थित नहीं हुआ
है?” यह पाया गया कि याबेश-गिलआद से इस सभा के लिए शिविर में कोई भी
उपस्थित न हुआ था. 9 क्योंकि जब गिनती की गई, यह मालूम हुआ कि
याबेश-गिलआद का एक भी निवासी वहां न था. 10 इसलिये इस सभा के द्वारा
बारह हज़ार वीर योद्धाओं के दल को वहां भेजा गया. उनके लिए आदेश था,
“जाओ, और याबेश-गिलआदवासियों को स्त्रियों और बालकों सहित तलवार से
मार डालो. 11 तुम्हें करना यह होगा: तुम्हें हर एक पुरुष को मार गिराना है और
हर एक उस स्त्री को भी, जो पुरुष से संबंध बना चुकी है.” 12 उन्हें याबेश-
गिलआद निवासियों में चार सौ ऐसी कुंवारी कन्याएं मिलीं जिनका किसी पुरुष
से संबंध नहीं हुआ था. इन्हें वे शीलो की छावनी में ले आए, यह कनान देश में
था. 13 तब सारी सभा ने उन बिन्यामिन वंशजों को, जो रिम्मोन चट्टान के क्षेत्र
में आसरा लिए हुए थे, संदेश भेजा और उनके साथ शांति की घोषणा की. 14
तब बिन्यामिन के वे वंशज लौट आए और उन्हें वे कन्याएं दे दी गईं, जिन्हें
याबेश-गिलआद में सुरक्षित रखा गया था. फिर भी कन्याओं की संख्या उनके
लिए पूरी न थी. 15 ये सभी बिन्यामिन गोत्र की स्थिति के लिए दुःखी थे,
क्योंकि याहवेह ने इस्राएल के गोत्रों के बीच फूट पैदा कर दी थी. 16 तब सभा
के प्रमुखों ने विचार-विमर्श किया, “बचे हुए पुरुषों के लिए पत्नियों का प्रबंध
करने के लिए अब क्या किया जाए, क्योंकि बिन्यामिन प्रदेश से स्त्रियों को मारा
जा चुका है?” 17 उन्होंने विचार किया, “बिन्यामिन के बचे हुओं के लिए
उत्तराधिकार का होना ज़रूरी है, कि इस्राएल का एक गोत्र मिट न जाए. 18 यह
तो संभव नहीं है कि हम उन्हें विवाह में अपनी पुत्रियां दे दें. क्योंकि इस्राएल
वंशजों ने यह शपथ ली थी, ‘शापित होगा वह, जो बिन्यामिन वंशजों को
विवाह में अपनी पुत्री देगा.’ 19 इसलिये उन्होंने विचार किया, शीलो में,
जो बेथेल के उत्तर में, याहवेह का सालाना उत्सव होनेवाला है. यह बेथेल से
शेकेम जाते हुए राजमार्ग के पूर्वी ओर लेबोनाह के दक्षिण में है.” 20 उन्होंने
बिन्यामिन वंशजों को आदेश दिया, “जाकर अंगूर के बगीचों में छिप जाओ.
21 इंतजार करते रहना. यह देखना कि जैसे ही शीलो की युवतियां नृत्य में
शामिल होने आएं, तुम अंगूर के बगीचों से बाहर निकल आना, और तुममें
से हर एक शीलो की इन नवयुवतियों में से अपनी पत्नी बनाने के लिए एक
नवयुवती उठा लेना. फिर बिन्यामिन की भूमि पर लौट जाना. 22 फलस्वरूप
उनके पिता और भाई हमारे पास शिकायत लेकर आएंगे. तब हम उन्हें उत्तर देंगे,
‘अब अपनी इच्छा से ही अपनी पुत्रियां उन्हीं के पास रहने दीजिए. युद्ध के
समय हमने बिन्यामिन वंशजों के लिए कन्याएं नहीं छोड़ी, और न ही आपने
अपनी पुत्रियां उन्हें दी, नहीं तो आप दोषी हो जाते.’” 23 बिन्यामिन वंशजों ने
ऐसा ही किया. उन्होंने अपनी गिनती के अनुसार नृत्य करती युवतियों में से
युवतियां उठा लीं और अपने साथ उन्हें ले गए. वे अपने तय किए गए विरासत
में लौट गए. उन्होंने नगरों को दोबारा बनाया और वे उनमें बस गए. 24 इस
समय शेष इस्राएल वंशज वहां से चले गए, हर एक अपने-अपने कुल और
परिवार को, हर एक अपनी-अपनी मीरास को. 25 उन दिनों इस्राएल देश में
राजा नहीं होता था. हर एक व्यक्ति वही करता था, जो उसे सही लगता था.

रूत

1 प्रशासकों के शासनकाल में सारे देश में एक अकाल पड़ा. यहूदिया के
बेथलेहेम नगर का एक व्यक्ति अपनी पत्नी तथा पुत्रों के साथ मोआब देश में
प्रवास करने के लिए चला गया. 2 इस व्यक्ति का नाम एलिमेलेख, उसकी पत्नी
का नाम नावोमी, तथा उसके पुत्रों के नाम महलोन तथा किल्योन थे. ये यहूदाह
के बेथलेहेम के इफ़्राथ परिवार से थे. 3 कुछ समय बाद एलिमेलेख की मृत्यु हो
गई. अब नावोमी अपने पुत्रों के साथ अकेली रह गई. 4 उनके पुत्रों ने मोआब
देश की ही युवतियों से विवाह कर लिया. एक का नाम था ओरपाह और दूसरी
का रूथ. मोआब देश में उनके लगभग दस वर्ष रहने के बाद, 5 महलोन तथा
किल्योन की मृत्यु हो गई. अब नावोमी अपने दोनों पुत्रों तथा पति के बिना
अकेली रह गई. 6 यह पता पड़ने पर कि याहवेह ने अपनी प्रजा को भोजन
देकर उनकी सुधि ली है, नावोमी ने अपनी दोनों बहुओं के साथ मोआब देश से
यहूदिया को लौट जाने का विचार किया. 7 तब जहां वह रह रहीं थी वह स्थान
छोड़कर अपनी बहुओं के साथ यहूदिया के मार्ग पर चल पड़ीं. 8 मार्ग में
नावोमी ने अपनी बहुओं से कहा, “तुम दोनों अपने-अपने मायके लौट जाओ.
याहवेह तुम पर वैसे ही दयालु हों, जैसी तुम मृतकों तथा मुझ पर दयालु रही हो.
9 याहवेह की कृपादृष्टि में तुम्हें अपने-अपने होनेवाले पति के घर में सुख-शांति
प्राप्त हो.” तब नावोमी ने उनको चूमा और वे फफक-फफक कर रोती रहीं. 10
उन्होंने नावोमी को उत्तर दिया, “नहीं, हम आपके साथ, आपके ही लोगों में
जा रहेंगी.” 11 किंतु नावोमी ने उनसे कहा, “लौट जाओ मेरी पुत्रियो, तुम भला
क्यों मेरे साथ जाओगी? क्या अब भी मेरे गर्भ में पुत्र हैं, जो तुम्हारे पति बन
सकें? 12 लौट जाओ मेरी पुत्रियो, अपने घर लौट जाओ, क्योंकि मेरी आयु वह
नहीं रही, कि मैं दोबारा विवाह कर सकूं. यदि मैं यह भी कहूं कि मुझे आशा है,
यदि मैं आज रात विवाह कर गर्भधारण भी कर लूं, 13 तो क्या तुम उनके युवा
होने का इंतजार करोगी? तो क्या तुम तब तक विवाह न करोगी? नहीं, मेरी
पुत्रियो, मेरे हृदय का दुःख बहुत ही गहरा है, क्योंकि स्वयं याहवेह मेरे विरुद्ध हो
गए हैं!” 14 तब वे दोबारा फफक-फफक कर रोने लगीं; फिर ओरपाह ने
अपनी सास को चूमा, और उनसे विदा हो गई, किंतु रूथ ने अपनी सास को न
छोड़ा. 15 नावोमी ने रूथ से कहा, “सुनो, तुम्हारी जेठानी तो अपने लोगों तथा
अपने देवताओं के पास लौट गई है. तुम भी अपनी जेठानी के समान लौट
जाओ.” 16 किंतु रूथ ने उसे उत्तर दिया, “आप मुझे न तो लौट जाने के लिए
मजबूर करें और न आपको छोड़ने के लिए, क्योंकि आप जहां भी जाएंगी, मैं
आपके ही साथ जाऊंगी और जहां आप रहेंगी, मैं वहीं रहूंगी. आपके लोग
मेरे लोग होंगे तथा आपके परमेश्वर मेरे परमेश्वर; 17 जिस स्थान पर आप
आखिरी सांस लें, मैं भी वहीं आखिरी सांस लूं, और वहीं मुझे भी मिट्टी दी
जाए. अब यदि मृत्यु के अलावा मेरा आपसे अलग होने का कोई और कारण
हो, तो याहवेह मुझे कठोर से कठोर दंड दें.” 18 जब नावोमी ने यह देखा कि
रूथ उनके साथ जाने के लिए दृढ़ निश्चयी है, तब उन्होंने रूथ को मजबूर करने
की और कोशिश न की. 19 तब वे आगे चलते-चलते बैथलेहेम पहुंच गई. जब
उन्होंने बेथलेहेम नगर में प्रवेश किया, उन्हें देख नगर में उत्तेजना की लहर दौड़
गई. अचंभे में स्त्रियां पूछने लगीं, “कहीं यह नावोमी तो नहीं?” 20 “मत कहो
मुझे नावोमी! मारा कहो मुझे, मारा! उसने उत्तर दिया, क्योंकि सर्वशक्तिमान ने
मेरे जीवन को कड़वाहट से भर दिया है. 21 मैं यहां से तो भरी पूरी गई थी, किंतु
याहवेह मुझे यहां खाली हाथ लौटा लाए हैं. तब मुझे नावोमी क्यों पुकारा जाए?
जब याहवेह ने ही मुझे यह दंड दिया है, तथा सर्वशक्तिमान द्वारा ही मुझ पर यह
मुसीबत डाली गई है.” 22 इस प्रकार नावोमी मोआब देश से अपनी बहू रूथ के
साथ, जो मोआब की रहनेवाली थी, लौट आई. बेथलेहेम नगर में यह जौ की
कटाई का समय था.

2 नावोमी के पति के बोअज़ नाम के एक रिश्तेदार था. वह एलिमेलेख के
परिवार से एक नामी और धनी व्यक्ति था. 2 मोआबी रूथ ने नावोमी से
पूछा, “क्या आप मुझे अनुमति देंगी कि मैं खेतों में किसी ऐसे व्यक्ति के पीछे
जाकर, जो मुझे इसकी अनुमति दे दे कि गिरी हुई सिल्ला इकट्ठी करूं?”
नावोमी ने उत्तर दिया, “जाओ, मेरी बेटी.” 3 सो रूथ ने खेत में जाकर फसल
काटनेवालों के पीछे-पीछे बालें इकट्ठी करना शुरू कर दिया. संयोग से यह खेत
एलिमेलेख के रिश्तेदार बोअज़ का था. 4 कुछ ही समय बाद, जब बोअज़
बेथलेहेम नगर से वहां खेत में आए, उन्होंने फसल काटनेवालों को नमस्कार
करते हुए उनसे कहा, “याहवेह आपके साथ रहें!” उन्होंने इसके उत्तर में कहा,
“याहवेह की कृपादृष्टि आप पर बनी रहे.” 5 बोअज़ ने फसल काटनेवालों के
प्रभारी से पूछा, “यह युवती कौन है?” 6 फसल काटनेवालों के प्रभारी ने उत्तर
दिया, “यही है वह मोआबी युवती, जो मोआब देश से नावोमी के साथ आई है.
7 उसने मुझसे अनुमति मांगी थी, ‘मुझे काटनेवालों के पीछे-पीछे, पूलियों के
बीच से गिरी हुई सिल्ला इकट्ठी करने दें.’ यह सुबह से आई हुई है और थोड़े से
आराम के अलावा तब से अब तक काम ही कर रही है.” 8 तब बोअज़ ने रूथ
से कहा, “बेटी, ध्यान से सुनो. किसी दूसरे खेत में बालें बीनने न जाना, और न
ही इस खेत से बाहर जाना. बेहतर होगा कि तुम मेरी इन दासियों के पास ही बनी
रहे. 9 यह ध्यान रहे कि वे किस खेत में कटनी कर रही हैं, कि तुम उनके पीछे-
पीछे सिल्ला बीन करते जाना. मैंने अपने दासों को आदेश दिया है कि वे तुम्हें
किसी भी प्रकार का तकलीफ न दें. जब तुम्हें प्यास लगी तो, जाकर दासों द्वारा
भरे गए मटकों से पानी पी लेना.” 10 रूथ ने भूमि तक झुककर दंडवत करते
हुए कहा, “क्या कारण है, जो मुझ विदेशी स्त्री पर आपकी ऐसी कृपादृष्टि हुई,
और आपने मेरी इतनी चिंता की है?” 11 बोअज़ ने उत्तर दिया, “अपने पति की
मृत्यु से लेकर अब तक तुमने अपनी सास के लिए जो कुछ किया है, तथा जिस
प्रकार तुम अपने माता-पिता का घर तथा अपनी मातृभूमि को छोड़कर पूरी तरह
से अनजाने लोगों के बीच आ गई हो, इसका पूरा वर्णन मुझे सुनाया गया है. 12
तुमने जो कुछ किया है, याहवेह तुम्हें उसका प्रतिफल दें, तथा इस्राएल का
परमेश्वर याहवेह ही जिसके पंखों के नीचे तुमने शरण ली है, तुम्हें इसका विपुल
पुरस्कार दें!” 13 रूथ ने उनसे कहा, “महोदय, हालांकि मैं आपकी इन दासियों
के बराबर भी नहीं हूं, आपने मुझ पर कृपादृष्टि की, मुझसे कोमल शब्दों में बातें
की हैं, आपने मुझे प्रोत्साहित किया है.” 14 भोजन के समय बोअज़ ने रूथ से
कहा, “यहां आ जाओ, मेरे साथ भोजन करो, और अपने कौर को सिरके में
डुबोती जाओ.” सो वह फसल काटनेवालों के साथ बैठ गई और बोअज़ ने उसे
भुना हुआ अनाज भी दे दिया, जिसे उसने न केवल भरपेट खाया बल्कि उसके
पास कुछ अन्न बचा भी रह गया. 15 जब वह गिरी हुई बालें इकट्ठी करने के
लिए दोबारा उठी, बोअज़ ने दासों को आज्ञा दी, “यदि वह पूलियों के बीच से
भी इकट्ठा करने लगे, न उसे रोकना और न उसे डांटना. 16 और हां, ऐसा करना,
कुछ बालें पूलियों में से खींचकर भी डाल देना, कि वह उन्हें भी बीनकर इकट्ठा
कर ले.” 17 सो वह शाम तक भूमि पर गिरी हुई बालें इकट्ठी करती रही. जब
उसने दाने अलग किए, उनकी मात्रा लगभग 13 किलो निकली. 18 वह इसे
लेकर नगर में गई, और अपनी सास के सामने यह अन्न तथा उस भोजन को भी
रख दिया, जो उसके तृप्त होने के बाद बचा रह गया था. 19 उसकी सास
ने उससे पूछा, “तुमने बालें कहां से बीनीं? तुम किस जगह पर काम करती
रहीं? धन्य है वह व्यक्ति, जिसने तुम्हारा ध्यान रखा!” तब रूथ ने अपनी सास
को बताया कि उसने किसके साथ काम किया था, “जिस व्यक्ति के यहां मैंने
आज काम किया है, उनका नाम बोअज़ है.” 20 तब नावोमी ने रूथ से कहा,

“याहवेह की कृपादृष्टि उन पर बनी रहे, जो न तो जीवितों को अपनी कृपा से दूर
रखते हैं, और न मरे हुओं को.” नावोमी ने यह भी कहा, “वह व्यक्ति हमारा
नज़दीकी रिश्तेदार है; हमारा एक छुड़ाने वाला भी.” 21 मोआबी रूथ ने आगे
कहा, “इसके अलावा उन्होंने मुझसे यह भी कहा है, ‘इसका ध्यान रखना, कि
तुम कटनी खत्म होने तक मेरे दासों के पास ही रहो.’” 22 तब नावोमी ने
अपनी बहू रूथ से कहा, “मेरी बेटी, यह तुम्हारे भले के लिए ही है कि तुम इन
दासियों के साथ हो, नहीं तो किसी दूसरे के खेत में तुम्हें परेशान किया जा
सकता था.” 23 तो जौ और गेहूं की कटनी खत्म होने तक रूथ बोअज़ की
दासियों के साथ साथ ही बनी रही. वह अपनी सास के साथ ही रहती थी.

3 एक दिन रूथ की सास नावोमी ने रूथ से कहा, “मेरी बेटी, क्या यह मेरी
जवाबदारी नहीं कि मैं तुम्हारा घर बसाने का प्रबंध करूं, कि अब इसमें
तुम्हारा भला हो. 2 सुनो, बोअज़ हमारे रिश्तेदार हैं, जिनकी दासियों के साथ
तुम काम कर रही थी. देखो, आज शाम वह खलिहान में जौ फटकेंगे. 3
सो अच्छी तरह से स्नान करके तैयार हो जा, सबसे अच्छे कपड़े पहनकर
खलिहान में जाना, किंतु ध्यान रहे, जब तक बोअज़ भोजन खत्म न कर लें, तुम
उन्हें अपनी उपस्थिति का अहसास न होने देना. 4 किंतु तुम उस स्थान को
अच्छी तरह से देख लेना, जहां वह सोने के लिए गए हैं. इसके बाद तुम वहां
जाना, और उनके पैरों की चादर उठाकर तुम खुद भी वहीं लेट जाना. इसके
बाद तुम्हारा क्या करना सही है, वही तुम्हें बताएंगे.” 5 “जो जो आपने कहा है,
मैं ठीक वैसा ही करूंगी,” रूथ ने इसके उत्तर में कहा. 6 सो रूथ खलिहान में
गई और वहां उसने ठीक वही किया, जैसा उसकी सास ने उसे कहा था. 7
बोअज़ बहुत ही खुश थे, जब उन्होंने खाना-पीना खत्म किया, वह अनाज के
ढेर के पास सोने के लिए चले गए. तब रूथ दबे पांव वहां आई, और बोअज़ के
पैरों की चादर उठाकर वहां लेट गई. 8 बीच रात में जब बोअज़ ने करवट ली
तो वह चौंक पड़े, कि एक स्त्री उनके पैरों के निकट लेटी हुई थी! 9 उन्होंने
पूछा, “कौन हो तुम?” “मैं रूथ हूं, आपकी दासी.” रूथ ने उत्तर दिया. “आप
हमारे छुड़ानेवाले हैं, सो अपनी दासी को अपने पंखों की शरण प्रदान करें.” 10
“बेटी,” बोअज़ ने इसके उत्तर में कहा, “याहवेह की कृपादृष्टि तुम पर बनी रहे.
समर्पण और निष्ठा की तुम्हारी यह प्रीति तुम्हारी पहले की प्रीति से बढ़कर है.
तुमने यहां के किसी भी धनी या साधारण युवक से विवाह का विचार नहीं
किया. 11 अब, मेरी बेटी, किसी भी विषय की चिंता न करो. तुम्हारी इच्छा के
अनुसार मैं सभी कुछ करूंगा, क्योंकि नगर में सभी को यह मालूम है कि तुम
अच्छे चरित्र की स्त्री हो. 12 यह सही है कि मैं तुम्हारा छुड़ाने वाला हूं, किंतु
इस रीति में एक और व्यक्ति है, जिसका अधिकार मुझसे पहले है. 13 अभी
तुम यहीं ठहरो, सुबह यदि वह व्यक्ति अपना दायित्व पूरा करता है तो बहुत
अच्छा, नहीं तो जीवित याहवेह की शपथ, मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं, कि मैं
तुम्हें छुड़ाऊंगा. सुबह होने तक यहीं सोती रहो.” 14 सो रूथ सुबह होने तक
बोअज़ के पैताने सोती रहीं, किंतु इसके पहले कि उजाला हो और कोई उन्हें
पहचान सके, वह उठ गई. बोअज़ ने उससे कहा, “किसी को यह पता न चले
कि तुम खलिहान में आई थी.” 15 तब बोअज़ ने उससे आगे कहा, “अपनी
ओढ़नी आगे फैलाओ.” सो उसने अपनी ओढ़नी वहां बिछा दी, बोअज़ ने छः
माप जौ उसकी ओढ़नी में डाल दिए और उसे उसके कंधे पर रख दिया, और
वह नगर में चली गयी. 16 जब रूथ अपनी सास के पास पहुंची, नावोमी ने
उससे पूछा, “मेरी पुत्री, बताओ कैसा रहा?” तब रूथ ने अपनी सास को वह
सब बता दिया, जो बोअज़ ने उसके लिए किया था. 17 रूथ ने आगे कहा,
“उन्होंने मुझे ये छः माप जौ भी यह कहते हुए दिए हैं, ‘अपनी सास के पास
खाली हाथ न जाना.’” 18 इस पर नावोमी ने रूथ से कहा, “मेरी पुत्री, अब
धीरज धरकर देखती जाओ कि आगे क्या-क्या होता है. क्योंकि वह व्यक्ति
आज इस विषय को सुलझाए बिना शांत न बैठेगा.”

4 उसी समय बोअज़ नगर द्वार पर जाकर बैठ गए, और जब वहां वह छुड़ाने
वाला आया, जिसका वर्णन बोअज़ रूथ से कर चुके थे, बोअज़ ने उनसे
कहा, “मित्र यहां आइए और मेरे पास बैठिए.” सो वह आकर बोअज़ के पास
बैठ गया. 2 इसके बाद बोअज़ ने नगर के पुरनियों में से दस को भी वहां बुलवा
लिया और उनसे विनती की, “कृपया यहां बैठिए,” सो वे सब बैठ गए. 3 तब
बोअज़ ने उस छुड़ानेवाले से कहा, “नावोमी, जो मोआब देश से लौट आई हैं,
एलिमेलेख, हमारे रिश्तेदार की भूमि, का एक भाग बेच रही हैं.” 4 सो मैं यह
सही समझता हूं कि मैं आपको इसकी सूचना इन शब्दों में दे दूं, “इस ज़मीन को
इन गवाहों की उपस्थिति में तथा हमारे नागरिकों के पुरनियों की उपस्थिति में
खरीद लो. यदि तुम इसको छुड़ाना चाहो, इसको छुड़ा लो. किंतु यदि तुम
छुड़ाना न चाहो, मुझसे कह दो, कि मुझे तुम्हारी इच्छा मालूम हो जाए, क्योंकि
तुम्हारे अलावा इसका और कोई दूसरा छुड़ाने वाला नहीं है. तुम्हारे बाद मैं
छुड़ा सकता हूं.” उस छुड़ानेवाले ने कहा, “मैं इसको छुड़ा लूंगा.” 5 इस पर
बोअज़ ने कहा, “जिस दिन तुम नावोमी से उस ज़मीन को ख़रीदोगे, तुम्हें
मोआबी रूथ को, जो उस मृतक रिश्तेदार की विधवा है, भी मोल लेना पड़ेगा
कि मृतक का नाम इस संपत्ति के साथ बना रह सके.” 6 इस पर उस छुड़ानेवाले
ने कहा, “इस स्थिति में मैं इसको छुड़ाने में असमर्थ हूं, क्योंकि ऐसा करने पर
अपने ही वंश का नुकसान कर बैठूंगा. छुड़ाने का यह अधिकार अब तुम ले लो.
क्योंकि मैं यह छुड़ाने में असमर्थ हूं.” 7 (इस्राएल में पुराने समय से यह प्रथा
चली आ रही थी, कि छुड़ाने की प्रक्रिया में लेनदेन को पक्का करने के प्रमाण
के रूप में छुड़ाने वाला अपना जूता उतारकर दूसरे व्यक्ति को सौंप दिया करता
था. इस्राएल देश में लेनदेन पक्का करने की यही विधि थी.) 8 सो जब उस
छुड़ानेवाले ने बोअज़ से कहा, “तुम स्वयं ही इसको खरीद लो,” उसने अपना
जूता उतारकर बोअज़ को दे दिया. 9 तब बोअज़ ने पुरनियों तथा सभी उपस्थित
लोगों को यह कहा, “आज आप सभी इस बात के गवाह हैं, कि मैंने नावोमी से
वह सब खरीद लिया है, जो एलिमेलेख का तथा किल्योन तथा महलोन का था.
10 साथ ही मैंने महलोन की विधवा मोआबी रूथ को अपनी पत्नी होने के लिए
स्वीकार कर लिया है, कि मृतक की संपत्ति के उत्तराधिकार के लिए संतान
पैदा हो, और उसके जन्मस्थान तथा उनके रिश्तेदारों में से मृतक का नाम
मिटने न पाए. आप सभी आज इसके गवाह हैं!” 11 इस पर नगर द्वार की सारी
भीड़ तथा नगर के पुरनियों ने उत्तर दिया, “हम इसके गवाह हैं. जो स्त्री तुम्हारे
परिवार में प्रवेश कर रही है, याहवेह उसे राहेल तथा लियाह के समान बनाएं,
जो दोनों ही इस्राएल के सारे गोत्रों का मूल हैं. तुम एफ़राथा में सम्पन्न होते
जाओ और बेथलेहेम में तुम्हारा यश फैल जाए. 12 याहवेह द्वारा तुम्हें जो संतान
इस स्त्री से मिले, वह पेरेज़ के समान हों, जो यहूदाह के तामार द्वारा प्राप्त हुए
थे.” 13 बोअज़ ने रूथ से विवाह कर लिया और जब वह उसके पास गया,
याहवेह ने रूथ को गर्भधारण की क्षमता दी, और उसे एक पुत्र पैदा हुआ. 14
स्त्रियां आकर नावोमी से कहने लगी, “धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने आज आपको
छुड़ानेवाले के बिना नहीं छोड़ा. इस्राएल देश में इस छुड़ानेवाले का बड़ा नाम
हो जाए! 15 वह आप में जीवन भर देगा और आपके बुढ़ापे में वही आपका
सहारा होगा, क्योंकि आपकी बहू ने उसे जन्म दिया है, उसका प्रेम आप पर
बहुत ही अपार है, जो आपके लिए सात पुत्रों से कहीं अधिक बढ़कर है.” 16
तब नावोमी ने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और धाय के समान उसकी
देखभाल करने लगी. 17 पड़ोसी स्त्रियों ने बच्चे को एक नाम दिया. उनका
कहना था, “नावोमी को एक बेटा हुआ है!” उनके द्वारा बच्चे को दिया गया
नाम था, ओबेद. यही यिशै का पिता हुआ, जो राजा दावीद के पिता थे. अर्थात्

राजा दावीद के दादा. **18** पेरेज़ की वंशावली इस प्रकार हुई: पेरेज़ हेज़रोन के,
19 हेज़रोन राम के, राम अम्मीनादाब के, **20** अम्मीनादाब नाहशोन के, और
नाहशोन सलमोन के, **21** सलमोन बोअज़ के, बोअज़ ओबेद के, **22** ओबेद
यिशै के और यिशै राजा दावीद के पिता हुए.

1 शमूएल

1 एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में रमाथाइम-ज़ोफ़िम नगर में एलकाना नामक एक
व्यक्ति था. वह एफ्राईमवासी येरोहाम के पुत्र था और येरोहाम एलिहू के,
एलिहू तोहू के तथा तोहू एफ्राईमवासी सूफ़ के पुत्र था. 2 एलकाना की दो पत्नियां
थी; पहली का नाम था हन्नाह और दूसरी का पेनिन्नाह. स्थिति यह थी कि
पेनिन्नाह के तो बच्चे थे, मगर हन्नाह बांझ थी. 3 यह व्यक्ति हर साल अपने
नगर से सर्वशक्तिमान याहवेह की वंदना करने तथा उन्हें बलि चढ़ाने शीलो
नगर जाया करता था. यहीं एली के दो पुत्र, होफ़नी तथा फिनिहास याहवेह के
पुरोहितों के रूप में सेवा करते थे. 4 जब कभी एलकाना बलि चढ़ाता था, वह
बलि में से कुछ भाग अपनी पत्नी पेनिन्नाह तथा उसकी संतान को दे दिया करता
था. 5 मगर वह अपनी पत्नी हन्नाह को इसका दो गुणा भाग देता था, क्योंकि
उन्हें हन्नाह ज्यादा प्रिय थी, यद्यपि याहवेह ने हन्नाह को संतान पैदा करने की
क्षमता नहीं दी थी. 6 हन्नाह की सौत उसे कुढ़ाने के उद्देश्य से उसे सताती रहती
थी. 7 यह काम हर साल चलता रहता था. जब कभी हन्नाह याहवेह के मंदिर
जाती थी, पेनिन्नाह उसे इस प्रकार चिढ़ाती थी, कि हन्नाह रोती रह जाती थी,
तथा उसके लिए भोजन करना मुश्किल हो जाता था. 8 यह देख उसके प्रति
एलकाना ने उससे कहा, “हन्नाह, तुम क्यों रो रही हो? तुमने भोजन क्यों छोड़
रखा है? इतनी दुःखी क्यों हो रही हो? क्या मैं तुम्हारे लिए दस पुत्रों से बढ़कर
नहीं हूं?” 9 शीलो में एक मौके पर, जब वे खा-पी चुके थे, हन्नाह उठकर
याहवेह के सामने चली गई. इस समय पुरोहित एली याहवेह के मंदिर के द्वार पर
अपने आसन पर बैठे थे. 10 जब हन्नाह याहवेह से प्रार्थना कर रही थी, वह मन
में बहुत ही दुःखी थी. उसका रोना भी बहुत तेज होता जा रहा था. 11 प्रार्थना
करते हुए उसने यह शपथ की: “सर्वशक्तिमान याहवेह, यदि आप अपनी दासी
की व्यथा पर करुणा-दृष्टि करें, मुझे स्मरण करें, तथा मेरी स्थिति को भुला न दें
और अपनी दासी को पुत्र दें, तो मैं उसे आजीवन के लिए आपको समर्पित कर
दूंगी. उसके केश कभी काटे न जाएंगे.” 12 जब वह याहवेह से प्रार्थनारत थी,
एली उसके मुख को ध्यान से देख रहे थे. 13 हन्नाह यह प्रार्थना अपने मन में
कर रही थी. यद्यपि उनके ओंठ हिल रहे थे, उसका स्वर सुनाई नहीं देता था.
यह देख एली यह समझे कि हन्नाह नशे में है. 14 तब उन्होंने हन्नाह से कहा,
“और कब तक रहेगा तुम पर यह नशा? बस करो अब यह दाखमधु पान.” 15
इस पर हन्नाह ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरे प्रभु, स्थिति यह नहीं है, मैं बहुत ही
गहन वेदना में हूं. न तो मैंने दाखमधु पान किया है, और न ही द्राक्षारस. मैं अपनी
पूरी वेदना याहवेह के सामने उंडेल रही थी. 16 अपनी सेविका को निकम्मी स्त्री
न समझिए, क्योंकि यहां मैं अपनी घोर पीड़ा और संताप में यह सम्भाषण कर
रही थी.” 17 इस पर एली ने उससे कहा, “शांति में यहां से विदा हो. इस्राएल
के परमेश्वर तुम्हारी अभिलाषित इच्छा पूरी करें.” 18 हन्नाह ने उत्तर दिया,
“आपकी सेविका पर आपका अनुग्रह बना रहे.” यह कहते हुए अपने स्थान को
लौट गई और वहां उसने भोजन किया. अब उसके चेहरे पर उदासी नहीं देखी
गई. 19 प्रातः उन्होंने जल्दी उठकर याहवेह की आराधना की और वे अपने घर
रामाह लौट गए. एलकाना तथा हन्नाह के संसर्ग होने पर याहवेह ने उसे याद
किया. 20 सही समय पर हन्नाह ने गर्भधारण किया और एक पुत्र को जन्म
दिया. उसने यह याद करते हुए शमुएल नाम दिया, “मैंने याहवेह से इसकी
याचना की थी.” 21 एलकाना सपरिवार याहवेह को अपनी वार्षिक बलि
चढ़ाने और शपथ पूरी करने चला गया, 22 मगर हन्नाह उसके साथ नहीं गई.
उसने अपने पति से कहा, “जैसे ही शिशु दूध पीना छोड़ देगा, मैं उसे ले जाकर
याहवेह के सामने प्रस्तुत करूंगी और फिर वह तब से हमेशा वहीं रहेगा.” 23
उसके पति एलकाना ने उससे कहा, “तुम्हें जो कुछ सही लगे वही करो. शिशु
के दूध छोड़ने तक तुम यहीं ठहरी रहो. याहवेह अपने वचन को पूरा करें.” तब
हन्नाह घर पर ही ठहरी रहीं और बालक का दूध छुड़ाने तक उसका पालन
पोषण करती रहीं. 24 जब बालक ने दूध पीना छोड़ दिया, और बालक आयु में
कम ही था, हन्नाह उसे और उसके साथ तीन बछड़े दस किलो आटा तथा एक
कुप्पी भर अंगूर का रस लेकर शीलो नगर में याहवेह के मंदिर को गई. 25 जब
वे बछड़ों की बलि चढ़ा चुके, वह बालक को एली के पास ले गई. 26 हन्नाह
ने एली से कहा, “मेरे स्वामी, आपके जीवन की शपथ, मैं वही स्त्री हूं, जो
आपकी उपस्थिति में एक दिन याहवेह से प्रार्थना कर रही थी. 27 मैंने इस पुत्र
की प्राप्ति की प्रार्थना की थी, और याहवेह ने मेरी विनती स्वीकार की है. 28
अब मैं यह बालक याहवेह को ही समर्पित कर रही हूं. आज से यह बालक
आजीवन याहवेह के लिए समर्पित है.” फिर उन सभी ने वहां याहवेह की स्तुति
की.

2 फिर हन्नाह ने यह प्रार्थना गीत गाया: “मेरा हृदय याहवेह में आनंद कर रहा
है; याहवेह ने मेरे सींग को ऊंचा किया है, मैं ऊंचे स्वर में शत्रुओं के विरुद्ध
बोलूंगी, क्योंकि मैं अपनी जय में आनंदित हूं. 2 “पवित्रता में कोई भी याहवेह
समान नहीं है; आपके अलावा दूसरा कोई भी नहीं है; हमारे परमेश्वर समान
चट्टान कोई नहीं. 3 “घमण्ड की बातें अब खत्म कर दी जाए, कि कोई भी
अहंकार भरी बातें तुम्हारे मुंह से न निकले, क्योंकि याहवेह वह परमेश्वर हैं, जो
सर्वज्ञानी हैं, वह मनुष्य के कामों को परखते रहते हैं. 4 “वीरों के धनुष तोड़
दिए गए हैं, मगर जो कमजोर थे उनका बल स्थिर हो गया. 5 वे, जो भरपेट
भोजन कर संतुष्ट रहते थे, वे अब मजदूरी पाने के लिए काम ढूंढ़ रहे हैं. मगर
अब, जो भूखे रहा करते थे, भूखे न रहे. वह जो बांझ हुआ करती थी, आज
सात संतान की जननी है, मगर वह, जो अनेक संतान की माता है, उसकी
स्थिति दयनीय हो गई है. 6 “याहवेह ही हैं, जो प्राण ले लेते तथा जीवनदान देते
हैं; वही अधोलोक में भेज देते, तथा वही जीवित करते हैं. **(Sheol h7585)** 7
याहवेह ही कंगाल बनाते, तथा वही धनी बनाते हैं; वही गिराते हैं और वही
उन्नत करते हैं. 8 वह निर्धन को धूलि से उठाते हैं, वही दरिद्रों को भस्म के ढेर
से उठाकर उन्नत करते हैं; कि वे प्रधानों के सामने बैठ सम्मानित किए जाएं,
तथा वे ऊंचे पद पर बैठाए जाएं. “पृथ्वी की नींव याहवेह की है; उन्होंने इन्हीं
पर पृथ्वी की स्थापना की है. 9 वह अपने श्रद्धालुओं की रक्षा करते रहते हैं,
मगर दुष्टों को अंधकार में निःशब्द कर दिया जाता है. “क्योंकि कोई भी व्यक्ति
अपने बल के कारण विजयी नहीं होता; 10 याहवेह के विरोधी चकनाचूर कर
दिए जाएंगे. याहवेह स्वर्ग से उनके विरुद्ध बिजली गिराएंगे; याहवेह का न्याय
पृथ्वी के एक छोर से दूसरे तक होता है. “वह अपने राजा को शक्ति-सम्पन्न
करते हैं, तथा अपने अभिषिक्त के सींग को ऊंचा कर देते हैं.” 11 यह सब होने
के बाद एलकाना रामाह नगर में अपना घर लौट गए, मगर वह बालक पुरोहित
एली की उपस्थिति में रहकर याहवेह की सेवा करने लगा. 12 एली के पुत्र बुरे
चरित्र के थे. उनके लिए न तो याहवेह के अधिकार का कोई महत्व था; 13
और न ही बलि चढ़ाने की प्रक्रिया में जनसाधारण के साथ पुरोहितों की सामान्य
रीति का. होता यह था कि जब बलि चढ़ाई जा चुकी थी, और बर्तन में मांस
उबाला जा रहा था, पुरोहित का सेवक एक तीन तरफा कांटा लिए हुए बर्तन के
निकट आता था, 14 वह इसे बर्तन में डालकर चुभोता था और जितना मांस तीन
तरफा कांटा में लगा हुआ आता था, उसे पुरोहित अपने लिए रख लेता था. ऐसा
वे शीलो नगर में आए सभी इस्राएलियों के साथ करते थे. 15 यहां तक कि
सांस्कारिक रीति से चर्बी के जलाए जाने के पहले ही पुरोहित के सेवक आकर
बलि चढ़ाने वाले व्यक्ति को आदेश देते थे, “बर्तन में डाले जाने के पहले ही
पुरोहित के लिए निर्धारित मांस हमें कच्चा ही दे दो कि उसे भूनकर प्रयुक्त किया
जा सके.” 16 यदि बलि अर्पित करनेवाला व्यक्ति उत्तर में यह कहता था,

“ज़रा वसा तो जल जाने दो, फिर जो चाहे वह अंश ले लेना,” वे कहते थे,
“नहीं, यह तो हम अभी ही ले जाएंगे; यदि नहीं दोगे, तो हम ज़बरदस्ती ले
जाएंगे.” 17 याहवेह की दृष्टि में यह बहुत ही गंभीर पाप था; क्योंकि ऐसा करते
हुए वे याहवेह को चढ़ाई गई बलि का अपमान कर रहे थे. 18 इस समय शमुएल
याहवेह की उपस्थिति में रहते हुए सेवा कर रहे थे. वह पुरोहितों के समान ही
वस्त्र धारण करते थे. 19 जब उनकी माता अपने पति के साथ वार्षिक बलि
चढ़ाने के लिए वहां आती थी, वह बालक शमुएल के लिए नियमित रूप से ऐसे
वस्त्र बनाकर लाया करती थी. 20 एलकाना तथा उनकी पत्नी के लिए एली इस
प्रकार के आशीर्वाद दिया करते थे: “याहवेह तुम्हारे लिए इस स्त्री के द्वारा संतान
प्रदान करें, कि जिस बालक को इसने याहवेह को समर्पित किया है, उसका
खालीपन भर जाए.” तब वे अपने घर लौट जाते थे. 21 तब याहवेह ने अपनी
कृपादृष्टि में हन्नाह की सुधि ली. उसने गर्भधारण किया और उनके तीन पुत्र और
दो पुत्रियां पैदा हुए. बालक शमुएल याहवेह के भवन में विकसित होते चले गए.
22 इस समय एली बहुत ही बूढ़े हो चुके थे. उन्हें इसकी सूचना दी जा चुकी थी
कि अपने पुत्र इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं और वे उन स्त्रियों के साथ
शारीरिक संबंध भी करते थे, जिन्हें मिलाप तंबू के प्रवेश पर सेवा के लिए
नियुक्त किया जाता था. 23 एली ने अपने पुत्रों से कहा, “तुम ये सब क्यों कर
रहे हो? तुम्हारे इन सभी बुरे कामों की ख़बरें मुझे सभी के द्वारा मिल रही हैं. 24
मेरे पुत्रो, यह गलत है. आज याहवेह की प्रजा में तुम्हारे किए हुए कामों की
ख़बर जो फैली है, वह ठीक नहीं है. 25 यदि एक व्यक्ति किसी दूसरे के विरुद्ध
पाप करे, तो उसके लिए परमेश्वर द्वारा विनती संभव है; मगर यदि कोई याहवेह
ही के विरुद्ध पाप करे, तब उसकी विनती के लिए कौन बाकी रह जाता है?”
मगर एली के पुत्रों को उनके पिता का तर्क अस्वीकार ही रहा, क्योंकि याहवेह
उनके प्राण लेने का निश्चय कर चुके थे. 26 इस समय बालक शमुएल बढ़ता जा
रहा था. उस पर याहवेह की कृपादृष्टि तथा लोगों का प्रेम बना था. 27 परमेश्वर
द्वारा भेजा हुआ एक व्यक्ति एली के पास आया और उनसे कहा, “यह याहवेह
का संदेश है: ‘क्या मैंने तुम्हारे पूर्वजों पर अपने आपको साफ़-साफ़ प्रकट नहीं
किया था, जब वे मिस्र देश में फ़रोह के परिवार के अधीन थे? 28 इस्राएल के
सारा गोत्रों में से मैंने तुम्हारे गोत्र को अपना पुरोहित होने के लिए नामित किया
कि वे मेरी वेदी पर बलि अर्पण करें, उस पर धूप जलाएं तथा मेरे सामने पुरोहितों
के लिए निर्धारित पुरोहित कपड़ा, एफ़ोद पहनकर मेरे सामने उपस्थित हुआ
करें. मैंने ही तुम्हारे पूर्वजों को यह आज्ञा दी कि इस्राएली प्रजा द्वारा अर्पित
अग्निबलि का हिस्सा तुम्हें दे दी जाएं. 29 फिर क्या कारण है कि मेरे आवास से
संबंधित जिन बलियों तथा भेटों का मैंने आदेश दिया था, तुम उनकी अवहेलना
कर रहे हो? मेरी प्रजा इस्राएल द्वारा अर्पित सभी भेटों के सर्वोत्तम अंशों को
खा-खाकर वे स्वयं पुष्ट हुए जा रहे हैं! यह करते हुए तुमने मेरी अपेक्षा अपने
पुत्रों को अधिक सम्मान दिया है?’ 30 “इसलिये याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
की यह घोषणा, ‘मैंने यह अवश्य कहा था कि तुम्हारा वंश तथा तुम्हारे पूर्वजों
का वंश सदा-सर्वदा मेरी सेवा करता रहेगा,’ मगर अब याहवेह की यह वाणी है,
‘अब मैं यह कभी न होने दूंगा! क्योंकि मैं उन्हें ही सम्मान दूंगा, जो मुझे सम्मान
देते हैं, तथा जो मुझे तुच्छ मानते हैं, वे शापित हो जाएंगे. 31 निकट हैं वे दिन,
जब मैं न केवल तुम्हारा, परंतु तुम्हारे पिता के संपूर्ण वंश का बल शून्य कर
दूंगा, यहां तक कि तुम्हारे परिवार में कोई भी व्यक्ति कभी भी बुढ़ापे तक नहीं
पहुंचेगा. 32 तब तुम पीड़ित होकर धुंधली आंखों से इस्राएल को दी जा रही
समृद्धि को स्वयं देखोगे. तुम्हारे परिवार में कभी भी कोई व्यक्ति बूढ़ा न हो
सकेगा. 33 फिर भी तुम्हारे परिवार के जो सदस्य को मैं वेदी की सेवा से वंचित
न करूंगा, वह अपने हृदय की दारुण वेदना में रोते-रोते अपने नेत्रों की ज्योति
खो बैठेगा. तुम्हारे सभी वंशज मनुष्यों द्वारा चलाई तलवार से घात किए जाएंगे.
तुम्हारे परिवार के हर एक व्यक्ति का निधन जीवन के जवानी में ही हो जाएगा.
34 “‘तुम्हारे लिए इसकी पुष्टि का चिन्ह यह होगा कि तुम्हारे दोनों पुत्रों, होफ़नी
तथा फिनिहास में होगी: दोनों एक ही दिन में मर जाएंगे. 35 जब यह सब हो
जाएगा, तब मैं अपने लिए एक विश्वसनीय पुरोहित को तैयार करूंगा. वह मेरे
हृदय और आत्मा की अभिलाषा पूर्ण करेगा. उसके लिए मैं उसके वंश को
स्थिरता प्रदान करूंगा. वही सदा-सर्वदा मेरे चुने हुए का पौरोहित्य करता रहेगा.
36 तुम्हारे परिवार में जो कोई शेष रह जाएगा, वह उसके सामने झुककर उससे
सिर्फ चांदी के एक सिक्के के लिए या रोटी के एक टुकड़े के लिए विनती
करेगा. हर एक की याचना यह होगी, “मुझे पुरोहित के काम में लगा लीजिए,
कि कम से कम मैं रोटी का एक टुकड़ा तो खा सकूं.”’”

3 उस समय बालक शमुएल एली के सामने याहवेह की सेवा कर रहा था.
उन दिनों याहवेह का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलते थे. 2 यह वह
स्थिति थी, जब एली के आंखों की रोशनी कम हो रही थी; तब वह स्पष्ट
देखने में असमर्थ था, उस समय वह अपने कमरे में लेटा हुआ था. 3 शमुएल
भी याहवेह के मंदिर में विश्राम कर रहा था. वही परमेश्वर का संदूक था और
परमेश्वर का दीप अब तक बुझा नहीं था. 4 याहवेह ने शमुएल को पुकारा.
शमुएल ने उत्तर दिया, “आज्ञा दीजिए, मैं यहां हूं.” 5 और वह दौड़कर एली के
पास जा पहुंचे और कहने लगे, “आपने मुझे पुकारा है, मैं हूं यहां.” मगर
एली ने उन्हें उत्तर दिया, “नहीं तो; मैंने तुम्हें नहीं पुकारा. जाओ सो जाओ.”
शमुएल जाकर सो गए. 6 तब याहवेह ने शमुएल को पुनः पुकारा, “शमुएल!”
तब शमुएल उठकर एली के पास गए और कहा, “आपने मुझे पुकारा है, मैं यहां
हूं.” मगर एली ने उससे कहा, “मैंने तुम्हें नहीं पुकारा, मेरे पुत्र जाओ, जाकर
सो जाओ.” 7 शमुएल को अब तक याहवेह का अनुभव नहीं था, और न ही
अब तक उन पर याहवेह के संदेश का कोई प्रकाशन ही हुआ था. 8 अब
याहवेह ने तीसरी बार पुकारा, “शमुएल!” तब वह उठा और उठकर एली के
पास गया और उनसे कहा, “मैं आ गया; आपने मुझे पुकारा है.” तब एली को
यह अहसास हुआ कि यह याहवेह है, जो शमुएल को पुकार रहे हैं. 9 तब
एली ने शमुएल से कहा, “जाकर सो जाओ. जब वह तुम्हें पुकारे तो कहना,
‘याहवेह, आप कहिए. आपका सेवक सुन रहा है.’” तब शमुएल अपने बिछौने
पर जाकर लेट गए. 10 तब याहवेह आए, शमुएल के निकट खड़े हुए और
पहले जैसे पुकारा, “शमुएल! शमुएल!” शमुएल ने उत्तर दिया, “आप कहिए,
आपका सेवक सुन रहा है.” 11 याहवेह ने शमुएल से कहा, “सुनो, मैं इस्राएल
राष्ट्र में कुछ ऐसा करने पर हूं, कि जो कोई उसके विषय में सुनेगा, उसके दोनों
कान झनझना उठेंगे. 12 उस दिन मैं एली के विरुद्ध शुरू से लेकर अंत तक वह
सब करूंगा, जो मैंने उसके परिवार के विषय में कहा है. 13 क्योंकि मैं उसे यह
सूचित कर चुका हूं, कि जिस अपराध के विषय में उसे पूरा ज्ञान था, उसके
लिए मैं उसके परिवार को स्थायी दंड दूंगा; क्योंकि उसके पुत्र परमेश्वर का
अपमान करते रहे हैं; फिर भी एली ने उन्हें नहीं रोका. 14 तब एली के परिवार
के संबंध में मैंने यह शपथ ली है, कि एली के परिवार का अपराध का प्रायश्चित
कभी भी, न तो किसी बलि से, और न किसी भेंट से हो सकेगा.” 15 शमुएल
प्रातःकाल तक अपने बिछौने पर लेटा रहा. फिर उसने याहवेह के भवन के द्वार
खोल दिया. रात के दिव्य दर्शन के विषय में एली को बताने में उसे भय लग रहा
था, 16 मगर एली ने उसे पुकारा, “शमुएल, मेरे पुत्र.” शमुएल ने उत्तर दिया,
“आज्ञा दीजिए, मैं यहां हूं.” 17 “क्या कहा याहवेह ने?” एली ने उससे पूछा.
“मुझसे कुछ भी न छुपाना. जो उन्होंने तुमसे कहा है उसमें से यदि तुम मुझसे
कुछ भी छिपाओ, परमेश्वर तुम्हें कठोर से कठोर दंड दें.” 18 तब शमुएल ने
उन्हें सब कुछ बता दिया, कुछ भी नहीं छिपाया. यह सब सुन एली ने कहा,
“वह याहवेह हैं; जो कुछ उन्हें सही लगे, करें.” 19 शमुएल विकास होता गया;

उस पर याहवेह की विशेष कृपादृष्टि थी तब उसका कोई भी वक्तव्य कभी
निरर्थक सिद्ध नहीं हुआ. 20 दान प्रदेश से लेकर बेअरशेबा तक सारा इस्राएल
राष्ट्र को यह पता चल गया कि शमुएल याहवेह द्वारा समर्थित भविष्यद्वक्ता हैं.
21 एक बार फिर याहवेह ने शीलो नगर में अपना दर्शन दिया, क्योंकि शीलो
नगर में ही याहवेह ने अपने वचन द्वारा स्वयं को शमुएल पर प्रकाशित किया
था.

4 शमुएल का वचन सारे इस्राएल राष्ट्र में पहुंच जाता था. यह वह समय था,
जब इस्राएलियों को फिलिस्तीनियों से युद्ध करने जाना पड़ा. उन्होंने एबेन-
एज़र नामक स्थान पर अपनी छावनी डाली तथा फिलिस्तीनियों ने अफेक
नामक स्थान पर. 2 फिलिस्तीनी इस्राएल के विरुद्ध मोर्चा बांधकर आगे बढ़े और
जब युद्ध उग्र हुआ, इस्राएली फिलिस्तीनियों के सामने हार गए. उस समय युद्ध-
भूमि में लगभग चार हज़ार इस्राएली मारे गए. 3 जब सेना लौटकर छावनी में
आई, इस्राएलियों के पुरनियों ने विचार किया, “क्या कारण है कि याहवेह ने
आज हमें फिलिस्तीनियों से हार जाने दिया? ऐसा करें, हम शीलो से याहवेह की
वाचा का संदूक ले आते हैं. संदूक के हमारे साथ रहने पर फिलिस्तीनी हमें हरा
न सकेंगे.” 4 तब कुछ लोगों को शीलो नगर भेजा गया कि वे सर्वशक्तिमान
याहवेह परमेश्वर जो करूबों के बीच विराजमान हैं, उनकी वाचा के संदूक ले
आएं. साथ एली के दो पुत्र होफ़नी और फिनिहास भी आये. 5 जब याहवेह की
वाचा का संदूक छावनी में पहुंचा, सारे इस्राएलियों ने उल्लास में ऐसा ऊंचा
शब्द किया, कि धरती कांप उठी. 6 जब फिलिस्तीनियों ने इस हर्षनाद को
सुना, वे विचार करने लगे, “इब्रियों की छावनी में यह शोर क्या है?” जब उन्हें
यह अहसास हुआ कि शिविर में याहवेह का संदूक आ गया है, 7 फिलिस्तीनी
भयभीत हो कहने लगे, “शिविर में कोई देवता उतर आया है.” वे यह भी कहने
लगे, “यह एक विपत्ति है हम पर! इसके पहले ऐसा कुछ देखा-सुना नहीं गया.
8 विपत्ति है हम पर! किसमें सामर्थ्य है जो हमें इन बलशाली देवताओं से छुड़ा
सके? ये ही हैं वे देवता, जिन्होंने मरुभूमि में मिस्रियों पर सब प्रकार की मुसीबतों
का प्रहार किया था. 9 फिलिस्तीनियों, पुरुषार्थ करो. साहस न छोड़ो. ऐसा न हो
कि तुम्हें इब्रियों के दास बनकर रहना पड़े, ठीक जैसे वे तुम्हारे दास बनकर रहे
थे. हिम्मत बांधो और युद्ध के लिए तैयार हो जाओ!” 10 तब फिलिस्तीनी युद्धरत
हो गए. इस्राएल हार गया. हर एक सैनिक ने भागकर अपने तंबू में शरण ली.
उस दिन भयंकर नरसंहार हुआ; इस्राएलियों के तीस हज़ार सैनिक धराशयी हो
गए. 11 परमेश्वर की वाचा के संदूक शत्रुओं द्वारा छीन लिया गया. एली के
दोनों पुत्र, होफ़नी और फिनिहास युद्ध में मारे गए. 12 उसी दिन बिन्यामिन वंश
का एक व्यक्ति रणभूमि से दौड़ता हुआ शीलो नगर पहुंचा. उसके वस्त्र फट चुके
थे तथा उसके सिर पर धूल समाई हुई थी. 13 जब वह शीलो नगर पहुंचा, एली
मार्ग के किनारे अपने आसन पर बैठे हुए उत्कण्ठापूर्वक मार्ग पर दृष्टि लगाए हुए
थे, क्योंकि वह परमेश्वर की मंजूषा के विषय में बहुत चिंतित थे. जब इस
व्यक्ति ने सूचना देने के लिए नगर में प्रवेश किया, संपूर्ण नगर में हाहाकार
मच गया. 14 जब एली ने यह रोने की आवाज सुनी, वह पूछने लगे, “यह
कोलाहल क्या है?” तब वह व्यक्ति तुरंत एली के पास आ गया और उन्हें स्थिति
के बारे में बताया, 15 इस समय एली की अवस्था अट्ठानवे वर्ष की थी. उनकी
आंखें धुंधली हो चुकी थी और वह देख नहीं सकता था. 16 उस व्यक्ति ने एली
को सूचना दी, “मैं रणभूमि से भागकर आया हूं; मैं आज ही युद्ध से यहां पहुंचा
हूं!” एली ने उससे प्रश्न किया, “मेरे पुत्र, क्या-क्या हुआ है वहां?” 17 दूत ने
उत्तर दिया, “इस्राएल फिलिस्तीनियों के सामने पीठ दिखाकर भागा है, सेना की
भारी हार हुई है, आपके दोनों पुत्र, होफ़नी और फिनिहास मारे गए हैं; परमेश्वर
की वाचा का संदूक शत्रु द्वारा छीन लिया गया है.” 18 जैसे ही उस व्यक्ति ने
परमेश्वर की वाचा के संदूक का उल्लेख किया, एली अपने आसन के पीछे की
ओर, द्वार के पास जा गिरे. इससे उनकी गर्दन टूट गई और उनकी मृत्यु हो गई,
क्योंकि वह वृद्ध भी थे और भारी भी. वह चालीस वर्षों तक इस्राएल के अगुए
रहे. 19 उनकी पुत्र-वधू, फिनिहास की पत्नी, गर्भवती थी. उसका प्रसवकाल
नज़दीक था. जैसे ही उसने यह सुना कि परमेश्वर की वाचा का संदूक छीन
लिया गया है, तथा यह कि उसके ससुर और पति की भी मृत्यु हो चुकी है, उसे
प्रसव पीड़ा शुरू हो गई; वह झुकी और उसका प्रसव हो गया. मगर प्रसव पीड़ा
उसके लिए असहनीय सिद्ध हुई! 20 जब उसकी मृत्यु निकट आ रही थी, उसके
निकट की स्त्रियों ने उससे कहा, “डरो मत; तुमने एक पुत्र को जन्म दिया है.”
मगर उसने न तो उसका कोई उत्तर दिया और न ही इस समाचार पर कोई
ध्यान ही दिया. 21 उसने अपने पुत्र को इखाबोद नाम दिया; उसका कथन था,
“महिमा इस्राएल को छोड़कर जा चुकी है.” क्योंकि परमेश्वर का संदूक छीना
जा चुका था, तथा उसके ससुर और पति की मृत्यु हो गई थी. 22 उसने कहा,
“इस्राएल से महिमा उठ चुकी है, क्योंकि परमेश्वर की वाचा के संदूक छीन
लिया गया है.”

5 तब फिलिस्तीनियों ने परमेश्वर के संदूक को छीनकर उसे एबेन-एज़र से
अशदोद को ले गए. 2 उन्होंने परमेश्वर के संदूक को दागोन के मंदिर में ले
जाकर उसे देवता के पास ही रख दिया. 3 तड़के, जब अशदोदवासी जागे,
उन्होंने देखा कि याहवेह के संदूक के सामने दागोन भूमि पर मुंह के बल पड़ा
हुआ था. तब उन्होंने दागोन को उठाकर दोबारा उसके स्थान पर स्थापित कर
दिया. 4 जब वे अगले दिन सुबह उठे, उन्होंने देखा कि दागोन दोबारा याहवेह
के संदूक के सामने मुंह के बल भूमि पर पड़ा हुआ था. इसके अलावा दागोन का
सिर और उसके दोनों हाथ कटे हुए ड्योढ़ी पर पड़े हुए थे-मुंह के बल उसका
धड़ समूचा था. 5 वही कारण है कि आज तक, न तो दागोन के पुरोहित और न
ही कोई भी, जो दागोन के मंदिर में प्रवेश करता है, अशदोद नगर में दागोन के
मंदिर की ड्योढ़ी पर पैर नहीं रखता. 6 याहवेह ने अशदोद नगरवासियों पर
प्रबल प्रहार किया. अशदोद तथा अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों में लोगों को गिल्टियों
से पीड़ित किया. 7 जब अशदोदवासियों ने स्थिति की विवेचना की, वे इस
निष्कर्ष पर पहुंचे, “यह सही नहीं कि इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा हमारे
मध्य में रहे, क्योंकि उनके परमेश्वर ने न केवल हम पर, बल्कि हमारे देवता
दागोन तक पर प्रहार किया है.” 8 इसलिये उन्होंने फिलिस्तीनियों के सभी
अगुओं को इकट्टा किया और उनके सामने इस प्रश्न पर विचार किया गया,
“इस्राएल के परमेश्वर के संदूक के विषय में क्या किया जाना सही होगा?”
सबने कहा, “इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को गाथ नगर भेज दिया जाना सही
होगा.” तो इस्राएल के परमेश्वर के संदूक का स्थान बदलकर गाथ नगर कर
दिया गया. 9 यह होने पर याहवेह ने उस नगर पर भी वार किया. इससे वहां घोर
आतंक फैल गया. याहवेह ने उस नगर के हर एक व्यक्ति पर वार किया, तब उन
सभी को गिल्टियां निकल आए. 10 तब उन्होंने परमेश्वर के संदूक को एक्रोन
नगर भेज दिया, मगर जब परमेश्वर का संदूक एक्रोन नगर पहुंचा, एक्रोन वासी
यह चिल्लाने लगे, “हमें मारने के उद्देश्य से इस्राएल के परमेश्वर का संदूक यहां
लाया गया है.” 11 तब फिलिस्तीनियों के सभी अगुओं की सभा बुलाई गई
और यह प्रस्ताव निकाला गया. “इस्राएल के परमेश्वर का संदूक यहां से बाहर
भेज दिया जाए. सही है कि यह उसके निर्धारित स्थान पर जाए, कि यह हमारी
और हमारी प्रजा की हत्या न कर सकें.” पूरा नगर मृत्यु के आतंक की चपेट में
आ पड़ा था. वहां परमेश्वर उन पर बहुत ही प्रबल प्रहार कर रहे थे. 12 जिन
लोगों की अभी मृत्यु नहीं हुई थी, उनकी देह गिल्टियों से भरी पड़ी थी. नगर
की दोहाई स्वर्ग तक जा पहुंची.

6 याहवेह के संदूक को फिलिस्तिया देश में अब सात महीने हो चुके थे.
2 फिलिस्तीनियों ने पुरोहितों एवं शकुन शास्त्रियों की सभा बुलाई. लोगों ने
उनसे कहा, “याहवेह के संदूक के लिए क्या करना सबसे सही होगा? हमें सलाह
दीजिए कि इसे इसके निर्धारित स्थान में भेजने की सही विधि क्या होगी?” 3
उनका उत्तर था, “यदि आपने इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को लौटा देने का
निश्चय कर ही लिया है, तो यह खाली न भेजी जाए. यह सुनिश्चित किया जाए
कि यह दोष बलि के साथ लौटाई जाए. यह होने पर ही आप चंगे हो सकेंगे,
और आप यह समझ सकेंगे कि क्या कारण था कि ये विपत्तियां आप पर आती
रही हैं.” 4 तब उन्होंने पूछा, “क्या होगी वह दोष बलि जो हम उसके साथ
भेजेंगे?” उन्होंने उत्तर दिया, “देखिए, आप पांच फिलिस्तीनी शासक हैं. तब
कुन्दन से बनी गिल्टियों की पांच मूरतें तथा कुन्दन के ही बने हुए पांच चूहे;
क्योंकि आप पर और आपके अगुओं पर उसी महामारी का प्रहार हुआ है. 5
आवश्यक है कि आप इन्हीं गिल्टियों तथा चूहों की मूर्तियां गढ़ें, जो सारा देश
को ध्वस्त कर रहे हैं. यह ज़रूरी है कि आप इस्राएल के परमेश्वर की महिमा
करें. तब यह संभव है कि वह आपको, आपके देवताओं को तथा आपके देश को
इस महामारी की जकड़न से विमुक्त कर दें. 6 इस स्थिति में मिस्रियों तथा फ़रोह
के समान अपने हृदय कठोर कर लेना हितकर नहीं होगा. जब परमेश्वर ने उन्हें
कठोर मुसीबतों से दंड दिया, तो क्या स्वयं मिस्रियों ही ने इस्राएलियों से मिस्र
देश छोड़ देने का आग्रह न किया था? 7 “तब अब आप जाइए, एक नया वाहन
तैयार कीजिए, दो ऐसी दुग्धवती गाएं लाइए, जिन पर जूआ कभी न रखा गया
हो, और इन्हें ही इस वाहन में जोत दीजिए, मगर इनके बछड़ों को उनके पास से
हटाकर गौशाला ले जाइए. 8 तब याहवेह के संदूक को उस वाहन पर स्थापित
कर दीजिए. फिर वे कुन्दन में ढली मूर्तियां, जो आप उन्हें दोष बलि स्वरूप
लौटा रहे हैं, एक मंजूषा में संदूक के निकट रख दीजिए. यह सब होने पर वाहन
को विदा कर दीजिए. 9 हां, वाहन पर दृष्टि बनाए रखिए. यदि यह वाहन अपने
स्वदेश की दिशा में बेथ-शेमेश नगर की ओर बढ़ता है, तब इस तथ्य की पुष्टि हो
जाएगी कि हम पर आई यह विपदा याहवेह ही की ओर से है. यदि ऐसा न हो,
तब हमें यह ज्ञात हो जाएगा कि हम पर हुआ यह प्रहार याहवेह की ओर से नहीं
था, परंतु यह सब हमारे साथ संयोगवश ही हुआ है.” 10 तब फिलिस्तीनियों ने
ठीक वैसा ही किया जैसा उन्हें निर्देश दिया गया था. उन्होंने दो दुग्धवती गायों
को वाहन में जोत दिया, और उनके बछड़ों को घर पर ही बंद कर दिया. 11
उन्होंने याहवेह का संदूक वाहन पर रख दी और उसी के पास वह मंजूषा भी
जिसमें कुन्दन की मूर्तियां रखी गई थी. 12 गाएं बेथ-शेमेश मार्ग पकड़कर सीधे
उस पर आगे बढ़ती चली गई. जाते-जाते वे रम्भाती जा रही थीं; न तो वे दाएं
मुड़ीं न बाएं. फिलिस्तीनी अगुए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे. वे बेथ-शेमेश
सीमा तक उनके साथ रहे. 13 वहां बेथ-शेमेशवासी घाटी में गेहूं की कटनी में
व्यस्त थे. संदूक को देखते ही वे आनंदित हो उठे. 14 वाहन यहोशू के खेत की
ओर बढ़ रहा था. यहोशू बेथ-शेमेश के ही वासी थे. वाहन वहीं एक बड़ी चट्टान
के निकट ठहर गया. उन्होंने वाहन की लकड़ियां काट डालीं तथा उन गायों
को याहवेह के लिए अग्निबलि बना भेंटकर दिया. 15 लेवियों ने संदूक को
वाहन से नीचे उतारा, साथ ही उसके निकट रखी हुई मंजूषा को भी, जिसमें
कुन्दन की मूर्तियां रखी गई थी. इन्हें उन्होंने उस चट्टान के निकट रख दिया.
तब बेथ-शेमेश वासियों ने याहवेह को अग्निबलियां एवं बलियां चढ़ाईं. 16
फिलिस्तीनियों के पांच शासक समेत सब लोग उसी दिन एक्रोन लौट गए. 17
फिलिस्तीनियों द्वारा हर एक नगर के लिए याहवेह को अर्पित की गई दोष बलि
गिल्टियां इस प्रकार हैं: अशदोद, अज्जाह, अश्कलोन, गाथ तथा एक्रोन. 18
चूहों की पांच कुन्दन की मूर्तियां पांच फिलिस्तीनी नगर का प्रतिनिधित्व करती
थी, जिनके वे पांच अग्रेसर थे. ये नगर सुरक्षित गढ़ भी थे तथा कुछ बिना
शहरपनाह के नगर भी. वह विशाल चट्टान जिस पर उन्होंने याहवेह का संदूक
स्थापित किया था, आज भी बेथ-शेमेश के यहोशू के खेत में गवाह है. 19
याहवेह ने बेथ-शेमेश के कुछ लोगों पर घातक प्रहार किया, क्योंकि उन्होंने
याहवेह के संदूक को खोल उसके भीतर झांका! सत्तर व्यक्ति इस प्रहार में मारे
गए. याहवेह द्वारा इस कठोर दंड दिए जाने के कारण लोगों में रोना-पीटना छा
गया. 20 बेथ-शेमेश नगर के निवासी विचार करते रह गए, “याहवेह, पवित्र
परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहने की क्षमता किसमें हो सकती है? तब अब
यह संदूक वहां से किसके यहां रखा जाए?” 21 तब उन्होंने किरयथ-यआरीम
वासियों के पास इस संदेश के साथ दूत भेजे, “फिलिस्तीनियों ने याहवेह का
संदूक लौटा दिया है. आप आकर इसे अपने साथ ले जाइए.”

7 तब किरयथ-यआरीम से कुछ लोग आए और याहवेह के संदूक को वहां से
ले जाकर पर्वत पर बने अबीनादाब के घर में रख दिया. उन्होंने याहवेह के
संदूक की देखरेख के लिए अबीनादाब के पुत्र एलिएज़र का अभिषेक किया. 2
लंबे समय तक लगभग बीस वर्ष तक, संदूक किरयथ-यआरीम में ही रहा. अब
सारे इस्राएल राष्ट्र को याहवेह की चाह होने लगी थी. 3 शमुएल ने समस्त
इस्राएली राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा, “यदि तुम हृदय की गहराई से याहवेह
की ओर फिर रहे हो, तो अपने बीच से सारे पराए देवताओं तथा अश्तोरेथ की
प्रतिमाओं को हटाकर दूर कर दो. अपना हृदय याहवेह को समर्पित कर सिर्फ
उन्हीं की वंदना करते रहो. तब याहवेह तुम्हें फिलिस्तीनियों के सताने से मुक्त
करेंगे.” 4 तब इस्राएलियों ने अपने मध्य से सारे पराए देवताओं और अश्तोरेथ
की मूर्तियों का त्याग कर दिया तथा वे सिर्फ याहवेह ही की वंदना करने लगे. 5
तब शमुएल ने उन्हें आदेश दिया, “सारा इस्राएल मिज़पाह नामक स्थान पर
एकत्र हो, कि मैं तुम्हारे लिए याहवेह से प्रार्थना करूं.” 6 वे सभी मिज़पाह में
इकट्ठा हो गए और उन्होंने जल निकाला और याहवेह के सामने उंडेल दिया.
उस दिन उन्होंने उपवास किया और यह स्वीकार किया, “हमने याहवेह के
विरुद्ध पाप किया है.” मिज़पाह ही वह स्थान था, जहां से शमुएल ने इस्राएल
राष्ट्र के न्यायाध्यक्ष के पद पर काम करना शुरू किया. 7 जब फिलिस्तीनियों
को यह समाचार प्राप्त हुआ कि इस्राएली मिज़पाह क्षेत्र में एकत्र हो गए हैं,
फिलिस्तीनी प्रधानों ने इस्राएल के विरुद्ध मोर्चा बांधा. जब इस्राएलियों को इसके
विषय में सूचना प्राप्त हुई, वे फिलिस्तीनियों से डरने लगे. 8 उन्होंने शमुएल से
आग्रह किया, “हमारी ओर से याहवेह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करना बंद न
कीजिए, कि हमें फिलिस्तीनियों से सुरक्षा प्राप्त होती रहे.” 9 इस पर शमुएल ने
एक दूध पीता मेमना लेकर उसे याहवेह के सामने अग्निबलि के रूप में अर्पण
किया. तब शमुएल ने इस्राएल की ओर से याहवेह की दोहाई दी, और याहवेह ने
उन्हें इसका प्रत्युत्तर दिया. 10 जब शमुएल यह अग्निबलि अर्पित कर ही रहे
थे, फिलिस्तीनी इस्राएल पर हमला करने के लक्ष्य से निकट आ गए. मगर
उस दिन याहवेह फिलिस्तीनियों पर बादल द्वारा ऐसे गरजे कि फिलिस्तीनी
आतंक के कारण सम्भ्रमित हो गए. तब इस्राएलियों ने उन्हें वहीं हरा दिया. 11
फिर इस्राएली मिज़पाह से बाहर निकल आए फिलिस्तीनियों को खदेड़ते हुए,
उनका संहार करते हुए, बेथ-कार नामक स्थान के नीचे तक चले गए. 12
मिज़पाह तथा शेन नामक स्थानों के मध्य शमुएल ने इस घटना की स्मारक
स्वरूप, एक शिला लेकर वहां प्रतिष्ठित कर उसे एबेन-एज़र नाम दिया; क्योंकि
उन्होंने यह गवाह दिया, “अब तक याहवेह ने हमारी सहायता की है.” 13 इस
प्रकार फिलिस्तीनी हरा दिए गए. इसके बाद उन्होंने इस्राएल की सीमा पर
हमला दोबारा नहीं किया. शमुएल के संपूर्ण जीवनकाल में फिलिस्तीनियों
पर याहवेह का गुस्सा बना रहा. 14 एक्रोन से लेकर गाथ तक, वे नगर, जो
फिलिस्तीनियों ने इस्राएल से छीन लिए थे, इस्राएल को लौटा दिए गए. स्वयं
इस्राएल ने फिलिस्तीनियों द्वारा अधिकृत किए गए अपने क्षेत्र उनसे मुक्त करवा

लिए. इस्राएल तथा अमोरियों के बीच भी शान्तिपूर्ण संबंधों की स्थापना हो गई.
15 शमुएल आजीवन इस्राएल के प्रशासक-न्यायाध्यक्ष रहे. 16 वर्ष-प्रतिवर्ष वह
भ्रमण करते हुए बेथेल, गिलगाल तथा मिज़पाह ये तीन मुख्यालयों पर जाकर
इस्राएल का न्याय करते थे. 17 फिर वह रामाह नगर को लौट जाते थे, क्योंकि
उनका घर-परिवार यहीं था. वह इस्राएल का न्याय और शासन यहां से भी करते
थे, साथ ही उन्होंने यहां याहवेह के लिए एक वेदी भी बनाई थी.

8 बूढ़ा होने पर शमुएल ने अपने पुत्रों को इस्राएल का न्यायाध्यक्ष नियुक्त
किया. 2 उनके प्रथम पुत्र का नाम था योएल तथा द्वितीय का अबीयाह. वे
बेअरशेबा में रहते हुए न्याय करते थे. 3 मगर उनके पुत्रों का आचरण उनके
समान न था. वे अनुचित रीति से धनार्जन में लग गए. वे घूस लेते तथा न्याय को
विकृत कर देते थे. 4 तब इस्राएल के सब नेतागण एकजुट होकर रामाह में
शमुएल के पास आए. 5 उन्होंने शमुएल से कहा, "देखिए, आप वयोवृद्ध हो
चले हैं, आपके पुत्र आपके समान नहीं हैं. इसलिए अब जिस प्रकार अन्य
जनताओं में प्रचलित है, उसी प्रकार आप हमारे लिए एक राजा चुन दें, कि
वह हम पर शासन करे." 6 शमुएल इस विनती को सुनकर अप्रसन्न हो गए.
क्योंकि उन्होंने उनसे कहा था, "हम पर शासन करने के लिए हमें एक राजा
दीजिए." तब शमुएल ने याहवेह से प्रार्थना की. 7 याहवेह ने शमुएल से कहा,
"ठीक वही करो, जिसकी विनती ये लोग कर रहे हैं. उन्होंने तुम्हें नहीं, परंतु
मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है. 8 ठीक जिस प्रकार वे उस
समय से करते चले आ रहे हैं, जिस दिन से मैंने उन्हें मिस्र से विमुक्त किया, तब
से आज तक, ये लोग मेरा परित्याग कर पराए देवताओं की आराधना करते रहे
हैं; ठीक यहीं वे तुम्हारे साथ भी कर रहे हैं. 9 तब सही यही होगा कि तुम वही
करो जो ये लोग चाह रहे हैं. हां, उन्हें इस विषय में गंभीर चेतावनी अवश्य दे
देना कि वह राजा, जो उन पर शासन करेगा, उसकी नीतियां कैसी होंगी." 10
तब शमुएल ने याहवेह द्वारा अभिव्यक्त सारा विचार जिन्होंने उनसे राजा की
नियुक्ति की विनती की थी उन लोगों के सामने प्रस्तुत किए. 11 शमुएल ने
उनसे कहा, "जो राजा तुम पर शासन करेगा, उसकी नीतियां इस प्रकार होंगी:
वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपनी रथों की सेना, तथा घुड़सवारों के रूप में
चुनेगा, कि वे उसके रथों के आगे-आगे दौड़ा करें. 12 वह अपने लिए हज़ार
पर तथा पचासों के लिए आदेशक चुनेगा. वह अपनी भूमि पर हल चलाने
के लिए, उपज कटने के लिए तथा युद्ध के शस्त्र तथा रथों के लिए उपकरण
निर्माता भी चुनेगा. 13 वह तुमसे तुम्हारी पुत्रियां लेकर उन्हें सुगंध बनाने, रसोई
कर्मचारी तथा सेंकने की कर्मचारी के रूप में चुनेगा. 14 वह तुम्हारे सर्वोत्तम
खेत, अंगूर के बगीचे तथा ज़ैतून उद्यान तुमसे लेकर अपने सेवकों को सौंप
देगा. 15 वह तुम्हारे अनाज में से तथा द्राक्ष उद्यान में से दसवां अंश लेकर अपने
अधिकारियों तथा अपने सेवकों को दे देगा. 16 वह तुम्हारे सेवक-सेविकाएं
तथा तुम्हारे सर्वोत्तम युवाओं तथा गधों को लेकर स्वयं अपने कामों में लगा
देगा. 17 वह तुम्हारे पशुओं के दसवां अंश ले लेगा और तुम उसके दास बन
जाओगे. 18 तब उस समय तुम अपने राजा के विरुद्ध दोहाई दोगे, जिसे तुम्हीं ने
चुना था; मगर तब याहवेह तुम्हारी छुड़ौती के लिए नहीं आएंगे." 19 मगर
लोगों ने शमुएल के चेतावनी वचनों पर विचार करना अस्वीकार कर दिया.
उन्होंने कहा, "कुछ भी हो! हमें तो राजा चाहिए ही! 20 हम चाहते हैं कि हम
भी अन्य राष्ट्रों के समान हों. हमारा राजा ही हमारा न्यायाध्यक्ष होगा, वह हम
पर शासन करेगा, वही हमारे लिए युद्ध करेगा." 21 जब शमुएल लोगों की सारी
मांगें सुन चुके, उन्होंने सभी कुछ याहवेह को सुना दिया. 22 याहवेह ने शमुएल
से कहा, वही करो, जो वे चाहते हैं. "उनके लिए एक राजा चुन दो." शमुएल ने
इस्राएल के दूतों से कहा, "तुममें से हर एक अपने-अपने नगर को लौट जाए."

9 बिन्यामिन गोत्र से कीश नामक एक व्यक्ति था. उसके पिता का नाम था
अबीएल, जो ज़ीरोर का पुत्र था. ज़ीरोर बीकोराथ का, बीकोराथ अपियाह
का पुत्र था, जो बिन्यामिन के वंशज थे. कीश एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था. 2 उनको
शाऊल नामक एक पुत्र था; एक सुंदर युवा! सारे इस्राएल में उनसे अधिक सुंदर
कोई भी न था. वह डीलडौल में सभी इस्राएली युवाओं से बढ़कर था सभी
उसके कंधों तक ही पहुंचते थे. 3 शाऊल का पिता कीश के गधे एक दिन खो
गए. तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, "उठो अपने साथ एक सेवक
को लेकर जाओ और गधों को खोज कर लाओ." 4 शाऊल खोजते-खोजते
एफ्राईम के पर्वतीय क्षेत्र के पार निकल गए. उन्होंने शालीशा प्रदेश में भी उन्हें
खोजा मगर वे उन्हें वहां भी न मिले. तब वे खोजते हुए शालीम देश भी पार कर
गए; मगर गधे वहां भी न थे. तब उन्होंने बिन्यामिन देश में उनकी खोज की,
मगर गधे वहां भी न थे. 5 जब वे इन्हें खोजते हुए सूफ़ देश पहुंचे, शाऊल ने
अपने साथ के सेवक से कहा, "अब ऐसा करें कि हम घर लौट चलें, ऐसा न हो
कि मेरे पिता गधों की चिंता करना छोड़ हमारे विषय में चिंतित होने लगें." 6
मगर उनके सेवक ने उन्हें यह सूचना दी, "सुनिए, इस नगर में परमेश्वर के एक
जन रहते हैं; वह बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं. वह जो कुछ कह देते हैं, होकर ही
रहता है. आइए हम उनके पास चलें. संभव है कि वह हमें मार्गदर्शन दें, कि यहां
से हमारा कहां जाना सही होगा." 7 शाऊल ने अपने सेवक को उत्तर दिया,
"ठीक है; मगर हम उन्हें भेंट स्वरूप क्या देंगे? हमारे झोले में अब रोटी शेष
नहीं रही! परमेश्वर के इस जन को हम भेंट में क्या देंगे?" 8 सेवक ने शाऊल
को उत्तर दिया, "ऐसा है, मेरे पास इस समय एक चौथाई शकेल चांदी है. यह मैं
परमेश्वर के जन को दे दूंगा, कि वह हमें बताएं हमारा कहां जाना उचित होगा."
9 (उन दिनों में इस्राएल में रीति यह थी कि जब कभी किसी को किसी विषय में
परमेश्वर की इच्छा मालूम करने की आवश्यकता होती थी, वह कहा करता था,
"चलो, दर्शी से पूछताछ करें," क्योंकि आज जिन्हें हम भविष्यद्वक्ता कहते हैं.
उन्हें उस समय लोग दर्शी कहकर ही पुकारते थे.) 10 तब शाऊल ने कहा,
"उत्तम सुझाव है यह! चलो, वहीं चलें." तब वे उस नगर को चले गए जहां
परमेश्वर के जन रहते थे. 11 जब वे नगर के ढाल पर चढ़ रहे थे, उन्हें जल
भरते जा रही कुछ युवतियां मिलीं. उन्होंने उनसे पूछा, "क्या दर्शी आज यहां
मिलेंगे?" 12 उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, सीधे चलते जाइए; मगर देर न
कीजिए. वह आज ही यहां आए हैं, और लोग पर्वत शिखर की वेदी पर बलि
चढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं. 13 जैसे ही आप नगर में प्रवेश करें, उसके पूर्व कि
वह पर्वत शिखर पर भोजन के लिए जाए, आप उनसे मिल सकेंगे. जब तक वह
वहां न पहुंचे, लोग भोजन शुरू न करेंगे, क्योंकि बलि पर आशीर्वचन दर्शी ही
को कहना होता है. अब शीघ्र जाइए. यही उनके मिलने का सर्वोत्तम मौका
है." 14 तब वे नगर में चले गए. जब वे नगर के केंद्र की ओर बढ़ रहे थे,
शमुएल उन्हीं की दिशा में आगे बढ़ रहे थे, कि वह पर्वत शिखर पर जाएं. 15
शाऊल के यहां पहुंचने के एक दिन पूर्व याहवेह ने शमुएल को यह संकेत दे दिया
था: 16 "कल इसी समय में बिन्यामिन प्रदेश से तुमसे भेंटकरने एक युवक को
भेजूंगा. तुम उसे ही इस्राएल के प्रधान के पद के लिए अभिषिक्त कर देना. वही
होगा, जो मेरी प्रजा को फिलिस्तीनियों के अत्याचारों से छुड़ाने वाला. मैंने
अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि की है. मैंने उनकी दोहाई सुन ली है." 17 जैसे ही
शमुएल की दृष्टि शाऊल पर पड़ी, याहवेह ने उनसे कहा, "यही है वह व्यक्ति
जिसके विषय में मैंने तुम्हें संकेत दिया था; यही मेरी प्रजा का शासक होगा."
18 शाऊल द्वार के पास, शमुएल के निकट आया. शाऊल ने शमुएल से पूछा,
"कृपया बताये दर्शी का घर कहां है?" 19 शमुएल ने शाऊल को उत्तर दिया,
"दर्शी मैं ही हूं. मेरे आगे-आगे जाकर पर्वत शिखर पर पहुंचो. आज तुम्हें मेरे
साथ भोजन करना है, प्रातःकाल ही मैं तुम्हें विदा कर दूंगा. तुम्हारे मन में उठ

रहे सभी प्रश्नों का उत्तर भी तुम्हें प्राप्त हो जाएगा. 20 गधों की चिंता छोड़
दो, जो तीन दिन पूर्व खो गए थे—वे मिल गए हैं. सारे इस्राएल राष्ट्र में जो
कुछ हो सकता है, वह किसके लिए है? क्या तुम्हारे तथा तुम्हारे सारा परिवार
ही के लिए नहीं?" 21 शाऊल ने उन्हें उत्तर दिया, "मगर मैं तो इस्राएल के
सबसे छोटे गोत्र बिन्यामिन से हूं, और इसके अलावा मेरा परिवार तो बिन्यामिन
गोत्र में सबसे छोटा है. तब आप मुझसे यह सब कैसे कह रहे हैं?" 22 इसी
समय शमुएल शाऊल और उनके सेवक को एक विशाल कक्ष में ले गए, जहां
लगभग तीस अतिथि उपस्थित थे. यहां शमुएल ने शाऊल को उन सबसे अधिक
सम्माननीय स्थान पर बैठा दिया. 23 और फिर शमुएल ने रसोइए को आदेश
दिया, "व्यंजन का वह विशेष अंश, जिसे मैंने तुम्हें अलग रखने का आदेश दिया
था, यहां ले आओ." 24 तब रसोइए ने व्यंजन में से अलग किया हुआ सर्वोत्तम
अंश शाऊल को परोस दिया. तब शमुएल ने कहा, "यही है वह अंश, जो तुम्हारे
लिए अलग रखा गया था, जो अब तुम्हें परोस दिया गया है. यह तुम्हारा ही
भोजन है, जो इस विशेष मौके पर तुम्हारे ही लिए रखा गया है, कि तुम उसे इन
विशेष अतिथियों के साथ खाओ." तब उस दिन शाऊल ने शमुएल के साथ
भोजन किया. 25 जब वे पर्वत शिखर परिसर से उतरकर नगर में आए, शाऊल
के लिए उस आवास की छत पर बिछौना लगाया गया, जहां वह सो गए. 26
प्रातःकाल शमुएल ने छत पर सोए हुए शाऊल को यह कहते हुए जगाया, "उठो,
मुझे तुम्हें विदा करना है." तब शाऊल जाग गए, बाद में वह शमुएल के साथ
बाहर चले गए. 27 जब वे नगर की बाहरी सीमा पर पहुंचे, शमुएल ने शाऊल से
कहा, "अपने सेवक से कहो, कि वह आगे बढ़ता जाए." सेवक ने वैसा ही
किया. शमुएल ने शाऊल से और कहा, "मगर तुम स्वयं यहीं ठहरे रहना कि मैं
तुम पर परमेश्वर द्वारा दिया गया संदेश प्रकाशित कर सकूं."

10 और शमुएल ने ज़ैतून के तेल से भरी एक शीशी निकाली, और वह तेल
शाऊल के सिर पर उंडेल दिया. तब उन्होंने शाऊल का चुंबन लेते हुए
उनसे कहा, "याहवेह ने अपनी मीरास इस्राएल का अगुआ होने के लिए तुम्हारा
अभिषेक किया है! 2 आज जब तुम मुझसे विदा होकर जाओगे, तुम्हें बिन्यामिन
प्रदेश की सीमा पर सेलसाह नामक स्थान पर राहेल की कब्र के निकट दो व्यक्ति
मिलेंगे. वे तुमसे कहेंगे, 'तुम जिन गधों की खोज में निकले थे, वे तो मिल चुके
हैं. तुम्हारे पिता को अब गधों की नहीं, बल्कि तुम दोनों की चिंता हो रही है.
वह कह रहे हैं, "अब मैं अपने पुत्र के लिए क्या करूं?"' 3 "तब तुम्हारे आगे
बढ़ने पर, जब तुम ताबोर के उस विशाल बांज वृक्ष के निकट पहुंचोगे, तुम्हें वहां
तीन व्यक्ति मिलेंगे, जो परमेश्वर की वंदना करने बेथेल जा रहे होंगे. एक तो
बकरी के तीन बच्चे ले जा रहा होगा, उनमें से दूसरा तीन रोटियां तथा तीसरा
अंगूर के रस की कुप्पी. 4 वे तुम्हारा अभिवादन करेंगे और तुम्हें दो रोटियां दे
देंगे, जिन्हें तुम स्वीकार कर लेना. 5 "फिर तुम गीबिया-एलोहीम पहुंचोगे,
जहां फिलिस्तीनी सेना का गढ़ है. तुम जैसे ही नगर में प्रवेश करोगे, तुम्हें वहां
भविष्यवक्ताओं का एक समूह मिलेगा, जो पर्वत शिखर से उतरकर आ रहा
होगा और जिनके हाथों में विभिन्न वाद्य यंत्र होंगे, जो भविष्यवाणी कर रहे
होंगे. 6 ठीक उसी समय याहवेह का आत्मा बड़ी सामर्थ्य के साथ तीव्र गति से
तुम्हें भर लेगा और तुम स्वयं उनके साथ मिलकर भविष्यवाणी करने लगोगे. यह
वह क्षण होगा, जब तुम्हें एक नया व्यक्तित्व प्रदान कर दिया जाएगा. 7 जब
तुम इन चिन्हों को होते देखो, तुम वही करना शुरू कर देना, जो तुम्हें सही
लगेगा, क्योंकि तब स्वयं परमेश्वर तुम्हारे साथ होंगे. 8 "तब तुम मुझसे पहले
गिलगाल पहुंच जाना. मैं तुमसे वहीं मिलूंगा, कि वहां अग्निबलि एवं मेल की
भेंटें अर्पित करूं. आवश्यक होगा कि तुम सात दिन प्रतीक्षा करो—जब तक मैं
वहां पहुंचकर तुम्हें यह न समझाऊं कि तुम्हारा क्या करना सही होगा." 9 जैसे
ही शाऊल शमुएल से विदा होकर मुड़ा, परमेश्वर ने उनका मन बदल दिया, और
ये सभी चिन्ह उस दिन पूर्ण हो गए. 10 जब वे गिबियाह पहुंचे, उनसे भेंटकरने
भविष्यवक्ताओं का एक समूह आ रहा था. तब परमेश्वर का आत्मा तीव्र गति से
उनके ऊपर उतरा और वह उनके साथ भविष्यवाणी करने लगे. 11 जो लोग
शाऊल से पूर्व परिचित थे, उन्हें भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी करते
देख, परस्पर कहने लगे, "क्या हो गया है कीश के पुत्र को? क्या शाऊल भी
भविष्यद्वक्ता वृन्द का सदस्य है?" 12 वहां खड़े एक व्यक्ति ने प्रश्न किया,
"और उनके पिता कौन हैं?" तब वहां यह लोकोक्ति हो गई: "क्या शाऊल भी
भविष्यवक्ताओं में से एक हैं?" 13 जब शाऊल अपनी भविष्यवाणी पूर्ण कर
चुके, वह पर्वत शिखर पर चले गए. 14 शाऊल के चाचा ने शाऊल से एवं
उनके सेवक से पूछा, "कहां चले गए थे तुम दोनों?" शाऊल ने उत्तर दिया,
"गधों को ढूंढने. मगर जब हमें यह लगा कि गधे खो चुके हैं, तो हम शमुएल से
भेंटकरने चले गए." 15 शाऊल के चाचा ने उनसे पूछा, "मुझे बताओ कि
शमुएल ने तुमसे क्या-क्या कहा है." 16 शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया,
"शमुएल ने हमें आश्वासन दिया, कि गधे मिल चुके हैं." शाऊल ने अपने चाचा
को राजत्व से संबंधित कुछ भी नहीं बताया. 17 तब शमुएल ने मिज़पाह में
याहवेह के सामने एक सार्वजनिक सभा बुलाई. 18 उन्होंने इस्राएल को संबोधित
करते हुए कहा, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: 'मैंने इस्राएल
को मिस्र देश से बाहर निकाल लिया, और मैंने ही मिस्रियों तथा उन सभी राज्यों
के कष्टों से छुड़ाया है जो तुम्हें सताते रहते थे.' 19 मगर आज वह दिन है, जब
तुमने अपने परमेश्वर को अस्वीकृत कर दिया है, जो तुम्हारी सभी पीड़ाओं और
मुसीबतों से तुम्हें बचाते हैं. तुम्हारी ही यह मांग थी, 'नहीं! हमारे लिए एक
राजा नियुक्त कीजिए.' ठीक है! याहवेह के सामने अपने गोत्रों एवं वंशों के
अनुसार अपना अपना स्थान ले लो." 20 तब शमुएल ने इस्राएल के सभी गोत्रों
को निकट बुलाया और बिन्यामिन का गोत्र चुना गया. 21 तब बिन्यामिन गोत्र के
परिवार निकट लाए गए और मत्री का परिवार चुना गया. और अंततः कीश के
पुत्र शाऊल को चुना गया. मगर जब उन्हें खोजा गया तो वह कहीं भी दिखाई न
दिया. 22 तब उन्होंने पुनः याहवेह से इस विषय में पूछताछ की, "क्या शाऊल
यहां आ चुके हैं?" याहवेह ने उत्तर दिया, "जाकर देखो, वह भण्डारगृह में
सामान के बीच में छिपा हुआ है." 23 तब वे दौड़कर गए और उन्हें वहां से ले
आए. जब शाऊल उनके मध्य में खड़े हुए, सभी उनके कंधों तक ही पहुंच रहे
थे. 24 तब जनसभा को संबोधित करते हुए शमुएल ने लोगों से कहा, "क्या उसे
देख रहे हो, जिसे याहवेह ने नामित किया है? निःसंदेह सभी लोगों में उसके
तुल्य कोई नहीं है!" सारे जनसमूह ने उच्च घोष किया, "राजा को लंबी आयु
मिले!" 25 तब शमुएल ने राजा के अधिकारों और कामों से संबंधित नीतियां
लोगों के सामने स्पष्ट कर दीं. ये सब उन्होंने एक पुस्तक में लिखकर याहवेह
के सामने रख दिया. यह सब होने पर शमुएल ने सब लोगों को उनके घर विदा
कर दिया. 26 शाऊल भी गिबियाह में अपने घर चले गए. कुछ शूरवीर युवक
भी उनके साथ गए. ये युवक परमेश्वर द्वारा चुने गए थे. 27 मगर कुछ निकम्मे
लोग कहने लगे, "यह व्यक्ति कैसे हमारी रक्षा कर सकेगा?" उन्हें शाऊल से
घृणा हो गई, यहां तक कि उन्होंने उन्हें कोई भेंट भी नहीं दी. मगर शाऊल ने
इस विषय को कोई महत्व नहीं दिया.

11 यह उस समय की घटना है, जब अम्मोनी राजा नाहाश ने याबेश-गिलआद
पर हमले के उद्देश्य से सेना आगे बढ़ाई. याबेश-गिलआदवासियों ने राजा
नाहाश से विनती की, "हमसे संधि कर लीजिए, हम आपके सेवक हो जाएंगे."
2 मगर अम्मोनी राजा नाहाश ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे संधि सिर्फ एक ही
स्थिति में कर सकता हूं; यदि तुम सभी मुझे अपनी-अपनी दाईं आंख निकाल
लेने दो, ताकि मैं इस्राएल राष्ट्र को अपमानित कर सकूं." 3 याबेश के पुरनियों ने
उसके लिए यह संदेश भेजा, "हमें सात दिन का अवकाश दीजिए कि हम संपूर्ण

इस्राएल राष्ट्र में अपने दूत भेज सके. तब यदि इसमें हमें कोई छुड़ाने वाला न मिले, हम स्वयं आपके प्रति समर्पण कर देंगे." 4 जब ये दूत शाऊल के गृहनगर, गिबिया, पहुंचे तथा वहां लोगों को इस विषय की सूचना दी गई, सभी लोग वहां उच्च स्वर में रोने लगे. 5 उस समय शाऊल अपने खेत से लौट रहे थे. वह अपने बैलों के पीछे-पीछे चल रहे थे. उन्होंने पूछा, "क्या हो गया है उन लोगों को? क्यों रो रहे हैं ये?" तब उन्होंने शाऊल को याबेशवासियों द्वारा भेजे संदेश के विषय बता दिया. 6 यह सुनना था कि शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बड़ी सामर्थ्य में तीव्र गति से उतरा. उनका क्रोध बहुत भयंकर तरीके से फूट गया. 7 उन्होंने एक जोड़ी बैलों को लेकर टुकड़े-टुकड़े कर सारा इस्राएल देश में इन टुकड़ों को दूतों के हाथ से इस संदेश के साथ भेज दिए, "जो कोई इस मौके पर शाऊल तथा शमुएल का साथ देने से पीछे हटेगा, उसके बैलों की यही दुर्गति की जाएगी." इस पर लोगों में याहवेह का भय छा गया और वे एकजुट होकर आगे आ गए. 8 जब शाऊल ने बेज़ेक नामक स्थान पर इनकी गणना की, इस्राएल राष्ट्र से आए व्यक्ति तीन लाख तथा यहूदिया राष्ट्र से आए व्यक्ति तीस हज़ार थे. 9 उन्होंने वहां आए हुए दूतों को यह संदेश भेजने का आदेश दिया, "जाकर याबेश-गिलआद के निवासियों से यह कहो, 'कल, जब सूर्य प्रकाश में उष्णता का भास होने लगे, तुम्हें छुड़ौती प्राप्त हो जाएगी.'" जब संदेशवाहकों ने याबेश-गिलआदवासियों को यह संदेश दिया, उनमें उल्लास की लहर दौड़ गई. 10 याबेशवासियों ने राजा नाहाश को यह संदेश भेज दिया, "हम कल आपके पास आ जाएंगे और आपको जो कुछ सही लगे, आप कर लेना." 11 अगले दिन शाऊल ने इकट्ठा हुए लोगों को तीन समूहों में बांट दिया. फिर उन्होंने पौ फटते ही अम्मोनियों की छावनी पर हमला कर दिया और सूर्य के गर्मी बढ़ने तक वे अम्मोनियों का नाश कर चुके थे. वे जो इस संहार से बच गए थे, ऐसे तितर-बितर हो चुके थे कि कहीं भी दो अम्मोनी साथ साथ देखे न जा सके. 12 तब लोग शमुएल से प्रश्न करने लगे, "कौन हैं वे, जिन्होंने यह कहते हुए आपत्ति उठाई थी, 'क्या शाऊल हम पर शासन करेगा?' उन्हें यहां ले आओ कि उन्हें मृत्यु दंड दिया जा सके." 13 मगर शाऊल ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया, "किसी को भी मृत्यु दंड न दिया जाएगा. क्योंकि आज वह दिन है, जिसमें याहवेह ने इस्राएल को मुक्ति प्रदान की है." 14 तब शमुएल ने इस्राएलियों से कहा, "आओ नगर को जाएं, और वहां राजत्व की पुनर्प्रतिष्ठा करें." 15 तब वे सभी गिलगाल नगर चले गए और गिलगाल नगर में याहवेह के सामने शाऊल का राजाभिषेक किया गया. याहवेह की ही उपस्थिति में वहां उन्हें मेल बलि अर्पित की गई. शाऊल एवं सारे इस्राएल के लिए यह बड़े आनंद का मौका था.

12 सारा इस्राएल को संबोधित करते हुए शमुएल ने कहा, "याद करो, तुम्हारी विनती के अनुसार मैंने सभी कुछ पूरा किया है. मैंने तुम्हारे लिए राजा चुन दिया है. 2 अब तुम स्वयं देख चुके हो कि राजा ही तुम्हारा नेतृत्व कर रहा है. तुम्हारे बीच अब मेरे पुत्र सेवा करते हैं. मैं बूढ़ा हो चुका हूं, पक चुके हैं मेरे बाल. मैं तुम्हारे सामने अपने बचपन से सेवा करता आया हूं. 3 आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हुआ यह प्रश्न कर रहा हूं: याहवेह तथा चुने हुए राजा के सामने मुझे बताओ. मैंने किसका बैल छीना है, किसका गधा मैंने छीना है? या मैंने किसके साथ छल किया है? मैंने किसे उत्पीड़ित किया है? किसके हाथ से घूस लेकर अनदेखा कर दिया है? मेरे सामने आज यह स्पष्टतः कह दो, ताकि मैं तुम्हारी क्षतिपूर्ति कर सकूं." 4 सबने कहा, "आपने न तो हमसे छल किया, न तो हमारा उत्पीड़न किया और न ही किसी भी व्यक्ति से कुछ अनुचित ही लिया है." 5 तब शमुएल ने उनसे कहा, "याहवेह इस तथ्य के गवाह हैं तथा उनका अभिषिक्त राजा भी आज इस तथ्य का गवाह है, कि तुम्हें मुझ पर आरोप लगाने का कोई कारण नहीं मिला है." सभी ने एक स्वर में कहा, "याहवेह गवाह हैं." 6 शमुएल ने जनसभा को संबोधित करते हुए आगे कहा, "स्वयं याहवेह ही हैं, जिन्होंने मोशेह तथा अहरोन को चुना कि वे तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर निकाल लाएं. 7 अब याहवेह की उपस्थिति में निश्छल और शांत खड़े हो जाओ, कि मैं याहवेह के सामने तुम्हारे साथ मिलकर याहवेह से उनके द्वारा तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के प्रति किए गए हर एक अच्छे काम का स्मरण प्रस्तुत कर सकूं. 8 "जब याकोब मिस्र देश में जाकर बस गए, उनके वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी और याहवेह ने उनके पास मोशेह तथा अहरोन को भेज दिया. उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकास किया. और वे इस स्थान में आकर बस गए. 9 "मगर उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुला दिया. तब याहवेह ने उन्हें हाज़ोर की सेना के सेनापति सीसरा के अधीन कर दिया, बाद फिलिस्तीनियों के, और फिर मोआब के राजा के अधीन. ये सब तुम्हारे पूर्वजों के साथ युद्ध करते रहे. 10 तब उन्होंने यह कहते हुए याहवेह की दोहाई दी, 'याहवेह का परित्याग करके तथा बाल और अश्तोरेथ की वंदना करने के द्वारा हमने पाप किया है. अब हमारे शत्रुओं की अधीनता से हमें विमुक्त कीजिए कि हम अब आपकी ही वंदना कर सकें.' 11 तब याहवेह ने यरूबाल, बाराक, यिफ्ताह तथा शमुएल को निर्धारित किया और तुम चारों ओर के अपने समान शत्रुओं की अधीनता से छुड़ाए गए और तुम सुरक्षा में रहने लगे. 12 "जब तुमने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश तुम पर हमला करने के उद्देश्य से आगे बढ़ रहा है, तुमने मुझसे आग्रह किया, 'बस, अब हम पर राजा ही शासन करेगा'—जबकि वस्तुतः तुम्हारे राजा याहवेह तुम्हारे परमेश्वर हैं. 13 अब ध्यान रहे कि तुम्हारा चुना हुआ राजा यह है—तुम्हारे ही द्वारा चुना हुआ! देखो, याहवेह ने तुम्हें राजा प्रदान किया है. 14 अब यदि तुम याहवेह के प्रति श्रद्धा और भय की भावना बनाए रखो, उनके प्रति आज्ञाकारी रहकर उन्हीं की वंदना करते रहो तथा उनके आदेशों के प्रति विद्रोही न बनो; साथ ही यदि तुम और तुम पर शासन कर रहा राजा याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का अनुसरण करते रहें, तो सभी कुछ भला ही होता रहेगा! 15 मगर यदि तुम याहवेह की आज्ञाओं का पालन न करो, उनके आदेशों के प्रति विद्रोह करो, तब याहवेह का हाथ तुम पर उठेगा जैसे तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध उठा था. 16 "तो अब स्थिर खड़े होकर स्वयं अपने नेत्रों से वह अद्भुत काम को होता हुआ देखो! जो याहवेह तुम्हारे सामने करने पर हैं. 17 क्या यह गेहूं की उपज कटने का समय नहीं है? मैं याहवेह से प्रार्थना करूंगा कि वह गर्जन और बारिश भेज दें. इसी से तुम पर यह बात साबित हो जाएगी, कि याहवेह की दृष्टि में कैसा घोर है यह पाप, जो तुमने उनसे अपने लिए राजा की याचना करने के द्वारा किया है." 18 तब शमुएल ने याहवेह की दोहाई दी और याहवेह ने उसी समय गर्जन और बारिश भेज दी. सभी लोगों पर याहवेह तथा शमुएल का गहरा भय छा गया. 19 सभी लोग शमुएल से विनती करने लगे, "याहवेह, अपने परमेश्वर से हमारे लिए, अपने सेवकों के लिए, प्रार्थना कीजिए कि इससे हमारी मृत्यु न हो जाए, क्योंकि राजा की याचना करने के द्वारा हमने अपने पापों की संख्या बढ़ा डाली है." 20 तब शमुएल ने लोगों से कहा, "डरो मत! अवश्य यह गलत काम तो आपने किया है; पर याहवेह का अनुसरण करना कभी न छोड़ना. अपने संपूर्ण हृदय से याहवेह की वंदना करते रहना. 21 बेकार की वस्तुओं की ओर कभी न फिरना. वे न तो लाभकर होती है, न ही उनमें तुम्हें छुड़ाने की ही क्षमता है, क्योंकि वे खोखली हैं. 22 अपने महान नाम की रक्षा के लिए याहवेह अपने लोगों को कभी ना अस्वीकार करेगा. तुम्हें अपनी निज प्रजा बना लेने में उनकी संतुष्टि थी. 23 जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझसे याहवेह के विरुद्ध वह पाप कभी न होगा, कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना छोड़ दूं. इसके अलावा मैं सही और सीधे मार्ग के विषय में तुम्हें शिक्षा देता रहूंगा. 24 स्थिति कैसी भी हो, याहवेह पर तुम्हारी श्रद्धा बनी रहे, तथा संपूर्ण हृदय से, पूर्ण विश्वासयोग्यता में, तुम उनकी सेवा-वन्दना करते रहो, और सोचो की कैसे बड़े-

बड़े काम याहवेह ने तुम्हारे लिए किए हैं. 25 मगर यदि तुम दुराचार में लगे रहो,
तो तुम्हारा और तुम्हारे राजा, दोनों ही का अस्तित्व मिटा दिया जाएगा.”

13 शासन शुरू करते समय शाऊल की आयु तीस वर्ष की थी, और उन्होंने
इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया. 2 इस्राएल राष्ट्र में से शाऊल
ने अपने लिए तीन हज़ार पुरुषों को चुना. इनमें से दो हज़ार उनके साथ बेथेल के
पहाड़ी क्षेत्र के नगर मिकमाश में तथा शेष एक हज़ार बिन्यामिन की सीमा में
गिबिया नामक स्थान में योनातन के साथ रहने लगे. शाऊल ने बाकी सभी को
घर लौट जाने का आदेश दिया. 3 योनातन ने गेबा में स्थित फिलिस्तीनियों
की टुकड़ी को हरा दिया. फिलिस्तीनियों को इसकी सूचना प्राप्त हो गई.
स्थिति को समझते हुए शाऊल ने सारे इस्राएल में यह संदेश भिजवा दिया, “सारे
इब्री सावधान हो जाएं!” 4 सारे इस्राएल राष्ट्र ने इसका मतलब यह निकाला:
“फिलिस्तीनियों की छावनी पर शाऊल ने हमला किया है, जिसके फलस्वरूप
अब उनके लिए इस्राएल एक घृणित शत्रु बन गया है.” तब लोगों को शाऊल के
सामने एकत्र करने के लिए गिलगाल नामक स्थान पर बुलाया गया. 5 इस्राएल
से युद्ध के लिए फिलिस्तीनियों ने तीन हज़ार रथ, छः हज़ार घुड़सवार तथा एक
ऐसी सेना तैयार कर ली थी, जो गिनती में वैसी ही लगती थी जैसे सागर के
किनारे के रेत के कण. इन सबने जाकर मिकमाश नामक स्थान पर बेथ-आवेन
के पूर्व में तंबू डाल दिए. 6 जब इस्राएली सेना को यह अहसास हुआ कि वे
यहां कठिन स्थिति में आ फंसे हैं, क्योंकि उनकी सेना पर दबाव बढ़ता जा
रहा था, सेना ने गुफाओं, झाड़ियों, चट्टानों, गड्ढों तथा कुंओं में जाकर छिपने
लगे. 7 कुछ इब्री तो भागकर यरदन के पार गाद और गिलआद तक चले गए.
मगर शाऊल गिलगाल में ही ठहरे रहे. उनके सैनिकों पर घोर भय छाया हुआ
था. 8 शाऊल इस स्थिति में शमुएल द्वारा बताए गए समय, सात दिन तक
ठहरे रहे. मगर शमुएल गिलगाल नहीं आए. सैनिक शाऊल को छोड़कर जाने
लगे. 9 तब शाऊल ने आदेश दिया, “मेरे पास होमबलि तथा मेल बलियां लाई
जाएं.” शाऊल ने होमबलि चढ़ाई. 10 ठीक जैसे ही उन्होंने होमबलि चढ़ाना
खत्म किया ही था, शमुएल वहां आ पहुंचे. शाऊल उनसे भेंटकरने तथा उनका
अभिवंदन करने उनके निकट गए. 11 उसी क्षण शमुएल ने उनसे प्रश्न किया,
“यह क्या कर डाला है तुमने?” शाऊल ने स्पष्ट किया, “जब मैंने देखा कि सेना
मुझे छोड़ भागने लगी है, तथा आप भी बताए हुए समय पर यहां नहीं पहुंचे,
तथा वहां फिलिस्तीनी मिकमाश में इकट्ठा हो चुके थे, 12 मैंने विचार किया,
‘अब तो फिलिस्तीनी निश्चयतः गिलगाल आकर मुझ पर हमला करेंगे, और
मैंने याहवेह से सहायता की बिनती ही नहीं की.’ तब इस विवशता में मैंने
होमबलि चढ़ा दी है.” 13 शमुएल ने उत्तर दिया, “तुमने एक मूर्खतापूर्ण काम
किया है! वह आदेश, जो तुम्हें याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा दिया गया था,
उसका तुमने उल्लंघन कर दिया है. यदि तुमने उस आदेश का पालन किया
होता, याहवेह इस्राएल पर तुम्हारे शासन को हमेशा के लिए स्थिर कर देते!
14 याहवेह ने अपने लिए एक ऐसा व्यक्ति खोज लिया है, जो उनके हृदय
के अनुकूल है. याहवेह ने उसे ही अपनी प्रजा का नेतृत्व करने के लिए चुन
लिया है; यह सब इसलिये, कि तुमने उन आदेशों का पालन नहीं किया, जो
तुम्हें याहवेह द्वारा दिए गए थे. अब तुम्हारा शासन चिरस्थायी न रहेगा.” 15
इसके बाद शमुएल गिलगाल से बिन्यामिन प्रदेश के गिबिया नगर को चले गए.
शाऊल ने शेष रह गए सैनिकों को इकट्ठा किया. ये गिनती में लगभग छः सौ थे.
16 शाऊल, उनके पुत्र योनातन तथा बाकी रह गई सेना बिन्यामिन प्रदेश के
गेबा में ही ठहरे रहे; जबकि फिलिस्तीनियों का शिविर मिकमाश में था. 17
फिलिस्तीनी शिविर से तीन छापामार दल निकले, एक दल उस मार्ग पर, जो
शुआल देश के ओफ़राह नगर को जाता था, 18 दूसरा दल उस मार्ग की ओर,
जो बेथ-होरोन की ओर जाता था तथा अन्य दल उस सीमा की ओर चला जाता
था, जो निर्जन प्रदेश की दिशा में ज़ेबोईम घाटी के ढलान पर है. 19 संपूर्ण
इस्राएल राष्ट्र में कोई भी लोहार न था क्योंकि फिलिस्तीनियों ने इस आशंका
के चलते यह रोक रखा था, “हमारे विरुद्ध प्रयोग के लिए इब्री तलवारों और
भालों का निर्माण न करने लगे!” 20 फलस्वरूप इस्राएलियों को अपने हल की
फाल, कुल्हाड़ी, हंसिया तथा काटने के उपकरणों में धार पैनी कराने के लिए
फिलिस्तीनियों के पास ही जाना पड़ता था. 21 तब हल की फाल पर धार
लगाने के लिए दो तिहाई शेकेल; कुल्हाड़ी या अंकुश की धार लगाने के लिए
एक तिहाई शेकेल देना होता था. 22 तब युद्ध के समय शाऊल और योनातन के
साथ के सैनिकों के पास न तो तलवार थी न भाला. हां सिर्फ शाऊल और उनके
पुत्र योनातन के पास ये हथियार थे. 23 फिलिस्तीनी सेना की एक टुकड़ी
मिकमाश के पर्वतीय संकरे मार्ग में निकल हुई थी.

14 एक दिन योनातन ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, “चलो, उस ओर चलें,
जहां फिलिस्तीनी सेना की छावनी है.” उसकी सूचना उसने अपने पिता
को नहीं दी. 2 शाऊल मिगरोन नामक स्थान पर एक अनार के पेड़ के नीचे बैठे
हुए थे. यह स्थान गिबियाह की सीमा के निकट था. उनके साथ के सैनिकों
की संख्या लगभग छः सौ थी, 3 इस समय अहीयाह एफ़ोद धारण किए हुए
उनके साथ था. वह अहीतूब का पुत्र था, जो एली के पुत्र, फिनिहास के पुत्र
इखाबोद का भाई था. एली शीलो में याहवेह के पुरोहित थे. सेना इस बात से
बिलकुल अनजान थी कि योनातन वहां से जा चुके थे. 4 उस संकरे मार्ग के
दोनों ओर चट्टानों की तीव्र ढलान थी. योनातन यहीं से होकर फिलिस्तीनी सेना
शिविर तक पहुंचने की योजना बना रहे थे. एक चट्टान का नाम था बोसेस और
दूसरी का सेनेह. 5 उत्तरी दिशा की चट्टान मिकमाश के निकट थी तथा दक्षिण
दिशा की चट्टान गेबा के. 6 योनातन ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, “चलो, इन
खतना-रहितों की छावनी तक चलें. संभव है कि याहवेह हमारे लिए सक्रिय
हो जाएं. किसमें है यह क्षमता कि याहवेह को रोके? वह छुड़ौती किसी भी
परिस्थिति में दे सकते हैं, चाहे थोड़ों के द्वारा या बहुतों के द्वारा.” 7 उनके
शस्त्रवाहक ने उनसे कहा, “जो कुछ आपको सही लग रहा है, वही कीजिए.
जो आपने निश्चय कर लिया है, उसे पूरा कीजिए. मैं हर एक परिस्थिति में
आपके साथ हूं.” 8 योनातन ने कहा, “बहुत बढ़िया! हम उन लोगों के सामने
जाएंगे कि वे हमें देख सकें. 9 यदि वे हमसे यह कहें, ‘हमारे वहां पहुंचने तक
वहीं ठहरे रहना,’ तब हम वहीं खड़े रहेंगे, और उनके पास नहीं जाएंगे. 10
मगर यदि वे यह कहें, ‘यहां हमारे पास आओ,’ तब हम उनके निकट चले
जाएंगे; क्योंकि यह हमारे लिए एक चिन्ह होगा कि याहवेह ने उन्हें हमारे
अधीन कर दिया है.” 11 जब उन दोनों ने स्वयं को फिलिस्तीनी सेना पर प्रकट
किया, फिलिस्तीनियों ने उन्हें देखा, वे आपस में विचार करने लगे, “देखो,
देखो, इब्री अब अपनी उन गुफाओं में से निकलकर बाहर आ रहे हैं, जहां वे
अब तक छिपे हुए थे.” 12 तब उन सैनिकों ने योनातन तथा उनके हथियार
उठानेवाले से कहा, “इधर आ जाओ कि हम तुम्हें एक-दो पाठ पढ़ा सकें.”
योनातन ने अपने हथियार उठानेवाले से कहा, “चलो, चलो. मेरे पीछे चले
आओ, क्योंकि याहवेह ने उन्हें इस्राएल के अधीन कर दिया है.” 13 तब
योनातन अपने हाथों और पैरों का उपयोग करते हुए ऊपर चढ़ने लगे और
उनका शस्त्रवाहक उनके पीछे-पीछे चढ़ता चला गया. योनातन फिलिस्तीनियों
को मारते चले गए और पीछे-पीछे उनके शस्त्रवाहक ने भी फिलिस्तीनियों को
मार गिराया. 14 उस पहली मार में योनातन और उनके शस्त्रवाहक ने लगभग
बीस सैनिकों को मार गिराया था और वह क्षेत्र लगभग आधा एकड़ था. 15
उससे फिलिस्तीनी शिविर में, मैदान में तथा सभी लोगों में आतंक छा गया.
सैनिक चौकी में तथा छापामार दलों में भी आतंक छा गया. भूमि कांपने लगी
जिससे सब में आतंक और भी अधिक गहरा हो गया. 16 बिन्यामिन प्रदेश की

सीमा में स्थित गिबिया में शाऊल का पहरेदार देख रहा था कि फिलिस्तीनी
सैनिक बड़ी संख्या में इधर-उधर हर दिशा में भाग रहे थे. 17 तब शाऊल ने
अपने साथ के सैनिकों को आदेश दिया, "सबको इकट्ठा करो और मालूम करो
कि कौन-कौन यहां नहीं है." जब सैनिक इकट्ठा हो गए तो यह मालूम हुआ कि
योनातन और उनका शस्त्र उठानेवाला वहां नहीं थे. 18 तब शाऊल ने अहीयाह
से कहा, "एफ़ोद यहां लाया जाए." (उस समय अहीयाह एफ़ोद धारण करता
था.) 19 यहां जब शाऊल पुरोहित से बातें कर ही रहे थे, फिलिस्तीनी शिविर में
आतंक गहराता ही जा रहा था. तब शाऊल ने पुरोहित को आदेश दिया, "अपना
हाथ बाहर निकाल लीजिए." 20 शाऊल और उनके साथ जितने व्यक्ति थे युद्ध
के लिए चल पड़े. फिलिस्तीनी शिविर में उन्होंने देखा कि घोर आतंक में
फिलिस्तीनी सैनिक एक दूसरे को ही तलवार से घात किए जा रहे थे. 21 वहां
कुछ इब्री सैनिक ऐसे भी थे, जो शाऊल की सेना छोड़ फिलिस्तीनियों से जा
मिले थे. अब वे भी विद्रोही होकर शाऊल और योनातन के साथ मिल गए. 22
इसी प्रकार, वे इस्राएली, जो एफ्राईम प्रदेश के पर्वतों में जा छिपे थे, यह सुनकर
कि फिलिस्तीनी भाग रहे हैं, वे भी युद्ध में उनका पीछा करने में जुट गए. 23 इस
प्रकार याहवेह ने उस दिन इस्राएल को छुड़ौती दी. युद्ध बेथ-आवेन के परे फैल
चुका था. 24 उस दिन इस्राएल सैनिक बहुत ही थक चुके थे क्योंकि शाऊल ने
शपथ ले रखी थी, "शापित होगा वह व्यक्ति, जो शाम होने के पहले भोजन
करेगा, इसके पहले कि मैं अपने शत्रुओं से बदला ले लूं." तब किसी भी सैनिक
ने भोजन नहीं किया. 25 सेना वन में प्रवेश कर चुकी थी और वहां भूमि पर
शहद का छत्ता पड़ा हुआ था. 26 जब सैनिक वन में आगे बढ़ रहे थे वहां शहद
बहा चला जा रहा था, मगर किसी ने शहद नहीं खाया क्योंकि उन पर शपथ
का भय छाया हुआ था. 27 मगर योनातन ने अपने पिता द्वारा सेना को दी गई
शपथ को नहीं सुना था. उसने अपनी लाठी का छोर शहद के छत्ते में डाल
दिया. और जब उसने उस शहद को खाया, उसकी आंखों में चमक आ गई. 28
तब सैनिकों में से एक ने उन्हें बताया, "तुम्हारे पिता ने सेना को इन शब्दों में यह
शपथ दी थी, 'शापित होगा वह व्यक्ति जो आज भोजन करेगा!' इसलिये सब
सैनिक बहुत ही थके मांदे हैं." 29 योनातन ने कहा, "राष्ट्र के लिए मेरे पिता ने
ही संकट उत्पन्न किया है. देख लो, मेरे शहद के चखने पर ही मेरी आंखें कैसी
चमकने लगीं हैं. 30 कितना अच्छा होता यदि आज सभी सैनिकों ने शत्रुओं से
लूटी सामग्री में से भोजन कर लिया होता! तब शत्रुओं पर हमारी जय और भी
अधिक उल्लेखनीय होती." 31 उस दिन सेना ने फिलिस्तीनियों को मिकमाश
से लेकर अय्जालोन तक हरा दिया. तब वे बहुत ही थक चुके थे. 32 तब
सैनिक शत्रुओं की सामग्री पर लालच कर टूट पड़े. उन्होंने भेड़ें गाय-बैल तथा
बछड़े लूट लिए. उन्होंने वहीं भूमि पर उनका वध किया और सैनिक उन्हें लहू
समेत खाने लगे. 33 इसकी सूचना शाऊल को दी गई, "देखिए, सेना याहवेह
के विरुद्ध पाप कर रही है—वे लहू के साथ उन्हें खा रहे हैं." शाऊल ने उत्तर
दिया, "तुम सभी ने विश्वासघात किया है. एक बड़ा पत्थर लुढ़का कर यहां मेरे
सामने लाओ." 34 उन्होंने आगे आदेश दिया, "तुम सब सैनिकों के बीच में
जाकर उनसे यह कहो, 'तुममें से हर एक अपना अपना बैल या अपनी-अपनी
भेड़ यहां मेरे सामने उस स्थान पर लाकर उसका वध करे और तब उसे खाए,
मगर मांस को लहू सहित खाकर याहवेह के विरुद्ध पाप न करो.'" तब उस रात
हर एक ने अपना अपना बैल वहीं लाकर उसका वध किया. 35 फिर शाऊल ने
याहवेह के लिए एक वेदी बनाई. यह उनके द्वारा याहवेह के लिए बनाई पहली
वेदी थी. 36 शाऊल ने अपनी सेना से कहा, "रात में हम फिलिस्तीनियों पर
हमला करें. सुबह होते-होते हम उन्हें लूट लेंगे. उनमें से एक भी सैनिक जीवित
न छोड़ा जाए." उन्होंने सहमति में उत्तर दिया, "वही कीजिए, जो आपको सही
लग रहा है." मगर पुरोहित ने सुझाव दिया, "सही यह होगा कि इस विषय में
हम परमेश्वर की सलाह ले लें." 37 तब शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मैं
फिलिस्तीनियों पर हमला करूं? क्या आप उन्हें इस्राएल के अधीन कर देंगे?"
मगर परमेश्वर ने उस समय उन्हें कोई उत्तर न दिया. 38 तब शाऊल ने सभी
सैन्य अधिकारियों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम सभी प्रधानों, यहां
आओ कि हम यह पता करें कि आज यह पाप किस प्रकार किया गया है. 39
इस्राएल के रखवाले जीवित याहवेह की शपथ, यदि यह पाप स्वयं मेरे पुत्र
योनातन द्वारा भी किया गया हो, उसके लिए मृत्यु दंड तय है." सारी सेना
में से एक भी सैनिक ने कुछ भी न कहा. 40 तब शाऊल ने संपूर्ण इस्राएली
सेना से कहा, "ठीक है. एक ओर मैं और योनातन खड़े होंगे और दूसरी ओर
तुम सभी." सेना ने उत्तर दिया, "आपको जो कुछ सही लगे, कीजिए." 41
तब शाऊल ने यह प्रार्थना की, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, यदि यह पाप
मेरे द्वारा या मेरे पुत्र योनातन द्वारा हीं किया गया है, तब याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर, तब उरीम के द्वारा इसकी पुष्टि कीजिए. यदि यह पाप आपकी प्रजा
इस्राएल के द्वारा किया गया है, तब इसकी पुष्टि थुम्मीम द्वारा कीजिए." इस
प्रक्रिया से चिट्ठियों द्वारा योनातन तथा शाऊल सूचित किए गए और सेना निर्दोष
घोषित कर दी गई. 42 तब शाऊल ने आदेश दिया, "चिट्ठियां मेरे तथा योनातन
के बीच डाली जाएं." इसमें चिट्ठी द्वारा योनातन चुना गया. 43 तब शाऊल
ने योनातन को आदेश दिया, "अब बताओ, क्या किया है तुमने?" योनातन
ने उन्हें बताया, "सच यह है कि मैंने अपनी लाठी का सिरा शहद के छत्ते
से लगा, उसमें लगे थोड़े से शहद को सिर्फ चखा ही था. क्या यह मृत्यु दंड
योग्य अपराध है!" 44 "योनातन, यदि मैं तुम्हें मृत्यु दंड न दूं तो परमेश्वर
मुझे कठोर दंड देंगे," शाऊल ने उत्तर दिया. 45 मगर सारी सेना इनकार कर
कहने लगी, "क्या योनातन वास्तव में मृत्यु दंड के योग्य है, जिसके द्वारा आज
हमें ऐसी महान विजय प्राप्त हुई है? कभी नहीं, कभी नहीं! जीवित याहवेह
की शपथ, उसके सिर के एक केश तक की हानि न होगी, क्योंकि जो कुछ
उसने आज किया है, वह उसने परमेश्वर की सहायता ही से किया है." इस
प्रकार सेना ने योनातन को निश्चित मृत्यु दंड से बचा लिया. 46 इसके बाद
शाऊल ने फिलिस्तीनियों का पीछा करने का विचार ही त्याग दिया, और
फिलिस्ती अपनी-अपनी जगह पर लौट गए. 47 जब शाऊल इस्राएल के राजा
के रूप में प्रतिष्ठित हो गए, उन्होंने उनके निकटवर्ती सभी शत्रुओं से युद्ध करना
शुरू कर दिया: मोआबियों, अम्मोनियों, एदोमियों, ज़ोबाह के राजाओं तथा
फिलिस्तीनियों से. 48 उन्होंने अमालेकियों को मार गिराया और इस्राएल को
उसके शत्रुओं से छुड़ौती प्रदान की. 49 शाऊल के पुत्र थे, योनातन, इशवी तथा
मालखी-शुआ. उनकी दो पुत्रियां भी थीं: बड़ी का नाम था मेराब तथा छोटी का
मीखल. 50 शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम था, जो अहीमाज़ की बेटी
थी. उनकी सेना के प्रधान थे नेर के पुत्र अबनेर. नेर शाऊल के पिता कीश के
भाई थे. 51 शाऊल के पिता कीश तथा अबनेर के पिता नेर, दोनों ही अबीएल
के पुत्र थे. 52 शाऊल के पूरे जीवनकाल में इस्राएलियों और फिलिस्तीनियों के
बीच लगातार युद्ध चलता रहा. जब कभी शाऊल की दृष्टि किसी साहसी और
बलवान युवक पर पड़ती थी, वह उसे अपनी सेना में शामिल कर लेते थे.

15 एक दिन शमुएल शाऊल के पास आए और उनसे कहने लगे, "इस्राएली
प्रजा के लिए राजा के पद पर तुम्हारा अभिषेक करने के लिए याहवेह ने
मुझे ही चुना था; तब अब ध्यानपूर्वक याहवेह द्वारा भेजा संदेश सुनो. 2 सेनाओं
के याहवेह का यह वचन है. 'अमालेकियों ने मिस्र देश से निकलकर आ रहे
इस्राएल का विरोध करते हुए क्या-क्या किया था, मैंने अच्छी रीति से ध्यान में
रखा है, उनके इस व्यवहार के लिए मैं सजा ज़रूर दूंगा. 3 तो अब जाओ और
अमालेकियों पर वार करो, और उनकी सारी वस्तुओं को पूरी तरह नष्ट कर
डालो. किसी को भी न छोड़ना; पुरुष, स्त्री, बालक शिशु, बैल, भेड़, ऊंट तथा

गधे, सभी मार डाले जाएं.'" 4 तब शाऊल ने सेना को बुलाया कि वे तेलाइम में
इकट्ठे हों. ये सब दो लाख सैनिक थे, तथा दस हज़ार पुरुष यहूदिया से आए हुए
थे. 5 शाऊल इन्हें लेकर अमालेक नगर पहुंचे और वहां घाटी में घात लगाकर
बैठ गए. 6 वहां शाऊल ने केनी जाति के लोगों से कहा, "तुम लोग यहां से
निकल भागो. अमालेकियों के बीच से तुम्हारा चले जाना ही सही होगा. कहीं
उनके साथ तुम्हारा भी नाश न हो जाए. तुम लोगों ने मिस्र देश से निकलकर
आए इस्राएलियों के साथ कृपापूर्ण व्यवहार किया था." तब केनी अमालेकियों
को छोड़कर चले गए. 7 तब शाऊल ने अमालेकियों पर हमला कर हाविलाह
से लेकर शूर तक, जो मिस्र देश के पास है, अमालेकियों को मारा. 8 उन्होंने
अमालेकियों के राजा अगाग को जीवित पकड़ लिया और तलवार से देश के
सभी लोगों की हत्या कर दी. 9 मगर शाऊल तथा सेना ने राजा अगाग तथा
सबसे अच्छी भेड़ों, बैलों तथा पुष्ट बछड़ों और मेमनों की हत्या नहीं की.
साथ ही उन वस्तुओं को भी नष्ट नहीं किया, जो अच्छी तथा मूल्यवान थी. इन्हें
नष्ट करना उन्हें सही न लगा. हां, उन्होंने वह सब नष्ट कर दिया, जो उन्हें घृणित
लगा, जो उनकी दृष्टि में बेकार था. 10 शमुएल को याहवेह का यह संदेश दिया
गया: 11 "मुझे खेद है कि मैंने शाऊल को राजा चुना है, क्योंकि वह मुझसे दूर
हो चुका है. उसने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया." इस पर शमुएल बहुत ही
क्रोधित हो गए, और वह याहवेह के सामने पूरी रात रोते रहे. 12 प्रातःकाल
वह शीघ्र उठ गए कि जाकर शाऊल से मिलें; मगर उन्हें यह सूचना दी गई,
"शाऊल कर्मेल को चले गए थे, कि वह वहां अपनी स्मृति के लिए एक स्मारक
का निर्माण करें. इसके बाद वह आगे बढ़कर गिलगाल को चले गए हैं." 13
जब शमुएल शाऊल के निकट पहुंचे, शाऊल ने उनका अभिवंदन करते हुए
कहा, "याहवेह की कृपादृष्टि आप पर बनी रहे! मैंने याहवेह के आदेश का
पालन किया है." 14 "अच्छा!" शमुएल ने शाऊल से प्रश्न किया, "तब मैं जो
भेड़ों का मिमियाना तथा गायों का रम्भाना सुन रहा हूं; वह कहां से आता है?"
15 शाऊल ने स्पष्ट किया, "उन्हें सेना अमालेकियों के यहां से ले आये है. सेना
ने सर्वोत्तम पशु याहवेह, हमारे परमेश्वर को चढ़ाने के उद्देश्य से बचा लिए
हैं, शेष सभी का वध कर दिया गया है." 16 "बस! बस करो!" शमुएल ने
शाऊल से कहा, "अब वह सुनो, जो याहवेह ने कल रात मुझ पर प्रकट किया
है." शाऊल ने उत्तर दिया, "जी, बताइए." 17 शमुएल ने उनसे कहा, "क्या
यह सच नहीं कि जब तुम स्वयं अपने ही दृष्टि में महत्वहीन थे, तुम्हें इस्राएल
के सारा गोत्रों का अगुआ बना दिया गया? याहवेह ने तुम्हें इस्राएल का राजा
नियुक्त किया. 18 याहवेह ने तुम्हें यह कहकर विशेष काम का दायित्व सौंपते
हुए भेजा था 'जाओ! उन पापी अमालेकियों का नाश करो! उनका पूरा नाश
होने तक युद्ध करते रहो.' 19 तुमने याहवेह के आदेश का पालन क्यों नहीं
किया? बल्कि तुमने लूट की वस्तुओं का लोभ किया है, जो याहवेह की दृष्टि में
अनुचित है." 20 शाऊल ने अपना पक्ष स्पष्ट करते हुए कहा, "मगर मैंने तो
याहवेह की आज्ञा का पालन किया है! जिस विशेष काम के लिए याहवेह ने मुझे
भेजा था, वह मैंने पूर्ण किया है. अमालेकियों का संहार करने के बाद मैं राजा
अगाग को यहां ले आया हूं. 21 हां, सेना ने कुछ भेड़ें तथा गाय-बैल बचा लिए
हैं—संहार के लिए निर्धारित पशुओं में से सर्वोत्तम, ताकि इन्हें गिलगाल में
याहवेह, आपके परमेश्वर को चढ़ाए जा सके." 22 शमुएल ने उनसे पूछा:
"क्या याहवेह की खुशी आज्ञाकारिता से बढ़कर होमबलि तथा बलि चढ़ाने में
है? निःसंदेह आज्ञाकारिता, बलि चढ़ाने से कहीं अधिक बढ़कर है, तथा याहवेह
के वचन को ध्यान से सुनना मेढ़ों की बलि से बढ़कर है. 23 विद्रोह वैसा ही
पाप है, जैसा जादू-टोना, और अहंकार वैसा ही घोर अपराध है जैसा मूर्ति पूजा.
इसलिये कि तुमने याहवेह के आदेश को अस्वीकार कर दिया है, याहवेह ने भी
तुम्हारे राजत्व को अस्वीकार कर दिया है." 24 यह सुन शाऊल ने शमुएल से
कहा, "मैंने पाप किया है. मैंने याहवेह के आदेश का उल्लंघन तथा आपके
निर्देशों को ठुकराया है. इसका कारण यह था कि मुझे अपनी सेना से भय लग
रहा था, और मैं उनकी इच्छा का विरोध न कर सका. 25 तब अब कृपा कर
मेरा पाप क्षमा कर दें. लौटकर मेरे साथ चलिए कि मैं याहवेह की वंदना कर
सकूं." 26 शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ लौटकर नहीं जाऊंगा,
क्योंकि तुमने याहवेह के आदेश को ठुकराया है, याहवेह भी तुम्हें इस्राएल के
राजा के रूप में अस्वीकार कर चुके हैं." 27 जैसे ही शमुएल मुड़कर जाने के
लिए तैयार हुए, शाऊल ने उनके बाहरी वस्त्र के छोर को पकड़ लिया और इस
काम में वह वस्त्र फट गया. 28 इस पर शमुएल ने शाऊल से कहा, "आज
याहवेह ने इस्राएल राज्य को तुमसे छीनकर तुम्हारे पड़ोसी को दे दिया है, जो
तुमसे श्रेष्ठ है. 29 इस्राएल के परम प्रधान अपनी बातें नहीं बदलते, और न ही
वह अपने विचार बदलते हैं, क्योंकि वह मनुष्य नहीं कि अपने विचार बदलते
रहें." 30 शाऊल ने दोबारा स्वीकार किया, "मैंने पाप किया है, मगर कृपया
मेरी प्रजा के पुरनियों के सामने तथा सारे इस्राएल राष्ट्र के सामने मेरे सम्मान का
ध्यान रखकर मेरे साथ वहां लौट चलिए, कि मैं याहवेह, आपके परमेश्वर की
वंदना कर सकूं." 31 तो शमुएल उनके साथ लौटने के लिए अंत में सहमत हो
गए, और शाऊल ने वहां याहवेह की वंदना की. 32 इसके बाद शमुएल ने
आदेश दिया, "अमालेकियों के राजा अगाग को यहां लाया जाए." अगाग
उनके सामने प्रसन्नता से, यह विचार करता हुआ आया. "मृत्यु का कड़वा क्षण
अब बीत चुका है." 33 मगर शमुएल ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "ठीक
जिस प्रकार तुम्हारी तलवार ने न जाने कितनी स्त्रियों की गोद सुनी कर दी है,
उसी प्रकार आज तुम्हारी माता भी संतानहीन स्त्रियों में से एक हो जाएगी." यह
कहते हुए शमुएल ने गिलगाल में याहवेह के सामने अगाग को टुकड़े-टुकड़े कर
दिए. 34 इसके बाद शमुएल रामाह नगर को चले गए, तथा शाऊल अपने घर
शाऊल के गिबियाह को. 35 इसके बाद शमुएल ने आजीवन शाऊल से भेंट न
की; मगर वह शाऊल के लिए विलाप करते रहे. याहवेह को इस विषय का खेद
रहा कि उन्होंने शाऊल को इस्राएल का राजा बनाया था.

16 याहवेह ने शमुएल से कहा, "बहुत हुआ! शाऊल के लिए और कितना
रोते रहोगे? मैं उसे इस्राएल के राजा के रूप में अयोग्य ठहरा चुका हूं.
अपनी तेल के सींग में तेल भरकर निकलो. मैं तुम्हें बेथलेहेम के यिशै के यहां
भेज रहा हूं, उसके पुत्रों में से एक को मैं अपने लिए राजा चुन चुका हूं." 2
शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया, "यह कैसे संभव है? शाऊल इसके विषय में सुनेगा
तो मेरी हत्या कर देगा." तब याहवेह ने आदेश दिया, "एक बछड़ा अपने साथ
ले जाओ, और यह घोषणा करना, मैं याहवेह के लिए बलि चढ़ाने आया हूं. 3
तब इस बलि अर्पण के मौके पर यिशै को आमंत्रित करना. मैं तुम्हें बताऊंगा कि
तुम्हें क्या करना होगा. मेरी ओर से तुम्हें उसका अभिषेक करना होगा, जिसे मैं
तुम्हारे लिए संकेत करूंगा." 4 शमुएल ने याहवेह के आदेश के अनुसार किया.
जब वह बेथलेहेम पहुंचे, उनसे भेंटकरने आए नगर के पुरनिये भयभीत हो कांप
रहे थे. उन्होंने उनसे पूछा, "क्या सब कुछ सकुशल है?" 5 शमुएल ने उत्तर
दिया, "हां, सब कुशल है. मैं यहां याहवेह के लिए बलि अर्पित करने आया हूं.
स्वयं को शुद्ध करके बलि अर्पण के लिए मेरे साथ चलो." तब उन्होंने यिशै और
उनके पुत्रों को शुद्ध करके उन्हें बलि अर्पण के लिए आमंत्रित किया. 6 जब वे
सब एकत्र हुए, शमुएल का ध्यान एलियाब की ओर गया ओर उन्होंने अपने मन
में विचार किया, "निःसंदेह, यहां याहवेह के सामने उनका अभिषिक्त खड़ा
हुआ है." 7 मगर याहवेह ने शमुएल से कहा, "न तो उसके रूप में और न
उसके डीलडौल से प्रभावित हो जाओ, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य ठहरा दिया है.
क्योंकि याहवेह का आंकलन वैसा नहीं होता, जैसा मनुष्य का होता है: मनुष्य
बाहरी रूप को देखकर आंकलन करता है, मगर याहवेह हृदय को देखते हैं." 8

इसके बाद यिशै ने अबीनादाब को बुलाया कि वह शमुएल के सामने प्रस्तुत
किया जाए, मगर शमुएल ने उन्हें बताया, “याहवेह ने इसे भी नहीं चुना है.” 9
तब यिशै ने शम्माह को प्रस्तुत किया, मगर शमुएल ने कहा, “याहवेह ने इसे भी
नहीं चुना है.” 10 यिशै ने अपने सातों पुत्र शमुएल के सामने प्रस्तुत किए, मगर
शमुएल यिशै से कहा, “याहवेह ने इनमें से किसी को भी नहीं चुना है.” 11 इस
पर शमुएल ने यिशै से प्रश्न किया, “क्या तुम्हारे इतने ही पुत्र हैं?” “नहीं, सबसे
छोटा भी है, मगर वह भेड़ों को चरा रहा है.” यिशै ने उत्तर दिया. “उसे तुरंत
बुलवा लो; उसके यहां आने तक हम आगे का कोई काम न कर सकेंगे.”
शमुएल ने कहा. 12 तब यिशै ने उसे बुलवाया. उसकी त्वचा गुलाबी, आंखें
सुंदर तथा रूप सुडौल था. याहवेह ने शमुएल को आदेश दिया, “उठो! उसका
अभिषेक करो; क्योंकि यही है मेरा चुना हुआ.” 13 तब शमुएल ने सब भाइयों
की उपस्थिति में सींग में लाए गए तेल से दावीद का अभिषेक किया. उस क्षण
से दावीद पर याहवेह का आत्मा वेग तथा बल के साथ उतरने लगे. इसके बाद
शमुएल रामाह नगर लौटे. 14 अब तक याहवेह का आत्मा शाऊल से दूर हो
चुके थे, तथा अब याहवेह की ओर से ठहराया हुआ एक दुष्ट आत्मा उन्हें
घबराने लगी. 15 शाऊल के सेवकों ने उन्हें सूचित किया, “आपके इस कष्ट
का कारण है, परमेश्वर द्वारा नियुक्त एक बुरी आत्मा. 16 हमारे स्वामी अपने इन
सेवकों को आदेश दें कि किसी अच्छे वाघवादक की खोज की जाए, कि जब-
जब परमेश्वर द्वारा नियुक्त दुष्ट आत्मा आप पर आए, वह अपने वाघ वादन द्वारा
आप में सुख-शांति भर दे.” 17 तब शाऊल ने उन्हें आदेश दिया, “जाओ!
किसी अच्छे वाघवादक की खोज करो और उसे मेरे पास ले आओ.” 18 उनमें
से एक सेवक ने उन्हें सूचित किया, “मैंने बेथलेहेम के यिशै के एक पुत्र को
देखा है. वह तन्तु वाघवादक है. उसके अलावा वह एक शूर योद्धा है, बातें करने
में बुद्धिमान है, रूपवान है तथा याहवेह उसके साथ हैं.” 19 तब शाऊल ने यिशै
के पास इस संदेश के साथ दूत भेज दिए, “अपने पुत्र दावीद को, जो इस समय
भेड़ों की रखवाली कर रहा है, मेरे पास भेज दो.” 20 इस पर यिशै ने अपने पुत्र
दावीद के साथ एक गधे पर रोटियां, द्राक्षारस की छागल तथा एक छोटा मेमना
शाऊल के लिए भेज दिया. 21 शाऊल की उपस्थिति में पहुंचकर दावीद शाऊल
की सेवा करने लगे. दावीद शाऊल के बहुत ही प्रिय पात्र थे, तब शाऊल ने उन्हें
अपना शस्त्रवाहक बना लिया. 22 शाऊल ने यिशै को यह संदेश भेज दिया,
“दावीद को मेरी सेवा में रहने दीजिए क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं.” 23
जब कभी परमेश्वर द्वारा भेजी दुष्ट आत्मा शाऊल पर प्रभावी होती थी, दावीद
अपना वाघ यंत्र लेकर वादन करने लगते थे. इससे उन्हें शांति प्राप्त हो जाती थी;
यह उनके लिए सुखद होता था, तथा बुरी आत्मा उन्हें छोड़कर चली जाती थी.

17 इस समय फिलिस्तीनियों ने युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठी की हुई
थी. वे यहूदिया के सोकोह नामक स्थान पर एकत्र थे. उन्होंने सोकोह
तथा अज़ेका के मध्यवर्ती क्षेत्र में अपने शिविर खड़े किए थे. 2 शाऊल और
उनकी सेना एलाह घाटी में एकत्र थी, जहां उन्होंने अपने शिविर खड़े किए थे.
फिलिस्तीनियों से युद्ध के लिए उन्होंने यहीं अपनी सेना संयोजित की थी. 3
फिलिस्तीनी सेना एक पहाड़ी पर तथा इस्राएली सेना अन्य पहाड़ी पर मोर्चा
बांधे खड़ी थी, और उनके मध्य घाटी थी. 4 इसी समय फिलिस्तीनियों के
शिविर से एक योद्धा बाहर आया. उसका नाम था गोलियथ, जो गाथ प्रदेश का
वासी था. कद में वह लगभग तीन मीटर ऊंचा था. 5 उसने अपने सिर पर कांसे
का टोप पहन रखा था. उसके शरीर पर पीतल का कवच था, जिसका भार
सत्तावन किलो था. 6 उसके पैरों पर भी पीतल का कवच था. उसके कंधों के
मध्य कांसे की बर्छी लटकी हुई थी 7 उसके भाले का दंड करघे के दंड समान
था. भाले के लोहे का फल लगभग सात किलो था. उसके आगे-आगे उसका
ढाल संवाहक चल रहा था. 8 इस्राएल की सेना पंक्ति के सामने खड़े हो उसने
उन्हें संबोधित कर उच्च स्वर में कहना शुरू किया, “क्या कर रहे हो तुम यहां
युद्ध संरचना में संयोजित होकर? शाऊल के दासों, मैं फिलिस्तीनी हूं. अपने
मध्य से एक योद्धा चुनो कि वह मेरे पास आए. 9 यदि वह मुझसे युद्ध कर सके
और मेरा वध कर सके, तो हम तुम्हारे सेवक बन जाएंगे; मगर यदि मैं उसे
पराजित करूं और उसका वध करूं, तो तुम्हें हमारे दास बनकर हमारी सेवा
करनी होगी.” 10 वह फिलिस्तीनी यह भी कह रहा था, “आज मैं इस्राएली
सेना को चुनौती देता हूं! मुझसे युद्ध करने के लिए एक योद्धा भेजो.” 11 जब
शाऊल तथा इस्राएली सेना ने यह सब सुना तो वे सभी निराश हो गए, और उनमें
भय समा गया. 12 दावीद यहूदिया प्रदेश में इफ्रथ क्षेत्र के बेथलेहेम नगर के
यिशै नामक व्यक्ति के पुत्र थे. यिशै के आठ पुत्र थे. शाऊल के शासनकाल में
यिशै वयोवृद्ध हो चुके थे. 13 उनके तीन बड़े पुत्र शाऊल की सेना में शामिल थे:
एलियाब उनका जेठा पुत्र, अबीनादाब दूसरा, तथा तीसरा पुत्र शम्माह. 14
दावीद इन सबसे छोटे थे. तीन बड़े भाई ही शाऊल की सेना में शामिल हुए थे.
15 दावीद शाऊल की उपस्थिति से बेथलेहेम जा-जाकर अपने पिता की भेड़ों
की देखभाल किया करते थे. 16 वह फिलिस्तीनी चालीस दिन तक हर सुबह
तथा शाम इस्राएली सेना के सामने आकर खड़ा हो जाया करता था. 17 यिशै ने
अपने पुत्र दावीद से कहा, “अपने भाइयों के लिए शीघ्र यह एफाह भर भुने
अन्न, तथा दस रोटियों की टोकरी ले जाओ. 18 इसके अतिरिक्त उनके सैन्य
अधिकारी के लिए ये दस पनीर टिकियां भी ले जाओ. अपने भाइयों का हाल
भी मालूम कर आना, और मुझे आकर सारी ख़बर देना. 19 शाऊल और उनकी
सारी सेना फिलिस्तीनियों से युद्ध करने के लक्ष्य से एलाह की घाटी में एकत्र
हैं.” 20 दावीद प्रातः जल्दी उठे और अपनी भेड़ें एक कर्मी की सुरक्षा में
छोड़कर पिता के आदेश के अनुरूप सारा प्रावधान लेकर प्रस्थान किया. वह
शिविर ठीक उस मौके पर पहुंचे, जब सेना युद्ध क्षेत्र के लिए बाहर आ ही रही
थी. इसी समय वे सब युद्ध घोष नारा भी लगा रहे थे. 21 इस्राएली सेना और
फिलिस्तीनी सेना आमने-सामने खड़ी हो गई. 22 दावीद अपने साथ लाई हुई
सामग्री सामान के रखवाले को सौंपकर रणभूमि की ओर दौड़ गए, कि अपने
भाइयों से उनके कुशल क्षेम के बारे में पूछताछ की. 23 जब वह उनसे संवाद
कर ही रहे थे, गाथ प्रदेश से आया वह गोलियथ नामक फिलिस्तीनी योद्धा,
फिलिस्तीनी सेना का पड़ाव से बाहर आ रहा था. आज भी उसने वही शब्द
दोहराए, जो वह अब तक दोहराता आया था, और दावीद ने आज वे शब्द सुने.
24 उसे देखते ही संपूर्ण इस्राएली सेना बहुत ही भयभीत होकर उसकी उपस्थिति
से दूर भागने लगी. 25 कुछ सैनिकों ने दावीद से बातचीत करते हुए पूछा,
“देख रहे हो न इस व्यक्ति को, जो हमारी ओर बढ़ा चला आ रहा है? वह
इस्राएल को तुच्छ साबित करने के उद्देश्य से रोज-रोज यही कर रहा है. जो कोई
उसे धराशायी कर देगा, राजा उसे समृद्ध सम्पन्न कर देंगे, उससे अपनी बेटी का
विवाह कर देंगे तथा उसके पिता के संपूर्ण परिवार को कर मुक्त भी कर देंगे.”
26 दावीद ने बातें कर रहे उन सैनिकों से प्रश्न किया, “उस व्यक्ति को क्या
प्रतिफल दिया जाएगा, जो इस फिलिस्तीनी का संहार कर इस्राएल के उस
अपमान को मिटा देगा? क्योंकि यह अख़तनित फिलिस्तीनी होता कौन है, जो
जीवन्त परमेश्वर की सेनाओं की ऐसी उपेक्षा करे?” 27 उन सैनिकों ने दावीद
को उत्तर देते हुए वही कहा, जो वे उसके पूर्व उन्हें बता चुके थे, “जो कोई
इसका वध करेगा, उसे वही प्रतिफल दिया जाएगा, जैसा हम बता चुके हैं.” 28
दावीद के बड़े भाई एलियाब ने दावीद को सैनिकों से बातें करते सुना. एलियाब
ने दावीद पर क्रोधित हुआ. एलियाब दावीद से पूछा, “तुम यहां क्यों आये?
मरुभूमि में उन थोड़ी सी भेड़ों को किसके पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूं
कि तुम यहां क्यों आये हो! मुझे पता है कि तू कितना अभिमानी है! मैं तेरे दुष्ट
हृदय को जानता! तुम केवल यहां युद्ध देखने के लिये आना चाहते थे!” 29

दावीद ने उत्तर दिया, “अरे! मैंने किया ही क्या है? क्या मुझे पूछताछ करने का
भी अधिकार नहीं?” 30 यह कहकर दावीद वहां से चले गए, और किसी अन्य
सैनिक से उन्होंने वही प्रश्न पूछा, जिसका उन्हें वही उत्तर प्राप्त हुआ, जो उन्हें
इसके पहले दिया गया था. 31 किसी ने दावीद का वक्तव्य शाऊल के सामने जा
दोहराया. शाऊल ने उन्हें अपने पास लाए जाने का आदेश दिया. 32 दावीद ने
शाऊल से कहा, “किसी को भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है. मैं,
आपका सेवक, जाकर उस फिलिस्तीनी से युद्ध करूंगा.” 33 शाऊल ने दावीद
को सलाह देते हुए कहा, “यह असंभव है कि तुम जाकर इस फिलिस्तीनी
से युद्ध करो; तुम सिर्फ एक बालक हो और वह जवानी से एक योद्धा.” 34
दावीद ने शाऊल को उत्तर दिया, “मैं, आपका सेवक, अपने पिता की भेड़ों की
रखवाली करता रहा हूं. जब कभी सिंह या भालू भेड़ों के झुंड में से किसी भेड़
को उठाकर ले जाता है, 35 मैं उसका पीछा कर, उस पर प्रहार कर उसके मुख
से भेड़ को निकाल लाता हूं, यदि वह मुझ पर हमला करता है, मैं उसका जबड़ा
पकड़, उस पर वार कर उसे मार डालता हूं. 36 आपके सेवक ने सिंह तथा भालू
दोनों ही का संहार किया है. इस अख़तनित फिलिस्तीनी की भी वही नियति
होने पर है, जो उनकी हुई है, क्योंकि उसने जीवन्त परमेश्वर की सेनाओं को
तुच्छ समझा है. 37 याहवेह, जिन्होंने मेरी रक्षा सिंह तथा रीछ से की है मेरी
रक्षा इस फिलिस्तीनी से भी करेंगे.” इस पर शाऊल ने दावीद से कहा, “बहुत
बढ़िया! जाओ, याहवेह की उपस्थिति तुम्हारे साथ बनी रहे.” 38 यह कहते हुए
शाऊल ने दावीद को अपने हथियारों से सुसज्जित करना शुरू कर दिया. 39
दावीद ने इनके ऊपर शाऊल की तलवार भी कस ली और फिर इन सबके साथ
चलने की कोशिश करने लगे, क्योंकि इसके पहले उन्होंने इनका प्रयोग कभी न
किया था. उन्होंने शाऊल से कहा, “इन्हें पहनकर तो मेरे लिए चलना फिरना
मुश्किल हो रहा है; क्योंकि मैंने इनका प्रयोग पहले कभी नहीं किया है.” यह
कहते हुए दावीद ने वे सब उतार दिए. 40 फिर दावीद ने अपनी लाठी ली, नदी
के तट से पांच चिकने-सुडौल पत्थर उठाए, उन्हें अपनी चरवाहे की झोली में
डाला, अपने हाथ में अपनी गोफन लिए हुए फिलिस्तीनी की ओर बढ़ चला.
41 वह फिलिस्तीनी भी बढ़ते हुए दावीद के निकट आ पहुंचा. उसके आगे-आगे
उसका ढाल उठानेवाला चल रहा था. 42 जब उस फिलिस्तीनी ने ध्यानपूर्वक
दावीद की ओर देखा, तो उसके मन में दावीद के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न हो
गए, क्योंकि दावीद सिर्फ एक बालक ही थे—कोमल गुलाबी त्वचा और बहुत
ही सुंदर. 43 उस फिलिस्तीनी ने दावीद को संबोधित करते हुए कहा, “मैं कोई
कुत्ता हूं, जो मेरी ओर यह लाठी लिए हुए बढ़े चले आ रहे हो?” और वह अपने
देवताओं के नाम लेकर दावीद का शाप देने लगा. 44 दावीद को संबोधित
कर वह कहने लगा, “आ जा! आज मैं तेरा मांस पशु पक्षियों का आहार बना
छोड़ूंगा.” 45 तब दावीद ने उस फिलिस्तीनी से कहा, “तुम मेरी ओर यह
भाला, यह तलवार, बरछा तथा शूल लिए हुए बढ़ रहे हो, मगर मैं तुम्हारा
सामना सेनाओं के याहवेह के नाम में कर रहा हूं, जो इस्राएल की सेनाओं के
परमेश्वर हैं, तुमने जिनकी प्रतिष्ठा को भ्रष्ट किया है. 46 आज ही याहवेह तुम्हें
मेरे अधीन कर देंगे. मैं तुम्हारा संहार करूंगा और तुम्हारा सिर काटकर देह से
अलग कर दूंगा. और मैं आज फिलिस्तीनी सेना के शव पक्षियों और वन्य
पशुओं के लिए छोड़ दूंगा कि सारी पृथ्वी को यह मालूम हो जाए कि परमेश्वर
इस्राएल राष्ट्र में हैं, 47 तथा यहां उपस्थित हर एक व्यक्ति को यह अहसास हो
जाएगा कि याहवेह के लिए छुड़ौती के साधन तलवार और बर्छी नहीं हैं. यह
युद्ध याहवेह का है और वही तुम्हें हमारे अधीन कर देंगे.” 48 यह सुनकर
वह फिलिस्तीनी दावीद पर प्रहार करने के लक्ष्य से आगे बढ़ा. वहां दावीद
भी फिलिस्तीनी पर हमला करने युद्ध रेखा की ओर दौड़े. 49 दावीद ने अपने
झोले से एक पत्थर निकाला, गोफन में रख उसे फेंका और वह पत्थर जाकर
फिलिस्तीनी के माथे पर जा लगा, और भीतर गहरा चला गया और वह भूमि पर
मुख के बल गिर पड़ा. 50 इस प्रकार दावीद सिर्फ गोफन और पत्थर के द्वारा
उस फिलिस्तीनी पर विजयी हो गए. उन्होंने इनके द्वारा उस फिलिस्तीनी पर
वार किया और उसकी मृत्यु हो गई. दावीद के पास तलवार तो थी नहीं. 51 तब
वह दौड़कर उस फिलिस्तीनी की देह पर चढ़ गए, उसकी म्यान में से तलवार
खींची, उसकी हत्या करने के लिए उसका सिर उस तलवार द्वारा अलग कर
दिया. जब फिलिस्ती सेना ने यह देखा कि उनका शूर योद्धा मारा जा चुका है, वे
भागने लगे. 52 यह देख इस्राएल तथा यहूदिया के सैनिकों ने युद्धनाद करते हुए
उनका पीछा करना शुरू कर दिया. वे उन्हें खदेड़ते हुए गाथ तथा एक्रोन के
प्रवेश द्वार तक जा पहुंचे. घायल फिलिस्तीनी सैनिक शअरयिम से गाथ और
एक्रोन के मार्ग पर पड़े रहे. 53 इस्राएली सैनिक उनका पीछा करना छोड़कर
लौटे और फिलिस्तीनी शिविर को लूट लिया. 54 दावीद उस फिलिस्तीनी का
सिर उठाकर येरूशलेम ले गए और उसके सारे हथियार अपने तंबू में रख लिए.
55 जब दावीद फिलिस्तीनी से युद्ध करने जा रहे थे, शाऊल उनकी हर एक
गतिविधि को ध्यानपूर्वक देख रहे थे. उन्होंने अपनी सेना के सेनापति अबनेर से
पूछा, “अबनेर, यह युवक किसका पुत्र है?” अबनेर ने उत्तर दिया, “महाराज,
आप जीवित रहें, यह मैं नहीं जानता.” 56 राजा ने आदेश दिया, “यह पता
लगाया जाए यह किशोर किसका पुत्र है.” 57 उस फिलिस्तीनी का संहार कर
लौटते ही सेनापति अबनेर दावीद को राजा शाऊल की उपस्थिति में ले गए. इस
समय दावीद के हाथ में उस फिलिस्तीनी का सिर था. 58 शाऊल ने दावीद से
पूछा. “युवक, कौन हैं तुम्हारे पिता?” दावीद ने उन्हें उत्तर दिया, “आपके
सेवक बेथलेहेम के यिशै.”

18 जैसे ही दावीद और शाऊल के बीच बातें खत्म हुईं, योनातन और दावीद
के बीच गहरा संबंध बनना शुरू हुआ. योनातन के लिए दावीद प्राणों से
प्रिय हो गए. 2 शाऊल ने उसी दिन से दावीद को अपने पास रख लिया और
उन्हें अपने पिता के घर लौटने की आज्ञा ही न दी. 3 योनातन ने दावीद से वाचा
बांधी, क्योंकि दावीद उन्हें अपने प्राणों से प्रिय हो गए थे. 4 योनातन ने अपने
औपचारिक वस्त्र उतारकर दावीद को दे दिए, जिनमें उनकी तलवार, उनका
धनुष-यहां तक उनका कटिबंध भी शामिल था. 5 शाऊल जिस किसी काम के
लिए दावीद को भेजा करते थे, दावीद उसमें सफलता ही प्राप्त करते थे. शाऊल
ने उन्हें सैन्य अधिकारी चुन लिया. इससे न केवल सेना में हर्ष की लहर दौड़
गई बल्कि शाऊल के सेवक भी इससे प्रसन्न हो गए. 6 जब फिलिस्तीनियों का
संहार कर विजयी सेना लौट रही थी, इस्राएल के सारा नगरों से आयीं स्त्रियों ने
नृत्य करते और गाते हुए शाऊल राजा से भेंट की. वे खंजड़ी तथा तन्तु वाद्य
वादन करती हुई बहुत ही आनंदित थी. 7 वाद्यों की सही पर गाती हुई स्त्रियों के
गीत के शब्द थे: “शाऊल ने अपने हज़ारों शत्रुओं को मारा मगर, दावीद ने
अपने दस हज़ार शत्रुओं को.” 8 इससे शाऊल बहुत ही क्रोधित हुआ. यह राग
शाऊल के अप्रसन्नता का कारण बन गया. वह विचार करते रहे, “उन्होंने
दावीद को दस हज़ार का श्रेय दिया है, मगर मुझे सिर्फ एक हज़ार का. तो फिर
अब उसके पास राज्य के अलावा और किस वस्तु की कमी रह गई है?” 9 उस
दिन से दावीद से शाऊल को जलन होने लगी. 10 अगले दिन परमेश्वर द्वारा
भेजी गई एक दुष्ट आत्मा झपटती हुई शाऊल पर उतरी और जिस समय दावीद
वाद्य वादन कर रहे थे, शाऊल आवेश में आ गए और अपने ही घर में तहस
नहस करने लगे. उस समय शाऊल के हाथ में भाला था. 11 शाऊल ने दावीद
पर भाला फेंका. वह विचार कर रहे थे, “मैं दावीद को दीवार से छेद दूंगा,”
मगर दो बार दावीद अपनी चतुराई से बच निकले. 12 शाऊल दावीद से डरने
लगे, क्योंकि याहवेह दावीद के साथ थे, मगर उनसे दूर. 13 शाऊल ने दावीद
को वहां से हटाकर हज़ार सैनिकों के सेनापति का पद दे दिया. तब दावीद इन

सैनिकों को लेकर युद्ध पर जाते, और उन्हें वापस ले आते थे. **14** दावीद जिस
किसी काम में हाथ डालते, वह सफल ही होता था, क्योंकि उन्हें याहवेह का
साथ मिला हुआ था. **15** जब शाऊल ने देखा कि दावीद कितनी सफलताएं
प्राप्त करते जा रहे हैं, वह दावीद से और भी अधिक डरने लगे. **16** दावीद
सारे इस्राएल तथा यहूदिया के प्रिय पात्र बन चुके थे, क्योंकि उनकी युद्ध नीति
सराहनीय थी. **17** एक दिन शाऊल ने दावीद से कहा, "सुनो, मेरी इच्छा है कि
मैं अपनी बड़ी बेटी का विवाह तुमसे कर दूं. तुम्हें बस इतना ही करना होगा कि
तुम मेरे लिए साहसी योद्धा होकर याहवेह के युद्ध लड़ो." वास्तव में शाऊल का
सोचना यह था, "यह करने पर दावीद की हत्या का दोष मुझ पर नहीं बल्कि
वह फिलिस्तीनियों पर आएगा. ज़रूरी ही नहीं है कि मैं उसकी हत्या की
कोशिश करूं, फिलिस्तीनी ही यह काम पूरा कर देंगे!" **18** दावीद ने शाऊल
को उत्तर दिया, "कौन होता हूं मैं? इस्राएल में क्या महत्व है मेरे संबंधियों या
मेरे पिता के कुल का, कि मुझे राजा का दामाद होने का सम्मान मिले?" **19**
फिर भी, जब दावीद और शाऊल की बेटी मेराब के विवाह का ठहराया हुआ
दिन आया, शाऊल ने उसका विवाह मेहोलावासी आद्रिएल से कर दिया. **20**
वास्तव में शाऊल की बेटी मीखल को दावीद से प्रेम था. जब शाऊल को इसकी
सूचना दी गई, वह इससे प्रसन्न हो गए. **21** शाऊल ने विचार किया, "मैं यह
विवाह कर देता हूं, मीखल ही दावीद के लिए एक फंदा बन जाए, और तब
फिलिस्तीनी ही दावीद की हत्या कर दें." यह दूसरा मौका था, जब शाऊल ने
दावीद के सामने दामाद होने का प्रस्ताव रखा था; "अब तुम मेरे दामाद बन
सकते हो." **22** दूसरी ओर शाऊल ने अपने सेवकों को आदेश दे रखा था,
"दावीद से अकेले में यह कहना, 'सुनो, महाराज तुमसे बहुत खुश हैं. इसके
अलावा तुम सभी सेवकों के प्रिय हो; राजा के दामाद होने योग्य तो सिर्फ तुम्हीं
हो.'" **23** शाऊल के सेवकों ने यह वक्तव्य दावीद के लिए दोहरा दिया. यह
सुन दावीद ने उन्हें समझाया, "क्या समझते हो तुम लोग? क्या, राजा का दामाद
होना कोई साधारण बात है? मैं एक निर्धन व्यक्ति हूं—एकदम तुच्छ." **24**
जब दावीद के ये विचार शाऊल तक पहुंचाए गए, **25** शाऊल ने इसका उत्तर
इस प्रकार दिया, "दावीद से यह कहना, 'राजा तुमसे कोई बेटी के मोल की
उम्मीद नहीं कर रहे. वह तुम्हारे द्वारा फिलिस्तीनियों से सिर्फ बदला ही लेना
चाहते हैं. तब इसके लिए तुम्हें उन्हें सिर्फ एक सौ फिलिस्तीनी पुरुषों के लिंग
की खाल लाकर देना होगा.'" इसके द्वारा शाऊल सिर्फ यह चाह रहे थे कि
दावीद फिलिस्तीनियों के हाथ में पड़ जाएं और मारे जाएं. **26** जब शाऊल के
अधिकारियों ने जाकर दावीद को यह सूचना दी, राजा के दामाद हो जाने के
लिए दावीद खुशी से तैयार हो गए. तय किए गए समय के पहले ही, **27** दावीद
अपने साथियों के साथ निकल पड़े, दो सौ फिलिस्तीनियों को मार गिराया और
दावीद ने उनके लिंग की खाल ले जाकर राजा को भेंटकर दी कि वह राजा के
दामाद बन सकें. शाऊल ने अपनी बेटी मीखल का विवाह दावीद से कर दिया.
28 इस बात के प्रकाश में, कि याहवेह दावीद के साथ हैं, तथा यह भी कि उनकी
बेटी मीखल दावीद से प्रेम करती है, **29** शाऊल दावीद से और भी अधिक डर
गए. उससे शाऊल दावीद के स्थायी शत्रु बन गए. **30** तब फिलिस्तीनी सैन्य
अधिकारियों ने युद्ध के लिए इकट्ठा होना शुरू कर दिया. जब कभी वे हमला
की कोशिश करते थे, दावीद शाऊल के सभी अधिकारियों की अपेक्षा कहीं
अधिक जयवंत होकर लौटते थे. इससे दावीद बहुत ही प्रसिद्ध होते चले गए.

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातन तथा अपने सारा सेवकों के सामने यह
प्रस्ताव रखा कि अनिवार्य है कि दावीद की हत्या कर दी जाए. मगर
शाऊल के पुत्र योनातन को दावीद बहुत ही प्रिय थे. **2** योनातन ने दावीद को इस
विषय पर सचेत किया, "मेरे पिता तुम्हारी हत्या की कोशिश कर रहे हैं. तब
कल प्रातः बहुत ही सतर्क रहना. मैदान में किसी अज्ञात स्थान पर जाकर छिप
जाओ. **3** मैं भी मैदान में जाकर अपने पिता के साथ खड़ा रहूंगा, जहां तुम छिपे
होंगे मैं अपने पिता से तुम्हारे संबंध में वार्तालाप शुरू करूंगा. जब मुझे इस
समस्या का मूल ज्ञात हो जाएगा, मैं वह तुम्हें बता दूंगा." **4** योनातन ने अपने
पिता के सामने दावीद की प्रशंसा करते हुए कहना शुरू किया, "यह सही न होगा
कि राजा अपने सेवक दावीद के विरुद्ध कोई पाप कर बैठें, क्योंकि दावीद
ने तो आपके विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है. इसके विपरीत दावीद के काम
आपके लिए हितकर ही सिद्ध हुए हैं. **5** दावीद ने अपने प्राणों पर खेलकर उस
फिलिस्तीनी का संहार किया है, जिससे याहवेह ने सारा इस्राएल को उल्लेखनीय
छुड़ौती प्रदान की है. स्वयं आपने यह देखा और आप इससे खुश भी हुए. तब
अकारण दावीद की हत्या कर आप निर्दोष के लहू के अपराधी क्यों होना चाह
रहे हैं?" **6** शाऊल ने योनातन के द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया, और यह
शपथ ली: "जीवित याहवेह की शपथ, उसकी हत्या न की जाएगी." **7** योनातन
ने तब दावीद को बुलाकर उन्हें सारी बातें बता दीं. तब योनातन दावीद को
शाऊल की उपस्थिति में ले गए और दावीद उनकी उपस्थिति में पहले के समान
रहने लगे. **8** एक बार फिर युद्ध शुरू हो गया. दावीद ने जाकर फिलिस्तीनियों से
युद्ध किया और उन पर ऐसा प्रबल संहार किया कि उनके पैर उखड़ गए और वे
पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए. **9** तब याहवेह द्वारा भेजी एक दुष्ट आत्मा शाऊल
पर उतरी. वह अपने कमरे में बैठे हुए थे, उनके हाथ में उनका भाला था और
दावीद वाद्य वादन कर रहे थे, **10** शाऊल ने अपने भाले से दावीद को दीवार में
नत्थी करना चाहा, मगर दावीद बड़ी चतुराई से बच निकले. शाऊल का भाला
दीवार में जा धंसा. उस रात दावीद बचकर भाग निकले. **11** रात में ही शाऊल ने
दावीद के आवास पर इस आदेश के साथ पहरेदार चुन लिए, कि प्रातः होते ही
दावीद की हत्या कर दी जाए. उनकी पत्नी मीखल ने उन्हें चेतावनी दी, "यदि
आप रात ही रात में अपनी सुरक्षा का काम न करें, कल आप मरे हुए पाए
जाएंगे." **12** तब मीखल ने दावीद को एक खिड़की से बाहर उतार दिया और
दावीद अपने प्राण बचाकर भाग गए. **13** उसके बाद मीखल ने एक मूर्ति को
बिछौने पर लिटा दिया, उसके सिर पर बकरे के बालों से बनाया हुआ कंबल
सजाकर और इन सबको बिछौने के वस्त्रों से ढांक दिया. **14** जब शाऊल के
सेवक दावीद को बंदी बनाने के उद्देश्य से वहां आए, मीखल ने उन्हें सूचित
किया, "दावीद बीमार हैं." **15** शाऊल ने उन सेवकों को दोबारा दावीद के घर
पर भेजा कि दावीद को देखें. शाऊल ने उन्हें यह आदेश दिया था, "दावीद को
उसके पलंग सहित मेरे पास ले आओ, कि मैं उसको खत्म करूं." **16** सेवक उस
पलंग को उठा लाए. उन्होंने पाया कि बिछौने पर मूर्ति थी तथा सिर के स्थान पर
बकरे के बालों का बना कंबल. **17** शाऊल ने मीखल से पूछा, "तुमने मेरे साथ
छल किया है और क्यों मेरे शत्रु को इस रीति से भाग जाने दिया?" मीखल ने
उत्तर दिया, "उन्होंने मुझे धमकी दी थी, कि यदि मैं उन्हें भागने न दूं, तो वह
मेरी ही हत्या कर देंगे!" **18** जब दावीद वहां से बच निकले, वह सीधे रामाह में
शमुएल के पास गए, और उनके विरुद्ध शाऊल द्वारा किए गए हर एक काम का
उल्लेख प्रस्तुत किया. तब दावीद और शमुएल जाकर नाइयोथ नामक स्थान पर
रहने लगे. **19** जब शाऊल को यह समाचार प्राप्त हुआ, "दावीद रामाह के
चराइयों में हैं"; **20** तब शाऊल ने उन्हें बंदी बनाने के लिए अपने सेवक भेज
दिए. वहां पहुंचकर उन्होंने शमुएल के नेतृत्व में भविष्यवक्ताओं के वृन्द को
भविष्यवाणी के उन्माद में देखा, तो शाऊल के सेवक परमेश्वर के आत्मा से भर
गए और वे भी भविष्यवाणी करने लगे. **21** जब शाऊल को इसकी सूचना दी
गई, उन्होंने अन्य सेवक वहां भेज दिए, मगर वे भी भविष्यवाणी करने लगे. तब
शाऊल ने तीसरी बार अपने सेवक वहां भेजे, और वे भी भविष्यवाणी करने
लगे. **22** अंततः स्वयं शाऊल रामाह पहुंच गए. जब उन्होंने सेकू नामक स्थान
पर विशाल कुएं के पास पहुंचकर यह पूछताछ की, "शमुएल और दावीद कहां

मिलेंगे?" उन्हें बताया गया, "रामाह के नाइयोथ में." 23 जब शाऊल रामाह के
नाइयोथ के लिए निकले, परमेश्वर का आत्मा उस पर भी वेग और बलपूर्वक
उतरा और वह रामाह के नाइयोथ पहुंचने तक भविष्यवाणी करते चला गया. 24
यहां तक कि उसने अपने वस्त्र उतार फैंके और शमुएल के सामने उन्माद में
विवस्त्र होकर दिन और रात भविष्यवाणी करते रहा. यही कारण है कि वहां यह
लोकोक्ति प्रचलित हो गईः "क्या, शाऊल भी भविष्यवक्ताओं में से एक है?"

20 दावीद रामाह के नाइयोथ से भी भागे. उन्होंने योनातन के पास आकर
उनसे पूछा, "क्या किया है मैंने, बताओ? कहां हुई है मुझसे भूल? क्या
अपराध किया है मैंने तुम्हारे पिता का, जो वह आज मेरे प्राणों के प्यासे हो गए
हैं?" 2 "असंभव!" योनातन ने उनसे कहा. "यह हो ही नहीं सकता कि
तुम्हारी हत्या हो! मेरे पिता साधारण असाधारण कोई भी काम बिना मुझे बताए
करते ही नहीं. भला इस विषय को वे मुझसे क्यों छिपाएंगे? नहीं. यह असंभव
है!" 3 दावीद ने शपथ लेकर कहा, "तुम्हारे पिता को तुम्हारे और मेरे गहरे
संबंधों का पूर्ण पता है, 'तब उन्होंने यह सही समझा है कि इस विषय में तुम्हें
कुछ भी जानकारी न हो, अन्यथा तुम दुःखी विचलित हो जाओगे.' जीवन्त
याहवेह तथा तुम्हारी शपथ, मेरी मृत्यु मुझसे सिर्फ एक पग ही दूर है." 4
योनातन ने इस पर दावीद से पूछा, "तो बताओ, अब मैं तुम्हारे लिए क्या कर
सकता हूं?" 5 तब दावीद ने योनातन को यह सुझाव दिया: "कल नवचंद्र
उत्सव है. रीति के अनुसार मेरा राजा के भोज में उपस्थित रहना अपेक्षित है.
तुम्हें मुझे अवकाश देना होगा कि मैं आज से तीसरे दिन की शाम तक मैदान में
जाकर छिप जाऊं. 6 यदि तुम्हारे पिता को मेरी अनुपस्थिति का पता हो जाए,
तो तुम उनसे कहो, 'दावीद ने एक बहुत ही ज़रूरी काम के लिए अपने गृहनगर
बेथलेहेम जाने की छुट्टी ली है. वहां उसके पूरे परिवार का बलि चढ़ाने का
उत्सव है.' 7 यदि तुम्हारे पिता कहें, 'ठीक है,' कोई बात नहीं, तब इसका
मतलब होगा कि तुम्हारा सेवक सुरक्षित है. मगर यदि यह सुनते ही वह क्रुद्ध हो
जाएं, तो यह समझ लेना कि उन्होंने मेरा बुरा करने का निश्चय कर लिया है. 8
तब तुम अपने सेवक के प्रति कृपालु रहना, क्योंकि तुमने ही याहवेह के सामने
अपने सेवक के साथ वाचा बांधी है. मगर यदि तुम्हारी दृष्टि में मैंने कोई अपराध
किया है, तुम स्वयं मेरे प्राण ले लो, क्या आवश्यकता है, इसमें तुम्हारे पिता को
शामिल करने की?" 9 "कभी नहीं!" योनातन ने कहा. "यदि मुझे लेश मात्र
भी यह पता होता कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करने के लिए ठान चुके हैं, क्या मैं
तुम्हें न बताता?" 10 तब दावीद ने योनातन से कहा, "अब बताओ, तुम्हारे पिता
द्वारा दिए गए प्रतिकूल उत्तर के विषय में कौन मुझे सूचित करेगा?" 11 योनातन
ने उनसे कहा, "आओ, बाहर मैदान में चलें." जब वे दोनों मैदान में पहुंच गए.
12 योनातन ने दावीद से कहा, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर मेरे गवाह हैं. कल
या परसों लगभग इसी समय, जब मैं अपने पिता के सामने यह विषय छोड़ूंगा,
यदि दावीद के विषय में उनकी मंशा अच्छी दिखाई दे, तो क्या में तुम्हें इसकी
सूचना न दूंगा? 13 मगर यदि मेरे पिता का संतोष तुम्हारी बुराई में ही है, तब
याहवेह यह सब, तथा इससे भी अधिक योनातन के साथ करें, यदि मैं तुम्हें
इसके विषय में सूचित न करूं, और तुम्हें इसका समाचार न दूं, कि तुम यहां से
सुरक्षा में विदा हो सको. याहवेह की उपस्थिति तुम्हारे साथ इसी प्रकार बनी रहे,
जिस प्रकार मेरे पिता के साथ बनी रही थी. 14 जब तक मैं जीवित रहूं, मुझ पर
याहवेह का अपार प्रेम प्रकट करते रहना, 15 मगर यदि मेरी मृत्यु हो जाए, तो
मेरे परिवार के प्रति अपने अपार प्रेम को कभी न भुलाना—हां, उस स्थिति
में भी, जब याहवेह दावीद के सारा शत्रुओं का अस्तित्व धरती पर से मिटा
देंगे." 16 तब योनातन ने यह कहते हुए दावीद के परिवार से वाचा स्थापित
की, "याहवेह दावीद के शत्रुओं से प्रतिशोध लें." 17 एक बार फिर योनातन
ने दावीद के साथ शपथ ली, क्योंकि दावीद उन्हें बहुत ही प्रिय थे. वस्तुतः
योनातन को दावीद अपने ही प्राणों के समान प्रिय थे. 18 योनातन ने उनसे कहा,
"कल नवचंद्र उत्सव है और तुम्हारा आसन रिक्त रहेगा तब सभी के सामने
तुम्हारी अनुपस्थिति स्पष्ट हो जाएगी. 19 परसों शीघ्र ही उस स्थान पर, पत्थरों
के ढेर के पीछे छिप जाना, जहां तुम पहले भी छिपे थे. तुम वहीं ठहरे रहना.
20 मैं इस ढेर के निकट तीन बाण छोड़ूंगा, मानो में किसी लक्ष्य पर तीर छोड़
रहा हूं. 21 जब मैं लड़के को उन बाणों के पीछे भेजूंगा, मैं कहूंगा, 'जाकर बाण
खोज लाओ.' और तब यदि मैं लड़के से कहूं, 'वह देखो, बाण तुम्हारे इसी ओर
हैं,' ले आओ उन्हें, तब तुम यहां लौट आना, क्योंकि जीवन्त याहवेह की
शपथ, तुम्हारे लिए कोई जोखिम न होगा और तुम पूर्णतः सुरक्षित हो. 22 मगर
यदि मैं लड़के से यह कहूं, 'सुनो! बाण तुम्हारी दूसरी ओर हैं,' तब तुम्हें भागना
होगा, क्योंकि याहवेह ने तुम्हें दूर भेजना चाहा है. 23 जिस विषय पर हम दोनों
के बीच चर्चा हुई है, उसका सदा-सर्वदा के लिए याहवेह हमारे गवाह हैं." 24
तब दावीद जाकर मैदान में छिप गए. नवचंद्र उत्सव के मौके पर राजा भोज के
लिए तैयार हुए. 25 राजा अपने निर्धारित स्थान पर बैठे थे, जो दीवार के निकट
था. योनातन का स्थान उनके ठीक सामने था. सेनापति अबनेर शाऊल के निकट
बैठे थे. दावीद का आसन खाली था. 26 शाऊल ने इस विषय में कोई प्रश्न नहीं
किया; इस विचार में "उसके साथ अवश्य कुछ हो गया है; वह सांस्कारिक रूप
से आज अशुद्ध होगा. हां, वह अशुद्ध ही होगा." 27 मगर जब दूसरे दिन भी,
नवचंद्र दिवस के दूसरे दिन भी, दावीद का आसन रिक्त ही था, शाऊल ने
योनातन से पूछा, "क्या कारण है यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया, न ही
आज भी?" 28 योनातन ने शाऊल को उत्तर दिया, "दावीद ने एक बहुत ही
आवश्यक काम के लिए मुझसे बेथलेहेम जाने की अनुमति ली है. 29 उसने
विनती की, 'मुझे जाने की अनुमति दो, क्योंकि हम अपने गृहनगर में बलि
अर्पण कर रहे हैं. और मेरे भाई ने आग्रह किया है कि मैं वहां आ जाऊं, तब यदि
मुझ पर तुम्हारी कृपादृष्टि है, मुझे मेरे भाइयों से भेंटकरने की अनुमति दीजिए.'
इसलिये आज वह इस भोज में शामिल नहीं हो सका है." 30 यह सुनते ही
योनातन पर शाऊल का क्रोध भड़क उठा, वह कहने लगे, "भ्रष्ट और विद्रोही
स्त्री की संतान! क्या मैं समझ नहीं रहा, कि तूने अपनी लज्जा तथा अपनी मां
की लज्जा के लिए यिशै के पुत्र का पक्ष ले रहा है? 31 यह समझ ले, कि जब
तक इस पृथ्वी पर यिशै का पुत्र जीवित है, तब तक न तो तू, और न तेरा राज्य
प्रतिष्ठित हो सकेगा. अब जा और उसे यहां लेकर आ, क्योंकि उसकी मृत्यु
निश्चित है!" 32 योनातन ने अपने पिता शाऊल से प्रश्न किया, "क्यों है उसकी
मृत्यु निश्चित? क्या किया है उसने ऐसा?" 33 यह सुनते ही शाऊल ने भाला
फेंककर योनातन को घात करना चाहा. अब योनातन को यह निश्चय हो गया,
कि उसके पिता दावीद की हत्या के लिए दृढ संकल्प किया हैं. 34 क्रोध से
अभिभूत योनातन भोजन छोड़ उठ गए; नवचंद्र के दूसरे दिन भी उन्होंने भोजन
न किया, क्योंकि वह अपने पिता के व्यवहार से लज्जित तथा दावीद के लिए
शोकाकुल थे. 35 प्रातःकाल योनातन एक लड़के को लेकर दावीद से भेंटकरने
मैदान में नियमित स्थान पर पहुंचे. 36 उन्होंने उस लड़के को आदेश दिया,
"दौड़कर उन बाणों को खोज लाओ जो मैं छोड़ने पर हूं." जैसे ही लड़के ने
दौड़ना शुरू किया, योनातन ने एक बाण उसके आगे लक्ष्य करते हुए छोड़ दिया.
37 जब वह लड़का उस स्थल के निकट पहुंचा, योनातन ने पुकारते हुए उससे
कहा, "क्या वह बाण तुमसे आगे नहीं गिरा है?" 38 योनातन ने फिर पुकारा,
"जल्दी करो! दौड़ो विलंब न करो!" लड़का बाण उठाकर अपने स्वामी के पास
लौट आया. 39 (यह सब क्या हो रहा था, इसका उस लड़के को लेश मात्र भी
पता नहीं था. रहस्य सिर्फ दावीद और योनातन के मध्य सीमित था.) 40
इसके बाद योनातन ने अपने शस्त्र उस लड़के को इस आदेश के साथ सौंप दिए,
"इन्हें लेकर नगर लौट जाओ." 41 जब वह लड़का वहां से चला गया, दावीद

ने पत्थरों के उस ढेर के पीछे से उठकर योनातन को नमन किया. तब दोनों एक दूसरे का चुंबन करते हुए रोते रहे—दावीद अधिक रो रहे थे. **42** योनातन ने दावीद से कहा, "तुम यहां से शांतिपूर्वक विदा हो जाओ, क्योंकि हमने याहवेह के नाम में यह वाचा बांधी है, 'मेरे और तुम्हारे बीच तथा मेरे तथा तुम्हारे वंशजों के मध्य याहवेह, हमेशा के गवाह हैं.'" तब दावीद वहां से चले गए और योनातन अपने घर लौट गए.

21 वहां से दावीद नोब नगर में पुरोहित अहीमेलेख से भेंटकरने पहुंचे, बहुत ही भयभीत अहीमेलेख कांपते हुए दावीद से भेंटकरने आए और उनसे प्रश्न किया, "आप अकेले! और कोई नहीं है आपके साथ?" **2** दावीद ने पुरोहित अहीमेलेख को उत्तर दिया, "राजा ने मुझे एक विशेष काम सौंपा है, और उनका ही आदेश है, 'जिस काम के लिए तुम भेजे जा रहे हो, और जो निर्देश तुम्हें दिए जा रहे हैं, उनके विषय में किसी को कुछ ज्ञात न होने पाए' मैंने सैनिकों को विशेष स्थान पर मिलने के आदेश दे दिए हैं. **3** अब बताइए, आपके पास भोज्य क्या-क्या है? मुझे कम से कम पांच रोटियां चाहिए, या जो कुछ इस समय आपके पास है." **4** पुरोहित ने दावीद को उत्तर दिया, "साधारण रोटी तो इस समय मेरे पास है नहीं—हां, आप वेदी पर समर्पित रोटियां अवश्य ले सकते हैं, यदि आपके सैनिक ठहराए गए समय से स्त्री संबंध से दूर रहे हैं." **5** दावीद ने पुरोहित को आश्वासन दिया, "निःसंदेह! जब कभी मैं अभियान पर निकलता हूं, स्त्रियां हमसे दूर ही रखी जाती हैं. साधारण काम के लिए जाते समय भी सैनिकों की देह पवित्र रखी जाती है, यह तो एक विशेष अभियान है!" **6** तब पुरोहित ने उन्हें समर्पित पवित्र रोटियां दे दीं, क्योंकि वहां समर्पित रोटियों के अलावा और कोई रोटी थी ही नहीं. इन रोटियों को याहवेह के सामने से हटा लिया जाता है, जिस समय गर्म नयी रोटियां वेदी पर भेंट की जाती हैं. **7** उस समय शाऊल का एक सेवक उसी स्थान पर उपस्थित था, जिसे याहवेह के सामने रोका गया था; वह एदोमवासी था तथा उसका नाम दोएग था, वह शाऊल के चरवाहों का प्रधान था. **8** तब दावीद ने अहीमेलेख से प्रश्न किया, "क्या आपके पास यहां कोई तलवार या बर्छी है? इस समय मेरे पास न तो अपनी तलवार है और न ही कोई दूसरा हथियार क्योंकि राजा के निर्देश कुछ ऐसे थे." **9** पुरोहित ने उत्तर दिया, "एफ़ोद के पीछे कपड़े में लिपटी हुई फिलिस्तीनी गोलियथ की तलवार रखी हुई है. यह वही गोलियथ है, जिसका आपने एलाह की घाटी में संहार किया था. आप चाहें तो इसे ले सकते हैं." दावीद ने उनसे कहा, "उससे अच्छा हथियार भला, क्या हो सकता है; यह मुझे दे दीजिए." **10** और दावीद वहां से भी चले गए. शाऊल से दूर भागते हुए वह गाथ के राजा आकीश के यहां जा पहुंचे. **11** आकीश के अधिकारियों में कौतुहल उत्पन्न हो गया था: "क्या यह दावीद, अपने ही देश का राजा नहीं है? यही तो वह व्यक्ति है, जिसके विषय में स्त्रियों ने नृत्य करते हुए प्रशंसागीत गाया था: "'शाऊल ने हज़ार शत्रुओं का संहार किया, मगर दावीद ने दस हज़ारों का'?" **12** उनके इन शब्दों पर गंभीरता पूर्वक विचार करने पर दावीद गाथ के राजा आकीश से बहुत ही डर गए. **13** तब उनकी उपस्थिति में दावीद ने पागल व्यक्ति का नाटक करना शुरू कर दिया, क्योंकि इस समय वह उनके राज्य की सीमा में थे. वह द्वार की लकड़ी खरोंचने लगे और अपनी लार को दाढ़ी पर बह जाने दिया. **14** यह देख आकीश ने अपने सेवकों से कहा, "देख रहे हो कि यह व्यक्ति पागल है! क्यों इसे यहां आने दिया गया है? **15** क्या मेरे पास पागलों की कमी हो गई है, कि मेरे पास इस पागल को ले आए हो? क्या इसे मेरे पास इसलिये ले आए हो कि मैं इसे अपना मेहमान बना लूं?"

22 तब दावीद ने गाथ से कूच कर अदुल्लाम की एक गुफ़ा में आसरा लिया. जब उनके भाइयों तथा उनके पिता के परिवार को यह मालूम हुआ, वे सभी उनसे भेंटकरने वहां गए. **2** वे सभी, जो किसी भी प्रकार की उलझन में थे, जो ऋण के बोझ में दबे जा रहे थे, तथा वे, जिनमें किसी कारण असंतोष समाया हुआ था, दावीद के पास इकट्ठा होने लगे, और दावीद ऐसों के लिए नायक सिद्ध हुए. ऐसे होते-होते उनके पास लगभग चार सौ व्यक्ति इकट्ठा हो गए. **3** फिर दावीद वहां से मोआब के मिज़पाह नामक स्थान को चले गए. वहां उन्होंने मोआब के राजा से विनती की, "जब तक परमेश्वर मुझ पर अपनी इच्छा प्रकट न करें, कृपया मेरे माता-पिता को यहां रहने की अनुमति दे दीजिए!" **4** तब दावीद ने उन्हें मोआब के राजा के यहां ठहरा दिया, और जब तक दावीद गढ़ में निवास करते रहे वे वहां उनके साथ रहे. **5** तब भविष्यद्वक्ता गाद ने दावीद से कहा, "अब गढ़ में निवास न करो. बल्कि अब तुम यहूदिया प्रदेश में चले जाओ." तब दावीद हेरेथ के वन में जाकर रहने लगे. **6** मगर शाऊल को इस बात का पता चल ही गया कि दावीद और उनके साथी कहां हैं. उस दिन शाऊल गिबियाह नामक स्थान पर एक टीले पर झाड़ वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे. उनके हाथ में बर्छी थी और उनके आस-पास उनके अधिकारी भी थे. **7** शाऊल ने अपने आस-पास के अधिकारियों से कहा, "बिन्यामिन के लोगों! ध्यान से सुनो, क्या यिशै का पुत्र तुम्हें खेत और अंगूर के बगीचे देगा? क्या वह तुम्हें हज़ार सैनिकों पर और सौ-सौ सैनिकों पर अधिकारी चुनेगा? **8** तुम सबने मेरे विरुद्ध एका क्यों किया है? कोई भी मुझे सूचना नहीं देता, जब मेरा अपना पुत्र इस यिशै के पुत्र के साथ वाचा बांध लेता है. तुममें से किसी को भी मुझ पर तरस नहीं आता. किसी ने मुझे सूचना नहीं दी कि मेरे अपने पुत्र ने मेरे ही सेवक को मेरे ही विरुद्ध घात लगाकर बैठने का आदेश दे रखा है, जैसा कि आज यहां हो रहा है." **9** मगर एदोमवासी दोएग ने, जो इस समय शाऊल के अधिकारियों के साथ ही था, उन्हें उत्तर दिया, "मैंने यिशै के इस पुत्र को नोब नगर में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेख से भेंटकरते देखा है. **10** अहीमेलेख ने दावीद के लिए याहवेह से पूछताछ की, उसे भोजन दिया, साथ ही उस फिलिस्तीनी गोलियथ की तलवार भी." **11** तब राजा ने अहीतूब के पुत्र, पुरोहित अहीमेलेख को बुलाने का आदेश दिया; न केवल उन्हें ही, बल्कि नोब नगर में उनके पिता के परिवार के सारे पुरोहितों को भी. वे सभी राजा की उपस्थिति में आ गए. **12** तब उन्हें शाऊल ने कहा, "अहीतूब के पुत्र, ध्यान से सुनो." अहीमेलेख ने उत्तर दिया, "आज्ञा दीजिए, मेरे स्वामी!" **13** शाऊल ने उनसे कहा, "क्या कारण है कि तुमने और यिशै के पुत्र ने मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचा है? तुमने उसे भोजन दिया, उसे तलवार दी, और उसके भले के लिए परमेश्वर से प्रार्थना भी की. अब वह मेरा विरोधी हो गया है, और आज स्थिति यह है कि वह मेरे लिए घात लगाए बैठा है?" **14** अहीमेलेख ने राजा को उत्तर में कहा, "महाराज, आप ही बताइए आपके सारे सेवकों में दावीद के तुल्य विश्वासयोग्य और कौन है? वह राजा के दामाद हैं, वह आपके अंगरक्षकों के प्रधान हैं, तथा इन सबके अलावा वह आपके परिवार में बहुत ही सम्माननीय हैं! **15** क्या आज पहला मौका है, जो मैंने उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की है? जी नहीं! महाराज, न तो मुझ पर और न मेरे पिता के परिवार पर कोई ऐसे आरोप लगाएं. क्योंकि आपके सेवक को इन विषयों का कोई पता नहीं है, न पूरी तरह और न ही थोड़ा भी." **16** मगर राजा ने उन्हें उत्तर दिया, "अहीमेलेख, आपके लिए तथा आपके पूरे परिवार के लिए मृत्यु दंड तय है." **17** तब राजा ने अपने पास खड़े रक्षकों को आदेश दिया: "आगे बढ़कर याहवेह के इन पुरोहितों को खत्म करो, क्योंकि ये सभी दावीद ही के सहयोगी हैं. इन्हें यह मालूम था कि वह मुझसे बचकर भाग रहा है, फिर भी इन्होंने मुझे इसकी सूचना नहीं दी." मगर राजा के अंगरक्षक याहवेह के पुरोहितों पर प्रहार करने में हिचकते रहे. **18** यह देख राजा ने दोएग को आदेश दिया, "चलो, आगे आओ और तुम करो इन सबका वध." तब एदोमी दोएग आगे बढ़ा और उस दिन उसने पुरोहितों के पवित्र वस्त्र धारण किए

हुए पचासी व्यक्तियों का वध कर दिया. 19 तब उसने पुरोहितों के नगर नोब जाकर वहां; स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, शिशुओं, बैलों, गधों तथा भेड़ों को, सभी को, तलवार से घात कर दिया. 20 मगर अहीतूब के पुत्र अहीमेलेख के पुत्रों में से एक बच निकला और दावीद के पास जा पहुंचा. उसका नाम अबीयाथर था. 21 अबीयाथर ने दावीद को सूचना दी कि शाऊल ने याहवेह के पुरोहितों का वध करवा दिया है. 22 तब दावीद ने अबीयाथर से कहा, “उस दिन, जब मैंने एदोमी दोएग को वहां देखा, मुझे यह लग रहा था कि वह अवश्य ही जाकर शाऊल को उसकी सूचना दे देगा. तुम्हारे पिता के परिवार की मृत्यु का दोषी मैं ही हूं. 23 अब तुम मेरे ही साथ रहो. अब तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है. जो कोई मेरे प्राणों का प्यासा है, वही तुम्हारे प्राणों का भी प्यासा है. मेरे साथ तुम सुरक्षित हो.”

23 दावीद को सूचना दी गई, “फिलिस्तीनियों ने काइलाह नगर पर हमला कर दिया है, और वे वहां के खलिहानों को लूट रहे हैं.” 2 तब दावीद ने याहवेह से पूछा, “क्या में जाकर इन फिलिस्तीनियों से युद्ध करूं?” याहवेह ने दावीद को उत्तर दिया, “जाओ, फिलिस्तीनियों का संहार करो, और काइलाह नगर को मुक्त करो.” 3 मगर दावीद के साथियों ने उनसे कहा, “विचार कीजिए, यहां यहूदिया में ही रहते हुए हम पर उनका आतंक छाया हुआ है. काइलाह पहुंचकर हमारी स्थिति क्या होगी, जब हम फिलिस्तीनी सेना के आमने-सामने होंगे!” 4 तब दावीद ने पुनः याहवेह से पूछा, और उन्हें याहवेह की ओर से यह उत्तर प्राप्त हुआ, “जाओ, फिलिस्तीनियों पर हमला करो क्योंकि मैं फिलिस्तीनियों को तुम्हारे अधीन कर दूंगा.” 5 इसलिये दावीद और उनके साथी काइलाह गए और फिलिस्तीनियों से युद्ध किया, उनके पशु उनसे छीनकर उन्हें पूरी तरह हरा दिया. इस प्रकार दावीद ने काइलाह निवासियों को सुरक्षा प्रदान की. 6 (जब अहीमेलेख के पुत्र अबीयाथर भागकर दावीद के पास गए, वह अपने साथ पवित्र परिधान एफ़ोद भी ले गए थे.) 7 जब शाऊल को सूचित किया गया कि दावीद काइलाह आए हुए हैं, शाऊल ने विचार किया, “अब तो परमेश्वर ने दावीद को मेरे वश में कर दिया है, क्योंकि अब वह ऐसे नगर में जा छिपा है, जो दीवारों से घिरा हुआ है और जिसमें प्रवेश द्वार भी है.” 8 तब शाऊल ने अपनी संपूर्ण सेना का आह्वान किया, कि वे काइलाह नगर को जाकर दावीद और उनके साथियों को बंदी बना लें. 9 दावीद यह जानते थे कि शाऊल उनके बुरे की युक्ति कर रहे हैं. यह जानकर दावीद ने पुरोहित अबीयाथर से विनती की, “एफ़ोद लेकर यहां आइए!” 10 तब दावीद ने यह प्रार्थना की, “याहवेह इस्राएल के परमेश्वर, आपके सेवक को यह निश्चित समाचार मिला है कि शाऊल मेरे कारण संपूर्ण काइलाह नगर को नष्ट करने के लक्ष्य से यहां आने की योजना बना रहे हैं. 11 मुझे बताइए, क्या, नगर के पुरनिए मुझे उनके हाथों में सौंप देंगे? क्या हमें प्राप्त सूचना के अनुसार शाऊल यहां आएंगे? याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, कृपा करें और अपने सेवक को इस विषय में सूचित करें.” याहवेह ने उत्तर दिया, “शाऊल अवश्य आएगा.” 12 तब दावीद ने उनसे पूछा, “क्या, काइलाह के नगर के पुरनिए मुझे और मेरे साथियों को शाऊल के हाथों में सौंप देंगे?” याहवेह ने उत्तर दिया, “वे तुम्हें उनके हाथों में सौंप देंगे.” 13 तब दावीद और उनके साथी, जो संख्या में लगभग छः सौ थे, काइलाह नगर छोड़ चले गए, और वनों में स्थान बदलते हुए घूमते रहे. जब शाऊल को यह सूचना मिली कि दावीद काइलाह नगर छोड़ चुके हैं, उन्होंने अपना अभियान छोड़ दिया. 14 दावीद ने निर्जन प्रदेश के गढ़ों में रहना शुरू कर दिया, जो ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाके में थे. दावीद की खोज करते रहना शाऊल का नियम हो गया था, मगर परमेश्वर ने दावीद को उनके हाथों में पड़ने नहीं दिया. 15 जब दावीद होरशा क्षेत्र में ज़ीफ़ के वनों में छिपे हुए थे, उन्हें यह पता हो गया था कि शाऊल उनके प्राणों की खोज में निकल पड़े हैं. 16 शाऊल के पुत्र योनातन होरशा में दावीद से भेंटकरने आए और उन्हें परमेश्वर में मजबूत किया. 17 उन्होंने दावीद से कहा, “डरना नहीं, मेरे पिता तुम तक पहुंच नहीं सकेंगे. इस्राएल के होनेवाले शासक तुम हो और मैं तुम्हारा सहायक रहूंगा. वस्तुतः मेरे पिता को इस बात की पूरी पता है.” 18 उन्होंने याहवेह के सामने परस्पर वाचा बांधी. दावीद होरशा में ही रहे, मगर योनातन अपने घर लौट गए. 19 कुछ ज़ीफ़ निवासियों ने गिबियाह में शाऊल को यह सूचना दी, “दावीद हमारे क्षेत्र में होरशा के गढ़ों में जेशिमोन के दक्षिण में, हकीलाह की पहाड़ियों में छिपे हुए हैं. 20 तब महाराज, आप जब चाहें यहां आ जाएं, और अपने हृदय की इच्छा पूरी करें. हम अपनी ओर से दावीद को महाराज के हाथों में सौंपने की पूरी कोशिश करेंगे.” 21 शाऊल ने उत्तर दिया, “आप लोगों ने मुझ पर जो दया दिखाई है, उसके लिए याहवेह आपको आशीष प्रदान करें. 22 जाइए और जाकर इस तथ्य की पुष्टि कर लीजिए: ठीक-ठीक यह ज्ञात कीजिए कि वह कहां छिपा हुआ है और किसने उसे वहां देखा है; क्योंकि मुझे प्राप्त सूचना के अनुसार वह बहुत ही चालाक व्यक्ति है. 23 जाकर उन सारे छिपने योग्य स्थानों को देखो, उन्हें पहचान लो, जहां वह दुबका रहता है, तब लौटकर आओ और मुझे निश्चित सूचना दो. तभी मैं तुम्हारे साथ चलूंगा; यदि वह वास्तव में इसी क्षेत्र में है, तो मैं उसे यहूदिया के कुलों से ढूंढ निकालूंगा.” 24 तब वे शाऊल के पूर्व ज़ीफ़ नगर पहुंच गए. इस समय दावीद और उनके साथी जेशिमोन के दक्षिण के अराबाह में माओन की मरुभूमि में थे. 25 शाऊल और उनके साथी दावीद की खोज में निकल पड़े. दावीद को किसी ने इसकी सूचना दे दी, तब दावीद माओन की मरुभूमि में पर्वत की चट्टानों में जा छिपे. शाऊल को इस विषय में भी सूचना दे दी गई. वह दावीद का पीछा करने निकल पड़े. 26 शाऊल और उनके साथी पर्वत की एक ओर चल रहे थे, दावीद और उनके साथी पर्वत की दूसरी ओर. दोनों के मध्य था पर्वत. दावीद की कोशिश थी कि वह शीघ्र, अति शीघ्र, शाऊल के साथियों से दूर निकल जाएं, क्योंकि वे उनके निकट आते जा रहे थे. 27 उसी समय एक संदेशवाहक ने आकर शाऊल को सूचना दी, “कृपया तुरंत लौट आएं! फिलिस्तीनियों ने हमारे देश पर हमला कर दिया है.” 28 तब शाऊल ने दावीद का पीछा करना छोड़ फिलिस्तीनियों से युद्ध करने चले गए. इस घटना के कारण उस स्थान का नाम ही सेला हम्माहलेकोथ अर्थात् विभाजक चट्टान पड़ गया. 29 दावीद ने वह क्षेत्र छोड़ दिया, और जाकर एन-गेदी के गढ़ों में रहने लगे.

24 जब शाऊल फिलिस्तीनियों से युद्ध करने के बाद लौटे, उन्हें सूचना दी गई, “दावीद एन-गेदी के निकटवर्ती मरुभूमि में छिपे हुए हैं.” 2 शाऊल ने इस्राएली सेना में से तीन हज़ार सर्वोत्तम सैनिक लेकर पहाड़ी बकरों की चट्टानों के पूर्व में दावीद की खोज करनी शुरू कर दी. 3 खोज करते हुए वे सब मार्ग के किनारे स्थित उन भेड़ के बाड़ों के निकट पहुंचे, जिनके निकट एक कंदरा थी. शाऊल उस गुफा के भीतर शौच के लिए चले गए. दावीद और उनके साथी गुफा के भीतरी गुप्त स्थानों में छिपे बैठे थे. 4 दावीद के साथियों ने उससे कहा, “आज ही वह दिन है, जिसके विषय में याहवेह ने आपसे कहा था, ‘मैं तुम्हारे शत्रु को तुम्हारे अधीन कर दूंगा और तुम उसके साथ वह सब कर सकोगे, जो तुम्हें सही लगेगा.’” यह सुन दावीद उठे और चुपचाप जाकर शाऊल के बाहरी वस्त्र की किनारी काट ली. 5 मगर कुछ समय बाद दावीद के मन के दोष भाव ने उन्हें व्याकुल कर दिया, 6 और उन्होंने अपने साथियों से कहा, “याहवेह यह कभी न होने दें कि मैं याहवेह के अभिषिक्त, मेरे स्वामी पर हाथ उठाने का दुस्साहस करूं, यह जानते हुए भी कि वह याहवेह द्वारा अभिषिक्त हैं.” 7 इन शब्दों के द्वारा दावीद ने अपने साथियों को शाऊल पर वार करने से रोक दिया. तब शाऊल उठे, गुफा से बाहर निकलकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ गए. 8 तब दावीद भी गुफा से बाहर आ गए. वहां से उन्होंने शाऊल को पुकारा, “महाराज, मेरे स्वामी!” दावीद का स्वर सुनकर शाऊल ने मुड़कर पीछे देखा.

दावीद ने घुटने टेककर भूमि तक सिर झुकाकर उनका अभिवंदन किया, 9 और
उन्होंने शाऊल को कहा, "महाराज, लोगों की बात का विश्वास क्यों करते हैं,
जब वे कहते हैं, 'दावीद आपके बुरा की युक्ति कर रहा है'? 10 आप स्वयं यह
देखिए, आज गुफ़ा में याहवेह ने आपको मेरे हाथों में सौंप दिया था. मेरे कुछ
साथी मुझसे कह भी रहे थे कि मैं आपकी हत्या कर दूं, मगर मैंने यह नहीं
किया; मैंने विचार किया, 'मैं अपने स्वामी पर कभी हाथ न उठाऊंगा, क्योंकि
उनका अभिषेक याहवेह ने किया है.' 11 यह देखिए, मेरे पिताजी, मेरे हाथ में
आपके कपड़े का यह छोर है. मैंने इसे तो क़तर लिया है, मगर मैंने आप पर वार
नहीं किया. तब आपका यह समझ लेना सही होगा कि मैं न तो किसी बुरे की
योजना गढ़ रहा हूं, और न ही किसी विद्रोह की. आपके विरुद्ध मैं कोई पाप नहीं
कर रहा हूं, फिर भी आप मेरे रास्ते में आ रहे हैं. 12 स्वयं याहवेह आपके और
मेरे बीच निर्णय करें. यह संभव है कि वही आपसे उन कामों के लिए बदला लें,
जो आपने मेरे विरुद्ध किए हैं, मगर स्वयं मैं आपकी कोई हानि न करूंगा. 13
जैसा पुरानी कहावत है, 'बुराई करनेवालों से बुरे काम आते हैं!' तो मेरा हाथ
आपको नहीं छुएगा. 14 "आप ही विचार कीजिए आप कर क्या रहे हैं?
इस्राएल का राजा एक मरे हुए कुत्ते का पीछा करने में जुटा है, कि उसकी हत्या
कर दे? एक कुत्ता, एक पिस्सू? 15 तब अब निर्णय याहवेह के द्वारा किया जाए.
वही आपके और मेरी स्थिति का आंकलन करें. वही मुझे आपसे सुरक्षा प्रदान
करें." 16 जब दावीद शाऊल के सामने अपनी यह बातें समाप्त कर चुके,
शाऊल ने प्रश्न किया, "क्या यह तुम्हारा स्वर है, मेरे पुत्र, दावीद?" और तब
शाऊल ऊंची आवाज में रोने लगे. 17 उन्होंने दावीद से कहा, "तुम मुझसे
अधिक धर्मी व्यक्ति हो, क्योंकि तुमने मेरे दुराचार का प्रतिफल सदाचार में
दिया, जबकि मैंने सदैव तुम्हारा बुरा ही करना चाहा है. 18 आज तो तुमने यह
घोषणा ही कर दी है कि तुमने सदैव ही मेरे हित की ही कामना की है. याहवेह ने
मुझे तुम्हारे हाथों में सौंप ही दिया था, फिर भी तुमने मेरी हत्या नहीं की.
19 क्या कभी ऐसा सुना गया है कि कोई व्यक्ति अपने हाथों में आए शत्रु को
सुरक्षित छोड़ दे? आज तुमने मेरे साथ जो उदारतापूर्ण अभिवृत्ति प्रदर्शित की है,
उसके लिए याहवेह तुम्हें भला करें. 20 अब सुनो: मुझे यह पता हो गया है कि
निश्चित राजा तुम ही बनोगे, और इस्राएल का राज्य तुम्हारे शासन में प्रतिष्ठित हो
जाएगा. 21 तब यहां याहवेह के सामने शपथ लो, कि मेरी मृत्यु के बाद तुम मेरे
वंशजों को नहीं मिटाओगे और न ही मेरे नाम को और न मेरे पिता के परिवार
की प्रतिष्ठा नष्ट करोगे." 22 दावीद ने शाऊल से इसकी शपथ खाई. इसके बाद
शाऊल अपने घर लौट गए और दावीद और उनके साथी अपने गढ़ में.

25 शमुएल की मृत्यु हो गई. सारा इस्राएलियों ने एकत्र होकर उनके लिए
विलाप किया; उन्हें उनके गृहनगर रामाह में गाड़ दिया. इसके बाद
दावीद पारान के निर्जन प्रदेश में जाकर रहने लगे. 2 कालेब के कुल का एक
व्यक्ति था, वह माओन नगर का निवासी था. कर्मेल नगर के निकट वह एक
भूखण्ड का स्वामी था. वह बहुत ही धनी व्यक्ति था. उसके तीन हज़ार भेड़ें,
तथा एक हज़ार बकरियां थीं. 3 उसका नाम नाबाल था और उसकी अबीगइल
नामक पत्नी थी, जो बहुत ही रूपवती एवं विदुषी थी. मगर वह स्वयं बहुत ही
नीच, क्रूर तथा क्रुद्ध प्रकृति का था. 4 इस समय दावीद निर्जन प्रदेश में थे, और
उन्हें मालूम हुआ कि नाबाल भेड़ों का ऊन क़तर रहा है. 5 तब दावीद ने
वहां दस नवयुवक भेज दिए और उन्हें यह आदेश दिया, "नाबाल से भेंटकरने
कर्मेल नगर चले जाओ और उसे मेरी ओर से शुभकामनाएं तथा अभिवंदन
प्रस्तुत करना. 6 तब तुम उससे कहना: 'आप पर तथा आपके परिवार पर शांति
स्थिर रहें! आप चिरायु हों! आपकी सारी संपत्ति पर समृद्धि बनी रहे! 7 "'मुझे
यह समाचार प्राप्त हुआ है कि आपकी भेड़ों का ऊन क़तरा जा रहा है. जब
आपके चरवाहे हमारे साथ थे, सारे समय जब वे कर्मेल में थे, हमने न तो उन्हें
अपमानित किया, न उन्हें कोई हानि पहुंचाई है. 8 आप स्वयं अपने सेवकों
से इस विषय में पूछ सकते हैं. आपकी कृपा हम पर बनी रहे. हम आपकी
सेवा में उत्सव के मौके पर आए हैं. कृपया अपने सेवकों को, तथा अपने पुत्र
समान सेवक दावीद को, जो कुछ आपको सही लगे, दे दीजिए.'" 9 दावीद के
नवयुवक साथी वहां गए, और दावीद की ओर से नाबाल को यह संदेश दे दिया,
और वे नाबाल के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करने लगे. 10 "कौन है यह दावीद?"
नाबाल ने दावीद के साथियों को उत्तर दिया, "और कौन है यह यिशै का पुत्र?
कैसा समय आ गया है, जो सारे दास अपने स्वामियों को छोड़-छोड़कर भाग
रहे हैं. 11 अब क्या मेरे लिए यही शेष रह गया है कि मैं अपने सेवकों के हिस्से
का भोजन लेकर इन लोगों को दे दूं? मुझे तो यही समझ नहीं आ रहा कि
ये लोग कौन हैं, और कहां से आए हैं?" 12 तब दावीद के साथी लौट गए.
लौटकर उन्होंने दावीद को यह सब सुना दिया. 13 दावीद ने अपने साथियों को
आदेश दिया, "हर एक व्यक्ति अपनी तलवार उठा ले!" तब सबने अपनी
तलवार धारण कर ली. दावीद ने भी अपनी तलवार धारण कर ली. ये सब
लगभग चार सौ व्यक्ति थे, जो इस अभियान में दावीद के साथ थे, शेष लगभग
दो सौ उनके विभिन्न उपकरणों तथा आवश्यक सामग्री की रक्षा के लिए ठहर
गए. 14 इसी बीच नाबाल के एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगइल को संपूर्ण
घटना का वृत्तांत सुना दिया, "दावीद ने हमारे स्वामी के पास मरुभूमि से अपने
प्रतिनिधि भेजे थे, कि वे उन्हें अपनी शुभकामनाएं प्रस्तुत करें, मगर स्वामी ने
उन्हें घोर अपमान करके लौटा दिया है. 15 ये सभी व्यक्ति हमारे साथ बहुत ही
सौहार्दपूर्ण रीति से व्यवहार करते रहे थे. उन्होंने न कभी हमारा अपमान किया,
न कभी हमारी कोई हानि ही की. जब हम मैदानों में भेड़ें चराया करते थे हमारी
कोई भी भेड़ नहीं खोई. हम सदैव साथ साथ रहे. 16 दिन और रात संपूर्ण समय
वे मानो हमारे लिए सुरक्षा की दीवार बने रहते थे, जब हम उनके साथ मिलकर
भेड़ें चराया करते थे. 17 अब आप स्थिति की गंभीरता को पहचान लीजिए
और विचार कीजिए, कि अब आपका क्या करना सही होगा, क्योंकि अब
हमारे स्वामी और उनके संपूर्ण परिवार के लिए बुरा योजित हो चुका है. वह ऐसा
दुष्ट व्यक्ति हैं, कि कोई उन्हें सुझाव भी नहीं दे सकता." 18 यह सुनते ही
अबीगइल ने तत्काल दो सौ रोटियां, दो छागलें द्राक्षारस, पांच भेड़ें, जो पकाई
जा चुकी थीं, पांच माप भुना हुआ अन्न, किशमिश के सौ पिंड तथा दो सौ पिंड
अंजीरों को लेकर गधों पर लाद दिया. 19 "उसने अपने सेवकों को आदेश
दिया, मेरे आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे आऊंगी." मगर स्वयं उसने इसकी
सूचना अपने पति नाबाल को नहीं दी. 20 जब वह अपने गधे पर बैठी हुई पर्वत
के उस गुप्त मार्ग पर थी, उसने देखा कि दावीद तथा उनके साथी उसी की
ओर बढ़े चले आ रहे थे, और वे आमने-सामने आ गए. 21 इस समय दावीद
विचार कर ही रहे थे, "निर्जन प्रदेश में हमने व्यर्थ ही इस व्यक्ति की संपत्ति की
ऐसी रक्षा की, कि उसकी कुछ भी हानि नहीं हुई, मगर उसने इस उपकार का
प्रतिफल हमें इस बुराई से दिया है. 22 यदि प्रातःकाल तक उसके संबंधियों में से
एक भी नर जीवित छोड़ दूं, तो परमेश्वर दावीद के शत्रुओं से ऐसा ही, एवं इससे
भी बढ़कर करें!" 23 दावीद को पहचानते ही अबीगइल तत्काल अपने गधे से
उतर पड़ीं, उनके सामने मुख के बल गिर दंडवत हुई. 24 तब उन्होंने दावीद
के चरणों पर गिरकर उनसे कहा, "दोष सिर्फ़ मेरा ही है, मेरे स्वामी, अपनी
सेविका को बोलने की अनुमति दें, तथा आप मेरा पक्ष सुन लें. 25 मेरे स्वामी,
कृपया आप इस निकम्मे व्यक्ति नाबाल के कड़वे वचनों पर ध्यान न दें. उसकी
प्रकृति ठीक उसके नाम के ही अनुरूप है. उसका नाम है नाबाल और मूर्खता
उसमें सचमुच व्याप्त है. खेद है कि उस समय मैं वहां न थी, जब आपके साथी
वहां आए हुए थे. 26 और अब मेरे स्वामी, याहवेह की शपथ, आप चिरायु
हों, क्योंकि याहवेह ने ही आपको रक्तपात के दोष से बचा लिया है, और

आपको यह काम अपने हाथों से करने से रोक दिया है. अब मेरी कामना है
कि आपके शत्रुओं की, जो आपकी हानि करने पर उतारू हैं, उनकी स्थिति
वैसी ही हो, जैसी नाबाल की. 27 अब आपकी सेविका द्वारा लाई गई इस
भेंट को हे स्वामी, आप स्वीकार करें कि इन्हें अपने साथियों में बाट दें. 28
"कृपया अपनी सेविका की इस भूल को क्षमा कर दें. याहवेह आपके परिवार
को प्रतिष्ठित करेंगे, क्योंकि मेरे स्वामी याहवेह के प्रतिनिधि होकर युद्ध कर रहे
हैं. अपने संपूर्ण जीवन में अपने किसी का बुरा नहीं चाहा है. 29 यदि कोई
आपके प्राण लेने के उद्देश्य से आपका पीछा करना शुरू कर दे, तब मेरे स्वामी
का जीवन याहवेह, आपके परमेश्वर की सुरक्षा में जीवितों की झोली में संचित
कर लिया जाएगा, मगर आपके शत्रुओं के जीवन को इस प्रकार दूर प्रक्षेपित कर
देंगे, जैसे गोफन के द्वारा पत्थर फेंक दिया जाता है. 30 याहवेह मेरे स्वामी के
लिए वह सब करेंगे, जिसकी उन्होंने आपसे प्रतिज्ञा की है. वह आपको इस्राएल
के शासक बनाएंगे, 31 अब आपकी अंतरात्मा निर्दोष के लहू बहाने के दोष से
न भरेगी, और न आपको इस विषय में कोई खेद होगा कि आपने स्वयं बदला ले
लिया. मेरे स्वामी, जब याहवेह आपको उन्नत करें, कृपया अपनी सेविका
को अवश्य याद रखियेगा." 32 अबीगइल से ये उद्गार सुनकर दावीद ने उन्हें
संबोधित कर कहा, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति हो, जिन्होंने
आपको मुझसे भेंटकरने भेज दिया है. 33 सराहनीय है आपका उत्तम अनुमान!
आज मुझे रक्तपात से रोक देने के कारण आप स्वयं सराहना की पात्र हैं. आपने
मुझे आज स्वयं बदला लेने की भूल से भी बचा लिया है. 34 याहवेह, इस्राएल
के जीवन्त परमेश्वर की शपथ, जिन्होंने मुझे आपका बुरा करने से रोक दिया है,
यदि आप आज इतने शीघ्र मुझसे भेंटकरने न आयी होती, सबेरे, दिन का प्रकाश
होते-होते, नाबाल परिवार का एक भी नर जीवित न रहता." 35 तब दावीद ने
उसके हाथ से उसके द्वारा लाई गई भेंटें स्वीकार की और उसे इस आश्वासन
के साथ विदा किया, "शांति से अपने घर लौट जाओ, मैंने तुम्हारी बात मान
ली और तुम्हारी विनती स्वीकार कर लिया." 36 जब अबीगइल घर पहुंची,
नाबाल ने अपने आवास पर एक भव्य भोज आयोजित किया हुआ था. ऐसा
भोज, मानो वह राजा हो. उस समय वह बहुत ही उत्तेजित था तथा बहुत ही नशे
में था. तब अबीगइल ने सुबह तक कोई बात न की. 37 सुबह, जब नाबाल से
शराब का नशा उतर चुका था, उसकी पत्नी ने उसे इस विषय से संबंधित सारा
विवरण सुना दिया. यह सुनते ही नाबाल को पक्षाघात हो गया, और वह सुन्न रह
गया. 38 लगभग दस दिन बाद याहवेह ने नाबाल पर ऐसा प्रहार किया कि
उसकी मृत्यु हो गई. 39 जब दावीद ने नाबाल की मृत्यु का समाचार सुना,
वह कह उठे, "धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने नाबाल द्वारा किए गए मेरे अपमान
का बदला ले लिया है. याहवेह अपने सेवक को बुरा करने से रोके रहे तथा
नाबाल को उसके दुराचार का प्रतिफल दे दिया." दावीद ने संदेशवाहकों द्वारा
अबीगइल के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा. 40 दावीद के संदेशवाहकों ने
कर्मेल नगर जाकर अबीगइल को कहा: "हमें दावीद ने आपके पास भेजा है कि
हम आपको अपने साथ उनके पास ले जाएं, कि वे आपसे विवाह कर सकें."
41 वह तत्काल उठी, भूमि पर दंडवत होकर उनसे कहा, "आपकी सेविका
मेरे स्वामी के सेवकों के चरण धोने के लिए तत्पर दासी हूं." 42 अबीगइल
विलंब न करते उठकर तैयार हो गई. वह अपने गधे पर बैठी और दावीद के
संदेशवाहकों के साथ चली गई. उसके साथ उसकी पांच सेविकाएं थी. वहां वह
दावीद की पत्नी हो गई. 43 दावीद ने येज़्रील नगरवासी अहीनोअम से भी विवाह
किया. ये दोनों ही उनकी पत्नी बन गईं. 44 इस समय तक शाऊल ने अपनी बेटी
मीखल, जो वस्तुतः दावीद की पत्नी थी, लायीश के पुत्र पालतिएल को, जो
गल्लीम नगर का वासी था, सौंप दी थी.

26 यह वह मौका था जब ज़ीफ़ नगर के लोगों ने जाकर शाऊल को सूचित
किया, "दावीद जेशिमोन के पूर्व में हकीलाह पहाड़ियों में छिपे हुए हैं."
2 तब शाऊल तैयार होकर इस्राएल के तीन हज़ार सर्वोत्तम योद्धाओं को लेकर
दावीद की खोज करते हुए ज़ीफ़ की मरुभूमि में जा पहुंचे. 3 शाऊल ने अपने
शिविर जेशिमोन के पूर्व में हकीलाह की पहाड़ी के मार्ग के निकट खड़े किए.
मगर दावीद निर्जन प्रदेश में ही रहे. जब दावीद को यह मालूम हुआ कि शाऊल
उन्हें खोजते हुए यहां तक आ पहुंचे हैं, 4 उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए
अपने दूत वहां भेज दिए. 5 बाद में दावीद खुद गए और उस स्थान की जांच
पड़ताल की, जहां शाऊल की सेना ने पड़ाव डाला हुआ था. उन्होंने वह स्थल
देखा, जहां शाऊल और सेनापति, नेर के पुत्र अबनेर, सोए हुए थे. शाऊल
विशेष सुरक्षा के स्थल में सोए थे और सारी सेना उन्हें घेरे हुए सोई हुई थी. 6
दावीद ने हित्ती अहीमेलेख तथा ज़ेरुइयाह के पुत्र, योआब के भाई अबीशाई को
संबोधित करते हुए प्रश्न किया, "कौन है तत्पर मेरे साथ शाऊल के शिविर में
सेंध लगाने के लिए?" "मैं चलूंगा आपके साथ." अबीशाई ने उत्तर दिया. 7
उस रात दावीद तथा अबीशाई सेना के पड़ाव में चले गए. वहां शाऊल विशेष
सुरक्षा के स्थल में सोए हुए थे. उनका भाला उनके सिर के निकट भूमि में गड़ा
हुआ था, तथा अबनेर तथा सारी सेना उन्हें घेरे हुए सो रही थी. 8 यह देख
अबीशाई ने दावीद से कहा, "आज तो परमेश्वर ने आपके शत्रु को आपके हाथों
में सौंप दिया है. मैं अपने भाले के एक ही प्रहार से उन्हें भूमि में नत्थी कर देता
हूं; मुझे दूसरा प्रहार करने की आवश्यकता तक न होगी." 9 मगर दावीद ने
अबीशाई को उत्तर दिया, "उन्हें मत मारो! क्या, याहवेह के अभिषिक्त पर हाथ
उठाकर कोई निर्दोष रह सकता है?" 10 दावीद ने आगे कहा, "जीवन्त याहवेह
की शपथ, स्वयं याहवेह ही उनका संहार करेंगे, या उनकी मृत्यु उनके लिए
निर्धारित समय पर होगी, या यह युद्ध करने जाएंगे और वहां मारे जाएंगे. 11
याहवेह ऐसा कभी न होने दें कि मैं याहवेह के अभिषिक्त पर हाथ उठाऊं, अब
ऐसा करो: उनके सिर के निकट गाड़ हुए भाले को उठाओ और उनके उस जल
पात्र को भी, और चलो हम लौट चलें." 12 दावीद ने वह भाला तथा सिर के
निकट रखे जल पात्र को उठाया और वे दोनों वहां से बाहर निकल आए. उन्हें न
तो किसी ने देखा और न ही किसी को इसके विषय में कुछ ज्ञात ही हुआ. उन
सभी पर घोर निद्रा छाई हुई थी; याहवेह द्वारा उन पर डाली गई घोर निद्रा. 13
तब दावीद पहाड़ी के दूसरी ओर चले गए, और दूर जाकर पहाड़ी के शीर्ष पर
जा खड़े हुए. उनके और पड़ाव के मध्य अब दूरी हो गई थी. 14 वहां से दावीद
ने सेना और नेर के पुत्र अबनेर को पुकारकर कहा, "अबनेर, आप मुझे उत्तर
देंगे?" अबनेर ने उत्तर दिया, "कौन हो तुम, जो राजा को पुकार रहे हो?" 15
दावीद ने अबनेर से कहा, "क्या आप शूर व्यक्ति नहीं? अंततः सारे इस्राएल राष्ट्र
में कौन है आपके तुल्य? तब आपने आज अपने स्वामी, राजा की सुरक्षा में ढील
क्यों दी है? आज रात कोई व्यक्ति आपके स्वामी, राजा की हत्या के उद्देश्य से
शिविर में घुस आया था. 16 आपके द्वारा दी गई यह ढील खेद का विषय है.
वस्तुतः जीवन्त याहवेह की शपथ, यह अपराध मृत्यु दंड के योग्य है, क्योंकि
आपने अपने स्वामी, याहवेह के अभिषिक्त, की सुरक्षा में ढील दी है. देख
लीजिए. राजा के सिरहाने गड़ा हुआ भाला तथा उनका जल पात्र कहां है?" 17
शाऊल दावीद का स्वर पहचान गए. उन्होंने उनसे कहा, "दावीद, मेरे पुत्र, क्या
यह तुम्हारा ही स्वर है?" "जी हां, महाराज, मेरे स्वामी," दावीद ने उत्तर दिया.
18 तब दावीद ने ही आगे यह कहा, "मेरे स्वामी, आप क्यों अपने सेवक का
पीछा कर रहे हैं? क्या है मेरा दोष? ऐसा कौन सा अपराध हो गया है मुझसे? 19
तब महाराज, मेरे स्वामी, अपने सेवक द्वारा प्रस्तुत यह याचना सुन लीजिए! यदि
स्वयं याहवेह ने ही आपको मेरे विरुद्ध यह करने के लिए उत्प्रेरित किया है, वह
एक भेंट स्वीकार कर लें, मगर यदि यह सब किसी मनुष्य की प्रेरणा में किया

जा रहा है, वे याहवेह द्वारा शापित हों. क्योंकि आज मुझे याहवेह द्वारा दी गई
मीरास को छोड़कर इधर-उधर भटकना पड़ रहा है, मानो मुझे यह आदेश दिया
गया हो, 'जाओ अज्ञात देवताओं की आराधना करो,' 20 तब मेरी विनती है मेरा
रक्त याहवेह द्वारा दी गई मीरास से दूर न गिरने दें, क्योंकि तथ्य यह है कि
इस्राएल राष्ट्र के महाराज सिर्फ एक पिस्सू का पीछा करते हुए ऐसे आए हैं, जैसे
कोई पर्वतों पर तीतर का पीछा करता है." 21 तब शाऊल कह उठे, "मुझसे
पाप हुआ है. मेरे पुत्र दावीद, लौट आओ, क्योंकि अब से मैं तुम्हारी कोई हानि
न करूंगा. आज तुमने मेरे प्राण को ऐसा मूल्यवान समझा है. बहुत ही मूर्खतापूर्ण
रहे हैं मेरे द्वारा उठाए गए ये कदम और वास्तव में मुझसे बड़ी भूल हुई है." 22
दावीद ने उत्तर दिया, "महाराज, मैं आपका भाला यहां छोड़ रहा हूं. किसी
सैनिक को इसे लेने के लिए भेज दीजिए. 23 हर एक व्यक्ति के लिए उसकी
धार्मिकता तथा सच्चाई के अनुसार ईनाम निर्धारित है. याहवेह ने आज आपको
मेरे हाथों में सौंप दिया था, मगर याहवेह के अभिषिक्त पर मैंने हाथ नहीं
उठाया. 24 जिस प्रकार मेरी दृष्टि में आपके प्राण अमूल्य हैं, मेरे प्राण भी याहवेह
की दृष्टि में अमूल्य बने रहें. वही मुझे सारी कठिनाइयों से विमुक्त करें." 25
तब शाऊल ने दावीद से कहा, "दावीद, मेरे पुत्र, तुम सराहनीय हो! तुम महान
काम करोगे और तुम्हें सदैव सफलता ही प्राप्त होगी." दावीद, इसके बाद वहां
से चले गए और शाऊल अपने घर को लौट गए.

27 इस समय दावीद के मन में एक ही विचार बार-बार उठ रहा था, "एक न
एक दिन शाऊल के हाथों से मेरी हत्या तय है, तब इससे उत्तम विकल्प
और क्या हो सकता है कि फिलिस्तिया देश को भाग जाऊं. परिणाम यह होगा
कि शाऊल निराश हो इस्राएल राष्ट्र के किसी भी भाग में मेरी खोज करना छोड़
देंगे, और में उनसे सुरक्षित रह सकूंगा." 2 तब दावीद ने सीमा पार की और गाथ
देश के राजा माओख के पुत्र आकीश के आश्रय में पहुंच गए. उनके साथ उनके
छः सौ साथी भी थे. 3 इस प्रकार दावीद आकीश के राज्य में अपने छः सौ
साथियों के साथ रहने लगे. हर एक व्यक्ति के साथ उसका अपना परिवार भी
था, तथा दावीद के साथ उनकी दोनों पत्नियां थीं: येज़्रील से आई अहीनोअम
तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगइल. 4 जब शाऊल को यह समाचार
प्राप्त हुआ कि दावीद गाथ देश को भाग चुके हैं, उन्होंने उनकी खोज करके
उनका पीछा करना छोड़ दिया. 5 दावीद ने जाकर राजा आकीश से निवेदन
किया, "यदि मैं आपकी दृष्टि में विश्वास्य हूं, तो कृपा कर अपने किसी दूर छोटे
नगर में मुझे बसने की अनुमति दे दीजिए; क्या आवश्यकता है आपके सेवक
की यहां राजधानी में बसने की?" 6 तब राजा आकीश ने उसी समय दावीद को
ज़िकलाग में बसने की आज्ञा दे दी. यही कारण है कि आज तक ज़िकलाग
यहूदिया के शासकों के अधीनस्थ है. 7 दावीद के फिलिस्तीनियों के देश में
रहने की कुल अवधि एक साल चार महीने हुई. 8 दावीद और उनके साथी
गेशूरियों, गीर्ज़ियों तथा अमालेकियों के क्षेत्रों में जाकर छापा मारा करते थे.
(ये वे स्थान थे, जहां ये लोग दीर्घ काल से निवास कर रहे थे. इस क्षेत्र शूर से
लेकर मिस्र देश तक विस्तृत था.) 9 दावीद किसी भी क्षेत्र पर हमला करते थे तो
किसी व्यक्ति को जीवित न छोड़ते थे: न स्त्री, न पुरुष; वह भेड़ें, पशु, गधे,
ऊंट तथा वस्त्र लूटकर राजा आकीश को दे दिया करते थे. 10 जब आकीश
उनसे पूछते थे, "आज कहां छापा मारा था तुमने?" दावीद कह दिया करते थे,
"यहूदिया के नेगेव में," या "येराहमील के नेगेव में," या "केनियों के क्षेत्र में."
11 दावीद इन क्षेत्रों में किसी को भी जीवित नहीं छोड़ते थे, ताकि कोई जाकर
राजा आकीश को सत्य की सूचना दे सके. दावीद का विचार यह था, "ऐसा
करने पर वे हमारे विरुद्ध यह न कह सकेंगे, 'दावीद ने किया है यह सब.'"
दावीद जितने समय फिलिस्तीनियों के क्षेत्र में निवास करते रहे, उनकी यही
रीति रही. 12 राजा आकीश ने दावीद पर भरोसा किया और खुद से कहा, "वह
अपने ही लोगों के लिए इतना अप्रिय हो गया है कि वह जीवन भर मेरा दास
रहेगा."

28 यह घटना उस समय की है, जब फिलिस्तीनियों ने इस्राएल से युद्ध के
उद्देश्य से अपनी सेना सुनियोजित की. राजा आकीश ने दावीद से कहा,
"आशा है तुम यह समझ रहे हो कि तुम और तुम्हारे साथी भी हमारी सेना में
शामिल हैं." 2 दावीद ने उसे उत्तर दिया, "अति उत्तम! आप भी देख लेना
आपका सेवक आपके लिए क्या-क्या कर सकता है." "वाह!" आकीश ने
दावीद से कहा, "मैं आजीवन तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाए रहूंगा." 3 इस
समय शमुएल की मृत्यु हो चुकी थी. सारे इस्राएल ने उनके लिए विलाप किया
तथा उन्हीं के गृहनगर रामाह में उनको दफना दिया. इस समय तक शाऊल ने
संपूर्ण देश में से सारे मोहनियों तथा तांत्रिकों को बाहर निकाल दिया था. 4
फिलिस्तीनी सैनिक एकत्र हुए, और शूनेम नामक स्थान पर उन्होंने अपना
पड़ाव खड़ा किया. शाऊल ने भी इस्राएली सेना संगठित की, और उन्होंने
अपना पड़ाव गिलबोआ में खड़ा किया. 5 जब शाऊल ने फिलिस्तीनियों की
सेना की ओर दृष्टि की, तो वह भयभीत हो गए और उनका हृदय बहुत ही
विचलित हो गया. 6 जब उन्होंने याहवेह से जानकारी चाही, याहवेह ने उन्हें
कोई उत्तर ही न दिया; न तो स्वप्नों के माध्यम से, न उरीम के माध्यम से और न
ही भविष्यवक्ताओं के माध्यम से. 7 हारकर शाऊल ने अपने सेवकों को आदेश
दिया, "मेरे लिए एक ऐसी स्त्री की खोज करो, जो डायन हो, कि मैं उससे
पूछताछ कर सकूं." उनके सेवक यह सूचना लाए. "सुनिए, एक डायन है, एन-
दोर में." 8 तब शाऊल ने भेष बदला और अपने वस्त्र परिवर्तित कर लिए तथा
अपने साथ दो व्यक्तियों को लेकर चल पड़े. वे उस स्त्री के पास रात में पहुंचे.
शाऊल ने उस स्त्री को आदेश दिया, "मेरे लिए आत्मा को बुलाकर पूछताछ
कीजिए." मेरे लिए उन्हें बुला दीजिए, जिसका मैं नाम लूंगा. 9 मगर उस स्त्री ने
उन्हें उत्तर दिया, "आपको यह ज्ञात तो अवश्य ही होगा कि शाऊल ने क्या
किया है. कैसे उन्होंने सारे देश के तांत्रिकों तथा जादू-टोन्हों का वध करवा
दिया है. आप क्यों मेरे वध के लिए जाल बिछा रहे हैं?" 10 इस पर शाऊल ने
याहवेह की शपथ लेते हुए उसे आश्वासन दिया, "जीवन्त याहवेह की शपथ,
तुम्हारा इसके कारण कोई भी बुरा न होगा." 11 "अच्छा बताइए, आपके लिए
मैं किसे बुलाऊंगा?" उसने पूछा उसने उत्तर दिया, "ऐसा करो, मेरे लिए तुम
शमुएल को बुला लाओ." 12 जब शमुएल आए, उन्हें देख वह स्त्री बहुत ही
उच्च स्वर में चिल्ला उठी. वह शाऊल से कहने लगी, "आपने मेरे साथ छल
क्यों किया है? आप शाऊल हैं!" 13 "डरो मत!" राजा ने उसे आश्वासन दिया
और पूछा, "तुम क्या देखती हो?" "मुझे भूमि में से एक दिव्य आकृति ऊपर
आती हुई दिखाई दे रही है." 14 शाऊल ने उससे पूछा, "उसका स्वरूप कैसा
दिखाई दे रहा है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "एक वृद्ध व्यक्ति ऊपर आ रहे हैं. वह
बागा ओढ़े हुए हैं." इससे शाऊल को यह अहसास हुआ कि वह शमुएल हैं. वह
भूमि की ओर नतमस्तक हुए और सामने घुटने टेक दिए. 15 शमुएल ने शाऊल
से पूछा, "मुझे बुलाकर तुमने मेरा विश्राम भंग क्यों किया?" शाऊल ने उत्तर
दिया, "मैं घोर संकट में आ पड़ा हूं. फिलिस्तीनी हमारे विरुद्ध युद्ध के लिए उठ
खड़े हुए हैं. परमेश्वर मुझसे विमुख हो गए हैं. उनसे मुझे कोई भी उत्तर प्राप्त
नहीं हो रहा: न तो भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, न स्वप्नों के माध्यम से.
इसलिये मुझे आपको कष्ट देना पड़ा है. कृपया मुझे बताइए मैं क्या करूं." 16
"जब याहवेह ही तुमसे विमुख हो चुके हैं, तुम्हारे शत्रु बन चुके हैं, तो क्या लाभ
है मुझसे पूछने का?" शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया. 17 "याहवेह ने वही किया है,
जो मेरे द्वारा पूर्वघोषित कर चुके थे. याहवेह ने साम्राज्य तुम्हारे हाथ से छीनकर
तुम्हारे पड़ोसी, दावीद को दे दिया है, 18 क्योंकि तुमने याहवेह के आदेश का
पालन नहीं किया और अमालेकियों के प्रति उनके प्रचंड प्रकोप का निष्पादन

नहीं किया; तुम्हें आज याहवेह की ओर से यह प्रतिफल प्राप्त हुआ है. **19**
याहवेह तुम्हें तथा इस्राएल को फिलिस्तीनियों के अधीन कर देंगे. कल तुम और
तुम्हारे पुत्र मेरे साथ होंगे. याहवेह इस्राएल की सेना को भी फिलिस्तीनियों के
अधीन कर देंगे." **20** यह सुनते ही शाऊल वैसे के वैसे भूमि पर गिर पड़े, कटे
वृक्ष समान. शमुएल के शब्दों ने उन्हें बहुत ही भयभीत कर दिया था. उनका
शरीर पूर्णतः शिथिल हो गया था. उन्होंने सारा दिन और रात में भोजन ही नहीं
किया था. **21** वह स्त्री शाऊल के निकट आई, और उसने पाया कि शाऊल बहुत
ही भयभीत थे, उसने शाऊल से कहा, "सुनिए, आपकी सेविका ने आपकी
आज्ञा का पालन किया है और यह मैंने अपने प्राणों पर खेलकर किया है. आपने
मुझे जो आदेश दिया, मैंने वही किया है. **22** तब आप भी अब मेरी सुन लीजिए.
मैं आपके लिए भोजन तैयार करती हूं ताकि आप कुछ खा लें. इससे आपको
बल प्राप्त होगा कि आप लौटकर जा सकें." **23** मगर शाऊल अस्वीकार करते
रहे, "नहीं मुझे कुछ नहीं खाना है." मगर शाऊल के सेवक तथा वह स्त्री उनसे
आग्रह करते रहे. अंततः उन्होंने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया. वह भूमि से
उठकर बिछौने पर बैठ गए. **24** उस स्त्री का एक पुष्ट बछड़ा था, उसका उसने
तुरंत वध किया, आटा लेकर खमीर रहित रोटियां बनाई. **25** यह सब उसने
शाऊल और उसके सेवकों को परोसा. उन्होंने भोजन किया और रात में ही वहां
से विदा हो गए.

29 फिलिस्तीनियों ने अपनी सारी सेना अफेक नामक स्थान पर नियोजित
की, तथा इस्राएलियों ने येज्रील के झरने के निकट. **2** जब फिलिस्तीनी
नायक अपने सैकड़ों तथा हज़ार के समूह में आगे बढ़ रहे थे, दावीद और उनके
साथी राजा आकीश के पीछे-पीछे चल रहे थे. **3** फिलिस्तीनियों के सेनापतियों
ने राजा से प्रश्न किया, "इन इब्रियों का यहां क्या काम?" राजा आकीश ने
सेनापतियों को उत्तर दिया, "क्या तुम इस्राएल के राजा शाऊल के सेवक दावीद
को नहीं जानते, जो मेरे साथ दीर्घ काल से—उस समय से है, जब से उसने
शाऊल को छोड़ा है? तब से आज तक मैंने उसके कामों में कोई भी गलती नहीं
देखी." **4** इस पर फिलिस्तीनी सेनापति उन पर क्रुद्ध हो गए. उन्होंने राजा से
कहा, "उसे उसी स्थान को लौट जाने का आदेश दीजिए, जो उसे आपने दिया
है. युद्ध में तो वह हमारे साथ नहीं जाएगा. क्या पता युद्ध में वह हमारे ही विरुद्ध
हो जाए? उसके सामने इससे उत्तम मौका और क्या हो सकता है कि वह शाऊल
की दृष्टि में स्वीकार हो? **5** क्या यह वही दावीद नहीं है, जिसके लिए उन्होंने
मिलकर नृत्य करते हुए यह गाया था: "'शाऊल ने अपने हज़ार शत्रुओं का
संहार किया मगर दावीद ने अपने दस हज़ार शत्रुओं का'?" **6** इस पर आकीश
ने दावीद को बुलाकर उनसे कहा, "जीवन्त याहवेह की शपथ, तुम सच्चे रहे
हो, और व्यक्तिगत रूप से मुझे सही यही लग रहा है कि इस युद्ध में तुम मेरे साथ
साथ आया जाया करो. जिस दिन से तुम मेरे आश्रय में आए हो, तब से आज तक
मुझे तुममें कुछ भी अप्रिय नहीं लगा. अब क्या किया जा सकता है; यदि
सेनापति तुम्हें स्वीकार करना नहीं चाहते? **7** तब तुम अब शांतिपूर्वक यहां से
लौट जाओ, कि फिलिस्तीनी सेनापति तुमसे अप्रसन्न न हो जाएं." **8** दावीद ने
आकीश से पूछा, "मुझसे ऐसी क्या भूल हो गई जो मैं राजा, मेरे स्वामी, के
शत्रुओं से लड़ने नहीं जा सकता? जिस दिन से मैं आपकी सेवा में आया हूं, तब
से आज तक आपको मुझमें कौन सा दोष दिखाई दिया है?" **9** आकीश ने दावीद
को उत्तर दिया, "मैं जानता हूं कि मेरी दृष्टि में तुम वैसे ही निर्दोष हो, जैसा
परमेश्वर का स्वर्गदूत. फिर भी फिलिस्तीनी सेनापतियों ने अपना मत दे दिया है,
'वह हमारे साथ युद्ध में नहीं जाएंगे.' **10** तब ऐसा करो, प्रातः शीघ्र उठकर
अपने साथ आए अपने स्वामी के सेवकों को लेकर सुबह का प्रकाश होते ही तुम
सब लौट जाओ." **11** तब दावीद अपने साथियों के साथ बड़े तड़के फिलिस्तीन
देश को लौट गए, मगर फिलिस्तीनी येज्रील की ओर बढ़ गए.

30 तीसरे दिन दावीद एवं उनके साथी ज़िकलाग नगर पहुंचे. इस बीच
अमालेकियों ने नेगेव तथा ज़िकलाग पर छापा मारा था. उन्होंने
ज़िकलाग पर हमला किया, तथा उसे आग लगा दी. **2** उन्होंने नगर की हर
अवस्था की स्त्रियों को बंदी बना लिया था मगर उन्होंने किसी की भी हत्या
नहीं की. उन्हें बंदी बनाकर वे उन्हें अपने साथ ले गए. **3** जब दावीद और
उनके साथी लौटकर नगर में आए तो उन्होंने देखा कि नगर भस्म हुआ पड़ा है,
और उनकी पत्नियां, पुत्र और पुत्रियां बंदी बनाकर ले जा चुके हैं. **4** यह देख
दावीद और उनके साथी ऊंची आवाज में उस समय तक रोते रहे, जब तक उनमें
रोने के लिए बल ही बाकी न रह गया. **5** दावीद की दोनों पत्नियां भी बंदी
बनाकर ले जाई गई थीं; येज्रील की अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की
विधवा अबीगइल. **6** इस समय दावीद बहुत ही परेशान थे, क्योंकि उनके साथी
उनका पत्थराव करने की योजना कर रहे थे. हर एक व्यक्ति का हृदय अपने
पुत्र-पुत्रियों के अपहरण के कारण बहुत ही कटु हो चुका था. मगर दावीद ने इस
स्थिति में याहवेह अपने परमेश्वर में बल प्राप्त किया. **7** दावीद ने अहीमेलेख के
पुत्र अबीयाथर पुरोहित से विनती की, "कृपया मेरे पास एफ़ोद लेकर आइए."
अबीयाथर एफ़ोद लेकर दावीद के निकट आ गए. **8** दावीद ने याहवेह से पूछा,
"क्या मैं इन छापामारों का पीछा करूं? क्या मैं उन्हें पकड़ सकूंगा?" याहवेह
की ओर से उत्तर आया, "पीछा अवश्य करो, क्योंकि तुम उन्हें निश्चयतः पकड़
लोगे और बंदियों को छुड़ा लोगे." **9** तब दावीद अपने छः सौ साथियों के साथ
उनका पीछा करने निकल पड़े. जब वे बेसोर नामक नदी पर पहुंचे, कुछ पीछे
रह गए. **10** दावीद ने वहां उन दो सौ व्यक्तियों को छोड़ दिया, क्योंकि ये थक
गए थे और बेसोर नदी को पार करने में असमर्थ थे. मगर दावीद अपने शेष चार
सौ साथियों को लेकर आगे बढ़ते गए. **11** चलते हुए मैदान में पहुंचने पर उन्हें
एक मिस्रवासी व्यक्ति मिला. वे उसे दावीद के पास ले गए. उन्होंने उसे भोजन
कराया तथा पीने के लिए पानी भी दिया. **12** इसके अतिरिक्त उन्होंने उसे खाने
के लिए एक पिण्ड अंजीर तथा एक गुच्छा किशमिश भी दिया. भोजन कर लेने
के बाद उसमें स्फूर्ति लौट आई. तीन दिन और तीन रात से उसने कुछ भी न
खाया था नहीं कुछ पिया था. **13** दावीद ने उससे पूछा, "तुम कहां से आ रहे हो
तथा कौन है तुम्हारा स्वामी?" उस युवा ने उत्तर दिया, "मैं मिस्रवासी हूं. मैं एक
अमालेकी का सेवक हूं. तीन दिन तक मेरे अस्वस्थ होने पर मेरे स्वामी ने मेरा
परित्याग कर दिया. **14** हम लोगों ने केरेथियों के दक्षिण क्षेत्र पर, यहूदिया के
एक क्षेत्र पर तथा कालेब के दक्षिण क्षेत्र पर छापा मारा. तब हमने ज़िकलाग में
आग लगा दी." **15** दावीद ने उससे पूछा, "क्या तुम हमें इन छापामारों तक
पहुंचा सकते हो?" उस मिस्रवासी ने उनसे कहा, "पहले आप शपथ लीजिए कि
आप न तो मेरी हत्या करेंगे, और न मुझे मेरे स्वामी के हाथों में सौंपेंगे; तब मैं
आपको इन छापामारों तक पहुंचा दूंगा." **16** तब वह मिस्रवासी उन्हें उस स्थान
पर ले गया. छापामार एक विशाल भूभाग पर फैले हुए थे. फिलिस्तीनियों तथा
यहूदिया से लूटकर लाई गई सामग्री के कारण वे अब खा-पीकर आमोद-प्रमोद
में लिप्त थे. **17** शाम से दावीद ने उनका संहार करना शुरू किया और यह क्रम
अगले दिन की शाम तक चलता रहा. इसमें ऊंटों पर आरोहित चार सौ युवा
छापामारों को छोड़ उनमें कोई भी जीवित न रहा. वे चार सौ ऊंटों पर भाग
निकले. **18** दावीद ने अपनी दोनों पत्नियों को तथा अमालेकियों द्वारा लूटी गई
सारा सामग्री पुनः प्राप्त कर ली. **19** किसी वस्तु की हानि नहीं हुई थी—न तो
कोई छोटी वस्तु या बड़ी वस्तु, पुत्र या पुत्रियां, लूटी हुई वस्तुएं या कुछ भी, जो
छीन लिया गया था, दावीद को सभी कुछ पुनः प्राप्त हो गया. **20** दावीद ने सारी
भेड़ें और पशु भी पकड़ लिए, और उन्हें अन्य पशुओं के साथ सबके आगे-आगे
लेकर लौटे. उन्होंने घोषणा की, "यह सब दावीद द्वारा लूटी गई सामग्री है."
21 जब वे लौटते हुए उन दो सौ के स्थान पर पहुंचे, जो सरिता पार करने योग्य

नहीं रह गए थे, जिन्हें उन्होंने सरिता बेसोर के पार छोड़ दिया था, वे दावीद
और उनके साथियों से भेंटकरने आगे आए. दावीद ने उनसे उनका कुशल क्षेम
पूछा. 22 तब दावीद के साथियों में से वे, जो निकम्मे तथा दुर्वृत्त थे, कहने लगे,
"हम इन्हें इस सामग्री में से कुछ नहीं देंगे, क्योंकि इन्होंने हमारा साथ छोड़
दिया था तथा ये हमारे साथ युद्ध पर नहीं गए थे. हां, हर एक व्यक्ति अपनी पत्नी
और संतान को लेकर यहां से चला जाए." 23 मगर जवाब में दावीद ने कहा,
"नहीं, मेरे भाइयो, याहवेह द्वारा दी गई सामग्री के साथ हम ऐसा नहीं कर
सकते. याहवेह ने हमें सुरक्षा प्रदान की है तथा हमें उन छापामारों पर जय प्रदान
की है. 24 किसे तुम्हारा यह तर्क मान्य हो सकता है? लूट की सामग्री में उसका
भी उतना ही अंश होगा, जो सबके सामान की रक्षा के लिए पीछे रुका रहता है,
जितना उसका, जो युद्ध करता है; सबका अंश समान होगा." 25 दावीद ने उस
दिन से इस्राएल में यही नियम तथा विधि प्रभावी कर दी, जो आज तक प्रभावी
है. 26 जब दावीद ज़िकलाग पहुंचे, उन्होंने लूट की सामग्री में से एक अंश
यहूदिया के पुरनियों को भेज दिया, जो उनके मित्र भी थे. उसके साथ उन्होंने
उन्हें यह संदेश भेजा, "याहवेह के शत्रुओं से लूट की सामग्री में से यह आपके
लिए उपहार है." 27 जो उपहार भेजा गया था, वह इन स्थानों के प्रवरों के
लिए था: जो बेथेल में वास कर रहे थे, रामोथ नेगेव तथा यत्तिर में; 28 जो
अरोअर, सिपमोथ, एशतमोह, 29 तथा राकाल में थे; जो येराहमील नगरों के
वासी थे तथा केनीत वासी; 30 जो होरमाह, बोर आशान, आथाक 31 तथा
हेब्रोन के निवासी थे तथा उन सभी स्थानों के प्रवरों को, जिन-जिन स्थानों पर
दावीद तथा उनके साथी जाते रहे थे.

31 फिलिस्तीनियों ने इस्राएल पर हमला कर दिया. इस्राएली सैनिक
फिलिस्तीनियों के सामने टिक न सके. अनेक गिलबोआ पर्वत पर मारे
गए. 2 फिलिस्तीनियों ने शाऊल और उनके पुत्रों को जा पकड़ा, और उन्होंने
शाऊल के पुत्रों योनातन, अबीनादाब तथा मालखी-शुआ की हत्या कर दी. 3
शाऊल के आस-पास युद्ध बहुत ही उग्र था. धनुर्धारियों ने उन्हें देख लिया और
उन्हें बहुत ही गंभीर रूप घायल कर दिया. 4 शाऊल ने अपने शस्त्रवाहक को
आदेश दिया, "इसके पहले कि ये अख़तनित आकर मेरी दुर्गति करके मुझ पर
तलवार का प्रहार करें, तुम अपनी तलवार से मुझ पर प्रहार कर दो." मगर उस
भयभीत शस्त्रवाहक ने यह विनती अस्वीकार कर दी. तब स्वयं शाऊल ने अपनी
तलवार निकाली और उस पर गिर पड़े. 5 जब उनके शस्त्रवाहक ने देखा कि
शाऊल की मृत्यु हो गई है, वह स्वयं अपनी तलवार पर गिर गया, और उसकी
भी मृत्यु शाऊल के ही साथ हो गई. 6 इस प्रकार शाऊल, उनके तीन पुत्र,
उनका शस्त्रवाहक तथा उनके सभी सैनिकों की मृत्यु एक ही दिन हो गई. 7
जब घाटी के और यरदन पार के इस्राएलियों ने देखा कि इस्राएली सेना पीठ
दिखाकर भाग रही है, शाऊल और उनके पुत्र युद्ध में मारे गए हैं, वे नगर छोड़-
छोड़कर भागने लगे. तब फिलिस्तीनी आए और नगरों में निवास करने लगे. 8
अगले दिन, जब फिलिस्तीनी आए कि शवों से जो मिल सके, अपने लिए उठा
ले जाएं. उन्हें गिलबोआ पर्वत पर शाऊल और उसके तीन पुत्रों के शव दिखाई
दिए. 9 उन्होंने शाऊल का सिर काटा, उनके हथियार उनकी शव से उतार
लिए, और अपने देवताओं के मंदिर तथा सारा फिलिस्तिया देश के लोगों को
यह संदेश अपने दूतों द्वारा भेज दिया. 10 उन्होंने शाऊल के शस्त्र ले जाकर
अश्तोरेथ के मंदिर में सजा दिया तथा उनके शव को बेथ-शान नगर की दीवार
पर जड़ दिया. 11 जब याबेश-गिलआदवासियों तक यह समाचार पहुंचा कि
शाऊल के साथ फिलिस्तीनियों ने कैसा व्यवहार किया है, 12 वहां के सारे योद्धा
इकट्ठा हुए, सारी रात यात्रा की, और शाऊल के तथा उनके पुत्रों के शवों को
नगर बेथ-शान प्राचीर से उतारकर याबेश नामक स्थान को ले गए. वहां उन्होंने
शवों को जला दिया. 13 फिर उन्होंने उनकी अस्थियां लेकर उन्हें याबेश के
झाऊ वृक्ष के नीचे गाड़ दिया. उसके बाद उन्होंने सात दिन उपवास रखा.

2 शमूएल

1 शाऊल की मृत्यु हो चुकी थी और दावीद को अमालेकियों का संहार कर
लौटे हुए दो दिन व्यतीत हो चुके थे. 2 तीसरे दिन शाऊल के शिविर से एक
व्यक्ति वहां आया उसके वस्त्र फटे हुए थे और उसके केशों में धूल समाई हुई थी.
जब वह दावीद के निकट पहुंचा, उसने दंडवत हो उनका अभिवादन किया.
3 दावीद ने उससे प्रश्न किया, “कहां से आ रहे हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं
इस्राएली सेना के शिविर से बच निकल भागकर यहां पहुंचा हूं.” 4 दावीद
ने उससे आगे पूछा, “मुझे बताओ वहां स्थिति क्या है?” उसने उत्तर दिया,
“इस्राएली सेना पीठ दिखाकर भागी है. अनेक सैनिक घायल हुए, और अनेक
मारे गए हैं. शाऊल और उनके पुत्र योनातन भी युद्ध में मारे गये.” 5 दावीद ने
उस संदेशवाहक युवक से प्रश्न किया, “तुम्हें यह कैसे ज्ञात हुआ कि शाऊल और
योनातन की मृत्यु हो चुकी है?” 6 उस सूचना देनेवाले युवक ने उन्हें बताया,
“संयोगवश में उस समय गिलबोआ पर्वत पर ही था. वहां मैंने देखा कि शाऊल
अपने भाले पर झुके हुए थे, घुड़सवार और रथ उनकी ओर बढ़े चले आ रहे थे,
7 उन्होंने मुड़कर मेरी ओर देखा और मुझे पुकारा, मैंने उनसे कहा, ‘आज्ञा
दीजिए?’ 8 “उन्होंने ही मुझसे पूछा, ‘कौन हो तुम?’ “मैंने उन्हें उत्तर दिया,
‘मैं अमालेकी हूं.’ 9 “उन्होंने मुझसे कहा, ‘मेरे निकट आकर मुझे इस पीड़ा से
मुक्त कर दो. मेरी मृत्यु की पीड़ा असहनीय हो रही है, परंतु मेरे प्राण निकल
नहीं रहे.’ 10 “तब मैं उनके निकट गया और उन पर वार कर उनकी हत्या कर
दी, क्योंकि यह स्पष्ट ही थी कि भाले पर गिरने के बाद उनका जीवित रहना
असंभव था. फिर मैंने उनका मुकुट उनके सिर से उठाया, उनकी बांह से उनका
कंगन निकाला, और अपने स्वामी के लिए उन्हें ले आया हूं.” 11 तब दावीद ने
अपने कपड़ों को पकडकर उन्हें फाड़ दिया, और यही उनके सभी साथियों ने
भी किया. 12 शाऊल, उनके पुत्र योनातन और तलवार से घात किए गए याहवेह
की प्रजा और इस्राएल वंश के लिए वे सांझ तक विलाप करते रहे और उन्होंने
उपवास किया. 13 दावीद ने उस युवक से जो समाचार लाया था पूछा, “कहां
के हो तुम?” और उसने उन्हें उत्तर दिया था, “मैं एक विदेशी की संतान हूं, एक
अमालेकी.” 14 दावीद ने इस युवक से प्रश्न किया, “याहवेह के अभिषिक्त पर
हाथ उठाते हुए तुम्हें भय क्यों न लगा?” 15 दावीद ने अपने एक युवा साथी को
बुलाकर उससे कहा, “जाकर उसे समाप्त कर दो.” तब उस साथी ने अमालेकी
पर वार किया और उसकी मृत्यु हो गई. 16 दावीद ने कहा, “तुम्हारा रक्त-दोष
तुम्हारे ही सिर पर है, क्योंकि स्वयं तुमने यह कहते हुए अपने मुख से अपने ही
विरुद्ध गवाही दी है, ‘मैंने याहवेह के अभिषिक्त की हत्या की है.’” 17 दावीद ने
शाऊल और उनके पुत्र योनातन के लिए यह शोक गीत गाया, 18 और उन्होंने
यह आदेश प्रसारित किया, कि यह गीत सारे यहूदियावासियों को सिखाया जाए
(यह गीत याशर के ग्रंथ में अंकित है): 19 “इस्राएल, तुम्हारा गौरव तुम्हारे ही
उच्च स्थानों पर घात किया गया है. कैसे पराक्रमी गिर पड़े हैं! 20 “इसका
उल्लेख गाथ में न किया जाए, इसका उल्लेख अश्कलोन की गलियों में भी न
किया जाए, ऐसा न हो कि फिलिस्तीनियों की पुत्रियां इस पर उल्लास मनाने
लगें, ऐसा न हो कि अख़तनितों की पुत्रियां हर्षित होने लगें. 21 “गिलबोआ के
पर्वतों, तुम पर न तो ओस पड़े, और न बारिश, तुम पर उपजाऊ खेत भी न हों.
क्योंकि इसी स्थान पर शूर योद्धा की ढाल दूषित की गई, शाऊल की ढाल बिना
तेल लगाए रह गई. 22 “घात किए हुओं के रक्त से, शूरवीरों की चर्बी से,
योनातन का धनुष कभी खाली न लौटा, वैसे ही शाऊल की तलवार का वार
कभी विफल नहीं हुआ. 23 शाऊल और योनातन अपने जीवनकाल में प्रिय
और आकर्षक थे, मृत्यु में भी वे विभक्त नहीं हुए. उनमें गरूड़ों सदृश तेज गति,
और सिंहों सदृश बल था. 24 “इस्राएल की पुत्रियो, शाऊल के लिए विलाप
करो, जिन्होंने तुम्हें भव्य बैंगनी वस्त्र पहनाए, जिन्होंने वस्त्रों के अलावा तुम्हें
सोने के आभूषण भी दिए. 25 “शूर कैसे घात किए गए युद्ध में! तुम्हारे उच्च
स्थल पर योनातन मृत पड़ा है. 26 योनातन, मेरे भाई, तुम्हारे लिए मैं शोकाकुल
हूं; तुम मुझे अत्यंत प्रिय थे. मेरे लिए तुम्हारा प्रेम, नारी के प्रेम से कहीं अधिक
मधुर था. 27 “कैसे शूर मिट गए! कैसे युद्ध के हथियार नष्ट हो गए!”

2 इसके बाद दावीद ने याहवेह से यह पूछा, “क्या यहूदिया के किसी नगर
को मेरा जाना सही होगा?” याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, “हां.” दावीद ने
पूछा, “कौन सा नगर उपयुक्त होगा?” “हेब्रोन,” याहवेह ने उत्तर दिया. 2 तब
दावीद वहां चले गए. उनके साथ उनकी दोनों पत्नियां, येज़्रील की अहीनोअम
और कर्मेलवासी नाबाल की विधवा अबीगइल भी थी. 3 तब दावीद अपने
साथियों के साथ जाकर हेब्रोन में बस गए. हर एक के साथ उसका घर-परिवार
भी था. 4 यहूदिया प्रदेश के वासियों ने आकर यहूदाह गोत्र के लिए दावीद
का राजाभिषेक किया. जब दावीद को यह सूचित किया गया कि शाऊल की
अंत्येष्टि याबेश-गिलआदवासियों के द्वारा की गई थी, 5 दावीद ने याबेश-
गिलआदवासियो को अपने संदेशवाहकों द्वारा यह संदेश प्रेषित किया, “आप पर
याहवेह की विशेष कृपादृष्टि बने रहे, क्योंकि आपने अपने स्वामी शाऊल के
प्रति निष्ठा प्रदर्शित करते हुए उनकी अंत्येष्टि की है. 6 आप पर याहवेह का
निर्जर प्रेम और उनकी सत्यनिष्ठा बने रहे. तुम्हारे इस सद्भाव के लिए स्वयं मैं तुम
पर दया प्रदर्शित करूंगा. 7 अब जबकि तुम्हारे स्वामी शाऊल की मृत्यु हो चुकी
है, और यहूदाह गोत्र ने मेरा राजाभिषेक किया है, तुम्हारी भुजाएं बलशाली बनी
रहे, और तुममें शौर्य कम न होने पाए.” 8 मगर दूसरी ओर नेर के पुत्र अबनेर ने,
जो शाऊल की सेना के सेनापति था, शाऊल के पुत्र इश-बोशेथ को माहानाईम
नगर ले जाकर 9 उसे गिलआद, अश्शूरवासियों, येज़्रील, एफ्राईम, बिन्यामिन
और संपूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया. 10 इस्राएल पर
शासन प्रारंभ करते समय इश-बोशेथ की अवस्था चालीस वर्ष की थी. उसका
शासनकाल दो वर्ष का था. मगर यहूदाह गोत्र दावीद के वफादार बना रहे. 11
हेब्रोन में यहूदाह गोत्र के ऊपर दावीद का शासनकाल सात वर्ष छः महीने का
था. 12 इस समय नेर के पुत्र अबनेर, शाऊल के पुत्र इश-बोशेथ के सेवकों को
लेकर माहानाईम से गिबयोन को चले गए. 13 दूसरी ओर ज़ेरुइयाह के पुत्र
योआब के सेवकों की भेंट उनसे गिबयोन ताल के निकट हुई. दोनों समूह तल
के एक-एक ओर बैठ गए. 14 अबनेर ने योआब से कहा, “हमारे ये युवा आगे
बढ़ें और हमारे सामने इनकी स्पर्धा हो जाए.” योआब सहमत हो गए, “ठीक है,
वे आगे बढ़े.” 15 तब युवा आगे आते गए और उनकी गणना की जाती रही.
शाऊल के पुत्र इश-बोशेथ और बिन्यामिन के पक्ष से बारह और दावीद के पक्ष से
भी बारह युवक सामने आए. 16 हर एक ने अपने प्रतिद्वंद्वी का सिर पकड़ा और
अपने प्रतिद्वंद्वी की पसली में तलवार झोंक दी. परिणामस्वरूप वे एक साथ ही
धराशायी हुए, इसके कारण गिबयोन नगर में उस स्थान का नाम हेलकाथ-
हज्ज़ूरिम पड़ गया. 17 उस दिन युद्ध ने अत्यंत रौद्र रूप ले लिया, और दावीद
के युवकों द्वारा अबनेर और इस्राएल के युवक हरा दिए गए. 18 ज़ेरुइयाह के
तीनों पुत्र इस समूह में शामिल थे: योआब, अबीशाई और आसाहेल. आसाहेल
मरुभूमि की हिरणी जैसा ही तेजी से दौड़ता था. 19 उसने अबनेर का पीछा
करना शुरू कर दिया. अबनेर का पीछा करते हुए वह न तो बाएं मुड़ा न दाएं.
20 आसाहेल को अपने पीछे आते देखकर अबनेर ने उससे पूछा, “क्या तुम
आसाहेल हो?” “जी हां,” उसने उत्तर दिया. 21 अबनेर ने उससे कहा, “अपने
दाएं अथवा बाएं मुड़कर जो भी युवक पकड़ में आए, उससे लूट की सामग्री
छीन लो.” मगर आसाहेल ने अबनेर का पीछा करना न छोड़ा. 22 अबनेर ने
आसाहेल को पुनः आदेश दिया, “मेरा पीछा करना छोड़ो! मैं नहीं चाहता कि मैं
तुम पर वार करके तुम्हें धराशायी कर दूं. तब मैं तुम्हारे भाई योआब को अपना

मुख कैसे दिखा सकूंगा?" 23 फिर भी उसने अबनेर का पीछा न छोड़ा. यह
देख अबनेर ने अपने भाले के कुन्दे से आसाहेल के पेट पर वार किया. भाला
आर-पार हो गया. आसाहेल वहीं धराशायी हो गया, और उसकी मृत्यु हो गई.
वे सभी, जो उस स्थान से होकर जा रहे थे, जहां आसाहेल की मृत्यु हुई थी,
स्थिर खड़े हो गये. 24 मगर योआब और अबीशाई अबनेर का पीछा करते
रहे. सूर्यास्त बेला में वे अम्माह पहाड़ी पर जा पहुंचे. यह पहाड़ी गिबयोन की
मरुभूमि के मार्ग पर गियाह नामक स्थान के पूर्व पड़ती है. 25 बिन्यामिनवासी
एकजुट होकर अबनेर के पीछे खड़े हो गए. इससे अब वे एक समूह हो गए थे.
इन सभी ने पहाड़ी के ऊपर अपना मोर्चा लिया. 26 तब अबनेर ने योआब से
कहा, "क्या तलवार का वार कभी न थमेगा? क्या तुम यह नहीं समझ रहे कि
इससे अंत में कड़वाहट ही हाथ लगेगी? अब और कितनी देर लगाओगे अपने
साथियों को आदेश देने में, कि वे अपने ही भाई-बंधुओं का पीछा करना छोड़
दें?" 27 योआब ने उत्तर दिया, "परमेश्वर की शपथ, यदि आपने यह सब न
कहा होता तो हमारे साथी अपनी भाई-बंधुओं का पीछा बिना रुके सुबह तक
करते रहते." 28 योआब ने तुरही फूंकी और उसके साथियों ने पीछा करना बंद
कर दिया. फिर उन्होंने न तो इस्राएलियों का पीछा किया और न उनसे युद्ध ही
किया. 29 अबनेर और उनके साथियों ने सारी रात चलकर अराबाह पार किया.
उन्होंने यरदन नदी को पार किया और दिन के शुरू के घंटों में चलते हुए वे
माहानाईम जा पहुंचे. 30 योआब अबनेर का पीछा करना छोड़ लौट गए, और
जब वे सब एकत्र हुए तब यह मालूम हुआ कि दावीद के सेवकों में से आसाहेल
के अलावा उन्नीस व्यक्ति लौटकर नहीं आए थे. 31 मगर दावीद के इस दल ने
बिन्यामिन के तीन सौ साठ व्यक्तियों का संहार कर दिया जो अबनेर के साथ
थे. 32 आसाहेल के शव को उसके पिता की कब्र में रख दिया गया. यह कब्र
बेथलेहेम में थी. योआब और उनके साथी सारी रात यात्रा करते रहे. जब वे
हेब्रोन पहुंचे तब भोर हो रही थी.

3 शाऊल के वंश और दावीद के वंश के बीच लंबे समय तक युद्ध चलता रहा.
दावीद धीरे धीरे मजबूत होते चले गए, और शाऊल का वंश लगातार दुर्बल
होता चला गया. 2 हेब्रोन वास के समय दावीद को ये पुत्र पैदा हुए: उनका
पहलौठा था अम्मोन, जो येज्रीलवासी अहीनोअम से पैदा हुआ था; 3 उनका
दूसरा पुत्र था किलियाब जो कर्मेलवासी नाबाल की विधवा पत्नी अबीगइल से
पैदा हुआ था; उनका तीसरा पुत्र था अबशालोम, जो गेशूर के राजा तालमाई की
पुत्री माकाह से पैदा हुआ था; 4 उनका चौथा पुत्र था अदोनियाह, जिसकी माता
थी हेग्गीथ; पांचवा पुत्र था शेपाथियाह जिसकी माता थी अबीताल; 5 छठा पुत्र
इथ्रियाम था, जिसकी माता थी दावीद की पत्नी एग्लाह. ये सभी दावीद के हेब्रोन
में रहते हुए पैदा हुए थे. 6 जब शाऊल और दावीद के वंश के बीच संघर्ष चल
रहा था, अबनेर स्वयं को शाऊल के परिवार ही में अपना स्थान सशक्त बनाए
जा रहा था. 7 शाऊल की रिज़पाह नामक एक उप-पत्नी थी, जो अइयाह की
पुत्री थी. इश-बोशेथ ने अबनेर का सामना करते हुए पूछा, "तुमने मेरे पिता की
उप-पत्नी से संबंध क्यों बनाया है?" 8 इश-बोशेथ के इन शब्दों को सुन अबनेर
को बहुत ही गुस्सा हो गए. उन्होंने इश-बोशेथ को उत्तर दिया, "क्या मैं यहूदिया
के किसी कुत्ते का सिर हूं? आज तक मैं तुम्हारे पिता शाऊल के परिवार, उनके
भाइयों और उनके मित्रों के प्रति पूरी तरह सच्चा रहा हूं, और मैं तुम्हें दावीद के
अधीन होने से बचाता रहा हूं, और आज तुम मुझ पर इस स्त्री से संबंधित अपराध
का आरोप लगा रहे हो! 9 अब यदि मैं, अबनेर, दान से बियरशीबा तक फैले
हुए शाऊल वंश के राज्य दावीद को दिए जाने और दावीद के इस्राएल और
यहूदिया पर सिंहासन की प्रतिष्ठा मिलने को, 10 जिसकी शपथ याहवेह द्वारा ही
ली गई थी, पूरी न करूं, तो परमेश्वर मुझसे ऐसा ही, बल्कि इससे भी बढ़कर
करें." 11 यह सुन इश-बोशेथ अबनेर से एक शब्द तक न कह सका, क्योंकि
वह अबनेर से डरता था. 12 अबनेर ने दावीद के पास इस संदेश के साथ अपने
दूत भेजे, "कौन है इस भूमि का स्वामी? मुझसे वाचा बांध लीजिए और तब
देखिएगा कि मैं अपने प्रभाव से सारे इस्राएल को आपकी अधीनता में ला दूंगा."
13 दावीद ने उन्हें उत्तर में यह संदेश भेजा. "बहुत बढ़िया, मैं आपसे वाचा
ज़रूर बांधूंगा, मगर एक ही शर्त पर, आप जब मुझसे भेंटकरने आएं, आप
शाऊल की पुत्री मीखल को अपने साथ लाएं, नहीं आप मेरा मुख न देख
सकेंगे." 14 इसके बाद दावीद ने शाऊल के पुत्र इश-बोशेथ के पास इस संदेश
के साथ संदेशवाहक भेजे: "मुझे मेरी पत्नी मीखल दे दो, जिसके साथ मेरा
रिश्ता फिलिस्तीनियों की एक सौ लिंग की खालों का मूल्य चुकता करने के
द्वारा हुआ था." 15 इश-बोशेथ ने उसे उसके पति लायीश के पुत्र पालतिएल के
पास से छीनकर दावीद के पास भेजी. 16 इस पर उसका पति सारे रास्ते रोता
हुआ उसके साथ साथ बहुरीम तक जा पहुंचा. उसे देख अबनेर ने उसे आदेश
दिया, "जाओ अपने घर लौट जाओ!" तब वह अपने घर लौट गया. 17
अबनेर ने इस्राएल के पुरनियों की सभा आयोजित की, और उन्हें संबोधित करते
हुए कहा, "बीते वर्षों से आपकी यह इच्छा रही है कि दावीद आप पर राजा
होकर शासन करें. 18 अब यही हो जाने दीजिए; क्योंकि याहवेह ने दावीद से
यह प्रतिज्ञा की है, 'मैं अपने सेवक दावीद के बाहुबल से फिलिस्तीनियों के
अधिकार से और सारे शत्रुओं से अपनी प्रजा इस्राएल को छुड़ाऊंगा.'" 19
अबनेर ने बिन्यामिन गोत्र के लोगों से भी इस विषय के उल्लेख किया. इसके
बाद अबनेर हेब्रोन नगर में दावीद को यह बताने गया कि सारे इस्राएल और सारे
बिन्यामिन गोत्र के लोगों के मत में अब क्या करना सही है. 20 जब अबनेर
बीस व्यक्तियों के साथ दावीद से भेंटकरने हेब्रोन पहुंचे, दावीद ने अबनेर और
उन बीस व्यक्तियों के लिए एक भोज तैयार किया. 21 अबनेर ने दावीद से
कहा, "मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं जाकर सारे इस्राएल को अपने स्वामी, जो राजा
हैं, उनके सामने इकट्ठा करूं, कि वे आपसे वाचा स्थापित कर सकें, कि आप
उन पर अपनी इच्छा अनुसार उन सभी पर शासन कर सकें." तब दावीद ने
अबनेर को इसके लिए विदा किया और अबनेर वहां से पूरी शांति से चले गए.
22 ठीक उसी समय योआब के साथ दावीद के सेवक छापामार करके लौट रहे
थे. उनके पास लूटी हुई सामग्री भी थी. उस समय अबनेर दावीद के पास हेब्रोन
नगर में नहीं थे. क्योंकि दावीद उसे विदा कर चुके थे. 23 योआब और उनकी
सारी सेना उनके साथ वहां लौटी, तब उन्हें सूचना इस प्रकार दी गई थी, "नेर के
पुत्र अबनेर राजा से भेंटकरने आए थे. राजा ने उन्हें पूरी शांति में लौटा दिया है."
24 यह सुन योआब ने राजा के पास जाकर कहा, "यह आपने क्या कर डाला
है? जब अबनेर आपके पास आया था, आपने उसे ऐसे ही छोड़ दिया, और अब
वह आपके हाथ से बच निकला है! 25 इतना तो आप समझते हैं कि नेर का पुत्र
अबनेर आपसे छल करने के उद्देश्य से यहां आया था. वह यहां आया था कि
आपकी हर एक गतिविधि का भेद ले ले." 26 दावीद की उपस्थिति से बाहर
आकर योआब ने अबनेर के पीछे अपने दूत दौड़ा दिए, जो अबनेर को सीराह के
कुंड के निकट से लौटा लाया. मगर दावीद को इसका कोई ज्ञान न था. 27 जब
अबनेर हेब्रोन पहुंचे, प्रवेश द्वारा के निकट योआब ने उन्हें अलग ले जाकर कुछ
ऐसा दिखाया की मानो वह उन्हें कोई गुप्त संदेश देना चाह रहे थे. उस स्थिति ही
में योआब ने उनके पेट में घातक वार किया. योआब ने यह हत्या उसके भाई
आसाहेल की हत्या का बदला लेने के लिए की. 28 जब दावीद को इस घटना
के विषय में मालूम हुआ, उनके वचन थे, "नेर के पुत्र अबनेर के वध के विषय
में याहवेह के सामने मैं और मेरा राज्य हमेशा निर्दोष रहेंगे. 29 इसका दोष
योआब और उसके कुल पर पड़े, वे स्राव रोग से कभी मुक्त न हो; उसके पिता
के कुल में कोढ़ी बने रहें; और बैसाखी का उपयोग करनेवाले हमेशा रहें, उसके
कुल के पुरुष तलवार से घात किए जाएं; उसके कुल में भोजन का अभाव बना

रहे.” 30 (योआब और उनका भाई अबीशाई अबनेर की हत्या के दोषी थे; यह
इसलिये कि अबनेर ने गिबयोन के युद्ध में आसाहेल का वध किया था.) 31
इसके बाद राजा दावीद ने योआब और वहां उपस्थित लोगों को संबोधित करते
हुए आदेश दिया, “अपने वस्त्र फाड़ दो, शोक-वस्त्र पहन लो और अबनेर के लिए
विलाप करो.” राजा दावीद अर्थी के पीछे-पीछे गये. 32 उन्होंने अबनेर को
हेब्रोन ही में गाड़ दिया. राजा ऊंची आवाज में रोते हुए अबनेर की कब्र के पास
खड़े रहे. वहां उपस्थित सभी लोग भी रोए. 33 राजा ने अबनेर के लिए इन
शब्दों में शोक गीत गाया: “क्या सही था कि अबनेर की मृत्यु ऐसी हो, जैसी
एक मूर्ख की? 34 अबनेर, न तो तुम्हारे हाथ बांधे गए थे, और न पांवों में
बेड़ियां डाली गई थी! फिर भी तुम्हारी मृत्यु ऐसी हुई, जैसी किसी दुष्ट की.”
एक बार फिर लोग अबनेर के शोक में रोने लगे. 35 इसके बाद सभी लोग
आकर दावीद से विनती करने लगे कि वह सूर्यास्त के पहले भोजन कर लें; मगर
दावीद ने शपथ लेते हुए कहा, “परमेश्वर मेरे साथ यही, मगर इससे भी ज्यादा
करें, यदि मैं सूर्यास्त के पहले भोजन का सिर्फ स्वाद भी चख लूं!” 36 यह
विषय सभी के ज्ञान में आ गया, और इससे सभी प्रसन्न हुए! वस्तुतः राजा जो
कुछ करते थे, उससे सभी लोग प्रसन्न ही होते थे. 37 उस दिन इस्राएल के सभी
लोगों के सामने यह स्पष्ट हो गया कि राजा की यह इच्छा कभी न थी कि नेर के
पुत्र अबनेर की हत्या की जाए. 38 तब राजा ने अपने सेवकों को संबोधित करते
हुए कहा, “क्या आप लोग नहीं समझ रहे कि इस्राएल ने आज एक प्रशासक
और एक असाधारण व्यक्ति खो दिया है? 39 अभिषिक्त राजा होने पर भी आज
मैं स्वयं को दुर्बल पा रहा हूं. मेरे लिए ज़ेरुइयाह के पुत्र बड़ी समस्या बन गए हैं.
याहवेह ही इन दुष्टों को उनके कुकर्मों के लिए सही बदला दें!”

4 अबनेर की मृत्यु का समाचार सुनकर इश-बोशेथ का साहस जाता रहा, और
सारे इस्राएल में निराशा छा गई. 2 शाऊल के पुत्र के छापामार दलों के दो
प्रधान थे: बाअनाह और रेखाब. ये दोनों बिन्यामिन प्रदेश के बएरोथ नगरवासी
रिम्मोन नामक व्यक्ति के पुत्र थे. बीरोथ नगर बिन्यामिन प्रदेश का हिस्सा माना
जाता था, 3 बीरोथवासियों को पलायन कर गित्ताईम नगर में जा बसना पड़ा,
और वे वहां आज तक परदेशी ही माने जाते हैं. 4 शाऊल के पुत्र योनातन के
एक पुत्र था, जो पैरों से विकलांग था. जब येज्रील से शाऊल और योनातन से
संबंधित समाचार उन्हें दिया गया, वह सिर्फ पांच वर्ष का था. उसकी सेविका
उसे लेकर भाग रही थी; उतावली में वह गिर पड़ा और विकलांग रह गया.
उसका नाम मेफ़िबोशेथ था. 5 बीरोथवासी रिम्मोन के दोनों पुत्रों, रेखाब और
बाअनाह ने यात्रा प्रारंभ की, और वे इश-बोशेथ के आवास पर उस समय जा
पहुंचे जब दिन की गर्मी के समय इश-बोशेथ विश्राम कर रहा था. 6 वे भवन के
बीचवाले कमरे में कुछ इस ढंग से जा पहुंचे मानो वे वहां गेहूं लेने आए थे. वहां
उन्होंने इश-बोशेथ के पेट में वार कर दिया. यह करके रेखाब और उसका भाई
बाअनाह भाग निकले. 7 जब उन्होंने भवन में प्रवेश किया, इश-बोशेथ अपने
कमरे में बिछौने पर लेटे हुए थे. उन्होंने उन पर वार किया, जिससे उनकी मृत्यु
हो गई. इसके बाद उन्होंने उनका सिर काट लिया और उसे लेकर वे सारी रात
अराबाह मार्ग पर चलते रहे. 8 इश-बोशेथ के सिर को लेकर दावीद के पास
हेब्रोन जा पहुंचे और उन्हें यह सूचना दी, “यह देखिए, आपके शत्रु शाऊल के
पुत्र इश-बोशेथ का सिर, जो आपके प्राणों के प्यासे रहे थे. अब आज याहवेह ने
राजा, मेरे स्वामी को शाऊल और उनके वंशजों का बदला दे दिया है.” 9
दावीद ने बीरोथवासी रिम्मोन के पुत्रों रेखाब और उसके भाई बाअनाह को उत्तर
दिया, “जीवित याहवेह की शपथ, जिन्होंने मेरे जीवन को सभी पीड़ाओं से
छुड़ाया है, 10 जब उस व्यक्ति ने आकर मुझे सूचना दी, सुनिए, ‘शाऊल की
मृत्यु हो चुकी है,’ वह यह समझ रहा था कि वह मेरे लिए शुभ संदेश लेकर
आया है, मैंने उसे पकड़ा और उसका वध कर दिया, यह ज़िकलाग की घटना
है. उसके द्वारा लाए गए समाचार का ईनाम मैंने उसे इस रीति से दिया था. 11
अब यह विचार करो कि और कितनी अधिक होगी वह प्रतिक्रिया, जब दुष्ट
व्यक्तियों ने एक धर्मी व्यक्ति की हत्या उसके घर में जाकर उसके बिछौने पर
की है. क्या सही नहीं कि उसके रक्त का बदला तुम्हीं से लेकर तुम्हें पृथ्वी पर
से मिटा दूं!” 12 तब दावीद ने युवाओं को आदेश दिया और उन्होंने उन दोनों
की हत्या कर दी, उनके हाथ और पांव काटकर उनके शव हेब्रोन के ताल के
निकट लटका दिए. मगर उन्होंने इश-बोशेथ के सिर को हेब्रोन में अबनेर की
कब्र में गाड़ दिया.

5 इसके बाद इस्राएल के सारे गोत्र हेब्रोन में दावीद से भेंटकरने आए और उनके
समक्ष यह प्रस्ताव रखा, “विचार कीजिए, हम आप ही की अस्थि और
मांस हैं. 2 पिछले सालों में जब राजा तो शाऊल थे किंतु ये आप ही थे, जो
हमारा मार्गदर्शन और इस्राएली सेना को चलाते रहे. याहवेह ने आपसे कहा
था, ‘तुम मेरी प्रजा इस्राएल के चरवाहे होगे, तुम मेरी प्रजा इस्राएल के शासक
होगे.’” 3 अत: इस्राएल के सारे प्राचीन हेब्रोन नगर में राजा के सामने इकट्ठा
हुए. दावीद ने याहवेह के सामने उनसे वाचा बांधी. तत्पश्चात उन्होंने इस्राएल
के लिए दावीद का राजाभिषेक किया. 4 शासन प्रारंभ करते समय दावीद
की आयु तीस वर्ष की थी, और उन्होंने चालीस वर्ष शासन किया. 5 उन्होंने
हेब्रोन में रहते हुए यहूदिया पर सात वर्ष छः माह शासन किया और येरूशलेम
में उन्होंने संपूर्ण इस्राएल और यहूदिया पर तैंतीस वर्ष शासन किया. 6 राजा
ने अपनी सेना के साथ येरूशलेम जाकर उस देश के निवासी यबूसियों पर
आक्रमण किया. यबूसियों ने दावीद को संदेश भेजा, “तुम तो यहां प्रवेश भी न
कर सकोगे; तुम्हें तो हमारे अंधे और लंगड़े ही पछाड़ देंगे!” उनका विचार
था, “दावीद के लिए यहां प्रवेश करना संभव नहीं है.” 7 फिर भी, दावीद
ने ज़ियोन गढ़ पर अधिकार कर लिया. अब यह दावीद के नगर के नाम से
प्रख्यात हो गया है. 8 उस अवसर पर दावीद ने अपने लोगों से कहा, “यदि तुम
लोग यबूसियों को हराना चाहते हो तो जल सुरंग से जाओ, और उन ‘अंधों
तथा विकलांगों’ पर हमला करो.” यही कारण है कि लोग कहते हैं “अंधों
और विकलांग को (राज) निवास में प्रवेश निषेध है.” 9 दावीद ने गढ़ पर
अधिकार कर लिया और उसे दावीद-नगर नाम दिया. दावीद ने मिल्लो से
प्रारंभ कर इसके चारों ओर भीतर की ओर नगर का निर्माण किया. 10 दावीद
पर सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर की कृपादृष्टि थी, इसलिए दावीद धीरे धीरे
मजबूत होते चले गए. 11 इसके बाद सोर के राजा हीराम ने दावीद के पास
अपने दूत भेजे, जो दावीद के घर को बनाने के लिए अपने साथ देवदार की
लकड़ी, बढ़ई और राजमिस्त्री भी ले आए. 12 इससे दावीद को यह अहसास हो
गया कि याहवेह ने उन्हें इस्राएल के राजा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है, और
यह भी कि याहवेह ने अपनी प्रजा इस्राएल के हित में अपने राज्य को उन्नत
किया है. 13 हेब्रोन से येरूशलेम आकर बसने पर दावीद और भी उपपत्नियां
और पत्नियां ले आए. उनको और भी संतान पैदा हुई. 14 येरूशलेम में पैदा
उनकी संतान के नाम ये हैं: शम्मुआ, शोबाब, नाथान, शलोमोन, 15 इबहार,
एलिशुआ, नेफ़ेग, याफिया, 16 एलीशामा, एलियादा और एलिफेलेत. 17 जब
फिलिस्तीनियों को यह मालूम हुआ कि दावीद का राजाभिषेक इस्राएल के राजा
के रूप में किया गया है, सभी फिलिस्तीनी दावीद की खोज में निकल पड़े;
मगर जैसे ही दावीद ने इसके विषय में सुना, वह गढ़ में चले गए. 18 इस
समय फिलिस्तीनी आकर रेफाइम घाटी में फैल गए. 19 इस पर दावीद ने
याहवेह से पूछा, “क्या मैं फिलिस्तीनियों पर आक्रमण करूं? क्या आप उन्हें
मेरे अधीन कर देंगे?” याहवेह ने दावीद को उत्तर दिया, “जाओ, क्योंकि मैं
फिलिस्तीनियों को निश्चित ही तुम्हारे अधीन कर दूंगा.” 20 दावीद बाल-
पेराज़िम नामक स्थान पर पहुंचे और वहां फिलिस्तीनियों को हरा दिया. वहां

दावीद ने यह घोषित किया, “याहवेह मेरे पहले ही वहां पहुंचकर मेरे शत्रुओं पर
कुछ ऐसे टूट पड़े, जैसे बहुत से जल का बहाव.” इस पर उस स्थान का नाम
पड़ गया, बाल-पेराज़िम. 21 फिलिस्तीनी अपनी मूर्तियां वहीं छोड़कर भागे,
जिन्हें दावीद और उनके साथी उठाकर ले गए. 22 एक बार फिर फिलिस्तीनी
आए और रेफाइम घाटी में फैल गए. 23 जब दावीद ने याहवेह से इस विषय में
पूछा, याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम सीधे जाकर उन पर हमला न करना,
बल्कि तुम घूमकर उनके पीछे जाकर मोखा वृक्षों की ओर से हमला करना. 24
हमला उस समय सही होगा, जब तुम्हें मोखा के पेड़ों के ऊपर से सेना की
चहल-कदमी सुनाई देने लगें. तब तुम युद्ध शुरू कर देना, क्योंकि उस समय
याहवेह तुम्हारे आगे-आगे फिलिस्तीनी सेना को मारते हुए बढ़ रहे होंगे.” 25
दावीद ने वैसा ही किया, जैसा याहवेह ने आदेश दिया था. उन्होंने गिबयोन से
लेकर गेज़ेर तक फिलिस्तीनियों को मार गिराया.

6 कुछ समय बाद दावीद ने इस्राएल से वीर युवाओं को चुना, जिनकी संख्या
तीस हज़ार पाई गई. 2 दावीद और उनके साथ के सभी व्यक्ति यहूदिया में
बालह के लिए निकले कि वे वहां से परमेश्वर के संदूक, जिसकी पहचान
सेनाओं के याहवेह के नाम के द्वारा होती है, जो करूबों पर विराजमान हैं. 3
उन्होंने परमेश्वर के संदूक को एक नई गाड़ी पर रख दिया. उन्होंने संदूक को
पहाड़ी पर बने अबीनादाब के घर से, इस रीति से लाया. इस नए वाहन को
अबीनादाब के पुत्र उज्जा और आहियो चला रहे थे. और परमेश्वर के संदूक के
साथ आहियो आगे-आगे चल रहा था. 5 इसी समय दावीद और सारा इस्राएल
वंश याहवेह के सामने सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे, वीणा,
सारंगिया, डफ, डमरू और झांझ के साथ आनंद मना रहे थे. 6 जब वे नाकोन
के खलिहान पर पहुंचे, बैलों के लड़खड़ाने के कारण उज्जा ने परमेश्वर के
संदूक की ओर हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया. 7 इस पर उज्जा पर याहवेह का
क्रोध भड़क उठा. परमेश्वर ने उस पर इस बात के कारण वहीं वार किया.
उसकी मृत्यु वहीं, परमेश्वर के संदूक के निकट हो गई. 8 उज्जा पर याहवेह के
इस क्रोध पर दावीद को गुस्सा हो गया. वह स्थान आज तक पेरेज़-उज्जा नाम
से जाना जाता है. 9 उस दिन दावीद याहवेह से डर गए. वह विचार करने लगे,
“यह कैसे संभव है कि याहवेह का संदूक मेरे यहां आए?” 10 तब दावीद ने
याहवेह के संदूक को दावीद-नगर में लाना न चाहा, बल्कि उन्होंने संदूक को
अलग ले जाकर गाथवासी ओबेद-एदोम के घर में रखवा दिया. 11 तब याहवेह
का संदूक गाथवासी ओबेद-एदोम के आवास में तीन महीने रखा रहा. याहवेह
की कृपादृष्टि ओबेद-एदोम के सारे परिवार पर बनी रही. 12 दावीद राजा को
तब यह सूचना दी गई: “परमेश्वर के संदूक के कारण याहवेह ने ओबेद-एदोम के
परिवार और उनकी संपत्ति पर आशीषों की बारिश की है.” दावीद गए और
ओबेद-एदोम के घर से परमेश्वर का संदूक बड़े हर्ष के साथ दावीद के नगर में ले
आए. 13 जब याहवेह के संदूक को उठानेवाले छः कदम आगे बढ़े, दावीद ने
एक बैल और एक हृष्ट-पुष्ट पशु की बलि चढ़ाई. 14 इस समय मलमल का वस्त्र
धारण किए हुए उल्लसित दावीद याहवेह के सामने पूरे मन से नाचने में लीन थे.
15 जब याहवेह का संदूक दावीद और संपूर्ण इस्राएल द्वारा लाया जा रहा था,
लोग नरसिंगे फूंकने के साथ खुशी से चिल्ला रहे थे. 16 जब याहवेह का संदूक
दावीद राजा के नगर में प्रवेश हो रहा था, शाऊल की पुत्री मीखल ने खिड़की के
बाहर दृष्टि की, तो यह देखा कि राजा दावीद याहवेह के सामने उछलते हुए नाच
रहे थे. यह देख उसका हृदय दावीद के प्रति घृणा से भर गया. 17 उन्होंने
याहवेह के संदूक को लाकर उस तंबू, जिसे दावीद ने उसके लिए विशेष रूप से
बनवाया था, उसके भीतर, संदूक के लिए निर्धारित स्थान पर, स्थापित कर
दिया. 18 इसके बाद दावीद ने याहवेह को अग्निबलि और मेल बलि चढ़ाई.
जब दावीद अग्निबलि और मेल बलि चढ़ा चुके, उन्होंने प्रजा के लिए सेनाओं
के याहवेह के नाम में आशीर्वाद दिए. 19 इसके बाद उन्होंने सब लोगों में, पूरे
इस्राएली जनसमूह में, स्त्री और पुरुष हर एक को, एक-एक रोटी, मांस का एक
अंश और किशमिश की एक टिकी बांट दी. इसके बाद सभी लोग अपने-अपने
घर चले गए. 20 जब दावीद अपने परिवार को आशीर्वाद देने लौटे, तो शाऊल
की पुत्री मीखल दावीद से भेंटकरने के लिए आई. उसने दावीद से कहा, “कैसा
देखने लायक था, आज इस्राएल के राजा का वैभव! वह एक बेशर्म मूर्ख के
समान अपने सेवकों की दासियों के सामने नंगा हुआ जा रहा था!” 21 दावीद ने
मीखल को उत्तर दिया, “यह तो याहवेह के सामने हो रहा था, जिन्होंने मुझे
तुम्हारे पिता और तुम्हारे सारे परिवार की अपेक्षा इस्राएल का शासक बनाना
सही समझा. याहवेह के सामने मैं और भी नाचूंगा, 22 और मैं तो याहवेह के
लिए अपने आपको तुम्हारी दृष्टि में और भी अधिक घृणित बना लूंगा, अपनी ही
दृष्टि में नीचा हो जाऊंगा; मगर जिन दासियों का तुमने उल्लेख किया है, उनकी
दृष्टि में तो मैं सम्मानित ही रहूंगा.” 23 मृत्यु होने तक शाऊल की पुत्री मीखल
बांझ ही रही.

7 जब राजा अपने महल में बस गया और याहवेह ने उन्हें उनके सभी शत्रुओं
से शांति प्रदान कर दी. 2 राजा ने भविष्यद्वक्ता नाथान पर अपनी यह इच्छा
प्रकट की: अब विचार कीजिए, “मैं तो देवदार से बने भव्य घर में निवास कर
रहा हूं, जबकि परमेश्वर का संदूक तंबू और पर्दों में.” 3 नाथान ने राजा को
उत्तर दिया, “आप वह सब कीजिए, जो आपने अपने मन में विचार किया है.
क्योंकि याहवेह आपके साथ हैं.” 4 उसी रात याहवेह का वचन नाथान को
प्राप्त हुआ: 5 “मेरे सेवक दावीद से जाकर यह कहना, ‘याहवेह का कथन
है: क्या तुम्हीं वह हो, जो मेरे रहने के लिए भवन बनाएगा? 6 जब से मैंने
इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला है, आज तक मैं किसी भवन में नहीं रहा
हूं, हां, मैं तंबू मेरा निवास बनाकर रहता आया हूं, 7 जिधर जिधर इस्राएल के
साथ मैं फिरा, क्या मैंने इस्राएल के किसी शासक से, जिसे मैंने अपनी प्रजा के
चरवाहा नियुक्त किया था, कभी कहा, “तुमने मेरे लिए देवदार की लकड़ी का
घर क्यों नहीं बनाया?”’ 8 “तब तुम्हें अब मेरे सेवक दावीद से यह कहना
होगा, ‘सेनाओं के याहवेह का वचन है, मैंने ही तुम्हें चरागाह से, भेड़ों के
चरवाहे के पद पर इसलिये चुना कि तुम्हें अपनी प्रजा इस्राएल का शासक
बनाऊं. 9 तुम जहां कहीं गए, मैं तुम्हारे साथ था. तुम्हारे सामने से तुम्हारे सारे
शत्रुओं को मैंने मार गिराया. मैं तुम्हारे नाम को ऐसा बड़ा करूंगा, जैसा पृथ्वी पर
महान लोगों का होता है. 10 अपनी प्रजा इस्राएल के लिए मैं एक जगह तय
करूंगा, मैं उन्हें वहां बसाऊंगा कि वे वहां अपने ही घरों में रह सकें, और उन्हें
वहां से चलाया न जाए, और कोई भी दुष्ट व्यक्ति उन्हें पहले के समान परेशान न
करे. 11 जैसे वे मेरे द्वारा उत्पीडित किए जाते थे. मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से
शांति दूंगा. “‘इसके अलावा, तुम्हारे लिए याहवेह की यह घोषणा है कि याहवेह
तुम्हारे वंशपरंपरा को स्थिर करेंगे. 12 जब तुम्हारी आयु के निर्धारित दिन पूर्ण
हो जाएंगे और तुम अपने पूर्वजों के साथ चिर-निद्रा में सो जाओगे, मैं तुम्हारी
संतान को तुम्हारे बाद पल्लवित करूंगा, जो तुम्हारी ही देह से उत्पन्न होगा. मैं
उसके साम्राज्य को प्रतिष्ठित करूंगा. 13 वही मेरी प्रतिष्ठा में भवन बनाएगा. मैं
उसका राज सिंहासन चिरस्थायी करूंगा. 14 उसका पिता मैं बन जाऊंगा, और
वह हो जाएगा मेरा पुत्र. जब उससे कोई अपराध होगा, मैं उसे मनुष्यों की रीति
पर छड़ी से अनुशासित करूंगा, वैसे ही जैसे मनुष्य अपनी संतान को प्रताड़ित
करते हैं. 15 मगर उसके प्रति मेरा अपार प्रेम कभी कमजोर न होगा, जैसा
शाऊल से मेरा प्रेम जाता रहा था, जिसे मैंने ही तुम्हारे पथ से हटा दिया. 16
तुम्हारा वंश और तुम्हारा साम्राज्य निश्चित, मेरे सामने सदा स्थायी रहेगा. तुम्हारा
सिंहासन हमेशा प्रतिष्ठित बना रहेगा.’” 17 नाथान ने अपने दर्शन और याहवेह
के संदेश के अनुसार दावीद को सब कुछ बता दिया. 18 तब राजा दावीद

जाकर याहवेह के सामने बैठ गए. वहां उनके हृदय से निकले वचन ये थे: "प्रभु
याहवेह, कौन हूं, मैं और क्या है मेरे परिवार का पद, कि आप मुझे इस जगह
तक ले आए हैं? 19 और प्रभु याहवेह, मानो यह आपकी दृष्टि में पर्याप्त नहीं
था, आपने मेरे वंशजों के दूर के भविष्य के विषय में भी प्रतिज्ञा कर दी है. प्रभु
परमेश्वर, यह सब केवल मिट्टी मात्र मनुष्य के लिए! 20 "दावीद इसके अलावा
आपसे और क्या विनती कर सकता है? क्योंकि प्रभु याहवेह, आप अपने सेवक
को जानते हैं. 21 अपनी प्रतिज्ञा के कारण और अपनी योजना के अनुसार,
आपने मुझे इस ऊंचाई तक पहुंचा दिया है, कि आपके सेवक को आश्वासन
मिल सके. 22 "इसलिये, प्रभु याहवेह, आप ऐसे महान हैं! कोई भी नहीं
है आपके तुल्य! हमने जो कुछ अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार कोई
भी परमेश्वर नहीं है आपके अलावा. 23 इसी प्रकार, कौन है आपकी प्रजा
इस्राएल के तुल्य? पृथ्वी पर एक जनता, जिसे स्वयं परमेश्वर ने जाकर इसलिये
छुड़ाया, कि वे उनकी प्रजा हो, कि इसमें आपकी प्रतिष्ठा हो. आपने अपनी
प्रजा के सामने से अन्य राष्ट्रों को निकाल दिया—उसी प्रजा के सामने से, जिसे
आपने मिस्र देश की बंधनों से विमुक्त किया है, कि वे इन राष्ट्रों और विदेशी
देवताओं को छोड़ आपकी प्रजा हों. 24 आपने अपने ही लिए अपनी प्रजा
इस्राएल को प्रतिष्ठित किया है कि वे सदा-सर्वदा के लिए आपकी प्रजा रहें. और,
तब याहवेह, आप उनके परमेश्वर हो गए. 25 "और अब, याहवेह परमेश्वर,
अपने सेवक और उसके वंश के विषय में कहे गए वचन को हमेशा के लिए
प्रतिष्ठित कर दीजिए, और जो कुछ आपने कहा है, उन्हें पूरा कीजिए. 26
आपकी महिमा के लिए, यह हमेशा के लिए किया जाता रहेगा. आपके विषय में
कहा जाएगा, सर्वशक्तिमान याहवेह ही इस्राएल के परमेश्वर है; आपके सामने
आपके सेवक दावीद का राजवंश हमेशा स्थायी रहेगा. 27 "यह इसलिये कि
सर्वशक्तिमान याहवेह, आपने, इस्राएल के परमेश्वर ही ने, अपने सेवक पर इन
शब्दों में यह प्रकाशित किया है, 'मैं तुम्हारे वंश को प्रतिष्ठित करूंगा.' इसी बात
के प्रकाश में आपके सेवक को इस प्रकार की प्रार्थना करने का साहस प्राप्त हुआ
है. 28 प्रभु याहवेह, आप परमेश्वर हैं! आपके मुख से निकले शब्द सत्य हैं.
आपने अपने सेवक से यह असाधारण प्रतिज्ञा की हैं. 29 तब आपके सेवक के
वंश पर आपकी कृपादृष्टि बनाए रखने में आप प्रभु याहवेह की संतुष्टि हो, कि
यह वंश आपके सामने हमेशा आगे ही बढ़ता जाए; क्योंकि यह आपने ही कहा
है. आपके आशीर्वाद से आपके सेवक का वंश हमेशा के लिए आशीषित हो
जाए."

8 कुछ समय बाद दावीद ने फिलिस्तीनियों को युद्ध में हराया, और
फिलिस्तीनियों के कब्जे के प्रमुख नगर का नियंत्रण उनसे छीन लिया.
2 दावीद ने मोआबियों को भी हराया, उन्हें भूमि पर लिटा कर एक डोर से
उन्हें मापा. तब दो पंक्तियों का वध किया जाने का और एक पंक्ति को सजीव
रखने का आदेश दिया. इससे मोआबी दावीद के सेवक हो गए और उन्हें शुल्क
देने लगे. 3 जब ज़ोबाह के राजा रेहोब के पुत्र हादेदेज़र फरात नदी पर अपने
अधिकार की पुनःस्थापना कर रहे थे, दावीद ने उसको भी हराया. 4 दावीद ने
हादेदेज़र से 1,000 रथ, 7,000 घुड़सवार और 20,000 पैदल सैनिक
छीन लिए, और रथों के घोड़ों के पैरों की प्रमुख नस काट दी, किंतु सौ
रथों में इस्तेमाल के लिए पर्याप्त घोड़ों को छोड़ दिया. 5 जब ज़ोबाह के
राजा हादेदेज़र की सहायता के लिए दमेशेक से अरामी वहां आए, दावीद ने
22,000 अरामियों को मार दिया. 6 दावीद ने दमेशेक के अरामी सैनिकों के
बीच एक रक्षक सेना ठहरा दी. अरामी दावीद के सेवक बन गए, और उन्हें कर
देने लगे. दावीद जहां कहीं गए, उन्हें याहवेह की सहायता मिलती रही. 7
हादेदेज़र के सेवकों की सोने की ढालों को दावीद ने लाकर येरूशलेम में रख
दिया. 8 हादेदेज़र के दोनों नगर बेताह और बेरोथाई से राजा दावीद ने बड़ी मात्रा
में कांसा इकट्ठा किया. 9 जब हामाथ के राजा तोऊ ने यह सुना कि दावीद ने
हादेदेज़र की संपूर्ण सेना को हरा दिया है, 10 तोऊ ने अपने पुत्र योराम को राजा
दावीद से भेंटकरने भेजा, ताकि वह राजा दावीद के स्वास्थ्य के बारे में मालूम
करे, और उनको बधाई दे, क्योंकि दावीद ने हादेदेज़र को हरा दिया, जो हमेशा
तोऊ से युद्ध करता रहता था. योराम अपने साथ सोना, चांदी और कांसे की
वस्तुएं भी लाया था. 11 राजा दावीद ने सोना, चांदी और कांसे की इन सभी
वस्तुओं को उन वस्तुओं के साथ याहवेह को समर्पित कर दी, जो वह उन सभी
पराजित देशों, 12 यानी, एदोम, मोआब, अम्मोन के वंशजों, फिलिस्तीनियों
और अमालेकियों और ज़ोबाह के पुत्र, राजा हादेदेज़र से कब्जा किये गए थे.
13 नमक की घाटी में 18,000 एदोमियों का संहार कर लौटने पर दावीद ने
अपनी कीर्ति व्यापक कर ली. 14 इसके बाद दावीद ने संपूर्ण एदोम राष्ट्र में गढ़
रक्षक सेनाएं बना दी. सभी एदोमवासी दावीद के अधीन हो गए. दावीद जहां
कहीं हमला करते थे, याहवेह की ओर से उन्हें सफलता ही प्राप्त होती थी. 15
दावीद सारे इस्राएल के शासक थे. उन्होंने अपनी सारी प्रजा के लिए न्याय और
सच्चाई की व्यवस्था की थी. 16 ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब सेना पर अधीक्षक था
और अहीलूद के पुत्र यहोशाफ़ात था लेखापाल; 17 अहीतूब के पुत्र सादोक और
अबीयाथर के पुत्र अहीमेलेख पुरोहित थे और सेराइयाह उनका सचिव था; 18
यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह केरेथि और पेलेथ के निवासियों के प्रधान थे और
दावीद के पुत्र प्रशासनिक सलाहकार थे.

9 दावीद ने पूछताछ की, "क्या शाऊल के वंशजों में से अब भी कोई बचा
रह गया है कि मैं योनातन से की गई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए उस
पर कृपा प्रदर्शित कर सकूं?" 2 शाऊल के परिवार की परिचर्या के उद्देश्य से
एक सेवक रखा गया था, जिसका नाम ज़ीबा था. उसे ही दावीद से भेंटकरने के
लिए बुलवाया गया. राजा ने उससे प्रश्न किया, "क्या तुम्ही ज़ीबा हो?" "जी
हां, मैं आपका सेवक ज़ीबा हूं," उसने उत्तर दिया. 3 इस पर राजा ने इससे आगे
प्रश्न किया, "क्या शाऊल के वंश में अब कोई भी शेष न रहा, जिस पर मैं
परमेश्वर की दया दिखा सकूं?" ज़ीबा ने उन्हें उत्तर दिया, "योनातन का एक पुत्र
ज़रूर जीवित है. दोनों ही पैरों से वह अपंग है." 4 राजा ने उससे पूछा, "वह
कहां है?" ज़ीबा ने राजा को उत्तर दिया, "इस समय वह लो-देबार में अम्मिएल
के पुत्र माखीर के आवास में है." 5 तब राजा दावीद ने लो-देबार में अम्मिएल
के पुत्र माखीर के आवास से मेफ़िबोशेथ को बुलवा लिया. 6 शाऊल के पुत्र
योनातन का पुत्र मेफ़िबोशेथ ने आकर भूमि पर मुख के बल गिरकर दावीद को
नमस्कार किया. दावीद ने उसे संबोधित किया, "मेफ़िबोशेथ!" उसने उत्तर
दिया, "हां जी, मैं आपका सेवक हूं!" 7 दावीद ने उसे आश्वासन दिया, "डरो
मत, तुम्हारे पिता योनातन के कारण तुम पर कृपा करूंगा, और तुम्हारे पितामह
शाऊल की सारी भूमि तुम्हें लौटा दूंगा. इसके अलावा अब से तुम नियमित रूप
से मेरे साथ मेरी ही मेज़ पर भोजन किया करोगे." 8 एक बार फिर मेफ़िबोशेथ
दंडवत हो गया. उसने कहा, "आपका सेवक है ही क्या, जो आप मुझ जैसे
मरे हुए कुत्ते की ओर ध्यान दें?" 9 इसके बाद राजा ने ज़ीबा, शाऊल के
सेवक को यह सूचित किया, "वह सब, जो शाऊल और उनके परिवार का है,
मैंने तुम्हारे स्वामी के पोते को दे दिया है. 10 यह तुम्हारी जवाबदारी है कि
तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे सेवक उनके लिए इस भूमि पर खेती करें और
उपज उत्पन्न करें और उन्हें सौंपे, कि तुम्हारे स्वामी के पोते के पर्याप्त भोजन
रहे; मगर मेफ़िबोशेथ, तुम्हारे स्वामी का पोता हमेशा मेरे साथ भोजन करता
रहेगा." (ज़ीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे.) 11 ज़ीबा ने राजा से कहा,
"जैसा राजा, मेरे स्वामी ने आदेश दिया है, आपका सेवक वैसा ही करेगा." तब
मेफ़िबोशेथ दावीद के साथ राजा के पुत्रों के समान भोजन करने लगा. 12
मेफ़िबोशेथ का मीका नामक एक पुत्र था—एक बालक. वे सभी, जो ज़ीबा के

घर में रहते थे, मेफ़िबोशेथ के सेवक बन गए. **13** तब मेफ़िबोशेथ येरूशलेम में
निवास करने लगा, क्योंकि वह सदैव राजा के साथ भोजन किया करता था; वह
दोनों पैरों में अपंग था.

10 इसके बाद अम्मोनियों के राजा की मृत्यु हो गई. उसके स्थान पर उसका
पुत्र हानून शासन करने लगा. **2** दावीद ने यह निश्चय किया, "मैं नाहाश
के पुत्र हानून पर दया दिखाऊंगा ठीक जिस प्रकार उसके पिता ने मुझ पर दया
की थी." तब दावीद ने अपने कुछ सेवकों को उसके पास उसके पिता के विषय
में शांति देने भेजा. मगर जब दावीद के सेवक अम्मोनियों के देश पहुंचे, **3**
अम्मोनियों के मंत्रियों ने अपने स्वामी हानून से कहा, "क्या आप समझ रहे हैं
कि इन सांत्वना के लिए भेजे गए व्यक्तियों को भेजकर दावीद आपके पिता के
प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर रहा है? दावीद ने ये व्यक्ति नगर का भेद लेने भेजे हैं,
कि हमारा भेद लेकर उसे तहस नहस कर दे." **4** यह सुन हानून ने दावीद के
सेवकों को ले जाकर हर एक की आधी-आधी दाढ़ी मुंडवा दी, उनके कपड़े
बीच में नितम्बों तक काट दिए और उन्हें इसी रूप में विदा कर दिया. **5** जब
दावीद को इसकी सूचना दी गई, उन्होंने उन सेवकों को उस सुझाव के साथ
बुलवा लिया, "आकर येरीख़ो में उस समय तक ठहरे रहना, जब तक तुम्हारी
दाढ़ी बढ़ न जाए. तब तुम यहां लौट सकते हो," क्योंकि वे इस समय बहुत ही
शर्म महसूस कर रहे थे. **6** जब अम्मोनियों को यह पता चला कि वे दावीद के
लिए अप्रिय हो गए हैं, तब अम्मोनियों ने भाड़े पर अराम के बेथ-रीहोब और
ज़ोबाह से 20,000 पद सैनिक, माकाह के राजा के साथ 1,000 सैनिक और
तोब से 12,000 सैनिक मंगवा लिए. **7** जब दावीद को इसका समाचार प्राप्त
हुआ, उन्होंने योआब के साथ वीर योद्धाओं की सारी सेना वहां भेज दी. **8**
अम्मोनियों ने आकर नगर फाटक पर मोर्चा बना लिया, जबकि ज़ोबाह और
रेहोब के, अरामी और तोब और माकाह के, सैनिक स्वतंत्र रूप से मैदान में ही
रहे. **9** जब योआब ने यह देखा कि उनके विरुद्ध युद्ध छिड़ चुका है—सामने से
और पीछे से भी, उन्होंने इस्राएल के सर्वोत्तम योद्धा अलग किए और उन्हें
अरामियों का सामना करने के लिए चुन दिया. **10** शेष सैनिकों को योआब ने
अपने भाई अबीशाई के नेतृत्व में छोड़ दिया कि वे अम्मोनियों का सामना करें.
11 योआब के स्पष्ट निर्देश थे, "यदि तुम्हें यह लगे कि अरामी मुझ पर हावी हो
रहे हैं, तब तुम मेरी सहायता के लिए आ जाना, मगर यदि अम्मोनी तुम पर
प्रबल होने लगे, तब मैं तुम्हारी सहायता के लिए आ जाऊंगा. **12** साहस बनाए
रखो. हम अपने परमेश्वर के नगरों के लिए और अपने देशवासियों के लिए
साहस का प्रदर्शन करें, कि याहवेह वह कर सकें, जो उनकी दृष्टि में सही है."
13 योआब और उनके साथ के सैनिकों ने अश्शूरियों पर हमला किया और
अरामी उनके सामने से भाग खड़े हुए. **14** जब अम्मोनियों ने यह देखा कि
अरामी मैदान छोड़कर भाग रहे हैं, अम्मोनी भी अबीशाई के समक्ष से भागकर
अपने नगर में जा छिपे. योआब अम्मोनियों से युद्ध करने के बाद येरूशलेम लौट
गए. **15** जब अश्शूरियों ने यह देखा कि उन्हें इस्राएल से हार का सामना करना
पड़ा है, वे आपस में एकजुट हो गए. **16** हादेदेज़र ने उन अश्शूरियों को बुला
लिया, जो फ़रात नदी के पार बसे हुए थे. ये सब हालेम नामक स्थान पर इकट्ठा
हो गए. उनका सेनापति था हादेदेत्सर की सेना का आदेशक शोबाख. **17** जब
दावीद को इसकी सूचना दी गई, वह सारी इस्राएली सेना को इकट्ठा कर यरदन
के पार हालेम पहुंच गए. अरामियों ने दावीद के विरुद्ध मोर्चा बांधकर उनके साथ
युद्ध शुरू कर दिया. **18** अरामी इस्राएलियों के सामने पीठ दिखाकर भागने लगे.
दावीद ने अरामी सेना के 700 रथ सैनिक, 40,000 घुड़सवार मार गिराए
और उनकी सेना के आदेशक शोबाख को घायल कर दिया; उसकी वहीं मृत्यु
हो गई. **19** जब हादेदेज़र के सभी जागीरदारों ने यह देखा कि वे इस्राएल द्वारा
हरा दिया गया है, उन्होंने इस्राएल से संधि कर ली और इस्राएल के अधीन हो
गए. इसके बाद अम्मोनियों की सहायता करने में अरामी झिझकने लगे.

11 जब वसन्त काल में राजा लोग युद्ध करने निकलते थे, दावीद ने योआब,
उनके अधीनस्थ अधिकारियों और सारे इस्राएली सेना को युद्ध के लिए
भेज दिया. उन्होंने अम्मोनियों का नाश कर दिया और रब्बाह पर अधिकार कर
लिया. मगर दावीद येरूशलेम में ही रह गए थे. **2** एक दिन, शाम के समय में,
जब दावीद अपने बिछौने से उठकर राजमहल की छत पर टहल रहे थे, वहां से
उन्हें स्नान करती हुई एक स्त्री दिखाई दी. वह स्त्री बहुत ही सुंदर थी. **3** दावीद ने
किसी को भेजकर यह मालूम करवाया कि वह स्त्री कौन थी. उन्हें सूचित किया
गया, "वह एलियाम, की पुत्री बैथशेबा है; हित्ती उरियाह की पत्नी." **4** दावीद
ने दूतों को भेजकर उसे बुलवा लिया. (इस समय वह अपने स्त्री-धर्म से शुद्ध हो
चुकी थी.) वह दावीद के पास आ गई, और दावीद ने उसके साथ संबंध बनाया.
इसके बाद वह अपने घर लौट गई. **5** वह गर्भवती हो गई. उसने दावीद को यह
संदेश भेजा, "मैं गर्भवती हो गई हूं." **6** यह मालूम होने पर दावीद ने योआब को
यह संदेश भेजा, "हित्ती उरियाह को यहां भेज दो." योआब ने उरियाह को
दावीद के पास भेज दिया. **7** जब उरियाह दावीद के सामने उपस्थित हुआ.
दावीद ने उससे योआब का हाल-चाल मालूम किया, सैनिकों और युद्ध की
स्थिति भी मालूम की. **8** उसके बाद दावीद ने उरियाह को आदेश दिया, "अब
तुम अपने घर चले जाओ." राजा की ओर से उसके पीछे-पीछे उसके लिए
उपहार भी भेजा गया. **9** मगर उरियाह राजमहल के द्वार के निकट ही उसके
स्वामी के सभी सेवकों के सोने के स्थान पर सो गया, और वह अपने घर
नहीं गया. **10** जब दावीद को यह बताया गया, "उरियाह तो अपने घर गया
ही नहीं." दावीद ने उरियाह से पूछा, "तुम यात्रा से लौटे हो, तो तुम अपने
घर क्यों नहीं गए?" **11** उरियाह ने उन्हें उत्तर दिया, "संदूक, इस्राएल और
यहूदिया की सेना मैदान में तंबू में ठहरे हुए हैं, और योआब मेरे स्वामी और मेरे
स्वामी के सैनिक मैदान में शिविर डाले हुए हैं, तब क्या यह मेरे लिए सही है कि
मैं अपने घर जाऊं, और खा-पीकर अपनी पत्नी के साथ सो जाऊं? आपकी और
आपके प्राणों की शपथ, मुझसे वह सब हो ही नहीं सकता!" **12** यह सुन
दावीद ने उससे कहा, "आज भी यहां ठहरो, मैं तुम्हें कल विदा कर दूंगा." तब
उरियाह येरूशलेम में एक दिन और ठहर गया. **13** तब दावीद ने उसे आमंत्रित
किया. उसने दावीद के साथ भोजन किया और दावीद उसे मदोन्मत होने तक
दाखमधु पिलाई. संध्याकाल में उरियाह वहां से निकलकर अपने स्वामी के
सेवकों के लिए निर्धारित स्थान पर अपने बिछौने पर जाकर सो गया, मगर
अपने घर नहीं गया. **14** प्रातः दावीद ने योआब को एक पत्र लिखा और उसे
उरियाह के ही हाथ से भेज दिया. **15** दावीद ने पत्र में लिखा था, "उरियाह को
ऐसे मोर्चे पर भेज दो, जहां युद्ध सबसे तेज हो और फिर उसे वहां अकेला छोड़
पीछे हट जाना, कि उस पर शत्रुओं का वार हो और वहीं उसकी मृत्यु हो
जाए." **16** जब योआब नगर पर घेरा डाल रहे थे, उन्हें मालूम था कि किस
स्थान पर शत्रु के सबसे अधिक बलवान सैनिक युद्ध कर रहे थे, तब उन्होंने
उरियाह को उसी स्थान पर युद्ध करने के लिए आदेश दिया. **17** नगर के शूर
योद्धा योआब से युद्ध करने निकल आए. दावीद के कुछ सैनिक इस हमले से घात
किए गए, हित्ती उरियाह भी इसमें मारा गया. **18** योआब ने दावीद को युद्ध का
विस्तृत समाचार भेज दिया. **19** योआब ने दूत को ये विशेष निर्देश दिए, "जब
तुम राजा को युद्ध का विस्तृत लेखा दे चुको, **20** तब यदि राजा गुस्सा होते दिखे
और यदि वह तुमसे पूछे, 'तुम लोग युद्ध करते हुए नगर के इतने निकट क्यों जा
पहुंचे थे? क्या तुम्हें इतनी भी बुद्धि न थी कि वे लोग तुम पर शहरपनाह से बाण
चलाएंगे? **21** येरूब-बाशेथ का पुत्र अबीमेलेक किसके वार से मारा गया था?
क्या, एक स्त्री ने ही उस पर शहरपनाह से चक्की का ऊपरी पाट नहीं फेंका था

और वह तेबेज़ में इसी प्रकार मारा नहीं गया था? तुम लोग शहरपनाह के इतने
निकट गए ही क्यों?' तब तुम्हें उत्तर देना होगा, 'महाराज, इसी में आपके सेवक
हित्ती उरियाह की भी मृत्यु हो गई है.'" 22 तब दूत चला गया. उसने आकर
दावीद को वह सब सुना दिया, जिसे सुनाने का आदेश उसे योआब ने दिया था.
23 दूत ने दावीद से कहा, "शत्रु सैनिक हम पर प्रबल हो गए थे. वे हम पर हमला
करने मैदान तक आ गए, मगर हमने उन्हें नगर प्रवेश तक धकेल दिया. 24
इसके बाद धनुर्धारियों ने शहरपनाह से हमारी सेना पर बाणों की बौछार कर दी.
राजा के कुछ सैनिक इसमें मारे गए. उन्हीं में आपका सेवक हित्ती उरियाह भी
था." 25 दावीद ने दूत को यह आदेश दिया, "तुम्हें जाकर योआब से यह कहना
होगा: 'तुम इस बात से उदास न होना, क्योंकि तलवार तो किसी को आज
मारती है तो किसी को कल. इस नगर पर अपना हमला और अधिक प्रबल कर
दो कि, नगर नष्ट कर दिया जाए,' तुम यह कहकर योआब को प्रोत्साहित कर
देना." 26 जब उरियाह की पत्नी को यह मालूम हुआ कि उसके पति की मृत्यु
हो गई है, वह अपने पति के लिए रोने लगी. 27 जब विलाप के लिए निर्धारित
अवधि पूरी हो गई, दावीद ने उसे अपने पास बुलवा लिया कि वह उसकी पत्नी
बन जाए. मगर दावीद के इस काम ने याहवेह को अप्रसन्न कर दिया.

12 फिर याहवेह ने नाथान को दावीद के पास भेजा. नाथान ने आकर दावीद
से कहा, "किसी नगर में दो व्यक्ति थे, एक धनी और दूसरा निर्धन. 2
धनी व्यक्ति अनेक पशुओं और भेड़ों का स्वामी था, 3 मगर निर्धन के पास
सिर्फ एक ही छोटी भेड़ थी, जिसे उसने मोल लिया था, और वह उसका पालन
पोषण कर रहा था. यह भेड़ उसके बालकों के साथ ही बड़ी हो रही थी. वह
उसी व्यक्ति के साथ भोजन करती थी, उसी के प्याले से पीती थी और उसके
साथ बिछौने में सोया करती थी. वह उसके लिए उसकी पुत्री समान थी. 4
"उस धनी के पास एक यात्री आया हुआ था. उस धनिक ने उस यात्री के सत्कार
के लिए अपनी भेड़ों में से कोई भेड़ न ली, बल्कि उस निर्धन की भेड़ लेकर
उस यात्री के लिए भोजन तैयार कर लिया." 5 यह सुनते ही उस धनी व्यक्ति के
प्रति दावीद का क्रोध भड़क उठा. उन्होंने नाथान से कहा, "जीवित याहवेह की
शपथ, जिस व्यक्ति ने यह किया है, मृत्यु दंड के योग्य है! 6 इसलिये कि
उसने ऐसा किया है, इसलिये कि वह ऐसा निर्दयी है, उसे उस भेड़ की चौगुनी
भरपाई करनी होगी." 7 नाथान ने दावीद को उत्तर दिया, "आप हैं वह व्यक्ति!
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का वचन यह है: 'इस्राएल पर मैंने तुम्हें राजा
बनाया; शाऊल के वारों से मैंने तुम्हारी रक्षा की. 8 तुम्हारे स्वामी का घर मैंने
ही तुम्हें दे दिया है, मैंने ही तुम्हारे स्वामी की पत्नियां तुम्हारे अधिकार में कर दी
हैं, और तुम्हें इस्राएल और यहूदिया के वंश का अधिकारी बना दिया है. यदि यह
सब तुम्हारे विचार से बहुत कम था, मैं तुम्हें इतना ही और दे देता. 9 तुमने
याहवेह के वचन को क्यों तुच्छ समझा कि तुमने वही किया, जो उनकी दृष्टि में
गलत है? तुमने हित्ती उरियाह पर तलवार चलाई, और उसकी पत्नी को अपनी
पत्नी बना लिया है. तुमने उरियाह को अम्मोनियों की तलवार से घात किया है.
10 अब तलवार तुम्हारे परिवार का पीछा कभी न छोड़ेगी. तुमने मुझसे घृणा की
है, और हित्ती उरियाह की पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया है.' याहवेह का यह
कथन है: 11 "यह देखना, कि मैं तुम्हारे ही परिवार में से तुम्हारे विरुद्ध बुराई
उत्पन्न करूंगा. मैं तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारी पत्नियों को लेकर तुम्हारे साथी
को दे दूंगा कि वह तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारी पत्नियों से दिन के प्रकाश में
कुकर्म करे. 12 तुमने तो यह गुप्त में किया, मगर मैं यह पूरे इस्राएल के सामने
करूंगा और वह भी सूर्य प्रकाश में." 13 दावीद ने नाथान से कहा, "मैंने याहवेह
के विरुद्ध पाप किया है." नाथान ने दावीद से कहा, "तुम्हारा पाप याहवेह ने दूर
कर दिया है. तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी. 14 फिर भी इस काम के द्वारा तुमने
याहवेह का तिरस्कार किया है, उस पुत्र की, जिसका जन्म होने पर है, मृत्यु हो
जाएगी." 15 इसके बाद नाथान अपने घर चले गए, उरियाह की पत्नी से दावीद
का जो शिशु पैदा हुआ, याहवेह ने उस पर वार किया और शिशु गंभीर रूप से
रोगी हो गया. 16 दावीद ने अपने शिशु के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की. इस
समय दावीद ने न कुछ खाया न पिया और वह जाकर सारी रात भूमि पर ही पड़े
रहे. 17 घर के सारे पुरनिए उनके निकट इस प्रतीक्षा में ठहरे रहे कि कब उन्हें
भूमि पर से उठाएं, मगर दावीद ने उठना अस्वीकार किया. उन्होंने उनके साथ
भोजन भी न किया. 18 सातवें दिन शिशु की मृत्यु हो गई. दावीद को इसकी
सूचना देने में सेवक झिझक रहे थे कि शिशु की मृत्यु हो चुकी थी. उनका
कहना था, "देखो, जब शिशु जीवित था और हम उन्हें मना रहे थे, उन्होंने
हमारी न सुनी. तब भला हम उन्हें कैसे बताएं कि शिशु की मृत्यु हो गई? कहीं
वह अपनी ही कोई हानि न कर लें." 19 जब दावीद ने ध्यान दिया कि सेवक
परस्पर दबे स्वर में बातचीत कर रहे थे, दावीद समझ गए कि शिशु की मृत्यु
हो चुकी. दावीद ने सेवकों से प्रश्न किया, "क्या शिशु की मृत्यु हो गई?"
"जी हां," उन्होंने उत्तर दिया. 20 तब दावीद भूमि से उठे, स्नान कर तेल
लगाया और अपने वस्त्र बदले. इसके बाद याहवेह के भवन में जाकर उन्होंने
उनकी वंदना की और अपने घर चले गए. उन्होंने भोजन मांगा, सेवकों ने
उनके साम्हने भोजन परोस दिया और राजा ने वह खाया. 21 इस पर सेवकों ने
दावीद से पूछा, "हमें समझ नहीं आया आपने यह क्या किया? जब शिशु
जीवित था आप भूखे रहे और रोते रहे, मगर जब शिशु की मृत्यु हो गई, आपने
उठकर भोजन किया!" 22 दावीद ने उत्तर दिया, "जब तक शिशु जीवित था, मैं
उपवास करते हुए रोता रहा, 'क्योंकि मैं विचार कर रहा था, किसे पता याहवेह
मुझ पर कृपा करें और शिशु जीवित रह जाए.' 23 मगर अब, जब शिशु की
मृत्यु हो चुकी है, क्या अर्थ है मेरे उपवास का? क्या इससे मैं उसे लौटा ला
सकता हूं? मैं उससे जा मिलूंगा, लौटकर वह मेरे पास न आएगा." 24 दावीद
अपनी पत्नी बैथशेबा को सांत्वना देते रहे. वह उसके निकट रहे और उसमें संबंध
बना. उन्हें एक पुत्र पैदा हुआ, जिसे दावीद ने शलोमोन नाम दिया. वह याहवेह
का प्रिय हुआ; 25 भविष्यद्वक्ता नाथान के द्वारा याहवेह ने एक संदेश भेजा.
तब याहवेह की आज्ञा पर उन्होंने उसे येदीदियाह नाम दिया. 26 योआब ने
अम्मोनियों के रब्बाह नगर से युद्ध छेड़ दिया और इस राजधानी को अपने
अधीन कर लिया. 27 तब योआब ने दूतों द्वारा दावीद को यह संदेश भेजा, "मैंने
रब्बाह नगर से युद्ध किया है, और मैंने जल नगर पर अधिकार भी कर लिया है.
28 अब आप बाकी सैनिकों को इकट्ठा कर नगर की घेराबंदी कर लीजिए और
इसे अपने अधिकार में कर लीजिए. ऐसा न हो कि मैं इस पर अधिकार कर लूं
और यह मेरी संपत्ति के रूप में प्रख्यात हो जाए." 29 तब दावीद ने सैनिक
इकट्ठा किए और रब्बाह नगर पर हमला किया और उसे अपने अधिकार में कर
लिया. 30 तत्पश्चात उन्होंने उनके राजा के सिर से उसका मुकुट ले लिया. इस
स्वर्ण मुकुट का वजन एक तालन्त था. एक अमूल्य रत्न भी इसमें जड़ित था. यह
मुकुट दावीद के सिर पर रखा गया. दावीद इस नगर से अत्यंत भारी मात्रा में
लूटी हुई सामग्री अपने साथ ले गए. 31 इस नगर से दावीद-नगर निवासी भी
अपने साथ ले गए, जिन्हें उन्होंने श्रमिक बनाकर उन्हें आरी, कुदाली, कुल्हाड़ी
से संबंधित कार्यों में लगा दिया और उन्हें ईंट निर्माण की भट्टियों में भी संलग्न
कर दिया. यही उन्होंने अम्मोनियों के सारे नगरों के साथ किया. इसके बाद
दावीद और सारे सैनिक येरूशलेम लौट गए.

13 दावीद के अबशालोम नामक पुत्र की अत्यंत रूपवती बहन थी, जिसका
नाम तामार था. अम्मोन नामक दावीद के अन्य पुत्र को तामार से प्रेम हो
गया. 2 अम्मोन अपनी बहन के कारण इतना अधिक निराश हो गया कि वह
रोगी रहने लगा. उसके साथ कुछ करना अम्मोन को कठिन जान पड़ता था.
तामार अब तक कुंवारी थी. 3 दावीद के भाई सिमअह का योनादाब नामक पुत्र

था, जो अम्मोन का मित्र था. वह एक चतुर व्यक्ति था. 4 उसने अम्मोन से
कहा, "ओ राजा के सपूत, तुम दिन-प्रतिदिन ऐसे मुरझाए हुए मुंह के क्यों हुए
जा रहे हो? मुझे बताओ, हुआ क्या है?" अम्मोन ने उसे उत्तर दिया, "मुझे मेरे
भाई अबशालोम की बहन तामार से प्रेम हो गया है." 5 योनादाब ने उससे कहा,
"ऐसा करो, जाकर अपने बिछौने पर सो जाओ मानो तुम रोगी हो. जब तुम्हारे
पिता तुम्हें देखने आएं तो उनसे कहना, 'मेरी बहन तामार को भेज दीजिए कि
वह यहीं आकर मेरे देखते हुए भोजन तैयार करे कि मैं उसकी के हाथ से भोजन
करूं.'" 6 तब अम्मोन ऐसे सो गया मानो वह रोगी था. जब राजा उसे देखने
आए, अम्मोन ने राजा से कहा, "कृपया मेरी बहन तामार को भेज दीजिए कि
वह यहां आकर मेरे सामने मेरे लिए भोजन बनाए, कि मैं उसी के हाथ से भोजन
कर सकूं." 7 तब दावीद ने तामार के घर पर यह संदेश भेजा, "अपने भाई
अम्मोन के घर पर चली जाओ और उसके लिए भोजन तैयार कर दो." 8 तब
तामार अपने भाई अम्मोन के घर पर चली गई, जहां वह लेटा हुआ था. उसने
वहां आटा गूंधा और उसके देखते हुए रोटियां बनाई. 9 इसके बाद उसने बर्तन में
से भोजन निकालकर अम्मोन को परोस दिया, मगर अम्मोन ने खाना न चाहा.
उसने आदेश दिया, "अन्य सभी व्यक्ति उस कमरे से बाहर भेज दिए जाएं." तब
सभी वहां से बाहर चले गए. 10 तब अम्मोन ने तामार से कहा, "भोजन यहां
इस कमरे में लाया जाए, कि मैं तुम्हारे हाथ से भोजन कर सकूं." तब तामार
अपने द्वारा तैयार किया हुआ भोजन अपने भाई अम्मोन के निकट ले गई. 11
जैसे ही वह उसके भोजन उसके निकट लेकर गई, अम्मोन ने उसे पकड़ लिया
और उससे कहा, "मेरी बहन, आओ, मेरे साथ सोओ." 12 उसने उत्तर दिया,
"नहीं, मेरे भाई! मुझे विवश न करो! इस्राएल राष्ट्र में ऐसा नहीं किया जाता; मत
करो यह अनाचार! 13 और फिर मेरे विषय में विचार करो. मैं इस लज्जा को
कैसे धोती फिरूंगी? और अपने विषय में भी विचार करो. तुम तो इस्राएल में दुष्ट
मूर्ख के रूप में कुख्यात हो जाओगे. सही होगा कि तुम इस विषय में राजा से
आग्रह करो. वह मेरे विषय में तुम्हारा आग्रह अस्वीकार न करेंगे." 14 मगर
अम्मोन ने उसकी एक न सुनी. तामार की अपेक्षा बलवान होने के कारण वह
उस पर प्रबल हो गया, और उसने उसके साथ बलात्कार किया. 15 इसके होते
ही अम्मोन तामार के प्रति ऐसी घृणा से भर गया, जो बहुत बड़ी घृणा थी. उसकी
यह घृणा उसके प्रति उसके प्रेम से कहीं अधिक भयंकर थी. तब अम्मोन ने
तामार से कहा, "चलो उठो और निकल जाओ यहां से!" 16 मगर तामार ने
उससे कहा, "नहीं, मेरे भाई, तुम्हारा मुझे इस प्रकार भेजना मेरे साथ किए गए
इस कुकर्म से भी ज्यादा गलत बात होगी." मगर अम्मोन ने उसकी एक न सुनी.
17 उसने अपने युवा सेवक को बुलाकर उसे आदेश दिया, "इसी समय इस स्त्री
को मेरी उपस्थिति से दूर ले जाओ, और फिर यह द्वार बंद कर दो." 18 तामार
एक लंबा वस्त्र धारण किए हुए थी. इस वस्त्र में लंबी बांहें थी. राजा की कुंवारी
कन्याएं इसी प्रकार का वस्त्र पहना करती थी. उस सेवक ने उसे कमरे से बाहर
निकालकर द्वार बंद कर दिया. 19 तामार ने अपने सिर पर भस्म डाल अपने
लंबी बांह युक्त वस्त्र को फाड़ दिया, जिसे उसने इस समय पहना था. वह इस
स्थिति में अपने मस्तक पर हाथ रखे हुए उच्च स्वर में रोती हुई लौट गई. 20
तामार के भाई अबशालोम ने उससे पूछा, "क्या, तुम अपने भाई अम्मोन के
यहां से आ रही हो? मेरी बहन, अब शांत हो जाओ. वह भाई है तुम्हारा. इसे
अपने हृदय से निकाल दो." तब तामार अपने भाई अबशालोम के आवास में
असहाय स्त्री होकर रहने लगी. 21 इस घटना का समाचार सुनकर राजा दावीद
बहुत क्रुद्ध हो गए. 22 अबशालोम ने अम्मोन से भला-बुरा कुछ भी न कहा.
अम्मोन ने उसकी बहन को भ्रष्ट किया था, इसलिए अबशालोम अम्मोन से
घृणा करने लगा. 23 इस घटना के बाद दो वर्ष पूर्ण होने पर अबशालोम ने
राजा के सारे पुत्रों को बाल-हाज़ोर नामक स्थान पर आमंत्रित किया. यह स्थान
एफ्राईम के निकट था. यहीं अबशालोम के भेड़ के ऊन कतरनेवाले चुने गए थे.
24 अबशालोम ने राजा के निकट जाकर उनसे विनती की, "कृपा कर सुनिए:
आपके सेवक ने भेड़ के ऊन कतरनेवाले चुने हैं. कृपया महाराज और उनके
सेवक मेरे साथ वहां पधारे." 25 मगर राजा ने अबशालोम को उत्तर दिया,
"नहीं मेरे पुत्र, हम सबका वहां जाना सही न होगा. हम सब तुम्हारे लिए बोझ
बन जाएंगे." अबशालोम विनती करता रहा मगर राजा मना करते रहे. हां, राजा
ने अबशालोम को आशीर्वाद अवश्य दिया. 26 इस स्थिति में अबशालोम ने
अपने पिता से कहा, "अच्छा, यदि आप नहीं जा सकते तो हमारे साथ मेरे
भाई अम्मोन को ही जाने दे." इस पर राजा ने प्रश्न किया, "क्यों? वह क्यों
जाएगा तुम्हारे साथ?" 27 मगर जब अबशालोम विनती करता ही रहा, दावीद ने
अम्मोन और सारे राजपुत्रों को उसके साथ जाने की आज्ञा दे दी. 28 अबशालोम
ने अपने सेवकों को आदेश दे रखा था, "देखते रहना! जब अम्मोन दाखमधु से
नशे में हो जाए, और जब मैं तुम्हें आदेश दूं, 'अम्मोन पर वार करो,' तब तुम
उसे घात कर देना. ज़रा भी न झिझकना. स्वयं मैं तुम्हें यह आदेश दे रहा हूं;
साहस बनाए रखना और वीरता दिखाना." 29 अबशालोम के सेवकों ने इस
आदेश का पूरा-पूरा पालन किया. वह होते ही सभी राजपुत्र अपने-अपने घोड़ों
पर सवार हो भाग गए. 30 जब वे सब मार्ग में ही थे, दावीद को यह समाचार
इस प्रकार भेजा गया: "अबशालोम ने सभी राजपुत्रों का संहार कर दिया है; एक
भी जीवित शेष न रहा है." 31 यह सुनकर राजा ने शोक में अपने वस्त्र फाड़
दिए, और उठकर भूमि पर जा लेटे. उनके निकट सभी सेवकों ने भी अपने वस्त्र
फाड़ दिए. 32 मगर दावीद के भाई सिमअह के पुत्र योनादाब ने आश्वासन दिया,
"मेरे प्रभु, यह न मान लें कि उन्होंने सारे युवा राजपुत्रों का संहार कर दिया है.
वध मात्र अम्मोन का ही किया गया है. इसका निश्चय अबशालोम ने उसी दिन
कर लिया था, जिस दिन अम्मोन ने अपनी बहन तामार से बलात्कार किया था.
33 मेरे स्वामी महाराज, इस विचार से उदास न हों, कि सारे राजपुत्रों का संहार
किया जा चुका है, क्योंकि सिर्फ अम्मोन का ही संहार किया गया है." 34 इसी
बीच अबशालोम वहां से भाग निकला. वहां नियुक्त युवा पहरेदार ने दृष्टि की, तो
देखा कि उसके पीछे के मार्ग से पर्वत की एक ओर से अनेक लोग चले आ रहे
थे. 35 योनादाब ने राजा से कहा, "देखिए राजपुत्र लौट आए हैं! ठीक वैसा ही
हुआ है, जैसे आपके सेवक ने आपको कहा था." 36 वह यह कह ही रहा था,
कि राजपुत्र आ पहुंचे और ऊंची आवाज में रोने लगे. उनके साथ राजा और सारे
सेवक भी फूट-फूटकर रोने लगे. 37 इस समय अबशालोम कूच करके गेशूर के
राजा अम्मीहूद के पुत्र तालमाई की शरण में जा पहुंचा. राजा दावीद अपने पुत्र
के लिए हर रोज़ रोते रहे. 38 अबशालोम भागकर गेशूर नामक स्थान पर गया
और वहां तीन साल तक रहता रहा. 39 राजा दावीद का हृदय अबशालोम से
मिलने के लिए व्याकुल रहता था. अब उन्हें अम्मोन मृत्यु के विषय में शांति
प्राप्त हो चुकी थी.

14 ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब ने यह भांप लिया कि राजा का हृदय अबशालोम
के लिए लालायित है. 2 योआब ने तकोआ नगर से एक विदुषी को
बुलवाकर उसे ये निर्देश दिए, "विलाप-वस्त्र धारण कर कृपया आप एक विलाप
करनेवाली का अभिनय कीजिए. आप किसी भी प्रकार का सौन्दर्य-प्रसाधन न
कीजिए. आपके रोने का ढंग ऐसा हो मानो आप लंबे समय से किसी मृतक के
लिए विलाप कर रही हों. 3 तब आप राजा की उपस्थिति में जाकर इस प्रकार
कहिए." और योआब ने उस स्त्री को समझा दिया कि उसे वहां क्या-क्या कहना
होगा. 4 जब तकोआ निवासी वह स्त्री राजा की उपस्थिति में आई, उसने भूमि
पर मुख के बल गिरकर सम्मानपूर्वक राजा का अभिवादन किया और राजा के
सामने अपनी यह विनती की, "महाराज मेरी रक्षा कीजिए!" 5 राजा ने उससे
प्रश्न किया, "क्या है तुम्हारी व्यथा?" उसने उत्तर दिया, "मैं एक अभागी विधवा

हूं क्योंकि मेरे पति की मृत्यु हो चुकी है. 6 आपकी सेविका के दो पुत्र थे. जब
वे खेत में थे, उनमें विवाद फूट पड़ा. वहां कोई भी न था, जो उनके बीच
हस्तक्षेप करे. एक ने ऐसा वार किया कि दूसरे की मृत्यु हो गई. 7 अब सारे
परिवार आपकी सेविका के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है. उनकी मांग है, 'अपना वह
पुत्र हमें सौंप दो, जिसने भाई की हत्या की है, कि हम उसके भाई की हत्या के
लिए उसकी भी हत्या करे.' यदि वे ऐसा करेंगे तो उत्तराधिकारी की संभावना ही
समाप्त हो जाएगी. इससे तो वे उत्तराधिकारी ही समाप्त कर देंगे. इसमें तो वे मेरे
शेष रह गए अंगार का ही शमन कर देंगे और तब पृथ्वी पर मेरे पति का न तो
नाम रह जाएगा और न कोई उत्तराधिकारी." 8 यह सुन राजा ने उस स्त्री से
कहा, "तुम अपने घर जाओ. इस विषय में मैं आदेश प्रसारित करूंगा." 9
तकोआ निवासी उस स्त्री ने राजा से कहा, "महाराज, मेरे स्वामी, इसका दोष
मुझ पर और मेरे पिता के वंश पर हो. महाराज और महाराज का सिंहासन इस
विषय में निर्दोष रहेंगे." 10 राजा ने आगे यह भी कहा, "यदि कोई भी इस
विषय में आपत्ति उठाए तो उसे मेरे यहां भेज देना. वह फिर कभी तुम्हें सताएगा
नहीं." 11 उस स्त्री ने तब यह भी कहा, "कृपया महाराज, याहवेह अपने
परमेश्वर से यह विनती करें कि अब बदला लेनेवाला किसी की हत्या न करे
और मेरा पुत्र जीवित रहे." राजा ने आश्वासन दिया, "जीवन्त याहवेह की
शपथ, तुम्हारे पुत्र का एक बाल भी भूमि पर न गिरेगा." 12 इसके बाद उस स्त्री
ने दावीद से यह कहा, "कृपया अपनी दासी को महाराज, मेरे स्वामी, एक और
विनती प्रस्तुत करने की आज्ञा दें." "कहो," राजा ने कहा. 13 उसे स्त्री ने कहा,
"क्या कारण है आपने परमेश्वर की प्रजा के लिए ऐसी युक्ति की है? आपने इस
समय जो निर्णय दिया है, उसके द्वारा महाराज ने स्वयं अपने को ही दोषी घोषित
कर दिया है, क्योंकि आपने अपने निकाले हुए को यहां नहीं लौटाया है. 14
हम सभी की मृत्यु निश्चित है. हम सभी भूमि पर छलक चुके उस जल के समान
हैं, जिसे दोबारा इकट्ठा करना संभव नहीं होता. मगर परमेश्वर जीवन नष्ट नहीं
करते. वह ऐसी युक्ति करते हैं कि कोई भी निकाले हुए हमेशा उनकी उपस्थिति
से दूर न रहे. 15 "यह कहने के लिए मैं महाराज के सम्मुख इसलिये आई हूं
कि, लोगों की सुनकर मुझे भय लग रहा है. आपकी सेविका ने विचार किया,
'अब मुझे महाराज से यह कहना ही होगा. संभव है, महाराज अपनी सेविका की
विनती पूरी करें. 16 क्योंकि जब महाराज यह सुनेंगे, वही अपनी सेविका
को उस व्यक्ति से सुरक्षा प्रदान करेंगे, जो मुझे और मेरे पुत्र को परमेश्वर के
उत्तराधिकार से वंचित करने पर है.' 17 "आपकी सेविका ने यह भी विचार
किया, 'महाराज, मेरे स्वामी का आदेश ही मेरे मन को शांति दे सकता है,
क्योंकि महाराज, मेरे स्वामी परमेश्वर के सदृश ही उचित-अनुचित भांप लेते हैं.
याहवेह, आपके परमेश्वर आपके साथ रहें.'" 18 यह सुन राजा ने उस स्त्री से
कहा, "मुझसे कुछ न छिपाना; मैं तुमसे कुछ पूछने जा रहा हूं." उस स्त्री ने
उत्तर दिया, "महाराज, मेरे स्वामी मुझसे प्रश्न करें." 19 राजा ने पूछा, "इन
सारी बातों में क्या तुम्हारे साथ योआब शामिल है?" आपके जीवन की शपथ,
"महाराज मेरे स्वामी द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर निरे सत्य के अलावा कुछ
और हो ही नहीं सकता. वह योआब ही थे, जिन्होंने मुझे यह सब करने का
आदेश दिया था; यह सारे वक्तव्य आपकी सेविका को उन्हीं ने सुझाया था. 20
आपके सेवक योआब ने यह सब इसलिये किया है, कि इस समय घटित हो
रही घटनाओं की दिशा परिवर्तित की जा सके. मगर मेरे स्वामी में परमेश्वर
के स्वर्गदूत के समान ऐसी बुद्धि है कि पृथ्वी के सारे विषयों को समझा जा
सके." 21 तब राजा ने योआब को आदेश दिया, "सुनो, मैंने तुम्हारा यह प्रस्ताव
स्वीकार किया. जाओ, उस युवा अबशालोम को यहां ले आओ." 22 योआब ने
भूमि पर दंडवत होकर राजा का अभिवादन किया और उनसे यह प्रतिवेदन
किया, "आज आपके सेवक को यह मालूम हो गया है, कि मुझ पर आपकी
दया बनी है, क्योंकि महाराज, मेरे स्वामी ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया है."
23 तब योआब गेशूर के लिए चले गए और अबशालोम को येरूशलेम ले आए.
24 राजा ने आदेश दिया, "सही होगा कि उसे उसी के घर में रहने दिया जाए;
वह मेरी उपस्थिति में न आए." इसलिये अबशालोम अपने घर चला गया, और
राजा का चेहरा न देखा. 25 सारे इस्राएल में सुंदरता में ऐसा कोई भी न था जो
अबशालोम के समान प्रशंसनीय हो. सिर से लेकर पैरों तक उसमें कहीं भी कोई
दोष न था. 26 प्रति वर्ष जब उसके केश काटे जाते थे; क्योंकि उसके सिर के
लिए वे बहुत भारी सिद्ध होते थे, तब राजा के तुलामान के अनुसार इन केशों का
भार 200 शकेल होता था. 27 अबशालोम के तीन पुत्र पैदा हुए और एक पुत्री,
जिसका नाम था तामार. वह रूपवती स्त्री थी. 28 अबशालोम को येरूशलेम में
रहते हुए राजा की उपस्थिति में गए बिना दो साल बीत गए. 29 तब अबशालोम
ने योआब से विनती की कि उसे राजा की उपस्थिति में जाने दिया जाए, मगर
योआब उससे भेंटकरने नहीं आए. 30 तब अबशालोम ने अपने सेवकों को
आदेश दिया, "जाओ, योआब के खेत में आग लगा दो. यह देख लेना कि
योआब का खेत मेरे खेत से लगा हुआ है और इसमें जौ की उपज खड़ी हुई है."
अबशालोम के सेवकों ने जाकर उस खेत में आग लगा दी. 31 इस पर योआब
ने अबशालोम के घर पर जाकर उससे पूछा, "तुम्हारे सेवकों ने मेरे खेत में आग
क्यों लगाई?" 32 अबशालोम ने योआब को उत्तर दिया, "याद है, मैंने आपसे
विनती की थी, 'आप यहां आएं, कि मैं आपको राजा की उपस्थिति में इस
विनती के साथ भेजूं, "क्या लाभ हुआ मेरे गेशूर से यहां आने का? मेरे लिए
अच्छा यही होता कि मैं वहीं ठहरा रहता!"' अब तो मुझे राजा के दर्शन करने
दीजिए. यदि मैं उनकी दृष्टि में अपराधी हूं, तो वही मुझे मृत्यु दंड दे दें." 33 तब
योआब ने जाकर राजा को यह सब बताया. राजा ने अबशालोम को बुलवाया.
अबशालोम ने राजा की उपस्थिति में जाकर भूमि पर गिरकर उनको नमस्कार
किया और राजा ने अबशालोम का चुंबन लिया.

15 कुछ समय बाद अबशालोम ने अपने लिए एक रथ, कुछ घोड़े और
इनके आगे-आगे दौड़ने के लिए पचास दौड़ने वाले जुटा लिए. 2
अबशालोम सुबह जल्दी उठकर नगर फाटक के मार्ग पर खड़ा हो जाता था.
जब कभी कोई व्यक्ति अपना विवाद लेकर राजा के सामने न्याय के उद्देश्य से
आता था, अबशालोम उसे बुलाकर उससे पूछता था, "कहां से आ रहे हो?"
उसे उत्तर प्राप्त होता था, "इस्राएल के एक वंश से." 3 तब अबशालोम उसे
सलाह देता था, "देखो, तुम्हारी विनती पूरी तरह सटीक और सही है, मगर राजा
द्वारा ऐसा कोई अधिकारी नियुक्त नहीं किया है, कि तुम्हारी विनती पर विचार
किया जा सके." 4 अबशालोम आगे कहता था, "कितना अच्छा होता यदि मैं
उस देश के लिए न्यायाध्यक्ष बना दिया जाता! तब हर एक व्यक्ति आकर मुझसे
उचित न्याय प्राप्त कर सकता." 5 यदि कोई व्यक्ति आकर उसे नमस्कार करने
आता था, वह हाथ बढ़ाकर उसे पकड़कर उसका चुंबन ले लिया करता था. 6
अबशालोम की अब यही रीति हो गई थी, कि जो कोई न्याय के उद्देश्य से राजा
के सामने जाने के लिए आता था, अबशालोम उसके साथ यही व्यवहार करता
था. यह करके अबशालोम ने इस्राएल की जनता के हृदय जीत लिया. 7 चार
वर्ष पूरे होते-होते अबशालोम ने राजा से कहा, "कृपया मुझे हेब्रोन जाने की
अनुमति दीजिए. मुझे वहां याहवेह से किए गए अपने संकल्प को पूरा करना है.
8 अराम राष्ट्र के गेशूर में रहते हुए आपके सेवक ने यह संकल्प लिया था, 'यदि
याहवेह मुझे वास्तव में येरूशलेम लौटा ले आएंगे, मैं हेब्रोन में आकर याहवेह
की वंदना करूंगा.'" 9 राजा ने उसे उत्तर दिया, "शांतिपूर्वक जाओ." तब
अबशालोम तैयार होकर हेब्रोन के लिए चला गया. 10 अबशालोम सारे इस्राएल
में गुप्त रूप से इस संदेश के साथ दूत भेज चुका था, "जैसे ही तुम नरसिंगे
की आवाज सुनो, यह घोषणा करना, 'हेब्रोन में अबशालोम राजा है.'" 11

येरूशलेम से अबशालोम के साथ दो सौ व्यक्ति भी हेब्रोन गए थे; आमंत्रित
अतिथि थे. वे काफ़ी मासूमियत से गए थे; उन्हें कुछ भी मालूम न था कि क्या-
क्या हो रहा था. 12 अबशालोम ने बलि चढ़ाने के अवसर पर गिलोहवासी
अहीतोफ़ेल को गिलोह नगर, जो उनके अपना नगर था, आने का न्योता दिया.
अहीतोफ़ेल दावीद का मंत्री था. यहां अबशालोम के समर्थक की संख्या बढ़ती
जा रही थी, जिससे राजा के विरुद्ध षड्‍यंत्र मजबूत होता चला गया. 13 एक दूत
ने आकर दावीद को यह सूचना दी, “इस्राएल के लोगों के दिल अबशालोम के
साथ हो गया है.” 14 यह मालूम होते ही दावीद ने येरूशलेम में अपने साथ के
सभी सेवकों को आदेश दिया, “उठो! हमें यहां से भागना होगा, नहीं तो हम
अबशालोम से बच न सकेंगे. हमें इसी क्षण निकलना होगा, कि हम घिर न जाएं
और हम पर विनाश न आ पड़े और सारा नगर तलवार का आहार न हो जाए.”
15 राजा के सेवकों ने उन्हें उत्तर दिया, “सच मानिए महाराज, हमारे स्वामी जो
कुछ कहें वह करने के लिए आपके सेवक तैयार हैं.” 16 तब राजा निकल
पड़े और उनके साथ उनका सारा घर-परिवार भी; मगर दावीद ने अपनी दस
उपपत्नियों को घर की देखभाल के उद्देश्य से वहीं छोड़ दीं. 17 राजा अपने घर
से निकल पड़े और उनके पीछे-पीछे सारे लोग भी. चलते हुए वे आखिरी घर
तक पहुंचकर ठहर गए. 18 उनके सारे अधिकारी उनके पास से निकलकर
आगे बढ़ गए. ये सभी थे केरेथि, पेलेथी और छः सौ गाथवासी, जो उनके साथ
गाथ नगर से आए हुए थे. ये सभी उनके सामने से होकर निकले. 19 राजा ने
गाथ नगरवासी इत्तई से कहा, “आप क्यों हमारे साथ हो लिए हैं? आप लौट
जाइए, और अपने राजा का साथ दीजिए. वैसे भी आप विदेशी हैं, अपने स्वदेश
से निकाले हुए. 20 आप कल ही तो हमारे पास आए हैं. क्या मैं आपको अपने
साथ भटकाने के लिए विवश करूं? मुझे तो यही मालूम नहीं मैं किधर जा रहा
हूं? आप लौट जाइए, ले जाइए अपने भाइयों को अपने साथ. याहवेह तुम पर
अपना अपार प्रेम और विश्वासयोग्यता बनाए रखें.” 21 मगर इत्तई ने राजा को
उत्तर दिया, “जीवित याहवेह की शपथ, जहां कहीं महाराज मेरे स्वामी होंगे,
चाहे जीवन में अथवा मृत्यु में, आपका सेवक भी वहीं होगा.” 22 तब दावीद ने
इत्तई से कहा, “जैसी तुम्हारी इच्छा.” तब गाथवासी इत्तई इन सभी व्यक्तियों
के साथ शामिल हो गए, इनमें बालक भी शामिल थे. 23 जब यह समूह आगे
बढ़ रहा था सारा देश ऊंची आवाज में रो रहा था. राजा ने किद्रोन नदी पार की,
और वे सब बंजर भूमि की ओर बढ़ गए. 24 अबीयाथर भी वहां आए और
सादोक के साथ सारे लेवी लोग भी. ये अपने साथ परमेश्वर की वाचा का संदूक
भी ले आए थे. उन्होंने वाचा के संदूक को उस समय तक भूमि पर रखे रहने
दिया जब तक सभी लोग नगर से बाहर न निकल गए. 25 इसके बाद राजा ने
सादोक को आदेश दिया, “परमेश्वर की वाचा के संदूक को अब नगर लौटा ले
जाओ. यदि याहवेह की कृपादृष्टि मुझ पर बनी रही, तो वह मुझे लौटा लाएंगे तब
मैं इस संदूक और उनके निवास का दर्शन कर सकूंगा. 26 मगर यदि याहवेह यह
कहें, ‘तुममें मेरी कोई भी खुशी नहीं,’ तो मैं यहीं हूं कि वह मेरे साथ वहीं करे,
जो उन्हें उचित जान पड़े.” 27 तब राजा ने पुरोहित सादोक से कहा, “सुनिए,
आप शांतिपूर्वक नगर लौट जाइए, अपने साथ अपने पुत्र अहीमाज़ को और
अबीयाथर के पुत्र योनातन को ले जाइए. 28 यह ध्यान में रहे: तुमसे सूचना प्राप्त
होने तक मैं वन में ठहरूंगा.” 29 अबीयाथर परमेश्वर का संदूक लेकर येरूशलेम
लौट गए, और वे वहीं ठहरे रहे. 30 दावीद ज़ैतून पर्वत की चढ़ाई चढ़ते चले
गए वह चलते हुए रोते जा रहे थे. उनका सिर तो ढका हुआ था मगर पांव नंगे.
उनके साथ चल रहे हर एक व्यक्ति ने भी अपना अपना सिर ढांक लिया था और
वे भी रोते हुए चल रहे थे. 31 इस अवसर पर किसी ने दावीद को यह सूचना दी.
“अहीतोफ़ेल भी अबशालोम के षड्‍यंत्रकारियों में शामिल है.” यह सुन दावीद
ने प्रार्थना की, “याहवेह, आपसे मेरी प्रार्थना है, अहीतोफ़ेल की सलाह को
मूर्खता में बदल दीजिए.” 32 जब दावीद पर्वत की चोटी पर पहुंच रहे थे, जिस
स्थान पर परमेश्वर की आराधना की जाती है, अर्की हुशाई उनसे भेंटकरने आ
गया. उसका बाहरी वस्त्र फटे हुए थे और सिर पर धूल पड़ी हुई थी. 33 दावीद ने
उससे कहा, “सुनो, यदि तुम मेरे साथ चलोगे तो मेरे लिए बोझ बन जाओगे. 34
मगर यदि तुम लौटकर नगर चले जाओ और अबशालोम से कहो, ‘महाराज, मैं
अब आपका सेवक हूं; ठीक जिस प्रकार पहले आपके पिता का सेवक था; अब
आपका सेवक रहूं,’ तब तुम वहां मेरे पक्ष में अहीतोफ़ेल की युक्ति को विफल
कर सकोगे. 35 तुम्हारे साथ के पुरोहित सादोक और अबीयाथर भी तो वहीं
हैं. राजमहल से तुम्हें जो कुछ मालूम होता है, तुम वह पुरोहित सादोक और
अबीयाथर को सूचित कर सकते हो. 36 याद है न, उनके दो पुत्र वहां उनके
साथ हैं—अहीमाज़, सादोक का पुत्र और योनातन, अबीयाथर का पुत्र. तुम्हें
वहां जो कुछ मालूम होता है, तुम इनके द्वारा भेज सकते हो.” 37 तब दावीद के
मित्र हुशाई नगर में आ गए. अबशालोम भी इस समय येरूशलेम आ चुका था.

16 जब दावीद पर्वत की चोटी से कुछ आगे निकल गए, मेफ़िबोशेथ का
सेवक ज़ीबा उनसे भेंटकरने आया. वह अपने साथ दो गधों पर दो सौ
रोटियां, किशमिश के सौ गुच्छे, सौ गर्मियों के फल और अंगूरों के रस का एक
बर्तन लादकर लाया था. 2 राजा ने ज़ीबा से पूछा, “यह सब क्या ले आए हो
तुम?” ज़ीबा ने उन्हें उत्तर दिया, “ये गधे तो आपके परिवार को उठाने के लिए
हैं और रोटियां और गर्मियों के फल युवाओं के आहार के लिए, और अंगूरों का
रस उनके पेय के लिए, जो इस वन में थक जायें.” 3 दावीद ने ज़ीबा से आगे
पूछा, “तुम्हारे स्वामी का पुत्र कहां है?” ज़ीबा ने राजा को उत्तर दिया, “वह
येरूशलेम में ही हैं, क्योंकि वह कहते हैं, ‘आज इस्राएल मुझे मेरे पिता का
साम्राज्य वापस कर देगा.’” 4 यह सुन दावीद ने ज़ीबा से कहा, “सुनो, जो कुछ
मेफ़िबोशेथ का है, वह अब तुम्हारा है.” “मेरे स्वामी, महाराज,” ज़ीबा ने कहा,
“मैं आपका अभिवादन करता हूं. मुझ पर आपकी कृपादृष्टि सदैव बनी रहे.” 5
जब राजा दावीद बहुरीम पहुंचे, वहां शाऊल का एक संबंधी उनके सामने आ
गया, जिसका नाम था शिमेई, जो गेरा का पुत्र था. वह दावीद की ओर बढ़ता
चला आ रहा था, और लगातार उन्हें शाप देता जा रहा था. 6 वह दावीद पर
और राजा दावीद के सारे साथियों पर पत्थर भी फेंकता जा रहा था, जबकि
दावीद के सैन्य अधिकारी उनके दाएं और बाएं उन्हें घेरे हुए चल रहे थे. 7
शिमेई इन शब्दों में उन्हें शाप दे रहा था, “निकल जा यहां से, लहू के प्यासे
व्यक्ति! निकम्मे पुरुष! 8 याहवेह ने शाऊल के परिवार में की गई सारी हत्याओं
का बदला ले लिया है, जिनके स्थान पर तू सिंहासन पर जा बैठा था. देख ले,
अब याहवेह ने यह राज्य तुझसे छीनकर तेरे पुत्र अबशालोम को दे दिया है. देख
ले, तेरी बुराई तुझ पर ही आ पड़ी है, क्योंकि तू लहू का प्यासा व्यक्ति ही है!”
9 ज़ेरुइयाह के पुत्र अबीशाई ने यह देख राजा से कहा, “मेरे स्वामी, महाराज को
भला यह मरा हुआ कुत्ता शाप क्यों दे? मुझे आज्ञा दें कि मैं जाकर इसका सिर
धड़ से अलग कर दूं.” 10 मगर राजा ने उसे उत्तर दिया, “ज़ेरुइयाह के पुत्रों,
तुममें और मुझमें कहीं कोई समानता नहीं है. यदि वह मुझे इसलिये शाप दे रहा
है, कि उसे याहवेह ही ने यह आदेश दिया है, ‘शाप दो दावीद को,’ तब कौन है,
जो उससे यह पूछेगा, ‘क्यों कर रहे हो ऐसा?’” 11 तब दावीद ने अबीशाई और
अपने सारे सेवकों को संबोधित करते हुए कहा, “देख रहे हो न, मेरा अपना पुत्र
ही आज मेरे प्राणों का प्यासा हो गया है, तो फिर बिन्यामिन का वंशज और
कितना अधिक न चाहेगा? मत रोको उसे! उसे शाप देने दो, क्योंकि उसे उसके
लिए आदेश याहवेह से प्राप्त हुआ है. 12 संभव है याहवेह मेरी पीड़ा पर दृष्टि
करें और उसके द्वारा की जा रही शाप की बारिश का प्रतिफल मुझे मेरे कल्याण
में दें.” 13 तब दावीद और उनके साथी मार्ग पर आगे बढ़ते चले गए, और
शिमेई उनके समानांतर पहाड़ी के ढाल पर उनके साथ साथ चलता गया. चलते

हुए वह शाप देता जा रहा था, उन पर पत्थर फेंकता जा रहा था, और साथ ही
धूल भी उछालता जाता था. 14 राजा, उनके सारे साथी यरदन नदी पर थके हुए
पहुंचे. वहां दावीद में नई ताज़गी आ गई. 15 अबशालोम और इस्राएली जनता
येरूशलेम पहुंच गए. अहीतोफ़ेल उनके साथ ही थे. 16 यह उस समय की
घटना है, जब दावीद के मित्र अर्की हुशाई ने अबशालोम की उपस्थिति में
पहुंचकर उससे कहा, "महाराज की लंबी आयु हो! महाराज की लंबी आयु
हो!" 17 अबशालोम ने हुशाई से पूछा, "क्या अपने मित्र के प्रति सच्चाई ऐसे
ही दिखाई जाती है? क्यों नहीं गए आप अपने मित्र के साथ?" 18 हुशाई ने
अबशालोम को उत्तर दिया, "नहीं. मगर मैं तो उसी का होकर रहूंगा, जिसे
याहवेह, जनसाधारण और सारे इस्राएल ने चुना है. मैं भी उसी का साथ दूंगा. 19
यह भी समझ लीजिए: किसकी सेवा करना मेरे लिए सही है; क्या उनके ही पुत्र
की नहीं? जिस प्रकार मैंने आपके पिता की सेवा की है, आपकी भी करूंगा."
20 इस पर अबशालोम ने अहीतोफ़ेल से कहा, "अब आप मुझे सलाह दीजिए,
क्या होगा मेरा अगला कदम?" 21 अहीतोफ़ेल ने अबशालोम को आदेश
दिया, "जिन उपपत्नियों को तुम्हारे पिता गृह प्रबंधन के उद्देश्य से यहां छोड़
गए हैं, जाकर उनसे संबंध बनाओ. जब सारा इस्राएल इसके विषय में सुनेगा
कि तुमने स्वयं को अपने पिता के लिए घृणित बना लिया है. इससे उन सभी
को, जो तुम्हारे साथ है, जो तुम्हारे समर्थक हैं, बल मिलेगा." 22 तब इसके
लिए राजमहल की छत पर एक तंबू खड़ा किया गया और अबशालोम ने सारे
इस्राएल के देखते-देखते अपने पिता की उपपत्नियों से संबंध बनाया. 23 उन
दिनों में अहीतोफ़ेल द्वारा दी गई सलाह वैसी ही मानी जाती थी जैसा किसी ने
परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त कर लिया है. दावीद और अबशालोम दोनों ही के
लिए अहीतोफ़ेल की सलाह बहुत ही सम्मानीय होती थी.

17 इसके अलावा अहीतोफ़ेल ने अबशालोम से यह भी कहा, "मुझे आज्ञा
हो कि मैं सर्वोत्तम 12,000 सैनिक लेकर आज ही रात में दावीद का
पीछा करूं. 2 मैं उस पर ऐसी स्थिति में हमला करूंगा जब वह थका हुआ और
निर्बल होगा. तब मैं उसे आतंकित कर दूंगा, जिससे उसके सारे साथी उसे
छोड़कर भाग जाएंगे. मैं सिर्फ राजा पर वार करूंगा, 3 और मैं बाकी सभी को
उस रीति से लौटा लाऊंगा. जैसे वधू अपने पति के लिए लौट आती है. सभी का
लौटकर यहां आ जाना सिर्फ उस व्यक्ति पर निर्भर करता है, जिसे आप खोज रहे
हैं. तभी जनसाधारण में शांति हो सकेगी." 4 अबशालोम और सारे इस्राएली
पुरनियों को यह युक्ति सही लगी. 5 तब अबशालोम ने आदेश दिया, "अर्की
हुशाई को भी यहां बुलवाया जाए, कि हम इस विषय में उसका मत भी सुन लें."
6 जब हुशाई अबशालोम की उपस्थिति में आए, अबशालोम ने उन्हें अहीतोफ़ेल
की योजना की जानकारी देते हुए उनसे पूछा, "अहीतोफ़ेल ने यह युक्ति सुझाई
है, क्या इसके अनुसार करना सही होगा? यदि नहीं, तो आप अपनी योजना हमें
बताएं." 7 यह सुन हुशाई ने अबशालोम से कहा, "इस स्थिति में अहीतोफ़ेल
सही सलाह देने में चूक गए हैं. 8 आगे हुशाई ने कहा, यह तो आपको मालूम ही
है, कि आपके पिता और उनके साथी वीर योद्धा है. इस समय उनकी मन स्थिति
ठीक वैसी है, जैसे मैदान में नन्हे शावकों के छीन जाने पर गुस्सैल रीछनी की
होती है. वे अभी बहुत गुस्से में हैं. इसके अलावा आपके पिता युद्ध कौशल में
बहुत निपुण हैं. यह हो ही नहीं सकता कि वह सेना के साथ रात बिताए. 9 यह
देख लेना कि इस समय वह किसी गुफा या किसी दूसरे ऐसे स्थान में जा छिपे हैं.
जब प्रथम आक्रमण किया जाएगा और हमारे सैनिक मारे जाएंगे, तब जो कोई
इसके विषय में सुनेगा, यही कहेगा, 'अबशालोम के सैनिक इस आक्रमण में
परास्त किए गए हैं.' 10 तब वह, अबशालोम के सैनिकों में जो वीर है, जो
साहस में सिंह सदृश हृदय का है, पूरी तरह हतोत्साहित हो जाएगा; क्योंकि सारे
इस्राएल में यह सबको मालूम है, कि आपके पिता शूर योद्धा हैं और उनके साथ
के सैनिक कुशल योद्धा हैं. 11 "इस समय आपके लिए मेरा परामर्श यह है कि
आपके सामने दान से लेकर बेअरशेबा से सारे इस्राएल इकट्ठा किया जाए; ऐसे
जनसमूह के रूप में, जैसे सागर तट के धूल के कण और आप स्वयं व्यक्तिगत
रूप से युद्ध संचालन करें. 12 तब हम उन्हें उस स्थान से खोज निकालेंगे, जहां
वह छिपे हुए हैं. फिर हम उन पर ऐसे टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर जा पड़ती है,
उन पर और उनके सारे सैनिकों पर. हम एक को भी न छोड़ेंगे. 13 यदि वह
किसी नगर में जा छिपेगा, तब सारा इस्राएल रस्सियां लेकर उस नगर में पहुंच
जाएगा, और हम उस नगर को घसीटकर घाटी में डाल देंगे, यहां तक कि वहां
एक भी कंकड़ बाकी न रह जाएगा." 14 तब अबशालोम और इस्राएल के सभी
पुरनिए यह कह उठे, "अर्की हुशाई का परामर्श अहीतोफ़ेल के परामर्श से
श्रेष्ठतर है." यह इसलिये कि याहवेह ने ही अहीतोफ़ेल के सुसंगत परामर्श को
विफल कर देना निर्धारित कर रखा था, कि याहवेह अबशालोम पर विनाश वृष्टि
कर दें. 15 इसके बाद हुशाई ने पुरोहित सादोक और अबीयाथर को यह संदेश
भेजा: "अहीतोफ़ेल ने अबशालोम और इस्राएली वृद्धों को यह परामर्श दिया था,
और मैंने उन्हें यह परामर्श दे दिया है. 16 अब शीघ्र, अति शीघ्र, दावीद को यह
संदेश भेज दीजिए, 'रात बंजर भूमि के घाट पर न बिताए, बल्कि पूरी शक्ति
से प्रयास कर आप नदी के पार चले जाएं; अन्यथा महाराज और उनके सारे
साथियों का विनाश होना निश्चित है.'" 17 योनातन और अहीमाज़ एन-रोगेल
नामक स्थान पर ठहरे हुए थे. एक दासी ठहराई गई थी कि वह जाकर उन्हें
सूचित करे और तब वे जाकर यह सूचना राजा दावीद को भेजें; क्योंकि यह
ज़रूरी थी कि वे नगर में प्रवेश करते हुए देखे न जाएं. 18 फिर भी एक युवक ने
उन्हें देख ही लिया और इसकी सूचना अबशालोम को दे दी. तब वे दोनों बिना
देर किए, बहुरीम नामक स्थान पर एक व्यक्ति के घर पर जा पहुंचे, जिसके
आंगन में एक कुंआ था. वे दोनों इस कुंएं में जा छिपे. 19 एक स्त्री ने कुंएं पर
वस्त्र बिछाकर उस पर अन्न फैला दिया, जिससे इन दोनों के विषय में किसी को
कुछ भी मालूम न हो सका. 20 तभी अबशालोम के सैनिक वहां आ पहुंचे और
उस गृहणी से पूछताछ करने लगे, "कहां हैं अहीमाज़ और योनातन?" स्त्री ने
उन्हें उत्तर दिया, "वे तो नदी के पार जा चुके हैं." सैनिक उन्हें खोजते रहे
और जब उन्हें न पा सके, वे येरूशलेम लौट गए. 21 जब सैनिक वहां से चले
गए, वे दोनों कुंएं से बाहर आए, और जाकर राजा दावीद को सारा हाल सुना
दिया. उन्होंने दावीद से कहा, "बिना देर किए उठिए, और नदी के पार चले
जाइए, क्योंकि अहीतोफ़ेल ने आपके विरुद्ध यह साज़िश कर रखी है." 22 तब
दावीद और उनके सारे साथी उठे, और यरदन नदी के पार चले गए. सुबह होते-
होते, वहां ऐसा कोई भी न था जो यरदन नदी के पार न गया था. 23 यहां जब
अहीतोफ़ेल ने यह देखा कि उसकी सलाह को ठुकरा दिया गया है, उसने अपने
गधे पर काठी कसी, और अपने गृहनगर में अपने घर को निकल पड़ा. उसने
अपने परिवार को सुव्यवस्थित किया, उसके बाद फांसी लगाकर आत्महत्या
कर ली. उसकी मृत्यु हो गई, और उसके शव को उसके पिता की कब्र में गाड़
दिया गया. 24 फिर दावीद माहानाईम पहुंचे. अबशालोम ने यरदन नदी पार की.
उसके साथ सारे इस्राएली सैनिक थे. 25 अबशालोम ने योआब के स्थान पर
अमासा को सेना का अधिकारी बनाया था. अमासा ज़ेथर नामक इशमाएली
व्यक्ति के पुत्र थे. ज़ेथर ने नाहाश की पुत्री अबीगइल, जो योओब की माता
ज़ेरुइयाह की बहन थी, से विवाह किया था. 26 इस्राएली सेना अबशालोम के
साथ गिलआद क्षेत्र में छावनी डाली हुई थी. 27 जब दावीद माहानाईम पहुंचे,
अम्मोन वंशज रब्बाहवासी नाहाश के पुत्र शोबी, लो-देबारवासी अम्मिएल के
पुत्र माखीर और रोगेलिम क्षेत्र से गिलआदवासी बारज़िल्लई दावीद और उनके
साथियों के उपयोग के लिए अपने साथ बिछौने, 28 चिलमचियां, मिट्टी के
पात्र, गेहूं, जौ, मैदा, भुना गया अन्न, फल्लियां, दालें, 29 मधु, दही, भेड़ें और

भेड़ों के दूध से बनाया पनीर आदि ले आए. क्योंकि उन्होंने कहा, “बंजर भूमि
में यात्रा कर रहे थे लोग अवश्य ही भूखे, प्यासे और थके होंगे.”

18 दावीद ने अपने साथियों की गिनती की, और इसमें उन्होंने हज़ारों और
सैकड़ों के ऊपर प्रधान बना दिए. 2 तब उन्होंने सेना को तीन भागों में
बांटकर एक तिहाई भाग योआब के नेतृत्व में, दूसरी तिहाई भाग ज़ेरुइयाह के पुत्र
और योआब के भाई अबीशाई के नेतृत्व में और तीसरी तिहाई भाग गाथी इत्तई
के नेतृत्व में भेज दिया. राजा ने सेना के सामने यह घोषित किया, “मैं स्वयं
तुम्हारे साथ चलूंगा.” 3 मगर सैनिकों ने विरोध किया, “नहीं, आपका हमारे
साथ जाना सही नहीं है. यदि हमें भागना ही पड़ जाए, तो उन्हें तो हमारी कोई
परवाह नहीं है. यदि हम आधे मार दिये जाए तो भी अबशालोम के सैनिक
परवाह नहीं करेंगे. मगर आपका महत्व हम जैसे दस हज़ार के बराबर है. तब
इस स्थिति में ठीक यही है कि आप नगर में रहते हुए ही हमारा समर्थन करें.” 4
यह सुन राजा ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं वही करूंगा जो तुम्हारी दृष्टि में सही है.”
तब राजा नगर फाटक के पास खड़े हो गए और सारी सेना सौ-सौ और हज़ार के
समान समूहों में उनके पास से निकलते चले गए. 5 राजा ने योआब, अबीशाई
और इत्तई को आदेश दिया, “मेरे हित का ध्यान रखते हुए इस युवा अबशालोम
के साथ दया दिखाना.” राजा द्वारा अबशालोम के विषय में सारे प्रधानों को दिए
गए इस आदेश को सारी सेना ने भी सुना. 6 तब यह सेना इस्राएल से युद्ध करने
मैदान में जा पहुंची, और यह युद्ध एफ्राईम के वन में छिड़ गया. 7 दावीद के
सैनिकों ने इस्राएल की सेना को हरा दिया. उस दिन की मार बहुत ही भयानक
थी जिसमें 20,000 सैनिक मारे गये. 8 यह युद्ध पूरे देश में फैल गया था.
तलवार की अपेक्षा वन के घनत्व ने ही अधिकतर सैनिकों के प्राण ले लिए.
9 संयोगवश, अबशालोम की भेंट दावीद के सैनिकों से हो गई. उस समय
अबशालोम अपने खच्चर पर चढ़ा हुआ था. खच्चर एक विशालकाय बांज वृक्ष
के नीचे से भागने लगा. परिणामस्वरूप, अबशालोम का सिर बांज वृक्ष की
डालियों में मजबूती से जा फंसा. उसका खच्चर तो आगे बढ़ गया मगर वह
स्वयं भूमि और आकाश के बीच लटका रह गया. 10 किसी ने अबशालोम को
इस स्थिति में देख लिया और जाकर योआब को इसकी सूचना दे दी, “सुनिए,
मैंने अबशालोम को बांज वृक्ष से लटके हुए देखा है.” 11 योआब ने उस व्यक्ति
से कहा, “अच्छा! तुमने उसे सचमुच देखा है? तब तुमने उसे मारकर भूमि पर
क्यों न गिरा दिया? इसके लिए मैं तुम्हें खुशी से दस चांदी के सिक्के और
योद्धा का एक कमरबंध भी दे देता.” 12 मगर उस व्यक्ति ने योआब को उत्तर
दिया, “यदि मेरे हाथ पर हज़ार चांदी के सिक्के भी रख दिए जाते, मेरा हाथ
राजकुमार पर नहीं उठ सकता था; क्योंकि स्वयं हमने राजा को आपको,
अबीशाई को और इत्तई को यह आदेश देते हुए सुन रखा है, ‘मेरे हित का ध्यान
रखते हुए उस युवा अबशालोम को सुरक्षित रखना.’ 13 इसके अलावा यदि मैंने
उसके प्राण लेकर राजा के प्रति विश्वासघात किया भी होता, तो आप तो मुझसे
स्वयं को पूरी तरह अलग ही कर लेते, जबकि राजा से कुछ भी छिपा नहीं रह
सकता.” 14 इस पर योआब ने कहा, “व्यर्थ है तुम्हारे साथ समय नष्ट करना.”
उन्होंने तीन भाले लिए और बांज वृक्ष में लटके हुए जीवित अबशालोम के
हृदय में भोंक दिए. 15 उसके बाद दस सैनिकों ने, जो योआब के हथियार
उठानेवाले थे, अबशालोम को घेरकर उस पर वार कर उसे घात कर दिया. 16
यह होने के बाद योआब ने युद्ध समाप्ति की तुरही फूंकी, और सैनिक इस्राएल
का पीछा करना छोड़ लौट आए, युद्ध समापन योआब का आदेश था. 17
उन्होंने अबशालोम के शव को वन में एक गहरे गड्ढे में डालकर उसके ऊपर
पत्थरों का बहुत विशाल ढेर लगा दिया. सभी इस्राएली सैनिक भाग गये, हर
एक अपने-अपने तंबू में. 18 जब अबशालोम जीवित ही था, उसने राजा की
घाटी नामक स्थान पर अपने लिए एक स्मारक खंभा बनवा दिया था. उसका
विचार था, “मेरे नाम की याद स्थायी रखने के लिए, क्योंकि मेरे कोई पुत्र
नहीं है.” इस स्मारक स्तंभ को उसने अपना ही नाम दिया. आज तक यह
अबशालोम स्मारक के नाम से जाना जाता है. 19 यह सब होने पर सादोक के
पुत्र अहीमाज़ ने विचार किया, “मैं दौड़कर राजा को यह संदेश दूंगा कि याहवेह
ने उन्हें उनके शत्रुओं के सामर्थ्य से छुड़ाया है.” 20 मगर योआब ने उससे कहा,
“आज तुम कोई भी संदेश नहीं ले जाओगे. तुम किसी दूसरे दिन संदेश ले जाना,
लेकिन तुम्हें आज ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह राजकुमार की मृत्यु का
समाचार है.” 21 वहां कूश देश का एक निवासी था. योआब ने आदेश दिया,
“तुमने जो कुछ देखा है, उसकी सूचना जाकर राजा को दे दो.” कूश देशवासी
ने झुककर योआब का अभिवंदन किया और दौड़ पड़ा. 22 सादोक के पुत्र
अहीमाज़ ने योआब से दोबारा विनती की, “कुछ भी हो, मुझे भी उस कूश देश
निवासी के पीछे जाने दीजिए.” योआब ने उससे पूछा, “मेरे पुत्र, तुम क्यों
जाना चाह रहे हो? इस समाचार को प्रेषित करने का तुम्हें कोई पुरस्कार तो
मिलेगा नहीं.” 23 “कुछ भी हो,” उसने उत्तर दिया, “मैं तो जाऊंगा.” तब
योआब ने उसे उत्तर दिया, “जाओ!” तब अहीमाज़ दौड़ पड़ा और मैदान में से
दौड़ता हुआ उस कूश देश निवासी से आगे निकल गया. 24 दावीद दो द्वारों के
मध्य बैठे हुए थे. प्रहरी दीवार से चढ़कर द्वार पर बने छत पर पहुंच गया. जब
उसने दृष्टि की तो उसे एक अकेला व्यक्ति दौड़ता हुआ नजर आया. 25 प्रहरी ने
पुकारते हुए राजा को इसकी सूचना दी. राजा ने उससे कहा, “यदि वह अकेला
व्यक्ति है तो उसके मुख से आनंददायक संदेश ही सुना जाएगा.” वह व्यक्ति
निकट-निकट आता गया. 26 तब प्रहरी ने एक और व्यक्ति को दौड़ते हुए आते
देखा. प्रहरी ने पुकारते हुए द्वारपाल को सूचित किया, “देखो, देखो, एक और
व्यक्ति अकेला दौड़ा आ रहा है!” राजा कहने लगा, “वह भी आनंददायक
संदेश ही ला रहा है.” 27 प्रहरी ने उन्हें बताया, “मेरे विचार से प्रथम व्यक्ति के
दौड़ने के ढंग से ऐसा लग रहा है कि वह सादोक का पुत्र अहीमाज़ है.” यह सुन
राजा ने कहा, “वह एक अच्छा व्यक्ति है. वह अवश्य ही शुभ संदेश ला रहा
है.” 28 अहीमाज़ ने पुकारकर राजा से कहा, “सब कुछ कुशल है.” तब वह
राजा के समक्ष भूमि पर दंडवत हो गया, उसने आगे कहा, “स्तुत्य हैं याहवेह,
आपके परमेश्वर जिन्होंने महाराज मेरे स्वामी के शत्रुओं को पराजित कर दिया
है!” 29 राजा ने उससे पूछा, “क्या युवा अबशालोम सकुशल है?” अहीमाज़ ने
उत्तर दिया, “जब योआब ने आपके सेवक को महाराज के लिए संदेश के साथ
प्रेषित किया था, तब मैंने वहां बड़ी अव्यवस्था देखी, मगर मुझे यह ज्ञात नहीं
कि वह सब क्या था.” 30 तब राजा ने उसे आदेश दिया, “आकर यहां खड़े
रहो.” तब वह जाकर वहां खड़ा हो गया. 31 तब वह कूश देशवासी भी वहां आ
पहुंचा. उसने सूचना दी, “महाराज, मेरे स्वामी के लिए खुशखबरी है! आज
याहवेह ने आपको विद्रोहियों पर जयंत किया है.” 32 यह सुनने के बाद राजा ने
कूश देशवासी से प्रश्न किया, “युवा अबशालोम तो सकुशल है न?” कूशवासी ने
उत्तर दिया, “महाराज मेरे स्वामी के शत्रुओं की और उन सभी की नियति, जो
आपके हानि के कटिबद्ध हो जाते हैं, वही हो, जो उस युवा की हुई है.” 33
भावना से अभिभूत राजा नगर द्वार के ऊपर बने हुए कक्ष में जाकर शोक करने
लगे. जब वह वहां जा रहे थे, उनके द्वारा उच्चारे गए ये शब्द सुने गए, “मेरे पुत्र
अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र अबशालोम! उत्तम तो यह होता, तुम्हारे स्थान पर
मेरी ही मृत्यु हो जाती, अबशालोम, मेरे पुत्र—मेरे पुत्र!”

19 योआब को इसकी सूचना इस प्रकार दी गई, “अपने राजा रो-रोकर
अबशालोम के लिए विलाप कर रहे हैं.” 2 तब उस दिन विजय का हर्ष
सारी सेना के लिए विलाप में बदल गया; क्योंकि सेना को यह बताया गया था,
“महाराज अपने पुत्र के लिए रो रहे हैं.” उस दिन की जीत की खुशी गहरी
उदासी में बदल गई थी. 3 फलस्वरूप, सैनिक नगर में चुपके-चुपके ऐसे प्रवेश

कर रहे थे, मानो वे लज्जित होकर युद्ध में शत्रु को पीठ दिखाकर भाग आए
हों. 4 राजा अपना मुखमंडल ढांप कर ऊंची आवाज में रो रहे थे, “मेरे पुत्र
अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!” 5 तब योआब ने उस कमरे में जाकर राजा से
कहा, “आज आपने अपने उन सभी अधिकारियों का मुख लज्जा से झुका
दिया है, जिन्होंने आपकी और आपके पुत्र-पुत्रियों, पत्नियों और उपपत्नियों के
जीवन की रक्षा की है. 6 आप उनसे तो प्रेम करते हैं, जिन्हें आपसे प्रेम नहीं,
और उनसे घृणा करते हैं, जो आपसे प्रेम करते हैं. आज आपने यह साफ़ कर
दिया है कि आपकी दृष्टि में न तो अधिकारियों का कोई महत्व है, न सैनिकों
का. आज मुझे यह मालूम हो गया है कि आज यदि अबशालोम जीवित होता
और हम सभी मृत, तो आपको अत्यंत हर्ष होता. 7 अब ऐसा कीजिए: उठिए,
बाहर आइए और अपने सैनिकों से सांत्वनापूर्ण शब्दों में बातें कीजिए, नहीं तो
जीवित याहवेह की शपथ, यदि आप यह न करेंगे, एक भी सैनिक आज रात
आपके साथ देखा न जाएगा. यह आपके लिए ऐसी किसी भी विपदा से कहीं
अधिक सोचने लायक होगा, जो आपके बाल्यकाल से आज तक आप पर न
आन पड़ी है.” 8 तब राजा उठे और नगर द्वार पर जाकर बैठ गए, जब लोगों ने
यह सुना, “सुनो, सुनो, राजा द्वार पर बैठे हुए है,” तो लोग राजा के निकट आने
लगे. इस्राएली अपने-अपने घर भाग जा चुके थे. 9 इस्राएल के सारे गोत्रों में इस
समय इस विषय पर उग्र विवाद छिड़ा हुआ था, “राजा ही हमें हमारे शत्रुओं से
सुरक्षा प्रदान करते आए हैं, वही हमें फिलिस्तीनियों से मुक्त करते आए हैं, अब
वह अबशालोम के कारण देश छोड़कर भाग गए हैं. 10 यहां हमने अबशालोम
का राजाभिषेक किया और वह युद्ध में मारा गया. तब अब राजा को वापस लाने
के बारे में कुछ क्यों नहीं किया जा रहा?” 11 राजा दावीद ने पुरोहित सादोक
और अबीयाथर के लिए यह संदेश भेजा: “आप यहूदिया के पुरनियों से इस
विषय में विचार-विमर्श करें: ‘राजा को उसके आवास में लौटा लाने के विषय में
आप सबसे पीछे क्यों हैं, जबकि सारे इस्राएल इस विषय में राजा तक अपने
विचार भेज चुका है? 12 आप मेरे रिश्तेदार हैं, आप में और मुझे में लहू-मांस
का संबंध है. तब आप ही राजा की पुनःस्थापना में पीछे क्यों हैं?’ 13 अमासा
से कहिये, ‘क्या तुम मेरा लहू-मांस नहीं हो? यदि योआब के स्थान पर तुम
आज से ही स्थायी रूप से मेरी सेना के सेनापति का पद ग्रहण न करो, तो मैं
परमेश्वर के सामने दंड के योग्य रहूंगा.’” 14 इस बात ने यहूदिया की जनता का
हृदय एक सूत्र में बांध दिया; तब उन्होंने राजा के लिए यह संदेश भेजा, “आप
और आपके सारे सेवक यहां लौट आएं.” 15 तब राजा लौटकर यरदन नदी तक
पहुंचे. तब यहूदियावासी गिलगाल नामक स्थान पर उनका स्वागत करते हुए
प्रतीक्षा कर रहे थे, कि उन्हें यरदन नदी के पार ले आएं. 16 बहुरीम नामक
स्थान से बिन्यामिन के एक वंशज, गेरा के पुत्र शिमेई यहूदिया के व्यक्तियों को
लेकर शीघ्रतापूर्वक राजा दावीद से भेंटकरने आ गए. 17 उनके साथ बिन्यामिन
वंश के हज़ार व्यक्ति भी थे. उसी समय शाऊल का गृह प्रबंधक ज़ीबा भी अपने
पन्द्रह पुत्रों और बीस सेवकों के साथ, ढलान पर यरदन नदी की ओर दौड़ता
हुआ राजा से भेंटकरने आया. 18 उन्होंने राजा के परिवार को नदी पार करने में
सहायता दी, और उनकी सुविधाओं के लिए प्रयास करते रहे. राजा नदी पार
करने पर ही थे, कि गेरा का पुत्र शिमेई आकर राजा के चरणों में गिर पड़ा. 19
उसने राजा से तेज आवाज में विनती की, “मेरे स्वामी, न तो मुझे दोषी ठहराएं
और न ही मेरे उस गलत व्यवहार को याद रखें, जो मैंने मेरे स्वामी महाराज
के येरूशलेम से जाने के अवसर में किया था. महाराज इसे अपने हृदय में न
रखें. 20 आपके सेवक को यह पता है, कि मैंने यह पाप किया है. इसलिये यह
देखिए, आज मैं ही सारे योसेफ़ वंश में से पहला हूं, जो महाराज, मेरे स्वामी से
भेंटकरने आया हूं.” 21 ज़ेरुइयाह के पुत्र अबीशाई ने इसके लिए सुझाव दिया,
“क्या सही नहीं कि जो कुछ शिमेई ने किया है, उसके लिए उसे मृत्यु दंड दिया
जाए? उसने याहवेह के अभिषिक्त को शाप दिया था.” 22 “तुम ज़ेरुइयाह के
पुत्रो,” दावीद ने कहा, “क्या लेना देना है मेरा तुम्हारा? क्या कारण है तुम आज
मेरे विपरीत ही जा रहे हो? क्या आज वह दिन है, जिसमें इस्राएल के किसी भी
व्यक्ति को प्राण-दंड दिया जाना सही होगा? क्या मुझे यह मालूम नहीं कि मैं इस
समय इस्राएल का राजा हूं?” 23 तब शिमेई से उन्मुख हो राजा ने कहा, “तुम्हें
मृत्यु दंड नहीं दिया जाएगा.” इसके लिए राजा ने उससे शपथ खाई. 24 शाऊल
का पुत्र मेफ़िबोशेथ भी राजा से भेंटकरने आया. जिस दिन से राजा ने पलायन
किया था, उस दिन से राजा के सुरक्षित लौटने तक उसने पैरों का ध्यान न रखा
था, न अपनी दाढ़ी का प्रसाधन किया था, और न ही उसने धुले हुए कपड़े पहने
थे. 25 जब वह राजा से भेंटकरने येरूशलेम में आया, राजा ने उससे कहा,
“मेफ़िबोशेथ, पलायन करते समय तुम मेरे साथ क्यों नहीं थे?” 26 उसने उत्तर
में कहा, “महाराज, मेरे स्वामी, मेरे सेवक ने मेरे साथ छल किया. आपके
सेवक ने उससे कह रखा था, ‘मैं अपने लिए गधे की काठी कसूंगा कि मैं
उस पर चढ़कर राजा के निकट जा सकूं,’ क्योंकि मैं ठहरा अपंग. 27 इसके
अलावा उसने महाराज, मेरे स्वामी से आपके सेवक के विरुद्ध झूठा आरोप भी
प्रसारित कर दी; मगर महाराज, मेरे स्वामी, आप परमेश्वर के स्वर्गदूत तुल्य हैं;
आपको जो कुछ सही लगे, आप वही करें. 28 महाराज मेरे स्वामी के सामने,
मेरे पिता का वंश मृतकों के समान छोटा था, फिर भी आपने अपने सेवक को
उनमें स्थान दिया, जो आपके साथ भोजन करने के लिए चुने गए थे. महाराज से
इससे अधिक अपेक्षा करने का मेरा अधिकार ही नहीं रह जाता.” 29 राजा ने
उससे कहा, “अब ज्यादा बोलने से क्या लाभ? मैंने यह निश्चय किया है कि
तुम्हारे और ज़ीबा के बीच संपत्ति को बांट दिया जाएगा.” 30 मेफ़िबोशेथ ने
राजा से कहा, “आप उसे संपूर्ण संपत्ति ही ले लेने दें. मेरे लिए यही काफ़ी है कि
महाराज, मेरे स्वामी सुरक्षित लौट आए हैं.” 31 रोगेलिम नामक स्थान से
गिलआदवासी बारज़िल्लई भी आए हुए थे. वह राजा के साथ साथ यरदन
नदी तक गए थे, कि उन्हें यरदन नदी पार उतार दें. 32 बारज़िल्लई बहुत वृद्ध
व्यक्ति थे, वह अस्सी वर्षीय थे. राजा के माहानाईम पड़ाव के अवसर पर
उन्हीं ने राजा की सुरक्षा का प्रबंध किया था, क्योंकि वहां वह अत्यंत प्रतिष्ठित
व्यक्ति थे. 33 राजा ने बारज़िल्लई से कहा, “आप मेरे साथ नदी पार कर
चलिए. येरूशलेम में आप मेरे साथ रहेंगे, मैं आपको आश्रय दूंगा.” 34 मगर
बारज़िल्लई ने राजा को उत्तर दिया, “और कितने दिन बाकी हैं मेरे जीवन के,
कि मैं महाराज के साथ येरूशलेम चलूं? 35 इस समय मेरी आयु अस्सी वर्ष की
है. क्या मुझमें अब यह बोध रह गया है कि सुखद क्या है, और क्या नहीं? क्या
आपके सेवक में अब भोजन और पेय से संबंधित स्वाद बोध शेष रह गया है?
अथवा क्या मैं अब भी स्त्री-पुरुष गायक-वृन्द की प्रस्तुति सुनने में समर्थ रह गया
हूं? तब क्या लाभ है कि आपका सेवक महाराज मेरे स्वामी पर अतिरिक्त बोझ
बनकर रहे? 36 आपका सेवक महाराज के साथ मात्र यरदन नदी पार ही करेगा,
पर क्या आवश्यकता है कि महाराज प्रतिफल में यह पुरस्कार दें. 37 कृपा
कर अपने सेवक को लौटने की अनुमति प्रदान करें, कि मेरा देहांत मेरे ही
गृहनगर में, मेरी माता-पिता की कब्र के निकट ही हो. हां, यह किमहाम है,
मेरा पुत्र, आपका सेवक. उसे ही आज्ञा दें कि वह महाराज मेरे स्वामी के साथ
जाए, और आपकी उपयुक्त इच्छा पूर्ण करता रहे.” 38 राजा ने सहमति प्रदान
की: “किमहाम मेरे साथ अवश्य जाएगा, और मैं उसके लिए वही करूंगा, जो
आपकी अभिलाषा है, साथ ही मैं आपके लिए भी वहीं करूंगा, जो मुझसे
आपकी इच्छा है.” 39 इसके बाद सभी यरदन नदी के पार चले गए, राजा ने
भी नदी पार की. तब राजा ने बारज़िल्लई का चुंबन लेते हुए उन्हें आशीर्वाद
दिया. इसके बाद बारज़िल्लई अपने घर लौट गए. 40 राजा गिलगाल की ओर
बढ़ते गए. किमहाम राजा के साथ था. राजा के साथ यहूदिया की सभी सेना और

इस्राएल की आधी सेना थी. **41** तब इस्राएल के सभी व्यक्ति आकर राजा से कहने लगे, “ऐसा क्यों हुआ है कि हमारे भाई-बंधुओं, यहूदियावासियों ने चुपके-चुपके यरदन के उस पार जाकर, राजा और उनके परिवार को और उनके सारे साथियों को यहां ले आए है?” **42** यहूदिया के सभी निवासियों ने इस्राएल के निवासियों को उत्तर दिया, “इसलिये, कि राजा हमारे निकट संबंधी हैं. इस पर क्रुद्ध होने का क्या कारण है? क्या हमने अपने भोजन के लिए राजा की धनराशि में से खर्च किया है? अथवा क्या उन्होंने हमें उपहार में कुछ दिया है?” **43** यह सुन इस्राएलियों ने यहूदियावासियों को उत्तर दिया, “राजा में हमारे दस अंश निहित है. तब दावीद पर हमारा अधिकार तुमसे अधिक होता ही है. तब तुमने हमें तुच्छ क्यों समझा? क्या राजा को दोबारा प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव सबसे पहले हमारी ओर से ही नहीं आया था?” इसमें यहूदियावासियों के वचन इस्राएलियों के उद्गारों से अधिक प्रभावी रहे.

20 वहां बिन्यामिन वंश में से बिकरी नामक व्यक्ति का शीबा नामक निकम्मा पुत्र था. उसने तुरही फूंकने पर यह घोषणा की, “दावीद में हमारा कोई भाग नहीं है, और न यिशै के पुत्र में कोई पैतृक संपत्ति! सुनो इस्राएल, लौट जाओ अपनी छावनी में!” **2** तब सभी इस्राएलियों ने दावीद का अनुसरण छोड़ दिया, और बिकरी के पुत्र शीबा का अनुसरण शुरू कर दिया; मगर यहूदियावासी यरदन नदी से येरूशलेम तक अपने राजा के साथ बने रहे. **3** येरूशलेम पहुंचकर दावीद ने अपने राजमहल में प्रवेश किया. राजा ने उन दस स्त्रियों को, जो उनकी उपपत्नियां थी, जिन्हें वह राजमहल की देखरेख के उद्देश्य से वहां छोड़ गए थे, एक पहरेदार की सुरक्षा में छोड़ दिया, और उनके पालन पोषण का उचित प्रबंध कर दिया; मगर अब उनसे कोई यौन संबंध न रखा; वे मृत्यु होने तक विधवा समान इसी स्थिति में सीमित रह गई. **4** तब राजा ने अमासा को आदेश दिया, “तीन दिन के भीतर यहूदिया मेरे सामने इकट्ठा करो, और तुम भी यहां रहना.” **5** तब अमासा यहूदिया के सैनिकों को इकट्ठा करने निकल पड़ा, मगर उसे निर्धारित समय से अधिक देर हो गई. **6** तब दावीद ने अबीशाई से कहा, “अब तो बिकरी का पुत्र शीबा अबशालोम की अपेक्षा हमारा कहीं अधिक नुकसान कर देगा. अपने स्वामी के सेवकों को लेकर उसका पीछा करो, कि वह गढ़ नगरों में प्रवेश न कर सके, और हमसे छिप जाए.” **7** तब योआब के साथ उसका पीछा करने निकल पड़े उनके साथ केरेथि, पेलेथी और अन्य शूर व्यक्ति भी अबीशाई के अगुवाई में बिकरी के पुत्र शीबा का पीछा उन्होंने येरूशलेम से शुरू किया. **8** जब वे गिबयोन के विशाल चट्टान के निकट आए, अमासा उनसे भेंट करने आ पहुंचा. इस समय योआब युद्ध के लिए तैयार थे. उनकी कमर में कमरबंध कसा हुआ था, उनकी जांघ पर म्यान में एक तलवार भी थी. जब वह आगे बढ़े, तलवार गिर पड़ी. **9** योआब ने अमासा से कहा, “मेरे भाई, सब कुछ कुशल तो है?” योआब ने यह कहते अमासा का चुंबन लेने के उद्देश्य से दाएं हाथ से उसकी दाढ़ी पकड़ी. **10** इस समय अमासा का ध्यान उस तलवार पर न था, जो योआब के हाथ में थी. योआब ने अमासा के पेट में तलवार से ऐसा वार किया, कि दूसरा वार किए बिना ही उसकी अंतड़ियां बाहर निकल भूमि पर आ गिरी, कि उसकी मृत्यु हो गई. तब योआब और उनके भाई अबीशाई ने बिकरी के पुत्र शीबा का पीछा किया. **11** योआब के एक युवा सैनिक ने अमासा के निकट खड़े होकर घोषणा की, “जो कोई योआब के समर्थक हैं, जो कोई दावीद पक्ष में है, वह योआब का अनुसरण करे!” **12** अमासा इस समय प्रमुख मार्ग पर अपने रक्त में लोट रहा था. जब इस व्यक्ति ने देखा कि उस मार्ग से आते जाते सभी यात्री उसे देख वहीं ठहर जाते हैं, उसने अमासा को मार्ग पर से हटाकर खेत में रख दिया और उसे एक वस्त्र से ढांक दिया. **13** जब मार्ग पर से अमासा को हटा दिया गया, तब सभी सैनिक बिकरी के पुत्र शीबा का पीछा करने योआब के साथ हो लिए. **14** जब शीबा इस्राएल राज्य के हर एक प्रदेश को पार करता हुआ बेथ-माकाह के आबेल पहुंचा, वहां सभी बिकरीवासी इकट्ठा होकर उसके पीछे-पीछे नगर में चले गए. **15** योआब के सभी साथी सैनिक वहां आ गए, और शीबा को बेथ-माकाह के आबेल में घेरा डाल दिया. इसके लिए उन्होंने नगर की दीवार के किनारे मिट्टी का ढेर इकट्ठा कर दिया. इसके बाद उन्होंने दीवार को तोड़ना शुरू कर दिया. **16** तब एक नगर में से एक चतुर स्त्री ने पुकारते हुए कहा, “सुनो! सुनो! जाकर योआब से यह कहना, यहां आइए, कि मैं आपसे बात कर सकूं.” **17** तब योआब वहां आए और उस स्त्री ने उनसे पूछा, “क्या आप ही योआब हैं?” “हां, मैं हूं.” योआब ने उत्तर दिया. तब उस स्त्री ने उनसे कहा, “अपनी सेविका की सुन लीजिए.” योआब ने कहा, “मैं सुन रहा हूं.” **18** तब उसने आगे कहा, “कुछ समय पहले यह कहा जाता था: ‘उन्हें यदि सलाह लेनी है’ तो सिर्फ आबेल ही से सलाह लो, इस प्रकार विवाद सुलझा लिया जाता था. **19** हम उनमें से हैं, जो इस्राएल में शांति प्रिय और सच्चे माने जाते हैं. आप एक ऐसे नगर को नष्ट करने के लिए उठे हैं, जो इस्राएल की माता है. आप याहवेह की मीरास को क्यों निगलना चाहते हैं?” **20** योआब ने उत्तर दिया, “मैं ऐसा कभी भी नहीं करूंगा कि यह नगर नष्ट किया जाए! **21** स्थिति ऐसी नहीं है. मगर एफ्राईम के पहाड़ी क्षेत्र से बिकरी के शीबा नामक व्यक्ति ने राजा दावीद के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया. बस, आप उसे हमें सौंप दें और मैं यहां से चला जाऊंगा.” उस स्त्री ने योआब को उत्तर दिया, “देखते रहिए, उसका सिर शहरपनाह से आपके सामने फेंका जाएगा.” **22** तब वह स्त्री अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण युक्ति के साथ नगर के सारी भीड़ के सामने पहुंची. परिणाम यह हुआ कि लोगों ने बिकरी के पुत्र शीबा का सिर उड़ाकर योआब के सामने फेंक दिया. तब योआब ने नरसिंगा फूंका और वे उस नगर से विसर्जित होकर अपने-अपने घर को लौट गए जबकि योआब राजा के पास येरूशलेम लौट गए. **23** अब योआब इस्राएल की सारी सेना के प्रधान हो गए; केरेथियों और पेलेथियों के प्रधान यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह थे; **24** बेगार के मजदूरों के अधिकारी थे अदोरम; अहीलूद के पुत्र यहोशाफ़ात लेखापाल थे; **25** शेवा सचिव थे; सादोक और अबीयाथर पुरोहित थे; **26** और याईर वासी ईरा भी दावीद के पुरोहित थे.

21 दावीद के शासनकाल में तीन साल का अकाल पड़ा; लगातार तीन वर्ष के लिए. दावीद ने याहवेह से इसका कारण जानने का प्रयास किया. याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, “शाऊल और उसके परिवार पर लहू का दोष है; उसने गिबियोनवासियों की हत्या की थी.” **2** इसलिये राजा ने बातचीत के लिए गिबियोनवासियों को आमंत्रित किया. (एक सच यह था कि गिबियोनवासी इस्राएल के वंशज नहीं बल्कि अमोरियों के बचे हुए भाग थे. इस्राएलियों ने उन्हें सुरक्षा का वचन दे दिया था. शाऊल ने अपने उत्साह में भरकर इस्राएल और यहूदाह के वंशजों के हित में इन्हें समाप्त करने का प्रयास किया था.) **3** दावीद ने गिबियोनवासियों से पूछा, “मैं आप लोगों के लिए क्या कर सकता हूं? मैं इसकी भरपाई किस प्रकार करूं कि आप लोग याहवेह की मीरास के प्रति आशीर्वाद ही दें?” **4** यह सुन गिबियोनवासियों ने उत्तर दिया, “शाऊल के परिवार से हमें न तो स्वर्ण की अपेक्षा है, न चांदी की, न ही हमारी इच्छा यह है कि इस्राएल के किसी भी व्यक्ति की हत्या करें.” राजा ने उन्हें आश्वासन दिया, “मैं तुम्हारे लिए जो कुछ तुम चाहो, करने के लिए तैयार हूं.” **5** यह सुन उन्होंने राजा से कहा, “जिस व्यक्ति ने हमारा जीवन नाश कर दिया, जिसने हमें मिटाने की युक्ति की कि हम इस्राएल देश की सीमा के भीतर देखे न जाएं, **6** उसके वंशजों में से हमें सात पुरुष सौंपे जाएं कि हम उन्हें याहवेह के चुने हुए शाऊल के गिबिया में ले जाकर याहवेह के सामने प्राण-दंड दें.” राजा ने उनसे कहा, “ऐसा ही होगा.” **7** मगर राजा ने याहवेह के सामने अपनी प्रतिज्ञा के कारण, शाऊल के पुत्र योनातन के पुत्र मेफ़िबोशेथ को सुरक्षा प्रदान की. **8** मगर राजा ने इसके लिए अइयाह की पुत्री रिज़पाह के आरमोनी और मेफ़िबोशेथ

नामक दो पुत्रों को, जो उसे शाऊल से पैदा हुए थे, और शाऊल की पुत्री मेरब के पांच पुत्रों को, जो उसे मेहोली बारज़िल्लई के पुत्र आद्रिएल से पैदा हुए थे, 9 गिबियोनवासियों को सौंप दिए. इन्हें उन्होंने याहवेह के सामने उस पर्वत पर प्राण-दंड दिया. इससे उसी समय सातों की मृत्यु हो गई. यह प्राण-दंड कटनी के शुरूआती दिनों दिया गया था, जौ की कटनी के शुरूआत में. 10 इस घटना के कारण अइयाह की पुत्री, रिज़पाह ने चट्टान पर अपने लिए मोटे कपडे का आसरा बना लिया और वह इसमें कटनी के शुरूआती दिनों से बारिश होने तक रही. वह न तो दिन में पक्षियों को शवों के निकट आने देती थी न रात में जंगली पशुओं को. 11 जब दावीद को अइयाह की पुत्री, शाऊल की उप-पत्नी रिज़पाह के इस काम की सूचना दी गई, 12 तब दावीद ने शाऊल और योनातन की अस्थियां याबेश-गिलआद के लोगों से ले लीं. ये अस्थियां याबेश-गिलआदवासियों ने बेथ-शान के नगर चौक से चुरा ली थी. (फिलिस्तीनियों ने शाऊल की हत्या के बाद उसी दिन वहां टांग दिया था.) 13 दावीद ने शाऊल और उनके पुत्र योनातन की अस्थियां ले जाकर उनकी अस्थियों के साथ इकट्टा कर दीं, जो यहां टांगे गए थे. 14 फिर उन्होंने बिन्यामिन के सेला नामक स्थान पर शाऊल और उनके पुत्र योनातन की अस्थियों को शाऊल के पिता कीश की कब्र में रख दिया. सभी कुछ राजा के आदेश के अनुसार किया गया. यह सब पूरा हो जाने पर परमेश्वर ने देश की दोहाई का उत्तर दिया. 15 फिलिस्तीनियों और इस्राएलियों के बीच दोबारा युद्ध छिड़ गया. दावीद अपनी सेना लेकर गए, और उनसे युद्ध किया. युद्ध करते हुए दावीद थक गए. 16 शत्रु सेना में इशबी बेनोब नामक दानवों का एक वंशज था, जिसके भाले का तोल लगभग साढ़े तीन किलो था. उसने एक नई तलवार धारण की हुई थी. उसने दावीद की हत्या करने की साजिश की. 17 मगर ज़ेरुइयाह का पुत्र अबीशाई दावीद की सहायता के लिए आ गया. उसने फिलिस्तीनी पर हमला किया और उसका वध कर दिया. दावीद के सैनिकों ने उनसे शपथ ली कि वह अब से युद्ध-भूमि में नहीं जाएंगे, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएल वंश का दीप ही बुझ जाए. 18 इसके बाद गोब नामक स्थान पर फिलिस्तीनियों से दोबारा युद्ध छिड़ गया. हुशाथी सिब्बेकाई ने साफ़ को मार गिराया. यह भी दानवों का वंशज था. 19 एक बार फिर गोब नामक स्थान पर ही फिलिस्तीनियों से युद्ध छिड़ गया. बेथलेहेमवासी जारे-ओरेगीम के पुत्र एलहानन ने गाथवासी गोलियथ को मार गिराया. उसका भाला बुनकर की धरणी के समान विशाल था. 20 उसके बाद गाथ में एक बार फिर युद्ध छिड़ गया. वहां एक बहुत ही विशाल डीलडौल का आदमी था, जिसके हाथों और पांवों में छः-छः उंगलियां थीं; पूरी चौबीस. वह भी दानवों के वंश का था. 21 जब उसने इस्राएल को चुनौती देने शुरू किए, दावीद के भाई सिमअह के पुत्र योनातन ने उसको मार दिया. 22 ये चारों गाथ नगर में दानवों का ही वंशज था. वे दावीद और उनके सेवकों द्वारा मार गिराए गए.

22 जब याहवेह ने दावीद को उनके शत्रुओं तथा शाऊल के आक्रमण से बचा लिया था, तब दावीद ने यह गीत याहवेह के सामने गाया: 2 दावीद ने कहा: "याहवेह मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरे छुड़ानेवाले हैं. 3 मेरे परमेश्वर, जिनमें मैं आसरा लेता हूं, मेरे लिए चट्टान हैं. वह मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग हैं. वह मेरा गढ़, मेरी शरण और मेरा छुड़ाने वाला हैं, जो कष्टों से मेरी रक्षा करते हैं. 4 "मैं दोहाई याहवेह की देता हूं, सिर्फ वही स्तुति के योग्य हैं, और मैं शत्रुओं से छुटकारा पा लेता हूं. 5 मृत्यु की लहरों में घिर चुका था; मुझ पर विध्वंस की तेज धारा का वार हो रहा था. 6 अधोलोक के तंतुओं ने मुझे उलझा लिया था; मैं मृत्यु के जाल के आमने-सामने आ गया था. **(Sheol h7585)** 7 "अपनी वेदना में मैंने याहवेह की दोहाई दी; मैंने अपने ही परमेश्वर को पुकारा. अपने मंदिर में उन्होंने मेरी आवाज सुन ली, उनके कानों में मेरा रोना जा पड़ा. 8 पृथ्वी झूलकर कांपने लगी, आकाश की नींव थरथरा उठी; और कांपने लगी. क्योंकि वह क्रुद्ध थे. 9 उनके नथुनों से धुआं उठ रहा था, उनके मुख की आग चट करती जा रही थी, उसने कोयलों को दहका रखा था. 10 उन्होंने आकाशमंडल को झुकाया, और उतर आए; उनके पैरों के नीचे घना अंधकार था. 11 वह करूब पर चढ़कर उड़ गए; वह हवा के पंखों पर चढ़कर उड़ गये! 12 उन्होंने अंधकार ओढ़ लिया, वह उनका छाता बन गया, घने-काले वर्षा के मेघ में घिरे हुए. 13 उनके सामने के तेज से कोयलों में आग जल गई. 14 स्वर्ग से याहवेह ने गर्जन की, और परम प्रधान ने अपने शब्द सुनाए. 15 उन्होंने बाण छोड़े, और उन्हें बिखरा दिया. बिजलियों ने उनके पैर उखाड़ दिए. 16 याहवेह की प्रताड़ना से, नथुनों से उनके सांस के झोंके से, सागर के जलमार्ग दिखाई देने लगे; संसार की नीवें खुल गई. 17 "उन्होंने स्वर्ग से हाथ बढ़ा मुझे थाम लिया; प्रबल जल प्रवाह से उन्होंने मुझे बाहर निकाल लिया. 18 उन्होंने मुझे मेरे प्रबल शत्रु से मुक्त किया, उनसे, जिन्हें मुझसे घृणा थी. वे मुझसे कहीं अधिक शक्तिमान थे. 19 संकट के दिन उन्होंने मुझ पर आक्रमण कर दिया था, किंतु मेरी सहायता याहवेह में मगन थी. 20 वह मुझे खुले स्थान पर ले आए; मुझसे अपनी प्रसन्नता के कारण उन्होंने मुझे छुड़ाया है. 21 "मेरी भलाई के अनुसार ही याहवेह ने मुझे प्रतिफल दिया है; मेरे हाथों की स्वच्छता के अनुसार उन्होंने मुझे ईनाम दिया है. 22 मैं याहवेह की नीतियों का पालन करता रहा हूं; मैंने परमेश्वर के विरुद्ध कोई दुराचार नहीं किया है. 23 उनके सारे नियम मेरे सामने बने रहे; उनके नियमों से मैं कभी भी विचलित नहीं हुआ. 24 मैं उनके सामने निर्दोष बना रहा. दोष भाव मुझसे दूर ही दूर रहा. 25 इसलिये याहवेह ने मुझे मेरी भलाई के अनुसार ही प्रतिफल दिया है, उनकी नज़रों में मेरी शुद्धता के अनुसार. 26 "सच्चे लोगों के प्रति आप स्वयं विश्वासयोग्य साबित होते हैं, निर्दोष व्यक्ति पर आप स्वयं को निर्दोष ही प्रकट करते हैं, 27 वह, जो निर्मल है, उस पर अपनी निर्मलता प्रकट करते हैं, कुटिल व्यक्ति पर आप अपनी चतुरता प्रगट करते हैं. 28 विनम्र व्यक्ति को आप छुटकारा प्रदान करते हैं, मगर आपकी दृष्टि घमंडियों पर लगी रहती है, कि कब उसे नीचा किया जाए. 29 याहवेह, आप मेरे दीपक हैं; याहवेह मेरे अंधकार को ज्योतिर्मय कर देते हैं. 30 जब आप मेरी ओर हैं, तो मैं सेना से टक्कर ले सकता हूं; मेरे परमेश्वर के कारण मैं दीवार तक फांद सकता हूं. 31 "यह वह परमेश्वर हैं, जिनकी नीतियां खरी हैं: ताया हुआ है याहवेह का वचन; अपने सभी शरणागतों के लिए वह ढाल बन जाते हैं. 32 क्योंकि याहवेह के अलावा कोई परमेश्वर है? और हमारे परमेश्वर के अलावा कोई चट्टान है? 33 वही परमेश्वर मेरे मजबूत आसरा हैं; वह निर्दोष व्यक्ति को अपने मार्ग पर चलाते हैं. 34 उन्हीं ने मेरे पांवों को हिरण के पांवों के समान बना दिया है; ऊंचे स्थानों पर वह मुझे सुरक्षा देते हैं. 35 वह मेरे हाथों को युद्ध की क्षमता प्रदान करते हैं; कि अब मेरी बांहें कांसे के धनुष तक को इस्तेमाल कर लेती हैं. 36 आपने मुझे छुटकारे की ढाल दी है; आपकी सहायता ने मुझे विशिष्ट पद दिया है. 37 मेरे पांवों के लिए आपने चौड़ा रास्ता दिया है, इसमें मेरे पगों के लिए कोई फिसलन नहीं है. 38 "मैंने अपने शत्रुओं का पीछा कर उन्हें नाश कर दिया है; जब तक वे पूरी तरह नाश न हो गए, मैं लौटकर नहीं आया. 39 मैंने उन्हें ऐसा पूरी तरह कुचल दिया कि वे पुनः सिर न उठा सकें; वे तो मेरे पैरों में आ गिरे. 40 शक्ति से आपने मुझे युद्ध के लिए सशस्त्र बना दिया; आपने उन्हें, जो मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए थे, मेरे सामने झुका दिया. 41 आपने मेरे शत्रुओं को पीठ दिखाकर भागने पर विवश कर दिया, जो मेरे विरोधी थे. मैंने उन्हें नष्ट कर दिया. 42 वे आशा ज़रूर करते रहे, मगर उनकी रक्षा के लिए कोई भी न आया. यहां तक कि उन्होंने याहवेह की भी दोहाई दी, मगर उन्होंने भी उन्हें उत्तर न दिया. 43 मैंने उन्हें पीसकर भूमि की धूल के समान बना दिया; मैंने उन्हें कुचल दिया, मैंने उन्हें गली के कीचड़ के समान रौंद डाला. 44 "आपने मुझे सजातियों के द्वारा उठाए कलह से छुटकारा दिया है;

आपने मुझे सारे राष्ट्रों पर सबसे ऊपर बनाए रखा; अब वे लोग मेरी सेवा कर रहे
हैं, जिनसे मैं पूरी तरह अपरिचित हूं. 45 विदेशी मेरे सामने झुकते आए; जैसे ही
उन्हें मेरे विषय में मालूम होते ही वे मेरे प्रति आज्ञाकारी हो गए. 46 विदेशियों
का मनोबल जाता रहा; वे कांपते हुए अपने गढ़ों से बाहर आ गए. 47 "जीवित
हैं याहवेह! धन्य हैं मेरी चट्टान! मेरे छुटकारे की चट्टान, मेरे परमेश्वर प्रतिष्ठित
हों! 48 परमेश्वर, जिन्होंने मुझे प्रतिफल दिया मेरा बदला लिया, और जनताओं
को मेरे अधीन कर दिया, 49 जो मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करते हैं. आपने मुझे
मेरे शत्रुओं के ऊपर ऊंचा किया है; आपने हिंसक पुरुषों से मेरी रक्षा की है. 50
इसलिये, याहवेह, मैं राष्ट्रों के सामने आपकी स्तुति करूंगा; आपके नाम का
गुणगान करूंगा. 51 "अपने राजा के लिए वही हैं छुटकारे का खंभा; अपने
अभिषिक्त पर, दावीद और उनके वंशजों पर, वह हमेशा अपार प्रेम प्रकट करते
रहते हैं."

23 यह दावीद द्वारा भेजा उनका आखिरी वचन है: "यिशै के पुत्र दावीद
की यह घोषणा है, वह व्यक्ति, जो परमेश्वर द्वारा उन्नत किया गया, वह
घोषणा कर रहा है, याकोब के परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त, इस्राएल का लोकप्रिय,
मधुर संगीतकार: 2 "याहवेह के आत्मा मेरे द्वारा बातें करते रहे हैं. उनका संदेश
मेरी जीभ पर रहता था. 3 इस्राएल के परमेश्वर ने, इस्राएल की चट्टान ने मुझसे
कहा, 'वह, जो मनुष्यों पर न्याय के साथ शासन करता है, परमेश्वर की श्रद्धा में
शासन करता है, 4 वह सुबह की आभा के समान है, जब सूर्योदय हो रहा होता
है, ऐसी सुबह, जो बादलों से छाई हुई, जब भूमि से बारिश के बाद कोमल घास
सूर्य प्रकाश में भूमि से अंकुरित होने लगती है.' 5 "क्या यह तथ्य नहीं, कि मेरे
वंश के विषय में परमेश्वर की यही मान्यता है? क्योंकि उन्होंने मुझसे सदा
की वाचा स्थापित की है, हर एक पक्ष में सुव्यवस्थित और सुरक्षित. क्या वह
मेरे उद्धार और अभिलाषा को उन्नत न करेंगे? 6 निकम्मे व्यक्ति फेंक दी गई
कंटीली झाड़ियों के समान हैं, उन्हें हाथों से इकट्ठा नहीं किया जा सकता; 7
जो व्यक्ति इन्हें इकट्ठा करने का काम करता है, वह लोहे के दंड और भाले की
छड़ को लेकर आता है; तब उन्हें आग में भस्म किया जा सकता है." 8 दावीद
द्वारा सेना में शामिल वीर योद्धाओं के नाम: तहकेमोनवासी योशेब-बश्शेबेथ; वह
तीन सेनापतियों में प्रमुख था. उसने अपने भाले से एक ही समय में आठ सौ
शत्रुओं का संहार किया था. 9 इन तीन शूरवीरों में दूसरा पद था अहोही के पुत्र
दोदो के पुत्र एलिएज़र का. वही उस समय दावीद के साथ था, जब वे युद्ध
के लिए मोर्चा बांधे फिलिस्तीनियों की ओर बेधड़क आगे बढ़ते गए, जबकि
इस्राएली सेना पीछे हट चुकी थी. 10 आगे बढ़कर उसने फिलिस्तीनियों का
संहार करना शुरू कर दिया, जब तक उसके हाथ थक न गए. उसका हाथ मानो
तलवार से चिपक गया था. उस दिन याहवेह द्वारा प्रदान की गई विजय अद्भुत
थी. इसके बाद सैनिक वहां आए अवश्य, मगर सिर्फ मृतकों की सामग्री लूटने.
11 इसके बाद नामित है हरारी अगी का पुत्र शम्माह. फिलिस्ती सेना लेही नामक
स्थल पर मोर्चा बांधे एकत्र थी. वहां मतूर का खेत था. लोग फिलिस्तीनियों से
डरकर भाग रहे थे. 12 उसने खेत के बीच में रहते हुए उनका सामना किया, उस
खेत की रक्षा करते रहे, और फिलिस्तीनियों को मार गिराया. याहवेह ने बड़ी
जीत के द्वारा उनकी रक्षा की. 13 कटनी के अवसर पर चट्टान में अदुल्लाम
गुफा में तीस प्रमुख अधिकारियों में से तीन दावीद से भेंटकरने गए. इस समय,
रेफाइम की फिलिस्तीनी सेना घाटी में शिविर डाले हुए थे. 14 इस समय दावीद
गढ़ में थे, और फिलिस्तीनी सेना बेथलेहेम में. 15 बड़ी इच्छा से दावीद कह
उठे, "कैसा सुखद होता अगर कोई बेथलेहेम फाटक के पास के कुएं से मुझे
पीने के लिए पानी ला देता!" 16 यह सुन ये तीन वीर योद्धा फिलिस्तीनियों के
शिविर में से बचते-बचाते जाकर उस कुएं से, जो बेथलेहेम के द्वार के निकट था,
दावीद के लिए जल ले आए. मगर दावीद ने वह जल पिया नहीं, उन्होंने उसे
याहवेह के सामने उंडेल दिया. 17 उन्होंने कहा, "याहवेह, मुझसे यह काम
कभी न हो. क्या, यह जल इन वीरों का लहू समान नहीं, जो अपने प्राण
जोखिम में डाल मेरे लिए यह लाए हैं?" इसलिये दावीद ने वह जल नहीं पिया.
ऐसे साहसिक थे इन वीरों के कार्य. 18 ज़ेरुइयाह का पुत्र, योआब का भाई
अबीशाई तीस सैनिकों पर अधिकारी था. उसने तीन सौ पर अपनी बर्छी घुमाई
और उनको मार गिराया. उसने भी उन तीनों के समान प्रतिष्ठा प्राप्त की. 19
तीसों में वही सबसे अधिक प्रख्यात था. वह उनका प्रधान बन गया, मगर वह
उन तीनों में से एक न था. 20 कबज़ीएल के एक वीर के पोते, यहोयादा के पुत्र,
बेनाइयाह ने बड़े-बड़े काम किए थे, उसने मोआब के अरीएल के दो पुत्रों को
मार गिराया. उसने ही उस दिन, जब बर्फ गिर रही थी, जाकर एक गड्ढे में बैठे
सिंह का वध किया था. 21 उसने एक बड़ा सा मिस्री का भी वध किया. उस
मिस्री के हाथ में भाला अवश्य था मगर बेनाइयाह ने जाकर अपनी छड़ी से
उसके भाले को उससे छीन लिया और उस मिस्र का वध उसी के भाले के कर
दिया. 22 यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह ने ये सारे काम किए, और उन तीन वीरों
के समान प्रतिष्ठा प्राप्त की. 23 वह उन तीसों में ही प्रख्यात हुआ, मगर उन तीन
के तुल्य नहीं. दावीद ने उसे अपने अंगरक्षक का अधिकारी नियुक्त कर दिया.
24 तीस योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे: योआब का भाई आसाहेल,
बेथलेहेम के दोदो का पुत्र एलहानन, 25 हेरोदी शम्माह, हेरोदी एलीका, 26
पेलेथी हेलेस, तकोआ निवासी इक्केश का पुत्र ईरा, 27 अनाथोथी अबीएज़ेर,
हुशाथी मबुन्ने, 28 अहोही सलमोन, नेतोफ़ाही माहाराई, 29 नेतोफ़ाही के
बाअनाह का पुत्र हेलेब, गिबियाह के बिन्यामिन परिवार समूह रिबाई का पुत्र
इथाई, 30 पिराथोनी बेनाइयाह, गाश के नालों का हिद्दै, 31 अरबाथवासी
अबीअल्बोन, बहूरीमी अज़मावेथ, 32 शालबोनी एलीअहाब, याशेन के पुत्र;
योनातन 33 हरारी शम्माह का पुत्र, अरारी शारार का अहीयम, 34 माकाहथि
का अहसबै का पुत्र एलिफेलेत, गीलोई अहीतोफ़ेल का पुत्र एलियाम, 35
कर्मेली हेस्रो, अराबी पारै, 36 ज़ोबाह के नाथान का पुत्र यिगाल; गादी बानी;
37 अम्मोनवासी सेलेक, बीरोथवासी नाहाराई, जो ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब का
हथियार उठानेवाला था; 38 इथरी ईरा इथरी गारेब; 39 और हित्ती उरियाह.
सब मिलाकर ये सैंतीस थे.

24 इस्राएल के विरुद्ध याहवेह का क्रोध एक बार फिर भड़क उठा. उन्होंने
दावीद को ही इस्राएल के विरुद्ध कर दिया. उन्होंने दावीद को उकसाया,
"इस्राएल और यहूदिया की गिनती करो." 2 तब राजा ने सेना के आदेशक
योआब और उनके सहयोगियों को आदेश दिया, "दान से लेकर बेअरशेबा तक
जाकर इस्राएल के सारे गोत्रों की जनगणना करो, कि मुझे जनसंख्या का पता
चल सके." 3 मगर योआब ने राजा से कहा, "जब तक आपकी आंखों में
ज्योति है, याहवेह आपके परमेश्वर वर्तमान जनसंख्या की सौ गुणा वृद्धि करें,
मगर महाराज, मेरे स्वामी, ऐसा करना क्यों चाह रहे हैं?" 4 मगर राजा के
आदेश के आगे योआब और अन्य प्रधानों का तर्क विफल ही रहा. तब योआब
और सेना के प्रधान संसद भवन से निकलकर इस्राएल की जनगणना के लिए
चल पड़े. 5 उन्होंने यरदन नदी पार कर अरोअर नामक स्थान पर शिविर
डाले. यह स्थान याज़र की ओर, गाद की तराई के बीच में है. 6 इसके बाद वे
गिलआद आ गए, और हित्तियों के क्षेत्र के कादेश में तब वे दान यअन पहुंचे.
दान यअन के बाद वे सीदोन के निकट जा पहुंचे. 7 फिर वे सोर के गढ़ पहुंचे,
जहां से उन्होंने हिव्वियों और कनानियों के सभी नगरों में गिनती पूरी की.
इसके बाद वे बेअरशेबा में यहूदिया के नेगेव पहुंचे. 8 जब वे संपूर्ण देश में गिनती
का काम पूरा कर चुके, वे येरूशलेम आ गए. अब तक नौ महीने और बीस दिन
पूरे हो चुके थे. 9 योआब ने राजा के सामने राज्य की जनगणना का लेखा प्रस्तुत
किया: इस्राएल में आठ लाख वीर योद्धा थे, और यहूदिया में पांच लाख, जिनमें

तलवार के कौशल की क्षमता थी. 10 जनगणना के परिणाम स्पष्ट होते ही दावीद
का मन उन्हें कचोटने लगा. सुबह जागने पर दावीद ने याहवेह से कहा, "यह
करके मैंने घोर पाप किया है. मगर याहवेह, अपने सेवक का अपराध दूर कर
दीजिए, क्योंकि यह मेरी बड़ी मूर्खता थी." 11 सुबह जागने पर दावीद को
याहवेह का यह संदेश भविष्यद्वक्ता गाद को भेज दिया गया. वह दावीद के लिए
नियुक्त दर्शी थे: 12 "जाओ और दावीद से यह कहो, 'याहवेह का यह संदेश
है, मैं तुम्हारे सामने तीन विकल्प प्रस्तुत कर रहा हूं. इनमें से तुम एक चुन लो,
कि मैं उसे तुम पर इस्तेमाल कर सकूं.'" 13 तब गाद दावीद के सामने आए
और उनसे यह कहा, "क्या तुम्हारे देश में तीन वर्ष के लिए अकाल भेजा जाए?
या तुम तीन महीने तक उन शत्रुओं से बचकर भागते रहो, जो तुम्हारा पीछा कर
रहे थे? या क्या देश में तीन दिन की महामारी हो? अब विचार करके निर्णय करो
कि मैं अपने भेजनेवाले को उत्तर दे सकूं." 14 तब दावीद ने गाद को उत्तर
दिया, "मैं बड़ी मुसीबत में हूं. हमें याहवेह के हाथ से दिया गया दंड ही सहने
दीजिए, क्योंकि अपार है उनकी कृपा. मुझे किसी मनुष्य के हाथ में न पड़ने
दें." 15 तब याहवेह ने उस समय से तय अवधि तक के लिए इस्राएल देश पर
महामारी भेज दी. दान से बेअरशेबा तक 70,000 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई.
16 जब विनाशक स्वर्गदूत ने येरूशलेम को ध्वस्त करने के उद्देश्य से उसकी ओर
हाथ बढ़ाया, याहवेह ने विनाश का विचार त्याग दिया. उन्होंने उस स्वर्गदूत को,
जो मनुष्यों को मार रहा था, कहा, "बस करो अब! अपना हाथ रोक दो!" इस
समय स्वर्गदूत यबूसी औरनन के खलिहान के निकट था. 17 जब दावीद ने
मनुष्यों का संहार कर रहे स्वर्गदूत को देखा, उन्होंने याहवेह को संबोधित कर
कहा, "पाप सिर्फ मैंने किया है. सिर्फ मैं ही हूं अपराधी; मगर ये भेड़ें; क्या दोष
है उनका? आपका यह दंड देता हुआ हाथ मुझ पर और मेरे पिता के परिवार के
विरुद्ध उठने दीजिए." 18 तब गाद उसी दिन दावीद के पास पहुंचे और उन्हें
आदेश दिया, "यबूसी औरनन के खलिहान में जाकर याहवेह के लिए वेदी
बनाओ." 19 दावीद ने गाद का आदेश पालन कर वैसा ही किया, जैसा याहवेह
ने उन्हें आदेश दिया था. 20 जब औरनन ने दृष्टि की, तो यह देखा कि राजा और
उनके सेवक उसी की ओर बढ़ते चले आ रहे थे. औरनन ने जाकर दंडवत हो
उनको नमस्कार किया. 21 औरनन ने विनती की, "क्या कारण है कि महाराज,
मेरे स्वामी को इस सेवक के यहां आने की आवश्यकता हुई है?" दावीद ने उत्तर
दिया, "तुमसे खलिहान खरीदने, कि मैं याहवेह के लिये वेदी बना सकूं. तब
बीमारी रुक जायेगी." 22 यह सुन औरनन ने दावीद से कहा, "महाराज, मेरे
स्वामी को जो कुछ सही लगे, ले लें और भेंट चढ़ा दें. अग्निबलि के लिए ये
बैल हैं, और बलि के लिए आवश्यक लकड़ी के लिए भूसी निकालने के ये
हथियार और जूआ प्रस्तुत हैं. 23 महाराज, यह सब औरनन महाराज को भेंट
में प्रस्तुत कर रहा है." औरनन ने राजा से यह भी कहा, "याहवेह, आपके
परमेश्वर, आपको स्वीकार करें." 24 मगर राजा ने औरनन को उत्तर दिया,
"नहीं, मैं तुम्हें इनका मूल्य देकर ही इन्हें स्वीकार करूंगा. मैं, याहवेह मेरे
परमेश्वर को ऐसी भेंट नहीं चढ़ा सकता, जिसका मैंने मूल्य नहीं चुका दिया
है." दावीद ने चांदी के पचास मुद्राएं देकर खलिहान और बैल मोल ले लिए.
25 दावीद ने वहां याहवेह के निमित्त वेदी बनाई और उस पर अग्निबलि और
मेल बलियां चढ़ाईं. तब याहवेह ने देश के लिए इस प्रार्थना को स्वीकार किया
जिससे इस्राएल देश से महामारी जाती रही.

1 राजा

1 राजा दावीद अब बहुत बूढ़े हो चुके थे. उन्हें ओढ़ाया अवश्य जाता, था
मगर कपड़े उनके शरीर को गर्म नहीं रख पा रहे थे. 2 इसलिये उनके
सेवकों ने उन्हें सलाह दी, “महाराज, हमारे स्वामी के लिए एक जवान लड़की
की खोज की जाए, वह महाराज की सेवा करे और उनके सामने ही रहे. वही
आपकी गोद में सोया करे, कि महाराज, हमारे स्वामी की देह गर्म रह सके.” 3
तब उन्होंने पूरे इस्राएल में एक सुंदर लड़की को खोजना शुरू कर दिया. उन्हें
शुनाम देश में ऐसी लड़की मिल गई, जिसका नाम था अबीशाग. वे उसे राजा
के सामने ले आए. 4 यह जवान लड़की बहुत ही सुंदर थी. उसे राजा की
सेविका बना दिया गया, वह उनकी सेवा करने में लग गई; मगर राजा ने उसके
साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाए. 5 उसी समय हेग्गीथ के पुत्र अदोनियाह ने
अपने आपको ऊंचा उठाते हुए यह घोषणा की: “अगला राजा मैं हूं.” उसने
अपने लिए रथ और घुड़सवार भी तैयार कर लिए और अपने आगे-आगे दौड़ने
के लिए पचास सैनिक भी. 6 उसके पिता ने उससे यह प्रश्न करते हुए कभी
नहीं रोका: “तुमने ऐसा क्यों किया है?” अदोनियाह एक सुंदर युवक था.
उसका जन्म अबशालोम के ठीक बाद ही हुआ था. 7 अदोनियाह ने जाकर
ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब और पुरोहित अबीयाथर से मिलकर बातचीत की.
उन्होंने अदोनियाह की तरफ होकर उसकी सहायता भी की. 8 मगर पुरोहित
सादोक, यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह, भविष्यद्वक्ता नाथान, शिमेई, रेइ और
दावीद के वीर योद्धाओं ने अदोनियाह को समर्थन नहीं दिया. 9 अदोनियाह
ने एन-रोगेल नामक स्थान पर जाकर ज़ोहेलेथ नामक चट्टान के पास भेड़ों,
बैलों और हष्ट-पुष्ट पशुओं की बलि चढ़ाई. इस मौके पर उसने अपने सभी
भाइयों—राजकुमारों और यहूदिया के राजकीय अधिकारियों को तो आमंत्रित
किया था, 10 मगर उसने इस मौके पर न तो भविष्यद्वक्ता नाथान को, न तो
बेनाइयाह को न अपने भाई शलोमोन को और न किसी वीर योद्धा को आमंत्रित
किया. 11 नाथान ने शलोमोन की माता बैथशेबा से कहा, “क्या तुमने सुना नहीं
कि हेग्गीथ का पुत्र अदोनियाह राजा बन गया है, और दावीद हमारे स्वामी इससे
अनजान हैं?” 12 इसलिये अब मेरी सलाह सुनो, कि तुम अपना और अपने पुत्र
शलोमोन का जीवन सुरक्षित रख सको: 13 इसी समय राजा दावीद से जाकर
कहो, “महाराज, मेरे स्वामी, क्या आपने अपनी दासी से यह शपथ न ली थी,
‘मेरे बाद तुम्हारा पुत्र शलोमोन ही राजा बनेगा, वही मेरे सिंहासन पर बैठेगा? तो
फिर अदोनियाह राजा कैसे बन बैठा?’ 14 जब तुम राजा से बातचीत कर ही रही
होगी, मैं वहां तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाऊंगा और तुम्हारी बातों में हामी भरूंगा.”
15 तब बैथशेबा राजा के कमरे में गई. राजा बहुत ही बूढ़े हो चुके थे और शूनामी
अबीशाग उनकी सेवा में लगी थी. 16 बैथशेबा ने झुककर राजा को नमस्कार
किया. राजा ने उससे पूछा, “क्या चाहती हो तुम?” 17 बैथशेबा ने उन्हें उत्तर
दिया, “मेरे स्वामी, आपने अपनी सेविका से याहवेह, आपके परमेश्वर की
शपथ ली थी, ‘तुम्हारा पुत्र शलोमोन ही मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे राज
सिंहासन पर बैठेगा.’ 18 अब देखिए, अदोनियाह राजा बन बैठा है, जबकि
महाराज, मेरे स्वामी, आपको इसके बारे में पता ही नहीं है. 19 अदोनियाह
ने बड़ी संख्या में बैलों, हष्ट-पुष्ट पशुओं और भेड़ों की बलि चढ़ाई है, और
उसने राजा के सभी पुत्रों को पुरोहित अबीयाथर और सेनापति योआब को भी
बुलाया है, मगर आपके सेवक शलोमोन को इसके लिए नहीं बुलाया गया है.
20 महाराज, मेरे स्वामी, इस समय सारे इस्राएल की नज़रें आप पर लगी हैं,
कि आप यह घोषणा करें कि महाराज, मेरे स्वामी के बाद कौन सिंहासन पर
बैठेगा. 21 नहीं तो यही होगा कि जैसे ही आप मेरे स्वामी हमेशा के लिए अपने
पूर्वजों में जा मिलेंगे, मुझे और मेरे पुत्र शलोमोन को अपराधी घोषित कर दिया
जाएगा.” 22 बैथशेबा राजा से यह बातें कर ही रही थी, कि भविष्यद्वक्ता
नाथान वहां आ गए. 23 उन्हें बताया गया, “भविष्यद्वक्ता नाथान आए हैं.” जब
भविष्यद्वक्ता नाथान राजा के सामने पहुंचे, उन्होंने राजा को दंडवत किया. 24
इसके बाद नाथान ने कहा, “महाराज, मेरे स्वामी, क्या यह आपकी घोषणा है
‘मेरे बाद अदोनियाह राज करेगा, वही मेरे सिंहासन पर बैठेगा?’ 25 क्योंकि
आज उसने जाकर बैल, हष्ट-पुष्ट पशु और बड़ी मात्रा में भेड़ों की बलि चढ़ाई
है. इस मौके पर उसने सभी राजकुमारों, सेनापतियों और पुरोहित अबीयाथर को
भी आमंत्रित किया है. ये सभी इस समय उसकी उपस्थिति में यह कहते हुए
खुशी मना रहे है. ‘अदोनियाह सदा जीवित रहे!’ 26 मगर अदोनियाह ने मुझे,
हां मुझे, आपके सेवक को, पुरोहित सादोक को, यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह और
आपके सेवक शलोमोन को नहीं बुलाया है. 27 क्या, यह सब महाराज, मेरे
स्वामी द्वारा किया गया है, और आपने अपने इन सेवकों को इस बात की सूचना
देना सही न समझा, कि महाराज, मेरे स्वामी के बाद उनके सिंहासन पर कौन
बैठेगा?” 28 जब राजा दावीद ने यह सुना, उन्होंने आदेश दिया, “मेरे सामने
बैथशेबा को बुलाया जाए.” बैथशेबा आकर राजा के सामने खड़ी हो गई. 29
राजा ने यह शपथ लेते हुए कहा, “जीवित याहवेह की शपथ, जिन्होंने मुझे हर
एक मुसीबत में से निकाला है, 30 मैंने इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह के सामने
जो शपथ ली थी, ‘तुम्हारा पुत्र शलोमोन मेरे बाद राजा होगा और वही मेरी
जगह पर मेरे सिंहासन पर बैठेगा,’ मैं आज ठीक यही पूरा करूंगा.” 31 यह
सुन बैथशेबा ने झुककर राजा को दंडवत करते हुए कहा, “राजा दावीद, मेरे
स्वामी, सदा जीवित रहें.” 32 राजा दावीद ने आदेश दिया, “पुरोहित सादोक,
भविष्यद्वक्ता नाथान और यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को मेरे सामने बुलाया
जाए.” जब वे राजा के सामने आए, 33 राजा ने उन्हें आदेश दिया, “मेरे पुत्र
शलोमोन को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाकर उसे अपने स्वामी के सेवकों के साथ
लेकर गीहोन चले जाओ. 34 वहां पहुंचकर पुरोहित सादोक और भविष्यद्वक्ता
नाथान इस्राएल का राजा होने के लिए शलोमोन को अभिषेक करें. इसके बाद
नरसिंग फूंकने के साथ यह घोषणा की जाए. ‘राजा शलोमोन सदा जीवित रहें!’
35 आप सभी इसके बाद शलोमोन के पीछे-पीछे आएं. तब वह यहां आकर मेरे
राज सिंहासन पर बैठे कि वह मेरे बाद मेरी जगह पर राजा हो जाए; क्योंकि
खुद मैंने उसे यहूदिया और इस्राएल पर राजा बनाया है.” 36 यहोयादा के पुत्र
बेनाइयाह ने राजा से कहा, “आमेन! महाराज, मेरे स्वामी के परमेश्वर, याहवेह
भी ऐसा ही कहें. 37 जिस प्रकार याहवेह महाराज, मेरे स्वामी के साथ साथ रहे
हैं, उसी प्रकार वह शलोमोन के साथ साथ बने रहें, और उसके सिंहासन को
मेरे स्वामी, राजा दावीद के सिंहासन से भी अधिक बढ़ाएं.” 38 तब पुरोहित
सादोक, भविष्यद्वक्ता नाथान, यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह और केरेथि और
पेलेथी शलोमोन को राजा दावीद के निज खच्चर पर बैठाकर उसे गीहोन ले
गए. 39 वहां पुरोहित सादोक ने मिलनवाले तंबू से लाए हुए सींग के तेल से
शलोमोन का अभिषेक किया. तब उन्होंने नरसिंगा फूंका और सभी ने एक
आवाज में यह नारे लगाए: “राजा शलोमोन सदा जीवित रहें!” 40 तब सारी
भीड़ बड़े ही आनंद में बांसुरी बजाते हुए राजा के पीछे-पीछे चलने लगी.
इतनी तेज थी उनकी आवाज कि इससे धरती डोल उठी! 41 यह आवाज
अदोनियाह और उसके सभी अतिथियों ने भी सुनी. इस समय वे अपना भोजन
खत्म कर ही रहे थे. जैसे ही योआब ने नरसिंगे की आवाज सुनी, वह पूछने
लगा, “नगर में इस चिल्लाहट का कारण क्या है?” 42 वह यह पूछताछ कर
ही रहा था, कि पुरोहित अबीयाथर का पुत्र योनातन वहां आ पहुंचा. अदोनियाह
ने उससे कहा, “यहां आओ तुम भले व्यक्ति हो, इसलिये भला समाचार ही लाए
होगे.” 43 योनातन ने उसे उत्तर दिया, “नहीं! हमारे स्वामी, महाराज दावीद
ने शलोमोन को राजा बना दिया है. 44 राजा दावीद ने उसे पुरोहित सादोक,

भविष्यद्वक्ता नाथान, यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह और केरेथि और पेलेथी भी
उसके साथ भेजे हैं. इसके अलावा उन्होंने शलोमोन को राजा दावीद के निज
खच्चर पर भी चढ़ा दिया है. 45 पुरोहित सादोक और भविष्यद्वक्ता नाथान ने
गीहोन में शलोमोन का राजाभिषेक कर दिया है. वे सभी वहां से बड़ी ही खुशी
में लौटे हैं. इसलिये नगर में यह आनंद मनाने की आवाज सुनाई दे रही है. यही
है वह चिल्लाहट, जो आपने सुनी है. 46 इन सबके अलावा अब शलोमोन
राज सिंहासन पर बैठे हैं. 47 वह सब होने के बाद राजा के सेवकों ने जाकर
महाराज, हमारे स्वामी को यह कहते हुए बधाईयां दी है 'परमेश्वर शलोमोन
के नाम को आपके नाम से भी अधिक ऊंचा करें, उनके राज सिंहासन को
आपके राज सिंहासन से भी अधिक बढ़ाएं.' यह सुन महाराज ने अपने पलंग
पर ही दंडवत किया. 48 साथ ही राजा ने यह भी कहा, 'धन्य हैं, याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर, जिन्होंने आज किसी को मेरे सिंहासन पर बैठने के लिए
चुना है, और उसे खुद मेरी आंखों ने देख लिया है.'" 49 यह सुन अदोनियाह
के सभी अतिथि बहुत ही डर गए. वे सभी उसी समय उठकर अपने-अपने
रास्ते पर निकल गए. 50 फिर अदोनियाह मन ही मन शलोमोन से डरने लगा;
इसलिये उसने तुरंत जाकर वेदी के सींग पकड लिए. शलोमोन को इस बात की
ख़बर इस प्रकार दी गई: 51 "सुनिए, सुनिए! अदोनियाह महाराज से डरता है,
इसलिये उसने जाकर यह कहते हुए वेदी के सींग थाम लिए हैं, 'आज महाराज
शलोमोन यह शपथ लें, कि वह अपने सेवक को तलवार से नहीं मारेंगे.'" 52
शलोमोन ने उत्तर दिया, "यदि वह अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति साबित
करे, उसका ज़रा सा भी नुकसान न होगा; मगर यदि उसमें दुष्टता का अंश भी
पाया गया तो उसकी मृत्यु तय है." 53 राजा शलोमोन ने आदेश दिया कि उसे
वेदी से लाकर उनके सामने पेश किया जाए. वह लाया गया, और उसे राजा
शलोमोन के सामने पेश किया गया. वह आया और राजा शलोमोन के सामने
दंडवत हो गया. राजा शलोमोन ने उसे आदेश दिया, "आप अपने घर को लौट
जाइए."

2 जब दावीद की मृत्यु का समय निकट आया, उन्होंने अपने पुत्र शलोमोन को
ये आदेश दिए: 2 "संसार की रीति के अनुसार मैं जा रहा हूं, तुम्हें मजबूत
होना होगा और तुम्हें पुरुषार्थ दिखाना होगा. 3 परमेश्वर के नियमों के पालन की
जो जवाबदारी याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सौंपी है—उनके नियमों का
पालन करने का, उनकी विधियों का पालन करने का, उनकी आज्ञा, चितौनियों
और गवाहियों का पालन करने का, जैसा कि मोशेह की व्यवस्था में लिखा है;
कि तुम्हारा हर एक काम जिसमें तुम लगे होते हो, चाहे वह कैसा भी काम हो;
करते हो, समृद्ध हो जाओ; 4 जिससे याहवेह मेरे बारे में ली गई अपनी इस शपथ
को पूरा कर सकें: 'यदि तुम्हारे पुत्रों का व्यवहार मेरे सामने उनके पूरे हृदय और
प्राण से सच्चा रहेगा, इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए तुम्हें कभी कमी न
होगी.' 5 "इसके अलावा तुम्हें यह भी मालूम है कि ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब
ने मेरे साथ कैसा गलत व्यवहार किया था—उसने इस्राएल की सेना के दो
सेनापतियों—नेर के पुत्र अबनेर और येथेर के पुत्र अमासा की किस प्रकार
हत्या की थी. उसने मेल के समय में भी युद्ध के समान लहू बहाया था. ऐसा
करके उसने अपने कमरबंध को और अपने जूतों को लहू से भिगो दिया. 6
अपनी बुद्धि का सही इस्तेमाल करो और ध्यान रहे कि उसके लिए वह इस
बुढ़ापे में पहुंचकर शांति से अधोलोक में प्रवेश न कर सके. (Sheol h7585) 7
"मगर गिलआदवासी बारज़िल्लई की संतान पर विशेष दया दिखाते रहना. ऐसा
करना कि वे भोजन के लिए तुम्हारे साथ बैठा करें; क्योंकि जब मैं तुम्हारे भाई
अबशालोम से छिपता हुआ भाग रहा था, उन्होंने मेरी बड़ी सहायता की थी. 8
"यह न भूलना कि इस समय तुम्हें बहुरीम के रहनेवाले बिन्यामिन वंशज गेरा के
पुत्र शिमेई के बारे में भी निर्णय लेना है. जब मैं माहानाईम की ओर बढ़ रहा
था, उसने मुझे कड़े शाप दिए थे. मगर जब मैं लौट रहा था, वह मुझसे मिलने
यरदन नदी के किनारे तक आया था. मैंने जीवित याहवेह की शपथ लेकर उसे
आश्वासन दिया, 'मेरी तलवार उस पर कभी न उठेगी.' 9 अब उसे दंड देने में
ढिलाई न करना. तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो, तुम्हें पता है कि सही क्या होगा.
उसके बूढ़े शरीर को बिना लहू बहाए अधोलोक में उतरने न देना." (Sheol
h7585) 10 इसके बाद दावीद अपने पूर्वजों में जा मिले. उन्हें उन्हीं के नगर की
कब्र में रख दिया गया. 11 इस्राएल पर दावीद के शासन की अवधि चालीस
साल थी. उन्होंने हेब्रोन में सात साल और येरूशलेम में तैंतीस साल शासन
किया. 12 शलोमोन अपने पिता दावीद के राज सिंहासन पर बैठे. उनका शासन
इस समय बहुत बढ़िया तरीके से दृढ़ हो चुका था. 13 एक दिन हेग्गीथ का पुत्र
अदोनियाह शलोमोन की माता बैथशेबा से मिलने आया. बथशेबा ने उससे पूछा,
"सब कुशल तो है न?" "जी हां, जी हां, सब कुशल है." उसने उत्तर दिया. 14
उसने आगे कहना शुरू किया, "मुझे आपसे एक विनती करनी है." बैथशेबा ने
उत्तर दिया, "हां, कहो." 15 तब उसने कहा, "आपको तो इस बात का पता है
ही कि वास्तव में यह राज्य मेरा था—पूरे इस्राएल की उम्मीद मुझसे ही थी. फिर
पासा पलट गया और राज्य मेरे भाई का हो गया; क्योंकि यह याहवेह द्वारा उसी
के लिए पहले से तय किया गया था. 16 अब मैं आपसे सिर्फ एक विनती कर
रहा हूं: कृपया मना न कीजिएगा." बैथशेबा ने उससे कहा, "हां, कहो." 17
अदोनियाह ने कहना शुरू किया, "आप कृपया राजा शलोमोन से विनती करें कि
वह मुझे शूनामी अबीशाग से विवाह करने की अनुमति दे दें; वह आपका कहना
नहीं टालेंगे." 18 "ठीक है!" बैथशेबा ने उत्तर दिया, "तुम्हारी यह विनती मैं
महाराज तक ज़रूर पहुंचा दूंगी." 19 तब बैथशेबा अदोनियाह के इस विषय को
लेकर राजा शलोमोन के सामने गई. उन्हें देखकर राजा उठ खड़े हुए, और उनसे
मिलने के पहले झुककर उन्हें नमस्कार किया. फिर वह अपने सिंहासन पर बैठ
गए, उन्होंने आदेश दिया कि एक आसन उनकी माता के लिए लाया जाए.
बैथशेबा उनके दाईं ओर उस आसन पर बैठ गईं. 20 बैथशेबा ने अपनी बात
कहनी शुरू की, "मैं तुमसे एक छोटी सी विनती कर रही हूं; कृपया मना न
करना." "मेरी माता, आप कहिए तो! मैं मना नहीं करूंगा." राजा ने उन्हें
आश्वासन दिया. 21 तब बैथशेबा ने आगे कहा, "अपने भाई अदोनियाह को
शूनामी अबीशाग से विवाह करने की अनुमति दे दो." 22 राजा शलोमोन ने
अपनी माता को उत्तर दिया, "मां, आप अदोनियाह के लिए सिर्फ शूनामी
अबीशाग की ही विनती क्यों कर रही हैं? आप तो उसके लिए पूरा राज्य
ही मांग सकती थीं; वह तो मेरा बड़ा भाई है. ऐसी ही विनती आप पुरोहित
अबीयाथर और ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब के लिए भी कर सकती हैं!" 23 तब
राजा शलोमोन ने याहवेह की शपथ लेते हुए कहा, "परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही,
बल्कि इससे भी कहीं अधिक करें, यदि अदोनियाह अपनी इस बात का मूल्य
अपने प्राणों से न चुकाए. 24 क्योंकि जीवित याहवेह ने ही मुझे मेरे पिता दावीद
के सिंहासन पर बैठाया है, उन्हीं ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मुझे राजवंश दिया
है. यह तय है कि आज ही अदोनियाह को प्राण-दंड दिया जाएगा." 25 राजा
शलोमोन ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को यह जवाबदारी सौंपी, और उसके
वार से अदोनियाह की मृत्यु हो गई. 26 इसके बाद राजा ने पुरोहित अबीयाथर
से कहा, "आप अनाथोथ चले जाइए, जहां आपकी पैतृक संपत्ति है. सही तो
यह था कि आपको मृत्यु दंड दिया जाता, मगर इस समय मैं आपकी हत्या नहीं
करूंगा, क्योंकि आपने मेरे पिता दावीद के सामने प्रभु याहवेह की वाचा के
संदूक को उठाया था, साथ ही आप मेरे पिता के बुरे समय में उनके साथ बने
रहे." 27 यह कहते हुए शलोमोन ने अबीयाथर को याहवेह के पुरोहित के पद
से हटा दिया, कि याहवेह का वह कहा हुआ वचन पूरा हो जाए, जो उन्होंने
शीलो में एली के वंश के संबंध में कहा था. 28 जब योआब को इसकी ख़बर

मिली, वह दौड़कर याहवेह के मिलनवाले तंबू में जा पहुंचा, और उसने जाकर वेदी के सींग पकड़ लिए. ज़ाहिर है कि योआब अदोनियाह के पक्ष में था; हालांकि अबशालोम के पक्ष में नहीं. 29 जब राजा शलोमोन को यह बताया गया, योआब याहवेह के मिलनवाले तंबू को भाग गया है, और वह इस समय वेदी पर है, तो शलोमोन ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को आदेश दिया, "जाओ, उसे वहीं खत्म कर दो!" 30 बेनाइयाह ने याहवेह के मिलनवाले तंबू के पास जाकर योआब से कहा, "यह महाराज का आदेश है, 'आप मिलनवाले तंबू से बाहर आइए!'" किंतु योआब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं यहीं अपने प्राण दे दूंगा." बेनायाह ने इसकी सूचना राजा को दे दी, "योआब ऐसा कर रहे हैं, और उन्होंने मुझे यह उत्तर दिया है." 31 राजा ने बेनायाह को उत्तर दिया, "वही करो, जैसा वह चाह रहा है. उसे खत्म करो, और उसका अंतिम संस्कार भी कर देना. यह करने के द्वारा तुम मेरे पिता के वंश और मुझ पर उस सारे बहाए गए लहू का दोष दूर कर दोगे, जो योआब द्वारा बेकार ही बहाया गया था. 32 याहवेह ही उन सभी कुकर्मों को उसके सिर पर ला छोड़ेंगे; क्योंकि उसने बिना मेरे पिता के जाने, अपने से कहीं अधिक भले और सुयोग्य व्यक्तियों की तलवार से हत्या की, नेर के पुत्र अबनेर की, जो इस्राएल की सेना के सेनापति थे, और येथेर के पुत्र अमासा की, जो यहूदिया की सेना के सेनापति थे. 33 तब उन दोनों की हत्या का दोष लौटकर योआब और उनके वंशजों पर हमेशा के लिए आता रहेगा; मगर दावीद, उनके वंशजों, उनके परिवार और सिंहासन पर याहवेह के द्वारा दी गई शांति हमेशा बनी रहे." 34 तब यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह भीतर गया, और योआब पर वार कर उसका वध कर दिया, और उसे बंजर भूमि के पास उसके घर पर उसका अंतिम संस्कार कर दिया. 35 राजा ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को योआब की जगह पर सेनापति और अबीयाथर के स्थान पर सादोक को पुरोहित बना दिया. 36 इसके बाद राजा ने शिमेई को बुलवाया और उसे आदेश दिया, "येरूशलेम में अपने लिए घर बनाइए और उसी में रहिए. ध्यान रहे कि आप यहां से और कहीं न जाएं, 37 क्योंकि जिस दिन आप बाहर निकलेंगे, और किद्रोन घाटी पार करेंगे यह समझ लीजिए कि उस दिन आपकी मृत्यु तय होगी, और इसका दोष आपके ही सिर पर होगा." 38 शिमेई ने राजा को उत्तर दिया, "महाराज, मेरे स्वामी द्वारा दिए गए निर्देश सही ही हैं. जो कुछ महाराज, मेरे स्वामी ने कहा है, आपका सेवक उसका पालन ज़रूर करेगा." तब शिमेई येरूशलेम में लंबे समय तक रहता रहा. 39 तीन साल खत्म होते-होते शिमेई के दो सेवक भागकर गाथ के राजा माकाह के पुत्र आकीश के पास चले गए. शिमेई को यह सूचना दी गई: "सुनिए, आपके सेवक इस समय गाथ में हैं." 40 यह सुन शिमेई ने अपने गधे पर काठी कसी और गाथ के लिए निकल गया, कि आकीश के यहां जाकर अपने सेवकों को खोज सके. शिमेई वहां से अपने सेवकों को लेकर येरूशलेम लौट आया. 41 शलोमोन को इस बात की सूचना दे दी गई कि शिमेई येरूशलेम से गाथ गया था और अब वह लौट चुका है. 42 यह सुनकर राजा शिमेई को बुलाने का आदेश दिया. राजा ने शिमेई से प्रश्न किया, "क्या मैंने बड़ी गंभीरता से आपसे याहवेह की शपथ लेकर यह चेतावनी न दी थी, 'जिस दिन आप येरूशलेम से बाहर निकलें, यह समझ लीजिए कि आपकी मृत्यु तय होगी'? जिसके उत्तर में आपने ही कहा था, 'महाराज, मेरे स्वामी द्वारा दिए गए निर्देश सही ही हैं.' 43 इतना होने पर भी आपने याहवेह के सामने ली गई शपथ का सम्मान और मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया?" 44 राजा ने शिमेई से यह भी कहा, "आपको उन सारे बुरे व्यवहारों और गलतियों का अहसास है, जो आपने मेरे पिता दावीद के साथ की थी; इसलिये याहवेह आपके द्वारा किए गए इन दुर्व्यवहारों को आपके ही ऊपर लौटा ले आएंगे. 45 मगर राजा शलोमोन धन्य रहेंगे और दावीद का सिंहासन याहवेह के सामने हमेशा के लिए बना रहेगा." 46 राजा ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को आदेश दिया, और उसने बाहर जाकर शिमाई पर ऐसा वार किया कि उसके प्राणपखेरु उड़ गए. इस प्रकार शलोमोन के हाथों में आया राज्य दृढ़ हो गया.

3 शलोमोन ने मिस्र के राजा फ़रोह के साथ वैवाहिक गठबंधन बनाया. उन्होंने फ़रोह की पुत्री से विवाह कर लिया, और उसे दावीद के नगर में ले आए. उन्होंने उसे येरूशलेम में तब तक रखा, जब तक अपने भवन, याहवेह के भवन और येरूशलेम की शहरपनाह बनाने का काम पूरा न हो गया. 2 लोग पूजा की जगहों पर अब भी बलि चढ़ाते थे, क्योंकि अब तक याहवेह के लिए कोई भी भवन बनाया नहीं गया था. 3 शलोमोन याहवेह से प्रेम करते थे. हां, अपने पिता दावीद की विधियों का पालन भी करते थे. इसके अलावा वह पूजा की जगहों पर बलि चढ़ाते और धूप भी जलाते थे. 4 एक बार राजा बलि चढ़ाने के लिए गिबयोन नगर गए. यह विशेष पूजा की जगह थी. शलोमोन हमेशा उस वेदी पर होमबलि के लिए एक हज़ार पशु चढ़ाते थे. 5 गिबयोन नगर में ही याहवेह शलोमोन पर सपने में दिखे. परमेश्वर ने उनसे कहा, "मांगो, जो तुम्हारी मनोकामना है!" 6 शलोमोन ने याहवेह को उत्तर दिया, "आपने अपने सेवक मेरे पिता, दावीद पर बहुत प्रेम दिखाया है, क्योंकि वह आपके सामने सच्चाई, ईमानदारी और मन की सीधाई से चलते रहे. आपने उन पर अपना अपार प्रेम इस हद तक बनाए रखा है कि, आज आपने उन्हें उनके सिंहासन पर बैठने के लिए एक पुत्र भी दिया है. 7 "याहवेह, मेरे परमेश्वर, अब आपने अपने सेवक को मेरे पिता दावीद की जगह पर राजा बना दिया है. यह होने पर भी, सच यही है कि मैं सिर्फ एक कम उम्र का बालक ही हूं—मुझे इसकी समझ ही नहीं कि किस परिस्थिति में कैसा फैसला लेना सही होता है. 8 आपका सेवक आपके द्वारा चुनी गई प्रजा के बीच है, जो इतनी विशाल है जिसकी गिनती भी नहीं की जा सकती है, जिनका हिसाब रखना मुश्किल है. 9 इसलिये प्रजा का न्याय करने के लिए अपने सेवक को ऐसा मन दे दीजिए कि मैं भले-बुरे को परख सकूं, नहीं तो कौन है जो आपकी इतनी विशाल प्रजा का न्याय करके उसे चला सके?" 10 शलोमोन की इस प्रार्थना ने प्रभु को प्रसन्न कर दिया. 11 परमेश्वर ने उन्हें उत्तर दिया, "इसलिये कि तुमने न तो अपनी लंबी उम्र के लिए, न धन-दौलत के लिए और न ही अपने शत्रुओं के प्राणों की विनती की है, बल्कि तुमने प्रार्थना की है, कि तुम्हें न्याय के लिए सही विवेक मिल सके; 12 देखो, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर रहा हूं. देखो, मैं तुम्हें बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं, ऐसा, कि न तो तुमसे पहले कोई ऐसा हुआ है, और न तुम्हारे बाद ऐसा कोई होगा. 13 मैं तुम्हें वह भी दूंगा, जिसकी तुमने प्रार्थना भी नहीं की; धन-दौलत और महिमा. तुम्हारे पूरे जीवन भर में कोई भी राजा तुम्हारे सामने खड़ा न हो सकेगा. 14 यदि तुम मेरे मार्ग पर चलोगे, मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन करते रहो, जैसा तुम्हारे पिता दावीद करते रहे, मैं तुम्हें लंबी उम्र दूंगा." 15 शलोमोन की नींद टूट गई. उन्हें लगा कि यह सिर्फ सपना ही था. वह येरूशलेम लौट गए, और वहां प्रभु की वाचा के संदूक के सामने खड़े हो गए, और उन्होंने होमबलि और मेल बलि चढ़ाई, और अपने सभी सेवकों के लिए एक भोज दिया. 16 एक दिन शलोमोन की सभा में दो वेश्याएं आ खड़ी हुईं. 17 उनमें से एक ने विनती की, "मेरे प्रभु, हम दोनों एक ही घर में रहती हैं. जब यह घर पर ही थी, मैंने एक बच्चे को जन्म दिया. 18 बच्चे को जन्म देने के तीसरे दिन इस स्त्री ने भी एक बच्चे को जन्म दिया. हम दोनों साथ साथ ही रह रही थी. घर में हम दोनों के अलावा कोई भी दूसरा व्यक्ति न था, घर में सिर्फ हम दोनों ही थी. 19 "रात में इस स्त्री के पुत्र की मृत्यु हो गई, क्योंकि बच्चा इसके नीचे दब गया था. 20 रात के बीच में जब मैं सो रही थी, इसने उठकर मेरे पास से मेरे पुत्र को लेकर अपने पास सुला लिया, और अपने मरे हुए पुत्र को मेरे पास लिटा दिया.

21 जब सुबह उठकर मैंने अपने पुत्र को दूध पिलाना चाहा, तो मैंने पाया कि वह
मरा हुआ था! मगर जब मैंने सुबह उसे ध्यान से देखा तो, यह मुझे साफ़ मालूम
हुआ कि वह मेरा पुत्र था ही नहीं, जिसे मैंने जन्म दिया था.” 22 इस पर दूसरी
स्त्री बोल उठी, “नहीं! यह ज़िंदा बच्चा ही मेरा पुत्र है. तुम्हारा पुत्र यह मरा हुआ
बच्चा है.” मगर पहली स्त्री ने कहा, “नहीं! मरा हुआ बच्चा तुम्हारा ही पुत्र है,
ज़िंदा बच्चा मेरा पुत्र है.” यह सब राजा के सामने हो रहा था. 23 तब राजा ने
कहा, “एक कहती है, ‘जो ज़िंदा है, वह मेरा पुत्र है, जो मरा है वह तुम्हारा पुत्र
है’ और दूसरी स्त्री दावा कर रही है, ‘नहीं! मरा हुआ पुत्र तुम्हारा है, ज़िंदा
मेरा.’” 24 राजा ने आदेश दिया, “मेरे लिए एक तलवार लेकर आओ.” सो
राजा के लिए एक तलवार लाई गई. 25 राजा ने उन्हें आदेश दिया, “जीवित
बच्चे को दो भागों में काट दिया जाए और दोनों स्त्रियों को आधा-आधा भाग
दे दिया जाए.” 26 तब वह स्त्री, जिसका बच्चा वास्तव में ज़िंदा था, राजा
से विनती करने लगी, क्योंकि वह अपने पुत्र के विषय में बहुत ही दुःखी हो
गई थी, “मेरे प्रभु, दे दीजिए यह ज़िंदा बच्चा इसे, इसकी हत्या बिलकुल न
कीजिए.” मगर दूसरी स्त्री ने कहा, “न बच्चा तुम्हारा होगा न मेरा; कर दो इसे
दो भागों में आधा!” 27 यह सुनते ही राजा ने आदेश दिया, “इस बच्चे की
हत्या बिलकुल न की जाए. ज़िंदा बच्चा इस पहली स्त्री को दे दो. इस बच्चे की
माता यही है.” 28 तब सारे इस्राएल ने इस निर्णय के बारे में सुना कि राजा ने
कैसा निर्णय दिया है, सबके मन में राजा का भय छा गया. क्योंकि वे यह साफ़
देख रहे थे कि न्याय करने के लिए राजा में परमेश्वर की बुद्धि थी.

4 राजा शलोमोन सारे इस्राएल देश के शासक थे. 2 उनके द्वारा चुने गए प्रमुख
अधिकारियों का ब्यौरा इस तरह है: सादोक के पुत्र अज़रियाह मुख्य
पुरोहित थे; 3 शिशा के पुत्र एलिहोरेफ और अहीयाह सचिव; अहीलूद का पुत्र
यहोशाफ़ात लेखापाल; 4 यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह पूरी सेना का सेनापति
था. सादोक और अबीयाथर पुरोहित थे. 5 नाथान का पुत्र अज़रियाह क्षेत्रीय
राज्यपालों का अधिकारी बनाया गया. नाथान के अन्य पुत्र ज़ाबूद, जो पुरोहित
भी थे, राजा के सलाहकार भी; 6 अहीशाहार राजपरिवार से संबंधित विषयों
का अधिकारी था; अब्दा का पुत्र अदोनिरम बंधुआ मजदूरों का अधिकारी था.
7 शलोमोन ने सारे इस्राएल राज्य के लिए बारह अधिकारियों को चुन रखा था.
इनकी जवाबदारी थी, राजा और उनके पूरे परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था
बनाए रखें. हर एक अधिकारी साल के एक महीने के लिए प्रबंध का ज़िम्मेदार
था. 8 उनके नामों की सूची इस प्रकार है: एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में बेन-हूर;
9 माकाज़ नगर में बेन-देकर, शआलबीम, बेथ-शेमेश और एलोन-बेथहानान;
10 अरुब्बोथ में बेन-हैसेद, उनका शासन सोकोह और पूरे हेफेर क्षेत्र पर भी था.
11 बेन-अबीनादाब पूरा नाफ़ात-दोर का प्रशासक था. उसकी पत्नी का नाम था
ताफ़ात, जो शलोमोन की पुत्री थी. 12 अहीलूद का पुत्र बाअना, तानख और
मगिद्दो में और येज्रील घाटी के ज़ारेथान के पास संपूर्ण बेथ-शान, बेथ-शान तक
और आबेल-मेहोलाह से लेकर योकमेअम; 13 बेन-गीबर रामोथ-गिलआद में
चुना गया शासक था. उनके अधिकार में मनश्शेह के पुत्र याईर के गांव भी थे,
जो गिलआद क्षेत्र में स्थित हैं. उसके अधिकार में अरगोब का क्षेत्र भी था, जो
बाशान में स्थित है—शहरपनाह और कांसे की छड़ों से सुरक्षित बना दिए गए
साठ विशाल नगर. 14 माहानाईम नगर में इद्दो का पुत्र अहीनादाब शासक था.
15 नफताली में, अहीमाज़ शासक था. उसने शलोमोन की पुत्री बसेमाथ से
विवाह किया था. 16 हुशाई का पुत्र बाअना आशेर और आलोथ में चुना गया
था. 17 इस्साखार में पारुआह का पुत्र यहोशाफ़ात; 18 बिन्यामिन में एला का
पुत्र शिमेई; 19 गिलआद प्रदेश में उरी का पुत्र गीबार, जो अमोरियों के राजा
सीहोन और इसके अलावा यहूदिया राज्य के लिए एक राज्यपाल भी चुना गया
था. 20 यहूदिया और इस्राएल में जनसंख्या समुद्र के किनारे की रेत के समान
अनगिनत थी. प्रजा सुख समृद्धि में रह रही थी. 21 शलोमोन की प्रभुता फरात
नदी के पश्चिम की ओर से लेकर फिलिस्तीनियों के देश तक और मिस्र देश की
सीमाओं तक सारे राज्यों पर हो गयी थी. ये सभी शलोमोन के पूरे जीवन भर
उन्हें भेंट भेजते रहे और उनकी सेवा करते रहे. 22 शलोमोन के राजपरिवार में
प्रतिदिन के भोजन में पांच हज़ार किलो मैदा; दस हज़ार किलो आटा 23 दस
हष्ट-पुष्ट बछड़ों का मांस, मैदानों में पाले गये बीस बैल, सौ भेड़ों और इन
सबके अलावा हिरण, चिंकारों और यखमूरों और हष्ट-पुष्ट पक्षियों का मांस
हुआ करता था. 24 फरात नदी के पश्चिम में हर जगह शलोमोन की प्रभुता थी,
तिफ़साह से अज्जाह तक, फरात नदी के पश्चिम के सभी राजाओं पर. पूरे राज्य
में चारों ओर शांति बनी हुई थी. 25 यहूदिया और इस्राएल पूरी तरह सुरक्षित थे.
दान से बेअरशेबा तक हर एक व्यक्ति शलोमोन के पूरे जीवन भर में अपने
अंगूरों और अंजीरों को खाते थे. 26 शलोमोन की घुड़शाला में चालीस हज़ार
घोड़े उनके रथों के इस्तेमाल के लिए थे, जिनके लिए बारह हज़ार घुड़सवार
चुने गए थे. 27 ठहराए गए महीने के लिए नियुक्त अधिकारी राजा शलोमोन के
लिए ज़रूरी चीज़ों का प्रबंध करते थे, कि शलोमोन और उनके मेहमानों के
सामने भोजन परोसा जाता रहे—कमी किसी चीज़ की नहीं होती थी. 28 घोड़ों
और तेज चलनेवाले घोड़ों के भोजन के लिए जौ और चारे का इंतजाम करना
भी इन्हीं की जवाबदारी थी. वे ज़रूरत के अनुसार ये सब पूरा कर देते थे. 29
परमेश्वर ने शलोमोन को बुद्धि, बहुत ही गहरा विवेक और असाधारण समझ दी
थी. 30 शलोमोन की बुद्धि पूर्वी देश के ज्ञानियों और मिस्र देश के विद्वानों की
बुद्धि से कहीं बढ़कर थी. 31 कारण यही था कि वह सभी मनुष्यों से अधिक
बुद्धिमान थे—एज्रावासी एथन से, हेमान से, कालकोल से और माहोल की संतान
दारदा से भी अधिक. आस-पास के सभी देशों में उनकी ख्याति फैल चुकी थी.
32 शलोमोन ने तीन हज़ार नीतिवचन कहे, और उनके द्वारा एक हज़ार पांच
गीत भी लिखे गए थे. 33 शलोमोन ने पेड़ों के बारे में अपनी बुद्धि व्यक्त की,
लबानोन के देवदार वृक्ष से लेकर दीवार में से उगने वाले जूफ़ा के पौधे के बारे में
भी. उन्होंने पशुओं, पक्षियों, रेंगते जंतुओं और मछलियों के बारे में भी अपना
ज्ञान प्रकट किया. 34 शलोमोन के ज्ञान की बातें सुनने सभी देशों से लोग आया
करते थे. इसके अलावा पृथ्वी के सभी राजाओं के लोग भी उनकी बुद्धि के बारे
में सुनकर शलोमोन के बुद्धि से भरे वचन सुनने आते रहते थे.

5 जब सोर देश के राजा हीराम को यह पता चला कि शलोमोन को उनके पिता
दावीद के स्थान पर राजा बनाया गया है, उन्होंने शलोमोन के पास अपने
राजदूतों को भेजे, दावीद हमेशा से ही हीराम के प्रिय रहे थे. 2 शलोमोन ने राजा
हीराम के लिए यह संदेश भेजा: 3 “आपको यह तो पता ही है कि विभिन्न युद्धों
में लगे रहने के कारण मेरे पिता दावीद, जब तक सभी शत्रु उनके अधीन न हो
गए, तब तक अपने परमेश्वर याहवेह की महिमा के लिए भवन बनाने में असमर्थ
ही रहे थे. 4 मगर अब याहवेह, मेरे परमेश्वर ने मुझे हर तरफ़ से शांति दी है.
अब न कोई मेरा शत्रु है, और न ही मुझे किसी ओर से किसी जोखिम की कोई
आशंका है. 5 इसलिये जैसा कि याहवेह ने मेरे पिता दावीद से कहा, ‘तुम्हारा
पुत्र, जिसे मैं तुम्हारे सिंहासन पर बैठाऊंगा, वही होगा, जो मेरी महिमा के लिए
भवन बनवाएगा.’ मेरी इच्छा है कि मैं याहवेह मेरे परमेश्वर की महिमा के लिए
भवन बनवाऊं. 6 “इसलिये आप अपने सेवकों को आदेश दें कि वे मेरे लिए
लबानोन से देवदार के पेड़ कांटे. इन सेवकों के साथ मेरे सेवक भी होंगे,
और मैं आपके इन सेवकों को आपके द्वारा तय किया गया वेतन देता जाऊंगा,
क्योंकि यह तो आपको मालूम ही है कि हमारे बीच ऐसा कोई नहीं है, जिसे
सीदोनियों के बराबर लकड़ी का काम आता हो.” 7 शलोमोन के ये वचन सुन
हीराम बहुत ही खुश होकर कह उठा, “आज धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने इस बड़े
देश पर शासन के लिए दावीद को एक बुद्धिमान पुत्र दिया है.” 8 तब हीराम ने

शलोमोन को यह संदेश भेजा: "आपके द्वारा भेजा गया संदेश मैंने सुन लिया है.
देवदार और सनोवर की लकड़ी से संबंधित आपके द्वारा कहे गये सब कुछ करने
के लिए मैं तैयार हूं. 9 मेरे सेवक लकड़ी लबानोन से भूमध्य-सागर तक पहुंचा
देंगे; मैं उनके बेड़े बना दूंगा, कि वे समुद्र के मार्ग से आपके द्वारा ठहराए गए
स्थान तक भेजे जा सकें. वहां ये बेड़े खोल दिए जाएंगे. वहां से आप इन्हें उठा
सकेंगे. आपको करना यह होगा: आप मेरे परिवार के लिए भोजन देकर मेरी
भी इच्छा पूरी कर दीजिए." 10 शलोमोन ने देवदार और सनोवर की जितनी
लकड़ी चाही उतना हीराम ने दे दी. 11 दूसरी ओर शलोमोन ने हीराम को तीन
हज़ार छः सौ टन गेहूं और चार लाख चालीस हज़ार लीटर शुद्ध ज़ैतून का तेल
भेज दिया. शलोमोन यह हर साल करते रहे. 12 अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार
याहवेह ने शलोमोन को बुद्धि से भर दिया. शलोमोन और हीराम के बीच मैत्रीपूर्ण
संबंध थे. दोनों ने आपस में वाचा बांध ली थी. 13 राजा शलोमोन ने सारे
इस्राएल देश से इस काम के लिए बेगारी पर पुरुष लगाए, जिनकी कुल संख्या
तीस हज़ार हो गई. 14 इनमें से वह दस हज़ार को पूरे साल में बारी-बारी से हर
महीने लबानोन भेज दिया करते थे. ये कर्मचारी एक महीने लबानोन में और दो
महीने अपने घर में रहते थे, अदोनिरम इन सभी कर्मचारियों के ऊपर अधिकारी
थे. 15 शलोमोन ने पहाड़ी क्षेत्र में सत्तर हज़ार बोझा ढोनेवाले और अस्सी हज़ार
पत्थर का काम करनेवाले चुने थे. 16 इन सबके अलावा पूरे काम को देखने के
लिए तीन हज़ार तीन सौ अधिकारी भी चुने गए थे, कि वे सारी योजना और
कर्मचारियों की गतिविधि पर नज़र रख सकें. 17 राजा के आदेश पर उन्होंने
बड़े-बड़े कीमती पत्थर खोद निकाले, कि इन्हें तराशकर भवन की नींव के
लिए इस्तेमाल किया जा सके. 18 इस प्रकार शलोमोन के कर्मचारियों ने,
हीराम के कर्मचारियों और गिबलियों ने मिलकर भवन बनाने के लिए लकड़ी
और पत्थर तैयार किए.

6 यह उस समय की बात है, जब इस्राएलियों को मिस्र देश से निकले हुए चार
सौ अस्सी साल हो चुके थे, और इस्राएल पर शलोमोन के शासन के चार
साल. शलोमोन ने साल के ज़ीव नामक दूसरे महीने में याहवेह के लिए भवन
बनाना शुरू किया. 2 राजा शलोमोन ने यह जो भवन याहवेह के लिए बनाया,
उसकी लंबाई सत्ताईस मीटर और चौड़ाई नौ मीटर ऊंचाई चौदह मीटर थी. 3
भवन के बीच के द्वार-मंडप की लंबाई भी नौ मीटर थी, जितनी भवन की
चौड़ाई थी. भवन के सामने इसकी गहराई साढ़े चार मीटर थी. 4 शलोमोन ने
भवन की खिड़कियां आकर्षक जालीदार बनाईं थी. 5 भवन की बाहरी दीवारों
के चारों ओर शलोमोन ने अनेक कमरों का परिसर बनाया, दोनों ओर पीछे भी.
6 सबसे नीचे का तल सवा दो मीटर चौड़ा था. बीच वाला तल दो मीटर सत्तर
सेंटीमीटर, और तीसरा तीन मीटर पन्द्रह सेंटीमीटर चौड़ा. उन्होंने भवन की
बाहरी दीवार कुर्सीदार बना दिए थे, कि बोझ उठाती बल्लियों को मूल भवन के
भीतर तक न पहुंचना पड़े. 7 भवन के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थरों को वहीं
तैयार कर लिया गया था, जहां से उन्हें निकाला जा रहा था. फलस्वरूप जब
नया भवन बनाया जा रहा था, वहां न तो घन की, न हथौड़े की और न किसी भी
लोहे के औज़ार की आवाज सुनाई दी. 8 बीचवाले तल का प्रवेश भवन के
दक्षिण ओर था: जब किसी को तीसरे तल को जाना होता था, वह सीढ़ियों से
चढ़कर बीचवाले तल पर पहुंचता था, फिर वहां से तीसरे तल को; 9 इस प्रकार
शलोमोन ने भवन बनाना समाप्त किया. भवन की छत उन्होंने देवदार की
बल्लियों और पटरियों से बनाई. 10 उन्होंने पूरे भवन के आस-पास छज्जे
बनाए, जिसकी ऊंचाई सवा दो मीटर थी. इन सभी को मूल भवन के देवदार से
जकड़ दिया गया था. 11 यह सब हो जाने पर शलोमोन को याहवेह का यह
संदेश भेजा गया. 12 "तुम जिस भवन को बना रहे हो, उसके संबंध में, यदि तुम
मेरी विधियों का पालन करते रहोगे, और मेरी आज्ञाओं को पूरा मानोगे और मेरे
आदेशों का पालन करोगे, तब मैं तुम्हारे साथ अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी करूंगा, जो
मैंने तुम्हारे पिता दावीद से की थी. 13 मैं इस्राएल वंशजों के बीच रहूंगा और
उन्हें छोड़ न दूंगा." 14 शलोमोन ने भवन बनाना समाप्त किया. 15 फिर उसने
भवन की दीवारों के अंदर से देवदार की पटियां लगवा दीं. उन्होंने भवन की
ज़मीन से लेकर भवन की छत तक दीवारों का अंदरूनी भाग देवदार लकड़ी से
ढकवा दिया. इसके बाद उन्होंने भवन का तल सनोवर की लकड़ी से ढकवा
दिया. 16 शलोमोन ने भवन की पीछे की दीवार से नौ मीटर भीतर की ओर एक
दीवार बनवाई. यह ज़मीन से छत तक देवदार की बनी हुई थी. इससे एक अंदर
का कमरा बन गया. यही परम पवित्र स्थान था. 17 इसके सामने बीच वाला
स्थान अठारह मीटर लंबा था. 18 भवन की दीवारों का अंदरूनी भाग देवदार
की लकड़ी से ढका था, जिस पर कलियां और खिले हुए फूल खुद हुए थे.
सभी कुछ देवदार से ढका था-पत्थर कहीं से भी दिखाई नहीं पड़ता था. 19
तब उन्होंने अंदरूनी पवित्र स्थान बनवाया. यह भवन के भीतर था, कि इसमें
याहवेह की वाचा का संदूक प्रतिष्ठित किया जा सके. 20 अंदरूनी कमरे की
लंबाई छः मीटर, चौड़ाई छः मीटर और ऊंचाई भी छः मीटर ही थी. इसे शुद्ध
कुन्दन से मढ़ दिया गया था. उन्होंने देवदार से बनी हुई वेदी को भी मढ़ दिया.
21 शलोमोन ने भवन के भीतरी भाग को शुद्ध कुन्दन से मढ़वा दिया. तब उन्होंने
अंदरूनी पवित्र स्थान के सामने सोने की सांकलें खींचवा दीं. इसे भी उन्होंने
सोने से मढ़वा दिया. 22 पूरे भवन को उन्होंने सोने से मढ़वा दिया. इस प्रकार पूरे
भवन का काम पूरा हुआ. इसके अलावा उन्होंने अंदरूनी पवित्र स्थान की पूरी
वेदी को सोने से मढ़वा दिया. 23 उन्होंने जैतून की लकड़ी से दो करूब बनवाए.
हर एक की ऊंचाई साढ़े चार-साढ़े चार मीटर थी. 24 करूब का एक पंख सवा
दो मीटर था और दूसरा पंख भी सवा दो मीटर का. पहले पंख के छोर से दूसरे
पंख के छोर तक लंबाई साढ़े चार मीटर थी. 25 दूसरा करूब भी साढ़े चार
मीटर ऊंचा था. दोनों ही करूबों की नाप बराबर थी. 26 दोनों करूब की
ऊंचाई साढ़े चार मीटर थी. 27 शलोमोन ने करूबों को अंदरूनी कमरे के बीच
में स्थापित कर दिया. करूबों के पंख फैले हुए थे, जिससे पहले करूब का एक
पंख एक दीवार को छू रहा था, तो दूसरे का एक पंख दूसरी दीवार को. इससे
भवन के बीच में उनके पंख एक दूसरे को छू रहे थे. 28 शलोमोन ने करूबों को
भी सोने से मढ़वा दिया था. 29 इसके बाद शलोमोन ने भवन की दीवारों के
भीतर और बाहर और बाहरी पवित्र स्थानों पर करूब, खजूर के पेड़ और खिले
हुए फूलों की आकृतियां खुदवा दीं. 30 भवन का फर्श उन्होंने भीतरी और
बाहरी पवित्र स्थानों में सोने से मढ़वा दिया. 31 अंदरूनी पवित्र स्थान में प्रवेश
के लिए शलोमोन ने जैतून के पेड़ की लकड़ी के दरवाजे बनवाए. इनकी चौखट
पांच कोण के थे. 32 उन्होंने जैतून वृक्ष की लकड़ी के दो दरवाजे बनवाए. इन
पर उन्होंने करूबों, खजूर के पेड़ों और खिले हुए फूलों की आकृति खुदवाई
और फिर इन्हें सोने से मढ़वा दिया. उन्होंने करूबों और खजूर के पेड़ों पर सोने
का पत्रक मढ़वा दिया. 33 उन्होंने बीचवाले स्थान में प्रवेश के लिए जैतून की
लकड़ी के चौकोर चौखट और 34 दरवाजे उन्होंने सनोवर की लकड़ी के
बनवाए. हर एक दरवाजे के दो-दो पल्ले थे, जो मोड़ने पर दोहरे हो जाते थे. 35
इन पर शलोमोन ने करूब, खजूर के पेड़ और खिले हुए पेड़ों की आकृतियां
खुदवाईं. इन सभी पर उन्होंने एक बराबर सोने का पत्रक मढ़वा दिया. 36
भीतरी कमरा उन्होंने काटे संवारे गए पत्थरों की तीन पंक्तियों और देवदार की
बल्लियों की एक सतह से बनवाया. 37 चौथे साल में याहवेह के भवन की
नींव रखी गई थी, यह ज़ीव नाम का महीना था. 38 ग्यारहवें साल में बूल महीने
में जो वास्तव में आठवां महीना है, हर तरह से भवन बनने का काम पूरा हो गया
था. यह सब हर रीति से योजना के अनुसार ही हुआ था, यानी भवन बनाने के
काम में सात साल लग गए थे.

7 इसी समय शलोमोन अपना महल भी बनवा रहे थे, जिसको बनने में तेरह
साल लग गए. 2 उन्होंने लबानोन वन महल जो बनवाया, यह पैंतालीस
मीटर लंबा, साढ़े बाईस मीटर चौड़ा और साढ़े तेरह मीटर ऊंचा था. इसमें
देवदार के मीनारों की चार पंक्तियां थी, जिन पर देवदार ही की कड़ियां रखी
थी. 3 कमरों की छत देवदार पटरियों से ढकी थी, जो पैंतालीस मीनारों पर
थी; हर एक पंक्ति में पन्द्रह 4 खिड़कियों की चौखटें तीन पंक्तियों में थी, और
खिड़कियां आमने-सामने तीन पंक्तियों में थी. 5 खिड़कियों और दरवाजों
के चौखट चौकोर थे और खिड़कियां तीन पंक्तियों में आमने-सामने थी. 6
शलोमोन ने साढ़े बाईस मीटर लंबे और साढ़े तेरह मीटर चौड़े एक कमरे का
निर्माण किया. इस कमरे के सामने मीनारों पर रखा छज्जा बनाया गया—एक
बरामदा. 7 फिर उन्होंने सिंहासन का कमरा भी बनाया, जहां से वह न्याय करने
पर थे. इसे न्याय कक्ष भी कहा गया, इसे भी ज़मीन से छतों तक देवदार की
पटरियों से ढक दिया. 8 उनका अपना घर, जहां से वह न्याय करने पर थे, इस
कमरे के पीछे बनाया गया. यह भी इसी प्रकार की कलाकृति के अनुसार बनाया
गया. शलोमोन ने फ़रोह की पुत्री, अपनी विवाहित पत्नी के लिए भी इसी महल
के समान महल बनवाया. 9 ये सभी कीमती पत्थरों से बनाए गए थे, जिन्हें
सावधानीपूर्वक माप के अनुसार किया गया था; अंदरूनी हिस्सा, बाहरी हिस्सा,
नींव से लेकर छत तक, बड़े आंगन तक. 10 नींव के लिए इस्तेमाल किए गए
पत्थर बहुत बड़े-बड़े थे जिनकी लंबाई साढ़े चार मीटर और चौड़ाई साढ़े तीन
मीटर थी. ये सभी पत्थर कीमती श्रेणी के थे. 11 इनके ऊपर कीमती पत्थर और
देवदार के खंभे भी थे. 12 बड़े आंगन में चारों ओर काटी गई चट्टानों की तीन
पंक्तियां थी. उसके बाद देवदार की छतों की एक पंक्ति; ठीक ऐसी ही संरचना
याहवेह के भवन के भीतरी आंगन और भवन की बीच वाली ड्योढ़ी की थी. 13
राजा शलोमोन ने दूत भेजकर सोर देश से हूराम को बुलवा लिया. 14 हूराम
विधवा का पुत्र था, जो नफताली की वंशज थी. हूराम का पिता सोर देश का ही
वासी था वह कांसे की धातु का शिल्पी था. उसमें ऐसी बुद्धि और कौशल था कि
वह कांसे से किसी भी प्रकार का काम कर सकता था. उसने आकर राजा
शलोमोन का सारा काम भार अपने हाथ में ले लिया. 15 उसने कांसे के दो खंभे
गढ़े. एक खंभे की ऊंचाई आठ मीटर की थी और इसका घेरा साढ़े पांच मीटर.
दूसरा खंभा भी इसी के समान था. 16 उसने ढाले गए कांसे के दो सिर बनाए कि
इन्हें खंभों के ऊपर बैठाया जा सके. हर एक सिर की ऊंचाई सवा दो मीटर थी.
17 इसके बाद हूराम ने दोनों ही खंभों के सिरों के लिए कड़ियों में बुनी हुई
सात-सात चौकोर जालीदार झालरें बनवाई. 18 इसी प्रकार उसने अनार गढ़े
और खंभों के सिरों को ढकने के लिए दो पंक्तियों में अनार लटका दिए.
19 ड्योढ़ी के खंभों के सिरों पर सोसन के फूल उकेरे गए थे. इनकी ऊंचाई
लगभग दो मीटर थी. 20 दोनों खंभों पर सिर बैठाए गए थे दोनों खंभों की
गोलाकार रचना के ऊपर जालीदार रचना के पास खंभों के सिरों के चारों ओर
दो पंक्तियों में दो सौ अनार उकेरे गए थे. 21 उन्होंने मंदिर के बरामदा में खंभे
बनाए, एक दक्षिण दिशा में, दूसरा उत्तर दिशा में. दक्षिण खंभे को उन्होंने याकिन
नाम दिया और उत्तरी खंभे को बोअज़. 22 खंभों के ऊपरी छोर पर सोसन के
फूल उकेरे गए थे. यह सब होने पर खंभों से संबंधित सारा काम पूरा हो गया.
23 शलोमोन ने ढली हुई धातु का एक पानी का हौद बनवाया, जो गोल था और
उसका व्यास साढ़े चार मीटर और उसकी ऊंचाई थी सवा दो मीटर इसका कुल
घेर था साढ़े तेरह मीटर. 24 इस कुंड की किनारी के नीचे सज्जापूर्ण तुम्बियों
की दो पंक्तियां ढाली गई थी; प्रति मीटर बीस तुम्बियों. 25 यह हौद बारह
बछड़ों पर रखा, गया था; तीन उत्तर दिशा की ओर मुख किए हुए थे, तीन
पश्चिम दिशा की ओर, तीन दक्षिण दिशा की ओर, और तीन पूर्व दिशा की ओर
थे. यह हौद इन्हीं पर रखा गया था, और इन सभी के पिछले पैर अंदर की ओर
थे. 26 इस कुंड की धातु की मोटाई लगभग आठ सेंटीमीटर थी. इसकी किनारी
को वैसा ही आकार दिया गया था जैसा किसी कटोरे को सोसन के फूल के
समान आकार दिया गया हो. इस कुंड में लगभग नब्बे हज़ार लीटर जल समाता
था. 27 हूराम ने कांसे के दस ठेले बनाए. हर एक ठेले की लंबाई एक मीटर
अस्सी सेंटीमीटर, चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर और ऊंचाई एक मीटर
पैंतीस सेंटीमीटर थी. 28 इन ठेलों की बनावट इस प्रकार की थी: इनमें ऐसे
हिल्ले थे, जो चौखटों में लगाए थे. 29 चौखटों में लगाए गए इन हिल्लों पर
सिंह, बैल और करूबों की आकृतियां उभरी हुई थी. इन आकृतियां के ऊपर
और नीचे तिरछी झालरें लटकी हुई थी. 30 हर एक ठेले के कांसे के चार-चार
पहिये और कांसे की धुरियां थी. चारों कोनों पर चिलमची रखने का स्थान था.
ये आधार ढाल कर बनाए गए थे. इनके किनारों पर दोनों ओर झालरें लटक
रही थी. 31 ठेलों के भीतर गोलाकार गड्ढा था, जो लगभग आधा मीटर गहरा
था. इसे एक आधार पर रखा गया था, जो लगभग सत्तर सेंटीमीटर था, जिस पर
चित्रकारी की गई थी. ठेले के हिल्ले गोल नहीं, चौकोर थे. 32 चारों पहिये
हिल्लों के नीचे थे, और पहियों की धुरियां ठेलों की मूल संरचना का ही
अंग थी. पहियों की ऊंचाई लगभग सत्तर सेंटीमीटर थी. 33 इन पहियों को
ठीक रथ के पहियों समान गढ़ा गया था; उनकी धुरियां, नेमियां, आरियां और
नाभियां सभी ढाले हुए थे. 34 हर एक ठेले के चारों कोनों पर एक-एक टेक था
और यह टेक ठेले ही का अंग था. 35 ठेले के ऊपरी ओर पर लगभग तेईस
सेंटीमीटर चौड़ी गोल पट्टी लगी हुई थी. ठेले की ऊपरी टेके और हिल्ले धातु
के एक ही टुकड़े से गढ़ गए थे; वे ठेले से जोड़े नहीं गए थे. 36 हूराम ने
हिल्लों पर उनकी किनारियों और रिक्त स्थानों पर करूब, सिंह और खजूर
वृक्ष उकेर दिए थे. इन सभी के आस-पास झालरें उकेरी गई थी. 37 हूराम ने दस
ठेले इस प्रकार बनाए. वे सभी एक ही सांचे, एक ही आकार में ढाले गए थे. 38
हूराम ने कांस्य की दस चिलमचियां भी बनाईं; हर एक में एक हज़ार आठ सौ
लीटर जल समाता था. हर एक चिलमची लगभग दो मीटर गहरी थी. हर एक
ठेले के लिए एक-एक चिलमची ठहराई गई थी. 39 इसके बाद उन्होंने पांच
ठेले भवन के दक्षिण की ओर और पांच उत्तरी ओर में लगा दिए. उन्होंने कुंड
को भवन की दाहिनी ओर स्थापित कर दिया. 40 यह सब करके हूराम ने
चिमचियां, बेलचे और कटोरियां भी बनाईं. हूराम ने राजा शलोमोन के लिए
याहवेह के भवन से संबंधित सारा काम खत्म कर दिया. 41 दो मीनार, इन
मीनारों के ऊपर लगाए गए दो गोलाकार कंगनियां; खंभे के सिरों के गोलाकार
भागों के ऊपर लटकाई गई जाली; 42 दोनों मीनारों के सिरों पर लगाए गए
चार सौ अनार; हर एक के लिए दो सौ, दो सौ अनार जो खंभों के सिरों पर
लगाए गए थे; 43 दस ठेले; जिन पर टेकों पर रखी गई दस चिलमचियां, 44
और वह एक हौद और उसके नीचे स्थापित किए गए वे बारह बछड़े और 45
चिलमचियां, बेलचे और कटोरियां. याहवेह के भवन में राजा शलोमोन के लिए
हूराम ने जितने भी बर्तन बनाए थे, वे सभी रगड़कर चमकाए गए कांसे के थे.
46 राजा ने इनकी ढलाई यरदन घाटी में, जो सुक्कोथ और ज़ारेथान में है, मिट्टी
के सांचों में ढाल कर की थी. 47 शलोमोन ने इन्हें तोलना सही न समझा
क्योंकि ये सब संख्या में बहुत ही ज्यादा थे; कांसे को मापना संभव न था. 48
इस प्रकार शलोमोन ने याहवेह के भवन में इस्तेमाल के लिए ठहराए गए सभी
बर्तनों का निर्माण पूरा किया: सोने की वेदी, भेंट की रोटी के लिए ठहराई गई
सोने की मेज़, 49 अंदरूनी कमरे के सामने शुद्ध कुन्दन के दीवट; पांच दक्षिण
दिशा में और पांच उत्तर दिशा में, सोने के फूल, दीपक और चिमटे, बर्तन; 50
कुन्दन के ठहराए गए बर्तन; अंदरूनी कमरा परम पवित्र स्थान के दरवाजों के
लिए सोने के ही कब्जे और बीचवाले भवन के दरवाजों के लिए सोने के कब्जे.
51 इस प्रकार याहवेह के भवन का सारा काम, जो राजा शलोमोन ने शुरू किया

था, पूरा हुआ. तब शलोमोन अपने पिता दावीद द्वारा भेंट की हुई वस्तुएं मंदिर में
ले आए. उन्होंने चांदी, सोना और सारे बर्तन परमेश्वर के भवन के खजाने में
इकट्ठा कर दिए.

8 राजा शलोमोन ने येरूशलेम में इस्राएल के सभी पुरनियों को, गोत्र प्रमुखों
और पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों को आमंत्रित किया. ये सभी राजा
शलोमोन के सामने येरूशलेम में इकट्ठे हो गए, कि याहवेह की वाचा के संदूक
को दावीद के नगर अर्थात् ज़ियोन से लाया जा सके. 2 सातवें महीने, एथनिम
नामक महीने में, उस उत्सव के अवसर पर, सारी इस्राएली प्रजा राजा शलोमोन
के सामने इकट्ठी हुई. 3 तब इस्राएल के सभी प्राचीन सामने आए, और पुरोहितों
ने संदूक को उठाया. 4 पुरोहित और लेवी याहवेह के संदूक, मिलापवाला तंबू
और उसमें रखे हुए सभी पवित्र बर्तन अपने साथ ले आए थे. 5 राजा शलोमोन
और इस्राएल की सारी सभा, जो उस समय उनके साथ वहां संदूक के सामने
इकट्ठी हुई थी, इतनी बड़ी संख्या में भेड़ें और बछड़े बलि कर रहे थे, कि
उनकी गिनती असंभव हो गई. 6 इसके बाद पुरोहितों ने याहवेह की वाचा के
संदूक को लाकर उसके लिए निर्धारित स्थान पर, भवन के भीतरी कमरे में,
परम पवित्र स्थान में करूबों के पंखों के नीचे रख दिया, 7 क्योंकि करूब
संदूक के लिए तय स्थान पर अपने पंख फैलाए हुए थे. यह ऐसा प्रबंध था
कि करूबों के पंख संदूक को उसके उठाने के लिए बनाई गई बल्लियों को
आच्छादित करें. 8 ये डंडे इतने लंबे थे, कि संदूक के इन डंडों को भीतरी कमरे
से देखा जा सकता था, मगर इसके बाहर से नहीं. आज तक वे इसी स्थिति में
हैं. 9 संदूक में पत्थर के उन दो पट्टियों के अलावा कुछ न था, जिन्हें मोशेह
ने होरेब पर्वत पर उसमें रख दी थी, जहां याहवेह ने इस्राएल से वाचा बांधी
थी, जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे. 10 जैसे ही पुरोहित पवित्र स्थान से
बाहर आए, याहवेह के भवन में बादल समा गया. 11 इसके कारण अपनी सेवा
पूरी करने के लिए पुरोहित वहां ठहरे न रह सके, क्योंकि याहवेह के तेज से
अपना भवन भर गया था. 12 तब शलोमोन ने यह कहा: “याहवेह ने यह प्रकट
किया है कि वह घने बादल में रहना सही समझते हैं. 13 निश्चय आपके लिए
मैंने एक ऐसा भव्य भवन बनवाया है, कि आप उसमें हमेशा रहें.” 14 यह
कहकर राजा ने सारी इस्राएली प्रजा की ओर होकर उनको आशीर्वाद दिया, इस
अवसर पर सारी इस्राएली सभा खड़ी हुई थी. 15 राजा ने उन्हें कहा: “याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर, जिन्होंने अपने हाथों से वह पूरा कर दिखाया, जो उन्होंने
अपने मुख से मेरे पिता दावीद से कहा था, 16 ‘जिस दिन से मैंने अपनी प्रजा
इस्राएली गोत्रों में से किसी भी नगर को इस उद्देश्य से नहीं चुना कि वहां मेरा
नाम प्रतिष्ठित हो. हां, मैंने दावीद को अपनी प्रजा इस्राएल का शासक होने के
लिए चुना.’ 17 “मेरे पिता दावीद की इच्छा थी कि वह याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर की महिमा के लिए एक भवन बनवाएं. 18 किंतु याहवेह ने मेरे पिता
दावीद से कहा, ‘तुम्हारे मन में मेरे लिए भवन के निर्माण का आना एक उत्तम
विचार है; 19 फिर भी, इस भवन को तुम नहीं, बल्कि वह पुत्र, जो तुमसे पैदा
होगा, मेरी महिमा के लिए वही भवन बनाएगा.’ 20 “आज याहवेह ने अपनी
प्रतिज्ञा पूरी की है. क्योंकि अब, जैसे याहवेह ने प्रतिज्ञा की थी, और मैंने
याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की महिमा के लिए इस भवन को बनवाया है. 21
इसमें मैंने संदूक के लिए स्थान निर्धारित किया है, जिसमें हमारे पूर्वजों से बांधी
गई याहवेह की वाचा रखी है; वह वाचा, जो उन्होंने उनसे उस समय बांधी थी,
जब उन्होंने उन्हें मिस्र देश से निकाला था.” 22 इसके बाद शलोमोन सारी
इस्राएल सभा के देखते हाथों को स्वर्ग की ओर फैलाकर याहवेह की वेदी के
सामने खड़े हो गए. 23 उस समय उनके वचन ये थे: “याहवेह इस्राएल के
परमेश्वर, आपके तुल्य परमेश्वर न तो कोई ऊपर स्वर्ग में है, और न यहां नीचे
धरती पर, जो अपने उन सेवकों पर अपना अपार प्रेम दिखाते हुए अपनी वाचा
को पूर्ण करता है, जिनका जीवन आपके प्रति पूरी तरह समर्पित है. 24 आपने
अपने सेवक, मेरे पिता दावीद को जो वचन दिया था, उसे पूरा किया है. आज
आपने अपने शब्द को सच्चाई में बदल दिया है. आपके सेवक दावीद से की
गई अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी करें, जो आपने उनसे इन शब्दों में की थी. 25
“अब इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह, आपके सेवक मेरे पिता दावीद के लिए
अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी कीजिए. ‘मेरे सामने इस्राएल के सिंहासन पर तुम्हारे
उत्तराधिकारी की कोई कमी न होगी, सिर्फ यदि तुम्हारे पुत्र सावधानीपूर्वक मेरे
सामने अपने आचरण के विषय में सच्चे रहें; ठीक जिस प्रकार तुम्हारा आचरण
मेरे सामने सच्चा रहा है.’ 26 इसलिये अब, इस्राएल के परमेश्वर अपने सेवक,
मेरे पिता दावीद से की गई प्रतिज्ञा पूरी कीजिए. 27 “मगर क्या वास्तव में
परमेश्वर पृथ्वी पर रहेंगे? स्वर्ग, हां, सबसे ऊंचा स्वर्ग भी आपको समाकर नहीं
रख सकता, तो भला मेरे द्वारा बनाए गए भवन में यह कैसे संभव हो सकता है!
28 फिर भी अपने सेवक की विनती और प्रार्थना का ध्यान रखिए. याहवेह, मेरे
परमेश्वर, इस दोहाई को, इस गिड़गिड़ाहट को सुन लीजिए, जो आपका सेवक
आपके सामने आज प्रस्तुत कर रहा है, 29 कि इस भवन की ओर आपकी दृष्टि
रात और दिन लगी रहे. इस भवन पर, जिसके विषय में आपने कहा था, ‘मेरी
प्रतिष्ठा वहां बनी रहेगी,’ कि आप उस प्रार्थना को सुन सकें, जो आपका सेवक
इस ओर होकर कर रहा है. 30 अपने सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल की
विनती सुन लीजिए, जब वे इस स्थान की ओर मुंह कर आपसे करते हैं, और
स्वर्ग, अपने घर में इसे सुनें और जब आप यह सुनें, आप उन्हें क्षमा प्रदान करें.
31 “जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है, और उसे शपथ लेने
के लिए विवश किया जाता है और वह आकर इस भवन में आपकी वेदी के
सामने शपथ लेता है, 32 तब आप स्वर्ग से सुनें, और अपने सेवकों का न्याय
करें, दुराचारी का दंड उसके दुराचार को उसी पर प्रभावी करने के द्वारा दें, और
सदाचारी को उसके सदाचार का प्रतिफल देने के द्वारा. 33 “जब आपकी प्रजा
इस्राएल उनके शत्रुओं द्वारा इसलिये हार जाती है, कि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप
किया है और वे दोबारा आपकी ओर लौट आते हैं, आपके नाम की दोहाई देते
हुए प्रार्थना करते हैं, और इस भवन में आपसे विनती करते हैं, 34 तब स्वर्ग से
यह सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा कर दीजिए, और उन्हें उस देश में
लौटा ले आइए, जो आपने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया है. 35 “जब आप
बारिश इसलिये रोक दें कि आपकी प्रजा ने आपके विरुद्ध पाप किया है और
फिर, जब वे इस स्थान की ओर फिरकर प्रार्थना करें और आपके प्रति सच्चे हो,
जब आप उन्हें सताएं, और वे पाप से फिर जाएं; 36 तब स्वर्ग में अपने सेवकों
और अपनी प्रजा इस्राएल की दोहाई सुनकर उनका पाप क्षमा कर दें. आप उन्हें
उन अच्छे मार्ग पर चलने की शिक्षा दें. फिर अपनी भूमि पर बारिश भेजें;
उस भूमि पर जिसे आपने उत्तराधिकार के रूप में अपनी प्रजा को प्रदान किया
है. 37 “जब देश में अकाल का प्रकोप हो जाए, यदि यहां महामारी हो जाए,
पाला पड़े, अथवा उपज में गेरूआ रोग लग जाए, टिड्डियों अथवा इल्लियों का
आक्रमण हो जाए, यदि शत्रु उन्हीं के देश में, उन्हीं के द्वार के भीतर उन्हें बंदी
बना ले, कोई भी महामारी हो, कोई भी व्याधि हो, 38 कैसी भी प्रार्थना की
जाए, किसी भी व्यक्ति या सारे इस्राएल देश द्वारा हर एक अपनी हृदय वेदना को
पहचानते हुए जब अपना हाथ इस भवन की ओर बढ़ाए, 39 तब अपने घर स्वर्ग
में यह सुनकर क्षमा प्रदान करें, और हर एक को, जिसके हृदय को आप जानते
हैं, उसके सभी कामों के अनुसार प्रतिफल दें; क्योंकि आप—सिर्फ आप—हर
एक मानव हृदय को जानते हैं, 40 कि वे इस देश में जो आपने उनके पूर्वजों को
प्रदान किया है, रहते हुए आपके प्रति आजीवन श्रद्धा बनाए रखें. 41 “इसी
प्रकार जब कोई परदेशी, जो आपकी प्रजा इस्राएल में से नहीं है, आपका नाम

सुनकर दूर देश से यहां आता है, 42 क्योंकि आपकी महिमा आपके महाकार्य
और आपकी महाशक्ति के विषय में सुनकर वे यहां ज़रूर आएंगे; तब, जब वह
विदेशी यहां आकर इस भवन की ओर होकर प्रार्थना करे, 43 अपने आवास
स्वर्ग में सुनकर उन सभी विनतियों को पूरा करें, जिसकी याचना उस परदेशी ने
की है, कि पृथ्वी के सभी मनुष्यों को आपकी महिमा का ज्ञान हो जाए, उनमें
आपके प्रति भय जाग जाए; जैसा आपकी प्रजा इस्राएल में है, और उन्हें यह
अहसास हो जाए कि यह आपकी महिमा में मेरे द्वारा बनाया गया भवन है. 44
"जब आपकी प्रजा अपने शत्रु के विरुद्ध बाहर जाए, चाहे आप उन्हें किसी भी
मार्ग से भेजें; जब वे आपके द्वारा चुने गए इस नगर और मेरे द्वारा आपकी महिमा
में बनाए गए इस भवन की ओर होकर, हे प्रभु याहवेह, आपसे प्रार्थना करें, 45
तब स्वर्ग में उनकी प्रार्थना और अनुरोध सुनकर उनके पक्ष में निर्णय की जायें.
46 "यदि वे आपके विरुद्ध पाप करें—क्योंकि ऐसा कोई भी नहीं जो पाप नहीं
करता—और आप उन पर क्रुद्ध हो जाएं, और उन्हें शत्रु के अधीन कर दें कि
उन्हें बंदी बनाकर शत्रु के देश ले जाया जाए, दूर देश अथवा निकट, 47 फिर
भी यदि वे उस बंदिता के देश में चेत कर पश्चाताप करें, और अपने बंधुआई के
देश में यह कहते हुए दोहाई दें, 'हमने पाप किया है, हमने कुटिलता और दुष्टता
भरे काम किए हैं,' 48 यदि वे अपने शत्रुओं के देश में ही, जिन्होंने उन्हें बंदी
बना रखा है, पूरे मन और पूरे हृदय से पश्चाताप करें, अपने देश की ओर होकर
प्रार्थना करें, जो देश आपने उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की ओर, जिसे
आपने चुना है और जो भवन मैंने आपकी महिमा में बनवाया है, 49 तब अपने
घर स्वर्ग में उनकी प्रार्थना सुन लीजिए और उनका न्याय कीजिए, 50 और
अपनी प्रजा को क्षमा कीजिए, जिन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है. उन्हें उनकी
दृष्टि में कृपा प्रदान करें, जिन्होंने उन्हें बंदी बना रखा है, कि वे उनकी कृपा
के पात्र हो जाएं. 51 क्योंकि वे आप ही के लोग हैं, आप ही की संपत्ति,
जिन्हें आप मिस्र देश से, लोहा गलाने की भट्टी में से, निकालकर लाए हैं. 52
"आपकी आंखें आपके सेवक की और आपकी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना के
लिए खुली रहें कि वे जब भी आपको पुकारें, आप उनकी सुन लें. 53 प्रभु
याहवेह, जैसा आपने अपने सेवक मोशेह के द्वारा भेजा, जब आप हमारे पूर्वजों
को मिस्र देश से बाहर ला रहे थे, आपने इन्हें विश्व के सभी जनताओं से अलग
किया कि वे आपके मीरास होकर रहें." 54 जब शलोमोन यह प्रार्थना और
विनती याहवेह से कर चुके, वह याहवेह की वेदी के सामने से उठे, जहां वह
घुटने टेक स्वर्ग की ओर अपने हाथ बढ़ाए हुए थे, 55 उन्होंने खड़े होकर
पूरी इस्राएली सभा के लिए ऊंची आवाज में ये आशीर्वाद दिया: 56 "धन्य हैं
याहवेह, जिन्होंने अपनी सभी प्रतिज्ञाओं के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को
शांति दी है. उनके सेवक मोशेह द्वारा दी गई उनकी सभी भली प्रतिज्ञाओं में से
एक भी पूरी हुई बिना नहीं रही है. 57 याहवेह हमारे परमेश्वर हमारे साथ रहें,
जैसे वह हमारे पूर्वजों के साथ रहे थे. ऐसा कभी न हो कि वह हमें त्याग दें,
हमें भुला दें, 58 कि वह हमारे हृदय अपनी ओर लगाए रखें, कि हम उन्हीं
के मार्गों पर चलें और उनके आदेशों, नियमों और विधियों का पालन करें;
जिन्हें उन्होंने हमारे पूर्वजों को सौंपा था. 59 मेरे ये शब्द, जिन्हें मैंने याहवेह
तक अपनी विनती करने के लिए इस्तेमाल किया है, रात-दिन याहवेह, हमारे
परमेश्वर के निकट बने रहें और दिन की आवश्यकता के अनुसार वह अपने
सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल के पक्ष में अपना निर्णय दें, 60 कि पृथ्वी पर
सभी को यह मालूम हो जाए कि याहवेह ही परमेश्वर हैं, दूसरा कोई नहीं. 61
तुम्हारा हृदय याहवेह हमारे परमेश्वर के प्रति पूरी तरह सच्चा बना रहे, और
तुम उनके नियमों और उनके आदेशों को पालन करते रहो—जैसा तुम यहां
आज कर रहे हो." 62 तब राजा और सारे इस्राएल ने उनके साथ याहवेह
के सामने बलि चढ़ाई. 63 शलोमोन ने 22,000 बछड़े और 1,20,000
भेड़ें मेल बलि के रूप में चढ़ाईं. इस प्रकार राजा और सारी इस्राएल प्रजा ने
याहवेह के भवन को समर्पित किया. 64 उसी समय राजा ने याहवेह के भवन के
सामने के बीचवाले आंगन को समर्पित किया, क्योंकि उसी स्थान पर उन्होंने
होमबलि, अन्नबलि और मेल बलि की चर्बी के लिए वह कांसे की वेदी बहुत
ही छोटी पड़ रही थी. 65 शलोमोन ने इस अवसर पर एक भोज दिया. इसमें
सारा इस्राएल शामिल हुआ. यह बहुत ही बड़ा सम्मेलन था, जिसमें लेबो हामाथ
से लेकर मिस्र देश की नदी तक से लोग आए हुए थे. वे याहवेह, हमारे परमेश्वर
के सामने सात दिन तक रहे. 66 आठवें दिन राजा ने सभा को विदा किया. प्रजा
ने राजा के लिए शुभकामनाओं के शब्द कहे और बहुत ही आनंद के साथ
अपने-अपने घर लौट गए. उनके आनंद का विषय था याहवेह द्वारा उनके सेवक
दावीद और उनकी प्रजा इस्राएल के ऊपर दिखाई गई दया.

9 जब शलोमोन ने याहवेह के भवन, राजमहल और जो कुछ भी करने
की योजना बनाई थी, और उसे पूरा कर चुके, 2 तब याहवेह दूसरी बार
शलोमोन के सामने प्रकट हुए, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वह उनके सामने
गिबयोन में प्रकट हुए थे. 3 याहवेह ने उनसे कहा, "जो प्रार्थना तुमने मेरे सामने
की है, वह मैंने सुन ली है. तुम्हारे द्वारा बनाए इस भवन को सदा-सर्वदा के
लिए अपना नाम लगाने के द्वारा पवित्र बना लिया है, कि इस स्थान पर मेरी
महिमा हमेशा बनी रहे, और मेरी दृष्टि और मेरा हृदय हमेशा यहीं लगे रहें. 4
"तुम्हारे बारे में मुझे यह कहना है: यदि तुम मेरे सामने चलते रहोगे, जैसे तुम्हारे
पिता दावीद हृदय की सच्चाई और सरलता में चलते रहे, यदि तुम उन सभी
आदेशों का पालन करते रहो, जो मैंने तुम्हें दिए हैं, और उन सभी नियमों और
आदेशों का पालन करते रहो, 5 तब तुम्हारे पिता दावीद से की गई इस प्रतिज्ञा
के अनुसार, 'इस्राएल के सिंहासन को स्थिर करूंगा, और इस्राएल के सिंहासन
पर बैठने के लिए तेरे वंश में पुरुष का अभाव न होगा.' 6 "यदि तुम और तुम्हारे
वंशज मेरे उन सभी नियमों और आदेशों का अनुसरण करना छोड़ दो, जो मैंने
तुम्हारे सामने रखे हैं, और जाकर अन्य देवताओं की सेवा और आराधना करने
लगो, 7 तब उस देश से, जो मैंने उन्हें दिया, इस्राएल को अलग कर दूंगा और
उस भवन को, जो मैंने अपनी महिमा के लिए प्रतिष्ठित किया है, अपनी दृष्टि से
दूर कर दूंगा, फलस्वरूप इस्राएल तब सभी लोगों के बीच उपहास और निंदा का
पात्र बन जाएगा. 8 यह भवन खंडहरों का ढेर होकर रह जाएगा. तब हर एक
व्यक्ति, जो उनके पास से होकर जाएगा, चकित हो सांस ऊपर खींच यह कह
उठेंगे, 'क्यों उन्होंने याहवेह अपने परमेश्वर को भुला दिया था. 9 याहवेह,
जिन्होंने उनके पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर निकाल लाया था. अब उन्होंने
अन्य देवताओं का अनुसरण करने का निश्चय किया. उन्होंने उन देवताओं की
सेवा और पूजा करनी आरंभ की. यही कारण है याहवेह ने उन पर यह सारी घोर
विपत्ति डाल दी है.'" 10 बीस साल खत्म होते-होते शलोमोन याहवेह का भवन
और राजमहल बना चुके थे. 11 तब तक सोर देश के राजा हीराम शलोमोन की
इच्छा अनुसार देवदार और सनोवर की लकड़ी और सोने की आपूर्ति करते रहे.
राजा शलोमोन ने हीराम को गलील क्षेत्र में बीस नगर दे दिए. 12 किंतु जब
हीराम ने आकर उन नगरों को देखा, उन्हें खुशी नहीं हुई. 13 उन्होंने शलोमोन
से कहा, "मेरे भाई, तुमने मुझे ये कैसे नगर दे दिए हैं?" इसलिये आज तक वे
नगर काबूल के नाम से जाने जाते हैं 14 हीराम शलोमोन को लगभग चार हज़ार
किलो सोना भेज चुके थे. 15 शलोमोन ने जिन लोगों को ज़बरदस्ती काम
पर लगाया था, उसका लेखा इस प्रकार है: उन्होंने याहवेह का भवन और
राजमहल, मिल्लो, और येरूशलेम की शहरपनाह, और हाज़ोर, मगिद्दो और
गेज़ेर नगर को बनाने का काम किया. 16 मिस्र देश के राजा फ़रोह ने गेज़ेर नगर
को अपने अधीन कर उसे भस्म कर दिया था. उन्होंने वहां रह रहे कनान मूल
के वासियों को मारकर नगर को भस्म कर दिया. फिर उसने यह नगर दहेज के

रूप में अपनी पुत्री को दे दिया, जो शलोमोन की पत्नी थी. 17 तब शलोमोन ने
गेज़ेर नगर को दोबारा से बसाया तथा घाटी क्षेत्र में बेथ-होरोन, 18 बालाथ और
मरुभूमि में स्थित तादमोर को भी बसाया. 19 उन्होंने दूसरे भण्डार नगरों को भी
बनवाया जहां उनके रथ, घोड़े और घुड़सवार रखे गए थे. इनके अलावा उन्होंने
येरूशलेम, लबानोन और सारे देश में अपनी इच्छा के अनुसार भवन बनवाए.
20 शलोमोन ने इन सभी को ज़बरदस्ती दास बनाकर निर्माण काम में लगा दिया;
अमोरी, हित्ती, परिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी. (ये इस्राएली नहीं थे.) 21 उनकी
संतानों को भी शलोमोन ने दास बना लिये, जो उनके बाद उस देश में बचे रह
गए थे, जिन्हें इस्राएली वध न कर सके थे; ये सब आज भी दास ही हैं. 22 मगर
शलोमोन ने किसी भी इस्राएली को दास नहीं बनाया. वे सैनिक बनाए जाते
थे, उन्हें सैन्य अधिकारी बनाया जाता था: योद्धा, कप्तान, रथ हाकिम और
घुड़सवार. 23 सभी कामों के ऊपर शलोमोन ने 550 प्रमुख अधिकारी ठहरा
दिए थे. ये सभी पद श्रमिकों के अधिकारी थे, जो भवन बनाने के काम में लगे
हुए थे. 24 जब फ़रोह की पुत्री दावीद-नगर छोड़कर उस राजमहल में आ गई,
जो शलोमोन द्वारा बनवाया गया था, तब शलोमोन ने उसके किए मिल्लो को
बनवा दिया. 25 राजा शलोमोन साल में तीन बार उस वेदी पर होम और मेल
बलि चढ़ाते थे, जो उन्होंने याहवेह के लिए बनाई थी. इस पर वह धूप जलाकर
याहवेह के सामने की वेदी पर बलि चढ़ाते थे. इस प्रकार उन्होंने भवन निर्माण
समाप्त किया. 26 राजा शलोमोन ने एज़िओन-गेबेर में जलयानों का एक बेड़ा
बनाया था. यह स्थान एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलाथ नामक स्थान
के पास है. 27 राजा हीराम ने बेड़े के साथ अपने सेवक भेज दिए. इनमें ऐसे
सेवक थे, जिन्हें समुद्र का ज्ञान था. इनके साथ शलोमोन के सेवक भी थे. 28 ये
सभी ओफीर नगर को गए और वहां से वे लगभग चौदह हज़ार किलो सोना
लेकर लौटे. उन्होंने यह शलोमोन को भेंट कर दिया.

10 जब शीबा की रानी ने याहवेह के नाम के कारण शलोमोन को मिली
ख्याति सुनी, वह कठिन प्रश्नों से उन्हें परखने के लिए आईं. 2 जब वह
येरूशलेम पहुंची, उनके साथ एक बड़ा कर्मचारी दल, ऊंटों पर मसाले और
बड़ी मात्रा में सोना और कीमती पत्थर थे. जब उनकी भेंट शलोमोन से हुई,
उन्होंने शलोमोन के सामने वह सब कह डाला, जो उनके मन में था. 3 शलोमोन
ने उनके सभी सवालों के जवाब दिए, ऐसा कुछ भी न था जो राजा के ज्ञान के
बाहर था, जो वह समझा न सके. 4 जब शीबा की रानी शलोमोन की पूरी
बुद्धिमानी को परख चुकीं और उनके द्वारा बनाया भवन, 5 उनकी मेज़ पर
परोसा गया भोजन, उनके कर्मचारियों के बैठने की व्यवस्था, उनके सेवकों
द्वारा की गई सेवा, उनके कपड़े, उनके पिलाने वाले और याहवेह के भवन
में चढ़ाई गई होमबलियां देख वह हैरान रह गईं. 6 उन्होंने राजा से कहा,
"आपकी प्रजा और आपकी बुद्धिमानी के बारे में जो मैंने अपने देश में सुना था,
वह सच था. 7 मगर मैंने उन समाचारों का विश्वास ही नहीं किया, जब तक
मैंने खुद आकर अपनी ही आंखों से यह सब देख न लिया. सच तो यह है कि
मुझे तो इसका आधा भी न बताया गया था. आपकी बुद्धि और समृद्धि उस
महिमा से कहीं बढ़कर है जो मेरे सामने वर्णन की गयी थी. 8 कैसे सुखी हैं
आपके लोग और आपके ये सेवक, जो सदा आपके सामने रहते हैं, और आपकी
बुद्धिमानी की बातें सुनते रहते हैं! 9 धन्य हैं याहवेह, आपके परमेश्वर, आप
पर जिनकी कृपादृष्टि है, जिन्होंने आपको इस्राएल के सिंहासन पर बैठाया है.
याहवेह हमेशा से इस्राएल से प्रेम करते आए हैं, इसलिये उन्होंने आपको राजा के
पद पर रखा है, कि आप न्याय और धर्म के साथ शासन करें." 10 उन्होंने
राजा को भेंट में लगभग चार हज़ार किलो सोना और बड़ी मात्रा में मसाले और
कीमती पत्थर दे दिए; इतनी मात्रा में मसाले फिर कभी नहीं आए, जितने शीबा
की रानी ने राजा शलोमोन को भेंट में दिए थे. 11 इसके अलावा हीराम के जो
जहाज़ ओफीर देश से सोना लाए थे, वही जहाज़ ओफीर देश से बड़ी मात्रा में
चन्दन की लकड़ी और कीमती पत्थर लेकर आए, 12 जिस लकड़ी से राजा
शलोमोन ने याहवेह के भवन के लिए और राजमहल के लिए खंभे और गायकों
के लिए वीणा और सारंगियां बना दिए. ऐसी चन्दन की लकड़ी देखी न गई,
क्योंकि फिर इसे लाया ही नहीं गया. 13 राजा शलोमोन ने अपने खजाने में
से शीबा की रानी को अपनी राजकीय उदारता के अनुसार दे दिया. इसके
अलावा उन्होंने शीबा की रानी को उसकी इच्छा और विनती के अनुसार भी दे
दिया. वह अपने सेवकों को लेकर अपने देश लौट गईं. 14 शलोमोन को हर
साल लगभग बाईस हज़ार किलो सोना मिलता था. 15 यह राजकीय खजाने में
व्यापारियों, यात्रियों, पश्चिमी देशों के राजाओं द्वारा दिए गए धन और देश के
ही राज्यपालों द्वारा प्राप्त कर धन से इकट्ठा धन के अलावा था. 16 राजा
शलोमोन ने पीटे हुए सोने की 200 विशाल ढालों को बनवाया. हर एक ढाल में
लगभग सात किलो सोना लगाया गया था. 17 शलोमोन ने पीटे हुए सोने से
300 ढालों को भी बनवाया. हर एक ढाल में लगभग साढ़े तीन किलो सोना
लगाया गया था. इन सभी को राजा ने लबानोन वन महल में रख दिया. 18 राजा
ने हाथी-दांत का एक सिंहासन भी बनवाया और उसे शुद्ध सोने से मढ़ दिया. 19
सिंहासन की छः सीढ़ियां थी, और इसके पीछे एक गोल शीर्ष थी. सिंहासन के
दोनों ओर दो हत्थे थे और उन्हीं से लगे हुई दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे.
20 हर एक सीढ़ी के दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे, कुल मिलाकर बारह
शेर थे. इसके समान सिंहासन और किसी राज्य में नहीं बनवाया गया था. 21
राजा शलोमोन के पीने के सारे बर्तन सोने के थे. लबानोन वन भवन में इस्तेमाल
किए जानेवाले बर्तन शुद्ध सोने के थे. चांदी कहीं भी इस्तेमाल नहीं हुई थी
क्योंकि शलोमोन के शासनकाल में चांदी की कोई कीमत ही न थी. 22 तरशीश
के सागर में राजा हीराम के साथ जहाजों का एक समूह था. हर तीन साल में
तरशीश के जहाज़ वहां सोना, चांदी, हाथी-दांत, बन्दर और मोर लेकर आते थे.
23 इस प्रकार राजा शलोमोन पृथ्वी के सभी राजाओं से धन और बुद्धि में बहुत
बढ़कर थे. 24 सारी पृथ्वी उसकी बुद्धिमानी की बातें, जो परमेश्वर ने उसके
मन में दीं थी, सुनने के लिए उनके सामने जाने की इच्छा रखती थी. 25 हर
साल सभी देखनेवाले अपने साथ चांदी और सोने की वस्तुएं, कपड़े, हथियार,
मसाले, घोड़े और खच्चर भेंट देने के लिए लाया करते थे. 26 शलोमोन ने अब
तक एक हज़ार चार सौ रथ, बारह हज़ार घुड़सवार एकत्र कर लिए थे. इन
सबको उसने रथों के लिए बनाए नगरों और येरूशलेम में राजा के लिए ठहराए
गए स्थानों पर रखवा दिया था. 27 राजा द्वारा येरूशलेम में चांदी का मूल्य वैसा
ही कर दिया गया था, जैसा पत्थरों का होता है, और देवदार की लकड़ी का
ऐसा जैसे तराई के गूलर के पेड़ों का. 28 शलोमोन घोड़ों का आयात मिस्र और
कवे से करते थे. राजा के व्यापारी इन्हें दाम देकर कवे से लाया करते थे. 29
लाए गए एक रथ की कीमत होती थी चांदी के छः सौ सिक्के. राजा के व्यापारी
इसी प्रकार इनका निर्यात सभी हित्ती और अरामी राजाओं को कर देते थे.

11 फ़रोह की पुत्री के अलावा शलोमोन को अनेक विदेशी स्त्रियों से प्रेम हो
गया था: मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी, और हित्ती स्त्रियों से. 2 ये
वे राष्ट्र थे, जिनके विषय में याहवेह ने इस्राएल को चेतावनी देते हुए कहा था,
"तुम न तो उन जनताओं से कोई वैवाहिक संबंध रखना, और न उनका ही
तुम्हारे साथ किसी प्रकार का संबंध हो, क्योंकि यह तय है कि वे तुम्हारा हृदय
अपने देवताओं की ओर लगा ही लेंगे." शलोमोन को इन स्त्रियों से गहरा प्रेम हो
गया था. 3 शलोमोन ने सात सौ राजकुमारियों से विवाह किया और उनकी तीन
सौ उपपत्नियां थी! उनकी पत्नियों ने उनका हृदय परमेश्वर से दूर कर दिया. 4
क्योंकि जब शलोमोन की उम्र ढलने लगी, उनकी पत्नियों ने उनका हृदय पराए
देवताओं की ओर कर दिया; उनका हृदय याहवेह, उनके परमेश्वर के लिए पूरी

तरह सच्चा नहीं रह गया, जैसे उनके पिता दावीद का था. 5 शलोमोन ने
सीदोनिवासियों की देवी अश्तोरेथ और अम्मोनियों के घृणित देवता मिलकाम
की आराधना करनी शुरू कर दी. 6 यह करते हुए शलोमोन ने वह किया जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था. अब वह पूरी तरह याहवेह के मार्गों पर नहीं चल
रहे थे, जैसा दावीद, उनके पिता ने किया था. 7 शलोमोन ने येरूशलेम की पूर्वी
पहाडी पर मोआब देश के घृणित देवता खेमोश और अम्मोनियों के घृणित देवता
मोलेख के आदर में पूजा घर बनवाए. 8 यही उन्होंने अपनी सभी विदेशी
पत्नियों के लिए किया, जो इन पर अपने-अपने देवताओं के लिए बलि चढ़ाया
करती और धूप जलाया करती थीं. 9 इन कामों के कारण याहवेह शलोमोन से
क्रोधित हो गए, क्योंकि उनका मन याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर से, जिन्होंने
दो बार उन्हें दर्शन दिए थे, दूर हो गया था, 10 जिन्होंने उन्हें यह आदेश दिया
था कि वह पराए देवताओं के पीछे न चलें. मगर उन्होंने याहवेह के इस आदेश
का पालन न किया. 11 इसलिये याहवेह ने शलोमोन से कहा, "तुम्हारे इसी
काम के कारण, और इसलिये कि तुमने मेरी वाचा और विधियों का पालन नहीं
किया, जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, यह तय है कि मैं तुम्हारा राज्य तुमसे
छीनकर तुम्हारे सेवक को दे दूंगा. 12 फिर भी, तुम्हारे पिता दावीद के कारण मैं
यह तुम्हारे जीवनकाल में नहीं करूंगा. बल्कि मैं यह तुम्हारे पुत्र के हाथ से छीन
लूंगा. 13 फिर भी मैं पूरा राज्य नहीं छीनूंगा. मैं एक गोत्र तुम्हारे पुत्र के लिए
छोड़ दूंगा; मेरे सेवक दावीद और मेरे चुने गए नगर येरूशलेम के कारण." 14
इसके बाद याहवेह ने शलोमोन के लिए एक शत्रु खड़ा किया; एदोमी हदद, जो
एदोम राजा के वंश से था. 15 जब दावीद एदोम देश में थे और सेनापति योआब
मरे हुओं को मिट्टी देने वहां गए हुए थे, उन्होंने एदोम देश के हर एक पुरुष का
वध कर दिया था. 16 योआब और इस्राएल सेना वहां छः महीने तक ठहरी रही
थी, जब तक एदोम के हर एक पुरुष की हत्या न कर दी गई. 17 मगर हदद
मिस्र देश को भाग चुका था. उसके साथ उसके पिता के एदोमी सेवक भी थे.
उस समय हदद सिर्फ छोटा बालक ही था. 18 उसने मिदियान देश से चलना
शुरू किया और पारान नामक स्थान पर आ पहुंचा. वहां से कुछ व्यक्तियों को
अपने साथ लेकर वे मिस्र देश में फ़रोह की शरण में पहुंच गया. फ़रोह ने उसे
एक घर और ज़मीन का टुकड़ा देकर उसके लिए नियमित भोजन की व्यवस्था
भी कर दी. 19 हदद फ़रोह का प्रिय बन गया, यहां तक कि फ़रोह ने उसका
विवाह अपनी पत्नी तहपनीस की बहन से कर दिया. 20 उससे उसके एक पुत्र
पैदा हुआ. उसका नाम गेनुबाथ रखा; फ़रोह के यहां रहते हुए ही इसने माता का
दूध पीना छोड़ दिया था. गेनुबाथ राजमहल में फ़रोह के पुत्रों के साथ ही रहता
था. 21 मिस्र में रहते हुए ही जब हदद ने यह सुना कि दावीद अब नहीं रहे, और
सेनापति योआब की भी मृत्यु हो गई है, हदद ने फ़रोह से विनती की, "मुझे
आज्ञा दीजिए कि मैं अपने देश में जा रहूं." 22 मगर फ़रोह ने उससे कहा, "मेरे
यहां ऐसी क्या कमी है कि तुम अपने देश को जाना चाह रहे हो?" हदद ने
उत्तर दिया, "कमी तो कुछ भी नहीं है, मगर फिर भी मुझे जाने दीजिए." 23
परमेश्वर ने शलोमोन के विरुद्ध एक और शत्रु खड़ा कर दिया: एलियादा का पुत्र
रेज़ोन, जो ज़ोबाह के राजा हादेदेज़र अपने स्वामी से बचकर भागा था. 24
दावीद द्वारा की गई हत्याओं के बाद उसने अपने साथ अनेक व्यक्ति जुटा लिए,
और वह लूटमार करनेवाले झुण्ड का मुखिया बन गया. ये सब दमेशेक जाकर
वहां बस गए. वहां इन लोगों ने उसे दमेशेक का राजा बना दिया. 25 शलोमोन
के पूरे जीवनकाल में वह इस्राएल का शत्रु ही बना रहा. हदद ने इस्राएल की
हानि ही की थी. इसके अलावा रेज़ोन अराम का शासक को इस्राएल से घोर
नफरत थी. 26 ज़ेरेदाह नगर से एक एफ्राईमवासी, नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने
भी, जो शलोमोन का ही सेवक था, जिसकी माता का नाम ज़ेरुआह था, जो
विधवा थी, राजा के विरुद्ध सिर उठाया. 27 राजा के विरुद्ध उसके विद्रोह का
कारण यह था: जब शलोमोन मिल्लो को बनवा रहा था और जब उनके पिता
दावीद के नगर की शहरपनाह की मरम्मत की जा रही थी, 28 राजा ने ध्यान
दिया कि यरोबोअम शक्तिशाली जवान था, और राजा ने यह भी देखा कि वह
मेहनती है, तो राजा ने उसे योसेफ़वंशी दासों का मुखिया बना दिया. 29 जब
यरोबोअम येरूशलेम से बाहर गया तो मार्ग में शीलो वासी भविष्यद्वक्ता अहीयाह
से उसकी भेंट हो गई. अहीयाह ने नए कपड़े पहने हुए था. सिर्फ ये दोनों इस
समय मैदान में खड़े हुए थे. 30 अचानक ही अहीयाह ने अपने उस नए कपड़े
को लिया, जिसे वह पहने हुए थे, और उसे फाड़ते हुए बारह भागों में बांट दिया.
31 यरोबोअम से उन्होंने कहा, "अपने लिए इनमें से दस भाग उठा लो, क्योंकि
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने यह कहा है, 'यह देख लेना कि मैं शलोमोन के
हाथ से छीनकर तुम्हें दस गोत्रों का अधिकार दे दूंगा, 32 मगर मेरे सेवक दावीद
और येरूशलेम नगर के हित में, उसके लिए एक गोत्र दे दिया जाएगा, जिसे मैंने
इस्राएल के सारे गोत्रों में से चुन लिया है, 33 क्योंकि उसने मुझे भुलाकर
सीदोनियों की देवी अश्तोरेथ की, मोआब के देवता खेमोश की और अम्मोनियों
के देवता मिलकाम की पूजा करना शुरू कर दिया है. उसने मेरे नियमों का
पालन करना छोड़ दिया है. उसने अपने पिता दावीद के समान वह नहीं किया,
जो मेरी नज़रों में सही है, और न ही उसने मेरी विधियों और नियमों का पालन
ही किया है. 34 "'यह सब होने पर भी मैं उससे सारा राज्य नहीं छीनूंगा, मैं
अपने सेवक दावीद के कारण उसे आजीवन शासक बना रहने दूंगा, जो मेरा चुना
हुआ था, जो मेरे आदेशों और नियमों का पालन करता रहा, 35 मगर मैं यह
राज्य उसके पुत्र से ज़रूर छीन लूंगा और ये दस गोत्र तुम्हें दे दूंगा. 36 हां, उसके
पुत्र को मैं एक गोत्र दे दूंगा, कि येरूशलेम में मेरे सामने मेरे सेवक दावीद का दीप
हमेशा जलता रहे. येरूशलेम वह नगर है, जहां मैंने अपनी महिमा करना सही
समझा है. 37 मैं तुम्हें प्रतिष्ठित करूंगा, कि तुम अपनी इच्छा अनुसार शासन कर
सकोगे. तुम इस्राएल देश के राजा बन जाओगे. 38 और यदि तुम मेरे आदेश को
सुनकर उनका पालन करोगे, मेरी आज्ञाओं को मानोगे, और वही सब करोगे जो
मेरी नज़रों में सही है, जैसा मेरे सेवक दावीद ने मेरे नियमों और आदेशों का
पालन करने में किया था, मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारे वंश को स्थिर
करूंगा, जैसा मैंने दावीद के साथ किया. तब मैं तुम्हें इस्राएल की प्रभुता सौंप
दूंगा. 39 ऐसा करके मैं दावीद के वंशजों को पीड़ित तो करूंगा, मगर यह पीड़ा
हमेशा के लिए नहीं होगी.'" 40 यह सुन शलोमोन ने यरोबोअम की हत्या
करने की कोशिश की, मगर यरोबोअम मिस्र के राजा शिशाक की शरण में चला
गया और शलोमोन की मृत्यु तक वहीं रहा. 41 शलोमोन की बाकी उपलब्धि
और उसके द्वारा किए गए सारे सुधारों का ब्योरा शलोमोन के काम नामक
पुस्तक में लिखित है. 42 सारे इस्राएल पर शलोमोन ने येरूशलेम से चालीस
साल राज किया. 43 शलोमोन अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गए.
उसका अंतिम संस्कार उसके पिता दावीद के नगर में किया गया. उसका स्थान
पर उसका पुत्र रिहोबोयाम राजा बना.

12 रिहोबोयाम शेकेम नगर गया, क्योंकि उसके राजाभिषेक के उद्देश्य
से सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ था. 2 जब नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने
यह सुना, जो इस समय मिस्र देश में ही रह रहा था—वह राजा शलोमोन से
भागकर यहीं ठहरा हुआ था— 3 लोगों ने संदेश भेजकर उसे बुलवा लिया. तब
यरोबोअम और सारी इस्राएली सभा अपनी बात रखने रिहोबोयाम के पास गई.
उन्होंने रिहोबोयाम से कहा, 4 "आपके पिता ने हमारा जूआ बहुत ही भारी कर
दिया था; अब तो आपके पिता द्वारा कराई गई मेहनत और इस भारी जूए को
हल्का कर दीजिए. हम आपकी सेवा हमेशा करते रहेंगे." 5 रिहोबोयाम ने उन्हें
उत्तर दिया, "अभी आप जाइए और तीन दिन के बाद आइए, तब मैं आपको
इसका उत्तर दूंगा." तब वे सब लौट गए. 6 इसी समय राजा रिहोबोयाम ने उन

पुरनियों से सलाह ली, जो उसके पिता शलोमोन के जीवन भर उसके सेवक रहे
थे. उसने पूछा, "मेरे लिए आपकी क्या राय है? मैं इन लोगों को क्या उत्तर
दूं?" 7 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "यदि आप आज इन लोगों के सामने सेवक
की तरह बनकर उन्हें उत्तर देते हुए उनसे मीठी बातें करें, तो वे आजीवन आपके
सेवक बने रहेंगे." 8 मगर रिहोबोयाम ने पुरनियों की इस सलाह को छोड़ दिया
और जाकर उन युवाओं से सलाह ली, जो उसी के साथ बड़े हुए थे और जो
उसके सेवक थे. 9 उसने उनसे पूछा "इन लोगों के लिए तुम्हारी राय क्या है,
जिन्होंने मुझसे विनती की, 'आपके पिता द्वारा हम पर रखा गया जूआ हल्का
कर दीजिए'?" 10 उसके साथ साथ पले बढ़े युवाओं ने उसे उत्तर दिया, "जिन
लोगों ने आपसे यह विनती की है, 'आपके पिता द्वारा हम पर रखे गए भारी जूए
को हल्का कर दीजिए,' उन्हें यह उत्तर दीजिए, 'मेरे हाथ की छोटी उंगली ही
मेरे पिता की कमर से मोटी है! 11 यदि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ लादा था,
तो मैं उसे और भी अधिक भारी बना दूंगा. मेरे पिता ने तो तुम्हें नियंत्रण में
रखने के लिए कोड़े इस्तेमाल किए थे, मगर मैं इसके लिए बिच्छू का इस्तेमाल
करूंगा.'" 12 जब यरोबोअम और सारी भीड़ तीन दिन बाद रिहोबोयाम के
सामने आया, जैसा राजा द्वारा बताया गया था, "मेरे पास तीन दिन के बाद
आना." 13 राजा ने पुरनियों की सलाह को छोड़कर लोगों को कठोर उत्तर
दिया, 14 जो उन्हें युवाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार था. उसने कहा,
"मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी किया था, तो मैं इसे और ज्यादा भारी कर दूंगा.
मेरे पिता ने अगर तुम पर कोड़े चलाए थे, तो अब मैं तुम पर बिच्छू डंक के
समान कोड़े बरसाऊंगा." 15 राजा ने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह सारी
बातें याहवेह द्वारा तय की जा चुकी थी, कि वह अपनी कही हुई बात पूरी करे,
जो उन्होंने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम से शीलो के भविष्यद्वक्ता अहीयाह द्वारा की
थी. 16 जब सारे इस्राएल के सामने यह बात आ गई कि राजा ने उनकी विनती
की ओर ध्यान ही नहीं दिया है, उन्होंने राजा से यह कह दिया: "क्या भाग है
दावीद में हमारा? क्या मीरास है यिशै पुत्र में हमारी? लौट जाओ अपने-अपने
तंबुओं में, इस्राएल! दावीद, तुम अपने ही वंश को संभालते रहो!" तब इस्राएली
अपने-अपने तंबुओं को लौट गए. 17 मगर यहूदिया प्रदेशवासी इस्राएलियों पर
रिहोबोयाम का शासन हो गया. 18 राजा रिहोबोयाम ने अदोरम को, जो बेगार
श्रमिकों का मुखिया था, इस्राएलियों के पास भेजा. सारे इस्राएलियों ने उसका
पथराव किया कि उसकी हत्या हो गई. यह देख राजा रिहोबोयाम ने बिना देर
किए रथ जुतवाया और वह येरूशलेम को भाग गया. 19 इस प्रकार इस्राएल
राज्य आज तक दावीद के वंश के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में है. 20 जब सारे
इस्राएल देश में यह मालूम चल गया कि यरोबोअम लौट आया है, उन्होंने उसे
सभा में आमंत्रित किया और उसका सारे इस्राएल के राजा के रूप में राजाभिषेक
कर दिया. सिर्फ यहूदाह गोत्र दावीद वंश के साथ रहा. 21 जब रिहोबोयाम
येरूशलेम लौटा, उसने सारे यहूदाह और बिन्यामिन गोत्र को इकट्ठा किया. ये
एक लाख अस्सी हज़ार योद्धा थे, जिन्हें परखकर अलग किया गया था, कि ये
इस्राएल वंश से युद्ध करें और शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम के राज्य को दोबारा
उसे लौटा दें. 22 मगर परमेश्वर के एक जन शेमायाह को परमेश्वर का आदेश
इन शब्दों में मिला, 23 "शलोमोन के पुत्र यहूदिया के राजा रिहोबोयाम से और
यहूदाह और बिन्यामिन के सभी गोत्रों से और बाकी सभी लोगों से जाकर यह
कहो: 24 'यह याहवेह का आदेश है, अपने इन संबंधियों से, जो इस्राएल के
वंशज हैं, युद्ध न करना. तुममें से हर एक अपने-अपने घर लौट जाए, क्योंकि
यह स्थिति मेरे द्वारा उत्पन्न की गई है.'" तब उन्होंने याहवेह के आदेश का
पालन किया. याहवेह के आदेश के अनुसार वे सब अपने-अपने घर लौट गए.
25 यरोबोअम ने एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में शेकेम नामक नगर को बसाया और
वहीं रहने लगा. कुछ समय बाद उसे छोड़ उसने पनीएल नामक स्थान को
मजबूत किया. 26 यरोबोअम ने विचार किया, "अब तो राज्य दावीद वंश के
पास लौट जाएगा. 27 यदि मेरे प्रजाजन बलि चढ़ाने के उद्देश्य से येरूशलेम में
याहवेह के भवन को ही जाते रहेंगे, तो यह तय ही है कि उनका हृदय उनके
स्वामी की ओर ही लगता जाएगा; यहूदिया के राजा रिहोबोयाम की ओर, और
ये लोग मेरी हत्या कर देंगे और यहूदिया के राजा रिहोबोयाम की ओर फिर
जाएंगे." 28 सलाह-मशविरा करने के बाद, राजा ने सोने के दो बछड़े ढाले,
और लोगों के सामने घोषणा की, "बहुत हो चुका तुम्हारा येरूशलेम जाना.
इस्राएल, यह देखो, तुम्हारे देवता ये हैं, ये ही हैं जो तुम्हें मिस्र देश से बाहर
निकाल लाए हैं." 29 इसके बाद उसने एक को तो बेथेल में और दूसरे को दान
प्रदेश में प्रतिष्ठित किया. 30 यह पाप साबित हुआ, क्योंकि लोग उसकी उपासना
करने दूर के दान प्रदेश तक जाने लगे. 31 उसने पूजा स्थलों पर मंदिर बनवा
दिए, और सारी प्रजा में से ऐसे व्यक्तियों को पुरोहित चुन दिया, जो लेवी के
वंशज न थे. 32 तब यरोबोअम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन एक पर्व घोषित
कर दिया. यह वैसा ही पर्व था, जो यहूदिया में मनाया जाता था. उसने बेथेल में
वेदी पर उन बछड़ों के लिए, जो स्वयं उसने गढ़ी थी, बलियां चढ़ाईं. उसने
बेथेल में उन पूजा की जगहों पर पुरोहित चुन लिए, जिन पूजा घरों को खुद
उसी ने बनवाया था. 33 वह बेथेल में अपनी ही बनाई हुई वेदी पर आठवें महीने
के पन्द्रहवें दिन गया, और यह महीना और दिन खुद उसने अपनी ही बुद्धि से
निश्चित किया था. इस प्रकार उसने इस्राएली प्रजा के लिए यह उत्सव ठहराया
था, फिर वह धूप जलाने वेदी पर गया.

13 जहां यरोबोअम धूप जलाने के लिए वेदी के पास खड़ा था, वहां ऐसा
हुआ कि याहवेह के आदेश पर परमेश्वर का एक दूत यहूदिया से बेथेल
आया. 2 याहवेह के आदेश पर इस व्यक्ति ने वेदी से कहा, "वेदी, ओ वेदी! यह
संदेश याहवेह का है 'यह देखना कि दावीद के वंश से एक पुत्र पैदा होगा,
जिसका नाम होगा योशियाह. वह तुझ पर पूजा-गिरियों के लिए ठहराए गए
पुरोहितों को बलि चढ़ा देगा, जो पुरोहित आज तुझ पर धूप जला रहे हैं, तुझ पर
मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी.'" 3 उसने उसी दिन उन्हें एक चिन्ह भी
दिया. "यह वह चिन्ह है, जो याहवेह द्वारा दिया गया है: देख लेना कि यह वेदी
फट जाएगी और इस पर की रखी चर्बी की राख नीचे आ पड़ेगी." 4 जब
राजा ने परमेश्वर के दूत के ये शब्द सुने, जो उसने बेथेल में बनी वेदी के बारे में
कहे थे, वेदी के पास खड़े यरोबोअम ने हाथ बढ़ाते हुए यह कहा: "पकड़
लो उसे!" परमेश्वर के दूत की ओर बढ़ाया हुआ उसका हाथ सूख चुका था,
वह उसे दोबारा अपनी ओर खींच न सका. 5 दूसरी ओर वेदी भी फट चुकी
थी और वेदी की चर्बी की राख भूमि पर जा पड़ी थी. परमेश्वर के दूत ने
याहवेह की ओर से यही भविष्यवाणी की थी. 6 इस पर राजा ने परमेश्वर के दूत
से बिनती की, "कृपया याहवेह अपने परमेश्वर से दोहाई देते हुए यह विनती
कीजिए, कि मेरा यह हाथ पहले जैसा हो जाए." तब परमेश्वर के दूत ने याहवेह
की दोहाई दी, और राजा का वह हाथ पहले के समान ही हो गया. 7 तब राजा
ने परमेश्वर के दूत से कहा, "आप मेरे साथ मेरे घर आने की कृपा करें और वहां
अपना जी ठंडा करें. मैं आपको उपहार भी दूंगा." 8 परमेश्वर के दूत ने राजा
को उत्तर दिया, "यदि आप मुझे अपना आधा राज्य भी दे दें, मैं न तो आपके
घर आऊंगा और न मैं इस स्थान पर खाना खाऊंगा और न ही पानी पिऊंगा,
9 क्योंकि याहवेह की ओर से उसे यही आदेश मिला था, 'न तुम वहां कुछ
खाओगे, पिओगे और न उस मार्ग से लौटोगे, जिससे तुम वहां गए थे.'" 10
इसलिये वह जिस मार्ग से बेथेल आया था, उससे नहीं बल्कि दूसरे मार्ग से घर
लौट गया. 11 बेथेल में एक बूढ़ा भविष्यद्वक्ता था. उसके पुत्रों ने लौटकर बेथेल
में परमेश्वर के दूत से संबंधित सारी घटना का हाल सुना दिया और वे सारी बातें
भी, जो उसके द्वारा राजा के लिए की गई थी. 12 उनके पिता ने उनसे पूछा,

“किस रास्ते से लौटा है वह?” उसके पुत्रों ने उसे बता दिया कि परमेश्वर
का वह दूत, जो यहूदिया से आया था, उसी रास्ते से लौटा था. 13 उस बूढ़े
भविष्यद्वक्ता ने अपने पुत्रों को आदेश दिया, “मेरे लिए गधे पर काठी कसो.”
तब उन्होंने पिता के लिए गधे पर काठी कस दी, और वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता उस
पर बैठकर चला गया. 14 उसने परमेश्वर के दूत का मार्ग लिया और उसे एक
बांज वृक्ष की छाया में बैठा पाया. उसने उससे पूछा, “क्या तुम्हीं यहूदिया से
आए हुए परमेश्वर के दूत हो?” उसने उत्तर दिया, “जी हां.” 15 तब उस
प्राचीन भविष्यद्वक्ता ने उससे कहा, “मेरे साथ मेरे घर चलकर भोजन कर लो.”
16 परमेश्वर के दूत ने उत्तर दिया, “मैं आपके साथ नहीं जा सकता, न तो मैं
आपके साथ लौट सकता हूं, न ही मैं इस स्थान में आपके साथ कुछ खा-पी
सकता हूं; 17 क्योंकि याहवेह की ओर से मुझे यह आदेश मिला है, ‘तुम वहां न
तो कुछ खाओगे, पिओगे और न इस मार्ग से लौटोगे, जिस मार्ग से तुम वहां गए
थे.’” 18 बूढ़े भविष्यद्वक्ता ने उसे उत्तर दिया, “मैं भी तुम्हारे ही समान एक
भविष्यद्वक्ता हूं. याहवेह की ओर से एक स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, ‘उसे लौटाकर
अपने घर ले आओ, कि वह भोजन कर सके.’” मगर यह झूठ था. 19 तब
परमेश्वर का वह दूत उस वृद्ध भविष्यद्वक्ता के साथ नगर में लौट गया और उसने
उसके घर पर भोजन किया और पानी पिया. 20 जब वे भोजन के लिए बैठे ही
थे, उस बूढ़े भविष्यद्वक्ता को, जो उसे लौटा लाया था, याहवेह का संदेश मिला,
21 और उसने यहूदिया से आए हुए परमेश्वर के दूत से दृढतापूर्वक कहा, “यह
याहवेह का संदेश है: इसलिये कि तुमने याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया
है, और उनके निर्देशों का पालन नहीं किया है, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने
तुम्हें दिए थे, 22 बल्कि तुम लौट गए और तुमने उस स्थान में भोजन किया
और पानी पिया है, जिसके बारे में मैंने तुमसे कह दिया था, ‘वहां न तो भोजन
करना और न जल पीना, तुम्हारे शरीर को तुम्हारे पूर्वजों के साथ मिट्टी न
मिलेगी.’” 23 जब परमेश्वर के दूत ने भोजन कर लिया और जल पी लिया,
बूढ़े भविष्यद्वक्ता ने उस भविष्यद्वक्ता के लिए, जिसे वह यात्रा से लौटा लाया
था, गधे पर काठी कसी. 24 जब वह भविष्यद्वक्ता कुछ दूर पहुंचा, उसे मार्ग में
एक शेर मिला, जिसने उसे मार डाला. उसका शव रास्ते में ही पड़ा रहा. गधा
उस शव के पास खड़ा रह गया. शेर भी शव के ही पास खड़ा रहा. 25 वहां से
जाते हुए यात्रियों ने यह दृश्य देखा: शव मार्ग पर पड़ा था और सिंह शव के
निकट खड़ा हुआ था. उन्होंने उस नगर में जाकर यह समाचार दे दिया, जहां
वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता रहता था. 26 जब उस भविष्यद्वक्ता ने, जो उसे यात्रा से
लौटा लाया था, यह समाचार सुना, उसने यह घोषणा की, “यह परमेश्वर का
वही दूत है, जिसने याहवेह की आज्ञा टाली थी, इसलिये याहवेह ने उसे शेर के
अधिकार में कर दिया, कि शेर उसे फाड़कर मार डाले. यह ठीक वैसा ही हुआ,
जैसा याहवेह ने उससे कहा था.” 27 तब उसने अपने पुत्रों को आदेश दिया,
“मेरे जाने के लिए गधे पर काठी कसो.” उन्होंने गधे पर काठी कस दी. 28
बूढ़ा भविष्यद्वक्ता गया और पाया कि उसका शव मार्ग में पड़ा हुआ था और गधा
और शेर शव के पास खड़े हुए थे. शेर ने न तो शव को खाया था और न ही
उसने गधे को फाड़ डाला था. 29 भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के दूत के शव को
गधे पर लादा और नगर लौट आया, कि उसके लिए विलाप करके उसका
अंतिम संस्कार किया जाए. 30 उसने उसके शव को अपने लिए तैयार की गई
कब्र में रखा. लोगों ने उसके लिए यह कहते हुए विलाप किया, “हाय, मेरे
भाई!” 31 उसे कब्र में रखने के बाद उसने अपने पुत्रों से कहा, “जब मेरी मृत्यु
होगी, मुझे भी इसी कब्र में रखना, जिसमें परमेश्वर का यह दूत रखा गया है;
मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के पास रख देना, 32 क्योंकि यह तो तय है कि
वह सभी कुछ होगा, जो याहवेह के संदेश के अनुसार बेथेल की वेदी और
शमरिया के नगरों में पूजा की सभी जगहों में बने सभी घरों के संबंध में उसने
दृढतापूर्वक कहा था.” 33 यह सब होने पर भी यरोबोअम अपने गलत कामों से
न फिरा. उसने पूजा की जगहों के लिए अपनी सारी प्रजा में से पुरोहित चुने. जो
कोई भी पुरोहित का पद चाहता था, वह उसे पूजा की जगहों के पुरोहित होने के
लिए अभिषिक्त कर देता था. 34 यह नीति यरोबोअम के परिवार के लिए पाप
हो गई, यही यरोबोअम के वंश का पृथ्वी पर से विनाश का कारण हो गया.

14 उसी समय यरोबोअम का पुत्र अबीयाह बीमार हो गया. 2 यरोबोअम
ने अपनी पत्नी से कहा, “ऐसा भेष बदलो, कि कोई भी तुम्हें पहचान न
सके, कि तुम यरोबोअम की पत्नी हो. और तुम शीलो को चली जाओ, जहां
भविष्यद्वक्ता अहीयाह रहते हैं. यह वही भविष्यद्वक्ता हैं, जिन्होंने मेरे विषय
में यह भविष्यवाणी की थी, मैं ही इस प्रजा का राजा बन जाऊंगा. 3 अपने
साथ दस रोटियां, कुछ टिकियां और एक कुप्पी शहद लेकर उनसे भेंटकरने
चली जाओ. वही तुम्हें बताएंगे कि बालक का क्या होगा.” 4 यरोबोअम की
पत्नी ने ऐसा ही किया. वह तैयार हो शीलो नगर में अहीयाह के घर पर जा
पहुंची. बूढ़ा होने के कारण अहीयाह की नज़रें धुंधली पड़ चुकी थी, और
वह देख नहीं सकता था. 5 मगर याहवेह ने अहीयाह को पूर्वसूचित किया,
“यरोबोअम की पत्नी तुमसे अपने पुत्र की स्थिति के विषय में पूछताछ करने आ
रही है. यह बालक अस्वस्थ है. तुम उसे ऐसा और ऐसा जवाब देना है.” जब
वह भविष्यद्वक्ता के निकट पहुंची, उसने अन्य स्त्री होने का बहाना किया. 6
अहीयाह उसके पदचाप सुन रहे थे. जैसे ही वह द्वार पर पहुंची, अहीयाह ने
पुकारते हुए कहा, “श्रीमती यरोबोअम, भीतर आ जाइए. क्या लाभ है आपके
वेष बदलने का? मुझे आपको अप्रिय समाचार देने का दायित्व सौंपा गया है. 7
जाकर यरोबोअम को सूचित कर दीजिए, ‘याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह
संदेश है, मैंने सारी प्रजा में से तुम्हें चुनकर उन्नत किया, तुम्हें अपनी प्रजा का
प्रधान नियुक्त किया. 8 और दावीद के वंश से राज्य छीनकर तुम्हें दे दिया है;
फिर भी तुम मेरे सेवक दावीद के समान साबित न हुए, जिसने मेरे आदेशों का
पालन किया और पूरे मन से मेरा अनुसरण करता रहा—सिर्फ वही करता रहा,
जो मेरी दृष्टि में सही है; 9 मगर तुमने तो ऐसी बुराई की है, जो तुमसे पहले हुए
उनसे भी बुरी है; तुमने अपने लिए पराए देवता बना लिए, धातु की मूर्तियां गढ़
लीं और मेरे क्रोध को भड़का दिया. तुमने तो मुझे अपने ही पीछे फेंक दिया है.
10 “‘इसलिये मैं यरोबोअम के परिवार पर मुसीबत डाल दूंगा. मैं यरोबोअम के
वंश से हर एक पुरुष को नाश कर दूंगा, चाहे वह इस्राएल में बंधुआ हो या
स्वतंत्र. मैं यरोबोअम के परिवार को उसी प्रकार भस्म कर दूंगा जिस प्रकार कोई
गोबर को पूरी तरह भस्म कर फेंक देता है. 11 यदि यरोबोअम के किसी भी
संबंधी की मृत्यु नगर के भीतर होती है, तो उसका शव कुत्ते खा जाएंगे; यदि
किसी की मृत्यु खुले मैदान में होती है, तो वह आकाश के पक्षियों का आहार हो
जाएगा; यह याहवेह का संदेश है!’ 12 “इसलिये अब उठो और अपने घर लौट
जाओ. तुम्हारे नगर में प्रवेश करते ही बालक की मृत्यु हो जाएगी. 13 पूरा
इस्राएल उसके लिए विलाप करेगा, और फिर उसे गाड़ा जाएगा; सिर्फ वह
अकेला होगा जिसे यरोबोअम के परिवार में कब्र मिलेगी; क्योंकि याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर ने सारे यरोबोअम परिवार से सिर्फ उसी में कुछ भला पाया
है. 14 “इसके अलावा आज ही याहवेह अपने लिए इस्राएल में से एक राजा
पैदा करेंगे, जो यरोबोअम के परिवार को आज ही हमेशा के लिए मिटा देगा.
15 इसके बाद याहवेह इस्राएल पर वैसा ही वार करेंगे, जैसा जल में सरकंडा.
वह इस समृद्ध भूमि पर से इस्राएल को उखाड़कर छोड़ेंगे—उस भूमि पर से, जो
उन्होंने उनके पूर्वजों को दी थी. वह उन्हें फरात नदी के पार तक बिखरा देंगे,
क्योंकि उन्होंने अशेरा खंभे गढ़ कर याहवेह को क्रोधित कर दिया है. 16
यरोबोअम द्वारा किए गए पापों के कारण याहवेह इस्राएल को छोड़ देंगे, वे पाप
काम जो खुद यरोबोअम किए और जिनके द्वारा उसने इस्राएल को पाप करने

लिए उकसाया.” 17 तब यरोबोअम की पत्नी वहां से विदा हो गई, और अपने
नगर तिर्ज़ाह पहुंची. उसने अपने घर की डेवढ़ी पर पैर रखा ही था, कि उसका
पुत्र मर गया. 18 सारे इस्राएल ने उसका अंतिम संस्कार किया, उसके लिए
विलाप किया, ठीक जैसा याहवेह ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता अहीयाह के द्वारा
कहा गया था. 19 यरोबोअम के बाकी काम, यानी उसने युद्ध कैसे किया और
उसने किस प्रकार शासन किया, इनका ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास
की पुस्तक में लिखा है. 20 यरोबोअम का पूरा शासनकाल बाईस साल का था.
फिर वह अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया. उसकी जगह पर उसका
पुत्र नादाब राजा बना. 21 इस समय यहूदिया का शासक था शलोमोन का पुत्र
रिहोबोयाम. जिस समय उसने शासन शुरू किया, उसकी उम्र एकतालीस साल
की थी. येरूशलेम में उसने सत्रह साल शासन किया. येरूशलेम वह नगर है,
जिसे याहवेह ने सारे इस्राएल में से इसलिये चुना, कि इसमें अपना नाम की
प्रतिष्ठा करें. उसकी माता का नाम था नामाह जो अम्मोनी थी. 22 यहूदिया प्रदेश
ने वह किया, जो याहवेह की नज़रों में गलत था. उन्होंने अपने पापों के द्वारा
याहवेह में इतनी जलन पैदा कर दी, जितनी उनके किसी भी पूर्वज ने कभी न
की थी. 23 उन्होंने भी अपने लिए पूजा की जगह, हर एक ऊंची पहाड़ी और
हर एक घने पेड़ के नीचे पूजा-स्तम्भ और अशेराह के खंभे बनवाए थे. 24 देश
में पुरुषगामियों के लिए पुरुष वेश्या भी मंदिरों में रखे गए थे. ये सब उन सारे
घृणित कामों में संलग्न थे, जो उन जातियों में किए जाते थे, जिन्हें याहवेह ने
इस्राएल के सामने से भगा दिया था. 25 राजा रिहोबोयाम के शासनकाल के
पांचवें साल में मिस्र के राजा शिशाक ने येरूशलेम पर हमला कर दिया. 26
उसने याहवेह के भवन से और राजा का महल में से सारा कीमती सामान लूट
लिया. वह सभी कुछ अपने साथ ले गया, यहां तक कि शलोमोन द्वारा गढ़ी गई
सारी सोने की ढालें भी. 27 तब राजा रिहोबोयाम ने उनकी जगह पर कांसे में
गढ़ी गई ढालें वहां रख दीं. इनकी जवाबदारी रिहोबोयाम ने राजघराने के
पहरेदारों के प्रधान को सौंप दी. 28 तब रीति यह बन गई कि जब-जब राजा
याहवेह के भवन को जाता था, पहरेदार ये ढालें लेकर चलते थे और राजा के
वहां से लौटने पर इन्हें पहरेदारों के कमरों में दोबारा रख दिया जाता था. 29
रिहोबोयाम के बाकी काम और उसके सारे कृत्य यहूदिया के राजाओं की
इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं. 30 रिहोबोयाम और यरोबोअम हमेशा ही
आपस में युद्ध करते रहे. 31 रिहोबोयाम अपने पूर्वजों के समान हमेशा के लिए
सो गया. उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा गया.
उसकी माता का नाम नामाह था. वह अम्मोनी थी. उसके स्थान पर उसका पुत्र
अबीयाम राजा बना.

15 नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के शासनकाल के अठारहवें साल में अबीयाम
ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया. 2 उसने येरूशलेम में तीन साल
शासन किया. उसकी माता का नाम माकाह था. वह अबीशालोम की पुत्री थी.
3 उसने अपने पिता के जैसा ही चालचलन रखा, और वे ही वे सारे पाप किए जो
अपने पिता ने किए. याहवेह, अपने परमेश्वर के प्रति उसका हृदय पूरी तरह
समर्पित न था, जैसा उसके पूर्वज दावीद का था. 4 यह सब होने पर भी, दावीद
के कारण याहवेह, उसके परमेश्वर ने उसके लिए एक पुत्र पैदा कर उसके हित में
येरूशलेम में एक दीप जला रखा, और येरूशलेम को स्थिरता दी. 5 क्योंकि
दावीद ने वही किया था, जो याहवेह की दृष्टि में सही था. दावीद आजीवन
याहवेह द्वारा दिए गए आदेशों से नहीं हटे—सिर्फ हित्ती उरियाह से संबंधित
घटना के सिवाय. 6 पूरे जीवन भर रिहोबोयाम और यरोबोअम के बीच युद्ध
होता रहा. 7 अबीयाम द्वारा किए गए बाकी काम और वह सब, जो उसने किया,
यहूदिया के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में लिखी हैं. अबीयाम और
यरोबोअम में युद्ध होता रहा. 8 अबीयाम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए
सो गया, और उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा गया.
उसके स्थान पर आसा राजा बना. 9 राजा यरोबोअम के शासनकाल के बीसवें
साल में आसा ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया. 10 उसने येरूशलेम में
रहकर एकतालीस साल तक शासन किया. उसकी दादी का नाम था माकाह जो
अबीशालोम की पुत्री थी. 11 आसा ने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही
था—जैसा उसके मूल पुरुष दावीद ने किया था. 12 उसने मंदिरों में से पुरुष
वेश्याओं को देश से निकाल दिया और अपने पिता द्वारा गढ़ी गई सारी मूर्तियों
को हटवा दिया. 13 उसने अपनी दादी माकाह को राजमाता पद से हटा दिया,
क्योंकि उसने अशेरा की घृणित मूर्ति बनाकर रखी थी. आसा ने इस मूर्ति को
काटकर उसे किद्रोन नदी तट पर राख बना डाला. 14 मगर पूजा-गिरियों को
हटाया नहीं गया. फिर भी आसा का मन जीवन भर याहवेह के लिए पूरी तरह
सच्चा बना रहा. 15 उसने याहवेह के भवन में वे सारी पवित्र वस्तुएं लाकर रख
दीं, सोना, चांदी और बर्तन, जो उसके पिता और खुद उसके पास थे. 16 आसा
और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके पूरे जीवन भर युद्ध चलता रहा. 17
इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदिया पर हमला कर दिया, और उसने रामाह नगर
के चारों ओर किला बनवाया, ताकि इस्राएल का कोई भी व्यक्ति इस्राएल की
सीमा से बाहर न जाए और यहूदिया के राजा आसा इस तरफ न पहुंच सके. 18
इसके बाद आसा ने याहवेह के भवन में बाकी रह गए सोने और चांदी और राजा
के भंडार में बचे हुए सोने और चांदी को लेकर अपने सेवकों को दिया, और
उन्हें दमेशेक निवासी हेज़ीऑन के पोते, ताब्रिम्मन के पुत्र बेन-हदद के लिए यह
कहते हुए भेज दिया, 19 “आपके और मेरे बीच एक वाचा बांधी जाए—ठीक
जैसी मेरे और आपके पिताओं के बीच थी. मैं उपहार के रूप में आपके लिए
सोना और चांदी भेज रहा हूं. आप इस्राएल के राजा बाशा से अपनी वाचा तोड़
दीजिए, कि वह यहां से अपनी सेनाएं हटा ले.” 20 बेन-हदद राजा आसा
के प्रस्ताव से राज़ी हो गया. उसने इस्राएल राज्य के नगरों के विरुद्ध अपने
सैन्य अधिकारी भेज दिए. उन्होंने इयोन, दान, बेथ-माकाह के आबेल और पूरे
किन्नेरेथ को नफताली प्रदेश सहित अपने अधीन कर लिया. 21 जब बाशा को
यह समाचार प्राप्त हुआ, उसने रामाह का गढ़ बनाना रोक कर सारा काम समाप्त
कर दिया और वह खुद तिरज़ाह में रहता रहा. 22 इसके बाद राजा आसा ने
यहूदिया में सभी के लिए घोषणा की—किसी को छूट नहीं थी—सबने मिलकर
राजा बाशा द्वारा लगाई निर्माण-सामग्री, पत्थर और लकड़ी लेकर आसा द्वारा
बनाए जा रहे बिन्यामिन और मिज़पाह के गेबा में लगा दी. 23 आसा द्वारा किए
गए बाकी काम, उनका शौर्य और उनकी सारी उपलब्धियां और उसके द्वारा
बसाए गए नगरों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में
है. उसके बुढ़ापे में उसके पैर रोगग्रस्त हो गए थे. 24 आसा अपने हमेशा के
लिए सो गया और उसको उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रख
दिया गया. उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोशाफ़ात राजा बना. 25 आसा के
शासनकाल के दूसरे साल में यरोबोअम का पुत्र नादाब इस्राएल पर शासन करने
लगा. इसने इस्राएल पर दो साल तक शासन किया. 26 उसने वही किया, जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था. उसका स्वभाव उसके पिता के समान ही था.
नादाब ने भी इस्राएल से वही पाप करवाए, जो उसके पिता ने उनसे करवाए थे.
27 इस्साखार वंश के अहीयाह के पुत्र बाशा ने नादाब के विरुद्ध साजिश रची,
और बाशा ने उसे फिलिस्तीनियों की सीमा में, गिब्बथोन नामक स्थान पर, मार
गिराया, क्योंकि नादाब ने सारी इस्राएली सेना लेकर गिब्बथोन को घेर रखा था.
28 यह यहूदिया के राजा आसा के शासन का तीसरा साल था, जब बाशा ने
नादाब की हत्या की, और उसकी जगह पर राजा हो गया. 29 जैसे ही उसने
राजपद संभाला, उसने यरोबोअम के सारे वंश का नाश कर दिया, ठीक वैसे ही
जैसे याहवेह ने शीलोनवासी अपने सेवक अहीयाह के द्वारा भविष्यवाणी की थी.

उसने यरोबोअम के परिवार में एक व्यक्ति भी जीवित न छोड़ा. 30 उन पापों के
कारण, जो यरोबोअम ने किए और उनके लिए, जो उसने इस्राएल को करने के
लिए उकसाया, उसने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के क्रोध को भड़काया. 31
नादाब द्वारा किए गए बाकी काम और जो उसके काल घटी घटनाएं इस्राएल के
राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में लिखा है. 32 आसा और इस्राएल के
राजा बाशा के बीच उनके पूरे जीवन भर युद्ध चलता रहा. 33 यहूदिया के राजा
आसा के शासन के तीसरे साल में, तिरज़ाह नगर में अहीयाह के पुत्र बाशा ने सारे
इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. उसने चौबीस साल शासन किया. 34 उसने
वह सब किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. उसका आचरण और उसके
पाप यरोबोअम के समान थे, जो उसने इस्राएल को भी करने के लिए उकसाया.

16 हनानी के पुत्र येहू के पास बाशा के विरुद्ध याहवेह का यह संदेश आया:
2 “इसलिये कि मैंने धूल से उठाकर तुम्हें प्रतिष्ठित किया, और अपनी
प्रजा इस्राएल का मुखिया चुना, मगर तुम्हारा स्वभाव यरोबोअम के समान ही
रहा है. तुमने मेरी प्रजा इस्राएल को पाप की ओर उकसाया और उनके पाप के
द्वारा तुमने मेरे क्रोध को भड़काया है. 3 अब देख लेना कि मैं बाशा के वंश को
मिटा दूंगा और तुम्हारे वंश को नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के समान कर दूंगा. 4
यदि बाशा के किसी भी संबंधी की मृत्यु नगर के भीतर होती है, तो उसका शव
कुत्तों का भोजन हो जाएगा; यदि किसी की मृत्यु खुले मैदान में होती है, तो वह
आकाश के पक्षियों का भोजन हो जाएगा.” 5 बाशा की बाकी उपलब्धियां,
उसके द्वारा किए गए काम और उसके शौर्य का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की
इतिहास नामक पुस्तक में है. 6 बाशा की मृत्यु हुई, और वह तिरज़ाह नगर
में गाड़ा गया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र एलाह राजा बना. 7 इसके
अलावा, हनानी के पुत्र भविष्यद्वक्ता येहू के द्वारा याहवेह का संदेश बाशा और
उसके सारे परिवार के विरुद्ध ये दोनों ही कारणों से भेजा गया: उसने यरोबोअम
के परिवार के समान वे काम करके, जो याहवेह दृष्टि में गलत थे, याहवेह का
क्रोध भड़काया और दूसरा, उसने यरोबोअम के वंश को खत्म कर डाला. 8
यहूदिया पर राजा आसा के शासन के छब्बीसवें साल में बाशा के पुत्र एलाह ने
इस्राएल पर, तिरज़ाह नगर में रहते हुए अपना शासन शुरू किया. उसने दो साल
शासन किया. 9 किंतु उसके सेवक ज़िमरी ने, जो आधी रथ सेना का मुखिया
था, उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा. जब एलाह तिरज़ाह में राजघराने के अधिकारी
अरज़ा के घर में नशे में था, 10 ज़िमरी ने आकर उस पर वार कर उसकी हत्या
कर दी. और उसके स्थान पर शासन करने लगा. यह यहूदिया के राजा आसा के
शासनकाल के सत्ताईसवें साल की घटना है. 11 जब उसने शासन शुरू किया,
सिंहासन पर बैठते ही उसने बाशा के परिवार के सारे सदस्यों की हत्या कर दी.
उसने परिवार और मित्रों के परिवारों में एक भी पुरुष को जीवित न छोड़ा. 12
इस प्रकार ज़िमरी ने याहवेह के संदेश के अनुसार, जो उन्होंने भविष्यद्वक्ता येहू
के द्वारा बाशा के विरुद्ध कहा था, बाशा के पूरे परिवार को खत्म कर दिया! 13
यह सब उन पापों के कारण हुआ जो बाशा और उसके पुत्र एलाह ने किए, और
इस्राएल को भी यह पाप करने के लिए प्रेरित किया, और इसलिये भी की
उन्होंने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर को अपने बेकार के कामों द्वारा क्रोधित
किया. 14 एलाह की बाकी उपलब्धियों का और उसके सारे कामों का ब्यौरा
इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में किया गया है. 15 यहूदिया के
राजा आसा के शासन के सत्ताईसवें साल में तिरज़ाह नगर में ज़िमरी ने सात दिन
शासन किया. सेना ने गिब्बथोन नगर की घेराबंदी की, जो फिलिस्तीनियों के
अधीन में एक नगर था. 16 नगर की घेराबंदी की हुई. सेना ने किसी को यह
कहते हुए सुना, “ज़िमरी ने षड़्यंत्र रचा है, और उसने राजा की हत्या कर दी
है.” यह सुन सारे इस्राएल ने ओमरी को सेनापति बना दिया, यानी उसे उस दिन
छावनी में ही इस्राएल का राजा घोषित कर दिया गया. 17 इस्राएली सेना ने
ओमरी के साथ गिब्बथोन से कूच किया और तिरज़ाह नगर को अधीन कर
लिया. 18 जब ज़िमरी ने देखा कि नगर उसके हाथ से निकल चुका है, वह
राजघराने के गढ़ में चला गया, और राजघराने में आग लगा ली, जिससे उसकी
मृत्यु हो गई. 19 यह उसके पापों के कारण हुआ. उसने वही किया, जो याहवेह
की दृष्टि में गलत था, यरोबोअम के समान बुरी चाल चलने के द्वारा, जिसमें
उसने इस्राएल को पाप करने के लिए उकसाया था. 20 ज़िमरी के बाकी कामों
का ब्यौरा और उसके द्वारा रचे गए षड़्यंत्र का वर्णन इस्राएल के राजाओं की
इतिहास नामक पुस्तक में किया गया है. 21 इस्राएली प्रजा दो भागों में बंट गई.
आधे लोग गीनाथ के पुत्र तिबनी की तरफ हो गए, कि उसे राजा बना दें और
आधे ओमरी के. 22 ओमरी के समर्थकों ने गीनाथ के पुत्र तिबनी के समर्थकों
को हरा दिया. इसमें तिबनी की मृत्यु भी हो गई, और ओमरी राजा बन गया. 23
यहूदिया के राजा आसा के शासनकाल के एकतीसवें साल में ओमरी ने इस्राएल
पर शासन शुरू किया. इनमें से उसने छः साल तिरज़ाह नगर में शासन किया. 24
उसने चौंतीस किलो चांदी देकर शेमेर नामक व्यक्ति से शमरिया की पहाड़ी
खरीद ली. उसने पहाड़ी को गढ़ में बदल दिया. उसने इस ज़मीन के मालिक
शेमेर के नाम पर इस नगर का नाम शमरिया रख दिया. 25 ओमरी ने वे काम
किए, जो याहवेह की दृष्टि में गलत थे. ये काम उन सभी की तुलना में अधिक
बुरे थे, जो ओमरी के पहले के राजाओं ने किए थे. 26 उसका स्वभाव हर प्रकार
से नेबाथ के पुत्र यरोबोअम समान था. जो पाप यरोबोअम ने किए थे, वे पाप
उसने इस्राएली प्रजा को करने के लिए भी उकसाया. उन्होंने याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर को अपनी दुष्टता के द्वारा क्रोधित किया. 27 ओमरी द्वारा किए गए
बाकी कामों और उसके द्वारा दिखाए शौर्य का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की
इतिहास नामक पुस्तक में किया गया है. 28 ओमरी की मृत्यु हुई और उसे
शमरिया में गाड़ा गया. उसकी जगह पर उसका पुत्र अहाब राजा बना. 29
यहूदिया के राजा आसा के शासनकाल के अड़तीसवें साल में ओमरी के पुत्र
अहाब ने इस्राएल पर शासन शुरू किया. अहाब ने इस्राएल पर बाईस साल
शासन किया. 30 ओमरी के पुत्र अहाब ने वही सब किया, जो याहवेह की दृष्टि
में गलत थे. यह सब उन सबसे कहीं अधिक गलत था, जो उसके पहले के
राजाओं द्वारा किया गया था. 31 इसके अलावा, मानो इतना काफ़ी न था, कि
उसने वे ही पाप किए, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम द्वारा किए गए थे, उसने
सीदोनियों के राजा एथबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह कर लिया और फिर वह
जाकर बाल की पूजा-अर्चना करने लगा. 32 शमरिया में उसने बाल के लिए
एक मंदिर बनवाया. इस मंदिर में उसने बाल के लिए एक वेदी भी बनवाई. 33
अहाब ने अशेरा के खंभे की भी स्थापना की. यह सब करके अहाब ने याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर को उन सब की अपेक्षा अधिक क्रोधित किया, जो उसके
पहले के राजाओं ने किया था. 34 इन्हीं दिनों में बेथेल निवासी हिएल ने
येरीख़ो नगर को बनाना शुरू किया और जब उसने इसकी नींव डाली तो उसके
पहलौठे पुत्र अबीराम की मृत्यु हो गई. और जब वह नगर फाटक, लगवा रहा
था, उसके छोटे पुत्र सेगूब की मृत्यु हो गई. यह याहवेह के वचन के अनुसार
था, जो उन्होंने नून के पुत्र यहोशू द्वारा बताया था.

17 गिलआद क्षेत्र के तिशबे नगर के निवासी एलियाह ने अहाब से कहा,
“इस्राएल के जीवित परमेश्वर याहवेह की शपथ, मैं जिनका सेवक हूं,
आनेवाले सालों में बिना मेरे कहे, न तो ओस पड़ेगी और न ही बारिश होगी.”
2 तब उसे याहवेह का यह संदेश मिला, 3 “यहां से जाओ और पूर्व में जाकर
केरिथ नाले के क्षेत्र में, जो यरदन के पूर्व में है, छिप जाओ. 4 तुम्हें नाले का
जल पीना होगा. मैंने कौवों को आदेश दिया है कि वे वहां तुम्हारे भोजन का
इंतजाम करें.” 5 तब एलियाह ने जाकर याहवेह के आदेश का पालन किया,
और यरदन नदी के पूर्व में केरिथ नाले के पास रहने लगे. 6 सुबह-सुबह कौवे

उनके लिए रोटी और मांस ले आते थे; वैसे ही शाम को भी. 7 कुछ समय बाद
वह नाला सूख गया, क्योंकि उस देश में बारिश हुई ही नहीं थी: 8 एलियाह
को याहवेह से यह आदेश प्राप्त हुआ: 9 "उठो, सीदोन प्रदेश के ज़रफता नगर
को जाओ, और वहीं रहो; और सुनो, मैंने वहां एक विधवा को आदेश दिया है
कि वह तुम्हारे भोजन की व्यवस्था करे." 10 तब एलियाह ज़रफता चले गए.
जब वह नगर द्वार के पास पहुंचे, उन्होंने एक विधवा को ईंधन-लकड़ी इकट्ठी
करते देखा. उन्होंने पुकारकर उससे विनती की, "पीने के लिए एक बर्तन में
थोड़ा-सा जल ले आओ." 11 जब वह जल लेने जा ही रही थी, एलियाह ने
दोबारा पुकारकर उससे विनती की: "मेरे लिए रोटी का एक टुकड़ा भी लेते
आना." 12 उस स्त्री ने उन्हें उत्तर दिया, "याहवेह, आपके जीवित परमेश्वर
की शपथ, मैंने कुछ भी नहीं पकाया है. घर पर एक बर्तन में मुट्ठी भर आटा
और एक कुप्पी में थोड़ा-सा तेल ही बाकी रह गया है. अब मैं यहां थोड़ी सी
लकड़ियां बीन रही थी, कि जाकर कुछ पका लूंगी, कि मैं और मेरा पुत्र इसे
खाएं; उसके बाद मृत्यु तो तय है ही." 13 एलियाह ने उससे कहा, "डरो मत.
वही करो जैसा अभी तुमसे कहा है. हां, मेरे लिए एक छोटी रोटी बनाकर
ले आना, इसके बाद अपने लिए और अपने पुत्र के लिए भी बना लेना. 14
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह संदेश है, 'उस बर्तन का आटा खत्म न
होगा और तेल की वह कुप्पी उस दिन तक खाली न होगी, जब तक याहवेह
पृथ्वी पर बारिश न भेज दें.'" 15 वह गई और ठीक वैसा ही किया, जैसा
एलियाह ने कहा था. एलियाह और उस स्त्री का परिवार इससे अनेक दिन तक
भोजन करते रहे. 16 उस बर्तन में न आटा खत्म हुआ और न ही तेल की वह
कुप्पी कभी खाली हुई, एलियाह द्वारा दिए गए याहवेह के संदेश के अनुसार.
17 कुछ समय बाद जो उस घर की स्वामिनी का पुत्र बीमार हो गया. उसका रोग
ऐसा बढ़ गया था कि उसका सांस लेना बंद हो गया. 18 उस स्त्री ने एलियाह से
कहा, "परमेश्वर के दूत, मुझसे ऐसी कौन सी भूल हो गई है? आपके यहां आने
का उद्देश्य यह है कि मुझे मेरा पाप याद कराया जाए और मेरे पुत्र के प्राण ले
लिए जाएं?" 19 एलियाह ने उससे कहा, "अपना पुत्र मुझे दो." यह कहते हुए
उन्होंने उसके पुत्र को उसके हाथों से ले लिया और उसे उसी ऊपरी कमरे में ले
गए, जहां वह ठहरे हुए थे, और उसी बिछौने पर लिटा दिया, जिस पर वह सोते
थे. 20 उन्होंने याहवेह को पुकारते हुए कहा, "याहवेह, मेरे परमेश्वर, क्या इस
विधवा पर, जिसके यहां मैंने आसरा लिया है, क्या, यह विपत्ति आपके ही के
द्वारा लाई गई है, कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई है?" 21 यह कहकर वह
बालक पर तीन बार पसरे और याहवेह की दोहाई देते हुए कहा, "याहवेह, मेरे
परमेश्वर, इस बालक के प्राण उसमें लौटा दीजिए." 22 याहवेह ने एलियाह की
दोहाई सुन ली; बालक के प्राण उसमें लौट आए और वह जीवित हो गया. 23
एलियाह बालक को लेकर ऊपरी कमरे से घर में आ गए और उसे उसकी माता
को सौंप दिया. और उससे कहा, "देखो, तुम्हारा पुत्र जीवित है." 24 यह देख
वह स्त्री एलियाह से कहने लगी, "अब मैं यह जान गई हूं कि आप परमेश्वर के
दूत हैं और आपके मुख से निकला हुआ याहवेह का संदेश सच है."

18 एक लंबे समय के बाद, तीसरे साल में एलियाह को याहवेह का यह
आदेश प्राप्त हुआ: "जाओ, स्वयं को अहाब के सामने पेश करो. मैं
पृथ्वी पर बारिश भेज रहा हूं." 2 तब एलियाह अपने आपको अहाब की
उपस्थिति में प्रस्तुत करने चले गए. इस समय शमरिया में अकाल बहुत ही भारी
था. 3 अहाब ने ओबदयाह को बुलवाया. ओबदयाह याहवेह का बड़ा भक्त था.
4 वास्तव में जब ईजेबेल ने याहवेह के भविष्यवक्ताओं को मारना शुरू किया था,
ओबदयाह ने सौ भविष्यवक्ताओं को पचास-पचास करके गुफ़ा में छिपा रखा था
और वह उनके लिए भोजन और जल का प्रबंध करते रहे थे. 5 अहाब ने
ओबदयाह से कहा, "सारे देश में जाकर जल के सोतों और घाटियों की खोज
करो. संभव है हमें हमारे घोड़ों और खच्चरों के लिए चारा मिल ही जाए और
उनके प्राण बच जाएं. इस प्रकार हमारे पशु नाश होने से बच जाएंगे." 6 इसके
लिए अहाब और ओबदयाह ने सारे देश को दो भागों में बांट लिया. अहाब एक
दिशा में चला गया और ओबदयाह अकेले दूसरी दिशा में. 7 जब ओबदयाह
मार्ग में ही थे कि उनकी भेंट एलियाह से हो गई. ओबदयाह ने उन्हें पहचान
लिया. भूमि पर मुख के बल होकर उन्होंने एलियाह से कहा, "क्या आप ही मेरे
स्वामी एलियाह हैं?" 8 एलियाह ने उत्तर दिया, "हां. जाकर अपने स्वामी को
सूचित करो, 'देखिए, एलियाह आ गया है.'" 9 ओबदयाह ने उन्हें उत्तर दिया,
"मुझसे ऐसा कौन सा पाप हो गया है," जो आप मृत्यु दंड के लिए मुझे अहाब
के हाथों में सौंप रहे हैं? 10 "याहवेह, आपके जीवित परमेश्वर की शपथ, न तो
कोई ऐसा देश है न ऐसा राष्ट्र, जहां मेरे स्वामी ने आपको खोजने किसी को न
भेजा हो. और जब उन्हें यह सूचना दी गयी, एलियाह तो यहां भी नहीं है, वह
उस देश और राष्ट्र से शपथ खिलाई, कि खोजने पर भी उन्हें आप नहीं मिले.
11 और यहां आपका आदेश है, जाकर अपने स्वामी को बताओ, 'देखिए, यहां
है एलियाह!' 12 मैं जैसे ही यहां आपको छोड़कर जाऊंगा, याहवेह के आत्मा
आपको न जाने कहां ले जाएंगे. और जब मैं अहाब को सूचना दूंगा और वह
आपको यहां नहीं पाएंगे, वह तो मुझे मृत्यु दंड दे देंगे, जबकि मैं आपका सेवक
बचपन से याहवेह के लिए भय रखता आया हूं. 13 क्या मेरे स्वामी को इस
विषय में बताया नहीं गया, कि जब ईजेबेल ने याहवेह के भविष्यवक्ताओं की
हत्या कर दी थी, मैंने उस स्थिति में क्या किया था, मैंने कैसे याहवेह के सौ
भविष्यवक्ताओं को पचास-पचास करके गुफ़ा में छिपा दिया था और उनके लिए
भोजन और जल की व्यवस्था की थी? 14 और अब आप आदेश दे रहे है,
जाकर अपने स्वामी को सूचना दो, 'देखिए, यहां है एलियाह.' अहाब तो ज़रूर
मेरी हत्या कर देंगे!" 15 एलियाह ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं जिनका सेवक हूं,
उस जीवित, सेनाओं के याहवेह की शपथ, आज मैं निश्चित ही अपने आपको
अहाब के सामने प्रस्तुत करूंगा." 16 तब ओबदयाह अहाब से भेंटकरने चले
गए. और उन्हें यह सूचना दे दी. अहाब एलियाह से मिलने चला. 17 एलियाह
को देखते ही अहाब कह उठा, "अच्छा तुम्हीं हो इस्राएल के सतानेवाले!"
18 एलियाह ने उत्तर दिया, "सतानेवाला मैं नहीं, आप और आपके पिता का
परिवार है. आप हैं जिन्होंने याहवेह के आदेशों को टाला है और बाल देवताओं
का अनुसरण किया है. 19 इसलिये अब मेरे सामने कर्मेल पर्वत पर सारे इस्राएल
को इकट्ठा होने के लिए आदेश भेजिए. इसके अलावा बाल के चार सौ पचास
और अशेरा के चार सौ भविष्यवक्ताओं को भी बुलाइए, जो ईजेबेल की मेज़ पर
भोजन करते हैं." 20 तब अहाब ने सारे इस्राएल और भविष्यवक्ताओं को
कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा होने का आदेश दिया. 21 एलियाह ने भीड़ के निकट
आकर कहा, "दो मतों के बीच तुम लोग और कब तक डगमगाते रहोगे? यदि
याहवेह ही परमेश्वर हैं तो उनका अनुसरण करो; और अगर बाल, तो उसका."
इसके उत्तर में लोग एक शब्द तक न कह सके. 22 तब एलियाह ने भीड़ को
कहा, "सिर्फ मैं; याहवेह का भविष्यद्वक्ता बाकी रह गया हूं, मगर बाल के
भविष्यद्वक्ता चार सौ पचास व्यक्ति हैं. 23 हमें दो बछड़े दिए जाएं. उन्हें अपने
लिए बछड़ा चुनने दिया जाए. वे उसके टुकड़े कर लकड़ी पर सजा दें, मगर
लकड़ी में आग न लगाई जाए. मैं भी दूसरे बछड़े को तैयार कर लकड़ी पर
सजाऊंगा मगर उसमें आग न लगाऊंगा. 24 तुम लोग अपने देवता की दोहाई
देना और मैं याहवेह की दोहाई दूंगा. परमेश्वर वही होगा, जो आग के द्वारा उत्तर
देगा." भीड़ ने एक स्वर में उत्तर दिया, "अच्छा विचार है यह!" 25 एलियाह
ने बाल के भविष्यवक्ताओं के सामने प्रस्ताव रखा, "अपने लिए एक बछड़ा
चुन लो और पहले तुम इसे तैयार करो, क्योंकि तुम लोग गिनती में अधिक हो.
अपने देवता की दोहाई दो, मगर उसमें आग न लगाना." 26 उन्होंने उन्हें दिए

गए बछड़े को लेकर उसे बलि के लिए तैयार किया और उन्होंने बाल को बलि
देनी शुरू की और सुबह से दोपहर तक वे यह कहकर दोहाई देते रहे, “हे बाल,
हमारी सुनो!” किंतु न तो कोई आवाज ही सुनी गई और न किसी से कोई उत्तर
ही मिला. वे अपनी बनाई हुई वेदी के आस-पास उछलते-कूदते रहे. 27 दोपहर
के समय एलियाह ने उनका मज़ाक उड़ाकर कहा: “थोड़ा ऊंची आवाज में
पुकारो! वह देवता है, हो सकता है वह ध्यानमग्न होगा, या वह शौच के लिए
गया होगा या यह भी संभव है कि वह यात्रा पर गया हो या वह गहरी नींद में हो,
जिसे जगाना ज़रूरी हो गया है.” 28 तब वे ऊंची आवाज में चिल्लाते हुए
अपनी प्रथा के अनुसार तलवारों और बर्छियों से अपने आपको छेदने लगे,
जिससे उनकी देह लहूलुहान हो गई. 29 दोपहर के बाद, वे संध्या बलि तक
आवेश में पागलों जैसे बड़बड़ाते रहे, मगर कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं
दी. न किसी ने उत्तर दिया न किसी ने इनकी ओर ध्यान दिया. 30 तब सभी
लोगों को एलियाह ने कहा, “मेरे पास आओ.” सभी उनके पास आ गए.
एलियाह ने याहवेह की वेदी की मरम्मत की थी, जो इस समय टूटी-फूटी
थी. 31 एलियाह ने, जिस याकोब से याहवेह का यह वादा था, “तुम्हारे नाम
इस्राएल होगा,” उस याकोब के पुत्रों के गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह
पत्थर इकट्ठे किए थे. 32 एलियाह ने इन बारह पत्थरों को लेकर याहवेह के
सम्मान में एक वेदी बनाई. इसके बाद उन्होंने वेदी के चारों ओर ऐसी गहरी
नाली खोद दी, जिसमें लगभग ग्यारह किलो बीज समा सकता था. 33 फिर
उन्होंने लकड़ी काटकर वेदी पर सजाकर रख दी और बछड़े को टुकड़े-टुकड़े
कर लकड़ियों पर सजा दिया. इसके बाद उन्होंने उन्हें आदेश दिया, “चार घड़े
जल से भरकर सारा जल होमबलि और लकड़ियों पर उंडेल दो.” 34 फिर
उन्होंने कहा, “यही एक बार फिर करो.” उन्होंने वैसा ही किया. फिर एलियाह
ने कहा, “यही एक बार फिर करो.” उन्होंने यह सब तीसरी बार भी किया. 35
जल वेदी के चारों ओर बह निकला, और नालियां तक जल से भर गईं. 36
शाम की बलि चढ़ाने के समय भविष्यद्वक्ता एलियाह ने वेदी के निकट आकर
यह दोहाई दी, “याहवेह, अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब के परमेश्वर, आज
यह सबको पता चल जाए कि इस्राएल देश में परमेश्वर सिर्फ आप ही हैं, और
यह भी कि मैं आपका सेवक हूं, और यह सब मैंने सिर्फ आपके ही आदेश पर
किया है. 37 याहवेह, मुझे उत्तर दीजिए, मुझे उत्तर दीजिए, कि ये लोग जान
जाएं कि आप, याहवेह, ही परमेश्वर हैं, और आपने ही उनके हृदय अपनी ओर
दोबारा फेर लिए हैं.” 38 यह पूरा होते ही याहवेह द्वारा भेजी गई आग गिरी!
उससे होमबलि, लकड़ियां, पत्थर और धूल, सभी कुछ भस्म हो गया, और
आग नाली में भरा जल चट कर गई. 39 जब उन सबने यह सब देखा, वे मुंह के
बल ज़मीन पर गिरकर यह स्वीकारने लगे, “याहवेह ही परमेश्वर हैं, याहवेह ही
परमेश्वर हैं.” 40 एलियाह ने उन्हें आदेश दिया, “बाल के भविष्यवक्ताओं को
पकड़ लो; एक भी बचने न पाए.” उन्होंने उन्हें पकड़ लिया. एलियाह उन्हें
कीशोन नाले पर ले गए और वहां उन सबको मार दिया. 41 एलियाह ने अहाब
से कहा, “उठिए, और भोजन कर लीजिए. मुझे मूसलाधार बारिश की आवाज
सुनाई दे रही है.” 42 तब अहाब भोजन करने चला गया. एलियाह कर्मेल पर्वत
के शिखर पर चले गए. उन्होंने भूमि की ओर झुककर अपने चेहरे को घुटनों में
छिपा लिया. 43 और अपने सेवक को आदेश दिया, “जाकर समुद्र की दिशा में
देखते रहो.” उसने जाकर देखा और सूचना दी. “वहां तो कुछ भी नहीं है!”
एलियाह ने यह आदेश सात बार दिया “जाकर फिर देखो!” 44 सातवीं बार
सेवक ने सूचना दी, “देखिए-देखिए! मनुष्य की बांह के समान बादल का एक
छोटा टुकड़ा समुद्र की सतह से उठ रहा है.” एलियाह ने सेवक को आदेश
दिया, “जाकर अहाब से कहो, ‘अपना रथ तैयार कर पर्वत से नीचे उतर जाइए,
कहीं ऐसा न हो कि आप बारिश में घिर जाएं.’” 45 कुछ ही देर बाद आकाश
बादलों से काला हो गया, क्योंकि हवा बहने लगी थी और मूसलाधार बारिश
शुरू हो गई. अहाब रथ पर येज्ऱील चला गया. 46 याहवेह की कृपादृष्टि में
एलियाह ने ऐसा बल पाया, कि उन्होंने अपने ढीले कपड़े समेटे और कमर
कसकर दौड़ते हुए अहाब के रथ से आगे निकलकर येज्ऱील तक पहुंच गए.

19 अहाब ने एलियाह के सारे कामों का वर्णन ईजेबेल को जा सुनाया, कि
किस प्रकार उसने बाल के सारे भविष्यवक्ताओं को तलवार से घात कर
दिया था. 2 इस पर ईजेबेल ने एलियाह के पास एक दूत के द्वारा यह संदेश भेज
दिया, “अगर कल इस समय तक मैं तुम्हारा जीवन उन भविष्यवक्ताओं में से
एक के जीवन के समान न बना दूं, तो देवता मेरे साथ ऐसा ही, बल्कि इससे भी
अधिक करें.” 3 यह सुन एलियाह इतने डर गए, कि वह अपने प्राण लेकर
भागे. वह भागते हुए यहूदिया के बेअरशेबा नगर जा पहुंचे. उन्होंने अपने सेवक
को वहीं छोड़ दिया, 4 और वह खुद एक दिन की यात्रा कर बंजर भूमि में जा
पहुंचे, जहां वह एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गए. वहां उन्होंने इन शब्दों में
अपनी मृत्यु की प्रार्थना की, “याहवेह, अब तो बहुत हो चुका. मेरे प्राण ले
लीजिए. मुझमें मेरे पूर्वजों की तुलना में कुछ भी अच्छा नहीं है.” 5 वह उस
झाऊ के पेड़ के नीचे लेट गए और वहीं सो गए. एक स्वर्गदूत वहां आया और
उन्हें छूकर उनसे कहा, “उठिए, भोजन कर लीजिए.” 6 उन्होंने देखा कि
उनके सिर के पास रोटी रखी थी, जो गर्म पत्थर पर पकाई हुई थी, और वहीं
एक बर्तन में पानी भी रखा था. उन्होंने भोजन किया, जल पिया और दोबारा
लेट गए. 7 याहवेह का दूत दूसरी बार उनके पास प्रकट हुआ, उन्हें छुआ और
उनसे कहा, “उठिए, भोजन कीजिए. आपको एक लंबी यात्रा करनी है.” 8
एलियाह उठे, उन्होंने भोजन किया, जल पिया और उसी भोजन से बल पाकर
चालीस दिन और चालीस रात लगातार चलते-चलते वह परमेश्वर के पर्वत
होरेब पहुंच गए. 9 वहां पहुंचकर उन्होंने एक गुफा में शरण ली. उनके लिए
वहां याहवेह का भेजा यह संदेश मिला, “तुम यहां क्या कर रहे हो, एलियाह?”
10 एलियाह ने उत्तर दिया, “मैं सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर के लिए बहुत ही
उत्साही रहा हूं; मगर इस्राएलियों ने आपकी वाचा को त्याग दिया है, आपकी
वेदियां गिरा दी हैं, और तलवार से आपके भविष्यवक्ताओं को मार दिया है और
मैं, सिर्फ मैं, बाकी रह गया हूं. अब वे मेरे प्राणों के खोजी हैं, कि वे उन्हें
भी ले लें.” 11 उन्होंने आदेश दिया, “बाहर निकलकर पर्वत पर याहवेह के
सामने खड़े हो जाओ, याहवेह वहां से होकर अभी निकल रहे हैं!” तब याहवेह
के आगे-आगे प्रचंड आंधी ने पहाड़ को हिला दिया, चट्टानें तड़क गईं, मगर
याहवेह की उपस्थिति वायु में न थी. प्रचंड आंधी के बाद एक भूकंप आया,
मगर याहवेह की उपस्थिति भूकंप में भी न थी. 12 भूकंप के बाद आग बरसी,
मगर याहवेह की उपस्थिति आग में भी न थी, आग के बाद एक धीमी सी
आवाज! 13 जब एलियाह ने यह सुना, उसने अपने वस्त्र से अपना मुख ढांप
लिया. वह गुफा से बाहर निकल गुफा के द्वार पर खड़े हो गए. तब उन्हें एक
आवाज सुनाई दी, “एलियाह, तुम यहां क्या कर रहे हो?” 14 एलियाह ने उत्तर
दिया, “मैं सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर के लिए बहुत ही उत्साही रहा हूं;
मगर इस्राएलियों ने आपकी वाचा को त्याग दिया है, आपकी वेदियां गिरा दी हैं,
और तलवार से आपके भविष्यवक्ताओं को मार दिया है, और सिर्फ मैं बाकी रह
गया हूं, अब वे मुझे भी मारने की कोशिश कर रहे हैं.” 15 याहवेह ने उन्हें
आदेश दिया, “दमेशेक के बंजर भूमि के मार्ग पर चले जाओ, वहां पहुंचकर
अराम के राजपद के लिए हाज़ाएल का राजाभिषेक करना, 16 इस्राएल के
राजपद के लिए निमशी के पुत्र येहू का राजाभिषेक करना और अपने स्थान पर
भविष्यद्वक्ता होने के लिए आबेल-मेहोलाह वासी शाफात के पुत्र एलीशा का
अभिषेक करना. 17 तब जो कोई हाज़ाएल की तलवार से बच निकलेगा,
उसको येहू मार देगा. और जो कोई येहू की तलवार से बच निकलेगा, उसके

प्राण एलीशा ले लेगा. 18 फिर भी इस्राएल देश में मैं उन सात हज़ार व्यक्तियों
को बचाकर रखूंगा, जिन्होंने न तो बाल के सामने घुटने टेके हैं और न अपने
होंठों से उसका चुंबन ही लिया है.” 19 तब एलियाह वहां से चल दिए. उन्हें
शाफात के पुत्र एलीशा खेत में हल चलाते हुए मिले. हल में बारह जोड़े बैल जुते
हुए थे, और वह खुद बारहवीं जोड़ी के साथ थे. एलीशा के पास से निकलते
हुए एलियाह ने अपना बाहरी कपड़ा उन पर डाल दिया. 20 एलीशा अपने बैलों
को वहीं छोड़ एलियाह के पीछे दौड़े और उन्होंने एलियाह से कहा, “मुझे
आज्ञा दीजिए कि मैं अपने पिता और माता का चुंबन ले सकूं; तब लौटकर मैं
आपका अनुसरण करूंगा.” एलियाह ने उससे कहा, “जाओ मैं तुम्हें रोक नहीं
रहा.” 21 एलीशा एलियाह के पास से खेत में लौट आए, एक जोड़ी बैल लिए
और उन्हें बलि के रूप में भेंट किया. उसके बाद जोते गए जूए को लेकर उससे
उनके मांस को उबाला और उस मांस को लोगों में बांट दिया और उन्होंने भोजन
किया. इसके बाद एलीशा एलियाह का अनुसरण करने चला गया और एलियाह
के सेवक बन गया.

20 अराम के राजा बेन-हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की. उनके साथ
बत्तीस राजा, घोड़े और रथ थे. उसने शमरिया की घेराबंदी कर उससे
युद्ध किया. 2 इसके बाद उसने दूतों द्वारा नगर में इस्राएल के राजा अहाब को
यह संदेश भेजा, “यह बेन-हदद का संदेश है, 3 ‘तुम्हारा सोना और चांदी मेरा
है; तुम्हारी सबसे उत्तम पत्नियां और तुम्हारे बच्चे भी मेरे हैं.’” 4 इस्राएल के
राजा का उत्तर था, “महाराज, मेरे स्वामी, जैसा आप कह रहे हैं, सही है. सब
कुछ जो मेरा है आपका ही है और मैं खुद भी आपका हूं.” 5 वे दूत दोबारा आए
और उन्होंने यह संदेश दिया, “यह बेन-हदद का संदेश है ‘मैंने तुमसे कहा था,
“मुझे अपना सोना, चांदी, पत्नियां और संतान दे दो,” 6 फिर भी, कल लगभग
इसी समय मैं अपने सेवक तुम्हारे यहां भेजूंगा. वे तुम्हारे घरों की और तुम्हारे
सेवकों के घरों की छानबीन करेंगे और वह सब लेकर यहां आ जाएंगे, जो तुम्हें
प्यारा है.’” 7 यह सुन इस्राएल के राजा ने देश के सारे पुरनियों की एक सभा
बुलाई और उन्हें यह कहा, “देख लीजिए, कैसे यह व्यक्ति हमसे झगड़ा मोल
ले रहा है! वह मुझसे मेरी पत्नियां और संतान और मेरा सोना और चांदी छीनने
की योजना बना रहा है! मैंने यह अस्वीकार नहीं किया है.” 8 सारे पुरनियों
और सभा के सदस्यों ने एक मत में कहा, “न तो उसकी सुनिए और न ही उसे
सहमति दीजिए.” 9 अहाब ने बेन-हदद के दूतों से यह कहा, “महाराज, मेरे
स्वामी से जाकर कहना, ‘आपने अपने सेवक से पहले जो कुछ चाहा था, वह मैं
करूंगा, किंतु यह मैं नहीं कर सकता.’” दूत लौट गए और दोबारा आकर
अहाब को यह संदेश दिया. 10 उनके लिए बेन-हदद का संदेश था, “देवता
मुझसे ऐसा, बल्कि इससे भी अधिक बुरा व्यवहार करें, यदि शमरिया की धूल
मेरे थोड़े से पीछे चलने वालों की मुट्ठी भरने के लिए भी काफ़ी हो.” 11
इस्राएल के राजा ने उसे उत्तर दिया, “उससे जाकर कह दो, ‘वह जो हथियार
धारण करता है, (विजयी होकर) वह उतारने वाले के समान घमण्ड न करे.’”
12 बेन-हदद दूसरे राजाओं के साथ, छावनी में, दाखमधु पीने में लगा था. जैसे
ही उसने अहाब का संदेश सुना, उसने सैनिकों को आदेश दिया, “चलो मोर्चे
पर!” इस पर उन्होंने नगर के विरुद्ध मोर्चा बांध लिया. 13 एक भविष्यद्वक्ता
इस्राएल के राजा अहाब के सामने आ गए. उन्होंने राजा से कहा, “यह याहवेह
का संदेश है: ‘क्या तुमने इस बड़ी भीड़ को देखी है? यह देख लेना कि आज मैं
इसे तुम्हारे अधीन कर दूंगा. तब तुम यह जान लोगे कि याहवेह मैं ही हूं.’” 14
अहाब ने भविष्यद्वक्ता से प्रश्न किया, “कौन करेगा यह?” “भविष्यद्वक्ता ने
उत्तर दिया, ‘याहवेह का संदेश यह है, कि यह काम राज्यपाल ही करेंगे.’ “तब
अहाब ने प्रश्न किया, युद्ध की पहल कौन करेगा?” भविष्यद्वक्ता ने उत्तर दिया,
“आप.” 15 अहाब ने राज्यपालों के सेवकों को इकट्ठा किया; कुल मिलाकर
ये गिनती में दो सौ बत्तीस थे; उनके पीछे की पंक्तियों में सात हज़ार इस्राएली
सैनिक थे. 16 इन्होंने दोपहर के समय कूच किया. इस समय बेन-हदद बत्तीस
साथी राजाओं के साथ छावनी में बैठा हुआ दाखमधु के नशे में धुत था. 17
राज्यपालों के सेवक सबसे आगे थे. बेन-हदद ने भेद लेने के लिए भेदिये भेजे
थे. उन्होंने लौटकर उसे यह सूचना दी, “शमरिया से सेना निकल चुकी है.”
18 बेन-हदद ने आदेश दिया, “चाहे वे शांति के लक्ष्य से आ रहे हैं या युद्ध के
लक्ष्य से, उन्हें जीवित ही पकड़ लेना.” 19 तब वे नगर से बाहर निकल पड़े.
राज्यपालों के सेवक आगे-आगे और उनके पीछे सेना. 20 हर एक ने अपने-
अपने सामने के सैनिक को मार दिया. अरामी सेना के पैर उखड़ गए और
इस्राएली सेना ने उनका पीछा करना शुरू कर दिया; मगर अराम का राजा बेन-
हदद अपने घोड़े पर घुड़सवारों के साथ भाग निकला. 21 इस्राएल के राजा
ने पीछा करके घोड़ों और रथों को खत्म कर दिया. अरामी सेना हार गई
और उसमें बड़ी मार-काट हुई. 22 तब वह भविष्यद्वक्ता इस्राएल के राजा की
उपस्थिति में जाकर कहने लगा, “आप आइए और अपने आपको बलवंत करें.
फिर सावधानीपूर्वक विचार कीजिए कि अब आपको क्या करना है; क्योंकि
वसन्त ऋतु में अराम का राजा आप पर हमला करेगा.” 23 अराम के राजा के
मंत्रियों ने उससे कहा, “उनके देवता पहाड़ियों के देवता हैं. यही कारण है कि वे
हमसे अधिक शक्तिशाली साबित हुए हैं, मगर आइए हम उनसे मैदान में युद्ध
करें, तब हम निश्चित ही उनसे अधिक मजबूत साबित होंगे. 24 हम ऐसा करें;
राजाओं को हटाकर सेनापतियों को उनकी जगहों पर खड़ा कर दें, 25 और
फिर हारी हुई सेना के समान घोड़े के लिए घोड़े और रथ के लिए रथ की सेना
इकट्ठी करें; फिर हम उनसे मैदान में ही युद्ध करेंगे. निश्चित ही हम उनसे अधिक
मजबूत साबित होंगे.” राजा ने उनकी सलाह स्वीकार कर ली और वैसा ही
किया भी. 26 वसन्त काल में बेन-हदद ने अरामी सेना को इकट्ठा किया और
इस्राएल से युद्ध करने अफेक नगर की ओर बढ़ गया. 27 इस्राएली सैनिक भी
इकट्ठे हुए, उन्होंने व्यूह रचना की और अरामियों का सामना करने के लिए
आगे बढ़े. इस्राएली सेना ने उनके सामने ऐसे डेरे खड़े किए कि वे भेड़ों के दो
छोटे समूहों समान दिखाई दे रहे थे; मगर अरामी सेना पूरी तरह से मैदान पर छा
गई थी. 28 परमेश्वर के एक दूत ने आकर इस्राएल के राजा से कहा, “यह
संदेश याहवेह की ओर से है ‘इसलिये कि अरामियों का यह मानना है, याहवेह
सिर्फ पहाड़ियों का परमेश्वर है, मगर घाटियों-मैदानों का नहीं, मैं इस पूरी
बड़ी भीड़ को तुम्हारे अधीन कर दूंगा, और तुम यह जान जाओगे कि मैं ही
याहवेह हूं.’” 29 सात दिन तक वे इसी स्थिति में एक दूसरे के आमने-सामने
डटे रहे. सातवें दिन युद्ध छिड़ गया. इस्राएली सेना ने एक ही दिन में एक लाख
अरामी पैदल सैनिकों को मार डाला, 30 बाकी अफेक नगर को भाग गए. उनमें
से बाकी सत्ताईस हज़ार की मृत्यु उन पर दीवार के ढहने से हो गई. बेन-हदद भी
भागा और एक भीतरी कमरे में जाकर छिप गया. 31 उसके सेवकों ने उससे
कहा, “सुनिए, हमने सुना है कि इस्राएल वंश के राजा कृपालु राजा होते हैं. हम
ऐसा करें; हम कमर में टाट लपेट लेते हैं, अपने सिर पर रस्सियां डाल लेते हैं
और इस्राएल के राजा की शरण में चले जाते हैं. संभव है वह आपको प्राण दान दे
दें.” 32 तब उन्होंने अपनी कमर में टाट लपेट ली, सिर पर रस्सियां डाल लीं
और जाकर इस्राएल के राजा से कहा, “आपके सेवक बेन-हदद की विनती है,
‘कृपया मुझे प्राण दान दें.’” अहाब ने उनसे पूछा, “क्या वह अब तक जीवित
है? वह तो मेरा भाई है.” 33 वहां बेन-हदद के मंत्री सही इशारे का इंतजार कर
रहे थे. इसे ही शुभ संकेत समझकर उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, “जी हां, जी हां,
आपका ही भाई बेन-हदद.” राजा अहाब ने उन्हें आदेश दिया, “जाओ, उसे ले
आओ!” तब बेन-हदद अहाब के सामने आया. अहाब ने उसे अपने रथ पर
ऊपर बुलाया. 34 बेन-हदद ने अहाब को कहा, “जो नगर मेरे पिता ने आपके

पिता से छीने थे, मैं उन्हें लौटा दूंगा. आप अपनी सुविधा के लिए दमेशेक में
अपने व्यापार के केंद्र बना सकते हैं; जैसा मेरे पिता ने शमरिया में किया था.”
अहाब ने बेन-हदद से कहा, “यदि तुम्हारी ओर से यही सुझाव है, तो मैं तुम्हें
मुक्त किए देता हूं.” तब उसने बेन-हदद से संधि की और उसे मुक्त कर दिया.
35 याहवेह के आदेश पर भविष्यद्वक्ता मंडल के एक भविष्यद्वक्ता ने अन्य
सदस्य से विनती की, “कृपा कर मुझ पर वार करो.” मगर उसने यह विनती
अस्वीकार कर दी. **36** तब उस पहले ने दूसरे से कहा, “इसलिये कि तुमने
याहवेह की आज्ञा तोड़ी है, यह देख लेना कि जैसे ही तुम यहां से बाहर जाओगे,
एक शेर तुम्हें दबोच लेगा. हुआ भी यही: जैसे ही वह वहां से बाहर गया एक
सिंह ने उसे दबोच लिया और मार डाला.” **37** तब उसे एक दूसरा व्यक्ति मिला.
उससे उसने विनती की, “कृपया मुझ पर वार कीजिए.” उस व्यक्ति ने उस पर
वार किया और ऐसा वार किया कि वह भविष्यद्वक्ता चोटिल हो गया. **38** तब
वह भविष्यद्वक्ता वहां से चला गया और जाकर मार्ग में राजा का इंतजार करने
लगा. उसने अपना रूप बदलने के उद्देश्य से अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली थी.
39 जैसे ही राजा वहां से गुजरा, उसने पुकारकर राजा से कहा, “आपका सेवक
युद्ध-भूमि में गया हुआ था. वहां एक सैनिक ने एक व्यक्ति को मेरे पास लाकर
कहा, ‘इस व्यक्ति की रक्षा करना. यदि किसी कारण से मुझे लौटने पर यह यहां
न मिले, उसके प्राण के बदले में तुम्हारा प्राण लिया जाएगा. यदि यह नहीं तो
तुम्हें उसके स्थान पर मुझे पैंतीस किलो चांदी देनी होगी.’ **40** मैं, आपका सेवक
जब अपने काम में जुट गया, वह व्यक्ति वहां से जा चुका था.” इस्राएल के
राजा ने उससे कहा, “तुम्हारा न्याय तुम्हारे ही कथन के अनुसार किया जाएगा.
तुमने खुद अपना निर्णय सुना दिया है.” **41** तब भविष्यद्वक्ता ने तुरंत अपनी
आंखों पर से पट्टी हटा दी और इस्राएल का राजा तुरंत पहचान गया कि वह
भविष्यद्वक्ता मंडल में से एक भविष्यद्वक्ता है. **42** तब भविष्यद्वक्ता ने राजा से
कहा, “यह संदेश याहवेह की ओर से है, ‘जिस व्यक्ति को मैंने पूर्ण विनाश के
लिए अलग किया था, तुमने उसे अपने अधिकार में आने के बाद भी मुक्त कर
दिया है, अब उसके प्राणों के स्थान पर तुम्हारे प्राण ले लिए जाएंगे और उसकी
प्रजा के स्थान पर तुम्हारी प्रजा.’ ” **43** इस्राएल का राजा उदास और अप्रसन्न
होकर शमरिया पहुंचा.

21 येज़्रील में, शमरिया के राजा अहाब के राजघराने के पास येज़्रीलवासी
नाबोथ का एक दाख की बारी थी. **2** इन घटनाओं के बाद अहाब ने
नाबोथ के सामने यह प्रस्ताव रखा, “मुझे अपना दाख की बारी दे दो. मैं इसे
अपने लिए साग-पात का बगीचा बनाना चाहता हूं, क्योंकि यह मेरे घर के पास
है. इसकी जगह पर मैं तुम्हें इससे बेहतर अंगूर का बगीचा दे दूंगा या अगर तुम्हें
सही लगे तो मैं तुम्हें इसका पूरा दाम दे सकता हूं.” **3** मगर नाबोथ ने अहाब
को उत्तर दिया, “याहवेह यह कभी न होने दें कि मैं अपने पूर्वजों की मीरास
आपको सौंप दूं.” **4** अहाब उदास और गुस्सा होता हुआ अपने घर को लौट
गया, क्योंकि येज़्रीलवासी नाबोथ ने उसे कहा था, “मैं अपने पूर्वजों की मीरास
आपको सौंप नहीं सकता.” अहाब जाकर अपने बिछौने पर लेट गया, अपना
मुंह फेर लिया और उसने भोजन भी न किया. **5** मगर उसकी पत्नी ईजेबेल ने
उसके पास आ उससे कहा, “आपके मन में ऐसी कौन सी उदासी है कि आप
भोजन तक नहीं कर रहे!” **6** राजा ने उसे उत्तर दिया, “इसलिये कि मैंने
येज़्रीलवासी नाबोथ से बातें की हैं और उसके सामने यह प्रस्ताव रखा, ‘अपनी
दाख की बारी मुझे बेच दो या तुम चाहो तो मैं तुम्हें इसकी जगह पर एक दूसरी
दाख की बारी दिए देता हूं,’ मगर उसने मुझे उत्तर दिया, ‘मैं तुम्हें अपनी दाख
की बारी नहीं दे सकता.’ ” **7** उसकी पत्नी ईजेबेल ने उत्तर दिया, “क्या इस्राएल
के राजा आप नहीं हैं? उठिए, भोजन कीजिए कि आपके चेहरे पर चमक आ
जाए. येज़्रीलवासी नाबोथ की दाख की बारी आपको मैं दूंगी.” **8** इसके लिए
ईजेबेल ने अहाब के नाम में पत्र लिखे, उन पर अहाब की मोहर लगा उन्हें
नाबोथ के नगर के पुरनियों और बड़े लोगों को भेज दिया. **9** पत्रों में उसने
लिखा था: “उपवास की घोषणा करो और नाबोथ को मुख्य स्थान पर बैठाना.
10 नाबोथ के ही सामने दो दुष्ट लोगों को भी बैठा देना. वे नाबोथ पर यह आरोप
लगाएं: ‘तुमने परमेश्वर और राजा को शाप दिया है.’ तब उसे ले जाकर पत्थराव
द्वारा उसकी हत्या कर देना.” **11** नाबोथ के नगरवासी पुरनियों और प्रमुखों ने
ऐसा ही किया, जैसा ईजेबेल ने उन्हें आदेश दिया था; ठीक जैसा आदेश उन्हें
पत्रों में ईजेबेल द्वारा दिया गया था. **12** उन्होंने उपवास की घोषणा की और
नाबोथ को लोगों के बीच मुख्य स्थान पर बैठाया. **13** दो दुष्टों ने आकर सबके
सामने यह कहकर नाबोथ पर आरोप लगाया: “नाबोथ ने परमेश्वर और राजा
को शाप दिया है.” तब वे नाबोथ को नगर के बाहर ले गए, और पत्थराव कर
उसकी हत्या कर दी. **14** इसके बाद उन्होंने ईजेबेल को यह सूचना भेज दी,
“नाबोथ का पत्थराव किया चुका है; उसकी मृत्यु हो चुकी है.” **15** जैसा ही
ईजेबेल को यह मालूम हुआ कि नाबोथ का पत्थराव किया गया और उसकी
मृत्यु हो चुकी है, ईजेबेल ने अहाब से कहा, “उठिए! येज़्रीलवासी नाबोथ की
दाख की बारी को अब अपने अधिकार में ले लीजिए. इस दाख की बारी के
लिए वह आपसे इसका मूल्य भी स्वीकार करने के लिए तैयार न था, अब वह
जीवित नहीं, मर चुका है.” **16** जैसे ही अहाब ने यह सुना कि नाबोथ की मृत्यु
हो चुकी है, अहाब उठकर येज़्रीलवासी नाबोथ की दाख की बारी की ओर चल
पड़ा, कि उस पर अधिकार कर ले. **17** तिशबेवासी एलियाह को याहवेह का
यह संदेश भेजा गया: **18** “जाकर इस्राएल के राजा अहाब से, जो शमरिया में
है, भेंटकरो. देखना इस समय वह नाबोथ की दाख की बारी में है, जहां वह उस
पर अधिकार करने के लिए गया हुआ है. **19** तुम्हें उससे कहना, ‘यह याहवेह
का संदेश है, तुमने हत्या की है, और अब अधिकार भी कर लिया न?’ फिर
यह कहना होगा: ‘यह याहवेह का संदेश है, जहां कुत्तों ने नाबोथ का लहू
चाटा है, वहीं वे तुम्हारा लहू भी चाटेंगे!’ ” **20** अहाब ने एलियाह से कहा,
“मेरे शत्रु, तुम फिर मेरे सामने आ गए!” एलियाह ने उत्तर दिया, “मुझे आना
पड़ा, क्योंकि आपने अपने आपको उस काम के लिए समर्पित कर रखा है, जो
याहवेह की दृष्टि में गलत है. **21** याहवेह कहते हैं, ‘यह देखना, मैं तुम पर बहुत
विपत्ति बरसाऊंगा. मैं तुम्हें पूरी तरह भस्म कर दूंगा और मैं इस्राएल में अहाब के
परिवार से हर एक पुरुष को—बंधुआ हो या स्वतंत्र—मिटा दूंगा. **22** मैं तुम्हारे
परिवार को नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के समान और अहीयाह के पुत्र बाशा के
समान बना दूंगा, क्योंकि तुमने मुझे क्रोध के लिए भड़काया और इस्राएल को
पाप की ओर उकसाया है.’ **23** “हां, ईजेबेल के लिए भी याहवेह का संदेश है,
‘येज़्रील नगर की सीमा के भीतर ही कुत्ते ईजेबेल को खा जाएंगे.’ **24** “अहाब
के किसी भी संबंधी की मृत्यु नगर में होगी वह कुत्तों का भोजन हो जाएगा,
और जिस किसी की मृत्यु नगर के बाहर खुले मैदान में होगी, वह आकाश के
पक्षियों का भोजन हो जाएगा.” **25** (निःसंदेह ऐसा कोई भी न हुआ, जो याहवेह
के सामने बुराई के लिए अहाब के समान लगा रहा—अहाब, जिसे उसकी पत्नी
ईजेबेल उकसाती रहती थी. **26** उसकी मूर्तियों की पूजा करना, जैसा अमोरी
किया करते थे, जिन्हें याहवेह ने इस्राएली प्रजा के सामने से निकाल दिया था,
बहुत ही घृणित काम था.) **27** यह सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़ दिए, और
टाट लपेट लिया, उपवास किया, टाट पर ही सोने लगा और विलाप करते हुए
ही अपना पूरा दिन गुज़ारने लगा. **28** तिशबे एलियाह के पास याहवेह का यह
संदेश पहुंचा, **29** “क्या तुमने देखा कि अहाब मेरे सामने कैसा विनम्र हो गया
है? उसकी इस विनम्रता के कारण मैं यह विपत्ति उसके जीवनकाल में नहीं,
बल्कि उसके पुत्र के शासनकाल में ही उसके परिवार पर डालूंगा.”

22 तीन साल तक इस्राएल और अराम के बीच युद्ध न हुआ. 2 तीसरे
साल यहूदिया का राजा यहोशाफ़ात इस्राएल के राजा अहाब से भेंटकरने
आया. 3 इस्राएल के राजा ने अपने सेवकों से कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि
रामोथ-गिलआद हमारे अधिकार क्षेत्र में है और हम इसे अराम के राजा से
दोबारा पाने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे हैं?" 4 तब उसने यहोशाफ़ात से प्रश्न
किया, "क्या आप रामोथ-गिलआद में युद्ध करने मेरे साथ चलेंगे?" यहोशाफ़ात
ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, "मैं आपके ही जैसा हूं, मेरी प्रजा आपकी
प्रजा के समान और घोड़े आपके घोड़ों के समान." 5 यहोशाफ़ात ने इस्राएल के
राजा से कहा, "सबसे पहले याहवेह की इच्छा मालूम कर लें." 6 तब इस्राएल
के राजा ने भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया. ये लगभग चार सौ व्यक्ति थे.
उसने भविष्यवक्ताओं से प्रश्न किया, "मैं रामोथ-गिलआद से युद्ध करने जाऊं, या
यह विचार छोड़ दूं?" उन्होंने उत्तर दिया, "आप जाइए, क्योंकि याहवेह उसे
राजा के अधीन कर देंगे." 7 मगर यहोशाफ़ात ने प्रश्न किया, "क्या यहां याहवेह
का कोई भविष्यद्वक्ता नहीं, जिससे हम यह मालूम कर सकें?" 8 इस्राएल के
राजा ने यहोशाफ़ात को उत्तर दिया, "हां, यहां एक और व्यक्ति है, जिससे हम
याहवेह की इच्छा जान सकते है; इमलाह का पुत्र मीकायाह; मगर मुझे उससे
घृणा है; क्योंकि उसकी भविष्यवाणी में मेरे लिए कुछ भी भला नहीं, बल्कि
बुरा ही हुआ करता है." इस पर यहोशाफ़ात ने कहा, "राजा का ऐसा कहना
अच्छा नहीं है." 9 तब इस्राएल के राजा ने अपने एक अधिकारी को बुलाकर
आदेश दिया, "जल्दी ही इमलाह के पुत्र मीकायाह को ले आओ." 10 इस्राएल
का राजा और यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात शमरिया के फाटक के सामने खुले
खलिहान में राजसी वस्त्रों में अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे थे. उनके सामने सारे
भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी कर रहे थे. 11 तभी केनानाह का पुत्र सीदकियाहू,
जिसने अपने लिए लोहे के सींग बनाए थे, कहने लगा, "यह संदेश याहवेह की
ओर से है, 'इन सींगों के द्वारा आप अरामियों पर इस रीति से वार करेंगे, कि
वे खत्म हो जाएंगे.'" 12 सारे भविष्यद्वक्ता यही भविष्यवाणी कर रहे थे,
"रामोथ-गिलआद पर हमला कीजिए और विजयी हो जाइए. याहवेह इसे राजा
के अधीन कर देंगे." 13 उस दूत ने, जो मीकायाह को लाने के लिए भेजा गया
था, मीकायाह से कहा, "देख लो, सारे भविष्यद्वक्ता राजा के लिए अनुसार और
भलाई में ही भविष्यवाणी कर रहे हैं. तुम्हारी भविष्यवाणी भी इन्हीं में से एक
के समान हो. तुम भी भली भविष्यवाणी ही करना." 14 मगर मीकायाह ने
कहा, "जीवित याहवेह की शपथ, मैं सिर्फ वही कहूंगा, जिसके लिए याहवेह
मुझे भेजेंगे." 15 जब मीकायाह राजा के सामने पहुंचा, राजा ने उससे प्रश्न
किया, "मीकायाह, क्या हम रामोथ-गिलआद से युद्ध करें या इसका विचार ही
छोड़ दें?" मीकायाह ने राजा को उत्तर दिया, "आप जाइए और सफलता प्राप्त
कीजिए. याहवेह इसे राजा के अधीन कर देंगे." 16 राजा ने मीकायाह से कहा,
"मीकायाह, मुझे तुम्हें कितनी बार इसकी शपथ दिलानी होगी कि तुम्हें मुझसे
याहवेह के नाम में सच के सिवाय और कुछ भी नहीं कहना है?" 17 तब
मीकायाह ने उत्तर दिया, "मैंने सारे इस्राएल को बिन चरवाहे की भेड़ों के समान
पहाड़ों पर तितर-बितर देखा. तभी याहवेह ने कहा, 'इनका तो कोई स्वामी ही
नहीं है. हर एक को शांतिपूर्वक अपने-अपने घर लौट जाने दो.'" 18 इस्राएल
के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, "मैंने कहा था न, कि यह मेरे बारे में बुरी
भविष्यवाणी ही करेगा, भली नहीं?" 19 इस पर मीकायाह ने उत्तर दिया,
"बहुत बढ़िया! तो फिर याहवेह का संदेश भी सुन लीजिए: मैंने याहवेह को
उनके सिंहासन पर बैठे देखा. उनके दाईं और बाईं ओर में सारी स्वर्गिक सेना
खड़ी हुई थी. 20 याहवेह ने वहां प्रश्न किया, 'यहां कौन है, जो अहाब को ऐसे
लुभाएगा कि वह रामोथ-गिलआद जाए और वहां जाकर मारा जाए?' "किसी
ने वहां कुछ उत्तर दिया और किसी ने कुछ और. 21 तब वहां एक आत्मा
आकर याहवेह के सामने खड़े होकर यह कहने लगा, 'मैं उसे लुभाऊंगा.' 22
"'कैसे?' याहवेह ने उससे प्रश्न किया. "उसने उत्तर दिया, 'मैं जाकर राजा के
सभी भविष्यवक्ताओं के मुख में झूठी आत्मा बन जाऊंगी.'" इस पर याहवेह ने
कहा, "'तुम्हें इसमें सफल भी होना होगा. जाओ और यही करो.' 23 "इसलिये
देख लीजिए, याहवेह ने इन सारे भविष्यवक्ताओं के मुंह में छल का एक आत्मा
डाल रखा है. आपके लिए याहवेह ने सर्वनाश की घोषणा कर दी है." 24 यह
सुन केनानाह का पुत्र सीदकियाहू सामने आया और मीकायाह के गाल पर मारते
हुए कहने लगा, "याहवेह का आत्मा मुझमें से निकलकर तुमसे बातचीत करने
किस प्रकार जा पहुंचा?" 25 मीकायाह ने उसे उत्तर दिया, "तुम यह देख लेना,
जब उस दिन तुम छिपने के लिए भीतर के कमरे में शरण लोगे." 26 इस्राएल के
राजा ने कहा, "पकड़ लो, मीकायाह को! उसे हाकिम अमोन और राजकुमार
योआश के पास ले जाओ. 27 उनसे कहना, 'यह राजा का आदेश है: इस
व्यक्ति को जेल में डाल दो और उसे उस समय तक ज़रा सा ही भोजन और पानी
देना, जब तक मैं सुरक्षित न लौट आऊं.'" 28 इस पर मीकायाह ने कहा, "यदि
आप सच में सकुशल लौट आएं, तो यह समझ लीजिए कि याहवेह ने मेरे द्वारा
यह सब प्रकट किया ही नहीं है." और फिर भीड़ से उसने कहा, "आप सब
भी यह सुन लीजिए." 29 फिर भी इस्राएल के राजा और यहूदिया के राजा
यहोशाफ़ात ने रामोथ-गिलआद पर हमला कर दिया. 30 इस्राएल के राजा ने
यहोशाफ़ात से कहा, "मैं भेष बदलकर युद्ध-भूमि में जाऊंगा, मगर आप अपनी
राजसी वेशभूषा ही पहने रहिए." इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध-भूमि में
गया. 31 अराम के राजा ने अपनी रथ सेना के बत्तीस प्रधानों को आदेश दे रखा
था, "युद्ध न तो साधारण सैनिकों से करना और न मुख्य अधिकारियों से,
सिर्फ इस्राएल के राजा को निशाना बनाना." 32 जैसे ही इन अधिकारियों ने
यहोशाफ़ात को देखा, उन्होंने समझा, "ज़रूर यही इस्राएल का राजा है." तब वे
यहोशाफ़ात की ओर लपके. इस पर यहोशाफ़ात चिल्ला उठा. 33 जब प्रधानों ने
देखा कि वह इस्राएल का राजा नहीं था, उन्होंने उसका पीछा करना छोड़
दिया. 34 इसी समय किसी एक सैनिक ने बिना कोई निशाना साधे ही अपना
बाण छोड़ दिया. वह बाण जाकर इस्राएल के राजा के कवच के जोड़ पर जा
लगा. तब राजा ने सारथी को आदेश दिया, "रथ मोड़ो और मुझे युद्ध-भूमि से
बाहर ले चलो, मैं बुरी तरह से ज़ख्मी हो गया हूं." 35 युद्ध तेज होता चला गया.
अरामियों के सामने राजा को रथ में खड़ा हुआ पेश किया गया. शाम को राजा
के प्राणपखेरू उड़ गए. उसका खून बहता हुआ रथ के पेंदे में जमा होता रहा. 36
शाम को सारी सेना में यह घोषणा की गई: "हर एक व्यक्ति अपने-अपने नगर
को और हर एक सैनिक अपने-अपने देश को लौट जाए." 37 राजा के शव को
शमरिया लाया गया और उसे शमरिया में गाड़ दिया गया. 38 रथ को शमरिया
के तालाब के तट पर धोया गया, और उस खून को कुत्ते चाटते रहे. इस समय
वह जगह वेश्याओं के नहाने के लिए ठहराया हुआ घाट था. यह ठीक वैसा
ही हुआ जैसी याहवेह की भविष्यवाणी थी. 39 अहाब द्वारा किए गए बाकी
काम और वह सब, जो उसके द्वारा किया गया, उसके द्वारा बनाया गया हाथी-
दांत का भवन और उसके द्वारा बनाए नगरों का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं
की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 40 अहाब अपने पूर्वजों के साथ
हमेशा के लिए जा मिला, और उसकी जगह पर उसका पुत्र अहज़्याह राजा
बना. 41 इस्राएल के राजा अहाब के शासनकाल के चौथे साल में आसा के पुत्र
यहोशाफ़ात ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया. 42 जब उसने शासन की
बागडोर संभाली, उसकी उम्र पैंतीस साल की थी. उन्होंने येरूशलेम में पच्चीस
साल शासन किया. उसकी माता का नाम अत्सूबा था, वह शिल्ही की पुत्री थी.
43 यहोशाफ़ात का व्यवहार सभी बातों में उनके पिता आसा के समान था. वह
कभी उस तरह के जीवन से अलग न हुआ. उसके काम वे ही थे, जो याहवेह

की दृष्टि में सही थे. फिर भी, पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई थी. लोग
पूजा स्थलों की वेदियों पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे. **44** इनके अलावा
यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा के साथ शांति की वाचा बांधी. **45** यहोशाफ़ात
की बाकी उपलब्धियां, उसके द्वारा किए गए वीरता के काम, और उसके युद्ध
कौशल का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में किया गया है.
46 उसने अपने पिता आसा के शासनकाल से बाकी रह गए अन्य देवताओं के
मंदिर में काम कर रहे पुरुष वेश्याओं को निकाल दिया. **47** एदोम देश में कोई
राजा न था; वहां सिर्फ राजा द्वारा एक दूत चुना गया था. **48** यहोशाफ़ात ने
दोबारा ओफीर से सोना आयात करने के लिए तरशीश के समान जहाज़ बनाए;
मगर वे यात्रा पर जा ही न सके, क्योंकि वे एज़िओन-गेबेर नामक स्थान पर ही
टूट गए. **49** अहाब के पुत्र अहज़्याह ने यहोशाफ़ात के सामने प्रस्ताव रखा,
"जहाजों में अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों को भी ले लीजिए," मगर
यहोशाफ़ात इसके लिए राज़ी न हुआ. **50** यहोशाफ़ात हमेशा के लिए अपने
पूर्वजों में मिल गया. उसे उसके पूर्वज दावीद के नगर में उसके पूर्वजों के साथ
गाड़ा दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोराम राजा हुआ. **51** यहूदिया के
राजा यहोशाफ़ात के शासनकाल के सत्रहवें साल में अहाब के पुत्र अहज़्याह ने
शासन करना शुरू किया. **52** उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है.
उसका स्वभाव अपने पिता और माता और नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के समान
था, जिन्होंने इस्राएल को पाप के लिए उकसाया था. **53** वह बाल की सेवा-
उपासना करता था, जिसके द्वारा उसने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के क्रोध
को भड़काया, ठीक वही सब, जैसा उसके पिता ने किया था.

2 राजा

1 अहाब की मृत्यु के बाद मोआब देश ने इस्राएल के विरुद्ध विद्रोह कर दिया.
2 अहज़्याह शमरिया नगर में अपने राजघराने के ऊपरी कमरे की जालीदार
खिड़की से नीचे गिर पड़ा और बीमार हो गया. तब उसने दूतों को बुलवाया
और उन्हें यह आदेश दिया, “जाओ और बाल-ज़बूब, एक्रोन के देवता से यह
मालूम करो, क्या मैं अपनी इस रोगी अवस्था से ठीक हो सकूंगा?” 3 मगर
याहवेह का दूत तिशबेवासी एलियाह से यह कह चुका था, “उठो, जाकर
शमरिया के राजा के दूतों से भेंटकर उनसे कहना, ‘क्या इस्राएल राज्य में
परमेश्वर नहीं हैं, कि तुम एक्रोन के देवता, बाल-ज़बूब से पूछताछ करने जा रहे
हो?’ 4 इसलिये अब याहवेह का संदेश यह है ‘अब तुम अपने बिछौने से, जिस
पर तुम इस समय लेटे हुए हो, नीचे कभी न आ सकोगे—तुम्हारी मृत्यु तय है.’”
यह सुन एलियाह चल पड़े. 5 जब दूत राजा के पास लौटे, राजा ने उनसे प्रश्न
किया, “तुम लौट क्यों आए हो?” 6 उन्होंने उत्तर दिया, “एक व्यक्ति हमसे
भेंटकरने आया था, उसी ने हमें आदेश दिया, ‘राजा के पास लौट जाओ, जिसने
तुम्हें भेजा है. उससे कहना, “यह याहवेह का संदेश है: क्या इस्राएल राज्य
में परमेश्वर नहीं हैं, कि तुम एक्रोन के देवता, बाल-ज़बूब से पूछताछ करने
जा रहे हो? इसलिये अब तुम जिस बिछौने पर लेटे हुए हो, उससे नीचे नहीं
आओगे—तुम्हारी मृत्यु ज़रूर हो जाएगी!”’” 7 राजा ने उनसे पूछा, “किस
प्रकार का व्यक्ति था वह, जो तुमसे भेंटकरने आया था, जिसने तुमसे यह सब
कहा है?” 8 उन्होंने उत्तर दिया, “वह बालों का एक वस्त्र पहिना हुआ था, और
वह चमड़े का कमरबंध बांधा हुआ था.” राजा बोल उठा, “वह तिशबेवासी
एलियाह है!” 9 राजा ने एक सेना के प्रधान को उसके पचास सैनिकों के साथ
एलियाह के पास भेज दिया. सेना के प्रधान ने वहां जाकर देखा कि एलियाह
पहाड़ी की चोटी पर बैठे हुए थे. सेना के प्रधान ने एलियाह से कहा, “परमेश्वर
के जन, राजा का आदेश है, ‘नीचे उतर आओ.’” 10 एलियाह ने सेना के
प्रधान को उत्तर दिया, “यदि मैं वास्तव में परमेश्वर का जन हूं, तो आकाश से
आग बरसे और तुम्हें और तुम्हारे पचासों को खत्म कर जाए.” उनका यह
कहना खत्म होते ही आकाश से आग बरसी और सेना के प्रधान और उसके
पचासों सैनिकों को चट कर गई. 11 राजा ने पचास सैनिकों की दूसरी टुकड़ी
को उनके प्रधान के साथ एलियाह के पास भेजी. सेना के प्रधान ने एलियाह
से कहा, “परमेश्वर के जन, यह राजा का आदेश है, ‘जल्द ही नीचे उतर
आओ.’” 12 एलियाह ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैं सच में परमेश्वर का जन हूं,
तो आकाश से आग बरसे और तुम्हें और तुम्हारे पचासों सैनिकों को चट कर
जाए.” उसी समय आकाश से आग बरसी और उसे और उसके पचासों सैनिकों
को चट कर गई. 13 राजा ने पचास सैनिकों की तीसरी टुकड़ी को उनके प्रधान
के साथ एलियाह के पास भेजी. जब वह तीसरी पचास सैनिकों की टुकड़ी का
प्रधान एलियाह के पास पहुंचा, उसने उनके आगे घुटने टेक दिए और उनसे
विनती की, “परमेश्वर के जन, आपकी दृष्टि में मेरा और इन पचास सैनिकों का
जीवन कीमती बना रहे. 14 आकाश से आग बरसी और मुझसे पहले आए दो
सेना प्रधानों और उनके पचास-पचास सैनिकों को चट कर गई; मगर अब
आपकी दृष्टि में मेरा जीवन कीमती हो.” 15 एलियाह को याहवेह के दूत ने
आदेश दिया, “निड़र होकर उसके साथ चले जाओ.” तब एलियाह उठे और
उसके साथ राजा के सामने जा पहुंचे. 16 उन्होंने राजा को कहा, “याहवेह का
संदेश यह है: आपने एक्रोन के देवता, बाल-ज़बूब से पूछताछ करने दूत भेजे थे,
क्या इसलिये कि अब इस्राएल देश में कोई परमेश्वर न रहा, जिनसे उनकी इच्छा
मालूम की जा सके? इसलिये आप जिस बिछौने पर लेटे हैं, उससे नीचे नहीं
उतरेंगे; आपकी मृत्यु ज़रूर ही हो जाएगी!” 17 तब याहवेह की भविष्यवाणी के
अनुसार, जो उन्होंने एलियाह के द्वारा की थी, अहज़्याह की मृत्यु हुई. इसलिये
कि अहज़्याह के कोई पुत्र न था, उसकी जगह पर उसका भाई योराम राजा बन
गया. यह यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात के पुत्र यहोराम के शासनकाल का दूसरा
साल था. 18 अहज़्याह द्वारा किए गए बाकी कामों का ब्यौरा इस्राएल के
राजाओं की इतिहास पुस्तक में दिया गया है.

2 इसके पहले कि याहवेह आंधी में एलियाह को स्वर्ग में उठाते, एलियाह
एलीशा के साथ गिलगाल से यात्रा पर निकल पड़े. 2 एलियाह ने एलीशा से
कहा, “अब तुम यहीं ठहरो, क्योंकि याहवेह ने मुझे बेथेल जाने का आदेश
दिया है.” मगर एलीशा ने उन्हें उत्तर दिया, “जीवित याहवेह की शपथ और
आपके जीवन की शपथ, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा.” तब वे दोनों ही
बेथेल चले गए. 3 तब बेथेल में भविष्यद्वक्ता मंडल के भविष्यद्वक्ता एलीशा के
पास आकर उनसे पूछने लगे, “क्या आपको इस बात का पता है कि आज
याहवेह आपके स्वामी को उठा लेने पर हैं?” “हां, मुझे मालूम है. आप चुप ही
रहिए,” एलीशा ने उत्तर दिया. 4 एलियाह ने एलीशा से कहा, “एलीशा, यहीं
ठहरो, क्योंकि याहवेह मुझे येरीख़ो को भेज रहे हैं.” मगर एलीशा ने उनसे
कहा, “जीवित याहवेह की शपथ, और आपकी शपथ, मैं आपका साथ नहीं
छोड़ूंगा.” तब वे दोनों ही येरीख़ो पहुंच गए. 5 तब येरीख़ो में भविष्यद्वक्ता
मंडल के भविष्यद्वक्ता एलीशा के पास आकर उनसे पूछने लगे, “क्या आपको
इस बात का पता है कि आज याहवेह आपके स्वामी को आपसे उठा लेने पर
हैं?” “हां, मुझे पता है, आप चुप ही रहिए,” एलीशा ने उत्तर दिया. 6 तब
एलियाह ने एलीशा से कहा, “यहीं ठहरे रहो. याहवेह मुझे यरदन को भेज रहे
हैं.” एलीशा ने एलियाह को उत्तर दिया, “जीवित याहवेह की शपथ, और
आपकी शपथ, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा.” तब दोनों ही आगे बढ़ते चले
गए. 7 भविष्यद्वक्ता मंडल के पचास भविष्यद्वक्ता वहां उनके सामने कुछ ही
दूरी पर खड़े हो गए. एलियाह और एलीशा यरदन तट पर खड़े थे. 8 एलियाह
ने अपनी चादर ली, उसे ऐंठ कर उससे यरदन के पानी पर वार किया. नदी का
जल दाएं और बाएं दो भागों में बांटकर स्थिर हो गया, और वे दोनों सूखी
ज़मीन पर चलते हुए पार निकल गए. 9 नदी के पार एलियाह ने एलीशा से
कहा, “इसके पहले कि मैं तुमसे दूर कर दिया जाऊं, मुझे बताओ मैं तुम्हारे लिए
क्या करूं.” एलीशा ने उन्हें उत्तर दिया, “यह, कि मुझे आपके आत्मा का दो
गुणा भाग मिल जाए.” 10 एलियाह ने कहा, “तुमने बहुत कठिन बात मांग ली
है; फिर भी, उस समय पर, जब मैं तुमसे दूर किया जा रहा होऊंगा, अगर तुम
मुझे देख लोगे, तब तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी; मगर यदि मैं ओझल हो
जाऊं, तब तुम्हारी इच्छा पूरी न होगी.” 11 जब वे इस तरह बातचीत करते हुए
आगे बढ़ ही रहे थे, उन्हें आग के रथ और आग के घोड़े दिखाई दिए, जिन्होंने
उन दोनों को अलग कर दिया. एलियाह बवंडर में होते हुए स्वर्ग में उठा लिए
गए. 12 एलीशा यह सब देख रहे थे. वह चिल्ला उठे, “मेरे पिता! मेरे पिता!
और इस्राएल के रथ और सारथी!” इसके बाद एलीशा ने उन्हें फिर कभी न
देखा. तब एलीशा ने अपने वस्त्र पकड़े और उन्हें फाड़कर दो भागों में बांट दिया.
13 इसके बाद उन्होंने एलियाह की देह से नीचे गिरी चादर को उठा लिया, और
लौटकर यरदन के तट पर जा पहुंचे. 14 उन्होंने एलियाह की उस चादर से,
जो एलियाह की देह पर से गिर गई थी, जल पर प्रहार किया और यह कहा,
“एलियाह के परमेश्वर याहवेह कहां हैं?” जब उन्होंने जल पर वार किया तो
यरदन का जल दाएं और बाएं बंट गया और एलीशा पार निकल गए. 15 जब
येरीख़ो में भविष्यद्वक्ता मंडल के भविष्यवक्ताओं ने एलीशा को आते देखा, वे
कह उठे, “एलियाह की स्वर्गीय शक्ति एलीशा को मिल चुकी है.” वे सब
एलीशा से भेंटकरने आ गए, और उनका अभिनंदन किया. 16 उन्होंने उन्हें
सुझाया, “देखिए, अब आपकी सेवा में पचास बलवान पुरुष हैं. आप इन्हें

अनुमति दे दीजिए, कि वे आपके स्वामी को खोजें. यह संभव है कि याहवेह के
आत्मा ने उन्हें ले जाकर किसी पहाड़ या किसी घाटी में छोड़ दिया हो.”
एलीशा ने उत्तर दिया, “कोई ज़रूरत नहीं, उन्हें भेजने की.” 17 मगर वे हठ
करते रहे, यहां तक कि संकोच में आकर एलीशा कह बैठे, “ठीक है, जाओ.”
उन्होंने पचास बलवान युवाओं को भेज दिया. वे तीन दिन तक खोजते रहे, मगर
असफल ही रहे. 18 वे लौट आए. उस समय एलीशा येरीख़ो में ही थे. उन्हें
देख एलीशा ने उनसे कहा, “मैंने पहले ही न कहा था, ‘मत जाओ?’” 19
नगरवासियों ने एलीशा से विनती की, “हमारे स्वामी, देखिए, इस नगर की
स्थिति सुखद है, यह आप भी देख रहे हैं, मगर यहां पानी सही नहीं है, साथ ही
ज़मीन भी उपजाऊ नहीं है.” 20 एलीशा ने आदेश दिया, “एक नए बर्तन में
नमक डालकर मेरे पास ले आओ.” 21 एलीशा झरने के निकट गए, नमक
उसमें डाल दिया और यह घोषित किया, “यह याहवेह द्वारा भेजा हुआ संदेश है,
‘मैंने इस जल को ठीक कर दिया है. इसके बाद इस जल से न तो किसी की
मृत्यु होगी, और न किसी का गर्भपात.’” 22 इसलिये आज तक उस झरने से
शुद्ध जल ही निकल रहा है, जैसा एलीशा द्वारा कहा गया था. 23 इसके बाद
एलीशा वहां से बेथेल चले गए. जब वह मार्ग में ही थे, नगर से कुछ बच्चे वहां
आ गए और एलीशा का मज़ाक उड़ाते हुए कहने लगे, “ओ गंजे, निकल जा
यहां से, निकल जा गंजे!” 24 एलीशा पीछे मुड़े और जब उनकी नज़र उन
बालकों पर पड़ी, उन्होंने उन्हें याहवेह के नाम में शाप दिया. उसी समय बंजर
भूमि में से दो रीछनियां बाहर निकल आईं और उन बयालीस बच्चों को फाड़
दिया. 25 वहां से वह कर्मेल पर्वत को गए और फिर शमरिया को लौट गए.

3 यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात के शासनकाल के अठारहवें साल में अहाब
का पुत्र यहोराम शमरिया में राजा हो गया, और उसने बारह साल तक शासन
किया. 2 याहवेह की दृष्टि में उसका व्यवहार गलत था; हालांकि उतना नहीं
जैसा उसके पिता और माता का था; क्योंकि उसने अपने पिता द्वारा बनवाए हुए
बाल के खंभों को हटा दिया. 3 फिर भी वह नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के उन
पापों में लगा रहा, जिन्हें करने के लिए वह इस्राएल को उकसाता रहा. वह इनसे
दूर न हुआ. 4 मेषा मोआब का राजा भेड़ पालता था. उसे इस्राएल के राजा को
हर साल एक लाख मेमने और एक लाख भेड़ों का ऊन देना होता था. 5 अहाब
की मृत्यु होते ही मोआब के राजा ने इस्राएल के विरुद्ध विद्रोह कर दिया. 6 तब
राजा यहोराम शमरिया से बाहर निकल पड़ा और उसने सारी इस्राएली सेना को
इकट्ठी की. 7 तब उसने जाकर यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात को यह संदेश
भेजा, “मोआब का राजा मेरे विरुद्ध विद्रोह पर उतर आया है. क्या मोआब से युद्ध
में आप मेरा साथ देंगे?” यहोशाफ़ात ने उत्तर दिया, “ज़रूर मैं आपके साथ हूं.
जो मेरे सैनिक हैं, वे आपके भी सैनिक हैं. मेरे घोड़े आपके घोड़े हैं.” 8 तब
यहोशाफ़ात ने पूछा, “हमें किस दिशा से हमला करना है?” यहोराम ने उत्तर
दिया, “एदोम के बंजर भूमि के मार्ग से.” 9 तब इस्राएल के राजा के साथ
यहूदिया और एदोम के राजा भी शामिल हो गए. वे सात दिन तक घूम-घूमकर
चलते रहे. इसमें न तो सैनिकों के पीने के लिए पानी मिला और न साथ चल रहे
पशुओं के लिए. 10 यह देख इस्राएल का राजा मन में कहने लगा, “हाय! ऐसा
लग रहा है याहवेह ने तीन राजा मोआब को सौंप देने के लिए इकट्ठा किए हैं.”
11 यहोशाफ़ात ने उससे पूछा, “क्या यहां याहवेह का कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है,
कि हम उसके द्वारा याहवेह की इच्छा मालूम कर सकें?” इस्राएल के राजा के
एक सेवक ने उत्तर दिया, “शाफात के पुत्र एलीशा यहीं रहते हैं, जो एलियाह के
हाथों को धुलाया करते थे.” 12 यहोशाफ़ात कह उठे, “उनके पास याहवेह का
संदेश पहुंचता है.” तब इस्राएल का राजा, यहूदिया का राजा और एदोम का
राजा, तीनों ही एलीशा से मिलने के लिए चले गए. 13 एलीशा ने इस्राएल के
राजा से कहा, “मेरा और आपका कोई संबंध नहीं है. जाइए अपने पिता और
अपनी माता के भविष्यवक्ताओं के पास.” इस्राएल के राजा ने उन्हें उत्तर दिया,
“नहीं! खुद याहवेह ने तीन राजाओं को मोआब के अधीन कर देने के लिए ही
इकट्ठा किया है.” 14 एलीशा ने उत्तर दिया, “जीवित याहवेह की शपथ, मैं
जिनके सामने खड़ा रहता हूं; अगर मेरे मन में यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात के
लिए आदर न होता, तो मैं न तो तुम्हें देखना चाहता और न ही तुम्हारी ओर दृष्टि
करता. 15 मगर अब मेरे लिए एक बजानेवाले का इंतजाम किया जाए.” जब
बजाने वाला बजाने लगा, एलीशा को याहवेह की ओर से शक्ति मिली. 16
एलीशा ने कहना शुरू किया, “याहवेह का संदेश यह है, ‘इस घाटी को खाइयों
में बदल दो.’ 17 क्योंकि यह याहवेह की घोषणा है, तुम्हें न तो हवा दिखाई
देगी और न ही बारिश; फिर भी घाटी पानी से भर जाएगी, कि तुम्हें पीने के
लिए पानी मिल जाए; तुम्हें, तुम्हारे घोड़ों को और तुम्हारे सभी पशुओं को भी.
18 याहवेह की नज़रों में यह बहुत ही आसान सा काम है. याहवेह मोआबियों
को भी आपके अधीन कर देंगे. 19 इसके अलावा तुम हर एक गढ़नगर और
प्रमुख नगर पर हमला करोगे, हर एक अच्छे पेड़ को गिरा दोगे, सारे पानी के
स्रोतों को बंद कर दोगे और हर एक उपजाऊ खेत को पत्थरों से पाट दोगे.” 20
अगली सुबह को, जब बलि चढ़ाने का समय हुआ, यह देखा गया कि एदोम
प्रदेश की दिशा से पानी बहने लगा और सारा इलाका पानी से भर गया. 21 जब
मोआब देश की प्रजा ने यह सुना कि राजा उनसे युद्ध करने आए हैं, तो बालक से
लेकर बूढ़े तक को, जो हथियार उठा सकते थे, बुलवाया गया और उन सबको
नगर सीमा पर खड़ा कर दिया गया. 22 सुबह को सूरज उगने के समय, जागने
पर, जब मोआबवासियों की दृष्टि सूरज से चमकते जल पर पड़ी, तो वह जल
उन्हें लहू सा दिखाई दिया. 23 वे आपस में कहने लगे, “यह खून है! लगता है
राजा आपस में ही लड़ पड़े और एक दूसरे को मार चुके हैं. तब तो हे मोआबियों
चलो, लूट का सामान उठाने!” 24 मगर जब वे इस्राएलियों की छावनी तक
पहुंचे, इस्राएली सेना ने उठकर मोआबी सेना को मारना शुरू कर दिया. तब
मोआबी पीठ दिखाकर भागने लगे. इस्राएली सेना मोआबियों को मारते हुए
मोआबियों के देश तक प्रवेश करती गई, और मोआबियों को मारती चली गई.
25 इस प्रकार उन्होंने नगर खत्म कर दिए और हर एक व्यक्ति ने बढ़ते हुए
अच्छी-अच्छी उपजाऊ भूमि पर पत्थर डालकर खेतों को पाट दिया. इसी तरह
उन्होंने सारे जल के स्रोत बंद कर दिए और सभी उत्तम, हरे-भरे पेड़ों को गिरा
दिया. अब कीर-हेरासेथ की ज़मीन पर पत्थर ही पत्थर दिखाई दे रहे थे. वे, जो
गोफन का इस्तेमाल कर रहे थे, उन्होंने कीर-हेरासेथ को घेरकर उस पर हमला
कर दिया. 26 जब मोआब के राजा ने यह पाया कि उसकी सेना हार रही है,
उसने 700 तलवारधारी सैनिकों को साथ लेकर एदोम के राजा की ओर बड़ी
शक्ति के साथ हमला किया, मगर वे अपने लक्ष्य में असफल ही रहे. 27 तब
मोआब के राजा ने अपने उत्तराधिकारी, जेठे पुत्र को नगर की शहरपनाह पर
बलि के रूप में चढ़ा दिया. इससे उनमें इस्राएली सेना के विरुद्ध बड़ा क्रोध छा
गया और वे अपने देश लौट गए.

4 भविष्यद्वक्ता मंडल के भविष्यवक्ताओं में से एक की पत्नी ने एलीशा की
दोहाई दी, “आपके सेवक, मेरे पति की मृत्यु हो चुकी है. आपको मालूम
ही है कि आपके सेवक के मन में याहवेह के लिए कितना भय था. अब हालत
यह है कि जिसका वह कर्ज़दार था वह मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के
लिए आ खड़ा हुआ है.” 2 एलीशा ने उससे पूछा, “मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?
बताओ क्या-क्या बाकी रह गया है तुम्हारे घर में?” उस स्त्री ने उत्तर दिया,
“आपकी सेविका के घर में अब तेल का एक पात्र के अलावा कुछ भी बचा
नहीं रह गया है.” 3 एलीशा ने उससे कहा, “जाओ और अपने सभी पड़ोसियों
से खाली बर्तन मांग लाओ और ध्यान रहे कि ये बर्तन गिनती में कम न हों. 4
तब उन्हें ले तुम अपने पुत्रों के साथ कमरे में चली जाना और दरवाजा बंद कर

लेना. तब इन सभी बर्तनों में तेल उण्डेलना शुरू करना. जो जो बर्तन भर जाएं
उन्हें अलग रखते जाना." 5 तब वह वहां से चली गई. अपने पुत्रों के साथ
कमरे में जाकर उसने दरवाजा बंद कर लिया. वह बर्तनों में तेल उंडेलती गई
और पुत्र उसके सामने खाली बर्तन लाते गए. 6 जब सारे बर्तन भर चुके, उसने
अपने पुत्र से कहा, "और बर्तन ले आओ!" पुत्र ने इसके उत्तर में कहा, "अब
कोई बर्तन नहीं है." तब तेल की धार थम गई. 7 उसने परमेश्वर के जन को इस
बात की ख़बर दे दी. और परमेश्वर के जन ने उस स्त्री को आदेश दिया, "जाओ,
यह तेल बेचकर अपना कर्ज़ भर दो." जो बाकी रह जाए, उससे तुम और तुम्हारे
पुत्र गुज़ारा करें. 8 एक दिन एलीशा शूनेम नाम के स्थान पर गए. वहां एक धनी
स्त्री रहती थी. उसने एलीशा को विनती करके भोजन पर बुलाया. इसके बाद जब
कभी एलीशा वहां से जाते थे, वहीं रुक कर भोजन कर लेते थे. 9 उस स्त्री ने
अपने पति से कहा, "सुनिए, अब तो मैं यह समझ गई हूं कि यह व्यक्ति, जो
हमेशा इसी मार्ग से जाया करते हैं, परमेश्वर के पवित्र जन हैं. 10 हम छत पर
दीवारें उठाकर एक छोटा कमरा बना लें, उनके लिए वहां एक बिछौना, एक
मेज़ एक कुर्सी और एक दीपक रख दें, कि जब कभी वह यहां आएं, वहां ठहर
सकें." 11 एक दिन एलीशा वहां आए और उन्होंने उस कमरे में जाकर आराम
किया. 12 उन्होंने अपने सेवक गेहज़ी से कहा, "शूनामी स्त्री को बुला लाओ."
वह आकर उनके सामने खड़ी हो गई. 13 एलीशा ने गेहज़ी को आदेश दिया,
"उससे कहो, 'देखिए, आपने हम दोनों का ध्यान रखने के लिए यह सब कष्ट
किया है; आपके लिए क्या किया जा सकता है? क्या आप चाहती हैं कि किसी
विषय में राजा के सामने आपकी कोई बात रखी जाए, या सेनापति से कोई
विनती की जाए?'" उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं तो अपनों ही के बीच में रह रही
हूं!" 14 तब उन्होंने पूछा, "तब इस स्त्री के लिए क्या किया जा सकता है?"
गेहज़ी ने उत्तर दिया, "उसके कोई पुत्र नहीं है, और उसके पति ढलती उम्र के
व्यक्ति हैं." 15 एलीशा ने कहा, "उसे यहां बुलाओ." जब वह स्त्री आकर द्वार
पर खड़ी हो गई, 16 एलीशा ने उससे कहा, "अगले साल इसी मौसम में
लगभग इसी समय तुम्हारी गोद में एक पुत्र होगा." वह स्त्री कहने लगी, "नहीं,
मेरे स्वामी! परमेश्वर के जन, अपनी सेविका को झूठी आशा न दीजिए." 17
उस स्त्री ने गर्भधारण किया और अगले साल उसी समय वसन्त के मौसम में उसने
एक पुत्र को जन्म दिया—ठीक जैसा एलीशा ने उससे कहा था. 18 बड़ा होता
हुआ वह बालक, एक दिन कटनी कर रहे मजदूरों के बीच अपने पिता के पास
चला गया. 19 अचानक उसने अपने पिता से कहा, "अरे, मेरा सिर! मेरा
सिर!" पिता ने अपने सेवक को आदेश दिया, "इसे इसकी माता के पास ले
जाओ." 20 सेवक ने उस बालक को उठाया और उसकी माता के पास ले गया.
वह बालक दोपहर तक अपनी माता की गोद में ही बैठा रहा और वहीं उसकी
मृत्यु हो गई. 21 उस स्त्री ने बालक को ऊपर ले जाकर उस परमेश्वर के जन के
बिछौने पर लिटा दिया और दरवाजा बंद करके चली गई. 22 तब उसने अपने
पति को यह संदेश भेजा, "मेरे पास अपना एक सेवक और गधा भेज दीजिए कि
मैं जल्दी ही परमेश्वर के जन से भेंटकर लौट आऊं." 23 पति ने प्रश्न किया,
"तुम आज ही क्यों जाना चाह रही हो? आज न तो नया चांद है, और न ही
शब्बाथ." उसका उत्तर था, "सब कुछ कुशल ही होगा." 24 तब उसने गधे
को तैयार किया और अपने सेवक को आदेश दिया, "गधे को तेज हांको! मेरे
लिए रफ़्तार धीमी न होने पाए, जब तक मैं इसके लिए आदेश न दूं." 25 वह
चल पड़ी और कर्मेल पर्वत पर परमेश्वर के जन के घर तक पहुंच गई. जब
परमेश्वर के जन ने उसे अपनी ओर आते देखा, उन्होंने अपने सेवक गेहज़ी से
कहा, "वह देखो! शूनामी स्त्री! 26 तुरंत उससे मिलने के लिए दौड़ो और उससे
पूछो, 'क्या आप सकुशल हैं? क्या आपके पति सकुशल हैं? क्या आपका पुत्र
सकुशल है?'" उसने उसे उत्तर दिया, "सभी कुछ सकुशल है." 27 तब, जैसे
ही वह पर्वत पर परमेश्वर के जन के पास पहुंची, उसने एलीशा के पैर पकड़
लिए. जब गेहज़ी उसे हटाने वहां पहुंचा, परमेश्वर के जन ने उससे कहा, "ऐसा
कुछ न करो, क्योंकि इसका मन भारी दर्द से भरा हुआ है. इसके बारे में मुझे
याहवेह ने कोई सूचना नहीं दी है, इसे गुप्त ही रखा है." 28 तब उस स्त्री ने
कहना शुरू किया, "क्या अपने स्वामी से पुत्र की विनती मैंने की थी? क्या मैंने
न कहा था, 'मुझे झूठी आशा न दीजिए?'" 29 एलीशा ने गेहज़ी को आदेश
दिया, "कमर कस लो और अपने साथ मेरी लाठी ले लो और चल पड़ो! मार्ग में
अगर कोई मिले तो उससे हाल-चाल जानने के लिए न रुकना. यदि तुम्हें कोई
नमस्कार करे तो उसका उत्तर न देना. जाकर मेरी लाठी उस बालक के मुंह पर
रख देना." 30 तब बालक की माता ने एलीशा से कहा, "जीवित याहवेह की
शपथ और आपकी शपथ, मैं आपके बिना न लौटूंगी!" तब एलीशा उठे और
उस स्त्री के साथ चल दिए. 31 गेहज़ी ने आगे-आगे जाकर बालक के मुंह पर
लाठी टिका दी, मगर वहां न तो कोई आवाज सुनाई दिया गया और न ही उसमें
जीवन का कोई लक्षण दिखाई दिया. तब गेहज़ी ने लौटकर एलीशा को ख़बर
दी, "बालक तो जागा ही नहीं!" 32 जब एलीशा ने घर में प्रवेश किया, वह
मरा हुआ बालक उनके ही बिछौने पर ही लिटाया हुआ था. 33 तब एलीशा
कमरे के भीतर चले गए और दरवाजा बंद कर लिया, वे दोनों बाहर ही थे.
एलीशा ने याहवेह से प्रार्थना की. 34 तब वह जाकर बालक के ऊपर लेट गए.
उन्होंने अपना मुख बालक के मुख पर रखा, उनकी आंखें बालक की आंखों
पर थी और उनके हाथ बालक के हाथों पर. जब वह उस बालक पर लेट गए,
तब बालक के शरीर में गर्मी आने लगी. 35 फिर वह नीचे उतरे और घर के
भीतर ही टहलते रहे. तब वह दोबारा बिछौने पर चढ़ गए और बालक पर लेट
गए. इससे उस बालक को सात बार छींक आई और उसने आंखें खोल दीं. 36
एलीशा ने गेहज़ी को पुकारा और आदेश दिया, "शूनामी स्त्री को बुलाओ." तब
गेहज़ी ने उसे पुकारा. जब वह भीतर आई, उन्होंने उस स्त्री से कहा, "उठा लो
अपने पुत्र को." 37 वह आई और भूमि की ओर झुककर एलीशा के पैरों पर
गिर पड़ी. इसके बाद उसने अपने पुत्र को गोद में उठाया और वहां से चली
गई. 38 एलीशा दोबारा गिलगाल नगर को लौट गए. इस समय देश में अकाल
फैला था. भविष्यद्वक्ता मंडल इस समय उनके सामने बैठा हुआ था. एलीशा ने
अपने सेवक को आदेश दिया, "एक बड़े बर्तन में भविष्यद्वक्ता मंडल के लिए
भोजन तैयार करो!" 39 एक भविष्यद्वक्ता ने बाहर जाकर खेतों में से कुछ
साग-पात इकट्ठा किया. वहीं उसे एक जंगली लता भी दिखाई दी, जिससे
उसने बड़ी संख्या में जंगली फल इकट्ठा कर लिए. उसने इन्हें काटकर पकाने
के बर्तन में डाल दिया. उसे यह मालूम न था कि ये फल क्या थे. 40 जब
परोसने के लिए भोजन निकाला गया और जैसे ही उन्होंने भोजन खाना शुरू
किया, वे चिल्ला उठे, "परमेश्वर के जन, इस हांडी में मौत है!" वे भोजन
न कर सके. 41 एलीशा ने आदेश दिया, "थोड़ा आटा ले आओ." उन्होंने
उस आटे को उस बर्तन में डाला और कहा, "अब इसे इन्हें परोस दो, कि वे
इसे खा सके." बर्तन का भोजन खाने योग्य हो चुका था. 42 बाल-शालीशाह
नामक स्थान से एक व्यक्ति ने आकर परमेश्वर के जन को उपज के प्रथम फल
से बनाई गई बीस जौ की रोटियां और बोरे में कुछ बालें लाकर भेंट में दीं.
एलीशा ने आदेश दिया, "यह सब भविष्यद्वक्ता मंडल के भविष्यवक्ताओं में बांट
दिया जाए कि वे भोजन कर लें." 43 सेवक ने प्रश्न किया, "यह भोजन सौ
व्यक्तियों के सामने कैसे रखा जाए?" एलीशा ने अपना आदेश दोहराया, "यह
भोजन भविष्यद्वक्ता मंडल के भविष्यवक्ताओं को परोस दो, कि वे इसे खा सकें,
क्योंकि यह याहवेह का संदेश है, 'उनके खा चुकने के बाद भी कुछ भोजन
बाकी रह जाएगा.'" 44 तब सेवक ने भोजन परोस दिया. वे खाकर तृप्त हुए
और कुछ भोजन बाकी भी रह गया; जैसा याहवेह ने कहा था.

5 अराम के राजा की सेना का सेनापति नामान, एक अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति
था. वह राजा का प्रियजन और आदर के योग्य व्यक्ति था, क्योंकि उसके
द्वारा याहवेह ने अराम को विजय दिलाई थी. वह पराक्रमी, वीर योद्धा था,
मगर उसे कुष्ठ रोग था. 2 एक मौके पर, जब अराम के सैनिकों ने छापा मारा,
वे इस्राएल देश से एक कम उम्र की लड़की अपने साथ ले गए. यह लड़की
नामान की पत्नी की सेविका के रूप में काम करती थी. 3 इस लड़की ने अपनी
स्वामिनी से कहा, “भला होता कि स्वामी उस भविष्यद्वक्ता से मिल सकते, जो
शमरिया में रहते हैं. वह स्वामी के कुष्ठ रोग को शुद्ध कर सकते हैं.” 4 नामान ने
अपने स्वामी, राजा के सामने इस तरह इसका ब्यौरा किया, “इस्राएल से लाई
गई एक लड़की ने मुझे ऐसा-ऐसा बताया है.” 5 अराम के राजा ने नामान से
कहा, “तुम इसी समय वहां चले जाओ. मैं तुम्हें इस्राएल के राजा के लिए एक
पत्र दिए देता हूं.” तब नामान ने प्रस्थान किया. उसने अपने साथ भेंट में देने के
लिए लगभग साढ़े तीन सौ किलो चांदी, सत्तर किलो सोना और दस जोड़ी
कीमती वस्त्र रख लिए थे. 6 वह अपने साथ इस्राएल के राजा को अराम के राजा
द्वारा लिखा गया पत्र ले गया था जिसमें इस प्रकार लिखा गया था, “जब यह पत्र
आपके हाथों में पहुंचेगा, आप यह समझ लें, कि मैं अपने सेवक नामान को
आपके पास भेज रहा हूं, कि आप इसे इसके कुष्ठ रोग से शुद्ध कर दें.” 7 जब
इस्राएल के राजा ने यह पत्र पढ़ा, उसने अपने कपड़े फाड़ते हुए कहा, “क्या मैं
परमेश्वर हूं, जो किसी के प्राण लूं या किसी को दोबारा जीवित करूं, कि यह
व्यक्ति कुष्ठरोगी की शुद्धि के लिए मुझसे विनती कर रहा है? ज़रा रुक कर
विचार तो करो, और देख लो कि यह मुझसे झगड़ने का बहाना ढूंढ़ रहा है!” 8
मगर जब परमेश्वर के जन एलीशा को राजा द्वारा अपने कपड़े फाड़े जाने की
घटना के बारे में मालूम हुआ, उन्होंने राजा को यह संदेश भेजा, “आपने क्यों
अपने कपड़े फाड़ दिए हैं? अब आप उससे कहिए कि नामान आकर मुझसे भेंट
करे, कि उसे यह मालूम हो जाए कि इस्राएल देश में एक भविष्यद्वक्ता है.” 9
तब नामान अपने घोड़ों और रथों सहित एलीशा के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ.
10 एलीशा ने दूत द्वारा नामान को यह संदेश दिया, “जाकर यरदन नदी में सात
बार नहा लो. तुम्हारा शरीर पहले के समान स्वस्थ हो जाएगा और तुम शुद्ध हो
जाओगे.” 11 यह सुन नामान बहुत ही क्रोधित हो वहां से लौट गया. वह मन में
सोच रहा था: “देखो तो, मैं विचार कर रहा था, भविष्यद्वक्ता ज़रूर बाहर
आएंगे, मेरे पास आ खड़े होकर याहवेह, अपने परमेश्वर के नाम की दोहाई देंगे,
मेरी रोगी देह पर अपना हाथ लहराएंगे और इस प्रकार मेरे कुष्ठ रोग को ठीक
कर देंगे. 12 अरे, क्या दमेशेक की अबाना और फारपर नदियां इस्राएल के जल
से कहीं ज्यादा अच्छी नहीं हैं? क्या मैं उनमें नहाकर शुद्ध न हो सकता था?”
तब नामान वहां से बड़े ही क्रोध में भरकर लौटने लगा. 13 यह देख उसके
सेवक उसके पास आ उससे कहने लगे, “पिताश्री! यदि भविष्यद्वक्ता ने आपको
कोई भारी काम करने का आदेश दिया होता, तो क्या आप वह न करते? उन्होंने
तो सिर्फ यह कहा है, ‘जाकर स्नान करो और शुद्ध हो जाओ.’” 14 यह सुन
नामान गया, यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाई—जैसा परमेश्वर के जन ने
आदेश दिया था—उसकी देह छोटे बालक के समान हो चुकी थी; वह शुद्ध हो
गई थी. 15 तब नामान अपने सारे झुण्ड के साथ लौटकर परमेश्वर के जन के
घर पर गया और घर के सामने खड़ा हो भविष्यद्वक्ता को संबोधित कर कहने
लगा, “सुनिए, अब मैं जान गया हूं कि सारी पृथ्वी पर इस्राएल के परमेश्वर के
अलावा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है. तब अपने सेवक की ओर से यह भेंट
स्वीकार कीजिए.” 16 मगर एलीशा ने उत्तर दिया, “जीवित याहवेह की शपथ,
मैं जिनका सेवक हूं, मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करूंगा.” नामान विनती करता
रहा मगर एलीशा इनकार करते रहे. 17 अंत में नामान ने कहा, “अच्छा, अगर
और कुछ नहीं तो आपके सेवक को दो खच्चरों के बोझ के बराबर की यहां की
मिट्टी ले जाने दी जाए, क्योंकि अब इसके बाद आपका सेवक याहवेह के
अलावा किसी भी पराए देवता को न होमबलि चढ़ाएगा और न ही बलि. 18 इस
विषय में याहवेह मुझे, आपके सेवक को क्षमा करें, जब मेरे स्वामी आराधना के
लिए रिम्मोन में आराधना भवन को जाते हैं, उन्हें मेरी बांह के सहारे की ज़रूरत
होती है. मुझे भी रिम्मोन के भवन में सिर झुकाना पड़ जाता है. इस बारे में
याहवेह अपने सेवक को क्षमा प्रदान करें.” 19 एलीशा ने नामान से कहा,
“आप याहवेह की शांति में यहां से विदा हो जाइए.” नामान वहां से कुछ ही दूर
गया था, 20 परमेश्वर के जन एलीशा के सेवक गेहज़ी ने मन में विचार किया,
“मेरे स्वामी ने तो भेंट स्वीकार न करके अरामवासी नामान को यों ही छोड़
दिया है. जीवित याहवेह की शपथ, मैं दौड़कर उसके पीछे जाऊंगा और उससे
कुछ तो ले ही लूंगा.” 21 तब गेहज़ी नामान के पीछे दौड़ा. जब नामान को लगा
कि कोई उसके पीछे दौड़ा आ रहा है, वह अपने रथ से उतर पड़ा, कि उससे
भेंट करे. नामान ने गेहज़ी से पूछा, “सब कुशल तो है न?” 22 गेहज़ी ने उत्तर
दिया, “हां, सब कुशल है. स्वामी ने मुझे आपसे यह विनती करने भेजा है:
‘एफ्राईम के पहाड़ी इलाके से भविष्यवक्ताओं के दो युवक यहां आ गए हैं.
कृपया मुझे उन्हें भेंट में देने के लिए एक तालन्त चांदी और दो जोड़ी अच्छे
कपड़े दे दीजिए.’” 23 नामान ने उत्तर दिया, “एक ही क्यों? आप खुशी से दो
तालन्त चांदी ले जाइए.” और नामान ने साग्रह दो थैलों में दो तालन्त चांदी और
दो जोड़े वस्त्र बांध दिए और यह सब अपने दो सेवकों को दिया, जिसे लेकर
वे गेहज़ी के आगे-आगे चले गए. 24 जब वे पहाड़ी तक पहुंचे, गेहज़ी ने
थैले उनसे लेकर अपने घर में रख लिए और उन दोनों को विदा कर दिया,
और वे वहां से चले गए. 25 गेहज़ी जाकर अपने स्वामी के सामने खड़ा हो
गया. एलीशा ने गेहज़ी से पूछा, “कहां गया था, गेहज़ी?” उसने उत्तर दिया,
“आपका सेवक कहीं नहीं गया था.” 26 मगर एलीशा ने उससे कहा, “क्या
मेरी आत्मा वहां न थी, जब वह व्यक्ति तुमसे भेंटकरने लौटकर तुम्हारी ओर
आया था? क्या धन और वस्त्र लेने के लिए सही मौका यही था, कि जैतून के
बगीचे, अंगूर के बगीचे, भेड़ें, बैल, दास-दासियां पाई जाएं? 27 नामान का कुष्ठ
रोग तुम पर और तुम्हारे वंशजों पर स्थायी रूप से आ जाएगा.” तब वह एलीशा
के सामने हिम के समान सफेद, घोर कुष्ठरोगी होकर बाहर चला गया.

6 भविष्यवक्ताओं के दल ने एलीशा से विनती की, “सुनिए, आपके द्वारा
हमारे लिए ठहराया गया घर अब छोटा पड़ रहा है! 2 हमें आज्ञा दीजिए कि
हम सब यरदन नदी के तट पर जाएं और हममें से हर एक वहां से एक-एक
बल्ली काटे और हम वहां अपने लिए घर बनाएंगे.” एलीशा ने आज्ञा दे दी,
“जाओ.” 3 उनमें से एक ने एलीशा से विनती की, “अपने सेवकों के साथ
चलने की कृपा कीजिए.” एलीशा ने हां कह दिया, “अच्छा, मैं तुम्हारे साथ
चलूंगा.” 4 तब वह उनके साथ चले गए. जब वे यरदन के तट पर आए,
उन्होंने पेड़ काटना शुरू किया. 5 उनमें से एक भविष्यद्वक्ता बल्ली काट रहा
था तब उसकी कुल्हाड़ी की फाल पानी में जा गिरी. वह भविष्यद्वक्ता चिल्ला
उठा, “ओह, मेरे स्वामी! वह तो उधार की फाल थी.” 6 इस पर परमेश्वर के
जन ने उससे पूछा, “किस जगह पर गिरी है वह?” जब उसने उन्हें वह जगह
दिखाई, भविष्यद्वक्ता ने एक छड़ी काटी और उस जगह पर फेंक दी. लोहे की
वह फाल पानी पर तैरने लगी. 7 एलीशा ने उसे आदेश दिया, “इसे उठा लो.”
तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया. 8 उस मौके पर, जब अराम का राजा
इस्राएल से युद्ध करता था, उसने अपने सेवकों की सलाह के अनुसार निर्णय
लिया, “मेरा तंबू अमुक जगह पर होगा.” 9 परमेश्वर के जन ने इस्राएल के
राजा को यह संदेश भेजा: “सावधान रहिए! अरामी सेना वहीं पहुंच रही है, तब
उस स्थान के निकट से होकर न जाइएगा.” 10 इस्राएल का राजा उसी स्थान
को अपनी सेना भेजा करता था, जिसके विषय में उसे परमेश्वर के जन द्वारा

सूचना मिली थी. इस प्रकार उसे चेतावनी मिलती रहती थी, फलस्वरूप वह
अपने आपकी सुरक्षा कर लेता था. यह अनेक बार हुआ. **11** इससे अराम के
राजा का मन बहुत ही घबरा गया. उसने अपने सेवकों की सभा बुलाकर उनसे
प्रश्न किया, "क्या, आप लोग मुझे यह बताएंगे कि हममें से कौन है, जो इस्राएल
के राजा की ओर है?" **12** एक सेवक ने उत्तर दिया, "कोई भी नहीं, महाराज.
हां, इस्राएल में एक भविष्यद्वक्ता है—एलीशा, वह इस्राएल के राजा को आपके
द्वारा आपके कमरे में कहे गए शब्दों तक की सूचना दे देता है." **13** अराम के
राजा ने आदेश दिया, "जाओ. मालूम करो कहां है यह भविष्यद्वक्ता, कि मैं
सैनिक भेज उसे पकड़वा सकूं." राजा को सूचित किया गया, **14** "महाराज,
वह भविष्यद्वक्ता दोथान में छिपा हुआ है." राजा ने उस स्थान के लिए घोड़े, रथ
और एक बड़ी सैनिक टुकड़ी भेज दी. रात में वहां पहुंचकर उन्होंने उस नगर
को घेर लिया. **15** तड़के जब परमेश्वर के जन का सेवक जागा, उसने बाहर
जाकर देखा कि सेना, घोड़े और रथ नगर को घेरे हुए हैं. सेवक कह उठा,
"हाय, मेरे स्वामी! अब हम क्या करें?" **16** एलीशा ने उत्तर दिया, "डरो मत!
क्योंकि वे, जो हमारे साथ हैं, गिनती में उनसे अधिक हैं, जो उनके साथ हैं."
17 तब एलीशा ने यह प्रार्थना की: "याहवेह, कृपा कर इसे दृष्टि दीजिए, कि यह
देख सके." तब याहवेह ने उस युवा सेवक को दृष्टि दी और उसने देखा एलीशा
के चारों ओर पहाड़ घोड़ों और अग्निरथों से भरा हुआ था. **18** जब अरामी
सेना एलीशा को पकड़ने के लिए आगे बढ़ी, एलीशा ने याहवेह से यह प्रार्थना
की: "कृपा कर इन लोगों की दृष्टि छीन लीजिए." तब एलीशा की प्रार्थना के
अनुसार याहवेह ने उन्हें अंधा कर दिया. **19** उन्हें एलीशा ने कहा, "न तो यह
वह मार्ग है और न ही यह वह नगर. मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें उस व्यक्ति तक ले
जाऊंगा, जिसे तुम खोज रहे हो." तब एलीशा ने उन्हें शमरिया पहुंचा दिया. **20**
जैसे ही उन्होंने शमरिया में प्रवेश किया, एलीशा ने प्रार्थना की, "याहवेह इन
व्यक्तियों की दृष्टि लौटा दीजिए कि अब ये देख सकें." तब याहवेह ने उन्हें दृष्टि
प्रदान की. उन्होंने देखा और पाया कि वे शमरिया में हैं. **21** जैसे ही इस्राएल के
राजा ने उन्हें देखा, वह एलीशा से कहने लगा, "मेरे पिताजी, क्या, हम उन पर
वार करें? बताइए, क्या हम उन पर वार करें?" **22** एलीशा ने उत्तर दिया,
"तुम्हारा उन पर हमला करना सही न होगा. क्या, उन बंदियों की हत्या की
जाती है, जिन्हें तुम तलवार और धनुष के द्वारा बंदी बनाते हो? उन्हें भोजन
परोसो कि वे खा-पीकर तृप्त हो जाएं, और अपने स्वामी के पास लौट जाएं."
23 तब उनके लिए एक उत्तम भोज तैयार किया गया. जब वे खा-पीकर तृप्त हो
गए, इस्राएल के राजा ने उन्हें विदा किया, और वे अपने स्वामी के पास लौट
गए. इस घटना के बाद अरामी फिर कभी इस्राएल पर हमला करने नहीं आए.
24 कुछ समय के बाद, अराम के राजा बेन-हदद ने अपनी सारी सेना तैयार की
और शमरिया पर हमला किया और नगर की घेराबंदी कर ली. **25** शमरिया में
इस समय भयंकर अकाल फैल गया. शत्रु सेना ने इसे घेर रखा था. स्थिति ऐसी
हो चुकी थी कि गधे का सिर चांदी के अस्सी शेकेलों में और एक चौथाई
कबूतर की बीट पांच शेकेल में बेची जा रही थी. **26** एक दिन इस्राएल का राजा
नगर की शहरपनाह पर चलता हुआ जा रहा था, एक स्त्री ने उससे ऊंचे स्वर में
कहा, "महाराज, मेरे स्वामी, सहायता कीजिए." **27** राजा ने उत्तर दिया, "यदि
याहवेह ही तुम्हारी सहायता नहीं करते, तो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता
हूं, क्या, खलिहान से या अंगूर-रस के कुंड से?" **28** राजा ने फिर आगे यह भी
पूछा, "क्या तकलीफ़ है तुम्हें?" स्त्री ने उत्तर दिया, "इस स्त्री ने मुझसे कहा था,
'आज मुझे अपना पुत्र दे दो कि वह हमारा आज का भोजन हो जाए, कल मेरा
पुत्र हमारा भोजन हो जाएगा.' **29** तब हमने मेरे पुत्र को पकाकर खा लिया.
दूसरे दिन मैंने इसे याद दिलाया, 'लाओ अपना पुत्र को, ताकि वह हमारा भोजन
हो जाए.' मगर इसने तो अपना पुत्र छिपा दिया है." **30** जब राजा ने उस स्त्री के
ये शब्द सुने, उसने अपने कपड़े फाड़ दिए. इस समय वह शहरपनाह पर टहल
रहा था. लोगों ने यह सब देखा. उन्होंने इस बात पर भी ध्यान दिया कि वह
राजसी वस्त्रों के भीतर टाट पहना हुआ था. **31** राजा ने घोषणा की, "परमेश्वर
मेरे साथ ऐसा ही, बल्कि इससे भी कड़ा व्यवहार करें, यदि आज शाफात के पुत्र
एलीशा का सिर उसके धड़ से लगा रह जाए." **32** एलीशा अपने घर में बैठे हुए
थे, उनके साथ नगर पुरनिए भी बैठे हुए थे. इस समय राजा द्वारा भेजा दूत यहीं
आ रहा था. अभी वह व्यक्ति यहां नहीं पहुंचा था, मगर एलीशा अपने साथ के
पुरनियों से कह रहे थे, "देखो, इस हत्यारे को, उसने मेरा सिर उड़ाने के लिए
एक दूत भेजा है! ऐसा कीजिए, जैसे ही वह दूत यहां पहुंचे, दरवाजा बंद कर लें
और उसे अच्छी तरह से बंद किए रखें. उसका स्वामी उससे अधिक दूर नहीं
होगा." **33** एलीशा उनसे यह कह ही रहे थे, कि उस दूत ने उनके पास आकर
उनसे कहा, "यह मुसीबत याहवेह की ओर से है. अब मैं आगे याहवेह का
इंतजार और क्यों करता रहूं?"

7 एलीशा ने उसे उत्तर दिया, "याहवेह का संदेश सुनो: 'याहवेह की प्रतिज्ञा है,
कल, लगभग इसी समय शमरिया के द्वार पर चांदी के एक सिक्के में तीन
किलो मैदा और चांदी के एक सिक्के में छः किलो जौ बिकने लगेगा.'" **2** तब
उस राजकीय अधिकारी ने, जिसके हाथ की टेक राजा लिया करते थे, परमेश्वर
के जन से कहा, "यदि खुद याहवेह आकाश के झरोखे खोल दें, तब भी क्या
यह संभव है?" मगर एलीशा ने उसे उत्तर दिया, "यह तुम खुद अपनी आंखों से
तो देखोगे, मगर इनको खा नहीं पाओगे." **3** उस समय नगर फाटक पर चार
कुष्ठरोगी थे. उन्होंने आपस में सलाह-मशवरा किया, "मृत्यु आने तक हम यहीं
क्यों बैठे रहें? **4** यदि हम विचार करें, 'चलो, नगर में,' तो वहां भयंकर अकाल
है; मृत्यु वहां भी तय है. यदि हम यहीं बैठे रहते हैं, तब भी मृत्यु तय ही है
इसलिये चलो, हम अरामियों के तंबू में चलें. यदि वे तरस खाकर हमें जीवनदान
दें, तो हम जीवित रह जाएंगे, यदि वे हमारी हत्या करना चाहें, तो वैसे भी हमारी
मृत्यु तो तय है ही." **5** तब शाम होते वे चारों उठे और अरामियों की छावनी
की ओर बढ़े. जब वे छावनी की सीमा पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वहां कोई
भी न था! **6** कारण यह था कि याहवेह ने ऐसा किया कि अरामी सेना को घोड़ों
और रथों की आवाज सुनाई दी गई, मानो एक बड़ी सेना चली आ रही हो. तब
अराम के सैनिक आपस में यह विचार करने लगे, "सुनो, सुनो! इस्राएल के राजा
ने हम पर हमला करने के लिए हित्ती और मिस्री राजाओं को भाड़े पर ले लिया
है." **7** तब अरामी सैनिक अपने-अपने तंबू वैसे ही छोड़कर भाग गए. वे अपने
पीछे अपने घोड़े और अपने गधे तक छोड़ गए. **8** जब ये चार कुष्ठरोगी शिविर
की सीमा तक आए, वे छावनी के भीतर गए, और तृप्त होने तक भोजन किया.
वे अपने साथ सोना, चांदी और उत्तम वस्त्र भी लेते गए, जिन्हें उन्होंने ले जाकर
छिपा दिया. फिर वे लौटकर अन्य छावनी में गए और वहां से भी ऐसा ही सामान
ले जाकर छिपा दिया. **9** तब वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, "हम यह
ठीक नहीं कर रहे. आज का दिन शुभ संदेश का दिन है. यदि हम इसको देने के
लिए सुबह तक ठहरे रहेंगे, तो हम दंड के अधिकारी हो जाएंगे. सो आओ, हम
जाकर राजपरिवार को बता दें." **10** तब उन्होंने जाकर नगर के द्वारपालों को
पुकारा और उन्हें सूचित किया, "हम अरामियों की छावनी तक गए थे, और
हमने देखा कि वहां कोई भी सैनिक नहीं है. वहां न किसी व्यक्ति का स्वर सुनाई
दे रहा है, और न ही कोई दिखाई दे रहा है सिवाय वहां बंधे हुए घोड़ों, गधों
और शांत तंबुओं के." **11** यह सुन द्वारपालों ने ऊंचे स्वर में पुकारा और यह
समाचार राजमहल तक पहुंचा दिया. **12** राजा रात में ही उठ गया और अपने
सेवकों से कहा, "मैं तुम्हें बता रहा हूं कि अरामियों ने हमारे साथ क्या किया है
उन्हें यह मालूम है कि हम भूखे हैं. इसलिये वे छावनी को खाली छोड़ मैदान में
जा छिपे हैं. 'उनका विचार है कि जब हम नगर से बाहर निकलेंगे, वे हमें

जीवित पकड़कर नगर में ले आएंगे.’” 13 उनके एक सेवक ने सुझाव दिया,
“हम बाकी रह गए घोड़ों में से पांच को कुछ सैनिकों के साथ वहां भेज दें. वैसे
भी, जो सैनिक यहां बचे रह गए हैं, उनकी स्थिति उनसे ज्यादा अलग नहीं है,
जिनकी मृत्यु हो चुकी है. हम इन्हें वहां की स्थिति मालूम करने के लिए भेज
दें.” 14 तब राजा ने घोड़े जुते दो रथों को अरामी सेना की स्थिति मालूम करने
के लिए भेज दिया. उसका आदेश था, “जाकर स्थिति की पता करो.” 15 ये
दोनों उस मार्ग पर उनके पीछे-पीछे चलते रहे. उन्होंने यरदन तक जाकर देखा
कि सारे मार्ग पर वस्त्र और हथियार बिखरे पड़े हैं, जो अरामी उतावली में भागते
समय फेंक गए थे. वे भेदिए लौट आए और राजा को इसकी ख़बर दे दी. 16
यह सुन प्रजा बाहर निकल आई और उन्होंने अरामियों के शिविर को लूट
लिया. परिणामस्वरूप, ठीक याहवेह की भविष्यवाणी के अनुसार तीन किलो
मैदा चांदी के एक सिक्के में और छः किलो जौ भी चांदी के एक सिक्के में
बिकने लगा. 17 राजा ने उस राजकीय अधिकारी को, वह जिसके हाथ का टेक
लेता था, द्वार पर नियुक्त कर रखा था; वह लोगों की इस भगदड़ में द्वार पर ही
रौंदा गया और उसकी मृत्यु हो गई, ठीक परमेश्वर के जन एलीशा द्वारा की गई
भविष्यवाणी के अनुसार जब राजा ने उन्हें बंदी बनाने की कोशिश की थी. 18
यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा परमेश्वर के जन ने राजा के लिए यह भविष्यवाणी
की थी, “लगभग इसी समय कल चांदी के एक सिक्के में तीन किलो मैदा और
चांदी के एक सिक्के में छः किलो जौ शमरिया के फाटक पर बिकने लगेगा.”
19 इस अधिकारी ने परमेश्वर के जन पर उत्तर में कटाक्ष किया था, “यदि स्वयं
याहवेह आकाश के झरोखे खोल दें, तब भी, क्या यह संभव है?” इसके उत्तर में
परमेश्वर के जन एलीशा ने कहा था, “यह सब तुम स्वयं अपनी आंखों से तो
देखोगे, मगर इनका इस्तेमाल न कर सकोगे!” 20 उसके साथ ठीक यही हुआ.
वह लोगों की भगदड़ में फाटक पर ही रौंदा गया, और उसकी मृत्यु हो गई.

8 एलीशा ने जिस स्त्री के पुत्र को जीवित किया था, उससे वह कह चुके थे,
“यहां से अपनी गृहस्थी लेकर जहां चाहे वहां चली जाओ! क्योंकि याहवेह
की ओर से इस देश पर एक अकाल भेजा जा रहा है और जिसकी अवधि सात
साल की होगी.” 2 तब उस स्त्री ने परमेश्वर के जन के आदेश के अनुसार ही
किया. वह अपनी सारी गृहस्थी को लेकर फिलिस्तीनियों के देश में रहने लगी.
3 सात साल पूरे होने पर जब वह फिलिस्तीनियों के देश से लौटकर आई, उसने
राजा से भेंटकर अपनी भूमि और घर के वापस लेने की विनती की. 4 इस समय
राजा परमेश्वर के जन के सेवक गेहज़ी से बातें करने में मगन था, वह कह रहा
था, “मुझे एलीशा द्वारा किए गए सभी अद्भुत कामों के बारे में बताओ.” 5 जब
गेहज़ी, एलीशा द्वारा मृतक को जीवित किए जाने की घटना को बता रहा था,
ठीक उसी समय पर यह स्त्री अपनी संपत्ति के वापस मिलने का आग्रह लेकर आ
उपस्थित हुई. उसे देख गेहज़ी कह उठा, “महाराज, मेरे स्वामी, यही तो है, वह
स्त्री और यही है उसका वह पुत्र, जिसे एलीशा ने जीवित किया है.” 6 राजा द्वारा
उस स्त्री से पूछताछ किए जाने पर उस स्त्री ने सारी बातों का ब्यौरा कर दिया. तब
राजा ने उसके लिए इस आदेश के साथ एक अधिकारी नियुक्त कर दिया,
“जो कुछ इस स्त्री का था, वह सब इसे लौटा दिया जाए, और जिस दिन से
यह देश छोड़कर गई थी तब से आज तक की भूमि की सारी उपज भी.” 7
एलीशा दमेशेक आए. अराम का राजा बेन-हदद बीमार था. उसे यह सूचना दी
गई, “परमेश्वर के जन यहां आए हुए हैं.” 8 राजा ने हाज़ाएल को आदेश
दिया, “अपने साथ भेंट लेकर परमेश्वर के जन के पास चले जाओ. उनके द्वारा
याहवेह से यह मालूम करो कि मुझे इस रोग से मुक्ति मिल जाएगी या नहीं?” 9
तब हाज़ाएल दमेशेक की हर एक प्रकार की उत्कृष्ट वस्तुएं ऊंटों पर लदवाकर
भेंट के लिए चल पड़ा. जब वह वहां पहुंचकर एलीशा के सामने खड़ा हुआ,
उसने परमेश्वर के जन से विनती की, “मुझे आपके पुत्र अराम के राजा बेन-हदद
ने भेजा है, उन्होंने पूछा है, ‘क्या मुझे इस रोग से मुक्ति मिल जाएगी?’” 10
एलीशा ने उसे उत्तर दिया, “जाकर उनसे कहो, ‘आप रोगमुक्त तो अवश्य हो
जाएंगे,’ किंतु वस्तुतः याहवेह ने मुझ पर यह प्रकट किया है कि निश्चयतः
उसकी मृत्यु हो जाएगी.” 11 तब एलीशा हाज़ाएल की ओर तब तक टकटकी
बांधकर देखते रहे, जब तक हाज़ाएल लज्जित न हो गया. तब परमेश्वर का जन
रोने लगा. 12 हाज़ाएल ने उनसे पूछा, “मेरे स्वामी, आप रोने क्यों लगे?”
एलीशा ने उत्तर दिया, “क्योंकि वह बुरा, जो तुम इस्राएली प्रजा के साथ करोगे,
मैं उसे जानता हूं. तुम उनके गढ़ों में आग लगा दोगे, तुम तलवार से उनके
युवाओं की हत्या कर दोगे, उनके शिशुओं को पटक-पटक कर टुकड़े-टुकड़े
कर दोगे और गर्भवती स्त्रियों का पेट चीर दोगे.” 13 हाज़ाएल ने उनसे कहा,
“आपका सेवक है ही क्या, मात्र एक कुत्ता, जो वह इस सीमा तक पतित कार्य
करे?” एलीशा ने उत्तर दिया, “याहवेह ने मुझ पर यह प्रकट किया है कि
तुम अराम के राजा हो जाओगे.” 14 तब हाज़ाएल एलीशा की उपस्थिति से
जाकर अपने स्वामी की उपस्थिति में पहुंचा. राजा ने उससे पूछा, “क्या कहा है
एलीशा ने तुमसे?” उसने उत्तर दिया, “उन्होंने कहा है कि आप ज़रूर निरोगी हो
जाएंगे.” 15 दूसरे दिन हाज़ाएल ने एक कंबल ले उसे जल में डुबोया, और बेन-
हदद के मुख पर फैला दिया और उसे वहीं रहने दिया जब तक उसकी मृत्यु न
हो गई. तब हाज़ाएल उसके स्थान पर राजा बन गया. 16 इस्राएल के राजा
अहाब के पुत्र योराम के शासनकाल के पांचवें साल में, यहोशाफ़ात के पुत्र
यहोराम ने यहूदिया पर शासन शुरू किया. 17 जब वह राजा बना, उसकी उम्र
बत्तीस साल थी, और उसने येरूशलेम में आठ साल शासन किया. 18 उसका
आचरण इस्राएल के राजाओं के समान था. उसने वही किया, जो अहाब के वंश
ने किया था; क्योंकि उसने अहाब की पुत्री से विवाह किया था. वह वही करता
था जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. 19 फिर भी दावीद से की गई अपनी
प्रतिज्ञा के कारण याहवेह यहूदिया को नष्ट नहीं करना चाहते थे. याहवेह ने
प्रतिज्ञा की थी कि, दावीद और उनके पुत्रों के लिए एक दीपक सदैव जलाए
रखेंगे. 20 यहोराम का शासनकाल में एक मौका ऐसा आया, जब एदोम ने
यहूदिया के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, और अपने लिए स्वयं एक राजा चुन लिया.
21 इस पर यहोराम अपने रथों को लेकर ज़ईर नगर के निकट से आगे बढ़ा.
उसने रात में उठकर एदोमी सेना पर हमला कर दिया, जिन्होंने उसकी सेना और
सैन्य अधिकारियों को घेर लिया था, किंतु यहोराम की सेना पीठ दिखाकर भाग
गई. 22 फलस्वरूप एदोम आज तक इस्राएल के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में
है. इसी समय लिबनाह ने भी विद्रोह कर दिया था. 23 यहोराम की बाकी
उपलब्धियों और सारे कामों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में किया गया है. 24 यहोराम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा की नींद सो
गया, और दावीद के नगर में उसके पूर्वजों के साथ उसे गाड़ा गया. उसके स्थान
पर उसके पुत्र अहज़्याह ने शासन करना शुरू किया. 25 इस्राएल के राजा अहाब
के पुत्र योराम के शासनकाल के बारहवें साल में यहूदिया के राजा यहोराम के पुत्र
अहज़्याह ने शासन करना शुरू किया. 26 जब अहज़्याह ने शासन शुरू किया,
उसकी उम्र बाईस साल थी. उसने येरूशलेम में एक साल राज्य किया. उसकी
माता का नाम अथालियाह था. वह इस्राएल के राजा ओमरी की पोती थी. 27
अहज़्याह का आचरण वैसा ही था जैसा अहाब के वंश का. उसने वही किया,
जो याहवेह की दृष्टि में गलत था, ठीक जैसा अहाब के परिवार ने भी किया था.
क्योंकि अहज़्याह अहाब के परिवार का दामाद था. 28 उसने अहाब के पुत्र
योराम के साथ मिलकर अराम के राजा हाज़ाएल से रामोथ-गिलआद में युद्ध छेड़
दिया. अरामी सेना ने योराम को घायल कर दिया. 29 रामाह में अराम के राजा
हाज़ाएल से युद्ध करते हुए राजा योराम को जो घाव लगे थे, उनसे स्वस्थ होने के
लिए राजा योराम येज़्रील को लौट गया. यहूदिया के राजा यहोराम का पुत्र

अहज़्याह अहाब के पुत्र योराम की स्थिति को देखने येज्रील गया क्योंकि
योराम बीमार था.

9 भविष्यद्वक्ता एलीशा ने भविष्यद्वक्ता मंडल के एक भविष्यद्वक्ता को आदेश
दिया, “कमर बांधो, अपने हाथ में यह तेल की कुप्पी लो और रामोथ-
गिलआद चले जाओ. 2 वहां पहुंचकर निमशी के पोते, यहोशाफ़ात के पुत्र, येहू
नामक व्यक्ति को खोजना. वहां तुम उसके कमरे में जाना, वह अपने साथियों
के साथ बैठा होगा. उसे खड़े होने को कहना और उसे अंदर के कमरे में ले
जाना. 3 तब इस तेल की कुप्पी का तेल उसके सिर पर उंडेल देना और
कहना, यह संदेश याहवेह की ओर से है, ‘मैं तुम्हें इस्राएल का राजा अभिषिक्त
करता हूं.’ तब द्वार खोलकर वहां से बिन देर किए भाग जाना.” 4 तब वह
युवा भविष्यद्वक्ता, एलीशा का सेवक, रामोथ-गिलआद के लिए चला. 5
वहां पहुंचकर उसने देखा कि सेनापति की समिति का सत्र चल रहा था. युवा
भविष्यद्वक्ता ने घोषणा की, “सेनापति महोदय, मेरे पास आपके लिए एक संदेश
है.” येहू ने उत्तर दिया, “हम सब में से किसके लिए?” भविष्यद्वक्ता ने उत्तर
दिया, “सेनापति जी, आपके ही लिए.” 6 तब येहू उठा और घर के भीतर चला
गया. युवा भविष्यद्वक्ता ने तुरंत यह कहते हुए उसके सिर पर तेल उंडेल दिया,
“याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह संदेश है ‘मैं याहवेह की प्रजा, इस्राएल
के लिए तुम्हारा राजाभिषेक कर रहा हूं. 7 तुम अपने स्वामी अहाब के वंश को
नाश करना, कि मैं इसके द्वारा ईजेबेल से अपने सेवक भविष्यवक्ताओं के लहू
का और याहवेह के सारे सेवकों के लहू का बदला ले सकूं. 8 क्योंकि अहाब
का सारा परिवार नाश होगा, मैं अहाब के वंश से हर एक पुरुष को इस्राएल
राष्ट्र से मिटा डालूंगा: दास या स्वतंत्र. 9 मैं अहाब के वंश को नेबाथ के पुत्र
यरोबोअम के समान और अहीयाह के पुत्र बाशा के समान बना दूंगा. 10 येज्रील
ही की सीमा के भीतर कुत्ते ईजेबेल के शव को खाएंगे—कोई उसे गाड़ने भी न
पाएगा.’” तब युवा भविष्यद्वक्ता द्वार खोल वहां से भाग गया. 11 जब येहू कमरे
से बाहर अपने स्वामी के सेवकों के पास लौटा, वे उससे पूछने लगे, “सब
कुशल तो है न? यह पागल व्यक्ति क्यों आया था तुम्हारे पास?” येहू ने उन्हें
उत्तर दिया, “तुम लोग तो इस व्यक्ति को और उसकी हरकतों को जानते ही
हो.” 12 सब एक साथ कहने लगे, “नहीं, नहीं, हम नहीं जानते. हमें सच-
सच सब बताओ.” तब उसने उत्तर दिया, “उसने मुझसे यह सब कहा है ‘यह
याहवेह का संदेश है, “मैं तुम्हें इस्राएल का राजा अभिषिक्त कर रहा हूं.”’” 13
यह सुनते ही उनमें से हर एक ने अपना अपना बाहरी वस्त्र उतारकर पत्थर की
सीढ़ियों पर बिछा दिया और उन्होंने नरसिंगे के साथ घोषणा की, “येहू राजा
हैं.” 14 निमशी के पोते, यहोशाफ़ात के पुत्र येहू ने योराम के विरुद्ध षड़्यंत्र रचा.
योराम सारी इस्राएली सेना के साथ अराम के राजा हाज़ाएल से रामोथ-गिलआद
की रक्षा कर रहा था, 15 मगर वास्तव में राजा यहोराम यहां अरामी सेना से लगे
घावों से स्वस्थ होने के उद्देश्य से येज्रील लौट आया था. ये घाव उसे अराम के
राजा हाज़ाएल से युद्ध करते हुए अरामी सेना द्वारा लगे थे. येहू ने यहां यह घोषणा
की, “यदि तुम सभी का यही मानना है, कि मैं अब राजा हूं, तो किसी को भी
नगर से बाहर न जाने दिया जाए, कि यह समाचार येज्रील न पहुंच सके.” 16
तब येहू अपने रथ पर येज्रील जा पहुंचा, क्योंकि इस समय योराम वहीं येज्रील
में था. यहूदिया का राजा अहज़्याह इस समय योराम का कुशल मंगल पता करने
यहां आया हुआ था. 17 येज्रील की शहरपनाह पर पहरेदार खड़ा हुआ था. येहू
और उसके साथ बढ़ते चले आ रहे दल को देखकर उसने सूचना दी, “मुझे एक
दल दिखाई दे रहा है.” यहोराम ने आदेश दिया, “एक घुड़सवार उनसे भेंटकरने
भेजा जाए, जो उसे देख उससे पूछे, ‘शांति में ही आ रहे हो न?’” 18 तब उससे
भेंटकरने एक घुड़सवार गया. उसने येहू से कहा, “राजा ने पूछा है, ‘शांति के
लिए ही आ रहे हो न?’” येहू का उत्तर था, “तुम्हें शांति से क्या लेना देना?
मुड़कर हमारा अनुसरण करो.” वहां पहरेदार ने यह सूचना फैला दी: “दूत
वहां पहुंचा तो ज़रूर, मगर वह लौटकर नहीं आ रहा.” 19 इस पर एक दूसरे
घुड़सवार को भी भेजा गया, जो उनके पास पहुंचा, जिसने येहू से कहा, “यह
राजा का संदेश है ‘क्या सब कुशल मंगल है?’” येहू ने उसे उत्तर दिया, “क्या
लेना देना है तुम्हारा कुशल मंगल से? मुड़कर हमारा अनुसरण करो.” 20
पहरेदार ने दोबारा सूचना फैला दी, “वह उनके पास पहुंचा तो ज़रूर, मगर
वह लौटकर नहीं आ रहा. घुड़सवार का व्यवहार निमशी के पुत्र येहू समान
है—क्योंकि घोड़ा तेजी से दौड़ाया जा रहा है.” 21 यहोराम ने आदेश दिया,
“तैयारी की जाए!” योराम का रथ तैयार किया गया. तब इस्राएल का राजा
योराम और यहूदिया का राजा अहज़्याह दोनों ही अपने-अपने रथों पर येहू से
भेंटकरने चल पड़े. येहू से उनकी भेंट येज्रीलवासी नाबोथ की भूमि पर हुई. 22
येहू को देखते ही यहोराम ने उससे पूछा, “येहू, क्या सब कुशल मंगल है?” येहू
ने उत्तर दिया, “कैसे हो सकती है, शांति, जब राज्य में आपकी माता ईजेबेल
की देखरेख में वेश्यावृत्ति और जादू-टोना फैलते जा रहे हैं?” 23 यह सुनते
ही यहोराम ने घोड़े को हांकते हुए अहज़्याह से कहा, “देशद्रोह, अहज़्याह,
देशद्रोह!” 24 येहू ने पूरी शक्ति लगाकर धनुष ताना और यहोराम के दोनों कंधों
के बीच निशाना साध कर बाण छोड़ दिया. बाण ने योराम के हृदय को बेध दिया
और वह अपने रथ में ही ढेर हो गया. 25 येहू ने अपने सहायक बिदकर को
आदेश दिया, “उसे उठाकर येज्रीलवासी नाबोथ की भूमि पर फेंक दो. तुम्हें वह
समय याद होगा जब तुम और मैं साथ साथ उसके पिता अहाब के पीछे-पीछे जा
रहे थे, स्वयं याहवेह ने कैसे उसके विरुद्ध यह घोषणा की थी: 26 ‘ठीक जिस
प्रकार कल मैंने नाबोथ और उसके पुत्रों का खून खराबा देखा था, यह याहवेह
का संदेश है—तुम्हारा बदला मैं इसी भूमि पर लूंगा.’ इसलिये अब उसे उठाओ
और उसे उसी भूमि पर फेंक आओ.” 27 जब यहूदिया के राजा अहज़्याह ने
यह सब देखा, वह बेथ-हग्गान नगर की दिशा में भागने लगा. उसका पीछा करते
हुए येहू ने आदेश दिया, “उस पर भी बाण चलाओ!” सैनिकों ने उसे उसके रथ
में ही गुर की चढ़ाई पर चढ़ते हुए मार गिराया. यह जगह इब्लीम के पास है.
अहज़्याह मगिद्दो की ओर भागा, जहां उसकी मृत्यु हो गई. 28 उसके सेवक
आकर उसे रथ में ही येरूशलेम ले गए और दावीद के नगर में उसे उसके पूर्वजों
के साथ कब्र में रख दिया. 29 अहज़्याह ने अहाब के पुत्र योराम के शासनकाल
के ग्यारहवें साल में यहूदिया पर शासन शुरू किया था. 30 जब येहू येज्रील नगर
पहुंचा ईजेबेल को सारी घटना का समाचार मिला. उसने अपनी आंखों में
काजल लगाया, बाल संवारे और खिड़की से बाहर का नज़ारा देखने लगी. 31
जैसे ही येहू ने प्रवेश किया, उसने पूछा, “सब कुशल तो है, अपने ही स्वामी के
हत्यारे ज़िमरी?” 32 येहू ने खिड़की की ओर दृष्टि करते हुए कहा, “कौन-कौन
है मेरी ओर?” दो या तीन अधिकारी खोजों ने झांककर उसकी ओर देखा. 33
येहू ने आदेश दिया, “फेंक दो उसे वहां से!” तब उन्होंने उसे उठाकर वहां से
नीचे फेंक दिया. उसके खून के कुछ छींटे दीवार पर और कुछ छींटे घोड़ों पर
जा पड़े और घोड़ों ने उसे रौंद डाला. 34 येहू राजघराने के भीतर गया और तृप्त
होने तक भोजन किया. उसने आदेश दिया, “जाकर उस शापित स्त्री को देखो!
उसे गाड़ दो, क्योंकि वह राजकुमारी थी.” 35 वे उसे गाड़ने के उद्देश्य से जब
उसे उठाने गए, उन्होंने पाया कि वहां सिर्फ उसकी खोपड़ी, पैर और उसके
हाथों की हथेलियां ही बची थी. 36 जब वे लौटकर येहू को बताने गए, उसने
याद दिलाया, “यह याहवेह की भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है, जो उन्होंने
अपने सेवक तिशबेवासी एलियाह के माध्यम से भेजी थी: येज्रील की सीमा के
ही भीतर कुत्ते ईजेबेल का मांस खा जाएंगे, 37 और ईजेबेल का शव येज्रील की
सीमा के भीतर की भूमि पर गोबर के समान होगा, कि कोई यह न कह सके,
‘यह ईजेबेल है.’”

10 शमरिया नगर में अहाब के सत्तर पुत्र थे. तब येहू ने शमरिया के शासकों,
पुरनियों और अहाब के पुत्रों के पालने वालों को, जो शमरिया में थे, यह
पत्र भेजे, जिनमें यह लिखा था: 2 “इसलिये कि आपके स्वामी के पुत्र आपकी
देखरेख में हैं और आपके उपयोग के लिए घोड़े और रथ उपलब्ध करा दिए गए
हैं, आप गढ़ में सुरक्षित रह रहे हैं और आपके पास हथियार भी हैं, तो यह पत्र
पाते ही 3 अपने स्वामी के पुत्रों में से सबसे अच्छे और सबसे सही को चुन
लीजिए और उसे अपने स्वामी के सिंहासन पर बैठा दीजिए, फिर अपने स्वामी
के वंश के लिए युद्ध करने को तैयार हो जाइए.” 4 मगर वे सभी बहुत ही डर
गए थे. उनका विचार था, “जब उसके सामने दो राजा भी ठहर न सके, तो हम
कैसे टिक सकेंगे?” 5 तब राजघराने के अधिकारी, नगर अध्यक्ष और पुरनियों
और बालकों के पालने वालों ने येहू को यह संदेश भेजा, “हम तो आपके सेवक
हैं. आप जो भी आदेश देंगे हम वही पूरा करेंगे. हम किसी का राजाभिषेक नहीं
करेंगे. आप वही करें, जो आपकी दृष्टि में सही है.” 6 तब येहू ने उन्हें दूसरा पत्र
भेजा, जिसमें उसने लिखा, “बहुत बढ़िया! यदि वास्तव में आप मेरी ओर हैं,
यदि आप मुझसे सहमत हैं, तो अपने स्वामी के पुत्रों के सिर लेकर मेरे पास कल
इसी समय येज्रील आ जाइए.” राजा के सत्तर पुत्र नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों
की देखरेख में थे, जो इनका पालन पोषण कर रहे थे. 7 जैसे ही उन्हें येहू का
पत्र मिला, उन्होंने राजकुमारों को ले जाकर उनकी हत्या कर दी, उन सत्तर
पुत्रों की; और उनके सिर टोकरों में रख दिए. 8 जब दूतों ने जाकर येहू को यह
सूचना दी, “वे राजकुमारों के सिर ले आए हैं.” उसने उन्हें आदेश दिया, “इन
सिरों के दो ढेर बनाकर सुबह तक के लिए नगर फाटक पर रख दो.” 9 सुबह
जब येहू बाहर आया, उसने खड़े होकर सारी भीड़ से कहा, “आप सभी निर्दोष
हैं. अपने स्वामी के विरुद्ध षड़्‍यंत्र मैंने रचा, और उनकी हत्या कर दी, मगर इन
सत्तर की हत्या किसने की है? 10 तब यह समझ लीजिए: अहाब के वंश के बारे
में याहवेह द्वारा कही गई कोई भी बात व्यर्थ नहीं होगी; क्योंकि याहवेह ने वह
पूरा कर दिखाया है, जो उन्होंने अपने सेवक एलियाह द्वारा प्रकट किया था.”
11 यह कहते हुए येहू ने येज्रील में अहाब के परिवार से संबंधित सभी बचे हुए
व्यक्तियों को भी मार डाला. उसने अहाब के परिवार के बाकी व्यक्तियों,
परिवार के करीबी मित्रों और पुरोहितों को भी मार दिया; कोई भी बचा न रह
गया. 12 तब येहू येज्रील से शमरिया के लिए निकला. मार्ग में जब वह चरवाहों
के बेथ-एकेद नामक स्थान में था, 13 उसकी भेंट यहूदिया के राजा अहज़्याह
के संबंधियों से हो गई. येहू ने उनसे पूछा, “आप कौन हैं?” उन्होंने उत्तर दिया,
“हम अहज़्याह के संबंधी हैं, हम यहां आए हैं कि हम राजा और राजमाता के
पुत्रों का कुशल मंगल जान सकें.” 14 येहू ने आदेश दिया, “जीवित पकड़ लो
इन्हें.” उन्होंने उन्हें जीवित पकड़ लिया और उन्हें बेथ-एकेद के गड्ढे पर ले
जाकर उनका वध कर दिया. ये बयालीस लोग थे. येहू ने उनमें से एक को भी
जीवित न छोड़ा. 15 जब वह वहां से निकले, उसकी भेंट रेखाब के पुत्र योनादाब
से हुई, जो उसी से भेंटकरने आ रहा था. नमस्कार के बाद उसने योनादाब से
पूछा, “क्या तुम्हारा मन मेरे प्रति वैसा ही सच्चा है, जैसा मेरा तुम्हारे प्रति?”
योनादाब ने उत्तर दिया, “हां, है.” तब येहू ने कहा, “अगर यह सत्य है, तो
अपना हाथ मुझे दो.” जब उसने येहू की ओर अपना हाथ बढ़ाया तो येहू ने उसे
अपने रथ में खींच लिया. 16 येहू ने उससे कहा, “अब मेरे साथ चलकर
याहवेह के प्रति मेरा उत्साह देखना.” इस प्रकार उसने योनादाब को अपने साथ
रथ में ले लिया. 17 जब वह शमरिया पहुंचा, उसने शमरिया में अहाब के सभी
बचे हुए संबंधियों का वध कर दिया—वह तब तक मारता चला गया, जब तक
उनमें से कोई भी बाकी न रहा; एलियाह द्वारा भेजे याहवेह के आदेश के अनुसार
ही. 18 तब येहू ने सारी प्रजा को इकट्ठा कर उन्हें कहा: “अहाब ने बाल की
उपासना-सेवा कम ही की थी, येहू उसकी उपासना-सेवा कहीं अधिक करेगा.
19 तब बाल के सारे भविष्यद्वक्ता यहां बुलाए जाएं और बाल के सारे उपासक
और सारे पुरोहित भी. अनुपस्थित कोई भी न रहे. जो अनुपस्थित होगा उसे मृत्यु
दंड दिया जाएगा.” वस्तुतः यह बाल के सभी उपासकों को खत्म करने के
लिए येहू की चाल थी, कि कोई भी बाल की उपासना करनेवाला बाकी न रह
जाए. 20 तब येहू ने आदेश भेजा, “बाल के लिए एक पावन समारोह आयोजित
करो!” सभी जगह उसकी घोषणा कर दी गई. 21 येहू ने सारे इस्राएल देश से
बाल के उपासक बुला लिए. कोई भी अनुपस्थित न था. इन सबने बाल के
मंदिर में प्रवेश किया और पुजारियों से मंदिर पूरी तरह भर गया; एक कोने से
दूसरे कोने तक. 22 येहू ने तब वस्त्रागार अधिकारी को आदेश दिया, “बाल के
उपासकों के लिए तय किए गए वस्त्र लाए जाएं.” तब उनके लिए वस्त्र लाए गए.
23 इसके बाद येहू ने बाल के मंदिर में प्रवेश किया. उसके साथ रेखाब का
पुत्र योनादाब भी था. येहू ने बाल के उपासकों को कहा, “खोजबीन कर यह
तय कर लो, कि यहां याहवेह का कोई भी सेवक नहीं, बल्कि सिर्फ बाल के
उपासक ही हैं.” 24 तब उन्होंने बलियां और होमबलियां चढ़ाने का काम शुरू
किया. येहू ने इसी समय के लिए भवन के बाहर अस्सी व्यक्ति चुने हुए थे,
जिन्हें यह निर्देश दिया गया था: “तुममें से जो कोई इन व्यक्तियों में से, जिन्हें मैं
तुम्हारे हाथों में सौंप रहा हूं, किसी को भी बचकर निकलने देगा, अपने ही
प्राणों से इसका दाम देगा.” 25 तब, जैसे ही येहू ने होमबलि का काम पूरा
किया, उसने पहरेदारों और राजकीय अधिकारियों को आदेश दिया, “अंदर
जाकर हर एक को खत्म कर दो; एक भी बचने न पाए.” तब उन्होंने हर एक
का वध कर डाला. पहरेदारों और अधिकारियों ने उन सबके शव बाहर फेंक
दिए. तब वे बाल देवता के मंदिर के भीतरी कमरे में गए. 26 वहां से उन्होंने
बाल का प्रतिष्ठित खंभा उखाड़ा, उसे बाहर लाकर भस्म कर डाला. 27 उन्होंने
बाल के खंभे को पूरी तरह नष्ट कर दिया, साथ ही बाल के मंदिर को भी, जिसे
आज तक शौचालय के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है. 28 इस प्रकार येहू ने
इस्राएल से बाल की उपासना को दूर कर दिया. 29 मगर येहू नेबाथ के पुत्र
यरोबोअम के पापों से दूर न हुआ; वे पाप, जो उसने इस्राएल राष्ट्र को करने के
लिए उकसाया था; अर्थात् बेथेल और दान में अब भी सोने के बछड़े थे. 30
याहवेह ने येहू से कहा, “इसलिये, कि तुमने वह करके, जो मेरी दृष्टि में अच्छा
है, एक बढ़िया काम किया है. अहाब के वंश के साथ तुमने जो कुछ किया
है, वही था, जो मेरे मन में था, चौथी पीढ़ी तक तुम्हारे पुत्र इस्राएल के राज
सिंहासन पर बैठते रहेंगे.” 31 मगर येहू पूरे मन से याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
की व्यवस्था और विधियों का पालन करने के विषय में सावधान न था. वह
यरोबोअम के पापों से दूर न हुआ, जो उसने इस्राएल को करने के लिए मजबूर
किया था. 32 इन्हीं दिनों में याहवेह ने इस्राएल राष्ट्र की सीमा को घटाना आरंभ
किया. हाज़ाएल पूरे इस्राएल राष्ट्र की सीमा में उन्हें हराता रहा. 33 यरदन के
पूर्ववर्ती क्षेत्र से लेकर पूरा गिलआद, गाद और रियूबेन के वंशज, मनश्शेह के
वंशज, आरनोन घाटी के निकटवर्ती अरोअर अर्थात् गिलआद और बाशान
तक. 34 येहू द्वारा किए गए बाकी कामों, उसकी उपलब्धियों और उसके शौर्य
का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 35 येहू
अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए जा मिला. उन्होंने उसे शमरिया में गाड़ा.
उसकी जगह पर उसका पुत्र यहोआहाज़ शासन करने लगा. 36 इस्राएल पर येहू
के शासन की पूरी अवधि अट्ठाईस साल थी.

11 जब अहज़्याह की माता को मालूम हुआ कि उसके पुत्र की मृत्यु हो
चुकी है, उसने जाकर सारे राजपरिवार को नाश कर दिया. 2 मगर
राजा यहोराम की पुत्री अहज़्याह की बहन येहोशिबा वध किए जा रहे राजपुत्रों
के बीच से अहज़्याह के पुत्र योआश को छिपाकर वहां से दूर ले गई, और
उसे और उसकी धाय को एक शयन कमरे में छिपा दिया. इस प्रकार उन्होंने

योआश को अथालियाह से बचा लिया और उसका वध नहीं किया जा सका.
3 योआश येहोशिबा की देखरेख में छः साल रहा. उसे याहवेह के भवन में
छिपाकर रखा गया था, और अथालियाह देश पर शासन करती रही. 4 सातवें
साल में पुरोहित यहोयादा ने कारी जाति के हजार सेनापतियों और अंगरक्षकों के
प्रधानों को बुलवाया और इन्हें अपने साथ याहवेह के भवन में इकट्ठा किया.
वहां उसने उनके साथ वाचा बांधी और उन्हें शपथ दिलाई, और उन्हें राजपुत्र के
दर्शन कराएं. 5 तब उसने उन्हें आदेश दिया, "तुम्हें यह करना होगा: तुममें से
एक तिहाई सैनिक, जो शब्बाथ पर काम के लिए ठहराए गए हैं, राजमहल
पर पहरा देंगे. 6 दूसरी तिहाई टुकड़ी सूर नामक द्वार पर और तीसरी तिहाई
टुकड़ी पहरेदारों के पीछे के द्वार पर बारी-बारी से ठहराई गई थी. 7 तुम्हारी दो
टुकड़िया जो शब्बाथ पर काम के लिए ठहराई गई हैं, और जो राजा के लिए
याहवेह के भवन की सुरक्षा के लिये चुनी गई हैं, 8 राजा को घेरकर खड़ी हो
जाएंगी, हर एक अपने शस्त्रों को लेकर. जो कोई सेना की पंक्ति के पास आएगा
निश्चयतः मार डाला जाएगा. तुम्हें हर पल राजा के साथ साथ रहना है; उसके
बाहर जाते और भीतर आते समय." 9 शतपति सेना नायकों ने पुरोहित यहोयादा
की हर एक बात पूरी की. पुरोहित यहोयादा ने छुट्टी पर जा रहे किसी भी दल
को शब्बाथ सेवा से अवकाश लेने न दिया. और जो सेवा के लिए आ रहे थे, वे
सभी पुरोहित यहोयादा के सामने इकट्ठा हो गए. 10 पुरोहित ने प्रधानों को वे
बर्छियां और ढालें दे दीं, जो राजा दावीद के शासनकाल से याहवेह के भवन में
सुरक्षित रखी गई थी. 11 हर एक अंगरक्षक अपने-अपने हाथ में अपने हथियार
लिए हुए भवन की दक्षिण दिशा से लेकर उत्तरी दिशा तक, वेदी के चारों ओर
भवन को घेरकर खड़े हो गए. 12 फिर पुरोहित यहोयादा राजकुमार को लेकर
बाहर आए, उसके सिर पर मुकुट रखा और उसे साक्षी पत्र दे दिया. तब उन्होंने
उसे राजा घोषित कर उसका राजाभिषेक किया, और ताली बजाकर सबने
जयघोष करते हुए कहा, "महाराज जीवित रहें!" 13 जब अथालियाह ने लोगों
और अंगरक्षकों द्वारा किए जा रहे घोषनाद की ध्वनि सुनी, वह याहवेह के भवन
में जनसमूह के बीच में आ गई. 14 उसने देखा कि राजा खंभे के पास खड़ा
हुआ था. रीति के अनुसार सेनापति और तुरही वादक राजा के पास खड़े हुए थे.
राज्य के लोग हर्षोल्लास में थे, और तुरही फूंक रहे थे. अथालियाह ने अपने
वस्त्र फाड़े और चिल्ला उठी, "देशद्रोह! देशद्रोह!" 15 तब पुरोहित यहोयादा ने
सेना के शतपति सेना नायकों को आदेश दिया, "उसे सेना की पंक्तियों के बीच
से निकालकर बाहर लाओ और जो जो उसके पीछे आए उसे तलवार से मार
दो." पुरोहित ने आदेश दे रखा था, "उसकी हत्या याहवेह के भवन में न की
जाए." 16 इसलिये उन्होंने उसे पकड़ लिया और जब वह घोड़ों के लिए
निर्धारित द्वार से होकर राजघराने तक पहुंची, वहां उसका वध कर दिया गया.
17 यहोयादा ने उस अवसर पर याहवेह तथा सारी प्रजा और राजा के बीच यह
वाचा स्थापित की, कि वे सिर्फ याहवेह ही को समर्पित रहेंगे. एक वाचा राजा
और प्रजा के बीच भी स्थापित की गई. 18 देश की सारी प्रजा बाल के भवन में
गई और उसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया. उसकी वेदी और उसकी मूर्तियों को
उन्होंने चूर-चूर कर दिया. तब उन्होंने वेदियों के सामने ही बाल के पुरोहित
मत्तान का वध कर दिया. इसके बाद पुरोहित यहोयादा ने याहवेह के भवन के
लिए पहरेदार बनाए गए. 19 यह सब करने के बाद यहोयादा शतपति सेना
नायकों, कारी सैनिकों, अंगरक्षकों और प्रजा को अपने साथ लेकर राजा को
याहवेह के भवन से बाहर ले आए और वे सब पहरेदारों के द्वार से निकलते हुए
राजघराने जा पहुंचे. वहां पहुंचकर राजा योआश राज सिंहासन पर बैठे. 20 इस
पर सारी प्रजा में खुशी छा गई, और नगर में शांति भर गई. राजमहल में तलवार
से अथालियाह की हत्या हुई थी, यह इसका मुख्य कारण था. 21 योआश सात
साल की थी, जब उन्होंने शासन करना शुरू किया.

12 येहू के शासनकाल के सातवें साल में योआश ने शासन शुरू किया. उसने
येरूशलेम में चालीस साल तक शासन किया. उसकी माता का नाम
ज़िबियाह था, वह बेअरशेबा की थी. 2 योआश ने आजीवन वही किया, जो
याहवेह की दृष्टि में ठीक है, क्योंकि उसे पुरोहित यहोयादा ने शिक्षा दी थी. 3
फिर भी, पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई. लोग पूजा स्थलों की वेदियों
पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे. 4 योआश ने पुरोहितों से कहा, "याहवेह
के मंदिर में पवित्र दान के लिए चढ़ाया गया पैसा, जो प्रचलित सिक्कों के रूप
में हैं, चाहे वह हर एक व्यक्ति के लिए मूल्यांकित रूप में हो, या हर एक व्यक्ति
द्वारा स्वैच्छिक रूप में याहवेह के भवन में लाई जाती है, 5 पुरोहित इन्हें हर एक
खजांची से लें; उनसे भवन में जहां कहीं टूटा-फूटा दिखाई दे, सुधारें." 6 मगर
यह पाया गया कि राजा योआश के शासन के तेईसवें साल तक पुरोहितों ने
भवन में मरम्मत का कोई भी काम नहीं किया था. 7 तब राजा योआश ने
पुरोहित यहोयादा और अन्य पुरोहितों को बुलाकर उनसे पूछा, "आप लोग
याहवेह के भवन की मरम्मत का काम क्यों नहीं करवा रहे? इसलिये अब
अपने जान पहचान वाले खजांची से पैसे अपने लिए लेना बंद कर दें, तो वह
धनराशि मरम्मत के काम में लगाई जाए." 8 पुरोहित इस पर सहमत हो गए,
कि वे अब न लोगों से मुद्राओं का दान इकट्ठा करेंगे, और न ही याहवेह के
भवन की मरम्मत की जवाबदारी लेंगे. 9 मगर पुरोहित यहोयादा ने एक मंजूषा
लेकर उसके ढक्कन में एक छेद करके याहवेह के भवन के फाटक के दाईं
ओर, वेदी के पास रख दी; वे पुरोहित जो डेवढ़ी पर दृष्टि रखते थे, याहवेह के
भवन में आई सारी मुद्राओं को इसी मंजूषा में डालने लगे. 10 जब वे देखते
थे मंजूषा में बहुत चांदी मुद्राएं इकट्ठा हो चुकी हैं, राजा की ओर से चुने गए
लिपिक और महापुरोहित आकर वह राशि थैलों में भरते और याहवेह के भवन
में आई मुद्राओं की गिनती कर लेते थे. 11 मुद्राओं की गिनती के बाद उन्हें तौला
जाता था और यह उन शिल्पियों को दे दी जाती थी, जो वस्तुतः याहवेह के
भवन के अधिकारी थे; ये ही याहवेह के भवन के सुधार का काम कर रहे
बढ़ई और राजमिस्त्रियों को भुगतान किया करते थे. 12 यह राजमिस्त्रियों और
कारीगरों की मजदूरी, लकड़ी और संवारी हुई शिलाओं का और याहवेह के
भवन की मरम्मत के लिए आवश्यक राशि का भुगतान किया करते थे. 13 मगर
इस प्रकार आए धन से याहवेह के भवन में प्रयोग के लिए आवश्यक चांदी
की चिलमचियां, चिमटियां, कटोरे, तुरहियां या कोई भी सोने का बर्तन या
चांदी का बर्तन याहवेह के भवन में लाई गई राशि से नहीं बनवाए गए; 14
क्योंकि इस राशि से उन कर्मचारियों की मजदूरी दी जाती थी, जो याहवेह के
भवन की मरम्मत का काम कर रहे थे. 15 इसके अलावा वे उन व्यक्तियों से,
जिन्हें वे कर्मचारियों को देने के लिए मुद्राएं सौंपा करते थे, कोई भी लेखा-
जोखा नहीं लिया करते थे, क्योंकि वे सभी सच्चे थे. 16 दोष बलि और
पापबलि से मिली मुद्राओं को याहवेह के भवन में नहीं लाया जाता था, यह राशि
पुरोहितों को दिए जाने के लिए ठहरा दी गई थी. 17 इसी समय अराम के
राजा हाज़ाएल ने गाथ पर हमला कर उसे अपने अधीन कर लिया. मगर जब
हाज़ाएल येरूशलेम पर हमला करने के लिए निकला, 18 यहूदिया के राजा
योआश ने अपने पूर्वजों यहोशाफ़ात, यहोराम और अहज़्याह द्वारा चढ़ाई गई
पवित्र वस्तुएं, जिन्हें यहूदिया के राजाओं ने भेंट किया था और स्वयं अपने द्वारा
भेंट की हुई पवित्र वस्तुएं और राजकोष में रखा सारा सोना लेकर, जो याहवेह के
भवन में रखा था, अराम के राजा हाज़ाएल को भेंट में दे दिया. फलस्वरूप
हाज़ाएल येरूशलेम न जाकर अपने देश लौट गया. 19 योआश की उपलब्धियों
और उसके द्वारा किए गए कामों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 20 योआश के सेवकों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा और
मिल्लो भवन में उसकी हत्या कर दी. यह भवन सिल्ला नगर के मार्ग के ढाल

पर बना है. 21 शिमियथ का पुत्र योज़ाकर और शोमर के पुत्र योज़ाबाद ने, जो उसके ही सेवक थे, उस पर वार किया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई. उन्होंने उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर में गाड़ दिया. उसकी जगह पर उसका पुत्र अमाज़्याह शासन करने लगा.

13 अहज़्याह के पुत्र यहूदिया के राजा योआश के शासनकाल के तेईसवें साल में येहू के पुत्र यहोआहाज़ ने शमरिया में इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. उसने सत्रह साल शासन किया. 2 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है और उसने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के पापों का अनुसरण किया, जिन्हें करने के लिए उसने इस्राएल राष्ट्र को भी उकसाया; वह इन पापों से दूर न हुआ. 3 फलस्वरूप याहवेह का क्रोध इस्राएल राष्ट्र पर भड़क गया, और याहवेह उन्हें बार-बार अराम के राजा हाज़ाएल के और उसके पुत्र बेन-हदद के अधीन करते रहे. 4 इसलिये यहोआहाज़ ने याहवेह से प्रार्थना की और याहवेह ने उसकी बिनती पर ध्यान दिया, क्योंकि उन्होंने इस्राएली प्रजा पर हो रहे अत्याचार को देखा, कि अराम का राजा उन्हें कैसे सता रहा था. 5 याहवेह ने इस्राएल राष्ट्र को एक छुड़ाने वाला दिया, फलस्वरूप इस्राएली प्रजा अराम देश के अधिकार से मुक्त हो गई, और वे अपने ही तंबुओं में पहले के समान रहने लगे. 6 इतना सब होने पर भी वे यरोबोअम के वंश द्वारा किए जानेवाले पापों से दूर न हुए; वे पाप, जिन्हें करने के लिए उसने इस्राएल को उकसाया था. वे इन पापों में उसका अनुसरण करते रहे. अशेरा देवी की मूर्ति शमरिया नगर में बनी ही रही. 7 अब यहोआहाज़ की सेना में पचास घुड़सवारों और दस रथों और दस हज़ार पैदल सैनिकों से ज्यादा बाकी नहीं रह गए; क्योंकि अराम के राजा ने उन्हें नाश कर, रौंदते हुए धूल के समान बना दिया था. 8 यहोआहाज़ की उपलब्धियों, उसके द्वारा किए गए बाकी कामों और उसके शौर्य का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 9 यहोआहाज़, हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला. उन्होंने उसे शमरिया में गाड़ दिया. उसकी जगह पर उसके पुत्र योआश ने शासन करना शुरू किया. 10 यहूदिया के राजा योआश के शासन के सैंतीसवें साल में यहोआहाज़ का पुत्र यहोआश शमरिया में इस्राएल पर शासन करने लगा और उसने सोलह साल शासन किया. 11 उसने वही किया जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. वह उन पाप, कामों से दूर न हुआ—वह उन्हीं पापों का अनुसरण करता रहा, जिन्हें नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने इस्राएल को करने के लिए उकसाया था. 12 यहोआश के बाकी कामों का, उसकी सारी उपलब्धियों का, उसकी वीरता का, यहूदिया के राजा अमाज़्याह से उसके युद्ध, इन सभी का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 13 यहोआश हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला, और यरोबोअम उसके सिंहासन पर बैठा. यहोआश शमरिया में इस्राएल के राजाओं के साथ गाड़ा गया. 14 इस समय एलीशा ऐसे बीमार पड़े कि वे मरने पर थे. इस्राएल का राजा यहोआश उनसे भेंटकरने गया. वह उनके सामने जाकर रोते हुए कहने लगा, “मेरे पिता, मेरे पिता! और इस्राएल के रथों और उसके घुड़सवारों!” 15 एलीशा ने उसे कहा, “एक धनुष लो और बाण भी.” राजा ने वैसा ही किया. 16 तब एलीशा ने इस्राएल के राजा को आदेश दिया, “धनुष पर अपना हाथ रखो.” उसने धनुष पर अपना हाथ रखा. तब एलीशा ने अपना हाथ राजा के हाथ के ऊपर रख दिया. 17 तब एलीशा ने आदेश दिया, “पूर्व की ओर की खिड़की खोल दो.” उसने वह खिड़की खोल दी. तब एलीशा ने आदेश दिया, “बाण छोड़ो!” उसने बाण छोड़ा. एलीशा ने कहा, “याहवेह का विजय बाण! हां, अराम देश पर जय का बाण. तुम अफेक में अरामियों से तब तक युद्ध करोगे, जब तक तुम उन्हें खत्म न कर दो.” 18 एलीशा ने दोबारा कहा, “बाण उठाओ.” उसने बाण उठाए. तब एलीशा ने इस्राएल के राजा को आदेश दिया, “भूमि को निशाना बनाकर वार करो!” राजा ने भूमि पर तीन वार किए और रुक गया. 19 इस पर परमेश्वर के जन ने उस पर गुस्सा करते हुए कहा, “तुम्हें पांच या छः वार तो करने थे, तभी तुम अराम को ऐसा मारते कि उनका अंत होकर ही रहता. अब तो तुम अराम को सिर्फ तीन बार ही हरा सकोगे.” 20 एलीशा की मृत्यु हो गई और उन्होंने उन्हें गाड़ दिया. हर साल वसन्त ऋतु में मोआबी लुटेरों का एक दल उस क्षेत्र पर हमला किया करता था. 21 एक अवसर पर, जब किसी व्यक्ति की देह को गाड़ा जा रहा था, लोगों ने लुटेरों के दल को आते देखा. उस व्यक्ति की देह को जल्दी ही एलीशा की कब्र में फेंक दिया. जैसे ही शव ने एलीशा की अस्थियों से छुआ, वह व्यक्ति जीवित हो अपने पैरों पर खड़ा हो गया. 22 यहोआहाज़ के पूरे शासनकाल में अराम का राजा हाज़ाएल इस्राएल को सताता ही रहा. 23 मगर याहवेह उन पर कृपालु थे, उन पर उनकी करुणा बनी थी. अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब से अपनी वाचा के कारण याहवेह उनकी ओर हुए. उन्होंने उन्हें खत्म न होने दिया और न ही उन्हें अब तक अपने सामने से दूर ही किया. 24 अराम के राजा हाज़ाएल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बेन-हदद उसकी जगह पर शासन करने लगा. 25 इस समय यहोआहाज़ के पुत्र यहोआश ने हाज़ाएल के पुत्र बेन-हदद से वे सारे नगर वापस ले लिए, जो उसने युद्ध में उसके पिता यहोआहाज़ से छीन लिए थे. यहोआश ने उसे तीन बार हराया और ये इस्राएली नगर वापस ले लिए.

14 यहोआहाज़ के पुत्र यहोआश के शासन के दूसरे साल में, यहूदिया के राजा योआश का पुत्र अमाज़्याह ने शासन करना शुरू किया. 2 जब उसने शासन की बागडोर संभाली उसकी उम्र पच्चीस साल थी. उसने येरूशलेम में उनतीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम येहोआद्दीन था. वह येरूशलेमवासी थी. 3 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था—फिर भी, अपने पूर्वज दावीद के समान नहीं. उसने हर एक काम में अपने पिता योआश का अनुसरण किया. 4 फिर भी, पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई थी. लोग पूजा स्थलों की वेदियों पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे. 5 उसके हाथों में राज्य मजबूत होते ही उसने अपने सेवकों की हत्या कर डाली, जिन्होंने उसके पिता की हत्या की थी; 6 मगर उसने इन हत्यारे सेवकों की संतान का वध नहीं किया; ठीक जैसे याहवेह की आज्ञा के अनुसार मोशेह द्वारा दी गई व्यवस्था में दिया है, “पुत्र के पाप का दंड उसके पिता को न मिले और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए.” 7 उसने नमक की घाटी में दस हज़ार एदोमियों को मार गिराया. भयंकर युद्ध के द्वारा उसने सेला नगर अपना लिया, और उसे एक नया नाम दिया: योकथएल, जो आज तक प्रचलित है. 8 तब अमाज़्याह ने येहू के पोते और यहोआहाज़ के पुत्र, इस्राएल का राजा यहोआश को दूतों द्वारा यह संदेश भेजा: “चलो, हम युद्ध-भूमि में आपस में बल परीक्षण करें.” 9 इस्राएल के राजा यहोआश ने यहूदिया के राजा अमाज़्याह को उत्तर भेजा, “लबानोन की एक कंटीली झाड़ी ने लबानोन के केदार को यह संदेश भेजा: ‘अपनी पुत्री को मेरे पुत्र की पत्नी होने के लिए दे दो.’ तब एक जंगली पशु वहां से निकलते हुए कंटीली झाड़ी को कुचलते हुए निकल गया. 10 यह सच है कि तुमने एदोम को हराया है और तुम्हारा मन गर्व से ऊंचा हो रहा है. अपने ही पराक्रम में संतुष्ट बने रहो, ऐसा करो: घर में शांति से बैठे रहो! मुसीबत को क्यों बुला रहे हो? तुम्हारा पतन तो होना ही है, साथ ही सारी यहूदिया राज्य का भी!” 11 मगर अमाज़्याह ने उसकी एक न सुनी; तब इस्राएल के राजा यहोआश ने हमला कर दिया. दोनों का सामना यहूदिया के बेथ-शेमेश नामक स्थान पर हुआ. 12 इस्राएल ने यहूदिया को हरा दिया. सैनिक पीठ दिखाकर अपने-अपने तंबुओं को लौट गए. 13 इस्राएल के राजा यहोआश ने अमाज़्याह को, जो अहज़्याह का पोते और यहूदिया के राजा योआश के पुत्र था, बेथ-शेमेश नामक

स्थान पर बंदी बना लिया, और उसे लेकर वह येरूशलेम आ गया. वहां उसने
एफ्राईम के फाटक से लेकर कोने के द्वारा तक लगभग एक सौ अस्सी मीटर
शहरपनाह को गिरा दिया. 14 वहां उसे याहवेह के भवन और राज-भंडार में
से जितना सोना, चांदी और सारे बर्तन मिले, उन्हें और बन्धकों को लेकर
वह शमरिया को लौट गया. 15 यहोआश द्वारा किए गए बाकी काम, उसकी
वीरता और यहूदिया के राजा अमाज़्याह के साथ उसके युद्ध का ब्यौरा, इस्राएल
के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 16 यहोआश हमेशा के
लिए अपने पूर्वजों में जा मिला और उसे शमरिया में इस्राएल के राजाओं के
साथ गाड़ दिया. उसके पुत्र यरोबोअम ने उसके स्थान पर शासन किया. 17
यहूदिया के राजा योआश का पुत्र अमाज़्याह इस्राएल के राजा यहोआहाज़ के
पुत्र यहोआश की मृत्यु के बाद पन्द्रह साल जीवित रहा. 18 अमाज़्याह के बाकी
के कामों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया
है. 19 येरूशलेम में लोगों ने उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा, तब वह लाकीश को भाग
गया; किंतु उन्होंने लाकीश में जाकर उसकी खोज की, और वहीं उसकी
हत्या कर दी. 20 उन्होंने घोड़ों पर उसका शव येरूशलेम लाकर उसके पूर्वजों
के साथ दावीद के नगर में गाड़ दिया. 21 यहूदिया की प्रजा ने अज़रियाह
को उसके पिता अमाज़्याह के स्थान पर राजा अभिषिक्त किया. उस समय
उसकी उम्र सोलह साल ही थी. 22 राजा की मृत्यु के बाद उसने एलाथ नगर
को दोबारा बसाया और उसे यहूदिया में शामिल कर लिया. 23 यहूदिया के
राजा योआश के पुत्र अमाज़्याह के शासनकाल के पन्द्रहवें साल में इस्राएल के
राजा यहोआश के पुत्र यरोबोअम को शमरिया में राजा बनाया गया. उसका
शासनकाल एकतालीस साल का था. 24 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि
में गलत था. वह उन पापों से दूर न हुआ जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने इस्राएल
को करने के लिए उकसाया था. 25 उसने इस्राएल राष्ट्र की सीमा लबो-हामाथ से
लेकर अराबाह सागर तक दोबारा स्थापित कर दी. यह याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर के उस आदेश के अनुसार था, जो उन्होंने गाथ-हेफ़ेरवासी अमित्ताइ के
पुत्र भविष्यद्वक्ता योनाह के द्वारा दिया था. 26 याहवेह देख रहे थे कि इस्राएल
पर हो रहा अत्याचार बहुत असहनीय था. इससे किसी को छूट नहीं थी; चाहे
दास या स्वतंत्र, और इसके लिए इस्राएल का सहायक कोई भी न था. 27
याहवेह ने यह कभी नहीं कहा कि वह पृथ्वी पर से इस्राएल का नाम ही मिटा
देंगे, तब याहवेह ने यहोआश के पुत्र यरोबोअम के द्वारा उन्हें छुटकारा दिलाया.
28 यरोबोअम द्वारा किए गए बाकी कामों और उसकी उपलब्धियों का ब्यौरा,
उसकी वीरता, उसकी युद्ध नीति, दमेशेक और हामाथ को यहूदिया से इस्राएल के
लिए दोबारा पाने का ब्यौरा, इस्राएल के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में
दिया गया है. 29 यरोबोअम हमेशा के लिए अपने पूर्वजों, इस्राएल के राजाओं
में जा मिला और उसका पुत्र ज़करयाह उसके स्थान पर शासन करने लगा.

15 इस्राएल के राजा यरोबोअम के शासन के सत्ताईसवें साल में अमाज़्याह
के पुत्र अज़रियाह ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया. 2 उस समय
उसकी उम्र सोलह साल थी. येरूशलेम में उसने बावन साल शासन किया.
उसकी माता का नाम यकोलियाह था, वह येरूशलेमवासी थी. 3 अज़रियाह ने
अपने पिता अमाज़्याह समान वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही है. 4 फिर
भी, पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई थी. लोग पूजा स्थलों की वेदियों
पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे. 5 याहवेह ने राजा की देह पर वार किया,
फलस्वरूप वह मरने तक कुष्ठरोगी होकर एक अलग घर में रहता रहा. तब
राजपुत्र योथाम प्रजा पर शासन करने लगा. 6 अज़रियाह द्वारा किए गए अन्य
काम और उसकी उपलब्धियों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 7 अज़रियाह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला
और उन्होंने उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर में गाड़ दिया. उसकी
जगह पर उसका पुत्र योथाम शासन करने लगा. 8 यहूदिया के राजा अज़रियाह
के शासन के अड़तीसवें साल में यरोबोअम के पुत्र ज़करयाह ने शमरिया में
इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. उसने सिर्फ छः महीने ही शासन किया. 9
उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था—ठीक जैसा उसके पूर्वजों ने
किया था. वह उन पापों से दूर न हुआ, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने शुरू
किए और जिन्हें करने के लिए उसने इस्राएल को उकसाया था. 10 याबेश के
पुत्र शल्लूम ने उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा और उसकी प्रजा के सामने ही उस
पर घात कर उसकी हत्या कर दी, और उसके स्थान पर खुद राजा बन गया.
11 ज़करयाह के अन्य कामों का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 12 याहवेह ने येहू से यह प्रतिज्ञा की थी, "चौथी पीढ़ी
तक तुम्हारी संतान इस्राएल के सिंहासन पर बैठेगी." यह इसी प्रतिज्ञा की पूर्ति
है. 13 यहूदिया के राजा उज्जियाह के शासनकाल के उनचालीसवें साल में
याबेश के पुत्र शल्लूम ने शासन करना शुरू किया और उसने शमरिया में एक
महीने तक शासन किया. 14 उसी समय गादी का पुत्र मेनाख़ेम तिरज़ाह से
शमरिया आ गया और उसने याबेश के पुत्र शल्लूम पर घात कर उसकी हत्या
करके उसकी जगह पर स्वयं राजा बन गया. 15 शल्लूम के बाकी काम और
उसके द्वारा रचे गए षड़्यंत्र का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 16 इसके बाद मेनाख़ेम ने तिफ़साह नगर पर हमला
किया और सारी नगरवासियों को और तिरज़ाह से लेकर सारी सीमावर्ती क्षेत्र
को खत्म कर दिया; क्योंकि उन्होंने फाटक खोलने से मना कर दिया था;
इसलिये उसने इसे पूरी तरह नाश कर दिया और सभी गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर
डाले. 17 यहूदिया के राजा अज़रियाह के शासन के उनचालीसवें साल में गादी
के पुत्र मेनाख़ेम ने इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. उसने शमरिया में दस
साल शासन किया. 18 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. वह
जीवन भर उन पापों से दूर न हुआ, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने इस्राएल को
करने के लिए उकसाया था. 19 अश्शूर के राजा पूल ने राज्य पर हमला किया.
मेनाख़ेम ने उसे लगभग पैंतीस टन चांदी इस मंशा से भेंट में दे दी, कि वह उससे
अपनी सत्ता को दृढ़ करने में सहायता ले सके. 20 मेनाख़ेम ने इस्राएल के सारे
धनी व्यक्तियों पर प्रति व्यक्ति लगभग आधा किलो चांदी का कर लगा दिया कि
अश्शूर के राजा को यह भेंट में दी जा सके. तब अश्शूर का राजा वहां से लौट
गया. वह उस देश में और अधिक नहीं ठहरा. 21 मेनाख़ेम के अन्य कामों और
उसकी उपलब्धियों का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास की पुस्तक
में दिया गया है. 22 मेनाख़ेम हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला और
उसके स्थान पर उसका पुत्र पेकाहियाह शासन करने लगा. 23 यहूदिया के
राजा अज़रियाह के शासन के पचासवें साल में मेनाख़ेम के पुत्र पेकाहियाह ने
शमरिया में इस्राएल पर शासन प्रारंभ किया. उसका शासनकाल दो साल का था.
24 उसने वह किया जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. वह उन पापों से विमुख न
हुआ, जिन्हें करने के लिए नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने इस्राएल को उकसाया
था. 25 उसके सेनानायक पेकाह, रेमालियाह के पुत्र, ने गिलआद के पचास
व्यक्तियों के साथ मिलकर उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा और शमरिया में राजमहल
के गढ़ में अरगोब और अरिएह के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी, और
स्वयं उसके स्थान पर राजा बन गया. 26 पेकाहियाह द्वारा किए गए अन्य कार्य
और उसकी सारी उपलब्धियों का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 27 यहूदिया के राजा अज़रियाह के शासन के बावनवें
साल में रेमालियाह के पुत्र पेकाह ने शमरिया में शासन करना शुरू किया. उसने
बीस साल शासन किया. 28 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था.
वह उन पापों से दूर न हुआ, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने इस्राएल को करने के
लिए उकसाया था. 29 इस्राएल के राजा पेकाह के शासनकाल में अश्शूर के

राजा तिगलथ-पलेसेर ने हमला किया और इयोन, बेथ-माकाह के आबेल,
यानोहा, केदेश, हाज़ोर, गिलआद, गलील और नफताली का सारा इलाका
अपने अधीन कर लिया. इन सभी को बंदी बनाकर वह अश्शूर ले गया. 30
उसी समय एलाह के पुत्र होशिया ने पेकाह के विरुद्ध षड़्यंत्र रचा, उस पर वार
किया, और उसकी हत्या कर दी, और उसके स्थान पर राजा बन गया. यह
घटना उज्जियाह के पुत्र योथाम के शासन के बीसवें साल में हुई. 31 पेकाह
द्वारा किए गए अन्य कार्य और उसकी सारी उपलब्धियों का ब्यौरा इस्राएल
के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 32 इस्राएल के राजा
रेमालियाह के पुत्र पेकाह के शासनकाल के दूसरे साल में उज्जियाह के पुत्र
योथाम ने यहूदिया पर शासन शुरू किया. 33 शासन शुरू करते समय उसकी उम्र
पच्चीस साल थी. उसने येरूशलेम में सोलह साल शासन किया. उसकी माता
का नाम येरूशा था, वह सादोक की पुत्री थी. 34 योथाम ने वह किया, जो
याहवेह की दृष्टि में सही था. उसने वही सब किया, जो उसके पिता उज्जियाह ने
किया था. 35 फिर भी, पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई थी. लोग पूजा
स्थलों की वेदियों पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे. योथाम ने याहवेह के
भवन के ऊपरी द्वार को बनवाया. 36 योथाम द्वारा किए गए अन्य कार्य और
उसकी अन्य उपलब्धियों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की
पुस्तक में दिया गया है. 37 इन्हीं दिनों में याहवेह ने यहूदिया के विरुद्ध अराम
देश के राजा रेज़िन और रेमालियाह के पुत्र पेकाह को हमले के उद्देश्य से भेजना
शुरू कर दिया था. 38 योथाम हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला और
उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर में गाड़ दिया गया. उसके स्थान पर
उसका पुत्र आहाज़ राजा बना.

16 रेमालियाह के पुत्र पेकाह के शासन के सत्रहवें साल में योथाम का पुत्र
आहाज़ यहूदिया का राजा बना. 2 शासन शुरू करते समय आहाज़ की
उम्र बीस साल थी. येरूशलेम में उसने सोलह साल शासन किया. उसने वह नहीं
किया जो याहवेह उसके परमेश्वर की दृष्टि में सही था—जैसा उसके पूर्वज
दावीद ने किया था. 3 इसकी बजाय उसका आचरण इस्राएल के राजाओं की
नीतियों के अनुसार था; यहां तक कि उसने अपने ही पुत्र को होमबलि के रूप में
बलि कर दिया. यह उन जनताओं की घृणित प्रथाओं के अनुसार था, जिन्हें
याहवेह ने इस्राएल राष्ट्र के सामने से निकाल दिया था. 4 वह पूजा स्थलों पर,
पहाड़ियों पर और हर एक हरे वृक्ष के नीचे धूप जलाकर बलि चढ़ाता रहा. 5
तब अराम का राजा रेज़िन और इस्राएल के राजा रेमालियाह का पुत्र पेकाह
येरूशलेम पर युद्ध करने के उद्देश्य से वहां आ गए. उन्होंने आहाज़ को बंदी बना
लिया; किंतु वे उसे अपने वश में न कर सके. 6 उसी समय अराम के राजा
रेज़िन ने एलाथ नगर को अधीन कर अराम देश में शामिल कर लिया. यह
करके उसने हर एक यहूदियावासी को वहां से पूरी तरह निकाल दिया, और
एलाथ में एदोमी आकर बस गए और आज भी वहीं रह रहे हैं. 7 आहाज़ ने
अश्शूर के राजा तिगलथ-पलेसेर को दूतों द्वारा यह संदेश भेजा: "मैं आपका
सेवक, बल्कि आपका पुत्र हूं. कृपया आकर अराम के राजा और इस्राएल के
राजा से मेरी रक्षा कीजिए. ये मुझ पर हमला करने को उतारू हैं." 8 आहाज़ को
याहवेह के भवन में और राजघराने के खजाने में जितना भी सोना और चांदी
मिली, वह सब उसने अश्शूर के राजा को उपहार के रूप में भेज दिया. 9
अश्शूर के राजा ने आहाज़ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. तब वह दमेशेक
पर हमला कर उसे अपने अधीन करके, नगरवासियों को बंदी बनाकर, उन्हें
कीर नामक स्थान को ले गया, और वहां उसने रेज़िन की हत्या कर दी. 10
यह सब होने के बाद राजा आहाज़ अश्शूर के राजा तिगलथ-पलेसेर से मिलने
दमेशेक गया. उसने वहां वह वेदी देखी जो दमेशेक में स्थापित की गई थी. राजा
आहाज़ ने वेदी की बनावट का नक्शा पुरोहित उरियाह को भेज दिया. इसमें वेदी
को बनाने के सारे शिल्प कौशल का ब्यौरा था. 11 इसके आधार पर पुरोहित
उरियाह ने एक वेदी बनाई; ठीक उसी के अनुसार जैसा राजा आहाज़ ने दमेशेक
से भेजा था. पुरोहित उरियाह ने राजा आहाज़ के दमेशेक से लौटने के पहले ही
यह वेदी तैयार कर ली थी. 12 जब राजा दमेशेक से लौटा, उसने वह वेदी
देखी, राजा वेदी के पास गया, 13 वहां राजा ने होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई,
राजा ने वहां अर्घ उंडेला, और अपनी मेल बलि का लहू उस वेदी पर छिड़क
दिया. 14 याहवेह के सामने रखी कांसे की वेदी को उसने भवन के सामने की
ओर से, उसकी अपनी वेदी और याहवेह के भवन के बीच से हटाकर, उसने
अपनी वेदी की उत्तरी दिशा में स्थापित करवा दिया. 15 तब राजा आहाज़ ने
पुरोहित उरियाह को आदेश दिया, "इस नई विशाल वेदी पर आप भोर की
होमबलि, शाम की अन्नबलि, राजा के लिए होमबलि और अन्नबलि और सारी
प्रजा के लिए होमबलि और अन्नबलि और उनका अर्घ इस वेदी पर ही चढ़ाना,
तथा होमबलि और बलि का सारा लहू इसी वेदी पर छिड़कना. मगर यह कांसे
की वेदी सिर्फ मेरे ही इस्तेमाल के लिए रहेगी, कि मैं इसके द्वारा परमेश्वर
की इच्छा जान सकूं." 16 पुरोहित उरियाह ने राजा आहाज़ के आदेश के
अनुसार ही किया. 17 राजा आहाज़ ने ठेलों की चौखटों को काटकर उसमें से
चिलमची को निकाल लिया और कांसे के बैलों के ऊपर रखे हुए पानी के बर्तन
को उतारकर पत्थर के एक चबूतरे पर स्थापित कर दिया. 18 उसने याहवेह के
भवन परिसर में शब्बाथ पर इस्तेमाल किए जा रहे ओसारे को और राजा के
लिए बनाए गए बाहरी फाटक को अश्शूर के राजा के कारण याहवेह के भवन से
हटा दिया. 19 आहाज़ के अन्य कामों का और उसकी अन्य उपलब्धियों का
ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 20 आहाज़
हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला और उसे उसके पूर्वजों के बीच,
दावीद के नगर में गाड़ दिया. उसकी जगह पर उसका पुत्र हिज़किय्याह शासन
करने लगा.

17 यहूदिया के राजा आहाज़ के शासन के बारहवें साल में एलाह का पुत्र
होशिया शमरिया में राजा बना. उसका शासन नौ साल का था. 2 उसने
वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था, मगर उस सीमा तक नहीं, जैसा
इस्राएल में उसके पहले के राजाओं ने किया था. 3 अश्शूर के राजा शालमानेसर
ने उस पर हमला कर दिया. होशिया को उसके अधीन, जागीरदार होकर उसे
कर देना पड़ता था. 4 मगर अश्शूर के राजा को होशिया के एक षड़्यंत्र के
विषय में मालूम हो गया. होशिया ने मिस्र देश के राजा सोअ से संपर्क के लिए
अपने दूत भेजे थे, और उसने अपने ठहराए गए कर का भुगतान भी नहीं किया
था, जैसा वह हर साल किया करता था. तब अश्शूर के राजा ने उसे बंदी बनाकर
बंदीगृह में डाल दिया. 5 इसके बाद उसने सारी इस्राएल देश पर कब्जा किया,
और तीन साल तक शमरिया नगर को अपनी अधीनता में रखा. 6 होशिया के
शासन के नवें साल में अश्शूर के राजा ने शमरिया को अपने अधिकार में ले
लिया. उसने इस्राएल जनता को बंदी बनाकर अश्शूर ले जाकर वहां हालाह और
हाबोर क्षेत्र में बसा दिया. ये दोनों क्षेत्र मेदिया प्रदेश के गोज़ान नदी के तट
पर स्थित हैं. 7 यह सब इसलिये हुआ कि इस्राएल वंशजों ने याहवेह, अपने
परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया; उस परमेश्वर के विरुद्ध, जिन्होंने उन्हें मिस्र के
राजा फ़रोह की बंधुआई से मुक्त कराया था. उनमें पराए देवताओं के लिए भय
आ गया था. 8 वे उन राष्ट्रों की प्रथाओं का पालन करने लगे थे, जिन जनताओं
को याहवेह ने इस्राएल वंश के सामने से अलग कर दिया था. इसके अलावा वे
इस्राएल के राजाओं द्वारा प्रचलित प्रथाओं का पालन करने लगे थे. 9 इस्राएल
के लोग याहवेह, उनके परमेश्वर के विरुद्ध गुप्त रूप से वह सब करते रहे, जो
गलत था. उन्होंने अपने सारे नगरों में पहरेदारों के खंभों से लेकर गढ़नगर तक
पूजा की जगहों को बनवाया. 10 उन्होंने हर एक ऊंची पहाड़ी पर और हर एक

हरे पेड़ के नीचे अशेराह के खंभे खड़े किए. 11 वे सारे पूजा स्थलों पर धूप
जलाते थे, उन्हीं जनताओं के समान, जिन्हें याहवेह ने उनके सामने से हटाकर
अलग किया था. इस्राएली प्रजा दुष्टता से भरे कामों में लगी रही, जिससे याहवेह
का गुस्सा भड़क उठता था. 12 वे मूर्तियों की सेवा-उपासना करते रहे, जिनके
विषय में याहवेह ने उन्हें चेताया था, “तुम यह न करना.” 13 फिर भी याहवेह
इस्राएल और यहूदिया को हर एक भविष्यद्वक्ता और दर्शी के द्वारा इस प्रकार
चेतावनी देते रहे: “व्यवस्था के अनुसार अपनी बुराइयों से फिरकर मेरे आदेशों
और नियमों का पालन करो, जिनका आदेश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था,
और जिन्हें मैंने भविष्यवक्ताओं, मेरे सेवकों के माध्यम से तुम तक पहुंचाया.”
14 मगर उन्होंने इसकी अवहेलना की, और अपने हृदय कठोर कर लिए; जैसा
उनके पूर्वजों ने किया था, जिनकी याहवेह, उनके परमेश्वर में कोई श्रद्धा न
थी. 15 उन्होंने याहवेह के नियमों का तिरस्कार किया और उस वाचा को
तुच्छ माना, जो याहवेह ने उनके पूर्वजों के साथ स्थापित की थी. उन्होंने उन
चेतावनियों पर ध्यान न दिया, जिनके द्वारा याहवेह ने उन्हें सचेत करना चाहा
था. वे बेकार के कामों का अनुसरण करते-करते खुद भी बेकार बन गए, और
अपने पड़ोसी राष्ट्रों के समान हो गए. इन्हीं राष्ट्रों के बारे में याहवेह ने उन्हें साफ़
आदेश दिया था: “उनका अनुसरण नहीं करना.” 16 उन्होंने याहवेह, अपने
परमेश्वर के सभी आदेशों को त्याग दिया, और उन्होंने अपने लिए बछड़ों की
धातु की मूर्तियां, हां, दो बछड़ों की मूर्तियां ढाल लीं. उन्होंने अशेराह को
बनाया और आकाश की सारी शक्तियों और बाल देवता की उपासना की. 17
इसके बाद उन्होंने अपनी संतान को आग के बीच से होकर निकलने की प्रथा
पूरी करने के लिए मजबूर किया. वे भावी कहते थे और जादू-टोना भी करते
थे. उन्होंने स्वयं को वह सब करने के लिए समर्पित कर दिया, जो याहवेह
की दृष्टि में गलत है. इससे उन्होंने याहवेह के क्रोध को भड़का दिया. 18
फलस्वरूप याहवेह इस्राएल पर बहुत ही क्रोधित हो गए, और उन्होंने इस्राएल
को अपनी नज़रों से दूर कर दिया; सिवाय यहूदाह गोत्र के. 19 यहूदिया ने भी
याहवेह, अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं किया. उसने उन्हीं प्रथाओं
का अनुसरण किया, जिनको इस्राएल द्वारा शुरू किया गया था. 20 याहवेह ने
इस्राएल के सारे वंशजों को त्याग दिया, उन्हें सताया, उन्हें लुटेरों को सौंप
दिया, और अपनी दृष्टि से दूर कर दिया. 21 जब याहवेह इस्राएल को दावीद
के वंश से अलग कर चुके, इस्राएलियों ने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम को राजा
बनाकर प्रतिष्ठित किया. यरोबोअम ने इस्राएल से याहवेह का अनुसरण खत्म
करवा दिया, और इस्राएल को अधम पाप के लिए उकसाया. 22 इस्राएली प्रजा
ने वे सारे पाप किए, जो यरोबोअम ने स्वयं किए थे. इन पापों से वे कभी दूर
न हुए. 23 तब याहवेह ने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर कर दिया, जैसा उन्होंने
भविष्यवक्ताओं, अपने सेवकों, के द्वारा पहले ही घोषित कर दिया था. तब
इस्राएल वंशज अपने देश से अश्शूर को बंधुआई में भेज दिए गए, वे अब तक
बंधुआई में ही हैं. 24 अश्शूर के राजा ने बाबेल, कूथाह, अव्वा, हामाथ और
सेफरवाइम से लोगों को लाकर शमरिया के नगरों में बसा दिया, जहां इसके
पहले इस्राएल का रहना था. उन्होंने शमरिया को अपने अधिकार में ले लिया,
और उसके नगरों में रहने लगे. 25 उनके वहां रहने के शुरूआती सालों में उनके
मन में याहवेह के प्रति भय था ही नहीं. तब याहवेह ने उनके बीच शेर भेज दिए,
जिन्होंने उनमें से कुछ को अपना कौर बना लिया. 26 इसके बारे में अश्शूर के
राजा को सूचित किया गया: “जिन राष्ट्रों को आपने ले जाकर शमरिया के
नगरों में बसाया है, उन्हें इस देश के देवता की विधि पता नहीं है, इसलिये उसने
उनके बीच शेर भेज दिए हैं. अब देखिए वे प्रजा को मार रहे हैं, क्योंकि प्रजा
को इस देश के देवता का पता नहीं है.” 27 यह सुन अश्शूर के राजा ने यह
आदेश दिया, “जिन पुरोहितों को बंधुआई में लाया गया है, उनमें से एक पुरोहित
को वहां भेज दिया जाए, कि वह वहां जाकर वहीं रहा करे, और वहां बसे इन
लोगों को उस देश के देवता की व्यवस्था की शिक्षा दे.” 28 तब शमरिया से
निकले पुरोहितों में से एक पुरोहित बेथेल नगर में आकर निवास करने लगा, जो
उन्हें याहवेह के प्रति भय रखने के विषय में शिक्षा देता था. 29 मगर हर एक राष्ट्र
अपने-अपने देवताओं की मूर्तियां बनाता रहा, और उन्हें अपने-अपने नगरों
के पूजा स्थलों में प्रतिष्ठित करता रहा; उन पूजा स्थलों पर, जो शमरिया के
मूलवासियों द्वारा बनाए गए थे. यह वे उन सभी नगरों में करते गए, जहां वे
बसते जा रहे थे. 30 जो लोग बाबेल से आए थे उन्होंने सुक्कोथ-बेनोथ की
मूर्ति, कूथ से आए लोगों ने नेरगल की, हामाथ से बसे हुए विदेशियों ने आशिमा
की, 31 अव्वी प्रवासियों ने निभाज़ और तारतक की; इसके अलावा सेफ़ारवी
प्रवासियों ने अपने बालकों को अद्राम्मेलेख और अन्नाम्मेलेख के लिए आग में
बलि करने सेफरवाइम देवता की प्रथा चालू रखी. 32 हां, उन्होंने भय के कारण
याहवेह के लिए सभी प्रकार के लोगों में से पुरोहित भी चुन लिए. ये पुरोहित
उनके लिए पूजा की जगहों पर बलि चढ़ाया करते थे. 33 संक्षेप में, वे याहवेह
के प्रति भय रखते हुए भी अपने-अपने राष्ट्र के उन देवताओं की उपासना करते
रहे, जिन राष्ट्रों से लाकर वे यहां बसाए गए थे. 34 आज तक वे अपनी-अपनी
पहले की प्रथाओं में लगे हैं. वे न तो याहवेह के प्रति भय दिखाते हैं, न ही वे
याहवेह द्वारा दी गई विधियों या आदेशों या नियमों या व्यवस्था का पालन करते
हैं, जिनके पालन करने का आदेश याहवेह द्वारा याकोब के वंशों को दिया गया
था, जिन्हें वह इस्राएल नाम से बुलाते थे, 35 जिनके साथ याहवेह ने वाचा
स्थापित की थी, और उन्हें यह आदेश दिया था: “पराए देवताओं से डरने की
कोई ज़रूरत नहीं है और न ही आवश्यकता है उनके सामने झुकने की, न उन्हें
बलि चढ़ाने की, और न उनकी सेवा-उपासना करने की. 36 हां, भय उस
याहवेह के लिए रखो, जिन्होंने मिस्र देश से तुम्हें अद्भुत सामर्थ्य और बढ़ाई हुई
भुजा से तुमको निकालकर यहां ले आए हैं. भय उन्हीं के प्रति बनाए रखो,
वंदना के लिए उन्हीं के सामने झुको, और बलि उन्हें ही चढ़ाओ. 37 इसके
अलावा जो विधियां, नियम, व्यवस्था और आदेश उन्होंने तुम्हारे लिए लिखवा
दिए हैं, उन्हें तुम हमेशा पालन करते रहो. साथ ही, यह ज़रूरी नहीं कि तुम
पराए देवताओं से डरो. 38 तुम उस वाचा को न भूलना जो मैंने तुम्हारे साथ
बांधी है और न पराए देवताओं का भय मानना. 39 तुम सिर्फ याहवेह अपने
परमेश्वर का भय मानना. याहवेह ही तुम्हें तुम्हारे सारी शत्रुओं से छुटकारा
दिलाएंगे.” 40 इतना सब होने पर भी उन्होंने याहवेह की बातों पर ध्यान न
दिया, वे अपने पहले के आचरण पर ही चलते रहे. 41 इन जातियों ने याहवेह
का भय तो माना, मगर साथ ही वे अपनी गढ़ी हुई मूर्तियों की उपासना भी करते
रहे. उनकी संतान भी यही करती रही. और उनके बाद उनकी संतान भी, जैसा
जैसा उन्होंने अपने पिता को करते देखा, उन्होंने आज तक उसी के जैसा
किया.

18 इस्राएल के राजा एलाह के पुत्र होशिया के शासन के तीसरे साल में
आहाज़ के पुत्र हिज़किय्याह ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया.
2 जब हिज़किय्याह राजा बना, उसकी उम्र पच्चीस साल थी. येरूशलेम में
उसने उनतीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम अबीयाह था, वह
ज़करयाह की पुत्री थी. 3 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था,
वैसा ही, जैसा उसके पूर्वज दावीद ने किया था. 4 उसने पूजा की जगह हटा
दीं, पूजा के खंभे तोड़ दिए और अशेराह के खंभे भी ध्वस्त कर दिए. उसने
मोशेह द्वारा बनाई उस कांसे के सांप की मूर्ति को भी नष्ट कर दिया, क्योंकि तब
तक इस्राएली प्रजा इसे नेहुष्तान नाम से पुकारते हुए इसके सामने धूप जलाने लगे
थे. 5 हिज़किय्याह का भरोसा याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर पर था, इसलिये न
उसके बाद और न ही उसके पहले यहूदिया के सारी राजाओं में उसके समान

कोई हुआ. 6 वह याहवेह से चिपका रहा. कभी भी उसने याहवेह का अनुसरण
करना न छोड़ा. वह मोशेह को सौंपे गए याहवेह के आदेशों का पालन करता
रहा. 7 वह जहां कहीं गया, याहवेह उसके साथ रहे. वह उन्‍नत ही होता चला
गया. उसने अश्शूर के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, और उससे अपना
दासत्व खत्म कर लिया. 8 उसने अज्जाह की सीमा तक फिलिस्तीनियों को
हरा दिया, यानी पहरेदारों की मचान से लेकर नगर गढ तक. 9 हिज़किय्याह के
शासन के चौथे साल में, जो इस्राएल के राजा एलाह के पुत्र होशिया के शासन
का सातवां साल था, अश्शूर के राजा शालमानेसर ने शमरिया पर घेरा डाल
दिया. 10 और तीन साल पूरा होते-होते उन्होंने शमरिया को अपने अधिकार में
ले लिया. हिज़किय्याह के शासन का छठवां और इस्राएल के राजा होशिया के
शासन का नवां साल था, जब शमरिया पर अश्शूर के राजा का अधिकार हो
गया. 11 अश्शूर का राजा इस्राएलियों को बंदी बनाकर अश्शूर देश को ले गया.
वहां उसने उन्हें गोज़ान नदी के तट पर हालाह और हाबोर नामक स्थानों में
और मेदिया प्रदेश के नगरों में बसा दिया, 12 क्योंकि उन्होंने याहवेह, अपने
परमेश्वर की वाणी को अनसुनी ही नहीं की, बल्कि उन्होंने उनकी वाचा भी
तोड़ दी थी, यहां तक कि उन सारी आदेशों को भी, जो याहवेह के सेवक मोशेह
ने दिए थे. न तो उन्होंने इन्हें सुना और न ही उनका पालन किया. 13 राजा
हिज़किय्याह के शासनकाल के चौदहवें वर्ष में अश्शूर के राजा सेनहेरीब ने
यहूदिया के समस्त गढ नगरों पर आक्रमण करके उन पर अधिकार कर लिया.
14 यहूदिया के राजा हिज़किय्याह ने लाकीश नगर में अश्शूर के राजा को यह
संदेश भेजा, "मुझसे गलती हुई है. अपनी सेना यहां से हटा लीजिए. आप मुझ
पर जो भी आर्थिक दंड देंगे मैं उसे पूरा करूंगा!" तब अश्शूर के राजा ने यहूदिया
के राजा हिज़किय्याह से दस टन चांदी और एक टन सोने का दंड तय कर दिया.
15 तब राजा हिज़किय्याह ने याहवेह के भवन और राजघराने के खजाने में रखी
पूरी चांदी अश्शूर के राजा को सौंप दी. 16 इसी समय हिज़किय्याह ने याहवेह
के मंदिर के दरवाजों पर मढ़ी गई सोने की परत उतार ली और वैसे ही दरवाजों
के मीनारों की भी, जो यहूदिया के राजा हिज़किय्याह द्वारा ही दरवाजों और
दरवाजों के मीनारों पर चढ़ाई गई थी. यह उसने अश्शूर के राजा को सौंप
दिया. 17 इस पर अश्शूर के राजा ने लाकीश से राजा हिज़किय्याह के पास
अपने सर्वोच्च सेनापति, अपने मुख्य अधिकारी और अपने प्रमुख सेनापति को
एक बड़ी सेना के साथ येरूशलेम भेज दिया. येरूशलेम पहुंचकर वे उस ऊपरी
तालाब की नाली पर जा खड़े हुए, जो सदह-कोबेस के राजमार्ग पर बनी है. 18
जब उन्होंने राजा को पुकारा, तब गृह प्रबंधक एलियाकिम, जो हिलकियाह का
पुत्र था, शास्त्री शेबना तथा आसफ का पुत्र योआह, जो प्रालेख अधिकारी था,
राजा से भेंट करने गए. 19 प्रमुख सेनापति ने उन्हें आदेश दिया, "हिज़किय्याह
से जाकर यह कहो, "'पराक्रमी राजा, अश्शूर के राजा का संदेश यह है: कौन है
तुम्हारे इस भरोसे का आधार? 20 युद्ध से संबंधित तुम्हारी रणनीति तथा तुम्हारी
शक्ति मात्र खोखले शब्द हैं. किस पर है तुम्हारा अवलंबन कि तुमने मुझसे
विद्रोह का साहस किया है? 21 देखो, तुमने जो मिस्र देश पर भरोसा किया है,
वह है ही क्या, एक टूटा हुआ सरकंडे की छड़ी! यदि कोई व्यक्ति इसकी टेक
लेना चाहे तो यह छड़ी उसके हाथ में ही चुभ जाएगी. मिस्र का राजा फ़रोह भी
उन सबके लिए ऐसा ही साबित होता है, जो उस पर भरोसा करते हैं. 22 हां,
यदि तुम मुझसे कहो, "हम तो याहवेह हमारे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं," तो
क्या ये वही नहीं हैं, जिनके पूजा-स्थल तथा वेदियां हिज़किय्याह ने ध्वस्त
कर दी हैं, तथा यहूदिया तथा येरूशलेम को यह आदेश दिया गया है: "तुम्हें
येरूशलेम में इसी वेदी के समक्ष आराधना करनी होगी"? 23 "'तो अब आओ,
और हमारे स्वामी, अश्शूर के राजा से मोलभाव कर लो: मैं तुम्हें दो हज़ार घोड़े
दूंगा; यदि तुम अपनी ओर से उनके लिए दो हज़ार घुड़सवार ला सको तो! 24
रथों और घुड़सवारों के लिए मिस्र देश पर निर्भर रहते हुए यह कैसे संभव है कि
तुम मेरे स्वामी के छोटे से छोटे सेवक से टक्कर ले उसे हरा दो! 25 क्या मैं
याहवेह की आज्ञा बिना ही इस स्थान को नष्ट करने आया हूं? याहवेह ही ने
मुझे आदेश दिया है, इस देश पर हमला कर इसे खत्म कर दो.'" 26 तब
हिलकियाह का पुत्र एलियाकिम, शेबना तथा योआह ने प्रमुख सेनापति से आग्रह
किया, "अपने सेवकों से अरामी भाषा में संवाद कीजिए, क्योंकि यह भाषा हम
समझते हैं; यहूदिया की हिब्री भाषा में संवाद मत कीजिए, क्योंकि प्राचीर पर
कुछ लोग हमारा वार्तालाप सुन रहे हैं." 27 किंतु प्रमुख सेनापति ने उत्तर दिया,
"क्या मेरे स्वामी ने मात्र तुम्हारे स्वामी तथा मात्र तुम्हें यह संदेश देने के लिए
मुझे प्रेषित किया है, तथा प्राचीर पर बैठे व्यक्तियों के लिए नहीं, जिनके लिए
तो यही दंड निर्धारित है, कि वे तुम्हारे साथ स्वयं अपनी विष्ठा का सेवन करें
तथा अपने ही मूत्र का पान?" 28 यह कहते हुए प्रमुख सेनापति खड़ा हो गया
और सबके सामने उच्च स्वर में यहूदिया की हिब्री भाषा में यह कहा: "अश्शूर
के राजा, प्रतिष्ठित सम्राट का यह संदेश सुन लो! 29 सम्राट का आदेश यह
है: हिज़किय्याह तुम्हें इस छल में सम्भ्रमित न रखे, क्योंकि वह तुम्हें विमुक्त
करने में समर्थ न होगा; 30 न ही हिज़किय्याह यह कहते हुए तुम्हें याहवेह पर
भरोसा करने के लिए उकसाए, 'निःसंदेह याहवेह हमारा छुटकारा करेंगे. यह
नगर अश्शूर के राजा के अधीन होने न दिया जाएगा.' 31 "हिज़किय्याह के
आश्वासन पर ध्यान न दो, क्योंकि अश्शूर के राजा का संदेश यह है, मुझसे
संधि स्थापित कर लो. नगर से निकलकर बाहर मेरे पास आ जाओ. तब तुममें से
हर एक अपनी ही लगाई हुई दाखलता से फल खाएगा, तुममें से हर एक अपने
ही अंजीर वृक्ष से अंजीर खाएगा, और तुममें से हर एक अपने ही कुंड में से
जल पीएगा. 32 तब मैं आऊंगा और तुम्हें एक ऐसे देश में ले जाऊंगा, जो
तुम्हारे ही देश के सदृश्य है, ऐसा देश जहां अन्‍न की उपज है, तथा नई द्राक्षा
भी. यह भोजन तथा द्राक्षा उद्यानों का देश है, जैतून के पेड़ों और शहद में
भरपूर; कि तुम वहां सम्पन्‍नता में जी सको, तुम काल का ग्रास न बनो. "तब
तुम हिज़किय्याह के आश्वासन पर ध्यान न देना, जब वह तुम्हें यह कहते हुए
भटकाएगा: 'याहवेह हमारा छुटकारा कर देंगे.' 33 भला, कहीं कोई ऐसा हुआ
भी है कि पड़ोसी राष्ट्रों के किसी देवता ने अपने देश को अश्शूर के राजा से
बचाया हो? 34 कहां हैं, हामाथ तथा अरपाद के देवता? कहां हैं, सेफरवाइम,
हेना और इव्वाह के देवता? और हां, उन्होंने शमरिया को कब मेरे अधिकार से
विमुक्त किया है? 35 इन देशों के किस देवता ने अपने देश को मेरे हाथों से
विमुक्त किया है? यह याहवेह येरूशलेम को मेरे हाथों से कैसे विमुक्त करा
लेंगे?" 36 मगर प्रजा मौन रही. किसी ने भी उससे एक शब्द तक न कहा,
क्योंकि राजा का आदेश ही यह था, "उसे उत्तर न देना!" 37 हिलकियाह के
पुत्र एलियाकिम ने, जो राजघराने में गृह प्रबंधक था, लिपिक शेबना और आसफ
के पुत्र योआह ने, जो लेखापाल था अपने वस्त्र फाड़े और जाकर प्रमुख सेनापति
के शब्द राजा को जा सुनाए.

19 जब राजा हिज़किय्याह ने यह सब सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़ दिए, टाट
पहन लिया और याहवेह के भवन में चला गया. 2 राजा ने गृह प्रबंधक
एलियाकिम, सचिव शेबना, पुरनियों और पुरोहितों को, जो टाट धारण किए हुए
थे, आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह के पास भेजा. 3 उन्होंने जाकर
यशायाह से विनती की, "हिज़किय्याह की यह विनती है, 'आज का दिन
संकट, फटकार और अपमान का दिन है. प्रसव का समय आ पहुंचा है, मगर
प्रसूता में प्रसव के लिए शक्ति ही नहीं रह गई. 4 संभव है याहवेह, आपके
परमेश्वर प्रमुख सेनापति द्वारा कहे गए सभी शब्द सुन लें, जो उसके स्वामी,
अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर की निंदा में उससे कहलवाए थे. संभव है इन
शब्दों को सुनकर याहवेह, आपके परमेश्वर उसे फटकार लगाएं. इसलिये कृपा

कर यहां प्रजा के बचे हुओं के लिए आकर प्रार्थना कीजिए.'" 5 जब राजा
हिज़किय्याह के सेवक यशायाह के पास पहुंचे, 6 यशायाह ने उनसे कहा,
"अपने स्वामी से कहना, 'याहवेह का संदेश यह है, उन शब्दों के कारण जो
तुमने सुने हैं, जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के सेवकों ने मेरी निंदा की है, तुम
डरना मत. 7 तुम देख लेना मैं उसमें एक ऐसी आत्मा डाल दूंगा कि उसे उड़ते-
उड़ते समाचार सुनाई देने लगेंगे और वह अपने देश को लौट जाएगा और
ऐसा कुछ करूंगा कि वह अपने ही देश में तलवार का कौर हो जाएगा.'" 8
जब प्रमुख सेनापति येरूशलेम से लौटा, उसने पाया कि अश्शूर राजा लाकीश
छोड़कर जा चुका था, और वह लिबनाह से युद्ध कर रहा था. 9 जब उसने
कूश के राजा तिरहाकाह से यह सुना कि, वह उससे युद्ध करने निकल पड़ा है,
तब उसने अपने संदेशवाहकों को हिज़किय्याह के पास यह कहकर भेजा,
10 "तुम यहूदिया के राजा हिज़किय्याह से यह कहना, 'जिस परमेश्वर पर
तुम भरोसा करते हो, वह तुमसे यह प्रतिज्ञा करते हुए छल न करने पाए, कि
येरूशलेम अश्शूर के राजा के अधीन नहीं किया जाएगा. 11 तुम यह सुन ही
चुके हो, कि अश्शूर के राजाओं ने सारी राष्ट्रों को कैसे नाश कर दिया है.
क्या तुम बचकर सुरक्षित रह सकोगे? 12 जब मेरे पूर्वजों ने गोज़ान, हारान,
रेत्सेफ़ और तेलास्सार में एदेन की प्रजा को खत्म कर डाला था, क्या उनके
देवता उनको बचा सके थे? 13 कहां है हामाथ का राजा, अरपाद का राजा,
सेफरवाइम नगर का राजा और हेना और इव्वाह के राजा?'" 14 इसके बाद
हिज़किय्याह ने पत्र ले आने वालों से वह पत्र लेकर उसे पढ़ा, और याहवेह के
भवन को चला गया, और उस पत्र को खोलकर याहवेह के सामने रख दिया.
15 हिज़किय्याह ने याहवेह से यह प्रार्थना की: "सर्वशक्तिमान याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर, आप, जो करूबों के बीच सिंहासन पर विराजमान हैं, परमेश्वर
आप ही ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया. 16 अपने कान मेरी ओर कीजिए,
याहवेह, मेरी प्रार्थना सुन लीजिए. अपनी आंखें खोल दीजिए और याहवेह, देख
लीजिए और उन शब्दों को सुन लीजिए, जो सेनहेरीब ने जीवित परमेश्वर का
मज़ाक उड़ाते हुए कहे हैं. 17 "याहवेह, यह सच है कि अश्शूर के राजाओं ने
जनताओं को और उनकी भूमि को उजाड़ कर छोड़ा है. 18 और उनके देवताओं
को आग में डाल दिया है, सिर्फ इसलिये कि वे देवता थे ही नहीं, वे तो सिर्फ
मनुष्य के बनाए हुए थे, सिर्फ लकड़ी और पत्थर. इसलिये वे नाश कर दिए गए.
19 अब, हे याहवेह, हमारे परमेश्वर, हमें उनके हाथ से बचा ताकि पूरी पृथ्वी को
यह मालूम हो जाए कि याहवेह, केवल आप ही परमेश्वर हैं." 20 तब आमोज़
के पुत्र यशायाह ने हिज़किय्याह से कहा, "याहवेह, इस्राएल का परमेश्वर, यों
कहते हैं: इसलिये कि तुमने अश्शूर के राजा सेनहेरीब के संबंध में मुझसे विनती
की, 21 उसके विरुद्ध कहे गए याहवेह के शब्द ये है: "'ज़ियोन की कुंवारी
कन्या ने तुम्हें तुच्छ समझा है, तुम्हारा मज़ाक उड़ाया है. येरूशलेम की पुत्री
पलायन करनेवाले तुम्हारी पीठ देखकर सिर हिलाती है. 22 तुमने किसका
अपमान और किसकी निंदा की है? किसके विरुद्ध तुमने आवाज ऊंची की है?
और किसके विरुद्ध तुम्हारी दृष्टि घमण्ड से उठी है? इस्राएल के महा पवित्र की
ओर! 23 तुमने अपने दूतों के द्वारा याहवेह की निंदा की है. तुमने कहा, "अपने
रथों की बड़ी संख्या लेकर मैं पहाड़ों की ऊंचाइयों पर चढ़ आया हूं, हां,
लबानोन के दुर्गम, दूर के स्थानों तक; मैंने सबसे ऊंचे देवदार के पेड़ काट
गिराए हैं, इसके सबसे उत्तम सनोवरों को भी; मैंने इसके दूर-दूर के घरों में प्रवेश
किया, हां, इसके घने वनों में भी. 24 मैंने कुएं खोदे और परदेश का जल पिया,
अपने पांवों के तलवों से मैंने मिस्र की सभी नदियां सुखा दीं." 25 "'क्या
तुमने सुना नहीं? इसका निश्चय मैंने बहुत साल पहले कर लिया था? इसकी
योजना मैंने बहुत पहले ही बना ली थी, जिसको मैं अब पूरा कर रहा हूं, कि तुम
गढ़ नगरों को खंडहरों का ढेर बना दो. 26 जब नगरवासियों का बल जाता
रहा, उनमें निराशा और लज्जा फैल गई. वे मैदान की वनस्पति और जड़ी-बूटी
के समान हरे हो गए. वैसे ही, जैसे छत पर उग आई घास बढ़ने के पहले ही
मुरझा जाती है. 27 "'मगर तुम्हारा उठना-बैठना मेरी दृष्टि में है, तुम्हारा भीतर
आना और बाहर जाना भी; और मेरे विरुद्ध तुम्हारा तेज गुस्सा भी! 28 मेरे विरुद्ध
तुम्हारे तेज गुस्से के कारण और इसलिये कि मैंने तुम्हारे घमण्ड के विषय में सुन
लिया है, मैं तुम्हारी नाक में अपनी नकेल डालूंगा, और तुम्हारे मुख में लगाम
और तब मैं तुम्हें मोड़कर उसी मार्ग पर चलाऊंगा जिससे तुम आए थे.' 29 "तब
हिज़किय्याह, तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा: "इस साल तुम्हारा भोजन उस उपज
का होगा, जो अपने आप उगती है; अगले साल वह, जो इसी से उपजेगी; तीसरे
साल तुम बीज बोओगे, उपज काटोगे, अंगूर के बगीचे लगाओगे और उनके
फल खाओगे. 30 तब यहूदाह गोत्र का बचा हुआ भाग दोबारा अपनी जड़ें भूमि
में गहरे जाकर मजबूत करता जाएगा, और ऊपर वृक्ष फलवंत होता जाएगा. 31
क्योंकि येरूशलेम से एक बचा हुआ भाग ही विकसित होगा, ज़ियोन पर्वत
से जो भागे हुए लोग. सेनाओं के याहवेह के जलन ही यह सब करेगा. 32
"इसलिये अश्शूर के राजा के बारे में मेरा यह संदेश है; "'वह न तो इस नगर में
प्रवेश करेगा, न वह वहां बाण चलाएगा. न वह इसके सामने ढाल लेकर आएगा,
और न ही वह इसकी घेराबंदी के लिए ढलान ही बना पाएगा. 33 वह तो उसी
मार्ग से लौट जाएगा जिससे वह आया था. वह इस नगर में प्रवेश ही न करेगा.
यह याहवेह का संदेश है. 34 क्योंकि अपनी और अपने सेवक दावीद की
महिमा के लिए मैं इसके नगर की रक्षा करूंगा.'" 35 उसी रात ऐसा हुआ कि
याहवेह के एक दूत ने अश्शूरी सेना के शिविर में जाकर एक लाख पचासी हज़ार
सैनिकों को मार दिया. सुबह जागने पर लोगों ने पाया कि सारे सैनिक मर चुके
थे. 36 यह होने पर अश्शूर का राजा सेनहेरीब अपने देश लौट गया, और
नीनवेह नगर में रहने लगा. 37 एक बार, जब वह अपने देवता निसरोक के
मंदिर में उसकी उपासना कर रहा था, उसी के पुत्रों, अद्राम्मेलेख और शारेज़र ने
तलवार से उस पर वार किया और वे अरारात प्रदेश में जाकर छिप गए. उसके
स्थान पर उसके पुत्र एसारहद्दन ने शासन करना शुरू किया.

20 उन्हीं दिनों में हिज़किय्याह को ऐसा रोग हो गया कि वह मरने पर
था. आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह उससे मिलने आए. उन्होंने
हिज़किय्याह से कहा, "याहवेह का संदेश यह है: अपने परिवार की व्यवस्था
कर लीजिए, क्योंकि आपकी मृत्यु होनी ही है, आपका रोग से ठीक हो पाना
संभव नहीं." 2 यह सुन हिज़किय्याह ने अपना मुंह दीवार की ओर कर याहवेह
से यह प्रार्थना की, 3 "याहवेह, कृपा कर याद करें कि मैं पूरे मन से कैसे
सच्चाई में आपके सामने आचरण करता रहा हूं. और मैंने वही किया है, जो
आपकी दृष्टि में सही है!" तब हिज़किय्याह फूट-फूटकर रोने लगा. 4 यशायाह
अभी बीच के आंगन के बाहर भी न जा पाए थे, कि उन्हें याहवेह का यह संदेश
प्राप्त हुआ: 5 "लौट जाओ और मेरी प्रजा के प्रधान हिज़किय्याह से जाकर यह
कहो: 'तुम्हारे पूर्वज दावीद के परमेश्वर का संदेश यह है: मैंने तुम्हारी प्रार्थना
सुन ली है. मैंने तुम्हारा आंसू बहाना देखा है. यह देखना कि मैं तुम्हें चंगा कर
दूंगा. तीसरे दिन तुम याहवेह के भवन को जाओगे. 6 मैं तुम्हारी आयु पन्द्रह
साल और बढ़ाता हूं. मैं तुम्हें और इस नगर को अश्शूर के राजा के अधिकार से
मुक्त कर दूंगा. मैं अपनी महिमा और अपने सेवक दावीद के निमित्त इस नगर
की रक्षा करूंगा.'" 7 फिर यशायाह ने हिज़किय्याह के सेवकों से यह भी कहा,
"सूखे अंजीरों की एक टिकिया ले आओ." उन्होंने उसे राजा के फोड़े पर रख
दिया और राजा चंगा हो गया. 8 हिज़किय्याह ने यशायाह से यह प्रश्न किया था:
"याहवेह मुझे चंगा कर देंगे और तीसरे दिन मैं याहवेह के भवन को जाऊंगा,
इसका क्या चिन्ह होगा?" 9 यशायाह ने उत्तर दिया, "याहवेह अपने वचन पूरा
करेंगे, इसके लिए याहवेह की ओर से चिन्ह यह होगा: आप यह बताईये, क्या

छाया दस कदम आगे जाए या दस कदम पीछे?" 10 हिज़किय्याह ने उत्तर
दिया, "छाया का दस कदम लंबी हो जाना आसान है. नहीं. ऐसा कीजिए कि
छाया दस कदम पीछे लौट जाए." 11 भविष्यद्वक्ता यशायाह ने याहवेह की
दोहाई दी और याहवेह ने छाया को दस कदम पीछे हटा दिया, जिससे छाया
आहाज़ द्वारा बनवाई गई सोपानों पर दस कदम नीचे उतर चुकी थी. 12 उसी
समय बाबेल के राजा बलादन के पुत्र मेरोदाख-बालादान ने हिज़किय्याह को पत्र
और उपहार भेजे, क्योंकि उसने राजा की बीमारी का समाचार सुन रखा था.
13 हिज़किय्याह उनकी बातें ध्यान से सुनता रहा, फिर उनका स्वागत करते हुए
उसने उन्हें अपना सारा खजाना, सोना-चांदी और सभी मसाले, कीमती तेल,
अपना हथियार घर और अपने भंडार घर की सारी वस्तुएं दिखा दीं; यानी सभी
कुछ, जो उसके खजानों में जमा था. उसके घर में या उसके सारी राज्य में ऐसा
कुछ न था, जो उसने उन्हें न दिखाया हो. 14 यह होने के बाद भविष्यद्वक्ता
यशायाह राजा हिज़किय्याह से भेंट करने गए और उनसे कहा, "क्या कह रहे थे
ये लोग? ये कहां से आए थे?" हिज़किय्याह ने उत्तर दिया, "वे एक दूर देश से
आए थे; बाबेल से." 15 भविष्यद्वक्ता यशायाह ने राजा से पूछा, "क्या-क्या
देखा उन्होंने आपके घर का?" हिज़किय्याह ने उत्तर दिया, "जो कुछ मेरे घर में
है, वे सभी कुछ देख गए हैं, मेरे खजाने में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो उन्होंने न
देखा हो." 16 यह सुन यशायाह ने हिज़किय्याह से कहा, "याहवेह का संदेश
सुनिए: 17 'यह देख लेना कि वे दिन आ रहे हैं, जब वह सभी कुछ, जो आपके
घर में है, वह सब, जो आपके पूर्वजों द्वारा आज तक इकट्ठा किया गया है,
बाबेल को ले जाया जाएगा; कुछ भी बाकी न रह जाएगा,' यह याहवेह का
संदेश है. 18 तुम्हारे ही अपने पुत्रों में से कुछ को, तुम्हारे ही मांस और रक्त को,
बंधुआई में ले जाया जाएगा. वे बाबेल के राजा के राजघराने में नपुंसक बना दिए
जाएंगे." 19 तब हिज़किय्याह ने यशायाह से कहा, "याहवेह का वचन जो
तुमने कहा वह भला ही है!" फिर कहा, "कम से कम मेरे जीवनकाल में तो
शांति एवं सुरक्षा तो बनी रहेगी!" 20 हिज़किय्याह द्वारा किए गए बाकी कामों
का, उसकी वीरता का, और उसके द्वारा बनाए गए जलाशय और नगर में नहरों
द्वारा जल पहुंचने का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया
गया है. 21 हिज़किय्याह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला. उसके
स्थान पर उसके पुत्र मनश्शेह ने शासन करना शुरू किया.

21 शासन शुरू करते समय मनश्शेह की उम्र बारह साल थी. येरूशलेम में
उसने पचपन साल शासन किया. उसकी माता का नाम हेपज़िबाह था. 2
उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था; वही सभी जो उन जनताओं
के समान घृणित था, जिन्हें याहवेह ने इस्राएल के सामने से निकाल दिया था. 3
उसने उन पूजा स्थलों को दोबारा बनवाया, जिन्हें उसके पिता हिज़किय्याह ने
गिरा दिया था. उसने देवता बाल की वेदियां दोबारा बनवाई और अशेराह के
खंभे को दोबारा ठीक करा दिया; ठीक जिस प्रकार इस्राएल के राजा अहाब ने
किया था. वह भी आकाशमंडल के सारे नक्षत्रों की सेवा-उपासना करता था. 4
उसने याहवेह के उसी भवन में अनेक वेदियां बनवा दीं, जिस भवन के बारे में
याहवेह कह चुके थे, "येरूशलेम में मैं अपने नाम को स्थापित करूंगा." 5
उसने याहवेह के ही भवन के दो आंगनों में आकाशमंडल के सारे नक्षत्रों के
लिए वेदियां बनवाई. 6 उसने अपने पुत्र की होमबलि दे दी. वह मोहिनी, शकुन
विचारने और प्रेतसिद्धि को मानने लगा. याहवेह की दृष्टि में घोर बुराई कर उसने
याहवेह के क्रोध को उकसा दिया. 7 उसने अशेरा देवी की ढाली गई मूर्ति की
प्रतिष्ठा उस भवन में कर दी, जिसके विषय में याहवेह ने दावीद और उनके पुत्र
शलोमोन से यह कहा था, "मैं इस भवन में और येरूशलेम नगर में, जिसे मैंने
इस्राएल के सारी गोत्रों में से चुन लिया है, हमेशा के लिए अपना नाम स्थापित
करूंगा. 8 इसके अलावा मैं इस्राएल के चरणों को इस देश से, जिसे मैंने उनकी
संतानों के लिए दिया है, बाहर भटकाने न दूंगा; यदि वे सावधानीपूर्वक सिर्फ वह
करें, जिसका मैंने उन्हें आदेश दिया है, और जिस व्यवस्था का आदेश मेरे सेवक
मोशेह द्वारा उन्हें दिया गया." 9 मगर उन्होंने इसको नहीं माना. मनश्शेह ने
उन्हें बुराई करने के लिए इस हद्द तक भटका दिया, जितना उन जनताओं ने तक
न किया था, जिन्हें याहवेह ने इस्राएल प्रजा के सामने से नाश किया था. 10 तब
याहवेह ने अपने सेवक, भविष्यवक्ताओं के द्वारा यह संदेश भेजा: 11 "इसलिये
कि यहूदिया के राजा मनश्शेह ने ऐसे घृणित काम किए हैं; अपने पहले इस देश
में रहते हुए अमोरियों द्वारा किए गए सभी कामों से अधिक घृणित, और अपनी
मूर्तियों के लिए यहूदिया को भी वही करने के लिए मजबूर किया. 12 इसलिए
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह संदेश है: देख लेना, मैं येरूशलेम और
यहूदिया पर ऐसी मुसीबत ला रहा हूं, कि जो कोई इसके बारे में सुनेगा, उसके
दोनों ही कान झनझना जाएंगे. 13 मैं येरूशलेम के ऊपर शमरिया के समान माप
की डोरी, और अहाब के वंश के समान साहुल का उपयोग करूंगा. मैं येरूशलेम
को ऐसे पोंछ दूंगा जैसे बर्तन को पोंछा जाता है, इसे पोंछकर मैं उसे उलट रख
दूंगा. 14 मैं अपनी मीरास के बचे हुए भाग का त्याग कर दूंगा, और उन्हें उनके
शत्रुओं के हाथों में सौंप दूंगा. वे उनके सभी शत्रुओं द्वारा लूटे, और लूटा हुआ
सामान हो जाएंगे; 15 क्योंकि उन्होंने वही किया है, जो जो मेरी दृष्टि में बुरा है,
और इससे उन्होंने मेरे गुस्से को भड़काया है. ऐसा वे उसी समय से, जब उनके
पूर्वज मिस्र देश से बाहर निकल आए थे, आज तक करते आ रहे हैं." 16 उस
पाप के अलावा जो उसने यहूदिया को वह करने के लिए उकसाया, जो याहवेह
की दृष्टि में गलत था, मनश्शेह ने अनगिनत निर्दोषों का बहुत लहू बहाया, कि
येरूशलेम एक छोर से दूसरे छोर तक लहूलुहान हो गया. 17 मनश्शेह द्वारा किए
गए बाकी कामों, उसकी उपलब्धियों और उसके द्वारा किए पापों का ब्यौरा
यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 18 मनश्शेह हमेशा
के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला और उसे उसी के महल की वाटिका, उज्जा
की वाटिका में ही, गाड़ दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र अमोन शासन करने
लगा. 19 राजा बनने के अवसर पर अमोन की उम्र बाईस साल थी. येरूशलेम में
उसने दो साल शासन किया. उसकी माता का नाम मेशुलेमेथ था, वह योत्बाह
नगर के हारूज़ की पुत्री थी. 20 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत
है; जैसा उसके पिता मनश्शेह ने किया था. 21 उसका सारा आचरण ठीक वैसा
ही था, जैसा उसके पिता का था. वह मूर्तियों की सेवा-उपासना करता था, उन्हें
ही नमन करता था, जिनकी सेवा-उपासना उसका पिता करता रहा था. 22 इस
प्रकार उसने याहवेह अपने पिता के परमेश्वर को छोड़ दिया और याहवेह के मार्ग
का अनुसरण न किया. 23 अमोन के सेवकों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा और
उसी के घर में राजा की हत्या कर दी. 24 मगर प्रजाजनों ने उन सभी की हत्या
कर दी, जिन्होंने राजा अमोन के विरुद्ध षड्यंत्र रचा था. उन्होंने उसके स्थान पर
उसके पुत्र योशियाह को राजा बनाया. 25 अमोन द्वारा किए गए अन्य कामों का
ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है. 26 उसका
अंतिम संस्कार उज्जा की वाटिका में स्थित कब्र में किया गया. उसकी जगह
पर उसके पुत्र योशियाह ने शासन शुरू किया.

22 शासन शुरू करते समय योशियाह की उम्र आठ साल थी. उसने येरूशलेम
में एकतीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम येदिदाह था, वह
बोत्सकथ नगर के अदाइयाह की पुत्री थी. 2 उसने वह किया, जो याहवेह की
दृष्टि में सही था. अपने पूर्वज दावीद के सारी मार्गों का आचरण करता रहा. वह
इनसे न तो दाएं मुड़ा और न बाएं. 3 राजा योशियाह के राज्य के अठारहवें वर्ष
में राजा ने मेशुल्लाम के पोते, अज़लियाह के पुत्र शापान को, जो सचिव था, इस
आदेश के साथ याहवेह के भवन को भेजा, 4 "महापुरोहित हिलकियाह के पास
जाइए कि वह याहवेह के भवन में लाए गए दान की गिनती करें, जो द्वारपालों

द्वारा आराधकों से इकट्ठा किया गया है. 5 यह धन याहवेह के भवन के लिए
चुने गए अधिकारियों को सौंप दिया जाए, और वे इसे उन्हें देते जाएं जिनकी
जवाबदारी याहवेह के भवन की मरम्मत करना है, 6 यानी बढ़ई, तराशनेवालों
और राजमिस्त्रियों को, कि वे भवन की मरम्मत के लिए ज़रूरी लकड़ी और
तराशी गई चट्टानें ले आएं. 7 इनसे लेनदेन का लेखा न लिया जाए, क्योंकि
वे अपने लेनदेन में सच्चे हैं." 8 महापुरोहित हिलकियाह ने लिपिक शापान
को सूचित किया, "याहवेह के भवन में मुझे व्यवस्था की पुस्तक मिली है!"
हिलकियाह ने पुस्तक शापान को सौंप दी. शापान ने उसे पढ़ा. 9 लिपिक
शापान ने राजा के पास जाकर उसे इसकी सूचना दी, "भवन में रखी सारी चांदी
निकाल ली गई हैं और यह धन उन कर्मचारियों को दे दिया गया है, जिन्हें
याहवेह के भवन के देखरेख की जवाबदारी सौंपी गई है." 10 इसके बाद
लिपिक शापान ने राजा को यह सूचना भी दी, "पुरोहित हिलकियाह ने मुझे एक
पुस्तक दी है." शापान ने राजा के सामने उस पुस्तक में से पढ़कर सुनाया. 11
जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक से सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़ दिए. 12 राजा
ने पुरोहित हिलकियाह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अखबोर,
लिपिक शापान और राजा के सेवक असाइयाह को यह आदेश दिया, 13 "इस
पुस्तक में हमारे लिए जो लिखा है, उसके विषय में, मेरी ओर से, यहूदिया और
प्रजा की ओर से याहवेह की इच्छा मालूम करो, क्योंकि भयंकर है याहवेह का
क्रोध, जो हमारे लिए भड़का है; क्योंकि हमारे पूर्वजों ने इस पुस्तक के आदेशों
का पालन नहीं किया है. उन्होंने वह सब नहीं किया है, जो इस पुस्तक में हमारे
लिए लिखा है." 14 तब पुरोहित हिलकियाह, अहीकाम, अखबोर, शापान और
असाइयाह हुलदाह नामक स्त्री से भेंटकरने गए, जो एक भविष्यद्वक्ता थी, वह
वस्त्रों के रखवाले शल्लूम की पत्नी थी, जो तिकवाह का पुत्र, हरहास का पोता
था. वह येरूशलेम के मिशनेह क्षेत्र में रहती थी. उन्होंने हुलदाह से सलाह-
मशवरा किया. 15 हुलदा ने उन्हें उत्तर दिया, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
का संदेश यह है 'जिस व्यक्ति ने तुम्हें मुझसे मिलने के लिए भेजा है, उससे यह
कहना, 16 याहवेह का संदेश यह है, "देख लेना, इस देश और इसके वासियों
पर मैं बुराई भेजूंगा; वे सभी बातें, जो यहूदिया के राजा ने पढ़े हैं. 17 क्योंकि
उन्होंने मुझे त्याग दिया है और वे पराए देवताओं के सामने धूप जलाते हैं. वे
अपने हाथ से बनाई हुई सारी वस्तुओं के द्वारा मेरे क्रोध को भड़काएं. इसलिये
इस स्थान के विरुद्ध मेरा क्रोध भड़का है, और मेरा क्रोध शांत न होगा."' 18
मगर यहूदिया के राजा, जिसने, तुम्हें मेरे पास भेजा है, कि मैं याहवेह से उनकी
इच्छा पता करूं, उससे तुम यह कहना: 'याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश
यह है: उन बातों के बारे में, जो तुमने सुनी है: 19 इसलिये कि तुम्हारा मन दीन
है और तुमने खुद को याहवेह के सामने विनम्र बना लिया, जब तुमने मुझे इस
जगह और इसके निवासियों के विरुद्ध कहते सुना, कि वे उजड़ जाएंगे, शाप बन
जाएंगे, तुमने अपने वस्त्र फाड़े और तुमने मेरे सामने विलाप किया है, विश्वास
करो, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है, यह याहवेह की घोषणा है. 20 इसलिये
सुनो, मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों में मिला दूंगा. शान्तिपूर्ण स्थिति में तुम्हारा अंतिम
संस्कार होगा. इस स्थान पर जो बुराई मेरे द्वारा भेजी जाएगी, उसे तुम्हारी आंखें
न देखेंगी.'" यह संदेश उन्होंने राजा को जा सुनाया.

23 इसके बाद राजा ने यहूदिया और येरूशलेम के पुरनियों को बुलाकर उन्हें
इकट्ठा किया. 2 राजा याहवेह के भवन को गया. उसके साथ यहूदिया
और येरूशलेम के निवासी, इनके पुरोहित, भविष्यद्वक्ता और साधारण और
विशेष लोग भी गए थे. राजा ने वाचा की पुस्तक का सारा पाठ पढ़ा; वही
पुस्तक, जो याहवेह के भवन में पाई गई थी, और वे सब सुन रहे थे. 3 राजा
खंभे के पास खड़ा हुआ और याहवेह के सामने यह वाचा बांधी कि वह याहवेह
का अनुसरण करेगा, इस वाचा के एक-एक वचन का पालन करने के लिए वह
उनकी आज्ञाएं, चेतावनियां और नियमों का पालन संपूर्ण हृदय और संपूर्ण प्राणों
से करेगा, जैसा इस पुस्तक में लिखा हुआ है. वहां उपस्थित सारी भीड़ इस
वाचा में शामिल हो गई. 4 राजा ने महापुरोहित हिलकियाह, नीचे के वर्ग के
पुरोहितों और द्वारपालों को आदेश दिया, कि याहवेह के मंदिर में से वे सभी
बर्तन बाहर लाए जाएं, जो बाल, अशेरा और आकाशमंडल के नक्षत्रों के लिए
बनाए गए थे. राजा ने इन बर्तनों को येरूशलेम के बाहर किद्रोन घाटी के मैदानों
में जला दिया और उनकी राख बेथेल ले गया. 5 उसने मूर्ति पूजने वाले उन
पुरोहितों को निकाल दिया, जिन्हें यहूदिया और येरूशलेम के पास के पूजा
स्थलों पर सूर्य, चंद्र, आकाशमंडल के नक्षत्रों और आकाश की शक्तियों के
लिए धूप जलाने के लिए यहूदिया के राजाओं द्वारा चुना गया था. 6 राजा ने
याहवेह के भवन से अशेरा को बाहर निकलवा दिया और येरूशलेम के बाहर
किद्रोन नाले में ले जाकर जला दिया, और उसे पीसकर चूर-चूर कर दिया और
इस चूरे को लोगों पर फेंक दिया. 7 राजा ने पुरुष वेश्याओं के घर भी ढाह दिए,
जो याहवेह के भवन के आंगन में बनाए गए थे, जहां स्त्रियां अशेराह देवी के लिए
दीवार सजाने के वस्त्र बुना करती थी. 8 राजा ने यहूदिया के सारी नगरों से
पुरोहितों को इकट्ठा कर गेबा से बेअरशेबा तक पूजा स्थलों को, जहां पुरोहित
धूप जलाया करते थे, दूषित कर दिया, फिर द्वारों पर प्रतिष्ठित पूजा स्थलों
को अर्थात् जो हाकिम यहोशू के फाटक के पास थे और फाटकों के बायीं
ओर ढाली गई मूर्तियों को नाश कर दिया. 9 फिर भी पूजा स्थलों के पुरोहित
येरूशलेम में याहवेह की वेदी के पास नहीं आए. हां, वे अपने भाइयों के साथ
खमीर रहित रोटी के भोजन में ज़रूर शामिल होते रहे. 10 उसने तोफेथ को
अशुद्ध कर दिया, जो बेन-हिन्नोम घाटी में था, ताकि इसके बाद कोई भी मोलेख
को बलि चढ़ाने के लिए यहां अपने पुत्र या पुत्री को बलि न करे. 11 उसने
याहवेह के भवन के द्वार के निकट से, अधिकारी नाथान-मेलेख के कमरे के
पास से उन घोड़ों की मूर्तियों को, जिन्हें यहूदिया के राजाओं से सूरज को
समर्पित किया हुआ था, आंगन के बाहर कर दिया. फिर उसने सूर्य रथों को
आग में भस्म कर दिया. 12 यहूदिया के राजाओं द्वारा आहाज़ के ऊपरी कमरे
की छत पर बनी वेदियों को और याहवेह के भवन के दोनों आंगनों में मनश्शेह
द्वारा बनाई गई वेदियों को उसने ध्वस्त कर चूर-चूर कर दिया, और उनके चूरे
को किद्रोन नाले में फेंक दिया. 13 राजा ने उन पूजा स्थलों को, जो येरूशलेम
के सामने विनाश के पर्वत के दाईं ओर थे, दूषित कर दिया, जिन्हें इस्राएल के
राजा शलोमोन ने सीदोनिवासियों की घृणित देवी अश्तोरेथ के लिए, मोआब
के घृणित देवता खेमोश और अम्मोनवासियों के घृणित देवता मिलकाम के
लिए बनवाया था. 14 राजा ने मीनारों को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, अशेरा की
मूर्तियों को काट डाला, और उन खाली स्थानों को मानव हड्डियों से भर दिया.
15 इसके अलावा उस वेदी को, जो बेथेल में बनाई गई थी और वह पूजा-स्थल,
जिसको नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने बनवाया था, जिसने इस्राएल को पाप करने
के लिए उकसाया था, इसी वेदी और पूजा-स्थल को उसने ढाह दिया, उन्हें
पीसकर चूरा बना दिया और अशेरा को भस्म कर डाला. 16 यह करते हुए जैसे
ही योशियाह मुड़ा, उसकी दृष्टि पहाड़ में खोदी गई कब्रों की गुफाओं पर गई.
उसने सेवक भेज उनमें से अस्थियां निकलवा लीं, उन्हें वेदी पर जलाकर वेदी
को दूषित किया, ठीक जैसा परमेश्वर के जन ने याहवेह के संदेश के अनुसार
घोषणा की थी. 17 तब राजा ने पूछा, "वह किसका स्मारक है, जो मैं इस समय
देख रहा हूं?" लोगों ने राजा को बताया, "यह परमेश्वर के उन्हीं जनों की कब्र
की गुफा है, जो यहूदिया से आए थे और आपने जो कुछ आज देवता बाल की
वेदी के साथ किया है, उन्होंने उसकी भविष्यवाणी कर दी थी." 18 राजा ने
आदेश दिया, "उसे ऐसा ही रहने दिया जाए. कोई भी उसकी अस्थियों को न
हटाए." तब उन्होंने उनकी अस्थियों को नहीं छुआ और उन्हें शमरिया के

भविष्यद्वक्ता की अस्थियों के साथ ही रहने दिया. 19 योशियाह ने शमरिया
राज्य के नगरों में पूजा स्थलों के भवनों को गिरा दिया, जो इस्राएल के राजाओं
द्वारा बनाए गए थे, जिनके कारण याहवेह का क्रोध भड़क उठा था. राजा ने
उनके साथ वही किया, जो उसने बेथेल की वेदियों के साथ किया था. 20 उसने
पूजा स्थलों के सारे पुरोहितों को उन्हीं की वेदियों पर मारकर उन पर मनुष्यों
की अस्थियां जला दीं. फिर वह येरूशलेम लौट गया. 21 राजा ने सभी लोगों
को आदेश दिया, "जैसा वाचा की पुस्तक में लिखा है, याहवेह, अपने परमेश्वर
के लिए फ़सह उत्सव मनाया जाए." 22 इस्राएल पर न्यायियों के शासनकाल से
या इस्राएल के राजाओं के शासनकाल से या यहूदिया के राजाओं के शासनकाल
से अब तक फ़सह उत्सव मनाया ही नहीं गया था. 23 मगर राजा योशियाह के
शासनकाल के अठारहवें साल में येरूशलेम में याहवेह के लिए यह फ़सह उत्सव
मनाया गया. 24 इसके अलावा, प्रेत-साधकों, टोन्हों, गृह-देवताओं, मूर्तियों
और सारे यहूदिया राज्य और येरूशलेम की हर एक घृणित वस्तु को हटा दिया
गया, कि राजा उस पुस्तक में लिखी विधियों की पुष्टि कर सके, जो पुस्तक
पुरोहित हिलकियाह को याहवेह के भवन में मिली थी. 25 इसके पहले ऐसा
कोई भी राजा न हुआ, जो मोशेह की व्यवस्था के अनुसार अपने पूरे हृदय, पूरे
प्राण और पूरी सामर्थ्य से याहवेह की ओर फिरा हो; वैसे ही उसके बाद भी
उसके बराबर और कोई राजा न हुआ. 26 इतना सब होने पर भी याहवेह का वह
भयंकर क्रोध, जो यहूदिया के विरुद्ध भड़का था, शांत न हुआ, क्योंकि मनश्शेह
ने अपनी सारी हरकतों के द्वारा उनका क्रोध भड़का दिया था. 27 याहवेह ने
कहा, "मैं यहूदिया को भी अपनी दृष्टि से दूर कर दूंगा, जैसे मैंने इस्राएल को दूर
किया है. मैं इस नगर, येरूशलेम को भी छोड़ दूंगा, जिसे मैंने खुद चुना और
उस मंदिर को भी, जिसके विषय में मैंने यह घोषणा की थी: 'इस स्थान पर
मेरी महिमा रहेगी.'" 28 योशियाह द्वारा किए गए अन्य कामों और उसकी
उपलब्धियों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया
गया है. 29 उसके शासनकाल में मिस्र का राजा फ़रोह नेको, अश्शूर के राजा से
भेंटकरने फरात नदी की ओर बढ़ा. राजा योशियाह उससे भेंटकरने के उद्देश्य से
वहां गया. उसे मगिद्दो में देखते ही फ़रोह नेको ने उसकी हत्या कर दी. 30
उसके सेवक उसकी मृत देह को रथ में मगिद्दो से येरूशलेम लाए, और उसे
उसी की कब्र की गुफा में रख दिया. प्रजा ने योशियाह के पुत्र यहोआहाज़ का
राजाभिषेक कर उसके पिता के स्थान पर उसे राजा बनाया. 31 शासन शुरू
करते हुए यहोआहाज़ की उम्र तेईस साल थी. येरूशलेम में उसने तीन महीने
शासन किया. उसकी माता का नाम हामुतल था. वह लिबनाहवासी येरेमियाह
की पुत्री थी. 32 यहोआहाज़ ने अपने पूर्वजों के समान वही सब किया, जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था. 33 फ़रोह नेको ने उसे बंदी बनाकर हामाथ देश के
रिबलाह नगर में रखा, कि वह येरूशलेम में शासन न कर सके. उसने राष्ट्र पर
तीन टन, पांच क्विंटल चांदी और पैंतीस किलो सोने का जुर्माना लगा दिया. 34
फ़रोह नेको ने योशियाह के पुत्र एलियाकिम को उसके पिता योशियाह के स्थान
पर शासक बना दिया, और उसका नाम बदलकर यहोइयाकिम रख दिया, मगर
वह यहोआहाज़ को अपने साथ मिस्र ले गया, वहीं यहोआहाज़ की मृत्यु हो गई.
35 यहोइयाकिम ने फ़रोह नेको को सोना और चांदी उपहार में तो दिए, मगर
इसके लिए उसने देश पर कर लगा दिया, कि फ़रोह के आदेश के अनुसार उसे
वह धनराशि चुकाए. इसलिये वह अपने ही आंकलन के आधार पर प्रजा से
ज़बरदस्ती सोना और चांदी लेने लगा. 36 यहोइयाकिम ने जिस समय शासन
शुरू किया, उसकी उम्र पच्चीस साल थी. येरूशलेम में उसने ग्यारह साल शासन
किया. उसकी माता का नाम ज़ेबिदा था. वह रूमाहवासी पेदाइयाह की पुत्री थी.
37 यहोइयाकिम ने अपने पूर्वजों के समान वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में
गलत था.

24 यहोइयाकिम के शासनकाल में बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने देश पर
हमला किया. फलस्वरूप उसे तीन साल तक नबूकदनेज्ज़र के अधीन
रहना पड़ा. इसके बाद उसने नबूकदनेज्ज़र के विरुद्ध विद्रोह कर दिया. 2 याहवेह
ने उसके विरुद्ध कादी, अश्शूर, मोआबी और अम्मोनी लुटेरे दल भेज दिए, कि
ये दल यहूदिया को नष्ट कर दें. यह याहवेह की उस भविष्यवाणी के अनुसार
हुआ जो याहवेह ने अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं द्वारा की थी. 3 यह तय था
कि यहूदिया पर यह सब याहवेह के आदेश पर ही हुआ, कि वह उन्हें अपनी
दृष्टि से दूर कर दें; मनश्शेह के पापों के कारण, उसके द्वारा किए गए कामों के
अनुसार. 4 साथ ही उसके द्वारा बहाए गए निर्दोषों के लहू के कारण; क्योंकि
मनश्शेह ने येरूशलेम को निर्दोषों के लहू से भर दिया था, जिसे याहवेह ने
क्षमा नहीं किया. 5 यहोइयाकिम द्वारा किए गए अन्य कामों और उसकी
उपलब्धियों का ब्यौरा यहूदिया के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में दिया
गया है. 6 तब यहोइयाकिम हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला. उसके
स्थान पर उसके पुत्र यहोइयाखिन ने शासन शुरू किया. 7 मिस्र देश का राजा
फिर कभी अपने देश से बाहर नहीं आया, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र
देश के नाले से लेकर फरात नदी तक, मिस्र देश के राजा की सारी संपत्ति
छीन ली थी. 8 यहोइयाखिन ने जब शासन करना शुरू किया तब उसकी उम्र
अठारह साल थी. येरूशलेम में उसने तीन महीने तक शासन किया. उसकी माता
का नाम नेहुष्ता था. वह येरूशलेमवासी एल-नाथान की पुत्री थी. 9 उसने
अपने पूर्वजों के समान वही सब किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है. 10
उसके शासनकाल में बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के सेना के अधिकारियों ने
येरूशलेम आकर उसे घेराबंदी कर लिया. 11 जब उसके सेना के अधिकारी
नगर को घेरे हुए ही थे, तब बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र स्वयं नगर को आया.
12 यहूदिया के राजा यहोइयाखिन ने बाबेल के राजा के सामने आत्मसमर्पण कर
दिया; स्वयं उसने, उसकी माता ने, उसके सेवकों ने, उसके सेना अधिकारियों
ने, और उसके राजघराने के सेवकों ने. यह उसके शासनकाल का आठवां साल
था, जब बाबेल के राजा ने उसे बंदी बनाया. 13 वहां से उसने याहवेह के मंदिर
और राजघराने के सारे खजानों को निकालकर अपने साथ ले गया. उसने
इस्राएल के राजा शलोमोन द्वारा याहवेह के मंदिर के लिए याहवेह के आदेश के
अनुसार ढाले गए सारे सोने के बर्तनों को तोड़ डाला. यह सब याहवेह की
भविष्यवाणी के अनुसार ही हुआ. 14 वह अपने साथ सारे येरूशलेम, सारे
अधिकारियों, सारे वीर योद्धाओं, सारे शिल्पियों और धातु शिल्पियों को अपने
साथ बंधुआई में ले गया—कुल दस हज़ार बंदियों को. वहां कोई भी बचा न रह
गया; सिवाय देश के कंगाल नागरिकों के. 15 वह यहोइयाखिन को अपने साथ
बंधुआई में बाबेल ले गया; उसके अलावा राजमाता, राजा की पत्नियों, उसके
अधिकारियों और देश के बड़े-बड़े लोगों को भी वह येरूशलेम से बंधुआई में
बाबेल ले गया. 16 सभी सात हज़ार वीर योद्धा, एक हज़ार शिल्पी और धातु
शिल्पी, जो सभी युद्ध के लिए सक्षम थे. जिन्हें बाबेल का राजा बंधुआई में
बाबेल ले आया. 17 बाबेल के राजा ने यहोइयाखिन के चाचा मत्तनियाह को
उसके स्थान पर राजा ठहरा दिया और उसका नाम बदलकर सीदकियाहू रख
दिया. 18 जब सीदकियाहू ने शासन शुरू किया उसकी उम्र इक्कीस साल थी.
येरूशलेम में उसने ग्यारह साल शासन किया. उसकी माता का नाम हामुतल था.
वह लिबनाहवासी येरेमियाह की पुत्री थी. 19 उसने वह किया, जो याहवेह की
दृष्टि में बुरा था—वही सब, जो यहोइयाकिम ने किया था. 20 वस्तुतः येरूशलेम
और यहूदिया ने याहवेह को इस सीमा तक क्रोधित कर दिया था, कि याहवेह ने
उन्हें अपनी नज़रों से ही दूर कर दिया. सीदकियाहू ने बाबेल के राजा के विरुद्ध
विद्रोह कर दिया.

25 राजा सीदकियाह् के शासन के नवें साल के दसवें महीने के दसवें दिन,
बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने अपनी सारी सेना के साथ आकर
येरूशलेम को घेर लिया, उसके आस-पास छावनी डाल दी और इसके चारों
ओर घेराबंदी की दीवार बना ली. 2 राजा सीदकियाह् के शासन के ग्यारहवें
साल तक नगर घिरा रहा. 3 चौथे महीने के नवें दिन से नगर में अकाल ऐसा
भयंकर हो गया कि नागरिकों के लिए कुछ भी भोजन न बचा. 4 तब उन्होंने
शहरपनाह को तोड़ डाली और रात में सारे योद्धा दो दीवारों के बीच की द्वार से,
जो राजा की वाटिका के पास थी, निकल भागे. कसदी इस समय नगर को घेरे
हुए थे. ये योद्धा अराबाह की दिशा में आगे बढ़ते गए, 5 मगर कसदियों की
सेना ने राजा का पीछा किया और येरीख़ो के मैदान में उसे पकड़ लिया, इस
कारण सारी यहूदी सेना बिखर गई. 6 उन्होंने राजा को बंदी बनाकर रिबलाह में
बाबेल के राजा के सामने पेश किया. उस पर दंड की आज्ञा दी गई. 7 उन्होंने
सीदकियाह् के पुत्रों का वहीं, उसी के देखते-देखते वध कर दिया. इसके
बाद उन्होंने सीदकियाह् की आंखें निकाल लीं और उसे कांसे की सांकलों
में बांधकर बाबेल ले गए. 8 बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के राज्य-काल
का उन्नीसवां वर्ष, पांचवें माह के सातवां दिन, बाबेल के राजा का सेवक,
अंगरक्षकों को प्रधान, नेबुज़रादान येरूशलेम आ गया. 9 उसने याहवेह के भवन
में, राजमहल में और येरूशलेम के सभी भवनों में आग लगा दी. हर एक अच्छा
भवन भस्म कर दिया गया. 10 अंगरक्षकों के प्रधान के साथ आई हुई कसदी
सेना ने मिलकर येरूशलेम के चारों ओर बनाई हुई दीवारों को ढाह दिया. 11
उन सभी को, जो नगर में बाकी रह गए थे, और जो बाबेल के राजा की ओर
भाग गये थे, और दूसरे लोगों को भी, अंगरक्षकों का प्रधान नेबुज़रादान बंदी
बनाकर बंधुआई में ले गया; 12 मगर देश के कुछ कंगाल लोगों को अंगरक्षकों
के प्रधान ने वहीं छोड़ दिया कि वे वहां रहकर अंगूर की उपज की देखभाल
करें और भूमि पर हल चलाते रहें. 13 याहवेह के मंदिर के कांस्य स्तंभ, कांस्य
के आधार तथा कांस्य जलबर्तनों को कसदी तोड़कर उनके टुकड़ों को बाबेल
ले गए. 14 वे याहवेह के भवन के पवित्र बर्तन, फावड़े, चिमटे तथा सभी कांस्य
बर्तन, जो मंदिर में आराधना के लिए उपयोग होते थे, ये सब अपने साथ ले गए;
15 इनके अलावा आग के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तन और कटोरे भी.
अंगरक्षकों का प्रधान वह सब जो सोने और चांदी का था, अपने साथ ले गया.
16 दो स्तंभ, एक विशाल जल बर्तन, उनके आधार, जो शलोमोन द्वारा याहवेह के
भवन में उपयोग के लिए निर्मित किए गए थे, इन सबका कांस्य अतुलनीय था.
17 एक-एक खंभे की ऊंचाई लगभग आठ मीटर थी, जिसका सिर कांसे का
था. इस सिर की ऊंचाई लगभग डेढ़ मीटर थी. सिर के चारों ओर जाली और
अनार की आकृति गढ़ी हुई थी. यह सभी कुछ कांसे का था. दूसरे खंभे पर भी
इसी प्रकार की जालीदार आकृतियां थी. 18 इसके बाद अंगरक्षकों के प्रधान ने
प्रमुख पुरोहित सेराइयाह, सहपुरोहित ज़ेफनियाह, और तीन मंदिर द्वारपालों को,
19 नगर में से सैनिकों के पर्यवेक्षक अधिकारी तथा राजा के पांच सलाहकारों
को जो वहीं नगर में थे, तथा सेनापति के सचिव को, जो देश के लोगों को सेना
में भर्ती करता था, तथा देश के साठ व्यक्तियों को जो उस समय नगर में पाए
गए थे, अपने साथ बंदी बनाकर ले गया. 20 नेबुज़रादान, जो अंगरक्षकों का
प्रधान था, उसने इन सभी को रिबलाह ले जाकर बाबेल के राजा के समक्ष
प्रस्तुत कर दिया. 21 तब बाबेल के राजा ने हामाथ देश के रिबलाह नगर में इन
सभी का वध कर दिया. इस प्रकार यहूदिया के निवासी अपने देश से बंधुआई में
ले जाया गया. 22 कुछ प्रजा के लोग, जिन्हें बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने
यहूदिया में रहने के लिए छोड़ दिया था, उनके लिए नबूकदनेज्ज़र ने शापान के
पोते, अहीकाम के पुत्र, गेदालियाह को राज्यपाल बना दिया. 23 जब सारे
सेनाधिकारियों और उनके सैनिकों ने यह सुना कि बाबेल के राजा ने गेदालियाह
को राज्यपाल बना दिया है, वे सब अपने सैनिकों के साथ गेदालियाह से मिलने
मिज़पाह आ गए, उनमें ये भी शामिल थे: नेथनियाह का पुत्र इशमाएल, कोरियाह
का पुत्र योहानन नेतोफ़ातवासी तनहूमेथ का पुत्र सेराइयाह, एक माकाहथिवासी
का पुत्र यात्सानिया. 24 गेदालियाह ने उनके और सैनिकों के सामने शपथ लेते
हुए कहा, “कसदी सैनिकों से डरने की ज़रूरत नहीं. यहीं देश में रहो, और
बाबेल के राजा की सेवा में बने रहो, तो तुम्हारा भला ही होगा.” 25 मगर सातवें
महीने में राजपरिवार के एलीशामा के पोते, नेथनियाह के पुत्र, इशमाएल ने दस
सैनिकों के साथ जाकर गेदालियाह पर ऐसा वार किया कि उसकी मृत्यु हो गई.
उसके अलावा उन यहूदियों और कसदियों का भी वध कर दिया, जो उस
समय मिज़पाह में उसके साथ थे. 26 इसके कारण सभी प्रजा के लोग; सामान्य
और विशेष, सेना अधिकारियों के साथ मिस्र देश को भाग गए क्योंकि उन्हें
कसदियों का डर था. 27 यहूदिया के राजा यहोइयाखिन के बंधुआई के सैंतीसवें
साल के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन, बाबेल के राजा एवील-मेरोदाख ने,
जिस साल उसने शासन शुरू किया, यहूदिया के राजा यहोइयाखिन को जेल से
रिहा कर दिया. 28 उसने उससे कृपाभाव में वार्तालाप किया तथा उसके लिए
उन राजाओं से उच्चतर स्थान पर सिंहासन स्थापित किया, जो बाबेल में इस
समय उसके साथ थे. 29 तब यहोइयाखिन ने कारागार के वस्त्र छोड़ दिए, और
वह मृत्युपर्यंत राजा के साथ भोजन करता रहा. 30 बाबेल के राजा की ओर से
उसे नियमित रूप से उपवेतन दिया जाता रहा, तथा मृत्युपर्यंत उसकी दैनिक
आवश्यकताएं पूर्ण की जाती रहीं.

1 इतिहास

1 आदम, शेत, एनोश, 2 केनान, माहालालेल, यारेद, 3 हनोख, मेथुसेलाह,
लामेख, नोआ. 4 नोआ के पुत्र: शेम, हाम और याफेत. 5 याफेत के पुत्र:
गोमर, मागोग, मेदिया, यावन, तूबल, मेशेख तथा तिरास थे. 6 गोमर के पुत्र:
अश्केनाज, रिफात तथा तोगरमाह थे. 7 यावन के पुत्र: एलिशाह, तरशीश,
कित्तिम तथा दोदानिम थे. 8 हाम के पुत्र: कूश, मिस्र, पूट तथा कनान हुए. 9
कूश के पुत्र: सेबा, हाविलाह, सबताह, रामाह और सबतेका. रामाह के पुत्र: शीबा
और देदान. 10 कूश उस निमरोद का पिता था जो पृथ्वी पर पहले वीर व्यक्ति के
रूप में मशहूर हुआ. 11 मिस्र के पुत्र: लूदिम, अनामिम, लेहाबिम, नाफ़तुहि, 12
पथरूस, कस्लूह और काफ़तोर (जिनसे फिलिस्तीनी राष्ट्र निकले). 13 कनान
का पहला पुत्र सीदोन फिर हित्ती, 14 यबूसी, अमोरी, गिर्गाशी, 15 हिव्वी,
आरकी, सीनी, 16 अरवादी, ज़ेमारी और हामाथी. 17 शेम के पुत्र: एलाम,
अशहूर, अरफाक्साद, लूद तथा अराम थे. अराम के पुत्र: उज़, हूल, गेथर तथा
मेशेख थे. 18 अरफाक्साद शेलाह का पिता था, शेलाह एबर का. 19 एबर के
दो पुत्र हुए: एक का नाम पेलेग, क्योंकि उनके समय में पृथ्वी का बंटवारा हुआ.
उनके भाई का नाम योकतान था. 20 योकतान के पुत्र: अलमोदाद, शेलेफ,
हासारमेबेथ, जेराह, 21 हादरोम, उजाल, दिखलाह, 22 ओबाल, अबीमाएल,
शीबा, 23 ओफीर, हाविलाह और योबाब. ये सभी योकतान के पुत्र थे. 24 शेम,
अरफाक्साद, शेलाह, 25 एबर, पेलेग, रेउ, 26 सेरूग, नाहोर, तेराह, 27 अब्राम
(अर्थात् अब्राहाम). 28 अब्राहाम के पुत्र थे: यित्सहाक और इशमाएल. 29
उनकी वंशावली इस प्रकार है: इशमाएल का पहलौठा था: नेबाइयोथ और दूसरे
पुत्र थे, केदार, अदबील, मिबसाम, 30 मिशमा, दूमाह, मास्सा, हदद, तेमा, 31
येतुर, नाफिश और केदेमाह. ये इशमाएल के पुत्र थे. 32 केतुराह जो अब्राहाम
की रखैल थी, उसके पुत्र थे: ज़िमरान, योकशान, मेदान, मिदियान, इशबक और
शुआह. योकशान के पुत्र थे, शीबा और देदान. 33 मिदियान के पुत्र: एफाह,
एफ़र, हनोख, अविदा तथा एलदाह थे. ये सब केतुराह से पैदा हुए थे. 34
अब्राहाम यित्सहाक के पिता थे. यित्सहाक के पुत्र थे: एसाव और इस्राएल. 35
एसाव के पुत्र थे: एलिफाज़, रियूएल, योउश, यालम और कोराह. 36 एलिफाज़
के पुत्र थे: तेमान, ओमर, ज़ेफो, गाताम, केनाज़; तिम्ना और अमालेक. 37
रियूएल के पुत्र थे: नाहाथ, ज़ेराह, शम्माह और मिज्जाह. 38 सेईर के पुत्र थे:
लोतन, शोबल, ज़िबेओन, अनाह, दिशोन, एज़र और दिशान. 39 लोतन के पुत्र:
होरी और होमाम. लोतन की बहन का नाम तिम्ना था. 40 शोबल के पुत्र थे:
अलवान, मानाहाथ, एबल, शेफो और ओनम. ज़िबेओन के पुत्र: अइयाह और
अनाह. 41 अनाह का पुत्र था दिशोन. दिशोन के पुत्र: हेमदान, एशबान, इथरान
और चेरन. 42 एज़र के पुत्र: बिलहान, त्सावन और आकन. दिशान के पुत्र: उज़
और अरान. 43 इसके पहले कि इस्राएल पर किसी राजा का शासन होता,
एदोम देश पर राज्य करनेवाले राजा ये थे: बेओर का पुत्र बेला, उसके द्वारा
शासित नगर का नाम था दिनहाबाह. 44 बेला के मरने के बाद, उसके स्थान पर
बोज़राहवासी ज़ेराह का पुत्र योबाब राजा बना. 45 योबाब के मरने के बाद,
उसके स्थान पर तेमानियों के देश का व्यक्ति हुशाम राजा बना. 46 हुशाम के मरने
के बाद, उसके स्थान पर बेदद का पुत्र हदद राजा बना. उसने मोआब देश में
मिदियानी सेना को हरा दिया. उसके द्वारा शासित नगर का नाम था आविथ. 47
हदद के मरने के बाद, उसके स्थान पर मसरेकाह का सामलाह राजा बना. 48
सामलाह के मरने के बाद, फरात नदी पर बसे रेहोबोथ का निवासी शाऊल उनके
स्थान पर राजा बना. 49 शाऊल के मरने के बाद, उसके स्थान पर अखबोर का
पुत्र बाल-हनन राजा बना. 50 बाल-हनन मरने के बाद, उसके स्थान पर हदद
राजा बना. उस नगर का नाम पाऊ था तथा उसकी पत्नी का नाम मेहेताबेल था.
वह मातरेद की पुत्री थी और मातरेद मेत्साहब की पुत्री थी. 51 तब हदद की भी
मृत्यु हो गई. एदोम देश के नायकों के नाम ये है: नायक तिम्ना, अलवाह,
यथेथ, 52 ओहोलिबामाह, एलाह, पिनोन, 53 केनाज़, तेमान, मिबज़ार, 54
मगदिएल, इराम. ये सभी एदोम देश के प्रधान हुए.

2 इस्राएल के पुत्रों के नाम ये है: रियूबेन, शिमओन, लेवी, यहूदाह, इस्साखार,
ज़ेबुलून, 2 दान, योसेफ़, बिन्यामिन, नफताली, गाद और आशेर. 3 यहूदाह
के पुत्र: एर, ओनान और शेलाह. ये तीनों कनानी शुआ की पुत्री से पैदा हुए थे.
(एर, यहूदाह का पहलौठा याहवेह की दृष्टि में दुष्ट था; इसलिये याहवेह ने उसके
प्राण ले लिए.) 4 यहूदाह की पुत्र-वधू तामार से उन्हें पेरेज़ और ज़ेराह पैदा हुए.
यहूदाह गोत्र पांच पुत्र थे. 5 पेरेज़ के पुत्र: हेज़रोन और हामुल. 6 ज़ेराह के पुत्र:
ज़िमरी, एथन, हेमान, कालकोल और दारा, कुल पांच पुत्र. 7 कारमी के पुत्र:
आखान, अर्थात् इस्राएल की विपदा, जिसने भेंट किए हुए सामान को लेकर
आज्ञा तोड़ी थी; 8 एथन का पुत्र: अज़रियाह. 9 हेज़रोन के पुत्र, जो उसे
पैदा हुए: येराहमील, राम और केलब. 10 राम पिता था अम्मीनादाब का और
अम्मीनादाब नाहशोन का, जो यहूदाह के पुत्रों का नायक हुआ; 11 नाहशोन
पिता था सालमा का, सालमा बोअज़ का, 12 बोअज़ ओबेद का, ओबेद, यिशै
का. 13 येस्सी का पहलौठा था एलियाब, दूसरा अबीनादाब, तीसरा शिमिया,
14 चौथा नेथानेल, पांचवा रद्दाई, 15 छठवां ओज़ेम और सातवां दावीद. 16
उनकी बहनें थी, ज़ेरुइयाह और अबीगइल. ज़ेरुइयाह के तीन पुत्र थे अबीशाई,
योआब और आसाहेल. 17 अबीगइल ने अमासा को जन्म दिया. जिसका पिता
था इशमाएली मूल का येथेर. 18 हेज़रोन के पुत्र कालेब को उसकी पत्नी अत्सूबा
और येरिओथ से ये पुत्र पैदा हुए: येशर, शोबाब और अर्दोन. 19 जब अत्सूबा
की मृत्यु हुई, कालेब ने एफ़राथा से विवाह कर लिया, जिसने हूर को जन्म दिया.
20 हूर उरी का पिता हुआ और उरी बसलेल का. 21 इसके बाद में हेज़रोन ने
माखीर की पुत्री से संबंध बनाया, माखीर गिलआद का पिता था. उसने साठ वर्ष
की उम्र में उससे विवाह किया और उससे सेगूब का जन्म हुआ. 22 सेगूब याईर
का पिता हुआ, जो गिलआद में तेईस नगरों का स्वामी था. 23 (किंतु गेशूर और
अराम ने हव्वोथ-याईर, केनाथ और इन क्षेत्रों के साठ गांव इनसे छीन लिए.) ये
सभी गिलआद के पिता माखीर के वंश के थे. 24 कालेब-एफ़राथा में हेज़रोन
की मृत्यु के बाद हेस्रोन की पत्नी अबीयाह ने अशहूर को जन्म दिया, जो तकोआ
का पिता था. 25 हेज़रोन के पहलौठे येराहमील के पुत्र थे: पहलौठा राम, इसके
बाद बूना, औरेन, ओज़ेम और अहीयाह. 26 येराहमील की एक अन्य पत्नी भी
थी, जिसका नाम था अटाराह; जो ओनम की माता थी. 27 येराहमील के
पहलौठे राम के पुत्र: माअज़, यामिन और एकर. 28 ओनम के पुत्र: शम्माई और
यादा. शम्माई के पुत्र: नादाब और अबीशूर. 29 अबीशूर की पत्नी का नाम था
अबीहाइल, जिससे आहबान और मोलिद का जन्म हुआ. 30 नादाब के पुत्र:
सेलेद और अप्पाईम. सेलेद निःसंतान ही मर गया. 31 अप्पाईम का पुत्र: इशी
था, इशी का शेशान, शेशान का अहलाई. 32 शम्माई के भाई यादा के पुत्र: येथेर
और योनातन थे. येथेर निःसंतान ही चल बसा. 33 योनातन के पुत्र थे: पेलेथ
और ज़ाज़ा. ये थे येराहमील के वंशज. 34 शेशान के कोई पुत्र न हुआ, उसके
सिर्फ पुत्रियां ही पैदा हुईं. शेशान का यारहा नामक एक मिस्री दास था. 35 शेशान
ने अपनी पुत्री का विवाह अपने इसी दास से कर दिया. जिससे अत्तई का जन्म
हुआ. 36 अत्तई नाथान का पिता था, नाथान ज़ाबाद का, 37 ज़ाबाद एफलाल
का, एफलाल ओबेद का पिता था. 38 ओबेद येहू का, और येहू अज़रियाह का.
39 अज़रियाह हेलेस का, और हेलेस एलासाह का. 40 एलासाह सिसमाई
का, और सिसमाई शल्लूम का. 41 शल्लूम येकामियाह का, और येकामियाह
एलीशामा का. 42 येराहमील के भाई कालेब के पुत्र: उसका पहलौठा मेषा, जो
ज़ीफ़ का पिता था, और दूसरा मारेशाह हेब्रोन का. 43 हेब्रोन के पुत्र: कोराह,

तप्पूआह, रेकेम और शेमा. 44 रेहाम का पिता था शेमा, जो योरकिअम का पिता
था, और रेकेम शम्माई का पिता था. 45 शम्माई का पुत्र था माओन; माओन
बेथ-त्सूर का पिता था. 46 कालेब की उप-पत्नी एफ़ाह ने, हारान, मोत्सा और
गज्ज़ा को जन्म दिया, और हारान गज्ज़ा का पिता हुआ. 47 याहदाई के पुत्र:
रेगेम, योथाम, गेशन, पेलेत, एफ़ाह और शाफ़. 48 कालेब की उप-पत्नी माकाह
ने, शेबर और तिरहाना को जन्म दिया. 49 उसने शाफ़ को भी जन्म दिया, जो
मदमन्नाह का पिता था और शेवा को भी, जो मकबेनाह और गिबिया का पिता
था. कालेब की पुत्री का नाम अक्सा था. 50 ये सभी कालेब के वंश के थे.
एफ़राथाह के पहलौठे हूर के पुत्र: किरयथ-यआरीम का पिता शोबल, 51
बेथलेहेम का पिता सालमा और बेथ-गादर का पिता हारेफ़ 52 किरयथ-यआरीम
के पिता शोबल के अन्य पुत्र भी थे हारोएह: मेनुहोथ नगरवासियों का आधा
भाग, 53 और किरयथ-यआरीम नगर के परिवार: इथरी, पुथी, शुमार्थी और
मिशराई. इन्हीं से सोराही और एशताओली वंश के लोग पैदा हुए. 54 सालमा
के पुत्र: बेथलेहेम, नेतोफ़ाथी, अतारोथ-बेथ-योआब और आधे सोरि मानाहाथी,
55 याबेज़ नगरवासी शास्त्रियों के वंशज: तीराही, शिमियाथी और सुकाथी. ये
केनी जाति के वे लोग हैं, जो हम्माथ से आए थे, जो रेखाब वंश का मूल था.

3 निम्न लिखित दावीद के वे पुत्र हैं, जिनका जन्म हेब्रोन में हुआ था: पहलौठा
अम्मोन, जो येज़्रीलवासी अहीनोअम से पैदा हुआ था; दूसरा दानिएल,
जिसका जन्म कर्मेल अबीगइल से; 2 तीसरा अबशालोम, जिसका जन्म माकाह
से हुआ, जो गेशूर के राजा तालमाई की पुत्री थी; चौथा पुत्र था अदोनियाह,
जिसकी माता थी हेग्गीथ; 3 पांचवा पुत्र था शेपाथियाह जिसकी माता थी
अबीताल; छठा इथ्रियाम, जिसका जन्म दावीद की पत्नी एग्लाह से हुआ. 4
हेब्रोन में दावीद के, जहां उन्होंने साढ़े सात साल शासन किया था, छः पुत्र पैदा
हुए. येरूशलेम में उन्होंने तैंतीस साल शासन किया. 5 येरूशलेम में अम्मिएल
की पुत्री बाथशुआ से उनकी ये चार संतान पैदा हुईं: शिमिया, शोबाब, नाथान
और शलोमोन. 6 इसके बाद इबहार, एलीशामा, एलिफेलेत, 7 नोगाह, नेफ़ेग,
याफिया, 8 एलीशामा, एलियादा और एलिफेलेत-कुल नौ पुत्र. 9 ये सभी
दावीद के पुत्र थे उन पुत्रों के अलावा, जो उनकी उपपत्नियों से पैदा हुए थे.
इनकी तामार नाम की एक बहन थी. 10 शलोमोन का पुत्र रिहोबोयाम, उसका
पुत्र अबीयाह, उसका पुत्र आसा और उसका पुत्र यहोशाफ़ात था, 11 उसका पुत्र
यहोराम, उसका पुत्र अहज़्याह, उसका पुत्र योआश, 12 उसका पुत्र अमाज़्याह,
उसका पुत्र अज़रियाह, उसका पुत्र योथाम, 13 उसका पुत्र आहाज़, उसका
पुत्र हिज़किय्याह, उसका पुत्र मनश्शेह, 14 उसका पुत्र अमोन, उसका पुत्र
योशियाह, 15 योशियाह के पुत्र: पहिलौंठा योहानन, दूसरा यहोइयाकिम,
तीसरा सीदकियाहू, व चौथा शल्लूम, 16 यहोइयाकिम के पुत्र थे यकोनियाह:
(या यहोइयाखिन) उसका पुत्र सीदकियाहू. 17 बंदी यकोनियाह के पुत्र:
शिअलतिएल और 18 मालखीरम, पेदाइयाह, शेनात्सार, येकामियाह, होशामा
और नेदाबियाह. 19 पेदाइयाह के पुत्र: ज़ेरूब्बाबेल और शिमेई. ज़ेरूब्बाबेल के
पुत्र: मेशुल्लाम और हननियाह. उनकी बहन का नाम शेलोमीथ था. 20 इनके
अलावा हशूबाह, ओहेल, बेरेखियाह, हसादिया और यूशबहेसेद, जो पांच पुत्र थे.
21 हननियाह के पुत्र: पेलातियाह और येशाइयाह, उसका पुत्र रेफ़ाइयाह, उसका
पुत्र आरनन, उसका पुत्र ओबदिया, उसका पुत्र शेकानियाह. 22 शेकानियाह का
पुत्र शेमायाह: शेमायाह के पुत्र थे: हत्तुष, यिगाल, बारियाह, नेअरियाह और
शाफात, कुल छः भाई. 23 नेअरियाह के पुत्र: एलिओएनाइ, हिज़किय्याह और
अज़रीकाम—ये तीन थे. 24 एलिओएनाइ के पुत्र: होदवियाह, एलियाशिब,
पेलाइयाह अक्कूब, योहानन, देलाइयाह और अनानी, जो सात भाई थे.

4 यहूदाह के पुत्र: पेरेज़, हेज़रोन, कारमी, हूर और शोबल. 2 शोबल का
पुत्र रेआइयाह याहाथ का पिता था, याहाथ अहूमाई और लाहाद का. ये
सोराहियों के मूल पुरुष थे. 3 एथाम के पुत्र ये थे: येज़्रील, इशमा और इदबाश.
इनकी बहन का नाम था हासलेलपोनी. 4 पेनुएल गेदोर का पिता हुआ और एज़र
हुशाह का. बेथलेहेम के पिता, एफ़राथा के पहलौठे हूर के पुत्र ये थे 5 अशहूर,
तकोआ के पिता की दो पत्नियां थी, हेलाह और नाराह. 6 नाराह ने उसके लिए
अहुज्ज़ाम, हेफेर, तेमेनी और हाअहाष्तारी को जन्म दिया. ये सभी नाराह के
पुत्र थे. 7 हेलाह के पुत्र: ज़ेरेथ, ज़ोहार, एथनन. 8 और कोज़ पिता था अनूब
तथा ज़ोबेबाह का और अहरहेल के वंश का पिता था हारूम. 9 याबेज़ अपने
भाइयों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतिष्ठित था. उसकी माता ने उसे याबेज़ नाम
यह कहकर दिया था, "क्योंकि मैंने उसे दर्द के साथ जन्म दिया है." 10
याबेज़ ने इस्राएल के परमेश्वर की यह दोहाई दी, "आप मुझे आशीष दें और
मेरी सीमाओं को बढ़ाएं! इसके अलावा आप मेरे साथ रहते हुए सारी बुराइयों
को मुझसे दूर रखें, कि मैं उससे बचा रह सकूं." परमेश्वर ने उसकी विनती
सुन ली. 11 शुहाह का भाई केलुब मेहिर का पिता था, जो एश्तोन का पिता
था. 12 एश्तोन पिता था बेथ-राफ़ा और पासेह का. तेहिन्नाह ईर-नाहाष का
पिता था. ये रेकाहवासी थे. 13 केनज़ के पुत्र थे: ओथनीएल और सेराइयाह.
ओथनीएल के पुत्र थे: हाथअथ और मेयोनोथाई. 14 मेयोनोथाई पिता हुआ
ओफ़राह का, और सेराइयाह पिता हुआ योआब का, जो गेहाराशीम का पिता
था. ये गेहाराशीम इसलिये कहलाए कि कारीगर थे. 15 येफुन्नेह के पुत्र कालेब
के पुत्र: इरू, एलाह, और नाअम. एलाह का पुत्र था: केनज़. 16 येहालेलेल के
पुत्र: ज़ीफ़, ज़िफाह, तिरिया और आसारेल. 17 एज्रा के पुत्र: येथेर, मेरेद,
एफ़र और यालोन. मेरेद की एक पत्नी, बिथिया, ने गर्भधारण किया और उसने
मिरियम, शम्माई और इशबाह को जन्म दिया, जो एशतमोह का पिता था. 18
फरओ की पुत्री बिथिया से जन्मे मेरेद की संतान ये थे. उसकी यहूदियावासी पत्नी
ने यारेद को जन्म दिया, जो गेदोर का पिता था, हेबेर को भी, जो सोकोह का
पिता था, और येकुथिएल को, जो ज़ानोहा को पिता था. 19 नाहाम की बहन,
होदियाह की पत्नी के पुत्र: गारमी के काइलाह और माकाहथि एशतमोह के
वंशमूल थे. 20 शिमओन के पुत्र: अम्मोन, रिन्नाह, बेन-हानन और तीलोन.
इशी के पुत्र: ज़ोहेथ और बेन-ज़ोहेथ. 21 यहूदाह के पुत्र: शेलाह के पुत्र एर, जो
लेकाह का पिता था, लादाह, जो मारेशाह का पिता था, जो बेथ-अशबेआ नगर
वंशमूल था जहां सन के कपड़े का काम होता था. 22 इनके अलावा योकिम
और कोज़ेबा नगरवासी और योआश व सारफ़, जो मोआब पर शासन करते रहे,
फिर याशुबीलेहेम को लौट गए. (यहां ये वर्णन पुराने हैं.) 23 ये सभी कुम्हार थे,
जो नेताईम और गेदेराह में बस गए थे; वहां रहते हुए, वे राजा की सेवा में लगे
रहे. 24 शिमओन के पुत्र: नमूएल, यामिन, यारिब, ज़ेराह, शाऊल, 25 उसका
पुत्र शल्लूम, उसका पुत्र मिबसाम, उसका पुत्र मिशमा. 26 मिशमा के पुत्र:
हम्मूएल, उसका पुत्र ज़क्कूर, उसका पुत्र शिमेई. 27 शिमेई के सोलह पुत्र थे
और छः पुत्रियां, मगर उसके भाइयों के अधिक संतान न हुई, न ही उसका वंश
बढ़ा, जैसी यहूदाह निवासियों की हुई थी. 28 वे बेअरशेबा, मोलादाह, हाज़र-
शूआल, 29 बिल्हा, एज़ेम, तोलाद, 30 बेथुएल, होरमाह, ज़िकलाग, 31 बेथ-
मरकाबोथ, हाज़र-सुसिम, बेथ-बिरी और शअरयिम नगरों में निवास करते थे.
जब तक दावीद का शासन रहा, ये इन्हीं के नगर रहे. 32 उनके आस-पास के
गांवों के नाम थे, एथाम, एइन, रिम्मोन, तोकेन और आशान, पांच गांव. 33 ये
गांव उन नगरों के आस-पास ही थे. इनका विस्तार बाल नामक नगर तक था. ये
इन्हीं के द्वारा बसाए गए नगर थे. ये अपनी वंशावली का लेखा भी रखते थे: 34
मेशोबाब, यामलेख, योशाह, जो अमाज़्याह का पुत्र था. 35 योएल; येहू, जो
योशिबियाह का पुत्र था, जो सेराइयाह का पुत्र था, जो आसिएल का पुत्र था; 36

एलिओएनाइ, याकोबाह, ये येहोशाइयाह; असाइयाह; आदिएल; येसिमिएल;
बेनाइयाह; 37 ज़िज़ा, शीफी का पुत्र, जो अल्लोन का पुत्र था, जो येदाइयाह का
पुत्र था, जो शिमरी का पुत्र था, जो शेमायाह का पुत्र था. 38 ये सभी अपने-
अपने गोत्रों के प्रधान थे. इनके पिता का वंश बहुत ही बढ़ता चला गया, 39
उन्होंने घाटी की पूर्वी दिशा की ओर, गेदोर के फाटक की ओर बढ़ना शुरू
किया, कि उन्हें अपने भेड़-बकरियों के लिए चरागाह मिल जाए. 40 यहां उन्हें
उत्तम और उपजाऊ चरागाह मिल गया, भूभाग भी बहुत ही फैला हुआ था. यहां
शांति थी, चैन था क्योंकि इसके पहले यहां के निवासी हाम के वंश थे. 41 ये,
जिनके नाम यहां लिखे हैं, यहूदिया के राजा हिज़किय्याह के शासनकाल में
आए, उन्होंने वहां के मिऊनियों को और उनके शिविरों को नष्ट कर दिया. वे
उनके स्थान पर वहां रहने लगे, क्योंकि यहां उनके पशुओं के लिए चरागाह था.
42 शिमओन के पुत्रों में से पांच सौ पुरुष वहां से सेईर पर्वत को गए. इशी के पुत्र,
पेलातियाह, नेअरियाह, रेफ़ाइयाह और उज्ज़िएल उनके प्रधान थे. 43 उन्होंने
अमालेकियों के भाग को, जो जीवित बचकर यहां आए हुए थे, नष्ट कर दिया,
जो अब तक वहां रहते आ रहे थे.

5 अब इस्राएल के पहलौठे रियूबेन वंशज, (किंतु इसलिये कि उसने अपने
पिता के बिस्तर को अशुद्ध किया था, उसके पहलौठे का जन्मसिद्ध अधिकार
इस्राएल के पुत्र योसेफ़ के पुत्रों को दे दिया गया; फलस्वरूप वंशावली में उसका
लेख पहलौठे के रूप में नहीं किया जा सका, 2 यद्यपि यहूदाह अपने भाइयों में
मजबूत ज़रूर हुआ और उसके वंश से एक प्रधान का आगमन भी हुआ, फिर भी
पहलौठे का जन्मसिद्ध अधिकार योसेफ़ को ही मिला.) 3 इस्राएल के पहलौठे
रियूबेन के पुत्र: हनोख, पल्लू, हेज़रोन और कारमी. 4 योएल के पुत्र: उसका
पुत्र शेमायाह, उसका पुत्र गोग, उसका पुत्र शिमेई, 5 उसका पुत्र मीकाह, उसका
पुत्र रेआइयाह, उसका पुत्र बाल, 6 उसका पुत्र बीएराह, जिसे अश्शूर के राजा
तिगलथ-पलेसेर बंदी बनाकर ले गया. बीएराह रियूबेन वंशजों का प्रधान था. 7
वंशावली के अनुसार वंश के आधार पर उसके भाई: उनका नायक येइएल और
ज़करयाह. 8 अत्सात्स का पुत्र बेला, उसका पुत्र शेमा, उसका पुत्र योएल.
जिसका घर अरोअर नगर में नेबो और बाल-मेओन तक था. 9 उसका घर पूर्व
में फरात नदी के इसी ओर मरुस्थल की सीमा तक भी था, क्योंकि गिलआद में
उनके पशुओं की संख्या बढ़ती गई. 10 शाऊल के शासनकाल में रियूबेन
वंशजों ने हग्रियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, वे उनके अधीन हो गए. इसके बाद वे
हग्रियों के शिविरों में ही रहते रहे और गिलआद के पहले के सारे क्षेत्र में बस
गए. 11 गाद-वंशज उन्हीं के सामने बाशान क्षेत्र में रहते थे, वे सलेकाह तक
फैले हुए थे: 12 योएल प्रधान था, दूसरा था शाफ़ाम, उसके बाद बाशान में
यानाई और शाफात. 13 उनके गोत्रों के आधार पर उनके संबंधी थे: मिखाएल,
मेशुल्लाम, शीबा, योराई, याकान, ज़िया और एबर, सात व्यक्ति. 14 हूरी के पुत्र
अबीहाइल वंशज: हूरी यारोह का, जो गिलआद का, जो मिखाएल का, जो
येशिशाई का, जो याहदो का, जो बुज़ का पुत्र था. 15 अही अबदियेल का, वह
गूनी का, जो उनके गोत्र का प्रधान था. 16 ये सभी बाशान के नगर गिलआद
और इसके अन्य नगरों में और शारोन के सारे चरागाह में दूर-दूर तक रहते थे.
17 इन सभी की वंशावली का लेखा यहूदिया के राजा योथाम और इस्राएल के
राजा यरोबोअम के शासनकाल में रखा गया था. 18 रियूबेन वंशजों में, गाद-
वंशजों में और मनश्शेह के आधे गोत्र में वीर योद्धा थे. ये ढाल और तलवार
लेकर चलते थे और वे धनुष भी चलाते थे. वे युद्ध कला में कुशल थे. युद्ध के
लिए तैयार इनकी संख्या 44,760 थी. 19 उन्होंने हग्रि, येतुर, नाफिश और
नोदाबी जातियों पर हमला किया. 20 उन्हें उनके विरुद्ध सहायता मिली और हग्रि
और उनके साथी इनके अधीन कर दिए गए, क्योंकि युद्ध करते हुए उन्होंने
परमेश्वर की दोहाई दी और परमेश्वर ने उनकी विनती सुनकर उनका यह ज़रूरी
आग्रह सुन लिया, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर में विश्वास किया था. 21 इन्होंने
उनके पशुओं को अपने अधिकार में कर लिया: 50,000 ऊंट, 2,50,000
भेड़ें, 2,000 गधे और 1,00,000 पुरुष जीवित बंदी बनाए गए. 22 अनेक
घात किए गए क्योंकि युद्ध परमेश्वर का था. वे लोग बंदी बनाए जाने तक इस
क्षेत्र में रहते रहे. 23 मनश्शेह के अर्धकुल के सदस्य इस देश में रहते रहे, जो
अनगिनत थे और बाशान से लेकर बाल-हरमोन तक और सेनीर (और हरमोन
पर्वत) तक बसे हुए थे. 24 उनके गोत्रपिताओं के वंशजों के नायकों के नाम
निम्न लिखित है एफ़र, इशी, एलिएल, अज़रिएल, येरेमियाह, होदवियाह और
याहदिएल, ये वीर योद्धा, मशहूर व्यक्ति और अपने पिता के गोत्रों के प्रधान थे.
25 किंतु उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर से विश्वासघात किया और देश के
पराए देवताओं को अपना लिया, जिन्हें परमेश्वर ने उनके सामने से खत्म किया
था. 26 तब इस्राएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल, (अर्थात् अश्शूर के
राजा तिगलथ-पलेसेर) का हृदय उभारा और वह उन्हें बंधुआई में ले गया अर्थात्
रियूबेन-वंशजों, गाद-वंशजों और मनश्शेह-वंशजों के आधे गोत्र को. इन्हें वह
हालाह, हाबोर, हारा और गोज़ान नदी के पास ले आया.

6 लेवी के पुत्र: गेरशोन, कोहाथ और मेरारी. 2 कोहाथ के पुत्र: अमराम,
इज़हार, हेब्रोन और उज्ज़िएल. 3 अमराम की संतान: अहरोन, मोशेह
और मिरियम. अहरोन के पुत्र: नादाब, अबीहू, एलिएज़र और इथामार. 4
एलिएज़र पिता था फिनिहास का, फिनिहास अबीशुआ का, 5 अबीशुआ बुक्की
का, बुक्की उज्जी का, 6 उज्जी ज़ेराइयाह का, ज़ेराइयाह मेराइओथ का, 7
मेराइओथ अमरियाह का, अमरियाह अहीतूब का, 8 अहीतूब सादोक का
सादोक अहीमाज़ का, 9 अहीमाज़ अज़रियाह का, अज़रियाह योहानन का,
10 योहानन अज़रियाह का पिता था. यह वही अज़रियाह था, जिसने येरूशलेम
में शलोमोन द्वारा बनाए गए भवन में पौरोहितिक सेवा की थी. 11 अज़रियाह
अमरियाह का, अमरियाह अहीतूब का, 12 अहीतूब सादोक का, सादोक
शल्लूम का, 13 शल्लूम हिलकियाह का, हिलकियाह अज़रियाह का, 14
अज़रियाह सेराइयाह का, सेराइयाह यहोत्सादाक का, 15 जब याहवेह ने
नबूकदनेज्ज़र द्वारा यहूदिया और येरूशलेम को बंधुआई में भेजा, तब यहोत्सादाक
भी बंधुआई में ले जाया गया: 16 लेवी के पुत्र: गेरशोम, कोहाथ और मेरारी. 17
गेरशोम के पुत्रों के ये नाम है: लिबनी और शिमेई. 18 कोहाथ के पुत्र: अमराम,
इज़हार, हेब्रोन और उज्ज़िएल. 19 मेरारी के पुत्र: माहली और मूशी. पिताओं के
आधार पर लेवी वंशजों के कुल इस प्रकार है: 20 गेरशोम के कुल: उसका
पुत्र लिबनी, उसका पुत्र याहाथ, उसका पुत्र ज़िम्माह, 21 उसका पुत्र योआह,
उसका पुत्र इद्दो, उसका पुत्र ज़ेराह, उसका पुत्र येआथेराई. 22 कोहाथ के पुत्र:
उसका पुत्र अम्मीनादाब, उसका पुत्र कोराह, उसका पुत्र अस्सिर, 23 उसका
पुत्र एलकाना, उसका पुत्र एबीआसफ, उसका पुत्र अस्सिर, 24 उसका पुत्र
ताहाथ, उसका पुत्र उरीएल, उज्जियाह उसका पुत्र, शाऊल उसका पुत्र. 25
एलकाना के पुत्र ये थे: आमासाई, अहीमोथ, 26 उसका पुत्र एकानाह, एलकाना
के पुत्र थे ज़ोफ़ाई, उसका पुत्र नाहाथ, 27 उसका पुत्र एलियाब, उसका पुत्र
येरोहाम, उसका पुत्र एलकाना, 28 शमुएल के पुत्र: उनका पहलौठा पुत्र योएल,
दूसरा अबीयाह. 29 मेरारी के पुत्र: माहली, उसका पुत्र लिबनी, उसका पुत्र
शिमेई, उसका पुत्र उज्जाह, 30 उसका पुत्र शिमिया, उसका पुत्र हाग्गियाह और
उसका पुत्र असाइयाह. 31 निम्न लिखित पुरुष वे हैं, जिन्हें दावीद ने याहवेह
के भवन में संदूक की स्थापना के बाद आराधना में गाने की जवाबदारी सौंप
रखी थी. 32 ये येरूशलेम में शलोमोन द्वारा याहवेह का भवन बनाए जाने तक,
मिलनवाले तंबू के सामने आराधना-संगीत के द्वारा सेवा करते थे. वे अपने पद के
अनुसार ही यह सेवा किया करते थे. 33 सेवा के लिए चुने गए उन व्यक्तियों
और उनके पुत्रों के नाम इस प्रकार है: कोहाथ के पुत्रों में से: गायक, हेमान, जो

योएल का पुत्र, शमुएल का पुत्र था, 34 जो एलकाना का, जो येरोहाम का, जो
एलिएल का, जो तौआह का, 35 जो सूफ़ का, जो एलकाना का, जो माहाथ
का, जो आमासाई का, 36 जो एलकाना का, जो योएल का, जो अज़रियाह
का, जो ज़ेफनियाह का, 37 जो ताहाथ का, जो अस्सिर का, एबीआसफ़ का,
जो कोराह का, 38 जो इज़हार का, जो कोहाथ का, जो लेवी का, जो इस्राएल
का पुत्र था. 39 हेमान का सहकर्मी आसफ उसके दाएं पक्ष में खड़ा रहता था,
जो वस्तुतः बेरेखियाह का पुत्र, शिमिया का पुत्र था. 40 जो मिखाएल का पुत्र
था, जो बासेइयाह का, जो मालखियाह का, 41 जो एथनी का, जो ज़ेराह का,
जो अदाइयाह का, 42 जो एथन का, जो ज़िम्माह का, जो शिमेई का, 43 जो
याहाथ का, जो गेरशोम का, जो लेवी का पुत्र था. 44 उनके बाएं पक्ष में उनके
संबंधी, मेरारी-वंशज खड़े हुआ करते थे: कीशी का पुत्र एथन, जो अबदी का,
जो मल्लूख का, 45 जो हशाबियाह का, जो अमाज़्याह का, जो हिलकियाह
का, 46 जो आमज़ी का, जो बानी का, जो शेमर का, 47 जो माहली का,
जो मूशी का, जो मेरारी का, जो लेवी का पुत्र था. 48 लेवी, उनके संबंधी,
मिलनवाले तंबू और परमेश्वर के भवन संबंधी सेवा के लिए चुने गए थे. 49
मगर अहरोन और उसके पुत्र वेदी पर होमबलि चढ़ाते और धूप वेदी पर धूप
जलाते, परम पवित्र स्थान संबंधित कार्य और परमेश्वर के सेवक मोशेह के
आदेश अनुसार इस्राएल के लिए प्रायश्चित किया करते थे. 50 ये अहरोन के
वंशज थे: उसका पुत्र एलिएज़र, उसका पुत्र फिनिहास, उसका पुत्र अबीशुआ,
51 उसका पुत्र बुक्की, उसका पुत्र उज्जी, ज़ेराइयाह. 52 उसका पुत्र मेराइओथ,
उसका पुत्र अमरियाह, उसका पुत्र अहीतूब, 53 उसका पुत्र सादोक और उसका
पुत्र अहीमाज़ था. 54 उनकी सीमाओं ही के भीतर, उनके शिविरों के आधार
पर उनके उपनिवेश इस प्रकार थे मतपत्रों के आधार पर सर्वप्रथम स्थान अहरोन
के पुत्रों के परिवार को प्राप्त हुआ था. (अहरोन-वंशजों को जो कोहाथि कुल
के थे, क्योंकि चिट्ठी डालकर वे ही इसके लिए पहले स्थान के लिए चुने गए
थे): 55 इन्होंने उन्हें यहूदिया में हेब्रोन क्षेत्र दे दिया साथ ही इसके आस-पास के
चरागाह भी. 56 (किंतु नगर के बीच के खेत और इसके गांव उन्होंने येफुन्नेह
के पुत्र कालेब को दे दिए.) 57 अहरोन के पुत्रों को उन्होंने शरण शहर दे दिए:
हेब्रोन, लिबनाह और इसकी सभी चरागाह, 58 हिलेन और देबीर, 59 आशान,
युताह और बेथ-शेमेश और उनकी चरागाह, 60 तब बिन्यामिन गोत्र की सीमा से
गिबियोन, इसके चरागाहों से इसके चरागाहों समेत गेबा, अलेमेथ, अनाथोथ
इसके सभी उनके ये सभी नगर उनके गोत्रों के अधिकार में हमेशा ही बने रहे.
ये कुल तेरह नगर थे. 61 तब कोहाथ की शेष संतान को ये चिट्ठी डालकर
बांट दिए गए. परिवार के गोत्र से, अर्धकुल से, मनश्शेह के आधे गोत्र से, दस
नगर. 62 गेरशोम के पुत्रों को उनके परिवार के अनुसार इस्साखार के गोत्र में
से, आशेर के गोत्र में से, नफताली के गोत्र में से और बाशान में मनश्शेह के
गोत्र में से तेरह नगर प्रदान किए गए. 63 मेरारी वंशजों को उनके कुलों के
अनुसार रियूबेन के, गाद के और ज़ेबुलून के कुलों से बारह नगर बांटे गए. 64
इस प्रकार इस्राएल वंशजों को वे नगर दे दिए, जिनमें चरागाह भी थे. 65
यहूदाह गोत्र के कुलों से उन्होंने चिट्ठियों द्वारा शिमओन वंश के कुलों और
बिन्यामिन वंश के कुलों को ये नगर, जिनका उल्लेख किया जा चुका है, दे
दिए. 66 कोहाथ वंश के कुछ परिवारों के पास एफ्राईम गोत्र की सीमा में के
कुछ नगर थे. 67 उन्होंने इन्हें ये शरण शहर दे दिए: एफ्राईम के पर्वतीय क्षेत्र का
शेकेम और इसके चरागाहों के साथ गेज़ेर, 68 योकमेअम, बेथ-होरोन, 69
चरागाहों के साथ अय्जालोन, चरागाहों के साथ गथ-रिम्मोन. 70 तब मनश्शेह
के आधे गोत्र में से चरागाहों के साथ ऐनर और चरागाहों के साथ बिलआम. 71
मनश्शेह के अर्ध-गोत्र में से गेरशोन-वंशजों को चरागाहों के साथ बाशान क्षेत्र में
गोलान और चरागाहों के साथ अश्तारोथ; 72 इस्साखार के गोत्र में से चरागाहों
के साथ के देश, चरागाहों के साथ दाबरथ, 73 चरागाहों के साथ रामोथ,
चरागाहों के साथ आनेम; 74 आशेर के गोत्र से चरागाहों के साथ माशाल,
चरागाहों के साथ अबदोन, 75 चरागाहों के साथ हुक्कोक और चरागाहों के
साथ रेहोब; 76 नफताली के गोत्र में से चरागाहों के साथ गलील में केदेश,
चरागाहों के साथ हम्मोन और चरागाहों के साथ किरयथियों. 77 मेरारी-वंशज
शेष लेवियों को: ज़ेबुलून के गोत्र में से चरागाहों के साथ रिम्मोन, चरागाहों के
साथ ताबोर; 78 और यरदन पार येरीख़ो में यरदन के पूर्वी तट पर रियूबेन के
गोत्र में से चरागाहों के साथ बेज़र, जो बंजर भूमि में था, चरागाहों कि साथ
यहत्स, 79 चरागाहों के साथ केदेमोथ और चरागाहों के साथ मेफाअथ; 80
गाद के गोत्र में से चरागाहों के साथ गिलआद में रामोथ, चरागाहों के साथ
माहानाईम, 81 चरागाहों के साथ हेशबोन और याज़र.

7 इस्साखार के पुत्र: तोला, पुआह, याशूब और शिम्रोन—चार पुत्र. 2 तोला
के पुत्र: उज्जी, रेफ़ाइयाह, येरिएल, याहमाई, इबसाम और शमुएल ये अपने
पूर्वजों के परिवारों के प्रधान थे. तोला के पुत्र अपनी पीढ़ी में वीर योद्धाओं के
रूप में मशहूर थे. दावीद के शासनकाल में इनकी संख्या 22,600 आंकी गई
थी. 3 उज्जी का पुत्र: यिज़राहियाह था. यिज़राहियाह के पुत्र: मिखाएल,
ओबदिया, योएल, इश्शियाह; ये पांचों ही प्रधान थे. 4 उस पीढ़ी में उनके साथ
उनके पूर्वजों के गोत्र के अनुसार युद्ध के लिए सेना की टुकड़िया तैयार थी,
जिनकी संख्या 36,000 थी. इस संख्या का कारण था उनकी अनेक पत्नियां
और उनसे पैदा अनेक पुत्र. 5 इस्साखार के सभी परिवारों में सभी संबंधी वीर
योद्धा थे. उनका लेखा वंशावली में रखा गया है. ये कुल 87,000 योद्धा थे. 6
बिन्यामिन के तीन पुत्र: बेला, बेकेर और येदिआएल. 7 बेला के पांच पुत्र:
एज़बोन, उज्जी, उज्ज़िएल, येरीमोथ और ईरी: ये अपने पिता के परिवार के
प्रमुख थे. वंशावली लेखा के अनुसार ये 22,034 सभी वीर योद्धा थे. 8 बेकेर
के पुत्र: ज़ेमिराह, योआश, एलिएज़र, एलिओएनाइ, ओमरी, येरेमोथ, अबीयाह,
अनाथोथ और अलेमेथ. ये सभी बेकेर के पुत्र थे. 9 इनका नामांकन इनकी
पीढ़ी के अनुसार वंशावली में किया गया है. ये अपने पूर्वजों के परिवार में
नायक रहे. इन वीर योद्धाओं की संख्या 20,200 थी. 10 येदिआएल का
पुत्र: बिलहान. बिलहान के पुत्र: येऊश, बिन्यामिन, एहूद, केनानाह, ज़ेथान,
तरशीश और अहीशाहार. 11 उनके पिता के परिवार के प्रमुखों के अनुसार ये
येदिआएल के पुत्र हुए. ये सभी शूर योद्धा थे, संख्या में 17,200. ये सभी युद्ध
के लिए निपुण थे. 12 ईर के पुत्र थे शुप्पिम और हुप्पिम. अहेर का पुत्र था
हुशीम. 13 नफताली के पुत्र: याहत्सिएल, गूनी, येसेर और शल्लूम ये सभी
बिलहाह से उत्पन्न पुत्र थे. 14 मनश्शेह के पुत्र: उसकी अरामी उप-पत्नी से पैदा
पुत्र अस्रीएल. उसी से पैदा हुआ गिलआद का पिता माखीर. 15 माखीर ने
हुप्पिम और शुप्पिम का विवाह कर दिया. उसकी बहन का नाम माकाह था और
दूसरी बहन का नाम था ज़लोफेहाद. ज़लोफेहाद ने पुत्रियों को जन्म दिया. 16
माखीर की पत्नी माकाह ने एक पुत्र को जन्म दिया, उसने जिसका नाम रखा,
पेरेश. उसके भाई का नाम था शेरेष. पेरेश के पुत्र उलाम और रेकेम. 17 उलाम
का पुत्र था: बेदान. ये सभी गिलआद के पुत्र, माखीर के पोते और मनश्शेह के
परपोते थे. 18 माखीर की बहन हम्मोलेखेत ने इशहोद, अबीएज़ेर और महलाह
को जन्म दिया. 19 शेमीदा के पुत्र थे: अहीयान, शेकेम, लीखी और आनियम.
20 एफ्राईम-वंशज: शूतेलाह, उसका पुत्र बेरेद, उसका पुत्र ताहाथ, उसका पुत्र
एलियाद, उसका पुत्र ताहाथ, 21 उसका पुत्र ज़ाबाद, उसके पुत्र शूतेलाह. (एज़र
और एलियाद. इन दोनों का वध गाथ के निवासियों द्वारा उस समय कर दिया
गया था, जब ये दोनों उनके पशुओं की चोरी करते हुए पकड़े गए थे. 22
इनके लिए इनका पिता एफ्राईम लंबे समय तक दुःख में डूबा रहा. उसके संबंधी
उसे सांत्वना देने उसके पास जाते रहे. 23 इसके बाद उसने अपनी पत्नी से

संबंध बनाए. वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम
रखा गया बेरियाह यानी मुसीबत, क्योंकि उसके परिवार पर मुसीबत आई हुई
थी. 24 उसकी पुत्री का नाम था शीराह. उसने ऊपरवाले और नीचेवाले बेथ-
होरोन नगरों और उज्जेन-शीराह नगर का निर्माण किया था.) 25 उसका पुत्र
था रेफ़ाह, उसका पुत्र था रेशेफ़, उसका पुत्र तेलाह, उसका पुत्र तहान 26
उसका पुत्र लादान, उसका पुत्र अम्मीहूद, उसका पुत्र एलीशामा, 27 उसका पुत्र
नून और उसका पुत्र यहोशू. 28 इनका स्वामित्व और घर बेथेल, और उसके
आस-पास के गांव, पूर्वी नआरन, पश्चिमी गेज़ेर और इसके नगरों, शेकेम और
इसके नगरों में और अय्याह और इसके नगरों में था. 29 मनश्शेह-वंशजों के
अधिकार में बेथ-शान और इसके नगर, तानख और उसके नगर, मगिद्दो और
उसके नगर, इन सभी नगरों में इस्राएल के पुत्र योसेफ़ के वंशज निवास करते थे.
30 आशेर के पुत्र: इमनाह, इशवाह, इशवी, बेरियाह और उनकी बहन सेराह.
31 बेरियाह के पुत्र: हेबेर और मालखिएल, जो पिता था बिरत्साइथ का. 32
हेबेर पिता था याफलेत, शोमर, होथाम और इनकी बहन शुआ का. 33 याफलेत
के पुत्र: पासाख, बिमहाल और अषवाथ. ये यफलेत के पुत्र थे. 34 उसके
भाई शेमर के पुत्र: अही, रोहगाह, येहुब्बाह और अराम. 35 उसके भाई हेलेम
के पुत्र: ज़ोफ़ाह, इमना, शेलेश और आमाल. 36 ज़ोफ़ाह के पुत्र: सुआह,
हारनेफ़र, शुआल, बेरी, इमराह, 37 बेज़र, होद, शम्मा, शिलशाह, इथरान और
बीअरा. 38 येथेर के पुत्र: येफुन्नेह, पिस्पा और आरा. 39 उल्ला के पुत्र:
आराह, हन्निएल और रिज़िया. 40 ये सभी आशेर वंश के पुरुष थे, अपने
गोत्रपिता के परिवारों के प्रमुख, प्रमाणित वीर योद्धा, प्रशासकों के प्रधान थे.
उनकी संख्या वंशावली द्वारा गिनी गई थी कि वे युद्धकाल में जाकर युद्ध करें. ये
संख्या में 26,000 पुरुष थे.

8 बिन्यामिन अपने पहलौठे बेला का पिता हुआ: दूसरा पुत्र था अशबेल, तीसरा
अहाराह, 2 चौथा नोहाह और पांचवा पुत्र था राफ़ा. 3 बेला के पुत्र: अद्दार,
गेरा, अबीहूद, 4 अबीशुआ, नामान, अहोह, 5 गेरा, शपूपान और हूराम. 6
एहूद के पुत्र ये गेबा निवासियों के अधिकारी थे, इन्हें ही मानाहाथ को बंधुआई
में ले जाया गया था: 7 नामान, अहीयाह और गेरा, अर्थात् हेगलाम, जो उज्जा
और अहीहूद का पिता हुआ. 8 शाहराइम जब हुषीम और बआरा नामक अपनी
पत्नियों को विदा कर चुका, मोआब देश में वह पुत्रों का पिता हुआ. 9 वह
अपनी पत्नी होदेश के द्वारा इन पुत्रों का पिता हुआ: योबाब, ज़िबियाह, मेषा,
मालकम, 10 येऊत्स, साकिया और मिरमाह. उसके ये पुत्र पूर्वजों के परिवारों
के प्रधान हुए. 11 हुषीम के द्वारा भी वह पुत्रों का पिता हुआ: अबीतूब और
एलपाल. 12 एलपाल के पुत्र: एबर, मिशाम और शेमेद, (जितने ओनो और लोद
को और उसके आस-पास के गांव सहित बसाया), 13 बेरियाह और शेमा
अय्जालोन के उन निवासियों के पूर्वजों के परिवारों के प्रधान थे, जिन्होंने गाथ
में बसे हुए लोगों को नगर छोड़ भागने के लिए विवश कर दिया था. 14 और
आहियो, शाशक और येरेमोथ, 15 ज़ेबादिया, अराद, एदर, 16 मिखाएल,
इशपाह और योहा बेरियाह के पुत्र थे. 17 ज़ेबादिया, मेशुल्लाम, हिज़की, हेबेर,
18 इशमेराइ, इज़लियाह और योबाब एलपाल के पुत्र थे. 19 याकिम, ज़ीकरी,
ज़ब्दी, 20 एलिएनाइ, ज़िल्लेथाइ, एलिएल, 21 अदाइयाह, बेराइयाह और
शिमराथ शिमेई के पुत्र थे. 22 इशपान, एबर, एलिएल, 23 अबदोन, ज़ीकरी,
हानन, 24 हननियाह, एलाम, अन्तोतियाह, 25 इफदेइयाह और पेनुएल शाशक
के पुत्र थे, 26 शमशेराइ, शेहरियाह, अथालियाह, 27 यअरेशियाह, एलियाह
और ज़ीकरी येरोहाम के पुत्र थे. 28 ये अपनी पीढ़ियों के अनुसार अपने-अपने
परिवारों के प्रधान नायक थे, ये सभी येरूशलेम में रहते थे. 29 गिबयोन का
पिता येइएल गिबयोन में रहता था. उसकी पत्नी का नाम माकाह था, 30 उसका
पहलौठा पुत्र था अबदोन, इसके बाद पैदा हुए ज़ुर, कीश, बाल, नेर, नादाब, 31
गेदोर, आहियो और ज़ेकर. 32 मिकलोथ सिमअह का पिता हो गया. ये लोग
भी येरूशलेम में अपने दूसरे रिश्तेदारों के सामने रह रहे थे. 33 नेर कीश का
पिता था, कीश शाऊल का, शाऊल योनातन, मालखी-शुआ, अबीनादाब और
एशबाल का. 34 योनातन का पुत्र था: मेरिब-बाल; मेरिब-बाल जो मीकाह
का पिता था. 35 मीकाह के पुत्र: पिथोन, मेलेख, तारिया और आहाज़. 36
आहाज़ पिता हुआ यहोआदाह का, यहोआदाह पिता था अलेमेथ, अज़मावेथ
और ज़िमरी का. ज़िमरी पिता था मोत्सा का. 37 मोत्सा पिता था बिनिया का;
उसके पुत्र थे राफाह, एलासाह उसके पुत्र, आज़ेल उसके पुत्र. 38 आज़ेल
के छः पुत्र थे, जिनके नाम निम्न लिखित है: अज़रीकाम, बोखेरु, इशमाएल,
शिआरियाह, ओबदिया और हनान. ये सभी आज़ेल के पुत्र थे. 39 उसके भाई
एशेक के पुत्र: उलाम उसका पहिलौठा, यीऊश दूसरा पुत्र, एलिफेलेत उसका
तीसरा पुत्र. 40 उलाम के सभी पुत्र बलवान योद्धा और धनुर्धारी थे. उनके अनेक
पुत्र और पोते हुए, गिनती में 150. ये सभी बिन्यामिन वंश के थे.

9 इस प्रकार पूरे इस्राएल का नाम वंशावली में पूरा-पूरा लिख लिया गया. यह
इस्राएल के राजा नामक पुस्तक में लिखा गया था. अपने विश्वासघात के
कारण यहूदिया को बंधुआई में बाबेल ले जाया गया. 2 वे, जो बंधुआई से लौटे,
उनमें सबसे पहले वे थे, जो अपने-अपने नगरों में अपनी ही संपत्ति में आकर
बसे थे, उनमें कुछ इस्राएली थे, कुछ पुरोहित थे, कुछ लेवी थे और कुछ मंदिर
में सेवा के लिए ठहराए गए सेवक थे. 3 कुछ यहूदिया के रहनेवाले बंधुए, कुछ
बिन्यामिन के वंशज और कुछ एफ्राईम और मनश्शेह के वंशज आकर येरूशलेम
में बस गए. 4 उथाई, जो अम्मीहूद का पुत्र था, जो ओमरी का, जो इमरी का,
जो बानी का, जो पेरेज़ के पुत्रों में से था, जो यहूदाह का पुत्र था. 5 शीलोनी वंश
के लोगों में से: पहलौठा असाइयाह और उसके पुत्र. 6 ज़ेराह के पुत्रों में से:
येउएल और उसके 690 संबंधी. 7 बिन्यामिन वंश से: सल्लू, जो मेशुल्लाम
का पुत्र था, जो होदवियाह का पुत्र था, जो हस्सनुआह का पुत्र था; 8 इबनियाह
येरोहाम का पुत्र था; एलाह जो उज्जी का पुत्र था, जो मिकरी का पुत्र था. और
मेशुल्लाम शेपाथियाह का, जो रियुएल का, इबनियाह जेरोहाम का पुत्र था. 9
पीढ़ियों की वंशावली के अनुसार ये बिन्यामिन वंश कुल 956 थे. पितरों
के गोत्रों की वंशावली के अनुसार ये सभी अपने-अपने गोत्र के प्रधान थे.
10 पुरोहितों में से: येदाइयाह; यहोइयारिब; याकिन; 11 और अज़रियाह जो
हिलकियाह का पुत्र था, जो मेशुल्लाम का, जो सादोक का, मेराइओथ का और
जो अहीतूब का, जो परमेश्वर के भवन का मुख्य अधिकारी था; 12 और
अदाइयाह, जो येरोहाम का, जो पशहूर का, जो मालखियाह का; जो मआसाई
का, जो आदिएल का, जो याहत्सेरहा का, जो मेशुल्लाम का, जो मेशिलेमिथ
का, जो इम्मर का पुत्र था. 13 उनके रिश्तेदारों के अलावा, उनके पितरों
के कुलों के प्रमुख ये 1,760 बलवान व्यक्ति परमेश्वर के भवन में सेवा के
लिए तैयार व्यक्ति थे. 14 लेवियों में से: शेमायाह, जो हस्षूब का पुत्र था, जो
अज़रीकाम का, जो हशाबियाह का, जो मेरारी का पुत्र था; 15 बकबक्कर,
हेरेश, गलाल और मत्तनियाह, जो मीका का पुत्र था, जो ज़ीकरी का, जो आसफ
का पुत्र था; 16 और ओबदिया, जो शेमायाह का, जो गलाल का, जो यदूथून
का; और बेरेखियाह, जो आसा का, जो एलकाना का, जो नेतोफ़ाथियों के गांवों
में निवास करता रहा था. 17 द्वारपाल थे: शल्लूम, अक्कूब, तालमोन, अहीमान
और उनके संबंधी, जिनमें शल्लूम सबका प्रधान था. 18 वे सभी अब तक राजा
के पूर्वी द्वार पर चुने जाने के कारण लेवियों के शिविरों के द्वारपाल रहे. 19
शल्लूम, जो कोरे का पुत्र था, जो एबीआसफ़ का, जो कोराह का और उसके
पिता के परिवार के संबंधी, कोराह के वंशज सेवा करने के अधिकारी थे. वे
शिविर की ड्योढ़ी के लिए के लिए चुने गए थे; ठीक जिस प्रकार उनके पूर्वज
याहवेह के शिविर के अधिकारी थे, यानी फाटक के. 20 इसके पहले एलिएज़र

का पुत्र फिनिहास इन सबके ऊपर प्रधान अधिकारी रहा. याहवेह उसके साथ
रहता था. 21 मिलनवाले तंबू के द्वार पर मेषेलेमियाह के पुत्र ज़करयाह को
द्वारपाल रखा गया था. 22 ड्योढ़ी के लिए चुने गए ये द्वारपाल गिनती में 212
थे. उनकी गिनती उनके गांवों की वंशावली में की गई है. दावीद और दर्शी
शमुएल ने इनको विश्वासयोग्य देखकर इन्हें इस पद पर ठहराया था. 23 ये
सब और इनके पुत्र याहवेह के भवन के द्वारों के अधिकारी थे अर्थात् तंबू के
पहरेदार. 24 ये द्वारपाल पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, चारों दिशाओं में
ठहराए गए थे. 25 हर सप्ताह उनके गांवों से उनके भाई-बंधुओं का वहां आकर
उनके साथ रहना तय था. 26 क्योंकि चार प्रमुख द्वारपालों को, जो विश्वास्य
लेवी थे, परमेश्वर के भवन के कमरों और खजाने की जवाबदारी सौंपी गई थी.
27 रात में वे परमेश्वर के भवन के आस-पास ही रहते थे, क्योंकि इसकी रक्षा
करना और इसे हर सुबह खोलने की चाबी उन्हीं की जवाबदारी में थी. 28
इनमें से कुछ बलि चढ़ाने वाले बर्तनों के अधिकारी थे, क्योंकि जब ये बाहर ले
जाए जाते और लौटाए जाते थे, उनकी गिनती करना ज़रूरी होता था. 29 इनमें
से अन्यों को मेजों, सभी पवित्र बर्तनों, साथ ही मैदा, अंगूर के रस, तेल,
गन्धरस और मसालों के प्रबंध के लिए चुना गया था. 30 पुरोहितों के दूसरे पुत्रों
की जवाबदारी थी इस्तेमाल के लिए मसालों को तैयार करना, 31 एक लेवी,
कोराहवंशी शल्लूम के पहलौठे मत्तीथियाह की जवाबदारी थी पतली-पतली
रोटियां बनाना. 32 इसके अलावा कोहाथ के संबंधियों में से कुछ व्यक्ति हर
शब्बाथ भेंट की रोटी तैयार करने के अधिकारी थे. 33 लेवी के पितरों के कुलों
के प्रधान, जो गायक थे, मंदिर के कमरों में ठहराए गए थे. उन्हें अन्य कोई
काम सौंपा नहीं गया था, क्योंकि उनका काम ही ऐसा था, जिसमें वे रात-दिन
व्यस्त रहते थे. 34 ये सभी अपनी-अपनी पीढ़ियों के अनुसार लेवी के पितरों के
कुलों के प्रधान थे, जिनका घर येरूशलेम में ही था. 35 गिबयोन का पिता
येइएल गिबयोन में रहता था. उसकी पत्नी का नाम माकाह था, 36 उसका
पहलौठा पुत्र था अबदोन, इसके बाद पैदा हुए ज़ुर, कीश, बाल, नेर, नादाब, 37
गेदोर, आहियो, ज़करयाह और मिकलोथ. 38 मिकलोथ सिमअह का पिता हो
गया. ये लोग भी येरूशलेम में अपने दूसरे रिश्तेदारों के सामने रह रहे थे. 39
नेर कीश का पिता था, कीश शाऊल का, शाऊल योनातन, मालखी-शुआ,
अबीनादाब और एशबाल का. 40 योनातन का पुत्र था: मेरिब-बाल; मेरिब-बाल
जो मीकाह का पिता था. 41 मीकाह के पुत्र: पिथोन, मेलेख, ताहरिया और
आहाज़. 42 आहाज़ पिता था याराह का, याराह अलेमेथ, अज़मावेथ और
ज़िमरी का, ज़िमरी, मोत्सा का. 43 मोत्सा पिता था बिनिया का; उसके पुत्र थे
रेफ़ाइयाह, एलासाह उसके पुत्र, आज़ेल उसके पुत्र. 44 आज़ेल के छः पुत्र थे,
जिनके नाम निम्न लिखित है: अज़रीकाम, बोखेरू, इशमाएल, शिआरियाह,
ओबदिया और हनान. ये आज़ेल के पुत्र थे.

10 फिलिस्तीनियों ने इस्राएल पर हमला कर दिया. इस्राएली सैनिक
फिलिस्तीनियों के सामने टिक न सके. अनेक गिलबोआ पर्वत पर मारे
गए. 2 फिलिस्तीनियों ने शाऊल और उनके पुत्रों को जा पकड़ा और उन्होंने
शाऊल के पुत्रों योनातन, अबीनादाब तथा मालखी-शुआ की हत्या कर दी. 3
शाऊल के आस-पास युद्ध बहुत ही उग्र था. धनुर्धारियों ने उन्हें देख लिया और
उन्हें गंभीर रूप घायल कर दिया. 4 शाऊल ने अपने शस्त्रवाहक को आदेश
दिया, "इसके पहले कि ये अख़तनित आकर मेरी दुर्गति करके मुझ पर तलवार
का प्रहार करें, तुम अपनी तलवार से मुझ पर प्रहार कर दो." मगर उस भयभीत
हथियार उठानेवाले ने यह विनती अस्वीकार कर दी. तब स्वयं शाऊल ने अपनी
तलवार निकाली और उस पर गिर पड़े. 5 जब हथियार ढोनेवाले ने यह पाया
कि शाऊल की मृत्यु हो गई है, वह भी उसी प्रकार अपनी तलवार पर जा गिरा
और उसकी भी मृत्यु हो गई. 6 इस प्रकार शाऊल और उनके तीनों पुत्रों की
मृत्यु हो गई; साथ ही उसके पूरे परिवार की भी मृत्यु हो गई. 7 जब घाटी के
इस्राएलियों ने देखा कि इस्राएली सेना पीठ दिखाकर भाग रही है, शाऊल और
उनके पुत्र युद्ध में मारे गए हैं, वे नगर छोड़-छोड़कर भागने लगे. तब फिलिस्तीनी
आए और नगरों में निवास करने लगे. 8 अगले दिन, जब फिलिस्तीनी आए कि
शवों पर से, जो मिल सके, अपने लिए उठा ले जाएं. उन्हें गिलबोआ पर्वत पर
शाऊल और उसके पुत्रों के शव दिखाई दिए. 9 उन्होंने शाऊल का सिर काटा,
उनके कपड़े उनकी शव से उतार लिए और यह संदेश सारा फिलिस्तिया देश में
अपने देवताओं के तथा लोगों के बीच फैलाने के लिए दूतों को भेज दिया. 10
उन्होंने शाऊल के हथियार अपने देवताओं के मंदिर में रखवा दिए और उसके
सिर को अपने देवता दागोन के मंदिर में लटका दिया. 11 जब पूरे याबेश-
गिलआदवासियों तक यह समाचार पहुंचा कि शाऊल के साथ फिलिस्तीनियों ने
कैसा व्यवहार किया है, 12 सारे वीर योद्धा इकट्ठा हो गए और जाकर शाऊल के
और उसके पुत्रों के शव उठाकर याबेश नगर को ले आए. उन्होंने इन शवों की
अस्थियों को याबेश नगर के बांज पेड़ के नीचे गाड़ दिया और उनके लिए सात
दिन तक उपवास रखा. 13 शाऊल की मृत्यु का कारण था याहवेह के प्रति उनके
द्वारा किया गया विश्वासघात. उन्होंने याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया
था, इसके अलावा उसने भूत सिद्धि करनेवाले की राय भी ली थी. 14 उसने
याहवेह से मार्गदर्शन लेना ज़रूरी न समझा था. इसी कारण याहवेह ने उसके प्राण
ले लिए और राज्य का प्रशासन यिशै के पुत्र दावीद के हाथों में दे दिया.

11 इसके बाद सारा इस्राएल हेब्रोन में दावीद से भेंट करने इकट्ठा आए और
उनके समक्ष यह प्रस्ताव रखा, "विचार कीजिए, हम आप ही की अस्थि
और मांस हैं. 2 पिछले सालों में जबकि राजा तो शाऊल थे किंतु ये आप ही थे,
जो हमारा मार्गदर्शन और इस्राएली सेना को चलाते रहे. याहवेह आपके परमेश्वर
ने आपसे कहा था, 'तुम मेरी प्रजा इस्राएल के चरवाहे होगे, तुम मेरी प्रजा
इस्राएल के शासक होगे.'" 3 इसलिये इस्राएल के सारे प्राचीन हेब्रोन नगर में
राजा के सामने इकट्ठा हुए. राजा दावीद ने याहवेह के सामने उनसे वाचा बांधी.
तत्पश्चात उन्होंने याहवेह के संदेश के अनुसार, जो उन्होंने शमुएल द्वारा दिया
गया था, इस्राएल देश के लिए दावीद का राजाभिषेक किया. 4 दावीद और सारा
इस्राएल येरूशलेम की ओर गया. येरूशलेम (यानी यबूस), जहां यबूसी रहते थे.
ये ही क्षेत्र के मूल निवासी थे. 5 यबूसियों ने दावीद से कहा, "आप इस नगर
में कभी आने न पाओगे." फिर भी दावीद ने ज़ियोन गढ़ पर अधिकार कर
लिया, जिसे दावीद-नगर भी कहा जाता है. 6 दावीद ने घोषणा की, "जो
कोई सबसे पहले यबूसियों पर हमला करेगा, सेना का प्रधान और सेनापति
ठहराया जाएगा." ज़ेरुइयाह का पुत्र योआब सबसे पहले वहां पहुंच गया, तब
उसे सेनापति का पद दे दिया गया. 7 दावीद ने गढ़ में रहना शुरू कर दिया. यही
कारण है कि यह दावीद-नगर नाम से जाना जाने लगा. 8 दावीद ने इसी के चारों
ओर नगर को बनाया, मिल्लो से शुरू करते हुए आस-पास के इलाके तक.
योआब ने नगर का बाकी काम भी पूरा किया. 9 दावीद पर सर्वशक्तिमान
याहवेह की कृपादृष्टि थी तब दावीद धीरे धीरे मजबूत होते चले गए. 10 दावीद
के वीरों में प्रमुख, जो इस्राएली सेना के अलावा उनके राज्य में उनके लिए
मजबूत आधार थे, जिन्होंने दावीद को राजा बनाने में, इस्राएल के संबंध में
याहवेह के वचन के अनुसार सहयोग दिया था, 11 दावीद के उन वीरों की
गिनती इस प्रकार है: हकमोनवासी यासोबअम तीस का प्रमुख था. उसने 300
सैनिकों पर अपने भाले से वार किया और एक ही वार में इनको मार डाला. 12
उसके बाद अहोही दोदो का पुत्र एलिएज़र, जो तीन वीरों में से एक था. 13
पस-दम्मीम में वही दावीद के साथ था, जब वहां फिलिस्तीनियों ने युद्ध के लिए
मोर्चा बांधा था. वहां जौ की उपज का एक खेत था. प्रजा फिलिस्तीनियों से
बचकर भाग रही थी. 14 उन्होंने खेत के बीच में रहते हुए उनका सामना किया,

उस खेत की रक्षा करते रहे और फिलिस्तीनियों को मार गिराया. याहवेह ने बड़ी
जीत के द्वारा उनकी रक्षा की. 15 चट्टान में अदुल्लाम गुफा में तीस प्रमुख
अधिकारियों में से तीन दावीद से भेंट करने गए. इस समय फिलिस्तीनी सेना
रेफाइम की घाटी में शिविर डाले हुए थी. 16 इस समय दावीद गढ़ में थे, और
फिलिस्तीनी सेना बेथलेहेम में. 17 बड़ी इच्छा से दावीद कह उठे, "कैसा सुखद
होता अगर कोई बेथलेहेम फाटक के पास के कुएं से मुझे पीने के लिए पानी ला
देता!" 18 वे तीनों फिलिस्तीनियों के शिविर में से बचते-बचाते जाकर उस कुएं
से, जो बेथलेहेम के द्वार के निकट था, दावीद के लिए जल ले आए. मगर
दावीद ने वह जल पिया नहीं, उन्होंने उसे याहवेह के सामने उंडेल दिया. 19
और कहा, "मेरे परमेश्वर के सामने मुझसे यह काम कभी न हो. क्या मैं इन
लोगों का लहू पीऊं, जो अपने प्राण जोखिम में डाल मेरे लिए यह जल लाए
हैं?" इसलिये दावीद ने वह जल नहीं पिया. ऐसे साहसिक थे इन वीरों के कार्य.
20 योआब का भाई अबीशाई तीस सैनिकों पर अधिकारी था. उसने तीन सौ पर
अपनी बर्छी घुमाई और उनको मार गिराया. उसने भी उन तीनों के समान
प्रतिष्ठा प्राप्त की. 21 दूसरे वर्ग में जो तीन थे, उनमें वह सबसे अधिक प्रतिष्ठित
था. वही उनका प्रधान बन गया; मगर वह उन तीन के सामने न आ सका. 22
कबज़ीएल के एक वीर के पोते, यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह ने बड़े-बड़े काम
किए थे उसने मोआब के अरीएल के दो पुत्रों को मार गिराया. उसने ही उस
दिन, जब बर्फ गिर रही थी, जाकर एक गड्ढे में बैठे सिंह का वध किया था. 23
उसने एक बहुत ही लंबे कद के मिस्रवासी का, जो लगभग साढ़े सात फुट का
था, वध किया था. उस मिस्री के हाथ में जो भाला था, वह बुनकर की बल्ली के
समान था. किंतु बेनाइया अपने हाथ में सिर्फ एक लाठी ले उसके निकट गया
और उस मिस्री के हाथ से उसका भाला छीन उसी से उसको मार डाला. 24
यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह ने ये सारे काम किए और उन तीन वीरों के समान
प्रतिष्ठा प्राप्त की. 25 वह उन तीस में ही प्रख्यात हुआ, मगर उन तीन के तुल्य
नहीं. दावीद ने उसे अपने अंगरक्षक का अधिकारी नियुक्त कर दिया. 26 वीर
ये थे: योआब का भाई आसाहेल, बेथलेहेमवासी दोदो का पुत्र एलहानन, 27
हारोर का शम्मोथ, पेलोन का हेलेस, 28 तकोआ के इक्केश का पुत्र ईरा,
अनाथोथवासी अबीएज़ेर, 29 हुशाथी सिब्बेकाई, अहोही इलाई, 30 नेतोफ़ाही
माहाराई, नेतोफ़ाही का ही बाअनाह का पुत्र हेलेद, 31 बिन्यामिन वंश के
गिबियाह के रिबाई का पुत्र इथाई, पीराथोनवासी बेनाइयाह, 32 गाश की नदियों
से हुराई, अरबाथवासी अबीएल, 33 बाहारूमवासी अज़मावेथ, शालबोनी
एलीअहाब, 34 गीज़ोनी हशेम के पुत्र, हारारवासी शागी का पुत्र योनातन, 35
हारारवासी साकार का पुत्र अहीयम, ऊर का पुत्र एलिफाल, 36 मेखेराथी
हेफेर, पेलोनवासी अहीयाह, 37 कर्मेल का हेज़ोरो, एज़बाई का पुत्र नआराई,
38 नाथान का भाई योएल, हागरी का पुत्र मिबहार, 39 अम्मोनवासी सेलेक,
बीरोथवासी नाहाराई, जो ज़ेरूइयाह के पुत्र योआब का हथियार उठानेवाला
था. 40 इथरवासी ईरा, इथरवासी गारेब. 41 हित्ती उरियाह, अहलाई का पुत्र
ज़ाबाद, 42 रूबेनवंशी शीज़ा का पुत्र आदिन, जो रियूबेन के वंशों का प्रधान
था. ये तीस भी उसके साथ थे, 43 माकाह का पुत्र हानन, और मिथिनवासी
यहोशाफ़ात, 44 अश्तारोथवासी उज्जियाह, अरोअरवासी होथाम के पुत्र शमा
और येइएल. 45 शिमरी का पुत्र येदिआएल, और उसका भाई तित्सी योहा. 46
महाव-वासी एलिएल, एलनाम के पुत्र येरिबाई, और योसावियाह और मोआबी
इथमाह. 47 एलिएल, ओबेद और मेत्सोबावासी यआसिएल.

12 ज़िकलाग में दावीद के समर्थक ये वे व्यक्ति हैं जिन्होंने ज़िकलाग में
दावीद की शरण ली थी, जब उन पर कीश के पुत्र शाऊल द्वारा रोक
लगा दी गई थी. (ये सभी उन वीर योद्धाओं में से थे, जिन्होंने युद्ध में दावीद की
बड़ी सहायता की थी. 2 ये धनुर्धारी सैनिक थे, जो धनुष चलाने में निपुण
होने के साथ साथ दाएं अथवा बाएं दोनों हाथों से गोफन में पत्थर रखकर
छोड़ सकते थे. ये बिन्यामिन प्रदेश से शाऊल के रिश्तेदार थे): 3 इनका प्रधान
था अहीएज़र इसके बाद योआश ये दोनों ही गिबियाथवासी शेमाआ के पुत्र
थे और अज़मावेथ के पुत्र, येत्सिएल और पेलेत, बेराका, अनाथोथी येहू, 4
गिबियोनवासियों का इशमाइया, जो उन तीस में शामिल एक वीर था और
वह उन तीसों का प्रधान था. येरेमियाह, याहाज़िएल, योहानन, गेदेराह का
योज़ाबाद, 5 एलुत्साई, येरीमोथ, बालियाह, शेमारियाहू, हारूफ़ी शेपाथियाह; 6
एलकाना, इश्शियाह, अज़रेल योएत्सर, और यासोबअम. ये सभी कोराह के
वंशज थे; 7 और गेदोर के येरोहाम के पुत्र योएलाह और ज़ेबादिया. 8 जब
दावीद बंजर भूमि के गढ़नगर में थे, गाद प्रदेश से उनके पास बलवान और
अनुभवी सैनिक जा पहुंचे. ये भाले और ढाल के कौशल में निपुण थे. इनका
मुखमंडल सिंहों के मुंह के समान था, जो ऐसी तेजी से दौड़ते थे जैसे पहाड़ों
पर दौड़ती हिरणी. 9 प्रधान था एज़र, दूसरा ओबदिया, तीसरा एलियाब, 10
मिशमन्नाह चौथा, येरेमियाह पांचवा, 11 अत्तई छठा, एलिएल सातवां, 12
योहानन आठवां, एलज़ाबाद नौवां, 13 येरेमियाह दसवां, मकबन्नाई ग्यारहवां.
14 गाद के वंशजों में से ये सेना के अधिकारी थे; इनमें निपुणता में सबसे छोटा
भी उनके एक सौ के समान था और सबसे बड़ा एक हज़ार के बराबर. 15 ये ही
वे हैं, जिन्होंने पहले महीने में यरदन नदी को उस स्थिति में पार किया था,
जब नदी का पानी दोनों तटों से उमड़ कर बह रहा था. उन्होंने घाटियों के
निवासियों को भगाकर पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में भगा दिया. 16 इसके
बाद बिन्यामिन और यहूदाह के वंशज दावीद से भेंट करने गढ़ में आए. 17
दावीद उनसे भेंट करने बाहर आ गए. दावीद ने कहा, "यदि आप मित्र-भाव में
मेरी सहायता के उद्देश्य से मुझसे मिलने आए हैं, मेरा हृदय आपसे जुड़ जाएगा;
मगर यदि यह मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों में सौंपने की योजना है, इसलिये कि मेरे
हाथों ने कुछ भी गलत नहीं किया है, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ही इस पर
दृष्टि करके निर्णय करें." 18 इसी समय पवित्रात्मा आमासाई पर जो उन तीस
पर प्रधान था, उतरे और आमासाई यह कहने लगा, "दावीद, हम आपके हैं!
यिशै के पुत्र, हम आपके साथ हैं! शांति, आप पर शांति बनी रहे, शांति आपके
सहायकों पर बनी रहे, निःसंदेह, आपके परमेश्वर आपकी सहायता करते हैं."
यह सुन दावीद ने उन्हें स्वीकार कर लिया और उन्हें सैनिकों का प्रधान बना
दिया. 19 दावीद जब शाऊल के विरुद्ध फिलिस्तीनियों के साथ युद्ध के लिए
तैयार हो ही रहे थे कि कुछ मनश्शेहवासी भी दावीद के साथ हो गए. (फिर भी
दावीद फिलिस्तीनियों के साथ युद्ध पर नहीं गए, क्योंकि फिलिस्तीनियों के
अधिकारियों ने आपस में विचार-विमर्श किया और दावीद को इस शक के साथ
लौटा दिया, "हमारे सिरों को कटवा कर वह अपने स्वामी शाऊल के पास लौट
जाएगा.") 20 दावीद जब वहां से ज़िकलाग को गए, मनश्शेहवासी अदनाह,
योज़ाबाद, येदिआएल, मिखाएल, योज़ाबाद, एलिहू और ज़िल्लेथाइ दावीद की
ओर आ गए थे. ये सभी हज़ारों के मुखिया मनश्शेह प्रदेश के थे. 21 इन सभी ने
छापामारों से दावीद को सुरक्षा दिलाई थी, क्योंकि ये सभी बहुत ही वीर और
सेना के प्रधान भी थे. 22 लोगों का दावीद के पास आने का काम चलता रहा
और देखते ही देखते परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना तैयार हो गई.
23 हज़ारों सेना की टुकड़ियों की गिनती इस प्रकार है. ये सब दावीद के पास
हेब्रोन में आए थे, कि उन्हें शाऊल का शासन सौंप दें, जैसी कि याहवेह का
कहा गया वचन था: 24 ढाल और भालाधारी यहूदिया के हज़ार सैनिकों की
गिनती 6,800 थी; 25 शिमओन से वीर योद्धा 7,100; 26 लेवी से 4,600,
27 अहरोन से शासक यहोयादा और उसके साथ 3,700 सैनिक. 28 सादोक
एक वीर योद्धा था, उसी के परिवार से बाईस सेनापति पैदा हुए थे. 29 इस समय
तक बिन्यामिन से, शाऊल के संबंधी 3,000 थे, क्योंकि अब तक शाऊल

के प्रति विश्वासयोग्य थे; 30 एफ्राईम से अपने पिता के वंश से प्रख्यात योद्धा
20,800; 31 मनश्शेह के आधे गोत्र से 18,000; इन्हें साफ़-साफ़ कह दिया
गया था कि वे आकर दावीद का राजाभिषेक करें. 32 इस्साखार से 200 प्रधान
थे, जिनके सभी संबंधियों पर उनका अधिकार था; 33 ये वे थे, जिन्हें यह
अहसास था कि इस्राएल के लिए कब क्या करना सबसे सही होगा. ज़ेबुलून से
50,000 वीर योद्धा थे; इनके पास युद्ध के सभी प्रकार के हथियार थे. ये
दावीद के प्रति पूरी तरह समर्पित थे, वे चंचल न थे. 34 नफताली से 37,000
सैनिक थे, जिन पर 1,000 सेनापति थे; 35 लड़ाई के लिए तैयार दान गोत्र से
28,600; 36 आशेर गोत्र से 40,000 युद्ध के लिए तैयार अनुभवी सैनिक;
37 यरदन नदी के दूसरी ओर से, रियूबेन के गोत्र, गाद के गोत्र और मनश्शेह के
आधे गोत्र से और गाद वंश गोत्र को दी गई भूमि के भाग से 1,20,000
सैनिक, जो युद्ध के लिए सभी प्रकार के हथियारों से सजे थे. 38 ये सभी,
जो वीर योद्धा थे, जो युद्ध व्यूह बनाने में निपुण थे. दावीद को पूरे इस्राएल पर
राजा बनाने की मंशा को लेकर हेब्रोन आए और सारा इस्राएल भी चाहते थे की
दावीद अपना राजा बनें. 39 वहां वे दावीद के साथ तीन दिन रहे. वहां उनकी
भोजन की पूरी व्यवस्था थी क्योंकि यह प्रबंध उनके लिए उनके भाइयों द्वारा
किया गया था. 40 इनके अलावा दूर-दूर से उनके संबंधी—इस्साखार, ज़ेबुलून
और नफताली प्रदेशों से अपने गधों, ऊंटों, खच्चरों और बैलों पर लादकर
भोजन सामग्री, बड़ी मात्रा में आटे से बने भोजन पदार्थ, अंजीर की टिक्कियां,
किशमिश के गुच्छे, अंगूर का रस, तेल ले आए, साथ ही बैल और भेड़ें भी,
क्योंकि इस्राएल में आनंद छा चुका था.

13 दावीद ने सहस्र पतियों, शतपतियों और हर एक शासक से विचार-विमर्श
किया. 2 दावीद ने सारी इस्राएली सभा को कहा, "यदि यह आपको
सही लगे, यदि यह याहवेह, हमारे परमेश्वर की ओर से है, हम हमेशा अपने
देशवासियों के लिए, जो सारे इस्राएल में बचे रह गए हैं, उन पुरोहितों और
लेवियों को, जो उनके साथ ऐसे नगरों में हैं, जिनमें चरागाह हैं यह संदेश भेजें,
कि वे आकर हमसे मिलें. 3 तब हम अपने परमेश्वर के संदूक को यहां ले आएं,
क्योंकि शाऊल के शासनकाल में हम परमेश्वर के संदूक से दूर रहे हैं." 4 सारी
सभा ऐसा करने के लिए राज़ी हो गई, क्योंकि यह बात सभी की नज़रों में सही
थी. 5 इस प्रकार दावीद ने मिस्र देश की शीख़ोर नदी से लेकर लबो-हामाथ तक
के सभी इस्राएलियों को इकट्ठा किया, कि परमेश्वर के संदूक को किरयथ-
यआरीम से लाया जाए. 6 सो दावीद और सारा इस्राएल परमेश्वर के संदूक
को, जो याहवेह की प्रतिष्ठा है, जिस पर याहवेह करूबों से ऊपर आसीन हैं,
यहूदिया प्रदेश के बालाह यानी किरयथ-यआरीम से लाने को गए. 7 अबीनादाब
के घर से एक नई गाड़ी पर परमेश्वर का संदूक ले जाया गया. इस गाड़ी को
चलानेवाले थे उज्जा और आहियो. 8 दावीद और सारा इस्राएल तरह-तरह के
बाजों और गीतों के सुरों पर परमेश्वर के सामने पूरे तन-मन से आनंदित हो रहे
थे. 9 जब वे कीदोन के खलिहान पर पहुंचे, बैल लड़खड़ा गए, और उज्जा ने
संदूक को थामने के लिए हाथ बढ़ाया. 10 तब उज्जा पर याहवेह का क्रोध
भड़क उठा. याहवेह ने उस पर वार किया, क्योंकि उसने संदूक की ओर अपना
हाथ बढ़ाया था. परमेश्वर के सामने उसकी मृत्यु हो गई. 11 उज्जा पर याहवेह
के इस क्रोध पर दावीद गुस्सा हो गए. वह स्थान आज तक पेरेज़-उज्जा कहा
जाता है. 12 दावीद उस दिन परमेश्वर से बहुत ही डर गए. वह विचार कर रहे
थे, "मैं परमेश्वर के संदूक को अपने इधर कैसे ला सकता हूं?" 13 इसलिये
दावीद संदूक को दावीद-नगर में नहीं ले गए, बल्कि वे संदूक को गाथ ओबेद-
एदोम के घर पर ले गए. 14 तब परमेश्वर का संदूक ओबेद-एदोम के घर पर,
उसके परिवार के साथ तीन महीने रहा. ओबोद-एदोम के परिवार और उसकी
संपत्ति पर याहवेह की कृपादृष्टि बनी रही.

14 सोर देश के राजा हीराम ने देवदार के पेड़ की लकड़ी, राजमिस्त्री और
बढ़ई के साथ अपने दूत भेजे. हीराम की इच्छा थी दावीद के लिए एक
घर बनवाना. 2 दावीद को यह साफ़ निश्चय हो गया था कि याहवेह ने उन्हें
राजा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है और यह भी कि याहवेह की प्रजा इस्राएल
के लिए उसका राज्य बहुत ही गौरवान्वित हो गया है. 3 येरूशलेम आकर बसने
पर दावीद और भी उपपत्नियां और पत्नियां ले आए, और उनके और भी संतान
पैदा हुईं. 4 येरूशलेम में पैदा उनकी संतान के नाम ये हैं: शम्मुआ, शोबाब,
नाथान, शलोमोन, 5 इबहार, एलिशुआ, एलपेलेत, 6 नोगाह, नेफ़ेग, याफिया,
7 एलिषमा, बीएलिआदा और एलिफेलेत. 8 जब फिलिस्तीनियों को यह मालूम
हुआ कि सारे इस्राएल के लिए दावीद का राजाभिषेक किया गया है, सभी
फिलिस्तीनी दावीद की खोज में निकल पड़े. दावीद को इसका समाचार मिल
गया. वह उनसे युद्ध करने निकल पड़े. 9 इस समय फिलिस्तीनी आकर रेफाइम
घाटी में फैल गए. 10 दावीद ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मैं फिलिस्तीनियों पर
हमला करूं? क्या आप उन्हें मेरे अधीन कर देंगे?" याहवेह ने दावीद को उत्तर
दिया, "हमला करो! मैं उन्हें तुम्हारे अधीन कर दूंगा." 11 दावीद और उसके
सैनिकों ने बाल-पेराज़िम नामक स्थान पर पहुंचे और वहां फिलिस्तीनियों को
हरा दिया. वहां दावीद ने यह घोषित किया, "परमेश्वर मेरे शत्रुओं पर कुछ ऐसे
टूट पड़े, जैसे बहुत से जल के बांध को तोड़ देते वक्त का बहाव." इस पर उस
स्थान का नाम पड़ गया, बाल-पेराज़िम. 12 फिलिस्तीनी अपने देवता वहीं
छोड़कर भागे थे. तब दावीद ने आदेश दिया और वे जला दिए गए. 13 एक बार
फिर फिलिस्तीनियों ने उस घाटी में छापा मारा. 14 दावीद ने दोबारा परमेश्वर से
पूछा और परमेश्वर ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम उनका पीछा करते हुए हमला न
करना, बल्कि घूमकर उनके पीछे जाओ और मोखा पेड़ों के सामने से उन पर
हमला करो. 15 हमला उस समय सही होगा, जब तुम्हें मोखा के पेड़ों के ऊपर
से सेना की चहल-कदमी सुनाई देने लगें. तब तुम युद्ध शुरू कर देना, क्योंकि
उस समय परमेश्वर तुम्हारे आगे-आगे फिलिस्तीनी सेना को मारते हुए आगे बढ़
रहे होंगे." 16 दावीद ने वैसा ही किया, जैसा परमेश्वर ने आदेश दिया था.
उन्होंने गिबयोन से लेकर गेज़ेर तक फिलिस्तीनी सेना को मार गिराया. 17 सभी
देशों में दावीद की कीर्ति फैलती चली गई. याहवेह ने सभी देशों पर उनका
आतंक फैला दिया.

15 दावीद ने दावीद-नगर में अपने लिए भवन बना लिए. उन्होंने परमेश्वर
के संदूक के लिए भी एक जगह तैयार की और उसके लिए शिविर
खड़ा किया. 2 तब दावीद ने आदेश दिया, "परमेश्वर के संदूक को लेवियों के
अलावा और कोई न उठाए, क्योंकि याहवेह ने हमेशा के लिए याहवेह के संदूक
को उठाने के लिए और अपनी सेवा के लिए उन्हें ही चुना है." 3 दावीद ने सारे
इस्राएल को येरूशलेम में इकट्ठा किया कि याहवेह के संदूक को येरूशलेम में
उनके द्वारा उसके लिए तैयार किए गए स्थान पर लाया जाए. 4 दावीद ने
अहरोन के इन पुत्रों और लेवियों को इकट्ठा किया: 5 कोहाथ के पुत्रों में से
उरीएल, जो प्रधान था और उसके 120 रिश्तेदार; 6 मेरारी के पुत्रों में से
असाइयाह, जो कि प्रधान था और उसके 220 संबंधी; 7 गेरशोम के पुत्रों में से
योएल, जो प्रधान था और उसके 130 संबंधी; 8 एलिज़ाफ़ान के पुत्रों में से,
शेमायाह, जो प्रधान था और उसके 200 संबंधी; 9 हेब्रोन के पुत्रों में से,
एलिएल, जो प्रधान था और उसके 80 संबंधी; 10 उज्ज़िएल के पुत्रों में से,
अम्मीनादाब, जो प्रधान था और उसके 112 भाइयों को. 11 तब दावीद ने
सादोक और अबीयाथर नामक पुरोहितों को और उरीएल असाइयाह, योएल,
शेमायाह, एलिएल और अम्मीनादाब नामक लेवियों को बुलवाकर 12 उन्हें
संबोधित करते हुए कहा, "आप सभी लेवी पितरों के गोत्रों के प्रधान हैं; आप
लोग अपने आपको शुद्ध कीजिए-अपने आपको और अपने रिश्तेदारों, दोनों

को, कि आप लोग याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को उस जगह पर ले
आएं, जो मैंने उसके लिए तैयार किया है. 13 पहली बार में आप लोगों ने इसको
नहीं निभाया था, इसलिये याहवेह, हमारे परमेश्वर का क्रोध हम पर भड़क गया
था. हमने व्यवस्था के अनुसार इसके उठाने के लिए उनकी इच्छा ही मालूम
नहीं की थी.” 14 तब पुरोहितों और लेवियों ने अपने आपको शुद्ध किया कि वे
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को ले आएं. 15 इसलिये लेवी वंशजों ने
परमेश्वर के संदूक को उसमें लगी बल्लियों के द्वारा उठाया, जैसा मोशेह द्वारा
आदेश दिया गया था, जैसा याहवेह ने मोशेह को बताया था. 16 दावीद ने
लेवियों के प्रधानों को यह आदेश दे रखा था कि वे अपने गायक संबंधियों
को चुनें कि वे बाजों के साथ और ऊंची आवाज की झांझ के साथ आनंद
में गायें. 17 इसलिये लेवियों ने इसके लिए इन लोगों चुना: योएल के पुत्र
हेमान और उसके संबंधियों को, बेरेखियाह के पुत्र आसफ और मेरारी के पुत्रों
में से उनके संबंधियों को, कुशायाह के पुत्र एथन को; 18 उनके साथ उनके
संबंधियों को, जो दूसरे पद में थे, ज़करयाह, बेन, जआत्सिएल, शेमिरामोथ
येहिएल, उन्नी, एलियाब, बेनाइयाह, मआसेइयाह, मत्तीथियाह, एलिफेलेह्,
मिकनेइया ओबेद-एदोम और येइएल को, जो द्वारपाल थे. 19 संगीतकार हेमान,
आसफ और एथन की जवाबदारी थी कांसे की झांझ को बजाना. 20 ज़करयाह,
आज़ेल, शेमिरामोथ, येहिएल, उन्नी, एलियाब मआसेइयाह और बेनाइयाह
की जवाबदारी थी तन्तु वादन पर अलामोथ के अनुसार बजाना. 21 किंतु
मत्तीथियाह, एलिफेलेह्, मिकनेइया, ओबेद-एदोम, येइएल और अज़रियाह की
जवाबदारी थी शेमिनिथ शैली में तन्तु वादन के अनुसार बजाना 22 लेवियों का
प्रधान केनानियाह सभी गानों का अधिकारी था. वह संगीत में कुशल था,
इसलिये वह निर्देश दिया करता था. 23 बेरेखियाह और एलकाना संदूक के
लिए ठहराए गए द्वारपाल थे. 24 शेबानियाहु, योशाफत, नेथानेल, आमासाई,
ज़करयाह, बेनाइयाह और एलिएज़र, ये सभी पुरोहित थे. इनकी जवाबदारी थी
परमेश्वर के संदूक के सामने तुरहियां बजाना. ओबेद-एदोम और येहियाह भी
संदूक के लिए ठहराए गए द्वारपाल थे. 25 इसलिये बहुत ही आनंद में भरकर
दावीद, इस्राएल के पुरनिए और सहस्र पति ओबेद-एदोम के घर से याहवेह के
संदूक को लाने के लिए गए. 26 उन्होंने सात बछड़ों और सात मेढ़ों की बलि
चढ़ाई क्योंकि याहवेह का संदूक उठानेवाले लेवियों को परमेश्वर द्वारा दी जा
रही सहायता साफ़ ही थी. 27 इस मौके पर दावीद ने उत्तम-उत्तम मलमल का
बागा पहना हुआ था, जैसा कि संदूक उठानेवाले लेवियों ने और गायकों और
गाने वालों को निर्देश देनेवाले केनानियाह ने भी. इसके अलावा दावीद मलमल
का एफ़ोद भी पहने हुए थे. 28 तब याहवेह की वाचा के संदूक को पूरे इस्राएल
ने जय जयकार करते हुए, नरसिंगे, तुरही, झांझों और तन्तु वादनों के ऊंचे
संगीत के आवाज के साथ लाया गया. 29 जैसे ही याहवेह की वाचा का संदूक
दावीद-नगर में आया, खिड़की से शाऊल की पुत्री मीखल ने खुशी में नृत्य करते
राजा दावीद को देखा और मन ही मन वह दावीद को तुच्छ मानने लगी.

16 उन्होंने परमेश्वर के संदूक को लाकर उस तंबू के भीतर, जिसे दावीद
ने उसके लिए विशेष रूप से बनवाया था, उसके निर्धारित स्थान पर
स्थापित कर दिया. इसके बाद दावीद ने याहवेह को अग्निबलि और मेल बलि
चढ़ाई. 2 जब दावीद अग्निबलि और मेल बलि चढ़ा चुके, उन्होंने प्रजा के
लिए सेनाओं के याहवेह के नाम में आशीर्वाद दिए. 3 उन्होंने इस्राएल के हर
एक व्यक्ति को; स्त्री-पुरुष दोनों ही को, एक-एक रोटी, मांस का एक भाग और
एक टिक्की किशमिश बंटवाई. 4 दावीद ने विशेष लेवियों को याहवेह के
संदूक के सामने सेवा के लिए ठहरा दिया कि वे याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
की दोहाई दें, उनका आभार माने और उनकी स्तुति करते रहें. 5 इनमें आसफ
प्रधान था इसके बाद दूसरे वर्ग में थे ज़करयाह, येइएल, शेमिरामोथ, येहिएल,
मत्तिथिया, एलियाब, बेनाइयाह, ओबेद-एदोम और येइएल. इनका काम था तन्तु
वाद्यों को बजाना. आसफ ऊंची आवाज में झांझ भी बजाता था. 6 पुरोहित
बेनाइयाह और याहाज़िएल की जवाबदारी थी परमेश्वर की वाचा के संदूक
के सामने लगातार तुरही बजाते रहना. 7 यह पहला मौका था, जब दावीद ने
आसफ और उसके संबंधियों को चुना कि वे याहवेह के लिए धन्यवाद के गीत
गाया करें: 8 याहवेह के प्रति आभार व्यक्त करो, उनको पुकारो; सभी राष्ट्रों के
सामने उनके द्वारा किए कार्यों की घोषणा करो. 9 उनकी प्रशंसा में गाओ,
उनका गुणगान करो; उनके सभी अद्भुत कार्यों का वर्णन करो. 10 उनके पवित्र
नाम पर गर्व करो; उनके हृदय, जो याहवेह के खोजी हैं, उल्लसित हों. 11
याहवेह और उनकी सामर्थ्य की खोज करो; उनकी उपस्थिति के सतत खोजी
बने रहो. 12 उनके द्वारा किए अद्भुत कार्य स्मरण रखो तथा उनके द्वारा हुईं
अद्भुत बातें एवं निर्णय भी, 13 उनके सेवक इस्राएल के वंश, उनके द्वारा चुने हुए
याकोब की संतान. 14 वह याहवेह हैं, हमारे परमेश्वर; समस्त पृथ्वी पर उनके
द्वारा किया गया न्याय स्पष्ट है. 15 उन्हें अपनी वाचा सदैव स्मरण रहती है, वह
आदेश जो उन्होंने हजार पीढ़ियों को दिया, 16 वह वाचा, जो उन्होंने अब्राहाम
के साथ स्थापित की, प्रतिज्ञा की वह शपथ, जो उन्होंने यित्सहाक से खाई थी,
17 जिसकी पुष्टि उन्होंने याकोब से अधिनियम स्वरूप की, अर्थात् इस्राएल
से स्थापित अमर यह वाचा: 18 “कनान देश तुम्हें मैं प्रदान करूंगा. यह वह
भूखण्ड है, जो तुम निज भाग में प्राप्त करोगे.” 19 जब परमेश्वर की प्रजा की
संख्या अल्प ही थी, वे बहुत ही कम थे, और वे उस देश में परदेशी थे, 20 जब
वे एक देश से दूसरे देश में भटकते फिर रहे थे, वे एक राज्य में से होकर दूसरे में
यात्रा कर रहे थे, 21 परमेश्वर ने किसी भी राष्ट्र को उन्हें दुःखित न करने दिया;
उनकी ओर से स्वयं परमेश्वर उन राजाओं को डांटते रहे: 22 “मेरे अभिषिक्तों
को स्पर्श तक न करना; मेरे भविष्यवक्ताओं को कोई हानि न पहुंचे.” 23 सारी
पृथ्वी याहवेह की स्तुति में गाए; हर रोज़ उनके द्वारा दी गई छुड़ौती की घोषणा
की जाए. 24 देशों में उनके प्रताप की चर्चा की जाए, और उनके अद्भुत कामों
की घोषणा हर जगह! 25 क्योंकि महान हैं याहवेह और सर्वाधिक योग्य हैं स्तुति
के; अनिवार्य है कि उनके ही प्रति सभी देवताओं से अधिक श्रद्धा रखी जाए. 26
क्योंकि अन्य जनताओं के समस्त देवता मात्र प्रतिमाएं ही हैं, किंतु स्वर्ग मंडल
के बनानेवाले याहवेह हैं. 27 वैभव और ऐश्वर्य उनके चारों ओर हैं, सामर्थ्य
और आनंद उनकी उपस्थिति में बसे हुए हैं. 28 राष्ट्रों के समस्त गोत्रो, याहवेह
को पहचानो, याहवेह को पहचानकर उनके तेज और सामर्थ्य को देखो. 29
याहवेह की प्रतिष्ठा के लिए उनका गुणगान करो; उनकी उपस्थिति में भेंट लेकर
जाओ. याहवेह की वंदना पवित्रता के ऐश्वर्य में की जाए. 30 उनकी उपस्थिति
में सारी पृथ्वी में कंपकंपी दौड़ जाए! यह एक सत्य है कि संसार दृढ रूप में
स्थिर हो गया है; यह हिल ही नहीं सकता. 31 स्वर्ग आनंदित हो और पृथ्वी
मगन; देश-देश में वह प्रचार कर दिया जाए, “यह याहवेह का शासन है.” 32
सागर और सभी कुछ, जो कुछ उसमें है, ऊंची आवाज करे; खेत और जो कुछ
उसमें है सब कुछ आनंदित हो. 33 तब बंजर भूमि के पेड़ों से याहवेह की स्तुति
में जय जयकार के गीत फूट पड़ेंगे. क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने आ रहे
हैं. 34 याहवेह का धन्यवाद करो-वे भले हैं; उनकी करुणा सदा की है. 35 तब
यह दोहाई दी जाए, “हमारे उद्धार करनेवाले परमेश्वर, हमें छुड़ा लीजिए, हमें
इकट्ठा कर देशों से हमें छुड़ा लीजिए. कि हम आपके पवित्र नाम का धन्यवाद
करें और आपकी स्तुति ही हमारा गौरव हो.” 36 आदि से अनंत काल तक धन्य
हैं. याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर! इस पर सारी प्रजा ने कहा, “आमेन” और
“याहवेह की स्तुति हो!” 37 तब दावीद ने हर दिन की आवश्यकता के अनुसार
याहवेह के संदूक के सामने नियमित सेवा के लिए आसफ और उसके संबंधियों
को जवाबदारी सौंप दी. 38 इनके अलावा यही जवाबदारी ओबेद-एदोम और

उसके अड़सठ रिश्तेदारों की भी थी. यदूथून का पुत्र ओबेद-एदोम भी होसाह
के साथ वहां द्वारपाल था. 39 दावीद ने गिबयोन के पवित्र स्थान पर पुरोहित
सादोक और उसके संबंधी पुरोहितों को याहवेह के मिलनवाले तंबू की सेवा के
लिए ठहरा दिया, 40 कि वे वहां होमबलि वेदी पर सुबह और शाम नियमित रूप
से याहवेह को बलि चढ़ाएं, ठीक जैसा याहवेह की व्यवस्था में कहा गया है,
जिसका आदेश इस्राएल को दिया गया है. 41 इनके साथ हेमान और यदूथून भी
थे और शेष वे थे जो इसके लिए अलग किए गए थे, जिन्हें उनके नाम से चुना
गया था कि वे याहवेह के प्रति उनके अपार प्रेम के लिए धन्यवाद करते रहें,
“जो सदा के लिए है.” 42 हेमान और यदूथून का एक और काम भी था;
तुरहियों, झांझों और अन्य वाद्य-यंत्रों पर उस समय बजाना, जब परमेश्वर के
लिए गीत गाए जा रहे होते थे. यदूथून के पुत्र द्वारपाल थे. 43 तब सभी वहां से
निकलकर अपने-अपने घर को लौट गए. दावीद भी अपने घर को चले गए, कि
अपने परिवार के लोगों को आशीर्वाद दें.

17 जब दावीद अपने लिए बनाए गए भवन में रहने लगे, तब उन्होंने
भविष्यद्वक्ता नाथान से कहा, “देखिए, मैं तो देवदार से बने भवन में रह
रहा हूं, मगर याहवेह की वाचा का संदूक सिर्फ पर्दों के अंदर रखा हुआ है.” 2
नाथान ने दावीद से कहा, “परमेश्वर आपके साथ हैं. आप वह सब कर सकते
है, जो आपके हृदय में आ रहा है.” 3 उसी रात परमेश्वर का वचन नाथान को
प्राप्त हुआ: 4 “मेरे सेवक दावीद से जाकर यह कहना, ‘याहवेह का कथन है:
तुम वह नहीं हो, जो मेरे रहने के लिए भवन बनाएगा. 5 क्योंकि इस्राएल के
निकाले जाने से लेकर अब तक मैं भवन में नहीं रहा हूं. मैं एक तंबू से दूसरे तंबू
में और एक निवास से दूसरे में रहता आया हूं. 6 सारी इस्राएली प्रजा के साथ
एक स्थान से दूसरे तक जाते हुए क्या मैंने इस्राएली प्रजा पर मेरे ही द्वारा चरवाहे
के पद पर रखे गए किसी भी न्यायाध्यक्ष से यह पूछा है, “तुमने मेरे लिए देवदार
की लकड़ी का भवन क्यों नहीं बनाया?”’ 7 “तब तुम्हें अब मेरे सेवक दावीद
से यह कहना होगा, सेनाओं के याहवेह का वचन है, ‘मैंने ही तुम्हें चरागाह से,
भेड़ों के चरवाहे के पद पर इसलिये चुना कि तुम्हें अपनी प्रजा इस्राएल का
शासक बनाऊं. 8 तुम जहां कहीं गए, मैं तुम्हारे साथ था. तुम्हारे सामने से
तुम्हारे सारे शत्रुओं को मैंने मार गिराया. मैं तुम्हारे नाम को ऐसा करूंगा, जैसा
पृथ्वी पर महान लोगों का होता है. 9 अपनी प्रजा इस्राएल के लिए मैं एक जगह
तय करूंगा, मैं उन्हें वहां बसाऊंगा कि वे वहां अपने ही घरों में रह सकें और
उन्हें वहां से चलाया न जाए और कोई भी दुष्ट व्यक्ति उन्हें पहले के समान
परेशान न करे. 10 हां, उस समय से शुरू करके, जब मैंने अपनी प्रजा इस्राएल
पर न्यायाध्यक्षों को शासक बनाया था. मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं को दबा दूंगा.
“‘इसके अलावा, मैं यह घोषित कर रहा हूं, याहवेह तुम्हें एक राजवंश के रूप में
बसाएंगे: 11 जब तुम मृत्यु या पूरी उम्र में अपने पूर्वजों से जा मिलोगे, मैं तुम्हारे
ही वंशज को तुम्हारे बाद खड़ा करूंगा. वह तुम्हारा ही अपना पुत्र होगा. मैं उसके
राज्य को स्थिरता दूंगा. 12 मेरे लिए भवन को वही बनाएगा. मैं उसका सिंहासन
हमेशा के लिए स्थिर करूंगा. 13 उसके लिए मैं पिता हो जाऊंगा और मेरे लिए
वह पुत्र होगा. उस पर से मेरा अपार प्रेम कभी न हटेगा, जैसा मैंने तुमसे पहले के
लोगों से हटा लिया था. 14 मैं उसे हमेशा के लिए अपने घर में, अपने राज्य में
प्रतिष्ठित करूंगा. उसका सिंहासन हमेशा के लिए अटल किया जाएगा.’” 15
नाथान ने अपने दर्शन और याहवेह के संदेश के अनुसार दावीद को सब कुछ बता
दिया. 16 तब राजा दावीद जाकर याहवेह के सामने बैठ गए. वहां उनके हृदय से
निकले वचन ये थे: “याहवेह परमेश्वर, कौन हूं मैं, और क्या है मेरे परिवार का
पद, कि आप मुझे इस जगह तक ले आए हैं? 17 परमेश्वर आपकी दृष्टि में यह
छोटा सा काम था. इतना ही नहीं, अपने-अपने सेवक के परिवार के बहुत आगे
के भविष्य के बारे में भी बता दिया है. याहवेह परमेश्वर, आपने मुझे ऊंचे पद के
व्यक्ति का स्थान दिया है. 18 “अपने सेवक को आपने जो सम्मान दिया है
उसके संबंध में इसके बाद दावीद कह ही क्या सकता है? आप अपने सेवक को
जानते हैं. 19 याहवेह, आपने अपने सेवक की भलाई में और स्वयं अपने हृदय
की इच्छा के अनुसार आपने ये सारे अद्भुत काम किए हैं कि इनमें आपकी
महानता प्रकट हो. 20 “जो कुछ हमने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार
याहवेह, कोई भी नहीं है आपके समान और न कोई ईश्वर आपके बराबर आ
सका है. 21 कौन है आपकी प्रजा इस्राएल के समान? जो पृथ्वी पर एकमात्र ऐसा
देश है, जिसे अपनी प्रजा बनाने के लिए स्वयं परमेश्वर उसे छुड़ाने के लिए आगे
आए. आपने जिस प्रजा को मिस्र देश से छुड़ाया था, उसके सामने से जनताओं
को निकाल के, अद्भुत और भयानक कामों को दिखाकर आपने अपनी कीर्ति
स्थापित की है. 22 आपने अपने ही लिए अपनी प्रजा इस्राएल को ऐसे बनाया है
कि वे सदा-सर्वदा के लिए आपकी प्रजा रहें. और, तब याहवेह, आप उनके
परमेश्वर हो गए. 23 “अब, याहवेह, अपने सेवक और उसके परिवार के संबंध
में आपने जो कुछ प्रकट किया है, हमेशा के लिए अटल हो, और आपके
वचन के अनुसार ही होता रहे. 24 इस विषय में यही कहा जाए, ‘इस्राएल के
परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह ही इस्राएल के परमेश्वर हैं!’ और आपके सेवक
दावीद का परिवार आपके सामने स्थिर हो जाएगा. 25 “क्योंकि मेरे परमेश्वर,
आपने अपने सेवक पर यह प्रकट किया है, कि आप उसके लिए घर बनाएंगे.
यही कारण है कि आपके सेवक को आपके सामने प्रार्थना करने की हिम्मत
मिली है. 26 याहवेह, परमेश्वर आप हैं और आपने अपने सेवक से यह भलाई
की प्रतिज्ञा की है. 27 और अब आपकी खुशी इसमें है कि आप अपने सेवक के
परिवार पर कृपादृष्टि करें, कि यह आपके सामने हमेशा अटल रहे; क्योंकि
याहवेह जब आपने आशीष दी है, तो यह आशीष हमेशा के लिए ही है.”

18 कुछ समय बाद दावीद ने फिलिस्तीनियों को युद्ध में हराया और
फिलिस्तीनियों के कब्जे के गाथ और उसके आस-पास के गांव उनके
अधिकार से छीन लिए. 2 दावीद ने मोआब देश को भी हराया और मोआब के
लोग दावीद के सेवक हो गए. वे दावीद को कर देने लगे. 3 दावीद ने ज़ोबाह के
राजा हादेदेज़र को भी हामाथ तक जाकर हराया क्योंकि हादेदेज़र फरात नदी के
तट पर एक स्मारक बनाने की योजना बना रहा था. 4 दावीद ने हादेदेज़र से
1,000 रथ, 7,000 घुड़सवार और 20,000 पैदल सैनिक छीन लिए
और रथों के घोड़ों के पैरो की प्रमुख नस काट दी, किंतु सौ रथों में इस्तेमाल
के लिए पर्याप्त घोड़ों को छोड़ दिया. 5 जब ज़ोबाह के राजा हादेदेज़र की
सहायता के लिए दमेशेक से अरामी वहां आए, दावीद ने 22,000 अरामियों
को मार दिया. 6 दावीद ने दमेशेक के अरामी सैनिकों के बीच एक रक्षक सेना
ठहरा दी. अरामी दावीद के सेवक बन गए और उन्हें कर देने लगे, दावीद जहां
कहीं गए, उन्हें याहवेह की सहायता मिलती रही. 7 हादेदेज़र के सेवकों द्वारा
ले जाई गई सोने की ढालों को दावीद ने लाकर येरूशलेम में रख दिया. 8 इसके
अलावा दावीद हादेदेज़र के नगर तिभाह और कून से भारी मात्रा में कांसा ले
आए, जिनसे शलोमोन ने पानी रखने के बर्तन, खंभे और दूसरे बर्तन बनाए थे. 9
जब हामाथ के राजा तोऊ ने यह सुना कि दावीद ने ज़ोबाह के राजा हादेदेज़र की
संपूर्ण सेना को हरा दिया है, 10 उसने अपने पुत्र हादरोम को राजा दावीद से भेंट
करने के लिए भेजा, कि वह राजा को बधाई दे सके; क्योंकि दावीद ने हादेदेज़र
से युद्ध कर उसे हरा दिया था. हादेदेज़र तोऊ से युद्ध करता रहा था. राजा तोऊ
ने अपने पुत्र के साथ सोने, चांदी और कांसे की तरह-तरह की वस्तुएं भेजी
थी. 11 राजा दावीद ने इन सभी वस्तुओं को उन वस्तुओं के साथ याहवेह को
समर्पित कर दी, जो वह उन सभी पराजित देशों यानी एदोम, मोआब, अम्मोन
के वंशजों, फिलिस्तीनियों और अमालेक से लेकर आए थे. 12 इसके अलावा
ज़ेरुइयाह के पुत्र अबीशाई ने नमक की घाटी में 18,000 सैनिकों की एदोमी

सेना को हराया. 13 दावीद ने एदोम में गढ़ रक्षक सेना बना दी; सभी एदोमवासी
दावीद के सेवक हो गए. दावीद जहां कहीं हमला करते थे, याहवेह ने उन्हें
सफलता प्रदान की. 14 दावीद सारे इस्राएल के शासक थे, उन्होंने अपनी सारी
प्रजा के लिए न्याय और सच्चाई की व्यवस्था की थी. 15 ज़ेरुइयाह के पुत्र
योआब सेना पर अधीक्षक था और अहीलूद के पुत्र यहोशाफ़ात लेखापाल था;
16 अहीतूब के पुत्र सादोक और अबीयाथर के पुत्र अहीमेलेख पुरोहित थे और
शावसा उनका सचिव था; 17 यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह केरेथि और पेलेथी
नगरवासियों पर मुख्य अधिकारी बनाया गया था; दावीद के पुत्र दावीद के साथ
उच्च अधिकारी थे.

19 अम्मोन के वंशजों के राजा नाहाश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र उसके
स्थान पर राजा हो गया. 2 दावीद ने सोचा, "मैं नाहाश के पुत्र हानून पर
अपनी दया बनाकर रखूंगा, क्योंकि उसका पिता मुझ पर कृपालु था," इसलिये
दावीद ने उसे उसके पिता की मृत्यु के संबंध में सांत्वना देने के लिए अपने दूत
भेजे. दावीद के दूत अम्मोन के वंशजों के नगर में राजा हानून को सांत्वना देने
पहुंचे, 3 किंतु अम्मोन के वंशजों के शासकों ने हानून से कहा, "क्या आप
वास्तव में यह मानते हैं कि इन दूतों को आपको सांत्वना देने के लिए भेजते हुए
दावीद ने आपके पिता का सम्मान करने का विचार किया है? ज़रा सोचिए, क्या
उसके ये सेवक आपके पास जासूसी करके नाश करने के लक्ष्य से हमारे देश का
भेद लेने तो नहीं आए हैं?" 4 तब हानून ने दावीद के सेवकों को पकड़कर
उनके बाल और दाढ़ी मूंड दी और उनके वस्त्रों को बीच में नितम्बों तक काट
दिया और उन्हें लौट जाने दिया. 5 कुछ लोगों ने जाकर इसकी सूचना दावीद
को दे दी. राजा ने कुछ दूतों को उस सुझाव के साथ बुलवा लिया, "आकर
येरीख़ो में उस समय तक ठहरे रहना जब तक तुम्हारी दाढ़ी बढ़ न जाए. तब तुम
यहां लौट सकते हो," क्योंकि वे इस समय बहुत ही शर्म महसूस कर रहे थे. 6
जब अम्मोन के वंशजों ने यह पाया कि उन्होंने स्वयं को दावीद के सामने बहुत
ही घृणित बना लिया है, हानून और अम्मोन के वंशजों ने लगभग पैंतीस हज़ार
किलो चांदी देकर मेसोपोतामिया, आराम-माकाह और ज़ोबाह से घुड़सवार और
रथ किराये पर ले लिए. 7 इसके द्वारा उन्होंने 32,000 रथ किराये पर ले
लिए. माकाह के राजा ने अपने सैनिकों के साथ आकर मेदेबा में शिविर डाल
दिए. अम्मोन के वंशजों ने अपने नगरों से इकट्ठा होकर युद्ध के लिए मोर्चा
बांधा. 8 जब दावीद को इसका समाचार प्राप्त हुआ, उन्होंने योआब के साथ
वीर योद्धाओं की सारी सेना वहां भेज दी. 9 अम्मोनियों ने आकर नगर फाटक
पर मोर्चा बना लिया. जो राजा इस युद्ध में मिले हुए थे, वे इनसे अलग मैदान में
ही ठहरे हुए थे. 10 जब योआब ने यह देखा कि उनके विरुद्ध युद्ध छिड़ चुका
है—सामने से और पीछे से भी, उन्होंने इस्राएल के सर्वोत्तम योद्धा अलग किए
और उन्हें अरामियों का सामना करने के लिए चुन दिया. 11 शेष सैनिकों को
योआब ने अपने भाई अबीशाई के नेतृत्व में छोड़ दिया कि वे अम्मोनियों का
सामना करें. 12 योआब का आदेश था, "यदि तुम्हें यह लगे कि अरामी मुझ पर
हावी हो रहे हैं, तब तुम मेरी रक्षा के लिए आ जाना, मगर यदि अम्मोनी तुम पर
प्रबल होने लगे, तब मैं तुम्हारी रक्षा के लिए आ जाऊंगा. 13 साहस बनाए रखो.
हम अपने परमेश्वर के नगरों के लिए और अपने देशवासियों के लिए साहस का
प्रदर्शन करें, कि याहवेह वह कर सकें, जो उनकी दृष्टि में सही है." 14 योआब
और उनके साथ के सैनिकों ने अश्शूरियों पर हमला किया और अरामी उनके
सामने से भाग खड़े हुए. 15 जब अम्मोनियों ने यह देखा कि अरामी मैदान
छोड़कर भाग रहे हैं, वे भी योआब के भाई अबीशाई के सामने से भागने लगे
और नगर के भीतर जा छिपे. योआब येरूशलेम लौट गया. 16 जब अश्शूरियों
ने यह देखा कि उन्हें इस्राएल से हार का सामना करना पड़ा है, तब उन्होंने दूत
भेजकर फरात नदी के पार से और भी सेना की विनती की. हादेदेज़र की इस
सेना का प्रधान था शोफख. 17 जब दावीद को इसकी सूचना दी गई, वह
सारी इस्राएली सेना को इकट्ठा कर यरदन के पार चले गए और उन्होंने अरामी
सेना के विरुद्ध मोर्चा बांधा. दोनों में युद्ध छिड़ गया. 18 अरामी इस्राएलियों के
सामने पीठ दिखाकर भागने लगे. दावीद ने अरामी सेना के 700 रथ सैनिक,
40,000 घुड़सवार मार गिराए और उनकी सेना के आदेशक शोफख का वध
कर दिया. 19 जब हादेदेज़र के अधीन सभी जागीरदारों ने यह देखा कि वे
इस्राएल द्वारा हरा दिया गया है, उन्होंने दावीद से संधि कर ली और उनके
अधीन हो गए. अब अरामी अम्मोन-वंशजो की सहायता के लिए तैयार न थे.

20 यह घटना वसन्त के मौसम की है, जब राजा युद्ध के लिए निकल पड़ते
थे. सेना की अगुवाई योआब कर रहा था. उन्होंने अम्मोन के वंशजों के
देश को नाश कर दिया था. उन्होंने रब्बाह नामक नगर पर घेरा डाल दिया. मगर
योआब ने रब्बाह पर हमला किया और उसे नाश कर दिया मगर इस मौके पर
दावीद येरूशलेम में ही रहे. 2 जब दावीद रब्बाह पहुंचा, तब दावीद ने उनके
राजा के सिर से मुकुट उतार लिया. इस मुकुट का कुल भार लगभग पैंतीस
किलो पाया गया. इस मुकुट में रत्न भी जड़े हुए थे. यह मुकुट दावीद के सिर
पर रख दिया गया. दावीद उस नगर से भारी मात्रा में लूटा हुआ सामान ले
आए. 3 दावीद उन नगरवासियों को नगर से बाहर निकाल लाए और उन्हें
आरियों, गेंतियों और कुल्हाड़ियों से होनेवाले कामों में लगा दिया. दावीद ने
अम्मोनियों के सभी नगरों के साथ यही किया. इसके बाद दावीद और सभी
लोग येरूशलेम लौट गए. 4 इसके बाद गेज़ेर में फिलिस्तीनियों के विरुद्ध युद्ध
छिड़ गया. इसमें हुशाथी सिब्बेकाई ने दैत्यों के वंशज सिप्पाई को मार गिराया,
जिससे फिलिस्तीनी दावीद के अधीन हो गए. 5 एक बार फिर फिलिस्तीनियों
से युद्ध छिड़ गया. याईर के पुत्र एलहानन ने गाथ गोलियथ के भाई लाहमी को
मार डाला, लाहमी के भाले की छड़ बुनकर के छड़ के बराबर थी. 6 तब एक
बार फिर गाथ में युद्ध छिड़ गया. वहां एक बहुत ही विशाल डीलडौल का व्यक्ति
था, जिसके हाथों और पांवों में छः-छः उंगलियां थीं-पूरी चौबीस. वह भी
दानवों का ही वंशज था. 7 जब उसने इस्राएल पर व्यंग्य-बाण छोड़ने शुरू किए,
दावीद के भाई शिमिया के पुत्र योनातन ने उसको मार दिया. 8 ये सभी गाथ नगर
में दानवों का ही वंशज था. वे दावीद और उनके सेवकों द्वारा मार गिराए गए.

21 शैतान इस्राएल के विरुद्ध सक्रिय हुआ और उसने दावीद को इस्राएल की
गिनती के लिए उकसाया. 2 दावीद ने सेनापति योआब को आदेश दिया,
"जाकर बेअरशेबा से लेकर दान तक इस्राएल की गिनती करो और मुझे पूरा
ब्यौरा दो कि मुझे लोगों की गिनती मालूम हो सके." 3 मगर योआब ने मना
किया, "आज प्रजा की जो गिनती है, याहवेह उसे सौ गुणा बढ़ाएं. महाराज मेरे
स्वामी, क्या उनमें से हर एक मेरे स्वामी का सेवक नहीं है? तब मेरे स्वामी को
इसकी क्या ज़रूरत है? यह क्यों इस्राएल के दोष का कारण बने?" 4 मगर राजा
को योआब की सलाह पसंद नहीं आई. इसलिये योआब इस काम के लिए
निकला. वह पूरे इस्राएल में घूमा और काम पूरा कर येरूशलेम लौट आया. 5
योआब ने दावीद को लोगों की गिनती का जोड़ सुनाया: पूरे इस्राएल में ग्यारह
लाख और यहूदिया में चार लाख सत्तर हज़ार तलवार चलानेवाले व्यक्ति थे. 6
इनमें योआब ने लेवी और बिन्यामिन वंश की गिनती नहीं की थी क्योंकि
योआब की नज़र में राजा का यह आदेश गलत था. 7 परमेश्वर दावीद के
इस काम से नाराज़ हुए. इसलिये उन्होंने इस्राएल पर वार किया. 8 दावीद ने
परमेश्वर से कहा, "इस काम को करके मैंने घोर पाप किया है, मगर अब कृपा
करके अपने सेवक का अपराध दूर कर दीजिए. यह मेरी घोर मूर्खता थी." 9
याहवेह ने दावीद के दर्शी गाद को यह आदेश दिया, 10 "जाओ और दावीद से
यह कहो, 'याहवेह का यह संदेश है, मैं तुम्हारे सामने तीन विकल्प प्रस्तुत कर

रहा हूं. इनमें से तुम एक चुन लो, कि मैं उसे तुम पर इस्तेमाल कर सकूं.'" 11
तब गाद ने दावीद के सामने जाकर उनसे कहा: "यह याहवेह का संदेश है,
'अपने लिए चुन लो: 12 तीन साल के लिए अकाल, या तीन महीने तक तुम्हारे
शत्रुओं द्वारा मार, जब उनकी तलवार नाश करती रहेगी या तीन दिन पूरे देश में
याहवेह की तलवार की महामारी, जब याहवेह का दूत सारे इस्राएल देश की
सीमाओं के भीतर महाविनाश करता जाएगा.' इसलिये अब विचार कीजिए कि
मैं लौटकर उन्हें क्या उत्तर दूं, जिन्होंने मुझे यहां भेजा है." 13 दावीद ने गाद से
कहा, "मैं घोर संकट में हूं. कृपया मुझे याहवेह के हाथ में पड़ जाने दीजिए,
क्योंकि बहुत बड़ी है उनकी दया. बस, मुझे किसी मनुष्य के हाथ में न पड़ने
दीजिए." 14 तब याहवेह ने इस्राएल पर महामारी भेजी. इस्राएल के सत्तर हज़ार
लोगों की मृत्यु हो गई. 15 येरूशलेम के विनाश के लिए परमेश्वर ने एक
स्वर्गदूत भेजा. मगर जब यह दूत येरूशलेम को नाश करने पर ही था, याहवेह ने
इस पर दृष्टि की और महामारी देख वह दुःखी हो गए. उन्होंने उस विनाश
करनेवाले स्वर्गदूत को आदेश दिया, "बहुत हुआ! आराम दो अपने हाथ को."
याहवेह का दूत यबूसी औरनन के खलिहान के पास खड़ा हुआ था. 16 दावीद
ने आंखें उठाई तो देखा कि याहवेह का दूत पृथ्वी और आकाश के बीच खड़ा
हुआ था. उसके हाथ में जो तलवार थी वह येरूशलेम की ओर बढ़ी हुई थी. यह
देख दावीद और उनके साथ के प्राचीन, जिन्होंने टाट पहन रखी थी, मुंह के
बल दंडवत हो गए. 17 दावीद ने परमेश्वर से विनती की, "क्या जनता की
गिनती का आदेश मेरा ही न था? पाप मैंने किया है बड़ा बुरा काम हुआ है
मुझसे. इन भेड़ों पर विचार कीजिए. क्या गलत किया है इन्होंने? याहवेह, मेरे
परमेश्वर, दया करें-आपका हाथ मुझ पर और मेरे पिता के परिवार पर उठे, मगर
आपकी प्रजा पर नहीं कि उन पर महामारी की मार हो." 18 इस अवसर पर
याहवेह के दूत ने गाद को आदेश दिया कि वह दावीद से कहें, कि दावीद
जाकर याहवेह के लिए यबूसी औरनन के खलिहान पर एक वेदी बनाए. 19
तब याहवेह द्वारा गाद को दिए गए आदेश के अनुसार दावीद वहां गए. 20
औरनन जैसे ही मुड़ा, उसे स्वर्गदूत दिखाई दिया. यह देखते ही औरनन के साथ
उसके जो चार पुत्र वहां थे, छिप गए. इस समय औरनन गेहूं की दांवनी (भूसी
निकालना) कर रहा था. 21 जब दावीद औरनन के निकट पहुंचे, औरनन की
दृष्टि दावीद पर पड़ी, वह खलिहान छोड़कर दावीद के सामने जा गिरा और
दंडवत हो उन्हें प्रणाम किया. 22 दावीद ने औरनन से कहा, "मुझे यह खलिहान
दे दो, कि मैं इस पर याहवेह के लिए एक वेदी बना सकूं. तुम यह मुझे इसके
पूरे-पूरे मूल्य पर दे दो कि याहवेह द्वारा मेरी प्रजा पर भेजी यह महामारी शांत की
जा सके." 23 औरनन ने दावीद से कहा, "आप इसे ले लीजिए! महाराज, मेरे
स्वामी को जो कुछ सही लगे वही करें. देखिए, मैं तो आपको होमबलि के लिए
बैल, लकड़ी के लिए दंवरी का औज़ार और अन्नबलि के लिए गेहूं दिए देता हूं.
यह सब आप मुझसे ले लें." 24 किंतु राजा दावीद ने औरनन को उत्तर दिया,
"नहीं, मैं यह सब पूरा दाम चुकता करके ही लूंगा. याहवेह को चढ़ाने के लिए
जो कुछ तुम्हारा है, उसे मैं नहीं ले सकता. मैं वह होमबलि नहीं चढ़ाऊंगा,
जिसका दाम मैंने चुकता नहीं किया है." 25 इसलिये दावीद ने औरनन को
खलिहान के लिए सात किलो सोना चुकाया. 26 तब दावीद ने वहां याहवेह के
लिए एक वेदी बनाई और उस पर होमबलि और मेल बलि भेंट की. दावीद
ने याहवेह की दोहाई दी और याहवेह ने इसका उत्तर स्वर्ग से होमबलि वेदी
पर आग भेजकर दिया. 27 याहवेह ने स्वर्गदूत को आदेश दिया और उसने
तलवार को म्यान में रख लिया. 28 उस अवसर पर, जब दावीद ने यह देखा कि
याहवेह ने उन्हें यबूसी औरनन के खलिहान पर उत्तर दिया है, उन्होंने उसी
स्थान पर बलि चढ़ा दी. 29 क्योंकि बंजर भूमि में मोशेह द्वारा बनाए याहवेह के
मिलनवाले तंबू और होमबलि वेदी इस समय गिबयोन के आराधना की जगह पर
ही थी. 30 दावीद परमेश्वर से पूछताछ करने उस वेदी के सामने न जा सके थे
क्योंकि वह याहवेह के दूत की तलवार से बहुत ही डरे हुए थे.

22 तब दावीद ने कहा, "यह याहवेह परमेश्वर का भवन है और इस्राएल
के लिए यही होमबलि वेदी है." 2 दावीद ने आदेश दिया कि इस्राएल
देश में बसे विदेशियों को इकट्ठा किया जाए. उन्होंने परमेश्वर के भवन बनाने
के लिए पत्थरों को संवारने के लिए शिल्पी चुने. 3 दावीद ने भारी मात्रा में
लोहा तैयार किया कि इससे तरह-तरह के दरवाजों के लिए कीलें और शिकंजे
तैयार किए जा सकें. उन्होंने इतना कांसा इकट्ठा कर लिया जिसे नापना-तौलना
मुश्किल हो गया था. 4 अनगिनत हो गई थी देवदार के पेड़ों की बल्लियां,
क्योंकि सीदोन और सोरवासी दावीद के लिए बड़ी भारी मात्रा में देवदार की
बल्लियां ले आए थे. 5 दावीद सोच रहे थे, "याहवेह के लिए जो भवन बनाया
जाना है, उसके लिए ज़रूरी है कि वह बहुत ही भव्य होगा. वह ऐसा शोभायमान
होगा कि देशों तक उसका यश पहुंच जाएगा; जबकि मेरा पुत्र शलोमोन कम उम्र
का और कम अनुभव का है. इसलिये मैं इसी समय इसकी तैयारी शुरू किए देता
हूं." सो अपनी मृत्यु के पहले ही दावीद ने बड़ी मात्रा में भवन बनाने का सामान
इकट्ठा कर लिया. 6 तब दावीद ने अपने पुत्र शलोमोन को बुलवाया और उसे
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के सम्मान में एक भवन को बनाने की जवाबदारी
सौंप दी. 7 शलोमोन से दावीद ने कहा: "याहवेह, मेरे परमेश्वर के सम्मान में
एक भवन को बनाने की योजना मेरी थी; 8 मगर मुझे इस बारे में याहवेह का
यह संदेश प्राप्त हुआ: 'तुमने बहुतों को मारा है, तुमने बहुत सी लड़ाइयां लड़ी
हैं; मेरे सम्मान में भवन को तुम नहीं बनवाओगे. मेरे देखते हुए तुमने भूमि पर
बहुत खून बहाया है. 9 तुम देखना, तुम्हें एक पुत्र पैदा होगा. वह एक शांत
व्यक्ति होगा. उसे मैं उसके चारों ओर के सभी शत्रुओं से शांति दूंगा, क्योंकि
उसका नाम शलोमोन होगा. उसके शासनकाल में मैं इस्राएल को शांति और
आराम दूंगा. 10 मेरे सम्मान में भवन को वही बनाएगा. वह मेरा पुत्र होगा
और मैं उसका पिता. इस्राएल में मैं उसका राज सिंहासन हमेशा के लिए स्थाई
कर दूंगा.' 11 "इसलिये मेरे पुत्र, याहवेह तुम्हारे साथ साथ बने रहें, कि तुम
सफल हो जाओ और याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर का भवन ठीक वैसे ही बनवाओ,
जैसा उन्होंने तुम्हारे बारे में कहा है. 12 याहवेह ही तुम्हें सूझ-बूझ, समझ और
इस्राएल पर अधिकार दें कि तुम याहवेह अपने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन
कर सको. 13 याहवेह ने मोशेह के द्वारा जो व्यवस्था और नियम दिए हैं, तुम
यदि उनका पालन सावधानी से करोगे, तुम फलवंत हो जाओगे. सक्षम साबित
होओ, दृढ़ बनो. तुममें न तो झिझक हो और न ही तुम्हारा मन कच्चा हो. 14
"तुम देख ही रहे हो कि मैंने बड़ी मेहनत से पैंतीस लाख किलो सोना, साढ़े तीन
करोड़ किलो चांदी और अपार कांसा और लोहा, जिन्हें मापना असंभव है.
याहवेह के भवन को बनाने के लिए तैयार कर रखा है. ये सभी बड़ी मात्रा में
इकट्ठा किए गए हैं. मैंने लकड़ी और चट्टानें भी तैयार कर रखी हैं. ज़रूरत पड़ने
पर तुम भी और सामान ला सकते हो. 15 तुम्हारे लिए अनेक कर्मचारी हैं:
पत्थर का काम करनेवाले शिल्पी, भवन बनानेवाले कर्मी, जो पत्थर का काम
जानते हैं, लकड़ी के शिल्पी और वे सभी व्यक्ति, जो हर एक काम में निपुण हैं.
16 सोना, चांदी, कांसा और लोहा अपार मात्रा में हैं. उठो और काम शुरू कर दो.
याहवेह तुम्हारे साथ होंगे." 17 दावीद ने इस्राएल के सभी अगुओं को अपने पुत्र
शलोमोन की सहायता के लिए यह आदेश दिया. 18 "आपको यह अहसास तो
है, कि याहवेह आपके परमेश्वर आपके साथ हैं और उन्होंने आपको हर तरह से
शांति दी है, क्योंकि उन्होंने इस देश के मूल निवासियों को मेरे अधीन कर दिया
है, जिससे पूरा देश याहवेह और उनकी प्रजा के सामने दबाया जा चुका है. 19
अब याहवेह अपने परमेश्वर की खोज करने का संकल्प पूरे हृदय और पूरे प्राण
से कीजिए. इसलिये उठिए. याहवेह परमेश्वर के भवन को बनाने में जुट जाइए;

कि आप याहवेह की वाचा के संदूक और परमेश्वर के पवित्र बर्तन उस भवन में
ला सकें, जो याहवेह के आदर में बनाया जाने पर है."

23 जब दावीद बूढ़े हो गए, उन्होंने अपने पुत्र शलोमोन को इस्राएल पर
राजा ठहरा दिया. 2 उन्होंने इस्राएल के सभी अगुओं को पुरोहितों और
लेवियों के साथ इकट्ठा किया. 3 तीस साल और तीस साल से ज्यादा उम्र के
लेवियों की गिनती की गई. गिनती में पुरुषों की कुल संख्या थी अड़तीस
हज़ार. 4 दावीद ने आदेश दिया, "इनमें से चौबीस हज़ार लोगों की जवाबदारी
है याहवेह के भवन को बनाने के काम की अगुवाई करना, और छः हज़ार का
काम है प्रशासन और न्याय करना, 5 और चार हजार द्वारपाल, और बाकी चार
हज़ार याहवेह की स्तुति जो संगीत वाद्यंत्र मैंने प्रदान किए हैं, उन पर करते
रहेंगे." 6 दावीद ने लेवी के वंश के अनुसार उन्हें गेरशोन, कोहाथ और मेरारी
दलों में बांट दिया था. 7 गेरशोन के वंशजों में से थे: लादान और शिमेई. 8
लादान के पुत्र थे: जेठा येहिएल और ज़ेथम और योएल—कुल तीन. 9 शिमेई
के पुत्र: शेलोमोथ, हाज़ीएल और हारान—कुल तीन. (लादान के घराने के प्रधान
थे.) 10 शिमेई के पुत्र थे: याहाथ, ज़िज़ा, येऊश और बेरियाह. ये चारों शिमेई
के पुत्र थे. 11 (याहाथ जेठा था और ज़िज़ाह छोटा; मगर येऊश और बेरियाह
के बहुत पुत्र न हुए इसलिये उनकी गिनती एक ही घराने में की गई.) 12 कोहाथ
के चार पुत्र थे: अमराम, इज़हार, हेब्रोन और उज्ज़िएल. 13 अमराम के पुत्र थे:
अहरोन और मोशेह. अहरोन को अलग रखा गया था कि वह अति पवित्र वस्तुएं
चढ़ाया करें, कि वह और उनके पुत्र हमेशा याहवेह के सामने बलि चढ़ाया
करें, उनकी सेवा करें और हमेशा उनके नाम में आशीर्वाद दिया करें. 14 मगर
परमेश्वर के जन मोशेह के संबंध में स्थिति यह थी कि उनके पुत्रों की गिनती
लेवियों के वंश में की गई. 15 मोशेह के पुत्र थे: गेरशोम और एलिएज़र. 16
गेरशोम का पुत्र: शुबेल, जो प्रधान था. 17 एलिएज़र का पुत्र था: रेहाबिया, जो
प्रधान था. (एलिएज़र की दूसरी कोई संतान न थी; हां, रेहाबिया की अनेक
संतान पैदा हुई.) 18 इज़हार का पुत्र था: शेलोमीथ, जो प्रधान था. 19 हेब्रोन
के पुत्र थे, पहला येरिया, दूसरा अमरियाह, तीसरा याहाज़िएल और चौथा
येकामियम. 20 उज्ज़िएल के पुत्र थे: पहला मीकाह और दूसरा इश्शियाह. 21
मेरारी के पुत्र थे: माहली और मूशी. माहली के पुत्र थे: एलिएज़र और कीश.
22 (एलिएज़र की मृत्यु बिना किसी पुत्र के हो गई. हां, उसके पुत्रियां ज़रूर हुईं.
इसलिये उनके रिश्तेदारों यानी कीश के पुत्रों ने उनसे विवाह कर लिया.)
23 मूशी के तीन पुत्र हुए: माहली, एदर और येरेमोथ. 24 कुलों के लेखों के
अनुसार लेवी के पुत्र इस प्रकार थे—ये उन घरानों के प्रधान थे, जिनके नाम
गिनती में लिखे गए थे, जिनका काम था याहवेह के भवन में सेवा करना.
इनकी उम्र बीस साल और इससे ऊपर की होती थी. 25 दावीद का विचार था,
"याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने अपनी प्रजा को सुरक्षा और शांति दी है. अब
हमेशा के लिए उनका रहना येरूशलेम में हो गया है. 26 यह भी सच है कि अब
वह स्थिति नहीं आएगी, जब लेवियों को मिलनवाले तंबू और इसमें की जा रही
सेवा से संबंधित बर्तन इधर-उधर करने होंगे." 27 क्योंकि दावीद के पिछले
आदेश के अनुसार बीस साल और इससे ऊपर के लेवियों का नाम लिखा गया
था. 28 उनका काम था अहरोन के पुत्रों की याहवेह के भवन के विभिन्न कामों
में सहायता करना. आंगन की देखरेख में, कमरों की देखरेख में, पवित्र बर्तनों
और वस्तुओं की साफ़-सफाई का ध्यान रखने में और परमेश्वर के भवन से
संबंधित विभिन्न कामों में उनकी सहायता करना. 29 इनके अलावा उनकी
जवाबदारी भेंट की रोटियों, अन्नबलि के मैदे, खमीर रहित पपड़ियां, गोल
रोटी की टिकियां, इन सबका विशेष ध्यान रखना, सबको तोलना और मिश्रण
तैयार करना. 30 उनका काम था कि वे सुबह और शाम खड़े रहकर याहवेह
को धन्यवाद देते हुए उनकी स्तुति करें, 31 याहवेह को शब्बाथों, नए चांद
उत्सवों और सम्मेलनों में इनके बारे में दिए गए आदेशों के अनुसार लगातार
होमबलि चढ़ाते रहना. 32 इस प्रकार याहवेह के भवन की सेवा के लिए उनकी
जवाबदारी थी, मिलनवाले तंबू, पवित्र स्थान और उनके संबंधी अहरोन के पुत्रों
की अगुवाई.

24 अहरोन-वंशजों के समूह ये थे: अहरोन के पुत्र थे नादाब, अबीहू,
एलिएज़र और इथामार. 2 मगर नादाब और अबीहू की मृत्यु उनके पिता
के देखते-देखते हो गई थी. उनके कोई संतान भी न थी. फलस्वरूप एलिएज़र
और इथामार ने पौरोहितिक कार्यभार अपने ऊपर ले लिया. 3 एलिएज़र वंशज
सादोक और इथामार-वंशज अहीमेलेख के साथ मिलकर दावीद ने सेवा के लिए
उनके पदों के अनुसार उनके समूहों को बांट दिया. 4 इसलिये कि एलिएज़र-
वंशजों में इथामार-वंशजों से संख्या में ज्यादा मुख्य पाए गए, उनका बंटवारा
इस प्रकार किया गया: एलिएज़र-वंशजों में सोलह और इथामार-वंशजों में आठ
मुख्य पाए गए, ये दोनों ही उनके घरानों के अनुसार थे. 5 पासा फेंकने की प्रथा
के द्वारा इन सभी का बंटवारा किया गया था; बिना किसी भेद-भाव के सभी का,
क्योंकि वे मंदिर के, हां, परमेश्वर के लिए चुने गए अधिकारी थे. ये दोनों ही
एलिएज़र और इथामार-वंशज थे. 6 लेवियों में से नेथानेल के पुत्र शेमायाह ने
राजा, शासकों, पुरोहित सादोक, अबीयाथर के पुत्र अहीमेलेख और पुरोहितों
के घरानों और लेवियों के सामने इन्हें लिख लिया. एक घराना एलिएज़र के
लिए और एक घराना इथामार के लिए लिखा गया. 7 इस प्रक्रिया से पहला
पासा यहोइयारिब के लिए, दूसरा येदाइयाह के लिए, 8 तीसरा हारिम के लिए,
चौथा सेओरिम के लिए, 9 पांचवां मालाखियाह के लिए, छठा मियामिन
के लिए, 10 सातवां हक्कोज़ के लिए, आठवां अबीयाह के लिए, 11 नवां
येशुआ के लिए, दसवां शेकानियाह के लिए, 12 ग्यारहवां एलियाशिब के लिए,
बारहवां याकिम के लिए, 13 तेरहवां हुप्पाह के लिए, चौदहवां येशेबियाब के
लिए, 14 पन्द्रहवां बिलगाह के लिए, सोलहवां इम्मर के लिए, 15 सत्रहवां
हेज़ीर के लिए, अठारहवां हापीज़ीज़ के लिए, 16 उन्नीसवां पेथाइयाह के लिए,
बीसवां यहेजकेल के लिए, 17 इक्कीसवां याकिन के लिए, बाईसवां गामुल के
लिए, 18 तेईसवां देलाइयाह के लिए और चौबीसवां माजियाह के लिए निकला.
19 जब ये अपने पूर्वज अहरोन द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार याहवेह के
भवन में आए, उन्हें सेवा के लिए ये ही पद सौंपे गए थे-ठीक जैसा आदेश उन्हें
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने दिया था. 20 इनके अलावा लेवी के अन्य
वंशजों का लेखा इस प्रकार है: अमराम के पुत्रों में से शेबुएल; शेबुएल के पुत्रों
में से येहदेइया. 21 रेहाबिया के पुत्रों में से इश्शियाह, जो जेठा भी था. 22
इज़हारियों के वंशजों में से शेलोमोथ; शेलोमोथ के वंशजों में से याहाथ. 23
हेब्रोन के पुत्र थे येरिया: जो जेठा भी था, अमरियाह छोटा था, याहाज़िएल
तीसरा और येकामियम चौथा. 24 उज्ज़िएल के पुत्रों में से मीकाह; मीकाह के
पुत्रों में से शामीर. 25 मीकाह का भाई था इश्शियाह; इश्शियाह के पुत्रों में से
ज़करयाह. 26 मेरारी के पुत्र माहली और मूशी; यआत्सियाह का पुत्र बेनो, 27
मेरारी के पुत्र: बेनो, शोहाम, ज़क्कूर और इबरी, जो यआत्सियाह से थे. 28
माहली से एलिएज़र, जिसके कोई संतान न हुई. 29 कीश से कीश के पुत्र थे:
येराहमील. 30 मूशी के पुत्र माहली एदर और येरीमोथ. ये सभी लेवियों के
वंशज थे, जैसा उनके घराने द्वारा स्पष्ट है. 31 ठीक अपने संबंधियों, अहरोन-
वंशजों के समान, उन्होंने भी राजा दावीद, सादोक, अहीमेलेख, लेवियों और
पुरोहितों के घरानों के प्रधानों के सामने अपने पासे फेंके. ये सभी घरानों के
प्रधान भी थे और उनके छोटे भाइयों के कुल के भी.

25 दावीद और सेनापतियों ने मिलकर आसफ, हेमान और यदूथून के पुत्रों
को अलग कर दिया कि जब वे नेबेल और किन्नोर नामक वाद्य यंत्र और

झांझ बजाएं, वे भविष्यवाणी किया करें. जिन्हें इस सेवा की जवाबदारी सौंपी
गई थी, उनकी सूची इस प्रकार है. **2** आसफ के पुत्रों में से: ज़क्कूर, योसेफ़,
नेथनियाह और आषारेलाह. आसफ के पुत्र खुद आसफ की अगुवाई में सेवा
करते थे, आसफ राजा के आदेश पर भविष्यवाणी करते थे. **3** यदूथून-वंशज:
यदूथून के वंशज थे गेदालियाह, ज़ेरी, येशाइयाह, शिमेई, हशाबियाह और
मत्तीथियाह, ये छः अपने पिता यदूथून के साथ किन्नोर वाद्य यंत्र के संगीत में
याहवेह की स्तुति करते, उनके प्रति धन्यवाद प्रकट करते और भविष्यवाणी
करते थे. **4** हेमान वंशज: हेमान के पुत्र थे बुक्कियाह, मत्तनियाह, उज्ज़िएल,
शुबेल और येरीमोथ, हननियाह, हनानी, एलियाथाह, गिद्दालती और रोमामती-
एत्सर, योषबेकाषाह, मल्लोथी, होथीर, माहाज़ीयोथ. **5** (ये सभी राजा के दर्शी
हेमान के पुत्र थे. इनकी जवाबदारी थी परमेश्वर के आदेश के अनुसार उनकी
स्तुति करते रहना; क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह पुत्र और तीन पुत्रियां दी
थी.) **6** ये सभी याहवेह के भवन में उनके पिता की ही अगुवाई में, परमेश्वर के
भवन की आराधना में झांझों, नेबेलों और किन्नोरों के संगीत पर गाने के लिए
चुने गये थे. आसफ, यदूथून और हेमान राजा के सामने उनकी अगुवाई में काम
करते थे. **7** सभी कुशल संगीतकारों और याहवेह के लिए गाने के लिए निपुण
गायकों की, उनके संबंधियों के साथ कुल संख्या 288 थी. **8** इन सभी ने
अपनी ज़िम्मेदारियों का ज़िम्मा लेने के उद्देश्य से पासे फेंके-सभी ने, चाहे खास
हो या सामान्य, शिक्षक हो या विद्यार्थी. **9** पहला संकेत आसफ से योसेफ़ के
लिए था, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, दूसरा गेदालियाह, उसके पुत्र
और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **10** तीसरे में ज़क्कूर, उसके पुत्र और संबंधी,
कुल 12 व्यक्ति, **11** चौथे में इज़री, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति,
12 पांचवें में नेथनियाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **13** छठवें में
बुक्कियाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **14** सातवें में येशारेलाह,
उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **15** आठवें में येशाइयाह, उसके पुत्र
और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **16** नवें में मत्तनियाह, उसके पुत्र और संबंधी,
कुल 12 व्यक्ति, **17** दसवें में शिमेई, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति,
18 ग्यारहवें में अज़रेल, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **19** बारहवें में
हशाबियाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **20** तेरहवें में शेबुएल,
उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **21** चौदहवें में मत्तीथियाह, उसके पुत्र
और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **22** पन्द्रहवें में येरेमोथ, उसके पुत्र और संबंधी,
कुल 12 व्यक्ति, **23** सोलहवें में हनानियाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल
12 व्यक्ति, **24** सत्रहवें में योषबेकाषाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12
व्यक्ति, **25** अठारहवें में हनानी, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **26**
उन्नीसवें में मल्लोथी, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **27** बीसवें में
एलियाथाह, उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **28** इक्कीसवें में होथीर,
उसके पुत्र और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **29** बाईसवें में गिद्दालती, उसके पुत्र
और संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **30** तेईसवें में माहाज़ीयोथ, उसके पुत्र और
संबंधी, कुल 12 व्यक्ति, **31** चोबीसवें में रोमामती-एत्सर, उसके पुत्र और
संबंधी, कुल 12 व्यक्ति.

26 द्वारपालों के लिए विभाजन इस प्रकार किया गया: कोहाथ के वंश
से: आसफ के परिवार में से कोरे का पुत्र मेषेलेमियाह. **2** मेषेलेमियाह
के पुत्र: जेठा पुत्र ज़करयाह, दूसरा पुत्र येदिआएल, तीसरा ज़ेबादिया, चौथा
याथनिएल, **3** पांचवा एलाम, छठवां येहोहानन और सातवां एलीहोएनाई. **4**
ओबेद-एदोम के पुत्र: जेठा पुत्र शेमायाह, दूसरा योज़ाबाद, तीसरा योआह, चौथा
साकार, पांचवा नेथानेल, **5** छठवां अम्मिएल, सातवां इस्साखार और आठवां
पेउल्लेथाई (सत्य तो यह है कि ओबेद-एदोम पर परमेश्वर की विशेष कृपादृष्टि
थी.) **6** उसके पुत्र शेमायाह के भी पुत्र हुए, जो अपने-अपने परिवारों के प्रधान
थे, क्योंकि उनमें अद्भुत प्रतिभा थी. **7** शेमायाह के पुत्र: ओथनी, रेफ़ाएल
और एलज़ाबाद; उसके संबंधी एलिहू और सेमाकियाह भी अद्भुत क्षमता के
व्यक्ति थे. **8** ये सभी ओबेद-एदोम के वंशज थे. वे, उनके पुत्र और संबंधी
सम्माननीय व्यक्ति थे. वे अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने में समर्थ थे. ये बासठ
व्यक्ति थे, जो ओबेद-एदोम से संबंधित थे, **9** मेषेलेमियाह के पुत्र और संबंधी
थे—अठारह वीर योद्धा. **10** मेरारी के एक वंशज, होसाह, के पुत्र थे जेठा
शिमरी, (जो वास्तव में जेठा नहीं था किंतु उसके पिता ने उसे यह पद दिया
था), **11** दूसरा पुत्र था हिलकियाह, तीसरा तेबालियाह और चौथा त्सेरवरियाह.
होसाह के पुत्रों और संबंधियों की कुल संख्या तेरह थी. **12** द्वारपालों के इन
दलों को उनके अगुओं की अगुवाई में उन्हीं के संबंधियों के समान याहवेह के
भवन में सेवा की जवाबदारी सौंपी गई थी. **13** हर एक परिवार ने, चाहे वह
छोटा था या बड़ा, पासा फेंकने की प्रक्रिया द्वारा यह मालूम किया कि उन्हें किस
द्वार पर सेवा करनी होगी. **14** पासे के द्वारा पूर्वी द्वार की जवाबदारी शेलेमियाह
को सौंपी गई. तब उसके पुत्र ज़करयाह लिए पासा फेंका गया. वह बुद्धिमान
सलाहकार था. पासा फेंकने से मिले निर्णय के अनुसार उसे उत्तरी द्वार पर रखा
गया. **15** ओबेद-एदोम के लिए पासे का निर्णय दक्षिण द्वार के लिए पड़ा. उसके
पुत्रों को भंडार घर के लिए चुना गया. **16** शुप्पिम और होसाह को पश्चिमी द्वार
के लिए चुना गया; इसके अलावा चढ़ाई के मार्ग के शल्लेकेथ. द्वार के लिए भी
द्वारपालों का काम पहरेदारों के समान था: **17** पूर्व में हर रोज़ छः लेवी ठहराए
जाते थे, उत्तर में हर रोज़ चार, दक्षिण में हर रोज़ चार और हर एक भंडार घर
पर दो-दो. **18** पश्चिम ओसारे के लिए चार पहरेदार मार्ग की ओर और दो
ओसारे के लिए चुने गए थे. **19** द्वारपालों का यह बंटवारा कोराह-वंशजों और
मेरारी के पुत्रों के बीच किया गया था. **20** अहीयाह के नेतृत्व में लेवी वंशज
और उनके संबंधी परमेश्वर के भवन के खजाने और चढ़ाई गई वस्तुओं के
खजाने के अधिकारी थे. **21** लादान-वंशज, जो वस्तुतः गेरशोन से लादान-वंशज
थे, गरशोनी लादान के घराने के प्रधान थे, जिनमें येहिएली भी शामिल थे, **22**
येहिएली का पुत्र ज़ेथम और उसका भाई योएल याहवेह के भवन के खजाने के
अधिकारी थे. **23** अमरामियों, इज़हारियों, हेब्रोनियों और उत्सिएलियों पर,
24 मोशेह का पोता, गेरशोम का पुत्र शुबेल प्रमुख ख़ज़ाना-अधिकारी था. **25**
एलिएज़र के ओर से उसके संबंधी रेहाबिया, उसका पुत्र येशाइयाह, उसका पुत्र
योराम, उसका पुत्र ज़ीकरी और उसका पुत्र शेलोमोथ थे. **26** (शेलोमोथ और
उसके संबंधी उन सभी खजानों के अधिकारी थे, जिसमें चढ़ाई गई भेंटें इकट्ठा
थी, जो राजा दावीद, घराने के प्रधानों, सहस्र पतियों और शतपतियों, सैन्य
अधिकारियों द्वारा चढ़ाई गई थी. **27** इन्होंने इसमें याहवेह के मंदिर के रख
रखाव के उद्देश्य से युद्ध में लूटी हुई सामग्री का भाग बचाकर रखा था. **28**
शेलोमोथ और उसका परिवार उन सभी वस्तुओं का अधिकारी था जो मंदिर में
इस्तेमाल के लिए चढ़ाई जाती थी. इनमें वे भेंट भी शामिल थी, जो भविष्यद्वक्ता
शमुएल, राजा शाऊल, नेर के पुत्र अबनेर और ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब द्वारा
चढ़ाई गई थी.) **29** इज़हारियों के बारे में: केनानियाह और उसके पुत्रों को
मंदिर के बाहर इस्राएल के प्रशासकों और न्यायाध्यक्षों के काम का भार सौंपा
गया था. **30** हेब्रोनियों के विषय में: हशाबियाह और उसके 1,700 सम्मान्य
संबंधियों को यरदन के पश्चिमी ओर बसे इस्राएलियों की जवाबदारी सौंपी गई.
वे राजा की सेवा में रहते हुए याहवेह के लिए काम करते थे. **31** हेब्रोनियों के
विषय में यह भी सच है कि वंशावली की लेख के अनुसार येरिया हेब्रोन-वंशजों
का अगुआ था. (दावीद के शासनकाल के चालीसवें साल में उन्होंने वंशावली
के लेखों की जांच की और यह पाया कि गिलआद के याज़र नगर में बहुत
सम्मान योग्य व्यक्ति बसे हुए हैं. **32** येरिया के 2,700 संबंधी थे, जो परिवारों
के सम्मान योग्य प्रधान थे. राजा दावीद ने इन्हें रियूबेन वंशजों, गाद-वंशजों

और मनश्शेह के आधे गोत्र पर अधिकारी ठहरा दिया. इनका काम था परमेश्वर और राजा से संबंधित सभी विषयों का ध्यान रखना.)

27 नीचे दी गई सूची इस्राएली परिवारों के प्रधानों और सहस्रपति और शतपति, सेनापतियों की और उनकी भी है, जो राजा की सेवा उनसे संबंधित सभी विषयों में करते रहते थे. हर एक टुकड़ी से यह उम्मीद की जाती थी कि साल में एक महीने सेवा करे. हर एक टुकड़ी की संख्या थी 24,000. **2** ज़ाबदिएल का पुत्र यासोबअम पहली टुकड़ी का अधिकारी था, जिसे पहले महीने में सेवा की जवाबदारी सौंपी गई थी. उसकी टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **3** वह पेरेज़ का वंशज था. वह पहले महीने में सभी सैन्य अधिकारियों का प्रमुख था. **4** अहोही दोदाई दूसरे महीने के लिए ठहराई गई टुकड़ी का अधिकारी था; मिकलोथ उनका प्रमुख अधिकारी था. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **5** तीसरे महीने के लिए ठहराई गई टुकड़ी का अधिकारी था यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **6** यह वही बेनाइयाह था जो तीस वीरों में से एक वीर सैनिक था. उसके बाद उसका पुत्र अम्मीज़ाबाद इस समूह के सेनापति के रूप में चुना गया. **7** चौथे महीने, योआब का भाई आसाहेल. उसके बाद उसका पुत्र ज़ेबादिया सेनापति बना. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **8** पांचवें महीने, इज़्हार का वंशज समहूथ. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **9** छठे महीने, तकोआवासी इक्केश का पुत्र ईरा. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **10** सातवें महीने, पेलोन नगर से एफ्राईमवासी हेलेस, इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **11** आठवें महीने, हुशाथी नगर का सिब्बेकाई. वह यहूदाह गोत्र के ज़ेरा वंश का सदस्य था. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **12** नवें महीने, बिन्यामिन गोत्र के क्षेत्र के अनाथोथ नगर से अबीएज़ेर. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **13** दसवें महीने, नेतोफ़ा नगर से माहाराई इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **14** ग्यारहवें महीने, एफ्राईम गोत्र के प्रदेश के पिराथोन नगर का बेनाइयाह. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **15** बारहवें महीने, नेतोफ़ा से हेल्दाई, जो ओथनीएल का वंशज था. इस टुकड़ी में 24,000 सैनिक थे. **16** इस्राएल के गोत्रों का प्रबंधन: रियूबेन: ज़ीकरी का पुत्र एलिएज़र; शिमओन: माकाह का पुत्र शेपाथियाह; **17** लेवी: केमुएल का पुत्र हशाबियाह; अहरोन: ज़ादोक; **18** यहूदाह: राजा दावीद का एक भाई एलिहू; इस्साखार: मिखाएल का पुत्र ओमरी; **19** ज़ेबुलून: ओबदयाह का पुत्र इशमाइया; नफताली: अज़रिएल का पुत्र येरीमोथ; **20** एफ्राईम: अज़रियाह का पुत्र होशिया; पश्चिमी मनश्शेह: पेदाइयाह का पुत्र योएल; **21** पूर्वी (गिलआद) मनश्शेह: ज़करयाह का पुत्र इद्दो; बिन्यामिन: अबनेर का पुत्र यआसिएल; **22** दान: येरोहाम का पुत्र अज़रेल. ये थे इस्राएल के गोत्रों के प्रमुख. **23** दावीद ने याहवेह की उस प्रतिज्ञा को याद करके, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह इस्राएल को आकाश के तारों के समान अनगिनत बना देंगे, गिनती में उन्हें शामिल नहीं किया था, जिनकी उम्र बीस साल या इससे कम थी. **24** ज़ेरूइयाह के पुत्र योआब ने उन्हें शामिल करना शुरू किया ही था, मगर इसे पूरा नहीं किया. फिर भी इसके लिए इस्राएल परमेश्वर के क्रोध का शिकार बन गया. वास्तविक गिनती राजा दावीद के इतिहास की पुस्तक में शामिल न की जा सकी. **25** आदिएल का पुत्र अज़मावेथ राजा के राज भंडारों का अधीक्षक था. उज्जियाह का पुत्र योनातन छोटे नगरों के भंडारों, गांवों, खेतों और मीनारों का अधीक्षक था. **26** केलुब का पुत्र एज़्री कृषि—मजदूरों का अधीक्षक था. **27** रामाह का शिमेई अंगूर के खेतों का अधीक्षक था. शेफ़ामवासी ज़ब्दी अंगूर के खेतों से आनेवाली दाखमधु की देखभाल और भंडारण करने का अधीक्षक था. **28** गेदेर का बाल-हनन पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश में जैतून और देवदार वृक्षों का अधीक्षक था. योआश जैतून के तेल के भंडारण का अधीक्षक था. **29** शारोन का शितराई शारोन क्षेत्र में पशुओं का अधीक्षक था. अदलाई का पुत्र शाफात घाटियों में पशुओं का अधीक्षक था. **30** इशमाएली व्यक्ति ओबिल ऊंटों का अधीक्षक था. मेरोनोथ का येहदेइया गधों का अधीक्षक था. **31** हग्रियों नगरवासी याज़ीज़ भेड़-बकरियों का अधीक्षक था. ये ही सब थे राजा दावीद के धन-संपत्ति के अधिकारी. **32** दावीद के चाचा योनातन उनके सलाहकार थे. उनमें सूझ-बूझ थी, वह लेखक भी थे. उनके अलावा हकमोनी का पुत्र येहिएल राजपुत्रों का शिक्षक था. **33** अहीतोफ़ेल राजा का सलाहकार था. अर्की हुशाई राजा का सलाहकार मित्र था. **34** (बेनाइयाह का पुत्र यहोयादा और अबीयाथर अहीतोफ़ेल के बाद उनकी जगह पर सलाहकार हुए.) योआब राजा की सेना का सेनापति था.

28 दावीद ने इस्राएल के सभी अधिकारियों, गोत्रों के प्रशासकों और राजकीय सेवा में लगी सेना की टुकड़ियों के हाकिमों और हज़ार सैनिकों के सेनापतियों, सौ सैनिकों के सेनापतियों, खजाने और राजा और उनके पुत्रों के पशुओं के अगुओं को, राजमहल के अधिकारियों, वीर योद्धाओं और बहुत अनुभवी योद्धाओं के साथ येरूशलेम में आमंत्रित किया. **2** राजा दावीद ने इन सबके सामने खड़े होकर उन्हें संबोधित कर कहा: "मेरे भाइयो और मेरी प्रजा, मेरी बातें ध्यान से सुनो; यह मेरी इच्छा थी कि मैं याहवेह की वाचा का संदूक और हमारे परमेश्वर के पैरों की चौकी के लिए एक स्थिर घर को बनाऊं. इसी उद्देश्य से मैंने भवन बनाने की तैयारी कर ली. **3** मगर परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'मेरे आदर में भवन को तुम नहीं बनवाओगे क्योंकि तुम एक योद्धा हो, तुमने बहुत लहू बहाया है.' **4** "फिर भी याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने मेरे पिता के पूरे परिवार में से मुझे इस्राएल के सदाकाल के राजा के पद पर बैठाना सही समझा. यह इसलिये कि उन्होंने ही यहूदाह गोत्र को अगुआ बनाने के लिए चुना और यहूदाह गोत्र में से मेरे पिता के परिवार को और मेरे पिता के पुत्रों में से पूरे इस्राएल का राजा मुझे बनाने में उनकी खुशी थी. **5** याहवेह ने मुझे बहुत पुत्र दिए हैं. उन्होंने मेरे पुत्र शलोमोन को इस्राएल के ऊपर याहवेह के साम्राज्य के सिंहासन पर बैठने के लिए चुना है. **6** याहवेह ने मुझसे कहा, 'तुम्हारा पुत्र शलोमोन ही वह है जो मेरे भवन और मेरे आंगनों को बनाएगा; क्योंकि मैंने यही सही समझा है कि वह मेरे लिए पुत्र हो और मैं उसका पिता हो जाऊंगा. **7** अगर वह हमेशा मेरे आदेशों और नियमों का पालन करता रहे, जैसा कि वह इस समय कर ही रहा है, मैं उसके राज्य को हमेशा के लिए स्थिर कर दूंगा.' **8** "इसलिये अब, सारे इस्राएल के सामने, जो याहवेह की सभा है और हमारे परमेश्वर के सामने याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सभी आदेशों का यत्न से पालन करो कि इस समृद्ध भूमि पर तुम अधिकारी बने रहो और तुम अपने बाद हमेशा के लिए अपने बच्चों को सौंपते जाओ. **9** "और तुम, मेरे शलोमोन, अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करो, सच्चे हृदय और तैयार मन से उनकी सेवा करो क्योंकि याहवेह हर एक हृदय को जांचते रहते हैं और मन के हर एक विचारों को समझते हैं. यदि तुम उन्हें खोजोगे तो उन्हें पाओगे, अगर तुम उनको छोड़ दोगे, वह हमेशा के लिए तुम्हें अकेला छोड़ देंगे. **10** अब सावधान हो जाओ, क्योंकि याहवेह ने तुम्हें मंदिर के भवन को बनाने के लिए चुना है. दृढ़ निश्चय के साथ इस काम को पूरा करो." **11** इसके बाद दावीद ने शलोमोन को मंदिर के भीतरी हिस्सों, इसके भवनों, इसके भंडार घरों, इसके ऊपरी कमरों, इसके भीतरी कमरों, और करुणासन के कमरे का नमूना सौंप दिया. **12** इसके अलावा वह सारा नमूना भी जो उनके मन में याहवेह के भवन के आंगन, आस-पास के कमरों, परमेश्वर के भवन के भंडार घरों और भेंट की हुई वस्तुओं के भंडार घरों के संबंध में था. **13** साथ ही वह नमूना भी, जो पुरोहितों और लेवियों के समूहों और याहवेह के भवन के सभी सेवा के कामों से संबंधित थी और याहवेह के भवन में इस्तेमाल होनेवाली सेवा से संबंधित पात्रों के बारे में. **14** दावीद ने हर एक प्रकार की आराधना में इस्तेमाल होनेवाले

सारे सोने के बर्तनों के लिए सोने की मात्रा तय की. इसी प्रकार हर एक तरह की
आराधना में इस्तेमाल होनेवाले सभी चांदी के बर्तनों की भी मात्रा तय की: **15**
इसके बाद दावीद ने यह भी तय किया कि दीप घरों और उनके दीवटों में कितने
सोने की ज़रूरत होगी, इसी प्रकार चांदी के दीप घरों और उनके दीपकों में
कितनी चांदी की ज़रूरत होगी. इनकी यह मात्रा आराधना में हर एक दीपक के
इस्तेमाल के आधार पर तय की गई थी; **16** दावीद ने निम्न लिखित वस्तुओं में
इस्तेमाल किए जानेवाले सोने और चांदी की मात्रा तय की: भेंट की रोटी के
मेजों के लिए सोना और चांदी की मेजों के लिए ज़रूरी चांदी; **17** कांटों,
कटोरों और प्यालों के लिए चोखा सोना, सोने की कटोरियों के लिए ज़रूरी
सोना; चांदी की कटोरियों के लिए ज़रूरी चांदी; **18** तब चोखे सोने से बनाने के
लिए ठहराई गई धूप की वेदी के लिए चोखा सोना और रथ के नमूने के लिए
सोना और उन करूबों के लिए सोना जो याहवेह की वाचा के संदूक को अपने
फैले हुए पंखों से ढांपे हुए हैं, सोने की मात्रा तय कर दी. **19** दावीद ने शलोमोन
से कहा, "यह सब याहवेह के निर्देश के अनुसार इस नमूने का हर एक बारीक़
विवरण के रूप में लिखा है. मुझ पर याहवेह का हाथ बना रहा है." **20** दावीद ने
शलोमोन से आगे कहा, "दृढ़ हो जाओ, हिम्मत बनाए रखो और काम में लग
जाओ. न तो तुम डरना और न निराश होना, क्योंकि याहवेह परमेश्वर, जो मेरे
परमेश्वर हैं, तुम्हारे साथ हैं. वह न तो तुम्हें निराश करेंगे, न तुम्हें त्यागेंगे; जब
तक याहवेह के भवन के बनने का काम पूरा न हो जाए. **21** यह ध्यान रहे
कि परमेश्वर के भवन में सभी आराधनाओं को चलाने के लिए पुरोहितों और
लेवियों के समूह हैं. तुम्हें किसी भी काम के लिए अपनी इच्छा अनुसार अपना
कौशल इस्तेमाल करने के लिए कारीगर उपलब्ध हैं. अधिकारी भी सभी लोगों
के साथ तुम्हारे आदेश को पूरा करने के लिए तैयार हैं."

29 सारी सभा को राजा दावीद ने कहा: "मेरा पुत्र शलोमोन, जो सिर्फ
परमेश्वर द्वारा ही चुना गया है, इस समय कम उम्र और कम अनुभव का
है, जबकि यह एक बड़ा काम है, क्योंकि यह मंदिर किसी इंसान का नहीं,
याहवेह परमेश्वर के आदर में बनाया जा रहा है. **2** मैं अपनी शक्ति भर कोशिश
कर मेरे परमेश्वर याहवेह के भवन के लिए सोने की वस्तुओं के लिए सोना,
चांदी की वस्तुओं के लिए चांदी, कांसे की वस्तुओं के लिए कांसा, लोहे की
वस्तुओं के लिए लोहा और लकड़ी की वस्तुओं के लिए लकड़ी इकट्ठा कर
लिया है. मैंने इनके अलावा शेषमणि पत्थर, जड़े जाने के लिए पत्थर, सुरमा के
पत्थर और तरह-तरह के रंगों के पत्थर और सभी प्रकार के कीमती पत्थर और
सिलखड़ी के पत्थर भी बड़ी मात्रा में इकट्ठा कर लिए हैं. **3** इन सबके अलावा
मेरे परमेश्वर के भवन में मेरा मन लगा रहने के कारण अपने खुद के खजाने में से
सोने और चांदी मैं मेरे परमेश्वर के भवन के लिए दे रहा हूं. उन सब वस्तुओं के
अलावा, जो मैंने पहले ही पवित्र मंदिर के लिए इकट्ठा कर रखी हैं, **4** यानी
ओफीर के सोने में से एक लाख किलो सोना और ढाई लाख किलो ताई हुई
चांदी, जिसे भवन की दीवारों पर मढ़ा जाना था, **5** यह सब सोने से बनने वाली
वस्तुओं और चांदी से बनने वाली वस्तुओं के लिए था, जिसका इस्तेमाल तरह-
तरह के कारीगर करने को थे. आप लोगों में से कौन-कौन आज याहवेह के
लिए अपने आपको समर्पित करने के लिए तैयार है?" **6** यह सुनकर इसके उत्तर
में सभी गोत्रों के प्रधानों ने, इस्राएल के कुलों के शासकों ने, हज़ारों और
सैकड़ों के अधिकारियों ने और राजा का काम करनेवाले अगुओं ने अपनी
इच्छा से दान दिया. **7** परमेश्वर के भवन से संबंधित कामों के लिए इन सबने
पांच हजार तालन्त सोना और दस हज़ार सोने के सिक्के, साढ़े तीन लाख किलो
चांदी, छः लाख किलो कांसा और पैंतीस लाख किलो लोहा दान में दे दिया. **8**
जिस किसी के पास कीमती पत्थर थे, उन्होंने उन्हें याहवेह के भवन के भंडार में
दे दिया, जो गेरशोन येहिएल की निगरानी में रखे गए थे. **9** अपनी इच्छा से यह
सब दे देने पर जनता में खुशी की लहर दौड़ गई, क्योंकि उन्होंने यह भेंट
याहवेह को खरे मन से भेंट चढ़ाई थी. राजा दावीद के सामने भी यह बड़े आनंद
का विषय था. **10** यह सब होने के बाद दावीद ने पूरी सभा के सामने याहवेह की
स्तुति की. दावीद ने कहा, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, आप आदि से अंत
तक स्तुति के योग्य हैं. **11** याहवेह, महिमा, सामर्थ, प्रताप, विजय और वैभव,
यानी सभी कुछ, जो स्वर्ग और पृथ्वी में है, आपका ही है. याहवेह, प्रभुता
आपकी ही है; आपने अपने आपको सबके ऊपर मुख्य और महान किया हुआ
है. **12** धन और सम्मान आपसे ही मिलते हैं; आपकी प्रभुता सब जगह है.
अधिकार और सामर्थ्य आपके हाथ में हैं. अपने ही अधिकार में आप मनुष्यों
को ऊंचा करते और उन्हें बलवान बना देते हैं. **13** इसलिये, हमारे परमेश्वर, हम
आपके आभारी हैं, और हम आपकी महिमा के वैभव को सराहते हैं. **14** "कौन
हूं मैं और क्या है मेरी प्रजा कि हम ऐसे अपनी इच्छा से भेंट चढ़ा सकें? क्योंकि
सभी कुछ आपसे ही मिलता है. हमने जो कुछ दिया है, वह हमको आपने
आपके ही हाथों से दिया हुआ है. **15** हम तो आपके सामने अपने पुरखों के
समान सिर्फ यात्री और परदेशी ही हैं. पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान होते
हैं, निराशा से भरे. **16** याहवेह, हमारे परमेश्वर, आपके आदर में भवन बनाने के
लिए हमने जो कुछ अपनी इच्छा से दिया है, आपका ही दिया हुआ है, इसलिये
यह आपका ही है. **17** मेरे परमेश्वर, इसलिये कि मुझे यह मालूम है कि आप
हृदय को परखते और सीधाई में आपकी खुशी है, मैंने अपने हृदय की सच्चाई
में, अपनी इच्छा से यह सब दे दिया है. यहां मैंने यह भी बड़े आनंद से आपकी
प्रजा में देखा है, जो यहां आए हैं, वे आपको अपनी इच्छा से दे रहे हैं. **18**
याहवेह, हमारे पुरखे अब्राहाम, यित्सहाक और इस्राएल के परमेश्वर, अपनी
प्रजा के हृदय की इच्छा में यह हमेशा बनाए रखिए और उनके हृदय अपनी ही
ओर लगाए रखिए. **19** मेरे पुत्र शलोमोन को एक ऐसा खरा मन दें, कि वह
आपके आदेशों, नियमों और विधियों का पालन करता रहे और वह इस मंदिर
को बनाने का काम पूरा करे, जिसके लिए मैंने यह इंतजाम किया है." **20** इसके
बाद दावीद पूरी सभा की ओर फिरे और उन्हें इन शब्दों में कहा, "याहवेह,
अपने परमेश्वर की स्तुति करो." पूरी सभा ने याहवेह की, अपने पुरखों के
परमेश्वर की स्तुति की. उन्होंने झुककर याहवेह और राजा को दंडवत किया.
21 दूसरे दिन उन्होंने याहवेह के लिए बलि चढ़ाई और याहवेह के लिए होमबलि
भेंट की एक हज़ार बछड़े, एक हज़ार मेंढ़े और एक हज़ार मेमने और इनके
अलावा उन्होंने पूरे इस्राएल के लिए भरपूरी से पेय बलि और बलियां चढ़ाईं.
22 उस दिन उन्होंने बड़ी ही खुशी में याहवेह के सामने खाया और पिया. उन्होंने
एक बार फिर दावीद के पुत्र शलोमोन का राजाभिषेक किया. उन्होंने याहवेह के
सामने शलोमोन को शासन और सादोक को पुरोहित के काम के लिए अभिषेक
किया. **23** याहवेह द्वारा ठहराए गए सिंहासन पर राजा होकर शलोमोन अपने
पिता दावीद की जगह पर बैठे. वह समृद्ध होते चले गए और सारा इस्राएल उनके
आदेशों को मानता था. **24** सभी अगुओं ने, वीर योद्धाओं ने और राजा दावीद
के पुत्रों ने राजा शलोमोन से उनकी अधीनता की शपथ खाई. **25** याहवेह ने
शलोमोन को सारे इस्राएल की दृष्टि में बहुत ही प्रतिष्ठित बना दिया और उन्हें इस
तरह का राजकीय ऐश्वर्य दिया जैसा इसके पहले इस्राएल में और किसी राजा को
न मिली थी. **26** यिशै के पुत्र दावीद ने सारे इस्राएल पर शासन किया. **27**
इस्राएल पर उनका शासनकाल चालीस वर्ष का था—सात साल हेब्रोन में और
तैंतीस साल येरूशलेम में. **28** बहुत बूढ़ा होने की अवस्था तक पहुंचकर, जीवन
के लिए ठहराए गए दिन पूरे कर समृद्धि और वैभव की स्थिति में दावीद की
मृत्यु हुई. उनकी जगह पर उनका पुत्र शलोमोन राजा हुआ. **29** शुरू से लेकर
अंत तक राजा दावीद द्वारा किए गए कामों का वर्णन दर्शी शमुएल, भविष्यद्वक्ता
नाथान और दर्शी गाद द्वारा लिखी गई इतिहास की पुस्तक में किया गया है. **30**

इन पुस्तकों में उनके शासन, उनकी शक्ति, उन पर और इस्राएल पर पड़ी परिस्थितियों और दुनिया के दूसरे देशों पर आई परिस्थितियों का वर्णन है.

2 इतिहास

1 दावीद के पुत्र शलोमोन ने अपने राज्य पर अपने आपको सुरक्षा के साथ
मजबूत कर लिया. याहवेह उनके परमेश्वर उनके साथ थे. परमेश्वर ने
उन्हें बहुत ही उन्नत किया. **2** शलोमोन ने सारे इस्राएल, सहस्रपतियों और
शतपतियों, न्यायाध्यक्षों, सारे इस्राएल में हर एक अगुओं और पितरों के प्रधानों
को बुलाकर उनसे बातचीत की. **3** शलोमोन और उनके साथ यह सभा उठकर
गिबयोन के ऊंचे स्थान पर गई, क्योंकि याहवेह के सेवक मोशेह द्वारा बंजर
भूमि में बनाया गया परमेश्वर का मिलापवाला तंबू वहीं था. **4** हां, दावीद
किरयथ-यआरीम से परमेश्वर का संदूक उस विशेष स्थान पर ले आए थे, जो
उन्होंने इसी के लिए तैयार किया था, क्योंकि इसके लिए दावीद ने येरूशलेम में
खास तंबू खड़ा किया था. **5** इस समय वह कांसे की वेदी, जिसको उरी के पुत्र,
हूर के पोते बसलेल ने बनाया था, याहवेह के मिलनवाले तंबू के सामने ही थी.
शलोमोन और सभा ने इससे याहवेह की इच्छा मालूम की. **6** शलोमोन कांसे की
वेदी के पास याहवेह के सामने आए, जो मिलनवाले तंबू में थी. वहां उस पर
उन्होंने एक हज़ार होमबलियां चढ़ाईं. **7** उस रात परमेश्वर शलोमोन पर प्रकट
हुए और उनसे कहा, "मुझसे जो चाहो, मांग लो." **8** शलोमोन ने परमेश्वर से
कहा, "मेरे पिता दावीद के साथ आपका व्यवहार बहुत ही करुणा भरा रहा है.
अब आपने मुझे उनके स्थान पर राजा बनाया है. **9** अब, याहवेह परमेश्वर, मेरे
पिता दावीद से की गई आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई है, क्योंकि आपने मुझे ऐसे
अनगिनत लोगों पर राजा बनाया है, जो भूमि की धूल के समान अनगिनत हैं.
10 अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दीजिए कि मैं इस प्रजा के सामने आना-जाना कर
सकूं, क्योंकि किसमें आपकी इतनी बड़ी प्रजा पर शासन करने की क्षमता है?"
11 परमेश्वर ने शलोमोन को उत्तर दिया, "इसलिये कि यही तुम्हारे मन इच्छा
रही है और तुमने मुझसे न तो धन-संपत्ति, न वैभव, न कीर्ति न अपने शत्रुओं के
प्राण और न अपने लिए लंबी उम्र की विनती की है, मगर तुमने अपने लिए बुद्धि
और ज्ञान की विनती की है कि तुम मेरी प्रजा का शासन कर सको, जिस पर मैंने
तुम्हें राजा बनाया है. **12** बुद्धि और ज्ञान तुम्हें दिए जा चुके हैं. मैं तुम्हें समृद्धि,
धन संपदा और सम्मान भी दूंगा, इतना, जितना तुम्हारे पहले किसी भी राजा ने
नहीं पाया और न ही तुम्हारे बाद किसी को मिलेगा." **13** शलोमोन गिबयोन में
याहवेह की उपस्थिति के मिलनवाले तंबू से येरूशलेम लौट गए. वहां उन्होंने
इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. **14** शलोमोन ने अब तक एक हज़ार चार
सौ रथ, बारह हज़ार घुड़सवार इकट्ठा कर लिए थे. इन सबको उसने रथों के
लिए बनाए नगरों और येरूशलेम में राजा के लिए ठहराए गए स्थानों पर रखवा
दिया था. **15** राजा द्वारा येरूशलेम में चांदी और सोना का मूल्य वैसा ही कर
दिया गया था, जैसा पत्थरों का होता है और देवदार की लकड़ी का ऐसा जैसे
तराई के गूलर के पेड़ों का. **16** शलोमोन घोड़ों का आयात मिस्र और कवे से
करते थे. राजा के व्यापारी इन्हें दाम देकर कवे से लाया करते थे. **17** मिस्र से
लाए गए एक रथ की कीमत होती थी चांदी के छः सौ सिक्के. इसी प्रकार राजा
के व्यापारी इनका निर्यात सभी हित्ती और अरामी राजाओं को कर देते थे.

2 अब शलोमोन ने याहवेह की महिमा में मंदिर और अपने लिए राजमहल
बनाने का निश्चय किया. **2** इसके लिए शलोमोन ने सत्तर हज़ार व्यक्ति बोझ
उठाने के लिए और अस्सी हज़ार पर्वतों से पत्थर काटने के लिए चुने. इन
सबके लिए छत्तीस सौ मुखिया चुने गए थे. **3** फिर शलोमोन ने सोर के राजा
हीराम को यह संदेश भेजा: "जब मेरे पिता दावीद अपने लिए भवन बनवा रहे
थे, आपने उनके लिए देवदार के लट्ठे भेजे थे, आपका ऐसा ही व्यवहार मेरे साथ
भी हो. **4** देखिए, याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए मैं एक भवन बनवाने पर हूं.
यह उन्हें ही समर्पित होगा, कि इसमें उनके सामने सुगंधित धूप जलाई जाए,
नियमित रूप से भेंट की रोटी रखी जाए और शब्बाथों, नए चांद के उत्सवों और
याहवेह हमारे परमेश्वर के लिए उत्सवों पर सुबह और शाम को होमबलि चढ़ाई
जाए. इस्राएल देश की ये हमेशा के लिए रीतियां हैं. **5** "जिस भवन को मैं
बनवाने पर हूं वह बहुत ही भव्य होगा, क्योंकि हमारे परमेश्वर सभी देवताओं
से महान हैं. **6** ऐसा कौन है, जो उनके लिए भवन बनवा सके, क्योंकि वह
आकाश और ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं समाते हैं? सो मैं कौन हूं, कि उनके सामने
धूप जलाने के अलावा किसी और काम के लिए मैं उनका भवन बनवाऊं? **7**
"अब आप कृपा कर मेरे लिए एक ऐसा व्यक्ति भेज दें, जो सोने, चांदी, कांसे
और लोहे का सामान बनाने में और साथ ही जो बैंगनी लाल और नीले वस्त्रों पर
कसीदा काढने में निपुण हो, और जो नक्काशी के काम में भी निपुण हो, जो मेरे
निपुण शिल्पियों के साथ काम कर सके, जो यहां यहूदिया और येरूशलेम में हैं,
जिन्हें मेरे पिता दावीद ने चुना है. **8** "कृपया मेरे लिए लबानोन से देवदार,
सनोवर और चन्दन के लट्ठे भी भेजने का इंतजाम करें. क्योंकि मुझे मालूम है
कि आपके सेवक लबानोन की लकड़ी काटने में निपुण हैं. मैं यह विश्वास
दिलाना चाहता हूं कि इसके लिए मेरे सेवक आपके सेवकों के साथ मिलकर
काम करेंगे, **9** जिससे कि मेरे लिए भारी मात्रा में लकड़ी तैयार हो जाए, उस
भवन के लिए, जिसको मैं बनवाने पर हूं, जो भव्य और अद्भुत होगा. **10** अब
यह याद रखिए: मैं आपके सेवकों के लिए, जो लकड़ी को काटेंगे, मैं उनके
लिए 3,200 मेट्रिक टन गेहूं, 2,700 मेट्रिक टन जौ, 4,40,000 लीटर
अंगूर का रस और 4,40,000 लीटर तेल दूंगा." **11** सोर के राजा हीराम ने
शलोमोन को एक पत्र के द्वारा उत्तर दिया, "याहवेह ने तुम्हें अपनी प्रजा पर
राजा इसलिये बनाया है कि उन्हें अपनी प्रजा से प्रेम है." **12** हीराम ने आगे यह
भी कहा: "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर महान हैं, उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को
बनाया है! उन्हीं ने राजा दावीद को एक बुद्धिमान पुत्र दिया है, उन्होंने उसे
विवेक और समझ से भर दिया है. वही है जो याहवेह के लिए भवन और अपने
लिए एक राजमहल को बनवाएगा. **13** "अब मैं हुराम-आबी नामक एक निपुण
व्यक्ति को भेज रहा हूं, **14** वह दान की वंशज स्त्री और सोर देश के व्यक्ति का
पुत्र है. उसे सोना, चांदी, कांसे, लोहे, पत्थरों, लकड़ी और नीले, लाल और
बैंगनी वस्त्रों के काम का उत्तम अनुभव है. वह नक्काशी का काम भी जानता है.
वह किसी भी नक्शे को देखकर काम करने में माहिर है. इसलिये वह आपके
कुशल शिल्पियों के साथ अच्छे से काम कर सकेगा और इसके अलावा उनके
साथ भी, जो मेरे स्वामी, आपके पिता दावीद के साथ काम कर चुके हैं. **15**
"इसलिये अब मेरे स्वामी, अपने ही कहने के अनुसार अपने सेवकों के लिए
गेहूं, जौ तेल और अंगूरों का रस भेज दीजिए. **16** हम लबानोन से आप जैसी
चाहें वैसी लकड़ी आपके लिए काट देंगे और हम इन्हें लट्ठों के बेड़े पर समुद्र के
रास्ते से योप्पा को भेज देंगे, कि आप वहां से इन्हें येरूशलेम ले जा सकें." **17**
शलोमोन ने इस्राएल राष्ट्र में बसे सभी विदेशियों की गिनती की, जैसी गिनती
उनके पिता दावीद ने की थी. तब राज्य में 1,53,600 विदेशी पाए गए. **18**
शलोमोन ने उनमें से सत्तर हज़ार को बोझा ढोने और अस्सी हज़ार को पहाड़ों से
पत्थर काटने और छत्तीस सौ को सारे कामों पर मुखिया बना दिया, कि काम
बिना रुके चलता रहे.

3 यह सब होने पर शलोमोन ने येरूशलेम में मोरियाह पर्वत पर याहवेह के
भवन को बनवाना शुरू किया. यह वही जगह थी जहां याहवेह उनके पिता
दावीद पर यबूसी औरनन के खलिहान में प्रकट हुए थे, जो दावीद ने इस भवन
के लिए ठहराई थी. **2** शलोमोन ने अपने शासन के चौथे साल के दूसरे महीने के
दूसरे दिन भवन का काम शुरू किया. **3** शलोमोन द्वारा बनवाए गए परमेश्वर के
भवन के माप इस प्रकार है: पुरानी माप के अनुसार भवन की लंबाई सत्ताईस
मीटर और चौड़ाई नौ मीटर. **4** भवन के सामने का ओसारा उतना ही लंबा था

जितनी उसकी चौड़ाई थी और उसकी ऊंचाई चौवन मीटर थी. शलोमोन ने
इसके अंदर के भाग को शुद्ध सोने से मढ़ दिया. 5 फिर शलोमोन ने मुख्य कमरे
को देवदार लकड़ी से मढ़ कर उस पर शुद्ध सोने की परत मढ़ दी और इस पर
खजूर वृक्ष और बेड़ियों की आकृति उकेर दी. 6 उन्होंने पूरे भवन को कीमती
पत्थर जड़ कर सजाया. यहां इस्तेमाल किया गया सोना परवाइम नामक स्थान
से लाया गया सोना था. 7 शलोमोन ने भवन को सोने से मढ़ दिया—छत के
धरनियों, डेवढ़ियों, दीवारों और द्वारों को. दीवारों पर उन्होंने करूब उकेर
दिए. 8 इसके बाद उन्होंने परम पवित्र स्थान के लिए एक कमरा बनाया. इस
कमरे की लंबाई इसकी चौड़ाई के बराबर, नौ मीटर थी. उन्होंने इस कमरे को
चोखे सोने से मढ़ दिया, जिसका माप था बीस हज़ार किलो. 9 कीलों का माप
था आधा किलो सोना. उन्होंने ऊपरी कमरों को भी सोने से मढ़ दिया. 10 तब
शलोमोन ने परम पवित्र स्थान के कमरे में दो करूब गढ़े और उन्हें सोने से मढ़
दिया. 11 करूबों के फैले हुए पंखों का फैलाव कुल नौ मीटर था. पहले करूब
का एक पंख सवा दो मीटर का था, जो कमरे की दीवार को छू रहा था. उसका
दूसरा पंख, जो सवा दो मीटर फैला था, दूसरे करूब के पंख को छू रहा था. 12
दूसरे करूब का एक पंख सवा दो मीटर का था, जो कमरे की दीवार को छू रहा
था और उसका दूसरा पंख, जो सवा दो मीटर फैला था, पहले करूब के पंख को
छू रहा था, 13 इन दोनों करूबों के पंखों का फैलाव नौ मीटर था, वे अपने
पांवों पर खड़े हुए मुख्य कमरे की ओर मुख किए हुए थे. 14 शलोमोन ने महीन
सन के कपड़े से नीले, बैंगनी और लाल रंग का पर्दा बनाया और उस पर उन्होंने
करूबों की आकृति काढ़ दी. 15 शलोमोन ने भवन के दरवाजे पर दो खंभों को
बनवाया, हर एक की ऊंचाई पन्द्रह मीटर, पचहत्तर सेंटीमीटर थी. हर एक के
ऊपर जो सिर बनाए गए थे, उनमें से हर एक का विस्तार सवा दो मीटर था. 16
उन्होंने गले के हार के समान सांकलें बनाकर मीनारों के ऊपरी छोर पर लगा दी
फिर सौ अनार बनाकर इन सांकलों में लगा दिया. 17 उन्होंने मंदिर के सामने
खंभे बनाए, एक दक्षिण दिशा में, दूसरा उत्तर दिशा में. दक्षिण खंभे को उन्होंने
याकिन नाम दिया और उत्तरी खंभे को बोअज़.

4 इसके बाद शलोमोन ने एक कांसे की वेदी बनवाई, इसकी लंबाई और
चैड़ाई एक समान, नौ मीटर थी और इसकी ऊंचाई थी साढ़े चार मीटर. 2
शलोमोन ने ढली हुई धातु का एक पानी का हौद बनाया, जो गोल था और
उसका व्यास साढ़े चार मीटर और उसकी ऊंचाई थी सवा दो मीटर इसका कुल
घेर था साढ़े तेरह मीटर 3 इसके जल में और इसके चारों ओर बछड़ों की
आकृति बनाई गई थी—पूरे साढ़े चार मीटर में. ये आकृतियां पूरे हौद को घेरे हुए
थी. बछड़ों की आकृतियां दो पंक्तियों में ढाली गई थी जिससे पूरा हौद एक ही
था, बिना जोड़ के. 4 यह हौद बारह बछड़ों पर रखा, गया था; तीन उत्तर दिशा
की ओर मुख किए हुए थे, तीन पश्चिम दिशा की ओर. यह हौद इन्हीं पर रखा
गया था और इन सभी के पिछले पैर अंदर की ओर थे. 5 हौद की मोटाई
लगभग आठ सेंटीमीटर थी, इसकी किनारी कटोरे की किनारी के समान सोसन
फूल के आकार में ढाली गई थी. इसकी क्षमता थी एक लाख पैंतीस हज़ार
लीटर. 6 धोने की प्रक्रिया के लिए उन्होंने दस चिलमचियों को बनाया. उन्होंने
पांच चिलमचियां दायीं ओर और पांच बायीं ओर. इनका इस्तेमाल होमबलि के
लिए प्रयोग की जानेवाली वस्तुओं को धोना, मगर हौद का प्रयोग पुरोहितों के
नहाने के लिए किया जाता था. 7 तब शलोमोन ने निर्देश के अनुसार दस सोने
की दीवटों का निर्माण किया और उन्हें मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया; पांच दायीं
ओर और पांच बायीं ओर. 8 उन्होंने दस मेजों को बनाकर उन्हें मंदिर में
प्रतिष्ठित किया, पांच दायीं ओर और पांच बायीं ओर. तब उन्होंने सौ सोने के
कटोरों का निर्माण किया. 9 इसके बाद शलोमोन ने पुरोहितों के लिए आंगन
बनवाया. उन्होंने साथ ही एक बहुत बड़ा आंगन और उसके लिए दरवाजों
को भी बनवाया. इन दरवाजों को उन्होंने कांसे से मढ़ दिया. 10 शलोमोन ने
हौद को भवन के दक्षिण पूर्व कोने में स्थापित कर दिया. 11 हूराम-आबी ने
चिमचियां, बेलचे और कटोरियां भी बनाईं. हीराम ने राजा शलोमोन के लिए
परमेश्वर के भवन से संबंधित सारा काम खत्म कर दिया. 12 दो मीनार, इन
मीनारों के ऊपर लगाए गए दो गोलाकार कंगनियां; खंभे के सिरों के गोलाकार
भागों के ऊपर लटकाई गई जाली; 13 दोनों मीनारों के सिरों पर लगाए गए
चार सौ अनार (हर एक के लिए दो-दो सौ अनार; जो खंभों के सिरों पर लगाए
गए थे); 14 उसने कुर्सियां बनवाई और उन पर रखने के लिए चिलमचियां भी;
15 और वह एक हौद और उसके नीचे स्थापित किए गए वे बारह बछड़े भी; 16
वे कलश, फावड़े, कांटे और इन सबके साथ इनसे संबंधित सारी चीज़ें. सारे
बर्तन हुराम-आबी ने राजा शलोमोन के आदेश से याहवेह के भवन के लिए
चमकाए गए कांसे के बनाए थे. 17 राजा ने इनकी ढलाई यरदन घाटी में, जो
सुक्कोथ और ज़ेरेदाह में है, मिट्टी के सांचों में ढाल कर की थी. 18 इस प्रकार
शलोमोन ने ये सभी बर्तन बहुत अधिक मात्रा में बनवाए थे. मात्रा इतनी ज्यादा
थी कि कांसे का भार मापना संभव न रहा. 19 शलोमोन ने परमेश्वर के भवन के
लिए ये सभी वस्तुएं भी बनवाई थीः सोने की वेदी; मेल की रोटी के लिए ज़रूरी
मेज़; 20 शुद्ध सोने की दीवटें और उनके ऊपर रखे जाने के दीप, जिन्हें ठहराई
गई रीति से अंदर के मंदिर के सामने जलाया जाना था; 21 सोने के, हां, विशुद्ध
स्वर्ण के फूल दीप और चिमटियां; 22 दीप की बाती काटने की कैंचियां,
चिलमचियां, धूप के पात्र, अग्नि रखने के पात्र शुद्ध सोने के थे. मंदिर के द्वारों के
कब्जे, परम पवित्र स्थान के आन्तरिक द्वारों के कब्जे और मंदिर के बीच के
भाग के दरवाजे भी सोने के ही थे.

5 इस प्रकार याहवेह के भवन का सारा काम, जो शलोमोन ने शुरू किया था,
पूरा हुआ. तब शलोमोन अपने पिता दावीद द्वारा भेंट की हुई वस्तुएं मंदिर में
ले आए. उन्होंने चांदी, सोना और सारे बर्तन परमेश्वर के भवन के खजाने में
इकट्ठा कर दिए. 2 शलोमोन ने येरूशलेम में इस्राएल के सभी पुरनियों को, गोत्र
प्रमुखों और पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों को आमंत्रित किया. ये सभी राजा
शलोमोन के सामने येरूशलेम में इकट्ठे हो गए, कि याहवेह की वाचा के संदूक
को दावीद के नगर अर्थात् ज़ियोन से लाया जा सके. 3 इस अवसर पर इस्राएल
की सारी प्रजा राजा द्वारा दिए गए न्योते पर उत्सव के लिए इकट्ठा हो गई. यह
साल का सातवां महीना था. 4 इसके लिए इस्राएल के सभी पुरनिए आए और
लेवियों ने संदूक को उठा लिया. 5 वे अपने साथ तंबू में से संदूक, मिलापवाला
तंबू और सारे पवित्र बर्तन लाए थे. ये सब लेवी पुरोहितों द्वारा लाए गए. 6 राजा
शलोमोन और इस्राएल की सारी सभा, जो उस समय उनके साथ वहां संदूक के
सामने इकट्ठा हुए थे, इतनी बड़ी संख्या में भेड़ें और बछड़े बलि कर रहे थे, कि
उनकी गिनती असंभव हो गई. 7 इसके बाद पुरोहितों ने याहवेह की वाचा के
संदूक को लाकर उसके लिए निर्धारित स्थान पर, भवन के भीतरी कमरे में,
परम पवित्र स्थान पर करूबों के नीचे रख दिया. 8 जिस स्थान पर संदूक रखा
हुआ था उस स्थान पर करूब अपने पंख फैलाए हुए थे, इस प्रकार, कि करूबों
ने संदूक और उसके डंडों पर फैला रखा था. 9 ये डंडे इतने लंबे थे, कि संदूक
के इन डंडों को भीतरी कमरे से देखा जा सकता था मगर इसके बाहर से नहीं.
आज तक वे इसी स्थिति में हैं. 10 संदूक में उन दो पटलों के अलावा कुछ न
था, जिन्हें होरेब पर्वत पर मोशेह ने वहां रख दिया था, जहां याहवेह ने इस्राएल
से वाचा बांधी थी, जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे. 11 पवित्र स्थल से पुरोहित
बाहर आ गए. हर एक दल के पुरोहित ने अपने आपको शुद्ध किया हुआ था. 12
संपूर्ण लेवी गायकों ने अर्थात् आसफ, हेमान, यदूथून और उनके पुत्र और संबंधी
महीन मलमल के कपड़े पहने हुए झांझ और तन्तु वाद्यों को लिए हुए वेदी के
पूर्व की ओर खड़े हुए थे. उनके साथ एक सौ बीस पुरोहित तुरही फूंक रहे थे.

13 तुरहीवादकों और गायकों से यह अपेक्षित था कि जब वे याहवेह की स्तुति
और धन्यवाद के गीत गाएं, तब यह गायन ऊंची आवाज में हो रहा हो और
याहवेह की स्तुति में तुरहियां, झांझ और अन्य वाद्य यंत्र भी शामिल हो गए हों:
“वे भले हैं; उनकी करुणा सदा की है.” तब याहवेह का वह भवन एक बादल से
भर गया, 14 इसके कारण अपनी सेवा पूरी करने के लिए पुरोहित वहां ठहरे न
रह सके, क्योंकि याहवेह के तेज से परमेश्वर का भवन भर गया था.

6 तब शलोमोन ने यह कहा: “याहवेह ने यह प्रकट किया है कि वह घने
बादल में रहना सही समझते हैं. 2 आपके लिए मैंने एक ऐसा भव्य भवन
बनवाया है कि आप उसमें हमेशा रहें.” 3 यह कहकर राजा ने सारी इस्राएली
प्रजा की ओर होकर उनको आशीर्वाद दिया, इस अवसर पर सारी इस्राएली सभा
खड़ी हुई थी. 4 राजा ने यह कहा: “धन्य हैं याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर!
उन्होंने मेरे पिता दावीद से अपने मुख से कहे गए इस वचन को अपने हाथों से
पूरा कर दिया है 5 ‘जिस दिन मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश से बाहर
लाया हूं, उसी दिन से मैंने इस्राएल के सभी गोत्रों में से ऐसे किसी भी नगर को
नहीं चुना, जहां एक ऐसा भवन बनाया जाए जहां मेरी महिमा का वास हो; वैसे
ही मैंने अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान होने के लिए किसी व्यक्ति को भी नहीं
चुना; 6 हां, मैंने येरूशलेम को चुना कि वहां मेरी महिमा ठहरे और मैंने दावीद
को चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का राजा हो.’ 7 “मेरे पिता दावीद की
इच्छा थी कि वह याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की महिमा के लिए भवन
बनवाएं. 8 किंतु याहवेह ने मेरे पिता दावीद से कहा, ‘तुम्हारे मन में मेरे लिए
भवन के निर्माण का आना एक उत्तम विचार है, 9 फिर भी, इस भवन को तुम
नहीं, बल्कि वह पुत्र, जो तुमसे पैदा होगा, मेरी महिमा के लिए भवन बनाएगा.’
10 “आज याहवेह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है. क्योंकि अब, जैसी याहवेह ने
प्रतिज्ञा की थी, मैं दावीद मेरे पिता का उत्तराधिकारी बनकर इस्राएल के राज
सिंहासन पर बैठा हूं, और मैंने याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की महिमा के लिए
इस भवन को बनवाया है. 11 मैंने इस भवन में वह संदूक स्थापित कर दिया है,
जिसमें याहवेह की वह वाचा है, जो उन्होंने इस्राएल के वंश से स्थापित की
थी.” 12 इसके बाद शलोमोन सारी इस्राएल की सभा के देखते हाथों को
फैलाकर याहवेह की वेदी के सामने खड़े हो गए. 13 शलोमोन ने सवा दो मीटर
लंबा, सवा दो मीटर चौड़ा और एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर ऊंचा कांसे का एक
मंच बनाया था, जिसे उन्होंने आंगन के बीच में स्थापित कर रखा था. वह
इसी पर जा खड़े हुए, उन्होंने इस्राएल की सारी प्रजा के सामने इस पर घुटने
टेक अपने हाथ स्वर्ग की दिशा में फैला दिए. 14 तब शलोमोन ने विनती की:
“याहवेह इस्राएल के परमेश्वर, आपके तुल्य परमेश्वर न तो कोई ऊपर स्वर्ग में
है और न यहां नीचे धरती पर, जो अपने उन सेवकों पर अपना अपार प्रेम
दिखाते हुए अपनी वाचा को पूर्ण करता है, जिनका जीवन आपके प्रति पूरी तरह
समर्पित है. 15 आपने अपने सेवक, मेरे पिता दावीद को जो वचन दिया था, उसे
पूरा किया है. वस्तुतः आज आपने अपने शब्द को सच्चाई में बदल दिया है.
आपके सेवक दावीद से की गई अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी करें, जो आपने उनसे इन
शब्दों में की थी. 16 “तब अब इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह, आपके सेवक
मेरे पिता दावीद के लिए अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी कीजिए. ‘मेरे सामने इस्राएल के
सिंहासन पर तुम्हारे उत्तराधिकारी की कोई कमी न होगी, सिर्फ यदि तुम्हारे पुत्र
सावधानीपूर्वक मेरे सामने अपने आचरण के विषय में सच्चे रहें—ठीक जिस
प्रकार तुम्हारा आचरण मेरे सामने सच्चा रहा है.’ 17 इसलिये अब, याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो जाए, जो आपने अपने सेवक दावीद
से की है. 18 “मगर क्या यह संभव है कि परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच
निवास करें? देखिए, आकाश और ऊंचे स्वर्ग तक आपको अपने में समा नहीं
सकते; तो फिर यह भवन क्या है, जिसको मैंने बनवाया है? 19 फिर भी अपने
सेवक की विनती और प्रार्थना का ध्यान रखिए. याहवेह, मेरे परमेश्वर, इस
दोहाई को, इस गिड़गिड़ाहट को सुन लीजिए जो आज आपका सेवक आपके
सामने प्रस्तुत कर रहा है. 20 कि यह भवन दिन-रात हमेशा आपकी दृष्टि में बना
रहे, उस स्थान पर, जिसके बारे में आपने कहा था कि आप वहां अपनी महिमा
की स्थापना करेंगे, कि आप उस प्रार्थना पर ध्यान दें, जो आपका सेवक इसकी
ओर फिरकर करेगा. 21 अपने सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल की विनतियों
को सुन लीजिए जब वे इस स्थान की ओर मुंह कर आपसे करते हैं, और स्वर्ग,
अपने घर से इसे सुनें और जब आप यह सुनें, आप उन्हें क्षमा प्रदान करें. 22
“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है, और उसे शपथ लेने के
लिए विवश किया जाता है और वह आकर इस भवन में आपकी वेदी के सामने
शपथ लेता है, 23 तब आप स्वर्ग से सुनें, और अपने सेवकों का न्याय करें,
दुराचारी का दंड उसके दुराचार को उसी पर प्रभावी करने के द्वारा दें और
सदाचारी को उसके सदाचार का प्रतिफल देने के द्वारा. 24 “यदि आपकी प्रजा
इस्राएल शत्रुओं द्वारा इसलिये हार जाए, कि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है
और तब वे लौटकर आपकी ओर फिरते हैं, आपके प्रति दोबारा सच्चे होकर इस
भवन में आपके सामने आकर विनती और प्रार्थना करते हैं, 25 तब स्वर्ग से यह
सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा कर दीजिए और उन्हें उस देश में
लौटा ले आइए, जो आपने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया है. 26 “जब आप
बारिश इसलिये रोक दें कि आपकी प्रजा ने आपके विरुद्ध पाप किया है और
फिर, जब वे इस स्थान की ओर फिरकर प्रार्थना करें और आपके प्रति सच्चे हो,
जब आप उन्हें सताएं, और वे पाप से फिर जाएं; 27 तब स्वर्ग में अपने सेवकों
और अपनी प्रजा इस्राएल की दोहाई सुनकर उनका पाप क्षमा कर दें. वस्तुतः
आप उन्हें उन अच्छे मार्ग पर चलने की शिक्षा दें. फिर अपनी भूमि पर बारिश
भेजें—उस भूमि पर जिसे आपने उत्तराधिकार के रूप में अपनी प्रजा को प्रदान
किया है. 28 “यदि देश में अकाल आता है, यदि यहां महामारी फैली हुई हो,
यदि यहां उपज में गेरूआ अथवा फफूंदी लगे, यदि यहां टिड्डियों अथवा टिड्डों
का हमला हो जाए, यदि उनके शत्रु उन्हें उन्हीं के देश में उन्हीं के नगरों में घेर
लें, यहां कोई भी महामारी या रोग का हमला हो, 29 किसी व्यक्ति या आपकी
प्रजा इस्राएल के द्वारा उनके दुःख और पीड़ा की स्थिति में इस भवन की ओर
हाथ फैलाकर कैसी भी प्रार्थना या विनती की जाए, 30 आप अपने घर, स्वर्ग से
इसे सुनिए और क्षमा दीजिए और हर एक को, जिसके मन को आप भली-भांति
जानते हैं, क्योंकि सिर्फ आपके ही सामने मानव का मन उघाड़ा रहता है, उसके
आचरण के अनुसार प्रतिफल दीजिए, 31 कि वे आपके प्रति इस देश में रहते हुए
जो आपने उनके पूर्वजों को प्रदान किया है, आजीवन श्रद्धा बनाए रखें, और
अपने जीवन भर आपकी नीतियों का पालन करते रहें. 32 “इसी प्रकार जब
कोई परदेशी, जो आपकी प्रजा इस्राएल में से नहीं है, आपकी महिमा आपके
महाकार्य और आपकी महाशक्ति के विषय में सुनकर वे यहां ज़रूर आएंगे; तब,
जब वह विदेशी यहां आकर इस भवन की ओर होकर प्रार्थना करे, 33 तब अपने
आवास स्वर्ग में सुनकर उन सभी विनतियों को पूरा करें, जिसकी याचना उस
परदेशी ने की है, कि पृथ्वी के सभी मनुष्यों को आपकी महिमा का ज्ञान हो
जाए, उनमें आपके प्रति भय जाग जाए—जैसा आपकी प्रजा इस्राएल में है और
उन्हें यह अहसास हो जाए कि यह आपकी महिमा में मेरे द्वारा बनाया गया भवन
है. 34 “जब आपकी प्रजा उनके शत्रुओं से युद्ध के लिए आपके द्वारा भेजी जाए-
आप उन्हें चाहे कहीं भी भेजें-वे आपके ही द्वारा चुने इस नगर और इस भवन
की ओर, जिसको मैंने बनवाया है, मुख करके प्रार्थना करें, 35 तब स्वर्ग में
उनकी प्रार्थना और अनुरोध सुनकर उनके पक्ष में निर्णय करें. 36 “जब वे
आपके विरुद्ध पाप करें-वास्तव में तो कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं जिसने पाप किया
ही न हो और आप उन पर क्रोधित हो जाएं और उन्हें किसी शत्रु के अधीन कर

दें, कि शत्रु उन्हें बंदी बनाकर किसी दूर या पास के देश में ले जाए; 37 फिर भी
यदि वे उस बंदिता के देश में चेत कर पश्चाताप करें, और अपने बंधुआई के देश
में यह कहते हुए दोहाई दें, 'हमने पाप किया है, हमने कुटिलता और दुष्टता भरे
काम किए हैं'; 38 यदि वे बंधुआई के उस देश में, जहां उन्हें ले जाया गया है,
सच्चे हृदय और संपूर्ण प्राणों से इस देश की ओर, जिसे आपने उनके पूर्वजों
को दिया है, उस नगर की ओर जिसे आपने चुना है और इस भवन की ओर,
जिसको मैंने आपके लिए बनवाया है, मुंह करके प्रार्थना करें; 39 तब अपने घर
स्वर्ग से उनकी प्रार्थना और विनती सुनिए और वही होने दीजिए, जो सही है और
अपनी प्रजा को, जिसने आपके विरुद्ध पाप किया है, क्षमा कर दीजिए. 40
"अब, मेरे परमेश्वर, मेरी विनती है कि इस स्थान में की गई प्रार्थना के प्रति
आपकी आंखें खुली और आपके कान सचेत बने रहें. 41 "इसलिये अब,
याहवेह परमेश्वर, खुद आप और आपकी शक्ति संदूक, 42 याहवेह परमेश्वर
अपने अभिषिक्त की प्रार्थना अनसुनी न कीजिए.

7 शलोमोन की प्रार्थना खत्म होते ही स्वर्ग से आग बरसी और उसने होमबलि
और बलियों को भस्म कर दिया और याहवेह के तेज से भवन भर गया. 2
याहवेह के तेज से याहवेह के भवन के भरने के कारण याहवेह के भवन में
पुरोहितों का रहना मुश्किल हो गया. 3 आग गिरने और भवन पर याहवेह के
तेज को देख इस्राएल वंशज भूमि की ओर मुख कर ज़मीन पर ही झुक गए और
यह कहते हुए याहवेह की वंदना की, उनकी स्तुति की, "याहवेह भले हैं;
उनकी करुणा सदा की है." 4 तब राजा और सारी इस्राएली प्रजा ने उनके साथ
याहवेह के सामने बलि चढ़ाई. 5 राजा शलोमोन ने 22,000 बछड़े और
1,20,000 भेड़ें चढ़ाईं. इस प्रकार राजा और सारी प्रजा ने परमेश्वर के भवन
को समर्पित किया. 6 पुरोहित अपनी-अपनी चौकियों पर खड़े थे, लेवी भी
याहवेह की स्तुति के लिए ठहराए गए वाद्य यंत्र लिए हुए खड़े थे, जो राजा
दावीद ने याहवेह की स्तुति के उद्देश्य से बनाए थे, कि वह इन वाद्य-यंत्रों की धुन
पर, "उनकी करुणा सदा की है." गाएं, जब दूसरी ओर इस्राएल खड़ा हुआ
होता था. 7 तब शलोमोन ने याहवेह के भवन के सामने के आंगन के बीचवाले
स्थान को समर्पित किया, क्योंकि उन्होंने होमबलि और मेल बलि की चर्बी
चढ़ाई थी, क्योंकि शलोमोन द्वारा बनाई कांसे की वेदी होमबलि, अन्नबलि
और वसा के लिए कम पड़ गई थी. 8 इस अवसर पर शलोमोन ने सारे इस्राएल
के साथ सात दिन उत्सव मनाया. यह एक बहुत ही बड़ी सभा थी, जिसमें सदस्य
हामाथ की घाटी से लेकर मिस्र की नदी तक से आए हुए थे. 9 आठवें दिन
उन्होंने समापन समारोह मनाया. उन्होंने वेदी के समर्पण के लिए सात दिन दिए
थे और उत्सव समारोह के लिए और सात दिन. 10 सातवें महीने के तेईसवें दिन
शलोमोन ने लोगों को उनके घर के लिए विदा किया. वे सभी दावीद, शलोमोन
और याहवेह की प्रजा इस्राएल पर उनकी भलाई के लिए आनंद मनाते हुए हर्षित
मन लिए लौट गए. 11 इस प्रकार शलोमोन ने याहवेह के भवन और राजमहल
का काम पूरा किया. याहवेह के भवन और राजमहल के विषय में जैसा सोचा
गया था, वह सफलतापूर्वक पूरा हो गया, 12 यह सब होने के बाद याहवेह
रात में शलोमोन पर प्रकट हुए. शलोमोन को उन्होंने संबोधित करते हुए कहा:
"तुम्हारी प्रार्थना मैंने सुन ली है. मैंने इस स्थान को अपने लिए बलि के भवन के
रूप में रखा है. 13 "जब कभी मैं आकाश को ऐसा रोक दूं, कि बारिश रुक
जाए, या मैं टिड्डियों को आदेश दूं कि वे देश को चट कर जाएं, या मैं अपनी
प्रजा पर महामारी भेज दूं 14 और मेरी प्रजा, जो मेरे नाम से जानी जाती है,
अपने आपको विनम्र बना ले, प्रार्थना करने लगे, मेरी खुशी चाहे और अपने पाप
के स्वभाव से दूर हो जाए, तब मैं स्वर्ग से उनकी सुनूंगा, उनका पाप क्षमा करूंगा
और उनके देश के घाव भर दूंगा. 15 अब से इस स्थान में की गई प्रार्थना के प्रति
मेरी आंखें खुली और कान सचेत रहेंगे. 16 क्योंकि अब मैंने इस भवन को
चुनकर इसे पवित्र बना लिया है कि इस स्थान पर मेरी महिमा हमेशा बनी रहे
और मेरी दृष्टि और मेरा हृदय हमेशा यही लगे रहें. 17 "तुमसे मुझे यह कहना है
यदि तुम्हारा व्यवहार तुम्हारे पिता दावीद के समान रहेगा, हां, यदि तुम वह
सब करोगे, जिसका मैंने तुम्हें आदेश दिया है और यदि तुम मेरी व्यवस्था और
विधियों का पालन करते रहोगे, 18 तब मैं तुम्हारे राज सिंहासन को स्थिर
करूंगा; जैसा कि मैंने तुम्हारे पिता दावीद के साथ यह वाचा भी बांधी थी,
'इस्राएल पर शासन के लिए तुम्हें कभी किसी उत्तराधिकारी का अभाव न
होगा.' 19 "मगर यदि तुम मुझसे दूर होकर मेरे उन नियमों और आदेशों को
त्याग दोगे, जो मैंने तुम्हारे सामने रखे हैं और दूसरे देवताओं की सेवा और
आराधना करने लगो, 20 तब मैं तुम्हें अपने उस देश से, जो मैंने तुम्हें दिया है,
निकाल दूंगा और इस भवन को जिसे मैंने अपनी महिमा के लिए पवित्र किया है,
अपनी दृष्टि से दूर कर दूंगा और इसे सभी लोगों के सामने उपमा देने और मज़ाक
का विषय बना छोड़ूंगा. 21 यह भवन खंडहरों का ढेर होकर रह जाएगा. तब
हर एक व्यक्ति, जो उनके पास से होकर जाएगा चकित हो सांस ऊपर खींच
यह कह उठेगा, 'क्यों उन्होंने याहवेह अपने परमेश्वर को भुला दिया था?'
22 तब उन्हें बताया जाएगा, 'याहवेह ने उनके पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर
निकाल लाया था. अब उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण करने का निश्चय
किया. उन्होंने उन देवताओं की सेवा और पूजा करनी आरंभ की. यही कारण है
याहवेह ने उन पर यह सारी घोर विपत्ति डाल दी है.'"

8 इस घटना के बाद बीस साल खत्म होते-होते, जब शलोमोन याहवेह का
भवन और खुद अपने लिए राजमहल बनवा चुके, 2 उन्होंने हीराम से मिले
नगरों को भी बनवाया और वहां उन्होंने इस्राएल के वंशजों को बसा दिया. 3
तब शलोमोन ने जाकर हामाथ-ज़ोबाह को अपने अधीन कर लिया. 4 शलोमोन
ने बंजर भूमि में तादमोर का और हामाथ क्षेत्र में भंडार नगरों को बनवाया. 5
इनके अलावा उन्होंने ऊंचे बेथ-होरोन और निचले बेथ-होरोन, को बनवाया. ये
गढ़नगर थे, जिनमें शहरपनाह, फाटक और छड़ें बनाई गई थी. 6 शलोमोन ने
बालाथ और दूसरे भण्डार नगरों को भी बनवाया जहां उनके रथ, घोड़े और
घुड़सवार रखे गए थे. इनके अलावा उन्होंने येरूशलेम, लबानोन और सारे देश
में अपनी इच्छा के अनुसार भवन बनवाए. 7 देश में अब भी कुछ ऐसे लोग रह
रहे थे, जो इस्राएल के वंशज नहीं थे. ये हित्ती, अमोरी परिज्ज़ी, हिव्वी और
यबूसी वंश के लोग थे. 8 वास्तव में ये उन राष्ट्रों के वंशज थे, जिन्हें इस्राएलियों
ने नाश नहीं किया था. तब शलोमोन ने इन सबको बेगार में रख लिया. ये सब
आज तक इसी पद पर काम करते हैं. 9 मगर शलोमोन ने किसी भी इस्राएली
को अपने काम के लिए दास नहीं बनाया. वे सैनिक बनाए जाते थे, उन्हें सैन्य
अधिकारी बनाया जाता था: योद्धा, कप्तान, रथ, हाकिम और घुड़सवार. 10
राजा शलोमोन ने दो सौ पचास व्यक्तियों को इन सबके ऊपर हाकिमों के पद
पर चुन लिया था. 11 इसके बाद शलोमोन दावीद के नगर से फ़रोह की पुत्री
को उसी के लिए बनाए गए भवन में ले आए. उनका विचार था, "मेरी पत्नी
का घर इस्राएल के राजा दावीद के भवन में नहीं होगा, क्योंकि जहां-जहां
याहवेह के संदूक का प्रवेश हुआ है, वह स्थान पवित्र स्थान है." 12 इसके
बाद शलोमोन ने याहवेह की वेदी, जो उन्होंने ओसारे में बनवाई थी, उस पर
याहवेह को होमबलि चढ़ाई, 13 जैसा कि व्यवस्था में मोशेह द्वारा शब्बाथों,
नए चांद के उत्सवों और तीन वार्षिक उत्सवों-खमीररहित रोटी का उत्सव,
सप्ताहों के उत्सव और कुटीरों के उत्सव के लिए आदेश दिया गया है. 14
जैसा उनके पिता दावीद ने आज्ञा दी थी, शलोमोन ने पुरोहितों के दलों को उनके
लिए ठहराए गए रोज़ के काम करने के लिए, लेवियों को आराधना करने और
पुरोहितों की सहायता करने के लिए और द्वारपालों के दलों को उनके लिए
ठहराए गए द्वारों पर सेवा करने के लिए चुन लिया. परमेश्वर के जन दावीद ने

यही आदेश दिया था. **15** वे राजा द्वारा पुरोहितों और लेवियों को दिए गए किसी
भी विषय के या भंडार घरों से संबंधित आदेश से ज़रा भी अलग न हुए. **16** इस
प्रकार शलोमोन द्वारा शुरू किया गया सारा काम पूरा हुआ. उस दिन से शुरू हुआ
काम, जब याहवेह के भवन की नींव रखी गई थी और जिस दिन बनाने का
काम पूरा हो गया, तब याहवेह के भवन का काम पूरा हुआ. **17** तब शलोमोन
एदोम देश में सागर तट पर बसे नगर एज़िओन-गेबेर और एलाथ को गए. **18**
राजा हीराम ने बेड़े के साथ अपने सेवक भेज दिए. इनमें ऐसे सेवक थे, जिन्हें
समुद्र का ज्ञान था. इनके साथ शलोमोन के सेवक भी थे ये सभी ओफीर नगर
को गए और वहां से वे लगभग पन्द्रह हज़ार किलो सोना लाए. उन्होंने यह
शलोमोन को भेंट कर दिया.

9 जब शीबा देश की रानी ने शलोमोन की कीर्ति के विषय में सुना, वह
मुश्किल प्रश्नों के साथ येरूशलेम आई कि शलोमोन को परखे. वह अपने
साथ सेवकों का विशाल दल लेकर आई थी. उसके साथ के ऊंटों पर मसाले,
बहुत मात्रा में सोना और रत्न थे. जब उसकी भेंट शलोमोन से हुई, उसने शलोमोन
के सामने अपने हृदय के सारे विचार प्रकट कर दिए. **2** शलोमोन ने उनके सभी
सवालों के जवाब दिए; ऐसा कोई भी विषय न था, जो शलोमोन के लिए रहस्य
साबित हुआ हो, जिसकी व्याख्या वह न कर सके. **3** जब शीबा की रानी
शलोमोन की बुद्धिमानी को परख चुकी—उनके द्वारा बनाया भवन, **4** उनकी
मेज़ का भोजन, अधिकारियों की बैठने की व्यवस्था, उनके सेवकों द्वारा की
जा रही सेवा, उनके कपड़े, उनके दाखमधु परोसने वाले और उनकी वेशभूषा,
और वह सीढ़ीनुमा रास्ता, जिसे वह याहवेह के भवन को जाया करते थे; देखा,
वह हैरान रह गई. **5** उसने राजा से कहा, "आपके विषय में और आपकी बुद्धि
के बारे में अपने देश में मैंने जो कुछ सुन रखा था, वह सच है. **6** मैंने उस सुनी
हुई सूचना का विश्वास ही नहीं किया था, जब तक मैंने यहां आकर यह सब
खुद अपनी आंखों से न देख लिया. सच तो यह है कि जो ख़बर मुझे वहां दी गई
थी, वह आपकी बुद्धिमानी के सामने आधी भी नहीं थी. आप उस ख़बर से
कहीं ज्यादा हैं. **7** कैसे सुखी हैं आपके लोग और कैसे सुखी हैं आपके ये
सेवक, जो सदा आपके सामने रहते हैं और आपकी बुद्धिमानी की बातें सुनते
रहते हैं! **8** धन्य हैं याहवेह, आपके परमेश्वर जिनकी आप में खुशी है और
जिन्होंने आपको अपने सिंहासन पर याहवेह आपके परमेश्वर के राजा के रूप में
बैठाया है. यह इसलिये कि इस्राएल पर आपके परमेश्वर का प्रेम बना है और
उनकी इच्छा यह है कि उन्हें हमेशा के लिए स्थिर करें. इसी इच्छा से उन्होंने
आपको उनका राजा बनाया है कि आप न्याय और धर्म से शासन कर सकें." **9**
शीबा की रानी ने राजा को लगभग चार हज़ार किलो सोना, बहुत मात्रा में मसाले
और कीमती रत्न भेंट में दिए. जो मसाले शीबा की रानी ने राजा शलोमोन को भेंट
में दिए थे, वैसे मसाले इसके पहले कभी देखे नहीं गए थे. **10** (इसके अलावा
हीराम के सेवक और शलोमोन के सेवक, जो ओफीर से लाए थे, अपने साथ
इसके अलावा चन्दन की लकड़ी और कीमती रत्न भी लाए थे. **11** चन्दन की
लकड़ी से राजा ने याहवेह के भवन और राजमहल के चबूतरे बनवाए और इन्हीं
से राजा ने गायकों के गाने के लिए वीणाएं और सारंगी नामक वाघ-यंत्रों को भी
बनवाया. यहूदिया राज्य में इसके पहले ऐसा कभी देखा न गया था.) **12** इसी
समय राजा शलोमोन ने शीबा की रानी द्वारा बताई गई उसकी हर एक इच्छा पूरी
की, वह सब, जिसकी उसने विनती की. यह सब उस भेंट से बढ़कर था, जो
उसने राजा शलोमोन को दी थी. तब वह अपने सेवकों के साथ अपने देश
को लौट गई. **13** शलोमोन को हर साल लगभग बाईस हज़ार किलो सोना
मिलता था. **14** वह सब उस सोने और चांदी से अलग था, जो शलोमोन को
व्यवसायियों और व्यापारियों, अरेबिया के राजाओं और देश के राज्यपालों द्वारा
दिया जाता था. **15** राजा शलोमोन ने पीटे हुए सोने की 200 विशाल ढालों
को बनवाया. हर एक ढाल में लगभग सात किलो सोना लगाया गया था. **16**
शलोमोन ने पीटे हुए सोने से 300 ढालों को भी बनवाया. हर एक ढाल में
लगभग साढ़े तीन किलो सोना लगाया गया था. इन सभी को राजा ने लबानोन के
बंजर भूमि के भवन में रखाव दिया. **17** राजा ने हाथी-दांत का एक सिंहासन भी
बनवाया और उसे शुद्ध सोने से मढ़ दिया. **18** इस सिंहासन की छः सीढ़ियां थी
और सोने की बनी पैर रखने की चौकी, जो सिंहासन ही से जुड़ी थी. सिंहासन
के दोनों ओर दो हत्थे थे और उन्हीं से लगकर दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए
थे. **19** हर एक सीढ़ी के दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे, कुल मिलाकर
बारह शेर थे. इसके समान सिंहासन और किसी राज्य में नहीं बनवाया गया
था. **20** राजा शलोमोन के पीने के सारे बर्तन सोने के थे. लबानोन वन भवन में
इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तन शुद्ध सोने के थे. चांदी कहीं भी इस्तेमाल नहीं हुई
थी क्योंकि शलोमोन के शासनकाल में चांदी की कोई कीमत ही न थी. **21**
राजा शलोमोन का तरशीश के सागर में राजा हीराम के साथ जहाजों का एक
समूह था. हर तीन साल में तरशीश के जहाज़ वहां सोना, चांदी, हाथी-दांत,
बन्दर और मोर लेकर आते थे. **22** इस प्रकार राजा शलोमोन पृथ्वी के सभी
राजाओं से धन और बुद्धि में बहुत बढ़कर थे. **23** पृथ्वी के सभी राजा परमेश्वर
द्वारा शलोमोन के मन में दिए गए बुद्धि के वचनों को सुनने के लिए उनके
सामने आने के इच्छुक रहते थे. **24** हर साल सभी देखनेवाले अपने साथ चांदी
और सोने की वस्तुएं, कपड़े, हथियार, मसाले, घोड़े और खच्चर भेंट देने के
लिए लाया करते थे. **25** घोड़ों और रथों के लिए शलोमोन की चार हज़ार
घुड़शालाएं थी. उनके बारह हज़ार घुड़सवार थे, जिन्हें उन्होंने रथों के लिए
बनाए गए नगरों में रखा हुआ था. इनमें से कुछ को उन्होंने अपने पास येरूशलेम
में रखा था. **26** शलोमोन का अधिकार फरात नदी से लेकर फिलिस्तीनियों के
देश और मिस्र देश की सीमा तक के सभी राजाओं के ऊपर था. **27** राजा द्वारा
येरूशलेम में चांदी का मूल्य वैसा ही कर दिया गया था, जैसा पत्थरों का होता है
और देवदार की लकड़ी का ऐसा जैसे तराई के गूलर के पेड़ों का. **28** शलोमोन
घोड़ों का आयात मिस्र देश के अलावा दूसरे देशों से भी करते थे. **29** शलोमोन
द्वारा बाकी कामों का ब्यौरा पहले से आखिरी तक, भविष्यद्वक्ता नाथान की
किताब में, शीलोनवासी अहीयाह की भविष्यवाणी में और दर्शी इद्दो के दर्शनों
में, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के संबंध में हैं, दिया गया है. **30** सारे इस्राएल
पर शलोमोन ने येरूशलेम में चालीस साल राज किया. **31** शलोमोन अपने
पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गए. उनका अंतिम संस्कार उनके पिता दावीद
के नगर में किया गया. उनके स्थान पर उनका पुत्र रिहोबोयाम राजा बना.

10 रिहोबोयाम शेकेम नगर गया, क्योंकि उसके राजाभिषेक के उद्देश्य
से सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ था. **2** जब नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने
यह सुना, जो मिस्र देश में रह रहा था—वह राजा शलोमोन से भागकर यहीं
ठहरा हुआ था. **3** इस्राएलियों ने संदेश भेज उसे वहां से बुलवा लिया. जब
यरोबोअम और सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ, उन्होंने रिहोबोयाम से यह
विनती की: **4** "आपके पिता ने हमारा जूआ बहुत ही भारी कर दिया था;
अब तो आपके पिता द्वारा कराई गई मेहनत और इस भारी जूए को हल्का कर
दीजिए. हम आपकी सेवा हमेशा करते रहेंगे." **5** उसने उन्हें उत्तर दिया, "आप
लोग तीन दिन बाद दोबारा मेरे पास आइए." तब वे लौट गए. **6** इसी समय राजा
रिहोबोयाम ने उन पुरनियों से सलाह ली, जो उसके पिता शलोमोन के जीवन
भर उनके सेवक रहे थे. उसने पूछा, "मेरे लिए आपकी क्या राय है? मैं इन
लोगों को क्या उत्तर दूं?" **7** उन्होंने उसे उत्तर दिया, "यदि आप इन लोगों के
प्रति दयालु रहेंगे, उन्हें खुश रखते हुए उनसे प्रोत्साहन के शब्द कहेंगे, वे हमेशा
आपकी सेवा करते रहेंगे." **8** मगर रिहोबोयाम ने पुरनियों की इस सलाह को
छोड़ दिया और जाकर उन युवाओं से सलाह ली, जो उसी के साथ बड़े हुए थे

और जो उसके सेवक थे. 9 उसने उनसे पूछा “इन लोगों के लिए तुम्हारी राय क्या है, जो लोग मुझसे विनती करने आए थे, ‘आपके पिता द्वारा हम पर रखा गया जूआ हल्का कर दीजिए’?” 10 उसके साथ साथ पले बढ़े युवाओं ने उसे उत्तर दिया, “जिन लोगों ने आपसे यह विनती की है, ‘आपके पिता द्वारा हम पर रखे गए भारी जूए को हल्का कर दीजिए,’ उन्हें यह उत्तर दीजिए, ‘मेरे हाथ की छोटी उंगली ही मेरे पिता की कमर से मोटी है! 11 यदि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ लादा था, तो मैं उसे और भी अधिक भारी बना दूंगा. मेरे पिता ने तो तुम्हें नियंत्रण में रखने के लिए कोड़े इस्तेमाल किए थे, मगर मैं इसके लिए बिच्छू का इस्तेमाल करूंगा.’” 12 जब यरोबोअम और सारी भीड़ तीन दिन बाद रिहोबोयाम के सामने आई, जैसा राजा द्वारा बताया गया था, “मेरे पास तीन दिन के बाद आना.” 13 पुरनियों की सलाह को ठुकराते हुए राजा ने उनसे बहुत कड़ी बातें की. 14 राजा ने उन्हें युवाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार उत्तर दिया, “मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी किया था, तो मैं इसे और ज्यादा भारी कर दूंगा. मेरे पिता ने अगर तुम पर कोड़े चलाए थे, तो अब मैं तुम पर बिच्छू डंक के समान कोड़े बरसाऊंगा.” 15 राजा ने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह सारी बातें याहवेह परमेश्वर द्वारा तय की जा चुकी थी, कि वह अपनी कही हुई बात को महिमा दें, जो उन्होंने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम से शीलो के भविष्यद्वक्ता अहीयाह द्वारा की थी. 16 जब सारे इस्राएल के सामने यह बात आ गई कि राजा ने उनकी विनती की ओर ध्यान ही नहीं दिया है, उन्होंने राजा से यह कह दिया: “क्या भाग है दावीद में हमारा? क्या मीरास है यिशै पुत्र में हमारी? लौट जाओ अपने-अपने तंबुओं में, इस्राएल! दावीद, तुम अपने ही वंश को संभालते रहो!” तब सारे इस्राएली अपने-अपने घर लौट गए. 17 मगर यहूदिया प्रदेशवासी इस्राएलियों पर रिहोबोयाम का शासन हो गया. 18 राजा रिहोबोयाम ने हदोराम को, जो बेगार श्रमिकों का मुखिया था, इस्राएलियों के पास भेजा. इस्राएलियों ने उसका पथराव किया कि उसकी हत्या हो गई. यह देख राजा रिहोबोयाम ने बिना देर किए रथ जुतवाया और वह येरूशलेम को भाग गया. 19 इस प्रकार इस्राएल राज्य आज तक दावीद के वंश के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में है.

11 येरूशलेम पहुंचते ही रिहोबोयाम ने यहूदाह और बिन्यामिन गोत्र को इकट्ठा किया. ये एक लाख अस्सी हज़ार अच्छे योद्धा इस उद्देश्य से इकट्ठा किए गए थे कि ये इस्राएल से युद्ध करें, कि रिहोबोयाम का राज्य उसके हाथ में दोबारा आ जाए. 2 मगर परमेश्वर के जन शेमायाह को याहवेह का यह संदेश भेजा गया: 3 “शलोमोन के पुत्र, यहूदिया के शासक रिहोबोयाम से और यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश के सभी इस्राएलियों में यह घोषणा कर दो, 4 ‘यह याहवेह का वचन है तुम अपने ही संबंधियों पर हमला नहीं करोगे. सभी अपने-अपने घर को लौट जाएं; क्योंकि इस स्थिति को मैं ही लाया हूं.’” उन्होंने याहवेह के संदेश के ही अनुसार किया और उन्होंने यरोबोअम पर हमला करने का विचार छोड़ दिया. 5 रिहोबोयाम येरूशलेम में रहता रहा. वह यहूदिया की सुरक्षा के हित में नगरों को बनाता गया. 6 वे ये थे: बेथलेहेम, एथाम, तकोआ, 7 बेथ-त्सूर, सोकोह, अदुल्लाम, 8 गाथ, मारेशाह, ज़ीफ़, 9 अदोराईम, लाकीश, अज़ेका, 10 ज़ोराह, अय्जालोन और हेब्रोन. ये सभी यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश के गढ़नगर थे. 11 उसने गढ़ों को मजबूत बनाया, उनमें अधिकारी ठहराए और इनमें भोजन सामग्री, तेल और अंगूर के रस के भंडार रखवा दिए. 12 उसने हर एक नगर में ढालें और बर्छियां रख दीं और इन नगरों को बहुत ही मजबूत सुरक्षा के नगर बना दिए. इस प्रकार यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश ही उसके अधिकार में रह गए. 13 पूरे इस्राएल के पुरोहित और लेवी वंशज रिहोबोयाम से सहमत थे और वे उसके साथ हो गए. 14 यरोबोअम और उसके पुत्रों द्वारा याहवेह के लिए लेवियों की पौरोहितिक सेवा पर रोक लगाने के कारण वे अपनी चरागाह और संपत्ति को त्याग कर यहूदिया और येरूशलेम आ गए. 15 यरोबोअम ने पूजा स्थलों पर बकरे देवता और बछड़े देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित कर दीं और इनके लिए खुद अपने ही चुने हुए व्यक्तियों को पुरोहित बना दिया. 16 इस्राएल के सारे गोत्रों में से वे लोग, जो हृदय से इस्राएल के परमेश्वर याहवेह के खोजी थे, इन पुरोहितों और लेवियों का अनुसरण करते हुए अपने पूर्वजों के याहवेह परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाने येरूशलेम चले जाते थे. 17 ये लोग तीन साल तक शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम का समर्थन करने के द्वारा यहूदिया राज्य को मजबूत बना रहे थे, क्योंकि वे दावीद और शलोमोन की नीतियों का पालन तीन साल तक करते रहे. 18 रिहोबोयाम ने दावीद की पोती, येरीमोथ की पुत्री माहलाथ से विवाह कर लिया. येरीमोथ की माता का नाम अबीहाइल था, वह यिशै के पुत्र एलियाब की पुत्री थी. 19 माहलाथ से उत्पन्न रिहोबाम के पुत्रों के नाम ये: है येऊश, शेमारियाह और त्सेहाम. 20 इसके बाद उसने अबशालोम की पुत्री माकाह से विवाह किया, जिससे पैदा उसके पुत्रों के नाम है अबीयाह, अत्तई, ज़िज़ा और शेलोमीथ. 21 रिहोबोयाम को अबशालोम की पुत्री माकाह बहुत प्रिय थी-अपनी दूसरी पत्नियों और उपपत्नियों से अधिक. उसकी अठारह पत्नियां और साठ उपपत्नियां थी. इनसे उसके अट्ठाईस पुत्र और साठ पुत्रियां पैदा हुई. 22 रिहोबोयाम ने माकाह के पुत्र अबीयाह को उसके भाइयों के ऊपर प्रधान और उनका अगुआ बनाया; क्योंकि उसकी इच्छा थी कि वह उसे राजा बनाए. 23 बड़ी ही बुद्धिमानी से उसने अपने कुछ पुत्रों को यहूदिया और बिन्यामिन राज्य की सीमा में सारे गढ़ नगरों में अलग-अलग ज़िम्मेदारियां सौंप दीं और उनके लिए बहुत मात्रा में भोजन की व्यवस्था भी कर दी. इसके अलावा उसने इन सबके लिए अनेक पत्नियों का प्रबंध भी कर दिया.

12 जब रिहोबोयाम का शासन मजबूत और स्थिर हो गया, उसने और उसके साथ सारे इस्राएल ने याहवेह की व्यवस्था को छोड़ दिया. 2 याहवेह से उनके विश्वासघात के कारण, रिहोबोयाम के शासनकाल के पांचवें साल में मिस्र के राजा शिशाक ने बारह सौ रथों और साठ हजार घुड़सवारों को लेकर येरूशलेम पर हमला किया. उसके साथ आए लिबिया के, सुक्किईम के और कूश देशवासी मिस्री सैनिक अनगिनत थे. 4 शिशाक ने यहूदिया के गढ़ नगरों को अपने अधीन कर लिया और वह येरूशलेम आ पहुंचा. 5 तब भविष्यद्वक्ता शेमायाह रिहोबोयाम और यहूदिया के राजाओं के पास आए, जो इस समय शिशाक के हमले के कारण येरूशलेम में ही इकट्ठा थे. भविष्यद्वक्ता शेमायाह ने उनसे कहा, “यह याहवेह का संदेश है ‘तुमने मुझे छोड़ दिया है इसलिये मैंने भी तुम्हें छोड़कर शिशाक के हाथों में सौंप दिया है.’” 6 यह सुन इस्राएल के शासकों और राजा ने खुद को नम्र बनाते हुए यह स्वीकार किया, “महान हैं याहवेह.” 7 जब याहवेह ने देखा कि वे सब नम्र हो गए हैं, शेमायाह को याहवेह का यह संदेश मिला: “उन्होंने अपने आपको नम्र बना लिया है, इसलिये अब मैं उन्हें नाश होने न दूंगा; मैं उन्हें एक हद्द तक छुड़ौती दूंगा. अब शिशाक द्वारा मेरा क्रोध येरूशलेम पर उंडेला न जाएगा. 8 मगर वे शिशाक के दास हो जाएंगे कि वे यह समझ सकें कि मेरी सेवा और अन्य देशों के राज्यों की सेवा में कितना अंतर होता है.” 9 तब मिस्र के राजा ने येरूशलेम पर हमला किया और याहवेह के भवन के और राजमहल के खजाने को अपने साथ ले गया. वस्तुतः वह अपने साथ सभी कुछ ले गया. यहां तक कि वे सोने की ढालें भी जिनको शलोमोन ने बनवाया था. 10 तब राजा रिहोबोयाम ने उनकी जगह पर कांसे में गढ़ी गई ढालें वहां रख दीं. इनकी जवाबदारी रिहोबोयाम ने राजघराने के पहरेदारों के प्रधान को सौंप दी. 11 तब रीति यह बन गई कि जब-जब राजा याहवेह के भवन को जाता था, पहरेदार ये ढालें लेकर चलते थे और राजा के वहां से लौटने पर इन्हें पहरेदारों के कमरों में दोबारा रख दिया जाता था. 12 जब रिहोबोयाम ने

अपने आपको विनम्र बना लिया, याहवेह का क्रोध शांत हो गया और उसका
सर्वनाश नहीं किया गया. इसी समय यहूदिया की कुछ दशा अच्छी भी थी. 13
रिहोबोयाम ने राजधानी येरूशलेम में स्वयं को पुनः सुदृढ़ किया, और यहूदिया
प्रदेश पर शासन करने लगा. जब रिहोबोयाम ने शासन शुरू किया, उसकी उम्र
एकतालीस साल की थी. येरूशलेम में उसने सत्रह साल शासन किया. येरूशलेम
वह नगर है, जिसे याहवेह ने सारे इस्राएल में से इसलिये चुना, कि वह इसमें
अपनी महिमा करें. उसकी माता का नाम था नामाह जो अम्मोनी थी. 14 जीवन
में वह वही सब करता रहा, जो गलत है, क्योंकि उसने अपना हृदय याहवेह की
इच्छा पता करने की ओर लगाया ही नहीं. 15 शुरू से अंत तक रिहोबोयाम के
कामों का ब्यौरा भविष्यद्वक्ता शेमायाह और दर्शी इद्दो की पुस्तकों में उपलब्ध
है, जो वंशावली का हिसाब भी रखते थे. रिहोबोयाम और यरोबोअम हमेशा
आपस में युद्ध में ही लगे रहें. 16 रिहोबोयाम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के
लिए सो गया. उसका अंतिम संस्कार दावीद के नगर में किया गया; उनका पुत्र
अबीयाह उसके स्थान पर राजा हो गया.

13 यरोबोअम के शासनकाल के अठारहवें साल में अबीयाह ने यहूदिया के
शासन की बागडोर अपने हाथों में ली. 2 उसने येरूशलेम में तीन साल
शासन किया. उसकी माता का नाम मीकायाह था. वह गिबियाह के उरीएल की
पुत्री थी. अबीयाह और यरोबोअम के बीच युद्ध छिड़ गया. 3 अबीयाह ने चार
लाख सबसे अच्छे वीर योद्धाओं को लेकर युद्ध शुरू किया, जबकि यरोबोअम
आठ लाख वीर सैनिक लेकर युद्ध-भूमि में उतरा. 4 तब अबीयाह ने एफ्राईम
प्रदेश के सेमाराइम पहाड़ पर मोर्चा बांधा और यरोबोअम से कहा, "यरोबोअम
और सारे इस्राएल ध्यान से मेरी बातें सुनो! 5 क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि
याहवेह इस्राएल के परमेश्वर ने नमक की वाचा के द्वारा दावीद और उनके पुत्रों
को इस्राएल पर हमेशा के लिए शासन दिया है? 6 यह होने पर भी नेबाथ के पुत्र
यरोबोअम ने अपने स्वामी दावीद के पुत्र शलोमोन के विरुद्ध उठकर विद्रोह
किया. 7 उसने अपने पास निकम्मे लोग इकट्ठा कर लिए, ऐसे नीच लोग, जो
शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम पर प्रबल हो गए, जो कि बहुत बालक और अल्हड़
मन का था, बुरा बोलते थे. वह इनके सामने ठहर न सका. 8 "अब तुम लोग
दावीद के पुत्रों के हाथों में सौंपे गए याहवेह के शासन का विरोध करने पर
उतारू हो, सिर्फ इसलिये कि तुम गिनती में अधिक हो और तुम्हारे पास देवताओं
के नाम पर सोने के ढाले हुए वे बछड़े हैं जिनको यरोबोअम ने तुम्हारे लिए
इसलिये बनाया है कि तुम इन्हें देवता मान लो. 9 क्या यह सच नहीं कि तुम
लोगों ने अहरोन के पुत्रों को जो याहवेह के पुरोहित हैं और लेवियों को हटाकर
दूसरे राष्ट्रों के समान अपने लिए पुरोहित चुनकर रखे हैं? तुम तो किसी भी ऐसे
व्यक्ति को पुरोहित बना देते हो, जो अपने साथ बछड़े और सात मेढ़े लेकर तुमसे
उन देवताओं के पुरोहित बनने की विनती करता है, जो हकीकत में देवता ही
नहीं हैं. 10 "मगर हमारे लिए तो याहवेह ही हमारे परमेश्वर हैं. हमने उनका
त्याग नहीं किया है. अहरोन के वंशज ही याहवेह की सेवा पुरोहितों के रूप में
कर रहे हैं. लेवी भी अपना ठहराया हुआ काम करने में लगे हैं. 11 हर सुबह
और शाम वे याहवेह को होमबलि और सुगंधधूप चढ़ाते हैं, स्वच्छ की गई मेज़
पर भेंट की रोटी रखी जाती है और हर शाम सोने के दीवट और उनके दीप
शाम को जलाए जाने के लिए तैयार रखे जाते हैं, क्योंकि हम याहवेह, हमारे
परमेश्वर के आदेश का पालन करते हैं. मगर तुम लोगों ने याहवेह का त्याग कर
दिया है. 12 अब यह देख लो, हमारे अगुए होकर याहवेह हमारे साथ हैं. यहां
उनके पुरोहित संकेत तुरहियों के साथ तुम्हारे विरुद्ध फूंकने के लिए तैयार हैं.
इस्राएल के वंशजों ने कहा कि अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह से युद्ध मत करो
क्योंकि तुम इसमें सफलता नहीं पा सकोगे." 13 मगर यरोबोअम ने यहूदिया
की सेना के पीछे एक घात करनेवाली टुकड़ी लगा रखी थी कि वे पीछे से
हमला करें. फलस्वरूप यहूदिया की सेना के सामने इस्राएली सेना थी और पीछे
घात करनेवाली टुकड़ी. 14 जब यहूदिया ने मुड़कर देखा तो पाया कि उन
पर दोनों ही ओर से हमला किया जा रहा था, सामने से भी और पीछे से भी.
तब उन्होंने याहवेह की दोहाई दी. पुरोहितों ने तुरही फूंकी. 15 जब यहूदिया
के सैनिकों ने जय जयकार किया, परमेश्वर ने यरोबोअम और पूरी इस्राएली
सेना को अबीयाह और यहूदिया के सामने हरा दिया. 16 जब इस्राएली सेना
यहूदिया की सेना को पीठ दिखाकर भागने लगी, परमेश्वर ने उन्हें यहूदिया के
अधीन कर दिया. 17 अबीयाह और उसकी सेना ने घोर नरसंहार के साथ
उन्हें हरा दिया. फलस्वरूप इस्राएल के पांच लाख वीर योद्धा मारे गए. 18 इस
प्रकार उस दिन इस्राएल के वंशज हार गए. यहूदाह के वंशज इसलिये जीते, कि
उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर, याहवेह पर भरोसा किया था. 19 अबीयाह ने
यरोबोअम का पीछा किया और उससे अनेक नगर लेकर अपने अधिकार में
कर लिए, बेथेल और उसके गांव, येशानाह और उसके गांव और एफ्रोन और
उसके गांव. 20 अबीयाह के जीवनकाल में यरोबोअम दोबारा अपनी शक्ति
इकट्ठी न कर सका. याहवेह ने उस पर वार किया और उसकी मृत्यु हो गई. 21
मगर अबीयाह मजबूत होता गया. उसने चौदह स्त्रियों से विवाह कर लिया
जिनसे बाईस पुत्र और सोलह पुत्रियां पैदा हुईं. 22 अबीयाह के शासनकाल का
घटनाक्रम और उसके कामों और बातों का ब्यौरा भविष्यद्वक्ता इद्दो की पुस्तक
में दिया गया है.

14 अबीयाह अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया और उसे उसके
पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा गया. उसके स्थान पर
आसा राजा बना. उसके शासनकाल के दस सालों में देश में शांति बनी रही. 2
आसा ने वह किया जो याहवेह उसके परमेश्वर की दृष्टि में सही और उचित है.
3 उसने अन्य जातीय वेदियों और पूजा स्थलों को हटा दिया, पूजा के खंभों
को नाश कर दिया, अशेराह के मीनारों को काट गिराया. 4 उसने यहूदिया
को आदेश दिया कि वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह की खोज करें और
व्यवस्था और नियमों का पालन करते रहें. 5 यहूदिया के सभी नगरों में से
उसके शासनकाल में राज्य में कोई अव्यवस्था देखी न गई. 6 यहूदिया में उसने
गढ़ नगरों को बनाया क्योंकि राज्य में शांति थी. इन सालों में किसी ने भी उससे
युद्ध नहीं किया, क्योंकि उसे मिली यह शांति याहवेह ने दी थी. 7 यहूदिया से
उसने कहा था, "चलो, हम इन नगरों को बनाएं. हम इन्हें दीवारों से घेर देंगे,
हम इन पर पहरेदारों की ऊंची चौकियां बनाएं और इनमें द्वार और शालाएं लगा
दें. हम याहवेह अपने परमेश्वर की इच्छा के खोजी रहे हैं इसलिये यह देश अब
तक हमारा है और याहवेह ने हमें सभी ओर से शांति दी है." इसलिये वे नगर
बनाते गए और उन्नति करते गए. 8 यहूदिया राज्य से आसा की सेना में तीन
लाख सैनिक थे, ये विशाल ढालों और बर्छियों से लैस थे. दो लाख अस्सी
हज़ार सैनिक बिन्यामिन प्रदेश के थे, ये भी ढालों से लैस धनुर्धारी थे. सारे
सैनिक वीर योद्धा थे. 9 कूश देशवासी ज़ेराह ने दस लाख सैनिकों और 300
रथों की सेना लेकर यहूदिया पर हमला कर दिया. वह मारेशाह नामक स्थान
तक आ पहुंचा. 10 तब आसा उसका सामना करने आगे बढ़ा. उसकी सेना
मारेशाह के निकट सापथा घाटी में युद्ध के लिये तैयार हुई. 11 आसा ने याहवेह,
अपने परमेश्वर की दोहाई दी और यह याचना की, "याहवेह, शक्तिशाली और
कमजोर के बीच युद्ध की स्थिति में आपके अलावा और कोई भी नहीं है, जो
सहायता के लिए उपलब्ध हो. इसलिये याहवेह, हमारे परमेश्वर, हमारी सहायता
कीजिए, क्योंकि हमारा भरोसा आप पर है. हम आपकी महिमा के कारण इस
विशाल सेना के विरुद्ध खड़े हैं. याहवेह, हमारे परमेश्वर आप हैं. ऐसा कभी न हो
कि कोई मनुष्य आप पर प्रबल हो." 12 तब याहवेह ने आसा और यहूदिया की
सेना के सामने कूश देशवासियों को हरा दिया और कूश देशवासी उनके सामने से

भाग गए. 13 आसा और उसकी सेना ने गेरार तक उनका पीछा किया; इतने
अधिक कूश देशवासी मारे गए कि उनका दोबारा इकट्ठा हो पाना असंभव हो
गया. कारण यह था कि वे याहवेह और उनकी सेना के सामने चूर-चूर हो चुके
थे. यहूदी सैनिकों ने बहुत बड़ी मात्रा में लूट की सामग्री इकट्ठा कर ली. 14
गेरार के निकटवर्ती नगरों को उन्होंने नाश कर दिया. सभी पर याहवेह का घोर
आतंक छा चुका था. यहूदी सेना ने सभी नगरों को लूट लिया. उनमें लूट का
सामान बहुत सारा था. 15 उन्होंने उनके शिविर भी नाश कर दिए, जो पशु
पालक थे. इनसे सेना ने बड़ी संख्या में भेड़ें और ऊंट ले लिए. इसके बाद वे
येरूशलेम लौट गए.

15 परमेश्वर के आत्मा ओदेद के पुत्र अज़रियाह पर उतरे. 2 वह आसा
से भेंट करने गए और उससे कहा, "आसा, मेरी सुनो और यहूदिया और
बिन्यामिन भी सुनें: याहवेह उस समय तक तुम्हारे साथ है, जब तक तुम उनके
साथ सच्चे हो. तुम यदि याहवेह की खोज करोगे, तुम उन्हें पा लोगे. यदि तुम
उनको छोड़ दोगे, वह भी तुम्हें छोड़ देंगे. 3 लंबे समय से इस्राएल बिना किसी
सच्चे परमेश्वर, बिना किसी शिक्षा देनेवाले पुरोहित और बिना किसी व्यवस्था
के रहता आया है. 4 मगर जब उन पर विपत्ति आई वे इस्राएल के परमेश्वर,
याहवेह की ओर मुड़ गए. उन्होंने उनकी खोज की और याहवेह ने ऐसा होने
दिया कि उन्होंने याहवेह को पा भी लिया. 5 ये वे दिन थे, जब न तो जानेवाले
सुरक्षित थे, न वे जो नगर में आ रहे होते थे, क्योंकि सभी राष्ट्रों के निवासियों
को बहुत कोलाहल ने आ घेरा था. 6 एक राष्ट्र दूसरे को कुचल रहा था और एक
नगर दूसरे को, क्योंकि परमेश्वर ही उन्हें अलग-अलग तरह की मुसीबतें देकर
उन्हें घबरा रहे थे. 7 मगर तुम्हारे लिए मेरी सलाह है, स्थिर रहो, साहस न
छोड़ो क्योंकि तुम्हारे द्वारा किए जा रहे काम के लिए उत्तम प्रतिफल तय है."
8 जब आसा ने ओदेद के पुत्र अज़रियाह की यह बातें और यह भविष्यवाणी
सुनी, उसमें साहस का संचार आया. उसने सारे यहूदिया और बिन्यामिन एफ्राईम
के पहाड़ी इलाके के कई नगरों में से घृणित मूर्तियां हटा दी. इसके बाद उसने
याहवेह के ओसारे के सामने की याहवेह की वेदी को दोबारा बनाया. 9 तब
उसने सारे यहूदिया, बिन्यामिन और इनके अलावा एफ्राईम, मनश्शेह और
शिमओन के रहनेवालों को इकट्ठा होने को कहा. इस्राएल राज्य से अनेक यहां
आकर बस गए थे, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि याहवेह, उनके परमेश्वर
उनके साथ थे. 10 ये सभी आसा के शासन के पन्द्रहवें साल के तीसरे महीने में
येरूशलेम में इकट्ठा हुए. 11 उस दिन उन्होंने याहवेह के लिए सात सौ बैलों और
सात हज़ार भेड़ों की बलि चढ़ाई. ये सभी पशु वे युद्ध में लूटकर लाए थे. 12
उन्होंने पूरे हृदय और पूरे प्राणों से अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह को खोजने
की वाचा बांधी. 13 वहां यह निर्णय भी लिया गया कि जो कोई याहवेह इस्राएल
के परमेश्वर की खोज न करे, चाहे साधारण हो या विशेष, स्त्री हो या पुरुष,
उसका वध कर दिया जाए. 14 इसके अलावा उन्होंने ऊंची आवाज में तुरहियों
और नरसिंगों के शब्द के साथ यह चिल्लाते हुए याहवेह से यह शपथ ली थी.
15 यह शपथ सारे यहूदिया के लिए उल्लास का विषय थी, क्योंकि उन्होंने यह
शपथ पूरे हृदय से ली थी और उन्होंने याहवेह की खोज पूरी सच्चाई में की थी.
फलस्वरूप याहवेह ने खुद को उन्हें प्राप्त होने दिया था. यह होने पर याहवेह ने
उन्हें हर एक ओर से शांति दी. 16 राजा आसा ने अपनी दादी माकाह को
राजमाता पद से हटा दिया, क्योंकि उसने अशेरा की घृणित मूर्ति बनाकर रखी
थी. आसा ने इस मूर्ति को काटकर उसे किद्रोन नदी तट पर राख बना डाला. 17
मगर पूजा की जगहों को इस्राएल से हटाया नहीं गया था. फिर भी आसा का
मन जीवन भर याहवेह के लिए पूरी तरह सच्चा बना रहा. 18 उसने परमेश्वर के
भवन में वे सारी पवित्र वस्तुएं लाकर रख दीं, सोना, चांदी और बर्तन, जो उसके
पिता और खुद उसके पास थी. 19 आसा के शासनकाल के पैंतीसवें साल तक
कोई युद्ध नहीं हुआ.

16 आसा के शासनकाल के छत्तीसवें साल में बाशा ने यहूदिया पर हमला
कर दिया और रामाह नगर को बसाया, इसलिये कि इस्राएल का कोई भी
व्यक्ति इस्राएल की सीमा से बाहर न जाने पाए और न कोई यहूदिया के राजा
आसा के पास जा सके. 2 इसलिये आसा ने याहवेह के भवन के खजाने से और
राजमहल से चांदी और सोना निकालकर दमेशेक में अराम के राजा बेन-हदद
को इस संदेश के साथ भेज दिया. 3 "आपके और मेरे बीच एक वाचा बांधी
जाए—ठीक जैसी मेरे और आपके पिता के बीच थी. मैं आपके लिए सोना और
चांदी भेज रहा हूं. आप इस्राएल के राजा बाशा से अपनी वाचा तोड़ दीजिए, कि
वह यहां से अपनी सेनाएं हटा ले." 4 बेन-हदद राजा आसा के प्रस्ताव से राज़ी
हो गया. उसने इस्राएल राज्य के नगरों के विरुद्ध अपने सैन्य अधिकारी भेज
दिए. इयोन, दान, आबेल-माइम और नफताली क्षेत्र के सभी भंडार नगर अपने
अधिकार में कर लिए. 5 जब बाशा को यह समाचार प्राप्त हुआ, उसने रामाह
का गढ़ बनाना रोक कर सारा काम समाप्त कर दिया. 6 राजा आसा ने सारी
यहूदी जनता को वहां ले जाकर रामाह के निर्माण स्थल से सारे पत्थर और
लकड़ियां इकट्ठा कर लीं, जिनसे बाशा बनाने का काम कर रहा था. इस सामान
को लेकर उसने गेबा और मिज़पाह नगरों की गढ़बन्दी कर दी. 7 उसी समय
दर्शी हनानी ने यहूदिया के राजा आसा से कहा, "इसलिये कि आपने याहवेह,
अपने परमेश्वर पर भरोसा करने की बजाय अराम के राजा पर भरोसा किया है,
इस्राएल के राजा की सेना अब आपसे बचकर निकल गई है. 8 क्या कूश देश
की और लिबिया की सेना बहुत ही बड़ी और अनगिनत सेना न थी, जिसमें बड़ी
संख्या में रथ और घुड़सवार थे? फिर भी इसलिये कि उस स्थिति में आपने
याहवेह पर भरोसा किया था, याहवेह ने आपको उन पर विजय दी थी. 9
क्योंकि याहवेह की आंखें पूरी पृथ्वी पर हर जगह घूमती रहती हैं, कि वह उन्हें
मजबूत कर सकें, जिनके मन उनके प्रति पूरी तरह से सच्चे है. इस स्थिति
में आपने मूर्खता कर डाली है. इसलिये अब से आप निश्चित ही युद्धों में ही
लगे रहेंगे." 10 यह सुनना था कि आसा दर्शी पर इतना गुस्सा हो गया कि
उसने दर्शी को जेल में डाल दिया; क्योंकि वह दर्शी की इस बात से बहुत ही
गुस्सा हो गया था. इसी समय आसा ने कुछ लोगों को परेशान करना शुरू कर
दिया था. 11 आसा द्वारा शुरू से अंत तक किए कामों का ब्यौरा यहूदिया
और इस्राएल के राजा की पुस्तक में दिया गया है. 12 उसके शासनकाल के
उनचालीसवें साल में आसा के पैरों में कोई रोग लग गया. यह बहुत गंभीर रोग
था; फिर भी अपनी रोगी हालत में उसने याहवेह की खोज नहीं कि वह सिर्फ
वैद्यों पर आश्रित रहा. 13 तब आसा हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला.
यह उसके शासनकाल का एकतालीसवां साल था. 14 उन्होंने उसे दावीद के
नगर में उसी की कब्र में रख दिया. यह कब्र उसने खुद अपने लिए बनवाई
थी. उन्होंने आसा को इस शांति की जगह में रख दिया, जिसे उसने सुगंध के
व्यापारियों के कौशल के द्वारा तरह-तरह के मसालों से मिलाकर भरकर रखा
था. उन्होंने आसा के सम्मान में बड़ी आग जलाई.

17 आसा के स्थान पर उसका पुत्र यहोशाफ़ात शासक बना. उसने इस्राएल
राज्य के विरुद्ध अपनी स्थिति मजबूत बना ली. 2 उसने यहूदिया के सभी
गढ़ नगरों में सेना की टुकड़िया ठहरा दीं और यहूदिया और एफ्राईम में उसने
सैनिकों की छावनियां बना दीं, जो उसके पिता आसा ने अधिकार में कर लिए
थे. 3 याहवेह यहोशाफ़ात की ओर थे क्योंकि वह अपने पिता के शुरूआती
समय की नीतियों का अनुसरण करता रहा. उसने बाल की पूजा कभी नहीं की,
4 बल्कि वह अपने पिता के परमेश्वर की ही खोज करता रहा, उन्हीं के आदेशों

का पालन करता रहा. उसने वह सब कभी न किया, जो इस्राएल राज्य ने किया
था. 5 फलस्वरूप याहवेह ने राज्य को उसके हाथ में स्थिर किया. पूरे यहूदिया
राज्य की प्रजा राजा को भेंट दिया करती थी. राजा समृद्ध और सम्मान्य होता
गया. 6 याहवेह की नीतियों के प्रति वह बहुत ही उत्साही था. उसने यहूदिया
राज्य में से सारे ऊंचे स्थानों पर बनी वेदियां और अशेराह देवी के खंभे नाश कर
दिए. 7 अपने शासन के तीसरे साल में उसने यहूदिया के नगरों में शिक्षा फैलाने
के उद्देश्य से अपने ये अधिकारी भेज दिए: बेन-हाइल, ओबदिया, ज़करयाह,
नेथानेल और मीकायाह. 8 इनके साथ लेवी शेमायाह, नेथनियाह, ज़ेबादिया,
आसाहेल, शेमिरामोथ, योनातन, अदोनियाह, तोबियाह और तोबादोनियाह. ये
सभी लेवी थे. इनके साथ पुरोहित एलीशामा और यहोराम भी भेजे गए थे. 9
इनके साथ याहवेह की व्यवस्था की पुस्तक थी. यहूदिया में उन्होंने इससे शिक्षा
दी; उन्होंने सारे यहूदिया राज्य में घूमते हुए प्रजा को शिक्षा प्रदान की. 10
यहूदिया के पास के सभी राष्ट्रों में याहवेह का आतंक फैल चुका था. फलस्वरूप
उन्होंने कभी यहोशाफ़ात पर हमला नहीं किया. 11 कुछ फिलिस्तीनी तक
यहोशाफ़ात को भेंट और चांदी चढ़ाया करते थे. अरब देश के लोगों ने उसके
लिए सात हज़ार, सात सौ मेढ़े और सात हज़ार, सात सौ बकरे भेंट में दिए. 12
तब यहोशाफ़ात दिन पर दिन उन्नत होता चला गया. उसने यहूदिया राज्य में गढ़
और भंडार नगर बनाए. 13 यहूदिया में उसने बड़े भंडार घर बनवाकर रखे
थे, साथ ही उसने येरूशलेम में योद्धा और वीर व्यक्ति चुनकर रखे थे. 14
उनके पूर्वजों के परिवारों के अनुसार उनकी गिनती इस प्रकार थी: यहूदिया से
एक हज़ार अधिकारी प्रधान: अदनाह तीन हज़ार कुशल सैनिकों का सेनापति
था; 15 येहोहानन दो लाख अस्सी हज़ार का सेनापति था; 16 ज़ीकरी का पुत्र
अमासियाह अपनी इच्छा से याहवेह की सेवा कर रहा था. उसने दो लाख
कुशल सैनिकों का नेतृत्व किया. 17 बिन्यामिन क्षेत्र से: एक वीर योद्धा था
एलियादा और उसके साथ थे दो लाख सैनिक, जो धनुष और ढाल से लैस थे;
18 उसके बाद था योज़ाबाद उसके साथ एक लाख अस्सी हज़ार युद्ध के लिए
तैयार सैनिक थे. 19 ये सभी सारे यहूदिया में बने गढ़ नगरों में राजा द्वारा नियुक्त
सैनिकों के अलावा राजा की सेवा में लगे थे.

18 यहोशाफ़ात अब समृद्ध और सम्मान्य हो चुका था. उसने विवाह के द्वारा
अहाब से संबंध बना लिए. 2 इसके कुछ साल बाद यहोशाफ़ात अहाब
से भेंट करने शमरिया गया. यहोशाफ़ात और उसके संगियों के सम्मान में भोज
के लिए अहाब ने अनेक भेड़ों और बछड़ों का वध किया. इसके द्वारा अहाब ने
उन्हें रामोथ-गिलआद पर हमला करने के लिए उकसाया. 3 इस्राएल के राजा
अहाब ने यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात से कहा, "क्या आप मेरे साथ रामोथ-
गिलआद पर हमला करने चलेंगे?" यहोशाफ़ात ने उसे उत्तर दिया, "मैं आपके
साथ हूं, मेरी प्रजा आपकी प्रजा है हम युद्ध में आपका साथ देंगे." 4 यहोशाफ़ात
ने इस्राएल के राजा से कहा, "सबसे पहले याहवेह की इच्छा मालूम कर लें."
5 तब इस्राएल के राजा ने भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया. ये चार सौ व्यक्ति
थे. उसने भविष्यवक्ताओं से प्रश्न किया, "मैं रामोथ-गिलआद से युद्ध करने
जाऊं, या यह विचार छोड़ दूं?" उन्होंने उत्तर दिया, "आप जाइए, क्योंकि
परमेश्वर उसे राजा के अधीन कर देंगे." 6 मगर यहोशाफ़ात ने प्रश्न किया,
"क्या यहां याहवेह का कोई भविष्यद्वक्ता नहीं, जिससे हम यह मालूम कर
सकें?" 7 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात को उत्तर दिया, "एक व्यक्ति है.
ज़रूर, जिससे हम याहवेह की इच्छा मालूम कर सकते है, मगर मुझे उससे घृणा
है, क्योंकि वह मेरे लिए भली तो नहीं बल्कि बुरी ही भविष्यवाणी करता है,
मीकायाह, इमलाह का पुत्र." यहोशाफ़ात ने इस पर कहा, "राजा का ऐसा
कहना सही नहीं है." 8 तब इस्राएल के राजा ने अपने एक अधिकारी को
बुलाकर आदेश दिया, "जल्दी ही इमलाह के पुत्र मीकायाह को ले आओ." 9
इस्राएल का राजा और यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात शमरिया के फाटक के
सामने खुले खलिहान में राजसी वस्त्रों में अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे थे.
उनके सामने सारे भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी कर रहे थे. 10 तभी केनानाह
का पुत्र सीदकियाह, जिसने अपने लिए लोहे के सींग बनाए थे, कहने लगा,
"यह संदेश याहवेह की ओर से है: 'इन सींगों के द्वारा आप अरामियों पर
इस रीति से वार करेंगे, कि वे खत्म हो जाएंगे.'" 11 सारे भविष्यद्वक्ता यही
भविष्यवाणी कर रहे थे. "रामोथ-गिलआद पर हमला कीजिए और विजयी
हो जाइए. याहवेह इसे राजा के अधीन कर देंगे." 12 जो दूत मीकायाह को
लेने गया हुआ था, उसने मीकायाह को आदेश दिया, "सुनो एक साथ सभी
भविष्यवक्ताओं का संदेश राजा के लिए अनुकूल है; ऐसा करो कि तुम्हारी
भविष्यवाणी भी उनमें से एक के समान ही हो. जो कहो, वह ठीक ही हो." 13
मगर मीकायाह ने कहा, "जीवित याहवेह की शपथ, मैं सिर्फ वही कहूंगा, जो
मेरे परमेश्वर मुझसे कहेंगे." 14 जब वह राजा के सामने पहुंचा, राजा ने उससे
कहा, "बताओ, मीकायाह, क्या हम रामोथ-गिलआद से युद्ध करने जाएं या
नहीं?" मीकायाह ने उत्तर दिया, "जाकर जयवंत हो जाइए! वे आपके अधीन
कर दिए जाएंगे." 15 राजा ने मीकायाह से कहा, "मीकायाह, मुझे तुम्हें कितनी
बार इसकी शपथ दिलानी होगी कि तुम्हें मुझसे याहवेह के नाम में सच के
सिवाय और कुछ भी नहीं कहना है?" 16 तब मीकायाह ने उत्तर दिया, "मैंने
सारे इस्राएल को बिन चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर तितर-बितर देखा.
तभी याहवेह ने कहा, 'इनका तो कोई स्वामी ही नहीं है. हर एक को शांतिपूर्वक
अपने-अपने घर लौट जाने दो.'" 17 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा,
"देखा? मैंने कहा था न कि यह मेरे लिए भली नहीं बल्कि बुरी भविष्यवाणी ही
करेगा?" 18 यह सुन मीकायाह ने कहा, "बहुत बढ़िया! इसलिये अब याहवेह
का संदेश सुन लीजिए: मैंने याहवेह को सिंहासन पर बैठे देखा. उनके दाएं और
बाएं स्वर्गिक समुदाय खड़े हुए थे. 19 याहवेह ने वहां प्रश्न किया, 'यहां कौन है,
जो इस्राएल के राजा अहाब को ऐसे लुभाएगा कि वह रामोथ-गिलआद जाए
और वहां जाकर मारा जाए?' "किसी ने वहां कुछ उत्तर दिया और किसी ने
कुछ और. 20 तब वहां एक आत्मा आकर याहवेह के सामने खड़ी होकर यह
कहने लगी, 'मैं उसे लुभाऊंगी.' "याहवेह ने पूछा, 'कैसे?' 21 "उसने उत्तर
दिया, 'मैं जाकर राजा के सभी भविष्यवक्ताओं के मुख में झूठी आत्मा बन
जाऊंगी.' "'इस पर याहवेह ने कहा, तुम्हें इसमें सफल भी होना होगा. जाओ
और यही करो.' 22 "इसलिये देख लीजिए, याहवेह ने इन सारे भविष्यवक्ताओं
के मुंह में छल का एक आत्मा डाल रखा है. आपके लिए याहवेह ने सर्वनाश की
घोषणा कर दी है." 23 यह सुन केनानाह का पुत्र सीदकियाह सामने आया और
मीकायाह के गाल पर मारते हुए कहने लगा, "याहवेह का आत्मा मुझमें से
निकलकर तुमसे बातचीत करने किस प्रकार जा पहुंचा?" 24 मीकायाह ने उसे
उत्तर दिया, "तुम यह देख लेना, जब उस दिन तुम छिपने के लिए भीतर के
कमरे में शरण लोगे." 25 इस्राएल के राजा ने कहा, "पकड़ लो, मीकायाह को!
उसे नगर के हाकिम अमोन और राजकुमार योआश के पास ले जाओ. 26 उनसे
कहना, 'यह राजा का आदेश है: "इस व्यक्ति को जेल में डाल दो और इसे
उस समय तक ज़रा सा ही भोजन और पानी देना, जब तक मैं सुरक्षित न लौट
आऊं."'" 27 इस पर मीकायाह ने कहा, "यदि आप सच में सकुशल लौट
आएं, तो यह समझ लीजिए कि याहवेह ने मेरे द्वारा यह सब प्रकट किया ही
नहीं है." और फिर भीड़ से उसने कहा, "आप सब भी यह सुन लीजिए!"
28 फिर भी इस्राएल के राजा और यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात ने रामोथ-
गिलआद पर हमला कर दिया. 29 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, "मैं
भेष बदलकर युद्ध-भूमि में जाऊंगा, मगर आप अपनी राजसी वेशभूषा ही पहने
रहिए." इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध-भूमि में गया. 30 अराम के राजा ने

अपनी रथ सेना के प्रधानों को आदेश दे रखा था, “युद्ध न तो साधारण सैनिकों
से करना और न मुख्य अधिकारियों से सिर्फ इस्राएल के राजा को निशाना
बनाना.” 31 जब रथों के सेनापतियों की नज़र यहोशाफ़ात पर पड़ी, वे समझे
वह इस्राएल का राजा है. वे उसी पर वार करने आगे बढ़े. यहोशाफ़ात चिल्ला
उठा. याहवेह ने उसकी सहायता की और परमेश्वर उन्हें यहोशाफ़ात से दूर ले
गए. 32 जब प्रधानों ने देखा कि वह इस्राएल का राजा नहीं था, उन्होंने उसका
पीछा करना छोड़ दिया. 33 किसी एक सैनिक ने बिना विचारे, बिना किसी
लक्ष्य के एक बाण छोड़ दिया. यह बाण वहां जा लगा, जहां इस्राएल के राजा
की कवच और कमरबंध का जोड़ था. तब राजा ने सारथी को आदेश दिया,
“रथ को मोड़कर युद्ध-भूमि से बाहर चलो, क्योंकि मेरा घाव गहरा है.” 34 उस
दिन युद्ध घमासान होता गया. इस्राएल का राजा अपने रथ में अरामियों को
दिखाने के उद्देश्य से शाम तक बाण से टिका रहा. शाम को उसकी मृत्यु हो गई.

19 यहूदिया का राजा यहोशाफ़ात सुरक्षित येरूशलेम में अपने घर को पहुंचा
किंतु येहू, जो दर्शी हनानी का पुत्र था, 2 उससे भेंट करने गया और
राजा यहोशाफ़ात से कहा: क्या सही है कि आप दुष्टों की सहायता करें और
याहवेह के शत्रुओं से प्रेम करें और याहवेह की ओर से अपने आप पर परमेश्वर
का क्रोध ले आएं? 3 मगर आप में कुछ अच्छी बातें ज़रूर है आपने देश में से
अशेरा के खंभे हटा दिए है और आपने अपना हृदय परमेश्वर की खोज करने की
ओर लगाया है. 4 यहोशाफ़ात येरूशलेम में रहता रहा. उसने प्रजा में घूमना शुरू
कर दिया. बेअरशेबा से लेकर एफ्राईम के पहाड़ी इलाके तक और उसकी
कोशिशों से लोग अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह की ओर हो गए. 5 यहूदिया
देश के हर एक नगर में उसने न्यायाध्यक्ष ठहरा दिए. 6 न्यायाध्यक्षों से उसने
कहा था, सोचो की क्या जवाबदारी है तुम्हारी. क्योंकि जब तुम न्याय करते हो,
तुम किसी मनुष्य के लिए नहीं, याहवेह के लिए न्याय करते हो, वो तुम्हारे साथ
बने रहते हैं. 7 तुममें याहवेह के प्रति श्रद्धा और भय की भावना बनी रहे. अपने
काम के विषय बहुत ही सावधान रहो, क्योंकि कुटिलता में या पक्षपात में या
घूस लेने में याहवेह हमारे परमेश्वर का कोई काम नहीं हुआ करता. 8 येरूशलेम
में भी उसने कुछ लेवियों, पुरोहितों और इस्राएल के पितरों के गोत्रों के कुछ
प्रमुखों को याहवेह की ओर से येरूशलेम में विवादों के न्याय देने के लिए चुना.
9 राजा ने उन्हें आदेश दिया, तुम्हारी जवाबदारी याहवेह के प्रति श्रद्धा और भय
की भावना में, सच्चाई और पूरे मन से हो. 10 जब कभी प्रजाजनों की ओर से
तुम्हारे सामने खून खराबा, नियम तोड़ने से संबंधित मुकद्दमा लाया जाए, तब तुम
उन्हें निर्देश देना. उन्हें चेतावनी देना है कि वे याहवेह के सामने दोषी साबित न
हों और तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर परमेश्वर का क्रोध न उतरे. इस तरह की
प्रक्रिया से तुम दोषी नहीं पाए जाओगे. 11 “देखो, याहवेह से संबंधित हर एक
विषय में प्रमुख पुरोहित अमरियाह ज़िम्मेदार होगा और राजा से संबंधित विषयों
के लिए इशमाएल का पुत्र ज़ेबादिया, जो यहूदाह गोत्र का प्रशासक है. लेवी
तुम्हारे लिए निर्णयों के लेने का काम पूरा करेंगे. हिम्मत बांधकर काम में जुट
जाओ. भले लोगों के लिए याहवेह का साथ हमेशा रहेगा.”

20 इसके बाद मोआबी, अम्मोनी और मिऊनी यहोशाफ़ात से युद्ध के लिए
तैयार हुए. 2 यहोशाफ़ात को बताया गया सागर पार एदोम से बड़ी भारी
भीड़ आप पर हमला करने आ रही है. इस समय वे हज़ज़ोन-तामार जो एन-गेदी
में है, 3 यहोशाफ़ात डर गया. उसने अपना ध्यान याहवेह की इच्छा जानने की
ओर लगा दिया. उसने सारे यहूदिया में उपवास की घोषणा करवा दी. 4 सारे
यहूदिया ने इकट्ठा होकर याहवेह से सहायता की विनती की; यहूदिया के हर एक
नगर से लोग याहवेह से सहायता की कामना करने आ गए. 5 यहोशाफ़ात
प्रार्थना करने याहवेह के भवन के नए आंगन में यहूदिया और येरूशलेम की सभा
के सामने खड़े हुए 6 यहोशाफ़ात ने विनती की, “हे याहवेह, हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर, आप वह परमेश्वर हैं, जो स्वर्ग में रहते हैं. आपका ही शासन सारे राष्ट्रों
के राज्यों पर भी है. अधिकार और सामर्थ्य आपके ही हाथों में है. इसके
कारण कोई भी आपके सामने ठहर नहीं सकता. 7 आपने ही इस भूमि के मूल
निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से दूर कर दिया और यह भूमि
अपने मित्र अब्राहाम के वंशजों को दे दी. 8 वे इसमें रह रहे हैं. आपकी महिमा
में यह कहते हुए एक पवित्र स्थान को बनाया, 9 ‘यदि हम पर बुराई, तलवार या
न्याय-दंड का वार हो या महामारी या अकाल आ पड़े, हम इस भवन के सामने,
सच में आपके सामने आ खड़े होंगे; क्योंकि इस भवन में आपकी महिमा का
वास है और अपनी विपत्ति में आपके सामने रोएंगे, आप हमारी सुनकर हमें
छुटकारा प्रदान करेंगे.’ 10 “अब देख लीजिए, अम्मोन, मोआब के वंशज और
सेईर पहाड़ के रहनेवाले, जिन पर मिस्र देश से आ रहे इस्राएलियों को आपने
हमला करने से रोक दिया था, वे जिनके पास से होकर निकल गए मगर उन्हें
नाश नहीं किया गया था. 11 देख लीजिए, वे हमें इसका प्रतिफल यह दे रहे हैं,
कि वे हमें आपकी संपत्ति से निकाल रहे हैं, जो आपने हमें मीरास के रूप में
दिया है. 12 हमारे परमेश्वर, क्या आप इसका फैसला न करेंगे? क्योंकि इस
बड़ी भीड़ के सामने, जो हम पर हमला करने आ रही है, हम तो पूरी तरह
शक्तिहीन हैं. हम नहीं जानते इस स्थिति में हमारा क्या करना सही होगा. हां,
हमारी दृष्टि बस आप पर ही टिकी हुई है.” 13 इस समय सारे यहूदिया राज्य,
उनकी पत्नियां, शिशु और बालक भी याहवेह के सामने ठहरे हुए थे. 14 तब इसी
सभा में याहवेह के पवित्र आत्मा याहाज़िएल पर उतरे. याहाज़िएल ज़करयाह
का, ज़करयाह बेनाइयाह का, बेनाइयाह येइएल का और येइएल आसफ के पुत्र
लेवी मत्तनियाह का पुत्र था. 15 याहाज़िएल ने सभा को संबोधित करते हुए
कहा: “यहूदिया, येरूशलेम के सभी निवासियों और महाराज यहोशाफ़ात,
कृपया सुनिए: ‘आपके लिए याहवेह का संदेश यह है इस बड़ी भीड़ को देखकर
तुम न तो डरना और न घबराना, क्योंकि यह युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है!
16 कल हम उन पर हमला करेंगे. यह देखना कि वे लोग ज़िज़ के चढ़ाव से
हमारी ओर बढ़ेंगे. उनसे तुम्हारा सामना येरूएल के बंजर भूमि के सामने की ओर
की घाटी के अंत में होगा. 17 यह ज़रूरी ही नहीं कि तुम इस युद्ध में जाओ. तुम
वहां सिर्फ स्थिर खड़े हो जाना. तब यहूदिया और येरूशलेम, तुम्हें वहां खड़े हुए
अपने लिए याहवेह द्वारा की गई छुड़ौती के गवाह होना. आप न तो भयभीत हों
न घबराएं. कल आप उनका सामना करने आगे बढ़िए, क्योंकि याहवेह आपके
साथ हैं.’” 18 यहोशाफ़ात ने यह सुनकर अपना सिर भूमि की ओर झुका लिया
और सारा यहूदिया और येरूशलेमवासी याहवेह के सामने याहवेह की स्तुति में
दंडवत हो गए. 19 कोहाथ और कोराह के वंशज लेवियों ने खड़े होकर बड़ी ही
ऊंची आवाज में याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति की. 20 बड़े तड़के
उठकर वे तकोआ के बंजर भूमि को चले गए. वहां पहुंचकर यहोशाफ़ात ने
खड़े हो उनसे कहा, यहूदिया और येरूशलेम के वासियों, सुनो! याहवेह, अपने
परमेश्वर में विश्वास रखो तो, तुम बने रहोगे. याहवेह के भविष्यवक्ताओं का
भरोसा करो तो तुम सफल हो जाओगे. 21 जब राजा लोगों से सलाह-मशवरा
कर चुका, उसने याहवेह के स्तुति के लिए गायक चुने. इनका काम था पवित्र
वस्त्र पहनकर सेना के आगे-आगे चलते हुए इन शब्दों में याहवेह की स्तुति
करना, “याहवेह का धन्यवाद करो-वे भले हैं; उनकी करुणा सदा की है.” 22
जब उन्होंने याहवेह की स्तुति में गाना शुरू किया, याहवेह ने यहूदिया के विरुद्ध
उठे अम्मोनिया, मोआबियों और सेईर पर्वत के वासियों पर वार करने के लिए
सैनिक घात लगाकर बैठा दिए. इस प्रकार शत्रुओं के पैर उखड़ गए. 23 तब
अम्मोन और मोआब के वंशज सेईर पर्वत वासियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए. और
उनको पूरी तरह से मार दिया. जब वे सेईरवासियों को मार चुके, वे एक दूसरे ही

को मारने लगे. 24 जब यहूदियावासी बंजर भूमि की चौकी पर पहुंचे, जब
उन्होंने भीड़ की दिशा में नज़रें की, वहां हर जगह शव ही शव पड़े हुए थे-कोई
भी जीवित न बचा था. 25 जब यहोशाफ़ात और उसकी सेना लूट का सामान
इकट्ठा करने आई, उन्हें वहां भारी मात्रा में वस्तुएं, वस्त्र और कीमती वस्तुएं
मिलीं. ये सभी उन्होंने अपने लिए रख लिया. यह सब मात्रा में इतना ज्यादा
था, कि यह सब ले जाना उनके लिए संभव न हुआ. लूट की सामग्री इकट्ठा
करते-करते उन्हें तीन दिन लग गए—इतनी ज्यादा थी लूट की सामग्री. 26 चौथे
दिन वे बेराकाह की घाटी में इकट्ठा हुए. वहां उन्होंने याहवेह की वंदना की
इसलिये उन्होंने उस घाटी का नाम ही बेराकाह की घाटी रख दिया, जो आज
तक प्रचलित है. 27 यहूदिया और येरूशलेम का हर एक व्यक्ति यहोशाफ़ात के
साथ, जो उनके आगे-आगे चल रहा था, बड़ी ही खुशी के साथ येरूशलेम
लौटा, क्योंकि याहवेह ने उन्हें शत्रुओं पर विजय दी थी. 28 किन्नोर, नेबेल
और नरसिंगों के साथ येरूशलेम में प्रवेश कर याहवेह के भवन को गए. 29 जब
सभी राष्ट्रों ने यह सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से युद्ध याहवेह ने किया था,
उनमें परमेश्वर का भय छा गया. 30 यहोशाफ़ात के शासन में हर जगह शांति
थी, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसे हर तरफ से शांति दी थी. 31 यहोशाफ़ात
यहूदिया राज्य पर शासन करता रहा. जब उसने शासन शुरू किया, उसकी उम्र
पैंतीस साल की थी. येरूशलेम पर वह पच्चीस साल राज्य करता रहा. उसकी
माता का नाम अत्सूबा था, जो शिल्ही की पुत्री थी. 32 वह अपने पिता आसा
की नीतियों का पालन करता रहा, इनसे वह कभी दूर न हुआ. वह वही करता
रहा, जो याहवेह की दृष्टि में सही था. 33 यह सब होने पर भी ऊंचे स्थानों की
वेदियां ढाई नहीं गईं; लोगों के मन उनके पूर्वजों के परमेश्वर पर स्थिर नहीं हुए
थे. 34 यहोशाफ़ात के अन्य कामों का ब्यौरा, पहले से लेकर अंतिम तक का,
हनानी के पुत्र येहू की पुस्तक इस्राएल के राजा में दिया गया है. 35 इसके कुछ
समय बाद यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा अहज़्याह से मित्रता
कर ली. अहज़्याह दुष्ट व्यक्ति था. 36 इस मैत्री के कारण दोनों में तरशीश से
व्यापार के लिए जहाज़ बनाने की सहमति हो गई. जहाज़ एज़िओन-गेबेर में
बनता था. 37 इस पर मारेशाहवासी दोदावाहू के पुत्र एलिएज़र ने यहोशाफ़ात के
विरोध में यह भविष्यवाणी की, "अहज़्याह से तुम्हारी मित्रता के कारण याहवेह
ने तुम्हारे कामों को नाश कर दिया है." फलस्वरूप जहाज़ टूट गए और तरशीश
यात्रा रुक गई.

21 यहोशाफ़ात हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में मिल गया. उसे दावीद के
नगर में उसके पूर्वजों के साथ गाड़ा गया. उसके स्थान पर उसका पुत्र
यहोराम राजा हुआ. 2 उसके भाई थे, यहोशाफ़ात ही के पुत्र अज़रियाह,
येहिएल, ज़करयाह, अज़रियाह, मिखाएल और शेपाथियाह. ये सभी यहूदिया
के राजा यहोशाफ़ात के पुत्र थे. 3 इनके पिता ने इन्हें अनेक उपहार दिए थे,
चांदी, सोना और कीमती वस्तुएं. इनके अलावा उसने उन्हें यहूदिया में गढ़नगर
भी दे दिए थे, मगर यहोराम को उसने राज्य सौंप दिया था; क्योंकि वह पहलौठा
था. 4 जैसे ही यहोराम अपने पिता के सिंहासन पर बैठा और राज्य स्थिर हुआ,
उसने अपने सभी भाइयों को घात कर दिया और इनके अलावा इस्राएल के कुछ
अधिकारियों को भी. 5 जब यहोराम राजा बना, उसकी उम्र बत्तीस साल थी
और उसने येरूशलेम में आठ साल शासन किया. 6 उसका आचरण इस्राएल
के राजाओं के समान था. उसने वही किया, जो अहाब के वंश ने किया था;
क्योंकि उसने अहाब की पुत्री से विवाह किया था. वह वही करता था जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था. 7 फिर भी दावीद से बांधी गई अपनी वाचा के
कारण याहवेह ने दावीद के वंश को नाश करना न चाहा और इसलिये भी कि
उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह दावीद को और उनके पुत्रों के दीपक को
कभी न बुझाएंगे. 8 यहोराम का शासनकाल में एक मौका ऐसा आया, जब
एदोम ने यहूदिया के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और अपने लिए स्वयं एक राजा चुन
लिया. 9 तब यहोराम अपने सेनापतियों और सारे रथों को लेकर एदोम की
ओर निकला. वह रात में उठा और उन एदोमियों को मार डाला जिन्होंने उसे,
सेनापतियों और रथों को घेर रखा था. 10 फलस्वरूप एदोम आज तक इस्राएल
के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में है. इसी समय लिबनाह ने भी विद्रोह कर दिया
था. क्योंकि यहोराम ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह को त्याग दिया था.
11 इसके अलावा उसने यहूदिया के पर्वतों पर वेदियां बना रखी थी, जिसका
परिणाम यह हुआ कि येरूशलेम के निवासी याहवेह परमेश्वर के प्रति सच्चे
न रह गए और यहूदिया के निवासी मार्ग से भटक गए. 12 तब यहोराम को
भविष्यद्वक्ता एलियाह द्वारा भेजा एक पत्र मिला, जिसमें एलियाह ने लिखा था,
"तुम्हारे पूर्वज दावीद के परमेश्वर याहवेह का संदेश यह है, 'इसलिये, कि तुमने
न तो अपने पिता यहोशाफ़ात की नीतियों का पालन किया और न यहूदिया के
राजा आसा की नीतियों का. 13 बल्कि तुमने इस्राएल के राजाओं की नीतियों
का अनुसरण किया है और यहूदिया और येरूशलेम के निवासियों को अहाब के
परिवार के समान विश्वासघात के लिए उकसाया है और तुमने अपने ही परिवार
के भाइयों की हत्या कर दी है, जो तुमसे अच्छे थे. 14 यह देख लेना, तुम्हारे
लोगों, तुम्हारे पुत्रों तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी सारी संपत्ति पर याहवेह बड़ी
भारी विपत्ति डालेंगे. 15 खुद तुम एक भयंकर रोग से बीमार हो जाओगे. यह
आंतों का रोग होगा, फलस्वरूप इस रोग के कारण हर रोज़ तुम्हारी आंतें बाहर
आती जाएंगी.'" 16 तब याहवेह ने फिलिस्तीनियों और उन अरबों के मनों
को, जो कूश देश की सीमा के पास रहते थे, यहोराम के विरुद्ध उकसाया. 17
उन्होंने यहूदिया पर हमला कर दिया, वे सीमा में घुस आए. उन्होंने राजमहल में
जो कुछ था सभी ले लिया और साथ ही उसके पुत्रों और पत्नियों को भी अपने
साथ ले गए. तब उसके छोटे पुत्र यहोआहाज़ के अलावा वहां कोई भी बचा न
रह गया. 18 यह सब होने पर याहवेह ने उसकी आंतों पर एक भयंकर रोग से
वार किया. 19 रोग दिनोंदिन बढ़ता ही गया और दो साल पूरे होने पर उसकी
आंतें बाहर निकल आईं और भीषण दर्द में उसकी मृत्यु हो गई. लोगों ने उसके
सम्मान में आग नहीं जलाई जैसा वे उसके पूर्वजों के संबंध में करते आए
थे. 20 जब उसने शासन करना शुरू किया उसकी उम्र बत्तीस साल की थी.
येरूशलेम में उसने आठ साल शासन किया. किसी को भी उसकी मृत्यु पर दुःख
न हुआ. उन्होंने उसे दावीद के नगर में गाड़ दिया, मगर राजाओं के लिए ठहराई
गई कब्र में नहीं.

22 येरूशलेम वासियों ने यहोराम के छोटे पुत्र अहज़्याह को उसके स्थान पर
राजा अभिषिक्त किया; क्योंकि वह दल, जो अरब शिविर में ठहरा हुआ
था, उसने उसके सभी बड़े पुत्रों की हत्या कर दी थी. तब राजा यहोराम का
पुत्र अहज़्याह ने शासन शुरू किया. 2 जब अहज़्याह ने शासन शुरू किया,
उसकी उम्र बाईस साल थी. उसने येरूशलेम में एक साल राज्य किया. उसकी
माता का नाम अथालियाह था. वह इस्राएल के राजा ओमरी की पोती थी. 3
अहज़्याह भी अहाब की नीतियों का अनुसरण करता रहा, क्योंकि बुराई में
उसकी सलाहकार थी उसकी माता. 4 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि
में बुरा था, अहाब के परिवार के समान, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के
बाद ऐसी उसकी सलाह थी, जिसका परिणाम था सर्वनाश. 5 अहज़्याह भी
इस्राएल की सलाह का अनुसरण करता रहा. वह इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र
योराम के साथ मिलकर अराम के राजा हाज़ाएल के विरुद्ध युद्ध के लिए रामोथ-
गिलआद में युद्ध-भूमि में उतर पड़े. मगर अरामियों ने योराम को घायल कर
दिया. 6 रामाह में अराम के राजा हाज़ाएल से युद्ध करते हुए राजा योराम को जो
घाव लगे थे, उनसे स्वस्थ होने के लिए वह येज़्रील को लौट गया. यहूदिया के
राजा यहोराम का पुत्र अहज़्याह अहाब के पुत्र योराम की स्थिति को देखने

येज़्रील गया क्योंकि योराम बीमार था. 7 अहज़्याह का विनाश परमेश्वर ही के
द्वारा पहले से ही तय किया गया था, इसलिये वह यहोराम से भेंट करने गया,
फिर वहां पहुंचने पर वह योराम के साथ निमशी के पुत्र येहू से भेंट करने चला
गया. येहू, जिसे याहवेह ने अहाब के वंश का विनाश करने के लिए ठहराया था.
8 जब येहू राजा अहाब के वंश पर परमेश्वर द्वारा ठहराए गए दंड दे रहा था,
उसकी भेंट उन यहूदी अधिकारियों से हो गई. इनमें अहज़्याह के भाइयों के वे
पुत्र भी थे, जो अहज़्याह के सेवक भी थे. येहू ने इन सभी की हत्या कर दी. 9
उसने अहज़्याह की खोज की और उसे शमरिया में जा पकड़ा, जहां वह जा
छिपा था. वे उसे येहू के सामने लाए. वहीं उन्होंने उसका वध किया और उसे
गाड़ दिया. क्योंकि वे याद कर रहे थे कि वह यहोशाफ़ात का पोता है, जिसने
पूरे हृदय से याहवेह की इच्छा जानने की खोज की थी. अब कोई भी बचा न
रहा, जो यहूदिया राज्य के अधिकार को स्थिर रख सके. 10 जब अहज़्याह की
माता को मालूम हुआ कि उसके पुत्र की मृत्यु हो चुकी है, उसने जाकर सारे
यहूदिया राजपरिवार को नाश कर दिया. 11 जब राजा के पुत्रों का संहार किया
जा रहा था, राजा की पुत्री येहोशाबेअथ ने अहज़्याह के पुत्र योआश को उसकी
धाय के साथ शयनागार में छिपा दिया था. इस प्रकार राजा यहोराम की पुत्री
येहोशाबेअथ ने, जो पुरोहित यहोयादा की पत्नी थी, जो अहज़्याह की बहन भी
थी, योआश की अथालियाह द्वारा हत्या किए जाने से बचा लिया. 12 जब देश
पर अथालियाह शासन कर रही थी, छः साल तक योआश को परमेश्वर के भवन
में छिपाए रखा गया.

23 मगर सातवें साल में पुरोहित यहोयादा ने साहस किया और सेना के इन
शतपतियों से वाचा बांधी की येरोहाम के पुत्र अज़रियाह, येहोहानन के
पुत्र इशमाएल, ओबेद के पुत्र अज़रियाह, अदाइयाह के पुत्र मआसेइयाह और
ज़ीकरी के पुत्र एलिषाफत से. 2 इन्होंने सारी यहूदिया में घूमकर यहूदिया के
सारे नगरों से लेवियों को और इस्राएल के पितरों के गोत्रों के प्रधानों को इकट्ठा
किया और वे सभी येरूशलेम आ गए. 3 तब परमेश्वर के भवन में इन सभी ने
राजा के साथ वाचा बांधी. पुरोहित यहोयादा ने इन सबको संबोधित करते हुए
कहा, "यह देख लीजिए कि शासन राजकुमार ही करेगा, क्योंकि यह दावीद के
वंशजों के बारे में की गई याहवेह की भविष्यवाणी के अनुसार है. 4 आप लोगों
को करना यह होगा: वे पुरोहित और लेवी, जो शब्बाथ पर यहां आया करते हैं,
उनमें से एक तिहाई द्वारपाल का काम करेंगे, 5 बाकी एक तिहाई राजा के घर
पर होंगे और बाकी एक तिहाई नींव के द्वार पर रहेंगे. बाकी सभी याहवेह के
भवन के आंगन में रहेंगे. 6 यह ध्यान रखा जाए कि पुरोहितों और सेवा के लिए
चुने गए लेवियों के अलावा कोई भी याहवेह के भवन में प्रवेश न करे. पुरोहित
और लेवी भवन में इसलिये प्रवेश करेंगे, कि वे पवित्र हैं. हर एक व्यक्ति याहवेह
की विधि का पालन करेगा. 7 लेवी राजा को घेर लेंगे, हर एक के हाथ में उसके
शस्त्र होंगे. यदि कोई भी भवन में आने की कोशिश करे, उसका वध कर दिया
जाए. राजा के आने जाने में आप हमेशा राजा के साथ साथ रहेंगे." 8 उन्हें जैसा
आदेश पुरोहित यहोयादा द्वारा दिया गया था, उन्होंने उसकी एक-एक बात पूरी
की. पुरोहित यहोयादा ने छुट्टी पर जा रहे किसी भी दल को शब्बाथ सेवा से
अवकाश लेने न दिया. इससे जो अवकाश पर जा रहे थे वे, और जो सेवा के
लिए आ रहे थे वे सभी वहां इकट्ठा हो गए. 9 तब यहोयादा ने परमेश्वर के भवन
में जमा राजा दावीद की छोटी और बड़ी ढालें और बर्छियां शतपतियों को दे दी.
10 अपने-अपने हाथों में हथियार लिए इन सभी व्यक्तियों को यहोयादा ने राजा
के आस-पास भवन में वेदी के पास और भवन के दायीं ओर से बायीं ओर तक
ठहरा दिया. 11 तब पुरोहित यहोयादा और उसके पुत्रों ने राजकुमार को लेकर
बाहर आए, उसके सिर पर मुकुट रखा और उसे साक्षी पत्र दे दिया. उन्होंने उसे
राजा घोषित कर उसका राजाभिषेक किया और सबने जयघोष करते हुए कहा,
"महाराज जीवित रहें!" 12 जब अथालियाह ने उस भीड़ का हल्ला और राजा
की प्रशंसा में की जा रही जय जयकार सुनी, वह याहवेह के भवन में लोगों के
बीच में आ गई. 13 उसने दृष्टि की और देखा कि राजा अपने ठहराए हुए खंभे
के पास खड़ा हुआ था और शतपति और तुरही वादक राजा के पास खड़े हुए थे.
सभी देशवासी आनन्दमग्न हो तुरही फूंक रहे थे, गायक लोग अपने वाद्य-यंत्रों
के साथ स्तुति कर रहे थे. यह देख अथालियाह अपने वस्त्र फाड़ चिल्ला उठी,
"राजद्रोह! राजद्रोह!" 14 पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों को, जो सेना के
अधिकारी थे, आदेश दिया: "उसे बाहर पंक्तियों के बीच में लाया जाए" और
जो कोई उसके प्रति सच्चा व्यक्ति हो, उसको तलवार से मार डाला जाए.
पुरोहित यह आदेश दे चुका था, "याहवेह के भवन में उसका वध न किया
जाए." 15 तब उन्होंने उसे पकड़ लिया. जब वह राजघराने के घोड़ा फाटक के
पास पहुंची, उन्होंने उसका वध कर दिया. 16 यहोयादा ने खुद अपने, सारी
प्रजा और राजा के साथ यह वाचा बांधी, कि वे अब याहवेह के होकर रहेंगे. 17
सारी जनता बाल के भवन को गई ओर उसे नाश कर डाला. उन्होंने वेदियों और
मूर्तियों को चूर-चूर कर डाला. तब उन्होंने वेदियों के बीच ही बाल के पुरोहित
मत्तान का वध कर डाला. 18 इसके अलावा यहोयादा ने याहवेह के भवन की
देखरेख की जवाबदारी लेवी पुरोहितों को सौंप दी. इन्हें याहवेह के भवन में
दावीद द्वारा चुना गया था, कि वे मोशेह की व्यवस्था की पुस्तक के अनुसार
होमबलि चढ़ाया करें, यह सब दावीद द्वारा चलाई गई विधि के अनुसार खुशी से
गाते हुए किया जाना था. 19 उसने याहवेह के भवन के लिए द्वारपाल चुन दिए,
कि किसी भी रूप में सांस्कारिक रूप से अशुद्ध कोई भी व्यक्ति भवन में आ न
सके. 20 तब यहोयादा ने शतपतियों, समाज के सम्मान्य व्यक्तियों, प्रजा के
प्रशासकों और सारी प्रजा को इकट्ठा किया और याहवेह के भवन में से इन सभी
के सामने राजा को बाहर लाया गया. उसे ऊपरी द्वार से लेकर वे राजघराने में
आए. वहां उन्होंने राजा को राज सिंहासन पर बैठाया. 21 इस पर सारी प्रजा में
खुशी छा गई और नगर में शांति भर गई, तलवार से अथालियाह की हत्या हुई
थी यह इसका मुख्य कारण था.

24 राजाभिषेक के मौके पर योआश की उम्र सात साल की थी. येरूशलेम
में उसने चालीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम ज़िबियाह था;
वह बेअरशेबा वासी थी. 2 योआश ने पुरोहित यहोयादा के जीवनकाल में वही
किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था. 3 यहोयादा ने उसके दो विवाह करना
सही समझा. इन दोनो पत्नियों से उसके पुत्र-पुत्रियां पैदा हुई. 4 योआश याहवेह
के भवन की मरम्मत करने के लिए मन में दृढ़ था. 5 उसने पुरोहितों और
लेवियों को इकट्ठा कर उन्हें कहा, "बिना देर किए यहूदिया के सारे नगरों में
जाकर सारे इस्राएल से वार्षिक दान इकट्ठा कीजिए, कि परमेश्वर के भवन की
मरम्मत की जा सके." किंतु लेवी इसके लिए देर करते रहे. 6 तब राजा ने
प्रमुख पुरोहित यहोयादा को बुलवाकर उससे कहा, "आपने लेवियों को यहूदिया
और येरूशलेम से याहवेह के सेवक मोशेह द्वारा इस्राएल से मिलनवाले तंबू
के लिए ठहराया गया कर इकट्ठा करने क्यों नहीं भेजा है?" 7 उस दुष्ट स्त्री
अथालियाह के पुत्रों ने परमेश्वर के भवन में घुसकर याहवेह के भवन की पवित्र
वस्तुओं तक को लेकर बाल के लिए इस्तेमाल कर ली थी. 8 तब राजा ने एक
कोष को बनाने का आदेश दिया, जिसे याहवेह के भवन के द्वार के बाहर रख
दिया गया. 9 यहूदिया और येरूशलेम में सार्वजनिक घोषणा की गई कि प्रजा
अब याहवेह के लिए कर देना शुरू करे जो परमेश्वर के सेवक मोशेह द्वारा
इस्राएल पर बंजर भूमि में लगाया गया था. 10 सभी अधिकारी और प्रजा के
लोग इस पर बहुत ही खुश हुए और हर एक ने उसे कोष में अपने लिए तय कर
डाल दिया, जिससे वह कोष भर गई. 11 तब उनकी रीति यह हो गई, कि जब
कोष लेवियों द्वारा राजकीय कोषाध्यक्ष के पास ले जाई जाती थी और यदि

उसमें काफ़ी मुद्राएं इकट्ठा हो चुकी होती थी तब उसे राजा के सचिव और
प्रमुख पुरोहित के अधिकारी आकर कोष से मुद्राएं निकालकर उसे दोबारा उसी
स्थान पर रख आते थे. वे ऐसा प्रतिदिन करते थे और उन्होंने एक बड़ी राशि
इकट्ठा कर ली. 12 राजा और यहोयादा ने यह राशि उनसे सेवकों को सौंप दी,
जिनकी जवाबदारी याहवेह के भवन में सेवा करने की थी. उन्होंने याहवेह के
भवन के मरम्मत के लिए वेतन पर रखा गया राजमिस्त्री, और बढ़ई दिए. इनके
अलावा याहवेह के भवन के उद्धार के लिए उन्होंने लोहे और कांसे के शिल्पी
भी पारिश्रमिक के आधार पर नियुक्त किए. 13 ये समस्त शिल्पी काम पर लग
गए और उनके परिश्रम का प्रतिफल प्रगति के रूप में जाहिर हुआ. विशेष निर्देशों
के अनुसार परमेश्वर का भवन पहले की तरह मजबूत हो गया. 14 जब सारा
काम खत्म हो गया, वे बाकी रह गई राशि राजा और यहोयादा के सामने ले
आए. इन बाकी की चांदी की मुद्राओं से उन्होंने याहवेह के भवन के प्रयोग के
लिए बर्तन बना लिए; होमबलि के लिए इस्तेमाल, सोने और चांदी के बर्तन.
यहोइयादा के पौरोहित्यकाल में याहवेह के भवन में नियमित रूप से होमबलि
चढ़ाई जाती रही. 15 जब यहोयादा पूरे बुढ़ापे को पहुंचा, उसकी मृत्यु हो गई.
मृत्यु के समय उसकी अवस्था एक सौ तीस साल की थी. 16 उन्होंने उसे
दावीद के नगर में राजाओं के मध्य में भूमिस्थ किया, क्योंकि इस्राएल में,
परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के भवन में उनका उत्तम योगदान रहा था. 17
यहोयादा की मृत्यु के बाद यहूदिया के अधिकारी आकर राजा के प्रति अपना
झूठा लगाव दिखाने लगे और राजा उनकी सुनने भी लगा. 18 उन्होंने याहवेह
अपने पूर्वजों के परमेश्वर के भवन को त्याग दिया. वे अशेरा देवी और मूर्तियों
की आराधना करने लगे. उनके इस दोष का परिणाम यह हुआ कि यहूदिया
और येरूशलेम क्रोध के भागी बन गए. 19 फिर भी याहवेह ने उनके लिए
भविष्यद्वक्ता भेजे कि वे दोबारा याहवेह की ओर हो जाएं. ये भविष्यद्वक्ता उन्हें
धिक्कारते रहे, फिर भी वे भविष्यवक्ताओं के संदेश का इनकार ही करते रहे.
20 तब परमेश्वर के आत्मा पुरोहित यहोयादा के पुत्र ज़करयाह पर उतरे. उसने
लोगों के सामने खड़े होकर यह घोषणा की, "यह परमेश्वर ने कहा है: 'तुम
लोग क्यों याहवेह के आदेशों को ठुकरा रहे हो कि अब तुम्हारी समृद्धि में
व्यवधान उत्पन्न हो गया है? याहवेह ने तुम्हें त्याग दिया है क्योंकि तुमने उनका
त्याग किया है.'" 21 इसके कारण उन्होंने ज़करयाह के विरुद्ध षड़्यंत्र गढ़ा और
राजा के आदेश पर उन्होंने याहवेह के भवन के परिसर में पथराव के द्वारा उसे
घात कर दिया. 22 राजा योआश ने उस कृपा को भुला दिया जो ज़करयाह के
पिता यहोयादा ने उस पर दिखाई थी, और उसने उसके पुत्र की हत्या कर दी.
मृत्यु के पहले ज़करयाह के ये शब्द थे "याहवेह इस ओर ध्यान दें और इसका
बदला लें." 23 साल समाप्त होते-होते अरामी सेना ने योआश पर हमला कर
दिया. वे यहूदिया में आ गए, येरूशलेम पहुंचे और लोगों के बीच से प्रजा के
सभी शासकों का वध कर दिया और उनकी समस्त लूट की सामग्री दमेशेक के
राजा के पास भेज दी. 24 यद्यपि अरामी सेना में सैनिक कम संख्या में ही
थे, याहवेह ने बड़ी विशाल संख्या की सेना उनके अधीन कर दी, क्योंकि
यहूदिया ने याहवेह, अपने पूर्वजों के परमेश्वर का त्याग कर दिया था. उनके
द्वारा योआश पर याहवेह द्वारा दिया दंड था. 25 जब अरामी सैनिक योआश को
बहुत ही घायल अवस्था में छोड़कर चले गए, योआश ही के सेवकों ने उसके
विरुद्ध षड़्यंत्र रचा और उसकी उसी के बिछौने पर हत्या कर दी. यह पुरोहित
यहोयादा के पुत्र की हत्या का प्रतिफल था. योआश की मृत्यु हो गई और उसे
दावीद के नगर में गाड़ा गया. उन्होंने उसे राजाओं के लिए ठहराई गई कब्र में
नहीं रखा. 26 जिन्होंने उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा था, उनके नाम है अम्मोनी
शिमियथ का पुत्र ज़ाबाद और मोआबी शिमरिथ का पुत्र योज़ाबाद. 27 उसके
पुत्रों का ब्यौरा और उसके विरुद्ध की गई अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख
और परमेश्वर के भवन की मरम्मत का उल्लेख राजाओं का जीवन वृत्तांत
पुस्तक में वर्णित है. उसके स्थान पर उसका पुत्र अमाज़्याह राजा हो गया.

25 यहूदिया पर अमाज़्याह का शासन: शासन शुरू करते समय आमज़ियाह
की उम्र पच्चीस साल की थी. येरूशलेम में उसने उनतीस साल शासन
किया. उसकी माता का नाम येहोआद्दीन था वह येरूशलेम की वासी थी. 2
अमाज़्याह ने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था फिर भी पूरे मन से
नहीं. 3 उसके हाथों में राज्य मजबूत होते ही उसने अपने सेवकों की हत्या कर
डाली, जिन्होंने उसके पिता की हत्या की थी. 4 मगर मोशेह द्वारा लिखी
व्यवस्था की पुस्तक में याहवेह ने आदेश दिया था, "पुत्र के पाप का दंड उसके
पिता को न मिले और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया
हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए." उसके अनुसार, उसने उनकी
संतानों की हत्या नहीं की. 5 राजा अमाज़्याह ने यहूदाह और बिन्यामिन गोत्र
के सभी पुरुषों को अनेक कुलों के अनुसार सैन्य टुकड़ियों में इकट्ठा कर दिया.
तब उसने उन पर सहस्र पति और शतपति अधिकारी नियुक्त कर दिए. इस
प्रक्रिया में सभी बीस साल या इससे अधिक आयु के पुरुष शामिल किए गए थे,
इनकी कुल गिनती तीन लाख पहुंची. ये सभी चुने हुए पुरुष थे, बर्छी और ढाल
से लैस, युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार कुशल सैनिक. 6 उसने इस्राएल के राजा से
साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी का दाम देकर एक लाख वीर सैनिक ले लिए. 7
परमेश्वर का एक दूत उसके पास यह संदेश लेकर आया, "महाराज, इस्राएल
की इस सेना को अपने साथ न ले जाइए; क्योंकि याहवेह न तो इस्राएल की सेना
की ओर हैं और न ही एफ्राईम के वंशजों में से किसी के. 8 यदि आप जाते ही है
तो आप अवश्य जाइए और युद्ध में जीत कर आइए. नहीं तो परमेश्वर आपको
शत्रु के सामने धूल चटा देंगे. परमेश्वर में यह क्षमता है कि वे सहायता करें या
गिरा दें." 9 यह सुन अमाज़्याह ने परमेश्वर के दूत से प्रश्न किया, "उस साढ़े
तीन हज़ार किलो चांदी का क्या होगा, जो इस्राएल को दी जा चुकी है?"
परमेश्वर के दूत ने उत्तर दिया, "याहवेह ने आपको इससे कहीं अधिक देने की
इच्छा की है." 10 तब अमाज़्याह ने उन सैनिकों को लौट जाने का आदेश
दिया. ये सैनिक एफ्राईम से आए थे. वे यहूदिया के प्रति बहुत ज्यादा गुस्सा करते
हुए लौटे. 11 तब अमाज़्याह ने साहस जुटाया और अपनी सेना का संचालन
करते हुए नमक की घाटी में जा पहुंचा और वहां उसने सेईर के दस हज़ार
वंशजों को मार गिराया. 12 यहूदाह के वंशजों ने जीवित दस हज़ार को बंदी
बनाया और उन्हें ऊंची चट्टान की चोटी पर ले जाकर वहां से नीचे फेंक दिया.
इस कारण उनके शरीर के चिथड़े उड़ गए. 13 मगर उन क्रोधित सैनिकों ने
जिन्हें अमाज़्याह ने युद्ध-भूमि न ले जाकर घर लौटा दिया था, यहूदिया के
नगरों में जाकर लूटमार की और शमरिया से लेकर बेथ-होरोन तक तीन हज़ार
व्यक्तियों को मार गिराया और बड़ी मात्रा में लूट लेकर चले गए. 14 जब
अमाज़्याह एदोमवासियों को मारकर लौटा, वह अपने साथ सेईरवासियों के
देवताओं की मूर्तियां भी ले आया. उसने उन्हें अपने देवता बनाकर प्रतिष्ठित कर
दिया, उनकी पूजा करने लगा, उनके सामने धूप जलाने लगा. 15 याहवेह का
क्रोध अमाज़्याह पर भड़क उठा. याहवेह ने उसके लिए एक भविष्यद्वक्ता भेजा,
जिसने उससे कहा, "तुम इन विदेशी देवताओं की पूजा क्यों करने लगे हो, जो
अपने ही लोगों को तुम्हारे सामर्थ्य से न बचा सके हैं?" 16 जब वह यह कह ही
रहा था, राजा ने उससे कहा, "बस करो! क्या हमने तुम्हें अपना मंत्री बनाया है?
क्यों अपनी मृत्यु को बुला रहे हो?" भविष्यद्वक्ता रुक गया और फिर उसने
कहना शुरू किया, "आपने मेरी सलाह को ठुकराया और आपने यह सब किया
है. मैं समझ गया हूं कि परमेश्वर आपके विनाश का निश्चय कर चुके है."
इस्राएल द्वारा यहूदिया की पराजय: 17 सलाह-मशवरा के बाद यहूदिया के राजा
अमाज़्याह ने येहू के पोते, यहोआहाज़ के पुत्र इस्राएल के राजा यहोआश को यह

संदेश भेजा: "आइए, हम एक दूसरे का सामना करें." 18 इस्राएल के राजा
यहोआश ने यहूदिया के राजा अमाज़्याह को उत्तर भेजा: "लबानोन की एक
कंटीली झाड़ी ने लबानोन के केदार को यह संदेश भेजा, 'अपनी पुत्री को मेरे
पुत्र की पत्नी होने के लिए दे दो.' तब एक जंगली पशु वहां से निकलते हुए
कंटीली झाड़ी को कुचलते हुए निकल गया. 19 तुमने कहा कि, तुमने एदोम को
हराया है! तुम घमण्ड में चूर होकर ऐसा कह रहे हो. पर घर में शांति से बैठे रहो!
क्यों मुसीबत को बुला रहे हो? तुम्हारा तो पतन होगा ही, साथ ही तुम्हारे साथ
यहूदिया का भी पतन हो जाएगा." 20 मगर अमाज़्याह ने उसकी एक न सुनी;
इस प्रकार यह सब याहवेह की ही योजना थी, कि वह उसे यहोआश के अधीन
कर दें, क्योंकि वह एदोम के देवताओं की पूजा करने लगा था. 21 तब इस्राएल
के राजा यहोआश ने हमला कर दिया. अमाज़्याह और यहोआश का सामना
यहूदिया के बेथ-शेमेश नामक स्थान पर हुआ. 22 इस्राएल ने यहूदिया को हरा
दिया. सैनिक पीठ दिखाकर अपने-अपने तंबुओं को लौट गए. 23 इस्राएल के
राजा यहोआश ने यहूदिया के राजा योआश के पुत्र और यहोआहाज़ के पौत्र
अमाज़्याह को बेथ-शेमेश में ही पकड़ लिया और उसे येरूशलेम ले गया. उसने
एफ्राईम फाटक से कोने के फाटक तक लगभग एक सौ अस्सी मीटर शहरपनाह
गिरा दी. 24 ओबेद-एदोम की देखरेख में रखे परमेश्वर के भवन के सभी सोने
और चांदी के बर्तन और राजघराने का सारा खजाना और बंदियों को लेकर
शमरिया लौट गया. 25 यहूदिया के राजा योआश का पुत्र अमाज़्याह इस्राएल के
राजा यहोआहाज़ के पुत्र यहोआश की मृत्यु के बाद पन्द्रह साल जीवित रहा. 26
पहले से लेकर आखिरी तक के कामों का ब्यौरा यहूदिया और इस्राएल के राजा
की पुस्तक में दिया गया है. 27 जब से अमाज़्याह याहवेह का अनुसरण करने से
दूर हो गया, येरूशलेम में लोगों ने उसके विरुद्ध षड़्यंत्र रचा, तब वह लाकीश को
भाग गया; किंतु उन्होंने लाकीश में जाकर उसकी खोज की और वहीं उसकी
हत्या कर दी. 28 घोड़ों पर लादकर उसका शव लाया गया और उसके पूर्वजों
के साथ दावीद के नगर में उसे गाड़ दिया गया.

26 यहूदिया की सारी प्रजा ने सोलह साल के उज्जियाह को उसके पिता
अमाज़्याह के स्थान पर राजा होने के लिए चुन लिया. 2 उसने अपने
पिता की मृत्यु के बाद एलाथ को बनवाकर उसे दोबारा यहूदिया में शामिल
कर लिया. 3 उस समय उज्जियाह की उम्र सोलह साल थी. येरूशलेम में
उसने बावन साल शासन किया. उसकी माता का नाम यकोलियाह था; वह
येरूशलेमवासी थी. 4 उज्जियाह ने अपने पिता अमाज़्याह समान वहीं किया,
जो याहवेह की दृष्टि में सही है. 5 ज़करयाह के जीवनकाल में परमेश्वर की
खोज करता रहा. याहवेह के दर्शन के कारण ज़करयाह में समझ थी. जब तक
वह याहवेह की खोज करता रहा, याहवेह उसे और बढ़ाते रहे. 6 उज्जियाह ने
फिलिस्तीनियों पर हमला किया और गाथ, याबनेह और अशदोद की शहरपनाह
गिरा दीं. अशदोद में और फिलिस्तीनियों के बीच उसने इस क्षेत्र में नगरों को
बनाया. 7 फिलिस्तीनियों और अरबियों के विरुद्ध जो गुर-बाल और मिऊनी में
रहते थे, परमेश्वर ने उसकी सहायता की. 8 अम्मोनवासी भी उज्जियाह को कर
देते थे. उसका यश मिस्र की सीमा तक पहुंच गया था, क्योंकि वह बलवान हो
चुका था. 9 इनके अलावा उज्जियाह ने येरूशलेम में कोने के फाटक और घाटी
के फाटक पर पहरेदारों के लिए खंभों को बनवाया और किले की दीवारों को
मजबूत बनाने के लिए उनमें गुम्मट बनवाए. 10 बंजर भूमि में उसने पहरेदारों के
खंभे खड़े किए और अनेक तालाबों को भी बनवाया, क्योंकि मैदानों में बड़ी
संख्या में उसके पशु थे. पहाड़ी इलाके में उसके किसान और अंगूर के बगीचों
के रखवाले थे. उसके अनेक उपजाऊ खेत भी थे, क्योंकि खेती उसे प्यारी थी.
11 इसके अलावा उसकी वीर सेना युद्ध के लिए तैयार रहती थी. इसको दलों के
रूप में बांटा गया था. इनकी भर्ती और संगठन राजा के अधिकारी हननियाह की
आज्ञा में सचिव येइएल और अधिकारी मआसेइयाह द्वारा की गई थी. 12 हर
एक गोत्र से चुने हुए बलवान वीर योद्धा थे, जिनकी कुल संख्या दो हज़ार छः सौ
थी. 13 इनके अधिकार में थी एक बड़ी सेना, जिसकी गिनती थी तीन लाख
साढ़े सात हज़ार. ये राजा के विरुद्ध उठे किसी भी शत्रु पर बहुत बल से वार कर
सकते थे. 14 इसके अलावा उज्जियाह ने पूरी सेना के लिए ढालें, बर्छियों,
टोप झिलम, धनुष और गोफन तैयार कर रखी थी. 15 कुशल शिल्पियों द्वारा
आविष्कार किए गए यंत्र और उपकरण उसने येरूशलेम में रखवा रखे थे. ये यंत्र
पहरेदारों के मीनारों और शहरपनाह के कोनों पर बाण छोड़ने और बड़े-बड़े
पत्थर फेंकने के लिए बनाए गए थे. इनके कारण उसकी ख्याति दूर-दूर तक
पहुंच चुकी थी. जब तक उसमें शक्ति रही उसे अद्भुत रूप से सहायता मिलती
रही. 16 जब वह इस प्रकार मजबूत होता गया, घमण्ड ने उसे आ घेरा. वह
याहवेह उसके परमेश्वर के लिए सच्चा भी न रह गया. वह याहवेह के मंदिर में
चला गया कि वह धूप वेदी पर धूप जलाए. 17 इस पर पुरोहित अज़रियाह
उसके पीछे-पीछे गया और उसके साथ याहवेह के अस्सी बलवान पुरोहित भी
थे. 18 उन्होंने राजा उज्जियाह को मना करते हुए कहा, "उज्जियाह, याहवेह
के लिए धूप जलाना आपका काम नहीं है, यह केवल पुरोहितों के लिए ही
ठहराया गया है, जो अहरोन के वंशज और धूप जलाने के लिए अलग किए हुए
हैं. आप पवित्र स्थान से बाहर चले जाइए, क्योंकि आप याहवेह परमेश्वर के
प्रति सच्चे नहीं रहे हैं, इसलिये आपको उनकी ओर से कोई आदर न मिलेगा."
19 उज्जियाह यह सुनकर बहुत गुस्सा हो गया. धूप जलाने के लिए उसके
हाथ में धूपदान था. जब वह पुरोहितों पर गुस्सा हो ही रहा था, याहवेह के
भवन में धूप वेदी के निकट पुरोहितों के देखते-देखते उसके माथे पर कुष्ठ रोग
हो गया. 20 प्रमुख पुरोहित अज़रियाह और दूसरे सभी पुरोहित उसकी ओर
देख रहे थे. वह माथे पर कोढ़ी हो चुका था. उन्होंने उसे बिना देर किए बाहर
निकाला-वास्तव में वह खुद वहां से निकलने के लिए आतुर था, क्योंकि वह
जान गया था कि उस पर याहवेह का प्रहार था. 21 मृत्यु तक राजा उज्जियाह
कुष्ठरोगी रहा. वह एक अलग घर में रहने लगा, क्योंकि वह कुष्ठरोगी था.
याहवेह के भवन में उसका जाना मना हो गया. उसका पुत्र योथाम अब राजमहल
पर अधिकारी हो प्रजा का न्याय करने लगा. 22 शुरू से अंत तक, उज्जियाह
द्वारा किए गए बाकी कामों का ब्यौरा आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह द्वारा
किया गया है. 23 तब उज्जियाह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला.
उन्होंने उसे राजाओं के लिए ठहराई गई की कब्र में गाड़ दिया, क्योंकि उन्होंने
कहा वह तो कुष्ठरोगी है. उसका पुत्र योथाम उसके स्थान पर राजा हो गया.

27 जब योथाम शासन करने लगा तब उसकी उम्र पच्चीस साल थी. उसने
येरूशलेम में सोलह साल शासन किया. उसकी माता का नाम येरूशा था,
वह सादोक की पुत्री थी. 2 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था,
जैसा उसके पिता उज्जियाह ने किया था. हां, उसने याहवेह के मंदिर में प्रवेश
नहीं किया. मगर प्रजा में भ्रष्टाचार फैला था. 3 उसने याहवेह के भवन के ऊपरी
द्वार को बनवाया. उसने शहरपनाह के उस भाग को बनवाया, जिसे ओफेल कहा
जाता था. 4 इसके अलावा उसने यहूदिया के पहाड़ी क्षेत्र में नगरों को बनवाया.
उसने जंगली पहाड़ियों पर गढ़ और पहरेदारों के मीनारों को बनवाया. 5 उसने
अम्मोनी राजा से युद्ध किया और उन पर विजयी हुआ. फलस्वरूप अम्मोनियों ने
उसे उस साल साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी, 1,800 टन गेहूं और 1,800 टन
जौ भेंट और कर के रूप में दिया. यही सब अम्मोनियों ने उसे दूसरे और तीसरे
साल में भी दिया. 6 तब योथाम बलवान हो गया क्योंकि उसने अपनी नीतियां
याहवेह अपने परमेश्वर की खुशी के अनुसार बनाई थी. 7 योथाम के बाकी
काम, उसके युद्ध, उसके दूसरे काम इस्राएल और यहूदिया के राजा नामक
पुस्तक में लिखे हैं. 8 शासन शुरू करते समय उसकी उम्र पच्चीस साल थी.

उसने येरूशलेम में सोलह साल शासन किया. 9 योथाम हमेशा के लिए अपने
पूर्वजों से जा मिला. उन्होंने उसे दावीद के नगर में गाड़ दिया. उसके स्थान पर
उसका पुत्र आहाज़ राजा बना.

28 शासन शुरू करते समय आहाज़ की उम्र बीस साल थी. येरूशलेम में
उसने सोलह साल शासन किया. उसने वह नहीं किया जो याहवेह की
दृष्टि में सही था, जैसा उसके पूर्वज दावीद ने किया था. 2 वह इस्राएल के
राजाओं की नीति का पालन करता रहा. उसने बाल देवताओं की मूर्तियां बनाईं.
3 इनके अलावा; वह बेन-हिन्नोम घाटी में धूप जलाता था और उसने अपने पुत्रों
की अग्निबलि चढ़ाई. यह उन जनताओं की घृणित प्रथाएं थी, जिन्हें याहवेह ने
इस्राएल वंशजों के सामने से दूर भगाया था. 4 वह पूजा स्थलों पर, पहाड़ियों
पर और हर एक हरे वृक्ष के नीचे धूप जलाकर बलि चढ़ाता रहा. 5 तब याहवेह
उसके परमेश्वर ने उसे अराम के राजा के अधीन कर दिया. उन्होंने उसे हरा
दिया और उनमें से बड़ी संख्या में बंदी बनाए और उन्हें दमेशेक ले गए. उसे
इस्राएल के राजा के अधीन भी कर दिया गया. उसने उसे बुरी तरह से हराया. 6
इसलिये कि उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह को त्याग दिया था,
रेमालियाह के पुत्र पेकाह ने एक ही दिन में यहूदिया के सभी एक लाख बीस
हज़ार योद्धाओं को मार गिराया. 7 एफ्राईमी ज़ीकरी ने राजपुत्र मआसेइयाह और
गृह प्रशासक अज़रीकाम का वध कर दिया और राजा के बाद के सर्वोच्च
अधिकारी एलकाना का भी. 8 इस्राएली अपने ही भाइयों के राज्य में से दो
लाख पत्नियां, पुत्र और पुत्रियां बंदी बनाकर अपने साथ ले गए. इनके अलावा वे
वहां से बड़ी लूट इकट्ठा कर शमरिया ले गए. 9 मगर वहां याहवेह का एक
भविष्यद्वक्ता था-ओदेद-वह शमरिया आई हुई सेना से भेंट करने चल पड़ा.
उसने उन्हें कहा, "यह समझ लो: क्योंकि याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर
यहूदिया से गुस्सा थे, उन्होंने ही इन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया है. तुमने क्रोध में
उनका संहार ऐसी क्रूरता में किया है, कि यह बात परमेश्वर के ध्यान में आ गई
है. 10 अब तुम यह विचार कर रहे हो, कि इनका दमन कर यहूदिया और
येरूशलेम वासियों के पुरुष और स्त्री को दास बनाओ, क्या यह सच नहीं कि तुम
भी याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के सामने अपराधी हो? 11 इसलिये अब मेरी सुनो
और इन बंदियों को, जिन्हें तुम अपने ही भाइयों में से पकड़कर ले आए हो,
लौट जाने दो; क्योंकि अब याहवेह का तेज क्रोध तुम्हारे विरुद्ध भड़क रहा है."
12 तब एफ्राईम के वंशजों में के कुछ प्रमुख—येहोहानन का पुत्र अज़रियाह,
मेशिल्लेमोथ का पुत्र बेरेखियाह, शल्लूम का पुत्र येहिज़किय्याह और हादलाई
का पुत्र अमासा-उनके विरुद्ध हो गए, जो युद्ध से लौट रहे थे. 13 इन्होंने उनसे
कहा, "सही नहीं कि तुम बंदियों को यहां लाओ. इसके द्वारा तुम याहवेह
के विरुद्ध हमारे पापों को बढ़ाना चाह रहे हो. हमारा दोष इतना बड़ा है कि
इस्राएल के विरुद्ध याहवेह का क्रोध दहक रहा है." 14 तब योद्धाओं ने लूट की
सामग्री और बंदियों को अधिकारियों और सारी सभा के सामने लाकर छोड़
दिया. 15 तब वे लोग, जिन्हें चुना गया था, उठे, नंगे बंदियों को लूट सामग्री से
निकालकर कपड़े पहनाए उन्हें जूतियां दी, उन्हें वस्त्र पहनाकर उन्हें भोजन और
पानी दिया, तेल से उनका अभिषेक किया, उनके दुर्बलों को गधों पर चढ़ाया
और उन्हें खजूर नगर यानी येरीख़ो तक उनके भाइयों के पास छोड़ आए फिर वे
शमरिया लौट गए. 16 तब राजा आहाज़ ने अश्शूर के राजा से सहायता की
विनती की. 17 एक बार फिर एदोमियों ने यहूदिया पर हमला किया और बहुतों
को बंदी बना लिया. 18 फिलिस्तीनियों ने भी तराई और यहूदिया के नेगेव पर
चढ़ाई करके बेथ-शेमेश, अय्जालोन, गदेरोथ और सोकोह का उसके आस-पास
के गांवों सहित, तिमनाह को उसके गांवों सहित और गिमज़ो को उसके गांवों
सहित कब्जे में कर लिया और वे वहीं बस भी गए. 19 याहवेह द्वारा यहूदिया
को इस दयनीय स्थिति में डाले जाने के पीछे कारण थे यहूदिया के राजा आहाज़
की याहवेह के प्रति बड़ी विश्वासहीनता और उसके द्वारा यहूदिया में लाई गई
दुष्टता. 20 तब अश्शूर का राजा तिगलथ-पलेसेर वहां आया ज़रूर, मगर उसने
आहाज़ की सहायता करने की बजाय उसे सताया. 21 यद्यपि आहाज़ ने याहवेह
के भवन से, राजघराने से और प्रशासकों से धन लेकर अश्शूर के राजा को दे दी
थी, इसका कोई लाभ न हुआ. 22 अपनी इस विपत्ति की स्थिति में यही राजा
आहाज़ ने कई और बुरे पाप किये और याहवेह का और अधिक अविश्वासयोग्य
बन गया. 23 क्योंकि अब वह दमेशेक के देवताओं को बलि चढ़ाने लगा था,
जो वास्तव में उसकी हार के कारण थे. वह यह विचार करने लगा, "जब ये
देवता अराम के राजा की सहायता कर सकते हैं तो, वे मेरी भी सहायता करेंगे."
मगर ये ही इस्राएल के पतन का कारण ठहरे. 24 इसके अलावा, आहाज़ ने
परमेश्वर के भवन के सब बर्तनों को इकट्ठा करके उन पात्रों के टुकड़े-टुकड़े कर
दिये और याहवेह के भवन का द्वार बंद करवा दिए. उसने येरूशलेम के कोने-
कोने में अपने लिए वेदियां बनवा लीं. 25 उसने यहूदिया के हर एक नगर में
वेदियों को बनवाया, कि इन पर अन्य देवताओं के लिए धूप जलाई जा सके.
इसके द्वारा उसने अपने पूर्वजों के परमेश्वर, याहवेह के क्रोध को भड़का दिया.
26 आहाज़ के बाकी कामों और उसकी सारी नीतियों का वर्णन शुरू से अंत
तक, यहूदिया और इस्राएल के राजा की पुस्तक में किया गया है. 27 तब
आहाज़ हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला. उन्होंने उसे येरूशलेम नगर में
ही गाड़ दिया. उन्होंने उसे इस्राएल के राजाओं के लिए ठहराई गई कब्रों में
जगह नहीं दी. उसके स्थान पर उसका पुत्र हिज़किय्याह राजा हुआ.

29 जब हिज़किय्याह राजा बना, उसकी उम्र पच्चीस साल थी. येरूशलेम
में उसने उनतीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम अबीयाह था,
वह ज़करयाह की पुत्री थी. 2 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही
था. वैसा ही, जैसा उसके पूर्वज दावीद ने किया था. 3 अपने शासन के पहले
साल, पहले महीने में ही उसने याहवेह के भवन के फाटक खोल दिए और उनमें
ज़रूरी सुधार भी किए. 4 उसने पुरोहितों और लेवियों को पूर्वी चौक में इकट्ठा
किया. 5 राजा हिज़किय्याह ने उन्हें कहा: "आप जो लेवी हैं ध्यान से सुनिए!
अब अपने आपको शुद्ध करो, याहवेह, अपने पूर्वजों के परमेश्वर के भवन को
पवित्र करो और पवित्र स्थान से अशुद्धता को निकाल डालो. 6 हमारे पूर्वज
सच्चे नहीं थे. उन्होंने वह सब किया, जो याहवेह, हमारे परमेश्वर की दृष्टि में
बुरा है. उन्होंने उनको त्याग दिया. वे याहवेह के घर से दूर हो गए, और इसे
पीठ ही दिखा दी है. 7 उन्होंने तो ओसारे के द्वार बंद कर दिए हैं, दीप बुझा दिए
हैं और इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र स्थान पर धूप जलाना और होमबलि
चढ़ाना छोड़ रखा है. 8 इसलिये यहूदिया और येरूशलेम याहवेह के क्रोध के
पात्र हो गए; फलस्वरूप जैसा आप देख ही रहे हैं, याहवेह ने इन्हें घृणा और
आतंक का विषय बना दिया है. 9 आपने देखा कि हमारे पूर्वज तलवार से
घात किए गए हैं और हमारे पुत्र, पुत्रियों और पत्नियां इसके कारण बंदी बना
ली गईं. 10 अब मेरी इच्छा यह है कि मैं याहवेह इस्राएल के परमेश्वर के
साथ एक वाचा बांधूं, कि उनका भड़का हुआ क्रोध हम पर से हट जाए. 11
मेरे पुत्रों, अब उपेक्षा को त्याग दो, क्योंकि याहवेह ने तुम्हें चुन लिया है कि
तुम उनके सामने खड़े रहो, उनकी सेवा करो और उनके सेवक होकर उनके
सामने धूप जलाओ." 12 यह सुनकर ये लेवी लोग सेवा के लिए: आगे आ गये
कोहाथ के वंशजों में से: आमासाई का पुत्र माहाथ और अज़रियाह का पुत्र
योएल; मेरारी के वंशजों में से: अबदी का पुत्र कीश और येहालेलेल का पुत्र
अज़रियाह; गेरशोन के वंशजों में से: ज़िम्माह का पुत्र योआह और योआह का
पुत्र एदेन; 13 एलिज़ाफ़ान के वंशजों में से: शिमरी और येइएल; आसफ के
वंशजों में से: ज़करयाह और मत्तनियाह; 14 हेमान के वंशजों में से: येहिएल

और शिमेई; यदूथून के वंशजों में से: शेमायाह और उज्ज़िएल. 15 इन सभी ने
अपने भाइयों को इकट्ठा किया, अपने आपको पवित्र किया और राजा के आदेश
पर याहवेह के भवन को शुद्ध करने के उद्देश्य से उसमें प्रवेश किया, कि याहवेह
द्वारा निर्धारित विधि से यह काम पूरा किया जाए. 16 तब पुरोहितों ने याहवेह के
भवन के भीतरी कमरे में प्रवेश किया, कि इसे शुद्ध करने का काम शुरू किया
जाए. वहां उन्होंने हर एक वस्तु को, जो स्वच्छ नहीं थी, याहवेह के भवन से
बाहर और याहवेह के भवन के आंगन में लाया; फिर लेवी इन्हें किद्रोन घाटी में
ले गए. 17 पहले महीने के पहले दिन उन्होंने पवित्र करने का काम शुरू कर
दिया. महीने के आठवें दिन उन्होंने याहवेह के ओसारे में प्रवेश किया. इसके
बाद याहवेह के भवन को उन्होंने अगले आठ दिनों में पवित्र किया और पहले
महीने के सोलहवें दिन सारा काम पूरा हो गया. 18 तब वे राजा हिज़किय्याह के
सामने गए और उन्होंने बताया, हमने याहवेह के पूरे भवन को शुद्ध कर दिया
है, होमबलि की वेदी, उससे संबंधित सारे बर्तन, भेंट की रोटी की मेज़ और
उससे संबंधित सारे बर्तन. 19 इसके अलावा, वे सारे बर्तन, जिन्हें राजा आहाज़
ने अपने विश्वासघात में अपने शासनकाल में फेंक दिए थे, हमने ठीक कर
शुद्ध कर दिए हैं. आप देख लीजिए, ये सभी याहवेह की वेदी के सामने रखे
हुए हैं. 20 अगले दिन राजा हिज़किय्याह सुबह-सुबह उठा, नगर के शासकों
को इकट्ठा किया और वे सभी याहवेह के भवन को गए. 21 वे अपने साथ
सात बछड़े, सात मेढ़े, सात मेमने और सात बकरे ले गए, कि वे अपने राज्य
के लिए, पवित्र स्थान के लिए और यहूदिया के लिए बलि चढ़ाएं. राजा ने
अहरोन के वंशज पुरोहितों को आदेश दिया कि वे इन्हें याहवेह की वेदी पर
चढ़ाएं. 22 तब बछड़ों का वध किया गया और पुरोहितों ने उनका लहू वेदी
पर छिड़का; उन्होंने मेढ़ों का भी वध किया और उनका लहू भी वेदी पर
छिड़क दिया; उन्होंने मेमनों का भी वध किया और उनका लहू वेदी पर छिड़क
दिया. 23 तब वे पापबलि के लिए राजा और सभा के सामने पापबलि के लिए
ठहराए गए बकरे लेकर आए और उन पर अपने हाथ रखे. 24 पुरोहितों ने
उनका वध किया, उनके लहू को वेदी पर छिड़का कि सारे इस्राएलियों के लिए
प्रायश्चित किया जाए, क्योंकि राजा का आदेश था कि होमबलि और पापबलि
सारे इस्राएल के लिए चढ़ाई जाए. 25 इसके बाद उसने, याहवेह के भवन में
दावीद, और राजा का दर्शी गाद और भविष्यद्वक्ता नाथान के आदेश के अनुसार
झांझ, सारंगी और वीणाओं के लिए लेवी चुने, क्योंकि यह भविष्यवक्ताओं
द्वारा घोषित याहवेह की आज्ञा थी. 26 दावीद द्वारा बनवाए वाघ लिए हुए लेवी
खड़े थे और पुरोहित नरसिंगे. 27 इसी समय हिज़किय्याह ने आदेश दिया कि
वेदी पर होमबलि चढ़ाई जाए. जब होमबलि चढ़ाना शुरू हुई, नरसिंगों की
आवाजों के साथ याहवेह के लिए स्तुतिगान भी शुरू हो गया. इनके अलावा
इस्राएल के राजा दावीद द्वारा बनवाए वाघ भी बजाए जा रहे थे. 28 सारी सभा
आराधना में लीन थी, गायक गा रहे थे और नरसिंगे बजाए जा रहे थे. यह
सब उस समय तक होता रहा जब तक होमबलि का काम पूरा न हो गया. 29
होमबलि खत्म हो जाने पर राजा और उसके साथ उपस्थित सभी व्यक्तियों ने
झुककर आराधना की. 30 इसके अलावा राजा हिज़किय्याह और उपस्थित
अधिकारियों ने आदेश दिया, कि दावीद और दर्शी आसफ की गीत रचनाओं
द्वारा लेवी याहवेह की स्तुति करें. तब उन्होंने बड़ी खुशी से स्तुति की और
झुक-झुक कर आराधना की. 31 यह होने पर हिज़किय्याह ने उन्हें कहा, "अब
इसलिये कि आप लोगों ने स्वयं को याहवेह के लिए पवित्र कर लिया है,"
निकट आकर याहवेह के भवन में बलि और धन्यवाद की भेंट चढ़ाइए. तब
सारी सभा बलियां और धन्यवाद की भेंटें लेकर आ गई और जिन्होंने चाहा वे
होमबलियां चढ़ाने आ गए. 32 सभा द्वारा चढ़ाई गई होमबलियों की गिनती उस
दिन इस तरह थी: सत्तर बछड़े, सौ बैल, और दो सौ मेमने. ये सभी पशु याहवेह
को होमबलि के लिए थे. 33 शुद्ध किए हुए पशुओं की संख्या इस प्रकार थी: छः
सौ बैल और तीन हज़ार भेड़ें. 34 मगर इनके लिए पुरोहितों की संख्या कम
साबित हुई फलस्वरूप होमबलि के पहले पशुओं की खाल उतारना संभव न हो
सका. इसलिये लेवी आकर इसमें उनकी सहायता तब तक करते रहे, जब तक
यह काम खत्म न हो गया और जब तक बाकी पुरोहितों ने अपने आपको शुद्ध न
कर लिया. क्योंकि यह देखा गया कि स्वयं को शुद्ध करने के लिए पुरोहितों की
तुलना में लेवी अधिक सीधे मन के थे. 35 बड़ी संख्या में होमबलि के अलावा
वहां मेल बलि में से बची रह गई चर्बी और पेय बलि भी थी. इस प्रकार याहवेह
के भवन में आराधना दोबारा शुरू की गई. 36 हिज़किय्याह और सारी प्रजा
बहुत ही खुश थी कि परमेश्वर ने बहुत ही जल्दी उनके लिए यह सब कर दिया
था.

30 हिज़किय्याह ने सारे इस्राएल, यहूदिया, एफ्राईम और मनश्शेह के लिए
एक संदेश भेजा, कि वे येरूशलेम में याहवेह के भवन में याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर के सम्मान में फ़सह उत्सव मनाने आएं. 2 राजा, उसके शासक और
सारी सभा ने येरूशलेम में मिलकर एक मत से यह निर्णय लिया था, कि फ़सह
उत्सव दूसरे महीने में मना लिया जाए. 3 क्योंकि वे इसे इसके नियत समय पर
मना नहीं सके थे. इसका कारण यह था, कि पर्याप्त संख्या में पुरोहित अपने
आपको शुद्ध न कर सके थे. इसके अलावा, प्रजाजन येरूशलेम में इकट्ठा भी न
हो सके थे. 4 तब राजा और समस्त प्रजा के मत में यही एक सही निर्णय था. 5
तब उन्होंने सबको बताने के उद्देश्य से एक राज आज्ञा तैयार की, कि सारे
इस्राएल में, बेअरशेबा से दान तक सभी इस्राएल के परमेश्वर याहवेह के सम्मान
में फ़सह उत्सव मनाने येरूशलेम आएं, क्योंकि जैसा कि लिखा था फ़सह
उत्सव अब तक राष्ट्रीय स्तर पर मनाया नहीं गया था. 6 समस्त इस्राएल और
यहूदिया में दूत राजा और उसके प्रशासकों के हाथ से लिखे हुए पत्र लेकर भेजे
गए. राजा का आदेश इस प्रकार था: "इस्राएल की संतान, अब्राहाम, यित्सहाक
और इस्राएल के याहवेह परमेश्वर की ओर लौट आओ, कि वह भी तुममें से
उनकी ओर लौट सकें, जो अराम के राजाओं के वार से बच निकले थे. 7 अपने
पूर्वजों और अपने भाई-बंधुओं के समान न बनो, जो अपने पूर्वजों के परमेश्वर,
याहवेह के प्रति विश्वासहीन हो गए थे; जिसका परिणाम, जैसा तुम देख ही रहे
हो, याहवेह ने तुम्हें घृणा का, आतंक का पात्र बना दिया है. 8 इसलिये अब
अपने पूर्वजों के समान हठी न बनो बल्कि अपने याहवेह के सामने विनम्र हो
जाओ और उनके पवित्र स्थान में प्रवेश करो, जिसे उन्होंने हमेशा के लिए शुद्ध
कर दिया है. याहवेह अपने परमेश्वर की सेवा करो, कि उनका भड़का हुआ
क्रोध तुम पर से दूर हो जाए. 9 क्योंकि यदि तुम याहवेह की ओर हो जाओ, तो
तुम्हारे भाई-बन्धु और तुम्हारी संतान को उनकी ओर से कृपा मिल जाएगी, जो
उन्हें बंदी बनाकर ले गए हैं. तब वे अपने देश लौट सकेंगे. क्योंकि याहवेह
तुम्हारे परमेश्वर कृपालु और करुणामय हैं. यदि तुम उनकी ओर लौटेंगे, वह
तुमसे अपना मुख फेर न लेंगे." 10 तब दूत नगर-नगर घूमकर संदेश देते गए. वे
एफ्राईम और मनश्शेह तक गए-यहां तक कि ज़ेबुलून तक भी किंतु लोग उनका
मज़ाक उड़ाकर उन पर हंसते रहे. 11 फिर भी, आशेर, मनश्शेह और ज़ेबुलून
के कुछ व्यक्तियों ने अपने आपको नम्र किया और वे येरूशलेम आए. 12
यहूदिया पर भी परमेश्वर का प्रभाव कुछ इस प्रकार था कि उन्होंने सच्चाई
में राजा और शासकों द्वारा भेजे याहवेह के आदेश को स्वीकार किया. 13
दूसरे महीने में बड़ी संख्या में लोग येरूशलेम में अखमीरी रोटी के उत्सव को
मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे. यह बहुत ही बड़ा जनसमूह था. 14 वे सभी
एकजुट हुए और येरूशलेम में जो वेदियां बनी हुई थी उन्हें, और सारी धूप
वेदियों को उठाकर किद्रोन नाले में फेंक आए. 15 इसके बाद उन्होंने दूसरे
महीने के चौदहवें दिन फ़सह के मेमनों का वध किया. पुरोहितों और लेवियों

के लिए यह लज्जा का विषय हो गया, तब उन्होंने स्वयं को शुद्ध किया और
याहवेह के भवन में वे होमबलि ले आए. 16 वे अपने ठहराए गए स्थानों पर
खड़े हो गए, जैसा परमेश्वर के जन मोशेह द्वारा बताया गया था. पुरोहित उस
लहू का छिड़काव करते जा रहे थे, जो उन्हें लेवियों द्वारा सौंपा जा रहा था. 17
यह इसलिये कि सभा में ऐसे अनेक थे, जिन्होंने स्वयं को शुद्ध नहीं किया था.
तब लेवियों के लिए यह ज़रूरी हो गया था कि हर एक अशुद्ध व्यक्ति के लिए
फ़सह मेमना वध किया जाए और वे याहवेह के लिए शुद्ध हो जाएं. 18 एफ्राईम,
मनश्शेह, इस्साखार और ज़ेबुलून प्रदेशों से आए लोगों में एक बड़ी संख्या
उनकी थी, जिन्होंने अपने आपको शुद्ध नहीं किया था. उन्होंने व्यवस्था तोड़ते
हुए फ़सह भोज को ग्रहण कर लिया था, मगर हिज़किय्याह ने उनके लिए यह
प्रार्थना की, “महान याहवेह ऐसे हर एक व्यक्ति को क्षमा करें, 19 जिसने अपने
मन को परमेश्वर, अपने पूर्वजों के याहवेह की खोज करने के लिए तैयार कर
लिया है, यद्यपि उसने अपने आपको पवित्र स्थान के नियमों के अनुसार शुद्ध
नहीं किया है.” 20 तब याहवेह ने हिज़किय्याह की विनती सुनी और लोगों को
दोबारा स्वस्थ कर दिया. 21 इस्राएल के वंशजों ने, जो इस समय येरूशलेम में
थे, सात दिन तक बड़े आनंद के साथ अखमीरी रोटी का उत्सव मनाया. लेवी
और पुरोहित दिन-प्रतिदिन वाद्यों की आवाजों की संगत पर याहवेह की स्तुति
करते रहते थे. 22 हिज़किय्याह ने उन सभी लेवियों के प्रोत्साहन में प्रशंसा के
शब्द कहे, जिन्होंने याहवेह से संबंधित विषयों में बुद्धिमानी का परिचय दिया
था. तब वे निर्धारित पर्व के सात दिनों तक फ़सह भोज करते रहे, मेल बलि
चढ़ाते रहे और अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह के प्रति धन्यवाद देते रहे. 23
उपस्थित सारी भीड़ ने यह निर्णय लिया कि इस उत्सव को सात दिन और मनाया
जाए. तब बहुत ही खुशी से उन्होंने सात दिन इस उत्सव को मनाया. 24 इस
उत्सव के लिए राजा हिज़किय्याह ने एक हज़ार बछड़े और सात हज़ार भेड़े दान
में दी थी. शासन अधिकारियों ने एक हज़ार बछड़े और दस हज़ार भेड़े दान में
दीं. बड़ी संख्या थी उन पुरोहितों की, जिन्होंने अपने आपको शुद्ध किया था.
25 यहूदिया की सारी सभा पुरोहितों और लेवियों के साथ आनंद मनाने में मगन
थी. इनके अलावा इनमें वे भी थे, जो इस्राएल से यहां आए थे, और इस्राएल से
और यहूदिया से आए हुए विदेशी भी. 26 सारा येरूशलेम इन दिनों में खुशी में
डूबा था, क्योंकि येरूशलेम में ऐसा समारोह इस्राएल के राजा दावीद के पुत्र
शलोमोन के शासनकाल से अब तक देखा न गया था. 27 तब लेवी और पुरोहित
उठ खड़े हुए और उन्होंने सारी सभा के लोगों के लिए आशीर्वाद दिए. उनकी
विनती सुनी गई. उनकी विनती याहवेह के घर, स्वर्ग पहुंच गई.

31 यह सब होने के बाद वहां उपस्थित इस्राएल के सारे वंशज यहूदिया
के नगरों में जा पहुंचे और वहां उन्होंने पूजा की जगह हटा दीं, पूजा
के खंभे तोड़ दिए और अशेराह के खंभे भी ध्वस्त कर दिए, जो यहूदिया,
बिन्यामिन, एफ्राईम और मनश्शेह प्रदेश में बनाई गई थी. उन्होंने हर एक वेदी
ढाह दी, एक भी बाकी न रही. यह करके सभी इस्राएल वंशज अपने-अपने
नगर, अपनी स्वयं की भूमि पर लौट गए. 2 राजा हिज़किय्याह ने पुरोहितों
और लेवियों के संगठन को व्यवस्थित किया. इनके अंतर्गत हर एक के लिए
ज़िम्मेदारियां तय कर दी गईं. इन ज़िम्मेदारियों में शामिल था होमबलि चढ़ाना,
मेल बलि चढ़ाना, सेवा करना, याहवेह के प्रति धन्यवाद करना, याहवेह की
छावनी के द्वार में उनकी स्तुति करना. 3 राजा ने यह भी तय किया कि उसकी
संपत्ति में से होमबलि के लिए कितना भाग दिया जाएगा यानी सुबह और शाम
की होमबलि और शब्बाथ के लिए, नए चांद के लिए और निश्चित उत्सवों के
लिए, जैसा याहवेह की व्यवस्था में लिखा है. 4 उसने येरूशलेम वासियों को
आदेश दिया कि वे पुरोहितों और लेवियों के लिए निर्धारित अंश दिया करें कि
पुरोहित और लेवी याहवेह की व्यवस्था पर अपना ध्यान लगा सकें. 5 जैसे ही
यह आदेश दिया गया, इस्राएल के वंशज भारी मात्रा में अन्न की पहली उपज,
नया अंगूर का रस, तेल, शहद और खेतों की उपज लेकर आने लगे. इसके
अलावा वे बड़ी मात्रा में इन सबका दसवां अंश भी लाने लगे. 6 इस्राएल और
यहूदाह के वे वंशज, जो यहूदिया के नगरों में रह रहे थे, उन्होंने तो बछड़ों और
भेड़ों में से भी दसवां अंश भेंट किया और याहवेह उनके परमेश्वर के लिए
अलग की गई भेंटे लेकर आए इन्हें एक ढेर के रूप में वहां इकट्ठा कर दिया. 7
तीसरे महीने में इनका ढेर लगाना शुरू हुआ और इसका अंत सातवें महीने में
ही हो सका. 8 जब हिज़किय्याह और शासकों ने आकर इन ढेरों को देखा,
उन्होंने याहवेह की स्तुति की और उनकी प्रजा इस्राएल की प्रशंसा की. 9 तब
हिज़किय्याह ने पुरोहितों और लेवियों से इन ढेरों का कारण जानना चाहा; 10
सादोक परिवार से प्रमुख पुरोहित अज़रियाह ने राजा को उत्तर दिया, “जब से
याहवेह के भवन में भेंटें लाने लगे हैं, हमारे लिए भोजन की सामग्री बहुत हो गई
है. यह सब बचा हुआ है क्योंकि याहवेह ने अपनी प्रजा को आशीष दी है;
इतनी, कि बचे हुए भाग की यह बड़ी मात्रा रह गई है.” 11 तब हिज़किय्याह ने
आदेश दिया कि इसके लिए याहवेह के भवन परिसर में कुछ कमरे तैयार किए
जाएं. तब कक्ष तैयार किए गए. 12 प्रजा बड़ी विश्वासयोग्यता से दान, दसवां
अंश और पवित्र वस्तुएं लेकर आती थी. इनका अधिकारी था लेवी केनानियाह
और उसका सहायक था उसका भाई शिमेई. 13 केनानियाह और उसके भाई को
राजा ने चुना था. इनके अधिकार में ये अधिकारी थे येहिएल, अज़रियाह,
नाहाथ, आसाहेल, येरीमोथ, योज़ाबाद, एलिएल, इसमाखियाह, माहाथ और
बेनाइयाह. अज़रियाह परमेश्वर के भवन का प्रधान अधिकारी था. 14 पूर्वी द्वार
का द्वारपाल इमनाह का पुत्र लेवी कोरे परमेश्वर को चढ़ाई गई स्वेच्छा भेंटों का
अधिकारी था, कि वह पवित्र वस्तुओं और याहवेह को दी गई भेंटों को बांटें.
15 उसके सहायक थे एदेन, मिनियामिन, येशुआ, शेमायाह, अमरियाह और
शेकानियाह. इन्हें काम करना होता था. पुरोहितों के नगरों में और इनका काम
था अपने भाई-बंधुओं में पूरी विश्वासयोग्यता में सामान्य या विशेष में उनके दल
के अनुसार उनके लिए ठहराया गया भाग बांट देना. 16 इसके अलावा, वे उन
पुरुषों को, जिनकी उम्र तीन साल या इससे अधिक थी, जिनके नाम वंशावली में
लिखे थे, वे सभी, जो अपने विभिन्न दैनिक कार्य करने के लिए अपने दल के
अंतर्गत अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों के अनुसार याहवेह के भवन में प्रवेश किया
करते थे, उनका भाग बांट देते थे. 17 पुरोहितों का नामांकन उनके कुलों के
आधार पर और लेवियों का उनकी ज़िम्मेदारियों के आधार पर और उनके दलों
के आधार पर उनका, जो बीस साल से अधिक उम्र के थे. 18 वंशावली में सभी
शामिल किए गए थे. सभी संतान, पत्नी, पुत्र एवं पुत्रियां. सारी सभा का नामांकन
किया गया था क्योंकि हर एक ने अपने को पूरी सच्चाई से शुद्ध किया था. 19
अहरोन के वंशज उन पुरोहितों के लिए भी, जो अपने-अपने नगरों में निवास
कर रहे थे अथवा जो किसी भी नगर में निवास कर रहे थे, वे व्यक्ति नामित कर
दिए गए थे, जो इन पुरोहितों को और वंशावली में शामिल लेवियों को उनके
लिए निर्धारित अंश बांटा करेंगे. 20 हिज़किय्याह ने संपूर्ण यहूदिया में यही
प्रणाली लागू कर दी. उसने वही सब किया, जो याहवेह, उसके परमेश्वर की
दृष्टि में भला, ठीक और सच्चा था. 21 हर एक काम, जो उसने व्यवस्था और
आदेशों के अनुसार परमेश्वर के भवन के हित में किया, जिसमें उसने परमेश्वर
की इच्छा मालूम की, उसने सभी कुछ अपने पूरे मन से ही किया और हमेशा ही
समृद्ध होता गया.

32 पूरी विश्वासयोग्यता में हुए इन कामों के पूरा होने पर अश्शूर के राजा
सेनहेरीब ने यहूदिया पर हमला कर दिया और उसने गढ़ नगरों को घेर
लिया. उसकी योजना इन्हें अपने अधिकार ले लेने की थी. 2 जब हिज़किय्याह
ने यह देखा कि सेनहेरीब निकट आ गया है और उसका लक्ष्य येरूशलेम पर

हमला करने का है, 3 अपने अधिकारियों और योद्धाओं के साथ उसने योजना
की कि नगर के बाहर के झरनों से जल की आपूर्ति काट दी जाए. इसमें उन्होंने
उसकी सहायता की. 4 इसके लिए बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए. उन्होंने
वे सारे झरने और जल के सोते बंद कर दिए, जो उस क्षेत्र से बह रहे थे. उनका
विचार था, "भला क्यों अश्शूर के राजा यहां आकर भारी जल प्राप्त करें?" 5
तब हिज़किय्याह ने बड़े साहस के साथ सारी टूटी पड़ी शहरपनाह को दोबारा
बनवाया, इन पर पहरेदारों की मचानों को बनवाया. इसके अलावा उसने एक
और बाहरी शहरपनाह को बनवाया, दावीद के नगर में उसने छतों को मजबूत
किया. तब उसने बड़ी मात्रा में हथियारों और ढालों को बनवाया. 6 उसने लोगों
के ऊपर सैन्य अधिकारी रख दिए और उन्हें नगर द्वार के चौक पर इकट्ठा कर
उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा: 7 "मजबूत और साहसी बनो. अश्शूर के राजा
के कारण न तो भयभीत हो, और न ही कमजोर बनो और न ही उनका विचार
करो, जो बड़ी सेना उसके साथ आई हुई है; क्योंकि वह जो हमारे साथ है,
उससे महान है, जो उसके साथ है. 8 उसके साथ तो सिर्फ मानवीय हाड़-मांस
का हाथ है, किंतु हमारे साथ हैं हमारी सहायता के लिए याहवेह हमारे परमेश्वर
कि वह हमारे युद्ध लड़े." प्रजा ने यहूदिया के राजा हिज़किय्याह की बातों का
विश्वास किया. 9 कुछ समय बाद अश्शूर के राजा सेनहेरीब ने येरूशलेम को
अपने दूत भेजे. इस समय वह अपनी सारी सेनाओं के साथ लाकीश नगर पर
घेरा डाले हुए था. उसका संदेश यहूदिया के राजा हिज़किय्याह और येरूशलेम में
पड़ाव डाली हुई यहूदिया की सेना के लिए यह था: 10 "अश्शूर के राजा
सेनहेरीब का संदेश यह है: ऐसा क्या है जिस पर तुम भरोसा किए हुए येरूशलेम
के घिरे हुए होने पर भी बैठे हो? 11 क्या यह सच नहीं है कि, हिज़किय्याह
तुम सभी को यह कहते छलावे में रखे हुए है, 'याहवेह हमारे परमेश्वर ही हमें
अश्शूर के राजा से छुटकारा दिलाएंगे,' कि वह तुम्हें भूख और प्यास की मृत्यु
को सौंप दे? 12 क्या यह वही हिज़किय्याह नहीं है, जिसने ऊंचे स्थानों की
वेदियों को गिराते हुए यहूदिया और येरूशलेम को कहा था, 'वेदी एक ही है,
तुम्हें जिसके सामने आराधना करना और धूप जलाना है'? 13 "क्या तुम जानते
नहीं कि मैंने और मेरे पूर्वजों ने दूसरे देशों के लोगों के साथ क्या-क्या किया
है? क्या किसी भी देश के देवताओं में यह क्षमता थी कि उन्हें मेरी शक्ति से
सुरक्षित रख सके? 14 मेरे पूर्वजों द्वारा नाश किए गए राष्ट्रों के उन सभी देवताओं
में ऐसा कौन था जो उन्हें मुझसे सुरक्षा प्रदान करेगा? 15 अब हिज़किय्याह न तो
तुमसे छल कर सके और न तुम्हें इस तरह भटकाए. तुम उसका विश्वास ही मत
करो. क्योंकि किसी भी राष्ट्र का कोई भी देवता अपनी प्रजा को न तो मुझसे
और न मेरे पूर्वजों से बचा सका है, तो फिर कैसे हो सकता है कि तुम्हारा
परमेश्वर मेरे हाथों से तुम्हारी रक्षा कर सके!" 16 उसके दूत याहवेह परमेश्वर
और उनके सेवक हिज़किय्याह के विरुद्ध बातें करते रहें. 17 सेनहेरीब ने याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर के प्रति अपमानजनक पत्र भी भेजे. इनमें उसने यह लिखा
था, "जैसा विभिन्न देशों के देवता उन्हें मुझसे सुरक्षा प्रदान करने में असफल रहे
हैं, वैसे ही हिज़किय्याह का परमेश्वर भी उसके लोगों को मुझसे सुरक्षा देने में
असफल रहेगा." 18 उन्होंने यह संदेश ऊंची आवाज में येरूशलेम के उन
लोगों को, जो इस समय शहरपनाह पर यह सब सुन रहे थे, यहूदियावासियों ही
की भाषा में पढ़ सुनाया, कि वे इसके द्वारा उन्हें भयभीत और निराश कर दें
और वे नगर पर अधिकार कर लें. 19 उन्होंने यह कहते हुए येरूशलेम के
परमेश्वर को पृथ्वी के दूसरे राष्ट्रों के देवताओं के बराबर रख दिया था, जो देवता
स्वयं उन्हीं के हाथों की रचना थे. 20 राजा हिज़किय्याह और आमोज़ के पुत्र
भविष्यद्वक्ता यशायाह ने इस विषय पर प्रार्थना की और स्वर्ग की दोहाई दी. 21
तब याहवेह ने एक ऐसा स्वर्गदूत भेजा, जिसने अश्शूर राजा की छावनी में
जाकर हर एक वीर योद्धा, प्रधान और अधिकारी को मार दिया. तब सेनहेरीब
घोर लज्जा में अपने देश को लौट गया. वहां पहुंचकर जब अपने देवता के मंदिर
में गया, उसी के कुछ पुत्रों ने उसे तलवार से घात कर दिया. 22 इस प्रकार
याहवेह ने हिज़किय्याह और येरूशलेम निवासियों को अश्शूर के राजा सेनहेरीब
और अन्यों के वार से सुरक्षा प्रदान की और उन्हें चारों ओर से सुरक्षा दी. 23
अनेक-अनेक याहवेह के लिए भेंटें लेकर येरूशलेम आने लगे. वे यहूदिया
के राजा हिज़किय्याह के लिए उत्तम भेंटें ला रहे थे. इससे इसके बाद सभी
राष्ट्रों की दृष्टि में हिज़किय्याह की प्रतिष्ठा बहुत ही बढ़ती चली गई. 24 कुछ
समय बाद हिज़किय्याह घातक रोग से बीमार हो गया. उसने याहवेह से विनती
की और याहवेह ने उससे बातें करते हुए उसे चिन्ह दिया. 25 मगर घमण्ड में
हिज़किय्याह ने इस उपकार का कोई बदला न दिया. उसका मन फूल चुका था.
इसलिये उस पर और यहूदिया और येरूशलेम पर याहवेह का क्रोध टूट पड़ा.
26 तब हिज़किय्याह ने अपने हृदय को नम्र किया, उसने और येरूशलेम वासियों
ने; फलस्वरूप याहवेह का प्रकोप हिज़किय्याह के जीवनकाल में हावी न हुआ.
27 हिज़किय्याह अब बहुत धनी और प्रतिष्ठित हो चुका था. उसने अपने लिए
चांदी, सोने, रत्नों, मसालों, ढालों और सभी प्रकार की कीमती सामग्री के रखने
के लिए भंडार बनवाए. 28 उसने अनाज, अंगूर के रस और तेल रखने के लिए
भंडार-घर बनाए और पशुओं और भेड़ों के लिए पशु-शालाएं और भेड़-शालाएं
बनवाई. 29 उसने अपने लिए नगर बनवाए और पशु और भेड़ें बड़ी संख्या में
इकट्ठा कर ली, क्योंकि परमेश्वर ही ने उसे यह बड़ी सम्पन्नता दी थी. 30 यह
हिज़किय्याह ही का काम था, जो उसने गीहोन नदी के ऊपर के सोते को बंद
कर बहाव को दावीद के नगर के पश्चिमी ओर मोड़ दिया था. हिज़किय्याह
जिस किसी काम को शुरू करता था, उसमें वह सफल होता था. 31 बाबेल
के शासकों के राजदूत उससे उसके अद्भुत कामों के बारे में जानने के लिए
भेजे गए थे. परमेश्वर ने उसे अकेला इसलिये छोड़ दिया था कि वह उसको
परखें, कि वह पहचान जाएं कि हिज़किय्याह के हृदय में हकीकत में है क्या.
32 हिज़किय्याह द्वारा किए गए बाकी कामों का और उसके श्रद्धा के कामों
का वर्णन आमोज़ के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के दर्शन और राजा नामक
पुस्तक में किया गया है. 33 हिज़किय्याह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा
मिला. उन्होंने उसके शव को दावीद के पुत्रों की कब्रों के ऊंचे भाग में रख
दिया. उसकी मृत्यु के अवसर पर सारे यहूदिया और येरूशलेम वासियों ने उसे
सम्मानित किया. उसके स्थान पर उसका पुत्र मनश्शेह राजा हो गया.

33 शासन शुरू करते समय मनश्शेह की उम्र बारह साल थी. येरूशलेम
में उसने पचपन साल शासन किया. 2 उसने वही किया, जो याहवेह की
दृष्टि में गलत था, वही सभी जो उन जनताओं के समान घृणित था, जिन्हें याहवेह
ने इस्राएल के सामने से निकाल दिया था. 3 उसने उन सभी ऊंचे स्थानों को
दोबारा बनवा दिया, जो उसके पिता हिज़किय्याह द्वारा गिराए गए थे. उसने बाल
के लिए वेदियां और अशेराहें बनाईं. उसने आकाश के सभी तारों और नक्षत्रों
की पूजा करनी भी शुरू कर दी. 4 उसने याहवेह के उसी भवन में अनेकों
वेदियां बनवा दीं, जिस भवन के बारे में याहवेह कह चुके थे, "येरूशलेम में मेरा
नाम हमेशा के लिए रहेगा." 5 उसने याहवेह के ही भवन के दो आंगनों में
आकाशमंडल के सारे नक्षत्रों के लिए वेदियां बनवाई. 6 बेन-हिन्नोम की घाटी
में उसने अपने पुत्रों को आग में से होकर निकलने की प्रथा पूरी कराई थी.
वह मोहिनी, शकुन विचारने वालों, प्रेत-सिद्धियों से व्यवहार रखता था. उसने
याहवेह की दृष्टि में बड़ी बुराई करते हुए उनके क्रोध को भड़का दिया. 7 उसने
मूर्ति की प्रतिष्ठा उस भवन में कर दी, जिसके विषय में परमेश्वर ने दावीद और
उनके पुत्र शलोमोन से यह कहा था, "मैं इस भवन में और येरूशलेम नगर में,
जिसे मैंने इस्राएल के सारे गोत्रों में से चुन लिया है, हमेशा के लिए अपना नाम
स्थापित करूंगा, 8 यदि केवल वे उन सभी आदेशों का पालन करें, जो मोशेह

द्वारा दी हुई विधियों, आज्ञाओं और नियमों के अनुसार हैं, मैं उस भूमि से
इस्राएल के पग अलग न होने दूंगा, जो भूमि मैंने तुम्हारे पूर्वजों के लिए ठहराई
है.” 9 इस प्रकार मनश्शेह ने यहूदिया और येरूशलेम वासियों को भटका दिया
कि वे उन राष्ट्रों से भी भयंकर पापों में लग जाएं, जिनको याहवेह ने इस्राएल
वंशजों के सामने से खत्म कर दिया था. 10 याहवेह ने मनश्शेह और उसकी
प्रजा से बातें की, मगर किसी ने भी उनकी ओर ध्यान न दिया. 11 तब याहवेह
ने अश्शूर के राजा की सेना के सेनापति उस पर हमला करने के लिए भेजे.
उन्होंने मनश्शेह को नकेल डालकर पकड़ा, कांसे की बेड़ियों से बांधकर उसे
बाबेल ले गए. 12 जब वह इस दुःख में पड़ा था उसने याहवेह अपने परमेश्वर से
प्रार्थना की, उसने अपने आपको अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने बहुत ही
नम्र बना लिया. 13 जब उसने याहवेह से प्रार्थना की, याहवेह उसकी प्रार्थना से
पिघल गए और उन्होंने उसकी विनती को स्वीकार किया और वह उसे उसके
राज्य में ही येरूशलेम लौटा ले आए. इससे मनश्शेह को मालूम हो गया कि
याहवेह ही परमेश्वर है. 14 यह होने पर उसने घाटी गीहोन के पश्चिमी ओर
दावीद के नगर की बाहरी शहरपनाह को बनवाया, जो मछली फाटक तक बनाई
गई थी. उसने इससे ओफेल को घेरकर बहुत ऊंचा बना दिया. इसके बाद उसने
यहूदिया के सभी गढ़ नगरों में सेनापति ठहरा दिए. 15 याहवेह के भवन से उसने
वह मूर्ति और पराए देवता हटा दिए. साथ ही वे सारी वेदियां भी, जो उसने
याहवेह के भवन के पर्वत पर और येरूशलेम में बनाई गई थी. इन्हें उसने नगर के
बाहर फेंक दिया. 16 उसने याहवेह की वेदी दोबारा से बनवाई और उस पर मेल
बलि और धन्यवाद बलि चढ़ाईं. उसने सारे यहूदिया में यह आदेश दे दिया कि
सेवा-आराधना सिर्फ इस्राएल के परमेश्वर याहवेह की ही की जाए. 17 फिर भी
लोग ऊंची जगहों पर ही बलि चढ़ाते रहे हालांकि यह वे याहवेह अपने परमेश्वर
ही को चढ़ा रहे होते थे. 18 मनश्शेह के बाकी कामों का वर्णन, यहां तक कि
परमेश्वर से की गई उसकी प्रार्थना, इस्राएल के परमेश्वर याहवेह द्वारा भेजे
दर्शियों के वचन, जिन्होंने उससे बातें की, यह सब इस्राएल के राजाओं की
पुस्तक में किया गया है. 19 उसके द्वारा की गई प्रार्थना, किस प्रकार उसकी
प्रार्थना से परमेश्वर पिघल गए, उसके द्वारा किए गए पाप, उसका विश्वासघात,
उसके द्वारा ऊंचे स्थानों पर बनाई वेदियां, अशेराह देवियां, खोदकर गढ़ी हुई
मूर्तियां, सब कुछ जो उसने नम्र होने के पहले किया था, इन सभी का वर्णन
होत्साई के प्रलेख में मिलता है. 20 मनश्शेह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा
मिला. उन्होंने उसे उसी के घर में गाड़ दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र अमोन
राजा हो गया. 21 राजा बनने के अवसर पर अमोन की उम्र बाईस साल थी.
येरूशलेम में उसने दो साल शासन किया. 22 उसने वह किया, जो याहवेह की
दृष्टि में बुरा है, जैसा उसके पिता ने भी किया था. अमोन अपने पिता द्वारा बनाई
गई और सभी खोदी गई मूर्तियों के लिए बलि चढ़ाता रहा और वह उनकी सेवा
भी करता रहा. 23 जैसा उसके पिता ने याहवेह के सामने अपने आपको नम्र
किया था, उसने ऐसा नहीं किया, बल्कि अमोन अपने ऊपर दोष इकट्ठा करता
चला गया. 24 उसके सेवकों ने उसके विरुद्ध षड्‍यंत्र रचा और उसी के घर
में उसका वध कर दिया. 25 मगर प्रजाजनों ने उन सभी की हत्या कर दी,
जिन्होंने राजा अमोन के विरुद्ध षड्‍यंत्र रचा था. उन्होंने उसके स्थान पर उसके
पुत्र योशियाह को राजा बनाया.

34 योशियाह के राजा बनने के समय उसकी उम्र आठ साल की थी और
उसने येरूशलेम में एकतीस साल शासन किया. 2 उसने वह किया, जो
याहवेह की दृष्टि में सही था. अपने पूर्वज दावीद के नीतियों के पथ का आचरण
करता रहा. वह इनसे न तो दाएं मुड़ा और न बाएं. 3 कारण यह था कि अपने
शासनकाल के आठवें साल में ही उसने अपने पूर्वज दावीद के परमेश्वर की
खोज करना शुरू कर दिया. अपने शासनकाल के बारहवें साल में उसने यहूदिया
और येरूशलेम को ऊंचे स्थानों पर बनाई वेदियों, अशेरा देवी की खोदी हुई
और ढाली हुई मूर्तियों को हटाकर शुद्ध करना शुरू कर दिया. 4 उन्होंने राजा
की उपस्थिति ही में बाल देवताओं की वेदियों, धूप वेदियों को, जो उनसे ऊंचे
पर थी, काट डालीं. उसने अशेरा की खोदी हुई और ढाली गई मूर्तियों को
चूर-चूर कर पीस डाला और उस बुकनी को उन लोगों की कब्र पर छिड़क
दिया, जो इनके लिए बलि चढ़ाते रहे थे. 5 इसके बाद उसने बाल-अशेराह के
पुरोहितों की अस्थियां इन्हीं वेदियों पर जलाकर यहूदिया और येरूशलेम को
शुद्ध कर दिया. 6 मनश्शेह, एफ्राईम शिमओन में भी, यहां कि नफताली और
उसके पास के क्षेत्रों में, उसने वेदियां गिरा दीं, 7 अशेरा की खोदी हुई मूर्तियों
को कूटकर उनका चूरा बना दिया. उसने सारे इस्राएल देश की सभी धूप वेदियों
को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया. यह करके वह येरूशलेम लौट गया. 8
उसके शासनकाल के अट्ठारहवें साल में जब उसने सारे देश और भवन को शुद्ध
कर लिया, उसने अज़लियाह के पुत्र शापान और नगर अध्यक्ष मआसेइयाह और
अभिलेखक यहोआहाज़ के पुत्र योआह को याहवेह अपने परमेश्वर के भवन की
मरम्मत की जवाबदारी सौंपी. 9 उन्होंने महापुरोहित हिलकियाह से भेंट की
और परमेश्वर के भवन में लाई गई धनराशि उन्हें सौंप दी, जो मनश्शेह, एफ्राईम
और इस्राएल के भाग से और सारे यहूदिया बिन्यामिन और येरूशलेम वासियों से
लेवियों और द्वारपालों द्वारा इकट्ठा की गई थी. 10 इसके बाद उन्होंने यह धन
उन्हें सौंप दिया, जिनके ऊपर याहवेह के भवन के बनाने की जवाबदारी थी.
उन्होंने यह धन उन्हें दे दिया, जो याहवेह के भवन को दोबारा बनाने और
मरम्मत का काम करते थे. 11 इन्होंने यह धन बढ़ई और राजमिस्त्रियों को दे
दिया कि वे इससे संवारे हुए पत्थर और भवन की उन बल्लियों के लिए नई
लकड़ी ले आएं, जो रख रखाव के बिना टूट-फूट चुकी थी, क्योंकि यहूदिया
के राजाओं ने इनको नष्ट ही कर दिया था. 12 अधिकारियों की देखरेख में
इन शिल्पियों ने विश्वासयोग्यता से अपनी जवाबदारी पूरी की, मेरारी के पुत्र
लेवी याहाथ और ओबदयाह, कोहाथ के परिवार से ज़करयाह और मेशुल्लाम
अधिकारी भी थे और वे सभी श्रेणी के कामों को देखते थे कुछ लेवी लेखक
कुछ अधिकारी और कुछ द्वारपाल थे. 14 जब वे याहवेह के भवन में लाया गया
धन बाहर ला रहे थे, पुरोहित हिलकियाह को मोशेह द्वारा सौंपी गई याहवेह की
व्यवस्था की पुस्तक मिली. 15 यह देख हिलकियाह ने लेखक शापान से कहा,
“याहवेह के भवन में मुझे व्यवस्था की पुस्तक मिली है.” हिलकियाह ने पुस्तक
शापान को सौंप दी. 16 शापान ने पुस्तक को राजा के सामने लाते हुए उसे
कहा: “जो काम आपके सेवकों को सौंपा गया था, उसे वे कर रहे हैं. 17
याहवेह के भवन में मिला सारा धन उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों
को दे दिया है.” 18 इसके अलावा लेखक शापान ने राजा को सूचित किया,
“पुरोहित हिलकियाह ने मुझे एक पुस्तक दी है.” तब शापान ने राजा के सामने
उस पुस्तक में से पढ़ा. 19 जब राजा ने व्यवस्था के शब्द सुने, उसने अपने वस्त्र
फाड़ दिए. 20 राजा ने हिलकियाह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकाह के पुत्र
अबदोन, लेखक शापान और राजा के सेवक असाइयाह को आदेश दिया: 21
“जाओ, मेरे लिए, इस्राएल और यहूदिया की बाकी प्रजा की ओर से याहवेह से
यह मालूम करो कि वह पुस्तक जो मिली है, उसका मतलब क्या है, क्योंकि
भयंकर है हमारे लिए ठहराया गया याहवेह का क्रोध, इसलिये है कि हमारे
पूर्वजों ने इसमें लिखी याहवेह की सारी शिक्षाओं का पालन नहीं किया है.” 22
तब हिलकियाह और वे, जिन्हें राजा द्वारा आदेश दिया गया था, नबिया हुलदाह
से भेंट करने गए. वह वस्त्रालय के रखवाले शल्लूम की पत्नी थी. शल्लूम तोखात
का पुत्र, हस्राह का पोता था. हुलदाह का घर येरूशलेम के नए बने हुए भाग
में था. उन्होंने उसके सामने यह बात रखी. 23 हुलदा ने उन्हें उत्तर दिया,
“याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: ‘जिस व्यक्ति ने तुम्हें मुझसे

मिलने के लिए भेजा है, उससे यह कहना: 24 याहवेह का वचन यह है, “यह
देखना, मैं इस स्थान पर और इसके निवासियों पर विपत्ति भेज रहा हूं. हां, वे
सारे शाप, जिनका वर्णन यहूदिया प्रदेश के राजा के सम्मुख में पढ़ी गई इस
पुस्तक में किया गया है. 25 इसलिये कि उन्होंने मुझे भुला दिया है और विदेशी
देवताओं के सामने धूप जलाया है, कि वे मेरे क्रोध को अपनी सभी हाथों से
बनाई हुई मूर्तियों के द्वारा भड़का दें. तब इस स्थान पर मेरा क्रोध उंडेला जाएगा
और याद रखना, यह शांत नहीं होगा.”’ 26 मगर यहूदिया के राजा, जिसने,
तुम्हें मेरे पास भेजा है, कि मैं याहवेह से उनकी इच्छा पता करूं, उससे तुम यह
कहना: ‘उन बातों के बारे में, जो तुमने सुनी है, इस्राएल के राजा को याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: 27 इसलिये कि तुम्हारा हृदय दीन था
और तुमने जब इस स्थान के विरुद्ध और इसके निवासियों के विरुद्ध परमेश्वर के
संदेश को सुनकर अपने आपको विनीत बना लिया और तुम मेरे सामने नम्र हो
गए, तुमने अपने कपड़े फाड़ दिए और मेरे सामने रोते रहे, मैंने वास्तव में तुम्हारी
सुन ली है. यह याहवेह ने कहा है. 28 इसलिये सुनो, मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों में
मिला दूंगा. शान्तिपूर्ण स्थिति में तुम्हारा अंतिम संस्कार होगा. इस स्थान पर जो
बुराई मेरे द्वारा भेजी जाएगी, उसे तुम्हारी आंखें न देखेंगी.’” यह संदेश उन्होंने
राजा को जा सुनाया. 29 इसके बाद राजा ने यहूदिया और येरूशलेम के पुरनियों
को बुलाकर उन्हें इकट्ठा किया. 30 राजा याहवेह के भवन को गया, उसके साथ
यहूदिया और येरूशलेम के सभी पुरुष, पुरोहित और लेवी और साधारण से लेकर
विशेष लोग भी थे. उनके सामने उसने वाचा की पुस्तक जो याहवेह के भवन में
पाई गई थी, की सारी बातें पढ़ीं, जिसे सभी ने सुना. 31 तब राजा अपने स्थान
पर खड़ा हुआ और याहवेह के सामने यह वाचा बांधी कि वह याहवेह का ही
अनुसरण करेगा, उनके आदेशों, उनकी चेतावनियों और उनकी विधियों का
पालन अपने पूरे हृदय और पूरे प्राणों से करेगा, कि वह इस पुस्तक में लिखित
वाचा का पालन कर सके. 32 इसके अलावा उसने वहां उपस्थित येरूशलेम
और बिन्यामिन वासियों से भी शपथ ली कि वे भी उसके साथ इसमें शामिल
होंगे. तब येरूशलेम वासियों ने परमेश्वर की वाचा के अनुसार ही पालन किया-
अपने पूर्वजों के परमेश्वर की वाचा के अनुसार. 33 योशियाह ने इस्राएल के
वंशजों के क्षेत्रों से सभी घृणित वस्तुएं हटा दी और इस्राएल में उपस्थित सभी
को याहवेह उनके परमेश्वर की ही वंदना करने के लिए प्रेरित किया. योशियाह
के पूरे जीवनकाल में वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह का अनुसरण करते
रहने से भटके नहीं.

35 तब योशियाह ने येरूशलेम में याहवेह के लिए फ़सह उत्सव मनाया.
पहले महीने के चौदहवें दिन उन्होंने फ़सह पशुओं का वध किया. 2
उसने पुरोहितों को उनके पदों पर ठहराया और उन्हें याहवेह के भवन संबंधी
सेवा के लिए प्रोत्साहित भी किया. 3 सारे इस्राएल में शिक्षा देने के लिए ठहराए
गए लेवियों को, जो याहवेह के लिए अलग किए हुए थे, राजा ने आदेश दिया:
“उस पवित्र संदूक को इस्राएल के राजा दावीद के पुत्र शलोमोन द्वारा बनवाए
याहवेह के घर में प्रतिष्ठित कर दो. अब यह तुम्हारे कांधों के लिए बोझ नहीं
रहेगा. अब आप लोग याहवेह अपने परमेश्वर और उनकी प्रजा इस्राएल की
सेवा की ओर ध्यान लगाइए. 4 स्वयं को अपने-अपने विभागों में कुलों के
अनुसार इस्राएल के राजा दावीद और उनके पुत्र शलोमोन के लिखित निर्देशों के
अनुसार इकट्ठा कर लीजिए. 5 “इसके अलावा पवित्र स्थान जनसाधारण के
कुलों के भागों के अनुसार खड़े हो जाइए, लेवी भी कुलों के भागों के अनुसार
खड़े हो जाइए. 6 अब फ़सह के लिए ठहराए गए पशु वध किए जाएं. स्वयं को
शुद्ध कीजिए और अपने भाई-बंधुओं को मोशेह द्वारा सौंपे गए याहवेह के आदेश
को पूरा करने के लिए तैयार कीजिए.” 7 खुद योशियाह ने लोगों के लिए,
जितने वहां उपस्थित थे, मेमनों का समूह और बकरी के बच्चे दान में दिए
कि वे फ़सह के लिए इस्तेमाल हो. इनकी कुल संख्या हो गई थी तीस हज़ार
और तीन हज़ार बछड़े. ये सभी राजा की संपत्ति में से दिए गए थे. 8 राजा के
अधिकारियों ने भी लोगों, पुरोहितों और लेवियों के लिए अपनी इच्छा से दान
दिया. परमेश्वर के भवन के अधिकारी हिलकियाह, ज़करयाह और यहीएल ने
पुरोहितों को फ़सह का बलिदान के लिए भेड़ों और बकरियों के दो हजार छ:
सौ और तीन सौ बछड़े दान में दिए. 9 इनके अलावा लेवियों के अधिकारी
केनानियाह, नेथानेल, उसके भाई, हशाबियाह, येइएल और योज़ाबाद ने फ़सह
बलि के लिए लेवियों को पांच हज़ार मेमने और पांच सौ बछड़े दान में दिए. 10
तब राजा के आदेश के अनुसार फ़सह की तैयारी पूरी हो गई. पुरोहित अपने
निर्धारित स्थान पर खड़े थे और लेवी अपने विभागों के अनुसार. 11 उन्होंने
फ़सह के लिए ठहराए गए पशुओं का वध करना शुरू किया. पुरोहित उनके द्वारा
इकट्ठा हुआ लहू लेकर छिड़काव कर रहे थे और लेवी पशु-शवों की खाल
उतार रहे थे. 12 तब उन्होंने होमबलियों को अलग रख दिया, कि इन्हें लोगों
में कुलों के अनुसार बांट दिया जाए, कि वे इसे याहवेह को पेश कर सकें, जैसा
मोशेह की पुस्तक में लिखा है. 13 तब उन्होंने फ़सह पशुओं को आग पर नियम
के अनुसार भुना और पवित्र भेंटों को विभिन्न बर्तनों में उबाल लिया और
जल्दी ही सभी लोगों को परोस दिया. 14 इसके बाद उन्होंने अपने लिए और
पुरोहितों के लिए भी तैयारी की, क्योंकि अहरोन के वंशज पुरोहित रात होने
तक होमबलि और चर्बी चढ़ा रहे थे. इसलिये लेवियों को खुद अपने लिए और
पुरोहितों के लिए जो अहरोन के वंशज थे, तैयारी करनी पड़ी. 15 दावीद,
आसफ, हेमान और राजा के दर्शी यदूथून द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार,
आसफ के वंशज गायक भी अपने-अपने ठहराए गए स्थानों पर खड़े हुए थे.
द्वारपालों को द्वार छोड़कर जाना ज़रूरी नहीं था, क्योंकि आवश्यक तैयारी
उनके भाई-बन्धु लेवियों ने उनके लिए पहले ही कर ली थी. 16 तब उस दिन
राजा योशियाह के आदेश के अनुसार याहवेह की आराधना के लिए, फ़सह
उत्सव मनाने और याहवेह की वेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिए सभी कुछ
तैयार पाया गया. 17 इस प्रकार इस अवसर पर वहां उपस्थित इस्राएल वंशजों
ने फ़सह उत्सव और खमीर रहित रोटी का उत्सव मनाया. 18 भविष्यद्वक्ता
शमुएल के समय से अब तक इस्राएल में फ़सह उत्सव का ऐसा समारोह नहीं
मनाया गया था और न ही इस्राएल के किसी भी राजा ने पुरोहितों, लेवियों,
सारे यहूदिया, उपस्थित इस्राएल और येरूशलेम वासियों के साथ इस तरह का
समारोह कभी नहीं मनाया था, जैसे योशियाह ने मनाया था. 19 यह फ़सह का
उत्सव योशियाह के शासनकाल के अठारहवें साल में मनाया गया था. 20 फिर,
यह सब होने के बाद, जब योशियाह मंदिर में सब कुछ तैयार कर चुका, युद्ध की
इच्छा से मिस्र का राजा नेको फरात नदी के तट पर कर्कमीश नामक स्थान तक
आ गया. योशियाह भी उसका सामना करने वहां पहुंचा. 21 मगर नेको ने उसके
लिए इस संदेश के साथ दूत भेजे, “यहूदिया के राजा, आपसे मेरी कोई शत्रुता
नहीं है. इस समय मैं आपसे युद्ध करने यहां नहीं आया हूं, बल्कि मैं उस परिवार
के विरुद्ध आया हूं, जिससे मेरा विवाद है और परमेश्वर ने ही मुझे पूर्ति का आदेश
दिया है. अपने ही हित में आप परमेश्वर के इस काम से अलग रहिए, कहीं ऐसा
न हो कि वह आपको नाश करे, क्योंकि परमेश्वर यहां मेरी ओर हैं.” 22 फिर
भी योशियाह ने उसकी एक न सुनी. बल्कि उससे युद्ध करने के उद्देश्य से उसने
भेष बदल लिया कि वह उससे युद्ध कर सके. वह नेको के द्वारा दिए परमेश्वर के
संदेश को ठुकरा कर उससे युद्ध करने के उद्देश्य से मगिद्दो के मैदान में आ गया.
23 राजा योशियाह मिस्री धनुर्धारियों के बाणों का निशाना हो गया. राजा ने
अपने सेवक को आदेश दिया, “मुझे यहां से ले चलो; मुझे गहरी चोट लगी है.”
24 तब उसके सेवकों ने उसे उस रथ से निकालकर उसके ही एक दूसरे रथ में
बैठा दिया और उसे येरूशलेम ले गये, जहां उसकी मृत्यु हो गई. उसे उसके

पूर्वजों की कब्र में रखा गया. योशियाह के लिए सारे यहूदिया और येरूशलेम ने
विलाप किया. 25 योशियाह के शोक में येरेमियाह ने एक विलापगीत प्रस्तुत
किया. आज भी पुरुष और स्त्री गायक अपने शोक गीत में योशियाह का उल्लेख
करते हैं. इस्राएल में इसे गाने की रीति हो गई है. इसे विलापगीत की पुस्तक में
शामिल किया गया है. 26 योशियाह के बाकी कामों का वर्णन और याहवेह की
व्यवस्था के प्रति उसके पहले के समर्पण द्वारा किए गए सुधारों का वर्णन, 27
शुरू से अंत तक उसके सभी कामों का वर्णन इस्राएल और यहूदिया के राजा
नामक पुस्तक में किया गया है.

36 यहोआहाज़, येहोआकिम और येहोआकिन का शासन: तब देश की प्रजा
ने येरूशलेम में योशियाह के पुत्र यहोआहाज़ को उसके पिता योशियाह
की जगह पर राजा होने के लिए चुना. 2 शासन शुरू करते समय यहोआहाज़ की
उम्र तेईस साल थी. येरूशलेम में उसने तीन महीने शासन किया. 3 तब मिस्र के
राजा ने उसे येरूशलेम में गद्दी से हटा दिया और देश पर साढ़े तीन हज़ार किलो
चांदी और पैंतीस किलो सोने का कर लगा दिया. 4 तब मिस्र के राजा ने उसके
भाई एलियाकिम को यहूदिया और येरूशलेम का राजा बना दिया और उसका
नाम बदलकर यहोइयाकिम रख दिया. मगर उसके भाई यहोआहाज़ को वह
अपने साथ मिस्र ले गया. 5 यहोइयाकिम की उम्र पच्चीस साल की थी, जब वह
राजा बनाया गया. उसने येरूशलेम में ग्यारह साल शासन किया. उसने याहवेह
अपने परमेश्वर की दृष्टि में बुरा किया. 6 बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने
हमला कर दिया और उसे कांसे की बेड़ियों से बांधकर बाबेल ले गया. 7 इसके
अलावा नबूकदनेज्ज़र ने याहवेह के भवन की कुछ वस्तुएं लेकर बाबेल में
अपने मंदिर में रख दीं. 8 यहोइयाकिम द्वारा किए गए बाकी काम, उसके द्वारा
किए गए घृणित काम और उसके सारे दोषों का वर्णन इस्राएल और यहूदिया के
राजा नामक पुस्तक में किया गया है. उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोइयाखिन
राजा बन गया. 9 राजा बनने के समय यहोइयाखिन की उम्र आठ साल की थी.
येरूशलेम में उसने तीन महीने और दस दिन शासन किया. उसने वही किया,
जो याहवेह की दृष्टि में बुरा है. 10 साल खत्म होते-होते वसन्त ऋतु में राजा
नबूकदनेज्ज़र ने उसे याहवेह के भवन की कीमती वस्तुओं के साथ बाबेल बुलवा
लिया और उसके संबंधी सीदकियाहू को यहूदिया और येरूशलेम पर राजा ठहरा
दिया. 11 जब सीदकियाहू ने शासन शुरू किया उसकी उम्र इक्कीस साल थी.
येरूशलेम में उसने ग्यारह साल शासन किया. 12 उसने वह किया, जो याहवेह
उसके परमेश्वर की दृष्टि में बुरा है. उसने याहवेह के अभिवक्ता भविष्यद्वक्ता
येरेमियाह के सामने अपने आपको नम्र नहीं किया. 13 उसने राजा नबूकदनेज्ज़र
के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, जिसने उसे सच्चा रहने के लिए परमेश्वर की शपथ
दिलाई थी. वह हठी हो गया और उसका हृदय कठोर हो गया फलस्वरूप वह
याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की ओर न हुआ. 14 इसके अलावा पुरोहितों के
अधिकारी और प्रजा और दूसरे जनताओं की घृणित प्रथाओं का पालन करते हुए
याहवेह से विश्वासघात किया. येरूशलेम में पवित्र याहवेह के भवन को उन्होंने
अशुद्ध कर दिया था. 15 अपनी प्रजा के प्रति और अपने घर के प्रति अपनी
दया के कारण याहवेह उनके पूर्वजों के परमेश्वर ने कई बार अपने दूतों के
द्वारा उनके लिए अपना संदेश भेजा; 16 मगर वे हमेशा अपने ही परमेश्वर के
संदेशवाहकों का मज़ाक उड़ाते रहे, उनके संदेश का तिरस्कार करते रहे और
परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को मज़ाक का पात्र बना दिया. यह तब तक होता
रहा जब तक याहवेह का क्रोध उनकी प्रजा पर टूट न पड़ा, जब तक परिस्थिति
काबू से बाहर न हो गई. 17 तब परमेश्वर उनके विरुद्ध कलदियों के राजा को ले
आए. उसने उनके युवाओं का उन्हीं के पवित्र स्थान में वध कर दिया. उसने न
तो युवाओं पर कृपा दिखाई और न कुंवारी कन्याओं पर, न बूढ़ों पर न कमज़ोरों
पर. परमेश्वर ने सभी को नबूकदनेज्ज़र के अधीन कर दिया. 18 वह परमेश्वर
के भवन की छोटी-बड़ी सभी वस्तुएं, याहवेह के भवन के खजाने और राजा
और उसके साथी शासकों के भी खजाने, सभी कुछ अपने साथ बाबेल ले गया.
19 तब उन्होंने परमेश्वर के भवन को भस्म कर दिया. उन्होंने येरूशलेम की
शहरपनाह तोड़ डाली, उसके सारे मजबूत भवनों को आग लगाकर नाश कर
दिया, सभी कीमती वस्तुओं को ध्वस्त कर दिया. 20 उन सभी को, जो तलवार
के वार से बच निकले थे, उन्हें वह अपने साथ बाबेल ले गया. ये सभी उस
समय तक उसके और उसकी संतान के सेवक तब तक बने रहे जब तक फारस
का शासन चलता रहा. 21 यह भविष्यद्वक्ता येरेमियाह द्वारा की गई याहवेह की
भविष्यवाणी पूरी हुई थी, कि भूमि उन सत्तर सालों का शब्बाथ प्राप्त कर सके,
जिनसे इसे दूर रखा गया था. 22 फारस के राजा कोरेश के शासन के पहले साल
में येरेमियाह द्वारा कही गई याहवेह की भविष्यवाणी पूरी करने के उद्देश्य से
याहवेह ने फारस के राजा की आत्मा को उभारा. फलस्वरूप उसने सभी राज्य में
यह लिखित घोषणा करवा दी: 23 फारस के राजा कोरेश की ओर से यह घोषणा
की जा रही है: "'स्वर्ग के परमेश्वर याहवेह ने मुझे पृथ्वी के सारे राज्यों का
अधिकार सौंपा है. उन्हीं ने मुझे उनके लिए यहूदिया के येरूशलेम में एक भवन
बनाने के लिए चुना है. तुम सब में से जो कोई उनकी प्रजा में से है, याहवेह
उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, उसे वहां जाने दिया जाए.'"

एज्रा

1 फारस के राजा कोरेश के शासन के पहले साल में येरेमियाह द्वारा कही गई
याहवेह की भविष्यवाणी पूरी करने के उद्देश्य से याहवेह ने फारस के राजा
की आत्मा को उभारा. फलस्वरूप उसने सभी राज्य में यह लिखित घोषणा
करवा दी: 2 "फारस के राजा कोरेश का आदेश यह है: "'याहवेह ने, जो स्वर्ग
के परमेश्वर हैं, मुझे सारी पृथ्वी के राज्यों पर अधिकार दिया है, उन्होंने ही मुझे
येरूशलेम नगर में, जो यहूदिया प्रदेश में है, उनके लिए एक भवन बनाने के
लिए चुना है. 3 आप लोगों में से जो कोई याहवेह की प्रजा में से है, आपके
परमेश्वर आपके साथ रहे! आप यहूदिया प्रदेश के येरूशलेम को जाएं तथा
याहवेह इस्राएल के परमेश्वर के लिए इस भवन को दोबारा बनाएं. यह वही
परमेश्वर हैं, जो येरूशलेम में हैं. 4 किसी भी स्थान पर, परमेश्वर के किसी भी
जन को, यदि वह अब तक जीवित है, उस स्थान के नागरिक चांदी, सोना,
अन्य वस्तुएं, पशु एवं स्वेच्छा से भेंटे देकर येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को
बनाने के लिए उसकी सहायता करें.'" 5 तब यहूदाह एवं बिन्यामिन के कुलों
के प्रधान, पुरोहित तथा लेवी तैयार हो गए, हर एक वह, जिस किसी के हृदय
को परमेश्वर ने उकसाया कि येरूशलेम में याहवेह के भवन को दोबारा से बनाएं.
6 उनके पडोसियों ने उन्हें चांदी, सोना, अन्य सामग्री; कीमती वस्तुएं, पशु देकर
प्रोत्साहित किया तथा इनके अलावा उन्होंने इन्हें अपनी इच्छा से भेंटें भी दे दी.
7 साथ ही राजा कोरेश याहवेह के भवन की वस्तुएं भी निकाल लाया, जो
नबूकदनेज्ज़र येरूशलेम से ले आया था और अपने देवताओं के भवन में रख
दिया था. 8 फारस के राजा कोरेश के खजांची मिथरेदाथ के द्वारा इन बर्तनों को
मंगवाया तथा यहूदिया के शासक शेशबाज्ज़र के सामने इनकी गिनती कर दी.
9 इन बर्तनों की संख्या इस प्रकार थी: सोने की चिलमचियां 30 चांदी की
चिलमचियां 1,000 दूसरे कटोरे 29 10 सोने की कटोरियां 30 समान चांदी
की कटोरियां 410 अलग-अलग बर्तन 1,000 11 सोने और चांदी के कुल
बर्तनों की संख्या 5,400 थी. शेशबाज्ज़र इन सभी को उन बंदियों के साथ
बाबेल से येरूशलेम ले आया.

2 इस प्रदेश के लोग, जो बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र द्वारा बंधुआई में ले
जाए गए थे और जो बंधुआई से यहूदिया और येरूशलेम, अपने-अपने नगर
को लौट आए थे, वे इस प्रकार है 2 ये वे हैं, जो ज़ेरुब्बाबेल के साथ आए
थे: येशुआ, नेहेमियाह, सेराइयाह, रीलाइयाह, मोरदकय, बिलषान, मिसपार,
बिगवाई, रेहुम और बाअनाह. इस्राएली प्रजा के पुरुषों की संख्या अपने-अपने
कुलों के अनुसार निम्न लिखित है: 3 पारोश 2,172 4 शेपाथियाह 372 5
आराह 775 6 पाहाथ-मोआब के वंशजों में से येशुआ एवं योआब के वंशज
2,812 7 एलाम 1,254 8 ज़त्तू 945 9 ज़क्काई 760 10 बानी 642 11
बेबाइ 623 12 अजगाद 1,222 13 अदोनिकम 666 14 बिगवाई 2,056
15 आदिन 454 16 हिज़किय्याह की ओर से अतेर के वंशज 98 17 बेज़ाइ के
वंशज 323 18 योरोह के वंशज 112 19 हाषूम 223 20 गिब्बर 95 21
बेथलेहेम के निवासी 123 22 नेतोपाह के निवासी 56 23 अनाथोथ के निवासी
128 24 अज़मावेथ के निवासी 42 25 किरयथ-यआरीम के कफीराह तथा
बएरोथ के निवासी 743 26 रामाह तथा गेबा के निवासी 621 27 मिकमाश
के निवासी 122 28 बेथेल तथा अय के निवासी 223 29 नेबो के निवासी
52 30 मकबिष के निवासी 156 31 उस अन्य एलाम के वंशज 1,254 32
हारिम के वंशज 320 33 लोद, हदिद तथा ओनो 725 34 येरीख़ो के निवासी
345 35 सेनाआह 3,630 36 पुरोहित: येशुआ के परिवार से येदाइयाह के
वंशज 973 37 इम्मर 1,052 38 पशहूर 1,247 39 हारिम 1,017
40 लेवी: होदवियाह के वंशजों में से कदमिएल तथा येशुआ, होदवियाह के
वंशज 74 41 गायक: आसफ के वंशज 128 42 द्वारपाल: शल्लूम, अतेर,
तालमोन, अक्कूब, हतिता और शेबाई 139 43 मंदिर सेवक इनके वंशज थे:
ज़ीहा, हासुफ़ा, तब्बओथ, 44 केरोस, सियाहा, पदोन, 45 लेबानाह, हागाबाह,
अक्कूब, 46 हागाब, शामलाई, हनान, 47 गिद्देल, गाहर, रेआइयाह, 48 रेज़िन,
नेकोदा, गज्ज़ाम, 49 उज्ज़ा, पासेह, बेसाई, 50 आसनाह, मिऊनी, नेफिसिम,
51 बकबुक, हकूफ़ा, हरहूर, 52 बाज़लुथ, मेहिदा, हरषा, 53 बारकोस, सीसरा,
तेमाह, 54 नेज़ीयाह, हातिफा. 55 शलोमोन के सेवकों के वंशज: हसोफेरेथ,
पेरूदा, सोताई, 56 याला, दारकोन, गिद्देल, 57 शेपाथियाह, हत्तील, पोचेरेथ-
हज्ज़ेबाइम, आमि. 58 मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों की कुल
गिनती: 392 59 ये वे हैं, जो तेल-मेलाह, तेल-हरषा, करूब, अद्दान तथा इम्मर
से आए, तथा इनके पास अपनी वंशावली के सबूत नहीं थे, कि वे इस्राएल के
वंशज थे भी या नहीं: 60 देलाइयाह के वंशज, तोबियाह के वंशज तथा नेकोदा
के वंशज 652 61 पुरोहितों में: होबाइयाह के वंशज, हक्कोज़ के वंशज तथा
बारज़िल्लाई, जिसने गिलआदवासी बारज़िल्लाई की पुत्रियों में से एक के साथ
विवाह किया था और उसने उन्हीं का नाम रख लिया. 62 इन्होंने अपने पुरखों
के पंजीकरण की खोज की, किंतु इन्हें सच्चाई मालूम न हो सकी; तब इन्हें
सांस्कृतिक रूप से अपवित्र माना गया तथा इन्हें पुरोहित जवाबदारी से दूर रखा
गया. 63 अधिपति ने उन्हें आदेश दिया कि वे उस समय तक अति पवित्र भोजन
न खाएं, जब तक वहां कोई ऐसा पुरोहित न हो, जो उरीम तथा थुम्मिन से सलाह
न ले लें. 64 सारी सभा की पूरी संख्या हुई 42,360. 65 इनके अलावा
7,337 दास-दासियां तथा 200 गायक-गायिकाएं भी थी. 66 उनके 736
घोड़े, 245 खच्चर, 67 435 ऊंट तथा 6,720 गधे थे. 68 कुलों के कुछ
प्रधान जब येरूशलेम में याहवेह के भवन में पहुंचे, उन्होंने अपनी इच्छा के
अनुसार परमेश्वर के भवन को उसी नींव पर दोबारा बनाने के लिए दान दिया.
69 उन्होंने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार इस काम के लिए 61,000
सोने के सिक्के, 5,000 चांदी के सिक्के तथा 100 पुरोहित वस्त्र खजाने में
जमा करा दिए. 70 इस समय पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, कुछ सामान्य
प्रजाजन, मंदिर के सेवक, जो सभी इस्राएल वंशज ही थे, अपने-अपने नगरों में
रहने लगे. पूरा इस्राएल अपने-अपने नगर में बस चुका था.

3 इस समय सारा इस्राएल अपने-अपने ठहराए गए नगर में बस चुका था.
सातवें महीने वे सभी येरूशलेम इकट्ठे हो गए. 2 तब योज़ादक के पुत्र
येशुआ तथा उसके भाइयों ने, जो पुरोहित थे, शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल
तथा उसके भाइयों ने मिलकर इस्राएल के परमेश्वर के लिए उस वेदी को
बनाया, जिस पर होमबलि चढ़ाई जानी थी, जैसा की परमेश्वर के जन मोशेह
की व्यवस्था में लिखा है. 3 उन्होंने उसी की नींव पर इस वेदी को बनाया,
क्योंकि उन्हें पास वाले देशों के लोगों का बहुत डर था. उन्होंने इस वेदी पर
याहवेह को होमबलि चढ़ाई-सुबह को होमबलि और शाम को होमबलि. 4
उन्होंने झोंपड़ियों का उत्सव लिखी हुई विधि के अनुसार मनाया तथा हर रोज़
उन्होंने ठहराई गई संख्या में होमबलियां चढ़ाईं, जैसा की हर रोज़ के लिए इस
संबंध में नियम था. 5 इसके बाद, होमबलि नित्य चढ़ाए जाने लगे; उसी प्रकार
नए चांद के उत्सवों में तथा याहवेह के लिए ठहराए गए पवित्र उत्सवों में तथा
हर एक के लिए याहवेह को स्वेच्छा बलि चढ़ाने में भी. नए चांद के उत्सवों में,
याहवेह के लिए ठहराए गए उत्सवों में, जो पवित्र किए गए थे, तथा हर एक के
लिए, जो याहवेह को स्वेच्छा बलि चढ़ाना चाहता था, नित्यत आ गए. 6 सातवें
महीने के पहले दिन से ही उन्होंने याहवेह के लिए होमबलि चढ़ाना शुरू कर
दिया था, किंतु याहवेह के भवन की नींव नहीं रखी गई थी. 7 इसलिये उन्होंने
राजमिस्त्रियों एवं कारीगरों को सिक्के, सीदोनियों एवं सोरियों को खाने-पीने

की वस्तुएं और तेल दिया, कि वे फ़ारस के राजा कोरेश की अनुमति के अनुसार
लबानोन के समुद्रतट पर स्थित योप्पा तक लकड़ी पहुंचा दें. 8 उनके येरूशलेम
में परमेश्वर के भवन को पहुंचने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में शिअलतिएल के
पुत्र ज़ेरूब्बाबेल तथा योज़ादक के पुत्र येशुआ ने तथा उनके सारे पुरोहित भाइयों
तथा लेवियों ने तथा उन सभी ने, जो बंधुआई से येरूशलेम आ चुके थे, काम
शुरू कर दिया. उन्होंने याहवेह के भवन को दोबारा बनाने के काम के लिए ऐसे
लेवियों को चुना, जिनकी आयु बीस वर्ष से अधिक थी. 9 इसके बाद येशुआ ने
अपने पुत्रों तथा रिश्तेदारों के साथ मिलकर कदमिएल तथा उसके पुत्र के
साथ, यहूदाह के पुत्रों के साथ तथा हेनादाद, उसके पुत्रों तथा रिश्तेदारों के
साथ मिलकर, जो लेवी थे, परमेश्वर के भवन के कारीगरों की निगरानी की
जवाबदारी ले ली. 10 जब राजमिस्त्रियों ने याहवेह के भवन की नींव डाल दी,
तब पुरोहित अपने कपड़ों में शोफ़ार नरसिंगे लेकर खड़े हो गए, लेवी तथा
आसफ के पुत्र झांझें लेकर इस्राएल के राजा दावीद द्वारा बताई गई विधि के
अनुसार याहवेह की स्तुति करने के लिए तैयार हो गए. 11 जब याहवेह के भवन
की नींव रखी गई तब उनकी स्तुति का विषय था, "याहवेह भले हैं; तथा
इस्राएल पर उनका अपार प्रेम सदाकाल का है." उन्होंने अपने गीतों में स्तुति
और आभार प्रकट किए. उपस्थित सारे समुदाय ने उनके गीतों पर बहुत ही ऊंचे
शब्द में याहवेह का जय जयकार किया. 12 जबकि वे बूढ़े व्यक्ति, जिन्होंने
पहले के भवन को देखा था, अनेक पुरोहित, लेवी एवं मुख्य प्रधान, इस भवन
की नींव के रखे जाने पर उसे देखकर ऊंची आवाज में रो रहे थे जबकि कुछ
खुशी से जय जयकार कर रहे थे. 13 परिणामस्वरूप रोने की आवाज और खुशी
की आवाज में अंतर पहचानना असंभव हो गया; क्योंकि लोग बहुत ही ऊंची
आवाज में जय जयकार कर रहे थे. यह आवाज दूर तक सुनाई दे रही थी.

4 जब यहूदिया तथा बिन्यामिन प्रदेश के शत्रुओं को यह मालूम चला, कि
बंधुआई से लौट आए लोग इस्राएल के याहवेह परमेश्वर के लिए भवन बना
रहे हैं, 2 तब उन्होंने ज़ेरूब्बाबेल तथा कुल के प्रधानों से जाकर विनती की,
"हमें अनुमति दीजिए कि हम इस भवन बनाने के काम में आप लोगों के साथ
जुट जाएं; क्योंकि आपके समान हम भी आपके ही परमेश्वर के आराधक हैं;
हम अश्शूर के राजा एसारहद्दन के शासनकाल से इन्हीं परमेश्वर के लिए बलि
चढ़ाते आ रहें हैं, जो हमें यहां लेकर आए हैं." 3 किंतु ज़ेरूब्बाबेल, येशुआ
तथा कुल के प्रधानों ने उन्हें उत्तर दिया, "तुममें तथा हममें हमारे परमेश्वर
के लिए भवन बनाने के संबंध में कुछ भी संबंध नहीं है. इस्राएल के याहवेह
के लिए हम ही मिलकर यह बनाएंगे, जैसा कि फारस के राजा कोरेश ने हमें
आज्ञा दी है." 4 यह देख उस देश के लोग यहूदाह के वंशजों को ड़राते हुए
इस काम में रुकावट डालने लगे. 5 इस उद्देश्य से उन लोगों ने फारस देश के
मंत्रियों को घूस दे दी, कि वे इस काम में रुकावट पैदा करें, यह सिर्फ फारस के
शासक कोरेश के ही नहीं बल्कि फारस पर दारयावेश के शासन के समय तक
करते रहे. 6 उन्होंने अहषवेरोष के शासनकाल की शुरूआत में ही यहूदिया एवं
येरूशलेम निवासियों के विरुद्ध एक आरोप पत्र लिखकर दिया. 7 अर्तहषस्ता के
शासनकाल में बिशलाम, मिथरेदाथ, तबील तथा उसके बाकी सहयोगियों ने
मिलकर फारस के राजा अर्तहषस्ता को पत्र लिखा. इस पत्र को अरामी भाषा में
लिखा गया था, किंतु इसका अनुवाद किया गया था. 8 तब शासनाधिकारी
रहूम और सचिव शिमशाई ने येरूशलेम के लोगों के विरुद्ध पत्र लिखा. उन्होंने
राजा अर्तहषस्ता को जो लिखा वह यह था: 9 शासनाधिकारी रहूम, सचिव
शिमशाई, तथा तर्पली, अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी लोगों
के न्यायाधीश और महत्वपूर्ण अधिकारियों की ओर से, 10 तथा वे अन्य
लोग जिन्हें महान और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शमरिया के नगरों एवं परात
नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों पर बसाय था. 11 (यह उस पत्र कि
नकल है जिसे उन लोगों ने अर्तहषस्ता को भेजा था.) महाराज अर्तहषस्ता को
महाराज के दास लोग जो परात नदी के पश्चिमी प्रदेश से हैं, 12 महाराज को यह
मालूम हो, कि वे यहूदी, जो आपके द्वारा ही भेजे गए हैं, हमारे क्षेत्र येरूशलेम में
आ चुके हैं. वे उस विद्रोही तथा घिनौने नगर को दोबारा बना रहे हैं. अब वे
शहरपनाह को बनाकर नींव को मजबूत कर रहे हैं. 13 महाराज को यह मालूम
हो, कि यदि उस नगर को दोबारा बना दिया जाएगा और इसकी शहरपनाह बन
गई, तब ये लोग आपको न तो कोई भेंट चढ़ाएंगे, न चुंगी देंगे और न ही कोई
कर, जिससे राजकीय खजाने की बहुत हानि हो जाएगी. 14 इसलिये कि हम
राजमंदिर में काम करते हैं, हम महाराज को अपमानित होते हुए नहीं देख
सकते, सो हम महाराज को इसकी ख़बर दे रहे हैं, 15 कि आप अपने पुरखों की
पुस्तकों में खोज करवाएं, इन पुस्तकों के द्वारा आपको मालूम हो ही जाएगा कि
यह नगर विद्रोही नगर ही रहा है, जिसने बाकी राजाओं की हानि ही की है.
पुराने समय से ही यह नगर राजद्रोह फैलाता ही रहा है, जिसके परिणामस्वरूप
आज यह नगर उजाड़ पड़ा हुआ है. 16 हम महाराज को यह बताने की कोशिश
कर रहे हैं, कि यदि यह नगर दोबारा बन जाएगा, यदि इसकी शहरपनाह दोबारा
बन जाएगी, तो नदी के उस पार के प्रदेश पर आप अपने भाग को खो देंगे. 17
सो राजा ने सेनापति रहूम, शास्त्री शिमशाई तथा शमरिया में तथा नदी के पार के
प्रदेश में चुने हुए उनके बाकी सहयोगियों को यह उत्तर भेजा: आप सभी का
भला हो. 18 आप सभी के द्वारा भेजे गए पत्र का अनुवाद मेरे सामने पढ़ा गया.
19 मेरे द्वारा एक राज आज्ञा दी जा चुकी है तथा इस विषय में खोज भी की गई
है; जिसके परिणामस्वरूप यह बात साफ़ हो चुकी है कि यह नगर पुराने समय से
ही राजविद्रोह करता रहा है तथा इसके द्वारा दंगा और बलवा किया जाता रहा है.
20 प्रतापी राजाओं ने येरूशलेम पर शासन किया है तथा उनका शासन इस नदी
के पार के सभी प्रदेशों पर रहा है तथा इन्हें भेंटें, चुंगी तथा कर दिए जाते रहे हैं.
21 तब अब यह आदेश ज़ारी कर दीजिए कि ये लोग इस कार्य को रोक दें तथा
मेरे आदेश के बिना यह नगर दोबारा बसाने का काम न करें. 22 सावधान रहिए!
इस आदेश के पालन में कोई भी ढिलाई न होने पाए. भला क्या लाभ होगा अगर
राजाओं की हानि का खतरा बढ़ जाएगा? 23 जैसे ही राजा अर्तहषस्ता के पत्र
का अनुवाद रहूम तथा शास्त्री शिमशाई तथा उनके सहयोगियों के सामने पढ़ा
गया, उन्होंने बिना देर किए येरूशलेम जाकर अधिकार का इस्तेमाल करते हुए
ज़बरदस्ती उन यहूदियों को आगे काम करने से रोक दिया. 24 इस प्रकार
येरूशलेम में परमेश्वर के भवन का काम रुक गया-यह काम फारस के राजा
दारयावेश के शासनकाल के दूसरे वर्ष तक रुका रहा.

5 तब भविष्यद्वक्ता हाग्गय तथा इद्दो के पुत्र भविष्यद्वक्ता ज़करयाह ने उन
यहूदियों के लिए, जो यहूदिया तथा येरूशलेम में रह रहे थे, इस्राएल के
परमेश्वर के नाम में भविष्यवाणी की. 2 तब शअलतीएल के पुत्र ज़ेरूब्बाबेल
तथा योज़ादक के पुत्र येशुआ ने येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को बनाने का
काम दोबारा शुरू कर दिया. उन्होंने परमेश्वर के इन भविष्यवक्ताओं का पूरा
साथ था. 3 उसी समय उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई, शेथर-
बोज़नाई तथा इनके सहयोगी आकर उनसे यह पूछने लगे: 4 "किसने तुम्हें इस
भवन को दोबारा बनाने की आज्ञा दी है? परमेश्वर के भवन बनाने वालों के नाम
क्या है?" 5 किंतु बात यह थी, कि उनके परमेश्वर की कृपादृष्टि यहूदियों के
पुरनियों पर बनी थी और वे उन्हें तब तक न रोक सके जब तक यह समाचार
दारयावेश तक न पहुंचा. तब इससे संबंधित उत्तर-पत्र लिखकर दिया गया. 6
उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई तथा शेथर-बोज़नाई तथा उसके
सहयोगी अधिकारियों ने मिलकर राजा दारयावेश को एक पत्र भेजा. 7 पत्र में
उन्होंने यह लिखकर भेजा: महाराज दारयावेश: आप सभी का भला हो. 8
महाराज को यह मालूम हो कि हमने यहूदिया प्रदेश के, महान परमेश्वर के भवन

का निरीक्षण किया है, जिसको विशालकाय पत्थरों से बनाया जा रहा है. इसकी
शहरपनाह को लकड़ी से मजबूत किया जा रहा है, सारा काम बहुत ही तेजी से
किया जा रहा है, और उनका यह काम सफल भी होता जा रहा है. **9** यह
देखकर हमने उन पुरनियों से प्रश्न किया, "किसके आदेश से आप यह भवन बना
रहे हैं और इसका काम पूरा करते जा रहे हैं?" **10** आपको बताने के उद्देश्य से
हमने उनके नाम भी पूछ लिए, इसलिये भी कि हम उनके अधिकारियों के नाम
पत्र में लिख सकें. **11** उन्होंने हमें यह उत्तर दिया: "हम तो स्वर्ग तथा पृथ्वी के
परमेश्वर के सेवक हैं और उस भवन को दोबारा बना रहे हैं, जिसको कई वर्षों
पहले बनाया गया था, इस्राएल के एक प्रतापी राजा के द्वारा. **12** सिर्फ इसलिये
कि हमारे पुरखों ने स्वर्ग के परमेश्वर के क्रोध को भड़का दिया था, परमेश्वर ने
उन्हें बाबेल के कसदी राजा नबूकदनेज्ज़र के अधीन कर दिया, जिसने इस
भवन को खत्म कर दिया तथा देशवासियों को बाबेल में बंदी बना लिया था. **13**
"फिर भी, बाबेल के राजा महाराज कोरेश ने अपने शासन के पहले वर्ष में यह
राज आज्ञा दे दी, कि परमेश्वर के भवन को दोबारा बनाया जाए. **14** इसके
अलावा परमेश्वर के भवन जो येरूशलेम में था जिसके सोने और चांदी के बर्तन
जिसे नबूकदनेज्ज़र द्वारा ले जाए गए वे भी महाराज कोरेश के आदेश से बाबेल
के भवन से निकाल लिए गए तथा शेशबाज्ज़र नामक व्यक्ति को सौंप दिए गए.
इस व्यक्ति को राज्यपाल बनाया गया था. **15** महाराज ने ही उसे आदेश दिया
था, 'इन बर्तनों को ले जाकर येरूशलेम के भवन में जमा कर दो तथा परमेश्वर
के भवन को दोबारा अपने स्थान पर बनाया जाए.' **16** "तब इसी शेशबाज्ज़र ने
येरूशलेम आकर परमेश्वर के भवन की नींव रखी थी. उसी समय से अब तक
यह बन रहा हैं यह कार्य अब तक खत्म नहीं हुआ है." **17** अब यदि महाराज
चाहें तो बाबेल में राजकीय खजाने में खोज की जाए, कि येरूशलेम में परमेश्वर
के भवन को दोबारा बनाने की राज आज्ञा राजा कोरेश द्वारा दी गई थी या नहीं.
तब महाराज इस विषय पर अपना निर्णय हमें दे दें.

6 तब राजा दारयावेश ने एक राजाज्ञा प्रसारित की और अभिलेखागार में खोज
की गई जहां बाबेल में मूल्यवान वस्तुएं संग्रहीत की जाती थी. **2** मेदिया
प्रदेश के एकबताना गढ़ में एक चर्मपत्र प्राप्त हो गया जिसमें लिखी विषय-वस्तु
इस प्रकार थी: स्मारक पत्र: **3** राजा कोरेश के शासन के प्रथम वर्ष में राजा
कोरेश ने यह राजाज्ञा प्रसारित की: येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को, जहां
बलियां अर्पित की जाती हैं, पुनर्निर्मित किया जाए. इसकी नींवों को पूर्ववत ही
रखा जाए. इसकी ऊंचाई सत्ताईस मीटर तथा चैड़ाई सत्ताईस मीटर होगी. **4**
इसके लिए विशालकाय शिलाओं के तीन स्तर तथा एक स्तर काठ का होगा
इसके लिए आवश्यक धनराशि राजकीय कोष से प्रदान की जाए. **5** इसके
अतिरिक्त परमेश्वर के भवन के वे सभी स्वर्ण एवं रजत पात्र जो नबूकदनेज्ज़र
द्वारा येरूशलेम भवन से बाबेल लाए गए थे येरूशलेम के इसी भवन में यथास्थान
रख दिए जाएं, तुम इन सभी को परमेश्वर के भवन में रख दोगे. **6** तब अब नदी
के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई, शेथर-बोज़नाई तथा तुम्हारे सहकर्मी,
नदी के पार के प्रदेशों के अधिकारियों, इस स्थान से दूर रहो! **7** परमेश्वर के
भवन के कार्य के साथ कोई छेड़-छाड़ न की जाए. यहूदी राज्यपाल तथा
यहूदियों के पुरनियों को परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण का कार्य उसके नियत
स्थान पर करने दिया जाए. **8** इसके अतिरिक्त मैं एक राजाज्ञा प्रसारित कर रहा
हूं कि तुम्हें परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण में संलग्न यहूदियों के पुरनियों से
कैसा व्यवहार करना होगा: नदी के पार के प्रदेशों से प्राप्त कर में से इन लोगों
को राजकीय खजाने से बिना रुके या देर किए धन प्रदान किया जाए. **9** उनकी
गेहूं, नमक, दाखमधु और तेल की आवश्यकता चाहे जितनी भी हो, स्वर्ग के
परमेश्वर के लिए होमबलि अर्पण के निमित्त बछड़े, मेढ़े, मेमने, गेहूं, लवण,
द्राक्षारस तथा अभिषेक का तेल जैसा कि येरूशलेम के पुरोहितों का आग्रह है,
उन्हें प्रतिदिन बिना चूक प्रदान किया जाता रहे. **10** कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को
बलिदान अर्पित करते हुए राजा एवं उसके पुत्रों के जीवन के लिए प्रार्थना कर
सकें. **11** मैं यह राजाज्ञा भी प्रसारित कर रहा हूं: यदि कोई व्यक्ति इस राजाज्ञा
का उल्लंघन करेगा, उसके घर से काठ की बल्ली खींची जाएगी, उसे इस पर
मृत्यु दंड दिया जाएगा, तथा इसके कारण उसके आवास को कूड़े का ढेर बना
दिया जाएगा. **12** वह परमेश्वर, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा को वहां बनाकर रखा है,
ऐसे किसी भी राजा या प्रजा को गिरा दें, जो इस राजाज्ञा को इसलिये टालने
का प्रयास करता है कि येरूशलेम में परमेश्वर के इस आवास को नाश किया
जा सके. मैं दारयावेश हूं, जिसने यह राजाज्ञा प्रसारित की है. इसका वस्तुतः
पालन पूर्ण सावधानी से किया जाए! **13** उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल
तत्तेनाई, शेथर-बोज़नाई तथा उनके सहकर्मियों ने पूर्ण सावधानी में इस आदेश
का पालन किया, जैसा जैसा राजा दारयावेश का आदेश था. **14** यहूदियों के
पुरनियों ने भविष्यद्वक्ता हाग्गय तथा इद्दो के पुत्र ज़करयाह की भविष्यवाणी के
अनुरूप यह निर्माण पूरा करने में सफलता हासिल की. इस निर्माण का पूर्ण होना
इस्राएल के परमेश्वर के आदेश तथा फारस के राजा कोरेश, दारयावेश तथा
अर्तहषस्ता की राजाज्ञा के अनुसार हुआ. **15** भवन पुनर्निर्माण का यह कार्य
अदर माह की तीसरी तिथि पर पूर्ण हुआ. यह राजा दारयावेश के शासन का
छठा वर्ष था. **16** इस्राएल वंशज, पुरोहित, लेवी तथा शेष रहनेवालों ने बड़े ही
आनंदपूर्वक परमेश्वर के भवन के अर्पण के उत्सव को मनाया. **17** परमेश्वर के
इस भवन के अर्पण-उत्सव में उन्होंने 100 बछड़े, 200 मेढ़े, 400 मेमने
अर्पित किए तथा इस्राएल के निमित्त पापबलि करके 12 बकरे इस्राएल के बारह
गोत्रों के अनुसार अर्पित किए. **18** तब उन्होंने अपने-अपने विभागों के लिए
पुरोहित तथा क्रम के अनुसार लेवी भी येरूशलेम में परमेश्वर की सेवा के लिए
नियुक्त कर दिए—जैसा कि मोशेह लिखित विधान में निर्दिष्ट है. **19** वे जो
रहनेवाले थे, उन्होंने प्रथम माह के चौदहवें दिन फ़सह उत्सव को मनाया. **20**
क्योंकि पुरोहितों एवं लेवियों ने साथ ही अपने को पवित्र कर लिया था. वे सभी
अब संस्कार के अनुसार शुद्ध किए गये थे. तब उन्होंने सभी रहनेवालों के लिए
फ़सह मेमना वध किया सहपुरोहितों के लिए तथा स्वयं अपने लिए. **21** इस्राएल
वंशज, जो निर्वासन से लौट आए थे तथा वे सभी, जिन्होंने स्वयं को उस देश
की अशुद्धताओं से अलग कर लिया था, उनके साथ हो गए थे, कि वे याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर की खोज करें; इन्होंने फ़सह के भोज का सेवन किया. **22**
तब उन्होंने बड़े ही आनंदपूर्वक सात दिन खमीर रहित रोटी का उत्सव भी
मनाया, याहवेह ने उन्हें आनंदित किया था. याहवेह ने ही अश्शूर के राजा का
हृदय उनकी ओर फेर दिया था कि वह उन्हें, इस्राएल के परमेश्वर के भवन के
कार्य के लिए सहायता करें.

7 इन घटनाओं के बाद फारस के राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल में एज्रा
बाबेल से लौट आए. एज्रा सेराइयाह के पुत्र थे, सेराइयाह अज़रियाह का,
अज़रियाह हिलकियाह का, हिलकियाह शल्लूम का, **2** शल्लूम सादोक का,
सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमरियाह का, **3** अमरियाह अज़रियाह का,
अज़रियाह मेराइओथ का, **4** मेराइओथ ज़ेराइयाह का, ज़ेराइयाह उज्जी का,
उज्जी बुक्की का, **5** बुक्की अबीशुआ का, अबीशुआ फिनिहास का, फिनिहास
एलिएज़र का, एलिएज़र प्रमुख पुरोहित अहरोन का पुत्र था. **6** एज्रा बाबेल से
लौट आए. वह मोशेह को याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के द्वारा सौंपी गई
व्यवस्था के विशेषज्ञ थे. याहवेह, उनके परमेश्वर का आशीर्वाद एज्रा पर बना
हुआ था, तब राजा ने उन्हें वह सब दिया, जिस जिस वस्तु का उन्होंने मांगा था.
7 कुछ इस्राएली, कुछ पुरोहित, लेवी, गायक, द्वारपाल तथा भवन के कर्मचारी
राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल के सातवें वर्ष में येरूशलेम पहुंचे. **8** स्वयं एज्रा
राजा के शासनकाल के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में येरूशलेम पहुंचे. **9**

उन्होंने बाबेल से अपनी यात्रा पहले महीने के पहले दिन से शुरू की थी तथा वह
पांचवें महीने के पहले दिन येरूशलेम पहुंच गए थे, क्योंकि उनके परमेश्वर की
कृपादृष्टि उन पर बनी हुई थी. 10 एज़्रा ने स्वयं को याहवेह की व्यवस्था के
अध्ययन, स्वयं उसका पालन करने तथा इस्राएल राष्ट्र में याहवेह की विधियों
और नियमों की शिक्षा देने के लिए समर्पित कर दिया था. 11 पुरोहित, विधि-
विशेषज्ञ, याहवेह द्वारा इस्राएल के लिए ठहराए गए उन आदेशों और विधियों में
प्रशिक्षित एज़्रा को राजा अर्तहषस्ता ने जो राजा कि आज्ञा सौंपी थी उसकी
नकल यह है: 12 अर्तहषस्ता, राजा की, ओर से एज़्रा को, जो पुरोहित और
स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के गुरू हैं, नमस्कार. 13 मैंने इसी समय एक
राजा की आज्ञा दी है, कि मेरे राज्य में इस्राएल देश का कोई भी नागरिक, उनके
पुरोहित और लेवी यदि चाहें तो आपके साथ येरूशलेम जाने के लिए स्वतंत्र हैं.
14 क्योंकि आप राजा द्वारा आपके ही परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, जो
आपके ही पास है, यहूदिया प्रदेश तथा येरूशलेम के विषय में पूछताछ करने के
उद्देश्य से राजा के सात मंत्रियों के साथ वहां भेजे जा रहे हैं, 15 कि आप अपने
साथ राजा और उनके मंत्रियों द्वारा इस्राएल के परमेश्वर को, जिनका निवास
येरूशलेम में है, भेंट में चढ़ाया जानेवाला सोना और चांदी भी ले जाएं. 16 आप
वह सारा सोना और चांदी, जो आपको पूरे बाबेल राज्य में से मिलेगा और वे
भेंटें, जो इस्राएली और उनके पुरोहित येरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन
के और उनके पुरोहित येरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन के निमित्त देंगे,
अपने साथ ले जाएंगे. 17 तब इस धनराशि से आप बड़ी ही सावधानीपूर्वक
बछड़े, मेढ़े तथा मेमने खरीदेंगे और उनकी अग्निबलियों तथा पेय बलियों को
येरूशलेम में अपने परमेश्वर के भवन की वेदी पर चढ़ाएंगे. 18 बचे हुए चांदी
और सोने का उपयोग कैसे किया जाए, यह आप अपने परमेश्वर की इच्छा के
अनुसार और अपने भाइयों की सहमति के अनुसार कर सकते हैं. 19 इसके
अलावा वे बर्तन, जो आपको आपके परमेश्वर के भवन में इस्तेमाल के लिए
सौंपे गए हैं, आप उन सभी बर्तनों को येरूशलेम के परमेश्वर को सौंप देंगे.
20 तब आपके परमेश्वर के भवन के लिए, जो बाकी ज़रूरतें हैं, जिनको पूरा
करना आपकी जवाबदारी है, उसको आप राजकीय खजाने से पूरा कर सकते
हैं. 21 "मैं, हां मैं, राजा अर्तहषस्ता, सभी कोषाध्यक्षों के लिए, जो नदी के
पार के प्रदेश के लिए चुने गए हैं, यह राज आज्ञा दे रहा हूं: स्वर्ग के परमेश्वर
की व्यवस्था के विशेषज्ञ, पुरोहित एज़्रा की चाहे कोई भी ज़रूरत हो, उसको
सावधानी के साथ पूरा किया जाए 22 यहां तक, यदि वह एक सौ तालन्त
चांदी, एक सौ कोर गेहूं, एक सौ बाथ दाखरस, एक सौ बाथ तेल, तथा नमक
आवश्यकतानुसार. 23 स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा, जो कुछ भी आदेश दिया गया है,
वह सब स्वर्ग के भवन के लिए बडे उत्साह के साथ पूरा किया जाए, कि किसी
भी रूप से राजा और उसके पुत्रों के साम्राज्य के विरोध में परमेश्वर का क्रोध न
भड़कने पाए. 24 हम आपको यह भी बताना चाहते हैं, कि आप लोगों को
पुरोहितों, लेवियों, गायकों, द्वारपालों, भवन के कर्मचारियों तथा परमेश्वर के
इस भवन के दासों से न तो कर लेने की, न भेंटे ग्रहण करने की और न चुंगी
लेने की अनुमति है. 25 "एज़्रा, आप, परमेश्वर के द्वारा मिली हुई अपनी बुद्धि
के अनुसार न्यायी और दण्डाधिकारी चुन लीजिए, कि वे नदी के पार के प्रदेश
में प्रजा के विवादों का न्याय करें-उनका भी, जो आपके परमेश्वर की व्यवस्था
को जानते हैं. वे, जो व्यवस्था और विधियों को नहीं जानते हैं, आप उन्हें इनकी
शिक्षा दे सकते हैं. 26 जो कोई आपके परमेश्वर की व्यवस्था और राजा के
नियमों को न माने, उसे कठोरता पूर्वक दंड दिया जाए, चाहे यह मृत्यु दंड हो,
देश निकाला हो, संपत्ति ज़ब्त करना हो या कैद." 27 स्तुति के योग्य हैं याहवेह,
हमारे पुरखों के परमेश्वर, जिन्होंने महाराज के हृदय में इस विषय का विचार
दिया, कि येरूशलेम में याहवेह का भवन संवारा जाए, 28 धन्य हैं याहवेह,
जिन्होंने मुझे महाराज तथा उनके मंत्रियों तथा उनके बड़े-बड़े हाकिमों की दृष्टि
में अपनी कृपा से भर दिया है. इसलिये याहवेह, मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ
पर होने के कारण मुझे बल मिल गया. तब मैंने इस्राएलियों में से ऐसे व्यक्ति चुन
लिए, जो मेरे साथ हाथ बंटाने के लिए येरूशलेम लौट सकें.

8 सम्राट अर्तहषस्ता के शासनकाल में बाबेल से जो लोग मेरे साथ लौटे
थे, उनके पितरों के प्रधान और उनकी वंशावली इस प्रकार: 2 फिनिहास
वंशज; गेरशोम; इथामार-वंशज; दानिएल दावीद के वंशज; हत्तुष 3 शेकानियाह
के वंशज: शेकानियाह, जो पारोश, ज़करयाह में से था तथा उसके साथ 150
पुरुष, जो वंशावली में शामिल थे; 4 पाहाथ-मोआब के वंशज, ज़ेराइयाह के पुत्र,
एलीहोएनाई तथा उसके साथ 200 पुरुष; 5 ज़ट्टू के वंशज; याहाज़िएल के पुत्र
शेकानियाह के वंशज तथा उसके 300 पुरुष; 6 योनातन के पुत्र आदिन, एबेद
तथा उसके साथ 50 पुरुष; 7 एलाम वंशज; अथालियाह के वंशज येशाइयाह
के वंशज तथा उसके साथ 70 पुरुष; 8 शेपाथियाह वंशज; मिखाएल का बेटा
ज़ेबादिया, जिसके साथ 80 लोग थे. 9 योआब वंशज; येहिएल का बेटा
ओबदिया, जिसके साथ 218 लोग थे. 10 शेलोमीथ वंशज; योसिब्याह का
बेटा जिसके साथ 160 लोग थे. 11 बेबाइ वंशज; बेबाइ का बेटा ज़करयाह,
जिसके साथ 28 लोग थे 12 अजगाद वंशज; हक्कातान का बेटा योहानन,
जिसके साथ 110 लोग थे. 13 अदोनिकम वंशज; जो लोग उसके साथ गए थे
उनके नाम ये है एलिफेलेत, येइएल, और शेमायाह, और उनके साथ 60 लोग
थे. 14 बिगवाई वंशज; उथाई और ज़क्कूर थे और उनके साथ 70 लोग थे. 15
इसके बाद मैंने इन्हें अहावा की दिशा में बहने वाली नदी के तट पर इकट्ठा
किया. हमने वहां तीन दिनों के लिए डेरे डाल दिए. जब मैंने इन लोगों का
निरीक्षण किया तो मुझे यह मालूम हुआ, कि इन लोगों में एक भी लेवी न था.
16 सो मैंने एलिएज़र, अरीएल, शेमायाह, एल-नाथान, यारिब, एलनाथन,
नाथान, ज़करयाह तथा मेशुल्लाम को, जो प्रधान थे तथा योइआरिब तथा
एलनाथन, जो शिक्षक थे, बुलवा लिया. 17 इन सभी को मैंने कासिफिया नामक
स्थान के अधिकारी के पास भेज दिया. मैंने उन्हें विशेष निर्देश दिए कि उन्हें इद्दो
तथा उसके संबंधियों के सामने क्या कहना होगा, ये सभी कासिफिया में भवन
के कर्मचारी थे तथा इनसे यह उम्मीद थी कि ये परमेश्वर के भवन के लिए हमें
सेवक देंगे. 18 हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि होने के कारण उन्होंने हमारे सामने
इस्राएल के पुत्र लेवी के वंशज माहली के पुत्रों में से एक ऐसा व्यक्ति दिया, जो
सक्षम व्यक्ति था, अर्थात् शेरेबियाह तथा उसके पुत्रों और रिश्तेदारों में से एक-
ये अठारह व्यक्ति थे; 19 और हशाबियाह को और उसके संग मेरारी के वंश में
से येशाइयाह को और उसके पुत्रों और भाइयों को अर्थात् बीस जनों को; 20
और नतीन लोगों में से जिन्हें दावीद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा करने को
ठहराया था, दो सौ बीस नतिनों को ले आए. इन सभी के नाम लिखे हुए थे. 21
इसके बाद मैंने अहावा नदी के तट पर उपवास की घोषणा की, कि हम स्वयं को
अपने परमेश्वर के सामने नम्र बनाएं और उनसे अपने लिए इस यात्रा में, अपनी,
अपने बालकों तथा वस्तुओं की सुरक्षा की प्रार्थना करें. 22 मार्ग में शत्रुओं से
सुरक्षा के उद्देश्य से महाराज से सैनिकों और घुड़सवारों की याचना करने में मुझे
संकोच हो रहा था, क्योंकि हम महाराज से यह कह चुके थे "हमारे परमेश्वर
की कृपादृष्टि उन सभी पर बनी रहती है, जो उनकी खोज में लगे रहते हैं, उनका
सामर्थ्य और उनका क्रोध उन सबके विरुद्ध हो जाता है, जो उनको त्याग देते
हैं." 23 सो हमने उपवास किया तथा इस विषय में परमेश्वर की इच्छा जानने
की कोशिश की और उन्होंने हमारी सुन ली. 24 इसके बाद मैंने बारह मुख्य
पुरोहितों को इस काम के लिए चुना: शेरेबियाह, हशाबियाह तथा उनके साथ
दस दूसरे पुरोहित, 25 मैंने चांदी, सोने और उन सभी बर्तनों को तौला तथा
राजा, उनके मंत्रियों, उनके शासकों तथा वहां उपस्थित सारी इस्राएल द्वारा

प्रस्तुत भेंटों को उन्हें सौंप दिया. 26 इस प्रक्रिया में मैंने माप कर 650 तालन्त
चांदी और बर्तन, जिनका मान 100 तालन्त था तथा सोने के 100 तालन्त 27
तथा 20 सोने के कटोरे, जिनका मूल्य था 1,000 दारिक तथा दो बर्तन
कीमती चमकीले कांसे के सोने के समान कीमती. 28 इसके बाद मैंने उन्हें यह
याद दिलाते हुए चेताया, “आप लोग याहवेह के लिए पवित्र, अलग किए हुए
लोग हैं, वैसे ही ये बर्तन भी पवित्र हैं तथा चांदी, सोने और स्वेच्छा भेंटे भी, जो
याहवेह, आपके पूर्वजों के परमेश्वर को चढ़ाई गई हैं. 29 इनकी रखवाली करते
हुए इन्हें सुरक्षित रखिए तथा येरूशलेम पहुंचकर इन्हें प्रधान पुरोहितों, लेवियों
तथा इस्राएल के गोत्रों के प्रधानों को याहवेह के भवन के कमरों में ले जाकर
सौंप देना.” 30 सो पुरोहितों तथा लेवियों ने वे तौले हुए चांदी, सोने और बर्तनों
को येरूशलेम में हमारे परमेश्वर के भवन तक ले जाना स्वीकार कर लिया. 31
इसके बाद हमने पहले महीने की बारहवीं तारीख को अहावा नदी के तट के
पड़ाव से येरूशलेम के लिए कूच किया. हम पर परमेश्वर की कृपादृष्टि बनी हुई
थी, तब उन्होंने शत्रुओं एवं मार्ग में घात लगाए हुए डाकुओं से हमारी रक्षा की.
32 हम येरूशलेम पहुंच गए तथा वहां तीन दिन ठहरे रहे. 33 चौथे दिन चांदी,
सोने और बर्तन भवन में जाकर पुरोहित उरियाह के पुत्र मेरेमोथ को तौलकर
सौंप दिए गए. इसका गवाह था, फिनिहास का पुत्र एलिएज़र तथा इन दोनों के
अलावा वहां लेवी येशुआ का पुत्र योज़ाबाद तथा बिन्नूइ का पुत्र नोआदिया भी
उपस्थित थे. 34 हर एक वस्तु गिनी और तौली हुई थी तथा उनका तौल उसी
समय वहां लिख लिया गया था. 35 बंधुआई से लौट आए पहले के बंदियों ने
इस्राएल के परमेश्वर को होमबलि चढ़ाई: पूरे इस्राएल के लिए 12 बछड़े, 96
मेढ़े, 77 मेमने, पापबलि के लिए 12 बकरे, ये सभी याहवेह के लिए होमबलि
के लिए चढ़ाए गए. 36 इसके बाद उन्होंने नदी के पार के प्रदेशों में राज्यपालों
और प्रशासकों को राजा कि आज्ञा सौंप दी और उनकी ओर से परमेश्वर के
भवन से संबंधित सहायता प्राप्त होने लगी.

9 जब यह सब पूरा हो चुका, प्रशासकों ने आकर मुझसे कहा, “इस्राएलियों ने,
पुरोहितों ने तथा लेवियों ने स्वयं को इस देश के मूल निवासियों, कनानियों,
हित्तियों, परिज़्ज़ियों, यबूसियों, अम्मोनियों, अमोरी तथा मोआबियों की
घृणित जीवनशैली से अलग नहीं रखा है. 2 क्योंकि उन्होंने उनकी कुछ
कन्याओं से विवाह कर लिया है तथा कुछ का विवाह अपने पुत्रों से कर दिया
है; परिणामस्वरूप यह पवित्र, अलग किया हुआ राष्ट्र इन राष्ट्रों में मिल चुका है.
सच तो यह है कि शासक और अधिकारी इस विश्वासघात में सबसे आगे रहे
हैं.” 3 यह सुनकर मैंने अपना वस्त्र और बागा फाड़ दिया तथा सिर के कुछ बाल
तथा दाढ़ी के कुछ बाल भी नोच दिए और निराश होकर बैठ गया. 4 उस समय
वे सभी, जो इन बंधुआई से आए लोगों के इस विश्वासघात के कारण भयभीत हो
गए थे, मेरे पास इकट्ठे हो गए. मैं शाम तक निराश बैठा रहा. 5 जब सांझ की
बलि का समय हो गया, मैं अपने विलाप की दशा से उठा. मेरे वे वस्त्र फटे हुए ही
थे; मैंने घुटनों पर आ याहवेह, अपने परमेश्वर की ओर हाथ बढ़ा दिए 6 और
यह दोहाई दी: “मेरे परमेश्वर, मैं इतना लज्जित और परेशान हूं, कि मैं आपकी
ओर आंख तक नहीं उठा सकता, मेरे परमेश्वर, हमारा अधर्म तो हमारे सिरों से
भी ऊपर उठ चुका है तथा हमारे दोष तो आकाश तक पहुंच चुके हैं. 7 हमारे
पूर्वजों के समय से लेकर आज तक हम घोर दोष में डूबे हुए हैं, हमारे अधर्म के
कारण हमें, हमारे राजाओं को तथा हमारे पुरोहितों को अन्य राष्ट्रों की तलवार,
बंधुआई, लूट तथा लज्जा का सामना करना पड़ा है तथा यह स्थिति आज भी
वही है. 8 “किंतु अब, याहवेह हमारे परमेश्वर ने कुछ समय के लिए हम पर
कृपादृष्टि की है. आपने हमारे लिए एक भाग छोड़ रखा है, कि हमें आपके
पवित्र स्थान में जगह मिल सके, कि परमेश्वर हमारी आंखों में नई रोशनी देकर
हमारी बंधुआई में हमें कुछ शांति दें. 9 क्योंकि सच यह है कि हम तो सिर्फ दास
ही हैं; फिर भी परमेश्वर ने हमें छोड़ नहीं दिया, बल्कि हमें फारस के राजाओं
की नज़रों में दया प्रदान की है, कि हम ताज़गी पाकर अपने परमेश्वर के भवन
को दोबारा बना सकें, कि हम खंडहरों को सुधारते हुए यहूदिया एवं येरूशलेम के
लिए शहरपनाह खड़ी कर सकें. 10 “अब, हमारे परमेश्वर, इसके बाद हमारे
सामने कहने के लिए कुछ भी बचा नहीं है. हमने तो आपकी आज्ञाएं तोड़ दी
हैं, 11 जो हमें आपने अपने सेवकों, उन भविष्यवक्ताओं के द्वारा इन शब्दों में
दी थी ‘तुम लोग जिस देश पर अधिकार करने के लक्ष्य से उसमें प्रवेश कर रहे
हो, एक अशुद्ध देश है, जिसे उन राष्ट्रों के लोगों ने अशुद्ध कर दिया है, उनके
घिनौने कामों ने इस देश को एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी ही अशुद्धताओं से
भर दिया है. 12 इसलिये अब न तो अपनी पुत्रियां उनके पुत्रों की पत्नियां होने के
लिए दोगे और न ही उनकी पुत्रियां अपने पुत्रों की पत्नियां होने के लिए लोगे.
कभी भी उनकी शांति की दिशा में कोई कोशिश न करना और न उनके बलवंत
होने के लिए कोई सहायता ही देना. इससे तुम बलवान होते जाओगे तथा भूमि
की सबसे अच्छी उपज को खाते हुए, अपनी संतानों के लिए सदा की मीरास
छोड़ सकोगे.’ 13 “जबकि सच यही है कि हम पर यह स्थिति सिर्फ हमारे ही
बुरे कामों और घोर अपराधों के कारण आई है. इतना होने पर भी परमेश्वर,
आपने हमारे अधर्म के प्रति सही दंड देने में धीरज बनाए रखा और हमें यह भाग
सौंप दिया है. 14 क्या हमारा दोबारा आपके आदेशों को त्याग कर घृणित जीवन
बिताने वाले लोगों के साथ वैवाहिक संबंध रखना सही होगा? क्या आपका हम
पर क्रोधित होना, हां, यहां तक क्रोधित हो जाना, जिससे आपके द्वारा हमें नाश
कर देने में कुछ बाकी न रह जाए और न ही कोई रह जाए. 15 याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर, आप तो धर्मी हैं. हम तो सिर्फ आज यहां बच निकले भाग ही है.
हम स्वीकार करते हैं हम आपके सामने दोषियों के रूप में उपस्थित हैं, जबकि
इस स्थिति में तो कोई भी आपके सामने ठहर नहीं सकता.”

10 जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने भूमि पर दंडवत कर प्रार्थना करते
हुए पाप स्वीकार करते हुए रो रहे थे, इस्राएल के पुरुषों, स्त्रियों एवं
बालकों की एक बहुत बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठी हो चुकी थी. वे सभी फूट-
फूटकर रो रहे थे. 2 एलाम कुल के येहिएल के पुत्र शेकानियाह ने एज्रा से कहा,
“हम अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे हैं और हमने इस देश के
लोगों में से विदेशी स्त्रियों से विवाह कर लिया है. यह सब होने पर भी इस्राएल
के लिए अब एक ही आशा बची है. 3 इसलिये अब आइए हम अपने परमेश्वर
से वाचा बांधें तथा अपनी सभी पत्नियों तथा उनसे पैदा बालकों को छोड़ दें-जैसा
कि मेरे प्रधान तथा उनका जिन्हें परमेश्वर के इस आदेश के प्रति पूर्ण विश्वास है,
उनकी सलाह है. यह सब व्यवस्था के अनुसार ही पूरा किया जाए. 4 आप
तैयार हो जाइए! क्योंकि यह अब आपकी ही जवाबदारी है. हम आपके साथ
हैं. आप साहस के साथ इसको कीजिए.” 5 यह सुन एज्रा उठे तथा सभी अगुए
पुरोहितों, लेवियों तथा सारे इस्राएल को यह शपथ लेने के लिए प्रेरित किया कि
वे इस प्रस्ताव के अनुसार ही करेंगे. इसलिये उन्होंने यह शपथ ली. 6 तब
एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से उठे और एलियाशिब के पुत्र येहोहानन के
कमरे में चले गए. वह उस कमरे में चले ज़रूर गए मगर उन्होंने वहां न कुछ
खाया और न कुछ पिया; क्योंकि वह निकाले गए लोगों द्वारा किए गए इस
विश्वासघात के लिए दुःखी थे. 7 उन सभी ने सारे यहूदिया तथा येरूशलेम में
निकालकर लाए लोगों के लिए यह घोषणा की, कि उन्हें येरूशलेम में इकट्ठा
होना है, 8 तथा जो कोई प्रधानों और प्राचीनों की सलाह के अनुसार तीन दिनों
के भीतर वहां उपस्थित न होगा, उसकी सारी संपत्ति ज़ब्त कर ली जाएगी तथा
स्वयं उसे बंधुआई से निकल आए लोगों की सभा से निकाल दिया जाएगा. 9
तब यहूदिया तथा बिन्यामिन के सारे पुरुष तीन दिनों के अंदर येरूशलेम में इकट्ठा
होने को गए. यह अवसर था नवें महीने की बीसवीं तारीख का. सभी इस

अवसर पर परमेश्वर के भवन के सामने खुले आंगन में बैठे हुए थे. इस विषय
के कारण वे भयभीत थे तथा मूसलाधार बारिश भी हो रही थी, तब उन पर
कंपकंपी छाई हुई थी. 10 पुरोहित एज़्रा खड़े हो गए तथा उन्हें संबोधित करने
लगे, "आप लोगों ने विश्वासघात किया और विदेशी स्त्रियों से विवाह करने
के द्वारा आपने इस्राएल पर दोष बढ़ा दिया है. 11 तब यही मौका है कि आप
लोग याहवेह अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करें,
तथा उनकी संतुष्टि के लिए उपयुक्त कदम उठाएं. स्वयं को इस देश के मूल
निवासियों से तथा विदेशी स्त्रियों से अलग कर लीजिए." 12 ऊंची आवाज में
उपस्थित भीड़ ने घोषणा की, "जो आज्ञा! जो कुछ आपने कहा है हम वही
करेंगे. 13 किंतु हम लोगों की संख्या बड़ी है, फिर यह बरसात ऋतु है, तब हम
खुले में खड़े न रह सकेंगे. इसके अलावा यह काम ऐसा नहीं, जो एक अथवा
दो दिनों में पूरा हो जाए, क्योंकि हमारे पाप बहुत ही भयंकर हो चुके है. 14
हमारे प्रधान सारी सभा की अगुवाई करें तथा वे सभी नगरवासी जिनकी विदेशी
पत्नियां हैं, निर्धारित अवसर पर हर एक नगर के प्राचीनों एवं न्यायाध्यक्षों के
साथ यहां आ जाएं, कि इस विषय के कारण हमारे परमेश्वर का यह भड़का हुआ
क्रोध हम पर से शांत हो जाए." 15 इस प्रस्ताव का विरोध सिर्फ दो व्यक्तियों
ने किया: आसाहेल के पुत्र योनातन तथा तिकवाह के पुत्र याहाज़िएल. लेवी
शब्बेथाइ ने इन दोनों का समर्थन किया. 16 उन सभी बंधुआई से आए लोगों
ने एज़्रा द्वारा सुझाई गई योजना का समर्थन किया. पुरोहित एज़्रा ने नामों का
उल्लेख करते हुए पितरों के प्रधानों को चुना. ये सभी दसवें महीने के पहले दिन
इस विषय से संबंधित सच्चाईयों का परीक्षण करने इकट्ठा हो गए. 17 विदेशी
स्त्रियों से विवाहित सभी पुरुषों का परीक्षण पहले महीने की पहली तारीख पर
पूरा हो गया. 18 पुरोहितों के उन पुत्रों में से वे, जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह
कर लिया था: ये थे योज़ादक का पुत्र येशुआ तथा उसके भाई: मआसेइयाह,
एलिएज़र, यारिब तथा गेदालियाह. 19 उन्होंने शपथ ली कि वे अपनी पत्नियों
को छोड़ देंगे. तब इसलिये कि वे दोषी थे, उन्होंने भेड़-बकरियों में से इस दोष
से छूटने के लिए एक मेढ़े की बलि चढ़ाई. 20 इम्मर के पुत्रों में से थे: हनानी
तथा ज़ेबादिया. 21 हारिम के पुत्रों में से थे: मआसेइयाह, एलियाह, शेमायाह,
येहिएल तथा उज्जियाह. 22 पशहूर के पुत्रों में से: एलिओएनाइ, मआसेइयाह,
इशमाएल, नेथानेल, योज़ाबाद तथा एलासाह. 23 लेवियों में से थे: योज़ाबाद,
शिमेई, केलाइयाह (अर्थात्, केलिता), पेथाइयाह, यहूदाह तथा एलिएज़र. 24
गायकवृन्दों में से था: एलियाशिब; द्वारपालों में शल्लूम, तेलेम तथा उरी.
25 इस्राएल में पारोश के पुत्रों में से थे: रामियाह, इज्ज़ियाह, मालखियाह,
मियामिन, एलिएज़र, मालखियाह तथा बेनाइयाह. 26 एलाम के वंशजों में
से थे: मत्तनियाह, ज़करयाह, येहिएल, अबदी, येरेमोथ तथा एलियाह. 27
ज़त्तू के पुत्रों में से थे: एलिओएनाइ, एलियाशिब, मत्तनियाह, येरेमोथ, ज़ाबाद
तथा आजिजा. 28 बेबाइ के पुत्रों में से थे: येहोहानन, हननियाह, ज़ब्बाई तथा
अथलाइ. 29 बानी के पुत्रों में से थे: मेशुल्लाम, मल्लूख तथा अदाइयाह याशूब,
शेअल तथा येरेमोथ. 30 पाहाथ-मोआब के पुत्रों में से थे: आदना, चेलल,
बेनाइयाह मआसेइयाह, मत्तनियाह, बसलेल, बिन्नूइ तथा मनश्शेह. 31 हारिम
के पुत्रों में से थे: एलिएज़र, इश्शियाह, मालखियाह, शेमायाह, शिमओन, 32
बिन्यामिन, मल्लूख तथा शेमारियाह. 33 हाषूम के पुत्रों में से थे: मत्तेनाइ,
मत्तात्ताह ज़ाबाद, एलिफेलेत, येरेमाई, मनश्शेह तथा शिमेई. 34 बानी के पुत्रों में
से थे: मआघई, अमराम, उएल, 35 बेनाइयाह, बेदेइयाह, चेलुही, 36 वानियाह,
मेरेमोथ, एलियाशिब, 37 मत्तनियाह, मत्तेनाइ, यआसु 38 बानी, बिन्नूइ के पुत्रों
में से थे: शिमेई, 39 शेलेमियाह, नाथान अदाइयाह, 40 माखनादेबाइ, शाशाई,
शाराई, 41 अज़ारेल, शेलेमियाह, शेमारियाह 42 शल्लूम, अमरियाह तथा
योसेफ़. 43 नेबो के पुत्रों में से थे: येइएल, मत्तीथियाह, ज़ाबाद, ज़ेबिना, यद्दाइ,
योएल तथा बेनाइयाह. 44 इन सभी ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था तथा
इनमें से कुछ के इन स्त्रियों से संतान भी पैदा हुई थी.

नहेमायाह

1 यह हाकालियाह के पुत्र नेहेमियाह के वचन हैं. यह घटना बीसवें वर्ष के
किसलेव महीने की है, जब मैं राजधानी शूशन में था, 2 यहूदिया से कुछ
लोग मेरे एक रिश्तेदार हनानी के साथ आए; मैंने उनसे येरूशलेम के बारे में और
उन यहूदियों के बारे में जानकारी पाई, जो बंधुआई से बच निकले थे और जो
अब जीवित थे. 3 उन्होंने मुझे बताया, "वह बचे हुए यहूदी, जो बंधुआई से
जीवित बच निकल आये हैं और जो इस समय उस प्रदेश में रह रहे हैं, वे बड़े दर्द
में और निंदनीय अवस्था में हैं. येरूशलेम की शहरपनाह टूट चुकी है और उसके
प्रवेश फाटक जला दिए जा चुके हैं." 4 यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा और मैं
बहुत दिन रोता रहा; कुछ दिन तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर के सामने उपवास और
प्रार्थना करता रहा. 5 मैंने कहा: "याहवेह, स्वर्ग के परमेश्वर यह मेरी प्रार्थना
है, आप जो महान और आदरणीय परमेश्वर हैं, आप, जो उनके प्रति अपनी
वाचा और अपनी करुणा रखते हैं, जो आपके प्रति अपने प्रेम में अटल और
आज्ञापालन करते हैं, 6 आपके सेवक की प्रार्थना की ओर आपके कान लगे रहें
और आपकी आंखें खुली रहें, कि आप अपने सेवक की प्रार्थना सुनें, मैं आपके
चरणों में आपके सेवक इस्राएल वंशजों की ओर से दिन-रात यह प्रार्थना कर
रहा हूं. इस्राएलियों ने और हमने जो पाप आपके विरुद्ध किए हैं, उन्हें मैं स्वीकार
कर रहा हूं. मैंने और मेरे पिता के परिवार ने पाप किए हैं. 7 हमारा आचरण
आपके सामने बहुत ही दुष्टता से भरा रहा है. हमने आपके आदेशों का पालन
नहीं किया है, न ही हमने आपके नियमों और विधियों का पालन ही किया है,
जिनका आदेश आपने अपने सेवक मोशेह को दिया था. 8 "आप अपने उस
आदेश को याद कीजिए, जो आपने अपने सेवक मोशेह को इस प्रकार दिया था:
'यदि तुम अविश्वासी हो जाओगे तो मैं तुम्हें देशों के बीच बिखरा दूंगा. 9 मगर
यदि तुम मेरी ओर फिरकर मेरे आदेशों का पालन करके उनका अनुसरण करोगे,
तो तुममें से बिखरे हुए लोगों को यदि दूर आकाश के नीचे तक कर दिया गया
है, मैं वहां से भी उस जगह पर ले आऊंगा, जिस जगह को मैंने अपनी प्रतिष्ठा
की स्थापना के लिए सही समझा है.' 10 "वे आपके ही सेवक हैं, आपकी ही
प्रजा, जिन्हें आपने अपने असाधारण सामर्थ्य और बलवंत हाथ से छुड़ा लिया
था. 11 प्रभु, आपसे मेरी प्रार्थना है, अपने सेवक की विनती पर कान लगाएं
और उन सेवकों की प्रार्थनाओं पर, जो आपका भय मानते हैं. आज अपने सेवक
को सफलता देकर उसके प्रति इस व्यक्ति पर दया कीजिए." मैं इस समय राजा
के लिए पिलाने वाले के पद पर था.

2 राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल के बीसवें वर्ष में निसान माह में जब राजा
के सामने दाखमधु रखी हुई थी, मैंने उन्हें दाखमधु परोस दी. इसके पहले
उनके सामने मैं दुःखी होकर कभी नहीं गया था. 2 यह देख राजा ने मुझसे
सवाल किया, "जब तुम बीमार नहीं हो, तो तुम्हारा चेहरा इतना उतरा क्यों है?
यह मन की उदासी के अलावा और कुछ नहीं." यह सुनकर मैं बहुत ही डर
गया. 3 मैंने राजा को उत्तर दिया, "महाराज आप सदा जीवित रहें. मेरा चेहरा
क्यों न उतरे, जब वह नगर, जो मेरे पुरखों की कब्रों का स्थान है, उजाड़ पड़ा
हुआ है और उस नगर के फाटक जल चुके हैं." 4 तब राजा ने मुझसे पूछा, "तो
तुम क्या चाहते हो?" तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना की. 5 मैंने राजा को
उत्तर दिया, "अगर महाराज को यह सही लगे और अगर आप अपने सेवक से
खुश हैं, तो मुझे यहूदिया जाने की अनुमति दें. वहां, जिस नगर में मेरे पुरखों
की कब्रें हैं, मैं उस नगर को दोबारा बनवा सकूं." 6 तब राजा ने मुझसे पूछा,
"इसके लिए तुम्हें कितना समय लगेगा और तुम्हारा लौटना कब होगा?" इस
समय रानी भी राजा के पास बैठी थी. मैंने राजा के सामने एक समय तय करके
बता दिया, सो राजा ने खुशी के साथ मुझे वहां जाने की अनुमति दे दी. 7 मैंने
राजा से विनती की, "यदि यह महाराज को सही लगे, मुझे उस नदी के उस ओर
के राज्यपालों के लिए महाराज द्वारा लिखे संदेश दे दिए जाएं, कि वे मुझे अपने
राज्यों में से होकर यहूदिया तक पहुंचने की आज्ञा देते जाएं. 8 एक संदेश
महाराज के बंजर भूमि के पहरेदार आसफ के लिए भी ज़रूरी होगा, कि वह
मंदिर के किले के फाटकों की कड़ियों के लिए, शहरपनाह और उस घर के
लिए जिसमें मैं रहूंगा, लकड़ी का इंतजाम कर दे." राजा ने सभी संदेश मुझे दे
दिए, क्योंकि मुझ पर परमेश्वर की कृपादृष्टि बनी हुई थी. 9 जब उस नदी के
पार के प्रदेशों के राज्यपालों से मेरी भेंट हुई, मैंने उन्हें राजा द्वारा लिखे गए
संदेश सौंप दिए. राजा ने मेरे साथ अधिकारी, सैनिक और घुड़सवार भी भेजे थे.
10 जब होरोनी सनबल्लत और अम्मोनी अधिकारी तोबियाह को इस बारे में
पता चला, तो उन दोनों को बहुत बुरा लगा, कि कोई इस्राएलियों का भला
चाहनेवाला यहां आ पहुंचा है. 11 येरूशलेम पहुंचकर मैं वहां तीन दिन रहा. 12
मैं रात में उठ गया, मेरे साथ कुछ लोग भी थे. मैंने यह किसी को भी प्रकट नहीं
किया, कि येरूशलेम के विषय में परमेश्वर ने मेरे मन में क्या करने का विचार
डाला है. मेरे साथ उस पशु के अलावा कोई भी दूसरा पशु न था, जिस पर मैं
सवार था. 13 इसलिये रात में मैं घाटी के फाटक से निकलकर अजगर कुएं
और कूड़ा फाटक की दिशा में आगे बढ़ा. मैं येरूशलेम की शहरपनाह का
बारीकी से जांच करता जा रहा था. शहरपनाह टूटी हुई थी और फाटक जले हुए
थे. 14 तब मैं झरने के फाटक और राजा के तालाब पर जा पहुंचा, यहां मेरे पशु
के लिए आगे बढ़ना नामुमकिन था. 15 इसलिये मैं रात में ही नाले से होता हुआ
शहरपनाह का बारीकी से मुआयना करता गया. तब मैंने दोबारा घाटी फाटक
में से प्रवेश किया और लौट गया. 16 अधिकारियों को यह पता ही न चल
सका, कि मैं कहां गया था या यह कि मैंने क्या काम किया था. मैंने अब तक
यहूदियों, पुरोहितों, प्रशासकों, अधिकारियों और बाकियों पर, जिन्हें काम में
जुट जाना था, कुछ भी नहीं बताया था. 17 तब मैंने उनसे कहा, "हमारी दुर्दशा
आपके सामने साफ़ ही है; येरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक गिरे पड़े
हैं. आइए, हम येरूशलेम की शहरपनाह को दोबारा बनाएं, कि हम दोबारा हंसी
का विषय न रह जाएं." 18 मैंने उनको यह साफ़ बताया कि किस तरह मुझ पर
मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि हुई और यह भी कि राजा ने मेरे लिए आश्वासन के
शब्द कहे थे. यह सुन उन्होंने कहा, "चलिए, हम बनाने का काम शुरू करें."
इस तरह वे इस अच्छे काम में लग गए. 19 किंतु जब होरोनी सनबल्लत,
अम्मोनी अधिकारी तोबियाह और अरबी गेशेम ने यह सब सुना, वे हमारा
मज़ाक उड़ाने लगे, घृणा से भरकर वे हमसे कहने लगे, "क्या कर रहे हो यह?
क्या तुम राजा के विरुद्ध विद्रोह करोगे?" 20 तब मैंने उन्हें उत्तर दिया, "स्वर्ग
के परमेश्वर ही हमें इसमें सफलता देंगे; इसलिये हम उनके सेवक बनाने का
काम शुरू करेंगे. इसमें आपका कोई लेना देना नहीं है न ही यहां आपका कोई
अधिकार है और न येरूशलेम में आपका कोई स्मारक ही है."

3 तब महापुरोहित एलियाशिब ने अपने भाइयों को अपने साथ लिया, जो
पुरोहित थे और इन्होंने भेड़-फाटक को बना दिया. उन्होंने इसे समर्पित
किया और इसके पल्ले उसमें जड़ दिए. उन्होंने शहरपनाह को हम्मेआ और
हननेल मीनारों तक समर्पित कर दिया. 2 इसके पास वाले भाग को येरीख़ो के
लोगों ने बनाया और उनके पास वाले इलाके को इमरी के पुत्र ज़क्कूर ने. 3
इसके बाद सेनाआह के पुत्रों ने मछली फाटक को बनाया. उन्होंने इसके पल्ले
की कड़ियां डालीं, द्वारों को चिटकनियों और छड़ों से लटका दिया. 4 इनके
बाद हक्कोज़ के पोते उरियाह के पुत्र मेरेमोथ ने मरम्मत का काम किया. उसके
पास वाले भाग की मरम्मत का काम मेशेजाबेल के पोते बेरेखियाह के बेटे
मेशुल्लाम ने किया. और फिर यही काम बाअनाह के बेटे सादोक ने भी किया.
5 इसके अलावा उसके पास के भाग की मरम्मत तकोआ निवासियों ने की,

मगर उनके नगर के बड़े लोगों ने अपने अधिकारियों को इस काम में सहायता
नहीं दी. 6 पासेह के पुत्र योइयादा ने और बेसादियाह के पुत्र मेशुल्लाम ने पुराने
फाटक की मरम्मत की. इन्होंने इसकी कड़ियां डालीं और इसके पल्लों को
इसकी चिटकनियों और इनकी छड़ों से लटका दिया. 7 उनके पास वाले
भाग की मरम्मत गिबियोनवासी मेलातियाह और मेरोनोथी यादोन ने की, जो
गिबयोनवासी और मिज़पाहवासी थे, उन्होंने उस नदी के दूसरी ओर के प्रदेश के
राज्यपाल के लिए उसके सिंहासन की मरम्मत भी की. 8 उसके पास वाले भाग
की मरम्मत सुनारों में से हरहइयाह के पुत्र उज्ज़िएल ने की. उसके पास वाले
भाग की मरम्मत सुगंध बनाने वालों में से एक ने की, जिसका नाम हननियाह
था. इस प्रकार उन्होंने येरूशलेम को फैली हुई शहरपनाह तक पहले की तरह
ला दिया. 9 उनके पासवाली जगहों की मरम्मत हूर के पुत्र रेफ़ाइयाह ने, जो
येरूशलेम के आधे क्षेत्र का अधिकारी था, की. 10 इनके पासवाली जगहों की
मरम्मत हारूमाफ के पुत्र येदाइयाह ने अपने घर के सामने के इलाके में की.
उसके पासवाली जगहों की मरम्मत हशबनेइयाह के पुत्र हत्तुष ने की. 11
हारिम के पुत्र मालखियाह और पाहाथ-मोआब के पुत्र हस्षूब ने एक दूसरे भाग
की और भट्टियों के मीनारों की मरम्मत की. 12 उसके पास वाले भाग की
मरम्मत हल्लेहेष के पुत्र शल्लूम ने, जो येरूशलेम में के आधे क्षेत्र का अधिकारी
था, अपनी पुत्रियों के साथ मिलकर की. 13 हानून और ज़ानोहावासियों ने
घाटी फाटक की मरम्मत की. उन्होंने इसको बनाया और इसके पल्लों को
इसकी चिटकनियों और छड़ों सहित लटका दिया. उन्होंने इसके अलावा कूड़ा
फाटक तक लगभग पांच सौ मीटर शहरपनाह को भी बनाया. 14 रेखाब के पुत्र
मालखियाह ने, जो बेथ-हक्केरेम क्षेत्र का अधिकारी था, कूड़ा फाटक की
मरम्मत की. उसने इसको बनाया और इसके पल्लों को इसकी चिटकनियों और
छड़ों सहित लटका दिया. 15 कोल-होज़ेह के पुत्र शल्लूम ने, जो मिज़पाह क्षेत्र
का अधिकारी था, झरना फाटक की मरम्मत की. उसने इसको बनाया, पल्लों
को चिटकनियों और छड़ों सहित लटका दिया और उसके ऊपर छत भी बना
दी. इसके अलावा उसने शेलाह के तालाब की शहरपनाह को भी बनाया. यह
शहरपनाह राजा के बगीचे से लेकर उन सीढ़ियों तक बनाई गई, जो दावीद के
नगर से उतरती हुई आती थी. 16 इसके बाद अज़बुक के पुत्र नेहेमियाह ने,
जो बेथ-त्सूर के आधे क्षेत्र का अधिकारी था, दावीद की कब्रों की गुफा तक
के बिंदु तक शहरपनाह की मरम्मत की और वीरों के घर और तालाबों तक
की शहरपनाह की भी. 17 पास वाले भाग की मरम्मत बानी के पुत्र रेहुम की
देखरेख में लेवियों ने की. उसके पास वाले भाग की मरम्मत, काइलाह के
आधे क्षेत्र के अधिकारी हशाबियाह ने अपने क्षेत्र में पूरी की. 18 उसके पास
वाले भाग की मरम्मत उनके भाइयों ने काइलाह के क्षेत्र के बचे हुए भाग के
अधिकारी हेनादाद के पुत्र बव्वाई की निगरानी में पूरी हुई. 19 उसके पास वाले
भाग की मरम्मत येशुआ के पुत्र एज़र ने की, जो मिज़पाह का अधिकारी था, यह
उस शस्त्रों के घर के सामने था, जो चढ़ाई तक था. 20 उसके पास वाले भाग की
मरम्मत ज़ब्बाई के पुत्र बारूख ने बहुत ही उत्साह से की, जो उस चढ़ाई से
लेकर महापुरोहित एलियाशिब के घर के द्वार तक है. 21 उसके पास वाले भाग
की हक्कोज़ के पोते उरियाह के पुत्र मेरेमोथ ने और दूसरे भागों की भी मरम्मत
की. यह भाग एलियाशिब के घर के द्वार से शुरू होकर उसके घर के आखिरी
छोर तक था. 22 उसके पास वाले भाग की मरम्मत घाटी के पास रहनेवाले
पुरोहितों ने की. 23 उनके पास वाले भाग की मरम्मत बिन्यामिन और हस्षूब ने
की. उन्होंने अपने-अपने घरों के सामने के भाग की मरम्मत की. उनके पास
वाले भाग की मरम्मत मआसेइयाह के पुत्र अननियाह के पोते अज़रियाह ने
अपने घर के पास की शहरपनाह की मरम्मत की. 24 उसके पास वाले भाग की
मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूइ ने की. यह भाग अज़रियाह के घर से मोड़ तक
और कोने तक फैला हुआ था. 25 उज़ाई के पुत्र पलाल ने उस भाग की मरम्मत
की, जो मोड़ के सामने से शुरू होकर राजमहल के ऊपरी माले के घर के गुम्मट
तक है. यह पहरेदारों के आंगन के पास है. उसके पास वाले भाग की मरम्मत
पारोश के पुत्र पेदाइयाह ने की. 26 मंदिर के उन सेवकों ने, जो ओफेल में रहते
थे, जल फाटक के सामने के भाग तक की मरम्मत की. यह वह फाटक था, जो
पूर्व दिशा की ओर था, जहां पहरेदारों का गुम्मट था. 27 इनके पास वाले भाग
की मरम्मत तकोआ निवासियों ने की. यह भाग बाहर निकले हुए पहरेदारों के
गुम्मट के सामने से ओफेल की शहरपनाह तक फैला हुआ था. 28 पुरोहितों ने
घोड़ा फाटक के ऊपर के भाग की मरम्मत की, हर एक ने अपने-अपने घर के
सामने के भाग की. 29 उनके पास वाले भाग की मरम्मत इम्मर के पुत्र सादोक
ने की जो उसके घर के सामने का भाग था. उसके पास वाले भाग की मरम्मत
शेकानियाह के पुत्र शेमायाह ने की, जो पूर्वी फाटक का द्वारपाल था. 30 उसके
पास वाले भाग की मरम्मत शेलेमियाह के पुत्र हननियाह और ज़लाफ़ के छठे
पुत्र हानून ने की. उसके पास वाले भाग की मरम्मत बेरेखियाह के पुत्र मेशुल्लाम
ने की जो उसके घर के सामने का भाग था. 31 उसके पास वाले भाग का
मालखियाह ने, जो सुनारों में से एक था, मंदिर के सेवकों और व्यापारियों के
घर से लेकर, जो मुस्तर अर्थात् मुआयना फाटक के सामने था, कोने के ऊपरी
कमरे तक मरम्मत का काम पूरा किया. 32 तब कोने के ऊपरी कमरे और भेड़-
फाटक के बीच की शहरपनाह की मरम्मत सुनारों और व्यापारियों ने पूरी की.

4 जब सनबल्लत को यह मालूम हुआ कि हम शहरपनाह को दोबारा से बना
रहे हैं, वह गुस्से से भर गया और हम यहूदियों का मज़ाक उड़ाने लगा. 2
उसने अपने साथ में काम करनेवालों और शमरिया के सेनाध्यक्षों के सामने
कहा, “यह निर्बल यहूदी कर क्या रहे हैं? क्या ये लोग अपने लिए इसको
दोबारा बना लेंगे? तब क्या वे बलि चढ़ा सकेंगे? क्या वे यह काम एक ही
दिन में पूरा कर सकेंगे? क्या वे पत्थर के टुकड़ों के ढेर से भवन बनाने के
लायक पत्थर निकाल सकेंगे, जबकि ये आग में जल चुके हैं?” 3 अम्मोनी
तोबियाह जो उसके पास ही खड़ा था, कहने लगा, “अरे, वे लोग जो बना रहे
हैं, वह ऐसा है, कि अगर एक लोमड़ी ही उस पर कूद पड़े तो उनकी बनाई हुई
पत्थर की शहरपनाह ढह जाएगी!” 4 हमारे परमेश्वर, सुन लीजिए कि हमारा
कैसा अपमान हो रहा है! उनके द्वारा की जा रही इस निंदा को उन्हीं पर लौटा
दीजिए और उन्हें बंधुआई के देश में लूट का सामान बना दीजिए. 5 उनके पाप
को क्षमा न कीजिए. आपके सामने से उनका पाप मिटाया न जाए क्योंकि
उन्होंने शहरपनाह बनाने वालों का मनोबल खत्म कर दिया है. 6 इस तरह हमने
शहरपनाह को बनाया और सारी शहरपनाह उसकी आधी ऊंचाई तक पूरी हो
गई, क्योंकि लोग इस काम के प्रति दृढ़ थे. 7 इस मौके पर जब सनबल्लत,
तोबियाह, अरबियों, अम्मोनियों, और अशदोदियों ने यह सुना, कि येरूशलेम
की शहरपनाह का मरम्मत का काम तेजी पर है और सभी नाके अब बंद किए
जाने लगे हैं, वे बहुत ही गुस्सा हो गए. 8 उन सभी ने मिलकर येरूशलेम पर
हमला करने का षड़्यंत्र रचा, कि इसके द्वारा वहां गड़बड़ी डाली जा सके. 9
इसलिये हमने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की और उनकी योजनाओं का ध्यान
रखते हुए वहां दिन और रात के लिए पहरेदार ठहरा दिए. 10 सो यहूदिया में
लोग इस तरह कहने लगे: “बोझ उठाने वालों का बल घट गया है, फिर भी
मलबा बहुत है; हम खुद ही शहरपनाह बनाने के लायक नहीं रहे हैं.” 11 हमारे
शत्रुओं ने आपस में विचार-विमर्श किया, “हम ऐसा करें: हमारे उनके बीच में
पहुंचने तक उन्हें यह पता ही न चलने पाए, तब हम उनको मार के इस काम को
खत्म कर देंगे.” 12 उनके आस-पास के यहूदियों ने दस बार आकर हमें इस
षड़्यंत्र की सूचना दी, “वे लोग हर एक दिशा से आकर हम पर हमला करेंगे.”
13 इसलिये मैंने शहरपनाह के पीछे उन जगहों पर पहरेदार ठहरा दिए, जहां-

जहां ऊंचाई कम थी जो जगह अब तक खुली पड़ी थी. मैंने परिवारों को उनकी
तलवारों, भालों और धनुषों के साथ बैठा दिया. 14 जब मुझे उनके मन में आ
रहे डर का अहसास हुआ, मैंने रईसों, अधिकारियों और बाकी लोगों को यह
कहा, "कोई ज़रूरत नहीं उनसे डरने की! आप याद रखिए: सिर्फ प्रभु को, जो
महान और प्रतापी है. अपने भाइयों, अपने पुत्रों, अपनी पुत्रियों, अपनी पत्नियों
और अपने घरों की भलाई को ध्यान में रखकर युद्ध के लिए तैयार हो जाइए."
15 हमारे शत्रुओं को यह मालूम हो गया कि हमें उनके षड़्यंत्र का पता चल
चुका है और परमेश्वर ने उनकी योजना विफल कर दी है. हम सभी शहरपनाह
के अपने-अपने काम में दोबारा लग गए. 16 उस दिन के बाद मेरे आधे सेवक
शहरपनाह के काम करते थे और आधे कवच पहनकर बर्छी, धनुष और ढाल
लिए हुए रहते थे. यहूदाह के सारे घराने को हाकिमों का समर्थन मिला हुआ था.
17 वे सभी, जो शहरपनाह को बनाने में लगे थे और जो सामान उठाने में लगे थे,
एक हाथ से काम करते थे और दूसरे में हथियार थामे रहते थे. 18 काम करते
हुए भी हर एक मिस्त्री अपनी जांघ पर तलवार लटकाए हुए रहता था और जिस
व्यक्ति की जवाबदारी थी नरसिंगा फूंकना, वह लगातार मेरे पास ही खड़ा रहता
था. 19 रईसों, अधिकारियों और दूसरे लोगों को मैंने कहा, "यह काम बड़ा
और फैला हुआ है और हम सभी इस शहरपनाह पर एक दूसरे से अलग हो चुके
हैं. 20 इसलिये जब कभी तुम्हें नरसिंगे की आवाज सुनाई दे, तुम उसी दिशा में
आकर हमारे पास इकट्ठा हो जाना. हमारे परमेश्वर हमारे लिए युद्ध करेंगे." 21
इस प्रकार हम इस काम में लग गए-आधे लोग सुबह से लेकर तारों के दिखने
तक बर्छी लिए हुए खड़े रहते थे. 22 उस समय मैंने लोगों से यह भी कहा,
"हर एक व्यक्ति रात के समय अपने-अपने सेवक के साथ येरूशलेम में ही रहे,
कि रात में तो वे पहरेदार हो जाएं और दिन के समय काम करने लगें." 23 न तो
मेरे लिए, न मेरे संबंधियों के लिए, न मेरे सेवकों के लिए और न उन पहरेदारों
के लिए, जो मेरे साथ साथ बने रहते थे, अपने कपड़े बदलने का मौका मिल
पाता था; जब हम जलाशयों के पास जाते थे, तब भी हथियारों को आपने साथ
रखते थे.

5 इसी समय लोगों और उनकी पत्नियों ने उनके यहूदी साथियों के साथ
झगड़ना शुरू कर दिया. 2 इसका कारण था वे लोग, जो यह कह रहे थे
"हम, हमारे पुत्र और हमारी पुत्रियां गिनती में बहुत हैं; इसलिये हमें अनाज दिया
जाए कि हम उसे खाकर ज़िंदा रह सकें." 3 कुछ और भी थे, जो कह रहे थे
"हमने अपने खेत, हमारे अंगूर के बगीचे और अपने घर गिरवी रखे हुए हैं कि
इस अकाल की स्थिति में हमें अनाज तो मिल सके." 4 इनके अलावा भी कुछ
और थे, जो यह कह रहे थे "हमने अपने खेतों और अंगूर के बगीचों पर राजा
द्वारा ठहराया गया कर भरने के लिए कर्ज़ लिया हुआ है. 5 हम भी अपने भाई-
बंधुओं के समान हड्डी-मांस के ही हैं, हमारी संतान उनकी संतान के समान ही है;
फिर भी देख लीजिए हमें अपने पुत्र-पुत्रियों को दास होने के लिए सौंपने के
लिए मजबूर होना पड़ रहा है. हमारी कुछ पुत्रियां तो पहले ही ज़बरदस्ती बंधक
बना ली गई हैं. अब हम निस्सहाय रह गए हैं, क्योंकि हमारे खेत और अंगूर
के बगीचे अब दूसरों के अधिकार में चले गए हैं." 6 उनकी शिकायतें और
बातें सुन मैं बहुत ही क्रोधित हो गया. 7 मैंने अपने मन में सोचा, फिर ऊंचे
पदाधिकारियों और शासकों से भी सलाह ली और फिर मैंने उनसे कहा, "आप
में से हर एक अपने ही भाई-बन्धु से ज़बरदस्ती ब्याज वसूली कर रहा है!"
इसलिये मैंने उनके विरुद्ध एक बड़ी सभा की. 8 उनसे मैंने कहा, "हमने अपनी
शक्ति भर उन यहूदी भाई-बंधुओं को दाम देकर उन देशों से छुड़ाया है, जहां
उन्हें बेच दिया गया था. अब क्या आप लोग इन्हें दोबारा उन्हीं को बेचते
जाएंगे, कि हमें उन्हें एक बार फिर उनसे खरीदना पड़े?" वे चुप रहे और अपने
बचाव में कहने के लिए उनके पास कुछ भी न था. 9 मैंने उन्हें दोबारा चेतावनी
दी, "आप जो कुछ कर रहे हैं, वह गलत है. हमारे शत्रु देश हमारी निंदा करें,
इस बात का ध्यान रखते हुए क्या यह सही नहीं कि आप अपने परमेश्वर का
भय मानकर चलें? 10 खुद मैंने, मेरे भाइयों ने और मेरे सेवकों ने उन्हें उधार के
रूप में सिक्के और अनाज देना शुरू कर दिया है. कृपा कर हम उनसे यह
ज़बरदस्ती भुगतान कराना बंद कर दें. 11 कृपा कर आज ही उन्हें उनके खेत,
अंगूर के बगीचे, उनके जैतून के बगीचे और उनके घर उन्हें लौटा दें. इसके
अलावा उनका धन, अनाज, नई दाखमधु और तेल का सौवां भाग भी, जो आप
उनसे ज़बरदस्ती ले रहे है." 12 उन्होंने इसके उत्तर में कहा, "हम उन्हें यह सब
लौटा देंगे, उनसे कुछ भी ज़बरदस्ती नहीं लेंगे. वही करेंगे, जो आप के द्वारा
सुझाया गया है." तब मैंने पुरोहितों को बुलवा लिया और उनसे यह शपथ ले ली
कि वे इस प्रतिज्ञा के अनुसार ही करेंगे. 13 तब मैंने अपने बाहरी कपड़े के
सामने का छोर झटकते हुए कहा, "परमेश्वर ऐसे हर एक मनुष्य को उसके घर
से और उसकी संपत्ति से ठीक उसी प्रकार झटक दे, जो इस शपथ को पूरी न
करेगा, यहां तक कि उसे इस तरह हिला दिया जाए कि वह पूरी तरह खाली ही
हो जाए." यह सुन सारी सभा कह उठी, "आमेन!" और उनके मुंह से याहवेह
की स्तुति निकली. लोगों ने अपनी शपथ के अनुसार ही किया. 14 राजा
अर्तहषस्ता के राज्य-काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल तक; बारह साल,
जिस दिन से मुझे यहूदिया का राज्यपाल बनाया गया था, न तो मैंने और न मेरे
रिश्तेदारों ने राज्यपाल के लिए तय किया गया भोजन खाया. 15 मुझसे पहले
के राज्यपालों ने तो प्रजा पर भारी बोझ लाद दिया था. वे उनसे उनका भोजन
और अंगूरों का रस छीन लिया करते थे, साथ ही चांदी के चालीस शकेल भी;
यहां तक कि उनके साथी सेवक तक प्रजा का शोषण किया करते थे. परमेश्वर
का भय मानने के कारण मैं ऐसा न कर सका. 16 मैंने खुद को शहरपनाह बनाने
के काम में लगा दिया. हमने कोई भी ज़मीन नहीं खरीदी. मेरे सभी सेवक इस
काम के लिए वहां इकट्ठे हो जाते थे. 17 मेरे भोजन की मेज़ पर हमारे पास के
देशों से आए लोगों के अलावा एक सौ पचास यहूदी और अधिकारी हुआ करते
थे. 18 मेरे हर रोज़ के भोजन के लिए एक बैल, छः सबसे अच्छी भेड़ें और
कुछ पक्षी तैयार किए जाते थे. दस दिन में एक बार तरह-तरह की दाखमधु बड़ी
मात्रा में परोसी जाती थी. इतना सब होने पर भी मैंने राज्यपाल के लिए ठहराया
गया भोजन नहीं मंगवाया; क्योंकि वैसे भी प्रजा बोझ के नीचे दबी जा रही थी.
19 मेरे परमेश्वर, मेरे द्वारा इस प्रजा के हित में किए गए सभी कामों के लिए मुझे
याद रखियेगा.

6 जब हमारे शत्रुओं सनबल्लत, तोबियाह, अरबी गेशेम और बाकी शत्रुओं
को इसका समाचार मिला कि मैंने शहरपनाह को दोबारा बना लिया है, कि
शहरपनाह में अब कहीं भी कोई दरार नहीं रह गई है, यद्यपि इस समय तक
फाटकों में पल्ले बैठाए नहीं गए थे, 2 तब सनबल्लत और गेशेम ने मुझे यह
संदेश भेजा "आप आइए कि हम ओनो के मैदान में चेपिरिम नामक स्थान पर
भेंट करें." मगर इसके द्वारा उनका इरादा मेरा बुरा करने का ही था. 3 तब मैंने
अपने दूत उन्हें इस संदेश के साथ भेजे: "मेरा यह काम बहुत बड़ा है, इसलिये
मेरा यहां आना संभव नहीं है. यह कैसे सही हो सकता है कि मैं इसे छोड़कर
आपसे भेंट करने वहां आऊं?" 4 उन्होंने चार बार यही संदेश भेजा और मैंने भी
उन्हें वही उत्तर दिया. 5 तब सनबल्लत ने अपने सेवक द्वारा एक संदेश मेरे लिए
भेजा यह वही संदेश पांचवी बार भेजा गया था. उसके हाथ में दिया यह खुला
पत्र था. 6 पत्र में लिखा था: "देश-देश के लोगों में यह कहा जाने लगा है
और उसकी ख़बर हमें गशमू से प्राप्त हुई है, कि आप और यहूदी विद्रोह की
योजना बना रहे हैं. शहरपनाह बनाना इसी योजना का भाग है. इन सूचनाओं के
अनुसार आप उनको राजा बनने की योजना बना रहे हैं. 7 इसके लिए तो आपने
येरूशलेम में भविष्यद्वक्ता भी ठहरा दिए हैं, जिनकी जवाबदारी होगी यह घोषणा

करना: 'यहूदियों में अब एक राजा है!' अब यही ख़बर राजा को भी दी ही जाएगी. इसलिये अब आप आ जाइए हम आपस में सलाह करें." **8** इसके उत्तर में मैंने उसे अपना दूत इस संदेश के साथ भेजा "आपके कहने के अनुसार यहां कुछ भी नहीं किया जा रहा हैं यह सब तो खुद आपके ही दिमाग की उपज है." **9** उन सभी का लक्ष्य हमें डराना ही था. उनका सोचना था, "इससे वे डर जाएंगे और यह काम पूरा न हो सकेगा." मगर परमेश्वर, मेरी बाज़ुओं में ताकत दीजिए. **10** मैं मेहेताबेल के पोते देलाइयाह के पुत्र शेमायाह के घर पर गया, जो घर से बाहर जाने में असमर्थ था, उसने प्रस्ताव रखा, "हम परमेश्वर के भवन में मंदिर के अंदर ही इकट्ठा हों और मंदिर के दरवाजे बंद कर लें, क्योंकि वे आपकी हत्या के उद्देश्य से यहां आ रहे हैं और वे रात में ही आपकी हत्या करना चाह रहे हैं." **11** किंतु मैंने इनकार किया, "क्या मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इस प्रकार भागना अच्छा होगा? और क्या मुझ जैसे व्यक्ति के लिए मंदिर में जाकर अपना जीवन बचाना सही होगा? मैं नहीं जाऊंगा वहां!" **12** तब मुझे यह अहसास हो गया, कि निश्चित ही यह परमेश्वर द्वारा भेजी गई सलाह नहीं थी! उसने तो यह भविष्यवाणी के रूप में इसलिये कहा था, कि उसे तोबियाह और सनबल्लत ने पैसा दिया था. **13** शेमायाह को पैसे देकर मुझे डराने के लिए काम पर रखा गया था, कि मैं डरकर वही करूं, जिससे मैं परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर बैठूं, और इसकी वजह से उन्हें मुझ पर दोष लगाने का मौका मिल जाए और मैं उनके लिए निंदा का पात्र बन जाऊं. **14** मेरे परमेश्वर, आप तोबियाह और सनबल्लत के इस काम को भुला दीजिए. उनके अलावा उस स्त्री, भविष्यद्वक्ता नोआदिया को भी और उन सभी भविष्यवक्ताओं को भी, जो मुझे डराने की कोशिश कर रहे थे. **15** इस प्रकार एलुल महीने की पच्चिसवीं तारीख पर 52 दिनों में शहरपनाह की मरम्मत का काम पूरा हो गया. **16** सभी शत्रुओं को यह समाचार मिल गया, हमारे सभी पास वाले देशों ने यह देख लिया. वे बहुत डर गए. क्योंकि उनके सामने यह साफ़ हो गया था कि यह काम हमारे परमेश्वर की सहायता ही से पूरा हो सका था. **17** इसके अलावा उन्हीं दिनों में यहूदिया के बड़े अधिकारियों और तोबियाह के बीच चिट्ठी बहुत आती-जाती थी. **18** क्योंकि यहूदिया के अनेक व्यक्ति तोबियाह का पक्ष लेने की शपथ लिए हुए थे, क्योंकि वह आराह के पुत्र शेकनियाह का दामाद था और उसके पुत्र येहोहानन का विवाह बेरेखियाह के पुत्र मेशुल्लाम की पुत्री से हुआ था. **19** इसके अलावा, वे मेरे ही सामने उसके भले कामों की सूचना भी दे दिया करते थे. तब तोबियाह ने मुझे डराने के लिए पत्र भेजना शुरू कर दिया.

7 जब शहरपनाह बनाने का काम पूरा हो गया, मैंने पल्लों को ठीक जगह पर बैठा दिया और द्वारपालों, गायकों और लेवियों को चुना, **2** मैंने अपने भाई हनानी और गढ़ के हाकिम हननियाह को येरूशलेम का अधिकारी ठहरा दिया, क्योंकि हननियाह विश्वासयोग्य व्यक्ति था और वह परमेश्वर का बहुत भय मानने वाला व्यक्ति था. **3** उनके लिए मेरा आदेश था, "जब तक सूरज में गर्मी रहे येरूशलेम के फाटक न खोले जाएं और जब तक पहरेदार द्वार पर खड़े ही होंगे, द्वार बंद ही रखे जाएं और उनमें चिटकनी लगी रहे. जो द्वारपाल ठहराए जाएं, वे येरूशलेम के रहनेवाले ही हों; हर एक को अपने-अपने निर्दिष्ट स्थानों पर और शेष अपने घरों के सामने के द्वार पर खड़ा किये जाए." **4** नगर फैला हुआ और बड़ा था, किंतु निवासियों की गिनती थोड़ी ही थी और अभी घर नहीं बने थे. **5** तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह विचार डाला कि रईसों, अधिकारियों और प्रजा को इकट्ठा किया जाए कि वंशावली के अनुसार उन्हें गिना जाए. मुझे वह पुस्तक भी मिल गई, जिसमें उन व्यक्तियों के नाम लिखे थे, जो सबसे पहले यहां पहुंचे थे. मुझे उस पुस्तक में जो लेखा मिला, वह इस प्रकार था: **6** इस प्रदेश के वे लोग, जो बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र द्वारा बंधुआई में ले जाए गए थे और जो बंधुआई से यहूदिया और येरूशलेम, अपने-अपने नगर को लौट आए थे, वे इस प्रकार हैं **7** वे ज़ेरुब्बाबेल, येशुआ, नेहेमियाह, अज़रियाह, रामियाह, नाहामानी, मोरदकय, बिलषान, मिसपार, बिगवाई, नेहुम और बाअनाह के साथ लौटे थे. कुल-पिताओं के नाम के अनुसार इस्राएल देश के पुरुषों की गिनती थी: **8** पारोश 2,172 **9** शेपाथियाह 372 **10** आराह 652 **11** पाहाथ-मोआब के वंशजों में से येशुआ एवं योआब के वंशज 2,818 **12** एलाम 1,254 **13** ज़त्तू 845 **14** ज़क्काई 760 **15** बिन्‍नूइ 648 **16** बेबाइ 628 **17** अजगाद 2,322 **18** अदोनिकम 667 **19** बिगवाई 2,067 **20** आदिन 655 **21** हिज़किय्याह की ओर से अतेर 98 **22** हाशूम 328 **23** बेज़ाइ 324 **24** हरिफ 112 **25** गिबयोन 95 **26** बेथलेहेम और नेतोपाह के निवासी 188 **27** अनाथोथ के निवासी 128 **28** बेथ-अज़्मावेह के निवासी 42 **29** किरयथ-यआरीम के कफीराह तथा बएरोथ के निवासी 743 **30** रामाह तथा गेबा के निवासी 621 **31** मिकमाश के निवासी 122 **32** बेथेल तथा अय के निवासी 123 **33** अन्य नेबो के निवासी 52 **34** अन्य एलाम के निवासी 1,254 **35** हारिम के निवासी 320 **36** येरीख़ो के निवासी 345 **37** लोद, हदिद तथा ओनो के निवासी 721 **38** सेनाआह के निवासी 3,930 **39** पुरोहित: येशुआ के परिवार से येदाइयाह के वंशज, 973 **40** इम्मर के वंशज 1,052 **41** पशहूर के वंशज 1,247 **42** हारिम के वंशज 1,017 **43** लेवी: होदवियाह के वंशजों में से कदमिएल तथा येशुआ के वंशज 74 **44** गायक: आसफ के वंशज 148 **45** द्वारपाल निम्न लिखित वंशों से: शल्लूम, अतेर, तालमोन, अक्कूब, हतिता, शेबाई 138 **46** मंदिर सेवक निम्न लिखित वंशों से: ज़ीहा, हासुफ़ा, तब्बओथ **47** केरोस, सिया, पदोन **48** लेबानाह, हागाबाह, शामलाई **49** हनान, गिद्देल, गाहार **50** रेआइयाह, रेज़िन, नेकोदा, **51** गज्ज़ाम, उज्जा, पासेह, **52** बेसाई, मिऊनी, नेफिसिम, **53** बकबुक, हकूफा, हरहूर, **54** बाज़लुथ, मेहिदा, हरषा, **55** बारकोस, सीसरा, तेमाह, **56** नेज़ीयाह, हातिफा. **57** शलोमोन के सेवकों के वंशज इन वंशों से: सोताई, हसोफेरेथ, पेरिदा, **58** याला, दारकोन, गिद्देल, **59** शेपाथियाह, हत्तील, पोचेरेथ-हज्ज़ेबाइम, अमोन. **60** मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों की कुल गिनती 392 **61** ये व्यक्ति वे हैं, जो तेल-मेलाह, तेल-हरषा, करूब, अद्दान तथा इम्मर से आए, तथा इनके पास अपनी वंशावली के सबूत नहीं थे, कि वे इस्राएल के वंशज थे भी या नहीं: **62** देलाइयाह के वंशज, तोबियाह के वंशज तथा नेकोदा के वंशज, 642 **63** पुरोहितों में: होबाइयाह के वंशज, हक्कोज़ के वंशज तथा बारज़िल्लाई, जिसने गिलआदवासी बारज़िल्लाई की पुत्रियों में से एक के साथ विवाह किया था, और उसने उन्हीं का नाम रख लिया. **64** इन्होंने अपने पुरखों के पंजीकरण की खोज की, किंतु इन्हें सच्चाई मालूम न हो सकी; तब इन्हें सांस्कृतिक रूप से अपवित्र माना गया तथा इन्हें पुरोहित की जवाबदारी से दूर रखा गया. **65** अधिपति ने उन्हें आदेश दिया कि वे उस समय तक अति पवित्र भोजन न खाएं, जब तक वहां कोई ऐसा पुरोहित न हो, जो उरीम तथा थुम्मिन से सलाह न ले लें. **66** सारी सभा की पूरी संख्या हुई 42,360. **67** इनके अलावा 7,337 दास-दासियां तथा 245 गायक-गायिकाएं भी थी. **68** उनके घोड़ों की गिनती 736 और खच्चरों की 245, **69** ऊंटों की 435 और गधों की गिनती 620 थी. **70** पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों ने इस काम के लिए आर्थिक सहायता दी. राज्यपाल ने खजाने में 1,000 सोने के द्राखमा, 50 चिलमचियां और पुरोहितों के लिए ठहराए गए 530 अंगरखे दिए. **71** पूर्वजों के परिवारों के कुछ प्रधानों ने इस काम के लिए खजाने में 20,000 सोने के द्राखमा और 2,200 चांदी मीना दिए. **72** वह सब, जो बाकी लोगों ने भेंट में दिया, वह था कुल 20,000 सोने के द्राखमा, 2,000 चांदी मीना और पुरोहितों के 67 अंगरखे. **73** अब पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, कुछ सामान्य प्रजाजन,

मंदिर के सेवक, जो सभी इस्राएल वंशज ही थे, अपने-अपने नगरों में रहने लगे.
सातवें महीने तक पूरा इस्राएल अपने-अपने नगर में बस चुका था.

8 एक बड़ी भीड़ के रूप में पूरा इस्राएल उस चौक में इकट्ठा हो गया, जो जल
फाटक के सामने है. उन्होंने व्यवस्था के ज्ञानी पुरोहित एज़्रा से विनती की
थी, कि वह याहवेह द्वारा इस्राएल के लिए दी हुई मोशेह की व्यवस्था की पुस्तक
अपने साथ लाएं. 2 तब पुरोहित एज़्रा सातवें महीने के पहले दिन उन सभी स्त्री-
पुरुषों की सभा के सामने वह व्यवस्था की पुस्तक लेकर आए, जो सुनकर समझ
सकते थे. 3 एज़्रा सुबह से लेकर दोपहर तक जल फाटक के सामने इकट्ठा भीड़
के सामने उन स्त्री-पुरुषों के लिए पढ़कर सुनाते रहे, जो सुनकर समझ सकते
थे, ये सभी व्यवस्था की पुस्तक पर ध्यान लगाए थे. 4 एज़्रा एक लकड़ी
की चौकी पर खड़े हुए थे, जो इसी मौके के लिए खास तौर पर बनाई गई
थी. इस मौके पर उनके दाईं ओर मत्तीथियाह, शेमा, अनाइयाह, उरियाह,
हिलकियाह और मआसेइयाह खड़े हुए थे और उनके बाईं ओर थे पेदाइयाह,
मिषाएल, मालखियाह, हाषूम, हासबद्दानाह, ज़करयाह और मेशुल्लाम. 5 एज़्रा
ने पूरी भीड़ के देखते इस पुस्तक को खोला, क्योंकि वह उस ऊंची चौकी पर
खड़े हुए थे. जैसे ही उन्होंने पुस्तक खोली, पूरी भीड़ खड़ी हो गई. 6 तब
एज़्रा ने याहवेह, महान परमेश्वर की स्तुति की और भीड़ ने कहा: "आमेन,
आमेन!" उन सभी लोगों ने अपने हाथ उठाए हुए थे, तब बड़े ही आदर के साथ
भीड़ ने भूमि की ओर झुककर याहवेह की स्तुति की उनके मुंह ज़मीन पर
ही लगे रहे. 7 जब सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर ठहरे हुए थे, येशुआ,
बानी, शेरेबियाह, यामिन, अक्कूब, शब्बेथाइ, होदियाह, मआसेइयाह, केलिता,
अज़रियाह, योज़ाबाद, हानन, पेलाइयाह और लेवी लोगों को व्यवस्था की
पुस्तक का मतलब साफ़-साफ़ समझाते जाते थे. 8 वे इस पुस्तक से पढ़ते जाते-
परमेश्वर की व्यवस्था में से और वे उसका अनुवाद भी करते जाते थे कि सभी
लोग पढ़े गए भाग को समझते भी जाएं. 9 तब नेहेमियाह ने, जो राज्यपाल थे,
पुरोहित एज़्रा ने, जो व्यवस्था के ज्ञानी थे और लेवियों ने, जो सभी लोगों के
शिक्षक थे, घोषणा की: "याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने यह दिन पवित्र है; न
तो शोकित होओ, और न ही रोओ," क्योंकि व्यवस्था के वचन सुनकर सभी
लोग रोने लगे थे. 10 नेहेमियाह ने उन्हें आदेश दिया "जाइए, अच्छा-अच्छा
भोजन कीजिए, मीठा-मीठा रस पीजिए और कुछ भाग उसे भी दे दीजिए,
जिसके पास यह सब तैयार किया हुआ नहीं है; क्योंकि यह दिन हमारे याहवेह
के सामने पवित्र है. दुःखी न रहिए; क्योंकि याहवेह के दिए हुए आनंद में ही
आपका बल है." 11 इस प्रकार लेवियों ने सभी को यह कहकर साथ शांत
किया, "आप शांत हो जाइए. आप दुःखी न हों; क्योंकि यह पवित्र दिन है."
12 तब सभी लोग खाने-पीने के लिए चले गए और उन्होंने उत्सव के लिए कुछ
भाग दूसरों को भी दिए; क्योंकि यह एक खास उत्सव था. यह इसलिये कि
उन्होंने पवित्र व्यवस्था-विधान का मतलब समझ लिया था. 13 इसके बाद दूसरे
दिन सारी प्रजा के पितरों के प्रधान पुरोहित और लेवी व्यवस्था के ज्ञानी एज़्रा के
सामने इकट्ठा हुए, कि यह मालूम कर सकें कि व्यवस्था के वचनों का मतलब
क्या है. 14 उनके विचार करने का विषय था मोशेह के द्वारा याहवेह की आज्ञा
अनुसार सातवें महीने में झोपड़ियों के उत्सव के मौके पर इस्राएल वंशजों का
रहन-सहन कैसा हो. 15 इसलिये उन्होंने घोषणा करके येरूशलेम में और राज्य
के सभी नगरों में यह घोषणा करवा दी, "पहाड़ों पर जाकर जैतून, जंगली
जैतून, मेहन्दी, खजूर और अन्य पत्तियों के पेड़ों की डालियां लाई जाएं कि
इनका इस्तेमाल व्यवस्था में लिखी हुई विधि के अनुसार झोपड़ियां बनाने के
लिए किया जा सके." 16 तब लोग बाहर गए, और डालियां लेकर आए और
अपने-अपने लिए झोपड़ियां बना लीं; हर एक ने अपनी छत पर और अपने
आंगन में और परमेश्वर के भवन के आंगन में, उस चौक में जो जल फाटक के
सामने है और एफ़्राईम फाटक के सामने के चौक पर. 17 बंधुआई से लौटे हुओं
की पूरी भीड़ ने झोपड़ियां बनाईं और उनमें रहे भी. बल्कि इस्राएल वंशजों ने
नून के पुत्र यहोशू के शासनकाल से अब तक यह नहीं किया था. यह बहुत बड़ा
आनंद का उत्सव हो गया. 18 एज़्रा हर रोज़, पहले दिन से आखिरी दिन तक
परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से सुनाया करते थे. आदेश के अनुसार
आठवें दिन विशेष महासभा बुलाई गई.

9 इसी महीने की चौबीसवीं तारीख पर इस्राएली इकट्ठा हुए. वे उपवास कर
रहे थे, वे टाट पहने हुए थे और उन्होंने अपने-अपने सिरों पर धूल भी डाल
ली थी. 2 इस्राएलियों ने अपने आपको सभी परदेशियों से अलग कर लिया
था, वे खड़े हो गए और उन्होंने वहां अपने पाप और अपने पूर्वजों के पापों को
भी अंगीकार किया. 3 जब वे अपनी-अपनी जगह पर ही खड़े थे, वे छः घंटे
याहवेह, अपने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ते रहे और बाकी छः
घंटे वे याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने पाप अंगीकार और उनकी स्तुति करते
रहे. 4 इसके बाद येशुआ, बानी, कदमिएल, शेबानियाह, बुन्नी, शेरेबियाह,
बानी और केनानी लेवियों के लिए ठहराई गई चौकी पर खड़े हो गए और
ऊंची आवाज में याहवेह, अपने परमेश्वर की दोहाई दी. 5 इसके बाद लेवियों,
येशुआ, कदमिएल, बानी, हशबनेइयाह, शेरेबियाह, होदियाह, शेबानियाह और
पेथाइयाह ने भीड़ को आज्ञा दी: "उठो, याहवेह, अपने परमेश्वर की हमेशा
स्तुति करते रहो!" "आपका महिमामय नाम धन्य कहा जाए और यह सारी
प्रशंसा और स्तुति से ऊपर ही बनी रहे! 6 वह याहवेह तो सिर्फ आप ही हैं.
आकाशमंडल के बनानेवाले आप ही हैं. आकाशमंडल और सारे नक्षत्र, यह
पृथ्वी और उस पर की सारी वस्तुएं, सागर और उनमें की सारी वस्तुएं, आपने
उन सबको जीवन दिया है. आकाश की शक्तियां आपके सामने झुककर आपको
दंडवत करती हैं. 7 "आप ही वह याहवेह परमेश्वर हैं जिन्होंने अब्राम को चुना
और उन्हें कसदियों के ऊर में से निकाला और उन्हें वह नाम अब्राहाम दिया. 8
आपने यह जान लिया था कि उनका हृदय आपके प्रति विश्वासयोग्य है. इसलिये
आपने उनके साथ वाचा बांधी कि आप उन्हें कनानियों, हित्तियों, अमोरियों,
परिज्ज़ियों, यबूसियों गिर्गाशियों का देश उनके वंशजों को देंगे. आपने अपनी
प्रतिज्ञा पूरी की, क्योंकि आप धर्मी परमेश्वर हैं. 9 "मिस्र में हमारे पूर्वजों का
दुःख आपने देखा था, लाल सागर तट पर आपने उनकी विनती सुन ली. 10 तब
आपने फ़रोह के विरोध में चिन्ह और अद्भुत चमत्कार दिखाए. यह सब आपने
फ़रोह के सेवकों और मिस्र देश की प्रजा के विरुद्ध किया, क्योंकि आप यह देख
रहे थे, कि वे यह सब हमारे पूर्वजों के विरुद्ध कर रहे थे. ऐसा करके आपने
अपने लिए बड़ा नाम किया है, जो आज तक बना है. 11 आपने उनके सामने
सागर को दो भाग कर दिया. वे सागर के बीच में से सूखी ज़मीन पर चलते हुए
चले गए. जो उनका पीछा कर रहे थे, आपने उन्हें गहराइयों में ऐसा डाल दिया
जैसे उफ़नते हुए समुद्र में पत्थर डाला जाए. 12 दिन में आप उनका मार्गदर्शन
बादल के खंभे से और रात में आग के खंभे से करते थे, कि जिस मार्ग पर उन्हें
चलना था उस पर उजाला बना रहे. 13 "तब आपने सीनायी पहाड़ पर उतरकर
स्वर्ग से उनसे बातें कीं; आपने उनके लिए सच्ची व्यवस्था और अच्छी आज्ञाएं
दीं, आदर्श व्यवस्था और आज्ञा. 14 आपने उन्हें अपने पवित्र शब्बाथ के बारे में
बताया, आपने उनकी भलाई में अपने सेवक मोशेह के द्वारा आज्ञाएं, विधियां
और व्यवस्था दीं. 15 आपने उनकी भूख मिटाने के लिए स्वर्ग से भोजन दिया,
उनकी प्यास बुझाने के लिए चट्टान से पानी निकाला. आपने उन्हें आज्ञा दी कि
उस देश में प्रवेश कर उस पर अधिकार करें, जिसे देने की आपने उनसे प्रतिज्ञा
की थी. 16 "मगर उन्होंने, हमारे पूर्वजों ने घमण्ड किया; वे हठीले बन गए
और उन्होंने आपके आदेशों को न माना. 17 उन्होंने आपकी आवाज को सुनना
ही न चाहा. उन्होंने आपके द्वारा किए गए अद्भुत चमत्कारों को भुला दिया, जो

आपने उनके बीच में किए थे; इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने मिस्र की
बंधुआई में लौट जाने के लक्ष्य से अपने लिए एक प्रधान चुन लिया. किंतु आप
क्षमा करनेवाले परमेश्वर हैं, अनुग्रहकारी और दयालु, क्रोध करने में धीमे और
प्रेम करने में अपार. आपने उन्हें अकेला न छोड़ा. **18** उस मौके पर भी नहीं,
जब उन्होंने अपने लिए बछड़े की मूर्ति बनायी थी और यह घोषित कर दिया
था: 'यही है तुम्हारा परमेश्वर, जिसने तुम्हें मिस्र से निकाला है,' इस प्रकार
उन्होंने परमेश्वर का बहुत अपमान किया. **19** "अपनी अद्भुत दया में आपने
उन्हें बंजर भूमि में अकेला न छोड़ा; दिन में न तो बादल के खंभे ने उनका साथ
छोड़ा कि उन्हें मार्गदर्शन मिलता रहे, न ही रात में उस आग के खंभे ने, कि
उनके रास्ते में उजाला रहे, जिस पर उन्हें आगे बढ़ना था. **20** आपने अपना
भला आत्मा उनके लिए दे दिया, कि वह उन्हें समझाते जाएं. आपने उन्हें मन्ना
खिलाना न छोड़ा और उनकी प्यास बुझाने के लिए पानी हमेशा बना रहा. **21**
सच तो यह है, कि बंजर भूमि में आप उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते रहें,
उन्हें किसी प्रकार की कोई कमी न हुई; न उनके कपड़े ही फटे और न ही उनके
पैरों में सूजन आई. **22** "आपने राज्य और लोग उनके वश में कर दिए और
उन्हें क्षेत्र का हर एक कोना भी दे दिया. उन्होंने हेशबोन के राजा सीहोन के देश
पर अधिकार कर लिया और बाशान के राजा ओग के देश पर भी. **23** आपने
उनके वंशजों की गिनती आकाश के तारों के समान अनगिनत कर दी और उन्हें
उस देश में ले आए, जिसमें प्रवेश कर उस पर अधिकार कर लेने का आदेश
आपने उनके पूर्वजों को दिया था. **24** तब उनके वंशजों ने उस देश में प्रवेश
किया और उस पर अधिकार कर लिया. आपने ही उनके सामने से उस देश के
निवासी कनानियों को उनके अधीन कर दिया. उस देश के राजा और प्रजा
को आपने उनके हाथ में दे दिया, कि वे उनके साथ अपनी इच्छा अनुसार
व्यवहार करें. **25** उन्होंने गढ़ नगरों और उपजाऊ भूमि को अपने अधिकार में
ले लिया. उन्होंने उन सभी घरों को अपने अधिकार में कर लिया, जिनमें सब
प्रकार के अच्छे-अच्छे सामान भरे हुए थे: चट्टानों में खोदा गया हौद, अंगूर
के बगीचे, ज़ैतून के बगीचे और बहुल फलदाई पेड़. वे उनको खाते थे, वे
तृप्त हुए, वे अच्छी तरह से पोषित होते चले गए और आपकी बड़ी भलाई के
प्रति वे खुशी मनाते रहे. **26** "फिर भी वे आपसे फिर गए और उन्होंने आपसे
विद्रोह किया. उन्होंने तो आपकी व्यवस्था को अपने पीठ पीछे फेंक दिया,
वे उन भविष्यवक्ताओं का वध कर देते थे, जो उन्हें इस उद्देश्य से चेतावनी
और झिड़कियां देते थे, कि वे आपकी ओर लौट जाएं, वे परमेश्वर की घोर
निन्दाएं करते चले गए. **27** यही कारण था कि आपने उन्हें उनके सतानेवालों
के अधीन कर दिया, जो उन्हें सताते रहे; मगर जब अपने दुःख के समय में
उन्होंने आपकी दोहाई दी, आपने अपनी बड़ी करुणा के अनुसार स्वर्ग से उनकी
सुन ली, आपने उनके लिए छुड़ानेवाले भी भेजे. **28** "मगर जैसे ही उन्हें यह
छुटकारा मिलता था, वे आपके सामने दोबारा बुराई करने लगते थे; फलस्वरूप
आपने उन्हें उनके शत्रुओं के अधीन कर दिया कि वे उन पर शासन करें. जब
उन्होंने आपकी दोहाई दी, आपने स्वर्ग से उनकी सुन ली. बहुत बार आपने
अपनी करुणा के अनुसार उन्हें छुड़ाया. **29** "उन्हें अपनी व्यवस्था की ओर
फेरने के उद्देश्य से आप उन्हें चेतावनी पर चेतावनी देते रहें. मगर वे अपने हठ में
ही अड़े रहें, आपके आदेशों को न मानते थे और आपके नियमों के विरुद्ध पाप
करते रहें, जिनका पालन करने में ही मानव का जीवन है. अपने हठ में वे
आपकी आज्ञा को ठुकराते चले गए. **30** फिर भी, सालों तक आप उनकी सहते
रहे. आप उन्हें अपनी आत्मा के द्वारा अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से
चेतावनी देते रहे; मगर तब भी उन्होंने आपकी न सुनी. इसलिये आपने उन्हें उन
देशों के निवासियों के अधीन कर दिया. **31** फिर भी, अपनी अपार दया में
आपने उन्हें मिटा नहीं दिया और न ही उन्हें अकेला छोड़ दिया; क्योंकि आप
दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर हैं. **32** "इसलिये, हमारे परमेश्वर, आप जो
महान, सर्वशक्तिमान और भय-योग्य हैं, जो अपनी वाचा को स्थिर रखते हैं,
जो करुणा से भरपूर हैं, आपकी नज़रों में हमारी सारी कठिनाइयां छोटी न
जानी जाएं. वे सभी कठिनाइयां हम पर, हमारे राजाओं पर, हमारे शासकों पर,
हमारे पुरोहितों पर, हमारे भविष्यवक्ताओं पर, हमारे पूर्वजों पर और आपके
सभी लोगों पर अश्शूर के राजाओं के समय से आज तक आती रही हैं. **33**
फिर भी, जो कुछ आपने हम पर भेजा है, उसमें आप न्यायी ही हैं; क्योंकि
आपका व्यवहार विश्वासयोग्य था, मगर हमने ही दुष्टता की है. **34** क्योंकि
हमारे राजाओं ने, हमारे पुरोहितों ने और हमारे पूर्वजों ने आपकी व्यवस्था का
पालन नहीं किया और न ही उन्होंने आपके आदेशों की ओर ध्यान दिया है, न
आपकी चेतावनियों पर. **35** वह राज्य, जो आपने उन्हें अपनी भलाई में दिया
था, वह देश, जो विशाल और फलवंत देश था, जो उन्हें आपकी दी हुई भेंट थी,
उसमें उन्होंने न तो आपकी सेवा की और न ही अपने बुरे कामों से दूर हुए. **36**
"देख लीजिए: हम आज भी दास ही हैं. हम उसी देश में दास होकर रह रहे हैं,
जिसे आपने हमारे पूर्वजों को यह कहते हुए दिया था: 'इसकी अच्छी उपज को
खाओ!' **37** इसकी उपज अब उन राजाओं की होकर रह गई है, जिन्हें आपने
ही हमारे पापों के कारण हम पर अधिकारी बना दिया है. वे तो हमारे शरीर और
हमारे पशुओं तक पर अपनी इच्छा के अनुसार कर रहे हैं. इसके कारण हम
बहुत दर्द में पड़े हैं. **38** "यह सब देख हम अब एक वाचा लिखकर बना रहे हैं;
इस पर हमारे नायकों, लेवियों और पुरोहितों के नाम की मोहर भी लगा देते
हैं."

10 इस वाचा पर मुहर लगानेवालों के नाम इस प्रकार है: हाकालियाह के
पुत्र राज्यपाल नेहेमियाह. और सीदकियाहू, **2** सेराइयाह, अज़रियाह,
येरेमियाह, **3** पशहूर, अमरियाह, मालखियाह, **4** हत्तुष, शेबानियाह, मल्लूख,
5 हारिम, मेरेमोथ, ओबदिया, **6** दानिएल, गिन्नेथौन, बारूख, **7** मेशुल्लाम,
अबीयाह, मियामिन, **8** माजियाह, बिलगाइ, शेमायाह. यह सभी पुरोहित थे. **9**
लेवी: ये थे अज़ानिया का पुत्र येशुआ, बिन्नूइ जो हेनादाद के वंशजों से था,
कदमिएल; **10** उनके भाई थे शेबानियाह, होदियाह, केलिता, पेलाइयाह, हानन,
11 मीका, रेहोब, हशाबियाह, **12** ज़क्कूर, शेरेबियाह, शेबानियाह, **13** होदियाह,
बानी, बेनिनू. **14** लोगों के नायक इस प्रकार थे: पारोश, पाहाथ-मोआब, एलाम,
ज़त्तू, बानी, **15** बुन्नी, अजगाद, बेबाइ, **16** अदोनियाह, बिगवाई, आदिन,
17 अतेर, हिज़किय्याह, अज्ज़ूर, **18** होदियाह, हाशूम, बेज़ाइ, **19** हरिफ,
अनाथोथ, नेबाय, **20** मगफ़ीआष, मेशुल्लाम, हेज़ीर, **21** मेशेजाबेल, सादोक,
यद्दुआ, **22** पेलातियाह, हानन, अनाइयाह, **23** होशिया, हननियाह, हस्षूब, **24**
हल्लोहेष, पिल्हा, शोबेक, **25** रेहुम, हशाबनाह, मआसेइयाह, **26** अहीयाह,
हानन, अनान, **27** मल्लूख, हारिम और बाअनाह. **28** इसके बाद बचे हुए
लोग, पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, मंदिर के सेवक और वे सभी, जिन्होंने
खुद को परमेश्वर की व्यवस्था के लिए देश-देश के लोगों से अलग कर रखा
था, उनकी पत्नियां, उनके पुत्र-पुत्रियां; और वे सभी, जिनमें ज्ञान और समझ थी,
29 अपने संबंधियों और उनके रईसों के साथ मिल गए. इन्होंने अपने आप पर
एक शाप ले लिया और उन्होंने याहवेह की व्यवस्था के पालन करने की शपथ
ली, वह व्यवस्था, जो परमेश्वर के सेवक मोशेह द्वारा दी गयी थी; सभी ने प्रण
किया, कि वे परमेश्वर, हमारे प्रभु याहवेह की सभी आज्ञाओं, नियमों और
विधियों का पालन करने में चौकसी करेंगे. **30** उन्होंने यह शपथ भी ली, कि वे
अपनी पुत्रियों का विवाह इस देश के निवासियों से न होने देंगे और न अपने
पुत्रों के लिए उनकी पुत्रियों को लाएंगे. **31** उस स्थिति में, जब उस देश के
निवासी किसी शब्बाथ पर या किसी अलग किए हुए प्रभु के शब्बाथ पर बेचने
के लिए अपना कुछ सामान या अनाज लेकर आएं, हम शब्बाथ पर या ऐसे

अलग किए हुए दिन पर हम उनसे इसको नहीं खरीदेंगे. हम हर सातवें साल न
तो खेती करेंगे और न उधार में दिए हुए पैसे को वापस लेने की कोशिश करेंगे.
32 हमने खुद अपने ऊपर यह जवाबदारी भी ले ली कि हम हर साल एक तिहाई
शेकेल का दान दिया करेंगे, कि यह परमेश्वर के भवन में सेवा के लिए इस्तेमाल
किया जाए; 33 पवित्र रोटी के लिए, नित्य अन्नबलि के लिए, नित्य होमबलि
के लिए, शब्बाथों के लिए, नए चांद के लिए, ठहराए गए अवसरों के लिए,
अलग की गई वस्तुओं के लिए, और पापबलि के लिए, कि उनके द्वारा इस्राएल
के लिए प्रायश्चित किया जा सके और हमारे परमेश्वर के भवन के सारे कामों में
यह योगदान दे सकें. 34 इसके अलावा हमने पुरोहितों, लेवियों और लोगों के
बीच लकड़ी की भेंट के लिए चिट्ठी डाली, कि वे इसे हर साल अपने-अपने
पितरों के अनुसार इस सभी अवसरों पर हमारे परमेश्वर के भवन में ले आएं कि
याहवेह हमारे परमेश्वर की वेदी पर आग जलाई जा सके, जैसा कि व्यवस्था का
आदेश है. 35 कि वे इस भूमि की पहली उपज को, हर एक पेड़ के पहले फल
को हर साल याहवेह के भवन में ले आया करें. 36 कि वे हमारी संतान के,
अपने पशुओं के, अपनी भेड़-बकरियों के पहलौठों को, लिखी गई विधि के
अनुसार हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा कर रहे पुरोहितों के सामने हमारे
परमेश्वर के भवन में ले आएं. 37 हम खुद भी अपने गूंधे हुए आटे का पहला
भाग, अपने दान, हर एक पेड़ का फल, नई दाखमधु का और तेल का पहला
भाग हमारे परमेश्वर के भवन के कमरों में नित्य पुरोहितों के सामने ले आएंगे
और अपनी भूमि की उपज का दसवां भाग लेवियों के सामने, क्योंकि लेवी ही
सभी नगरों में दसवें अंश के अधिकारी हैं. 38 अहरोन के वंश का कोई पुरोहित
उस अवसर पर लेवी के साथ रहेगा, जब लेवी दसवां भाग इकट्ठा करते हैं. तब
लेवी हमारे परमेश्वर के भवन में आए दसवें भाग का दसवां भाग लेकर जाएगा,
यानी भंडार घर के कमरों में. 39 इस्राएल वंशज और लेवी वंशज अनाज
के दान, नई दाखमधु और तेल उन कमरों में ले आएंगे. वहां पवित्र स्थान में
इस्तेमाल के लिए ठहराए गए बर्तन रखे होंगे और वहां सेवा कर रहे पुरोहित,
द्वारपाल और गायक ठहराए हुए रहते हैं. इस प्रकार हम हमारे परमेश्वर के भवन
को अकेला न छोड़ेंगे.

11 इस पर प्रजा नायक येरूशलेम में बस गए मगर बाकी लोगों ने चिट्ठी
डालकर दस-दस में से एक व्यक्ति को पवित्र नगर येरूशलेम में बस जाने
के लिए ठहराया, जबकि बचे हुए नौ-नौ लोग दूसरे नगरों में रह गए 2 प्रजा ने
उन व्यक्तियों की बहुत तारीफ़ की, जो अपनी इच्छा से येरूशलेम में बसने के
लिए तैयार हो गए थे. 3 ये वे हैं, जो राज्यों (प्रदेशों) पर अधिकारी थे, जो
येरूशलेम में ही रहते थे, मगर यहूदिया के नगरों में हर एक प्रधान अपनी-अपनी
संपत्ति में अपने-अपने नगरों में रहता था, इस्राएल के वंशजों के पुरोहित, लेवी,
मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों के वंशज. 4 यहूदाह और बिन्यामिन
के कुछ वंशज येरूशलेम में ही रहते थे. यहूदाह के वंशज ये थे: अथलियाह, जो
उज्जियाह का पुत्र था, जो ज़करयाह का, जो अमरियाह का, जो शेपाथियाह
का, जो माहालालेल का, जो पेरेज़ के वंशज थे 5 मआसेइयाह जो बारूख
का पुत्र था, जो कोल-होज़ेह का, जो हज़ाइयाह का, जो अदाइयाह का, जो
योइआरिब का, जो ज़करयाह का, जो शेला के वंशज थे. 6 येरूशलेम में रह रहे
पेरेज़ के सभी 468 वंशज वीर योद्धा थे. 7 बिन्यामिन के वंशज ये है: सल्लू,
जो मेशुल्लाम का पुत्र था, जो योएद का, जो पेदाइयाह का, जो कोलाइयाह का,
जो मआसेइयाह का, जो ईथिएल का, जो येशाइयाह का पुत्र था; 8 और उसके
बाद गब्बाई और सल्लाई—कुल 928 व्यक्ति. 9 इनका प्रधान था ज़ीकरी
का पुत्र योएल. हस्सनुआह का पुत्र यहूदाह, नगर का सह अधिकारी था. 10
पुरोहित वर्ग में से: योइआरिब का पुत्र येदाइयाह, याकिन 11 सेराइयाह, जो
हिलकियाह का पुत्र, जो मेशुल्लाम का, जो सादोक का, जो मेराइओथ का, जो
परमेश्वर के भवन के प्रधान अहीतूब का पुत्र था. 12 इनके अलावा उनके 822
संबंधी, जो मंदिर से संबंधित कार्यों के लिए चुने गए थे; और अदाइयाह, जो
येरोहाम का पुत्र था, जो पेलाइयाह का, जो आमज़ी का, जो ज़करयाह का, जो
पशहूर का, जो मालखियाह का, 13 और उसके 242 रिश्तेदार, जो पितरों के
प्रधान थे; और अमाशसाई, जो अज़ारेल का पुत्र था, जो आहज़ाई का, जो
मेशिल्लेमोथ का, जो इम्मर का पुत्र था; 14 और उनके भाई, 128 शूर योद्धा.
उनका अधिकारी था ज़ाबदिएल, जो हग्गेदालिम का पुत्र था. 15 लेवियों में से:
शेमायाह, जो हस्षूब का पुत्र था, जो अज़रीकाम का, जो हशाबियाह का, जो
बुन्नी का पुत्र था; 16 और शब्बेथाइ और योज़ाबाद, जो लेवियों के प्रधानों में से
थे, जिनकी जवाबदारी थी परमेश्वर के भवन से संबंधित बाहरी काम; 17 और
मत्तनियाह, जो मीका का पुत्र था, जो ज़ब्दी का, जो आसफ का, जो प्रार्थना में
धन्यवाद देने वालों का मुखिया था और बकबुकियाह भाई-बंधुओं में दूसरा पद
रखता था; और अब्दा, जो शम्मुआ का पुत्र था, जो गलाल का, जो यदूथून
का पुत्र था. 18 पवित्र नगर में रह रहे लेवियों की पूरी गिनती थी 284. 19
इनके अलावा: अक्कूब, तालमोन और उनके 172 रिश्तेदार, जो फाटकों पर
चौकसी किया करते थे. 20 इनके अलावा बाकी इस्राएली, पुरोहित और लेवी
यहूदिया के अलग-अलग नगरों में बसे हुए थे; हर एक अपने-अपने भाग की
ज़मीन पर. 21 हां, मंदिर के सेवक ओफेल नगर में बस गए थे. ज़ीहा और
गिशपा मंदिर सेवकों के अधिकारी थे. 22 येरूशलेम में लेवियों के मुखिया थे
उज्जी, जो बानी का पुत्र था, जो हशाबियाह का, जो मत्तनियाह का, जो मीका
का पुत्र, जो आसफ के वंशजों में से एक था. ये सब परमेश्वर के भवन में
आराधना के गाने के लिए चुने गए गायक थे. 23 क्योंकि, उनके लिए राजा के
विशेष आदेश और तय नियम थे, जिनके अनुसार उनके लिए हर रोज़ का काम
तय किया गया था. 24 पेथाइयाह, जो मेशेजाबेल का पुत्र था, जो ज़ेराह के पुत्रों
में से एक था, ज़ेराह जो यहूदाह का पुत्र था. पेथाइयाह प्रजा से संबंधित सभी
कामों में राजा से साथ रहता था. 25 उन गांवों के विषय में यही कहा जा सकता
है, जिनमें खेत भी थे, यहूदाह के कुछ वंशज किरयथ-अरबा और इसके नगरों
में, दीबोन और उसके नगरों में और जेकबज़ील और उसके गांवों में, 26 येशुआ
में, मोलादाह में और बेथ-पेलेट में, 27 हाज़र-शूआल में, बेअरशेबा और इसके
नगरों में, 28 ज़िकलाग में, मेकोनह में और इसके नगरों में, 29 एन-रिम्मोन में,
ज़ोराह में और यरमूथ में, 30 ज़ानोहा में, अदुल्लाम में और इनके गांवों में
लाकीश और इसके खेतों में, अज़ेका और इसके नगरों में रहते थे. इस तरह
यहूदिया के निवासी बेअरशेबा से लेकर हिन्नोम घाटी तक बसते चले गए. 31
बिन्यामिन के वंशज भी गेबा से आगे की ओर बसते चले गए, मिकमाश और
अय्याह में, बेथेल और इसके नगरों में, 32 अनाथोथ, नोब, अननियाह, 33
हाज़ोर, रामाह, गित्ताईम, 34 हदिद, ज़ेबोईम, नेबल्लात, 35 लोद और ओनो में,
जो शिल्पियों की घाटी कहलाता है. 36 यहूदिया के कुछ लेवी बिन्यामिन क्षेत्र
में बसने चले गए.

12 शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरूब्बाबेल और येशुआ के साथ लौटे पुरोहित
एवं लेवियों के नाम ये हैं: सेराइयाह, येरेमियाह, एज्रा, 2 अमरियाह,
मल्लूख, हत्तुष, 3 शेकानियाह, रेहुम, मेरेमोथ, 4 इद्दो, गिन्नेथौन, अबीयाह, 5
मियामिन, मोआदियाह, बिलगाह, 6 शेमायाह, योइआरिब, येदाइयाह, 7 सल्लू,
अमोक, हिलकियाह और येदाइयाह, येशुआ के समय में ये सभी पुरोहितों के
प्रधान और उनके रिश्तेदार थे. 8 ये लेवी येशुआ, बिन्नूइ, कदमिएल, शेरेबियाह,
यहूदाह थे. इनके अलावा अपने संबंधियों के साथ मत्तनियाह भी. मत्तनियाह
धन्यवाद के गीतों का अधिकारी था. 9 आराधना के मौके पर बकबुकियाह और
उन्नी अपने रिश्तेदारों के साथ एक झुण्ड में उनके सामने खड़े हुआ करते थे.
10 येशुआ योइआकिम का पिता था, योइआकिम एलियाशिब का, एलियाशिब

योइयादा का, 11 योइयादा योनातन का और योनातन यद्दुआ का पिता था. 12
योइआकिम के दिनों में पुरोहित और पितरों के मुखिया ये थे: सेराइयाह के
कुल से मेराइयाह; येरेमियाह कुल से हनानियाह; 13 एज़्रा कुल से मेशुल्लाम;
अमरियाह कुल से येहोहानन; 14 मल्लूख से योनातन; शेबानियाह से योसेफ़;
15 हारिम से आदना; मेराइओथ से हेलकाइ; 16 इद्दो से ज़करयाह; गिन्नेथौन से
मेशुल्लाम; 17 अबीयाह से ज़ीकरी; मिनियामिन और मोआदियाह से पिलताई;
18 बिलगाह से शम्मुआ; शेमायाह से योनातन; 19 योइआरिब से मत्तेनाइ;
येदाइयाह से उज्जी; 20 सल्लू से कल्लाई; अमोक से एबर; 21 हिलकियाह से
हशाबियाह, और येदाइयाह के कुल से नेथानेल. 22 लेवियों के संबंध में यह
हुआ, कि उनके पितरों के प्रधानों का नाम एलियाशिब, योइयादा, योहानन और
यद्दुआ के समय में लिखा गया था. उसी प्रकार पुरोहितों का नाम भी फ़ारस के
राजा दारयावेश के समय में लिखा गया था. 23 लेवी के वंशज, जो पितरों के
मुखिया थे, उनका नाम एलियाशिब के पुत्र योहानन के समय में लिखा जा चुका
था. 24 हशाबियाह, शेरेबियाह और कदमिएल का पुत्र येशुआ लेवियों में प्रमुख
थे. इनका चुनाव परमेश्वर के भक्त दावीद की आज्ञा के अनुसार समूहों में स्तुति
और धन्यवाद देने के लिए किया गया था. इनके रिश्तेदार इनके सामने खड़े
हुआ करते थे. 25 मत्तनियाह, बकबुकियाह, ओबदिया, मेशुल्लाम, तालमोन
और अक्कूब द्वारपाल थे, जो फाटकों के पास के भंडारों की चौकसी करते
रहते थे. 26 ये योज़ादक के पोते, येशुआ के पुत्र, योइआकिम और राज्यपाल
नेहेमियाह और पुरोहित और शास्त्री एज़्रा के समय के सेवक थे. 27 येरूशलेम की
शहरपनाह की प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने सभी स्थानों से लेवियों को ढूंढ निकाला
कि उन्हें येरूशलेम लाया जा सके, कि वे इस प्रतिष्ठा के उत्सव को आनंद में
झांझों, सारंगी और वीणा बजाकर और धन्यवाद के गीतों को गाकर मना सकें.
28 तब गायकों के पुत्र येरूशलेम के पास के क्षेत्रों से और नेतोफ़ाथियों के गांवों
से इकट्ठा हो गए. 29 बेथ-गिलगाल और अपने खेतों से, गेबा और अज़मावेथ
से भी, क्योंकि इन गायकों ने अपने लिए येरूशलेम के पास के क्षेत्रों में गांव
बना लिए थे. 30 पुरोहितों और लेवियों ने अपने आपको शुद्ध किया; उन्होंने
लोगों, फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया. 31 मैंने यहूदिया के हाकिमों
को अपने पास शहरपनाह के ऊपर आमंत्रित किया और दो बड़े गायकों के
झुण्ड को धन्यवाद देने की जवाबदारी सौंप दी. पहले गायकों के झुण्ड का
काम था कि वह शहरपनाह पर चढ़कर दायीं ओर कूड़ा फाटक की दिशा में
आगे बढ़ें. 32 होशाइयाह और यहूदिया के प्रधानों में से आधे प्रधान उनका
अनुसरण कर रहे थे. 33 अज़रियाह, एज़्रा, मेशुल्लाम, 34 यूदाह, बिन्यामिन,
शेमायाह, येरेमियाह 35 और तुरहियों के साथ पुरोहितों के कुछ पुत्र भी उनके
साथ थे और ज़करयाह, जो योनातन का पुत्र था, जो शेमायाह का, जो मत्तनियाह
का, जो मिकाइयाह का, जो ज़क्कूर का, जो आसफ का पुत्र था; 36 उसके
साथ उसके संबंधी शेमायाह, अज़ारेल, मिलालई, गिलालाई, मआई, नेथानेल,
यूदाह और हनानी थे. यह अपने साथ परमेश्वर के जन दावीद के बाजे लिए हुए
थे. शास्त्री एज़्रा उनके आगे-आगे थे. 37 झरना फाटक शहरपनाह पहुंचकर वे
दावीद-नगर की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए. वे सीधे दावीद के घर के ऊपर की
दीवार की सीढ़ियों से पूर्व की ओर जल फाटक तक पहुंच गए. 38 दूसरा
गायकों का झुण्ड बायीं ओर बढ़ गया. मैं उनका अनुसरण कर रहा था. आधा
झुण्ड शहरपनाह के उस भाग पर था, जो भट्टियों के खंभे के ऊपर बनाई गई
थी. हम लोग भट्टियों के मीनारों के ऊपर बनी शहरपनाह से चौड़ी शहरपनाह
की ओर बढ़े 39 फिर एफ्राईम फाटक की ओर, पुराने फाटक की ओर, मछली
फाटक की ओर, हननेल खंभे की ओर और शतक खंभे की ओर जाते हुए
मछली फाटक तक. वे सभी पहरेदार फाटक पर जाकर ठहर गए. 40 इसके
बाद दोनों ही गायकों के झुण्ड परमेश्वर के भवन में जाकर खड़े हुए. मैं भी वहां
जा खड़ा हुआ. मेरे साथ वहां अधिकारी वर्ग में से आधे अधिकारी शामिल थे.
41 वहीं शोफ़ार लिए हुए पुरोहित थे एलियाकिम, मआसेइयाह, मिनियामिन,
मिकाइयाह, एलिओएनाइ, ज़करयाह और हननियाह. 42 इनके अलावा वहां
मआसेइयाह, शेमायाह, एलिएज़र, उज्जी, येहोहानन, मालखियाह, एलाम और
एज़र नाम पुरोहित भी थे. यिज़राहियाह के निर्देशन में गायकों ने अपना गाना
प्रस्तुत किया. 43 उस मौके पर लोगों ने बड़ी-बड़ी बलियां चढ़ाईं. वहां बहुत ही
आनंद मनाया जा रहा था, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से दिया गया आनंद
था-यहां तक कि स्त्रियां और बच्चे तक आनंद मना रहे थे; फलस्वरूप येरूशलेम
का यह आनंद दूर-दूर तक सुनाई दे रहा था. 44 उसी अवसर पर भंडारों के
अधिकारी भी चुने गए, कि वे सभी दान, पहले फलों, दसवें अंश को नगरों के
खेतों के अनुसार, व्यवस्था के द्वारा उन भागों को पुरोहितों और लेवियों के लिए
इकट्ठा करें; क्योंकि यह यहूदिया के लोगों के लिए आनंद का विषय था कि ये
पुरोहित और लेवी सेवा करते थे. 45 इन सभी ने दावीद और उनके पुत्र शलोमोन
द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार गायकों और द्वारपालों के साथ मिलकर अपने
परमेश्वर की आराधना और शुद्ध करने की सेवा की. 46 क्योंकि पहले के समय
में, यानी दावीद और आसफ के समय में गायकों के लिए एक प्रधान हुआ
करता था, जब वे परमेश्वर के लिए स्तुति के गीत और धन्यवाद के गीत प्रस्तुत
किया करते थे. 47 इस प्रकार ज़ेरुब्बाबेल और नेहेमियाह के शासनकाल में
गायकों और द्वारपालों के लिए ठहराए गए हर दिन का भाग सभी इस्राएली
चढ़ाया करते थे और लेवियों का भाग पवित्र करके दिया करते थे और तब लेवी
अहरोन के वंशजों के लिए ठहराया गया भाग अलग रख दिया करते थे.

13 उस दिन सभा के लिए मोशेह की पुस्तक ऊंची आवाज में पढ़ी गई.
इस पुस्तक में यह लिखा हुआ पाया गया कि परमेश्वर की सभा में न तो
किसी अम्मोनी के और न किसी मोआबी के प्रवेश की आज्ञा है, 2 क्योंकि
उन्होंने इस्राएल के लिए भोजन और पानी का इंतजाम करने की बजाय उन पर
शाप देने के लक्ष्य से बिलआम को पैसे दिए थे. मगर हमारे परमेश्वर ने शाप को
आशीर्वाद में बदल दिया. 3 इसलिये जब उन्होंने उस व्यवस्था को सुना, उन्होंने
सभी विदेशियों को इस्राएल में से बाहर कर दिया. 4 इसके पहले, पुरोहित
एलियाशिब, जिसे हमारे परमेश्वर के भवन के कमरों का अधिकारी चुना गया
था, वास्तव में तोबियाह का रिश्तेदार था. 5 उसने तोबियाह के लिए एक बड़े
कमरे को बना रखा था, जहां इसके पहले अन्नबलि, लोबान, तरह-तरह के
बर्तन और लेवियों, गायकों, द्वारपालों और पुरोहितों के लिए इकट्ठा दानों के
ठहराए गए अन्न, अंगूर के रस और तेल का दसवां भाग जमा किया जाता था.
6 मगर ऐसा हुआ कि इस समय में मैं येरूशलेम में था ही नहीं, क्योंकि बाबेल
के राजा, अर्तहषस्ता के समय के बत्तीसवें साल में मैं राजा से मिलने गया हुआ
था, मगर यहां कुछ समय रहने के बाद मैंने राजा की आज्ञा ली 7 और येरूशलेम
आ गया. मुझे उस बुराई के बारे में पता चला, जो एलियाशिब ने तोबियाह के
लिए किया—उसने परमेश्वर के भवन के आंगन में तोबियाह के लिए एक कमरा
तैयार किया था. 8 इससे मैं बहुत नाराज़ हुआ; तब मैंने तोबियाह का सारा
सामान उस कमरे के बाहर फेंक दिया. 9 तब मेरे आदेश पर वे कमरे शुद्ध किए
गए. मैंने परमेश्वर के भवन के बर्तन, अन्नबलि और लोबान दोबारा उस कमरे
में रखाव दिए. 10 तब मुझे यह भी पता चला कि लेवियों के लिए ठहराया
हुआ भाग उन्हें दिया ही नहीं गया था, फलस्वरूप तरह-तरह की सेवाओं के
लिए चुने गए लेवी और गायक सेवा का काम छोड़कर जा चुके थे-अपने-
अपने खेतों में खेती करने. 11 इसलिये मैंने अधिकारियों को फटकार लगाई,
"परमेश्वर का भवन क्यों छोड़ दिया गया है?" तब मैंने उन सबको वापस
बुलाकर उन्हें सेवा के काम पर दोबारा नियुक्त कर दिया. 12 तब सारे यहूदिया
के लोगों ने भंडार में अनाज, अंगूर का रस और तेल का दसवां भाग रखवा

दिया. 13 तब मैंने पुरोहित शेलेमियाह को, शासक सादोक को और लेवियों में से
पेदाइयाह को भंडारों का अधिकारी ठहरा दिया. उनके अलावा मैंने, मत्तनियाह
के पोते ज़क्कूर के पुत्र हनान को चुना, क्योंकि ये सभी विश्वासयोग्य पाए गए.
इनकी जवाबदारी थी अपने रिश्तेदारों में सामग्री बांटना. 14 मेरे परमेश्वर, इस
काम के लिए आप मुझे याद रखें. सच्चाई से किए गए मेरे कामों को, जो मैंने
परमेश्वर के भवन और इसकी सेवा में किए हैं, आप मिटा न दीजिए. 15 उन्हीं
दिनों में मेरे सामने यह भी आया कि यहूदिया में कुछ व्यक्ति ऐसे थे, जो शब्बाथ
पर अंगूर रौंद रहे थे, कुछ अनाज के बोरे नगर में ला रहे थे, कुछ इन्हें गधों पर
लाद रहे थे, सभी प्रकार का सामान शब्बाथ पर येरूशलेम में लाया जा रहा था,
वैसे ही अंगूर का रस, अंगूर, अंजीर और सभी प्रकार के बोझ. इसलिये मैंने
शब्बाथ पर भोजन बेचने पर उन्हें डांटा. 16 येरूशलेम में कुछ सोरवासी भी रहने
लगे थे, जो मछली और सब प्रकार का बिकने वाला सामान वहां से बिक्री कर
रहे थे. वे यह सब यहूदाह के वंशजों को शब्बाथ पर बेच रहे थे; हां, येरूशलेम
ही में! 17 तब मैंने यहूदिया के रईसों को फटकार लगाई. मैंने उनसे कहा,
"आप लोग शब्बाथ को अपवित्र कर यह कैसी बुराई कर रहे हैं? 18 क्या
आपके पूर्वजों ने यह नहीं किया था, जिसके फलस्वरूप हमारे परमेश्वर ने हम
पर और इस नगर पर यह सारी विपत्ति डाल दी है? यह होने पर भी आप लोग
शब्बाथ को अपवित्र करके इस्राएल पर परमेश्वर के क्रोध को बढ़ा रहे हैं." 19
तब यह हुआ कि शब्बाथ शुरू होने के ठीक पहले, जब येरूशलेम के फाटकों
पर अंधेरा छा ही रहा था, मैंने आदेश दिया कि फाटक बंद कर दिए जाएं और वे
शब्बाथ खत्म होने के पहले बिलकुल न खोले जाएं. इसके बाद मैंने अपने ही
कुछ सेवकों को फाटकों पर ठहरा दिया कि शब्बाथ पर किसी भी बोझ को
अंदर न आने दिया जाए. 20 एक या दो मौके ही ऐसे गए होंगे, जब विभिन्न
प्रकार के व्यापारियों और बेचने वालों ने येरूशलेम के बाहर रात बिताई थी. 21
तब मैंने उन्हें इस प्रकार चेतावनी दी, "क्यों आप लोग शहरपनाह के पास रात
बिताते हैं? यदि आप दोबारा यह करते पाए जाएंगे, तो मुझे आप पर ताकत का
इस्तेमाल करना पड़ेगा." इस चेतावनी के बाद वे शब्बाथ पर येरूशलेम कभी
नहीं आए. 22 तब मैंने लेवियों को आदेश दिया कि शब्बाथ को पवित्र करने के
उद्देश्य से वे अपने आपको शुद्ध कर द्वारपाल के समान आया करें. मेरे परमेश्वर,
इस भले काम के लिए भी आप मुझे याद रखिए और अपनी बड़ी करुणा के
अनुसार मुझ पर अपनी दया हमेशा बनाए रखिए. 23 उन्हीं दिनों में मेरा ध्यान
इस सच्चाई की ओर भी गया, कि यहूदियों ने अशदोद, अम्मोन और मोआब
की स्त्रियों से विवाह किया हुआ था. 24 उनकी संतान के विषय में सच्चाई यह
है कि उनकी संतान के आधे लोग अशदोद की भाषा बोलते है, उनमें से कोई भी
यहूदिया की भाषा में बातचीत कर ही नहीं सकता, बल्कि वे सिर्फ अपने ही
लोगों की भाषा का इस्तेमाल करते हैं. 25 इसलिये मैंने उनसे बहस की, उन्हें
धिक्कारा, उनमें से कुछ पर तो मैंने हाथ भी छोड़ दिया और कुछ के बाल नोचे.
तब मैंने उन्हें परमेश्वर की शपथ दी, "तुम उनके पुत्रों को अपनी पुत्रियां विवाह
के लिए नहीं दोगे और न उनकी पुत्रियां को अपने पुत्रों के लिए या खुद अपने
विवाह के लिए लोगे. 26 क्या इस्राएल के राजा शलोमोन ने इन्हीं विषयों में
पाप नहीं किया था? इतना होने पर भी अनेकों देशों में उनके समान राजा कोई
न था. उन पर उनके परमेश्वर का प्रेम स्थिर था और परमेश्वर ने उन्हें सारे
इस्राएल पर राजा ठहराया दिया; फिर भी, उन विदेशी स्त्रियों ने उन्हें तक पाप
करने के लिए फेर दिया था. 27 तब क्या यह सही होगा कि हम आपसे सहमत
होकर यह बड़ी बुराई करें और विदेशी स्त्रियों से विवाह करने के द्वारा अपने
परमेश्वर के विरुद्ध विश्वासघात करें?" 28 यहां तक कि महापुरोहित एलियाशिब
के पुत्रों में से एक योइयादा, होरोनी के सनबल्लत का दामाद था. मैंने उसे वहां
से निकाल दिया. 29 मेरे परमेश्वर, आप इन्हें याद रखिए, क्योंकि इन्होंने
पुरोहित के पद को और पुरोहित की और लेवियों की वाचा को अशुद्ध किया है.
30 इस प्रकार मैंने उन्हें उन सभी से शुद्ध कर दिया, जो कुछ विदेशी था. मैंने
पुरोहितों और लेवियों के लिए उनके कामों को ठहरा भी दिया-हर एक के लिए
निश्चित काम. 31 मैंने ठहराए गए अवसरों के लिए लकड़ी और पहले फलों
को देने का भी प्रबंध कर दिया. मेरे परमेश्वर, मेरी भलाई के लिए मुझे याद
रखिये!

एस्तेर

1 राजा अहषवेरोष के शासनकाल में, जिसका साम्राज्य हिंद देश से कूश तक
127 राज्यों तक विस्तीर्ण था, 2 जब वह राजधानी शूशन में अपने राज
सिंहासन पर विराजमान था, 3 अपने शासनकाल के तीसरे वर्ष में उसने अपने
समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक विशिष्ट उत्सव का आयोजन
किया. फारस एवं मेदिया के सेनापति, सारे सांसद एवं राज्यपाल इस भोज में
उसके साथ शामिल हुए. 4 यह भोज 180 दिन चलता रहा, जिसमें राजा ने
अपना राजसी वैभव, समृद्धि एवं संपत्ति का प्रदर्शन किया. 5 जब इस काल का
अंत हुआ, राजा ने राजधानी शूशन में उपस्थित समस्त प्रजा के लिए; चाहे वह
सामान्य हो अथवा विशिष्ट, राजमहल के उद्यान के आंगन में सात दिनों का एक
विशेष भोज आयोजित किया. 6 इस स्थल को सफेद तथा बैंगनी वस्त्रों का
उत्कृष्ट सन के पर्दे बैंजनी डोरियों द्वारा चांदी की छड़ों से लटकाकर सजाया
गया था. ये छड़ें संगमरमर के स्तंभों पर लगी थीं. वहां सोना एवं चांदी के
आसन सजाए गए थे इस स्थल को संगमरमर के खंभों, अमूल्य रत्नों तथा
अमूल्य पत्थरों से गढ़ा गया था. 7 दाखमधु सोने के विभिन्न प्रकार के बर्तनों में
परोसी जा रही थी. राजकीय दाखमधु राजा के बड़े भंडार में से बहुतायत से
परोसी जा रही थी. 8 पेय परोसने के विषय में आज्ञा थी कि किसी को इसके
पीने के लिए मजबूर न किया जाए क्योंकि राजा ने राज कर्मचारियों को यह
आज्ञा दी थी कि वे वही करें जैसा हर एक बुलाए गए लोग चाहते है. 9 रानी
वश्ती ने भी राजमहल की स्त्रियों के लिये अहषवेरोष के राजमहल में भोज दिया
था. 10 सातवें दिन जब राजा दाखमधु से मस्त था उसने महूमान बिज़्था हरबोना
बिगथा अबगथा ज़ेथर तथा करकस नामक सात खोजों को 11 आदेश दिया कि
रानी वश्ती को राजा के सामने उसके राजसी मुकुट के साथ प्रस्तुत किया जाए,
शासकों एवं समस्त उपस्थित अतिथियों के सामने उसके सौंदर्य का प्रदर्शन
करे, रानी वश्ती अति सुंदर थी. 12 किंतु रानी वश्ती ने खोजों द्वारा दिए गए
राजा के इस आदेश को अस्वीकार कर दिया. इस पर राजा क्रोधित हो उठा,
क्रोध उसके अंदर भड़कने लगा. 13 तब राजा अपने समय के अनुसार अपने
उन ज्ञानियों से बोला जो न्यायशास्त्र एवं नियम के विशेषज्ञ थे 14 इन ऊंचे पदों
पर थे: करषना, शेतार, अदमाता, तरशीश, मेरेस, मरसेना, तथा ममूकान. ये सात
फारस तथा मेदिया के ऐसे प्रधान थे जो साम्राज्य में ज़रूरी थे, उनके लिए राजा
की उपस्थिति में प्रवेश आसान था. 15 राजा ने इनसे पूछा, "नियम के अनुसार
अब रानी वश्ती के साथ क्या किया जाना सही होगा, क्योंकि उसने खोजों द्वारा
दी गई राजा अहषवेरोष की आज्ञा नहीं मानी है?" 16 ममूकान ने राजा एवं
अधिकारियों के सामने साफ किया, "रानी वश्ती का यह काम राजा के विरुद्ध
अपराध है, मतलब यह समस्त अधिकारियों, राजा अहषवेरोष के राज्यों के
समस्त लोगों के विरुद्ध एक बड़ा अपराध है. 17 क्योंकि रानी के इस काम की
सूचना समस्त स्त्रियों को मिल जाएगी, जिसका परिणाम यह होगा, वे सभी
अपने-अपने पतियों के प्रति घृणा के साथ व्यवहार करेंगी, क्योंकि तब वे यह
विचार करने लगेंगी, 'राजा अहषवेरोष का आदेश था कि रानी वश्ती उनके
सामने लायी जाए, किंतु वह उनके सामने नहीं आई.' 18 फारस एवं मेदिया की
स्त्रियों ने आज रानी के जिस व्यवहार के विषय में सुन लिया है, राजा के हाकिमो
से वैसा ही व्यवहार करेंगी. इससे उनमें बहुत घृणा एवं क्रोध उत्पन्न हो जाएगा.
19 "यदि राजा को यह उपयुक्त लगे, वह एक राजाज्ञा प्रसारित कर दें जिसे
फारस एवं मेदिया के नियमों में लिख दिया जाए कि कभी इस नियम को बदला
न जा सके, कि अब कभी भी रानी वश्ती राजा अहषवेरोष की उपस्थिति में
प्रवेश न करे, तब रानी वश्ती का राजकीय पद किसी अन्य को जो वश्ती से
अधिक योग्य हैं उसे प्रदान कर दें 20 जब राजा के द्वारा प्रसारित आज्ञा उनके
संपूर्ण साम्राज्य में सुनाई जाएगी तब सब स्त्रियां अपने पतियों का आदर करने
लगेंगी, विशेष अथवा सामान्य, सभी अपने-अपने पतियों का सम्मान करने
लगेंगी." 21 राजा एवं शासकों के लिए यह परामर्श स्वीकार्य था, तब राजा ने
ममूकान के प्रस्ताव के अनुरूप ही कार्य पूरा किया. 22 तब उसने राजा के
समस्त राज्यों में पत्र प्रेषित किए, हर एक राज्य में उसी की अक्षर के अनुरूप
तथा हर एक जाति को उसी की भाषा में कि अपने-अपने परिवार में हर एक
पुरुष घर का मुखिया हो तथा वह अपने जाति की भाषा बोला करे.

2 जब यह सब पूरा हो चुका, राजा अहषवेरोष का क्रोध ठंडा हो गया, उसने
वश्ती के उस आचरण का स्मरण किया तथा यह भी, कि वश्ती के विरुद्ध
कैसी राजाज्ञा प्रभावी की जा चुकी थी. 2 राजा के अधिकारियों ने राजा के
सामने प्रस्ताव रखा, "राजा के लिए रूपवान, युवा कुंवारियों की खोज की
जाएं. 3 साम्राज्य के हर एक राज्य में राजा मुखियाओं को नियुक्त करें, कि वे
राजधानी शूशन में हर एक रूपवान, युवा, कुंवारियों को एकत्र करें. उन्हें राजा
के खोजा हेगाइ के संरक्षण निवास में रखा जाए, जो समस्त स्त्रियों के लिए
प्रबंधक था. इन सभी कुंवारियों को सुंदर बनाने वाली वस्तुएं दी जाएं. 4 तब
वह युवती, जो राजा को उत्तम लगे, वह वश्ती के स्थान पर रानी हो जाए."
राजा को यह प्रस्ताव अच्छा लगा और उसने यही किया. 5 शूशन गढ़नगर में
एक यहूदी निवास करता था, जिसका नाम था, मोरदकय, वह बिन्यामिन का
वंश का था वह याईर का पुत्र था, जो शिमेई का, जो कीश का पुत्र था. 6
वह यहूदिया के राजा यकोनियाह के साथ येरूशलेम से अन्य बंदियों के साथ
बंधुआई में गया हुआ था, जिन्हें बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने बंदी बनाकर ले
गया था. 7 मोरदकय हदास्साह का पालन पोषण कर रहा था. हदास्साह एस्तेर
नाम से भी जानी जाती थी. वह मोरदकय के चाचा की पुत्री थी उसके माता-
पिता जीवित नहीं थे. यह युवती सुंदर और रूपवती थी. जब उसके माता-पिता
की मृत्यु हुई, मोरदिकय ने उसे अपनी ही पुत्री सदृश अपना लिया था. 8 उसके
बाद का घटनाक्रम इस प्रकार है: जब राजा की राजाज्ञा सर्वत्र सुना दी गयी,
अनेक युवतियां गढ़नगर शूशन हेगाइ के संरक्षण एकत्र कर दी गई थी. एस्तेर को
भी राजमहल में हेगाइ के संरक्षण में दिया गया, जो युवतियों का प्रभारी था. 9
हेगाइ को एस्तेर प्रिय लगी और उसे हेगाइ की कृपा प्राप्त हो गयी. हेगाइ ने तुरंत
एस्तेर की सौंदर्य प्रसाधन एवं भोजन वस्तु का प्रबंध कर दिया. इसके अलावा
उसने एस्तेर के लिए राजमहल की सात सर्वोत्तम परिचारिकाएं रखी. एस्तेर
एवं इन दासियों को निवास स्थान के सर्वोत्तम क्षेत्र में रख दिया. 10 एस्तेर ने
मोरदकय के संदेश के अनुसार अपनी जाति एवं पृष्ठभूमि की बातें गुप्त रखी थी.
11 प्रतिदिन मोरदकय रानी महल के आंगन के सामने आया जाया करता था कि
उसे एस्तेर की गतिविधियों की जानकारी रहें. 12 स्त्रियों के लिए निर्धारित
नियम के अनुसार जब हर एक नवयुवती राजा अहषवेरोष के सामने जाने के
लिए बारह महीनों का निर्धारित काल पूर्ण कर लेती—हर एक की सुंदरता को
संवारने के क्रम में छः माह गन्धरस का तेल लगाया जाता था और छः महीने
उबटन लगाया जाता था, तब हर एक को बारी-बारी से राजा के सामने लाया
जाता था. 13 नवयुवतियां इस प्रक्रिया से राजा के सामने प्रस्तुत की जाती थी:
रानी निवास में से राजमहल में ले जाने के लिए कोई भी उपयुक्त वस्तु दे दी
जाती थी. 14 सायंकाल में नवयुवतियां कक्ष में प्रवेश करती थी तथा प्रातःकाल
में वह एक अन्य रानी निवास में पहुंच जाती थी. यह शाअसगाज़ के संरक्षण में
हो जातीं थी. यदि राजा उससे प्रसन्न न होता, तो वह लड़की फिर कभी राजा
के पास न जाती, और यदि राजा उससे प्रसन्न होता तो उसे राजा नाम लेकर
वापस बुलाता था. 15 जब मोरदकय के चाचा अबीहाइल की पुत्री एस्तेर की
बारी आई, जिसका मोरदकय ने अपनी ही पुत्री सदृश पालन पोषण किया था,
वह राजा की उपस्थिति में प्रस्तुत हुई. उसने राजा के खोजा हेगाइ द्वारा, जो

स्त्रियों का प्रभारी था, दिये परामर्श के अतिरिक्त अपने लिए कुछ भी याचना
नहीं की. जिस किसी ने एस्तेर को देखा, हर एक को वह सुंदर लगी. 16 तब
दसवें माह में, अर्थात् तेबिथ माह में राजा अहषवेरोष के शासन के सातवें वर्ष में
एस्तेर को राजा अहषवेरोष के राजमहल में लाया गया. 17 एस्तेर सभी अन्य
युवतियों की अपेक्षा में राजा को प्रिय लगी, उसे अन्य सभी कुंवारियों की
अपेक्षा राजा की अधिक कृपा एवं अनुग्रह प्राप्त हो गया, इतना, कि राजा ने
उसके सिर पर राजकीय मुकुट रखकर उसे वश्ती के स्थान पर रानी घोषित कर
दिया. 18 इस अवसर पर राजा ने एक भव्य भोज आयोजित किया, जिसे नाम
दिया गया एस्तेर का भोज, इसमें उसके सभी शासक एवं अधिकारी आमंत्रित थे.
इसके अतिरिक्त समस्त साम्राज्य में अवकाश घोषित किया तथा राजा के कोष
में से उपहार भी वितरित किए गए. 19 जब कुंवारी नवयुवतियां फिर से एकत्रित
हो गई, मोरदकय उस समय राजमहल परिसर के फाटक पर ही बैठा हुआ था.
20 अब तक एस्तेर ने अपनी जाति एवं कुल के बारे में पृष्ठभूमि प्रकट नहीं की
थी, जैसा मोरदकय ने उसे आदेश दिया था, क्योंकि एस्तेर वही करती थी, जो
मोरदकाय उसे आदेश देता था. ठीक जैसा वह उस समय करती थी, जब वह
उसके संरक्षण में थी. 21 उन्हीं दिनों में जब मोरदकय राजमहल परिसर के द्वार
पर बैठा करता था, राजा के द्वारपालों में से दो, बिगथान तथा तेरेश किसी कारण
राजा अहषवेरोष पर नाराज हो गए और उसकी हत्या की युक्ति करने लगे. 22
इस षड़्यंत्र के बारे में मोरदकय को मालूम हो गया. इसकी सूचना उसने रानी
एस्तेर को दे दी और मोरदकय की ओर से एस्तेर ने राजा को सूचित किया. 23
जब इस षड़्यंत्र की खोजबीन की गई और इस बात का पता चला, उन दोनों को
मृत्यु दंड पर लटका दिया गया. इसका उल्लेख राजा के सामने ही इतिहास ग्रंथ
में लिख लिया.

3 इन घटनाओं के बाद राजा अहषवेरोष ने अगागी हम्मेदाथा के पुत्र हामान
को वर्णन किया. राजा ने उसे उन सभी के ऊपर अधिकार प्रदान कर उसे
सम्मानित किया, जो राजा के साथ शासक थे. 2 राजमहल परिसर के द्वार पर
सभी अधिकारी-सेवक झुककर हामान को दंडवत किया करते थे क्योंकि
राजा के ही ओर से उसके संबंध यह आदेश प्रसारित किया जा चुका था. परंतु
मोरदकय न तो झुकता था और न उसको दण्डवत् करता था. 3 एक अवसर पर
प्रवेश द्वार पर नियुक्त राजा के अधिकारियों ने मोरदकय से प्रश्न किया, "तुम
राजा की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते?" 4 जब वे मोरदकय को प्रतिदिन
इसका स्मरण दिलाते रहे और फिर भी उसने उनकी चेतावनी की ओर ध्यान
नहीं दिया, तब उन्होंने इस विषय का उल्लेख हामान से किया, कि वे यह
मालूम कर सकें कि मोरदकय का विचार स्वीकार्य होगा अथवा नहीं, क्योंकि
मोरदकय उन पर यह प्रकट कर चुका था कि वह एक यहूदी है. 5 जब हामान ने
यह देखा कि मोरदकय न तो उसके सामने झुकता है और न ही उसका आदर
करता है, तब हामान क्रुद्ध हो गया! 6 क्योंकि उन्होंने उसे यह भी सूचित किया
था, कि मोरदकाय किस समुदाय से था. इस कारण हामान यह युक्ति करने लगा
कि किस रीति से समस्त यहूदियों को नष्ट किया जा सकता है, जो मोरदकय के
सजातीय थे, जो अहषवेरोष के साम्राज्य में फैल गये थे. 7 राजा अहषवेरोष के
शासन के बारहवें वर्ष के पहले महीने निसान में हामान के सामने दिन-दिन तथा
महीने-महीने करके बारहवें महीने के लिए अर्थात् अदार के लिए पुर अर्थात्
चिट्ठी डाली गई. 8 हामान ने राजा अहषवेरोष से निवेदन किया, "आपके सारे
साम्राज्य में कुछ विशेष जाति समूह के लोग बिखरे हुए रह रहे हैं. इनका अपना
नियम है, जो सभी अन्यों से अलग हैं. ये वे हैं, जो राजा के नियम को महत्व
नहीं देते. इन्हें बने रहने देना राजा के लाभ में न होगा. 9 यदि यह राजा को
उत्तम लगे, यह राजाज्ञा प्रसारित की जाए, कि इन्हें नष्ट कर दिया जाए. मैं स्वयं
कोषाधिकारियों के हाथ में दस हजार चांदी के सिक्के सौंपूंगा, कि जो जो
राजाज्ञा का पालन करेगा, उन्हें दी जायें." 10 इस पर राजा ने अपनी उंगली से
राजकीय अंगूठी निकाली और यहूदियों के शत्रु अगागवासी हम्मेदाथा के पुत्र
हामान को सौंप दी. 11 राजा ने हामान को आश्वासन दिया, "तुम्हें धनराशि भी
दी जा रही है और सहायक भी. अब तुम्हें जो कुछ ज़रूरी लगे वही करो." 12
तब प्रथम महीने की तेरहवीं तिथि पर राजा के लेखकों को आमंत्रित किया गया
और हामान द्वारा दी गयी राजाज्ञा सारे साम्राज्य के हर एक राज्य के हाकिमो एवं
राज्यपालों के नाम तथा प्रजा पर नियुक्त अधिकारियों के लिए उसी राज्य की
भाषा एवं अक्षर में लिखवा दी गई. यह राजाज्ञा अहषवेरोष के नाम में लिख दी
गई थी. तथा इस पर राजा की राजमुद्रा की मोहर लगा दी गई थी. 13 ये चिट्ठी
सारे साम्राज्य के हर एक राज्य को चिट्ठी संदेशवाहकों द्वारा दी गई थी. इनमें
संदेश यह था: यहूदियों का संहार हो, उन्हें नष्ट कर दो, उन सभी का अस्तित्व
ही समाप्त कर दो, चाहे युवा हों, वृद्ध हों, स्त्रियां हों, अथवा बालक हों, यह
एक ही दिन में पूरा हो, बारहवें महीने अदार की तेरहवीं तिथि पर. इसी दिन
उनकी संपत्ति भी लूट ली जाए. 14 इस लेख की एक प्रति हर एक राज्य में
लोगों के सामने इस घोषणा के साथ सौंपी जाए कि समस्त लोग उस विशेष दिन
के लिए तैयार रहें. 15 राजा के आदेश पर संदेशवाहक तुरंत चले गए. राजाज्ञा
को गढ़नगर शूशन में जाहिर कर दिया गया. राजा एवं हामान साथ बैठे हुए
दाखमधु में मस्त थे जबकि शूशन नगर में घबराहट फैल चुकी थी.

4 यह सब, जो कुछ किया गया था, मालूम हुआ तब मोरदकय ने अपने वस्त्र
फाड़ दिए, टाट ओढ़े, देह पर भस्म लगाकर शोक करता रहा, और ऊंची
आवाज से चिल्लाते हुए नगर चौक से 2 राजमहल प्रवेश द्वार पर जा पहुंचा.
टाट ओढ़ के राजमहल के द्वार से प्रवेश करना मना था. 3 सारे साम्राज्य में जहां-
जहां राजाज्ञा तथा आदेश पहुंच चुका था, यहूदियों में गहन वेदना-विलाप फैल
चुका था. यहूदी उपवास कर रहे थे; रो रहे थे, हां, चिल्लाते भी. अनेकों ने
भस्म के साथ टाट ओढ़ लिए थे. 4 एस्तेर की परिचारिकाओं एवं खोजों ने उसे
इसकी सूचना दी. जिससे वह बहुत संकट में थी. उसने मोरदकय के लिए वस्त्र
भेज दिए, कि वह अपने टाट वस्त्र छोड़ दे, किंतु मोरदकाय ने ये वस्त्र अस्वीकार
कर दिए. 5 तब एस्तेर ने राजा के खोजों में से हाथाख नाम खोजा को बुलवाया,
जिसे स्वयं राजा ने ही एस्तेर की सेवा के लिए नियुक्त किया था; एस्तेर ने
हाथाख को मोरदकय से यह मालूम करने के लिए प्रेषित किया, कि यह सब
क्या हो रहा है तथा इसके पीछे क्या कारण है? 6 तब हाथाख राजमहल प्रवेश
द्वार के सामने नगर चौक पर गया. 7 मोरदकय ने उसे अपने साथ हुए समस्त
घटना का विवरण दे दिया तथा यह भी कि हामान ने यहूदियों को नष्ट करने पर
राजकोष में ठीक-ठीक कितना धन देने की प्रतिज्ञा की है. 8 मोरदकय ने तो उसे
उस राजाज्ञा जो शूशन नगर में उनके नाश के लिए निकाली जा चुकी थी, उसकी
एक नकल भी इस उद्देश्य से सौंप दी, कि हाथाख यह एस्तेर को दिखा दे तथा
उसे इस विषय की सूचना प्राप्त हो सके; और एस्तेर राजा से उसकी कृपा की
याचना करे तथा राजा के सामने अपने लोगों का पक्ष समर्थन कर सके. 9
हाथाख ने वहां से लौटकर मोरदकय द्वारा प्रकट की गई समस्त बात एस्तेर को
बता दी. 10 इस पर एस्तेर ने हाथाख को मोरदकय तक यह संदेश पहुंचाने का
आदेश दिया, 11 "राजा के सारे कर्मचारी एवं राजा के सारे साम्राज्य की प्रजा
इस बात को जानती हैं, कि कोई स्त्री अथवा पुरुष यदि बुलाहट के बिना राजा के
भीतरी आंगन में प्रवेश कर जाता है, उनके लिये एक ही नियम बनाकर रखा है,
उसे मृत्यु दंड दिया जाए. उसके जीवित रह सकने का मात्र एक ही कानून शेष
रहता है यदि राजा उसकी ओर अपना स्वर्ण राजदंड बढ़ाए, कि वह जीवित रह
सके. मालूम है कि गत तीस दिनों से राजा द्वारा मुझे बुलाया नहीं गया है."
12 जब एस्तेर की ये बातें मोरदकय को सुनाई गई, 13 मोरदकय ने आग्रह
किया कि एस्तेर को यह उत्तर भेज दिया जाए: "इस सोच में न रह जाना कि

तुम्हारे राजमहल में रहने के कारण तुम समस्त यहूदियों पर आए संकट से बच
जाओगी. 14 यदि तुम इस अवसर पर चुप रहीं, यहूदियों के लिए निश्चय
किसी अन्य जगह से राहत और उद्धार तो आ ही जाएगा, किंतु तुम एवं तुम्हारा
कुल मिट जाएगा. कौन इस मर्म को समझ सकता है कि तुम्हें यह राजपद इस
परिस्थिति के लिए प्रदान किया गया है?" 15 तब एस्तेर ने उन्हें मोरदकय के
लिए इस उत्तर के साथ भेजा, 16 "जाइए और शूशन नगर के सभी यहूदियों को
एकत्र कीजिए तथा मेरे लिए उपवास कीजिए; तीन दिन तथा तीन रात को कोई
भी कुछ न खाए और न ही कुछ पिए. अपनी परिचारिकाओं के साथ स्वयं
मैं भी इसी प्रकार उपवास करूंगी. तब मैं इसी स्थिति में राजा के पास भीतर
जाऊंगी, जो नियम के विरुद्ध है. तब यदि मेरा नाश होता है, तो हो जाए." 17
मोरदकय ने जाकर ठीक यही किया, जैसा एस्तेर ने उसे आज्ञा दी थी.

5 तब घटनाक्रम इस प्रकार है: उपवास के तृतीय दिन एस्तेर अपने राजकीय
राजसी पोशाक धारण कर राजा के राजमहल के आंगन में राजा के कक्षों के
सामने जा खड़ी हुई. राजा इस समय सिंहासन कक्ष में, जो राजमहल के प्रवेश के
सम्मुख है, सिंहासन पर बैठा था. 2 जब राजा ने रानी एस्तेर को आंगन में खड़ी
हुई देखा, तब राजा के हृदय में एस्तेर के प्रति कृपा हुई और दिल आनंद से भर
गया. राजा ने अपने हाथ में पकड़े हुए स्वर्ण राजदंड ले, एस्तेर की ओर में
बढ़ा दिया. तब समय के अनुरूप एस्तेर ने आगे बढ़कर राजदंड के नोक को
स्पर्श किया. 3 राजा ने उससे पूछा, "रानी एस्तेर, क्या हुआ? क्या चाहती हो
तुम? यदि तुमने मुझसे आधे साम्राज्य की भी याचना की, तो वह भी तुम्हें दे
दिया जाएगा." 4 एस्तेर ने उत्तर दिया, "यदि महाराज मुझसे प्रसन्न हैं, तो
महाराज एवं हामान आज मेरे द्वारा आयोजित भोज में शामिल होने का कष्ट
करें." 5 राजा ने आदेश दिया, "तुरंत हामान को बुलाया जाए, कि हम एस्तेर
की इच्छा को पूरी करें." तब राजा तथा हामान एस्तेर द्वारा तैयार किए गए भोज
में सम्मिलित होने आए. 6 जब भोज के अवसर पर दाखमधु पीने बैठे थे, राजा
ने एस्तेर से प्रश्न किया, "क्या है तुम्हारी याचना, कि इसको पूरी की जा सके.
क्या है तुम्हारा आग्रह? यदि वह मेरे आधे साम्राज्य तक है, पूर्ण किया जाएगा."
7 एस्तेर ने उत्तर दिया, "मेरी याचना तथा बिनती यह है 8 यदि मैंने राजा की
कृपा प्राप्त कर ली है, तथा यदि मेरा आग्रह पूर्ण करने में राजा ने स्वीकार किया
है और वह मेरी विनती पूर्ण करने के लिये भी तत्पर हैं, तो क्या राजा एवं हामान
मेरे द्वारा तैयार किए गए भोज पर कल भी आ सकेंगे, तब मैं वही करूंगी, जो
राजा आदेश देंगे." 9 उस दिन हामान बहुत आनंदित हृदय के साथ लौटा; किंतु
जैसे ही हामान की दृष्टि मोरदकय पर पड़ी, जो उस समय राजमहल के द्वार पर
ही था, जिसने उसके सामने खड़ा होकर अभिनंदन करना उचित न समझा और
न ही उसे सम्मान देना उचित समझा, हामान मोरदकय के प्रति क्रोध से भर उठा.
10 फिर भी हामान ने स्वयं पर नियंत्रण बनाए रखा और अपने घर को लौट गया.
उसने अपने मित्रों एवं पत्नी ज़ेरेष को अपने पास में बुला लिया. 11 उनके सामने
हामान ने अपने वैभव एवं समृद्धि का, अपने पुत्रों की संख्या का तथा हर एक
घटना का उल्लेख किया, जिनमें राजा ने उसकी प्रशंसा का वर्णन किया तथा
राजा द्वारा, अन्य सभी शासकों एवं राजा के अधिकारियों की अपेक्षा उसे ऊंचा
पद देने की अपेक्षा वर्णन किया गया. 12 हामान ने यह भी कहा, "यह भी
मालूम है कि रानी एस्तेर ने राजा के साथ किसी अन्य को आमंत्रित न कर मात्र
मुझे ही आमंत्रित करना उचित समझा. 13 फिर भी, इतना सब होने पर भी मुझे
कोई चैन नहीं मिलता, जब कभी मैं यहूदी मोरदकय को राजमहल परिसर द्वार
पर बैठा हुआ देखता हूं." 14 यह सुन उनकी पत्नी ज़ेरेष तथा उसके समस्त मित्रों
ने यह सुझाव दिया "आप बीस मीटर ऊंचा एक फांसी का खंभा बनवा दीजिए
तथा सुबह जाकर राजा से अनुरोध कर मोरदकय को लटका दीजिए. और आप
जाइए और राजा के साथ भोज का आनंद उठाइए." हामान को यह परामर्श सही
लगा तब उसने उस स्तंभ का निर्माण करवा डाला.

6 उस रात राजा को नींद नहीं आई, तब उसने आदेश दिया, कि इतिहास
की पुस्तक लायी जाए, कि उसे राजा के सामने वाचन किया जाए. 2 वहां
पुस्तक में यह बात सामने आयी, कि राजा के दो द्वारपाल खोजा, बिगथान एवं
तेरेश का राजा अहषवेरोष की हत्या का षड्‍यंत्र मोरदकय द्वारा सूचित किया
गया था. 3 राजा ने पूछा, "मोरदकय को इसके लिए कौन सा सम्मान अथवा
पुरस्कार दिया गया?" राजा के परिचाराकों ने उत्तर दिया. "कुछ भी नहीं
किया गया है, उसके लिए." 4 राजा ने पूछा, "कौन है इस समय आंगन में?"
हुआ यह था, कि हामान ने इसी समय राजमहल परिसर के बाहर के आंगन में
प्रवेश किया था, कि वह राजा से मोरदकय को उस स्तंभ पर लटकाने की चर्चा
कर सके, जो उसने मोरदकय के लिए बनवाया था. 5 राजा के अधिकारियों ने
उसे सूचित किया, "महाराज, हामान आंगन में ठहरे हुए हैं." राजा ने आदेश
दिया, "उसे यहां आने दो." 6 हामान भीतर आ गया. राजा ने उससे प्रश्न किया,
"यह बताओ, यदि राजा किसी व्यक्ति को सम्मान प्रदान करना चाहे, तो इसके
लिए क्या-क्या उपयुक्त होगा?" हामान के मन में विचार आया: "मेरे अतिरिक्त
राजा भला किसे सम्मानित करना चाहेंगे?" 7 हामान ने राजा को उत्तर दिया,
"राजा जिस व्यक्ति को सम्मान करना चाहें, 8 उसके लिए वही राजसी पोशाक
लाया जाए, जो स्वयं राजा पहना करते हैं, उसे वही घोड़ा दिया जाए, जिसका
प्रयोग स्वयं राजा करते हैं, तथा उसके सिर पर राजसी मुकुट भी रखा जाए; 9
यह राजसी पोशाक एवं घोड़ा राजा के सर्वोच्च शासक को सौंपा जाए कि वह
यह राजसी वस्त्र उस व्यक्ति को पहना दे, जिसे राजा आदर करना चाहते हैं. तब
उस व्यक्ति को घोड़े पर सवार किया जाए और उसे इस तरह से नगर चौक में
लेकर घुमाया जाए. यह करते हुए उसके आगे-आगे यह घोषणा की जाए: 'राजा
जिस व्यक्ति को आदर करना चाहते हैं, उसके साथ यही किया जाएगा.'" 10
राजा ने हामान को आदेश दिया, "तुरंत वे राजसी वस्त्र तथा घोड़ा लो, जैसा
सुझाव अभी तुमने रखा है और यहूदी मोरदकय के साथ वह सब करो, जो इस
समय राजमहल के परिसर के द्वार पर बैठा हुआ है. तुमने जैसा जैसा सुझाव रखा
है, उसमें कोई कमी न आने पाए." 11 तब हामान ने राजसी पोशाक, वस्त्र लिया
और घोड़ा लिया. उसने मोरदकय को वह राजसी पोशाक, वस्त्र पहनाया और
उसे घोड़े पर सवार करके नगर चौक में घुमाया. वह उसके आगे-आगे यह
घोषणा किये जा रहे थे: "उस व्यक्ति के साथ ऐसा ही किया जाएगा, जिसका
राजा आदर करना चाहते हैं." 12 मोरदकय तो राजमहल परिसर द्वार पर लौट
गया; किंतु हामान तुरंत अपने घर को विलाप करता अपने सिर को ढांप कर
लौट गया. 13 उसने अपनी पत्नी ज़ेरेष तथा अपने मित्रों को उसके साथ जो हुआ
सब कुछ कह सुनाया. यह सुन उसकी पत्नी ज़ेरेष तथा उसके बुद्धिमान दोस्तों ने
उसे चेतावनी दी, "यदि मोरदकय, जिसके सामने तुम्हारे पतन की शुरूआत हो
चुकी है, यहूदी मूल का है, जब तक तुम उसे पराजित न कर पाओगे-तुम्हारा
पतन सुनिश्चित है." 14 जब उनके मध्य यह वार्तालाप चल रहा था, वहां राजा
के खोजा आ पहुंचे और हामान को तत्काल अपने साथ उस भोज के लिए ले
गए, जिसे एस्तेर ने तैयार किया था.

7 राजा तथा हामान रानी एस्तेर के यहां दाखमधु पी रहे थे. 2 यह भोज का
द्वितीय दिन था. राजा ने भोज के अवसर पर दाखमधु पीते हुए प्रश्न किया,
"रानी एस्तेर, तुम्हारा अनुरोध क्या है? वह पूर्ण किया जाएगा. क्या है तुम्हारी
विनती? यदि इस राज्य के आधा तक भी हो, वह पूर्ण किया जाएगा." 3 रानी
एस्तेर ने उत्तर दिया, "महाराज, यदि मुझ पर आपकी कृपा है, यदि महाराज
मुझसे प्रसन्न हैं, मेरी विनती पर मुझे एवं मेरे सहजातियों को मेरे अनुरोध पर

प्राण दान मिले, 4 क्योंकि मुझे तथा मेरे सहजातियों को बेच दिया गया है, कि
हम नष्ट कर दिए जाएं, कि हमारा वध कर दिया जाए. यदि हमें मात्र दास-
दासियों सदृश ही बेच दिया जाता तो मैं मौन रह जाती क्योंकि तब मुझे महाराज
को कष्ट देने की ज़िद नहीं करनी पड़ती." 5 राजा अहषवेरोष ने रानी एस्तेर से
पूछा, "कौन है वह और कहां है वह, जिसने यह ज़िद की है?" 6 एस्तेर ने उत्तर
दिया, "वह शत्रु, वह विरोधी है यह दुष्ट हामान!" यह सुनते ही राजा एवं रानी के
सामने हामान अत्यंत भयभीत हो गया. 7 अत्यंत क्रोध में राजा अपनी दाखमधु
वहीं छोड़ राजमहल उधान में चला गया; किंतु हामान वहीं ठहर गया कि रानी
एस्तेर से अपने जीवन की याचना कर सके, क्योंकि उसे अब यह मालूम हो
चुका था, राजा ने उसे मृत्यु दंड देने का निश्चय कर लिया है. 8 कुछ समय
बाद जब राजा राजमहल उधान से लौटकर दाखमधु कक्ष में लौटा, हामान इस
समय एस्तेर के सामने झुका हुआ था. वह दृश्य देख राजा कह उठा, "क्या
यह मेरे ही उपस्थिति में रानी से बलात्कार करना चाहता है?" राजा के इस
वचन को सुनकर, कर्मचारियों ने हामान के मुंह को ढांप दिया. 9 राजा के
सामने उपस्थित खोजों में एक हरबोना नामक खोजा ने सूचना दी, "महाराज,
वस्तुस्थिति यह है कि हामान ने ही मोरदकय की हत्या के लिए अपने घर के
निकट बीस मीटर ऊंचा फांसी का खंभा बनवा रखा है, जबकि मोरदकय ने
राजा के लाभ की सूचना दी थी!" राजा ने तत्क्षण आदेश दिया, "इसे उसी पर
लटका दिया जाए." 10 तब उन्होंने हामान को उसी फांसी के खंभे पर लटका
दिया, जिसे उसने मोरदकय को मृत्यु दंड के लिए बनवाया था. तब राजा का
कोप ठंडा हो गया.

8 उसी दिन राजा अहषवेरोष ने यहूदियों के शत्रु हामान की संपूर्ण संपत्ति रानी
एस्तेर के नाम कर दी. मोरदकय को राजा के सामने लाया गया, क्योंकि
एस्तेर ने मोरदकय से अपने संबंध स्पष्ट कर दिए थे. 2 राजा ने हामान से ली
गयी राजकीय अंगूठी अपनी उंगली से उतारकर मोरदकय को सौंप दी. एस्तेर
ने मोरदकय को हामान की संपत्ति का अधिकारी नियुक्त किया. 3 इसके बाद
एस्तेर फिर राजा से बोली. और राजा के चरणों पर जा गिरी तथा रोते हुए
उसने राजा से निवेदन किया, कि वह अगागी और हामान की दुष्ट योजना को
खत्म कर दें, उस षड्यंत्र को, जो उसने यहूदियों के विरुद्ध रचा था. 4 राजा ने
अपना स्वर्ण राजदंड एस्तेर की ओर बढाया. यह देख एस्तेर उठकर राजा के
सामने खड़ी हो गई. 5 उसने राजा से आग्रह किया, "यदि यह राजा की दृष्टि में
संतोषप्रद है, यदि मुझ पर आपकी कृपादृष्टि हुई है, यह विषय राजा की दृष्टि में
ठीक है तथा मैं महाराज की दृष्टि में उत्तम हूं, तो अगागी हम्मेदाथा के पुत्र हामान
द्वारा रचे पत्रों को, जिसमें उसने उन सभी यहूदियों को जो राजा के सारे साम्राज्य
में बसे हुए हैं, नष्ट करने के लिए लिखा था, रद्द करने के लिए चिट्ठियां लिखी
जाएं 6 क्योंकि अपने सजातियों पर आ पड़े संकट को देखते हुए मैं कैसे सह
सकती हूं, मैं अपने परिवार के विनाश को देखते हुए कैसे सहन कर सकती हूं?"
7 तब राजा ने रानी एस्तेर तथा यहूदी मोरदकय से कहा, "मैंने हामान की संपत्ति
एस्तेर के नाम कर दी है, हामान को उन्होंने मृत्यु दंड पर लटका दिया है,
क्योंकि उसने यहूदियों के विरुद्ध हाथ उठाया था. 8 मोरदकय, अब तुम राजा
की ओर से जैसा भी भला समझो, यहूदियों को संबोधित राजाज्ञा लिखो और
उस पर राजा की राजमुद्रा मुद्रित लगा दो; क्योंकि वह राजाज्ञा, जिस पर राजा
की राजमुद्रा की मोहर लगी हुई होती है, बदली नहीं जा सकती." 9 यह तृतीय
माह अर्थात् सिवान की तेईसवीं तिथि थी. राजा के सचिवों को बुलवाया गया.
उन्होंने समस्त 127 राज्यों में, जो हिंद से कूश तक फैले थे, उनमें निवास कर
रहे यहूदियों, वहां नियुक्त राज्यपालों, उपराज्यपालों, हाकिमों को संबोधित
मोरदकय के आदेश की चिट्ठियां उन राज्यों की अक्षरों एवं भाषाओं में लिख दी
गई. 10 मोरदकय ने यह आज्ञा राजा अहषवेरोष की ओर से लिखकर उस पर
अंगूठी की मुहर लगा दी तथा ये चिट्ठी घोड़े पर सवार संदेशवाहकों के द्वारा भेज
दी गई. ये सभी घोड़े उच्च कोटि के राजकीय सुरक्षा के घोड़े थे. 11 इन
चिट्ठियों के द्वारा राजा ने उन यहूदियों को, जो साम्राज्य के हर एक नगर में रहते
थे, यह अनुमति प्रदान कर दी थी, कि वे एकत्र होकर अपने प्राणों की रक्षा के
उपक्रम में किसी भी समुदाय वा राज्य की सशस्त्र सेना को, जो उन पर, उनकी
स्त्रियों तथा बालकों पर आक्रमण करें, उनको घात और नष्ट करें, एवं उनकी
संपत्ति को लूट लें और उनका अस्तित्व ही मिटा दें. 12 यह राजा अहषवेरोष के
अखिल साम्राज्य के समस्त राज्यों में एक ही दिन-बारहवें महीना अदार की
तेरहवीं तिथि पर किया जाए. 13 इस पत्र की एक प्रति राजा के आदेश के साथ
हर प्रांत को भेजी जानी थी. यह एक नियम बन गया. हर प्रांत में इसे नियम के
रूप में ले लिया. राज्य में रहनेवाली प्रत्येक जाति के लोगों के बीच इसका
प्रचार किया गया. उन्होंने ऐसा इसलिये किया जिससे उस विशेष दिन के लिये
यहूदी तैयार हो जायें जब यहूदियों को अपने शत्रुओं से बदला लेने की अनुमति
दे दी जाएगी. 14 राजा की आज्ञा के कारण संदेशवाहक राजकीय घोड़ों पर
तुरंत, द्रुत गति से निकल गए. राजधानी शूशन नगर में राजाज्ञा भेज दी गई थी.
15 मोरदकय नीले और सफेद राजकीय वस्त्र धारण हुए, एक गोलाकार स्वर्ण
मुकुट धारण किए हुए, तथा उत्कृष्ट मलमल का बैंगनी राजसी पोशाक धारण हुए
राजा के उपस्थिति से निकलकर बाहर नगर में आ गया. संपूर्ण राजधानी शूशन
नगर के लोग उल्लास से भरकर जयघोष कर रहे थे, 16 क्योंकि इस समय
समस्त यहूदी इस सम्मान के कारण विमुक्ति एवं उल्लास में मगन हो चुके थे.
17 यहीं नहीं, हर एक राज्य के हर एक नगर में जैसे जैसे राजा की राजाज्ञा तथा
उसका आदेश चिट्ठियां पहुंच गयी, यहूदियों में हर्ष तथा उल्लास फैलता चला
गया, एक उत्सव तथा महोत्सव जैसे. इस अवसर पर जनसाधारण पर यहूदियों
का आतंक ऐसा गहन हो गया कि राज्यों में अनेकों ने यहूदी मत अंगीकार कर
लिया.

9 बारहवें महीने, आदार की तेरह तारीख पर राजा का आदेश तथा राजाज्ञा का
पूरा होना निर्धारित था. यहूदियों के शत्रु इस प्रतीक्षा में थे, कि वे यहूदियों
को पराजित कर लेंगे; किंतु परिस्थिति विपरीत हो गई-यहूदियों ने अपने शत्रुओं
को हरा दिया. 2 राजा अहषवेरोष के सारे साम्राज्य में यहूदी अपने-अपने नगरों
में एकत्र होते गए, कि वे उन्हें घात कर सकें, जिन्होंने उनको नष्ट करने के लिए
युक्ति बनाई थी. कोई भी यहूदियों का सामना करने में समर्थ न रहा, क्योंकि
जनसाधारण पर यहूदियों का भय छा चुका था. 3 यहां तक कि सारे राज्यों के
हाकिमों, उपराज्यपालों, राज्यपालों तथा राजा के कर्मचारियों पर मोरदकय
का ऐसा सशक्त आतंक छाया हुआ था, कि वे यहूदियों के पक्ष में होकर उनकी
सहायता में लग गए. 4 राजा के सांसदों में मोरदकय ऊंचे पद पर नियुक्त था.
उसकी कीर्ति सर्वत्र समस्त साम्प्राज्य के राज्यों में फैल चुकी थी. मोरदकय
का प्रभाव बढ़ता और मजबूत होता चला गया. 5 यहूदी अपने सारे शत्रुओं
को तलवार से संहार करते चले गए, उन्हें नष्ट करते रहे; वे अपने शत्रुओं के
साथ वही करते गए, जो उन्हें उस अवसर पर ठीक लगे. 6 राजधानी शूशन में
यहूदियों ने पांच सौ व्यक्तियों को नष्ट कर दिया. 7 इनके अलावा परशनदाथा,
दलफ़ोन, असपाथा, 8 पोराथा, अदलया, अरीदाथा, 9 परमशथा, अदीसय,
अरिदय, वयज़ाथा, 10 यहूदियों के शत्रु और हम्मेदाथा के पुत्र, हामान के इन
दस पुत्रों की भी हत्या कर दी गई; किंतु यहूदियों ने इनकी संपत्ति नहीं लूटी.
11 राजा को राजधानी शूशन के पुरुषों की गिनती की सूचना उसी दिन दे दी गई
थी. 12 राजा ने रानी एस्तेर को बताया, "राजधानी शूशन में तो यहूदियों ने पांच
सौ पुरुषों तथा हामान के दस पुत्रों का संहार कर दिया है शेष राज्यों में क्या
किया होगा उन्होंने! अब यह बताओ तुम्हारा आग्रह क्या है? वह पूर्ण किया
जाएगा. इसके अलावा और क्या चाहती हो तुम? वह भी तुम्हारे लिए पूर्ण किया

जाएगा.” 13 एस्तेर ने उत्तर दिया, “यदि यह राजा को उपयुक्त लगे, शूशनवासी
यहूदियों को कल भी आज की राजाज्ञा के अनुरूप करने की अनुमति मिले.
हामान के दसों पुत्रों को फांसी पर लटका दिया जाए.” 14 तब राजा ने आदेश
प्रसारित किया कि ऐसा ही किया जाए. इस पर शूशन में एक राजाज्ञा प्रसारित
की गई और हामान के दसों पुत्रों को लटका दिया गया. 15 अदार महीने की
चौदहवीं तिथि पर भी शूशनवासी यहूदी एकजुट हो गए तथा उन्होंने शूशन में
तीन सौ व्यक्तियों की हत्या कर दी; किंतु उन्होंने कोई भी सामान नहीं लूटा.
16 समस्त साम्राज्य के राज्यों में निवास कर रहे यहूदी भी एकत्र हुए कि वे अपने
प्राणों की रक्षा कर सकें तथा अपने शत्रुओं का उन्मूलन कर सकें. उन्होंने अपने
75,000 शत्रुओं का हत्या कर दी, किंतु उन्होंने उनकी सामग्री नहीं लूटी. 17
उन्होंने यह अदार माह की तेरहवीं तारीख पर पूरा कर दिया था. चौदहवीं तिथि
को छुट्टी करते हुए उन्होंने इसे उत्सव एवं उल्लास मनाने का दिन ठहराया. 18
किंतु वे यहूदी, जो शूशनवासी थे, इसी माह की तेरहवीं तथा चौदहवीं तिथि पर
जमा हुए थे और उन्होंने पन्द्रहवीं तारीख खुशी भरी छुट्टी करते हुए उत्सव
मनाया. 19 इसके आधार पर उन यहूदियों ने, जिनका निवास गांव क्षेत्रों में था,
अदार महीने की चौदहवीं तारीख को उत्सव मना लिया, कि वे इसमें उत्सव
मनाते हुए खुशियां मना सकें. उन्होंने आपस में भोजन व्यंजनों का आदान-प्रदान
भी किया. 20 इन सारी घटनाओं के बाद मोरदकय ने इन सारी घटनाओं को
लिखकर राजा अहषवेरोष के सारे साम्राज्य के यहूदियों को पत्रों में प्रेषित
किया, निकट तथा दूर सभी को. 21 इसमें उन्होंने यह आदेश दिया था, कि
अदार महीने की चौदहवीं एवं पन्द्रहवीं तिथियों पर प्रति वर्ष उत्सव मनाया
जाए. 22 यह इस बात का स्मारक था, कि इन दो दिनों में यहूदियों ने अपने
शत्रुओं पर विजय पायी थी, यह वह महीना था, जिसमें उनका विलाप आनंद में
तथा दुःख उत्सव में बदल गया था. उत्सव के इन दो दिनों में वे उल्लास के साथ
आपस में भोजन व्यंजनों का आदान-प्रदान करें तथा गरीबों को उपहार दिया
करें. 23 यहूदी इस समय के लिए सहमत हो गए-जैसा उन्हें मोरदकय द्वारा
आदेश दिया गया था. 24 क्योंकि यहूदियों के शत्रु अगागी हम्मेदाथा के पुत्र
हामान ने यहूदियों को मिटा डालने की योजना बनाई थी, और पूर अर्थात्
चिट्ठियां डाली थीं, कि उन्हें मिटाकर पूरी तरह से नष्ट कर दे. 25 किंतु जब यह
बात राजा की जानकारी में आयी, उसने राजाज्ञा प्रसारित की, कि वह योजना,
जो हामान ने यहूदियों के संबंध में बनाई थी, स्वयं उसी पर प्रयोग में लाई गई,
तथा उसके पुत्र फांसी पर लटका दिए गए. 26 यही कारण है कि इन दो दिनों
को पुर शब्द के आधार पर पुरीम कहना प्रचलित हो गया. इस राजाज्ञा के कारण
तथा इसके अलावा संपूर्ण घटना में उनके साथ जो कुछ घटित हुआ तथा जो
कुछ स्वयं उन्होंने देखा, 27 यहूदियों ने यह संकल्प लिया, कि वे तथा उनके
वंश इन लिखित संदेशों के अनुसार बिना चूक के, प्रति वर्ष इन दो ठहराए हुए
दिनों पर यह उत्सव मनाया करेंगे. 28 ये दो दिन अब हर एक पीढ़ी द्वारा,
परिवारों द्वारा, राज्यों एवं नगरों द्वारा स्मरण किए जाते तथा उत्सव के रूप में
मनाए जाते हैं, कि पुरीम के ये दो दिन यहूदियों के जीवन में कभी न मिटने दें.
29 अबीहाइल की पुत्री रानी एस्तेर ने यहूदी मोरदकय के साथ मिलकर पूर्ण
अधिकार के साथ पुरीम संबंधी आज्ञा पत्र की पुष्टि करते हुए एक और आज्ञा दे
दी. 30 मोरदकय ने राजा अहषवेरोष के साम्राज्य के समस्त 127 राज्यों में
निवास कर रहे यहूदियों को चिट्ठियां लिखी जिसमें शांति और आश्वासन का
संदेश भेजा 31 कि पुरीम के ठहराए हुए समय पर इन दो दिनों की पुष्टि की
जाए, ठीक जैसा यहूदी मोरदकय तथा रानी एस्तेर ने इन्हें उनके लिए ठहराया
था, तथा ठीक जैसा उन्होंने स्वयं अपने लिए तथा अपनी आनेवाली पीढ़ियों के
लिए उपवास एवं विलाप के संदेश निर्धारित किए थे. 32 एस्तेर के आदेश पर
पुरीम के लिए यह विधि तय कर दी गई थी. तथा इसे पुस्तक में लिख दिया
गया.

10 राजा अहषवेरोष ने समस्त साम्राज्य पर, हां, दूरस्त सागर तट, टापू के
क्षेत्रों तक कर लगा दिया. 2 राजा के सभी उल्लेखनीय एवं वैभवशाली
उपलब्धियों का विवरण एवं मोरदकय की महानता का पूर्ण वर्णन, जिस उदात्त
पद पर राजा ने उसे नियुक्त किया था, उनका उल्लेख मेदिया एवं फारस के
राजाओं के इतिहास के ग्रंथ में लिखा है. 3 मात्र राजा अहषवेरोष ही पद में
यहूदी मोरदकय से उच्चतर था. वह यहूदियों में अति आदरमान था तथा वह
अपने जातियों में प्रिय था. वह सर्वदा प्रजा के लाभ का ही प्रयास करता, तथा
समस्त राष्ट्र की भलाई के पक्ष में ही याचना करता था.

अय्यूब

1 उज़ देश में अय्योब नामक एक व्यक्ति थे. वे सीधे, खरे, परमेश्वर के श्रद्धा
युक्त तथा बुराई से दूर थे. 2 उनके सात पुत्र एवं तीन पुत्रियां थीं, 3 उनके
पास सात हजार भेड़ें, तीन हजार ऊंट, पांच सौ जोड़े बैल, पांच सौ गधियां तथा
अनेक-अनेक दास-दासियां थीं. पूर्वी देशों में कोई भी उनके तुल्य धनवान न
था. 4 उनके पुत्र अपने-अपने जन्मदिन पर अपने घरों में दावत का आयोजन
करते थे, जिसमें वे अपनी तीनों बहनों को भी आमंत्रित किया करते थे, कि वे
भी भोज में सम्मिलित हों. 5 जब उत्सवों का समय समाप्त हो जाता था, तब
अय्योब अपनी इन संतानों को अपने यहां बुलाकर उन्हें पवित्र किया करते थे.
वह बड़े भोर को उठकर उनकी संख्या के अनुरूप होमबलि अर्पित करते थे.
उनकी सोच थी, “संभव है मेरे पुत्रों से कोई पाप हुआ हो और उन्होंने अपने
हृदय में ही परमेश्वर के प्रति अनिष्ट किया हो और परमेश्वर को छोड़ दिया हो.”
अय्योब यह सब नियमपूर्वक किया करते थे. 6 यह वह दिन था, जब परमेश्वर
के पुत्र ने स्वयं को याहवेह के सामने प्रस्तुत किया और शैतान भी उनके साथ
आया हुआ था. 7 याहवेह ने शैतान से पूछा, “तुम कहां से आ रहे हो?” शैतान
ने याहवेह को उत्तर दिया, “पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते हुए तथा डोलते-
डालते आया हूं.” 8 याहवेह ने शैतान से प्रश्न किया, “क्या तुमने अय्योब, मेरे
सेवक पर ध्यान दिया है? कि सारी पृथ्वी पर कोई भी उसके तुल्य नहीं है. वह
सीधा, खरा, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा युक्त तथा बुराई से दूर है.” 9 शैतान ने
याहवेह से पूछा, “क्या अय्योब परमेश्वर के प्रति श्रद्धा बिना लाभ के मानता है?
10 आपने उसके घर के और उसकी संपत्ति के चारों ओर अपनी सुरक्षा का
बाड़ा बांध रखा है? आपने उसके श्रम को समृद्ध किया है. उसकी संपत्ति इस देश
में फैलती जा रही है. 11 आप हाथ बढ़ाकर उसकी समस्त संपत्ति को छुएं, वह
निश्चय आपके सामने आपकी निंदा करने लगेगा.” 12 याहवेह ने शैतान से
कहा, “अच्छा सुनो, उसकी समस्त संपत्ति पर मैं तुम्हें अधिकार दे रहा हूं, मात्र
ध्यान दो, तुम उसको स्पर्श मत करना.” शैतान याहवेह की उपस्थिति से चला
गया. 13 जिस दिन अय्योब के पुत्र-पुत्रियां ज्येष्ठ भाई के घर पर उत्सव में व्यस्त
थे, 14 एक दूत ने अय्योब को सूचित किया, “बैल हल चला रहे थे तथा निकट
ही गधे चर रहे थे, 15 कि शीबाईयों ने आक्रमण किया और इन्हें लूटकर ले
गए. उन्होंने तो हमारे दास-दासियों का तलवार से संहार कर दिया है, मात्र मैं
बचते हुए आपको सूचित करने आया हूं!” 16 अभी उसका कहना पूर्ण भी न
हुआ था, कि एक अन्य दूत ने आकर सूचना दी, “आकाश से परमेश्वर की
ज्वाला प्रकट हुई और हमारी भेड़ें एवं दास-दासियां भस्म हो गए, मैं बचते हुए
आपको सूचित करने आया हूं!” 17 उसका कहना अभी पूर्ण भी न हुआ था, कि
एक अन्य दूत भी वहां आ पहुंचा और कहने लगा, “कसदियों ने तीन दल
बनाकर ऊंटों पर छापा मारा और उन्हें ले गए. दास-दासियों का उन्होंने तलवार
से संहार कर दिया है, मात्र मैं बचते हुए आपको सूचित करने आया हूं!” 18 वह
अभी कह ही रहा था, कि एक अन्य दूत भी वहां आ पहुंचा और उन्हें सूचित
करने लगा, “आपके ज्येष्ठ पुत्र के घर पर आपके पुत्र-पुत्रियां उत्सव में खा-पी
रहे थे, 19 कि एक बड़ी आंधी चली, जिसका प्रारंभ रेगिस्तान क्षेत्र से हुआ था,
इसने उस घर पर चारों ओर से ऐसा प्रहार किया कि दब कर समस्त युवाओं की
मृत्यु हो गई. मात्र मैं बचकर आपको सूचना देने आया हूं!” 20 अय्योब यह सुन
उठे, और अपने वस्त्र फाड़ डाले, अपने सिर का मुंडन किया तथा भूमि पर
दंडवत किया. 21 उनके वचन थे: “माता के गर्भ से मैं नंगा आया था, और मैं
नंगा ही चला जाऊंगा. याहवेह ने दिया था, याहवेह ने ले लिया; धन्य है याहवेह
का नाम.” 22 समस्त घटनाक्रम में अय्योब ने न तो कोई पाप किया और न ही
उन्होंने परमेश्वर की किसी भी प्रकार की निंदा की.

2 फिर एक दिन जब स्वर्गदूत याहवेह की उपस्थिति में एकत्र हुए, शैतान भी
उनके मध्य में आया था, कि वह स्वयं को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करे. 2
याहवेह ने शैतान से प्रश्न किया, “तुम कहां से आ रहे हो?” शैतान ने याहवेह को
उत्तर दिया, “पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते तथा इसकी चारों दिशाओं
में डोलते-डालते आया हूं.” 3 याहवेह ने शैतान से प्रश्न किया, “क्या तुमने
अय्योब, मेरे सेवक पर ध्यान दिया है? क्योंकि पृथ्वी पर कोई भी उसके तुल्य
नहीं है. वह सीधा, ईमानदार, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा युक्त तथा बुराई से दूर
रहनेवाला व्यक्ति है. अब भी वह अपनी खराई पर अटल है, जबकि तुम्हीं हो
जिसने उसे नष्ट करने के लिए मुझे अकारण ही उकसाया था.” 4 शैतान ने
याहवेह को जवाब दिया, “खाल का विनिमय खाल से! अपने प्राणों की रक्षा में
मनुष्य अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार हो जाता है. 5 अब आप उसकी हड्डी
तथा मांस को स्पर्श कीजिए; तब वह आपके सामने आपकी निंदा करने लगेगा.”
6 यह सुनकर याहवेह ने शैतान को उत्तर दिया, “सुनो, अब वह तुम्हारे अधिकार
में है; बस इतना ध्यान रहे कि उसका जीवन सुरक्षित रहे.” 7 शैतान याहवेह की
उपस्थिति से चला गया और जाकर अय्योब पर ऐसा प्रहार किया कि उनकी देह
पर, तलवों से लेकर सिर तक, दुखदाई फोड़े निकल आए. 8 वह राख में जा
बैठे और एक ठीकरे के टुकड़े से स्वयं को खुजलाने लगे. 9 यह सब देख
उनकी पत्नी ने उनसे कहा, “क्या तुम अब भी अपनी खराई को ही थामे रहोगे?
परमेश्वर की निंदा करो और मर जाओ!” 10 किंतु अय्योब ने उसे उत्तर दिया,
“तुम तो मूर्ख स्त्रियों के समान बक-बक करने लगी हो. क्या हमारे लिए यह
भला होगा कि परमेश्वर से सुख स्वीकार करते जाएं और दुःख कुछ भी नहीं?”
इन सभी स्थितियों में अय्योब ने अपने मुख द्वारा कोई पाप नहीं किया. 11
जब अय्योब के तीन मित्रों को अय्योब की दुखद स्थिति का समाचार प्राप्त
हुआ, तब तीनों ही अपने-अपने स्थानों से अय्योब के घर आ गए, तेमानी से
एलिफाज़, शूही से बिलदद तथा नआमथ से ज़ोफर. इन तीनों ने योजना बनाई
कि सहानुभूति एवं सांत्वना देने के लिए वे अय्योब से भेंट करेंगे. 12 जब वे दूर
ही थे तथा उन्होंने अय्योब की ओर देखा, तो वे उन्हें पहचान ही न सके. वे
उच्च स्वर में रोने लगे. हर एक ने अपने-अपने वस्त्रों को फाड़कर अपने-अपने
ऊपर धूल डाल ली. 13 तब वे जाकर अय्योब के निकट भूमि पर सात दिन एवं
सात रात्रि चुप बैठे रहे, क्योंकि उनके सामने यह पूर्णतः स्पष्ट था कि अय्योब की
पीड़ा अत्यंत भयानक थी.

3 उसके बाद अय्योब ने अपना मुंह खोला और अपने जन्मदिवस को
धिक्कारा. 2 उनका वचन था: 3 “जिस दिन मेरा जन्म होना निर्धारित था,
वही दिन मिट जाए तथा वह रात्रि, जब यह घोषणा की गयी कि एक बालक का
गर्भधारण हुआ है! 4 अंधकारमय हो वह दिन; स्वर्गिक परमेश्वर उसका ध्यान
ही न रखें; किसी भी ज्योति का प्रकाश उस पर न पड़े. 5 अंधकार तथा मृत्यु के
बादल बने रहें; उस पर एक बादल आ जाए; दिन का अंधकार उसको डराने का
कारण हो जाए. 6 उस रात्रि को भी अंधकार अपने वश में कर ले; वर्ष के दिनों
में, यह दिन आनन्दमय न समझा जाए; माहों में उस दिन की गणना न की जाए.
7 ओह, वह रात्रि बांझ हो जाए; कोई भी आनंद ध्वनि उसे सुनाई न दे. 8 वे, जो
दिनों को धिक्कारते रहते हैं तथा लिवयाथान को उकसाने के लिए तत्पर रहते
हैं, वे इसे भी धिक्कारें. 9 इसके संध्या के तारे काले हो जाएं; इसका उजियाला
नष्ट हो जाए, इसके लिए प्रभात ही मिट जाए; 10 क्योंकि यही वह दिन था,
जिसने मेरी माता के प्रसव को रोका नहीं, और न ही इसने विपत्ति को मेरी दृष्टि
से छिपाया. 11 “जन्म होते ही मेरी मृत्यु क्यों न हो गई, क्यों नहीं गर्भ से
निकलते ही मेरा प्राण चला गया? 12 क्यों उन घुटनों ने मुझे थाम लिया तथा
मेरे दुग्धपान के लिए वे स्तन तत्पर क्यों थे? 13 यदि ऐसा न होता तो आज मैं
शांति से पड़ा हुआ होता; मैं निद्रा में विश्रान्ति कर रहा होता, 14 मेरे साथ होते

संसार के राजा एवं मंत्री, जिन्होंने अपने ही लिए सुनसान स्थान को पुनर्निर्माण
किया था. 15 अथवा वे शासक, जो स्वर्ण धारण किए हुए थे, जिन्होंने चांदी से
अपने कोष भर लिए थे. 16 अथवा उस मृत भ्रूण के समान, उस शिशु-समान,
जिसने प्रकाश का अनुभव ही नहीं किया, मेरी भी स्थिति वैसी होती. 17 उस
स्थान पर तो दुष्ट लोग भी दुःख देना छोड़ देते हैं तथा थके मांदे विश्रान्ति के लिए
कब्र में जा पहुंचते हैं, 18 वहां एकत्र बंदी भी एक साथ सुख से रहते हैं; वहां
उनके पहरेदारों की आवाज वे नहीं सुनते. 19 वहां सामान्य भी हैं और विशिष्ट
भी, वहां दास अपने स्वामी से स्वतंत्र हो चुका है. 20 “जो पीड़ा में पड़ा हुआ
है, उसे प्रकाश का क्या लाभ, तथा उसको जीवन क्यों देना है, जिसकी आत्मा
कड़वाहट से भर चुकी हो, 21 वह जिसकी मनोकामना मृत्यु की है, किंतु मृत्यु
उससे दूर-दूर रहती है, वह मृत्यु को इस यत्न से खोज रहा है, मानो वह एक
खजाना है. 22 भला किसे, किसी कब्र को देख आनंद होता है? 23 उस व्यक्ति
को प्रकाश प्रदान करने का क्या लाभ, जिसके सामने कोई मार्ग नहीं है, जिसे
परमेश्वर द्वारा सीमित कर दिया गया है? 24 भोजन को देखने से ही मेरी कराहट
का प्रारंभ होता है; तथा जल समान बहता है मेरा विलाप. 25 जो कुछ मेरे सामने
भय का विषय थे; उन्हीं ने मुझे घेर रखा है, जो मेरे सामने भयावह था, वही
मुझ पर आ पड़ा है. 26 मैं सुख स्थिति में नहीं हूं, मैं निश्चिंत नहीं हूं; मुझमें
विश्रान्ति नहीं है, परंतु खलबली समाई है.”

4 तब तेमानवासी एलिफ़ाज़ ने उत्तर दिया: 2 “अय्योब, यदि मैं तुमसे कुछ
कहने का ढाढस करूं, क्या तुम चिढ़ जाओगे? किंतु कुछ न कहना भी
असंभव हो रहा है. 3 यह सत्य है कि तुमने अनेकों को चेताया है, तुमने अनेकों
को प्रोत्साहित किया है. 4 तुम्हारे शब्दों से अनेकों के लड़खड़ाते पैर स्थिर हुए
हैं; तुमसे ही निर्बल घुटनों में बल-संचार हुआ है. 5 अब तुम स्वयं उसी स्थिति
का सामना कर रहे हो तथा तुम अधीर हो रहे हो; उसने तुम्हें स्पर्श किया है और
तुम निराशा में डूबे हुए हो! 6 क्या तुम्हारे बल का आधार परमेश्वर के प्रति
तुम्हारी श्रद्धा नहीं है? क्या तुम्हारी आशा का आधार तुम्हारा आचरण खरा होना
नहीं? 7 “अब यह सत्य याद न होने देना कि क्या कभी कोई अपने निर्दोष होने
के कारण नष्ट हुआ? अथवा कहां सज्जन को नष्ट किया गया है? 8 अपने
अनुभव के आधार पर मैं कहूंगा, जो पाप में हल चलाते हैं तथा जो संकट बोते
हैं, वे उसी की उपज एकत्र करते हैं. 9 परमेश्वर के श्वास मात्र से वे नष्ट हो जाते
हैं; उनके कोप के विस्फोट से वे नष्ट हो जाते हैं, 10 सिंह की दहाड़, हिंसक
सिंह की गरज, बलिष्ठ सिंहों के दांत टूट जाते हैं. 11 भोजन के अभाव में सिंह
नष्ट हो रहे हैं, सिंहनी के बच्चे इधर-उधर जा चुके हैं. 12 “एक संदेश छिपते-
छिपाते मुझे दिया गया, मेरे कानों ने वह शांत ध्वनि सुन ली. 13 रात्रि में सपनों
में विचारों के मध्य के दृश्यों से, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े हुए होते हैं,
14 मैं भय से भयभीत हो गया, मुझ पर कंपकंपी छा गई, वस्तुतः मेरी समस्त
हड्डियां हिल रही थीं. 15 उसी अवसर पर मेरे चेहरे के सामने से एक आत्मा
निकलकर चली गई, मेरे रोम खड़े हो गए. 16 मैं स्तब्ध खड़ा रह गया. उसके
रूप को समझना मेरे लिए संभव न था. एक रूप को मेरे नेत्र अवश्य देख रहे थे.
वातावरण में पूर्णतः सन्नाटा था, तब मैंने एक स्वर सुना 17 ‘क्या मानव जाति
परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हो सकती है? क्या रचयिता की परख में मानव पवित्र
हो सकता है? 18 परमेश्वर ने अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखा है, अपने
स्वर्गदूतों पर वे दोष आरोपित करते हैं. 19 तब उन पर जो मिट्टी के घरों में
निवास करते, जिनकी नींव ही धूल में रखी हुई है, जिन्हें पतंगे-समान कुचलना
कितना अधिक संभव है! 20 प्रातःकाल से लेकर संध्याकाल तक उन्हें टुकड़े-
टुकड़े कर दिया जाता है; उन्हें सदा-सर्वदा के लिए विनष्ट कर दिया जाता है,
किसी का ध्यान उन पर नहीं जाता. 21 क्या यह सत्य नहीं कि उनके तंबुओं
की रस्सियां उनके भीतर ही खोल दी जाती हैं? तथा बुद्धिहीनों की मृत्यु हो
जाती है?’”

5 “इसी समय पुकारकर देख. है कोई जो इसे सुनेगा? तुम किस सज्जन व्यक्ति
से सहायता की आशा करोगे? 2 क्रोध ही मूर्ख व्यक्ति के विनाश का कारण
हो जाता है, तथा जलन भोले के लिए घातक होती है. 3 मैंने मूर्ख को जड़
पकड़े देखा है, किंतु तत्काल ही मैंने उसके घर को शाप दे दिया. 4 उसकी
संतान सुरक्षित नहीं है, नगर चौक में वे कष्ट के लक्ष्य बने हुए हैं, कोई भी वहां
नहीं, जो उनको छुड़वाएगा, 5 उसकी कटी हुई उपज भूखे लोग खा जाते हैं,
कंटीले क्षेत्र की उपज भी वे नहीं छोड़ते. लोभी उसकी संपत्ति हड़पने के लिए
प्यासे हैं. 6 कष्ट का उत्पन्न धूल से नहीं होता और न विपत्ति भूमि से उपजती
है. 7 जिस प्रकार चिंगारियां ऊपर दिशा में ही बढ़ती हैं उसी प्रकार मनुष्य का
जन्म होता ही है यातनाओं के लिए. 8 “हां, मैं तो परमेश्वर की खोज करूंगा; मैं
अपना पक्ष परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करूंगा. 9 वही विलक्षण एवं अगम्य कार्य
करते हैं, असंख्य हैं आपके चमत्कार. 10 वही पृथ्वी पर वृष्टि बरसाते तथा
खेतों को पानी पहुंचाते हैं. 11 तब वह विनम्रों को ऊंचे स्थान पर बैठाते हैं, जो
विलाप कर रहे हैं, उन्हें सुरक्षा प्रदान करते हैं. 12 वह चालाक के षड़्यंत्र को
विफल कर देते हैं, परिणामस्वरूप उनके कार्य सफल हो ही नहीं पाते. 13 वह
बुद्धिमानों को उन्हीं की युक्ति में उलझा देते हैं तथा धूर्त का परामर्श तत्काल
विफल हो जाता है. 14 दिन में ही वे अंधकार में जा पड़ते हैं तथा मध्याह्न पर
उन्हें रात्रि के समान टटोलना पड़ता है. 15 किंतु प्रतिरक्षा के लिए परमेश्वर का
वचन है उनके मुख की तलवार; वह बलवानों की शक्ति से दीन की रक्षा करते
हैं. 16 तब निस्सहाय के लिए आशा है, अनिवार्य है कि बुरे लोग चुप रहें. 17
“ध्यान दो, कैसा प्रसन्न है वह व्यक्ति जिसको परमेश्वर ताड़ना देते हैं; तब
सर्वशक्तिमान के द्वारा की जा रही ताड़ना से घृणा न करना. 18 चोट पहुंचाना
और मरहम पट्टी करना, दोनों ही उनके द्वारा होते हैं; वही घाव लगाते और
स्वास्थ्य भी वही प्रदान करते हैं. 19 वह छः कष्टों से तुम्हारा निकास करेंगे, सात
में भी अनिष्ट तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सकेगा. 20 अकाल की स्थिति में परमेश्वर
तुम्हें मृत्यु से बचाएंगे, वैसे ही युद्ध में तलवार के प्रहार से. 21 तुम चाबुक समान
जीभ से सुरक्षित रहोगे, तथा तुम्हें हिंसा भयभीत न कर सकेगी. 22 हिंसा तथा
अकाल तुम्हारे लिए उपहास के विषय होंगे, तुम्हें हिंसक पशुओं का भय न
होगा. 23 तुम खेत के पत्थरों के साथ रहोगे तथा वन-पशुओं से तुम्हारी मैत्री हो
जाएगी. 24 तुम्हें यह तो मालूम हो जाएगा कि तुम्हारा डेरा सुरक्षित है; तुम
अपने घर में जाओगे और तुम्हें किसी भी हानि का भय न होगा. 25 तुम्हें यह भी
बोध हो जाएगा कि तुम्हारे वंशजों की संख्या बड़ी होगी, तुम्हारी सन्तति भूमि
की घास समान होगी. 26 मृत्यु की बेला में भी तुम्हारे शौर्य का ह्रास न हुआ
होगा, जिस प्रकार परिपक्व अन्न एकत्र किया जाता है. 27 “इस पर ध्यान दो:
हमने इसे परख लिया है यह ऐसा ही है. इसे सुनो तथा स्वयं इसे पहचान लो.”

6 यह सुन अय्योब ने यह कहा: 2 “कैसा होता यदि मेरी पीड़ा मापी जा
सकती, इसे तराजू में रखा जाता! 3 तब तो इसका माप सागर तट की बालू से
अधिक होता. इसलिये मेरे शब्द मूर्खता भरे लगते हैं. 4 क्योंकि सर्वशक्तिमान
के बाण मुझे बेधे हुए हैं, उनका विष रिसकर मेरी आत्मा में पहुंच रहा है.
परमेश्वर का आतंक आक्रमण के लिए मेरे विरुद्ध खड़ा है! 5 क्या जंगली गधा
घास के सामने आकर रेंकता है? क्या बछड़ा अपना चारा देख रम्भाता है? 6
क्या किसी स्वादरहित वस्तु का सेवन नमक के बिना संभव है? क्या अंडे की
सफेदी में कोई भी स्वाद होता है? 7 मैं उनका स्पर्श ही नहीं चाहता; मेरे लिए ये
घृणित भोजन-समान हैं. 8 “कैसा होता यदि मेरा अनुरोध पूर्ण हो जाता तथा
परमेश्वर मेरी लालसा को पूर्ण कर देते, 9 तब ऐसा हो जाता कि परमेश्वर मुझे

कुचलने के लिए तत्पर हो जाते, कि वह हाथ बढ़ाकर मेरा नाश कर देते! **10**
किंतु तब भी मुझे तो संतोष है, मैं असह्य दर्द में भी आनंदित होता हूं, क्योंकि
मैंने पवित्र वचनों के आदेशों का विरोध नहीं किया है. **11** "क्या है मेरी शक्ति,
जो मैं आशा करूं? क्या है मेरी नियति, जो मैं धैर्य रखूं? **12** क्या मेरा बल वह
है, जो चट्टानों का होता है? अथवा क्या मेरी देह की रचना कांस्य से हुई है?
13 क्या मेरी सहायता का मूल मेरे अंतर में निहित नहीं, क्या मेरी विमुक्ति
मुझसे दूर हो चुकी? **14** "जो अपने दुःखी मित्र पर करुणा नहीं दिखाता, वह
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति श्रद्धा छोड़ देता है. **15** मेरे भाई तो जलधाराओं
समान विश्वासघाती ही प्रमाणित हुए, वे जलधाराएं, जो विलीन हो जाती हैं, **16**
जिनमें हिम पिघल कर जल बनता है और उनका जल छिप जाता है. **17** वे
जलहीन शांत एवं सूनी हो जाती हैं, वे ग्रीष्मऋतु में अपने स्थान से विलीन हो
जाती हैं. **18** वे अपने रास्ते से भटक जाते हैं; उसके बाद वे मरुभूमि में विलीन
हो जाती हैं. **19** तेमा के यात्री दल उन्हें खोजते रहे, शीबा के यात्रियों ने उन पर
आशा रखी थी. **20** उन पर भरोसा कर उन्हें पछतावा हुआ; वे वहां पहुंचे और
निराश हो गए. **21** अब स्थिति यह है, कि तुम इन्हीं जलधाराओं के समान हो
चुके हो; तुम आतंक को देखकर डर जाते हो. **22** क्या मैंने कभी यह आग्रह
किया है, 'कुछ तो दे दो मुझे, अथवा, अपनी संपत्ति में से कुछ देकर मुझे मुक्त
करा लो, **23** अथवा, शत्रु के बंधन से मुझे मुक्त करा लो, इस उपद्रव करनेवाले
व्यक्ति के अधिकार से मुझे छुड़ा लो?' **24** "मुझे शिक्षा दीजिए, मैं चुप रहूंगा;
मेरी त्रुटियां मुझ पर प्रकट कर दीजिए. **25** सच्चाई में कहे गए उद्गार कितने
सुखदायक होते हैं! किंतु आपके विवाद से क्या प्रकट होता है? **26** क्या तुम्हारा
अभिप्राय मेरे कहने की निंदा करना है, निराश व्यक्ति के उद्गार तो निरर्थक ही
होते हैं? **27** तुम तो पितृहीनों के लिए चिट्ठी डालोगे तथा अपने मित्र को ही बेच
दोगे. **28** "अब कृपा करो और मेरी ओर देखो. फिर देखना कि क्या मैं तुम्हारे
मुख पर झूठ बोल सकूंगा? **29** अब कोई अन्याय न होने पाए; छोड़ दो यह सब,
मैं अब भी सत्यनिष्ठ हूं. **30** क्या मेरी जीभ अन्यायपूर्ण है? क्या मुझमें बुराई और
अच्छाई का बोध न रहा?

7 "क्या ऐहिक जीवन में मनुष्य श्रम करने के लिए बंधा नहीं है? क्या उसका
जीवनकाल मज़दूर समान नहीं है? **2** उस दास के समान, जो हांफते हुए
छाया खोजता है, उस मज़दूर के समान, जो उत्कण्ठापूर्वक अपनी मज़दूरी
मिलने की प्रतीक्षा करता है. **3** इसी प्रकार मेरे लिए निरर्थकता के माह तथा
पीड़ा की रातें निर्धारित की गई हैं. **4** मैं इस विचार के साथ बिछौने पर जाता
हूं, 'मैं कब उठूंगा?' किंतु रात्रि समाप्त नहीं होती. मैं प्रातःकाल तक करवटें
बदलता रह जाता हूं. **5** मेरी खाल पर कीटों एवं धूल की परत जम चुकी है,
मेरी खाल कठोर हो चुकी है, उसमें से स्राव बहता रहता है. **6** "मेरे दिनों की
गति तो बुनकर की धड़की की गति से भी अधिक है, जब वे समाप्त होते हैं,
आशा शेष नहीं रह जाती. **7** यह स्मरणीय है कि मेरा जीवन मात्र श्वास है;
कल्याण अब मेरे सामने आएगा नहीं. **8** वह, जो मुझे आज देख रहा है, इसके
बाद नहीं देखेगा; तुम्हारे देखते-देखते मैं अस्तित्वहीन हो जाऊंगा. **9** जब कोई
बादल छुप जाता है, उसका अस्तित्व मिट जाता है, उसी प्रकार वह अधोलोक
में प्रवेश कर जाता है, पुनः यहां नहीं लौटता. **(Sheol h7585)** **10** वह अपने घर
में नहीं लौटता; न ही उस स्थान पर उसका अस्तित्व रह जाता है. **11** "तब मैं
अपने मुख को नियंत्रित न छोड़ूंगा; मैं अपने हृदय की वेदना उंडेल दूंगा, अपनी
आत्मा की कड़वाहट से भरके कुड़कुड़ाता रहूंगा. **12** परमेश्वर, क्या मैं सागर
हूं, अथवा सागर का विकराल जल जंतु, कि आपने मुझ पर पहरा बैठा रखा है?
13 यदि मैं यह विचार करूं कि बिछौने पर तो मुझे सुख संतोष प्राप्त हो जाएगा,
मेरे आसन पर मुझे इन पीड़ाओं से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी, **14** तब आप मुझे
स्वप्नों के द्वारा भयभीत करने लगते हैं तथा दर्शन दिखा-दिखाकर आतंकित कर
देते हैं; **15** कि मेरी आत्मा को घुटन हो जाए, कि मेरी पीड़ाएं मेरे प्राण ले लें.
16 मैं अपने जीवन से घृणा करता हूं; मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं चाहता हूं.
छोड़ दो मुझे अकेला; मेरा जीवन बस एक श्वास तुल्य है. **17** "प्रभु, मनुष्य है
ही क्या, जिसे आप ऐसा महत्व देते हैं, जिसका आप ध्यान रखते हैं, **18** हर
सुबह आप उसका परीक्षण करते, तथा हर पल उसे परखते रहते हैं? **19** क्या
आप अपनी दृष्टि मुझ पर से कभी न हटाएंगे? क्या आप मुझे इतना भी अकेला
न छोड़ेंगे, कि मैं अपनी लार को गले से नीचे उतार सकूं? **20** प्रभु, आप जो
मनुष्यों पर अपनी दृष्टि लगाए रखते हैं, क्या किया है मैंने आपके विरुद्ध? क्या
मुझसे कोई पाप हो गया है? आपने क्यों मुझे लक्ष्य बना रखा है? क्या, अब तो
मैं अपने ही लिए एक बोझ बन चुका हूं? **21** तब आप मेरी गलतियों को क्षमा
क्यों नहीं कर रहे, क्यों आप मेरे पाप को माफ नहीं कर रहे? क्योंकि अब तो
तुझे धूल में मिल जाना है; आप मुझे खोजेंगे, किंतु मुझे नहीं पाएंगे."

8 तब शूही बिलदद ने कहना प्रारंभ किया: **2** "और कितना दोहराओगे इस
विषय को? अब तो तुम्हारे शब्द तेज हवा जैसी हो चुके हैं. **3** क्या परमेश्वर
द्वारा अन्याय संभव है? क्या सर्वशक्तिमान न्याय को पथभ्रष्ट करेगा? **4** यदि
तुम्हारे पुत्रों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है, तब तो परमेश्वर ने उन्हें उनके
अपराधों के अधीन कर दिया है. **5** यदि तुम परमेश्वर को आग्रहपूर्वक अर्थना
करें, सर्वशक्तिमान से कृपा की याचना करें, **6** यदि तुम पापरहित तथा ईमानदार
हो, यह निश्चित है कि परमेश्वर तुम्हारे पक्ष में सक्रिय हो जाएंगे और तुम्हारी
युक्तता की स्थिति को पुनःस्थापित कर देंगे. **7** यद्यपि तुम्हारा प्रारंभ नम्र जान
पड़ेगा, फिर भी तुम्हारा भविष्य अत्यंत महान होगा. **8** "कृपा करो और पूर्व
पीढ़ियों से मालूम करो, उन विषयों पर विचार करो, **9** क्योंकि हम तो कल की
पीढ़ी हैं और हमें इसका कोई ज्ञान नहीं है, क्योंकि पृथ्वी पर हमारा जीवन
छाया-समान होता है. **10** क्या वे तुम्हें शिक्षा देते हुए प्रकट न करेंगे, तथा अपने
मन के विचार व्यक्त न करेंगे? **11** क्या दलदल में कभी सरकंडा उग सकता है?
क्या जल बिन झाड़ियां जीवित रह सकती हैं? **12** वह हरा ही होता है तथा इसे
काटा नहीं जाता, फिर भी यह अन्य पौधों की अपेक्षा पहले ही सूख जाता है.
13 उनकी चालचलन भी ऐसी होती है, जो परमेश्वर को भूल जाते हैं; श्रद्धाहीन
मनुष्यों की आशा नष्ट हो जाती है. **14** उसका आत्मविश्वास दुर्बल होता है तथा
उसका विश्वास मकड़ी के जाल समान पल भर का होता है. **15** उसने अपने घर
के आश्रय पर भरोसा किया, किंतु वह स्थिर न रह सका है; उसने हर संभव
प्रयास तो किए, किंतु इसमें टिकने की क्षमता ही न थी. **16** वह सूर्य प्रकाश
में समृद्ध हो जाता है, उसकी जड़ें उद्यान में फैलती जाती हैं. **17** उसकी जड़ें
पत्थरों को चारों ओर से जकड़ लेती हैं, वह पत्थरों से निर्मित भवन को पकड़े
रखता है. **18** यदि उसे उसके स्थान से उखाड़ दिया जाए, तब उससे यह कहा
जाएगा: 'तुम्हें मैंने कभी देखा नहीं!' **19** अय्योब, ध्यान दो! यही है परमेश्वर
की नीतियों का आनंद; इसी धूल से दूसरे उपजेंगे. **20** "मालूम है कि परमेश्वर
सत्यनिष्ठ व्यक्ति को उपेक्षित नहीं छोड़ देते, और न वह दुष्कर्मियों का समर्थन
करते हैं. **21** अब भी वह तुम्हारे जीवन को हास्य से पूर्ण कर देंगे, तुम उच्च
स्वर में हर्षोल्लास करोगे. **22** जिन्हें तुमसे घृणा है, लज्जा उनका परिधान होगी
तथा दुर्वृत्तों का घर अस्तित्व में न रहेगा."

9 तब अय्योब ने और कहा: **2** "वस्तुतः मुझे यह मालूम है कि सत्य यही है.
किंतु मनुष्य भला परमेश्वर की आंखों में निर्दोष कैसे हो सकता है? **3** यदि
कोई व्यक्ति परमेश्वर से वाद-विवाद करना चाहे, तो वह परमेश्वर को एक हजार
में से एक प्रश्न का भी उत्तर नहीं दे सकेगा. **4** वह तो मन से बुद्धिमान तथा बल
के शूर हैं. कौन उनकी हानि किए बिना उनकी उपेक्षा कर सका है? **5** मात्र
परमेश्वर ही हैं, जो विचलित कर देते हैं, किसे यह मालूम है कि अपने क्रोध में

वह किस रीति से उन्हें पलट देते हैं. 6 कौन है जो पृथ्वी को इसके स्थान से
हटा देता है, कि इसके आधार-स्तंभ थरथरा जाते हैं. 7 उसके आदेश पर सूर्य
निष्प्रभ हो जाता है, कौन तारों पर अपनी मोहर लगा देता है? 8 कौन अकेले ही
आकाशमंडल को फैला देता है, कौन सागर की लहरों को रौंदता चला जाता है;
9 किसने सप्त ऋषि, मृगशीर्ष, कृतिका तथा दक्षिण नक्षत्रों की स्थापना की
है? 10 कौन विलक्षण कार्य करता है? वे कार्य, जो अगम्य, आश्चर्यजनक एवं
असंख्य भी हैं. 11 यदि वे मेरे निकट से होकर निकलें, वह दृश्य न होंगे; यदि
वह मेरे निकट से होकर निकलें, मुझे उनका बोध भी न होगा. 12 यदि वह कुछ
छीनना चाहें, कौन उन्हें रोक सकता है? किसमें उनसे यह प्रश्न करने का साहस
है, 'यह क्या कर रहे हैं आप?' 13 परमेश्वर अपने कोप को शांत नहीं करेंगे;
उनके नीचे राहाब के सहायक दुबके बैठे हैं. 14 "मैं उन्हें किस प्रकार उत्तर दे
सकता हूं? मैं कैसे उनके लिए दोषी व निर्दोष को पहचानूं? 15 क्योंकि यदि
मुझे धर्मी व्यक्ति पहचाना भी जाए, तो उत्तर देना मेरे लिए असंभव होगा; मुझे
अपने न्याय की कृपा के लिए याचना करनी होगी. 16 यदि वे मेरी पुकार सुन
लेते हैं, मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन होगा, कि वे मेरी पुकार को सुन
रहे थे. 17 क्योंकि वे तो मुझे तूफान द्वारा घायल करते हैं, तथा अकारण ही
मेरे घावों की संख्या में वृद्धि करते हैं. 18 वे मुझे श्वास भी न लेने देंगे, वह
मुझे कड़वाहट से परिपूर्ण कर देते हैं. 19 यदि यह अधिकार का विषय है, तो
परमेश्वर बलशाली हैं! यदि यह न्याय का विषय है, तो कौन उनके सामने ठहर
सकता है? 20 यद्यपि मैं ईमानदार हूं, मेरे ही शब्द मुझे दोषारोपित करेंगे; यद्यपि
मैं दोषहीन हूं, मेरा मुंह मुझे दोषी घोषित करेंगे. 21 "मैं दोषहीन हूं, यह स्वयं
मुझे दिखाई नहीं देता; मुझे तो स्वयं से घृणा हो रही है. 22 सभी समान हैं; तब
मेरा विचार यह है, 'वे तो निर्दोष तथा दुर्वृत्त दोनों ही को नष्ट कर देते हैं.'
23 यदि एकाएक आई विपत्ति महामारी ले आती है, तो परमेश्वर निर्दोषों की
निराशा का उपहास करते हैं. 24 समस्त को दुष्ट के हाथों में सौप दिया गया है,
वे अपने न्यायाधीशों के चेहरे को आवृत्त कर देते हैं. अगर वे नहीं हैं, तो वे
कौन हैं? 25 "मेरे इन दिनों की गति तो धावक से भी तीव्र है; वे उड़े चले जा
रहे हैं, इन्होंने बुरा समय ही देखा है. 26 ये ऐसे निकले जा रहे हैं, कि मानो ये
सरकंडों की नौकाएं हों, मानो गरूड़ अपने शिकार पर झपटता है. 27 यद्यपि मैं
कहूं: मैं अपनी शिकायत प्रस्तुत नहीं करूंगा, 'मैं अपने चेहरे के विषाद को
हटाकर उल्लास करूंगा.' 28 मेरे समस्त कष्टों ने मुझे भयभीत कर रखा है, मुझे
यह मालूम है कि आप मुझे निर्दोष घोषित नहीं करेंगे. 29 मेरी गणना दुर्वृत्तों में
हो चुकी है, तो फिर मैं अब व्यर्थ परिश्रम क्यों करूं? 30 यदि मैं स्वयं को बर्फ
के निर्मल जल से साफ कर लूं, अपने हाथों को साबुन से साफ़ कर लूं, 31 यह
सब होने पर भी आप मुझे कब्र में डाल देंगे. मेरे वस्त्र मुझसे घृणा करने लगेंगे.
32 "परमेश्वर कोई मेरे समान मनुष्य तो नहीं हैं, कि मैं उन्हें वाद-विवाद में
सम्मिलित कर लूं, कि मैं उनके साथ न्यायालय में प्रवेश करूं. 33 हम दोनों के
मध्य कोई भी मध्यस्थ नहीं, कि वह हम दोनों के सिर पर हाथ रखे. 34
परमेश्वर ही मुझ पर से अपना नियंत्रण हटा लें, उनका आतंक मुझे भयभीत न
करने पाए. 35 इसी के बाद मैं उनसे बिना डर के वार्तालाप कर सकूंगा, किंतु
स्वयं मैं अपने अंतर में वैसा नहीं हूं.

10 "अपने जीवन से मुझे घृणा है; मैं खुलकर अपनी शिकायत प्रस्तुत
करूंगा. मेरे शब्दों का मूल है मेरी आत्मा की कड़वाहट. 2 परमेश्वर से
मेरा आग्रह है: मुझ पर दोषारोपण न कीजिए, मुझ पर यह प्रकट कर दीजिए, कि
मेरे साथ अमरता का मूल क्या है. 3 क्या आपके लिए यह उपयुक्त है कि आप
अत्याचार करें, कि आप अपनी ही कृति को त्याग दें, तथा दुर्वृत्तों की योजना
को समर्थन दें? 4 क्या आपके नेत्र मनुष्यों के नेत्र-समान हैं? क्या आपका
देखना मनुष्यों-समान होता है? 5 क्या आपका जीवनकाल मनुष्यों-समान है,
अथवा आपके जीवन के वर्ष मनुष्यों-समान हैं, 6 कि आप मुझमें दोष खोज
रहे हैं, कि आप मेरे पाप की छानबीन कर रहे हैं? 7 आपके ज्ञान के अनुसार
सत्य यही है मैं दोषी नहीं हूं, फिर भी आपकी ओर से मेरे लिए कोई भी मुक्ति
नहीं है. 8 "मेरी संपूर्ण संरचना आपकी ही कृति है, क्या आप मुझे नष्ट कर
देंगे? 9 स्मरण कीजिए, मेरी रचना आपने मिट्टी से की है. क्या आप फिर
मुझे मिट्टी में शामिल कर देंगे? 10 आपने क्या मुझे दूध के समान नहीं उंडेला
तथा दही-समान नहीं जमा दिया था? 11 क्या आपने मुझे मांस तथा खाल का
आवरण नहीं पहनाया तथा मुझे हड्डियों तथा मांसपेशियों से बुना था? 12 आपने
मुझे जीवन एवं करूणा-प्रेम का अनुदान दिया तथा आपकी कृपा में मेरी आत्मा
सुरक्षित रही है. 13 "फिर भी ये सत्य आपने अपने हृदय में गोपनीय रख लिए,
मुझे यह मालूम है कि यह आप में सुरक्षित है: 14 यदि मैं कोई पाप कर बैठूं तो
आपका ध्यान मेरी ओर जाएगा. तब आप मुझे निर्दोष न छोड़ेंगे. 15 धिक्कार है
मुझ पर—यदि मैं दोषी हूं! और यद्यपि मैं बेकसूर हूं, मुझमें सिर ऊंचा करने का
साहस नहीं है. मैं तो लज्जा से भरा हुआ हूं, क्योंकि मुझे मेरी दयनीय दुर्दशा का
बोध है. 16 यदि मैं अपना सिर ऊंचा कर लूं, तो आप मेरा पीछा ऐसे करेंगे, जैसे
सिंह अपने आहार का पीछा करता है; एक बार फिर आप मुझ पर अपनी शक्ति
का प्रदर्शन करेंगे. 17 आप मेरे विरुद्ध नए-नए साक्षी लेकर आते हैं तथा मेरे विरुद्ध
अपने कोप की वृद्धि करते हैं; मुझ पर तो कष्टों पर कष्ट चले आ रहे हैं. 18
"तब आपने मुझे गर्भ से बाहर क्यों आने दिया? उत्तम तो यही होता कि वहीं
मेरी मृत्यु हो जाती कि मुझ पर किसी की दृष्टि न पड़ती. 19 मुझे तो ऐसा हो
जाना था, मानो मैं हुआ ही नहीं; या सीधे गर्भ से कब्र में! 20 क्या परमेश्वर मुझे
मेरे इन थोड़े से दिनों में शांति से रहने न देंगे? आप अपना यह स्थान छोड़
दीजिए, कि मैं कुछ देर के लिए आनंदित रह सकूं. 21 इसके पूर्व कि मैं वहां के
लिए उड़ जाऊं, जहां से कोई लौटकर नहीं आता, उस अंधकार तथा मृत्यु के
स्थान को, 22 उस घोर अंधकार के स्थान को, जहां कुछ गड़बड़ी नहीं है, उस
स्थान में अंधकार भी प्रकाश समान है."

11 इसके बाद नआमथवासी ज़ोफर ने कहना प्रारंभ किया: 2 "क्या मेरे इतने
सारे शब्दों का उत्तर नहीं मिलेगा? क्या कोई वाचाल व्यक्ति दोष मुक्त
माना जाएगा? 3 क्या तुम्हारी अहंकार की बातें लोगों को चुप कर पाएगी? क्या
तुम उपहास करके भी कष्ट से मुक्त रहोगे? 4 क्योंकि तुमने तो कहा है, 'मेरी
शिक्षा निर्मल है तथा आपके आंकलन में मैं निर्दोष हूं,' 5 किंतु यह संभव है कि
परमेश्वर संवाद करने लगें तथा वह तुम्हारे विरुद्ध अपना निर्णय दें. 6 वह तुम पर
ज्ञान का रहस्य प्रगट कर दें, क्योंकि सत्य ज्ञान के दो पक्ष हैं. तब यह समझ लो,
कि परमेश्वर तुम्हारे अपराध के कुछ अंश को भूल जाते हैं. 7 "क्या, परमेश्वर
के रहस्य की गहराई को नापना तुम्हारे लिए संभव है? क्या तुम सर्वशक्तिमान
की सीमाओं की जांच कर सकते हो? 8 क्या करोगे तुम? वे तो आकाश-समान
उन्नत हैं. क्या मालूम कर सकोगे तुम? वे तो पाताल से भी अधिक अथाह हैं.
(Sheol h7585) 9 इसका विस्तार पृथ्वी से भी लंबा है तथा महासागर से भी
अधिक व्यापक. 10 "यदि वह आएं तथा तुम्हें बंदी बना दें, तथा तुम्हारे लिए
अदालत आयोजित कर दें, तो कौन उन्हें रोक सकता है? 11 वह तो पाखंडी को
पहचान लेते हैं, उन्हें तो यह भी आवश्यकता नहीं; कि वह पापी के लिए विचार
करें. 12 जैसे जंगली गधे का बच्चा मनुष्य नहीं बन सकता, वैसे ही किसी मूर्ख
को बुद्धिमान नहीं बनाया जा सकता. 13 "यदि तुम अपने हृदय को शुद्ध दिशा
की ओर बढ़ाओ, तथा अपना हाथ परमेश्वर की ओर बढ़ाओ, 14 यदि तुम्हारे
हाथ जिस पाप में फंसे है, तुम इसका परित्याग कर दो तथा अपने घरों में बुराई
का प्रवेश न होने दो, 15 तो तुम निःसंकोच अपना सिर ऊंचा कर सकोगे तथा
तुम निर्भय हो स्थिर खड़े रह सकोगे. 16 क्योंकि तुम्हें अपने कष्टों का स्मरण
रहेगा, जैसे वह जल जो बह चुका है वैसी ही होगी तुम्हारी स्मृति. 17 तब

तुम्हारा जीवन दोपहर के सूरज से भी अधिक प्रकाशमान हो जाएगा, अंधकार भी प्रभात-समान होगा. 18 तब तुम विश्वास करोगे, क्योंकि तब तुम्हारे सामने होगी एक आशा; तुम आस-पास निरीक्षण करोगे और फिर पूर्ण सुरक्षा में विश्राम करोगे. 19 कोई भी तुम्हारी निद्रा में बाधा न डालेगा, अनेक तुम्हारे समर्थन की अपेक्षा करेंगे. 20 किंतु दुर्वृत्तों की दृष्टि शून्य हो जाएगी, उनके लिए निकास न हो सकेगा; उनके लिए एकमात्र आशा है मृत्यु."

12 तब अय्योब ने उत्तर दिया: 2 "निःसंदेह तुम्हीं हो वे लोग, तुम्हारे साथ ही ज्ञान का अस्तित्व मिट जाएगा! 3 किंतु तुम्हारे समान बुद्धि मुझमें भी है; तुमसे कम नहीं है मेरा स्तर. किसे बोध नहीं है इस सत्य का? 4 "अपने मित्रों के लिए तो मैं हंसी मज़ाक का विषय होकर रह गया हूं, मैंने परमेश्वर को पुकारा और उन्होंने इसका प्रत्युत्तर भी दिया; और अब यहां खरा तथा निर्दोष व्यक्ति उपहास का पात्र हो गया है! 5 सुखी धनवान व्यक्ति को दुःखी व्यक्ति घृणित लग रहा है. जो पहले ही लड़खड़ा रहा है, उसी पर प्रहार किया जा रहा है. 6 उन्हीं के घरों को सुरक्षित छोड़ा जा रहा है, जो हिंसक-विनाशक हैं, वे ही सुरक्षा में निवास कर रहे हैं, जो परमेश्वर को उकसाते रहे हैं, जो सोचते हैं कि ईश्वर अपनी मुट्ठी में है! 7 "किंतु अब जाकर पशुओं से परामर्श लो, अब वे तुम्हें शिक्षा देने लगें, आकाश में उड़ते पक्षी तुम्हें सूचना देने लगें; 8 अन्यथा पृथ्वी से ही वार्तालाप करो, वही तुम्हें शिक्षा दे, महासागर की मछलियां तुम्हारे लिए शिक्षक हो जाएं. 9 कौन है तुम्हारे मध्य जो इस सत्य से अनजान है, कि यह सब याहवेह की कृति है? 10 किसका अधिकार है हर एक जीवधारी जीवन पर तथा समस्त मानव जाति के श्वास पर? 11 क्या कान शब्दों की परख नहीं करता, जिस प्रकार जीभ भोजन के स्वाद को परखती है? 12 क्या, वृद्धों में बुद्धि पायी नहीं जाती है? क्या लंबी आयु समझ नहीं ले आती? 13 "विवेक एवं बल परमेश्वर के साथ हैं; निर्णय तथा समझ भी उन्हीं में शामिल हैं. 14 जो कुछ उनके द्वारा गिरा दिया जाता है, उसे फिर से बनाया नहीं जा सकता; जब वह किसी को बंदी बना लेते हैं, असंभव है उसका छुटकारा. 15 सुनो! क्या कहीं सूखा पड़ा है? यह इसलिये कि परमेश्वर ने ही जल रोक कर रखा है; जब वह इसे प्रेषित कर देते हैं, पृथ्वी जलमग्न हो जाती है. 16 वही हैं बल एवं ज्ञान के स्रोत; धोखा देनेवाला तथा धोखा खानेवाला दोनों ही उनके अधीन हैं. 17 वह मंत्रियों को विवस्त्र कर छोड़ते हैं तथा न्यायाधीशों को मूर्ख बना देते हैं. 18 वह राजाओं द्वारा डाली गई बेड़ियों को तोड़ फेंकते हैं तथा उनकी कमर को बंधन से सुसज्जित कर देते हैं. 19 वह पुरोहितों को नग्न पांव चलने के लिए मजबूर कर देते हैं तथा उन्हें, जो स्थिर थे, पराजित कर देते हैं. 20 वह विश्वास सलाहकारों को अवाक बना देते हैं तथा बड़ों की समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं 21 वह आदरणीय व्यक्ति को घृणा के पात्र बना छोड़ते हैं. तथा शूरवीरों को निकम्मा कर देते हैं. 22 वह घोर अंधकार में बड़े रहस्य प्रकट कर देते हैं, तथा घोर अंधकार को प्रकाश में ले आते हैं. 23 वही राष्ट्रों को उन्नत करते और फिर उन्हें नष्ट भी कर देते हैं. वह राष्ट्रों को समृद्ध करते और फिर उसे निवास रहित भी कर देते हैं. 24 वह विश्व के शासकों की बुद्धि शून्य कर देते हैं तथा उन्हें रेगिस्तान प्रदेश में दिशाहीन भटकने के लिए छोड़ देते हैं. 25 वे घोर अंधकार में टटोलते रह जाते हैं तथा वह उन्हें इस स्थिति में डाल देते हैं, मानो कोई मतवाला लड़खड़ा रहा हो.

13 "सुनो, मेरे नेत्र यह सब देख चुके हैं, मेरे कानों ने, यह सब सुन लिया है तथा मैंने इसे समझ लिया है. 2 जो कुछ तुम्हें मालूम है, वह सब मुझे मालूम है; मैं तुमसे किसी भी रीति से कम नहीं हूं, 3 हां, मैं इसका उल्लेख सर्वशक्तिमान से अवश्य करूंगा, मेरी अभिलाषा है कि इस विषय में परमेश्वर से वाद-विवाद करूं. 4 तुम तो झूठी बात का चित्रण कर रहे हो; तुम सभी अयोग्य वैद्य हो! 5 उत्तम तो यह होता कि तुम चुप रहते! इसी में सिद्ध हो जाती तुम्हारी बुद्धिमानी. 6 कृपा कर मेरे विवाद पर ध्यान दो; तथा मेरे होंठों की बहस की बातों पर ध्यान करो. 7 क्या तुम वह बात करोगे, जो परमेश्वर की दृष्टि में अन्यायपूर्ण है? अथवा वह कहोगे, जो उनकी दृष्टि में छलपूर्ण है? 8 क्या तुम परमेश्वर के लिए पक्षपात करोगे? क्या तुम परमेश्वर से वाद-विवाद करोगे? 9 क्या जब तुम्हारी परख की जाएगी, तो यह तुम्हारे हित में होगा? अथवा तुम मनुष्यों के समान परमेश्वर से छल करने का यत्न करने लगोगे? 10 यदि तुम गुप्त में पक्षपात करोगे, तुम्हें उनकी ओर से फटकार ही प्राप्त होगी. 11 क्या परमेश्वर का माहात्म्य तुम्हें भयभीत न कर देगा? क्या उनका आतंक तुम्हें भयभीत न कर देगा? 12 तुम्हारी उक्तियां राख के नीतिवचन के समान हैं; तुम्हारी प्रतिरक्षा मिट्टी समान रह गई है. 13 "मेरे सामने चुप रहो, कि मैं अपने विचार प्रस्तुत कर सकूं; तब चाहे कैसी भी समस्या आ पड़े. 14 भला मैं स्वयं को जोखिम में क्यों डालूं तथा अपने प्राण हथेली पर लेकर घुमूं? 15 चाहे परमेश्वर मेरा घात भी करें, फिर भी उनमें मेरी आशा बनी रहेगी; परमेश्वर के सामने मैं अपना पक्ष प्रस्तुत करूंगा. 16 यही मेरी छुटकारे का कारण होगा, क्योंकि कोई बुरा व्यक्ति उनकी उपस्थिति में प्रवेश करना न चाहेगा! 17 बड़ी सावधानीपूर्वक मेरा वक्तव्य सुन लो; तथा मेरी घोषणा को मन में बसा लो. 18 अब सुन लो, प्रस्तुति के लिए मेरा पक्ष तैयार है, मुझे निश्चय है मुझे न्याय प्राप्त होकर रहेगा. 19 कौन करेगा मुझसे वाद-विवाद? यदि कोई मुझे दोषी प्रमाणित कर दे, मैं चुप होकर प्राण त्याग दूंगा. 20 "परमेश्वर, मेरी दो याचनाएं पूर्ण कर दीजिए, तब मैं आपसे छिपने का प्रयास नहीं करूंगा. 21 मुझ पर से अपना कठोर हाथ दूर कर लीजिए, तथा अपने आतंक मुझसे दूर कर लीजिए. 22 तब मुझे बुला लीजिए कि मैं प्रश्नों के उत्तर दे सकूं, अथवा मुझे बोलने दीजिए, और इन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए. 23 कितने हैं मेरे पाप एवं अपराध? प्रकट कर दीजिए, मेरा अपराध एवं मेरा पाप. 24 आप मुझसे अपना मुख क्यों छिपा रहे हैं? आपने मुझे अपना शत्रु क्यों मान लिया है? 25 क्या आप एक वायु प्रवाह में उड़ती हुई पत्ती को यातना देंगे? क्या आप सूखी भूसी का पीछा करेंगे? 26 आपने मेरे विरुद्ध कड़वे आरोपों की सूची बनाई है तथा आपने मेरी युवावस्था के पापों को मुझ पर लाद दिया है. 27 आपने मेरे पांवों में बेड़ियां डाल दी है; आप मेरे मार्गों पर दृष्टि रखते हैं. इसके लिए आपने मेरे पांवों के तलवों को चिन्हित कर दिया है. 28 "तब मनुष्य किसी सड़ी-गली वस्तु के समान नष्ट होता जाता है, उस वस्त्र के समान, जिसे कीड़े खा चुके हों.

14 "स्त्री से जन्मे मनुष्य का जीवन, अल्पकालिक एवं दुःख भरा होता है. 2 उस पुष्प समान, जो खिलता है तथा मुरझा जाता है; वह तो छाया-समान द्रुत गति से विलीन हो जाता तथा अस्तित्वहीन रह जाता है. 3 क्या इस प्रकार का प्राणी इस योग्य है कि आप उस पर दृष्टि बनाए रखें तथा उसका न्याय करने के लिए उसे अपनी उपस्थिति में आने दें? 4 अशुद्ध में से किसी शुद्ध वस्तु की सृष्टि कौन कर सकता है? कोई भी इस योग्य नहीं है! 5 इसलिये कि मनुष्य का जीवन सीमित है; उसके जीवन के माह आपने नियत कर रखे हैं. साथ आपने उसकी सीमाएं निर्धारित कर दी हैं, कि वह इनके पार न जा सके. 6 जब तक वह वैतनिक मज़दूर समान अपना समय पूर्ण करता है उस पर से अपनी दृष्टि हटा लीजिए, कि उसे विश्राम प्राप्त हो सके. 7 "वृक्ष के लिए तो सदैव आशा बनी रहती है: जब उसे काटा जाता है, उसके तने से अंकुर निकल आते हैं. उसकी डालियां विकसित हो जाती हैं. 8 यद्यपि भूमि के भीतर इसकी मूल जीर्ण होती जाती है तथा भूमि में इसका ठूंठ नष्ट हो जाता है, 9 जल की गंध प्राप्त होते ही यह खिलने लगता है तथा पौधे के समान यह अपनी शाखाएं फैलाने लगता है. 10 किंतु मनुष्य है कि, मृत्यु होने पर वह पड़ा रह जाता है; उसका श्वास समाप्त हुआ, कि वह अस्तित्वहीन रह जाता है. 11 जैसे सागर का जल सूखते रहता है

तथा नदी धूप से सूख जाती है, 12 उसी प्रकार मनुष्य, मृत्यु में पड़ा हुआ लेटा
रह जाता है; आकाश के अस्तित्वहीन होने तक उसकी स्थिति यही रहेगी, उसे
इस गहरी नींद से जगाया जाना असंभव है. 13 "उत्तम तो यही होता कि आप
मुझे अधोलोक में छिपा देते, आप मुझे अपने कोप के ठंडा होने तक छिपाए
रहते! आप एक अवधि निश्चित करके इसके पूर्ण हो जाने पर मेरा स्मरण करते!
(Sheol h7585) 14 क्या मनुष्य के लिए यह संभव है कि उसकी मृत्यु के बाद
वह जीवित हो जाए? अपने जीवन के समस्त श्रमपूर्ण वर्षों में मैं यही प्रतीक्षा
करता रह जाऊंगा. कब होगा वह नवोदय? 15 आप आह्वान करो, तो मैं उत्तर
दूंगा; आप अपने उस बनाए गये प्राणी की लालसा करेंगे. 16 तब आप मेरे पैरों
का लेख रखेंगे किंतु मेरे पापों का नहीं. 17 मेरे अपराध को एक थैली में
मोहरबन्द कर दिया जाएगा; आप मेरे पापों को ढांप देंगे. 18 "जैसे पर्वत नष्ट
होते-होते वह चूर-चूर हो जाता है, चट्टान अपने स्थान से हट जाती है. 19 जल
में भी पत्थरों को काटने की क्षमता होती है, तीव्र जल प्रवाह पृथ्वी की धूल
साथ ले जाते हैं, आप भी मनुष्य की आशा के साथ यही करते हैं. 20 एक ही
बार आप उसे ऐसा हराते हैं, कि वह मिट जाता है; आप उसका स्वरूप परिवर्तित
कर देते हैं और उसे निकाल देते हैं. 21 यदि उसकी संतान सम्मानित होती है,
उसे तो इसका ज्ञान नहीं होता; अथवा जब वे अपमानित किए जाते हैं, वे इससे
अनजान ही रहते हैं. 22 जब तक वह देह में होता है, पीड़ा का अनुभव करता
है, इसी स्थिति में उसे वेदना का अनुभव होता है."

15 इसके बाद तेमानी एलिफाज़ के उद्गार ये थे: 2 "क्या किसी बुद्धिमान के
उद्गार खोखले विचार हो सकते हैं तथा क्या वह पूर्वी पवन से अपना पेट
भर सकता है? 3 क्या वह निरर्थक सत्यों के आधार पर विचार कर सकता है?
वह उन शब्दों का प्रयोग कर सकता है? जिनका कोई लाभ नहीं बनता? 4 तुमने
तो परमेश्वर के सम्मान को ही त्याग दिया है, तथा तुमने परमेश्वर की श्रद्धा में
विघ्न डाले. 5 तुम्हारा पाप ही तुम्हारे शब्दों की प्रेरणा है, तथा तुमने धूर्तों के
शब्दों का प्रयोग किये हैं. 6 ये तो तुम्हारा मुंह ही है, जो तुझे दोषी ठहरा रहा है,
मैं नहीं; तुम्हारे ही शब्द तुम पर आरोप लगा रहे हैं. 7 "क्या समस्त मानव
जाति में तुम सर्वप्रथम जन्मे हो? अथवा क्या पर्वतों के अस्तित्व में आने के पूर्व
तुम्हारा पालन पोषण हुआ था? 8 क्या तुम्हें परमेश्वर की गुप्त अभिलाषा सुनाई
दे रही है? क्या तुम ज्ञान को स्वयं तक सीमित रखे हुए हो? 9 तुम्हें ऐसा क्या
मालूम है, जो हमें मालूम नहीं है? तुमने वह क्या समझ लिया है, जो हम समझ
न पाए हैं? 10 हमारे मध्य सफेद बाल के वृद्ध विघमान हैं, ये तुम्हारे पिता से
अधिक आयु के भी हैं. 11 क्या परमेश्वर से मिली सांत्वना तुम्हारी दृष्टि में
पर्याप्त है, वे शब्द भी जो तुमसे सौम्यतापूर्वक से कहे गए हैं? 12 क्यों तुम्हारा
हृदय उदासीन हो गया है? क्यों तुम्हारे नेत्र क्रोध में चमक रहे हैं? 13 कि तुम्हारा
हृदय परमेश्वर के विरुद्ध हो गया है, तथा तुम अब ऐसे शब्द व्यर्थ रूप से उच्चार
रहे हो? 14 "मनुष्य है ही क्या, जो उसे शुद्ध रखा जाए अथवा वह, जो स्त्री से
पैदा हुआ, निर्दोष हो? 15 ध्यान दो, यदि परमेश्वर अपने पवित्र लोगों पर भी
विश्वास नहीं करते, तथा स्वर्ग उनकी दृष्टि में शुद्ध नहीं है. 16 तब मनुष्य
कितना निकृष्ट होगा, जो घृणित तथा भ्रष्ट है, जो पाप को जल समान पिया
करता है! 17 "यह मैं तुम्हें समझाऊंगा मेरी सुनो जो कुछ मैंने देखा है; मैं उसी
की घोषणा करूंगा, 18 जो कुछ बुद्धिमानों ने बताया है, जिसे उन्होंने अपने
पूर्वजों से भी गुप्त नहीं रखा है. 19 (जिन्हें मात्र यह देश प्रदान किया गया था
तथा उनके मध्य कोई भी विदेशी न था): 20 दुर्वृत्त अपने समस्त जीवनकाल में
पीड़ा से तड़पता रहता है. तथा बलात्कारी के लिए समस्त वर्ष सीमित रख दिए
गए हैं. 21 उसके कानों में आतंक संबंधी ध्वनियां गूंजती रहती हैं; जबकि
शान्तिकाल में विनाश उस पर टूट पड़ता है. 22 उसे यह विश्वास नहीं है कि
उसका अंधकार से निकास संभव है; कि उसकी नियति तलवार संहार है. 23
वह भोजन की खोज में इधर-उधर भटकता रहता है, यह मालूम करते हुए,
'कहीं कुछ खाने योग्य वस्तु है?' उसे यह मालूम है कि अंधकार का दिवस पास
है. 24 वेदना तथा चिंता ने उसे भयभीत कर रखा है; एक आक्रामक राजा समान
उन्होंने उसे वश में कर रखा है, 25 क्योंकि उसने परमेश्वर की ओर हाथ बढ़ाने
का ढाढस किया है तथा वह सर्वशक्तिमान के सामने अहंकार का प्रयास करता
है. 26 वह परमेश्वर की ओर सीधे दौड़ पड़ा है, उसने मजबूत ढाल ले रखी है.
27 "क्योंकि उसने अपना चेहरा अपनी वसा में छिपा लिया है तथा अपनी जांघ
चर्बी से भरपूर कर ली है. 28 वह तो उजाड़ नगरों में निवास करता रहा है, ऐसे
घरों में जहां कोई भी रहना नहीं चाहता था, जिनकी नियति ही है खंडहर हो
जाने के लिए. 29 न तो वह धनी हो जाएगा, न ही उसकी संपत्ति दीर्घ काल तक
उसके अधिकार में रहेगी, उसकी उपज बढ़ेगी नहीं. 30 उसे अंधकार से मुक्ति
प्राप्त न होगी; ज्वाला उसके अंकुरों को झुलसा देगी, तथा परमेश्वर के श्वास से
वह दूर उड़ जाएगा. 31 उत्तम हो कि वह व्यर्थ बातों पर आश्रित न रहे, वह
स्वयं को छल में न रखे, क्योंकि उसका प्रतिफल धोखा ही होगा. 32 समय के
पूर्व ही उसे इसका प्रतिफल प्राप्त हो जाएगा, उसकी शाखाएं हरी नहीं रह
जाएंगी. 33 उसका विनाश वैसा ही होगा, जैसा कच्चे द्राक्षों की लता कुचल दी
जाती है, जैसे जैतून वृक्ष से पुष्पों का झड़ना होता है. 34 क्योंकि दुर्वृत्तों की
सभा खाली होती है, भ्रष्ट लोगों के तंबू को अग्नि चट कर जाती है. 35 उनके
विचारों में विपत्ति गर्भधारण करती है तथा वे पाप को जन्म देते हैं; उनका
अंतःकरण छल की योजना गढ़ता रहता है."

16 अय्योब ने उत्तर दिया: 2 "मैं ऐसे अनेक विचार सुन चुका हूं; तुम तीनों
ही निकम्मे दिलासा देनेवाले हो! 3 क्या इन खोखले उद्गारों का कोई
अंत नहीं है? अथवा किस पीडा ने तुमसे ये उत्तर दिलवाए हैं? 4 तुम्हारी शैली
में मैं भी वार्तालाप कर सकता हूं, यदि मैं आज तुम्हारी स्थिति में होता; मैं तो
तुम्हारे सम्मान में काव्य रचना कर देता और अपना सिर भी हिलाता रहता.
5 मैं अपने शब्दों के द्वारा तुममें साहस बढ़ा सकता हूं; तथा मेरे विचारों की
सांत्वना तुम्हारी वेदना कम करती है. 6 "यदि मैं कुछ कह भी दूं, तब भी मेरी
वेदना कम न होगी; यदि मैं चुप रहूं, इससे भी मुझे कोई लाभ न होगा. 7 किंतु
परमेश्वर ने मुझे थका दिया है; आपने मेरे मित्र-मण्डल को ही उजाड़ दिया है. 8
आपने मुझे संकुचित कर दिया है, यह मेरा साक्षी हो गया है; मेरा दुबलापन मेरे
विरुद्ध प्रमाणित हो रहा है, मेरा मुख मेरा विरोध कर रहा है. 9 परमेश्वर के कोप
ने मुझे फाड़ रखा है जैसे किसी पशु को फाड़ा जाता है, वह मुझ पर दांत पीसते
रहे; मेरे शत्रु मुझ पर कोप करते रहते हैं. 10 मजाक करते हुए वे मेरे सामने
अपना मुख खोलते हैं; घृणा के आवेग में उन्होंने मेरे कपोलों पर प्रहार भी किया
है. वे सब मेरे विरोध में एकजुट हो गए हैं. 11 परमेश्वर ने मुझे अधर्मियों के वश
में कर दिया है तथा वह मुझे एक से दूसरे के हाथ में सौंपते हैं. 12 मैं तो निश्चिंत
हो चुका था, किंतु परमेश्वर ने मुझे चूर-चूर कर दिया; उन्होंने मुझे गर्दन से
पकड़कर इस रीति से झंझोड़ा, कि मैं चूर-चूर हो बिखर गया; उन्होंने तो मुझे
निशाना भी बना दिया है. 13 उनके बाणों से मैं चारों ओर से घिर चुका हूं. बुरी
तरह से उन्होंने मेरे गुर्दे काटकर घायल कर दिए हैं. उन्होंने मेरा पित्त भूमि पर
बिखरा दिया. 14 वह बार-बार मुझ पर आक्रमण करते रहते हैं; वह एक योद्धा
समान मुझ पर झपटते हैं. 15 "मैंने तो अपनी देह पर टाट रखी है तथा अपना
सिर धूल में ठूंस दिया है. 16 रोते-रोते मेरा चेहरा लाल हो चुका है, मेरी पलकों
पर विषाद छा गई है. 17 जबकि न तो मेरे हाथों ने कोई हिंसा की है और न मेरी
प्रार्थना में कोई स्वार्थ शामिल था. 18 "पृथ्वी, मेरे रक्त पर आवरण न डालना;
तथा मेरी दोहाई को विश्रान्ति न लेने देना. 19 ध्यान दो, अब भी मेरा साक्षी स्वर्ग
में है; मेरा गवाह सर्वोच्च है. 20 मेरे मित्र ही मेरे विरोधी हो गए हैं. मेरा आंसू
बहाना तो परमेश्वर के सामने है. 21 उपयुक्त होता कि मनुष्य परमेश्वर से उसी

स्तर पर आग्रह कर सकता, जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से. 22
“क्योंकि जब कुछ वर्ष बीत जायेंगे, तब मैं वहां पहुंच जाऊंगा, जहां से कोई
लौटकर नहीं आता.

17 मेरा मनोबल टूट चुका है, मेरे जीवन की ज्योति का अंत आ चुका
है, कब्र को मेरी प्रतीक्षा है. 2 इसमें कोई संदेह नहीं, ठट्ठा करनेवाले
मेरे साथ हो चुके हैं; मेरी दृष्टि उनके भड़काने वाले कार्यों पर टिकी हुई है.
3 “परमेश्वर, मुझे वह ज़मानत दे दीजिए, जो आपकी मांग है. कौन है वह,
जो मेरा जामिन हो सकेगा? 4 आपने तो उनकी समझ को बाधित कर रखा
है; इसलिए आप तो उन्हें जयवंत होने नहीं देंगे. 5 जो लूट में अपने अंश के
लिए अपने मित्रों की चुगली करता है, उसकी संतान की दृष्टि जाती रहेगी. 6
“परमेश्वर ने तो मुझे एक निंदनीय बना दिया है, मैं तो अब वह हो चुका हूं, जिस
पर लोग थूकते हैं. 7 शोक से मेरी दृष्टि क्षीण हो चुकी है; मेरे समस्त अंग अब
छाया-समान हो चुके हैं. 8 यह सब देख सज्जन चुप रह जाएंगे; तथा निर्दोष
मिलकर दुर्वृत्तों के विरुद्ध हो जाएंगे. 9 फिर भी खरा अपनी नीतियों पर अटल
बना रहेगा, तथा वे, जो सत्यनिष्ठ हैं, बलवंत होते चले जाएंगे. 10 “किंतु आओ,
तुम सभी आओ, एक बार फिर चेष्टा कर लो! तुम्हारे मध्य मुझे बुद्धिमान प्राप्त
नहीं होगा. 11 मेरे दिनों का तो अंत हो चुका है, मेरी योजनाएं चूर-चूर हो चुकी
हैं. यही स्थिति है मेरे हृदय की अभिलाषाओं की. 12 वे तो रात्रि को भी दिन में
बदल देते हैं, वे कहते हैं, ‘प्रकाश निकट है,’ जबकि वे अंधकार में होते हैं. 13
यदि मैं घर के लिए अधोलोक की खोज करूं, मैं अंधकार में अपना बिछौना
लगा लूं, (Sheol h7585) 14 यदि मैं उस कब्र को पुकारकर कहूं, ‘मेरे जनक तो
तुम हो और कीड़ों से कि तुम मेरी माता या मेरी बहिन हो,’ 15 तो मेरी आशा
कहां है? किसे मेरी आशा का ध्यान है? 16 क्या यह भी मेरे साथ अधोलोक में
समा जाएगी? क्या हम सभी साथ साथ धूल में मिल जाएंगे?” (Sheol h7585)

18 इसके बाद शूही बिलदद ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की: 2 “कब तक
तुम इसी प्रकार शब्दों में उलझे रहोगे? कुछ सार्थक विषय प्रस्तुत करो,
कि कुछ परिणाम प्रकट हो सके. 3 हमें पशु क्यों समझा जा रहा है? क्या हम
तुम्हारी दृष्टि में मूर्ख हैं? 4 तुम, जो क्रोध में स्वयं को फाड़े जा रहे हो, क्या,
तुम्हारे हित में तो पृथ्वी अब उजड़ हो जानी चाहिए? अथवा, क्या चट्टान को
अपनी जगह से अलग किया जाये? 5 “सत्य तो यह है कि दुर्वृत्त का दीप
वस्तुतः बुझ चुका है; उसके द्वारा प्रज्वलित अग्निशिखा में तो प्रकाश ही नहीं है.
6 उसका तंबू अंधकार में है; उसके ऊपर का दीपक बुझ गया है. 7 उसकी द्रुत
चाल को रोक दिया गया है; तथा उसकी अपनी युक्ति उसे ले डूबी, 8 क्योंकि
वह तो अपने जाल में जा फंसा है; उसने अपने ही फंदे में पैर डाल दिया है. 9
उसकी एड़ी पर वह फंदा जा पड़ा तथा संपूर्ण उपकरण उसी पर आ गिरा है, 10
भूमि के नीचे उसके लिए वह गांठ छिपाई गई थी; उसके रास्ते में एक फंदा रखा
गया था. 11 अब तो आतंक ने उसे चारों ओर से घेर रखा है तथा उसके पीछे
पड़कर उसे सता रहे हैं. 12 उसके बल का ठट्ठा हुआ जा रहा है; विपत्ति उसके
निकट ठहरी हुई है. 13 उसकी खाल पर घोर व्याधि लगी हुई है; उसके अंगों
को मृत्यु के पहलौठे ने खाना बना लिया है. 14 उसके ही तंबू की सुरक्षा में से
उसे झपट लिया गया है अब वे उसे आतंक के राजा के सामने प्रदर्शित हो रहे हैं.
15 अब उसके तंबू में विदेशी जा बसे हैं; उसके घर पर गंधक छिड़क दिया गया
है. 16 भूमि के भीतर उसकी जड़ें अब शुष्क हो चुकी हैं तथा ऊपर उनकी
शाखाएं काटी जा चुकी हैं. 17 धरती के लोग उसको याद नहीं करेंगे; बस अब
कोई भी उसको याद नहीं करेगा. 18 उसे तो प्रकाश में से अंधकार में धकेल
दिया गया है तथा मनुष्यों के समाज से उसे खदेड़ दिया गया है. 19 मनुष्यों के
मध्य उसका कोई वंशज नहीं रह गया है, जहां-जहां वह प्रवास करता है, वहां
उसका कोई उत्तरजीवी नहीं. 20 पश्चिमी क्षेत्रों में उसकी स्थिति पर लोग
चकित होंगे तथा पूर्वी क्षेत्रों में भय ने लोगों को जकड़ लिया है. 21 निश्चयतः
दुर्वृत्तों का निवास ऐसा ही होता है; उनका निवास, जिन्हें परमेश्वर का कोई ज्ञान
नहीं है.”

19 तब अय्योब ने उत्तर दिया: 2 “तुम कब तक मुझे यातना देते रहोगे तथा
अपने इन शब्दों से कुचलते रहोगे? 3 इन दसों अवसरों पर तुम मेरा
अपमान करते रहे हो; मेरे साथ अन्याय करते हुए तुम्हें लज्जा तक न आई. 4
हां, यदि वास्तव में मुझसे कोई त्रुटि हुई है, तो यह त्रुटि मेरे लिए चिंता का
विषय है. 5 यदि तुम वास्तव में स्वयं को मुझसे उच्चतर प्रदर्शित करोगे तथा
मुझ पर मेरी स्थिति को निंदनीय प्रमाणित कर दोगे, 6 तब मैं यह समझ लूंगा,
कि मेरी यह स्थिति परमेश्वर की ओर से है तथा उन्हीं ने मुझे इस जाल में डाला
है. 7 “मैं तो चिल्ला रहा हूं, ‘अन्याय!’ किंतु मुझे कोई उत्तर नहीं मिल रहा; मैं
सहायता के लिए पुकार रहा हूं, किंतु न्याय कहीं से मिल नहीं रहा है. 8
परमेश्वर ने ही जब मेरे मार्ग रोक दिया है, मैं आगे कैसे बढ़ूं? उन्होंने तो मेरे मार्ग
अंधकार कर दिए हैं. 9 मेरा सम्मान मुझसे छीन लिया गया है, तथा जो मुकुट
मेरे सिर पर था, वह भी उतार लिया गया है. 10 वह मुझे चारों ओर से तोड़ने में
शामिल हैं, कि मैं नष्ट हो जाऊं; उन्होंने मेरी आशा को उखाड़ दिया है, जैसे
किसी वृक्ष से किया जाता है. 11 अपना कोप भी उन्होंने मुझ पर उंडेल दिया है;
क्योंकि उन्होंने तो मुझे अपना शत्रु मान लिया है. 12 उनकी सेना एकत्र हो रही
है; उन्होंने मेरे विरुद्ध ढलान तैयार की है तथा मेरे तंबू के आस-पास घेराबंदी कर
ली है. 13 “उन्होंने तो मेरे भाइयों को मुझसे दूर कर दिया है; मेरे परिचित
मुझसे पूर्णतः अनजान हो गए हैं. 14 मेरे संबंधियों ने तो मेरा त्याग कर दिया है;
मेरे परम मित्रों ने मुझे याद करना छोड़ दिया है. 15 वे, जो मेरी गृहस्थी के अंग
हैं तथा जो मेरी परिचारिकाएं हैं; वे सब मुझे परदेशी समझने लगी हैं. 16 मैं
अपने सेवक को अपने निकट बुलाता हूं, किंतु वह उत्तर नहीं देता. 17 मेरी पत्नी
के लिए अब मेरा श्वास घृणास्पद हो गया है; अपने भाइयों के लिए मैं घिनौना
हो गया हूं. 18 यहां तक कि छोटे-छोटे बालक मुझे तुच्छ समझने लगे हैं; जैसे
ही मैं उठता हूं, वे मेरी निंदा करते हैं. 19 मेरे सभी सहयोगी मेरे विद्वेषी हो गए
हैं; मुझे जिन-जिन से प्रेम था, वे अब मेरे विरुद्ध हो चुके हैं. 20 अब तो मैं मात्र
चमड़ी तथा हड्डियों का रह गया हूं; मैं जो हूं, मृत्यु से बाल-बाल बच निकला हूं.
21 “मेरे मित्रों, मुझ पर कृपा करो, क्योंकि मुझ पर तो परमेश्वर का प्रहार हुआ
है. 22 किंतु परमेश्वर के समान तुम मुझे क्यों सता रहे हो? क्या मेरी देह को
यातना देकर तुम्हें संतोष नहीं हुआ है? 23 “कैसा होता यदि मेरे इन विचारों को
लिखा जाता, इन्हें पुस्तक का रूप दिया जा सकता, 24 सीसे के पटल पर लौह
लेखनी से उन्हें चट्टान पर स्थायी रूप से खोद दिया जाता! 25 परंतु मुझे यह
मालूम है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित हैं, तथा अंततः वह पृथ्वी पर खड़ा रहेंगे.
26 मेरी देह के नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं अपनी देह में ही परमेश्वर का दर्शन
करूंगा; 27 जिन्हें मैं अपनी ही आंखों से देखूंगा, उन्हें अन्य किसी के नहीं,
बल्कि मेरे ही नेत्र देखेंगे. मेरा मन अंदर ही अंदर उतावला हुआ जा रहा है! 28
“अब यदि तुम यह विचार करने लगो, ‘हम उसे कैसे सता सकेंगे?’ अथवा,
‘उस पर हम कौन सा आरोप लगा सकेंगे?’ 29 तब उपयुक्त यह होगा कि तुम
अपने ऊपर तलवार के प्रहार का ध्यान रखो; क्योंकि क्रोध का दंड तलवार से
होता है, तब तुम्हें यह बोध होना अनिवार्य है, कि एक न्याय का समय है.”

20 तब नआमथवासी ज़ोफर ने कहना प्रारंभ किया: 2 “मेरे विचारों ने मुझे
प्रत्युत्तर के लिए प्रेरित किया क्योंकि मेरा अंतर्मन उत्तेजित हो गया था.
3 मैंने उस झिड़की की ओर ध्यान दिया, जो मेरा अपमान कर रही थी इसका
भाव समझकर ही मैंने प्रत्युत्तर का निश्चय किया है. 4 “क्या आरंभ से तुम्हें

इसकी वास्तविकता मालूम थी, उस अवसर से जब पृथ्वी पर मनुष्य की सृष्टि
हुई थी, 5 अल्पकालिक ही होता है, दुर्वृत्त का उल्लास तथा क्षणिक होता है
पापिष्ठ का आनंद. 6 भले ही उसका नाम आकाश तुल्य ऊंचा हो तथा उसका
सिर मेघों तक जा पहुंचा हो, 7 वह कूड़े समान पूर्णतः मिट जाता है; जिन्होंने
उसे देखा था, वे पूछते रह जाएंगे, ‘कहां है वह?’ 8 वह तो स्वप्न समान टूट
जाता है, तब उसे खोजने पर भी पाया नहीं जा सकता, रात्रि के दर्शन समान
उसकी स्मृति मिट जाती है. 9 जिन नेत्रों ने उसे देखा था, उनके लिए अब वह
अदृश्य है; न ही वह स्थान, जिसके सामने वह बना रहता था. 10 उसके पुत्रों
की कृपा दीनों पर बनी रहती है तथा वह अपने हाथों से अपनी संपत्ति लौटाता
है. 11 उसकी हड्डियां उसके यौवन से भरी हैं किंतु यह शौर्य उसी के साथ धूल में
जा मिलता है. 12 “यद्यपि उसके मुख को अनिष्ट का स्वाद लग चुका है और
वह इसे अपनी जीभ के नीचे छिपाए रखता है, 13 यद्यपि वह इसकी आकांक्षा
करता रहता है, वह अपने मुख में इसे छिपाए रखता है, 14 फिर भी उसका
भोजन उसके पेट में उथल-पुथल करता है; वह वहां नाग के विष में परिणत हो
जाता है. 15 उसने तो धन-संपत्ति निगल रखी है, किंतु उसे उगलना ही होगा;
परमेश्वर ही उन्हें उसके पेट से बाहर निकाल देंगे. 16 वह तो नागों के विष को
चूस लेता है; सर्प की जीभ उसका संहार कर देती है. 17 वह नदियों की ओर
दृष्टि नहीं कर पाएगा, उन नदियों की ओर, जिनमें दूध एवं दही बह रहे हैं. 18
वह अपनी उपलब्धियों को लौटाने लगा है, इसका उपभोग करना उसके लिए
संभव नहीं है; व्यापार में मिले लाभ का वह आनंद न ले सकेगा. 19 क्योंकि
उसने कंगालों पर अत्याचार किए हैं तथा उनका त्याग कर दिया है; उसने वह
घर हड़प लिया है, जिसका निर्माण उसने नहीं किया है. 20 “इसलिये कि
उसका मन विचलित था; वह अपनी अभिलाषित वस्तुओं को अपने अधिकार
में न रख सका. 21 खाने के लिये कुछ भी शेष न रह गया; तब अब उसकी
समृद्धि अल्पकालीन ही रह गई है. 22 जब वह परिपूर्णता की स्थिति में होगा
तब भी वह संतुष्ट न रह सकेगा; हर एक व्यक्ति, जो इस समय यातना की स्थिति
में होगा, उसके विरुद्ध उठ खड़ा होगा. 23 जब वह पेट भरके खा चुका होगा,
परमेश्वर अपने प्रचंड कोप को उस पर उंडेल देंगे, तभी यह कोप की वृष्टि उस
पर बरस पड़ेगी. 24 संभव है कि वह लौह शस्त्र के प्रहार से बच निकले किंतु
कांस्यबाण तो उसे बेध ही देगा. 25 यह बाण उसकी देह में से खींचा जाएगा,
और यह उसकी पीठ की ओर से बाहर आएगा, उसकी चमकदार नोक उसके
पित्त से सनी हुई है. वह आतंक से भयभीत है. 26 घोर अंधकार उसकी संपत्ति
की प्रतीक्षा में है. अग्नि ही उसे चट कर जाएगी. यह अग्नि उसके तंबू के बचे
हुओं को भस्म कर जाएगी. 27 स्वर्ग ही उसके पाप को उजागर करेगा; पृथ्वी
भी उसके विरुद्ध खड़ी होगी. 28 उसके वंश का विस्तार समाप्त हो जाएगा,
परमेश्वर के कोप-दिवस पर उसकी संपत्ति नाश हो जाएगी. 29 यही होगा
परमेश्वर द्वारा नियत दुर्वृत्त का भाग, हां, वह उत्तराधिकार, जो उसे याहवेह द्वारा
दिया गया है.”

21 तब अय्योब ने उत्तर दिया: 2 “अब ध्यान से मेरी बात सुन लो और
इससे तुम्हें सांत्वना प्राप्त हो. 3 मेरे उद्गार पूर्ण होने तक धैर्य रखना, बाद
में तुम मेरा उपहास कर सकते हो. 4 “मेरी स्थिति यह है कि मेरी शिकायत
किसी मनुष्य से नहीं है, तब क्या मेरी अधीरता असंगत है? 5 मेरी स्थिति पर
ध्यान दो तथा इस पर चकित भी हो जाओ; आश्चर्यचकित होकर अपने मुख पर
हाथ रख लो. 6 उसकी स्मृति मुझे डरा देती है; तथा मेरी देह आतंक में समा
जाती है. 7 क्यों दुर्वृत्त दीर्घायु प्राप्त करते जाते हैं? वे उन्नति करते जाते एवं
सशक्त हो जाते हैं. 8 इतना ही नहीं उनके तो वंश भी, उनके जीवनकाल में
समृद्ध होते जाते हैं. 9 उनके घरों पर आतंक नहीं होता; उन पर परमेश्वर का दंड
भी नहीं होता. 10 उसका सांड बिना किसी बाधा के गाभिन करता है; उसकी
गाय बच्चे को जन्म देती है, तथा कभी उसका गर्भपात नहीं होता. 11 उनके
बालक संख्या में झुंड समान होते हैं; तथा खेलते रहते हैं. 12 वे खंजरी एवं
किन्‍नोर की संगत पर गायन करते हैं; बांसुरी का स्वर उन्हें आनंदित कर देता है.
13 उनके जीवन के दिन तो समृद्धि में ही पूर्ण होते हैं, तब वे एकाएक अधोलोक
में प्रवेश कर जाते हैं. (Sheol h7585) 14 वे तो परमेश्वर को आदेश दे बैठते हैं,
‘दूर हो जाइए मुझसे!’ कोई रुचि नहीं है हमें आपकी नीतियों में. 15 कौन
है यह सर्वशक्तिमान, कि हम उनकी सेवा करें? क्या मिलेगा, हमें यदि हम
उनसे आग्रह करेंगे? 16 तुम्हीं देख लो, उनकी समृद्धि उनके हाथ में नहीं है,
दुर्वृत्तों की परामर्श मुझे स्वीकार्य नहीं है. 17 “क्या कभी ऐसा हुआ है कि दुष्टों
का दीपक बुझा हो? अथवा उन पर विपत्ति का पर्वत टूट पड़ा हो, क्या कभी
परमेश्वर ने अपने कोप में उन पर नाश प्रभावी किया है? 18 क्या दुर्वृत्त वायु
प्रवाह में भूसी-समान हैं, उस भूसी-समान जो तूफान में विलीन हो जाता है? 19
तुम दावा करते हो, ‘परमेश्वर किसी भी व्यक्ति के पाप को उसकी संतान के
लिए जमा कर रखते हैं.’ तो उपयुक्त हैं कि वह इसका दंड प्रभावी कर दें, कि
उसे स्थिति बोध हो जाए. 20 उत्तम होगा कि वह स्वयं अपने नाश को देख ले;
वह स्वयं सर्वशक्तिमान के कोप का पान कर ले. 21 क्योंकि जब उसकी आयु
के वर्ष समाप्त कर दिए गए हैं तो वह अपनी गृहस्थी की चिंता कैसे कर सकता
है? 22 “क्या यह संभव है कि कोई परमेश्वर को ज्ञान दे, वह, जो परलोक के
प्राणियों का न्याय करते हैं? 23 पूर्णतः सशक्त व्यक्ति का भी देहावसान हो जाता
है, उसका, जो निश्चिंत एवं संतुष्ट था. 24 जिसकी देह पर चर्बी थी तथा हड्डियों
में मज्जा भी था. 25 जबकि अन्य व्यक्ति की मृत्यु कड़वाहट में होती है, जिसने
जीवन में कुछ भी सुख प्राप्त नहीं किया. 26 दोनों धूल में जा मिलते हैं, और
कीड़े उन्हें ढांक लेते हैं. 27 “यह समझ लो, मैं तुम्हारे विचारों से अवगत हूं,
उन योजनाओं से भी, जिनके द्वारा तुम मुझे छलते रहते हो. 28 तुम्हारे मन में प्रश्न
उठ रहा है, ‘कहां है उस कुलीन व्यक्ति का घर, कहां है वह तंबू, जहां दुर्वृत्त
निवास करते हैं?’ 29 क्या तुमने कभी अनुभवी यात्रियों से प्रश्न किया है? क्या
उनके साक्ष्य से तुम परिचित हो? 30 क्योंकि दुर्वृत्त तो प्रलय के लिए हैं, वे
कोप-दिवस पर बंदी बना लिए जाएंगे. 31 कौन उसे उसके कृत्यों का स्मरण
दिलाएगा? कौन उसे उसके कृत्यों का प्रतिफल देगा? 32 जब उसकी मृत्यु पर
उसे दफन किया जाएगा, लोग उसकी कब्र पर पहरेदार रखेंगे. 33 घाटी की
मिट्टी उसे मीठी लगती है; सभी उसका अनुगमन करेंगे, जबकि असंख्य तो वे
हैं, जो उसकी यात्रा में होंगे. 34 “तुम्हारे निरर्थक वचन मुझे सांत्वना कैसे देंगे?
क्योंकि तुम्हारे प्रत्युत्तर झूठी बातों से भरे हैं!”

22 तब तेमानवासी एलिफाज़ ने प्रत्युत्तर में कहा: 2 “क्या कोई बलवान
पुरुष परमेश्वर के लिए उपयोगी हो सकता है? अथवा क्या कोई बुद्धिमान
स्वयं का कल्याण कर सकता है? 3 क्या तुम्हारी खराई सर्वशक्तिमान के लिए
आनंद है? अथवा क्या तुम्हारा त्रुटिहीन चालचलन लाभकारी होता है? 4 “क्या
तुम्हारे द्वारा दिया गया सम्मान तुम्हें उनके सामने स्वीकार्य बना देता है, कि वह
तुम्हारे विरुद्ध न्याय करने लगते हैं? 5 क्या तुम्हारी बुराई बहुत नहीं कही जा
सकती? क्या तुम्हारे पाप का अंत नहीं? 6 क्यों तुमने अकारण अपने भाइयों
का बंधक रख लिया है, तथा मनुष्यों को विवस्त्र कर छोड़ा है? 7 थके मांदे से
तुमने पेय जल के लिए तक न पूछा, भूखे से तुमने भोजन छिपा रखा है. 8 किंतु
पृथ्वी पर बलवानों का अधिकार है, इसके निवासी सम्मान्य व्यक्ति हैं. 9 तुमने
विधवाओं को निराश लौटा दिया है पितृहीनों का बल कुचल दिया गया है. 10
यही कारण है कि तुम्हारे चारों ओर फंदे फैले हैं, आतंक ने तुम्हें भयभीत कर
रखा है, 11 संभवतः यह अंधकार है कि तुम दृष्टिहीन हो जाओ, एक बड़ी जल
राशि में तुम जलमग्न हो चुके हो. 12 “क्या परमेश्वर स्वर्ग में विराजमान नहीं
हैं? दूर के तारों पर दृष्टि डालो. कितनी ऊंचाई पर हैं वे! 13 तुम पूछ रहे हो,

‘क्या-क्या मालूम है परमेश्वर को?’ क्या घोर अंधकार में भी उन्हें स्थिति बोध
हो सकता है? 14 मेघ उनके लिए छिपने का साधन हो जाते हैं, तब वह देख
सकते हैं; वह तो नभोमण्डल में चलते फिरते हैं. 15 क्या तुम उस प्राचीन
मार्ग पर चलते रहोगे, जो दुर्वृत्तों का मार्ग हुआ करता था? 16 जिन्हें समय
से पूर्व ही उठा लिया गया, जिनकी तो नींव ही नदी अपने प्रवाह में बहा ले
गई? 17 वे परमेश्वर से आग्रह करते, ‘हमसे दूर चले जाइए!’ तथा यह भी
‘सर्वशक्तिमान उनका क्या बिगाड़ लेगा?’ 18 फिर भी परमेश्वर ने उनके घरों
को उत्तम वस्तुओं से भर रखा है, किंतु उन दुर्वृत्तों की युक्ति मेरी समझ से परे
है. 19 यह देख धार्मिक उल्लसित हो रहे हैं तथा वे; जो निर्दोष हैं, उनका
उपहास कर रहे हैं. 20 उनका नारा है, ‘यह सत्य है कि हमारे शत्रु मिटा दिए
गए हैं, उनकी समृद्धि को अग्नि भस्म कर चुकी है.’ 21 “अब भी समर्पण
करके परमेश्वर से मेल कर लो; तब तो तुम्हारे कल्याण की संभावना है. 22
कृपया उनसे शिक्षा ग्रहण कर लो. उनके शब्दों को मन में रख लो. 23 यदि
तुम सर्वशक्तिमान की ओर मुड़कर समीप हो जाओ, तुम पहले की तरह हो
जाओगे: यदि तुम अपने घर में से बुराई को दूर कर दोगे, 24 यदि तुम अपने
स्वर्ण को भूमि में दबा दोगे, उस स्वर्ण को, जो ओफीर से लाया गया है, उसे
नदियों के पत्थरों के मध्य छिपा दोगे, 25 तब सर्वशक्तिमान स्वयं तुम्हारे लिए
स्वर्ण हो जाएंगे हां, उत्कृष्ट चांदी. 26 तुम परमेश्वर की ओर दृष्टि करोगे, तब
सर्वशक्तिमान तुम्हारे परमानंद हो जाएंगे. 27 जब तुम उनसे प्रार्थना करोगे, वह
तुम्हारी सुन लेंगे, इसके अतिरिक्त तुम अपनी मन्नतें भी पूर्ण करोगे. 28 तुम
किसी विषय की कामना करोगे और वह तुम्हारे लिए सफल हो जाएगा, इसके
अतिरिक्त तुम्हारा रास्ता भी प्रकाशित हो जाएगा. 29 उस स्थिति में जब तुम
पूर्णतः हताश हो जाओगे, तुम्हारी बातें तुम्हारा ‘आत्मविश्वास प्रकट करेंगी!’
परमेश्वर विनीत व्यक्ति को रक्षा प्रदान करते हैं. 30 निर्दोष को परमेश्वर सुरक्षा
प्रदान करते हैं, वह निर्दोष तुम्हारे ही शुद्ध कामों के कारण छुड़ाया जाएगा.”

23 तब अय्योब ने कहा: 2 “आज भी अपराध के भाव में मैं शिकायत कर
रहा हूं; मैं कराह रहा हूं, फिर भी परमेश्वर मुझ पर कठोर बने हुए हैं. 3
उत्तम होगा कि मुझे यह मालूम होता कि मैं कहां जाकर उनसे भेंट कर सकूं, कि
मैं उनके निवास पहुंच सकूं! 4 तब मैं उनके सामने अपनी शिकायत प्रस्तुत कर
देता, अपने सारे विचार उनके सामने उंडेल देता. 5 तब मुझे उनके उत्तर समझ
आ जाते, मुझे यह मालूम हो जाता कि वह मुझसे क्या कहेंगे. 6 क्या वह अपनी
उस महाशक्ति के साथ मेरा सामना करेंगे? नहीं! निश्चयतः वह मेरे निवेदन पर
ध्यान देंगे. 7 सज्जन उनसे वहां विवाद करेंगे तथा मैं उनके न्याय के द्वारा मुक्ति
प्राप्त करूंगा. 8 “अब यह देख लो: मैं आगे बढ़ता हूं, किंतु वह वहां नहीं हैं; मैं
विपरीत दिशा में आगे बढ़ता हूं, किंतु वह वहां भी दिखाई नहीं देते. 9 जब वह
मेरे बायें पक्ष में सक्रिय होते हैं; वह मुझे दिखाई नहीं देते. 10 किंतु उन्हें यह
अवश्य मालूम रहता है कि मैं किस मार्ग पर आगे बढ़ रहा हूं; मैं तो उनके द्वारा
परखे जाने पर कुन्दन समान शुद्ध प्रमाणित हो जाऊंगा. 11 मेरे पांव उनके पथ से
विचलित नहीं हुए; मैंने कभी कोई अन्य मार्ग नहीं चुना है. 12 उनके मुख से
निकले आदेशों का मैं सदैव पालन करता रहा हूं; उनके आदेशों को मैं अपने
भोजन से अधिक अमूल्य मानता रहा हूं. 13 “वह तो अप्रतिम है, उनका, कौन
हो सकता है विरोधी? वह वही करते हैं, जो उन्हें सर्वोपयुक्त लगता है. 14 जो
कुछ मेरे लिए पहले से ठहरा है, वह उसे पूरा करते हैं, ऐसी ही अनेक योजनाएं
उनके पास जमा हैं. 15 इसलिये उनकी उपस्थिति मेरे लिए भयास्पद है; इस
विषय में मैं जितना विचार करता हूं, उतना ही भयभीत होता जाता हूं. 16
परमेश्वर ने मेरे हृदय को क्षीण बना दिया है; मेरा घबराना सर्वशक्तिमान जनित है,
17 किंतु अंधकार मुझे चुप नहीं रख सकेगा, न ही वह घोर अंधकार, जिसने मेरे
मुख को ढक कर रखा है.

24 “सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने न्याय-दिवस को ठहराया क्यों नहीं है? तथा
वे, जो उन्हें जानते हैं, इस दिन की प्रतीक्षा करते रह जाते हैं? 2 कुछ
लोग तो भूमि की सीमाओं को परिवर्तित करते रहते हैं; वे भेड़ें पकड़कर हड़प
लेते हैं. 3 वे पितृहीन के गधों को हकाल कर ले जाते हैं. वे विधवा के बैल को
बंधक बना लेते हैं. 4 वे दरिद्र को मार्ग से हटा देते हैं; देश के दीनों को मजबूर
होकर एक साथ छिप जाना पड़ता है. 5 ध्यान दो, दीन वन्य गधों-समान भोजन
खोजते हुए भटकते रहते हैं, मरुभूमि में अपने बालकों के भोजन के लिए. 6
अपने खेत में वे चारा एकत्र करते हैं तथा दुर्वृत्तों के दाख की बारी से सिल्ला
उठाते हैं. 7 शीतकाल में उनके लिए कोई आवरण नहीं रहते. उन्हें तो विवस्त्र ही
रात्रि व्यतीत करनी पड़ती है. 8 वे पर्वतीय वृष्टि से भीगे हुए हैं, सुरक्षा के लिए
उन्होंने चट्टान का आश्रय लिया हुआ है. 9 अन्य वे हैं, जो दूधमुंहे, पितृहीन
बालकों को छीन लेते हैं; ये ही हैं वे, जो दीन लोगों से बंधक वस्तु कर रख लेते
हैं. 10 उन्हीं के कारण दीन को विवस्त्र रह जाना पड़ता है; वे ही भूखों से अन्न
की पुलियां छीने लेते हैं. 11 दीनों की दीवारों के भीतर ही वे तेल निकालते
हैं; वे द्राक्षरस-कुण्ड में अंगूर तो रौंदते हैं, किंतु स्वयं प्यासे ही रहते हैं. 12
नागरिक कराह रहे हैं, तथा घायलों की आत्मा पुकार रही है. फिर भी परमेश्वर
मूर्खों की याचना की ओर ध्यान नहीं देते. 13 “कुछ अन्य ऐसे हैं, जो ज्योति
के विरुद्ध अपराधी हैं, उन्हें इसकी नीतियों में कोई रुचि नहीं है, तब वे ज्योति के
मार्गों पर आना नहीं चाहते. 14 हत्यारा बड़े भोर उठ जाता है, वह जाकर दीनों
एवं दरिद्रों की हत्या करता है, रात्रि में वह चोरी करता है. 15 व्यभिचारी की
दृष्टि रात आने की प्रतीक्षा करती रहती है, वह विचार करता है, ‘तब मुझे कोई
देख न सकेगा.’ वह अपने चेहरे को अंधेरे में छिपा लेता है. 16 रात्रि होने पर वे
सेंध लगाते हैं, तथा दिन में वे घर में छिपे रहते हैं; प्रकाश में उन्हें कोई रुचि नहीं
रहती. 17 उनके सामने प्रातःकाल भी वैसा ही होता है, जैसा घोर अंधकार,
क्योंकि उनकी मैत्री तो घोर अंधकार के आतंक से है. 18 “वस्तुतः वे जल के
ऊपर के फेन समान हैं; उनका भूखण्ड शापित है. तब कोई उस दिशा में दाख
की बारी की ओर नहीं जाता. 19 सूखा तथा गर्मी हिम-जल को निगल लेते हैं,
यही स्थिति होगी अधोलोक में पापियों की. (Sheol h7585) 20 गर्भ उन्हें भूल
जाता है, कीड़े उसे ऐसे आहार बना लेते हैं; कि उसकी स्मृति भी मिट जाती है,
पापी वैसा ही नष्ट हो जाएगा, जैसे वृक्ष. 21 वह बांझ स्त्री तक से छल करता है
तथा विधवा का कल्याण उसके ध्यान में नहीं आता. 22 किंतु परमेश्वर अपनी
सामर्थ्य से बलवान को हटा देते हैं; यद्यपि वे प्रतिष्ठित हो चुके होते हैं, उनके
जीवन का कोई आश्वासन नहीं होता. 23 परमेश्वर उन्हें सुरक्षा प्रदान करते हैं,
उनका पोषण करते हैं, वह उनके मार्गों की चौकसी भी करते हैं. 24 अल्पकाल
के लिए वे उत्कर्ष भी करते जाते हैं, तब वे नष्ट हो जाते हैं; इसके अतिरिक्त वे
गिर जाते हैं तथा वे अन्यों के समान पूर्वजों में जा मिलते हैं; अन्न की बालों के
समान कट जाना ही उनका अंत होता है. 25 “अब, यदि सत्य यही है, तो कौन
मुझे झूठा प्रमाणित कर सकता है तथा मेरी बात को अर्थहीन घोषित कर सकता
है?”

25 तब बिलदद ने, जो शूही था, अपना मत देना प्रारंभ किया: 2 “प्रभुत्व
एवं अतिशय सम्मान के अधिकारी परमेश्वर ही हैं; वही सर्वोच्च स्वर्ग में
व्यवस्था की स्थापना करते हैं. 3 क्या परमेश्वर की सेना गण्य है? कौन है, जो
उनके प्रकाश से अछूता रह सका है? 4 तब क्या मनुष्य परमेश्वर के सामने युक्त
प्रमाणित हो सकता है? अथवा नारी से जन्मे किसी को भी शुद्ध कहा जा सकता
है? 5 यदि परमेश्वर के सामने चंद्रमा प्रकाशमान नहीं है तथा तारों में कोई शुद्धता
नहीं है, 6 तब मनुष्य क्या है, जो मात्र एक कीड़ा है, मानव प्राणी, जो मात्र एक
केंचुआ ही है!”

26 तब अय्योब ने उत्तर दिया: 2 “क्या सहायता की है तुमने एक दुर्बल
की! वाह! कैसे तुमने बिना शक्ति का उपयोग किए ही एक हाथ की रक्षा
कर डाली है! 3 कैसे तुमने एक ज्ञानहीन व्यक्ति को ऐसा परामर्श दे डाला है!
कैसे समृद्धि से तुमने ठीक अंतर्दृष्टि प्रदान की है! 4 किसने तुम्हें इस बात के
लिए प्रेरित किया है? किसकी आत्मा तुम्हारे द्वारा बातें की है? 5 “मृतकों की
आत्माएं थरथरा उठी हैं, वे जो जल-जन्तुओं से भी नीचे के तल में बसी हुई हैं.
6 परमेश्वर के सामने मृत्यु खुली तथा नाश-स्थल ढका नहीं है. (Sheol h7585)
7 परमेश्वर ने उत्तर दिशा को रिक्त अंतरीक्ष में विस्तीर्ण किया है; पृथ्वी को
उन्होंने शून्य में लटका दिया है. 8 वह जल को अपने मेघों में लपेट लेते हैं तथा
उनके नीचे मेघ नहीं बरस पाते हैं. 9 वह पूर्ण चंद्रमा का चेहरा छिपा देते हैं तथा
वह अपने मेघ इसके ऊपर फैला देते हैं. 10 उन्होंने जल के ऊपर क्षितिज का
चिन्ह लगाया है. प्रकाश तथा अंधकार की सीमा पर. 11 स्वर्ग के स्तंभ कांप
उठते हैं तथा उन्हें परमेश्वर की डांट पर आश्चर्य होता है. 12 अपने सामर्थ्य से
उन्होंने सागर को मंथन किया; अपनी समझ बूझ से उन्होंने राहाब को संहार
कर दिया. 13 उनका श्वास स्वर्ग को उज्जवल बना देता है; उनकी भुजा ने द्रुत
सर्प को बेध डाला है. 14 यह समझ लो, कि ये सब तो उनके महाकार्य की
झलक मात्र है; उनके विषय में हम कितना कम सुन पाते हैं! तब किसमें क्षमता है
कि उनके पराक्रम की थाह ले सके?”

27 तब अपने वचन में अय्योब ने कहा: 2 “जीवित परमेश्वर की शपथ,
जिन्होंने मुझे मेरे अधिकारों से वंचित कर दिया है, सर्वशक्तिमान ने मेरे
प्राण को कड़वाहट से भर दिया है, 3 क्योंकि जब तक मुझमें जीवन शेष है, जब
तक मेरे नथुनों में परमेश्वर का जीवन-श्वास है, 4 निश्चयतः मेरे मुख से कुछ भी
असंगत मुखरित न होगा, और न ही मेरी जीभ कोई छल उच्चारण करेगी. 5
परमेश्वर ऐसा कभी न होने दें, कि तुम्हें सच्चा घोषित कर दूं; मृत्युपर्यंत मैं
धार्मिकता का त्याग न करूंगा. 6 अपनी धार्मिकता को मैं किसी भी रीति से छूट
न जाने दूंगा; जीवन भर मेरा अंतर्मन मुझे नहीं धिक्कारेगा. 7 “मेरा शत्रु दुष्ट-
समान हो, मेरा विरोधी अन्यायी-समान हो. 8 जब दुर्जन की आशा समाप्त हो
जाती है, जब परमेश्वर उसके प्राण ले लेते हैं, तो फिर कौन सी आशा बाकी रह
जाती है? 9 जब उस पर संकट आ पड़ेगा, क्या परमेश्वर उसकी पुकार सुनेंगे?
10 तब भी क्या सर्वशक्तिमान उसके आनंद का कारण बने रहेंगे? क्या तब भी
वह हर स्थिति में परमेश्वर को ही पुकारता रहेगा? 11 “मैं तुम्हें परमेश्वर के
सामर्थ्य की शिक्षा देना चाहूंगा; सर्वशक्तिमान क्या-क्या कर सकते हैं, मैं यह
छिपा नहीं रखूंगा. 12 वस्तुतः यह सब तुमसे गुप्त नहीं है; तब क्या कारण है
कि तुम यह व्यर्थ बातें कर रहे हो? 13 “परमेश्वर की ओर से यही है दुर्वृत्तों की
नियति, सर्वशक्तिमान की ओर से वह मीरास, जो अत्याचारी प्राप्त करते हैं.
14 यद्यपि उसके अनेक पुत्र हैं, किंतु उनके लिए तलवार-घात ही निर्धारित
है; उसके वंश कभी पर्याप्त भोजन प्राप्त न कर सकेंगे. 15 उसके उत्तरजीवी
महामारी से कब्र में जाएंगे, उसकी विधवाएं रो भी न पाएंगी. 16 यद्यपि वह
चांदी ऐसे संचित कर रहा होता है, मानो यह धूल हो तथा वस्त्र ऐसे एकत्र करता
है, मानो वह मिट्टी का ढेर हो. 17 वह यह सब करता रहेगा, किंतु धार्मिक
व्यक्ति ही इन्हें धारण करेंगे तथा चांदी निर्दोषों में वितरित कर दी जाएगी. 18
उसका घर मकड़ी के जाले-समान निर्मित है, अथवा उस आश्रय समान, जो
चौकीदार अपने लिए बना लेता है. 19 बिछौने पर जाते हुए, तो वह एक धनवान
व्यक्ति था; किंतु अब इसके बाद उसे जागने पर कुछ भी नहीं रह जाता है. 20
आतंक उसे बाढ़ समान भयभीत कर लेता है; रात्रि में आंधी उसे चुपचाप ले
जाती है. 21 पूर्वी वायु उसे दूर ले उड़ती है, वह विलीन हो जाता है; क्योंकि
आंधी उसे ले उड़ी है. 22 क्योंकि यह उसे बिना किसी कृपा के फेंक देगा; वह
इससे बचने का प्रयास अवश्य करेगा. 23 लोग उसकी स्थिति को देख आनंदित
हो ताली बजाएंगे तथा उसे उसके स्थान से खदेड़ देंगे.”

28 इसमें कोई संदेह नहीं, कि वहां चांदी की खान है तथा एक ऐसा स्थान,
जहां वे स्वर्ण को शुद्ध करते हैं. 2 धूल में से लौह को अलग किया जाता
है, तथा चट्टान में से तांबा धातु पिघलाया जाता है. 3 मनुष्य इसकी खोज में
अंधकार भरे स्थल में दूर-दूर तक जाता है; चाहे वह अंधकार में छिपी कोई
चट्टान है अथवा कोई घोर अंधकार भरे स्थल. 4 मनुष्य के घर से दूर वह गहरी
खान खोदते हैं, रेगिस्तान स्थान में से दुर्गम स्थलों में जा पहुंचते हैं; तथा गहराई
में लटके रहते हैं. 5 पृथ्वी-पृथ्वी ही है, जो हमें भोजन प्रदान करती है, किंतु
नीचे भूगर्भ अग्निमय है. 6 पृथ्वी में चट्टानें नीलमणि का स्रोत हैं, पृथ्वी की धूल
में ही स्वर्ण मिलता है. 7 यह मार्ग हिंसक पक्षियों को मालूम नहीं है, और न इस
पर बाज की दृष्टि ही कभी पड़ी है. 8 इस मार्ग पर निश्चिंत, हृष्ट-पुष्ट पशु कभी
नहीं चले हैं, और न हिंसक सिंह इस मार्ग से कभी गया है. 9 मनुष्य चकमक
के पत्थर को स्पर्श करता है, पर्वतों को तो वह आधार से ही पलटा देता है. 10
वह चट्टानों में से मार्ग निकाल लेते हैं तथा उनकी दृष्टि वहीं पड़ती है, जहां कुछ
अमूल्य होता है; 11 जल प्रवाह रोक कर वह बांध खड़े कर देते हैं तथा वह जो
अदृश्य था, उसे प्रकाशित कर देते हैं. 12 प्रश्न यही उठता है कि कहां मिल
सकती है बुद्धि? कहां है वह स्थान जहां समझ की जड़ है? 13 मनुष्य इसका
मूल्य नहीं जानता वस्तुतः जीवितों के लोक में यह पाई ही नहीं जाती. 14
सागर की गहराई की घोषणा है, “मुझमें नहीं है यह”; महासागर स्पष्ट करता है,
“मैंने इसे नहीं छिपाया.” 15 स्वर्ण से इसको मोल नहीं लिया जा सकता, वैसे
ही चांदी माप कर इसका मूल्य निर्धारण संभव नहीं है. 16 ओफीर का स्वर्ण भी
इसे खरीद नहीं सकता, न ही गोमेद अथवा नीलमणि इसके लिए पर्याप्त होंगे.
17 स्वर्ण एवं स्फटिक इसके स्तर पर नहीं पहुंच सकते, और वैसे ही कुन्दन के
आभूषण से इसका विनिमय संभव नहीं है. 18 मूंगा तथा स्फटिक मणियों का
यहां उल्लेख करना व्यर्थ है; ज्ञान की उपलब्धि मोतियों से कहीं अधिक ऊपर
है. 19 कूश देश का पुखराज इसके बराबर नहीं हो सकता; कुन्दन से इसका
मूल्यांकन संभव नहीं है. 20 तब, कहां है विवेक का उद्गम? कहां है समझ का
निवास? 21 तब यह स्पष्ट है कि यह मनुष्यों की दृष्टि से छिपी है, हां, पक्षियों
की दृष्टि से भी इसे नहीं देख पाते है. 22 नाश एवं मृत्यु स्पष्ट कहते हैं “अपने
कानों से तो हमने बस, इसका उल्लेख सुना है.” 23 मात्र परमेश्वर को इस तक
पहुंचने का मार्ग मालूम है, उन्हें ही मालूम है इसका स्थान. 24 क्योंकि वे पृथ्वी
के छोर तक दृष्टि करते हैं तथा आकाश के नीचे की हर एक वस्तु उनकी दृष्टि में
होती है. 25 जब उन्होंने वायु को बोझ प्रदान किया तथा जल को आयतन से
मापा, 26 जब उन्होंने वृष्टि की सीमा तय कर दी तथा गर्जन और बिजली की
दिशा निर्धारित कर दी, 27 तभी उन्होंने इसे देखा तथा इसकी घोषणा की
उन्होंने इसे संस्थापित किया तथा इसे खोज भी निकाला. 28 तब उन्होंने मनुष्य
पर यह प्रकाशित किया, “इसे समझ लो प्रभु के प्रति भय, यही है बुद्धि, तथा
बुराइयों से दूरी बनाए रखना ही समझदारी है.”

29 तब अपने वचन में अय्योब ने कहा: 2 “उपयुक्त तो यह होता कि मैं उस
स्थिति में जा पहुंचता जहां मैं कुछ माह पूर्व था, उन दिनों में, जब मुझ
पर परमेश्वर की कृपा हुआ करती थी, 3 जब परमेश्वर के दीपक का प्रकाश मेरे
सिर पर चमक रहा था. जब अंधकार में मैं उन्हीं के प्रकाश में आगे बढ़ रहा था!
4 वे मेरी युवावस्था के दिन थे, उस समय मेरे घर पर परमेश्वर की कृपा थी, 5
उस समय सर्वशक्तिमान मेरे साथ थे, मेरे संतान भी उस समय मेरे निकट थे. 6
उस समय तो स्थिति ऐसी थी, मानो मेरे पैर मक्खन से धोए जाते थे, तथा चट्टानें
मेरे लिए तेल की धाराएं बहाया करती थीं. 7 “तब मैं नगर के द्वार में चला

जाया करता था, जहां मेरे लिए एक आसन हुआ करता था, 8 युवा सम्मान में मेरे सामने आने में हिचकते थे, तथा प्रौढ़ मेरे लिए सम्मान के साथ उठकर खड़े हो जाते थे; 9 यहां तक कि शासक अपना वार्तालाप रोक देते थे तथा मुख पर हाथ रख लेते थे; 10 प्रतिष्ठित व्यक्ति शांत स्वर में वार्तालाप करने लगते थे, उनकी तो जीभ ही तालू से लग जाती थी. 11 मुझे ऐसे शब्द सुनने को मिलते थे 'धन्य हैं वह,' जब मेरी दृष्टि उन पर पड़ती थी, यह वे मेरे विषय में कह रहे होते थे. 12 यह इसलिये, कि मैं उन दीनों की सहायता के लिए तत्पर रहता था, जो सहायता की दोहाई लगाते थे. तथा उन पितृहीनों की, जिनका सहायक कोई नहीं है. 13 जो मरने पर था, उस व्यक्ति की समृद्धि मुझे दी गई है; जिसके कारण उस विधवा के हृदय से हर्षगान फूट पड़े थे. 14 मैंने युक्तता धारण कर ली, इसने मुझे ढक लिया; मेरा न्याय का काम बाह्य वस्त्र तथा पगड़ी के समान था. 15 मैं दृष्टिहीनों के लिए दृष्टि हो गया तथा अपंगों के लिए पैर. 16 दरिद्रों के लिए मैं पिता हो गया; मैंने अपरिचितों के न्याय के लिए जांच पड़ताल की थी. 17 मैंने दुष्टों के जबड़े तोड़े तथा उन्हें जा छुड़ाया, जो नष्ट होने पर ही थे. 18 "तब मैंने यह विचार किया, 'मेरी मृत्यु मेरे घर में ही होगी तथा मैं अपने जीवन के दिनों को बालू के समान त्याग दूंगा. 19 मेरी जड़ें जल तक पहुंची हुई हैं सारी रात्रि मेरी शाखाओं पर ओस छाई रहती है. 20 सभी की ओर से मुझे प्रशंसा प्राप्त होती रही है, मेरी शक्ति, मेरा धनुष, मेरे हाथ में सदा बना रहेगा. 21 "वे लोग मेरे परामर्श को सुना करते थे, मेरी प्रतीक्षा करते रहते थे, इस रीति से वे मेरे परामर्श को शांति से स्वीकार भी करते थे. 22 मेरे वक्तव्य के बाद वे प्रतिक्रिया का साहस नहीं करते थे; मेरी बातें वे ग्रहण कर लेते थे. 23 वे मेरे लिए वैसे ही प्रतीक्षा करते थे, जैसे वृष्टि की, उनके मुख वैसे ही खुले रह जाते थे, मानो यह वसन्त ऋतु की वृष्टि है. 24 वे मुश्किल से विश्वास करते थे, जब मैं उन पर मुस्कुराता था; मेरे चेहरे का प्रकाश उनके लिए कीमती था. 25 उनका प्रधान होने के कारण मैं उन्हें उपयुक्त हल सुझाता था; सेना की टुकड़ियों के लिए मैं रणनीति प्रस्तुत करता था; मैं ही उन्हें जो दुःखी थे सांत्वना प्रदान करता था.

30 "किंतु अब तो वे ही मेरा उपहास कर रहे हैं, जो मुझसे कम उम्र के हैं, ये वे ही हैं, जिनके पिताओं को मैंने इस योग्य भी न समझा था कि वे मेरी भेड़ों के रक्षक कुत्तों के साथ बैठें. 2 वस्तुतः उनकी क्षमता तथा कौशल मेरे किसी काम का न था, शक्ति उनमें रह न गई थी. 3 अकाल एवं गरीबी ने उन्हें कुरूप बना दिया है, रात्रि में वे रेगिस्तान के कूड़े में जाकर सूखी भूमि चाटते हैं. 4 वे झाड़ियों के मध्य से लोनिया साग एकत्र करते हैं, झाऊ वृक्ष के मूल उनका भोजन है. 5 वे समाज से बहिष्कृत कर दिए गए हैं, और लोग उन पर दुत्कार रहे थे, जैसे कि वे चोर थे. 6 परिणाम यह हुआ कि वे अब भयावह घाटियों में, भूमि के बिलों में तथा चट्टानों में निवास करने लगे हैं. 7 झाड़ियों के मध्य से वे पुकारते रहते हैं; वे तो कंटीली झाड़ियों के नीचे एकत्र हो गए हैं. 8 वे मूर्ख एवं अपरिचित थे, जिन्हें कोड़े मार-मार कर देश से खदेड़ दिया गया था. 9 "अब मैं ऐसों के व्यंग्य का पात्र बन चुका हूं; मैं उनके सामने निंदा का पर्याय बन चुका हूं. 10 उन्हें मुझसे ऐसी घृणा हो चुकी है, कि वे मुझसे दूर-दूर रहते हैं; वे मेरे मुख पर थूकने का कोई अवसर नहीं छोड़ते. 11 ये दुःख के तीर मुझ पर परमेश्वर द्वारा ही छोड़े गए हैं, वे मेरे सामने पूर्णतः निरंकुश हो चुके हैं. 12 मेरी दायीं ओर ऐसे लोगों की सन्तति विकसित हो रही है. जो मेरे पैरों के लिए जाल बिछाते है, वे मेरे विरुद्ध घेराबंदी ढलान का निर्माण करते हैं. 13 वे मेरे निकलने के रास्ते बिगाड़ते; वे मेरे नाश का लाभ पाना चाहते हैं. उन्हें कोई भी नहीं रोकता. 14 वे आते हैं तो ऐसा मालूम होता है मानो वे दीवार के सूराख से निकलकर आ रहे हैं; वे तूफान में से लुढ़कते हुए आते मालूम होते हैं. 15 सारे भय तो मुझ पर ही आ पड़े हैं; मेरा समस्त सम्मान, संपूर्ण आत्मविश्वास मानो वायु में उड़ा जा रहा है. मेरी सुरक्षा मेघ के समान खो चुकी है. 16 "अब मेरे प्राण मेरे अंदर में ही डूबे जा रहे हैं; पीड़ा के दिनों ने मुझे भयभीत कर रखा है. 17 रात्रि में मेरी हड्डियों में चुभन प्रारंभ हो जाती है; मेरी चुभती वेदना हरदम बनी रहती है. 18 बड़े ही बलपूर्वक मेरे वस्त्र को पकड़ा गया है तथा उसे मेरे गले के आस-पास कस दिया गया है. 19 परमेश्वर ने मुझे कीचड़ में डाल दिया है, मैं मात्र धूल एवं भस्म होकर रह गया हूं. 20 "मैं आपको पुकारता रहता हूं, किंतु आप मेरी ओर ध्यान नहीं देते. 21 आप मेरे प्रति क्रूर हो गए हैं; आप अपनी भुजा के बल से मुझ पर वार करते हैं. 22 जब आप मुझे उठाते हैं, तो इसलिये कि मैं वायु प्रवाह में उड़ जाऊं; तूफान में तो मैं विलीन हो जाता हूं; 23 अब तो मुझे मालूम हो चुका है, कि आप मुझे मेरी मृत्यु की ओर ले जा रहे हैं, उस ओर, जहां अंत में समस्त जीवित प्राणी एकत्र होते जाते हैं. 24 "क्या वह जो, कूड़े के ढेर में जा पड़ा है, सहायता के लिए हाथ नहीं बढ़ाता अथवा क्या नाश की स्थिति में कोई सहायता के लिए नहीं पुकारता. 25 क्या संकट में पड़े व्यक्ति के लिए मैंने आंसू नहीं बहाया? क्या दरिद्र व्यक्ति के लिए मुझे वेदना न हुई थी? 26 जब मैंने कल्याण की प्रत्याशा की, मुझे अनिष्ट प्राप्त हुआ; मैंने प्रकाश की प्रतीक्षा की, तो अंधकार छा गया. 27 मुझे विश्रान्ति नही है, क्योंकि मेरी अंतड़ियां उबल रही हैं; मेरे सामने इस समय विपत्ति के दिन आ गए हैं. 28 मैं तो अब सांत्वना रहित, विलाप कर रहा हूं; मैं सभा में खड़ा हुआ सहायता की याचना कर रहा हूं. 29 मैं तो अब गीदड़ों का भाई तथा शुतुरमुर्गों का मित्र बनकर रह गया हूं. 30 मेरी खाल काली हो चुकी है; ज्वर में मेरी हड्डियां गर्म हो रही हैं. 31 मेरा वाघ अब करुण स्वर उत्पन्न कर रहा है, मेरी बांसुरी का स्वर भी ऐसा मालूम होता है, मानो कोई रो रहा है.

31 "अपने नेत्रों से मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि मैं किसी कुमारी कन्या की ओर कामुकतापूर्ण दृष्टि से नहीं देखूंगा. 2 स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा क्या-क्या प्रदान किया जाता है अथवा स्वर्ग से सर्वशक्तिमान से कौन सी मीरास प्राप्त होती है? 3 क्या अन्यायी के लिए विध्वंस तथा दुष्ट लोगों के लिए सर्वनाश नहीं? 4 क्या परमेश्वर के सामने मेरी जीवनशैली तथा मेरे पैरों की संख्या स्पष्ट नहीं होती? 5 "यदि मैंने झूठ का आचरण किया है, यदि मेरे पैर छल की दिशा में द्रुत गति से बढ़ते, 6 तब स्वयं परमेश्वर सच्चे तराजू पर मुझे माप लें तथा परमेश्वर ही मेरी निर्दोषिता को मालूम कर लें. 7 यदि उनके पथ से मेरे पांव कभी भटके हों, अथवा मेरे हृदय ने मेरी स्वयं की दृष्टि का अनुगमन किया हो, अथवा कहीं भी मेरे हाथ कलंकित हुए हों. 8 तो मेरे द्वारा रोपित उपज अन्य का आहार हो जाए तथा मेरी उपज उखाड़ डाली जाए. 9 "यदि मेरा हृदय किसी पराई स्त्री द्वारा लुभाया गया हो, अथवा मैं अपने पड़ोसी के द्वार पर घात लगाए बैठा हूं, 10 तो मेरी पत्नी अन्य के लिए कठोर श्रम के लिए लगा दी जाए, तथा अन्य पुरुष उसके साथ सोयें, 11 क्योंकि कामुकता घृण्य है, और एक दंडनीय पाप. 12 यह वह आग होगी, जो विनाश के लिए प्रज्वलित होती है, तथा जो मेरी समस्त समृद्धि को नाश कर देगी. 13 "यदि मैंने अपने दास-दासियों के आग्रह को बेकार समझा है तथा उनमें मेरे प्रति असंतोष का भाव उत्पन्न हुआ हो, 14 तब उस समय मैं क्या कर सकूंगा, जब परमेश्वर सक्रिय हो जाएंगे? जब वह मुझसे पूछताछ करेंगे, मैं उन्हें क्या उत्तर दूंगा? 15 क्या उन्हीं परमेश्वर ने, जिन्होंने गर्भ में मेरी रचना की है? उनकी भी रचना नहीं की है तथा क्या हम सब की रचना एक ही स्वरूप में नहीं की गई? 16 "यदि मैंने दीनों को उनकी अभिलाषा से कभी वंचित रखा हो, अथवा मैं किसी विधवा के निराश होने का कारण हुआ हूं, 17 अथवा मैंने छिप-छिप कर भोजन किया हो, तथा किसी पितृहीन को भोजन से वंचित रखा हो. 18 मैंने तो पिता तुल्य उनका पालन पोषण किया है, बाल्यकाल से ही मैंने उसका मार्गदर्शन किया है. 19 यदि मैंने अपर्याप्त वस्त्रों के कारण किसी का नाश होने दिया है, अथवा कोई दरिद्र

वस्त्रहीन रह गया हो. 20 ऐसों को तो मैं ऊनी वस्त्र प्रदान करता रहा हूं, जो मेरी
भेडों के ऊन से बनाए गए थे. 21 यदि मैंने किसी पितृहीन पर प्रहार किया हो,
क्योंकि नगर चौक में कुछ लोग मेरे पक्ष में हो गए थे, 22 तब मेरी बांह कंधे से
उखड़ कर गिर जाए तथा मेरी बांह कंधे से टूट जाए. 23 क्योंकि परमेश्वर की
ओर से आई विपत्ति मेरे लिए भयावह है. उनके प्रताप के कारण मेरा कुछ भी
कर पाना असंभव है. 24 "यदि मेरा भरोसा मेरी धनाढ्यता पर हो तथा सोने को
मैंने, 'अपनी सुरक्षा घोषित किया हो,' 25 यदि मैंने अपनी महान संपत्ति का
अहंकार किया हो, तथा इसलिये कि मैंने अपने श्रम से यह उपलब्ध किया है.
26 यदि मैंने चमकते सूरज को निहारा होता, अथवा उस चंद्रमा को, जो अपने
वैभव में अपनी यात्रा पूर्ण करता है, 27 तथा यह देख मेरा हृदय मेरे अंतर में इन
पर मोहित हो गया होता, तथा मेरे हाथ ने इन पर एक चुंबन कर दिया होता, 28
यह भी पाप ही हुआ होता, जिसका दंडित किया जाना अनिवार्य हो जाता,
क्योंकि यह तो परमेश्वर को उनके अधिकार से वंचित करना हो जाता. 29
"क्या मैं कभी अपने शत्रु के दुर्भाग्य में आनंदित हुआ हूं अथवा उस स्थिति पर
आनन्दमग्न हुआ हूं, जब उस पर मुसीबत टूट पड़ी? 30 नहीं! मैंने कभी भी
शाप देते हुए अपने शत्रु की मृत्यु की याचना करने का पाप अपने मुख को नहीं
करने दिया. 31 क्या मेरे घर के व्यक्तियों की साक्ष्य यह नहीं है, 'उसके घर के
भोजन से मुझे संतोष नहीं हुआ?' 32 मैंने किसी भी विदेशी प्रवासी को अपने
घर के अतिरिक्त अन्यत्र ठहरने नहीं दिया, क्योंकि मेरे घर के द्वार प्रवासियों
के लिए सदैव खुले रहते हैं. 33 क्या, मैंने अन्य लोगों के समान अपने अंदर में
अपने पाप को छुपा रखा है; अपने अधर्म को ढांप रखा है? 34 क्या, मुझे
जनमत का भय रहा है? क्या, परिजनों की घृणा मुझे डरा रही है? क्या, मैं
इसलिये चुप रहकर अपने घर से बाहर न जाता था? 35 ("उत्तम होती वह
स्थिति, जिसमें कोई तो मेरा पक्ष सुनने के लिए तत्पर होता! देख लो ये हैं मेरे
हस्ताक्षर सर्वशक्तिमान ही इसका उत्तर दें; मेरे शत्रु ने मुझ पर यह लिखित
शिकायत की है. 36 इसका धारण मुझे कांधों पर करना होगा, यह आरोप मेरे
अपने सिर पर मुकुट के समान धारण करना होगा. 37 मैं तो परमेश्वर के सामने
अपने द्वारा उठाए गए समस्त पैर स्पष्ट कर दूंगा; मैं एक राजनेता की अभिवृत्ति
उनकी उपस्थिति में प्रवेश करूंगा.) 38 "यदि मेरा खेत मेरे विरुद्ध अपना स्वर
ऊंचा करता है तथा कुंड मिलकर रोने लगते हैं, 39 यदि मैंने बिना मूल्य चुकाए
उपज का उपभोग किया हो अथवा मेरे कारण उसके स्वामियों ने अपने प्राण
गंवाए हों, 40 तो गेहूं के स्थान पर कांटे बढ़ने लगें तथा जौ के स्थान पर जंगली
घास उग जाए." यहां अय्योब का वचन समाप्त हो गया.

32 तब इन तीनों ने ही अय्योब को प्रत्युत्तर देना छोड़ दिया, क्योंकि
अय्योब स्वयं की धार्मिकता के विषय में अटल मत के थे. 2 किंतु राम
के परिवार के बुज़वासी बारकएल के पुत्र एलिहू का क्रोध भडक उठा-उसका
यह क्रोध अय्योब पर ही था, क्योंकि अय्योब स्वयं को परमेश्वर के सामने नेक
प्रमाणित करने में अटल थे. 3 इसके विपरीत अय्योब अपने तीनों मित्रों पर
नाराज थे, क्योंकि वे उनके प्रश्नों के उत्तर देने में विफल रहे थे. 4 अब तक
एलिहू ने कुछ नहीं कहा था, क्योंकि वह उन सभी से कम उम्र का था. 5 तब,
जब एलिहू ने ध्यान दिया कि अन्य तीन प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ थे, तब
उसका क्रोध भड़क उठा. 6 तब बुज़वासी बारकएल के पुत्र एलिहू ने कहना
प्रारंभ किया: "मैं ठहरा कम उम्र का और आप सभी बडे; इसलिये मैं झिझकता
रहा और मैंने अपने विचार व्यक्त नहीं किए. 7 मेरा मत यही था, 'विचार वही
व्यक्त करें, जो वर्षों में मुझसे आगे हैं, ज्ञान की शिक्षा वे ही दें, जो बडे हैं.' 8
वस्तुतः सर्वशक्तिमान की श्वास तथा परमेश्वर का आत्मा ही है, जो मनुष्य में
ज्ञान प्रगट करता है. 9 संभावना तो यह है कि बडे में विद्वत्ता ही न हो, तथा बड़े
में न्याय की कोई समझ न हो. 10 "तब मैंने भी अपनी इच्छा प्रकट की 'मेरी
भी सुन लीजिए; मैं अपने विचार व्यक्त करूंगा.' 11 सुनिए, अब तक मैं आप
लोगों के वक्तव्य सुनता हुआ ठहरा रहा हूं, आप लोगों के विचार भी मैंने सुन
लिए हैं, जो आप लोग घोर विचार करते हुए प्रस्तुत कर रहे थे. 12 मैं आपके
वक्तव्य बड़े ही ध्यानपूर्वक सुनता रहा हूं. निःसंदेह ऐसा कोई भी न था जिसने
महोदय अय्योब के शब्दों का विरोध किया हो; आप में से एक ने भी उनका
उत्तर नहीं दिया. 13 अब यह मत बोलना, 'हमें ज्ञान की उपलब्धि हो गई है;
मनुष्य नहीं, स्वयं परमेश्वर ही उनके तर्कों का खंडन करेंगे.' 14 क्योंकि
अय्योब ने अपना वक्तव्य मेरे विरोध में लक्षित नहीं किया था, मैं तो उन्हें आप
लोगों के समान विचार से उत्तर भी न दे सकूंगा. 15 "वे निराश हो चुके हैं, अब
वे उत्तर ही नहीं दे रहे; अब तो उनके पास शब्द न रह गए हैं. 16 क्या उनके
चुप रहने के कारण मुझे प्रतीक्षा करना होगा, क्योंकि अब वे वहां चुपचाप खड़े
हुए हैं, उत्तर देने के लिए उनके सामने कुछ न रहा है. 17 तब मैं भी अपने
विचार प्रस्तुत करूंगा; मैं भी वह सब प्रकट करूंगा, जो मुझे मालूम है. 18
विचार मेरे मन में समाए हुए हैं, मेरी आत्मा मुझे प्रेरित कर रही है. 19 मेरा हृदय
तो दाखमधु समान है, जिसे बंद कर रखा गया है, ऐसा जैसे नये दाखरस की
बोतल फटने ही वाली है. 20 जो कुछ मुझे कहना है, उसे कहने दीजिए, ताकि
मेरे हृदय को शांति मिल जाए; मुझे उत्तर देने दीजिए. 21 मैं अब किसी का पक्ष
न लूंगा और न किसी की चापलूसी ही करूंगा; 22 क्योंकि चापलूसी मेरे
स्वभाव में नहीं है, तब यदि मैं यह करने लगूं, मेरे रचयिता मुझे यहां से उठा लें.

33 "फिर भी, महोदय अय्योब, कृपा कर मेरे वक्तव्य; मेरे सभी विचारों पर
ध्यान दीजिए. 2 अब मैं अपने शब्द आपके सामने प्रकट रहा हूं; अब
मेरी जीभ तथा मेरा मुख तैयार हो रहे हैं. 3 मेरे ये शब्द मेरे हृदय की ईमानदारी
से निकल रहे हैं; मेरे होंठ पूर्ण सच्चाई में ज्ञान प्रकट करेंगे. 4 मैं परमेश्वर के
आत्मा की कृति हूं; मेरी प्राणवायु सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उच्छ्वास से है. 5
यदि आपके लिए संभव हो तो मेरे शब्दों का खंडन कीजिए; मेरा सामना करने
के लिए आप तैयार हो जाइए. 6 स्मरण रखिए आपके समान मैं भी परमेश्वर की
सृष्टि हूं; मैं भी मिट्टी की ही रचना हूं. 7 सुनिए, मुझसे आपको किसी प्रकार का
भय न हो, मैं आपको किसी भी रीति से कठोर नहीं करूंगा. 8 "निःसंदेह जो
कुछ आपने कहा हैं, वह सब मैंने सुना है, आपके सभी शब्द मैं सुन चुका हूं—
9 'मैं निष्कलंक हूं, अत्याचार रहित हूं; मैं निर्दोष हूं तथा मुझमें कोई दोष नहीं
है. 10 ध्यान दीजिए, फिर भी परमेश्वर मेरे विरुद्ध दोष खोज रहे हैं; उन्होंने तो
मुझे अपना शत्रु समझे हैं. 11 उन्होंने मेरे पांव काठ में जकड़ दिए; मेरे समस्त
मार्गों पर वह निगरानी बनाए हुए हैं.' 12 "सुनिए, मैं आपको सूचित कर रहा हूं:
आप इस विषय में नीतिमान नहीं हैं, क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों से बड़े हैं. 13
आप परमेश्वर के विरुद्ध यह शिकायत क्यों कर रहे हैं कि वह अपने कार्यों का
लेखा नहीं दिया करते? 14 परमेश्वर संवाद अवश्य करते हैं—कभी एक रीति
से, कभी अन्य रीति से— मनुष्य इसके ओर ध्यान देने से चूक जाता है. 15
कभी तो स्वप्न के माध्यम से, कभी रात्रि में प्रकाशित दर्शन के माध्यम से, जब
मनुष्य घोर निद्रा में पड़ा रहता है, जब वह बिछौने पर नींद में डूबता है. 16 तब
परमेश्वर उसके कान को जागृत कर देते हैं. उसे चेतावनियों से भयभीत कर देते
हैं, 17 कि ऐसा करके वह मनुष्य को उसके आचरण से दूर कर दें तथा मनुष्य
को अहंकार से बचा लें; 18 परमेश्वर गड्ढे से मनुष्य की आत्मा की रक्षा कर लेते
हैं, कि उसका जीवन अधोलोक में न चला जाए. 19 "मनुष्य जब अपने बिछौने
पर होता है, तब भी उसे पीडा द्वारा सताया जाता है, इसके अतिरिक्त उसकी
हड्डियों में गहन वेदना के द्वारा भी. 20 परिणामस्वरूप उसका मन तक भोजन से
घृणा करने लगता है भले ही वह उसका सर्वाधिक उत्तम भोजन रहा हो. 21
उसके शरीर का मांस देखते ही सूख जाता है, वे हड्डियां, जो अदृश्य थी, मांस
सूख कर अब स्पष्ट दिखाई दे रही हैं. 22 तब उसके प्राण उस कब्र के निकट

पहुंच जाते हैं, तथा उसका जीवन मृत्यु के दूतों के निकट पहुंच जाता है. 23
यदि सहस्रों में से कोई एक स्वर्गदूत ऐसा है, जो उसका मध्यस्थ है, कि उसे
यह स्मरण दिलाए, कि उसके लिए सर्वोपयुक्त क्या है, 24 तब वह बड़ी ही
शालीनता के भाव में उससे यह कहे. 'उसका उस कब्र में जाना निरस्त कर दिया
जाए, मुझे इसके लिए छुड़ौती प्राप्त हो चुकी है; 25 अब उसके मांस को
नवयुवक के मांस से भी पुष्ट कर दिया जाए, उसे उसके युवावस्था के काल में
पहुंचा दिया जाए.' 26 तब उसके लिए यह संभव हो जाएगा, कि वह परमेश्वर
से प्रार्थना करे और परमेश्वर उसे स्वीकार भी कर लेंगे, कि वह हर्षोल्लास में
परमेश्वर के चेहरे को निहार सके तथा परमेश्वर उस व्यक्ति की युक्तता की
पुनःस्थापना कर सकें. 27 वह गा गाकर अन्य मनुष्यों के सामने यह बता देगा.
'मैंने धर्मी को विकृत करने का पाप किया है, मेरे लिए ऐसा करना उपयुक्त न
था. 28 परमेश्वर ने मेरे प्राण को उस कब्र में जा पड़ने से बचा लिया है, अब मेरे
प्राण उजियाले को देख सकेंगे.' 29 "यह देख लेना, परमेश्वर मनुष्यों के साथ
यह सब बहुधा करते हैं, 30 कि वह उस कब्र से मनुष्य के प्राण लौटा लाएं, कि
मनुष्य जीवन ज्योति के द्वारा प्रकाशित किया जा सके. 31 "अय्योब, मेरे इन
शब्दों को ध्यान से सुन लो; तुम चुप रहोगे, तो मैं अपना संवाद प्रारंभ करूंगा.
32 यदि तुम्हें कुछ भी कहना हो तो कह दो, कह डालो; क्योंकि मैं चाहता हूं,
कि मैं तुम्हें निर्दोष प्रमाणित कर दूं. 33 यदि यह संभव नहीं, तो मेरा विचार
ध्यान से सुन लो; यदि तुम चुप रहो, तो मैं तुम्हें बुद्धि की शिक्षा दे सकूंगा."

34 एलिहू ने फिर कहा: 2 "बुद्धिमानों, मेरा वक्तव्य सुनो; आप तो सब
समझते ही हैं, तब मेरी सुन लीजिए. 3 जैसे जीभ भोजन के स्वाद को
परखती है, कान भी वक्तव्य की विवेचना करता है. 4 उत्तम यही होगा, कि हम
यहां अपने लिए; वही स्वीकार कर लें, जो भला है. 5 "अय्योब ने यह दावा
किया है 'मैं तो निर्दोष हूं, किंतु परमेश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया है; 6 क्या
अपने अधिकार के विषय में, मैं झूठा दावा करूंगा? मेरा घाव असाध्य है,
जबकि मेरी ओर से कोई अवज्ञा नहीं हुई है.' 7 क्या ऐसा कोई व्यक्ति है, जो
अय्योब के समान हो, जो निंदा का जल समान पान कर जाते हैं, 8 जो पापिष्ठ
व्यक्तियों की संगति करते हैं; जो दुर्वृत्तों के साथ कार्यों में जुट जाते हैं? 9
क्योंकि उन्होंने यह कहा है, 'कोई लाभ नहीं होता यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर
से आनंदित होता.' 10 "तब अब आप ध्यान से मेरी सुन लीजिए, आप तो
बुद्धिमान हैं. परमेश्वर के लिए तो यह संभव ही नहीं कि वह किसी भी प्रकार
की बुराई करे, सर्वशक्तिमान से कोई भूल होना संभव नहीं. 11 क्योंकि वह तो
किसी को भी उसके कार्यों के अनुरूप प्रतिफल देते हैं; तथा उसके आचरण के
अनुसार फल भी. 12 निश्चय, परमेश्वर बुराई नहीं करेंगे तथा सर्वशक्तिमान
न्याय को विकृत नहीं होने देंगे. 13 पृथ्वी पर उन्हें अधिकारी किसने बनाया है?
किसने संपूर्ण विश्व का दायित्व उन्हें सौंपा है? 14 यदि वह यह निश्चय कर लेते
हैं, कि वह कोई कार्य निष्पन्न करेंगे, यदि वह अपनी आत्मा तथा अपना श्वास
ले लें, 15 तो समस्त मानव जाति तत्क्षण नष्ट हो जाएगी तथा मनुष्य धूल में लौट
जाएगा. 16 "किंतु यदि वास्तव में आप में समझ है, यह सुन लीजिए; मेरे शब्द
की ध्वनि पर ध्यान दीजिए. 17 क्या यह उपयुक्त है कि वह शासन करे, जिसे
न्याय से घृणा है? क्या आप उस शूर पर, जो पूर्ण धर्मी है दंड प्रसारित करेंगे?
18 जिसमें राजा तक पर यह आक्षेप लगाने का साहस है 'निकम्मे,' तथा प्रधानों
पर, 'तुम दुष्ट हो,' 19 जो प्रमुखों से प्रभावित होकर उनका पक्ष नहीं करता, जो
न दीनों को तुच्छ समझ धनाढ्यों को सम्मान देता है, क्योंकि उनमें यह बोध
प्रबल रहता है दोनों ही एक परमेश्वर की कृति हैं? 20 सभी की मृत्यु क्षण मात्र
में हो जाती है, मध्य रात्रि के समय एक पल के साथ उनके प्राण उड़ जाते हैं, हां,
शूरवीर तक, बिना किसी मानव हाथ के प्रहार के चले जाते हैं. 21 "क्योंकि
मनुष्य की हर एक गतिविधि पर परमेश्वर की दृष्टि रहती है; उसकी समस्त चाल
परमेश्वर को मालूम रहते हैं. 22 न तो कोई ऐसा अंधकार है, और न ही ऐसी
कोई छाया, जहां दुराचारी छिपने के लिए आश्रय ले सकें. 23 परमेश्वर के लिए
यह आवश्यक नहीं, कि वह किसी मनुष्य के लिए गए निर्णय पर विचार करें,
कि मनुष्य को न्याय के लिए परमेश्वर के सामने उपस्थित होना पड़े. 24 बिना
कुछ पूछे परमेश्वर, शूरवीरों को चूर-चूर कर देते हैं, तब अन्य व्यक्ति को उसके
स्थान पर नियुक्त कर देते हैं. 25 तब परमेश्वर को उनके कृत्यों का पूरा हिसाब
रहता है, रात्रि के रहते ही वह उन्हें मिटा देते हैं, वे कुचल दिए जाते हैं. 26 उन
पर परमेश्वर का प्रहार वैसा ही होता है, मानो कोई दुराचारी सार्वजनिक रीति से
दंडित किया जा रहा हो, 27 क्योंकि वे परमेश्वर से दूर हो गये थे, उन्होंने
परमेश्वर के मार्ग का कोई ध्यान नहीं दिया था, 28 कि कंगालों की पुकार
परमेश्वर तक जा पहुंची, कि पीड़ित की पुकार परमेश्वर ने सुनी. 29 जब
परमेश्वर चुप रहते हैं, तब उन पर उंगली कौन उठा सकेगा? तथा अगर वह मुख
छिपाने का निर्णय ले लें, तो कौन उनकी झलक देख सकेगा; चाहे कोई राष्ट्र हो
अथवा व्यक्ति? 30 किंतु दुर्जन शासक न बन सकें, और न ही वे प्रजा के लिए
मोहजाल प्रमाणित हों. 31 "क्या कोई परमेश्वर के सामने यह दावा करे, 'मैं तो
गुनहगार हूं, परंतु इसके बाद मुझसे कोई अपराध न होगा. 32 अब आप मुझे
उस विषय की शिक्षा दीजिए; जो मेरे लिए अब तक अदृश्य है. चाहे मुझसे
कोई पाप हो गया है, मैं अब इसे कभी न करूंगा.' 33 महोदय अय्योब, क्या
परमेश्वर आपकी शर्तों पर नुकसान करेंगे, क्योंकि आपने तो परमेश्वर की
कार्यप्रणाली पर विरोध प्रकट किया है, चुनाव तो आपको ही करना होगा मुझे
नहीं तब; अपने ज्ञान की घोषणा कर दीजिए. 34 "वे, जो बुद्धिमान हैं, तथा वे,
जो ज्ञानी हैं, मेरी सुनेंगे और मुझसे कहेंगे, 35 'अय्योब की बात बिना ज्ञान की
होती है; उनके कथनों में कोई विद्वत्ता नहीं है.' 36 महोदय अय्योब को बड़ी ही
सूक्ष्मता-पूर्वक परखा जाए, क्योंकि उनके उत्तरों में दुष्टता पाई जाती है! 37 वह
अपने पाप पर विद्रोह का योग देते हैं; वह हमारे ही मध्य रहते हुए उपहास में
ताली बजाते तथा परमेश्वर की निंदा पर निंदा करते जाते हैं."

35 एलिहू ने और कहा: 2 "क्या आप यह न्याय समझते हैं? आप कहते हैं,
'मेरा धर्म परमेश्वर के धर्म से ऊपर है?' 3 क्योंकि आप तो यही कहेंगे,
'आप पर मेरे पाप का क्या प्रभाव पड़ता है, और पाप न करने के द्वारा मैंने क्या
प्राप्त किया है?' 4 "इसका उत्तर आपको मैं दूंगा, आपको तथा आपके मित्रों
को. 5 आकाश की ओर दृष्टि उठाओ; मेघों का अवलोकन करो, वे तुमसे ऊपर
हैं. 6 जब आप पाप कर बैठते हैं, इससे हानि परमेश्वर की कैसी होती है? यदि
आपके अत्याचारों की संख्या अधिक हो जाती, क्या परमेश्वर पर इसका कोई
प्रभाव होता है? 7 यदि आप धर्मी हैं, आप परमेश्वर के लिए कौन सा उपकार
कर देंगे, अथवा आपके इस कृत्य से आप उनके लिए कौन सा लाभ हासिल कर
देंगे? 8 आपकी दुष्चरित्रता आप जैसे व्यक्ति पर ही शोभा देती है, तथा आपकी
धार्मिकता मानवता के लिए योग देती है. 9 "अत्याचारों में वृद्धि होने पर मनुष्य
कराहने लगते हैं; वे बुरे काम के लिए किसी शूर की खोज करते हैं. 10 किंतु
किसी का ध्यान इस ओर नहीं जाता 'कहां हैं परमेश्वर, मेरा रचयिता, जो रात में
गीत देते हैं, 11 रचयिता परमेश्वर ही हैं, जिनकी शिक्षा हमें पशु पक्षियों से
अधिक विद्वत्ता देती है, तथा हमें आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धिमान बना
देती है.' 12 वहां वे सहायता की पुकार देते हैं, किंतु परमेश्वर उनकी ओर ध्यान
नहीं देते, क्योंकि वे दुर्जन अपने अहंकार में डूबे हुए रहते हैं. 13 यह निर्विवाद
सत्य है कि परमेश्वर निरर्थक पुकार को नहीं सुनते; सर्वशक्तिमान इस ओर
ध्यान देना भी उपयुक्त नहीं समझते. 14 महोदय अय्योब, आप कह रहे थे,
आप परमेश्वर को नहीं देख सकते, अनिवार्य है कि आप परमेश्वर के समय की
प्रतीक्षा करें. आपका पक्ष उनके सामने रखा जा चुका है. 15 इसके अतिरिक्त,
परमेश्वर क्रोध कर तुम्हें दण्ड नहीं देता, और न ही वह अभिमान की ओर ध्यान

देते हैं, 16 महोदय अय्योब, इसलिये व्यर्थ है आपका इस प्रकार बातें करना;
आप बिना किसी ज्ञान के अपने उद्गार पर उद्गार किए जा रहे हैं.”

36 एलिहू ने आगे कहा: 2 “आप कुछ देर और प्रतीक्षा कीजिए, कि मैं
आपके सामने यह प्रकट कर सकूं, कि परमेश्वर की ओर से और भी
बहुत कुछ कहा जा सकता है. 3 अपना ज्ञान मैं दूर से लेकर आऊंगा; मैं यह
प्रमाणित करूंगा कि मेरे रचयिता धर्मी हैं. 4 क्योंकि मैं आपको यह आश्वासन
दे रहा हूं, कि मेरी आख्यान झूठ नहीं है; जो व्यक्ति इस समय आपके सामने
खड़ा है, उसका ज्ञान त्रुटिहीन है. 5 “स्मरण रखिए परमेश्वर सर्वशक्तिमान तो
हैं, किंतु वह किसी से घृणा नहीं करते; उनकी शक्ति शारीरिक भी है तथा
मानसिक भी. 6 वह दुष्टों को जीवित नहीं छोड़ते किंतु वह पीड़ितों को न्याय
से वंचित नहीं रखते. 7 धर्मियों पर से उनकी नजर कभी नहीं हटती, वह उन्हें
राजाओं के साथ बैठा देते हैं, और यह उन्नति स्थायी हो जाती है, वे सम्मानित
होकर वहां ऊंचे पद को प्राप्त किए जाते हैं. 8 किंतु यदि कोई बेड़ियों में जकड़
दिया गया हो, उसे पीड़ा की रस्सियों से बांध दिया गया हो, 9 परमेश्वर उन पर
यह प्रकट कर देते हैं, कि इस पीड़ा का कारण क्या है? उनका ही अहंकार,
उनका यही पाप. 10 तब परमेश्वर उन्हें उपयुक्त शिक्षा के पालन के लिए मजबूर
कर देते हैं, तथा उन्हें आदेश देते हैं, कि वे पाप से दूर हो जाएं. 11 यदि वे
आज्ञापालन कर परमेश्वर की सेवा में लग जाते हैं, उनका संपूर्ण जीवन समृद्धि से
पूर्ण हो जाता है तथा उनका जीवन सुखी बना रहता है. 12 किंतु यदि वे उनके
निर्देशों की उपेक्षा करते हैं, तलवार से नाश उनकी नियति हो जाती है और
बिना ज्ञान के वे मर जाते हैं. 13 “किंतु वे, जो दुर्वृत्त हैं, जो मन में क्रोध को
पोषित करते हैं; जब परमेश्वर उन्हें बेड़ियों में जकड़ देते हैं, वे सहायता की
पुकार नहीं देते. 14 उनकी मृत्यु उनके यौवन में ही हो जाती है, देवताओं को
समर्पित लुच्चों के मध्य में. 15 किंतु परमेश्वर पीड़ितों को उनकी पीड़ा से मुक्त
करते हैं; यही पीड़ा उनके लिए नए अनुभव का कारण हो जाती है. 16 “तब
वस्तुतः परमेश्वर ने आपको विपत्ति के मुख से निकाला है, कि आपको मुक्ति के
विशाल, सुरक्षित स्थान पर स्थापित कर दें, तथा आपको सर्वोत्कृष्ट स्वादिष्ट
खाना परोस दें. 17 किंतु अब आपको वही दंड दिया जा रहा है, जो दुर्वृत्तों के
लिए ही उपयुक्त है; अब आप सत्य तथा न्याय के अंतर्गत परखे जाएंगे. 18
अब उपयुक्त यह होगा कि आप सावधान रहें, कि कोई आपको धन-संपत्ति के
द्वारा लुभा न ले; ऐसा न हो कि कोई घूस देकर रास्ते से भटका दे. 19 आपका
क्या मत है, क्या आपकी धन-संपत्ति आपकी पीड़ा से मुक्ति का साधन बन
सकेगी, अथवा क्या आपकी संपूर्ण शक्ति आपको सुरक्षा प्रदान कर सकेगी? 20
उस रात्रि की कामना न कीजिए, जब लोग अपने-अपने घरों से बाहर नष्ट होने
लगेंगे. 21 सावधान रहिए, बुराई की ओर न मुड़िए, ऐसा जान पड़ता है, कि
आपने पीड़ा के बदले बुराई को चुन लिया है. 22 “देखो, सामर्थ्य में परमेश्वर
सर्वोच्च हैं. कौन है उनके तुल्य उत्कृष्ट शिक्षक? 23 किसने उन्हें इस पद पर
नियुक्त किया है, कौन उनसे कभी यह कह सका है ‘इसमें तो आपने कमी कर
दी है’? 24 यह स्मरण रहे कि परमेश्वर के कार्यों का गुणगान करते रहें, जिनके
विषय में लोग स्तवन करते रहे हैं. 25 सभी इनके साक्ष्य हैं; दूर-दूर से उन्होंने
यह सब देखा है. 26 ध्यान दीजिए परमेश्वर महान हैं, उन्हें पूरी तरह समझ पाना
हमारे लिए असंभव है! उनकी आयु के वर्षों की संख्या मालूम करना असंभव
है. 27 “क्योंकि वह जल की बूंदों को अस्तित्व में लाते हैं, ये बूंदें बादलों से
वृष्टि बनकर टपकती हैं; 28 मेघ यही वृष्टि उण्डेलते जाते हैं, बहुतायत से यह
मनुष्यों पर बरसती हैं. 29 क्या किसी में यह क्षमता है, कि मेघों को फैलाने की
बात को समझ सके, परमेश्वर के मंडप की बिजलियां को समझ ले? 30 देखिए,
परमेश्वर ही उजियाले को अपने आस-पास बिखरा लेते हैं तथा महासागर की
थाह को ढांप देते हैं. 31 क्योंकि ये ही हैं परमेश्वर के वे साधन, जिनके द्वारा वह
जनताओं का न्याय करते हैं. तथा भोजन भी बहुलता में प्रदान करते हैं. 32 वह
बिजली अपने हाथों में ले लेते हैं, तथा उसे आदेश देते हैं, कि वह लक्ष्य पर जा
पड़े. 33 बिजली का नाद उनकी उपस्थिति की घोषणा है; पशुओं को तो इसका
पूर्वाभास हो जाता है.

37 “मैं इस विचार से भी कांप उठता हूं. वस्तुतः मेरा हृदय उछल पड़ता
है. 2 परमेश्वर के उद्घोष के नाद तथा उनके मुख से निकली गड़गड़ाहट
सुनिए. 3 इसे वह संपूर्ण आकाश में प्रसारित कर देते हैं तथा बिजली को धरती
की छोरों तक. 4 तत्पश्चात गर्जनावत स्वर उद्भूत होता है; परमेश्वर का
प्रतापमय स्वर, जब उनका यह स्वर प्रक्षेपित होता है, वह कुछ भी रख नहीं
छोड़ते. 5 विलक्षण ही होता है परमेश्वर का यह गरजना; उनके महाकार्य हमारी
बुद्धि से परे होते हैं. 6 परमेश्वर हिम को आदेश देते हैं, ‘अब पृथ्वी पर बरस
पड़ो,’ तथा मूसलाधार वृष्टि को, ‘प्रचंड रखना धारा को.’ 7 परमेश्वर हर एक
व्यक्ति के हाथ रोक देते हैं कि सभी मनुष्य हर एक कार्य के लिए श्रेय परमेश्वर
को दे. 8 तब वन्य पशु अपनी गुफाओं में आश्रय ले लेते हैं तथा वहीं छिपे रहते
हैं. 9 प्रचंड वृष्टि दक्षिण दिशा से बढ़ती चली आती हैं तथा शीत लहर उत्तर दिशा
से. 10 हिम की रचना परमेश्वर के फूंक से होती है तथा व्यापक हो जाता है जल
का बर्फ बनना. 11 परमेश्वर ही घने मेघ को नमी से भर देते हैं; वे नमी के ज़रिए
अपनी बिजली को बिखेर देते हैं. 12 वे सभी परमेश्वर ही के निर्देश पर अपनी
दिशा परिवर्तित करते हैं कि वे समस्त मनुष्यों द्वारा बसाई पृथ्वी पर वही करें,
जिसका आदेश उन्हें परमेश्वर से प्राप्त होता है. 13 परमेश्वर अपनी सृष्टि, इस
पृथ्वी के हित में इसके सुधार के निमित्त, अथवा अपने निर्जर प्रेम से प्रेरित हो
इसे निष्पन्न करते हैं. 14 “अय्योब, कृपया यह सुनिए; परमेश्वर के विलक्षण
कार्यों पर विचार कीजिए. 15 क्या आपको मालूम है, कि परमेश्वर ने इन्हें
स्थापित कैसे किया है, तथा वह कैसे मेघ में उस बिजली को चमकाते हैं? 16
क्या आपको मालूम है कि बादल अधर में कैसे रहते हैं? यह सब उनके द्वारा
निष्पादित अद्भुत कार्य हैं, जो अपने ज्ञान में परिपूर्ण हैं. 17 जब धरती दक्षिण
वायु प्रवाह के कारण निस्तब्ध हो जाती है आपके वस्त्रों में उष्णता हुआ करती
है? 18 महोदय अय्योब, क्या आप परमेश्वर के साथ मिलकर, ढली हुई धातु के
दर्पण-समान आकाश को विस्तीर्ण कर सकते हैं? 19 “आप ही हमें बताइए, कि
हमें परमेश्वर से क्या निवेदन करना होगा; हमारे अंधकार के कारण उनके सामने
अपना पक्ष पेश करना हमारे लिए संभव नहीं! 20 क्या परमेश्वर को यह सूचना
दे दी जाएगी, कि मैं उनसे बात करूं? कि कोई व्यक्ति अपने ही प्राणों की हानि
की योजना करे? 21 इस समय यह सत्य है, कि मनुष्य के लिए यह संभव नहीं,
कि वह प्रभावी सूर्य प्रकाश की ओर दृष्टि कर सके. क्योंकि वायु प्रवाह ने
आकाश से मेघ हटा दिया है. 22 उत्तर दिशा से स्वर्णिम आभा का उदय हो रहा
है; परमेश्वर के चारों ओर बड़ा तेज प्रकाश है. 23 वह सर्वशक्तिमान, जिनकी
उपस्थिति में प्रवेश दुर्गम है, वह सामर्थ्य में उन्नत हैं; यह हो ही नहीं सकता कि
वह न्याय तथा अतिशय धार्मिकता का हनन करें. 24 इसलिये आदर्श यही है,
कि मनुष्य उनके प्रति श्रद्धा भाव रखें. परमेश्वर द्वारा वे सभी आदरणीय हैं,
जिन्होंने स्वयं को बुद्धिमान समझ रखा है.”

38 तब स्वयं याहवेह ने तूफान में से अय्योब को उत्तर दिया: 2 “कौन
है वह, जो अज्ञानता के विचारों द्वारा मेरी युक्ति को बिगाड़ रहा है? 3
ऐसा करो अब तुम पुरुष के भाव कमर बांध लो; तब मैं तुमसे प्रश्न करना प्रारंभ
करूंगा, तुम्हें इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा. 4 “कहां थे तुम, जब मैंने पृथ्वी की
नींव डाली थी? यदि तुममें कुछ भी समझ है, मुझे इसका उत्तर दो. 5 यदि तुम्हें
मालूम हो! तो मुझे बताओ, किसने पृथ्वी की नाप ठहराई है? अथवा, किसने
इसकी माप रेखाएं निश्चित की? 6 किस पदार्थ पर इसका आधार स्थापित है?

किसने इसका आधार रखा? 7 जब निशांत तारा सहगान में एक साथ गा रहे थे
तथा सभी स्वर्गदूत उल्लासनाद कर रहे थे, तब कहां थे तुम? 8 "अथवा किसने
महासागर को द्वारों द्वारा सीमित किया, जब गर्भ से इसका उद्भव हो रहा था; 9
जब मैंने इसके लिए मेघ परिधान निर्मित किया तथा घोर अंधकार को इसकी
मेखला बना दिया, 10 तथा मैंने इस पर सीमाएं चिन्हित कर दीं तथा ऐसे द्वार
बना दिए, जिनमें चिटकनियां लगाई गईं; 11 तथा मैंने यह आदेश दे दिया 'तुम
यहीं तक आ सकते हो, इसके आगे नहीं तथा यहां आकर तुम्हारी वे सशक्त
वाली तरंगें रुक जाएंगी'? 12 "क्या तुमने अपने जीवन में प्रभात को यह आदेश
दिया है, कि वह उपयुक्त क्षण पर ही अरुणोदय किया करे, 13 कि यह पृथ्वी के
हर एक छोर तक प्रकट करे, कि दुराचारी अपने-अपने छिपने के स्थान से हिला
दिए जाएं? 14 गीली मिट्टी पर मोहर लगाने समान परिवर्तन जिसमें परिधान के
सूक्ष्म भेद स्पष्ट हो जाते हैं. 15 सूर्य प्रकाश की उग्रता दुर्वृत्तों को दुराचार से
रोके रहती है, मानो हिंसा के लिए उठी हुई उनकी भुजा तोड़ दी गई हो. 16
"अच्छा, यह बताओ, क्या तुमने जाकर महासागर के स्रोतों का निरीक्षण किया
है अथवा सागर तल पर चलना फिरना किया है? 17 क्या तुमने घोर अंधकार में
जाकर मृत्यु के द्वारों को देखा है? 18 क्या तुम्हें ज़रा सा भी अनुमान है, कि
पृथ्वी का विस्तार कितना है, मुझे बताओ, क्या-क्या मालूम है तुम्हें? 19 "कहां
है प्रकाश के घर का मार्ग? वैसे ही, कहां है अंधकार का आश्रय, 20 कि तुम
उन्हें यह तो सूचित कर सको, कि कहां है उनकी सीमा तथा तुम इसके घर का
मार्ग पहचान सको? 21 तुम्हें वास्तव में यह मालूम है, क्योंकि तब तुम्हारा जन्म
हो चुका होगा! तब तो तुम्हारी आयु के वर्ष भी अनेक ही होंगे! 22 "क्या
तुमने कभी हिम के भंडार में प्रवेश किया है, अथवा क्या तुमने कभी हिम के
भण्डारगृह देखे हैं, 23 उन ओलों को जिन्हें मैंने पीड़ा के समय के लिए रखा
हुआ है युद्ध तथा संघर्ष के दिनों के लिए? 24 क्या तुम्हें मालूम है कि प्रकाश का
विभाजन कहां है, अथवा यह कि पृथ्वी पर पुरवाई कैसे बिखर जाती है? 25
क्या तुम्हें मालूम है कि बड़ी बरसात के लिए धारा की नहर किसने काटी है,
अथवा बिजली की दिशा किसने निर्धारित की है, 26 कि रेगिस्तान प्रदेश में
पानी बरसायें, उस बंजर भूमि जहां कोई नहीं रहता, 27 कि उजड़े और बंजर
भूमि की प्यास मिट जाए, तथा वहां घास के बीजों का अंकुरण हो जाए? 28 है
कोई वृष्टि का जनक? अथवा कौन है ओस की बूंदों का उत्पादक? 29 किस
गर्भ से हिम का प्रसव है? तथा आकाश का पाला कहां से जन्मा है? 30 जल
पत्थर के समान कठोर हो जाता है तथा इससे महासागर की सतह एक कारागार
का रूप धारण कर लेती है. 31 "अय्योब, क्या तुम कृतिका नक्षत्र के समूह को
परस्पर गूंथ सकते हो, अथवा मृगशीर्ष के बंधनों को खोल सकते हो? 32 क्या
तुम किसी तारामंडल को उसके निर्धारित समय पर प्रकट कर सकते हो तथा
क्या तुम सप्त ऋषि को दिशा-निर्देश दे सकते हो? 33 क्या तुम आकाशमंडल के
अध्यादेशों को जानते हो, अथवा क्या तुम पृथ्वी पर भी वही अध्यादेश प्रभावी
कर सकते हो? 34 "क्या यह संभव है कि तुम अपना स्वर मेघों तक प्रक्षेपित
कर दो, कि उनमें परिसीमित जल तुम्हारे लिए विपुल वृष्टि बन जाए? 35 क्या
तुम बिजली को ऐसा आदेश दे सकते हो, कि वे उपस्थित हो तुमसे निवेदन करें,
'क्या आज्ञा है, आप आदेश दें'? 36 किसने बाज पक्षी में ऐसा ज्ञान स्थापित
किया है, अथवा किसने मुर्गे को पूर्व ज्ञान की क्षमता प्रदान की है? 37 कौन है
वह, जिसमें ऐसा ज्ञान है, कि वह मेघों की गणना कर लेता है? अथवा कौन है
वह, जो आकाश के पानी के मटकों को झुका सकता है, 38 जब धूल मिट्टी का
ढेला बनकर कठोर हो जाती है, तथा ये ढेले भी एक दूसरे से मिल जाते हैं?
39 "अय्योब, क्या तुम सिंहनी के लिए शिकार करते हो, शेरों की भूख को
मिटाते हो 40 जो अपनी कन्दरा में दुबकी बैठी है, अथवा जो झाड़ियों में घात
लगाए बैठी है? 41 कौवों को पौष्टिक आहार कौन परोसता है, जब इसके बच्चे
परमेश्वर को पुकारते हैं, तथा अपना भोजन खोजते हुए भटकते रहते हैं?

39 "क्या तुम्हें जानकारी है, कि पर्वतीय बकरियां किस समय बच्चों को
जन्म देती हैं? क्या तुमने कभी हिरणी को अपने बच्चे को जन्म देते हुए
देखा है? 2 क्या तुम्हें यह मालूम है, कि उनकी गर्भावस्था कितने माह की होती
है? अथवा किस समय वह उनका प्रसव करती है? 3 प्रसव करते हुए वे झुक
जाती हैं; तब प्रसव पीड़ा से मुक्त हो जाती हैं. 4 उनकी सन्तति होती जाती हैं,
खुले मैदानों में ही उनका विकास हो जाता है; विकसित होने पर वे अपनी
माता की ओर नहीं लौटते. 5 "किसने वन्य गधों को ऐसी स्वतंत्रता प्रदान की
है? किसने उस द्रुत गधे को बंधन मुक्त कर दिया है? 6 मैंने घर के लिए उसे
रेगिस्तान प्रदान किया है तथा उसके निवास के रूप में नमकीन सतह. 7 उसे तो
नगरों के शोर से घृणा है; अपरिचित है वह नियंता की हांक से. 8 अपनी चराई
जो पर्वतमाला में है, वह घूमा करता है तथा हर एक हरी वनस्पति की खोज में
रहता है. 9 "क्या कोई वन्य सांड तुम्हारी सेवा करने के लिए तैयार होगा?
अथवा क्या वह तुम्हारी चरनी के निकट रात्रि में ठहरेगा? 10 क्या तुम उसको
रस्सियों से बांधकर हल में जोत सकते हो? अथवा क्या वह तुम्हारे खेतों में
तुम्हारे पीछे-पीछे पाटा खींचेगा? 11 क्या तुम उस पर मात्र इसलिये भरोसा
करोगे, कि वह अत्यंत शक्तिशाली है? तथा समस्त श्रम उसी के भरोसे पर छोड़
दोगे? 12 क्या तुम्हें उस पर ऐसा भरोसा हो जाएगा, कि वह तुम्हारी काटी गई
उपज को घर तक पहुंचा देगा तथा फसल खलिहान तक सुरक्षित पहुंच जाएगी?
13 "क्या शुतुरमुर्ग आनंद से अपने पंख फुलाती है, उसकी तुलना सारस के परों
से की जा सकते है? 14 शुतुरमुर्ग तो अपने अंडे भूमि पर रख उन्हें छोड़ देती है,
मात्र भूमि की उष्णता ही रह जाती है. 15 उसे तो इस सत्य का भी ध्यान नहीं
रह जाता कि उन पर किसी का पैर भी पड़ सकता है अथवा कोई वन्य पशु उन्हें
रौंद भी सकता है. 16 बच्चों के प्रति उसका व्यवहार क्रूर रहता है मानो उनसे
उसका कोई संबंध नहीं है; उसे इस विषय की कोई चिंता नहीं रहती, कि इससे
उसका श्रम निरर्थक रह जाएगा. 17 परमेश्वर ने ही उसे इस सीमा तक मूर्ख कर
दिया है उसे ज़रा भी सामान्य बोध प्रदान नहीं किया गया है. 18 यह सब होने
पर भी, यदि वह अपनी लंबी काया का प्रयोग करने लगती है, तब वह घोड़ा
तथा घुड़सवार का उपहास बना छोड़ती है. 19 "अय्योब, अब यह बताओ,
क्या तुमने घोड़े को उसका साहस प्रदान किया है? क्या उसके गर्दन पर केसर
तुम्हारी रचना है? 20 क्या उसका टिड्डे-समान उछल जाना तुम्हारे द्वारा संभव
हुआ है, उसका प्रभावशाली हिनहिनाना दूर-दूर तक आतंक प्रसारित कर देता
है? 21 वह अपने खुर से घाटी की भूमि को उछालता है तथा सशस्त्र शत्रु का
सामना करने निकल पड़ता है. 22 आतंक को देख वह हंस पड़ता है उसे किसी
का भय नहीं होता; तलवार को देख वह पीछे नहीं हटता. 23 उसकी पीठ पर
रखा तरकश खड़खड़ाता है, वहीं चमकती हुई बर्छी तथा भाला भी है. 24
बड़ी ही रिस और क्रोध से वह लंबी दूरियां पार कर जाता है; तब वह नरसिंगे
सुनकर भी नहीं रुकता. 25 हर एक नरसिंग नाद पर वह प्रत्युत्तर देता है, 'वाह!'
उसे तो दूर ही से युद्ध की गंध आ जाती है, वह सेना नायकों का गर्जन तथा
आदेश पहचान लेता है. 26 "अय्योब, क्या तुम्हारे परामर्श पर बाज आकाश में
ऊंचा उठता है तथा अपने पंखों को दक्षिण दिशा की ओर फैलाता है? 27 क्या
तुम्हारे आदेश पर गरूड़ ऊपर उड़ता है तथा अपना घोंसला उच्च स्थान पर
निर्माण करता है? 28 चट्टान पर वह अपना आश्रय स्थापित करता है; चोटी पर,
जो अगम्य है, वह बसेरा करता है. 29 उसी बिंदु से वह अपने आहार को खोज
लेता है; ऐसी है उसकी सूक्ष्मदृष्टि कि वह इसे दूर से देख लेता है. 30 जहां कहीं
शव होते हैं, वह वहीं पहुंच जाता है और उसके बच्चे रक्तपान करते हैं."

40 तब याहवेह ने अय्योब से पूछा: 2 "क्या अब सर्वशक्तिमान का विरोधी
अपनी पराजय स्वीकार करने के लिए तत्पर है अब वह उत्तर दे? जो
परमेश्वर पर दोषारोपण करता है!" 3 तब अय्योब ने याहवेह को यह उत्तर दिया:
4 "देखिए, मैं नगण्य बेकार व्यक्ति, मैं कौन होता हूं, जो आपको उत्तर दूं? मैं
अपने मुख पर अपना हाथ रख लेता हूं. 5 एक बार मैं धृष्टता कर चुका हूं अब
नहीं, संभवतः दो बार, किंतु अब मैं कुछ न कहूंगा." 6 तब स्वयं याहवेह ने
तूफान में से अय्योब को उत्तर दिया: 7 "एक योद्धा के समान कटिबद्ध हो जाओ;
अब प्रश्न पूछने की बारी मेरी है तथा सूचना देने की तुम्हारी. 8 "क्या तुम
वास्तव में मेरे निर्णय को बदल दोगे? क्या तुम स्वयं को निर्दोष प्रमाणित करने के
लिए मुझे दोषी प्रमाणित करोगे? 9 क्या, तुम्हारी भुजा परमेश्वर की भुजा समान
है? क्या, तू परमेश्वर जैसी गर्जना कर सकेगा? 10 तो फिर नाम एवं सम्मान
धारण कर लो, स्वयं को वैभव एवं ऐश्वर्य में लपेट लो. 11 अपने बढ़ते क्रोध को
निर्बाध बह जाने दो, जिस किसी अहंकारी से तुम्हारा सामना हो, उसे झुकाते
जाओ. 12 हर एक अहंकारी को विनीत बना दो, हर एक खड़े हुए दुराचारी को
पांवों से कुचल दो. 13 तब उन सभी को भूमि में मिला दो; किसी गुप्त स्थान में
उन्हें बांध दो. 14 तब मैं सर्वप्रथम तुम्हारी क्षमता को स्वीकार करूंगा, कि
तुम्हारा दायां हाथ तुम्हारी रक्षा के लिए पर्याप्त है. 15 "अब इस सत्य पर
विचार करो जैसे मैंने तुम्हें सृजा है, वैसे ही उस विशाल जंतु बहेमोथ को भी जो
बैल समान घास चरता है. 16 उसके शारीरिक बल पर विचार करो, उसकी
मांसपेशियों की क्षमता पर विचार करो! 17 उसकी पूंछ देवदार वृक्ष के समान
कठोर होती है; उसकी जांघ का स्नायु-तंत्र कैसा बुना गया है. 18 उसकी हड्डियां
कांस्य की नलियां समान है, उसके अंग लोहे के छड़ के समान मजबूत हैं. 19
वह परमेश्वर की एक उत्कृष्ट रचना है, किंतु उसका रचयिता उसे तलवार से
नियंत्रित कर लेता है. 20 पर्वत उसके लिए आहार लेकर आते हैं, इधर-उधर
वन्य पशु फिरते रहते हैं. 21 वह कमल के पौधे के नीचे लेट जाता है, जो
कीचड़ तथा सरकंडों के मध्य में है. 22 पौधे उसे छाया प्रदान करते हैं; तथा
नदियों के मजनूं वृक्ष उसके आस-पास उसे घेरे रहते हैं. 23 यदि नदी में बाढ़ आ
जाए, तो उसकी कोई हानि नहीं होती; वह निश्चिंत बना रहता है, यद्यपि यरदन
का जल उसके मुख तक ऊंचा उठ जाता है. 24 जब वह सावधान सजग रहता
है तब किसमें साहस है कि उसे बांध ले, क्या कोई उसकी नाक में छेद कर
सकता है?

41 "क्या तुम लिवयाथान को मछली पकड़ने की अंकुड़ी से खींच सकोगे?
अथवा क्या तुम उसकी जीभ को किसी डोर से बांध सको? 2 क्या
उसकी नाक में रस्सी बांधना तुम्हारे लिए संभव है, अथवा क्या तुम अंकुड़ी के
लिए उसके जबड़े में छेद कर सकते हो? 3 क्या वह तुमसे कृपा की याचना
करेगा? क्या वह तुमसे शालीनतापूर्वक विनय करेगा? 4 क्या वह तुमसे वाचा
स्थापित करेगा? क्या तुम उसे जीवन भर अपना दास बनाने का प्रयास करोगे? 5
क्या तुम उसके साथ उसी रीति से खेल सकोगे जैसे किसी पक्षी से? अथवा उसे
अपनी युवतियों के लिए बांधकर रख सकोगे? 6 क्या व्यापारी उसके लिए
विनिमय करना चाहेंगे? क्या व्यापारी अपने लिए परस्पर उसका विभाजन कर
सकेंगे? 7 क्या तुम उसकी खाल को बर्छी से बेध सकते हो अथवा उसके सिर
को भाले से नष्ट कर सकते हो? 8 बस, एक ही बार उस पर अपना हाथ रखकर
देखो, दूसरी बार तुम्हें यह करने का साहस न होगा. उसके साथ का संघर्ष तुम्हारे
लिए अविस्मरणीय रहेगा. 9 व्यर्थ है तुम्हारी यह अपेक्षा, कि तुम उसे अपने
अधिकार में कर लोगे; तुम तो उसके सामने आते ही गिर जाओगे. 10 कोई भी
उसे उकसाने का ढाढस नहीं कर सकता. तब कौन करेगा उसका सामना? 11
उस पर आक्रमण करने के बाद कौन सुरक्षित रह सकता है? आकाश के नीचे की
हर एक वस्तु मेरी ही है. 12 "उसके अंगों का वर्णन न करने के विषय में मैं चुप
रहूंगा, न ही उसकी बड़ी शक्ति तथा उसके सुंदर देह का. 13 कौन उसके बाह्य
आवरण को उतार सकता है? कौन इसके लिए साहस करेगा कि उसमें बागडोर
डाल सके? 14 कौन उसके मुख के द्वार खोलने में समर्थ होगा, जो उसके
भयावह दांतों से घिरा है? 15 उसकी पीठ पर ढालें पंक्तिबद्ध रूप से बिछी हुई हैं
और ये अत्यंत दृढतापूर्वक वहां लगी हुई हैं; 16 वे इस रीति से एक दूसरे से सटी
हुई हैं, कि इनमें से वायु तक नहीं निकल सकती. 17 वे सभी एक दूसरे से
जुड़ी हुई हैं उन्होंने एक दूसरे को ऐसा जकड़ रखा है; कि इन्हें तोड़ा नहीं जा
सकता. 18 उसकी छींक तो आग की लपटें प्रक्षेपित कर देती है; तथा उसके
नेत्र उषाकिरण समान दिखते हैं. 19 उसके मुख से ज्वलंत मशालें प्रकट रहती;
तथा इनके साथ चिंगारियां भी झड़ती रहती हैं. 20 उसके नाक से धुआं उठता
रहता है, मानो किसी उबलते पात्र से, जो जलते हुए सरकंडों के ऊपर रखा हुआ
है. 21 उसकी श्वास कोयलों को प्रज्वलित कर देती, उसके मुख से अग्निशिखा
निकलती रहती है. 22 उसके गर्दन में शक्ति का निवास है, तो उसके आगे-आगे
निराशा बढ़ती जाती है. 23 उसकी मांसपेशियां उसकी देह पर अचल एवं दृढ़,
24 और उसका हृदय तो पत्थर समान कठोर है! हां! चक्की के निचले पाट के
पत्थर समान! 25 जब-जब वह उठकर खड़ा होता है, शूरवीर भयभीत हो जाते
हैं. उसके प्रहार के भय से वे पीछे हट जाते हैं. 26 उस पर जिस किसी तलवार
से प्रहार किया जाता है, वह प्रभावहीन रह जाती है, वैसे ही उस पर बर्छी, भाले
तथा बाण भी. 27 उसके सामने लौह भूसा समान होता है, तथा कांसा सड़ रहे
लकड़ी के समान. 28 बाण का भय उसे भगा नहीं सकता. गोफन प्रक्षेपित पत्थर
तो उसके सामने काटी उपज के ठूंठ प्रहार समान होता है. 29 लाठी का प्रहार
भी ठूंठ के प्रहार समान होता है, वह तो बर्छी की ध्वनि सुन हंसने लगता है. 30
उसके पेट पर जो झुरिया हैं, वे मिट्टी के टूटे ठीकरे समान हैं. कीचड़ पर चलते
हुए वह ऐसा लगता है, मानो वह अनाज कुटने का पट्टा समान चिन्ह छोड़ रहा
है. 31 उसके प्रभाव से महासागर जल, ऐसा दिखता है मानो हांडी में उफान आ
गया हो. तब सागर ऐसा हो जाता, मानो वह मरहम का पात्र हो. 32 वह अपने
पीछे एक चमकीली लकीर छोड़ता जाता है यह दृश्य ऐसा हो जाता है, मानो यह
किसी वृद्ध का सिर है. 33 पृथ्वी पर उसके जैसा कुछ भी नहीं है; एकमात्र
निर्भीक रचना! 34 उसके आंकलन में सर्वोच्च रचनाएं भी नगण्य हैं; वह
समस्त अहंकारियों का राजा है."

42 तब अय्योब ने याहवेह को यह उत्तर दिया: 2 "मेरे प्रभु, मुझे मालूम है
कि आप सभी कुछ कर सकते हैं; तथा आपकी किसी भी योजना विफल
नहीं होती. 3 आपने पूछा था, 'कौन है वह अज्ञानी, जो मेरे ज्ञान पर आवरण
डाल देता है?' यही कारण है कि मैं स्वीकार कर रहा हूं, कि मुझे इन विषयों का
कोई ज्ञान न था, मैं नहीं समझ सका, कि क्या-क्या हो रहा था, तथा जो कुछ
हो रहा था, वह विस्मयकारी था. 4 "आपने कहा था, 'अब तुम चुप रहो; कि
अब मैं संवाद कर सकूं, तब प्रश्न मैं करूंगा, कि तुम इनका उत्तर दो.' 5 इसके
पूर्व आपका ज्ञान मेरे लिए मात्र समाचार ही था, किंतु अब आपको मेरी आंखें
देख चुकी हैं. 6 इसलिये अब मैं स्वयं को घृणास्पद समझ रहा हूं, मैं इसके लिए
धूल तथा भस्म में प्रायश्चित करता हूं." 7 अय्योब से अपना आख्यान समाप्त
करके याहवेह ने तेमानी एलिफाज़ से पूछा, "मैं तुमसे तथा तुम्हारे दोनों मित्रों से
अप्रसन्न हूं, क्योंकि तुमने मेरे विषय में वह सब अभिव्यक्त नहीं किया, जो सही
है, जैसा मेरे सेवक अय्योब ने प्रकट किया था. 8 तब अब तुम सात बछड़े तथा
सात मेढ़े लो और मेरे सेवक अय्योब के पास जाकर अपने लिए होमबलि अर्पित
करो तथा मेरा सेवक अय्योब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा, क्योंकि मैं उसकी
याचना स्वीकार कर लूंगा, कि तुम्हारी मूर्खता के अनुरूप व्यवहार न करूं,
क्योंकि तुमने मेरे विषय में वह सब अभिव्यक्त नहीं किया, जो उपयुक्त था
जैसा अय्योब ने किया था." 9 तब तेमानी एलिफाज़ ने, शूही बिलदद ने तथा

नआमथी ज़ोफर ने याहवेह के आदेश के अनुसार अनुपालन किया तथा याहवेह
ने अय्योब की याचना स्वीकार कर ली. 10 जब अय्योब अपने मित्रों के लिए
प्रार्थना कर चुके, तब याहवेह ने अय्योब की संपत्ति को पूर्वावस्था में कर दिया
तथा जो कुछ अय्योब का था, उसे दो गुणा कर दिया. 11 कालांतर उनके समस्त
भाई बहनों तथा पूर्व परिचितों ने उनके घर पर आकर भोज में उनके साथ संगति
की. उन्होंने उन पर याहवेह द्वारा समस्त विपत्तियों के संबंध में सहानुभूति एवं
सांत्वना दी. उनमें से हर एक ने अय्योब को धनराशि एवं सोने के सिक्के भेंट में
दिये. 12 याहवेह ने अय्योब के इन उत्तर वर्षों को उनके पूर्व वर्षों की अपेक्षा
कहीं अधिक आशीषित किया. उनकी संपत्ति में अब चौदह हजार भेड़ें, छः
हजार ऊंट, एक हजार जोड़े बैल तथा एक हजार गधियां हो गईं. 13 उनके
सात पुत्र एवं तीन पुत्रियां हुईं. 14 पहली पुत्री का नाम उन्होंने यमीमाह, दूसरी
का केज़ीआह, तीसरी का केरेन-हप्पूख रखा. 15 समस्त देश में अय्योब की
पुत्रियों समान सौंदर्य अन्यत्र नहीं थी. उनके पिता ने उन्हें उनके भाइयों के साथ
ही मीरास दी. 16 इसके बाद अय्योब एक सौ चालीस वर्ष और जीवित रहे.
उन्होंने चार पीढ़ियों तक अपने पुत्र तथा पौत्र देखे. 17 वृद्ध अय्योब अपनी पूर्ण
परिपक्व आयु में चले गये.

भजन संहिता

1 कैसा धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की सम्मति का आचरण नहीं करता, न
पापियों के मार्ग पर खड़ा रहता और न ही उपहास करनेवालों की बैठक में
बैठता है, 2 इसके विपरीत उसका उल्लास याहवेह की व्यवस्था का पालन करने
में है, उसी का मनन वह दिन-रात करता रहता है. 3 वह बहती जलधाराओं
के तट पर लगाए गए उस वृक्ष के समान है, जो उपयुक्त ऋतु में फल देता है
जिसकी पत्तियां कभी मुरझाती नहीं. ऐसा पुरुष जो कुछ करता है उसमें सफल
होता है. 4 किंतु दुष्ट ऐसे नहीं होते! वे उस भूसे के समान होते हैं, जिसे पवन
उड़ा ले जाती है. 5 तब दुष्ट न्याय में टिक नहीं पाएंगे, और न ही पापी धर्मियों
के मण्डली में. 6 निश्चयतः याहवेह धर्मियों के आचरण को सुख समृद्धि से
सम्पन्न करते हैं, किंतु दुष्टों को उनका आचरण ही नष्ट कर डालेगा.

2 क्यों मचा रहे हैं राष्ट्र यह खलबली? क्यों देश-देश जुटे हैं विफल षड्यंत्र
की रचना में? 2 याहवेह तथा उनके अभिषिक्त के विरोध में संसार के
राजाओं ने एका किया है एकजुट होकर शासक सम्मति कर रहे हैं: 3 "चलो,
तोड़ फेंकें उनके द्वारा डाली गई ये बेड़ियां, उतार डालें उनके द्वारा बांधी गई ये
रस्सियां." 4 वह, जो स्वर्गिक सिंहासन पर विराजमान हैं, उन पर हंसते हैं, प्रभु
उनका उपहास करते हैं. 5 तब वह उन्हें अपने प्रकोप से डराकर अपने रोष में
उन्हें संबोधित करते हैं, 6 "अपने पवित्र पर्वत ज़ियोन पर स्वयं मैंने अपने राजा
को बसा दिया है." 7 मैं याहवेह की राजाज्ञा की घोषणा करूंगा: उन्होंने मुझसे
कहा है, "तुम मेरे पुत्र हो; आज मैं तुम्हारा जनक हो गया हूं. 8 मुझसे मांगो, तो
मैं तुम्हें राष्ट्र दे दूंगा तथा संपूर्ण पृथ्वी को तुम्हारी निज संपत्ति बना दूंगा. 9 तुम
उन्हें लोहे के छड़ से टुकड़े-टुकड़े कर डालोगे; मिट्टी के पात्रों समान चूर-चूर
कर दोगे." 10 तब राजाओ, बुद्धिमान बनो; पृथ्वी के न्यायियों, सचेत हो
जाओ. 11 श्रद्धा भाव में याहवेह की आराधना करो; थरथराते हुए आनंद मनाओ.
12 पूर्ण सच्चाई में पुत्र को सम्मान दो, ऐसा न हो कि वह क्रोधित हो जाए और
तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध शीघ्र भड़कता है. धन्य होते
हैं वे सभी, जो उनका आश्रय लेते हैं.

3 दावीद का एक स्तोत्र. जब वह अपने पुत्र अबशालोम से बचकर भाग रहे
थे. याहवेह! कितने सारे हैं मेरे शत्रु! कितने हैं जो मेरे विरोध में उठ खड़े हुए
हैं! 2 वे मेरे विषय में कहने लगे हैं, "परमेश्वर उसे उद्धार प्रदान नहीं करेंगे." 3
किंतु, याहवेह, आप सदैव ही जोखिम में मेरी ढाल हैं, आप ही हैं मेरी महिमा,
आप मेरा मस्तक ऊंचा करते हैं. 4 याहवेह! मैंने उच्च स्वर में आपको पुकारा
है, और आपने अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर दिया. 5 मैं लेटता और निश्चिंत
सो जाता हूं; मैं पुनः सकुशल जाग उठता हूं, क्योंकि याहवेह मेरी रक्षा कर रहे
थे. 6 मुझे उन असंख्य शत्रुओं का कोई भय नहीं जिन्होंने मुझे चारों ओर से
घेर लिया है. 7 उठिए याहवेह! मेरे परमेश्वर, आकर मुझे बचाइए! निःसंदेह
आप मेरे समस्त शत्रुओं के जबड़े पर प्रहार करें; आप उन दुष्टों के दांत तोड़
डालें. 8 उद्धार तो याहवेह में ही है, आपकी प्रजा पर आपकी कृपादृष्टि बनी रहे!

4 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. दावीद का एक
स्तोत्र. हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूं, मुझे उत्तर दें! आपने मेरे
संकट के समय मेरी सहायता की; अब अपने अनुग्रह में मेरी प्रार्थना का उत्तर दें.
2 मनुष्यो! कब तक तुम मेरा अपमान करते रहोगे? कब तक तुम छल से प्रेम
और उसकी खोज करते रहोगे, जो निरर्थक है, जो मात्र झूठी ही है? 3 यह
स्मरण रखो कि याहवेह ने अपने भक्त को अपने निमित्त अलग कर रखा है; जब
मैं पुकारूं याहवेह मेरी सुनेंगे. 4 श्रद्धा में पाप का परित्याग कर दो; शांत हो
जाओ, बिछौने पर लेटे हुए आत्म-परीक्षण करो. 5 व्यवस्था द्वारा निर्धारित बलि
अर्पण करो और याहवेह पर भरोसा करो. 6 अनेक हैं, जो कहते हैं, "कौन है,
जो हमें यह दर्शाएगा कि क्या है उपयुक्त और क्या है भला?" याहवेह, हम
पर अपने मुख का प्रकाश चमकाएं. 7 जिन्हें अन्न और दाखमधु की बड़ी
उपज प्राप्त हुई है, उनसे भी अधिक आनंद से आपने मेरे हृदय भर दिया है. 8
मैं शांतिपूर्वक लेटूंगा और सो जाऊंगा, क्योंकि याहवेह, मात्र आप ही मुझे,
सुरक्षापूर्ण विश्राम प्रदान करते हैं.

5 संगीत निर्देशक के लिये. बांसुरी वाद्यों के लिए. दावीद का एक स्तोत्र.
याहवेह, मेरे वचनों पर ध्यान दें, मेरे शब्दों की आहों पर विचार करें. 2
मेरे परमेश्वर, मेरे राजा, सहायता के लिए मेरी पुकार पर ध्यान दें, क्योंकि
याहवेह, मेरी यह प्रार्थना आपसे है. 3 याहवेह, आप प्रातःकाल मेरी वाणी सुनेंगे;
सूर्योदय के समय मैं आपको बलि अर्पित करूंगा और आपके प्रत्युत्तर की
प्रतीक्षा करूंगा. 4 निःसंदेह आप वह परमेश्वर नहीं, जो दुष्टता का समर्थन करें;
वस्तुतः बुराई आपके साथ नहीं रह सकती. 5 घमंडी आपकी उपस्थिति में ठहर
नहीं सकते, दुष्ट आपके लिए घृणास्पद हैं; 6 झूठ बोलने वालों का आप विनाश
करते हैं. हत्यारों और धूर्तों से, याहवेह, को घृणा है. 7 किंतु आपके, अपार प्रेम
के बाहुल्य के परिणामस्वरूप मैं, आपके आवास में प्रवेश कर सकूंगा; पूर्ण श्रद्धा
में झुककर मैं आपके पवित्र मंदिर में आराधना करूंगा. 8 याहवेह, मेरे शत्रुओं के
कारण अपने धर्ममय मार्ग पर मेरी अगुवाई करें; मेरे आगे-आगे अपने सीधे मार्ग
को दिखा. 9 मेरे शत्रुओं का एक भी शब्द सच्चा नहीं है; उनके हृदय बुराई से
भरे हैं. उनका गला खुली हुई कब्र समान है; उनकी जीभ चिकनी-चुपड़ी बातें
करती है. 10 प्रभु परमेश्वर! आप उन पर दंड-आज्ञा प्रसारित करें, कि अपनी ही
युक्तियों के जाल में फंसकर उनका नाश हो जाए, उनके अपराधों की अधिकता
के कारण आप उन्हें अपनी उपस्थिति से दूर करें, क्योंकि उन्होंने आपके विरुद्ध
बलवा किया है. 11 आनंदित हों आपके सभी शरणागत; सदैव हो उनका आनंद.
आप उन्हें सुरक्षित रखें, जो आपसे प्रेम रखते हैं, वे सदैव उल्लसित रहें. 12
याहवेह, धर्मियों पर आपकी कृपादृष्टि बनी रहती है; आप अपने अनुग्रह में उन्हें
ढाल के समान सुरक्षा प्रदान करते हैं.

6 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों के संगत के साथ. शेमिनिथ. पर
आधारित. दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, अपने क्रोध में मुझे न डांटें,
झुंझलाहट में मेरी ताड़ना न करें. 2 कृपा करें, याहवेह, मैं शिथिल हो चुका हूं;
मुझमें शक्ति का संचार करें, मेरी हड्डियों को भी पीड़ा ने जकड़ लिया है. 3 मेरे
प्राण घोर पीड़ा में हैं. याहवेह, आप कब तक ठहरे रहेंगे? 4 याहवेह, आकर मुझे
बचा लीजिए; अपने करुणा-प्रेम के निमित्त मुझे बचा लीजिए. 5 क्योंकि मृत
अवस्था में आपका स्मरण करना संभव नहीं. अधोलोक में कौन आपका स्तवन
कर सकता है? (Sheol h7585) 6 कराहते-कराहते मैं थक चुका हूं, प्रति रात्रि मेरे
आंसुओं से मेरा बिछौना भीग जाता है, मेरे आंसू मेरा तकिया भिगोते रहते हैं. 7
शोक से मेरी आंखें निस्तेज हो गई हैं; मेरे शत्रुओं के कारण मेरी आंखें क्षीण हो
चुकी हैं. 8 दुष्टो, दूर रहो मुझसे, याहवेह ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है. 9
याहवेह ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है; याहवेह मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे.
10 मेरे समस्त शत्रु लज्जित किए जाएंगे, वे पूर्णतः निराश हो जाएंगे; वे पीठ
दिखाएंगे और तत्काल ही लज्जित किए जाएंगे!

7 दावीद का शिग्गायोन जिसे दावीद ने बिन्यामिन गोत्र के कूश के संदर्भ में
याहवेह के सामने गाया. याहवेह, मेरे परमेश्वर! मैं आपके ही आश्रय में
आया हूं; उन सबसे मुझे बचा लीजिए, जो मेरा पीछा कर रहे हैं, उन सबसे मेरी
रक्षा कीजिए, 2 अन्यथा वे मेरे प्राण को सिंह की नाई फाड़कर टुकड़े-टुकड़े
कर डालेंगे, जबकि मुझे छुड़ाने के लिए वहां कोई भी न होगा. 3 याहवेह, मेरे
परमेश्वर, यदि मैंने वह किया है, जैसा वे कह रहे हैं, यदि मैं किसी अनुचित

कार्य का दोषी हूं, 4 यदि मैंने उसकी बुराई की है, जिसके साथ मेरे शान्तिपूर्ण
संबंध थे, अथवा मैंने अपने शत्रु को अकारण ही मुक्त कर दिया है, 5 तो शत्रु
मेरा पीछा करे और मुझे पकड़ ले; वह मुझे पैरों से कुचलकर मार डाले और
मेरी महिमा को धूल में मिला दे. 6 याहवेह, कोप में उठिए; मेरे शत्रुओं के विरुद्ध
अत्यंत झुंझलाहट के साथ उठिये. अपने निर्धारित न्याय-दंड के अनुरूप मेरे
पक्ष में सहायता कीजिए. 7 आपके चारों ओर विश्व के समस्त राष्ट्र एकत्र हों
और आप पुनः उनके मध्य अपने निर्धारित उच्चासन पर विराजमान हो जाइए,
8 याहवेह ही राष्ट्रों के न्यायाध्यक्ष हैं. याहवेह, मेरी सच्चाई, एवं ईमानदारी के
कारण मेरा न्याय करें, 9 दुष्ट के दुष्कर्म समाप्त हो जाएं आप ईमानदारी को
स्थिर करें, आप ही युक्त परमेश्वर हैं. आप ही हैं, जो मन के विचारों एवं मर्म
की विवेचना करते हैं. 10 परमेश्वर मेरी सुरक्षा की ढाल हैं, वही सीधे मनवालों
को बचाते हैं. 11 परमेश्वर युक्त न्यायाध्यक्ष हैं, ऐसे परमेश्वर, जो सदैव ही
बुराई से क्रोध करते हैं. 12 यदि मनुष्य पश्चात्ताप न करे, परमेश्वर अपनी
तलवार की धार तीक्ष्ण करते हैं; वह अपना धनुष साध बाण डोरी पर चढ़ा लेते
हैं. 13 परमेश्वर ने अपने घातक शस्त्र तैयार कर लिए हैं; उन्होंने अपने बाणों
को अग्निबाण बना लिया है. 14 दुष्ट जन विनाश की योजनाओं को अपने
गर्भ में धारण किए हुए हैं, वे झूठ का जन्म देते हैं. 15 उसने भूमि खोदी और
गड्ढा बनाया और वह अपने ही खोदे हुए गड्ढे में जा गिरा. 16 उसकी विनाशक
युक्तियां लौटकर उसी के सिर पर आ पड़ेंगी; उसकी हिंसा उसी की खोपड़ी पर
आ उतरेगी. 17 मैं याहवेह को उनके धर्म के अनुसार धन्यवाद दूंगा; मैं सर्वोच्च
याहवेह के नाम का स्तवन करूंगा.

8 संगीत निर्देशक के लिये. गित्तीथ पर आधारित. दावीद का एक स्तोत्र.
याहवेह, हमारे प्रभु, समस्त पृथ्वी पर कितना तेजमय है आपका नाम! स्वर्ग
पर आपने अपने वैभव को प्रदर्शित किया है. 2 आपने अपने शत्रुओं के कारण
बालकों एवं शिशुओं के मुख से अपना बल बसा लिया, कि आपके विरोधियों
तथा शत्रु का अंत हो जाए. 3 जब मैं आपकी उंगलियों, द्वारा रचा आकाश,
चंद्रमा और नक्षत्रों को, जिन्हें आपने यथास्थान पर स्थापित किया, देखता हूं, 4
तब मैं विचार करता हूं: मनुष्य है ही क्या, कि आप उसकी ओर ध्यान दें? क्या
विशेषता है मानव में कि आप उसके विषय में विचार भी करें? 5 आपने मनुष्य
को सम्मान और वैभव का मुकुट पहनाया, क्योंकि आपने उसे स्वर्गदूतों से
थोड़ा ही कम बनाया है. 6 आपने उसे अपनी सृष्टि का प्रशासक बनाया; आपने
सभी कुछ उसके अधिकार में दे दिया: 7 भेड़-बकरी, गाय-बैल, तथा वन्य पशु,
8 आकाश के पक्षी, एवं समुद्र की मछलियां, तथा समुद्री धाराओं में चलते फिरते
सभी जलचर भी. 9 याहवेह, हमारे प्रभु, समस्त पृथ्वी पर कितना तेजमय है
आपका नाम!

9 संगीत निर्देशक के लिये. मूथलब्बेन धुन पर आधारित. दावीद का एक
स्तोत्र. याहवेह, मैं संपूर्ण हृदय से आपका आभार मानूंगा; मैं आपके हर एक
आश्चर्य कर्मों का वर्णन करूंगा. 2 मैं आप में उल्लसित होकर आनंद मनाता हूं;
सर्वोच्च प्रभु, मैं आपका भजन गाता हूं. 3 जब मेरे शत्रु पीठ दिखाकर भागे; वे
आपकी उपस्थिति के कारण नाश होकर लड़खड़ा कर गिर पड़े. 4 आपने न्याय
किया और मेरे पक्ष में निर्णय दिया, आपने अपने सिंहासन पर बैठ सच्चाई
में न्याय किया. 5 आपने जनताओं को डांटा और दुष्टों को नष्ट कर दिया;
आपने सदा के लिए उनका नाम मिटा दिया. 6 कोई भी शत्रु शेष न रहा, उनके
नगर अब स्थायी विध्वंस मात्र रह गए हैं; शत्रु का नाम भी शेष न रहा. 7 परंतु
याहवेह सदैव सिंहासन पर विराजमान हैं; उन्होंने अपना सिंहासन न्याय के लिए
स्थापित किया है. 8 वह संसार का न्याय तथा राष्ट्रों का निर्णय धार्मिकता से
करते हैं. 9 याहवेह ही दुःखित को शरण देते हैं, संकट के समय वही ऊंचा गढ़
हैं. 10 जिन्होंने आपकी महिमा को पहचान लिया है, वे आप पर भरोसा करेंगे,
याहवेह, जिन्होंने आपसे प्रार्थना की, आपने उन्हें निराश न होने दिया. 11
याहवेह का गुणगान करो, जो ज़ियोन में सिंहासन पर विराजमान हैं; राष्ट्रों में
उनके आश्चर्य कार्यों की उद्घोषणा करो. 12 वह, जो पीड़ितों के बदला लेनेवाले
हैं, उन्हें स्मरण रखते हैं; दीनों की वाणी को वह अनसुनी नहीं करते. 13 हे
याहवेह, मुझ पर कृपादृष्टि कीजिए! मेरी पीड़ा पर दृष्टि कीजिए. आप ही हैं, जो
मुझे मृत्यु-द्वार के निकट से झपटकर उठा सकते हैं, 14 कि मैं ज़ियोन की पुत्री
के द्वारों के भीतर आपके हर एक गुण का वर्णन करूं, कि मैं आपके द्वारा किए
उद्धार में उल्लसित होऊं. 15 अन्य जनता उसी गड्ढे में जा गिरे, जिसे स्वयं उन्हीं
ने खोदा था; उनके पैर उसी जाल में जा फंसे, जिसे उन्होंने बिछाया था. 16
याहवेह ने स्वयं को प्रकट किया, उन्होंने न्याय सम्पन्न किया; दुष्ट अपने ही फंदे
में उलझ कर रह गए. 17 दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, यही नियति है उन सभी
राष्ट्रों की भी, जिन्होंने परमेश्वर की उपेक्षा की है. **(Sheol h7585)** 18 दीन
दरिद्र सदा भुला नहीं दिए जाएंगे; पीड़ितों की आशा सदा के लिए चूर नहीं
होगी. 19 याहवेह, आप उठ जाएं, कि कोई मनुष्य प्रबल न हो जाए; जनताओं
का न्याय आपके सामने हो. 20 याहवेह, आप उन्हें भयभीत कर दें; जनताओं
को यह बोध हो जाए कि वे मात्र मनुष्य हैं.

10 याहवेह, आप दूर क्यों खड़े हैं? संकट के समय आप स्वयं को क्यों
छिपा लेते हैं? 2 दुर्जन अपने अहंकार में असहाय निर्धन को खदेड़ते हैं,
दुर्जन अपनी ही रची गई युक्तियों में फंसकर रह जाएं. 3 दुर्जन की मनोकामना
पूर्ण होती जाती है, तब वह इसका घमंड करता है; लालची पुरुष याहवेह की
निंदा करता तथा उनसे अलग हो जाता है. 4 दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्वर की
कामना ही नहीं करता; वह अपने मन में मात्र यही विचार करता रहता है:
परमेश्वर है ही नहीं. 5 दुष्ट के प्रयास सदैव सफल होते जाते हैं; उसके सामने
आपके आदेशों का कोई महत्व है ही नहीं; उसके समस्त विरोधी उसके सामने
तुच्छ हैं. 6 वह स्वयं को आश्वासन देता रहता है: "मैं विचलित न होऊंगा, मेरी
किसी भी पीढ़ी में कोई भी विपदा नहीं आ सकती." 7 उसका मुख शाप, छल
तथा अत्याचार से भरा रहता है; उसकी जीभ उत्पात और दुष्टता छिपाए रहती है.
8 वह गांवों के निकट घात लगाए बैठा रहता है; वह छिपकर निर्दोष की हत्या
करता है. उसकी आंखें चुपचाप असहाय की ताक में रहती हैं; 9 वह प्रतीक्षा में
घात लगाए हुए बैठा रहता है, जैसे झाड़ी में सिंह. घात में बैठे हुए उसका लक्ष्य
होता है निर्धन-दुःखी, वह उसे अपने जाल में फंसा घसीटकर ले जाता है. 10
वह दुःखी दब कर झुक जाता; और उसकी शक्ति के सामने पराजित हो जाता है.
11 उस दुष्ट की यह मान्यता है, "परमेश्वर सब भूल चुके हैं; उन्होंने अपना मुख
छिपा लिया है, वह यह सब कभी नहीं देखेंगे." 12 याहवेह, उठिए, अपना
हाथ उठाइये, परमेश्वर! इन दुष्टों को दंड दीजिए, दुःखितों को भुला न दीजिए.
13 दुष्ट परमेश्वर का तिरस्कार करते हुए अपने मन में क्यों कहता रहता है,
"परमेश्वर इसका लेखा लेंगे ही नहीं"? 14 किंतु निःसंदेह आपने सब कुछ
देखा है, आपने यातना और उत्पीड़न पर ध्यान दिया है; आप स्थिति को अपने
नियंत्रण में ले लें. दुःखी और लाचार स्वयं को आपके हाथों में सौंप रहे हैं;
क्योंकि आप ही सहायक हैं अनाथों के. 15 कुटिल और दुष्ट का भुजबल तोड़
दीजिए; उसकी दुष्टता का लेखा उस समय तक लेते रहिए जब तक कुछ भी
दुष्टता शेष न रह जाए. 16 सदा-सर्वदा के लिए याहवेह महाराजाधिराज हैं; उनके
राज्य में से अन्य जनता मिट गए हैं. 17 याहवेह, आपने विनीत की अभिलाषा
पर दृष्टि की है; आप उनके हृदय को आश्वासन प्रदान करेंगे, 18 अनाथ तथा
दुःखित की रक्षा के लिए, आपका ध्यान उनकी वाणी पर लगा रहेगा कि मिट्टी
से बना मानव अब से पुनः आतंक प्रसारित न करे.

11 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना मैंने याहवेह में आश्रय लिया
है, फिर तुम मुझसे यह क्यों कह रहे हो: “पंछी के समान अपने पर्वत
को उड़ जा. 2 सावधान! दुष्ट ने अपना धनुष साध लिया है; और उसने धनुष पर
बाण भी चढ़ा लिया है, कि अंधकार में सीधे लोगों की हत्या कर दे. 3 यदि
आधार ही नष्ट हो जाए, तो धर्मी के पास कौन सा विकल्प शेष रह जाता है?” 4
याहवेह अपने पवित्र मंदिर में हैं; उनका सिंहासन स्वर्ग में बसा है. उनकी दृष्टि
सर्वत्र मनुष्यों को देखती है; उनकी सूक्ष्मदृष्टि हर एक को परखती रहती है. 5
याहवेह की दृष्टि धर्मी एवं दुष्ट दोनों को परखती है, याहवेह के आत्मा हिंसा
प्रिय पुरुषों से घृणा करते हैं. 6 दुष्टों पर वह फन्दों की वृष्टि करेंगे, उनके प्याले
में उनका अंश होगा अग्नि; गंधक तथा प्रचंड हवा. 7 याहवेह युक्त हैं, धर्मी ही
उन्हें प्रिय हैं; धर्मी जन उनका मुंह देखने पाएंगे.

12 संगीत निर्देशक के लिये. शेमिनिथ पर आधारित. दावीद का एक स्तोत्र.
याहवेह, हमारी रक्षा कीजिए, कोई भक्त अब शेष न रहा; मनुष्यों के
मध्य से विश्वासयोग्य पुरुष नहीं रहे. 2 मनुष्य मनुष्य से झूठी बातें कर रहा है;
वे चापलूसी करते हुए एक दूसरे का छल करते हैं. 3 अच्छा होगा यदि याहवेह
चापलूसी होंठों तथा घमंडी जीभ को काट डालें. 4 वे डींग मारते हुए कहते हैं,
“शक्ति हमारी जीभ में मगन है; ओंठ हमारे वश में हैं. कौन हो सकता है हमारा
स्वामी?” 5 किंतु अब याहवेह का कहना है, “दुःखितों के प्रति की गई हिंसा
के कारण, निर्धनों की करुण वाणी के कारण मैं उनके पक्ष में उठ खड़ा होऊंगा.
मैं उन्हें वही सुरक्षा प्रदान करूंगा, वे जिसकी कामना कर रहे हैं.” 6 याहवेह का
वचन शुद्ध है, उस चांदी-समान हैं, जिसे भट्टी में सात बार तपा कर शुद्ध किया
गया है. 7 याहवेह, उन्हें अपनी सुरक्षा में बनाए रखेंगे उन्हें इस पीढ़ी से सर्वदा
सुरक्षा प्रदान करेंगे, 8 जब मनुष्यों द्वारा नीचता का आदर किया जाता है, तब
दुष्ट चारों और अकड़ कर चलते फिरते हैं.

13 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. कब तक, याहवेह?
कब तक आप मुझे भुला रखेंगे, क्या सदा के लिए? कब तक आप मुझसे
अपना मुख छिपाए रहेंगे? 2 कब तक मैं अपने मन को समझाता रहूं? कब तक
दिन-रात मेरा हृदय वेदना सहता रहेगा? कब तक मेरे शत्रु मुझ पर प्रबल होते
रहेंगे? 3 याहवेह, मेरे परमेश्वर, मेरी ओर ध्यान दे मुझे उत्तर दीजिए. मेरी
आंखों को ज्योतिर्मय कीजिए, ऐसा न हो कि मैं मृत्यु की नींद में समा जाऊं, 4
तब तो निःसंदेह मेरे शत्रु यह घोषणा करेंगे, “हमने उसे नाश कर दिया,” ऐसा न
हो कि मेरा लड़खड़ाना मेरे विरोधियों के लिए आनंद का विषय बन जाए. 5
जहां तक मेरा संबंध है, याहवेह, मुझे आपके करुणा-प्रेम पर भरोसा है; तब मेरा
हृदय आपके द्वारा किए उद्धार में मगन होगा. 6 मैं याहवेह का भजन गाऊंगा,
क्योंकि उन्होंने मुझ पर अनेकानेक उपकार किए हैं.

14 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना मूर्ख मन ही मन में कहते हैं,
“परमेश्वर है ही नहीं.” वे सभी भ्रष्ट हैं और उनके काम घिनौने हैं; ऐसा
कोई भी नहीं, जो भलाई करता हो. 2 स्वर्ग से याहवेह मनुष्यों पर दृष्टि डालते
हैं इस आशा में कि कोई तो होगा, जो बुद्धिमान है, जो परमेश्वर की खोज करता
हो. 3 सभी मनुष्य भटक गए हैं, सभी नैतिक रूप से भ्रष्ट हो चुके हैं; कोई भी
सत्कर्म परोपकार नहीं करता, हां, एक भी नहीं. 4 मेरी प्रजा के ये भक्षक, ये
दुष्ट पुरुष, क्या ऐसे निर्बुद्धि हैं? जो उसे ऐसे खा जाते हैं, जैसे रोटी को; क्या उन्हें
याहवेह की उपासना का कोई ध्यान नहीं? 5 वहां वे अत्यंत घबरा गये हैं,
क्योंकि परमेश्वर धर्मी पीढ़ी के पक्ष में होते हैं. 6 तुम दुःखित को लज्जित करने
की युक्ति कर रहे हो, किंतु उनका आश्रय याहवेह हैं. 7 कैसा उत्तम होता यदि
इस्राएल का उद्धार ज़ियोन से प्रगट होता! याकोब के लिए वह हर्षोल्लास का
अवसर होगा, जब याहवेह अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा लाएंगे, तब इस्राएल
आनंदित हो जाएगा!

15 दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, कौन आपके तंबू में रह सकेगा? कौन
आपके पवित्र पर्वत पर निवास कर सकेगा? 2 वही, जिसका आचरण
निष्कलंक है, जो धार्मिकता का आचरण करता है, जो हृदय से सच बोलता है;
3 जिसकी जीभ से निंदा के शब्द नहीं निकलते, जो न तो अपने पड़ोसी की
बुराई करता है, और न अपने किसी मित्र की, 4 जिसके लिए याहवेह की दृष्टि
में निकम्मा पुरुष घृणित है, किंतु याहवेह का भय माननेवाले पुरुष सम्मान्य; जो
हर मूल्य पर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करता है, चाहे उसकी हानि ही क्यों न हो; 5
जो ऋण देकर ब्याज नहीं लेता; और निर्दोष के विरुद्ध झूठी गवाही देने के
उद्देश्य से घूस नहीं लेता. इस प्रकार के आचरण का पुरुष सदैव स्थिर रहेगा वह
कभी न डगमगाएगा.

16 दावीद की मिकताम गीत रचना. परमेश्वर, मुझे सुरक्षा प्रदान कीजिए,
क्योंकि मैंने आप में आश्रय लिया है. 2 याहवेह से मैंने कहा, “आप ही
प्रभु हैं; वस्तुतः आपको छोड़ मेरा हित संभव ही नहीं.” 3 पृथ्वी पर आपके
लोग पवित्र महिमामय हैं, “वे ही मेरे सुख एवं आनंद का स्रोत हैं.” 4 वे,
जो अन्य देवताओं के पीछे भागते हैं, उनके क्लेशों में वृद्धि होती जाएगी. मैं
उन देवताओं के लिए न तो रक्त की पेय बलि उंडेलूंगा और न मैं उनका नाम
अपने होंठों पर लाऊंगा. 5 याहवेह, आप मेरा हिस्सा हैं, आप ही मेरा भाग हैं;
आप ही मुझे सुरक्षा प्रदान करते हैं. 6 माप की डोर ने मेरे लिए रमणीय स्थान
निर्धारित किए हैं; निःसंदेह मेरा भाग आकर्षक है. 7 मैं याहवेह को स्तुत्य
कहूंगा, जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया है; रात्रि में भी मेरा अंतःकरण मुझे शिक्षा
देता है. 8 मैंने सदैव ही याहवेह की उपस्थिति का बोध अपने सामने बनाए रखा
है. जब वह नित मेरे दायें पक्ष में रहते हैं, तो भला मैं कैसे लड़खड़ा सकता हूं. 9
इसलिये मेरा हृदय आनंदित और मेरी जीभ मगन हुई; मेरा शरीर भी सुरक्षा में
विश्राम करेगा, 10 क्योंकि आप मेरे प्राण को अधोलोक में सड़ने नहीं छोड़
देंगे, और न अपने मनचाहे प्रिय पात्र को मृत्यु के क्षय में. (Sheol h7585) 11
आप मुझ पर सर्वदा जीवन का मार्ग प्रकाशित करेंगे; आपकी उपस्थिति में परम
आनंद है, आपके दाहिने हाथ में सर्वदा सुख बना रहता है.

17 दावीद की एक प्रार्थना याहवेह, मेरा न्याय संगत, अनुरोध सुनिए; मेरी
पुकार पर ध्यान दीजिए. मेरी प्रार्थना को सुन लीजिए, जो कपटी होंठों
से निकले शब्द नहीं हैं. 2 आपके द्वारा मेरा न्याय किया जाए; आपकी दृष्टि में
वही आए जो धर्ममय है. 3 आप मेरे हृदय को परख चुके हैं, रात्रि में आपने मेरा
ध्यान रखा है, आपने मुझे परखकर निर्दोष पाया है; मैंने यह निश्चय किया है कि
मेरे मुख से कोई अपराध न होगा. 4 मनुष्यों के आचरण के संदर्भ में, ठीक
आपके ही आदेश के अनुरूप मैं हिंसक मनुष्यों के मार्गों से दूर ही दूर रहा हूं.
5 मेरे पांव आपके मार्गों पर दृढ रहें; और मेरे पांव लड़खड़ाए नहीं. 6 मैंने
आपको ही पुकारा है, क्योंकि परमेश्वर, आप मुझे उत्तर देंगे; मेरी ओर कान
लगाकर मेरी बिनती को सुनिए. 7 अपने शत्रुओं के पास से आपके दायें पक्ष में
आए हुए शरणागतों के रक्षक, उन पर अपने करुणा-प्रेम का आश्चर्य प्रदर्शन
कीजिए. 8 अपने आंखों की पुतली के समान मेरी सुरक्षा कीजिए; अपने पंखों
की आड़ में मुझे छिपा लीजिए 9 उन दुष्टों से, जो मुझ पर प्रहार करते रहते हैं,
उन प्राणघातक शत्रुओं से, जिन्होंने मुझे घेर लिया है. 10 उनके हृदय कठोर हो
चुके हैं, उनके शब्द घमंडी हैं. 11 वे मेरा पीछा करते रहे हैं और अब उन्होंने
मुझे घेर लिया है. उनकी आंखें मुझे खोज रही हैं, कि वे मुझे धरती पर पटक दें.
12 वह उस सिंह के समान है जो फाड़ खाने को तत्पर है, उस जवान सिंह
के समान जो घात लगाए छिपा बैठा है. 13 उठिए, याहवेह, उसका सामना

कीजिए, उसे नाश कीजिए; अपनी तलवार के द्वारा दुर्जन से मेरे प्राण बचा
लीजिए, 14 याहवेह, अपने हाथों द्वारा, उन मनुष्यों से, उन सांसारिक मनुष्यों
से जिनका भाग मात्र इसी जीवन में मगन है. उनका पेट आप अपनी निधि से
परिपूर्ण कर देते हैं; संतान पाकर वे प्रसन्‍न हैं, और वे अपनी समृद्धि अपनी संतान
के लिए छोड़ जाते हैं. 15 अपनी धार्मिकता के कारण मैं आपके मुख का दर्शन
करूंगा; जब मैं प्रातः आंखें खोलूं, तो आपके स्वरूप का दर्शन मुझे आनंद से
तृप्‍त कर देगा.

18 संगीत निर्देशक के लिये. याहवेह के सेवक दावीद की रचना. दावीद
ने यह गीत याहवेह के सामने गाया जब याहवेह ने दावीद को उनके
शत्रुओं तथा शाऊल के आक्रमण से बचा लिया था. दावीद ने कहा: याहवेह, मेरे
सामर्थ्य, मैं आपसे प्रेम करता हूं. 2 याहवेह मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरे
छुड़ानेवाले हैं; मेरे परमेश्वर, मेरे लिए चट्टान हैं, जिनमें मैं आसरा लेता हूं, वह
मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, वह मेरा गढ़. 3 मैं दोहाई याहवेह की देता हूं,
सिर्फ वही स्तुति के योग्य हैं, और मैं शत्रुओं से छुटकारा पा लेता हूं. 4 मृत्यु की
लहरों में घिर चुका था; मुझ पर विध्वंस की तेज धारा का वार हो रहा था. 5
अधोलोक के तंतुओं ने मुझे उलझा लिया था; मैं मृत्यु के जाल के आमने-सामने
आ गया था. **(Sheol h7585)** 6 अपनी वेदना में मैंने याहवेह की दोहाई दी; मैंने
अपने ही परमेश्वर को पुकारा. अपने मंदिर में उन्होंने मेरी आवाज सुन ली,
उनके कानों में मेरा रोना जा पड़ा. 7 पृथ्वी झूलकर कांपने लगी, पहाड़ों की
नींव थरथरा उठीं; और कांपने लगी. क्योंकि प्रभु क्रुद्ध थे. 8 उनके नथुनों से
धुआं उठ रहा था; उनके मुख की आग चट करती जा रही थी, उसने कोयलों
को दहका रखा था. 9 उन्होंने आकाशमंडल को झुकाया और उतर आए; उनके
पैरों के नीचे घना अंधकार था. 10 वह करूब पर चढ़कर उड़ गए; वह हवा के
पंखों पर चढ़कर उड़ गये! 11 उन्होंने अंधकार ओढ़ लिया, वह उनका छाता
बन गया, घने-काले वर्षा के मेघ में घिरे हुए. 12 उनकी उपस्थिति के तेज
से मेघ ओलों और बिजलियां के साथ आगे बढ़ रहे थे. 13 स्वर्ग से याहवेह
ने गर्जन की और परम प्रधान ने अपने शब्द सुनाए. 14 उन्होंने बाण छोड़े
और उन्हें बिखरा दिया, बिजलियों ने उनके पैर उखाड़ दिए. 15 याहवेह की
प्रताड़ना से, नथुनों से उनके सांस के झोंके से सागर के जलमार्ग दिखाई देने
लगे; संसार की नींवें खुल गईं. 16 उन्होंने स्वर्ग से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम
लिया; प्रबल जल प्रवाह से उन्होंने मुझे बाहर निकाल लिया. 17 उन्होंने मुझे
मेरे प्रबल शत्रु से मुक्त किया, उनसे, जिन्हें मुझसे घृणा थी, वे मुझसे कहीं
अधिक शक्तिमान थे. 18 संकट के दिन उन्होंने मुझ पर आक्रमण कर दिया था,
किंतु मेरी सहायता याहवेह में मगन थी. 19 वह मुझे खुले स्थान पर ले आए;
मुझसे अपनी प्रसन्‍नता के कारण उन्होंने मुझे छुड़ाया है. 20 मेरी भलाई के
अनुसार ही याहवेह ने मुझे प्रतिफल दिया है; मेरे हाथों की स्वच्छता के अनुसार
उन्होंने मुझे ईनाम दिया है. 21 मैं याहवेह की नीतियों का पालन करता रहा हूं;
मैंने परमेश्वर के विरुद्ध कोई दुराचार नहीं किया है. 22 उनकी सारी नियम
संहिता मेरे सामने बनी रही; उनके नियमों से मैं कभी भी विचलित नहीं हुआ.
23 मैं उनके सामने निर्दोष बना रहा, दोष भाव मुझसे दूर ही दूर रहा. 24 इसलिये
याहवेह ने मुझे मेरी भलाई के अनुसार ही प्रतिफल दिया है, उनकी नज़रों में मेरे
हाथों की शुद्धता के अनुसार. 25 सच्चे लोगों के प्रति आप स्वयं विश्वासयोग्य
साबित होते हैं, निर्दोष व्यक्ति पर आप स्वयं को निर्दोष ही प्रकट करते हैं. 26
वह, जो निर्मल है, उस पर अपनी निर्मलता प्रकट करते हैं, कुटिल व्यक्ति पर
आप अपनी चतुरता प्रगट करते हैं. 27 आप विनम्र को सुरक्षा प्रदान करते हैं,
किंतु आप नीचा उनको कर देते हैं, जिनकी आंखें अहंकार से चढ़ी होती हैं. 28
याहवेह, आप मेरे दीपक को जलाते रहिये, मेरे परमेश्वर, आप मेरे अंधकार को
ज्योतिर्मय कर देते हैं. 29 जब आप मेरी ओर हैं, तो मैं सेना से टक्कर ले सकता
हूं; मेरे परमेश्वर के कारण मैं दीवार तक फांद सकता हूं. 30 यह वह परमेश्वर हैं,
जिनकी नीतियां खरी हैं: ताया हुआ है याहवेह का वचन; अपने सभी शरणागतों
के लिए वह ढाल बन जाते हैं. 31 क्योंकि याहवेह के अलावा कोई परमेश्वर
है? और हमारे परमेश्वर के अलावा कोई चट्टान है? 32 वही परमेश्वर मेरे मजबूत
आसरा हैं; वह निर्दोष व्यक्ति को अपने मार्ग पर चलाते हैं. 33 उन्हीं ने मेरे
पांवों को हिरण के पांवों के समान बना दिया है; ऊंचे स्थानों पर वह मुझे सुरक्षा
देते हैं. 34 वह मेरे हाथों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करते हैं; अब मेरी बांहें कांसे
के धनुष को भी इस्तेमाल कर लेती हैं. 35 आपने मुझे उद्धार की ढाल प्रदान की
है, आपका दायां हाथ मुझे थामे हुए है; आपकी सौम्यता ने मुझे महिमा प्रदान की
है. 36 मेरे पांवों के लिए आपने चौड़ा रास्ता दिया है, इसमें मेरे पगों के लिए
कोई फिसलन नहीं है. 37 मैंने अपने शत्रुओं का पीछा कर उन्हें नाश कर दिया
है; जब तक वे पूरी तरह नाश न हो गए मैं लौटकर नहीं आया. 38 मैंने उन्हें
ऐसा कुचल दिया कि वे पुनः सिर न उठा सकें; वे तो मेरे पैरों में आ गिरे. 39
आपने मुझे युद्ध के लिए आवश्यक शक्ति से भर दिया; आपने उन्हें, जो मेरे विरुद्ध
उठ खड़े हुए थे, मेरे सामने झुका दिया. 40 आपने मेरे शत्रुओं को पीठ दिखाकर
भागने पर विवश कर दिया, वे मेरे विरोधी थे. मैंने उन्हें नष्ट कर दिया. 41
उन्होंने मदद के लिए पुकारा, मगर उनकी रक्षा के लिए कोई भी न आया.
उन्होंने याहवेह की भी दोहाई दी, मगर उन्होंने भी उन्हें उत्तर न दिया. 42 मैंने
उन्हें ऐसा कुचला कि वे पवन में उड़ती धूल से हो गए; मैंने उन्हें मार्ग के कीचड़
के समान अपने पैरों से रौंद डाला. 43 आपने मुझे मेरे सजातियों के द्वारा उठाए
कलह से छुटकारा दिया है; आपने मुझे सारे राष्ट्रों पर सबसे ऊपर बनाए रखा;
अब वे लोग मेरी सेवा कर रहे हैं, जिनसे मैं पूरी तरह अपरिचित हूं. 44 विदेशी
मेरी उपस्थिति में दास की तरह व्यवहार करते आए; जैसे ही उन्हें मेरे विषय में
मालूम हुआ, वे मेरे प्रति आज्ञाकारी हो गए. 45 विदेशियों का मनोबल जाता
रहा; वे कांपते हुए अपने गढ़ों से बाहर आ गए. 46 जीवित हैं याहवेह! धन्य हैं
मेरी चट्टान! मेरे छुटकारे की चट्टान, मेरे परमेश्वर प्रतिष्ठित हों! 47 परमेश्वर,
जिन्होंने मुझे प्रतिफल दिया मेरा बदला लिया, और जनताओं को मेरे अधीन कर
दिया. 48 जो मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करते हैं, आप ही ने मुझे मेरे शत्रुओं के
ऊपर ऊंचा किया है; आप ही ने हिंसक पुरुषों से मेरी रक्षा की है. 49 इसलिये,
याहवेह, मैं राष्ट्रों के सामने आपकी स्तुति करूंगा; आपके नाम का गुणगान
करूंगा. 50 “अपने राजा के लिए वही हैं छुटकारे का खंभा; अपने अभिषिक्त
पर दावीद और उनके वंशजों पर, वह हमेशा अपार प्रेम प्रकट करते रहते हैं.”

19 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. स्वर्ग परमेश्वर की
महिमा को प्रगट करता है; अंतरीक्ष उनकी हस्तकृति का प्रघोषण करता
है. 2 हर एक दिन आगामी दिन से इस विषय में वार्तालाप करता है; हर एक
रात्रि आगामी रात्रि को ज्ञान की शक्ति प्रगट करती है. 3 इस प्रक्रिया में न तो
कोई बोली है, न ही कोई शब्द; यहां तक कि इसमें कोई आवाज़ भी नहीं है. 4
इनका स्वर संपूर्ण पृथ्वी पर गूंजता रहता है, इनका संदेश पृथ्वी के छोर तक जा
पहुंचता है. परमेश्वर ने स्वर्ग में सूर्य के लिए एक मंडप तैयार किया है. 5 और
सूर्य एक वर के समान है, जो अपने मंडप से बाहर आ रहा है, एक बड़े शूरवीर
के समान, जिसके लिए दौड़ एक आनन्दप्रदायी कृत्य है. 6 वह आकाश के एक
सिरे से उदय होता है, तथा दूसरे सिरे तक चक्कर मारता है; उसके ताप से कुछ
भी छुपा नहीं रहता. 7 संपूर्ण है याहवेह की व्यवस्था, जो आत्मा की संजीवनी
है. विश्वासयोग्य हैं याहवेह के अधिनियम, जो साधारण लोगों को बुद्धिमान
बनाते हैं. 8 धर्ममय हैं याहवेह के नीति सूत्र, जो हृदय का उल्लास हैं. शुद्ध हैं
याहवेह के आदेश, जो आंखों में ज्योति ले आते हैं. 9 निर्मल है याहवेह की
श्रद्धा, जो अमर है. सत्य हैं याहवेह के नियम, जो पूर्णतः धर्ममय हैं. 10 वे स्वर्ण
से भी अधिक मूल्यवान हैं, हां, उत्तम कुन्दन से भी अधिक, वे मधु से अधिक

मधुर हैं, हां, मधुछत्ते से टपकते मधु से भी अधिक मधुर. 11 इन्हीं के द्वारा
आपके सेवक को चेतावनी मिलती हैं; इनके पालन करने से बड़ा प्रतिफल प्राप्त
होता है. 12 अपनी भूल-चूक का ज्ञान किसे होता है? अज्ञानता में किए गए मेरे
पापों को क्षमा कर दीजिए. 13 अपने सेवक को ढिठाई के पाप करने से रोके
रहिए; वे मुझे अधीन करने न पाएं. तब मैं निरपराध बना रहूंगा, मैं बड़े अपराधों
का दोषी न रहूंगा. 14 याहवेह, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारक, मेरे मुख का वचन
तथा मेरे हृदय का चिंतन आपको स्वीकार्य हो.

20 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. संकट के समय याहवेह
आपकी प्रार्थना का उत्तर दें; याकोब के परमेश्वर में आपकी सुरक्षा हो.
2 वह अपने पवित्र आवास में से आपके लिए सहायता प्रदान करें, ज़ियोन से
आपकी सहायता का प्रबंध हो. 3 परमेश्वर आपकी समस्त बलियों का स्मरण
रखें, आपकी अग्निबलि उन्हें स्वीकार्य हो. 4 वह आपके हृदय का मनोरथ
पूर्ण करें, आपकी समस्त योजनाएं सफल हों! 5 आपके उद्धार होने पर हम
हर्षोल्लास में जय जयकार करेंगे, तथा अपने परमेश्वर के नाम में ध्वजा ऊंची
करेंगे. हमारी कामना है कि याहवेह आपकी सारी प्रार्थनाएं सुनकर उन्हें पूर्ण
करें. 6 अब मुझे यह आश्वासन प्राप्त हो गया है: कि याहवेह अपने अभिषिक्त
को सुरक्षा प्रदान करते हैं. वह अपने पवित्र स्वर्ग से अपनी भुजा के सुरक्षा
देनेवाले सामर्थ्य के द्वारा उन्हें प्रत्युत्तर देते हैं. 7 कुछ को रथों का, तो कुछ को
अपने घोड़ों पर भरोसा हैं, किंतु हमें भरोसा है याहवेह, हमारे परमेश्वर के नाम
पर. 8 वे लड़खड़ाते हैं और उनका पतन हो जाता है, किंतु हमारा जय होता है
और हम स्थिर रहते हैं. 9 याहवेह, महाराजा को विजय प्रदान करें! हम जब भी
पुकारें, हमें प्रत्युत्तर दें!

21 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, आपकी शक्ति
पर राजा हर्षित है. आपके द्वारा प्रदान किये गये उद्धार से राजा का
हर्षातिरेक देखते ही बनता है! 2 आपने उसके हृदय का मनोरथ पूर्ण किया है,
आपने उसके अनुरोध को पूर्ण करने में अस्वीकार नहीं किया. 3 आपने उत्कृष्ट
आशीषों के साथ उसका स्वागत किया है, आपने उसके सिर को कुन्दन के
मुकुट से सुशोभित किया है. 4 राजा ने आपसे जीवन की प्रार्थना की, आपने उसे
जीवनदान किया— हां, सदैव का जीवन. 5 आपके द्वारा दिए गये विजय से
राजा की महिमा ऊंची हुई है; आपने उसे ऐश्वर्य एवं तेज से विभूषित किया है. 6
निःसंदेह आपने उसे सर्वदा के लिये आशीषें प्रदान की हैं, अपनी उपस्थिति के
आनंद से आपने उसे उल्लसित किया है. 7 यह इसलिये कि महाराज का भरोसा
याहवेह पर है; सर्वोच्च परमेश्वर की करुणा, प्रेम के कारण राजा अटल रहेगा.
8 आप समस्त शत्रुओं को ढूंढ निकालेंगे; आपका बाहुबल उन सभी को कैद कर
लाएगा, जो आपसे घृणा करते हैं. 9 आपके प्रकट होने पर, वे सभी जलते भट्टी
में जल जाएंगे. अपने कोप में याहवेह उन्हें निगल जाएगा, उनकी अग्नि उन्हें
भस्म कर देगी. 10 आप उनकी सन्तति को पृथ्वी से मिटा देंगे, उनके वंशज
मनुष्यों के मध्य नहीं रह जाएंगे. 11 यद्यपि आपके विरुद्ध उनकी योजना बुराई
करने की है तथा वे युक्ति भी रचेंगे, वे सफल न हो पाएंगे. 12 क्योंकि जब
आप धनुष से उन पर निशाना लगाएंगे, आपके कारण वे पीठ दिखाकर भाग
खड़े होंगे. 13 अपनी शक्ति में, याहवेह, आप ऊंचे होते जाएं; हम आपके
सामर्थ्य का गुणगान करेंगे.

22 संगीत निर्देशक के लिये. "सबेरे की हिरणी" धुन पर आधारित. दावीद
का एक स्तोत्र. मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, क्यों आपने मेरा परित्याग
कर दिया? मुझे मुक्त करने में इतना विलंब क्यों हो रहा है? क्यों मेरे कराहने का
स्वर आप सुन नहीं पा रहे? 2 मेरे परमेश्वर, मैं दिन में पुकारता हूं पर आप उत्तर
नहीं देते, रात्रि में भी मुझे शांति प्राप्त नहीं हो पाती. 3 जबकि पवित्र हैं आप;
जो इस्राएल के स्तवन पर विराजमान हैं. 4 हमारे पूर्वजों ने आप पर भरोसा
किया; उन्होंने आप पर भरोसा किया और आपने उनका उद्धार किया. 5 उन्होंने
आपको पुकारा और आपने उनका उद्धार किया; आप में उनके विश्वास ने उन्हें
लज्जित होने न दिया. 6 अब मैं मनुष्य नहीं, कीड़ा मात्र रह गया हूं, मनुष्यों के
लिए लज्जित, जनसाधारण के लिए अपमानित. 7 वे सभी, जो मुझे देखते हैं,
मेरा उपहास करते हैं; वे मेरा अपमान करते हुए सिर हिलाते हुए कहते हैं, 8
"उसने याहवेह में भरोसा किया है, याहवेह ही उसे मुक्त कराएं. वही उसे बचाएं,
क्योंकि वह याहवेह में ही मगन रहता है." 9 आप ही हैं, जिन्होंने मुझे गर्भ से
सुरक्षित निकाला; जब मैं अपनी माता की गोद में ही था, आपने मुझमें अपने
प्रति विश्वास जगाया. 10 जन्म के समय से ही मुझे आपकी सुरक्षा में छोड़ दिया
गया; आप उस क्षण से मेरे परमेश्वर हैं, जिस क्षण से मैं माता के गर्भ में आया.
11 प्रभु, मुझसे दूर न रहें, क्योंकि संकट निकट दिखाई दे रहा है और मेरा
सहायक कोई नहीं. 12 अनेक सांड मुझे घेरे हुए हैं; बाशान के सशक्त सांडों ने
मुझे घेर रखा है. 13 उन्होंने अपने मुंह ऐसे फाड़ रखे हैं जैसे गरजनेवाले हिंसक
सिंह अपने शिकार को देख मुख फाड़ते हैं. 14 मुझे जल के समान उंडेल दिया
गया है, मेरी हड्डियां जोड़ों से उखड़ गई हैं. मेरा हृदय मोम समान हो चुका है;
वह भी मेरे भीतर ही भीतर पिघल चुका है. 15 मेरा मुंह ठीकरे जैसा शुष्क हो
चुका है, मेरी जीभ तालू से चिपक गई है; आपने मुझे मृत्यु की मिट्टी में छोड़
दिया है. 16 कुत्ते मुझे घेरकर खड़े हुए हैं, दुष्टों का समूह मेरे चारों ओर खड़ा
हुआ है; उन्होंने मेरे हाथ और पांव छेद दिए हैं. 17 अब मैं अपनी एक-एक हड्डी
गिन सकता हूं; लोग मुझे ताकते हुए मुझ पर कुदृष्टि डालते हैं. 18 उन्होंने
मेरा बाहरी कपड़ा आपस में बांट लिया, और मेरे अंदर के वस्त्र के लिए पासा
फेंका. 19 किंतु, याहवेह, आप मुझसे दूर न रहें. आप मेरी शक्ति के स्रोत हैं;
मेरी सहायता के लिए देर मत लगाइए. 20 तलवार के प्रहार से तथा कुत्तों के
आक्रमण से, मेरे जीवन की रक्षा करें. 21 सिंहों के मुंह से तथा वन्य सांडों के
सींगों से, मेरी रक्षा करें. 22 तब मैं स्वजनों में आपकी महिमा का प्रचार करूंगा;
सभा में मैं आपका स्तवन करूंगा. 23 याहवेह के श्रद्धालुओ, उनका स्तवन करो!
याकोब के वंशजो, उनका सम्मान करो! समस्त इस्राएल वंशजो, उनकी वंदना
करो! 24 क्योंकि याहवेह ने दुःखितों की शोचनीय, करुण स्थिति को न तो
तुच्छ जाना और न ही उससे घृणा की. वह पीड़ितों की यातनाएं देखकर उनसे
दूर न हुए, परंतु उन्होंने उनकी सहायता के लिए उनकी वाणी सुनी. 25 महासभा
में आपके गुणगान के लिए मेरे प्रेरणास्रोत आप ही हैं; आपके श्रद्धालुओं के सामने
मैं अपने प्रण पूर्ण करूंगा. 26 नम्र पुरुष भोजन कर तृप्त हो जाएगा; जो याहवेह
के खोजी हैं, वे उनका स्तवन करेंगे. सर्वदा सजीव रहे तुम्हारा हृदय! 27 पृथ्वी
की छोर तक सभी मनुष्य याहवेह को स्मरण कर उनकी ओर उन्मुख होंगे, राष्ट्रों
के समस्त परिवार उनके सामने नतमस्तक होंगे. 28 क्योंकि राज्य याहवेह ही
का है, समस्त राष्ट्रों के अधिपति वही हैं. 29 खा-पीकर पृथ्वी के समस्त हृष्ट-
पुष्ट उनके सामने नतमस्तक हो उनकी वंदना करेंगे; सभी नश्वर मनुष्य उनके
सामने घुटने टेक देंगे, जो अपने ही प्राण जीवित रख नहीं सकते. 30 यह संपूर्ण
पीढ़ी उनकी सेवा करेगी; भावी पीढ़ी को प्रभु के विषय में बताया जाएगा. 31 वे
परमेश्वर की धार्मिकता तथा उनके द्वारा किए गए महाकार्य की घोषणा उस पीढ़ी
के सामने करेंगे, जो अभी अजन्मी ही है.

23 दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह मेरे चरवाहा हैं, मुझे कोई घटी न होगी.
2 वह मुझे हरी-हरी चराइयों में विश्रान्ति प्रदान करते हैं, वह मुझे शांत
स्फूर्ति देनेवाली जलधाराओं के निकट ले जाते हैं. 3 वह मेरे प्राण में नवजीवन
का संचार करते हैं. वह अपनी ही महिमा के निमित्त मुझे धर्म के मार्ग पर लिए
चलते हैं. 4 यद्यपि मैं भयानक अंधकारमय घाटी में से होकर आगे बढ़ता हूं,
तौभी मैं किसी बुराई से भयभीत नहीं होता, क्योंकि आप मेरे साथ होते हैं,

आपकी लाठी और आपकी छड़ी, मेरे आश्वासन हैं. 5 आप मेरे शत्रुओं के
सामने मेरे लिए उत्कृष्ट भोजन परोसते हैं. आप तेल से मेरे सिर को मला करते हैं;
मेरा प्याला उमड़ रहा है. 6 निश्चयतः कुशल मंगल और करुणा-प्रेम आजीवन
मेरे साथ साथ बने रहेंगे, और मैं सदा-सर्वदा याहवेह के आवास में, निवास करता
रहूंगा.

24 दावीद की रचना. एक स्तोत्र. पृथ्वी और पृथ्वी में जो कुछ भी है, सभी
कुछ याहवेह का ही है. संसार और वे सभी, जो इसमें निवास करते
हैं, उन्हीं के हैं; 2 क्योंकि उन्हीं ने महासागर पर इसकी नींव रखी तथा
जलप्रवाहों पर इसे स्थिर किया. 3 कौन चढ़ सकेगा याहवेह के पर्वत पर? कौन
खड़ा रह सकेगा उनके पवित्र स्थान में? 4 वही, जिसके हाथ निर्मल और हृदय
शुद्ध है, जो मूर्तियों पर भरोसा नही रखता, जो झूठी शपथ नहीं करता. 5 उस
पर याहवेह की आशीष स्थायी रहेगी. परमेश्वर, उसका छुड़ाने वाला, उसे धर्मी
घोषित करेंगे. 6 यही है वह पीढ़ी, जो याहवेह की कृपादृष्टि खोजने वाली, जो
आपके दर्शन की अभिलाषी है, हे याकोब के परमेश्वर! 7 प्रवेश द्वारो, ऊंचे करो
अपने मस्तक; प्राचीन किवाड़ो, ऊंचे हो जाओ, कि महातेजस्वी महाराज प्रवेश
कर सकें. 8 यह महातेजस्वी राजा हैं कौन? याहवेह, तेजी और समर्थ, याहवेह,
युद्ध में पराक्रमी. 9 प्रवेश द्वारों, ऊंचा करो अपने मस्तक; प्राचीन किवाड़ों, ऊंचे
हो जाओ, कि महातेजस्वी महाराज प्रवेश कर सकें. 10 यह महातेजस्वी राजा
कौन है? सर्वशक्तिमान याहवेह! वही हैं महातेजस्वी महाराजा.

25 दावीद की रचना. याहवेह, मैंने आप पर अपनी आत्मा समर्पित की
है. 2 मेरे परमेश्वर, मैंने आप पर भरोसा किया है; मुझे लज्जित होने न
दीजिए, और न मेरे शत्रु मेरा पीछा करने पाएं. 3 कोई भी, जिसने आप पर
अपनी आशा रखी है लज्जित कदापि नहीं किया जा सकता, लज्जित वे किए
जाएंगे, जो विश्वासघात करते हैं. 4 याहवेह, मुझे अपने मार्ग दिखा, मुझे अपने
मार्गों की शिक्षा दीजिए. 5 अपने सत्य की ओर मेरी अगुवाई कीजिए और मुझे
शिक्षा दीजिए, क्योंकि आप मेरे छुड़ानेवाले परमेश्वर हैं, दिन भर मैं आपकी ही
प्रतीक्षा करता रहता हूं. 6 याहवेह, अपनी असीम दया तथा अपने करुणा-प्रेम
का स्मरण कीजिए, जो अनंत काल से होते आए हैं. 7 युवावस्था में किए गए
मेरे अपराधों का तथा मेरे हठीले आचरण का लेखा न रखिए; परंतु, याहवेह,
अपनी करुणा में मेरा स्मरण रखिए, क्योंकि याहवेह, आप भले हैं! 8 याहवेह
भले एवं सत्य हैं, तब वह पापियों को अपनी नीतियों की शिक्षा देते हैं. 9
विनीत को वह धर्ममय मार्ग पर ले चलते हैं, तथा उसे अपने मार्ग की शिक्षा देते
हैं. 10 जो याहवेह की वाचा एवं व्यवस्था का पालन करते हैं, उनके सभी मार्ग
उनके लिए प्रेमपूर्ण एवं विश्वासयोग्य हैं. 11 याहवेह, अपनी महिमा के निमित्त,
मेरा अपराध क्षमा करें, यद्यपि मेरा अपराध घोर है. 12 तब कौन है वह मनुष्य,
जो याहवेह से डरता है? याहवेह उस पर वह मार्ग प्रकट करेंगे, जिस पर उसका
चलना भला है. 13 तब समृद्ध होगा उसका जीवन, और उसकी सन्तति उस देश
पर शासन करेगी. 14 अपने श्रद्धालुओं पर ही याहवेह अपने रहस्य प्रकाशित
करते हैं; उन्हीं पर वह अपनी वाचा प्रगट करते हैं. 15 मेरी आंखें एकटक
याहवेह को देख रहीं हैं, क्योंकि वही मेरे पैरों को फंदे से मुक्त करेंगे. 16 हे
याहवेह, मेरी ओर मुड़कर मुझ पर कृपादृष्टि कीजिए, क्योंकि मैं अकेला तथा
पीडित हूं. 17 मेरे हृदय का संताप बढ़ गया है, मुझे मेरी यातनाओं से बचा
लीजिए. 18 मेरी पीड़ा और यातना पर दृष्टि कीजिए, और मेरे समस्त पाप क्षमा
कर दीजिए. 19 देखिए, मेरे शत्रुओं की संख्या कितनी बड़ी है, यह भी देखिए
कि मेरे प्रति कितनी उग्र है उनकी घृणा! 20 मेरे जीवन की रक्षा कीजिए और
मुझे बचा लीजिए; मुझे लज्जित न होना पड़े, क्योंकि मैं आपके आश्रय में आया
हूं. 21 खराई तथा सच्चाई मुझे सुरक्षित रखें, क्योंकि मैंने आप पर ही भरोसा
किया है. 22 हे परमेश्वर, इस्राएल को बचा लीजिए, समस्त संकटों से इस्राएल
को मुक्त कीजिए!

26 दावीद की रचना. याहवेह, मुझे निर्दोष प्रमाणित कीजिए, क्योंकि मैं
सीधा हूं; याहवेह पर से मेरा भरोसा कभी नहीं डगमगाया. 2 याहवेह,
मुझे परख लीजिए, मेरा परीक्षण कर लीजिए, मेरे हृदय और मेरे मन को परख
लीजिए; 3 आपके करुणा-प्रेम का बोध मुझमें सदैव बना रहता है, आपकी
सत्यता मेरे मार्ग का आश्वासन है. 4 मैं न तो निकम्मी चाल चलने वालों की
संगत करता हूं, और न मैं कपटियों से सहमत होता हूं. 5 कुकर्मियों की समस्त
सभाएं मेरे लिए घृणित हैं और मैं दुष्टों की संगत में नहीं बैठता. 6 मैं अपने हाथ
धोकर निर्दोषता प्रमाणित करूंगा और याहवेह, मैं आपकी वेदी की परिक्रमा
करूंगा, 7 कि मैं उच्च स्वर में आपके प्रति आभार व्यक्त कर सकूं और आपके
आश्चर्य कार्यों को बता सकूं. 8 याहवेह, मुझे आपके आवास, पवित्र मंदिर से
प्रेम है, यही वह स्थान है, जहां आपकी महिमा का निवास है. 9 पापियों की
नियति में मुझे सम्मिलित न कीजिए, हिंसक पुरुषों के साथ मुझे दंड न दीजिए.
10 उनके हाथों में दुष्ट युक्ति है, जिनके दायें हाथ घूस से भरे हुए हैं. 11 किंतु मैं
अपने आचरण में सदैव खरा रहूंगा; मुझ पर कृपा कर मुझे मुक्त कर दीजिए. 12
मेरे पैर चौरस भूमि पर स्थिर हैं; श्रद्धालुओं की महासभा में मैं याहवेह की वंदना
करूंगा.

27 दावीद की रचना. याहवेह मेरी ज्योति और उद्धार हैं; मुझे किसका भय
हो सकता है? याहवेह मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ हैं, तो मुझे किसका भय?
2 जब दुर्जन मुझे निगलने के लिए मुझ पर आक्रमण करते हैं, जब मेरे विरोधी
तथा मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध उठ खड़े होते हैं, वे ठोकर खाकर गिर जाते हैं. 3 यदि
एक सेना भी मुझे घेर ले, तब भी मेरा हृदय भयभीत न होगा; यदि मेरे विरुद्ध युद्ध
भी छिड़ जाए, तब भी मैं पूर्णतः निश्चिंत बना रहूंगा. 4 याहवेह से मैंने एक ही
प्रार्थना की है, यही मेरी आकांक्षा है: मैं आजीवन याहवेह के आवास में निवास
कर सकूं, कि याहवेह के सौंदर्य को देखता रहूं और उनके मंदिर में मनन करता
रहूं. 5 क्योंकि वही हैं जो संकट काल में मुझे आश्रय देंगे; वही मुझे अपने
गुप्त-मंडप के आश्रय में छिपा लेंगे और एक उच्च चट्टान में मुझे सुरक्षा प्रदान
करेंगे. 6 तब जिन शत्रुओं ने मुझे घेरा हुआ है, उनके सामने मेरा मस्तक ऊंचा हो
जाएगा. तब उच्च हर्षोल्लास के साथ मैं याहवेह के गुप्त-मंडप में बलि अर्पित
करूंगा; मैं गाऊंगा, हां, मैं याहवेह की वंदना करूंगा. 7 याहवेह, मेरी वाणी
सुनिए; मुझ पर कृपा कर मुझे उत्तर दीजिए. 8 आपने कहा, "मेरे खोजी बनो!"
मेरा हृदय आपसे यह कहता है, याहवेह, मैं आपका ही खोजी बनूंगा. 9 मुझसे
अपना मुखमंडल न छिपाइए, क्रोध में अपने सेवक को दूर न कीजिए; आप ही
मेरे सहायक रहे हैं. मेरे परमेश्वर, मेरे उद्धारक मुझे अस्वीकार न कीजिए और न
मेरा परित्याग कीजिए. 10 मेरे माता-पिता भले ही मेरा परित्याग कर दें, किंतु
याहवेह मुझे स्वीकार कर लेंगे. 11 याहवेह, मुझे अपने आचरण की शिक्षा दें;
मेरे शत्रुओं के मध्य सुरक्षित मार्ग पर मेरी अगुवाई करें. 12 मुझे मेरे शत्रुओं की
इच्छापूर्ति का साधन होने के लिए न छोड़ दें, मेरे विरुद्ध झूठे साक्ष्य उठ खड़े हुए
हैं, वे सभी हिंसा पर उतारू हैं. 13 मुझे यह पूर्ण निश्चय है: कि मैं इसी जीवन में,
याहवेह की कृपादृष्टि का अनुभव करूंगा. 14 याहवेह में अपनी आशा स्थिर
रखो; दृढ़ रहकर साहसी बनो, हां, याहवेह पर भरोसा रखो.

28 दावीद की रचना याहवेह, मैं आपको पुकार रहा हूं; आप मेरी सुरक्षा
की चट्टान हैं, मेरी अनसुनी न कीजिए. कहीं ऐसा न हो कि आपके
प्रत्युत्तर न देने पर मैं उनके समान हो जाऊं, जो मृतक लोक में उतर रहे हैं.
2 जब मैं परम पवित्र स्थान की ओर अपने हाथ उठाऊं, जब मैं सहायता के
लिए आपको पुकारूं, तो मेरी पुकार सुन लीजिए. 3 दुष्टों के लिए निर्धारित

दंड में मुझे सम्मिलित न कीजिए, वे अधर्म करते रहते हैं, पडोसियों के साथ
उनका वार्तालाप अत्यंत मेल-मिलाप का होता है किंतु उनके हृदय में उनके लिए
बुराई की युक्तियां ही उपजती रहती हैं. 4 उन्हें उनके आचरण के अनुकूल ही
प्रतिफल दीजिए, उन्होंने जो कुछ किया है बुराई की है; उन्हें उनके सभी कार्यों
के अनुरूप दंड दीजिए, उन्हें वही दंड दीजिए, जिसके वे अधिकारी हैं. 5
क्योंकि याहवेह के महाकार्य का, याहवेह की कृतियों के लिए ही, उनकी दृष्टि
में कोई महत्व नहीं! याहवेह उन्हें नष्ट कर देंगे, इस रीति से कि वे कभी उठ न
पाएंगे. 6 याहवेह का स्तवन हो, उन्होंने सहायता के लिए मेरी पुकार सुन ली
है. 7 याहवेह मेरा बल एवं मेरी ढाल हैं; उन पर ही मेरा भरोसा है, उन्होंने
मेरी सहायता की है. मेरा हृदय हर्षोल्लास में उछल रहा है, मैं अपने गीत के
द्वारा उनके लिए आभार व्यक्त करूंगा. 8 याहवेह अपनी प्रजा का बल हैं,
अपने अभिषिक्त के लिए उद्धार का दृढ़ गढ़ हैं. 9 आप अपनी मीरास को उद्धार
प्रदान कीजिए और उसे आशीष दीजिए; उनके चरवाहा होकर उन्हें सदा-सर्वदा
संभालते रहिए.

29 दावीद का एक स्तोत्र. स्वर्गदूत, याहवेह की महिमा करो, उनके तेज
तथा सामर्थ्य की महिमा करो. 2 याहवेह को उनके नाम के अनुरूप
महिमा प्रदान करो; उनकी पवित्रता की भव्यता में याहवेह की आराधना करो. 3
महासागर की सतह पर याहवेह का स्वर प्रतिध्वनित होता है; महिमामय परमेश्वर
का स्वर गर्जन समान है, याहवेह प्रबल लहरों के ऊपर गर्जन करते हैं. 4
शक्तिशाली है याहवेह का स्वर; भव्य है याहवेह का स्वर. 5 याहवेह का स्वर
देवदार वृक्ष को उखाड़ फेंकता है; याहवेह लबानोन के देवदार वृक्षों को टुकड़े-
टुकड़े कर डालते हैं. 6 याहवेह लबानोन को बछड़े जैसे उछलने, तथा हर्मोन
को वन्य सांड जैसे, उछलने के लिए प्रेरित करते हैं. 7 याहवेह के स्वर का
प्रहार, बिजलियों के समान होता है. 8 याहवेह का स्वर वन को हिला देता है;
याहवेह कादेश के बंजर भूमि को हिला देते हैं. 9 याहवेह के स्वर से हिरणियों
का गर्भपात हो जाता है; उनके स्वर से बंजर भूमि में पतझड़ हो जाता है. तब
उनके मंदिर में सभी पुकार उठते हैं, "याहवेह की महिमा ही महिमा!" 10 ढेर
जल राशि पर याहवेह का सिंहासन बसा है; सर्वदा महाराजा होकर वह सिंहासन
पर विराजमान हैं. 11 याहवेह अपनी प्रजा को बल प्रदान करते हैं; याहवेह
अपनी प्रजा को शांति की आशीष प्रदान करते हैं.

30 एक स्तोत्र. मंदिर के समर्पणोत्सव के लिए एक गीत, दावीद की रचना.
याहवेह, मैं आपकी महिमा और प्रशंसा करूंगा, क्योंकि आपने मुझे
गहराई में से बचा लिया है अब मेरे शत्रुओं को मुझ पर हंसने का संतोष प्राप्त न
हो सकेगा. 2 याहवेह, मेरे परमेश्वर, मैंने सहायता के लिए आपको पुकारा,
आपने मुझे पुनःस्वस्थ कर दिया. 3 याहवेह, आपने मुझे अधोलोक से ऊपर
खींच लिया; आपने मुझे जीवनदान दिया, उनमें से बचा लिया, जो अधोलोक-
कब्र में हैं. **(Sheol h7585)** 4 याहवेह के भक्तो, उनके स्तवन गान गाओ; उनकी
महिमा में जय जयकार करो. 5 क्योंकि क्षण मात्र का होता है उनका कोप, किंतु
आजीवन स्थायी रहती है उनकी कृपादृष्टि; यह संभव है रोना रात भर रहे, किंतु
सबेरा उल्लास से भरा होता है. 6 अपनी समृद्धि की स्थिति में मैं कह उठा,
"अब मुझ पर विषमता की स्थिति कभी न आएगी." 7 याहवेह, आपने ही मुझ
पर कृपादृष्टि कर, मुझे पर्वत समान स्थिर कर दिया; किंतु जब आपने मुझसे
अपना मुख छिपा लिया, तब मैं निराश हो गया. 8 याहवेह, मैंने आपको पुकारा;
मेरे प्रभु, मैंने आपसे कृपा की प्रार्थना की: 9 "क्या लाभ होगा मेरी मृत्यु से, मेरे
अधोलोक में जाने से? क्या मिट्टी आपकी स्तुति करेगी? क्या वह आपकी
सच्चाई की साक्ष्य देगी? 10 याहवेह, मेरी विनती सुनिए, मुझ पर कृपा कीजिए;
याहवेह, मेरी सहायता कीजिए." 11 आपने मेरे विलाप को उल्लास-नृत्य में
बदल दिया; आपने मेरे शोक-वस्त्र टाट उतारकर मुझे हर्ष का आवरण दे दिया,
12 कि मेरा हृदय सदा आपका गुणगान करता रहे और कभी चुप न रहे. याहवेह,
मेरे परमेश्वर, मैं सदा-सर्वदा आपके प्रति आभार व्यक्त करता रहूंगा.

31 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, मैंने आप में
ही शरण ली है; मुझे कभी लज्जित न होने दीजिए; अपनी धार्मिकता के
कारण हे परमेश्वर, मेरा बचाव कीजिए. 2 मेरी पुकार सुनकर, तुरंत मुझे छुड़ा
लीजिए; मेरी आश्रय-चट्टान होकर मेरे उद्धार का, दृढ गढ़ बनकर मेरी रक्षा
कीजिए. 3 इसलिये कि आप मेरी चट्टान और मेरा गढ़ हैं, अपनी ही महिमा के
निमित्त मेरे मार्ग में अगुवाई एवं संचालन कीजिए. 4 मुझे उस जाल से बचा
लीजिए जो मेरे लिए बिछाया गया है, क्योंकि आप ही मेरा आश्रय-स्थल हैं. 5
अपनी आत्मा मैं आपके हाथों में सौंप रहा हूं; याहवेह, सत्य के परमेश्वर,
आपने ही मुझे मुक्त किया है. 6 मुझे घृणा है व्यर्थ प्रतिमाओं के उपासकों
से; किंतु मेरी, आस्था है याहवेह में. 7 मैं हर्षित होकर आपके करुणा-प्रेम में
उल्लसित होऊंगा, आपने मेरी पीड़ा पर ध्यान दिया और मेरे प्राण की वेदना को
पहचाना है. 8 आपने मुझे शत्रु के हाथों में नहीं सौंपा और आपने मेरे पैरों को
एक विशाल स्थान पर स्थापित किया है. 9 याहवेह, मुझ पर अनुग्रह कीजिए, मैं
इस समय संकट में हूं; शोक से मेरी आंखें धुंधली पड़ चुकी हैं, मेरे प्राण तथा
मेरी देह भी शिथिल हो चुकी है. 10 वेदना में मेरा जीवन समाप्त हुआ जा रहा
है; आहें भरते-भरते मेरी आयु नष्ट हो रही है; अपराधों ने मेरी शक्ति को खत्म
कर दिया है, मेरी हड्डियां तक जीर्ण हो चुकी हैं. 11 विरोधियों के कारण, मैं
अपने पड़ोसियों के सामने घृणास्पद बन गया हूं, मैं अपने परिचितों के सामने
भयास्पद बन गया हूं, सड़क पर मुझे देख वे छिपने लगते हैं. 12 उन्होंने मुझे
ऐसे भुला दिया है मानो मैं एक मृत पुरुष हूं; मैं वैसा ही व्यर्थ हो गया हूं जैसे एक
टूटा पात्र. 13 अनेकों का फुसफुस करना मैं सुन रहा हूं; "आतंक ने मुझे चारों
ओर से घेर लिया है!" वे मेरे विरुद्ध सम्मति रच रहे हैं, वे मेरे प्राण लेने के लिए
तैयार हो गए हैं. 14 किंतु याहवेह, मैंने आप पर भरोसा रखा है; यह मेरी साक्षी
है, "आप ही मेरे परमेश्वर हैं." 15 मेरा जीवन आपके ही हाथों में है; मुझे मेरे
शत्रुओं से छुड़ा लीजिए, उन सबसे मेरी रक्षा कीजिए, जो मेरा पीछा कर रहे हैं.
16 अपने मुखमंडल का प्रकाश अपने सेवक पर चमकाईए; अपने करुणा-प्रेम के
कारण मेरा उद्धार कीजिए. 17 याहवेह, मुझे लज्जित न होना पड़े, मैं बार-बार
आपको पुकारता रहा हूं; लज्जित हों दुष्ट और अधोलोक हो उनकी नियति,
जहां जाकर वे चुपचाप हो जाएं. **(Sheol h7585)** 18 उनके झूठ भाषी ओंठ मूक
हो जाएं, क्योंकि वे घृणा एवं घमण्ड से प्रेरित हो, धर्मियों के विरुद्ध अहंकार
करते रहते हैं. 19 कैसी महान है आपकी भलाई, जो आपने अपने श्रद्धालुओं के
निमित्त आरक्षित रखी है, जो आपने अपने शरणागतों के लिए सार्वजनिक रूप से
प्रदर्शित की है. 20 अपनी उपस्थिति के आश्रय-स्थल में आप उन्हें मनुष्यों के
षड्यंत्रों से सुरक्षा प्रदान करते हैं; अपने आवास में आप उन्हें शत्रुओं के झगड़ालू
जीभ से सुरक्षा प्रदान करते हैं. 21 स्तुत्य हैं, याहवेह! जब शत्रुओं ने मुझे घेर
लिया था, उन्होंने मुझ पर अपना करुणा-प्रेम प्रदर्शित किया. 22 घबराहट में मैं
कह उठा था, "मैं आपकी दृष्टि से दूर हो चुका हूं!" किंतु जब मैंने सहायता के
लिए आपको आवाज दी तब आपने मेरी पुकार सुन ली. 23 याहवेह के सभी
भक्तो, उनसे प्रेम करो! सच्चे लोगों को याहवेह सुरक्षा प्रदान करते हैं, किंतु
अहंकारी को पूरा-पूरा दंड. 24 तुम सभी, जिन्होंने याहवेह पर भरोसा रखा है,
दृढ़ रहते हुए साहसी बनो.

32 दावीद की मसकील गीत रचना धन्य हैं वे, जिनके अपराध क्षमा कर
दिए गए, जिनके पापों को ढांप दिया गया है. 2 धन्य है वह व्यक्ति,
जिसके पापों का हिसाब याहवेह कभी न लेंगे. तथा जिसके हृदय में कोई कपट

नहीं है. 3 जब तक मैंने अपना पाप छिपाए रखा, दिन भर कराहते रहने के
कारण, मेरी हड्डियां क्षीण होती चली गईं, 4 क्योंकि दिन-रात आपका हाथ मुझ
पर भारी था; मेरा बल मानो ग्रीष्मकाल की ताप से सूख गया. 5 तब मैंने अपना
पाप अंगीकार किया, मैंने अपना अपराध नहीं छिपाया. मैंने निश्चय किया, "मैं
याहवेह के सामने अपने अपराध स्वीकार करूंगा." जब मैंने आपके सामने
अपना पाप स्वीकार किया तब आपने मेरे अपराध का दोष क्षमा किया. 6
इसलिये आपके सभी श्रद्धालु, जब तक संभव है आपसे प्रार्थना करते रहें. तब,
जब संकट का प्रबल जल प्रवाह आएगा, वह उनको स्पर्श न कर सकेगा. 7
आप मेरे आश्रय-स्थल हैं; आप ही मुझे संकट से बचाएंगे और मुझे उद्धार के
विजय घोष से घेर लेंगे. 8 याहवेह ने कहा, मैं तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करूंगा तथा
उपयुक्त मार्ग के लिए तुम्हारी अगुवाई करूंगा; मैं तुम्हें सम्मति दूंगा और तुम्हारी
रक्षा करता रहूंगा. 9 तुम्हारी मनोवृत्ति न तो घोड़े समान हो, न खच्चर समान,
जिनमें समझ ही नहीं होती. उन्हें तो रास और लगाम द्वारा नियंत्रित करना पड़ता
है, अन्यथा वे तुम्हारे निकट नहीं आते. 10 दुष्ट अपने ऊपर अनेक संकट ले
आते हैं, किंतु याहवेह का करुणा-प्रेम उनके सच्चे लोगों को घेरे हुए उसकी
सुरक्षा करता रहता है. 11 याहवेह में उल्लसित होओ और आनंद मनाओ,
धर्मियो गाओ; तुम सभी, जो सीधे मनवाले हो, हर्षोल्लास में जय जयकार
करो!

33 धर्मियों, याहवेह के लिए हर्षोल्लास में गाओ; उनका स्तवन करना सीधे
लोगों के लिए शोभनीय होता है. 2 किन्नोर की संगत पर याहवेह का
धन्यवाद करो; दस तंतुओं के नेबेल पर उनके लिए संगीत गाओ. 3 उनके
स्तवन में एक नया गीत गाओ; कुशलतापूर्वक वादन करते हुए तन्मय होकर
गाओ. 4 क्योंकि याहवेह का वचन सत्य और खरा है; अपने हर एक कार्य में
वह विश्वासयोग्य हैं. 5 उन्हें धर्म तथा न्याय प्रिय हैं; समस्त पृथ्वी में याहवेह का
करुणा-प्रेम व्याप्त है. 6 स्वर्ग याहवेह के आदेश से ही अस्तित्व में आया, तथा
समस्त नक्षत्र उनके ही मुख के उच्छ्वास के द्वारा बनाए गए. 7 वे महासागर के
जल को एक ढेर जल राशि के रूप में एकत्र कर देते हैं; और गहिरे सागरों को
भण्डारगृह में रखते हैं. 8 समस्त पृथ्वी याहवेह को डरे; पृथ्वी के समस्त वासी
उनके भय में निस्तब्ध खड़े हो जाएं. 9 क्योंकि उन्हीं के आदेश मात्र से यह
पृथ्वी अस्तित्व में आई; उन्हीं के आदेश से यह स्थिर भी हो गई. 10 याहवेह
राष्ट्रों की युक्तियां व्यर्थ कर देते हैं; वह लोगों की योजनाओं को विफल कर देते
हैं. 11 इसके विपरीत याहवेह की योजनाएं सदा-सर्वदा स्थायी बनी रहती हैं,
उनके हृदय के विचार पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहते हैं. 12 धन्य है वह राष्ट्र,
जिसके परमेश्वर याहवेह हैं, वह प्रजा, जिसे उन्होंने अपना निज भाग चुन
लिया. 13 याहवेह स्वर्ग से पृथ्वी पर दृष्टि करते हैं, वह समस्त मनुष्यों को
निहारते हैं; 14 वह अपने आवास से पृथ्वी के समस्त निवासियों का निरीक्षण
करते रहते हैं. 15 उन्हीं ने सब मनुष्यों के हृदय की रचना की, वही उनके सारे
कार्यों को परखते रहते हैं. 16 किसी भी राजा का उद्धार उसकी सेना की सामर्थ्य
से नहीं होता; किसी भी शूर योद्धा का शौर्य उसको नहीं बचाता. 17 विजय के
लिए अश्व पर भरोसा करना निरर्थक है; वह कितना भी शक्तिशाली हो, उद्धार
का कारण नहीं हो सकता. 18 सुनो, याहवेह की दृष्टि उन सब पर स्थिर रहती
है, जो उनके श्रद्धालु होते हैं, जिनका भरोसा उनके करुणा-प्रेम में बना रहता है,
19 कि वही उन्हें मृत्यु से उद्धार देकर अकाल में जीवित रखें. 20 हम धैर्यपूर्वक
याहवेह पर भरोसा रखे हुए हैं; वही हमारे सहायक एवं ढाल हैं. 21 उनमें ही
हमारा हृदय आनंदित रहता है, उनकी पवित्र महिमा में ही हमें भरोसा है. 22
याहवेह, आपका करुणा-प्रेम हम पर बना रहे, हमने आप पर ही भरोसा रखा है.

34 दावीद की रचना. जब दावीद ने राजा अबीमेलेक के सामने पागल होने
का स्वांग रचा था और अबीमेलेक ने उन्हें बाहर निकाल दिया जिससे
वह वहां से पलायन कर सके थे. हर एक स्थिति में मैं याहवेह को योग्य कहता
रहूंगा; मेरे होंठों पर उनकी स्तुति-प्रशंसा के उद्गार सदैव ही बने रहेंगे. 2 मेरी
आत्मा याहवेह में गर्व करती है; पीड़ित यह सुनें और उल्लसित हों. 3 मेरे साथ
याहवेह का गुणगान करो; हम सब मिलकर याहवेह की महिमा को ऊंचा करें. 4
मैंने याहवेह से प्रार्थना की और उन्होंने प्रत्युत्तर दिया; उन्होंने मुझे सब प्रकार के
भय से मुक्त किया. 5 जिन्होंने उनसे अपेक्षा की, वे उल्लसित ही हुए; इसमें
उन्हें कभी लज्जित न होना पड़ा. 6 इस दुःखी पुरुष ने सहायता के लिए पुकारा
और याहवेह ने प्रत्युत्तर दिया; उन्होंने उसे उसके समस्त संकटों से छुड़ा लिया
है. 7 याहवेह का दूत उनके श्रद्धालुओं के चारों ओर उनकी चौकसी करता रहता
है और उनको बचाता है. 8 स्वयं चखकर देख लो कि कितने भले हैं याहवेह;
कैसा धन्य है वे, जो उनका आश्रय लेते हैं. 9 सभी भक्तो, याहवेह के प्रति श्रद्धा
रखो. जो उन पर श्रद्धा रखते हैं, उन्हें कोई भी घटी नहीं होती. 10 युवा सिंह
दुर्बल हो सकते हैं और वे भूखे भी रह जाते हैं, किंतु जो याहवेह के खोजी हैं,
उन्हें किसी उपयुक्त वस्तु की घटी नहीं होगी. 11 मेरे बालको, निकट आकर
ध्यान से सुनो; मैं तुम्हें याहवेह के प्रति श्रद्धा सिखाऊंगा. 12 तुममें से जिस किसी
को जीवन के मूल्य का बोध है और जिसे सुखद दीर्घायु की आकांक्षा है, 13 वह
अपनी जीभ को बुरा बोलने से तथा अपने होंठों को झूठ से मुक्त रखे; 14 बुराई
में रुचि लेना छोड़कर परोपकार करे; मेल-मिलाप का यत्न करे और इसी के लिए
पीछा करे. 15 क्योंकि याहवेह की दृष्टि धर्मियों पर तथा उनके कान उनकी
विनती पर लगे रहते हैं, 16 परंतु याहवेह बुराई करनेवालों से दूर रहते हैं; कि
उनका नाम ही पृथ्वी से मिटा डालें. 17 धर्मी की पुकार को याहवेह अवश्य
सुनते हैं; वह उन्हें उनके संकट से छुड़ाते हैं. 18 याहवेह टूटे हृदय के निकट
होते हैं, वह उन्हें छुड़ा लेते हैं, जो आत्मा में पीसे हुए है. 19 यह संभव है कि
धर्मी पर अनेक-अनेक विपत्तियां आ पड़ें, किंतु याहवेह उसे उन सभी से बचा
लेते हैं; 20 वह उसकी हर एक हड्डी को सुरक्षित रखते हैं, उनमें से एक भी नहीं
टूटती. 21 दुष्टता ही दुष्ट की मृत्यु का कारण होती है; धर्मी के शत्रु दंडित किए
जाएंगे. 22 याहवेह अपने सेवकों को छुड़ा लेते हैं; जो कोई उनमें आश्रय लेता
है, वह दोषी घोषित नहीं किया जाएगा.

35 दावीद की रचना याहवेह, आप उनसे न्याय-विन्याय करें, जो मुझसे
न्याय-विन्याय कर रहे हैं; आप उनसे युद्ध करें, जो मुझसे युद्ध कर रहे हैं.
2 ढाल और कवच के साथ; मेरी सहायता के लिए आ जाइए. 3 उनके विरुद्ध,
जो मेरा पीछा कर रहे हैं, बर्छी और भाला उठाइये. मेरे प्राण को यह आश्वासन
दीजिए, "मैं हूं तुम्हारा उद्धार." 4 वे, जो मेरे प्राणों के प्यासे हैं, वे लज्जित और
अपमानित हों; जो मेरे विनाश की योजना बना रहे हैं, पराजित हो भाग खड़े हों.
5 जब याहवेह का दूत उनका पीछा करे, वे उस भूसे समान हो जाएं, जिसे पवन
उड़ा ले जाता है; 6 उनका मार्ग ऐसा हो जाए, जिस पर अंधकार और फिसलन
है. और उस पर याहवेह का दूत उनका पीछा करता जाए. 7 उन्होंने अकारण
ही मेरे लिए जाल बिछाया और अकारण ही उन्होंने मेरे लिए गड्ढा खोदा है, 8
उनका विनाश उन पर अचानक ही आ पड़े, वे उसी जाल में जा फंसे, जो
उन्होंने बिछाया था, वे स्वयं उस गड्ढे में गिरकर नष्ट हो जाएं. 9 तब याहवेह में
मेरा प्राण उल्लसित होगा और उनके द्वारा किया गया उद्धार मेरे हर्षोल्लास का
विषय होगा. 10 मेरी हड्डियां तक कह उठेंगी, "कौन है याहवेह के तुल्य? आप
ही हैं जो दुःखी को बलवान से, तथा दरिद्र और दीन को लुटेरों से छुड़ाते हैं."
11 क्रूर साक्ष्य मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं; वे मुझसे उन विषयों की पूछताछ कर
रहे हैं, जिनका मुझे कोई ज्ञान ही नहीं है. 12 वे मेरे उपकार का प्रतिफल
अपकार में दे रहे हैं, मैं शोकित होकर रह गया हूं. 13 जब वे दुःखी थे, मैंने

सहानुभूति में शोक-वस्त्र धारण किए, यहां तक कि मैंने दीन होकर उपवास भी
किया. जब मेरी प्रार्थनाएं बिना कोई उत्तर के मेरे पास लौट आईं, 14 मैं इस भाव
में विलाप करता चला गया मानो मैं अपने मित्र अथवा भाई के लिए विलाप कर
रहा हूं. मैं शोक में ऐसे झुक गया मानो मैं अपनी माता के लिए शोक कर रहा हूं.
15 किंतु यहां जब मैं ठोकर खाकर गिर पड़ा हूं, वे एकत्र हो आनंद मना रहे हैं;
इसके पूर्व कि मैं कुछ समझ पाता, वे मुझ पर आक्रमण करने के लिए एकजुट
हो गए हैं. वे लगातार मेरी निंदा कर रहे हैं. 16 जब वे नास्तिक जैसे मेरा उपहास
कर रहे थे, उसमें क्रूरता का समावेश था; वे मुझ पर दांत भी पीस रहे थे. 17
याहवेह, आप कब तक यह सब चुपचाप ही देखते रहेंगे? उनके विनाशकारी
कार्य से मेरा बचाव कीजिए, सिंहों समान इन दुष्टों से मेरी रक्षा कीजिए. 18
महासभा के सामने मैं आपका आभार व्यक्त करूंगा; जनसमूह में मैं आपका
स्तवन करूंगा. 19 जो अकारण ही मेरे शत्रु बन गए हैं, अब उन्हें मेरा उपहास
करने का संतोष प्राप्त न हो; अब अकारण ही मेरे विरोधी बन गए पुरुषों को
आंखों ही आंखों में मेरी निंदा में निर्लज्जतापूर्ण संकेत करने का अवसर प्राप्त न
हो. 20 उनके वार्तालाप शांति प्रेरक नहीं होते, वे शांति प्रिय नागरिकों के लिए
झूठे आरोप सोचने में लगे रहते हैं. 21 मुख फाड़कर वे मेरे विरुद्ध यह कहते हैं,
“आहा! आहा! हमने अपनी ही आंखों से सब देख लिया है.” 22 याहवेह,
सत्य आपकी दृष्टि में है; अब आप शांत न रहिए. याहवेह, अब मुझसे दूर न
रहिए. 23 मेरी रक्षा के लिए उठिए! मेरे परमेश्वर और मेरे स्वामी, मेरे पक्ष में
न्याय प्रस्तुत कीजिए. 24 याहवेह, मेरे परमेश्वर, अपनी सच्चाई में मुझे निर्दोष
प्रमाणित कीजिए; मेरी स्थिति से उन्हें कोई आनंद प्राप्त न हो. 25 वे मन ही मन
यह न कह सकें, “देखा, यही तो हम चाहते थे!” अथवा वे यह न कह सकें,
“हम उसे निगल गए.” 26 वे सभी, जो मेरी दुखद स्थिति पर आनंदित हो
रहे हैं, लज्जित और निराश हो जाएं; वे सभी, जिन्होंने मुझे नीच प्रमाणित
करना चाहा था स्वयं निंदा और लज्जा में दब जाएं. 27 वे सभी, जो मुझे दोष
मुक्त हुआ देखने की कामना करते रहे, आनंद में उल्लसित हो जय जयकार
करें; उनका स्थायी नारा यह हो जाए, “ऊंची हो याहवेह की महिमा, वह
अपने सेवक के कल्याण में उल्लसित होते हैं.” 28 मेरी जीभ सर्वदा आपकी
धार्मिकता की घोषणा, तथा आपकी वंदना करती रहेगी.

36 संगीत निर्देशक के लिये. याहवेह के सेवक दावीद की रचना दुष्ट के हृदय
में उसका दोष भाव उसे कहते रहता है: उसकी दृष्टि में परमेश्वर के प्रति
कोई भय है ही नहीं. 2 अपनी ही नज़रों में वह खुद की चापलूसी करता है.
ऐसे में उसे न तो अपना पाप दिखाई देता है, न ही उसे पाप से घृणा होती है. 3
उसका बोलना छलपूर्ण एवं बुराई का है; बुद्धि ने उसका साथ छोड़ दिया है तथा
उपकार भाव अब उसमें रहा ही नहीं. 4 यहां तक कि बिछौने पर लेटे हुए वह
बुरी युक्ति रचता रहता है; उसने स्वयं को अधर्म के लिए समर्पित कर दिया है.
वह बुराई को अस्वीकार नहीं कर पाता. 5 याहवेह, आपका करुणा-प्रेम स्वर्ग
तक, तथा आपकी विश्वासयोग्यता आकाशमंडल तक व्याप्त है. 6 आपकी
धार्मिकता विशाल पर्वत समान, तथा आपकी सच्चाई अथाह महासागर तुल्य है.
याहवेह, आप ही मनुष्य एवं पशु, दोनों के परिरक्षक हैं. 7 कैसा अप्रतिम है
आपका करुणा-प्रेम! आपके पंखों की छाया में साधारण और विशिष्ट, सभी
मनुष्य आश्रय लेते हैं. 8 वे आपके आवास के उत्कृष्ट भोजन से तृप्त होते हैं;
आप सुख की नदी से उनकी प्यास बुझाते हैं. 9 आप ही जीवन के स्रोत हैं;
आपके प्रकाश के द्वारा ही हमें ज्योति का भास होता है. 10 जिनमें आपके प्रति
श्रद्धा है, उन पर आप अपना करुणा-प्रेम एवं जिनमें आपके प्रति सच्चाई है, उन
पर अपनी धार्मिकता बनाए रखें. 11 मुझे अहंकारी का पैर कुचल न पाए, और
न दुष्ट का हाथ मुझे बाहर धकेल सके. 12 कुकर्मियों का अंत हो चुका है, वे
ज़मीन-दोस्त हो चुके हैं, वे ऐसे फेंक दिए गए हैं, कि अब वे उठ नहीं पा रहे!

37 दावीद की रचना दुष्टों के कारण मत कुढ़ो, कुकर्मियों से डाह मत करो;
2 क्योंकि वे तो घास के समान शीघ्र मुरझा जाएंगे, वे हरे पौधे के समान
शीघ्र नष्ट हो जाएंगे. 3 याहवेह में भरोसा रखते हुए वही करो, जो उपयुक्त है;
कि तुम सुरक्षित होकर स्वदेश में खुशहाल निवास कर सको. 4 तुम्हारा आनंद
याहवेह में मगन हो, वही तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करेंगे. 5 याहवेह को अपने जीवन
की योजनाएं सौंप दो; उन पर भरोसा करो और वे तुम्हारे लिए ये सब करेंगे: 6
वे तुम्हारी धार्मिकता को सबेरे के सूर्य के समान तथा तुम्हारी सच्चाई को मध्याह्न
के सूर्य समान चमकाएंगे. 7 याहवेह के सामने चुपचाप रहकर धैर्यपूर्वक उन पर
भरोसा करो; जब दुष्ट पुरुषों की युक्तियां सफल होने लगें अथवा जब वे अपनी
बुराई की योजनाओं में सफल होने लगें तो मत कुढ़ो! 8 क्रोध से दूर रहो, कोप
का परित्याग कर दो; कुढ़ो मत! इससे बुराई ही होती है. 9 कुकर्मी तो काट
डाले जाएंगे, किंतु याहवेह के श्रद्धालुओं के लिए भाग आरक्षित है. 10 कुछ
ही समय शेष है जब दुष्ट का अस्तित्व न रहेगा; तुम उसे खोजने पर भी न
पाओगे. 11 किंतु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, वे बड़ी समृद्धि में आनंदित
रहेंगे. 12 दुष्ट धर्मियों के विरुद्ध बुरी युक्ति रचते रहते हैं, उन्हें देख दांत पीसते
रहते हैं; 13 किंतु प्रभु दुष्ट पर हंसते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि उसके दिन
समाप्त हो रहे हैं. 14 दुष्ट तलवार खींचते हैं और धनुष पर डोरी चढ़ाते हैं कि
दुःखी और दीन दरिद्र को मिटा दें, उनका वध कर दें, जो सीधे हैं. 15 किंतु
उनकी तलवार उन्हीं के हृदय को छेदेगी और उनके धनुष टूट जाएंगे. 16 दुष्ट
की विपुल संपत्ति की अपेक्षा धर्मी की सीमित राशि ही कहीं उत्तम है; 17
क्योंकि दुष्ट की भुजाओं का तोड़ा जाना निश्चित है, किंतु याहवेह धर्मियों
का बल हैं. 18 याहवेह निर्दोष पुरुषों की आयु पर दृष्टि रखते हैं, उनका निज
भाग सर्वदा स्थायी रहेगा. 19 संकट काल में भी उन्हें लज्जा का सामना नहीं
करना पड़ेगा; अकाल में भी उनके पास भरपूर रहेगा. 20 दुष्टों का विनाश
सुनिश्चित है: याहवेह के शत्रुओं की स्थिति घास के वैभव के समान है, वे धुएं
के समान विलीन हो जाएंगे. 21 दुष्ट ऋण लेकर उसे लौटाता नहीं, किंतु धर्मी
उदारतापूर्वक देता रहता है; 22 याहवेह द्वारा आशीषित पुरुष पृथ्वी के भागी
होंगे, याहवेह द्वारा शापित पुरुष नष्ट कर दिए जाएंगे. 23 जिस पुरुष के कदम
याहवेह द्वारा नियोजित किए जाते हैं, उसके आचरण से याहवेह प्रसन्न होते हैं;
24 तब यदि वह लड़खड़ा भी जाए, वह गिरेगा नहीं, क्योंकि याहवेह उसका
हाथ थामे हुए हैं. 25 मैंने युवावस्था देखी और अब मैं प्रौढ़ हूं, किंतु आज तक
मैंने न तो धर्मी को शोकित होते देखा है और न उसकी संतान को भीख मांगते.
26 धर्मी सदैव उदार ही होते हैं तथा उदारतापूर्वक देते रहते हैं; आशीषित रहती
है उनकी संतान. 27 बुराई से परे रहकर परोपकार करो; तब तुम्हारा जीवन सदैव
सुरक्षित बना रहेगा. 28 क्योंकि याहवेह को सच्चाई प्रिय है और वे अपने भक्तों
का परित्याग कभी नहीं करते. वह चिरकाल के लिए सुरक्षित हो जाते हैं; किंतु
दुष्ट की सन्तति मिटा दी जाएगी. 29 धर्मी पृथ्वी के भागी होंगे तथा उसमें सर्वदा
निवास करेंगे. 30 धर्मी अपने मुख से ज्ञान की बातें कहता है, तथा उसकी जीभ
न्याय संगत वचन ही उच्चारती है. 31 उसके हृदय में उसके परमेश्वर की
व्यवस्था बसी है; उसके कदम फिसलते नहीं. 32 दुष्ट, जो धर्मी के प्राणों का
प्यासा है, उसकी घात लगाए बैठा रहता है; 33 किंतु याहवेह धर्मी को दुष्ट के
अधिकार में जाने नहीं देंगे और न ही न्यायालय में उसे दोषी प्रमाणित होने देंगे.
34 याहवेह की सहायता की प्रतीक्षा करो और उन्हीं के सन्मार्ग पर चलते रहो.
वही तुमको ऐसा ऊंचा करेंगे, कि तुम्हें उस भूमि का अधिकारी कर दें; दुष्टों की
हत्या तुम स्वयं अपनी आंखों से देखोगे. 35 मैंने एक दुष्ट एवं क्रूर पुरुष को देखा
है जो उपजाऊ भूमि के हरे वृक्ष के समान ऊंचा था, 36 किंतु शीघ्र ही उसका
अस्तित्व समाप्त हो गया; खोजने पर भी मैं उसे न पा सका. 37 निर्दोष की ओर
देखो, खरे को देखते रहो; उज्जवल होता है शांत पुरुष का भविष्य. 38 किंतु

समस्त अपराधी नाश ही होंगे; दुष्टों की सन्तति ही मिटा दी जाएगी. 39 याहवेह धर्मियों के उद्धार का उगम स्थान हैं; वही विपत्ति के अवसर पर उनके आश्रय होते हैं. 40 याहवेह उनकी सहायता करते हुए उनको बचाते हैं; इसलिये कि धर्मी याहवेह का आश्रय लेते हैं, याहवेह दुष्ट से उनकी रक्षा करते हुए उनको बचाते हैं.

38 दावीद का एक स्तोत्र. अभ्यर्थना. याहवेह, अपने क्रोध में मुझे न डांटिए और न अपने कोप में मुझे दंड दीजिए. 2 क्योंकि आपके बाण मुझे लग चुके हैं, और आपके हाथ के बोझ ने मुझे दबा रखा है. 3 आपके प्रकोप ने मेरी देह को स्वस्थ नहीं छोड़ा; मेरे ही पाप के परिणामस्वरूप मेरी हड्डियों में अब बल नहीं रहा. 4 मैं अपने अपराधों में डूब चुका हूं; एक अतिशय बोझ के समान वे मेरी उठाने की क्षमता से परे हैं. 5 मेरे घाव सड़ चुके हैं, वे अत्यंत घृणास्पद हैं यह सभी मेरी पापमय मूर्खता का ही परिणाम है. 6 मैं झुक गया हूं, दुर्बलता के शोकभाव से अत्यंत नीचा हो गया हूं; सारे दिन मैं विलाप ही करता रहता हूं. 7 मेरी कमर में जलती-चुभती-सी पीड़ा हो रही है; मेरी देह अत्यंत रुग्ण हो गई है. 8 मैं दुर्बल हूं और टूट चुका हूं; मैं हृदय की पीड़ा में कराह रहा हूं. 9 प्रभु, आपको यह ज्ञात है कि मेरी आकांक्षा क्या है; मेरी आहें आपसे छुपी नहीं हैं. 10 मेरे हृदय की धड़कने तीव्र हो गई हैं, मुझमें बल शेष न रहा; यहां तक कि मेरी आंखों की ज्योति भी जाती रही. 11 मेरे मित्र तथा मेरे साथी मेरे घावों के कारण मेरे निकट नहीं आना चाहते; मेरे संबंधी मुझसे दूर ही दूर रहते हैं. 12 मेरे प्राणों के प्यासे लोगों ने मेरे लिए जाल बिछाया है, जिन्हें मेरी दुर्गति की कामना है; मेरे विनाश की योजना बना रहे हैं, वे सारे दिन छल की बुरी युक्ति रचते रहते हैं. 13 मैं बधिर मनुष्य जैसा हो चुका हूं, जिसे कुछ सुनाई नहीं देता, मैं मूक पुरुष-समान हो चुका हूं, जो बातें नहीं कर सकता; 14 हां, मैं उस पुरुष-सा हो चुका हूं, जिसकी सुनने की शक्ति जाती रही, जिसका मुख बोलने के योग्य नहीं रह गया. 15 याहवेह, मैंने आप पर ही भरोसा किया है; कि प्रभु मेरे परमेश्वर उत्तर आपसे ही प्राप्त होगा. 16 मैंने आपसे अनुरोध किया था, "यदि मेरे पैर फिसलें, तो उन्हें मुझ पर हंसने और प्रबल होने का सुख न देना." 17 अब मुझे मेरा अंत निकट आता दिख रहा है, मेरी पीड़ा सतत मेरे सामने बनी रहती है. 18 मैं अपना अपराध स्वीकार कर रहा हूं; मेरे पाप ने मुझे अत्यंत व्याकुल कर रखा है. 19 मेरे शत्रु प्रबल, सशक्त तथा अनेक हैं; जो अकारण ही मुझसे घृणा करते हैं. 20 वे मेरे उपकारों का प्रतिफल अपकार में देते हैं; जब मैं उपकार करना चाहता हूं, वे मेरा विरोध करते हैं. 21 याहवेह, मेरा परित्याग न कीजिए; मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न रहिए. 22 तुरंत मेरी सहायता कीजिए, मेरे प्रभु, मेरे उद्धारकर्ता.

39 संगीत निर्देशक के लिये. यदूथून के लिए. दावीद का एक स्तोत्र. मैंने निश्चय किया, "मैं पाप करने से अपने आचरण एवं जीभ से अपने बोलने की चौकसी करूंगा; यदि मैं दुष्टों की उपस्थिति में हूं, मैं अपने वचनों पर नियंत्रण रखूंगा." 2 तब मैंने मौन धारण कर लिया, यहां तक कि मैंने भली बातों पर भी नियंत्रण लगा दिया, तब मेरी व्याकुलता बढ़ती चली गई; 3 भीतर ही भीतर मेरा हृदय जलता गया और इस विषय पर अधिक विचार करने पर मेरे भीतर अग्नि भड़कने लगी; तब मैंने अपना मौन तोड़ दिया और जीभ से बोल उठा: 4 "याहवेह, मुझ पर मेरे जीवन का अंत प्रकट कर दीजिए. मुझे बताइए कि कितने दिन शेष हैं मेरे जीवन के; मुझ पर स्पष्ट कीजिए कि कितना है मेरा क्षणभंगुर जीवन. 5 आपने मेरी आयु क्षणिक मात्र ही निर्धारित की है; आपकी तुलना में मेरी आयु के वर्ष नगण्य हैं. वैसे भी मनुष्य का जीवन-श्वास मात्र ही होता है, वह शक्तिशाली व्यक्ति का भी. 6 "एक छाया के समान, जो चलती-फिरती रहती है; उसकी सारी भाग दौड़ निरर्थक ही होती है. वह धन संचित करता जाता है, किंतु उसे यह ज्ञात ही नहीं होता, कि उसका उपभोग कौन करेगा. 7 "तो प्रभु, अब मैं किस बात की प्रतीक्षा करूं? मेरी एकमात्र आशा आप ही हैं. 8 मुझे मेरे समस्त अपराधों से उद्धार प्रदान कीजिए; मुझे मूर्खों की घृणा का पात्र होने से बचाइए. 9 मैं मूक बन गया; मैंने कुछ भी न कहना उपयुक्त समझा, क्योंकि आप उठे थे. 10 अब मुझ पर प्रहार करना रोक दीजिए; आपके प्रहार से मैं टूट चुका हूं. 11 मनुष्यों द्वारा किए गए अपराध के लिए आप उन्हें ताड़ना के साथ दंड देते हैं, आप उनकी अमूल्य संपत्ति ऐसे नष्ट कर देते हैं, मानो उसे कीड़ा खा गया. निश्चयतः मनुष्य मात्र एक श्वास है. 12 "याहवेह, मेरी प्रार्थना सुनिए, मेरी सहायता की पुकार पर ध्यान दीजिए; मेरे आंसुओं की अनसुनी न कीजिए. मैं अल्पकाल के लिए आपका परदेशी हूं, ठीक जिस प्रकार मेरे समस्त पूर्वज प्रवासी थे. 13 इसके पूर्व कि मैं चला जाऊं, अपनी कोपदृष्टि मुझ पर से हटा लीजिए, कि कुछ समय के लिए ही मुझे आनंद का सुख प्राप्त हो सके."

40 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना. एक स्तोत्र. मैं धैर्यपूर्वक याहवेह की प्रतीक्षा करता रहा; उन्होंने मेरी ओर झुककर मेरा रोना सुना. 2 उन्होंने मुझे सत्यानाश के गड्ढे में से बचा लिया, दलदल और कीच के गड्ढे से निकाला; उन्होंने मुझे एक चट्टान पर ले जा खड़ा कर दिया अब मेरे पांव स्थिर स्थान पर है. 3 उन्होंने मुझे हमारे परमेश्वर के स्तवन में, एक नए गीत को सिखाया. अनेक यह देखेंगे, श्रद्धा से भयभीत हो जाएंगे और याहवेह में विश्वास करेंगे. 4 धन्य है वह पुरुष, जो याहवेह पर भरोसा रखता है, जो अभिमानियों से कोई आशा नहीं रखता, अथवा उनसे, जो झूठे देवताओं की शरण में हैं. 5 याहवेह, मेरे परमेश्वर, आपके द्वारा किए गए चमत्कार चिन्ह अनेक-अनेक हैं, और हमारे लिए आपके द्वारा योजित योजनाएं. आपके तुल्य कोई भी नहीं है; यदि मैं उनका वर्णन करना प्रारंभ भी करूं, तो उनके असंख्य होने के कारण उनकी गिनती करना असंभव होगा. 6 आपको बलि और भेंट की कोई अभिलाषा नहीं, किंतु आपने मेरे कान खोल दिए. आपने अग्निबलि और पापबलि की भी चाहत नहीं की. 7 तब मैंने यह कहा, "देखिए मैं आ रहा हूं; पुस्तिका में यह मेरे ही विषय में लिखा है. 8 मेरे परमेश्वर, मुझे प्रिय है आपकी ही इच्छापूर्ति; आपकी व्यवस्था मेरे हृदय में बसी है." 9 विशाल सभा में मैंने आपके धर्ममय शुभ संदेश का प्रचार किया है; देख लीजिए, याहवेह, आप जानते हैं कि मैं इस विषय में चुप न रहूंगा. 10 मैंने अपने परमेश्वर की धार्मिकता को अपने हृदय में ही सीमित नहीं रखा; मैं आपकी विश्वासयोग्यता तथा आपके द्वारा प्रदान किए गए उद्धार की चर्चा करता रहता हूं. विशाल सभा के सामने मैं आपके सत्य एवं आपके करुणा-प्रेम को छुपाता नहीं. 11 याहवेह, आप अपनी कृपा से मुझे दूर न करिये; आपका करुणा-प्रेम तथा आपकी सत्यता निरंतर मुझे सुरक्षित रखेंगे. 12 मैं असंख्य बुराइयों से घिर चुका हूं; मेरे अपराधों ने बढ़कर मुझे दबा दिया है; परिणामस्वरूप अब मैं देख भी नहीं पा रहा. ये अपराध संख्या में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं, मेरा साहस अब टूटा जा रहा है. 13 याहवेह, कृपा कर मुझे उद्धार प्रदान कीजिए; याहवेह, तुरंत मेरी सहायता कीजिए. 14 वे, जो मेरे प्राणों के प्यासे हैं, लज्जित और निराश किए जाएं; वे जिनका आनंद मेरी पीड़ा में है, पीठ दिखाकर भागें तथा अपमानित किए जाएं. 15 वे सभी, जो मेरी स्थिति को देख, "आहा! आहा!" कर रहे हैं, अपनी ही लज्जास्पद स्थिति को देख विस्मित हो जाएं. 16 किंतु वे सभी, जो आपकी खोज करते हैं हर्षोल्लास में मगन हों; वे सभी, जिन्हें आपके उद्धार की आकांक्षा है, यही कहें, "अति महान हैं याहवेह!" 17 प्रभु, मैं गरीब और ज़रूरतमंद हूं; इस कारण मुझ पर कृपादृष्टि कीजिए. आप ही मेरे सहायक तथा छुड़ानेवाले हैं; मेरे परमेश्वर, अब विलंब न कीजिए.

41 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. धन्य है वह मनुष्य, जो
दरिद्र एवं दुर्बल की सुधि लेता है; याहवेह विपत्ति की स्थिति से उसका
उद्धार करते हैं. 2 याहवेह उसे सुरक्षा प्रदान कर उसके जीवन की रक्षा करेंगे. वह
अपने देश में आशीषित होगा. याहवेह उसे उसके शत्रुओं की इच्छापूर्ति के लिए
नहीं छोड़ देंगे. 3 रोगशय्या पर याहवेह उसे संभालते रहेंगे, और उसे पुनःस्वस्थ
करेंगे. 4 मैंने पुकारा, “याहवेह, मुझ पर कृपा कीजिए; यद्यपि मैंने आपके विरुद्ध
पाप किया है, फिर भी मुझे रोगमुक्त कीजिए.” 5 बुराई भाव में मेरे शत्रु मेरे
विषय में कामना करते हैं, “कब मरेगा वह और कब उसका नाम मिटेगा?” 6
जब कभी उनमें से कोई मुझसे भेंट करने आता है, वह खोखला दिखावा मात्र
करता है, जबकि मन ही मन वह मेरे विषय में अधर्म की बातें संचय करता
है; बाहर जाकर वह इनके आधार पर मेरी निंदा करता है. 7 मेरे समस्त शत्रु
मिलकर मेरे विरुद्ध में कानाफूसी करते रहते हैं; वे मेरे संबंध में बुराई की योजना
सोचते रहते हैं. 8 वे कहते हैं, “उसे एक घृणित रोग का संक्रमण हो गया है; अब
वह इस रोगशय्या से कभी उठ न सकेगा.” 9 यहां तक कि जो मेरा परम मित्र
था, जिस पर मैं भरोसा करता था, जिसके साथ मैं भोजन करता था, उसी ने मुझ
पर लात उठाई है. 10 किंतु याहवेह, आप मुझ पर कृपा करें; मुझमें पुनः बल-
संचार करें कि मैं उनसे प्रतिशोध ले सकूं. 11 इसलिये कि मेरा शत्रु मुझे नाश न
कर सका, मैं समझ गया हूं कि आप मुझसे अप्रसन्न नहीं हैं. 12 मेरी सच्चाई
के कारण मुझे स्थिर रखते हुए, सदा-सर्वदा के लिए अपनी उपस्थिति में मुझे
बसा लीजिए. 13 सर्वदा से सर्वदा तक इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह का स्तवन
होता रहे.

42 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की मसकील गीत रचना. जैसे
हिरणी को बहते झरनों की उत्कट लालसा होती है, वैसे ही परमेश्वर,
मेरे प्राण को आपकी लालसा रहती है. 2 मेरा प्राण परमेश्वर के लिए, हां,
जीवन्त परमेश्वर के लिए प्यासा है. मैं कब जाकर परमेश्वर से भेंट कर सकूंगा?
3 दिन और रात, मेरे आंसू ही मेरा आहार बन गए हैं. सारे दिन लोग मुझसे एक
ही प्रश्न कर रहे हैं, “कहां है तुम्हारा परमेश्वर?” 4 जब मैं अपने प्राण आपके
सम्मुख उंडेल रहा हूं, मुझे उन सारी घटनाओं का स्मरण आ रहा है; क्योंकि मैं
ही परमेश्वर के भवन की ओर अग्रगामी, विशाल जनसमूह की शोभायात्रा का
अधिनायक हुआ करता था. उस समय उत्सव के वातावरण में जय जयकार तथा
धन्यवाद की ध्वनि गूंज रही होती थी. 5 मेरे प्राण, तुम ऐसे खिन्न क्यों हो?
क्यों मेरे हृदय में तुम ऐसे व्याकुल हो गए हो? परमेश्वर पर भरोसा रखो, क्योंकि
यह सब होने पर मैं पुनः उनकी उपस्थिति के आश्वासन के लिए उनका स्तवन
करूंगा. 6 मेरे परमेश्वर! मेरे अंदर खिन्न है मेरा प्राण; तब मैं यरदन प्रदेश से तथा
हरमोन, मित्सार पर्वत से आपका स्मरण करूंगा. 7 आपके झरने की गर्जना के
ऊपर से सागर सागर का आह्वान करता है; सागर की लहरें तथा तट पर टकराती
लहरें मुझ पर होती हुई निकल गईं. 8 दिन के समय याहवेह अपना करुणा-प्रेम
प्रगट करते हैं, रात्रि में उनका गीत जो मेरे जीवन के लिए परमेश्वर को संबोधित
एक प्रार्थना है, उसे मैं गाया करूंगा. 9 परमेश्वर, मेरी चट्टान से मैं प्रश्न करूंगा,
“आप मुझे क्यों भूल गए? मेरे शत्रुओं द्वारा दी जा रही यातनाओं के कारण,
क्यों मुझे शोकित होना पड़ रहा है?” 10 जब सारे दिन मेरे दुश्मन यह कहते हुए
मुझ पर ताना मारते हैं, “कहां है तुम्हारा परमेश्वर?” तब मेरी हड्डियां मृत्यु वेदना
सह रहीं हैं. 11 मेरे प्राण, तुम ऐसे खिन्न क्यों हो? क्यों मेरे हृदय में तुम ऐसे
व्याकुल हो गए हो? परमेश्वर पर भरोसा रखो, क्योंकि यह सब होते हुए भी मैं
याहवेह का स्तवन करूंगा.

43 परमेश्वर, मुझे निर्दोष प्रमाणित कीजिए, श्रद्धाहीन पीढ़ी के विरुद्ध मेरे
पक्ष में निर्णय दीजिए. मुझे झूठ बोलने वालों से एवं दुष्ट लोगों से मुक्त
कीजिए. 2 क्योंकि आप वह परमेश्वर हैं, जिनमें मेरा बल है. आप मुझे भूल
क्यों गए? मेरे शत्रुओं द्वारा दी जा रही यातनाओं के कारण, मुझे शोकित क्यों
होना पड़ रहा है? 3 अपनी ज्योति तथा अपना सत्य भेज दीजिए, उन्हें ही मेरी
अगुवाई करने दीजिए; कि मैं आपके पवित्र पर्वत तक पहुंच सकूं, जो आपका
आवास है. 4 तब मैं परमेश्वर की वेदी के निकट जा सकूंगा, वही परमेश्वर, जो
मेरे परमानंद हैं. तब परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मैं किन्‍नोर की संगत पर आपकी
वंदना करूंगा. 5 मेरे प्राण, तुम ऐसे खिन्न क्यों हो? क्यों मेरे हृदय में तुम ऐसे
व्याकुल हो गए हो? परमेश्वर पर भरोसा रखो, क्योंकि यह सब होते हुए भी मैं
याहवेह का स्तवन करूंगा.

44 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की रचना. एक मसकील. हे
परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना है, पूर्वजों ने उसका उल्लेख किया
है, कि प्राचीन काल में, हमारे पूर्वजों के समय में आपने जो कुछ किया है: 2
अपने भुजबल से आपने जनताओं को निकाल दिया और उनके स्थान पर हमारे
पूर्वजों को बसा दिया; आपने उन लोगों को कुचल दिया और हमारे पूर्वजों को
समृद्ध बना दिया. 3 यह अधिकार उन्होंने अपनी तलवार के बल पर नहीं
किया, और न ही यह उनके भुजबल का परिणाम था; यह परिणाम था आपके
दायें हाथ, उसकी सामर्थ्य तथा आपके मुख के प्रकाश का, क्योंकि वे आपकी
प्रीति के पात्र थे. 4 मेरे परमेश्वर, आप मेरे राजा हैं, याकोब की विजय का
आदेश दीजिए. 5 आपके द्वारा ही हम अपने शत्रुओं पर प्रबल हो सकेंगे; आप
ही के महिमामय नाम से हम अपने शत्रुओं को कुचल डालेंगे. 6 मुझे अपने
धनुष पर भरोसा नहीं है, मेरी तलवार भी मेरी विजय का साधन नहीं है; 7 हमें
अपने शत्रुओं पर विजय आपने ही प्रदान की है, आपने ही हमारे शत्रुओं को
लज्जित किया है. 8 हम निरंतर परमेश्वर में गर्व करते रहे, हम सदा-सर्वदा
आपकी महिमा का धन्यवाद करते रहेंगे. 9 किंतु अब आपने हमें लज्जित होने
के लिए शोकित छोड़ दिया है; आप हमारी सेना के साथ भी नहीं चल रहे. 10
आपके दूर होने के कारण, हमें शत्रुओं को पीठ दिखानी पड़ी. यहां तक कि
हमारे विरोधी हमें लूटकर चले गए. 11 आपने हमें वध के लिए निर्धारित भेड़ों
समान छोड़ दिया है. आपने हमें अनेक राष्ट्रों में बिखेर दिया है. 12 आपने
अपनी प्रजा को मिट्टी के मोल बेच दिया, और ऊपर से आपने इसमें लाभ मिलने
की भी बात नहीं की. 13 अपने पड़ोसियों के लिए अब हम निंदनीय हो गए हैं,
सबके सामने घृणित एवं उपहास पात्र. 14 राष्ट्रों में हम उपमा होकर रह गए हैं;
हमारे नाम पर वे सिर हिलाने लगते हैं. 15 सारे दिन मेरा अपमान मेरे सामने
झूलता रहता है, तथा मेरी लज्जा ने मुझे भयभीत कर रखा है. 16 उस शत्रु की
वाणी, जो मेरी निंदा एवं मुझे कलंकित करता है, उसकी उपस्थिति के कारण जो
शत्रु तथा बदला लेनेवाले है. 17 हमने न तो आपको भुला दिया था, और न हमने
आपकी वाचा ही भंग की; फिर भी हमें यह सब सहना पड़ा. 18 हमारे हृदय
आपसे बहके नहीं; हमारे कदम आपके मार्ग से भटके नहीं. 19 फिर भी आपने
हमें उजाड़ कर गीदड़ों का बसेरा बना दिया; और हमें गहन अंधकार में छिपा
दिया. 20 यदि हम अपने परमेश्वर को भूल ही जाते अथवा हमने अन्य देवताओं
की ओर हाथ बढ़ाया होता, 21 क्या परमेश्वर को इसका पता न चल गया होता,
उन्हें तो हृदय के सभी रहस्यों का ज्ञान होता है? 22 फिर भी आपके निमित्त हम
दिन भर मृत्यु का सामना करते रहते हैं; हमारी स्थिति वध के लिए निर्धारित
भेड़ों के समान है. 23 जागिए, प्रभु! सो क्यों रहे हैं? उठ जाइए! हमें सदा के
लिए शोकित न छोड़िए. 24 आपने हमसे अपना मुख क्यों छिपा लिया है हमारी
दुर्दशा और उत्पीड़न को अनदेखा न कीजिए? 25 हमारे प्राण धूल में मिल ही
चुके हैं; हमारा पेट भूमि से जा लगा है. 26 उठकर हमारी सहायता कीजिए;
अपने करुणा-प्रेम के निमित्त हमें मुक्त कीजिए.

45 संगीत निर्देशक के लिये. "कुमुदिनी" धुन पर आधारित. कोराह के पुत्रों
की रचना. एक मसकील. एक विवाह गीत. राजा के सम्मान में कविता
पाठ करते हुए मेरे हृदय में मधुर भाव उमड़ रहा हैं; मेरी जीभ कुशल लेखक की
लेखनी बन गई है. 2 आप ही पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं, आपके होंठों में अनुग्रह
भरा होता है, क्योंकि स्वयं परमेश्वर द्वारा आपको सदैव के लिए आशीषित
किया गया है. 3 परमवीर योद्धा, तलवार से सुसज्जित हो जाइए; ऐश्वर्य और
तेज धारण कर लीजिए. 4 सत्य, विनम्रता तथा धार्मिकता की रक्षा करते हुए,
आपके समृद्ध यश में, ऐश्वर्य के साथ अपने अश्व पर सवार हो जाइए! आपका
दायां हाथ अद्भुत कार्य कर दिखाए! 5 आपके तीक्ष्ण बाण राजा के शत्रुओं
के हृदय बेध दें; राष्ट्र आपसे नाश हो आपके चरणों में गिर पड़ें. 6 परमेश्वर,
आपका सिंहासन अमर है; आपके राज्य का राजदंड वही होगा, जो सच्चाई का
राजदंड है. 7 धार्मिकता आपको प्रिय है तथा दुष्टता घृणास्पद; यही कारण है कि
परमेश्वर, आपके परमेश्वर ने हर्ष के तेल से आपको अभिषिक्त करके आपके
समस्त साथियों से ऊंचे स्थान पर बसा दिया है. 8 आपके सभी वस्त्र गन्धरस,
अगरू तथा तेजपात से सुगंधित किए गए हैं; हाथी-दांत से जड़ित राजमहल से
मधुर तन्तु वाघों का संगीत आपको मगन करता रहता है. 9 आपके राज्य में
आदरणीय स्त्रियों के पद पर राजकुमारियां हैं; आपके दायें पक्ष में ओफीर राज्य
के कुन्दन से सजी राज-वधू विराजमान हैं. 10 राजकन्या, सुनिए, ध्यान दीजिए
और विचार कीजिए: अब आपका राज्य और आपके पिता का परिवार प्राचीन
काल का विषय हो गया. 11 तब महाराज आपके सौंदर्य की कामना करेंगे;
क्योंकि वह आपके स्वामी हैं, अब आप उनके सामने नतमस्तक हों. 12
सोर देश की राजकन्या उपहार लेकर आएंगी, धनी पुरुष आपकी कृपादृष्टि की
कामना करेंगे. 13 अंतःपुर में राजकन्या ने भव्य शृंगार किया है; उसके वस्त्र पर
सोने के धागों से कढ़ाई की गई है. 14 कढ़ाई किए गए वस्त्र धारण किए हुए उन्हें
राजा के निकट ले जाया जा रहा है; उनके पीछे कुंवारी वधू सहेलियों की
पंक्तियां चल रही हैं, यह समूह अब आपके निकट पहुंच रहा है. 15 ये सभी
आनंद एवं उल्लास के भाव में यहां आ पहुंचे हैं, अब उन्होंने राजमहल में प्रवेश
किया है. 16 आपके पुत्र पूर्वजों के स्थान पर होंगे; आप उन्हें समस्त देश के
शासक बना देंगे. 17 सभी पीढ़ियों के लिए मैं आपकी महिमा सजीव रखूंगा;
तब समस्त राष्ट्र सदा-सर्वदा आपका धन्यवाद करेंगे.

46 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की रचना. अलामोथ धुन पर
आधारित. एक गीत. परमेश्वर हमारे आश्रय-स्थल एवं शक्ति हैं, संकट
की स्थिति में सदैव उपलब्ध सहायक. 2 तब हम भयभीत न होंगे, चाहे पृथ्वी
विस्थापित हो जाए, चाहे पर्वत महासागर के गर्भ में जा पड़ें, 3 हां, तब भी जब
समुद्र गरजना करते हुए फेन उठाने लगें और पर्वत इस उत्तेजना के कारण थर्रा
जाएं. 4 परमेश्वर के नगर में एक नदी है, जिसकी जलधारा में इस नगर का
उल्लास है, यह नगर वह पवित्र स्थान है, जहां सर्वोच्च परमेश्वर निवास करते
हैं. 5 परमेश्वर इस नगर में निवास करते हैं, इस नगर की क्षति न होगी; हर
एक अरुणोदय में उसके लिए परमेश्वर की सहायता मिलती रहेगी. 6 राष्ट्रों में
खलबली मची हुई है, राज्य के लोग डगमगाने लगे; परमेश्वर के एक आह्वान
पर, पृथ्वी पिघल जाती है. 7 सर्वशक्तिमान याहवेह हमारे पक्ष में हैं; याकोब के
परमेश्वर में हमारी सुरक्षा है. 8 यहां आकर याहवेह के कार्यों पर विचार करो,
पृथ्वी पर उन्होंने कैसा विध्वंस किया है. 9 उन्हीं के आदेश से पृथ्वी के छोर
तक युद्ध थम जाते हैं. वही धनुष को भंग और भाले को टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं;
वह रथों को अग्नि में भस्म कर देते हैं. 10 परमेश्वर कहते हैं, "समस्त प्रयास
छोड़कर यह समझ लो कि परमेश्वर मैं हूं; समस्त राष्ट्रों में मेरी महिमा होगी,
समस्त पृथ्वी पर मेरी महिमा होगी." 11 सर्वशक्तिमान याहवेह हमारे पक्ष में हैं;
याकोब के परमेश्वर में हमारी सुरक्षा है.

47 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की रचना. एक स्तोत्र. समस्त
राष्ट्रो, तालियां बजाओ; हर्षोल्लास में परमेश्वर का जय जयकार करो. 2
याहवेह, सर्वोच्च परमेश्वर भय-योग्य हैं, वही समस्त पृथ्वी के ऊपर पराक्रमी
राजा हैं. 3 उन्हीं ने जनताओं को हमारे अधीन कर दिया है, लोग हमारे पैरों के
नीचे हो गए हैं. 4 उन्हीं ने हमारे लिए निज भाग को निर्धारित किया है, यही
याकोब का गौरव है, जो उनका प्रिय है. 5 जय जयकार की ध्वनि के मध्य से
परमेश्वर ऊपर उठाए गए, तुरही नाद के मध्य याहवेह ऊपर उठाए गए. 6 स्तुति
गान में परमेश्वर की वंदना करो, वंदना करो; स्तुति गान में हमारे राजाधिराज की
वंदना करो, वंदना करो. 7 परमेश्वर संपूर्ण पृथ्वी के राजाधिराज हैं; उनके
सम्मान में एक स्तवन गीत प्रस्तुत करो. 8 संपूर्ण राष्ट्रों पर परमेश्वर का शासन है;
परमेश्वर अपने महान सिंहासन पर विराजमान हैं. 9 अब्राहाम के परमेश्वर की
प्रजा के रूप में जनताओं के अध्यक्ष एकत्र हुए हैं, क्योंकि पृथ्वी की ढालों पर
परमेश्वर का अधिकार है; परमेश्वर अत्यंत ऊंचे हैं.

48 एक गीत. कोराह के पुत्रों की एक स्तोत्र रचना. महान हैं याहवेह, हमारे
परमेश्वर के नगर में, उनके पवित्र पर्वत में, सर्वोच्च वंदना और प्रशंसा
के योग्य. 2 मनोहर हैं इसके शिखर, जिसमें समस्त पृथ्वी आनन्दमग्न है, ज़ियोन
पर्वत उत्तर के उच्च पर्वत ज़ेफोन के समान है, जो राजाधिराज का नगर है. 3
इसके राजमहलों में परमेश्वर निवास करते हैं; उन्होंने स्वयं को इसका गढ़
प्रमाणित कर दिया है. 4 जब राजाओं ने अपनी सेनाएं संयुक्त की, जब उन्होंने
इस पर आक्रमण किया, 5 तब वे इसे देख चकित रह गए; वे भयभीत हो भाग
खड़े हुए. 6 भय के कारण उन्हें वहां ऐसी कंपकंपी होने लगी, जैसी प्रसव पीड़ा
में प्रसूता को होती है. 7 आपने उनका ऐसा विध्वंस किया, जैसे तरशीश के
जलयानों का पूर्वी हवा के कारण हुआ था. 8 जैसा हमने सुना था, और जैसा
हमने देखा है सर्वशक्तिमान याहवेह के नगर में, हमारे परमेश्वर के नगर में:
परमेश्वर उसे सर्वदा महिमा प्रदान करेंगे. 9 परमेश्वर, आपके मंदिर में, हमने
आपके करुणा-प्रेम पर चिंतन किया है. 10 जैसी आपकी महिमा है, वैसी ही
आपकी स्तुति-प्रशंसा भी पृथ्वी के छोर तक पहुंच रही है; आपका दायां हाथ
धार्मिकता से भरा है. 11 ज़ियोन पर्वत उल्लसित है, यहूदाह प्रदेश के नगर
आपके निष्पक्ष न्याय के कारण हर्षित हो रहे हैं. 12 ज़ियोन की परिक्रमा करते
हुए, उसके स्तंभों की गणना करो. 13 उसकी शहरपनाह पर दृष्टि लगाओ,
उसके महलों का भ्रमण करो, कि तत्पश्चात तुम अगली पीढ़ी को इनके विषय में
बता सको. 14 यही हैं वह परमेश्वर, जो युगानुयुग के लिए हमारे परमेश्वर हैं;
वही अंत तक हमारी अगुवाई करते रहेंगे.

49 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की रचना. एक स्तोत्र. विभिन्न
देशों के निवासियो, यह सुनो; धरती के वासियो, यह सुनो, 2 सुनो अरे
उच्च और निम्न, सुनो अरे दीन जनो और अमीरो, 3 मैं बुद्धिमानी की बातें करने
पर हूं; तथा मेरे हृदय का चिंतन समझ से परिपूर्ण होगा. 4 मैं नीतिवचन पर
ध्यान दूंगा; मैं किन्नोर की संगत पर पहेली स्पष्ट करूंगा: 5 क्या आवश्यकता है
विपत्ति के समय मुझे भयभीत होने की, जब दुष्ट धोखेबाज मुझे आ घेरते हैं; 6
हां, वे जिनका भरोसा उनकी संपत्ति पर है, तथा जिन्हें अपनी सम्पन्नता का गर्व
है? 7 कोई भी मनुष्य किसी अन्य मनुष्य के प्राणों का उद्धार नहीं कर सकता,
और न ही वह परमेश्वर को किसी के प्राणों के लिए छुड़ौती दे सकता है. 8
क्योंकि उसके प्राणों का मूल्य अत्यंत ऊंचा है, कि कोई मूल्य पर्याप्त नहीं है,
9 कि मनुष्य सर्वदा जीवित रहे, वह कभी कब्र का अनुभव न करे. 10 सभी के
सामने यह स्पष्ट है, कि सभी बुद्धिमानो की भी मृत्यु होती है; वैसे ही मूर्खों और
अज्ञानियों की भी, ये सभी अपनी संपत्ति दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं. 11
उनकी आत्मा में उनका विचार है, कि उनके आवास अमर हैं, तथा उनके

निवास सभी पीढ़ियों के लिए हो गए हैं, वे तो अपने देशों को भी अपने नाम से पुकारने लगे हैं. 12 अपने ऐश्वर्य के बावजूद मनुष्य अमरत्व प्राप्त नहीं कर सकता; वह तो फिर भी नश्वर पशु समान ही है. 13 यह नियति उनकी है, जो बुद्धिहीन हैं तथा उनकी, जो उनके विचारों से सहमत होते हैं. 14 भेड़ों के समान अधोलोक ही उनकी नियति है; मृत्यु ही उनका चरवाहा होगा. प्रातःकाल सीधे लोग उन पर शासन करेंगे तथा उनकी देह अधोलोक की ग्रास हो जाएंगी, परिणामस्वरूप उनका कोई आधार शेष न रह जाएगा. **(Sheol h7585)** 15 मेरे प्राण परमेश्वर द्वारा अधोलोक की सामर्थ्य से मुक्त किए जाएंगे; निश्चयतः वह मुझे स्वीकार कर लेंगे. **(Sheol h7585)** 16 किसी पुरुष की विकसित होती जा रही समृद्धि को देख डर न जाना, जब उसकी जीवनशैली वैभवशाली होने लगे; 17 क्योंकि मृत्यु होने पर वह इनमें से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाएगा, उसका वैभव उसके साथ कब्र में नहीं उतरेगा. 18 यद्यपि जब वह जीवित था, उसने प्रशंसा ही प्राप्त की, क्योंकि मनुष्य समृद्ध होने पर उनकी प्रशंसा करते ही हैं, 19 वह पुरुष अंततः अपने पूर्वजों में ही जा मिलेगा, जिनके लिए जीवन प्रकाश देखना नियत नहीं है. 20 एक धनवान मनुष्य को सुबुद्धि खो गया है, तो उसमें और उस नाशमान पशु में कोई अंतर नहीं रह गया!

50 आसफ का एक स्तोत्र. वह, जो सर्वशक्तिमान हैं, याहवेह, परमेश्वर, सूर्योदय से सूर्यास्त तक पृथ्वी को संबोधित करते हैं. 2 ज़ियोन के परम सौंदर्य में, परमेश्वर तेज दिखा रहे हैं. 3 हमारे परमेश्वर आ रहे हैं, वह निष्क्रिय नहीं रह सकते; उनके आगे-आगे भस्मकारी अग्नि चलती है, और उनके चारों ओर है प्रचंड आंधी. 4 उन्होंने आकाश तथा पृथ्वी को आह्वान किया, कि वे अपनी प्रजा की न्याय-प्रक्रिया प्रारंभ करें. 5 उन्होंने आदेश दिया, "मेरे पास मेरे भक्तों को एकत्र करो, जिन्होंने बलि अर्पण के द्वारा मुझसे वाचा स्थापित की है." 6 आकाश उनकी धार्मिकता की पुष्टि करता है, क्योंकि परमेश्वर ही न्यायाध्यक्ष हैं. 7 "मेरी प्रजा, मेरी सुनो, मैं कुछ कह रहा हूं; इस्राएल, मैं तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य दे रहा हूं, परमेश्वर मैं हूं, तुम्हारा परमेश्वर. 8 तुम्हारी बलियों के कारण मैं तुम्हें डांट नहीं रहा और न मैं तुम्हारी अग्निबलियों की आलोचना कर रहा हूं, जो नित मुझे अर्पित की जा रही हैं. 9 मुझे न तो तुम्हारे पशुशाले से बैल की आवश्यकता है और न ही तुम्हारे झुंड से किसी बकरे की, 10 क्योंकि हर एक वन्य पशु मेरा है, वैसे ही हजारों पहाड़ियों पर चर रहे पशु भी मेरे ही हैं. 11 पर्वतों में बसे समस्त पक्षियों को मैं जानता हूं, मैदान में चलते फिरते सब प्राणी भी मेरे ही हैं. 12 तब यदि मैं भूखा होता तो तुमसे नहीं कहता, क्योंकि समस्त संसार तथा इसमें मगन सभी वस्तुएं मेरी ही हैं. 13 क्या बैलों का मांस मेरा आहार है और बकरों का रक्त मेरा पेय? 14 "परमेश्वर को धन्यवाद का बलि अर्पित करो, सर्वोच्च परमेश्वर के लिए अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो, 15 तब संकट काल में मुझे पुकारो; तो मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा और तुम मुझे सम्मान दोगे." 16 किंतु दुष्ट से, परमेश्वर कहते हैं: "जब तुम मेरी शिक्षाओं से घृणा करते, और मेरे निर्देशों को हेय मानते हो? 17 तो क्या अधिकार है तुम्हें मेरी व्यवस्था का वाचन करने, अथवा मेरी वाचा को बोलने का? 18 चोर को देखते ही तुम उसके साथ हो लेते हो; वैसे ही तुम व्यभिचारियों के साथ व्यभिचार में सम्मिलित हो जाते हो. 19 तुमने अपने मुख को बुराई के लिए समर्पित कर दिया है, तुम्हारी जीभ छल-कपट के लिए तत्पर रहती है. 20 तुम निरंतर अपने ही भाई की निंदा करते रहते हो, अपने ही सगे भाई के विरुद्ध चुगली लगाते रहते हो. 21 तुम यह सब करते रहे, किंतु मैं चुप रहा, और तुम यह समझते रहे कि मैं तुमसे सहमत हूं. किंतु मैं अब तुम्हीं पर शासन करूंगा और तुम्हारे ही सम्मुख तुम पर आरोप लगाऊंगा. 22 "तुम, जो परमेश्वर को भूलनेवाले हो गए हो, विचार करो, ऐसा न हो कि मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर नष्ट कर दूं और कोई तुम्हारी रक्षा न कर सके: 23 जो कोई मुझे धन्यवाद की बलि अर्पित करता है, मेरा सम्मान करता है, मैं उसे, जो सन्मार्ग का आचरण करता है, परमेश्वर के उद्धार का अनुभव करवाऊंगा."

51 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. यह उस अवसर का लिखा है जब दावीद ने बैथशेबा से व्यभिचार किया और भविष्यद्वक्ता नाथान ने दावीद का सामना किया था. परमेश्वर, अपने करुणा-प्रेम में, अपनी बड़ी करुणा में; मुझ पर दया कीजिए, मेरे अपराधों को मिटा दीजिए. 2 मेरे समस्त अधर्म को धो दीजिए और मुझे मेरे पाप से शुद्ध कर दीजिए. 3 मैंने अपने अपराध पहचान लिए हैं, और मेरा पाप मेरे दृष्टि पर छाया रहता है. 4 वस्तुतः मैंने आपके, मात्र आपके विरुद्ध ही पाप किया है, मैंने ठीक वही किया है, जो आपकी दृष्टि में बुरा है; तब जब आप अपने न्याय के अनुरूप दंड देते हैं, यह हर दृष्टि से न्याय संगत एवं उपयुक्त है. 5 इसमें भी संदेह नहीं कि मैं जन्म के समय से ही पापी हूं, हां, उसी क्षण से, जब मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया था. 6 यह भी बातें हैं कि आपकी यह अभिलाषा है, कि हमारी आत्मा में सत्य हो; तब आप मेरे अंतःकरण में भलाई प्रदान करेंगे. 7 जूफ़ा पौधे की टहनी से मुझे स्वच्छ करें, तो मैं शुद्ध हो जाऊंगा; मुझे धो दीजिए, तब मैं हिम से भी अधिक श्वेत हो जाऊंगा. 8 मुझमें हर्षोल्लास एवं आनंद का संचार कीजिए; कि मेरी हड्डियां जिन्हें आपने कुचल दी हैं, मगन हो उठें. 9 मेरे पापों को अपनी दृष्टि से दूर कर दीजिए और मेरे समस्त अपराध मिटा दीजिए. 10 परमेश्वर, मुझमें एक शुद्ध हृदय को उत्पन्न कीजिए, और मेरे अंदर में सुदृढ़ आत्मा की पुनःस्थापना कीजिए. 11 मुझे अपने सान्निध्य से दूर न कीजिए और मुझसे आपके पवित्रात्मा को न छीनिए. 12 अपने उद्धार का उल्लास मुझमें पुनः संचारित कीजिए, और एक तत्पर आत्मा प्रदान कर मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 13 तब मैं अपराधियों को आपकी नीतियों की शिक्षा दे सकूंगा, कि पापी आपकी ओर पुनः फिर सकें. 14 परमेश्वर, मेरे छुड़ानेवाले परमेश्वर, मुझे रक्तपात के दोष से मुक्त कर दीजिए, कि मेरी जीभ आपकी धार्मिकता का स्तुति गान कर सके. 15 प्रभु, मेरे होंठों को खोल दीजिए, कि मेरे मुख से आपकी स्तुति-प्रशंसा हो सके. 16 आपकी प्रसन्नता बलियों में नहीं है, अन्यथा मैं बलि अर्पित करता, अग्निबलि में भी आप प्रसन्न नहीं हैं. 17 टूटी आत्मा ही परमेश्वर को स्वीकार्य योग्य बलि है; टूटे और पछताये हृदय से, हे परमेश्वर, आप घृणा नहीं करते हैं. 18 आपकी कृपादृष्टि से ज़ियोन की समृद्धि हो, येरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण हो. 19 तब धर्मी की अग्निबलि तथा सर्वांग पशुबलि अर्पण से आप प्रसन्न होंगे; और आपकी वेदी पर बैल अर्पित किए जाएंगे.

52 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की मसकील गीत रचना. इसका संदर्भ: एदोमवासी दोएग ने जाकर शाऊल को सूचित किया कि दावीद अहीमेलेख के आवास में ठहरे हैं. हे बलवान घमंडी, अपनी बुराई का अहंकार क्यों करता है? तू दिन भर क्यों घमंड करता है, तू जो परमेश्वर की नजर में एक अपमान है? 2 तेज उस्तरे जैसी तुम्हारी जीभ विनाश की बुरी युक्ति रचती रहती है, और तुम छल के कार्य में लिप्त रहते हो. 3 तुम्हें भलाई से ज्यादा अधर्म, और सत्य से अधिक झूठाचार पसंद है. 4 हे छली जीभ, तुझे तो हर एक बुरा शब्द प्रिय है! 5 यह सुनिश्चित है कि परमेश्वर ने तेरे लिए स्थायी विनाश निर्धारित किया है: वह तुझे उखाड़कर तेरे निवास से दूर कर देंगे; परमेश्वर तुझे जीव-लोक से उखाड़ देंगे. 6 यह देख धर्मी भयभीत हो जाएंगे; वे उसे देख यह कहते हुए उपहास करेंगे, 7 "उस पुरुष को देखो, जिसने परमेश्वर को अपना आश्रय बनाना उपयुक्त न समझा परंतु उसने अपनी धन-संपत्ति पर भरोसा किया और अन्यों पर दुष्कर्म करते हुए सशक्त होता गया!" 8 किंतु मैं परमेश्वर के निवास के हरे-भरे जैतून वृक्ष के समान हूं; मैं परमेश्वर के करुणा-प्रेम पर सदा-सर्वदा भरोसा रखता हूं. 9 परमेश्वर, मैं आपके द्वारा किए गए कार्यों के लिए सदा-

सर्वदा आपका धन्यवाद करता रहूंगा. आपके नाम मेरी आशा रहेगी, क्योंकि वह उत्तम है, आपके भक्तों के उपस्थिति में मैं आपकी वंदना करता रहूंगा.

53 संगीत निर्देशक के लिये. माख़लथ पर आधारित दावीद की मसकील गीत रचना मूर्ख मन ही मन में कहते हैं, "परमेश्वर है ही नहीं." वे सभी भ्रष्ट हैं और उनकी जीवनशैली घिनौनी है; ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता हो. **2** स्वर्ग से परमेश्वर मनुष्यों पर दृष्टि डालते हैं इस आशा में कि कोई तो होगा, जो बुद्धिमान है, जो परमेश्वर की खोज करता हो. **3** सभी मनुष्य भटक गए हैं, सभी नैतिक रूप से भ्रष्ट हो चुके हैं; कोई भी सत्कर्म परोपकार नहीं करता, हां, एक भी नहीं. **4** मेरी प्रजा के ये भक्षक, ये दुष्ट पुरुष, क्या ऐसे निर्बुद्धि हैं? जो उसे ऐसे खा जाते हैं, जैसे रोटी को; क्या उन्हें परमेश्वर की उपासना का कोई ध्यान नहीं? **5** जहां भय का कोई कारण ही न था, वहां वे अत्यंत भयभीत हो गए. परमेश्वर ने उनकी हड्डियों को बिखरा दिया, जो तेरे विरुद्ध छावनी डाले हुए थे; तुमने उन्हें लज्जित कर डाला, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा लज्जित किये गये थे. **6** कैसा उत्तम होता यदि इस्राएल का उद्धार ज़ियोन से प्रगट होता! याकोब के लिए वह हर्षोल्लास का अवसर होगा, जब परमेश्वर अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा लाएंगे, तब इस्राएल आनंदित हो जाएगा!

54 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. दावीद की मसकील गीत रचना. यह उस स्थिति के संदर्भ में है, जब ज़िफियों ने जाकर शाऊल को सूचना दी थी: "दावीद हमारे यहां छिपे हैं." परमेश्वर, अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कीजिए; अपनी सामर्थ्य के द्वारा मुझे निर्दोष प्रमाणित कीजिए. **2** परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनिए; मेरे मुख के वचनों पर ध्यान दीजिए. **3** ऐसे अपरिचित पुरुषों ने मुझ पर आक्रमण कर दिया है; कुकर्मी पुरुष अब मेरे प्राण के प्यासे हो गए हैं, जिनके हृदय में आपके प्रति कोई श्रद्धा नहीं है. **4** कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर मेरी सहायता के लिए तत्पर हैं; प्रभु ही हैं, जो मुझमें बल देते हैं. **5** ऐसा हो कि बुराई मेरे निंदकों पर ही जा पड़े; परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता के कारण उनका विनाश कर दीजिए. **6** मैं आपको स्वेच्छा बलि अर्पित करूंगा; याहवेह, मैं आपकी महान महिमा की सराहना करूंगा, क्योंकि यह शोभनीय है. **7** आपने समस्त संकटों से मेरा छुटकारा किया है, मैंने स्वयं अपनी आंखों से, अपने शत्रुओं की पराजय देखी है.

55 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. दावीद की मसकील गीत रचना परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए, मेरी गिड़गिड़ाहट को न ठुकराईए; **2** मेरी गिड़गिड़ाहट सुनकर, मुझे उत्तर दीजिए. मेरे विचारों ने मुझे व्याकुल कर दिया है. **3** शत्रुओं की ललकार ने मुझे निराश कर छोड़ा है; उन्हीं के द्वारा मुझ पर कष्ट उण्डेले गए हैं और वे क्रोध में मुझे खरीखोटी सुना रहे हैं. **4** भीतर ही भीतर मेरा हृदय वेदना में भर रहा है; मुझमें मृत्यु का भय समा गया है. **5** भय और कंपकंपी ने मुझे भयभीत कर लिया है; मैं आतंक से घिर चुका हूं. **6** तब मैं विचार करने लगा, "कैसा होता यदि कबूतर समान मेरे पंख होते! और मैं उड़कर दूर शांति में विश्राम कर पाता. **7** हां, मैं उड़कर दूर चला जाता, और निर्जन प्रदेश में निवास बना लेता. **8** मैं बवंडर और आंधी से दूर, अपने आश्रय-स्थल को लौटने की शीघ्रता करता." **9** प्रभु, दुष्टों के मध्य फूट डाल दीजिए, उनकी भाषा में गड़बड़ी कर दीजिए, यह स्पष्ट ही है कि नगर में हिंसा और कलह फूट पड़े हैं. **10** दिन-रात वे शहरपनाह पर छिप-छिप कर घूमते रहते हैं; नगर में वैमनस्य और अधर्म का साम्राज्य है. **11** वहां विनाशकारी शक्तियां प्रबल हो रही हैं; गलियों में धमकियां और छल समाप्त ही नहीं होते. **12** यदि शत्रु मेरी निंदा करता तो यह, मेरे लिए सहनीय है; यदि मेरा विरोधी मेरे विरुद्ध उठ खड़ा हो तो, मैं उससे छिप सकता हूं. **13** किंतु यहां तो तुम, मेरे साथी, मेरे परम मित्र, मेरे शत्रु हो गए हैं, जो मेरे साथ साथ रहे हैं, **14** तुम्हारे ही साथ मैंने संगति के मेल-मिलाप अवसरों का आनंद लिया था, अन्य आराधकों के साथ हम भी साथ साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे. **15** अब उत्तम वही होगा कि अचानक ही मेरे शत्रुओं पर मृत्यु आ पड़े; वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएं, क्योंकि बुराई उनके घर में आ बसी है, उनकी आत्मा में भी. **(Sheol h7585)** **16** यहां मैं तो परमेश्वर को ही पुकारूंगा, याहवेह ही मेरा उद्धार करेंगे. **17** प्रातः, दोपहर और संध्या मैं पीड़ा में कराहता रहूंगा, और वह मेरी पुकार सुनेंगे. **18** उन्होंने मुझे उस युद्ध से बिना किसी हानि के सुरक्षित निकाल लिया, जो मेरे विरुद्ध किया जा रहा था जबकि मेरे अनेक विरोधी थे. **19** सर्वदा के सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर, मेरी विनती सुनकर उन्हें ताड़ना करेंगे. वे ऐसे हैं, जिनका हृदय परिवर्तित नहीं होता; उनमें परमेश्वर का कोई भय नहीं. **20** मेरा साथी ही अपने मित्रों पर प्रहार कर रहा है; उसने अपनी वाचा भंग कर दी है. **21** मक्खन जैसी चिकनी हैं उसकी बातें, फिर भी युद्ध उसके दिल में है; उसके शब्दों में तेल से अधिक कोमलता थी, फिर भी वे नंगी तलवार थे. **22** अपने दायित्वों का बोझ याहवेह को सौंप दो, तुम्हारे बल का स्रोत वही हैं; यह हो ही नहीं सकता कि वह किसी धर्मी पुरुष को पतन के लिए शोकित छोड़ दें. **23** किंतु परमेश्वर, आपने दुष्टों के लिए विनाश के गड्ढे को निर्धारित किया है; रक्त पिपासु और कपटी मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी पहुंच न पाएंगे. किंतु मेरा भरोसा आप पर अटल बना रहेगा.

56 संगीत निर्देशक के लिये. "दूर के बांज वृक्ष पर बैठा कबूतरी" धुन पर आधारित. दावीद की मिकताम गीत रचना. यह उस घटना का संदर्भ है, जब गाथ देश में फिलिस्तीनियों ने दावीद को पकड़ लिया था. परमेश्वर, मुझ पर कृपा कीजिए, क्योंकि शत्रु मुझे कुचल रहे हैं; दिन भर उनका आक्रमण मुझ पर प्रबल होता जा रहा है. **2** मेरे निंदक सारे दिन मेरा पीछा करते हैं; अनेक हैं, जो मुझ पर अपने अहंकार से प्रहार कर रहे हैं. **3** भयभीत होने की स्थिति में, मैं आप पर ही भरोसा करूंगा. **4** परमेश्वर, आपकी प्रतिज्ञा स्तुति प्रशंसनीय है, परमेश्वर, मैं आप पर ही भरोसा रखूंगा और पूर्णतः निर्भय हो जाऊंगा. नश्वर मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ लेगा? **5** दिन भर मेरे वचन को उलटा कर प्रसारित किया जाता है; मेरी हानि की युक्तियां सोचना उनकी दिनचर्या हो गई है. **6** वे बुरी युक्ति रचते हैं, वे घात लगाए बैठे रहते हैं, वे मेरे हर कदम पर दृष्टि बनाए रखते हैं, कि कब मेरे प्राण ले सकें. **7** उनकी दुष्टता को देखकर उन्हें बचकर न जाने दें; परमेश्वर, अपने क्रोध के द्वारा इन लोगों को मिटा दीजिए. **8** आपने मेरे भटकने का लेखा रखा है; आपने मेरे आंसू अपनी कुप्पी में जमा कर रखें हैं. आपने इनका लेखा भी अपनी पुस्तक में रखा है? **9** तब जैसे ही मैं आपको पुकारूंगा, मेरे शत्रु पीठ दिखाकर भाग खड़े होंगे. तब यह प्रमाणित हो जाएगा कि परमेश्वर मेरे पक्ष में हैं. **10** वही परमेश्वर, जिनकी प्रतिज्ञा स्तुति प्रशंसनीय है, वही याहवेह, जिनकी प्रतिज्ञा स्तुति प्रशंसनीय है. **11** मैं परमेश्वर पर ही भरोसा रखूंगा, तब मुझे किसी का भय न होगा. मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ सकता है? **12** परमेश्वर, मुझे आपके प्रति की गई मन्नतें पूर्ण करनी हैं; मैं आपको अपनी आभार-बलि अर्पण करूंगा. **13** क्योंकि आपने मृत्यु से मेरे प्राणों की रक्षा की है, मेरे पांवों को आपने फिसलने से बचाया है कि मैं, परमेश्वर, आपके साथ साथ जीवन ज्योति में चल सकूं.

57 संगीत निर्देशक के लिये. "अलतशख़ेथ" धुन पर आधारित. दावीद की मिकताम गीत रचना. यह उस घटना का संदर्भ है, जब दावीद शाऊल की उपस्थिति से भागकर कन्दरा में जा छिपे थे. मुझ पर कृपा कीजिए, हे मेरे परमेश्वर, कृपा कीजिए, क्योंकि मैंने आपको ही अपना आश्रय-स्थल बनाया है. मैं आपके पंखों के नीचे आश्रय लिए रहूंगा, जब तक विनाश मुझ पर से टल न जाए. **2** मैं सर्वोच्च परमेश्वर को पुकारता हूं, वही परमेश्वर, जो मुझे निर्दोष

ठहराते हैं. 3 वह स्वर्ग से सहायता भेजकर मेरा उद्धार करेंगे; जो मुझे कुचलते हैं
उनसे उन्हें घृणा है. परमेश्वर अपना करुणा-प्रेम तथा अपना सत्य प्रेषित करेंगे. 4
मैं सिंहों से घिर गया हूं; मैं हिंसक पशुओं समान मनुष्यों के मध्य पड़ा हुआ हूं.
उनके दांत भालों और बाणों समान, तथा जीभें तलवार समान तीक्ष्ण हैं. 5
परमेश्वर, आप सर्वोच्च स्वर्ग में बसे हैं; आपका तेज समस्त पृथ्वी को भयभीत
करें. 6 उन्होंने मेरे मार्ग में जाल बिछाया है; मेरा प्राण डूबा जा रहा था. उन्होंने
मेरे मार्ग में गड्ढा भी खोद रखा था, किंतु वे स्वयं उसी में जा गिरे हैं. 7 मेरा हृदय
निश्चिंत है, परमेश्वर, मेरा हृदय निश्चिंत है; मैं स्तुति करते हुए गाऊंगा और
संगीत बजाऊंगा. 8 मेरी आत्मा, जागो! नेबेल और किन्नोर जागो! मैं उषःकाल
को जागृत करूंगा. 9 प्रभु, मैं लोगों के मध्य आपका आभार व्यक्त करूंगा; राष्ट्रों
के मध्य मैं आपका स्तवन करूंगा. 10 क्योंकि आपका करुणा-प्रेम आकाश से
भी महान है; आपकी सच्चाई अंतरीक्ष तक जा पहुंचती है. 11 परमेश्वर, आप
सर्वोच्च स्वर्ग में बसे हैं; आपका तेज समस्त पृथ्वी को भयभीत करें.

58 संगीत निर्देशक के लिये. "अलतशख़ेथ" धुन पर आधारित. दावीद की
मिकताम गीत रचना. न्यायाधीशो, क्या वास्तव में तुम्हारा निर्णय न्याय
संगत होता है? क्या, तुम्हारा निर्णय वास्तव में निष्पक्ष ही होता है? 2 नहीं, मन
ही मन तुम अन्यायपूर्ण युक्ति करते रहते हो, पृथ्वी पर तुम हिंसा परोसते हो. 3
दुष्ट लोग जन्म से ही फिसलते हैं, गर्भ से ही; परमेश्वर से झूठ बोलते हुए भटक
जाते है. 4 उनका विष विषैले सर्प का विष है, उस बहरे सर्प के समान, जिसने
अपने कान बंद कर रखे हैं. 5 कि अब उसे संपेरे की धुन सुनाई न दे, चाहे वह
कितना ही मधुर संगीत प्रस्तुत करे. 6 परमेश्वर, उनके मुख के भीतर ही उनके
दांत तोड़ दीजिए; याहवेह, इन सिंहों के दाढ़ों को ही उखाड़ दीजिए! 7 वे जल
के जैसे बहकर विलीन हो जाएं; जब वे धनुष तानें, उनके बाण निशाने तक नहीं
पहुंचें. 8 वे उस घोंघे के समान हो जाएं, जो सरकते-सरकते ही गल जाता है,
अथवा उस मृत जन्मे शिशु के समान, जिसके लिए सूर्य प्रकाश का अनुभव
असंभव है. 9 इसके पूर्व कि कंटीली झाड़ियों में लगाई अग्नि का ताप पकाने
के पात्र तक पहुंचे, वह जले अथवा अनजले दोनों ही को बवंडर में उड़ा देंगे.
10 धर्मी के लिए ऐसा पलटा आनन्द-दायक होगा, वह दुष्टों के रक्त में अपने
पांव धोएगा. 11 तब मनुष्य यह कह उठेंगे, "निश्चय धर्मी उत्तम प्रतिफल प्राप्त
करते हैं; यह सत्य है कि परमेश्वर हैं और वह पृथ्वी पर न्याय करते हैं."

59 संगीत निर्देशक के लिये. "अलतशख़ेथ" धुन पर आधारित. दावीद
की मिकताम गीत रचना. यह उस घटना के संदर्भ में है, जब शाऊल ने
दावीद का वध करने के उद्देश्य से सैनिक भेज उनके आवास पर घेरा डलवाया
था. परमेश्वर, मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ा लीजिए; मुझे उनसे सुरक्षा प्रदान कीजिए,
जो मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं. 2 मुझे कुकर्मियों से छुड़ा लीजिए तथा हत्यारे
पुरुषों से मुझे सुरक्षा प्रदान कीजिए. 3 देखिए, वे कैसे मेरे लिए घात लगाए बैठे
हैं! जो मेरे लिए बुरी युक्ति रच रहे हैं वे हिंसक पुरुष हैं. याहवेह, न मैंने कोई
अपराध किया है और न कोई पाप. 4 मुझसे कोई भूल भी नहीं हुई, फिर भी वे
आक्रमण के लिए तत्पर हैं. मेरी दुर्गति पर दृष्टि कर, मेरी सहायता के लिए आ
जाइए! 5 याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर, इन समस्त
राष्ट्रों को दंड देने के लिए उठ जाइए; दुष्ट विश्वासघातियों पर कोई कृपा न
कीजिए. 6 वे संध्या को लौटते, कुत्तों के समान चिल्लाते, और नगर में घूमते
रहते हैं. 7 आप देखिए कि वे अपने मुंह से क्या-क्या उगल रहे हैं, उनके होंठों
में से तलवार बाहर आती है, तब वे कहते हैं, "कौन सुन सकता है हमें?" 8
किंतु, याहवेह, आप उन पर हंसते हैं; ये सारे राष्ट्र आपके उपहास के विषय हैं. 9
मेरी शक्ति, मुझे आपकी ही प्रतीक्षा है; मेरे परमेश्वर, आप मेरे आश्रय-स्थल हैं,
10 आप मेरे प्रेममय परमेश्वर हैं. परमेश्वर मेरे आगे-आगे जाएंगे, तब मैं अपने
निंदकों के ऊपर संतोष के साथ व्यंग्य पूर्ण दृष्टि डाल सकूंगा. 11 किंतु मेरे प्रभु,
मेरी ढाल, उनकी हत्या न कीजिए, अन्यथा मेरी प्रजा उन्हें भूल जाएगी. अपने
सामर्थ्य में उन्हें तितर-बितर भटकाने के लिए छोड़ दीजिए, कि उनमें मनोबल
ही शेष न रह जाए. 12 उनके मुख के वचन द्वारा किए गए पापों के कारण,
उनके होंठों द्वारा किए गए अनाचार के लिए तथा उनके द्वारा दिए गए शाप तथा
झूठाचार के कारण, उन्हें अपने ही अहंकार में फंस जाने दीजिए. 13 उन्हें
अपनी क्रोध अग्नि में भस्म कर दीजिए, उन्हें इस प्रकार भस्म कीजिए, कि
उनका कुछ भी शेष न रह जाए. तब यह पृथ्वी की छोर तक सर्वविदित बातें हो
जाएगी, कि परमेश्वर ही वस्तुतः याकोब के शासक हैं. 14 वे संध्या को लौटते,
कुत्तों के समान चिल्लाते और नगर में घूमते रहते हैं. 15 वे भोजन की खोज में
घूमते रहते हैं और संतोष न होने पर सियारों जैसे चिल्लाने लगते हैं. 16 किंतु मैं
आपकी सामर्थ्य का गुणगान करूंगा, प्रातःकाल मेरे गीत का विषय होगा आपका
करुणा-प्रेम क्योंकि मेरा दृढ़ आश्रय-स्थल आप हैं, संकट काल में शरण स्थल
हैं. 17 मेरा बल, मैं आपका गुणगान करता हूं; परमेश्वर, आप मेरे आश्रय-स्थल
हैं, आप ही करुणा-प्रेममय मेरे परमेश्वर हैं.

60 संगीत निर्देशक के लिये. "शूशन एदूथ" धुन पर आधारित. दावीद की
मिकताम गीत रचना. यह सिखाए जाने के लिए. लिखा गया है. यह उस
स्थिति का संदर्भ है जब दावीद अरम-नहरयिम और अरम-ज़ोबाह देशों से
युद्धरत थे. उसी समय सेनापति योआब ने नमक की घाटी में लौटते हुए बारह
हजार एदोमी सैनिकों को नाश किया था. परमेश्वर, आपने हमें शोकित छोड़
दिया, मानो आप हम पर टूट पड़े हैं; आप हमसे क्रोधित हो गए हैं. अब हमें
पुनः अपना लीजिए! 2 आपने पृथ्वी को कंपाया था, धरती फट गई थी; अब
जोड़कर इसे शांत कर दीजिए, क्योंकि यह कांप रही है. 3 आपने अपनी
प्रजा को विषम परिस्थितियों का अनुभव कराया; आपने हमें पीने के लिए वह
दाखमधु दी, जिसके सेवन से हमारे पांव लड़खड़ा गए, 4 किंतु अपने श्रद्धालुओं
के लिए आपने एक ध्वजा ऊंची उठाई है, कि वह सत्य के प्रतीक स्वरूप
प्रदर्शित की जाए. 5 अपने दायें हाथ से हमें छुड़ाकर हमें उत्तर दीजिए, कि
आपके प्रिय पात्र छुड़ाए जा सकें. 6 परमेश्वर ने अपने पवित्र स्थान में घोषणा
की है: "अपने विजय में मैं शेकेम को विभाजित करूंगा तथा मैं सुक्कोथ घाटी
को नाप कर बंटवारा कर दूंगा. 7 गिलआद पर मेरा अधिकार है, मनश्शेह पर
मेरा अधिकार है; एफ्राईम मेरे सिर का रखवाला है, यहूदाह मेरा राजदंड है. 8
मोआब राष्ट्र मेरे हाथ धोने का पात्र है, और एदोम राष्ट्र पर मैं अपनी पादुका
फेंकूंगा; फिलिस्तिया के ऊपर उच्च स्वर में जयघोष करूंगा." 9 कौन ले
जाएगा मुझे सुदृढ़-सुरक्षित नगर तक? कौन पहुंचाएगा मुझे एदोम नगर तक? 10
परमेश्वर, क्या आप ही नहीं, जिन्होंने हमें अब शोकित छोड़ दिया है और
हमारी सेनाओं को साथ देना भी छोड़ दिया है? 11 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता
कीजिए, क्योंकि किसी भी मनुष्य द्वारा लायी गयी सहायता निरर्थक है. 12
परमेश्वर के साथ मिलकर हमारी विजय सुनिश्चित होती है, वही हमारे शत्रुओं
को कुचल डालेगा.

61 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. दावीद की रचना
परमेश्वर, मेरे चिल्लाने को सुनिए; मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए. 2 मैं
पृथ्वी की छोर से आपको पुकार रहा हूं, आपको पुकारते-पुकारते मेरा हृदय डूबा
जा रहा है; मुझे उस उच्च, अगम्य चट्टान पर खड़ा कीजिए जिसमें मेरी सुरक्षा
है. 3 शत्रुओं के विरुद्ध मेरे लिए आप एक सुदृढ़ स्तंभ, एक आश्रय-स्थल रहे हैं.
4 मेरी लालसा है कि मैं आपके आश्रय में चिरकाल निवास करूं और आपके
पंखों की छाया में मेरी सुरक्षा रहे. 5 परमेश्वर, आपने मेरी मन्नतें सुनी हैं; आपने
मुझे वह सब प्रदान किया है, जो आपके श्रद्धालुओं का निज भाग होता है. 6

आप राजा को आयुष्मान करेंगे, उनकी आयु के वर्ष अनेक पीढ़ियों के तुल्य हो जाएंगे. **7** परमेश्वर की उपस्थिति में वह सदा-सर्वदा सिंहासन पर विराजमान रहेंगे; उनकी सुरक्षा के निमित्त आप अपने करुणा-प्रेम एवं सत्य को प्रगट करें. **8** तब मैं आपकी महिमा का गुणगान करूंगा और दिन-प्रतिदिन अपनी मन्नतें पूरी करता रहूंगा.

62 संगीत निर्देशक के लिये. यदूथून धुन पर आधारित. दावीद का एक स्तोत्र. मात्र परमेश्वर में मेरे प्राणों की विश्रान्ति है; वही मेरे उद्धार के कारण हैं. **2** वही मेरे लिए एक स्थिर चट्टान और मेरा उद्धार हैं; वह मेरे सुरक्षा-दुर्ग हैं, अब मेरा विचलित होना संभव नहीं. **3** तुम कब तक उस पुरुष पर प्रहार करते रहोगे, मैं जो झुकी हुई दीवार अथवा गिरते बाड़े समान हूं? क्या तुम मेरी हत्या करोगे? **4** उन्होंने मुझे मेरी उन्नत जगह से उखाड़ डालने का निश्चय कर लिया है. झूठाचार में ही उनका संतोष मगन होता है. अपने मुख से वे आशीर्वचन उच्चारते तो हैं, किंतु मन ही मन वे उसे शाप देते रहते हैं. **5** मेरे प्राण, शांत होकर परमेश्वर के उठने की प्रतीक्षा कर; उन्हीं में तुम्हारी एकमात्र आशा मगन है. **6** वही मेरे लिए एक स्थिर चट्टान और मेरा उद्धार हैं; वह मेरे सुरक्षा-रच हैं, अब मेरा विचलित होना संभव नहीं. **7** मेरा उद्धार और मेरा सम्मान परमेश्वर पर अवलंबित हैं; मेरे लिए वह सुदृढ़ चट्टान तथा आश्रय-स्थल है. **8** मेरे लोगो, हर एक परिस्थिति में उन्हीं पर भरोसा रखो; उन्हीं के सम्मुख अपना हृदय उंडेल दो, क्योंकि परमेश्वर ही हमारा आश्रय-स्थल हैं. **9** साधारण पुरुष श्वास मात्र हैं, विशिष्ट पुरुष मात्र भ्रान्ति. इन्हें तुला पर रखकर तौला जाए तो वे नगण्य उतरेंगे; एक श्वास मात्र. **10** न तो हिंसा-अत्याचार से कुछ उपलब्ध होगा, न लूटमार से प्राप्त संपत्ति कोई गर्व का विषय है; जब तुम्हारी समृद्धि में बढ़ती होने लगे, तो संपत्ति से मन न जोड़ लेना. **11** परमेश्वर ने एक बात प्रकाशित की, मैंने दो बातें ग्रहण की: "परमेश्वर, आप सर्वसामर्थ्यी हैं. **12** तथा प्रभु, आपका प्रेम अमोघ"; इसमें संदेह नहीं, "आप हर एक पुरुष को उसके कर्मों के अनुरूप प्रतिफल प्रदान करेंगे."

63 दावीद का एक स्तोत्र. जब वह यहूदिया प्रदेश के निर्जन प्रदेश में था. परमेश्वर, आप मेरे अपने परमेश्वर हैं, अत्यंत उत्कटतापूर्वक मैं आपके सान्निध्य की कामना करता हूं; सूखी और प्यासी भूमि में, जहां जल है ही नहीं, मेरा प्राण आपके लिए प्यासा एवं मेरी देह आपकी अभिलाषी है. **2** आपके पवित्र स्थान में मैंने आपका दर्शन किया है, कि आपके सामर्थ्य तथा तेज को निहारूं. **3** इसलिये कि आपका करुणा-प्रेम मेरे जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ है, मेरे होंठ आपके स्तवन करते रहेंगे. **4** मैं आजीवन आपका धन्यवाद करता रहूंगा, आपकी महिमा का ध्यान करके मैं अपने हाथ उठाऊंगा. **5** होंठों पर गीत और मुख से स्तुति के वचनों से मेरे प्राण ऐसे तृप्त हो जाएंगे, जैसे उत्कृष्ट भोजन से. **6** जब मैं बिछौने पर होता हूं, तब आपका स्मरण करता हूं; मैं रात्रि के प्रहरों में आपके विषय में चिंतन करता रहूंगा. **7** क्योंकि आप ही मेरे सहायक हैं, आपके पंखों की छाया मुझे गीत गाने के लिए प्रेरित करती है. **8** मैं आपके निकट रहना चाहता हूं; आपका दायां हाथ मुझे संभाले रहता है. **9** जो मेरे प्राणों के प्यासे हैं, उनका विनाश निश्चित है; वे पृथ्वी की गहराई में समा जाएंगे. **10** वे तलवार से घात किए जाने के लिए सौंप दिए जाएंगे, कि वे सियारों का आहार बन जाएं. **11** परंतु राजा तो परमेश्वर में उल्लसित रहेगा; वे सभी, जिन्होंने परमेश्वर में श्रद्धा रखी है, उनका स्तवन करेंगे, जबकि झूठ बोलने वालों के मुख चुप कर दिए जाएंगे.

64 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनिए, जब आपके सामने मैं अपनी शिकायत प्रस्तुत कर रहा हूं; शत्रु के आतंक से मेरे जीवन को सुरक्षित रखिए. **2** कुकर्मियों के षड़्यंत्र से, दुष्टों की बुरी युक्ति से सुरक्षा के लिए मुझे अपनी आड़ में ले लीजिए. **3** उन्होंने तलवार के समान अपनी जीभ तेज कर रखी है और अपने शब्दों को वे लक्ष्य पर ऐसे छोड़ते हैं, जैसे घातक बाणों को. **4** वे निर्दोष पुरुष की घात में बैठकर बाण चलाते हैं; वे निडर होकर अचानक रूप से प्रहार करते हैं. **5** वे एकजुट हो दुष्ट युक्तियों के लिए एक दूसरे को उकसाते हैं, वे छिपकर जाल बिछाने की योजना बनाते हैं; वे कहते हैं, "कौन देख सकेगा हमें?" **6** वे कुटिल योजना बनाकर कहते हैं, "अब हमने सत्य योजना तैयार कर ली है!" इसमें कोई संदेह नहीं कि मानव हृदय और अंतःकरण को समझ पाना कठिन कार्य है. **7** परमेश्वर उन पर अपने बाण छोड़ेंगे; एकाएक वे घायल हो गिर पड़ेंगे. **8** परमेश्वर उनकी जीभ को उन्हीं के विरुद्ध कर देंगे और उनका विनाश हो जाएगा; वे सभी, जो उन्हें देखेंगे, घृणा में अपने सिर हिलाएंगे. **9** समस्त मनुष्यों पर आतंक छा जाएगा; वे परमेश्वर के महाकार्य की घोषणा करेंगे, वे परमेश्वर के महाकार्य पर विचार करते रहेंगे. **10** धर्मी याहवेह में हर्षित होकर, उनका आश्रय लेंगे और सभी सीधे मनवाले उनका स्तवन करें!

65 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. एक गीत. परमेश्वर, ज़ियोन में आपका स्तवन अपेक्षित है; आपके सामने की गई मन्नतें पूर्ण किए जाएंगे. **2** सभी मनुष्य आपके निकट आएंगे, आप जो प्रार्थनाएं सुनकर उनका उत्तर देते हैं. **3** मेरे पाप के अपराधों की बहुलता ने मुझे दबा रखा है, हमारे अपराधों पर आपने आवरण डाल दिया है. **4** धन्य होता है वह पुरुष जिसे आप चुन लेते हैं, कि वह आपके आंगन में आपके सामने में रहे! हम आपके आवास, आपके मंदिर के पवित्र स्थान के उत्कृष्ट पदार्थों से तृप्त किए जाएंगे. **5** आपके प्रत्युत्तर हमें चकित कर देते हैं, ये आपकी धार्मिकता होने का प्रमाण हैं. परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, पृथ्वी के छोर तक तथा दूर-दूर महासागर तक आप सभी श्रद्धालुओं की आशा हैं. **6** आप स्वयं सामर्थ्य से सुसज्जित हैं, आपने ही अपनी सामर्थ्य से पर्वतों की रचना की. **7** आप समुद्र की लहरों को, उसके गर्जनों को शांत कर देते हैं, आप राष्ट्रों की हलचल को भी शांत करते हैं. **8** सीमांत देशों के निवासी आपके महाकार्य से घबराए हुए; उदयाचल और अस्ताचल को आप हर्षगान के लिए प्रेरित करते हैं. **9** आप भूमि का ध्यान रख उसकी सिंचाई का प्रबंध करते हैं; आप उसे अत्यंत उपजाऊ बनाते हैं; परमेश्वर के जल प्रवाह कभी नहीं सूखते. क्योंकि परमेश्वर, आपने यह निर्धारित किया है, कि मनुष्यों के आहार के लिए अन्न सदैव उपलब्ध रहे. **10** आप नालियों को आर्द्र बनाए रखते हैं तथा कूटक को वर्षा द्वारा समतल कर देते हैं; वृष्टि से आप इसे कोमल बना देते हैं, आप इसकी उपज को आशीष देते हैं. **11** आप वर्ष को विपुल उपज के द्वारा गौरवान्वित करते हैं, जिससे अन्न उत्तम-उत्तम पदार्थ से भंडार परिपूर्ण पाए जाते हैं. **12** बंजर ज़मीन तक घास से सम्पन्न हो जाती है; पहाड़ियां आनंद का स्रोत हो जाती हैं. **13** हरे घास पशुओं से आच्छादित हो जाते हैं; घाटियां उपज से परिपूर्ण हैं; वे उल्लसित हो उच्च स्वर में गाने लगती हैं.

66 संगीत निर्देशक के लिये. एक गीत. एक स्तोत्र. संपूर्ण पृथ्वी हर्षोल्लास में, परमेश्वर का जय जयकार करे! **2** परमेश्वर की महिमा के तेज का गुणगान करो; महिमा का भजन गाकर उनका स्तवन करो. **3** परमेश्वर से कहो, "कैसे आश्चर्यजनक हैं आपके महाकार्य! ऐसी अतुलनीय है आपकी सामर्थ्य, कि आपके शत्रु आपके सामने संकुचित होकर झुक जाते हैं. **4** संपूर्ण पृथ्वी आपके सामने नतमस्तक हो जाती है; सभी देश आपका स्तवन गान करते हैं, वे आपकी महिमा का स्तवन गान करते हैं." **5** आकर स्वयं देख लो कि परमेश्वर ने क्या-क्या किया है, कैसे शोभायमान हैं मनुष्य के हित में किए गए उनके कार्य! **6** उन्होंने समुद्र को सूखी भूमि में बदल दिया, जब वे नदी पार कर रहे थे

तो उनके पांव सूखी भूमि पर पड़ रहे थे. आओ, हम प्रभु में आनंद मनाएं. 7 सामर्थ्य में किया गया उनका शासन सर्वदा है, सभी राष्ट्र उनकी दृष्टि में बने रहते हैं, कोई भी उनके विरुद्ध विद्रोह का विचार न करे. 8 सभी जातियों, हमारे परमेश्वर का स्तवन करो, उनके स्तवन का नाद सर्वत्र सुनाई दे; 9 उन्होंने ही हमारे जीवन की रक्षा की है तथा हमारे पांवों को फिसलने से बचाया है. 10 परमेश्वर, आपने हमारी परीक्षा ली; आपने हमें चांदी जैसे परिशुद्ध किया है. 11 आपने हमें उलझन की परिस्थिति में डालकर, हमारी पीठ पर बोझ लाद दिए. 12 आपने हमारे शत्रुओं को हमारे सिर कुचलते हुए जाने दिया; हमें अग्नि और जलधारा में से होकर जाना पड़ा, किंतु अंततः आपने हमें समृद्ध भूमि पर ला बसाया. 13 मैं आपके मंदिर में अग्निबलि के साथ प्रवेश करूंगा, और आपसे की गई अपनी प्रतिज्ञाएं पूर्ण करूंगा. 14 वे सभी प्रतिज्ञाएं, जो विपत्ति के अवसर पर स्वयं मैंने अपने मुख से की थी. 15 मैं आपको पुष्ट पशुओं की बलि अर्पण करूंगा, मैं मेढ़ों, बछड़ों और बकरों की बलि अर्पण करूंगा. 16 परमेश्वर के सभी श्रद्धालुओ, आओ और सुनो; मैं उन महाकार्य को लिखा करूंगा, जो मेरे हित में परमेश्वर द्वारा किए गए हैं. 17 मैंने उन्हें पुकारा, मेरे होंठों पर उनका गुणगान था. 18 यदि मैंने अपने हृदय में अपराध को संजोए रखकर, उसे पोषित किया होता, तो परमेश्वर ने मेरी पुकार न सुनी होती; 19 किंतु परमेश्वर ने न केवल मेरी प्रार्थना सुनी; उन्होंने उसका उत्तर भी दिया है. 20 धन्य हैं परमेश्वर, जिन्होंने मेरी प्रार्थना सुनकर उसे अस्वीकार नहीं किया, और न मुझे अपने करुणा-प्रेम से छीन लिया!

67 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. एक स्तोत्र. एक गीत. परमेश्वर हम पर अनुग्रह करें, और आशीष दें, और उनका मुख हम पर प्रकाशित करते रहें. 2 पृथ्वी पर आपकी इच्छा प्रकाशित होती रहे, तथा समस्त राष्ट्रों को आपके उद्धार का परिचय प्राप्त हो. 3 हे परमेश्वर, मनुष्य आपका स्तवन करते रहें; सभी मनुष्यों द्वारा आपका स्तवन होता रहे. 4 हर एक राष्ट्र उल्लसित होकर हर्षोल्लास में गाने लगे, क्योंकि आपका न्याय सभी के लिए खरा है और आप पृथ्वी के हर एक राष्ट्र की अगुवाई करते हैं. 5 हे परमेश्वर, मनुष्य आपका स्तवन करते रहें; सभी मनुष्यों द्वारा आपका स्तवन होता रहे. 6 पृथ्वी ने अपनी उपज प्रदान की है; परमेश्वर, हमारे परमेश्वर, हम पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखें. 7 परमेश्वर हम पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखेंगे, कि पृथ्वी के दूर-दूर तक उनके लिए श्रद्धा प्रसारित हो जाए.

68 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना. एक स्तोत्र. एक गीत. परमेश्वर उठे, कि उनके शत्रु बिखर जाएं; उनके शत्रु उनके सम्मुख से भाग खड़े हों. 2 आप उन्हें वैसे ही उड़ा दें, जैसे हवा धुएं को उड़ा ले जाती है, वे परमेश्वर के सामने उसी प्रकार नष्ट हो जाएं जिस प्रकार अग्नि के सम्मुख आने पर मोम. 3 धर्मी हर्षित हों और वे परमेश्वर की उपस्थिति में हर्षोल्लास में मगन हों; वे आनंद में उल्लसित हों. 4 परमेश्वर का गुणगान करो, जो मेघों पर विराजमान होकर आगे बढ़ते हैं, उनकी महिमा का स्तवन करो, उनका नाम है याहवेह. उपयुक्त है कि उनके सामने उल्लसित रहा जाए. 5 परमेश्वर अपने पवित्र आवास में अनाथों के पिता तथा विधवाओं के रक्षक हैं. 6 वह एकाकियों के लिए स्थायी परिवार निर्धारित करते तथा बंदियों को मुक्त कर देते हैं तब वे हर्ष गीत गाने लगते हैं; किंतु हठीले तपते, सूखे भूमि में निवास करने के लिए छोड़ दिए जाते हैं. 7 परमेश्वर, जब आप अपनी प्रजा के आगे-आगे चलने के लिए निकल पड़े, जब आप बंजर ज़मीन में से होकर जा रहे थे, 8 पृथ्वी कांप उठी, आकाश ने वृष्टि भेजी, परमेश्वर के सामने, वह जो सीनायी पर्वत के परमेश्वर हैं, परमेश्वर के सामने, जो इस्राएल के परमेश्वर हैं. 9 परमेश्वर, आपने समृद्ध वृष्टि प्रदान की; आपने अपने थके हुए विरासत को ताज़ा किया. 10 आपकी प्रजा उस देश में बस गई; हे परमेश्वर, आपने अपनी दया के भंडार से असहाय प्रजा की आवश्यकता की व्यवस्था की. 11 प्रभु ने आदेश दिया और बड़ी संख्या में स्त्रियों ने यह शुभ संदेश प्रसारित कर दिया: 12 "राजा और सेना पलायन कर रहे हैं; हां, वे पलायन कर रहे हैं, और वह जो घर पर रह गई है लूट की सामग्री को वितरित करेगी. 13 जब तुम भेड़शाला में लेटते हो, तुम ऐसे लगते हो, मानो कबूतरी के पंखों पर चांदी, तथा उसके पैरों पर प्रकाशमान स्वर्ण मढ़ा गया हो." 14 जब सर्वशक्तिमान ने राजाओं को वहां तितर-बितर किया, ज़लमोन में हिमपात हो रहा था. 15 ओ देवताओं का पर्वत, बाशान पर्वत, ओ अनेक शिखरयुक्त पर्वत, बाशान पर्वत, 16 ओ अनेक शिखरयुक्त पर्वत, तुम उस पर्वत की ओर डाह की दृष्टि क्यों डाल रहे हो, जिसे परमेश्वर ने अपना आवास बनाना चाहा है, निश्चयतः वहां याहवेह सदा-सर्वदा निवास करेंगे? 17 परमेश्वर के रथ दस दस हजार, और हजारों हजार हैं; प्रभु अपनी पवित्रता में उनके मध्य हैं, जैसे सीनायी पर्वत पर. 18 जब आप ऊंचाइयों पर चढ़ गए, और आप अपने साथ बड़ी संख्या में युद्धबन्दी ले गए; आपने मनुष्यों से, हां, हठीले मनुष्यों से भी भेंट स्वीकार की, कि आप, याहवेह परमेश्वर वहां निवास करें. 19 परमेश्वर, हमारे प्रभु, हमारे उद्धारक का स्तवन हो, जो प्रतिदिन के जीवन में हमारे सहायक हैं. 20 हमारे परमेश्वर वह परमेश्वर हैं, जो हमें उद्धार प्रदान करते हैं; मृत्यु से उद्धार सर्वसत्ताधारी अधिराज याहवेह से ही होता है. 21 इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर कुचल देंगे, केश युक्त सिर, जो पापों में लिप्त रहते हैं. 22 प्रभु ने घोषणा की, "मैं तुम्हारे शत्रुओं को बाशान से भी खींच लाऊंगा; मैं उन्हें सागर की गहराइयों तक से निकाल लाऊंगा, 23 कि तुम अपने पांव अपने शत्रुओं के रक्त में डूबा सको, और तुम्हारे कुत्ते भी अपनी जीभ तृप्त कर सकें." 24 हे परमेश्वर, आपकी शोभायात्रा अब दिखने लगी है; वह शोभायात्रा, जो मेरे परमेश्वर और मेरे राजा की है, जो मंदिर की ओर बढ़ रही है! 25 इस शोभायात्रा में सबसे आगे चल रहा है गायक-वृन्द, उसके पीछे है वाद्य-वृन्द; जिनमें युवतियां भी हैं जो डफ़ बजा रही हैं. 26 विशाल जनसभा में परमेश्वर का स्तवन किया जाए; इस्राएल राष्ट्र की महासभा में याहवेह का स्तवन किया जाए. 27 बिन्यामिन का छोटा गोत्र उनके आगे-आगे चल रहा है, वहीं यहूदी गोत्र के न्यायियों का विशाल समूह है, ज़ेबुलून तथा नफताली गोत्र के प्रधान भी उनमें सम्मिलित हैं. 28 हे परमेश्वर, अपनी सामर्थ्य को आदेश दीजिए, हम पर अपनी शक्ति प्रदर्शित कीजिए, हे परमेश्वर, जैसा आपने पहले भी किये हैं! 29 येरूशलेम में आपके मंदिर की महिमा के कारण, राजा अपनी भेंटें आपको समर्पित करेंगे. 30 सरकंडों के मध्य घूमते हिंसक पशुओं को, राष्ट्रों के बछड़ों के मध्य सांड़ों के झुंड को आप फटकार लगाइए. उन्हें रौंद डालिए, जिन्हें भेंट पाने की लालसा रहती है. युद्ध के लिए प्रसन्न राष्ट्रों की एकता भंग कर दीजिए. 31 मिस्र देश से राजदूत आएंगे; तथा कूश देश परमेश्वर के सामने समर्पित हो जाएगा. 32 पृथ्वी के समस्त राज्यो, परमेश्वर का गुणगान करो, प्रभु का स्तवन करो. 33 उन्हीं का स्तवन, जो सनातन काल से स्वर्ग में चलते फिरते रहे हैं, जिनका स्वर मेघ के गर्जन समान है. 34 उन परमेश्वर के सामर्थ्य की घोषणा करो, जिनका वैभव इस्राएल राष्ट्र पर छाया है, जिनका नियंत्रण समस्त स्वर्ग पर प्रगट है. 35 परमेश्वर, अपने मंदिर में आप कितने शोभायमान लगते हैं; इस्राएल के परमेश्वर अपनी प्रजा को अधिकार एवं सामर्थ्य प्रदान करते हैं. परमेश्वर का स्तवन होता रहे!

69 संगीत निर्देशक के लिये. "शोशनीम" धुन पर आधारित. दावीद की रचना. परमेश्वर, मेरी रक्षा कीजिए, क्योंकि जल स्तर मेरे गले तक आ पहुंचा है. 2 मैं गहरे दलदल में डूब जा रहा हूं, यहां मैं पैर तक नहीं टिक पा रहा हूं. मैं गहरे जल में आ पहुंचा हूं; और चारों ओर से जल मुझे डूबा रहा है. 3 सहायता के लिए पुकारते-पुकारते मैं थक चुका हूं; मेरा गला सूख चुका है.

अपने परमेश्वर की प्रतीक्षा करते-करते मेरी दृष्टि धुंधली हो चुकी है. **4** जो
अकारण ही मुझसे बैर करते हैं उनकी संख्या मेरे सिर के केशों से भी बढ़कर है;
बलवान हैं वे, जो अकारण ही मेरे शत्रु हो गए हैं, वे सभी मुझे मिटा देने पर
सामर्थ्यी हैं. जो मैंने चुराया ही नहीं, उसी की भरपाई मुझसे ली जा रही है. **5**
परमेश्वर, आप मेरी मूर्खतापूर्ण त्रुटियों से परिचित हैं; मेरे दोष आपसे छिपे नहीं
हैं. **6** मेरी प्रार्थना है कि मेरे कारण आपके विश्वासियों को लज्जित न होना पड़े.
प्रभु, सर्वशक्तिमान याहवेह, मेरे कारण, इस्राएल के परमेश्वर, आपके खोजियों
को लज्जित न होना पड़े. **7** मैं यह लज्जा आपके निमित्त सह रहा हूं, मेरा
मुखमंडल ही घृणास्पद हो चुका है. **8** मैं अपने परिवार के लिए अपरिचित हो
चुका हूं; अपने ही भाइयों के लिए मैं परदेशी हो गया हूं. **9** आपके भवन
की धुन में जलते जलते मैं भस्म हुआ, तथा आपके निंदकों द्वारा की जा रही
निंदा मुझ पर पड़ रही है. **10** जब मैंने उपवास करते हुए विलाप किया, तो मैं
उनके लिए घृणा का पात्र बन गया; **11** जब मैंने शोक-वस्त्र धारण किए, तो लोग
मेरी निंदा करने लगे. **12** नगर द्वार पर बैठे हुए पुरुष मुझ पर ताना मारते हैं, मैं
पियक्कड़ पुरुषों के गीतों का विषय बन चुका हूं. **13** किंतु याहवेह, आपसे
मेरी गिड़गिड़ाहट है, अपने करुणा-प्रेम के कारण, अपनी कृपादृष्टि के अवसर
पर, परमेश्वर, अपने निश्चित उद्धार के द्वारा मुझे प्रत्युत्तर दीजिए. **14** मुझे इस
दलदल से बचा लीजिए, इस गहरे जल में मुझे डूबने न दीजिए; मुझे मेरे शत्रुओं
से बचा लीजिए. **15** बाढ़ का जल मुझे समेट न ले और मैं गहराई में न जा पड़ूं
और पाताल मुझे निगल न ले. **16** याहवेह, अपने करुणा-प्रेम की भलाई के
कारण मुझे प्रत्युत्तर दीजिए; अपनी कृपादृष्टि में अपना मुख मेरी ओर कीजिए.
17 अपने सेवक से मुंह न मोड़िए; मुझे शीघ्र उत्तर दीजिए, क्योंकि मैं संकट में
पड़ा हुआ हूं. **18** पास आकर मुझे इस स्थिति से बचा लीजिए; मुझे मेरे शत्रुओं
से छुड़ा लीजिए. **19** आपको सब कुछ ज्ञात है, किस प्रकार मुझसे घृणा की जा
रही है, मुझे लज्जित एवं अपमानित किया जा रहा है; आप मेरे सभी शत्रुओं को
भी जानते हैं. **20** निंदा ने मेरा हृदय तोड़ दिया है और अब मैं दुःखी रह गया हूं;
मुझे सहानुभूति की आवश्यकता थी, किंतु यह कहीं भी न मिली, तब मैंने
सांत्वना खोजी, किंतु वह भी कहीं न थी. **21** उन्होंने मेरे भोजन में विष मिला
दिया, और पीने के लिए मुझे सिरका दिया गया. **22** उनके लिए सजाई गई मेज़
ही उनके लिए फंदा बन जाए; और जब वे शान्तिपूर्ण स्थिति में हैं, यही उनके
लिए जाल सिद्ध हो जाए. **23** उनके आंखों की ज्योति जाती रहे और वे देख न
सकें, उनकी कमर स्थायी रूप से झुक जाए. **24** अपना क्रोध उन पर उंडेल
दीजिए; आपका भस्मकारी क्रोध उन्हें समेट ले. **25** उनकी छावनी निर्जन हो
जाए; उनके मण्डपों में निवास करने के लिए कोई शेष न रह जाए. **26** ये उन्हें
दुःखित करते हैं, जिन्हें आपने घायल किया था, और उनकी पीड़ा पर वार्तालाप
करते हैं, जिस पर आपने प्रहार किया है. **27** उनके समस्त पापों के लिए उन्हें
दोषी घोषित कीजिए; वे कभी आपकी धार्मिकता में सम्मिलित न होने पाएं. **28**
उनके नाम जीवन-पुस्तक से मिटा दिए जाएं; उनका लिखा धर्मियों के साथ
कभी न हो. **29** मैं पीड़ा और संकट में पड़ा हुआ हूं, परमेश्वर, आपके उद्धार में
ही मेरी सुरक्षा हो. **30** मैं परमेश्वर की महिमा गीत के द्वारा करूंगा, मैं धन्यवाद
के साथ उनके तेज की बड़ाई करूंगा. **31** इससे याहवेह बछड़े के बलि अर्पण से
अधिक प्रसन्न होंगे; अथवा सींग और खुरयुक्त सांड की बलि से. **32** दरिद्रों
के लिए यह हर्ष का विषय होगा. तुम, जो परमेश्वर के खोजी हो, इससे नया बल
प्राप्त करो! **33** याहवेह असहायों की सुनते हैं, उन्हें बंदियों से घृणा नहीं है. **34**
आकाश और पृथ्वी उनकी वंदना करें, हां, महासागर और उसमें चलते फिरते
सभी प्राणी भी, **35** क्योंकि परमेश्वर ज़ियोन की रक्षा करेंगे; वह यहूदिया प्रदेश
के नगरों का पुनःनिर्माण करेंगे. तब प्रभु की प्रजा वहां बस जाएगी और उस क्षेत्र
पर अधिकार कर लेगी. **36** यह भूमि प्रभु के सेवकों की संतान का भाग हो
जाएगी, तथा जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं, वहां निवास करेंगे.

70 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना. अभ्यर्थना. हे परमेश्वर, कृपा
कर मुझे उद्धार प्रदान कीजिए; याहवेह, तुरंत मेरी सहायता कीजिए. **2**
वे, जो मेरे प्राणों के प्यासे हैं, लज्जित और निराश किए जाएं; वे जिनका आनंद
मेरी पीड़ा में है, पीठ दिखाकर भागें तथा अपमानित किए जाएं. **3** वे सभी, जो
मेरी स्थिति को देख, "आहा! आहा!" करते हैं! लज्जा में अपना मुख छिपा लें.
4 किंतु वे सभी, जो आपकी खोज करते हैं हर्षोल्लास में मगन हों; वे सभी,
जिन्हें आपके उद्धार की आकांक्षा है, यही कहें, "अति महान हैं परमेश्वर!" **5** मैं
दरिद्र और दुःखी पुरुष हूं; परमेश्वर, मेरी सहायता के लिए विलंब न कीजिए.
आप ही मेरे सहायक और छुड़ानेवाले हैं; याहवेह, विलंब न कीजिए.

71 याहवेह, मैंने आपका आश्रय लिया है; मुझे कभी लज्जित न होने
दीजिएगा. **2** अपनी धार्मिकता में हे परमेश्वर, मुझे बचाकर छुड़ा
लीजिए; मेरी पुकार सुनकर मेरा उद्धार कीजिए. **3** आप मेरे आश्रय की चट्टान
बन जाइए, जहां मैं हर एक परिस्थिति में शरण ले सकूं; मेरे उद्धार का आदेश
प्रसारित कीजिए, आप ही मेरे लिए चट्टान और गढ़ हैं. **4** मुझे दुष्ट के शिकंजे से
मुक्त कर दीजिए, परमेश्वर, उन पुरुषों के हाथों से जो कुटिल तथा क्रूर हैं. **5**
प्रभु याहवेह, आप ही मेरी आशा हैं, बचपन से ही मैंने आप पर भरोसा रखा है.
6 वस्तुतः गर्भ ही से आप मुझे संभालते आ रहे हैं; मेरे जन्म की प्रक्रिया भी
आपके द्वारा पूर्ण की गई. मैं सदा-सर्वदा आपका स्तवन करता रहूंगा. **7** अनेकों
के लिए मैं एक उदाहरण बन गया हूं; मेरे लिए आप दृढ़ आश्रय प्रमाणित हुए हैं.
8 मेरा मुख आपका गुणगान करते हुए नहीं थकता, आपका वैभव एवं तेज सारे
दिन मेरे गीतों के विषय होते हैं. **9** मेरी वृद्धावस्था में मेरा परित्याग न कीजिए;
अब, जब मेरा बल घटता जा रहा है, मुझे भूल न जाइए, **10** क्योंकि मेरे शत्रुओं
ने मेरे विरुद्ध स्वर उठाना प्रारंभ कर दिया है; जो मेरे प्राण लेने चाहते हैं, वे मेरे
विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं. **11** वे कहते फिर रहे हैं, "परमेश्वर तो उसे छोड़ चुके
हैं, उसे खदेड़ो और उसे जा पकड़ो, कोई नहीं रहा उसे बचाने के लिए." **12**
परमेश्वर, मुझसे दूर न रहिए; तुरंत मेरी सहायता के लिए आ जाइए. **13** वे, जो
मुझ पर आरोप लगाते हैं, लज्जा में ही नष्ट हो जाएं; जो मेरी हानि करने पर
सामर्थ्यी हैं, लज्जा और अपमान में समा जाएं. **14** जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं
आशा कभी न छोड़ूंगा; आपका स्तवन मैं अधिक-अधिक करता जाऊंगा. **15**
सारे दिन मैं अपने मुख से आपके धर्ममय कृत्यों के तथा आपके उद्धार के बारे में
बताता रहूंगा; यद्यपि मुझे इनकी सीमाओं का कोई ज्ञान नहीं है. **16** मैं प्रभु
याहवेह के विलक्षण कार्यों की घोषणा करता हुआ आऊंगा; मेरी घोषणा का
विषय होगा मात्र आपकी धार्मिकता, हां, मात्र आपकी. **17** परमेश्वर, मेरे बचपन
से ही आप मुझे शिक्षा देते आए हैं, आज तक मैं आपके महाकार्य की घोषणा कर
रहा हूं. **18** आज जब मैं वृद्ध हो चुका हूं, मेरे केश पक चुके हैं, परमेश्वर, मुझे
उस समय तक न छोड़ना, जब तक मैं अगली पीढ़ी को आपके सामर्थ्य तथा
आपके पराक्रम के विषय में शिक्षा न दे दूं. **19** परमेश्वर आपकी धार्मिकता
आकाश तक ऊंची है, आपने महाकार्य किए हैं. परमेश्वर, कौन है आपके तुल्य?
20 यद्यपि आप मुझे अनेक विकट संकटों में से लेकर यहां तक ले आए हैं, आप
ही मुझमें पुनः जीवन का संचार करेंगे, आप पृथ्वी की गहराइयों से मुझे ऊपर ले
आएंगे. **21** आप ही मेरी महिमा को ऊंचा करेंगे तथा आप ही मुझे पुनः सांत्वना
प्रदान करेंगे. **22** मेरे परमेश्वर, आपकी विश्वासयोग्यता के लिए, मैं वीणा के
साथ आपका स्तवन करूंगा; इस्राएल के परम पवित्र, मैं किन्नोर की संगत पर,
आपका गुणगान करूंगा. **23** अपने होंठों से मैं हर्षोल्लास में नारे लगाऊंगा, जब
मैं आपके स्तवन गीत गाऊंगा; मैं वही हूं, जिसका आपने उद्धार किया है. **24**

आपके युक्त कृत्यों का वर्णन मेरी जीभ से सदा होता रहेगा, क्योंकि जो मेरी
हानि के इच्छुक थे आपने उन्हें लज्जित और निराश कर छोड़ा है.

72 शलोमोन का परमेश्वर, राजा को अपना न्याय, तथा राजपुत्र को अपनी
धार्मिकता प्रदान कीजिए, 2 कि वह आपकी प्रजा का न्याय धार्मिकता-
पूर्वक, तथा पीड़ितों का शासन न्याय संगत रीति से करे. 3 तब प्रजा के लिए
पर्वतों से समृद्धि, तथा घाटियों से धार्मिकता की उपज उत्पन्न होने लगेगी. 4
तब राजा प्रजा में पीड़ितों की रक्षा करेगा, दरिद्रों की संतानों का उद्धार करेगा;
और सतानेवाले को कुचल डालेगा. 5 पीढ़ी से पीढ़ी जब तक सूर्य और चंद्रमा
का अस्तित्व रहेगा, प्रजा में आपके प्रति श्रद्धा बनी रहेगी. 6 उसका प्रगट होना
वैसा ही होगा, जैसा घास पर वर्षा का तथा शुष्क भूमि पर वृष्टि का. 7 उसके
शासनकाल में धर्मी फूले फलेंगे, और जब तक चंद्रमा रहेगा समृद्धि बढ़ती
जाएगी. 8 उसके साम्राज्य का विस्तार एक सागर से दूसरे सागर तक तथा फ़रात
नदी से पृथ्वी के छोर तक होगा. 9 वन में रहनेवाले लोग भी उसके सामने झुकेंगे
और वह शत्रुओं को धूल का सेवन कराएगा. 10 तरशीश तथा दूर तट के देशों
के राजा उसके लिए भेंटें लेकर आएंगे, शीबा और सेबा देश के राजा भी उसे
उपहार प्रस्तुत करेंगे. 11 समस्त राजा उनके सामने नतमस्तक होंगे और समस्त
राष्ट्र उनके अधीन. 12 क्योंकि वह दुःखी की पुकार सुनकर उसे मुक्त कराएगा,
ऐसे पीड़ितों को, जिनका कोई सहायक नहीं. 13 वह दरिद्रों तथा दुर्बलों पर
तरस खाएगा तथा वह दुःखी को मृत्यु से बचा लेगा. 14 वह उनके प्राणों को
अंधेर और हिंसा से बचा लेगा, क्योंकि उसकी दृष्टि में उनका रक्त मूल्यवान है.
15 वह दीर्घायु हो! उसे भेंट में शीबा देश का स्वर्ण प्रदान किया जाए. प्रजा उसके
लिए प्रार्थना करती रहे और निरंतर उसके हित की कामना करती रहे. 16 संपूर्ण
देश में अन्न विपुलता में बना रहे; पहाड़ियां तक उपज से भर जाएं. देश में फलों
की उपज लबानोन की उपजाऊ भूमि जैसी हो और नगरवासियों की समृद्धि ऐसी
हो, जैसी भूमि की वनस्पति. 17 उसकी ख्याति चिरस्थाई हो; जब तक सूर्य में
प्रकाश है, उसकी महिमा नई हो. उसके द्वारा समस्त राष्ट्र आशीषित हों, वे उसे
धन्य कहें. 18 इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह परमेश्वर का स्तवन हो, केवल वही
हैं, जो महाकार्य करते हैं. 19 उनका महिमामय नाम सदा-सर्वदा धन्य हो; संपूर्ण
पृथ्वी उनके तेज से भयभीत हो जाए. 20 यिशै के पुत्र दावीद की प्रार्थनाएं यहां
समाप्त हुईं.

73 आसफ का एक स्तोत्र. इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर इस्राएल के
प्रति, उनके प्रति, जिनके हृदय निर्मल हैं, हितकारी हैं. 2 वैसे मैं लगभग
इस स्थिति तक पहुंच चुका था; कि मेरे पैर फिसलने पर ही थे, मेरे कदम
लड़खड़ाने पर ही थे. 3 मुझे दुर्जनों की समृद्धि से डाह होने लगी थी क्योंकि
मेरा ध्यान उनके घमंड पर था. 4 मृत्यु तक उनमें पीड़ा के प्रति कोई संवेदना
न थी; उनकी देह स्वस्थ तथा बलवान थी. 5 उन्हें अन्य मनुष्यों के समान
सामान्य समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता; उन्हें परिश्रम भी नहीं करना
पड़ता. 6 अहंकार उनके गले का हार है; तथा हिंसा उनका वस्त्र. 7 उनके
संवेदन शून्य हृदय से अपराध ही निकलता है; उनके मस्तिष्क में घुमड़ती
दुष्कल्पनाओं की कोई सीमा ही नहीं है. 8 वे उपहास करते रहते हैं, बुराई करने
की वार्तालाप करते हैं; तथा अहंकार के साथ वे उत्पीड़न की धमकी देते हैं. 9
उनकी डींगे आकाश तक ऊंची होती हैं, और वे दावा करते हैं कि वे पृथ्वी के
अधिकारी हैं. 10 इसलिये उनके लोग इस स्थान पर लौट आते हैं, और वे भरे
हुए जल में से पान करते हैं. 11 वे कहते हैं, "यह कैसे हो सकता है, कि यह
परमेश्वर को ज्ञात हो जाए? क्या परम प्रधान को इसका बोध है?" 12 ऐसे होते
हैं दुष्ट पुरुष—सदैव निश्चिंत; और उनकी संपत्ति में वृद्धि होती रहती है. 13 क्या
लाभ हुआ मुझे अपने हृदय को शुद्ध रखने का? व्यर्थ ही मैंने अपने हाथ निर्दोष
रखे. 14 सारे दिन मैं यातनाएं सहता रहा, प्रति भोर मुझे दंड दिया जाता रहा. 15
अब मेरा बोलना उन्हीं के जैसा होगा, तो यह आपकी प्रजा के साथ विश्वासघात
होता. 16 मैंने इस मर्म को समझने का प्रयास किया, तो यह अत्यंत कठिन
लगा. 17 तब मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान में जा पहुंचा; और वहां मुझ पर दुष्टों
की नियति का प्रकाशन हुआ. 18 सचमुच में, आपने दुष्टों को फिसलने वाली
भूमि पर रखा है; विनाश होने के लिए आपने उन्हें निर्धारित कर रखा है. 19
अचानक ही आ पड़ेगा उन पर विनाश, आतंक उन्हें एकाएक ही ले उड़ेगा! 20
जब दुस्वप्न के कारण निद्रा से जागने पर एक व्यक्ति दुस्वप्न के रूप से घृणा
करता है, हे प्रभु, उसी प्रकार आपके जागने पर उनके स्वरूप से आप घृणा
करेंगे! 21 जब मेरा हृदय खेदित था तथा मेरी आत्मा कड़वाहट से भर गई थी,
22 उस समय मैं नासमझ और अज्ञानी ही था; आपके सामने मैं पशु समान था.
23 किंतु मैं सदैव आपके निकट रहा हूं; और आप मेरा दायां हाथ थामे रहे.
24 आप अपनी सम्मति द्वारा मेरी अगुवाई करते हैं, और अंत में आप मुझे
अपनी महिमा में सम्मिलित कर लेंगे. 25 स्वर्ग में आपके अतिरिक्त मेरा कौन
है? आपकी उपस्थिति में मुझे पृथ्वी की किसी भी वस्तु की कामना नहीं रह
जाती. 26 यह संभव है कि मेरी देह मेरा साथ न दे और मेरा हृदय क्षीण हो जाए,
किंतु मेरा बल स्वयं परमेश्वर हैं; वही मेरी निधि हैं. 27 क्योंकि वे, जो आपसे
दूर हैं, नष्ट हो जाएंगे; आपने उन सभी को नष्ट कर दिया है, जो आपके प्रति
विश्वासघाती हैं. 28 मेरा अपना अनुभव यह है, कि मनोरम है परमेश्वर का
सान्निध्य. मैंने प्रभु याहवेह को अपना आश्रय-स्थल बना लिया है; कि मैं आपके
समस्त महाकार्य को लिख सकूं.

74 आसफ का मसकील. परमेश्वर! आपने क्यों हमें सदा के लिए शोकित
छोड़ दिया है? आपकी चराई की भेड़ों के प्रति आपके क्रोध की अग्नि
का धुआं क्यों उठ रहा है? 2 स्मरण कीजिए उन लोगों को, जिन्हें आपने मोल
लिया था, उस कुल को, आपने अपना भागी बनाने के लिए जिसका उद्धार किया
था; स्मरण कीजिए ज़ियोन पर्वत को, जो आपका आवास है. 3 इन चिरस्थाई
विध्वंस अवशेषों के मध्य चलते फिरते रहिए, पवित्र स्थान में शत्रु ने सभी
कुछ नष्ट कर दिया है. 4 एक समय जहां आप हमसे भेंटकरते थे, वहां शत्रु के
जयघोष के नारे गूंज रहे हैं; उन्होंने वहां प्रमाण स्वरूप अपने ध्वज गाड़ दिए हैं.
5 उनका व्यवहार वृक्षों और झाड़ियों पर कुल्हाड़ी चलाते हुए आगे बढ़ते पुरुषों
के समान होता है. 6 उन्होंने कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से द्वारों के उकेरे गए
नक़्क़ाशीदार कामों को चूर-चूर कर डाला है. 7 उन्होंने आपके मंदिर को भस्म
कर धूल में मिला दिया है; उस स्थान को, जहां आपकी महिमा का वास था,
उन्होंने भ्रष्ट कर दिया है. 8 उन्होंने यह कहते हुए संकल्प किया, "इन्हें हम
पूर्णतः कुचल देंगे!" संपूर्ण देश में ऐसे स्थान, जहां-जहां परमेश्वर की वंदना की
जाती थी, भस्म कर दिए गए. 9 अब कहीं भी आश्चर्य कार्य नहीं देखे जा रहे;
कहीं भी भविष्यद्वक्ता शेष न रहे, हममें से कोई भी यह नहीं बता सकता, कि
यह सब कब तक होता रहेगा. 10 परमेश्वर, शत्रु कब तक आपका उपहास
करता रहेगा? क्या शत्रु आपकी महिमा पर सदैव ही कीचड़ उछालता रहेगा? 11
आपने क्यों अपना हाथ रोके रखा है, आपका दायां हाथ? अपने वस्त्रों में छिपे
हाथ को बाहर निकालिए और कर दीजिए अपने शत्रुओं का अंत! 12 परमेश्वर,
आप युग-युग से मेरे राजा रहे हैं; पृथ्वी पर उद्धार के काम करनेवाले आप ही हैं.
13 आप ही ने अपनी सामर्थ्य से समुद्र को दो भागों में विभक्त किया था; आप
ही ने विकराल जल जंतु के सिर कुचल डाले. 14 लिवयाथान के सिर भी आपने
ही कुचले थे, कि उसका मांस वन के पशुओं को खिला दिया जाए. 15 आपने
ही झरने और धाराएं प्रवाहित की; और आपने ही सदा बहने वाली नदियों को
सुखा दिया. 16 दिन तो आपका है ही, साथ ही रात्रि भी आपकी ही है; सूर्य,
चंद्रमा की स्थापना भी आपके द्वारा की गई है. 17 पृथ्वी की समस्त सीमाएं

आपके द्वारा निर्धारित की गई हैं; ग्रीष्मऋतु एवं शरद ऋतु दोनों ही आपकी
कृति हैं. 18 याहवेह, स्मरण कीजिए शत्रु ने कैसे आपका उपहास किया था,
कैसे मूर्खों ने आपकी निंदा की थी. 19 अपने कबूतरी का जीवन हिंसक पशुओं
के हाथ में न छोड़िए; अपनी पीड़ित प्रजा के जीवन को सदा के लिए भूल न
जाइए. 20 अपनी वाचा की लाज रख लीजिए, क्योंकि देश के अंधकारमय
स्थान हिंसा के अड्डे बन गए हैं. 21 दमित प्रजा को लज्जित होकर लौटना न
पड़े; कि दरिद्र और दुःखी आपका गुणगान करें. 22 परमेश्वर, उठ जाइए
और अपने पक्ष की रक्षा कीजिए; स्मरण कीजिए कि मूर्ख कैसे निरंतर आपका
उपहास करते रहे हैं. 23 अपने विरोधियों के आक्रोश की अनदेखी न कीजिए,
आपके शत्रुओं का वह कोलाहल, जो निरंतर बढ़ता जा रहा है.

75 संगीत निर्देशक के लिये. "अलतशखेथ" धुन पर आधारित. आसफ
का एक स्तोत्र. एक गीत. हे परमेश्वर, हम आपकी स्तुति करते हैं, हम
आपकी स्तुति करते हैं क्योंकि आपका नाम हमारे निकट है; लोग आपके
महाकार्य का वर्णन कर रहे हैं. 2 आपका कथन है, "उपयुक्त समय का निर्धारण
मैं करता हूं; निष्पक्ष न्याय भी मेरा ही होता है. 3 जब भूकंप होता है और पृथ्वी
के निवासी भयभीत हो कांप उठते हैं, तब मैं ही हूं, जो पृथ्वी के स्तंभों को
दृढ़तापूर्वक थामे रखता हूं. 4 अहंकारी से मैंने कहा, 'घमंड न करो,' और दुष्ट
से, 'अपने सींग ऊंचे न करो, 5 स्वर्ग की ओर सींग उठाने का साहस न करना;
अपना सिर ऊंचा कर बातें न करना.'" 6 न तो पूर्व से, न पश्चिम से और न ही
दक्षिण के वन से, कोई किसी मनुष्य को ऊंचा कर सकता है. 7 मात्र परमेश्वर
ही न्याय करते हैं: वह किसी को ऊंचा करते हैं और किसी को नीचा. 8 याहवेह
के हाथों में एक कटोरा है, उसमें मसालों से मिली उफनती दाखमधु है; वह इसे
उण्डेलते हैं और पृथ्वी के समस्त दुष्ट तलछट तक इसका पान करते हैं. 9 मेरी
ओर से सर्वदा यही घोषणा होगी; मैं याकोब के परमेश्वर का गुणगान करूंगा; 10
आप का, जो कहते हैं, "मैं समस्त दुष्टों के सींग काट डालूंगा, किंतु धर्मियों के
सींग ऊंचे किए जाएंगे."

76 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाद्यों की संगत के साथ. आसफ का एक
स्तोत्र. एक गीत. यहूदिया प्रदेश में लोग परमेश्वर को जानते हैं; इस्राएल
देश में उनका नाम बसा है. 2 शालेम नगर में उनका आवास है, और उनका
मुख्यालय ज़ियोन नगर में. 3 यह वह स्थान है, जहां उन्होंने आग्नेय बाणों को,
ढाल और तलवारों को तोड़ डाला. 4 आप अत्युज्जवल ज्योति से उज्जवल हैं,
प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण पर्वतों से कहीं अधिक भव्य. 5 शूरवीरों से सब
कुछ छीन लिया गया, वे चिर-निद्रा में समा गए; एक भी योद्धा में इतना सामर्थ्य
शेष न रहा कि इसे रोक पाए. 6 याकोब के परमेश्वर, ऐसी प्रचंड थी आपकी
फटकार, कि अश्व और रथ दोनों ही नष्ट हो गए. 7 मात्र आप ही इस योग्य हैं
कि आपके प्रति श्रद्धा रखा जाए. जब आप उदास होते हैं तब किसमें आपके
सामने ठहरने की क्षमता होती है? 8 जब स्वर्ग से आपने अपने निर्णय प्रसारित
किए, तो पृथ्वी भयभीत होकर चुप हो गई. 9 परमेश्वर, आप उस समय न्याय
के लिए सामर्थ्यी हुए, कि पृथ्वी के पीड़ित लोगों को छुड़ा लिया जाए. 10
निःसंदेह दुष्टों के प्रति आपका रोष आपके प्रति प्रशंसा प्रेरित करता है, तब वे,
जो आपके रोष के बाद शेष रह गए थे, आप उन्हें नियंत्रित एवं धर्ममय करेंगे.
11 जब तुम मन्नत मानो, तो परमेश्वर, अपने याहवेह के लिए पूर्ण करो; सभी
निकटवर्ती राष्ट्र उन्हें भेंट अर्पित करें, जो श्रद्धा-भय के अधिकारी हैं. 12 वह
शासकों का मनोबल तोड़ देते हैं; समस्त पृथ्वी के राजाओं के लिए वह आतंक
हैं.

77 संगीत निर्देशक के लिये. यदूथून के लिए. आसफ का एक स्तोत्र. एक
गीत. मैं परमेश्वर को पुकारता हूं—उच्च स्वर में परमेश्वर की दुहाई दे
रहा हूं; कि वह मेरी प्रार्थना पर ध्यान दें. 2 अपनी संकट की स्थिति में, मैंने प्रभु
की सहायता की कामना की; रात्रि के समय थकावट की अनदेखी कर मैं उनकी
ओर हाथ बढ़ाए रहा किंतु, मेरे प्राण को थोड़ी भी सांत्वना प्राप्त न हुई. 3
परमेश्वर, कराहते हुए मैं आपको स्मरण करता रहा; आपका ध्यान करते हुए मेरी
आत्मा क्षीण हो गई. 4 जब मैं संकट में निराश हो चुका था; आपने मेरी आंख न
लगने दी. 5 मेरे विचार प्राचीन काल में चले गए, और फिर मैं प्राचीन काल
में दूर चला गया. 6 जब रात्रि में मैं अपनी गीत रचनाएं स्मरण कर रहा था,
मेरा हृदय उन पर विचार करने लगा, तब मेरी आत्मा में यह प्रश्न उभर आया.
7 "क्या प्रभु स्थाई रूप से हमारा परित्याग कर देंगे? क्या हमने स्थाई रूप
से उनकी कृपादृष्टि खो दी है? 8 क्या उनका बड़ा प्रेम अब पूर्णतः शून्य हो
गया? क्या उनकी प्रतिज्ञा पूर्णतः विफल प्रमाणित हो गई? 9 क्या परमेश्वर की
कृपालुता अब जाती रही? क्या अपने क्रोध के कारण वह दया नहीं करेंगे?" 10
तब मैंने विचार किया, "वस्तुतः मेरे दुःख का कारण यह है: कि सर्वोच्च प्रभु
परमेश्वर ने अपना दायां हाथ खींच लिया है. 11 मैं याहवेह के महाकार्य स्मरण
करूंगा; हां, प्रभु पूर्व युगों में आपके द्वारा किए गए आश्चर्य कार्यों का मैं स्मरण
करूंगा. 12 आपके समस्त महाकार्य मेरे मनन का विषय होंगे और आपके
आश्चर्य कार्य मेरी सोच का विषय." 13 परमेश्वर, पवित्र हैं, आपके मार्ग. और
कौन सा ईश्वर हमारे परमेश्वर के तुल्य महान है? 14 आप तो वह परमेश्वर हैं,
जो आश्चर्य कार्य करते हैं; समस्त राष्ट्रों पर आप अपना सामर्थ्य प्रदर्शित करते
हैं. 15 आपने अपने भुजबल से अपने लोगों को, याकोब और योसेफ़ के वंशजों
को, छुड़ा लिया. 16 परमेश्वर, महासागर ने आपकी ओर दृष्टि की, महासागर
ने आपकी ओर दृष्टि की और छटपटाने लगा; महासागर की गहराइयों तक
में उथल-पुथल हो गई. 17 मेघों ने जल वृष्टि की, स्वर्ग में मेघ की गरजना
गूंज उठी; आपके बाण इधर-उधर-सर्वत्र बरसने लगे. 18 आपकी गरजना का
स्वर बवंडर में सुनाई पड़ रहा था, आपकी बिजली की चमक से समस्त संसार
प्रकाशित हो उठा; पृथ्वी कांपी और हिल उठी. 19 आपका मार्ग सागर में
से होकर गया है, हां, महासागर में होकर आपका मार्ग गया है, किंतु आपके
पदचिन्ह अदृश्य ही रहे. 20 एक चरवाहे के समान आप अपनी प्रजा को लेकर
आगे बढ़ते गए. मोशेह और अहरोन आपके प्रतिनिधि थे.

78 आसफ का मसकील मेरी प्रजा, मेरी शिक्षा पर ध्यान दो; जो शिक्षा
मैं दे रहा हूं उसे ध्यान से सुनो. 2 मैं अपनी शिक्षा दृष्टान्तों में दूंगा; मैं
पूर्वकाल से गोपनीय रखी गई बातों को प्रकाशित करूंगा— 3 वे बातें जो हम
सुन चुके थे, जो हमें मालूम थीं, वे बातें, जो हमने अपने पूर्वजों से प्राप्त की
थीं. 4 याहवेह द्वारा किए गए स्तुत्य कार्य, जो उनके सामर्थ्य के अद्भुत कार्य हैं,
इन्हें हम इनकी संतानों से गुप्त नहीं रखेंगे; उनका लिखा भावी पीढ़ी तक
किया जायेगा. 5 प्रभु ने याकोब के लिए नियम स्थापित किया तथा इस्राएल में
व्यवस्था स्थापित कर दिया, इनके संबंध में परमेश्वर का आदेश था कि हमारे
पूर्वज अगली पीढ़ी को इनकी शिक्षा दें, 6 कि आगामी पीढ़ी इनसे परिचित हो
जाए, यहां तक कि वे बालक भी, जिनका अभी जन्म भी नहीं हुआ है, कि
अपने समय में वे भी अपनी अगली पीढ़ी तक इन्हें बताते जाए. 7 तब वे
परमेश्वर में अपना भरोसा स्थापित करेंगे और वे परमेश्वर के महाकार्य भूल न
सकेंगे, तथा उनके आदेशों का पालन करेंगे. 8 तब उनका आचरण उनके
पूर्वजों के समान न रहेगा, जो हठी और हठीली पीढ़ी प्रमाणित हुई, जिनका
हृदय परमेश्वर को समर्पित न था, उनकी आत्माएं उनके प्रति सच्ची नहीं थीं.
9 एफ्राईम के सैनिक यद्यपि धनुष से सुसज्जित थे, युद्ध के दिन वे फिरकर भाग
गए; 10 उन्होंने परमेश्वर से स्थापित वाचा को भंग कर दिया, उन्होंने उनकी
व्यवस्था की अधीनता भी अस्वीकार कर दी. 11 परमेश्वर द्वारा किए गए
महाकार्य, वे समस्त आश्चर्य कार्य, जो उन्हें प्रदर्शित किए गए थे, वे भूल गए.

12 ये आश्चर्यकर्म परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के देखते उनके सामने किए थे, ये
सब मिस्र देश तथा ज़ोअन क्षेत्र में किए गए थे. 13 परमेश्वर ने समुद्र जल को
विभक्त कर दिया और इसमें उनके लिए मार्ग निर्मित किया; इसके लिए परमेश्वर
ने समुद्र जल को दीवार समान खड़ा कर दिया. 14 परमेश्वर दिन के समय
उनकी अगुवाई बादल के द्वारा तथा संपूर्ण रात्रि में अग्निप्रकाश के द्वारा करते
रहे. 15 परमेश्वर ने बंजर भूमि में चट्टानों को फाड़कर उन्हें इतना जल प्रदान
किया, जितना जल समुद्र में होता है; 16 उन्होंने चट्टान में से जलधाराएं प्रवाहित
कर दीं, कि जल नदी समान प्रवाहित हो चला. 17 यह सब होने पर भी वे
परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते ही रहे, बंजर भूमि में उन्होंने सर्वोच्च परमेश्वर के
विरुद्ध विद्रोह किया. 18 जिस भोजन के लिए वे लालायित थे, उसके लिए हठ
करके उन्होंने मन ही मन परमेश्वर की परीक्षा ली. 19 वे यह कहते हुए परमेश्वर
की निंदा करते रहे; "क्या परमेश्वर बंजर भूमि में भी हमें भोजन परोस सकते
हैं? 20 जब उन्होंने चट्टान पर प्रहार किया तो जल-स्रोत फूट पड़े तथा विपुल
जलधाराएं बहने लगीं; किंतु क्या वह हमें भोजन भी दे सकते हैं? क्या वह संपूर्ण
प्रजा के लिए मांस भोजन का भी प्रबंध कर सकते हैं?" 21 यह सुन याहवेह
अत्यंत उदास हो गए; याकोब के विरुद्ध उनकी अग्नि भड़क उठी, उनका क्रोध
इस्राएल के विरुद्ध भड़क उठा, 22 क्योंकि उन्होंने न तो परमेश्वर में विश्वास
किया और न उनके उद्धार पर भरोसा किया. 23 यह होने पर भी उन्होंने आकाश
को आदेश दिया और स्वर्ग के झरोखे खोल दिए; 24 उन्होंने उनके भोजन के
लिए मन्ना वृष्टि की, उन्होंने उन्हें स्वर्गिक अन्न प्रदान किया. 25 मनुष्य वह
भोजन कर रहे थे, जो स्वर्गदूतों के लिए निर्धारित था; परमेश्वर ने उन्हें भरपेट
भोजन प्रदान किया. 26 स्वर्ग से उन्होंने पूर्वी हवा प्रवाहित की, अपने सामर्थ्य
में उन्होंने दक्षिणी हवा भी प्रवाहित की. 27 उन्होंने उनके लिए मांस की ऐसी
वृष्टि की, मानो वह धूलि मात्र हो, पक्षी ऐसे उड़ रहे थे, जैसे सागर तट पर रेत
कण उड़ते हैं. 28 परमेश्वर ने पक्षियों को उनके मण्डपों में घुस जाने के लिए
बाध्य कर दिया, वे मंडप के चारों ओर छाए हुए थे. 29 उन्होंने तृप्त होने के
बाद भी इन्हें खाया. परमेश्वर ने उन्हें वही प्रदान कर दिया था, जिसकी उन्होंने
कामना की थी. 30 किंतु इसके पूर्व कि वे अपने कामना किए भोजन से तृप्त
होते, जब भोजन उनके मुख में ही था, 31 परमेश्वर का रोष उन पर भड़क
उठा; परमेश्वर ने उनके सबसे सशक्तों को मिटा डाला, उन्होंने इस्राएल के
युवाओं को मिटा डाला. 32 इतना सब होने पर भी वे पाप से दूर न हुए; समस्त
आश्चर्य कार्यों को देखने के बाद भी उन्होंने विश्वास नहीं किया. 33 तब
परमेश्वर ने उनके दिन व्यर्थता में तथा उनके वर्ष आतंक में समाप्त कर दिए. 34
जब कभी परमेश्वर ने उनमें से किसी को मारा, वे बाकी परमेश्वर को खोजने
लगे; वे दौड़कर परमेश्वर की ओर लौट गये. 35 उन्हें यह स्मरण आया कि
परमेश्वर उनके लिए चट्टान हैं, उन्हें यह स्मरण आया कि सर्वोच्च परमेश्वर
उनके उद्धारक हैं. 36 किंतु उन्होंने अपने मुख से परमेश्वर की चापलूसी की,
अपनी जीभ से उन्होंने उनसे झूठाचार किया; 37 उनके हृदय में सच्चाई नहीं
थी, वे उनके साथ बांधी गई वाचा के प्रतिनिष्ठ न रहे. 38 फिर भी परमेश्वर
उनके प्रति कृपालु बने रहे; परमेश्वर ही ने उनके अपराधों को क्षमा कर दिया
और उनका विनाश न होने दिया. बार-बार वह अपने कोप पर नियंत्रण करते रहे
और उन्होंने अपने समग्र प्रकोप को प्रगट न होने दिया. 39 परमेश्वर को यह
स्मरण रहा कि वे मात्र मनुष्य ही हैं—पवन के समान, जो बहने के बाद लौटकर
नहीं आता. 40 बंजर भूमि में कितनी ही बार उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह
किया, कितनी ही बार उन्होंने उजाड़ भूमि में उन्हें उदास किया! 41 बार-बार
वे परीक्षा लेकर परमेश्वर को उकसाते रहे; वे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को
क्रोधित करते रहे. 42 वे परमेश्वर की सामर्थ्य को भूल गए, जब परमेश्वर ने
उन्हें अत्याचारी की अधीनता से छुड़ा लिया था. 43 जब परमेश्वर ने मिस्र
देश में चमत्कार चिन्ह प्रदर्शित किए, जब ज़ोअन प्रदेश में आश्चर्य कार्य किए
थे. 44 परमेश्वर ने नदी को रक्त में बदल दिया; वे जलधाराओं से जल पीने
में असमर्थ हो गए. 45 परमेश्वर ने उन पर कुटकी के समूह भेजे, जो उन्हें
निगल गए. मेंढकों ने वहां विध्वंस कर डाला. 46 परमेश्वर ने उनकी उपज
हासिल टिड्डों को, तथा उनके उत्पाद अरबेह टिड्डियों को सौंप दिए. 47 उनकी
द्राक्षा उपज ओलों से नष्ट कर दी गई, तथा उनके गूलर-अंजीर पाले में नष्ट
हो गए. 48 उनका पशु धन भी ओलों द्वारा नष्ट कर दिया गया, तथा उनकी
भेड़-बकरियों को बिजलियों द्वारा. 49 परमेश्वर का उत्तप्त क्रोध, प्रकोप तथा
आक्रोश उन पर टूट पड़ा, ये सभी उनके विनाशक दूत थे. 50 परमेश्वर ने अपने
प्रकोप का पथ तैयार किया था; उन्होंने उन्हें मृत्यु से सुरक्षा प्रदान नहीं की परंतु
उन्हें महामारी को सौंप दिया. 51 मिस्र के सभी पहलौठों को परमेश्वर ने हत्या
कर दी, हाम के मण्डपों में पौरुष के प्रथम फलों का. 52 किंतु उन्होंने भेड़ के
झुंड के समान अपनी प्रजा को बचाया; बंजर भूमि में वह भेड़ का झुंड के
समान उनकी अगुवाई करते रहे. 53 उनकी अगुवाई ने उन्हें सुरक्षा प्रदान की,
फलस्वरूप वे अभय आगे बढ़ते गए; जबकि उनके शत्रुओं को समुद्र ने समेट
लिया. 54 यह सब करते हुए परमेश्वर उन्हें अपनी पवित्र भूमि की सीमा तक,
उस पर्वतीय भूमि तक ले आए जिस पर उनके दायें हाथ ने अपने अधीन किया
था. 55 तब उन्होंने जनताओं को वहां से काटकर अलग कर दिया और उनकी
भूमि अपनी प्रजा में भाग स्वरूप बाट दिया; इस्राएल के समस्त गोत्रों को उनके
आवास प्रदान करके उन्हें वहां बसा दिया. 56 इतना सब होने के बाद भी उन्होंने
परमेश्वर की परीक्षा ली, उन्होंने सर्वोच्च परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया;
उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को भंग कर दिया. 57 अपने पूर्वजों के जैसे वे
भी अकृतज्ञ तथा विश्वासघाती हो गए; वैसे ही अयोग्य, जैसा एक दोषपूर्ण धनुष
होता है. 58 उन्होंने देवताओं के लिए निर्मित वेदियों के द्वारा परमेश्वर के क्रोध
को भड़काया है; उन प्रतिमाओं ने परमेश्वर में डाह भाव उत्तेजित किया. 59
उन्हें सुन परमेश्वर को अत्यंत झुंझलाहट सी हो गई; उन्होंने इस्राएल को पूर्णतः
छोड़ दिया. 60 उन्होंने शीलो के निवास-मंडप का परित्याग कर दिया, जिसे
उन्होंने मनुष्य के मध्य बसा दिया था. 61 परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य के संदूक
को बन्दीत्व में भेज दिया, उनका वैभव शत्रुओं के वश में हो गया. 62 उन्होंने
अपनी प्रजा तलवार को भेंट कर दी; अपने ही निज भाग पर वह अत्यंत उदास
थे. 63 अग्नि उनके युवाओं को निगल कर गई, उनकी कन्याओं के लिए कोई
भी वैवाहिक गीत-संगीत शेष न रह गया. 64 उनके पुरोहितों का तलवार से वध
कर दिया गया, उनकी विधवाएं आंसुओं के लिए असमर्थ हो गईं. 65 तब
मानो प्रभु की नींद भंग हो गई, कुछ वैसे ही, जैसे कोई वीर दाखमधु की होश
से बाहर आ गया हो. 66 परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को ऐसे मार भगाया; कि
उनकी लज्जा चिरस्थाई हो गई. 67 तब परमेश्वर ने योसेफ़ के मण्डपों को
अस्वीकार कर दिया, उन्होंने एफ्राईम के गोत्र को नहीं चुना; 68 किंतु उन्होंने
यहूदाह गोत्र को चुन लिया, अपने प्रिय ज़ियोन पर्वत को. 69 परमेश्वर ने अपना
पवित्र आवास उच्च पर्वत जैसा निर्मित किया, पृथ्वी-सा चिरस्थाई. 70 उन्होंने
अपने सेवक दावीद को चुन लिया, इसके लिए उन्होंने उन्हें भेड़शाला से बाहर
निकाल लाया; 71 भेड़ों के चरवाहे से उन्हें लेकर परमेश्वर ने उन्हें अपनी प्रजा
याकोब का रखवाला बना दिया, इस्राएल का, जो उनके निज भाग हैं. 72 दावीद
उनकी देखभाल हृदय की सच्चाई में करते रहे; उनके कुशल हाथों ने उनकी
अगुवाई की.

79 आसफ का एक स्तोत्र. परमेश्वर, जनताओं ने आपके निज भाग में
अतिक्रमण किया है; आपके पवित्र मंदिर को उन्होंने दूषित कर दिया
है, येरूशलेम अब खंडहर मात्र रह गया है. 2 उन्होंने आपके सेवकों के शव
आकाश के पक्षियों के आहार के लिए छोड़ दिए हैं; आपके भक्तों का मांस

वन्य पशुओं का आहार बन गया है. 3 येरूशलेम के चारों ओर उन्होंने रक्त को
जलधारा समान बहा दिया है, मृतकों को भूमिस्थ करने के लिए कोई शेष न
रहा. 4 हमारे पड़ोसियों के लिए हम तिरस्कार के पात्र हो गए हैं. उनके लिए,
जो हमारे आस-पास होते हैं, हम घृणा और ठट्टा का विषय बन गए हैं. 5 याहवेह,
कब तक? क्या हम पर आपका क्रोध लगातार रहेगा? कब तक आपकी डाह
अग्नि के जैसी दहकती रहेगी? 6 अब तो उन जनताओं पर अपना क्रोध उंडेल
दीजिए, जो आपकी अवमानना करते हैं, उन राष्ट्रों पर, जो आपकी महिमा को
मान्यता नहीं देते; 7 उन्होंने याकोब को निगल लिया है तथा उसकी मातृभूमि
को ध्वस्त कर दिया है. 8 हमारे पूर्वजों के पापों का दंड हमें न दीजिए; हम पर
आपकी कृपा तुरंत पहुंच जाए, क्योंकि हमारी स्थिति अत्यंत गंभीर हो गई है.
9 परमेश्वर, हमारे छुड़ानेवाले, अपनी महिमा के तेज के निमित्त हमारी सहायता
कीजिए; अपनी महिमा के निमित्त हमारे पाप क्षमा कर हमारा उद्धार कीजिए. 10
भला जनताओं को यह कहने का अवसर क्यों दिया जाए, "कहां है उनका
परमेश्वर?" हमारे देखते-देखते राष्ट्रों पर यह प्रकट कर दीजिए, कि आप अपने
सेवकों के बहे रक्त का प्रतिशोध लेते हैं. 11 बंदियों का कराहना आप तक
पहुंचे; अपने महा सामर्थ्य के द्वारा उनकी रक्षा कीजिए, जो मृत्यु के लिए सौंपे
जा चुके हैं. 12 प्रभु, पड़ोसी राष्ट्रों ने जो आपकी निंदा की है, उसका सात गुणा
प्रतिशोध उनके झोली में डाल दीजिए. 13 तब, हम आपकी प्रजा, आपके
चरागाह की भेड़ें, सदा-सर्वदा आपका धन्यवाद करेंगे; एक पीढ़ी से दूसरी तक
हम आपका गुणगान करते रहेंगे.

80 संगीत निर्देशक के लिये. "वाचा की कुमुदिनी" धुन पर आधारित.
आसफ की रचना. एक स्तोत्र. इस्राएल के चरवाहे, हमारी सुनिए, आप
ही हैं, जो योसेफ़ की अगुवाई भेड़ों के वृन्द की रीति से करते हैं. आप, जो
करूबों के मध्य विराजमान हैं, प्रकाशमान हों! 2 एफ्राईम, बिन्यामिन तथा
मनश्शेह के सामने अपने सामर्थ्य को प्रगट कीजिए; और हमारी रक्षा कीजिए.
3 परमेश्वर, हमें हमारी पूर्व स्थिति प्रदान कीजिए; हम पर अपना मुख प्रकाशित
कीजिए, कि हमारा उद्धार हो जाए. 4 याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, कब तक
आपकी प्रजा की प्रार्थनाओं के प्रति, आपका कोप भीतर ही भीतर सुलगता
रहेगा? 5 आपने आंसुओं को उनका आहार बना छोड़ा है; आपने उन्हें विवश
कर दिया है, कि वे कटोरे भर-भर आंसू पिएं. 6 आपने हमें अपने पड़ोसियों के
लिए विवाद का कारण बना दिया है, हमारे शत्रु हमारा उपहास करते हैं. 7
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमें हमारी पूर्व स्थिति प्रदान कर दीजिए; हम पर अपना
मुख प्रकाशित कीजिए, कि हमारा उद्धार हो जाए. 8 मिस्र देश से आप एक
द्राक्षालता ले आए; आपने जनताओं को काटकर इसे वहां रोप दिया. 9 आपने
इसके लिए भूमि तैयार की, इस लता ने जड़ पकड़ी और इसने समस्त भूमि
आच्छादित कर दी. 10 इसकी छाया ने तथा मजबूत देवदार की शाखाओं ने,
पर्वतों को ढंक लिया था. 11 वह अपनी शाखाएं समुद्र तक, तथा किशलय नदी
तक फैली हुई थी. 12 आपने इसकी सुरक्षा की दीवारें क्यों ढाह दीं, कि आते
जाते लोग इसके द्राक्षा तोड़ते जाएं? 13 जंगली सूअर इसे निगल जाते, तथा
मैदान के पशु इसे अपना आहार बनाते हैं. 14 सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हम आग्रह
करते हैं, आप लौट आइए! स्वर्ग से दृष्टिपात कीजिए! और इस ओर ध्यान
दीजिए, 15 और इस द्राक्षालता की हां उस पौधे की जिसे आपके दायें हाथ ने
लगाया है, तथा उस पुत्र को देखिए, जिसे आपने स्वयं सशक्त बनाया है. 16
आपकी इस द्राक्षालता को काट डाला गया है, इसे अग्नि में भस्म कर दिया गया
है; आपकी फटकार-मात्र आपकी प्रजा को नष्ट करने के लिए काफ़ी है. 17 उस
पुरुष पर आपके दायें हाथ का आश्वासन स्थिर रहे, जो आपके दायें पक्ष में
उपस्थित है, वह मनुष्य का पुत्र जिसे आपने अपने लिए तैयार किया है. 18 तब
हम आपसे दूर न होंगे; हमें जिलाइए, हम आपके ही नाम को पुकारेंगे. 19
याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमें पुनर्स्थापित कीजिए; अपना मुख हम पर
प्रकाशित कीजिए कि हम सुरक्षित रहेंगे.

81 संगीत निर्देशक के लिये. गित्तीथ पर आधारित. आसफ की रचना.
परमेश्वर के लिए, जो हमारा बल हैं, आनंद के साथ गाओ; याकोब के
परमेश्वर के लिए उच्च स्वरनाद करो! 2 संगीत प्रारंभ हो, किन्नोर के साथ
नेबेल के वादन से, मधुर ध्वनि उत्पन्न की जाए. 3 नवचंद्र के अवसर पर
शोफ़ार बजाओ, वैसे ही पूर्णिमा के अवसर पर, जब हमारा उत्सव होता है; 4
इस्राएल के लिए यह विधि है, यह याकोब के परमेश्वर का नियम है. 5 जब
परमेश्वर मिस्र देश के विरुद्ध प्रतिकार के लिए कटिबद्ध हुए, उन्होंने इसे योसेफ़
के लिए अधिनियम स्वरूप बसा दिया. जहां हमने वह भाषा सुनी, जो हमारी
समझ से परे थी: 6 "प्रभु ने कहा, मैंने उनके कांधों से बोझ उतार दिया; टोकरी
ढोने के कार्य से वे स्वतंत्र हो गए. 7 जब तुम पर संकट का अवसर आया, तुमने
मुझे पुकारा और मैंने तुम्हें छुड़ा लिया, मेघ गरजना में से मैंने तुम्हें उत्तर दिया;
मेरिबाह जल पर मैंने तुम्हारी परीक्षा ली. 8 मेरी प्रजा, मेरी सुनो, कि मैं तुम्हें
चिता सकूं, इस्राएल, यदि तुम मात्र मेरी ओर ध्यान दे सको! 9 तुम्हारे मध्य वे
देवता न पाए जाएं, जो वस्तुतः अनुपयुक्त हैं; तुम उन देवताओं की वंदना न
करना. 10 मैं, याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ाकर लाया
हूं. तुम अपना मुख पूरा-पूरा खोलो कि मैं उसे भर दूं. 11 "किंतु मेरी प्रजा
ने मेरी नहीं सुनी; इस्राएल ने मेरी आज्ञा नहीं मानी. 12 तब मैंने उसे उसी
के हठीले हृदय के अधीन छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्तियों की पूर्ति
करती रहे. 13 "यदि मेरी प्रजा मात्र मेरी आज्ञा का पालन कर ले, यदि इस्राएल
मेरी शिक्षा का पालन कर ले, 14 शीघ्र मैं उसके शत्रुओं का पीछा करूंगा,
और उसके शत्रुओं पर मेरा प्रहार होगा! 15 जो याहवेह से घृणा करते हैं, वे
आज्ञाकारिता का दिखावा करेंगे और उनको बड़ा दंड होगा. 16 किंतु तुम्हारा
आहार होगा सर्वोत्तम गेहूं; मैं तुम्हें चट्टान के उत्कृष्ट मधु से तृप्त करूंगा."

82 आसफ का एक स्तोत्र. स्वर्गिक महासभा में परमेश्वर ने अपना स्थान
ग्रहण किया है; उन्होंने "देवताओं" के सामने अपना निर्णय सुना दिया
है: 2 कब तक तुम अन्यायी को समर्थन करते रहोगे, कब तक तुम अन्याय का
पक्षपात करते रहोगे? 3 दुःखी तथा पितृहीन का पक्ष दृढ़ करो; दरिद्रों एवं
दुःखितों के अधिकारों की रक्षा करो. 4 दुर्बल एवं दीनों को छुड़ा लो; दुष्ट
के फंदे से उन्हें बचा लो. 5 "वे कुछ नहीं जानते, वे कुछ नहीं समझते. वे
अंधकार में आगे बढ़ रहे हैं; पृथ्वी के समस्त आधार डगमगा गए हैं. 6 "मैंने
कहा, 'तुम "ईश्वर" हो; तुम सभी सर्वोच्च परमेश्वर की संतान हो.' 7 किंतु
तुम सभी की मृत्यु दूसरे मनुष्यों सी होगी; तुम्हारा पतन भी अन्य शासकों के
समान ही होगा." 8 परमेश्वर, उठकर पृथ्वी का न्याय कीजिए, क्योंकि समस्त
राष्ट्रों पर आपका प्रभुत्व है.

83 एक गीत. आसफ का एक स्तोत्र. परमेश्वर, शांत न रहिए; न हमारी
उपेक्षा कीजिए, और न निष्क्रिय बैठिए, परमेश्वर, 2 देखिए, आपके
शत्रुओं में कैसी हलचल हो रही है, कैसे वे सिर उठा रहे हैं. 3 वे आपकी प्रजा
के विरुद्ध चतुराई से बुरी युक्ति रच रहे हैं; वे आपके प्रियों के विरुद्ध परस्पर
सम्मति कर रहे हैं. 4 वे कहते हैं, "आओ, हम इस संपूर्ण राष्ट्र को ही नष्ट कर
दें, यहां तक कि इस्राएल राष्ट्र का नाम ही शेष न रहे." 5 वे एकजुट होकर,
एकचित्त युक्ति रच रहे हैं; वे सब आपके विरुद्ध संगठित हो गए हैं— 6 एदोम
तथा इशमाएलियों के मंडप, मोआब और हग्रियों के वंशज, 7 गेबल, अम्मोन
तथा अमालेक, फिलिस्ती तथा सोर के निवासी. 8 यहां तक कि अश्शूरी भी
उनके साथ सम्मिलित हो गए हैं कि लोत के वंशजों की सेना को सशक्त बनाएं.
9 उनके साथ आप वही कीजिए, जो आपने मिदियान के साथ किया था, जो

आपने सीसरा के साथ किया था, जो आपने कीशोन नदी पर याबीन के साथ
किया था, 10 जिनका विनाश एन-दोर में हुआ, जो भूमि पर पड़े गोबर जैसे हो
गए थे. 11 उनके रईसों को ओरेब तथा ज़ेब समान, तथा उनके न्यायियों को
ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना समान बना दीजिए, 12 जिन्होंने कहा था, “चलो, हम
परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी बन जाए.” 13 मेरे परमेश्वर उन्हें बवंडर में
उड़ती धूल समान, पवन में उड़ते भूसे समान बना दीजिए. 14 जैसे अग्नि वन
को निगल जाती है अथवा जैसे चिंगारी पर्वत को ज्वालामय कर देती है, 15
उसी प्रकार अपनी आंधी से उनका पीछा कीजिए तथा अपने तूफान से उन्हें
घबरा दीजिए. 16 वे लज्जा में डूब जाएं, कि याहवेह, लोग आपकी महिमा की
खोज करने लगें. 17 वे सदा के लिए लज्जित तथा भयभीत हो जाएं; अपमान में
ही उनकी मृत्यु हो. 18 वे यह जान लें कि आप, जिनका नाम याहवेह है, मात्र
आप ही समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च हैं.

84 संगीत निर्देशक के लिये. गित्तीथ पर आधारित. कोराह के पुत्रों की
रचना. एक स्तोत्र. सर्वशक्तिमान याहवेह, कैसा मनोरम है आपका निवास
स्थान! 2 मेरे प्राण याहवेह के आंगनों की उत्कट अभिलाषा करते हुए मूर्छित
तक हो जाते हैं; मेरा हृदय तथा मेरी देह जीवन्त परमेश्वर का स्तवन करने लगती
है. 3 सर्वशक्तिमान याहवेह, मेरे राजा, मेरे परमेश्वर, आपकी वेदी के निकट ही
गौरैयों को आवास, तथा अबाबील को अपने बच्चों को रखने के लिए, घोसले
के लिए, स्थान प्राप्त हो गया है. 4 धन्य होते हैं वे, जो आपके आवास में निवास
करते हैं; वे निरंतर आपका स्तवन करते रहते हैं. 5 धन्य होते हैं वे, जिनकी
शक्ति के स्रोत आप हैं, जिनके हृदय में ज़ियोन का राजमार्ग हैं. 6 जब वे बाका
घाटी में से होकर आगे बढ़ते हैं, उसमें झरने फूट पड़ते हैं; शरदकालीन वर्षा से
जलाशय भर जाते हैं. शरदकालीन वृष्टि उस क्षेत्र को आशीषों से भरपूर कर देती
है. 7 तब तक उनके बल उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है, जब तक फिर ज़ियोन
पहुंचकर उनमें से हर एक परमेश्वर के सामने उपस्थित हो जायें. 8 याहवेह,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनिए; याकोब के परमेश्वर, मेरी सुनिए. 9
परमेश्वर, हमारी ढाल पर दृष्टि कीजिए; अपने अभिषिक्त पर कृपादृष्टि कीजिए.
10 आपके परिसर में एक दिन, अन्यत्र के हजार दिनों से उत्तमतर है; दुष्टों के
मंडप में निवास की अपेक्षा मैं, आपके भवन का द्वारपाल होना उपयुक्त समझता
हूं. 11 मेरे लिए याहवेह परमेश्वर सूर्य एवं ढाल हैं; महिमा एवं सम्मान याहवेह
ही के अनुग्रह हैं; निष्कलंक पुरुष को वह किसी भी उत्तम वस्तु से रोक कर
नहीं रखते. 12 सर्वशक्तिमान याहवेह, धन्य होता है वह, जिसने आप पर भरोसा
रखा है.

85 संगीत निर्देशक के लिये. कोराह के पुत्रों की रचना. एक स्तोत्र. याहवेह,
आपने अपने देश पर कृपादृष्टि की है; आपने याकोब की समृद्धि को
पुनःस्थापित किया है. 2 आपने अपनी प्रजा के अपराध क्षमा कर दिए हैं तथा
उनके सभी पापों को ढांप दिया है. 3 आपने अपना संपूर्ण कोप शांत कर दिया
तथा आप अपने घोर रोष से दूर हो गए हैं. 4 परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमारी
समृद्धि पुनःस्थापित कर दीजिए, हमारे विरुद्ध अपने कोप को मिटा दीजिए. 5
क्या हमारे प्रति आपका क्रोध सदैव स्थायी रहेगा? क्या आप अपने क्रोध को
सभी पीढ़ियों तक बनाए रखेंगे? 6 क्या आप हमें पुनः जिलाएंगे नहीं, कि
आपकी प्रजा आप में प्रफुल्लित हो सके? 7 याहवेह, हम पर अपना करुणा-प्रेम
प्रदर्शित कीजिए, और हमें अपना उद्धार प्रदान कीजिए. 8 जो कुछ याहवेह
परमेश्वर कहेंगे, वह मैं सुनूंगा; उन्होंने अपनी प्रजा, अपने भक्तों के निमित्त
शांति की प्रतिज्ञा की है. किंतु उपयुक्त यह होगा कि वे पुनः मूर्खता न करें. 9
इसमें कोई संदेह नहीं कि उनकी ओर से उद्धार उन्हीं के लिए निर्धारित है, जो
उनके श्रद्धालु हैं, कि हमारे देश में उनका तेज भर जाए. 10 करुणा-प्रेम तथा
सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धार्मिकता तथा शांति ने एक दूसरे का चुंबन ले
लिया. 11 पृथ्वी से सच्चाई उगती रही है, धार्मिकता स्वर्ग से यह देख रही है.
12 इसमें कोई संदेह नहीं कि याहवेह वही प्रदान करेंगे, जो उत्तम है, और धरती
अपनी उपज देगी. 13 धार्मिकता आगे-आगे चलेगी और वही हमारे कदम के
लिए मार्ग तैयार करती है.

86 दावीद की एक प्रार्थना याहवेह, मेरी बिनती सुनकर मुझे उत्तर दीजिए,
क्योंकि मैं दरिद्र तथा दीन हूं. 2 मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए, क्योंकि मैं
आपके प्रति समर्पित हूं; अपने इस सेवक को बचा लीजिए, जिसने आप पर
भरोसा रखा है. आप मेरे परमेश्वर हैं; 3 प्रभु, मुझ पर कृपा कीजिए, क्योंकि मैं
सारा दिन आपको पुकारता रहता हूं. 4 अपने सेवक के प्राणों में आनंद का
संचार कीजिए, क्योंकि, प्रभु, मैं अपना प्राण आपकी ओर उठाता हूं. 5 प्रभु,
आप कृपानिधान एवं क्षमा शील हैं, उन सभी के प्रति, जो आपको पुकारते हैं,
आपका करुणा-प्रेम महान है. 6 याहवेह, मेरी प्रार्थना सुनिए; कृपा कर मेरी
पुकार पर ध्यान दीजिए. 7 संकट के अवसर पर मैं आपको पुकारूंगा, क्योंकि
आप मुझे उत्तर देंगे. 8 प्रभु, देवताओं में कोई भी आपके तुल्य नहीं है; आपके
कृत्यों की तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती. 9 आपके द्वारा बनाए गए
समस्त राष्ट्रों के लोग, हे प्रभु, आपके सामने आकर आपकी वंदना करेंगे; वे
आपकी महिमा का आदर करेंगे. 10 क्योंकि आप महान हैं और अद्भुत हैं
आपके कृत्य; मात्र आप ही परमेश्वर हैं. 11 हे याहवेह, मुझे अपनी राह की
शिक्षा दीजिए, कि मैं आपके सत्य का आचरण करूं; मुझे एकचित्त हृदय प्रदान
कीजिए, कि मैं आपकी महिमा के प्रति श्रद्धा बनाए रखूं. 12 मेरे प्रभु परमेश्वर, मैं
संपूर्ण हृदय से आपका स्तवन करूंगा; मैं आपकी महिमा का आदर सदैव करता
रहूंगा. 13 क्योंकि मेरे प्रति आपका करुणा-प्रेम अधिक है; अधोलोक के गहरे
गड्ढे से, आपने मेरे प्राण छुड़ा लिए हैं. **(Sheol h7585)** 14 परमेश्वर, अहंकारी
मुझ पर आक्रमण कर रहे हैं; क्रूर पुरुषों का समूह मेरे प्राणों का प्यासा है, ये वे
हैं, जिनके हृदय में आपके लिए कोई सम्मान नहीं है. 15 किंतु प्रभु, आप
कृपालु और दयालु परमेश्वर हैं, आप विलंब से क्रोध करनेवाले तथा अति
करुणामय एवं सत्य से परिपूर्ण हैं. 16 मेरी ओर फिरकर मुझ पर कृपा कीजिए;
अपने सेवक को अपनी ओर से शक्ति प्रदान कीजिए; अपनी दासी के पुत्र को
बचा लीजिए. 17 मुझे अपनी खराई का चिन्ह दिखाइए, कि इसे देख मेरे शत्रु
लज्जित हो सकें, क्योंकि वे देखेंगे, कि याहवेह, आपने मेरी सहायता की है,
तथा आपने ही मुझे सहारा भी दिया है.

87 कोराह के पुत्रों की रचना. एक स्तोत्र. एक गीत. पवित्र पर्वत पर उन्होंने
अपनी नींव डाली है; 2 याकोब के समस्त आवासों की अपेक्षा, याहवेह
को ज़ियोन के द्वार कहीं अधिक प्रिय हैं. 3 परमेश्वर के नगर, तुम्हारे विषय में
यशस्वी बातें लिखी गई हैं, 4 “अपने परिचितों के मध्य मैं राहाब और बाबेल
का लेखा करूंगा, साथ ही फिलिस्तिया, सोर और कूश का भी, और फिर मैं
कहूंगा, ‘यही है वह, जिसकी उत्पत्ति ज़ियोन में हुई है.’” 5 ज़ियोन के विषय में
यही घोषणा की जाएगी, “इसका भी जन्म ज़ियोन में हुआ और उसका भी,
सर्वोच्च परमेश्वर ही ने ज़ियोन को बसाया है.” 6 याहवेह अपनी प्रजा की
गणना करते समय लिखेगा: “इसका जन्म ज़ियोन में हुआ था.” 7 संगीत की
संगत पर वे गाएंगे, “तुम्हीं में मेरे आनंद का समस्त उगम हैं.”

88 एक गीत. कोराह के पुत्रों की स्तोत्र रचना. संगीत निर्देशक के लिये.
माहलाथ लान्नोथ धुन पर आधारित. एज्रावंश हेमान का मसकील हे
याहवेह, मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर; मैं दिन-रात आपको पुकारता रहता हूं. 2 मेरी
प्रार्थना आप तक पहुंच सके; और आप मेरी पुकार सुनें. 3 मेरा प्राण क्लेश में
डूब चुका है तथा मेरा जीवन अधोलोक के निकट आ पहुंचा है. **(Sheol h7585)**

4 मेरी गणना उनमें होने लगी है, जो कब्र में पड़े हैं; मैं दुःखी पुरुष के समान हो गया हूं. 5 मैं मृतकों के मध्य छोड़ दिया गया हूं, उन वध किए गए पुरुषों के समान, जो कब्र में पड़े हैं, जिन्हें अब आप स्मरण नहीं करते, जो आपकी हितचिंता के योग्य नहीं रह गए. 6 आपने मुझे अधोलोक में डाल दिया है ऐसी गहराई में, जहां अंधकार ही अंधकार है. 7 आपका कोप मुझ पर अत्यंत भारी पड़ा है; मानो मैं लहरों में दबा दिया गया हूं. 8 मेरे निकटतम मित्रों को आपने मुझसे दूर कर दिया है, आपने मुझे उनकी घृणा का पात्र बना दिया है. मैं ऐसा बंध गया हूं कि मुक्त ही नहीं हो पा रहा; 9 वेदना से मेरी आंखें धुंधली हो गई हैं. याहवेह, मैं प्रतिदिन आपको पुकारता हूं; मैं आपके सामने हाथ फैलाए रहता हूं. 10 क्या आप अपने अद्भुत कार्य मृतकों के सामने प्रदर्शित करेंगे? क्या वे, जो मृत हैं, जीवित होकर आपकी महिमा करेंगे? 11 क्या आपके करुणा-प्रेम की घोषणा कब्र में की जाती है? क्या विनाश में आपकी सच्चाई प्रदर्शित होगी? 12 क्या अंधकारमय स्थान में आपके आश्चर्य कार्य पहचाने जा सकेंगे, अथवा क्या विश्वासघात के स्थान में आपकी धार्मिकता प्रदर्शित की जा सकेगी? 13 किंतु, हे याहवेह, सहायता के लिए मैं आपको ही पुकारता हूं; प्रातःकाल ही मैं अपनी मांग आपके सामने प्रस्तुत कर देता हूं. 14 हे याहवेह, आप क्यों मुझे अस्वीकार करते रहते हैं, क्यों मुझसे अपना मुख छिपाते रहते हैं? 15 मैं युवावस्था से आक्रांत और मृत्यु के निकट रहा हूं; मैं आपके आतंक से ताड़ना भोग रहा हूं तथा मैं अब दुःखी रह गया हूं. 16 आपके कोप ने मुझे भयभीत कर लिया है; आपके आतंक ने मुझे नष्ट कर दिया है. 17 सारे दिन ये मुझे बाढ़ के समान भयभीत किए रहते हैं; इन्होंने पूरी रीति से मुझे अपने में समाहित कर रखा है. 18 आपने मुझसे मेरे मित्र तथा मेरे प्रिय पात्र छीन लिए हैं; अब तो अंधकार ही मेरा घनिष्ठ मित्र हो गया है.

89 एज्रावंश के एथन का एक मसकील मैं याहवेह के करुणा-प्रेम का सदा गुणगान करूंगा; मैं पीढ़ी से पीढ़ी अपने मुख से आपकी सच्चाई को बताता रहूंगा. 2 मेरी उद्घोषणा होगी कि आपका करुणा-प्रेम सदा-सर्वदा अटल होगी, स्वर्ग में आप अपनी सच्चाई को स्थिर करेंगे. 3 आपने कहा, "मैंने अपने चुने हुए के साथ एक वाचा स्थापित की है, मैंने अपने सेवक दावीद से यह शपथ खाई है, 4 'मैं तुम्हारे वंश को युगानुयुग अटल रखूंगा. मैं तुम्हारे सिंहासन को पीढ़ी से पीढ़ी स्थिर बनाए रखूंगा.'" 5 याहवेह, स्वर्ग मंडल आपके अद्भुत कार्यों का गुणगान करता है. भक्तों की सभा में आपकी सच्चाई की स्तुति की जाती है. 6 स्वर्ग में कौन याहवेह के तुल्य हो सकता है? स्वर्गदूतों में कौन याहवेह के समान है? 7 जब सात्विक एकत्र होते हैं, वहां परमेश्वर के प्रति गहन श्रद्धा व्याप्त होता है; सभी के मध्य वही सबसे अधिक श्रद्धा योग्य हैं. 8 याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, कौन है आपके समान सर्वशक्तिमान याहवेह? आप सच्चाई को धारण किए हुए हैं. 9 उमड़ता सागर आपके नियंत्रण में है; जब इसकी लहरें उग्र होने लगती हैं, आप उन्हें शांत कर देते हैं. 10 आपने ही विकराल जल जंतु रहब को ऐसे कुचल डाला मानो वह एक खोखला शव हो; यह आपका ही भुजबल था, कि आपने अपने शत्रुओं को पछाड़ दिया. 11 स्वर्ग के स्वामी आप हैं तथा पृथ्वी भी आपकी ही है; आपने ही संसार संस्थापित किया और वह सब भी बनाया जो, संसार में है. 12 उत्तर दिशा आपकी रचना है और दक्षिण दिशा भी; आपकी महिमा में ताबोर और हरमोन पर्वत उल्लास में गाने लगते हैं. 13 सामर्थ्य आपकी भुजा में व्याप्त है; बलवंत है आपका हाथ तथा प्रबल है आपका दायां हाथ. 14 धार्मिकता तथा खराई आपके सिंहासन के आधार हैं; करुणा-प्रेम तथा सच्चाई आपके आगे-आगे चलते हैं. 15 याहवेह, धन्य होते हैं वे, जिन्होंने आपका जयघोष करना सीख लिया है, जो आपकी उपस्थिति की ज्योति में आचरण करते हैं. 16 आपके नाम पर वे दिन भर खुशी मनाते हैं वे आपकी धार्मिकता का उत्सव मनाते हैं. 17 क्योंकि आप ही उनके गौरव तथा बल हैं, आपकी ही कृपादृष्टि के द्वारा हमारा बल आधारित रहता है. 18 वस्तुतः याहवेह ही हमारी सुरक्षा ढाल हैं, हमारे राजा इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के ही हैं. 19 वर्षों पूर्व आपने दर्शन में अपने सच्चे लोगों से वार्तालाप किया था: "एक योद्धा को मैंने शक्ति-सम्पन्‍न किया है; अपनी प्रजा में से मैंने एक युवक को खड़ा किया है. 20 मुझे मेरा सेवक, दावीद, मिल गया है; अपने पवित्र तेल से मैंने उसका अभिषेक किया है. 21 मेरा ही हाथ उसे स्थिर रखेगा; निश्चयतः मेरी भुजा उसे सशक्त करती जाएगी. 22 कोई भी शत्रु उसे पराजित न करेगा; कोई भी दुष्ट उसे दुःखित न करेगा. 23 उसके देखते-देखते मैं उसके शत्रुओं को नष्ट कर दूंगा और उसके विरोधियों को नष्ट कर डालूंगा. 24 मेरी सच्चाई तथा मेरा करुणा-प्रेम उस पर बना रहेगा, मेरी महिमा उसकी कीर्ति को ऊंचा रखेगी. 25 मैं उसे समुद्र पर अधिकार दूंगा, उसका दायां हाथ नदियों पर शासन करेगा. 26 वह मुझे संबोधित करेगा, 'आप मेरे पिता हैं, मेरे परमेश्वर, मेरे उद्धार की चट्टान.' 27 मैं उसे अपने प्रथमजात का पद भी प्रदान करूंगा, उसका पद पृथ्वी के समस्त राजाओं से उच्च होगा—सर्वोच्च. 28 उसके प्रति मैं अपना करुणा-प्रेम सदा-सर्वदा बनाए रखूंगा, उसके साथ स्थापित की गई मेरी वाचा कभी भंग न होगी. 29 मैं उसके वंश को सदैव सुस्थापित रखूंगा, जब तक आकाश का अस्तित्व रहेगा, उसका सिंहासन भी स्थिर बना रहेगा. 30 "यदि उसकी संतान मेरी व्यवस्था का परित्याग कर देती है तथा मेरे अधिनियमों के अनुसार नहीं चलती, 31 यदि वे मेरी विधियों को भंग करते हैं तथा मेरे आदेशों का पालन करने से चूक जाते हैं, 32 तो मैं उनके अपराध का दंड उन्हें लाठी के प्रहार से तथा उनके अपराधों का दंड कोड़ों के प्रहार से दूंगा; 33 किंतु मैं अपना करुणा-प्रेम उसके प्रति कभी कम न होने दूंगा और न मैं अपनी सच्चाई का घात करूंगा. 34 मैं अपनी वाचा भंग नहीं करूंगा और न अपने शब्द परिवर्तित करूंगा. 35 एक ही बार मैंने सदा-सर्वदा के लिए अपनी पवित्रता की शपथ खाई है, मैं दावीद से झूठ नहीं बोलूंगा; 36 उसका वंश सदा-सर्वदा अटल बना रहेगा और उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य के समान सदा-सर्वदा ठहरे रहेगा; 37 यह आकाश में विश्वासयोग्य साक्ष्य होकर, चंद्रमा के समान सदा-सर्वदा ठहरे रहेगा." 38 किंतु आप अपने अभिषिक्त से अत्यंत उदास हो गए, आपने उसकी उपेक्षा की, आपने उसका परित्याग कर दिया. 39 आपने अपने सेवक से की गई वाचा की उपेक्षा की है; आपने उसके मुकुट को धूल में फेंक दूषित कर दिया. 40 आपने उसकी समस्त दीवारें तोड़ उन्हें ध्वस्त कर दिया और उसके समस्त रचों को खंडहर बना दिया. 41 आते जाते समस्त लोग उसे लूटते चले गए; वह पड़ोसियों के लिए घृणा का पात्र होकर रह गया है. 42 आपने उसके शत्रुओं का दायां हाथ सशक्त कर दिया; आपने उसके समस्त शत्रुओं को आनंद विभोर कर दिया. 43 उसकी तलवार की धार आपने समाप्त कर दी और युद्ध में आपने उसकी कोई सहायता नहीं की. 44 आपने उसके वैभव को समाप्त कर दिया और उसके सिंहासन को धूल में मिला दिया. 45 आपने उसकी युवावस्था के दिन घटा दिए हैं; आपने उसे लज्जा के वस्त्रों से ढांक दिया है. 46 और कब तक, याहवेह? क्या आपने स्वयं को सदा के लिए छिपा लिया है? कब तक आपका कोप अग्नि-सा दहकता रहेगा? 47 मेरे जीवन की क्षणभंगुरता का स्मरण कीजिए, किस व्यर्थता के लिए आपने समस्त मनुष्यों की रचना की! 48 ऐसा कौन सा मनुष्य है जो सदा जीवित रहे, और मृत्यु को न देखे? ऐसा कौन है, अपने प्राणों को अधोलोक के अधिकार से मुक्त कर सकता है? **(Sheol h7585)** 49 प्रभु, अब आपका वह करुणा-प्रेम कहां गया, जिसकी शपथ आपने अपनी सच्चाई में दावीद से ली थी? 50 प्रभु, स्मरण कीजिए, कितना अपमान हुआ है आपके सेवक का, कैसे मैं समस्त राष्ट्रों द्वारा किए गए अपमान अपने हृदय में लिए हुए जी रहा हूं. 51 याहवेह, ये सभी अपमान, जो

मेरे शत्रु मुझ पर करते रहे, इनका प्रहार आपके अभिषिक्त के हर एक कदम पर किया गया. 52 याहवेह का स्तवन सदा-सर्वदा होता रहे!

90 परमेश्वर के प्रिय पात्र मोशेह की एक प्रार्थना प्रभु, समस्त पीढ़ियों में आप हमारे आश्रय-स्थल बने रहे हैं. 2 इसके पूर्व कि पर्वत अस्तित्व में आते अथवा पृथ्वी तथा संसार की रचना की जाती, अनादि से अनंत तक परमेश्वर आप ही हैं. 3 आप मनुष्य को यह कहकर पुनः धूल में लौटा देते हैं, "मानव-पुत्र, लौट जा." 4 आपके लिए एक हजार वर्ष वैसे ही होते हैं, जैसे गत कल का दिन; अथवा रात्रि का एक प्रहर. 5 आप मनुष्यों को ऐसे समेट ले जाते हैं, जैसे बाढ़; वे स्वप्न मात्र होते हैं— प्रातःकाल में बढ़ने वाली कोमल घास के समान: 6 जो प्रातःकाल फूलती है, उसमें बढ़ती है, किंतु संध्या होते-होते यह मुरझाती और सूख जाती है. 7 आपका कोप हमें मिटा डालता है, आपकी अप्रसन्नता हमें घबरा देती है. 8 हमारे अपराध आपके सामने खुले हैं, आपकी उपस्थिति में हमारे गुप्त पाप प्रकट हो जाते हैं. 9 हमारे जीवन के दिन आपके क्रोध की छाया में ही व्यतीत होते हैं; हम कराहते हुए ही अपने वर्ष पूर्ण करते हैं. 10 हमारी जीवन अवधि सत्तर वर्ष है—संभवतः अस्सी वर्ष, यदि हम बलिष्ठ हैं; हमारी आयु का अधिकांश हम दुःख और कष्ट में व्यतीत करते हैं, हां, ये तीव्र गति से समाप्त हो जाते हैं और हम कूच कर जाते हैं. 11 आपके कोप की शक्ति की जानकारी कौन ले सका है! आपका कोप उतना ही व्यापक है जितना कि लोगों के द्वारा आपका भय मानना. 12 हमें जीवन की न्यूनता की धर्ममय विवेचना करने की अंतर्दृष्टि प्रदान कीजिए, कि हमारा हृदय बुद्धिमान हो जाए. 13 याहवेह! मृदु हो जाइए, और कितना विलंब? कृपा कीजिए-अपने सेवकों पर. 14 प्रातःकाल में ही हमें अपने करुणा-प्रेम से संतुष्ट कर दीजिए, कि हम आजीवन उल्लसित एवं हर्षित रहें. 15 हमारे उतने ही दिनों को आनंद से तृप्त कर दीजिए, जितने दिन आपने हमें ताड़ना दी थी, उतने ही दिन, जितने वर्ष हमने दुर्दशा में व्यतीत किए हैं. 16 आपके सेवकों के सामने आपके महाकार्य स्पष्ट हो जाएं और उनकी संतान पर आपका वैभव. 17 हम पर प्रभु, हमारे परमेश्वर की मनोहरता स्थिर रहे; तथा हमारे लिए हमारे हाथों के परिश्रम को स्थायी कीजिए— हां, हमारे हाथों का परिश्रम स्थायी रहे.

91 वह, जिसका निवास सर्वोच्च परमेश्वर के आश्रय में है, सर्वशक्तिमान के छाया कुंज में सुरक्षित निवास करेगा. 2 याहवेह के विषय में मेरी घोषणा है, "वह मेरे आश्रय, मेरे गढ़ हैं, मेरे शरणस्थान परमेश्वर हैं, जिनमें मेरा भरोसा है." 3 वह तुम्हें सभी फंदे से बचाएंगे, वही घातक महामारी से तुम्हारी रक्षा करेंगे. 4 वह तुम्हें अपने परों में छिपा लेंगे, उनके पंखों के नीचे तुम्हारा आश्रय होगा; उनकी सच्चाई ढाल और गढ़ हैं. 5 तुम न तो रात्रि के आतंक से भयभीत होगे, न ही दिन में छोड़े गए बाण से, 6 वैसे ही न उस महामारी से, जो अंधकार में छिपी रहती है, अथवा उस विनाश से, जो दिन-दोपहरी में प्रहार करता है. 7 संभव है कि तुम्हारे निकट हजार तथा तुम्हारी दायीं ओर दस हजार आ गिरें, किंतु वह तुम तक नहीं पहुंचेगा. 8 तुम स्वयं अपनी आंखों से देखते रहोगे और देखोगे कि कैसा होता है कुकर्मियों का दंड. 9 याहवेह, आप, जिन्होंने सर्वोच्च स्थान को अपना निवास बनाया है, "मेरे आश्रय हैं." 10 कोई भी विपत्ति तुम पर आने न पाएगी और न कोई विपत्ति ही तुम्हारे मंडप के निकट आएगी. 11 क्योंकि वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारी हर एक गतिविधि में तुम्हारी सुरक्षा का आदेश देंगे; 12 वे तुम्हें अपने हाथों में उठा लेंगे, कि कहीं तुम्हारे पांव को पत्थर से ठोकर न लग जाए. 13 तुम सिंह और नाग को कुचल दोगे; तुम पुष्ट सिंह और सर्प को रौंद डालोगे. 14 यह याहवेह का आश्वासन है, "मैं उसे छुड़ाऊंगा, क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है; मैं उसे सुरक्षित रखूंगा, क्योंकि उसने मेरी महिमा पहचानी है. 15 जब वह मुझे पुकारेगा, मैं उसे उत्तर दूंगा; संकट की स्थिति में मैं उसके साथ रहूंगा, उसे छुड़ाकर मैं उसका सम्मान बढ़ाऊंगा. 16 मैं उसे दीर्घायु से तृप्त करूंगा और मैं उसे अपने उद्धार का अनुभव कराऊंगा."

92 एक स्तोत्र. एक गीत. शब्बाथ दिन के लिए निर्धारित. भला है याहवेह के प्रति धन्यवाद, सर्वोच्च परमेश्वर, आपकी महिमा का गुणगान करना उपयुक्त है. 2 दस तारों के आसोर, नेबेल तथा किन्नोर की संगत पर प्रातःकाल ही आपके करुणा-प्रेम की उद्घोषणा करना तथा रात्रि में आपकी सच्चाई का वर्णन करना अच्छा है. 4 याहवेह, आपने मुझे अपने कार्यों के उल्लास से तृप्त कर दिया है; आपके कार्यों के लिए मैं हर्षोल्लास के गीत गाता हूं. 5 याहवेह, कैसे अद्भुत हैं, आपके द्वारा निष्पन्न कार्य! गहन हैं आपके विचार! 6 अज्ञानी के लिए असंभव है इनका अनुभव करना, निर्बुद्धि के लिए ये बातें निरर्थक हैं. 7 यद्यपि दुष्ट घास के समान अंकुरित तो होते हैं और समस्त दुष्ट उन्नति भी करते हैं, किंतु उनकी नियति अनंत विनाश ही है. 8 किंतु, याहवेह, आप सदा-सर्वदा सर्वोच्च ही हैं. 9 निश्चयतः आपके शत्रु, याहवेह, आपके शत्रु नाश हो जाएंगे; समस्त दुष्ट बिखरा दिए जाएंगे. 10 किंतु मेरी शक्ति को आपने वन्य सांड समान ऊंचा कर दिया है; आपने मुझ पर नया नया तेल उंडेल दिया है. 11 स्वयं मैंने अपनी ही आंखों से अपने शत्रुओं का पतन देखा है; स्वयं मैंने अपने कानों से अपने दुष्ट शत्रुओं के कोलाहल को सुना है. 12 धर्मी खजूर वृक्ष समान फलते जाएंगे, उनका विकास लबानोन के देवदार के समान होगा; 13 याहवेह के आवास में लगाए वे परमेश्वर के आंगन में समृद्ध होते जाएंगे! 14 वृद्धावस्था में भी वे फलदार बने रहेंगे, उनकी नवीनता और उनकी कान्ति वैसी ही बनी रहेगी, 15 कि वे यह घोषणा कर सकें कि, "याहवेह सीधे हैं; वह मेरे लिए चट्टान हैं, उनमें कहीं भी, किसी भी दुष्टता की छाया तक नहीं है."

93 याहवेह, राज्य करते हैं, उन्होंने वैभवशाली परिधान धारण किए हैं; याहवेह ने तेज के परिधान धारण किए हैं और वह शक्ति से सुसज्जित हैं; विश्व सुदृढ़ नींव पर स्थापित है, जो अटल है. 2 सनातन काल से आपका सिंहासन बसा है; स्वयं आप सनातन काल से हैं. 3 याहवेह, जल स्तर उठता जा रहा है, लहरों की ध्वनि ऊंची होती जा रही है; समुद्र की प्रचंड लहरों का प्रहार उग्र होता जा रहा है. 4 विशालकाय लहरों की गर्जन से कहीं अधिक शक्तिशाली, उद्वेलित लहरों के प्रहार से कहीं अधिक प्रचंड हैं, महान सर्वशक्तिमान याहवेह. 5 अटल हैं आपके अधिनियम; पवित्रता, आपके आवास की शोभा; याहवेह, ये सदा-सर्वदा स्थिर रहेंगे.

94 याहवेह, बदला लेनेवाले परमेश्वर, बदला लेनेवाले परमेश्वर, अपने तेज को प्रकट कीजिए. 2 पृथ्वी का न्यायाध्यक्ष, उठ जाइए; अहंकारियों को वही प्रतिफल दीजिए, जिसके वे योग्य हैं. 3 दुष्ट कब तक, याहवेह, कब तक आनंद मनाते रहेंगे? 4 वे डींग मारते चले जा रहे हैं; समस्त दुष्ट अहंकार में फूले जा रहे हैं. 5 वे आपकी प्रजा को कुचल रहे हैं, याहवेह; वे आपकी निज भाग को दुःखित कर रहे हैं. 6 वे विधवा और प्रवासी की हत्या कर रहे हैं; वे अनाथों की हत्या कर रहे हैं. 7 वे कहे जा रहे हैं, "कुछ नहीं देखता याहवेह; याकोब के परमेश्वर ने इसकी ओर ध्यान नहीं देते है." 8 मन्दमतियो, थोड़ा विचार तो करो; निर्बुद्धियो, तुममें बुद्धिमत्ता कब जागेगी? 9 जिन्होंने कान लगाए हैं, क्या वे सुनते नहीं? क्या वे, जिन्होंने आंखों को आकार दिया है, देखते नहीं? 10 क्या वे, जो राष्ट्रों को ताड़ना देते हैं, वे दंड नहीं देंगे? क्या वे, जो मनुष्यों को शिक्षा देते हैं, उनके पास ज्ञान की कमी है? 11 याहवेह मनुष्य के विचारों को जानते हैं; कि वे विचार मात्र श्वास ही हैं. 12 याहवेह, धन्य होता है वह पुरुष, जो आपके द्वारा प्रताड़ित किया जाता है, जिसे आप अपनी व्यवस्था

से शिक्षा देते हैं; 13 विपत्ति के अवसर पर आप उसे चैन प्रदान करते हैं, दुष्ट के लिए गड्ढा खोदे जाने तक. 14 कारण यह है कि याहवेह अपनी प्रजा का परित्याग नहीं करेंगे; वह कभी भी अपनी निज भाग को भूलते नहीं. 15 धर्मियों को न्याय अवश्य प्राप्त होगा और सभी सीधे हृदय इसका अनुसरण करेंगे. 16 मेरी ओर से बुराई करनेवाले के विरुद्ध कौन खड़ा होगा? कुकर्मियों के विरुद्ध मेरा साथ कौन देगा? 17 यदि स्वयं याहवेह ने मेरी सहायता न की होती, शीघ्र ही मृत्यु की चिर-निद्रा मेरा आवास हो गई होती. 18 यदि मैंने कहा, "मेरा पांव फिसल गया है," याहवेह, आपका करुणा-प्रेम मुझे थाम लेगा. 19 जब मेरा हृदय अत्यंत व्याकुल हो गया था, आपकी ही सांत्वना ने मुझे हर्षित किया है. 20 क्या दुष्ट शासक के आपके साथ संबंध हो सकते हैं, जो राजाज्ञा की आड़ में प्रजा पर अन्याय करते हैं? 21 वे सभी धर्मी के विरुद्ध एकजुट हो गए हैं और उन्होंने निर्दोष को मृत्यु दंड दे दिया है. 22 किंतु स्थिति यह है कि अब याहवेह मेरा गढ़ बन गए हैं, तथा परमेश्वर अब मेरे आश्रय की चट्टान हैं. 23 वही उनकी दुष्टता का बदला लेंगे, वही उनकी दुष्टता के कारण उनका विनाश कर देंगे; याहवेह हमारे परमेश्वर निश्चयतः उन्हें नष्ट कर देंगे.

95 चलो, हम याहवेह के स्तवन में आनंदपूर्वक गाएं; अपने उद्धार की चट्टान के लिए उच्च स्वर में मनोहारी संगीत प्रस्तुत करें. 2 हम धन्यवाद के भाव में उनकी उपस्थिति में आएं स्तवन गीतों में हम मनोहारी संगीत प्रस्तुत करें. 3 इसलिये कि याहवेह महान परमेश्वर हैं, समस्त देवताओं के ऊपर सर्वोच्च राजा हैं. 4 पृथ्वी की गहराइयों पर उनका नियंत्रण है, पर्वत शिखर भी उनके अधिकार में हैं. 5 समुद्र उन्हीं का है, क्योंकि यह उन्हीं की रचना है, सूखी भूमि भी उन्हीं की हस्तकृति है. 6 आओ, हम नतमस्तक होकर आराधना करें, हम याहवेह, हमारे सृजनहार के सामने घुटने टेकें! 7 क्योंकि वह हमारे परमेश्वर हैं और हम उनके चराई की प्रजा हैं, उनकी अपनी संरक्षित भेड़ें. यदि आज तुम उनका स्वर सुनते हो, 8 "अपने हृदय कठोर न कर लेना. जैसे तुमने मेरिबाह में किया था, जैसे तुमने उस समय बंजर भूमि में मस्साह नामक स्थान पर किया था, 9 जहां तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे परखा और मेरे धैर्य की परीक्षा ली थी; जबकि वे उस सबके गवाह थे, जो मैंने उनके सामने किया था. 10 उस पीढ़ी से मैं चालीस वर्ष उदास रहा; मैंने कहा, 'ये ऐसे लोग हैं जिनके हृदय फिसलते जाते हैं, वे मेरे मार्ग समझ ही न सके हैं.' 11 तब अपने क्रोध में मैंने शपथ ली, 'मेरे विश्राम में उनका प्रवेश कभी न होगा.'"

96 सारी पृथ्वी याहवेह की स्तुति में नया गीत गाए; हर रोज़ उनके द्वारा दी गई छुड़ौती की घोषणा की जाए. 2 याहवेह के लिये गाओ. उनके नाम की प्रशंसा करो; प्रत्येक दिन उनका सुसमाचार सुनाओ कि याहवेह बचाने वाला है. 3 देशों में उनके प्रताप की चर्चा की जाए, और उनके अद्भुत कामों की घोषणा हर जगह. 4 क्योंकि महान हैं याहवेह और सर्वाधिक योग्य हैं स्तुति के; अनिवार्य है कि उनके ही प्रति सभी देवताओं से अधिक श्रद्धा रखी जाए. 5 क्योंकि अन्य जनताओं के समस्त देवता मात्र प्रतिमाएं ही हैं, किंतु स्वर्ग मंडल के बनानेवाले याहवेह हैं. 6 वैभव और ऐश्वर्य उनके चारों ओर हैं; सामर्थ्य और महिमा उनके पवित्र स्थान में बसे हुए हैं. 7 राष्ट्रों के समस्त गोत्रो, याहवेह को पहचानो, याहवेह को पहचानकर उनके तेज और सामर्थ्य को देखो. 8 याहवेह के नाम की सुयोग्य महिमा करो; उनकी उपस्थिति में भेंट लेकर जाओ; 9 उनकी वंदना पवित्रता के ऐश्वर्य में की जाए. उनकी उपस्थिति में सारी पृथ्वी में कंपकंपी दौड़ जाए. 10 राष्ट्रों के सामने यह घोषणा की जाए, "याहवेह ही शासक हैं." यह एक सत्य है कि संसार दृढ़ रूप में स्थिर हो गया है, यह हिल ही नहीं सकता; वह खराई से राष्ट्रों का न्याय करेंगे. 11 स्वर्ग आनंदित हो और पृथ्वी मगन; समुद्र और उसमें मगन सब कुछ इसी हर्षोल्लास को प्रतिध्वनित करें. 12 समस्त मैदान और उनमें चलते फिरते रहे सभी प्राणी उल्लसित हों; तब वन के समस्त वृक्ष आनंद में गुणगान करने लगेंगे. 13 वे सभी याहवेह की उपस्थिति में गाएं, क्योंकि याहवेह आनेवाला हैं और पृथ्वी पर उनके आने का उद्देश्य है पृथ्वी का न्याय करना. उनका न्याय धार्मिकतापूर्ण होगा; वह मनुष्यों का न्याय अपनी ही सच्चाई के अनुरूप करेंगे.

97 यह याहवेह का शासन है, पृथ्वी उल्लसित हो; दूर के तटवर्तीं क्षेत्र आनंद मनाएं. 2 प्रभु के आस-पास मेघ और गहन अंधकार छाया हुआ है; उनके सिंहासन का आधार धार्मिकता और सच्चाई है. 3 जब वह आगे बढ़ते हैं, अग्नि उनके आगे-आगे बढ़ते हुए उनके समस्त शत्रुओं को भस्म करती जाती है. 4 उनकी बिजलियां समस्त विश्व को प्रकाशित कर देती हैं; यह देख पृथ्वी कांप उठती है. 5 याहवेह की उपस्थिति में पर्वत मोम समान पिघल जाते हैं, उनके सामने, जो समस्त पृथ्वी के अधिकारी हैं. 6 आकाशमंडल उनके सत्य की घोषणा करती है, समस्त मनुष्य उनके तेज के दर्शक हैं. 7 मूर्तियों के उपासक लज्जित कर दिए गए, वे सभी, जो व्यर्थ प्रतिमाओं का गर्व करते हैं; समस्त देवताओ, याहवेह की आराधना करो! 8 यह सब सुनकर ज़ियोन आनंदित हुआ, याहवेह, आपके निर्णयों के कारण यहूदिया प्रदेश के समस्त नगर हर्षित हो गए. 9 क्योंकि याहवेह, आप समस्त रचना में सर्वोच्च हैं; समस्त देवताओं से आप कहीं अधिक महान एवं उत्तम ठहरे हैं. 10 यह उपयुक्त है कि वे सभी, जिन्हें याहवेह से प्रेम है, बुराई से घृणा करें, प्रभु अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करते हैं, वह उन्हें दुष्टों की युक्ति से छुड़ाते हैं. 11 धर्मियों के जीवन प्रकाशित किए जाते हैं तथा निष्ठों के हृदय आनन्दविभोर. 12 समस्त धर्मियो, याहवेह में प्रफुल्लित हो और उनके पवित्र नाम का स्तवन करो.

98 एक स्तोत्र. याहवेह के लिए एक नया गीत गाओ, क्योंकि उन्होंने अद्भुत कार्य किए हैं; उनके दायें हाथ तथा उनकी पवित्र भुजा ने जय प्राप्त की है. 2 याहवेह ने राष्ट्रों पर अपना उद्धार तथा अपनी धार्मिकता परमेश्वर ने प्रकाशित की है. 3 इस्राएल वंश के लिए उन्होंने अपना करुणा-प्रेम तथा सच्चाई को भूला नहीं; पृथ्वी के छोर-छोर तक लोगों ने हमारे परमेश्वर के उद्धार को देख लिया है. 4 याहवेह के लिए समस्त पृथ्वी का आनंद उच्च स्वर में प्रस्तुत हो, संगीत की संगत पर हर्षोल्लास के गीत उमड़ पड़ें; 5 सारंगी पर याहवेह का स्तवन करे, हां, किन्नोर की संगत पर मधुर धुन के गीत के द्वारा. 6 तुरहियों तथा शोफ़ार के उच्च नाद के साथ याहवेह, हमारे राजा, के लिए उच्च स्वर में हर्षोल्लास का घोष किया जाए. 7 समुद्र तथा इसमें मगन सभी कुछ उसका हर्षनाद करें, साथ ही संसार और इसके निवासी भी. 8 नदियां तालियां बजाएं, पर्वत मिलकर हर्षगान गाएं; 9 वे सभी याहवेह की उपस्थिति में गाएं, क्योंकि याहवेह आनेवाले हैं. पृथ्वी का न्याय करने के लिए वे आ रहे हैं. उनका न्याय धार्मिकता में पूर्ण होगा; वह मनुष्यों का न्याय अपनी ही सच्चाई के अनुरूप करेंगे.

99 याहवेह शासक हैं, राष्ट्र कांपते रहें; उन्होंने अपना आसन करूबों के मध्य स्थापित किया है, पृथ्वी कांप जाए. 2 ज़ियोन में याहवेह तेजस्वी हैं; वह समस्त राष्ट्रों के ऊपर बसे हैं. 3 उपयुक्त है उनका आपके महान और भय-योग्य नाम की वंदना करना— पवित्र हैं वह. 4 राजा शक्ति-सम्पन्न हैं, वह जो न्याय को प्रिय मानता है, उन्होंने इस्राएल में समता की स्थापना की है; जो न्याय संगत और उचित है. 5 याहवेह, हमारे परमेश्वर की महिमा की जाए, उनके चरणों में गिर आराधना की जाए; वह पवित्र हैं. 6 मोशेह और अहरोन उनके पुरोहित थे, शमुएल उनके आराधक थे; ये सभी याहवेह को पुकारते थे और वह उन्हें उत्तर देते थे. 7 मेघ-स्तंभ में से याहवेह ने उनसे वार्तालाप किया; उन्होंने उनके अधिनियमों तथा उनके द्वारा सौंपे गए आदेशों का पालन

किया. 8 याहवेह, हमारे परमेश्वर, आप उन्हें उत्तर देते थे; इस्राएल के लिए
आप क्षमा शील परमेश्वर रहे, यद्यपि आप उनके अपराधों का दंड देते रहे. 9
याहवेह, हमारे परमेश्वर की महिमा को ऊंचा करो, उनके पवित्र पर्वत पर उनकी
आराधना करो, क्योंकि पवित्र हैं हमारे याहवेह परमेश्वर.

100 एक स्तोत्र. धन्यवाद के लिए गीत याहवेह के स्तवन में समस्त पृथ्वी
उच्च स्वर में जयघोष करे. 2 याहवेह की आराधना आनंदपूर्वक की
जाए; हर्ष गीत गाते हुए उनकी उपस्थिति में प्रवेश किया जाए. 3 यह समझ लो
कि स्वयं याहवेह ही परमेश्वर हैं. हमारी रचना उन्हीं ने की है, स्वयं हमने नहीं;
हम पर उन्हीं का स्वामित्व है. हम उनकी प्रजा, उनकी चराई की भेड़ें हैं. 4
धन्यवाद के भाव में उनके द्वारों में और स्तवन भाव में उनके आंगनों में प्रवेश
करो; उनकी महिमा को धन्य कहो. 5 याहवेह भले हैं; उनकी करुणा सदा की
है; उनकी सच्चाई का प्रसरण समस्त पीढ़ियों में होता जाता है.

101 दावीद की रचना. एक स्तोत्र. मेरे गीत का विषय है आपका करुणा-
प्रेम तथा आपका न्याय; याहवेह, मैं आपका स्तवन करूंगा. 2
निष्कलंक जीवन मेरा लक्ष्य है, आप कब मेरे पास आएंगे? अपने आवास में
मेरा आचरण निष्कलंक रहेगा. 3 मैं किसी भी अनुचित वस्तु की ओर दृष्टि न
उठाऊंगा. मुझे घृणा है भ्रष्टाचारी पुरुषों के आचार-व्यवहार से; मैं उनसे कोई
संबंध नहीं रखूंगा. 4 कुटिल हृदय मुझसे दूर रहेगा; बुराई से मेरा कोई संबंध न
होगा. 5 जो कोई गुप्त में अपने पड़ोसी की निंदा करता है, मैं उसे नष्ट कर दूंगा;
जिस किसी की आंखें अहंकार से चढ़ी हुई हैं तथा जिसका हृदय घमंडी है, वह
मेरे लिए असह्य होगा. 6 पृथ्वी पर मेरी दृष्टि उन्हीं पर रहेगी जो विश्वासयोग्य
हैं, कि वे मेरे साथ निवास कर सकें; मेरा सेवक वही होगा, जिसका आचरण
निष्कलंक है. 7 किसी भी झूठों का निवास मेरे आवास में न होगा, कोई भी
झूठ बोलने वाला, मेरी उपस्थिति में ठहर न सकेगा. 8 प्रति प्रभात मैं अपने
राज्य के समस्त दुर्जनों को नष्ट करूंगा; याहवेह के नगर में से मैं हर एक दुष्ट को
मिटा दूंगा.

102 संकट में पुकारा आक्रांत पुरुष की अभ्यर्थना. वह अत्यंत उदास
है और याहवेह के सामने अपनी हृदय-पीड़ा का वर्णन कर रहा है
याहवेह, मेरी प्रार्थना सुनिए; सहायता के लिए मेरी पुकार आप तक पहुंचे. 2
मेरी पीड़ा के समय मुझसे अपना मुखमंडल छिपा न लीजिए. जब मैं पुकारूं.
अपने कान मेरी ओर कीजिए; मुझे शीघ्र उत्तर दीजिए. 3 धुएं के समान मेरा
समय विलीन होता जा रहा है; मेरी हड्डियां दहकते अंगारों जैसी सुलग रही हैं. 4
घास के समान मेरा हृदय झुलस कर मुरझा गया है; मुझे स्मरण ही नहीं रहता कि
मुझे भोजन करना है. 5 मेरी सतत कराहटों ने मुझे मात्र हड्डियों एवं त्वचा का
ढांचा बनाकर छोड़ा है. 6 मैं वन के उल्लू समान होकर रह गया हूं, उस उल्लू
के समान, जो खंडहरों में निवास करता है. 7 मैं सो नहीं पाता, मैं छत के
एकाकी पक्षी-सा हो गया हूं. 8 दिन भर मैं शत्रुओं के ताने सुनता रहता हूं; जो
मेरी निंदा करते हैं, वे मेरा नाम शाप के रूप में जाहिर करते हैं. 9 राख ही अब
मेरा आहार हो गई है और मेरे आंसू मेरे पेय के साथ मिश्रित होते रहते हैं. 10 यह
सब आपके क्रोध, उग्र कोप का परिणाम है क्योंकि आपने मुझे ऊंचा उठाया
और आपने ही मुझे अलग फेंक दिया है. 11 मेरे दिन अब ढलती छाया-समान
हो गए हैं; मैं घास के समान मुरझा रहा हूं. 12 किंतु, याहवेह, आप सदा-सर्वदा
सिंहासन पर विराजमान हैं; आपका नाम पीढ़ी से पीढ़ी स्थायी रहता है. 13 आप
उठेंगे और ज़ियोन पर मनोहरता करेंगे, क्योंकि यही सुअवसर है कि आप उस
पर अपनी कृपादृष्टि प्रकाशित करें. वह ठहराया हुआ अवसर आ गया है. 14
इस नगर का पत्थर-पत्थर आपके सेवकों को प्रिय है; यहां तक कि यहां की
धूल तक उन्हें द्रवित कर देती है. 15 समस्त राष्ट्रों पर आपके नाम का आतंक
छा जाएगा, पृथ्वी के समस्त राजा आपकी महिमा के सामने नतमस्तक हो
जाएंगे. 16 क्योंकि याहवेह ने ज़ियोन का पुनर्निर्माण किया है; वे अपने तेज में
प्रकट हुए हैं. 17 याहवेह लाचार की प्रार्थना का प्रत्युत्तर देते हैं; उन्होंने उनकी
गिड़गिड़ाहट का तिरस्कार नहीं किया. 18 भावी पीढ़ी के हित में यह लिखा
जाए, कि वे, जो अब तक अस्तित्व में ही नहीं आए हैं, याहवेह का स्तवन कर
सकें: 19 "याहवेह ने अपने महान मंदिर से नीचे की ओर दृष्टि की, उन्होंने स्वर्ग
से पृथ्वी पर दृष्टि की, 20 कि वह बंदियों का कराहना सुनें और उन्हें मुक्त कर
दें, जिन्हें मृत्यु दंड दिया गया है." 21 कि मनुष्य ज़ियोन में याहवेह की महिमा
की घोषणा कर सकें तथा येरूशलेम में उनका स्तवन, 22 जब लोग तथा राज्य
याहवेह की वंदना के लिए एकत्र होंगे. 23 मेरी जीवन यात्रा पूर्ण भी न हुई थी,
कि उन्होंने मेरा बल शून्य कर दिया; उन्होंने मेरी आयु घटा दी. 24 तब मैंने
आग्रह किया: "मेरे परमेश्वर, मेरे जीवन के दिनों के पूर्ण होने के पूर्व ही मुझे
उठा न लीजिए; आप तो पीढ़ी से पीढ़ी स्थिर ही रहते हैं. 25 प्रभु, आपने
प्रारंभ में ही पृथ्वी की नींव रखी, तथा आकाशमंडल आपके ही हाथों की
कारीगरी है. 26 वे तो नष्ट हो जाएंगे किंतु आप अस्तित्व में ही रहेंगे; वे सभी
वस्त्र समान पुराने हो जाएंगे. आप उन्हें वस्त्रों के ही समान परिवर्तित कर देंगे
उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा. 27 आप न बदलनेवाले हैं, आपकी आयु
का कोई अंत नहीं. 28 आपके सेवकों की सन्तति आपकी उपस्थिति में निवास
करेंगी; उनके वंशज आपके सम्मुख स्थिर रहेंगे."

103 दावीद की रचना मेरे प्राण, याहवेह का स्तवन करो; मेरी संपूर्ण आत्मा
उनके पवित्र नाम का स्तवन करे. 2 मेरे प्राण, याहवेह का स्तवन
करो, उनके किसी भी उपकार को न भूलो. 3 वह तेरे सब अपराध क्षमा करते
तथा तेरे सब रोग को चंगा करते हैं. 4 वही तेरे जीवन को गड्ढे से छुड़ा लेते हैं
तथा तुझे करुणा-प्रेम एवं मनोहरता से सुशोभित करते हैं. 5 वह तेरी अभिलाषाओं
को मात्र उत्कृष्ट वस्तुओं से ही तृप्त करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप तेरी जवानी
गरूड़-समान नई हो जाती है. 6 याहवेह सभी दुःखितों के निमित्त धर्म एवं
न्यायसंगतता के कार्य करते हैं. 7 उन्होंने मोशेह को अपनी नीति स्पष्ट की, तथा
इस्राएल राष्ट्र के सामने अपना अद्भुत कृत्य: 8 याहवेह करुणामय, कृपानिधान,
क्रोध में विलंबी तथा करुणा-प्रेम में समृद्ध हैं. 9 वह हम पर निरंतर आरोप नहीं
लगाते रहेंगे, और न ही हम पर उनकी अप्रसन्नता स्थायी बनी रहेगी; 10
उन्होंने हमें न तो हमारे अपराधों के लिए निर्धारित दंड दिया और न ही उन्होंने
हमारे अधर्मों का प्रतिफल हमें दिया है. 11 क्योंकि आकाश पृथ्वी से जितना
ऊपर है, उतना ही महान है उनका करुणा-प्रेम उनके श्रद्धालुओं के लिए. 12 पूर्व
और पश्चिम के मध्य जितनी दूरी है, उन्होंने हमारे अपराध हमसे उतने ही दूर
कर दिए हैं. 13 जैसे पिता की मनोहरता उसकी संतान पर होती है, वैसे ही
याहवेह की मनोहरता उनके श्रद्धालुओं पर स्थिर रहती है; 14 क्योंकि उन्हें
हमारी सृष्टि ज्ञात है, उन्हें स्मरण रहता है कि हम मात्र धूल ही हैं. 15 मनुष्य से
संबंधित बातें यह है, कि उसका जीवन घास समान है, वह मैदान के पुष्प समान
खिलता है, 16 उस पर उष्ण हवा का प्रवाह होता है और वह नष्ट हो जाता है,
किसी को यह स्मरण तक नहीं रह जाता, कि पुष्प किस स्थान पर खिला था,
17 किंतु याहवेह का करुणा-प्रेम उनके श्रद्धालुओं पर अनादि से अनंत तक, तथा
परमेश्वर की धार्मिकता उनकी संतान की संतान पर स्थिर बनी रहती है. 18 जो
उनकी वाचा का पालन करते तथा उनके आदेशों का पालन करना याद रखते हैं.
19 याहवेह ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है, समस्त बनाई वस्तुओं
पर उनका शासन है. 20 तुम, जो उनके स्वर्गदूत हो, याहवेह का स्तवन करो,
तुम जो शक्तिशाली हो, तुम उनके आदेशों का पालन करते हो, उनके मुख से
निकले वचन को पूर्ण करते हो. 21 स्वर्ग की संपूर्ण सेना और तुम, जो उनके
सेवक हो, और जो उनकी इच्छा की पूर्ति करते हो, याहवेह का स्तवन करो. 22

उनकी समस्त सृष्टि, जो समस्त रचना में व्याप्त हैं, याहवेह का स्तवन करें. मेरे
प्राण, याहवेह का स्तवन करो.

104 मेरे प्राण, याहवेह का स्तवन करो. याहवेह, मेरे परमेश्वर, अत्यंत
महान हैं आप; वैभव और तेज से विभूषित हैं आप. **2** आपने ज्योति
को वस्त्र समान धारण किया हुआ है; आपने वस्त्र समान आकाश को विस्तीर्ण
किया है. **3** आपने आकाश के जल के ऊपर ऊपरी कक्ष की धरनें स्थापित की
हैं, मेघ आपके रथ हैं तथा आप पवन के पंखों पर यात्रा करते हैं. **4** हवा को
आपने अपना संदेशवाहक बनाया है, अग्निशिखाएं आपकी परिचारिकाएं हैं. **5**
आपने ही पृथ्वी को इसकी नींव पर स्थापित किया है; इसे कभी भी सरकाया
नहीं जा सकता. **6** आपने गहन जल के आवरण से इसे परिधान समान सुशोभित
किया; जल स्तर पर्वतों से ऊंचा उठ गया था. **7** किंतु जब आपने फटकार
लगाई, तब जल हट गया, आपके गर्जन समान आदेश से जल-राशियां भाग
खड़ी हुई; **8** जब पर्वतों की ऊंचाई बढ़ी, तो घाटियां गहरी होती गईं, ठीक
आपके नियोजन के अनुरूप निर्धारित स्थान पर. **9** आपके द्वारा उनके लिए
निर्धारित सीमा ऐसी थी; जिसका अतिक्रमण उनके लिए संभव न था; और वे
पृथ्वी को पुनः जलमग्न न कर सकें. **10** आप ही के सामर्थ्य से घाटियों में झरने
फूट पड़ते हैं; और पर्वतों के मध्य से जलधाराएं बहने लगती हैं. **11** इन्हीं से
मैदान के हर एक पशु को पेय जल प्राप्त होता है; तथा वन्य गधे भी प्यास बुझा
लेते हैं. **12** इनके तट पर आकाश के पक्षियों का बसेरा होता है; शाखाओं के
मध्य से उनकी आवाज निकलती है. **13** वही अपने आवास के ऊपरी कक्ष से
पर्वतों की सिंचाई करते हैं; आप ही के द्वारा उपजाए फलों से पृथ्वी तृप्त है. **14**
वह पशुओं के लिए घास उत्पन्न करते हैं, तथा मनुष्य के श्रम के लिए वनस्पति,
कि वह पृथ्वी से आहार प्राप्त कर सके: **15** मनुष्य के हृदय मगन करने के
निमित्त द्राक्षारस, मुखमंडल को चमकीला करने के निमित्त तेल, तथा मनुष्य के
जीवन को संभालने के निमित्त आहार उत्पन्न होता है. **16** याहवेह द्वारा लगाए
वृक्षों के लिए अर्थात् लबानोन में लगाए देवदार के वृक्षों के लिए जल बड़ी
मात्रा में होता है. **17** पक्षियों ने इन वृक्षों में अपने घोंसले बनाए हैं; सारस ने
अपना घोंसला चीड़ के वृक्ष में बनाया है. **18** ऊंचे पर्वतों में वन्य बकरियों का
निवास है; चट्टानों में चट्टानी बिज्जुओं ने आश्रय लिया है. **19** आपने नियत
समय के लिए चंद्रमा बनाया है, सूर्य को अपने अस्त होने का स्थान ज्ञात है. **20**
आपने अंधकार का प्रबंध किया, कि रात्रि हो, जिस समय वन्य पशु चलने फिरने
को निकल पड़ते हैं. **21** अपने शिकार के लिए पुष्ट सिंह गरजनेवाले हैं, वे
परमेश्वर से अपने भोजन खोजते हैं. **22** सूर्योदय के साथ ही वे चुपचाप छिप
जाते हैं; और अपनी-अपनी मांदों में जाकर सो जाते हैं. **23** इस समय मनुष्य
अपने-अपने कार्यों के लिए निकल पड़ते हैं, वे संध्या तक अपने कार्यों में
परिश्रम करते रहते हैं. **24** याहवेह! असंख्य हैं आपके द्वारा निष्पन्न कार्य,
आपने अपने अद्भुत ज्ञान में इन सब की रचना की है; समस्त पृथ्वी आपके द्वारा
रचे प्राणियों से परिपूर्ण हो गई है. **25** एक ओर समुद्र है, विस्तृत और गहरा,
उसमें भी असंख्य प्राणी चलते फिरते हैं— समस्त जीवित प्राणी हैं, सूक्ष्म भी
और विशालकाय भी. **26** इसमें जलयानों का आगमन होता रहता है, साथ ही
इसमें विशालकाय जंतु हैं, लिवयाथान, जिसे आपने समुद्र में खेलने के लिए
बनाया है. **27** इन सभी की दृष्टि आपकी ओर इसी आशा में लगी रहती है, कि
इन्हें आपकी ओर से उपयुक्त अवसर पर आहार प्राप्त होगा. **28** जब आप उन्हें
आहार प्रदान करते हैं, वे इसे एकत्र करते हैं; जब आप अपनी मुट्ठी खोलते हैं,
उन्हें उत्तम वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं. **29** जब आप उनसे अपना मुख छिपा लेते
हैं, वे घबरा जाते हैं; जब आप उनकी श्वास छीन लेते हैं, उनके प्राण पखेरू उड़
जाते हैं और वे उसी धूलि में लौट जाते हैं. **30** जब आप अपना पवित्रात्मा प्रेषित
करते हैं, उनका उद्भव होता है, उस समय आप पृथ्वी के स्वरूप को नया बना
देते हैं. **31** याहवेह का तेज सदा-सर्वदा स्थिर रहे; याहवेह की कृतियां उन्हें
प्रफुल्लित करती रहें. **32** जब वह पृथ्वी की ओर दृष्टिपात करते हैं, वह थरथरा
उठती है, वह पर्वतों का स्पर्श मात्र करते हैं और उनसे धुआं उठने लगता है. **33**
मैं आजीवन याहवेह का गुणगान करता रहूंगा; जब तक मेरा अस्तित्व है, मैं
अपने परमेश्वर का स्तवन गान करूंगा. **34** मेरा मनन-चिन्तन उनको प्रसन्न
करनेवाला हो, क्योंकि याहवेह मेरे परम आनंद का उगम हैं. **35** पृथ्वी से पापी
समाप्त हो जाएं, दुष्ट फिर देखे न जाएं. मेरे प्राण, याहवेह का स्तवन करो.
याहवेह का स्तवन हो.

105 याहवेह के प्रति आभार व्यक्त करो, उनको पुकारो; सभी जनताओं के
सामने उनके द्वारा किए कार्यों की घोषणा करो. **2** उनकी प्रशंसा में
गाओ, उनका गुणगान करो; उनके सभी अद्भुत कार्यों का वर्णन करो. **3** उनके
पवित्र नाम पर गर्व करो; उनके हृदय, जो याहवेह के खोजी हैं, उल्लसित हों. **4**
याहवेह और उनकी सामर्थ्य की खोज करो; उनकी उपस्थिति के सतत खोजी
बने रहो. **5** उनके द्वारा किए अद्भुत कार्य स्मरण रखो तथा उनके द्वारा हुईं अद्भुत
बातें एवं निर्णय भी, **6** उनके सेवक अब्राहाम के वंश, उनके द्वारा चुने हुए
याकोब की संतान. **7** वह याहवेह हैं, हमारे परमेश्वर; समस्त पृथ्वी पर उनके
द्वारा किया गया न्याय स्पष्ट है. **8** उन्हें अपनी वाचा सदैव स्मरण रहती है, वह
आदेश जो उन्होंने हजार पीढ़ियों को दिया, **9** वह वाचा, जो उन्होंने अब्राहाम
के साथ स्थापित की, प्रतिज्ञा की वह शपथ, जो उन्होंने यित्सहाक से खाई थी,
10 जिसकी पुष्टि उन्होंने याकोब से अधिनियम स्वरूप की, अर्थात् इस्राएल
से स्थापित अमर यह वाचा: **11** "कनान देश तुम्हें मैं प्रदान करूंगा. यह वह
भूखण्ड है, जो तुम निज भाग में प्राप्त करोगे." **12** जब परमेश्वर की प्रजा की
संख्या अल्प ही थी, जब उनकी संख्या बहुत ही कम थी, और वे उस देश में
परदेशी थे, **13** जब वे एक देश से दूसरे देश में भटकते फिर रहे थे, वे एक राज्य
में से होकर दूसरे में यात्रा कर रहे थे, **14** परमेश्वर ने किसी भी राष्ट्र को उन्हें
दुःखित न करने दिया; उनकी ओर से स्वयं परमेश्वर उन राजाओं को डांटते रहे:
15 "मेरे अभिषिक्तों का स्पर्श तक न करना; मेरे भविष्यवक्ताओं को कोई हानि
न पहुंचे!" **16** तब परमेश्वर ने उस देश में अकाल की स्थिति उत्पन्न कर दी.
उन्होंने ही समस्त आहार तृप्ति नष्ट कर दी; **17** तब परमेश्वर ने एक पुरुष,
योसेफ़ को, जिनको दास बनाकर उस देश में पहले भेज दिया. **18** उन्होंने
योसेफ़ के पैरों में बेड़ियां डालकर उन पैरों को ज़ख्मी किया था, उनकी गर्दन में
भी बेड़ियां डाल दी गई थीं. **19** तब योसेफ़ की पूर्वोक्ति सत्य प्रमाणित हुई,
उनके विषय में, याहवेह के वक्तव्य ने उन्हें सत्य प्रमाणित कर दिया. **20** राजा ने
उन्हें मुक्त करने के आदेश दिए, प्रजा के शासक ने उन्हें मुक्त कर दिया. **21**
उसने उन्हें अपने भवन का प्रधान तथा संपूर्ण संपत्ति का प्रशासक बना दिया, **22**
कि वह उनके प्रधानों को अपनी इच्छापूर्ति के निमित्त आदेश दे सकें और
उनके मंत्रियों को सुबुद्धि सिखा सकें. **23** तब इस्राएल ने मिस्र में पदार्पण किया;
तब हाम की धरती पर याकोब एक प्रवासी होकर रहने लगे. **24** याहवेह ने
अपने चुने हुओं को अत्यंत समृद्ध कर दिया; यहां तक कि उन्हें उनके शत्रुओं से
अधिक प्रबल बना दिया, **25** जिनके हृदय में स्वयं परमेश्वर ने अपनी प्रजा के
प्रति घृणा उत्पन्न कर दी, वे परमेश्वर के सेवकों के विरुद्ध बुरी युक्ति रचने
लगे. **26** तब परमेश्वर ने अपने चुने हुए सेवक मोशेह को उनके पास भेजा,
और अहरोन को भी. **27** उन्होंने परमेश्वर की ओर से उनके सामने आश्चर्य
कार्य प्रदर्शित किए, हाम की धरती पर उन्होंने अद्भुत कार्य प्रदर्शित किए. **28**
उनके आदेश ने सारे देश को अंधकारमय कर दिया; क्योंकि उन्होंने परमेश्वर
के आदेशों की अवहेलना की. **29** परमेश्वर ही के आदेश से देश का समस्त
जल रक्त में बदल गया, परिणामस्वरूप समस्त मछलियां मर गईं. **30** उनके
समस्त देश में असंख्य मेंढक उत्पन्न हो गए, यहां तक कि उनके न्यायियों के

शयनकक्ष में भी पहुंच गए. 31 परमेश्वर ने आदेश दिया और मक्खियों के समूह
देश पर छा गए, इसके साथ ही समस्त देश में मच्छर भी समा गए. 32 उनके
आदेश से वर्षा ने ओलों का रूप ले लिया, समस्त देश में आग्नेय विघुज्ज्वाला
बरसने लगी. 33 तब परमेश्वर ने उनकी द्राक्षालताओं तथा अंजीर के वृक्षों पर
भी आक्रमण किया, और तब उन्होंने उनके देश के वृक्षों का अंत कर दिया. 34
उनके आदेश से अरबेह टिड्डियों ने आक्रमण कर दिया, ये यालेक टिड्डियां
असंख्य थीं; 35 उन्होंने देश की समस्त वनस्पति को निगल लिया, भूमि
की समस्त उपज समाप्त हो गई. 36 तब परमेश्वर ने उनके देश के हर एक
पहलौठे की हत्या की, उन समस्त पहिलौठों का, जो उनके पौरुष का प्रमाण थे.
37 परमेश्वर ने स्वर्ण और चांदी के बडे धन के साथ इस्राएल को मिस्र देश से
बचाया, उसके समस्त गोत्रों में से कोई भी कुल नहीं लड़खड़ाया. 38 मिस्र
निवासी प्रसन्न ही थे, जब इस्राएली देश छोड़कर जा रहे थे, क्योंकि उन पर
इस्राएल का आतंक छा गया था. 39 उन पर आच्छादन के निमित्त परमेश्वर ने
एक मेघ निर्धारित कर दिया था, और रात्रि में प्रकाश के लिए अग्नि भी. 40
उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर ने उनके निमित्त आहार के लिए बटेरें भेज दीं;
और उन्हें स्वर्गिक आहार से भी तृप्त किया. 41 उन्होंने चट्टान को ऐसे खोल
दिया, कि उसमें से उनके निमित्त जल बहने लगा; यह जल वन में नदी जैसे
बहने लगा. 42 क्योंकि उन्हें अपने सेवक अब्राहाम से की गई अपनी पवित्र
प्रतिज्ञा स्मरण की. 43 आनंद के साथ उनकी प्रजा वहां से बाहर लाई गई, उनके
चुने हर्षनाद कर रहे थे; 44 परमेश्वर ने उनके लिए अनेक राष्ट्रों की भूमि दे दी,
वे उस संपत्ति के अधिकारी हो गए जिसके लिए किसी अन्य ने परिश्रम किया
था. 45 कि वे परमेश्वर के अधिनियमों का पालन कर सकें और उनके नियमों
को पूरा कर सकें. याहवेह का स्तवन हो.

106 याहवेह की स्तुति हो! याहवेह का धन्यवाद करो-वे भले हैं; उनकी
करुणा सदा की है. 2 किसमें क्षमता है याहवेह के महाकार्य को
लिखने की अथवा उनका तृप्त स्तवन करने की? 3 प्रशंसनीय हैं वे, जो न्याय
का पालन करते हैं, जो सदैव वही करते हैं, जो न्याय संगत ही होता है. 4
याहवेह, जब आप अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि करें, तब मुझे स्मरण रखिए, जब
आप उन्हें उद्धार दिलाएं, तब मेरा भी ध्यान रखें. 5 कि मैं आपके चुने हुओं की
समृद्धि देख सकूं, कि मैं आपके राष्ट्र के आनंद में उल्लसित हो सकूं, कि मैं
आपके निज भाग के साथ गर्व कर सकूं. 6 हमने अपने पूर्वजों के समान पाप
किए हैं; हमने अपराध किया है, हमारे आचरण में अधर्म था. 7 जब हमारे पूर्वज
मिस्र देश में थे, उन्होंने आपके द्वारा किए गए आश्चर्य कार्यों की गहनता को
मन में ग्रहण नहीं किया; उनके लिए आपके करुणा-प्रेम में किए गए वे अनेक
हितकार्य नगण्य ही रहे, सागर, लाल सागर के तट पर उन्होंने विद्रोह कर दिया.
8 फिर भी परमेश्वर ने अपनी महिमा के निमित्त उनकी रक्षा की, कि उनका
अतुलनीय सामर्थ्य प्रख्यात हो जाए. 9 परमेश्वर ने लाल सागर को डांटा और
वह सूख गया; परमेश्वर उन्हें उस गहराई में से इस प्रकार लेकर आगे बढ़ते गए
मानो वे वन के मार्ग पर चल रहे हों. 10 परमेश्वर ने शत्रुओं से उनकी सुरक्षा
की; उन्हें शत्रुओं के अधिकार से मुक्त कर दिया. 11 उनके प्रतिरोधी जल में डूब
गए; उनमें से एक भी जीवित न रहा. 12 तब उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं
पर विश्वास किया और उनकी वंदना की. 13 किंतु शीघ्र ही वह परमेश्वर के
महाकार्य को भूल गए; यहां तक कि उन्होंने परमेश्वर के निर्देशों की प्रतीक्षा भी
नहीं की. 14 जब वे बंजर भूमि में थे, वे अपने अनियंत्रित आवेगों में बह गए;
उजाड़ क्षेत्र में उन्होंने परमेश्वर की परीक्षा ली. 15 तब परमेश्वर ने उनकी
अभिलाषा की पूर्ति कर दी; इसके अतिरिक्त परमेश्वर ने उन पर महामारी
भेज दी. 16 मंडप निवासकाल में वे मोशेह और अहरोन से, जो याहवेह के
अभिषिक्त थे, डाह करने लगे. 17 तब भूमि फट गई और दाथान को निगल गई;
अबीराम के दल को उसने गाड़ दिया. 18 उनके अनुयायियों पर अग्निपात
हुआ; आग ने कुकर्मियों को भस्म कर दिया. 19 होरेब पर्वत पर उन्होंने बछड़े
की प्रतिमा ढाली और इस धातु प्रतिमा की आराधना की. 20 उन्होंने परमेश्वर
की महिमा का विनिमय उस बैल की प्रतिमा से कर लिया, जो घास चरता है.
21 वे उस परमेश्वर को भूल गए, जिन्होंने उनकी रक्षा की थी, जिन्होंने मिस्र
देश में असाधारण कार्य किए थे, 22 हाम के क्षेत्र में आश्चर्य कार्य तथा लाल
सागर के तट पर भयंकर कार्य किए थे. 23 तब परमेश्वर ने निश्चय किया कि
वह उन्हें नष्ट कर देंगे. वह उन्हें नष्ट कर चुके होते, यदि परमेश्वर के चुने मोशेह
उनके और परमेश्वर के सत्यानाश प्रकोप के मध्य आकर, जलजलाहट को ठंडा
न करते. 24 इसके बाद इस्राएलियों ने उस सुखदायी भूमि को निकम्मी समझा;
उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास नहीं किया. 25 अपने-अपने तंबुओं में
वे कुड़कुड़ाते रहे, उन्होंने याहवेह की आज्ञाएं नहीं मानीं. 26 तब याहवेह ने
शपथ खाई, कि वह उन्हें बंजर भूमि में ही मिटा देंगे, 27 कि वह उनके वंशजों
को अन्य जनताओं के मध्य नष्ट कर देंगे और उन्हें समस्त पृथ्वी पर बिखरा देंगे.
28 उन्होंने पओर के देवता बाल की पूजा-अर्चना की. उन्होंने उस बलि में से
खाया, जो निर्जीव देवताओं को अर्पित की गई थी. 29 अपने अधर्म के द्वारा
उन्होंने याहवेह के क्रोध को भड़का दिया, परिणामस्वरूप उनके मध्य महामारी
फैल गई. 30 तब फिनिहास ने सामने आकर मध्यस्थ का कार्य किया, और
महामारी थम गई. 31 उनकी इस भूमिका को पीढ़ी से पीढ़ी के लिए युक्त
घोषित किया गया. 32 मेरिबाह जलाशय के निकट उन्होंने याहवेह के कोप को
भड़काया, उनके कारण मोशेह पर संकट आ पड़ा, 33 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर
के आत्मा के विरुद्ध बलवा किया था, और मोशेह ने बिन सोचे शब्द बोल डाले
थे. 34 याहवेह के आदेश के अनुरूप उन्होंने उन लोगों की हत्या नहीं की, 35
परंतु वे अन्य जनताओं से घुल-मिल गए और उन्होंने उनकी प्रथाएं भी अपना
लीं. 36 उन्होंने उनकी प्रतिमाओं की आराधना की, जो उनके लिए फंदा बन
गईं. 37 उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों को प्रेतों के लिए बलि कर दिया. 38 उन्होंने
निर्दोषों का रक्त बहाया, अपने ही पुत्रों और पुत्रियों का रक्त, जिनकी उन्होंने
कनान देश की प्रतिमाओं को बलि अर्पित की, और उनके रक्त से भूमि दूषित हो
गई. 39 अपने कार्यों से उन्होंने स्वयं को भ्रष्ट कर डाला; उन्होंने अपने ही
कार्यों के द्वारा विश्वासघात किया. 40 ये सभी वे कार्य थे, जिनके कारण याहवेह
अपने ही लोगों से क्रोधित हो गए और उनको अपना निज भाग उनके लिए
घृणास्पद हो गया. 41 परमेश्वर ने उन्हें अन्य राष्ट्रों के अधीन कर दिया, उनके
विरोधी ही उन पर शासन करने लगे. 42 उनके शत्रु उन पर अधिकार करते
रहे और उन्हें उनकी शक्ति के सामने समर्पण करना पड़ा. 43 कितनी ही बार
उन्होंने उन्हें मुक्त किया, किंतु वे थे विद्रोह करने पर ही अटल, तब वे अपने ही
अपराध में नष्ट होते चले गए. 44 किंतु उनका संकट परमेश्वर की दृष्टि में था.
तब उन्होंने उनकी पुकार सुनी; 45 उनके कल्याण के निमित्त परमेश्वर ने अपनी
वाचा का स्मरण किया, और अपने करुणा-प्रेम की परिणामता में परमेश्वर ने उन
पर कृपा की. 46 परमेश्वर ने उनके प्रति, जिन्होंने उन्हें बंदी बना रखा था,
उनके हृदय में कृपाभाव उत्पन्न किया. 47 याहवेह, हमारे परमेश्वर, हमारी रक्षा
कीजिए, और हमें विभिन्न राष्ट्रों में से एकत्र कर लीजिए, कि हम आपके पवित्र
नाम के प्रति आभार व्यक्त कर सकें और आपका स्तवन हमारे गर्व का विषय बन
जाए. 48 आदि से अनंत काल तक धन्य हैं. याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, इस
पर सारी प्रजा कहे, "आमेन," याहवेह की स्तुति हो.

107 याहवेह का धन्यवाद करो, वे भले हैं; उनकी करुणा सदा की है.
2 यह नारा उन सबका हो, जो याहवेह द्वारा उद्धारित हैं, जिन्हें उन्होंने
विरोधियों से मुक्त किया है, 3 जिन्हें उन्होंने पूर्व और पश्चिम से, उत्तर और
दक्षिण से, विभिन्न देशों से एकत्र कर एकजुट किया है. 4 कुछ निर्जन वन में

भटक रहे थे, जिन्हें नगर की ओर जाता हुआ कोई मार्ग न मिल सका. 5 वे भूखे
और प्यासे थे, वे दुर्बल होते जा रहे थे. 6 अपनी विपत्ति की स्थिति में उन्होंने
याहवेह को पुकारा, याहवेह ने उन्हें उनकी दुर्दशा से छुड़ा लिया. 7 उन्होंने उन्हें
सीधे-समतल पथ से ऐसे नगर में पहुंचा दिया जहां वे जाकर बस सकते थे. 8
उपयुक्त है कि वे याहवेह के प्रति उनके करुणा-प्रेम के लिए तथा उनके द्वारा
मनुष्यों के लिए किए गए अद्भुत कार्यों के लिए उनका आभार व्यक्त करें,
9 क्योंकि वह प्यासी आत्मा के प्यास को संतुष्ट करते तथा भूखे को उत्तम
आहार से तृप्त करते हैं. 10 कुछ ऐसे थे, जो अंधकार में, गहनतम मृत्यु की
छाया में बैठे हुए थे, वे बंदी लोहे की बेड़ियों में यातना सह रहे थे, 11 क्योंकि
उन्होंने परमेश्वर के आदेशों के विरुद्ध विद्रोह किया था और सर्वोच्च परमेश्वर
के निर्देशों को तुच्छ समझा था. 12 तब परमेश्वर ने उन्हें कठोर श्रम के कार्यों
में लगा दिया; वे लड़खड़ा जाते थे किंतु कोई उनकी सहायता न करता था.
13 अपनी विपत्ति की स्थिति में उन्होंने याहवेह को पुकारा, याहवेह ने उन्हें
उनकी दुर्दशा से छुड़ा लिया. 14 परमेश्वर ने उन्हें अंधकार और मृत्यु-छाया
से बाहर निकाल लिया, और उनकी बेड़ियों को तोड़ डाला. 15 उपयुक्त है
कि वे याहवेह के प्रति उनके करुणा-प्रेम के लिए तथा उनके द्वारा मनुष्यों के
हित में किए गए अद्भुत कार्यों के लिए उनका आभार व्यक्त करें, 16 क्योंकि
वही कांस्य द्वारों को तोड़ देते तथा लोहे की छड़ों को काटकर विभक्त कर
डालते हैं. 17 कुछ ऐसे भी थे, जो विद्रोह का मार्ग अपनाकर मूर्ख प्रमाणित हुए,
जिसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हें अपने अपराधों के कारण ही पीड़ा सहनी
पड़ी. 18 उन्हें सभी प्रकार के भोजन से घृणा हो गई और वे मृत्यु-द्वार तक पहुंच
गए. 19 अपनी विपत्ति की स्थिति में उन्होंने याहवेह को पुकारा, याहवेह ने
उन्हें उनकी दुर्दशा से छुड़ा लिया. 20 उन्होंने आदेश दिया और वे स्वस्थ हो गए
और उन्होंने उन्हें उनके विनाश से बचा लिया. 21 उपयुक्त है कि वे याहवेह के
प्रति उनके करुणा-प्रेम के लिए तथा उनके द्वारा मनुष्यों के हित में किए गए
अद्भुत कार्यों के लिए उनका आभार व्यक्त करें. 22 वे धन्यवाद बलि अर्पित करें
और हर्षगीतों के माध्यम से उनके कार्यों का वर्णन करें. 23 कुछ वे थे, जो
जलयानों में समुद्री यात्रा पर चले गए; वे महासागर पार जाकर व्यापार करते थे.
24 उन्होंने याहवेह के महाकार्य देखे, वे अद्भुत कार्य, जो समुद्र में किए गए थे.
25 याहवेह आदेश देते थे और बवंडर उठ जाता था, जिसके कारण समुद्र पर
ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगती थीं. 26 वे जलयान आकाश तक ऊंचे उठकर
गहराइयों तक पहुंच जाते थे; जोखिम की इस बुराई की स्थिति में उनका साहस
जाता रहा. 27 वे मतवालों के समान लुढ़कते और लड़खड़ा जाते थे; उनकी
मति भ्रष्ट हो चुकी थी. 28 अपनी विपत्ति की स्थिति में उन्होंने याहवेह को
पुकारा, याहवेह ने उन्हें उनकी दुर्दशा से छुड़ा लिया. 29 याहवेह ने बवंडर को
शांत किया और समुद्र की लहरें स्तब्ध हो गईं. 30 लहरों के शांत होने पर उनमें
हर्ष की लहर दौड़ गई, याहवेह ने उन्हें उनके मनचाहे बंदरगाह तक पहुंचा
दिया. 31 उपयुक्त है कि वे याहवेह के प्रति उनके करुणा-प्रेम के लिए तथा
उनके द्वारा मनुष्यों के हित में किए गए अद्भुत कार्यों के लिए उनका आभार
व्यक्त करें. 32 वे जनसमूह के सामने याहवेह का भजन करें, वे अगुओं की सभा
में उनकी महिमा करें. 33 परमेश्वर ने नदियां मरुभूमि में बदल दीं, परमेश्वर ने
झरनों के प्रवाह को रोका. 34 वहां के निवासियों की दुष्टता के कारण याहवेह
नदियों को वन में, नदी को शुष्क भूमि में और उर्वर भूमि को निर्जन भूमि में
बदल देते हैं. 35 याहवेह ही वन को जलाशय में बदल देते हैं और शुष्क भूमि
को झरनों में; 36 वहां वह भूखों को बसने देते हैं, कि वे वहां बसने के लिये एक
नगर स्थापित कर दें, 37 कि वे वहां कृषि करें, द्राक्षावाटिका का रोपण करें तथा
इनसे उन्हें बड़ा उपज प्राप्त हो. 38 याहवेह ही की कृपादृष्टि में उनकी संख्या में
बहुत वृद्धि होने लगती है, याहवेह उनके पशु धन की हानि नहीं होने देते. 39
जब उनकी संख्या घटने लगती है और पीछे, क्लेश और शोक के कारण उनका
मनोबल घटता और दब जाता है, 40 परमेश्वर उन अधिकारियों पर निंदा-वृष्टि
करते हैं, वे मार्ग रहित वन में भटकाने के लिए छोड़ दिए जाते हैं. 41 किंतु
याहवेह दुःखी को पीड़ा से बचाकर उनके परिवारों को भेड़ों के झुंड समान
वृद्धि करते हैं. 42 यह सब देख सीधे लोग उल्लसित होते हैं, और दुष्टों को चुप
रह जाना पड़ता है. 43 जो कोई बुद्धिमान है, इन बातों का ध्यान रखे और
याहवेह के करुणा-प्रेम पर विचार करता रहे.

108 एक गीत. दावीद का एक स्तोत्र. परमेश्वर, मेरा हृदय निश्चिंत है; मैं
संपूर्ण हृदय से संगीत बनाऊंगा, और गाऊंगा. 2 नेबेल और किन्नोर
जागो! मैं सुबह को जागृत करूंगा. 3 याहवेह, मैं लोगों के मध्य आपका आभार
व्यक्त करूंगा; राष्ट्रों के मध्य मैं आपका स्तवन करूंगा. 4 क्योंकि आपका
करुणा-प्रेम आकाश से भी महान है; आपकी सच्चाई अंतरीक्ष तक जा पहुंचती
है. 5 परमेश्वर, आप सर्वोच्च स्वर्ग में बसे हैं; आपकी महिमा समस्त पृथ्वी को
तेजोमय करें. 6 अपने दायें हाथ से हमें छुड़ाकर हमें उत्तर दीजिए, कि आपके
प्रिय पात्र छुड़ाए जा सकें. 7 परमेश्वर ने अपने पवित्र स्थान में घोषणा की है:
"अपने विजय में मैं शेकेम को विभाजित करूंगा, तथा मैं सुक्कोथ घाटी को नाप
कर बंटवारा कर दूंगा. 8 गिलआद पर मेरा अधिकार है, मनश्शेह पर मेरा
अधिकार है; एफ्राईम मेरे सिर का रखवाला है, यहूदाह मेरा राजदंड है. 9
मोआब राष्ट्र मेरे हाथ धोने का पात्र है, और एदोम राष्ट्र पर मैं अपनी पादुका
फेंकूंगा; फिलिस्तिया के ऊपर उच्च स्वर में जयघोष करूंगा." 10 कौन ले
जाएगा मुझे सुदृढ़-सुरक्षित नगर तक? कौन पहुंचाएगा मुझे एदोम नगर तक? 11
परमेश्वर, क्या आप ही नहीं, जिन्होंने हमें शोकित छोड़ दिया है और हमारी
सेनाओं को साथ देना भी छोड़ दिया है? 12 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता
कीजिए, क्योंकि किसी भी मनुष्य द्वारा लायी गयी सहायता निरर्थक है. 13
परमेश्वर के साथ मिलकर हमारी विजय सुनिश्चित होती है, वही हमारे शत्रुओं
को कुचल डालेगा.

109 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना. एक स्तोत्र. परमेश्वर, मेरे
स्तुति पात्र, निष्क्रिय और चुप न रहिए. 2 दुष्ट और झूठे पुरुषों ने मेरी
निंदा करना प्रारंभ कर दिया है; वे जो कुछ कहकर मेरी निंदा कर रहे हैं, वह
सभी झूठ है. 3 उन्होंने मुझ पर घिनौने शब्दों की बौछार कर दी; अकारण ही
उन्होंने मुझ पर आक्रमण कर दिया है. 4 उन्होंने मेरी मैत्री के बदले मुझ पर
आरोप लगाये, किंतु मैं प्रार्थना का आदमी हूं! 5 उन्होंने मेरे हित का प्रतिफल
बुराई में दिया है, तथा मेरी मैत्री का प्रतिफल घृणा में. 6 आप उसका प्रतिरोध
करने के लिए किसी दुष्ट पुरुष को ही बसा लीजिए; उसके दायें पक्ष पर कोई
विरोधी खड़ा हो जाए. 7 जब उस पर न्याय चलाया जाए तब वह दोषी पाया
जाए, उसकी प्रार्थनाएं उसके लिए दंड-आज्ञा हो जाएं. 8 उसकी आयु कम हो
जाए; उसके पद को कोई अन्य हड़प ले. 9 उसकी संतान पितृहीन हो जाए तथा
उसकी पत्नी विधवा. 10 उसकी संतान भटकें और भीख मांगें; वे अपने उजड़े
घर से दूर जाकर भोजन के लिए तरस जाएं. 11 महाजन उसका सर्वस्व हड़प
लें; उसके परिश्रम की संपूर्ण निधि परदेशी लोग लूट लें. 12 उसे किसी की भी
कृपा प्राप्त न हो और न कोई उसकी पितृहीन संतान पर करुणा प्रदर्शित करे. 13
उसका वंश ही मिट जाए, आगामी पीढ़ी की सूची से उनका नाम मिट जाए. 14
याहवेह के सामने उसके पूर्वजों का अपराध स्मरण दिलाया जाए; उसकी माता
का पाप कभी क्षमा न किया जाए. 15 याहवेह के सामने उन सभी के पाप बने
रहें, कि वह उन सबका नाम पृथ्वी पर से ही मिटा दें. 16 करुणाभाव उसके मन
में कभी आया ही नहीं, वह खोज कर निर्धनों, दीनों तथा खेदितमनवालों की
हत्या करता है. 17 शाप देना उसे अत्यंत प्रिय है, वही शाप उस पर आ पड़े.

किसी की हितकामना करने में उसे कोई आनंद प्राप्त नहीं होता— उत्तम यही
होगा कि हित उससे ही दूर-दूर बना रहे. 18 उसके लिए वस्त्र धारण करने जैसे ही
हो गया शाप देना; जैसा जल शरीर का अंश होता है; वैसे ही हो गया शाप,
हां, जैसे तेल हड्डियों का अंश हो जाता है! 19 शाप ही उसका वस्त्र बन जाए,
कटिबंध समान, जो सदैव समेटे रहता है. 20 याहवेह की ओर से मेरे विरोधियों
के लिए यही प्रतिफल हो, उनके लिए, जो मेरी निंदा करते रहते हैं. 21 किंतु
आप, सर्वसत्ताधारी याहवेह, अपनी महिमा के अनुरूप मुझ पर कृपा कीजिए;
अपने करुणा-प्रेम के कारण मेरा उद्धार कीजिए. 22 मैं दीन और दरिद्र हूं, और
मेरा हृदय घायल है. 23 संध्याकालीन छाया-समान मेरा अस्तित्व समाप्ति पर
है; मुझे ऐसे झाड़ दिया जाता है मानो मैं अरबेह टिड्डी हूं. 24 उपवास के कारण
मेरे घुटने दुर्बल हो चुके हैं; मेरा शरीर क्षीण और कमजोर हो गया है. 25 मेरे
विरोधियों के लिए मैं घृणास्पद हो चुका हूं; मुझे देखते ही वे सिर हिलाने लगते
हैं. 26 याहवेह मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता कीजिए; अपने करुणा-प्रेम के कारण
मेरा उद्धार कीजिए. 27 उनको यह स्पष्ट हो जाए कि, वह आपके बाहुबल के
कारण ही हो रहा है, यह कि याहवेह, यह सब आपने ही किया है. 28 वे शाप
देते रहें, किंतु आप आशीर्वचन ही कहें; तब जब वे, आक्रमण करेंगे, उन्हें
लज्जित होना पड़ेगा, यह आपके सेवक के लिए आनंद का विषय होगा. 29 मेरे
विरोधियों को अनादर के वस्त्रों के समान धारण करनी होगी, वे अपनी ही
लज्जा को कंबल जैसे लपेट लेंगे. 30 मेरे मुख की वाणी याहवेह के सम्मान में
उच्चतम धन्यवाद होगी; विशाल जनसमूह के सामने मैं उनका स्तवन करूंगा,
31 क्योंकि याहवेह दुःखितों के निकट दायें पक्ष पर आ खड़े रहते हैं, कि वह
उनके जीवन को उन सबसे सुरक्षा प्रदान करें, जिन्होंने उसके लिए मृत्यु दंड
निर्धारित किया था.

110 दावीद की रचना. एक स्तोत्र. याहवेह मेरे प्रभु ने, राजा से कहा: "मेरे
दायें पक्ष में विराजमान हो जाओ. तुम्हारे शत्रुओं को मैं तुम्हारे चरणों
की चौकी बना रहा हूं." 2 याहवेह ही ज़ियोन से आपके सामर्थ्यवान राजदंड
का विस्तार करेंगे, "आपका शासन आपके शत्रुओं के मध्य बसा होगा!" 3
आपकी सेना आपकी लड़ाई के समय स्वेच्छा से आपका साथ देगी, सबेरे के
गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान पवित्रता से सुशोभित होकर आपके पास आएंगे
आपके जवान. 4 यह याहवेह की शपथ है, जो अपने वक्तव्य से दूर नहीं होते:
"तुम मेलखीज़ेदेक की शृंखला में सनातन पुरोहित हो." 5 प्रभु आपके दायें पक्ष
में तत्पर हैं; वह उदास होकर राजाओं को कुचल डालेंगे. 6 वह राष्ट्रों पर अपने
न्याय का निर्णय घोषित करेंगे, मृतकों का ढेर लग जाएगा और संपूर्ण पृथ्वी के
न्यायियों की हत्या कर दी जाएगी. 7 तब महाराज मार्ग के किनारे के झरने से
जल का पान करेंगे, उनका सिर गर्व से ऊंचा होगा.

111 याहवेह का स्तवन हो. मैं संपूर्ण हृदय से याहवेह का स्तवन करूंगा,
सीधे मनवालों की समिति और सभा में. 2 अति उदात्त हैं याहवेह के
कृत्य; वे उनकी प्रसन्नता का कारण हैं, जो इनको मनन करते हैं. 3 महिमामय
और भव्य हैं याहवेह के ये कृत्य, उनकी धार्मिकता सर्वदा है. 4 याहवेह ने अपने
इन कृत्यों को अविस्मरणीय बना दिया है; वह उदार एवं कृपालु हैं. 5 अपने
श्रद्धालुओं के लिए वह आहार का प्रबंध करते हैं; वह अपनी वाचा सदा-सर्वदा
स्मरण रखते हैं. 6 उन्होंने अपनी प्रजा पर इन कृत्यों की सामर्थ्य प्रकट कर दी,
जब उन्होंने उन्हें अन्य राष्ट्रों की भूमि प्रदान की. 7 उनके द्वारा निष्पन्न समस्त
कार्य विश्वासयोग्य और न्याय के हैं; विश्वासयोग्य हैं उनके सभी उपदेश. 8 वे
सदा-सर्वदा के लिए अटल हैं, कि इनका पालन सच्चाई एवं न्याय में किया
जाए. 9 याहवेह ने अपनी प्रजा का उद्धार किया; उन्होंने अपनी वाचा सदा-
सर्वदा के लिए स्थापित कर दी है. उनका नाम सबसे अलग तथा पवित्र और
भय-योग्य है. 10 याहवेह के प्रति श्रद्धा बुद्धि का मूल है; उन सभी में, जो इसे
मानते हैं, उत्तम समझ रहते है. याहवेह ही हैं सर्वदा वंदना के योग्य.

112 याहवेह का स्तवन हो. धन्य है वह पुरुष, जो याहवेह के प्रति श्रद्धा
रखता है, जिसने उनके आदेशों के पालन में अधिक आनंद पाया है.
2 उसके वंशजों का तेज समस्त पृथ्वी पर होगा; सीधे पुरुष की हर एक पीढ़ी
धन्य होगी. 3 उसके परिवार में संपत्ति और समृद्धि का वास है, सदा बनी रहती
है उसकी सच्चाई और धार्मिकता 4 सीधे लोगों के लिए अंधकार में भी प्रकाश
का उदय होता है, वह उदार, कृपालु और नीतियुक्त है. 5 उत्तम होगा उन लोगों
का प्रतिफल, जो उदार है, जो उदारतापूर्वक ऋण देता है, जो अपने लेनदेन में
सीधा है. 6 यह सुनिश्चित है, कि वह कभी पथभ्रष्ट न होगा; धर्मी अपने पीछे
स्थायी नाम छोड़ जाता है. 7 उसे किसी बुराई के समाचार से भय नहीं होता;
याहवेह पर भरोसा करते हुए उसका हृदय शांत और स्थिर बना रहता है. 8
उसका हृदय सुरक्षा में स्थापित है, तब उसे कोई भय नहीं होता; अंततः वही
शत्रुओं पर जयन्त होकर दृष्टि करेगा. 9 उन्होंने कंगालों को उदारतापूर्वक दान
दिया है, उनकी सच्चाई और धार्मिकता युगानुयुग बनी रहती है. उनकी महिमा
सदैव ऊंची होती रहती है. 10 यह सब देखकर दुष्ट अत्यंत कुपित हो जाता है,
वह दांत पीसता है और गल जाता है; दुष्ट की अभिलाषाएं अपूर्ण ही रह जाएंगी.

113 याहवेह का स्तवन हो. याहवेह के सेवको, स्तवन करो; याहवेह की
महिमा का स्तवन करो. 2 आज से सदा-सर्वदा याहवेह के नाम का
स्तवन होता रहे. 3 उपयुक्त है कि सूर्योदय से सूर्यास्त के क्षण तक, याहवेह के
नाम का स्तवन हो. 4 याहवेह समस्त राष्ट्रों के ऊपर हैं, उनका तेज स्वर्ग से भी
महान है. 5 और कौन है याहवेह हमारे परमेश्वर के तुल्य, जो सर्वोच्च सिंहासन
पर विराजमान हैं, 6 जिन्हें स्वर्ग एवं पृथ्वी को देखने के लिए झुककर दृष्टिपात
करना पड़ता है? 7 याहवेह ही कंगाल को धूलि से उठाकर बसाते हैं, वही दरिद्र
को राख के ढेर से उठाकर ऊंचा करते हैं. 8 वही उन्हें प्रधानों के साथ लाकर,
अपनी प्रजा के प्रधानों के साथ विराजमान करते हैं. 9 वही बांझ स्त्री को बच्चों
की माता का आनंद प्रदान करके परिवार में सम्मान प्रदान करते हैं. याहवेह का
स्तवन हो.

114 जब इस्राएली मिस्र देश से बाहर आए, जब याकोब के वंशज विदेशी
भाषा-भाषी देश से बाहर आए, 2 तब यहूदिया उनका पवित्र स्थान
और इस्राएल प्रदेश उनका शासित राष्ट्र हो गया. 3 यह देख समुद्र पलायन कर
गया, और यरदन नदी विपरीत दिशा में प्रवाहित होने लगी; 4 पर्वत मेढ़ों के तथा
पहाड़ियां मेमनों के समान, छलांग लगाने लगीं. 5 समुद्र, यह बताओ, तुमने
पलायन क्यों किया? और यरदन, तुम्हें उलटा क्यों बहना पड़ा? 6 पर्वतो, तुम
मेढ़ों के समान तथा पहाड़ियो, तुम मेमनों के समान छलांगें क्यों लगाने लगे?
7 पृथ्वी, तुम याहवेह की उपस्थिति में थरथराओ, याकोब के परमेश्वर की
उपस्थिति में, 8 जिन्होंने चट्टान को ताल में बदल दिया, और उस कठोर पत्थर
को जल के सोते में.

115 हमारी नहीं, याहवेह, हमारी नहीं, परंतु आपकी ही महिमा हो,
आपके करुणा-प्रेम और आपकी सच्चाई के निमित्त. 2 अन्य जनता
यह क्यों कह रहे हैं, "कहां है उनका परमेश्वर?" 3 स्वर्ग में हैं हमारे परमेश्वर
और वह वही सब करते हैं; जिसमें उनकी चाहत है. 4 किंतु इन राष्ट्रों की
प्रतिमाएं मात्र स्वर्ण और चांदी हैं, मनुष्यों की हस्तकृति मात्र. 5 हां, उनका मुख
अवश्य है, किंतु ये बोल नहीं सकतीं, उनकी आंखें अवश्य हैं, किंतु ये देख
नहीं सकतीं. 6 उनके कान हैं, किंतु ये सुन नहीं सकतीं, नाक तो है, किंतु ये
सूंघ नहीं सकती. 7 इनके हाथ हैं, किंतु ये स्पर्श नहीं कर सकतीं, पैर भी हैं,

किंतु ये चल फिर नहीं सकतीं, न ही ये अपने कण्ठ से कोई स्वर ही उच्चार
सकती हैं. 8 इनके समान ही हो जाएंगे इनके निर्माता, साथ ही वे सभी, जो इन
पर भरोसा करते हैं. 9 इस्राएल के वंशजो, याहवेह पर भरोसा करो; वही हैं तुम्हारे
सहायक तथा रक्षक. 10 अहरोन के वंशजो, याहवेह पर भरोसा करो; वही हैं
तुम्हारे सहायक तथा रक्षक. 11 याहवेह के भय माननेवालो, याहवेह में भरोसा
रखो, याहवेह सहारा देता है और अपने अनुयायियों की रक्षा करता है. 12
याहवेह को हमारा स्मरण रहता है, हम पर उनकी कृपादृष्टि रहेगी: याहवेह अपने
लोग इस्राएल को आशीर्वाद देंगे, उनकी कृपादृष्टि अहरोन के वंश पर रहेगी. 13
उनकी कृपादृष्टि उन सभी पर रहेगी, जिनमें याहवेह के प्रति श्रद्धा है— चाहे वे
साधारण हों अथवा विशिष्ट. 14 याहवेह तुम्हें ऊंचा करें, तुम्हें और तुम्हारी
संतान को. 15 याहवेह की कृपादृष्टि तुम पर स्थिर रहे, जो स्वर्ग और पृथ्वी के
रचनेवाले हैं. 16 सर्वोच्च स्वर्ग के स्वामी याहवेह हैं, किंतु पृथ्वी उन्होंने मनुष्य
को सौंपी है. 17 वे मृतक नहीं हैं, जो याहवेह का स्तवन करते हैं, न ही जो
चिर-निद्रा में समा जाते हैं; 18 किंतु जहां तक हमारा प्रश्न है, हम याहवेह का
गुणगान करते रहेंगे, इस समय तथा सदा-सर्वदा. याहवेह का स्तवन हो.

116 मुझे याहवेह से प्रेम है, क्योंकि उन्होंने मेरी पुकार सुन ली; उन्होंने
मेरी प्रार्थना सुन ली. 2 इसलिये कि उन्होंने मेरी पुकार सुन ली, मैं
आजीवन उन्हें ही पुकारता रहूंगा. 3 मृत्यु के डोर मुझे कसे जा रहे थे, अधोलोक
की वेदना से मैं भयभीत हो चुका था; भय और संकट में मैं पूर्णतः डूब चुका था.
(Sheol h7585) 4 इस स्थिति में मैंने याहवेह के नाम को पुकारा: "याहवेह, मेरा
अनुरोध है, मुझे बचाइए!" 5 याहवेह उदार एवं धर्ममय हैं; हां, हमारे परमेश्वर
करुणानिधान हैं. 6 याहवेह भोले लोगों की रक्षा करते हैं; मेरी विषम परिस्थिति
में उन्होंने मेरा उद्धार किया. 7 ओ मेरे प्राण, लौट आ अपने विश्राम स्थान पर,
क्योंकि याहवेह ने तुझ पर उपकार किया है. 8 याहवेह, आपने मेरे प्राण को
मृत्यु से मुक्त किया है, मेरे आंखों को अश्रुओं से, तथा मेरे पांवों को लड़खड़ाने
से सुरक्षित रखा है, 9 कि मैं जीवितों के लोक में याहवेह के साथ चल फिर
सकूं. 10 उस स्थिति में भी, जब मैं यह कह रहा था, "असह्य है मेरी पीड़ा"
विश्वास मुझमें बना था; 11 अपनी खलबली में मैंने यह कह दिया था, "सभी
मनुष्य झूठ बोलनेवाले हैं." 12 याहवेह के इन समस्त उपकारों का प्रतिफल मैं
उन्हें कैसे दे सकूंगा? 13 मैं उद्धार का प्याला ऊंचा उठाऊंगा और याहवेह की
महिमा का गुणगान करूंगा. 14 याहवेह की प्रजा के सामने मैं याहवेह से की गई
अपनी प्रतिज्ञाएं पूर्ण करूंगा. 15 याहवेह की दृष्टि में उनके भक्तों की मृत्यु
मूल्यवान होती है. 16 याहवेह, निःसंदेह, मैं आपका सेवक हूं; आपका सेवक,
आपकी सेविका का पुत्र. आपने मुझे मेरे बंधनों से छुड़ा दिया है. 17 मैं आपको
आभार-बलि अर्पित करूंगा, मैं याहवेह की वंदना करूंगा. 18 मैं याहवेह से की
गई अपनी प्रतिज्ञाएं उनकी संपूर्ण प्रजा के सामने पूर्ण करूंगा. 19 येरूशलेम,
तुम्हारे मध्य, याहवेह के भवन के आंगनों में पूर्ण करूंगा. याहवेह का स्तवन हो.

117 समस्त राष्ट्रो, याहवेह का स्तवन करो; सभी उनका गुणगान करें.
2 इसलिये कि हमारे प्रति उनका करुणा-प्रेम अप्रतिम है, तथा उनकी
सच्चाई सर्वदा है. याहवेह का स्तवन हो.

118 याहवेह का धन्यवाद करो, क्योंकि वे भले हैं, सनातन है उनकी
करुणा. 2 इस्राएल यह नारा लगाए: "सनातन है उनकी करुणा." 3
अहरोन के परिवार का यह नारा हो: "सनातन है उनकी करुणा" 4 याहवेह के
समस्त श्रद्धालुओं का यह नारा हो: "सनातन है उनकी करुणा." 5 अपने संकट
की स्थिति में मैंने याहवेह को पुकारा; और प्रत्युत्तर में वे मुझे एक विशाल स्थान
पर ले आये. 6 मुझे कोई भय न होगा, क्योंकि याहवेह मेरे साथ हैं. मनुष्य मेरा
क्या बिगाड़ सकता है? 7 मेरे साथ याहवेह हैं; वह मेरे सहायक हैं. मैं स्वयं
अपने शत्रुओं का पराजय देखूंगा. 8 मनुष्य पर भरोसा करने की अपेक्षा याहवेह
का आश्रय लेना उत्तम है. 9 न्यायियों पर भरोसा करने की अपेक्षा से याहवेह
का आश्रय लेना उत्तम है. 10 सब राष्ट्रों ने मुझे घेर लिया था, किंतु याहवेह के
नाम में मैंने उन्हें नाश कर दिया. 11 मैं चारों ओर से घिर चुका था, किंतु
याहवेह के नाम में मैंने उन्हें नाश कर दिया. 12 उन्होंने मुझे उसी प्रकार घेर
लिया था, जिस प्रकार मधुमक्खियां किसी को घेर लेती हैं, किंतु मेरे सब शत्रु
वैसे ही शीघ्र नाश हो गए जैसे अग्नि में जलती कंटीली झाड़ी; याहवेह के नाम
में मैंने उन्हें नाश कर दिया. 13 इस सीमा तक मेरा पीछा किया गया, कि मैं
टूटने पर ही था, किंतु याहवेह ने आकर मेरी सहायता की. 14 मेरा बल और मेरा
गीत याहवेह हैं; वे मेरा उद्धार बन गए हैं. 15 धर्मियों के मंडप से ये उल्लासपूर्ण
जयघोष प्रतिध्वनित हो रही हैं: "याहवेह के दायें हाथ ने महाकार्य किए हैं! 16
याहवेह का दायां हाथ ऊंचा उठा हुआ है; याहवेह के दायें हाथ ने महाकार्य किए
हैं!" 17 मैं जीवित रहूंगा, मेरी मृत्यु नहीं होगी, और मैं याहवेह के महाकार्य की
उद्घोषणा करता रहूंगा. 18 कठोर थी मुझ पर याहवेह की प्रताड़ना, किंतु उन्होंने
मुझे मृत्यु के हाथों में नहीं सौंप दिया. 19 मेरे लिए धार्मिकता के द्वार खोल दिए
जाएं; कि मैं उनमें से प्रवेश करके याहवेह को आभार भेंट अर्पित कर सकूं. 20
यह याहवेह का प्रवेश द्वार है, जिसमें से धर्मी ही प्रवेश करेंगे. 21 याहवेह,
मैं आपको आभार भेंट अर्पित करूंगा; क्योंकि आपने मेरी प्रार्थना सुन ली;
आप मेरे उद्धारक हो गए हैं. 22 भवन निर्माताओं द्वारा अयोग्य घोषित शिला ही
आधारशिला बन गई है; 23 यह कार्य याहवेह का है, हमारी दृष्टि में अद्भुत. 24
यह याहवेह द्वारा बनाया गया दिन है; आओ, हम आनंद में उल्लसित हों. 25
याहवेह, हमारी रक्षा कीजिए! याहवेह, हमें समृद्धि दीजिए! 26 स्तुत्य हैं वह, जो
याहवेह के नाम में आ रहे हैं. हम याहवेह के आवास से आपका अभिनंदन करते
हैं. 27 याहवेह ही परमेश्वर हैं, उन्होंने हम पर अपनी रोशनी डाली है. उत्सव के
बलि पशु को वेदी के सींगों से बांध दो. 28 आप ही मेरे परमेश्वर हैं, मैं आपके
प्रति आभार व्यक्त करूंगा; आप ही मेरे परमेश्वर हैं, मैं आपका गुणगान करूंगा.
29 याहवेह का धन्यवाद करो, क्योंकि वे भले हैं, सनातन है उनकी करुणा.

119 कैसे धन्य हैं वे, जिनका आचार-व्यवहार निर्दोष है, जिनका आचरण
याहवेह की शिक्षाओं के अनुरूप है. 2 कैसे धन्य हैं वे, जो उनके
अधिनियमों का पालन करते हैं तथा जो पूर्ण मन से उनके खोजी हैं. 3 वे याहवेह
के मार्गों में चलते हैं, और उनसे कोई अन्याय नहीं होता. 4 आपने ये आदेश
इसलिये दिए हैं, कि हम इनका पूरी तरह पालन करें. 5 मेरी कामना है कि
आपके आदेशों का पालन करने में मेरा आचरण दृढ़ रहे! 6 मैं आपके आदेशों
पर विचार करता रहूंगा, तब मुझे कभी लज्जित होना न पड़ेगा. 7 जब मैं
आपकी धर्ममय व्यवस्था का मनन करूंगा, तब मैं निष्कपट हृदय से आपका
स्तवन करूंगा. 8 मैं आपकी विधियों का पालन करूंगा; आप मेरा परित्याग
कभी न कीजिए. 9 युवा अपना आचरण कैसे स्वच्छ रखे? आपके वचन पालन
के द्वारा. 10 मैं आपको संपूर्ण हृदय से खोजता हूं; आप मुझे अपने आदेशों से
भटकने न दीजिए. 11 आपके वचन को मैंने अपने हृदय में इसलिये रख छोड़ा
है, कि मैं आपके विरुद्ध पाप न कर बैठूं. 12 याहवेह, आपका स्तवन हो; मुझे
अपनी विधियों की शिक्षा दीजिए. 13 जो व्यवस्था आपके मुख द्वारा निकली हैं,
मैं उन्हें अपने मुख से दोहराता रहता हूं. 14 आपके अधिनियमों का पालन करना
मेरा आनंद है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कोई विशाल धनराशि पर आनंदित
होता है. 15 आपके नीति-सिद्धांत मेरे चिंतन का विषय हैं, मैं आपकी सम्विधियों
की विवेचना करता रहता हूं. 16 आपकी विधियां मुझे मगन कर देती हैं, आपके
वचनों को मैं कभी न भूलूंगा. 17 अपने सेवक पर उपकार कीजिए कि मैं
जीवित रह सकूं, मैं आपके वचन का पालन करूंगा. 18 मुझे आपकी व्यवस्था
की गहन और अद्भुत बातों को ग्रहण करने की दृष्टि प्रदान कीजिए. 19 पृथ्वी पर

मैं प्रवासी मात्र हूं; मुझसे अपने निर्देश न छिपाइए. **20** सारा समय आपकी
व्यवस्था की अभिलाषा करते-करते मेरे प्राण डूब चले हैं. **21** आपकी प्रताड़ना
उन पर पड़ती है, जो अभिमानी हैं, शापित हैं, और जो आपके आदेशों का
परित्याग कर भटकते रहते हैं. **22** मुझ पर लगे घृणा और तिरस्कार के कलंक
को मिटा दीजिए, क्योंकि मैं आपके अधिनियमों का पालन करता हूं. **23** यद्यपि
प्रशासक साथ बैठकर मेरी निंदा करते हैं, आपका यह सेवक आपकी विधियों
पर मनन करेगा. **24** आपके अधिनियमों में मगन है मेरा आनंद; वे ही मेरे
सलाहकार हैं. **25** मेरा प्राण नीचे धूलि में जा पड़ा है; अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप
मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. **26** जब मैंने आपके सामने अपने आचरण
का वर्णन किया, आपने मुझे उत्तर दिया; याहवेह, अब मुझे अपनी विधियां
सिखा दीजिए. **27** मुझे अपने उपदेशों की प्रणाली की समझ प्रदान कीजिए, कि
मैं आपके अद्भुत कार्यों पर मनन कर सकूं. **28** शोक अतिरेक में मेरा प्राण डूबा
जा रहा है; अपने वचन से मुझमें बल दीजिए. **29** झूठे मार्ग से मुझे दूर रखिए;
और अपनी कृपा में मुझे अपनी व्यवस्था की शिक्षा दीजिए. **30** मैंने सच्चाई के
मार्ग को अपनाया है; मैंने आपके नियमों को अपना आदर्श बनाया है. **31**
याहवेह, मैंने आपके नियमों को दृढ़तापूर्वक थाम रखा है; मुझे लज्जित न होने
दीजिए. **32** आपने मेरे हृदय में साहस का संचार किया है, तब मैं अब आपके
आदेशों के पथ पर दौड़ रहा हूं. **33** याहवेह, मुझे आपकी विधियों का आचरण
करने की शिक्षा दीजिए, कि मैं आजीवन उनका पालन करता रहूं. **34** मुझे वह
समझ प्रदान कीजिए, कि मैं आपकी व्यवस्था का पालन कर सकूं और संपूर्ण
हृदय से इसमें मगन आज्ञाओं का पालन कर सकूं. **35** अपने आदेशों के मार्ग में
मेरा संचालन कीजिए, क्योंकि इन्हीं में मेरा आनंद है. **36** मेरे हृदय को स्वार्थी
लाभ की ओर नहीं, परंतु अपने नियमों की ओर फेर दीजिए. **37** अपने वचन
के द्वारा मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए; मेरी रुचि निरर्थक वस्तुओं से हटा
दीजिए. **38** अपने सेवक से की गई प्रतिज्ञा पूर्ण कीजिए, कि आपके प्रति मेरी
श्रद्धा स्थायी रहे. **39** उस लज्जा को मुझसे दूर रखिए, जिसकी मुझे आशंका है,
क्योंकि आपके नियम उत्तम हैं. **40** कैसी तीव्र है आपके उपदेशों के प्रति मेरी
अभिलाषा! अपनी धार्मिकता के द्वारा मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. **41**
याहवेह, आपका करुणा-प्रेम मुझ पर प्रगट हो जाए, और आपकी प्रतिज्ञा के
अनुरूप मुझे आपका उद्धार प्राप्त हो; **42** कि मैं उसे उत्तर दे सकूं, जो मेरा
अपमान करता है, आपके वचन पर मेरा भरोसा है. **43** सत्य के वचन मेरे मुख
से न छीनिए, मैं आपकी व्यवस्था पर आशा रखता हूं. **44** मैं सदा-सर्वदा निरंतर,
आपकी व्यवस्था का पालन करता रहूंगा. **45** मेरा जीवन स्वतंत्र हो जाएगा,
क्योंकि मैं आपके उपदेशों का खोजी हूं. **46** राजाओं के सामने मैं आपके
अधिनियमों पर व्याख्यान दूंगा और मुझे लज्जित नहीं होना पड़ेगा. **47** क्योंकि
आपका आदेश मेरे आनंद का उगम हैं, और वे मुझे प्रिय हैं. **48** मैं आपके
आदेशों की ओर हाथ बढ़ाऊंगा, जो मुझे प्रिय हैं, और आपकी विधियां मेरे मनन
का विषय हैं. **49** याहवेह, अपने सेवक से की गई प्रतिज्ञा को स्मरण कीजिए,
क्योंकि आपने मुझमें आशा का संचार किया है. **50** मेरी पीड़ा में मुझे इस
बातों से सांत्वना प्राप्त होती है: आपकी प्रतिज्ञाएं मेरे नवजीवन का स्रोत हैं. **51**
अहंकारी बेधड़क मेरा उपहास करते हैं, किंतु मैं आपकी व्यवस्था से दूर नहीं
होता. **52** याहवेह, जब प्राचीन काल से प्रगट आपकी व्यवस्था पर मैं विचार
करता हूं, तब मुझे उनमें सांत्वना प्राप्त होती है. **53** दुष्ट मुझमें कोप उकसाते हैं,
ये वे हैं, जिन्होंने आपकी व्यवस्था त्याग दी है. **54** आपकी विधियां मेरे गीत की
विषय-वस्तु हैं चाहे मैं किसी भी स्थिति में रहूं. **55** याहवेह, मैं आपकी व्यवस्था
का पालन करता हूं, रात्रि में मैं आपका स्मरण करता हूं. **56** आपके उपदेशों का
पालन करते जाना ही मेरी चर्या है. **57** याहवेह, आप मेरे जीवन का अंश बन
गए हैं; आपके आदेशों के पालन के लिए मैंने शपथ की है. **58** सारे मन से मैंने
आपसे आग्रह किया है; अपनी ही प्रतिज्ञा के अनुरूप मुझ पर कृपा कीजिए. **59**
मैंने अपनी जीवनशैली का विचार किया है और मैंने आपके अधिनियमों के
पालन की दिशा में अपने कदम बढ़ा दिए हैं. **60** अब मैं विलंब न करूंगा और
शीघ्रता से आपके आदेशों को मानना प्रारंभ कर दूंगा. **61** मैं आपकी व्यवस्था से
दूर न होऊंगा, यद्यपि दुर्जनों ने मुझे रस्सियों से बांध भी रखा हो. **62** आपकी
युक्ति संगत व्यवस्था के प्रति आभार अभिव्यक्त करने के लिए, मैं मध्य रात्रि को
ही जाग जाता हूं. **63** मेरी मैत्री उन सभी से है, जिनमें आपके प्रति श्रद्धा है, उन
सभी से, जो आपके उपदेशों पर चलते हैं. **64** याहवेह, पृथ्वी आपके करुणा-प्रेम
से तृप्त है; मुझे अपनी विधियों की शिक्षा दीजिए. **65** याहवेह, अपनी ही
प्रतिज्ञा के अनुरूप अपने सेवक का कल्याण कीजिए. **66** मुझे ज्ञान और धर्ममय
परख सीखाइए, क्योंकि मैं आपकी आज्ञाओं पर भरोसा करता हूं. **67** अपनी
पीड़ाओं में रहने के पूर्व मैं भटक गया था, किंतु अब मैं आपके वचन के प्रति
आज्ञाकारी हूं. **68** आप धन्य हैं, और जो कुछ आप करते हैं भला ही होता है;
मुझे अपनी विधियों की शिक्षा दीजिए. **69** यद्यपि अहंकारियों ने मुझे झूठी
बातों से कलंकित कर दिया है, मैं पूर्ण सच्चाई में आपके आदेशों को थामे हुए
हूं. **70** उनके हृदय कठोर तथा संवेदनहीन हो चुके हैं, किंतु आपकी व्यवस्था ही
मेरा आनंद है. **71** यह मेरे लिए भला ही रहा कि मैं प्रताड़ित किया गया, इससे
मैं आपकी विधियों से सीख सकूं. **72** आपके मुख से निकली व्यवस्था मेरे लिए
स्वर्ण और चांदी की हजारों मुद्राओं से कहीं अधिक मूल्यवान हैं. **73** आपके
हाथों ने मेरा निर्माण किया और मुझे आकार दिया; मुझे अपने आदेशों को
समझने की सद्बुद्धि प्रदान कीजिए. **74** मुझे देख आपके भक्त उल्लसित हो सकें,
क्योंकि आपका वचन ही मेरी आशा है. **75** याहवेह, यह मैं जानता हूं कि
आपकी व्यवस्था धर्ममय है, और आपके द्वारा मेरा क्लेश न्याय संगत था. **76**
अब अपने सेवक से की गई प्रतिज्ञा के अनुरूप, आपका करुणा-प्रेम ही मेरी
शांति है! **77** आपकी व्यवस्था में मेरा आनन्दमग्न है, तब मुझे आपकी मनोहरता
में जीवन प्राप्त हो. **78** अहंकारियों को लज्जित होना पड़े क्योंकि उन्होंने
अकारण ही मुझसे छल किया है; किंतु मैं आपके उपदेशों पर मनन करता रहूंगा.
79 आपके श्रद्धालु, जिन्होंने आपके अधिनियमों को समझ लिया है, पुनः मेरे
पक्ष में हो जाएं, **80** मेरा हृदय पूर्ण सिद्धता में आपकी विधियों का पालन करता
रहे, कि मुझे लज्जित न होना पड़े. **81** आपके उद्धार की तीव्र अभिलाषा करते
हुए मेरा प्राण बेचैन हुआ जा रहा है, अब आपका वचन ही मेरी आशा का
आधार है. **82** आपकी प्रतिज्ञा-पूर्ति की प्रतीक्षा में मेरी आंखें थक चुकी हैं; मैं
पूछ रहा हूं, “कब मुझे आपकी ओर से सांत्वना प्राप्त होगी?” **83** यद्यपि मैं धुएं
में संकुचित द्राक्षारस की कुप्पी के समान हो गया हूं, फिर भी आपकी विधियां
मेरे मन से लुप्त नहीं हुई हैं. **84** और कितनी प्रतीक्षा करनी होगी आपके सेवक
को? आप कब मेरे सतानेवालों को दंड देंगे? **85** अहंकारियों ने मेरे लिए गड्ढे
खोद रखे हैं, उनका आचरण आपकी व्यवस्था के विपरीत है. **86** विश्वासयोग्य
हैं आपके आदेश; मेरी सहायता कीजिए, झूठ बोलनेवाले मुझे दुःखित कर रहे
हैं. **87** उन्होंने मुझे धरती पर से लगभग मिटा ही डाला था, फिर भी मैं आपके
नीति सूत्रों से दूर न हुआ. **88** मैं आपके मुख से बोले हुए नियमों का पालन
करता रहूंगा, अपने करुणा-प्रेम के अनुरूप मेरे जीवन की रक्षा कीजिए. **89**
याहवेह, सर्वदा है आपका वचन; यह स्वर्ग में दृढ़तापूर्वक बसा है. **90** पीढ़ी से
पीढ़ी आपकी सच्चाई बनी रहती है; आपके द्वारा ही पृथ्वी की स्थापना की गई
और यह स्थायी बनी हुई है. **91** आप के नियम सभी आज तक अस्तित्व में हैं,
और सभी कुछ आपकी सेवा कर रहे हैं. **92** यदि आपकी व्यवस्था में मैं उल्लास
मगन न होता, तो इन पीड़ाओं को सहते सहते मेरी मृत्यु हो जाती. **93** आपके
उपदेश मेरे मन से कभी नष्ट न होंगे, क्योंकि इन्हीं के द्वारा आपने मुझे जीवन
प्रदान किया है, **94** तब मुझ पर आपका ही स्वामित्व है, मेरी रक्षा कीजिए; मैं

आपके ही उपदेशों का खोजी हूं. 95 दुष्ट मुझे नष्ट करने के उद्देश्य से घात लगाए बैठे हैं, किंतु आपकी चेतावनियों पर मैं विचार करता रहूंगा. 96 हर एक सिद्धता में मैंने कोई न कोई सीमा ही पाई है, किंतु आपके आदेश असीमित हैं. 97 आह, कितनी अधिक प्रिय है मुझे आपकी व्यवस्था! इतना, कि मैं दिन भर इसी पर विचार करता रहता हूं. 98 आपके आदेशों ने तो मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान बना दिया है क्योंकि ये कभी मुझसे दूर नहीं होते. 99 मुझमें तो अपने सभी शिक्षकों से अधिक समझ है, क्योंकि आपके उपदेश मेरे चिंतन का विषय हैं. 100 आपके उपदेशों का पालन करने का ही परिणाम यह है, कि मुझमें बुज़ुर्गों से अधिक समझ है. 101 आपकी आज्ञा का पालन करने के लक्ष्य से, मैंने अपने कदम हर एक अधर्म के पथ पर चलने से बचा रखे हैं. 102 आप ही के द्वारा दी गई शिक्षा के कारण, मैं आपके नियम तोड़ने से बच सका हूं. 103 कैसा मधुर है आपकी प्रतिज्ञाओं का आस्वादन करना, आपकी प्रतिज्ञाएं मेरे मुख में मधु से भी अधिक मीठी हैं! 104 हर एक झूठा मार्ग मेरी दृष्टि में घृणास्पद है; क्योंकि आपके उपदेशों से मुझे समझदारी प्राप्त होती है. 105 आपका वचन मेरे पांवों के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए प्रकाश है. 106 मैंने यह शपथ ली है और यह सुनिश्चित किया है, कि मैं आपके धर्ममय नियमों का ही पालन करता जाऊंगा. 107 याहवेह, मेरी पीड़ा असह्य है; अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 108 याहवेह, मेरे मुख से निकले स्वैच्छिक स्तवन वचनों को स्वीकार कीजिए, और मुझे अपने नियमों की शिक्षा दीजिए. 109 आपकी व्यवस्था से मैं कभी दूर न होऊंगा, यद्यपि मैं लगातार अपने जीवन को हथेली पर लिए फिरता हूं. 110 दुष्टों ने मेरे लिए जाल बिछाया हुआ है, किंतु मैं आपके उपदेशों से नहीं भटका. 111 आपके नियमों को मैंने सदा-सर्वदा के लिए निज भाग में प्राप्त कर लिया है; वे ही मेरे हृदय का आनंद हैं. 112 आपकी विधियों का अंत तक पालन करने के लिए मेरा हृदय तैयार है. 113 दुविधा से ग्रस्त मन का पुरुष मेरे लिए घृणास्पद है, मुझे प्रिय है आपकी व्यवस्था. 114 आप मेरे आश्रय हैं, मेरी ढाल हैं; मेरी आशा का आधार है आपका वचन. 115 अधर्मियो, दूर रहो मुझसे, कि मैं परमेश्वर के आदेशों का पालन कर सकूं! 116 याहवेह, अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप मुझे सम्भालिए, कि मैं जीवित रहूं; मेरी आशा भंग न होने पाए. 117 मुझे थाम लीजिए कि मैं सुरक्षित रहूं; मैं सदैव आपकी विधियों पर भरोसा करता रहूंगा. 118 वे सभी, जो आपके नियमों से भटक जाते हैं, आपकी उपेक्षा के पात्र हो जाते हैं, क्योंकि निरर्थक होती है उनकी चालाकी. 119 संसार के सभी दुष्टों को आप मैल के समान फेंक देते हैं; यही कारण है कि मुझे आपकी चेतावनियां प्रिय हैं. 120 आपके भय से मेरी देह कांप जाती है; आपके निर्णयों का विचार मुझमें भय का संचार कर देता है. 121 मैंने वही किया है, जो न्याय संगत तथा धर्ममय है; मुझे सतानेवालों के सामने न छोड़ दीजिएगा. 122 अपने सेवक का हित निश्चित कर दीजिए; अहंकारियों को मुझ पर अत्याचार न करने दीजिए. 123 आपके उद्धार की प्रतीक्षा में, आपकी निष्ठ प्रतिज्ञाओं की प्रतीक्षा में मेरी आंखें थक चुकी हैं. 124 अपने करुणा-प्रेम के अनुरूप अपने सेवक से व्यवहार कीजिए और मुझे अपने अधिनियमों की शिक्षा दीजिए. 125 मैं आपका सेवक हूं, मुझे समझ प्रदान कीजिए, कि मैं आपकी विधियों को समझ सकूं. 126 याहवेह, आपके नियम तोड़े जा रहे हैं; समय आ गया है कि आप अपना कार्य करें. 127 इसलिये कि मुझे आपके आदेश स्वर्ण से अधिक प्रिय हैं, शुद्ध कुन्दन से अधिक, 128 मैं आपके उपदेशों को धर्ममय मानता हूं, तब मुझे हर एक गलत मार्ग से घृणा है. 129 अद्भुत हैं आपके अधिनियम; इसलिये मैं उनका पालन करता हूं. 130 आपके वचन के खुलने से ज्योति उत्पन्न होती है; परिणामस्वरूप भोले पुरुषों को सबुद्धि प्राप्त होती है. 131 मेरा मुख खुला है और मैं हांफ रहा हूं, क्योंकि मुझे प्यास है आपके आदेशों की. 132 मेरी ओर ध्यान दीजिए और मुझ पर कृपा कीजिए, जैसी आपकी नीति उनके प्रति है, जिन्हें आपसे प्रेम है. 133 अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप मेरे पांव को स्थिर कर दीजिए; कोई भी दुष्टता मुझ पर प्रभुता न करने पाए. 134 मुझे मनुष्यों के अत्याचार से छुड़ा लीजिए, कि मैं आपके उपदेशों का पालन कर सकूं. 135 अपने सेवक पर अपना मुख प्रकाशित कीजिए और मुझे अपने नियमों की शिक्षा दीजिए. 136 मेरी आंखों से अश्रुप्रवाह हो रहा है, क्योंकि लोग आपकी व्यवस्था का पालन नहीं कर रहे. 137 याहवेह, आप धर्मी हैं, सच्चे हैं आपके नियम. 138 जो अधिनियम आपने प्रगट किए हैं, वे धर्ममय हैं; वे हर एक दृष्टिकोण से विश्वासयोग्य हैं. 139 मैं भस्म हो रहा हूं, क्योंकि मेरे शत्रु आपके वचनों को भूल गए हैं. 140 आपकी प्रतिज्ञाओं का उचित परीक्षण किया जा चुका है, वे आपके सेवक को अत्यंत प्रिय हैं. 141 यद्यपि मैं छोटा, यहां तक कि लोगों की दृष्टि में घृणास्पद हूं, फिर भी मैं आपके अधिनियमों को नहीं भूलता. 142 अनंत है आपकी धार्मिकता, परमेश्वर तथा यथार्थ है आपकी व्यवस्था. 143 क्लेश और संकट मुझ पर टूट पड़े हैं, किंतु आपके आदेश मुझे मगन रखे हुए हैं. 144 आपके अधिनियम सदा-सर्वदा धर्ममय ही प्रमाणित हुए हैं; मुझे इनके विषय में ऐसी समझ प्रदान कीजिए कि मैं जीवित रह सकूं. 145 याहवेह, मैं संपूर्ण हृदय से आपको पुकार रहा हूं, मुझे उत्तर दीजिए, कि मैं आपकी विधियों का पालन कर सकूं. 146 मैं आपको पुकार रहा हूं; मेरी रक्षा कीजिए, कि मैं आपके अधिनियमों का पालन कर सकूं. 147 मैं सूर्योदय से पूर्व ही जाग कर सहायता के लिये पुकारता हूं; मेरी आशा आपके वचन पर आधारित है. 148 रात्रि के समस्त प्रहरों में मेरी आंखें खुली रहती हैं, कि मैं आपकी प्रतिज्ञाओं पर मनन कर सकूं. 149 अपने करुणा-प्रेम के कारण मेरी पुकार सुनिए; याहवेह, अपने ही नियमों के अनुरूप मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 150 जो मेरे विरुद्ध बुराई की युक्ति रच रहे हैं, मेरे निकट आ गए हैं, किंतु वे आपकी व्यवस्था से दूर हैं. 151 फिर भी, याहवेह, आप मेरे निकट हैं, और आपके सभी आदेश प्रामाणिक हैं. 152 अनेक-अनेक वर्ष पूर्व मैंने आपके अधिनियमों से यह अनुभव कर लिया था कि आपने इनकी स्थापना ही इसलिये की है कि ये सदा-सर्वदा स्थायी बने रहें. 153 मेरे दुःख पर ध्यान दीजिए और मुझे इससे बचा लीजिए, क्योंकि आपकी व्यवस्था को मैं भुला नहीं. 154 मेरे पक्ष का समर्थन करके मेरा उद्धार कीजिए; अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 155 कठिन है दुष्टों का उद्धार होना, क्योंकि उन्हें आपकी विधियों की महानता ही ज्ञात नहीं. 156 याहवेह, अनुपम है आपकी मनोहरता; अपने ही नियमों के अनुरूप मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 157 मेरे सतानेवाले तथा शत्रु अनेक हैं, किंतु मैं आपके अधिनियमों से दूर नहीं हुआ हूं. 158 विश्वासघाती आपके आदेशों का पालन नहीं करते, तब मेरी दृष्टि में वे घृणास्पद हैं. 159 आप ही देख लीजिए: कितने प्रिय हैं मुझे आपके नीति-सिद्धांत; याहवेह, अपने करुणा-प्रेम के अनुरूप मुझमें नवजीवन का संचार कीजिए. 160 वस्तुतः सत्य आपके वचन का सार है; तथा आपके धर्ममय नियम सदा-सर्वदा स्थायी रहते हैं. 161 प्रधान मुझे बिना किसी कारण के दुःखित कर रहे हैं, किंतु आपके वचन का ध्यान कर मेरा हृदय कांप उठता है. 162 आपकी प्रतिज्ञाओं से मुझे ऐसा उल्लास प्राप्त होता है; जैसा किसी को बड़ी लूट प्राप्त हुई है. 163 झूठ से मुझे घृणा है, बैर है किंतु मुझे प्रेम है आपकी व्यवस्था से. 164 आपकी धर्ममय व्यवस्था का ध्यान कर मैं दिन में सात-सात बार आपका स्तवन करता हूं. 165 जिन्हें आपकी व्यवस्था से प्रेम है, उनको बड़ी शांति मिलती रहती है, वे किसी रीति से विचलित नहीं हो सकते. 166 याहवेह, मैं आपके उद्धार का प्रत्याशी हूं, मैं आपके आदेशों का पालन करता हूं. 167 मैं आपके अधिनियमों का पालन करता हूं, क्योंकि वे मुझे अत्यंत प्रिय हैं. 168 मैं आपके उपदेशों तथा नियमों का पालन करता हूं, आपके सामने मेरा संपूर्ण आचरण प्रगट है. 169 याहवेह, मेरी पुकार आप तक पहुंचे; मुझे अपने वचन को समझने की क्षमता प्रदान

कीजिए. 170 मेरा गिड़गिड़ाना आप तक पहुंचे; अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करते हुए
मुझे छुड़ा लीजिए. 171 मेरे होंठों से आपका स्तवन छलक उठे, क्योंकि
आपने मुझे अपनी विधियों की शिक्षा दी है. 172 मेरी जीभ आपके वचन का
गान करेगी, क्योंकि आपके सभी आदेश आदर्श हैं. 173 आपकी भुजा मेरी
सहायता के लिए तत्पर रहे, मैंने आपके उपदेशों को अपनाया है. 174 आपसे
उद्धार की प्राप्ति की मुझे उत्कंठा है, याहवेह, आपकी व्यवस्था में मेरा आनंद है.
175 मुझे आयुष्मान कीजिए कि मैं आपका स्तवन करता रहूं, और आपकी
व्यवस्था मुझे संभाले रहे. 176 मैं खोई हुई भेड़ के समान हो गया था. आप ही
अपने सेवक को खोज लीजिए, क्योंकि मैं आपके आदेशों को भूला नहीं.

120 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. मैंने अपनी पीड़ा में याहवेह को
पुकारा, और उन्होंने मेरी सुन ली. 2 याहवेह, मेरी रक्षा कीजिए, झूठ
बोलनेवाले होंठों से, और छली जीभ से! 3 तुम्हारे साथ परमेश्वर क्या करेंगे,
और उसके भी अतिरिक्त और क्या करेंगे, ओ छली जीभ? 4 वह तुझे योद्धा के
तीक्ष्ण बाणों से दंड देंगे, वह तुझे वृक्ष की लकड़ी के प्रज्वलित कोयलों से दंड
देंगे. 5 धिक्कार है मुझ पर, जो मैं मेशेख देश में जा निवास करूं, जो मैं केदार
देश के मण्डपों में जा रहूं! 6 बहुत समय मैंने उनके साथ व्यतीत की है, जिन्हें
शांति से घृणा हैं. 7 मैं खड़ा शांति प्रिय पुरुष; किंतु जब मैं कुछ कहता हूं, वे युद्ध
पर उतारू हो जाते हैं.

121 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर
उठाता— क्या मेरी सहायता का स्रोत वहां है? 2 मेरी सहायता का
स्रोत तो याहवेह हैं, स्वर्ग और पृथ्वी के कर्ता. 3 वह तुम्हारा पैर फिसलने न देंगे;
वह, जो तुम्हें सुरक्षित रखते हैं, झपकी नहीं लेते. 4 निश्चयतः इस्राएल के रक्षक
न तो झपकी लेंगे और न सो जाएंगे. 5 याहवेह तुम्हें सुरक्षित रखते हैं— तुम्हारे
दायें पक्ष में उपस्थित याहवेह तुम्हारी सुरक्षा की छाया हैं; 6 न तो दिन के समय
सूर्य से तुम्हारी कोई हानि होगी, और न रात्रि में चंद्रमा से. 7 सभी प्रकार की
बुराई से याहवेह तुम्हारी रक्षा करेंगे, वह तुम्हारे जीवन की रक्षा करेंगे; 8 तुम्हारे
आने जाने में याहवेह तुम्हें सुरक्षित रखेंगे, वर्तमान में और सदा-सर्वदा.

122 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. दावीद की रचना. जब यात्रियों
ने मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा, "चलो, याहवेह के आवास को चलें,"
मैं अत्यंत उल्लसित हुआ. 2 येरूशलेम, हम तुम्हारे द्वार पर खड़े हुए हैं. 3
येरूशलेम उस नगर के समान निर्मित है, जो संगठित रूप में बसा हुआ है. 4 यही
है वह स्थान, जहां विभिन्न कुल, याहवेह के कुल, याहवेह के नाम के प्रति
आभार प्रदर्शित करने के लिए जाया करते हैं जैसा कि उन्हें आदेश दिया गया
था. 5 यहीं न्याय-सिंहासन स्थापित हैं, दावीद के वंश के सिंहासन. 6 येरूशलेम
की शांति के निमित्त यह प्रार्थना की जाए: "समृद्ध हों वे, जिन्हें तुझसे प्रेम है. 7
तुम्हारी प्राचीरों की सीमा के भीतर शांति व्याप्त रहे तथा तुम्हारे राजमहलों में
तुम्हारे लिए सुरक्षा बनी रहें." 8 अपने भाइयों और मित्रों के निमित्त मेरी यही
कामना है, "तुम्हारे मध्य शांति स्थिर रहे." 9 याहवेह, हमारे परमेश्वर के भवन
के निमित्त, मैं तुम्हारी समृद्धि की अभिलाषा करता हूं.

123 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. मैं अपनी आंखें आपकी ओर
उठाए हुए हूं, आपकी ओर, जिनका सिंहासन स्वर्ग में स्थापित है. 2
वैसे ही जिस प्रकार दासों की दृष्टि अपने स्वामी के हाथ की ओर लगी रहती है,
जैसी दासी की दृष्टि अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती है. ठीक इसी
प्रकार हमारी दृष्टि याहवेह, हमारे परमेश्वर की ओर लगी रहती है, जब तक वह
हम पर कृपादृष्टि नहीं करते. 3 हम पर कृपा कीजिए, याहवेह, हम पर कृपा
कीजिए, हमने बहुत तिरस्कार सहा है. 4 हमने अहंकारियों द्वारा घोर उपहास
भी सहा है, हम अहंकारियों के घोर घृणा के पात्र होकर रह गए हैं.

124 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. दावीद की रचना. यदि हमारे
पक्ष में याहवेह न होते— इस्राएली राष्ट्र यही कहे— 2 यदि हमारे पक्ष
में याहवेह न होते जब मनुष्यों ने हम पर आक्रमण किया था, 3 जब उनका क्रोध
हम पर भड़क उठा था वे हमें जीवित ही निगल गए होते; 4 बाढ़ ने हमें जलमग्न
कर दिया होता, जल प्रवाह हमें बहा ले गया होता, 5 उग्र जल प्रवाह हमें दूर
बहा ले गया होता. 6 स्तवन हो याहवेह का, जिन्होंने हमें उनके दांतों से फाड़े
जाने से बचा लिया है. 7 हम उस पक्षी के समान हैं, जो बहेलिए के जाल से बच
निकला है; वह जाल टूट गया, और हम बच निकले. 8 हमारी सहायता याहवेह
के नाम से है, जो स्वर्ग और पृथ्वी के कर्ता हैं.

125 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. जिन्होंने याहवेह पर भरोसा
किया है, वे ज़ियोन पर्वत समान हैं, जिसे हिलाया नहीं जा सकता,
जो सदा-सर्वदा स्थायी है. 2 जिस प्रकार पर्वतों ने येरूशलेम को घेरा हुआ है,
उसी प्रकार याहवेह भी अपनी प्रजा को घेरे हुए हैं आज भी और सदा-सर्वदा. 3
धर्मियों को आवंटित भूमि पर दुष्टों का राजदंड स्थायी न रहेगा, कहीं ऐसा न हो
कि धर्मियों के हाथ बुराई की ओर बढ़ जाएं. 4 याहवेह, धर्मियों का कल्याण
कीजिए, उनका, जिनके हृदय निष्ठ हैं. 5 उन्हें, जो दुष्टता के मार्ग की ओर मुड़
जाते हैं, याहवेह उन्हें दुष्टों के साथ काट देंगे. इस्राएल राष्ट्र में शांति व्याप्त हो.

126 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. जब याहवेह ने बंदियों को
ज़ियोन लौटा लाया, हम उन पुरुषों के समान थे, जिन्होंने स्वप्न देखा
था. 2 हमारे मुख से हंसी छलक रही थी, हमारी जीभ पर हर्षगान थे. राष्ट्रों में
यह बात जाहिर हो चुकी थी, "उनके लिए याहवेह ने अद्भुत कार्य किए हैं." 3
हां, याहवेह ने हमारे लिए अद्भुत कार्य किए, हम हर्ष से भरे हुए थे. 4 याहवेह,
नेगेव की नदी समान, हमारी समृद्धि लौटा लाइए. 5 जो अश्रु बहाते हुए रोपण
करते हैं, वे हर्ष गीत गाते हुए उपज एकत्र करेंगे. 6 वह, जो रोते हुए बीजारोपण
के लिए बाहर निकलता है, अपने साथ पूले लेकर हर्ष गीत गाता हुआ लौटेगा.

127 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. शलोमोन की रचना. यदि गृह-
निर्माण याहवेह द्वारा न किया गया हो तो, श्रमिकों का परिश्रम निरर्थक
होता है. यदि नगर की सुरक्षा याहवेह न करें, तो रखवाले द्वारा की गई चौकसी
व्यर्थ होती है. 2 तुम्हारा सुबह जाग उठना देर तक जागे रहना, संकटपूर्ण श्रम का
भोजन करना व्यर्थ है; क्योंकि याहवेह द्वारा नींद का अनुदान उनके लिए है,
जिनसे वह प्रेम करते हैं. 3 संतान याहवेह के दिए हुए निज भाग होते हैं, तथा
बालक उनका दिया हुआ उपहार. 4 युवावस्था में उत्पन्न हुई संतान वैसी ही
होती है, जैसे योद्धा के हाथों में बाण. 5 कैसा धन्य होता है वह पुरुष, जिसका
तरकश इन बाणों से भरा हुआ है! नगर द्वार पर शत्रुओं का प्रतिकार करते हुए
उन्हें लज्जित नहीं होना पड़ेगा.

128 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. वे सभी धन्य हैं, जिनमें याहवेह
के प्रति श्रद्धा पायी जाती है, जो उनकी नीतियों का आचरण करते हैं.
2 जिसके लिए तुम अपने हाथों से श्रम करते रहे हो, तुम्हें उसका प्रतिफल
प्राप्त होगा; तुम धन्य होगे और कल्याण होगा तुम्हारा. 3 तुम्हारे परिवार में
तुम्हारी पत्नी फलदायी दाखलता समान होगी; तुम्हारी मेज़ के चारों ओर तुम्हारी
संतान जैतून के अंकुर समान होगी. 4 धन्य होता है वह जिसमें याहवेह के प्रति
श्रद्धा पाई जाती है. 5 ज़ियोन से याहवेह तुमको तुम्हारे जीवन के हर एक दिन
आशीषों से भरते रहें, तुम आजीवन येरूशलेम की समृद्धि देखो. 6 वस्तुतः, तुम

अपनी संतान की भी संतान देखने के लिए जीवित रहो. इस्राएल राष्ट्र में शांति
स्थिर रहे.

129 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. "मेरे बचपन से वे मुझ पर घोर
अत्याचार करते आए हैं," इस्राएल राष्ट्र यही कहे; 2 "मेरे बचपन से
वे मुझ पर घोर अत्याचार करते आए हैं, किंतु वे मुझ पर प्रबल न हो सके हैं. 3
हल चलानेवालों ने मेरे पीठ पर हल चलाया है, और लम्बी-लम्बी हल रेखाएं
खींच दी हैं. 4 किंतु याहवेह युक्त है; उन्हीं ने मुझे दुष्टों के बंधनों से मुक्त
किया है." 5 वे सभी, जिन्हें ज़ियोन से बैर है, लज्जित हो लौट जाएं. 6 उनकी
नियति भी वही हो, जो घर की छत पर उग आई घास की होती है, वह विकसित
होने के पूर्व ही मुरझा जाती है; 7 किसी के हाथों में कुछ भी नहीं आता, और न
उसकी पुलियां बांधी जा सकती हैं. 8 आते जाते पुरुष यह कभी न कह पाएं,
"तुम पर याहवेह की कृपादृष्टि हो; हम याहवेह के नाम में तुम्हारे लिए मंगल
कामना करते हैं."

130 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. याहवेह, गहराइयों में से मैं
आपको पुकार रहा हूं; 2 हे प्रभु, मेरा स्वर सुन लीजिए, कृपा के लिए
मेरी नम्र विनती की ओर आपके कान लगे रहें. 3 याहवेह, यदि आप अपराधों
का लेखा रखने लगें, तो प्रभु, कौन ठहर सकेगा? 4 किंतु आप क्षमा शील हैं,
तब आप श्रद्धा के योग्य हैं. 5 मुझे, मेरे प्राणों को, याहवेह की प्रतीक्षा रहती है,
उनके वचन पर मैंने आशा रखी है. 6 मुझे प्रभु की प्रतीक्षा है उन रखवालों से
भी अधिक, जिन्हें सूर्योदय की प्रतीक्षा रहती है, वस्तुतः उन रखवालों से कहीं
अधिक जिन्हें भोर की प्रतीक्षा रहती है. 7 इस्राएल, याहवेह पर भरोसा रखो,
क्योंकि जहां याहवेह हैं वहां करुणा-प्रेम भी है और वहीं पूरा छुटकारा देनेवाले
हैं. 8 स्वयं वहीं इस्राएल को, उनके अपराधों को क्षमा करेंगे.

131 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. दावीद की रचना. याहवेह, मेरा
हृदय न तो अहंकार से फूल रहा है, और न मेरी आंखें घमंड में चढ़ी
हुई हैं; मेरी रुचि न तो असाधारण उपलब्धियों में है, न चमत्कारों में. 2 मैंने
अपने प्राणों को शांत और चुप कर लिया है, जैसे माता की गोद में तृप्त शिशु;
मेरा प्राण अब ऐसे ही शिशु-समान शांत है. 3 इस्राएल, याहवेह पर भरोसा रखो
इस समय और सदा-सर्वदा.

132 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. याहवेह, दावीद को और उनके
द्वारा झेली गई समस्त विषमताओं को स्मरण कीजिए. 2 उन्होंने
याहवेह की शपथ खाई, तथा याकोब के सर्वशक्तिमान से शपथ की थी: 3 "मैं
न तो तब तक घर में प्रवेश करूंगा और न मैं अपने बिछौने पर जाऊंगा, 4 न तो
मैं अपनी आंखों में नींद आने दूंगा और न पलकों में झपकी, 5 जब तक मुझे
याहवेह के लिए एक स्थान उपलब्ध न हो जाए, याकोब के सर्वशक्तिमान के
आवास के लिए." 6 इसके विषय में हमने एफ़राथा में सुना, याअर के मैदान में
भी यही पाया गया: 7 "आओ, हम उनके आवास को चलें; हम उनके चरणों में
जाकर आराधना करें. 8 'याहवेह, अब उठकर अपने विश्राम स्थल पर आ
जाइए, आप और आपकी सामर्थ्य का संदूक भी. 9 आपके पुरोहित धर्म के वस्त्र
पहिने हुए हों; और आपके सात्विक हर्ष गीत गाएं.'" 10 अपने सेवक दावीद
के निमित्त, अपने अभिषिक्त को न ठुकराईए. 11 याहवेह ने दावीद से शपथ
खाई थी, एक ऐसी शपथ, जिसे वह तोड़ेंगे नहीं: "तुम्हारे ही अपने वंशजों में
से एक को मैं तुम्हारे सिंहासन पर विराजमान करूंगा. 12 यदि तुम्हारे वंशज मेरी
वाचा का पालन करेंगे तथा मेरे द्वारा सिखाए गए उपदेशों का पालन करेंगे, तब
उनकी संतान भी तुम्हारे सिंहासन पर सदा-सर्वदा के लिए विराजमान होगी."
13 क्योंकि ज़ियोन याहवेह द्वारा ही निर्धारित किया गया है, अपने आवास के
लिए याहवेह की यही अभिलाषा है. 14 "यह सदा-सर्वदा के लिए मेरा विश्रान्ति
स्थल है; मैं यहीं सिंहासन पर विराजमान रहूंगा, क्योंकि यही मेरी अभिलाषा
है. 15 उसके लिए मेरी आशीष बड़ी योजना होगी; मैं इसके दरिद्रों को भोजन
से तृप्त करूंगा. 16 उसके पुरोहितों को मैं उद्धार के परिधानों से सुसज्जित
करूंगा, और उसके निवासी सात्विक सदैव हर्षगान गाते रहेंगे. 17 "यहां मैं
दावीद के वंश को बढाऊंगा, मैं अपने अभिषिक्त के लिए एक दीप स्थापित
करूंगा. 18 मैं उसके शत्रुओं को लज्जा के वस्त्र पहनाऊंगा, किंतु उसके अपने
सिर का मुकुट उज्जवल रहेगा."

133 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. दावीद की रचना. कैसी आदर्श
और मनोरम है वह स्थिति जब भाइयों में परस्पर एकता होती है! 2
यह वैसी ही मनोरम स्थिति है, जब सुगंध द्रव्य पुरोहित के सिर पर उंडेला जाता
है, और बहता हुआ दाढ़ी तक पहुंच जाता है, हां, अहरोन की दाढ़ी पर बहता
हुआ, उसके वस्त्र की छोर तक जा पहुंचता है. 3 हरमोन पर्वत की ओस के
समान, जो ज़ियोन पर्वत पर पड़ती है. क्योंकि वहीं है वह स्थान, जहां याहवेह
सर्वदा जीवन की आशीष प्रदान करते हैं.

134 आराधना के लिए यात्रियों का गीत. तुम सभी, जो याहवेह के सेवक
हो, याहवेह का स्तवन करो, तुम, जो रात्रि में याहवेह के आवास में
सेवारत रहते हो. 2 पवित्र स्थान में अपने हाथ ऊंचे उठाओ, और याहवेह का
स्तवन करो. 3 याहवेह—स्वर्ग और पृथ्वी के कर्ता, तुम्हें ज़ियोन से आशीष
प्रदान करें.

135 याहवेह का स्तवन करो. याहवेह की महिमा का स्तवन करो; तुम,
जो याहवेह के सेवक हो, उनका स्तवन करो. 2 तुम, जो याहवेह के
आवास में सेवारत हो, जो परमेश्वर के आवास के आंगनों में सेवारत हो. 3
याहवेह का स्तवन करो क्योंकि याहवेह धन्य हैं; उनकी महिमा का गुणगान
करो, क्योंकि यह सुखद है. 4 याहवेह को यह उपयुक्त लगा, कि वह याकोब
को अपना बना लें, इस्राएल को अपनी अमूल्य संपत्ति के लिये चुन लिया है. 5
मैं यह जानता हूं कि याहवेह सर्वश्रेष्ठ हैं, हमारे परमेश्वर समस्त देवताओं से महान
हैं. 6 याहवेह वही करते हैं जो उनकी दृष्टि में उपयुक्त होता है, स्वर्ग में तथा
पृथ्वी पर, समुद्रों में तथा उनकी गहराइयों में. 7 पृथ्वी के छोर से उन्हीं के द्वारा
बादल उठाए जाते हैं; वही वृष्टि के साथ बिजलियां उत्पन्न करते हैं तथा अपने
भण्डार-गृहों से हवा को प्रवाहित कर देते हैं. 8 उन्होंने मिस्र के पहिलौठों की
हत्या की, मनुष्यों तथा पशुओं के पहिलौठों की. 9 उन्हीं ने, हे मिस्र, तुम्हारे
मध्य अपने आश्चर्य कार्य एवं चमत्कार प्रदर्शित किए, जो फ़रोह और उसके
सभी सेवकों के विरुद्ध थे. 10 उन्हीं ने अनेक जनताओं की हत्या की और
अनेक शक्तिशाली राजाओं का वध भी किया. 11 अमोरियों के राजा सीहोन
का, बाशान के राजा ओग का तथा कनान देश के समस्त राजाओं का. 12
तत्पश्चात उन्होंने इन सब की भूमि निज भाग स्वरूप दे दी, अपनी प्रजा इस्राएल
को, निज भाग स्वरूप. 13 याहवेह, सदा के लिए है, आपकी महिमा. आपकी
ख्याति, याहवेह, पीढ़ी से पीढ़ी स्थायी रहती है. 14 याहवेह अपनी प्रजा को
निर्दोष प्रमाणित करेंगे, वह अपने सेवकों पर करुणा प्रदर्शित करेंगे. 15 अन्य
जनताओं की प्रतिमाएं मात्र स्वर्ण और चांदी हैं, मनुष्यों की हस्तकृति मात्र. 16
हां, उनका मुख अवश्य है, किंतु ये बोल नहीं सकती, उनकी आंखें अवश्य हैं,
किंतु ये देख नहीं सकतीं. 17 उनके कान अवश्य हैं, किंतु ये सुन नहीं सकते,
और न उनके नाक में श्वास है. 18 इनके समान ही हो जाएंगे इनके निर्माता,
साथ ही वे सभी, जो इन पर भरोसा करते हैं. 19 इस्राएल वंश, याहवेह का
स्तवन करो; अहरोन के वंशजो, याहवेह का स्तवन करो; 20 लेवी के वंशजो,
याहवेह का स्तवन करो; तुम सभी, जिनमें याहवेह के प्रति श्रद्धा है, याहवेह का

स्तवन हो. 21 ज़ियोन से याहवेह का, जो येरूशलेम में निवास करते हैं, स्तवन
हो. याहवेह का स्तवन हो.

136 याहवेह का धन्यवाद करो, क्योंकि वे भले हैं, 2 परम परमेश्वर के
प्रति आभार अभिव्यक्त करो. 3 उनके प्रति, जो प्रधानों के प्रधान हैं,
आभार अभिव्यक्त करो: 4 उनके प्रति, जिनके अतिरिक्त अन्य कोई अद्भुत
कार्य कर ही नहीं सकता, 5 जिन्होंने अपनी सुबुद्धि से स्वर्ग का निर्माण किया,
6 जिन्होंने जल के ऊपर पृथ्वी का विस्तार कर दिया, 7 जिन्होंने प्रखर प्रकाश
पुंजों की रचना की, 8 दिन के प्रभुत्व के लिए सूर्य का, 9 रात्रि के लिए चंद्रमा
और तारों का; 10 उन्हीं के प्रति, जिन्होंने मिस्र देश के पहलौठों की हत्या की,
11 और उनके मध्य से इस्राएल राष्ट्र को बाहर निकाल लिया, 12 सशक्त भुजा
और ऊंची उठी हुई बांह के द्वारा; 13 उन्हीं के प्रति, जिन्होंने लाल सागर को
विभक्त कर दिया था 14 और उसके मध्य की भूमि से इस्राएलियों को पार
करवा दिया, 15 किंतु फ़रोह और उसकी सेना को सागर ही में डुबो दिया; 16
उन्हीं के प्रति, जिन्होंने अपनी प्रजा को बंजर भूमि से पार कराया; 17 जिन्होंने
प्रख्यात राजाओं की हत्या की, 18 जिन्होंने सशक्त राजाओं का वध कर दिया,
19 अमोरियों के राजा सीहोन का, 20 बाशान के राजा ओग का, 21 तथा
उनकी भूमि निज भाग में दे दी, 22 अपने सेवक इस्राएल को, निज भाग में दे
दी, 23 उन्हीं के प्रति, जिन्होंने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि ली, 24 और हमें
हमारे शत्रुओं से मुक्त किया, 25 जो सब प्राणियों के आहार का प्रबंध करते हैं,
26 स्वर्गिक परमेश्वर के प्रति आभार अभिव्यक्त करो,

137 बाबेल की नदी के तट पर बैठे हुए ज़ियोन का स्मरण कर हम रो रहे
थे. 2 वहां मजनू वृक्षों पर हमने अपने वाद्य टांग दिए थे. 3 क्योंकि
जिन्होंने हमें बंदी बनाया था, वे हमारा गायन सुनना चाह रहे थे और जो हमें
दुःख दे रहे थे; वे हमसे हर्षगान सुनने की चाह कर रहे थे, "हमें ज़ियोन का कोई
गीत सुनाओ!" 4 प्रवास में हमारे लिए याहवेह का स्तवन गान गाना कैसे संभव
हो सकता था? 5 येरूशलेम, यदि मैं तुम्हें भूल जाऊं, तो मेरे दायें हाथ का
कौशल जाता रहेगा. 6 यदि मैं तुम्हारा स्मरण न करूं, यदि मैं येरूशलेम को
अपना सर्वोच्च आनंद न मानूं, मेरी जीभ तालू से जा चिपके. 7 याहवेह, वह
दिन स्मरण कीजिए जब एदोम के वंशज येरूशलेम के विरुद्ध एकत्र हो गए थे. वे
कैसे चिल्ला रहे थे, "ढा दो इसे, इसे नींव तक ढा दो!" 8 बाबेल की पुत्री,
तेरा विनाश तो निश्चित है, धन्य होगा वह पुरुष, जो तुझसे उन अत्याचारों का
प्रतिशोध लेगा जो तूने हम पर किए. 9 धन्य होगा वह पुरुष, जो तेरे शिशुओं को
उठाकर चट्टान पर पटक देगा.

138 दावीद की रचना. याहवेह, मैं हृदय की गहराई से आपका स्तवन
करूंगा; मैं "देवताओं" के सामने आपका स्तवन करूंगा. 2 आपके
पवित्र मंदिर की ओर मुख कर मैं नतमस्तक हूं, आपके करुणा-प्रेम के लिए;
आपकी सच्चाई के लिए मैं आपके नाम का आभार मानता हूं; आपने अपने
वचन को अपनी महिमा के भी ऊपर ऊंचा किया है. 3 जिस समय मैंने आपको
पुकारा, आपने प्रत्युत्तर दिया; आपने मेरे प्राणों में बल के संचार से धैर्य दिया. 4
पृथ्वी के समस्त राजा, याहवेह, आपके कृतज्ञ होंगे, क्योंकि उन्होंने आपके
मुख से निकले वचन सुने हैं, 5 वे याहवेह की नीतियों का गुणगान करेंगे,
क्योंकि याहवेह का तेज बड़ा है. 6 यद्यपि याहवेह स्वयं महान हैं, वह नगण्यों
का ध्यान रखते हैं; किंतु अहंकारी को वह दूर से ही पहचान लेते हैं. 7 यद्यपि
इस समय मेरा विषम समय चल रहा है, आप मेरे जीवन के रक्षक हैं. आप ही
अपना हाथ बढ़ाकर मेरे शत्रुओं के प्रकोप से मेरी रक्षा करते हैं; आपका दायां
हाथ मेरा उद्धार करता है. 8 याहवेह मेरे लिए निर्धारित उद्देश्य को पूरा करेंगे;
याहवेह, सर्वदा है आपका करुणा-प्रेम. अपनी ही हस्तकृति का परित्याग न
कीजिए.

139 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद की रचना. एक स्तोत्र. याहवेह,
आपने मुझे परखा है, और जान लिया है. 2 मैं कब उठता हूं और मैं
कब बैठता हूं, यह सब आपको ज्ञात रहता है; दूरदर्शिता में आप मेरे विचारों को
समझ लेते हैं. 3 आप मेरे आने जाने और विश्रान्ति का परीक्षण करते रहते हैं;
तथा मेरे समस्त आचार-व्यवहार से आप भली-भांति परिचित हैं. 4 इसके पूर्व
कि कोई शब्द मेरी जीभ पर आए, याहवेह, आप, उसे पूरी-पूरी रीति से जान
लेते हैं. 5 आप मुझे आगे-पीछे, चारों ओर से घेरे रहते हैं, आपका हाथ सदैव
मुझ पर स्थिर रहता है. 6 आपका ज्ञान मेरी परख-शक्ति से सर्वथा परे हैं, मैं
इसकी जानकारी लेने में स्वयं को पूर्णतः कमजोर पाता हूं. 7 आपके आत्मा से
बचकर मैं कहां जा सकता हूं? आपकी उपस्थिति से बचने के लिए मैं कहां भाग
सकता हूं? 8 यदि मैं स्वर्ग तक आरोहण करूं तो आप वहां हैं; यदि मैं अधोलोक
में जा लेटूं, आप वहां भी हैं. (Sheol h7585) 9 यदि मैं उषा के पंखों पर बैठ दूर
उड़ चला जाऊं, और समुद्र के दूसरे तट पर बस जाऊं, 10 वहां भी आपका
हाथ मेरी अगुवाई करेगा, आपका दायां हाथ मुझे थामे रहेगा. 11 यदि मैं यह
विचार करूं, "निश्चयतः मैं अंधकार में छिप जाऊंगा और मेरे चारों ओर का
प्रकाश रात्रि में बदल जाएगा," 12 अंधकार भी आपकी दृष्टि के लिए अंधकार
नहीं; आपके लिए तो रात्रि भी दिन के समान ज्योतिर्मय है, आपके सामने
अंधकार और प्रकाश एक समान हैं. 13 आपने ही मेरे आन्तरिक अंगों की
रचना की; मेरी माता के गर्भ में आपने मेरी देह की रचना की. 14 मैं आपके
प्रति कृतज्ञ हूं, क्योंकि आपने मेरी रचना भयानक एवं अद्भुत ढंग से की है;
आश्चर्य हैं आपके कार्य, मेरे प्राणों को इसका पूर्ण बोध है. 15 मेरा ढांचा उस
समय आपके लिए रहस्य नहीं था जब सभी अवस्था में मेरा निर्माण हो रहा था,
जब मैं पृथ्वी की गहराइयों में जटिल कौशल में तैयार किया जा रहा था. 16
आपकी दृष्टि मेरे विकासोन्मुख भ्रूण पर थी; मेरे लिए निर्धारित समस्त दिनों का
कुल लेखा आपके ग्रंथ में अंकित था, जबकि वे उस समय अस्तित्व में भी न थे.
17 परमेश्वर, मेरे लिए निर्धारित आपकी योजनाएं कितनी अमूल्य हैं! कितना
विशाल है उनका कुल योग! 18 यदि मैं उनकी गणना प्रारंभ करूं, तो वे धूल के
कणों से भी अधिक होंगी. जब मैं जागता हूं, आपको अपने निकट पाता हूं. 19
परमेश्वर, अच्छा होता कि आप दुष्ट की हत्या कर देते! हे रक्त पिपासु, दूर हो
जाओ मुझसे! 20 ये वे हैं, जो आपके विरुद्ध कुयुक्ति की बातें करते हैं; आपके ये
शत्रु आपका नाम गलत ढंग से लेते हैं. 21 याहवेह, क्या मुझे भी उनसे घृणा
नहीं है, जिन्हें आपसे घृणा है? क्या आपके शत्रु मेरे लिए भी घृणास्पद नहीं हैं?
22 उनके प्रति मेरी घृणा अखण्ड है; वे मेरे भी शत्रु हैं. 23 परमेश्वर, परीक्षण
करके मेरे हृदय को पहचान लीजिए; मुझे परखकर मेरे चिंतापूर्ण विचारों को
जान लीजिए. 24 यह देखिए कि मुझमें कहीं कोई बुरी प्रवृत्ति तो नहीं है, अनंत
काल के मार्ग पर मेरी अगुवाई कीजिए.

140 संगीत निर्देशक के लिये. दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, दुष्ट पुरुषों
से मुझे उद्धार प्रदान कीजिए; हिंसक पुरुषों से मेरी रक्षा कीजिए, 2 वे
मन ही मन अनर्थ षड्यंत्र रचते रहते हैं और सदैव युद्ध ही भड़काते रहते हैं. 3
उन्होंने अपनी जीभ सर्प सी तीखी बना रखी है; उनके होंठों के नीचे नाग का
विष भरा है. 4 याहवेह, दुष्टों से मेरी रक्षा कीजिए; मुझे उन हिंसक पुरुषों
से सुरक्षा प्रदान कीजिए, जिन्होंने, मेरे पैरों को उखाड़ने के लिए युक्ति की
है. 5 उन अहंकारियों ने मेरे पैरों के लिए एक फंदा बनाकर छिपा दिया है;
तथा रस्सियों का एक जाल भी बिछा दिया है, मार्ग के किनारे उन्होंने मेरे ही
लिए फंदे लगा रखे हैं. 6 मैं याहवेह से कहता हूं, "आप ही मेरे परमेश्वर हैं."

याहवेह, कृपा करके मेरी पुकार पर ध्यान दीजिए. 7 याहवेह, मेरे प्रभु, आप ही
मेरे उद्धार का बल हैं, युद्ध के समय आप ही मेरे सिर का आवरण बने. 8 दुष्टों की
अभिलाषा पूर्ण न होने दें, याहवेह; उनकी बुरी युक्ति आगे बढ़ने न पाए अन्यथा
वे गर्व में ऊंचे हो जाएंगे. 9 जिन्होंने इस समय मुझे घेरा हुआ है; उनके होंठों
द्वारा उत्पन्न कार्य उन्हीं के सिर पर आ पड़े. 10 उनके ऊपर जलते हुए कोयलों
की वृष्टि हो; वे आग में फेंक दिए जाएं, वे दलदल के गड्ढे में डाल दिए जाएं, कि
वे उससे बाहर ही न निकल सकें. 11 निंदक इस भूमि पर अपने पैर ही न जमा
सकें; हिंसक पुरुष अति शीघ्र बुराई द्वारा पकड़े जाएं. 12 मैं जानता हूं कि
याहवेह दुखित का पक्ष अवश्य लेंगे तथा दीन को न्याय भी दिलाएंगे. 13
निश्चयतः धर्मी आपके नाम का आभार मानेंगे, सीधे आपकी उपस्थिति में
निवास करेंगे.

141 दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, मैं आपको पुकार रहा हूं, मेरे पास
शीघ्र ही आइए; जब मैं आपको पुकारूं, मेरी पुकार पर ध्यान दीजिए.
2 आपके सामने मेरी प्रार्थना सुगंधधूप; तथा मेरे हाथ उठाना, सान्ध्य बलि समर्पण
जैसा हो जाए. 3 याहवेह, मेरे मुख पर पहरा बैठा दीजिए; मेरे होंठों के द्वार की
चौकसी कीजिए. 4 मेरे हृदय को किसी भी अनाचार की ओर जाने न दीजिए,
मुझे कुकृत्यों में शामिल होने से रोक लीजिए, मुझे दुष्टों की संगति से बचाइए;
मुझे उनके उत्कृष्ट भोजन को चखने से बचाइए. 5 कोई नीतिमान पुरुष मुझे
ताड़ना करे, मैं इसे कृपा के रूप में स्वीकार करूंगा; वह मुझे डांट लगाए, यह
मेरे सिर के अभ्यंजन तुल्य है. इसे अस्वीकार करना मेरे लिए उपयुक्त नहीं,
फिर भी मैं निरंतर दुष्टों की बुराई के कार्यों के विरुद्ध प्रार्थना करता रहूंगा. 6 जब
उनके प्रधानों को ऊंची चट्टान से नीचे फेंक दिया जाएगा तब उन्हें मेरे इस
वक्तव्य पर स्मरण आएगा कि वह व्यर्थ न था, कि यह कितना सांत्वनापूर्ण एवं
सुखदाई वक्तव्य है: 7 "जैसे हल चलाने के बाद भूमि टूटकर बिखर जाती है,
वैसे ही हमारी हड्डियों को टूटे अधोलोक के मुख पर बिखरा दिया जाएगा."
(Sheol h7585) 8 मेरे प्रभु, याहवेह, मेरी दृष्टि आप ही पर लगी हुई है; आप
ही मेरा आश्रय हैं, मुझे असुरक्षित न छोड़िएगा. 9 मुझे उन फन्दों से सुरक्षा प्रदान
कीजिए, जो उन्होंने मेरे लिए बिछाए हैं, उन फन्दों से, जो दुष्टों द्वारा मेरे लिए
तैयार किए गए हैं. 10 दुर्जन अपने ही जाल में फंस जाएं, और मैं सुरक्षित पार
निकल जाऊं.

142 दावीद की मसकील रचना इस समय वह कन्दरा में थे. एक अभ्यर्थना
मैं अपना स्वर उठाकर याहवेह से प्रार्थना कर रहा हूं; अपने शब्दों के
द्वारा में याहवेह से कृपा का अनुरोध कर रहा हूं. 2 मैं उनके सामने अपने संकट
को उंडेल रहा हूं; मैंने अपने कष्ट उनके सामने रख दिए हैं. 3 जब मैं पूर्णतः टूट
चुका हूं, आपके सामने मेरी नियति स्पष्ट रहती है. वह पथ जिस पर मैं चल रहा
हूं उन्होंने उसी पर फंदे बिछा दिए हैं. 4 दायीं ओर दृष्टि कीजिए और देखिए
किसी को भी मेरा ध्यान नहीं है; कोई भी आश्रय अब शेष नहीं रह गया है,
किसी को भी मेरे प्राणों की हितचिंता नहीं है. 5 याहवेह, मैं आपको ही पुकार
रहा हूं; मैं विचार करता रहता हूं, "मेरा आश्रय आप हैं, जीवितों के लोक में मेरा
अंश." 6 मेरी पुकार पर ध्यान दीजिए, क्योंकि मैं अब थक चुका हूं; मुझे
उनसे छुड़ा लीजिए, जो मुझे दुःखित कर रहे हैं, वे मुझसे कहीं अधिक बलवान
हैं. 7 मुझे इस कारावास से छुड़ा दीजिए, कि मैं आपकी महिमा के प्रति मुक्त
कण्ठ से आभार व्यक्त कर सकूं. तब मेरी संगति धर्मियों के संग हो सकेगी
क्योंकि मेरे प्रति यह आपका स्तुत्य उपकार होगा.

143 दावीद का एक स्तोत्र. याहवेह, मेरी प्रार्थना सुन लीजिए, कृपा करके
मेरे गिड़गिड़ाने पर ध्यान दीजिए; अपनी सच्चाई में, अपनी नीतिमत्ता
में मुझे उत्तर दीजिए. 2 अपने सेवक का न्याय कर उसे दंड न दीजिए, क्योंकि
आपके सामने कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं है. 3 शत्रु मेरा पीछा कर रहा है, उसने
मुझे कुचलकर मेरे प्राण को धूल में मिला दिया है. उसने मुझे ऐसे अंधकार में ला
बैठाया है, जैसा दीर्घ काल से मृत पुरुष के लिए होता है. 4 मैं पूर्णतः दुर्बल हो
चुका हूं; मेरे हृदय को भय ने भीतर ही भीतर भयभीत कर दिया है. 5 मुझे
प्राचीन काल स्मरण आ रहा है; आपके वे समस्त महाकार्य मेरे विचारों का
विषय हैं, आपके हस्तकार्य मेरे मनन का विषय हैं. 6 अपने हाथ मैं आपकी ओर
बढ़ाता हूं; आपके लिए मेरी लालसा वैसी है जैसी शुष्क वन में एक प्यासे पुरुष
की होती है. 7 याहवेह, शीघ्र ही मुझे उत्तर दीजिए; मेरी आत्मा दुर्बल हो चुकी
है. अपना मुख मुझसे छिपा न लीजिए अन्यथा मेरी भी नियति वही हो जाएगी,
जो उनकी होती है, जो कब्र में समा जाते हैं. 8 मैंने आप पर ही भरोसा किया है,
तब अरुणोदय मेरे लिए आपके करुणा-प्रेम का संदेश लेकर आए. मुझे मेरे लिए
निर्धारित मार्ग पर चलना है वह बताइए, क्योंकि मेरे प्राणों की पुकार आपके ही
ओर लगी है. 9 हे याहवेह, मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ा लीजिए, आश्रय के लिए मैं
दौड़ा हुआ आपके निकट आया हूं. 10 मुझे अपनी इच्छा के आज्ञापालन की
शिक्षा दीजिए, क्योंकि मेरे परमेश्वर आप हैं; आपका धन्य आत्मा मुझे धर्म पथ
की ओर ले जाए. 11 याहवेह, अपनी महिमा के निमित्त मेरे प्राणों का परिरक्षण
कीजिए; अपनी धार्मिकता में मेरे प्राणों को संकट से बचा लीजिए. 12 अपने
करुणा-प्रेम में मेरे शत्रुओं की हत्या कीजिए; मेरे समस्त विरोधियों को भी नष्ट
कर दीजिए, क्योंकि मैं आपका सेवक हूं.

144 दावीद की रचना. स्तुत्य हैं याहवेह, जो मेरी चट्टान हैं, जो मेरी
भुजाओं को युद्ध के लिए, तथा मेरी उंगलियों को लड़ने के लिए
प्रशिक्षित करते हैं. 2 वह मेरे प्रेमी परमेश्वर, मेरे किला हैं, वह मेरे लिए दृढ़ गढ़
तथा आश्रय हैं, वह मेरे उद्धारक हैं, वह ऐसी ढाल है जहां मैं आश्रय के लिए जा
छिपता हूं, वह प्रजा को मेरे अधीन बनाए रखते हैं. 3 याहवेह, मनुष्य है ही
क्या, जो आप उसकी ओर ध्यान दें? क्या है मनुष्य की सन्तति, कि आप
उसकी हितचिंता करें? 4 मनुष्य श्वास समान है; उसकी आयु विलीन होती
छाया-समान है. 5 याहवेह, स्वर्ग को खोलकर आप नीचे आ जाइए; पर्वतों का
स्पर्श कीजिए कि उनमें से धुआं उठने लगे. 6 विद्युज्ज्वाला भेजकर मेरे शत्रुओं
को बिखरा दीजिए; अपने बाण चला कर उनका आगे बढ़ना रोक दीजिए. 7
अपने उच्चासन से अपना हाथ बढ़ाइए; ढेर जल राशि में से मुझे बचाकर मेरा
उद्धार कीजिए, उनसे जो विदेशी और प्रवासी हैं. 8 उनके मुख से झूठ बातें ही
निकलती हैं, जिनका दायां हाथ धोखे के काम करनेवाला दायां हाथ है. 9
परमेश्वर, मैं आपके लिए मैं एक नया गीत गाऊंगा; मैं दस तार वाली वीणा पर
आपके लिए स्तवन संगीत बनाऊंगा. 10 राजाओं की जय आपके द्वारा प्राप्त
होती है, आप ही अपने सेवक दावीद को सुरक्षा प्रदान करते हैं, तलवार के क्रूर
प्रहार से 11 मुझे छुड़ाइए; विदेशियों के हाथों से मुझे छुड़ा लीजिए. उनके ओंठ
झूठ बातें ही करते हैं, जिनका दायां हाथ झूठी बातें करने का दायां हाथ है. 12
हमारे पुत्र अपनी युवावस्था में परिपक्व पौधों के समान हों, और हमारी पुत्रियां
कोने के उन स्तंभों के समान, जो राजमहल की सुंदरता के लिए सजाये गए हैं.
13 हमारे अन्नभण्डार परिपूर्ण बने रहें, उनसे सब प्रकार की तृप्ति होती रहे.
हमारी भेड़ें हजारों मेमने उत्पन्न करें, हमारे मैदान दस हजारों से भर जाएं; 14
सशक्त बने रहें हमारे पशु; उनके साथ कोई दुर्घटना न हो, वे प्रजनन में कभी
विफल न हों, हमारी गलियों में वेदना की कराहट कभी न सुनी जाए. 15 धन्य
है वह प्रजा, जिन पर कृपादृष्टि की ऐसी वृष्टि होती है; धन्य हैं वे लोग, जिनके
परमेश्वर याहवेह हैं.

145 एक स्तवन गीत. दावीद की रचना. परमेश्वर, मेरे महाराजा, मैं
आपका स्तवन करता हूं; मैं सदा-सर्वदा आपके नाम का गुणगान

करूंगा. 2 प्रतिदिन मैं आपकी वंदना करूंगा, मैं सदा-सर्वदा आपके नाम का गुणगान करूंगा. 3 सर्वोच्च हैं याहवेह, स्तुति के सर्वाधिक योग्य; अगम है उनकी सर्वोच्चता. 4 आपके कार्य एक पीढ़ी से दूसरी को बताए जाएंगे; वे आपके महाकार्य की उद्घोषणा करेंगे. 5 आपकी प्रभुसत्ता के भव्य प्रताप पर तथा आपके अद्भुत कार्यों पर मैं मनन करता रहूंगा. 6 मनुष्य आपके अद्भुत कार्यों की सामर्थ्य की घोषणा करेंगे, मैं आपके महान कार्यों की उद्घोषणा करूंगा. 7 लोग आपकी बड़ी भलाई की कीर्ति का वर्णन करेंगे तथा उच्च स्वर में आपकी धार्मिकता का गुणगान करेंगे. 8 याहवेह उदार एवं कृपालु हैं, वह शीघ्र क्रोधित नहीं होते और बड़ी है उनकी करुणा. 9 याहवेह सभी के प्रति भले हैं; तथा उनकी कृपा उनकी हर एक कृति पर स्थिर रहती है. 10 याहवेह, आपके द्वारा बनाए गए समस्त सृष्टि आपके प्रति आभार व्यक्त करेंगे, और आपके समस्त सात्विक आपका स्तवन करेंगे. 11 वे आपके साम्राज्य की महिमा का वर्णन तथा आपके सामर्थ्य की उद्घोषणा करेंगे. 12 कि समस्त मनुष्यों को आपके महाकार्य ज्ञात हो जाएं और उन्हें आपके साम्राज्य के अप्रतिम वैभव का बोध हो जाए. 13 आपका साम्राज्य अनंत साम्राज्य है, तथा आपका प्रभुत्व पीढ़ी से पीढ़ी बना रहता है. याहवेह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं में निष्ठ हैं; उनके समस्त कार्यों में उनकी कृपा बनी रहती है. 14 उन सभी को, जो गिरने पर होते हैं, याहवेह संभाल लेते हैं और जो झुके जा रहे हैं, उन्हें वह थाम कर सीधे खड़ा कर देते हैं. 15 सभी की दृष्टि अपेक्षा में आपकी ओर लगी रहती है, और आप उपयुक्त अवसर पर उन्हें आहार प्रदान करते हैं. 16 आप अपना हाथ उदारतापूर्वक खोलते हैं; आप हर एक जीवित प्राणी की इच्छा को पूरी करते हैं. 17 याहवेह अपनी समस्त नीतियों में सीधे हैं, उनकी सभी गतिविधियों में सच्चा हैं. 18 याहवेह उन सभी के निकट होते हैं, जो उन्हें पुकारते हैं, उनके निकट, जो सच्चाई में उन्हें पुकारते हैं. 19 वह अपने श्रद्धालुओं की अभिलाषा पूर्ण करते हैं; वह उनकी पुकार सुनकर उनकी रक्षा भी करते हैं. 20 याहवेह उन सभी की रक्षा करते हैं, जिन्हें उनसे प्रेम है, किंतु वह दुष्टों को नष्ट कर देंगे. 21 मेरा मुख याहवेह का गुणगान करेगा. सभी सदा-सर्वदा उनके पवित्र नाम का स्तवन करते रहें.

146 याहवेह का स्तवन हो. मेरे प्राण, याहवेह का स्तवन करो. 2 जीवन भर मैं याहवेह का स्तवन करूंगा; जब तक मेरा अस्तित्व है, मैं अपने परमेश्वर का स्तुति गान करता रहूंगा. 3 प्रधानों पर अपना भरोसा आधारित न करो—उस नश्वर मनुष्य पर, जिसमें किसी को छुड़ाने की कोई सामर्थ्य नहीं है. 4 जब उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं, वह भूमि में लौट जाता है; और ठीक उसी समय उसकी योजनाएं भी नष्ट हो जाती हैं. 5 धन्य होता है वह पुरुष, जिसकी सहायता का उगम याकोब के परमेश्वर में है, जिसकी आशा याहवेह, उसके परमेश्वर पर आधारित है. 6 वही स्वर्ग और पृथ्वी के, समुद्र तथा उसमें चलते फिरते सभी प्राणियों के कर्ता हैं; वह सदा-सर्वदा विश्वासयोग्य रहते हैं. 7 वही दुःखितों के पक्ष में न्याय निष्पन्न करते हैं, भूखों को भोजन प्रदान करते हैं. याहवेह बंदी को छुड़ाते हैं, 8 वह अंधों की आंखें खोल दृष्टि प्रदान करते हैं, याहवेह झुके हुओं को उठाकर सीधा खड़ा करते हैं, उन्हें नीतिमान पुरुष प्रिय हैं. 9 याहवेह प्रवासियों की हितचिंता कर उनकी रक्षा करते हैं वही हैं, जो विधवा तथा अनाथों को संभालते हैं, किंतु वह दुष्टों की युक्तियों को नष्ट कर देते हैं. 10 याहवेह का साम्राज्य सदा के लिए है, ज़ियोन, पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा परमेश्वर राजा हैं. याहवेह का स्तवन करो.

147 याहवेह का स्तवन करो. शोभनीय है हमारे परमेश्वर का गुणगान करना, क्योंकि यह सुखद है और स्तवन गान एक धर्ममय कार्य है! 2 येरूशलेम के निर्माता याहवेह हैं; वह इस्राएल में से ठुकराए हुओं को एकत्र करते हैं. 3 जिनके हृदय भग्न हैं, वह उन्हें चंगा करते हैं, वह उनके घावों पर पट्टी बांधते हैं. 4 उन्होंने ही तारों की संख्या निर्धारित की है; उन्होंने ही हर एक को नाम दिया है. 5 पराक्रमी हैं हमारे प्रभु और अपार है उनका सामर्थ्य; बड़ी है उनकी समझ. 6 याहवेह विनम्रों को ऊंचा उठाते तथा दुर्जनों को धूल में मिला देते हैं. 7 धन्यवाद के साथ याहवेह का स्तवन गान करो; किन्नोर की संगत पर परमेश्वर की वंदना करो. 8 वही आकाश को बादलों से ढांक देते हैं; वह पृथ्वी के लिए वर्षा की तैयारी करते और पहाड़ियों पर घास उपजाते हैं. 9 वही पशुओं के लिए आहार नियोजन तथा चिल्लाते हुए कौवे के बच्चों के लिए भोजन का प्रबंध करते हैं. 10 घोड़े के बल में उन्हें कोई रुचि नहीं है, और न ही किसी मनुष्य के शक्तिशाली पैरों में. 11 याहवेह को प्रसन्न करते हैं वे, जिनमें उनके प्रति श्रद्धा है, जिन्होंने उनके करुणा-प्रेम को अपनी आशा का आधार बनाया है. 12 येरूशलेम, याहवेह की महिमा करो; ज़ियोन, अपने परमेश्वर की वंदना करो. 13 क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे द्वार के खंभों को सुदृढ़ बना दिया है; उन्होंने नगर के भीतर तुम्हारी संतान पर कृपादृष्टि की है. 14 तुम्हारी सीमाओं के भीतर वह शांति की स्थापना करते तथा तुमको सर्वोत्तम गेहूं से तृप्त करते हैं. 15 वह अपना आदेश पृथ्वी के लिए भेजा करते हैं; और उनका वचन अति गति से प्रसारित होता है. 16 वह हिमवृष्टि करते हैं, जो ऊन समान दिखता है; जब पाला पड़ता है, वह बिखरे हुए भस्म समान लगता है. 17 जब वह ओले के छोटे-छोटे टुकड़े से वृष्टि करते हैं, तो किसमें उस शीत को सहने की क्षमता है? 18 वह अपना आदेश भेजकर उसे पिघला देते हैं; वह हवा और जल में प्रवाह उत्पन्न करते हैं. 19 उन्होंने याकोब के लिए अपना संदेश तथा इस्राएल के लिए अपने अधिनियम तथा व्यवस्था स्पष्ट कर दिए. 20 ऐसा उन्होंने किसी भी अन्य राष्ट्र के लिए नहीं किया; वे उनकी व्यवस्था से अनजान हैं. याहवेह का स्तवन हो.

148 याहवेह का स्तवन हो. आकाशमंडल में याहवेह का स्तवन हो; उच्च स्थानों में उनका स्तवन हो. 2 उनके समस्त स्वर्गदूत उनका स्तवन करें; स्वर्गिक सेनाएं उनका स्तवन करें. 3 सूर्य और चंद्रमा उनका स्तवन करें; टिमटिमाते समस्त तारे उनका स्तवन करें. 4 सर्वोच्च आकाश, उनका स्तवन करे और वह जल भी, जो स्वर्ग के ऊपर संचित है. 5 ये सभी याहवेह की महिमा का स्तवन करें, क्योंकि इन सब की रचना, आदेश मात्र से हुई है. 6 उन्होंने इन्हें सदा-सर्वदा के लिए स्थापित किया है; उन्होंने राजाज्ञा प्रसारित की, जिसको टाला नहीं जा सकता. 7 पृथ्वी से याहवेह का स्तवन किया जाए, महासागर तथा उनके समस्त विशालकाय प्राणी, 8 अग्नि और ओले, हिम और धुंध, प्रचंड बवंडर उनका आदेश पालन करते हैं, 9 पर्वत और पहाड़ियां, फलदायी वृक्ष तथा सभी देवदार, 10 वन्य पशु और पालतू पशु, रेंगते जंतु और उड़ते पक्षी, 11 पृथ्वी के राजा और राज्य के लोग, प्रधान और पृथ्वी के समस्त शासक, 12 युवक और युवतियां, वृद्ध और बालक. 13 सभी याहवेह की महिमा का गुणगान करें, क्योंकि मात्र उन्हीं की महिमा सर्वोच्च है; उनका ही तेज पृथ्वी और आकाश से महान है. 14 अपनी प्रजा के लिए उन्होंने एक सामर्थ्यी राजा का उद्भव किया है, जो उनके सभी भक्तों के गुणगान का पात्र हैं, इस्राएली प्रजा के लिए, जो उनकी अत्यंत प्रिय है. याहवेह की स्तुति हो.

149 याहवेह का स्तवन हो. याहवेह के लिए एक नया गीत गाओ, भक्तों की सभा में उनका स्तवन किया जाए. 2 इस्राएल अपने कर्ता में आनंदित हो; ज़ियोन की सन्तति अपने राजा में उल्लसित हो. 3 वे उनकी महिमा में नृत्य के साथ स्तवन करें; वे खंजरी और किन्नोर की संगत पर संगीत गाया करें. 4 क्योंकि याहवेह का आनंद उनकी प्रजा में मगन है; वह भोले पुरुष को उद्धार से सुशोभित करते हैं. 5 सात्विक उनके पराक्रम में प्रफुल्लित रहें, यहां तक कि वे अपने बिछौने पर भी हर्षोल्लास में गाते रहें. 6 उनके कण्ठ में

परमेश्वर के लिए सर्वोत्कृष्ट वंदना तथा उनके हाथों में दोधारी तलवार हो. 7 वे
अन्य राष्ट्रों पर प्रतिशोध तथा उनकी प्रजा पर दंड के लिए तत्पर रहें, 8 कि
उनके राजा बेड़ियों में बंदी बनाए जाएं और उनके अधिकारी लोहे की जंजीरों
में, 9 कि उनके लिए निर्धारित दंड दिया जाए, यह उनके समस्त भक्तों का
सम्मान होगा. याहवेह का स्तवन हो.

150 याहवेह का स्तवन हो. परमेश्वर का उनके मंदिर में स्तवन हो; अत्यंत
विशाल आकाश में उनका स्तवन हो. 2 उनके अद्भुत कार्यों के लिए
उनका स्तवन हो; उनके सर्वोत्कृष्ट महानता के योग्य उनका स्तवन हो. 3
तुरही के साथ उनका स्तवन हो, वीणा तथा किन्‍नोर की संगत पर उनका स्तवन
हो, 4 खंजरी और नृत्य के साथ उनका स्तवन हो, तन्तु एवं बांसुरी के साथ
उनका स्तवन हो, 5 झांझ की ध्वनि की संगत पर उनका स्तवन हो, झांझ की
उच्च झंकार में उनका स्तवन हो. 6 हर एक प्राणी, जिसमें जीवन का श्वास है,
याहवेह का स्तवन करे. याहवेह का स्तवन हो!

नीतिवचन

1 इस्राएल के राजा, दावीद के पुत्र शलोमोन की सूक्तियां: 2 ज्ञान और शिक्षा
से परिचय के लिए; शब्दों को समझने के निमित्त ज्ञान; 3 व्यवहार कुशलता
के लिए निर्देश-प्राप्ति, धर्मी, पक्षपात किए बिना तथा न्यायसंगति के लिए; 4
साधारण व्यक्ति को समझ प्रदान करने के लिए, युवाओं को ज्ञान और निर्णय-
बुद्धि प्रदान करने के लिए. 5 बुद्धिमान इन्हें सुनकर अपनी बुद्धि को बढ़ाए,
समझदार व्यक्ति बुद्धिमानी का परामर्श प्राप्त करे; 6 कि वह सूक्ति तथा दृष्टांत
को, बुद्धिमानों की योजना को और उनके रहस्यों को समझ सके. 7 याहवेह के
प्रति श्रद्धा ही ज्ञान का प्रारम्भ-बिंदु है, मूर्ख हैं वे, जो ज्ञान और अनुशासन को
तुच्छ मानते हैं. 8 मेरे पुत्र, अपने पिता के अनुशासन पर ध्यान देना और अपनी
माता की शिक्षा को न भूलना. 9 क्योंकि ये तुम्हारे सिर के लिए सुंदर अलंकार
और तुम्हारे कण्ठ के लिए माला हैं. 10 मेरे पुत्र, यदि पापी तुम्हें प्रलोभित करें,
उनसे सहमत न हो जाना. 11 यदि वे यह कहें, "हमारे साथ चलो; हम हत्या के
लिए घात लगाएंगे, हम बिना किसी कारण निर्दोष पर छिपकर आक्रमण करें;
12 अधोलोक के समान हम भी उन्हें जीवित ही निगल जाएं, पूरा ही निगल
जाएं, जैसे लोग कब्र में समा जाते हैं; **(Sheol h7585)** 13 तब हमें सभी अमूल्य
वस्तुएं प्राप्त हो जाएंगी इस लूट से हम अपने घरों को भर लेंगे; 14 जो कुछ
तुम्हारे पास है, सब हमें दो; तब हम सभी का एक ही बटुआ हो जाएगा." 15
मेरे पुत्र, उनके इस मार्ग के सहयात्री न बन जाना, उनके मार्गों का चालचलन
करने से अपने पैरों को रोके रखना; 16 क्योंकि उनके पैर बुराई की दिशा में ही
दौड़ते हैं, हत्या के लिए तो वे फुर्तीले हो जाते हैं. 17 यदि किसी पक्षी के
देखते-देखते उसके लिए जाल बिछाया जाए, तो यह निरर्थक होता है! 18 किंतु
ये व्यक्ति ऐसे हैं, जो अपने लिए ही घात लगाए बैठे हैं; वे अपने ही प्राण लेने की
प्रतीक्षा में हैं. 19 यही चाल है हर एक ऐसे व्यक्ति की, जो अवैध लाभ के लिए
लोभ करता है; यह लोभ अपने ही स्वामियों के प्राण ले लेगा. 20 ज्ञान गली में
उच्च स्वर में पुकार रही है, व्यापार केंद्रों में वह अपना स्वर उठा रही है; 21
व्यस्त मार्गों के उच्चस्थ स्थान पर वह पुकार रही है, नगर प्रवेश पर वह यह
बातें कह रही है: 22 "हे भोले लोगो, कब तक तुम्हें भोलापन प्रिय रहेगा? ठट्ठा
करनेवालो, कब तक उपहास तुम्हारे विनोद का विषय और मूर्खो, ज्ञान तुम्हारे
लिए घृणास्पद रहेगा? 23 यदि मेरे धिक्कारने पर तुम मेरे पास आ जाते! तो मैं
तुम्हें अपनी आत्मा से भर देती, तुम मेरे विचार समझने लगते. 24 मैंने पुकारा
और तुमने इसकी अनसुनी कर दी, मैंने अपना हाथ बढ़ाया किंतु किसी ने ध्यान
ही न दिया, 25 मेरे सभी परामर्शों की तुमने उपेक्षा की और मेरी किसी भी
ताड़ना का तुम पर प्रभाव न पड़ा है, 26 मैं भी तुम पर विपत्ति के अवसर पर
हंसूंगी; जब तुम पर आतंक का आक्रमण होगा, मैं तुम्हारा उपहास करूंगी— 27
जब आतंक आंधी के समान और विनाश बवंडर के समान आएगा, जब तुम पर
दुःख और संकट का पहाड़ टूट पड़ेगा. 28 "उस समय उन्हें मेरा स्मरण आएगा,
किंतु मैं उन्हें उत्तर न दूंगी; वे बड़े यत्नपूर्वक मुझे खोजेंगे, किंतु पाएंगे नहीं. 29
क्योंकि उन्होंने ज्ञान से घृणा की थी और याहवेह के प्रति श्रद्धा को उपयुक्त न
समझा. 30 उन्होंने मेरा एक भी परामर्श स्वीकार नहीं किया उन्होंने मेरी
ताड़नाओं को तुच्छ समझा, 31 परिणामस्वरूप वे अपनी करनी का फल भोगेंगे
उनकी युक्तियों का पूरा-पूरा परिणाम उन्हीं के सिर पर आ पड़ेगा. 32 सरल-
साधारण व्यक्ति सुसंगत मार्ग छोड़ देते और मृत्यु का कारण हो जाते हैं, तथा
मूर्खों की मनमानी उन्हें ले डूबती है; 33 किंतु कोई भी, जो मेरी सुनता है,
सुरक्षा में बसा रहेगा वह निश्चिंत रहेगा, क्योंकि उसे विपत्ति का कोई भय न
होगा."

2 मेरे पुत्र, यदि तुम मेरे वचन स्वीकार करो और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय
में संचित कर रखो, 2 यदि अपने कानों को ज्ञान के प्रति चैतन्य तथा अपने
हृदय को समझदारी की ओर लगाए रखो; 3 वस्तुतः यदि तुम समझ को आह्वान
करो और समझ को उच्च स्वर में पुकारो, 4 यदि तुम इसकी खोज उसी रीति से
करो जैसी चांदी के लिए की जाती है और इसे एक गुप्त निधि मानते हुए खोजते
रहो, 5 तब तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि याहवेह के प्रति श्रद्धा क्या होती है, तब तुम्हें
परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा. 6 क्योंकि ज्ञान को देनेवाला याहवेह ही हैं;
उन्हीं के मुख से ज्ञान और समझ की बातें बोली जाती हैं. 7 खरे के लिए वह
यथार्थ ज्ञान आरक्षित रखते हैं, उनके लिए वह ढाल प्रमाणित होते हैं, जिनका
चालचलन निर्दोष है, 8 वह बिना पक्षपात न्याय प्रणाली की सुरक्षा बनाए रखते
हैं तथा उनकी दृष्टि उनके संतों के चालचलन पर लगी रहती है. 9 मेरे पुत्र, तब
तुम्हें धर्मी, बिना पक्षपात न्याय, हर एक सन्मार्ग और औचित्य की पहचान हो
जाएगी. 10 क्योंकि तब ज्ञान तुम्हारे हृदय में आ बसेगा, ज्ञान तुम्हारी आत्मा में
आनंद का संचार करेगा. 11 निर्णय-ज्ञान तुम्हारी चौकसी करेगा, समझदारी में
तुम्हारी सुरक्षा होगी. 12 ये तुम्हें बुराई के मार्ग से और ऐसे व्यक्तियों से बचा
लेंगे, जिनकी बातें कुटिल है, 13 जो अंधकारपूर्ण जीवनशैली को अपनाने के
लिए खराई के चालचलन को छोड़ देते हैं, 14 जिन्हें कुकृत्यों तथा बुराई
की भ्रष्टता में आनंद आता है, 15 जिनके व्यवहार ही कुटिल हैं जो बिगड़े
मार्ग पर चालचलन करते हैं. 16 तब ज्ञान तुम्हें अनाचरणीय स्त्री से, उस अन्य
पुरुषगामिनी से, जिसकी बातें मीठी हैं, सुरक्षित रखेगी, 17 जिसने युवावस्था के
साथी का परित्याग कर दिया है जो परमेश्वर के समक्ष की गई वाचा को भूल
जाती है. 18 उसका घर-परिवार मृत्यु के गर्त में समाता जा रहा है, उसके पांव
अधोलोक की राह पर हैं. 19 जो कोई उसके पास गया, वह लौटकर कभी न
आ सकता, और न उनमें से कोई पुनः जीवन मार्ग पा सकता है. 20 मेरे पुत्र, ज्ञान
तुम्हें भलाई के मार्ग पर ले जाएगा और तुम्हें धर्मियों के मार्ग पर स्थिर रखेगा.
21 धर्मियों को ही देश प्राप्त होगा, और वे, जो धर्मी हैं, इसमें बने रहेंगे; 22
किंतु दुर्जनों को देश से निकाला जाएगा तथा धोखेबाज को समूल नष्ट कर दिया
जाएगा.

3 मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना, मेरे आदेशों को अपने हृदय में रखे रहना,
2 क्योंकि इनसे तेरी आयु वर्षों वर्ष बढ़ेगी और ये तुझे शांति और समृद्धि
दिलाएंगे. 3 प्रेम और ईमानदारी तुमसे कभी अलग न हो; इन्हें अपने कण्ठ का
हार बना लो, इन्हें अपने हृदय-पटल पर लिख लो. 4 इसका परिणाम यह होगा
कि तुम्हें परमेश्वर तथा मनुष्यों की ओर से प्रतिष्ठा तथा अति सफलता प्राप्त
होगी. 5 याहवेह पर अपने संपूर्ण हृदय से भरोसा करना, स्वयं अपनी ही समझ
का सहारा न लेना; 6 अपने समस्त कार्य में याहवेह को मान्यता देना, वह तुम्हारे
मार्गों में तुम्हें स्मरण करेंगे. 7 अपनी ही दृष्टि में स्वयं को बुद्धिमान न मानना;
याहवेह के प्रति भय मानना, और बुराई से अलग रहना. 8 इससे तुम्हारी देह पुष्ट
और तुम्हारी अस्थियां सशक्त बनी रहेंगी. 9 अपनी संपत्ति के द्वारा, अपनी
उपज के प्रथम उपज के द्वारा याहवेह का सम्मान करना; 10 तब तुम्हारे भंडार
विपुलता से भर जाएंगे, और तुम्हारे कुंडों में द्राक्षारस छलकता रहेगा. 11 मेरे
पुत्र, याहवेह के अनुशासन का तिरस्कार न करना, और न उनकी डांट पर बुरा
मानना, 12 क्योंकि याहवेह उसे ही डांटते हैं, जिससे उन्हें प्रेम होता है, उसी पुत्र
के जैसे, जिससे पिता प्रेम करता है. 13 धन्य है वह, जिसने ज्ञान प्राप्त कर ली
है, और वह, जिसने समझ को अपना लिया है, 14 क्योंकि इससे प्राप्त बुद्धि,
चांदी से प्राप्त बुद्धि से सर्वोत्तम होती है और उससे प्राप्त लाभ विशुद्ध स्वर्ण
से उत्तम. 15 ज्ञान रत्नों से कहीं अधिक मूल्यवान है; आपकी लालसा की
किसी भी वस्तु से उसकी तुलना नहीं की जा सकती. 16 अपने दायें हाथ में
वह दीर्घायु थामे हुए है; और बायें हाथ में समृद्धि और प्रतिष्ठा. 17 उसके मार्ग

आनन्द-दायक मार्ग हैं, और उसके सभी मार्गों में शांति है. 18 जो उसे अपना
लेते हैं, उनके लिए वह जीवन वृक्ष प्रमाणित होता है; जो उसे छोडते नहीं, वे
धन्य होते हैं. 19 याहवेह द्वारा ज्ञान में पृथ्वी की नींव रखी गई, बडी समझ के
साथ उन्होंने आकाशमंडल की स्थापना की है; 20 उनके ज्ञान के द्वारा ही
महासागर में गहरे सोते फूट पडे, और मेघों ने ओस वृष्टि प्रारंभ की. 21 मेरे पुत्र
इन्हें कभी ओझल न होने देना, विशुद्ध बुद्धि और निर्णय-बुद्धि; 22 ये तुम्हारे प्राणों
के लिए संजीवनी सिद्ध होंगे और तुम्हारे कण्ठ के लिए हार. 23 तब तुम सुरक्षा
में अपने मार्ग में आगे बढते जाओगे, और तुम्हारे पांवों में कभी ठोकर न लगेगी.
24 जब तुम बिछौने पर जाओगे तो निर्भय रहोगे; नींद तुम्हें आएगी और वह नींद
सुखद नींद होगी. 25 मेरे पुत्र, अचानक आनेवाले आतंक अथवा दुर्जनों पर टूट
पडी विपत्ति को देख भयभीत न हो जाना, 26 क्योंकि तुम्हारी सुरक्षा याहवेह में
होगी, वही तुम्हारे पैर को फंदे में फंसने से बचा लेंगे. 27 यदि तुममें भला करने
की शक्ति है और किसी को इसकी आवश्यकता है, तो भला करने में आनाकानी
न करना. 28 यदि तुम्हारे पास कुछ है, जिसकी तुम्हारे पडोसी को आवश्यकता
है, तो उससे यह न कहना, "अभी जाओ, फिर आना; कल यह मैं तुम्हें दे
दूंगा." 29 अपने पडोसी के विरुद्ध बुरी युक्ति की योजना न बांधना, तुम पर
विश्वास करते हुए उसने तुम्हारे पडोस में रहना उपयुक्त समझा है. 30 यदि
किसी ने तुम्हारा कोई नुकसान नहीं किया है, तो उसके साथ अकारण झगडा
प्रारंभ न करना. 31 न तो हिंसक व्यक्ति से ईर्ष्या करो और न उसकी जीवनशैली
को अपनाओ. 32 कुटिल व्यक्ति याहवेह के लिए घृणास्पद है किंतु धर्मी उनके
विश्वासपात्र हैं. 33 दुष्ट का परिवार याहवेह द्वारा शापित होता है, किंतु धर्मी के
घर पर उनकी कृपादृष्टि बनी रहती है. 34 वह स्वयं ठट्ठा करनेवालों का उपहास
करते हैं किंतु दीन जन उनके अनुग्रह के पात्र होते हैं. 35 ज्ञानमान लोग सम्मान
पाएंगे, किंतु मूर्ख लज्जित होते जाएंगे.

4 मेरे पुत्रो, अपने पिता की शिक्षा ध्यान से सुनो; इन पर विशेष ध्यान दो,
कि तुम्हें समझ प्राप्त हो सके. 2 क्योंकि मेरे द्वारा दिए जा रहे नीति-सिद्धांत
उत्तम हैं, इन शिक्षाओं का कभी त्याग न करना. 3 जब मैं स्वयं अपने पिता का
पुत्र था, मैं सुकुमार था, माता के लिए लाखों में एक. 4 मेरे पिता ने मुझे शिक्षा
देते हुए कहा था, "मेरी शिक्षा अपने हृदय में दृढतापूर्वक बैठा लो; मेरे आदेशों
का पालन करते रहो, क्योंकि इन्हीं में तुम्हारा जीवन सुरक्षित है. 5 मेरे मुख से
निकली शिक्षा से बुद्धिमत्ता प्राप्त करो, समझ प्राप्त करो; न इन्हें त्यागना, और न
इनसे दूर जाओ. 6 यदि तुम इसका परित्याग न करो, तो यह तुम्हें सुरक्षित
रखेगी; इसके प्रति तुम्हारा प्रेम ही तुम्हारी सुरक्षा होगी. 7 सर्वोच्च प्राथमिकता
है बुद्धिमत्ता की उपलब्धि: बुद्धिमत्ता प्राप्त करो. यदि तुम्हें अपना सर्वस्व भी देना
पडे, समझ अवश्य प्राप्त कर लेना. 8 ज्ञान को अमूल्य संजो रखना, तब वह
तुम्हें भी प्रतिष्ठित बनाएगा; तुम इसे आलिंगन करो तो यह तुम्हें सम्मानित करेगा.
9 यह तुम्हारे मस्तक को एक भव्य आभूषण से सुशोभित करेगा; यह तुम्हें एक
मनोहर मुकुट प्रदान करेगा." 10 मेरे पुत्र, मेरी शिक्षाएं सुनो और उन्हें अपना
लो, कि तुम दीर्घायु हो जाओ. 11 मैंने तुम्हें ज्ञान की नीतियों की शिक्षा दी है,
मैंने सीधे मार्ग पर तुम्हारी अगुवाई की है. 12 इस मार्ग पर चलते हुए तुम्हारे पैर
बाधित नहीं होंगे; यदि तुम दौडोगे तब भी तुम्हारे पांव ठोकर न खाएंगे. 13 इन
शिक्षाओं पर अटल रहो; कभी इनका परित्याग न करो; ज्ञान तुम्हारा जीवन है,
उसकी रक्षा करो. 14 दुष्टों के मार्ग पर पांव न रखना, दुर्जनों की राह पर पांव न
रखना. 15 इससे दूर ही दूर रहना, उस मार्ग पर कभी न चलना; इससे मुडकर
आगे बढ जाना. 16 उन्हें बुराई किए बिना नींद ही नहीं आती; जब तक वे
किसी का बुरा न कर लें, वे करवटें बदलते रह जाते हैं. 17 क्योंकि बुराई ही
उन्हें आहार प्रदान करती है और हिंसा ही उनका पेय होती है. 18 किंतु धर्मी का
मार्ग भोर के प्रकाश समान है, जो दिन चढते हुए उत्तरोत्तर प्रखर होती जाती है
और मध्याह्न पर पहुंचकर पूर्ण तेज पर होती है. 19 पापी की जीवनशैली गहन
अंधकार होती है; उन्हें यह ज्ञात ही नहीं हो पाता, कि उन्हें ठोकर किससे लगी
है. 20 मेरे पुत्र, मेरी शिक्षाओं के विषय में सचेत रहना; मेरी बातों पर विशेष
ध्यान देना. 21 ये तुम्हारी दृष्टि से ओझल न हों, उन्हें अपने हृदय में बनाए
रखना. 22 क्योंकि जिन्होंने इन्हें प्राप्त कर लिया है, ये उनका जीवन हैं, ये
उनकी देह के लिए स्वास्थ्य हैं. 23 सबसे अधिक अपने हृदय की रक्षा करते
रहना, क्योंकि जीवन के प्रवाह इसी से निकलते हैं. 24 कुटिल बातों से दूर
रहना; वैसे ही छल-प्रपंच के वार्तालाप में न बैठना. 25 तुम्हारी आंखें सीधे
लक्ष्य को ही देखती रहें; तुम्हारी दृष्टि स्थिर रहे. 26 इस पर विचार करो कि
तुम्हारे पांव कहां पड रहे हैं तब तुम्हारे समस्त लेनदेन निरापद बने रहेंगे. 27
सन्मार्ग से न तो दायें मुडना न बाएं; बुराई के मार्ग पर पांव न रखना.

5 मेरे पुत्र, मेरे ज्ञान पर ध्यान देना, अपनी समझदारी के शब्दों पर कान
लगाओ, 2 कि तुम्हारा विवेक और समझ स्थिर रहे और तुम्हारी बातों में
ज्ञान सुरक्षित रहे. 3 क्योंकि व्यभिचारिणी की बातों से मानो मधु टपकता
है, उसका वार्तालाप तेल से भी अधिक चिकना होता है; 4 किंतु अंत में वह
चिरायते सी कडवी तथा दोधारी तलवार-सी तीखी-तीक्ष्ण होती है. 5 उसका
मार्ग सीधा मृत्यु तक पहुंचता है; उसके पैर अधोलोक के मार्ग पर आगे बढते
जाते हैं. **(Sheol h7585)** 6 जीवन मार्ग की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता;
उसके चालचलन का कोई लक्ष्य नहीं होता और यह वह स्वयं नहीं जानती. 7
और अब, मेरे पुत्रो, ध्यान से मेरी शिक्षा को सुनो; मेरे मुख से बोले शब्दों से
कभी न मुडना. 8 तुम उससे दूर ही दूर रहना, उसके घर के द्वार के निकट भी न
जाना, 9 कहीं ऐसा न हो कि तुम अपना सम्मान किसी अन्य को सौंप बैठो और
तुम्हारे जीवन के दिन किसी क्रूर के वश में हो जाएं, 10 कहीं अपरिचित व्यक्ति
तुम्हारे बल का लाभ उठा लें और तुम्हारे परिश्रम की सारी कमाई परदेशी के घर
में चली जाए. 11 और जीवन के संध्याकाल में तुम कराहते रहो, जब तुम्हारी
देह और स्वास्थ्य क्षीण होता जाए. 12 और तब तुम यह विचार करके कहो,
"क्यों मैं अनुशासन तोडता रहा! क्यों मैं ताडना से घृणा करता रहा! 13 मैंने
शिक्षकों के शिक्षा की अनसुनी की, मैंने शिक्षाओं पर ध्यान ही न दिया. 14
आज मैं विनाश के कगार पर, सारी मण्डली के सामने, खडा हूं." 15 तुम अपने
ही जलाशय से जल का पान करना, तुम्हारा अपना कुंआ तुम्हारा सोता हो.
16 क्या तुम्हारे सोते की जलधाराएं इधर-उधर बह जाएं, क्या ये जलधाराएं
सार्वजनिक गलियों के लिए हैं? 17 इन्हें मात्र अपने लिए ही आरक्षित रखना, न
कि तुम्हारे निकट आए अजनबी के लिए. 18 आशीषित बने रहें तुम्हारे सोते,
युवावस्था से जो तुम्हारी पत्नी है, वही तुम्हारे आनंद का सोता हो. 19 वह हिरणी
सी कमनीय और मृग सी आकर्षक है. उसी के स्तन सदैव ही तुम्हें उल्लास से
परिपूर्ण करते रहें, उसका प्रेम ही तुम्हारा आकर्षण बन जाए. 20 मेरे पुत्र, वह
व्यभिचारिणी भली क्यों तुम्हारे आकर्षण का विषय बने? वह व्यभिचारिणी क्यों
तुम्हारे सीने से लगे? 21 पुरुष का चालचलन सदैव याहवेह की दृष्टि में रहता है,
वही तुम्हारी चालों को देखते रहते हैं. 22 दुष्ट के अपराध उन्हीं के लिए फंदा
बन जाते हैं; बडा सशक्त होता है उसके पाप का बंधन. 23 उसकी मृत्यु का
कारण होती है उसकी ही शिक्षा, उसकी अतिशय मूर्खता ही उसे भटका देती है.

6 मेरे पुत्र, यदि तुम अपने पडोसी के लिए ज़मानत दे बैठे हो, किसी अपरिचित
के लिए वचनबद्ध हुए हो, 2 यदि तुम वचन देकर फंस गए हो, तुम्हारे ही
शब्दों ने तुम्हें विकट परिस्थिति में ला रखा है, 3 तब मेरे पुत्र, ऐसा करना कि
तुम स्वयं को बचा सको, क्योंकि इस समय तो तुम अपने पडोसी के हाथ में आ
चुके हो: तब अब अपने पडोसी के पास चले जाओ, और उसको नम्रता से मना
लो! 4 यह समय निश्चिंत बैठने का नहीं है, नींद में समय नष्ट न करना. 5 इस

समय तुम्हें अपनी रक्षा उसी हिरणी के समान करना है, जो शिकारी से बचने के
लिए अपने प्राण लेकर भाग रही है, जैसे पक्षी जाल डालनेवाले से बचकर उड़
जाता है. 6 ओ आलसी, जाकर चींटी का ध्यान कर; उनके कार्य पर विचार
कर और ज्ञानी बन जा! 7 बिना किसी प्रमुख, अधिकारी अथवा प्रशासक के, 8
वह ग्रीष्मकाल में ही अपना आहार जमा कर लेती है क्योंकि वह कटनी के
अवसर पर अपना भोजन एकत्र करती रहती है. 9 ओ आलसी, तू कब तक ऐसे
लेटा रहेगा? कब टूटेगी तेरी नींद? 10 थोड़ी और नींद, थोड़ा और विश्राम,
कुछ देर और हाथ पर हाथ रखे हुए विश्राम, 11 तब देखना निर्धनता कैसे तुझ
पर डाकू के समान टूट पड़ती है और गरीबी, सशस्त्र पुरुष के समान. 12 बुरा
व्यक्ति निकम्मा ही सिद्ध होता है, उसकी बातों में हेरा-फेरी होती है, 13 वह
पलकें झपका कर, अपने पैरों के द्वारा तथा उंगली से इशारे करता है, 14 वह
अपने कपटी हृदय से बुरी युक्तियां सोचता तथा निरंतर ही कलह को उत्पन्न
करता रहता है. 15 परिणामस्वरूप विपत्ति उस पर एकाएक आ पड़ेगी; क्षण मात्र
में उस पर असाध्य रोग का प्रहार हो जाएगा. 16 छः वस्तुएं याहवेह को अप्रिय
हैं, सात से उन्हें घृणा है: 17 घमंड से भरी आंखें, झूठ बोलने वाली जीभ, वे
हाथ, जो निर्दोष की हत्या करते हैं, 18 वह मस्तिष्क, जो बुरी योजनाएं सोचता
रहता है, बुराई के लिए तत्पर पांव, 19 झूठ पर झूठ उगलता हुआ साक्षी तथा
वह व्यक्ति, जो भाइयों के मध्य कलह निर्माण करता है. 20 मेरे पुत्र, अपने पिता
के आदेश पालन करते रहना, अपनी माता की शिक्षा का परित्याग न करना. 21
ये सदैव तुम्हारे हृदय में स्थापित रहें; ये सदैव तुम्हारे गले में लटके रहें. 22 जब
तुम आगे बढ़ोगे, ये तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे; जब तुम विश्राम करोगे, ये तुम्हारे
रक्षक होंगे; और जब तुम जागोगे, तो ये तुमसे बातें करेंगे. 23 आदेश दीपक एवं
शिक्षा प्रकाश है, तथा ताड़ना सहित अनुशासन जीवन का मार्ग हैं, 24 कि बुरी
स्त्री से तुम्हारी रक्षा की जा सके व्यभिचारिणी की मीठी-मीठी बातों से. 25 मन
ही मन उसके सौंदर्य की कामना न करना, उसके जादू से तुम्हें वह अधीन न
करने पाए. 26 वेश्या मात्र एक भोजन के द्वारा मोल ली जा सकती है, किंतु दूसरे
पुरुष की औरत तुम्हारे खुद के जीवन को लूट लेती है. 27 क्या यह संभव है कि
कोई व्यक्ति अपनी छाती पर आग रखे और उसके वस्त्र न जलें? 28 अथवा क्या
कोई जलते कोयलों पर चले और उसके पैर न झुलसें? 29 यही नियति है उस
व्यक्ति की, जो पड़ोसी की पत्नी के साथ यौनाचार करता है; उसके साथ इस रूप
से संबंधित हर एक व्यक्ति का दंड निश्चित है. 30 लोगों की दृष्टि में वह व्यक्ति
घृणास्पद नहीं होता जिसने अतिशय भूख मिटाने के लिए भोजन चुराया है, 31
हां, यदि वह चोरी करते हुए पकड़ा जाता है, तो उसे उसका सात गुणा लौटाना
पड़ता है, इस स्थिति में उसे अपना सब कुछ देना पड़ सकता है. 32 वह, जो
व्यभिचार में लिप्त हो जाता है, निरा मूर्ख है; वह, जो यह सब कर रहा है,
स्वयं का विनाश कर रहा है. 33 घाव और अपमान उसके अंश होंगे, उसकी
नामधराई मिटाई न जा सकेगी. 34 ईर्ष्या किसी भी व्यक्ति को क्रोध में भड़काती
है, प्रतिशोध की स्थिति में उसकी सुरक्षा संभव नहीं. 35 उसे कोई भी क्षतिपूर्ति
स्वीकार्य नहीं होती; कितने भी उपहार उसे लुभा न सकेंगे.

7 मेरे पुत्र, मेरे वचनों का पालन करते रहो और मेरे आदेशों को अपने हृदय
में संचित करके रखना. 2 मेरे आदेशों का पालन करना और जीवित रहना;
मेरी शिक्षाएं वैसे ही सुरक्षित रखना, जैसे अपने नेत्र की पुतली को रखते हो. 3
इन्हें अपनी उंगलियों में पहन लेना; इन्हें अपने हृदय-पटल पर उकेर लेना. 4
ज्ञान से कहो, "तुम मेरी बहन हो," समझ को "अपना रिश्तेदार घोषित करो,"
5 कि ये तुम्हें व्यभिचारिणी स्त्री से सुरक्षित रखें, तुम्हें पर-स्त्री की लुभानेवाली
बातों में फंसने से रोक सकें. 6 मैं खिड़की के पास खड़ा हुआ जाली में से बाहर
देख रहा था. 7 मुझे एक साधारण, सीधा-सादा युवक दिखाई दिया, इस युवक
में समझदारी तो थी ही नहीं, 8 यह युवक उस मार्ग पर जा रहा था, जो इस स्त्री
के घर की ओर जाता था, सड़क की छोर पर उसका घर था. 9 यह संध्याकाल
गोधूली की बेला थी, रात्रि के अंधकार का समय हो रहा था. 10 तब मैंने देखा
कि एक स्त्री उससे मिलने निकल आई, उसकी वेशभूषा वेश्या के समान थी
उसके हृदय से धूर्तता छलक रही थी. 11 (वह अत्यंत भड़कीली और चंचल
थी, वह अपने घर पर तो ठहरती ही न थी; 12 वह कभी सड़क पर दिखती थी
तो कभी नगर चौक में, वह प्रतीक्षा करती हुई किसी भी चौराहे पर देखी जा
सकती थी.) 13 आगे बढ़ के उसने उस युवक को बाहों में लेकर चूम लिया
और बड़ी ही निर्लज्जता से उससे कहने लगी: 14 "मुझे बलि अर्पित करनी ही
थी और आज ही मैंने अपने मन्नत को पूर्ण कर लिया हैं. 15 इसलिये मैं तुमसे
मिलने आ सकी हूं; मैं कितनी उत्कण्ठापूर्वक तुम्हें खोज रही थी, देखो, अब
तुम मुझे मिल गए हो! 16 मैंने उत्कृष्ट चादरों से बिछौना सजाया है इन पर
मिस्र देश की रंगीन कलाकृतियां हैं. 17 मैंने बिछौने को गन्धरस, अगरू और
दालचीनी से सुगंधित किया है. 18 अब देर किस लिए, प्रेम क्रीड़ा के लिए
हमारे पास प्रातःकाल तक समय है; हम परस्पर प्रेम के द्वारा एक दूसरे का
समाधान करेंगे! 19 मेरे पति प्रवास पर हैं; बड़े लंबे समय का है उनका प्रवास.
20 वह अपने साथ बड़ी धनराशि लेकर गए हैं वह तो पूर्णिमा पर ही लौटेंगे."
21 इसी प्रकार के मधुर शब्द के द्वारा उसने अंततः उस युवक को फुसला ही
लिया; उसके मधुर शब्द के समक्ष वह हार गया. 22 तत्क्षण वह उसके साथ
चला गया. यह वैसा ही दृश्य था जैसे वध के लिए ले जाया जा रहा बैल, अथवा
जैसे कोई मूर्ख फंदे में फंस गया हो. 23 तब बाण उसके कलेजे को बेधता हुआ
निकल जाता है, जैसे पक्षी जाल में जा उलझा हो. उसे तो यह बोध ही नहीं
होता, कि यह उसके प्राण लेने के लिए किया जा रहा है. 24 और अब, मेरे पुत्रो,
ध्यान से सुनो; और मेरे मुख से निकले शब्दों के प्रति सावधान रहो. 25 तुम्हारा
हृदय कभी भी ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर न फिरे, उसके आचार-व्यवहार देखकर
बहक न जाना, 26 उसने ऐसे अनेक-अनेक व्यक्तियों को फंसाया है; और बड़ी
संख्या है उसके द्वारा संहार किए गए शक्तिशाली व्यक्तियों की. 27 उसका घर
अधोलोक का द्वार है, जो सीधे मृत्यु के कक्ष में ले जाकर छोड़ता है. **(Sheol
h7585)**

8 क्या ज्ञान आह्वान नहीं करता? क्या समझ उच्च स्वर में नहीं पुकारती?
2 वह गलियों के ऊंचे मार्ग पर, चौराहों पर जाकर खड़ी हो जाती है; 3 वह
नगर प्रवेश द्वार के सामने खड़ी रहती है, उसके द्वार के सामने खड़ी होकर वह
उच्च स्वर में पुकारती रहती है: 4 "मनुष्यो, मैं तुम्हें संबोधित कर रही हूं; मेरी
पुकार मनुष्यों की सन्तति के लिए है. 5 साधारण सरल व्यक्तियो, चतुराई सीख
लो; अज्ञानियो, बुद्धिमत्ता सीख लो. 6 क्योंकि मैं तुम पर उत्कृष्ट बातें प्रकट
करूंगी; मेरे मुख से वही सब निकलेगा जो सुसंगत ही है, 7 क्योंकि मेरे मुख से
मात्र सत्य ही निकलेगा, मेरे होंठों के लिए दुष्टता घृणास्पद है. 8 मेरे मुख से
निकला हर एक शब्द धर्ममय ही होता है; उनमें न तो छल-कपट होता है, न ही
कोई उलट फेर का विषय. 9 जिस किसी ने इनका मूल्य पहचान लिया है,
उनके लिए ये उपयुक्त हैं, और जिन्हें ज्ञान की उपलब्धि हो चुकी है, उनके लिए
ये उत्तम हैं. 10 चांदी के स्थान पर मेरी शिक्षा को संग्रहीत करो, वैसे ही उत्कृष्ट
स्वर्ण के स्थान पर ज्ञान को, 11 क्योंकि ज्ञान रत्नों से अधिक कीमती है, और
तुम्हारे द्वारा अभिलाषित किसी भी वस्तु से इसकी तुलना नहीं की जा सकती.
12 "मैं ज्ञान हूं और व्यवहार कुशलता के साथ मेरा सह अस्तित्व है, मेरे पास
ज्ञान और विवेक है. 13 पाप से घृणा ही याहवेह के प्रति श्रद्धा है; मुझे घृणा है
अहंकार, गर्वोक्ति, बुराई तथा छलपूर्ण बातों से. 14 मुझमें ही परामर्श है, सद्बुद्धि
है; मुझमें समझ है, मुझमें शक्ति निहित है. 15 मेरे द्वारा राजा शासन करते हैं, मेरे
ही द्वारा वे न्याय संगत निर्णय लेते हैं. 16 मेरे द्वारा ही शासक शासन करते हैं,
और समस्त न्यायाध्यक्ष मेरे द्वारा ही न्याय करते हैं. 17 जिन्हें मुझसे प्रेम है, वे

सभी मुझे भी प्रिय हैं, जो मुझे खोजते हैं, मुझे प्राप्त भी कर लेते हैं. 18 मेरे साथ ही संलग्न हैं समृद्धि और सम्मान इनके साथ ही चिरस्थायी निधि तथा धार्मिकता. 19 मेरा फल स्वर्ण से, हां, उत्कृष्ट स्वर्ण से उत्तम; तथा जो कुछ मुझसे निकलता है, वह चांदी से उत्कृष्ट है. 20 धार्मिकता मेरा मार्ग है, जिस पर मैं चालचलन करता हूं, न्यायशीलता ही मेरा मार्ग है, 21 परिणामस्वरूप, जिन्हें मुझसे प्रेम है, उन्हें धन प्राप्त हो जाता है और उनके भण्डारगृह परिपूर्ण भरे रहते हैं. 22 “जब याहवेह ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की, इसके पूर्व कि वह किसी वस्तु की सृष्टि करते, मैं उनके साथ था; 23 युगों पूर्व ही, सर्वप्रथम, पृथ्वी के अस्तित्व में आने के पूर्व ही मैं अस्तित्व में था. 24 महासागरों के अस्तित्व में आने के पूर्व, जब सोते ही न थे, मुझे जन्म दिया गया. 25 इसके पूर्व कि पर्वतों को आकार दिया गया, और पहाड़ियां अस्तित्व में आयीं, मैं अस्तित्व में था; 26 इसके पूर्व कि परमेश्वर ने पृथ्वी तथा पृथ्वी की सतह पर मैदानों की रचना की, अथवा भूमि पर सर्वप्रथम धूल देखी गई. 27 जब परमेश्वर ने आकाशमंडल की स्थापना की, मैं अस्तित्व में था, जब उन्होंने महासागर पर क्षितिज रेखा का निर्माण किया, 28 जब उन्होंने आकाश को हमारे ऊपर सुदृढ़ कर दिया, जब उन्होंने महासागर के सोते प्रतिष्ठित किए, 29 जब उन्होंने महासागर की सीमाएं बांध दी, कि जल उनके आदेश का उल्लंघन न कर सके, जब उन्होंने पृथ्वी की नींव रेखांकित की. 30 उस समय मैं उनके साथ साथ कार्यरत था. एक प्रधान कारीगर के समान प्रतिदिन मैं ही उनके हर्ष का कारण था, सदैव मैं उनके समक्ष आनंदित होता रहता था, 31 उनके द्वारा बसाए संसार में तथा इसके मनुष्यों में मेरा आनंद था. 32 “मेरे पुत्रो, ध्यान से सुनो; मेरे निर्देश सुनकर बुद्धिमान हो जाओ. 33 इनका परित्याग कभी न करना; धन्य होते हैं वे, जो मेरी नीतियों पर चलते हैं. 34 धन्य होता है वह व्यक्ति, जो इन शिक्षाओं के समक्ष ठहरा रहता है, जिसे द्वार पर मेरी प्रतीक्षा रहती है. 35 जिसने मुझे प्राप्त कर लिया, उसने जीवन प्राप्त कर लिया, उसने याहवेह की कृपादृष्टि प्राप्त कर ली. 36 किंतु वह, जो मुझे पाने में असफल होता है, वह स्वयं का नुकसान कर लेता है; वे सभी, जो मुझसे घृणा करते हैं, वे मृत्यु का आलिंगन करते हैं.”

9 ज्ञान ने एक घर का निर्माण किया है; उसने काटकर अपने लिए सात स्तंभ भी गढ़े हैं. 2 उसने उत्कृष्ट भोजन तैयार किए हैं तथा उत्तम द्राक्षारस भी परोसा है; उसने अतिथियों के लिए सभी भोज तैयार कर रखा है. 3 आमंत्रण के लिए उसने अपनी सहेलियां भेज दी हैं कि वे नगर के सर्वोच्च स्थलों से आमंत्रण की घोषणा करें, 4 “जो कोई सरल-साधारण है, यहां आ जाए!” जिस किसी में सरल ज्ञान का अभाव है, उसे वह कहता है, 5 “आ जाओ, मेरे भोज में सम्मिलित हो जाओ. उस द्राक्षारस का भी सेवन करो, जो मैंने परोसा है. 6 अपना भोला चालचलन छोड़कर; समझ का मार्ग अपना लो और जीवन में प्रवेश करो.” 7 यदि कोई ठट्ठा करनेवाले की भूल सुधारता है, उसे अपशब्द ही सुनने पड़ते हैं; यदि कोई किसी दुष्ट को डांटता है, अपने ही ऊपर अपशब्द ले आता है. 8 तब ठट्ठा करनेवाले को मत डांटो, अन्यथा तुम उसकी घृणा के पात्र हो जाओगे; तुम ज्ञानवान को डांटो, तुम उसके प्रेम पात्र ही बनोगे. 9 शिक्षा ज्ञानवान को दो. इससे वह और भी अधिक ज्ञानवान हो जाएगा; शिक्षा किसी सज्जन को दो, इससे वह अपने ज्ञान में बढ़ते जाएगा. 10 याहवेह के प्रति श्रद्धा-भय से ज्ञान का तथा महा पवित्र के सैद्धान्तिक ज्ञान से समझ का उद्भव होता है. 11 तुम मेरे द्वारा ही आयुष्मान होगे तथा तुम्हारी आयु के वर्ष बढ़ाए जाएंगे. 12 यदि तुम बुद्धिमान हो, तो तुम्हारा ज्ञान तुमको प्रतिफल देगा; यदि तुम ज्ञान के ठट्ठा करनेवाले हो तो इसके परिणाम मात्र तुम भोगोगे. 13 श्रीमती मूर्खता उच्च स्वर में बक-बक करती है; वह भोली है, अज्ञानी है. 14 उसके घर के द्वार पर ही अपना आसन लगाया है, जब वह नगर में होती है तब वह अपने लिए सर्वोच्च आसन चुन लेती है, 15 वह उनको आह्वान करती है, जो वहां से निकलते हैं, जो अपने मार्ग की ओर अग्रगामी हैं, 16 “जो कोई सीधा-सादा है, वह यहां आ जाए!” और निबुद्धियों से वह कहती है, 17 “मीठा लगता है चोरी किया हुआ जल; स्वादिष्ट लगता है वह भोजन, जो छिपा-छिपा कर खाया जाता है!” 18 भला उसे क्या मालूम कि वह मृतकों का स्थान है, कि उसके अतिथि अधोलोक में पहुंचे हैं. **(Sheol h7585)**

10 शलोमोन के ज्ञान सूत्र निम्न लिखित हैं: बुद्धिमान संतान पिता के आनंद का विषय होती है, किंतु मूर्ख संतान माता के शोक का कारण. 2 बुराई द्वारा प्राप्त किया धन लाभ में वृद्धि नहीं करता, धार्मिकता मृत्यु से सुरक्षित रखती है. 3 याहवेह धर्मी व्यक्ति को भूखा रहने के लिए छोड़ नहीं देते, किंतु वह दुष्ट की लालसा पर अवश्य पानी फेर देते हैं. 4 निर्धनता का कारण होता है आलस्य, किंतु परिश्रमी का प्रयास ही उसे समृद्ध बना देता है. 5 बुद्धिमान है वह पुत्र, जो ग्रीष्मकाल में ही आहार संचित कर रखता है, किंतु वह जो फसल के दौरान सोता है वह एक अपमानजनक पुत्र है. 6 धर्मी आशीषें प्राप्त करते जाते हैं, किंतु दुष्ट में हिंसा ही समाई रहती है. 7 धर्मी का जीवन ही आशीर्वाद-स्वरूप स्मरण किया जाता है, किंतु दुष्ट का नाम ही मिट जाता है. 8 बुद्धिमान आदेशों को हृदय से स्वीकार करेगा, किंतु बकवादी मूर्ख विनष्ट होता जाएगा. 9 जिस किसी का चालचलन सच्चाई का है, वह सुरक्षित है, किंतु वह, जो कुटिल मार्ग अपनाता है, पकड़ा जाता है. 10 जो कोई आंख मारता है, वह समस्या उत्पन्न कर देता है, किंतु बकवादी मूर्ख विनष्ट हो जाएगा. 11 धर्मी के मुख से निकले वचन जीवन का सोता हैं, किंतु दुष्ट अपने मुख में हिंसा छिपाए रहता है. 12 घृणा कलह की जननी है, किंतु प्रेम सभी अपराधों पर आवरण डाल देता है. 13 समझदार व्यक्ति के होंठों पर ज्ञान का वास होता है, किंतु अज्ञानी के लिए दंड ही निर्धारित है. 14 बुद्धिमान ज्ञान का संचयन करते हैं, किंतु मूर्ख की बातें विनाश आमंत्रित करती है. 15 धनी व्यक्ति के लिए उसका धन एक गढ़ के समान होता है, किंतु निर्धन की गरीबी उसे ले डूबती है. 16 धर्मी का ज्ञान उसे जीवन प्रदान करता है, किंतु दुष्ट की उपलब्धि होता है पाप. 17 जो कोई सावधानीपूर्वक शिक्षा का चालचलन करता है, वह जीवन मार्ग पर चल रहा होता है, किंतु जो ताड़ना की अवमानना करता है, अन्यों को भटका देता है. 18 वह, जो घृणा को छिपाए रहता है, झूठा होता है और वह व्यक्ति मूर्ख प्रमाणित होता है, जो निंदा करता फिरता है. 19 जहां अधिक बातें होती हैं, वहां अपराध दूर नहीं रहता, किंतु जो अपने मुख पर नियंत्रण रखता है, वह बुद्धिमान है. 20 धर्मी की वाणी उत्कृष्ट चांदी तुल्य है; दुष्ट के विचारों का कोई मूल्य नहीं होता. 21 धर्मी के उद्गार अनेकों को तृप्त कर देते हैं, किंतु बोध के अभाव में ही मूर्ख मृत्यु का कारण हो जाते हैं. 22 याहवेह की कृपादृष्टि समृद्धि का मर्म है. वह इस कृपादृष्टि में दुःख को नहीं मिलाता. 23 जैसे अनुचित कार्य करना मूर्ख के लिए हंसी का विषय है, वैसे ही बुद्धिमान के समक्ष विद्वत्ता आनंद का विषय है. 24 जो आशंका दुष्ट के लिए भयास्पद होती है, वही उस पर घटित हो जाती है; किंतु धर्मी की मनोकामना पूर्ण होकर रहती है. 25 बवंडर के निकल जाने पर दुष्ट शेष नहीं रह जाता, किंतु धर्मी चिरस्थायी बना रहता है. 26 आलसी संदेशवाहक अपने प्रेषक पर वैसा ही प्रभाव छोड़ता है, जैसा सिरका दांतों पर और धुआं नेत्रों पर. 27 याहवेह के प्रति श्रद्धा से आयु बढ़ती जाती है, किंतु थोड़े होते हैं दुष्ट के आयु के वर्ष. 28 धर्मी की आशा में आनंद का उद्घाटन होता है, किंतु दुर्जन की आशा निराशा में बदल जाती है. 29 निर्दोष के लिए याहवेह का विधान एक सुरक्षित आश्रय है, किंतु बुराइयों के निमित्त सर्वनाश. 30 धर्मी सदैव अटल और स्थिर बने रहते हैं, किंतु दुष्ट पृथ्वी पर निवास न कर सकेंगे. 31 धर्मी अपने बोलने में ज्ञान का संचार करते हैं, किंतु कुटिल की जीभ काट दी जाएगी. 32 धर्मी में यह सहज बोध रहता है, कि उसका कौन सा उद्गार स्वीकार्य होगा, किंतु दुष्ट के शब्द कुटिल विषय ही बोलते हैं.

11 अशुद्ध माप याहवेह के लिए घृणास्पद है, किंतु शुद्ध तोल माप उनके लिए
आनंद है. 2 जब कभी अभिमान सिर उठाता है, लज्जा उसके पीछे-पीछे
चली आती है, किंतु विनम्रता ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है. 3 ईमानदार की
सत्यनिष्ठा उनका मार्गदर्शन करती है, किंतु विश्वासघाती व्यक्ति की कुटिलता
उसके विनाश का कारक होती है. 4 प्रकोप के दिन में धन-संपत्ति निरर्थक सिद्ध
होती है, मात्र धार्मिकता मृत्यु से सुरक्षा प्रदान करती है. 5 निर्दोष की धार्मिकता
ही उसके मार्ग को सीधा बना देती है, किंतु दुष्ट अपनी ही दुष्टता के कारण नाश
में जा पड़ता है. 6 ईमानदार की धार्मिकता ही उसकी सुरक्षा है, किंतु कृतघ्न
व्यक्ति अपनी वासना के जाल में उलझ जाते हैं. 7 जब दुष्ट की मृत्यु होती है,
उसकी आशा भी बुझ जाती है, और बलवान की आशा शून्य रह जाती है.
8 धर्मी विपत्ति से बचता हुआ आगे बढ़ता जाता है, किंतु दुष्ट उसी में फंस
जाता है. 9 अभक्त लोग मात्र अपने शब्दों के द्वारा अपने पड़ोसी का नाश कर
देता है, किंतु धर्मी का छुटकारा ज्ञान में होता है. 10 धर्मी की सफलता में
संपूर्ण नगर आनंदित होता है, और जब दुर्जन नष्ट होते हैं, जयघोष गूंज उठते हैं.
11 ईमानदार के आशीर्वाद से नगर की प्रतिष्ठा बढ़ जाती है, किंतु दुर्जन का
वक्तव्य ही उसे ध्वस्त कर देता है. 12 निर्बुद्धि व्यक्ति ही अपने पड़ोसी को तुच्छ
समझता है, किंतु समझदार व्यक्ति चुपचाप बना रहता है. 13 निंदक के लिए
गोपनीयता बनाए रखना संभव नहीं होता, किंतु विश्वासपात्र रहस्य छुपाए रखता
है. 14 मार्गदर्शन के अभाव में राष्ट्र का पतन हो जाता है, किंतु अनेक सलाह
देनेवाले मंत्रियों के होने पर राष्ट्र सुरक्षित हो जाता है. 15 यह सुनिश्चित ही है कि
यदि किसी ने किसी अपरिचित की ज़मानत ले ली है, उसकी हानि अवश्य
होगी, किंतु वह, जो ऐसी शपथ करने की भूल नहीं करता, सुरक्षित रहता है.
16 कृपावान स्त्री का ज्ञान है सम्मान, किंतु क्रूर व्यक्ति के हाथ मात्र धन ही लगता
है. 17 कृपा करने के द्वारा मनुष्य अपना ही हित करता है, किंतु क्रूर व्यक्ति
स्वयं का नुकसान कर लेता है. 18 दुर्जन का वेतन वस्तुतः छल ही होता है, किंतु
जो धर्म का बीज रोपण करता है, उसे निश्चयतः सार्थक प्रतिफल प्राप्त होता है.
19 वह, जो धर्म में दृढ़ रहता है, जीवित रहता है, किंतु जो बुराई का चालचलन
करता है, वह जीवित न रहेगा. 20 याहवेह की दृष्टि में कुटिल हृदय घृणास्पद है,
किंतु उनके निमित्त निर्दोष व्यक्ति प्रसन्न है. 21 यह सुनिश्चित है कि दुष्ट दंडित
अवश्य किया जाएगा, किंतु धर्मी की सन्तति सुरक्षित रहेगी. 22 विवेकहीन
सुंदर स्त्री वैसी ही होती है जैसी सूअर के थूथन में सोने की नथ. 23 धर्मी की
आकांक्षा का परिणाम उत्तम ही होता है, किंतु दुष्ट की आशा कोप ले आती है.
24 कोई तो उदारतापूर्वक दान करते है, फिर भी अधिकाधिक धनाढ्य होता जाता
है; किंतु अन्य है जो उसे दबाकर रखता है, और फिर भी वह तंगी में ही रहता
है. 25 जो कोई उदारता से देता है, वह सम्पन्न होता जाएगा; और वह, जो
अन्यों को सांत्वना देता है, वह सांत्वना पायेगा! 26 उसे, जो अनाज को दबाए
रखता है, लोग शाप देते हैं, किंतु उसे, जो अनाज जनता को बेचता जाता है,
लोग आशीर्वाद देते हैं. 27 जो कोई भलाई की खोज करता है, वह प्रसन्नता
प्राप्त करता है, किंतु वह, जो बुराई को ढूंढता है, वह उसी को मिल जाती है.
28 धर्मी नई पत्तियों के समान पल्लवित होंगे, किंतु उसका पतन निश्चित
है, जिसने अपनी धन-संपत्ति पर आशा रखी है. 29 जो कोई अपने परिवार
की विपत्ति का कारण होता है, वह केवल हवा का वारिस होगा, मूर्ख को
कुशाग्रबुद्धि के व्यक्ति के अधीन ही सेवा करनी पड़ती है. 30 धर्मी का प्रतिफल
है जीवन वृक्ष और ज्ञानवान है वह, जो आत्माओं का विजेता है. 31 यदि पार्थिव
जीवन में ही धर्मी को उसके सत्कर्मों का प्रतिफल प्राप्त हो जाता है, तो दुष्टों
और पापियों को क्यों नहीं!

12 अनुशासन प्रिय व्यक्ति को बुद्धिमता से प्रेम है, किंतु मूर्ख होता है वह,
जिसे अप्रिय होती है सुधारना. 2 धर्मी व्यक्ति को याहवेह की कृपादृष्टि
प्राप्त हो जाती है, किंतु जो दुष्कर्म की युक्ति करता रहता है, उसके लिए
याहवेह का दंड नियत है. 3 किसी को स्थिर करने में दुष्टता कोई भी योग नहीं
देती, किंतु धर्मी के मूल को कभी उखाड़ा नहीं जा सकता. 4 अच्छे चाल-
चलनवाली पत्नी अपने पति का शिरोमणि होती है, किंतु वह पत्नी, जो पति के
लिए लज्जा का विषय है, मानो पति की अस्थियों में लगा रोग है. 5 धर्मी की
धारणाएं न्याय संगत होती हैं, किंतु दुष्ट व्यक्ति के परामर्श छल-कपट पूर्ण होते हैं.
6 दुष्ट व्यक्ति के शब्द ही रक्तपात के लिए उच्चारे जाते हैं. किंतु सज्जन व्यक्ति
की बातें लोगों को छुड़ाने वाली होती हैं. 7 बुराइयां उखाड़ फेंकी जाती हैं और
उनकी स्मृति भी शेष नहीं रहती, किंतु धार्मिक का परिवार स्थिर खड़ा रहता है.
8 बुद्धिमान की बुद्धि उसे प्रशंसा प्रदान करती है, किंतु कुटिल मनोवृत्ति के व्यक्ति
को घृणित समझा जाता है. 9 सामान्य व्यक्ति होकर भी सेवक रखने की क्षमता
जिसे है, वह उस व्यक्ति से श्रेष्ठतर है, जो बड़प्पन तो दिखाता है, किंतु खाने की
रोटी का भी अभाव में है. 10 धर्मी अपने पालतू पशु के जीवन का भी ध्यान
रखता है, किंतु दुर्जन द्वारा प्रदर्शित दया भी निर्दयता ही होती है. 11 जो किसान
अपनी भूमि की जुताई-गुड़ाई करता रहता है, उसे भोजन का अभाव नहीं होता,
किंतु जो व्यर्थ कार्यों में समय नष्ट करता है, निर्बुद्धि प्रमाणित होता है. 12 दुष्ट
बुराइयों द्वारा लूटी गई संपत्ति की लालसा करता है, किंतु धर्मी की जड़ फलवंत
होती है. 13 बुरा व्यक्ति अपने ही मुख की बातों से फंस जाता है, किंतु धर्मी
संकट से बच निकलता है. 14 समझदार शब्द कई लाभ लाते हैं, और कड़ी
मेहनत प्रतिफल लाती है. 15 मूर्ख की दृष्टि में उसकी अपनी कार्यशैली योग्य
लगती है, किंतु ज्ञानवान परामर्श की विवेचना करता है. 16 मूर्ख अपना क्रोध
शीघ्र ही प्रकट करता है, किंतु व्यवहार कुशल व्यक्ति अपमान को अनदेखा
करता है. 17 सत्यवादी की साक्ष्य सत्य ही होती है, किंतु झूठा छलयुक्त साक्ष्य
देता है. 18 असावधानी में कहा गया शब्द तलवार समान बेध जाता है, किंतु
बुद्धिमान के शब्द चंगाई करने में सिद्ध होते हैं. 19 सच्चाई के वचन चिरस्थायी
सिद्ध होते हैं, किंतु झूठ बोलने वाली जीभ पल भर की होती है! 20 बुराई की
युक्ति करनेवाले के हृदय में छल होता है, किंतु जो मेल स्थापना का प्रयास करते
हैं, हर्षित बने रहते हैं. 21 धर्मी पर हानि का प्रभाव ही नहीं होता, किंतु दुर्जन
सदैव संकट का सामना करते रहते हैं. 22 झूठ बोलनेवाले ओंठ याहवेह के
समक्ष घृणास्पद हैं, किंतु उनकी प्रसन्नता खराई में बनी रहती है. 23 चतुर
व्यक्ति ज्ञान को प्रगट नहीं करता, किंतु मूर्ख के हृदय मूर्खता का प्रसार करता है.
24 सावधान और परिश्रमी व्यक्ति शासक के पद तक उन्नत होता है, किंतु
आलसी व्यक्ति को गुलाम बनना पड़ता है. 25 चिंता का बोझ किसी भी व्यक्ति
को दबा छोड़ता है, किंतु सांत्वना का मात्र एक शब्द उसमें आनंद को भर देता
है. 26 धर्मी अपने पड़ोसी के लिए मार्गदर्शक हो जाता है, किंतु बुरे व्यक्ति का
चालचलन उसे भटका देता है. 27 आलसी के पास पकाने के लिए अन्न ही
नहीं रह जाता, किंतु परिश्रमी व्यक्ति के पास भरपूर संपत्ति जमा हो जाती है.
28 धर्म का मार्ग ही जीवन है; और उसके मार्ग पर अमरत्व है.

13 समझदार संतान अपने पिता की शिक्षा का पालन करती है, किंतु ठट्ठा
करनेवाले के लिए फटकार भी प्रभावहीन होती है. 2 मनुष्य अपनी
बातों का ही प्रतिफल प्राप्त करता है, किंतु हिंसा ही विश्वासघाती का लक्ष्य
होता है. 3 जो कोई अपने मुख पर नियंत्रण रखता है, वह अपने जीवन को
सुरक्षित रखता है, किंतु वह, जो बिना विचारे बक-बक करता रहता है, अपना
ही विनाश आमंत्रित कर लेता है. 4 आलसी मात्र लालसा ही करता रह जाता है.
किंतु उसे प्राप्त कुछ भी नहीं होता, जबकि परिश्रमी की इच्छा पूर्ण हो जाती है.
5 धर्मी के लिए झूठ घृणित है, किंतु दुष्ट दुर्गंध तथा घृणा ही समेटता है. 6
जिसका चालचलन निर्दोष होता है, धार्मिकता उसकी सुरक्षा बन जाती है, किंतु
पाप दुर्जन के समूल विनाश का कारण होता है. 7 कोई तो धनाढ्य होने का

प्रदर्शन करता है, किंतु वस्तुतः वह निर्धन होता है; अन्य ऐसा है, जो प्रदर्शित करता है कि वह निर्धन है, किंतु वस्तुतः वह है अत्यंत सम्पन्न! **8** धन किसी व्यक्ति के लिए छुटकारा हो सकता है, किंतु निर्धन पर यह स्थिति नहीं आती. **9** धर्मी आनन्दायी प्रखर ज्योति समान हैं, जबकि दुष्ट बुझे हुए दीपक समान. **10** अहंकार और कुछ नहीं, कलह को ही जन्म देता है, किंतु वे, जो परामर्श का चालचलन करते हैं, बुद्धिमान प्रमाणित होते हैं. **11** बेईमानी का धन शीघ्र ही समाप्त भी हो जाता है, किंतु परिश्रम से प्राप्त किया धन बढ़ता जाता है. **12** आशा की वस्तु उपलब्ध न होने पर हृदय खिन्न हो जाता है, किंतु अभिलाषा की पूर्ति जीवन वृक्ष प्रमाणित होती है. **13** वह, जो शिक्षा को तुच्छ दृष्टि से देखता है, स्वयं अपना विनाश आमंत्रित करता है, किंतु वह, जो आदेश का सम्मान करता है, उत्कृष्ट प्रतिफल प्राप्त करता है. **14** बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है, कि इससे मृत्यु के फन्दों से बचा जा सके. **15** सौहार्दपूर्ण संबंध सहज सुबुद्धि द्वारा स्थापित किए जाते हैं, किंतु विश्वासघाती की नीति उसी के विनाश का कारक होती है. **16** चतुर व्यक्ति के हर एक कार्य में ज्ञान झलकता है, किंतु मूर्ख अपनी मूर्खता ही उछालता रहता है. **17** कुटिल संदेशवाहक विपत्ति में जा पड़ता है, किंतु विश्वासयोग्य संदेशवाहक मेल-मिलाप करवा देता है. **18** निर्धनता और लज्जा, उसी के हाथ लगती हैं, जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, किंतु सम्मानित वह होता है, जो ताड़ना स्वीकार करता है. **19** अभिलाषा की पूर्ति प्राणों में मधुरता का संचार करती है, किंतु बुराई का परित्याग मूर्ख को अप्रिय लगता है. **20** वह, जो ज्ञानवान की संगति में रहता है, ज्ञानवान हो जाता है, किंतु मूर्खों के साथियों को हानि का सामना करना होगा. **21** विपत्ति पापियों के पीछे लगी रहती है, किंतु धर्मी का प्रतिफल होता है कल्याण. **22** सज्जन संतान की संतान के लिए धन छोड़ जाता है, किंतु पापियों की निधि धर्मी को प्राप्त होती है. **23** यह संभव है कि साधारण किसान की भूमि उत्तम उपज लाए, किंतु अन्यायी उसे हड़प लेता है. **24** जो पिता अपने पुत्र को दंड नहीं देता, उसे अपने पुत्र से प्रेम नहीं है, किंतु जिसे अपने पुत्र से प्रेम है, वह बड़ी सावधानीपूर्वक उसे अनुशासन में रखता है. **25** धर्मी को उसकी भूख मिटाने के लिए पर्याप्त भोजन रहता है, किंतु दुष्ट सदैव अतृप्त ही बने रहते हैं.

14 बुद्धिमान स्त्री एक सशक्त परिवार का निर्माण करती है, किंतु मूर्ख अपने ही हाथों से उसे नष्ट कर देती है. **2** जिस किसी के जीवन में याहवेह के प्रति श्रद्धा है, उसके जीवन में सच्चाई है; परंतु वह जो प्रभु को तुच्छ समझता है, उसका आचरण छल से भरा हुआ है! **3** मूर्ख के मुख से निकले शब्द ही उसके दंड के कारक बन जाते हैं, किंतु बुद्धिमानों के होंठों से निकले शब्द उनकी रक्षा करते हैं. **4** जहां बैल ही नहीं हैं, वहां गौशाला स्वच्छ रहती है, किंतु बैलों की शक्ति से ही धन की भरपूरी निहित है. **5** विश्वासयोग्य साक्षी छल नहीं करता, किंतु झूठे साक्षी के मुख से झूठ ही झूठ बाहर आता है. **6** छिछोरा व्यक्ति ज्ञान की खोज कर सकता है, किंतु उसे प्राप्त नहीं कर पाता, हां, जिसमें समझ होती है, उसे ज्ञान की उपलब्धि सरलतापूर्वक हो जाती है. **7** मूर्ख की संगति से दूर ही रहना, अन्यथा ज्ञान की बात तुम्हारी समझ से परे ही रहेगी. **8** विवेकी की बुद्धिमता इसी में होती है, कि वह उपयुक्त मार्ग की विवेचना कर लेता है, किंतु मूर्खों की मूर्खता धोखा है. **9** दोष बलि मूर्खों के लिए ठट्टा का विषय होता है, किंतु खरे के मध्य होता है अनुग्रह. **10** मनुष्य को स्वयं अपने मन की पीडा का बोध रहता है और अज्ञात व्यक्ति हृदय के आनंद में सम्मिलित नहीं होता. **11** दुष्ट के घर-परिवार का नष्ट होना निश्चित है, किंतु धर्मी का डेरा भरा-पूरा रहता है. **12** एक ऐसा भी मार्ग है, जो उपयुक्त जान पड़ता है, किंतु इसका अंत है मृत्यु-द्वार. **13** हंसता हुआ व्यक्ति भी अपने हृदय में वेदना छुपाए रख सकता है, और हर्ष के बाद शोक भी हो सकता है. **14** विश्वासहीन व्यक्ति अपनी ही नीतियों का परिणाम भोगेगा, किंतु धर्मी अपनी नीतियों का. **15** मूर्ख जो कुछ सुनता है उस पर विश्वास करता जाता है, किंतु विवेकी व्यक्ति सोच-विचार कर पैर उठाता है. **16** बुद्धिमान व्यक्ति वह है, जो याहवेह का भय मानता, और बुरी जीवनशैली से दूर ही दूर रहता है; किंतु निर्बुद्धि अहंकारी और असावधान होता है. **17** वह, जो शीघ्र क्रोधी हो जाता है, मूर्ख है, तथा वह जो बुराई की युक्ति करता है, घृणा का पात्र होता है. **18** निर्बुद्धियों को प्रतिफल में मूर्खता ही प्राप्त होती है, किंतु बुद्धिमान मुकुट से सुशोभित किए जाते हैं. **19** अंततः बुराई को भलाई के समक्ष झुकना ही पड़ता है, तथा दुष्टों को भले लोगों के द्वार के समक्ष. **20** पड़ोसियों के लिए भी निर्धन घृणा का पात्र हो जाता है, किंतु अनेक हैं, जो धनाढ्य के मित्र हो जाते हैं. **21** वह, जो अपने पड़ोसी से घृणा करता है, पाप करता है, किंतु वह धन्य होता है, जो निर्धनों के प्रति उदार एवं कृपालु होता है. **22** क्या वे मार्ग से भटक नहीं गये, जिनकी अभिलाषा ही दुष्कर्म की होती है? वे, जो भलाई का यत्न करते रहते हैं. उन्हें सच्चाई तथा निर्जर प्रेम प्राप्त होता है. **23** श्रम किसी भी प्रकार का हो, लाभांश अवश्य प्राप्त होता है, किंतु मात्र बातें करते रहने का परिणाम होता है गरीबी. **24** बुद्धिमान समृद्धि से सुशोभित होते हैं, किंतु मूर्खों की मूर्खता और अधिक गरीबी उत्पन्न करती है. **25** सच्चा साक्षी अनेकों के जीवन को सुरक्षित रखता है, किंतु झूठा गवाह धोखेबाज है. **26** जिसके हृदय में याहवेह के प्रति श्रद्धा होती है, उसे दृढ गढ़ प्राप्त हो जाता है, उसकी संतान सदैव सुरक्षित रहेगी. **27** याहवेह के प्रति श्रद्धा ही जीवन का सोता है, उससे मानव मृत्यु के द्वारा बिछाए गए जाल से बचता जाएगा. **28** प्रजा की विशाल जनसंख्या राजा के लिए गौरव का विषय होती है, किंतु प्रजा के अभाव में प्रशासक नगण्य रह जाता है. **29** वह बुद्धिमान ही होता है, जिसका अपने क्रोधावेग पर नियंत्रण होता है, किंतु जिसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है, वह मूर्खता की वृद्धि करता है. **30** शांत हृदय देह के लिए संजीवनी सिद्ध होता है, किंतु ईर्ष्या अस्थियों में लगे घुन-समान है. **31** वह, जो निर्धन को उत्पीड़ित करता है, उसके सृजनहार को अपमानित करता है, किंतु वह, जो निर्धन के प्रति उदारता प्रदर्शित करता है, उसके सृजनहार को सम्मानित करता है. **32** दुष्ट के विनाश का कारण उसी के कुकृत्य होते हैं, किंतु धर्मी अपनी मृत्यु के अवसर पर निराश्रित नहीं छूट जाता. **33** बुद्धिमान व्यक्ति के हृदय में ज्ञान का निवास होता है, किंतु मूर्खों के हृदय में ज्ञान गुनहगार अवस्था में रख दिया जाता है. **34** धार्मिकता ही राष्ट्र को उन्नत बनाती है, किंतु किसी भी समाज के लिए पाप निंदनीय ही होता है. **35** चतुर सेवक राजा का प्रिय पात्र होता है, किंतु वह सेवक, जो लज्जास्पद काम करता है, राजा का कोप को भड़काता है.

15 मृदु प्रत्युत्तर कोप शांत कर देता है, किंतु कठोर प्रतिक्रिया से क्रोध भड़कता है. **2** बुद्धिमान के मुख से ज्ञान निकलता है, किंतु मूर्ख का मुख मूर्खता ही उगलता है. **3** याहवेह की दृष्टि सब स्थान पर बनी रहती है, उनके नेत्र उचित-अनुचित दोनों पर निगरानी रखते हैं. **4** सांत्वना देनेवाली बातें जीवनदायी वृक्ष है, किंतु कुटिलतापूर्ण वार्तालाप उत्साह को दुःखित कर देता है. **5** मूर्ख पुत्र की दृष्टि में पिता के निर्देश तिरस्कारीय होते हैं, किंतु विवेकशील होता है वह पुत्र, जो पिता की डांट पर ध्यान देता है. **6** धर्मी के घर में अनेक-अनेक बहुमूल्य वस्तुएं पाई जाती हैं, किंतु दुष्ट की आय ही उसके संकट का कारण बन जाती है. **7** बुद्धिमान के होंठों से ज्ञान का प्रसरण होता है, किंतु मूर्ख के हृदय से ऐसा कुछ नहीं होता. **8** दुष्ट द्वारा अर्पित की गई बलि याहवेह के लिए घृणास्पद है, किंतु धर्मी द्वारा की गई प्रार्थना उन्हें स्वीकार्य है. **9** याहवेह के समक्ष बुराई का चालचलन घृणास्पद होता है, किंतु जो धर्मी का निर्वाह करता है वह उनका प्रिय पात्र हो जाता है. **10** उसके लिए घातक दंड निर्धारित है, जो सन्मार्ग का परित्याग कर देता है और वह; जो डांट से घृणा करता है, मृत्यु आमंत्रित करता है. **11** जब मृत्यु और विनाश याहवेह के समक्ष खुली पुस्तक-समान हैं, तो मनुष्य के हृदय कितने अधिक स्पष्ट न होंगे! **(Sheol h7585)** **12** हंसी मजाक

करनेवाले को डांट पसंद नहीं है, इसलिए वे ज्ञानी से दूर रखते हैं. 13 प्रसन्न
हृदय मुखमंडल को भी आकर्षक बना देता है, किंतु दुःखित हृदय आत्मा तक
को निराश कर देता है. 14 विवेकशील हृदय ज्ञान की खोज करता रहता है,
किंतु मूर्खों का वार्तालाप उत्तरोत्तर मूर्खता विकसित करता है. 15 गरीबी-पीड़ित
के सभी दिन क्लेशपूर्ण होते हैं, किंतु उल्लसित हृदय के कारण प्रतिदिन उत्सव
सा आनंद रहता है. 16 याहवेह के प्रति श्रद्धा में सीमित धन हीं उत्तम होता है,
इसकी अपेक्षा कि अपार संपदा के साथ विपत्तियां भी संलग्न हों. 17 प्रेमपूर्ण
वातावरण में मात्र सादा साग का भोजन ही उपयुक्त होता है, इसकी अपेक्षा कि
अनेक व्यंजनों का आमिष भोज घृणा के साथ परोसा जाए. 18 क्रोधी स्वभाव
का व्यक्ति कलह उत्पन्न करता है, किंतु क्रोध में विलंबी व्यक्ति कलह को शांत
कर देता है. 19 मूर्खों की जीवनशैली कंटीली झाड़ी के समान होती है, किंतु
धर्मी के जीवन का मार्ग सीधे-समतल राजमार्ग समान होता है. 20 बुद्धिमान पुत्र
अपने पिता के लिए आनंद एवं गर्व का विषय होता है, किंतु मूर्ख होता है वह,
जिसे अपनी माता से घृणा होती है. 21 समझ रहित व्यक्ति के लिए मूर्खता ही
आनन्दप्रदायी मनोरंजन है, किंतु विवेकशील व्यक्ति धर्मी के मार्ग पर सीधा
आगे बढ़ता जाता है. 22 उपयुक्त परामर्श के अभाव में योजनाएं विफल हो जाती
हैं, किंतु अनेक परामर्शक उसे विफल नहीं होने देते. 23 अवसर के अनुकूल
दिया गया उपयुक्त उत्तर हर्ष का विषय होता है. कैसा मनोहर होता है, अवसर के
अनुकूल दिया गया सुसंगत शब्द! 24 बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति का जीवन
मार्ग ऊपर की तरफ जाता है, कि वह नीचे, अधोलोक-उन्मुख मृत्यु के मार्ग से
बच सके. (Sheol h7585) 25 याहवेह अहंकारी के घर को चिथड़े-चिथड़े कर
देते हैं, किंतु वह विधवा की सीमाएं सुरक्षित रखते हैं. 26 दुष्ट का विचार मंडल
ही याहवेह के लिए घृणित है, किंतु करुणामय बातें उन्हें सुखद लगती हैं. 27
लालची अपने ही परिवार में विपत्ति ले आता है. किंतु वह, जो घूस से घृणा
करता है, जीवित रहता है. 28 उत्तर देने के पूर्व धर्मी अपने हृदय में अच्छी
रीति से विचार कर लेता है, किंतु दुष्ट के मुख से मात्र दुर्वचन ही निकलते हैं. 29
याहवेह धर्मी की प्रार्थना का उत्तर अवश्य देते हैं, किंतु वह दुष्टों से दूरी बनाए
रखते हैं. 30 संदेशवाहक की नेत्रों में चमक सभी के हृदय में आनंद का संचार
करती है, तथा शुभ संदेश अस्थियों तक में नवस्फूर्ति ले आता है. 31 वह व्यक्ति,
जो जीवन-प्रदायी ताड़ना को स्वीकार करता है, बुद्धिमान के साथ निवास करेगा.
32 वह जो अनुशासन का परित्याग करता है, स्वयं से छल करता है, किंतु वह,
जो प्रताड़ना स्वीकार करता है, समझ प्राप्त करता है. 33 वस्तुतः याहवेह के
प्रति श्रद्धा ही ज्ञान उपलब्धि का साधन है, तथा विनम्रता महिमा की पूर्ववर्ती है.

16 मनुष्य के मन में योजना अवश्य होती हैं, किंतु कार्य का आदेश याहवेह
के द्वारा ही किया जाता है. 2 मनुष्य की दृष्टि में उसका अपना समस्त
चालचलन शुद्ध ही होता है, किंतु याहवेह ही उसकी अंतरात्मा को परखते हैं. 3
अपना समस्त उपक्रम याहवेह पर डाल दो, कि वह तुम्हारी योजनाओं को सफल
कर सकें. 4 याहवेह ने हर एक वस्तु को एक विशेष उद्देश्य से सृजा— यहां तक
कि दुष्ट को घोर विपत्ति के दिन के लिए. 5 हर एक अहंकारी हृदय याहवेह के
लिए घृणास्पद है; स्मरण रहे: दंड से कोई भी नहीं बचेगा. 6 निस्वार्थ प्रेम तथा
खराई द्वारा अपराधों का प्रायश्चित किया जाता है; तथा याहवेह के प्रति श्रद्धा के
द्वारा बुराई से मुड़ना संभव होता है. 7 जब किसी व्यक्ति का चालचलन याहवेह
को भाता है, वह उसके शत्रुओं तक को उसके प्रति मित्र बना देते हैं. 8 सीमित
संसाधनों के साथ धर्मी का जीवन अनुचित रूप से अर्जित अपार संपत्ति से
उत्तम है. 9 मानवीय मस्तिष्क अपने लिए उपयुक्त मार्ग निर्धारित कर लेता
है, किंतु उसके पैरों का निर्धारण याहवेह ही करते हैं. 10 राजा के मुख द्वारा
घोषित निर्णय दिव्य वाणी के समान होते हैं, तब उसके निर्णयों में न्याय-विसंगति
अनुपयुक्त है. 11 शुद्ध माप याहवेह द्वारा निर्धारित होते हैं; सभी प्रकार के माप
पर उन्हीं की स्वीकृति है. 12 बुराई राजा पर शोभा नहीं देती, क्योंकि सिंहासन
की स्थिरता धर्म पर आधारित है. 13 राजाओं को न्यायपूर्ण वाणी भाती है; जो
जन सत्य बोलता है, वह उसे ही मान देता है. 14 राजा का कोप मृत्यु के दूत के
समान होता है, किंतु ज्ञानवान व्यक्ति इस कोप को ठंडा कर देता है. 15 राजा के
मुखमंडल का प्रकाश जीवनदान है; उसकी कृपादृष्टि उन मेघों के समान है, जो
वसन्त ऋतु की वृष्टि लेकर आते हैं. 16 स्वर्ण की अपेक्षा ज्ञान को प्राप्त करना
कितना अधिक उत्तम है, और बुद्धिमत्ता की उपलब्धि चांदी पाने से. 17 धर्मी
का राजमार्ग कुटिलता को देखे बिना उसे दूर छोड़ता हुआ आगे बढ़ जाता है.
जो अपने चालचलन के प्रति न्यायी रहता है, अपने जीवन की रक्षा ही करता है.
18 सर्वनाश के पूर्व अहंकार, तथा ठोकर के पूर्व घमंड प्रकट होता है. 19
निर्धनों के मध्य विनम्र भाव में रहना दिन के साथ लूट की सामग्री में सम्मिलित
होने से उत्तम है. 20 जो कोई शिक्षा को ध्यानपूर्वक सुनता है, उत्तम प्रतिफल
प्राप्त करता है और धन्य होता है वह, जिसने याहवेह पर भरोसा रखा है. 21
कुशाग्रबुद्धि के व्यक्ति अनुभवी व्यक्ति के रूप में प्रख्यात हो जाते हैं, और मधुर
बातों से अभिव्यक्ति ग्रहण योग्य हो जाती है. 22 बुद्धिमान व्यक्ति में समझ
जीवन-प्रदायी सोता समान है, किंतु मूर्ख को अपनी ही मूर्खता के द्वारा दंड प्राप्त
हो जाता है. 23 बुद्धिमानों के मन उनके मुंह को समझदार बनाते हैं और उनके
ओंठ ज्ञान प्रसार करते हैं, और उसका वक्तव्य श्रोता स्वीकार भी कर लेते हैं. 24
सुहावने शब्द मधु के छत्ते-समान होते हैं, जिनसे मन को शांति तथा देह को
स्वास्थ्य प्राप्त होता है. 25 एक ऐसा मार्ग है, जो उपयुक्त जान पड़ता है, किंतु
इसका अंत है मृत्यु-द्वार. 26 श्रमिक के श्रम की प्रेरणा है उसकी भूख; अपने
उदर की सतत मांग पर ही वह श्रम करता जाता है. 27 अधर्मी व्यक्ति बुराई की
योजना करता रहता है, और जब वह बातें करता है, तो उसके शब्द भड़कती
अग्नि-समान होते हैं. 28 कुटिल मनोवृत्ति का व्यक्ति कलह फैलाता जाता है,
तथा परम मित्रों में फूट का कारण वह व्यक्ति होता है, जो कानाफूसी करता है.
29 हिंसक प्रवृत्ति का व्यक्ति अपने पड़ोसी को आकर्षित कर उसे बुराई के लिए
प्रेरित कर देता है. 30 वह, जो अपने नेत्रों से इशारे करता है, वह निश्चयतः
कुटिल युक्ति गढ़ रहा होता है; जो अपने ओंठ चबाता है, वह विसंगत युक्ति कर
रहा होता है. 31 श्वेत केश शानदार मुकुट हैं; ये धर्ममय मार्ग पर चलने से प्राप्त
होते है. 32 एक योद्धा से बेहतर वह है, जो विलंब से क्रोध करता है; जिसने एक
नगर को अधीन कर लिया है, उससे भी उत्तम है जिसने अपनी अंतरात्मा पर
नियंत्रण कर लिया है! 33 किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए मत अवश्य लिया
जाता है, किंतु हर एक निष्कर्ष याहवेह द्वारा ही निर्धारित किया जाता है.

17 सुख-शांति के वातावरण में सूखी रोटी का भोजन कलहपूर्ण उत्सव-भोज
से कहीं अधिक उत्तम है. 2 चतुर, बुद्धिमान सेवक उस पुत्र पर शासन
करेगा, जिसका चालचलन लज्जास्पद है. 3 चांदी की परख कुठाली से तथा
स्वर्ण की भट्टी से की जाती है, किंतु हृदयों की परख याहवेह करते हैं. 4 दुष्ट
अनर्थ में रुचि लेता रहता है; झूठा व्यक्ति विनाशकारी जीभ पर ध्यान देता है. 5
जो निर्धन को उपहास का पात्र बनाता है, वह उसके सृजनहार का उपहास करता
है; और जो दूसरों की विपत्ति को देख आनंदित होता है, निश्चयतः दंड प्राप्त
करता है. 6 वयोवृद्धों का गौरव उनके नाती-पोतों में होता है, तथा संतान का
गौरव उनके माता-पिता में. 7 अशोभनीय होती है मूर्ख द्वारा की गई दीर्घ बात;
इससे कहीं अधिक अशोभनीय होती है प्रशासक द्वारा की गई झूठी बात. 8 वह,
जो घूस देता है, उसकी दृष्टि में घूस जादू-समान प्रभाव डालता है; इसके द्वारा वह
अपना कार्य पूर्ण कर ही लेता है. 9 प्रेम का खोजी अन्य के अपराध पर आवरण
डालता है, किंतु वह, जो अप्रिय घटना का उल्लेख बार-बार करता है, परम
मित्रों तक में फूट डाल देता है. 10 बुद्धिमान व्यक्ति पर एक डांट का जैसा गहरा
प्रभाव पड़ता है, मूर्ख पर वैसा प्रभाव सौ लाठी के प्रहारों से भी संभव नहीं है.

11 दुष्ट का लक्ष्य मात्र विद्रोह ही हुआ करता है; इसके दमन के लिए क्रूर दूत
भेजा जाना अनिवार्य हो जाता है. 12 किसी मूर्ख की मूर्खता में उलझने से उत्तम
यह होगा, कि उस रीछनी से सामना हो जाए, जिसके बच्चे छीन लिए गए हैं.
13 जो व्यक्ति किसी हितकार्य का प्रतिफल बुराई कार्य के द्वारा देता है, उसके
परिवार में बुराई का स्थायी वास हो जाता है. 14 कलह का प्रारंभ वैसा ही होता
है, जैसा विशाल जल राशि का छोड़ा जाना; तब उपयुक्त यही होता है कि कलह
के प्रारंभ होते ही वहां से पलायन कर दिया जाए. 15 याहवेह की दृष्टि में दोनों
ही घृणित हैं; वह, जो दोषी को छोड़ देता है तथा जो धर्मी को दोषी घोषित कर
देता है. 16 ज्ञानवर्धन के लिए किसी मूर्ख के धन का क्या लाभ? जब उसे ज्ञान
का मूल्य ही ज्ञात नहीं है. 17 मित्र वह है, जिसका प्रेम चिरस्थायी रहता है,
और भाई का अस्तित्व विषम परिस्थिति में सहायता के लिए ही होता है. 18
वह मूर्ख ही होता है, जो हाथ पर हाथ मारकर शपथ करता तथा अपने पड़ोसी
के लिए आर्थिक ज़मानत देता है. 19 जो कोई झगड़े से प्यार रखता है, वह पाप
से प्यार करता है; जो भी एक ऊंचा फाटक बनाता है विनाश को आमंत्रित करता
है. 20 कुटिल प्रवृत्ति का व्यक्ति अवश्य ही विपत्ति में जा पड़ेगा; वैसे ही वह
भी, जो झूठ बोलने वाला है. 21 वह, जो मन्दबुद्धि पुत्र को जन्म देता है, अपने
ही ऊपर शोक ले आता है; मूर्ख के पिता के समक्ष आनंद का कोई विषय नहीं
रह जाता. 22 आनंदित हृदय स्वास्थ्य देनेवाली औषधि है, किंतु टूटा दिल
अस्थियों को तक सुखा देता है. 23 दुष्ट गुप्त रूप से घूस लेता रहता है, कि
न्याय की नीति को कुटिल कर दे. 24 बुद्धिमान सदैव ज्ञान की ही खोज करता
रहता है, किंतु मूर्ख का मस्तिष्क विचलित होकर सर्वत्र भटकता रहता है. 25
मूर्ख पुत्र अपने पिता के लिए शोक का कारण होता है और जिसने उसे जन्म
दिया है उसके हृदय की कड़वाहट का कारण. 26 यह कदापि उपयुक्त नहीं है
कि किसी धर्मी को दंड दिया जाए, और न किसी सज्जन पर प्रहार किया जाए.
27 ज्ञानी जन शब्दों पर नियंत्रण रखता है, और समझदार जन शांत बना रहता है.
28 जब तक मूर्ख मौन रहता है, बुद्धिमान माना जाता है, उसे उस समय तक
बुद्धिमान समझा जाता है, जब तक वह वार्तालाप में सम्मिलित नहीं होता.

18 जिसने स्वयं को समाज से अलग कर लिया है, वह अपनी ही
अभिलाषाओं की पूर्ति में संलिप्त रहता है, वह हर प्रकार की प्रामाणिक
बुद्धिमत्ता को त्याग चुका है. 2 विवेकशीलता में मूर्ख की कोई रुचि नहीं होती.
उसे तो मात्र अपने ही विचार व्यक्त करने की धुन रहती है. 3 जैसे ही दुष्टि का
प्रवेश होता है, घृणा भी साथ साथ चली आती है, वैसे ही अपमान के साथ साथ
निर्लज्जता भी. 4 मनुष्य के मुख से बोले शब्द गहन जल समान होते हैं, और
ज्ञान का सोता नित प्रवाहित उमड़ती नदी समान. 5 दुष्ट का पक्ष लेना उपयुक्त
नहीं और न धर्मी को न्याय से वंचित रखना. 6 मूर्खों का वार्तालाप कलह का
प्रवेश है, उनके मुंह की बातें उनकी पिटाई की न्योता देती हैं. 7 मूर्खों के मुख
ही उनके विनाश का हेतु होता हैं, उनके ओंठ उनके प्राणों के लिए फंदा सिद्ध
होते हैं. 8 फुसफुसाहट में उच्चारे गए शब्द स्वादिष्ट भोजन-समान होते हैं; ये
शब्द मनुष्य के पेट में समा जाते हैं. 9 जो कोई अपने निर्धारित कार्य के प्रति
आलसी है वह विध्वंसक व्यक्ति का भाई होता है. 10 याहवेह का नाम एक
सुदृढ़ मीनार समान है; धर्मी दौड़कर इसमें छिप जाता और सुरक्षित बना रहता
है. 11 धनी व्यक्ति के लिए उसका धन एक गढ़ के समान होता है; उनको लगता
हैं कि उस पर चढ़ना मुश्किल है! 12 इसके पूर्व कि किसी मनुष्य पर विनाश का
प्रहार हो, उसका हृदय घमंडी हो जाता है, पर आदर मिलने के पहले मनुष्य नम्र
होता है! 13 यदि कोई ठीक से सुने बिना ही उत्तर देने लगे, तो यह मूर्खता और
लज्जा की स्थिति होती है. 14 रुग्ण अवस्था में मनुष्य का मनोबल उसे संभाले
रहता है, किंतु टूटे हृदय को कौन सह सकता है? 15 बुद्धिमान मस्तिष्क वह है,
जो ज्ञान प्राप्त करता रहता है. बुद्धिमान का कान ज्ञान की खोज करता रहता
है. 16 उपहार उसके देनेवाले के लिए मार्ग खोलता है, जिससे उसका महान
व्यक्तियों के पास प्रवेश संभव हो जाता है. 17 यह संभव है कि न्यायालय में,
जो व्यक्ति पहले होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करता है, सच्चा ज्ञात हो; जब तक
अन्य पक्ष आकर परीक्षण न करे. 18 पासा फेंककर विवाद हल करना संभव है,
इससे प्रबल विरोधियों के मध्य सर्वमान्य निर्णय लिया जा सकता है. 19 एक रुष्ट
भाई को मनाना सुदृढ़-सुरक्षित नगर को ले लेने से अधिक कठिन कार्य है; और
विवाद राजमहल के बंद फाटक समान होते हैं. 20 मनुष्य की बातों का परिणाम
होता है उसके पेट का भरना; उसके होंठों के उत्पाद में उसका संतोष होता है.
21 जिह्वा की सामर्थ्य जीवन और मृत्यु तक व्याप्त है, और जिन्हें यह बात ज्ञात
है, उन्हें इसका प्रतिफल प्राप्त होगा. 22 जिस किसी को पत्नी प्राप्त हो गई है,
उसने भलाई प्राप्त की है, उसे याहवेह की ओर से ही यह आनंद प्राप्त हुआ है.
23 संसार में निर्धन व्यक्ति गिड़गिड़ाता रहता है, और धनी उसे कठोरतापूर्व उत्तर
देता है. 24 मनुष्य के मित्र मैत्री का लाभ उठाते रहते हैं, किंतु सच्चा मित्र वह
होता है, जो भाई से भी अधिक उत्तम होता है.

19 वह निर्धन व्यक्ति, जिसका चालचलन खराई है, उस व्यक्ति से उत्तम है,
जो कुटिल है और मूर्ख भी. 2 ज्ञान-रहित इच्छा निरर्थक होती है तथा
वह, जो किसी भी कार्य के लिए उतावली करता है, लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाता!
3 जब किसी व्यक्ति की मूर्खता के परिणामस्वरूप उसकी योजनाएं विफल हो
जाती हैं, तब उसके हृदय में याहवेह के प्रति क्रोध भड़क उठता है. 4 धन-
संपत्ति अनेक नए मित्रों को आकर्षित करती है, किंतु निर्धन व्यक्ति के मित्र उसे
छोड़कर चले जाते हैं. 5 झूठे साक्षी का दंड सुनिश्चित है, तथा दंडित वह भी
होगा, जो झूठा है. 6 उदार व्यक्ति का समर्थन अनेक व्यक्ति चाहते हैं, और उस
व्यक्ति के मित्र सभी हो जाते हैं, जो उपहार देने में उदार है. 7 निर्धन व्यक्ति तो
अपने संबंधियों के लिए भी घृणा का पात्र हो जाता है. उसके मित्र उससे कितने
दूर हो जाते हैं! वह उन्हें मनाता रह जाता है, किंतु इसका उन पर कोई प्रभाव
नहीं पड़ता. 8 बुद्धि प्राप्त करना स्वयं से प्रेम करना है; तथा ज्ञान को सुरक्षित
रखना समृद्धि है. 9 झूठे साक्षी का दंड सुनिश्चित है तथा जो झूठा है, वह नष्ट हो
जाएगा. 10 सुख से रहना मूर्ख को शोभा नहीं देता, ठीक जिस प्रकार दास का
शासकों पर शासन करना. 11 सद्बुद्धि मनुष्य को क्रोध पर नियंत्रण रखने योग्य
बनाती है; और जब वह अपराध को भुला देता है, उसकी प्रतिष्ठा होती है. 12
राजा का क्रोध सिंह के गरजने के समान होता है, किंतु उसकी कृपा घास पर
पड़ी ओस समान. 13 मूर्ख संतान पिता के विनाश का कारक होती है, और
झगड़ालू पत्नी नित टपक रहे जल समान. 14 घर और संपत्ति पूर्वजों का धन
होता है, किंतु बुद्धिमती पत्नी याहवेह की ओर से प्राप्त होती है. 15 आलस्य
का परिणाम होता है गहन नींद, ढीला व्यक्ति भूखा रह जाता है. 16 वह, जो
आदेशों को मानता है, अपने ही जीवन की रक्षा करता है, किंतु जो अपने
चालचलन के विषय में असावधान रहता है, मृत्यु अपना लेता है. 17 वह, जो
निर्धनों के प्रति उदार मन का है, मानो याहवेह को ऋण देता है; याहवेह उसे
उत्तम प्रतिफल प्रदान करेंगे. 18 यथासंभव अपनी संतान पर अनुशासन रखो
उसी में तुम्हारी आशा निहित है; किंतु ताड़ना इस सीमा तक न की जाए, कि
इसमें उसकी मृत्यु ही हो जाए. 19 अति क्रोधी व्यक्ति को इसका दंड भोगना
होता है; यदि तुम उसे दंड से बचाओगे तो तुम समस्त प्रक्रिया को दोहराते रहोगे.
20 परामर्श पर विचार करते रहो और निर्देश स्वीकार करो, कि तुम उत्तरोत्तर
बुद्धिमान होते जाओ. 21 मनुष्य के मन में अनेक-अनेक योजनाएं उत्पन्न होती
रहती हैं, किंतु अंततः याहवेह का उद्देश्य ही पूरा होता है. 22 मनुष्य में खराई
की अपेक्षा की जाती है; तथा झूठ बोलनेवाले की अपेक्षा निर्धन अधिक उत्तम
है. 23 याहवेह के प्रति श्रद्धा ही जीवन का मार्ग है; तथा जिस किसी में यह भय
है, उसका ठिकाना सुखी रहता है, अनिष्ट उसको स्पर्श नहीं करता. 24 एक

आलसी ऐसा भी होता है, जो अपना हाथ भोजन की थाली में डाल तो देता है; किंतु आलस्य में भोजन को मुख तक नहीं ले जाता. 25 ज्ञान के ठट्ठा करनेवाले पर प्रहार करो कि सरल-साधारण व्यक्ति भी बुद्धिमान बन जाये; विवेकशील व्यक्ति को डांटा करो कि उसका ज्ञान बढ़ सके. 26 जो व्यक्ति अपने पिता के प्रति हिंसक हो जाता तथा अपनी माता को घर से बाहर निकाल देता है, ऐसी संतान है, जो परिवार पर लज्जा और निंदा ले आती है. 27 मेरे पुत्र, यदि तुम शिक्षाओं को सुनना छोड़ दो, तो तुम ज्ञान के वचनों से दूर चले जाओगे. 28 कुटिल साक्षी न्याय का उपहास करता है, और दुष्ट का मुख अपराध का समर्थन करता है. 29 ठट्ठा करनेवालों के लिए दंड निर्धारित है, और मूर्ख की पीठ के लिए कोड़े हैं.

20 दाखमधु ठट्ठा करनेवाला, तथा दाखमधु हल्ला मचानेवाला हो जाता है; और जो व्यक्ति इनके प्रभाव में है, वह निर्बुद्धि है. 2 राजा का भय सिंह की दहाड़-समान होता है; जो कोई उसके कोप को उकसाता है, अंततः प्राणों से हाथ धो बैठता है. 3 आदरणीय है वह व्यक्ति, जो कलह और विवादों से दूर रहता है, झगड़ालू, वस्तुतः मूर्ख ही होता है. 4 आलसी निर्धारित समय पर हल नहीं जोतता; और कटनी के समय पर उपज काटने जाता है, तो वहां कुछ भी नहीं रहेगा. 5 मनुष्य के मन में निहित युक्तियां गहरे सागर समान होती हैं, ज्ञानवान ही उन्हें निकाल बाहर ला सकता है. 6 अनेक अपने उत्कृष्ट प्रेम का दावा करते हुए खड़े हो जाएंगे, किंतु एक सच्चा व्यक्ति किसे प्राप्त होता है? 7 धर्मी जन निष्कलंक जीवन जीता है; उसके बाद आनेवाली संतानें धन्य हैं. 8 न्याय-सिंहासन पर विराजमान राजा मात्र अपनी दृष्टि ही से बुराई को भांप लेता है. 9 कौन यह दावा कर सकता है, "मैंने अपने हृदय को पवित्र कर लिया है; मैं पाप से शुद्ध हो चुका हूं"? 10 याहवेह के समक्ष असमान तुला और असमान माप घृणास्पद हैं. 11 एक किशोर के लिए भी यह संभव है, कि वह अपने चालचलन द्वारा अपनी विशेषता के लक्षण प्रकट कर दे, कि उसकी गतिविधि शुद्धता तथा पवित्रता की ओर है अथवा नहीं? 12 वे कान, जो सुनने के लिए, तथा वे नेत्र, जो देखने के लिए निर्धारित किए गए हैं, याहवेह द्वारा निर्मित हैं. 13 नींद का मोह तुम्हें गरीबी में डुबो देगा; अपने नेत्र खुले रखो कि तुम्हारे पास भोजन की भरपूरी रहे. 14 ग्राहक तो विक्रेता से यह अवश्य कहता है, "अच्छी नहीं है यह सामग्री!" किंतु वहां से लौटकर वह अन्यों के समक्ष अपनी उत्कृष्ट खरीद की बड़ाई करता है. 15 स्वर्ण और मूंगे की कोई कमी नहीं है, दुर्लभ रत्नों के समान दुर्लभ हैं ज्ञान के उद्गार. 16 जो किसी अनजान के ऋण की ज़मानत देता है, वह अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है; जब कोई अनजान व्यक्तियों की ज़मानत लेने लगे, तब प्रतिभूति सुरक्षा में उसका वस्त्र भी रख ले. 17 छल से प्राप्त किया गया भोजन उस व्यक्ति को बड़ा स्वादिष्ट लगता है, किंतु अंत में वह पाता है कि उसका मुख कंकड़ों से भर गया है. 18 किसी भी योजना की सिद्धि का मर्म है सुसंगत परामर्श; तब युद्ध के पूर्व उपयुक्त निर्देश प्राप्त कर रखो. 19 कानाफूसी आत्मविश्वास को धोखा देती है; तब ऐसे बकवादी की संगति से दूर रहना ही भला है. 20 जो अपने पिता और अपनी माता को शाप देता है, उसका दीपक घोर अंधकार की स्थिति में ही बुझ जाएगा. 21 प्रारंभ में सरलतापूर्वक और शीघ्रता से प्राप्त की हुई संपत्ति अंततः सुखदायक नहीं होती. 22 मत कहो, "मैं इस अन्याय का प्रतिशोध अवश्य लूंगा!" याहवेह के निर्धारित अवसर की प्रतीक्षा करो, वही तुम्हारा छुटकारा करेंगे. 23 असमान माप याहवेह के समक्ष घृणास्पद, तथा छलपूर्ण तुलामान कुटिलता है. 24 जब मनुष्य का चलना याहवेह द्वारा ठहराया जाता है, तब यह कैसे संभव है कि हम अपनी गतिविधियों को स्वयं समझ सकें? 25 जल्दबाजी में कुछ प्रभु के लिए कुछ समर्पित करना एक जाल जैसा है, क्योंकि तत्पश्चात व्यक्ति मन्नत के बारे में विचार करने लगता है! 26 बुद्धिमान राजा दुष्टों को अलग करता जाता है; और फिर उन पर दांवने का पहिया चला देता है. 27 मनुष्य की आत्मा याहवेह द्वारा प्रज्वलित वह दीप है, जिसके प्रकाश में वह उसके मन की सब बातों का ध्यान कर लेते हैं. 28 स्वामीभक्ति तथा सच्चाई ही राजा को सुरक्षित रखती हैं; तथा बिना पक्षपात का न्याय उसके सिंहासन की स्थिरता होती है. 29 युवाओं की शोभा उनके शौर्य में है, और वरिष्ठ व्यक्ति की उसके सफेद बालों में. 30 बुराई को छोड़ने के लिए अनिवार्य है वह प्रहार, जो घायल कर दे; कोड़ों की मार मन को स्वच्छ कर देती है.

21 याहवेह के हाथों में राजा का हृदय जलप्रवाह-समान है; वही इसे ईच्छित दिशा में मोड़ देते हैं. 2 मनुष्य की दृष्टि में उसका हर एक कदम सही ही होता है, किंतु याहवेह उसके हृदय को जांचते रहते हैं. 3 याहवेह के लिए सच्चाई तथा न्याय्यता कहीं अधिक स्वीकार्य है. 4 घमंडी आंखें, दंभी हृदय तथा दुष्ट का दीप पाप हैं. 5 यह सुनिश्चित होता है कि परिश्रमी व्यक्ति की योजनाएं लाभ में निष्पन्न होती हैं, किंतु हर एक उतावला व्यक्ति निर्धन ही हो जाता है. 6 झूठ बोलने के द्वारा पाया गया धन इधर-उधर लहराती वाष्प होती है, यह मृत्यु का फंदा है. 7 दुष्ट अपने ही हिंसक कार्यों में उलझ कर विनष्ट हो जाएंगे, क्योंकि वे उपयुक्त और सुसंगत विकल्प को ठुकरा देते हैं. 8 दोषी व्यक्ति कुटिल मार्ग को चुनता है, किंतु सात्विक का चालचलन धार्मिकतापूर्ण होता है. 9 विवादी पत्नी के साथ घर में निवास करने से कहीं अधिक श्रेष्ठ है छत के एक कोने में रह लेना. 10 दुष्ट के मन की लालसा ही बुराई की होती है; उसके पड़ोसी तक भी उसकी आंखों में कृपा की झलक नहीं देख पाते. 11 जब ज्ञान के ठट्ठा करनेवालों को दंड दिया जाता है, बुद्धिहीनों में ज्ञानोदय हो जाता है; जब बुद्धिमान को शिक्षा दी जाती है, उसमें ज्ञानवर्धन होता जाता है. 12 धर्मी दुष्ट के घर पर दृष्टि बनाए रखता है, और वह दुष्ट को विनाश गर्त में डाल देता है. 13 जो कोई निर्धन की पुकार की अनसुनी करता है, उसकी पुकार के अवसर पर उसकी भी अनसुनी की जाएगी. 14 गुप्त रूप से दिया गया उपहार और चुपचाप दी गई घूस कोप शांत कर देती है. 15 बिना पक्षपात न्याय को देख धर्मी हर्षित होते हैं, किंतु यही दुष्टों के लिए आतंक प्रमाणित होता है. 16 जो ज्ञान का मार्ग छोड़ देता है, उसका विश्रान्ति स्थल मृतकों के साथ निर्धारित है. 17 यह निश्चित है कि विलास प्रिय व्यक्ति निर्धन हो जाएगा तथा वह; जिसे दाखमधु तथा शारीरिक सुखों का मोह है, निर्धन होता जाएगा. 18 धर्मी के लिए दुष्ट फिरौती हो जाता है, तथा विश्वासघाती खराई के लिए. 19 क्रोधी, विवादी और चिड़चिड़ी स्त्री के साथ निवास करने से उत्तम होगा बंजर भूमि में निवास करना. 20 अमूल्य निधि और उत्कृष्ट भोजन बुद्धिमान के घर में ही पाए जाते हैं, किंतु मूर्ख इन्हें नष्ट करता चला जाता है. 21 धर्म तथा कृपा के अनुयायी को प्राप्त होता है जीवन, धार्मिकता और महिमा. 22 बुद्धिमान व्यक्ति ही योद्धाओं के नगर पर आक्रमण करके उस सुरक्षा को ध्वस्त कर देता है, जिस पर उन्होंने भरोसा किया था. 23 जो कोई अपने मुख और जीभ को वश में रखता है, स्वयं को विपत्ति से बचा लेता है. 24 अहंकारी तथा दुष्ट व्यक्ति, जो ठट्ठा करनेवाले के रूप में कुख्यात हो चुका है, गर्व और क्रोध के भाव में ही कार्य करता है. 25 आलसी की अभिलाषा ही उसकी मृत्यु का कारण हो जाती है, क्योंकि उसके हाथ कार्य करना ही नहीं चाहते. 26 सारे दिन वह लालसा ही लालसा करता रहता है, किंतु धर्मी उदारतापूर्वक दान करता जाता है. 27 याहवेह के लिए दुष्ट द्वारा अर्पित बलि घृणास्पद है और उससे भी कहीं अधिक उस स्थिति में, जब यह बलि कुटिल अभिप्राय से अर्पित की जाती है. 28 झूठा साक्षी तो नष्ट होगा ही, किंतु वह, जो सच्चा है, सदैव सुना जाएगा. 29 दुष्ट व्यक्ति अपने मुख पर निर्भयता का भाव ले आता है, किंतु धर्मी अपने चालचलन के प्रति अत्यंत सावधान रहता है. 30 याहवेह के समक्ष न तो कोई ज्ञान, न कोई समझ और न कोई परामर्श ठहर सकता है. 31 युद्ध के दिन के लिए

घोड़े को सुसज्जित अवश्य किया जाता है, किंतु जय याहवेह के ही अधिकार में रहती है.

22 विशाल निधि से कहीं अधिक योग्य है अच्छा नाम; तथा स्वर्ण और चांदी से श्रेष्ठ है आदर सम्मान! 2 सम्पन्न और निर्धन के विषय में एक समता है: दोनों ही के सृजनहार याहवेह ही हैं. 3 चतुर व्यक्ति जोखिम को देखकर छिप जाता है, किंतु अज्ञानी आगे ही बढ़ता जाता है और यातना सहता है. 4 विनम्रता तथा याहवेह के प्रति श्रद्धा का प्रतिफल होता है; धन संपदा, सम्मान और जीवन. 5 कुटिल व्यक्ति के मार्ग पर बिछे रहते हैं कांटे और फंदे, किंतु जो कोई अपने जीवन के प्रति सावधान रहता है, स्वयं को इन सबसे दूर ही दूर रखता है. 6 अपनी संतान को उसी जीवनशैली के लिए तैयार कर लो, जो सुसंगत है, वृद्ध होने पर भी वह इससे भटकेगा नहीं. 7 निर्धन पर धनाढ्य अधिकार कर लेता है, तथा ऋणी महाजन का दास होकर रह जाता है. 8 जो कोई अन्याय का बीजारोपण करता है, विपत्ति की उपज एकत्र करता है, तब उसके क्रोध की लाठी भी विफल सिद्ध होती है. 9 उदार व्यक्ति धन्य रहेगा, क्योंकि वह निर्धन को अपने भोजन में सहभागी कर लेता है. 10 यदि छिछोरे और ठट्टा करनेवाले को सभा से बाहर कर दिया जाए; तो विवाद, कलह और परनिंदा सभी समाप्त हो जाएंगे. 11 जिन्हें निर्मल हृदय की महत्ता ज्ञात है, जिनकी बातें मधुर हैं, वे राजा के प्रिय पात्र हो जाएंगे. 12 याहवेह की दृष्टि ज्ञान की रक्षा करती है, किंतु वह कृतघ्न और विश्वासघाती के वक्तव्य को मिटा देते हैं. 13 आलसी कहता है, "बाहर सिंह है! बाहर सड़क पर जाने पर मेरी मृत्यु निश्चित है!" 14 चरित्रहीन स्त्री का मुख गहरे गड्ढे-समान है; याहवेह द्वारा शापित व्यक्ति ही इसमें जा गिरता है. 15 बालक की प्रकृति में ही मूर्खता बंधी रहती है, अनुशासन की छड़ी से ही यह उससे दूर की जाती है. 16 जो अपनी संपत्ति में वृद्धि पाने के उद्देश्य से निर्धन पर अंधेर करने, तथा धनाढ्य को उपहार देने का परिणाम होता है; निर्धनता! 17 अत्यंत ध्यानपूर्वक बुद्धिमानों का प्रवचन सुनो; और मेरे ज्ञान की बातों को मन में बसा लो, 18 क्योंकि यह करना तुम्हारे लिए सुखदायी होगा, यदि ये तुम्हारे मन में बसे हुए होंगे, यदि ये सभी तुम्हें मुखाग्र होंगे. 19 मैं यह सब तुम पर, विशेष रूप से तुम पर इसलिये प्रकट कर रहा हूं, कि तुम्हारा भरोसा याहवेह पर अटल रहे; 20 विचार करो, क्या मैंने परामर्श तथा ज्ञान के ये तीस नीति सूत्र इस उद्देश्य से नहीं लिखे कि 21 तुम्हें यह बोध रहे कि सुसंगत और सत्य क्या है, और तुम अपने प्रेषकों को उपयुक्त उत्तर दे सको? 22 किसी निर्धन को इसलिये लूटने न लगो, कि वह निर्धन है, वैसे ही किसी पीड़ित को न्यायालय ले जाकर गुनहगार न बनाना, 23 क्योंकि याहवेह पीड़ित के पक्ष में खड़े होंगे, और उनके प्राण का बदला लेंगे. 24 किसी क्रोधी व्यक्ति को मित्र न बनाना, और न किसी शीघ्र क्रोधी व्यक्ति के किसी कार्य में सहयोगी बनना. 25 कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उसी के समान बन जाओ और स्वयं किसी फंदे में जा फंसो. 26 तुम उनके जैसे न बनना, जो किसी की ज़मानत लेते हैं, जो किसी ऋणी के ऋण का दायित्व लेते हैं. 27 यदि तुम्हारे पास भुगतान करने के लिए कुछ नहीं है, तो साहूकार तो तुमसे तुम्हारा बिछौना छीन लेगा. 28 अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित सीमा-चिन्हों को तुम कभी न हटाना. 29 क्या आप किसी को अपने काम में कुशल दिखते हैं? उस व्यक्ति का स्थान राजा की उपस्थिति में है; वे नीचे श्रेणी के अधिकारियों के सामने सेवा नहीं करेंगे.

23 जब तुम किसी अधिकारी के साथ भोजन के लिए बैठो, जो कुछ तुम्हारे समक्ष है, सावधानीपूर्वक उसका ध्यान करो. 2 उपयुक्त होगा कि तुम अपनी भूख पर नियंत्रण रख भोजन की मात्रा कम ही रखो. 3 उसके उत्कृष्ट व्यंजनों की लालसा न करना, क्योंकि वे सभी धोखे के भोजन हैं. 4 धनाढ्य हो जाने की अभिलाषा में स्वयं को अतिश्रम के बोझ के नीचे दबा न डालो. 5 जैसे ही तुम्हारी दृष्टि इस पर जा ठहरती है, यह अदृश्य हो जाती है, मानो इसके पंख निकल आए हों, और यह गरूड़ के समान आकाश में उड़ जाता है. 6 भोजन के लिए किसी कंजूस के घर न जाना, और न उसके उत्कृष्ट व्यंजनों की लालसा करना; 7 क्योंकि वह उस व्यक्ति के समान है, जो कहता तो है, "और खाइए न!" किंतु मन ही मन वह भोजन के मूल्य का हिसाब लगाता रहता है. वस्तुतः उसकी वह इच्छा नहीं होती, जो वह कहता है. 8 तुमने जो कुछ अल्प खाया है, वह तुम उगल दोगे, और तुम्हारे अभिनंदन, प्रशंसा और सम्मान के मधुर उद्गार भी व्यर्थ सिद्ध होंगे. 9 जब मूर्ख आपकी बातें सुन रहा हो तब कुछ न कहना. क्योंकि तुम्हारी ज्ञान की बातें उसके लिए तुच्छ होंगी. 10 पूर्वकाल से चले आ रहे सीमा-चिन्ह को न हटाना, और न किसी अनाथ के खेत को हड़प लेना. 11 क्योंकि सामर्थ्यवान है उनका छुड़ाने वाला; जो तुम्हारे विरुद्ध उनका पक्ष लड़ेगा. 12 शिक्षा पर अपने मस्तिष्क का इस्तेमाल करो, ज्ञान के तथ्यों पर ध्यान लगाओ. 13 संतान पर अनुशासन के प्रयोग से न हिचकना; उस पर छड़ी के प्रहार से उसकी मृत्यु नहीं हो जाएगी. 14 यदि तुम उस पर छड़ी का प्रहार करोगे तो तुम उसकी आत्मा को नर्क से बचा लोगे. **(Sheol h7585)** 15 मेरे पुत्र, यदि तुम्हारे हृदय में ज्ञान का निवास है, तो मेरा हृदय अत्यंत प्रफुल्लित होगा; 16 मेरा अंतरात्मा हर्षित हो जाएगा, जब मैं तुम्हारे मुख से सही उद्गार सुनता हूं. 17 दुष्टों को देख तुम्हारे हृदय में ईर्ष्या न जागे, तुम सर्वदा याहवेह के प्रति श्रद्धा में आगे बढ़ते जाओ. 18 भविष्य सुनिश्चित है, तुम्हारी आशा अपूर्ण न रहेगी. 19 मेरे बालक, मेरी सुनकर विद्वत्ता प्राप्त करो, अपने हृदय को सुमार्ग के प्रति समर्पित कर दो: 20 उनकी संगति में न रहना, जो मद्यपि हैं और न उनकी संगति में, जो पेटू हैं. 21 क्योंकि मतवालों और पेटुओं की नियति गरीबी है, और अति नींद उन्हें चिथड़े पहनने की स्थिति में ले आती है. 22 अपने पिता की शिक्षाओं को ध्यान में रखना, वह तुम्हारे जनक है, और अपनी माता के वयोवृद्ध होने पर उन्हें तुच्छ न समझना. 23 सत्य को मोल लो, किंतु फिर इसका विक्रय न करना; ज्ञान, अनुशासन तथा समझ संग्रहीत करते जाओ. 24 सबसे अधिक उल्लसित व्यक्ति होता है धर्मी व्यक्ति का पिता; जिसने बुद्धिमान पुत्र को जन्म दिया है, वह पुत्र उसके आनंद का विषय होता है. 25 वही करो कि तुम्हारे माता-पिता आनंदित रहें; एवं तुम्हारी जननी उल्लसित. 26 मेरे पुत्र, अपना हृदय मुझे दे दो; तुम्हारे नेत्र मेरी जीवनशैली का ध्यान करते रहें, 27 वेश्या एक गहरा गड्ढा होती है, पराई स्त्री एक संकरा कुंआ है. 28 वह डाकू के समान ताक लगाए बैठी रहती है इसमें वह मनुष्यों में विश्वासघातियों की संख्या में वृद्धि में योग देती जाती है. 29 कौन है शोक संतप्त? कौन है विपदा में? कौन विवादग्रस्त है? और कौन असंतोष में पड़ा है? किस पर अकारण ही घाव हुए है? किसके नेत्र लाल हो गए हैं? 30 वे ही न, जिन्होंने देर तक बैठे दाखमधु पान किया है, वे ही न, जो विविध मिश्रित दाखमधु का पान करते रहे हैं? 31 उस लाल आकर्षक दाखमधु पर दृष्टि ही मत डालो और न तब, जब यह प्याले में उंडेली जाती है, अन्यथा यह गले से नीचे उतरने में विलंब नहीं करेगी. 32 अंत में सर्पदंश के समान होता है दाखमधु का प्रभाव तथा विषैले सर्प के समान होता है उसका प्रहार. 33 तुम्हें असाधारण दृश्य दिखाई देने लगेंगे, तुम्हारा मस्तिष्क कुटिल विषय प्रस्तुत करने लगेगा. 34 तुम्हें ऐसा अनुभव होगा, मानो तुम समुद्र की लहरों पर लेटे हुए हो, ऐसा, मानो तुम जलयान के उच्चतम स्तर पर लेटे हो. 35 तब तुम यह दावा भी करने लगोगे, "उन्होंने मुझे पीटा था, फिर भी मुझ पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा. उन्होंने मुझे मारा पर मुझे तो लगा ही नहीं! कब टूटेगी मेरी यह नींद? लाओ, मैं एक प्याला और पी लूं."

24 दुष्टों से ईर्ष्या न करना, उनके साहचर्य की कामना भी न करना; 2 उनके मस्तिष्क में हिंसा की युक्ति तैयार होती रहती है, और उनके मुख से हानिकर शब्द ही निकलते हैं. 3 गृह-निर्माण के लिए विद्वत्ता आवश्यक

होती है, और इसकी स्थापना के लिए चतुरता; 4 ज्ञान के द्वारा घर के कक्षों
में सभी प्रकार की बहुमूल्य तथा सुखदाई वस्तुएं सजाई जाती हैं. 5 ज्ञानवान
व्यक्ति शक्तिमान व्यक्ति होता है, विद्वान अपनी शक्ति में वृद्धि करता जाता है. 6
क्योंकि कुशल दिशा-निर्देश के द्वारा ही युद्ध में तुम आक्रमण कर सकते हो,
अनेक परामर्शदाताओं के परामर्श से विजय सुनिश्चित हो जाती है. 7 मूर्ख के
लिए ज्ञान पहुंच के बाहर होता है; बुद्धिमानों की सभा में वह चुप रह जाता है. 8
वह, जो अनर्थ की युक्ति करता है वह षड़्‍यंत्रकारी के रूप में कुख्यात हो जाता
है. 9 मूर्खतापूर्ण योजना वस्तुतः पाप ही है, और ज्ञान का ठट्ठा करनेवाला सभी
के लिए तिरस्कार बन जाता है. 10 कठिन परिस्थिति में तुम्हारा हताश होना
तुम्हारी सीमित शक्ति का कारण है. 11 जिन्हें मृत्यु दंड के लिए ले जाया जा
रहा है, उन्हें विमुक्त कर दो; और वे, जो लड़खड़ाते पैरों से अपने ही वध की
ओर बढ़ रहे हैं, उन्हें वहीं रोक लो. 12 यदि तुम यह कहो, "देखिए, इस विषय
में हमें तो कुछ भी ज्ञात नहीं था." क्या वे, परमेश्वर जो मन को जांचनेवाले हैं,
यह सब नहीं समझते? क्या उन्हें, जो तुम्हारे जीवन के रक्षक हैं, यह ज्ञात नहीं?
क्या वह सभी को उनके कार्यों के अनुरूप प्रतिफल न देंगे? 13 मेरे प्रिय बालक,
मधु का सेवन करो क्योंकि यह भला है; छत्ते से टपकता हुआ मधु स्वादिष्ट होता
है. 14 यह भी समझ लो, कि तुम्हारे जीवन में ज्ञान भी ऐसी ही है: यदि तुम इसे
अपना लोगे तो उज्जवल होगा तुम्हारा भविष्य, और तुम्हारी आशाएं अपूर्ण
न रह जाएंगी. 15 दुष्ट व्यक्ति! धर्मी व्यक्ति के घर पर घात लगाकर न बैठ
और न उसके विश्रामालय को नष्ट करने की युक्ति कर; 16 क्योंकि सात बार
गिरने पर भी धर्मी व्यक्ति पुनः उठ खड़ा होता है, किंतु दुष्टों को विपत्ति नष्ट
कर जाती है. 17 तुम्हारे विरोधी का पतन तुम्हारे हर्ष का विषय न हो; और
उन्हें ठोकर लगने पर तुम आनंदित न होना, 18 ऐसा न हो कि यह याहवेह की
अप्रसन्नता का विषय हो जाए और उन पर से याहवेह का क्रोध जाता रहे. 19
दुष्टों के वैभव को देख कुढ़ने न लगाना और न बुराइयों की जीवनशैली से ईर्ष्या
करना, 20 क्योंकि दुष्ट का कोई भविष्य नहीं होता, उनके जीवनदीप का बुझना
निर्धारित है. 21 मेरे पुत्र, याहवेह तथा राजा के प्रति श्रद्धा बनाए रखो, उनसे दूर
रहो, जिनमें विद्रोही प्रवृत्ति है, 22 सर्वनाश उन पर अचानक रूप से आ पड़ेगा
और इसका अनुमान कौन लगा सकता है, कि याहवेह और राजा द्वारा उन
पर भयानक विनाश का रूप कैसा होगा? 23 ये भी बुद्धिमानों द्वारा बोली गई
सूक्तियां हैं: न्याय में पक्षपात करना उचित नहीं है: 24 जो कोई अपराधी से
कहता है, "तुम निर्दोष हो," वह लोगों द्वारा शापित किया जाएगा तथा अन्य
राष्ट्रों द्वारा घृणास्पद समझा जाएगा. 25 किंतु जो अपराधी को फटकारते हैं
उल्लसित रहेंगे, और उन पर सुखद आशीषों की वृष्टि होगी. 26 सुसंगत प्रत्युत्तर
होंठों पर किए गए चुम्बन-समान सुखद होता है. 27 पहले अपने बाह्य कार्य पूर्ण
करके खेत को तैयार कर लो और तब अपना गृह-निर्माण करो. 28 बिना किसी
संगत के कारण अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी न देना, और न अपनी साक्षी के
द्वारा उसे झूठा प्रमाणित करना. 29 यह कभी न कहना, "मैं उसके साथ वैसा ही
करूंगा, जैसा उसने मेरे साथ किया है; उसने मेरे साथ जो कुछ किया है, मैं
उसका बदला अवश्य लूंगा." 30 मैं उस आलसी व्यक्ति की वाटिका के पास से
निकल रहा था, वह मूर्ख व्यक्ति था, जिसकी वह द्राक्षावाटिका थी. 31 मैंने
देखा कि समस्त वाटिका में, कंटीली झाड़ियां बढ़ आई थीं, सारी भूमि पर
बिच्छू बूटी छा गई थी. 32 यह सब देख मैं विचार करने लगा, जो कुछ मैंने
देखा उससे मुझे यह शिक्षा प्राप्त हुई: 33 थोड़ी और नींद, थोड़ा और विश्राम,
कुछ देर और हाथ पर हाथ रखे हुए विश्राम, 34 तब देखना निर्धनता कैसे तुझ
पर डाकू के समान टूट पड़ती है और गरीबी, सशस्त्र पुरुष के समान.

25 ये भी राजा शलोमोन के ही कुछ और नीति वाक्य हैं, जिन्हें यहूदिया
राज्य के राजा हिज़किय्याह के लोगों ने तैयार किया है: 2 परमेश्वर की
महिमा इसमें है कि वह किसी विषय को गुप्त रख देते हैं; जबकि राजा की
महिमा किसी विषय की गहराई तक खोजने में होती है. 3 जैसे आकाश की
ऊंचाई और पृथ्वी की गहराई, उसी प्रकार राजाओं का हृदय भी रहस्यमय होता
है. 4 चांदी में से खोट दूर कर दो, तो चांदीकार के लिए शुद्ध चांदी शेष रह जाती
है. 5 राजा के सामने से दुष्टों को हटा दो, तो राज सिंहासन धर्म में प्रतिष्ठित हो
जाएगा. 6 न तो राजा के समक्ष स्वयं को सम्मान्य प्रमाणित करो, और न ही
किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का स्थान लेने का प्रयास करो; 7 क्योंकि उत्तम तो यह
होगा कि राजा ही तुम्हें आमंत्रित कर यह कहे, "यहां मेरे पास आओ," इसकी
अपेक्षा कि तुम्हें सब की दृष्टि में निम्नतर स्थान पर जाने का आदेश दिया जाए.
8 मात्र इसलिये कि तुमने कुछ देख लिया है, मुकदमा चलाने की उतावली न
करना. 9 विवादास्पद विषय पर सीधा उसी व्यक्ति से विचार-विमर्श कर लो,
और किसी अन्य व्यक्ति का रहस्य प्रकाशित न करना, 10 कहीं ऐसा न हो कि
कोई इसे सुन ले, यह तुम्हारे ही लिए लज्जा का कारण हो जाए और तुम्हारी
प्रतिष्ठा स्थायी रूप से नष्ट हो जाए. 11 उचित अवसर पर कहा हुआ वचन चांदी
के पात्र में प्रस्तुत स्वर्ण के सेब के समान होता है. 12 तत्पर श्रोता के लिए
ज्ञानवान व्यक्ति की चेतावनी वैसी ही होती है जैसे स्वर्ण कर्णफूल अथवा स्वर्ण
आभूषण. 13 कटनी के समय की उष्णता में ठंडे पानी के पेय के समान होता है,
प्रेषक के लिए वह दूत, जो विश्वासयोग्य है; वह अपने स्वामी के हृदय को
प्रफुल्लित कर देता है. 14 बारिश के बिना बादलों और हवा की तरह है जो
व्यक्ति उपहार तो देता नहीं, किंतु सबके समक्ष देने की डींग मारता रहता है. 15
धैर्य के द्वारा शासक को भी मनाया जा सकता है, और कोमलता में कहे गए
वचन से हड्डी को भी तोड़ा जा सकता है. 16 यदि तुम्हें कहीं मधु प्राप्त हो जाए,
तो उतना ही खाना, जितना पर्याप्त है, सीमा से अधिक खाओगे तो, तुम उसे
उगल दोगे. 17 उत्तम तो यह होगा कि तुम्हारे पड़ोसी के घर में तुम्हारे पैर कम
ही पड़ें, ऐसा न हो कि वह तुमसे ऊब जाए और तुमसे घृणा करने लगे. 18 वह
व्यक्ति, जो अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठा साक्षी हो जाता है, वह युद्ध के लिए
प्रयुक्त लाठी, तलवार अथवा बाण के समान है. 19 विपदा के अवसर पर ऐसे
व्यक्ति पर भरोसा रखना, जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता, वैसा ही होता
है, जैसे सड़े दांत अथवा टूटे पैर पर भरोसा रखना. 20 दुःख में डूबे व्यक्ति के
समक्ष हर्ष गीत गाने का वैसा ही प्रभाव होता है, जैसा शीतकाल में किसी को
विवस्त्र कर देना अथवा किसी के घावों पर सिरका मल देना. 21 यदि तुम्हारा
विरोधी भूखा है, उसे भोजन कराओ, यदि प्यासा है, उसे पीने के लिए जल दो;
22 इससे तुम उसके सिर पर प्रज्वलित कोयलों का ढेर लगा दोगे, और तुम्हें
याहवेह की ओर से पारितोषिक प्राप्त होगा. 23 जैसे उत्तरी वायु प्रवाह वृष्टि का
उत्पादक होता है, वैसे ही पीठ पीछे पर निंदा करती जीभ शीघ्र क्रोधी मुद्रा
उत्पन्न करती है. 24 विवादी पत्नी के साथ घर में निवास करने से कहीं अधिक
श्रेष्ठ है छत के एक कोने में रह लेना. 25 दूर देश से आया शुभ संदेश वैसा ही
होता है, जैसा प्यासी आत्मा को दिया गया शीतल जल. 26 वह धर्मी व्यक्ति,
जो दुष्टों के आगे झुक जाता है, गंदले सोते तथा दूषित कुओं-समान होता है. 27
मधु का अत्यधिक सेवन किसी प्रकार लाभकर नहीं होता, ठीक इसी प्रकार
अपने लिए सम्मान से और अधिक सम्मान का यत्न करना लाभकर नहीं होता.
28 वह व्यक्ति, जिसका स्वयं पर कोई नियंत्रण नहीं है, वैसा ही है, जैसा वह
नगर, जिसकी सुरक्षा के लिए कोई दीवार नहीं है.

26 मूर्ख को सम्मानित करना वैसा ही असंगत है, जैसा ग्रीष्मऋतु में हिमपात
तथा कटनी के समय वृष्टि. 2 निर्दोष को दिया गया शाप वैसे ही प्रभावी
नहीं हो पाता, जैसे गौरैया का फुदकना और अबाबील की उड़ान. 3 जैसे घोड़े
के लिए चाबुक और गधे के लिए लगाम, वैसे ही मूर्ख की पीठ के लिए छड़ी
निर्धारित है. 4 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुरूप उत्तर न दो, कहीं तुम स्वयं

मूर्ख सिद्ध न हो जाओ. 5 मूर्खों को उनकी मूर्खता के उपयुक्त उत्तर दो, अन्यथा
वे अपनी दृष्टि में विद्वान हो जाएंगे. 6 किसी मूर्ख के द्वारा संदेश भेजना वैसा ही
होता है, जैसा अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार लेना अथवा विषपान कर लेना. 7
मूर्ख के मुख द्वारा निकला नीति सूत्र वैसा ही होता है, जैसा अपंग के लटकते
निर्जीव पैर. 8 किसी मूर्ख को सम्मानित करना वैसा ही होगा, जैसे पत्थर को
गोफन में बांध देना. 9 मूर्ख व्यक्ति द्वारा कहा गया नीतिवचन वैसा ही लगता है,
जैसे मद्यपि के हाथों में चुभा हुआ कांटा. 10 जो अनजान मूर्ख यात्री अथवा
मदोन्मत्त व्यक्ति को काम पर लगाता है, वह उस धनुर्धारी के समान है, जो बिना
किसी लक्ष्य के, लोगों को घायल करता है. 11 अपनी मूर्खता को दोहराता हुआ
व्यक्ति उस कुत्ते के समान है, जो बार-बार अपने उल्टी की ओर लौटता है. 12
क्या तुमने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है, जो स्वयं को बुद्धिमान समझता है?
उसकी अपेक्षा एक मूर्ख से कहीं अधिक अपेक्षा संभव है. 13 आलसी कहता
है, "मार्ग में सिंह है, सिंह गलियों में छुपा हुआ है!" 14 आलसी अपने बिछौने
पर वैसे ही करवटें बदलते रहता है, जैसे चूल पर द्वार. 15 आलसी अपना हाथ
भोजन की थाली में डाल तो देता है; किंतु आलस्यवश वह अपना हाथ मुख तक
नहीं ले जाता. 16 अपने विचार में आलसी उन सात व्यक्तियों से अधिक
बुद्धिमान होता है, जिनमें सुसंगत उत्तर देने की क्षमता होती है. 17 मार्ग में चलते
हुए अपरिचितों के मध्य चल रहे विवाद में हस्तक्षेप करते हुए व्यक्ति की स्थिति
वैसी ही होती है, मानो उसने वन्य कुत्ते को उसके कानों से पकड़ लिया हो. 18
उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या मनुष्य जो घातक तीर फेंकता है 19
वैसे ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी की छलता है और कहता है, "मैं तो
बस ऐसे ही मजाक कर रहा था!" 20 लकड़ी समाप्त होते ही आग बुझ जाती
है; वैसे ही जहां कानाफूसी नहीं की जाती, वहां कलह भी नहीं होता. 21 जैसे
प्रज्वलित अंगारों के लिए कोयला और अग्नि के लिए लकड़ी, वैसे ही कलह
उत्पन्न करने के लिए होता है विवादी प्रवृत्ति का व्यक्ति. 22 फुसफुसाहट में
उच्चारे गए शब्द स्वादिष्ट भोजन-समान होते हैं; ये शब्द मनुष्य के पेट में समा
जाते हैं. 23 कुटिल हृदय के व्यक्ति के चिकने-चुपड़े शब्द वैसे ही होते हैं, जैसे
मिट्टी के पात्र पर चढ़ाई गई चांदी का कीट. 24 घृणापूर्ण हृदय के व्यक्ति के मुख
से मधुर वाक्य टपकते रहते हैं, जबकि उसके हृदय में छिपा रहता है छल और
कपट. 25 जब वह मनभावन विचार व्यक्त करने लगे, तो उसका विश्वास न
करना, क्योंकि उसके हृदय में सात घिनौनी बातें छिपी हुई हैं. 26 यद्यपि इस
समय उसने अपने छल को छुपा रखा है, उसकी कुटिलता का प्रकाशन भरी
सभा में कर दिया जाएगा. 27 जो कोई गड्ढा खोदता है, उसी में जा गिरता है; जो
कोई पत्थर को लुढ़का देता है, उसी के नीचे आ जाता है. 28 झूठ बोलने वाली
जीभ जिससे बातें करती है, वह उसके घृणा का पात्र होता है, तथा विनाश का
कारण होते हैं चापलूस के शब्द.

27 भावी कल तुम्हारे गर्व का विषय न हो, क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि
दिन में क्या घटनेवाला है. 2 कोई अन्य तुम्हारी प्रशंसा करे तो करे, तुम
स्वयं न करना; कोई अन्य कोई अपरिचित तुम्हारी प्रशंसा करे तो करे, तुम स्वयं
न करना, स्वयं अपने मुख से नहीं. 3 पत्थर भारी होता है और रेत का भी बोझ
होता है, किंतु इन दोनों की अपेक्षा अधिक भारी होता है मूर्ख का क्रोध. 4 कोप
में क्रूरता निहित होती है तथा रोष में बाढ़ के समान उग्रता, किंतु ईर्ष्या के समक्ष
कौन ठहर सकता है? 5 छिपे प्रेम से कहीं अधिक प्रभावशाली है प्रत्यक्ष रूप से
दी गई फटकार. 6 मित्र द्वारा किए गए घाव भी विश्वासयोग्य है, किंतु विरोधी
चुम्बनों की वर्षा करता है! 7 जब भूख अच्छी रीति से तृप्त की जा चुकी है,
तब मधु भी अप्रिय लगने लगता है, किंतु अत्यंत भूखे व्यक्ति के लिए कड़वा
भोजन भी मीठा हो जाता है. 8 अपने घर से दूर चला गया व्यक्ति वैसा ही होता
है जैसे अपने घोंसले से भटक चुका पक्षी. 9 तेल और सुगंध द्रव्य हृदय को
मनोहर कर देते हैं, उसी प्रकार सुखद होता है खरे मित्र का परामर्श. 10 अपने
मित्र तथा अपने माता-पिता के मित्र की उपेक्षा न करना. अपनी विपत्ति की
स्थिति में अपने भाई के घर भेंट करने न जाना. दूर देश में जा बसे तुम्हारे भाई से
उत्तम है तुम्हारे निकट निवास कर रहा पड़ोसी. 11 मेरे पुत्र, कैसा मनोहर होगा
मेरा हृदय, जब तुम स्वयं को बुद्धिमान प्रमाणित करोगे; तब मैं अपने निंदकों को
मुंह तोड़ प्रत्युत्तर दे सकूंगा. 12 चतुर व्यक्ति जोखिम को देखकर छिप जाता है,
किंतु अज्ञानी आगे ही बढ़ता जाता है, और यातना सहता है. 13 जो किसी
अनजान के ऋण की ज़मानत देता है, वह अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है; जब
कोई अनजान व्यक्तियों की ज़मानत लेने लगे, तब प्रतिभूति सुरक्षा में उसका वस्त्र
भी रख ले. 14 यदि किसी व्यक्ति को प्रातःकाल में अपने पड़ोसी को उच्च स्वर
में आशीर्वाद देता हुआ सुनो, तो उसे शाप समझना. 15 विवादी पत्नी तथा वर्षा
ऋतु में लगातार वृष्टि, दोनों ही समान हैं, 16 उसे नियंत्रित करने का प्रयास पवन
वेग को नियंत्रित करने का प्रयास जैसा, अथवा अपने दायें हाथ से तेल को
पकड़ने का प्रयास जैसा. 17 जिस प्रकार लोहे से ही लोहे पर धार बनाया जाता
है, वैसे ही एक व्यक्ति दूसरे के सुधार के लिए होते है. 18 अंजीर का फल वही
खाता है, जो उस वृक्ष की देखभाल करता है, वह, जो अपने स्वामी का ध्यान
रखता है, सम्मानित किया जाएगा. 19 जिस प्रकार जल में मुखमंडल की छाया
देख सकते हैं, वैसे ही व्यक्ति का जीवन भी हृदय को प्रतिबिंबित करता है. 20
मृत्यु और विनाश अब तक संतुष्ट नहीं हुए हैं, मनुष्य की आंखों की अभिलाषा
भी कभी संतुष्ट नहीं होती. (Sheol h7585) 21 चांदी की परख कुठाली से तथा
स्वर्ण की भट्टी से होती है, वैसे ही मनुष्य की परख उसकी प्रशंसा से की जाती
है. 22 यदि तुम मूर्ख को ओखली में डालकर मूसल से अनाज के समान भी
कूटो, तुम उससे उसकी मूर्खता को अलग न कर सकोगे. 23 अनिवार्य है कि
तुम्हें अपने पशुओं की स्थिति का यथोचित ज्ञान हो, अपने पशुओं का ध्यान
रखो; 24 क्योंकि, न तो धन-संपत्ति चिरकालीन होती है, और न यह कहा जा
सकता है कि राजपाट आगामी सभी पीढ़ियों के लिए सुनिश्चित हो गया. 25
जब सूखी घास एकत्र की जा चुकी हो और नई घास अंकुरित हो रही हो, जब
पर्वतों से जड़ी-बूटी एकत्र की जाती है, 26 तब मेमनों से तुम्हारे वस्त्रों की
आवश्यकता की पूर्ति होगी, और तुम बकरियों के मूल्य से खेत मोल ले सकोगे,
27 बकरियों के दूध इतना भरपूर होगा कि वह तुम्हारे संपूर्ण परिवार के लिए
पर्याप्त भोजन रहेगा; तुम्हारी सेविकाओं की ज़रूरत भी पूर्ण होती रहेगी.

28 जब कोई पीछा नहीं भी कर रहा होता, तब भी दुर्जन व्यक्ति भागता रहता
है, किंतु धर्मी वैसे ही निडर होते हैं, जैसे सिंह. 2 राष्ट्र में अराजकता
फैलने पर अनेक शासक उठ खड़े होते हैं, किंतु बुद्धिमान शासक के शासन में
स्थायी सुव्यवस्था बनी रहती है. 3 वह शासक, जो निर्धनों को उत्पीड़ित करता
है, ऐसी घनघोर वृष्टि-समान है, जो समस्त उपज को नष्ट कर जाती है. 4 कानून
को नहीं मानने वाला व्यक्ति दुर्जनों की प्रशंसा करते नहीं थकते, किंतु वे, जो
सामाजिक सुव्यवस्था का निर्वाह करते हैं, ऐसों का प्रतिरोध करते हैं. 5 दुष्ट लोग
न्याय का मूल्य नहीं समझ सकते, किंतु याहवेह के अभिलाषी इसे उत्तम रीति से
पहचानते हैं. 6 खराई का चलनेवाला निर्धन उस धनी से कहीं उत्तम है जिसकी
जीवनशैली कुटिल है. 7 नियमों का पालन करता है बुद्धिमान संतान, किंतु पेटू
का साथी अपने पिता को लज्जा लाता है. 8 जो कोई अपनी संपत्ति की वृद्धि
अतिशय ब्याज लेकर करता है, वह इसे उस व्यक्ति के लिए संचित कर रहा
होता है, जो निर्धनों को उदारतापूर्वक देता रहता है. 9 जो व्यक्ति नियम-व्यवस्था
का परित्याग करता है, उसकी प्रार्थना भी परमेश्वर के लिए घृणित हो जाती है.
10 जो कोई किसी धर्मी को भटका कर विसंगत चालचलन के लिए उकसाता है
वह अपने ही जाल में फंस जाएगा, किंतु खरे व्यक्ति का प्रतिफल सुखद होता है.
11 अपने ही विचार में धनाढ्य स्वयं को बुद्धिमान मानता है; जो गरीब और

समझदार है, वह देखता है कि धनवान कितना भ्रमित है. 12 धर्मी व्यक्ति की विजय पर अतिशय आनंद मनाया जाता है; किंतु जब दुष्ट उन्नत होने लगते हैं, प्रजा छिप जाती है. 13 जो अपने अपराध को छिपाए रखता है, वह समृद्ध नहीं हो पाता, किंतु वह, जो अपराध स्वीकार कर उनका परित्याग कर देता है, उस पर कृपा की जाएगी. 14 धन्य होता है वह व्यक्ति जिसके हृदय में याहवेह के प्रति श्रद्धा सर्वदा रहती है, किंतु जो अपने हृदय को कठोर बनाए रखता है, विपदा में जा पड़ता है. 15 निर्धनों के प्रति दुष्ट शासक का व्यवहार वैसा ही होता है जैसा दहाड़ते हुए सिंह अथवा आक्रामक रीछ का. 16 एक शासक जो समझदार नहीं, अपनी प्रजा को उत्पीड़ित करता है, किंतु वह, जिसे अनुचित अप्रिय है, आयुष्मान होता है. 17 यदि किसी की अंतरात्मा पर मनुष्य हत्या का बोझ है वह मृत्युपर्यंत छिपता और भागता रहेगा; यह उपयुक्त नहीं कि कोई उसकी सहायता करे. 18 जिसका चालचलन खराईपूर्ण है, वह विपत्तियों से बचा रहेगा, किंतु जिसके चालचलन में कुटिलता है, शीघ्र ही पतन के गर्त में जा गिरेगा. 19 जो किसान अपनी भूमि की जुताई-गुड़ाई करता रहता है, उसे भोजन का अभाव नहीं होता, किंतु जो व्यर्थ कार्यों में समय नष्ट करता है, निर्बुद्धि प्रमाणित होता है. 20 खरे व्यक्ति को प्रचुरता में आशीषें प्राप्त होती रहती है, किंतु जो शीघ्र ही धनाढ्य होने की धुन में रहता है, वह दंड से बच न सकेगा. 21 पक्षपात भयावह होता है. फिर भी यह संभव है कि मनुष्य मात्र रोटी के एक टुकड़े को प्राप्त करने के लिए अपराध कर बैठे. 22 कंजूस व्यक्ति को धनाढ्य हो जाने की उतावली होती है, जबकि उन्हें यह अन्देशा ही नहीं होता, कि उसका निर्धन होना निर्धारित है. 23 अंततः कृपापात्र वही बन जाएगा, जो किसी को किसी भूल के लिए डांटता है, वह नहीं, जो चापलूसी करता रहता है. 24 जो अपने माता-पिता से संपत्ति छीनकर यह कहता है, "इसमें मैंने कुछ भी अनुचित नहीं किया है," लुटेरों का सहयोगी होता है. 25 लोभी व्यक्ति कलह उत्पन्न करा देता है, किंतु समृद्ध वह हो जाता है, जिसने याहवेह पर भरोसा रखा है. 26 मूर्ख होता है वह, जो मात्र अपनी ही बुद्धि पर भरोसा रखता है, किंतु सुरक्षित वह बना रहता है, जो अपने निर्णय विद्वत्ता में लेता है. 27 जो निर्धनों को उदारतापूर्वक दान देता है, उसे अभाव कभी नहीं होता, किंतु वह, जो दान करने से कतराता है अनेक ओर से शापित हो जाता है. 28 दुष्टों का उत्थान लोगों को छिपने के लिए विवश कर देता है; किंतु दुष्ट नष्ट हो जाते हैं, खरे की वृद्धि होने लगती है.

29 वह, जिसे बार-बार डांट पड़ती रहती है, फिर भी अपना हठ नहीं छोड़ता, उस पर विनाश अचानक रूप से टूट पड़ेगा और वह पुनः उठ न सकेगा. 2 जब खरे की संख्या में वृद्धि होती है, लोगों में हर्ष की लहर दौड़ जाती है; किंतु जब दुष्ट शासन करने लगते हैं, तब प्रजा कराहने लगती है. 3 बुद्धि से प्रेम करनेवाला पुत्र अपने पिता के हर्ष का विषय होता है, किंतु जो वेश्याओं में संलिप्त रहता है वह अपनी संपत्ति उड़ाता जाता है. 4 न्याय्यता पर ही राजा अपने राष्ट्र का निर्माण करता है, किंतु वह, जो जनता को करो के बोझ से दबा देता है, राष्ट्र के विनाश को आमंत्रित करता है. 5 जो अपने पड़ोसियों की चापलूसी करता है, वह अपने पड़ोसी के पैरों के लिए जाल बिछा रहा होता है. 6 दुष्ट अपने ही अपराधों में उलझा रहता है, किंतु धर्मी सदैव उल्लसित हो गीत गाता रहता है. 7 धर्मी को सदैव निर्धन के अधिकारों का बोध रहता है, किंतु दुष्ट को इस विषय का ज्ञान ही नहीं होता. 8 ठट्टा करनेवाले नगर को अग्नि लगाते हैं, किंतु बुद्धिमान ही कोप को शांत करते हैं. 9 यदि बुद्धिमान व्यक्ति किसी मूर्ख को न्यायालय ले जाता है, तो विवाद न तो शीघ्र क्रोधी होने से सुलझता है न ही हंसी में उड़ा देने से. 10 खून के प्यासे हिंसक व्यक्ति खराई से घृणा करते हैं, वे धर्मी के प्राणों के प्यासे हो जाते हैं. 11 क्रोध में मूर्ख व्यक्ति अनियंत्रित हो जाता है, किंतु बुद्धिमान संयमपूर्वक शांत बना रहता है. 12 यदि शासक असत्य को सुनने लगता है, उसके सभी मंत्री कुटिल बन जाते हैं. 13 अत्याचारी और निर्धन व्यक्ति में एक साम्य अवश्य है: दोनों ही को याहवेह ने दृष्टि प्रदान की है. 14 यदि राजा पूर्ण खराई में निर्धन का न्याय करता है, उसका सिंहासन स्थायी रहता है. 15 ज्ञानोदय के साधन हैं डांट और छड़ी, किंतु जिस बालक पर ये प्रयुक्त न हुए हों, वह माता की लज्जा का कारण हो जाता है. 16 दुष्टों की संख्या में वृद्धि अपराध दर में वृद्धि करती है, किंतु धर्मी उनके पतन के दर्शक होते हैं. 17 अपने पुत्र को अनुशासन में रखो कि तुम्हारा भविष्य सुखद हो; वही तुम्हारे हृदय को आनंदित रखेगा. 18 भविष्य के दर्शन के अभाव में लोग प्रतिबन्ध तोड़ फेंकते हैं; किंतु धन्य होता है वह, जो नियमों का पालन करता है. 19 सेवकों के अनुशासन के लिए मात्र शब्द निर्देश पर्याप्त नहीं होता; वे इसे समझ अवश्य लेंगे, किंतु इसका पालन नहीं करेंगे. 20 एक मूर्ख व्यक्ति से उस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक आशा की जा सकती है, जो बिना विचार अपना मत दे देता है. 21 यदि सेवक को बाल्यकाल से ही जो भी चाहे दिया जाए, तो अंततः वह घमंडी हो जाएगा. 22 शीघ्र क्रोधी व्यक्ति कलह करनेवाला होता है, और अनियंत्रित क्रोध का दास अनेक अपराध कर बैठता है. 23 अहंकार ही व्यक्ति के पतन का कारण होता है, किंतु वह, जो आत्मा में विनम्र है, सम्मानित किया जाता है. 24 जो चोर का साथ देता है, वह अपने ही प्राणों का शत्रु होता है; वह न्यायालय में सबके द्वारा शापित किया जाता है, किंतु फिर भी सत्य प्रकट नहीं कर सकता. 25 लोगों से भयभीत होना उलझन प्रमाणित होता है, किंतु जो कोई याहवेह पर भरोसा रखता है, सुरक्षित रहता है. 26 शासक के प्रिय पात्र सभी बनना चाहते हैं, किंतु वास्तविक न्याय याहवेह के द्वारा निष्पन्न होता है. 27 अन्यायी खरे के लिए तुच्छ होते हैं; किंतु वह, जिसका चालचलन खरा है, दुष्टों के लिए तुच्छ होता है.

30 याकेह के पुत्र आगूर का वक्तव्य—एक प्रकाशन ईथिएल के लिए. इस मनुष्य की घोषणा—ईथिएल और उकाल के लिए: 2 निःसंदेह, मैं इन्सान नहीं, जानवर जैसा हूं; मनुष्य के समान समझने की क्षमता भी खो चुका हूं. 3 न तो मैं ज्ञान प्राप्त कर सका हूं, और न ही मुझमें महा पवित्र परमेश्वर को समझने की कोई क्षमता शेष रह गई है. 4 कौन है, जो स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया है? किसने वायु को अपनी मुट्ठी में एकत्र कर रखा है? किसने महासागर को वस्त्र में बांधकर रखा है? किसने पृथ्वी की सीमाएं स्थापित कर दी हैं? क्या है उनका नाम और क्या है उनके पुत्र का नाम? यदि आप जानते हैं! तो मुझे बता दीजिए. 5 "परमेश्वर का हर एक वचन प्रामाणिक एवं सत्य है; वही उनके लिए ढाल समान हैं जो उनमें आश्रय लेते हैं. 6 उनके वक्तव्य में कुछ भी न जोड़ा जाए ऐसा न हो कि तुम्हें उनकी फटकार सुननी पड़े और तुम झूठ प्रमाणित हो जाओ. 7 "अपनी मृत्यु के पूर्व मैं आपसे दो आग्रह कर रहा हूं; मुझे इनसे वंचित न कीजिए. 8 मुझसे वह सब अत्यंत दूर कर दीजिए, जो झूठ है, असत्य है; न तो मुझे निर्धनता में डालिए और न मुझे धन दीजिए, मात्र मुझे उतना ही भोजन प्रदान कीजिए, जितना आवश्यक है. 9 ऐसा न हो कि सम्पन्नता में मैं आपका त्याग ही कर दूं और कहने लगूं, 'कौन है यह याहवेह?' अथवा ऐसा न हो कि निर्धनता की स्थिति में मैं चोरी करने के लिए बाध्य हो जाऊं, और मेरे परमेश्वर के नाम को कलंकित कर बैठूं. 10 "किसी सेवक के विरुद्ध उसके स्वामी के कान न भरना, ऐसा न हो कि वह सेवक तुम्हें शाप दे और तुम्हीं दोषी पाए जाओ. 11 "एक पीढ़ी ऐसी है, जो अपने ही पिता को शाप देती है, तथा उनके मुख से उनकी माता के लिए कोई भी धन्य उद्गार नहीं निकलते; 12 कुछ की दृष्टि में उनका अपना चालचलन शुद्ध होता है किंतु वस्तुतः उनकी अपनी ही मलिनता से वे धुले हुए नहीं होते है; 13 एक और समूह ऐसा है, आंखें गर्व से चढ़ी हुई तथा उन्नत भौंहें; 14 कुछ वे हैं, जिनके दांत तलवार समान तथा जबड़ा चाकू समान हैं, कि पृथ्वी से उत्पीड़ितों को तथा निर्धनों को मनुष्यों के मध्य में से लेकर निगल जाएं. 15 "जोंक की दो बेटियां हैं. जो चिल्लाकर

कहती हैं, 'और दो! और दो!' "तीन वस्तुएं असंतुष्ट ही रहती है, वस्तुतः चार
कभी नहीं कहती, 'अब बस करो!': **16** अधोलोक तथा बांझ की कोख;
भूमि, जो जल से कभी तृप्त नहीं होती, और अग्नि, जो कभी नहीं कहती,
'बस!' **(Sheol h7585)** **17** "वह नेत्र, जो अपने पिता का अनादर करते हैं, तथा
जिसके लिए माता का आज्ञापालन घृणास्पद है, घाटी के कौवों द्वारा नोच-
नोच कर निकाल लिया जाएगा, तथा गिद्धों का आहार हो जाएगा. **18** "तीन
वस्तुएं मेरे लिए अत्यंत विस्मयकारी हैं, वस्तुतः चार, जो मेरी समझ से सर्वथा
परे हैं: **19** आकाश में गरूड़ की उड़ान, चट्टान पर सर्प का रेंगना, महासागर
पर जलयान का आगे बढ़ना, तथा पुरूष और स्त्री का पारस्परिक संबंध. **20**
"व्यभिचारिणी स्त्री की चाल यह होती है: संभोग के बाद वह कहती है, 'क्या
विसंगत किया है मैंने.' मानो उसने भोजन करके अपना मुख पोंछ लिया हो. **21**
"तीन परिस्थितियां ऐसी हैं, जिनमें पृथ्वी तक कांप उठती है; वस्तुतः चार इसे
असहाय हैं: **22** दास का राजा बन जाना, मूर्ख व्यक्ति का छक कर भोजन
करना, **23** पूर्णतः घिनौनी स्त्री का विवाह हो जाना तथा दासी का स्वामिनी का
स्थान ले लेना. **24** "पृथ्वी पर चार प्राणी ऐसे हैं, जो आकार में तो छोटे हैं, किंतु
हैं अत्यंत बुद्धिमान: **25** चीटियों की गणना सशक्त प्राणियों में नहीं की जाती,
फिर भी उनकी भोजन की इच्छा ग्रीष्मकाल में भी समाप्त नहीं होती; **26**
चट्टानों के निवासी बिज्जू सशक्त प्राणी नहीं होते, किंतु वे अपना आश्रय चट्टानों
में बना लेते हैं; **27** अरबेह टिड्डियों का कोई शासक नहीं होता, फिर भी वे सैन्य
दल के समान पंक्तियों में आगे बढ़ती हैं; **28** छिपकली, जो हाथ से पकड़े जाने
योग्य लघु प्राणी है, किंतु इसका प्रवेश राजमहलों तक में होता है. **29** "तीन हैं,
जिनके चलने की शैली अत्यंत भव्य है, चार की गति अत्यंत प्रभावशाली है: **30**
सिंह, जो सभी प्राणियों में सबसे अधिक शक्तिमान है, वह किसी के कारण पीछे
नहीं हटता; **31** गर्वीली चाल चलता हुआ मुर्ग, बकरा, तथा अपनी सेना के
साथ आगे बढ़ता हुआ राजा. **32** "यदि तुम आत्मप्रशंसा की मूर्खता कर बैठे हो,
अथवा तुमने कोई षड्यंत्र गढ़ा है, तो अपना हाथ अपने मुख पर रख लो! **33**
जिस प्रकार दूध के मंथन से मक्खन तैयार होता है, और नाक पर घूंसे के प्रहार
से रक्त निकलता है, उसी प्रकार क्रोध को भड़काने से कलह उत्पन्न होता है."

31 ये राजा लमूएल द्वारा प्रस्तुत नीति सूत्र हैं, जिनकी शिक्षा उन्हें उनकी
माता द्वारा दी गई थी. **2** सुन, मेरे पुत्र! सुन, मेरे ही गर्भ से जन्मे पुत्र! सुन,
मेरी प्रार्थनाओं के प्रत्युत्तर पुत्र! **3** अपना पौरुष स्त्रियों पर व्यय न करना और न
अपने संसाधन उन पर लुटाना, जिन्होंने राजाओं तक के अवपात में योग दिया
है. **4** लमूएल, यह राजाओं के लिए कदापि उपयुक्त नहीं है, दाखमधु राजाओं
के लिए सुसंगत नहीं है, शासकों के लिए मादक द्रव्यपान भला नहीं होता.
5 ऐसा न हो कि वे पीकर कानून को भूल जाएं, और दीन दलितों से उनके
अधिकार छीन लें. **6** मादक द्रव्य उन्हें दो, जो मरने पर हैं, दाखमधु उन्हें दो, जो
घोर मन में उदास हैं! **7** वे पिएं तथा अपनी निर्धनता को भूल जाएं और उन्हें
उनकी दुर्दशा का स्मरण न आएं. **8** उनके पक्ष में खड़े होकर उनके लिए न्याय
प्रस्तुत करो, जो अपना पक्ष प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं. **9** निडरतापूर्वक न्याय
प्रस्तुत करो और बिना पक्षपात न्याय दो; निर्धनों और निर्धनों के अधिकारों की
रक्षा करो. **10** किसे उपलब्ध होती है उत्कृष्ट, गुणसंपन्न पत्नी? उसका मूल्य रत्नों
से कहीं अधिक बढ़कर है. **11** उसका पति उस पर पूर्ण भरोसा करता है और
उसके कारण उसके पति का मूल्य अपरिमित होता है. **12** वह आजीवन अपने
पति का हित ही करती है, बुरा कभी नहीं. **13** वह खोज कर ऊन और पटसन
ले आती है और हस्तकार्य में उसकी गहरी रुचि है. **14** व्यापारिक जलयानों के
समान, वह दूर-दूर जाकर भोज्य वस्तुओं का प्रबंध करती है. **15** रात्रि समाप्त
भी नहीं होती, कि वह उठ जाती है; और अपने परिवार के लिए भोजन का
प्रबंध करती तथा अपनी परिचारिकाओं को उनके काम संबंधी निर्देश देती है.
16 वह जाकर किसी भूखण्ड को परखती है और उसे मोल ले लेती है; वह
अपने अर्जित धन से द्राक्षावाटिका का रोपण करती है. **17** वह कमर कसकर
तत्परतापूर्वक कार्य में जुट जाती है; और उसकी बाहें सशक्त रहती हैं. **18** उसे
यह बोध रहता है कि उसका लाभांश ऊंचा रहे, रात्रि में भी उसकी समृद्धि का
दीप बुझने नहीं पाता. **19** वह चरखे पर कार्य करने के लिए बैठती है और उसके
हाथ तकली पर चलने लगते हैं. **20** उसके हाथ निर्धनों की ओर बढ़ते हैं और
वह निर्धनों की सहायता करती है. **21** शीतकाल का आगमन उसके परिवार के
लिए चिंता का विषय नहीं होता; क्योंकि उसके समस्त परिवार के लिए पर्याप्त
ऊनी वस्त्र तैयार रहते हैं. **22** वह अपने लिए बाह्य ऊनी वस्त्र भी तैयार रखती है;
उसके सभी वस्त्र उत्कृष्ट तथा भव्य ही होते हैं. **23** जब राज्य परिषद का सत्र होता
है, तब प्रमुखों में उसका पति अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है. **24** वह पटसन के
वस्त्र बुनकर उनका विक्रय कर देती है, तथा व्यापारियों को दुपट्टे बेचती है. **25**
वह शक्ति और सम्मान धारण किए हुए है; भविष्य की आशा में उसका उल्लास
है. **26** उसके मुख से विद्वत्तापूर्ण वचन ही बोले जाते हैं, उसके वचन कृपा-प्रेरित
होते हैं. **27** वह अपने परिवार की गतिविधि पर नियंत्रण रखती है और आलस्य
का भोजन उसकी चर्या में है ही नहीं. **28** प्रातःकाल उठकर उसके बालक
उसकी प्रशंसा करते हैं; उसका पति इन शब्दों में उसकी प्रशंसा करते नहीं
थकता: **29** "अनेक स्त्रियों ने उत्कृष्ट कार्य किए हैं, किंतु तुम उन सबसे उत्कृष्ट
हो." **30** आकर्षण एक झूठ है और सौंदर्य द्रुत गति से उड़ जाता है; किंतु जिस
स्त्री में याहवेह के प्रति श्रद्धा विद्यमान है, वह प्रशंसनीय रहेगी. **31** उसके परिश्रम
का श्रेय उसे दिया जाए, और उसके कार्य नगर में घोषित किए जाएं.

सभोपदेशक

1 दावीद के पुत्र, येरूशलेम में राजा, दार्शनिक के वचन: 2 “बेकार ही
बेकार!” दार्शनिक का कहना है. “बेकार ही बेकार! बेकार है सब कुछ.”
3 सूरज के नीचे मनुष्य द्वारा किए गए कामों से उसे क्या मिलता है? 4 एक
पीढ़ी खत्म होती है और दूसरी आती है, मगर पृथ्वी हमेशा बनी रहती है. 5
सूरज उगता है, सूरज डूबता है, और बिना देर किए अपने निकलने की जगह पर
पहुंच दोबारा उगता है. 6 दक्षिण की ओर बहती हुई हवा उत्तर दिशा में मुड़कर
निरंतर घूमते हुए अपने घेरे में लौट आती है. 7 हालांकि सारी नदियां सागर में
मिल जाती हैं, मगर इससे सागर भर नहीं जाता. नदियां दोबारा उसी जगह पर
बहने लगती हैं, जहां वे बह रही थीं. 8 इतना थकाने वाला है सभी कुछ, कि
मनुष्य के लिए इसका वर्णन संभव नहीं. आंखें देखने से तृप्त नहीं होतीं, और न
कान सुनने से संतुष्ट. 9 जो हो चुका है, वही है जो दोबारा होगा, और जो किया
जा चुका है, वही है जो दोबारा किया जाएगा; इसलिये धरती पर नया कुछ भी
नहीं. 10 क्या कुछ ऐसा है जिसके बारे में कोई यह कह सके, “इसे देखो! यह
है नया?” यह तो हमसे पहले के युगों से होता आ रहा है. 11 कुछ याद नहीं
कि पहले क्या हुआ, और न यह कि जो होनेवाला है. और न ही उनके लिए
कोई याद बची रह जाएगी जो उनके भी बाद आनेवाले हैं. 12 मैं, दार्शनिक,
येरूशलेम में इस्राएल का राजा रहा हूं. 13 धरती पर जो सारे काम किए जाते हैं,
मैंने बुद्धि द्वारा उन सभी कामों के जांचने और अध्ययन करने में अपना मन
लगाया. यह बड़े दुःख का काम है, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के लिए इसलिये
ठहराया है कि वह इसमें उलझा रहे! 14 मैंने इन सभी कामों को जो इस धरती
पर किए जाते हैं, देखा है, और मैंने यही पाया कि यह बेकार और हवा से
झगड़ना है. 15 जो टेढ़ा है, उसे सीधा नहीं किया जा सकता; और जो है ही
नहीं, उसकी गिनती कैसे हो सकती है. 16 “मैं सोच रहा था, येरूशलेम में
मुझसे पहले जितने भी राजा हुए हैं, मैंने उन सबसे ज्यादा बुद्धि पाई है तथा
उन्नति की है; मैंने बुद्धि और ज्ञान के धन का अनुभव किया है.” 17 मैंने अपना
हृदय बुद्धि को और बावलेपन और मूर्खता को जानने में लगाया, किंतु मुझे
अहसास हुआ कि यह भी हवा से झगड़ना ही है. 18 क्योंकि ज्यादा बुद्धि में
बहुत दुःख होता है; ज्ञान बढ़ाने से दर्द भी बढ़ता है.

2 मैंने अपने आपसे कहा, “चलो, मैं आनंद के द्वारा तुम्हें परखूंगा.” इसलिये
आनंदित और मगन हो जाओ. मगर मैंने यही पाया कि यह भी बेकार ही है.
2 मैंने हंसी के बारे में कहा, “यह बावलापन है” और आनंद के बारे में, “इससे
क्या मिला?” 3 जब मेरा मन यह सोच रहा था कि किस प्रकार मेरी बुद्धि बनी
रहे, मैंने अपने पूरे मन से इसके बारे में खोज कर डाली कि किस प्रकार दाखमधु
से शरीर को बहलाया जा सकता है और किस प्रकार मूर्खता को काबू में किया
जा सकता है, कि मैं यह समझ सकूं कि पृथ्वी पर मनुष्यों के लिए उनके छोटे
से जीवन में क्या करना अच्छा है. 4 मैंने अपने कामों को बढ़ाया: मैंने अपने
लिए घरों को बनाया, मैंने अपने लिए अंगूर के बगीचे लगाए. 5 मैंने बगीचे
और फलों के बागों को बनाया और उनमें सब प्रकार के फलों के पेड़ लगाए.
6 वनों में सिंचाई के लिए मैंने तालाब बनवाए ताकि उससे पेड़ बढ़ सकें. 7 मैंने
दास-दासी खरीदें जिनकी मेरे यहां ही संतानें भी पैदा हुईं. मैं बहुत से गाय-बैलों
का स्वामी हो गया. जो मुझसे पहले थे उनसे कहीं अधिक मेरे गाय-बैल थे. 8
मैंने अपने आपके लिए सोने, चांदी तथा राज्यों व राजाओं से धन इकट्ठा किया,
गायक-गायिकाएं चुन लिए और उपपत्नियां भी रखीं जिससे पुरुषों को सुख
मिलता है. 9 मैं येरूशलेम में अपने से पहले वालों से बहुत अधिक महान हो
गया. मेरी बुद्धि ने हमेशा ही मेरा साथ दिया. 10 मेरी आंखों ने जिस किसी चीज़
की इच्छा की; मैंने उन्हें उससे दूर न रखा और न अपने मन को किसी आनंद से;
क्योंकि मेरी उपलब्धियों में मेरी संतुष्टि थी, और यही था मेरे परिश्रम का
पुरस्कार. 11 इसलिये मैंने अपने द्वारा किए गए सभी कामों को, और अपने द्वारा
की गई मेहनत को नापा, और यही पाया कि यह सब भी बेकार और हवा
से झगड़ना था; और धरती पर इसका कोई फायदा नहीं. 12 सो मैंने बुद्धि,
बावलेपन तथा मूर्खता के बारे में विचार किया. राजा के बाद आनेवाला इसके
अलावा और क्या कर सकता है? केवल वह जो पहले से होता आया है. 13
मैंने यह देख लिया कि बुद्धि मूर्खता से बेहतर है, जैसे रोशनी अंधकार से. 14
बुद्धिमान अपने मन की आंखों से व्यवहार करता है, जबकि मूर्ख अंधकार में
चलता है. यह सब होने पर भी मैं जानता हूं कि दोनों का अंतिम परिणाम एक ही
है. 15 मैंने मन में विचार किया, जो दशा मूर्ख की है वही मेरी भी होगी. तो मैं
अधिक बुद्धिमान क्यों रहा? “मैंने स्वयं को याद दिलाया, यह भी बेकार ही है.”
16 बुद्धिमान को हमेशा याद नहीं किया जाएगा जैसे मूर्ख को; कुछ दिनों में ही
वे भुला दिए जाएंगे. बुद्धिमान की मृत्यु कैसे होती है? मूर्ख के समान ही न! 17
इसलिये मुझे जीवन से घृणा हो गई क्योंकि धरती पर जो कुछ किया गया था
वह मेरे लिए तकलीफ़ देनेवाला था; क्योंकि सब कुछ बेकार और हवा से
झगड़ना था. 18 इसलिये मैंने जो भी मेहनत इस धरती पर की थी उससे मुझे
नफ़रत हो गई, क्योंकि इसे मुझे अपने बाद आनेवाले के लिए छोड़ना पड़ेगा.
19 और यह किसे मालूम है कि वह बुद्धिमान होगा या मूर्ख. मगर वह उन सभी
वस्तुओं का अधिकारी बन जाएगा जिनके लिए मैंने धरती पर बुद्धिमानी से
मेहनत की. यह भी बेकार ही है. 20 इसलिये धरती पर मेरे द्वारा की गई मेहनत
के प्रतिफल से मुझे घोर निराशा हो गई. 21 कभी एक व्यक्ति बुद्धि, ज्ञान और
कुशलता के साथ मेहनत करता है और उसे हर एक वस्तु उस व्यक्ति के आनंद
के लिए त्यागनी पड़ती है जिसने उसके लिए मेहनत ही नहीं की. यह भी बेकार
और बहुत बुरा है. 22 मनुष्य को अपनी सारी मेहनत और कामों से, जो वह
धरती पर करता है, क्या मिलता है? 23 वास्तव में सारे जीवन में उसकी पूरी
मेहनत दुःखों और कष्टों से भरी होती है; यहां तक की रात में भी उसके मन को
और दिमाग को आराम नहीं मिल पाता. यह भी बेकार ही है. 24 मनुष्य के
लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं है कि वह खाए, पिए और खुद को विश्वास
दिलाए कि उसकी मेहनत उपयोगी है. मैंने यह भी पाया है कि इसमें परमेश्वर का
योगदान होता है, 25 नहीं तो कौन परमेश्वर से अलग हो खा-पीकर सुखी
रह सकता है? 26 क्योंकि जो मनुष्य परमेश्वर की नज़रों में अच्छा है, उसे
परमेश्वर ने बुद्धि, ज्ञान और आनंद दिया है, मगर पापी को परमेश्वर ने इकट्ठा
करने और बटोरने का काम दिया है सिर्फ इसलिये कि वह उस व्यक्ति को दे दे
जो परमेश्वर की नज़रों में अच्छा है. यह सब भी बेकार और हवा से झगड़ना
है.

3 हर एक काम के लिए एक तय समय है, और धरती पर हर एक काम करने
का एक समय होता है: 2 जन्म का समय और मृत्यु का समय; बोने का
समय और बोए हुए को उखाड़ने का समय. 3 मार डालने का समय और स्वस्थ
करने का समय; गिराने का समय और बनाने का समय; 4 रोने का समय और
हंसने का समय; शोक करने का समय और नाचने का समय. 5 पत्थर फेंकने
का समय और पत्थर इकट्ठा करने का समय; गले लगाने का समय और गले न
लगाने का समय. 6 खोजने का समय और छोड़ देने का समय; बचाकर रखने
का समय और फेंक देने का समय. 7 फाड़ने का समय और सीने का समय; चुप
रहने का समय और बोलने का समय. 8 प्रेम का समय और नफरत का समय;
युद्ध का समय और शांति का समय. 9 मेहनत करनेवाले को उससे क्या लाभ
जिसके लिए वह मेहनत करता है? 10 मनुष्य को व्यस्त रखने के लिए परमेश्वर
द्वारा ठहराए गए कामों का अनुभव मैंने किया है. 11 उन्होंने हर एक वस्तु को
उसके लिए सही समय में ही बनाया है. उन्होंने मनुष्य के हृदय में अनंत काल

का अहसास जगाया, फिर भी मनुष्य नहीं समझ पाता कि परमेश्वर ने शुरू
से अंत तक क्या किया है. **12** मैं जानता हूं कि मनुष्य के लिए इससे सही
और कुछ नहीं कि वह जीवन में खुश रहे तथा दूसरों के साथ भलाई करने
में लगा रहे. **13** हर एक व्यक्ति खाते-पीते अपनी मेहनत के कामों में संतुष्ट
रहे—यह मनुष्य के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया वरदान है. **14** मुझे मालूम है
कि परमेश्वर द्वारा किया गया-हर-एक काम सदा बना रहेगा; ऐसा कुछ भी नहीं
कि इसमें जोड़ा नहीं जा सकता या इससे अलग किया जा सके. परमेश्वर ने ऐसा
इसलिये किया है कि लोग उनके सामने श्रद्धा और भय में रहें. **15** वह जो है,
पहले ही हो चुका तथा वह भी जो होने पर है, पहले ही हो चुका; क्योंकि
परमेश्वर बीती हुई बातों को फिर से दोहराते हैं. **16** इसके अलावा मैंने धरती पर
यह भी देखा कि: न्याय की जगह दुष्टता है, तथा अच्छाई की जगह में भी दुष्टता
ही होती है. **17** मैंने सोचा, "परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का ही न्याय करेंगे,
क्योंकि हर एक काम और हर एक आरंभ का एक समय तय है." **18** मनुष्यों
के बारे में मैंने सोचा, "परमेश्वर निश्चित ही उनको परखते हैं कि मनुष्य यह
समझ लें कि वे पशु के अलावा और कुछ नहीं. **19** क्योंकि मनुष्य तथा पशु
का अंत एक ही है: जैसे एक की मृत्यु होती है वैसे दूसरे की भी. उनकी सांस
एक जैसी है; मनुष्य पशु से किसी भी तरह से बेहतर नहीं, क्योंकि सब कुछ
बेकार है. **20** सब की मंज़िल एक है. सभी मिट्टी से बने हैं और मिट्टी में मिल भी
जाते हैं. **21** किसे मालूम है कि मनुष्य के प्राण ऊपरी लोक में जाते हैं तथा पशु
के प्राण पाताल में?" **22** मैंने यह पाया कि मनुष्य के लिए इससे बेहतर कुछ
नहीं है कि वह अपने कामों में संतुष्ट रहे, यही है उसकी मंज़िल. उसे कौन इस
स्थिति में ला सकता है कि वह देख पाए कि क्या होगा उसके बाद?

4 धरती पर किए जा रहे अत्याचार को देखकर मैंने दोबारा सोचा: मैंने
अत्याचार सहने वाले व्यक्तियों के आंसुओं को देखा और यह भी कि उन्हें
शांति देने के लिए कोई भी नहीं है; अत्याचारियों के पास तो उनका अधिकार
था, मगर अत्याचार सहने वालों के पास शांति देने के लिए कोई भी न था. **2** सो
मैंने जीवितों की तुलना में, मरे हुओं को, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, अधिक
सराहा कि वे अधिक खुश हैं. **3** मगर इन दोनों से बेहतर तो वह है जो कभी
आया ही नहीं और जिसने इस धरती पर किए जा रहे कुकर्मों को देखा ही नहीं.
4 मैंने यह भी पाया कि सारी मेहनत और सारी कुशलता मनुष्य एवं उसके
पड़ोसी के बीच जलन के कारण है. यह भी बेकार और हवा से झगड़ना है. **5**
मूर्ख अपने हाथ पर हाथ रखे बैठा रहता है, और खुद को बर्बाद करता है. **6** दो
मुट्ठी भर मेहनत और हवा से संघर्ष की बजाय बेहतर है जो कुछ मुट्ठी भर तुम्हारे
पास है उसमें आराम के साथ संतुष्ट रहना. **7** तब मैंने धरती पर दोबारा बेकार की
बात देखी: **8** एक व्यक्ति जिसका कोई नहीं है; न पुत्र, न भाई. उसकी मेहनत
का कोई अंत नहीं. वह पर्याप्त धन कमा नहीं पाता, फिर भी वह यह प्रश्न कभी
नहीं करता, "मैं अपने आपको सुख से दूर रखकर यह सब किसके लिए कर
रहा हूं?" यह भी बेकार, और दुःख भरी स्थिति है! **9** एक से बेहतर हैं दो,
क्योंकि उन्हें मेहनत का बेहतर प्रतिफल मिलता है: **10** यदि उनमें से एक गिर
भी जाए, तो दूसरा अपने मित्र को उठा लेगा, मगर शोक है उस व्यक्ति के लिए
जो गिरता है और उसे उठाने के लिए कोई दूसरा नहीं होता. **11** अगर दो व्यक्ति
साथ साथ सोते हैं तो वे एक दूसरे को गर्म रखते हैं. मगर अकेला व्यक्ति अपने
आपको कैसे गर्म रख सकता है? **12** अकेले व्यक्ति पर तो हावी होना संभव है,
मगर दो व्यक्ति उसका सामना कर सकते हैं: तीन डोरियों से बनी रस्सी को
आसानी से नहीं तोड़ा जा सकता. **13** एक गरीब मगर बुद्धिमान नौजवान एक
निर्बुद्धि बूढ़े राजा से बेहतर है, जिसे यह समझ नहीं रहा कि सलाह कैसे ली
जाए. **14** वह बंदीगृह से सिंहासन पर जा बैठा हालांकि वह अपने राज्य में गरीब
ही जन्मा था. **15** मैंने धरती पर घूमते हुए सभी प्राणियों को उस दूसरे नौजवान
की ओर जाते देखा, जो पहले वालों की जगह लेगा. **16** अनगिनत थे वे लोग
जिनका वह राजा था. फिर भी जो इनके बाद आएंगे उससे खुश न होंगे. निश्चित
ही यह भी बेकार और हवा से झगड़ना है.

5 परमेश्वर के भवन में जाने पर अपने व्यवहार के प्रति सावधान रहना और
मूर्खों के समान बलि भेंट करने से बेहतर है परमेश्वर के समीप आना. मूर्ख
तो यह जानते ही नहीं कि वे क्या गलत कर रहे हैं. **2** अपनी किसी बात में
उतावली न करना, न ही परमेश्वर के सामने किसी बात को रखने में जल्दबाजी
करना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तुम पृथ्वी पर हो, इसलिये अपने शब्दों
को थोड़ा ही रखना. **3** स्वप्न किसी काम में बहुत अधिक लीन होने के कारण
आता है, और मूर्ख अपने बक-बक करने की आदत से पहचाना जाता है. **4** यदि
तुमने परमेश्वर से कोई मन्नत मानी तो उसे पूरा करने में देर न करना; क्योंकि
परमेश्वर मूर्ख से प्रसन्न नहीं होते; पूरी करो अपनी मन्नत. **5** मन्नत मानकर उसे
पूरी न करने से कहीं अधिक अच्छा है कि तुम मन्नत ही न मानो. **6** तुम्हारी
बातें तुम्हारे पाप का कारण न हों. परमेश्वर के स्वर्गदूत के सामने तुम्हें यह
न कहना पड़े, "मुझसे गलती हुई." परमेश्वर कहीं तुम्हारी बातों के कारण
क्रोधित न हों और तुम्हारे कामों को नाश कर डालें. **7** क्योंकि स्वप्नों की
अधिकता और बक-बक करने में खोखलापन होता है, इसलिए तुम परमेश्वर के
प्रति भय बनाए रखो. **8** अगर तुम अपने क्षेत्र में गरीब पर अत्याचार और उसे
न्याय और धर्म से दूर होते देखो; तो हैरान न होना क्योंकि एक अधिकारी दूसरे
अधिकारी के ऊपर होता है और उन पर भी एक बड़ा अधिकारी. **9** वास्तव में
जो राजा खेती को बढ़ावा देता है, वह सारे राज्य के लिए वरदान साबित होता है.
10 जो धन से प्रेम रखता है, वह कभी धन से संतुष्ट न होगा; और न ही वह जो
बहुत धन से प्रेम करता है. यह भी बेकार ही है. **11** जब अच्छी वस्तुएं बढ़ती हैं,
तो वे भी बढ़ते हैं, जो उनको इस्तेमाल करते हैं. उनके स्वामी को उनसे क्या
लाभ? सिवाय इसके कि वह इन्हें देखकर संतुष्ट हो सके. **12** मेहनत करनेवाले
के लिए नींद मीठी होती है, चाहे उसने ज्यादा खाना खाया हो या कम, मगर
धनी का बढ़ता हुआ धन उसे सोने नहीं देता. **13** एक और बड़ी बुरी बात है जो
मैंने सूरज के नीचे देखी: कि धनी ने अपनी धन-संपत्ति अपने आपको ही कष्ट
देने के लिए ही कमाई थी. **14** उसने धन-संपत्ति निष्फल जगह लगा दी है, वह
धनी एक पुत्र का पिता बना. मगर उसकी सहायता के लिए कोई नहीं है. **15**
जैसे वह अपनी मां के गर्भ से नंगा आया था, उसे लौट जाना होगा, जैसे वह
आया था. ठीक वैसे ही वह अपने हाथ में अपनी मेहनत के फल का कुछ भी
नहीं ले जाएगा. **16** यह भी एक बड़ी बुरी बात है: ठीक जैसे एक व्यक्ति का
जन्म होता है, वैसे ही उसकी मृत्यु भी हो जाएगी. तो उसके लिए इसका क्या
फायदा, जो हवा को पकड़ने के लिए मेहनत करता है? **17** वह अपना पूरा
जीवन रोग, क्रोध और बहुत ही निराशा में बिताता है. **18** मैंने जो एक अच्छी
बात देखी वह यह है: कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा दिए गए जीवन में खाए, पिए
और अपनी मेहनत में, जो वह सूरज के नीचे करता है, के ईनाम में खुश रहे. **19**
और हर एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने धन-संपत्ति दी है तो परमेश्वर ने उसे
उनका इस्तेमाल करने, उनके ईनाम को पाने और अपनी मेहनत से खुश होने की
योग्यता भी दी है; यह भी परमेश्वर द्वारा दिया गया ईनाम ही है. **20** मनुष्य अपने
पूरे जीवन को हमेशा के लिए याद नहीं रखेगा, क्योंकि परमेश्वर उसे उसके
दिल के आनंद में व्यस्त रखते हैं.

6 मैंने सूरज के नीचे एक बुरी बात देखी जो मनुष्य पर बहुत अधिक हावी है.
2 एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने धन-संपत्ति और सम्मान दिया है जिससे उसे
उस किसी भी वस्तु की कमी न हो जिसे उसका मन चाहता है; मगर परमेश्वर ने
उसे उनको इस्तेमाल करने की समझ नहीं दी, उनका आनंद तो एक विदेशी

लेता है. यह बेकार और बड़ी ही बुरी बात है. 3 यदि एक व्यक्ति सौ पुत्रों का पिता है और वह बहुत साल जीवित रहता है, चाहे उसकी आयु के साल बहुत हों, पर अगर वह अपने जीवन भर में अच्छी वस्तुओं का इस्तेमाल नहीं करता और उसे क्रिया-कर्म ही नहीं किया गया तो मेरा कहना तो यही है कि एक मरा हुआ जन्मा बच्चा उस व्यक्ति से बेहतर है, 4 क्योंकि वह बच्चा बेकार में आता है और अंधेरे में चला जाता है. अंधेरे में उसका नाम छिपा लिया जाता है. 5 उस बच्चे ने सूरज को नहीं देखा और न ही उसे कुछ मालूम ही हुआ था. वह बच्चा उस व्यक्ति से कहीं अधिक बेहतर है. 6 दो बार जिसका जीवन दो हज़ार साल का हो मगर उस व्यक्ति ने किसी अच्छी वस्तु का इस्तेमाल न किया हो, क्या सभी लोग एक ही जगह पर नहीं जाते? 7 मनुष्य की सारी मेहनत उसके भोजन के लिए ही होती है, मगर उसका मन कभी संतुष्ट नहीं होता. 8 बुद्धिमान को निर्बुद्धि से क्या लाभ? और गरीब को यह मालूम होने से क्या लाभ कि उसे बुद्धिमानों के सामने कैसा व्यवहार करना है? 9 आंखों से देख लेना इच्छा रखने से कहीं अधिक बेहतर है. मगर यह भी बेकार ही है, सिर्फ हवा को पकड़ने की कोशिश. 10 जो हो चुका है उसका नाम भी रखा जा चुका है, और यह भी मालूम हो चुका है कि मनुष्य क्या है? मनुष्य उस व्यक्ति पर हावी नहीं हो सकता जो उससे बलवान है. 11 शब्द जितना अधिक है, अर्थ उतना कम होता है. इससे मनुष्य को क्या फायदा? 12 जिसे यह मालूम है कि उसके पूरे जीवन में मनुष्य के लिए क्या अच्छा है, अपने उस व्यर्थ जीवन के थोड़े से सालों में. वह एक परछाई के समान उन्हें बिता देगा. मनुष्य को कौन बता सकता है कि सूरज के नीचे उसके बाद क्या होगा?

7 सम्मानित होना इत्र से कहीं ज्यादा बेहतर है, और मृत्यु के दिन से बेहतर है किसी व्यक्ति के जन्म का दिन. 2 शोक के घर में जाना भोज के घर में जाने से कहीं ज्यादा अच्छा है, क्योंकि हर एक मनुष्य का अंत यही है; और जीवित इस पर ध्यान दें. 3 शोक करना हंसने से अच्छा है, क्योंकि हो सकता है कि चेहरा तो उदास हो मगर हृदय आनंदित. 4 बुद्धिमान का हृदय तो शोक करनेवालों के घर में होता है, मगर निर्बुद्धियों का हृदय भोज के घर में ही होता है. 5 एक बुद्धिमान की फटकार सुनना मूर्खों के गीतों को सुनने से बेहतर है. 6 मूर्खों की हंसी किसी बर्तन के नीचे कांटों के जलने की आवाज के समान होती है. और यह भी सिर्फ बेकार ही है. 7 अत्याचार बुद्धिमान को मूर्ख बना देता है और घूस हृदय को भ्रष्ट कर देती है. 8 किसी काम का अंत उसकी शुरुआत से बेहतर है, और धैर्य बेहतर है. घमण्ड से. 9 क्रोध करने में जल्दबाजी न करना, क्योंकि क्रोध निर्बुद्धियों के हृदय में रहता है. 10 तुम्हारा यह कहना न हो, "बीता हुआ समय आज से बेहतर क्यों था?" क्योंकि इस बारे में तुम्हारा यह कहना बुद्धि द्वारा नहीं है. 11 बुद्धि के साथ मीरास पाना सबसे अच्छा है, और उनके लिए यह एक फायदा है जो जीवित हैं. 12 बुद्धि की सुरक्षा वैसी ही है जैसे धन की सुरक्षा, मगर ज्ञान का फायदा यह है: कि बुद्धि बुद्धिमान को जीवित रखती है. 13 परमेश्वर के कामों पर मनन करो: क्योंकि वह ही इसके योग्य हैं कि टेढ़े को सीधा कर सकें. 14 भरपूरी के दिनों में तो खुश रहो; मगर दुःख के दिनों में विचार करो: दोनों ही परमेश्वर ने बनाए हैं, जिससे मनुष्य को यह मालूम हो कि उसके बाद क्या होगा. 15 अपने बेकार के जीवन में मैंने हर एक चीज़ देखी: धर्मी अपनी धार्मिकता में ही खत्म हो जाता है, किंतु जब दुष्टता करता है तब अपनी उम्र बढ़ाता है. 16 बहुत धर्मी न होना, और न ही बहुत बुद्धिमान बनना. इस प्रकार तुम अपना ही विनाश क्यों करो? 17 बहुत दुष्ट न होना, और न ही मूर्ख बनना. क्योंकि समय से पहले तुम्हारी मृत्यु क्यों हो? 18 अच्छा होगा कि तुम एक चीज़ पर अधिकार कर लो और अपने दूसरे हाथ को भी आराम न करने दो. क्योंकि परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय रखनेवाला व्यक्ति ही ये दोनों काम कर पाएगा. 19 बुद्धिमान के लिए बुद्धि नगर के दस शासकों से भी बलवान होती है. 20 पृथ्वी पर एक व्यक्ति भी ऐसा धर्मी नहीं है, जो अच्छे काम ही करता हो और पाप न करता हो. 21 लोगों की बातों पर ध्यान न देना, तो तुम अपने सेवक को तुम्हारी निंदा करते नहीं सुनोगे. 22 क्योंकि तुम्हें मालूम होगा कि ठीक इसी तरह तुम भी बहुतों की निंदा कर चुके हो. 23 इन सभी कामों की छानबीन मैंने बुद्धि द्वारा की और मैंने कहा, "मैं बुद्धिमान बनूंगा," मगर यह मुझसे बहुत दूर थी. 24 जो कुछ है वह हमारी बुद्धि से परे है. यह गहरा है, बहुत ही गहरा. उसकी थाह कौन पाएगा? 25 मैंने अपने हृदय से यह मालूम करने की कोशिश की कि बुद्धि और ज्ञान क्या हैं और दुष्ट की मूर्खता पता करूं और मूर्खता जो पागलपन ही है. 26 मुझे यह मालूम हुआ कि एक स्त्री जिसका हृदय घात लगाए रहता है, और उसके हाथ बेड़ियां डालते हैं वह मृत्यु से भी कड़वी है. उस स्त्री से वही व्यक्ति सुरक्षित बच निकलता है जो परमेश्वर के सामने अच्छा है, मगर पापी व्यक्ति उसका शिकार बन जाता है. 27 दार्शनिक कहता है, "देखो!" मुझे यह मालूम हुआ: "मैंने एक चीज़ से दूसरी को मिलाया, कि इसके बारे में मालूम कर सकूं, 28 जिसकी मैं अब तक खोज कर रहा हूं मगर वह मुझे नहीं मिली है. मैंने हज़ार पुरुष तो धर्मी पाए, मगर एक भी स्त्री नहीं! 29 मगर मुझे यह ज़रूर मालूम हुआ: परमेश्वर ने तो मनुष्यों को धर्मी होने के लिए रचा है, मगर वे अपने ही बनाए हुए निचले रास्ते पर बढ़ने लगे."

8 कौन बुद्धिमान के समान है? किसे इस बात का मतलब मालूम है? बुद्धि से बुद्धिमान का चेहरा चमक जाता है. 2 दार्शनिक कहता है, परमेश्वर के सामने ली गई शपथ के कारण राजा की आज्ञा का पालन करो. 3 उनके सामने से जाने में जल्दबाजी न करना और बुरी बातों पर हठ न करना, क्योंकि राजा वही करेंगे जो उनकी नज़रों में सही होगा. 4 राजा की बातों में तो अधिकार होता है, उन्हें कौन कहेगा, "आप क्या कर रहे हैं?" 5 जो व्यक्ति आज्ञा का पालन करता है, बुरा उसका भी न होगा, क्योंकि बुद्धिमान हृदय को सही समय और सही तरीका मालूम होता है. 6 क्योंकि हर एक खुशी के लिए सही समय और तरीका होता है, फिर भी एक व्यक्ति पर भारी संकट आ ही जाता है. 7 अगर किसी व्यक्ति को यह ही मालूम नहीं है कि क्या होगा, तो कौन उसे बता सकता है कि क्या होगा? 8 वायु को रोकने का अधिकार किसके पास है? और मृत्यु के दिन पर अधिकार कौन रखता है? युद्ध के समय छुट्टी नहीं होती, और जो बुराई करते हैं वे इसके प्रभाव से कैसे बचेंगे. 9 यह सब देख मैंने अपने हृदय को सूरज के नीचे किए जा रहे हर एक काम पर लगाया जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की बुराई के लिए उसके अधिकार का इस्तेमाल करता है. 10 सो मैंने दुष्टों को गाड़े जाते देखा. वे पवित्र स्थान में आते जाते थे. किंतु जहां वे ऐसा करते थे जल्द ही उस नगर ने उन्हें भुला दिया. यह भी बेकार ही है. 11 बुरे काम के दंड की आज्ञा जल्दबाजी में नहीं दी जाती, इसलिये मनुष्य का हृदय बुराई करने में हमेशा लगा रहता है, 12 चाहे पापी हज़ार बार बुरा करें और अपने जीवन को बढ़ाते रहें, मगर मुझे मालूम है कि जिनमें परमेश्वर के लिए श्रद्धा और भय की भावना है उनका भला ही होगा, क्योंकि उनमें परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय की भावना हैं. 13 मगर दुष्ट के साथ अच्छा न होगा और न ही वह परछाई के समान अपने सारे जीवन को बड़ा कर सकेगा, क्योंकि उसमें परमेश्वर के लिए श्रद्धा और भय की भावना नहीं है. 14 पृथ्वी पर एक और बात बेकार होती है: धर्मियों के साथ दुष्टों द्वारा किए गए कामों के अनुसार घटता है और दुष्टों के साथ धर्मियों द्वारा किए गए कामों के अनुसार. मैंने कहा कि यह भी बेकार ही है. 15 सो मैं आनंद की तारीफ़ करता हूं, सूरज के नीचे मनुष्य के लिए इससे अच्छा कुछ नहीं है कि वह खाए-पिए और खुश रहे क्योंकि सूरज के नीचे परमेश्वर द्वारा दिए गए उसके जीवन भर में उसकी मेहनत के साथ यह हमेशा रहेगा. 16 जब मैंने अपने हृदय को बुद्धि के और पृथ्वी पर के कामों के

बारे में मालूम करने के लिए लगाया (हालांकि एक व्यक्ति को दिन और रात
नहीं सोना चाहिए). 17 और मैंने परमेश्वर के हर एक काम को देखा, तब मुझे
मालूम हुआ कि सूरज के नीचे किया जा रहा हर एक काम मनुष्य नहीं समझ
सकता. जबकि मनुष्य बहुत मेहनत करे फिर भी उसे यह मालूम न होगा और
चाहे बुद्धिमान का यह कहना हो कि, मुझे मालूम है, फिर भी वह इसे मालूम
नहीं कर सकता.

9 मैंने सभी कामों में अपना मन लगाया और यह मतलब निकाला कि धर्मी,
बुद्धिमान और उनके सारे काम परमेश्वर के हाथ में हैं. मनुष्य को यह मालूम
नहीं होता कि उसके सामने क्या होगा; प्रेम या नफ़रत. 2 यह सभी के लिए
बराबर है. धर्मी और दुष्ट, भले और बुरे, शुद्ध और अशुद्ध, जो बलि चढ़ाता है
और जो बलि नहीं चढ़ाता, सभी का अंत एक समान है. जिस तरह एक भला
व्यक्ति है, उसी तरह एक पापी भी है; और जिस तरह एक शपथ खानेवाला है,
उसी तरह वह व्यक्ति है जिसके सामने शपथ खाना भय की बात है. 3 सूरज के
नीचे किए जा रहे हर एक काम में मैंने यही बुराई देखी कि सभी मनुष्यों का एक
ही अंत है. मनुष्यों के हृदय बुराई से भरे हैं और उनके पूरे जीवन में पागलपन
उनके हृदयों में भरा रहता है. इसके बाद उनकी मृत्यु हो जाती है. 4 जो जीवित
है उसके लिए आशा है क्योंकि निश्चय ही मरे हुए शेर से जीवित कुत्ता ज्यादा
अच्छा है. 5 जीवितों को यह मालूम होता है कि उनकी मृत्यु ज़रूर होगी, मगर
मरे हुओं को कुछ भी मालूम नहीं होता; उन्हें तो कोई ईनाम भी नहीं मिलता,
और जल्द ही उन्हें भुला दिया जाता है. 6 इस तरह उनका प्रेम, घृणा और
उत्साह खत्म हो गया, और सूरज के नीचे किए गए किसी भी काम में उनका
कोई भाग न होगा. 7 इसलिये जाओ और आनंद से भोजन करो और मन में सुख
मानकर अंगूर का रस पिया करो क्योंकि पहले ही परमेश्वर तुम्हारे कामों से
खुश हैं. 8 तुम्हारे कपड़े हमेशा उजले रहें और तुम्हारे सिर पर तेल की कमी न
हो. 9 सूरज के नीचे परमेश्वर द्वारा दिए गए बेकार के जीवन में अपनी प्यारी
पत्नी के साथ खुश रहो, क्योंकि तुम्हारे जीवन का और सूरज के नीचे की गई
मेहनत का ईनाम यही है. 10 अपने सामने आए हर एक काम को पूरी लगन से
करो क्योंकि अधोलोक में जिसकी ओर तुम बढ़ रहे हो, वहां न तो कोई काम
या तरकीब, न ज्ञान और न ही बुद्धि है. (Sheol h7585) 11 मैंने दोबारा सूरज के
नीचे देखा, कि न तो दौड़ में तेज दौड़ने वाले और न युद्ध में बलवान ही जीतते
हैं, न बुद्धिमान को भोजन मिलता है और न ही ज्ञानवान को धन-दौलत और न
ही योग्य को अनुग्रह; क्योंकि ये समय और संयोग के वश में हैं. 12 मनुष्य
अपने समय के बारे में नहीं जानता: जैसे बुरे जाल में फंसी एक मछली के, और
फंदे में फंसे पक्षियों के समान, वैसे ही मनुष्य बुरे समय में जा फंसेगा जब यह
अचानक ही उस पर आ पड़ेगा. 13 मैंने सूरज के नीचे बुद्धि का एक और
उदाहरण देखा, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया. 14 बहुत ही थोड़े लोगों का
एक छोटा नगर था इसमें एक बहुत ही सम्मानित राजा आया और उसने इस नगर
के विरुद्ध घेराव किया. 15 मगर उस नगर के एक साधारण लेकिन बुद्धिमान ने
अपनी बुद्धि द्वारा इस नगर को छुड़वा दिया. फिर भी उस सीधे-सादे को किसी ने
याद नहीं किया. 16 इसलिये मैंने यह कहा, "बुद्धि शक्ति से बढ़कर है."
लेकिन किसी सीधे-सादे की बुद्धि को तुच्छ ही जाना जाता है और उसकी बातों
पर ध्यान नहीं दिया जाता. 17 मूर्खों के बीच राजा की चिल्लाहट से अकेले में
बुद्धिमान की बातें सुन लेना कहीं ज्यादा अच्छा है. 18 युद्ध के शस्त्रों की तुलना
में बुद्धि ज्यादा अच्छी है, मगर एक पापी हर एक अच्छी चीज़ का नाश कर
देता है.

10 जिस प्रकार मरी हुई मक्खियां सुगंध तेल को बदबूदार बना देती हैं, उसी
प्रकार थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और सम्मान पर भारी पड़ती है. 2 बुद्धिमान
का हृदय तो उसे सही ओर ले जाता है, किंतु मूर्ख का हृदय उसे उस ओर जो
गलत है. 3 रास्ते पर चलते समय भी मूर्खों के हृदय में, समझ की कमी होती
है, और सबसे उसका कहना यही होता है कि वह एक मूर्ख है. 4 यदि राजा का
क्रोध तुम्हारे विरुद्ध भड़क गया है, तो भी तुम अपनी जगह को न छोड़ना;
क्योंकि तुम्हारा धीरज उसके क्रोध को बुझा देगा. 5 सूरज के नीचे मैंने एक
और बुराई देखी, जैसे इसे कोई राजा अनजाने में ही कर बैठता है. 6 वह यह कि
मूर्खता ऊंचे पदों पर बैठी होती है, मगर धनी लोग निचले पदों पर ही होते हैं. 7
मैंने दासों को तो घोड़ों पर, लेकिन राजाओं को दासों के समान पैदल चलते हुए
देखा है. 8 जो गड्ढा खोदता है वह खुद उसमें गिरेगा; और जो दीवार में सेंध
लगाता है, सांप उसे डस लेगा. 9 जो पत्थर खोदता है वह उन्हीं से चोटिल हो
जाएगा; और जो लकड़ी फाड़ता है, वह उन्हीं से जोखिम में पड़ जाएगा. 10
यदि कुल्हाड़े की धार तेज नहीं है और तुम उसको पैना नहीं करते, तब तुम्हें
अधिक मेहनत करनी पड़ेगी; लेकिन बुद्धि सफलता दिलाने में सहायक होती है.
11 और यदि सांप मंत्र पढ़ने से पहले ही डस ले तो, मंत्र पढ़ने वाले का कोई
फायदा नहीं. 12 बुद्धिमान की बातों में अनुग्रह होता है, जबकि मूर्खों के ओंठ
ही उनके विनाश का कारण हो जाते हैं. 13 उसकी बातों की शुरुआत ही मूर्खता
से होती है और उसका अंत दुखदाई पागलपन होता है. 14 जबकि वह अपनी
बातें बढ़ाकर भी बोलता है. यह किसी व्यक्ति को मालूम नहीं होता कि क्या
होनेवाला है, और कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या होगा? 15 मूर्ख
की मेहनत उसे इतना थका देती है; कि उसे नगर का रास्ता भी पता नहीं होता.
16 धिक्कार है उस देश पर जिसका राजा एक कम उम्र का युवक है और जिसके
शासक सुबह से ही मनोरंजन में लग जाते हैं. 17 मगर सुखी है वह देश जिसका
राजा कुलीन वंश का है और जिसके शासक ताकत के लिए भोजन करते हैं, न
कि मतवाले बनने के लिए. 18 आलस से छत की कड़ियों में झोल पड़ जाते हैं;
और जिस व्यक्ति के हाथों में सुस्ती होती है उसका घर टपकने लगता है. 19
लोग मनोरंजन के लिए भोजन करते हैं, दाखमधु जीवन में आनंद को भर देती
है, और धन से हर एक समस्या का समाधान होता है. 20 अपने विचारों में भी
राजा को न धिक्कारना, और न ही अपने कमरे में किसी धनी व्यक्ति को शाप
देना, क्योंकि हो सकता है कि आकाश का पक्षी तुम्हारी वह बात ले उड़े और
कोई उड़नेवाला जंतु उन्हें इस बारे में बता देगा.

11 पानी के ऊपर अपनी रोटी डाल दो; क्योंकि बहुत दिनों के बाद यह तुम्हें
दोबारा मिल जाएगी. 2 अपना अंश सात भागों बल्कि आठ भागों में
बांट दो, क्योंकि तुम्हें यह पता ही नहीं कि पृथ्वी पर क्या हो जाए! 3 अगर
बादल पानी से भरे होते हैं, तो वे धरती पर जल बरसाते हैं. और पेड़ चाहे दक्षिण
की ओर गिरे या उत्तर की ओर, यह उसी जगह पर पड़ा रहता है जहां यह गिरता
है. 4 जो व्यक्ति हवा को देखता है वह बीज नहीं बो पाएगा; और जो बादलों
को देखता है वह उपज नहीं काटेगा. 5 जिस तरह तुम्हें हवा के मार्ग और
गर्भवती स्त्री के गर्भ में हड्डियों के बनने के बारे में मालूम नहीं, उसी तरह सारी
चीज़ों के बनानेवाले परमेश्वर के काम के बारे में तुम्हें मालूम कैसे होगा? 6
बीज सुबह-सुबह ही बो देना और शाम में भी आराम न करना क्योंकि तुम्हें
यह मालूम नहीं है, कि सुबह या शाम का बीज बोना फलदायी होगा या दोनों
ही एक बराबर अच्छे होंगे. 7 उजाला मनभावन होता है, और आंखों के
लिए सूरज सुखदायी. 8 अगर किसी व्यक्ति की उम्र बड़ी है, तो उसे अपने
जीवनकाल में आनंदित रहने दो. किंतु वह अपने अंधकार भरे दिन भुला न
दे क्योंकि वे बहुत होंगे. ज़रूरी है कि हर एक चीज़ बेकार ही होगी. 9 हे
जवान! अपनी जवानी में आनंदित रहो, इसमें तुम्हारा हृदय तुम्हें आनंदित करे.
अपने हृदय और अपनी आंखों की इच्छा पूरी करो. किंतु तुम्हें यह याद रहे कि
परमेश्वर इन सभी कामों के बारे में तुम पर न्याय और दंड लाएंगे. 10 अपने

हृदय से क्रोध और अपने शरीर से बुराई करना छोड़ दो क्योंकि बचपन, और
जवानी भी बेकार ही हैं.

12 जवानी में अपने बनानेवाले को याद रख: अपनी जवानी में अपने
बनानेवाले को याद रखो, इससे पहले कि बुराई और वह समय आए
जिनमें तुम्हारा कहना यह हो, “मुझे इनमें ज़रा सी भी खुशी नहीं,” **2** इससे
पहले कि सूरज, चंद्रमा और तारे अंधियारे हो जाएंगे, और बादल बारिश के बाद
लौट आएंगे; **3** उस दिन पहरेदार कांपने लगेंगे, बलवान पुरुष झुक जाएंगे, जो
पीसते हैं वे काम करना बंद कर देंगे, क्योंकि वे कम हो गए हैं, और जो झरोखों
से झांकती हैं वे अंधी हो जाएंगी; **4** चक्की की आवाज धीमी होने के कारण
नगर के फाटक बंद हो जाएंगे; और कोई व्यक्ति उठ खड़ा होगा, तथा सारे गीतों
की आवाज शांत हो जाएगी. **5** लोग ऊंची जगहों से डरेंगे और रास्ते भी डरावने
होंगे; बादाम के पेड़ फूलेंगे और टिड्डा उनके साथ साथ घसीटता हुआ चलेगा
और इच्छाएं खत्म हो जाएंगी. क्योंकि मनुष्य तो अपने सदा के घर को चला
जाएगा जबकि रोने-पीटने वाले रास्तों में ही भटकते रह जाएंगे. **6** याद करो
उनको इससे पहले कि चांदी की डोर तोड़ी जाए, और सोने का कटोरा टूट जाए,
कुएं के पास रखा घड़ा फोड़ दिया जाए और पहिया तोड़ दिया जाए; **7** धूल
जैसी थी वैसी ही भूमि में लौट जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास लौट
जाएगी जिसने उसे दिया था. **8** “बेकार! ही बेकार है!” दार्शनिक कहता है,
“सब कुछ बेकार है!” **9** बुद्धिमान होने के साथ साथ दार्शनिक ने लोगों को ज्ञान
भी सिखाया उसने खोजबीन की और बहुत से नीतिवचन को इकट्ठा किया. **10**
दार्शनिक ने मनभावने शब्दों की खोज की और सच्चाई की बातों को लिखा.
11 बुद्धिमानों की बातें छड़ी के समान होती हैं तथा शिक्षकों की बातें अच्छे से
ठोकी गई कीलों के समान; वे एक ही चरवाहे द्वारा दी गई हैं. **12** पुत्र! इनके
अलावा दूसरी शिक्षाओं के बारे में चौकस रहना; बहुत सी पुस्तकों को लिखकर
रखने का कोई अंत नहीं है और पुस्तकों का ज्यादा पढ़ना भी शरीर को थकाना
ही है. **13** इसलिये इस बात का अंत यही है: कि परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय
की भावना रखो और उनकी व्यवस्था और विधियों का पालन करो, क्योंकि
यही हर एक मनुष्य पर लागू होता है. **14** क्योंकि परमेश्वर हर एक काम को,
चाहे वह छुपी हुई हो, भली या बुरी हो, उसके लिए न्याय करेंगे.

श्रेष्ठगीत

1 शलोमोन द्वारा रचित गीतों का गीत. 2 वह अपने मुख के चुम्बनों से मेरा
चुंबन करे! क्योंकि तुम्हारा प्रेम दाखमधु से उत्तम है. 3 तुम्हारे विभिन्न ईत्रों
की सुगंध सुखद है, तुम्हारा नाम उण्डेले हुए इत्र के समान है; इसलिये आश्चर्य
नहीं कि तुम कन्याओं के आकर्षण का केंद्र हो. 4 मुझे अपने पास ले लो कि
हम दोनों दूर चले जाएं! राजा मुझे अपने कमरों में ले आए हैं. सहेलियां हम
तुममें आनंदित हो मगन होंगी; हम दाखमधु से ज्यादा तुम्हारे प्रेम का गुणगान
करेंगी. नायिका ठीक ही है तुम्हारे प्रति उनका आकर्षण. 5 मेरा रंग सांवला तो
अवश्य है, मगर मैं सुंदर हूं, येरूशलेम की कन्याओ, केदार के तंबुओं के समान,
शलोमोन के पर्दों के समान. 6 मुझे इस तरह से न देखो कि मैं सांवली हूं, यह तो
धूप में झुलसने से हुआ है. मेरी माता के पुत्र मुझ पर गुस्सा हो गए; उन्होंने मुझे
अंगूर के बगीचे की देखरेख की जवाबदारी सौंप दी, मगर मैं खुद ही अपने
अंगूर के बगीचे का ध्यान न रख सकी. 7 मेरे प्राणप्रिय, मुझे यह तो बता दो,
कहां हैं वे चरागाह, जहां तुम अपनी भेड़-बकरियां चराते हो, वह कौन सी जगह
है जहां तुम दोपहर में उन्हें आराम के लिए बैठा देते हो? क्योंकि मैं तुम्हारे
साथियों की भेड़-बकरियों के पास उसके समान क्यों बनूं, जो अपना मुंह
छिपाए रखती है? 8 स्त्रियों में परम सुंदरी, यदि स्वयं तुम्हें ही यह मालूम नहीं है,
भेड़-बकरियों के पांव के निशानों पर चलती जाओ और अपने मेमनों को
चरवाहों के तंबुओं के पास चराओ. 9 मेरी प्रियतमा, मेरे लिए तुम वैसी ही हो,
जैसी फ़रोह के रथों के बीच मेरी घोड़ी. 10 गहनों के साथ तुम्हारे गाल क्या ही
सुंदर लगते हैं, वैसे ही हीरों के हार के साथ तुम्हारी गर्दन. 11 हम तुम्हारे लिए
ऐसे गहने गढ़ेंगे, जो चांदी में जड़े हुए सोने के होंगे. 12 जब महाराज बैठे हुए
थे, मेरा इत्र अपनी खुशबू फैला रहा था. 13 मेरा प्रियतम मेरे लिए उस गन्धरस
की थैली है, जो सारी रात मेरे स्तनों के बीच रहती है. 14 मेरा प्रियतम मेरे लिए
मेंहदी के फूलों के गुच्छे के समान है, जो एन-गेदी के अंगूरों के बगीचों में पाए
जाते हैं. 15 मेरी प्रियतमा, कितनी सुंदर हो तुम! ओह, तुम वास्तव में कितनी
सुंदर हो! तुम्हारी आंखें कबूतरी के समान हैं. 16 कितने सुंदर लगते हो, तुम, मेरे
प्रियतम! तथा आनन्द-दायक भी! वास्तव में कितना भव्य है हमारा बिछौना. 17
हमारे घरों की धरनें देवदार की हैं; तथा छतें सनोवर की.

2 मैं शारोन का गुलाब हूं, घाटियों की कुमुदिनी. 2 कन्याओं के बीच मेरी
प्रिया कांटों के बीच कुमुदिनी के समान है. 3 मेरा प्रियतम जवानों के बीच
वैसा ही लगता है, जैसा जंगली पेड़ों के बीच एक सेब का पेड़. उसकी छाया में
मेरा बैठना सुखद अनुभव था, मीठा था उसके फल का स्वाद. 4 वह मुझे अपने
महाभोज के कमरे में ले आया, तथा प्रेम ही मुझ पर उसका झंडा है. 5 अंगूर की
टिकियों से मुझमें बल भर दो, सेब खिलाकर मुझमें नई ताज़गी भर दो, क्योंकि
मुझे प्रेम रोग हो गया है. 6 उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे हो, तथा दाएं हाथ
से वह मेरा आलिंगन करे. 7 येरूशलेम की कन्याओ, तुम्हें मैदान के हिरणों तथा
हिरणियों की शपथ, मुझको वचन दो, जब तक सही समय न आए, मेरे प्रेम को
न जगाना. 8 सुनो-सुनो! मेरा प्रियतम आ रहा है, पर्वतों को पार कर, पहाड़ियों
पर उछलते हुए. 9 मेरा प्रियतम एक चिंकारे अथवा एक हिरण के समान है.
वह देखो, वह हमारी दीवार के पीछे ही खड़ा है, वह खिड़कियों में से देख
रहा है, वह जाली में से झांक रहा है. 10 इसके उत्तर में मेरे प्रियतम ने मुझसे
कहा, "उठो, मेरी प्रियतमा, मेरी सुंदरी, मेरे साथ चलो. 11 क्योंकि देख लो!
जाड़ा जा रहा है; वर्षा ऋतु भी हो चुकी है. 12 देश में फूल खिल चुके हैं;
गुनगुनाने का समय आ चुका है, हमारे देश में कबूतरों का गीत सुनाई देने लगा
है. 13 अंजीर के पेड में अंजीर पक चुके हैं; लताओं पर खिले फूल सुगंध
फैला रहे हैं. उठो, मेरी प्रियतमा; मेरी सुंदरी, मेरे साथ चलो." 14 चट्टान की
दरारों में, चढ़ाई के रास्ते के गुप्त स्थानों में बैठी मेरी कबूतरी, मैं तुम्हारा मुख
देखना चाहता हूं, मैं तुम्हारी आवाज सुनना चाहता हूं; क्योंकि मीठी है तुम्हारी
आवाज, सुंदर है तुम्हारा मुखमंडल. 15 हमारे लिए उन लोमड़ियों को पकड़
लो, उन छोटी लोमड़ियों को, जो हमारे अंगूर के बगीचों को नष्ट कर रही हैं,
जब हमारे अंगूर के बगीचों में फूल खिल रहे हैं. 16 मेरा प्रियतम सिर्फ मेरा ही
है और मैं उसकी; वह अपनी भेड़-बकरियों को सोसन के फूलों के बीच में चरा
रहा है. 17 शाम के आने तक जब छाया मिटने लगती है, मेरे प्रिय, बतेर पहाड़ों
पर के हिरण के समान, हां, हिरण के बच्चे के समान लौट आओ.

3 अपने बिछौने पर मैं हर रात उसका इंतजार करती रही, जो मुझे प्राणों से भी
प्रिय है; मैं उसे खोजती रही, मगर मेरी खोज बेकार रही. 2 अब ठीक तो
यही होगा कि मैं उठूं और नगर में जाकर खोज करूं, गलियों में और चौकों में;
यह ज़रूरी है कि मैं उसे खोजूं, जो मेरे लिए प्राणों से भी अधिक प्रिय है. मैं
खोजती रही, किंतु मेरी खोज बेकार ही रही. 3 वे पहरेदार, जो नगर में घूमते
रहते हैं, उनसे मेरी मुलाकात हुई. मैंने उनसे पूछा, "क्या तुमने उसे देखा है, जो
मुझे प्राणों से प्रिय है?" 4 मैं पहरेदारों से कुछ ही दूर गई थी, कि वह मुझे मिल
गया, जो मेरे लिए प्राणों से भी अधिक प्रिय है, मैं उससे लिपट गई, मैंने उसे
जाने न दिया, तब मैं उसे अपनी माता के घर पर ले गई, उसके कमरे में, जिसने
मुझे अपने गर्भ में धारण किया था. 5 येरूशलेम की कन्याओ, तुम्हें मैदान के
हिरणों तथा हिरणियों की शपथ, मुझको वचन दो, जब तक सही समय न आए,
मेरे प्रेम को न जगाना. 6 रेगिस्तान की दिशा से धुएं के खंभे के समान यह क्या
बढ़ा चला आ रहा है, यह लोबान और गन्धरस से सुगंधित है, व्यापारियों के
सारे चूर्णों से भी सुगंधित? 7 देखो-देखो, यह शलोमोन की पालकी है, साठ
योद्धा उसे घेरे हुए हैं, ये इस्राएल के शूरवीरों में से चुने हुए हैं. 8 वे सभी तलवार
लिए हुए हैं, युद्ध कला में बेहतरीन, हर एक ने अपनी तलवार अपने पास रखी
है, ये रात के आतंक का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं. 9 यह
पालकी राजा शलोमोन ने अपने लिए बनवाई है; इसमें इस्तेमाल की गई लकड़ी
लबानोन से लाई गई थी. 10 इसके खंभे चांदी के, तथा सतह सोने का है.
इसमें बैठने के स्थान के लिए बैंगनी वस्त्र का इस्तेमाल हुआ है, इसके अंदर के
भाग को येरूशलेम की कन्याओं द्वारा प्रेम से मढ़ दिया गया है. 11 ज़ियोन की
कन्याओ, आगे बढ़ो, मुकुट पहने हुए महाराज शलोमोन को निहारो, यह उसकी
माता ने उसे पहनाया है, यह उसके विवाह का दिन है, यह वह दिन है, जब वह
बहुत ही खुश है.

4 कितनी सुंदर हो तुम मेरी प्रिया! मेरी आंखों के लिए कितनी प्रिय हो तुम!
ओढ़नी के पीछे तुम्हारी आंखें कबूतरी के समान हैं. तुम्हारे बाल गिलआद
पर्वत की ढाल पर चढ़ाई कर रही बकरियों के समान हैं. 2 तुम्हारे दांत अभी-
अभी ऊन कतरे हुए भेड़ों के समान हैं, जो नहाकर आईं हैं, उन सभी के जुड़वां
बच्चे होते हैं, तथा जिनमें से एक भी अकेला नहीं है. 3 तुम्हारे ओंठ लाल रंग
की डोरी के समान हैं; तथा मनमोहन है तुम्हारा मुंह. तुम्हारे गाल तुम्हारी ओढ़नी
के पीछे अनार की दो फांक के समान हैं. 4 दावीद द्वारा बनाए गए मीनारों के
समान है तुम्हारी गर्दन, जिन्हें पत्थरों को तराशकर बनाया गया है, जिन पर एक
हज़ार ढालें लटका दी जाती हैं, वीर योद्धाओं की सभी गोलाकार ढालें. 5
तुम्हारी दोनों छातियां हिरणी के दो बच्चों के समान हैं, हिरणी के जुड़वां बच्चे,
जो सोसन के फूलों के बीच चरते हैं. 6 शाम होने तक जब छाया मिटने लगती
है, मैं गन्धरस के पहाड़ पर चला जाऊंगा, हां, लोबान की पहाड़ी पर. 7 मेरी
प्रियतमा, तुम सर्वांग सुंदरी हो; कोई भी दोष नहीं है तुममें. 8 मेरी दुल्हिन, मेरे
साथ लबानोन से आ जाओ, कैसा होगा जब तुम मेरे साथ लबानोन से आओगी.
उतर आओ; अमाना शिखर से, सेनीर तथा हरमोन के शिखर से, शेरों की

गुफाओं से, तेंदुओं के पर्वतों से. 9 मेरी बहन, मेरी दुल्हिन, तुमने तो मेरी हृदय
गति तेज कर दी है; तुम्हारे गले के हार के एक ही हीरे से, तुम्हारी आंखों के
एक ही चितवन से, तुमने तो मेरी हृदय गति तेज कर दी है! 10 मेरी बहन, मेरी
दुल्हिन, कैसा मनोहर है तुम्हारा प्रेम! दाखमधु से भी उत्तम है तुम्हारा प्रेम, तथा
तुम्हारे ईत्रों की सुगंध भी उत्तमोत्तर है सभी मसालों की सुगंध से! 11 मेरी
दुल्हिन, तुम्हारे ओंठ मधु टपकाते हैं; तुम्हारी जीभ के नीचे दूध और मधु रहता
है, तुम्हारे वस्त्रों से उठती सुगंध लबानोन की सुगंध के समान है. 12 मेरी बहन,
मेरी दुल्हिन एक गुप्त निजी बगीचा है; चारदीवारी में बंद तथा निजी झरने वाला
बगीचा. 13 तुम तो अनार के पेड़ों की बारी हो, जिसमें सबसे अच्छे फल लगे
हुए हैं तथा जिसमें मेंहदी तथा जटामांसी के पौधे लगे हुए हैं. 14 जटामांसी एवं
केसर, नरकुल तथा दालचीनी, ये सभी गन्धरस, लोबान तथा अगर तथा इनके
सारे मुख्य मसालों के मिश्रण के साथ. 15 तुम तो बगीचे के बीच का सोता हो,
सुखदायी जल का कुंआ, वे नदियां, जो लबानोन से निकली हैं. 16 उत्तरी वायु,
जागो, दक्षिण वायु! आ जाओ; मेरे बगीचे के ऊपर से बहो, इसके मसालों के
मिश्रण उड़कर दूर चले जाएं. कैसा हो यदि मेरा प्रेमी अपने बगीचे में आ जाए
तथा इसके उत्तम-उत्तम फलों को खाए.

5 मेरी बहन, मेरी दुल्हिन; मैं अपने बगीचे में आ चुका हूं; मैंने अपना गन्धरस,
अपना लोबान इकट्ठा कर लिया है. मैंने मधु के साथ मधुछत्ते को भी खा
लिया है; मैंने अपना दाखमधु तथा अपना दूध पी लिया है. मित्रगण मित्रो, भोजन
करो, दाखमधु का सेवन करो; तथा प्रेम के नशे में चूर हो जाओ. 2 मैं सोई हुई
थी, किंतु मेरा हृदय जाग रहा था. एक आवाज! मेरा प्रेमी दरवाजा खटखटा रहा
था: “दरवाजा खोलो, मेरी बहन, मेरी प्रियतमा, मेरी कबूतरी, मेरी सर्वांग सुंदरी.
क्योंकि ओस से मेरा सिर भीगा हुआ है, रात की नमी मेरे बालों में समाई हुई
है.” 3 मैं तो अपने वस्त्र उतार चुकी हूं, अब मैं कैसे वस्त्रों को दोबारा पहनूं? मैं
अपने पांव धो चुकी हूं, अब मैं उन्हें मैला क्यों करूं? 4 मेरे प्रेमी ने दरवाजे के
छेद में से अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया; उसके लिए मेरी भावनाएं उमड़ उठीं. 5
मैं बिछौना छोड़ अपने प्रेमी के लिए दरवाजा खोलने के लिए उठी, मेरे हाथों
से गन्धरस टपक रहा था और मेरी उंगलियों से टपकता हुआ गन्धरस. मेरी
उंगलियां इस समय दरवाजे की चिटकनी पर थीं. 6 अपने प्रेमी के लिए मैंने
दरवाजा खोला, मगर मेरा प्रेमी लौट चुका था. जब वह मुझसे विनती कर रहा
था, मेरा हृदय पिघल गया. मैं उसे खोजती रही पर वह मुझे नहीं मिला. मैं उसे
पुकारती रही, पर उसकी ओर से मुझे उत्तर न मिला. 7 नगर में घूमते हुए
पहरेदारों से मेरी भेंट ज़रूर हुई. उन्होंने मुझ पर वार कर मुझे घायल कर दिया;
शहरपनाह के पहरेदारों ने तो मेरी चादर ही छीन ली. 8 येरूशलेम की कन्याओ,
यह वादा करो, यदि तुम्हें कहीं मेरा प्रेमी मिल जाए, तुम उसे बताओगे? उसे बता
देना कि मुझे प्रेम की बीमारी हो गयी है. 9 नवयुवतियों में परम सुंदरी नवयुवती,
किस प्रकार तुम्हारा प्रेमी दूसरे प्रेमियों से उत्तम है? किस प्रकार का है तुम्हारा
यह प्रेमी, कि तुम हमें सौगंध दे रही हो? 10 मेरा प्रेमी तेजवान और लाल है, वह
तो दस हज़ारों में सिर्फ एक है. 11 उसका सिर सोना; हां, शुद्ध सोने के समान है;
और उसके बाल तो खजूर के गुच्छों के समान हैं, कौआ के समान काले. 12
उसकी आंखें उन कबूतरों के समान हैं जो नदियों के किनारे पाए जाते हैं, मानो
उन्होंने दूध में नहाया है, जिनमें हीरे जडे हुए हैं. 13 उसके गाल बलसान की
क्यारियों के समान हैं, मानो वे सुगंध मिश्रण के ढेर हों. उसके ओंठ सोसन के
फूल हैं, जिनमें से गन्धरस का रस टपकता है. 14 उसके हाथ मरकत मणि जड़े
हुए कुन्दन के हैं; उसका पेट तो उत्तम हाथी-दांत का है, जिसमें नीलम जड़े हुए
हैं. 15 उसके पैर संगमरमर के खंभे हैं, जिन्हें कुन्दन पर बैठा दिया गया है.
उसका रूप लबानोन के समान है, सुंदर देवदार के वृक्षों के समान. 16 उसका
मुख बहुत ही मीठा है; वह हर तरह से मन को भानेवाला है. येरूशलेम की
कन्याओ, ऐसा ही है मेरा प्रेमी, मेरा मीत.

6 स्त्रियों में परम सुंदरी, कहां चला गया है तुम्हारा प्रेमी? किस मोड़ पर बढ़
गया है वह, हमें बताओ कि हम भी तुम्हारे साथ उसे खोजें? 2 मेरा प्रेमी
अपनी वाटिका में है, जहां बलसान की क्यारियां हैं. कि वह वहां अपनी भेड़-
बकरियों को चराए, कि वहां वह सोसन के फूल इकट्ठा करे. 3 मैं अपने प्रेमी
की हो चुकी हूं तथा वह मेरा; वही, जो अपनी भेड़-बकरियों को सोसन के
फूलों के बीच में चरा रहा है. 4 मेरी प्रियतमा, तुम तो वैसी ही सुंदर हो, जैसी
तिरज़ाह, वैसी ही रूपवान, जैसी येरूशलेम, वैसी ही प्रभावशाली, जैसी झंडा
फहराती हुई सेना. 5 हटा लो मुझसे अपनी आंखें; क्योंकि उन्होंने मुझे व्याकुल
कर दिया है. तुम्हारे बाल वैसे ही हैं, जैसे बकरियों का झुण्ड, जो गिलआद से
उतरा हुआ है. 6 तुम्हारे दांत अभी-अभी ऊन कतरे हुए भेड़ों के समान हैं, उन
सभी के जुड़वां बच्चे होते हैं, तथा जिनमें से एक भी अकेला नहीं है. 7 तुम्हारे
गाल ओढ़नी से ढंके हुए अनार की दो फांक के समान हैं. 8 वहां रानियों की
संख्या साठ है तथा उपपत्नियों की अस्सी, दासियां अनगिनत हैं, 9 किंतु मेरी
कबूतरी, मेरी निर्मल सुंदरी, अनोखी है, अपनी माता की एकलौती संतान,
अपनी जननी की दुलारी. जैसे ही दासियों ने उसे देखा, उसे धन्य कहा; रानियों
तथा उपपत्नियों ने उसकी प्रशंसा की, उन्होंने कहा: 10 कौन है यह, जो भोर के
समान उद्भूत हो रही है, पूरे चांद के समान सुंदर, सूर्य के समान निर्मल, वैसी ही
प्रभावशाली, जैसे झंडा फहराती हुई सेना? 11 मैं अखरोट के बगीचे में गयी कि
घाटी में खिले फूलों को देखूं, कि यह पता करूं कि दाखलता में कलियां लगी हैं
या नहीं. अनार के पेड़ों में फूल आए हैं या नहीं. 12 इसके पहले कि मैं कुछ
समझ पाती, मेरी इच्छाओं ने मुझे मेरे राजकुमार के रथों पर पहुंचा दिया. 13
लौट आओ, शुलामी, लौट आओ; लौट आओ, लौट आओ, कि हम तुम्हें देख
सकें! नायक तुम लोग शुलामी को क्यों देखोगे, मानो यह कोई दो समूहों का
नृत्य है?

7 राजकुमारी, कैसे सुंदर लगते हैं, जूतियों में तुम्हारे पांव! तुम्हारी जांघों
की गोलाई गहनों के समान है, किसी निपुण शिल्पी की रचना के समान. 2
तुम्हारी नाभि गोल कटोरे के समान है, जो मसाला मिली हुई दाखमधु से कभी
खाली नहीं होता, और तुम्हारा पेट तो गेहूं के ढेर के समान है, जो चारों ओर से
सोसन के फूलों से सजाया गया है. 3 तुम्हारी दोनों छातियां हिरणी के दो बच्चों
के समान हैं, हिरणी के जुड़वां बच्चे. 4 तुम्हारा गला हाथी-दांत के मीनारों के
समान है. तुम्हारी आंखें हेशबोन के तालाबों के समान हैं, जो बेथ-रब्बीम के
फाटकों के पास हैं; तुम्हारी नाक लबानोन के खंभे के समान, जो दमेशेक की
ओर मुख किए हुए हैं. 5 तुम्हारा सिर कर्मेल के गौरव के समान है. तुम्हारे लंबे-
लंबे घुंघराले बाल राजसी धागों का अहसास कराते हैं; राजा तो तुम्हारी लटों
का बंदी होकर रह गया है. 6 मेरी प्रिय, अपनी कोमलताओं के साथ, तुम कैसी
सुंदर और मनोहर लगती हो! 7 खजूर के पेड के समान है तुम्हारा डीलडौल
और तुम्हारी छातियां खजूर के गुच्छों के समान. 8 मेरे मन में विचार आया,
“मैं खजूर के पेड़ पर चढ़ूंगा और इसके फलों के गुच्छों को थाम लूंगा.” कैसा
होता यदि तुम्हारी छातियां अंगूर के गुच्छे होते तुम्हारी सांस की सुगंध सेबों के
समान 9 तुम्हारा मुख सबसे उत्तम दाखमधु के समान है. नायिका जो होंठों से
होती हुई, दांतों को छूती हुई, मेरे प्रेमी की ओर धीरे धीरे बढ़ती जाती है, 10 मैं
अपने प्रेमी की हो चुकी हूं, और वह मेरी कामना करता रहता है. 11 मेरे प्रिय,
चलो, हम बाहर मैदान में चलें, हमें रात गांवों में बितानी पड़ सकती है. 12
चलो, सुबह तड़के उठकर हम अंगूर के बगीचे में चलें; आओ हम देखें कि लता
में कलियां लगी भी हुई हैं या नहीं, क्या इसके फूल खिले हुए हैं या नहीं. क्या

अनार के फूल खिल चुके हैं या नहीं. वहीं वह जगह होगी जहां मैं तुम पर
अपना प्रेम दिखाऊंगी. 13 विशाखमूल से सुगंध आ रही है, हमारे दरवाजों पर
सभी प्रकार के उत्तम फल सजाए गए हैं, नए भी पुराने भी. ये सभी, मेरे प्रेमी,
मैंने तुम्हारे लिए बचाकर रखे हैं.

8 कैसा होता यदि तुम मेरे लिए मेरे भाई के समान होते, मेरी माता की छाती
का दूध पीते हुए! और तब, तुम मुझे बाहर कहीं दिख जाते, तो मैं तुम्हें चूम
लेती; इससे मुझे कोई भी तुच्छ नज़रों से न देखता. 2 मैं तुम्हें अपने साथ यहां
ले आती, अपनी माता के घर में, जिसने मुझे शिक्षा दी है. मैं तुम्हें अपने अनारों
के रस से बनी हुई उत्तम दाखमधु परोसती. 3 उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे
हो, तथा दाएं हाथ से वह मेरा आलिंगन करे. 4 येरूशलेम की कन्याओ, मुझको
वचन दो, जब तक सही समय न आए, मेरे प्रेम को न जगाना. 5 बंजर भूमि से
यह कौन चला आ रहा है, जो उसके प्रेमी का सहारा लिए हुए है? नायिका सेब
के पेड़ के नीचे मैंने तुम्हें जगा दिया; वहां तुम्हारी माता तुम्हें जन्म देती हुई प्रसव
पीड़ा में थी, वह प्रसव पीड़ा में थी तथा उसने तुम्हें जन्म दे दिया. 6 अपने
हृदय पर मुझे एक मोहर जैसे लगा लो, हाथ पर मोहर के समान; प्रेम उतना ही
सामर्थ्यी है, जितनी मृत्यु, ईर्ष्या उतनी ही निर्दयी, जितनी मृत्यु. उसकी ज्वाला
आग की ज्वाला है, जो वास्तव में याहवेह ही की ज्वाला है. **(Sheol h7585)** 7
पानी की बाढ़ भी प्रेम को बुझाने में असमर्थ होती है; नदी में आई बाढ़ इसे डुबोने
में असफल रहती है. यदि कोई व्यक्ति प्रेम के लिए अपनी सारी संपत्ति भी देना
चाहे, यह संपत्ति तुच्छ ही होगी. 8 हमारी एक छोटी बहन है, उस आयु की,
जब उसमें जवानी के लक्षण दिखना शुरू नहीं हुए हैं, उसकी छातियां उभरी
नहीं हैं. अब यदि कोई हमारी बहन के लिए विवाह की बात चलाए, तो हम
क्या करेंगे? 9 यदि वह शहरपनाह होती, तो हम उस पर चांदी के खंभे बनाते;
मगर यदि वह एक फाटक होती, तो हम उस पर देवदार के तख्ते लगवा देते. 10
मैं शहरपनाह थी, तथा मेरे स्तन खंभे के समान थे. तब मैं अपने प्रेमी की नज़र में
शांति लाने वाली के समान हो गई. 11 बाल-हामोन में शलोमोन का एक अंगूर
का बगीचा था; यह उसने रखवालों को सौंप दिया था. हर एक के लिए एक
शर्त थी, कि वह इसके फलों के लिए एक हज़ार शेकेल चांदी लाए. 12 मेरा
अपना अंगूर का बगीचा मेरी जवाबदारी है; शलोमोन, एक हज़ार शेकेल पर
तुम्हारा अधिकार है, दो सौ उनके लिए हैं, जो इसके फलों की रक्षा करते रहते
हैं. 13 तुम सभी, जो बगीचों में रहते हो, मेरे साथी तुम्हारी आवाज सुनने के
लिए इच्छुक बने रहते हैं. कब सुन सकूंगा, मैं वह आवाज? 14 मेरे प्रेमी, देर न
करो, तुम्हारी चाल सुगंध द्रव्य के पहाड़ों पर से आते हुए हिरण अथवा जवान
हिरण के समान तेज हो.

यशायाह

1 यहूदिया तथा येरूशलेम के विषय में आमोज़ के पुत्र यशायाह का दर्शन, जो उन्हें यहूदिया के राजा उज्जियाह, योथाम, आहाज़, और हिज़किय्याह के शासनकाल में प्राप्त हुआ. 2 हे आकाश! और पृथ्वी सुनो! क्योंकि यह याहवेह की आज्ञा है: "कि मैंने अपने बच्चों का पालन पोषण किया और उन्हें बढ़ाया, किंतु उन्होंने मुझसे नफरत की. 3 बैल अपने स्वामी को जानता है, और गधा अपने स्वामी की चरनी को, किंतु इस्राएल, मेरी प्रजा को इसकी समझ नहीं." 4 हाय है तुम लोगों पर, जो पाप और अधर्म से भरे हो, जिनमें सच्चाई नहीं, और जिनका स्वभाव बुरा है! जिसने याहवेह को छोड़ दिया है; और जिसने इस्राएल के पवित्र स्वामी का अपमान किया और जो याहवेह से दूर हो गया है! 5 तुम क्यों बुरा बनना चाहते हो? विद्रोह करते हो? तुम्हारे सिर में घाव है, और तुम्हारा मन दुःखी है. 6 सिर से पांव तक घाव और शरीर में खरोंच चोट है जिन्हें न तो पोंछा गया, न ही पट्टी बांधी गई और कोमल बनाने के लिए न ही उन पर तेल लगाया गया. 7 तुम्हारा देश उजड़ गया, नगर आग से भस्म कर दिए गए; लोगों ने तुम्हारे खेतों को ले लिया. 8 ज़ियोन की पुत्री अंगूर के बगीचे में छोड़ दी गई, ककड़ी के खेत में आश्रय के जैसे, या पिछड़े हुए नगर में अकेली खडी है. 9 यदि सर्वशक्तिमान याहवेह ने हमें न बचाया होता, तो हम भी सोदोम और अमोराह के समान हो जाते. 10 सोदोम के शासको, याहवेह का वचन सुनो; अमोराह के लोगों! हमारे परमेश्वर के व्यवस्था-विधान पर ध्यान दो. 11 याहवेह कहता है, "तुम्हारे बहुत से मेल बलि मेरे किस काम के? तुम्हारे मेढ़ों की अग्निबलियां और पशुओं की चर्बी; और बैलों, मेमनों और बकरों के रक्त से मैं खुश नहीं होता. 12 जब तुम मेरे सामने आते हो, तो तुम किस अधिकार से, मेरे आंगनों में चलते हो? 13 अब मुझे अन्नबलि न चढ़ाना और धूप से नये चांद. विश्राम दिन और सभाओं का आयोजन मुझे अच्छा नहीं लगता. 14 नफरत है मुझे तुम्हारे नये चांद पर्वों तथा वार्षिक उत्सवों से. बोझ बन गए हैं ये मेरे लिए; थक गया हूं मैं इन्हें सहते सहते. 15 तब जब तुम प्रार्थना में मेरी ओर अपने हाथ फैलाओगे, मैं तुमसे अपना मुंह छिपा लूंगा; चाहे तुम कितनी भी प्रार्थनाएं करते रहो, मैं उन्हें नहीं सुनूंगा. "क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं! 16 "तुम अपने आपको शुद्ध करो. और मेरे सामने से अपने बुरे कामों को हटा दो; बुराई करना छोड दो. 17 अच्छा काम करना सीखो; दुखियों की सहायता करो. अनाथों की रक्षा करो; और विधवाओं को न्याय दिलवाओ." 18 याहवेह यों कहते हैं, "अब आओ, हम मिलकर इसका निष्कर्ष निकालें, चाहे तुम्हारे पाप लाल रंग के हों, वे हिम समान श्वेत हो जाएंगे; चाहे वे बैंगनी रंग के हों, तो भी वे ऊन के समान सफेद हो जाएंगे. 19 यदि सच्चाई से मेरी बात मानोगे, तो इस देश की उत्तम से उत्तम चीज़ें खा पाओगे; 20 और यदि तुम विरोध करो और बात न मानोगे, तो तलवार से मार दिये जाओगे." यह याहवेह का यही वचन है! 21 वह नगर जिसमें सत्य, न्याय और धार्मिकता पाई जाती है, उसमें व्यभिचार कैसे बढ गया! 22 तुम्हारी चांदी में मिलावट है, और तुम्हारे दाखरस में पानी मिला दिया गया है. 23 राज्य करनेवाले विद्रोही, और चोरों के मित्र हैं; सब घूस लेते हैं और लालची हैं. वे अनाथों की रक्षा नहीं करते; और न विधवाओं को न्याय दिलाते हैं. 24 अतः इस्राएल के सर्वशक्तिमान, प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह कहते हैं: "मैं अपने बैरियों से बदला लूंगा. 25 मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ उठाऊंगा; मैं तुम्हारे धातु की गंदगी को दूर कर दूंगा और उसमें जो मिलावट है उसे दूर करूंगा. 26 मैं फिर से न्यायी और मंत्री बनाऊंगा और उनको उनका पद दूंगा. फिर इस नगर में कोई कमी नहीं होगी." 27 ज़ियोन को न्याय से, और जो अपने आपको बदलेगा वे धर्म से छुड़ा लिये जायेंगे. 28 लेकिन विद्रोहियों और पापियों को एक साथ नष्ट कर दिया जाएगा, जिन्होंने याहवेह को त्याग दिया है. 29 "वे उन बांज वृक्षों से, जिनकी तुम चाह रखते थे लज्जित हो जाएंगे; और जिन क्यारियों में मेहनत करके खुश होते थे अब उसी से लज्जित होना पड़ेगा. 30 तुम उस बांज वृक्ष के समान हो जाओगे जिसके पत्ते सूख गए हैं, और सूखी क्यारियां जिसमें पानी नहीं पिलाया गया हो. 31 बलवान व्यक्ति आग और उसका काम चिंगारी होगा; और वे एक साथ जल जायेंगे, और कोई उन्हें बचा नहीं पाएगा."

2 यहूदिया और येरूशलेम के विषय में आमोज़ के पुत्र यशायाह ने दर्शन देखा: 2 कि अंत के दिनों में वह पर्वत और पहाड़ जिस पर याहवेह का भवन है; उसे दृढ़ और ऊंचा किया जायेगा, और सब जाति के लोग बहती हुई नदी के समान उस ओर आएंगे. 3 और कहेंगे, "आओ, हम याहवेह के पर्वत, याकोब के परमेश्वर के भवन को चलें. कि वह हमें अपने नियम सिखाएं, और हम उनके मार्गों पर चलें." क्योंकि ज़ियोन से व्यवस्था निकलेगी, और येरूशलेम से याहवेह का वचन आएगा. 4 परमेश्वर राज्यों के बीच न्याय करेंगे और लोगों की परेशानियां दूर करेंगे. तब वे अपनी तलवारों को पीट-पीटकर हल के फाल तथा अपने भालों को हंसिया बना लेंगे. एक देश दूसरे के विरुद्ध तलवार नहीं उठायेगा, तथा उन्हें फिर कभी लड़ने के लिए तैयार नहीं किया जाएगा. 5 याकोब के लोग आओ, हम याहवेह के प्रकाश में चलें. 6 याहवेह, ने तो अपनी प्रजा, याकोब के वंश को छोड़ दिया है. क्योंकि वे पूर्णतः पूर्वी लोगों के समान हो गये; और फिलिस्तीनियों के समान उनकी सोच और काम हो गया है. 7 उनका देश भी सोना और चांदी से भरा है; और उनके पास धन की कमी नहीं. और उनका देश घोड़ों और रथों से भरा है. 8 उनका देश मूर्तियों से भरा है; जो अपने हाथों से बनाया हुआ है. 9 और मनुष्य उसके सामने झुकते और प्रणाम करते हैं, इसलिये उन्हें माफ नहीं किया जाएगा. 10 याहवेह के डर तथा उनके प्रताप के तेज के कारण चट्टान में चले जाओ और छिप जाओ! 11 मनुष्यों का घमंड नीचा करके; याहवेह को ऊंचा किया जायेगा. 12 क्योंकि हर घमंडी एवं अहंकारी व्यक्ति के लिए सर्वशक्तिमान याहवेह ने दिन ठहराया है, उस दिन उनका घमंड तोड़ दिया जाएगा, 13 और लबानोन के समस्त ऊंचे देवदारों, तथा बाशान के सब बांज वृक्षों पर, 14 समस्त ऊंचे पहाडों और ऊंची पहाड़ियों पर, 15 समस्त ऊंचे गुम्मटों और सब शहरपनाहों पर और, 16 तरशीश के सब जहाजों तथा सब सुंदर चित्रकारी पर. 17 जो मनुष्य का घमंड और अहंकार है दूर किया जाएगा; और केवल याहवेह ही ऊंचे पर विराजमान होगा, 18 सब मूर्तियां नष्ट कर दी जाएंगी. 19 जब याहवेह पृथ्वी को कंपित करने के लिए उठेंगे तब उनके भय तथा प्रताप के तेज के कारण मनुष्य चट्टानों की गुफाओं में तथा भूमि के गड्ढों में जा छिपेंगे. 20 उस दिन मनुष्य अपनी सोने-चांदी की मूर्तियां जिन्हें उन्होंने बनाई थी, उन्हें छछूंदरों और चमगादड़ों के सामने फेंक देंगे. 21 जब याहवेह पृथ्वी को कंपित करने के लिए उठेंगे तब उनके भय तथा उनके प्रताप के तेज के कारण, मनुष्य चट्टानों की गुफाओं में तथा चट्टानों में जा छिपेंगे. 22 तुम मनुष्यों से दूर रहो, जिनका सांस कुछ पल का है. जिनका कोई महत्व नहीं.

3 प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह येरूशलेम और यहूदिया से उनका सहारा और उनके अन्न और जल का स्रोत सब दूर कर देगा, 2 वीर योद्धा तथा सैनिक, न्यायी तथा भविष्यद्वक्ता, भावी बोलनेवाले तथा बूढ़े, 3 मंत्री और प्रतिष्ठित व्यक्ति, सलाहकार, कारीगर और जादूगर को भी दूर करेंगे. 4 "मैं लड़कों को शासक बना दूंगा; और वे उन पर शासन करेंगे." 5 लोग एक दूसरे पर अत्याचार करेंगे— सब अपने साथी, पडोसी पर, और लड़के, बूढ़ों से बुरा व्यवहार करेंगे. 6 जब एक व्यक्ति अपने पिता के घर में अपने भाई से ही यह कहने लगे, "तुम्हारे पास तो अच्छा वस्त्र है, तुम्हें हमारा न्यायी होना चाहिए;

और यह देश जो उजड़ा हुआ है अपने अधीन कर लो!" 7 उस दिन कहेगा, "मैं चंगा करनेवाला नहीं हूं. क्योंकि मेरे घर में न तो भोजन है और न वस्त्र; ऐसा व्यक्ति प्रजा का शासक नहीं बन सकता." 8 येरूशलेम लड़खड़ाया और यहूदिया गिर गया है; क्योंकि उनके वचन और उनके काम याहवेह के विरुद्ध हैं, जो याहवेह के तेजोमय आंखों के सामने बुराई करनेवाले हो गये. 9 उनका मुंह ही उनके विरुद्ध गवाही देता हैं; और वे सदोम के समान अपने ही पापों को बताते हैं; वे उन्हें छिपाते नहीं हाय उन पर. क्योंकि उन्होंने अपना ही नुकसान किया है. 10 धर्मियों को यह बताओ कि उनका अच्छा ही होगा, क्योंकि उन्हें उनके कामों का प्रतिफल मिलेगा. 11 हाय है दुष्ट पर! उनके साथ बुरा ही होगा! क्योंकि उनके बुरे कामों का फल उन्हें बुरा ही मिलेगा. 12 मेरे लोगों को बच्चे दुःख देते हैं, और स्त्रियां उन पर अधिकार करती हैं. हे मेरी प्रजा, जो तुम्हारे मार्ग बताते हैं; वे ही तुम्हें भटकाते हैं तथा वे तुम्हारे रास्ते को भूला देते हैं. 13 याहवेह तुम्हें बचाने और लोगों के न्याय निष्पादन के लिए तैयार हैं. 14 याहवेह न्याय के लिए शासन करनेवालों तथा बूढ़ों के साथ मिल गए हैं: "तुम ही ने खेत से अंगूर खा लिये; और गरीबों से लूटा गया सामान अपने घर में रखा. 15 क्यों मेरी प्रजा को परेशान और दुःखी करते हो?" प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह कहता है! 16 याहवेह कहता है, "ज़ियोन की पुत्रियां घमंड करती हैं, वे सिर ऊंचा कर आंखों को मटकाती, घुंघरूओं को छमछमाती हुई पायल पहनकर चलती हैं. 17 इसलिये प्रभु याहवेह ज़ियोन की पुत्रियों के सिर को गंजा कर देंगे; और उनके तन को विवस्त्र करेंगे." 18 उस दिन प्रभु उनकी पायल, ललाट पट्टिका, झूमर, 19 झुमके, कंगन, झीना मुखावरण, 20 सुंदर वस्त्र, भुजबन्द, करधनी, ईत्रदान, कवच, 21 अंगूठी, नथ, 22 मख़मल के वस्त्र, कुरती, बुन्दियों, ओढ़नी; 23 बटूवा, अधोवस्त्र, पगड़ी और ओढ़नी की सुंदरता को हटा देंगे. 24 और खुशबू की जगह बदबू; करधनी के स्थान पर रस्सी; बालों की जगह गंजापन; बहुमूल्य वस्त्रों के स्थान पर टाट; और सुंदरता की जगह बदसूरती होगी. 25 तुम्हारे पुरुष तलवार से, और तुम्हारे योद्धा युद्ध में मारे जाएंगे. 26 तुम्हारे फाटक रोएंगे और शोक मनाएंगे; वह अकेली भूमि पर बैठी रहेगी.

4 उस दिन सात स्त्रियां एक पुरुष को रोक कर कहेंगी, "हम अपने भोजन और वस्त्रों की व्यवस्था स्वयं कर लेंगी; सिर्फ हमें अपना नाम दे दो. और हमारा तिरस्कार दूर कर दो!" 2 उस दिन याहवेह की मनोहरता भूषण और महिमा ठहरेगी और बचे हुओं के लिए भूमि की उपज गर्व और सम्मान का विषय होगी. 3 ज़ियोन के बचे हुए और येरूशलेम में, वे जो बच गए हैं, वे पवित्र कहलाएंगे, जिनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा गया है. 4 जब प्रभु न्याय और भस्म करनेवाली आत्मा के द्वारा ज़ियोन की पुत्रियों की गंदगी धो देंगे और खून से भरे हुए येरूशलेम को दूर कर देंगे. 5 तब याहवेह ज़ियोन पर्वत और सभी लोगों पर दिन के समय धुएं का बादल तथा रात में तेज आग की रोशनी दिखाएगा और इन सबके ऊपर याहवेह का तेज मंडराता रहेगा. 6 दिन की उष्णता, आंधी, पानी और हवा से बचने के लिये आड़ बनकर सुरक्षित रहे.

5 अब मैं अपने प्रिय के लिए और उसकी दाख की बारी के लिये एक गीत गाऊंगी: एक अच्छी उपजाऊ पहाड़ी पर मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी. 2 मिट्टी खोदकर अच्छी सफाई करके उसमें अंगूर की अच्छी बेल लगाई. और इसके बीच एक गुम्मट बनाया और अच्छे फल का इंतजार करने लगा, लेकिन उसमें से खराब गुच्छा निकला. 3 "अब येरूशलेम और यहूदिया के लोग, मेरे और मेरे अंगूर की बारी के बीच फैसला करेंगे. 4 मैंने अंगूर की बारी में कोई कमी नहीं रखी और अच्छा फल चाहा तो उसमें खराब फल निकला. 5 अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं अपनी बारी के चारों ओर बांधे हुए बाड़े को हटा दूंगा, ताकि पशु आकर उसे खा लें, और पौधों को नष्ट कर दें. 6 मैं इसे निर्जन बना दूंगा, न मैं इसकी छंटाई करूंगा, न ही सिंचाई! इसमें झाड़ उगेंगे. और मैं बादलों को भी कहूंगा कि बारिश न हो." 7 क्योंकि इस्राएल वंश सर्वशक्तिमान याहवेह की दाख की बारी है, और यहूदिया की प्रजा उनका प्रिय पौधा. उन्होंने न्याय मांगा, लेकिन अन्याय मिला; उन्होंने धर्म चाहा, लेकिन अधर्म मिला. 8 हाय उन पर जो घर से घर और खेत से खेत जोड़ देते हैं कि और किसी को खाली जगह नहीं मिलती कि वे रहने लगें. 9 सर्वशक्तिमान याहवेह ने कहा; "निश्चय बड़े, और सुंदर घर सुनसान हो जाएंगे. 10 दस एकड़ के दाख की बारी से सिर्फ एक बत दाखरस ही मिलेगा; और होमेर भर बीज से एक एफा उपज होगी." 11 हाय उन पर जो सुबह जल्दी उठकर शराब खोजते हैं, और शाम तक दाखमधु पीकर नशा करते हैं. 12 उनके उत्सवों में वीणा, सारंगी, खंजरी, बांसुरी और दाखरस होता है, किंतु वे न तो याहवेह के कामों पर ध्यान देते हैं, और न ही उनके हाथ के कामों को सोचते हैं. 13 यही कारण है कि मेरी प्रजा समझ की कमी से उन्हें बंदी बना दी गई; उनके प्रतिष्ठित लोग भूखे रह जाते हैं और साधारण लोग प्यासे रह जाते हैं. 14 इसलिये अधोलोक ने, अपना गला खोल दिया है; ताकि येरूशलेम का वैभव, उसका जनसमूह उसके शत्रु और लेनदेन करनेवाले सब उसमें उतर जाएंगे. (Sheol h7585) 15 तब साधारण मनुष्य तो दबाएं जाते हैं और बड़े लोग नीचे किए जाते हैं, और घमंडी की आंखें झुका दी जाएंगी. 16 किंतु सर्वशक्तिमान याहवेह ही न्याय करेंगे, और पवित्र परमेश्वर अपनी धार्मिकता में स्वयं को पवित्र प्रकट करेंगे. 17 तब मेमने खेत में चरेंगे; तथा अमीरों की खाली जगहों पर परदेशियों को चराई के लिये जगह मिलेगी. 18 हाय उन पर जो अनर्थ को अधर्म से, तथा पाप को गाड़ी के रस्सियों से खींचते हैं, 19 जो कहते हैं, "इस्राएल के पवित्र परमेश्वर गति को बढ़ायें; और अपने कामों को जल्दी पूरा करें, ताकि हम उनकी इच्छा को जान सकें." 20 हाय उन पर जो गलत को सही और सही को गलत कहते हैं, और अंधकार को ज्योति और ज्योति को अंधकार से, और कड़वे को मीठा तथा मीठे को कड़वा कहते हैं. 21 हाय उन पर जो अपने आपको ज्ञानी और बुद्धिमान कहते हैं. 22 हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और बनाने में बहादुर हैं, 23 जो रिश्वत लेकर अपराधी को बचा लेते हैं, और निर्दोष को दोषी बना देते हैं. 24 इस कारण, जैसे आग खूंटी को जला देती है और सूखी घास जलकर राख हो जाती है, और उनकी जड़ें सड़ जाएगी और फल हवा में उड़ जाएंगे; क्योंकि उन्होंने सर्वशक्तिमान याहवेह की व्यवस्था को ठुकरा दिया है और इस्राएल के पवित्र वचन को तुच्छ समझा है. 25 इसलिये याहवेह ने क्रोधित होकर उनको मारा तब पर्वत हिलने लगा और शव सड़कों पर बिखरे पड़े थे फिर भी वे शांत न हुए, और उनका हाथ अब तक उठा हुआ है. 26 वे दूर देश के लिए झंडा खड़ा करेंगे, और पृथ्वी के चारों ओर से लोगों को बुलाएंगे और सब तुरंत वहां आएंगे. 27 और उनमें न कोई थका हुआ होगा न ही कोई बलहीन होगा, न कोई ऊंघता है और न कोई सोता; न तो कोई बंधन खोलता है, और न कोई बांधता है. 28 उनके तीर तेज, और धनुष चढ़ाए हुए हैं; उनके घोड़ों के खुर वज्र के समान, और उनके रथों के पहिए चक्रवात के समान हैं. 29 उनकी दहाड़ सिंह के समान, हां, जो गुर्राते हुए शिकार पर झपटते हैं; और उसे उठाकर ले जाते हैं और उसका छुड़ाने वाला कोई नहीं होता. 30 उस दिन वे समुद्र में उठती लहरों के समान गरजेंगे. और सब जगह अंधकार और संकट दिखाई देगा, यहां तक कि रोशनी भी बादल में छिप जाएगी.

6 यशायाह का दर्शन है उस वर्ष जब राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, उस वर्ष मैंने प्रभु को ऊंचे सिंहासन पर बैठे देखा, उनके वस्त्र से मंदिर ढंक गया है. 2 और उनके ऊपर स्वर्गदूत दिखाई दिए जिनके छः-छः पंख थे: सबने दो पंखों से अपना मुंह ढंक रखा था, दो से अपने पैर और दो से उड़ रहे थे. 3 वे एक दूसरे

से इस प्रकार कह रहे थे: "पवित्र, पवित्र, पवित्र हैं सर्वशक्तिमान याहवेह; सारी पृथ्वी उनके तेज से भरी है." **4** उनकी आवाज से द्वार के कक्ष हिल गए और भवन धुएं से भरा हुआ हो गया. **5** तब मैंने कहा, "हाय मुझ पर! क्योंकि मैं नष्ट हो गया हूं! मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं, जिसके होंठ अशुद्ध हैं और मैं उन व्यक्तियों के बीच रहता हूं जिनके होंठ अशुद्ध हैं; क्योंकि मैंने अपनी आंखों से महाराजाधिराज, सर्वशक्तिमान याहवेह को देख लिया है." **6** तब एक स्वर्गदूत उड़कर मेरी ओर आया और उसके हाथ में अंगारा था, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठाया था. **7** उसने इस अंगारे से मेरे मुंह पर छूते हुए कहा, "देखो, तुम्हारे होंठों से अधर्म दूर कर दिया और तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया गया है." **8** तब मैंने प्रभु को यह कहते हुए सुना, "मैं किसे भेजूं और कौन जाएगा हमारे लिए?" तब मैंने कहा, "मैं यहां हूं. मुझे भेजिए!" **9** प्रभु ने कहा, "जाओ और इन लोगों से कहो: "'सुनते रहो किंतु समझो मत; देखते रहो किंतु ग्रहण मत करो.' **10** इन लोगों के हृदय कठोर; कान बहरे और आंख से अंधे हैं. कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आंखों से देखकर, अपने कानों से सुनकर, और मन फिराकर मेरे पास आएं, और चंगे हो जाएं." **11** तब मैंने पूछा, "कब तक, प्रभु, कब तक?" प्रभु ने कहा: "जब तक नगर सूना न हो जाए और कोई न बचे, और पूरा देश सुनसान न हो जाएं, **12** याहवेह लोगों को दूर ले जाएं और देश में कई जगह निर्जन हो जाएं. **13** फिर इसमें लोगों का दसवां भाग रह जाए, तो उसे भी नष्ट किया जाएगा. जैसे बांझ वृक्ष को काटने के बाद भी ठूंठ बच जाता है, उसी प्रकार सब नष्ट होने के बाद, जो ठूंठ समान बच जाएगा, वह पवित्र बीज होगा."

7 यह उल्लेख उस समय का है, जब उज्जियाह का पोता, योथाम के पुत्र यहूदिया के राजा आहाज़, अराम के राजा रेज़िन और रेमालियाह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकाह ने येरूशलेम पर हमला किया, और हार गये. **2** जब दावीद के घराने को यह पता चला कि अराम और एफ्राईम एकजुट हो गए है; तो उनके लोग आंधी से हिलते हुए वन वृक्षों के समान डर से कांपने लगे. **3** तब याहवेह ने यशायाह से कहा, "तुम्हें और तुम्हारे पुत्र शआर-याशूब को आहाज़ से मिलने राजमार्ग से लगे धोबी खेत में ऊपरी कुंड के पास पहुंचना है. **4** और उनसे कहना कि, 'अराम के राजा, रेज़िन तथा रेमालियाह के पुत्र के क्रोध के कारण जो जलता हुआ धुआं दिखाई दे रहा है, सावधान और शांत बने रहना, भयभीत न होना और न ही घबराना. **5** क्योंकि अराम के राजा, रेमालियाह के पुत्र तथा एफ्राईम ने तुम्हारे विरुद्ध यह कहते हुए नई चाल चली है, **6** "आओ, हम यहूदाह पर आक्रमण कर उसे मार दें, और ताबील के पुत्र को उसका राजा बना दें." **7** इसलिये प्रभु याहवेह ने कहा: "'उनकी यह चाल सफल न होगी, यह कदापि सफल न होगी. **8** क्योंकि अराम का सिर दमेशेक है, और दमेशेक का रेज़िन. आगामी पैंसठ वर्षों के अंदर में एफ्राईम ऐसा नष्ट कर दिया जाएगा. **9** एफ्राईम का शीर्ष शोमरोन और शोमरोन का शीर्ष रेमालियाह का पुत्र है. यदि तुम विश्वास नहीं करोगे तो स्थिर भी नहीं रहोगे.'" **10** तब याहवेह ने आहाज़ से कहा, **11** "तुम याहवेह अपने परमेश्वर से अपने लिए एक चिन्ह मांगो, चाहे वह गहरे सागर का हो या आकाश का." **(Sheol h7585)** **12** किंतु आहाज़ ने कहा, "नहीं, मैं न तो मांगूंगा और न ही याहवेह को परखूंगा." **13** इस पर यशायाह ने कहा, "हे दावीद के घराने सुनो! क्या तुम्हारे लिए लोगों के धैर्य की परीक्षा लेना काफ़ी न था, कि अब तुम मेरे परमेश्वर के धैर्य को भी परखोगे?" **14** तब प्रभु स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देंगे: सुनो, एक कन्या गर्भधारण करेगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी और उसे इम्मानुएल नाम से पुकारेगी. **15** बुरे को अस्वीकार करने तथा भले को अपनाने की समझ होने तक वह मक्खन और शहद खाएगा, **16** क्योंकि बालक को बुरे को अस्वीकार करने तथा भले को अपनाने की समझ होने से पहले, जिन दो राजाओं से तुम डर रहे हो उनके राज्य निर्जन कर दिए जाएंगे. **17** याहवेह तुम पर, तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे पूर्वजों के वंश पर ऐसा समय लाएंगे जैसा उस समय से, जब अश्शूर के राजा के समय में एफ्राईम यहूदिया से अलग हुआ था, अब तक कभी ऐसा नहीं हुआ था. **18** उस दिन याहवेह सीटी की आवाज से मिस्र देश की नदियों के छोर से मक्खियों को तथा अश्शूर देश से मधुमक्खियों को बुलाएंगे. **19** और वे सभी आकर ढलवां घाटियों, चट्टानों की दरारों में, कंटीली झाड़ियों और जलधाराओं के निकट में बस जाएंगी. **20** उस दिन प्रभु फ़रात नदी के पार के क्षेत्र से भाड़े पर लिए हुए छुरे से अश्शूर के राजा के सिर तथा पूरे शरीर के बाल और दाढ़ी को काट डालेंगे. **21** उस समय, मनुष्य केवल एक कलोर और भेड़ों के जोड़े को पालेगा. **22** दूध की बहुतायत के कारण दही उसका भोजन होगा क्योंकि देश में जीवित रह गए हर व्यक्ति का भोजन दही और मधु ही होगा. **23** उस समय, जहां हजार टुकडे चांदी की हजार दाख लताएं होती थी, वहां अब कंटीली झाड़ियां तथा ऊंटकटारे उगेंगे. **24** लोग वहां धनुष और तीर लेकर जाएंगे क्योंकि पूरा देश कंटीली झाड़ियों से भरा होगा. **25** जिन पहाड़ियों पर कुदाली से खेती की जाती थी, अब तुम कंटीली झाड़ियों तथा ऊंटकटारों के कारण वहां नहीं जा पाओगे. मवेशी, भेड़, और बकरियां वहां चरेंगी.

8 याहवेह ने मुझसे कहा, "एक बड़ी पटिया में बड़े-बड़े अक्षरों में यह लिखो: महेर-शालाल-हाश-बाज़ अर्थात् त्वरित लूट, द्रुत डाका." **2** मैं पुरोहित उरियाह और यबेरेकयाह के पुत्र ज़करयाह को अपने साथ दो विश्वासयोग्य गवाह के रूप में रखूंगा. **3** तब मैं नबिया के पास गया और उसने गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म दिया. तब याहवेह ने मुझसे कहा, "उसका नाम महेर-शालाल-हाश-बाज़ रखो. **4** और इससे पहले कि वह पिता और माता बुलाए, दमेशेक की संपत्ति और शमरिया की लूट अश्शूर के राजा के द्वारा ले जाई जाएगी." **5** फिर याहवेह ने मुझसे कहा: **6** "इसलिये कि इस प्रजा ने शिलोह के धीरे धीरे बहने वाले सोते को छोड़ दिया और रेमालियाह के पुत्र और वे रेज़िन से मिलकर खुश हैं, **7** इसलिये अब प्रभु उन पर अर्थात् अश्शूर के राजा और उसके समस्त वैभव पर फरात का कष्ट लाने पर हैं. उसका जल उसकी समस्त नहरों, और तटों पर से उमड़ पड़ेगा. **8** तब पानी यहूदिया पर भी चढ़ जाएगा और बढ़ता जाएगा. और इम्मानुएल का पूरा देश उसके पंखों से ढंक जाएगा!" **9** हे दूर-दूर देश के सब लोगों, चिल्लाओ अपनी-अपनी कमर कसो. परंतु तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े किए जाएंगे और तुम नाश किए जाओगे! **10** तुम चाहे कुछ भी करो, कोई फायदा नहीं; और तुम्हारी सब बात झूठी होगी, क्योंकि परमेश्वर तो हमारे साथ हैं. **11** और याहवेह का मजबूत हाथ मेरे ऊपर था, और उन लोगों के समान न बनने के लिए याहवेह ने कहा: **12** "जिससे ये सब लोग नफरत करे तुम उससे नफरत न करना; और जिससे वे डरे हैं, तुम उससे डरो मत. **13** सर्वशक्तिमान याहवेह ही पवित्र परमेश्वर हैं, उन्हीं का भय मानना, और उन्हीं से डरना. **14** तब वे तुम्हारे शरणस्थान होंगे; लेकिन इस्राएल के दोनों परिवारों के लिए वे ठोकर का पत्थर और लड़खड़ाने की चट्टान. तथा येरूशलेम वासियों के लिए वे एक जाल और एक फंदा होंगे. **15** कई लोग उनसे ठोकर खाकर गिरेंगे; और टूट जाएंगे, वे फंदे में फंसेंगे और पकड़े जाएंगे." **16** इस चेतावनी को बंद कर दो और मेरे चेलों के सामने इस व्यवस्था पर छाप लगा दो. **17** मैं याहवेह की प्रतीक्षा करता रहूंगा, जो याकोब वंश से अपना मुख छिपाए हुए हैं. मैं उन्हीं पर आशा लगाए रहूंगा. **18** देख: मैं यहां हूं, और याहवेह ने जो संतान मुझे दिये हैं! ज़ियोन पर्वत पर रहनेवाला जो सर्वशक्तिमान याहवेह हैं, उनकी ओर से हम चिन्ह और चमत्कार होंगे. **19** जब वे तुमसे कहें कि, बुदबुदानेवाले और गुनगुनानेवाले तंत्र मंत्र करनेवालों से पूछो, तो क्या वे जीवित परमेश्वर से नहीं पूछ सकते, क्या जीवित लोग मरे हुओं से पूछेंगे? **20** परमेश्वर की शिक्षा और उनकी चेतावनी से पूछताछ करें. यदि वे लोग सच्चाई की बातों को नहीं मानते

तो उनके लिए सुबह का नया दिन नहीं. 21 वे इस देश से बहुत दुःखी और भूखे
होकर निकलेंगे और जब वे भूखे होंगे वे क्रोधित हो जाएंगे, वे क्रोध में अपना
मुंह आकाश की ओर उठाकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को शाप देंगे. 22
तब वे पृथ्वी की ओर देखेंगे और उन्हें धुंधलापन संकट, और अंधकार दिखाई
देगा और वे घोर अंधकार में फेंक दिए जाएंगे.

9 यद्यपि दुःख का समय हटेगा. पहले उसने ज़ेबुलून और नफताली से घृणा की
थीं, किंतु भविष्य में वह समुद्र के रास्ते यरदन के उस पार, अन्यजातियों
का गलील प्रदेश सम्मानित किया जायेगा— 2 अंधकार में चल रहे लोगों ने
एक बड़ी ज्योति को देखा; गहन अंधकार के निवासियों पर ज्योति चमकी. 3
जैसे फसल कटनी के समय आनंदित होती है, और जैसे लोग लूट बांटने के
समय मगन होते हैं; वैसे तूने जाति को बढ़ाया और आनंदित किया. 4 क्योंकि
परमेश्वर ने उनके जूए और भारी बोझ को दूर किया, जो मिदियान के द्वारा दिया
गया था. 5 युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों के जूते और खून से भरे हुए कपड़े
जला दिए जाएंगे. 6 क्योंकि हमारे लिए एक पुत्र का जन्म हुआ है, प्रभुता
उनके कंधों पर स्थित होगी, और उनका नाम होगा अद्भुत युक्ति करनेवाला,
पराक्रमी, अनंत काल का पिता, और शांति का राजकुमार होगा. 7 दावीद के
सिंहासन और उनके राज्य पर उनके अधिकार तथा उनकी शांति का अंत न
होगा. इसलिये दावीद की राजगद्दी हमेशा न्याय और धर्म के साथ स्थिर रहेगी.
सेनाओं के याहवेह का जोश इसे पूरा करेगा. 8 याहवेह ने याकोब के पास एक
संदेश भेजा; जो इस्राएल पर पूरा हुआ. 9 यह एफ्राईम और शमरिया के सभी
लोगों को मालूम हो जाएगा— जो घमंड और कठोरता से बोलते हैं, 10 "ईंटें तो
गिर गई हैं, लेकिन हम गिरे हुए पत्थरों से घर बनाएंगे, गूलर-वृक्ष तो काट दिए
गए हैं, तब हम उनके स्थान पर देवदार उगाएंगे." 11 तब याहवेह रेज़िन की
ओर से उसके विरुद्ध शत्रु खड़े करेंगे और उसके अन्य शत्रुओं को उकसाएंगे. 12
पूर्व से अरामी और पश्चिम से फिलिस्तीनी जो मुंह खोलकर इस्राएल को निगल
जाएंगे. यह सब होने पर भी उनका क्रोध शांत न होगा, और उनका हाथ उठा
रहेगा. 13 फिर भी लोग उनकी ओर नहीं फिरे, और न ही उन्होंने सर्वशक्तिमान
याहवेह की ओर ध्यान दिया. 14 इसलिये याहवेह एक ही दिन में इस्राएल से
सिर और पूंछ, तथा खजूर के सरकंडे को काट डालेंगे; 15 सिर तो वह प्रतिष्ठित
और बुज़ुर्ग व्यक्ति है, और पूंछ वह भविष्यद्वक्ता जो झूठी बात सिखाता है. 16
क्योंकि वे ही, उनको मार्ग बताकर भटका देते थे, और जो उनकी अगुवाई करते
थे नाश हो गये. 17 इसलिये प्रभु उनके जवानों से खुश नहीं थे, और उनके
अनाथ और विधवाओं पर कोई दया नहीं करता, क्योंकि सब श्रद्धाहीन और
कुकर्मी थे, उनमें सब की बातें मूर्खता की होती थी. इतना सब होने पर भी
उनका क्रोध शांत न हुआ, और उनका हाथ उठा रहा. 18 दुष्ट आग के समान
जलता है; जो ऊंटकटारों तथा कंटीली झाड़ियों को जला देती है, वन के
झुरमुट को जला देती है, और उसका धुआं ऊपर उठता है. 19 सर्वशक्तिमान
याहवेह के क्रोध से देश झुलस गया है और प्रजा आग में जल गई है; भाई ने भाई
को नहीं छोड़ा. 20 वे दायीं ओर से छीन झपटकर खाने पर भी भूखे ही रहते
हैं, और वह भी खा जाते हैं; जो बाएं ओर होता है, फिर भी तृप्त नहीं होते. उनमें
से हर एक अपनी ही बांह के मांस को खा जाता है: 21 एफ्राईम मनश्शेह को
खाता है और मनश्शेह एफ्राईम को; वे एक साथ होकर यहूदाह के विरुद्ध हो गए
हैं. इतना सब होने पर भी उनका क्रोध शांत न होगा, और उनका हाथ उठा
रहेगा.

10 हाय उन पर जो गलत न्याय करते और उन पर दबाव डालने की आज्ञा
लिख देते हैं, 2 कि वे कंगालों को न्याय से दूर कर दें और गरीबों के
अधिकारों को छीन लें, जिससे वे विधवाओं को लूट सकें और अनाथों को
अपना शिकार बना सकें. 3 क्या करोगे तुम दंड और विनाश के दिन पर, जो दूर
से आएगा? तब सहायता के लिए तुम दौड़कर किसके पास जाओगे? और कहां
छिपाओगे अपने आपको? 4 बंदियों के बीच चापलूसी और मरे हुओं के बीच
छिपने के सिवा कोई भी रास्ता नहीं रह जाएगा. इतना सब होने पर भी, उनका
क्रोध नहीं हटेगा, और उनका हाथ उठा रहेगा. 5 "अश्शूर पर हाय, जो मेरे
क्रोध का सोंटा तथा लाठी है! 6 मैं उसको एक श्रद्धाहीन जाति के विरुद्ध भेजूंगा,
और उन लोगों के विरुद्ध जिनसे मैं क्रोधित हूं, उसे आज्ञा दे रहा हूं कि वह इसे
उजाड़ दे, लूट ले और गलियों के कीचड़-समान रौंद डाले. 7 किंतु फिर भी
उसकी इच्छा यह नहीं और न ही उसके हृदय में ऐसी कोई युक्ति है; परंतु
उसका यह उद्देश्य है, कि वह अनेक देशों को नष्ट करे और मिटा डाले. 8
क्योंकि वह यह कहता है, 'क्या मेरे सब हाकिम राजा नहीं? 9 क्या कलनो
कर्कमीश व हामाथ अरपाद के और शमरिया दमेशेक के समान नहीं है? 10
इसलिये कि मेरा हाथ मूर्तियों के राज्य में पहुंच गया है, जिनकी गढ़ी हुई मूर्ति
येरूशलेम और शमरिया से अधिक थी— 11 क्या मैं येरूशलेम और उसकी
मूर्तियों के साथ वही करूंगा जैसा मैंने शमरिया और उसकी मूर्तियों के साथ
किया था?'" 12 तब अब ऐसा होगा जब प्रभु ज़ियोन पर्वत और येरूशलेम में
अपना सब काम पूरा कर चुके होंगे, तब वे अश्शूर के राजा को उसके विचारों
और घमंड को तोड़ देंगे. 13 क्योंकि उनका यह मानना था: "'अपनी ही समझ
और बल से राज्य की सीमाओं को मैंने हटाया और उनके धन को लूट लिया.
14 देश के लोगों की धन-संपत्ति इस प्रकार कब्जे में की, जिस प्रकार चिड़िया
घोंसलों को और बचे हुए अण्डों को इकट्ठा करती है.'" 15 क्या कुल्हाड़ी
अपनी प्रशंसा करेगी, या आरी स्वयं को जो उसे खींचता है अच्छा होने का
दावा करेगी? यह तो उसी प्रकार है जैसे लाठी उसे उठाए जो काठ है ही नहीं,
या मुगदर अपने प्रयोक्ता को चलाए! 16 तब सर्वशक्तिमान याहवेह, उनके
बलवान योद्धाओं को कमजोर कर देंगे; और उनके ऐश्वर्य के नीचे आग की सी
जलन होगी. 17 इस्राएल की ज्योति आग और पवित्र ज्वाला होगी; और उसके
झाड़ आग में जल जाएंगे. 18 वे उसके वन और फलदायक उद्यान के वैभव को
ऐसे नष्ट कर देंगे, जैसे एक रोगी की देह और प्राण कमजोर होते हैं. 19 उसके
वन में शेष रह गए वृक्षों की संख्या इतनी अल्प हो जाएगी कि कोई बालक भी
इसकी गणना कर लेगा. 20 उस दिन इस्राएल के बचे हुए लोग, और याकोब
वंश के भागे हुए लोग, अपने मारने वाले पर फिर विश्वास नहीं करेंगे, बल्कि
याहवेह इस्राएल के पवित्र परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे. 21 याकोब में से बचे हुए
लोग पराक्रमी परमेश्वर के पास लौट आएंगे. 22 क्योंकि हे इस्राएल, चाहे
तुम्हारी प्रजा समुद्र के बालू के समान भी हो, किंतु उनमें से कुछ ही बच पाएंगे.
लेकिन विनाश पूरे न्याय के साथ होगा. 23 क्योंकि विनाश करने का निर्णय
प्रभु, सेनाओं के याहवेह ने ले लिया है. 24 इसलिये प्रभु, सेनाओं के याहवेह यों
कहते हैं: "हे ज़ियोन में रहनेवाले, अश्शूरियों से न डरना; चाहे वे सोंटे से और
लाठी से तुम्हें मारें. 25 क्योंकि कुछ ही समय में तुम पर मेरा गुस्सा शांत हो
जाएगा और मैं उनको नाश कर दूंगा." 26 सर्वशक्तिमान याहवेह उनको चाबुक
से ऐसा मारेंगे, जैसा उन्होंने ओरेब की चट्टान पर मिदियान को मारा था. उनकी
लाठी समुद्र पर होगी और वे इसे ऐसे उठा लेंगे, जैसे उन्होंने मिस्र में किया था.
27 उस दिन उनका बोझ तुम्हारे कंधों से हट जाएगा, और उनका जूआ तुम्हारी
गर्दन से; यह जूआ अभिषेक के साथ तोड़ दिया जाएगा. 28 उन्होंने अय्याथ पर
हमला कर दिया है; और वे मिगरोन में से होकर निकल गये हैं; मिकमाश में
उन्होंने अपने हथियार रखे हैं. 29 वे घाटी पार करके, "वे गेबा में रात रुकेंगे."
रामाह डरा हुआ है; शाऊल का गिबियाह भाग गया है. 30 हे गल्लीम की पुत्री,
ऊंचे स्वर में चिल्लाओ! हे लयशाह के लोगों, सुनो! हे अनाथोथ, ध्यान दो! 31
मदमेनाह भाग गया है; गीबाम के लोग जाने के लिये तैयार हैं. 32 वे आज

नोब में रुकेंगे; वे ज़ियोन की पुत्री के पर्वत अर्थात् येरूशलेम की पहाड़ी को, अपनी ताकत दिखाएंगे. 33 देखो, प्रभु, सर्वशक्तिमान याहवेह, भयानक रूप से डालियों को काट डालेंगे. और वे जो ऊंचे हैं, नीचे किए जाएंगे. 34 वे घने वन के झुरमुटों को काट डालेंगे; और सर्वसामर्थ्यी परमेश्वर लबानोन को नाश कर देंगे.

11 यिशै के जड़ से एक कोंपल निकलेगी; और एक डाली फलवंत होगी. 2 याहवेह का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और सामर्थ्य का आत्मा, ज्ञान और समझ की आत्मा— 3 उनकी खुशी याहवेह के प्रति ज्यादा होगी. वे मुंह देखकर न्याय नहीं करेंगे, न सुनकर करेंगे; 4 वे तो कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का न्याय सच्चाई से करेंगे. वे अपने मुंह के शब्द से पृथ्वी पर हमला करेंगे; और अपनी फूंक से दुष्टों का नाश कर देंगे. 5 धर्म उनका कटिबंध और सच्चाई उनकी कमर होगी. 6 भेड़िया मेमने के साथ रहेगा, चीता बकरी के बच्चों के पास लेटेगा, बछड़ा, सिंह और एक पुष्ट पशु साथ साथ रहेंगे; और बालक उनको संभालेगा. 7 गाय और रीछ मिलकर चरेंगे, उनके बच्चे पास-पास रहेंगे, और सिंह बैल समान भूसा खाएगा. 8 दूध पीता शिशु नाग के बिल से खेलेगा, तथा दूध छुड़ाया हुआ बालक काला सांप के बिल में हाथ डालेगा. 9 मेरे पूरे पवित्र पर्वत पर वे न किसी को दुःख देंगे और न किसी को नष्ट करेंगे, क्योंकि समस्त पृथ्वी याहवेह के ज्ञान से ऐसे भर जाएगी जैसे पानी से समुद्र भरा रहता है. 10 उस दिन यिशै का मूल जो देशों के लिए झंडा समान प्रतिष्ठित होंगे और देश उनके विषय में पूछताछ करेंगे, तथा उनका विश्राम स्थान भव्य होगा. 11 उस दिन प्रभु उस बचे हुओं को लाने के लिए अपना हाथ बढ़ाएंगे, जिसे उन्होंने अश्शूर, मिस्र, पथरोस, कूश, एलाम, शीनार, हामाथ और समुद्री द्वीपों से मोल लिया है. 12 वे देशों के लिए एक झंडा खड़ा करेंगे इस्राएल में रहनेवाले; और यहूदाह के बिखरे लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा करेंगे. 13 तब एफ्राईम की नफरत खत्म हो जाएगी, और यहूदाह के परेशान करनेवाले काट दिए जाएंगे; फिर एफ्राईम यहूदाह से नफरत नहीं करेगा, और न ही यहूदाह एफ्राईम को तंग करेगा. 14 वे पश्चिम दिशा में फिलिस्तीनियों पर टूट पड़ेंगे; और वे सब एकजुट होकर पूर्व के लोगों को लूट लेंगे. वे एदोम और मोआब को अपने अधिकार में कर लेंगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो जाएंगे. 15 याहवेह मिस्र के समुद्र की खाड़ी को विनष्ट कर देंगे; वे अपने सामर्थ्य का हाथ बढ़ाकर फरात नदी को सात धाराओं में बांट देंगे, ताकि मनुष्य इसे पैदल ही पार कर सकें. 16 उनके बचे हुए लोगों के लिए अश्शूर से एक राजमार्ग होगा, जैसे इस्राएल के लिए हुआ था जब वे मिस्र से निकले थे.

12 उस दिन तुम कहोगे: "याहवेह, मैं आपका आभार मानूंगा. यद्यपि आप मुझसे क्रोधित थे, अब आपका गुस्सा शांत हो गया और आपने मुझे शांति दी है. 2 परमेश्वर मेरे उद्धारकर्ता हैं; मैं भरोसा रखूंगा और न डरूंगा. क्योंकि याह, हां याहवेह ही, मेरा बल और मेरा गीत हैं; वे मेरे उद्धारकर्ता हो गए हैं." 3 तुम उद्धार के स्रोतों से आनंदपूर्वक जल भरोगे. 4 उस दिन तुम कहोगे: "याहवेह की प्रशंसा करो, उनके नाम की दोहाई दो; जनताओं में उनके कामों का प्रचार करो, उन्हें यह याद दिलाओ कि प्रभु का नाम गौरवान्वित है. 5 गीतों से याहवेह की स्तुति करो, क्योंकि उन्होंने प्रतापमय काम किए हैं; और सारी पृथ्वी पर यह प्रकट हो जाए. 6 ज़ियोन के लोगों, ऊंचे स्वर से जय जयकार करो, क्योंकि इस्राएल के पवित्र परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं."

13 आमोज़ के पुत्र यशायाह को दर्शन मिला कि: 2 निर्जन पहाड़ी पर झंडा खड़ा करो, ऊंची आवाज से कहो कि; वे फाटकों से प्रवेश करें. 3 मैंने युद्ध के लिये अपने प्रशिक्षित लोगों से कहा है; और मैंने अपने क्रोध के लिए मेरे योद्धाओं को बुलाया है— जो गर्व के साथ आनंद करते हैं. 4 पर्वतों पर राज्य-राज्य से इकट्ठी की गई, बड़ी भीड़ का शोर सुनाई दे रहा है! और सेनाओं के याहवेह युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठी कर रहे हैं. 5 वे दूर देशों से, आकाश की छोर से— याहवेह क्रोधित होकर— देश को नाश करने आ रहे हैं. 6 विलाप करो, क्योंकि याहवेह का दिन निकट है; वे सर्वशक्तिमान की ओर से सबको नाश करने आएंगे. 7 इसलिये सबके हाथ कमजोर हो जाएंगे, और सब मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा. 8 वे निराश हो जाएंगे: दर्द और तकलीफ़ बढ़ जाएगी. वे हैरानी से एक दूसरे की ओर देखेंगे, और उनके मुंह जल जाएंगे. 9 याद रखो, याहवेह का दिन क्रोध और निर्दयता के साथ आता है— कि पृथ्वी को उजाड़ दे और पापियों को नाश करे. 10 उस दिन तारे और चंद्रमा अपनी रोशनी नहीं देंगे, और सूर्य उदय होते ही अंधेरा हो जाएगा. 11 मैं संसार को उसकी दुष्टता और बुराई के लिए दंड दूंगा. मैं घमंड को खत्म करूंगा और दुष्ट लोगों के गर्व को नाश कर दूंगा. 12 मैं मनुष्य को कुन्दन से भी अधिक मूल्यवान बनाऊंगा, और ओफीर के सोने से भी अधिक महंगा करूंगा. 13 सर्वशक्तिमान याहवेह अपने क्रोध से, आकाश को कंपित करेंगे, और पृथ्वी अपने स्थान से हिल जाएगी. 14 शिकार की गई हिरणी, और उन भेड़ों के समान जिनका कोई नहीं जो उन्हें संभाल सके, उनमें से वे अपने लोगों की ओर भाग जाएंगे. 15 वहां जो कोई भी पाया गया वह मार दिया जाएगा; और जो कोई भी पकड़ा गया उसे तलवार से घात किया जाएगा. 16 उनके शिशु उनके सामने ही टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे; उनके घर लूट लिए जाएंगे और उनकी पत्नियों से बलात्कार किए जाएंगे. 17 याद रहे, कि मैं इनके विरुद्ध मेदिया लोगों को भेजूंगा, जिनको चांदी और सोने का लालच नहीं है. 18 वे तीर से जवानों को मारेंगे; और उनके बच्चों पर दया नहीं करेंगे, और न तरस खाएंगे. 19 जब परमेश्वर उन्हें नाश कर देंगे तब बाबेल, राज्यों का वैभव, कसदियों की भव्यता और उनका दिखावा सदोम और अमोराह के समान हो जाएगा. 20 फिर से इस देश को बसाया न जाएगा और कोई भी अरबी उसमें तंबू नहीं लगाएगा; और न ही कोई चरवाहे अपनी भेड़ों को चराएंगे. 21 लेकिन इसमें जंगली पशु रहेंगे, उनके घर गीदड़ों से भरे होंगे; और शुतुरमुर्ग बसेंगे, और वन्य बकरे छलांग लगाएंगे. 22 लकड़बग्घे उनके आश्रय-स्थलों और गीदड़ सुख-विलास के मंदिरों में कोलाहल करेंगे. उसके नाश होने का दिन पास है, बहुत जल्दी यह सब कुछ पूरा होगा.

14 याकोब पर याहवेह की कृपा होगी; वे इस्राएल को फिर से अपना लेंगे और उन्हें उनके ही देश में बसा देंगे. परदेशी उनसे मिल जायेंगे. 2 देश-देश के लोग उन्हें उन्हीं के स्थान में आने के लिए सहायता करेंगे जो याहवेह ने उन्हें दिया है, वह देश इस्राएल के दास और दासियां होंगे. इस्राएल उन्हें अपना बंदी बना लेंगे जिनके वे बंदी हुआ करते थे वे उन पर शासन करेंगे जिन्होंने उन पर अत्याचार किया था. 3 उस दिन याहवेह तुम्हारी पीड़ा, बेचैनी तथा उस कठिन परिश्रम को खत्म करेंगे जो तुमसे करवाया जाता था, 4 तब तुम बाबेल के राजा पर यह ताना मारोगे कि: सतानेवाले का कैसा अंत हुआ! उसका सुनहरा मंदिर से भरा नगर नाश हो गया! 5 याहवेह ने दुष्ट के दंड और शासकों की लाठी को तोड़ डाला है, 6 जो जनताओं पर निरंतर सताव और गुस्से में शासन करता था. 7 पूरी पृथ्वी को विश्राम और चैन मिला है; और सब खुश होकर गा उठे हैं. 8 सनोवर और लबानोन के केदार उससे खुश हैं और कहते हैं, "कि जब से उसको गिरा दिया है, तब से हमें कोई काटने नहीं आया है." 9 अधोलोक तुम्हारे आगमन पर तुमसे मिलने के लिए खुश है; यह तुम्हारे लिए मरे हुओं की आत्माओं को— जो पृथ्वी के सरदार थे; उन सभी को उनके सिंहासनों से उठाकर खड़ा कर रहा है जो देशों के राजा थे. (Sheol h7585) 10 वे सब तुमसे कहेंगे, "तुम भी हमारे समान कमजोर हो गए हो; तुम भी हमारे समान बन गए हो." 11 तुम्हारा दिखावा और तुम्हारे सारंगी का संगीत नर्क तक उतारा गया है;

कीट तुम्हारी बिछौना और कीड़े तुम्हारी ओढ़नी समान हैं. **(Sheol h7585)** **12** हे भोर के तारे! स्वर्ग से तुम अलग कैसे हुए. तुमने देशों को निर्बल कर दिया था, तुम काटकर भूमि पर कैसे गिरा दिए गए! **13** तुमने सोचा, "मैं स्वर्ग तक चढ़ जाऊंगा; मैं अपना सिंहासन परमेश्वर के तारागणों से भी ऊपर करूंगा; मैं उत्तर दिशा के दूर स्थानों में ज़ेफोन पर्वत पर विराजमान होऊंगा. **14** मैं बादल के ऊपर चढ़ जाऊंगा; और परम प्रधान परमेश्वर के समान हो जाऊंगा." **15** परंतु तू अधोलोक के नीचे, नरक में ही उतार दिया गया है. **(Sheol h7585)** **16** जो तुम्हें देखेंगे वे तुम्हें बुरी नजर से देखेंगे, और वे तुम्हारे बारे में यह कहेंगे: "क्या यही वह व्यक्ति है जिसने पृथ्वी को कंपा और देशों को हिला दिया था, **17** जिसने पृथ्वी को निर्जन बना दिया, और नगरों को उलट दिया था, जिसने बंदियों को उनके घर लौटने न दिया था?" **18** सभी देशों के सब राजा अपनी-अपनी कब्र में सो गए हैं. **19** परंतु तुम्हें तुम्हारी कब्र से एक निकम्मी शाखा के समान निकालकर फेंक दिया गया है; जिन्हें तलवार से मार दिया गया, तुम पैरों के नीचे कुचले गए और गड्ढे में पत्थरों के नीचे फेंक दिये गये. **20** तुम उन सबके साथ कब्र में दफनाए नहीं जाओगे, तुमने अपने देश का नाश किया और अपने ही लोगों को मारा है. **21** उनके पूर्वजों की गलतियों के कारण उनके पुत्रों के घात का स्थान तैयार करो; ऐसा न हो कि वे उठें और पृथ्वी पर अपना अधिकार कर लें और सारी पृथ्वी को अपने नगरों से भर दें. **22** "मैं उनके विरुद्ध उठ खड़ा हो जाऊंगा," सेनाओं के याहवेह कहते हैं. "मैं बाबेल से उनके बचे हुए वंश, तथा भावी पीढ़ियों के नाम तक को मिटा दूंगा," याहवेह कहते हैं! **23** "मैं उसे उल्लुओं के अधिकार में कर दूंगा और उसे झीलें बना दूंगा; मैं इसे विनाश के झाड़ू से झाड़ दूंगा." **24** सर्वशक्तिमान याहवेह ने यह शपथ की है, "जैसा मैंने सोचा है, वैसा ही होगा, और जैसी मेरी योजना है, वह पूरी होगी. **25** अपने देश में मैं अश्शूर के टुकड़े-टुकडे कर दूंगा; और पहाड़ों पर उसे कुचल डालूंगा. उसके बंधन का बोझ इस्राएलियों से हट जाएगा, और उनके कंधों से उनका बोझ उठ जाएगा." **26** यह वह योजना है जो सारी पृथ्वी के लिये ठहराई गई है; और यह वह हाथ है जो सब देशों के विरुद्ध उठा है. **27** जो बात सर्वशक्तिमान याहवेह ने यह कही है, उसे कौन बदल सकेगा? उनका हाथ उठ गया है, तो कौन उसे रोक सकेगा? **28** जिस वर्ष राजा आहाज़ की मृत्यु हुई उसी वर्ष यह भविष्यवाणी की गई: **29** फिलिस्तीनी के साथ, आनंदित मत होना, जिस लाठी से तुम्हें मारा था वह टूट गई है; क्योंकि सांप के वंश से काला नाग पैदा होगा, और उससे उड़ते हुए सांप पैदा होंगे. **30** वे जो कंगाल हैं उन्हें भोजन मिलेगा, और गरीब सुरक्षित रहेंगे. मैं तुम्हारे वंश को दुःख से मार डालूंगा; और तुम्हारे बचे हुए लोग घायल किए जायेंगे. **31** हे फाटक! तू हाय कर, हे नगर! तू चिल्ला. हे फिलिस्तिया देश! डर से तू पिघल जा. क्योंकि उत्तर दिशा से धुआं उठ रहा है, और उसकी सेना में कोई पीछे नहीं रहेगा. **32** देशों के लोगों को कौन उत्तर देगा? "याहवेह ने ज़ियोन की नींव डाली है, उसमें दुखियों को शरण मिलेगी."

15 एक ही रात में मोआब का: आर नगर उजाड़ दिया गया, और उसी रात में मोआब के, कीर नगर को नाश कर दिया गया! **2** दीबोन रोने के लिए अपने मंदिर में, हां उसकी ऊंची जगह में चढ़ गए; और मोआब के लोग नेबो और मेदेबा नगरों के लिये दुःखी होकर चिल्ला रहे हैं. वे दुःखी होकर अपने सिर और दाढ़ी मुंडवा रहे हैं. **3** और सड़कों में वे टाट ओढ़े हुए हैं; और अपने घरों की छतों और मैदानों में वे रो-रोकर, आंसू बहा रहे हैं. **4** हेशबोन तथा एलिआलेह नगर चिल्ला रहे हैं, और उनकी चिल्लाहट याहज़ नगर तक सुनाई दे रही है. इसलिये मोआब के सैनिक चिल्ला रहे हैं, और मोआब कांप उठा है. **5** मेरा हृदय मोआब के लिए दुःखी है; मोआब के लोग ज़ोअर, तथा एगलथ शलिशियाह के नगर में चले गए हैं. वे लूहीत की चढ़ाई, रोते हुए चढ़ रहे हैं; होरोनयिम की सड़क पर इस नाश के कारण रो रहे हैं. **6** निमरीम नदी सूख गयी है, घास मुरझा गई है; हरियाली नहीं बची है. **7** इस कारण जो धन उन्होंने अपने लिये बचाया था वे उसे अराबीम नाले के उस पार ले जा रहे हैं. **8** मोआब के देश में सब की चिल्लाहट सुनाई दे रही है; इसके रोने की आवाज एगलयिम, तथा बेर-एलीमा नगरों तक पहुंच गयी है. **9** क्योंकि दीमोन के सोते खून से भरे हैं, फिर भी मैं दीमोन पर और अधिक विपत्ति डालूंगा— भागे हुए मोआबी लोग तथा उस देश के बचे हुए लोगों के विरुद्ध मैं एक सिंह भेजूंगा.

16 सेला नगर से ज़ियोन की बेटी के पर्वत पर, बंजर भूमि से हाकिम के लिए, एक मेमना तैयार करो. **2** आरनोन के घाट पर मोआब की बेटियां ऐसी हो गईं, जैसे घोंसले से पक्षियों के बच्चों को उड़ा दिया गया हो. **3** "हमें समझाओ, हमारा न्याय करो, और दिन में हमें छाया दो. घर से निकाले हुओं को सुरक्षा दो, भागे हुओं को मत पकड़वाओ. **4** मोआब के घर से निकाले हुओं को अपने बीच में रहने दो; विनाश करनेवालों से मोआब को बचाओ." क्योंकि दुःख का अंत हो चुका है, और कष्ट समाप्त हो चुका है; और जो पैरों से कुचलता था वह नाश हो चुका है. **5** तब दया के साथ एक सिंहासन बनाया जाएगा; और दावीद के तंबू में एक व्यक्ति सच्चाई के साथ विराजमान होगा— यह वह व्यक्ति है जो न्याय से निर्णय करेगा और सच्चाई से काम करने में देरी न करेगा. **6** हमने मोआब के अहंकार— उसके अभिमान, गर्व और क्रोध के बारे में सुना है; वह सब झूठा था. **7** इसलिये मोआब को मोआब के लिए रोने दो. और कीर-हेरासेथ नगर की दाख की टिकियों के लिए दुःखी होगा. **8** हेशबोन के खेत तथा सिबमाह के दाख की बारी सूख गई हैं; देशों के शासकों ने अच्छी फसल को नुकसान कर दिया. **9** इसलिये मैं याज़र के लिए रोऊंगा, और सिबमाह के दाख की बारी के लिए दुःखी होऊंगा. हेशबोन तथा एलिआलेह, मैं तुम्हें अपने आंसुओं से भिगो दूंगा! क्योंकि तुम्हारे फल और तुम्हारी उपज की खुशी समाप्त हो गई है. **10** फलदायी बारी से आनंद और उनकी खुशी छीन ली गई है; दाख की बारी में से भी कोई खुशी से गीत नहीं गाएगा; कोई व्यापारी दाखरस नहीं निकाल रहा है, क्योंकि मैंने सब की खुशी खत्म कर दी है. **11** मेरा मन मोआब के लिए और हृदय कीर-हेरासेथ के लिए वीणा के समान आवाज करता है. **12** जब मोआब ऊंचाई पर जाकर थक जाए और प्रार्थना करने के लिए पवित्र स्थान में जाता है, उससे उनको कोई फायदा नहीं होगा. **13** यह मोआब के लिये पहले कहा हुआ याहवेह का वचन है. **14** परंतु अब याहवेह ने यों कहा: "मजदूरों की तीन वर्षों की गिनती के अनुसार, मोआब का वैभव तिरस्कार में तुच्छ जाना जाएगा और उसके बचे हुए अत्यंत कम और कमजोर होंगे."

17 दमेशेक के विरोध में एक भविष्यवाणी: दमेशेक एक नगर न रहकर खंडहरों का एक ढेर बन जाएगा. **2** अरोअर के नगर उजाड़ कर दिए गए हैं वहां पशु चरेंगे और आराम करेंगे और उन्हें भगाने वाला कोई नहीं होगा. **3** एफ्राईम के गढ़ गुम हो जाएंगे, दमेशेक के राज्य में कोई नहीं बचेगा; यह सर्वशक्तिमान याहवेह की यह वाणी है. **4** "उस दिन याकोब का वैभव कम हो जाएगा; और उसका शरीर कमजोर हो जाएगा. **5** और ऐसा होगा जैसा फसल काटकर बालों को बांधे, या रेफाइम नामक तराई में सिला बीनता हो. **6** जैतून के पेड़ को झाड़ने पर कुछ फल नीचे रह जाते हैं, उसी प्रकार इसमें भी बीनने के लिए कुछ बच जाएगा," यह याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की वाणी है. **7** उस दिन मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता की ओर अपनी आंखें उठाएंगे और उनकी दृष्टि इस्राएल के उस पवित्र की ओर होगी. **8** वह अपनी बनाई हुई धूप वेदी और अशेरा नामक मूर्ति या सूर्य को न देखेगा. **9** उस समय उनके गढ़वाले नगर, घने बंजर भूमि हो जाएंगे अथवा जो इस्राएल के डर से छोड़ दिए गए हो, उन्हें नष्ट

कर दिया जाएगा. 10 क्योंकि तुम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए; और
अपनी चट्टान को याद नहीं किया, इसलिये तब चाहे तुम अच्छे पौधे और किसी
अनजान के लिए दाख की बारी लगाओ, 11 उगाने के बाद तुम इसे बढ़ा भी लो
और जो बीज तुमने लगाया और उसमें कोपल निकल आये, किंतु दुःख और
तकलीफ़ के कारण उपज की कोई खुशी नहीं प्राप्त होगी. 12 हाय देश-देश के
बहुत से लोगों का कैसा अपमान हो रहा है— वे समुद्र की लहरों के समान उठते
हैं! और प्रचंड धारा के समान दहाडते हैं! 13 जैसे पहाडों से भूसी और धूल
उड़कर फैलती है, वैसे ही राज्य-राज्य के लोग बाढ़ में बहते हुए बिखर जाएंगे.
14 शाम को तो घबराहट होती है! परंतु सुबह वे गायब हो जाते हैं! यह उनके
लिए है जिन्होंने हमें लूटा है, और इससे भी ज्यादा उनके लिए जिन्होंने हमें
सताया है.

18

हाय कूश नदी के दूसरी ओर के देश पर जहां पंखों की फड़फड़ाहट की
आवाज सुनाई देती है, 2 वह जो पानी में पपीरस नौकाओं में समुद्र के
द्वारा दूत भेजता है, तुम जो स्वस्थ और लंबे डीलडौल के हो, उस देश में उन
लोगों के पास जाओ, जहां दूर-दूर तक जिनका डर मन में है, तथा जो देश सिद्ध
एवं सुंदर है, और जिनके बीच से नदियां बहती हैं. 3 हे सारी पृथ्वी के लोगों
सुनो, जब पर्वतों पर झंडा ऊंचा किया जाए और जब तुरही फूंकी जायेगी, 4
तब याहवेह ने मुझसे कहा, "सूर्य की तेज धूप तथा कटनी के समय ओस के
बादल में रहकर मैं चुपचाप देखूंगा." 5 क्योंकि जैसे ही कलियां खिल जाएं
और फूल पके हुए दाख बन जाएं, तब याहवेह टहनी से वह अंकुरों को छांटेंगे,
और बढ़ती हुई डालियों को काटकर अलग कर देंगे. 6 जो मांसाहारी पक्षियों
और पृथ्वी के पशुओं के लिए होगा; मांसाहारी पक्षी इन पर धूप में, तथा पृथ्वी
के पशु इस पर सर्दी में बैठेंगे. 7 स्वस्थ और लंबे डीलडौल के लोग जो अजीब
भाषा का, आक्रामक राष्ट्र हैं, जिन्हें दूर और पास के सब लोग डरते हैं, और जो
देश सिद्ध एवं सुंदर है, जिसके बीच से नदियां बहती हैं— उनकी ओर से उस
समय सेनाओं के याहवेह के नाम में प्रतिष्ठित ज़ियोन पर्वत पर भेंट लाई जाएगी.

19

मिस्र के विरोध में भविष्यवाणी: देखो, याहवेह उड़नेवाले बादलों पर
सवार होकर मिस्र आ रहे हैं. उनके आने से मूर्तियां हिलने लगेंगी,
और मिस्र के लोग कांपने लगेंगे. 2 "मैं मिस्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध
भड़काऊंगा— वे आपस में झगड़ा करेंगे, भाई अपने भाई से, पड़ोसी अपने
पड़ोसी से, नगर दूसरे नगर के विरुद्ध, और राज्य दूसरे राज्य के विरुद्ध हो जायेंगे.
3 तब मिस्रियों की हिम्मत टूट जाएगी, और मैं उनकी सब योजनाओं को विफल
कर दूंगा; तब वे मूर्तियां, ओझों, तांत्रों तथा टोन्हों की शरण में जाएंगे. 4 मैं
मिस्रियों को एक निर्दयी स्वामी के अधीन कर दूंगा, और एक भयंकर राजा उन
पर शासन करेगा," सर्वशक्तिमान याहवेह की यह वाणी है. 5 समुद्र का जल
सूख जाएगा, और नदियां भी सूख कर खाली हो जाएंगी. 6 नदियों से बदबू
आएगी; और मिस्र की नहरें सूख कर खाली हो जाएंगी. सरकंडे और सिवार
मुरझा जाएंगे, 7 नदी तट के मुहाने के सरकंडे, और नदी के किनारे में लगाए
गए पौधे सूख जाएंगे, वहां कुछ नहीं बचेगा. 8 मछुवे रोएंगे, जो नील नदी में
मछली पकड़ने लिए जाल डालते हैं; वे दुःखी होंगे. 9 सूत बुनने वाले निराश
होंगे. बुनकरों की उम्मीद कम हो जाएगी! 10 मिस्र के अमीर लोग निराश
होंगे, और भाड़े के मज़दूर उदास हो जाएंगे. 11 ज़ोअन के शासक सब मूर्ख हैं;
फ़रोह के सब मंत्री मूर्ख हैं. तुम फ़रोह से कैसे कह सकते हो, "मैं बुद्धिमान राजा
का पुत्र हूं." 12 तो, कहां है तुम्हारी बुद्धि? जो बता सके कि मिस्र के विरुद्ध
सर्वशक्तिमान याहवेह ने क्या योजना बनाई है. 13 ज़ोअन के शासक मूर्ख हैं,
और नोफ के उच्च अधिकारियों को धोखा मिला; जो उसके कुल के मुखिया थे
वे मिस्र को विनाश की ओर ले गए हैं. 14 याहवेह ने मुखियाओं को मूर्खता की
आत्मा दी है, मिस्र को उसके सब कामों में धोखा दे रहे थे. वे मतवाले की नाई
डगमगाते थे. 15 मिस्र की न तो सिर और न ही पूंछ न ही ऊपर खजूर की डाली
और न नीचे सरकंडा किसी प्रकार से सहायक हो सकेगा. 16 उस समय मिस्री
स्त्रियों के समान होगें. जब याहवेह उन पर अपना हाथ बढ़ायेंगे तब वे डरकर
कांपने लगेंगे. 17 यहूदाह मिस्र के लोगों के लिए डर का कारण हो जाएगा; जो
कोई इनकी बात सुनेगा वह कांप जाएगा, त्सबाओथ के याहवेह ने उनके विरुद्ध
ऐसा ही किया है. 18 उस समय मिस्र देश में पांच नगर होंगे जो कनानी भाषा
बोलेंगे और वे सर्वशक्तिमान याहवेह के प्रति आदर रखने की शपथ खाएंगे. उन
पांच नगरों में से एक नगर का नाम नाश नगर रखा जाएगा. 19 उस समय वे
मिस्र देश में याहवेह के लिए एक वेदी और गढ़ बनाएंगे, और मिस्र की सीमाओं
में याहवेह के लिये एक खंभा खड़ा होगा. 20 मिस्र देश में यह सर्वशक्तिमान
याहवेह का एक चिन्ह और साक्षी होगा. जब वे दुःख देने वालों के कारण
याहवेह को पुकारेंगे, तब याहवेह उनके पास एक उद्धारकर्ता और रक्षक भेजकर
उनको छुड़ाएंगे. 21 याहवेह स्वयं अपने आपको मिस्रियों पर प्रकट करेंगे, और
उस दिन मिस्री याहवेह को पहचानेंगे और बलि और भेंट के साथ याहवेह की
आराधना करेंगे. वे याहवेह की शपथ खाएंगे और उन्हें पूरा भी करेंगे. 22
याहवेह मिस्रियों को मारेंगे; याहवेह मारेंगे और चंगा भी करेंगे. तब वे याहवेह
की ओर लौट आएंगे, याहवेह उन्हें उत्तर देंगे और चंगा करेंगे. 23 उस समय
मिस्र से अश्शूर तक एक राजमार्ग होगा. अश्शूरी मिस्र देश में आएंगे और मिस्री
अश्शूर देश में और दोनों मिलकर आराधना करेंगे. 24 उस समय मिस्र, अश्शूर
तथा इस्राएल तीनों पृथ्वी पर आशीष पायेंगे. 25 जिनके विषय में याहवेह ने
कहा है, "मेरी प्रजा मिस्र पर आशीष पाए और अश्शूर, जो मेरे हाथों की रचना
है, तथा इस्राएल भी जो मेरी मीरास है."

20

जिस वर्ष अश्शूर के राजा सर्गोन ने सेनापति बनाया, उस वर्ष उसने
अशदोद पर हमला कर उस पर अधिकार कर लिया— 2 उस समय
याहवेह ने आमोज़ के पुत्र यशायाह से कहा, "जाओ, अपनी कमर से टाट खोल
दो तथा अपने पांव के जूते उतार दो." तब यशायाह वस्त्रहीन और नंगे पांव रहता
था. 3 तब याहवेह ने यह कहा, "जिस प्रकार मेरा सेवक यशायाह मिस्र और
कूश के लिए एक नमूना बना वह तीन वर्ष तक वस्त्रहीन तथा नंगे पांव रहा, 4
उसी प्रकार अश्शूर का राजा मिस्रियों और कूश देश के लोगों को बंधक बनाकर
देश से निकाल देगा, सबको चाहे वे जवान हों, बूढ़े हों सबको बंधुआ बनाकर
बिना वस्त्र और नंगे पांव ले जाएगा. 5 तब कूश के कारण जिस पर उनको आशा
थी और मिस्र पर वे घमंड करते थे वे विनाश और लज्जित हो जाएंगे. 6 और
उस समय समुद्रतट के किनारे रहनेवाले कहेंगे कि, 'देखो जिस पर हमारी आशा
थी और अपने आपको बचाने के लिये हम अश्शूर के राजा के पास जानेवाले
थे! अब उनकी ही ऐसी दशा हो गई तो अब हम कैसे बचेंगे?'"

21

समुद्र किनारे की मरुभूमि के विरुद्ध भविष्यवाणी: जिस प्रकार दक्षिण
के भूमि में आंधी आती है, उसी प्रकार बंजर भूमि से, अर्थात् आतंक का
देश से निकलकर आक्रमणकारी आ रहा है. 2 मुझे एक दर्शन मिला जो दुःख
का था कि: विश्वासघाती विश्वासघात करता है और नाशक नाश करता है. हे
एलाम, चढ़ाई करो! हे मेदिया, सबको घेर लो! मैं उन सबके दुःख को खत्म कर
दूंगा जो उसके कारण हुए हैं. 3 इस कारण मेरे शरीर में दर्द है, मैं इतना घबरा
गया हूं, कि मुझे सुनाई नहीं देता; मैं इतना डर गया हूं, कि मुझे दिखाई नहीं
देता. 4 मेरा हृदय कांपता है, डर ने मुझे घेर लिया है; वह शाम जिसकी मुझे
चाह थी वह डर में बदल गई है. 5 भोजन की तैयारी हो गई और मेहमानों को
बिठाया जा रहा है, शासकों उठो, ढालों पर तेल लगाओ! 6 प्रभु ने मुझसे कहा
है: "जाओ, एक पहरेदार को खड़ा करो और जो कुछ वह देखे उसे बताने दो.

7 जब घोड़ों, गधों और ऊंटों पर सवारी आता देखे तब उन पर खास दे."
8 तब वह पहरेदार सिंह के समान गुर्राते हुए कहेगा, "हे स्वामी, मैं दिन भर
खड़ा पहरा देता रहता हूं; और पूरी रात जागता हूं. 9 और देखो रथ में एक
आदमी आता है, दो-दो घोड़ों के रथ में सवार होकर आ रहे हैं. उसने कहा:
'गिर गया, बाबेल गिर गया! सभी मूर्तियां गिरकर चूर-चूर हो गई हैं!'" 10 हे
मेरे कुचले गए पुत्र, हे मेरे खलिहान के पुत्र सर्वशक्तिमान याहवेह इस्राएल के
परमेश्वर ने, मुझसे जो कुछ कहा, वह मैंने तुम्हें बता दिया. 11 दूमाह के विरोध
में भविष्यवाणी: सेईर से मुझे कोई बुला रहा है, "हे पहरेदार, रात की क्या ख़बर
है?" 12 पहरेदार ने कहा, "सुबह होती है, और रात भी. और जो कुछ आप
पूछना चाहते हैं, पूछिए; और पूछने के लिये आईये." 13 अराबिया के खिलाफ़
एक भविष्यवाणी: ददान के यात्री संघो, अराबिया के बंजर भूमि में तुम रात
बिताओगे, 14 तेमा देश के लोगों को पानी पिलाओगे; भागे हुओं को खाना दो.
15 क्योंकि वे युद्ध से भागे हुए हैं, और तलवार और धनुष के सामने से भागे हुए
हैं. 16 क्योंकि प्रभु ने मुझसे ऐसा कहा है: "मज़दूर के अनुसार एक ही वर्ष में,
केदार की शान खत्म हो जाएगी. 17 केदार के तीर चलानेवालों की गिनती कम
हो जाएगी." यह याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, का वचन है.

22 दर्शन की घाटी के विरुद्ध भविष्यवाणी: क्या हो गया है तुम्हें, तुम सबके
सब छतों पर क्यों चढ़ गए हो, 2 हे अधर्मी नगर, तुम जो खुशी मनाते
थे, तुम्हारे लोग जो मारे गए हैं. वे न तो तलवार से मारे गए, और न ही उनकी
मृत्यु युद्ध में हुई. 3 बल्कि वे सब भाग गए; और धनुष के बिना ही बंदी बना
लिए गए. और भागे हुओं में जिनको पकड़ा गया, उन्हें बंदी बना लिया गया. 4
इसलिये मैं कहता हूं, "अपनी दृष्टि मुझसे हटा लो; मुझे फूट-फूटकर रोने दो.
मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के विषय में मुझे तसल्ली देने का प्रयास न करो."
5 क्योंकि सर्वशक्तिमान याहवेह का दर्शन की घाटी में कोलाहल, रौंदा जाना,
बेचैनी, प्राचीनों को गिरा देने और पर्वतों की दोहाई देने का एक दिन निश्चित है.
6 एलाम ने घोड़ों पर सवार, तथा रथों के साथ अपना तरकश साथ रख लिया
है; और कीर ने ढाल खोल ली है. 7 तुम्हारी उत्तम घाटियां रथों से भरी थी,
और घोड़े पर सवार द्वार पर खड़े हैं. 8 प्रभु ने यहूदाह की सुरक्षा को हटा दिया,
उस समय तुम वन के भवन के शस्त्रों पर निर्भर थे. 9 तुमने देखा कि दावीद के
नगर में दरारें बहुत थीं; तुमने निचले हिस्से से ही पानी जमा किया. 10 तुमने
येरूशलेम के भवनों की गिनती की और नगर को दृढ़ करने के लिए तुमने कई
घरों को गिरा दिया. 11 पुराने तालाब के पानी के लिए दो दीवारों के बीच तुमने
एक जलाशय बनाया, किंतु जिसने यह काम पूरा किया, और जिसने इसकी
योजना प्राचीन काल में बनाई थी उसे भुला दिया. 12 उस दिन याहवेह ने
तुम्हें रोने, सिर मुंडवाने, टाट ओढ़ने के लिए कहा. 13 यह सब होने पर भी
वहां आनंद मनाया जा रहा है, पशुओं का वध और भेड़ों का संहार, मांस और
दाखमधु पीकर कहा जा रहा है कि! "आओ हम खाएं-पिएं, क्योंकि कल तो
हमारी मृत्यु होनी ही है!" 14 किंतु सर्वशक्तिमान याहवेह ने मुझसे कहा: "यह
अपराध तब तक क्षमा नहीं किया जाएगा जब तक तुम्हारी मृत्यु न हो जाए,"
प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह ने कहा! 15 फिर प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह ने कहा:
"शेबना के उस भंडारी के पास जाओ, जो उस राजपरिवार का चौकीदार है. 16
तुम्हारा यहां क्या काम है और कौन है तुम्हारा यहां, जो तुमने अपने लिए एक
कब्र बना ली है, और अपने लिए चट्टान में एक घर बना लिया है? 17 "हे
पराक्रमी मनुष्य, सुनो, याहवेह तुम्हें पकड़कर दूर फेंक देंगे. 18 तुम्हें गेंद के
समान लुढ़का देंगे तुम जो अपने स्वामी के लिए लज्जा का कारण हो. वहां
तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी और तुम्हारे भव्य रथ वहीं रह जायेंगे. 19 मैं तुम्हें
तुम्हारे ऊंचे पद से हटा दूंगा और. 20 "हिलकियाह के पुत्र एलियाकिम को
तुम्हारा पद दूंगा. 21 मैं तुम्हारा वस्त्र उसे पहनाऊंगा और तुम्हारे वस्त्र का कटिबंध
उस पर बांध दूंगा, मैं तुम्हारा अधिकार उसे दे दूंगा. वह यहूदाह और येरूशलेम
के निवासियों का पिता होगा. 22 मैं दावीद वंश का पूरा अधिकार उसे दूंगा.
उसके पास उसके पद की कुंजी होगी; वह जो पायेगा उसे कोई बंद नहीं करेगा,
और वह जो बंद कर देगा उसे कोई न खोलेगा. 23 मैं उसे सुरक्षित स्थान में
स्थिर कर दूंगा; और वह अपने पिता के वंश के लिए एक वैभव का सिंहासन
होगा. 24 उस पर उसके पिता के वंश का वैभव, संतान, छोटे पात्र, कटोरे तथा
सुराहियों को लटका देंगे. 25 "सर्वशक्तिमान याहवेह ने कहा, जो खूंटी सुरक्षित
स्थान में स्थिर की गई थी वह उखड़ जाएगी; यहां तक की वह टूटकर बिखर
जाएगी, और इस पर लटका बोझ हटा दिया जाएगा," याहवेह की वाणी है!

23 सोर के विरुद्ध में भविष्यवाणी: तरशीश के जलयानों विलाप करो!
क्योंकि सोर नगर नष्ट कर दिया गया है, वहां न तो कोई घर बचा और न
ही कोई बंदरगाह. इसकी सूचना कित्तिमयों के देश से दी गई. 2 हे द्वीप के
निवासियो, सीदोन के व्यापारियो चुप हो जाओ, तुम्हें संदेश देने वालों ने समुद्र
पार किया है. 3 उन्होंने अनेक सागरों की यात्रा की, शीहोर का अन्न; और
नदियों की उपज उनकी आमदनी थी, और यह अनेक देशों के लिये व्यापार की
जगह थी. 4 हे सीदोन लज्जित हो जाओ, क्योंकि समुद्र की यह घोषणा है: "न
तो मुझे प्रसव पीड़ा हुई और न ही मैंने किसी शिशु को जन्म दिया; न तो मैंने
युवकों का और न ही कन्याओं का पालन पोषण किया." 5 जब यह समाचार
मिस्र देश पहुंचेगा तो, वे सोर के विषय में मिले समाचार से दुःखी हो जाएंगे. 6
तुम उस पार तरशीश नगर को चले जाओ; और हे द्वीप के निवासियो, रोओ. 7
क्या यही खुशी से भरा तुम्हारा नगर है, जो पुराने समय से चला आ रहा है,
जिसमें रुकने के लिये दूर तक चले जाते थे? 8 वह नगर जो मुकुटों का दाता
था, जिसके व्यापारी शासक, और जिसके व्यवसायी पृथ्वी के प्रतिष्ठित व्यक्ति
थे, किसने सोर के विरुद्ध ऐसी योजना बनाई? 9 सर्वशक्तिमान याहवेह ने, समस्त
सुंदरता के घमंड को चूर-चूर कर देने और पृथ्वी के प्रतिष्ठितों को तुच्छ कर देने
के लिए यह योजना बनाई है. 10 हे तरशीश नगर की पुत्री, नील नदी समान
अपना देश पार करके उस पार चली जाओ, अब कोई विरोधी नहीं बचा. 11
याहवेह ने समुद्र पर अपनी बांह उठाई है उन्होंने देशों को हिला दिया है. याहवेह
ने कनान के विषय में उसके गढ़ को नाश कर देने का आदेश दिया है. 12
याहवेह ने कहा है, "सीदोन की दुःखी कुंवारी पुत्री, तुम अब और आनंदित न
होगी! "उठो, कित्तिमयों के देश के उस पार चली जाओ; किंतु तुम्हें वहां भी
शांति नहीं मिलेगी." 13 कसदियों के देश पर ध्यान दो, ये वे लोग हैं जो
वस्त्रहीन हो गए हैं! अश्शूर ने इन्हें जंगली पशुओं के लिए छोड़ दिया था; उन्होंने
उन्हें घेरकर गुम्मट खड़े किए, उन्होंने उनके राज्यों को लूट लिया उन्होंने इसे
खंडहर बना दिया. 14 तरशीश के जहाजों, रोओ; क्योंकि तुम्हारे गढ़ नष्ट हो
गए हैं! 15 उस दिन सोर नगर एक राजा के दिनों के समान सत्तर वर्षों के लिए
बढ़ा दिया जाएगा. सत्तर वर्षों के बीतने पर, सोर वेश्या की नाई गीत गाने
लगेगा: 16 "हे वेश्या, वीणा लेकर नगर में घूम; वीणा बजा और गीत गा, ताकि
लोग तुझे याद करें." 17 सत्तर वर्षों के बीतने पर याहवेह सोर पर ध्यान देंगे.
सोर फिर से व्यापार करने लगेगा. धरती के सभी देशों के लिये सोर एक वेश्या
के समान हो जायेगा. 18 उसका व्यवसाय तथा उसकी मेहनत याहवेह के लिए
पवित्र होगी; वह न भंडार में रखी जाएगी न संचय की जाएगी. उनके व्यापार
की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो याहवेह के सामने रहा करेंगे, ताकि
उनको भरपूर भोजन और चमकीला वस्त्र मिले.

24 सुनो, याहवेह पृथ्वी को सुनसान और निर्जन कर देने पर हैं; वह इसकी
सतह को उलट देंगे और इसके निवासियों को तितर-बितर कर देंगे— 2
प्रजा पुरोहित के समान, सेवक अपने स्वामी के समान, सेविका अपनी स्वामिनी

के समान, खरीदने और बेचनेवाले के समान, साहूकार ऋणी के समान और वह
जो उधार देता है, और जो उधार लेता है सब एक समान हो जायेंगे. 3 पृथ्वी पूरी
तरह निर्जन हो जाएगी और लूट ली जाएगी. क्योंकि यह याहवेह की घोषणा है.
4 पृथ्वी रो रही है और थक गई है, संसार रो रहा है और थक गया है, और
आकाश भी पृथ्वी के साथ रो रहे है. 5 पृथ्वी अपने रहनेवालों के कारण दूषित
कर दी गई; क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था और आज्ञाओं को नहीं माना
तथा सनातन वाचा को तोड़ दिया. 6 इसलिये शाप पृथ्वी को निगल लेगा; और
जो इसमें रहते हैं वे दोषी होंगे. इसलिये पृथ्वी के निवासियों को जला दिया
जाता है, और बहुत कम बचे हैं. 7 नया दाखरस रो रहा है और खराब हो गया
है; वे जो खुश थे अब दुःखी होगें. 8 डफ की हर्ष रूपी आवाज खत्म हो चुकी
है, आनंदित लोगों का कोलाहल शांत हो गया है, वीणा का सुखदायी शब्द थम
गया है. 9 लोग गीत गाते हुए दाखमधु पान नहीं करते; दाखमधु उनके लिए
कड़वी हो गई है. 10 निर्जन नगर को गिरा दिया गया है; हर घर के द्वार बंद कर
दिए गए हैं कि कोई उनमें जा न सके. 11 दाखरस की कमी के कारण गलियों में
हल्ला हो रहा है; सब खुशी दुःख में बदल गई है; पृथ्वी पर से खुशी मिट गई है.
12 नगर सुनसान पड़ा, और सब कुछ नष्ट कर दिया गया है. 13 जिस प्रकार
जैतून वृक्ष को झड़ाया जाता और दाख की उपज के बाद उसको जमा करने पर
कुछ बच जाता है, उसी प्रकार पृथ्वी पर लोगों के बीच वैसा ही होगा. 14 लोग
आनंदित होकर ऊंची आवाज में गाते हैं; वे याहवेह के वैभव के लिए पश्चिम
दिशा से जय जयकार करते हैं. 15 तब पूर्व दिशा में याहवेह की प्रशंसा करो;
समुद्रतटों में, याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की महिमा करो. 16 पृथ्वी के छोर से
हमें सुनाई दे रहा है: "धर्मी की महिमा और प्रशंसा हो." परंतु, "मेरे लिए तो
कोई आशा ही नहीं है! हाय है मुझ पर! विश्वासघाती विश्वासघात करते हैं!
और उनका विश्वासघात कष्टदायक होता जा रहा है!" 17 हे पृथ्वी के लोगों,
डरो, गड्ढे और जाल से तुम्हारा सामना होगा. 18 तब जो कोई डर से भागेगा
वह गड्ढे में गिरेगा; और गड्ढे से निकला हुआ जाल में फंस जायेगा. क्योंकि
आकाश के झरोखे खोल दिये गये हैं, और पृथ्वी की नींव हिल गई है. 19
पृथ्वी टुकड़े-टुकड़े होकर, फट गई है और हिला दी गई है. 20 पृथ्वी झूमती है
और लड़खड़ाती है, और एक झोपड़ी समान डोलती है; और इतना अपराध बढ़
गया है, कि पाप के बोझ से दब गई और फिर कभी भी उठ न पाएगी. 21 उस
दिन याहवेह आकाश में सेना को तथा पृथ्वी पर राजाओं को दंड देंगे. 22 उन
सभी को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया जाएगा; और बहुत दिनों तक उन्हें
दंड दिया जाएगा. 23 तब चंद्रमा और सूर्य लज्जित होगा, क्योंकि सर्वशक्तिमान
याहवेह ज़ियोन पर्वत से येरूशलेम में शासन करेंगे, और उनका वैभव उनके
धर्मवृद्धों पर प्रकट होगा.

25 याहवेह, आप ही मेरे परमेश्वर हैं; मैं आपकी प्रशंसा करूंगा और आपके
नाम की महिमा करूंगा, क्योंकि आपने बड़े अद्भुत काम किए हैं, और
उन सनातन योजनाओं को पूरी विश्वस्तता एवं सच्चाई से आपने पूरा किया है.
2 आपने नगरों को गिरा दिया, और खंडहर कर दिया, परदेशियों का अब
कोई नगर नहीं; और न ही उन्हें फिर बसाया जाएगा. 3 इसलिये बलवंत प्रजा
आपकी महिमा करेगी; और निर्दयी आपका भय मानेंगे. 4 दीनों के लिए आप
शरणस्थान, और विपत्ति के समय आप उनके लिए ढाल होंगे, दरिद्रों के लिये
उनके शरण और रक्षक होंगे. 5 जैसे निर्जल देश में बादल से ठंडक होती है;
वैसे ही परदेशियों का कोलाहल, और निर्दयी लोगों का जय जयकार शांत हो
जाएगा. 6 इसी पर्वत पर सर्वशक्तिमान याहवेह सब लोगों को भोजन खिलाएंगे,
जिसमें पुराना दाखरस— और उत्तम से उत्तम चिकना भोजन जो अच्छा और
स्वादिष्ट होगा. 7 इस पर्वत पर आकर सब जातियों और देशों के बीच जो पर्दा,
और दीवार है तोड़ देगा; 8 वह सदा-सर्वदा के लिए मृत्यु को नाश करेंगे. और
प्रभु याहवेह सभी के चेहरों से आंसुओं को पोंछ देंगे; वह अपने लोगों की निंदा
को दूर कर देंगे. याहवेह का यह संदेश है. 9 उस दिन लोग यह कहेंगे, "कि,
यही हैं हमारे परमेश्वर; यही हैं वह याहवेह जिनका हमने इंतजार किया. आओ,
हम उनके उद्धार में आनंद मनाएं और प्रसन्न रहेंगे." 10 क्योंकि याहवेह का
हाथ सदा बना रहेगा; मोआब उनके द्वारा रौंद दिया जाएगा जिस प्रकार गोबर-
कुण्ड में एक तिनके को रौंद दिया जाता है. 11 जिस प्रकार एक तैराक अपने
हाथों को फैलाता है, उसी प्रकार मोआब भी अपने हाथों को फैलाएगा. किंतु
याहवेह उसके घमंड को चूर-चूर और उसके हाथों की कुशलता को कमजोर
कर देंगे. 12 याहवेह उसकी दृढ़ शहरपनाह को गिरा देंगे वह उन्हें भूमि पर फेंक
देंगे; उन्हें मिट्टी में मिला देंगे.

26 उस समय यहूदिया देश में यह गीत गाया जाएगा कि: हमारा एक दृढ़
नगर है; याहवेह ने हमारी रक्षा के लिए चारों ओर शहरपनाह और गढ़
को बनाया है. 2 नगर के फाटकों को खोल दो कि वहां सच्चाई से, जीनेवाली
एक धर्मी जाति आ सके. 3 जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं उनके मन को पूर्ण
शांति मिलती है, और याहवेह उनकी रक्षा करते हैं. 4 सदा याहवेह पर भरोसा
रखो, क्योंकि याह, याहवेह ही, हमारी सनातन चट्टान हैं. 5 क्योंकि उन्होंने
पर्वत पर बसे दृढ़ नगर के निवासियों को गिरा दिया है; उन्होंने इसे गिराकर धूल
में मिला दिया है. 6 दुखियों और दरिद्रों के पांव इन्हें कुचल देंगे. 7 धर्मी का
मार्ग सीधा होता है; आप धर्मी के मार्ग को समतल बनाते हैं. 8 हे याहवेह,
आपके न्याय के मार्ग पर हम आपकी प्रतीक्षा करते हैं; आपका स्मरण हमारे
प्राणों का अभिलाषी है. 9 रात के समय मेरा प्राण आपकी लालसा करता है;
मेरा मन अंदर ही अंदर आपको खोजता रहता है. क्योंकि जब पृथ्वी पर आपके
न्याय का काम होता है, तब लोग धर्म को सीखते हैं. 10 यद्यपि दुष्ट पर दया की
जाए, फिर भी वह धर्म नहीं सीखता. दुष्ट चाहे भले लोगों के बीच में रहे,
लेकिन वह तब भी बुरे कर्म करता रहेगा. वह दुष्ट कभी भी याहवेह की महानता
नहीं देख पायेगा 11 याहवेह का हाथ उठा हुआ है, फिर भी वे इसे नहीं देखते.
अपनी प्रजा के लिए आपके प्यार और लगन को देखकर वे लज्जित हुए हैं;
आग आपके शत्रुओं को निगल लेगी. 12 याहवेह हमें शांति देंगे; क्योंकि आपने
हमारे सब कामों को सफल किया है. 13 हे याहवेह हमारे परमेश्वर आपके
अलावा और स्वामियों ने भी हम पर शासन किया है, किंतु हम तो आपके ही
नाम का स्मरण करते हैं. 14 वे मर गये हैं, वे जीवित नहीं होंगे; वे तो छाया-
समान हैं, वे नहीं उठेंगे. आपने उन्हें दंड दिया और उनका नाश कर दिया;
आपने उनकी याद तक मिटा डाली. 15 हे याहवेह, आपने जाति को बढ़ाया;
और आप महान हुए. आपने देश की सब सीमाओं को बढ़ाया. 16 हे याहवेह,
कष्ट में उन्होंने आपको पुकारा; जब आपकी ताड़ना उन पर हुई, वे प्रार्थना ही
कर सके. 17 जिस प्रकार जन्म देने के समय प्रसूता प्रसव पीड़ा में चिल्लाती
और छटपटाती है, उसी प्रकार याहवेह आपके सामने हमारी स्थिति भी ऐसी ही
है. 18 हम गर्भवती समान थे, हम प्रसव पीड़ा में छटपटा रहे थे, ऐसा प्रतीत
होता है मानो हमने वायु प्रसव की. हमने अपने देश के लिए कोई विजय प्राप्त न
की, और न ही संसार के निवासियों का पतन हुआ. 19 इस्राएली जो मरे हैं वे
जीवित हो जाएंगे; और उनके शव उठ खड़े होंगे, तुम जो धूल में लेटे हुए हो
जागो और आनंदित हो. क्योंकि तुम्हारी ओस भोर की ओस के समान है; और
मरे हुए पृथ्वी से जीवित हो जाएंगे. 20 मेरी प्रजा, आओ और अपनी कोठरी में
जाकर द्वार बंद कर लो; थोड़ी देर के लिए अपने आपको छिपा लो जब तक
क्रोध शांत न हो जाए. 21 देखो, याहवेह अपने निवास स्थान से पृथ्वी के लोगों
को उनके अपराधों के लिए दंड देने पर हैं. पृथ्वी अपना खून प्रकट कर देगी;
और हत्या किए हुओं को अब और ज्यादा छिपा न सकेगी.

27 उस दिन, याहवेह अपनी बड़ी और भयानक तलवार से, टेढ़े चलनेवाले
सांप लिवयाथान को दंड दिया करेंगे, टेढ़े चलनेवाले सांप लिवयाथान;
वह उसको मार देंगे जो समुद्र में रहता है. 2 उस दिन— “आप दाख की बारी के
विषय में एक गीत गाओगे: 3 मैं, याहवेह इसका रक्षक हूं; हर क्षण मैं इसकी
सिंचाई करता हूं. मैं दिन-रात इसका पहरा देता हूं कि कोई इसको नुकसान न
पहुंचाएं. 4 मैं कठोर नहीं हूं. किंतु यदि कंटीले झाड़ मेरे विरुद्ध खड़े होंगे! तो मैं
उन्हें पूर्णतः भस्म कर दूंगा. 5 या मेरे साथ मिलकर मेरी शरण में आना चाहे तो
वे मेरे पास आए.” 6 उस दिन याकोब अपनी जड़ मजबूत करेगा, इस्राएल
और पूरा संसार इसके फल से भर जाएगा. 7 क्या याहवेह ने उन पर वैसा ही
आक्रमण किया है, जैसा उनके मारने वालों पर आक्रमण करता है? या उनका
वध उस प्रकार कर दिया गया, जिस प्रकार उनके हत्यारों का वध किया गया
था? 8 जब तूने उसे निकाला तब सोच समझकर उसे दुःख दिया, पूर्वी हवा के
समय उसको आंधी से उड़ा दिया. 9 जब याकोब वेदियों के पत्थरों को चूर-चूर
कर देगा, फिर न कोई अशेराह और न कोई धूप वेदी खड़ी रहेगी: तब इसके
द्वारा याकोब का अपराध क्षमा किया जाएगा; यह उसके पापों का प्रायश्चित
होगा. 10 क्योंकि नगर निर्जन हो गया है, घर मरुभूमि, छोड़ी हुई और बंजर
भूमि समान कर दिया गया है; वहां बछड़े चरेंगे, और आराम करेंगे; और इसकी
शाखाओं से भोजन करेंगे. 11 जब इसकी शाखाएं सूख जाएंगी, तब महिलाएं
आकर इन्हें आग जलाने के लिए काम में लेंगी. क्योंकि ये निर्बुद्धि लोग हैं;
इसलिये उनका सृष्टि करनेवाला उन पर अनुग्रह नहीं करेगा, जिन्होंने उन्हें
सृजा, वे उन पर दया नहीं करेंगे. 12 उस दिन याहवेह फरात नदी से मिस्र की
घाटी तक अपने अनाज को झाड़ेंगे और इस्राएल, तुम्हें एक-एक करके एकत्र
किया जाएगा. 13 उस दिन नरसिंगा फूंका जाएगा. वे जो अश्शूर देश में नष्ट
किए गए थे और वे जो मिस्र देश में तितर-बितर कर दिए गए थे, वे सब आएंगे
और येरूशलेम में पवित्र पर्वत पर याहवेह की आराधना करेंगे.

28 घमंड का मुकुट जो एफ्राईम के मतवालों का है, उनकी सुंदरता पर,
जो मुर्झाने वाला फूल है, जो उपजाऊ तराई के सिरे पर— दाखमधु से
मतवालों की है! 2 देखो, याहवेह के पास एक है जो शक्तिशाली और मजबूत
है, जिसने एक शक्तिशाली ओलावृष्टि और एक मूसलाधार बारिश की तरह,
विनाश की आंधी और बाढ़ से, पृथ्वी को नुकसान पहुंचाया है. 3 एफ्राईम
मतवालों के अहंकारी मुकुट को, पैरों तले रौंद दिया गया है. 4 इसकी सुंदरता
मुरझाया हुआ फूल, जो उपजाऊ घाटी के ऊंचाई पर स्थित है, और वह जैसे
ग्रीष्मकाल से पहले पके अंजीर के समान होगा— जिसे देखते ही जल्दी खा
जाते हैं. 5 उस दिन सर्वशक्तिमान याहवेह अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिए,
एक प्रतापी और सुंदर मुकुट ठहराएगा. 6 और जो न्याय-सिंहासन पर बैठा होता
है उसके लिए न्याय की आत्मा, हां, जो फाटक से शत्रुओं को पीछे धकेलते हैं
उनके लिये वह ढाल ठहरेगा. 7 पुरोहित और भविष्यद्वक्ता भी दाखमधु पीकर
डगमगाते हैं, वे मधु से बेहाल होकर नीचे गिर पड़ते हैं, वे मधु से लड़खड़ाते हैं.
भविष्यद्वक्ता जब अपने दर्शन देखते हैं, तभी भी वे पिए हुए होते हैं, और दर्शन
पाकर भी भटक जाते हैं, न्यायाधीश जब न्याय करते हैं तो वे नशे में डूबे हुए
होकर न्याय में गलती करते हैं. 8 क्योंकि भोजन करने की जगह गंदगी से
भरी हुई हैं और कहीं भी सफाई नहीं है. 9 “किसको सिखाएं और किसको
समझाएं? क्या उन्हें, जो अभी-अभी दूध छुड़ाए गये बच्चे हैं, जो मां के स्तन से
अलग किए गए हैं? 10 आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम,
नियम पर नियम; थोड़ा यहां, थोड़ा वहां.” 11 परमेश्वर इन लोगों को हकलाते
हुए होंठों और विदेशी भाषा वालों के द्वारा बात करेंगे, 12 जिन्होंने उन्हें इस
प्रकार कहा, “विश्राम यहां है, जो थके हैं उन्हें आराम दो”; “विश्राम यहीं
है”— किंतु वे नहीं सुनेंगे. 13 तब उनके लिए याहवेह ने उनसे कहा: आज्ञा पर
आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम; थोड़ा यहां, थोड़ा
वहां— जिससे वे ठोकर खाकर गिरकर घायल हो जायें और; जाल में फंसकर
पकड़े जाएं. 14 इस कारण हे ठट्ठा करनेवालो, याहवेह की बात सुनो, वह जो
इस प्रजा पर शासन करते हैं वे येरूशलेम में रहते हैं. 15 क्योंकि तुमने कहा है,
“हमने मृत्यु से एक वाचा बांधी है और अधोलोक से एक समझौता किया है.
जब यह कष्ट बढ़ जाये, तब यह हम तक नहीं पहुंच पाएगा, क्योंकि हमने झूठ
को अपना शरणस्थान बनाया है और झूठ की आड़ में हमने अपने आपको
छिपा रखा है.” (Sheol h7585) 16 इसलिये याहवेह यों कहते हैं: “देखो, मैंने
ज़ियोन में एक पत्थर, एक परखा हुआ पत्थर, नींव के लिए एक मूल्यवान
कोने का पत्थर रखा है. 17 मैं न्याय को नाप की डोरी और धर्मी को साहुल
बनाऊंगा; तब झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और छिपने की जगह
डूब जाएगी. 18 मृत्यु से तुम्हारी वाचा टूट जाएगी; और अधोलोक से तुम्हारा
समझौता सिद्ध न होगा. जब विपत्ति दंड के रूप में निकलेगी, तब तुम कुचल दिए
जाओगे. (Sheol h7585) 19 जितना तुम बढ़ोगे वह तुम्हें दबा देगी; क्योंकि हर
दिन और हर रात किसी भी समय होकर वह निकलेगा, और इस बात से तुम डर
जाओगे.” 20 किसी को फैलकर सोने के लिए बिछौना छोटा पड़ जाता है, और
किसी को ओढ़ने के लिए चादर संकरी. 21 क्योंकि याहवेह उसी प्रकार खड़े
हो जाएंगे जिस प्रकार वह पराज़ीम पर्वत पर खड़े हुए थे, और वह उसी प्रकार
क्रोधित होंगे जैसे वह गिबयोन की घाटी में क्रोधित हुए थे— फिर से वह अपना
काम करेगा, जो अद्भुत और अचंभित है. 22 इसलिये अब ठट्ठा करनेवालों के
समान मत बनो, नहीं तो तुम्हारी बेड़ियों को और अधिक मजबूत कर दिया
जाएगा; क्योंकि प्रभु सर्वशक्तिमान याहवेह से मैंने सारी पृथ्वी पर विनाश के
विषय में सुना है. 23 ध्यान दो और सुनो सचेत हो जाओ; और मेरी बातों पर
ध्यान दो. 24 क्या बीज बोने वाले के लिए एक किसान भूमि को जोतता रहता
है? क्या वह भूमि को निरंतर पलटता और सींचता रहता है? 25 क्या वह इसे
समतल नहीं बनाता और इसमें सौंफ उगाता, जीरे को छितराता, पंक्तियों में गेहूं
उगाता, जौ और बाजरे को उसके स्थान पर नहीं बोता? 26 क्योंकि उसे बताये
गए हैं, और परमेश्वर उसे सिखा देते हैं. 27 सौंफ की दंवरी पटरे से नहीं की
जाती, और न ही जीरे के ऊपर गाड़ी का पहिया चलाया जाता है; किंतु सौंफ
की दंवरी तो लाठी से और जीरे की मुगदर से की जाती है. 28 क्या दंवरी में
रोटी के लिए अन्न को चूर-चूर किया जाता है; नहीं, किसान इसकी दंवरी
सर्वदा नहीं करता रहता. जब वह अपनी गाड़ी के पहिए को घोड़ों के द्वारा
इसके ऊपर चलाता है, वह इसे चूर-चूर नहीं करता. 29 इसे नियुक्त करनेवाला
भी सर्वशक्तिमान याहवेह ही, अद्भुत युक्ति वाला और महा बुद्धिमान है.

29 हाय तुम पर, अरीएल, अरीएल, वह नगर जिसे दावीद ने अपने रहने के
लिए बनाए थे! अपने वर्षों को और अधिक बढ़ा लो और खुशी मना लो.
2 मैं तुम पर विपत्ति लाऊंगा; और अरीएल नगर विलाप और शोक का नगर हो
जाएगा, यह मेरे लिए अरीएल समान होगा. 3 मैं तुम्हारे चारों ओर दीवार
लगाऊंगा, और तुम्हें घेर लूंगा और मैं तुम्हारे विरुद्ध गढ़ खड़े करूंगा. 4 तब
तुम्हारा पतन पूरा हो जाएगा; अधोलोक से तुम्हारे स्वर सुनाई देंगे. धूल में से
तुम्हारी फुसफुसाहट सुनाई देगी; एक प्रेत के समान तुम्हारे शब्द पृथ्वी से सुनाई
देंगे. 5 किंतु तुम्हारे शत्रुओं का बड़ा झुंड धूल के छोटे कण के समान और क्रूर
लोगों का बड़ा झुंड उस भूसी के समान हो जाएगा. जो उड़ जाता है, 6 सेनाओं
के याहवेह की ओर से बादल गर्जन, भूकंप, आंधी और भस्म करनेवाली आग
आएगी. 7 पूरे देश जिसने अरीएल से लड़ाई की यद्यपि वे सभी, जिन्होंने इस
नगर अथवा इसके गढ़ों के विरुद्ध आक्रमण किया तथा उसे कष्ट दिया है, वे रात
में देखे गए स्वप्न, तथा दर्शन के समान हो जाएंगे— 8 यह ऐसा होगा जैसे एक
भूखा व्यक्ति स्वप्न देखता है कि वह भोजन कर रहा है, किंतु जब वह नींद से

जागता है तब वह पाता है कि उसकी भूख मिटी नहीं; उसी प्रकार जब एक
प्यासा व्यक्ति स्वप्न देखता है कि वह पानी पी रहा है, किंतु जब वह नींद से
जागता है वह पाता है कि उसका गला सूखा है और उसकी प्यास बुझी नहीं हुई
है. उसी प्रकार उन सब देशों के साथ होगा जो ज़ियोन पर्वत पर हमला करते हैं.
9 रुक जाओ और इंतजार करो, अपने आपको अंधा बना लो; वे मतवाले तो
होते हैं किंतु दाखरस से नहीं, वे लड़खड़ाते तो हैं किंतु दाखमधु से नहीं. 10
क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे ऊपर एक भारी नींद की आत्मा को डाला है: उन्होंने
भविष्यवक्ताओं को अंधा कर दिया है; और तुम्हारे सिर को ढंक दिया है. 11 मैं
तुम्हें बता रहा हूं कि ये बातें घटेंगी. किंतु तुम मुझे नहीं समझ रहे. मेरे शब्द उस
पुस्तक के समान है, जो बंद हैं और जिस पर एक मुहर लगी है. तुम उस पुस्तक
को एक ऐसे व्यक्ति को दो जो पढ़ सकता हो, तो वह व्यक्ति कहेगा, "मैं पुस्तक
को पढ़ नहीं सकता क्योंकि इस पर एक मुहर लगी है, और मैं इसे खोल नहीं
सकता." 12 अथवा तुम उस पुस्तक को किसी भी ऐसे व्यक्ति को दो, जो पढ़
नहीं सकता, और उस व्यक्ति से कहो कि वह उस पुस्तक को पढ़े. तब वह
व्यक्ति कहेगा, "मैं इस किताब को नहीं पढ़ सकता, क्योंकि मैं अनपढ़ हूं!"
13 तब प्रभु ने कहा: "ये लोग अपने शब्दों से तो मेरे पास आते हैं और अपने
होंठों से मेरा सम्मान करते हैं, किंतु इन्होंने अपने दिल को मुझसे दूर रखा है.
और वे औरों के दबाव से मेरा भय मानते हैं. 14 इसलिये, मैं फिर से इन लोगों
के बीच अद्भुत काम करूंगा अद्भुत पर अद्भुत काम; इससे ज्ञानियों का ज्ञान नाश
हो जाएगा; तथा समझदारों की समझ शून्य." 15 हाय है उन पर जो याहवेह से
अपनी बात को छिपाते हैं, और जो अपना काम अंधेरे में करते हैं और सोचते हैं,
"कि हमें कौन देखता है? या कौन जानता है हमें?" 16 तुम सब बातों को
उलटा-पुलटा कर देते हो, क्या कुम्हार को मिट्टी के समान समझा जाए! या कोई
वस्तु अपने बनानेवाले से कहे, कि तुमने मुझे नहीं बनाया और "तुम्हें तो समझ
नहीं"? 17 क्या कुछ ही समय में लबानोन को फलदायी भूमि में नहीं बदला
जा सकता और फलदायी भूमि को मरुभूमि में नहीं बदला जा सकता है? 18 उस
दिन बहरे उस पुस्तक की बात को सुनेंगे, और अंधे जिन्हें दिखता नहीं, वे
देखेंगे. 19 नम्र लोगों की खुशी याहवेह में बढ़ती चली जाएगी; और मनुष्यों
के दरिद्र इस्राएल के पवित्र परमेश्वर में आनंदित होंगे. 20 क्योंकि दुष्ट और
ठट्टा करनेवाले व्यक्ति नहीं रहेंगे, और वे सभी काट दिये जाएंगे जिनको बुराई
के लिए एक नजर हैं. 21 वे व्यक्ति जो शब्दों में फंसाते हैं, और फंसाने के
लिए जाल बिछाते हैं और साधारण बातों के द्वारा धोखा देते हैं. 22 इसलिये
याहवेह, अब्राहाम का छुड़ाने वाला, याकोब को कहते हैं: "याकोब को अब
और लज्जित न होना पड़ेगा. 23 जब याकोब की संतान परमेश्वर के काम को
देखेंगे, जो परमेश्वर उनके बीच में करेगा; तब वे मेरा नाम पवित्र रखेंगे; और वे
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर का भय मानेंगे. 24 उस समय मूर्ख बुद्धि पायेंगे और
जो कुड़कुड़ाते हैं; वे शिक्षा ग्रहण करेंगे."

30 याहवेह ने कहा, "हाय उन विद्रोही लड़कों पर! वे योजनाएं बनाते हैं
किंतु मेरी सहायता से नहीं, वाचा तो बांधते हैं, परंतु मेरी आत्मा से नहीं.
इस प्रकार वे पाप करते हैं; 2 वे मुझसे बिना पूछे मिस्र जाते हैं; कि फ़रोह के
साथ में रहे और मिस्र की छाया की शरण लें. 3 इस कारण फ़रोह की सुरक्षा ही
तुम्हारी लज्जा का कारण, और मिस्र की छाया की शरण तुम्हारा अपमान होगी.
4 क्योंकि उनके अधिकारी ज़ोअन में हैं और उनके संदेश देनेवाले हानेस तक
आ पहुंचे हैं, 5 हर व्यक्ति को उन लोगों के कारण लज्जित किया जाएगा
जिनसे उन्हें कोई लाभ नहीं है, ये वे हैं जो किसी लाभ या सहायता के लिए
नहीं, बल्कि लज्जा और अपमान करने के लिए ही है." 6 नेगेव के पशु के बारे
में कहा कि; विपत्ति और वेदना के देश से होकर, जहां से सिंह और सिंहनी, सांप
और वे सांप जो उड़ते हैं, वे अपनी धन-संपत्ति अपने गधों पर और अपना
खजाना ऊंटों पर, रखकर उन लोगों के पास ले जाते हैं, जिनसे उनको कोई
फायदा नहीं, 7 मिस्र की सहायता व्यर्थ और झूठी है. इसलिये मैंने उसका नाम
राहाब जो व्यर्थ रखा है. 8 अब जाओ, इस बात को उनके सामने एक पत्थर पर
खोदकर, और एक पुस्तक में लिखकर दो, जिससे यह संदेश हमेशा के लिए
एक साक्ष्य रहे. 9 क्योंकि यह एक विद्रोही प्रजा, धोखेबाज संतान है, वह संतान
जो याहवेह की आज्ञा को नहीं मानती है. 10 कौन दर्शकों को कहता है, "तुम
दर्शन मत देखो!" भविष्यवक्ताओं से, "तुम हमें इस विषय में भविष्यवाणी मत
बताओ कि सही क्या है और हमसे चिकनी-चुपड़ी बातें करो, झूठी भविष्यवाणी
करो. 11 तुम रास्ता छोड़ दो, मार्ग से हट जाओ, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के
विषय में और कुछ न सुनाओ!" 12 इस कारण इस्राएल के पवित्र परमेश्वर ने
कहा: "क्योंकि तुमने इस बात को नहीं माना और तुमने विश्वास झूठ और
कपट में किया है और तुम उन्हीं पर आश्रित रहे हो, 13 इसलिये यह अपराध
तुम्हारे ऊपर ऐसे आया, जैसे एक दीवार टूटकर अचानक गिर जाती है. 14
इसका टूटकर गिरना वैसा जैसे कुम्हार के एक बर्तन को, चूर-चूर कर दिया
जाता है जिसके कारण इसके टुकड़ों में कुछ भी न बचेगा इससे न चूल्हे में से
राख निकाली जा सके या जल कुंड में से पानी." 15 क्योंकि प्रभु याहवेह
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर याहवेह यों कहते हैं: "अगर तुम चुप रहते और लौट
आते तो उद्धार पाते, तथा शांत रहकर विश्वास करते तो सफल होते, परंतु तुमने
ऐसा नहीं किया. 16 लेकिन तुमने कहा कि, 'हम तो घोड़ों पर चढ़कर भाग
जाएंगे.' इसलिये तुम भाग जाओगे! और घोड़े को तेज भगाकर चले जायेंगे,
इसलिये जो तुम्हारा पीछा करेंगे, वे भी तेज होंगे! 17 एक व्यक्ति के भय से एक
हजार भागेंगे; पांच के डराने से तुम ऐसा भागोगे कि भागते भागते पहाड़ की
आखिरी ऊंचाई पर जहां निशानी के लिये झंडा गाड़ा जाता है वहां तक पहुंच
जाओ." 18 याहवेह तुम पर कृपा करने के लिए उठ गए हैं; क्योंकि याहवेह
न्यायी परमेश्वर हैं. धन्य हैं वे सब, जो उस पर आशा लगाये रहते हैं! 19 हे
ज़ियोन के लोगो, येरूशलेम के वासियो, तुम अब और न रोओगे. याहवेह तुम्हारे
रोने को सुनकर तुम पर दयालु होंगे और तुम्हें उत्तर देंगे. 20 यद्यपि प्रभु ने तुम्हें
विपत्ति की रोटी और दुःख का जल दिया है, वह, तुमसे अब दूर नहीं जायेंगे.
तुम्हें उपदेश देंगे और तुम अपनी आंखों से उपदेशक को देखोगे. 21 जब कभी
भी तुम दायें अथवा बायें मुड़ो तुम्हें पीछे से एक आवाज सुनाई देगी, "यही है
वह मार्ग; इसी पर चला करो." 22 तुम्हारे सोने और चांदी जिसमें मूर्तियां खुदी
हुई है; उसे अशुद्ध करोगे और उसे पुराने कपड़ों के समान उठाकर फेंक दोगे,
"दूर हो जाओ!" 23 तब याहवेह उस बीज के लिए तुम्हें बारिश देंगे जो तुमने
भूमि में लगाई है, और भोजन अर्थात् वह उपज जो भूमि से मिलती है उत्तम और
भरपूर होगी. 24 बैल और गधे जो खेतों के लिए काम में लाए जाते हैं, वे सूप
और डलिया से फटकी हुई भूसी खाकर तृप्त होंगे. 25 उस महा संहार के समय
जब दुर्ग गिरेंगे, तब पहाड़ों और हर ऊंची पहाड़ियों से सोते बहेंगे. 26 उस
समय जब याहवेह अपने लोगों के घाव पर पट्टी बांधेंगे और उन खरोचों को
ठीक करेंगे, जो उन्होंने उन्हें पहुंचाई थी, उस दिन चंद्रमा का तेज सूर्य के तेज
के समान होगा और सूर्य का प्रकाश सात गुणा अर्थात् वह सात दिन के प्रकाश के
समान होगा. 27 देखो, याहवेह अपनी महिमा में दूर से आ रहे हैं, उनका क्रोध
भड़क उठा है और धुंए का बादल उठ रहा है; उसके होंठ क्रोध से भरे हैं, और
उनकी जीभ भस्म करनेवाली आग के समान है. 28 उनकी श्वास उमड़ती हुई
धारा के समान है, जो गले तक पहुंचती है. वह सब जनताओं को छलनी में
आगे-पीछे हिला देंगे; और लोगों के जबड़ों में ऐसी लगाम कस देंगे जो नाश
की ओर ले जाती है. 29 तुम्हारे गीत पवित्र पर्व पर रात में गाए गीतों के समान
होंगे; और तुम्हारा दिल ऐसे आनंदित होगा जैसे कोई याहवेह के पर्वत इस्राएल
की चट्टान पर, बांसुरी की आवाज के साथ आगे बढ़ता जाता है. 30 तब याहवेह

अपनी प्रतापमय वाणी सुनायेंगे और स्वर्ग से उनका बल उनके प्रचंड क्रोध, भस्म करनेवाली आग, भारी वर्षा और ओलों के द्वारा दिखाई देगा. 31 क्योंकि याहवेह की शक्ति पर अश्शूर डर जाएगा; जब याहवेह उनको दंड देंगे. 32 उस समय खंजरी और नेबेल की आवाज सुनाई देगी, याहवेह हथियार से उनसे युद्ध करेंगे. 33 क्योंकि पहले से ही एक अग्निकुण्ड तैयार किया गया है; यह राजा के लिए तैयार किया गया है. अनेक लकड़ियों से बनाई गयी एक चिता; गंधक की धारा के समान, याहवेह अपनी श्वास इसमें डाल देते हैं.

31 हाय उन पर जो मिस्र देश में सहायता के लिए जाते हैं, और जो घोड़ों पर आश्रित होते हैं, उनका भरोसा रथों पर है क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर क्योंकि वे बलवान है, किंतु वे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर सहायता के लिए नहीं देखते, और न ही वे याहवेह को खोजते हैं. 2 परंतु वह भी बुद्धिमान हैं याहवेह और दुःख देंगे; याहवेह अपने वायदे को नहीं बदलेंगे. वह अनर्थकारियों के विरुद्ध लड़ेंगे, और उनके खिलाफ़ भी, जो अपराधियों की सहायता करते हैं. 3 मिस्र के लोग मनुष्य हैं, ईश्वर नहीं; और उनके घोड़े हैं, और उनके घोड़े आत्मा नहीं बल्कि मांस हैं. याहवेह अपना हाथ उठाएंगे और जो सहायता करते हैं, वे लड़खड़ाएंगे और जिनकी सहायता की जाती है; वे गिरेंगे और उन सबका अंत हो जाएगा. 4 क्योंकि याहवेह ने मुझसे कहा: "जिस प्रकार एक सिंह अथवा, जवान सिंह अपने शिकार पर गुर्राता है— और सब चरवाहे मिलकर सिंह का सामना करने की कोशिश करते हैं, परंतु सिंह न तो उनकी ललकार से डरता है और न ही उनके डराने से भागता है— उसी प्रकार सर्वशक्तिमान याहवेह ज़ियोन पर्वत पर उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए तैयार हो जाएंगे. 5 पंख फैलाए हुए पक्षी के समान सर्वशक्तिमान याहवेह येरूशलेम की रक्षा करेंगे; और उन्हें छुड़ाएंगे." 6 हे इस्राएल तुमने जिसका विरोध किया है, उसी की ओर मुड़ जाओ. 7 उस समय हर व्यक्ति अपनी सोने और चांदी की मूर्तियों को फेंक देगा, जो तुमने बनाकर पाप किया था. 8 "अश्शूरी के लोग तलवार से मार दिये जाएंगे, वह मनुष्य की तलवार से नहीं; एक तलवार उन्हें मार डालेगी, किंतु वह तलवार मनुष्य की नहीं है. इसलिये वह उस तलवार से बच नहीं पाएगा और उसके जवान पुरुष पकड़े जाएंगे. 9 डर से उसका गढ़ गिर जाएगा; और उसके अधिकारी डर के अपना झंडा छोड़कर भाग जाएंगे," याहवेह की यह वाणी है कि, जिनकी अग्नि ज़ियोन में, और जिनका अग्निकुण्ड येरूशलेम की पहाड़ी पर युद्ध करने को उतरेंगे.

32 देखो, राजा धर्म से शासन करेंगे और अधिकारी न्याय से शासन करेंगे. 2 सब मानो आंधी से छिपने का स्थान और बौछार के लिये आड़ के समान होगा, मरूभूमि में झरने एक विशाल चट्टान की छाया के समान होंगे. 3 तब जो देखते हैं, उनकी आंख कमजोर न होगी, और जो सुनते हैं वे सुनेंगे. 4 उतावले लोगों के मन ज्ञान की बातें समझेंगे, और जो हकलाते हैं वे साफ़ बोलेंगे. 5 मूर्ख फिर उदार न कहलायेगा न कंजूस दानी कहलायेगा. 6 क्योंकि एक मूर्ख मूढ़ता की बातें ही करता है, और उसका मन व्यर्थ बातों पर ही लगा रहता है: वह कपट और याहवेह के विषय में झूठ बोलता है जिससे वह भूखे को भूखा और प्यासे को प्यासा ही रख सके. 7 दुष्ट गलत बात सोचता है, और सीधे लोगों को भी अपनी बातों में फंसा देता है. 8 किंतु सच्चा व्यक्ति तो अच्छा ही करता है, और अच्छाईयों पर स्थिर रहता है. 9 हे आलसी स्त्रियों तुम जो निश्चिंत हो, मेरी बात को सुनो; हे निश्चिंत पुत्रियो उठो, मेरे वचन पर ध्यान दो! 10 हे निश्चिंत पुत्रियो एक वर्ष और कुछ ही दिनों में तुम व्याकुल कर दी जाओगी; क्योंकि दाख का समय खत्म हो गया है, और फल एकत्र नहीं किए जाएंगे. 11 हे निश्चिंत स्त्रियो, कांपो; कांपो, हे निश्चिंत पुत्रियो! अपने वस्त्र उतारकर अपनी कमर पर टाट बांध लो. 12 अच्छे खेतों के लिए और फलदार अंगूर के लिये रोओ, 13 क्योंकि मेरी प्रजा, जो बहुत खुश और आनंदित है, उनके खेत में झाड़ और कांटे उग रहे हैं. 14 क्योंकि राजमहल छोड़ दिया जायेगा, और नगर सुनसान हो जायेगा; पर्वत और उनके पहरेदारों के घर जहां है, वहां जंगली गधे मौज करेंगे, पालतू पशुओं की चराई बन जाएंगे. 15 जब तक हम पर ऊपर से आत्मा न उंडेला जाए, और मरूभूमि फलदायक खेत न बन जाए, और फलदायक खेत वन न बन जाए. 16 तब तक उस बंजर भूमि में याहवेह का न्याय रहेगा, और फलदायक खेत में धर्म रहेगा. 17 धार्मिकता का फल है शांति, उसका परिणाम चैन; और हमेशा के लिए साहस! 18 तब मेरे लोग शांति से, और सुरक्षित एवं स्थिर रहेंगे. 19 और वन विनाश होगा और उस नगर का घमंड चूर-चूर किया जाएगा, 20 क्या ही धन्य हो तुम, जो जल के स्रोतों के पास बीज बोते हो, और गधे और बैल को आज़ादी से चराते हो.

33 हाय! तुम पर, जिनको नाश नहीं किया गया! और हाय! तुम विश्वासघातियों पर, जिनके साथ विश्वासघात नहीं किया गया! जब तुम नाश करोगे, तब तुम नाश किए जाओगे; और जब तुम विश्वासघात कर लोगे, तब तुम्हारे साथ विश्वासघात किया जायेगा. 2 हे याहवेह, हम पर दया कीजिए; हम आप ही की ओर देखते हैं. प्रति भोर आप हमारा बल तथा विपत्ति में हमारा सहायक बनिये. 3 शोर सुनते ही लोग भागने लगते हैं; जब आप उठते तब, लोग बिखरने लगते हैं. 4 जैसे टिड्डियां खेत को नष्ट करती हैं; उसी प्रकार लूटकर लाई गई चीज़ों को नष्ट कर दिया गया है, मनुष्य उस पर लपकते हैं. 5 याहवेह महान हैं, वह ऊंचे पर रहते हैं; उन्होंने ज़ियोन को न्याय तथा धर्म से भर दिया है. 6 याहवेह तुम्हारे समय के लिए निश्चित आधार होगा! उद्धार, बुद्धि और ज्ञान तुम्हारा हक होगा; और याहवेह का भय उसका धन होगा. 7 देख, उनके सैनिक गलियों में रो रहे हैं; शांति के राजदूत फूट-फूटकर रो रहे हैं. 8 मार्ग सुनसान पड़े हैं, और सब वायदों को तोड़ दिया गया है. उसे नगरों से घृणा हो चुकी है, मनुष्य के प्रति उसमें कोई सम्मान नहीं है. 9 देश रो रहा है, और परेशान है, लबानोन लज्जित होकर मुरझा रहा है; शारोन मरूभूमि के मैदान के समान हो गया है, बाशान तथा कर्मेल की हरियाली खत्म हो चुकी हैं. 10 याहवेह ने कहा, "अब मैं उठूंगा, अब मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा; और महान बनाऊंगा. 11 तुम्हें सूखी घास का गर्भ रहेगा, और भूसी उत्पन्न होगी; तुम्हारी श्वास ही तुम्हें भस्म कर देगी. 12 जो लोग भस्म होंगे वे चुने के समान हो जाएंगे; उन कंटीली झाड़ियों को आग में भस्म कर दिया जायेगा." 13 हे दूर-दूर के लोगों, सुनो कि मैंने क्या-क्या किया है; और तुम, जो पास हो, मेरे सामर्थ्य को देखो! 14 ज़ियोन के पापी डर गये; श्रद्धाहीन कांपने लगे: "हममें से कौन इस आग में जीवित रहेगा? जो कभी नहीं बुझेगी." 15 वही जो धर्म से चलता है तथा सीधी बातें बोलता, जो गलत काम से नफरत करता है जो घूस नहीं लेता, जो खून की बात सुनना नहीं चाहता और बुराई देखना नहीं चाहता— 16 वही ऊंचे स्थान में रहेगा, व चट्टानों में शरण पायेगा. उसे रोटी, और पानी की कमी नहीं होगी. 17 तुम स्वयं अपनी ही आंखों से राजा को देखोगे और लंबे चौड़े देश पर ध्यान दोगे. 18 तुम्हारा हृदय भय के दिनों को याद करेगा: "हिसाब लेनेवाला और कर तौलकर लेनेवाला कहां रहा? गुम्मटों का लेखा लेनेवाला कहां रहा?" 19 उन निर्दयी लोगों को तू दोबारा न देखेगा, जिनकी भाषा कठिन है और जो हकलाते हैं, तथा उनकी बातें किसी को समझ नहीं आती. 20 ज़ियोन के नगर पर ध्यान दो, जो उत्सवों का नगर है; येरूशलेम को तुम एक शांत ज़ियोन के रूप में देखोगे, एक ऐसे शिविर, जिसे लपेटा नहीं जाएगा; जिसके खूंटों को उखाड़ा न जाएगा, न ही जिसकी रस्सियों को काटा जाएगा. 21 किंतु वही याहवेह जो पराक्रमी परमेश्वर हैं हमारे पक्ष में है. वह बड़ी-बड़ी नदियों एवं नहरों का स्थान है. उन पर वह नाव नहीं जा सकती जिसमें पतवार लगते हैं, इस पर बड़े जहाज़ नहीं जा सकते. 22 क्योंकि याहवेह हमारे न्यायी हैं, याहवेह

हमारे हाकिम, याहवेह हमारे राजा हैं; वही हमें उद्धार देंगे. 23 तुम्हारी रस्सियां ढीली पड़ी हुई हैं: वे जहाज़ को स्थिर न रख सकतीं, न पाल को तान सके. तब लूटी हुई चीज़ों को बांटकर विकलांग ले जाएंगे. 24 कोई भी व्यक्ति यह नहीं कहेगा, "मैं बीमार हूं"; वहां के लोगों के अधर्म को क्षमा कर दिया जायेगा.

34 हे राज्य, राज्य के लोगो, सुनो! सारी पृथ्वी के लोगो, और जो कुछ इसमें है ध्यान से सुनो! 2 क्योंकि याहवेह का क्रोध सब जातियों पर तथा उनके शत्रुओं पर है. उन्होंने तो इन शत्रुओं को पूरा नष्ट कर दिया है, उन्होंने इन शत्रुओं को वध के लिए छोड़ दिया है. 3 जो मर गये हैं उन्हें बाहर फेंक दिया जाएगा, उनके शव सड़ जायेंगे; तथा पर्वत उनके रक्त से गल जाएंगे. 4 आकाश के सभी तारे छिप जाएंगे तथा आकाश कागज़ की नाई लपेट दिया जाएगा; आकाश के तारे मुरझाई हुई पत्तियों के समान गिर जायेंगे. 5 क्योंकि स्वर्ग में मेरी तलवार पीकर तृप्त हो चुकी है; अब न्याय के लिए एदोम पर बरसेगी, उन लोगों पर जिन्हें मैंने नाश के लिए अलग कर दिया है. 6 याहवेह की तलवार लहू से भरी है, यह मेमनों तथा बकरों के रक्त तथा चर्बी से तृप्त हो चुकी है. क्योंकि याहवेह ने बोज़राह में यज्ञ बलि अर्पण आयोजित किया है तथा एदोम देश में एक विशाल संहार. 7 जंगली बैलों का भी उन्हीं के साथ संहार हो जाएगा, तथा पुष्ट सांड़ बछड़े के साथ वध हो जाएंगे. इस प्रकार उनका देश रक्त से गल जाएगा, तथा वहां की धूल वसायुक्त हो जाएगी. 8 क्योंकि याहवेह द्वारा बदला लेने का दिन तय किया गया है, यह ज़ियोन के हित में प्रतिफल का वर्ष होगा. 9 एदोम की नदियां झरने बन जायेंगी, तथा इसकी मिट्टी गंधक; तथा देश प्रज्वलित झरने हो जाएंगे! 10 न तो यह दिन में बुझेगी, न रात्रि में; इसका धुआं सदा ऊपर उठता रहेगा. पीढ़ी से पीढ़ी तक यह सुनसान पड़ा रहेगा; कोई भी इसके बाद यहां से होकर नहीं जाएगा. 11 हवासिल तथा साही इस पर अपना अधिकार कर लेंगे; यह उल्लू तथा कौवों का घर हो जाएगा. याहवेह इसके ऊपर निर्जनता की सीमा-निर्धारण डोर तान देंगे तथा रिक्तता का साहुल भी. 12 वहां ऐसा कोई भी नहीं जिसे वे राजा घोषित करें, वहां के ऊंचे पद वाले तथा उसके सब शासक किसी के योग्य नहीं हैं. 13 गढ़नगर के महलों पर कंटीली झाड़ियां उग जाएंगी, इसके नगरों में बिच्छू, पौधे तथा झाड़ बढ़ जायेंगे. यहां सियारों का बसेरा हो जाएगा, जहां शुतुरमुर्ग घर करेंगे. 14 वहां मरुभूमि के प्राणियों, तथा भेड़ियों का सम्मेलन हुआ करेगा; जंगली बकरे एक दूसरे को पुकारेंगे तथा वहां रात के जीव लेट जाएंगे. 15 वहां उल्लू अपना घोंसला बनाएगा तथा वहीं वह अंडे देगा, वहां चूज़े पैदा होंगे तथा वह उन्हें अपने पंखों की छाया में ले लेगा; तब वहां बाज़ भी एकत्र होंगे. 16 याहवेह की पुस्तक से खोज करते हुए पढ़ो: इनमें से एक भी न हटेगा, न किसी जोड़े को साथी का अभाव होगा. क्योंकि स्वयं याहवेह ने कहा है, तथा उनके आत्मा ने उन्हें एक किया है. 17 याहवेह ने उनके लिए पासे फेंके हैं; स्वयं उन्होंने डोरी द्वारा बांट दिया है. इस पर उनका हक सर्वदा बना रहेगा एक से दूसरी पीढ़ी तक वे इसमें निवास करते रहेंगे.

35 वह निर्जन स्थान तथा वह मरुस्थल भूमि खुश होंगे, मरुस्थल आनंदित होकर केसर समान खिल उठेंगे. 2 वह अत्यंत आनंदित होगी तथा जय जयकार और उसे लबानोन का शौर्य दिया जायेगा उसकी समृद्धि कर्मेल तथा शारोन के समान हो जाएगी, वे याहवेह की महिमा, परमेश्वर के प्रताप को देखेंगे. 3 जो उदास है उन्हें उत्साहित करो, तथा जो निर्बल हैं उन्हें दृढ़ करो; 4 घबराने वाले व्यक्तियों से कहो, "साहस बनाए रखो, भयभीत न हो; स्मरण रखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने आ रहा है." 5 तब अंधों की आंखें खोली जायेंगी तथा बहरों के कान खोल दिये जायेंगे. 6 तब लंगड़ा हिरण के समान उछलेगा, गूंगे अपनी जीभ से जय जयकार करेंगे. सुनसान जगह पर सोता फूट निकलेगा तथा मरुस्थल में नदियां बहेंगी. 7 सूखी हुई भूमि पोखर सोते में बदल जायेगी, तथा धारा झरनों में बदलेगी. तथा तृषित धरा झरनों में; जिस जगह पर कभी सियारों का बसेरा था, वहां हरियाली हो जायेगी. 8 वहां एक मार्ग होगा; उसका नाम पवित्र मार्ग होगा. अशुद्ध उस पर न चल पाएंगे; निर्धारित लोग (परमेश्वर के पवित्र लोग) ही उस पर चला करेंगे; न ही मूर्ख वहां आएंगे. 9 उस मार्ग पर सिंह नहीं होगा, न हीं कोई जंगली पशु वहां आयेगा; इनमें से कोई भी उस मार्ग पर नहीं चलेगा. 10 इसलिये वे जो याहवेह द्वारा छुड़ाए गए हैं, जय जयकार के साथ ज़ियोन में आएंगे; उनके सिर पर आनंद के मुकुट होंगे और उनका दुःख तथा उनके आंसुओं का अंत हो जायेगा, तब वे सुख तथा खुशी के अधिकारी हो जाएंगे.

36 राजा हिज़किय्याह के शासनकाल के चौदहवें वर्ष में अश्शूर के राजा सेनहेरीब ने यहूदिया के समस्त गढ़ नगरों पर आक्रमण करके उन पर अधिकार कर लिया. 2 अश्शूर के राजा ने लाकीश से प्रमुख सेनापति के साथ येरूशलेम में राजा हिज़किय्याह से युद्ध करने एक विशाल सेना प्रेषित कर दी तथा स्वयं धोबी के खेत के राजमार्ग के निकटवर्ती ऊपरी ताल की जल प्रणाली के निकट खड़ा हो गया. 3 तब गृह प्रबंधक एलियाकिम, जो हिलकियाह का पुत्र था, शास्त्री शेबना तथा आसफ का पुत्र योआह, जो प्रालेख अधिकारी था, राजा से भेंट करने गए. 4 प्रमुख सेनापति ने उन्हें आदेश दिया, "हिज़किय्याह से जाकर यह कहो, "'पराक्रमी राजा, अश्शूर के राजा का संदेश यह है कौन है तुम्हारे इस भरोसे का आधार? 5 युद्ध से संबंधित तुम्हारी रणनीति तथा तुम्हारी शक्ति मात्र खोखले शब्द हैं. किस पर है तुम्हारा अवलंबन कि तुमने मुझसे विद्रोह का साहस किया है? 6 देखो, तुमने जो मिस्र देश पर भरोसा किया है, वह है ही क्या, एक टूटी हुई छड़ी! यदि कोई व्यक्ति इसकी टेक लेना चाहे तो यह छड़ी उसके हाथ में ही चुभ जाएगी. मिस्र का राजा फ़रोह भी उन सबके लिए ऐसा ही साबित होता है, जो उस पर भरोसा करते हैं. 7 हां, यदि तुम मुझसे कहो, "हम तो याहवेह हमारे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं," तो क्या ये वही नहीं हैं, जिनके पूजा-स्थल तथा वेदियां हिज़किय्याह ने ध्वस्त कर दी हैं तथा यहूदिया तथा येरूशलेम को यह आदेश दिया गया है: "तुम्हें इसी वेदी के समक्ष आराधना करनी होगी?" 8 "'तब अब आओ और हमारे स्वामी, अश्शूर के राजा से मोलभाव कर लो: मैं तुम्हें दो हज़ार घोड़े दूंगा, यदि तुम अपनी ओर से उनके लिए दो हज़ार घुड़सवार ला सको. 9 रथों और घुड़सवारों के लिए मिस्र देश पर निर्भर रहते हुए यह कैसे संभव है कि तुम मेरे स्वामी के छोटे से छोटे सेवक से टक्कर ले उसे हरा दो! 10 क्या मैं याहवेह के बिना ही इस स्थान को नष्ट करने आया हूं? याहवेह ही ने मुझे आदेश दिया है, इस देश पर हमला कर इसे खत्म कर दो.'" 11 तब एलियाकिम, शेबना तथा योआह ने प्रमुख सेनापति से आग्रह किया, "अपने सेवकों से अरामी भाषा में संवाद कीजिए, क्योंकि यह भाषा हम समझते हैं; यहूदिया की भाषा में संवाद मत कीजिए, क्योंकि प्राचीर पर कुछ लोग हमारा वार्तालाप सुन रहे हैं." 12 किंतु प्रमुख सेनापति ने उत्तर दिया, "क्या मेरे स्वामी ने मुझे मात्र तुम्हारे स्वामी तथा मात्र तुम्हें यह संदेश देने के लिए प्रेषित किया है तथा प्राचीर पर बैठे व्यक्तियों के लिए नहीं, जिनके लिए तो यही दंड निर्धारित है, कि वे तुम्हारे साथ स्वयं अपनी विष्ठा का सेवन करें तथा अपने ही मूत्र का पान?" 13 यह कहते हुए प्रमुख सेनापति खड़ा हो गया और सबके सामने उच्च स्वर में यहूदिया की भाषा में यह कहा: "अश्शूर के राजा प्रतिष्ठित सम्राट का यह संदेश सुन लो: 14 सम्राट का आदेश यह है: हिज़किय्याह तुम्हें इस छल में सम्भ्रमित न रखे, क्योंकि वह तुम्हें विमुक्त करने में समर्थ न होगा; 15 न ही हिज़किय्याह यह कहते हुए तुम्हें याहवेह पर भरोसा करने के लिए उकसाए, 'निःसंदेह याहवेह हमारा छुटकारा करेंगे. यह नगर अश्शूर के राजा के अधीन होने न दिया जाएगा.' 16

"हिज़किय्याह के आश्वासन पर ध्यान न दो, क्योंकि अश्शूर के राजा का संदेश
यह है, मुझसे संधि स्थापित कर लो. नगर से निकलकर बाहर मेरे पास आ
जाओ. तब तुममें से हर एक अपनी ही लगाई हुई दाखलता से फल खाएगा,
तुममें से हर एक अपने ही अंजीर वृक्ष से अंजीर खाएगा और तुममें से हर एक
अपने ही कुंड में से जल पीएगा. 17 तब मैं आऊंगा और तुम्हें एक ऐसे देश में ले
जाऊंगा, जो तुम्हारे ही देश के सदृश्य है, ऐसा देश जहां अन्न की उपज है तथा
नई द्राक्षा भी. यह भोजन तथा द्राक्षा उद्यानों का देश है. 18 "सावधान! ऐसा न
हो कि हिज़किय्याह तुम्हें यह कहकर बहका दे: 'याहवेह हमें विमुक्ति प्रदान
करेंगे.' क्या राष्ट्रों के किसी देवता ने अश्शूर के सम्राट के अधिकार से अपने
देश को विमुक्ति प्रदान की है? 19 कहां हैं हामाथ तथा अरपाद के देवता? कहां
हैं सेफरवाइम के देवता? और हां, उन्होंने शमरिया को कब मेरे अधिकार से
विमुक्त किया है? 20 इन देशों के किस देवता ने अपने देश को मेरे हाथों से
विमुक्त किया है, जो ये याहवेह येरूशलेम को मेरे हाथों से विमुक्त करा लेंगे?"
21 मगर प्रजा मौन रही. किसी ने भी उससे एक शब्द तक न कहा, क्योंकि राजा
का आदेश ही यह था, "उसे उत्तर न देना!" 22 हिलकियाह के पुत्र एलियाकिम
ने, जो राजघराने में गृह प्रबंधक था, लिपिक शेबना और आसफ के पुत्र योआह
ने, जो लेखापाल था अपने वस्त्र फाड़े और जाकर प्रमुख सेनापति के शब्द
हिज़किय्याह राजा को जा सुनाए.

37 जब राजा हिज़किय्याह ने यह सब सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़ दिए, टाट
पहन लिया और याहवेह के भवन में चला गया. 2 राजा ने गृह प्रबंधक
एलियाकिम, सचिव शेबना, पुरनियों और पुरोहितों को, जो टाट धारण किए हुए
थे, आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह के पास भेजा. 3 उन्होंने जाकर
यशायाह से विनती की, "हिज़किय्याह की यह विनती है, 'आज का दिन संकट,
फटकार और अपमान का दिन है. प्रसव का समय आ पहुंचा है मगर प्रसूता में
प्रसव के लिए शक्ति ही नहीं रह गई. 4 संभव है याहवेह, आपके परमेश्वर
राबशाकेह द्वारा कहे गए सभी शब्द सुन लें, जो उसके स्वामी, अश्शूर के राजा
ने जीवित परमेश्वर की निंदा में उससे कहलवाए थे. संभव है इन शब्दों को
सुनकर याहवेह, आपके परमेश्वर उसे फटकार लगाएं. इसलिये कृपा कर यहां
प्रजा के बचे हुओं के लिए आकर प्रार्थना कीजिए.'" 5 जब राजा हिज़किय्याह
के सेवक यशायाह के पास पहुंचे, 6 यशायाह ने उनसे कहा, "अपने स्वामी से
कहना, 'याहवेह का संदेश यह है, उन शब्दों के कारण जो तुमने सुने हैं, जिनके
द्वारा अश्शूर के राजा के सेवकों ने मेरी निंदा की है, तुम डरना मत. 7 तुम देख
लेना मैं उसमें एक ऐसी आत्मा डाल दूंगा कि उसे उड़ते-उड़ते समाचार सुनाई
देने लगेंगे और वह अपने देश को लौट जाएगा और ऐसा कुछ करूंगा कि वह
अपने ही देश में तलवार का कौर हो जाएगा.'" 8 जब प्रमुख सेनापति अपने
देश लौटा, उसने पाया कि अश्शूर राजा लाकीश छोड़कर जा चुका था और वह
लिबनाह से युद्ध कर रहा था. 9 जब सेनहेरीब ने कूश के राजा तिरहाकाह से यह
सुना कि वह तुमसे युद्ध करने निकल पड़ा है तब उसने अपने दूत हिज़किय्याह
के पास यह कहकर भेजा: 10 "तुम यहूदिया के राजा हिज़किय्याह से यह
कहना, 'जिस परमेश्वर पर तुम भरोसा करते हो, वह तुमसे यह प्रतिज्ञा करते
हुए छल न करने पाए, कि येरूशलेम अश्शूर के राजा के अधीन नहीं किया
जाएगा. 11 तुम यह सुन ही चुके हो, कि अश्शूर के राजाओं ने सारे राष्ट्रों को
कैसे नाश कर दिया है. क्या तुम बचकर सुरक्षित रह सकोगे? 12 जब मेरे
पूर्वजों ने गोज़ान, हारान, रेत्सेफ़ और तेलास्सार में एदेन की प्रजा को खत्म
कर डाला था, क्या उनके देवता उनको बचा सके थे? 13 कहां है हामाथ का
राजा, अरपाद का राजा, सेफरवाइम नगर का राजा और हेना और इव्वाह के
राजा?'" 14 इसके बाद हिज़किय्याह ने उन पत्र ले आनेवाले दूतों से वह पत्र
लेकर उसे पढ़ा और याहवेह के भवन को चला गया और उस पत्र को खोलकर
याहवेह के सामने रख दिया. 15 हिज़किय्याह ने याहवेह से यह प्रार्थना की: 16
"सर्वशक्तिमान याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, आप, जो करूबों से भी ऊपर
सिंहासन पर विराजमान हैं. परमेश्वर आप ही ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया. 17
अपने कान मेरी ओर कीजिए, याहवेह, मेरी प्रार्थना सुन लीजिए. अपनी आंखें
खोल दीजिए और याहवेह, देख लीजिए और उन शब्दों को सुन लीजिए, जो
सेनहेरीब ने जीवित परमेश्वर का मज़ाक उड़ाते हुए कहे हैं. 18 "याहवेह, यह
सच है कि अश्शूर के राजाओं ने राष्ट्रों को और उनकी भूमि को उजाड़ कर
छोड़ा हैं. 19 और उनके देवताओं को आग में डाल दिया है, सिर्फ इसलिये कि
वे देवता थे ही नहीं, वे तो सिर्फ मनुष्य के बनाए हुए थे, सिर्फ लकड़ी और
पत्थर. इसलिये वे नाश कर दिए गए. 20 अब, हे याहवेह, हमारे परमेश्वर, हमें
उनके हाथ से बचा ताकि पूरी पृथ्वी को यह मालूम हो जाए कि याहवेह, केवल
आप ही परमेश्वर हैं." 21 तब आमोज़ के पुत्र यशायाह ने हिज़किय्याह को यह
संदेश भेजा: "याहवेह, इस्राएल का परमेश्वर यों कहते हैं; इसलिये कि तुमने
अश्शूर के राजा सेनहेरीब के संबंध में मुझसे विनती की. 22 उसके विरुद्ध कहे
गए याहवेह के शब्द ये है: "ज़ियोन की कुंवारी कन्या ने तुम्हें तुच्छ समझा है,
तुम्हारा मज़ाक उड़ाया है. येरूशलेम की पुत्री तुम्हारी पीठ पीछे सिर हिलाती है.
23 तुमने किसका अपमान और निंदा की है? किसके विरुद्ध तुमने आवाज ऊंची
की है? और किसके विरुद्ध तुम्हारी दृष्टि घमण्ड से उठी है? इस्राएल के महा
पवित्र की ओर! 24 तुमने अपने दूतों के द्वारा याहवेह की निंदा की है. तुमने
कहा, 'अपने रथों की बड़ी संख्या लेकर मैं पहाड़ों की ऊंचाइयों पर चढ़ आया
हूं, हां, लबानोन के दुर्गम, दूर के स्थानों तक; मैंने सबसे ऊंचे देवदार के पेड़
काट गिराए हैं, इसके सबसे उत्तम सनोवरों को भी; मैंने इसके दूर-दूर के घरों में
प्रवेश किया, हां, इसके घने वनों में भी. 25 मैंने कुएं खोदे और परदेश का जल
पिया, अपने पांवों के तलवों से मैंने मिस्र की सभी नदियां सुखा दीं.' 26
"'क्या तुमने सुना नहीं? इसका निश्चय मैंने बहुत साल पहले कर लिया था?
इसकी योजना मैंने बहुत पहले ही बना ली थी, जिसको मैं अब पूरा कर रहा हूं,
कि तुम गढ़ नगरों को खंडहरों का ढेर बना दो. 27 तब जब नगरवासियों का
बल जाता रहा, उनमें निराशा और लज्जा फैल गई. वे मैदान की वनस्पति और
जड़ी-बूटी के समान हरे हो गए. वैसे ही, जैसे छत पर उग आई घास बढ़ने के
पहले ही मुरझा जाती है. 28 "'मगर तुम्हारा उठना-बैठना मेरी दृष्टि में है,
तुम्हारा भीतर आना और बाहर जाना भी और मेरे विरुद्ध तुम्हारा तेज गुस्सा भी!
29 मेरे विरुद्ध तुम्हारे तेज गुस्से के कारण और इसलिये कि मैंने तुम्हारे घमण्ड के
विषय में सुन लिया है, मैं तुम्हारी नाक में अपनी नकेल डालूंगा और तुम्हारे मुख
में लगाम और तब मैं तुम्हें मोड़कर उसी मार्ग पर चलाऊंगा जिससे तुम आए थे.'
30 "तब तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा: "इस साल तुम्हारा भोजन उस उपज का
होगा, जो अपने आप उगती है; अगले साल वह, जो इसी से उपजेगी; तीसरे
साल तुम बीज बोओगे, उपज काटोगे, अंगूर के बगीचे लगाओगे और उनके
फल खाओगे. 31 तब यहूदाह गोत्र का बचा हुआ भाग दोबारा अपनी जड़ें भूमि
में गहरे जा मजबूत करता जाएगा और ऊपर वृक्ष फलवंत होता जाएगा. 32
क्योंकि येरूशलेम से एक बचा हुआ भाग ही विकसित होगा, और ज़ियोन पर्वत
से भागे हुए लोग. सेनाओं के याहवेह अपनी जलन के कारण ऐसा करेंगे. 33
"इसलिये अश्शूर के राजा के बारे में याहवेह का यह संदेश है: "वह न तो इस
नगर में प्रवेश करेगा, न वह वहां बाण चलाएगा. न वह इसके सामने ढाल लेकर
आएगा और न ही वह इसकी घेराबंदी के लिए ढलान ही बना पाएगा. 34 वह तो
उसी मार्ग से लौट जाएगा जिससे वह आया था. वह इस नगर में प्रवेश ही न
करेगा." यह याहवेह का संदेश है. 35 "क्योंकि अपनी और अपने सेवक
दावीद की महिमा के लिए मैं इसके नगर की रक्षा करूंगा!" 36 उसी रात ऐसा
हुआ कि याहवेह के एक स्वर्गदूत ने अश्शूरी सेना के शिविर में जाकर एक लाख

पचासी हज़ार सैनिकों को मार दिया. सुबह जागने पर लोगों ने पाया कि सारे सैनिक मर चुके थे. 37 यह होने पर अश्शूर का राजा सेनहेरीब अपने देश लौट गया और नीनवेह नगर में रहने लगा. 38 एक बार, जब वह अपने देवता निसरोक के भवन में उसकी उपासना कर रहा था, उसी के पुत्रों, अद्राम्मेलेख और शारेज़र ने तलवार से उस पर वार किया और वे अरारात प्रदेश में जाकर छिप गए. उसके स्थान पर उसके पुत्र एसारहद्दन ने शासन करना शुरू किया.

38 उन्हीं दिनों में हिज़किय्याह को ऐसा रोग हो गया कि वह मरने पर था. आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह उससे मिलने आए. उन्होंने हिज़किय्याह से कहा, “याहवेह का संदेश यह है—अपने परिवार की व्यवस्था कर लीजिए क्योंकि आपकी मृत्यु होनी ही है, आपका रोग से ठीक हो पाना संभव नहीं.” 2 यह सुन हिज़किय्याह ने अपना मुंह दीवार की ओर कर याहवेह से यह प्रार्थना की, 3 “याहवेह, कृपा कर याद करें कि मैं पूरे मन से कैसे सच्चाई में आपके सामने आचरण करता रहा हूं. और मैंने वही किया है, जो आपकी दृष्टि में सही है.” तब हिज़किय्याह फूट-फूटकर रोने लगा. 4 तब यशायाह को याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 5 “जाकर हिज़किय्याह से कहो, ‘तुम्हारे पूर्वज दावीद के परमेश्वर याहवेह का संदेश यह है: मैंने तुम्हारी विनती सुनी है, तुम्हारे आंसू मैंने देखे हैं; अब देखना कि मैं तुम्हारे जीवन में पन्द्रह वर्ष और बढ़ा रहा हूं. 6 मैं तुम्हें तथा इस नगर को अश्शूर के राजा के अधिकार से मुक्त करूंगा. इस नगर की रक्षा मैं करूंगा. 7 “‘जो कुछ याहवेह ने कहा वह उसे पूरा करेंगे, याहवेह की ओर से तुम्हारे लिए इसका चिन्ह यह होगा: 8 तुम देखोगे कि सूर्य की छाया को मैं दस अंश पीछे हटा दूंगा.’” तब सूर्य द्वारा उत्पन्न छाया दस अंश पीछे हट गई. 9 यहूदिया के राजा हिज़किय्याह की बात, जो उसने अपने रोगी होकर चंगा होने के बाद लिखी है: 10 मैंने सोचा, “कि मेरे जीवन के बीच में ही मुझे नर्क के फाटकों में से जाना होगा और मेरे जीवन का कोई पल अब बचा नहीं?” (Sheol h7585) 11 मैंने सोचा, “मैं जीवितों की पृथ्वी पर याहवेह को देख न सकूंगा; मैं अब याहवेह को और मनुष्य को नहीं देख सकूंगा. 12 मेरा घर चरवाहे के तंबू के समान हटा लिया गया है. मैंने तो अपना जीवन बुनकर लपेट लिया था, प्रभु ने मुझे करघे से काटकर अलग कर दिया है; एक ही दिन में तू मेरा अंत कर डालेगा. 13 सुबह तक मैं अपने आपको शांत करता रहा, प्रभु सिंह के समान मेरी हड्डियों को तोड़ते रहे; दिन से शुरू कर रात तक आपने मेरा अंत कर दिया है. 14 मैं सुपाबेनी या सारस के समान चहकता हूं, मैं पण्डुक के समान कराहता हूं. मेरी आंखें ऊपर की ओर देखते-देखते थक गई है. हे प्रभु, मैं परेशान हूं आप मेरे सहायक हों!” 15 अब मैं क्या कहूं? क्योंकि उन्होंने मुझसे प्रतिज्ञा की और पूरी भी की है. मैं जीवन भर दुःख के साथ जीवित रहूंगा. 16 हे प्रभु, ये बातें ही तो मनुष्यों को जीवित रखती हैं; इन्हीं से मेरी आत्मा को जीवन मिलता है. आप मुझे चंगा कीजिए और जीवित रखिए. 17 शांति पाने के लिए मुझे बड़ी कड़वाहट मिली. आपने मेरे प्राण को नाश के गड्ढे से निकाला है; क्योंकि मेरे सब पापों को आपने पीठ पीछे फेंक दिया है. 18 अधोलोक आपका धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु आपकी महिमा कर सकती है; जो कब्र में पड़े हैं वे आपकी विश्वासयोग्यता की आशा नहीं कर सकते. (Sheol h7585) 19 जीवित व्यक्ति ही आपका धन्यवाद कर सकते हैं, जिस प्रकार मैं आज कर रहा हूं; पिता अपनी संतान से आपकी विश्वस्तता की बात बताता है. 20 निश्चयतः याहवेह मेरा उद्धार करेंगे, इसलिये याहवेह के भवन में पूरे जीवनकाल में मेरे गीत तार वाले बाजों पर गाते रहेंगे. 21 यशायाह ने कहा, “अंजीर की टिकिया हिज़किय्याह के फोड़े पर लगा दो, ताकि उसे इससे आराम मिल सके.” 22 इसी पर हिज़किय्याह ने पूछा था, “इसका चिन्ह क्या होगा कि मैं याहवेह के भवन में फिर से जा पाऊंगा?”

39 उसी समय बाबेल के राजा बलादन के पुत्र मेरोदाख-बलादान ने हिज़किय्याह के लिए पत्र तथा एक उपहार भेजा, क्योंकि उन्हें यह समाचार मिला, कि हिज़किय्याह अस्वस्थ था तथा अब वह ठीक है. 2 हिज़किय्याह उनकी बातें ध्यान से सुनता रहा, फिर उनका स्वागत करते हुए उसने उन्हें अपना सारा खजाना, सोना-चांदी और सभी मसाले, कीमती तेल, अपना हथियार घर और अपने भंडार घर की सारी वस्तुएं दिखा दीं; यानी सभी कुछ, जो उसके खजानों में जमा था. उसके घर में या उसके सारी राज्य में ऐसा कुछ न था, जो उसने उन्हें न दिखाया हो. 3 यह होने के बाद भविष्यद्वक्ता यशायाह राजा हिज़किय्याह से भेंट करने गए और उससे कहा, “क्या कह रहे हैं ये लोग, कहां से आए थे?” “हिज़किय्याह ने उत्तर दिया, वे एक दूर देश से—बाबेल से मेरे पास आए थे.” 4 भविष्यद्वक्ता यशायाह ने राजा से पूछा, “क्या-क्या देखा उन्होंने आपके घर का?” हिज़किय्याह ने उत्तर दिया, “जो कुछ मेरे घर में है, वे सभी कुछ देख गए हैं, मेरे खजाने में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो उन्होंने न देखा हो.” 5 यह सुन यशायाह ने हिज़किय्याह से कहा, “याहवेह का संदेश सुनिए: 6 ‘यह देख लेना कि वे दिन आ रहे हैं, जब वह सभी कुछ, जो आपके घर में है, वह सब, जो आपके पूर्वजों द्वारा आज तक इकट्ठा किया गया है, बाबेल को ले जाया जाएगा—कुछ भी बाकी न रह जाएगा,’ यह याहवेह का संदेश है. 7 तुम्हारे ही अपने पुत्रों में से कुछ को, जो तुम्हारे अपने पुत्र होंगे उन्हें बंधुआई में ले जाया जाएगा. वे बाबेल के राजा के राजघराने में नपुंसक बना दिए जाएंगे.” 8 तब हिज़किय्याह ने यशायाह से कहा, “याहवेह का वचन जो तुमने कहा वह भला ही है,” फिर कहा, “कम से कम मेरे जीवनकाल में तो शांति एवं सुरक्षा बनी रहेगी.”

40 तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, कि मेरी प्रजा को शांति दो, शांति दो! 2 येरूशलेम से शांति की बात करो, उनसे कहो कि अब उनकी कठिन सेवा खत्म हो चुकी है, क्योंकि उनके अधर्म का मूल्य दे चुका है, उसने याहवेह ही के हाथों से अपने सारे पापों के लिए दो गुणा दंड पा लिया है. 3 एक आवाज, जो पुकार-पुकारने वाले की, कह रही है, “याहवेह के लिए जंगल में मार्ग को तैयार करो; हमारे परमेश्वर के लिए उस मरुस्थल में एक राजमार्ग सीधा कर दो. 4 हर एक तराई भर दो, तथा हर एक पर्वत तथा पहाडी को गिरा दो; असमतल भूमि को चौरस मैदान बना दो, तथा ऊंचा नीचा है वह चौड़ा किया जाए. 5 तब याहवेह का प्रताप प्रकट होगा, तथा सब जीवित प्राणी इसे एक साथ देख सकेंगे. क्योंकि यह याहवेह के मुंह से निकला हुआ वचन है.” 6 फिर बोलनेवाले कि आवाज सुनाई दी कि प्रचार करो. मैंने कहा, “मैं क्या प्रचार करूं?” “सभी मनुष्य घास समान हैं, उनकी सुंदरता मैदान के फूल समान है. 7 घास मुरझा जाती है तथा फूल सूख जाता है, जब याहवेह की श्वास चलती है. तब घास सूख जाती है. 8 घास मुरझा जाती है तथा फूल सूख जाता है, किंतु हमारे परमेश्वर का वचन स्थिर रहेगा.” 9 किसी ऊंचे पर्वत पर चले जाओ, हे ज़ियोन, तुम तो शुभ संदेश सुनाते हो. अत्यंत ऊंचे स्वर में घोषणा करो, हे येरूशलेम, तुम जो शुभ संदेश सुनाते हो, बिना डरे हुए ऊंचे शब्द से कहो; यहूदिया के नगरों को बताओ, “देखो ये हैं हमारे परमेश्वर!” 10 तुम देखोगे कि प्रभु याहवेह बड़ी सामर्थ्य के साथ आएंगे, वह अपने भुजबल से शासन करेंगे. वह अपने साथ मजदूरी लाए हैं, उनका प्रतिफल उनके आगे-आगे चलता है. 11 वह चरवाहे के समान अपने झुंड की देखभाल करेंगे: वह मेमनों को अपनी बाहों में ले लेंगे वह उन्हें अपनी गोद में उठा लेंगे और बाहों में लेकर चलेंगे; उनके साथ उनके चरवाहे भी होंगे. 12 कौन है जिसने अपनी हथेली से महासागर को नापा है, किसने बित्ते से आकाश को नापा है? किसने पृथ्वी की धूल को माप कर उसकी गिनती की है, तथा पर्वतों को कांटे से तथा पहाड़ियों को तौल से मापा है? 13 किसने याहवेह के आत्मा को मार्ग बताया है, अथवा

याहवेह का सहायक होकर उन्हें ज्ञान सिखाया है? 14 किससे उसने सलाह ली,
तथा किसने उन्हें समझ दी? किसने उन्हें न्याय की शिक्षा दी तथा उन्हें ज्ञान
सिखाया, किसने उन्हें बुद्धि का मार्ग बताया? 15 यह जान लो, कि देश पानी की
एक बूंद और पलड़ों की धूल के समान है; वह द्वीपों को धूल के कण समान
उड़ा देते हैं. 16 न तो लबानोन ईंधन के लिए पर्याप्त है, और न ही होमबलि के
लिए पशु है. 17 उनके समक्ष पूरा देश उनके सामने कुछ नहीं है; उनके सामने वे
शून्य समान हैं. 18 तब? किससे तुम परमेश्वर की तुलना करोगे? या किस छवि
से उनकी तुलना की जा सकेगी? 19 जैसे मूर्ति को शिल्पकार रूप देता है,
स्वर्णकार उस पर सोने की परत चढ़ा देता है तथा चांदी से उसके लिए कड़ियां
गढ़ता है. 20 कंगाल इतनी भेंट नहीं दे सकता इसलिये वह अच्छा पेड़ चुने, जो
न सड़े; फिर एक योग्य शिल्पकार को ढूंढ़कर मूरत खुदवाकर स्थिर करता है
ताकि यह हिल न सके. 21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने सुना नहीं? क्या
शुरू में ही तुम्हें नहीं बताया गया था? क्या पृथ्वी की नींव रखे जाने के समय से
ही तुम यह समझ न सके थे? 22 यह वह हैं जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाश
में विराजमान हैं. पृथ्वी के निवासी तो टिड्डी के समान हैं, वह आकाश को
मख़मल के वस्त्र के समान फैला देते हैं. 23 यह वही हैं, जो बड़े-बड़े हाकिमों
को तुच्छ मानते हैं और पृथ्वी के अधिकारियों को शून्य बना देते हैं. 24 कुछ
ही देर पहले उन्हें बोया गया, जड़ पकड़ते ही हवा चलती और वे सूख जाति है,
और आंधी उन्हें भूसी के समान उड़ा ले जाती है. 25 “अब तुम किससे मेरी
तुलना करोगे? कि मैं उसके तुल्य हो जाऊं?” यह पवित्र परमेश्वर का वचन है.
26 अपनी आंख ऊपर उठाकर देखो: किसने यह सब रचा है? वे अनगिनत तारे
जो आकाश में दिखते हैं जिनका नाम लेकर बुलाया जाता है. और उनके सामर्थ्य
तथा उनके अधिकार की शक्ति के कारण, उनमें से एक भी बिना आए नहीं
रहता. 27 हे याकोब, तू क्यों कहता है? हे इस्राएल, तू क्यों बोलता है, “मेरा
मार्ग याहवेह से छिपा है; और मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की चिंता नहीं करता”?
28 क्या तुम नहीं जानते? तुमने नहीं सुना? याहवेह सनातन परमेश्वर है, पृथ्वी
का सृजनहार, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अपरंपार है. 29 वह
थके हुओं को बल देता है, शक्तिहीनों को सामर्थ्य देता है. 30 यह संभव है कि
जवान तो थकते, और मूर्छित हो जाते हैं और लड़खड़ा जाते हैं; 31 परंतु जो
याहवेह पर भरोसा रखते हैं वे नया बल पाते जाएंगे. वे उकाबों की नाई उड़ेंगे; वे
दौड़ेंगे, किंतु श्रमित न होंगे, चलेंगे, किंतु थकित न होंगे.

41 हे द्वीपो, चुप रहकर मेरी सुनो! देश-देश के लोग, नया बल पायें! वे पास
आकर बात करें; न्याय के लिए हम एक दूसरे के पास आएं. 2 “किसने
उसे उकसाया है जो पूर्व में है, जिसको धर्म के साथ अपने चरणों में बुलाता हैं?
याहवेह उसे देश सौंपते जाते हैं तथा राजाओं को उसके अधीन करते जाते हैं.
वह उसकी तलवार से उन्हें धूल में, तथा उसके धनुष से हवा में उड़ती भूसी में
बदल देता है. 3 वह उनका पीछा करता है तथा एक ऐसे मार्ग से सुरक्षित उनसे
आगे निकल जाता है, जिस पर इससे पहले वह चलकर कभी पार नहीं गया. 4
आदिकाल से अब तक की पीढ़ियों को किसने बुलाया है? मैं ही याहवेह, जो
सबसे पहला और आखिरी हूं.” 5 तटवर्ती क्षेत्रों ने यह देखा तथा वे डर गए;
पृथ्वी कांपने लगी, और पास आ गए. 6 हर एक अपने पड़ोसी की सहायता
करता है तथा अपने बंधु से कहता है, “हियाव बांध!” 7 इसी प्रकार शिल्पी भी
सुनार को हिम्मत दिलाता है, जो हथौड़े से धातु को समतल बनाकर कील मारता
है और हिम्मत बांधता है. निहाई पर हथौड़ा चलाता है. वह टांकों को ठोक ठोक
कर कसता है ताकि वह ढीला न रह जाए. 8 “हे मेरे दास इस्राएल, मेरे चुने हुए
याकोब, मेरे मित्र अब्राहाम के वंश, 9 तुम्हें जिसे मैं दूर देश से लौटा लाया हूं,
तथा पृथ्वी के दूरतम स्थानों से तुम्हें बुलाकर तुम्हें यह आश्वासन दिया है. ‘तुम
मेरे सेवक हो’; मेरे चुने हुए, मैंने तुम्हें छोड़ा नहीं है. 10 इसलिये मत डरो, मैं
तुम्हारे साथ हूं; इधर-उधर मत ताको, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर मैं हूं. मैं तुम्हें
दृढ़ करूंगा और तुम्हारी सहायता करूंगा; मैं तुम्हें अपने धर्ममय दाएं हाथ से
संभाले रखूंगा. 11 “देख जो तुझसे क्रोधित हैं वे लज्जित एवं अपमानित किए
जाएंगे; वे जो तुमसे झगड़ा करते हैं नाश होकर मिट जायेंगे. 12 तुम उन्हें जो
तुमसे विवाद करते थे खोजते रहोगे, किंतु उन्हें पाओगे नहीं. जो तुम्हारे साथ युद्ध
करते हैं, वे नाश होकर मिट जाएंगे. 13 क्योंकि मैं याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं,
जो तुम्हारे दाएं हाथ को थामे रहता है जो तुम्हें आश्वासन देता है, मत डर;
तुम्हारी सहायता मैं करूंगा. 14 हे कीड़े समान याकोब, हे इस्राएली प्रजा मत
डर, तुम्हारी सहायता मैं करूंगा,” यह याहवेह की वाणी है. इस्राएल के पवित्र
परमेश्वर तेरे छुड़ानेवाले हैं. 15 “देख, मैंने तुम्हें छुरी वाले उपकरण समान
बनाया है. तुम पर्वतों को कूट-कूट कर चूर्ण बना दोगे, तथा घाटियों को भूसी
का रूप दे दोगे. 16 तुम उन्हें फटकोगे, हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी, तथा आंधी
उन्हें बिखेर देगी. किंतु तुम याहवेह में खुश होगे तुम इस्राएल के पवित्र परमेश्वर
पर गर्व करोगे. 17 “जो दीन तथा दरिद्र हैं वे जल की खोज कर रहे हैं, किंतु
जल कहीं नहीं; प्यास से उनका गला सूख गया है. मैं याहवेह ही उन्हें स्वयं
उत्तर दूंगा; इस्राएल का परमेश्वर होने के कारण मैं उनको नहीं छोड़ूंगा. 18 मैं
सूखी पहाड़ियों से नदियों को बहा दूंगा, घाटियों के मध्य झरने फूट पड़ेंगे.
निर्जन स्थल जल ताल हो जाएगा, तथा सूखी भूमि जल का सोता होगी. 19
मरुस्थल देवदार, बबूल, मेंहदी, तथा जैतून वृक्ष उपजाने लगेंगे. मैं मरुस्थल में
सनौवर, चिनार तथा चीड़ के वृक्ष उगा दूंगा, 20 कि वे देख सकें तथा इसे समझ
लें, कि यह याहवेह के हाथों का कार्य है, तथा इसे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर
ही ने किया है.” 21 याहवेह कहता है, “अपनी बात कहो.” अपना मुकदमा
लड़ो, “यह याकोब के राजा का आदेश है. 22 वे देवताएं आएं, तथा हमें बताएं,
कि भविष्य में क्या होनेवाला है. या होनेवाली घटनाओं के बारे में भी बताएं. 23
उन घटनाओं को बताओ जो भविष्य में होने पर हैं, तब हम मानेंगे कि तुम देवता
हो. कुछ तो करो, भला या बुरा, कि हम चकित हो जाएं तथा डरें भी. 24 देखो
तुम कुछ भी नहीं हो तुम्हारे द्वारा किए गए काम भी व्यर्थ ही हैं; जो कोई तुम्हारा
पक्ष लेता है वह धिक्कार-योग्य है. 25 “मैंने उत्तर दिशा में एक व्यक्ति को चुना
है, वह आ भी गया है— पूर्व दिशा से वह मेरे नाम की दोहाई देगा. वह हाकिमों
को इस प्रकार रौंद डालेगा, जिस प्रकार गारा रौंदा जाता है, जिस प्रकार कुम्हार
मिट्टी को रौंदता है. 26 क्या किसी ने इस बात को पहले से बताया था, कि पहले
से हमें मालूम हो, या पहले से, किसी ने हमें बताया कि, ‘हम समझ सकें और
हम कह पाते की वह सच्चा है?’ कोई बतानेवाला नहीं, कोई भी सुननेवाला
नहीं है. 27 सबसे पहले मैंने ही ज़ियोन को बताया कि, ‘देख लो, वे आ गए!’
येरूशलेम से मैंने प्रतिज्ञा की मैं तुम्हें शुभ संदेश सुनाने वाला दूत दूंगा. 28 किंतु
जब मैंने ढूंढ़ा वहां कोई नहीं था, उन लोगों में कोई भी जवाब देनेवाला नहीं
था, यदि मैं कोई प्रश्न करूं, तो मुझे उसका उत्तर कौन देगा. 29 यह समझ लो
कि वे सभी अनर्थ हैं! व्यर्थ हैं उनके द्वारा किए गए काम; उनके द्वारा बनाई गई
मूर्तियां केवल वायु एवं खोखली हैं.”

42 “मेरे इस सेवक को देखो, जिससे मैं खुश हूं, वह मेरा चुना हुआ है मेरा
प्रिय; उस पर मैंने अपना आत्मा रखा है, वही देशों का निष्पक्ष न्याय
करेगा. 2 वह न तो चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा, और न सड़क में
उसका शब्द सुनाई देगा. 3 कुचले हुए नरकट को वह तोड़ न फेंकेगा, और न
ही वह टिमटिमाती बत्ती को बुझा देगा. वह सच्चाई से न्याय करेगा; 4 जब
तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे वह न तो निराश होगा न थकेगा. द्वीप
उसकी व्यवस्था की प्रतीक्षा करेंगे.” 5 परमेश्वर, जो याहवेह हैं— जिन्होंने
आकाश बनाया तथा पृथ्वी को बढ़ाया और फैलाया, जो पृथ्वी पर पाए जाते हैं,
जिन्होंने पृथ्वी के लोगों को श्वास और जीवन उस पर चलने वालों को दिया:

6 "मैं ही, वह याहवेह हूं, मैंने धर्म से तुम्हें बुलाया है; मैं तुम्हारा हाथ थाम कर
तुम्हारी देखभाल करूंगा. मैं तुम्हें लोगों के लिए वाचा और देशों के लिए ज्योति
ठहराऊंगा, 7 ताकि अंधे देख पाएं, बंदी कारागार से बाहर लाया जाए जो
कारागार के अंधकार में रहता है. 8 "मैं ही वह याहवेह हूं; यही मेरा नाम है!
किसी और को मैं अपनी महिमा न दूंगा, और मेरी स्तुति खुदी हुई मूर्ति को न
दूंगा. 9 देखो, पुरानी बातें बीत चुकी हैं, अब मैं नई बात बताता हूं. अब वे बातें
पहले ही बताऊंगा जो आगे चलकर घटने वालीं हैं." 10 हे समुद्र पर चलने
वालो, हे समुद्र के रहनेवालो, हे द्वीपो और उनमें रहनेवालो, तुम सब याहवेह
की स्तुति में एक नया गीत गाओ, पृथ्वी के छोर से उनकी स्तुति करो. 11
मरुस्थल एवं उसमें स्थित नगर नारे लगाओ; बस्तियां और गुफा में भी बसे हुए
जय जयकार करो. सेला के निवासी नारे लगाओ; पर्वत शिखरों पर से खुशी
के नारे लगाएं. 12 वे याहवेह की महिमा को प्रकट करें तथा द्वीपों में उसका
गुणगान करें. 13 याहवेह वीर के समान निकलेगा, योद्धा के समान अपनी जलन
दिखाएगा; वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और शत्रुओं पर विजयी होगा. 14
"बहुत समय से मैंने अपने आपको चुप रखा, अपने आपको रोकता रहा. अब
जच्चा के समान चिल्लाऊंगा, अब मैं हांफ रहा हूं और मेरा श्वास फूल रहा है.
15 मैं पर्वतों तथा घाटियों को उजाड़ दूंगा सब हरियाली को सुखा दूंगा; नदियों
को द्वीपों में बदल दूंगा तथा नालों को सुखा दूंगा. 16 अंधों को मैं ऐसे मार्ग से
ले जाऊंगा जिसे वे जानते नहीं, उन अनजान रास्तों पर मैं उन्हें अपने साथ साथ
ले चलूंगा; मैं उनके अंधियारे को दूर करूंगा उनके टेढ़े रास्ते को सीधा कर दूंगा.
मैं यह सब कर दिखाऊंगा; इसमें कोई कमी न होगी. 17 वे बहुत लज्जित होंगे,
जो मूर्तियों पर भरोसा रखते, और खुदी हुई मूर्तियों से कहते हैं, 'तुम ही हमारे
ईश्वर हो.' 18 "हे बहरो सुनो; हे अंधो, इधर देखो, तुम समझ सको! 19 कौन
है अंधा, किंतु सिवाय मेरे सेवक के, अथवा कौन है बहरा, सिवाय मेरे उस भेजे
हुए दूत के? अंधा कौन है जिसके साथ मैंने वाचा बांधी, अंधा कौन है सिवाय
याहवेह का दास? 20 अनेक परिस्थितियां तुम्हारे आंखों के सामने हुईं अवश्य,
किंतु तुमने उन पर ध्यान नहीं दिया; तुम्हारे कान खुले तो थे, किंतु तुमने सुना ही
नहीं." 21 याहवेह अपनी धार्मिकता के लिये अपनी व्यवस्था की प्रशंसा ज्यादा
करवाना चाहा. 22 किंतु ये ऐसे लोग हैं जो लूट लिए गए हैं, तथा जिनकी
वस्तुएं छीनी जा चुकी हैं और सभी गड्ढों में जा फंसे हैं, तथा सभी को जेल में
बंद कर दिया गया है. वे ऐसे फंस चुके हैं, जिन्हें कोई निकाल नहीं सकता; और
उनसे जो सामान लूटा गया है, उसे लौटाने को कोई नहीं कहता. 23 तुममें से
ऐसा कौन है, जो यह सब सुनने के लिए तैयार है? और कौन सुलझाएगा? 24
किसने याकोब को लुटेरों के हाथों में सौंप दिया, तथा इस्राएल को लुटेरों के
अधीन कर दिया? क्या याहवेह ने यह नहीं किया, जिनके विरुद्ध हमने पाप
किया है? जिसके मार्ग पर उन्होंने चलना न चाहा; और उनकी व्यवस्था का
उन्होंने पालन नहीं किया. 25 इस कारण याहवेह ने उन्हें अपने क्रोध की आग
में, और युद्ध की भीड़ में डाल दिया. उसे चारों ओर से आग ने घेर लिया! फिर
भी वह यह सब समझ न सका; इसने उसे भस्म कर दिया, तब भी उसने ध्यान
नहीं दिया.

43 हे इस्राएल तेरा रचनेवाला और हे याकोब, तुम्हारे सृजनहार याहवेह—
जिन्होंने तुम्हारी रचना की है, वह याहवेह यों कहते हैं: "मत डर,
क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ा लिया है; मैंने नाम लेकर तुम्हें बुलाया है; अब तुम मेरे हो
गए हो. 2 जब तुम गहरे जल से होकर चलोगे, तुम मुझे अपने पास पाओगे; जब
तुम नदियों से होकर आगे बढ़ोगे, वे तुम्हें डूबा न सकेंगी. जब तुम आग में से
होकर निकलोगे, आग तुम्हें झुलसा न सकेगी; न ही लौ तुम्हें भस्म कर सकेगी.
3 क्योंकि मैं ही याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं, तुम्हारा छुड़ाने वाला, इस्राएल का
पवित्र परमेश्वर हूं; मैंने मिस्र देश से तुम्हें छुड़ाया है, कूश एवं सेबा को तुम्हारी
संती दी है. 4 इसलिये कि तुम मेरी दृष्टि में अनमोल तथा प्रतिष्ठित और मेरे प्रिय
हो, इस कारण मैं तेरी संती मनुष्यों को, और तेरे प्राण के बदले में राज्य-राज्य के
लोगों को दे दूंगा. 5 मत डर, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं; मैं तुम्हारे वंश को पूर्व
से ले आऊंगा तथा तुम्हें पश्चिम में इकट्ठा करूंगा. 6 और उत्तर से कहूंगा, 'वे
मुझे दे दो!' और दक्षिण से की, 'मत रोके रहो उन्हें.' दूर से मेरे पुत्रों और पुत्रियों
को ले आओ— 7 उन सभी को जो मेरे नाम से जाने जाते हैं, जिन्हें मैंने अपनी
महिमा के लिए सृजा है, जिसकी रचना मैंने की है." 8 उन्हें बाहर लाओ
जिनकी आंखें हैं, लेकिन अंधे हैं, और कान होते हुए भी बहरे हैं. 9 जाति-जाति
के लोग एक साथ हो, और राज्य-राज्य के लोग इकट्ठा हो. किसी भी मिथ्या
देवता ने कभी इन बातों के बारे में कुछ कहा है और भूतकाल में यह बताया था
कि आगे क्या कुछ होगा तो उन्हें अपने गवाह लाने दो और उन मिथ्या देवताओं
को प्रामाणिक सिद्ध करने दो. उन्हें सत्य बताने दो और उन्हें सुनो. इनमें से कौन
बीती हुई बातों को बता सकता और सुनकर कहे कि यह सच है? 10 याहवेह ने
कहा, "तुम मेरे गवाह बनो," और वे सेवक जिनको मैंने चुना है, ताकि तुम मुझे
पहचानो, मुझमें विश्वास करो तथा समझ पाओ कि मैं ही परमेश्वर हूं. न मुझसे
पहले कोई था, न बाद में कोई हुआ. 11 मैं ही याहवेह हूं, मुझे छोड़ कोई और
नहीं है. 12 मैं ही हूं जिसने समाचार दिया और उद्धार किया— तथा वर्णन भी
किया, तुम्हारे बीच कोई और देवता नहीं था. "इसलिये तुम ही मेरे गवाह हो,
यह याहवेह की वाणी है. 13 मैं ही परमेश्वर हूं तथा आगे भी मैं वही हूं. कोई
और नहीं है जो मेरे हाथों से किसी को छीनकर छुड़ा ले. कौन है, जो मेरे द्वारा
किए गए काम को पलट सके?" 14 इस्राएल के पवित्र परमेश्वर याहवेह, जो
तुम्हारे उद्धारकर्ता हैं, उनकी वाणी यह है: "तुम्हारे कारण मैंने बाबेल पर हमला
किया मैं उन सभी को बंधक बना दूंगा, और उन्हीं के जहाज़ पर चढ़ाकर ले
आऊंगा. 15 मैं याहवेह तुम्हारा पवित्र परमेश्वर, इस्राएल का रचनेवाला, तुम्हारा
राजा हूं." 16 याहवेह ने कहा है— जिन्होंने समुद्र में से मार्ग तैयार किया, और
गहरे जल में से पथ निकालता है. 17 वह जो रथों तथा अश्वों, और सेना को
निकाल लाता है, और शूर योद्धा गिरा दिये जायेंगे, और फिर उठ न सकेंगे: 18
"न तो पुरानी बातों को याद करो; और न ही अतीत पर विचार करो. 19 देखो,
मैं एक नई बात करता हूं! जो अभी प्रकट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे?
मैं बंजर भूमि में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा. 20
मैदान के पशु सियार तथा शुतुरमुर्ग मेरी महिमा करेंगे, क्योंकि निर्जन स्थान में
नदियां तथा मरुस्थल में लोगों को पीने के लिए जल मिलेगा, 21 वे लोग, जिन्हें
मैंने इस उद्देश्य से बनाया है, कि वे मेरी प्रशंसा करें. 22 "याकोब, यह सब होने
पर भी तुमने मेरी महिमा नहीं की, इस्राएल, तुम तो मुझसे थक गए हो. 23
होमबलि के लिए अलग की गई भेड़ को तुम मेरे पास नहीं लाए, अपनी बलि
के द्वारा तुमने मेरा आदर नहीं किया. बलि चढ़ाने के लिए मैंने नहीं कहा न ही
धूप चढ़ाने के लिए मेरी इच्छा तुम पर बोझ बढ़ाने के लिए थी. 24 तुमने मेरे
लिए सुगंध सामग्री मोल नहीं लिया, और न तुमने मुझे बलियों की चर्बी चढ़ाई.
इसके बदले तुमने मुझ पर अपने पापों का बोझ ही डाल दिया है और अधर्म के
कामों से मुझे थका दिया है. 25 "मैं ही हूं, जो अपने नाम के निमित्त तुम्हारे
पापों को मिटा देता हूं, तुम्हारे पापों को मैं याद नहीं रखूंगा. 26 मुझे याद
दिलाओ, कि हम आपस में बातचीत करें; तुम अपनी सच्चाई को बताओ जिससे
तुम निर्दोष ठहरे. 27 तुम्हारे पूर्वजों ने पाप किया; और जो मेरे और तुम्हारे बीच
आए उन्होंने मुझसे बदला लिया. 28 इस कारण मैं पवित्र स्थान के शासकों को
अपवित्र कर दूंगा; मैं याकोब को सर्वनाश के लिए तथा इस्राएल को निंदा के
लिए छोड़ दूंगा.

44 "परंतु अब हे मेरे दास याकोब, हे मेरे चुने हुए इस्राएल, सुन लो. 2
याहवेह, जो तुम्हारे सहायक हैं, जिन्होंने गर्भ में ही तुम्हारी रचना कर दी

थी, वे यों कहते हैं: हे मेरे दास याकोब, हे मेरे चुने हुए यशुरून मत डर, तुम
भी, जो मेरे मनोनीत हो. 3 क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल, तथा सूखी भूमि
पर नदियां बहाऊंगा; मैं अपना आत्मा तथा अपनी आशीषें, तुम्हारी संतान पर
उंडेल दूंगा. 4 वे घास के बीच अंकुरित होने लगेंगे, और बहती जलधारा के
किनारे लगाए गए वृक्ष के समान होंगे. 5 कोई कहेगा, 'मैं तो याहवेह का हूं';
और याकोब के नाम की दोहाई देगा; और कोई अपनी हथेली पर, 'मैं याहवेह
का' लिख लेगा, वह इस्राएल का नाम अपना लेगा. 6 "वह जो याहवेह हैं,
सर्वशक्तिमान याहवेह इस्राएल के राजा, अर्थात् उसको छुड़ाने वाला है: वह यों
कहता है, मैं ही पहला हूं और मैं ही अंत तक रहूंगा; मेरे सिवाय कोई और
परमेश्वर है ही नहीं. 7 मेरे समान है कौन? जब से मैंने मनुष्यों को ठहराया तब
से किसने मेरे समान प्रचार किया? या वह बताये, मेरी बातों को पहले ही से
प्रकट करें. 8 तुम डरो मत, क्या मैंने बहुत पहले बता न दिया था. क्या मैंने
उसकी घोषणा न कर दी थी? याद रखो, तुम मेरे गवाह हो. क्या मेरे सिवाय कोई
और परमेश्वर है? या क्या कोई और चट्टान है? नहीं, मैं किसी और को नहीं
जानता." 9 वे सभी जो मूर्तियां बनाते हैं वे व्यर्थ हैं, उनसे कोई लाभ नहीं.
उनके साक्षी न कुछ देखते न कुछ जानते हैं; उन्हें लज्जित होना पड़ेगा. 10
कौन है ऐसा निर्बुद्धि जिसने ऐसे देवता की रचना की या ऐसी मूर्ति बनाई, जो
निर्जीव और निष्फल है? 11 देख उसके सभी साथियों को लज्जा का सामना
करना पड़ेगा; क्योंकि शिल्पकार स्वयं मनुष्य है. अच्छा होगा कि वे सभी एक
साथ खड़े हो जाएं तो डर जाएंगे; वे सभी एक साथ लज्जित किए जाएं. 12
लोहार लोहे को अंगारों से गर्म करके हथौड़ों से मारकर कोई रूप देता है; अपने
हाथों के बल से उस मूर्ति को बनाता है, फिर वह भूखा हो जाता है, उसकी
ताकत कम हो जाती है; वह थक जाता है, वह पानी नहीं पीता और कमजोर
होने लगता है. 13 एक और शिल्पकार वह काठ को रूप देता है वह माप का
प्रयोग करके काठ पर निशान लगाता है; वह काठ पर रन्दे चलाता है तथा
परकार से रेखा खींचता है, तथा उसे एक सुंदर व्यक्ति का रूप देता है. 14 वह
देवदार वृक्षों को अपने लिए काटता है, वह जंगलों से सनौवर तथा बांज को भी
बढ़ाता है. वह देवदार पौधा उगाता है, और बारिश उसे बढ़ाती है. 15 फिर इसे
मनुष्य आग जलाने के लिए काम में लेता है; आग से वह अपने लिए रोटी भी
बनाता है, और उसी से वह अपने लिए एक देवता भी गढ़ लेता है. वह इसके
काठ को गढ़ते हुए उसे मूर्ति का रूप देता है; और फिर इसी के समक्ष दंडवत भी
करता है. 16 इसका आधा तो जला देता है; जिस आधे पर उसने अपना भोजन
बनाया, मांस को पकाता, जिससे उसकी भूख मिटाये. "इसी आग से उसने
अपने लिए गर्मी भी पायी." 17 बचे हुए काठ से वह एक देवता का निर्माण कर
लेता है, उस देवता की गढ़ी गई मूर्ति; वह इसी के समक्ष दंडवत करता है. और
प्रार्थना करके कहता है, "मेरी रक्षा कीजिए! आप तो मेरे देवता हैं!" 18 वे न तो
कुछ जानते हैं और न ही कुछ समझते हैं; क्योंकि परमेश्वर ने उनकी आंखों को
अंधा कर दिया है, तथा उनके हृदय से समझने की शक्ति छीन ली है. 19 उनमें
से किसी को भी यह बात उदास नहीं करती, न कोई समझता है, "मैंने आधे वृक्ष
को तो जला दिया है; उसी के कोयलों पर मैंने भोजन तैयार किया, अपना मांस
को भूंजता, अब उसके बचे हुए से गलत काम किया." 20 उसने तो राख को
अपना भोजन बना लिया है; उसे एक ऐसे दिल ने बहका दिया है, जो स्वयं
भटक चुका है; स्वयं को तो वह मुक्त कर नहीं सकता, "जो वस्तु मैंने अपने
दाएं हाथ में पकड़ रखी है, क्या वह सच नहीं?" 21 "हे याकोब, हे इस्राएल,
इन सब बातों को याद कर, क्योंकि तुम तो मेरे सेवक हो. मैंने तुम्हारी रचना की
है; हे इस्राएल, यह हो नहीं सकता कि मैं तुम्हें भूल जाऊं. 22 तुम्हारे अपराधों
को मैंने मिटा दिया है जैसे आकाश से बादल, तथा तुम्हारे पापों को गहरे कोहरे
के समान दूर कर दिया है. तुम मेरे पास आ जाओ, क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ा लिया
है." 23 हे आकाश, आनंदित हो, क्योंकि याहवेह ने यह कर दिखाया है; हे
अधोलोक के पाताल भी खुश हो. हे पहाड़ों, आनंद से गाओ, क्योंकि याहवेह
ने याकोब को छुड़ा लिया है, तथा इस्राएल में उन्होंने अपनी महिमा प्रकट की
है. 24 "याहवेह तुम्हें उद्धार देनेवाले हैं, जिन्होंने गर्भ में ही तुम्हें रूप दिया था,
वह यों कहता है: "मैं ही वह याहवेह हूं, सबको बनानेवाला, मैंने आकाश को
बनाया, तथा मैंने ही पृथ्वी को अपनी शक्ति से फैलाया, 25 मैं झूठे लोगों की
बात को व्यर्थ कर देता हूं और भविष्य कहने वालों को खोखला कर देता हूं,
बुद्धिमान को पीछे हटा देता और पंडितों को मूर्ख बनाता हूं. 26 इस प्रकार
याहवेह अपने दास के वचन को पूरा करता हैं, तथा अपने दूतों की युक्ति को
सफल करता है वह मैं ही था, "जिसने येरूशलेम के विषय में यह कहा था कि,
'येरूशलेम नगर फिर बसाया जाएगा,' तथा यहूदिया के नगरों के लिए, 'उनका
निर्माण फिर किया जाएगा,' मैं उनके खंडहरों को ठीक करूंगा, 27 मैं ही हूं,
जो सागर की गहराई को आज्ञा देता हूं, 'सूख जाओ, मैं तुम्हारी नदियों को
सूखा दूंगा,' 28 मैं ही हूं वह, जिसने कोरेश के बारे में कहा था कि, 'वह मेरा
ठहराया हुआ चरवाहा है जो मेरी इच्छा पूरी करेगा; येरूशलेम के बारे में उसने
कहा, "उसको फिर से बसाया जायेगा," मंदिर के बारे में यह आश्वासन देगा,
"तुम्हारी नींव डाली जाएगी."'"

45 "परमेश्वर के अभिषिक्त कोरेश को याहवेह ने कहा, मैंने उसका दायां
हाथ थाम रखा है कि मैं उसके सामने जनताओं को उसके अधीन कर दूं
और राजाओं की कमर ढीली कर दूं, कि इसके लिए फाटक खोल दूं ताकि
फाटक बंद ही न हो सकें: 2 मैं तेरे आगे-आगे चलूंगा ऊंची-ऊंची भूमि को
सीधा बना दूंगा; मैं कांस्य के दरवाजों को चूर-चूर कर दूंगा लोहे के जंजीर को
काटता हुआ निकल जाऊंगा. 3 मैं तुम्हें अंधकार से छिपा हुआ, और गुप्त
स्थानों में गढ़ा हुआ धन दूंगा, कि तुम्हें यह मालूम हो जाये कि यह मैं ही वह
याहवेह, इस्राएल का परमेश्वर हूं, जो तुम्हें तुम्हारा नाम लेकर बुलाता है. 4 मेरे
सेवक याकोब के हित में, तथा मेरे चुने हुए इस्राएल के हित में, तुम्हारा नाम
लेकर मैंने बुलाया है, मैंने तुम्हें ऊंचा पद दिया है, परंतु तुम तो मुझे जानते भी न
थे. 5 मैं ही वह याहवेह हूं और कोई नहीं; मेरे सिवाय परमेश्वर कोई नहीं. मैं
तुम्हें विषमता के लिए सुसज्जित कर दूंगा, परंतु तुम मुझे जानते ही नहीं थे तो
भी मैं तुम्हारी कमर कसूंगा, 6 यह इसलिये कि पूर्व से पश्चिम तक सभी को यह
मालूम हो जाए, कि मेरे सिवाय कोई भी नहीं है. याहवेह मैं ही हूं, दूसरा और
कोई नहीं. 7 मैं वह हूं जो उजियाला और अंधियारे का सृजन करता हूं, मैं सुख-
शांति का दाता और विपत्ति को भी रचता हूं; मैं वह याहवेह हूं, जो इन सबका
नाश करता हूं. 8 "हे आकाश, अपनी ऊंचाई से धार्मिकता बरसा और बादल से
धार्मिकता की बारिश हो. पृथ्वी खुल जाए, जिससे उद्धार हो, और नीति भी
उसके साथ उगे; मैं, याहवेह ने ही इसकी सृष्टि की है. 9 "हाय उस व्यक्ति पर
जो अपने रचनेवाले से झगड़ता है, वह तो मिट्टी के बर्तनों के बीच मिट्टी का एक
बर्तन है. क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी कि, 'यह क्या कर रहे हो तुम मेरे साथ?'
क्या कारीगर की बनाई हुई वस्तु यह कहेगी कि, 'उसके तो हाथ ही नहीं हैं'?
10 हाय उस व्यक्ति पर जो अपने पिता से पूछे, 'किसे जन्म दे रहे हैं आप?' और
अपनी माता से पूछे, 'तू किसकी माता है?' 11 "याहवेह जो इस्राएल का पवित्र
और उसका बनानेवाला है, वे यों कहते हैं: क्या तुम होनेवाली घटनाओं के बारे
में मुझसे पूछोगे, क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के लिए मुझसे कहोगे? 12 मैं ही
हूं वह जिसने पृथ्वी को बनाया तथा मनुष्य की रचना की. अपने ही हाथों से
मैंने आकाश को फैलाया; और उसके सारे तारों को आज्ञा दी है. 13 मैंने उसे
धार्मिकता में जगाया: तथा अब मैं उसका मार्ग सीधा बनाऊंगा. वह मेरे नगरों को
बसायेगा तथा मेरे बंधक को, बिना किसी दाम अथवा बदला लिये छुड़ा लेगा,
यह सर्वशक्तिमान याहवेह की घोषणा है." 14 याहवेह का संदेश है: "मिस्र देश

की कमाई तथा कूश देश के व्यापार की लाभ सामग्री तथा सीबा के लोग स्वयं
तुमसे मिलने आएंगे तथा तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; वे झुककर दंडवत करेंगे, वे
तुमसे विनती करेंगे और कहेंगे. ‘परमेश्वर आपके साथ हैं, और दूसरा कोई नहीं
उसके सिवाय; कोई और परमेश्वर नहीं.’” 15 हे इस्राएल के परमेश्वर, हे
उद्धारकर्ता, सच तो यह है कि आप अपरंपार परमेश्वर हैं, जो स्वयं को अदृश्य
कर लेते हैं. 16 वे लज्जित किए जाएंगे यहां तक कि वे अपमानित हो जाएंगे, वे
सभी; वे जो मूर्तियों को बनानेवाले सब लज्जित और अपमानित किए जाएंगे.
17 इस्राएल याहवेह द्वारा छुड़ा दिया गया है, उनका यह छुटकारा सदा तक स्थिर
रहेगा; फिर न तो वे लज्जित किए जाएंगे, और न ही अपमानित होंगे. 18
आकाश का रचनेवाला याहवेह, वही परमेश्वर; जिन्होंने पृथ्वी की रचना कर
उसे रूप दिया, और उन्होंने इसे स्थिर किया; तथा इसमें एक भी स्थान ऐसा
नहीं जो बसाया गया न हो, लेकिन इसको इसलिये बनाया कि इसे बसाया
जाये— वह यों कहता है: “मैं ही वह याहवेह हूं, अन्य कोई भी नहीं. 19 मैंने
जो कुछ कहा है वह गुप्त में नहीं कहा है, न ही अंधकार में; मैंने याकोब के वंश
को यह नहीं कहा कि, ‘मेरी खोज व्यर्थ में करो.’ मैं, याहवेह, सत्य ही कहता
हूं; मैं सही बातें ही बताता आया हूं. 20 “हे अन्यजातियों में से बचे हुए लोगो,
एक साथ पास आओ; वे जो लकड़ी की खुदी हुई मूर्ति लेकर फिरते हैं. जिससे
उद्धार नहीं हो सकता, वे अनजान है इसलिये प्रार्थना करते हैं. 21 प्रचार करके
उनको लाओ, कि वे आपस में मिलें, किसने पहले ये बताया और सब प्रकट
किया. क्या मैं याहवेह ही ने यह सब नहीं किया? इसी लिये मुझे छोड़ और
कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता; परमेश्वर मैं ही हूं. 22 “हे
सारी पृथ्वी के लोगो, मेरी ओर फिरो; क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूं, कोई नहीं है
मेरे सिवाय. 23 मैंने अपनी ही शपथ ली है, धर्म के अनुसार मेरे मुंह से यह
वचन निकला है यह नहीं बदलेगा: हर एक घुटना मेरे सामने झुकेगा; और मुंह
से मेरी शपथ खाई जाएगी. 24 मेरे विषय में लोग कहेंगे कि, ‘केवल याहवेह में
ही नीति और शक्ति है.’” मनुष्य उनकी ओर चले आएंगे, वे सभी जिन्होंने उन
पर क्रोध किया वे लज्जित किए जाएंगे. 25 इस्राएल के सारे लोग याहवेह ही के
कारण धर्मी ठहरेंगे और उसकी महिमा करेंगे.

46 बाबेल की मूर्ति बेल और नेबो देवता झुक गए हैं; उनकी मूर्तियों को
पशुओं पर रखकर ले जाया जा रहा है. जिन वस्तुओं को वे उठाए फिरते
थे, वे अब बोझ बन गई है. 2 वे दोनों देवता ही झुक गए हैं; वे इन मूर्तियों के
बोझ को उठा न सके, वे तो स्वयं ही बंधुवाई में चले गए हैं. 3 “हे याकोब के
घराने, मेरी सुनो, इस्राएल के बचे हुए लोग, तुम भी सुनो! तुम तो जन्म ही से,
मेरी देखरेख में रहे हो. 4 तुम्हारे बुढ़ापे तक भी मैं ऐसा ही रहूंगा, तुम्हारे बाल
पकने तक मैं तुम्हें साथ लेकर चलूंगा. मैंने तुम्हें बनाया है और मैं तुम्हें साथ साथ
लेकर चलूंगा; इस प्रकार ले जाते हुए मैं तुम्हें विमुक्ति तक पहुंचा दूंगा. 5 “तुम
मेरी उपमा किससे दोगे तथा मुझे किसके समान बताओगे, कि हम दोनों एक
समान हो जाएं? 6 वे जो अपनी थैली से सोना उण्डेलते या कांटे से चांदी तौलते
हैं; जो सुनार को मजदूरी देकर देवता बनाते हैं, फिर उसको प्रणाम और दंडवत
करते हैं. 7 वे इस मूर्ति को अपने कंधे पर लेकर जाते हैं; और उसे उसके स्थान
पर रख देते हैं और वह वहीं खड़ी रहती है. वह मूर्ति अपनी जगह से हिलती
तक नहीं. कोई भी उसके पास खड़ा होकर कितना भी रोए, उसमें उत्तर देने की
ताकत नहीं; उसकी पीड़ा से उसे बचाने की ताकत उसमें नहीं है! 8 “यह
स्मरण रखकर दृढ़ बने रहो, हे अपराधियो, इसे मन में याद करते रहो. 9 उन
बातों को याद रखो, जो बहुत पहले हो चुकी हैं; क्योंकि परमेश्वर मैं हूं, मेरे
समान और कोई नहीं. 10 मैं अंत की बातें पहले से ही बताता आया हूं, प्राचीन
काल से जो अब तक पूरी नहीं हुई हैं. जब मैं किसी बात की कोई योजना
बनाता हूं, तो वह घटती है; मैं वही करता हूं जो मैं करना चाहता हूं 11 मैं पूर्व
दिशा से उकाब को; अर्थात् दूर देश से मेरी इच्छा पूरी करनेवाले पुरुष को बुलाता
हूं. मैंने ही यह बात कही; और यह पूरी होकर रहेगी. 12 हे कठोर मनवालो, तुम
जो धर्म से दूर हो, मेरी सुनो. 13 मैं अपनी धार्मिकता को पास ला रहा हूं, यह दूर
नहीं है; मेरे द्वारा उद्धार करने में देर न हो. मैं इस्राएल के लिए अपनी महिमा,
और ज़ियोन का उद्धार करूंगा.”

47 याहवेह कहते हैं, “बाबेल की कुंवारी बेटी, आओ, धूल में बैठ जाओ;
कसदियों की बेटी सिंहासन पर नहीं, अब धूल में बैठो. क्योंकि अब
तुम्हें कोई कोमल तथा सुकुमारी नहीं कहेगा. 2 चक्की लेकर आटा पीसो;
अपना घूंघट हटा दो. बाह्य वस्त्र उतार दो, कि नंगे पैर नदियां पार कर सको. 3
तुम्हारी नग्नता सामने आ जायेगी तुम्हारी लज्जा बाहर दिखेगी. मैं तुमसे बदला
लूंगा; और एक भी व्यक्ति छूट न सकेगा.” 4 हमें छुटकारा देनेवाले का नाम
है सर्वशक्तिमान याहवेह इस्राएल के पवित्र परमेश्वर है. 5 “हे कसदियों की
पुत्री, अंधकार में जाकर शांत बैठ जाओ; क्योंकि अब तुम महलों की रानी
नहीं कहलाओगी. 6 मैं अपनी प्रजा से अप्रसन्न था, मैंने अपने निज भाग को
अपवित्र किया; और तुम्हें सौंप दिया, तुमने उन पर दया नहीं की. बूढ़ों पर भारी
बोझ रख दिया. 7 फिर भी तुम ज़िद करती रही कि, ‘रानी तो सदैव मैं ही बनी
रहूंगी!’ न तो तुमने इन बातों का ध्यान रखा और न ही इसके बारे में सोचा. 8
“इसलिये, अब सुन, तुम जो इस समय सुरक्षित रह रही हो, जो मन ही मन सोच
रही हो कि, ‘मेरे सिवाय ऐसा कोई भी नहीं है. मैं विधवा के समान न बैठूंगी न
मेरे बच्चे मिटेंगे.’ 9 किंतु ये दोनों दुःख अचानक एक ही दिन में तुम पर आ
पड़ेंगे: बालकों की मृत्यु तथा विधवा हो जाना. तुम्हारे अनेक टोन्हों के होने पर
भी तथा जादू की शक्ति होते हुए भी यह होगा. 10 अपनी गलती में सुरक्षा का
अनुभव करते हुए तुमने यही सोचा कि, ‘कोई मुझे नहीं देख सकता.’ तुम्हारे ही
ज्ञान तथा तुम्हारी बुद्धि ने तुम्हें भटका दिया है क्योंकि तुमने मन ही मन सोचा
था, ‘मैं जो हूं, मेरे सिवाय ऐसा कोई भी नहीं है.’ 11 किंतु कष्ट तो तुम पर
आएगा ही, अपने जादू-टोने से इसे दूर कर पाना मुश्किल होगा. तुम पर तो
घोर विपत्ति टूट ही पड़ेगी जिसका सामना करना तुम्हारे लिए संभव न होगा;
यह ऐसी घोर विपत्ति होगी, जिसके विषय में तुम्हें मालूम न होगा यह तुम पर
अचानक आ पड़ेगी. 12 “अपने जादू-टोन्हों, जिसका तुमने बचपन से अभ्यास
किया है, कदाचित उससे तुमको फायदा होगा या शायद उनके बल से स्थिर रह
सकोगी! 13 तू तो कोशिश करते-करते थक गई है, अब ज्योतिषी, जो तारों और
नये चांद को देखकर होनहार बताते हैं, वे तुम्हें उससे बचाएं जो तुम पर घटने
वाली है. 14 देख वे भूसे के समान आग में जल जायेंगे, वे अपने आपको आग
से न बचा पायेंगे. यह तापने के लिए अंगार नहीं, और न ही सेंकने के लिए
आग! 15 जिनके साथ तुम मेहनत करती रही हो— बचपन से ही जिनसे तुम्हारा
लेनदेन होता रहा है. उनमें से हर एक अपने ही रास्ते पर भटक रहा है; तुम्हारी
रक्षा के लिए कोई भी नहीं बचा.

48 “हे याकोब के वंश, तुम जो इस्राएली कहलाते हो तथा जो यहूदाह की
संतान हो, जो याहवेह के नाम की शपथ लेते हो जो इस्राएल के परमेश्वर
की दोहाई देते हो— किंतु यह सब न तो सच्चाई से होता है और न धर्म से होता
है— 2 क्योंकि वे पवित्र होने का दावा करते हैं वे इस्राएल के परमेश्वर पर
भरोसा भी रखते हैं— जिनका नाम सर्वशक्तिमान याहवेह: 3 होनेवाली बातों को
पहले ही बताया है, यह मेरे ही मुंह से निकली और सब सच हो गई. 4 इसलिये
कि मुझे मालूम है कि तुम हठीले हो; तुम्हारी गर्दन लोहे की बनी हुई है, तथा
तुम्हारा सिर कांस्य का बना है. 5 इस कारण मैंने यह बात पहले ही बता दी थी;
उनके होने के पहले मैंने ये बता दिया था ताकि तुम यह न कहो कि, ‘यह तो मेरी
मूर्तियों ने किया जिसको हमने बनाया था.’ 6 तुम सुन चुके हो; अब यह देख

लो. क्या अब तुम इसकी घोषणा न करोगे? “अब मैं तुम्हें नई नई और गुप्त बातें सुनाऊंगा, जिन्हें तुम नहीं जानते. 7 इसकी रचना अभी की गई है पहले से नहीं; परंतु आज से पहले तुमने इसके विषय में नहीं सुना है. कि तुम यह कह सको कि, ‘यह तो मुझे पहले से ही मालूम था.’ 8 हां सच तुमने सुना नहीं, तुम्हें इसका ज्ञान तक न था; न तुम्हारे कान खोले गए थे क्योंकि मुझे मालूम था. कि तुम अवश्य धोखा दोगे; इस कारण गर्भ ही से तुम्हारा नाम अपराधी पड़ा है. 9 अपने ही नाम के कारण मैंने अपने क्रोध को रोक रखा है; अपनी ही महिमा के निमित्त तुम्हारे हित में मैं इसे रोके रहा, कि तुम मिट न जाओ. 10 यह देख, मैंने तुम्हें शुद्ध तो किया है, परंतु चांदी के समान मैंने तुम्हें दुःख देकर; जांच कर तुम्हें चुन लिया है. 11 अपने हित में, हां! अपने हित में, मैंने यह किया है. क्योंकि यह कैसे संभव हो सकता है कि मेरा नाम दूषित हो? अपनी महिमा किसी और को दो. 12 “हे याकोब, हे मेरे बुलाये हुए इस्राएल: मैं वही हूं; मैं ही आदि और अंत हूं. 13 इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे हाथों ने पृथ्वी की नींव रखी, मेरे दाएं हाथ ने आकाश को बढ़ाया है; जब मैं कहता हूं, वे एक साथ खड़े हो जाते हैं. 14 “तुम सब मेरी बात ध्यान से सुनो: उनमें से कौन है, जिसने इन बातों को बताया? याहवेह उससे प्रेम करते हैं वही बाबेल के बारे में याहवेह की इच्छा पूरी करेगा; याहवेह का हाथ कसदियों के ऊपर उठेगा. 15 मैंने कह दिया है; और मैंने उनको बुलाया है. मैं उसे लाया हूं, तथा याहवेह ही उसके काम को सफल करेंगे. 16 “मेरे पास आकर यह सुनो, “शुरू से अब तक मैंने कोई बात नहीं छुपाई; जिस समय ऐसा होता है, तब मैं वहां हूं.” और अब प्रभु याहवेह ने मुझे तथा अपनी आत्मा को भेज दिया है. 17 तुम्हें छुड़ाने वाला इस्राएल के पवित्र परमेश्वर, याहवेह यों कहते हैं: “मैं ही याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें वही सिखाता हूं, जो तुम्हारे लिए सही है, और जिस मार्ग में तुम्हें चलना चाहिये. 18 यदि तुमने मेरी बातों पर मात्र ध्यान दिया होता, तब तो तुम्हारी शांति नदी के समान, और तुम्हारा धर्म सागर की लहरों के समान होता. 19 तुम्हारे वंश बालू के कण के समान होते, मेरे कारण उनके नाम न तो मिटाए न ही काटे जाएंगे.” 20 बाबेल से निकल जाओ, कसदियों के बीच से भाग जाओ! जय जयकार के साथ बताओ, “याहवेह ने अपने सेवक याकोब को छुड़ा लिया है; यह बात पृथ्वी के छोर तक फैलाओ.” 21 जब याहवेह उन्हें मरुस्थल में से लेकर आए थे, वे प्यासे नहीं हुए; उनके लिए याहवेह ने चट्टान से जल निकाला था; उन्होंने चट्टान को चीरा और उसमें से जल फूट पड़ा था. 22 “दुष्टों को कोई शांति नहीं मिलेगी,” यह याहवेह का वचन है.

49 हे द्वीपो, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; हे दूर देश के लोगो, ध्यान दो! माता के गर्भ से याहवेह ने मुझे बुलाया; जब मैं अपनी माता की देह में ही था उन्होंने मुझे नाम दे दिया था. 2 उन्होंने मेरे मुंह को तलवार के समान तेज धार बना दिया है, उन्होंने मुझे अपने हाथ की छाया में छिपा रखा है; हां, उन्होंने मुझे एक विशेष तीर का रूप भी दे दिया है, और उन्होंने मुझे अपनी आड़ में छिपा लिया है. 3 उन्होंने मुझसे कहा, “इस्राएल तुम मेरे सेवक हो, तुम्हीं से मैं अपनी महिमा प्रकट करूंगा.” 4 तब मैंने कहा, “मेरी मेहनत व्यर्थ ही रही; अपना बल मैंने व्यर्थ ही खो दिया. तो भी निश्चय मेरा न्याय याहवेह के पास है, मेरा प्रतिफल मेरे परमेश्वर के हाथ में है.” 5 और वह याहवेह, जिन्होंने अपना सेवक होने के लिए मुझे माता के गर्भ से चुन लिया था कि वे याकोब को अपनी ओर लौटा ले आएं कि इस्राएल को एक साथ कर दिया जाए, क्योंकि मैं याहवेह के सम्मुख ऊंचा किया गया तथा मेरा परमेश्वर ही मेरा बल हैं. 6 याहवेह ने कहा: “याकोब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के बचे हुओं को वापस लाने के लिए मेरा सेवक बना यह तो मामूली बात है. मैं तो तुम्हें देशों के लिए ज्योति ठहराऊंगा, ताकि मेरा उद्धार पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक फैल जाए.” 7 जो घृणा का पात्र है, जो देश के द्वारा तुच्छ माना गया है— जो अपराधियों का सेवक है— उसके लिए इस्राएल का छुड़ाने वाला पवित्र परमेश्वर, अर्थात् याहवेह का संदेश यह है: “राजा उसे देखकर उठ खड़े होंगे, हाकिम भी दंडवत करेंगे, क्योंकि याहवेह ने, जो विश्वासयोग्य हैं, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर ने तुम्हें चुन लिया है.” 8 याहवेह ने कहा: “एक अनुकूल अवसर पर मैं तुम्हें उत्तर दूंगा, तथा उद्धार करने के दिन मैं तुम्हारी सहायता करूंगा; मैं तुम्हें सुरक्षित रखकर लोगों के लिए एक वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्थिर करे और उजड़े हुए मीरास को ठीक कर सके, 9 और जो बंधुवाई में हैं, ‘उन्हें छुड़ा सके,’ जो अंधकार में हैं, ‘उन्हें कहा जाए कि अपने आपको दिखाओ!’ “रास्ते पर चलते हुए भी उन्हें भोजन मिलेगा, सूखी पहाड़ियों पर भी उन्हें चराई मिलेगी. 10 न वे भूखे होंगे और न प्यासे, न तो लू और न सूर्य उन्हें कष्ट पहुंचा सकेंगे. क्योंकि, जिनकी दया उन पर है, वही उनकी अगुवाई करते हुए उन्हें पानी के सोतों तक ले जाएंगे. 11 मैं अपने सब पर्वतों को मार्ग बना दूंगा, तथा मेरे राजमार्ग ऊंचे किए जायेंगे. 12 देखो, ये लोग दूर देशों से कुछ उत्तर से, कुछ पश्चिम से तथा कुछ सीनीम देश से आएंगे.” 13 हे आकाश, जय जयकार करो; हे पृथ्वी, आनंदित होओ; हे पर्वतो, आनंद से जय जयकार करो! क्योंकि याहवेह ने अपनी प्रजा को शांति दी है और दीन लोगों पर दया की है. 14 परंतु ज़ियोन ने कहा, “याहवेह ने मुझे छोड़ दिया है, प्रभु मुझे भूल चुके हैं.” 15 “क्या यह हो सकता है कि माता अपने बच्चे को भूल जाए और जन्माए हुए बच्चे पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परंतु मैं नहीं भूल सकता! 16 देख, मैंने तेरा चित्र हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरे सामने बनी रहती है. 17 तेरे लड़के फुर्ती से आ रहे हैं, और उजाड़नेवाले तेरे बीच में से निकल रहे हैं. 18 अपनी आंख उठाकर अपने आस-पास देखो; वे सभी तुम्हारे पास आ रहे हैं.” याहवेह ने कहा “शपथ मेरे जीवन की, तुम उन सबको गहने के समान पहन लोगे; दुल्हन के समान अपने शरीर में सबको बांध लोगे. 19 “जो जगह सुनसान, उजड़ी, और जो देश खंडहर हैं, उनमें अब कोई नहीं रहेगा, और तुम्हें नष्ट करनेवाले अब दूर हो जायेंगे. 20 वे बालक जो तुझसे ले लिये गये वे फिर तुम्हारे कानों में कहेंगे, ‘मेरे लिए यह जगह छोटी है; मेरे लिये बड़ी जगह तैयार कीजिए की मैं उसमें रह सकूं.’ 21 तब तुम अपने मन में कहोगे, ‘कौन है जिसने इन्हें मेरे लिए जन्म दिया है? क्योंकि मेरे बालक तो मर गये हैं; बांझ थी मैं, यहां वहां घूमती रही. फिर इनका पालन पोषण किसने किया है? मुझे तो अकेला छोड़ दिया गया था, ये कहां से आए हैं?’” 22 प्रभु याहवेह ने कहा: “मैं अपना हाथ जाति-जाति के लोगों की ओर बढ़ाऊंगा, और उनके सामने अपना झंडा खड़ा करूंगा; वे तुम्हारे पुत्र व पुत्रियों को अपनी गोद में उठाएंगे. 23 राजा तेरे बच्चों का सेवक तथा उनकी रानियां दाईयां होंगी. वे झुककर तुम्हें दंडवत करेंगी; फिर तुम यह जान जाओगे कि मैं ही याहवेह हूं; मेरी बाट जोहने वाले कभी लज्जित न होंगे.” 24 क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है, अथवा क्या कोई अत्याचारी से किसी बंदी को छुड़ा सकता है? 25 निःसंदेह, याहवेह यों कहते हैं: “बलात्कारी का शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा, तथा निष्ठुर लोगों से लूट का समान वापस ले लिये जायेंगे; क्योंकि मैं उनसे मुकदमा लड़ूंगा जो तुमसे लड़ेगा, और मैं तुम्हारे पुत्रों को सुरक्षित रखूंगा. 26 जो तुमसे लड़ते हैं उन्हें मैं उन्हीं का मांस खिला दूंगा; वे अपना ही खून पीकर मतवाले हो जाएंगे. तब सब जान जायेंगे कि याहवेह ही तुम्हारा उद्धारकर्ता है, तेरा छुड़ाने वाला, याकोब का सर्वशक्तिमान परमेश्वर मैं ही हूं.”

50 याहवेह यों कहता है: “कहां है वह तलाक पत्र जो मैंने तुम्हारी माता से अलग होने पर दिया था या किसी व्यापारी को बेचा था? देखो तुम्हारे ही अधर्म के कारण तुम बेचे गये? और तुम्हारे ही पापों के कारण; तुम दूर किए गये. 2 मेरे यहां पहुंचने पर, यहां कोई पुरुष क्यों न था? मेरे पुकारने पर, जवाब

देने के लिये यहां कोई क्यों न था? क्या मेरा हाथ ऐसा कमजोर हो गया कि
छुड़ा नहीं सकता? या मुझमें उद्धार करने की शक्ति नहीं? देखो, मैं अपनी डांट
से ही सागर को सूखा देता हूं, और नदियों को मरुस्थल में बदल देता हूं; जल न
होने के कारण वहां की मछलियां मर जाती हैं और बदबू आने लगती है. 3 मैं ही
आकाश को दुःख का काला कपड़ा पहना देता हूं ओर टाट को उनका आवरण
बना देता हूं." 4 परमेश्वर याहवेह ने मुझे सिखाने वालों की जीभ दी है, ताकि मैं
थके हुओं को अपने शब्दों से संभाल सकूं. सुबह वह मुझे जगाता है, और
मेरे कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं. 5 वह जो प्रभु याहवेह हैं,
उन्होंने मेरे कान खोल दिए हैं; मैंने न तो विरोध किया, और न पीछे हटा. 6 मैंने
विरोधियों को अपनी पीठ दिखा दी, तथा अपने गाल उनके सामने किए, कि वे
मेरी दाढ़ी के बाल नोच लें; मैंने अपने मुंह को थूकने तथा मुझे लज्जित करने से
बचने के लिये नहीं छिपाया. 7 क्योंकि वह, जो प्रभु याहवेह हैं, मेरी सहायता
करते हैं, तब मुझे लज्जित नहीं होना पड़ा. और मैंने अपना मुंह चमका लिया
है, और मैं जानता हूं कि मुझे लज्जित होना नहीं पड़ेगा. 8 मेरे निकट वह है,
जो मुझे निर्दोष साबित करता है. कौन मुझसे लड़ेगा? चलो, हम आमने-सामने
खड़े होंगे! कौन मुझ पर दोष लगाएगा? वह मेरे सामने आए! 9 सुनो, वह जो
प्रभु याहवेह हैं, मेरी सहायता करते हैं. कौन मुझे दंड की आज्ञा देगा? देखो, वे
सभी वस्त्र समान पुराने हो जाएंगे; उन्हें कीड़े खा जाएंगे. 10 तुम्हारे बीच ऐसा
कौन है जो याहवेह का भय मानता है, जो उनके सेवक की बातों को मानता है?
जो अंधकार में चलता है, जिसके पास रोशनी नहीं, वह याहवेह पर भरोसा रखे
तथा अपने परमेश्वर पर आशा लगाये रहे. 11 तुम सभी, जो आग जलाते और
अपने आस-पास आग का तीर रखे हुए हो, तुम अपने द्वारा जलाई हुई आग में
जलते रहो, जो तुमने जला रखे हैं. मेरी ओर से यही होगा: तुम यातना में पड़े
रहोगे.

51 "हे धर्म पर चलने वालो, ध्यान से मेरी सुनो, तुम, जो याहवेह के खोजी
हो: उस चट्टान पर विचार करो जिसमें से तुम्हें काटा गया है तथा उस
खान पर जिसमें से तुम्हें खोदकर निकाला गया है; 2 अपने पूर्वज अब्राहाम और
साराह पर ध्यान दो. जब मैंने उनको बुलाया तब वे अकेले थे, तब मैंने उन्हें
आशीष दी और बढ़ाया. 3 याहवेह ने ज़ियोन को शांति दी है और सब उजाड़
स्थानों को भी शांति देंगे; वह बंजर भूमि को एदेन वाटिका के समान बना देंगे,
तथा उसके मरुस्थल को याहवेह की वाटिका के समान बनाएंगे. वह आनंद एवं
खुशी से भरा होगा, और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई देगा. 4 "हे
मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान दो; हे मेरे लोगो मेरी बात सुनो: क्योंकि मैं
एक नियम दूंगा; जो देश-देश के लोगों के लिए ज्योति होगा. 5 मेरा छुटकारा
निकट है, मेरा उद्धार प्रकट हो चुका है, मेरा हाथ लोगों को न्याय देगा. द्वीप मेरी
बाट जोहेंगे और मेरे हाथों पर आशा रखेंगे. 6 आकाश की ओर देखो, और
पृथ्वी को देखो; क्योंकि आकाश तो धुएं के समान छिप जाएगा, तथा पृथ्वी
पुराने वस्त्र के समान पुरानी हो जाएगी, और पृथ्वी के लोग भी मक्खी जैसी मृत्यु
में उड़ जाएंगे. परंतु जो उद्धार मैं करूंगा वह सर्वदा स्थिर रहेगा, और धर्म का
अंत न होगा. 7 "तुम जो धर्म के माननेवाले हो, मेरी सुनो, जिनके मन में मेरी
व्यवस्था है: वे मनुष्यों द्वारा की जा रही निंदा से न डरेंगे और न उदास होंगे. 8
क्योंकि कीट उन्हें वस्त्र के समान नष्ट कर देंगे; तथा कीड़ा उन्हें ऊन के समान
खा जाएगा. परंतु धर्म सदा तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा."
9 हे याहवेह, जाग, और शक्ति को पहन ले! जैसे पहले युग में, पीढ़ियां जागी
थी. क्या तुम्हीं ने उस राहाब के टुकड़े न किए, और मगरमच्छ को छेदा? 10
क्या आप ही न थे जिन्होंने सागर को सुखा दिया, जो बहुत गहरा था, और
जिसने सागर को मार्ग में बदल दिया था और छुड़ाए हुए लोग उससे पार हुए?
11 इसलिये वे जो याहवेह द्वारा छुड़ाए गए हैं. वे जय जयकार के साथ ज़ियोन में
आएंगे; उनके सिर पर आनंद के मुकुट होंगे. और उनका दुःख तथा उनके
आंसुओं का अंत हो जायेगा, तब वे सुख तथा खुशी के अधिकारी हो जाएंगे. 12
"मैं, हां! मैं ही तेरा, शान्तिदाता हूं. कौन हो तुम जो मरने वाले मनुष्य और
उनकी संतान से, जो घास समान मुरझाते हैं, उनसे डरते हो, 13 तुम याहवेह
अपने सृष्टिकर्ता को ही भूल गये, जिन्होंने आकाश को फैलाया और पृथ्वी की
नींव डाली! जब विरोधी नाश करने आते हैं तब उनके क्रोध से तुम दिन भर
कांपते हो, द्रोही जलजलाहट करता रहता था. किंतु आज वह क्रोध कहां है? 14
शीघ्र ही वे, जो बंधन में झुके हुए हैं, छोड़ दिए जाएंगे; गड्ढे में उनकी मृत्यु न
होगी, और न ही उन्हें भोजन की कमी होगी. 15 क्योंकि मैं ही वह याहवेह
तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो सागर को उथल-पुथल करता जिससे लहरें गर्जन करने
लगती हैं— उनका नाम है याहवेह त्सबाओथ 16 मैंने तुम्हारे मुंह में अपने वचन
डाले हैं तथा तुम्हें अपने हाथ की छाया से ढांप दिया है— ताकि मैं आकाश को
बनाऊं और, पृथ्वी की नींव डालूं, तथा ज़ियोन को यह आश्वासन दूं, 'तुम मेरी
प्रजा हो.'" 17 हे येरूशलेम, जाग उठो! तुमने तो याहवेह ही के हाथों से उनके
क्रोध के कटोरे में से पिया है. तुमने कटोरे का लड़खड़ा देनेवाला मधु पूरा पी
लिया है. 18 उससे जन्मे पुत्रों में से ऐसा कोई भी नहीं है, जो उनकी अगुवाई
करे; न कोई है जो उनका हाथ थामे. 19 तुम्हारे साथ यह दो भयावह घटनाएं
घटी हैं— अब तुम्हारे लिए कौन रोएगा? उजाड़ और विनाश, अकाल तथा
तलवार आई है— उससे कौन तुम्हें शांति देगा? 20 तुम्हारे पुत्र मूर्छित होकर
गली के छोर पर, जाल में फंसे पड़े हैं. याहवेह के क्रोध और परमेश्वर की डांट
से वे भर गये हैं. 21 इस कारण, हे पीड़ित सुनो, तुम जो मतवाले तो हो, किंतु
दाखमधु से नहीं. 22 प्रभु अपने लोगों की ओर से युद्ध करते हैं, याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर ने कहा हैं: "देखो, मैंने तुम्हारे हाथों से वह कटोरा ले लिया है; जो
लड़खड़ा रहा है और, मेरे क्रोध का घूंट, अब तुम इसे कभी न पियोगे. 23 इसे
मैं तुम्हें दुःख देने वालो के हाथ में दे दूंगा, जिन्होंने तुमसे कहा था, 'भूमि पर
लेटो, कि हम तुम पर से होकर चल सकें.' तुमने अपनी पीठ भूमि पर करके
मार्ग बनाया, ताकि वे उस पर चलें."

52 हे ज़ियोन, जागो, और अपना बल पाओ! हे पवित्र नगर येरूशलेम,
अपने सुंदर वस्त्र पहन लो. क्योंकि अब न तो खतना-रहित और न ही
अशुद्ध व्यक्ति आएंगे. 2 हे येरूशलेम, तुम जो बंदी हो, अपने ऊपर से धूल झाड़
कर उठ जाओ. ज़ियोन की बंदी पुत्री, अपने गले में पड़ी हुई जंजीर को उतार
दो. 3 क्योंकि याहवेह यों कहते हैं: "तुम तो बिना किसी मूल्य के बिक गए थे,
तथा बिना मूल्य चुकाए छुड़ाए भी जाओगे." 4 क्योंकि प्रभु याहवेह यों कहते
हैं: "पहले मेरे लोग मिस्र देश इसलिये गए थे, कि वे वहां परदेशी होकर रहें;
अश्शूरियों ने उन्हें बिना कारण दुःख दिये." 5 याहवेह ने कहा है: "बिना किसी
कारण मेरे लोग बंधक बना लिए गए, अब मेरे पास क्या रह गया है," याहवेह
यों कहते हैं. "वे जो उन पर शासन कर रहे हैं, उनको सता रहे हैं, वे पूरे दिन मेरे
नाम की निंदा करते हैं. 6 इस कारण अब मेरी प्रजा मेरे नाम को पहचानेगी; और
उन्हें यह मालूम हो जाएगा कि मैं ही हूं, कि मैं ही हूं जो यह कह रहा है. हां, मैं
यहां हूं." 7 पर्वतों पर से आते हुए उनके पैर कैसे शुभ हैं, जो शुभ संदेश ला रहे
हैं, जो शांति, और भलाई की बात सुनाते हैं, जो उद्धार की घोषणा करते हैं, तथा
ज़ियोन से कहते हैं, "राज्य तुम्हारे परमेश्वर का है!" 8 सुनो! तुम्हारे पहरा
देनेवाले ऊंचे शब्द से पुकार रहे हैं; वे सभी मिलकर जय जयकार कर रहे हैं.
क्योंकि वे देखेंगे, कि याहवेह ज़ियोन को वापस बनाएंगे. 9 हे येरूशलेम के
उजड़े स्थानो, तुम उच्च स्वर से जय जयकार करो, क्योंकि याहवेह ने अपने
लोगों को शांति दी है, उन्होंने येरूशलेम को छुड़ा दिया है. 10 याहवेह ने अपना
पवित्र हाथ सभी देशों को दिखा दिया है, कि पृथ्वी के दूर-दूर देश के सब लोग
हमारे परमेश्वर के द्वारा किए गये उद्धार को देखेंगे. 11 चले जाओ यहां से! किसी

भी अशुद्ध वस्तु को हाथ न लगाओ! तुम जो याहवेह के पात्रों को उठानेवाले हो,
नगर के बीच से निकलकर बाहर चले जाओ तथा अपने आपको शुद्ध करो. 12
फिर भी तुम बाहर जाने में उतावली न करना न ही तुम ऐसे जाना मानो तुम चल
रहे हो; क्योंकि याहवेह तुम्हारे आगे-आगे चलेंगे, तथा इस्राएल का परमेश्वर
तुम्हारे पीछे भी रक्षा करते चलेंगे. 13 देखो, मेरा सेवक बढ़ता जाएगा; वह
ऊंचा महान और अति महान हो जाएगा. 14 मेरे लोग जिस प्रकार तुम्हें देखकर
चकित हुए— क्योंकि उसका रूप व्यक्ति से तथा उसका डीलडौल मनुष्यों से
अधिक बिगड़ चुका था— 15 वैसे ही वह बहुत सी जातियों को छिड़केगा,
राजा शांत रहेंगे क्योंकि जो बातें नहीं कही गई थी. वे उनके सामने आएंगी,
और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना था, उन्हें समझ आ जाएगा.

53 किसने हमारी बातों पर विश्वास किया और याहवेह के हाथ किस पर
प्रकट हुए हैं? 2 क्योंकि वह जो उनके सामने अंकुर के समान और ऐसे
उगा जैसे सूखी भूमि से निकला हो. उसका रूप न तो सुंदर था न प्रभावशाली
कि हमें अच्छा लगे, न ही ऐसा रूप कि हम उसकी ओर देखते. 3 वह तो
मनुष्यों द्वारा तुच्छ जाना जाता तथा त्यागा हुआ था, वह दुःखी पुरुष था, रोगों से
परिचित था. उसे देखकर लोग अपना मुंह छिपा लेते हैं वह तुच्छ जाना गया,
और हमने उसके महत्व को न जाना. 4 उसने हमारे रोगों को सह लिया और
उठा लिया उसने हमारे ही दुखों को अपने ऊपर ले लिया, स्वयं हमने उसे
परमेश्वर द्वारा मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा. 5 हमारे पापों के
कारण ही उसे रौंदा गया, हमारे अधर्म के कामों के कारण वह कुचला गया;
उसके कोड़े खाने से, हम चंगे हुए. 6 हम सभी भेड़ों के समान भटक गए थे,
हममें से हर एक ने अपना मनचाहा मार्ग अपना लिया; किंतु याहवेह ने हम सभी
के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया. 7 वह सताया गया और, फिर भी कुछ न
कहा; वध के लिए ले जाए जा रहे मेमने के समान उसको ले जाया गया, तथा
जैसे ऊन कतरनेवाले के सामने मेमना शांत रहता है, वैसे ही उसने भी अपना
मुख न खोला. 8 अत्याचार करके और दोष लगाकर उसे दंड दिया गया. वह
जीवितों के बीच में से उठा लिया गया; मेरे ही लोगों के पापों के कारण उसे
मार पड़ी. 9 उसकी कब्र दुष्ट व्यक्तियों के साथ रखी गई, फिर भी अपनी मृत्यु
में वह एक धनी व्यक्ति के साथ था, क्योंकि न तो उससे कोई हिंसा हुई थी,
और न उसके मुंह से कोई छल की बात निकली. 10 तो भी याहवेह को यही
अच्छा लगा की उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया, ताकि वह अपने
आपको पाप बलिदान के रूप में अर्पित करें, तब वह अपने वंश को देख पायेंगे
और वह बहुत दिन जीवित रहेंगे, तथा इससे याहवेह की इच्छा पूरी होगी. 11
और अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेंगे और संतोष पायेंगे; अपने ज्ञान के
द्वारा वह जो धर्मी व्यक्ति है मेरा सेवक अनेकों को धर्मी बनाएगा, क्योंकि वही
उनके पाप का बोझ उठाएगा. 12 अतः मैं उसे महान लोगों के साथ एक भाग
दूंगा, वह लूटी हुई चीज़ों को सामर्थ्यी व्यक्तियों में बांट देगा, उसने अपने प्राणों
को मृत्यु में ढाल दिया, उसकी गिनती अपराधियों में की गई. फिर भी उसने
अनेकों के पाप का बोझ उठाया, और अपराधियों के लिए मध्यस्थता की!

54 यह याहवेह की वाणी है, "बांझ, तुम, जो संतान पैदा करने में असमर्थ
हो, आनंदित हो. तुम, जो प्रसव पीड़ा से अनजान हो, जय जयकार करो,
क्योंकि त्यागी हुई की संतान, सुहागन की संतान से अधिक है. 2 अपने तंबू के
पर्दों को फैला दो, इसमें हाथ मत रोको; अपनी डोरियों को लंबा करो, अपनी
खूंटियों को दृढ़ करो. 3 क्योंकि अब तुम दाएं तथा बाएं दोनों ही ओर को
बढ़ाओगे; तुम्हारे वंश अनेक देशों के अधिकारी होंगे और उजड़े हुए नगर को
फिर से बसाएंगे. 4 "मत डर; क्योंकि तुम्हें लज्जित नहीं होना पड़ेगा. मत
घबरा; क्योंकि तू फिर लज्जित नहीं होगी. तुम अपनी जवानी की लज्जा
को भूल जाओगे और अपने विधवापन की बदनामी को फिर याद न रखोगे.
5 क्योंकि तुम्हें रचनेवाला तुम्हारा पति है— जिसका नाम है त्सबाओथ के
याहवेह— तथा इस्राएल के पवित्र परमेश्वर हैं; जिन्हें समस्त पृथ्वी पर परमेश्वर
नाम से जाना जाता है. 6 क्योंकि याहवेह ने तुम्हें बुलाया है तुम्हारी स्थिति उस
पत्नी के समान थी— जिसको छोड़ दिया गया हो, और जिसका मन दुःखी था,"
तेरे परमेश्वर का यही वचन है. 7 "कुछ पल के लिए ही मैंने तुझे छोड़ा था,
परंतु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा. 8 कुछ ही क्षणों के लिए क्रोध
में आकर तुमसे मैंने अपना मुंह छिपा लिया था, परंतु अब अनंत करुणा और प्रेम
के साथ मैं तुम पर दया करूंगा," तेरे छुड़ानेवाले याहवेह का यही वचन है. 9
"क्योंकि मेरी दृष्टि में तो यह सब नोहा के समय जैसा है, जब मैंने यह शपथ ली
थी कि नोहा के समय हुआ जैसा जलप्रलय अब मैं पृथ्वी पर कभी न करूंगा.
अतः अब मेरी यह शपथ है कि मैं फिर कभी तुम पर क्रोध नहीं करूंगा, न ही
तुम्हें कभी डाटूंगा. 10 चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जायें, तो भी
मेरा प्रेम कभी भी तुम पर से न हटेगा तथा शांति की मेरी वाचा कभी न टलेगी,"
यह करुणामय याहवेह का वचन है. 11 "हे दुखियारी, तू जो आंधी से सताई है
और जिसको शांति नहीं मिली, अब मैं तुम्हारी कलश को अमूल्य पत्थरों से
जड़ दूंगा, तथा तुम्हारी नीवों को नीलमणि से बनाऊंगा. 12 और मैं तुम्हारे
शिखरों को मूंगों से, तथा तुम्हारे प्रवेश द्वारों को स्फटिक से निर्मित करूंगा.
13 वे याहवेह द्वारा सिखाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शांति मिलेगी. 14 तू
धार्मिकता के द्वारा स्थिर रहेगी: अत्याचार तुम्हारे पास न आएगा; तुम निडर बने
रहना; डर कभी तुम्हारे पास न आएगा. 15 यदि कोई तुम पर हमला करे, तो
याद रखना वह मेरी ओर से न होगा; और वह तुम्हारे द्वारा हराया जाएगा. 16
"सुन, लोहार कोयले की आग में हथियार बनाता है, वह मैंने ही बनाया है और
बिगाड़ने के लिये भी मैंने एक को बनाया है. 17 कोई भी हथियार ऐसा नहीं
बनाया गया, जो तुम्हें नुकसान पहुंचा सके, तुम उस व्यक्ति को, जो तुम पर
आरोप लगाता है, दंड दोगे. याहवेह के सेवकों का भाग यही है, तथा उनकी
धार्मिकता मेरी ओर से है," याहवेह ही का यह वचन है.

55 "हे सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; जिनके पास धन नहीं, वे भी
आकर दाखमधु और दूध बिना मोल ले जाएं! 2 जो खाने का नहीं है उस
पर धन क्यों खर्च करते हो? जिससे पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों मेहनत
करते हो? ध्यान से मेरी सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाओगे, और तृप्त होंगे. 3 मेरी
सुनो तथा मेरे पास आओ; ताकि तुम जीवित रह सको. और मैं तुम्हारे साथ सदा
की वाचा बांधूंगा, जैसा मैंने दावीद से किया था. 4 मैंने उसे देशों के लिए
गवाह, प्रधान और आज्ञा देनेवाला बनाया है. 5 अब देख इस्राएल के पवित्र
परमेश्वर याहवेह, ऐसे देशों को बुलाएंगे, जिन्हें तुम जानते ही नहीं, और ऐसी
जनता, जो तुम्हें जानता तक नहीं, तुम्हारे पास आएगी, क्योंकि तुम्हें परमेश्वर
ने शोभायमान किया है." 6 जब तक याहवेह मिल सकते हैं उन्हें खोज लो; जब
तक वह पास हैं उन्हें पुकार लो. 7 दुष्ट अपनी चालचलन और पापी अपने
सोच-विचार छोड़कर याहवेह की ओर आए. तब याहवेह उन पर दया करेंगे,
जब हम परमेश्वर की ओर आएंगे, तब वह हमें क्षमा करेंगे. 8 क्योंकि याहवेह
कहते हैं, "मेरे और तुम्हारे विचार एक समान नहीं, न ही तुम्हारी गति और मेरी
गति एक समान है. 9 क्योंकि जिस प्रकार आकाश और पृथ्वी में अंतर है, उसी
प्रकार मेरे और तुम्हारे कामों में बहुत अंतर है तथा मेरे और तुम्हारे विचारों में भी
बहुत अंतर है. 10 क्योंकि जिस प्रकार बारिश और ओस आकाश से गिरकर
भूमि को सींचते हैं, जिससे बोने वाले को बीज, और खानेवाले को रोटी मिलती
है, 11 वैसे ही मेरे मुंह से निकला शब्द व्यर्थ नहीं लौटेगा: न ही उस काम को
पूरा किए बिना आयेगा जिसके लिये उसे भेजा गया है. 12 क्योंकि तुम आनंद
से निकलोगे तथा शांति से पहुंचोगे; तुम्हारे आगे पर्वत एवं घाटियां जय जयकार

करेंगी, तथा मैदान के सभी वृक्ष आनंद से ताली बजायेंगे. 13 कंटीली झाड़ियों
की जगह पर सनोवर उगेंगे, तथा बिच्छुबूटी की जगह पर मेंहदी उगेंगी. इससे
याहवेह का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह है, उसे कभी मिटाया न जाएगा.”

56 याहवेह यों कहते हैं: “न्याय का यों पालन करो तथा धर्म के काम करो,
क्योंकि मैं जल्द ही तुम्हारा उद्धार करूंगा, मेरा धर्म अब प्रकट होगा. 2
क्या ही धन्य है वह व्यक्ति जो ऐसा ही करता है, वह मनुष्य जो इस पर अटल
रहकर इसे थामे रहता है, जो शब्बाथ को दूषित न करने का ध्यान रखता है,
तथा किसी भी गलत काम करने से अपने हाथ को बचाये रखता है.” 3 जो
परदेशी याहवेह से मिल चुका है, “यह न कहे कि निश्चय याहवेह मुझे अपने
लोगों से अलग रखेंगे.” खोजे भी यह कह न सके, “मैं तो एक सुखा वृक्ष हूं.”
4 इस पर याहवेह ने कहा है: “जो मेरे विश्राम दिन को मानते और जिस बात से मैं
खुश रहता हूं, वे उसी को मानते और वाचा का पालन करते हैं— 5 उन्हें मैं
अपने भवन में और भवन की दीवारों के भीतर एक यादगार बनाऊंगा तथा एक
ऐसा नाम दूंगा; जो पुत्र एवं पुत्रियों से उत्तम और स्थिर एवं कभी न मिटेगा. 6
परदेशी भी जो याहवेह के साथ होकर उनकी सेवा करते हैं, और याहवेह के नाम
से प्रीति रखते है, उसके दास हो जाते है, और विश्राम दिन को अपवित्र नहीं
करते हुए पालते है, तथा मेरी वाचा पूरी करते हैं— 7 मैं उन्हें भी अपने पवित्र
पर्वत पर तथा प्रार्थना भवन में लाकर आनंदित करूंगा. उनके चढ़ाए होमबलि
तथा मेलबलि ग्रहण करूंगा; क्योंकि मेरा भवन सभी देशों के लिए प्रार्थना भवन
कहलाएगा.” 8 प्रभु याहवेह, जो निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा कर रहे हैं:
“उनका संदेश है कि जो आ चुके हैं, मैं उनमें औरों को भी मिला दूंगा.” 9 हे
मैदान के पशुओ, हे जंगली पशुओ, भोजन के लिए आ जाओ! 10 अंधे हैं उनके
पहरेदार, अज्ञानी हैं वे सभी; वे ऐसे गूंगे कुत्ते हैं, जो भौंकते नहीं; बिछौने पर
लेटे हुए स्वप्न देखते, जिन्हें नींद प्रिय है. 11 वे कुत्ते जो लोभी हैं; कभी तृप्त
नहीं होते. ऐसे चरवाहे जिनमें समझ ही नहीं; उन सभी ने अपने ही लाभ के
लिए, अपना अपना मार्ग चुन लिया. 12 वे कहते हैं, “आओ, हम दाखमधु
पीकर तृप्त हो जाएं! कल का दिन भी आज के समान, या इससे भी बेहतर
होगा.”

57 धर्मी व्यक्ति नाश होते हैं, और कोई इस बात की चिंता नहीं करता; भक्त
उठा लिये जाते हैं, परंतु कोई नहीं सोचता. धर्मी जन आनेवाली परेशानी
से बचने के लिये उठा लिये जाते हैं. 2 वे शांति पहचानते हैं, वे अपने बिछौने पर
आराम पाते हैं; जो सीधी चाल चलते हैं. 3 “परंतु हे जादूगरनी, व्यभिचारी और
उसकी संतान यहां आओ! 4 तुम किस पर हंसते हो? किसके लिए तुम्हारा मुंह
ऐसा खुल रहा है किस पर जीभ निकालते हो? क्या तुम अत्याचार व झूठ की
संतान नहीं हो? 5 सब हरे वृक्ष के नीचे कामातुर होते हो और नालों में तथा
चट्टानों की गुफाओं में अपने बालकों का वध करते रहते हो. 6 तुम्हारा संबंध
तो चट्टान के उन चिकने पत्थरों से है; वही तुम्हारा भाग और अंश है. तुम उन्हीं
को अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाते हो. क्या इन सबसे मेरा मन शांत हो जाएगा?
7 ऊंचे पर्वत पर तुमने अपना बिछौना लगाया है; और तुमने वहीं जाकर बलि
चढ़ाई है. 8 द्वार तथा द्वार के चौखट के पीछे तुमने अपने अन्य देवताओं का
चिन्ह बनाया है, तुमने अपने आपको मुझसे दूर कर लिया है. तुमने वहां अपनी
देह दिखाई, तब तुमने अपने बिछौने के स्थान को बढ़ा लिया; तुमने उनके साथ
अपने लिए एक संबंध बना लिया, तुम्हारे लिए उनका बिछौना प्रिय हो गया,
और उनकी नग्न शरीरों पर आसक्ति से नज़र डाली! 9 राजा से मिलने के लिए
तुमने यात्रा की तथा सुगंध द्रव्य से श्रृंगार कर उसे तेल भेंट किया. तुमने दूर देशों
और अधोलोक में अपना दूत भेजा! (Sheol h7585) 10 तुम तो लंबे मार्ग के
कारण थक चुके थे, फिर भी तुमने यह न कहा कि, ‘व्यर्थ ही है यह.’ तुममें नए
बल का संचार हुआ, तब तुम थके नहीं. 11 “कौन था वह जिससे तुम डरती थी
जब तुमने मुझसे झूठ कहा, तथा मुझे भूल गई, तुमने तो मेरे बारे में सोचना ही
छोड़ दिया था? क्या मैं बहुत समय तक चुप न रहा तुम इस कारण मेरा भय नहीं
मानती? 12 मैं तुम्हारे धर्म एवं कामों को बता दूंगा, लेकिन यह तुम्हारे लिए
अच्छा नहीं होगा. 13 बुलाने पर, तुम्हारी मूर्तियां ही तुम्हारी रक्षा करें! किंतु
होगा यह कि हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी, केवल श्वास उन्हें दूर कर देगी. परंतु वे
जो मुझ पर भरोसा रखते हैं, वह देश के अधिकारी होंगे, तथा वह मेरे पवित्र
पर्वत का स्वामी हो जाएगा.” 14 तब यह कहा जाएगा: “निर्माण करो, निर्माण
करो, पांति बांधकर राजमार्ग बनाओ! हर एक स्कावट मेरी प्रजा के मार्ग से
हटाई जाए.” 15 क्योंकि जो महान, उत्तम और सदा-सर्वदा जीवित रहते हैं—
जिनका नाम ही पवित्र है, वे यों कहते हैं: “मैं ऊंचे एवं पवित्र स्थान में निवास
करता हूं, और दुःखी तथा नम्र लोगों के साथ भी रहता हूं, ताकि मैं नम्र और
दुःखी लोगों के मन को खुशी दूं. 16 क्योंकि मैं सदा-सर्वदा वाद-विवाद करता
न रहूंगा, न ही मैं सर्वदा स्ठा रहूंगा, क्योंकि वे आत्माएं मेरी बनायी हुई हैं—
और जीव मेरे सामने मूर्छित हो जाते हैं. 17 उसके लालच के कारण मैं उससे
क्रोधित होकर; उसको दुःख दिया और मुंह छिपाया था, पर वह अपनी इच्छा से
दूर चला गया था. 18 मैंने उसका चालचलन देखा है, फिर भी अब उसको चंगा
करूंगा; मैं उसे ले चलूंगा तथा उसके शोक करनेवालों को शांति दूंगा, 19 मैं
उनके होंठों के फल का रचनेवाला हूं. जो दूर हैं उन्हें शांति, और पास हैं उन्हें
भी मैं शांति दूंगा,” यह याहवेह का वचन है, “मैं उसे चंगा करूंगा.” 20 परंतु
दुष्ट लहराते हुए सागर समान है, जो स्थिर रह ही नहीं सकता, उसकी तरंगें
कचरे और कीचड़ को उछालती रहती हैं. 21 मेरे परमेश्वर का वचन है, “दुष्टों
के लिए शांति नहीं.”

58 “ऊंचे स्वर में नारा लगाओ बिना किसी रोक के. नरसिंगों का शब्द
ऊंचा करो, मेरी प्रजा को उनकी गलती, तथा याकोब वंश पर उसके
पाप की घोषणा करो. 2 यह सब होने पर भी वे दिन-प्रतिदिन मेरे पास आते;
तथा प्रसन्नतापूर्वक मेरी आज्ञाओं को मानते हैं. मानो वे धर्मी हैं, जिसने अपने
परमेश्वर के नियम को नहीं टाला. वे मुझसे धर्म के बारे में पूछते और परमेश्वर
के पास आने की इच्छा रखते हैं. 3 ‘ऐसा क्यों हुआ कि हमने उपवास किया,
किंतु हमारी ओर आपका ध्यान ही नहीं गया? हमने दुःख उठाया, किंतु आपको
दिखाई ही नहीं दिया?’ “इसका कारण यह है कि जब तुम उपवास करते हो,
तब तुम अपनी अभिलाषाओं पर नियंत्रण नहीं रखते, तुम उस समय अपने
सेवकों को कष्ट देते हो. 4 तुम यह समझ लो कि तुम उपवास भी करते हो तथा
इसके साथ साथ वाद-विवाद, तथा कलह भी करते हो और लड़ते झगड़ते हो.
उस प्रकार के उपवास से यह संभव ही नहीं कि तुम्हारी पुकार सुनी जाएगी. 5
क्या ऐसा होता है उपवास, जो कोई स्वयं को दीन बनाए? या कोई सिर झुकाए
या टाट एवं राख फैलाकर बैठे? क्या इसे ही तुम उपवास कहोगे, क्या ऐसा
उपवास याहवेह ग्रहण करेंगे? 6 “क्या यही वह उपवास नहीं, जो मुझे खुशी
देता है: वह अंधेरे सहने के बंधन को तोड़ दे, जूए उतार फेंके और उनको छुड़ा
लिया जाए? 7 क्या इसका मतलब यह नहीं कि तुम भूखों को अपना भोजन
बांटा करो तथा अनाथों को अपने घर में लाओ— जब किसी को वस्त्रों के बिना
देखो, तो उन्हें वस्त्र दो, स्वयं को अपने सगे संबंधियों से दूर न रखो? 8 जब तुम
यह सब करने लगोगे तब तुम्हारा प्रकाश चमकेगा, और तू जल्दी ठीक हो
जायेगा; और तेरा धर्म तेरे आगे-आगे चलेगा, तथा याहवेह का तेज तेरे पीछे
तुम्हारी रक्षा करेगा. 9 उस समय जब तुम याहवेह की दोहाई दोगे, तो वह
उसका उत्तर देंगे; तुम पुकारोगे, तब वह कहेंगे: मैं यहां हूं. “यदि तुम अपने बीच
से दुःख का जूआ हटा दोगे, जब उंगली से इशारा करेंगे तब दुष्ट बातें करना छोड़
देंगे, 10 जब तुम भूखे की सहायता करोगे तथा दुखियों की मदद करोगे, तब

अंधकार में तेरा प्रकाश चमकेगा, तथा घोर अंधकार दोपहर समान उजियाला
देगा. 11 याहवेह तुझे लगातार लिये चलेगा; और सूखे में तुझे तृप्त करेगा वह
तुम्हारी हड्डियों में बल देगा. तुम सींची हुई बारी के समान हो जाओगे, तथा उस
सोते का जल कभी न सूखेगा. 12 खंडहर को तेरे वंश के लिये फिर से बसायेंगे
और पीढ़ियों से पड़ी हुई नींव पर घर बनाएगा; टूटे हुए बाड़े और सड़क को,
ठीक करनेवाला कहलायेगा. 13 "यदि तुम शब्बाथ दिन को अशुद्ध न करोगे,
अर्थात् मेरे पवित्र दिन के हित में अपनी इच्छा को छोड़ देते हो, शब्बाथ दिन को
आनंद का दिन मानकर और याहवेह के पवित्र दिन का सम्मान करते हो, अपनी
इच्छाओं को छोड़कर अपनी बातें न बोले, 14 तू याहवेह के कारण आनंदित
होगा, मैं तुम्हें पृथ्वी की ऊंचाइयों तक ले जाऊंगा और तुम्हारे पिता याकोब के
भाग की उपज से खायेगा." क्योंकि यह याहवेह के मुंह से निकला वचन है.

59 याहवेह का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सकें, न ही
वह बहरे हो चुके कि सुन न सकें. 2 परंतु तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हारे एवं
परमेश्वर के बीच में दूरी बना दी है; उनके मुंह को उन्होंने तुम्हारे ही पापों के
कारण छिपा रखा है, कि वह नहीं सुनता. 3 खून से तुम्हारे हाथ तथा अधर्म से
तुम्हारी उंगलियां दूषित हो चुकी हैं, तुम्हारे होंठों ने झूठ बोला है. तुम्हारी जीभ
दुष्टता की बातें कहती है. 4 कोई भी धर्म व्यवहार में नहीं लाता; कोई भी
सच्चाई से मुकदमा नहीं लड़ता. वे झूठ बोलते हैं और छल पर भरोसा रखते हैं;
वे अनिष्ट का गर्भधारण करते हैं तथा पाप को जन्म देते हैं. 5 वे विषैले सांप के
अंडे सेते हैं तथा मकड़ी का जाल बुनते हैं. जो कोई उनके अण्डों का सेवन
करता है, उसकी मृत्यु हो जाती है, तथा कुचले अंडे से सांप निकलता है. 6
उनके द्वारा बुने गए जाल से वस्त्र नहीं बन सकते; अपनी शिल्पकारी से वे अपने
आपको आकार नहीं दे सकते. उनके काम तो अनर्थ ही हैं, उनके हाथ से हिंसा
के काम होते हैं. 7 उनके पैर बुराई करने के लिए दौड़ते हैं; निर्दोष की हत्या
करने को तैयार रहते हैं. उनके विचार व्यर्थ होते हैं; उनका मार्ग विनाश एवं
उजाड़ से भरा है. 8 शांति का मार्ग वे नहीं जानते; न उनके स्वभाव में न्याय है.
उन्होंने अपने मार्ग को टेढ़ा कर रखा है; इस मार्ग में कोई व्यक्ति शांति न पायेगा.
9 इस कारण न्याय हमसे दूर है, धर्म हम तक नहीं पहुंचता. हम उजियाले की
राह देखते हैं, यहां तो अंधकार ही अंधकार भरा है; आशा की खोज में हम
अंधकार में आगे बढ़ रहे हैं. 10 हम अंधों के समान दीवार को ही टटोल रहे हैं,
दिन में ऐसे लड़खड़ा रहे हैं मानो रात है; जो हृष्ट-पुष्ट हैं उनके बीच हम मृत
व्यक्ति समान हैं. 11 हम सभी रीछ के समान गुर्राते हैं; तथा कबूतरों के समान
विलाप में कराहते हैं. हम न्याय की प्रतीक्षा करते हैं, किंतु न्याय नहीं मिलता;
हम छुटकारे की राह देखते हैं, किंतु यह हमसे दूर है. 12 हमारे अपराध आपके
सामने बहुत हो गये हैं, हमारे ही पाप हमारे विरुद्ध गवाही दे रहे हैं: हमारे अपराध
हमारे साथ जुड़ गए हैं, हम अपने अधर्म के काम जानते हैं: 13 हमने याहवेह के
विरुद्ध अपराध किया, हमने उन्हें ठुकरा दिया और परमेश्वर के पीछे चलना छोड़
दिया, हम अंधेर और गलत बातें करने लगे, झूठी बातें सोची और कही भी है.
14 न्याय को छोड़ दिया है, तथा धर्म दूर खड़ा हुआ है; क्योंकि सत्य तो मार्ग में
गिर गया है, तथा सीधाई प्रवेश नहीं कर पाती है. 15 हां यह सच है कि सच्चाई
नहीं रही, वह जो बुराई से भागता है, वह खुद शिकार हो जाता है. न्याय तथा
मुक्ति याहवेह ने देखा तथा उन्हें यह सब अच्छा नहीं लगा क्योंकि कहीं भी
सच्चाई और न्याय नहीं रह गया है. 16 उसने देखा वहां कोई भी मनुष्य न था,
और न कोई मध्यस्थता करनेवाला है; तब उसी के हाथ ने उसका उद्धार किया,
तथा उसके धर्म ने उसे स्थिर किया. 17 उन्होंने धर्म को कवच समान पहन
लिया, उनके सिर पर उद्धार का टोप रखा गया; उन्होंने पलटा लेने का वस्त्र
पहना तथा उत्साह का वस्त्र बाहर लपेट लिया. 18 वह उनके कामों के अनुरूप
ही, उन्हें प्रतिफल देंगे विरोधियों पर क्रोध तथा शत्रुओं पर बदला देंगे. 19 तब
पश्चिम दिशा से, उन पर याहवेह का भय छा जाएगा, तथा पूर्व दिशा से, उनकी
महिमा का भय मानेंगे. जब शत्रु आक्रमण करेंगे तब याहवेह का आत्मा उसके
विरुद्ध झंडा खड़ा करेगा. 20 "याकोब वंश में से जो अपराध से मन फिराते हैं,
ज़ियोन में एक छुड़ाने वाला आयेगा," यह याहवेह की वाणी है. 21 "मेरी
स्थिति यह है, उनके साथ मेरी वाचा है," यह याहवेह का संदेश है. "मेरा
आत्मा, जो तुम पर आया है, तथा मेरे वे शब्द, जो मैंने तुम्हारे मुंह में डाले; वे
तुम्हारे मुंह से अलग न होंगे, न तुम्हारी संतान के मुंह से, न ही तुम्हारी संतान
की संतान के मुंह से, यह सदा-सर्वदा के लिए आदेश है." यह याहवेह की
घोषणा है.

60 "उठो, प्रकाशमान हो, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आया है, तथा याहवेह
का तेज तुम्हारे ऊपर उदय हुआ है. 2 देख, पृथ्वी पर तो अंधकार और
राज्य-राज्य के लोगों पर घोर अंधकार है, परंतु तुम्हारे ऊपर याहवेह उदय होगा
और उनका तेज तुम्हारे ऊपर प्रकट होगा. 3 अन्य जातियां तुम्हारे पास प्रकाश
के लिये, और राजा तुम्हारे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे. 4 "अपने आस-
पास दृष्टि उठाकर देख: वे सभी इकट्ठे हो रहे हैं और वे तुम्हारे पास आ रहे हैं;
दूर स्थानों से तुम्हारे पुत्र आ जाएंगे, तुम्हारी पुत्रियां गोद में उठाकर लाई जाएंगी.
5 तब तुम देखोगे तथा आनंदित होओगे, तुम्हारा हृदय आनंद से भर जाएगा;
क्योंकि सागर का सारा धन तुम्हारा हो जायेगा, और देशों की धन-संपत्ति
तुम्हारी हो जाएगी. 6 तुम्हारे देश असंख्य ऊंटों से भर जाएंगे, जो मिदियान तथा
एफाह और शीबा देश से आएंगे. वे अपने साथ सोना तथा लोबान लाएंगे, वे
याहवेह का आनंद से गुणगान करेंगे. 7 केदार की सब भेड़-बकरियां तुम्हारी हो
जायेंगी, नेबाइयोथ के मेढ़े सेवा टहल के काम आएंगे; मेरी वेदी पर वे ग्रहण
योग्य होंगे, मैं अपने घर को और प्रतापी कर दूंगा. 8 "कौन हैं ये जो बादल
समान उड़ते हैं, और कबूतर समान अपने घर को पहुंच जाते हैं? 9 निश्चय द्वीप
मेरी प्रतीक्षा करेंगे; तरशीश के जहाज़ पहले पहुंचेंगे, वे अपने साथ दूर देशों से
तुम्हारे पुत्रों को लाएंगे, उनके साथ उनका सोना एवं उनकी चांदी होगी, यह
याहवेह तुम्हारे परमेश्वर की महिमा में होगा, क्योंकि उन्होंने ही तुम्हें प्रताप से
शोभायमान किया है. 10 "परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएंगे, उनके राजा
तेरी सेवा करेंगे. क्योंकि क्रोध में आकर मैंने तुझे दुःख दिया था, परंतु अब
तुझसे प्रसन्न होकर दया करूंगा. 11 तुम्हारे फाटक निरंतर खुले रहेंगे, दिन
हो या रात, वे बंद नहीं किए जाएंगे, देश की धन-संपत्ति और उनके राजा
बंधुए होकर तेरे पास आएंगे. 12 वे लोग तथा वे राज्य जो तुम्हारी सेवा करना
अस्वीकार करेंगे, नष्ट हो जाएंगे; ये देश पूर्णतः नष्ट हो जाएंगे. 13 "लबानोन का
वैभव तुम्हारा हो जाएगा, सनोवर व देवदार तथा चीड़ वृक्ष, मेरे पवित्र स्थान के
सौंदर्य को बढ़ाएंगे; मैं अपने चरणों के स्थान को भी महिमा का रूप दूंगा. 14
जिन्होंने तुम पर अत्याचार किया है, उनके पुत्र तुम्हारे सामने झुक जाएंगे; तथा
वे सभी जिन्होंने तुमसे घृणा की है वे सब तुम्हारे सामने झुक जाएंगे! वे तुम्हारा
नाम 'याहवेह का नगर, इस्राएल के पवित्र का ज़ियोन' बुलाएंगे. 15 "जब तुम
त्यागी हुई घृणा के नगर थे, कोई भी तुममें से होकर नहीं जाता था, लेकिन अब
मैं तुम्हें स्थिर गौरव का स्थान बना दूंगा और पीढ़ी दर पीढ़ी आनंद का कारण
ठहराऊंगा. 16 तू अन्य जनताओं का दूध पी लेगी तुम्हें राजा दूध पिलाएंगे. तब
तुम जान लोगे कि मैं, याहवेह ही, तुम्हारा उद्धारकर्ता, और याकोब का वह
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तुम्हारा छुड़ाने वाला हूं. 17 कांस्य के स्थान पर मैं
सोना, लोहे के स्थान पर चांदी. लकड़ी के स्थान पर कांस्य, तथा पत्थरों के
स्थान पर लोहा लेकर आऊंगा. तब मैं शांति को तेरा हाकिम तथा धार्मिकता को
तेरा अधिकारी नियुक्त कर दूंगा. 18 अब तुम्हारे देश में फिर हिंसा न होगी, न
ही तुम्हारी सीमाओं में हलचल या विनाश बिखर जायेगा, परंतु तुम अपनी
शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखोगे. 19 तब दिन

के समय तुम्हें प्रकाश के लिए, न तो सूर्य की आवश्यकता होगी और न रात को
चांद की, परंतु याहवेह तुम्हारे लिए सदा का प्रकाश होंगे, और तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हारा वैभव होगा. 20 तुम्हारा सूर्य कभी अस्त न होगा, न ही तुम्हारे चांद की
ज्योति कम होगी; क्योंकि याहवेह तेरी सदैव की ज्योति होंगे, और तुम्हारे
विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे. 21 तब तुम्हारे लोग धर्मी हो जाएंगे वे सदा-
सर्वदा के लिए देश के अधिकारी हो जाएंगे. मेरे लगाये हुए पौधे, और मेरे हाथों
का काम ठहरेंगे, जिससे मेरी महिमा प्रकट हो. 22 सबसे छोटा एक हजार हो
जायेगा, और सबसे कमजोर एक सामर्थ्यी जाति बन जायेगा. मैं याहवेह हूं;
ठीक समय पर सब कुछ पूरा करूंगा.”

61 मुझ पर प्रभु याहवेह का आत्मा है, क्योंकि याहवेह ने मेरा अभिषेक
किया है कि उत्पीड़ितों तक सुसमाचार सुनाने के लिये, तथा दुःखी
मनवालों को शांति दूं, कि बंदियों के लिए मुक्ति का तथा कैदियों के लिये
छुटकारे का प्रचार करूं, 2 कि याहवेह की कृपादृष्टि का वर्ष का प्रचार करूं,
और हमारे परमेश्वर के बदला लेने के दिन का प्रचार, कि उन सभी को शांति हो
जो विलाप में हैं, 3 जो ज़ियोन में विलाप कर रहे हैं, उन्हें भस्म नहीं— परंतु
सुंदर पगड़ी बांध दूं, ताकि उनके दुःख की जगह, आनंद का तेल लगाऊं और
उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं जिससे वे धर्म और याहवेह के
लगाये हुए कहलाएं और याहवेह की महिमा प्रकट हो. 4 तब वे खंडहरों का
पुनर्निर्माण करेंगे, वे बहुत पहले नाश हुए शहरों की मरम्मत करेंगे; उजाड़े हुए
नगरों को फिर बसायेंगे. 5 अपरिचित लोग तुम्हारी भेड़-बकरियों की देखभाल
करेंगे; विदेशी लोग तुम्हारे खेत ओर दाख की बारी की देखभाल करेंगे. 6 किंतु
तुम याहवेह के पुरोहित कहलाओगे, वे तुमको हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे.
तुम अन्यजातियों की संपत्ति के हकदार होंगे, तथा उनके धन पर तुम गर्व
करोगे. 7 अपनी लज्जा के स्थान पर तुम्हें दो गुणा अंश मिलेगा, तथा निंदा के
स्थान पर वे अपने भाग के कारण हर्ष करेंगे. तुम अपने देश में दुगुने होंगे, और
सदा आनंदित रहोगे. 8 “क्योंकि मैं, याहवेह, न्याय प्रिय हूं; अन्याय और
डकैती से मैं घृणा करता हूं. इसलिये मैं उन्हें सच्चाई का प्रतिफल दूंगा तथा
उनके साथ सदा की वाचा बांधूंगा. 9 उनकी संतान जनताओं में प्रसिद्ध हो जाएगी
तथा उनके वंश लोगों के बीच याहवेह से आशीषित होंगे. सभी उन्हें पहचान
जाएंगे जो उन्हें देखेंगे.” 10 मैं याहवेह में अत्यंत आनंदित होऊंगा; मेरे प्राण मेरे
परमेश्वर में मगन होंगे. क्योंकि उन्होंने मुझे उद्धार के वस्त्र पहनाए और धर्म की
चादर ओढ़ा दी, जैसे दूल्हा फूलों से अपने आपको सजाता है, और दुल्हन
गहनों से श्रृंगार करती है. 11 क्योंकि जिस प्रकार भूमि अपनी उपज उगाती
और बारी में बोये गये बीज को अंकुरित करती है, उसी प्रकार प्रभु याहवेह सब
देशों के बीच धार्मिकता बढ़ाएंगे.

62 ज़ियोन के हित में मैं चुप न रहूंगा, येरूशलेम के कल्याण के लिए मैं शांत
न रहूंगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता के समान, और उसका उद्धार
जलते हुए पीतल के समान दिखाई न दे. 2 तब अन्य जातियां, तेरा धर्म और सब
राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जायेगा जो याहवेह के मुंह
से निकलेगा. 3 तुम याहवेह के हाथों में एक सुंदर मुकुट, तथा परमेश्वर की
हथेली में राज मुकुट ठहरोगे. 4 इसके बाद तुम्हारी पहचान त्यागी हुई के रूप में
न होगी, न ही तुम्हारा देश उजड़ा हुआ कहलायेगा. परंतु तुम हेप्सीबा, और
तुम्हारी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि याहवेह तुमसे प्रसन्न है, और तुम्हारी
भूमि अच्छी उपज उपजायेगी. 5 जिस प्रकार एक युवा कुंवारी कन्या से विवाह
करता है, उसी प्रकार तुम्हारे निर्माण-कर्ता पुनः तुमसे विवाह करेंगे; जिस प्रकार
वर के आनंद का विषय होती है वधू, उसी प्रकार तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे कारण
आनंदित होंगे. 6 हे येरूशलेम, मैंने तुम्हारी शहरपनाह पर स्वर्गदूत बिठाए हैं;
सारी रात और दिन वे चुप न रहेंगे. हे याहवेह को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो.
7 तुम याहवेह को चैन मत देना जब तक वे येरूशलेम को स्थिर करके उसे पृथ्वी
की प्रशंसा पात्र न बना दें! 8 याहवेह ने अपने दाएं हाथ: “तथा बलवंत हाथ की
शपथ ली है: निश्चय अब मैं कभी भी तुम्हारी उपज को तुम्हारे शत्रुओं का
भोजन न होने दूंगा, न हीं मैं तुम्हारे मेहनत से लगाये दाखरस को परदेशियों को
खाने दूंगा; 9 किंतु वे जो इसे जमा करेंगे वे इसे खाकर याहवेह की स्तुति करेंगे,
और जिन्होंने दाखमधु भंडार में रखा हो वे ही उसके पवित्र स्थान के आंगनों में
पायेंगे.” 10 सब फाटकों से होकर निकलो! लोगों के लिए मार्ग सीधा करो.
राजमार्ग को बनाओ! सभी पत्थर मार्ग से हटाकर. लोगों के लिए झंडा ऊंचा
करो. 11 देखो, याहवेह ने पृथ्वी की छोर तक इस आज्ञा का प्रचार किया है:
“ज़ियोन की बेटी से कहो, ‘देख, तेरा उद्धारकर्ता आया है! और मजदूरी उसके
पास है, तथा उनका प्रतिफल उन्हें देगा.’” 12 वे उन्हें पवित्र प्रजा, और याहवेह
के छुड़ाए हुए कहेंगे, और तेरा नाम गृहण की हुई, अर्थात् न त्यागी गई नगरी
पड़ेगा.

63 कौन है वह जो एदोम के बोज़राह से चला आ रहा है, जो बैंगनी रंग के
कपड़े पहने हुए हैं? जो बलवान और बहुत भड़कीला वस्त्र पहने हुए आ
रहा है? “मैं वही हूं, जो नीति से बोलता, और उद्धार करने की शक्ति रखता हूं.”
2 तुम्हारे वस्त्र लाल क्यों है, तुम्हारे वस्त्र हौद में दाख रौंदने वाले के समान क्यों
है? 3 “मैंने अकेले ही दाख को रौंदा; जनताओं से कोई भी मेरे साथ न था.
अपने क्रोध में ही मैंने दाख रौंदा और उन्हें कुचल दिया था; उनके लहू का
छींटा मेरे वस्त्रों पर पड़ा, और मेरे वस्त्र में दाग लग गया. 4 मेरे मन में बदला लेने
का दिन निश्चय था; मेरी छुड़ाई हुई प्रजा का वर्ष आ गया है. 5 मैंने ढूंढ़ा, तब
कोई नहीं मिला सहायता के लिए, कोई संभालने वाला भी; तब मैंने अपने ही
हाथों से उद्धार किया, और मेरी जलजलाहट ने ही मुझे संभाला. 6 मैंने अपने
क्रोध में जनताओं को कुचल डाला; तथा अपने गुस्से में उन्हें मतवाला कर दिया
और उनके लहू को भूमि पर बहा दिया.” 7 जितनी दया याहवेह ने हम पर की,
अर्थात् इस्राएल के घराने पर, दया और अत्यंत करुणा करके जितनी भलाई हम
पर दिखाई— उन सबके कारण मैं याहवेह के करुणामय कामों का वर्णन और
उसका गुण गाऊंगा. 8 क्योंकि याहवेह ही ने उनसे कहा, “वे मेरी प्रजा हैं, वे
धोखा न देंगे”; और वह उनका उद्धारकर्ता हो गए. 9 उनके संकट में उसने भी
कष्ट उठाया, उनकी उपस्थिति के स्वर्गदूत ने ही उनका उद्धार किया. अपने प्रेम
एवं अपनी कृपा से उन्होंने उन्हें छुड़ाया; और पहले से उन्हें उठाए रखा. 10 तो
भी उन्होंने विद्रोह किया और पवित्रात्मा को दुःखी किया. इस कारण वे उनके
शत्रु हो गए और खुद उनसे लड़ने लगे. 11 तब उनकी प्रजा को बीते दिन,
अर्थात् मोशेह के दिन याद आए: कहां हैं वह, जिन्होंने उन्हें सागर पार करवाया
था, जो उनकी भेड़ों को चरवाहे समेत पार करवाया? कहां हैं वह जिन्होंने
अपना पवित्रात्मा उनके बीच में डाला, 12 जिन्होंने अपने प्रतापी हाथों को
मोशेह के दाएं हाथ में कर दिया, जिन्होंने सागर को दो भाग कर दिया, और
अपना नाम सदा का कर दिया, 13 जो उन्हें सागर तल की गहराई पर से दूसरे
पार ले गए? वे बिलकुल भी नहीं घबराए, जिस प्रकार मरुस्थल में घोड़े हैं;
14 याहवेह के आत्मा ने उन्हें इस प्रकार शांति दी, जिस प्रकार पशु घाटी से
उतरते हैं. आपने इस प्रकार अपनी प्रजा की अगुवाई की कि आपकी महिमा हो
क्योंकि आप हमारे पिता हैं. 15 स्वर्ग से अपने पवित्र एवं वैभवशाली उन्नत
निवास स्थान से नीचे देखिए. कहां है आपकी वह खुशी तथा आपके पराक्रम के
काम? आपके दिल का उत्साह तथा आपकी कृपा मेरे प्रति अब नहीं रह गई.
16 आप हमारे पिता हैं, यद्यपि अब्राहाम हमें नहीं जानता और इस्राएल भी हमें
ग्रहण नहीं करता; तो भी, हे याहवेह, आप ही हमारे पिता हैं, हमारा छुड़ानेवाले
हैं, प्राचीन काल से यही आपका नाम है. 17 हे याहवेह आपने क्यों हमें आपके

मार्गों से भटक जाने के लिए छोड़ दिया हैं, आप क्यों हमारे दिल को कठोर हो जाने देते हैं कि हम आपका भय नहीं मानते? अपने दास के लिए लौट आइए, जो आप ही की निज प्रजा है. 18 आपका पवित्र स्थान आपके लोगों को कुछ समय के लिये ही मिला था, लेकिन हमारे शत्रुओं ने इसे रौंद डाला. 19 अब तो हमारी स्थिति ऐसी हो गई है; मानो हम पर कभी आपका अधिकार था ही नहीं, और जो आपके नाम से कभी जाने ही नहीं गए थे.

64 भला हो कि आप आकाश को फाड़कर नीचे आ सकते, कि पर्वत आपके सामने कांप उठे! 2 जिस प्रकार आग झाड़ को जला देती है या जल को उबालती है, वैसे ही आपके विरोधियों को आपकी प्रतिष्ठा का बोध हो जाता कि आपकी उपस्थिति से राष्ट्र कांप उठते हैं! 3 जब आपने ऐसे भयानक काम किए थे, तब आप उतर आए थे, पर्वत आपकी उपस्थिति में कांप उठे. 4 पूर्वकाल से न तो उन्होंने सुना है, न ही देखा गया है, आपके सिवाय हमारे लिए और कोई परमेश्वर नहीं हुआ है, जो अपने भक्तों की ओर ध्यान दे. 5 आप उन्हीं से मिलते हैं जो आनंद से नीतियुक्त काम करते हैं, जो आपको याद रखते हुए आपके मार्गों पर चलते हैं. सच है कि आप हमारे पाप के कारण क्रोधित हुए, और हमारी यह दशा बहुत समय से है. क्या हमें छुटकारा मिल सकता है? 6 हम सभी अशुद्ध मनुष्य के समान हो गये है, हमारे धर्म के काम मैले चिथड़ों के समान है; हम सभी पत्तों के समान मुरझा जाते हैं, हमारे अधर्म के काम हमें हवा में उड़ा ले जाते हैं. 7 ऐसा कोई भी नहीं जो आपके नाम की दोहाई देता है और जो आपको थामे रहने का प्रयास यत्न से करता है; क्योंकि आपने हमसे अपना मुंह छिपा लिया है तथा हमें हमारी बुराइयों के हाथ कर दिया है. 8 किंतु अब, याहवेह, हमने आपको पिता समान स्वीकारा है. हम तो मात्र मिट्टी हैं, आप हमारे कुम्हार; हम सभी आपके हाथ की रचना हैं. 9 इसलिये हे याहवेह, क्रोधित न होइये; और अनंत काल तक हमारे पापों को याद न रखिए. हमारी ओर ध्यान दीजिए, हम सभी आपके अपने ही हैं. 10 देखो आपका पवित्र नगर बंजर भूमि हो गया है; ज़ियोन अब सुनसान है! येरूशलेम उजाड़ पड़ा है. 11 हमारा पवित्र एवं भव्य भवन, जहां हमारे पूर्वजों ने आपकी स्तुति की थी, आग से जला दिया गया है, हमारी सभी अमूल्य वस्तुएं नष्ट हो चुकी हैं. 12 यह सब होते हुए भी, याहवेह, क्या आप अपने आपको रोके रहेंगे? क्या आप हमें इस दुर्दशा में रहने देंगे?

65 "मैंने अपने आपको उन लोगों में प्रकट किया, जिन्होंने मेरे विषय में पूछताछ ही नहीं की; मैंने अपने आपको उन लोगों के लिए उपलब्ध करा दिया, जिन्होंने मुझे खोजने की कोशिश भी न की थी. वह देश जिसने मेरे नाम की दोहाई ही न दी थी, मैं उसका ध्यान इस प्रकार करता रहा, 'देख मैं यहां हूं.' 2 एक विद्रोही जाति के लिए मैं सारे दिन अपने हाथ फैलाए रहा, जो अपनी इच्छा से बुरे रास्तों पर चलते हैं, 3 जो ईंटों पर धूप जलाकर तथा बागों में बलि चढ़ाकर, मुझे क्रोधित करते हैं; 4 जो कब्रों के बीच बैठे रहते तथा सुनसान जगहों पर रात बिताते हैं; जो सूअर का मांस खाते, और घृणित वस्तुओं का रस अपने बर्तनों में रखते हैं; 5 वे कहते हैं, 'अपने आप काम करो; मत आओ हमारे पास, तुमसे अधिक पवित्र मैं हूं!' मेरे लिए तो यह मेरे नाक में धुएं व उस आग के समान है, जो सारे दिन भर जलती रहती है. 6 "देखो, यह सब मेरे सामने लिखा है: मैं चुप न रहूंगा, किंतु मैं बदला लूंगा; वरन तुम्हारे और तुम्हारे पूर्वजों के भी अधर्म के कामों का बदला तुम्हारी गोद में भर दूंगा. 7 क्योंकि उन्होंने पर्वतों पर धूप जलाया है और पहाड़ियों पर उन्होंने मेरी उपासना की है, इसलिये मैं उनके द्वारा पिछले कामों का बदला उन्हीं की झोली में डाल दूंगा." 8 याहवेह कहते हैं, "जिस प्रकार दाख के गुच्छे में ही नया दाखमधु भरा होता है जिसके विषय में कहा जाता है, 'इसे नष्ट न करो, यही हमें लाभ करेगा,' इसी प्रकार मैं भी अपने सेवकों के लिये काम करूंगा; कि वे सबके सब नष्ट न हो जाएं. 9 मैं याकोब के वंश को जमा करूंगा, और यहूदिया से मेरे पर्वतों का उत्तराधिकारी चुना जायेगा; वे मेरे चुने हुए वारिस होंगे, और वहां मेरे सेवक बस जायेंगे. 10 शारोन में उसकी भेड़-बकरियां चरेंगी, और गाय-बैल आकोर घाटी में विश्राम करेंगे, क्योंकि मेरी प्रजा मेरी खोज करने लगी है. 11 "परंतु तुम जिन्होंने याहवेह को छोड़ दिया हैं और जो मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हैं, वे भाग्य देवता के लिए मेज़ पर खाना सजाते हैं और भावी देवी के लिये मसाला मिला दाखमधु रखते हैं, 12 मैं तुम्हारे लिए तलवार लाऊंगा, तुम सभी वध होने के लिए झुक जाओगे; क्योंकि तुमने मेरे बुलाने पर उत्तर न दिया, जब मैंने कहा तुमने न सुना. तुमने वही किया, जो मेरी दृष्टि में गलत है तथा वही करना चाहा जो मुझे नहीं भाता." 13 तब प्रभु याहवेह ने कहा: "देखो, मेरे सेवक तो भोजन करेंगे, पर तुम भूखे रह जाओगे; कि मेरे सेवक पिएंगे, पर तुम प्यासे रह जाओगे; मेरे सेवक आनंदित होंगे, पर तुम लज्जित किए जाओगे. 14 मेरे सेवक आनंद से जय जयकार करेंगे, पर तुम दुःखी दिल से रोते और तड़पते रहोगे. 15 मेरे चुने हुए लोग तुम्हारा नाम लेकर शाप देंगे; और प्रभु याहवेह तुमको नाश करेंगे, परंतु अपने दासों का नया नाम रखेंगे. 16 क्योंकि वह जो पृथ्वी पर धन्य है वह सत्य के परमेश्वर द्वारा आशीषित किया गया है; वह जो पृथ्वी पर शपथ लेता है वह सत्य के परमेश्वर की शपथ लेगा. क्योंकि पुरानी विपत्तियां दूर हो जायेंगी, वह मेरी आंखों से छिप गया है. 17 "क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और पृथ्वी बनाऊंगा. पुरानी बातें न सोची, और न याद की जायेंगी. 18 इसलिये मैं जो कुछ बना रहा हूं उसमें सर्वदा मगन और खुश रहो, क्योंकि देखो मैं येरूशलेम को मगन और आनंदित बनाऊंगा. 19 मैं येरूशलेम में खुशी मनाऊंगा तथा अपनी प्रजा से मैं खुश रहूंगा; फिर येरूशलेम में न तो रोने और न चिल्लाने का शब्द सुनाई देगा. 20 "अब वहां ऐसा कभी न होगा कि कुछ दिन का बच्चा, या किसी वृद्ध की अचानक मृत्यु हो जाए; क्योंकि जवान ही की मृत्यु एक सौ वर्ष की अवस्था में होगी; तथा वह, जो अपने जीवन में एक सौ वर्ष न देख पाए, उसे शापित माना जाएगा. 21 वे घर बनाकर रहेंगे; वे दाख की बारी लगायेंगे और उसका फल खाएंगे. 22 ऐसा कभी न होगा कि घर तो वे बनाएंगे तथा उसमें कोई और रहने लगेगा; या वे बीज बोए, और दूसरे फसल काटे. क्योंकि जितना जीवनकाल वृक्ष का होगा, उतनी ही आयु मेरी प्रजा की होगी; मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे. 23 उनकी मेहनत बेकार न होगी, न उनके बालक कष्ट के लिए उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे याहवेह के धन्य वंश होंगे, और उनके बच्चे उनसे अलग न होंगे. 24 उनके पुकारते ही मैं उन्हें उत्तर दूंगा; और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा. 25 भेड़िये तथा मेमने साथ साथ चरेंगे, बैल के समान सिंह भूसा खाने लगेगा, तथा सांप का भोजन धूल होगा. मेरे पवित्र पर्वत पर किसी प्रकार की हानि और कष्ट न होगा," यह याहवेह का वचन है.

66 याहवेह यों कहते हैं: "स्वर्ग मेरा सिंहासन है, तथा पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है. तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे? कहां है वह जगह जहां मैं आराम कर सकूंगा? 2 क्योंकि ये सब मेरे ही हाथों से बने, और ये सब मेरे ही हैं." यह याहवेह का वचन है. "परंतु मैं उसी का ध्यान रखूंगा: जो व्यक्ति दीन और दुःखी हो, तथा जो मेरे आदेशों का पालन सच्चाई से करेगा. 3 जो बैल की बलि करता है वह उस व्यक्ति के समान है जो किसी मनुष्य को मार डालता है, और जो मेमने की बलि चढ़ाता है वह उस व्यक्ति के समान है जो किसी कुत्ते की गर्दन काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह उस व्यक्ति के समान है जो सूअर का लहू चढ़ाता है, और जो धूप जलाता है उस व्यक्ति के समान है जो किसी मूर्ति की उपासना करता है. क्योंकि उन्होंने तो अपना अपना मार्ग चुन लिया है, और वे अपने आपको संतुष्ट करते हैं; 4 अतः उनके लिए दंड मैं

निर्धारित करके उन्हें वही दंड दूंगा, जो उनके लिए कष्ट से भरा होगा. क्योंकि
जब मैंने बुलाया, तब किसी ने उत्तर नहीं दिया, जब मैंने उनसे बात की, तब
उन्होंने सुनना न चाहा. उन्होंने वही किया जो मेरी दृष्टि में बुरा है, और उन्होंने
वही चुना जो मुझे अच्छा नहीं लगता." **5** तुम सभी जो याहवेह के वचन को
मानते हो सुनो: "तुम्हारे भाई बंधु जो तुमसे नफरत करते हैं, जो तुम्हें मेरे नाम के
कारण अलग कर देते हैं, 'वे यह कह रहे हैं कि याहवेह की महिमा तो बढ़े,
जिससे हम देखें कि कैसा है तुम्हारा आनंद.' किंतु वे लज्जित किए जाएंगे. **6**
नगर से हलचल तथा मंदिर से एक आवाज सुनाई दे रही है! यह आवाज याहवेह
की है जो अपने शत्रुओं को उनके कामों का बदला दे रहे हैं. **7** "प्रसववेदना
शुरू होने के पहले ही, उसका प्रसव हो गया; पीड़ा शुरू होने के पहले ही, उसे
एक पुत्र पैदा हो गया. **8** क्या कभी किसी ने ऐसा सुना है? किसकी दृष्टि में कभी
ऐसा देखा गया है? क्या यह हो सकता है कि एक ही दिन में एक देश उत्पन्न हो
जाए? क्या यह संभव है कि एक क्षण में ही राष्ट्र बन जायें? जैसे ही ज़ियोन को
प्रसव पीड़ा शुरू हुई उसने अपने पुत्रों को जन्म दे दिया. **9** क्या मैं प्रसव बिंदु
तक लाकर प्रसव को रोक दूं?" याहवेह यह पूछते हैं! "अथवा क्या मैं जो गर्भ
देता हूं, क्या मैं गर्भ को बंद कर दूं?" तुम्हारा परमेश्वर कहते हैं! **10** "तुम सभी
जिन्हें येरूशलेम से प्रेम है, येरूशलेम के साथ खुश होओ, उसके लिए आनंद
मनाओ; तुम सभी जो उसके लिए रोते थे, अब खुश हो जाओ. **11** कि तुम
उसके सांत्वना देनेवाले स्तनों से स्तनपान कर तृप्त हो सको; तुम पियोगे तथा
उसकी बहुतायत तुम्हारे आनंद का कारण होगा." **12** क्योंकि याहवेह यों कहते
हैं: "तुम यह देखोगे, कि मैं उसमें शांति नदी के समान, और अन्यजातियों के
धन को बाढ़ के समान बहा दूंगा; और तुम उसमें से पियोगे तथा तुम गोद में
उठाए जाओगे तुम्हें घुटनों पर बैठाकर पुचकारा जाएगा. **13** तुम्हें मेरे द्वारा
उसी तरह तसल्ली दी जाएगी, जिस तरह माता तसल्ली देती है; यह तसल्ली
येरूशलेम में ही दी जाएगी." **14** तुम यह सब देखोगे, तथा तुम्हारा मन आनंद से
भर जाएगा और तुम्हारी हड्डियां नई घास के समान हो जाएंगी; याहवेह का
हाथ उनके सेवकों पर प्रकट होगा, किंतु वह अपने शत्रुओं से क्रोधित होंगे.
15 याहवेह आग में प्रकट होंगे, तथा उनके रथ आंधी के समान होंगे; उनका
क्रोध जलजलाहट के साथ, तथा उनकी डांट अग्नि ज्वाला में प्रकट होगी. **16**
क्योंकि आग के द्वारा ही याहवेह का न्याय निष्पक्ष होगा उनकी तलवार की मार
सब प्राणियों पर होगी, याहवेह द्वारा संहार किए गये अनेक होंगे. **17** याहवेह ने
कहा, "वे जो अपने आपको पवित्र और शुद्ध करते हैं ताकि वे उन बागों में जाएं,
और जो छुपकर सूअर या चूहे का मांस तथा घृणित वस्तुएं खाते हैं उन सभी का
अंत निश्चित है. **18** "क्योंकि मैं, उनके काम एवं उनके विचार जानता हूं; और
मैं सब देशों तथा भाषा बोलने वालों को इकट्ठा करूंगा, वे सभी आएंगे तथा वे
मेरी महिमा देखेंगे. **19** "उनके बीच मैं एक चिन्ह प्रकट करूंगा, तथा उनमें से
बचे हुओं को अन्यजातियों के पास भेजूंगा. तरशीश, पूत, लूद, मेशेख, तूबल
तथा यावन के देशों में, जिन्होंने न तो मेरा नाम सुना है, न ही उन्होंने मेरे प्रताप
को देखा है, वहां वे मेरी महिमा को दिखाएंगे. **20** तब वे सब देशों में से तुम्हारे
भाई-बन्धु याहवेह के लिए अर्पण समान अश्वों, रथों, पालकियों, खच्चरों एवं
ऊंटों को लेकर येरूशलेम में मेरे पवित्र पर्वत पर आएंगे. जिस प्रकार इस्राएल
वंश याहवेह के भवन में शुद्ध पात्रों में अन्नबलि लेकर आएंगे." याहवेह की यही
वाणी है. **21** "तब उनमें से मैं कुछ को पुरोहित तथा कुछ को लेवी होने के लिए
अलग करूंगा," यह याहवेह की घोषणा है. **22** "क्योंकि ठीक जिस प्रकार
नया आकाश और नई पृथ्वी जो मैं बनाने पर हूं मेरे सम्मुख बनी रहेगी," याहवेह
की यही वाणी है, "उसी प्रकार तुम्हारा वंश और नाम भी बना रहेगा. **23** यह
ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नये चांद के दिन तक और एक विश्राम
दिन से दूसरे विश्राम दिन तक सभी लोग मेरे सामने दंडवत करने आएंगे," यह
याहवेह का वचन है. **24** "तब वे बाहर जाएंगे तथा उन व्यक्तियों के शवों को
देखेंगे, जिन्होंने मेरे विरुद्ध अत्याचार किया था; क्योंकि उनके कीड़े नहीं मरेंगे
और उनकी आग कभी न बुझेगी, वे सभी मनुष्यों के लिए घृणित बन जाएंगे."

यिर्मयाह

1 पुरोहितों में से बिन्यामिन प्रदेश के अनाथोथवासी हिलकियाह के पुत्र येरेमियाह का वचन. 2 जिन्हें यहूदिया के राजा अमोन के पुत्र योशियाह के राज्य-काल के तेरहवें वर्ष में याहवेह का संदेश प्रगट किया गया, 3 उन्हें याहवेह का संदेश यहूदिया के राजा योशियाह के पुत्र यहोइयाकिम के राज्य-काल से लेकर, यहूदिया के राजा योशियाह के पुत्र सीदकियाहू के राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष के अंत तक, पांचवें माह में येरूशलेम के निवासी तक भी प्रगट किया जाता रहा. 4 मुझे याहवेह का संदेश प्राप्त हुआ, 5 "गर्भ में तुम्हें कोई स्वरूप देने के पूर्व मैं तुम्हें जानता था, तुम्हारे जन्म के पूर्व ही मैं तुम्हें नियुक्त कर चुका था; मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए भविष्यद्वक्ता नियुक्त किया है." 6 यह सुन मैंने कहा, "ओह, प्रभु याहवेह, बात करना तो मुझे आता ही नहीं; क्योंकि मैं तो निरा लड़का ही हूं." 7 किंतु याहवेह ने मुझसे कहा, "मत कहो, 'मैं तो निरा लड़का ही हूं.' क्योंकि मैं तुम्हें जहां कहीं भेजा करूं तुम वहां जाओगे. 8 तब उनसे भयभीत मत होना, क्योंकि तुम्हें छुडाने के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं," यह याहवेह की वाणी है. 9 तब याहवेह ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुख को स्पर्श किया और याहवेह ने मुझसे कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे मुख में अपने शब्द स्थापित कर दिए हैं. 10 यह समझ लो कि आज मैंने तुम्हें उन राष्ट्रों तथा राज्यों पर इसलिये नियुक्त किया है कि तुम तोडो तथा चूर-चूर करो, नष्ट करो तथा सत्ता पलट दो, निर्माण करो तथा रोपित करो." 11 मुझे याहवेह का यह संदेश प्रगट किया गया: "येरेमियाह, तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?" "मैंने उत्तर दिया, मुझे बादाम के वृक्ष की एक छड़ी दिखाई दे रही है." 12 याहवेह ने मुझसे कहा, "तुम्हारा देखना सही है, इसका आशय यह है कि मैं यह देखने के लिए जागृत हूं कि मेरा वचन पूरा हो!" 13 याहवेह का संदेश पुनः मुझे प्रगट किया गया: "तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?" मैंने उत्तर दिया, "मुझे भोजन पकाने का एक बर्तन दिखाई दे रहा है, उत्तर दिशा से हमारी ओर झुका दिया गया है." 14 तब याहवेह ने मुझ पर प्रकट किया, "इस देश के निवासियों पर उत्तर दिशा से संकट टूट पड़ेगा. 15 क्योंकि देख लेना, मैं उत्तरी राज्यों के सारे परिवारों को आह्वान कर रहा हूं," यह याहवेह की वाणी है. "वे आएंगे तथा उनमें से हर एक येरूशलेम के प्रवेश द्वार पर, इसकी सभी शहरपनाह के चारों ओर तथा यहूदिया के सभी नगरों पर अपना अपना सिंहासन स्थापित कर लेंगे. 16 मैं अपने न्याय-दंड की घोषणा करूंगा, उनकी सभी बुराइयों पर जिनके अंतर्गत उन्होंने मेरा परित्याग कर दिया, पराये देवताओं को बलि अर्पित किया तथा स्वयं अपने द्वारा निर्मित मूर्तियों की उपासना की है. 17 "अब उठो! तैयार हो जाओ और उन सभी से बात करो जिनके विषय में मैं तुम्हें आदेश दे रहा हूं. उनके समक्ष जाकर निराश न हो जाना, अन्यथा मैं तुम्हें उनके समक्ष निराश कर दूंगा. 18 अब यह समझ लो आज मैंने तुम्हें सारे देश के लिए, यहूदिया के राजाओं के लिए, इसके उच्चाधिकारियों के लिए, इसके पुरोहितों के लिए तथा देशवासियों के लिए एक गढ़नगर, एक लौह स्तंभ तथा कांस्य दीवारों सदृश बना दिया है. 19 वे तुम पर आक्रमण तो करेंगे किंतु तुम्हें पराजित नहीं कर सकेंगे, क्योंकि तुम्हारा बचाने वाला मैं तुम्हारे साथ हूं," यह याहवेह की वाणी है.

2 तब मुझे याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 2 "जाओ, येरूशलेम की प्रजा के कानों में वाणी करो: "यह याहवेह का संदेश है: "'तुम्हारे विषय में मुझे स्मरण है: जवानी की तुम्हारी निष्ठा, दुल्हिन सा तुम्हारा प्रेम और निर्जन प्रदेश में तुम्हारे द्वारा मेरा अनुसरण, ऐसे देश में, जहां बीज बोया नहीं जाता था. 3 इस्राएल याहवेह के लिए पवित्र किया हुआ था, याहवेह की पहली उपज; जिस किसी ने इस उपज का उपभोग किया, वे दोषी हो गए; वे संकट से ग्रसित हो गए,'" यह याहवेह की वाणी है. 4 याकोब के वंशजों, याहवेह का संदेश सुनो, इस्राएल के सारे गोत्रों, तुम भी. 5 याहवेह का संदेश यह है: "तुम्हारे पूर्वजों ने मुझमें कौन सा अन्याय पाया, कि वे मुझसे दूर हो गए? निकम्मी वस्तुओं के पीछे होकर वे स्वयं निकम्मे बन गए. 6 उन्होंने यह प्रश्न ही न किया, 'कहां हैं याहवेह, जिन्होंने हमें मिस्र देश से मुक्त किया और जो हमें निर्जन प्रदेश में होकर यहां लाया. मरूभूमि तथा गड्ढों की भूमि में से, उस भूमि में से, जहां निर्जल तथा अंधकार व्याप्त था, उस भूमि में से जिसके पार कोई नहीं गया था, जिसमें कोई निवास नहीं करता था?' 7 मैं तुम्हें उपजाऊ भूमि पर ले आया कि तुम इसकी उपज का सेवन करो और इसकी उत्तम वस्तुओं का उपयोग करो. किंतु तुमने आकर मेरी भूमि को अशुद्ध कर दिया और तुमने मेरे इस निज भाग को घृणास्पद बना दिया. 8 पुरोहितों ने यह समझने का प्रयास कभी नहीं किया, 'याहवेह कहां हैं?' आचार्य तो मुझे जानते ही न थे; उच्च अधिकारी ने मेरे विरोध में विद्रोह किया. भविष्यवक्ताओं ने बाल के द्वारा भविष्यवाणी की, तथा उस उपक्रम में लग गए जो निरर्थक है. 9 "तब मैं पुनः तुम्हारे समक्ष अपना सहायक प्रस्तुत करूंगा," यह याहवेह की वाणी है. "मैं तुम्हारी संतान की संतान के समक्ष अपना सहायक प्रस्तुत करूंगा. 10 सागर पार कर कित्तिम के तटवर्ती क्षेत्रों में देखो, किसी को केदार देश भेजकर सूक्ष्म अवलोकन करो; और ज्ञात करो कि कभी ऐसा हुआ है: 11 क्या किसी राष्ट्र ने अपने देवता परिवर्तित किए हैं? (जबकि देवता कुछ भी नहीं हुआ करते.) किंतु मेरी प्रजा ने अपने गौरव का विनिमय उससे कर लिया है जो सर्वथा निरर्थक है. 12 आकाश, इस पर अपना भय अभिव्यक्त करो, कांप जाओ और अत्यंत सुनसान हो जाओ," यह याहवेह की वाणी है. 13 "मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं: उन्होंने मुझ जीवन्त स्रोत का परित्याग कर दिया है, उन्होंने ऐसे हौद बना लिए हैं, जो टूटे हुए हैं, जो पानी को रोक नहीं सकते. 14 क्या इस्राएल दास है, अथवा घर में ही जन्मा सेवक? तब उसका शिकार क्यों किया जा रहा है? 15 जवान सिंह उस पर दहाड़ते रहे हैं; अत्यंत सशक्त रही है उनकी दहाड़. उन्होंने उसके देश को उजाड़ बना दिया है; उसके नगरों को नष्ट कर दिया है और उसके नगर निर्जन रह गए हैं. 16 मैमफिस तथा ताहपनहेस के लोगों ने तुम्हारी उपज की बालें नोच डाली हैं. 17 क्या यह स्वयं तुम्हारे ही द्वारा लाई हुई स्थिति नहीं है, जब याहवेह तुम्हें लेकर आ रहे थे, तुमने याहवेह अपने परमेश्वर का परित्याग कर दिया? 18 किंतु अब तुम मिस्र की ओर क्यों देखते हो? नील नदी के जल पीना तुम्हारा लक्ष्य है? अथवा तुम अश्शूर के मार्ग पर क्या कर रहे हो? क्या तुम्हारा लक्ष्य है, फरात नदी के जल का सेवन करना? 19 तुम्हारी अपनी बुराई ही तुम्हें सुधारेगी; याहवेह के प्रति श्रद्धा से तुम्हारा भटक जाना ही तुम्हें प्रताड़ित करेगा. तब यह समझ लो तथा यह बात पहचान लो याहवेह अपने परमेश्वर का परित्याग करना हानिकर एवं पीडादायी है, तुममें मेरे प्रति भय-भाव है ही नहीं," यह सेनाओं के प्रभु परमेश्वर की वाणी है. 20 "वर्षों पूर्व मैंने तुम्हारा जूआ भंग कर दिया तथा तुम्हारे बंधन तोड डाले; किंतु तुमने कह दिया, 'सेवा मैं नहीं करूंगा!' क्योंकि, हर एक उच्च पर्वत पर और हर एक हरे वृक्ष के नीचे तुमने वेश्या-सदृश मेरे साथ विश्वासघात किया है. 21 फिर भी मैंने तुम्हें एक उत्कृष्ट द्राक्षलता सदृश, पूर्णतः, विशुद्ध बीज सदृश रोपित किया. तब ऐसा क्या हो गया जो तुम विकृत हो गए और वन्य लता के निकृष्ट अंकुर में, परिवर्तित हो गए? 22 यद्यपि तुम साबुन के साथ स्वयं को स्वच्छ करते हो तथा भरपूरी से साबुन का प्रयोग करते हो, फिर भी तुम्हारा अधर्म मेरे समक्ष बना हुआ है," यह प्रभु याहवेह की वाणी है. 23 "तुम यह दावा कैसे कर सकते हो, 'मैं अशुद्ध नहीं हुआ हूं; मैं बाल देवताओं के प्रति निष्ठ नहीं हुआ हूं'? उस घाटी में अपने आचार-व्यवहार को स्मरण करो; यह पहचानो कि तुम क्या कर बैठे हो. तुम तो उस ऊंटनी सदृश हो जो दिशाहीन लक्ष्य की ओर तीव्र गति से दौडती हुई उत्तरोत्तर उलझती जा रही है, 24 तुम वनों में पली-बढ़ी उस वन्य गधी के सदृश हो, जो अपनी लालसा में वायु की

गंध लेती रहती है— उत्तेजना के समय में कौन उसे नियंत्रित कर सकता है? वे
सब जो उसे खोजते हैं व्यर्थ न हों; उसकी उस समागम ऋतु में वे उसे पा ही
लेंगे. 25 तुम्हारे पांव जूते-विहीन न रहें और न तुम्हारा गला प्यास से सूखने
पाए. किंतु तुमने कहा, 'निरर्थक होगा यह प्रयास! नहीं! मैंने अपरिचितों से प्रेम
किया है, मैं तो उन्हीं के पास जाऊंगी.' 26 "जैसे चोर चोरी पकडे जाने पर
लज्जित हो जाता है, वैसे ही इस्राएल वंशज लज्जित हुए हैं— वे, उनके राजा,
उनके उच्च अधिकारी, उनके पुरोहित और उनके भविष्यद्वक्ता. 27 वे वृक्ष से
कहते हैं, 'तुम मेरे पिता हो,' तथा पत्थर से, 'तुमने मुझे जन्म दिया है.' यह
इसलिये कि उन्होंने अपनी पीठ मेरी ओर कर दी है अपना मुख नहीं; किंतु
अपने संकट के समय, वे कहेंगे, 'उठिए और हमारी रक्षा कीजिए!' 28 किंतु
वे देवता जो तुमने अपने लिए निर्मित किए हैं, कहां हैं? यदि उनमें तुम्हारी
रक्षा करने की क्षमता है तो वे तुम्हारे संकट के समय तैयार हो जाएं! क्योंकि
यहूदिया, जितनी संख्या तुम्हारे नगरों की है उतने ही हैं तुम्हारे देवता. 29 "तुम
मुझसे वाद-विवाद क्यों कर रहे हो? तुम सभी ने मेरे विरुद्ध बलवा किया है,"
यह याहवेह की वाणी है. 30 "व्यर्थ हुई मेरे द्वारा तुम्हारी संतान की ताड़ना;
उन्होंने इसे स्वीकार ही नहीं किया. हिंसक सिंह सदृश तुम्हारी ही तलवार
तुम्हारे भविष्यवक्ताओं को निगल कर गई. 31 "इस पीढ़ी के लोगो, याहवेह के
वचन पर ध्यान दो: "क्या इस्राएल के लिए मैं निर्जन प्रदेश सदृश रहा हूं अथवा
गहन अंधकार के क्षेत्र सदृश? क्या कारण है कि मेरी प्रजा यह कहती है, 'हम
ध्यान करने के लिए स्वतंत्र हैं; क्या आवश्यकता है कि हम आपकी शरण में
आएं'? 32 क्या कोई नवयुवती अपने आभूषणों की उपेक्षा कर सकती है,
अथवा क्या किसी वधू के लिए उसका श्रृंगार महत्वहीन होता है? फिर भी मेरी
प्रजा ने मुझे भूलना पसंद कर दिया है, वह भी दीर्घ काल से. 33 अपने प्रिय
बर्तन तक पहुंचने के लिए तुम कैसी कुशलतापूर्वक युक्ति कर लेते हो! तब तुमने
तो बुरी स्त्रियों को भी अपनी युक्तियां सिखा दी हैं. 34 तुम्हारे वस्त्र पर तो निर्दोष
गरीब का जीवन देनेवाला रक्त पाया गया है, तुम्हें तो पता ही न चला कि वे कब
तुम्हारे आवास में घुस आए. 35 यह सब होने पर भी तुमने दावा किया, 'मैं
निस्सहाय हूं; निश्चय उनका क्रोध मुझ पर से टल चुका है.' किंतु यह समझ लो
कि मैं तुम्हारा न्याय कर रहा हूं क्योंकि तुमने दावा किया है, 'मैं निस्सहाय हूं.'
36 तुम अपनी नीतियां परिवर्तित क्यों करते रहते हो, यह भी स्मरण रखना? तुम
जिस प्रकार अश्शूर के समक्ष लज्जित हुए थे उसी प्रकार ही तुम्हें मिस्र के समक्ष
भी लज्जित होना पड़ेगा. 37 इस स्थान से भी तुम्हें निराश होना होगा. उस समय
तुम्हारे हाथ तुम्हारे सिर पर होंगे, क्योंकि जिन पर तुम्हारा भरोसा था उन्हें
याहवेह ने अस्वीकृत कर दिया है; उनके साथ तुम्हारी समृद्धि संभव नहीं है.

3 "यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री से तलाक कर लेता है और वह उसे त्याग कर
चली जाती है और वह किसी अन्य पुरुष के साथ रहने लगती है, क्या वह
पहला पुरुष फिर भी उसके पास लौटेगा? क्या वह देश पूर्णतः अशुद्ध नहीं हो
जाएगा? किंतु तुम वह व्यभिचारी हो जिसके बर्तन अनेक हैं— यह होने पर भी
तुम अब मेरे पास लौट आए हो?" यह याहवेह की वाणी है. 2 "अपनी दृष्टि
वनस्पतिहीन पर्वतों की ओर उठाओ और देखो. कौन सा ऐसा स्थान है जहां
तुम्हारे साथ कुकर्म नहीं हुआ है? मरुभूमि में चलवासी के सदृश, तुम मार्ग के
किनारे उनकी प्रतीक्षा करती रही. अपनी दुर्वृत्ति से तथा अपने स्वच्छंद कुकर्म
के द्वारा तुमने देश को अशुद्ध कर दिया है. 3 तब वृष्टि अशुद्ध रखी गई है, वसन्त
काल में वृष्टि हुई नहीं. फिर भी तुम्हारा माथा व्यभिचारी सदृश झलकता रहा;
तुमने लज्जा को स्थान ही न दिया. 4 क्या तुमने अभी-अभी मुझे इस प्रकार
संबोधित नहीं किया: 'मेरे पिता; आप तो बचपन से मेरे साथी रहे हैं, 5 क्या
आप मुझसे सदैव ही नाराज बने रहेंगे? क्या यह आक्रोश चिरस्थायी बना रहेगा?'
स्मरण रहे, यह तुम्हारा वचन है और तुमने कुकर्म भी किए हैं, तुमने जितनी
चाही उतनी मनमानी कर ली है." 6 तत्पश्चात राजा योशियाह के राज्य-काल
में, याहवेह ने मुझसे बात की, "देखा तुमने, विश्वासहीन इस्राएल ने क्या किया
है? उसने हर एक उच्च पर्वत पर तथा हर एक हरे वृक्ष के नीचे वेश्या-सदृश मेरे
साथ विश्वासघात किया है. 7 मेरा विचार था यह सब करने के बाद इस्राएली
प्रजा मेरे पास लौट आएगी किंतु वह नहीं लौटी, उसकी विश्वासघाती बहन
यहूदिया यह सब देख रही थी. 8 मैं देख रहा था कि विश्वासहीन इस्राएल के सारे
स्वच्छंद कुकर्म के कारण मैंने उसे निराश कर तलाक पत्र भी दे दिया था. फिर
भी उसकी विश्वासघाती बहन यहूदिया भयभीत न हुई; बल्कि वह भी व्यभिचारी
बन गई. 9 इसलिये कि उसकी दृष्टि में यह स्वच्छंद कुकर्म कोई गंभीर विषय न
था, उसने सारे देश को अशुद्ध कर दिया और पत्थरों एवं वृक्षों के साथ व्यभिचार
किया. 10 यह सब होने पर भी, यह घोर विश्वासघाती बहन यहूदिया अपने
संपूर्ण हृदय से मेरे पास नहीं लौटी, वह मात्र कपट ही करती रही," यह याहवेह
की वाणी है. 11 याहवेह ने मुझसे कहा, "विश्वासहीन इस्राएल ने स्वयं को
विश्वासघाती यहूदिया से अधिक कम दोषी प्रमाणित कर दिया है. 12 जाओ,
उत्तर दिशा की ओर यह संदेश वाणी घोषित करो: "'विश्वासहीन इस्राएल,
लौट आओ,' यह याहवेह की वाणी है, 'मैं तुम पर क्रोधपूर्ण दृष्टि नहीं डालूंगा,
क्योंकि मैं कृपालु हूं,' यह याहवेह की वाणी है, 'मैं सर्वदा क्रोधी नहीं रहूंगा.
13 तुम मात्र इतना ही करो: अपना अधर्म स्वीकार कर लो— कि तुमने याहवेह,
अपने परमेश्वर के प्रति अतिक्रमण का अपराध किया है, तुम हर एक हरे वृक्ष के
नीचे अपरिचितों को प्रसन्न करती रही हो, यह भी, कि तुमने मेरे आदेश की
अवज्ञा की है,'" यह याहवेह की वाणी है. 14 "विश्वासहीनो, लौट आओ,"
यह याहवेह का आदेश है, "क्योंकि तुम्हारे प्रति मैं एक स्वामी हूं. तब मैं तुम्हें,
नगर में से एक को तथा परिवार में से दो को ज़ियोन में ले आऊंगा. 15 तब मैं
तुम्हें ऐसे चरवाहे प्रदान करूंगा जो मेरे हृदय के अनुरूप होंगे, जो तुम्हें ज्ञान और
समझ से प्रेषित करेंगे. 16 यह उस समय होगा, जब तुम उस देश में असंख्य और
समृद्ध हो जाओगे," यह याहवेह की वाणी है, "तब वे यह कहना छोड़ देंगे,
'याहवेह की वाचा का संदूक.' तब उनके हृदय में न तो इसका विचार आएगा न
वे इसका स्मरण करेंगे; यहां तक कि उन्हें इसकी आवश्यकता तक न होगी, वे
एक और संदूक का निर्माण भी नहीं करेंगे. 17 उस समय वे येरूशलेम को
याहवेह का सिंहासन नाम देंगे, सभी जनता यहां एकत्र होंगे. वे याहवेह की
प्रतिष्ठा के लिए येरूशलेम में एकत्र होंगे तब वे अपने बुरे हृदय की कठोरता के
अनुरूप आचरण नहीं करेंगे. 18 उन दिनों में यहूदाह गोत्रज इस्राएल वंशज के
साथ संयुक्त हो जाएगा, वे एक साथ उत्तर के देश से उस देश में आ जाएंगे जो
मैंने तुम्हारे पूर्वजों को निज भाग स्वरूप में प्रदान किया है. 19 "तब मैंने कहा,
"'मेरी अभिलाषा रही कि मैं तुम्हें अपनी सन्तति पुत्रों में सम्मिलित करूं और
तुम्हें एक सुखद देश प्रदान करूं, राष्ट्रों में सबसे अधिक मनोहर यह निज भाग.'
और मैंने यह भी कहा तुम मुझे 'मेरे पिता' कहकर संबोधित करोगे, और मेरा
अनुसरण करना न छोड़ोगे. 20 इस्राएल वंशजों निश्चय तुमने मुझसे वैसे ही
विश्वासघात किया है, जैसे स्त्री अपने बर्तन से विश्वासघात कर अलग हो जाती
है," यह याहवेह की वाणी है. 21 वनस्पतिहीन उच्च पर्वतों पर एक स्वर सुनाई
दे रहा है, इस्राएल वंशजों का विलाप एवं उनके गिड़गिड़ाने का, वे अपने
विश्वासमत से दूर हो चुके हैं और उन्होंने याहवेह अपने परमेश्वर को भूलना
पसंद किया है. 22 "विश्वासविहीन वंशजों, लौट आओ; तुम्हारी विश्वासहीनता
का उपचार मैं करूंगा." "देखिए, हम आपके निकट आ रहे हैं, क्योंकि आप
याहवेह हमारे परमेश्वर हैं. 23 यह सुनिश्चित है कि पहाड़ियों पर छल है और
पर्वतों पर उपद्रव है; निःसंदेह याहवेह हमारे परमेश्वर में ही इस्राएल की सुरक्षा
है. 24 हमारे बचपन से इस लज्जास्पद आचरण ने हमारे पूर्वजों के उपक्रम
को— उनके पशुओं को तथा उनकी संतान को निगल कर रखा है. 25 उपयुक्त

होगा कि हमारी लज्जा में समावेश हो जाएं, कि हमारी लज्जा हमें ढांप ले.
क्योंकि हमने अपने बाल्यकाल से आज तक याहवेह हमारे परमेश्वर के विरुद्ध
पाप ही किया है; हमने याहवेह, हमारे परमेश्वर की अवज्ञा की है."

4 याहवेह की यह वाणी है, "इस्राएल, यदि तुम लौटो, तो तुम्हारा मेरे पास
लौट आना उपयुक्त होगा, यदि तुम वे घृणास्पद वस्तुएं मेरे समक्ष से दूर कर
दो और यदि तुम अपने संकल्प से विचलित न हो, 2 और तुम पूर्ण निष्ठा में,
न्यायपूर्णता में तथा पूर्वजों में यह शपथ लो, 'जीवित याहवेह की शपथ,' तब
जनता स्वयं ही याहवेह द्वारा आशीषित की जाएंगी तथा याहवेह में उनका गौरव
हो जाएगा." 3 यहूदिया एवं येरूशलेम के निवासियों के लिए याहवेह का
आदेश है: "उस भूमि पर हल चला दो, कंटीली भूमि में बीजारोपण न करो. 4
यहूदिया तथा येरूशलेम के वासियो, याहवेह के लिए अपना ख़तना करो, ख़तना
अपने हृदय की खाल का करो, अन्यथा मेरा कोप अग्नि-समान भड़क उठेगा
और यह ज्वाला ऐसी होगी, जिसे अलग करना किसी के लिए संभव न होगा—
क्योंकि यह तुम्हारे दुष्कर्मों का परिणाम है. 5 "यहूदिया में प्रचार करो और
येरूशलेम में यह वाणी कहो: 'सारे देश में नरसिंगा का नाद करो!' उच्च स्वर में
यह कहा जाए: 'सब एकत्र हों! तथा हम सब गढ़ नगरों में शरण ले लें!' 6
ज़ियोन की ओर झंडा ऊंचा किया जाए! चुपचाप खड़े न रहो, आश्रय की खोज
करो! क्योंकि मैं उत्तर दिशा से महा संकट ला रहा हूं, यह पूरा विनाश होगा."
7 झाड़ियों में छिपा सिंह बाहर निकल आया है; राष्ट्रों का विनाशक प्रस्थित हो
चुका है. वह अपने आवास से बाहर आ चुका है कि वह तुम्हारे देश को निर्जन
बना दे. तुम्हारे नगर खंडहर रह जाएंगे उनमें कोई भी निवासी न रह जाएगा. 8
तब साधारण वस्त्र धारण करो, रोओ और विलाप करो, क्योंकि याहवेह का प्रचंड
क्रोध हमसे दूर नहीं हटा है. 9 "उस दिन ऐसा होगा," यह याहवेह की वाणी
है, "राजा का तथा उच्चाधिकारी का साहस शून्य हो जाएगा, तब पुरोहित
भयभीत एवं, भविष्यद्वक्ता अचंभित रह जाएंगे." 10 इस पर मैं कह उठा, "प्रभु
याहवेह! आपने तो येरूशलेम के निवासियों को यह आश्वासन देते हुए पूर्णतः
धोखे में रखा हुआ है, 'तुम शांत एवं सुरक्षित रहोगे,' जबकि उनके गर्दन पर
तलवार रखी हुई है!" 11 उस समय इस प्रजा एवं येरूशलेम से कहा जाएगा,
"मरुभूमि की वनस्पतिहीन ऊंचाइयों से मेरे आदेश पर एक प्रबल उष्ण वायु
प्रवाह उठेगा, उसका लक्ष्य होगा मेरी प्रजा की पुत्री; यह वायु सुनसान तथा
समाप्ति के लिए नहीं है. अब मैं उनके विरुद्ध न्याय-दंड घोषित करूंगा." 13
देखो! वह घुमड़ते मेघों के सदृश बढ़ा चला आ रहा है, उसके रथ बवंडर सदृश
हैं, उसके घोड़े गरूड़ों से अधिक द्रुतगामी हैं. धिक्कार है हम पर! हम मिट गए
है! 14 येरूशलेम, अपने दुष्ट हृदय को धोकर साफ़ करो, कि तुम सुरक्षित रह
सको. और कब तक तुममें कुविचारों का निवास रहेगा? 15 दान से एक स्वर
कह रहा है, एफ्राईम पर्वत से बुराई का प्रचार किया जा रहा है. 16 "इसी समय
राष्ट्रों में सूचना प्रसारित की जाए, येरूशलेम में इसका प्रचार किया जाए: 'जो
नगर की घेराबंदी करेंगे वे दूर देश से आ रहे हैं, वे यहूदिया के नगरों के विरुद्ध
अपने स्वर उठाएंगे. 17 खेत के प्रहरियों सदृश वे अपना घेरा छोटा करते जा
रहे हैं, यह इसलिये कि उसने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है,'" यह याहवेह की
वाणी है. 18 "तुम्हारे आचरण एवं तुम्हारे कार्यों के कारण यह स्थिति आई है.
तुम्हारा है यह संकट. कितना कड़वा! इसने तुम्हारे हृदय को बेध दिया है!" 19
मेरे प्राण, ओ मेरे प्राण! मैं अकाल पीड़ा में हूं. आह मेरा हृदय! मेरे अंदर में हृदय
धड़क रहा है, मैं शांत नहीं रह सकता. क्योंकि मेरे प्राण, मैंने नरसिंगा नाद, युद्ध
की ललकार, सुनी है. 20 विध्वंस पर विध्वंस की वाणी की गई है; क्योंकि देश
उध्वस्त किया जा चुका है. अचानक मेरे तंबू ध्वस्त हो गए हैं, मेरे पर्दे क्षण मात्र
में नष्ट हो गए हैं. 21 मैं कब तक झंडा-पताका को देखता रहूं और कब तक
नरसिंगा नाद मेरे कानों में पड़ता रहेगा? 22 "क्योंकि निर्बुद्धि है मेरी प्रजा; वह
मुझे नहीं जानती. वे मूर्ख बालक हैं; उनमें समझ का अभाव है. अधर्म के लिए
उनमें बुद्धि अवश्य है; किंतु सत्कर्म उनसे किया नहीं जाता है." 23 मैंने पृथ्वी
पर दृष्टि की, और पाया कि वह आकार रहित तथा रिक्त थी; मैंने आकाश की
ओर दृष्टि उठाई और मैंने पाया, कि वहां कोई ज्योति-स्रोत न था. 24 मैंने पर्वतों
की ओर दृष्टि की, और देखा कि वे कांप रहे थे; और पहाड़ियां इधर-उधर सरक
रही थी. 25 मैंने ध्यान दिया, कि वहां कोई मनुष्य नहीं था; तथा आकाश के
सारे पक्षी पलायन कर चुके थे. 26 मैंने देखा, और यह पाया कि फलदायी देश
अब निर्जन प्रदेश हो चुका था; तथा इस देश के सारे नगर याहवेह तथा उनके उग्र
कोप के समक्ष ध्वस्त हो चुके थे. 27 यह याहवेह की वाणी है: "सारा देश
निर्जन हो जाएगा, फिर भी मैं इसका पूरा विनाश न करूंगा. 28 इसके लिए
पृथ्वी विलाप करेगी तथा ऊपर आकाश काला पड़ जाएगा, इसलिये कि मैं यह
कह चुका हूं और मैं निर्धारित कर चुका हूं, मैं न अपना विचार परिवर्तित करूंगा
और न ही मैं पीछे हटूंगा." 29 घुड़सवार एवं धनुर्धारियों की ध्वनि सुन हर एक
नगर भागने लगता है. वे झाड़ियों में जा छिपते हैं; वे चट्टानों पर चढ़ जाते हैं.
सभी नगर छोड़े जा चुके हैं; उनमें कोई भी निवास नहीं कर रहा. 30 और तुम
जो निर्जन हो, अब क्या करोगी? यद्यपि तुम भड़कीले वस्त्र धारण किए हुए हो,
यद्यपि तुमने स्वयं को स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित किया है? यद्यपि तुमने अपने
नेत्रों का श्रृंगार कर उन्हें सजाया है? स्वयं को ऐसा सुरम्य स्वरूप देना व्यर्थ है.
तुम्हारे प्रेमियों के लिए तो तुम अब घृणित हो गई हो; वे तो अब तुम्हारे प्राणों के
प्यासे हैं. 31 मुझे ऐसी कराहट सुनाई दी मानो कोई प्रसूता की कराहट हो ऐसी
वेदना का स्वर, जैसा उस स्त्री को होता है जिसका पहला प्रसव हो रहा हो. यह
पुकार ज़ियोन की पुत्री की चिल्लाहट है जिसका श्वांस फूल रहा है, वह अपने
हाथ फैलाकर कह रही है, "हाय! धिक्कार है मुझ पर; मुझे तो हत्यारों के
समक्ष मूर्च्छा आ रही है."

5 "येरूशलेम के मार्गों पर इधर-उधर ध्यान करो, इसी समय देखो और ध्यान
दो, उसके खुले चौकों में खोज कर देख लो. यदि वहां एक भी ऐसा मनुष्य
है जो अपने आचार-व्यवहार में खरा है और जो सत्य का खोजी है, तो मैं
सारे नगर को क्षमा कर दूंगा. 2 यद्यपि वे अपनी शपथ में यह अवश्य कहते
हैं, 'जीवित याहवेह की शपथ,' वस्तुस्थिति यह है कि उनकी शपथ झूठी
होती है." 3 याहवेह, क्या आपके नेत्र सत्य की अपेक्षा नहीं करते? आपने
उन्हें दंड अवश्य दिया, किंतु उन्हें वेदना नहीं हुई; आपने उन्हें कुचल भी
दिया, किंतु फिर भी उन्होंने अपने आचरण में सुधार करना अस्वीकार कर
दिया. उन्होंने अपने मुखमंडल वज्र सदृश कठोर बना लिए हैं और उन्होंने
प्रायश्चित करना अस्वीकार कर दिया है. 4 तब मैंने विचार किया, "वे तो मात्र
निर्धन हैं; वे निर्बुद्धि हैं, क्योंकि उन्हें याहवेह की नीतियों का ज्ञान ही नहीं है,
अथवा अपने परमेश्वर के नियम वे जानते नहीं हैं. 5 मैं उनके अगुए से भेंट
करूंगा; क्योंकि उन्हें तो याहवेह की नीतियों का बोध है, वे अपने परमेश्वर के
नियम जानते हैं." किंतु उन्होंने भी एक मत होकर जूआ उतार दिया है तथा
उन्होंने बंधन तोड़ फेंके हैं. 6 तब वन से एक सिंह आकर उनका वध करेगा,
मरुभूमि का भेड़िया उन्हें नष्ट कर देगा, एक चीता उनके नगरों को ताक रहा है,
जो कोई नगर से बाहर निकलता है वह फाड़ा जाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया
जाएगा, क्योंकि बड़ी संख्या है उनके अपराधों की और असंख्य हैं उनके मन
के विचार. 7 "मैं भला तुम्हें क्षमा क्यों करूं? तुम्हारे बालकों ने मुझे भूलना
पसंद कर दिया है. उन्होंने उनकी शपथ खाई है जो देवता ही नहीं हैं. यद्यपि मैं
उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा, फिर भी उन्होंने व्यभिचार किया,
उनका जनसमूह यात्रा करते हुए वेश्यालयों को जाता रहा है. 8 वे उन घोड़ों के
सदृश हैं, जो पुष्ट हैं तथा जिनमें काम-वासना समाई हुई है, हर एक अपने पड़ोसी

की पत्नी को देख हिनहिनाने लगता है. 9 क्या मैं ऐसे लोगों को दंड न दूं?" यह
याहवेह की वाणी है. "क्या मैं स्वयं ऐसे राष्ट्र से बदला न लूं? 10 "जाओ इस
देश की द्राक्षालता की पंक्तियों के मध्य जाकर उन्हें नष्ट कर दो, किंतु यह
सर्वनाश न हो. उसकी शाखाएं तोड़ डालो, क्योंकि वे याहवेह की नहीं हैं. 11
क्योंकि इस्राएल वंश तथा यहूदाह गोत्र ने मेरे साथ घोर विश्वासघात किया
है," यह याहवेह की वाणी है. 12 उन्होंने याहवेह के विषय में झूठी अफवाएं
प्रसारित की हैं; उन्होंने कहा, "वह कुछ नहीं करेंगे! हम पर न अकाल की
विपत्ति आएगी; हम पर न अकाल का प्रहार होगा, न तलवार का. 13 उनके
भविष्यद्वक्ता मात्र वायु हैं उनमें परमेश्वर का आदेश है ही नहीं; यही किया
जाएगा उनके साथ." 14 तब याहवेह सेनाओं के परमेश्वर की बात यह है:
"इसलिये कि तुमने ऐसा कहा है, यह देखना कि तुम्हारे मुख में मेरा संदेश अग्नि
में परिवर्तित हो जाएगा तथा ये लोग लकड़ी में, जिन्हें अग्नि निगल जाएगी. 15
इस्राएल वंश यह देखना," यह याहवेह की वाणी है, "मैं दूर से तुम्हारे विरुद्ध
आक्रमण करने के लिए एक राष्ट्र को लेकर आऊंगा— यह सशक्त, स्थिर तथा
प्राचीन राष्ट्र है, उस देश की भाषा से तुम अपरिचित हो, उनकी बात को समझना
तुम्हारे लिए संभव नहीं. 16 उनका तरकश रिक्त कब्र सदृश है; वे सभी शूर
योद्धा हैं. 17 वे तुम्हारी उपज तथा तुम्हारा भोजन निगल जाएंगे, वे तुम्हारे पुत्र-
पुत्रियों को निगल जाएंगे; वे तुम्हारी भेड़ों एवं पशुओं को निगल जाएंगे, वे
तुम्हारी द्राक्षालताओं तथा अंजीर वृक्षों को निगल जाएंगे. वे तुम्हारे उन गढ़
नगरों को, जिनकी सुरक्षा में तुम्हारा भरोसा टिका है, तलवार से ध्वस्त कर देंगे.
18 "फिर भी उन दिनों में," यह याहवेह की वाणी है, "मैं तुम्हें पूर्णतः नष्ट नहीं
करूंगा. 19 यह उस समय होगा जब वे यह कह रहे होंगे, 'याहवेह हमारे
परमेश्वर ने हमारे साथ यह सब क्यों किया है?' तब तुम्हें उनसे यह कहना
होगा, 'इसलिये कि तुमने मुझे भूलना पसंद कर दिया है तथा अपने देश में तुमने
परकीय देवताओं की उपासना की है, तब तुम ऐसे देश में अपरिचितों की सेवा
करोगे जो देश तुम्हारा नहीं है.' 20 "याकोब वंशजों में यह प्रचार करो और
यहूदाह गोत्रजों में यह घोषणा करो: 21 मूर्ख और अज्ञानी लोगों, यह सुन लो,
तुम्हारे नेत्र तो हैं किंतु उनमें दृष्टि नहीं है, तुम्हारे कान तो हैं किंतु उनमें सुनने कि
क्षमता है ही नहीं: 22 क्या तुम्हें मेरा कोई भय नहीं?" यह याहवेह की वाणी
है. "क्या मेरी उपस्थिति में तुम्हें थरथराहट नहीं हो जाती? सागर की सीमा-
निर्धारण के लिए मैंने बांध का प्रयोग किया है, यह एक सनातन आदेश है, तब
वह सीमा तोड़ नहीं सकता. लहरें थपेड़े अवश्य मारती रहती हैं, किंतु वे सीमा
पर प्रबल नहीं हो सकती; वे कितनी ही गरजना करे, वे सीमा पार नहीं कर
सकती. 23 किंतु इन लोगों का हृदय हठी एवं विद्रोही है; वे पीठ दिखाकर
अपने ही मार्ग पर आगे बढ़ गए हैं. 24 यह विचार उनके हृदय में आता ही
नहीं, 'अब हम याहवेह हमारे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा रखेंगे, याहवेह जो उपयुक्त
अवसर पर वृष्टि करते हैं, शरत्कालीन वर्षा एवं वसन्तकालीन वर्षा, जो हमारे
हित में निर्धारित कटनी के सप्ताह भी लाते हैं.' 25 तुम्हारे अधर्म ने इन्हें दूर कर
दिया है; तुम्हारे पापों ने हित को तुमसे दूर रख दिया है. 26 "मेरी प्रजा में दुष्ट
व्यक्ति भी बसे हुए हैं वे छिपे बैठे चिड़ीमार सदृश ताक लगाए रहते है और वे
फंदा डालते हैं, वे मनुष्यों को पकड़ लेते हैं. 27 जैसे पक्षी से पिंजरा भर जाता
है, वैसे ही उनके आवास छल से परिपूर्ण हैं; वे धनिक एवं सम्मान्य बने बैठे
हैं 28 और वे मोटे हैं और वे चिकने हैं. वे अधर्म में भी बढ़-चढ़ कर हैं; वे
निर्सहायक का न्याय नहीं करते. वे पितृहीनों के पक्ष में निर्णय इसलिये नहीं देते
कि अपनी समृद्धि होती रहे; वे गरीबों के अधिकारों की रक्षा नहीं करते. 29
क्या मैं ऐसे व्यक्तियों को दंड न दूं?" यह याहवेह की वाणी है. "क्या मैं इस
प्रकार के राष्ट्र से अपना बदला न लूं? 30 "देश में भयावह तथा रोमांचित स्थिति
देखी गई है: 31 भविष्यद्वक्ता झूठी भविष्यवाणी करते हैं, पुरोहित अपने ही
अधिकार का प्रयोग कर राज्य-काल कर रहे है, मेरी प्रजा को यही प्रिय लग रहा
है. यह सब घटित हो चुकने पर तुम क्या करोगे?

6 "बिन्यामिन के वंशजों, अपनी सुरक्षा के लिए, येरूशलेम में से पलायन
करो! तकोआ नगर में नरसिंगा नाद किया जाए! तथा बेथ-हक्केरेम में संकेत
प्रसारित किया जाए! उत्तर दिशा से संकट बड़ा है, घोर विनाश. 2 ज़ियोन की
सुंदर एवं सुरुचिपूर्ण, पुत्री को मैं नष्ट कर दूंगा. 3 चरवाहे एवं उनकी भेड़-
बकरियां उसके निकट आएंगे; वे अपने तंबू उसके चारों ओर खड़े कर देंगे,
उनमें से हर एक अपने-अपने स्थान पर पशुओं को चराएगा." 4 "उसके विरुद्ध
युद्ध की तैयारी की जाए! उठो, हम मध्याह्न के अवसर पर आक्रमण करेंगे!
धिक्कार है हम पर! दिन ढल चला है, क्योंकि संध्या के कारण छाया लंबी
होती जा रही है. 5 उठो, अब हम रात्रि में आक्रमण करेंगे और हम उसके महलों
को ध्वस्त कर देंगे!" 6 क्योंकि सेनाओं के याहवेह का यह आदेश है: "काट
डालो उसके वृक्ष और येरूशलेम की घेराबंदी करो. आवश्यक है कि इस नगर
को दंड दिया जाए; जिसके मध्य अत्याचार ही अत्याचार भरा है. 7 जिस प्रकार
कुंआ अपने पानी को ढालता रहता है, उसी प्रकार वह भी अपनी बुराई को
निकालती रहती है. उसकी सीमाओं के भीतर हिंसा तथा विध्वंस का ही उल्लेख
होता रहता है; मुझे वहां बीमारी और घाव ही दिखाई देते रहते हैं. 8 येरूशलेम,
चेत जाओ, ऐसा न हो कि तुम मेरे हृदय से उतर जाओ तथा मैं तुम्हें उजाड़ स्थान
बना डालूं जहां किसी भी मनुष्य का निवास न होगा." 9 यह सेनाओं के याहवेह
की वाणी है: "जैसे गिरी हुई द्राक्षा भूमि पर से एकत्र की जाती है वैसे ही वे चुन-
चुनकर इस्राएल के लोगों को एकत्र कर लेंगे; तब द्राक्ष तोड़नेवाले के सदृश
द्राक्षलता की शाखाएं टटोल लो, कि शेष रह गई द्राक्षा को एकत्र कर सको."
10 मैं किसे संबोधित करूं, किसे यह चेतावनी सुनाऊं कि वे इस पर ध्यान दें?
आप ही देखिए उनके कान तो बंद हैं, सुनना उनके लिए असंभव है. यह भी देख
लीजिए याहवेह का संदेश उनके लिए घृणास्पद बन चुका है; इसमें उनको
थोड़ा भी उल्लास नहीं है. 11 मुझमें याहवेह का कोप समाया हुआ है, इसे
नियंत्रित रखना मेरे लिए मुश्किल हुआ जा रहा है. "अपना यह कोप गली के
बालकों पर उंडेल दो और उन एकत्र हो रहे जवानों की सभा पर; क्योंकि
पति-पत्नी दोनों ही ले जा लिए जाएंगे, प्रौढ़ तथा अत्यंत वृद्ध भी. 12 उनके
आवास अपरिचितों को दे दिए जाएंगे, यहां तक कि उनकी पत्नियां एवं खेत भी,
क्योंकि मैं अपना हाथ देशवासियों के विरुद्ध बढ़ाऊंगा," यह याहवेह की वाणी
है. 13 "क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े तक, हर एक लाभ के लिए लोभी है;
यहां तक कि भविष्यद्वक्ता से लेकर पुरोहित तक भी, हर एक अपने व्यवहार में
झूठे हैं. 14 उन्होंने मेरी प्रजा के घावों को मात्र गलत उपचार किया है. वे दावा
करते रहे, 'शांति है, शांति है,' किंतु शांति वहां थी ही नहीं. 15 क्या अपने
घृणास्पद कार्य के लिए उनमें थोड़ी भी लज्जा देखी गई? निश्चयतः थोड़ी भी
नहीं; उन्हें तो लज्जा में गिर जाना आता ही नहीं. तब उनकी नियति वही होगी
जो समावेश किए जा रहे व्यक्तियों की नियति है; जब मैं उन्हें दंड दूंगा, घोर
होगा उनका पतन," यह याहवेह की वाणी है. 16 याहवेह का संदेश यह है:
"चौराहों पर जाकर ठहरो, वहां ठहर कर अवलोकन करो; और वहां प्राचीन
काल मार्गों के विषय में ज्ञात करो, यह पूछ लो कि कौन सा है वह सर्वोत्तम
मार्ग, और उसी पर चलो, तब तुम्हारे प्राण को चैन का अनुभव होगा. किंतु
उन्होंने कहा, 'हम उस पथ पर नहीं चलेंगे.' 17 तब मैंने इस विचार से तुम पर
प्रहरी नियुक्त किए, 'नरसिंगा नाद सुनो!' किंतु उन्होंने हठ किया, 'हम नहीं
सुनेंगे.' 18 इसलिये राष्ट्रों, सुनो और यह जान लो; एकत्र जनसमूह, तुम भी यह
समझ लो कि उनकी नियति क्या होगी. 19 पृथ्वी, तुम सुन लो: कि तुम इन
लोगों पर लाया गया विनाश देखोगी, यह उन्हीं के द्वारा गढ़ी गई युक्तियों का
परिणाम है, क्योंकि उन्होंने मेरे आदेश की अवज्ञा की है तथा उन्होंने मेरे

नियमों को भी ठुकरा दिया है. 20 क्या लाभ है उस लोहबान का जो मेरे लिए
शीबा देश से लाया जाता है, तथा दूर देश से लाए गए सुगंध द्रव्य का? तुम्हारे
बलियों से मैं खुश नहीं हूं, न तुम्हारे अर्पण से मैं प्रसन्न!" 21 इसलिये याहवेह
की यह वाणी है: "यह देख लो कि मैं इन लोगों के पथ में ठोकर के लिए लक्षित
पत्थर रख रहा हूं. उन्हें इन पत्थरों से ठोकर लगेगी, पिता और पुत्र दोनों ही;
उनके पड़ोसी एवं उनके मित्र नष्ट हो जाएंगे." 22 यह याहवेह की वाणी है:
"यह देखना, कि उत्तरी देश से एक जनसमूह आ रहा है; पृथ्वी के दूर क्षेत्रों में
एक सशक्त राष्ट्र तैयार हो रहा है. 23 वे धनुष एवं भाला छीन रहे हैं; वे क्रूर एवं
सर्वथा कृपाहीन हैं. उनका स्वर सागर गर्जन सदृश है, तथा वे युद्ध के लिए तैयार
घुड़सवारों के सदृश आ रहे हैं. ज़ियोन की पुत्री, तुम हो उनका लक्ष्य." 24
इसकी सूचना हमें प्राप्त हो चुकी है, हमारे हाथ ढीले पड़ चुके हैं. प्रसव पीड़ा ने
हमें अपने अधीन कर रखा है, वैसी ही पीड़ा जैसी प्रसूता की होती है. 25 न तो
बाहर खेत में जाना न ही मार्ग पर निकल पड़ना, क्योंकि शत्रु तलवार लिए हुए
है, सर्वत्र आतंक छाया हुआ है. 26 अतः मेरी पुत्री, मेरी प्रजा, शोक-वस्त्र धारण
करो, भस्म में लोटो; तुम्हारा शोक वैसा ही हो जैसा उसका होता है जिसने
अपना एकमात्र पुत्र खो दिया है, अत्यंत गहन शोक, क्योंकि हम पर विनाशक
का आक्रमण सहसा ही होगा. 27 "मैंने तुम्हें अपनी प्रजा के लिए परखने तथा
जानने के लिए पारखी नियुक्त किया है, कि तुम उनकी जीवनशैली को परखकर
जान लो. 28 वे सब हठी और विद्रोही हैं, बदनाम करते फिरते हैं. वे ऐसे कठोर
हैं जैसे कांस्य एवं लौह; वे सबके सब भ्रष्ट हो चुके हैं. 29 धौंकनियों ने भट्टी
को अत्यंत गर्म कर रखा है, अग्नि ने सीसे को भस्म कर दिया है, शुद्ध करने की
प्रक्रिया व्यर्थ ही की जा रही है; जिससे बुरे लोगों को अलग नहीं किया जा
सका! 30 उन्हें खोटी चांदी कहा गया है, क्योंकि उन्हें याहवेह ने त्याग दिया
है."

7 वह संदेश जो याहवेह द्वारा येरेमियाह के लिए प्रगट किया गया: 2 "याहवेह
के भवन के द्वार पर खड़े हो जाओ और वहां यह संदेश घोषित करो: "'संपूर्ण
यहूदिया याहवेह का यह संदेश सुनो, तुम जो याहवेह की आराधना करने इस द्वार
से प्रवेश किया करते हो. 3 इस्राएल के परमेश्वर, स्वर्गीय याहवेह का आदेश
यह है: अपने आचार-व्यवहार तथा अपने कार्यों की सुधारना करो, तब मैं तुम्हें
इस स्थान पर निवास करने दूंगा. 4 इस झूठे आश्वासन के धोखे में न रहना,
"यह तो याहवेह का मंदिर है, याहवेह का मंदिर है, याहवेह का मंदिर है!" 5
यदि तुम वास्तव में अपने आचारों को तथा कार्यों को सुधारोगे, यदि तुम एक
दूसरे के साथ न्याय में व्यवहार करोगे, 6 यदि तुम परदेशी, पितृहीन तथा विधवा
पर अत्याचार न करोगे, इस स्थान पर निःसहायक का रक्तपात न करोगे और
परकीय देवताओं का अनुसरण न करोगे, जो तुम्हारे अपने ही विनाश का कारण
है, 7 तब मैं तुम्हें इस स्थान पर निवास करने दूंगा, इस देश में, जो मैंने तुम्हारे
पूर्वजों को सदा-सर्वदा के लिए प्रदान किया है. 8 इस विषय पर ध्यान दो, कि
तुम निरर्थक ही झूठे आश्वासनों के भरोसे पर बैठे हुए हो. 9 "'क्या तुम चोरी,
हत्या, व्यभिचार करके ओर झूठी साक्ष्य देकर, बाल को बलि अर्पित करके
तथा उन परकीय देवताओं का अनुसरण करने के बाद जिन्हें तुम जानते ही नहीं,
10 इस भवन में, जो मेरे नाम से प्रख्यात है, आकर मेरे समक्ष इसलिये खड़े
होकर यह कहते, "अब हम सुरक्षित हैं"—कि तुम इन घृणित कार्यों में स्थिर
बने रह सको? 11 क्या तुम्हारी दृष्टि में यह भवन, जो मेरे नाम से प्रख्यात है,
डाकुओं की गुफा बन गया है? सुनो, मैंने, हां, मैंने सब देखा है! यह याहवेह की
वाणी है. 12 "'किंतु अब तुम शीलो जाओ जो इसके पूर्व मेरी आराधना के लिए
निर्धारित स्थल था, और देखो कि मैंने अपनी प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण
उसकी स्थिति कैसी बना दी है. 13 और अब इसलिये कि तुमने ये सारे कुकृत्य
किए हैं, यह याहवेह की वाणी है, मैंने तुमसे तुरंत उठकर बात की, किंतु तुमने
मेरी ओर ध्यान ही न दिया; मैंने तुम्हारा आह्वान भी किया, किंतु तुमने प्रत्युत्तर
ही न दिया. 14 इसलिये मैं उस भवन के साथ जो मेरे नाम से प्रख्यात है, जिस
पर तुमने अपनी आस्था रखी है तथा जो स्थान मैंने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को
प्रदान किया है, वही करूंगा जो मैंने शीलो के साथ किया था. 15 मैं तुम्हें अपनी
दृष्टि से दूर कर दूंगा, जैसा मैंने तुम्हारे भाइयों को अपनी दृष्टि से दूर कर दिया है,
अर्थात् एफ्राईम के सारे वंशजों को.' 16 "जहां तक तुम्हारा प्रश्न है तुम इन
लोगों के लिए प्रार्थना न करो; न उनके लिए गिड़गिड़ाने दो, न प्रार्थना में मुझसे
उनकी मध्यस्थता ही करो, क्योंकि मैं तुम्हारी नहीं सुनूंगा. 17 क्या तुम्हें यह
नहीं दिख रहा कि वे यहूदिया के नगरों में तथा येरूशलेम की गलियों में क्या-
क्या कर रहे हैं? 18 बालक लकड़ियां एकत्र करते हैं और पितागण आग जलाते
हैं, स्त्रियां आटा गूंधती हैं कि वे स्वर्ग की रानी के लिए मिष्ठान्न तैयार करें. वे
परकीय देवताओं को पेय बलि भी अर्पित करते हैं कि वे मेरे कोप को उकसाएं.
19 क्या वे इसके द्वारा मेरे प्रति अपना क्रोध व्यक्त कर रहे हैं? यह याहवेह की
वाणी है. यह तो वे स्वयं अपनी ही लज्जा के लिए कर रहे हैं, अपनी ही लज्जा
के लिए? 20 "'इसलिये प्रभु याहवेह का संदेश यह है: तुम देख लेना कि मेरा
कोप और मेरा आक्रोश इस स्थान पर उंडेला जाएगा, चाहे मनुष्य हो अथवा
पशु, मैदान के वृक्ष हों अथवा भूमि के फल, यह प्रज्वलित रहेगा तथा यह बूझ
न सकेगा. 21 "'इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का यह आदेश है:
अपनी होमबलियों के साथ अन्य बलियों को भी सम्मिलित कर लो और तुम
ही उस मांस को सेवन भी कर लो! 22 क्योंकि मिस्र देश से तुम्हारे पूर्वजों को
निराश करने के अवसर पर मैंने उनसे न तो होमबलियों का और न हनन बलियों
का उल्लेख किया था और न ही इनके लिए आदेश ही दिया था, 23 किंतु मैंने
उन्हें आदेश यह दिया था: मेरे आदेशों का पालन करो, तो मैं तुम्हारा परमेश्वर
बना रहूंगा तथा तुम मेरी प्रजा बनी रहोगी. मेरी नीतियों का आचरण करो जिनका
मैंने तुम्हें आदेश दिया है, कि तुम्हारा कल्याण हो. 24 फिर भी उन्होंने न तो मेरे
आदेशों का पालन किया, न उनकी ओर ध्यान ही दिया. उन्होंने अपने बुरे दिलों
की जिद्दी इच्छा का पालन किया. तब वे आगे बढ़ने की अपेक्षा में पीछे ही हटते
चले गए. 25 जिस दिन से तुम्हारे पूर्वज मिस्र देश से निराश हुए तब से आज
तक, मैंने अपने सेवक अर्थात् भविष्यवक्ताओं को दिन-प्रतिदिन तुम्हारे लिए
भेजा है. 26 फिर भी न तो उन्होंने मेरी सुनी और न ही मेरे संदेश की ओर ध्यान
ही दिया. बल्कि उन्होंने अपनी गर्दन और भी अधिक कठोर बना ली, उन्होंने
तो अपने पूर्वजों से भी अधिक बुरे कार्य किए.' 27 "अनिवार्य है कि तुम मेरा
संपूर्ण वचन उनके समक्ष दोहराओ, हां, वे तुम्हारी सुनेंगे नहीं; तुम उनको आह्वान
तो करोगे, किंतु वे इसका प्रत्युत्तर कदापि न देंगे. 28 तुम्हें उनसे यह कहना
होगा, 'यह वह राष्ट्र है जिसने न तो याहवेह अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन
किया और न ही उनके द्वारा किए जा रहे आदेश को स्वीकार किया. सत्यता नष्ट
हो चुकी और उनके मुख से दूर की जा चुकी है. 29 "'अपने केश काट डालो
और उन्हें फेंक दो; वनस्पतिहीन पर्वतों पर जाकर विलाप करो, क्योंकि याहवेह
ने उस पीढ़ी को अस्वीकार करके उसका परित्याग कर दिया है और जिसने
उनका कोप भड़काया है. 30 "'यहूदाह के वंशजों ने वह किया है जो मेरी दृष्टि
में बुरा है, यह याहवेह की वाणी है. उन्होंने उन घृणास्पद वस्तुओं को उस भवन
में प्रतिष्ठित कर रखा है जो मेरे नाम से प्रख्यात हैं और मेरा भवन अशुद्ध हो चुका
है. 31 उन्होंने तोफेथ के पूजा-स्थल निर्मित कर लिए हैं जो हिन्नोम के पुत्र की
घाटी में हैं कि वे वहां अपने पुत्रों-पुत्रियों को होमबलि स्वरूप अर्पित करें,
जिसको मैंने आदेश ही न दिया है, न ही यह कभी मेरे विचारों में आया था.
32 इसलिये यह देखना, कि वे दिन आ रहे हैं, यह याहवेह की वाणी है, जब
इसको तोफेथ-पूजास्थल अथवा हिन्नोम के पुत्र की घाटी कहा जाना समाप्त हो
जाएगा, बल्कि यह नरसंहार घाटी हो जाएगी, वे अपने मृतकों को तोफ़ेथ में तब

तक दफनाएंगे कि जब तक वहां कोई जगह ही शेष न हो. **33** इन लोगों के शव आकाश के पक्षी को तथा पृथ्वी के पशुओं के आहार होने लगेंगे, इन्हें कोई भी शवों से दूर नहीं भगाएगा. **34** तब मैं यहूदिया के नगरों और येरूशलेम के सड़कों में से उल्लास एवं आनंद का स्वर बंद कर दूंगा, वर एवं वधू के विवाहोत्सव की ध्वनि बंद हो जाएगी, क्योंकि सारे देश ही उजाड़ हो जाएंगे.

8 "'याहवेह की यह घोषणा है, उस समय, वे यहूदिया के राजाओं, उच्च अधिकारियों, पुरोहितों, भविष्यवक्ताओं तथा येरूशलेम वासियों की अस्थियां उनकी कब्रों में से निकालकर लाएंगे. **2** वे इन अस्थियों को सूर्य, चंद्रमा, आकाश के तारों को समर्पित कर देंगे, जिनसे उन्होंने प्रेम किया, जिनकी उन्होंने उपासना की, जिनका उन्होंने अनुसरण किया, जिनकी इच्छा इन्होंने ज्ञात करने का उपक्रम किया, जिनकी इन्होंने वंदना की. इन अस्थियों को वे न एकत्र करेंगे और न इन्हें गाड़ देंगे, वे भूमि पर विष्ठा सदृश पड़ी रहेंगी. **3** इस अधर्मी परिवार के लोगों द्वारा जीवन की अपेक्षा मृत्यु को ही अधिक पसंद किया जाएगा. यह स्थिति उस हर एक स्थान के लोगों की होगी, जिन्हें मैंने इन स्थानों पर खदेड़ा है, यह सेनाओं के याहवेह की वाणी है.' **4** "तुम्हें उनसे यह कहना होगा, 'यह याहवेह का कहना है: "'क्या मनुष्य गिरते और फिर उठ खड़े नहीं होते? क्या कोई पूर्व स्थिति को परित्याग कर प्रायश्चित नहीं करता? **5** तो येरूशलेम, क्या कारण है कि ये लोग मुंह मोड़कर चले गये? उन्होंने छल को दृढतापूर्वक जकड़ रखा है; वे लौटना तो चाहते ही नहीं. **6** मैंने सुना तथा सुनकर इस पर ध्यान दिया है, उनका वचन ठीक नहीं है. एक भी व्यक्ति ने बुराई का परित्याग कर प्रायश्चित नहीं किया है, उनका तर्क है, "मैंने किया ही क्या है?" हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया है जैसे घोड़ा रणभूमि में द्रुत गति से दौड़ता हुआ जा उतरता है. **7** आकाश में उड़ता हुआ सारस अपनी ऋतु को पहचानता है, यही सत्य है कपोत, अबाबील तथा सारिका के विषय में ये सभी अपने आने के समय का ध्यान रखते हैं. किंतु मेरे अपने लोगों को मुझ याहवेह के नियमों का ज्ञान ही नहीं है. **8** "'तुम यह दावा कैसे कर सकते हो, "हम ज्ञानवान हैं, हम याहवेह के विधान को उत्तम रीति से जानते हैं," ध्यान दो शास्त्रियों की झूठी लेखनी ने विधान को ही झूठा स्वरूप दे दिया है. **9** तुम्हारे बुद्धिमानों को लज्जित कर दिया गया है; वे विस्मित हो चुके हैं तथा उन्हें पकड़ लिया गया है. ध्यान दो उन्होंने याहवेह के संदेश को ठुकरा दिया है, अब उनकी बुद्धिमत्ता के विषय में क्या कहा जाएगा? **10** इसलिये मैं अब उनकी पत्नियां अन्यों को दे दूंगा अब उनके खेतों पर स्वामित्व किसी अन्य का हो जाएगा. क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े तक, हर एक लाभ के लिए लोभी है; यहां तक कि भविष्यद्वक्ता से लेकर पुरोहित तक भी, हर एक अपने व्यवहार में झूठे हैं. **11** उन्होंने मेरी प्रजा की पुत्री के घावों को मात्र गलत उपचार किया है. वे दावा करते रहे, "शांति है, शांति है," किंतु शांति वहां थी ही नहीं. **12** क्या अपने घृणास्पद कार्य के लिए उनमें थोड़ी भी लज्जा देखी गई? निश्चयतः थोड़ी भी नहीं; उन्हें तो लज्जा में गिर जाना आता ही नहीं. तब उनकी नियति वही होगी जो समावेश किए जा रहे व्यक्तियों की नियति है; उन्हें जब दंड दिया जाएगा, घोर होगा उनका पतन, यह याहवेह की वाणी है. **13** "'मैं निश्चयतः उन्हें झपटकर ले उड़ूंगा, यह याहवेह की वाणी है. द्राक्षालता में द्राक्षा न होंगे. अंजीर वृक्ष में अंजीर न होंगे, पत्तियां मुरझा चुकी होंगी. जो कुछ मैंने उन्हें दिया है वह सब निकल जाएगा.'" **14** हम चुपचाप क्यों बैठे हैं? एकत्र हो जाओ! और हम गढ़ नगरों को चलें तथा हम वहीं युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हों! यह याहवेह हमारे परमेश्वर द्वारा निर्धारित दंड है उन्हीं ने हमें विष से भरा पेय जल दिया है, क्योंकि हमने याहवेह के विरुद्ध पाप किया है. **15** हम शांति की प्रतीक्षा करते रहें किंतु कल्याण के अनुरूप कुछ न मिला, हम शांति की पुनःस्थापना की प्रतीक्षा करते रहे, किंतु हमें प्राप्त हुआ आतंक. **16** दान प्रदेश में उनके घोड़ों की फुनफुनाहट सुनाई पड़ रही है; उनके घोड़ों की हिनहिनाहट से सारे क्षेत्र कांप उठे हैं. क्योंकि वे आते हैं और सारे देश को जो कुछ इसमें है, उसे सारे नगर एवं उसके निवासियों को नष्ट कर जाते हैं. **17** "यह देखना कि, मैं तुम्हारे मध्य नाग छोड़ रहा हूं, वे सर्प जिन पर मंत्र नहीं किया जा सकता, वे तुम्हें डसेंगे," यह याहवेह की वाणी है. **18** मेरा शोक असाध्य है, मेरा हृदय डूब चुका है. **19** यहां देखो ध्यान से सुनो, दूर देश से आ रही मेरी प्रजा की पुत्री की विलाप ध्वनि "क्या याहवेह ज़ियोन में नहीं हैं? क्या ज़ियोन का राजा उनके मध्य नहीं है?" "क्यों उन्होंने मुझे क्रोधित किया अपनी खोदी हुई प्रतिमाओं द्वारा, विजातीय प्रतिमाओं द्वारा?" **20** "कटनी काल समाप्त हो चुका, ग्रीष्मऋतु भी जा चुकी, फिर भी हमें उद्धार प्राप्त नहीं हुआ है." **21** अपने लोगों की पुत्री की दुःखित अवस्था ने मुझे दुःखित कर रखा है; मैं शोक से अचंभित हूं, और निराशा में मैं डूब चुका हूं. **22** क्या गिलआद में कोई भी औषधि नहीं? क्या वहां कोई वैद्य भी नहीं? तब क्या कारण है कि मेरे लोगों की पुत्री रोगमुक्त नहीं हो पाई है?

9 अच्छा होता कि मेरा सिर जल का सोता तथा मेरे नेत्र आंसुओं से भरे जाते कि मैं घात किए गए अपने प्रिय लोगों के लिए रात-दिन विलाप करता रहता! **2** अच्छा होता कि मैं मरुभूमि में यात्रियों का आश्रय-स्थल होता, कि मैं अपने लोगों को परित्याग कर उनसे दूर जा सकता; उन सभी ने व्यभिचार किया है, वे सभी विश्वासघातियों की सभा हैं. **3** "वे अपनी जीभ का प्रयोग अपने धनुष सदृश करते हैं; देश में सत्य नहीं असत्य व्याप्त हो चुका है. वे एक संकट से दूसरे संकट में प्रवेश करते जाते हैं; वे मेरे अस्तित्व ही की उपेक्षा करते हैं," यह याहवेह की वाणी है. **4** "उपयुक्त होगा कि हर एक अपने पड़ोसी से सावधान रहे; कोई अपने भाई-बन्धु पर भरोसा न करे. क्योंकि हर एक भाई का व्यवहार धूर्ततापूर्ण होता है, तथा हर एक पड़ोसी अपभाषण करता फिरता है. **5** हर एक अपने पड़ोसी से छल कर रहा है, और सत्य उसके भाषण में है ही नहीं. अपनी जीभ को उन्होंने झूठी भाषा में प्रशिक्षित कर दिया है; अंत होने के बिंदु तक वे अधर्म करते जाते हैं. **6** तुम्हारा आवास धोखे के मध्य स्थापित है; धोखा ही वह कारण है, जिसके द्वारा वे मेरे अस्तित्व की उपेक्षा करते हैं," यह याहवेह की वाणी है. **7** इसलिये सेनाओं के याहवेह की चेतावनी यह है: "यह देख लेना, कि मैं उन्हें आग में शुद्ध करूंगा तथा उन्हें परखूंगा, क्योंकि अपने प्रिय लोगों के कारण मेरे समक्ष इसके सिवा और कौन सा विकल्प शेष रह जाता है? **8** उनकी जीभ घातक बाण है; जिसका वचन फंसाने ही का होता है. अपने मुख से तो वह अपने पड़ोसी को कल्याण का आश्वासन देता है, किंतु मन ही मन वह उसके लिए घात लगाने की युक्ति करता रहता है. **9** क्या उपयुक्त नहीं कि मैं उन्हें इन कृत्यों के लिए दंड दूं?" यह याहवेह की वाणी है. "क्या मैं इस प्रकार के राष्ट्र से स्वयं बदला न लूं?" **10** पर्वतों के लिए मैं विलाप करूंगा और चराइयों एवं निर्जन क्षेत्रों के लिए मैं शोक के गीत गाऊंगा. क्योंकि अब वे सब उजाड़ पड़े है कोई भी उनके मध्य से चला फिरा नहीं करता, वहां पशुओं के रम्भाने का स्वर सुना ही नहीं जाता. आकाश के पक्षी एवं पशु भाग चुके हैं, वे वहां हैं ही नहीं. **11** "येरूशलेम को मैं खंडहरों का ढेर, और सियारों का बसेरा बना छोड़ूंगा; यहूदिया प्रदेश के नगरों को मैं उजाड़ बना दूंगा वहां एक भी निवासी न रहेगा." **12** कौन है वह बुद्धिमान व्यक्ति जो इसे समझ सकेगा? तथा कौन है वह जिससे याहवेह ने बात की कि वह उसकी व्याख्या कर सके? सारा देश उजाड़ कैसे हो गया? कैसे मरुभूमि सदृश निर्जन हो गई, कि कोई भी वहां से चला फिरा नहीं करता? **13** याहवेह ने उत्तर दिया, "इसलिये कि उन्होंने मेरे विधान की अवहेलना की है, जो स्वयं मैंने उनके लिए नियत किया तथा उन्होंने न तो मेरे आदेशों का पालन किया और न ही उसके अनुरूप आचरण ही किया. **14** बल्कि, वे अपने हठीले हृदय की समझ के अनुरूप आचरण करते रहे; वे अपने पूर्वजों की शिक्षा पर बाल देवताओं का अनुसरण करते रहें." **15** इसलिये

सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने निश्चय किया: “यह देख लेना, मैं
उन्हें पेय के लिए कड़वा नागदौन तथा विष से भरा जल दूंगा. 16 मैं उन्हें ऐसे
राष्ट्रों के मध्य बिखरा दूंगा जिन्हें न तो उन्होंने और न उनके पूर्वजों ने जाना है,
मैं उनके पीछे उस समय तक तलवार तैयार रखूंगा, जब तक उनका पूर्ण अंत न
हो जाए.” 17 यह सेनाओं के याहवेह का आदेश है: “विचार करके उन स्त्रियों
को बुला लो, जिनका व्यवसाय ही है विलाप करना, कि वे यहां आ जाएं; उन
स्त्रियों को, जो विलाप करने में निपुण हैं, 18 कि वे यहां तुरंत आएं तथा हमारे
लिए विलाप करें कि हमारे नेत्रों से आंसू उमड़ने लगे, कि हमारी पलकों से
आंसू बहने लगे. 19 क्योंकि ज़ियोन से यह विलाप सुनाई दे रहा है: ‘कैसे हो
गया है हमारा विनाश! हम पर घोर लज्जा आ पड़ी है! क्योंकि हमने अपने देश
को छोड़ दिया है क्योंकि उन्होंने हमारे आवासों को ढाह दिया है.’” 20 स्त्रियों,
अब तुम याहवेह का संदेश सुनो; तुम्हारे कान उनके मुख के वचन सुनें. अपनी
पुत्रियों को विलाप करना सिखा दो; तथा हर एक अपने-अपने पड़ोसी को शोक
गीत सिखाए. 21 क्योंकि मृत्यु का प्रवेश हमारी खिड़कियों से हुआ है यह
हमारे महलों में प्रविष्ट हो चुका है; कि गलियों में बालक नष्ट किए जा सकें तथा
नगर चौकों में से जवान. 22 यह वाणी करो, “याहवेह की ओर से यह संदेश है:
“‘मनुष्यों के शव खुले मैदान में विष्ठा सदृश पड़े हुए दिखाई देंगे, तथा फसल
काटनेवाले द्वारा छोड़ी गई पूली सदृश, किंतु कोई भी इन्हें एकत्र नहीं करेगा.’”
23 याहवेह की ओर से यह आदेश है: “न तो बुद्धिमान अपनी बुद्धि का अहंकार
करे न शक्तिवान अपने पौरुष का न धनाढ्य अपनी धन संपदा का, 24 जो गर्व
करे इस बात पर गर्व करे: कि उसे मेरे संबंध में यह समझ एवं ज्ञान है, कि मैं
याहवेह हूं जो पृथ्वी पर निर्जर प्रेम, न्याय एवं धार्मिकता को प्रयोग करता हूं,
क्योंकि ये ही मेरे आनंद का विषय है,” यह याहवेह की वाणी है. 25 “यह
ध्यान रहे कि ऐसे दिन आ रहे हैं,” याहवेह यह वाणी दे रहे हैं, “जब मैं उन सभी
को दंड दूंगा, जो ख़तनित होने पर भी अख़तनित ही हैं— 26 मिस्र, यहूदिया,
एदोम, अम्मोन वंशज, मोआब तथा वे सभी, जिनका निवास मरुभूमि में है, जो
अपनी कनपटी के केश क़तर डालते हैं. ये सभी जनता अख़तनित हैं, तथा
इस्राएल के सारे वंशज वस्तुतः हृदय में अख़तनित ही हैं.”

10 इस्राएल वंशजों, तुम्हें संबोधित बात सुनो. 2 याहवेह कह रहे हैं: “अन्य
जनताओं के आचार-व्यवहार परिपाटी एवं प्रथाओं को सीखने का प्रयास
न करो और न ही आकाश में घटित हो रहे असाधारण लक्षणों से विचलित हो
जाओ, यद्यपि अन्य राष्ट्र, निःसंदेह, इनसे विचलित हो जाते हैं. 3 क्योंकि
लोगों की प्रथाएं मात्र भ्रम हैं, कारण यह वन से काटकर लाया गया काठ ही तो
है, काष्ठ शिल्पी द्वारा उसके छेनी से बनाया गया है. 4 वे ही इन्हें स्वर्ण और
चांदी से सजाते है; इन्हें कीलों द्वारा हथौड़ों के प्रहार से जोड़ा जाता है कि ये
अपने स्थान पर स्थिर रहें. 5 उनकी प्रतिमाएं ककड़ी के खेत में खड़े किए गए
बिजूखा सदृश हैं, जो बात नहीं कर सकतीं; उन्हें तो उठाकर एक स्थान से
दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है क्योंकि वे तो चल ही नहीं सकतीं. मत डरो
उनसे; वे कोई हानि नहीं कर सकतीं वस्तुतः वे तो कोई कल्याण भी नहीं कर
सकतीं.” 6 याहवेह, कोई भी नहीं है आपके सदृश; आप महान हैं, और
सामर्थ्य में असाधारण हैं आपकी प्रतिष्ठा. 7 राष्ट्रों का राजा, कौन हो सकता है
वह जिसमें आपके प्रति श्रद्धा न होगी? वस्तुतः आप ही हैं इसके योग्य क्योंकि
राष्ट्रों के सारे बुद्धिमानों के मध्य, तथा राष्ट्रों के सारे राज्यों में कोई भी नहीं है
आपके तुल्य. 8 किंतु वे पूर्णतः निर्बुद्धि एवं मूर्ख हैं; उनकी शिक्षाएं धोखे के
सिवा और कुछ नहीं. 9 तरशीश से पीटी हुई चांदी तथा उपहाज़ से स्वर्ण लाया
जाता है. शिल्पी एवं स्वर्णकार की हस्तकला हैं वे नीले और बैंगनी वस्त्र उन्हें
पहनाए जाते हैं— ये सभी दक्ष शिल्पियों की कलाकृति-मात्र हैं. 10 किंतु
याहवेह सत्य परमेश्वर हैं; वे अनंत काल के राजा हैं. उनके कोप के समक्ष पृथ्वी
कांप उठती है; तथा राष्ट्रों के लिए उनका आक्रोश असह्य हो जाता है. 11
“उनसे तुम्हें यह कहना होगा: ‘वे देवता, जिन्होंने न तो आकाश की और न
पृथ्वी की सृष्टि की है, वे पृथ्वी पर से तथा आकाश के नीचे से नष्ट कर दिए
जाएंगे.’” 12 याहवेह ही हैं जिन्होंने अपने सामर्थ्य से पृथ्वी की सृष्टि की;
जिन्होंने विश्व को अपनी बुद्धि द्वारा प्रतिष्ठित किया है, अपनी सूझ-बूझ से
उन्होंने आकाश को विस्तीर्ण कर दिया. 13 उनके स्वर उच्चारण से आकाश के
जल में हलचल मच जाती है; वही हैं जो चारों ओर से मेघों का आरोहण बनाया
करते हैं. वह वृष्टि के लिए बिजली को अधीन करते हैं तथा अपने भण्डारगृह से
पवन को चलाते हैं. 14 हर एक मनुष्य मूर्ख है—ज्ञानहीन; हर एक स्वर्णशिल्पी
अपनी ही कृति प्रतिमा द्वारा लज्जित किया जाता है. क्योंकि उसके द्वारा ढाली
गई प्रतिमाएं धोखा हैं; उनमें जीवन-श्वास तो है ही नहीं. 15 ये प्रतिमाएं सर्वथा
व्यर्थ हैं, ये हास्यपद कृति हैं; जब उन पर दंड का अवसर आएगा, वे नष्ट हो
जाएंगी. 16 याहवेह जो याकोब की निधि हैं इनके सदृश नहीं हैं, क्योंकि वे
सभी के सृष्टिकर्ता हैं, इस्राएल उन्हीं के इस निज भाग का कुल है— उनका नाम
है सेनाओं का याहवेह. 17 तुम, जो शत्रु द्वारा घिरे हुए जिए जा रहे हो, भूमि पर
से अपनी गठरी उठा लो. 18 क्योंकि याहवेह का संदेश यह है: “यह देख लेना
कि मैं इस देश के निवासियों को इस समय प्रक्षेपित करने पर हूं; मैं उन पर
विपत्तियां ले आऊंगा कि उन्हें वस्तुस्थिति का बोध हो जाए.” 19 धिक्कार है
मुझ पर! मैं निराश हो चुका हूं! असाध्य है मेरा घाव! किंतु मैंने विचार किया,
“निश्चयतः यह एक रोग है, यह तो मुझे सहना ही होगा.” 20 मेरा तंबू नष्ट हो
चुका है; रस्सियां टूट चुकी हैं. मेरे पुत्र मुझे छोड़ चुके हैं, कोई भी न रहा; जो
पुनः मेरे तंबू को खड़ा करे ऐसा कोई भी नहीं, जो इसमें पर्दे लटकाए. 21 कारण
यह है कि चरवाहे मूर्ख हैं और उन्होंने याहवेह की बातें ज्ञात करना आवश्यक न
समझा; इसलिये वे समृद्ध न हो सके और उनके सभी पशु इधर-उधर बिखर गए
हैं. 22 समाचार यह आ रहा है, कि वे आ रहे हैं— उत्तर दिशा के देश से घोर
अशांति की आवाज! कि यहूदिया के नगरों को निर्जन तथा सियारों का बसेरा
बना दिया जाए. 23 याहवेह, मैं उत्तम रीति से इस बात से अवगत हूं कि मनुष्य
अपनी गतिविधियों को स्वयं नियंत्रित नहीं करता; न ही मनुष्य अपने कदम
स्वयं संचालित कर सकता है. 24 याहवेह मुझे अनुशासित करिये किंतु सही
तरीके से— यह अपने क्रोध में न कीजिए, अन्यथा मैं तो मिट ही जाऊंगा. 25
अपना कोप उन जनताओं पर उंडेल दीजिए जो आपको नहीं जानते तथा उन
परिवारों पर भी, जो आपसे गिड़गिड़ाने नहीं देते. क्योंकि इन राष्ट्रों ने याकोब
को समाप्त कर दिया है; उन्होंने याकोब को निगल कर उसे पूर्णतः नष्ट कर दिया
है तथा उसके आवास को उजाड़ बना दिया है.

11 वह संदेश जो याहवेह द्वारा येरेमियाह के लिए प्रगट किया गया: 2 “इस
वाचा के वचन पर ध्यान दो, और फिर जाकर यहूदिया तथा येरूशलेम के
निवासियों के समक्ष इसकी बात करो. 3 उनसे कहना, याहवेह इस्राएल के
परमेश्वर का संदेश यह है: ‘श्रापित है वह व्यक्ति जो इस वाचा की विषय-वस्तु
की ओर ध्यान नहीं देता; 4 जिसका आदेश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को उस समय
दिया था, जब मैंने उन्हें मिस्र देश से लौह-भट्टी से यह कहते हुए निराश किया
था. मेरे आदेश का पालन करो तथा मेरे आदेशों का आचरण करो, कि तुम मेरी
प्रजा हो जाओ तथा मैं तुम्हारा परमेश्वर. 5 कि मैं तुम्हारे पूर्वजों को एक देश
प्रदान करने की शपथ पूर्ण करूं, जिस देश में दुग्ध एवं मधु धारा-सदृश विपुलता
में प्रवाहित होते रहते हैं,’ जैसा कि यह वर्तमान में भी है.” यह सुन मैं कह उठा,
“याहवेह, ऐसा ही होने दीजिए.” 6 याहवेह ने मुझे उत्तर दिया, “यहूदिया के
नगरों में तथा येरूशलेम की गलियों में इस वचन की वाणी करो: ‘इस वाचा के
वचन को सुनो तथा उसका अनुकरण करो. 7 क्योंकि मैंने तुम्हारे पूर्वजों को
मिस्र देश से बाहर लाते समय उन्हें गंभीर चेतावनी दी थी, आज भी मैं उन्हें

आग्रही चेतावनी दे रहा हूं, “मेरे आदेश सुनो.” 8 फिर भी न तो उन्होंने मेरे
आदेश का पालन किया और न ही उन पर ध्यान देना उपयुक्त समझा; बल्कि,
उनमें से हर एक अपने कुटिल हृदय की हठीली उत्प्रेरणा में मनमानी करता रहा.
जब उन्होंने मेरे इन आदेशों का पालन नहीं किया, मैंने वाचा में बताए सारे शाप
उन पर अधीन कर दिए.’” 9 तब याहवेह ने मुझ पर प्रकट किया, “यहूदिया
की प्रजा में तथा येरूशलेम वासियों में एक षड़्यंत्र का भेद खुला है. 10 वे अपने
उन्हीं पूर्वजों के अधर्म में लौट चुके हैं, जिन्होंने मेरे आदेशों का पालन करना
अस्वीकार कर दिया था और वे परकीय देवताओं की उपासना करने लगे.
इस्राएल वंशज तथा यहूदाह गोत्रजों ने मेरी वह वाचा भंग कर दी है, जो मैंने
उनके पूर्वजों के साथ स्थापित की थी. 11 इसलिये यह याहवेह की वाणी है:
‘यह देखना कि मैं उन पर ऐसी विपत्ति लाने पर हूं जिससे उनका बच निकलना
असंभव होगा, यद्यपि वे मेरी ओर गिड़गिड़ाने लगें. 12 जिनकी उपासना में वे
धूप जलाया करते हैं, किंतु उनकी विपत्ति के समय वे निश्चयतः उनकी रक्षा न
कर सकेंगे. 13 क्योंकि यहूदिया, तुम्हारे इन देवताओं की संख्या उतनी ही
है; जितनी तुम्हारे नगरों की तथा उस घृणित कार्य के लिए उतनी ही वेदियां
हैं—वे वेदियां जिन पर तुम बाल के लिए धूप जलाते हो—जितनी येरूशलेम की
गलियां.’ 14 “इसलिये इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो और न उनके लिए
मध्यस्थ होकर बिनती करो, क्योंकि जब वे अपने संकट के अवसर पर मेरे पास
गिड़गिड़ाने लगे फिर भी मैं उनकी न सुनूंगा. 15 “अब मेरी प्रिया का मेरे
परिवार में क्या स्थान रह गया है जब वह अनेक कुकर्म कर चुकी है? क्या
तुम्हारे द्वारा अर्पित की गई बलि तुमसे तुम्हारी विपत्ति दूर कर देगी, कि तुम
आनंद मना सको?” 16 याहवेह ने तुम्हें नाम दिया था सुंदर आकार तथा मनोरम
फल से युक्त हरा जैतून वृक्ष. किंतु अशांति की उच्च ध्वनि के साथ याहवेह ने
इसमें आग लगा दी है, अब इसकी शाखाएं किसी योग्य न रहीं. 17 सेनाओं के
याहवेह ने, जिन्होंने तुम्हें रोपित किया, इस्राएल वंश तथा यहूदाह के वंश के द्वारा
किए गए संकट के कारण तुम पर संकट का उच्चारण किया है. यह उन्होंने
बाल को धूप जलाने के द्वारा मेरे कोप को भड़काने के लिए यह किया है. 18
इसके सिवा याहवेह ने मुझ पर यह प्रकट किया, इसलिये मुझे इसका ज्ञान मिल
गया, तब याहवेह आपने मुझ पर उनके कृत्य प्रकाशित किए. 19 मुझे यह बोध
ही न था कि वे मेरे विरुद्ध षड़्यंत्र रच रहें हैं; मेरी स्थिति वैसी ही थी जैसी वध के
लिए ले जाए जा रहे मेमने की होती है, वे परस्पर परामर्श कर रहे हैं, “चलो,
हम इस वृक्ष को इसके फलों सहित नष्ट कर दें; हम इसे जीव-लोक से ही मिटा
दें, कि उसके नाम का ही उल्लेख पुनः न हो सके.” 20 सेनाओं के याहवेह,
आप वह हैं, जो नीतिपूर्ण निर्णय देते हैं आप जो भावनाओं तथा हृदय को परखते
रहते हैं, मुझे उन पर आपके बदले को देखने का सुअवसर प्रदान कीजिए,
क्योंकि अपनी समस्या मैंने आप ही को सौंप दी है. 21 इसलिये अनाथोथ के
उन व्यक्तियों के संबंध में जो तुम्हारे प्राण लेने को तैयार हैं, जिन्होंने तुम्हें यह
धमकी दी है, “याहवेह के नाम में कोई भविष्यवाणी न करना, कि तुम हमारे
द्वारा वध किए न जाओ”— 22 इसलिये सेनाओं के याहवेह की वाणी यह है:
“यह देखना कि मैं उन्हें दंड देने पर हूं! जवान पुरुष तलवार से घात किए जाएंगे,
उनकी संतान की मृत्यु लड़ाई में हो जाएगी. 23 उनके कोई भी लोग न रहेंगे,
क्योंकि मैं अनाथोथ की प्रजा पर विनाश लेकर आ रहा हूं, यह उनके लिए दंड
का वर्ष होगा.”

12 याहवेह, जब भी मैं आपके समक्ष अपना मुकदमा प्रस्तुत करता हूं, आप
सदैव ही युक्त प्रमाणित होते हैं. निःसंदेह मैं आपके ही साथ न्याय संबंधी
विषयों पर विचार-विमर्श करूंगा: क्यों बुराइयों का जीवन समृद्ध होता गया है?
क्यों वे सब जो विश्वासघात के व्यापार में लिप्त हैं निश्चिंत जीवन जी रहे हैं? 2
आपने उन्हें रोपित किया है, अब तो उन्होंने जड़ भी पकड़ ली है; वे विकास
कर रहे हैं और अब तो वे फल भी उत्पन्न कर रहे हैं. उनके होंठों पर तो
आपका नाम बना रहता है किंतु अपने मन से उन्होंने आपको दूर ही दूर रखा है.
3 किंतु याहवेह, आप मुझे जानते हैं; मैं आपकी दृष्टि में बना रहता हूं; आप मेरे
हृदय की परीक्षा करते रहते हैं. उन्हें इस प्रकार खींचकर अलग कर लीजिए,
जिस प्रकार वध के लिए भेड़ें अलग की जाती हैं! उन्हें नरसंहार के दिन के
लिए तैयार कर लीजिए! 4 हमारा देश और कितने दिन विलाप करता रहेगा
तथा कब तक मैदान में घास मुरझाती रहेगी? क्योंकि देशवासियों की बुराई के
कारण, पशु-पक्षी सहसा वहां से हटा दिए गए हैं. क्योंकि, वे मनुष्य अपने मन
में विचार कर रहे हैं, “परमेश्वर को हमारे द्वारा किए गए कार्यों का परिणाम
दिखाई न देगा.” 5 “यदि तुम धावकों के साथ दौड़ रहे थे और तुम इससे थक
चुके हो, तो तुम घोड़ों से स्पर्धा कैसे कर सकोगे? यदि तुम अनुकूल क्षेत्र में ही
लड़खड़ा गए तो, यरदन क्षेत्र के बंजर भूमि में तुम्हारा क्या होगा? 6 क्योंकि
यहां तक कि तुम्हारे भाई-बंधुओं तथा तुम्हारे पिता के ही परिवार ने— तुम्हारे
साथ विश्वासघात किया है; वे चिल्ला-चिल्लाकर तुम्हारा विरोध कर रहे हैं.
यदि वे तुमसे तुम्हारे विषय में अनुकूल शब्द भी कहें, फिर भी उनका विश्वास न
करना. 7 “मैंने अपने परिवार का परित्याग कर दिया है, मैंने अपनी इस निज
भाग को भी छोड़ दिया है; मैंने अपनी प्राणप्रिया को उसके शत्रुओं के हाथों में
सौंप दिया है. 8 मेरे लिए तो अब मेरा यह निज भाग वन के सिंह सदृश हो गया
है. उसने मुझ पर गर्जना की है; इसलिये अब मुझे उससे घृणा हो गई है. 9 क्या
मेरे लिए यह निज भाग चित्तिवाले शिकारी पक्षी सदृश है? क्या वह चारों ओर
से शिकारी पक्षी से घिर चुकी है? जाओ, मैदान के सारे पशुओं को एकत्र करो;
कि वे आकर इन्हें निगल कर जाएं. 10 अनेक हैं वे चरवाहे जिन्होंने मेरा
द्राक्षाउद्यान नष्ट कर दिया है, उन्होंने मेरे अंश को रौंद डाला है; जिन्होंने मेरे
मनोहर खेत को निर्जन एवं उजाड़ कर छोड़ा है. 11 इसे उजाड़ बना दिया गया
है, अपनी उजाड़ स्थिति में देश मेरे समक्ष विलाप कर रहा है; सारा देश ही
ध्वस्त किया जा चुका है; क्योंकि किसी को इसकी हितचिंता ही नहीं है. 12
निर्जन प्रदेश में वनस्पतिहीन पहाड़ियों पर विनाशक सेना आ पहुंची है, क्योंकि
देश के एक ओर से दूसरी ओर तक याहवेह की घातक तलवार तैयार हो चुकी
है; इस तलवार से सुरक्षित कोई भी नहीं है. 13 उन्होंने रोपण तो किया गेहूं को
किंतु उपज काटी कांटों की; उन्होंने परिश्रम तो किया किंतु लाभ कुछ भी
अर्जित न हुआ. उपयुक्त है कि ऐसी उपज के लिए तुम लज्जित होओ क्योंकि
इसके पीछे याहवेह का प्रचंड कोप क्रियाशील है.” 14 अपने बुरे पड़ोसियों के
विषय में जिन्होंने मेरी प्रजा इस्राएल के इस निज भाग पर आक्रमण किया है,
याहवेह का यह कहना है: “यह देख लेना, मैं उन्हें उनके देश में से अलग करने
पर हूं और उनके मध्य से मैं यहूदाह के वंश को अलग कर दूंगा. 15 और तब
जब मैं उन्हें अलग कर दूंगा, मैं उन पर पुनः अपनी करुणा प्रदर्शित करूंगा; तब
मैं उनमें से हर एक को उसके इस निज भाग में लौटा ले आऊंगा; हर एक को
उसके देश में लौटा लाऊंगा. 16 तब यदि वे मेरी प्रजा की नीतियां सीख लेंगे
और बाल के जीवन की शपथ कहने के स्थान पर कहेंगे, ‘जीवित याहवेह की
शपथ,’ तब वे मेरी प्रजा के मध्य ही समृद्ध होते चले जाएंगे. 17 किंतु यदि वे मेरे
आदेश की अवहेलना करेंगे, तब मैं उस राष्ट्र को अलग कर दूंगा; अलग कर
उसे नष्ट कर दूंगा,” यह याहवेह की वाणी है.

13 याहवेह ने मुझे यह आदेश दिया: “जाकर अपने लिए सन के सूत का
बना एक कमरबंध ले आओ और उससे अपनी कमर कस लो, किंतु उसे
जल में न डुबोना.” 2 याहवेह के आदेश के अनुसार मैंने एक कमरबंध मोल
लिया, और उससे अपनी कमर कस ली. 3 तब दूसरी बार मेरे लिए याहवेह का
यह आदेश प्राप्त किया गया: 4 “तुमने जो कमरबंध मोल लिया है जिससे तुमने
अपनी कमर कसी हुई है, उसे लेकर फरात नदी के तट पर जाओ और उसे

चट्टान के छिद्र में छिपा दो.” 5 इसलिये मैं फरात नदी के तट पर गया, जैसा
याहवेह का आदेश था और उस कमरबंध को वहां छिपा दिया. 6 अनेक दिन
व्यतीत हो जाने पर याहवेह ने मुझे आदेश दिया, “उठो, फरात तट पर जाओ
और उस कमरबंध को उस स्थान से निकालो जहां मैंने तुम्हें उसे छिपाने का
आदेश दिया था.” 7 मैं फरात नदी के तट पर गया और उस स्थान को खोदा,
जहां मैंने उस कमरबंध को छिपाया था. जब मैंने उस कमरबंध को वहां से
निकाला तो मैंने देखा कि वह कमरबंध नष्ट हो चुका था. अब वह किसी योग्य न
रह गया था. 8 तब मुझे याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ था: 9 “याहवेह का
यह कहना है: ‘ठीक इसी प्रकार मैं यहूदिया का अहंकार नष्ट कर दूंगा तथा
येरूशलेम का उच्चतर अहंकार भी. 10 इन बुरे लोगों की नियति भी वही हो
जाए, जो इस कमरबंध की हुई है, जो अब पूर्णतः अयोग्य हो चुका है. इन लोगों
ने मेरे आदेश की अवहेलना की है, वे अपने हठी हृदय के अनुरूप आचरण
करते हैं, वे परकीय देवताओं का अनुसरण करते हुए उनकी उपासना करते हैं
तथा उन्हीं के समक्ष नतमस्तक होते हैं. 11 क्योंकि जिस प्रकार कमरबंध
मनुष्य की कमर से बंधा हुआ रहता है, ठीक उसी प्रकार मैंने सारे इस्राएल वंश
तथा सारे यहूदाह गोत्र को स्वयं से बांधे रखा,’ यह याहवेह की वाणी है, ‘वे मेरी
कीर्ति, स्तवन तथा गौरव के लिए मेरी प्रजा हो जाएं; किंतु उन्होंने इसे महत्व ही
न दिया.’ 12 “इसलिये तुम्हें उनसे यह कहना होगा: ‘याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर का, यह आदेश है: हर एक मश्कों में द्राक्षारस भरा जाए.’ जब वे तुमसे
यह पूछें, ‘क्या हमें यह ज्ञात नहीं कि हर एक मश्कों को द्राक्षारस से भरा जाना
अपेक्षित है?’ 13 तब तुम उन्हें उत्तर देना, ‘याहवेह का संदेश यह है: यह देखना
कि मैं इस देश के हर एक नागरिक को कोपरूपी दाखमधु से भरने पर हूं, राजा
जो दावीद के सिंहासन पर विराजमान है, पुरोहित, भविष्यद्वक्ता एवं येरूशलेम के
सभी निवासी. 14 मैं उन्हें एक दूसरे से टकराऊंगा; पिताओं को पुत्रों से तथा
पुत्रों को पिताओं से, यह याहवेह की वाणी है. उन्हें नष्ट करते हुए न तो मुझे उन
पर दया आएगी न खेद होगा और न ही उन पर तरस आएगा.’” 15 सुनो और
ध्यान दो, अहंकारी न बनो, क्योंकि याहवेह का आदेश प्रसारित हो चुका है.
16 याहवेह, अपने परमेश्वर को सम्मान दो इसके पूर्व कि वह अंधकार प्रभावी
कर दें, और इसके पूर्व कि अंधकारमय पर्वतों पर तुम्हारे कदम लड़खड़ा जाएं.
इसके पूर्व कि जब तुम प्रकाश का कल्याण कर रहे हो, वह इसे और भी अधिक
गहन अंधकार बना दें तथा यह छाया में परिवर्तित हो जाए. 17 किंतु यदि तुम
मेरे आदेश की अवहेलना करो, तुम्हारे इस अहंकार के कारण मेरा प्राण भीतर ही
भीतर विलाप करता रहेगा; मेरे नेत्र घोर रुदन करेंगे, मानो वे अश्रुओं के साथ ही
बह जाएंगे, क्योंकि याहवेह की भेड़-बकरियों को बंदी बना लिया गया है. 18
राजा तथा राजमाता से अनुरोध करो, “सिंहासन छोड़ नीचे बैठ जाइए, क्योंकि
आपका वैभवपूर्ण मुकुट आपके सिर से उतार लिया गया है.” 19 नेगेव क्षेत्र के
नगर अब घेर लिए गये हैं, कोई उनमें प्रवेश नहीं कर सकता. संपूर्ण यहूदिया को
निर्वासन में ले जाया गया है, पूरा यहूदिया ही बंदी हो चुका है. 20 अपने नेत्र
ऊंचे उठाकर उन्हें देखो जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं. वे भेड़-बकरियां कहां
हैं, जो तुम्हें दी गई थी, वे पुष्ट भेड़ें? 21 क्या प्रतिक्रिया होगी तुम्हारी जब
याहवेह तुम्हारे ऊपर उन्हें अधिकारी नियुक्त कर देंगे, जिन्हें स्वयं तुमने अपने
साथी होने के लिए शिक्षित किया था? क्या इससे तुम्हें पीड़ा न होगी वैसी ही
जैसी प्रसूता को होती है? 22 यदि तुम अपने हृदय में यह विचार करो, “क्या
कारण है कि मेरे साथ यह सब घटित हुआ है?” तुम्हारी पापिष्ठता के परिमाण
के फलस्वरूप तुम्हें निर्वस्त्र कर दिया गया तथा तुम्हारे अंग अनावृत कर दिए
गए. 23 क्या कूश देशवासी अपनी त्वचा के रंग को परिवर्तित कर सकता
है, अथवा क्या चीता अपनी चित्तियां परिवर्तित कर सकता है? यदि हां तो
तुम भी जो दुष्टता करने के अभ्यस्त हो चुके हो, हितकार्य कर सकते हो. 24
“इसलिये मैं उन्हें इस प्रकार बिखरा दूंगा, जैसे पवन द्वारा भूसी मरुभूमि में उड़ा
दी जाती है. 25 यही तुम्हारे लिए ठहराया अंश है, जो माप कर मेरे द्वारा दिया
गया है,” यह याहवेह की वाणी है, “क्योंकि तुम मुझे भूल चुके हो और झूठे
देवताओं पर भरोसा करते हो. 26 इसलिये स्वयं मैंने ही तुम्हें निर्वस्त्र किया है कि
तुम्हारी निर्लज्जता सर्वज्ञात हो जाए. 27 धिक्कार है तुम पर येरूशलेम! मैं तुम्हारे
घृणास्पद कार्य, तुम्हारे द्वारा किए गए व्यभिचार, तुम्हारी कामोत्तेजना, अनैतिक
कुकर्म में कामुकतापूर्ण कार्य, जो तुम पर्वतों एवं खेतों में करते रहे हो देखता रहा
हूं. येरूशलेम, धिक्कार है तुम पर! तुम कब तक अशुद्ध बने रहोगे?”

14 लड़ाई, तलवार एवं महामारी याहवेह की ओर से येरेमियाह को भेजा
अनावृष्टि संबंधित संदेश: 2 “यहूदिया विलाप कर रहा है, तथा उसके
नगर द्वार निस्तेज हो गए हैं; शोक का पहिरावा पहिने प्रजाजन भूमि पर बैठ गए
हैं, येरूशलेम का गिड़गिड़ाना आकाश तक पहुंच रहा है. 3 सम्पन्न लोगों ने
जल के लिए अपने सेवकों को कुंओं पर भेजा; कुंओं पर पहुंचकर उन्होंने पाया
कि वहां जल है ही नहीं. वे रिक्त बर्तन लेकर ही लौट आए हैं; उन्हें लज्जा एवं
दीनता का सामना करना पड़ा, वे अपने मुखमंडल छिपाए लौटे हैं. 4 देश में
अनावृष्टि के कारण भूमि तड़क चुकी है; किसान लज्जा के कारण मुखमंडल
ढांपे हुए हैं. 5 यहां तक कि हिरणी अपने नवजात बच्चे को मैदान में ही
छोड़कर चली गई है, क्योंकि चारा कहीं भी नहीं है. 6 वन्य गधे वनस्पतिहीन
पहाड़ियों पर खड़े रह जाते हैं, वे सियारों के समान हांफते हैं; उनके नेत्र निस्तेज
हो गए हैं क्योंकि वनस्पति कहीं भी नहीं है.” 7 यद्यपि हमारे अनाचार ही
हमारे विरुद्ध साक्षी बन गए हैं, याहवेह, अपनी ही प्रतिष्ठा के निमित्त तैयार हो
जाइए. यह सत्य है कि हम अनेक क्षेत्रों में अपने विश्वासमत से भटके हुए हैं;
हमने आपके विरुद्ध पाप किया है. 8 आप जो इस्राएल की आशा के आधार हैं,
आप जो इसके संकट में इसके बचानेवाले रहे हैं, आप देश में ही विदेशी सदृश
क्यों हो गए हैं, अथवा उस यात्री के सदृश, जिसने मात्र रात्रि के लिए ही तंबू
डाला हुआ है? 9 आप उस व्यक्ति सदृश कैसे हो गए हैं, जो विस्मित हो चुका
है, उस शूर के सदृश जो रक्षा करने में असमर्थ हो गया है? कुछ भी हो याहवेह,
आप हमारे मध्य में उपस्थित हैं, हम पर आपके ही स्वामित्व की मोहर लगी है;
हमारा परित्याग न कर दीजिए! 10 अपनी इस प्रजा के लिए याहवेह का यह
संदेश है: “यद्यपि स्वेच्छानुरूप उन्होंने मुझसे दूर जाना ही उपयुक्त समझा;
उन्होंने अपने पांवों पर नियंत्रण न रखा. इसलिये याहवेह भी उन्हें स्वीकार नहीं
करना चाहते; इसलिये अब वह उनकी पापिष्ठता को स्मरण कर उनके पापों का
लेखा लेंगे.” 11 याहवेह ने मुझसे कहा, “इन लोगों के कल्याण के लिए बिनती
मत करो. 12 यदि वे उपवास भी करें, मैं उनके गिड़गिड़ाने पर ध्यान न दूंगा;
जब वे होमबलि एवं अन्नबलि भी अर्पित करें, मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूंगा.
इसकी अपेक्षा मैं उन्हें तलवार, अकाल तथा महामारी द्वारा नष्ट कर दूंगा.” 13
इसे सुन मैंने कहा, “प्रभु परमेश्वर, आप ही देखिए! भविष्यद्वक्ता ही उनसे कह
रहे हैं, ‘न तो तुम्हें तलवार का सामना करना पड़ेगा, न ही अकाल का; बल्कि
याहवेह तुम्हें इस स्थान पर ही स्थायी शांति प्रदान करेंगे.’” 14 तब याहवेह ने
मुझ पर यह प्रकट किया, “ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यवाणी
कर रहे हैं. वे न तो मेरे द्वारा भेजे गए हैं और न ही मैंने उन्हें कोई आदेश दिया है
और यहां तक कि मैंने तो उनसे बात तक नहीं की है. जिसे वे तुम्हारे समक्ष
भविष्यवाणी स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं, वह निरा झूठा दर्शन, भविष्यवाणी तथा
व्यर्थ मात्र है, उनके अपने ही मस्तिष्क द्वारा बनाया छलावा. 15 याहवेह का यह
संदेश उन भविष्यवक्ताओं के विषय में है जो मेरे नाम में भविष्यवाणी कर रहे हैं:
जबकि मैंने उन्हें प्रगट किया ही नहीं, फिर भी वे यह दावा करते रहते हैं, ‘इस
देश में न तो तलवार का प्रहार होगा न ही अकाल का.’ तब इन भविष्यवक्ताओं
का अंत ही तलवार तथा लड़ाई द्वारा होगा. 16 वे लोग भी, जिनके लिए ये

भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी कर रहे हैं, लड़ाई तथा तलवार से मारे गये ये लोग
बाहर येरूशलेम की गलियों में फेंक दिए जाएंगे. उन्हें गाड़ने के लिए शेष कोई
भी न रहेगा; यही होगी उन सभी की हालत; स्वयं उनकी, उनकी पत्नियों की,
उनके पुत्रों की तथा उनकी पुत्रियों की. क्योंकि मैं उनकी पापिष्ठता उन्हीं
पर उंडेल दूंगा. 17 “तुम्हें उन्हें यह संदेश देना होगा: “‘मेरे नेत्रों से दिन-रात
अश्रुप्रवाह होने दिया जाए, इन प्रवाहों को रुकने न दिया जाए; क्योंकि मेरी प्रजा
की कुंवारी पुत्री को, प्रचंड प्रहार से कुचल दिया गया है, उसका घाव अत्यंत
गंभीर है. 18 यदि मैं खुले मैदान में निकल जाता हूं, मुझे वहां तलवार से मरे ही
मरे दिखाई दे रहे हैं; अथवा यदि मैं नगर में प्रवेश करता हूं, मुझे वहां महामारी
तथा अकाल ही दिखाई देते हैं. क्योंकि भविष्यद्वक्ता और पुरोहित दोनों ही एक
ऐसे देश में भटक रहे हैं जो उनके लिए सर्वथा अज्ञात है.’” 19 याहवेह, क्या
आपने यहूदिया का पूर्ण परित्याग कर दिया है? क्या आपका हृदय ज़ियोन के
प्रति घृणा से परिपूर्ण है? आपने हम पर ऐसा प्रचंड प्रहार क्यों किया है कि हमारा
घाव असाध्य हो गया है? हम शांति की प्रतीक्षा करते रहे किंतु कुछ भी अनुकूल
घटित नहीं हुआ, हम अच्छे हो जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे किंतु हमने आतंक
ही पाया. 20 याहवेह, हम अपनी बुराई स्वीकार करते हैं, हम अपने पूर्वजों की
पापिष्ठता भी स्वीकार करते हैं; क्योंकि हमने आपके विरुद्ध पाप किया है. 21
याहवेह, अपनी ही प्रतिष्ठा के निमित्त हमसे घृणा न कीजिए; अपने वैभव के
सिंहासन को अपमानित न होने दीजिए. हमसे स्थापित की गई अपनी वाचा का
नाश न कीजिए. 22 क्या जनताओं के देवताओं में कोई ऐसा है, जो वृष्टि दे
सके? अथवा क्या वृष्टि आकाश से स्वयमेव ही हो जाती है? याहवेह, हमारे
परमेश्वर, क्या आप ही वृष्टि के बनानेवाले नहीं? हमारा भरोसा आप पर ही है,
क्योंकि आप ही हैं जिन्होंने यह सब बनाया है.

15 तब याहवेह मुझसे बात करने लगे: “यद्यपि मोशेह तथा शमुएल भी मेरे
सम्मुख उपस्थित हो जाएं, इन लोगों के लिए मेरा हृदय द्रवित न होगा.
उन्हें मेरी उपस्थिति से दूर ले जाओ! दूर हो जाएं वे मेरे समक्ष से! 2 जब वे तुमसे
यह पूछें, ‘कहां जाएं हम?’ तब तुम उन्हें उत्तर देना, ‘यह वाणी याहवेह की है:
“‘वे जो मृत्यु के लिए पूर्व-निर्दिष्ट हैं, उनकी मृत्यु होगी; जो तलवार के लिए
पूर्व-निर्दिष्ट हैं, उनकी तलवार से, जो अकाल के लिए पूर्व-निर्दिष्ट हैं, उनकी
अकाल से; तथा जिन्हें बंधुआई में ले जाया जाना है, वे बंधुआई में ही ले जाए
जाएंगे.’ 3 “मैं उनके लिए चार प्रकार के विनाश निर्धारित कर दूंगा,” यह
याहवेह की वाणी है, “संहार के लिए तलवार और उन्हें खींचकर ले जाने के
लिए कुत्ते तथा आकाश के पक्षी एवं पृथ्वी के पशु उन्हें खा जाने तथा नष्ट करने
के लिए. 4 यहूदिया के राजा हिज़किय्याह के पुत्र मनश्शेह द्वारा येरूशलेम में
किए गए कुकृत्यों के कारण, मैं उन्हें पृथ्वी के सारे राज्यों के लिए आतंक का
विषय बना दूंगा. 5 “येरूशलेम, कौन तुम पर तरस खाने के लिए तैयार होगा?
अथवा कौन तुम्हारे लिए विलाप करेगा? अथवा कौन तुम्हारा कुशल क्षेम ज्ञात
करने का कष्ट उठाएगा? 6 तुम, जिन्होंने मुझे भूलना पसंद कर दिया है,” यह
याहवेह की वाणी है. “तुम जो पीछे ही हटते जा रहे हो. इसलिये मैं अपना हाथ
तुम्हारे विरुद्ध उठाऊंगा और तुम्हें नष्ट कर दूंगा; थक चुका हूं मैं तुम पर कृपा
करते-करते. 7 मैं सूप लेकर देश के प्रवेश द्वारों पर उनको फटकूंगा. मैं उनसे
उनकी संतान ले लूंगा और मैं अपनी ही प्रजा को नष्ट कर दूंगा, उन्होंने अपने
आचरण के लिए पश्चात्ताप नहीं किया है. 8 अब मेरे समक्ष उनकी विधवाओं
की संख्या में सागर तट के बांध से अधिक वृद्धि हो जाएगी. मैं जवान की माता
के विरुद्ध दोपहर में एक विनाशक ले आऊंगा; मैं उस पर सहसा व्यथा एवं
निराशा ले आऊंगा. 9 वह, जिसके सात पुत्र पैदा हुए थे, व्यर्थ और दुर्बल हो रही
है और उसका श्वसन भी श्रमपूर्ण हो गया है. उसका सूर्य तो दिन ही दिन में अस्त
हो गया; उसे लज्जित एवं अपमानित किया गया. और मैं उनके शत्रुओं के ही
समक्ष उन्हें तलवार से घात कर दूंगा जो उनके उत्तरजीवी हैं,” यह याहवेह की
वाणी है. 10 मेरी माता, धिक्कार है मुझ पर, जो आपने मुझे जन्म दिया है, मैं,
सारे देश के लिए संघर्ष एवं विवाद का कारण हो गया हूं! न तो मैंने किसी को
ऋण दिया है न ही किसी ने मुझे, फिर भी सभी मुझे शाप देते रहते हैं. 11
याहवेह ने उत्तर दिया, “निःसंदेह मैं कल्याण के लिए तुम्हें मुक्त कर दूंगा;
निःसंदेह मैं ऐसा करूंगा कि शत्रु संकट एवं पीड़ा के अवसर पर तुमसे विनती
करेगा. 12 “क्या कोई लौह को तोड़ सकता है, उत्तर दिशा के लौह एवं कांस्य
को? 13 “तुम्हारी ही सीमाओं के भीतर तुम्हारे सारे पापों के कारण मैं तुम्हारा
धन तथा तुम्हारी निधियां लूट की सामग्री बनाकर ऐसे दे दूंगा, जिसके लिए
किसी को कुछ प्रयास न करना पड़ेगा. 14 तब मैं तुम्हारे शत्रुओं को इस प्रकार
प्रेरित करूंगा, कि वे उसे ऐसे देश में ले जाएंगे जिसे तुम नहीं जानते, क्योंकि
मेरे क्रोध में एक अग्नि प्रज्वलित हो गई है जो सदैव ही प्रज्वलित रहेगी.” 15
याहवेह, आप सब जानते हैं; मुझे स्मरण रखिए, मेरा ध्यान रखिए, उनसे बदला
लीजिए. जिन्होंने मुझ पर अत्याचार किया है. आप धीरज धरनेवाले हैं—मुझे
दूर मत कीजिये; यह बात आपके समक्ष स्पष्ट रहे कि मैं आपके निमित्त निंदा सह
रहा हूं. 16 मुझे आपका संदेश प्राप्त हुआ, मैंने उसे आत्मसात कर लिया; मेरे
लिए आपका संदेश आनंद का स्रोत और मेरे हृदय का उल्लास है, याहवेह
सेनाओं के परमेश्वर, इसलिये कि मुझ पर आपके स्वामित्व की मोहर लगाई गई
है. 17 न मैं उनकी संगति में जाकर बैठा हूं जो मौज-मस्ती करते रहते हैं, न ही
स्वयं मैंने आनंद मनाया है; मैं अकेला ही बैठा रहा क्योंकि मुझ पर आपका हाथ
रखा हुआ था, क्योंकि आपने मुझे आक्रोश से पूर्ण कर दिया है. 18 क्या कारण
है कि मेरी पीड़ा सदा बनी रही है तथा मेरे घाव असाध्य हो गए हैं, वे स्वस्थ
होते ही नहीं? क्या आप वास्तव में मेरे लिए धोखा देनेवाले सोता के समान हो
जाएंगे, जिसमें जल होना, न होना अनिश्चित ही होता है. 19 इसलिये याहवेह
का संदेश यह है: “यदि तुम लौट आओ, तो मैं तुम्हें पुनःस्थापित करूंगा कि तुम
मेरे समक्ष खड़े रह पाओगे; यदि तुम व्यर्थ बातें नहीं, बल्कि अनमोल बातें कहें,
तुम मेरे प्रवक्ता बन जाओगे. संभव है कि वे तुम्हारे निकट आ जाएं, किंतु तुम
स्वयं उनके निकट न जाना. 20 तब मैं तुम्हें इन लोगों के लिए कांस्य की दृढ़
दीवार बना दूंगा; वे तुमसे युद्ध तो अवश्य करेंगे किंतु तुम पर प्रबल न हो सकेंगे,
क्योंकि तुम्हारी सुरक्षा के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं, मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा,” यह
याहवेह की वाणी है. 21 “इस प्रकार मैं तुम्हें बुरे लोगों के आधिपत्य से विमुक्त
करूंगा और मैं तुम्हें हिंसक के बंधन से छुड़ा लूंगा.”

16 मुझे पुनः याहवेह का संदेश इस प्रकार प्राप्त हुआ: 2 “इस स्थान में न तो
तुम पत्नी लाना और न ही पुत्र उत्पन्न करना और न ही पुत्रियां.” 3 इस
स्थान में उत्पन्न पुत्र-पुत्रियों के विषय में, उनकी माताओं एवं उन पिताओं के
विषय में, जिन्होंने इन्हें पैदा किया है, याहवेह की यह पूर्ववाणी है. 4 “घातक
व्याधियों से उनकी मृत्यु हो जाएगी. न उनके लिए विलाप किया जाएगा और न
उन्हें गाड़ा जाएगा. उनकी मृत्यु तलवार एवं अकाल से हो जाएगी, वे भूमि पर
गोबर सदृश पड़े रहेंगे, उनके शव आकाश के पक्षी एवं वन्य पशुओं का आहार
हो जाएंगे.” 5 याहवेह का आदेश यह है: “उस घर में प्रवेश न करना जिसमें
विलाप हो रहा है; न वहां शोक प्रकट करने जाना और न सांत्वना देने, क्योंकि
मैंने उन पर से अपनी आशीष, अपना प्रेम तथा अपनी दया हटा ली है,” यह
याहवेह की वाणी है. 6 “इस देश में दोनों ही, सामान्य तथा विशिष्ट, मृत्यु की
भेंट हो जाएंगे. उन्हें न गाड़ा जाएगा, न उनके लिए विलाप किया जाएगा और न
कोई उनके शोक में अपने शरीर को निराश करेगा ओर न अपना सिर मुंडाएगा.
7 कोई भी उनके सुविधा के लिये भोजन की पूर्ति नहीं करेगा जो शोक मृतकों
के लिये शोक प्रकट करते हैं, न कोई किसी के पिता अथवा माता के लिए
सांत्वना का एक प्याला ही प्रस्तुत करेगा. 8 “इसके सिवा तुममें से कोई भी ऐसे

घर में जाकर न बैठ जाए जहां भोज आयोजित है, कि तुममें से वहां कोई भी
भोज में सम्मिलित हो. 9 क्योंकि सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का
संदेश यह है: तुम यह देखोगे कि मैं इस स्थान से तुम्हारे देखते-देखते, तुम्हारे ही
जीवनकाल में हर्षोल्लास का स्वर, आनंद की ध्वनि, वर तथा वधू के वार्तालाप
की वाणी बंद करने पर हूं. 10 "ऐसा होगा कि जब तुम इन लोगों को यह संपूर्ण
संदेश दोगे, तो वे तुमसे प्रश्न करेंगे, 'याहवेह द्वारा हमारे ऊपर इस महा संकट
की वाणी का कारण क्या है? क्या है हमारी अधार्मिकता अथवा हमसे क्या
पाप हुआ है? हमसे, जो हम याहवेह हमारे परमेश्वर के विरुद्ध कर बैठे हैं?'
11 तब तुम्हें उनसे यह कहना होगा, 'कारण यह है कि तुम्हारे पूर्वजों ने मेरा
परित्याग कर दिया,' यह याहवेह की वाणी है, 'परकीय देवताओं का अनुसरण
करना तथा उनकी उपासना करना, उनको नमन करना तुम्हारे पूर्वजों ने उपयुक्त
समझा. किंतु मुझे भूलना उन्होंने पसंद किया और मेरे व्यवस्था-विधान का
अनुकरण नहीं किया. 12 स्वयं तुमने भी तो वही किया है जो ठीक नहीं है, हां,
अपने पूर्वजों से भी अधिक; क्योंकि ध्यान दो तुममें से हर एक अपने पतित
हृदय के दुराग्रह में मेरी अवज्ञा कर रहा है. 13 इसलिये मैं तुम्हें इस देश में से
एक ऐसे देश में प्रक्षेपित कर दूंगा, जिस देश को तुम जानते भी नहीं हो, न तुम,
न तुम्हारे पूर्वज; तब तुम वहां दिन-रात परकीय देवताओं की उपासना करते
रहोगे, क्योंकि मैं तुम पर किसी भी रीति से कोई कृपा न करूंगा.' 14 "यद्यपि
इस बात को स्मरण रखना: वे दिन बड़े हैं," यह याहवेह की वाणी है, "जब यह
सूक्ति फिर कभी सुनी न जाएगी, 'जीवित याहवेह की शपथ, जिन्होंने इस्राएल
वंशजों को मिस्र देश से निकाल लाया था,' 15 किंतु यह, 'जीवित याहवेह की
शपथ, जो इस्राएल वंशजों को उत्तर दिशा के देशों से तथा उन सभी देशों से
निकालकर लाए हैं, जहां उन्हें बंदी किया गया था.' क्योंकि मैं उन्हें उन्हीं
के देश में पुनःस्थापित कर दूंगा, जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था. 16
"तुम देखोगे कि मैं अनेक मछुवारे बुलवाऊंगा," यह याहवेह की वाणी है, "ये
मछुवारे उन्हें पकड़ लेंगे. तत्पश्चात मैं अनेक शिकारियों को बुलवाऊंगा, वे हर
एक पर्वत, हर एक पहाड़ी तथा चट्टानों के दरार में से उनको निकाल डालेंगे.
17 उनकी सारी गतिविधियों पर मेरी दृष्टि बनी हुई है; वे मेरे नेत्रों की ओट
में नहीं हैं और न उनकी पापिष्ठता मेरी दृष्टि से छिप सकी है. 18 मैं उनकी
अधर्मिता तथा पापिष्ठता का दूना दंड उन्हें दूंगा, क्योंकि उन्होंने मेरे देश को
अशुद्ध कर छोड़ा है; मेरे इस निज भाग को उन्होंने उनकी घृणास्पद प्रतिमाओं के
शवों एवं उनकी तिरस्कार कृतियों से भर रखा है." 19 याहवेह, मेरे बल तथा
मेरे अजेयगढ़, संकट की स्थिति में मेरे आश्रय, पृथ्वी के चारों ओर से चलकर
राष्ट्र आपके निकट आकर यह स्वीकार करेंगे, "हमारे पूर्वजों ने इस निज भाग में
असत्य, व्यर्थ तथा निरर्थकता के सिवा और कुछ भी प्राप्त नहीं किया है. 20
क्या मनुष्य के लिए यह संभव है कि वह अपने लिए देवताओं को निर्माण कर
ले? फिर भी ये देवता नहीं होते!" 21 "इसलिये यह देख लेना मैं उन्हें यह बोध
करा ही दूंगा, अब तो वे अवश्य ही मेरे अधिकार एवं सामर्थ्य से परिचित हो
जाएंगे. तब उन्हें यह ज्ञात हो जाएगा कि मेरा ही नाम याहवेह है.

17 "यहूदिया का पाप लौह लेखनी से लिख दिया गया, हीरक-नोक से
उनके हृदय-पटल पर तथा उनकी वेदियों के सींगों पर भी. 2 वे अपनी
वेदियों तथा अशेराओं का स्मरण हरे वृक्षों के नीचे, उच्च पहाड़ियों पर उसी
रीति से करते हैं, जिस रीति से वे अपनी संतान को स्मरण करते हैं. 3 नगर से दूर
मेरे पर्वत, पाप के लिए निर्मित तुम्हारी सीमा में प्रतिष्ठित तुम्हारे पूजा स्थलों के
कारण मैं तुम्हारी संपदा तथा तुम्हारे सारे निधियों को, लूट की सामग्री बनाकर
दे दूंगा. 4 तुम स्वयं ही अपने इस निज भाग को जो मैंने ही तुम्हें दिया है,
अपने हाथों से निकल जाने दोगे; मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हें एक ऐसे देश में जो
तुम्हारे लिए सर्वथा अज्ञात है अपने शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेगी, क्योंकि
तुमने मेरे क्रोध में एक ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दी है, जो सदैव ही प्रज्वलित
रहेगी." 5 याहवेह ने यह कहा है: "शापित है वह मनुष्य, जिसने मानव की
क्षमताओं को अपना आधार बनाया हुआ है, जिनका भरोसा मनुष्य की शक्ति में
है तथा जो मुझसे विमुख हो चुका है. 6 क्योंकि वह उस झाड़ी के सदृश है, जो
मरुभूमि में उगी हुई है. समृद्धि उससे दूर ही रहेगी. वह निर्जन प्रदेश की गर्मी से
झुलसने वाली भूमि में निवास करेगा. उस भूमि की मिट्टी लवणमय है, वहां
किसी भी मनुष्य का निवास नहीं है. 7 "धन्य है वह मनुष्य जिसने याहवेह पर
भरोसा रखा है, तथा याहवेह ही जिसका भरोसा हैं. 8 वह व्यक्ति जल के
निकट रोपित वृक्ष के सदृश है, जो जल प्रवाह की ओर अपनी जड़ें फैलाता
जाता है. ग्रीष्मकाल का उसे कोई भय नहीं होता; उसकी पत्तियां सदैव हरी ही
रहेंगी. अकाल उसके लिए चिंता का विषय न होगा और इसमें समय पर फल
लगना बंद नहीं होगा." 9 अन्य सभी से अधिक कपटी है हृदय, असाध्य
रोग से संक्रमित. कौन है उसे समझने में समर्थ? 10 "मैं याहवेह, हृदय की
विवेचना करता हूं. मैं मस्तिष्क का परीक्षण करता हूं, कि हर एक व्यक्ति को
उसके आचरण के अनुरूप प्रतिफल दूं, उसके द्वारा किए कार्यों के परिणामों के
अनुरूप." 11 जिस प्रकार तीतर उन अण्डों को सेती है जो उसके द्वारा दिए हुए
नहीं होते, उस व्यक्ति की स्थिति भी इसी तीतर के सदृश होती है जो धन जमा
तो कर लेता है. किंतु अनुचित रीति से ऐसा धन असमय ही उसके हाथ से
निकल जाएगा, तथा अपने जीवन के अंत में वह स्वयं मूर्ख प्रमाणित हो जायेगा.
12 प्रारंभ ही से उच्च स्थल पर प्रतिष्ठित आपका वैभवशाली सिंहासन हमारा
आश्रय रहा है. 13 याहवेह, आप में ही निहित है इस्राएल की आशा; लज्जित
उन्हें होना पड़ेगा जिन्होंने आपका परित्याग किया है. जो आपसे विमुख होते हैं
उनका नामांकन उनमें होगा जो अधोलोक के लिए तैयार हैं, क्योंकि उन्होंने
जीवन्त जल के बहते झरने का, अर्थात् याहवेह का ही परित्याग कर दिया
है. 14 याहवेह, यदि आप मुझे सौख्य प्रदान करें, तो मैं वास्तव में निरोगी हो
जाऊंगा; यदि आप मेरी रक्षा करें तो मैं सुरक्षित ही रहूंगा, कारण आप ही मेरे
स्तवन का विषय हैं. 15 सुनिए, वे यह कहते हुए मुझ पर व्यंग्य-बाण छोड़ते
रहते हैं, "कहां है याहवेह का संदेश? हम भी तो सुनें!" 16 किंतु मैं आपका
चरवाहा होने के दायित्व से भागा नहीं; और न ही मैंने उस घातक दिवस की
कामना ही की. आपकी उपस्थिति में मेरे मुख से मुखरित उच्चारण आपको ज्ञात
ही हैं. 17 मेरे लिए आप आतंक का विषय न बन जाइए; संकट के अवसर पर
आप ही मेरे आश्रय होते हैं. 18 मेरे उत्पीड़क लज्जित किए जाएं, किंतु मुझे
लज्जित न होना पड़ें; निराश उन्हें होना पड़ें; मुझे नहीं. विनाश का दिन उन पर
टूट पड़ें, दो गुने विध्वंस से उन्हें कुचल दीजिए. 19 याहवेह ने मुझसे यह कहा:
"जाकर जनसाधारण के लिए निर्धारित प्रवेश द्वार पर खड़े हो जाओ, यह वही
द्वार है जिसमें से यहूदिया के राजा आते जाते हैं; और येरूशलेम के अन्य द्वारों
पर भी जाना. 20 वहां तुम्हें यह वाणी करनी होगी, 'याहवेह का संदेश सुनो,
यहूदिया के राजाओं, सारे यहूदिया तथा येरूशलेम वासियों, जो इन प्रवेश द्वारों
में से प्रवेश करते हो. 21 यह याहवेह का आदेश इसी प्रकार है: अपने विषय में
सावधान हो जाओ, शब्बाथ पर कोई भी बोझ न उठाना अथवा येरूशलेम के
प्रवेश द्वारों से कुछ भी लेकर भीतर न आना. 22 शब्बाथ पर अपने आवासों से
बोझ बाहर न लाना और न किसी भी प्रकार के कार्य में संलग्न होना, बल्कि
शब्बाथ को पवित्र रखना, जैसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को आदेश दिया था. 23 न तो
उन्होंने मेरे आदेशों का पालन किया और न उन पर ध्यान ही दिया; बल्कि
उन्होंने हठ में अपनी-अपनी गर्दनें कठोर कर लीं, कि वे इन्हें न तो सुनें अथवा
अपना आचरण सुधार लें. 24 किंतु होगा यह यदि तुम सावधानीपूर्वक मेरी बात
सुनोगे, यह याहवेह की वाणी है, कि तुम इस नगर के प्रवेश द्वार से शब्बाथ पर
कोई बोझ लेकर प्रवेश न करोगे, बल्कि शब्बाथ को पवित्र रखने के लिए तुम

इस दिन कोई भी कार्य न करोगे, 25 तब इस नगर के प्रवेश द्वारों से राजा तथा
उच्च अधिकारी प्रवेश करेंगे, जो दावीद के सिंहासन पर विराजमान होंगे, जो
रथों एवं घोड़ों पर चला फिरा करेंगे. वे तथा उनके उच्च अधिकारी, यहूदिया
तथा येरूशलेमवासी, तब यह नगर स्थायी रूप से बस जाएगा. 26 वे यहूदिया के
नगरों से, येरूशलेम के परिवेश से, बिन्यामिन प्रदेश से, तराई से, पर्वतीय क्षेत्र से
तथा नेगेव से बलि, होमबलि, अन्‍नबलि तथा सुगंधधूप अपने साथ लेकर प्रवेश
करेंगे. वे याहवेह के भवन में आभार-बलि लेकर भी आएंगे. 27 किंतु यदि तुम
शब्बाथ को पवित्र रखने, बोझ न उठाने, शब्बाथ पर येरूशलेम के प्रवेश द्वारों से
प्रवेश न करने के मेरे आदेश की अवहेलना करो, तब मैं इन द्वारों के भीतर
अग्नि प्रज्वलित कर दूंगा. यह अग्नि येरूशलेम में महलों को भस्म करने के बाद
भी अलग न होगी.'"

18 वह संदेश जो याहवेह द्वारा येरेमियाह के लिए प्रगट किया गया: 2
"कुम्हार के घर जाओ, वहीं मैं तुम पर अपनी बातें प्रकाशित करूंगा."
3 मैं कुम्हार के आवास पर गया, जहां वह अपने चक्र पर कुछ गढ़ रहा था. 4
किंतु वह बर्तन, जिसे वह मिट्टी से बना रहा था, वह उसके हाथों में ही विकृत
हो गया; इसलिये उसने उसी से जैसा उसे उपयुक्त लगा, एक अन्य बर्तन का
निर्माण कर दिया. 5 तब याहवेह ने अपना संदेश मुझे इस प्रकार प्रगट किया.
6 "इस्राएल वंशजों, क्या तुम्हारे साथ मैं भी वही नहीं कर सकता, जो यह
कुम्हार किया करता है?" यह याहवेह की वाणी है. "यह समझ लो इस्राएल
वंशजों: मेरे हाथों में तुम्हारी स्थिति ठीक वैसी ही है, जैसी कुम्हार के हाथों
में उस मिट्टी की होती है. 7 यह संभव है कि मैं एक क्षण किसी राष्ट्र अथवा
किसी राज्य के अंत, पतन अथवा विध्वंस की वाणी करूं. 8 किंतु वह राष्ट्र,
जिसके संबंध में मैंने विध्वंस की वाणी की थी, यदि अपने कुकृत्यों से विमुख
हो जाता है ओर मैं उसके विरुद्ध योजित विध्वंस का विचार ही त्याग दूं. 9
अथवा दूसरे क्षण में किसी राष्ट्र, किसी राज्य के विषय में उसके निर्माण अथवा
रोपण का विचार व्यक्त करूं, 10 यदि वह राष्ट्र अथवा राज्य मेरे आदेश की
अवज्ञा करते हुए मेरी दृष्टि में बुरा करता है, तब मैं उसके कल्याण के लिए की
गई अपनी प्रतिज्ञा पर पुनर्विचार करूंगा. 11 "इसलिये अब जाकर यहूदिया तथा
येरूशलेम के निवासियों से जाकर यह कहना, 'याहवेह का संदेश यह है: यह
समझ लो! मैं तुम्हारे विरुद्ध घोर विपत्ति नियोजित कर रहा हूं और तुम्हारे विरुद्ध
एक योजना बना रहा हूं. ओह! तुममें से हर एक अपनी बुराई का परित्याग कर
मेरे निकट लौट आए, अपनी जीवनशैली एवं आचरण को परिशुद्ध कर ले.' 12
किंतु उनका प्रत्युत्तर होगा, 'इससे कोई भी लाभ न होगा. क्योंकि हमने अपनी
रणनीति पहले ही निर्धारित कर ली है; हममें से हर एक अपने बुरे हृदय की
कठोरता के ही अनुरूप कदम उठाएगा.'" 13 इसलिये याहवेह का आदेश यह
है: "अब राष्ट्रों के मध्य जाकर यह पूछताछ करो: क्या कभी किसी ने भी इस
प्रकार की घटना के विषय में सुना है? कुंवारी कन्या इस्राएल ने अत्यंत भयावह
कार्य किया है. 14 क्या लबानोन का हिम खुले मैदान की चट्टान से विलीन हो
जाता है? अथवा अन्य देश से प्रवाहित शीतल जल कभी छीना जा सका है? 15
किंतु मेरी प्रजा है कि उसने मुझे भूलना पसंद कर दिया है; वे निस्सार देवताओं
के लिए धूप जलाते हैं, तथा वे पूर्व मार्गों पर चलते हुए लड़खड़ा गए हैं. वे
मुख्य मार्ग पर न चलकर कदमडंडी पर चलने लगें. 16 कि उनका देश निर्जन
हो जाए चिरस्थायी घृणा का विषय; हर एक जो वहां से निकलेगा चकित हो
जाएगा और आश्चर्य में सिर हिलाएगा. 17 मैं उन्हें शत्रु के समक्ष पूर्वी वायु
प्रवाह-सदृश बिखरा दूंगा; मैं उनके संकट के समय उनके समक्ष अपनी पीठ कर
दूंगा न कि अपना मुखमंडल." 18 तब कुछ लोग विचार-विमर्श करने लगे,
"येरेमियाह के विरुद्ध कोई युक्ति गढ़ी जाए; निश्चयतः पुरोहित से तो व्यवस्था-
विधान दूर होगा नहीं और न बुद्धिमानों से परामर्श की क्षमता बंद होगी, उसी
प्रकार भविष्यवक्ताओं से परमेश्वर का संदेश भी समाप्त नहीं किया जा सकेगा.
चलो, हम उस पर वाकबाण चलाएं तथा उसके वचन को अनसुनी कर दें." 19
याहवेह, मेरी विनय पर ध्यान दीजिए; तथा मेरे विरोधियों की बातों को सुन
लीजिए! 20 क्या संकट के द्वारा कल्याण का प्रतिफल दिया जा सकता है?
उन्होंने तो मेरे लिए गड्ढा खोद रखा है. स्मरण कीजिए मैं आपके समक्ष कैसे
ठहरा रहता था और उनकी सहायता में ही मत दिया करता था, कि उनके प्रति
आपका क्रोध दूर किया जा सके. 21 इसलिये अब उनकी संतान को अकाल को
सौंप दीजिए; तथा उन्हें तलवार की शक्ति के अधीन कर दीजिए. उनकी पत्नियों
को संतानहीन तथा विधवा हो जाने दीजिए; उनके पतियों को मृत्यु का आहार
हो जाने दीजिए, उनके लड़के युद्ध में तलवार के ग्रसित हो जाएं. 22 जब आप
उन पर लुटेरों का आक्रमण होने दें, तब उनके आवासों से चिल्लाहट सुनाई
पड़े, क्योंकि मुझे पकड़ने के लिए उन्होंने मेरे लिए गड्ढा खोद रखा है, और
उन्होंने मेरे मार्ग में फंदे बिछा रखे हैं. 23 फिर भी, याहवेह, मेरे समक्ष उनकी
घातक युक्तियां आपको ज्ञात हैं. उनकी पापिष्ठता को क्षमा न कीजिए और न
उनके पाप आपकी दृष्टि से ओझल हों. आपके ही समक्ष वे नष्ट हो जाएं; जब
आप क्रुद्ध हों तब आप उनके लिए उपयुक्त कदम उठाएं.

19 याहवेह ने आदेश दिया: "जाकर कुम्हार से एक मिट्टी का बर्तन खरीदो,
तथा कुछ प्राचीन नागरिकों तथा कुछ प्राचीन पुरोहितों को एकत्र करो
2 तब बेन-हिन्‍नोम की घाटी में जाओ, इसके लिए तुम्हें टूटे हुए बर्तनों के प्रवेश
द्वार से जाना होगा. वहां तुम उस संदेश की वाणी करना जो मैं तुम्हें भेजा करूंगा,
3 तुम कहना, 'यहूदिया के राजाओं तथा येरूशलेम वासियों याहवेह का संदेश
सुनो. सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: मैं इस स्थान
पर घोर विपत्ति लाने पर हूं, ऐसी जिसके विषय में सुनते ही हर एक श्रोता के
कान झनझना उठेंगे. 4 यह इसलिये कि उन्होंने मेरा परित्याग कर इस स्थान
को अरुचिकर बना छोड़ा है; उन्होंने इस स्थान पर परकीय देवताओं के लिए
बलि अर्पित की है, जिन्हें न तो उनके पूर्वजों ने, न यहूदिया के राजाओं ने
कभी जाना-पहचाना था तथा इसलिये भी कि उन्होंने इस स्थान को निर्दोष
लोगों के रक्त से रंजित कर रखा है. 5 उन्होंने बाल के लिए अपने पुत्रों की
होमबलि अर्पित करने के उद्देश्य से बाल के लिए पूजा-स्थल प्रतिष्ठित किए हैं.
यह वह कृत्य है, जिसका मैंने उन्हें न तो आदेश दिया और न ही मैंने कभी
इसका उल्लेख किया और न यह विचार ही कभी मेरे मस्तिष्क में आया. 6
इसलिये यह देखना कि वे दिन आ रहे हैं, यह याहवेह की वाणी है, जब इस
स्थान की पहचान तोफेथ अथवा बेन-हिन्‍नोम की घाटी नहीं रह जाएगी, बल्कि
तब यह नरसंहार घाटी के रूप में प्रख्यात हो जाएगी. 7 "'मैं इस स्थान पर
यहूदिया तथा येरूशलेम की युक्ति निष्फल कर दूंगा. तथा मैं ऐसा करूंगा कि वे
अपने शत्रुओं के समक्ष ही, जो उनके प्राणों के प्यासे हैं, उन्हीं के तलवार के
ग्रसित हो जाएंगे. और मैं उनके शव आकाश के पक्षी तथा पृथ्वी के पशुओं का
आहार बना दूंगा. 8 इस नगर को मैं भय और घृणा का विषय बना दूंगा. इसके
निकट से जाता हुआ हर एक व्यक्ति भयभीत होकर इसके घावों को देखेगा और
उसका उपहास करेगा. 9 मैं ऐसी स्थिति उत्पन्‍न करूंगा कि वे अपनी ही संतान
का मांस खाने लगेंगे, जब नगर की घेराबंदी होगी, और उनके शत्रुओं की ओर
से उन पर विपत्ति आएगी तथा जो उनके प्राण लेने के लिए तैयार हैं, उन्हें
उत्पीड़ित करने लगेंगे, तब वे एक दूसरे का ही मांस खाने लगेंगे.' 10 "इसके
बाद तुम्हें उन सभी के समक्ष जो तुम्हारे साथ वहां गए हुए हैं उस बर्तन को तोड़
देना होगा, 11 तब तुम उनसे कहना, 'यह सेनाओं के याहवेह का संदेश है: ठीक
इसी प्रकार मैं इन लोगों को तथा इस नगर को चूर-चूर कर दूंगा, जैसे कोई
कुम्हार द्वारा निर्मित बर्तन को तोड़ देता है, जिसे पुनर्निर्मित करना असंभव होता
है. लोग शवों को तोफेथ में गाड़ेंगे, जब तक इन्हें गाड़ने के लिए स्थान शेष न

रह जाएगा. 12 यही करूंगा मैं इस स्थान एवं यहां के निवासियों के साथ, यह याहवेह की वाणी है, कि मैं इस नगर को तोफेथ सदृश बना दूंगा. 13 येरूशलेम के आवास एवं यहूदिया के राजाओं के आवास इस स्थान तोफेथ के सदृश अशुद्ध हो जाएंगे. उन सभी आवासों के कारण, जिन पर उन्होंने आकाश की शक्तियों को होमबलि अर्पित की तथा परकीय देवताओं को पेय बलि अर्पित की थी.'" 14 तत्पश्चात येरेमियाह तोफेथ से लौट आए, जहां याहवेह ने उन्हें भविष्यवाणी के उद्देश्य से भेजा था, येरेमियाह जाकर याहवेह के भवन के आंगन में खड़े हो गए और उन्होंने वहां से उपस्थित जनसमूह को इस प्रकार संबोधित किया, 15 "इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का संदेश यह है: 'सुनो! मैं इस नगर तथा इसके सारे उपनगरों पर वे सारी विपत्तियां प्रभावी करने पर हूं, जिसकी मैं पूर्वघोषणा कर चुका हूं, क्योंकि उन्होंने मेरे आदेश को न सुनने के हठ में अपनी गर्दनें कठोर कर ली हैं.'"

20 जब याहवेह के भवन के प्रमुख अधिकारी, इम्मर के पुत्र पुरोहित पशहूर ने येरेमियाह को इन विषयों पर भविष्यवाणी करते हुए सुना, 2 तब उसने भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को पिटवाया तथा ऊपरी बिन्यामिन द्वार में उन्हें काठ के बांक में जकड़ दिया, यह याहवेह के भवन के निकट ही था. 3 अगले दिन, जब पशहूर ने उन्हें बांक से विमुक्त किया, येरेमियाह ने उससे कहा, "याहवेह द्वारा तुम्हें दिया गया नाम पशहूर नहीं, बल्कि मागोर-मिस्साबीब है. 4 क्योंकि याहवेह का संदेश यह है: 'तुम यह देखोगे कि मैं तुम्हें स्वयं के लिए तथा तुम्हारे सारे मित्रों के लिए आतंक बना देने पर हूं; तुम्हारे देखते-देखते वे अपने शत्रुओं की तलवार से वध किए जाएंगे. तब मैं सारे यहूदिया को बाबेल के राजा के हाथों में सौंप दूंगा, वह उन्हें बंदी बनाकर बाबेल ले जाएगा तथा तलवार से उनका संहार कर देगा. 5 मैं इस नगर की सारी धन संपदा इसकी सारी उपज एवं इसकी सारी मूल्यवान सामग्री उसे सौंप दूंगा—यहां तक कि यहूदिया के राजाओं की सारी निधि मैं उनके शत्रुओं के हाथों में सौंप दूंगा. वे उन्हें लूट लेंगे, उन्हें बंदी बना लेंगे तथा उन्हें बाबेल ले जाएंगे. 6 और तुम, पशहूर, तथा वे सभी जो तुम्हारे आवास में निवास कर रहे हैं, बंधुआई में ले जाए जाएंगे, तुम बाबेल में प्रवेश करोगे. और वहीं तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी वहीं तुम्हें गाड़ा जाएगा, तुम्हें तथा तुम्हारे उन सभी मित्रों को जिनके लिए तुमने झूठी भविष्यवाणी की थी.'" 7 याहवेह, आपने मुझे प्रलोभित किया, कि मैं प्रलोभित हो गया; आपने मुझे गुमराह किया और आप मुझ पर प्रबल भी हो गए. सारे दिन मैं उपहास का बर्तन बना रहता हूं; सभी मेरा उपहास करते रहते हैं. 8 जब भी मैं कुछ कहना चाहता हूं, मैं उच्चस्वर में रोने लगता हूं; मेरी वाणी के विषय रह गए हैं हिंसा एवं विध्वंस. क्योंकि मेरे संदर्भ में याहवेह के संदेश का परिणाम हुआ है सतत निंदा एवं फटकार. 9 किंतु यदि मैं यह निश्चय करूं, "अब मैं याहवेह का उल्लेख ही नहीं करूंगा अथवा अब मैं उनकी ओर से कोई भी संदेश भेजा न करूंगा," तब आपका संदेश मेरे हृदय में प्रज्वलित अग्नि का रूप ले लेता है, वह प्रज्वलित अग्नि जो मेरी अस्थियों में बंद है. अब यह मेरे लिए असह्य हो रही है; इसे दूर रखते-रखते मैं व्यर्थ हो चुका हूं. 10 मैंने अनेकों को दबे स्वर में यह कहते सुना है, "चारों ओर आतंक व्याप्त हो चुका है! फटकार करो उनकी! निःसंदेह हमें उनकी फटकार करनी ही होगी!" ये मेरे विश्वास्य मित्रों के शब्द हैं जिन्हें मेरे पतन में रुचि है. वे विचार कर रहे हैं, "संभव है वह फंदे में फंस जाए; और हम उसे अपने वश में कर लें तथा उससे अपना बदला ले लें." 11 किंतु याहवेह मेरे साथ शक्तिवान योद्धा के सदृश हैं जिसका आतंक चारों ओर व्याप्त है; इसलिये मेरे उत्पीड़क मुझ पर प्रबल न होंगे बल्कि लड़खड़ा जाएंगे. अपनी विफलता पर उन्हें घोर लज्जा का सामना करना पड़ेगा यह ऐसी चिरस्थायी लज्जा होगी; जिसे भूलना पसंद करना संभव न होगा. 12 फिर भी सेनाओं के याहवेह, आप तो सद्वृत्त की विवेचना करते रहते हैं, आपकी दृष्टि मन एवं हृदय का आंकलन करती रहती है, कुछ ऐसा कीजिए कि मैं आपके द्वारा उनसे लिए गए बदले का प्रत्यक्षदर्शी हो जाऊं, क्योंकि अपना मुकदमा मैंने आपको ही सौंप रखा है. 13 याहवेह के लिए गायन हो! याहवेह का स्तवन हो! क्योंकि उन्होंने निस्सहाय के प्राणों को बुरे बंधन से उद्धार प्रदान किया है. 14 शापित हो वह दिन जिसमें मैंने जन्म लिया! जिस दिन मेरी माता ने मुझे जन्म दिया, उसे धन्य न कहा जाए! 15 शापित हो वह व्यक्ति जिसने मेरे पिता को अत्यंत हर्षित कर दिया, जब उसने उन्हें यह संदेश दिया, "आपका एक पुत्र पैदा हुआ है!" 16 उस संदेशवाहक की नियति वही हो जो उन नगरों की हुई थी, जिन्हें याहवेह ने निर्ममता से नष्ट कर दिया था. उसे प्रातःकाल से ही पीड़ा की कराहट सुनाई देने लगी, तथा दोपहर में युद्ध की चेतावनी की वाणी. 17 क्योंकि मेरे जन्म के पूर्व ही मेरी जीवन लीला उसने समाप्त नहीं कर दी, कि मेरी माता ही मेरी कब्र हो जाती, और मेरी माता स्थायी रूप से गर्भवती रह जाती. 18 मैं गर्भ से बाहर ही क्यों आ गया कि संकट और शोक देखूं, कि मेरे जीवन के दिन लज्जा में जिए जाएं?

21 जब राजा सीदकियाहू ने येरेमियाह के पास मालखियाह के पुत्र पशहूर तथा मआसेइयाह के पुत्र पुरोहित ज़ेफनियाह को भेजा था, येरेमियाह को यह संदेश याहवेह की ओर से भेजा गया: 2 "कृपया हमारी ओर से याहवेह से पूछताछ कर दीजिए क्योंकि बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र हमारे विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार है. संभव है याहवेह अपने सामर्थ्य में अलौकिक कार्य के प्रदर्शन के द्वारा नबूकदनेज्ज़र को पीछे हटने के लिए विवश कर दें." 3 यह सुन येरेमियाह ने उन्हें उत्तर दिया, "सीदकियाहू से तुम्हें यह कहना होगा, 4 'याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: यह देखना कि मैं उन शस्त्रों को जो इस समय तुम्हारे हाथों में हैं, जिनसे तुम बाबेल तथा कसदियों के राजा पर प्रहार करने पर हो, जिन्होंने तुम्हारी शहरपनाह के बाहर घेरा डाल रखा है, तुम्हारे ही विरुद्ध अधीन करने पर हूं. अंततः मैं नगर के मध्य में इन शस्त्रों का ढेर लगा दूंगा. 5 मैं स्वयं अपने क्रोध, कोप एवं उग्र आक्रोश में विस्तीर्ण शक्तिशाली भुजा के द्वारा तुमसे युद्धरत हो जाऊंगा. 6 मैं इस नगर के निवासियों का संहार करूंगा, चाहे वे मनुष्य हों अथवा पशु वे सभी अत्यंत विकट महामारी में नष्ट हो जाएंगे. 7 तत्पश्चात, यह याहवेह की वाणी है, मैं यहूदिया के राजा सीदकियाहू को, उसके सेवकों को, उसकी प्रजा को, यहां तक कि, जो इस नगर में महामारी, तलवार तथा अकाल से जीवित बच जाएंगे, उन्हें भी बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के, उनके शत्रुओं के तथा उनके अधीन कर दूंगा, जो उनके प्राण लेने को तैयार हैं. वह उन्हें अपनी तलवार की धार के प्रहार से वध कर देगा; न तो वह किसी को जीवित छोड़ेगा, न किसी पर कृपा करेगा और न किसी पर सहानुभूति ही प्रदर्शित करेगा.' 8 "तुम्हें इन लोगों को यह भी सूचित करना होगा, 'याहवेह का कहना यह है: यह समझ लो, मैंने तुम्हारे समक्ष जीवन की नीति भी प्रस्तुत कर दी है तथा मृत्यु की नीति भी. 9 वह जो इस नगर में निवास कर रहा है उसकी मृत्यु तलवार, अकाल अथवा महामारी से हो जाएगी. किंतु वह जो नगर के बाहर निकलेगा तथा कसदियों के हाथों में जा पड़ेगा जिन्होंने नगर को घेर रखा है; वह जीवित रहेगा, उसका जीवन ही उसकी लूट सामग्री सदृश उपहार प्रमाणित होगा. 10 कारण यह है कि मैंने इस नगर पर संकट लाने का निश्चय कर लिया है, कल्याण का नहीं, यह याहवेह की वाणी है. यह नगर बाबेल के राजा को सौंप दिया जाएगा, जो इसे भस्म कर डालेगा.' 11 "तत्पश्चात यहूदिया के राजा के परिवार से यह कहना, 'याहवेह का संदेश सुनो. 12 दावीद वंशजों, यह याहवेह का आदेश है: "'प्रति प्रातःकाल यह ध्यान रखना कि लोगों को निरसहायक न्याय प्राप्त हो; उस व्यक्ति को विमुक्त कर दो जिसे अत्याचारियों के दमन के कारण लूट लिया गया है, कि उनके दुष्कर्मों के कारण मेरा कोप अग्नि-सदृश प्रसार करता न जाए, वह ऐसा प्रज्वलित न हो जाए कि इसे अलग करना असंभव हो जाए. 13 सुनो, घाटी के निवासियो, सुनो,

चट्टानी पठार के निवासियो, अब मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, यह याहवेह की वाणी है—
तुम लोग भी सुनो जो इस आश्वासन में संतुष्ट हो, “हम पर कौन आक्रमण कर
सकता है? अथवा कौन हमारे आवास में प्रवेश कर सकता है?” **14** किंतु मैं
तुम्हारे कार्यों के परिणामों के अनुरूप ही तुम्हें दंड दूंगा, यह याहवेह की वाणी
है. मैं तुम्हारे वनों में अग्नि प्रज्वलित कर दूंगा कि इसके सारे मंडल ही नष्ट हो
जाएं.’”

22 यह याहवेह का आदेश है: “यहूदिया के राजा के आवास पर जाओ और
वहां इस वचन का प्रचार करो: **2** ‘यहूदिया के राजा, याहवेह का यह
संदेश सुनो, तुम जो दावीद के सिंहासन पर विराजमान हो, तुम, तुम्हारे सेवक एवं
तुम्हारी प्रजा जो इन द्वारों से होकर प्रवेश करते हो. **3** यह याहवेह का आदेश
है: तुम्हारा न्याय निस्सहाय हो. व्यवहार सद्‌वृत्त तथा उसे मुक्त कर दो जिसे
अत्याचारियों ने अपने अधीन रख लूट लिया है. इसके सिवा विदेशी, पितृहीन
तथा विधवा के प्रति न तो तुम्हारा व्यवहार प्रतिकूल हो और न हिंसक, इस स्थान
पर निस्सहाय की हत्या न की जाए. **4** क्योंकि यदि तुम जो पुरुष हो, वास्तव में
इन विषयों को ध्यान रखो, इनका आचरण करो, तो इस भवन के द्वार में से
राजाओं का प्रवेश हुआ करेगा, वे दावीद के सदृश उनके सिंहासन पर विराजमान
हुआ करेंगे, जो रथों एवं घोड़ों पर सवार होते हैं स्वयं राजा को, उसके सेवकों
को तथा उसकी प्रजा का प्रवेश हुआ करेगा. **5** किंतु यदि तुम इन आदेशों का
पालन न करो, तो मैं अपनी ही शपथ ले रहा हूं, यह याहवेह की वाणी है,
कि यह महल उजाड़ बन जाएगा.’” **6** क्योंकि यहूदिया के राजा के महलों
के विषय में याहवेह की यह वाणी है: “मेरी दृष्टि में तुम गिलआद सदृश हो,
लबानोन शिखर सदृश, फिर भी निश्चयतः मैं तुम्हें निर्जन प्रदेश बना छोड़ूंगा, उन
नगरों के सदृश, जो निर्जन हैं. **7** मैं तुम्हारे विरुद्ध विध्वंसक उत्पन्न कर दूंगा,
उनमें से हर एक शस्त्रों से सुसज्जित होगा, वे तुम्हारे सर्वोत्तम देवदार वृक्ष काट
डालेंगे तथा उन्हें अग्नि में झोंक देंगे. **8** “अनेक जनता इस नगर के निकट से
होते हुए चले जाएंगे और उनके वार्तालाप का विषय होगा, ‘याहवेह ने इस भव्य
नगर के साथ ऐसा कर दिया है?’ **9** तब उन्हें इसका यह उत्तर दिया जाएगा:
‘इसकी इस स्थिति का कारण यह है कि उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर की
वाचा भंग कर दी है, वे परकीय देवताओं की उपासना करने लगे तथा उन्हीं की
सेवा-उपासना करने लगे हैं.’” **10** न तो मृतक के लिए रोओ और न विलाप
करो; बल्कि, ज़ोर ज़ोर से विलाप करो, उसके लिए जो बंधुआई में दूर जा रहा
है, क्योंकि वह अब लौटकर नहीं आएगा, और न वह कभी अपनी मातृभूमि
को पुनः देख सकेगा. **11** क्योंकि यहूदिया के राजा योशियाह के पुत्र शल्लूम के
विषय में, जो अपने पिता योशियाह के स्थान पर सिंहासनारूढ़ हुआ है, जो यहीं
से चला गया है: याहवेह का यह संदेश है, “अब वह लौटकर यहां कभी नहीं
आएगा. **12** वह वहीं रह जाएगा जहां उसे बंदी बनाकर ले जाया गया है, वहीं
उसकी मृत्यु हो जाएगी; अब वह यह देश कभी न देख सकेगा.” **13** “धिक्कार
है उस पर जो अनैतिकता से अपना गृह-निर्माण करता है, तथा अपने ऊपरी कक्ष
अन्यायपूर्णता के द्वारा बनाता है, जो अपने पड़ोसी से बेगार कार्य तो करा लेता
है, और उसे पारिश्रमिक नहीं देता. **14** वह विचार करता है, ‘मैं एक विस्तीर्ण
भवन को निर्माण करूंगा जिसमें विशाल ऊपरी कक्ष होंगे.’ इसमें खिड़कियां भी
होंगी, मैं इसकी दीवारों को देवदार से मढ़ कर उन्हें प्रखर लाल रंग से रंग दूंगा.
15 “क्या अपने भवन में देवदार का प्रचूर प्रयोग करने के कारण तुम राजा के पद
पर पहुंच गए हो? क्या तुम्हारा पिता सर्वसंपन्न न था? फिर भी उसने वही किया
जो सही और न्यायपूर्ण था, इसलिये उसका कल्याण होता रहा. **16** तुम्हारा पिता
उत्पीड़ित एवं निस्सहायों का ध्यान रखता था, इसलिये उसका कल्याण होता
रहा. क्या मुझे जानने का यही आशय नहीं होता?” यह याहवेह की वाणी
है. **17** “किंतु तुम्हारी दृष्टि तथा तुम्हारे हृदय की अभिलाषा मात्र अन्यायपूर्ण
धनप्राप्ति पर केंद्रित है, तुम निस्सहाय के रक्तपात, दमन, ज़बरदस्ती धन वसूली
और उपद्रव में लिप्त रहते हो.” **18** इसलिये यहूदिया के राजा योशियाह के पुत्र
यहोइयाकिम के विषय में याहवेह की यह वाणी है: “प्रजा उसके लिए इस प्रकार
विलाप नहीं करेगी: ‘ओह, मेरे भाई! अथवा ओह, मेरी बहन!’ वे उसके लिए
इस प्रकार भी विलाप नहीं करेंगे: ‘ओह, मेरे स्वामी! अथवा ओह, उसका
वैभव!’ **19** उसकी अंत्येष्टि उसी रीति से की जाएगी. जैसे एक गधे की शव को
खींचकर येरूशलेम के द्वार के बाहर फेंक दिया जाता.” **20** “लबानोन में जाकर
विलाप करो, बाशान में उच्च स्वर उठाओ, अबारिम में भी विलाप सुना जाए,
क्योंकि जो तुम्हें प्रिय थे उन्हें कुचल दिया गया है. **21** तुम्हारी सम्पन्नता की
स्थिति में मैंने तुमसे बात करना चाहा, किंतु तुम्हारा हठ था, ‘नहीं सुनूंगा मैं!’
बचपन से तुम्हारी यही शैली रही है; तुमने कभी मेरी नहीं सुनी. **22** तुम्हारे सभी
चरवाहों को वायु उड़ा ले जाएगी, वे जो तुम्हें प्रिय हैं, बंधुआई में चले जाएंगे.
तब अपनी सारी बुराई के कारण निश्चयतः लज्जित हो तुम अपनी प्रतिष्ठा खो
दोगे. **23** तुम जो लबानोन में निवास कर रहे हो, तुम जो देवदार वृक्षों के मध्य
सुरक्षित हो, कैसी होगी तुम्हारी कराहट जब पीड़ा तुम्हें अचंभित कर लेगी, ऐसी
पीड़ा जैसी प्रसूता अनुभव करती है!” **24** यह याहवेह की वाणी है, “मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, यदि यहूदिया के राजा यहोइयाकिम का पुत्र
कोनियाह मेरे दाएं हाथ में मुद्रिका भी होता, फिर भी मैं उसे उतार फेंकता. **25** मैं
तुम्हें उन लोगों के हाथों में सौंप दूंगा जो तुम्हारे प्राण लेने को तैयार हैं, हां,
उन्हीं के हाथों में जो तुम्हारे लिए आतंक बने हुए हैं, अर्थात् बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र के तथा कसदियों के हाथों में. **26** मैं तुम्हें तथा तुम्हारी माता को
जिसने तुम्हें जन्म दिया है, ऐसे देश में प्रक्षेपित कर फेंक दूंगा, जहां तुम्हारा जन्म
नहीं हुआ था और तुम्हारी मृत्यु वहीं हो जाएगी. **27** किंतु वे अपने अभिलाषित
देश को कदापि न लौट सकेंगे.” **28** क्या यह व्यक्ति, कोनियाह, चूर-चूर हो
चुका घृणास्पद बर्तन है? अथवा वह एक तुच्छ बर्तन रह गया है? क्या कारण है
कि उसे तथा उसके वंशजों को एक ऐसे देश में प्रक्षेपित कर दूर फेंक दिया गया
है, जो उनके लिए सर्वथा अज्ञात था? **29** पृथ्वी, ओ पृथ्वी, याहवेह का आदेश
सुनो! **30** याहवेह कह रहे हैं: “इस व्यक्ति का पंजीकरण संतानहीन व्यक्ति के
रूप में किया जाए, ऐसे व्यक्ति के रूप में, जो भविष्य में समृद्ध न हो सकेगा,
उसके वंशजों में कोई भी व्यक्ति सम्पन्न न होगा, न तो कोई इसके बाद दावीद
के सिंहासन पर विराजमान होगा न ही कोई यहूदिया को उच्चाधिकारी हो
सकेगा.”

23 “धिक्कार है उन चरवाहों पर जो मेरी चराई की भेड़ों को तितर-बितर
कर रहे तथा उन्हें नष्ट कर रहे हैं!” यह याहवेह की वाणी है. **2** इसलिये
उन चरवाहों के विषय में, जो याहवेह की भेड़ों के रखवाले हैं, याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर का संदेश यह है: “तुमने मेरी भेड़ों को तितर-बितर कर दिया है,
उन्हें खदेड़ दिया है तथा उनकी देखभाल नहीं की है, इसलिये यह समझ लो
कि मैं तुम्हारे अधर्म का प्रतिफल देने ही पर हूं.” यह याहवेह की वाणी है. **3**
“तत्पश्चात स्वयं मैं अपनी भेड़-बकरियों के बचे हुए लोगों को उन सारे देशों
से एकत्र करूंगा, जहां मैंने उन्हें खदेड दिया था, मैं उन्हें उन्हीं के चराइयों में
लौटा ले आऊंगा जहां वे सम्पन्न होते और संख्या में बढ़ते जाएंगे. **4** मैं उनके
लिए चरवाहे भी तैयार करूंगा वे उनकी देखभाल करेंगे, तब उनके समक्ष किसी
भी प्रकार का भय न रहेगा, उनमें से कोई भी न तो व्याकुल होगा और न ही कोई
उनमें से खो जाएगा,” यह याहवेह की वाणी है. **5** “यह देख लेना कि ऐसे दिन
आ रहे हैं,” यह याहवेह की वाणी है, “जब मैं दावीद के लिए एक धार्मिकतापूर्ण
शाखा उत्पन्न करूंगा, वह राजा सदृश राज्य-काल करेगा तथा उसके निर्णय
विद्वत्तापूर्ण होंगे उस देश में न्याय एवं धार्मिकतापूर्ण होगा. **6** तब उन दिनों में
यहूदिया संरक्षित रखा जाएगा तथा इस्राएल सुरक्षा में निवास करेगा. उन दिनों

उसकी पहचान होगी: ‘याहवेह हमारी धार्मिकता.’ 7 इसलिये यह देखना,
ऐसे दिन आ रहे हैं,” यह याहवेह की वाणी है, “जब वे ऐसा कहना छोड़
देंगे, ‘जीवित याहवेह की शपथ, जिन्होंने इस्राएल वंशजों का मिस्र देश से
निकास किया,’ 8 बल्कि वे यह कहने लगेंगे, ‘जीवित याहवेह की शपथ, जो
इस्राएल के परिवार के वंशजों को उस देश से जो उत्तर में है तथा उन सभी देशों
में से जहां मैंने उन्हें खदेड़ दिया था, निकास कर लौटा ले आया हूं.’ तब वे
अपनी मातृभूमि पर निवास करने लगेंगे.” 9 भविष्यवक्ताओं के विषय में मैं यह
कहूंगा: भीतर ही भीतर मेरा हृदय टूट चुका है; मेरी सारी अस्थियां थरथरा रही
हैं. मेरी स्थिति मतवाले व्यक्ति के सदृश हो चुकी है, उस व्यक्ति के सदृश जो
दाखमधु से अचंभित हो चुका है, इस स्थिति का कारण हैं याहवेह और उनके
पवित्र वचन. 10 देश व्यभिचारियों से परिपूर्ण हो चुका है; शाप के कारण
देश विलाप में डूबा हुआ है, निर्जन प्रदेश के चराई शुष्क हो चुके हैं. उनकी
जीवनशैली संकटमय है तथा उनका बल का उपयोग अन्याय के कामों में होता
है. 11 “क्योंकि दोनों ही श्रद्धाहीन हैं, भविष्यद्वक्ता एवं पुरोहित; मेरे ही भवन में
मैंने उनका अधर्म देखा है,” यह याहवेह की वाणी है. 12 “इसलिये उनका मार्ग
उनके लिए अंधकार में फिसलन सदृश हो जाएगा; वे अंधकार में धकेल दिए
जाएंगे जहां उनका गिर जाना निश्चित है. क्योंकि मैं उन पर विपत्ति ले आऊंगा,
जो उनके दंड का वर्ष होगा,” यह याहवेह की वाणी है. 13 “मुझे शमरिया
के भविष्यवक्ताओं में एक घृणास्पद संस्कार दिखाई दिया है: उन्होंने बाल से
उत्प्रेरित हो भविष्यवाणी की है तथा मेरी प्रजा इस्राएल को रास्ते से भटका दिया
है. 14 इसके सिवाय येरूशलेम के भविष्यवक्ताओं में भी मैंने एक भयानक बात
देखी है: मेरे प्रति उनके संबंध में वैसा ही विश्वासघात हुआ है जैसा दाम्पत्य में
व्यभिचार से होता है. वे बुराइयों के हाथों को सशक्त करने में लगे हुए हैं,
परिणामस्वरूप कोई भी बुराई का परित्याग नहीं कर रहा. मेरी दृष्टि में वे सभी
सोदोमवासियों सदृश हो चुके हैं; वहां के निवासी अमोराह सदृश हो गए हैं.” 15
इसलिये भविष्यवक्ताओं के संबंध में याहवेह की वाणी है: “यह देख लेना कि मैं
उन्हें नागदौन खिलाऊंगा तथा उन्हें पेय स्वरूप विष से भरा जल पिलाऊंगा,
क्योंकि येरूशलेम के भविष्यवक्ताओं से ही श्रद्धाहीनता संपूर्ण देश में व्याप्त हो
गई है.” 16 यह सेनाओं के याहवेह का आदेश है: “मत सुनो भविष्यवक्ताओं
के वचन जो तुम्हारे लिए भविष्यवाणी कर रहे हैं; वे तुम्हें व्यर्थ की ओर ले जा
रहे है. वे अपनी ही कल्पना के दर्शन का उल्लेख करते हैं, न कि याहवेह के
मुख से उद्भूत संदेश को. 17 जिन्हें मुझसे घृणा है वे यह आश्वासन देते रहते हैं,
‘याहवेह ने यह कहा है: तुम्हारे मध्य शांति व्याप्त रहेगी.’ तब तुम सभी के विषय
में जो अपने हृदय के हठ में आचरण करते हो, मुझे यह कहना है: वे कहते तो हैं,
‘तुम पर विपत्ति के आने की कोई संभावना ही नहीं हैं.’ 18 कौन याहवेह की
संसद में उपस्थित हुआ है, कि याहवेह को देखे तथा उनका स्वर सुने? 19 ध्यान
दो, कि याहवेह का प्रकोप आंधी सदृश प्रभावी हो चुका है, हां, बवंडर सदृश यह
दुष्टों के सिरों पर भंवर सदृश उतर पड़ेगा. 20 याहवेह के कोप का बुझना उस
समय तक नहीं होता जब तक वह अपने हृदय की बातें कार्यान्वयन की निष्पत्ति
नहीं कर लेते. भावी अंतिम दिनों में तुम यह स्पष्ट समझ लोगे. 21 जब मैंने इन
भविष्यवक्ताओं को भेजा ही नहीं था, वे दौड़ पड़े थे; उनसे तो मैंने बात ही नहीं
की थी, किंतु वे भविष्यवाणी करने लगे. 22 यदि वे मेरी संसद में उपस्थित हुए
होते, तो वे निश्चयतः मेरी प्रजा के समक्ष मेरा संदेश भेजा करते, वे मेरी प्रजा को
कुमार्ग से लौटा ले आते और वे अपने दुराचरण का परित्याग कर देते. 23
“क्या मैं परमेश्वर तब होता हूं, जब मैं तुम्हारे निकट हूं?” यह याहवेह की वाणी
है, “क्या मैं तब परमेश्वर नहीं हूं, जब मैं तुमसे दूर होता हूं? 24 क्या कोई
व्यक्ति स्वयं को किसी छिपने के स्थान पर ऐसे छिपा सकता है, कि मैं उसे देख
न सकूं?” यह याहवेह का प्रश्न है. “क्या आकाश और पृथ्वी मुझसे पूर्ण नहीं
हैं?” यह याहवेह का प्रश्न है. 25 “मैंने वह सुन लिया है जो झूठे भविष्यवक्ताओं
ने मेरा नाम लेकर इस प्रकार भविष्यवाणी करते हैं: ‘मुझे एक स्वप्न आया
था! सुना तुमने, मुझे एक स्वप्न आया था!’ 26 और कब तक? क्या उन
भविष्यवक्ताओं के हृदय में जो झूठी भविष्यवाणी करते रहते हैं, कुछ सार्थक है,
हां, वे भविष्यद्वक्ता जो अपने ही हृदय के भ्रम की भविष्यवाणी करते रहते हैं.
27 जिनका एकमात्र लक्ष्य होता है उनके उन स्वप्नों के द्वारा, जिनका उल्लेख वे
परस्पर करते रहते हैं, मेरी प्रजा मेरा नाम ही भूलना पसंद कर दे, ठीक जिस
प्रकार बाल के कारण उनके पूर्वजों ने मेरा नाम भूलना पसंद कर रखा था. 28
जिस भविष्यद्वक्ता ने स्वप्न देखा है वह अपने स्वप्न का उल्लेख करता रहे,
किंतु जिस किसी को मेरा संदेश सौंपा गया है वह पूर्ण निष्ठा से मेरा संदेश प्रगट
करे. भला भूसी तथा अन्न में कोई साम्य होता है?” यह याहवेह की वाणी है.
29 “क्या मेरा संदेश अग्नि-सदृश नहीं?” यह याहवेह का प्रश्न है, “और क्या
एक हथौड़े सदृश नहीं जो चट्टान को चूर्ण कर देता है? 30 “इसलिये यह समझ
लो, मैं उन भविष्यवक्ताओं से रुष्ट हूं,” यह याहवेह की वाणी है, “जो एक दूसरे
से मेरा संदेश छीनते रहते हैं. 31 यह समझ लो, मैं उन भविष्यवक्ताओं से रुष्ट
हूं,” यह याहवेह की वाणी है, “जो अपनी जीभ का प्रयोग कर यह वाणी कहते
हैं, ‘यह प्रभु की वाणी है.’ 32 यह समझ लो, मैं उन सभी से रुष्ट हूं जिन्होंने झूठे
स्वप्नों को भविष्यवाणी का स्वरूप दे दिया है,” यह याहवेह की वाणी है. “तथा
इन स्वप्नों को मेरी प्रजा के समक्ष प्रस्तुत करके अपने लापरवाह झूठों तथा
दुस्साहसमय गर्वोक्ति द्वारा उन्हें भरमाते है. मैंने न तो उन्हें कोई आदेश दिया है
और न ही उन्हें भेजा है. मेरी प्रजा को इनसे थोड़ा भी लाभ नहीं हुआ है,” यह
याहवेह की वाणी है. 33 “अब यदि ऐसी स्थिति आए, जब जनसाधारण अथवा
भविष्यद्वक्ता अथवा पुरोहित तुमसे यह प्रश्न करें, ‘क्या है याहवेह का प्रकाशन?’
तब तुम्हें उन्हें उत्तर देना होगा, ‘कौन सा प्रकाशन?’ याहवेह की वाणी है, मैं
तुम्हारा परित्याग कर दूंगा. 34 तब उस भविष्यद्वक्ता अथवा पुरोहित अथवा उन
लोगों के विषय में जो यह कहते हैं, ‘याहवेह का सारगर्भित प्रकाशन,’ उस पर
मेरी ओर से दंड प्रभावी हो जाएगा उस पर तथा उसके परिवार पर. 35 तुममें से
हर एक अपने-अपने पड़ोसी एवं अपने बंधु से यह पूछेगा: ‘क्या था याहवेह का
प्रत्युत्तर?’ अथवा, ‘क्या प्रकट किया है याहवेह ने?’ या 36 ‘क्योंकि याहवेह
का प्रकाशन तुम्हें स्मरण न रह जाएगा,’ क्योंकि हर एक व्यक्ति के अपने ही
वचन प्रकाशन हो जाएंगे. तुमने जीवन्त परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह हमारे
परमेश्वर के संदेश को तोड़ मरोड़ दिया है. 37 उस भविष्यद्वक्ता से तुम यह प्रश्न
करोगे: ‘क्या उत्तर दिया है याहवेह ने तुम्हें?’ तथा ‘याहवेह ने क्या कहा है?’
38 क्योंकि यदि तुम कहोगे, ‘याहवेह का वह प्रकाशन,’ निश्चयतः यह याहवेह
की बात है: इसलिये कि तुमने इस प्रकार कहा है, ‘याहवेह का वह प्रकाशन,’
मैंने भी तुम्हें यह संदेश भेजा है तुम यह नहीं कहोगे, ‘यह याहवेह का वह
प्रकाशन है.’ 39 इसलिये ध्यान से सुनो, मैं निश्चयतः तुम्हें भूलना पसंद करके
तुम्हें अपनी उपस्थिति से दूर कर दूंगा, इस नगर को भी जो मैंने तुम्हें एवं तुम्हारे
पूर्वजों को प्रदान किया था. 40 मैं तुम्हारे साथ ऐसी चिरस्थायी लज्जा, ऐसी
चिरस्थायी निंदा सम्बद्ध कर दूंगा जो अविस्मरणीय हो जाएगी.”

24 जब बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र यहोइयाकिम के पुत्र यहूदिया के
राजा यकोनियाह को, यहूदिया के उच्चाधिकारियों को, येरूशलेम के
शिल्पकारों तथा धातुकर्मियों को अपने साथ बाबेल ले गया, याहवेह ने मुझे यह
प्रदर्शित किया: याहवेह के मंदिर के समक्ष अंजीर की दो टोकरियां रखी गई हैं,
इन्हें देखो. 2 एक टोकरी में अत्यंत उत्कृष्ट अंजीर रखे हुए थे, जैसे पहली उपज
के पके फल; दूसरी टोकरी में अत्यंत निकृष्ट कोटि के गले हुए, सेवन के लिए
सर्वथा अयोग्य अंजीर रखे हुए थे. 3 तब याहवेह ने मुझसे पूछा, “क्या दिखाई
दे रहा है तुम्हें, येरेमियाह?” मैंने उत्तर दिया, “अंजीर, उत्तम कोटि के अंजीर

उत्कृष्ट हैं, तथा तुच्छ अंजीर अत्यंत निकृष्ट, सेवन के लिए अयोग्य क्योंकि वे
गल चुके हैं.” 4 तब मेरे लिए याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 5 “याहवेह
इस्राएल के परमेश्वर का वचन यह है: ‘इन उत्तम अंजीरों के सदृश, मैं यहूदिया
के बंदियों को उत्तम मान लूंगा, जिन्हें मैंने इस स्थान से कसदियों के देश में
कृपादृष्टि में भेज दिया है. 6 क्योंकि मैं उन पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखूंगा
तथा मैं उन्हें इसी देश में लौटा ले आऊंगा. मैं उन्हें उभारूंगा, ध्वस्त नहीं; मैं
उन्हें रोपित करूंगा; नहीं उखाड़ूंगा. 7 मैं उन्हें ऐसा हृदय दूंगा जिससे उन्हें यह
ज्ञान हो जाएगा, कि याहवेह मैं हूं. वे मेरी प्रजा होंगे, तथा मैं उनका परमेश्वर,
क्योंकि वे अपने संपूर्ण हृदय से मेरे निकट लौट आएंगे. 8 “‘किंतु उन निकृष्ट
अंजीरों के सदृश, जो खाने के लिए अयोग्य हैं क्योंकि वे गल चुके हैं, वस्तुतः
याहवेह का कहना यह है, इसी प्रकार मैं यहूदिया के राजा सीदकियाहू, उसके
अधिकारियों तथा येरूशलेम के लोगों का, जो इस देश में रह जाएंगे तथा उन्हें
जो मिस्र देश में निवास करते हैं और सभी का परित्याग कर दूंगा. 9 मैं उन्हें
पृथ्वी के सारे देशों के लिए आतंक, संकट, एक निंदा, एक लोकोक्ति, एक
व्यंग्य सदृश तथा उन सभी स्थानों में जहां मैं उन्हें बिखरा दूंगा, एक शाप बना
छोड़ूंगा. 10 मैं उनके ऊपर तब तक तलवार, अकाल तथा महामारी का प्रहार
करता रहूंगा, जब तक वे उस देश में से जो मैंने उन्हें तथा उनके पूर्वजों को प्रदान
किया है, नष्ट न हो जाएं.’”

25 योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल के चौथे
वर्ष में यह बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के राज्य-काल का पहला वर्ष
था, येरेमियाह को याहवेह का संदेश भेजा गया जो यहूदिया की सारी प्रजा से
संबंधित था. 2 जो भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने यहूदिया के सारे निवासियों तथा
येरूशलेम के सारे निवासियों को प्रगट किया: 3 अमोन के पुत्र यहूदिया के राजा
योशियाह के राज्य-काल के तेरहवें वर्ष से आज तक इन तेईस वर्षों में मुझे
याहवेह का संदेश प्राप्त होता आया है, जो मैं बार-बार तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत भी
करता रहा हूं, किंतु तुमने इसकी अनसुनी ही की है. 4 याहवेह ने बार-बार अपने
भविष्यवक्ताओं को भेजा जो सभी याहवेह के सेवक थे, किंतु न तो तुमने उनकी
और ध्यान दिया और न ही उनकी सुनी. 5 भविष्यवक्ताओं का संदेश था, “तुम
सभी अपने-अपने अनाचार तथा अपने-अपने दुष्कर्मों को त्याग कर लौट
आओ, तथा उस देश में निवास करो जो याहवेह ने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को
सदा-सर्वदा के लिए दे दिया है. 6 उन परकीय देवताओं का अनुसरण मत करो न
उनकी सेवा करो न उनकी उपासना; अपनी हस्तकृतियों के द्वारा मेरे कोप
को मत भड़काओ कि मैं तुम्हारी कोई हानि करूं.” 7 “फिर भी तुमने मेरी न
सुनी,” यह याहवेह की वाणी है, “तुमने यह सब स्वयं अपनी ही हानि के लिए
अपनी हस्तकृतियों के द्वारा मेरे कोप को भड़काने के उद्देश्य से किया है.” 8
इसलिये सेनाओं के याहवेह का कहना यह है: “इसलिये कि तुमने मेरे आदेशों
का पालन नहीं किया है, 9 यह देख लेना कि मैं उत्तर दिशा के सारे परिवारों
को बुलाऊंगा,” यह याहवेह की वाणी है, “साथ ही मैं अपने सेवक बाबेल के
राजा नबूकदनेज्ज़र को भी बुलाऊंगा कि वह इस देश पर इसके निवासियों तथा
इस देश के निकटवर्ती इन सारे देशों पर आक्रमण करे. मैं इन्हें पूर्णतः नष्ट कर
दूंगा कि वे आतंक तथा व्यंग्य का प्रतीक बन जाएं, कि उनमें स्थायी उजाड़
व्याप्त हो जाए. 10 इसके सिवा मैं इन देशों से आनंद का स्वर एवं हर्षोल्लास
की ध्वनि ही मिटा दूंगा, न वहां वर का स्वर सुना जा सकेगा न वधू का, न वहां
चक्की की ध्वनि होगी न दीप की ज्योति. 11 यह संपूर्ण देश एक उजाड़ तथा
भयावहता में परिवर्तित हो जाएगा, ये जनता सत्तर वर्षों तक बाबेल के राजा की
सेवा करते रहेंगे. 12 “तत्पश्चात यह होगा: जब सत्तर वर्ष बीत जाएंगे, मैं बाबेल
के राजा एवं राष्ट्र को तथा कसदियों के देश को उनके अधर्म के लिए दंड दूंगा,”
यह याहवेह की वाणी है, “मैं उसे चिरस्थायी उजाड़ में परिवर्तित कर दूंगा. 13
उस देश से संबंधित मेरे द्वारा उच्चारित सारे शब्द सत्य प्रमाणित होंगे, वे सब जो
इस ग्रंथ में बताए गए है जिनकी भविष्यवाणी येरेमियाह ने इन सभी राष्ट्रों के
विरुद्ध की थी. 14 क्योंकि अनेक राष्ट्र एवं प्रतिष्ठित राजा उन्हें भी अपने दास
बना लेंगे; हां, बाबेलवासियों को भी मैं उनके द्वारा किए गए कार्यों के अनुरूप
ही प्रतिफल दूंगा.” 15 क्योंकि याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का, मेरे लिए
आदेश यह है: “मेरे हाथ से मेरे कोप के द्राक्षारस का प्याला ले लो और उन
सभी देशों को जहां मैं तुम्हें भेजने पर हूं, इसे पीने के लिए प्रेरित करो. 16 वे
उस तलवार के कारण जो मैं उनके मध्य भेजने पर हूं, इसे पिएंगे, लड़खड़ाने
लगेंगे तथा उन्मत्त हो जाएंगे.” 17 मैंने याहवेह के हाथ से वह प्याला ले लिया
और याहवेह ने मुझे जिन-जिन राष्ट्रों में भेजा उन्हें पिला दिया: 18 येरूशलेम
तथा यहूदिया के नगर, उनके राजा एवं उनके उच्चाधिकारियों को वे अवशेष,
आतंक, उपहास तथा शाप बने रह जाएं, जैसा कि आज भी देखा जा सकता है;
19 मिस्र का राजा फ़रोह, उसके सेवक, उसके उच्च अधिकारी तथा उसकी
सारी प्रजा, 20 सभी विदेशी नागरिक; उज़ देश के सभी राजा; फिलिस्तिया देश
के सभी राजा, यहां तक कि अश्कलोन, अज्जाह, एक्रोन, तथा अशदोद के
लोग; 21 एदोम, मोआब तथा अम्मोन के वंशज; 22 सोर के सभी राजा, सीदोन
के सभी राजा, तथा उन तटवर्ती क्षेत्रों के राजा जो सागर के परे हैं; 23 देदान,
तेमा, बुज़ तथा वे सभी जो अपनी कनपटी के बाल क़तर लेते हैं; 24 अरेबिया
के सभी राजा तथा विदेशियों के सभी राजा जो मरुस्थल में निवास करते हैं; 25
ज़िमरी के सभी राजा, एलाम के सभी राजा, मेदिया के सभी राजा; 26 उत्तर के
सभी राजा दूर अथवा निकट के, एक के बाद एक, तथा पृथ्वी के सभी राज्य,
जो पृथ्वी तल पर हैं, और इन सबके बाद शेशाख का राजा भी यह द्राक्षारस
पिएगा. 27 “तुम्हें उनसे कहना होगा, ‘इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह
का आदेश यह है: पियो, मतवाले हो जाओ, उल्टी करो, गिर पड़ो, फिर खड़े
ही न होओ, उस तलवार के कारण जो मैं तुम्हारे मध्य तैयार करने पर हूं.’ 28
यदि वे तुम्हारे हाथ से वह प्याला लेकर पीना अस्वीकार कर दें, तब तुम्हें उनसे
यह कहना होगा, ‘सेनाओं के याहवेह का संदेश यह है: निश्चयतः पीना तो तुम्हें
पड़ेगा ही! 29 क्योंकि यह देखना, इस नगर में जो मेरे नाम से प्रतिष्ठित हैं, मैं
घोर संकट प्रारंभ करने पर हूं, कैसे संभव है कि तुम दंड से बचे रहोगे? तुम दंड
से बच न सकोगे, क्योंकि मैंने सारी पृथ्वी के निवासियों के विरुद्ध तलवार का
आह्वान किया हुआ है, यह सेनाओं के याहवेह की वाणी है.’ 30 “इसलिये
तुम्हें उन सबके विरुद्ध यह भविष्यवाणी करनी होगी और तुम उनसे यह कहोगे:
“‘याहवेह की गर्जना उनके उच्च स्थान से होगी; तथा उनके पवित्र आवास से
उनका स्वरोच्चार होगा वह अपनी भेड़-बकरियों पर उच्च स्वर में गरजेंगे.
उनका उच्च स्वर पृथ्वी के सारे निवासियों के विरुद्ध, उनके सदृश होगा जो द्राक्षा
को रौंद रहे हैं. 31 पृथ्वी के छोर तक यह आवाज गूंज उठेगी, क्योंकि याहवेह
ने राष्ट्रों पर आरोप लगाया है; वह सारे मनुष्यों का न्याय करने पर हैं, जहां तक
बुराइयों का प्रश्न है, याहवेह ने उन्हें तलवार से घात होने के लिए तैयार कर दिया
है,’” यह याहवेह की वाणी है. 32 सेनाओं के याहवेह की यह वाणी है: “इस
ओर ध्यान दो एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में घोर विपत्ति प्रसारित होती चली जा रही
है; और पृथ्वी के दूर-दूर के क्षेत्रों से एक विशाल बवंडर स्वरूप ले रहा है.” 33
उस अवसर पर याहवेह द्वारा घात किए हुए लोग पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर
तक देखे जाएंगे. उनके लिए विलाप नहीं किया जाएगा न ही उन्हें एकत्र करके
गाड़ा जाएगा, वे भूमि के ऊपर मल सदृश पड़े रहेंगे. 34 चरवाहो, विलाप करो,
विलाप करो; तुम जो भेड़-बकरियों के स्वामी हो, भस्म में लोटते रहो. क्योंकि
तुम्हारे मारे जाने तथा तुम्हारे तितर-बितर होने के दिन आ पहुंचे हैं; तुम उत्कृष्ट
बर्तन के सदृश गिरकर चूर-चूर हो जाओगे. 35 चरवाहों के समक्ष पलायन करने
का कोई स्थान न होगा, वही स्थिति होगी पशुओं के झुंड के स्वामियों की. 36

चरवाहों के रोने की ध्वनि सुन लो, साथ ही भेड़-बकरियों के स्वामियों का
विलाप भी, क्योंकि याहवेह उनके चरवाहों को नष्ट कर रहे हैं. 37 उनकी
शान्तिपूर्ण चरागाहें याहवेह के प्रचंड कोप के कारण निस्तब्ध हो गई हैं. 38 सिंह
के सदृश याहवेह अपनी मांद से निकल पड़े हैं, याहवेह के प्रचंड कोप के कारण
तथा दमनकारी तलवार की प्रचंडता के कारण उनका देश भयावह हो चुका है.

26 योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल के प्रारंभ
में याहवेह की ओर से यह संदेश भेजा गया: 2 “याहवेह का आदेश यह
है: याहवेह के भवन के आंगन में खड़े होकर यहूदिया के उन सारे नगरों को
संबोधित करो, जो याहवेह के भवन में वंदना के उद्देश्य से एकत्र हुए हैं तथा तुम
उन्हें वह सब प्रगट कर दो, जिनके लिए वचन देने का आदेश मैं तुम्हें दे चुका हूं;
एक शब्द भी न छूटने पाए. 3 यह संभव है कि वे मेरी सुन लें तथा अपनी बुरी
चाल का परित्याग कर दें. जिससे मैं उस विध्वंस का विचार त्याग दूं जो मैंने
उनके लिए उनके अधर्म के कारण योजित किया था. 4 तुम्हें उनसे कहना होगा,
‘यह याहवेह की ओर से प्रसारित चेतावनी है: यदि तुम मेरी न सुनो, मेरी नीति
का आचरण न करो जो मैं तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत कर चुका हूं, 5 कि तुम मेरे
सेवक उन भविष्यवक्ताओं द्वारा भेजा संदेश न सुनो, जिन्हें मैं बार-बार तुम्हारे
लिए भेज रहा हूं (जिनकी तुमने नहीं सुनी है), 6 तब मैं इस भवन की वही
स्थिति कर दूंगा जो शीलो की हुई थी तथा मैं इस नगर को पृथ्वी के सारे राष्ट्रों
के लिए एक शाप बना दूंगा.’” 7 याहवेह के भवन में पुरोहितों, भविष्यवक्ताओं
तथा सारे जनसाधारण ने येरेमियाह को यह वचन देते हुए सुन लिया. 8 जब
येरेमियाह याहवेह द्वारा आदेशित सब लोगों के लिए संदेश दे चुके, पुरोहितों,
भविष्यवक्ताओं तथा लोगों ने उन्हें यह कहते हुए पकड़ लिया, “इसके लिए
तुम्हें प्राण-दंड दिया जाना उपयुक्त है! 9 कैसे तुमने याहवेह के नाम में यह
भविष्यवाणी कर दी है, यह भवन शीलो सदृश हो जाएगा तथा यह नगर निर्जन
तथा उजाड़ हो जाएगा?” याहवेह के भवन परिसर में सारे जनसमूह ने येरेमियाह
को घेर लिया. 10 जब यहूदिया के अधिकारियों ने यह सब सुना, वे राजमहल
से याहवेह के भवन परिसर में आ गए, उन्होंने याहवेह के भवन के नव-द्वार के
प्रवेश में अपने आसन स्थापित किए. 11 तब पुरोहितों एवं भविष्यवक्ताओं ने
उन अधिकारियों एवं जनसमुदाय को संबोधित कर कहा, “यह व्यक्ति मृत्यु दंड
के योग्य है. उसने इस नगर के विरुद्ध भविष्यवाणी की है, जैसा कि आपने स्वयं
सुन लिया है!” 12 तब येरेमियाह ने सारे अधिकारियों तथा सारे जनसमुदाय को
यह कहते हुए अपना प्रत्युत्तर दिया: “स्वयं याहवेह ने मुझे उन शब्दों में जिन्हें
आप लोगों ने सुने हैं, इस नगर एवं भवन के विरुद्ध भविष्यवाणी करने का आदेश
दिया था. 13 अब आप अपने आचरण को तथा अपने कार्यों को सुधार लीजिए
तथा याहवेह अपने परमेश्वर के आदेश के प्रति आज्ञाकारी बन जाइए. तब
याहवेह आपके संबंध में घोषित विपत्ति के विषय में अपने संकल्प को परिवर्तित
कर देंगे. 14 जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं तो आपकी कृपा पर निर्भर कर रहा हूं; मेरे
साथ आप वही कीजिए जो कुछ आपको उपयुक्त लगे. 15 हां, यह अवश्य
समझ लीजिए, यदि आप मुझे प्राण-दंड देते हैं, आप एक निस्सहाय की मृत्यु
का दोष स्वयं पर तथा इस नगर एवं इसके निवासियों पर ले आएंगे, क्योंकि
सत्य यही है कि याहवेह ने ही मुझे इस संदेश को प्रगट करने भेजा है कि आप
इसे सुन लें.” 16 यह सुन अधिकारियों तथा सारे जनसमूह ने पुरोहितों तथा
भविष्यवक्ताओं से कहा, “इस व्यक्ति को प्राण-दंड न दिया जाए! क्योंकि इसने
हमसे याहवेह हमारे परमेश्वर के नाम में बात की है.” 17 तत्पश्चात देश के कुछ
प्राचीन नागरिकों ने उठकर जनसभा को संबोधित कर कहा, 18 “यहूदिया के
राजा हिज़किय्याह के राज्य-काल में मोरेशेथवासी मीकाह ने भविष्यवाणी की
थी और उसकी भविष्यवाणी सारे यहूदियावासियों से संबंधित इस प्रकार थी,
‘सेनाओं के याहवेह ने यह कहा है: “‘ज़ियोन पर खेत के सदृश हल चला दिया
जाएगा, येरूशलेम खंडहर हो जाएगा, तथा भवन की पहाड़ी, वन में पूजा-स्थल
का स्वरूप ले लेगी.’ 19 क्या यहूदिया के राजा हिज़किय्याह एवं सारे यहूदिया
की जनता ने उसे प्राण-दंड दिया? क्या हिज़किय्याह ने याहवेह से डर और
श्रद्धा के साथ याचना नहीं की? क्या याहवेह ने उनका विनाश करने का वह
विचार त्याग नहीं दिया, जिसकी चेतावनी याहवेह पहले से दे चुके थे? किंतु
अब हम स्वयं अपने ही विरुद्ध घोर संकट कर रहे हैं!” 20 वस्तुतः एक ऐसा
व्यक्ति हो चुका है जिसने याहवेह के नाम में भविष्यवाणी की थी; शेमायाह का
पुत्र उरियाह जो किरयथ-यआरीमवासी था; उसने इस नगर एवं देश के विरुद्ध
इसी प्रकार के शब्दों में भविष्यवाणी की थी जैसी येरेमियाह ने. 21 जब राजा
यहोइयाकिम, उसके शूर योद्धाओं तथा उसके अधिकारियों ने ये शब्द सुने,
राजा ने उसे घात करने की युक्ति की. किंतु जब उरियाह को इसका समाचार
प्राप्त हुआ, वह भयभीत हो मिस्र देश को पलायन कर गया. 22 तब राजा
यहोइयाकिम ने मिस्र देश को अपने ये प्रतिनिधि भेज दिए, अखबोर का पुत्र एल-
नाथान तथा उसके साथ अन्य विशिष्ट व्यक्ति, ये सभी मिस्र देश जा पहुंचे. 23
वहां से वे उरियाह को लौटा ले आए, उसे राजा यहोइयाकिम के समक्ष प्रस्तुत
किया गया, जिसने उसे तलवार से घात कर उसका शव उस स्थान पर फेंक दिया
जहां सर्वसाधारण को गाड़ा जाता था. 24 किंतु, शापान का पुत्र अहीकाम
येरेमियाह का सहायक था, परिणामस्वरूप येरेमियाह को मृत्यु दंड के लिए
लोगों के हाथों में सौंपा नहीं गया.

27 नबूकदनेज्ज़र द्वारा रखा गया जूआ यहूदिया के राजा सीदकियाह् के
पुत्र योशियाह के राज्य-काल के प्रारंभ में ही याहवेह का एक संदेश
येरेमियाह को भेजा गया. 2 याहवेह ने मुझे यह आदेश दिया: “अपने लिए बंधन
एवं जूआ बनाकर अपनी गर्दन पर रख लो. 3 और यहूदिया के राजा सीदकियाह्
से भेंट करने येरूशलेम आए संदेशवाहकों द्वारा एदोम के राजा, मोआब के राजा,
अम्मोन वंशजों के राजा, सोर के राजा तथा सीदोन राजा को यह संदेश प्रगट कर
दो. 4 उन्हें आदेश दो कि ये संदेशवाहक अपने स्वामियों के पास लौटकर उन्हें
यह संदेश दे दें, ‘सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का आदेश है: अपने
स्वामियों से तुम्हें यह कहना होगा: 5 अपने अनन्य सामर्थ्य तथा अपने अपूर्व
भुजबल से मैंने पृथ्वी, मनुष्यों एवं पशुओं की रचना की है जो आकाश तल पर
ध्यान करते रहते हैं. अपनी स्वेच्छानुरूप यह मैं उसे दे देता हूं जो मेरी दृष्टि में
योग्य है. 6 मैंने ही यह संपूर्ण भूभाग बाबेल के राजा अपने सेवक नबूकदनेज्ज़र
को सौंप दिया है; मैंने उसे भूमि के वन्य पशु भी दे दिए हैं, कि ये उसकी सेवा
में अधीन रहें. 7 सभी राष्ट्र उसके, उसके पुत्र के तथा उसके पौत्र के अधीन
रहेंगे, उसके अपने राज्य की स्थापना हो जाने तक; तत्पश्चात अनेक राष्ट्र तथा
पराक्रमी राजा नबूकदनेज्ज़र को अपने अधीन कर लेंगे. 8 “‘“किंतु, यदि कोई
राष्ट्र अथवा कोई राज्य बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र की अधीनता का विरोध
करेगा तथा बाबेल के राजा के जूए में अपनी गर्दन नहीं देगा, उस राष्ट्र को मैं
तलवार, अकाल तथा महामारी द्वारा दंड दूंगा, यह याहवेह की वाणी है, यह उस
समय तक होता रहेगा जब तक मैं उसके द्वारा उस राष्ट्र को नष्ट न कर दूं. 9 किंतु
तुम तो अपने भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों, स्वप्नदर्शियों, शकुन वाचकों तथा
टोन्हों की वाणियों की अनसुनी करना जो तुमसे यह कहते हैं, ‘बाबेल के राजा
की अधीनता स्वीकार न करना.’ 10 क्योंकि वे तुम्हारे लिए झूठी भविष्यवाणी
कर रहे हैं जिससे वे इसके द्वारा तुम्हें तुम्हारी मातृभूमि से दूर कर दें; तब मैं ही
तुम्हें इस देश से दूर कर दूंगा और तुम नष्ट हो जाओगे. 11 किंतु वह राष्ट्र जो
बाबेल के राजा के जूए में अपनी गर्दन देकर स्वयं को उसके अधीन कर देगा, मैं
उसे उसकी मातृभूमि में ही निवास करने दूंगा, यह याहवेह की वाणी है, वे इसी
देश में रहकर कृषि करेंगे और इसी में निवास करेंगे.”’” 12 यही सब मैंने
यहूदिया के राजा सीदकियाह् के समक्ष कह दिया. मैंने उनसे कहा, “अपनी

गर्दन बाबेल के राजा के जूए में जोत दीजिए; और उसके तथा उसकी प्रजा के
अधीन रहते हुए जीवित बने रहिए. 13 क्या आवश्यकता है कि आप तथा
आपकी प्रजा तलवार, अकाल तथा महामारी के द्वारा मृत्यु को गले लगाए, जैसा
कि याहवेह ने उस राष्ट्र के संदर्भ में उल्लेख किया था जो बाबेल के राजा की
अधीनता स्वीकार न करेगा? 14 इसलिये उन भविष्यवक्ताओं के परामर्श पर
ध्यान ही न दीजिए जो यह परामर्श दे रहे हैं, 'बाबेल के राजा के अधीन होने की
आवश्यकता ही नहीं है,' क्योंकि वे तुमसे यह झूठी भविष्यवाणी कर रहे हैं.
15 'क्योंकि वे मेरे द्वारा भेजे गये भविष्यद्वक्ता हैं ही नहीं,' यह याहवेह की
वाणी है. 'किंतु वे मेरे नाम में झूठी भविष्यवाणी किए जा रहे हैं, कि मैं तुम्हारे
देश से तुम्हें दूर कर दूं और तुम नष्ट हो जाओ—तुम और ये भविष्यद्वक्ता, जो
तुम्हारे लिए यह भविष्यवाणी कर रहे हैं.'" 16 तब मैंने पुरोहितों तथा सभी
लोगों से यह कहा, "याहवेह का संदेश यह है: तुम अपने भविष्यवक्ताओं के
शब्दों पर ध्यान न दो जो तुम्हारे लिए यह भविष्यवाणी कर रहे हैं, 'शीघ्र ही
याहवेह के भवन के बर्तन बाबेल से यहां लौटा लिये जाएंगे.' क्योंकि वे तुम्हारे
लिए झूठी भविष्यवाणी कर रहे हैं. 17 उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी की
उपेक्षा ही करना. बाबेल के राजा की अधीनता स्वीकार करके जीवित रहना.
भला यह नगर उजाड़ क्यों बना दिया जाए? 18 यदि वे वास्तव में भविष्यद्वक्ता
हैं तथा यदि उन्हें याहवेह का संदेश प्रगट किया गया है तो, वे अब सेनाओं के
याहवेह से बिनती करें कि वे बर्तन, जो याहवेह के भवन में यहूदिया के राजा के
राजमहल में तथा येरूशलेम में शेष रह गए हैं बाबेल न ले जाएं. 19 क्योंकि
स्तंभों, जल बर्तन आधारों तथा नगर में शेष रह गए बर्तनों के विषय में, जिन्हें
बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र अपने साथ उस अवसर पर न ले जा सका था,
जब वह यहोइयाकिम के पुत्र यहूदिया के राजा यकोनियाह तथा यहूदिया तथा
येरूशलेम के सारे अभिजात व्यक्तियों को येरूशलेम से बाबेल को बंधुआई में ले
गया था— 21 उन बर्तनों के विषय में, जो याहवेह के भवन में, यहूदिया के
राजमहलों में तथा येरूशलेम में छूट गए हैं, सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर का संदेश यह है: 22 'इन्हें बाबेल ले जाया जाएगा और वे सब वहां
उस समय तक रहेंगे, जब तक मैं स्वयं उनकी ओर ध्यान न दूं,' यह याहवेह की
वाणी है. 'तब मैं स्वयं उन्हें लौटा ले आऊंगा और उनके निर्धारित स्थान पर
पुनःस्थापित कर दूंगा.'"

28 झूठे भविष्यद्वक्ता हाननियाह से येरेमियाह का सामना: तब उसी वर्ष
यहूदिया के राजा सीदकियाहू के राज्य-काल के प्रारंभ ही में, वस्तुतः
चौथे वर्ष के पांचवें माह में अज्ज़ूर के पुत्र गिबयोनवासी हाननियाह ने, जो
भविष्यद्वक्ता था, मुझसे याहवेह के भवन में पुरोहितों एवं सारे उपस्थित लोगों
के समक्ष यह कहा: 2 "इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का यह
संदेश सुनो: 'मैंने बाबेल के राजा का जूआ भंग कर दिया है. 3 दो ही वर्षों के
अंतराल में मैं याहवेह के भवन के उन सारे बर्तनों को जिन्हें बाबेल का राजा
नबूकदनेज्ज़र इस स्थान से बाबेल को ले गया है, इसी स्थान पर लौटा ले आने
पर हूं. 4 मैं यहोइयाकिम के पुत्र यहूदिया के राजा यकोनियाह को भी इस स्थान
पर लौटा ले आने पर हूं तथा यहूदिया के उन सभी बंदियों को, जो बाबेल
चले गए थे,' यह याहवेह की वाणी है, 'क्योंकि मैं बाबेल के राजा का जूआ
तोड़ दूंगा.'" 5 यह सुन भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने भविष्यद्वक्ता हाननियाह को
पुरोहितों एवं याहवेह के भवन में उपस्थित सारे लोगों के समक्ष संबोधित करते
हुए कहा. 6 भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के वचन इस प्रकार थे, "आमेन! याहवेह
ऐसा ही हो जाने दें! तुम्हारे द्वारा की गई भविष्यवाणी की याहवेह पुष्टि करें, जो
तुम्हारे द्वारा की गई है, कि याहवेह के भवन के बर्तन तथा बाबेल के सारे बंदियों
को इस स्थान पर लौटा लाया जाएगा. 7 फिर भी, अब मेरा यह वचन सुन लो
जो मैं तुम्हारे तथा इन सभी लोगों के सुनने में प्रस्तुत करने पर हूं: 8 प्राचीन
काल से मेरे और तुम्हारे प्राचीन काल भविष्यद्वक्ता अनेक देशों तथा शक्तिशाली
राज्यों के विरुद्ध युद्ध, अकाल संकट तथा महामारी की भविष्यवाणी करते आए
हैं. 9 वह भविष्यद्वक्ता, जो शांति कल्याण की भविष्यवाणी करता है और उस
भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणी चरितार्थ हो जाती है, तब वही भविष्यद्वक्ता
याहवेह द्वारा भेजा गया सही भविष्यद्वक्ता होगा." 10 यह सुन हाननियाह ने
भविष्यद्वक्ता येरेमियाह की गर्दन पर रखा जूआ लेकर तोड़ डाला. 11 हाननियाह
ने सभी उपस्थित लोगों के समक्ष यह कहा, "याहवेह का संदेश यह है: 'मैं
दो वर्ष के भीतर ही भीतर सारी जनताओं की गर्दन पर से बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र का जूआ तोड़ डालूंगा.'" तब भविष्यद्वक्ता येरेमियाह वहां से चले
गए. 12 भविष्यद्वक्ता हाननियाह द्वारा भविष्यद्वक्ता येरेमियाह की गर्दन पर रखे
जूए को तोड़ देने के बाद, येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 13
"जाकर हाननियाह से यह कहना: 'यह याहवेह द्वारा भेजा गया संदेश है: तुमने
तो काठ के जुओं को तोड़ दिया है, किंतु तुम्हीं ने उनके स्थान पर लोहे के जूए
निर्मित कर दिए हैं. 14 क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का
संदेश यह है: मैंने इन सारी जनताओं की गर्दन पर लोहे का जूआ रख दिया है कि
वे बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के अधीन हो जाएं, वे निश्चयतः उसके अधीन
रहेंगे. मैंने तो नबूकदनेज्ज़र को मैदान के पशुओं पर भी अधिकार दे दिया है.'"
15 तब भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने भविष्यद्वक्ता हाननियाह को संबोधित किया,
"अब यह सुन लो, हाननियाह! याहवेह ने तुम्हें भेजा ही नहीं है, तुमने इन लोगों
को असत्य पर विश्वास करने पर विवश किया है. 16 इसलिये याहवेह का संदेश
यह है: 'यह देखना कि मैं तुम्हें आकाश तल पर से ही हटा देने पर हूं. तुम्हारी
मृत्यु इसी वर्ष हो जाएगी, क्योंकि तुमने याहवेह के विरुद्ध विद्रोह करने की युक्ति
की है.'" 17 उसी वर्ष सातवें माह में, भविष्यद्वक्ता हाननियाह की मृत्यु हो गई.

29 नबूकदनेज्ज़र द्वारा येरूशलेम से बाबेल बंदी उत्तरजीवी प्राचीनों,
पुरोहितों, भविष्यवक्ताओं तथा सारे लोगों को संबोधित येरेमियाह द्वारा
लिखित पत्र की विषय-वस्तु यह है. 2 (यह उस समय का उल्लेख है जब राजा
यकोनियाह, राजमाता, सांसद तथा यहूदिया तथा येरूशलेम के प्रशासक, कुशल
मजदूर और शिल्पकार येरूशलेम से पलायन कर चुके थे.) 3 यह पत्र शापान के
पुत्र एलासाह तथा हिलकियाह के पुत्र गेमारियाह के हाथों में सौंप दिया गया,
कि यह पत्र यहूदिया के राजा सीदकियाहू ने बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र को
इन शब्दों में संबोधित करते हुए बाबेल में भेजा: 4 सभी बंदियों के लिए, जिन्हें
मैंने येरूशलेम से बाबेल में बंधुआई में भेजा है, सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर का संदेश यह है: 5 "आवासों का निर्माण करो तथा उनमें निवास करो;
वाटिकाएं रोपित करो तथा उनके उत्पाद का उपभोग करो. 6 विवाह करो और
पुत्र-पुत्रियों के जनक हो जाओ; तब अपने पुत्रों के लिए पत्नियां ले आओ तथा
अपनी पुत्रियों का विवाह कर उन्हें विदा करो, कि वे संतान पैदा करें-उनका
बढ़ना ही होता रहे, कमी नहीं. 7 जिस नगर में मैंने तुम्हें बंदी बनाकर रखा
है, तुम उस नगर के हित का यत्न करते रहना. उसकी ओर से तुम याहवेह से
बिनती भी करते रहना, क्योंकि उस नगर की समृद्धि में ही तुम्हारा हित निहित
होगा." 8 क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का आदेश यह है:
"सावधान रहना कि तुम अपने मध्य विद्यमान भविष्यवक्ताओं तथा पूर्वघोषकों
के धोखे में न आ जाओ. वे अपने जिन स्वप्नों का उल्लेख करते हैं, उनकी
ओर भी ध्यान न देना. 9 क्योंकि वे मेरे नाम में तुमसे झूठी भविष्यवाणी कर रहे
होंगे. वे मेरे द्वारा भेजे गये बर्तन नहीं हैं," यह याहवेह की वाणी है. 10 क्योंकि
याहवेह की वाणी यह है: "जब बाबेल के सत्तर वर्ष पूरे हो जायेंगे, तब मैं
तुम्हारी ओर आकर तुमसे की गई बात, तुम्हें इसी स्थान पर लौटा ले आने की
वह रुचिर प्रतिज्ञा पूर्ण करूंगा. 11 इसलिये कि मेरे द्वारा तुम्हारे लिए योजित
अभिप्राय स्पष्ट हैं," यह याहवेह की वाणी है, "तुम्हें एक प्रत्याशित भविष्य

प्रदान करने के निमित, मैंने समृद्धि की योजना का विन्यास किया है, संकट का
नहीं. 12 उस समय तुम मेरी ओर उन्मुख होकर मुझे पुकारोगे, मुझसे बिनती
करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा. 13 तुम मेरी खोज करोगे और मुझे प्राप्त कर
लोगे, जब तुम अपने संपूर्ण हृदय से मेरी खोज करोगे. 14 यह याहवेह की वाणी
है, मैं तुम्हें उपलब्ध हो जाऊंगा, मैं तुम्हारे ऐश्वर्य को लौटाकर दूंगा तथा तुम्हें
उन सभी राष्ट्रों तथा स्थानों से एकत्र करूंगा, जहां मैंने तुम्हें बंदी कर दिया है,”
यह याहवेह की वाणी है, “तब मैं तुम्हें उसी स्थान पर लौटा ले आऊंगा, जहां से
मैंने तुम्हें बंधुआई में भेज दिया था.” 15 इसलिये कि तुम्हारा यह दावा है,
“बाबेल में हमारे निमित्त भविष्यवक्ताओं का उद्भव याहवेह द्वारा किया गया है,”
16 यह याहवेह का संदेश है, उस राजा के विषय में जो दावीद के सिंहासन पर
विराजमान होता है तथा उन लोगों के विषय में, जो इस नगर में निवास कर रहे
हैं, जो सहनागरिक तुम्हारे साथ बंधुआई में नहीं गए हैं— 17 सेनाओं के याहवेह
की यह वाणी है: “यह देख लेना मैं उन पर तलवार का प्रहार करवाऊंगा,
अकाल तथा महामारी भेजूंगा. मैं उनका स्वरूप ऐसे फटे हुए अंजीरों के सदृश
बना दूंगा, जो सड़न के कारण सेवन के योग्य ही नहीं रह गए हैं. 18 मैं तलवार,
अकाल तथा महामारी लेकर उनका पीछा करूंगा. मैं उन्हें पृथ्वी के सारे राज्यों
के समक्ष भयावह बना दूंगा, कि वे उन राष्ट्रों के मध्य शाप, भय तथा उपहास का
विषय बनकर रह जाएं, जहां मैंने उन्हें दूर किया है. 19 क्योंकि उन्होंने मेरे
आदेशों की ओर ध्यान नहीं दिया है,” यह याहवेह की वाणी है, “जो मैं अपने
सेवकों, भविष्यवक्ताओं के द्वारा बार-बार भेज रहा हूं. किंतु तुमने उनकी सुनी
ही नहीं,” यह याहवेह की वाणी है. 20 इसलिये तुम याहवेह का आदेश सुनो,
तुम सभी बंदियों, जिन्हें मैंने येरूशलेम से बाबेल बंदी किया है. 21 यह इस्राएल
के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की कोलाइयाह के पुत्र अहाब तथा मआसेइयाह
के पुत्र सीदकियाहू के विषय में, जो मेरे नाम में झूठी भविष्यवाणी कर रहे हैं यह
वाणी है: “यह देखना कि मैं उन्हें बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के हाथों में सौंप
दूंगा, जो तुम्हारे देखते-देखते उनका वध कर देगा. 22 उनके कारण उन सभी
बंदी द्वारा, जिन्हें यहूदिया से बाबेल ले जाया गया है, इस प्रकार शाप दिया
जाएगा: ‘याहवेह तुम्हें सीदकियाहू तथा अहाब सदृश बना दें, जिन्हें बाबेल के
राजा ने अग्नि में झोंक दिया था.’ 23 इस्राएल में उन्होंने जो किया है, वह
मूर्खतापूर्ण था; उन्होंने अपने पड़ोसियों की पत्नियों के साथ व्यभिचार किया,
उन्होंने मेरे नाम में झूठे वचन दिए हैं, जिनके विषय में मेरी ओर से कोई आदेश
नहीं दिया गया था. मैं वह हूं, जिसे संज्ञान है, मैं प्रत्यक्षदर्शी हूं,” यह याहवेह
की वाणी है. 24 नेहेलामी शेमायाह से तुम्हें कहना होगा, 25 “इस्राएल के
परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की वाणी यह है: इसलिये कि तुमने स्वयं अपने ही
नाम में येरूशलेम में निवास कर रहे लोगों को, मआसेइयाह के पुत्र पुरोहित
ज़ेफनियाह को तथा अन्य सभी पुरोहितों को पत्र प्रगट किए हैं, जिनमें यह
लिखा गया था, 26 ‘याहवेह ने आपको पुरोहित यहोइयादा के स्थान पर पुरोहित
नियुक्त किया है, कि आप याहवेह के भवन में भविष्यवाणी कर रहे हर एक
विक्षिप्त व्यक्ति पर पर्यवेक्षक हो जाएं; कि उसे बेड़ी में तथा उसके गले को लौह
गली में जकड़ दिया जाए. 27 इसलिये आपने अनाथोथवासी येरेमियाह को
फटकार क्यों नहीं लगाई, जो आपके समक्ष भविष्यवाणी करता रहता है? 28
क्योंकि उसी ने तो हमें बाबेल में यह संदेश भेजा किया था: दीर्घकालीन होगी
यह बंधुआई; अपने लिए आवास निर्मित करो और उनमें निवास करो, वाटिकाएं
रोपित करो तथा उनके उत्पाद का उपभोग करो.’” 29 पुरोहित ज़ेफनियाह ने
यह पत्र भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को पढ़ सुनाया. 30 यह होते ही येरेमियाह को
याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 31 “सभी बंदियों को यह संदेश प्रगट कर दो:
‘नेहेलामी शेमायाह के विषय में याहवेह का संदेश यह है: इसलिये कि शेमायाह
ने तुम्हारे समक्ष भविष्यवाणी की है यद्यपि उसे मैंने प्रगट किया ही न था तथा
उसने तुम्हें असत्य पर विश्वास करने के लिए उकसा दिया, 32 इसलिये याहवेह
का संदेश यह है: यह देखना कि मैं नेहेलामी शेमायाह तथा उसके वंशजों को दंड
देने पर हूं. इन लोगों के मध्य में उसका कोई भी शेष न रह जाएगा, वह उस हित
को देख न सकेगा, जो मैं अपनी प्रजा के निमित्त करने पर हूं, यह याहवेह की
वाणी है, क्योंकि उसने याहवेह के विरुद्ध विद्रोह करना सिखाया था.’”

30 वह संदेश जो याहवेह द्वारा येरेमियाह के लिए प्रगट किया गया: 2
“याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का आदेश यह है: ‘एक पुस्तक में तुमसे
की गई मेरी संपूर्ण बात को लिख लो. 3 क्योंकि यह देख लेना, ऐसे दिन आ रहे
हैं,’ यह याहवेह की वाणी है, ‘जब मैं अपने लोग इस्राएल तथा यहूदिया की
समृद्धि लौटा दूंगा,’ याहवेह की यह वाणी है, ‘मैं उन्हें उस देश में लौटा ले
आऊंगा, जो मैंने उनके पूर्वजों को प्रदान किया था और वे उस पर अधिकार
कर लेंगे.’” 4 इस्राएल एवं यहूदिया से संबंधित याहवेह का वचन यह है: 5
“याहवेह का संदेश यह है: “‘मैंने एक भय की पुकार सुनी है— आतंक की
ध्वनि, शांति है ही नहीं. 6 ज्ञात करो, विचार करो: क्या पुरुष के लिए प्रसव
संभव है? तब कारण क्या है कि हर एक पुरुष अपने कमर पर हाथ रखे हुए है,
प्रसूता के सदृश और उनका मुखमंडल विवर्ण क्यों हो गया है? 7 हाय! क्योंकि
भयंकर होगा वह दिन! ऐसा कभी देखा ही नहीं गया. यह याकोब की वेदना का
समय होगा, किंतु याकोब इसमें से पार निकल जाएगा. 8 “‘उस दिन ऐसा
होगा,’ यह सेनाओं के याहवेह की वाणी है, ‘मैं उसकी गर्दन पर पड़ा हुआ जूआ
तोड़ डालूंगा तथा उनके बंधन तोड़ डालूंगा; तब इसके बाद अपरिचित आकर
उन्हें दास नहीं बनाएंगे. 9 तब वे याहवेह अपने परमेश्वर तथा दावीद अपने राजा
के अधीन रहेंगे, जिसका मैं उनके लिए उद्भव करूंगा. 10 “‘याकोब, मेरे सेवक,
भयभीत न होओ; और इस्राएल, हताश न हो जाओ,’ यह याहवेह का आदेश है.
‘क्योंकि तुम यह देखोगे कि तुम चाहे कितनी भी दूर क्यों न रहो, मैं तुम्हारे
वंशजों का उद्धार उनके बंधुआई के देश में से करूंगा. तब याकोब लौट आएगा,
वह सुरक्षित रहेगा तथा सुख-शांति की स्थिति में निवास करेगा, कोई भी उसे
भयभीत न करेगा. 11 क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, कि तुम्हें विमुक्त कर दूं,’
यह याहवेह की वाणी है. ‘मैं उन सभी जनताओं का सर्वनाश कर दूंगा, जहां मैंने
तुम्हें बिखरा दिया था, किंतु मैं तुम्हें पूर्णतः नष्ट नहीं करूंगा. मैं तुम्हारी न्यायोचित
प्रताड़ना अवश्य करूंगा; किसी भी स्थिति में मैं तुम्हें अदण्डित न छोड़ूंगा.’ 12
“क्योंकि याहवेह का स्पष्टीकरण यह है: “‘असाध्य है तुम्हारा घाव, तथा गंभीर
है तुम्हें लगी हुई चोट. 13 तुम्हारा समर्थन करनेवाला कोई भी नहीं है, न तो
तुम्हारे घाव भरेंगे, और न ही तुम्हें स्वास्थ्य पुनः प्राप्त होगा. 14 जिन्हें तुमसे प्रेम
था, उन्होंने तुम्हें भूलना पसंद कर दिया है; उन्हें तुम्हारी कोई चिंता नहीं. मैंने
तुम्हें वह घाव दिया है, जो एक शत्रु ही दे सकता है, एक ऐसा दंड, जो निर्मम
शत्रु दिया करता है, क्योंकि घोर है तुम्हारा अपराध तथा असंख्य हैं तुम्हारे पाप.
15 अपने घावों पर विलाप क्यों कर रहे हो, तुम्हारी पीड़ा असाध्य है? इसलिये
कि तुम्हारी पापिष्ठता जघन्य है तथा असंख्य हैं तुम्हारे पाप. मैंने ही तुम्हारे साथ
ऐसा व्यवहार किया है. 16 “‘इसलिये वे सभी, जो तुम्हें निगल रहे हैं, स्वयं
निगल लिए जाएंगे; तुम्हारे सब शत्रु बंधुआई में चले जाएंगे. वे, जो तुम्हें लूट रहे
हैं, स्वयं लूट लिए जाएंगे. वे, जो तुम्हें शिकार बना रहे हैं, मैं उन्हें शिकार होने
के लिए सौंप दूंगा. 17 क्योंकि मैं तुम्हारा स्वास्थ्य पुनःस्थापित करूंगा, तथा
तुम्हारे घावों को भर दूंगा,’ यह याहवेह की वाणी है, ‘क्योंकि उन्होंने तुम्हें
गृहवंचित घोषित कर दिया है, उन्होंने कहा है, यह ज़ियोन है; उन्हें तुम्हारी कोई
चिंता नहीं.’ 18 “यह याहवेह की वाणी है: “‘तुम देखना मैं याकोब के शिविर
की समृद्धि को लौटाकर दूंगा, मैं ध्वस्त आवासों के प्रति अनुकम्पा प्रदर्शित
करूंगा; उसके खंडहरों पर ही नगर का पुनर्निर्माण होगा, तथा महल अपने
यथास्थान पर प्रतिष्ठित किया जाएगा. 19 उनसे धन्यवाद तथा हर्षोल्लास का

स्वर आता रहेगा. मैं उनकी संख्या में वृद्धि करूंगा, उनकी संख्या कम न होगी;
मैं उन्हें सम्मान्य बना दूंगा, वे नगण्य न रहेंगे. **20** उनकी संतान भी पूर्ववत समृद्ध
हो जाएगी, मेरे समक्ष सारा राष्ट्र प्रतिष्ठित हो जाएगा; तथा मैं उन्हें दंड दूंगा,
जिन्होंने उन पर अत्याचार किया था. **21** उन्हीं का अपना स्वजन उनका
उच्चाधिकारी हो जाएगा; उन्हीं के मध्य से उनके उच्चाधिकारी का उद्भव
होगा. मेरे आमंत्रण पर वह मेरे निकट आएगा अन्यथा कैसे मेरे निकट आकर
अपने प्राण को जोखिम में डालेगा?' यह याहवेह की वाणी है. **22** 'तब तुम मेरी
प्रजा हो जाओगे, तथा मैं तुम्हारा परमेश्वर.'" **23** देख लो, याहवेह के बवंडर
को, उनका कोप क्रोध हो चुका है, यह बवंडर सब कुछ उड़ा ले जाएगा ये
बुराइयां सिर पर टूट पड़ेंगी. **24** याहवेह का प्रचंड कोप तब तक अलग न होगा,
जब तक वह अपने हृदय की बातों को पूर्ण नहीं कर लेते, जब तक वह इसका
निष्पादन नहीं कर लेते. अंतिम दिनों में तुम्हारे समक्ष यह सब स्पष्ट हो जाएगा.

31 "उस समय," यह याहवेह की वाणी है, "मैं इस्राएल के सारे परिवारों
का परमेश्वर हो जाऊंगा तथा वे मेरी प्रजा ठहरेंगी." **2** यह याहवेह की
वाणी है: "वे लोग, जो तलवार प्रहार से उत्तरजीवित रह गए, जब इस्राएल ने
चैन की खोज की; उन्हें निर्जन क्षेत्र में आश्रय प्राप्त हो गया." **3** सुदूर देश में
याहवेह उसके समक्ष प्रकट हुए, याहवेह ने उससे यह बात की: "मैंने तुम्हें, मेरे
लोगों को, अनश्वर प्रेम से प्रेम किया है, इसलिये मैंने तुम्हें अत्यंत प्रेमपूर्वक
अपनी ओर आकर्षित किया है. **4** तब मैं पुनः तुम्हारा निर्माण करूंगा, और
तुम निर्मित हो जाओगी, कुंवारी इस्राएल तुम पुनः खंजरी उठाओगी तथा उनमें
सम्मिलित हो जाओगी, जो आनन्दमग्न हो रहे होंगे. **5** शमरिया की पहाड़ियों
पर पुनः द्राक्षालता रोपण प्रारंभ हो जाएगा; रोपक इन्हें रोपेंगे ओर उनका सेवन
करेंगे. **6** क्योंकि एक दिन ऐसा भी आएगा जब एफ्राईम के पर्वतों से प्रहरी
पुकारेंगे, 'चलो-चलो, हमें याहवेह हमारे परमेश्वर के समक्ष ज़ियोन को जाना
है.'" **7** क्योंकि अब याहवेह का यह आदेश है: "हर्षोल्लास में याकोब के
लिए गायन किया जाए; तथा राष्ट्रों के प्रमुख के लिए जयघोष किया जाए.
स्तवन के साथ यह वाणी की जाए, 'याहवेह, अपनी प्रजा को उद्धार प्रदान
कीजिए, उनको, जो इस्राएल के बचे हुए लोग हैं.' **8** यह देखना, कि मैं उन्हें
उत्तरी देश से लेकर आऊंगा, मैं उन्हें पृथ्वी के दूर क्षेत्रों से एकत्र करूंगा. उनमें
ये सभी होंगे: नेत्रहीन, अपंग, गर्भवती स्त्री तथा वह जो प्रसूता है; एक साथ यह
विशाल जनसमूह होगा, जो यहां लौट आएगा. **9** वे रोते हुए लौटेंगे; तथा वे
प्रार्थना करेंगे और मैं उनका मार्गदर्शन करूंगा. मैं उन्हें जलधाराओं के निकट से
लेकर आऊंगा, उनका मार्ग सीधा समतल होगा, जिस पर उन्हें ठोकर नहीं
लगेगी, क्योंकि मैं इस्राएल के लिए पिता हूं, तथा एफ्राईम मेरा पहलौठा पुत्र है.
10 "राष्ट्रों, याहवेह का संदेश सुनो, दूर तटवर्ती क्षेत्रों में घोषणा करो; जिसने
इस्राएल को छिन्न-भिन्न कर दिया है: वही उन्हें एकत्र भी करेगा, वह उन्हें इस
प्रकार सहेजेगा, जिस प्रकार चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों को. **11** क्योंकि
याहवेह ने मूल्य चुका कर याकोब को छुड़ा लिया है तथा उसे उसके बंधन
से विमुक्त कर दिया है, जो उससे सशक्त था. **12** वे लौटेंगे तथा ज़ियोन की
ऊंचाइयों पर आकर हर्षोल्लास करेंगे; याहवेह की कृपादृष्टि के कारण वे
आनंदित हो जाएंगे— अन्न, नई दाखमधु तथा प्रचूर तेल के कारण, भेड़ों एवं
पशुओं के बच्चों के कारण. उनका जीवन सिंचित उद्यान सदृश होगा, वे पुनः
अंत न होंगे. **13** तब कुंवारी कन्या का हर्ष नृत्य में फूट पड़ेगा इसमें जवान एवं
प्रौढ़, दोनों ही सम्मिलित हो जाएंगे. क्योंकि मैं उनकी छाया को उल्लास में
परिवर्तित कर दूंगा; मैं उनके शोक को आनंद में ढाल कर उन्हें सांत्वना प्रदान
करूंगा. **14** मेजवानी ऐसी होगी कि पुरोहितों के प्राण तृप्त हो जाएंगे, तथा मेरी
प्रजा मेरे द्वारा किए गए कल्याण पर संतुष्ट हो जाएगी," यह याहवेह की वाणी है.
15 याहवेह की बात यह है: "रामाह नगर में एक शब्द सुना गया, रोना तथा घोर
विलाप! राहेल अपने बालकों के लिए रो रही है. धीरज उसे स्वीकार नहीं
क्योंकि अब वे हैं ही नहीं." **16** याहवेह का आदेश है: "अपने रुदन स्वर को
नियंत्रित करो तथा अपनी अश्रुधारा को प्रतिबद्ध करो, क्योंकि तुम्हारे श्रम को
पुरस्कृत किया जाएगा," यह याहवेह की वाणी है. "वे शत्रु के देश से लौट
आएंगे. **17** तुम्हारा सुखद भविष्य संभव है," यह याहवेह की वाणी है. "तुम्हारे
वंशज निज भूमि में लौट आएंगे. **18** "वस्तुस्थिति यह है कि मैंने एफ्राईम का
विलाप करना सुना है: 'जिस प्रकार उद्दंड बछड़े को प्रताड़ित किया जाता है उसी
प्रकार आपने मुझे भी प्रताड़ित किया है, और मैंने इससे शिक्षा ग्रहण की है. मुझे
अपनी उपस्थिति में ले आइए, कि मैं पूर्ववत हो जाऊं, क्योंकि याहवेह, आप ही
मेरे परमेश्वर हैं. **19** जब मैं आपसे दूर हो गया था, तब मैंने लौटकर पश्चात्ताप
किया; जब मेरी समझ में आ गया, तब मैंने अपनी छाती पीटी; मुझे लज्जित
होना पड़ा. तथा मेरी प्रतिष्ठा भी भंग हो गई क्योंकि मैं अपनी जवानी की लांछना
लिए हुए चल रहा था.' **20** क्या एफ्राईम मेरा प्रिय पुत्र है, क्या वह सुखदायक
संतान है? वस्तुतः जब-जब मैंने उसके विरोध में कुछ कहा, मैंने उसे प्रेम के साथ
ही स्मरण किया. इसलिये मेरा हृदय उसकी लालसा करता रहता है; इसमें कोई
संदेह नहीं कि मैं उस पर अनुकम्पा करूंगा," यह याहवेह की वाणी है. **21**
"अब अपने लिए मार्ग निर्देश नियत कर लो; अपने लिए तोड़ सूचक खड़े कर
लो. तुम्हारा ध्यान राजपथ की ओर लगा रहे, उसी मार्ग पर, जिससे तुम गए थे.
कुंवारी इस्राएल, लौट आओ, लौट आओ अपने इन्हीं नगरों में. **22** हे भटकने
वाली कन्या, कब तक तुम यहां वहां भटकती रहोगी? याहवेह ने पृथ्वी पर एक
अपूर्व परिपाटी प्रचलित कर दी है— अब पुरुष के लिए स्त्री सुरक्षा घेरा बनेगी."
23 इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की यह वाणी है: "जब मैं उनकी
समृद्धि लौटा दूंगा, तब यहूदिया देश में तथा उसके नगरों में पुनः 'उनके मुख से
ये वचन निकलेंगे, पवित्र पर्वत, पूर्वजों के आश्रय, याहवेह तुम्हें आशीष दें.' **24**
यहूदिया के सभी नगरों के निवासी, किसान तथा चरवाहे अपने पशुओं सहित
वहां एक साथ निवास करेंगे. **25** क्योंकि मैं थके हुए व्यक्ति में संतोष, तथा
हताश व्यक्ति में उत्साह का पुनःसंचार करता हूं." **26** यह सुन मैं जाग पड़ा. उस
समय मुझे यह बोध हुआ कि मेरी निद्रा मेरे लिए सुखद अनुभूति छोड़ गई है. **27**
"यह देखना, वे दिन आ रहे हैं," यह याहवेह की वाणी है, "जब मैं इस्राएल के
परिवार में तथा यहूदिया के परिवार में मनुष्य का तथा पशु का बीज रोपित
करूंगा. **28** जिस प्रकार मैं उनके उखाड़ने में, उनके तोड़ने में, उनके पराभव
करने में, उनके नष्ट करने में तथा उन पर सर्वनाश लाने में मैं उन पर नजर रखता
आया, उसी प्रकार मैं उनका परिरक्षण भी करता रहूंगा, जब वे निर्माण करेंगे तथा
रोपण करेंगे," यह याहवेह की वाणी है. **29** "उन दिनों में उनके मुख से ये
शब्द पुनः सुने नहीं जाएंगे, "'खट्टे अंगूर तो पूर्वजों ने खाए थे, किंतु दांत खट्टे
हुए वंशजों के.' **30** किंतु हर एक की मृत्यु का कारण होगा स्वयं उसी की
पापिष्ठता; हर एक व्यक्ति, जो खट्टे अंगूर खाएगा, दांत उसी के खट्टे होंगे. **31**
"यह देख लेना, वे दिन आ रहे हैं," यह याहवेह की वाणी है, "जब मैं इस्राएल
वंश के साथ तथा यहूदिया वंश के साथ एक नयी वाचा स्थापित करूंगा. **32** उस
वाचा के सदृश नहीं, जो मैंने उस समय उनके पूर्वजों के साथ स्थापित की थी,
जब मैंने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से उनका निकास किया था, यद्यपि
मैं उनके लिए पति-सदृश था, उन्होंने मेरी वाचा भंग कर दी," यह याहवेह
की वाणी है. **33** "किंतु उन दिनों के बाद इस्राएल वंश के साथ मैं इस वाचा
की स्थापना करूंगा," यह याहवेह की वाणी है. "उनके अंतर्मन में मैं अपना
व्यवस्था-विधान संस्थापित कर दूंगा तथा उनके हृदय पर मैं इसे लिख दूंगा. मैं
उनका परमेश्वर हो जाऊंगा, तथा वे मेरी प्रजा. **34** तब हर एक व्यक्ति अपने
पड़ोसी को, हर एक व्यक्ति अपने सजातीय को पुनः यह कहते हुए यह शिक्षा
नहीं देने लगेगा, 'याहवेह को जान लो,' क्योंकि वे सभी मुझे जान जाएंगे, छोटे

से बड़े तक,” यह याहवेह की वाणी है. “क्योंकि मैं उनकी पापिष्ठता क्षमा कर
दूंगा तथा इसके बाद उनका पाप मैं पुनः स्मरण ही न करूंगा.” 35 यह याहवेह
की वाणी है, जिन्होंने दिन को प्रकाशित करने के लिए सूर्य को स्थित किया है,
जिन्होंने चंद्रमा तथा तारों के क्रम को रात्रि के प्रकाश के लिए निर्धारित कर
दिया, जो समुद्र को हिलाते हैं कि उसकी लहरों में गर्जन आए— उनका नाम है
सेनाओं के याहवेह: 36 “यदि यह व्यवस्थित विन्यास मेरे समक्ष से विघटित
होता है,” यह याहवेह की वाणी है, “तब एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल के वंशजों
का अस्तित्व भी मेरे समक्ष से सदा-सर्वदा के लिए समाप्त हो जाएगा.” 37 यह
याहवेह की वाणी है: “यदि हमारे ऊपर विस्तीर्ण आकाशमंडल का मापा जाना
संभव हो जाए तथा भूतल में पृथ्वी की नीवों की खोज निकालना संभव हो
जाए, तो मैं भी इस्राएल द्वारा किए गए उन सारे कार्यों के कारण इस्राएल के सभी
वंशजों का परित्याग कर दूंगा,” यह याहवेह की वाणी है. 38 देखना, “वे दिन
आ रहे हैं,” यह याहवेह की वाणी है, “जब हननेल स्तंभ से लेकर कोने के
प्रवेश द्वार तक याहवेह के लिए नगर को पुनर्निर्माण किया जाएगा. 39 मापक
डोर आगे बढ़ती हुई सीधी गारेब पर्वत तक पहुंच जाएगी, तत्पश्चात वह और
आगे बढ़कर गोआह की ओर मुड़ जाएगी. 40 शवों तथा भस्म से आच्छादित
संपूर्ण घाटी तथा किद्रोन सरिता तक विस्तृत खेत, पूर्व तोड़ के घोड़े-द्वार के कोण
तक का क्षेत्र याहवेह के निमित्त पवित्र ठहरेगा. यह क्षेत्र तब सदा-सर्वदा के लिए
न तो उखाड़ा जाएगा और न ही ध्वस्त किया जाएगा.”

32 यहूदिया के राजा सीदकियाहू के राज्य-काल के दसवें वर्ष में, जो
नबूकदनेज़्ज़र के राज्य-काल का अठारहवां वर्ष था, याहवेह का संदेश
येरेमियाह को भेजा गया. 2 इस समय बाबेल के राजा की सेना येरूशलेम को घेरे
हुए थी तथा भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को यहूदिया के राजा के महलों के पहरे के
आंगन में बंदी बनाकर रखा गया था. 3 क्योंकि यहूदिया के राजा सीदकियाहू ने
येरेमियाह को यह कहते हुए बंदी बना रखा था, “तुम यह कहते हुए भविष्यवाणी
क्यों करते हो? ‘यह याहवेह का संदेश है, यह देखना, मैं इस नगर को बाबेल के
राजा के हाथों में सौंपने पर हूं, और वह इसे प्राप्त कर लेगा. 4 तथा यहूदिया का
राजा सीदकियाहू के अधिकार से विमुक्त नहीं हो सकेगा, बल्कि वह निश्चयतः
बाबेल के राजा के हाथों में सौंप दिया जाएगा. तब वह आमने-सामने उससे
वार्तालाप करेगा तथा वे एक दूसरे को अपने-अपने नेत्रों से देख सकेंगे. 5
बाबेल का राजा सीदकियाहू को अपने साथ बाबेल ले जाएगा और वह वहां उस
समय तक रखा जाएगा, जब तक मैं उससे भेंट करने वहां न पहुंचूं, यह याहवेह
की वाणी है. यदि तुम कसदियों पर आक्रमण भी करो, तुम्हें सफलता प्राप्त न
होगी.’” 6 येरेमियाह ने यह सूचना दी, “मुझे याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ:
7 यह देखना, तुम्हारे चाचा शल्लूम का पुत्र हनामेल तुमसे भेंट करने आ रहा है.
वह तुमसे कहेगा, ‘अनाथोथ का मेरा खेत तुम मोल ले लो, क्योंकि विधान के
अंतर्गत यह तुम्हारा ही अधिकार है.’ 8 “तब मेरे चाचा का पुत्र हनामेल,
याहवेह के संदेश के अनुरूप, पहरे के आंगन में मुझसे भेंट करने आया और
मुझसे कहा, ‘बिन्यामिन प्रदेश के अनाथोथ में मेरा जो खेत है, उसे तुम मोल ले
लो. क्योंकि उसके स्वामित्व को तथा उसके निष्क्रय का अधिकार तुम्हारा ही
है, तुम्हीं इसे मोल ले लो.’ “तब मुझे यह निश्चय हो गया कि यह याहवेह
ही का संदेश था; 9 मैंने अपने चाचा के पुत्र हनामेल से अनाथोथ का खेत
मोल ले लिया, इसके लिए मैंने दो सौ ग्राम चांदी उसके लिए तौल दी. 10 मैंने
बंधक-पत्र पर हस्ताक्षर किए तथा उस पर मोहर लगा दी, तब मैंने गवाहों को
आमंत्रित किया और तुलामान पर चांदी तौल दी. 11 तब मैंने क्रय-बन्धक पत्र
लिए—दोनों ही वह, जिस पर मोहर लगी हुई थी, जिसमें नियम तथा शर्तें निहित
थी तथा वह, जो खुली हुई प्रति थी— 12 मैंने क्रय-बन्धक पत्र अपने चाचा के
पुत्र हनामेल ही के समक्ष तथा उन साक्ष्यों के समक्ष, जिन्होंने बंधक-पत्र पर
हस्ताक्षर किए थे तथा पहरे के आंगन में उस समय बैठे हुए यहूदियों के समक्ष,
माहसेइयाह के पौत्र, नेरियाह के पुत्र बारूख को सौंप दिया. 13 “तब मैंने
बारूख को उन्हीं की उपस्थिति में सूचित किया: 14 ‘इस्राएल के परमेश्वर,
सेनाओं के याहवेह का आदेश है: इन बंधक पत्रों को मोहर लगे क्रय-बन्धक पत्र
को तथा इस खुले बंधक-पत्र को लेकर एक मिट्टी के बर्तन में संजो दो, कि ये
दीर्घ काल तक सुरक्षित बने रहें. 15 क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के
याहवेह की वाणी यह है: आवास, खेत तथा द्राक्षाउद्यान इस देश में पुनः मोल
लिए जाएंगे.’ 16 “जब मैं नेरियाह के पुत्र बारूख को क्रय-बन्धक पत्र सौंप
चुका, तब मैंने याहवेह से यह बिनती की: 17 “प्रभु याहवेह, आपने, मैं जानता
हूं आपने अपने विलक्षण सामर्थ्य तथा विस्तीर्ण भुजा के द्वारा आकाश और पृथ्वी
की सृष्टि की है. असंभव तो आपके समक्ष कुछ भी नहीं है. 18 सहस्रों पर आप
निर्जर प्रेम अभिव्यक्त करते हैं, किंतु इसके विपरीत आप माता-पिता अथवा
पूर्वजों की पापिष्ठता का प्रतिफल उनकी संतान की गोद में डाल देते हैं, आपका
नाम सेनाओं के याहवेह है, 19 महान हैं आपके संकल्प और पराक्रमी आपके
कर्म! आपकी दृष्टि मानव की हर एक गतिविधि पर लगी रहती है; आप हर एक
को उसके आचरण एवं उसके कार्यों के परिणाम के अनुरूप प्रतिफल देते हैं. 20
आपने मिस्र देश में चिन्हों एवं विलक्षण कृत्यों का प्रदर्शन किया तथा आप
इस्राएल में तथा सारे मानव जाति दोनों ही के मध्य आज भी कर रहे हैं, तथा
आपने अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर ली है, जो आज भी स्थापित है. 21 आपने
अपनी प्रजा इस्राएल का मिस्र देश से चिन्हों एवं विलक्षण कार्यों तथा सशक्त
बाहुबल, विस्तीर्ण भुजा के सिवा घोर आतंक के साथ निकास किया. 22 तब
आपने उन्हें यह देश दे दिया, जिसे देने की शपथ आपने उनके पूर्वजों से की थी,
वह देश जिसमें दुग्ध एवं मधु का बहाव है. 23 उन्होंने आकर इस पर अधिकार
तो कर लिया, किंतु उन्होंने न तो आपके आदेशों का पालन ही किया और न ही
आपके व्यवस्था-विधान का अनुकरण; आपके द्वारा उन्हें जो सारे आदेश दिए
गए थे, उन्होंने उनमें से किसी का भी अनुकरण नहीं किया है. यही कारण
है, कि आपने उन पर यह विपत्ति आने दी है. 24 “यह भी देखिए कि नगर
अभिग्रहण के लक्ष्य से निर्मित घेराबंदी की ढलान नगर तक पहुंच चुकी है.
तलवार, अकाल तथा महामारी के कारण नगर कसदियों के अधिकार में जा
चुका है, जिन्होंने इस पर आक्रमण किया है. वस्तुतः इसलिये कि यह आप ही
की पूर्वोक्ति है जो कृतार्थ हो रही है, और अब आप ही देख रहे हैं, कि ऐसा ही
हो रहा है. 25 प्रभु याहवेह, आपने ही मुझे आदेश दिया था, अपने लिए मूल्य
चुका कर खेत क्रय कर लो तथा गवाहों को बुला लो, जबकि नगर कसदियों को
सौंपा जा चुका है.” 26 इस पर येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ:
27 “यह स्मरण रखो, मैं याहवेह हूं, सभी मनुष्यों का परमेश्वर. क्या कोई भी
ऐसा विषय है, जो मेरे लिए दुस्साध्य है? 28 इसलिये याहवेह की वाणी यह है:
सुनो, मैं यह नगर कसदियों को सौंपने पर हूं तथा बाबेल के राजा नबूकदनेज़्ज़र
के हाथ में, जो इसे प्राप्त कर लेगा. 29 इस नगर पर आक्रमण करनेवाले कसदी,
नगर में प्रवेश कर नगर में आग लगाकर इसे भस्म कर देंगे; इसमें वे भवन भी
सम्मिलित होंगे, जहां छतों पर लोगों ने बाल के लिए धूप जलाया, परकीय
देवताओं के लिए पेय बलिदान उंडेला और मेरे कोप को उकसाया. 30 “इस्राएल
तथा यहूदाह गोत्रज अपनी बाल्यावस्था ही से वही करते आए हैं, जो मेरी दृष्टि में
ठीक नहीं है; इस्राएल वंशज अपनी हस्तकृतियों के द्वारा मेरे कोप को उकसाते
आए हैं, यह याहवेह की वाणी है. 31 यह सत्य है कि जिस दिन से इस नगर की
स्थापना हुई है, उसी दिन से आज तक यह नगर मेरे क्रोध एवं कोप को उकसाता
रहा है, इसलिये यह आवश्यक है कि यह मेरी दृष्टि से दूर कर दिया जाए. 32
मेरे कोप को भड़काने के लिए इस्राएल एवं यहूदाह गोत्रजों ने जो दुष्टता की
है; उन्होंने, उनके राजाओं ने, उनके नायकों ने, उनके पुरोहितों ने, उनके

भविष्यवक्ताओं ने तथा येरूशलेम एवं यहूदिया के निवासियों ने भी. 33 मेरी
ओर उन्मुख होने की अपेक्षा वे मुझसे विमुख हो गए हैं, यद्यपि मैं उन्हें शिक्षा
देता रहा बार-बार शिक्षा देता रहा, किंतु उन्होंने न तो मेरी सुनी और न मेरी शिक्षा
का स्वीकार ही किया. 34 इतना ही नहीं उन्होंने मेरे नाम में प्रतिष्ठित भवन को
अशुद्ध करने के लक्ष्य से अपनी घृणास्पद वस्तुओं को उसमें स्थापित कर दिया
है. 35 उन्होंने बेन-हिन्नोम की घाटी में बाल के लिए पूजा स्थलों का निर्माण
किया कि वे मोलेख के लिए अपने पुत्र-पुत्रियों को अग्निबलि प्रथा में समर्पित
करें, मैंने उन्हें इसके लिए कोई आदेश न दिया था; हालांकि इसका तो विचार ही
मेरे मस्तिष्क में नहीं आया, कि वे यह घृणित कार्य करें तथा यहूदिया को यह
पाप करने के लिए प्रेरित करें. 36 “इसलिये अब इस नगर के विषय में, जिसके
संबंध में तुम्हीं यह कह रहे हो, ‘तलवार, अकाल तथा महामारी के कारण यह
नगर बाबेल के राजा के हाथ में दे दिया गया है’; याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
की यह वाणी है, 37 तुम देखना, कि मैं उन्हें उन सभी देशों से एकत्र करूंगा,
जिनमें मैंने उन्हें अपने कोप के कारण दूर कर दिया था. अपने क्रोध में, अपने
कोप में तथा अपने उग्र आक्रोश में, मैं उन्हें इस देश में लौटा ले आऊंगा कि वे
यहां पूर्ण सुरक्षा में निवास करने लगें. 38 वे मेरी प्रजा होंगे तथा मैं उनका
परमेश्वर. 39 मैं उन्हें एकनिष्ठ हृदय तथा एकमात्र अभीष्ट प्रदान करूंगा, कि उनमें
मेरे प्रति सदा-सर्वदा को उन्हीं के तथा उनके बाद उनकी संतान के कल्याण के
निमित्त चिरस्थायी श्रद्धा व्याप्त हो जाए. 40 मैं उनसे चिरकालीन वाचा स्थापित
करूंगा; कि मैं उनसे विमुख न होऊं, कि उनका हित हो, और मैं उनके हृदय में
अपने प्रति ऐसा श्रद्धा संस्थापित कर दूंगा, कि वे मुझसे विमुख कभी न हों. 41
अपने संपूर्ण हृदय से तथा अपने संपूर्ण प्राण से उनका हित करना तथा उन्हें इस
देश में बसा देना मेरे अतीव हर्ष का विषय होगा. 42 “क्योंकि याहवेह की वाणी
यह है: ठीक जिस प्रकार मैंने उन पर ये घोर विपत्तियां डाली हैं, ठीक उसी
प्रकार मैं उन पर वह सारी समृद्धि ले आऊंगा, जिसकी मैं प्रतिज्ञा कर रहा हूं. 43
इस देश में, अब खेत मोल लिए जाएंगे, जिसके विषय में तुम कहते रहते हो,
‘उजाड़ हो चुका है यह देश, इसमें अब न तो मनुष्य शेष रह गए हैं, न पशु; सब
कुछ कसदियों के अधिकार में जा चुका है.’ 44 लोग चांदी देकर खेत क्रय
कर लेंगे, वे बंधक-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे तथा उसे आमंत्रित साक्ष्यों को सारे
मोहरबन्द कर देंगे. यह सब बिन्यामिन प्रदेश में होगा, येरूशलेम के उपनगरों में
होगा यहूदिया के नगरों में होगा, घाटी के नगरों में होगा तथा नेगेव के नगरों में
होगा; क्योंकि मैं समृद्धि लौटा दूंगा, यह याहवेह की वाणी है.”

33 फिर दूसरी बार येरेमियाह को याहवेह का संदेश भेजा गया, इस समय
वह पहरे के आंगन में ही बंदी थे. संदेश यह था: 2 “पृथ्वी के बनानेवाले
याहवेह का संदेश यह है, याहवेह, जिन्होंने पृथ्वी को आकार दिया कि यह
स्थापित की जाए, जिनका नाम याहवेह है: 3 ‘मुझसे प्रतिवेदन करो तो मैं तुम्हें
प्रत्युत्तर दूंगा और मैं तुम पर विलक्षण तथा रहस्यमय बात, जो अब तक तुम्हारे
लिए अदृश्य हैं, उन्हें प्रकाशित करूंगा.’ 4 क्योंकि घेराबंदी ढलानों तथा
तलवार के प्रहार से प्रतिरक्षा के उद्देश्य से ध्वस्त कर डाले गए इस नगर के
आवासों तथा यहूदिया के राजमहलों के संबंध में इस्राएल के परमेश्वर याहवेह
का यह संदेश है. 5 जब वे कसदियों से युद्ध के लिए निकलेंगे, कि इन खंडहरों
को उन मनुष्यों के शवों से भर दें, जिनका संहार मैंने अपने क्रोध एवं कोप में
किया है. इसका कारण है नगरवासियों की दुष्टता के परिणामस्वरूप मेरा उनसे
विमुख हो जाना. 6 “‘तुम देखोगे कि मैं इस देश में स्वास्थ्य तथा चंगाई ले
आऊंगा; मैं उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करूंगा, तब मैं उन पर भरपूर शांति तथा सत्य
प्रकाशित करूंगा. 7 मैं यहूदिया तथा इस्राएल की समृद्धि लौटाकर दूंगा तथा
उनका पुनर्निर्माण कर उन्हें पूर्ववत रूप दे दूंगा. 8 मैं उन्हें उनके सारे पापों से शुद्ध
करूंगा, जो उन्होंने मेरे विरुद्ध किया है, मैं उनकी सारी बुराई को क्षमा कर दूंगा,
जिनके द्वारा उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है. 9 सारे राष्ट्र उनके लिए मेरे द्वारा
निष्पादित हितकार्यों का उल्लेख सुनेंगे तथा वे उन देशों के लिए मेरे द्वारा बनाये
गये सारे हितकार्यों तथा शांति की स्थापना को देख भयभीत हो थरथराएंगे; यह
मेरे लिए आनंद, स्तवन एवं प्रताप की प्रतिष्ठा होगी.’ 10 “याहवेह की वाणी यह
है: इस स्थान पर, जिसे तुमने उजाड़-निर्जन तथा पशु-विहीन घोषित कर रखा
है, अर्थात् यहूदिया के नगरों में तथा येरूशलेम की गलियों में, जो उजाड़,
निर्जन एवं पशु-विहीन है, 11 एक बार फिर आनंद का स्वर, उल्लास का
कलरव, वर एवं वधू का वार्तालाप तथा उन लोगों की बात सुनी जाएगी, जो
कह रहे होंगे, “सेनाओं के याहवेह के प्रति आभार व्यक्त करो, क्योंकि सदाशय
हैं याहवेह; क्योंकि सनातन है उनकी करुणा.” तथा उनका भी स्वर, जो याहवेह
के भवन में आभार की भेंट लेकर उपस्थित होते हैं. क्योंकि मैं इस देश की
समृद्धि पूर्ववत लौटाकर दूंगा, यह याहवेह की वाणी है. 12 “सेनाओं के याहवेह
का संदेश यह है: ‘इस स्थान पर, जो निर्जन, उजाड़ एवं पशु-विहीन हो गया है,
इसके सारे नगरों में ऐसे चरवाहों का निवास हो जाएगा, जो यहां अपने पशुओं
को विश्राम करवाते देखे जाएंगे. 13 पर्वतीय क्षेत्र के नगरों में, तराई के नगरों
में, नेगेव के नगरों में, बिन्यामिन के प्रदेश में, येरूशलेम के उपनगरों में तथा
यहूदिया के नगरों में भेड़-बकरियां पुनः उसके हाथों के नीचे से आगे जाएगी,
जो उनकी गणना करता है,’ यह याहवेह की वाणी है. 14 “‘तुम यह देखोगे, वे
दिन आ रहे हैं,’ यह याहवेह की वाणी है, ‘जब मैं अपनी उस प्रतिज्ञा को पूर्ण
करूंगा, जो मैंने इस्राएल के वंश तथा यहूदाह के वंश के संबंध में की थी. 15
“‘तब उस समय उन दिनों में मैं दावीद के वंश से एक धर्मी शाखा को अंकुरित
करूंगा; वह पृथ्वी पर वही करेगा जो न्याय संगत एवं यथोचित होगा. 16 तब
उन दिनों में यहूदिया संरक्षित रखा जाएगा तथा येरूशलेम सुरक्षा में निवास
करेगा. उन दिनों उसकी पहचान होगी: याहवेह हमारी धार्मिकता है.’ 17
क्योंकि याहवेह की वाणी है: ‘दावीद के राज सिंहासन के लिए प्रत्याशी का
अभाव कभी न होगा, 18 लेवी पुरोहितों को मेरे समक्ष होमबलि अर्पण के लिए,
अन्नबलि होम के लिए तथा नियमित रूप से बलि तैयार करने के लिए किसी
उपयुक्त व्यक्ति का अभाव न होगा.’” 19 येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश
प्राप्त हुआ: 20 “यह याहवेह का कहना है: ‘यदि तुम दिन एवं रात्रि से स्थापित
की गई मेरी वाचा को इस प्रकार तोड़ सको, कि दिन और रात्रि अपने-अपने
निर्धारित समय पर प्रकट न हों, 21 तब तो मेरे सेवक दावीद से स्थापित की गई
मेरी वाचा भी भंग की जा सकेगी और इसका परिणाम यह होगा, कि उसके
सिंहासन पर विराजमान हो राज्य-काल करने के लिए उसके कोई पुत्र न रहेगा
और न मेरी सेवा के निमित्त कोई लेवी पुरोहित. 22 जिस प्रकार आकाश के तारे
अगण्य तथा सागर तट की रेत अपार है, उसी प्रकार मैं अपने सेवक दावीद के
वंशजों को तथा लेवियों को, जो मेरी सेवा करते हैं, आवर्धन कर उन्हें असंख्य
कर दूंगा.’” 23 तब याहवेह का यह संदेश येरेमियाह को भेजा गया: 24 “क्या
तुमने ध्यान दिया है कि इन लोगों ने क्या-क्या कहा है. वे कह रहे हैं, ‘जिन दो
गोत्रों को याहवेह ने मनोनीत किया था, उन्हें याहवेह ने परित्यक्त छोड़ दिया
है’? वे मेरी प्रजा से घृणा कर रहे हैं, उनकी दृष्टि में अब वे राष्ट्र रह ही नहीं गए
हैं. 25 याहवेह की वाणी यह है: ‘यदि दिन एवं रात्रि से संबंधित मेरी वाचा भंग
होना संभव है, यदि आकाश एवं पृथ्वी के नियमों में अनियमितता संभव है, 26
तो मैं भी याकोब तथा दावीद मेरे सेवक के वंशजों का परित्याग कर दूंगा; मैं भी
दावीद के एक वंशज को, अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब के वंशजों पर
शासन करने के लिए नहीं चुनूंगा. किंतु मैं उनकी समृद्धि लौटा दूंगा तथा उन पर
अनुकम्पा करूंगा.’”

34 बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र अपनी सारी सेना को लेकर येरूशलेम
तथा इसके निकटवर्ती नगरों से युद्धरत था, पृथ्वी के सारे राष्ट्र एवं इनकी

सारी प्रजा नबूकदनेज़्ज़र के अधीन थी, इसी परिस्थिति में येरेमियाह को याहवेह
का यह संदेश प्रगट किया गया: **2** "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह
आदेश है: यहूदिया के राजा सीदकियाहू को यह संदेश दो, 'यह याहवेह की
वाणी है: यह देख लेना कि मैं इस नगर को बाबेल के राजा के अधीन कर दूंगा
और वह इस नगर को भस्म कर देगा. **3** तुम उसके हाथ से बचकर निकल न
सकोगे, निश्चयतः तुम पकड़े जाओगे तथा उसे सौंप दिए जाओगे. तुम बाबेल के
राजा को प्रत्यक्ष देखोगे, वह तुमसे साक्षात वार्तालाप करेगा और फिर तुम बाबेल
को बंदी कर दिए जाओगे. **4** "'फिर भी, यहूदिया के राजा सीदकियाहू, याहवेह
का संदेश सुनिए! आपके संबंध में याहवेह ने कहा है: तुम्हारी मृत्यु तलवार प्रहार
से नहीं होगी; **5** तुम्हारी मृत्यु शान्तिपूर्ण स्थिति में होगी. जिस प्रकार तुम्हारे
पूर्वज राजाओं के सम्मान में, उन उच्चाधिकारी के लिए, जो तुम्हारे प्राचीन
काल थे, धूप जलाया गया था, वे तुम्हारे सम्मान में भी धूप जलाएंगे, वे तुम्हारे
लिए विलाप भी करेंगे, "धिक्कार है आप पर स्वामी!" यह इसलिये कि यह
मेरी उक्ति है, यह याहवेह की वाणी है.'" **6** भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने येरूशलेम
में यहूदिया के राजा सीदकियाहू को यह पूरा संदेश दे दिया, **7** इस समय बाबेल
के राजा की सेना येरूशलेम तथा यहूदिया के इन नगरों से युद्धरत थी. लाकीश
तथा अज़ेका, क्योंकि ये ही यहूदिया के ऐसे गढ़नगर थे, जो सुरक्षित रह गए थे.
8 जब राजा सीदकियाहू ने सारी प्रजा से, जो येरूशलेम में थी, उद्धार वाणी की
वाचा स्थापित की, याहवेह का यह संदेश येरेमियाह को भेजा गया. **9** हर एक
व्यक्ति अपने इब्री सेवक को तथा अपनी इब्री सेविका को विमुक्त कर दे, कि
कोई भी सजातीय यहूदी बंदी न रह जाए. **10** सारे अधिकारियों एवं सारी प्रजा
ने इस आदेश का पालन किया. वे सभी इस वाचा में सम्मिलित हो गए, कि हर
एक व्यक्ति अपने सेवक को अथवा सेविका को विमुक्त कर देगा, कि कोई भी
बंधन में न रह जाए. उन्होंने आज्ञापालन किया और उन्हें विमुक्त कर दिया. **11**
किंतु कुछ समय बाद सभी ने अपना निर्णय परिवर्तित कर अपने सेवकों एवं
सेविकाओं को पुनः अपने अधिकार में ले लिया जिन्हें उन्होंने मुक्त किया था.
12 तत्पश्चात येरेमियाह को याहवेह की ओर से याहवेह का यह संदेश भेजा गया:
13 "इस्राएल के परमेश्वर याहवेह ने यह कहा है: मिस्र के निर्गमन के अवसर पर
दासत्व आवास से उन्हें निराश करते समय मैंने तुम्हारे पूर्वजों से यह वाचा
स्थापित की थी, **14** 'प्रति सातवें वर्ष तुममें से हर एक अपने मोल लिए हुए उस
इब्री दास को मुक्त कर दे, जिसने छः वर्ष तुम्हारी सेवा पूर्ण कर ली है. तुम्हें उन्हें
सेवा मुक्त करना होगा.' किंतु तुम्हारे पूर्वजों ने न तो मेरे इस आदेश का पालन
किया और न उन्होंने मेरा कहा सुनना ही चाहा है. **15** यह सत्य है कि कुछ ही
समय पूर्व तुमने मेरी ओर उन्मुख होकर वह किया है: जो मेरी दृष्टि में सुधार है.
हर एक ने यह घोषणा की है कि उसने अपने पड़ोसी को विमुक्त कर दिया है.
तुमने मेरे नाम में प्रतिष्ठित भवन में एक वाचा भी स्थापित की थी. **16** यह होने
पर भी तुमने विमुख होकर मेरी प्रतिष्ठा अशुद्ध कर दी और हर एक ने अपने-
अपने सेवक-सेविकाओं को पुनः अपने अधिकार में ले लिया, जिन्हें उन्होंने
इसके पूर्व विमुक्त किया था, जैसा कि स्वयं उनकी भी अभिलाषा थी. तुमने
उन्हें पुनः अपने सेवक-सेविकाएं बना लिये. **17** "इसलिये अब याहवेह का
संदेश यह है: तुमने हर एक व्यक्ति द्वारा अपने सजातीय बंधु एवं अपने पड़ोसी
को विमुक्त करने की घोषणा करने के मेरे आदेश का उल्लंघन किया है. अब
यह देखो, कि मैं तुम्हें छुड़ाने की घोषणा कर रहा हूं, यह याहवेह की वाणी है, मैं
तुम्हें तलवार, महामारी एवं अकाल को सौंप रहा हूं. मैं तुम्हें पृथ्वी के सब राष्ट्रों
के लिए आतंक बना दूंगा. **18** जिन लोगों ने मेरे साथ स्थापित की गई वाचा भंग
की है, जिन्होंने इस वाचा की अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं किया है, जो उन्होंने मेरे
साथ स्थापित की थी, जिस वाचा को उन्होंने बछड़े को दो भागों में विभक्त कर
उन भागों के मध्य से निकलकर अविचल घोषित कर दिया था. **19** यहूदिया
तथा येरूशलेम के अधिकारी, संसद के अधिकारी, पुरोहित तथा सारी प्रजा, जो
विभक्त बछड़े के मध्य से होकर निकले थे, **20** इन सभी को मैं उनके शत्रुओं
के हाथों में सौंप दूंगा, जो उनके प्राणों के प्यासे है. उनके शव आकाश के
पक्षी तथा पृथ्वी के वन्य पशुओं के आहार हो जाएंगे. **21** "यहूदिया के राजा
सीदकियाहू को तथा उसके अधिकारियों को मैं उनके शत्रुओं के हाथों में सौंप
दूंगा तथा उनके हाथों में जो उनके प्राणों के प्यासे हैं तथा बाबेल के राजा की
सेना के हाथों में, जो तुमसे दूर जा चुकी है. **22** यह भी देखना, कि मैं यह
आदेश देने पर हूं, यह याहवेह की वाणी है, और मैं उस सेना को इसी नगर में
लौटा ले आऊंगा. वे इससे युद्ध करेंगे, इसे अधीन कर लेंगे तथा इसे भस्म कर
देंगे. और मैं यहूदिया के नगरों को उजाड़ एवं निर्जन बना दूंगा."

35 योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल में
येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश भेजा गया: **2** "रेखाबियों के वंशजों
के निकट जाकर उनसे याहवेह के भवन में आने का आग्रह करो, उन्हें भवन
के किसी कक्ष में ले जाकर उन्हें पीने के लिए द्राक्षारस देना." **3** इसलिये मैं
यात्सानिया को, जो येरेमियाह का पुत्र हाबाज़ीनियाह का पौत्र था तथा उसके
भाइयों एवं उसके सारे पुत्रों तथा रेखाबियों के संपूर्ण वंश को **4** याहवेह के भवन
में परमेश्वर के बर्तन इगदालिया के पुत्र हनान के पुत्रों के कक्ष में ले गया. यह
अधिकारियों के कक्ष के निकट और यह शल्लूम के पुत्र, द्वारपाल मआसेइयाह
के कक्ष के ऊपर था. **5** वहां मैंने रेखाब के वंशजों के समक्ष द्राक्षारस से भरे हुए
बर्तन एवं प्याले रख दिए और उनसे कहा, "इनका सेवन करो." **6** किंतु उन्होंने
कहा, "हम द्राक्षारस का सेवन नहीं करेंगे, क्योंकि रेखाब के पुत्र योनादाब
का हमारे लिए आदेश यह है: 'तुम और तुम्हारी संतान कभी भी द्राक्षारस का
सेवन नहीं करोगे. **7** न तो तुम अपने लिए आवास का निर्माण करोगे, न
तुम बीजारोपण करोगे; न तुम द्राक्षाउद्यान रोपित करोगे और न कभी किसी
द्राक्षाउद्यान का स्वामित्व प्राप्त करोगे, बल्कि तुम आजीवन तंबुओं में निवास
करोगे, कि जिस देश में तुम प्रवास करो, उसमें तुम दीर्घायु हो.' **8** हमने रेखाब
के पुत्र योनादाब के सभी आदेशों का पालन किया है. हमने, हमारी पत्नियों ने,
हमारी संतान ने कभी भी द्राक्षारस का सेवन नहीं किया **9** और हमने अपने
निवास के लिए आवासों का निर्माण नहीं किया, न तो कोई द्राक्षोद्यान का, न
कोई खेत, न ही हमने अनाज संचित कर रखा है. **10** हमारा निवास मात्र तंबुओं
में ही रहा है, हमने आज्ञाकारिता में अपने पूर्वज योनादाब के आदेश के अनुरूप
ही सब कुछ किया है. **11** किंतु जब बाबेल के राजा नबूकदनेज़्ज़र ने देश पर
आक्रमण किया, तब हमने विचार किया, 'चलो, हम कसदियों तथा अरामी सेना
के आगे-आगे येरूशलेम चले जाएं.' इस प्रकार हम येरूशलेम ही में निवास
करते आ रहे हैं." **12** तब येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ:
13 "इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह का आदेश यह है: जाकर सारे
यहूदियावासियों तथा येरूशलेम वासियों से कहो, 'क्या मेरा वचन सुनकर तुम
अपने लिए शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते?' यह याहवेह की वाणी है. **14** 'रेखाब
के पुत्र योनादाब द्वारा आदेशित द्राक्षरस सेवन निषेध आज्ञा का उसके वंशजों ने
पालन किया. फिर उन्होंने आज तक द्राक्षरस सेवन नहीं किया, क्योंकि उन्होंने
अपने पूर्वजों के आदेश का पालन किया है. किंतु मैंने तुम्हें बार-बार आदेश
दिया है, फिर भी तुमने मेरा आदेश सुना ही नहीं. **15** इसके सिवा मैंने बार-बार
तुम्हारे हित में अपने सेवक, अपने भविष्यद्वक्ता भेजे. वे यह चेतावनी देते रहे,
"तुममें से हर एक अपनी संकट नीतियों से विमुख हो जाए और अपने आचरण
में संशोधन करे; परकीय देवताओं का अनुसरण कर उनकी उपासना न करे. तभी
तुम इस देश में निवास करते रहोगे, जो मैंने तुम्हें एवं तुम्हारे पूर्वजों को दिया है."
किंतु तुमने मेरे आदेश पर न तो ध्यान ही दिया और न उसका पालन ही किया.
16 वस्तुतः रेखाब के पुत्र योनादाब के वंशजों ने अपने पूर्वज के आदेश का

पालन किया है, किंतु इन लोगों ने मेरे आदेश का पालन नहीं किया है.’ **17**
“इसलिये इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की वाणी यह है: ‘यह
देख लेना! कि मैं सारे यहूदियावासियों तथा येरूशलेम वासियों पर उनके लिए
पूर्वघोषित विपत्तियां प्रभावी करने पर हूं. क्योंकि मैंने उन्हें आदेश दिया किंतु
उन्होंने उसकी उपेक्षा की; मैंने उन्हें पुकारा, किंतु उन्होंने उत्तर नहीं दिया.’”
18 तब येरेमियाह ने रेखाब के वंशजों को संबोधित करते हुए कहा, “सेनाओं के
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: ‘इसलिये कि तुमने अपने पूर्वज
योनादाब के आदेश का पालन किया है, सभी कुछ उसके आदेशों के अनुरूप ही
किया है तथा वही किया जिसका उन्होंने तुम्हें आदेश दिया था.’ **19** इस्राएल के
परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की यह वाणी है: ‘रेखाब के पुत्र योनादाब के वंश
में मेरी सेवा के निमित्त किसी पुरुष का अभाव कभी न होगा.’”

36 योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल के चौथे
वर्ष में येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश भेजा गया: **2** “जिस दिन से
मैंने तुमसे बात करना प्रारंभ किया है, उसके पहले दिन से ही योशियाह के दिनों
से लेकर आज तक मैंने तुमसे इस्राएल, यहूदिया तथा सारे राष्ट्रों के संबंध में जो
कुछ कहा है, उसे एक चर्मपत्र कुण्डली लेकर उस पर मेरे सारे संदेश लिख
डालो. **3** यह संभव है कि यहूदाह के वंशज सारे विपत्ति के विषय में सुनेंगे, जो
मैं उन पर प्रभावी करने की योजना बना रहा हूं; कि हर एक व्यक्ति इसे सुन
अपनी संकट नीति से विमुख हो जाए और मैं उनकी अधर्मिता तथा उनके पाप
को क्षमा कर दूं.” **4** फिर येरेमियाह ने नेरियाह के पुत्र बारूख को बुलवाया.
याहवेह द्वारा प्रगट हर एक संदेश को जैसे जैसे येरेमियाह बोलते गए, वैसे वैसे
बारूख एक चर्मपत्र कुण्डली पर लिखता गया. **5** येरेमियाह ने बारूख को यह
आदेश दिया, “मुझ पर प्रतिबन्ध लगाया गया है; इसलिये याहवेह के भवन
में मेरा प्रवेश निषिद्ध है. **6** इसलिये तुम्हें ही याहवेह के भवन में जाना होगा
और उपवास के लिए निर्धारित दिवस पर तुम मेरे बोले हुए लेख द्वारा चर्मपत्र
कुण्डली पर लिखे गए सारे वचन लोगों के समक्ष पढ़ देना. तुम्हें यही वचन उन
लोगों के समक्ष भी पढ़ना होगा, जो यहूदिया के नगरों से वहां आएंगे. **7** संभव
है उनकी बिनती याहवेह के समक्ष प्रस्तुत की जाए, हर एक व्यक्ति अपने अधर्म
से विमुख हो जाए, क्योंकि प्रचंड है याहवेह का क्रोध एवं प्रकोप, जिसकी वाणी
इन लोगों के विरुद्ध की जा चुकी है.” **8** नेरियाह के पुत्र बारूख ने येरेमियाह
भविष्यद्वक्ता के आदेश का पूरी तरह पालन किया, उसने याहवेह के भवन में
जाकर इस अभिलेख में से याहवेह के संदेश का वाचन किया. **9** योशियाह के
पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल के पांचवें वर्ष के नवें माह में
येरूशलेम के सभी निवासियों ने तथा यहूदिया के नगरों से वहां आए सभी
निवासियों ने याहवेह के समक्ष उपवास रखे जाने की घोषणा की. **10** तत्पश्चात
बारूख ने याहवेह के भवन में लिपिक शापान के पुत्र गेमारियाह के कक्ष में, जो
ऊपरी आंगन में था, याहवेह के भवन के नये प्रवेश द्वार के प्रवेश में खड़े होकर
उपस्थित सारे जनसमूह के समक्ष येरेमियाह के अभिलेख के संदेश को पढ़ा. **11**
जब शापान के पौत्र गेमारियाह के पुत्र मीकायाह ने इस अभिलेख से याहवेह
का संदेश सुना, **12** वह महलों में लिपिकों के कक्ष में चला गया. वहां उसने
देखा कि वहां सारे अधिकारी बैठे हुए थे. लिपिक एलीशामा, शेमायाह का पुत्र
देलाइयाह, अखबोर को पुत्र एल-नाथान, शापान का पुत्र गेमारियाह, हननियाह
का पुत्र सीदकियाहू तथा अन्य सभी अधिकारी भी. **13** मीकायाह ने उनके
समक्ष उस अभिलेख से बारूख द्वारा लोगों के समक्ष पढ़ी गई संपूर्ण विषय-वस्तु
दोहरा दी, जो वह स्वयं सुनकर आया था, **14** इस पर सारे अधिकारियों ने कूशी
के परपोते, शेलेमियाह के पोते, नेथनियाह के पुत्र, येहूदी को बारूख के लिए इस
संदेश के साथ भेजा, “तुमने जिस चर्मपत्र कुण्डली से लोगों के समक्ष पढ़ा
है, उसे लेकर यहां आ जाओ.” इसलिये नेरियाह का पुत्र बारूख उस चर्मपत्र
कुण्डली को लेकर उनकी उपस्थिति में पहुंच गया. **15** उन्होंने उससे आग्रह
किया, “कृपया बैठ जाओ और इसे हमें पढ़कर सुनाओ.” तब बारूख ने उसे
उनके समक्ष पढ़ दिया. **16** जब उन्होंने संपूर्ण विषय-वस्तु सुन ली, तब वे
भयभीत होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे और उन्होंने बारूख से कहा,
“निश्चयतः हम यह सब राजा को सूचित कर देंगे.” **17** उन्होंने बारूख से यह
भी पूछा, “हमें कृपा कर यह भी बताओ, यह सब तुमने लिखा कैसे? क्या यह
येरेमियाह द्वारा बोली हुई बातों का लेख है?” **18** तब बारूख ने उन्हें उत्तर
दिया, “उन्होंने ही मुझे यह सारे वचन कहे हैं, जिन्हें मैंने स्याही से सूची में
लिख दिया है.” **19** तब अधिकारियों ने बारूख को आदेश दिया, “तुम और
येरेमियाह जाकर कहीं छिप जाओ और किसी को भी यह ज्ञात न होने पाए
कि तुम कहां हो.” **20** अधिकारियों ने जाकर चर्मपत्र कुण्डली को लिपिक
एलीशामा के कक्ष में सुरक्षित रख दिया और फिर राज्यसभा में जाकर राजा को
चर्मपत्र कुण्डली में लिखित संपूर्ण विषय-वस्तु की सूचना दे दी. **21** राजा ने
येहूदी को यह चर्मपत्र कुण्डली लाने का आदेश दिया, उसने जाकर इसे लिपिक
एलीशामा के कक्ष से बाहर निकाल लिया. तब येहूदी ने राजा एवं राजा की
उपस्थिति में खड़े सारे अधिकारियों के समक्ष चर्मपत्र कुण्डली अभिलेख पढ़
दिया. **22** यह नवें माह का अवसर था और राजा अपने शीतकालीन आवास में
विराजमान था; उसके समक्ष अंगीठी में अग्नि प्रज्वलित थी. **23** जब येहूदी
तीन अथवा चार अंश पढ़ लेता था, राजा उतने चर्मपत्र को लिपिक के चाकू
से काटकर अंगीठी की अग्नि में डाल देता था, इस प्रकार होते-होते संपूर्ण
चर्मपत्र कुण्डली अंगीठी की अग्नि में भस्म हो गई. **24** इतना सब होने पर भी
राजा तथा उसके सारे सेवकों पर कोई प्रभाव न पड़ा, न वे भयभीत हुए और न
उनमें से किसी ने शोक में अपने वस्त्र ही फाड़े. **25** यहां तक कि एल-नाथान,
देलाइयाह तथा गेमारियाह, राजा से चर्मपत्र कुण्डली को दहन न करने का
आग्रह करते रहे, राजा ने उनकी एक न सुनी. **26** राजा ने राजपुत्र येराहमील
को, आज़रियल के पुत्र सेराइयाह तथा अबदील के पुत्र शेलेमियाह को आदेश
दिया, कि वे लिपिक बारूख को तथा भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को पकड़ लें,
किंतु इस समय वे याहवेह द्वारा छिपा दिए गए थे. **27** येरेमियाह के बोले हुए
लेख जो बारूख द्वारा लिखित चर्मपत्र कुण्डली में था, जिसका दहन जब राजा
यहोइयाकिम ने कर चुका, तब येरेमियाह को याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ:
28 “अब एक नयी चर्मपत्र कुण्डली लो और उस पर वे ही संदेश लिपिबद्ध
कर दो, जो उस चर्मपत्र कुण्डली पर लिखे गए थे, जिसको यहूदिया के राजा
यहोइयाकिम द्वारा दहन कर दिया गया है. **29** यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के
विषय में तुम्हें यह कहना होगा, ‘यह याहवेह का संदेश है: तुमने तो यह कहते
हुए चर्मपत्र कुण्डली का दहन कर दिया है, “तुमने इसमें ऐसा क्यों लिख दिया,
कि बाबेल का राजा निश्चयतः आएगा तथा इस देश को ध्वस्त कर देगा तथा उस
देश से मनुष्यों एवं पशुओं का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा?” **30** इसलिये
यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के विषय में याहवेह की पूर्ववाणी यह है: दावीद
के सिंहासन पर विराजमान होने के लिए उसका कोई भी वंशज नहीं रह जाएगा
तथा उसका शव दिन की उष्णता तथा रात्रि के पाले में पड़ा रह जाएगा. **31**
मैं उसे, उसके वंशजों तथा उसके सेवकों को उनके अधर्म के लिए दंड भी
दूंगा; मैं उन पर, येरूशलेम वासियों पर तथा यहूदिया की प्रजा पर वे सभी
विपत्तियां प्रभावी कर दूंगा, जिनकी वाणी मैं कर चुका हूं, क्योंकि उन्होंने
मेरी चेतावनियों की अवहेलना की है.’” **32** तब येरेमियाह ने नेरियाह के पुत्र
लिपिक बारूख को एक अन्य चर्मपत्र कुण्डली दी, जिस पर उसने येरेमियाह के
बोले हुए वचन लिखे, इसमें उसने वे सभी संदेश पुनः लिख दिए, जो उस चर्मपत्र
कुण्डली में लिखे थे, जिसे यहूदिया के राजा यहोइयाकिम ने अग्नि में दहन कर

दिया था. इसके सिवा इसमें इसी प्रकार के अन्य संदेश भी सम्मिलित कर दिए
गए.

37 योशियाह का पुत्र सीदकियाहू, जिसे बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने
यहूदिया पर राजा नियुक्त किया था; यहोइयाकिम के पुत्र कोनियाह के
स्थान पर राज्य-काल कर रहा था. 2 किंतु न तो उसने, न उसके सेवकों ने और
न देश की प्रजा ने याहवेह की उन चेतावनियों को महत्व दिया, जो याहवेह ने
भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के द्वारा उन्हें दी थीं. 3 फिर भी, राजा सीदकियाहू ने
शेलेमियाह के पुत्र यहूकुल को तथा मआसेइयाह के पुत्र पुरोहित ज़ेफनियाह को
भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के पास इस अनुरोध के साथ भेजा: "कृपा कर याहवेह
हमारे परमेश्वर से हमारे लिए बिनती कीजिए." 4 येरेमियाह अब तक बंदी नहीं
बनाए गए थे, इसलिये वे अब भी लोगों के बीच आने और जाने के लिए स्वतंत्र
थे. 5 इसी समय मिस्र से फ़रोह की सेना प्रस्थित हो चुकी थी, जैसे ही कसदी
सेना जो येरूशलेम की घेराबंदी किए हुए थी, उसे यह समाचार प्राप्त हुआ,
उसने येरूशलेम से अपनी घेराबंदी उठा ली. 6 तब भविष्यद्वक्ता येरेमियाह
को याहवेह की ओर से यह संदेश प्रगट किया गया: 7 "इस्राएल के परमेश्वर
याहवेह का संदेश यह है: तुम्हें यहूदिया के राजा से यह कहना होगा, जिसने
तुम्हें मेरे पास इसलिये भेजा है कि वह मेरी बातें ज्ञात कर सके, 'तुम यह देख
लेना, कि तुम्हारी सहायता के लिए आई हुई फ़रोह की सेना अपने देश मिस्र को
लौट जाएगी. 8 तब कसदी भी लौट आएंगे तथा इस नगर पर आक्रमण करेंगे;
इसे अधीन कर लेंगे तथा इसे भस्म कर देंगे.' 9 "यह याहवेह का आदेश है:
निःसंदेह कसदी यहां से चले ही जाएंगे, 'यह कहकर स्वयं को धोखे में न
रखो.' क्योंकि वे यहां से जाएंगे ही नहीं! 10 क्योंकि यदि तुमने संपूर्ण कसदी
सेना को पराजित भी कर दिया होता, जो तुमसे युद्धरत थी तथा उनके तंबुओं
में मात्र निराश सैनिक ही शेष रह गए होते, वे निराश सैनिक ही उठेंगे और
इस नगर को भस्म कर देंगे." 11 जब फ़रोह की सेना के येरूशलेम की ओर
आने का समाचार कसदी सेना ने सुना, उन्होंने येरूशलेम से अपनी घेराबंदी
उठा ली, 12 तब येरेमियाह बिन्यामिन प्रदेश में कुछ लोगों से पैतृक संपत्ति
अभिग्रहण के उद्देश्य से येरूशलेम से प्रस्थित हुए. 13 जब वह बिन्यामिन प्रवेश
द्वार पर पहुंचे, उन्हें वहां हाननियाह के पौत्र, शेलेमियाह के पुत्र, इरियाह नामक
प्रधानप्रहरी ने बंदी बना लिया, उसने भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को संबोधित कर
कहा, "अच्छा, तुम कसदियों से भेंट करने जा रहे हो!" 14 येरेमियाह ने
उसे उत्तर दिया, "झूठ! मैं कसदियों से भेंट करने नहीं जा रहा." इरियाह ने
येरेमियाह के स्पष्टीकरण का विश्वास नहीं किया, उसने येरेमियाह को बंदी
बनाकर अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया. 15 अधिकारी येरेमियाह से रुष्ट हो
गए और उन्होंने येरेमियाह को पिटवा कर लिपिक योनातन के निवास में बंदी
बनाकर रख दिया, वस्तुतः योनातन का निवास स्थान कारागार में परिवर्तित कर
दिया गया था. 16 येरेमियाह को पातालगृह में बंदी बनाकर रखा गया था अर्थात्
एक तलवार कक्ष में, येरेमियाह इस स्थान पर दीर्घ काल तक रहे. 17 राजा
सीदकियाहू ने येरेमियाह को बंदीगृह से मुक्त करवाया और महलों में बुलवाया
तथा उनसे गुप्त में प्रश्न किया, "क्या याहवेह की ओर से कोई संदेश भेजा गया
है?" येरेमियाह ने राजा को उत्तर दिया, "जी हां," है, फिर उन्होंने आगे यह भी
कहा: "आप बाबेल के राजा के हाथ में सौंप दिए जाएंगे." 18 इसके सिवा
येरेमियाह ने राजा से पूछा, "मैंने आपके विरुद्ध, आपके सेवकों के विरुद्ध अथवा
इस प्रजा के विरुद्ध ऐसा कौन सा पाप कर दिया है, जो आपने मुझे बंदी बना रखा
है? 19 इस समय आपके वे भविष्यद्वक्ता कहां हैं, जिन्होंने आपके लिए यह
भविष्यवाणी की थी, 'बाबेल का राजा न तो आप पर आक्रमण करेगा न इस देश
पर'? 20 किंतु अब, महाराज, मेरे स्वामी, कृपा कर मेरा गिड़गिड़ाना सुन
लीजिए: अब मुझे लिपिक योनातन के आवास पर न भेजिए, कि वहीं मेरी मृत्यु
हो जाए." 21 तब राजा ने आदेश दिया और येरेमियाह को पहरे के आंगन में
रखने का प्रबंध किया गया, वहां उन्हें प्रतिदिन पाकशाला गली से रोटी प्रदान की
जाती रही, यह तब तक होता रहा जब तक नगर में रोटी का निर्माण करना संभव
रहा. वैसे येरेमियाह पहरे के आंगन में ही निवास करते रहे.

38 इसी समय मत्तान के पुत्र शेपाथियाह, पशहूर के पुत्र गेदालियाह,
शेलेमियाह के पुत्र यूकल तथा मालखियाह के पुत्र पशहूर ने येरेमियाह को
यह सार्वजनिक घोषणा करते सुना, 2 "याहवेह का संदेश यह है: 'जो कोई इस
नगर में ठहरा रह जाएगा, वह तलवार, अकाल अथवा महामारी से ग्रसित होकर
रहेगा, किंतु वह, जो नगर से बाहर कसदियों की शरण ले लेगा, वह जीवित रह
जाएगा. उसका जीवन युद्ध में प्राप्त लूट सामग्री सदृश उसका उपहार हो जाएगा
और वह जीवित रहेगा.' 3 यह याहवेह की वाणी है: 'निश्चयतः यह नगर
बाबेल के राजा की सेना के अधीन कर दिया जाएगा, वह इस पर अधिकार कर
लेगा.'" 4 यह सुन अधिकारियों ने राजा के समक्ष प्रस्ताव रखा, "अब तो इस
व्यक्ति को प्राण-दंड दिया जाना ही उपयुक्त होगा, क्योंकि इसकी इस वाणी से
इस नगर में शेष रह गए सैनिकों तथा शेष रह गई सारी प्रजा के मनोबल का ह्रास
हो रहा है. यह व्यक्ति प्रजा की हितकामना नहीं, बल्कि संकट का ही प्रयास
कर रहा है." 5 तब राजा सीदकियाहू ने उन्हें उत्तर दिया, "वह तुम्हारे हाथ में
है; मैं किसी भी रीति से आपके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता." 6 तब उन्होंने
येरेमियाह को पकड़कर एक अंधे कुएं में डाल दिया, यह राजपुत्र मालखियाह
का अंधा कुंआ था. यह पहरे के आंगन में ही था; उन्होंने येरेमियाह को इसमें
रस्सियों द्वारा उतार दिया. इस अंधे कुएं में जल नहीं, मात्र कीचड़ ही शेष रह
गया था ओर येरेमियाह उस कीचड़ में धंस गए. 7 किंतु महलों में नियुक्त एबेद-
मेलेख नामक कूश देशवासी खोजे को यह ज्ञात हो गया कि उन्होंने येरेमियाह
को अंधे कुएं में डाल दिया है. इस समय राजा बिन्यामिन प्रवेश द्वार पर आसन
लगाए हुए था, 8 एबेद-मेलेख ने महलों से जाकर राजा से यह कहा, 9 "मेरे
स्वामी, महाराज, इन लोगों ने आरंभ ही से भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के साथ जो
कुछ किया है, दुष्टतापूर्ण कृत्य ही किया है. जिन्हें इन्होंने अब अंधे कुएं में डाल
दिया है, वहां तो भूख से उनकी मृत्यु निश्चित है, नगर में वैसे भी अब रोटी
शेष रह ही नहीं गई है." 10 यह सुन राजा ने कूश देशवासी एबेद-मेलेख को
आदेश दिया, "अपने साथ तीस पुरुषों को अपने अधिकार में लेकर जाओ और
भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को अंधे कुएं से बाहर निकाल लो, इसके पूर्व कि उनकी
वहीं मृत्यु हो जाए." 11 तब एबेद-मेलेख अपने साथ के व्यक्ति लेकर महल में
गया. वहां जाकर उसने महलों के भण्डारगृह के नीचे निर्मित एक कक्ष में से
कुछ चिथड़े निकाले और उन्हें रस्सियों द्वारा अंधे कुएं में येरेमियाह तक पहुंचा
दिया. 12 तत्पश्चात कूश देशवासी एबेद-मेलेख ने येरेमियाह से कहा, "इन पुराने
वस्त्रों को रस्सियों के नीचे अपनी बगलों में दबा लीजिए." येरेमियाह ने ऐसा ही
किया, 13 तब उन्होंने येरेमियाह को रस्सियों से ऊपर खींच लिया और उन्हें
अंधे कुएं से बाहर निकाल लिया. येरेमियाह तब पहरे के आंगन में ही ठहरे रहे.
14 कुछ समय बाद राजा सीदकियाहू ने भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को याहवेह के
भवन के तीसरे प्रवेश द्वार पर बुलवाया. राजा ने येरेमियाह से कहा, "मैं आपसे
कुछ प्रश्न करूंगा, मुझसे कुछ न छिपाइए." 15 येरेमियाह ने सीदकियाहू से ही
प्रश्न किया, "जब मैं आपको उत्तर दूंगा, क्या यह सुनिश्चित नहीं है कि आप
मेरा वध करवा ही देंगे? इसके सिवा यदि मैं आपको कोई परामर्श दूंगा, आप तो
उसका पालन करेंगे नहीं." 16 किंतु राजा सीदकियाहू ने गुप्त में येरेमियाह से
शपथ खाते हुए कहा: "जीवित याहवेह की शपथ, जिन्होंने आपको और मुझे
जीवन दिया है, यह निश्चित है, कि मैं न तो आपका वध करवाऊंगा न ही
आपको इन व्यक्तियों के हाथों में सौंपूंगा, जो आपके प्राण लेने को तैयार हैं."
17 तब येरेमियाह ने सीदकियाहू को उत्तर दिया, "इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं

के याहवेह का संदेश यह है: 'सत्य यह है कि यदि आप बाहर जाएं और बाबेल
के राजा के अधिकारियों के समक्ष समर्पण कर दें, तब आप जीवित रहेंगे,
यह नगर अग्नि के द्वारा भस्म नहीं किया जाएगा और तब आप और आपका
परिवार जीवित रह सकेगा. 18 किंतु यदि आप बाहर जाकर बाबेल के राजा के
अधिकारियों के समक्ष समर्पण नहीं करते, तो यह नगर कसदियों को सौंप दिया
जाएगा; वे इसे अग्नि से भस्म कर देंगे तथा स्वयं आप भी उनके हाथों से बच
निकल न सकेंगे.'" 19 तब राजा सीदकियाहू ने येरेमियाह से कहा, "मुझे भय है
उन यहूदियों से जो कसदियों से जा मिले हैं, यह संभव है कि कसदी मुझे उनके
हाथों में सौंप दें और वे मेरी हालत बुरी कर दें." 20 "कसदी आपको उनके
हाथों में नहीं सौंपेंगे." येरेमियाह ने उसे उत्तर दिया. "आप कृपा कर मेरे कहे
अनुसार याहवेह के आदेश का पालन कीजिए, कि आपका कल्याण हो और
आप जीवित रहें. 21 किंतु यदि आप बाहर जाने को टालते रहेंगे, तो याहवेह
द्वारा आपके लिए मुझे दिया गया संदेश यह है: 22 तब आप देखना, यहूदिया
के राजा के महलों में जितनी भी स्त्रियां शेष रह गई है, वे बाबेल के राजा के
अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत की जाएंगी. जब वे यहां से जा रही होंगी, वे इस
प्रकार कटाक्ष करेंगी: "'तुम्हारे घनिष्ठ मित्रों ने ही तुम्हें दूर— तथा आक्रांत
कर दिया है. जब तुम्हारे कदम दलदल में फंसे हुए थे; वे तुम्हें पीठ दिखाकर
चले गए.' 23 "वे तुम्हारी पत्नियों एवं बालकों को निकालकर कसदियों को
सौंप देंगे. आप स्वयं उनसे छूटकर बच न सकेंगे, बल्कि तुम बाबेल के राजा
द्वारा बंदी बना लिए जाओगे; यह नगर अग्नि से भस्म कर दिया जाएगा." 24
यह सुन सीदकियाहू ने येरेमियाह से कहा, "किसी को भी इस वार्तालाप के
विषय में ज्ञात न होने पाए, आपकी मृत्यु न होगी. 25 किंतु फिर भी, यदि
अधिकारियों को यह ज्ञात हो जाए कि मैंने आपसे वार्तालाप किया है और तब वे
आकर आपसे आग्रह करेंगे, 'अब तो हमें बता दो, कि तुमने राजा को क्या-क्या
बता दिया है और राजा ने तुमसे क्या-क्या कहा है; यदि तुम हमसे कुछ नहीं
छिपाओगे तो हम तुम्हारा वध नहीं करेंगे,' 26 तब तुम्हारा प्रत्युत्तर यह होगा,
'मैं राजा के समक्ष अपनी याचना प्रस्तुत कर रहा था, कि मुझे पुनः योनातन के
आवास में न भेजा जाए, कि वहां मेरी मृत्यु हो जाए.'" 27 तब सभी अधिकारी
येरेमियाह के पास आ गए और उनसे पूछताछ करने लगे, येरेमियाह ने उन्हें वही
उत्तर दिया, जैसा उन्हें राजा द्वारा निर्देश दिया गया था. तब उन्होंने पूछताछ बंद
कर दी, क्योंकि वस्तुस्थिति यही थी, कि किसी को भी यह ज्ञात न था कि राजा
तथा येरेमियाह के मध्य वार्तालाप विषय वास्तव में क्या था. 28 येरेमियाह
येरूशलेम के पतन के दिन तक पहरे के आंगन में ही निवास करते रहे.

39 येरूशलेम का पतन इस प्रकार हुआ: यहूदिया के राजा सीदकियाहू के
राज्य-काल के नवें वर्ष के दसवें माह में बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने
अपनी सारी सेना के साथ आकर येरूशलेम की घेराबंदी की. 2 सीदकियाहू के
राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष के चौथे माह में नवीं तिथि को, नगर शहरपनाह तोड़
करके वे नगर में घुस गए. 3 यह होते ही बाबेल के राजा के सभी अधिकारी
भीतर आ गए और मध्य प्रवेश द्वार पर बैठ गए: ये अधिकारी थे सामगर का
नेरगल-शारेज़र तथा नेबो-सारसेकिम, जो अधिकारियों में प्रमुख था, राजा का
परामर्शक नेरगल-शारेज़र तथा अन्य सभी अधिकारी. 4 जब सीदकियाहू तथा
उसके सैनिकों ने यह देखा; वे रात्रि में राजा के उद्यान में से होते हुए दोनों
शहरपनाह के मध्य के द्वार से नगर से होते हुए पलायन कर गए, उन्होंने अराबाह
घाटी की ओर भागना चाहा. 5 किंतु कसदी सेना ने उनका पीछा किया और
उन्होंने येरीख़ो के मैदान में यहूदिया के राजा सीदकियाहू को जा पकड़ा. उसे
बंदी बना लिया और उसे बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र की उपस्थिति में हामाथ
देश के रिबलाह में ले गए, वहां सीदकियाहू पर दंड की आज्ञा प्रसारित कर दी
गई. 6 तत्पश्चात बाबेल के राजा ने सीदकियाहू के देखते-देखते रिबलाह में
उसके पुत्रों का वध कर डाला, बाबेल के राजा ने यहूदिया के सारे अधिकारियों
का भी वध कर दिया. 7 फिर नबूकदनेज्ज़र ने सीदकियाहू की आंखें निकाल
लीं और उसे कांसे की सांकलों में बांधकर बाबेल ले गए. 8 कसदियों ने महलों
को तथा प्रजा के आवासों को भस्म कर दिया तथा येरूशलेम की शहरपनाह
तोड़ दीं. 9 इस समय वे लोग जो नगर में शेष रह गए थे, वे लोग, जो नगर
छोड़कर कसदियों की शरण में जा पहुंचे थे तथा अन्य लोगों को अंगरक्षकों का
प्रधान नेबुज़रादान बंधुआई में बाबेल ले गया. 10 किंतु कुछ अत्यंत निर्धन लोगों
को जिनके पास कुछ भी न था, अंगरक्षकों का प्रधान नेबुज़रादान यहूदिया में ही
पीछे छोड़ गया; इन्हें उसने द्राक्षाउद्यान एवं खेत सौंप दिए. 11 इसी समय
बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने येरेमियाह के विषय में अंगरक्षकों के प्रधान
नेबुज़रादान के द्वारा यह आदेश प्रसारित कर दिया था: 12 "उसे ले जाकर
उसकी देखभाल करो; ध्यान रहे उसकी कोई हानि न होने पाए, उसके साथ वही
किया जाए, जिसका वह तुमसे आग्रह करता है." 13 इसलिये अंगरक्षकों के
प्रधान नेबुज़रादान ने रब-सारिस नबूषाज़बान तथा रब-माग नेरगल-शारेज़र के
द्वारा तथा बाबेल के राजा के सारे प्रमुख अधिकारियों के द्वारा यह संदेश प्रसारित
कर दिया 14 उन्होंने कुछ व्यक्तियों को भेजा और उन्होंने येरेमियाह को पहरे
के आंगन से निकालकर शापान के पौत्र अहीकाम के पुत्र, गेदालियाह को
सौंप दिया, कि वह येरेमियाह को अपने आवास ले जाए. इस प्रकार येरेमियाह
लोगों के मध्य रहने लगे. 15 ऐसा हुआ कि जब येरेमियाह पहरे के आंगन में
बंदी बनाकर रखे गए थे, उनके पास याहवेह का यह संदेश आ चुका था: 16
"जाकर कूश देशवासी एबेद-मेलेख को यह सूचित करो, 'इस्राएल के परमेश्वर,
सेनाओं के याहवेह की यह वाणी है: यह देखना, कि इस नगर के लिए की गई
अपनी पूर्ववाणी को मैं कृतार्थ करने पर हूं—उस वाणी को, जो इसके विध्वंस
की वाणी थी, समृद्धि की नहीं. विध्वंस के उस दिन को देखने के लिए तुम
जीवित रहोगे. 17 किंतु उस दिन मैं तुम्हें इस विध्वंस से बचा लूंगा, यह याहवेह
की वाणी है; तुम उन लोगों द्वारा बंदी नहीं बनाए जाओगे, जो तुम्हारे लिए
भयास्पद हैं. 18 क्योंकि मैं तुम्हें निःसंदेह उनसे बचा लूंगा, तुम तलवार से घात
नहीं किए जाओगे. तुम्हारा अपना जीवन ही लूट सामग्री सदृश तुम्हारा छुटकारा
होगा, क्योंकि तुमने मुझ पर भरोसा किया है, यह याहवेह की वाणी है.'"

40 राज्यपाल गेदालिया के आवास में से अंगरक्षकों के प्रधान नेबुज़रादान
ने जब येरेमियाह को येरूशलेम तथा यहूदिया के सारे बंदियों के बीच
जंजीरों से बंधा हुआ देखा जिन्हें बाबेल ले जाया जा रहा था, तब उसने उसे
रामाह में विमुक्त कर दिया. उस समय याहवेह का संदेश येरेमियाह को प्रगट
किया गया. 2 अंगरक्षकों के प्रधान ने येरेमियाह को अलग ले जाकर कहा,
"याहवेह, आपके ही परमेश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध यह घोर विपत्ति योजित की
थी. 3 अब याहवेह ने जैसी पूर्ववाणी की थी; उसे ही बनाकर दिखाया है.
क्योंकि आप लोगों ने ही तो याहवेह के विरुद्ध पाप किया है, आप लोगों ने
उनके आदेशों का पालन नहीं किया, इसलिये आप पर यह विपत्ति टूट पड़ी है.
4 किंतु अब देखिए, आज मैं आपको आपके हाथों में पड़ी हुई इन बेड़ियों से
विमुक्त कर रहा हूं, यदि आपको उपयुक्त लगे, आप मेरे साथ बाबेल चल सकते
हैं, आपकी देखभाल का दायित्व मेरा होगा; किंतु यदि आप मेरे साथ बाबेल
चलना उपयुक्त न समझें तो, आपकी इच्छा, आपके समक्ष संपूर्ण देश खुला
पड़ा है; आपको जो स्थान अनुकूल लगे वहीं चले जाइए." 5 इसलिये कि
येरेमियाह वहां अनिश्चय की स्थिति में ही ठहरे हुए थे, नेबुज़रादान ने उनसे
कहा, "अच्छा, तो आप शापान के पौत्र अहीकाम के पुत्र गेदालियाह के पास
लौट जाइए, जिसे बाबेल के राजा ने यहूदिया के नगरों पर राज्यपाल नियुक्त
किया है, आप गेदालियाह के यहां अपने ही लोगों के मध्य निवास कीजिए.
यदि नहीं, तो आपको जहां कहीं उपयुक्त लगे वहीं चले जाइए." इसके बाद

अंगरक्षकों के प्रधान ने येरेमियाह को कुछ अन्न पदार्थ तथा एक उपहार देकर उन्हें विदा किया. 6 येरेमियाह वहां से मिज़पाह में अहीकाम के पुत्र गेदालियाह के यहां जाकर उस देश में शेष रह गए लोगों के मध्य निवास करने लगे. 7 जब युद्ध क्षेत्र में सारे सेनापतियों तथा सैनिकों को यह सूचना प्राप्त हुई कि बाबेल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गेदालियाह को संपूर्ण देश तथा उन पुरुषों, स्त्रियों तथा बालकों पर, जो देश में गरीब थे तथा जो बाबेल में बंदी नहीं किए गए थे, अधिपति नियुक्त कर दिया है, 8 वे मिज़पाह में गेदालियाह से भेंट करने आ गए. उनके साथ थे नेथनियाह का पुत्र इशमाएल, कोरियाह के पुत्र योहानन तथा योनातन, तनहूमेथ का पुत्र सेराइयाह, नेतोफ़ातवासी एफाई के पुत्र, माकाहथिवासी का पुत्र येत्सानियाह, दोनों ही तथा उनकी सैनिक टुकड़ी. 9 यह सब देखते हुए शापान के पौत्र, अहीकाम के पुत्र, गेदालियाह ने उनके तथा सैनिकों के समक्ष यह कहते हुए शपथ ली: "कसदियों की सेवा करने का विचार तुम्हें भयभीत न करे, इसी देश में निवास करते हुए बाबेल के राजा की सेवा करते रहो, कि तुम्हारा हित हो. 10 मैं तो मिज़पाह में ही रहूंगा, कि मैं तुम्हारी सहायता में खड़ा रह सकूं, कि मैं उन कसदियों के लिए तुम्हारा प्रवक्ता हो सकूं जो अपना प्रतिवाद लेकर मेरे पास आए थे, किंतु तुम द्राक्षारस, ग्रीष्मकालीन फल एवं तेल का संग्रहण करते रहना, उन्हें भंडारण बर्तनों में रख देना, अपने-अपने नगरों में निवास करना, जिन्हें अब तुमने अपना लिया है." 11 इसी प्रकार वे सभी यहूदियों ने जो इस समय मोआब, अम्मोन, एदोम तथा अन्य देशों में निवास करने लगे थे, यह सुना कि बाबेल के राजा ने यहूदिया में कुछ लोगों को छोड़ दिया है, तथा यह, कि उसने उन पर शापान के पौत्र, अहीकाम के पुत्र गेदालियाह को अधिपति नियुक्त कर दिया है, 12 तब सभी स्थानों से सारे यहूदी लौटकर आने लगे, जहां उन्हें खदेड़ दिया गया था, वे यहूदिया देश में आए तथा मिज़पाह में गेदालियाह से भेंट करने गए. उन्होंने बड़ी मात्रा में द्राक्षारस एवं ग्रीष्मकालीन फलों का भंडारण कर डाला. 13 तब कोरियाह का पुत्र योहानन तथा रणभूमि में सैनिकों के सारे सेनापति मिज़पाह में गेदालियाह से भेंट करने आए. 14 उन्होंने उससे कहा, "क्या आपको यह संज्ञान है कि अम्मोन के वंशजों के राजा बालिस ने नेथनियाह के पुत्र इशमाएल को आपकी हत्या के उद्देश्य से भेजा है?" किंतु अहीकाम के पुत्र गेदालियाह ने उनका विश्वास ही नहीं किया. 15 तब कोरियाह के पुत्र योहानन ने मिज़पाह में अकेले में जाकर गेदालियाह के समक्ष यह प्रस्ताव रखा, "मुझे अनुमति दीजिए, कि मैं जाकर नेथनियाह के पुत्र इशमाएल का वध कर दूं. किसी को भी इसके विषय में ज्ञात न हो सकेगा, हम क्यों उसे आपकी हत्या का अवसर दें? अन्यथा आपकी शरण में आए ये सारे यहूदी पुनः बिखर जाएंगे तथा यहूदिया का बचा हुआ शेष नष्ट हो जाएगा?" 16 किंतु अहीकाम के पुत्र गेदालियाह ने उससे कहा, "इशमाएल के विषय में तुम्हारा यह वचन असत्य है! मत करो उसकी हत्या."

41 सातवें माह में एलीशामा का पौत्र नेथनियाह का पुत्र, राजपरिवार का वंशज इशमाएल, राजा के प्रमुख सेनापतियों में से एक तथा दस व्यक्ति अहीकाम के पुत्र गेदालियाह से भेंट करने मिज़पाह पहुंचे. जब वे वहां साथ बैठे हुए भोजन कर रहे थे, 2 नेथनियाह का पुत्र इशमाएल तथा उसके दस साथी उठे और तलवार के प्रहार से शापान के पौत्र, अहीकाम के पुत्र गेदालिया का वध कर दिया, गेदालियाह, जिसे बाबेल के राजा ने देश पर अधिपति नियुक्त किया था. 3 इशमाएल ने राजा के सारे यहूदियों का भी संहार कर दिया, अर्थात् वे, जो मिज़पाह में गेदालियाह के साथ थे, उसने उन कसदी सैनिकों का भी संहार कर दिया, जो उस स्थान पर पाए गए. 4 दूसरे दिन, जब गेदालियाह की हत्या की जा चुकी थी, जिसके विषय में किसी को कोई संज्ञान न था, 5 शेकेम से, शीलो से तथा शमरिया से अस्सी व्यक्ति वहां पहुंचे, उनकी दाढ़ी मूंडी हुई थी, वस्त्र फटे हुए तथा देह पर घाव लगे हुए थे, वे अपने साथ अन्नबलि एवं धूप लेकर आए थे, कि इन्हें याहवेह के भवन में ले जाएं. 6 तब नेथनियाह का पुत्र इशमाएल मिज़पाह से उनसे भेंट करने निकला, इस समय वह रोता जा रहा था. जब उसकी भेंट इन अस्सी व्यक्तियों के समूह से हुई, उसने उनसे कहा, "चलिए, हम अहीकाम के पुत्र गेदालियाह से भेंट करने चलें." 7 उनके नगर में पहुंचते ही, नेथनियाह के पुत्र इशमाएल तथा उसके साथियों ने उनकी हत्या कर दी और उनके शव कुएं में फेंक दिए. 8 किंतु इन अस्सी में से दस जीवित रह गए थे, उन्होंने इशमाएल से आग्रह किया, "हमें जीवनदान दीजिए! हमारे पास गेहूं, जौ, मधु तथा तेल का भंडार है, जिसे हमने खेत में छिपा रखा है." तब इशमाएल ने अन्य सत्तर के साथ उनकी हत्या नहीं की. 9 वह कुंआ जिसमें इशमाएल ने उन लोगों के शव फेंक दिए थे, जिनकी उसने गेदालियाह के साथ हत्या की थी, राजा आसा द्वारा इस्राएल के राजा बाशा से अपनी सुरक्षा के उद्देश्य से निर्मित किया गया था. नेथनियाह के पुत्र इशमाएल ने इस कुएं को मरे हुओं के शवों से भर दिया. 10 तत्पश्चात इशमाएल ने मिज़पाह में निवास कर रहे सारे लोगों को बंदी बना लिया, राजा की बेटियों तथा मिज़पाह में शेष रह गए सभी यहूदी, जिन्हें अंगरक्षकों के प्रधान, नेबुज़रादान ने अहीकाम के पुत्र गेदालियाह के संरक्षण में छोड़ रखा था. इस प्रकार नेथनियाह के पुत्र इशमाएल ने इन सभी को बंदी बना लिया और वह अम्मोन वंशजों के देश की ओर इन्हें लेकर प्रस्थित हो गया. 11 नेथनियाह के पुत्र इशमाएल द्वारा किए गए इस संकट का समाचार कोरियाह के पुत्र योहानन तथा उसके साथ की संयुक्त सेना के सेनापतियों को प्राप्त हुआ, 12 इसलिये उन्होंने सभी पुरुषों को एकजुट किया और नेथनियाह के पुत्र इशमाएल से युद्ध करने के लिए तैयार हुए. नेथनियाह के पुत्र इशमाएल को उन्होंने गिबयोन के महा कुंड के निकट जा पकड़ा. 13 जैसे ही इशमाएल के सारे साथियों की दृष्टि कोरियाह के पुत्र योहानन तथा उसके साथी सेनापतियों पर पड़ी, वे पुलकित हो गए. 14 इससे मिज़पाह में इशमाएल द्वारा बंदी बनाए गए सभी लोग मुड़कर कोरियाह के पुत्र योहानन के निकट आ गए. 15 किंतु नेथनियाह का पुत्र इशमाएल योहानन से बचकर भाग निकला, उसके साथ आठ व्यक्ति भी बच निकले और अम्मोन वंशजों के देश पहुंच गए. 16 तब कोरियाह के पुत्र योहानन तथा उसके साथ की सेना के सारे सेनापतियों ने मिज़पाह से लोगों के संपूर्ण लोगों को निकाल लिया, जिन्हें उसने नेथनियाह के पुत्र इशमाएल से विमुक्त किया था, जिन्हें इशमाएल ने अहीकाम के पुत्र गेदालियाह की हत्या के बाद बंदी बना लिया था, अर्थात्, सैनिक, स्त्रियां, बालक; तथा राज-दरबार के अधिकारी जिन्हें उसने गिबयोन से लौटा ले आया था. 17 उपयुक्त समय आने पर मिस्र चले जाने के उद्देश्य से वे जाकर बेथलेहेम के निकटवर्ती नगर गेरूथ किमहाम में ठहरे रहे. 18 क्योंकि उन्हें कसदियों का भय था. क्योंकि नेथनियाह के पुत्र इशमाएल ने अहीकाम के पुत्र गेदालियाह की हत्या कर दी थी, जिसको बाबेल के राजा ने देश पर अधिपति नियुक्त किया था.

42 तब सारी सेना के सेनापति, कोरियाह का पुत्र योहानन, होशाइयाह का पुत्र येत्सानियाह, तथा प्रजा के साधारण एवं विशिष्ट सभी लोग भविष्यद्वक्ता येरेमियाह से भेंट करने आ गए 2 उन्होंने येरेमियाह भविष्यद्वक्ता से आग्रह किया, "हमारा आपसे निवेदन है, कृपया, याहवेह, अपने परमेश्वर से हमारे लिए, अर्थात् उन बचे हुए लोगों के लिए बिनती कीजिए. क्योंकि बहुसंख्यकों में से अब हम मात्र अल्प ही रह गए हैं, यह तो आप स्वयं देख ही रहे हैं. 3 आप प्रार्थना कीजिए, कि याहवेह, आपके परमेश्वर हम पर यह प्रकट कर दें, कि अब हमारा क्या करना उपयुक्त होगा तथा हमारा कहां जाना सार्थक होगा." 4 भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने तुम्हारा प्रस्ताव सुन लिया है. अब देखो, तुम्हारे अनुरोध के अनुसार मैं याहवेह तुम्हारे परमेश्वर से प्रार्थना

करूंगा और जो उत्तर मुझे याहवेह की ओर से प्राप्त होगा, वह संपूर्ण संदेश मैं
तुम पर प्रकट कर दूंगा और उस संदेश का एक भी शब्द मैं तुमसे न छिपाऊंगा.”
5 यह सुन उन्होंने येरेमियाह को उत्तर दिया, “याहवेह ही हमारे लिए सत्य एवं
विश्वसनीय गवाह हों, यदि हम उस संदेश के अनुरूप पूर्णतः आचरण न करें, जो
याहवेह आपके परमेश्वर आपके द्वारा हमें प्रगट करेंगे. 6 वह संदेश चाहे हमारे
लिए सुखद हो अथवा दुखद, हम याहवेह, हमारे परमेश्वर के संदेश को सुनेंगे,
जिनके समक्ष जाने का हम आपसे अनुरोध कर रहे हैं, क्योंकि जब हम याहवेह,
हमारे परमेश्वर के आदेश का पालन करें, तब हमारा कल्याण हो.” 7 दस
दिन समाप्त होते-होते येरेमियाह को याहवेह का संदेश प्राप्त हुआ. 8 उन्होंने
कोरियाह के पुत्र योहानन को, उन सारे सेनापतियों को भी, जो उसके साथ
थे तथा सारे साधारण एवं विशिष्ट लोगों की सभा आमंत्रित की. 9 और उन्हें
संबोधित कर कहा, “याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है, उन्हीं
याहवेह का, जिनके समक्ष तुमने मुझे अपना निवेदन प्रस्तुत करने का दायित्व
सौंपा था: 10 ‘यदि तुम वास्तव में इस देश में निवास करते रहो, तब मैं तुम्हें
समृद्धि प्रदान करूंगा, तुम्हें नष्ट न करूंगा; मैं तुम्हें यहां रोपित करूंगा, अलग
नहीं; क्योंकि मैं तुम पर प्रभावी की गई विपत्तियों के विषय में पछताऊंगा. 11
बाबेल के राजा से भयभीत न होना, जिससे तुम इस समय भयभीत हो रहे हो. मत
हो उससे भयभीत, यह याहवेह की वाणी है, क्योंकि तुम्हारी सुरक्षा के निमित्त मैं
तुम्हारे साथ हूं मैं तुम्हें उसकी अधीनता से मुक्त करूंगा. 12 मैं तुम्हें अनुकम्पा
का अनुदान दूंगा कि वह तुम पर अनुकम्पा करे और तुम्हें तुम्हारी मातृभूमि पर
लौटा दे.’ 13 “किंतु यदि तुम कहो, ‘हम इस देश में निवास नहीं करेंगे,’ अर्थात्
तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के आदेश का अनुकरण करना अस्वीकार कर दो,
14 और यह कहो, ‘नहीं, हम तो मिस्र देश जाएंगे, जहां न तो युद्ध की स्थिति
होगी, जहां न नरसिंगा का युद्धनाद सुनना पड़ेगा और न ही जहां भोजन का
अभाव रहेगा. हम वहीं निवास करेंगे,’ 15 तब यदि स्थिति यह है, तो यहूदिया
के बचे हुए लोगो, याहवेह का यह संदेश सुन लो; सेनाओं के याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर की वाणी यह है: ‘यदि तुमने मिस्र देश में प्रवेश करने तथा वहां बस
जाने का निश्चय कर ही लिया है, 16 तब तो वह तलवार जिससे तुम आतंकित
हो, तुम्हें वहां मिस्र देश में जा पकड़ेगी, वह अकाल जिसका तुम्हें डर है, वह
तुम्हारे पीछे-पीछे मिस्र देश में जा पहुंचेगा और वहां तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी. 17
तब वे सभी, जिन्होंने मिस्र में जाकर बस जाने का निश्चय कर लिया है, वे वहां
जाकर तलवार, लड़ाई तथा महामारी को ग्रसित हो ही जाएंगे, और हां, वहां उस
विपत्ति से, जो मैं उन पर डालने पर हूं, न तो कोई उत्तरजीवी शेष रहेगा और न
ही कोई शरणार्थी.’ 18 क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह की
वाणी यह है: ‘जिस प्रकार मेरा क्रोध एवं आक्रोश येरूशलेम वासियों पर उंडेला
जा चुका है, उसी प्रकार मेरा कोप तुम पर उस अवसर पर उंडेला जाएगा, जब
तुम मिस्र देश में प्रवेश करोगे. तब तुम शाप, आतंक के प्रतिरूप, अमंगल तथा
उपहास का विषय होकर रह जाओगे; इसके बाद तुम इस स्थान को कभी भी
देख न सकोगे.’ 19 “यहूदिया के बचे हुए लोगो, याहवेह ने तुमसे बात की है,
‘मत जाओ मिस्र देश.’ स्पष्टतः यह समझ लो, कि आज मैंने तुम्हें यह चेतावनी
दी है 20 छल तो तुमने स्वयं से किया है, क्योंकि स्वयं तुमने ही याहवेह, तुम्हारे
परमेश्वर से बात करने का यह दायित्व मुझे सौंपा था, ‘याहवेह हमारे परमेश्वर से
प्रार्थना कीजिए तथा जो कुछ याहवेह हमारे परमेश्वर कहें, वह हमें बता दीजिए,
कि हम वैसा ही करें.’ 21 यही मैंने आज तुम्हें बता दिया है, किंतु तुमने याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर के आदेश का पालन नहीं किया है, उसी को, जिसे तुम्हें बता
देने के लिए मुझे याहवेह ने भेजा है. 22 इसलिये अब तुम्हारा यह स्पष्टतः समझ
लेना उपयुक्त होगा, कि तुम जिस स्थान पर जाने की अभिलाषा कर रहे हो,
तुम्हारी मृत्यु वहीं तलवार, अकाल तथा महामारी से ही होनी है.”

43 जैसे ही येरेमियाह ने सारे उपस्थित जनसमूह के समक्ष याहवेह, उनके
परमेश्वर द्वारा प्रदत्त संदेश सुनाना समाप्त किया, 2 होशाइयाह का पुत्र
अज़रियाह तथा कोरियाह का पुत्र योहानन तथा अन्य सारे दंभी लोग येरेमियाह
के विषय में कह उठे: “झूठ बोल रहे हैं आप! याहवेह, हमारे परमेश्वर ने आपको
इस संदेश के साथ भेजा ही नहीं है, ‘तुम्हें मिस्र में बस जाने के उद्देश्य से प्रवेश
नहीं करना है’; 3 यह नेरियाह का पुत्र बारूख है, जो आपको हमारे विरुद्ध
उकसा रहा है, कि हमें कसदियों के हाथों में सौंप दिया जाए, कि वे हमारी
हत्या कर दें अथवा हमें बंदी बनाकर बाबेल ले जायें.” 4 तब कोरियाह के पुत्र
योहानन ने, सेनापतियों ने तथा सारे लोगों ने यहूदिया देश में ही ठहरे रहने
के विषय में याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया. 5 कोरियाह के पुत्र
योहानन तथा सारे सेनापतियों ने यहूदिया के संपूर्ण बचे हुए लोगों को, जो
अनेक-अनेक देशों में से विस्थापन की स्थिति से यहूदिया में बस जाने के लिए
लौटा लाए गए थे, 6 पुरुष स्त्री एवं बालक, राजपुत्रियां तथा हर एक ऐसा व्यक्ति,
जिसे अंगरक्षकों के प्रधान नेबुज़रादान ने शापान के पौत्र अहीकाम के पुत्र,
गेदालियाह, भविष्यद्वक्ता येरेमियाह तथा नेरियाह के पुत्र बारूख के साथ छोड़
दिया था, 7 इन्होंने याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया और ये सभी मिस्र
देश को चले गए और ताहपनहेस तक जा पहुंचे. 8 ताहपनहेस में येरेमियाह को
याहवेह का यह संदेश प्राप्त हुआ: 9 “यहां ताहपनहेस में हीं, कुछ बड़े पत्थर
लेकर उन्हें यहूदियों के देखते-देखते फ़रोह के महलों के प्रवेश द्वार के सम्मुख
के पक्के मार्ग के पत्थरों के गारे के नीचे छिपा दो. 10 तब उनके समक्ष यह
वाणी करो: ‘सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की यह वाणी है, यह देख
लेना कि मैं बाबेल के राजा अपने सेवक नबूकदनेज्ज़र को यहां ले आने पर हूं.
इन्हीं पत्थरों पर मैं उसका सिंहासन स्थापित करूंगा, जो यहां छिपाए गए हैं.
इनके ऊपर वह अपना राजकीय मंडप विस्तृत करेगा. 11 नबूकदनेज्ज़र आकर
मिस्र को पराजित कर देगा. जिनके लिए मृत्यु नियत की गई है, उनकी मृत्यु हो
जाएगी; जिनको बंदी बना लिया जाना नियत है, वे बंदी बना लिए जाएंगे; जो
तलवार से वध किए जाने के लिए निर्धारित किए गए हैं, वे तलवार से वध कर
दिए जाएंगे. 12 मैं मिस्र के देवताओं के मंदिरों में आग लगा दूंगा और वह उन्हें
भस्म कर डालेगा तथा मिस्रियों को बंदी बना लेगा. वह मिस्र को ध्वस्त कर देगा
जिस प्रकार चरवाहा स्वयं अपने बाह्य वस्त्र को अपनी देह पर लपेट लेता है.
उसी प्रकार वह मिस्र को स्वयं पर लपेट लेगा और वहां से सुरक्षित विदा हो
जाएगा. 13 वह मिस्र के सूर्य मंदिर के पूजा-स्तम्भों को चूर-चूर कर देगा, जो
हेलियोपोलिस में हैं; वैसे ही मिस्र के देवताओं के मंदिरों को भी वह भस्म कर
देगा.’”

44 मिस्र देश के मिगदोल, ताहपनहेस, मैमफिस नगरों तथा पथरोस प्रदेश में
निवास कर रहे यहूदियों के लिए येरेमियाह को यह संदेश भेजा गया: 2
“सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की वाणी यह है: येरूशलेम तथा
यहूदिया के नगरों पर जो सारी विपत्तियां मेरे द्वारा भेजी गई हैं, उन्हें तो तुमने
स्वयं ही देख ली हैं. देख लो, कि आज तक ये स्थान खंडहर बने हुए हैं और
कोई भी उनमें निवास नहीं कर रहा. 3 उस दुष्कृति के कारण जिसके द्वारा
उन्होंने परकीय देवताओं की उपासना करने, उन्हें बलि अर्पण करने के द्वारा मेरे
कोप को भड़काया है. ये देवता उनके लिए, तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे पूर्वजों के
लिए अज्ञात रहे. 4 इतना सब होने पर भी मैंने तुम्हारे हित में अपने सेवक
भविष्यवक्ताओं को भेजा, बार-बार वे यह संदेश देते रहे, ‘मत करो ये सारे
उपक्रम, जो मेरे समक्ष घृणास्पद हैं!’ 5 किंतु उन्होंने न इस ओर ध्यान दिया, न
मेरा संदेश सुना न वे इन दुष्कृत्यों से विमुख हुए; उन्होंने उन परकीय देवताओं
को बलि अर्पण करना समाप्त न किया. 6 इसलिये मेरा कोप और मेरा आक्रोश
उंडेला गया; यहूदिया के नगर तथा येरूशलेम की गलियां इनसे क्रोधित हो गईं

और इसका परिणाम यह है कि अब ये खंडहर मात्र रह गए हैं, जैसा आज स्पष्ट ही है, ये अब निर्जन रह गए हैं. 7 "इसलिये अब, सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की वाणी यह है: तुम क्यों अपनी ही अकाल हानि करने पर तैयार हो, कि तुम्हारे मध्य में यहूदिया में से स्त्री-पुरुष, बालक तथा शिशु कोई बचे हुए लोग न रह जाएं? 8 मिस्र देश, जहां तुमने बस जाने के उद्देश्य से प्रवेश किया है, वहां तुम उन परकीय देवताओं को बलि अर्पण करने के द्वारा मेरे कोप को भड़का रहे हो. इसका परिणाम यही होगा कि तुम नष्ट हो जाओगे तथा तुम पृथ्वी के सारी जनताओं के लिए एक शाप, एक कटाक्ष बनकर रह जाओगे. 9 क्या तुम अपने पूर्वजों की दुष्कृति भूलना पसंद कर चुके हो—यहूदिया के राजाओं की दुष्कृति, उनकी पत्नियों की दुष्कृति, स्वयं तुम्हारी दुष्कृति तथा तुम्हारी पत्नियों की दुष्कृति, जो यहूदिया में तथा येरूशलेम की गलियों में उनके द्वारा की जाती रही है? 10 किंतु पश्चाताप उन्होंने आज तक नहीं किया और उनमें न तो मेरे प्रति श्रद्धा दिखाई, न उन्होंने मेरे व्यवस्था-विधान के पालन किया जो मैंने ही तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के सामने रखे थे. 11 "इसलिये इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह, की वाणी यह है, यह देख लेना, कि मैं तुम्हारे संकट के लक्ष्य से तुम्हारी ओर अभिमुख होने पर हूं, हां, सारे यहूदिया के सर्वनाश के लक्ष्य से. 12 मैं यहूदिया के उस बचे हुए लोगों को, जो मिस्र में बस जाने के लिए तैयार हो चुके हैं, नष्ट कर दूंगा. मिस्र देश में वे पूर्णतः नष्ट हो जाएंगे; वे तलवार तथा अकाल से नष्ट हो जाएंगे. तलवार एवं अकाल से सामान्य एवं विशिष्ट दोनों ही मिटा दिए जाएंगे. वे शाप बन जाएंगे, आतंक-प्रतिरूप हो जाएंगे, अमंगल प्रार्थना तथा उपहास का विषय हो जाएंगे. 13 मैं मिस्र के निवासियों को उसी प्रकार दंड दूंगा, जिस प्रकार मैंने येरूशलेम को तलवार, अकाल तथा महामारी का दंड दिया है. 14 तब यहूदिया के उन बचे हुए लोगों में से जो मिस्र में इन बातों के साथ जा बसे हैं, कि वे पुनः यहूदिया लौट आएंगे, जहां लौटकर आ रहना ही उनकी अभिलाषा है; उनमें से मात्र अल्प शरणार्थियों के सिवाय न तो कोई शरणार्थी रहेगा और न कोई उत्तरजीवी." 15 तब उन सभी व्यक्तियों ने जिन्हें यह ज्ञात था कि उनकी पत्नियां परकीय देवताओं के समक्ष धूप जलाने की प्रथा में संलग्न हैं, अपनी-अपनी पत्नी के साथ एक विशाल सभा के रूप में मिस्र में पथरोस के निवासियों के साथ मिलकर येरेमियाह को यह प्रत्युत्तर दिया, 16 "आपने याहवेह के नाम से हमें जो संदेश दिया है, उसे हम नहीं सुनेंगे! 17 हम तो निश्चयतः वही सब करेंगे, जो हमारे मुख से मुखरित हुआ है: हम स्वर्ग की रानी के निमित्त धूप जलाएंगे, उसे पेय बलि अर्पित करेंगे; ठीक जैसा हमारे पूर्वज, हमारे राजा और हमारे उच्चाधिकारी यहूदिया के नगरों में तथा येरूशलेम की गलियों में करते रहे हैं. क्योंकि उस समय हमें भोजन का कोई अभाव न था, हम सम्पन्न थे तथा हमें किसी प्रतिकूलता का अनुभव न हुआ. 18 किंतु जैसे ही हमने स्वर्ग की रानी के लिए धूप जलाना छोड़ा, जैसे ही हमने उसे पेय बलि अर्पित करना छोड़ा, हम सब प्रकार के अभाव में आ पड़े हैं और प्रजा तलवार एवं अकाल द्वारा विनाश हो रही है." 19 और स्त्रियों ने आक्षेप लगाना प्रारंभ किया, "जब हम स्वर्ग की रानी के लिए धूप जला रही थी और पेय बलि अर्पित कर रही थी, क्या हम ये बलियां, ये पेय बलियां तथा अर्पण के व्यंजन जिन पर स्वर्ग की रानी की प्रतिकृति होती थी यह सब अपने-अपने पतियों के जानने बिना कर रही थी?" 20 तब येरेमियाह ने पुरुषों, स्त्रियों, सारे उपस्थित जनसमूह को, उन सभी को, जिन्होंने उन्हें उत्तर दिया था, संबोधित करते हुए कहा: 21 "यहूदिया के नगरों में तथा येरूशलेम की गलियों में जो धूप तुम लोगों ने, तुम्हारे पूर्वजों ने, तुम्हारे राजाओं ने, तुम्हारे उच्चाधिकारियों ने तथा देश की प्रजा ने, जलाई हैं, क्या याहवेह की दृष्टि से अदृश्य रह गई है अथवा उन्होंने इन्हें भूलना पसंद कर दिया है? 22 यह सब याहवेह के लिए असह्य हो चुका था, तुम्हारे उपक्रमों के संकट के कारण, तुम्हारे द्वारा किए गए घृणास्पद कार्यों के कारण ही आज तुम्हारा देश उजाड़ हो चुका है, यह देश अब भय का स्रोत तथा एक शाप प्रमाणित हो रहा है, आज यह निर्जन पड़ा हुआ है. 23 आज तुम्हारे देश पर जो विपत्ति आ पड़ी है, उसका कारण यही है कि तुमने याहवेह की आज्ञा की अवहेलना की है, उनकी नीतियों का आचरण नहीं किया, उनके अधिनियमों तथा साक्ष्यों की अवहेलना की है, तथा तुमने धूप जलाई है." 24 तब येरेमियाह ने सारी स्त्रियों सहित सारे जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा, "सारे यहूदियावासियो, जो मिस्र में जा बसे हो, याहवेह का संदेश सुनो. 25 सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: तुम्हारे लिए तथा तुम्हारी पत्नियों से संबंधित संदेश यह है: तुमने यह कहते हुए, 'हम उन सारे संकल्पों को पूर्ण करेंगे, जो हमने किए थे. हम स्वर्ग की रानी के लिए धूप जलाएंगे, उसे पेय बलि भी अर्पित करेंगे, तुमने जो कुछ अपने मुख से घोषित किया, उसे अपने कार्यों द्वारा पूर्ण भी कर दिखाया है.' "जाओ, जाकर अपने संकल्पों की पुष्टि करो और उन्हें पूर्ण भी करो! 26 फिर भी, मिस्र में जा बसे यहूदियावासियो, याहवेह का संदेश सुन लो: 'ध्यान रहे, मैंने अपने ही उदात्त नाम की शपथ ली है,' यह याहवेह की वाणी है, 'मिस्र देश में यहूदिया का कोई भी व्यक्ति शपथ करने के लिये अब कभी भी मेरे महान नाम का उपयोग नहीं कर पायेगा. वे फिर कभी नहीं कहेंगे, "याहवेह के नाम की शपथ!" 27 मैं उन पर मेरी दृष्टि लगी हुई है, वह हित के लिए नहीं, पर विपत्ति के लिए. यहूदियावासी सभी, जो मिस्र देश में जा बसे है, तब तक तलवार से तथा अकाल से उनकी मृत्यु हो ही जाएगी; जब तक उनके विनाश संपूर्ण न हो. 28 हां, अत्यंत अल्प संख्या में कुछ तलवार से बचकर मिस्र से यहूदिया पहुंच जाएंगे. तब यहूदिया के संपूर्ण बचे हुए लोगों को, जो मिस्र में बस जाने के लिए वहां गए थे, उन्हें यह ज्ञात हो जाएगा कि किसका कहना अटल होता है, मेरा अथवा उनका. 29 "'तुम्हारे लिए इसका चिन्ह यह होगा,' यह याहवेह की वाणी है, 'मैं तुम्हें इसी स्थान पर दंड दूंगा, जिससे कि तुम यह समझ सको कि तुम्हारे संकट के लिए मेरी वाणी पूर्ण होकर ही रहेगी.' 30 याहवेह का संदेश यह है: 'तुम देखोगे कि मैं मिस्र के राजा फ़रोह होफ़राह को उसके शत्रुओं के अधीन कर दूंगा, उनके अधीन जो उसके प्राण लेने को तैयार हैं, ठीक जिस प्रकार मैंने यहूदिया के राजा सीदकियाहू को बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के अधीन कर दिया था, जो उसका शत्रु था, जो उसके प्राण लेने को तैयार था.'"

45 योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-काल के चौथे वर्ष में जब भविष्यद्वक्ता येरेमियाह ने नेरियाह के पुत्र बारूख को एक पुस्तक में लिखने के लिए जो संदेश दिया था, उसे लिखने के बाद येरेमियाह ने बारूख को कहा: 2 "बारूख, इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह, का तुम्हारे लिए यह संदेश है: 3 तुमने कहा था, 'हाय, धिक्कार है मुझ पर! याहवेह ने मेरी पीड़ा पर शोक भी लाद दिया है; मैं कराहते-कराहते थक चुका हूं और मुझे कुछ भी चैन प्राप्त नहीं हुआ है.' 4 तो तुम्हें उससे यह कहना होगा, 'यह याहवेह की वाणी है: यह देख लेना कि मैं वह सब ध्वस्त कर दूंगा, जिसे मैंने ही निर्मित किया है. जिसे मैंने रोपित किया है, उसे मैं ही अलग कर दूंगा; अर्थात् संपूर्ण देश को. 5 किंतु तुम, क्या तुम अपने लिए विशेष कृपादृष्टि की खोज में हो? मत करो यह खोज. क्योंकि तुम देख लेना मैं सभी मनुष्यों पर सर्वनाश ले आने पर हूं, यह याहवेह की वाणी है, किंतु मैं तुम्हारा जीवन तुम्हें लूट सामग्री सदृश दे दूंगा, चाहे तुम कहीं भी जाओ.'"

46 भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को याहवेह की ओर से राष्ट्रों से संबंधित प्राप्त संदेश: 2 मिस्र के संबंध में: यह मिस्र के राजा फ़रोह नेको की सेना से संबंधित है, जिसे फरात नदी के तट पर कर्कमीश नामक स्थान पर बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने योशियाह के पुत्र यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के राज्य-

काल के चौथे वर्ष में पराजित किया था: 3 “अपनी सभी छोटी-बड़ी ढालों को
तैयार कर लो, और युद्ध के लिए प्रस्थान करो! 4 घोड़ों को सुसज्जित करो! उन
पर बैठ जाओ और टोप पहन लो! अपनी बर्छियों पर धार लगा लो और झिलम
धारण कर लो! 5 यह मेरी दृष्टि में क्यों आ गया? वे भयभीत हैं वे पीछे हट रहे
हैं, उनके शूर योद्धा पराजित हो चुके हैं, और अब वे अपने प्राणों की रक्षा के
लिए भाग रहे हैं. वे तो मुड़कर भी नहीं देख रहे, आतंक सर्वत्र व्याप्त हो चुका
है,” यह याहवेह की वाणी है. 6 “न तो द्रुत धावक भागने पाए, न शूर योद्धा बच
निकले. फरात के उत्तरी तट पर वे लड़खड़ा कर गिर चुके हैं. 7 “यह कौन है,
जो बाढ़ के समय की नील नदी के सदृश उफान रहा है, उस नदी के सदृश
जिसका जल महानदों में है? 8 मिस्र नील नदी सदृश बढ़ता जा रहा है, वैसे ही,
जैसे नदी का जल उफनता है. उसने घोषणा कर दी है, ‘मैं उफनकर संपूर्ण देश
पर छा जाऊंगी; निःसंदेह मैं इस नगर को तथा नगरवासियों को नष्ट कर दूंगी.’
9 घोड़ो, आगे बढ़ जाओ! रथो, द्रुत गति से दौड़ पड़ो! कि शूर योद्धा आगे बढ़
सकें: कूश तथा पूट देश के ढाल ले जानेवाले योद्धा, तथा लीदिया के योद्धा, जो
धनुष लेकर बढ़ रहे हैं. 10 वह दिन प्रभु सेनाओं के याहवेह का दिन है— बदला
लेने का दिन, कि वह अपने शत्रुओं से बदला लें. तलवार तब तक चलेगी, जब
तक संतुष्ट न हो जाए, जब तक उसकी तलवार रक्त पीकर तृप्त न हो जाए.
क्योंकि यह नरसंहार प्रभु सेनाओं के याहवेह के लिए फरात के ऊपरी तट पर
स्थित देश में बलि अर्पण होगा. 11 “मिस्र की कुंवारी कन्या, गिलआद जाकर
औषधि ले आओ. निरर्थक ही रहा तुम्हारी औषधियों का संचय करना; तुम्हारे
लिए तो पुनःअच्छे हो जाना निर्धारित ही नहीं है. 12 राष्ट्रों ने तुम्हारी लज्जा का
समाचार सुन लिया है; पृथ्वी तुम्हारे विलाप से पूर्ण है. भागते हुए सैनिक एक
दूसरे पर गिरे पड़ रहे हैं; और दोनों ही एक साथ गिर गये हैं.” 13 मिस्र पर
बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के आक्रमण के विषय में याहवेह ने भविष्यद्वक्ता
येरेमियाह को यह संदेश प्रगट किया: 14 “यह घोषणा मिस्र में तथा प्रचार
मिगदोल में किया जाए; हां, प्रचार मैमफिस तथा ताहपनहेस में भी किया जाए:
यह कहना: ‘तैयार होकर मोर्चे पर खड़े हो जाओ, क्योंकि तलवार तुम्हारे
निकटवर्ती लोगों को निगल चुकी है.’ 15 तुम्हारे शूर योद्धा पृथ्वी पर कैसे गिर
गए? पुनः खड़े होना उनके लिए असंभव हो गया है, क्योंकि उन्हें याहवेह ने ही
भूमि पर पटका है. 16 फिर बार-बार वे पृथ्वी पर गिराए जा रहे हैं; भागते हुए वे
एक दूसरे पर गिराए जा रहे हैं. तब उन्होंने कहा, ‘चलो उठो, हम लौट चलें हम
अपने उत्पीड़क की तलवार से दूर अपने लोगों में, अपने देश लौट चलें.’ 17
वहां वे चिल्लाते रहे, ‘मिस्र का राजा आवाज मात्र है; उसने सुअवसर को हाथ
से निकल जाने दिया है.’ 18 “जिनका नाम है सेनाओं के याहवेह, जो राजा है,
उनकी वाणी है, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, यह सुनिश्चित है
कि जो पर्वतों में ताबोर-सदृश प्रभावशाली, अथवा सागर तट के कर्मेल पर्वत
सदृश है, वह आएगा. 19 मिस्र में निवास कर रही पुत्री, बंधुआई में जाने के लिए
सामान तैयार कर लो, क्योंकि मैमफिस का उजड़ जाना निश्चित है और इसका
दहन कर दिया जाएगा तथा यहां कोई भी निवासी न रह जाएगा. 20 “मिस्र एक
सुंदर कलोर है, किंतु उत्तर की ओर से एक गोमक्खी आ रही है वह बढ़ी चली
आ रही है. 21 मिस्र में निवास कर रहे भाड़े के सैनिक पुष्ट हो रहे बछड़ों
के सदृश हैं. वे सभी एक साथ मुड़कर भाग गए हैं, उनके पैर उखड़ गए हैं,
क्योंकि उनके विनाश का दिन उन पर आ पड़ा है, उनके दंड का समय. 22
और उसके भागने की ध्वनि रेंगते हुए सर्प के सदृश हो रही है; क्योंकि वे सेना
के सदृश आगे बढ़ रहे हैं, और वे उसके समक्ष कुल्हाड़ी लिए हुए लक्कड़हारे
के समान पहुंचे जाते हैं. 23 उन्होंने मिस्र के वन को नष्ट कर दिया है,” यह
याहवेह की वाणी है, “इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका अस्तित्व मिट ही
जाएगा, यद्यपि इस समय वे टिड्डियों-सदृश असंख्य हैं, अगण्य हैं. 24 मिस्र
की पुत्री को लज्जा का सामना करना पड़ रहा है, उसे उत्तर की ओर से आए
हुए लोगों के अधीन कर दिया गया है.” 25 सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर का संदेश है: “यह देख लेना, मैं थेबेस के अमोन को तथा फ़रोह और
मिस्र को उनके देवताओं एवं राजाओं के साथ दंड देने पर हूं, हां, फ़रोह तथा
उन सबको, जो उस पर भरोसा किए हुए हैं. 26 मैं उन्हें उनके अधीन कर
दूंगा, जो उनके प्राण लेने पर तैयार हैं—हां, बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र तथा
उसके अधिकारियों के अधीन. किंतु कुछ समय बाद यह देश पहले जैसा बस
जाएगा,” यह याहवेह की वाणी है. 27 “किंतु तुम, याकोब, मेरे सेवक; तुम
भयभीत न होना; इस्राएल, तुम हताश न हो जाना. तुम्हारी बंधुआई के दूर देश में
से, मैं तुम्हें एवं तुम्हारे वंशजों को विमुक्त करूंगा. तब याकोब लौट आएगा और
शांतिपूर्वक सुरक्षा में ऐसे निवास करेगा, कि उसे कोई भी भयभीत न कर सकेगा.
28 याकोब, मेरे सेवक, भयभीत न होओ, यह याहवेह का आश्वासन है, क्योंकि
मैं तुम्हारे साथ हूं. क्योंकि मैं उन सभी राष्ट्रों का पूर्ण विनाश कर दूंगा जहां-जहां
मैंने तुम्हें बंदी किया था, फिर भी मैं तुम्हारा पूरा विनाश नहीं करूंगा. तुम्हें दी
गई मेरी ताड़ना सही तरीके से होगी; यह न समझ लेना कि मैं तुम्हें दंड दिए
बिना ही छोड़ दूंगा.”

47 इसके पूर्व कि फ़रोह अज्जाह को पराजित करता, भविष्यद्वक्ता येरेमियाह
को फिलिस्तीनियों से संबंधित यह संदेश प्राप्त हुआ: 2 यह याहवेह का
संदेश है: “यह देखना कि उत्तर से जल स्तर ऊंचा होने लगेगा; और यह बढ़कर
प्रचंड प्रवाह में परिवर्तित हो जाएगा. यह संपूर्ण भूमि को आच्छादित कर लेगा
वह सब भी जो भूमि के ऊपर है, नगर को तथा नगरवासियों को भी. पुरुष
चिल्लायेंगे; तथा देश का हर एक निवासी विलाप करेगा. 3 घोड़ों की टापों की
ध्वनि के कारण, उसके रथों की आवाज सुनकर, उनके पहियों की गड़गड़ाहट
के कारण. पिता मुड़कर अपने बालकों को देखेंगे; क्योंकि उनके हाथ ढीले हो
चुके हैं. 4 यह इसलिये कि सारे फिलिस्तीनियों के विनाश का तथा सोर और
सीदोन में हर एक शेष रह गए सहायक को नष्ट करने का दिन आया है. स्वयं
याहवेह ही फिलिस्तीनियों तथा काफ़तोर के तटवर्ती क्षेत्रों के बचे हुए लोगों को
नष्ट करने के लिए तैयार हैं. 5 अज्जाह को सिर मुंडाना पड़ा है; अश्कलोन नष्ट
किया जा चुका है. उनकी घाटी के बचे हुए लोगो, तुम कब तक अपनी देह को
घायल करते रहोगे? 6 “‘आह, याहवेह की तलवार, और कब तक प्रतीक्षा की
जाए तुम्हारे शांत होने की? अब तो अपनी म्यान में जा बैठो; विश्राम करो और
चुपचाप रहो.’ 7 यह शांत रह भी कैसे सकती है जब इसे आदेश ही याहवेह ने
दिया है, उसे अश्कलोन तथा समुद्रतट के क्षेत्रों के विरुद्ध ही नियत किया गया
है?”

48 मोआब के विषय में ज़आबोथ याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की वाणी
यह है: “धिक्कार है नेबो पर, क्योंकि यह नष्ट हो चुका है. किरयथियों
को लज्जित किया गया है, इसे अधीन कर लिया गया है; उच्चस्थ गढ़नगर
को लज्जित कर दिया गया है. अब वह चूर-चूर हो चुका है. 2 मोआब की
अब ख्याति धूल में जा पड़ी है; उन्होंने हेशबोन के विरुद्ध विपत्ति योजित की
है: ‘आओ, हम राष्ट्र के रूप में उसका अस्तित्व ही मिटा दें.’ मदमेन तुम्हारा
स्वर भी शांत कर दिया जाएगा; तलवार तुम्हारा पीछा करेगी. 3 होरोनयिम से
विलाप सुनाई पड़ रहा है, विनाश और पूरा विध्वंस. 4 मोआब भंग हो चुका है;
उसके बालक पीड़ा में विलाप कर रहे हैं. 5 वे लूहीत की चढ़ाई पर, सदा
रोते हुए चढ़ते जाएंगे; क्योंकि उन्होंने होरोनयिम की ढाल पर विनाश का
विलाप सुन लिया है. 6 अपने प्राण बचाकर भागो; कि तुम मरुभूमि में धूप
चन्दन झाड़ी सदृश हो जाओ. 7 क्योंकि तुमने अपनी ही उपलब्धियों तथा
अपनी ही निधियों पर भरोसा किया है, यहां तक कि तुम स्वयं भी बंदी बना

लिए जाओगे, खेमोश बंदी किया जाएगा, तथा उसके साथ होंगे उसके पुरोहित
तथा अधिकारी. 8 एक विनाशक हर एक नगर में जाएगा, एक भी नगर बच
न सकेगा. घाटी भी नष्ट हो जाएगी तथा पठार भी कुछ न रहेगा, ठीक जैसी
याहवेह की पूर्ववाणी थी. 9 मोआब को पंख प्रदान किए जाएं, कि वह उड़कर
दूर चला जाए; क्योंकि उसके नगर उजाड़ हो जाएंगे, और कोई भी उनमें
निवास न करेगा. 10 "शापित होगा वह व्यक्ति, जो याहवेह का कार्य उपेक्षा के
भाव से करता है! तथा शापित वह भी होगा, जो अपनी तलवार को रक्तपात
से बचाए रखता है! 11 "बचपन ही से मोआब सुख-शांति की अवस्था में
रहा है, कभी उसकी शांति भंग नहीं की गई, जैसे द्राक्षालता अपनी भूमि में
स्थित हो गई हो, उसे एक बर्तन से दूसरे में उंडेला नहीं गया, न उसने बंधुआई
का ही अनुभव किया है. तब उसका स्वाद वही का वही है, उसकी सुगंध भी
अपरिवर्तित बनी हुई है. 12 इसलिये यह देख लेना, कि वे दिन आ रहे हैं," यह
याहवेह की वाणी है, "जब मैं मोआब में उन्हें भेजा करूंगा, जो बर्तनों से रस
उण्डेलते हैं, वे मोआब को उण्डेलेंगे; वे मोआब के बर्तन रिक्त कर देंगे और तब
वे उसके बर्तनों को तोड़कर चूर-चूर कर देंगे. 13 खेमोश मोआब की लज्जा का
कारण होगा, जिस प्रकार बेथेल इस्राएल वंश के लिए लज्जा का कारण हो गया
था, जिस पर उन्होंने अत्यंत विश्वास किया था. 14 "तुम यह दावा कैसे कर रहे
हो, 'हम तो शूर योद्धा हैं, युद्ध के लिए हर प्रकार से सुयोग्य'? 15 मोआब नष्ट
हो चुका है, इसके नगर नष्ट हो चुके हैं; इसके सर्वोत्तम जवान वध के लिए
उतारे गए हैं," यह राजा की वाणी है, जिनका नाम है सेनाओं का याहवेह. 16
"मोआब का विनाश तुरंत हो जाएगा; उसका विनाश निकट है. 17 तुम, जो
उसके पड़ोसी हो, उसके लिए शोक मनाओ, तुम भी, जो उससे परिचित हो; यह
कहते जाओ, 'कैसे टूट गया दृढ़ राजदंड, वह, जो वैभवशाली राजदंड था!' 18
"दीबोन निवासी पुत्री और अब अपने ऐश्वर्य से नीचे उतर आओ और आकर
इस शुष्क भूमि पर बैठो, मोआब का विनाशक तुम्हें लक्ष्य करता हुआ आ पहुंचा
है, वह तुम्हारे गढ़नगर नष्ट कर ही चुका है. 19 अरोअर वासियो, मार्ग के
किनारे खड़े हो, सावधानीपूर्वक देखते रहो. उससे यह पूछो: जो भाग रहा है तथा
उससे भी, जो बचकर निकल रहा है, 'हुआ क्या है?' 20 मोआब लज्जित है,
क्योंकि इसे तोड़ दिया गया है. चिल्लाओ, विलाप करो! आरनोन के निकट
जाकर घोषणा करो, कि मोआब विनष्ट किया जा चुका है. 21 मैदानी क्षेत्र पर भी
अब दंड प्रभावी हो चुका है; होलोन, यहत्स, मेफाअथ, 22 दीबोन, नेबो,
बेथ-दिबलाथाईम, 23 किरयथियों, बेथ-गामूल, बेथ-मिओन, 24 केरिओथ,
बोज़राह तथा मोआब के दूरवर्ती एवं निकटवर्ती सभी नगर. 25 मोआब की
शक्ति का प्रतीक सींग ही काट दिया गया है; तथा उसकी भुजा तोड़ दी गई है,"
यह याहवेह की वाणी है. 26 "उसे मतवाला कर दो, क्योंकि उसने याहवेह के
समक्ष अहंकार करके विद्रोह किया है. अब वह उस स्थिति में पहुंच जाएगा
जब वह अपनी ही उल्टी में लोटता हुआ दिखाई देगा; और वह उपहास का
विषय बन जाएगा. 27 क्या इस्राएल तुम्हारे लिए उपहास का विषय न बना था?
अथवा क्या वह चोरों में से है, क्योंकि जब भी इस्राएल का उल्लेख होता है,
तुम घृणाभाव से अपना सिर हिलाने लगते हो? 28 मोआबवासियो, नगरों में
रहना छोड़कर चट्टानों में रहने लगो. और उस कबूतर समान हो जाओ, जो
दुर्गम चट्टानों की लघु गुफा में घोंसला निर्मित करती है. 29 "हमने मोआब के
अहंकार— उसकी उद्दंडता, उसके दर्प, उसके गर्व तथा उसके मन के विषय में
सुन लिया है, अत्यंत उग्र है उसका अहंकार. 30 मैं अच्छी रीति से समझता हूं
उसकी तिलमिलाहट," यह याहवेह की वाणी है, "किंतु निरर्थक है यह सब;
उसकी खोखली गर्वोक्ति ने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है. 31 इसलिये मैं मोआब
के लिए विलाप करूंगा, पूरे मोआब के लिए होगा मेरा विलाप, कीर-हेरासेथ
वासियों के लिए होगी मेरी कराहट. 32 सिबमाह की लता मैं, याज़र पर विलाप
से अधिक तुम्हारे लिए विलाप करूंगा. तुम्हारे लतातन्तु सागर पार तक तने हुए
हैं; वे तो याज़र तक पहुंच चुके हैं. तुम्हारे ग्रीष्मकालीन फलों की उपज तथा
तुम्हारे द्राक्षा की उपज पर विनाशक बरस पड़ा है. 33 इसलिये मोआब के
फलदायी उद्यान से उल्लास एवं आनंद समाप्त कर दिए गए हैं. द्राक्षा रौंदने के
कुंड से रस निकलना समाप्त हो गया है; कोई भी उन्हें उल्लास-स्वर के साथ न
रौंदेगा. जो ध्वनि होगी वह उल्लास-ध्वनि न होगी. 34 "हेशबोन में उठ रही
चिल्लाहट से एलिआलेह तक हां, याहज़ तक उन्होंने अपना स्वर उठाया है,
ज़ोअर से होरोनयिम तक तथा एगलथ शलिशियाह तक, क्योंकि निमरीम की
जल राशि समाप्त हो जाएगी. 35 मैं मोआब का अस्तित्व ही मिटा दूंगा," यह
याहवेह की वाणी है, जो पूजा-स्थल पर बलि अर्पण करता है तथा जो अपने-
अपने देवताओं के लिए धूप जलाता है. 36 "इसलिये मोआब के लिए मेरा हृदय
ऐसे विलाप करता है, जैसे विलापगान में बांसुरी; मेरा हृदय कीर-हेरासेथ के
निवासियों के लिए बांसुरी के समान कराहता है. उन्होंने अपनी उपज का बहाव
खो दिया है. 37 हर एक सिर शोक के कारण मुंडवाया हुआ तथा दाढ़ी क़तरी
हुई है; सभी के हाथ घावों से भरे हुए तथा हर एक ने कमर पर टाट लपेटा हुआ
है. 38 मोआब के हर एक घर की छत पर तथा इसकी सड़कों पर चहुंओर
विलाप व्याप्त है, क्योंकि मैंने मोआब को उस बर्तन के सदृश तोड़ दिया है, जो
तिरस्कृत है," यह याहवेह की वाणी है. 39 "कैसा चूर-चूर हो चुका है यह!
कैसा है उनका विलाप! मोआब ने लज्जा में कैसे अपनी पीठ इस ओर कर दी
है! अब मोआब उपहास का विषय होकर रह जाएगा, तथा निकटवर्ती सारे राष्ट्रों
के समक्ष आतंक का विषय भी." 40 क्योंकि यह याहवेह का संदेश है: "तुम
देखना! कोई गरुड़-सदृश द्रुत गति से उड़ेगा, और मोआब पर अपने पंख फैला
देगा. 41 केरिओथ अधीन कर लिया गया तथा गढ़ों पर शत्रु का अधिकार हो
गया है. तब उस दिन मोआब के शूर योद्धाओं का हृदय ऐसा हो जाएगा, जैसे
प्रसूता का. 42 मोआब विनष्ट होकर एक राष्ट्र न रह जाएगा क्योंकि वह याहवेह
के समक्ष अहंकारी हो गया है. 43 मोआबवासियो, आतंक, गड्ढे तथा फंदे तुम्हारे
लिए नियत हैं," यह याहवेह की वाणी है. 44 "वह, जो आतंक से बचकर
भागेगा, वह गड्ढे में जा गिरेगा, वह, जो गड्ढे से बाहर निकल आएगा फंदे में जा
फंसेगा; क्योंकि मैं मोआब पर दंड का वर्ष ले आऊंगा," यह याहवेह की वाणी
है. 45 "हेशबोन की छाया में निर्बल शरणार्थी जा ठहरेंगे; क्योंकि हेशबोन में से
अग्नि फैल रही है, तथा सीहोन के मध्य से लपटें. उसने मोआब के माथे को
भस्म कर डाला है, साथ ही उनके कपाल भी, जो युद्ध में आनंद ले रहे थे. 46
धिक्कार है तुम पर मोआब! खेमोशवासी नष्ट हो चुके हैं; क्योंकि तुम्हारे पुत्रों
को बंदी बना लिया गया है और तुम्हारी पुत्रियां भी बन्दीत्व में चली गई हैं. 47
"फिर भी मैं मोआब की समृद्धि अंतिम दिनों में लौटा दूंगा," यह याहवेह की
वाणी है. मोआब का दंड इतना ही होगा.

49 अम्मोन वंशजों के संबंध में: यह याहवेह का संदेश है: "क्या इस्राएल के
पुत्र नहीं हैं? अथवा उसके कोई उत्तराधिकारी ही नहीं हैं? तब क्या हुआ
कि अम्मोनी देवता मोलेक ने गाद पर अधिकार कर लिया है? तथा उसकी प्रजा
इसके नगरों में जा बसी है? 2 इसलिये यह देखना कि ऐसे दिन आ रहे हैं, कि मैं
अम्मोन वंशजों के रब्बाह के विरुद्ध नरसिंगे का आवाज उत्पन्न करूंगा; तब यह
एक निर्जन ढेर बनकर रह जाएगा, उसके आस-पास के गांवों को भस्म कर
दिया जाएगा. तब इस्राएल उन्हें अपने अधीन कर लेगा, जिन्होंने उसे अधीन
किया हुआ था," यह याहवेह की वाणी है. 3 "हेशबोन, विलाप करो, क्योंकि
अय नगर नष्ट हो चुका है! रब्बाह की पुत्रियो, विलाप करो! टाट बांधकर विलाप
करो; विस्मित हो इधर-उधर शहरपनाह के भीतर दौड़ती रहो, क्योंकि मोलेक
बंधुआई में चला जाएगा, और उसके साथ होंगे उसके पुरोहित तथा अधिकारी.
4 तुम अपनी घाटियों के विषय में कितना अहंकार कर रही हो, भटकने वाली

पुत्री, तुम्हारी घाटी बंद हुई जा रही है. अपनी संपदा का भरोसा करके तुम गर्व
करती रही हो, 'कौन कर सकता है मेरा सामना?' 5 यह देख लेना, मैं तुम पर
आतंक लाने पर हूं यह आतंक तुम्हें चारों ओर से घेर लेगा," यह सेनाओं के प्रभु
याहवेह की वाणी है. मैं तुम्हारे चारों ओर के लोगों से तुम पर आतंक लाऊंगा,
हर एक भागकर बिखर जाएगा, शरणार्थियों के एकत्रण के लिए कोई शेष न
रहेगा. 6 "किंतु तत्पश्चात मैं अम्मोन वंशजों की समृद्धि पुनःस्थापित कर दूंगा,"
यह याहवेह की वाणी है. 7 एदोम के विषय में: सेनाओं के याहवेह की वाणी यह
है: "क्या तेमान में अब बुद्धिमत्ता रह ही नहीं गई है? क्या बुद्धिमान उत्तम
परामर्श रहित हो गए हैं? क्या उनकी बुद्धिमत्ता का क्षय हो चुका है? 8 देदान
वासियों, पीछे मुड़कर भाग जाओ और गहरी गुफाओं में जा छिपो, क्योंकि मैं
उस पर एसाव का संकट डालने पर हूं उस समय मैं उसे दंड दूंगा. 9 यदि द्राक्षा
तोड़नेवाले तुम्हारे निकट आएं, क्या वे अंगूर न छोड़ेंगे? यदि चोर रात्रि में आएं,
क्या वे उतना ही विनाश न करेंगे जितना उनके लिए पर्याप्त होगा? 10 किंतु मैंने
तो एसाव को विवस्त्र कर दिया है; उसके छिपने के स्थान मैंने प्रकट कर दिए
हैं, अब वह स्वयं को छिपा न सकेगा. तथा उसके पड़ोसियों के साथ उसके
संबंधियों, तथा उसकी संतान भी नष्ट हो गई हैं, अब वह भी न रहा. 11 'अपने
पितृहीनों को यहीं छोड़ दो; मैं उन्हें जीवित रखूंगा. तुम्हारी विधवाएं मुझ पर
भरोसा कर सकती हैं.'" 12 क्योंकि याहवेह की वाणी यह है: "यह देखना,
जिन्हें उस प्याले से पीने का दंड नहीं दिया गया था, निश्चयतः उससे पिएंगे
और क्या तुम वह हो, जिसे पूर्णतः सहायकमुक्त छोड़ दिया जाएगा? नहीं तुम्हें
सहायकमुक्त नहीं छोड़ा जाएगा, किंतु तुम निश्चयतः उस प्याले में से पियोगे.
13 क्योंकि मैंने स्वयं अपनी ही शपथ ली है," यह याहवेह ही की वाणी है,
"कि बोज़राह आतंक का, घृणा का, विध्वंस का तथा शाप का साधन बन
जाएगा, इसके सभी नगर स्थायी खंडहर बनकर रह जाएंगे." 14 याहवेह द्वारा
प्रगट एक संदेश मैंने सुना है; राष्ट्रों में एक प्रतिनिधि इस संदेश के साथ भेजा गया
है, "तुम सब एकजुट होकर उस पर आक्रमण करो! और युद्ध के लिए तैयार हो
जाओ!" 15 "क्योंकि तब तुम्हें बोध होगा, कि मैंने तुम्हें राष्ट्रों के मध्य लघु
बना दिया है, जनसाधारण में तुच्छ कर दिया है. 16 तुम, जो चट्टानों के मध्य
निवास करते हो, तुम, जो पहाड़ियों की ऊंचाइयों को अपनाए बैठे हो, तुम्हारी
भय पैदा करनेवाली छवि का कारण है, तुम्हारे हृदय में अवस्थित अहंकार,
जिसने तुम्हें भ्रमित कर रखा है. यद्यपि तुम अपने घोंसले को उतनी ही ऊंचाई
पर निर्मित करते हो, जितनी ऊंचाई पर गरूड़ निर्मित करते हैं, मैं तुम्हें वहां से भी
नीचे उतार लाऊंगा," यह याहवेह की वाणी है. 17 "एदोम भय का विषय
हो जाएगा; इसके निकट से जाता हुआ हर एक व्यक्ति भयभीत होकर इसके
घावों को देखेगा और उसका उपहास करेगा. 18 सोदोम, अमोराह तथा इनके
निकटवर्ती क्षेत्रों के प्रलय के सदृश," यह याहवेह की वाणी है, "कोई भी वहां
निवास न करेगा; यह मनुष्यों के निवास के योग्य रह ही न जाएगा. 19 "यह
देखना, यरदन की झाड़ियों में से कोई सिंह सदृश निकलकर मजबूत चरवाहों
पर आक्रमण कर देगा; क्योंकि मैं एक ही क्षण में उसे वहां से पलायन के लिए
प्रेरित कर दूंगा तथा इस क्षेत्र पर मैं उसे नियुक्त कर दूंगा, जो इसके लिए समर्थ
किया जा चुका है. कौन है मेरे तुल्य तथा किसमें क्षमता है मुझे न्यायालय में
बुलाने की? इसके सिवा कौन है वह चरवाहा, जो मेरे समक्ष ठहर सकेगा?" 20
इसलिये अब याहवेह की उस योजना को समझ लो, जो उन्होंने एदोम के प्रति
योजित की है, तथा उन लक्ष्यों को भी, जो उन्होंने तेमानवासियों के संकट के
लिए निर्धारित किए हैं: इसमें कोई संदेह नहीं कि वे उन्हें खींचकर ले जाएंगे-
भले ही वे भेड़-बकरियां मेमने हों; उनके कारण याहवेह उनकी चराइयों को
निश्चयतः निर्जन बनाकर छोड़ेंगे. 21 उनके पतन की ध्वनि के कारण पृथ्वी
कांप उठी है; यह चिल्लाहट है, इस आवाज की ध्वनि लाल सागर तक सुनी
गई है. 22 यह देख लेना कि याहवेह ऊंचे उड़कर गरूड़-सदृश झपट्टा मारेंगे,
और अपने पंख बोज़राह के विरुद्ध फैला देंगे. तब एदोम के शूर योद्धाओं के हृदय
उस दिन प्रसूता के हृदय सदृश हो जाएंगे. 23 दमेशेक के विषय में: "हामाथ तथा
अरपाद को लज्जित किया गया है, क्योंकि उन्हें संकट समाचार दिया गया है.
वे हताश हो गए हैं. वहां समुद्र के सदृश अशांति है, इसे शांत करना संभव नहीं.
24 दमेशेक अब निस्सहाय रह गया है, वह मुड़कर भाग जाने पर तैयार है ओर
घोर आतंक ने उसे जकड़ लिया है; पीड़ा एवं वेदना ने उसे अपने अधिकार में ले
लिया है, जैसे प्रसूता को. 25 प्रख्यात नगर कैसे परित्यक्त नहीं छोड़ा गया,
वह, जो मेरे आनंद का नगर है. 26 उस नगर के जवान उसकी सड़कों पर
पृथ्वी पर गिरे हुए पाए जाएंगे; उस दिन सभी योद्धा मूक कर दिए जाएंगे," यह
सेनाओं के याहवेह की वाणी है. 27 "मैं दमेशेक की शहरपनाहें भस्म कर दूंगा;
और अग्नि बेन-हदद के गढ़-स्तम्भों को भस्म कर देगी." 28 बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र द्वारा पराजय: केदार, तथा हाज़ोर के राज्यों के विषय में याहवेह
की वाणी यह है: "उठो, केदार पहुंच जाओ और पूर्व के लोगों को नष्ट कर दो.
29 वे अपने शिविर तथा अपनी भेड़-बकरियां अपने साथ ले जाएंगे; वे अपने
लिए अपने शिविर के पर्दे ले जाएंगे, अपनी सारी सामग्री तथा ऊंट भी. तब वे
एक दूसरे से पुकार-पुकारकर कहेंगे, 'चहुंओर आतंक व्याप्त है!' 30 "भागो दूर
चले जाओ! हाज़ोरवासियो जाकर गहन गुफाओं में जा बसो," यह याहवेह की
वाणी है. "क्योंकि बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने तुम्हारे विरुद्ध एक योजना
रची है; तुम्हारे विरुद्ध एक युक्ति गढ़ी है. 31 "उठकर ऐसे देश पर आक्रमण
करो, जो शांति में निवास कर रहा है, जो पूर्णतः सुरक्षित है," यह याहवेह की
वाणी है, "उस नगर के न तो प्रवेश द्वार हैं और न कहीं छड़ों से उसे सुरक्षा
प्रदान की गई है; वे अलग, अकेले निवास करते हैं. 32 उनके ऊंट लूट सामग्री
हो जाएंगे, वैसे ही उनके असंख्य पशु भी. मैं प्रचंड वायु में उन सभी को बिखरा
दूंगा, जो अपने कनपटी के केश कतरते रहते हैं और उनका विनाश उन पर हर
एक ओर से टूट पड़ेगा," यह याहवेह की वाणी है. 33 "हाज़ोर सियारों का
बसेरा बन जाएगा, एक स्थायी निर्जन स्थान. कोई भी वहां निवास न करेगा; न
कोई मनुष्य की सन्तति वहां पाई जाएगी." 34 वह संदेश, जो याहवेह की ओर
से भविष्यद्वक्ता येरेमियाह को एलाम के संबंध में यहूदिया के राजा सीदकियाहू
के राज्य-काल के प्रारंभ में भेजा गया, यह है: 35 सेनाओं के याहवेह की वाणी
यह है: "देख लेना, मैं एलाम के धनुष को तोड़ने पर हूं, जो उनकी शक्ति का
आधार है. 36 आकाश की चारों दिशाओं से मैं एलाम पर इन चारों वायुओं का
प्रहार करूंगा; इससे इस राष्ट्र का अस्तित्व ही मिट जाएगा, तब ऐसा कोई राष्ट्र न
रहेगा, जहां एलाम के शरणार्थी न पहुंचेंगे. 37 इस रीति से मैं एलाम को उसके
शत्रुओं के समक्ष तितर-बितर कर दूंगा, उनके समक्ष, जो उनके प्राणों के प्यासे
हैं; उनके ऊपर मैं संकट प्रभावी कर दूंगा, यह मेरा उग्र कोप होगा," यह याहवेह
की वाणी है. "उनका पीछा करने के लिए मैं तलवार भेज दूंगा, जब तक वे
सभी समाप्त न हो जाएं. 38 तब मैं एलाम में अपना सिंहासन प्रतिष्ठित करूंगा, मैं
इसके सभी राजाओं तथा उच्चाधिकारी को नष्ट कर दूंगा," यह याहवेह की
वाणी है. 39 "किंतु होगा यह, कि मैं अंतिम दिनों में एलाम की समृद्धि लौटा
दूंगा," यह याहवेह की वाणी है.

50 भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के द्वारा जो संदेश याहवेह ने कसदियों के देश
बाबेल के विषय में दिया, वह यह है: 2 "सारे राष्ट्रों में सर्वत्र यह वाणी
हो, यह प्रकट किया जाए, यह घोषणा की जाए और झंडा ऊंचा किया जाए;
कुछ भी छिपाया न जाए बल्कि यह कहा जाए, 'बाबेल अचंभित हो चुका; बेल
लज्जित कर दिया गया, मारदुक चूर-चूर कर दिया गया है. उसकी प्रतिमाएं
लज्जित कर दी गई है और उसकी प्रतिमाएं चूर-चूर कर दी गई हैं.' 3 उत्तरी
दिशा का एक राष्ट्र उस पर आक्रमण करेगा, वह उसे निर्जन क्षेत्र में परिवर्तित कर

देगा, वहां कोई निवासी न रह जाएगा. मनुष्य और पशु दोनों ही वहां से पलायन
कर गए हैं; अब वे वहां से दूर चले गए हैं. 4 “उन दिनों में, उस अवसर पर,”
यह याहवेह की वाणी है, “इस्राएल वंशज आ जाएंगे, वे और यहूदाह के वंशज,
दोनों ही; वे साथ साथ विलाप करते हुए जाएंगे, वे याहवेह अपने परमेश्वर
की खोज करेंगे. 5 वे ज़ियोन के मार्ग के विषय में पूछताछ करेंगे, वे उसी
ओर अभिमुख हो जाएंगे. वे इस उद्देश्य से आएंगे कि वे याहवेह के साथ एक
चिरकालीन वाचा में सम्बद्ध हो जाएं जिसे कभी भूलना पसंद न किया जाएगा. 6
“मेरी प्रजा खोई भेड़ हो गई है; उनके चरवाहों ही ने इन्हें दूर किया है, उन्हीं ने
उन्हें पर्वतों पर चले जाने के लिए छोड़ दिया है. अब वे पर्वतों तथा पहाड़ियों
पर भटक रहे हैं और अब तो उन्हें अपना चैन-स्थल ही स्मरण न रहा है. 7
उनकी भेंट जितनों से भी हुई, उन्होंने उन्हें निगल डाला; उनके शत्रु यह दावा
करते रहे, ‘हम दोषी नहीं हैं, पाप तो उन्होंने किया है याहवेह के विरुद्ध, जो
पूर्वजों के आश्रय हरी चरागाह है, वस्तुतः याहवेह, उनके पूर्वजों की आशा.’ 8
“बाबेल के मध्य से भाग निकलो; कसदियों के देश से पलायन करो, उन बकरों
के सदृश बन जाओ, जो पशु समूह के आगे-आगे चलते हैं. 9 क्योंकि तुम यह
देख लेना कि मैं उत्तरी ओर से सशक्त राष्ट्रों के समूह को बाबेल पर आक्रमण के
लिए प्रेरित करूंगा. वे उसके विरुद्ध मोर्चा बांधेंगे, और तब बाबेल बंदी बना लिया
जाएगा. उनका लक्ष्य कर कुशल योद्धा बाण छोड़ेंगे और उनका प्रहार अचूक ही
होगा. 10 कसदिया लूट की सामग्री बन जाएगा; जो इसे लूटेंगे वे इसे यथाशक्ति
लूट लेंगे,” यह याहवेह की वाणी है. 11 “मेरे उत्तराधिकार के लुटेरो, इसलिये
कि तुम आनंदित हो, इसलिये कि तुम उल्लसित हो, इसलिये कि तुम चरागाहों
में बछिया के समान उछलते हो, घोड़े सदृश हिनहिनाते हो, 12 तुम्हारी माता
अत्यंत लज्जित होगी; तुम्हारी जननी निन्दित हो जाएगी. तुम देखना कि वह
राष्ट्रों में नीच हो जाएगी एक निर्जन क्षेत्र— एक शुष्क भूखण्ड, एक मरुभूमि.
13 याहवेह की अप्रसन्नता के कारण वह निर्जन ही रहेगी, पूर्णतः निर्जन; हर
एक, जो बाबेल के निकट से निकलेगा, भयभीत हो जाएगा; और उसके घावों
को देखकर उपहास करेगा. 14 “हर एक ओर से बाबेल के विरुद्ध मोर्चा बांधो,
तुम सभी धनुर्धारियों. उस पर प्रहार करो कोई भी तुम्हारे बाणों से बचने न पाए,
क्योंकि याहवेह की दृष्टि में बाबेल पापिष्ठ है! 15 चारों ओर से उसके विरुद्ध
आवाज की जाए! उसने समर्पण कर दिया है, उसके स्तंभ पृथ्वीशायी हो चुके हैं,
उसकी शहरपनाहें भंग की गई हैं. यह याहवेह का निरा बदला है; तुम भी उससे
बदला लो, उसने जैसा जैसा अन्यों के साथ किया है; तुम भी उसके साथ वैसा
ही करो. 16 बाबेल से रोपक को नष्ट कर दो और उसे भी, जो कटनी के अवसर
पर अपना हंसिया चलाता है. क्योंकि अत्याचारी की तलवार के कारण वे
लौटकर अपने ही लोगों के पास भागकर स्वदेश ही चले जाएंगे. 17 “इस्राएल
तितर-बितर की हुई भेड़-बकरियां हैं, सिंहों ने उन्हें खदेड़ दिया है. जिसने उसे
सर्वप्रथम निगल डाला था, वह है अश्शूर का राजा; जिसने सबसे अंत में उसकी
अस्थियां तोड़ दी हैं, वह है बाबेल का राजा नबूकदनेज्ज़र.” 18 इसलिये
सेनाओं के याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: “तुम यह देखना कि
मैं बाबेल के राजा तथा उसके देश को दंड देने पर हूं ठीक जिस प्रकार मैंने
अश्शूर के राजा को दंड दिया है. 19 तब मैं इस्राएल को उसकी चराइयों में
लौटा ले आऊंगा, तब वह कर्मेल तथा बाशान में चरा करेगा; और पर्वतीय क्षेत्र
एफ्राईम तथा गिलआद में उसकी अभिलाषा पूर्ण की जाएगी. 20 उन दिनों में,
उस अवसर पर,” यह याहवेह की वाणी है, “इस्राएल में पापिष्ठता की खोज की
जाएगी, किंतु वहां कुछ भी प्राप्त न होगा, वैसे ही यहूदिया में भी पापिष्ठता की
खोज की जाएगी, किंतु वहां भी उनमें कुछ पाया न जाएगा, क्योंकि मैं बचे हुए
लोगों को क्षमा कर दूंगा, जिन्हें मैंने रख छोड़ा है. 21 “जाकर मेराथाइम देश
पर आक्रमण करो, जाकर पेकोदवासियों पर भी आक्रमण करो. उन्हें घात करो
तथा उन्हें पूर्णतः नष्ट कर दो,” यह याहवेह का आदेश है. “वही सब करो,
जिसका मैंने तुम्हें आदेश दिया है. 22 युद्ध की ध्वनि देश में व्याप्त है, विनाश
अत्यंत प्रचंड है! 23 वह, जो सारे विश्व के लिए हथौड़ा था, वह कैसे कट गया,
टूट गया! सारे राष्ट्रों के लिए बाबेल आज आतंक का विषय कैसे बन गया है!
24 बाबेल, मैंने तुम्हारे लिए फंदा डाला, और तुम उसमें जा भी फंसे! तुम्हें
इसका आभास ही न हुआ; तुम्हें खोज निकाला गया और तुम पकड़ लिए
गए कारण यह था, कि तुमने याहवेह से द्वन्द किया था. 25 याहवेह ने अपना
शस्त्रागार खोल दिया है ओर उन्होंने अपने आक्रोश के शस्त्र बाहर निकाल लिए
हैं, क्योंकि कसदियों के देश में यह प्रभु सेनाओं के याहवेह का निष्पादन है. 26
दूरतम सीमा से उसके निकट आ जाओ. उसके अन्नभण्डार खोल दो; उसे
अनाज का ढेर लगाए जैसे कर दो और उसे पूर्णतः. नष्ट कर दो, उसका कुछ भी
शेष न रह जाए. 27 उसके सारे पुष्ट बैल तलवार से घात कर दो; उन सभी का
वध कर दो! धिक्कार हो उन पर! क्योंकि उनका समय आ गया है, उनके दंड
का समय. 28 बाबेल से आए शरणार्थियों तथा आश्रयहीनों का स्वर सुनाई दे
रहा है, कि ज़ियोन में उनके मंदिर के लिए, याहवेह हमारे परमेश्वर के बदले की
घोषणा की जा सके. 29 “बाबेल पर आक्रमण के लिए उन सभी को बुला
लाओ, जो बाण छोड़ने में कुशल है. उसे चारों ओर से घेरकर शिविर डाल दो;
कोई भी बचने न पाए. उसके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार ही उसे प्रतिफल
दो; उसने जैसा जैसा किया है उसके साथ वैसा ही करो. क्योंकि बाबेल याहवेह
के विरुद्ध अहंकारी हो गया है, उनके विरुद्ध, जो इस्राएल के पवित्र परमेश्वर हैं.
30 इसलिये बाबेल के शूर जवान वहां की सड़कों पर पृथ्वीशायी हो जाएंगे;
तथा उसके सभी योद्धा उस दिन नष्ट हो जाएंगे,” यह याहवेह की वाणी है. 31
“ओ अहंकारी, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, तुम यह देख लेना,” यह प्रभु सेनाओं के
याहवेह की वाणी है, “क्योंकि तुम्हारा समय आ गया है, वह समय, जब मैं
तुम्हें दंड दूंगा. 32 वह, जो अहंकारी है, वह लड़खड़ा कर गिर पड़ेगा और
कोई नहीं होगा, जो उसे उठाए; बाबेल के नगरों को मैं भस्म कर दूंगा, इससे
उसके निकटवर्तीं सारे क्षेत्र भी नष्ट हो जाएंगे.” 33 सेनाओं के याहवेह का संदेश
यह है: “इस्राएल वंशज उत्पीड़ित किए जा रहे हैं, यहूदाह गोत्रज भी; वे सभी,
जिन्होंने उन्हें बंदी बनाया है, उन्हें मुक्त नहीं कर रहे. 34 सशक्त हैं उनके
उद्धारक, सेनाओं के याहवेह है उनका नाम. वह उनके सशक्त प्रवक्ता होंगे, कि
पृथ्वी पर शांति की स्थापना हो सके, किंतु बाबेलवासियों में अशांति.” 35
याहवेह की वाणी है, “कसदी तलवार से घात किए जाएंगे, वैसे ही बाबेलवासी
भी!” बाबेल के अधिकारी एवं बुद्धिमान तलवार से घात किए जाएंगे! 36 झूठे
भविष्यवक्ताओं पर तलवार का प्रहार होगा! और वे मूर्ख प्रमाणित हो जाएंगे. शूर
योद्धाओं पर तलवार का प्रहार होगा! और वे चूर-चूर हो जाएंगे. 37 तलवार
उनके घोड़ों तथा रथों पर भी चलेगी, तथा उन सारे विदेशियों पर भी! जो उनके
मध्य में निवास कर रहे हैं, कि वे दुर्बल हो जाएं. तलवार उसके कोषागारों पर
भी चलेगी! और वे लूट लिए जाएंगे. 38 मैं उनके जलाशयों पर अनावृष्टि
भेजूंगा! और वे सूख जाएंगे. क्योंकि यह देश प्रतिमाओं का देश हो गया है, यहां
के निवासी उन प्रतिमाओं पर उन्मत्त हुए जा रहे हैं. 39 “इसलिये वहां सियार तो
निवास करेंगे ही, उनके सिवा वहां मरुभूमि के प्राणी भी निवास करने लगेंगे. वहां
शुतुरमुर्ग निवास करने लगेंगे और फिर कभी पीढ़ियों से पीढ़ियों तक इसे बसाया
न जा सकेगा. 40 जैसा परमेश्वर ने सोदोम तथा अमोराह तथा इनके निकटवर्तीं
क्षेत्रों में विनाश वृष्टि की थी,” यह याहवेह की पूर्वोक्ति है, “कोई मनुष्य वहां
निवास न कर सकेगा; और न मानव का कोई अस्तित्व पाया जाएगा. 41 “अब
देखो! उत्तर की ओर से एक राष्ट्र आक्रमण कर रहा है; यह राष्ट्र सशक्त है तथा
इसके राजा अनेक, वे पृथ्वी के दूर क्षेत्रों से प्रेरित किए जा रहे हैं. 42 वे अपना
धनुष एवं बर्छी उठा रहे हैं; वे निर्मम एवं क्रूर हैं. उनका स्वर सागर की लहरों

के गर्जन सदृश है, वे घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़ते आ रहे हैं; वे युद्ध के
लिए सुसज्जित योद्धा सदृश हैं. बाबेल की पुत्री, वे तुम पर आक्रमण करेंगे. 43
बाबेल के राजा को इसकी सूचना प्राप्त हो चुकी है, उसके हाथ ढीले पड़ चुके
हैं. पीड़ा ने उसे अपने अधीन कर रखा है, वैसी ही पीड़ा जैसी प्रसूता की
होती है. 44 यह देखना, यरदन की झाड़ियों में से कोई सिंह सदृश निकलकर
मजबूत चरवाहों पर आक्रमण कर देगा, क्योंकि मैं एक ही क्षण में उसे वहां
पलायन के लिए प्रेरित कर दूंगा. तथा इस क्षेत्र पर मैं उसे नियुक्त कर दूंगा, जो
इसके लिए असमर्थ किया जा चुका है. कौन है मेरे तुल्य तथा किसमें क्षमता है
मुझे न्यायालय में बुलाने की? इसके सिवा कौन है वह चरवाहा, जो मेरे समक्ष
ठहर सकेगा?" 45 इसलिये अब याहवेह की उस योजना को समझ लो, जो
उन्होंने बाबेल के प्रति योजित की है, तथा उन लक्ष्यों को भी, जो उन्होंने
तेमानवासियों के संकट के लिए निर्धारित किए हैं: इसमें कोई संदेह नहीं कि वे
उन्हें खींचकर ले जाएंगे-भले ही वे भेड़-बकरियां के बच्चों की नाई हों; उनके
कारण याहवेह उनकी चराइयों को निश्चयतः निर्जन बनाकर छोड़ेंगे. 46 इस
घोषनाद के कारण: बाबेल बंदी बना लिया गया है; पृथ्वी कांप उठी है, सभी
राष्ट्रों में निराशा की चिल्लाहट प्रतिध्वनित हो गई है.

51 यह याहवेह की वाणी है: "यह देखना मैं बाबेल के विरुद्ध तथा लेब-
कोमाई के निवासियों के विरुद्ध एक विनाशक बवंडर उत्पन्न करने पर हूं.
2 मैं विदेशियों को बाबेल की ओर भेजूंगा, कि वे उसको सुनसान करें तथा उस
देश को ध्वस्त कर दें; चारों ओर से वे उसका विरोध करेंगे यह उसके विनाश
का दिन होगा. 3 वह, जो धनुर्धारी है, उसे न तो धनुष तानने दो, न ही उसे
झिलम पहनकर खड़े होने दो. संक्षेप में, बाबेल के जवानों को किसी भी रीति से
बचकर न जाने दो; बाबेल की संपूर्ण सेना को नष्ट कर दो. 4 वे कसदियों के देश
में पृथ्वीशायी हो जाएंगे, वे अपनी ही सड़कों पर बर्छियों से बेधे जाएंगे. 5
क्योंकि न तो इस्राएल और न यहूदिया को उनके परमेश्वर, सेनाओं के याहवेह
द्वारा परित्याग किया गया है, यद्यपि उनका देश इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के
समक्ष सहायकभाव से परिपूर्ण हो गया है. 6 "बाबेल के मध्य से पलायन करो!
तुममें से हर एक अपना प्राण बचा ले! उसे दिए जा रहे दंड में तुम नष्ट न हो
जाना. क्योंकि यह याहवेह के बदला लेने का अवसर होगा; वह उसे वही देंगे,
जो उसे दिया जाना उपयुक्त है. 7 बाबेल याहवेह के हाथ में स्वर्ण कटोरा समान
रहा है; इससे सारी पृथ्वी मतवाली की गयी है. राष्ट्रों ने उसकी मदिरा का सेवन
किया है; इसलिये राष्ट्र मतवाले हुए जा रहे हैं. 8 सहसा बाबेल का पतन हो गया
है और वह चूर-चूर हो गया है. उसके लिए विलाप करो! उसके लिए दर्द मिटाने
वाली औषधि ले आओ; संभव है उसकी वेदना का निवारण हो जाए. 9 "'हमने
बाबेल का उपचार करना चाहा, किंतु हमारा प्रयास निष्फल रहा; उसे वैसा ही
छोड़ दिया जाए और हम अपने-अपने देश को लौट चलें, क्योंकि उसका दंड
स्वर्ग तक पहुंच रहा है, वह आकाश तक पहुंच चुका है.' 10 "'याहवेह ने
हमें निस्सहाय घोषित किया है; आओ, हम ज़ियोन में जाकर इसकी घोषणा
करें कि यह याहवेह हमारे परमेश्वर द्वारा बनाया कृत्य है.' 11 "बाणों की
नोक की धार बना लो, ढालों को उठा लो! याहवेह ने मेदियों के राजाओं के
उत्साह को उत्तेजित कर दिया है, क्योंकि वे बाबेल के विनाश के लिए तैयार
हैं. यह याहवेह का बदला है, उनके मंदिर के लिए लिया गया बदला है. 12
बाबेल शहरपनाह पर आक्रमण के लिए संकेत झंडा ऊंचा उठाओ! वहां एक
सशक्त प्रहरी नियुक्त करो, संतरियों को भी नियुक्त किया जाए, कुछ योद्धा घात
लगाकर छिप जाएं! क्योंकि याहवेह ने निर्धारित भी किया और निष्पादित भी,
जिसकी पूर्ववाणी वह बाबेलवासियों के विषय में कर चुके थे. 13 तुम, जो
महानद के निकट निवास करते हो, तुम, जो निधियों में सम्पन्न हो, तुम्हारा पतन
बड़ा है, तुम्हारा जीवन सूत्र काटा जा चुका है. 14 सेनाओं के याहवेह ने अपनी
ही जीवन की शपथ खायी है: निस्संदेह, मैं तुम्हारे मध्य टिड्डी दल सदृश एक
जनसमूह ले आऊंगा, और वे तुम्हें पराजित कर जयघोष करेंगे. 15 "याहवेह ही
हैं जिन्होंने अपने सामर्थ्य से पृथ्वी की सृष्टि की; जिन्होंने विश्व को अपनी बुद्धि
द्वारा प्रतिष्ठित किया है. अपनी सूझ-बूझ से उन्होंने आकाश को विस्तीर्ण कर
दिया. 16 उनके नाद उच्चारण से आकाश के जल में हलचल मच जाती है;
वही हैं जो चारों ओर से मेघों का आरोहण बनाया करते हैं. वह वृष्टि के लिए
बिजली को अधीन करते हैं तथा अपने भण्डारगृह से पवन को चलाते हैं. 17
"हर एक मनुष्य मूर्ख है—ज्ञानहीन; हर एक स्वर्णशिल्पी अपनी ही कृति प्रतिमा
द्वारा लज्जित किया जाता है. क्योंकि उसके द्वारा ढाली गई प्रतिमाएं धोखा हैं;
उनमें जीवन-श्वास तो है ही नहीं. 18 ये प्रतिमाएं सर्वथा व्यर्थ हैं, ये हास्यपद
कृति हैं; जब उन पर दंड का अवसर आएगा, वे नष्ट हो जाएंगी. 19 याहवेह, जो
याकोब की निधि हैं, इनके सदृश नहीं हैं, क्योंकि वे सभी के सृष्टिकर्ता हैं,
उनके निज भाग इस कुल का भी; उनका नाम है सेनाओं का याहवेह. 20
"उनका आश्वासन है, मेरे लिए तुम युद्ध के शस्त्र हो, तुम्हारे द्वारा मैं राष्ट्रों को चूर्ण
कर देता हूं, तुम्हारे साथ मैं राज्यों को नष्ट कर देता हूं, 21 तुमसे मैं घोड़े तथा
उसके सवार को नष्ट कर देता हूं, तुमसे ही मैं रथ तथा रथ नियंता को नष्ट कर
देता हूं, 22 तुमसे मैं पुरुष तथा स्त्री को नष्ट कर देता हूं, तथा तुमसे ही मैं वृद्ध तथा
जवान को नष्ट कर देता हूं, तुमसे मैं नवयुवक को तथा कुंवारी कन्या को नष्ट कर
देता हूं, 23 तुमसे मैं चरवाहे एवं भेड़-बकरियों को नष्ट करता हूं, तुमसे ही मैं
किसान एवं उसके सहायकों को नष्ट करता हूं, तथा तुमसे ही मैं राज्यपालों एवं
सेनापतियों को नष्ट करता हूं. 24 "किंतु मैं तुम्हारी आंखों ही के समक्ष बाबेल
तथा सारे कसदियावासियों से उनके द्वारा ज़ियोन में किए गए उनके सारे अधर्म
का बदला लूंगा," यह याहवेह की वाणी है. 25 "तुम यह समझ लो, विनाशक
पर्वत, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, तुम, जो सारे पृथ्वी को नष्ट करते हो," यह याहवेह की
वाणी है. "मैं तुम्हारे विरुद्ध अपनी भुजा बढ़ाऊंगा, और तुम्हें ढलवां चट्टानों से
लुढ़का दूंगा, और तब मैं तुम्हें भस्म हो चुका पर्वत बना छोड़ूंगा. 26 तुममें से वे
भवन के लिए कोने की शिला तक न निकालेंगे और न ही नींव के लिए कोई
शिला: तुम तो सदा-सर्वदा के लिए उजाड़-निर्जन होकर रह जाओगे," यह
याहवेह की वाणी है. 27 "सारे देश में चेतावनी का झंडा ऊंचा किया जाए! राष्ट्रों
में नरसिंगा नाद किया जाए! राष्ट्रों को उसके विरुद्ध युद्ध के लिए नियुक्त करो;
उसके विरुद्ध अरारात, मिन्नी तथा अश्केनाज राज्य एकत्र किए जाएं. घोड़ों को
टिड्डी दल सदृश ले आओ; तथा उसके लिए सेनापति भी नियुक्त करो. 28 राष्ट्रों
को उसके विरुद्ध युद्ध के लिए नियुक्त करो— मेदियों के राजा, उनके राज्यपाल
तथा उनके सेनापति, तथा उनके द्वारा शासित हर एक देश. 29 पृथ्वी कंपित
होती तथा वेदना में ऐंठ रही है, क्योंकि बाबेल के विरुद्ध याहवेह का उद्देश्य
अटल है— बाबेल देश को उजाड़ एवं निर्जन कर देना. 30 बाबेल के शूर
योद्धाओं ने समर्पण कर दिया है; वे अपने दुर्गों से बाहर नहीं आ रहे. उनका बल
क्षय हो चुका है; वस्तुतः वे अब स्त्रियां होकर रह गए है. उनके आवास अग्नि से
ग्रसित हो चुके है; नगर प्रवेश द्वार की छड़ें टूट चुकी हैं. 31 एक समाचार का
प्रेषक दौड़कर अन्य से मिलता है और एक संदेशवाहक अन्य से, कि बाबेल
के राजा को यह संदेश दिया जाए: एक छोर से दूसरी छोर तक आपका नगर
अधीन हो चुका है, 32 घाटों पर शत्रु का अधिकार हो चुका है, शत्रु ने तो
दलदल-वन तक को दाह कर दिया है, योद्धा अत्यंत भयभीत हैं." 33 सेनाओं के
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की वाणी यह है: "बाबेल की पुत्री दांवनी के
खलिहान-सदृश है, जिस पर अन्न रौंदा जाता है; फिर भी शीघ्र ही उसे कटनी
के अवसर का सामना करना पड़ेगा." 34 ज़ियोनवासी कहेंगे, "बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र ने तो मुझे ग्रसित कर लिया है, तथा कुचल दिया है, उसने मुझे
एक रिक्त बर्तन की स्थिति में लाकर छोड़ दिया है. उसने मुझे विकराल जंतु

सदृश निगल लिया है, और वह मेरे उत्कृष्ट व्यंजनों का सेवन कर तृप्त हो चुका है, वह मानो मुझे बहाकर ले गया है. 35 वह हिंसा, जो बाबेल द्वारा मुझ पर तथा मेरी देह पर की गई थी," तब ज़ियोनवासी कहेंगे, वह उसी पर लौट पड़े. तथा येरूशलेम कहेगा, "मुझ पर की गई हिंसा का बदला कसदिया देश से लिया जाए," 36 इसलिये याहवेह की वाणी यह है: "यह देख लेना, मैं तुम्हारे सहायक का प्रवक्ता हो जाऊंगा और तुम्हारे लिए भरपूर बदला प्रभावी करूंगा. मैं उसकी जल राशि को शुष्क कर दूंगा तथा उसके जल-स्रोत निर्जल बना दूंगा. 37 बाबेल खंडहरों का ढेर, तथा सियारों का बसेरा बन जाएगा, वह भय का पर्याय, निर्जन स्थान, तथा उपहास का विषय बन जाएगा. 38 बाबेलवासी सशक्त सिंहों के समान दहाड़ेंगे, वे सिंह के शावकों के समान गुर्राएंगे. 39 जब वे उतावला होंगे, मैं उनके लिए भोज आयोजित कर दूंगा और मैं उन्हें ऐसे मतवाले कर दूंगा, कि वे प्रमुदित हो जाएं और तब वे चिर-निद्रा में चले जाएंगे, कि वे कभी न जाग सकें," यह याहवेह की वाणी है. 40 "मैं उनकी स्थिति वध के लिए निर्धारित मेमनों के समान कर दूंगा, मेढ़ों तथा बकरों के सदृश. 41 "कैसे शेशाख को बंदी बना लिया गया है, जिसे सारी पृथ्वी की प्रशंसा प्राप्त होती रहती थी! यह कैसे हुआ कि बाबेल राष्ट्रों के मध्य भय का विषय बन गया है! 42 समुद्र जल स्तर ऊंचा होकर बाबेल तक पहुंच गया है; उसकी प्रचंड लहरों ने इसे ढांप लिया है. 43 उसके नगर भयास्पद हो गए हैं, अनावृष्टि प्रभावित मरुभूमि सदृश ऐसा क्षेत्र जहां कोई मनुष्य निवास नहीं करता, जिसके मध्य से होकर कोई भी नहीं निकलता. 44 मैं बाबेल में ही बेल को दंड दूंगा, मैं उसके मुख से वही उगलवाऊंगा, जो उसने निगल लिया था. तब जनता उसकी ओर आकर्षित होना ही छोड़ देंगे. अब तो बाबेल की शहरपनाह भी ढह चुकी है. 45 "मेरी प्रजाजनो, वहां से निकल आओ! तुममें से हर एक याहवेह के प्रचंड प्रकोप से अपनी रक्षा करें. 46 तुम्हारा हृदय मूर्छित न होने लगे तथा सारे देश में प्रसारित होते समाचार से तुम भयभीत न हो जाओ; क्योंकि एक समाचार इस वर्ष आएगा, तत्पश्चात अन्य समाचार अगले वर्ष, सारे देश में हिंसा भड़क रही होगी, उच्चाधिकारी ही उच्चाधिकारी के विरुद्ध हो जाएगा. 47 तब तुम यह देख लेना वे दिन आ रहे हैं, मैं बाबेल की प्रतिमाओं को दंड दूंगा; सारे देश के लिए यह लज्जा का विषय होगा घात किए हुओं के शव उसके मध्य में इधर-उधर पड़े पाए जाएंगे. 48 तब स्वर्ग और पृथ्वी तथा इनके सारे निवासी बाबेल की इस स्थिति पर हर्षनाद करेंगे, क्योंकि उसके विनाशक उत्तर दिशा से आएंगे," यह याहवेह की वाणी है. 49 "इस्राएल के लोगों के कारण बाबेल का पतन अनिवार्य है, ठीक जिस प्रकार सारी पृथ्वी पर के मारे गये लोग बाबेल के ही कारण मारे गये हैं. 50 तुम सभी, जो तलवार से बच निकले हो, यहां ठहरे न रहो, भागो यहां से! दूर ही दूर रहते हुए याहवेह को स्मरण कर लिया करो, येरूशलेम तुम्हारी स्मृति से दूर न रहे." 51 "निंदा सुनकर हम अत्यंत लज्जित हुए हैं हमारे मुखमंडल पर कलंक लग चुका है, क्योंकि याहवेह के पवित्र भवन में विदेशियों का प्रवेश हो चुका है." 52 "तब यह समझ लो: वे दिन आ रहे हैं," यह याहवेह की वाणी है, "जब मैं उसकी प्रतिमाओं को दंड दूंगा, तब घातक प्रहार से पीड़ित, संपूर्ण देश में कराहते हुए पाए जाएंगे. 53 चाहे बाबेल आकाश-सदृश ऊंचा हो जाए, चाहे वह अपने ऊंचे गढ़ सुदृढ़ बना ले, मेरे द्वारा भेजे गए विनाशक उसे जा पकड़ेंगे," यह याहवेह की वाणी है. 54 "बाबेल में विलाप व्याप्त है, तथा कसदियों के देश में महाविनाश. 55 क्योंकि याहवेह बाबेल के विनाश के लिए तैयार हैं; वह उसकी उस उच्च आवाज को समाप्त कर देंगे. उसकी ध्वनि उग्र लहरों के सदृश है; नगर में आवाज गूंज रही है. 56 बाबेल पर विनाशक ने आक्रमण किया है; उसके सारे शूर योद्धा बंदी बनाए जाएंगे, उसके धनुष टूट चुके हैं. क्योंकि याहवेह बदला लेनेवाले परमेश्वर हैं; वह पूरा-पूरा बदला लेंगे. 57 मैं उसके उच्चाधिकारी तथा परामर्शकों को मदोन्मत बना दूंगा, उसके राज्यपालों, सेनापतियों तथा शूर योद्धाओं को भी; कि वे सभी चिर-निद्रा में सो जाएं, और फिर कभी न जागें!" यह उस राजा की वाणी है, जिनका नाम है सेनाओं के याहवेह. 58 सेनाओं के याहवेह का संदेश यह है: "बाबेल की चौड़ी शहरपनाह पूर्णतः ध्वस्त कर दी जाएगी तथा उसके ऊंचे-ऊंचे प्रवेश द्वार अग्नि में दाह कर दिए जाएंगे; तब प्रजा का परिश्रम व्यर्थ रहेगा, तथा राष्ट्रों का सारा परिश्रम मात्र अग्नि में भस्म होने के लिए सिद्ध होगा." 59 नेरियाह के पुत्र माहसेइयाह के पौत्र सेराइयाह को दिया गया भविष्यद्वक्ता येरेमियाह का आदेश यह है, यह उसे उस अवसर पर भेजा गया, जब वह यहूदिया के राजा सीदकियाहू के राज्य-काल के चौथे वर्ष में राजा के साथ बाबेल गया था, सेराइयाह वहां महलों का प्रबंधक था. 60 येरेमियाह ने एक चर्म कुण्डलिका में उन सारे संकटों की एक सूची बना दी जो बाबेल के लिए निर्धारित किए गए थे, अर्थात् वे सभी भविष्यवाणी, जो बाबेल के विषय में की गई थी. 61 तत्पश्चात येरेमियाह ने सेराइयाह को संबोधित कर कहा, "यह ध्यान रखना कि बाबेल पहुंचते ही तुम यह सब उच्च स्वर में सबके समक्ष पढ़ोगे. 62 फिर तुम यह भी कहना, 'याहवेह ने इस स्थान के विषय में भविष्यवाणी की है, कि यह स्थान नष्ट कर दिया जाएगा, इस प्रकार कि इस स्थान पर कोई भी निवासी शेष न रह जाएगा; चाहे मनुष्य हो अथवा पशु और यह स्थायी उजाड़ हो जाएगा.' 63 जैसे ही तुम इस चर्म कुण्डली को पढ़ना समाप्त करोगे, तुम एक पत्थर इसमें बांध देना और इसे फरात नदी के मध्य में फेंक देना. 64 उसे फेंकते हुए तुम यह कहना, 'बाबेल इसी प्रकार डूब जाएगा और फिर कभी उठकर ऊपर न आएगा, क्योंकि मैं उस पर ऐसा संकट डालने पर हूं. और उसके लोग गिर जाएंगे.'" येरेमियाह के शब्द यहीं तक हैं.

52 जब सीदकियाहू ने शासन शुरू किया उसकी उम्र इक्कीस साल थी. येरूशलेम में उसने ग्यारह साल शासन किया. उसकी माता का नाम हामुतल था. वह लिबनाहवासी येरेमियाह की पुत्री थी. 2 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में बुरा था—वही सब, जो यहोइयाकिम ने किया था. 3 वस्तुतः येरूशलेम और यहूदिया ने याहवेह को इस सीमा तक क्रोधित कर दिया था, कि याहवेह ने उन्हें अपनी नज़रों से ही दूर कर दिया. सीदकियाहू ने बाबेल के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था. 4 तब उसके शासन के नवें साल के दसवें महीने के दसवें दिन बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने अपनी सारी सेना के साथ आकर येरूशलेम को घेर लिया, उसके आस-पास छावनी डाल दी और इसके चारों ओर घेराबंदी की दीवार बना ली. 5 राजा सीदकियाहू के शासन के ग्यारहवें साल तक नगर घिरा रहा. 6 चौथे महीने के नवें दिन से नगर में अकाल ऐसा भयंकर हो गया कि नागरिकों के लिए कुछ भी भोजन न बचा. 7 तब उन्होंने शहरपनाह को तोड़ दिया और रात में सारे योद्धा दो दीवारों के बीच के द्वार से, जो राजा की वाटिका के पास था, निकल भागे. कसदी इस समय नगर को घेरे हुए थे. ये योद्धा अराबाह की दिशा में आगे बढ़ते गए, 8 कसदी सेना ने राजा का पीछा किया और सीदकियाहू को येरीख़ो के मैदानों में जा पकड़ा. उसकी सारी सेना उसे छोड़कर भाग गई. 9 राजा को बंदी बनाकर वे उसे हामाथ में रिबलाह नामक स्थान पर बाबेल के राजा के समक्ष ले गए, वहां सीदकियाहू पर दंड की आज्ञा घोषित की गई. 10 बाबेल के राजा ने सीदकियाहू के समक्ष ही उसके पुत्रों का वध कर दिया, तब उसने रिबलाह में यहूदिया के सभी उच्चाधिकारियों का भी वध कर दिया. 11 इसके बाद बाबेल के राजा ने सीदकियाहू की आंखें निकाल लीं और उसे कांसे की सांकलों में बांधकर बाबेल ले गया और उसे बंदीगृह में डाल दिया, जहां वह मृत्युपर्यंत रखा गया. 12 पांचवें माह के दसवें दिन, जो वस्तुतः बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के राज्य-काल का उन्नीसवां वर्ष था, बाबेल के राजा का सेवक, अंगरक्षकों का प्रधान नेबुज़रादान येरूशलेम आ गया. 13 उसने याहवेह के भवन

में, राजमहल में और येरूशलेम के सभी भवनों में आग लगा दी. हर एक अच्छा
भवन भस्म कर दिया गया. 14 अंगरक्षकों के प्रधान के साथ आई हुई कसदियों
की सारी सेना ने येरूशलेम के चारों ओर बनाई हुई दीवारों को ढाह दिया. 15
तब अंगरक्षकों के प्रधान नेबुज़रादान ने प्रजा में से कुछ गरीब लोगों को, नगर में
शेष रह गए लोगों को, उन लोगों को, जो बाबेल के राजा के अधीन में हो गए
थे तथा वहां शेष रह गए शिल्पियों को अपने साथ बंधुआई में ले गया. 16
नेबुज़रादान ने कुछ गरीब लोगों को कृषि तथा द्राक्षा उद्यानों की देखभाल के
लिए वहीं रहने दिया. 17 याहवेह के भवन के कांस्य स्तंभ, कांस्य के आधार
तथा कांस्य जलबर्तनों को कसदी तोड़कर उनके टुकड़ों को बाबेल ले गए. 18
वे याहवेह के भवन के पवित्र बर्तन, फावड़े, चिलमचियां, दीपषमक तथा सभी
कांस्य बर्तन, जो मंदिर में आराधना के लिए अधीन होते थे, अपने साथ ले गए.
19 अंगरक्षकों का प्रधान अपने साथ शुद्ध स्वर्ण एवं चांदी के कटोरे, अग्निबर्तन,
चिलमचियां, बर्तन, दीवट, तवे, पेय बलि के कटोरे भी ले गया. 20 दो स्तंभ,
एक विशाल जल बर्तन, बारह कांस्य बैल, जो इस जल बर्तन के नीचे आधार के
रूप में रहते थे, जो राजा शलोमोन द्वारा याहवेह के भवन में अधीन किए जाने
के लिए निर्मित किए गए थे, इन सबका कांस्य अतुलनीय था. 21 हर एक
स्तंभ की ऊंचाई लगभग आठ मीटर तथा हर एक की परिधि साढ़े पांच मीटर
थी; तथा इनकी परत की मोटाई आठ सेंटीमीटर थी, ये स्तंभ खोखले थे. 22
इन सबके ऊपर शीर्ष था, जो कांस्य का बनाया गया था. हर एक शीर्ष की
ऊंचाई सवा दो मीटर थी, शीर्ष के चारों ओर अनारों की आकृति की जाली
निर्मित की गई थी. दूसरा स्तंभ भी इसी प्रकार का था, उस पर भी अनारों की
आकृति निर्मित थी. 23 अनारों की कुल संख्या सौ थी तथा इनमें से छियानवे
स्पष्टतः दिखाई देते थे; ये सभी चारों ओर की जाली में गढ़े गए थे. 24 इसके
बाद अंगरक्षकों के प्रधान ने प्रमुख पुरोहित सेराइयाह, सहपुरोहित ज़ेफनियाह,
तीन मंदिर अधिकारियों, 25 नगर में से सैनिकों के पर्यवेक्षक अधिकारी तथा
राजा के सात परामर्शकों को, जो वहीं नगर में थे, तथा सेना के आदेशक के
लेखापाल को, जो देश के लोगों को सेना में तैयार करता था तथा देश के साठ
व्यक्तियों को, जो उस समय नगर में पाए गए थे, अपने साथ बंदी बनाकर ले
गया. 26 नेबुज़रादान, जो अंगरक्षकों का प्रधान था, उसने इन सभी को रिबलाह
ले जाकर बाबेल के राजा के समक्ष प्रस्तुत कर दिया. 27 तब बाबेल के राजा ने
हामाथ देश के रिबलाह नगर में इन सभी का वध कर दिया. इस प्रकार यहूदिया
अपने देश से बंधुआई में ले जाया गया. 28 नबूकदनेज्ज़र द्वारा बंधुआई में ले
जाए गए व्यक्तियों की सूची इस प्रकार है: सातवें वर्ष में, तीन हजार तेईस
यहूदी; 29 नबूकदनेज्ज़र के राज्य-काल के अठारहवें वर्ष में, येरूशलेम से
आठ सौ बत्तीस व्यक्ति; 30 नबूकदनेज्ज़र के राज्य-काल के तेईसवें वर्ष में,
अंगरक्षकों के प्रधान नेबुज़रादान द्वारा सात सौ पैंतालीस यहूदी बंधुआई में ले
जाए गए. इन सभी व्यक्तियों की कुल संख्या चार हजार छः सौ पाई गई. 31
यहूदिया के राजा यहोइयाखिन के बंधुआई के सैंतीसवें वर्ष में, बारहवें माह के
पच्चीसवें दिन में बाबेल के राजा एवील-मेरोदाख ने अपने राज्य-काल के पहले
वर्ष में यहूदिया के राजा यहोइयाखिन पर कृपा प्रदर्शित की और उसे कारागार से
बाहर निकाल लिया. 32 उसने उससे कृपाभाव में वार्तालाप किया तथा उसके
लिए उन राजाओं से उच्चतर स्थान पर सिंहासन स्थापित किया, जो बाबेल में
इस समय उसके साथ थे. 33 फिर यहोइयाखिन ने कारागार के वस्त्र त्याग दिए.
साथ ही, वह मृत्युपर्यंत राजा के साथ भोजन करता रहा. 34 बाबेल के राजा की
ओर से उसे नियमित रूप से उपवेतन दिया जाता रहा, तथा मृत्युपर्यंत उसकी
दैनिक आवश्यकताएं पूर्ण की जाती रहीं.

विलापगीत

1 कैसी अकेली रह गई है, यह नगरी जिसमें कभी मनुष्यों का बाहुल्य हुआ
करता था! कैसा विधवा के सदृश स्वरूप हो गया है इसका, जो राष्ट्रों में
सर्वोत्कृष्ट हुआ करती थी! जो कभी प्रदेशों के मध्य राजकुमारी थी आज बंदी
बन चुकी है. 2 रात्रि में बिलख-बिलखकर रोती रहती है, अश्रु उसके गालों पर
सूखते ही नहीं. उसके अनेक-अनेक प्रेमियों में अब उसे सांत्वना देने के लिए
कोई भी शेष न रहा. उसके सभी मित्रों ने उससे छल किया है; वस्तुतः वे तो अब
उसके शत्रु बन बैठे हैं. 3 यहूदिया के निर्वासन का कारण था उसकी पीड़ा तथा
उसका कठोर दासत्व. अब वह अन्य राष्ट्रों के मध्य में ही है; किंतु उसके लिए
अब कोई विश्राम स्थल शेष न रह गया; उसकी पीड़ा ही की स्थिति में वे जो
उसका पीछा कर रहे थे, उन्होंने उसे जा पकड़ा. 4 ज़ियोन के मार्ग विलाप के
हैं, निर्धारित उत्सवों के लिए कोई भी नहीं पहुंच रहा. समस्त नगर प्रवेश द्वार
सुनसान हैं, पुरोहित कराह रहे हैं, नवयुवतियों को घसीटा गया है, नगरी का
कष्ट दारुण है. 5 आज उसके शत्रु ही अध्यक्ष बने बैठे हैं; आज समृद्धि उसके
शत्रुओं के पक्ष में है. क्योंकि याहवेह ने ही उसे पीड़ित किया है. क्योंकि उसके
अपराध असंख्य थे. उसके बालक उसके देखते-देखते ही शत्रु द्वारा बंधुआई में
ले जाए गए हैं. 6 ज़ियोन की पुत्री से उसके वैभव ने विदा ले ली है. उसके
अधिकारी अब उस हिरण-सदृश हो गए हैं, जिसे चरागाह ही प्राप्त नहीं हो रहा;
वे उनके समक्ष, जो उनका पीछा कर रहे हैं, बलहीन होकर भाग रहे हैं. 7 अब
इन पीड़ा के दिनों में, इन भटकाने के दिनों में येरूशलेम को स्मरण आ रहा है
वह युग, जब वह अमूल्य वस्तुओं की स्वामिनी थी. जब उसके नागरिक शत्रुओं
के अधिकार में जा पड़े, जब सहायता के लिए कोई भी न रह गया. उसके शत्रु
बड़े ही संतोष के भाव में उसे निहार रहे हैं, वस्तुतः वे उसके पतन का उपहास
कर रहे हैं. 8 येरूशलेम ने घोर पाप किया है परिणामस्वरूप वह अशुद्ध हो गई.
उन सबको उससे घृणा हो गई, जिनके लिए वह सामान्य थी, क्योंकि वे उसकी
निर्लज्जता के प्रत्यक्षदर्शी हैं; वस्तुतः अब तो वही कराहते हुए अपना मुख फेर
रही है. 9 उसकी गंदगी तो उसके वस्त्रों में थी; उसने अपने भविष्य का कोई
ध्यान न रखा. इसलिये उसका पतन ऐसा घोर है; अब किसी से भी उसे सांत्वना
प्राप्त नहीं हो रही. "याहवेह, मेरी पीड़ा पर दृष्टि कीजिए, क्योंकि जय शत्रु की
हुई है." 10 शत्रु ने अपनी भुजाएं उसके समस्त गौरव की ओर विस्तीर्ण कर
रखी है; उसके देखते-देखते जनताओं ने उसके पवित्र स्थान में बलात प्रवेश कर
लिया है, उस पवित्र स्थान में, जहां प्रवेश आपकी सभा तक के लिए वर्जित था.
11 उसके सभी नागरिक कराहते हुए भोजन की खोज कर रहे हैं; वे अपनी
मूल्यवान वस्तुओं का विनिमय भोजन के लिए कर रहे हैं, कि उनमें शक्ति का
संचार हो सके. "याहवेह, देखिए, ध्यान से देखिए, क्योंकि मैं घृणा का पात्र हो
चुकी हूं." 12 "तुम सभी के लिए, जो इस मार्ग से होकर निकल जाते हो, क्या
यह तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं? खोज करके देख लो. कि कहीं भी क्या मुझ
पर आई वेदना जैसी देखी गई है, मुझे दी गई वह दारुण वेदना, जो याहवेह ने
अपने उग्र कोप के दिन मुझ पर प्रभावी कर दी है? 13 "उच्च स्थान से याहवेह
ने मेरी अस्थियों में अग्नि लगा दी, यह अग्नि उन पर प्रबल रही. मेरे पैरों के
लिए याहवेह ने जाल बिछा दिया और उन्होंने मुझे लौटा दिया. उन्होंने मुझे सारे
दिन के लिए, निर्जन एवं मनोबल विहीन कर दिया है. 14 "मेरे अपराध मुझ पर
ही जूआ बना दिए गए हैं; उन्हें तो याहवेह ने गूंध दिया है. वे मेरे गले पर आ पड़े
हैं, मेरे बल को उन्होंने विफल कर दिया है. याहवेह ने मुझे उनके अधीन कर
दिया है, मैं जिनका सामना करने में असमर्थ हूं. 15 "प्रभु ने मेरे सभी शूर
योद्धाओं को अयोग्य घोषित कर दिया है; जो हमारी सेना के अंग थे, उन्होंने मेरे
विरुद्ध एक ऐसा दिन निर्धारित कर दिया है जब वह मेरे युवाओं को कुचल देंगे.
प्रभु ने यहूदिया की कुंवारी कन्या को ऐसे कुचल दिया है, जैसे रसकुंड में द्राक्षा
कुचली जाती है. 16 "यही सब मेरे रोने का कारण हैं और मेरे नेत्रों से हो रहा
अश्रुपात बहता है. क्योंकि मुझसे अत्यंत दूर है सांत्वना देनेवाला, जिसमें मुझमें
नवजीवन संचार करने की क्षमता है. मेरे बालक अब निस्सहाय रह गए हैं,
क्योंकि शत्रु प्रबल हो गया है." 17 ज़ियोन ने अपने हाथ फैलाए हैं, कोई भी
नहीं, जो उसे सांत्वना दे सके. याकोब के संबंध में याहवेह का आदेश प्रसारित
हो चुका है, कि वे सभी जो याकोब के आस-पास बने रहते हैं, वस्तुतः वे उसके
शत्रु हैं; उनके मध्य अब येरूशलेम एक घृणित वस्तु होकर रह गया है. 18
"याहवेह सच्चा हैं, फिर भी विद्रोह तो मैंने उनके आदेश के विरुद्ध किया है. अब
सभी लोग यह सुन लें; तथा मेरी इस वेदना को देख लें. मेरे युवक एवं युवतियां
बंधुआई में जा चुके हैं. 19 "मैंने अपने प्रेमियों को पुकारा, किंतु उन्होंने मुझे
धोखा दे दिया. मेरे पुरोहित एवं मेरे पूर्वज नगर में ही नष्ट हो चुके हैं, जब वे
स्वयं अपनी खोई शक्ति की पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से भोजन खोज रहे थे. 20
"याहवेह, मेरी ओर दृष्टि कीजिए! क्योंकि मैं पीड़ा में डूबी हुई हूं, अत्यंत प्रचंड
है मेरी आत्मा की वेदना, अपने इस विकट विद्रोह के कारण मेरे अंतर में मेरा
हृदय अत्यंत व्यग्र है. बाहर तो तलवार संहार में सक्रिय है; यहां आवास में मानो
मृत्यु व्याप्त है. 21 "उन्होंने मेरी कराहट सुन ली है, कोई न रहा जो मुझे
सांत्वना दे सके. मेरे समस्त शत्रुओं तक मेरे इस विनाश का समाचार पहुंच चुका
है; आपने जो किया है, उस पर वे आनंद मनाते हैं. उत्तम तो यह होता कि आप
उस दिन का सूत्रपात कर देते जिसकी आप पूर्वघोषणा कर चुके हैं, कि मेरे शत्रु
मेरे सदृश हो जाते. 22 "उनकी समस्त दुष्कृति आपके समक्ष प्रकट हो जाए;
आप उनके साथ वही व्यवहार करें, जैसा आपने मेरे साथ किया है मेरे समस्त
अपराध के परिणामस्वरूप. गहन है मेरी कराहट तथा शून्य रह गया है मेरा
मनोबल."

2 हमारे प्रभु ने कैसे अपने कोप में ज़ियोन की पुत्री को एक मेघ के नीचे डाल
दिया है! उन्होंने इस्राएल के वैभव को स्वर्ग से उठाकर पृथ्वी पर फेंक दिया
है; उन्होंने अपनी चरण चौकी को अपने क्रोध के अवसर पर स्मरण न रखा. 2
प्रभु ने याकोब के समस्त आवासों को निगल लिया है उन्होंने कुछ भी नहीं
छोड़ा है; अपने कोप में उन्होंने यहूदिया की पुत्री के गढ़ नगरों को भग्न कर
दिया है. उन्होंने राज्य तथा इसके शासकों को अपमानित किया है, उन्होंने उन
सभी को धूल में ला छोड़ा है. 3 उन्होंने उग्र क्रोध में इस्राएल के समस्त बल को
निरस्त कर दिया है. उन्होंने उनके ऊपर से अपना सुरक्षा देनेवाला दायां हाथ
खींच लिया है, जब शत्रु उनके समक्ष आ खड़ा हुआ था. वह याकोब में प्रचंड
अग्नि बन जल उठे जिससे उनके निकटवर्ती सभी कुछ भस्म हो गया. 4 एक
शत्रु के सदृश उन्होंने अपना धनुष खींचा; एक विरोधी के सदृश उनका दायां
हाथ तत्पर हो गया. ज़ियोन की पुत्री के शिविर में ही उन सभी का संहार कर
दिया; जो हमारी दृष्टि में मनभावने थे उन्होंने अपने कोप को अग्नि-सदृश उंडेल
दिया. 5 हमारे प्रभु ने एक शत्रु का स्वरूप धारण कर लिया है; उन्होंने इस्राएल
को निगल लिया है. उन्होंने समस्त राजमहलों को मिटा दिया है और इसके
समस्त गढ़ नगरों को उन्होंने नष्ट कर दिया है. यहूदिया की पुत्री में उन्होंने
विलाप एवं रोना बढ़ा दिया है. 6 अपनी कुटीर को उन्होंने ऐसे उजाड़ दिया है,
मानो वह एक उद्यान कुटीर था; उन्होंने अपने मिलने के स्थान को नष्ट कर
डाला है. याहवेह ने ज़ियोन के लिए उत्सव तथा शब्बाथ विस्मृत करने की
स्थिति ला दी है; उन्होंने अपने प्रचंड कोप में सम्राट तथा पुरोहित को घृणास्पद
बना दिया है. 7 हमारे प्रभु को अब अपनी ही वेदी से घृणा हो गई है और उन्होंने
पवित्र स्थान का त्याग कर दिया है. राजमहल की दीवारें अब शत्रु के अधीन
हो गई है; याहवेह के भवन में कोलाहल उठ रहा है मानो यह कोई निर्धारित
उत्सव-अवसर है. 8 यह याहवेह का संकल्प था कि ज़ियोन की पुत्री की दीवारें

तोड़ी जाएं. मापक डोरी विस्तीर्ण कर विनाश के लिए उन्होंने अपने हाथों को न
रोका. परिणामस्वरूप किलेबंदी तथा दीवार विलाप करती रही; वे वेदना-विलाप
में एकजुट हो गईं. 9 उसके प्रवेश द्वार भूमि में धंस गए; उन्होंने उसकी सुरक्षा
छड़ों को तोडकर नष्ट कर दिया है. उसके राजा एवं शासक अब राष्ट्रों में हैं,
नियम-व्यवस्था अब शून्य रह गई है, अब उसके भविष्यवक्ताओं को याहवेह
की ओर से प्रकाशन प्राप्त ही नहीं होता. 10 ज़ियोन की पुत्री के पूर्वज भूमि पर
मौन बैठे हुए हैं; उन्होंने अपने सिर पर धूल डाल रखी है तथा उन्होंने टाट
पहन ली है. येरूशलेम की युवतियों के सिर भूमि की ओर झुके हैं. 11 रोते-
रोते मेरे नेत्र अपनी ज्योति खो चुके हैं, मेरे उदर में मंथन हो रहा है; मेरा पित्त
भूमि पर बिखरा पड़ा है; इसके पीछे मात्र एक ही कारण है; मेरी प्रजा की पुत्री
का सर्वनाश, नगर की गलियों में मूर्च्छित पड़े हुए शिशु एवं बालक. 12 वे
अपनी-अपनी माताओं के समक्ष रोकर कह रहे हैं, "कहां है हमारा भोजन,
कहां है हमारा द्राक्षारस?" वे नगर की गली में घायल योद्धा के समान पड़े हैं,
अपनी-अपनी माताओं की गोद में पड़े हुए उनका जीवन प्राण छोड़ रहे है. 13
येरूशलेम की पुत्री, क्या कहूं मैं तुमसे, किससे करूं मैं तुम्हारी तुलना? ज़ियोन
की कुंवारी कन्या, तुम्हारी सांत्वना के लक्ष्य से किससे करूं मैं तुम्हारा साम्य?
तथ्य यह है कि तुम्हारा विध्वंस महासागर के सदृश व्यापक है. अब कौन तुम्हें
चंगा कर सकता है? 14 तुम्हारे भविष्यवक्ताओं ने तुम्हारे लिए व्यर्थ तथा झूठा
प्रकाशन देखा है; उन्होंने तुम्हारी पापिष्ठता को प्रकाशित नहीं किया, कि तुम्हारी
समृद्धि पुनःस्थापित हो जाए. किंतु वे तुम्हारे संतोष के लिए ऐसे प्रकाशन प्रस्तुत
करते रहें, जो व्यर्थ एवं भ्रामक थे. 15 वे सब जो इस ओर से निकलते हैं तुम्हारी
स्थिति को देखकर उपहास करते हुए; येरूशलेम की पुत्री पर सिर हिलाते तथा
विचित्र ध्वनि निकालते हैं: वे विचार करते हैं, "क्या यही है वह नगरी, जो परम
सौन्दर्यवती तथा समस्त पृथ्वी का उल्लास थी?" 16 तुम्हारे सभी शत्रु तुम्हारे
लिए अपमानपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हुए; विचित्र ध्वनियों के साथ दांत
पीसते हुए उच्च स्वर में घोषणा करते हैं, "देखो, देखो! हमने उसे निगल लिया
है! आह, कितनी प्रतीक्षा की है हमने इस दिन की; निश्चयतः आज वह दिन आ
गया है आज वह हमारी दृष्टि के समक्ष है." 17 याहवेह ने अपने लक्ष्य की पूर्ति
कर ही ली है; उन्होंने अपनी पूर्वघोषणा की निष्पत्ति कर दिखाई; वह घोषणा,
जो उन्होंने दीर्घ काल पूर्व की थी. जिस रीति से उन्होंने तुम्हें फेंक दिया उसमें
थोड़ी भी करुणा न थी, उन्होंने शत्रुओं के सामर्थ्य को ऐसा विकसित कर दिया,
कि शत्रु तुम्हारी स्थिति पर उल्लसित हो रहे हैं. 18 ज़ियोन की पुत्री की दीवार
उच्च स्वर में अपने प्रभु की दोहाई दो. दिन और रात्रि अपने अश्रुप्रवाह को
उग्र जलधारा-सदृश प्रवाहित करती रहो; स्वयं को कोई राहत न दो, और न
तुम्हारी आंखों को आराम. 19 उठो, रात्रि में दोहाई दो, रात्रि प्रहर प्रारंभ होते
ही; जल-सदृश उंडेल दो अपना हृदय अपने प्रभु की उपस्थिति में. अपनी
संतान के कल्याण के लिए अपने हाथ उनकी ओर बढ़ाओ, उस संतान के लिए,
जो भूख से हर एक गली के मोड़ पर मूर्छित हो रही है. 20 "याहवेह, ध्यान
से देखकर विचार कीजिए: कौन है वह, जिसके साथ आपने इस प्रकार का
व्यवहार किया है? क्या यह सुसंगत है कि स्त्रियां अपने ही गर्भ के फल को
आहार बनाएं, जिनका उन्होंने स्वयं ही पालन पोषण किया है? क्या यह उपयुक्त
है कि पुरोहितों एवं भविष्यवक्ताओं का संहार हमारे प्रभु के पवित्र स्थान में
किया जाए? 21 "सड़क की धूलि में युवाओं एवं वृद्धों के शव पड़े हुए हैं; मेरे
युवक, युवतियों का संहार तलवार से किया गया है. अपने कोप-दिवस में
आपने उनका निर्दयतापूर्वक संहार कर डाला है. 22 "आपने तो मेरे आतंकों
का आह्वान चारों ओर से इस ढंग से किया, मानो आप इन्हें किसी उत्सव का
आमंत्रण दे रहे हैं. यह सब याहवेह के कोप के दिन हुआ है, इसमें कोई भी
बचकर शेष न रह सका; ये वे सब थे, जिनका आपने अपनी गोद में रखकर
पालन पोषण किया था, मेरे शत्रुओं ने उनका सर्वनाश कर दिया है."

3 मैं वह व्यक्ति हूं, जिसने याहवेह के कोप-दण्ड में पीड़ा का साक्षात अनुभव
किया है. 2 उन्होंने हकालते हुए मुझे घोर अंधकार में डाल दिया है कहीं
थोड़ा भी प्रकाश दिखाई नहीं देता; 3 निश्चयतः बार-बार, सारे दिन उनका
कठोर हाथ मेरे विरुद्ध सक्रिय बना रहता है. 4 मेरा मांस तथा मेरी त्वचा गलते जा
रहे हैं और उन्होंने मेरी अस्थियों को तोड़ दिया है. 5 उन्होंने मुझे पकड़कर
कष्ट एवं कड़वाहट में लपेट डाला है. 6 उन्होंने मुझे इस प्रकार अंधकार में रहने
के लिए छोड़ दिया है मानो मैं दीर्घ काल से मृत हूं. 7 उन्होंने मेरे आस-पास
दीवार खड़ी कर दी है, कि मैं बचकर पलायन न कर सकूं; उन्होंने मुझे भारी
बेड़ियों में बांध रखा है. 8 मैं सहायता की दोहाई अवश्य देता हूं, किंतु वह मेरी
पुकार को अवरुद्ध कर देते हैं. 9 उन्होंने मेरे मार्गों को पत्थर लगाकर बाधित कर
दिया है; उन्होंने मेरे मार्गों को विकृत बना दिया है. 10 वह एक ऐसा रीछ है,
ऐसा सिंह है, जो मेरे लिए घात लगाए हुए बैठा है, 11 मुझे भटका कर मुझे
टुकड़े-टुकड़े कर डाला और उसने मुझे निस्सहाय बना छोड़ा है. 12 उन्होंने
अपना धनुष चढ़ाया तथा मुझे अपने बाणों का लक्ष्य बना लिया. 13 अपने
तरकश से बाण लेकर उन्होंने उन बाणों से मेरा हृदय बेध दिया. 14 सभी के
लिए अब तो मैं उपहास पात्र हूं; सारे दिन उनके व्यंग्य-बाण मुझ पर छोड़े जाते
हैं. 15 उन्होंने मुझे कड़वाहट से भर दिया है उन्होंने मुझे नागदौने से सन्तृप्त कर
रखा है. 16 उन्होंने मुझे कंकड़ों पर दांत चलाने के लिए विवश कर दिया है;
मुझे भस्म के ढेर में जा छिपने के लिए विवश कर दिया है. 17 शांति ने मेरी
आत्मा का साथ छोड़ दिया है; मुझे तो स्मरण ही नहीं रहा कि सुख-आनन्द क्या
होता है. 18 इसलिये मुझे यही कहना पड़ रहा है, "न मुझमें धैर्य शेष रहा है
और न ही याहवेह से कोई आशा." 19 स्मरण कीजिए मेरी पीड़ा और मेरी
भटकन, वह नागदौन तथा वह कड़वाहट. 20 मेरी आत्मा को इसका स्मरण
आता रहता है, मेरा मनोबल शून्य हुआ जा रहा है. 21 मेरी आशा मात्र इस स्मृति
के आधार पर जीवित है: 22 याहवेह का करुणा-प्रेम, के ही कारण हम भस्म
नही होते! कभी भी उनकी कृपा का ह्रास नहीं होता. 23 प्रति प्रातः वे नए पाए
जाते हैं; महान है आपकी विश्वासयोग्यता. 24 मेरी आत्मा इस तथ्य की पुष्टि
करती है, "याहवेह मेरा अंश हैं; इसलिये उनमें मेरी आशा रखूंगा." 25 याहवेह
के प्रिय पात्र वे हैं, जो उनके आश्रित हैं, वे, जो उनके खोजी हैं; 26 उपयुक्त यही
होता है कि हम धीरतापूर्वक याहवेह द्वारा उद्धार की प्रतीक्षा करें. 27 मनुष्य के
लिए हितकर यही है कि वह आरंभ ही से अपना जूआ उठाए. 28 वह एकाकी
हो शांतिपूर्वक इसे स्वीकार कर ले, जब कभी यह उस पर आ पड़ता है. 29 वह
अपना मुख धूलि पर ही रहने दे— आशा कभी मृत नहीं होती. 30 वह अपना
गाल उसे प्रस्तुत कर दे, जो उस प्रहार के लिए तैयार है, वह समस्त अपमान
स्वीकार कर ले. 31 प्रभु का परित्याग चिरस्थायी नहीं हुआ करता. 32 यद्यपि
वह पीड़ा के कारण तो हो जाते हैं, किंतु करुणा का सागर भी तो वही हैं, क्योंकि
अथाह होता है उनका करुणा-प्रेम. 33 पीड़ा देना उनका सुख नहीं होता न ही
मनुष्यों को यातना देना उनका आनंद होता है. 34 पृथ्वी के समस्त बंदियों का
दमन, 35 परम प्रधान की उपस्थिति में न्याय-वंचना, 36 किसी की न्याय-दोहाई
में की गई विकृति में याहवेह का समर्थन कदापि नहीं होता? 37 यदि स्वयं प्रभु
ने कोई घोषणा न की हो, तो किसमें यह सामर्थ्य है, कि जो कुछ उसने कहा है,
वह पूरा होगा? 38 क्या यह तथ्य नहीं कि अनुकूल अथवा प्रतिकूल, जो कुछ
घटित होता है, वह परम प्रधान के बोलने के द्वारा ही होता है? 39 भला कोई
जीवित मनुष्य अपने पापों के दंड के लिए परिवाद कैसे कर सकता है? 40
आइए हम अपनी नीतियों का परीक्षण करें तथा अपने याहवेह की ओर लौट
चलें: 41 आइए हम अपने हृदय एवं अपनी बांहें परमेश्वर की ओर उन्मुख करें

तथा अपने हाथ स्वर्गिक परमेश्वर की ओर उठाएं: 42 "हमने अपराध किए
हैं, हम विद्रोही हैं, आपने हमें क्षमा प्रदान नहीं की है. 43 "आपने स्वयं को
कोप में भरकर हमारा पीछा किया; निर्दयतापूर्वक हत्यायें की हैं. 44 आपने
स्वयं को एक मेघ में लपेट रखा है, कि कोई भी प्रार्थना इससे होकर आप तक
न पहुंच सके. 45 आपने हमें राष्ट्रों के मध्य कीट तथा कूड़ा बना छोड़ा है.
46 "हमारे सभी शत्रु बेझिझक हमारे विरुद्ध निंदा के शब्द उच्चार रहे हैं. 47
आतंक, जोखिम, विनाश तथा विध्वंस हम पर आ पड़े हैं." 48 मेरी प्रजा के इस
विनाश के कारण मेरे नेत्रों के अश्रुप्रवाह नदी सदृश हो गए हैं. 49 बिना किसी
विश्रान्ति मेरा अश्रुपात होता रहेगा, 50 जब तक स्वर्ग से याहवेह इस ओर
दृष्टिपात न करेंगे. 51 अपनी नगरी की समस्त पुत्रियों की नियति ने मेरे नेत्रों को
पीड़ित कर रखा है. 52 उन्होंने, जो अकारण ही मेरे शत्रु हो गए थे, पक्षी सदृश
मेरा अहेर किया है. 53 उन्होंने तो मुझे गड्ढे में झोंक मुझ पर पत्थर लुढ़का दिए
हैं; 54 जब जल सतह मेरे सिर तक पहुंचने लगी, मैं विचार करने लगा, अब मैं
मिट जाऊंगा. 55 गड्ढे से मैंने, याहवेह आपकी दोहाई दी. 56 आपने मेरी इस
दोहाई सुन ली है: "मेरी विमुक्ति के लिए की गई मेरी पुकार की ओर से, अपने
कान बंद न कीजिए." 57 जब मैंने आपकी दोहाई दी, आप निकट आ गए;
आपने आश्वासन दिया, "डरो मत." 58 प्रभु आपने मेरा पक्ष लेकर; मेरे जीवन
को सुरक्षा प्रदान की है. 59 याहवेह, आपने वह अन्याय देख लिया है, जो मेरे
साथ किया गया है. अब आप मेरा न्याय कीजिए! 60 उनके द्वारा लिया गया
बदला आपकी दृष्टि में है, उनके द्वारा रचे गए सभी षड़्यंत्र आपको ज्ञात हैं. 61
याहवेह, आपने उनके द्वारा किए गए व्यंग्य सुने हैं, उनके द्वारा रचे गए सभी
षड़्यंत्र आपको ज्ञात हैं— 62 मेरे हत्यारों के हृदय में सारे दिन जो विचार
उभरते हैं होंठों से निकलते हैं, मेरे विरुद्ध ही होते हैं. 63 आप ही देख लीजिए,
उनका उठना-बैठना, मैं ही हूं उनका व्यंग्य-गीत. 64 याहवेह, उनके कृत्यों के
अनुसार, उन्हें प्रतिफल तो आप ही देंगे. 65 आप उनके हृदय पर आवरण डाल
देंगे, उन पर आपका शाप प्रभावी हो जाएगा! 66 याहवेह, आप अपने स्वर्गलोक
से उनका पीछा कर उन्हें नष्ट कर देंगे.

4 सोना खोटा कैसे हो गया, सोने में खोट कैसे! हर एक गली के मोड़ पर
पवित्र पत्थर बिखरे पड़े हैं. 2 ज़ियोन के वे उत्कृष्ट पुत्र, जिनका मूल्य
उत्कृष्ट स्वर्ण के तुल्य है, अब मिट्टी के पात्रों-सदृश कुम्हार की हस्तकृति माने
जा रहे हैं! 3 सियार अपने बच्चों को स्तनपान कराती है, किंतु मेरी प्रजा की
पुत्री क्रूर हो चुकी है, मरुभूमि के शुतुरमुर्गों के सदृश. 4 अतिशय तृष्णा के
कारण दूधमुंहे शिशु की जीभ उसके तालू से चिपक गई है; बालक भोजन की
याचना करते हैं, किंतु कोई भी भोजन नहीं दे रहा. 5 जिनका आहार उत्कृष्ट
भोजन हुआ करता था, आज गलियों में नष्ट हुए जा रहे हैं. जिनके परिधान
बैंगनी वस्त्र हुआ करते थे, आज भस्म में बैठे हुए हैं. 6 मेरी प्रजा की पुत्री पर
पड़ा अधर्म सोदोम के दंड से कहीं अधिक प्रचंड है, किसी ने हाथ तक नहीं
लगाया और देखते ही देखते उसका सर्वनाश हो गया. 7 उस नगरी के शासक तो
हिम से अधिक विशुद्ध, दुग्ध से अधिक श्वेत थे, उनकी देह मूंगे से अधिक
गुलाबी, उनकी देह रचना नीलम के सौंदर्य से भी अधिक उत्कृष्ट थी. 8 अब
उन्हीं के मुखमंडल श्यामवर्ण रह गए हैं; मार्ग चलते हुए उन्हें पहचानना संभव
नहीं रहा. उनकी त्वचा सिकुड़ कर अस्थियों से चिपक गई है; वह काठ-सदृश
शुष्क हो चुकी है. 9 वे ही श्रेष्ठतर कहे जाएंगे, जिनकी मृत्यु तलवार प्रहार से हुई
थी, उनकी अपेक्षा, जिनकी मृत्यु भूख से हुई; जो घुल-घुल कर कूच कर गए
क्योंकि खेत में उपज न हो सकी थी. 10 ये उन करुणामयी माताओं के ही हाथ
थे, जिन्होंने अपनी ही संतान को अपना आहार बना लिया, जब मेरी प्रजा की
पुत्री विनाश के काल में थी ये बालक उनका आहार बनाए गए थे. 11 याहवेह ने
अपने कोप का प्रवाह पूर्णतः निर्बाध छोड़ दिया. उन्होंने अपना भड़का कोप
उंडेल दिया और फिर उन्होंने ज़ियोन में ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दी, जिसने
इसकी नीवों को ही भस्म कर दिया. 12 न तो संसार के राजाओं को, और न ही
पृथ्वी के निवासियों को इसका विश्वास हुआ, कि विरोधी एवं शत्रु येरूशलेम के
प्रवेश द्वारों से प्रवेश पा सकेगा. 13 इसका कारण था उसके भविष्यवक्ताओं के
पाप तथा उसके पुरोहितों की पापिष्ठता, जिन्होंने नगर के मध्य ही धर्मियों का
रक्तपात किया था. 14 अब वे नगर की गलियों में दृष्टिहीनों-सदृश भटक रहे हैं;
वे रक्त से ऐसे दूषित हो चुके हैं कि कोई भी उनके वस्त्रों को स्पर्श करने का
साहस नहीं कर पा रहा. 15 उन्हें देख लोग चिल्ला उठते है, "दूर, दूर अशुद्ध!
दूर, दूर! मत छूना उसे!" अब वे छिपते, भागते भटक रहे हैं, राष्ट्रों में सभी यही
कहते फिरते हैं, "अब वे हमारे मध्य में निवास नहीं कर सकते." 16 उन्हें तो
याहवेह ने ही इस तरह बिखरा दिया है; अब वे याहवेह के कृपापात्र नहीं रह
गए. न तो पुरोहित ही सम्मान्य रह गए हैं, और न ही पूर्वज किसी कृपा के योग्य.
17 हमारे नेत्र दृष्टिहीन हो गए, सहायता की आशा व्यर्थ सिद्ध हुई; हमने उस राष्ट्र
से सहायता की आशा की थी, जिसमें हमारी सहायता की क्षमता ही न थी. 18
उन्होंने इस रीति से हमारा पीछा करना प्रारंभ कर दिया, कि मार्ग पर हमारा
आना-जाना दूभर हो गया; हमारी मृत्यु निकट आती गई, हमारा जीवनकाल
सिमटता चला गया, वस्तुतः हमारा जीवन समाप्त ही हो गया था. 19 वे, जो
हमारा पीछा कर रहे थे, उनकी गति आकाशगामी गरूड़ों से भी द्रुत थी; उन्होंने
पर्वतों तक हमारा पीछा किया और निर्जन प्रदेश में वे हमारी घात में रहे. 20
याहवेह द्वारा अभिषिक्त, हमारे जीवन की सांस उनके फन्दों में जा फंसे. हमारा
विचार तो यह रहा था, कि उनकी छत्रछाया में हम राष्ट्रों के मध्य निवास करते
रहेंगे. 21 एदोम की पुत्री, तुम, जो उज़ देश में निवास करती हो, हर्षोल्लास में
मगन हो जाओ. प्याला तुम तक भी पहुंचेगा; तुम मदोन्मत्त होकर पूर्णतः निर्वस्त्र
हो जाओगी. 22 ज़ियोन की पुत्री, निष्पन्न हो गया तुम्हारी पापिष्ठता का दंड;
अब वह तुम्हें निर्वासन में रहने न देंगे. किंतु एदोम की पुत्री, वह तुम्हारी पापिष्ठता
को दंडित करेंगे, वह तुम्हारे पाप प्रकट कर सार्वजनिक कर देंगे.

5 याहवेह, स्मरण कीजिए हमने क्या-क्या सहा है; हमारी निंदा पर ध्यान
दीजिए. 2 हमारा भाग अपरिचितों को दिया गया है, परदेशियों ने हमारे
आवास अपना लिए हैं. 3 हम अनाथ एवं पितृहीन हो गए हैं, हमारी माताओं की
स्थिति विधवाओं के सदृश हो चुकी है. 4 यह आवश्यक है कि हम पेय जल के
मूल्य का भुगतान करें; जो काठ हमें दिया जाता है, उसका क्रय किया जाना
अनिवार्य है. 5 वे जो हमारा पीछा कर रहे हैं, हमारे निकट पहुंच चुके हैं; हम
थक चुके हैं, हमें विश्राम प्राप्त न हो सका है. 6 पर्याप्त भोजन के लिए हमने
मिस्र तथा अशशूर की अधीनता स्वीकार कर ली है. 7 पाप तो उन्होंने किए, जो
हमारे पूर्वज थे, और वे कूच कर गए अब हम हैं, जो उनकी पापिष्ठता का
सम्वहन कर रहे हैं. 8 जो कभी हमारे दास थे, आज हमारे शासक बने हुए हैं,
कोई भी नहीं, जो हमें उनकी अधीनता से विमुक्त करे. 9 अपने प्राणों का
जोखिम उठाकर हम अपने भोजन की व्यवस्था करते हैं, क्योंकि निर्जन प्रदेश में
तलवार हमारे पीछे लगी रहती है. 10 दुर्भिक्ष की ऊष्मा ने हमारी त्वचा ऐसी
कालिगर्द हो गई है, मानो यह तंदूर है. 11 ज़ियोन में स्त्रियां भ्रष्ट कर दी गई हैं,
यहूदिया के नगरों की कन्याएं. 12 शासकों को उनके हाथों से लटका दिया
गया है; पूर्वजों को कोई सम्मान नहीं दिया जा रहा. 13 युवाओं को चक्की
चलाने के लिए बाध्य किया जा रहा है; किशोर लट्ठों के बोझ से लड़खड़ा
रहे हैं. 14 प्रौढ़ नगर प्रवेश द्वार से नगर छोड़ जा चुके हैं; युवाओं का संबंध
संगीत से टूट चुका है. 15 हमारे हृदय में अब कोई उल्लास न रहा है; नृत्य की
अभिव्यक्ति अब विलाप हो गई है. 16 हमारे सिर का मुकुट धूल में जा पड़ा है.
धिक्कार है हम पर, हमने पाप किया है! 17 परिणामस्वरूप हमारे हृदय रुग्ण हो
गए हैं, इन्हीं से हमारे नेत्र धुंधले हो गए हैं 18 इसलिये कि ज़ियोन पर्वत निर्जन

हो चुका है, वहां लोमड़ियों को विचरण करते देखा जा सकता है. 19 किंतु
याहवेह, आपका शासन चिरकालिक है; पीढ़ी से पीढ़ी तक आपका सिंहासन
स्थायी रहता है. 20 आपने हमें सदा के लिए विस्मृत क्यों कर दिया है? आपका
यह परित्याग इतना दीर्घकालीन क्यों? 21 हमसे अपने संबंध पुनःस्थापित कर
लीजिए, कि हमारी पुनःस्थापना हो जाए; याहवेह, वही पूर्वयुग लौटा लाइए 22
हां, यदि आपने पूर्णतः हमारा परित्याग नहीं किया है तथा आप हमसे अतिशय
नाराज नहीं हो गए हैं.

यहेजकेल

1 यह घटना मेरी बंधुआई के तीसवें वर्ष के चौथे माह के पांचवें दिन की
है, जब मैं बंदियों के साथ खेबर नदी के तट पर था, तब आकाश खुल गया
और मुझे परमेश्वर का दर्शन हुआ. 2 —यह राजा यहोयाकिन के बंधुआई के
पांचवें वर्ष के चौथे माह के पांचवें दिन की घटना है— 3 बाबेलवासियों के देश
में खेबर नदी के तट पर, बुज़ी के पुत्र पुरोहित यहेजकेल के पास याहवेह का यह
वचन आया. वहां याहवेह का हाथ उस पर था. 4 मैंने देखा कि उत्तर दिशा से
एक बड़ी आंधी आ रही थी—कड़कती बिजली के साथ एक बहुत बड़ा बादल
और चारों तरफ तेज प्रकाश था. आग का बीच वाला भाग तपता हुआ लाल
धातु के समान दिख रहा था, 5 और आग में चार जीवित प्राणी जैसे दिख रहे थे.
दिखने में उनका स्वरूप मानव जैसे था, 6 पर इनमें से हर एक के चार-चार मुंह
और चार-चार पंख थे. 7 उनके पैर सीधे थे; उनके पांव बछड़े के खुर के समान
थे और चिकने कांसे के समान चमक रहे थे. 8 उनके चारों तरफ पंखों के नीचे
उनके मनुष्य के समान हाथ थे. उन चारों के मुंह और पंख थे, 9 उनके पंख
एक दूसरे के पंख को छू रहे थे. हर एक आगे सीधा जा रहा था, और वे बिना
मुड़े आगे बढ़ रहे थे. 10 उनका मुंह इस प्रकार दिखता था: चारों में से हर एक
का एक मुंह मनुष्य का था, और दाहिने तरफ हर एक का मुंह सिंह का, और
बायें तरफ हर एक मुंह बैल का; और हर एक का एक गरूड़ का मुंह भी था. 11
इस प्रकार उनके मुंह थे. उनमें से हर एक के दो पंख ऊपर की ओर फैले थे,
और ये पंख अपने दोनों तरफ के प्राणी को छू रहे थे और हर एक अन्य दो पंखों
से अपने शरीर को ढांपे हुए थे. 12 हर एक आगे सीधा जा रहा था. जहां कहीं
भी आत्मा जाती थी, वे भी बिना मुड़े उधर ही जाते थे. 13 उन जीवित प्राणियों
का रूप आग के जलते कोयलों या मशालों के समान था. वह आग प्राणियों के
बीच इधर-उधर खसक रही थी; यह चमकीला था, और इससे बिजली चमक
रही थी. 14 वे प्राणी बिजली की चमक समान तेजी से इधर-उधर हो रहे थे. 15
जब मैं जीवित प्राणियों को देख रहा था, तब मैंने देखा कि उन चार मुहों वाले
हर एक जीवित प्राणियों के बाजू में एक-एक पहिया था. 16 उन पहियों का रूप
और बनावट इस प्रकार थी: वे पुखराज के समान चमक रहे थे, और चारों एक
जैसे दिखते थे. हर एक पहिया ऐसे बनाया गया दिखता था मानो एक पहिये के
भीतर दूसरा पहिया हो. 17 जब वे आगे बढ़ते थे, तो वे चारों दिशाओं में उस
दिशा की ओर जाते थे, जिस दिशा में प्राणियों का चेहरा होता था; जब प्राणी
चलते थे, तो पहिये अपनी दिशा नहीं बदलते थे. 18 इन पहियों के घेरे ऊंचे
और अद्भुत थे, और चारों पहियों के घेरो में सब तरफ आंखें ही आंखें थी. 19
जब वे जीवित प्राणी आगे बढ़ते थे, तब उनके बाजू के पहिये भी आगे बढ़ते थे;
और जब वे जीवित प्राणी भूमि पर से ऊपर उठते थे, तो पहिये भी ऊपर उठते थे.
20 जहां कहीं भी आत्मा जाती थी, वे भी जाते थे, और वे पहिये उनके साथ
ऊपर उठते थे, क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा उन पहियों में थी. 21 जब
वे प्राणी आगे बढ़ते थे, तो ये भी आगे बढ़ते थे; जब वे प्राणी खड़े होते थे, तो ये
भी खड़े हो जाते थे; और जब वे प्राणी भूमि से ऊपर उठते थे, तो ये पहिये भी
उनके साथ ऊपर उठते थे, क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा इन पहियों में
थी. 22 सजीव प्राणियों के सिर के ऊपर जो फैला हुआ था, वह गुम्बज के
समान दिखता था, और स्फटिक के समान चमक रहा था, और अद्भुत था. 23
गुम्बज के नीचे उनके पंख एक दूसरे की ओर फैले हुए थे, और हर एक प्राणी
के दो पंख से उनके अपने शरीर ढके हुए थे. 24 जब वे प्राणी आगे बढ़ते थे, तो
मैंने सुना, उनके पंखों से तेजी से बहते पानी के गर्जन जैसी, सर्वशक्तिमान के
आवाज जैसी, सेना के कोलाहल जैसी आवाज आती थी. जब वे खड़े होते थे,
तो वे अपने पंख नीचे कर लेते थे. 25 जब वे खड़े थे और उनके पंख झुके
हुए थे, तब उनके सिर के ऊपर स्थित गुम्बज के ऊपर से एक आवाज आई.
26 उनके सिर के ऊपर स्थित गुम्बज के ऊपर कुछ ऐसा था जो नीलमणि के
सिंहासन जैसे दिखता था, और इस ऊंचे सिंहासन के ऊपर मनुष्य के जैसा कोई
दिख रहा था. 27 मैंने देखा कि उसके कमर से ऊपर वह चमकते धातु की तरह
दिखता था, मानो वह आग से भरा हो, और उसके कमर से नीचे वह आग के
समान दिखता था, और वह चमकते प्रकाश से घिरा हुआ था. 28 जैसे किसी
बरसात के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही उसके चारों ओर
प्रकाश की चमक थी. याहवेह के तेज के जैसा यह रूप था. जब मैंने उसे देखा,
तो मैं मुंह के बल ज़मीन पर गिरा, और मैंने किसी के बात करने की आवाज
सुनी.

2 उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, मैं
तुमसे बात करूंगा." 2 जैसे ही उसने मुझसे बात की, आत्मा मुझमें समा
गया और मुझे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया, और मैंने उसे मुझसे बातें करते
सुना. 3 उसने कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएलियों के पास भेज रहा हूं,
जो एक विद्रोही जाति है; और जिन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है; वे और उनके
पूर्वज आज तक मेरे विरुद्ध विद्रोह करते आ रहे हैं. 4 जिन लोगों के पास मैं तुम्हें
भेज रहा हूं, वे ढीठ और हठीं हैं. तुम उनसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है.' 5 और चाहे वे सुनें या न सुनें—क्योंकि वे तो विद्रोही लोग हैं
ही—तौभी वे जान जाएं कि उनके बीच एक भविष्यवक्ता है. 6 और हे मनुष्य
के पुत्र, तुम, उनसे या उनकी बातों से न डरना. डरना मत, यद्यपि कंटीली
झाड़ियां और कांटे तुम्हारे चारों तरफ हैं और तुम बिच्छुओं के बीच रहते हो. वे
क्या कहते हैं, उन बातों से न डरना या उनसे भयभीत न होना, यद्यपि वे एक
विद्रोही लोग हैं. 7 तुम उन्हें मेरी बातें अवश्य बताओ, चाहे वे सुनें या न सुनें,
क्योंकि वे तो विद्रोही हैं. 8 पर हे मनुष्य के पुत्र, मैं तुमसे जो कहता हूं, उसे
सुनो. इन विद्रोही लोगों की तरह विद्रोह न करना; अपना मुख खोलो और मैं
तुम्हें जो दे रहा हूं, उसे खाओ." 9 तब मैंने देखा कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा.
उस हाथ में एक पुस्तक थी, 10 जिसे उसने मेरे सामने खोली. उस पुस्तक के
दोनों तरफ विलाप, शोक और दुःख की बातें लिखी हुई थी.

3 और उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे सामने जो है, उसे खाओ,
इस पुस्तक को खाओ; और तब जाकर इस्राएल के लोगों से बातें करो." 2
इसलिये मैंने अपना मुंह खोला, और उसने मुझे खाने के लिये वह पुस्तक दिया.
3 तब उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, जो पुस्तक मैं तुम्हें दे रहा हूं, उसे
खाओ और अपना पेट भर लो." अतः मैंने उसे खा लिया, और मेरे मुंह में वह
शहद के जैसी मीठी लगी. 4 तब उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, अब
इस्राएल के लोगों के पास जाओ और उन्हें मेरी बातें बताओ. 5 तुम्हें किसी ऐसे
लोगों के पास नहीं भेजा जा रहा है, जिनकी बोली अस्पष्ट और भाषा अनोखी
हो, पर तुम्हें इस्राएल के लोगों के पास भेजा जा रहा है— 6 अस्पष्ट बोली और
अनोखी भाषावाले बहुत से लोगों के पास नहीं, जिनकी बातें तू समझ न सके.
निश्चित रूप से, यदि मैं तुम्हें इस प्रकार के लोगों के बीच भेजता, तो वे तुम्हारी
सुनते. 7 परंतु इस्राएल के लोग तुम्हारी बातों को सुनना नहीं चाहते क्योंकि वे
मेरी बातों को सुनना नहीं चाहते; सारे इस्राएलियों ने अपने मन को कठोर और
अपने आपको हठीला बना लिया है. 8 पर मैं तुम्हें उनके जैसा न झुकनेवाला
और कठोर बना दूंगा. 9 मैं तुम्हारे माथे को बहुत कठोर बना दूंगा, चकमक
पत्थर से भी कठोर. तुम उनसे न डरना या उनसे भयभीत न होना, यद्यपि वे एक
विद्रोही लोग हैं." 10 फिर उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, जो बातें मैं
तुमसे कहता हूं, उन्हें ध्यान से सुन और अपने हृदय में रख. 11 बंधुआई में गये
अपने लोगों के पास जाओ और उनसे बात करो. उनसे कहो, 'परम प्रधान

याहवेह का यह कहना है,' चाहे वे सुनें या न सुनें." 12 तब आत्मा ने मुझे
ऊपर उठाया, और मैंने अपने पीछे एक तेज गड़गड़ाहट की आवाज सुनी, जब
याहवेह का तेज उस जगह से उठा जहां वह था. 13 यह उन जीवित प्राणियों के
पंखों की आवाज थी, जो एक दूसरे से रगड़ खा रहे थे और उन पहियों की
आवाज थी, जो उनके बाजू में थे; यह एक तेज गड़गड़ाहट की आवाज थी. 14
तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया और दूर ले गया, और मेरा मन कड़वाहट एवं
क्रोध से भर गया, और याहवेह का मजबूत हाथ मुझ पर था. 15 मैं बंधुआ लोगों
के पास आया, जो खेबर नदी के पास तेल-अबीब नगर में रहते थे. और जहां वे
रहते थे, वहां मैं बहुत दुःखी होकर उनके बीच सात दिन तक बैठा रहा. 16 सात
दिन के अंत में याहवेह का यह वचन मेरे पास आया, 17 "हे मनुष्य के पुत्र, मैंने
तुम्हें इस्राएल के लोगों के लिये एक पहरेदार ठहराया है; इसलिये जो बात मैं
कहता हूं, उसे सुन और उन्हें मेरी ओर से चेतावनी दे. 18 जब मैं एक दुष्ट व्यक्ति
से कहूं, 'तुम निश्चय मरोगे,' और तुम उसका प्राण बचाने के लिये उसे चेतावनी
न दो या उसे उसके बुरे कार्यों को छोड़ने के लिये न कहो, तो वह दुष्ट व्यक्ति
अपने पाप में तो मरेगा ही, पर मैं तुम्हें उसके खून का ज़िम्मेदार ठहराऊंगा. 19
पर यदि तुम उस दुष्ट व्यक्ति को चेतावनी देते हो और वह अपनी दुष्टता या बुरे
कार्यों को नहीं छोड़ता, तब तो वह अपने पाप में मरेगा, पर तुम अपने आपको
बचा लोगे. 20 "इसी प्रकार, जब कोई धर्मी व्यक्ति अपने धर्मीपन को छोड़कर
बुरे कार्य करने लगे और मैं उसके सामने रोड़ा अटकाऊं, तो वह मर जाएगा.
क्योंकि तुमने उसे नहीं चेताया, इसलिये वह अपने पाप में मर जाएगा, और जो
धर्मी काम वह व्यक्ति किया होगा, वह याद किया नहीं जाएगा, और मैं तुमको
उसके खून का ज़िम्मेदार ठहराऊंगा. 21 पर यदि तुम उस धर्मी व्यक्ति को पाप
न करने की चेतावनी देते हो और वह पाप नहीं करता है, तब वह निश्चित रूप
से जीवित रहेगा, क्योंकि उसने चेतावनी पर ध्यान दिया और तुम अपने आपको
बचा लोगे." 22 वहां याहवेह का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझसे कहा,
"उठकर मैदान में जा और वहां मैं तुमसे बातें करूंगा." 23 इसलिये मैं उठा और
बाहर मैदान में चला गया. मैंने देखा कि याहवेह का तेज वहां था; यह तेज ठीक
वैसा ही था, जैसा मैंने खेबर नदी के किनारे देखा था, और मैं मुख के बल गिर
पड़ा. 24 तब आत्मा मुझमें आया और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया. वह
मुझसे कहने लगा: "जाओ और अपने आपको अपने घर के अंदर बंद कर लो.
25 और हे मनुष्य के पुत्र, वे तुम्हें रस्सियों से बांध देंगे, ताकि तुम बाहर लोगों
के बीच न जा सको. 26 मैं तुम्हारे जीभ को तुम्हारे तालू से चिपका दूंगा ताकि
तुम चुप रहो और उनको डांट न सको, क्योंकि वे एक विद्रोही लोग हैं. 27 परंतु
जब मैं तुमसे बातें करूंगा, तो मैं तुम्हारे मुंह को खोल दूंगा और तुम उनसे कहोगे,
'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है.' जो कोई सुनना चाहे, वह सुने, और जो
कोई सुनना न चाहे, वह न सुने; क्योंकि वे एक विद्रोही लोग हैं.

4 "अब, हे मनुष्य के पुत्र, तुम एक मिट्टी की ईंट लो, उसे अपने सामने रखो
ओर उस पर येरूशलेम शहर का चित्र बनाओ. 2 तब इसकी घेराबंदी करो:
इसके विरुद्ध घेराबंदी की रचना करो, इस पर एक ढलान बनाओ, इसके विरुद्ध
शिविर खड़े करो और इसके चारों ओर युद्ध के यंत्र लगाओ. 3 तब लोहे की
एक थाली लो, और इसे अपने और शहर के बीच एक लोहे की दीवार के रूप में
रखो और अपना मुंह इसकी ओर करो. यह घेराबंदी में होगा, और तुम इस पर
घेरा डालोगे. यह इस्राएल के लोगों के लिये एक चिन्ह होगा. 4 "तब तुम
अपनी बायीं करवट पर लेट जाओ और इस्राएल के लोगों के पाप को अपने
ऊपर रखो. तुम्हें अपने करवट पर लेटे रहकर काफ़ी दिनों तक उनके पाप का
बोझ सहना है. 5 उन्होंने जितने साल पाप में लगाए हैं, मैंने उतने ही दिन तुम्हारी
इस स्थिति के लिए ठहराए हैं अर्थात् 390 दिन तक तुम इस्राएल के लोगों के
पाप को सहते रहोगे. 6 "इस काम को पूरा कर लेने के बाद, तुम फिर से लेट
जाना, पर इस समय अपनी दायीं करवट पर, और तुम यहूदिया के लोगों के
पाप का भार सहोगे. मैंने तुम्हारे लिए चालीस दिन ठहराए हैं, हर साल के लिये
एक दिन. 7 तब तुम अपना मुंह येरूशलेम की घेराबंदी की ओर करना और
खुली बांह के साथ इसके विरुद्ध भविष्यवाणी करना. 8 मैं तुम्हें रस्सियों से बांध
दूंगा, ताकि तुम करवट न बदल सको, जब तक कि तुम अपने घेराबंदी के दिनों
को पूरा न कर लो. 9 "तुम गेहूं, जौ, सेम, दाल, बाजरा और कठिया लो; उन्हें
एक मर्तबान में रखो और उनका उपयोग अपने लिए रोटी बनाने में करो. तुम्हें
इसको उन 390 दिनों के दौरान खाना है, जब तुम अपनी करवट पर लेटे
रहोगे. 10 प्रतिदिन 20 शेकेल का भोजन वजन करके खाना है और इसे एक
नियत समय पर ही खाना है. 11 पानी भी एक हीन का छठवां भाग नाप लेना
और उसे नियत समय पर पीना. 12 जौ की एक रोटी बनाकर खाना; इसे लोगों
के देखते में पकाना और ईंधन के रूप में मनुष्य के मल का उपयोग करना." 13
फिर याहवेह ने कहा, "इस प्रकार इस्राएल के लोग उन जनताओं के बीच
अशुद्ध भोजन करेंगे, जहां मैं उन्हें भगा दूंगा." 14 तब मैंने कहा, "हे परम
प्रधान याहवेह! ऐसा न हो. मैंने कभी अपने आपको अशुद्ध नहीं किया है. अपने
जवानी से लेकर अब तक, मैंने कभी कोई मरा हुआ या जंगली जानवरों के द्वारा
फाड़ डाला गया पशु नहीं खाया है. मेरे मुंह में कभी भी किसी भी प्रकार का
अशुद्ध मांस नहीं गया है." 15 तब उन्होंने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हें मनुष्य
के मल के बदले गाय के गोबर पर रोटी सेंकने की अनुमति देता हूं." 16 फिर
उसने मुझसे यह भी कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, मैं येरूशलेम का भोजन-पानी बंद
करनेवाला हूं. लोग प्रतिदिन का भोजन चिंतित होकर खाएंगे और प्रतिदिन का
पानी निराश होकर पिएंगे, 17 क्योंकि भोजन और पानी बहुत थोड़ा होगा. वे
एक दूसरे को देखकर भयभीत होंगे और अपने पाप के कारण नाश हो जाएंगे.

5 "हे मनुष्य के पुत्र, अब तुम एक तेज तलवार लो और उसका उपयोग एक
नाई के उस्तरे की तरह अपने सिर के बाल मुंडाने और अपनी दाढ़ी बनाने में
करो. तब तोलने का कांटा लेकर इन बालों को बांट लो. 2 जब तुम्हारे घेराबंदी
के दिन खत्म हो जाते हैं, तो एक तिहाई बालों को शहर के अंदर जला देना. तब
एक तिहाई बालों को लेकर शहर के चारों तरफ तलवार से काटते जाना. और
एक तिहाई बालों को हवा में बिखेर देना. और मैं नंगी तलवार लेकर उनका
पीछा करूंगा. 3 परंतु कुछ बालों को लेना और इन्हें अपने कपड़े के परतों पर
खोंच देना. 4 फिर, इन बालों में से कुछ को लेना और उन्हें आग में फेंककर
जला देना. वहां से एक आग पूरे इस्राएल में फैल जाएगी. 5 "परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: यह येरूशलेम है, जिसे मैंने जाति-जाति के लोगों के
बीच में रखा है, और यह चारों ओर देशों से घिरी हुई है. 6 किंतु उसने दुष्ट काम
करके मेरे कानूनों और नियमों के विरुद्ध अपने चारों तरफ के जनताओं और
देशों से अधिक विद्रोह किया है. उसने मेरे कानूनों को तुच्छ जाना है और मेरे
नियमों पर नहीं चला है. 7 "इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
तुम अपने चारों तरफ के जातियों से ज्यादा उद्दंड हो गये हो और मेरे नियमों या
कानूनों के पीछे नहीं चले हो. और तो और तुम अपने चारों तरफ के जातियों
के स्तर के भी नहीं बने हो. 8 "इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
हे येरूशलेम, मैं, स्वयं तुम्हारे विरुद्ध हूं, और मैं जातियों के देखते में ही तुम्हें दंड
दूंगा. 9 तुम्हारे घृणास्पद मूर्तियों के कारण, मैं तुम्हारे बीच वह करूंगा, जो
मैंने पहले कभी नहीं किया है और न भविष्य में फिर कभी ऐसा करूंगा. 10
इसलिये, तुम्हारे ही बीच माता-पिता अपने बच्चों को खाएंगे और बच्चे अपने
माता-पिता को खा जायेंगे. मैं तुम्हें दंड दूंगा और तुम्हारे बचे हुए लोगों को हवा
में बिखेर दूंगा. 11 इसलिये परम प्रधान याहवेह घोषणा करते हैं, 'मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, क्योंकि तुमने अपने सब निकम्मे मूर्तियों
और घृणास्पद कार्यों के द्वारा मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है, मैं स्वयं तुम्हें

छील डालूंगा; मैं तुम पर दया नहीं करूंगा या तुम्हें नहीं बचाऊंगा. 12 तुम्हारे
एक तिहाई लोग तुम्हारे ही बीच में महामारी या अकाल से मरेंगे, एक तिहाई
तलवार से तुम्हारे दीवारों के बाहर मारे जाएंगे; और एक तिहाई को मैं चारों
ओर तितर-बितर कर दूंगा और नंगी तलवार से पीछा करवाऊंगा.' 13 "तब मेरा
क्रोध बंद होगा और उनके विरुद्ध मेरा कोप शांत होगा, और मेरा प्रतिशोध पूरा
होगा. और जब उन पर मेरा कोप खत्म हो जाएगा, तब वे जानेंगे कि मैं, याहवेह
अपने उत्साह में उनसे यह सब कहा है. 14 "मैं तुम्हें उजाड़ दूंगा और तुम्हारे
चारों तरफ के जातियों के बीच और वे जो वहां से होकर गुज़रते हैं, उनकी दृष्टि
में, मैं तुम्हें एक कलंक बना दूंगा. 15 जब मैं अपने क्रोध और कोप में बहुत
फटकार के साथ तुम्हें दंड दूंगा, तब तुम अपने चारों तरफ के जातियों के लिये
एक कलंक और एक निंदा, एक चेतावनी और एक बहुत घृणा के पात्र बन
जाओगे. मैं, याहवेह ने यह कहा है. 16 जब मैं तुम पर अकाल के घातक और
विनाशकारी तीर छोड़ूंगा, तो तुम्हें नाश करने के लिये ऐसा करूंगा. मैं तुम्हारे
ऊपर बार-बार अकाल लाऊंगा और तुम्हारा भोजन-पानी बंद कर दूंगा. 17
मैं तुम्हारे बीच अकाल और जंगली जानवर भेजूंगा और वे तुम्हें संतानहीन
कर देंगे. महामारी और रक्तपात तुम्हारे बीच होगा, और मैं तुम पर तलवार
चलवाऊंगा. मैं, याहवेह ने यह कहा है."

6 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, अपना मुंह
इस्राएल के पर्वतों की ओर करके उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करो 3 और
कहो: हे इस्राएल के पर्वतों, परम प्रधान याहवेह की बातों को सुनो. परम प्रधान
याहवेह पर्वतों, पहाड़ियों, तराइयों और घाटियों से यह कहते हैं: मैं तुम पर एक
तलवार चलवानेवाला हूं, और मैं तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को नष्ट कर दूंगा.
4 तुम्हारी वेदियां ढहा दी जाएंगी और तुम्हारी धूप की वेदियां टुकड़े-टुकड़े कर
दी जाएंगी; और मैं तुम्हारी मूर्तियों के सामने तुम्हारे लोगों का वध करूंगा. 5 मैं
इस्राएलियों के लाशों को उनके मूर्तियों के सामने रख दूंगा, और मैं तुम्हारी
हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के चारों ओर बिखेर दूंगा. 6 तुम जहां कहीं भी
निवास करोगे, वे नगर उजड़ जाएंगे और पूजा के ऊंचे स्थान गिरा दिये जाएंगे,
ताकि तुम्हारी वेदियां उजड़ कर बरबाद हो जाएं, तुम्हारी मूर्तियां टुकड़े-टुकड़े
होकर नष्ट हो जाएं, तुम्हारी धूप की वेदियां टूटकर नष्ट हो जाएं, और जो तुमने
बनाया है उसे मिटा दिया जाए. 7 तुम्हारे लोगों के वध किए गये शव तुम्हारे ही
बीच आ गिरेंगे, और तब तुम जानोगे मैं याहवेह हूं. 8 "'फिर भी, मैं कुछ लोगों
को छोड़ दूंगा, क्योंकि जब तुम देश-देश और जाति-जाति के बीच बिखर
जाओगे, तो तुममें से कुछ तलवार की मार से बच जाएंगे. 9 तब उन जातियों
के बीच, जहां वे बंधुआ होकर गये होंगे, और बच गये होंगे, वे मुझे याद
करेंगे—कैसे मैं उनके व्यभिचारी हृदयों से दुःखी हुआ हूं, जो मुझसे दूर हो गये
हैं और कैसे मैं उनकी आंखों से दुःखी हुआ हूं, जो उनकी मूर्तियों की लालसा
करते हैं. तब किए गये अपने बुरे कामों और अपने सारे घृणित कार्यों के कारण
उन्हें स्वयं से घृणा हो जाएगी. 10 और तब वे जान जाएंगे कि मैं याहवेह हूं; मैंने
उन पर यह विपत्ति लाने की खोखली धमकी नहीं दी है. 11 "'परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: अपने हाथों को एक साथ मारकर अपने पैरों को
पटको और चिल्लाकर कहो, "हाय!" इस्राएल के लोगों के सब दुष्ट और घृणित
कामों के कारण उनका विनाश तलवार, अकाल और महामारी से होगा. 12 वह
जो दूर है, वह महामारी से मारा जाएगा, और वह जो पास है, वह तलवार से
मारा जाएगा, और वह जो जीवित रहेगा और छोड़ दिया गया होगा, वह अकाल
से मारा जाएगा. इस प्रकार मैं अपना कोप उन पर प्रगट करूंगा. 13 और तब वे
जान जाएंगे कि मैं याहवेह हूं, जब उनकी वेदियों के चारों ओर उनके मूर्तियों के
बीच, हर एक उच्च पहाड़ी पर और पहाड़ों के चोटी पर, हर एक फैले हुए पेड़
और हर एक पत्तीवाले बांज वृक्ष के नीचे और हर वह स्थान, जहां वे अपने सब
मूर्तियों को सुगंधित धूप चढ़ाते हैं, वहां अपने लोगों को मरे पड़े हुए देखेंगे. 14
और मैं उनके विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और उनके देश को निर्जन स्थान से
लेकर दिबलाह तक, जहां कहीं भी वे रहते हैं उन सब जगहों को उजाड़ दूंगा.
तब वे जान जाएंगे कि मैं याहवेह हूं.'"

7 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, परम प्रधान
याहवेह का इस्राएल देश को यह कहना है: "'अंत! देश के चारों ओर अंत
का समय आ गया है! 3 तुम्हारा अंत आ गया है, अब मैं अपना क्रोध तुम्हारे
विरुद्ध प्रगट करूंगा. मैं तुम्हारे आचरण के अनुसार तुम्हारा न्याय करूंगा और
तुम्हारे सारे घृणित कार्यों का बदला लूंगा. 4 मैं तुम्हारे ऊपर दया दृष्टि नहीं
करूंगा; मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा. मैं निश्चय ही तुम्हारे आचरण का और तुम्हारे
बीच तुम्हारे घृणित कार्यों का तुमसे बदला लूंगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह
हूं.' 5 "परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'घोर विपत्ति! न सुनी गई घोर
विपत्ति! देखो, वह आ रही है! 6 अंत आ गया है! अंत आ गया है! वह स्वयं
तुम्हारे विरुद्ध जाग गया है. देखो, वह आ रहा है! 7 विनाश तुम्हारे ऊपर आ
चुका है, तुम्हारे ऊपर, जो इस देश में रहते हो. वह समय आ गया है! वह
दिन निकट है! पर्वतों पर आनंद नहीं, पर आतंक है. 8 मैं तुम पर अपना
कोप उण्डेलने ही वाला हूं और अपना क्रोध तुम पर प्रगट करने ही वाला हूं.
मैं तुम्हारे आचरण के अनुसार तुम्हारा न्याय करूंगा और तुम्हारे सब घृणित
कार्यों का बदला तुमसे लूंगा. 9 मैं तुम पर कृपादृष्टि नहीं करूंगा; मैं तुम्हें नहीं
छोड़ूंगा. मैं तुमसे तुम्हारे आचरण और तुम्हारे बीच घृणित कार्यों का बदला
लूंगा. तब तुम जानोगे कि यह मैं वह याहवेह हूं, जो तुम पर प्रहार करता है. 10
"'देखो, उस दिन को! देखो, वह दिन आ रहा है! तुम्हारा विनाश फट चुका है,
लाठी अंकुरित हो चुकी है, अहंकार खिलकर फूल बन चुका है. 11 हिंसा,
दुष्ट को सजा देने के लिये एक लाठी बन गयी है. उन लोगों में से कोई भी
नहीं बचेगा, उस भीड़ का कोई भी नहीं— न उनकी धन-संपत्ति और न ही
उनकी कोई मूल्यवान वस्तु बचेगी. 12 समय आ गया है! वह दिन आ चुका है!
खरीदनेवाला आनंदित न हो और न ही बेचनेवाला दुःखी हो, क्योंकि मेरा कोप
पूरे भीड़ पर है. 13 जब तक खरीदनेवाला और बेचनेवाला जीवित हैं, तब तक
बेचनेवाले को उसकी बिकी हुई संपत्ति वापस नहीं मिलेगी. क्योंकि पूरे भीड़
के बारे में जो दर्शन है उसे पलटा नहीं जाएगा. अपने पापों के कारण, उनमें से
कोई भी अपने जीवन को बचा न सकेगा. 14 "'उन्होंने तुरही बजाई, और सारी
तैयारी भी पूरी कर ली, परंतु युद्ध में कोई भी नहीं जाता, क्योंकि सारी भीड़ पर
मेरा कोप है. 15 बाहर में तलवार है; भीतर महामारी और अकाल है. जो बाहर
मैदान में है, वे तलवार से मरेंगे; जो शहर में हैं, वे अकाल और महामारी से मारे
जाएंगे. 16 जो भगोड़े बच निकलेंगे, वे पर्वतों पर भाग जाएंगे वे घाटियों के
पड़कियों के जैसे विलाप करेंगे, हर एक अपने स्वयं के पाप के लिए. 17 हर
एक के हाथ पंगु हो जाएंगे; हर एक के घुटने पानी के नाई कमजोर हो जाएंगे!
18 वे टाट के कपड़े पहनेंगे और आतंक से भर जाएंगे. हर एक का मुंह लज्जा से
ढका होगा, और हर एक सिर मुंडन किया होगा. 19 "'वे अपनी चांदी को
गलियों में फेंक देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा. याहवेह के कोप के
दिन उनका चांदी और सोना उनको बचा न सकेगा. यह उनके भूख को नहीं
मिटाएगा या उनके पेट को नहीं भरेगा, क्योंकि यह उनके पाप में पड़ने का
कारण हुआ है. 20 उन्होंने अपने सुंदर गहनों पर घमंड किया है, और इनका
उपयोग अपने घृणित मूर्तियां बनाने में किया है. उनसे उन्होंने निकम्मी मूर्तियां
बनाई हैं; इसलिये मैं इसे उनके लिए अशुद्ध वस्तु बना दूंगा. 21 मैं उनके धन-
संपत्ति को लूट के रूप में विदेशियों को और पृथ्वी के दुष्ट लोगों को दे दूंगा,
जो उसे दूषित कर देंगे. 22 मैं लोगों से अपना मुंह मोड़ लूंगा, और लुटेरे मेरे
बहुमूल्य स्थान को अपवित्र करेंगे. वे इसमें प्रवेश करेंगे और इसे अशुद्ध कर देंगे.

23 "'बेड़ी तैयार करो! क्योंकि देश रक्तपात से, और शहर हिंसा से भर गया है.
24 मैं जनताओं के सबसे बुरे लोगों को लाऊंगा कि वे उनके घरों पर अधिकार
कर लें. मैं बलवान के घमंड का अंत कर दूंगा, और उनके पवित्र स्थान अपवित्र
किए जाएंगे. 25 जब आतंक आयेगा, तब वे बेकार में शांति की खोज करेंगे.
26 विपत्ति के ऊपर विपत्ति आएगी, और अफवाह के ऊपर अफवाह फैलेगा.
वे भविष्यवक्ता से दर्शन की खोज करेंगे, कानून में पुरोहित के निर्देश बंद हो
जाएंगे, अगुओं की सलाह खत्म हो जाएगी. 27 राजा विलाप करेगा, राजकुमार
के लिए निराशा उसका कपड़ा हो जाएगा, और देशवासियों के हाथ कांपने
लगेंगे. मैं उनके साथ उनके आचरण के अनुरूप व्यवहार करूंगा, और उन्हीं के
स्तर से मैं उनका न्याय करूंगा. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.'"

8 छठवें वर्ष के छठवें माह के पांचवें दिन, जब मैं अपने घर में बैठा हुआ था
और यहूदिया के अगुए मेरे सामने बैठे हुए थे, तब वहां परम प्रधान याहवेह
का हाथ मेरे ऊपर आया. 2 मैंने एक आकृति देखी, जो एक मनुष्य के जैसी थी.
उसकी कमर से नीचे का रूप आग के जैसा था, और उसकी कमर के ऊपर
का भाग चमकते धातु की तरह उजला था. 3 उसने अपने हाथ जैसे चीज़
को बढ़ाकर मेरे सिर के बाल को पकड़ लिया. तब आत्मा ने मुझे पृथ्वी और
आकाश के बीच उठा लिया और परमेश्वर के दर्शन में वह मुझे येरूशलेम में
भीतरी आंगन के उत्तर के द्वार के प्रवेश स्थल पर ले गया, जहां जलन की
भावना उत्तेजित करनेवाली मूर्ति थी. 4 और वहां इस्राएल के परमेश्वर का वैसा
ही तेज था, जैसा कि मैदान में दर्शन में देखा था. 5 तब उसने मुझसे कहा, "हे
मनुष्य के पुत्र, उत्तर दिशा की ओर देखो." अतः मैंने दृष्टि की, और वेदी के द्वार
के उत्तर में प्रवेश स्थल पर मैंने जलन उपजानेवाली उस मूर्ति को देखा. 6 और
उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देख रहे हो कि वे क्या कर रहे
हैं—इस्राएली लोग यहां बहुत ही घृणित काम कर रहे हैं, ऐसा काम जो मुझे मेरे
पवित्र स्थान से दूर ले जाएगा? पर तुम इनसे भी ज्यादा घृणित काम देखोगे." 7
तब वह मुझे आंगन के प्रवेश स्थल पर ले आया. वहां मैंने देखा कि दीवार
में एक छेद था. 8 उसने मुझे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, दीवार को फोड़ो."
इसलिये मैंने दीवार को फोड़ा और वहां मुझे एक प्रवेश द्वार दिखाई दिया. 9 तब
उसने मुझसे कहा, "अंदर जाओ और जो दुष्ट और घृणित कार्य वे यहां कर रहे
हैं, उसे देखो." 10 इसलिये मैं अंदर गया, और देखा कि दीवारों पर सब तरफ
सब प्रकार के रेंगनेवाले जंतुओं और अशुद्ध पशुओं और इस्राएल के सब मूर्तियों
के चित्र बनाए गये हैं. 11 उनके सामने इस्राएल के सत्तर अगुए खड़े थे, और
उनके बीच शापान का पुत्र यात्सानिया खड़ा हुआ था. हर एक व्यक्ति अपने
हाथ में धूपदान लिये हुए था, और वहां धूप का सुगंधित धुआं उठ रहा था. 12
तब उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुमने देखा है कि इस्राएल के
अगुए अंधेरे में, हर एक अपने मूर्ति की जगह में क्या कर रहे हैं? वे कहते हैं,
'याहवेह हमें नहीं देखते; याहवेह ने हमारे देश को त्याग दिया है.'" 13 फिर
उसने मुझसे कहा, "तुम उन्हें और भी ज्यादा घृणित काम करते हुए देखोगे."
14 तब वह मुझे याहवेह के भवन के उत्तरी द्वार के प्रवेश स्थल पर ले आया,
और मैंने देखा कि वहां स्त्रियां बैठी हुई तम्मुत्स देवता के लिए रो रही थी. 15
उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुम यह सब देख रहे हो? तुम इससे
भी ज्यादा घृणित चीज़ें देखोगे." 16 तब वह मुझे याहवेह के भवन के भीतरी
आंगन में ले आया, और वहां मंदिर के प्रवेश द्वार पर, मंडप और वेदी के बीच
लगभग पच्चीस पुरुष थे. उनकी पीठ याहवेह के मंदिर की ओर और उनका मुंह
पूर्व दिशा की ओर था, और वे पूर्व में सूर्य को दंडवत कर रहे थे. 17 उसने मुझसे
कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुमने यह देखा? यहूदिया के लोगों के लिये
घृणित काम करना, जिसे वे यहां कर रहे हैं, क्या कोई छोटी बात है? निश्चित
रूप से वे देश को हिंसा से भर देते हैं और लगातार मेरे क्रोध को भड़काते हैं.
देखो, वे पेड़ की डाली को अपनी नाक पर रखे हुए हैं! 18 इसलिये मैं उनके
साथ क्रोध से पेश आऊंगा; मैं उन दया दृष्टि नहीं करूंगा या उन्हें नहीं छोड़ूंगा.
चाहे वे आकर मेरे कान में ऊंची आवाज में पुकारें, फिर भी मैं उनकी बात न
सुनूंगा."

9 तब मैंने उसे ऊंची आवाज में यह कहते हुए सुना, "उनको मेरे पास लाओ,
जिनको शहर के लोगों का न्याय करने के लिये ठहराया गया है, और
उनमें से हर एक के हाथ में हथियार हो." 2 और मैंने देखा कि उत्तर की तरफ
खुलनेवाले ऊपरी द्वार की दिशा से छः पुरुष चले आ रहे हैं, और उनमें से हर
एक के हाथ में एक-एक घातक हथियार है. उनमें से एक व्यक्ति मलमल का
कपड़ा पहने हुए था, जिसके बगल में लेखन सामग्री का एक झोला था. वे भीतर
आए और कांस्य-वेदी के बाजू में खड़े हो गए. 3 तब करूबों के ऊपर रहनेवाला
इस्राएल के परमेश्वर का तेज, वहां से ऊपर उठा और मंदिर के डेवढ़ी में आ
गया. तब याहवेह ने मलमल कपड़ा पहने उस व्यक्ति को पुकारा, जिसके बगल
में लेखन सामग्री का झोला था. 4 उससे कहा, "पूरे येरूशलेम शहर में जाओ
और उन सब लोगों के माथे पर एक चिन्ह लगाओ, जो शहर में हो रहे सब
घृणित कामों से दुःखी हैं और शोक मनाते हैं." 5 जैसे कि मैंने सुना, उसने दूसरों
से कहा, "उसके पीछे-पीछे पूरे शहर में जाओ और बिना दया या सहानुभूति
दिखाये लोगों को जान से मारते जाओ. 6 बूढ़े, जवान युवक और युवती, मां
और बच्चे सबको मार डालना, परंतु किसी भी ऐसे व्यक्ति को न छूना, जिसमें
चिन्ह लगा हो. मेरे पवित्र स्थान से शुरू करना." अतः उन्होंने उन बूढ़े लोगों से
शुरू किया, जो मंदिर के सामने थे. 7 तब उसने उनसे कहा, "मंदिर को अशुद्ध
कर देना और मारे गये लोगों से आंगनों को भर देना. जाओ!" अतः वे बाहर
निकले और पूरे शहर में लोगों को मारने लगे. 8 जब वे मार रहे थे और मैं
अकेला रह गया, तब मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाकर कहा, "हे परम प्रधान
याहवेह, हाय! क्या आप येरूशलेम पर अपने भयंकर कोप में आकर इस्राएल के
सब बचे हुओं को नाश कर देंगे?" 9 तब उसने मुझे उत्तर दिया, "इस्राएल और
यहूदाह के लोगों का पाप बहुत ही ज्यादा है; सारा देश रक्तपात से और शहर
अन्याय से भरा हुआ है. वे कहते हैं, 'याहवेह ने तो देश को त्याग दिया है;
याहवेह नहीं देखते.' 10 इसलिये मैं उन पर दया दृष्टि नहीं करूंगा या उन्हें नहीं
छोड़ूंगा, पर मैं उनके कामों को उन्हीं पर डाल दूंगा." 11 तब वह व्यक्ति, जो
मलमल का कपड़ा पहने अपने बगल में लेखन सामग्री लिये हुए था, वापस
आकर कहा, "आपने जैसा आदेश दिया था, मैंने वैसा कर दिया है."

10 मैंने देखा कि करूबों के सिरों के ऊपर जो गुम्बज था, उसके ऊपर मुझे
नीलमणि का एक सिंहासन जैसा दिखाई दिया. 2 जो व्यक्ति मलमल का
कपड़ा पहने हुए था, उससे याहवेह ने कहा, "करूबों के नीचे चक्कों के बीच
में जाओ, और अपने हथेलियों को करूबों के बीच जलते कोयलों से भर लो
और उनको शहर के ऊपर बिखेर दो." और जैसे कि मैंने देखा, वह अंदर चला
गया. 3 जब वह व्यक्ति अंदर गया, तब करूब मंदिर के दाहिने तरफ खड़े थे,
और भीतरी आंगन एक बादल से भर गया. 4 तब याहवेह का तेज करूबों के
ऊपर से उठा और मंदिर के डेवढ़ी पर आ गया. मंदिर बादल से भरा हुआ था
और आंगन याहवेह के तेज के चमक से भरा था. 5 करूबों के पंखों की
आवाज बाहरी आंगन तक ऐसे सुनाई देती थी, जैसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की
आवाज सुनाई देती है, जब वह बोलते हैं. 6 जब याहवेह ने मलमल के कपड़े
पहने हुए व्यक्ति को आज्ञा दी, "करूबों के नीचे चक्कों के बीच से आग ले
लो," तो वह व्यक्ति गया और एक पहिये के बाजू में खड़ा हो गया. 7 तब
करूबों में से एक ने अपने बीच की आग की तरफ अपना हाथ बढ़ाया और
उसमें से कुछ आग लेकर मलमल के कपड़े पहने व्यक्ति के हाथों में रख दिया,

जो उसे लेकर बाहर चला गया. 8 (करूबों के पंखों के नीचे मनुष्य के हाथों जैसा कुछ दिखता था.) 9 मैंने देखा करूबों के बाजू में चार पहिये, हर एक करूब के बाजू में एक पहिया; वे पहिये पुखराज की तरह चमक रहे थे. 10 उन चारों पहियों की आकृति एक जैसी थी; और ऐसा लगता था, मानो वे एक दूसरे में समाये हुए हों. 11 जब वे आगे बढ़ते थे, तो वे चारों दिशाओं में से उस दिशा की ओर जाते थे, जिधर करूबों का मुंह होता था; जब करूब चलते थे, तो पहिये बिना इधर-उधर मुडे उसी दिशा में जाते थे. करूब बिना इधर-उधर मुडे उसी दिशा में जाते थे, जिधर उनका मुंह होता था. 12 उनकी पीठ, उनके हाथ और उनके पंखों सहित उनका पूरा शरीर पूरी तरह आंखों से भरा हुआ था, और वैसा ही उनके चारों पहिये आंख ही आंख से भरे थे. 13 मैंने सुना कि उन पहियों को “घूमनेवाले पहिये” कहा गया. 14 हर एक करूब के चार-चार मुख थे: एक मुख करूब जैसा, दूसरा मनुष्य जैसा, तीसरा सिंह जैसा और चौथा मुख गरूड जैसा था. 15 तब करूब ऊपर उठे. ये वही जीवित प्राणी थे, जिन्हें मैंने खेबर नदी के किनारे देखा था. 16 जब करूब चलते थे, तो उनके बाजू के पहिये भी चलते थे; और जब करूब भूमि से ऊपर उठने के लिये अपने पंख फैलाते थे, तब पहिये उनकी बाजू नहीं छोडते थे. 17 जब करूब स्थिर रहते थे, तो वे भी स्थिर रहते थे; और जब करूब ऊपर उठते थे, तो वे पहिये भी उनके साथ ऊपर उठते थे, क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा उनमें थी. 18 तब याहवेह का तेज मंदिर की डेवढ़ी के ऊपर से चला गया और करूबों के ऊपर आकर ठहर गया. 19 जब मैं देख रहा था, तब करूब अपने पंख फैलाकर भूमि से ऊपर उठे, और जब वे गये, तो वे पहिये भी उनके साथ गये. वे याहवेह के भवन के पूर्वी द्वार के प्रवेश स्थल पर रुक गये, और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था. 20 ये वही जीवित प्राणी थे, जिन्हें मैंने खेबर नदी के पास इस्राएल के परमेश्वर के नीचे देखा था, और मैं समझ गया कि वे करूब थे. 21 हर एक के चार-चार मुख और चार-चार पंख थे और उनके पंखों के नीचे मनुष्य के हाथ जैसे कुछ दिखते थे. 22 उनके मुखों का रूप वैसा ही था, जैसा मैंने खेबर नदी के पास देखा था. हर एक आगे सीधा ही चलता था.

11 तब आत्मा मुझे उठाकर याहवेह के भवन के उस द्वार पर ले आया, जिसका मुख पूर्व दिशा की ओर है. मैंने देखा कि वहां द्वार के प्रवेश स्थल पर पच्चीस व्यक्ति थे, और उनके बीच मैंने अज्जूर के पुत्र यात्सानिया और बेनाइयाह के पुत्र पेलातियाह को देखा, जो लोगों के अगुए थे. 2 याहवेह ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के पुत्र, ये वे लोग हैं, जो इस शहर में बुरे षड़्यंत्र रच रहे हैं और बुरी सलाह दे रहे हैं. 3 वे कहते हैं, ‘क्या हमारे घर अभी हाल ही में नहीं बने हैं? यह शहर एक बर्तन है और हम इसमें रखे मांस हैं.’ 4 इसलिये हे मनुष्य के पुत्र, उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करो, भविष्यवाणी करो.” 5 तब याहवेह का आत्मा मुझ पर आया, और मुझसे यह कहने के लिये कहा: “याहवेह का यह कहना है: हे इस्राएल के अगुओं, तुम यही कह रहे हो, पर मैं जानता हूं कि तुम्हारे मन में क्या चल रहा है. 6 तुमने इस शहर में बहुत से लोगों को मार डाला है और इसकी गलियों को लाशों से भर दिया है. 7 “इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: वे शरीर, जिनको तुमने वहां फेंक दिया है, वे मांस हैं और यह शहर एक बर्तन, पर मैं तुमको यहां से निकाल दूंगा. 8 तुम तलवार से डरते हो, और तलवार ही प्रयोग मैं तुम्हारे विरुद्ध करूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 9 मैं तुम्हें शहर से बाहर निकाल दूंगा और तुम्हें विदेशियों के हाथ में दे दूंगा और तुम्हें दंड दूंगा. 10 तुम तलवार से मारे जाओगे, और मैं तुम्हें इस्राएल की सीमाओं पर दंड दूंगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 11 यह शहर तुम्हारे लिये एक बर्तन न होगा और न ही तुम इसमें के मांस होगे; मैं तुम्हें इस्राएल की सीमाओं पर दंड दूंगा. 12 और तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं, क्योंकि तुमने मेरे नियमों और कानूनों को नहीं माना है, पर तुम अपने चारों तरफ के जातियों के नियमों पर चले हो.” 13 जब मैं भविष्यवाणी कर ही रहा था कि बेनाइयाह के पुत्र पेलातियाह की मृत्यु हो गई. तब मैं मुंह के बल गिरा और ऊंची आवाज में पुकारकर कहा, “हाय, हे परम प्रधान याहवेह! क्या आप इस्राएल के बचे हुओं को नाश कर देंगे?” 14 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 15 “हे मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे साथ के बंधुआ लोगों और दूसरे इस्राएलियों के बारे में येरूशलेम के लोगों ने ये कहा है, ‘वे याहवेह से बहुत दूर हैं; यह देश हमें हमारे संपत्ति के रूप में दिया गया है.’ 16 “इसलिये यह कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: यद्यपि मैंने उन्हें बहुत दूर के जनताओं के बीच भेजकर विभिन्न देशों में बिखेर दिया है, तौभी मैं उनके लिए उन देशों में, जहां वे गये हैं, थोड़े समय के लिये आश्रय-स्थल बना रहा.’ 17 “इसलिये उनसे कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं तुम्हें जनताओं के बीच से इकट्ठा करूंगा और मैं तुम्हें उन देशों से वापस लाऊंगा, जहां तुम तितर-बितर किए गये हो, और मैं फिर से तुम्हें इस्राएल देश वापस दे दूंगा.’ 18 “वे वहां लौट आएंगे और इसमें की सब निकम्मी आकृतियों और घृणित मूर्तियों को हटा देंगे. 19 मैं उनके मन को एक कर दूंगा और उनमें एक नई आत्मा डालूंगा; मैं उनसे उनके पत्थर रूपी हृदय को निकाल दूंगा और उन्हें एक मांस का हृदय दूंगा. 20 तब वे मेरे नियमों को मानेंगे और ध्यानपूर्वक मेरे कानूनों पर चलेंगे. वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा. 21 पर वे लोग, जिनका हृदय उनकी निकम्मी आकृतियां और घृणित मूर्तियों में ही लगा रहेगा, मैं उनके कामों को उन्हीं के ही सिर पर ले आऊंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.” 22 तब करूबों ने अपने पंख फैलाए, और पहिये उनके बाजू में थे, और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था. 23 याहवेह का तेज शहर के भीतर से ऊपर उठा और शहर के पूर्व में स्थित पर्वत के ऊपर जाकर ठहर गया. 24 फिर परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दिये गये दर्शन में, आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया और बाबेल में बंधुओं के पास ले आया. तब वह दर्शन वहीं समाप्त हो गया, 25 और याहवेह ने मुझे दर्शन में जो दिखाया था, वे सब बातें मैंने बंधुओं को बता दी.

12 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, तुम विद्रोही लोगों के बीच रह रहे हो. उनकी आंख तो हैं, परंतु देखते नहीं और कान तो हैं, परंतु सुनते नहीं, क्योंकि वे विद्रोही लोग हैं. 3 “इसलिये, हे मनुष्य के पुत्र, बंधुवाई में जाने के लिये अपना सामान बांधो और दिन के समय, उनके देखते में चल पडो और जहां तुम हो, वहां से दूसरी जगह चले जाओ. यद्यपि वे विद्रोही लोग हैं, फिर भी, शायद वे समझ जाएं. 4 दिन के समय, उनके देखते में बंधुवाई के लिये तैयार अपने सामान को बाहर ले आओ. तब शाम के समय, जब वे देख रहे हों, तब ऐसे जाओ जैसे लोग बंधुवाई में जाते हैं. 5 जब वे देख रहे हों, तो दीवार को फोडना और उसमें से अपना सामान बाहर ले जाना. 6 उनके देखते ही में सामान को अपने कंधे पर रखना और सूर्यास्त के समय उनको बाहर ले जाना. अपने चेहरे को ढांपे रहना ताकि तुम्हें भूमि दिखाई न दे, क्योंकि मैंने तुम्हें इस्राएलियों के लिए एक चिन्ह ठहराया है.” 7 मुझे जैसी आज्ञा दी गई, तब मैंने वैसा ही किया. दिन के समय, बंधुवाई के लिये तैयार, मैं अपना सामान बाहर ले आया. तब संध्या के समय, मैंने दीवार को अपने हाथों से फोडा. सूर्यास्त के समय, मैं अपना सामान बाहर ले गया, और उनको अपने कंधों पर उठाकर लोगों के देखते में चला गया. 8 सुबह याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 9 “हे मनुष्य के पुत्र, वे विद्रोही इस्राएली लोग क्या तुमसे नहीं पूछे, ‘तुम क्या कर रहे हो?’ 10 “उनसे कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: इस भविष्यवाणी का संबंध येरूशलेम के राजकुमार और उन सब इस्राएलियों से है, जो वहां रहते हैं.’ 11 उनसे कहो, ‘मैं तुम्हारे लिये एक चिन्ह हूं.’ “जैसा मैंने किया है, ठीक वैसा ही उनके साथ भी किया जाएगा. ‘वे बंदी के रूप में बंधुवाई में चले जाएंगे.’ 12 “उनके बीच का राजकुमार शाम के

समय अपने सामान को अपने कंधों पर रखकर चला जाएगा, और दीवार में
एक बड़ा छेद बनाया जाएगा, ताकि वह उसमें से निकलकर जा सके. वह
अपना चेहरा ढांक लेगा ताकि उसे भूमि न दिखे. 13 मैं उसके लिये अपना जाल
बिछाऊंगा, और वह मेरे फंदे में फंस जाएगा; मैं उसे कसदियों के देश बाबेल
में ले आऊंगा, पर वह इसे देख न सकेगा, और वहां वह मर जाएगा. 14 मैं
उसके आस-पास के सब लोगों को तितर-बितर कर दूंगा—उसके कर्मचारी और
उसकी सब सेना—और नंगी तलवार लेकर मैं उनका पीछा करूंगा. 15 "जब मैं
उन्हें जाति-जाति और देश-देश के बीच तितर-बितर कर दूंगा, तब वे जानेंगे कि
मैं याहवेह हूं. 16 परंतु मैं उनमें से कुछ को तलवार की मार, अकाल और
महामारी से बचाऊंगा, ताकि उन जनताओं के बीच, जहां वे जाएं, वहां वे अपने
सब घृणित कार्यों को मान लें. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं." 17 याहवेह का
यह वचन मेरे पास आया: 18 "हे मनुष्य के पुत्र, कांपते हुए अपना भोजन
करना और थरथराते हुए अपना पानी पीना. 19 तब देश के लोगों से कहो:
'येरूशलेम और इस्राएल देश में रहनेवालों के विषय में परम प्रधान याहवेह का
यह कहना है: वे चिंतित मन से अपना भोजन करेंगे और निराश मन से अपना
पानी पिएंगे, क्योंकि देश में रहनेवाले सब लोगों की हिंसा के कारण, देश की
सब चीज़ें ले ली जाएंगी. 20 बसे हुए नगर उजाड़ दिए जाएंगे और देश निर्जन
हो जाएगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं.'" 21 याहवेह का यह वचन मेरे
पास आया: 22 "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल देश में यह क्या कहावत है: 'दिन
बीतते जा रहे हैं और कोई भी दर्शन पूरा नहीं हो रहा है'? 23 अतः उनसे कहो,
'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं इस कहावत का अंत करनेवाला हूं,
और वे फिर कभी इस्राएल में इस कहावत का प्रयोग नहीं करेंगे.' उनसे कहो,
'वे दिन निकट हैं जब हर एक दर्शन पूरा होगा. 24 क्योंकि तब इस्राएल के
लोगों के बीच कोई झूठा दर्शन और चापलूसीपूर्ण भविष्य की बातें न होंगी. 25
क्योंकि जो भी बोलूंगा, मैं, याहवेह ही बोलूंगा, और वह बिना देरी के पूरा होगा.
क्योंकि हे विद्रोही लोगों, तुम्हारे ही दिनों में, जो कुछ मैं कहता हूं, उसे मैं पूरा
करूंगा, यह परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.'" 26 फिर याहवेह का यह
वचन मेरे पास आया: 27 "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएली कह रहे हैं, 'जो दर्शन वह
देख रहा है, वह अब से लेकर बहुत सालों बाद पूरा होगा, और जो भविष्यवाणी
वह कर रहा है, वह अब से लेकर बहुत समय बाद की बात कर रहा है.' 28
"इसलिये उनसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मेरे कहे गये
किसी भी वचन के पूरा होने में और देरी नहीं होगी; जो भी मैं कहता हूं, वह पूरा
होगा, यह परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.'"

13 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल
के उन भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध भविष्यवाणी करो, जो इस समय
भविष्यवाणी कर रहे हैं. उनसे कहो जो अपने ही मन से भविष्यवाणी करते हैं:
'याहवेह का वचन सुनो! 3 परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: धिक्कार है
उन मूर्ख भविष्यवक्ताओं पर, जो अपने ही मन के अनुसार चलते हैं और उन्होंने
कुछ नहीं देखा है! 4 हे इस्राएल, तुम्हारे भविष्यवक्ता खंडहरों के सियार के
समान हैं. 5 तुम इस्राएल के लोगों के लिये दीवार के दरारों को सुधारने के लिये
ऊपर नहीं गए हो ताकि याहवेह के दिन युद्ध में यह मजबूत बना रहे. 6 उनके
दर्शन और उनके भविष्य की बातें झूठी हैं. यद्यपि याहवेह ने उन्हें नहीं भेजा है,
फिर भी वे कहते हैं, "याहवेह की यह घोषणा है," और आशा करते हैं कि
याहवेह उनकी भविष्यवाणी को पूरा करे. 7 क्या तुमने झूठे दर्शन नहीं देखें और
भविष्य की झूठी बातें नहीं कहीं, जब तुमने यह कहा, "याहवेह की यह घोषणा
है," हालांकि मैंने नहीं कहा था? 8 "'इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है: तुम्हारी झूठी बातों और तुम्हारे झूठे दर्शनों के कारण, मैं तुम्हारे विरुद्ध
हूं, परम प्रधान याहवेह की यह घोषणा है. 9 मेरा हाथ उन भविष्यवक्ताओं के
विरुद्ध उठेगा, जो झूठे दर्शन देखते तथा भविष्य की झूठी बातें बताते हैं, वे मेरे
लोगों के समूह में नहीं होंगे या इस्राएल की सूची में उनका नाम लिखा नहीं
जाएगा, और न ही वे इस्राएल देश में प्रवेश कर पाएंगे. तब तुम जानोगे कि मैं
परम प्रधान याहवेह हूं. 10 "'क्योंकि वे मेरे लोगों को यह कहकर भटकाते हैं,
"सब ठीक है," जबकि कुछ भी ठीक नहीं होता, और फिर जब एक कमजोर
दीवार बनाई जाती है, तो वे उस पर चूना पोत देते हैं, 11 इसलिये जो इस पर
चूना पोत देते हैं, उनसे कहो कि यह गिर जाएगी. मूसलाधार वर्षा होगी, और मैं
ओलावृष्टि करूंगा, जो दीवार को गिरा देगी, और भयंकर आंधी चलेगी. 12 जब
दीवार गिर जाएगी, तो क्या लोग तुमसे यह नहीं पूछेंगे, "तुम जो चूना पोते थे,
वह कहां गया?" 13 "'इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं
अपने कोप में भयंकर आंधी लाऊंगा, और अपने क्रोध में भयंकर विनाश के
साथ ओलावृष्टि और मूसलाधार वर्षा कराऊंगा. 14 मैं उस दीवार को तोड़
डालूंगा, जिस पर तुमने चूना पोता है और इसे मिट्टी में मिला दूंगा ताकि इसकी
नीव खाली पड़ी रहे. जब यह गिरेगी, तो तुम भी इसके साथ नाश हो जाओगे;
और तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 15 इस प्रकार मेरा कोप उस दीवार
पर और उन पर भड़केगा, जिन्होंने उस पर चूना पोत दिया था. तब मैं तुमसे
कहूंगा, "दीवार नष्ट हो गई और वैसे ही वे भी नष्ट हो गये, जिन्होंने इस पर
चूना पोत दिया था, 16 अर्थात् इस्राएल के वे भविष्यवक्ता नष्ट हो गये, जो
येरूशलेम के विषय में भविष्यवाणी करते और उसकी शांति का दर्शन देखते थे,
जबकि वहां किसी भी प्रकार की शांति नहीं थी, परम प्रधान याहवेह की यह
घोषणा है."' 17 "हे मनुष्य के पुत्र, अब, तुम अपना मुंह अपने लोगों की उन
बेटियों के विरुद्ध खोलो, जो अपने ही मन से भविष्यवाणी करती हैं. तुम उनके
विरुद्ध भविष्यवाणी करो 18 और कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
धिक्कार है उन स्त्रियों पर, जो अपनी कलाइयों पर जादू की ताबीज़ बांधती और
लोगों को फंसाने हेतु अपने सिर के लिये विभिन्न लंबाई के घूंघट बनाती हैं.
क्या तुम मेरे लोगों के प्राण को खतरे में डालोगी और अपने स्वयं को बचाकर
रखोगी? 19 तुमने मुट्ठी भर जौ और रोटी के कुछ टुकड़ों के लिए मेरे लोगों के
बीच मुझे अपवित्र किया है. मेरे वे लोग जो झूठी बातें सुनते हैं, उनसे झूठी बातें
करके तुमने उन लोगों को मार डाला है जिन्हें ज़िंदा रहना था और तुमने उनको
छोड़ दिया है जिन्हें ज़िंदा नहीं रहना था. 20 "'इसलिये परम प्रधान याहवेह का
यह कहना है: मैं तुम्हारे जादू के उन ताबीज़ों के विरुद्ध हूं जिससे तुम लोगों को
चिड़िया की तरह फंसाती हो; मैं तुम्हारे बांह के उन ताबीज़ों को तोड़ डालूंगा; मैं
उन लोगों को स्वतंत्र कर दूंगा, जिन्हें तुम चिड़ियों की तरह फंसाती हो. 21 मैं
तुम्हारे घूंघट को भी फाड़ दूंगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से बचाऊंगा,
और वे फिर कभी तुम्हारे वश में न होंगे. तब तुम जानोगी कि मैं याहवेह हूं. 22
क्योंकि तुमने अपनी झूठी बातों से धर्मी लोगों को निराश किया है, जबकि मैं
उन पर कोई दुःख तकलीफ़ नहीं लाया, और क्योंकि तुमने दुष्ट लोगों को बुरे
काम न छोड़ने के लिये उत्साहित किया है और ऐसा करके उनके प्राण को
बचाया है, 23 इसलिये अब तुम न तो झूठे दर्शन देख सकोगी और न ही भविष्य
की झूठी बातें कह सकोगी. मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से बचाऊंगा. और
तब तुम जानोगी कि मैं याहवेह हूं.'"

14 फिर इस्राएल के कुछ अगुए मेरे पास आकर मेरे सामने बैठ गए. 2
तब याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 3 "हे मनुष्य के पुत्र, ये लोग
अपने हृदय में मूर्तियों को बसा रखे हैं और अपने चेहरे के सामने दुष्टता के ठोकर
के पत्थर रखे हुए हैं. क्या मैं इन्हें मुझसे जानकारी लेने की अनुमति दूं? 4
इसलिये उनसे बात करो और उनसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: जब कोई इस्राएली अपने हृदय में मूर्तियों को बसाता है और अपने चेहरे के
सामने दुष्टता का ठोकर का पत्थर रखता है और तब वह भविष्यवक्ता के पास

जाता है, तो मैं, याहवेह स्वयं उसकी बड़ी मूर्ति पूजा की बातों को ध्यान में रखते
हुए उसे उत्तर दूंगा. 5 मैं इसलिये ऐसा करूंगा ताकि मैं उन इस्राएली लोगों के
हृदय को फिर से अपने तरफ कर सकूं, जो अपनी मूर्तियों के लिये मुझे छोड़
दिये हैं.' 6 "इसलिये इस्राएल के लोगों से कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है: पश्चात्ताप करो! अपने मूर्तियों से दूर होकर अपने सब घृणित कार्यों
को छोड़ दो! 7 "'जब इस्राएलियों में से कोई या कोई विदेशी इस्राएल में रहता
है और अपने आपको मुझसे अलग कर लेता है और अपने हृदय में मूर्तियों को
बसाता है और अपने चेहरे के सामने दुष्टता का ठोकर का पत्थर रखता है और
तब मुझसे जानकरी लेने के लिये भविष्यवक्ता के पास जाता है, तो मैं, याहवेह
स्वयं उसको उत्तर दूंगा. 8 मैं उसके विरुद्ध अपना मुंह करूंगा और उसे दूसरों के
लिये एक चेतावनी और एक कहावत बना दूंगा. मैं उसे अपने लोगों के बीच
से हटा दूंगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 9 "'और यदि भविष्यवक्ता
भविष्यवाणी करने के लिये बहकाया जाता है, तो यह जान लो कि मैं, याहवेह ने
उस भविष्यवक्ता को बहकाया है, और मैं उसके विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा
और उसे अपने इस्राएली लोगों के बीच में से नाश कर दूंगा. 10 उन्हें उनके
अपराध का दंड मिलेगा—भविष्यवक्ता भी उतना ही दोषी ठहरेगा जितना कि
वह जो उससे सलाह लेता है. 11 तब इस्राएल के लोग मुझसे अलग न होंगे,
और न ही वे फिर कभी अपने सब पापों के द्वारा अपने आपको दूषित करेंगे.
वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, परम प्रधान याहवेह की
घोषणा है.'" 12 तब याहवेह का वचन मेरे पास आया: 13 "हे मनुष्य के पुत्र,
यदि कोई देश विश्वासघात करके मेरे विरुद्ध पाप करता है और मैं उसके विरुद्ध
अपना हाथ बढ़ाकर उसका भोजन-पानी बंद कर देता हूं और उस पर अकाल
भेजकर उसके लोगों और जानवरों को मार डालता हूं, 14 और चाहे यदि ये
तीन लोग—नोहा, दानिएल और अय्योब भी उनके बीच होते, तो वे अपने
धर्मीपन के कारण सिर्फ अपने आपको ही बचा पाते, परम प्रधान याहवेह की
घोषणा है. 15 "या यदि मैं उस देश में जंगली जानवरों को भेजूं और वे उसे
निर्जन कर देते हैं और वह देश उजड़ जाए ताकि जंगली जानवरों के कारण उस
देश में से होकर कोई न जाए, 16 तो, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है कि मैं
अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, चाहे यदि ये तीनों व्यक्ति भी वहां
होते, तो वे अपने खुद के बेटे-बेटियों को भी बचा न पाते. वे अकेले ही बचते,
पर देश उजाड़ हो जाएगा. 17 "या यदि मैं उस देश के विरुद्ध तलवार उठाऊं
और ये कहूं, 'पूरे देश में तलवार चले,' और मैं उस देश के लोगों और उनके
जानवरों को मार डालूं, 18 तो मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, परम
प्रधान याहवेह की घोषणा है, चाहे यदि ये तीनों व्यक्ति भी वहां होते, वे अपने
खुद के बेटे-बेटियों को भी बचा न पाते. वे अकेले ही बचते. 19 "या यदि मैं
उस देश में महामारी भेजूं और उस देश के लोगों और उनके जानवरों को मारते
हुए रक्तपात के द्वारा उस पर अपना कोप प्रगट करूं, 20 तो मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, चाहे यदि नोहा,
दानिएल तथा अय्योब भी वहां होते, तो वे न तो अपने बेटे को बचा पाते और न
ही अपनी बेटी को. वे अपने धर्मीपन के कारण सिर्फ अपने आपको बचा पाते.
21 "क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: कितनी दयनीय स्थिति होगी
जब मैं येरूशलेम पर ये चार प्रकार के दंड लाऊंगा—तलवार, अकाल, जंगली
जानवर और महामारी, ताकि इसके लोग और उनके जानवर मारे जाएं! 22
फिर भी कुछ लोग जीवित रहेंगे—बेटे और बेटियां, जिन्हें यहां से बाहर लाया
जाएगा. वे तुम्हारे पास आएंगे, और जब तुम उनके आचरण एवं उनके कार्यों
को देखोगे, तो तुम्हें उस विपत्ति के बारे में सांत्वना मिलेगी जिसे मैंने येरूशलेम
पर लाया है—हर एक विपत्ति जिसे मैंने इस पर लाया है. 23 तुम्हें सांत्वना
मिलेगी जब तुम उनके आचरण और उनके कार्यों को देखोगे, क्योंकि तब तुम
जानोगे कि येरूशलेम में मैंने जो कुछ किया है, वह बिना कारण के नहीं किया
है, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है."

15 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, एक अंगूर
की लता की लकड़ी बंजर भूमि के किसी पेड़ की शाखा से किस प्रकार
भिन्‍न है? 3 क्या कभी इसकी लकड़ी को लेकर कोई उपयोगी चीज़ बनाई गई
है? क्या लोग वस्तुओं को टांगने के लिये इससे खूंटी बनाते हैं? 4 और जब इसे
आग में ईंधन के रूप में डाला जाता है और इसके दोनों छोर आग से जल जाते हैं
और बीच का भाग झुलस जाता है, तब क्या वह किसी काम का रह जाती है?
5 जब यह अपने पूरे आकार में थी, तब यह किसी काम की न थी, तो फिर तब
इसकी क्या उपयोगिता हो सकती है जब यह आग में जल गई और झुलस गई?
6 "इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जैसा कि मैंने अंगूर की लता
की लकड़ी को बंजर भूमि के पेड़ों के बीच आग के लिये ईंधन के रूप में दिया
है, वैसा ही मैं येरूशलेम में रहनेवालों के साथ व्यवहार करूंगा. 7 मैं अपना मुंह
उनके विरुद्ध करूंगा. यद्यपि वे आग से बचकर निकल आये हैं, फिर भी आग ही
उन्हें जलाकर नष्ट कर देगी. और जब मैं अपना मुंह उनके विरुद्ध करूंगा, तब तुम
जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 8 मैं देश को उजाड़ दूंगा, क्योंकि उन्होंने विश्वासघात
किया है, यह परम प्रधान याहवेह की घोषणा है."

16 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, येरूशलेम
का उसके घृणित कार्यों के लिये विरोध करो 3 और कहो, 'परम प्रधान
याहवेह का येरूशलेम से यह कहना है: तुम्हारे पुरखे और तुम्हारा जन्म कनानियों
के देश में हुआ; तुम्हारा पिता एक अमोरी और तुम्हारी मां एक हित्ती थी. 4
तुम्हारे जन्म के समय न तो तुम्हारी नाभिनाड़ी काटी गई, और न ही तुम्हें पानी
से नहलाकर साफ किया गया, न तो तुम्हें नमक से रगड़ा गया था, और न ही
तुम्हें कपड़ों में लपेटा गया था. 5 तुम्हारे लिये इनमें से कोई भी काम करने हेतु
किसी ने भी तुम पर दया दृष्टि नहीं की, या सहानुभूति नहीं दिखाई. बल्कि तुम्हें
बाहर खुले मैदान में फेंक दिया गया, क्योंकि जन्म के दिन से ही तुम्हें तुच्छ
समझा गया. 6 "'तब मैं वहां से होकर गुजरा और तुम्हें अपने खून में लोटते हुए
देखा, और जैसे कि तुम अपने खून में लेटी थी, मैंने तुमसे कहा, "जीवित रहो!"
7 मैंने तुम्हें खेत के एक पौधे की तरह बढ़ाया. तुम बढ़ती गई और विकसित हुई
और यौवन अवस्था में आई. तुम्हारे स्तन विकसित हुए और तुम्हारे बाल लंबे हो
गए, फिर भी तुम बिलकुल निवस्त्र थी. 8 "'बाद में, मैं वहां से होकर गुजरा,
और मैंने देखा कि तुम प्रेम करने लायक बड़ी हो चुकी थी, अतः मैंने अपने
कपड़े का कोना तुम्हारे ऊपर फैला दिया और तुम्हारे नंगे शरीर को ढांप दिया.
तब मैंने तुमसे सत्यनिष्ठा से शपथ खाई और तुम्हारे साथ एक वाचा बांधी, और
तुम मेरी हो गई, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 9 "'तब मैंने तुम्हें पानी से
नहलाया और तुम पर लगे खून को धोया तथा तुम्हारे शरीर पर तेल लगाया. 10
मैंने तुम्हें कसीदा काढ़े वस्त्र पहनाया और तुम्हारे पांवों पर उच्च दर्जे के चमड़े
की जूतियां पहनाई. मैंने तुम्हें सुंदर मलमल के कपड़े पहनाए और तुम्हें कीमती
कपड़े ओढ़ाए. 11 मैंने गहनों से तुम्हारा श्रृंगार किया: मैंने तुम्हारे हाथों में कंगन
डाला और तुम्हारे गले में हार पहनाया, 12 और मैंने तुम्हारी नाक में नथनी,
कानों में बालियां और तुम्हारे सिर पर एक सुंदर मुकुट पहनाया. 13 इस प्रकार
सोने और चांदी से तुम्हारा श्रृंगार किया गया; तुम्हारे कपड़े सुंदर मलमल, मंहगे
बुनावट और कसीदा किए हुए थे. तुम्हारे भोजन में शहद, जैतून तेल और सबसे
अच्छा आटा था. तुम बहुत सुंदर हो गई और रानी बनने के योग्य हो गई. 14
और तुम्हारी सुंदरता के कारण तुम्हारी प्रसिद्धि जाति-जाति के लोगों में फैल गई,
क्योंकि मैंने तुम्हें जो शोभा दी, उसने तुम्हारी सुंदरता को परिपूर्ण कर दिया, परम
प्रधान याहवेह की घोषणा है. 15 "'परंतु तुमने अपनी सुंदरता पर भरोसा किया

और अपनी प्रसिद्धि का उपयोग एक वेश्या बनने में किया. जो भी तुम्हारे पास से
होकर गुजरा, तुमने उस पर बहुत कृपा दिखाई, और तुम्हारी सुंदरता ने उसे मोह
लिया. 16 तुमने अपने कुछ कपड़ों को लेकर भड़कीले ऊंचे स्थान बनाए, और
वहां तुम वेश्यावृत्ति करती रही. तुम उसके पास गई, और उसने तुम्हारी सुंदरता
पर अधिकार कर लिया है. 17 तुमने मेरे दिये हुए उन सुंदर गहनों को भी लिया,
जो सोने और चांदी से बने थे, और तुमने अपने लिए पुरुष-मूर्तियां बना लीं और
उन मूर्तियों के साथ व्यभिचार करने लगीं. 18 और तुमने अपने कसीदा किए
हुए कपड़े लेकर उनको पहनाए, और तुमने मेरा तेल और धूप उनको चढ़ाए. 19
और वह भोजन भी जो मैंने तुमको तुम्हारे खाने के लिये दिया था—आटा, जैतून
तेल और शहद—तुमने इसे उनके सामने एक सुगंधित धूप के रूप में चढ़ाया.
ऐसा ही हुआ है, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 20 "'और तुमने अपने उन
बेटे और बेटियों को लिया, जिन्हें तुमने मेरे लिए पैदा किए थे, और उन्हें उन
मूर्तियों के लिये भोजन के रूप में चढ़ा दिया. क्या तुम्हारी वेश्यावृत्ति पर्याप्त
नहीं थी? 21 तुमने मेरे बच्चों का वध किया और उन्हें इन मूर्तियों को चढ़ा
दिया. 22 अपने इन सब घृणित कार्यों और वेश्यावृत्ति के बीच, तुमने अपने
बचपन के उन दिनों को भूला दिया, जब तुम नंगी और खुली अपने खून में लेट
रही थी. 23 "'धिक्कार! धिक्कार है तुम पर, परम प्रधान याहवेह की घोषणा
है. अपनी सब दुष्टताओं के अलावा, 24 तुमने अपने लिये एक टीला बना लिया
है और हर एक चौक पर अपने लिए एक ऊंचा पूजा-स्थल बनाया है. 25 हर
एक गली के कोने पर तुमने ऊंचे पूजा-स्थल बना लिए हैं और वहां से गुज़रने
वाले लोगों के सामने बढ़ती दुराचार प्रवृत्ति के साथ अपने पैरों को फैलाकर
अपनी सुंदरता का अपमान किया है. 26 तुमने बड़े जननांगों वाले मिस्री और
अपने पड़ोसियों से व्यभिचार किया है, और अपनी बढ़ती दुराचार प्रवृत्ति से
तुमने मेरे क्रोध को भड़काया है. 27 इसलिये मैंने अपना हाथ तुम्हारे विरुद्ध
उठाया है और तुम्हारे क्षेत्र को घटा दिया है, मैंने तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं की कृपा पर
छोड़ दिया है, अर्थात् फिलिस्तीनियों की पुत्रियों की कृपा पर, जिन्हें तुम्हारे
व्यभिचारी आचरण के कारण धक्का लगा है. 28 तुमने अश्शूरियों के साथ भी
व्यभिचार किया है, क्योंकि तुम्हें संतोष ही नहीं होता था; और उसके बाद भी
तुम संतुष्ट न हुई 29 तब तुमने अपने दुराचार प्रवृत्ति को बढ़ाकर उसमें बाबेल देश
को भी शामिल कर लिया, जो व्यापारियों का एक देश है, पर इससे भी तुम्हें
संतोष न हुआ. 30 "'जब तुम इस प्रकार एक निर्लज्ज वेश्या की तरह काम
करती हो, तो मैं क्रोध से भर जाता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है! 31
जब तुमने हर गली के कोने पर अपना टीला बनाया है और हर चौक में अपना
ऊंचा पूजा-स्थल बनाया है, तो तुम एक वेश्या की तरह ठहरी, क्योंकि तुमने
दिये गये रकम का असम्मान किया है. 32 "'तुम व्यभिचारी पत्नी हो! तुम अपने
स्वयं के पति के बदले अजनबियों को ज्यादा पसंद करती हो! 33 सब वेश्याएं
उपहार लेती हैं, परंतु तुम अपने सब प्रेमियों को उपहार देती हो, कि वे हर जगह
से तुम्हारे अवैध चाहत के लिये आएं. 34 इस प्रकार तुम्हारी वेश्यावृत्ति दूसरों
की वेश्यावृत्ति का उलटा है; तुम्हारी चाहत के लिये तुम्हारे पीछे कोई नहीं
भागता. तुम बिलकुल उलटा हो, क्योंकि तुम दाम (पैसा) देती हो और तुम्हें
कुछ नहीं दिया जाता. 35 "'इसलिये, हे वेश्या, याहवेह की बात सुनो! 36
परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्योंकि तुमने अपनी वासना को उंडेला है
और अपने कामुक प्रवृत्ति में अपने प्रेमियों को अपने नंगे देह को दिखाया है,
और तुम्हारे सब घृणित मूर्तियों के कारण, और क्योंकि तुमने उन मूर्तियों को
अपने बच्चों का खून दिया है, 37 इसलिये मैं तुम्हारे उन सब प्रेमियों को इकट्ठा
करनेवाला हूं, जिनके साथ तुम्हें खुशी मिली है, जिनसे तुमने प्रेम किया है, साथ
ही साथ जिनसे तुमने घृणा किया है. मैं उन्हें चारों तरफ से तुम्हारे विरुद्ध इकट्ठा
करूंगा और उनके सामने तुम्हारे कपड़े उतारूंगा और वे तुम्हें पूरी तरह नंगी
देखेंगे. 38 मैं तुम्हें उन स्त्रियों का दंड दूंगा जो व्यभिचार करती हैं और जो खून
बहाती हैं; मैं अपने कोप और ईर्ष्या के क्रोध से तुमसे खून का बदला लूंगा. 39
तब मैं तुम्हें तुम्हारे प्रेमियों के हाथों में सौंप दूंगा, और वे तुम्हारे पूजा के टीलों
को तोड़कर गिरा देंगे और तुम्हारे ऊंचे पूजा स्थलों को नष्ट कर देंगे. वे तुम्हारे
कपड़े उतार लेंगे और तुम्हारे अच्छे गहने आभूषण लूट लेंगे और तुम्हें बिलकुल
नंगी छोड़ देंगे. 40 वे तुम्हारे विरुद्ध एक उपद्रवी भीड़ ले आएंगे, जो तुम पर
पत्थरवाह करेंगे और तुम्हें अपनी तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे. 41 वे
तुम्हारे घरों को जला देंगे और बहुत सी स्त्रियों के देखते में तुम्हें दंड देंगे. मैं
तुम्हारे वेश्यावृत्ति को बंद कर दूंगा, और तुम अपने प्रेमियों को दाम नहीं दोगी.
42 तब तुम्हारे विरुद्ध मेरा कोप ठंडा पड़ जाएगा और तुम्हारे ऊपर से मेरी ईर्ष्या
का क्रोध जाता रहेगा; मैं शांत हो जाऊंगा और फिर गुस्सा नहीं करूंगा. 43
"'क्योंकि तुमने अपनी जवानी के दिनों को याद नहीं रखा, पर इन सब कामों
के द्वारा मुझे नाराज किया; इसलिये जो कुछ तुमने किया है, निश्चित रूप से उन
बातों को मैं तुम्हारे ही सिर पर ले आऊंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.
अपने सब दूसरे घृणित कामों के अलावा क्या तुमने अश्लीलता भी नहीं की? 44
"'हर एक व्यक्ति, जो कहावतों का प्रयोग करता है, वह तुम्हारे बारे में इस
कहावत का प्रयोग करेगा: "जैसी मां, वैसी बेटी." 45 तुम अपनी मां की सही
बेटी हो, जिसने अपने पति और अपने बच्चों को तुच्छ जाना; और तुम अपनी
बहनों की सही बहन हो, जिन्होंने अपने पतियों और बच्चों को तुच्छ जाना.
तुम्हारी माता एक हित्ती और तुम्हारे पिता एक अमोरी थे. 46 शमरिया तुम्हारी
बड़ी बहन थी, जो अपनी बेटियों के साथ तुम्हारे उत्तर की ओर रहती थी; और
तुम्हारी छोटी बहन सोदोम है, जो अपनी बेटियों के साथ तुम्हारे दक्षिण की ओर
रहती थी. 47 तुमने न सिर्फ उनके पद-चिन्हों पर चलकर उनके घृणित कामों
की नकल की, पर जल्दी ही तुम अपने सब कामों में उनसे भी ज्यादा भ्रष्ट हो
गई. 48 परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूं, तुम्हारी बहन सोदोम तथा उसकी बेटियों ने ऐसा घृणित काम कभी
नहीं किया, जैसा कि तुमने और तुम्हारी बेटियों ने किया है. 49 "'तुम्हारी
बहन सोदोम का पाप यह था: वह और उसकी बेटियां घमंडी, ज्यादा खानेवाली
और निश्चिंत जीवन जीनेवाली थी; वे गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता नहीं
करती थी. 50 वे घमंड से भरी थी और उन्होंने मेरे सामने घृणित कार्य किया.
इसलिये मैंने उन्हें दूर कर दिया जैसे कि तुमने देखा है. 51 शमरिया ने तुमसे
आधे भी पाप नहीं किए हैं. तुमने उनसे ज्यादा घृणित काम किए हैं, और तुम्हारे
द्वारा किए गये इन सब कामों के द्वारा तुम्हारी बहनें धार्मिक दिखाई दे रही हैं.
52 अपने कलंक का बोझ उठाती रहो, क्योंकि तुमने ही अपनी बहनों के कुछ
न्याय-प्रक्रिया को साफ किया है. क्योंकि तुम्हारे पाप उनके पापों से ज्यादा नीच
प्रकृति के थे, वे तुमसे ज्यादा धर्मी जान पड़ती हैं. इसलिये लज्जित हो और
अपने कलंक का भार उठाओ, क्योंकि तुलना में तुम्हारी बहनें धर्मी जान पड़ती
हैं. 53 "'फिर भी, मैं सोदोम और उसकी बेटियों के जीवन, शमरिया और
उसकी बेटियों के जीवन, और साथ में तुम्हारे जीवन को भी बदलूंगा, 54 ताकि
तुम अपने कलंक का बोझ उठा सको और उनको सांत्वना देकर जो काम तुमने
किया है, उससे लज्जित हो. 55 और तुम्हारी बहनें, सोदोम और उसकी बेटियां,
और शमरिया और उसकी बेटियां अपने पहले की स्थिति में लौट जाएंगी; और
तुम और तुम्हारी बेटियां भी अपने पहले की स्थिति में लौट आएंगी. 56 अपने
अहंकार के दिनों में, जब तुम्हारी दुष्टता प्रगट नहीं हुई थी, तब तुम अपनी बहन
सोदोम का नाम तक लेना नहीं चाहती थी. 57 उसी तरह, अब तुम एदोम की
बेटियों और उसके सब पड़ोसियों और फिलिस्तीनियों की बेटियों—अपने
चारों तरफ के लोगों के द्वारा तुच्छ समझी जाती हो. 58 तुम्हें अपनी नीचता
और घृणित कार्यों का प्रतिफल मिलेगा, याहवेह की घोषणा है. 59 "'परम

प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा, जैसा
तुमने किया है, क्योंकि तुमने वाचा को तोड़ने के द्वारा मेरी सौगंध को तुच्छ
समझा है. 60 तौभी, मैं उस वाचा को याद रखूंगा, जिसे मैंने तुम्हारे साथ तुम्हारे
जवानी के दिनों में बांधी थी, और मैं तुम्हारे साथ सदाकाल तक बने रहनेवाली
एक वाचा बांधूंगा. 61 तब तुम अपने चालचलन को याद करके लज्जित होगी,
जब तुम अपनी बड़ी और छोटी बहनों से मिलोगी. मैं उन्हें तुमको तुम्हारी
बेटियों के रूप में दूंगा, परंतु यह तुम्हारे साथ बांधी गई वाचा के आधार पर नहीं
होगा. 62 इस प्रकार मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा बांधूंगा, और तुम जानोगे कि मैं
याहवेह हूं. 63 तब, जब मैं तुम्हारे किए गये सब गलत कार्यों को क्षमा करूंगा,
तब तुम याद करोगी और लज्जित होंगी और अपमानित होने के कारण फिर
कभी अपना मुंह नहीं खोलोगी, यह परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.’”

17 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, एक पहेली
बनाओ और इसे इस्राएलियों को एक दृष्टांत के रूप में सुनाओ. 3 उनसे
कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: एक बड़ा गरूड़ लबानोन में आया,
जिसके शक्तिशाली डैने और लंबे पंख थे और उसके पूरे पंख विभिन्‍न रंगों के
थे. उसने देवदार के पेड़ की चोटी के शाखा को पकड़कर. 4 उसने सबसे ऊपर
की कोमल शाखा को तोड़ लिया और उसे व्यापारियों के एक देश में ले गया,
और उसने उसे वहां एक व्यापारियों के शहर में रोप दिया. 5 “‘उसने देश के
छोटे पौधों में से एक पौधा लेकर उसे उपजाऊ भूमि में लगा दिया. उसने उसे
एक बहुत पानी वाले जगह में एक सरई की तरह लगाया, 6 और वह बढ़ने लगा
और फैलकर अंगूर की एक लता हो गया. उसकी डालियां उसकी ओर झुकी,
पर उसकी जड़ें उसके नीचे में ही रहीं. वह अंगूर की एक लता हो गई और
उसमें से डालियां निकलीं और ये डालियां पत्तियों से भर गईं. 7 “‘पर वहां
एक और बड़ा गरूड़ था जिसके शक्तिशाली डैने थे और वह पंखों से भरा हुआ
था. अब अंगूर की लता, जहां वह लगायी गई थी, वहां से उसकी जड़ें उस
दूसरे गरूड़ की ओर बढ़ने लगीं और उसकी डालियां पानी के लिये उसकी तरफ
फैलने लगीं. 8 उस लता को अच्छी भूमि पर बहुत पानी वाले जगह में लगाया
गया था ताकि उसमें डालियां निकलें; उसमें फल लगें और वह एक बहुत बढ़िया
अंगूर की लता हो.’ 9 “उनसे कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
क्या यह बढ़ेगा? क्या इसे उखाड़कर इसके फलों को गिरा दिया नहीं जाएगा
ताकि यह सूख जाए? इसकी सब नई अंकुरित पत्तियां सूख जाएंगी. इसे इसके
जड़ से उखाड़ने के लिये किसी मजबूत हाथ या बहुत से लोगों की ज़रूरत नहीं
होगी. 10 इसे लगाया गया है, पर क्या यह बढ़ेगा? क्या यह पूरी तरह सूख नहीं
जाएगी जब इस पर पूर्वी हवा चलेगी? यह उसी भूमि में ही सूख जाएगी, जहां
यह उगी थी.’” 11 तब याहवेह का वचन मेरे पास आया: 12 “इन विद्रोही
लोगों से कहो, ‘क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते?’ उनसे कहो: ‘बाबेल
का राजा येरूशलेम गया और उसके राजा और उसके प्रभावशाली लोगों को
अपने साथ वापस बाबेल ले आया. 13 तब उसने राजपरिवार के एक सदस्य को
लिया और उसे सौगंध दिलाकर उससे एक संधि की. वह अपने साथ देश के
मुख्य लोगों को भी ले गया, 14 ताकि वह राज्य कमजोर हो जाए और फिर
उन्‍नति न कर सके, पर सिर्फ उसके द्वारा किए गये संधि पर चलने से बचा रहे.
15 परंतु उस राज्य के राजा ने अपने दूतों को घोड़े और एक बड़ी सेना लाने के
लिये मिस्र देश भेजा और इस प्रकार उसने बाबेल के राजा से विद्रोह किया.
क्या वह सफल होगा? क्या वह, जो ऐसा काम करता है, बच निकलेगा? क्या
वह संधि को तोड़कर भी बच जाएगा? 16 “‘मेरे जीवन की सौगंध, परम
प्रधान याहवेह की घोषणा है, वह उस राजा के देश बाबेल में मरेगा, जिसने उसे
सिंहासन पर बैठाया, जिसकी शपथ को उसने तुच्छ जाना और जिसके संधि
को उसने तोड़ा. 17 जब ढलानें बनायी जाएंगी और लोगों को मारने के लिये
घेराबंदी का काम किया जाएगा, तो फ़रोह, उसकी बड़ी सेना और उसका बड़ा
उपद्रवी झुंड भी युद्ध में उसके कोई काम न आएगा. 18 उसने वाचा को तोड़ने
के द्वारा शपथ को तुच्छ जाना. क्योंकि उसने अपने हाथ को गिरवी रखा और
फिर भी ये सब काम किया, इसलिये वह बच नहीं पाएगा. 19 “‘इसलिये परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं,
निश्चयतः, मैं उससे मेरी शपथ को तुच्छ समझने और मेरी वाचा को तोड़ने का
बदला लूंगा. 20 मैं उसके लिये अपना जाल फैलाऊंगा, और वह मेरे फंदे में
फंसेगा. मैं उसे बाबेल ले जाऊंगा और वहां उसे दंड दूंगा क्योंकि उसने मेरे साथ
विश्वासघात किया. 21 उसके उत्तम सैन्य दल तलवार से मारे जाएंगे, और बचे
हुए लोग चारों तरफ तितर-बितर हो जाएंगे. तब तुम जानोगे कि मैं, याहवेह
ने यह कहा है. 22 “‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं एक देवदार
वृक्ष की सबसे ऊंची डाली के अंकुर को लेकर लगाऊंगा; मैं उसकी सबसे
ऊंची शाखाओं में से एक कोमल डाली को तोड़ूंगा और उसे एक ऊंचे पहाड़
पर लगाऊंगा. 23 मैं उसे इस्राएल के पहाड़ की ऊंचाइयों में लगाऊंगा; इसमें
शाखाएं निकलेंगी और फल लगेगा और यह एक शानदार देवदार का पेड़ होगा.
हर प्रकार के पक्षी उसमें घोंसला बनाएंगे; वे उसकी शाखाओं की छाया में बसेरा
करेंगे. 24 बंजर भूमि के सब वृक्ष जान लेंगे कि मैं याहवेह ऊंचे वृक्ष को नीचे
लाता और छोटे वृक्ष को बढ़ाकर ऊंचा करता हूं. मैं हरे-भरे वृक्ष को सुखा देता
और सूखे वृक्ष को हरा-भरा करके बढ़ाता हूं. “‘मैं याहवेह ने कहा है, और मैं
इसे पूरा करूंगा.’”

18 फिर याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 “इस्राएल देश के बारे में
इस कहावत का उल्लेख करने के द्वारा तुम लोग क्या कहना चाहते हो:
“‘खट्टे अंगूर तो खाए माता-पिताओं ने, किंतु दांत खट्टे हुए बच्चों के’? 3 “मैं
अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, तुम
इस्राएल देश में इस कहावत का उल्लेख फिर न करोगे. 4 हर एक जन मेरा है,
माता-पिता के साथ साथ बच्चे भी—दोनों एक समान मेरे हैं. इसलिये जो व्यक्ति
पाप करता है, वही मरेगा भी. 5 “मान लो एक धर्मी व्यक्ति है, जो वही करता
है जो उचित और सही है. 6 वह जो पहाड़ों के पूजा स्थलों पर नहीं खाता है
या इस्राएल के मूर्तियों की ओर नहीं देखता है. वह अपने पड़ोसी की पत्नी को
भ्रष्ट नहीं करता है, या किसी स्त्री के साथ उसके मासिक के समय संभोग नहीं
करता है. 7 वह किसी पर अत्याचार नहीं करता है, पर गिरवी रखी गई वस्तु
ऋणी को लौटा देता है. वह डाका नहीं डालता है, पर अपना भोजन भूखे को
देता है, और नंगे को कपड़ा देता है. 8 वह बिना किसी ब्याज के पैसा उधार देता
है, या उनसे लाभ नहीं उठाता है. वह गलत कार्य करने से अपने हाथ को रोके
रखता है और दो पक्षों के बीच सही न्याय करता है. 9 वह मेरे नियम पर चलता
है और विश्वासयोग्यता के साथ मेरे कानूनों का पालन करता है. तो वह व्यक्ति
धर्मी है; वह निश्चित रूप से जीवित रहेगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.
10 “मान लो उस व्यक्ति का एक हिंसक प्रवृत्ति का बेटा है, जो खून-ख़राबा
करता है या इनमें से कोई भी काम करता है, 11 (यद्यपि उसके पिता ने इनमें से
कोई भी काम नहीं किया है): “वह पहाड़ के पूजा स्थलों पर खाता है. वह
अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट करता है. 12 वह गरीब और ज़रूरतमंद पर
अत्याचार करता है. वह डाका डालता है. वह गिरवी रखी गई वस्तु को लौटाता
नहीं है. वह मूर्तियों की ओर देखता है. वह घृणित कार्य करता है. 13 वह ब्याज
पर पैसा उधार देता है और लाभ कमाता है. क्या ऐसा व्यक्ति जीवित रहेगा? वह
जीवित नहीं रहेगा! क्योंकि उसने ये सारे घृणित कार्य किए हैं, वह निश्चय मार
डाला जाएगा; उसके खून का दोष स्वयं उसी के ऊपर होगा. 14 “पर मान लो,
इस बेटे का एक बेटा है, जो अपने पिता द्वारा किए गए सब पापों को देखता है,
और यद्यपि वह उन पापों को देखता है, पर वह ऐसा कोई पाप नहीं करता है:

15 "वह पहाड़ के पूजा स्थलों पर नहीं खाता है या इस्राएल के मूर्तियों को नहीं
देखता है. वह अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट नहीं करता है. 16 वह किसी पर
अत्याचार नहीं करता है, वह कर्जा देने के लिये किसी चीज़ को गिरवी नहीं
रखता. वह डाका नहीं डालता है, पर अपना भोजन भूखे को देता है और नंगे
को कपड़ा देता है. 17 वह गरीबों को सताने से अपने हाथ रोके रखता है और
उनसे कोई ब्याज या फायदा नहीं उठाता है. वह मेरे कानूनों का पालन करता
और मेरे नियमों पर चलता है. वह अपने पिता के पाप के कारण नहीं मरेगा; वह
निश्चय ही जीवित रहेगा. 18 पर उसका पिता उसके स्वयं के पाप के कारण
मरेगा, क्योंकि उसने अवैध वसूली की, अपने भाई को लूटा और वह काम
किया जो उसके लोगों के बीच गलत है. 19 "तौभी तुम पूछते हो, 'पुत्र अपने
पिता के दोष का भागीदार क्यों नहीं होता?' जब बेटे ने वह काम किया जो
उचित और सही है और ध्यानपूर्वक मेरे नियमों को माना है, तो वह निश्चय ही
जीवित रहेगा. 20 जो पाप करेगा, मरेगा भी वहीं. कोई बच्चा अपने माता-पिता
के दोष का भागीदार नहीं होगा, और न ही माता-पिता अपने बच्चों के दोष के
भागीदार होंगे. धर्मी के धर्मीपन का फल उस धर्मी को ही मिलेगा, और दुष्ट
की दुष्टता का फल उस दुष्ट को दिया जाएगा. 21 "पर यदि कोई दुष्ट व्यक्ति
अपने सब पापों को छोड़ देता है और मेरे नियमों का पालन करता है, और वह
काम करता है जो उचित और सही है, तो वह व्यक्ति निश्चय जीवित रहेगा; वह
न मरेगा. 22 उसने जो भी पाप किए हैं, वे फिर याद किए नहीं जाएंगे. वह
अपने किए गये धर्म के कामों के कारण जीवित रहेगा. 23 क्या मैं किसी दुष्ट
की मृत्यु से खुश होता हूं? परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. बल्कि क्या मैं
खुश नहीं होता, जब वह अपने बुरे कामों को छोड़कर जीवित रहता है? 24
"पर यदि कोई धर्मी व्यक्ति अपने धर्मीपन को छोड़कर पाप करता है और वही
घृणित काम करने लगता है जो दुष्ट व्यक्ति करते हैं, तो क्या वह जीवित रहेगा?
उसके द्वारा किए गये कोई भी धर्मी काम याद नहीं किए जाएंगे. अपने किए
गये विश्वासघात के कारण वह दोषी है और अपने किए गये पापों के कारण
वह मरेगा. 25 "फिर भी तुम कहते हो, 'प्रभु की नीति उचित नहीं है.' हे
इस्राएलियो, सुनो: क्या मेरी नीति अनुचित है? क्या ये तुम्हारी ही नीतियां नहीं
हैं जो अनुचित हैं? 26 यदि कोई धर्मी व्यक्ति अपने धर्मीपन को छोड़कर दुष्ट
काम करता है, तब वह अपने दुष्ट काम के कारण मरेगा; अपने किए गये पापों
के कारण वह मरेगा. 27 पर यदि कोई दुष्ट व्यक्ति अपने बुरे कामों को छोड़ देता
है और वह काम करता है जो उचित और सही है, तो वह अपना प्राण बचाएगा.
28 क्योंकि उसने अपने किए गये सब पापों पर सोच-विचार किया और उन्हें
छोड़ दिया, इसलिये वह व्यक्ति निश्चय ही जीवित रहेगा; वह नहीं मरेगा. 29
तौभी इस्राएली कहते हैं, 'प्रभु की नीति उचित नहीं है.' हे इस्राएल के लोगो,
क्या मेरी नीतियां अनुचित हैं? क्या ये तुम्हारी ही नीतियां नहीं हैं जो अनुचित
हैं? 30 "इसलिये, हे इस्राएलियो, मैं तुममें से हर एक का न्याय उसी के आचरण
के अनुसार करूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. पश्चात्ताप करो! अपने
सब पापों को छोड़ दो; तब पाप तुम्हारे लिए पतन का कारण नहीं बनेगा. 31
अपने द्वारा किए गए सब अपराधों से दूर हो जाओ और एक नया हृदय और एक
नई आत्मा ले लो. हे इस्राएल के लोगों, तुम्हारी मृत्यु क्यों हो? 32 क्योंकि मुझे
किसी के भी मृत्यु से खुशी नहीं होती, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.
इसलिये पश्चात्ताप करो और जीवित रहो!

19 "इस्राएल के राजकुमारों के संबंध में एक विलापगीत लो 2 और कहो:
"'सिंहों के मध्य क्या ही एक सिंहनी थी तुम्हारी माता! वह उनके बीच
रहती थी और अपने बच्चों (शावकों) का पालन पोषण करती थी. 3 उसने
अपने बच्चों में से एक को पालकर बड़ा किया, और वह एक बलवान सिंह हो
गया. वह शिकार को फाड़ डालना सीख गया और वह एक नर-भक्षी बन गया.
4 जाति-जाति के लोगों ने उसके बारे में सुना, और वह उनके द्वारा खोदे गए गड्ढे
में गिरकर फंस गया. वे उस पर नकेल डालकर मिस्र देश ले गये. 5 "'जब
सिंहनी ने देखा कि उसकी आशा पूरी नहीं हुई, और उसकी उम्मीद जाती रही,
तो उसने अपने एक और बच्चे को लिया और उसे एक बलवान सिंह बनाया. 6
वह अन्य सिंहों के बीच चलने फिरने लगा, क्योंकि अब वह एक बलवान सिंह
बन चुका था. वह शिकार को फाड़ डालना सीख गया और वह एक नर-भक्षी
बन गया. 7 उसने उनके एक दृढ गढ़ को तोड़ डाला और उनके नगरों को
उजाड़ दिया. पूरा देश और उसमें रहनेवाले सबके सब उसके गर्जन से भयभीत
होते थे. 8 तब उसके चारों तरफ के जाति-जाति के लोग उसके विरुद्ध हो गए.
उन्होंने उसके लिये जाल बिछाया, और वह उनके द्वारा खोदे गए गड्ढे में फंस
गया. 9 उन्होंने नकेल डालकर उसे ऊपर खींचा और उसे एक पिंजरे में डाल
दिया और उसे बाबेल के राजा के पास ले आए. उन्होंने उसे बंदी बनाकर रखा,
जिससे उसका गर्जन इस्राएल देश के पर्वतों पर फिर कभी सुनाई नहीं दिया. 10
"'तुम्हारी माता पानी के किनारे लगाये गए अंगूर की बारी में अंगूर की एक
लता की तरह थी; पानी की अधिकता के कारण उसमें फल लगते थे और वह
शाखाओं से भरी हुई थी. 11 उसकी शाखाएं मजबूत थी, और एक शासन
करनेवाले के राजदंड के लिये उपयुक्त थी. घने पत्तियों के ऊपर यह बहुत ऊंची
थी, अपनी ऊंचाई और बहुत सी शाखाओं के कारण यह महत्वपूर्ण थी. 12 परंतु
उसे क्रोध में उखाड़ दिया गया और भूमि पर फेंक दिया गया. पूर्वी हवा ने उसे
सूखा दिया, उसके फल गिर गये; उसकी मजबूत शाखाएं सूख गईं और आग ने
उन्हें जलाकर नष्ट कर दिया. 13 अब उसे निर्जन प्रदेश में लगाया गया है, एक
सूखी और प्यासी भूमि पर. 14 उसकी एक मुख्य शाखा से आग फैली और
उसके फलों को जलाकर नष्ट कर दिया. उसमें और कोई मजबूत शाखा नहीं
बची जो शासन करनेवाले के राजदंड के लिये उपयुक्त हो.' यह एक विलापगीत
है और इसे एक विलापगीत के रूप में उपयोग करना है."

20 सातवें वर्ष के पांचवें महीने के दसवें दिन, इस्राएल के कुछ अगुए याहवेह
की इच्छा जानने के लिये आये और वे मेरे सामने बैठ गये. 2 तब याहवेह
का वचन मेरे पास आया: 3 "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के अगुओं से बात करो
और उनसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्या तुम मेरी इच्छा
जानने आए हो? मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, मैं तुम्हें अपनी
इच्छा नहीं बताऊंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.' 4 "क्या तुम उनका
न्याय करोगे? हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुम उनका न्याय करोगे? तब उनके पूर्वजों
के द्वारा किए घृणित कार्य उन्हें बताओ 5 और उनसे कहो: 'परम प्रधान याहवेह
का यह कहना है: जिस दिन मैंने इस्राएल को चुन लिया, मैंने अपना हाथ उठाकर
याकोब के वंशजों से शपथ खाई और अपने आपको मिस्र देश में उन पर प्रकट
किया. हाथ उठाकर मैंने उनसे कहा, "मैं याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं." 6 उस
दिन मैंने उनसे शपथ खाई कि मैं उन्हें मिस्र देश से निकालकर एक ऐसे देश में ले
आऊंगा, जिसे मैंने उनके लिये खोजा था, एक ऐसा देश जिसमें दूध और मधु की
धाराएं बहती हैं, और जो सब देशों से सुंदर है. 7 और मैंने उनसे कहा, "तुममें से
हर एक उन निकम्मे मूर्तियों को निकाल फेंको, जिन पर तुम्हारी दृष्टि लगी रहती
है, और मिस्र की मूर्तियों से अपने आपको अशुद्ध मत करो. मैं याहवेह तुम्हारा
परमेश्वर हूं." 8 "'परंतु उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया और मेरी बातें नहीं
सुनी; उन्होंने उन निकम्मी मूर्तियों को नहीं फेंका, जिन पर उनकी दृष्टि लगी
हुई थी, और न ही उन्होंने मिस्र की मूर्तियों का परित्याग किया. इसलिये मैंने
कहा कि मैं उन पर अपना कोप उंडेलूंगा और मिस्र देश में उनके विरुद्ध अपना
क्रोध दिखाऊंगा. 9 पर अपने नाम के निमित्त मैं उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया.
मैंने ऐसा इसलिये किया ताकि मेरा नाम उन जातियों के दृष्टि में अपवित्र न ठहरे,
जिनके बीच वे रहते थे और जिनके देखते में मैंने अपने आपको इस्राएलियों पर

प्रकट किया था. 10 इसलिये मैं उन्हें मिस्र देश से निकालकर निर्जन प्रदेश में ले आया. 11 मैंने उन्हें अपने नियम दिये और उन्हें अपना कानून बताया, जिनका यदि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो वह जीवित रहेगा. 12 मैंने उनके लिये अपने शब्बाथ भी ठहराए, जो मेरे और उनके बीच एक चिन्ह हो, ताकि वे जानें कि मैं याहवेह ने उन्हें पवित्र बनाया है. 13 “‘तो भी इस्राएल के लोगों ने निर्जन प्रदेश में मेरे विरुद्ध विद्रोह किया. वे मेरे नियमों पर नहीं चले और मेरे कानूनों को अस्वीकार किया—जिनका यदि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो वह जीवित रहेगा—और उन्होंने पूरी तरह से मेरे विश्राम दिन को अपवित्र किया. इसलिये मैंने कहा कि मैं उन पर अपना कोप उंडेलूंगा और निर्जन प्रदेश में उन्हें नाश कर दूंगा. 14 पर अपने नाम के निमित्त मैंने वह किया जिससे मेरा नाम उन जनताओं की दृष्टि में अपवित्र न ठहरे, जिनके देखते मैं उन्हें निकाल लाया था. 15 अपना हाथ उठाकर निर्जन प्रदेश में, मैंने शपथ भी खाई कि मैं उन्हें उस देश में नहीं लाऊंगा, जिसे मैंने उन्हें दिया था—एक ऐसा देश जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, जो सब देशों से सुंदर है— 16 इसका कारण यह था कि उन्होंने मेरे कानूनों को अस्वीकार किया और मेरे नियमों पर नहीं चले और मेरे विश्राम दिन को अपवित्र किया. क्योंकि उनका मन उनकी मूर्तियों पर लगा हुआ था. 17 तौभी मैंने उन पर दया की और उन्हें नाश नहीं किया या निर्जन प्रदेश में उनका अंत नहीं किया. 18 निर्जन प्रदेश में मैंने उनके बच्चों से कहा, “अपने माता-पिता के विधियों पर या उनके कानूनों पर मत चलो या उनके मूर्तियों से अपने आपको अशुद्ध मत करो. 19 मैं याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं; मेरे नियमों पर चलो और ध्यानपूर्वक मेरे कानूनों का पालन करो. 20 मेरे विश्राम दिनों को पवित्र मानो, कि वे मेरे और तुम्हारे बीच एक चिन्ह ठहरें. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं.” 21 “‘परंतु उनके बच्चों ने भी मेरे विरुद्ध विद्रोह किया: वे मेरे नियमों पर नहीं चले, उन्होंने मेरे कानूनों का पालन करने में सावधानी नहीं बरती, जिनके बारे में मैंने कहा था, “वह व्यक्ति जो उनका पालन करेगा, वह जीवित रहेगा,” और उन्होंने मेरे विश्राम दिनों को अपवित्र किया. इसलिये मैंने कहा मैं उन पर अपना कोप उंडेलूंगा और निर्जन प्रदेश में उनको अपना क्रोध दिखाऊंगा. 22 परंतु मैंने अपना हाथ रोके रखा, और अपने नाम के निमित्त मैंने वह किया, जिससे मेरा नाम उन जनताओं के दृष्टि में अपवित्र न ठहरे, जिनके देखते में, मैं उन्हें निकाल लाया था. 23 निर्जन प्रदेश में, मैंने अपना हाथ उठाकर उनसे शपथ भी खाई कि मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच छितरा दूंगा और विभिन्न देशों में तितर-बितर कर दूंगा, 24 क्योंकि उन्होंने मेरे कानूनों का पालन नहीं किया और मेरे नियमों को अस्वीकार किया और मेरे विश्राम दिनों को अपवित्र किया, और उनकी आंखें उनके माता-पिता के मूर्तियों पर लगी रहीं. 25 इसलिये मैंने उन्हें दूसरे विधि विधान दिये जो अच्छे नहीं थे और उन्हें ऐसे कानून दिये जिसके द्वारा वे जीवित नहीं रह सकते थे; 26 मैंने उन्हें उनके ही उपहारों के द्वारा अशुद्ध किया—हर पहलौठा का बलिदान किया जाना—जिससे वे अत्यंत भयभीत हों और वे जानें कि मैं याहवेह हूं.’ 27 “इसलिये, हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोगों से बात करो और उनसे कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: इस पर भी तुम्हारे पूर्वजों ने मुझसे विश्वासघात करके मेरी निंदा की. 28 जब मैं उन्हें उस देश में ले आया, जिसे मैंने उन्हें देने की शपथ खाई थी तो वे किसी ऊंची पहाड़ी या किसी पत्तीवाले पेड़ को देखकर, वहां अपना बलिदान और भेंट चढ़ाने लगे, और अपना सुगंधित धूप जलाकर पेय बलिदान देने लगे, जिससे मेरा क्रोध भड़का. 29 तब मैंने उनसे कहा: यह ऊंचा स्थान क्या है जो तुम वहां जाते हो?’ 30 “इसलिये इस्राएलियों से कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्या तुम लोग अपने पूर्वजों की तरह अपने आपको अशुद्ध करोगे और उनकी निकम्मी मूर्तियों के पीछे भागोगे? 31 जब तुम अपनी भेंटें चढ़ाते हो—अपने बच्चों का आग में बलिदान करते हो—तो ऐसा करने के द्वारा तुम आज तक अपने आपको अपनी सब मूर्तियों के द्वारा अशुद्ध करते आ रहे हो. तो हे इस्राएलियो, क्या मैं तुमको मुझसे पूछताछ करने दूंगा? मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, मैं तुमको मुझसे पूछताछ करने नहीं दूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 32 “‘तुम कहते हो, “हम उन जाति-जाति और संसार के लोगों के समान होना चाहते हैं, जो लकड़ी और पत्थर की सेवा करते हैं.” पर तुम्हारे मन में जो है, वह कभी पूरा न होगा. 33 मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, मैं शक्तिशाली हाथ और बढ़ाए हुए भुजा और भड़के हुए कोप से तुम्हारे ऊपर शासन करूंगा. 34 मैं तुम्हें उन जाति-जाति के लोगों और देशों से लाकर इकट्ठा करूंगा, जहां तुम बिखरे हुए हो—मैं तुम्हें शक्तिशाली हाथ और बढ़ाए हुए भुजा और भड़के हुए कोप से इकट्ठा करूंगा. 35 मैं तुम्हें जनताओं के निर्जन प्रदेश में ले आऊंगा और वहां, आमने-सामने मैं तुम्हारा न्याय करूंगा. 36 जैसा कि मैंने मिस्र देश के निर्जन प्रदेश में तुम्हारे पूर्वजों का न्याय किया था, वैसा ही मैं तुम्हारा न्याय करूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 37 जब तुम मेरी लाठी के अधीन चलोगे, तो मेरा ध्यान तुम पर रहेगा, और मैं तुम्हें वाचा के बंधन में लाऊंगा. 38 मैं तुम्हें उनमें से हटाकर शुद्ध करूंगा, जो मेरे विरुद्ध विद्रोह और अपराध करते हैं. यद्यपि मैं उन्हें उस देश से निकालकर लाऊंगा, जहां वे रह रहे हैं, तौभी वे इस्राएल देश में प्रवेश न कर पाएंगे. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 39 “‘हे इस्राएल के लोगों, जहां तक तुम्हारा संबंध है, परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: तुममें से हर एक जन जाए और अपनी-अपनी मूर्तियों की सेवा करे! परंतु बाद में तुम निश्चित रूप से मेरी सुनोगे और फिर मेरे पवित्र नाम को अपने उपहारों और मूर्तियों से अशुद्ध नहीं करोगे. 40 क्योंकि परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, मेरे पवित्र पर्वत, इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर, वहां देश में, इस्राएल के सारे लोग मेरी सेवा करेंगे, और वहां मैं उन्हें स्वीकार करूंगा. तब वहां मैं तुम्हारी भेंट और उत्तम उपहारों को तुम्हारे सब पवित्र बलिदानों सहित ग्रहण करूंगा. 41 मैं तुम्हें एक सुगंधित धूप के रूप में ग्रहण करूंगा जब मैं तुम्हें जनताओं के बीच से निकाल लाऊंगा और उन देशों से तुम्हें इकट्ठा करूंगा, जहां तुम तितर-बितर हो गये हो, और मैं जाति-जाति के लोगों के दृष्टि में तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊंगा. 42 तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं, जब मैं तुम्हें इस्राएल देश में ले आऊंगा, वह देश जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने की हाथ उठाकर शपथ खाई थी. 43 वहां तुम अपने चालचलन और उन सब कामों को याद करोगे, जिनके द्वारा तुमने अपने आपको अशुद्ध किया है, और अपने द्वारा किए गए सब बुरे कामों के कारण, तुम अपने आपसे घृणा करोगे. 44 हे इस्राएल के लोगों, जब मैं तुम्हारे बुरे कार्यों और तुम्हारे भ्रष्ट आचरण के अनुसार नहीं, परंतु अपने नाम के निमित्त तुमसे व्यवहार करूंगा, तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.’” 45 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 46 “हे मनुष्य के पुत्र, अपना चेहरा दक्षिण की ओर करो; दक्षिण के विरुद्ध प्रचार करो और दक्षिण देश के बंजर भूमि के विरुद्ध भविष्यवाणी करो. 47 दक्षिण के बंजर भूमि से कहो: ‘याहवेह के वचन को सुनो. परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं तुम पर आग लगाने ही वाला हूं, और यह तुम्हारे हरे और सूखे सब पेड़ों को जलाकर नष्ट कर देगी. धधकती ज्वाला नहीं बुझेगी, और दक्षिण से लेकर उत्तर तक हर चेहरा इससे झुलस जाएगा. 48 हर एक जन देखेगा कि मैं याहवेह ने ही यह आग लगायी है; यह नहीं बुझेगी.’” 49 तब मैंने कहा, “हे परम प्रधान याहवेह, वे लोग मेरे विषय में कह रहे हैं, ‘क्या वह मात्र दृष्टांत नहीं कह रहे हैं?’”

21 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, अपना चेहरा येरूशलेम के विरुद्ध करो और पवित्र स्थान के विरुद्ध प्रचार करो. इस्राएल देश के विरुद्ध भविष्यवाणी करो. 3 और उस देश से कहो: ‘याहवेह

का यह कहना है: हे इस्राएल, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं. मैं अपनी तलवार म्यान से
निकालूंगा और तुममें से धर्मी और दुष्ट दोनों को मार डालूंगा. **4** क्योंकि मैं
धर्मी और दुष्ट दोनों को मार डालने वाला हूं, इसलिये मेरी तलवार दक्षिण
से लेकर उत्तर तक सब मनुष्यों के विरुद्ध उठेगी. **5** तब सब लोग जानेंगे मैं
याहवेह ने म्यान से अपनी तलवार बाहर निकाली है; यह फिर म्यान में नहीं
रखी जाएगी.' **6** "इसलिये हे मनुष्य के पुत्र, कराहो! टूटे हृदय और बड़े दुःखी
होकर उनके सामने कराहो. **7** और जब वे तुमसे पूछें, 'क्यों कराह रहे हो?' तो
तुम उनसे कहना, 'उस समाचार के कारण, जो मुझे मिला है. हर एक का हृदय
डर से भर जाएगा और हर एक का हाथ पंगु हो जाएगा; हर एक का मनोबल
गिरेगा और हर एक के घुटने पानी के नाई कमजोर हो जाएंगे.' यह होनेवाला है!
यह निश्चय होगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है." **8** फिर याहवेह का वचन
मेरे पास आया: **9** "हे मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करो और कहो, 'याहवेह
का यह कहना है: "'एक तलवार, एक तलवार, धारदार और चमकाई हुई—
10 हत्या करने के लिये धारदार, बिजली की तरह कौंधने के लिये चमकाई
हुई! "'क्या हम मेरे शाही पुत्र के राजदंड पर आनंदित हों? तलवार हर एक
लाठी को तुच्छ समझती है. **11** "'तलवार को चमकाने के लिये, और हाथ से
पकड़ने के लिये दी गई है; इसे धारदार बनाया और चमकाया गया है, और हत्या
करनेवाले के हाथ में दिये जाने के लिये तैयार है. **12** हे मनुष्य के पुत्र, रोओ
और विलाप करो, क्योंकि यह मेरे लोगों के विरुद्ध है; यह इस्राएल के सब
राजकुमारों के विरुद्ध है. उन्हें मेरे लोगों सहित तलवार के आगे कर दिया गया
है. इसलिये अपनी छाती पीटो. **13** "'जांचने का समय निश्चय आएगा. और
यदि राजदंड, जिसे तलवार तुच्छ समझती है, न रहे, तब क्या होगा? परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है.' **14** "इसलिये तब, हे मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करो,
और अपने हाथों को एक साथ पीटो. तलवार दो बार, वरन तीन बार चले. यह
तलवार हत्या करने के लिये ही है, लोगों को सब तरफ से घेरकर यह तलवार
घोर हत्या करने के लिए है. **15** ताकि उनके हृदय डर से भर जाएं और बहुतेरे
ज़मीन पर गिरें, मैंने उनके सब द्वारों पर हत्या के लिये तलवार ठहराई है.
देखो! बिजली की तरह चोट करने के लिये यह जाल बुना गया है, इसका
उपयोग हत्या करने के लिये होगा. **16** हे तलवार, अपने दाहिने तरफ काट, तब
अपने बायें तरफ, जिधर भी तुम्हारा धार मुड़ता है, उधर काट. **17** मैं भी ताली
बजाऊंगा, और मेरा कोप शांत हो जाएगा. मैं याहवेह ने यह कहा है." **18**
याहवेह का वचन मेरे पास आया: **19** "हे मनुष्य के पुत्र, बाबेल के राजा की
तलवार ले जाने के लिये दो मार्गों को चिन्हांकित करो, दोनों मार्ग एक ही
देश से शुरू हों. जहां से मार्ग विभाजित होकर शहर की ओर जाता हैं, वहां
एक मार्ग-सूचक लगाओ. **20** एक मार्ग को अम्मोनियों के रब्बाह के विरुद्ध
तलवार के आने के लिये, और दूसरे मार्ग को यहूदिया और किलाबंदी किए हुए
येरूशलेम के विरुद्ध चिन्हांकित करना. **21** क्योंकि बाबेल का राजा तिराहे पर
अर्थात् दोनों मार्गों के मध्य संधि स्थल पर शकुन जानने के लिये रुकेगा: वह
तीरों से साथ लाटरी डालेगा, वह अपनी मूर्तियों से सलाह लेगा, वह बलि किए
हुए पशु के कलेजे को जांचेगा. **22** उसके दाहिने हाथ में येरूशलेम के लिये
चिट्ठी निकलेगी कि कहां वह युद्ध उपकरण लगाए, हत्या करने की आज्ञा दे, युद्ध
घोष करवाए, प्रवेश द्वारों के विरुद्ध युद्ध उपकरण लगवाए, आक्रमण के लिये एक
ढलान बनाए और घेराबंदी का काम करवाए. **23** यह उनके लिये एक झूठा
शकुन जान पड़ेगा, जिन्होंने उससे राजभक्ति की शपथ खाई है, पर वह उन्हें
उनके अपराध याद दिलाएगा और उन्हें बंदी बनाकर ले जाएगा. **24** "इसलिये
परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: 'इसलिये कि तुमने अपने किए गये सब
पापों को प्रगट करके, अपने खुले विद्रोह के द्वारा अपने अपराधों को याद किया
है—क्योंकि तुमने ऐसा किया है, इसलिये तुम्हें बंदी बना लिया जाएगा. **25**
"'हे इस्राएल के अशुद्ध और दुष्ट राजकुमार, तुम्हारा दिन आ गया है, तुम्हें दंड
देने का अंतिम समय आ गया है, **26** परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
अपनी पगड़ी उतार दो, मुकुट को हटा दो. जैसे स्थिति पहले थी, वैसे अब न
रहेगी: नीचे दर्जे के लोग ऊंचे किए जाएंगे और जो ऊंचे दर्जे के हैं, वे नीचे किए
जाएंगे. **27** विनाश! विनाश! मैं इसका विनाश कर दूंगा! मुकुट वापस नहीं
दिया जाएगा, जब तक कि वह न आ जाए, जो इसका सही हकदार है; उसे मैं
यह दे दूंगा.' **28** "और तुम, हे मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करो और कहो,
'अम्मोनियों और उनकी बेइज्जती के बारे में परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: "'एक तलवार, एक तलवार, जो हत्या करने के लिये निकाली गई, नाश
करने के लिए चमकाई गई है और उसकी चमक बिजली जैसी हो! **29** तुम्हारे
बारे में झूठे दर्शन और झूठे शकुन विचार के बावजूद, तलवार उन दुष्टों के गर्दन
पर रखी जाएगी, जिनका वध किया जाना है, जिनका दिन आ गया है, जिन्हें
दंड देने का अंतिम समय आ गया है. **30** "'तलवार को फिर उसके म्यान में
रखो. मैं तुम्हारा न्याय उस स्थान पर करूंगा, जहां तुम्हारी सृष्टि हुई, तुम्हारे
पुरखों के देश में. **31** मैं तुम पर अपना कोप उंडेलूंगा और मेरा भयंकर क्रोध तुम
पर भड़केगा; मैं तुम्हें ऐसे क्रूर लोगों के हाथों में सौंप दूंगा, जो विनाश करने में
निपुण हैं. **32** तुम आग के लिए ईंधन होगे, तुम्हारा खून तुम्हारे ही देश में गिरेगा,
तुम्हें फिर याद नहीं किया जाएगा; क्योंकि मैं, याहवेह ने कहा है.'"

22 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: **2** "हे मनुष्य के पुत्र, क्या
तुम उसका न्याय करोगे? क्या तुम इस खून बहानेवाले शहर का न्याय
करोगे? तब उसके सब घृणित कार्यों को उसे बताओ **3** और कहो: 'परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: हे शहर, तू अपने बीच खून बहाने के द्वारा अपने ऊपर
दण्डाज्ञा लाता है और मूर्तियां बनाकर अपने आपको अशुद्ध करता है. **4** तू दोषी
ठहरा है क्योंकि तूने खून बहाया है और तू मूर्तियां बनाकर अशुद्ध हो गया है. तू
अपने दिनों का अंत ले आया है, और तेरे वर्षों का भी अंत आ गया है. इसलिये
मैं तुझे जनताओं के लोगों में तिरस्कार का पात्र और सब देशों में हंसी का पात्र
बना दूंगा. **5** हे बदनाम शहर, तू उपद्रव से भरा है. वे लोग, जो तेरे पास हैं और
वे जो तुझसे दूर हैं, वे सबके सब तेरी हंसी उड़ाएंगे. **6** "'देखो, तुझमें रहनेवाले
इस्राएल के हर एक राजकुमार कैसे अपने शक्ति का उपयोग रक्तपात के लिए
करते हैं. **7** तुझमें रहकर उन्होंने अपने माता-पिता से अपमान का व्यवहार किया
है; तुममें रहकर उन्होंने विदेशियों को सताया और अनाथ और विधवा के साथ
गलत व्यवहार किया है. **8** तुमने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ समझा और मेरे
विश्राम दिनों को अशुद्ध किया है. **9** तुझमें निंदा करनेवाले हैं, जिनका झुकाव
रक्तपात करने की ओर रहता है; तुझमें वे लोग हैं, जो पहाड़ के पूजा स्थलों पर
खाते हैं और अश्लील काम करते हैं. **10** तुझमें वे लोग हैं, जो अपने पिता के
बिछौने का अपमान करते हैं; तुझमें ऐसे लोग हैं, जो स्त्रियों से उनके मासिक धर्म
के समय शारीरिक संबंध बनाते हैं, जब वे अशुद्ध होती हैं. **11** तुझमें रहकर एक
व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ घृणित काम करता है, तो दूसरा व्यक्ति
निर्लज्जता से अपने पुत्र-वधू को दूषित करता है, और एक दूसरा व्यक्ति अपनी
बहन को ही भ्रष्ट करता है, अर्थात् अपने पिता की बेटी को. **12** तुझमें ऐसे लोग
हैं, जो हत्या करने के लिये घूस लेते हैं; तुम ब्याज लेते हो और गरीबों से लाभ
कमाते हो. तुम अपने पड़ोसियों से बलपूर्वक छीनकर अन्याय की कमाई करते
हो. और तुम मुझे भूल गये हो, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. **13** "'तुमने
अन्याय से जो कमाई की है और तुमने अपने बीच में जो खून बहाया है, उस पर
मैं अपना दोनों हाथ एक साथ चलाऊंगा. **14** उस दिन क्या तुममें साहस होगा
या तुम्हारे हाथ मजबूत होंगे, जब मैं तुमसे लेखा लूंगा? मैं, याहवेह ने कहा है
और मैं यह करके ही रहूंगा. **15** मैं तुम्हें जाति-जाति के लोगों के बीच तितर-
बितर कर दूंगा और भिन्न-भिन्न देशों में फैला दूंगा; और मैं तुम्हारी अशुद्धता

को समाप्त कर दूंगा. 16 जब तुम जाति-जाति के लोगों के दृष्टि में अशुद्ध हो
जाओगे, तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं.’” 17 तब याहवेह का वचन मेरे पास
आया: 18 “हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोग मेरे लिये मैल बन गये हैं. वे सब
भट्टी में छोड़े गए तांबा, टीन, लोहा और सीसा हैं. वे चांदी के मैल हैं. 19
इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: ‘क्योंकि तुम सब मैल हो गये
हो, इसलिये मैं तुमको येरूशलेम में इकट्ठा करूंगा. 20 जैसे चांदी, तांबा, लोहा,
सीसा और टीन को भट्टी में इकट्ठा कर दहकती आग में पिघलाया जाता है; वैसे
ही मैं तुम्हें अपने क्रोध और कोप में होकर इकट्ठा करूंगा और तुम्हें शहर के
अंदर डालकर पिघलाऊंगा. 21 मैं तुम्हें इकट्ठा करूंगा और तुम पर अपने बड़े
कोप में आकर फूंक मारूंगा, और तुम शहर के अंदर पिघल जाओगे. 22 जैसे
चांदी भट्टी में पिघल जाती है, वैसे ही तुम उसके अंदर पिघल जाओगे, और तब
तुम जानोगे कि मैं, याहवेह ने तुम पर अपना कोप उंडेला है.’” 23 याहवेह का
वचन फिर मेरे पास आया: 24 “हे मनुष्य के पुत्र, उस देश से कहो, ‘तुम एक
ऐसे देश हो, जो शुद्ध नहीं हुए हो या जिस पर कोप के दिन वर्षा नहीं हुई है.’ 25
जैसे गरजता सिंह अपने शिकार को फाड़ डालता है, वैसे ही उसके अंदर उसके
राजकुमारों का एक षड़्यंत्र है; वे लोगों को मार डालते हैं और उनके खजानों
और बहुमूल्य वस्तुओं को ले लेते हैं और उसके अंदर ही बहुत स्त्रियों को विधवा
बना देते हैं. 26 उस देश के पुरोहित मेरे कानून को तोड़ते हैं और मेरे पवित्र
वस्तुओं को अपवित्र करते हैं; वे पवित्र और सामान्य चीज़ों के बीच कोई
फर्क नहीं करते हैं; वे सिखाते हैं कि शुद्ध और अशुद्ध में कोई फर्क नहीं है; वे
मेरे विश्राम दिनों को मानने से जी चुराते हैं, जिससे मैं उनके बीच अपवित्र
ठहरता हूं. 27 उसके अंदर उसके कर्मचारी अपने शिकार को फाड़ खानेवाले
भेड़ियों के समान हैं; वे खून बहाते हैं और अन्याय करने के लिये लोगों को मार
डालते हैं. 28 उसके भविष्यवक्ता झूठे दर्शन और शकुन के द्वारा उनके लिये इन
कामों पर लीपा-पोती करते हैं. वे कहते हैं, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है’—जबकि याहवेह ने नहीं कहा होता है. 29 देश के लोग बलपूर्वक छीनते हैं
और डाका डालते हैं; वे गरीब और ज़रूरतमंद लोगों पर अत्याचार करते हैं और
विदेशियों के साथ अन्याय करके उनके साथ गलत व्यवहार करते हैं. 30
“उनके बीच मैं एक ऐसे व्यक्ति को खोज रहा था, जो दीवार बनाए और उस
देश की तरफ से दरार में मेरे सामने खड़ा हो, ताकि मैं उसे नष्ट न करूं, परंतु मुझे
ऐसा कोई भी व्यक्ति न मिला. 31 इसलिये मैं उन पर अपना कोप उंडेलूंगा और
अपने भयंकर क्रोध से जलाकर नष्ट कर दूंगा, और उनके सब किए गये काम
उन्हीं के सिर डाल दूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.”

23 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, दो स्त्रियां थी,
जो एक ही मां की बेटियां थी. 3 वे मिस्र देश में वेश्या बन गईं और वे
अपनी जवानी के दिनों से वेश्यावृत्ति करती थी. उसी देश में उनके स्तनों से
दुलार किया गया और उनके कुंवारी छाती से लाड़ किया गया. 4 बड़ी बहन का
नाम ओहोलाह, और छोटी का नाम ओहोलीबाह था. वे मेरी थी और उन्होंने
बेटे-बेटियों को जन्म दिया. ओहोलाह शमरिया है, और ओहोलीबाह येरूशलेम
है. 5 “जब ओहोलाह मेरी ही थी, तभी वह वेश्यावृत्ति करने लगी; वह अपने
प्रेमियों के लिये लालायित रहती थी—जो नीले कपड़े पहने अश्शूरी योद्धा थे, 6
राज्यपाल और सेनापति थे, ये सबके सब सुंदर और जवान थे, और उसके
प्रेमियों में घुड़सवार भी थे. 7 उसने अपने आपको वेश्या के रूप में सबसे अच्छे
अश्शूरियों को दे दिया और उन हर एक के मूर्तियों से अपने आपको अशुद्ध
किया जिनके लिये वह लालायित रहती थी. 8 जो वेश्यावृत्ति उसने मिस्र देश में
शुरू की थी, उसे उसने नहीं छोड़ा, जब उसकी जवानी के समय पुरुष उसके
साथ सोते थे, उसकी कुंवारी छाती को दुलारते थे और अपनी काम-वासना उस
पर लुटाते थे. 9 “इसलिये मैंने उसे उसके प्रेमी अश्शूरियों के हाथ में सौंप
दिया, जिनके लिये वह लालायित रहती थी. 10 उन्होंने उसे नंगी कर दिया,
उसके बेटे और बेटियों को ले लिया और उसे तलवार से मार डाला. वह स्त्रियों
के बीच एक कहावत बन गई और उसे दंड दिया गया. 11 “उसकी बहन
ओहोलीबाह यह सब देखी, फिर भी वह काम-वासना और वेश्यावृत्ति में अपनी
बहन से कहीं अधिक भ्रष्ट थी. 12 वह भी अश्शूरियों के पीछे काम-वासना से
आसक्त थी—जिसमें राज्यपाल और सेनापति, पोशाक पहने योद्धा, घुड़सवार
और सब सुंदर पुरूष आते थे. 13 मैंने देखा कि उसने भी अपने आपको अशुद्ध
कर लिया था; दोनों बहनों का चालचलन एक जैसा था. 14 “पर ओहोलीबाह
अपनी वेश्यावृत्ति में आगे थी. उसने एक दीवार पर आदमियों के चित्र को देखा,
जिसमें बाबेलियों को लाल रंग में चित्रित किया गया था; 15 चित्र में आदमियों
के कमर में पट्टा बंधा था और उनके सिरों पर लहराती पगड़ी थीं; वे सबके सब
बाबेल के निवासी, बाबेली रथ के अधिकारी जैसे लगते थे. 16 वह उन्हें देखते
ही, उनके प्रति काम-वासना से आसक्त हो गई और कसदिया में उनके दूत भेजी.
17 तब बाबेली प्यार में हमबिस्तर होने के लिये उसके पास आये, और अपने
काम-वासना में उसे अशुद्ध किया. उनके द्वारा अशुद्ध होने के बाद, वह घृणा में
उनसे अलग हो गई. 18 जब उसने खुलेआम वेश्यावृत्ति किया और अपने नंगी
देह को दिखाया, तो मैं घृणा में उससे दूर हो गया, जैसा कि मैं उसकी बहन से दूर
हो गया था. 19 फिर भी वह अपने दुराचार वृत्ति में और भी बढ़ती गई, अपने
जवानी के दिनों को याद करते हुए जब वह मिस्र देश में एक वेश्या थी. 20 वहां
वह अपने यारों के पीछे काम-वासना के लिये लगी रहती थी, जिनके जननांग
गधों के जननांग जैसे और उनका वीर्य-उत्सर्जन घोड़ों के समान होता था. 21
इस प्रकार तुम अपनी जवानी की कामुकता की लालसा करती थी, जब मिस्र में
तुम्हारे छाती को दुलारा जाता था और तुम्हारे स्तन से लाड़ किया जाता था. 22
“इसलिये हे ओहोलीबाह, परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं तुम्हारे
प्रेमियों को तुम्हारे विरुद्ध भड़काऊंगा, जिनसे तुम घृणा करते हुए दूर हो गई
थी, और मैं उन्हें चारों ओर से तुम्हारे विरुद्ध लाऊंगा. 23 बाबेलियों और सब
कसदी, पेकोद, शोआ और कोआ के पुरूष, और उनके साथ सब अश्शूरी, सुंदर
जवान, उनमें सबके सब राज्यपाल और सेनापति, रथ अधिकारी और उच्च
पदस्थ व्यक्ति, सबके सब घोड़े पर सवार हैं. 24 वे तुम्हारे विरुद्ध हथियार, रथ
और चार पहिया गाड़ी लेकर लोगों की भीड़ के साथ आएंगे; वे चारों तरफ से
छोटी और बड़ी ढाल के साथ सिर में टोप लगाकर तुम्हारे विरुद्ध मोर्चा बांधेंगे. मैं
तुम्हें दंड के लिये उनके हाथ में सौंप दूंगा, और वे अपने स्तर के अनुसार उन्हें
दंड देंगे. 25 मैं तुम पर अपना जलन भरा क्रोध दिखाऊंगा, और तुम्हारे प्रति
उनका व्यवहार बहुत क्रोधपूर्ण होगा. वे तुम्हारी नाक और कान काट डालेंगे,
और तुममें से जो बच जाएंगे, वे तलवार से मारे जाएंगे. वे तुम्हारे बेटे और
बेटियों को ले लेंगे, और तुममें से जो बच जाएंगे, वे आग से जलकर नष्ट हो
जाएंगे. 26 वे तुमसे तुम्हारे कपड़े भी उतार लेंगे और तुम्हारे सुंदर गहने छीन
लेंगे. 27 इस प्रकार मैं उस काम-वासना और वेश्यावृत्ति को बंद कर दूंगा, जिसे
तुमने मिस्र देश में शुरू किया था. तुम इन चीज़ों की कामना नहीं करोगी या मिस्र
देश को फिर याद नहीं करोगी.” 28 क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: “मैं तुम्हें उन लोगों के हाथ में सौंपने ही वाला हूं, जिनसे तुम घृणा करती हो,
उनके हाथ, जिनसे घृणा के कारण तुम दूर हो गई थी. 29 वे तुम्हारे साथ घृणित
व्यवहार करेंगे और तुम्हारी कमाई हुई सारी चीज़ें ले लेंगे. वे तुम्हें एकदम नंगी
छोड़ देंगे, और तुम्हारी वेश्यावृत्ति की निर्लज्जता प्रगट हो जाएगी. तुम्हारी
अश्लीलता और दुराचार वृत्ति के कारण 30 यह सब तुम पर हुआ है, क्योंकि तुम
जाति-जाति के लोगों के पीछे काम-वासना के लिये भागी और उनकी मूर्तियों
से तुमने अपने आपको अशुद्ध किया. 31 तुम अपनी बहन के रास्ते पर चली हो;
इसलिये मैं उसका कटोरा तुम्हारे हाथ में दूंगा.” 32 परम प्रधान याहवेह का यह

कहना है: “तुम अपनी बहन के कटोरे को पीओगी, जो बड़ा और गहरा है;
इसके कारण तुम तिरस्कार और हंसी का पात्र होंगी, क्योंकि इसमें बहुत कुछ
समाता है. 33 तुम मतवालापन और दुःख से भर जाओगी, यह विनाश और
निर्जनता का कटोरा है, यह तुम्हारी बहन शमरिया का कटोरा है. 34 तुम इसे
पीकर खाली कर दोगी और इसके टुकड़ों को चबाओगी और अपने छातियों
को घायल करोगी. यह मैंने कहा है, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 35
“इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जब तुमने मुझे भूला दिया है
और मुझसे अपना मुंह फेर लिया है, तो ज़रूरी है कि तुम अपने अश्लीलता और
वेश्यावृत्ति का फल भोगो.” 36 याहवेह ने मुझसे कहा: “हे मनुष्य के पुत्र, क्या
तुम ओहोलाह और ओहोलीबाह का न्याय करोगे? तो फिर उनके घृणित काम
उन्हें बताओ, 37 क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है और उनके हाथ खून से रंगे
हैं. उन्होंने मूर्तियों के साथ व्यभिचार किया है; और तो और उन्होंने उन अपने
बच्चों को उनके भोजन के रूप में बलिदान किया है, जो मेरे द्वारा ही पैदा हुए
थे. 38 उन्होंने मेरे साथ यह भी किया है: उसी समय उन्होंने मेरे पवित्र स्थान
को अशुद्ध किया है और मेरे विश्राम दिनों को अपवित्र किया है. 39 जिस दिन
उन्होंने अपने बच्चों को अपनी मूर्तियों के लिये बलिदान किया, उसी दिन
उन्होंने मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश किया और उसे अपवित्र किया. उन्होंने मेरे
भवन के भीतर यही किया है. 40 “और तो और उन्होंने दूत भेजकर बहुत दूर से
लोगों को बुलवाया, और जब वे आ गये, तो तुम उनके लिये नहाई-धोई, अपने
आंखों का श्रृंगार किया और अपने गहनों को पहना. 41 तब तुम एक सुंदर
सोफा में बैठ गईं, जिसके सामने एक टेबल रखा था, जिस पर तुमने धूप और
जैतून का तेल रखा था, जो कि मेरा था. 42 “उसके चारों तरफ लापरवाह भीड़
का कोलाहल सुनाई दे रहा था; पियक्कड़ों को निर्जन प्रदेश से उपद्रवी लोगों के
साथ लाया गया था, जो उस स्त्री और उसकी बहन के हाथों में कंगन और उनके
सिर में सुंदर मुकुट पहना दिये थे. 43 तब मैंने उस स्त्री के बारे में कहा, जो
व्यभिचार करते-करते बेहाल हो चुकी थी, ‘अब वे उसका उपयोग एक वेश्या
के रूप में करें, क्योंकि वह वेश्या ही तो है.’ 44 और वे उसके साथ सोए. जैसे
पुरुष एक वेश्या के साथ सोते हैं, वैसे ही वे उन कामुक स्त्रियों, ओहोलाह एवं
ओहोलीबाह के साथ सोए. 45 परंतु धर्मी न्यायाधीश उनको उन स्त्रियों का दंड
देंगे, जो व्यभिचार करती और खून बहाती हैं, क्योंकि वे व्यभिचारिणी हैं और
उनके हाथ खून से रंगे हैं. 46 “परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: उनके
विरुद्ध एक बड़ी भीड़ ले आओ और उन्हें आतंकित होने और लूटे जाने के किए
सौंप दो. 47 उस भीड़ के लोग उन पर पत्थरवाह करेंगे और उन्हें अपने तलवार
से काट डालेंगे; वे उनके बेटे-बेटियों को मार डालेंगे और उनके घरों को जला
देंगे. 48 “इस प्रकार मैं इस देश से काम-वासना का अंत कर दूंगा, ताकि सब
स्त्रियों के लिये यह एक चेतावनी हो और वे तुम्हारे समान काम न करें. 49 तुम्हें
अपने कामुकता का दंड भोगना पड़ेगा और तुम्हें अपने मूर्तियों के पाप का फल
भी भोगना पड़ेगा. तब तुम जानोगे कि मैं परम प्रधान याहवेह हूं.”

24 नवें वर्ष के, दसवें माह के दसवें दिन, याहवेह का वचन मेरे पास आया:
2 “हे मनुष्य के पुत्र, आज के दिन को लिख लो, आज ही के दिन,
क्योंकि बाबेल के राजा ने आज ही के दिन येरूशलेम की घेराबंदी की है. 3 इन
विद्रोही लोगों को एक दृष्टांत सुनाओ और उनसे कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का
यह कहना है: “‘पकाने के बर्तन को चूल्हे पर रखो, चूल्हे पर रखो और उसमें
पानी डालो. 4 तब उसमें मांस के टुकड़े डाल दो, सब अच्छे टुकड़े—जांघ और
कंधा. इन उत्तम हड्डियों से उसे भर दो; 5 झुंड के सबसे अच्छे पशु को लो. तब
हड्डियों के लिये बर्तन के नीचे लकड़ियां डालो; उसे अच्छे से उबालो और
उसमें हड्डियों को पकाओ. 6 क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
“‘धिक्कार है रक्तपात करनेवाले शहर पर, धिक्कार है उस बर्तन पर, जिसमें
जंग लगा है, जिसमें का जंग नहीं जाता है! उसमें से मांस को एक-एक टुकड़ा
करके निकालो जो भी क्रम में ये टुकड़े आते हैं उन्हें निकालो. 7 “‘क्योंकि उस
शहर ने जो रक्तपात किया है, वह अपने ही बीच किया है: उसने खून को खाली
चट्टान पर उंडेल दिया है; उसने खून को भूमि पर नहीं उंडेला, जहां धूल उसे
ढांप ले. 8 कोप को भड़काने और बदला लेने के लिये मैंने उसके खून को
खाली चट्टान पर डाला है, ताकि उसे ढांपा न जाय. 9 इसलिये परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: “‘धिक्कार है रक्तपात करनेवाले शहर पर! मैं, भी
लकड़ी का ऊंचा ढेर लगाऊंगा. 10 लकड़ी का ढेर लगाओ और उसमें आग
लगाओ. मांस को मसाले में मिलाकर उसे अच्छी तरह पकाओ; हड्डियों को
हल्का सा जलने दो. 11 तब खाली बर्तन को आग पर रखो जब तक कि यह
गर्म होकर इसका तांबा लाल न हो जाए, ताकि इसकी अशुद्धता पिघल जाए और
उसमें लगा जंग जल जाए. 12 इसने सारे परिश्रम को बेकार किया है; इसमें
लगा भारी जंग नहीं निकला है, और तो और आग से भी नहीं निकला. 13
“‘तुम्हारी अशुद्धता काम-वासना है. क्योंकि मैंने तुम्हें साफ करने की कोशिश
की, पर तुम अपनी अशुद्धता से साफ नहीं होते, अब तुम फिर तब तक साफ
किए न जाओगे, जब तक कि मेरा कोप तुम्हारे विरुद्ध शांत न हो जाए. 14
“‘मैं, याहवेह ने कहा है. मेरे लिये काम करने का समय आ गया है. मैं नहीं
छोड़ूंगा; मैं दया नहीं करूंगा, न ही नरम होऊंगा. तुम्हारे चालचलन और तुम्हारे
कार्यों के अनुसार तुम्हारा न्याय होगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.’” 15
याहवेह का वचन मेरे पास आया: 16 “हे मनुष्य के पुत्र, मैं एक ही प्रहार में
तुमसे तुम्हारे आंखों की खुशी छीनने ही वाला हूं. तौभी तुम शोकित न हो, न ही
रोओ और न ही आंसू बहाओ. 17 चुपचाप कराहो; मरे हुओं के लिये शोकित न
हो. अपनी पगड़ी बांधे रहना और अपनी जूती पहने रहना; अपनी दाढ़ी और
मूंछ को न ढांकना या शोक करनेवालों की प्रथा अनुसार होनेवाला भोजन न
करना.” 18 इसलिये सुबह मैं लोगों से बात किया, और शाम को मेरी पत्नी मर
गई. उसके अगले सुबह मैंने वैसा ही किया, जैसा मुझे आदेश दिया गया था. 19
तब लोग मुझसे पूछने लगे, “क्या तुम हमें नहीं बताओगे कि इन चीज़ों का
हमसे क्या लेना देना है? तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?” 20 इसलिये मैंने उनसे
कहा, “याहवेह का वचन मेरे पास आया: 21 इस्राएल के लोगों से कहो, ‘परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं अपने पवित्र स्थान को अपवित्र करने ही
वाला हूं—वह दृढ़ गढ़, जिस पर घमंड करते हो, तुम्हारे आंखों की खुशी,
तुम्हारे स्नेह का पात्र. तुम्हारे बेटे और बेटियां, जो तुम्हारे पीछे रह जाएंगे, वे
तलवार से मारे जाएंगे. 22 और तुम वैसा ही करोगे, जैसा मैंने किया है. तुम
अपने दाढ़ी और मूंछ को नहीं ढंकोगे या शोक करनेवालों की प्रथा अनुसार
होनेवाला भोजन नहीं खाओगे. 23 तुम अपने सिर पर अपनी पगड़ी रखोगे और
अपने पांवों में अपनी जूतियां पहनोगे. तुम न तो शोक मनाओगे और न ही
रोओगे पर अपने पापों और अपने ही बीच कराहने के कारण, तुम बरबाद हो
जाओगे. 24 यहेजकेल तुम्हारे लिए एक चिन्ह ठहरेगा; तुम वैसा ही करोगे,
जैसा कि उसने किया है. जब ये बातें होंगी, तब तुम जानोगे कि मैं परम प्रधान
याहवेह हूं.’ 25 “और हे मनुष्य के पुत्र, जिस दिन मैं उनके दृढ़ गढ़, उनका
आनंद और महिमा, उनके आंखों की खुशी, उनके हृदय की इच्छा, और साथ
ही साथ उनके बेटे और बेटियों को छीन लूंगा— 26 उसी दिन बचकर भाग
निकलने वाला एक व्यक्ति आकर तुम्हें वह समाचार देगा. 27 उस समय तुम्हारा
मुंह खुलेगा; तुम उस व्यक्ति से बात करोगे और फिर चुप न रहोगे. इस प्रकार
तुम उनके लिये एक चिन्ह ठहरोगे, और वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.”

25 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, अपना मुंह
अम्मोनियों की ओर करके उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करो. 3 उनसे
कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का वचन सुनो. परम प्रधान याहवेह का यह कहना

है: क्योंकि जब मेरा पवित्र स्थान अपवित्र किया गया और जब इस्राएल देश
उजाड़ा गया और जब यहूदिया के लोग बंधुआई में चले गये, तो तुमने आहा,
आहा! कहा, 4 इसलिये मैं तुम्हें पूर्व देश के लोगों के अधीन करने जा रहा हूं. वे
तुम्हारे बीच अपना शिविर खड़ा करेंगे और अपना तंबू गाड़ेंगे; वे तुम्हारा फल
खाएंगे और तुम्हारा दूध पिएंगे. 5 मैं रब्बाह को ऊंटों का चरागाह और अम्मोन
देश को भेड़ों का विश्राम स्थल बना दूंगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 6
क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्योंकि तुमने इस्राएल देश के
प्रति अपने हृदय के सब द्वेष भावना के कारण आनंदित होकर ताली बजाई और
अपने पैरों को पटका, 7 इसलिये मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और
तुम्हें लूट की वस्तु के रूप में जाति-जाति के लोगों के बीच दे दूंगा. मैं लोगों के
बीच से तुम्हारा नाम तक मिटा दूंगा और तुम्हें देश-देश में पूरी तरह नाश कर
दूंगा. मैं तुम्हें नाश करूंगा, और तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं.'" 8 "परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: 'क्योंकि मोआब और सेईर ने कहा, "देखो,
यहूदाह का वंश भी दूसरे सब जातियों के समान हो गया है," 9 इसलिये मैं
मोआब के किनारे को खुला छोड़ूंगा और इसकी शुरुआत सीमावर्ती नगर—बेथ-
यशिमोथ, बाल-मेओन और किरयथियों से होगी, जो उस देश की शोभा हैं. 10
मैं मोआब को अम्मोनियों के साथ पूर्वी देश के लोगों के अधीन कर दूंगा,
ताकि अम्मोनियों को लोग याद न करें; 11 और मैं मोआब को दंड दूंगा. तब
वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.'" 12 "परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
'क्योंकि एदोम ने यहूदाह से बदला लिया और ऐसा करके बहुत दोषी ठहरा,
13 इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं एदोम के विरुद्ध अपना
हाथ बढ़ाऊंगा और आदमी और जानवर दोनों को मार डालूंगा. मैं उसे उजाड़
दूंगा और तेमान से लेकर देदान तक, वे तलवार से मारे जाएंगे. 14 मैं अपने
इस्राएली लोगों के द्वारा एदोम से बदला लूंगा, और वे मेरे क्रोध और कोप के
मुताबिक उनसे व्यवहार करेंगे; तब वे मेरे प्रतिशोध को जानेंगे, परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है.'" 15 "परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: 'क्योंकि
फिलिस्तीनियों ने प्रतिशोध की भावना से काम किया और अपने हृदय की
ईर्ष्या के कारण बदला लिया, और प्राचीन शत्रुता के कारण यहूदाह को नष्ट
करने का प्रयत्न किया, 16 इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं
फिलिस्तीनियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने ही वाला हूं, और मैं केरेथियों को
मिटा दूंगा और उनको नष्ट कर दूंगा, जो समुद्र के किनारों पर बचे हुए हैं. 17 मैं
उनसे भयंकर बदला लूंगा और अपने कोप में होकर उनको दंड दूंगा. तब वे
जानेंगे कि मैं याहवेह हूं, जब मैं उनसे प्रतिशोध लूंगा.'"

26 बारहवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन, याहवेह का वचन मेरे पास
आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, क्योंकि सोर ने येरूशलेम के विषय में यह
कहा है, 'आहा! जनताओं के प्रवेश द्वार टूट गया है, और इसके फाटक मेरे लिए
खुल गये हैं; वह नाश हो गई है, इसलिये अब मैं उन्नति करूंगा,' 3 इसलिये
परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: हे सोर, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, और मैं तुम्हारे
विरुद्ध बहुत सी जाति के लोगों को समुद्र के लहरों के समान लाऊंगा. 4 वे सोर
की दीवारों को ध्वस्त कर देंगे और उसके स्तंभों को गिरा देंगे; मैं उसकी मिट्टी
को खुरचकर उसे एक खाली चट्टान बना दूंगा. 5 बाहर समुद्र में, वह मछली का
जाल फैलाने का स्थान हो जाएगा, क्योंकि मैंने कहा है, परम प्रधान याहवेह की
घोषणा है. वह जाति-जाति के लोगों के लिये लूट का सामान हो जाएगा, 6
और मुख्य भूमि में उसकी बस्ती को तलवार से नष्ट कर दिया जाएगा. तब वे
जानेंगे कि मैं याहवेह हूं. 7 "क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं
उत्तर दिशा से सोर के विरुद्ध राजाओं के राजा बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र को
लाऊंगा. वह घोड़ों, रथों, घुड़सवारों और एक बड़ी सेना के साथ आएगा. 8
वह मुख्य भूमि में तुम्हारी बस्ती को तलवार से नाश कर देगा; वह तुम्हारे विरुद्ध
घेराबंदी करेगा, तुम्हारे दीवारों से ढलान बनाएगा और तुम्हारे विरुद्ध अपना ढाल
उठाएगा. 9 वह तुम्हारे दीवारों पर युद्ध का यंत्र चलाएगा और अपने हथियारों से
तुम्हारे स्तंभों को गिरा देगा. 10 उसके घोड़े इतने होंगे कि उनकी धूल से तुम
ढंक जाओगे. तुम्हारी दीवारें घुड़-सेना, चार पहिया गाड़ी और रथों की आवाज
से कांप उठेंगी जब वह तुम्हारे प्रवेश द्वारों से इस प्रकार प्रवेश करेगा, जिस
प्रकार लोग दीवारों को तोड़कर शहर के भीतर घुस आते हैं. 11 उसके घोड़ों के
खुरों से तुम्हारी सब गलियां रौंदी जाएंगी; वह तुम्हारे लोगों को तलवार से मार
डालेगा, और तुम्हारे मजबूत खंभे ज़मीन पर गिरा दिये जाएंगे. 12 वे तुम्हारे
धन-संपत्ति और व्यापार की वस्तुओं को लूट लेंगे; वे तुम्हारी दीवारों को गिरा
देंगे और तुम्हारे सुंदर घरों को नष्ट कर देंगे और तुम्हारे पत्थर, इमारती लकड़ी
और कूड़ा-कर्कट को पानी में फेंक देंगे. 13 मैं तुम्हारे कोलाहलपूर्ण गीतों का
अंत कर दूंगा, और तुम्हारे वीणा का संगीत फिर सुनाई नहीं देगा. 14 मैं तुम्हें
एक खाली चट्टान बना दूंगा, और तुम मछली के जालों को फैलाने का एक
स्थान बन जाओगे. तुम्हारा पुनर्निर्माण फिर कभी न होगा, क्योंकि मैं याहवेह ने
कहा है, परम प्रधान याहवेह की यह घोषणा है. 15 "सोर से परम प्रधान याहवेह
का यह कहना है: क्या समुद्रतट की भूमि तुम्हारे गिरने की आवाज से कांप नहीं
उठेगी, जब घायल व्यक्ति कराहेंगे और तुम्हारे बीच हत्याएं होंगी? 16 तब
समुद्रतट के सब राजकुमार अपने सिंहासन से उतरेंगे और अपना लबादा बाजू
में रख देंगे और अपने क़सीदे किए हुए कपड़े उतार देंगे. वे आतंकित कपड़े
पहनकर, हर क्षण कांपते हुए, तुमसे भयभीत होकर ज़मीन पर बैठ जाएंगे. 17
तब तुम्हारे विषय में एक विलापगीत लेंगे और तुमसे कहेंगे: "'हे प्रसिद्ध शहर,
तुम कैसे नष्ट हो गए, समुद्रतट पर तुममें लोग बसे थे, तुम समुद्र पर एक शक्ति
थे, तुम और तुम्हारे निवासी; तुमने उन सब पर अपना आतंक फैलाया जो वहां
रहते थे. 18 अब समुद्रतट की भूमि तुम्हारे गिरने के दिन कांपती है; समुद्र के
द्वीप तुम्हारे गिरने से भयभीत होते हैं.' 19 "परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: जब मैं तुम्हें एक उजाड़ शहर बना दूंगा, उन शहरों जैसा जहां अब कोई नहीं
रहता, और जब मैं समुद्र की गहराई और उसके अथाह पानी को तुम्हारे ऊपर ले
आऊंगा, 20 तब मैं तुम्हें उनके साथ नीचे ले आऊंगा, जो बहुत पहले के लोगों
के पास नीचे गड़हे में जाते हैं. मैं तुम्हें पृथ्वी के नीचे निवास करवाऊंगा, पुराने
ज़माने के पतन की तरह उन लोगों के साथ, जो नीचे गड़हे में जाते हैं, और फिर
तुम न लौटोगे या जीवितों के देश में तुम्हारी जगह न होगी. 21 मैं तुम्हारा
भयानक रूप से अंत करूंगा और तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा. तुम्हें
खोजा तो जाएगा, परंतु तुम्हारा फिर कभी कोई पता न चलेगा, परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है."

27 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, सोर के लिए
एक विलापगीत लो. 3 सोर से कहो, जो समुद्र के प्रवेश द्वार पर बसा है
और बहुत से समुद्रतट पर लोगों का व्यापारी है, 'परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है: "'हे सोर, तुम कहते हो, "मैं पूरी तरह सुंदर हूं." 4 तुम्हारी सीमा
समुद्र के गर्भ तक थी; तुम्हें बनाने वालों ने तुम्हें पूरी तरह सुंदर बनाया. 5
उन्होंने तुम्हारी सब इमारती लकड़ी सेनीर पहाड़ के सनौवर के पेड़ों से ली हैं;
उन्होंने तुम्हारे लिये एक मस्तूल बनाने के लिये लबानोन के देवदार की लकड़ी
का उपयोग किया है. 6 तुम्हारे पतवारों के लिए उन्होंने बाशान के बांज वृक्षों
की लकड़ी का उपयोग किया है; तुम्हारे पानी जहाज़ का छत कित्तिम समुद्रतट
के चीड़ वृक्ष का है, जिसे हाथी-दांत से सजाया गया है. 7 तुम्हारे जहाज़ का
पाल मिस्र देश के सुंदर कसीदा किए हुए मलमल के कपड़े का था, और यह
तुम्हारे ध्वज के रूप में काम करता था; तुम्हारा तिरपाल (चांदनी) एलिशाह के
समुद्रतट का था, जिसका रंग नीला और बैंगनी था. 8 सीदोन और आरवद के
लोग तुम्हारे मल्लाह थे; हे सोर, तुम्हारे निपुण लोग नाविक के रूप में जहाज़ पर

थे. 9 जहाज़ के जोड़ों को ठीक करने के लिये जहाज़ पर गेबल के अनुभवी
शिल्पकार जहाज़ के शिल्पी के रूप में थे. समुद्र के सारे जहाज़ और उनके
नाविक तुम्हारे व्यापारिक माल का लेनदेन करने के लिये तुम्हारे साथ थे. 10
"'तुम्हारी सेना में परसिया, लूद और पूत के लोग शामिल थे. उन्होंने तुम्हारी
शोभा बढ़ाते हुए, अपनी ढाल और टोप दीवारों पर टांग दिये थे. 11 आरवद
और हेलेक के लोग चारों तरफ से तुम्हारी दीवारों का पहरा दिये; गम्माद के
लोग तुम्हारे स्तंभों पर थे. उन्होंने अपनी ढालें तुम्हारी दीवारों पर टांग दीं;
उन्होंने तुम्हारी सुंदरता में चार चांद लगाया. 12 "'सभी प्रकार की चीज़ों की
अधिकता के कारण तरशीश के लोगों ने तुम्हारे साथ व्यापार किया; उन्होंने
तुम्हारे सामानों को चांदी, लोहा, टीन और सीसा देकर खरीदा. 13 "'यावन
(ग्रीस), तूबल और मेशेख तुमसे व्यापार करते थे; वे तुम्हें तुम्हारे व्यापारिक
सामानों के बदले मानव प्राणी और कांसे के चीज़ों को देते थे. 14 "'बेथ-
तोगरमाह के लोग तुम्हारे व्यापारिक सामानों के बदले रथ खींचनेवाले घोड़े,
सेना के घोड़े और खच्चर दिया करते थे. 15 "'रोडीस के लोग तुमसे व्यापार
करते थे, और समुद्रतट के बहुतेरे देश तुम्हारे ग्राहक थे; वे अपना भुगतान हाथी-
दांत और आबनूस (तेंदू) की लकड़ी देकर करते थे. 16 "'तुम्हारे पास सामानों
की अधिकता के कारण, अराम ने तुमसे व्यापार किया; वे तुम्हारी वस्तुओं
के मूल्य के बदले तुम्हें हरित नीलमणि, बैंगनी रंग के कपड़े, कसीदा किए
हुए कपड़े, अच्छे किस्म के मलमल कपड़े, मूंगा और लाल रत्न देते थे. 17
"'यहूदिया तथा इस्राएल देश ने भी तुमसे व्यापार किया; वे तुम्हारे सामानों के
भुगतान के बदले तुम्हें मिन्निथ में उपजे गेहूं, मिठाई, मधु, जैतून तेल और
मलहम देते थे. 18 "'तुम्हारे पास उत्पादन की अधिकता और सामानों की
अत्यधिक प्रचुरता के कारण दमेशेक ने तुमसे व्यापार किया. तुम्हारे सामान:
बना हुआ लोहा, दालचीनी और तेजपत्ती के बदले उन्होंने तुम्हें हेलबोन की
दाखमधु, 19 जाहर का ऊन और उजाल में बने दाखमधु की लकड़ी के पीपे देने
का प्रस्ताव दिया. 20 "'देदान नगर तुम्हें घोड़े की पीठ पर बिछानेवाले कंबल
देता था. 21 "'अरेबिया के लोग और केदार देश के सब राजकुमार तुम्हारे
ग्राहक थे; वे तुम्हें तुम्हारे सामान के बदले मेमने, मेढ़े और बकरियां देकर
तुमसे लेनदेन करते थे. 22 "'शीबा तथा रामाह के व्यापारियों ने तुमसे व्यापार
किया; तुम्हारे व्यापारिक सामानों के बदले वे तुम्हें सब प्रकार के सर्वोत्तम
मसाले, बहुमूल्य रत्न एवं सोना देते थे. 23 "'हारान, कन्नेह, एदेन, शीबा,
अश्शूर तथा किलमाद के व्यापारियों ने भी तुम्हारे ही साथ व्यापार किया. 24
तुम्हारे बाज़ार के जगह में, वे तुम्हें तुम्हारे सामानों के बदले सुंदर कपड़े, नीले
कपड़े, कसीदा किए हुए कपड़े और आंटी गई और कसकर बांधी गई डोरियों
वाले रंग-बिरंगे कंबल देते थे. 25 "'तुम्हारे व्यापारिक सामानों का परिवहन
तरशीश के पानी जहाजों से होता है जब तुम समुद्री यात्रा में जाते हो तो जहाज़ में
तुम्हारा भारी माल भरा रहता है. 26 तुम्हारे जहाज़ के चालक तुम्हें गहरे समुद्र में
ले जाते हैं. पर पूर्व की हवा दूर समुद्र में तुम्हारे जहाज़ के टुकड़े-टुकड़े कर
देगी. 27 तुम्हारी संपत्ति, व्यापारिक सामान और वस्तुएं, तुम्हारे नाविक, जहाज़
चलानेवाले और जहाज़ बनानेवाले, तुम्हारे व्यापारी और तुम्हारे सब सैनिक,
और जहाज़ के सारे लोग उस दिन समुद्र की गहराई में डूब जाएंगे जब तुम्हारा
जहाज़ टूट जाएगा. 28 तुम्हारे जहाज़ चलानेवालों की चिल्लाहट से समुद्रतट
कांप उठेगा; 29 पतवार चलानेवाले सबके सब अपने जहाजों को छोड़ देंगे,
मल्लाह और जहाज़ को चलानेवाले सबके सब जहाज़ से उतरकर समुद्रतट पर
खड़े हो जाएंगे. 30 वे तुम्हारे कारण चिल्लाएंगे और बिलख-बिलखकर रोएंगे;
वे अपने सिर पर धूल छिड़क कर राख में लोटेंगे. 31 वे तुम्हारे कारण अपना
सिर मुंडा लेंगे और टाट का कपड़ा पहनेंगे. वे मन की वेदना और भारी शोक से
तुम्हारे विषय रोएंगे. 32 जब वे तुम्हारे विषय में बहुत रोएंगे और शोक मनाएंगे,
तो वे तुम्हारे विषय एक विलापगीत गाएंगे: "कौन समुद्र से घिरे हुए सोर के
समान चुप था?" 33 जब तुम्हारे व्यापार का माल समुद्र में होकर जाता था, तो
उससे तुम बहुत सी जाति के लोगों को संतुष्ट करते थे; अपनी अपार संपत्ति और
व्यापारिक माल से तुमने पृथ्वी के राजाओं को समृद्ध कर दिया. 34 अब तुम
पानी की गहराइयों में समुद्र के द्वारा चकनाचूर हो गये हो; तुम्हारा व्यापार का
माल और जहाज़ में तुम्हारे पूरे लोगों का जत्था तुम्हारे साथ डूब गया है. 35
समुद्रतट पर सब रहनेवाले तुम्हारी दशा देख डर गये हैं; उनके राजा तो आतंक
से कांपते हैं और डर से उनके चेहरे का रंग उड़ गया है. 36 जनता के बीच जो
व्यापारी है, वे तुम्हारी खिल्ली उड़ाते हैं; तुम्हारा एक डरावना अंत हो गया है
और तुम्हारा अस्तित्व अब नहीं रहेगा.'"

28 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, सोर के शासक
से कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'अपने मन में फूलकर
तुम कहते हो, "मैं एक ईश्वर हूं; मैं समुद्र के बीच एक ईश्वर के सिंहासन पर
बैठता हूं." परंतु तुम सिर्फ एक मरणशील प्राणी हो, ईश्वर नहीं, यद्यपि तुम
सोचते हो कि तुम ईश्वर के समान बुद्धिमान हो. 3 क्या तुम दानिएल से ज्यादा
बुद्धिमान हो? क्या तुमसे कोई भी गुप्त बात छिपी नहीं है? 4 अपनी बुद्धि और
समझ से तुमने अपने लिये संपत्ति कमा लिया है और अपने खजाने में सोना और
चांदी का ढेर लगा लिया है. 5 व्यापार में अपनी निपुणता के द्वारा, तुमने अपनी
संपत्ति बढ़ा ली है, और तुम्हारे धन के कारण तुम्हारा मन घमंडी हो गया है. 6
"'इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'क्योंकि तुम सोचते हो कि
तुम एक ईश्वर के समान बुद्धिमान हो, 7 इसलिये मैं तुम पर विदेशियों से चढ़ाई
कराऊंगा, जो जातियों में सबसे अधिक क्रूर हैं; वे तुम्हारी सुंदरता और बुद्धिमानी
पर अपनी तलवार चलाएंगे और तुम्हारी चमकती शोभा को नष्ट कर देंगे. 8 वे
तुम्हें नीचे गड्ढे में ले आएंगे, और समुद्र के बीच तुम्हारी एक हिंसात्मक मृत्यु
होगी. 9 जो तुम्हें मार डालते हैं, उनके सामने क्या तब तुम कहोगे, "मैं एक
ईश्वर हूं?" जो तुम्हारी हत्या करते हैं, उनके हाथों में तुम एक मरणशील मनुष्य
हो, ईश्वर नहीं. 10 तुम विदेशियों के हाथ ख़तनाहीन व्यक्तियों के समान मारे
जाओगे. मैंने कहा है, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.'" 11 याहवेह का
वचन मेरे पास आया: 12 "हे मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा के बारे में एक
विलापगीत लो और उससे कहो: 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'तुम
बुद्धि से भरे हुए और सुंदरता में उत्तम, निर्दोषता के मुहर थे. 13 तुम परमेश्वर के
बगीचा, एदेन में थे; हर बहुमूल्य रत्न तुम्हें सजाता था: माणिक्य, हीरा और
पन्ना, पुखराज, गोमेदक और मणि, नीलम, फ़िरोजा और मरकत. तुम्हारे बैठने
की जगह और सवारी की वस्तु सोने के बने हुए थे; जिस दिन तुम्हारी सृष्टि की
गई, उसी दिन ये तैयार किए गये. 14 एक अभिभावक करूब के रूप में तुम्हारा
राजतिलक हुआ था, इसी काम हेतु मैंने तुम्हें नियुक्त किया था. तुम परमेश्वर के
पवित्र पर्वत पर थे; तुम प्रज्वलित पत्थरों के बीच चलते फिरते थे. 15 अपनी
सृष्टि के दिन से ही तुम अपने आचार व्यवहार में निर्दोष थे, जब तक कि तुममें
दुष्टता न पायी गई. 16 अपने व्यापार के फैले होने के कारण तुम हिंसा से भर गये
थे, और तुमने पाप किया. इसलिये मैंने तुम्हें कलंक के साथ परमेश्वर के पर्वत से
भगा दिया, और हे अविभावक करूब, मैं ने तुम्हें प्रज्वलित पत्थरों के बीच से
निकाल दिया. 17 अपनी सुंदरता के कारण तुम्हारा मन घमंडी हो गया, और
अपने वैभव के कारण तुमने अपनी बुद्धि को भ्रष्ट कर लिया. इसलिये मैंने तुम्हें
भूमि पर फेंक दिया; मैंने तुम्हें राजाओं के सामने एक तमाशा बना दिया. 18
अपने बहुत पाप और बेईमानी के व्यापार से तुमने अपने पवित्र स्थानों को
अपवित्र कर दिया. इसलिये मैंने तुमसे ही एक आग उत्पन्न की, और उसने तुम्हें
जलाकर नष्ट कर दिया, और जो देख रहे थे, उन सबके सामने, मैंने तुम्हें भूमि
पर राख बना दिया. 19 सब जाति के लोग जो तुम्हें जानते थे, तुम्हारी स्थिति से

भयभीत हो गये; तुम्हारा एक भयानक अंत हुआ है, और तुम्हारा अस्तित्व अब
न रहेगा.'" **20** याहवेह का वचन मेरे पास आया: **21** "हे मनुष्य के पुत्र, सीदोन
की ओर अपना मुंह करके उसके विरुद्ध भविष्यवाणी करो **22** और कहो: 'परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'हे सीदोन, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, और तुम्हारे
बीच मैं अपनी महिमा प्रकट करूंगा. जब मैं तुम्हें दंड दूंगा तब तुम जानोगे कि मैं
याहवेह हूं, और तुम्हारे ही बीच मैं पवित्र ठहरूंगा. **23** मैं तुम्हारे बीच महामारी
फैलाऊंगा और तुम्हारी गलियों में खून बहाऊंगा. चारों तरफ से तुम्हारे विरुद्ध
तलवार चलेगी, और मारे गये लोग तुम्हारे ही बीच गिरेंगे. तब तुम जानोगे कि
मैं याहवेह हूं. **24** "'तब इस्राएली लोगों के ऐसे पड़ोसी देश नहीं होंगे, जो
पीड़ादायक कंटीली झाड़ी और तेज चुभनेवाले कांटे जैसे हों. तब वे जानेंगे कि
मैं परम प्रधान याहवेह हूं. **25** "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जब मैं
इस्राएल के लोगों को उन जाति के लोगों में से इकट्ठा करूंगा, जिनके बीच वे
बिखर गये हैं, तो मैं उनके द्वारा उन जाति के लोगों की दृष्टि में पवित्र ठहरूंगा.
तब वे अपने स्वयं के देश में रहेंगे, जिसे मैंने अपने सेवक याकोब को दिया था.
26 वे वहां सुरक्षित रहेंगे और घर बनाएंगे और अंगूर की बारी लगाएंगे; वे
सुरक्षित रहेंगे जब मैं उनके उन सब पड़ोसी देशों को दंड दूंगा, जो उनसे शत्रुता
रखते थे. तब वे जानेंगे कि मैं उनका परमेश्वर, याहवेह हूं.'"

29 दसवें साल के, दसवें माह के बारहवें दिन, याहवेह का वचन मेरे पास
आया: **2** "हे मनुष्य के पुत्र, अपने मुंह को मिस्र देश के राजा फ़रोह की
ओर करके उसके और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्यवाणी करो. **3** तुम यह कहो:
'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'हे मिस्र के राजा फ़रोह, मैं तुम्हारे
विरुद्ध हूं; तुम वह विशाल जंतु हो, जो अपने जल-सोतों के बीच पड़े रहते हो.
तुम कहते हो, "नील नदी मेरी है; मैंने इसे अपने लिये बनाया है." **4** परंतु मैं
तुम्हारे जबड़ों में अंकुड़ी (कांटा) लगाऊंगा और तुम्हारे सोतों की मछलियों को
तुम्हारे खाल पर चिपका दूंगा. तब मैं तुम्हें तुम्हारे सोतों से बाहर खींच लूंगा,
और सब मछलियां तुम्हारे खाल से चिपकी होंगी. **5** मैं तुम्हें और तुम्हारे सोतों
की सब मछलियों को निर्जन प्रदेश में छोड़ दूंगा. तुम खुले मैदान में जा गिरोगे
और तुम्हें इकट्ठा किया नहीं जाएगा या उठाया नहीं जाएगा. मैं तुम्हें भोजन के
रूप में पृथ्वी के पशुओं और आकाश के चिड़ियों को दे दूंगा. **6** तब वे सब जो
मिस्र में रहते हैं, जानेंगे कि मैं याहवेह हूं. "'तुम इस्राएल के लोगों के लिये
सरकंडे की एक लाठी बन गये हो. **7** जब उन्होंने तुम्हें अपने हाथों से पकड़ा,
तो तुमने चीर दिया और तुमने उनके कंधों को फाड़कर उखाड़ दिया; जब वे तुम
पर झुके, तो तुमने तोड़ा और उनकी पीठ में मरोड़ आ गई. **8** "'इसलिये परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार चलाऊंगा और मनुष्य
और पशु दोनों को मार डालूंगा. **9** मिस्र देश निर्जन एवं उजाड़ हो जाएगा. तब वे
जानेंगे कि मैं याहवेह हूं. "'क्योंकि तुमने कहा है, "नील नदी मेरी है; मैंने इसे
बनाया है," **10** इसलिये मैं तुम्हारे और तुम्हारे पानी के सोतों के विरुद्ध हूं, और
मैं मिस्र देश को मिगदोल से लेकर सवेने तक, वरन कूश की सीमा तक खंडहर
कर दूंगा और उजाड़ दूंगा. **11** न तो कोई मनुष्य और न ही कोई पशु वहां से
होकर गुज़रेगा; वहां चालीस साल तक कोई नहीं रहेगा. **12** मैं बरबाद हुए देशों
के बीच मिस्र देश को उजाड़ दूंगा, और उसके शहर नष्ट हुए शहरों के बीच
चालीस साल तक उजाड़ पड़े रहेंगे. और मैं मिस्रवासियों को जाति-जाति के
लोगों के बीच छिन्न-भिन्न कर दूंगा और उनको विभिन्न देशों में इधर-उधर
फैला दूंगा. **13** "'तौभी परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: चालीस साल के
बीतने पर मैं मिस्रवासियों को उन जनताओं के बीच से इकट्ठा करूंगा, जहां वे
तितर-बितर कर दिये गये थे. **14** मैं उन्हें बंधुआई से वापस ले आऊंगा और उन्हें
ऊपरी मिस्र में लौटा लाऊंगा, जो उनके पूर्वजों का देश है. वहां वे एक निचले
दर्जे का राज्य होंगे. **15** यह सब राज्यों में सबसे निचले दर्जे का राज्य होगा
और यह अपने आपको फिर कभी दूसरे जातियों से ऊपर उठा न सकेगा. मैं इसे
इतना कमजोर कर दूंगा कि यह फिर कभी जाति-जाति के लोगों पर शासन
करने न पाएगा. **16** मिस्र फिर इस्राएल के लोगों के भरोसे का कारण नहीं होगा
पर यह इस्राएल को उनके उस पाप की याद दिलाता रहेगा, जब उन्होंने सहायता
के लिए मिस्र से अपेक्षा की थी. तब वे जानेंगे कि मैं परम प्रधान याहवेह हूं.'"
17 फिर सत्ताईसवें वर्ष के पहले माह के पहले दिन, याहवेह का वचन मेरे पास
आया: **18** "हे मनुष्य के पुत्र, बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र ने अपनी सेना से
सोर के विरुद्ध एक कठोर सैनिक अभियान करवाया; हर एक का सिर गंजा
हो गया और हर एक का कंधा छिल गया. फिर भी उसे और उसकी सेना
को सोर के विरुद्ध किए गए सैनिक अभियान से कोई फायदा नहीं हुआ. **19**
इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं मिस्र देश को बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र के अधीन करनेवाला हूं, और वह मिस्र की संपत्ति को ले जाएगा.
वह अपनी सेना के भुगतान के रूप में मिस्र देश को लूटेगा और उसके चीज़ों को
छीन लेगा. **20** मैंने उसके प्रयत्न करने के कारण उसे मिस्र देश को एक ईनाम के
रूप में दिया है, क्योंकि उसने और उसकी सेना ने यह काम मेरे लिये किया,
परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. **21** "उस दिन मैं इस्राएलियों के लिये एक
सींग उगाऊंगा, और मैं उनके बीच तुम्हारे मुंह को खोलूंगा. तब वे जानेंगे कि मैं
याहवेह हूं."

30 याहवेह का वचन मेरे पास आया: **2** "हे मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी
करो और कहो: 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'विलाप करो
और कहो, "हाय! उस दिन के लिये!" **3** क्योंकि वह दिन निकट है, याहवेह
का दिन निकट है— बादलों का एक दिन होगा, जाति-जाति के लोगों के लिये
दंड का दिन होगा. **4** मिस्र के विरुद्ध एक तलवार उठेगी, और कूश पर पीड़ा
का समय आएगा. जब मिस्र में हत्यायें होंगी, तब उसकी धन-संपत्ति ले ली
जाएगी, और उसकी नीवें ध्वस्त कर दी जाएंगी. **5** कूश और पूट, लूद और पूरा
अरब, लिबिया और वाचा बांधे हुए देश के लोग मिस्र के साथ तलवार से मारे
जाएंगे. **6** "'याहवेह का यह कहना है: "'मिस्र के मित्र देश नाश हो जाएंगे और
उसका अहंकार से भरा बल चूर-चूर हो जाएगा. मिगदोल से लेकर सेवेनेह
तक वे उसके अंदर ही तलवार से मारे जाएंगे, परम प्रधान याहवेह की घोषणा
है. **7** वे निर्जन देशों के बीच निर्जन हो जाएंगे, और ध्वस्त शहरों के बीच
उनके शहर ध्वस्त पड़े रहेंगे. **8** जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा, और उसके सारे
सहायक कुचले जाएंगे, तब वे जानेंगे कि मैं ही याहवेह हूं. **9** "'उस दिन
संदेशवाहक अपने को सुरक्षित समझते हुए मेरे पास से कूश को डराने के लिये
पानी जहाजों में जाएंगे. मिस्र के विनाश के दिन वे पीड़ा से भर जाएंगे, क्योंकि
इसका होना निश्चित है. **10** "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "मैं
बाबेल के राजा नबूकदनेज्ज़र के द्वारा मिस्र के उपद्रवी लोगों का अंत कर दूंगा.
11 नबूकदनेज्ज़र और उसकी सेना को, जो सारे राष्ट्रों में सबसे क्रूर हैं— देश को
नाश करने के लिये लायी जाएगी. वे मिस्र पर तलवार चलाएंगे और देश को
हत्या किए हुए लोगों से भर देंगे. **12** मैं नील नदी का पानी सुखा दूंगा और देश
एक दुष्ट जाति के हाथ बेच दूंगा; विदेशियों के द्वारा मैं देश और इसमें की सब
चीज़ों को उजाड़ दूंगा. मैं, याहवेह ने यह कहा है. **13** "'परम प्रधान याहवेह
का यह कहना है: "'मैं मूर्तियों को नष्ट कर दूंगा और मैमफिस की आकृतियां
का अस्तित्व मिटा दूंगा. मिस्र देश में कोई भी राजकुमार न होगा, ओर मैं पूरे
मिस्र में डर फैला दूंगा. **14** मैं ऊपरी मिस्र को उजाड़ दूंगा, ज़ोअन नगर को आग
लगा दूंगा तथा थेबेस नगर को दंड दूंगा. **15** सिन पर, जो मिस्र का दृढ़ नगर है,
मेरा कोप भड़केगा, और मैं थेबेस नगर के उपद्रवी लोगों को नष्ट कर दूंगा. **16**
मैं मिस्र पर आग लगा दूंगा; सिन पीड़ा में तड़पेगा. थेबेस नगर आंधी में उड़
जाएगा; मैमफिस नगर लगातार कष्ट में रहेगा. **17** ओन तथा पी-बेसेथ नगर के

युवा तलवार से मारे जाएंगे, और ये शहर बंधुआई में चले जाएंगे. 18 जब मैं
मिस्र के जूआ को तोड़ूंगा, तब ताहपनहेस नगर में दिन में ही अंधकार हो जाएगा;
तब उसके घमंड से भरे बल का अंत हो जाएगा. वह बादलों से ढंक जाएगा,
और उसके गांव बंधुआई में चले जाएंगे. 19 इस प्रकार मैं मिस्र को दंड दूंगा,
और वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.'" 20 ग्यारहवें वर्ष के, पहले माह के सातवें
दिन, याहवेह का वचन मेरे पास आया: 21 "हे मनुष्य के पुत्र, मैंने मिस्र के राजा
फ़रोह की भुजा को तोड़ दिया है. उसके उपचार के लिए उसे बांधा नहीं गया है
या उस पर पट्टी नहीं बांदी है कि वह मजबूत होकर तलवार पकड़ सके. 22
इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं मिस्र के राजा फ़रोह के विरुद्ध
हूं. मैं उसके दोनों भुजाओं को तोड़ दूंगा—अच्छी भुजा के साथ टूटी हुई भुजा
भी, और उससे हाथ से तलवार को गिरा दूंगा. 23 मैं मिस्रियों को जनताओं के
लोगों के बीच इधर-उधर फैला दूंगा और देश-देश में उन्हें तितर-बितर कर दूंगा.
24 मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को मजबूत करूंगा और अपनी तलवार उसके
हाथ में दे दूंगा, पर मैं फ़रोह की भुजाओं को तोड़ डालूंगा, और वह बाबेल के
राजा के सामने ऐसे कराहेगा, जैसे एक घायल मरनेवाला व्यक्ति कराहता है. 25
मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को मजबूत करूंगा, किंतु फ़रोह की भुजाएं पंगु
हो जाएंगी. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं, जब मैं अपनी तलवार बाबेल के
राजा के हाथ में दे दूंगा और वह इसका उपयोग मिस्र के विरुद्ध करेगा. 26 मैं
मिस्रियों को जाति-जाति के लोगों के बीच फैला दूंगा और उन्हें देश-देश में
तितर-बितर कर दूंगा. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं."

31 ग्यारहवें वर्ष के, तीसरे माह के पहले दिन, याहवेह का वचन मेरे पास
आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फ़रोह और उसके उपद्रवी
लोगों से कहो: "'गौरव में तुम्हारी तुलना किससे की जा सकती है? 3 अश्शूर
पर विचार करो, जो एक समय लबानोन का देवदार था, उसकी शाखाएं सुंदर
और बंजर भूमि को छाया प्रदान करती थीं; यह पेड़ बहुत ऊंचा था, इसकी
चोटी घने पत्तों के ऊपर थी. 4 पानी से इसका पोषण होता था, गहरे झरनों ने
इसे ऊंचा बढ़ाया; उनके सोते इसके आधार के चारों तरफ बहते थे और उनकी
धाराएं मैदान के सारे वृक्षों तक जाती थीं. 5 इसलिये मैदान के सारे पेड़ों से यह
ऊंची हो गई, इसकी डालियां बढ़ने लगीं और इसकी शाखाएं फैलकर लंबी हो
गईं, इसका कारण था पानी की अधिकता. 6 आकाश के सारे पक्षी उसकी
डालियों पर बसेरा करते थे, उसकी शाखाओं के नीचे बंजर भूमि के सारे पशु
बच्चे देते थे; सारी महान जनता इसकी छाया में रहती थीं. 7 अपनी फैली हुई
डालियों के साथ, सुंदरता में यह वैभवशाली था, क्योंकि इसकी जड़ें नीचे
भरपूर अधिक पानी के सोतों तक पहुंची हुई थी. 8 परमेश्वर के बगीचे के
देवदार वृक्ष इसकी तुलना में कुछ न थे, सनोवर भी इसकी डालियों के बराबर
नहीं थे, न ही चौरस पेड़ों की तुलना इसकी शाखाओं से की जा सकती थी—
परमेश्वर के बगीचे का कोई भी पेड़ इसकी सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकता
था. 9 मैंने प्रचूर शाखाओं के साथ इसे सुंदर बनाया, परमेश्वर की वाटिका,
एदेन के सारे पेड़ इससे ईर्ष्या करते थे. 10 "'इसलिये परम प्रधान याहवेह
का यह कहना है: क्योंकि महान देवदार घने पत्तियों के ऊपर बढ़ा था, और
क्योंकि उसे अपनी ऊंचाई का घमंड था, 11 इसलिये मैंने उसे जाति-जाति के
लोगों पर शासन करनेवाले के हाथों में दे दिया कि वह उसकी दुष्टता के अनुसार
उससे व्यवहार करे. मैंने उसे अलग फेंक दिया, 12 और विदेशी जनताओं में जो
सबसे ज्यादा निर्दयी हैं, उन्होंने उसे काटकर छोड़ दिया. उसकी डालियां पर्वतों
और सब घाटियों में गिरीं; उसकी शाखाएं देश के सब दर्रों में टूटी पड़ी रहीं.
जाति-जाति के सब लोग उसकी छाया से निकल आए और उसे छोड़ दिया. 13
सब पक्षी गिरे हुए पेड़ पर बसेरा करने लगे, और सब पशु उसकी शाखाओं के
बीच रहने लगे. 14 इसलिये पानी के पास अब कोई दूसरा पेड़ घनी पत्तियों के
बीच अपने सिर को उठाते हुए घमंड से ऊंचा न बढ़े. भरपूर पानी के पास का
कोई दूसरा पेड़ ऐसा ऊंचा न हो; उन सबका मरना निश्चित है, उनकी जगह
पृथ्वी के नीचे उन मरणहार लोगों के बीच है, जो मृतकों के राज्य में नीचे जा
रहे हैं. 15 "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जिस दिन इसे मृतकों के
राज्य में नीचे लाया गया, मैंने इसके लिये शोक के साथ गहरे झरनों को ढांक
दिया; मैंने इसके सोतों को रोक दिया, और इसके भरपूर पानी के स्रोत बंद हो
गये. इसके कारण मैंने लबानोन को गम में डाल दिया, और मैदान के सारे पेड़
मुरझा गए. (Sheol h7585) 16 मैंने इसके गिरने की आवाज से जाति-जाति के
लोगों को कंपा दिया, जब मैं इसे मृतकों के राज्य में नीचे लाया, ताकि वे उनके
साथ रहें जो नीचे कब्र में जाते हैं. तब एदेन वाटिका के सब पेड़ों, लबानोन के
चुने हुए और सबसे अच्छे, भरपूर पानी से सिंचित पेड़ों को पृथ्वी के नीचे
सांत्वना मिली. (Sheol h7585) 17 बड़े देवदार पेड़ के समान वे भी उन मृतकों
के राज्य में नीचे गये, जो तलवार से मारे गये थे; जो हथियारबंद आदमी उसकी
छाया में जाति-जाति के लोगों के बीच रहते थे, वे भी उनके साथ थे. (Sheol
h7585) 18 "'शान और वैभव में, एदेन के किस पेड़ की तुलना तुमसे की
जा सकती है? फिर भी तुम्हें भी अदन के वृक्षों के साथ पृथ्वी के नीचे लाया
जाएगा; तुम उन खतना-रहितों के बीच पड़े रहोगे, जो तलवार से मारे गये हैं.
"'यह स्थिति फ़रोह और उसके सब उपद्रवी लोगों की होगी, परम प्रधान
याहवेह की यह घोषणा है.'"

32 बारहवें वर्ष के, बारहवें माह के पहले दिन, याहवेह का वचन मेरे
पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फ़रोह के बारे में एक
विलापगीत लो और उसे सुनाओ: "'जाति-जाति के लोगों के बीच तुम एक सिंह
की तरह हो; समुद्र में तुम एक विशाल और विलक्षण प्राणी की तरह हो, तुम
अपने सोतों में मजा लेते, पांव से पानी को मथते, और सोतों को कीचड़ से भर
देते हो. 3 "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'लोगों की एक बड़ी भीड़
के साथ मैं तुम पर अपना जाल फेंकूंगा, और वे तुम्हें मेरे जाल में ऊपर खींच
लेंगे. 4 मैं तुम्हें भूमि पर फेंक दूंगा, और खुले मैदान में तुम्हें पटक दूंगा. मैं
आकाश के सब पक्षियों को तुम पर बसेरा करने दूंगा और बंजर भूमि के सारे पशु
तुम्हें भकोसकर खा जाएंगे. 5 मैं तुम्हारा मांस पर्वतों पर बिखरा दूंगा और
घाटियों को तुम्हारे बचे अंगों से भर दूंगा. 6 मैं तुम्हारे बहते हुए खून से पर्वतों
तक की भूमि को भीगा दूंगा, और घाटियां तुम्हारे मांस से भर जाएंगी. 7 जब मैं
तुम्हें सूंघकर निकालूंगा तब मैं आकाश को ढांक दूंगा और उसके तारों को
अंधेरा कर दूंगा; मैं सूर्य को एक बादल से ढांक दूंगा, और चंद्रमा अपना प्रकाश
न देगा. 8 आकाश के सब चमकते ज्योतियों को मैं तुम्हारे लिये अंधेरा कर
दूंगा; मैं तुम्हारे देश पर अंधकार ले आऊंगा, प्रभु याहवेह की वाणी है! 9 जब
जाति-जाति के लोगों के बीच, और उन देशों के बीच जिसे तुम नहीं जानते, मैं
तुम्हारे ऊपर विनाश लाऊंगा, तब मैं बहुतों के मन को व्याकुल करूंगा. 10
जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चलाऊंगा, तब मैं बहुत से लोगों को तुमसे
भयभीत कराऊंगा, और उनके राजा तुम्हारे कारण अत्यधिक भय से कांपेंगे.
तुम्हारे पतन के दिन उनमें से हर एक अपने जीवन के लिये हर क्षण कांपेगा. 11
"'क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "'बाबेल के राजा की तलवार
तुम्हारे ऊपर चलेगी. 12 मैं शक्तिशाली लोगों की तलवार से तुम्हारे उपद्रवी
लोगों को मरवाऊंगा— ये शक्तिशाली लोग सब जातियों में सबसे अधिक
निर्दयी हैं. वे मिस्र के अहंकार को चकनाचूर कर देंगे, और उसके सब उपद्रवी
लोग नाश कर दिये जाएंगे. 13 मैं उसके सब पशुओं को जलाशयों के किनारे से
नष्ट कर दूंगा जिससे पानी मनुष्य के पांव से मथकर गंदा न हो या पशुओं के खुर
से वहां कीचड़ न हो. 14 तब मैं उसके पानी को साफ कर दूंगा और उसके सोतों
से पानी को तेल की तरह बहाऊंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 15 जब

मैं मिस्र देश को उजाड़ दूंगा और देश से सब चीज़ों को छीन लूंगा, जब मैं उन सबको मारूंगा, जो वहां रहते हैं, तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.' 16 "यह वह विलापगीत है, जिसे वे उसके लिये गाएंगे. जनताओं की बेटियां इसे गाएंगी; मिस्र देश और उसके सब उपद्रवी लोगों के लिये वे इसे गाएंगी, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है." 17 बारहवें वर्ष के, पहले माह के पन्द्रहवें दिन, याहवेह का वचन मेरे पास आया: 18 "हे मनुष्य के पुत्र, मिस्र देश के उपद्रवी लोगों के लिये शोक मनाओ और उसे तथा शक्तिशाली जाति के बेटियों को उन लोगों के साथ पृथ्वी को सौंप दो, जो नीचे कब्र में जाते हैं. 19 उनसे कहो, 'क्या तुम दूसरों की अपेक्षा ज्यादा कृपापात्र हो? नीचे जाकर खतना-रहितों के बीच लेट जाओ.' 20 वे उन्हीं के बीच गिरेंगे, जो तलवार से घात किए गये हैं. तलवार म्यान से निकाली गई है; उसे उसके सब उपद्रवी लोगों के साथ घसीटकर ले जाया जाए. 21 मृतकों के राज्य के भीतर से ही शक्तिशाली अगुए मिस्र और उसके साथ वालों के बारे में कहेंगे, 'वे नीचे आ गये हैं और वे उन खतना-रहित लोगों के साथ पड़े हैं, जो तलवार से मारे गये हैं.' (Sheol h7585) 22 "अश्शूर वहां अपनी पूरी सेना के साथ है; वह अपने सब मारे गये लोगों की कब्रों से घिरी हुई है, वे सब जो तलवार से मारे गये हैं. 23 उनकी कब्र गड्ढों के गहराइयों में हैं और उसकी सेना उसकी कब्र के चारों ओर लेटी हुई है. वे सब जिन्होंने जीवितों के देश में आतंक फैलाया था, घात किए गये हैं; वे सब तलवार से मारे गये हैं. 24 "एलाम वहां है, और उसके सब उपद्रवी लोग उसकी कब्र के चारों ओर हैं. वे सब तलवार से मारे गये हैं, जिन्होंने जीवितों के देश में आतंक फैलाया था, वे सब नीचे पृथ्वी में खतना-रहित चले गये हैं. वे उनके साथ ही लज्जित हैं, जो नीचे कब्र में जाते हैं. 25 मारे गये लोगों के बीच उसके लिये एक बिछौना बनाया गया है, और उसके सब उपद्रवी लोग उसकी कब्र के चारों तरफ हैं. ये सबके सब खतना-रहित लोग हैं और तलवार से मारे गये हैं. क्योंकि जीवितों के देश में उनका आतंक फैला था, इसलिये वे उनके साथ ही लज्जित हैं, जो नीचे कब्र में जाते हैं; उन्हें मारे गये लोगों के बीच रखा गया है. 26 "मेशेख और तूबल वहां हैं, और उनके उपद्रवी लोग उनकी कब्रों के चारों तरफ हैं. उनमें से सब खतना-रहित हैं और तलवार से मारे गये हैं क्योंकि उन्होंने जीवितों के देश में अपना आतंक फैलाया था. 27 पर वे मरे हुए उन पुराने योद्धाओं के साथ नहीं पड़े हैं, जो अपने युद्ध के हथियारों के साथ मृतकों के राज्य में नीचे गये—उनकी तलवारें उनके सिर के नीचे रखी थी और उनके ढाल उनकी हड्डियों पर पड़े थे—यद्यपि ये योद्धा भी जीवितों के देश को आतंकित किए थे. (Sheol h7585) 28 "हे फ़रोह, तुम्हें भी टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा और तुम भी उन खतना-रहितों के बीच पड़े रहोगे, जो तलवार से मारे गये हैं. 29 "एदोम, उसके राजा और उसके सब राजकुमार वहां हैं; शक्तिशाली होने के बावजूद, वे उनके साथ पड़े हैं, जो तलवार से मारे गये हैं. वे उन खतना-रहितों के साथ पड़े हैं, जो नीचे कब्र में जाते हैं. 30 "उत्तर दिशा के सारे राजकुमार और सारे सीदोनी भी वहां हैं; अपनी शक्ति से आतंक फैलाने के बावजूद, कलंकित होकर वे मारे गये लोगों के साथ कब्र में चले गये. वे खतना-रहित दशा में उन लोगों के साथ पड़े हुए हैं, जो तलवार से मारे गये हैं और उनके साथ ही लज्जित हैं, जो नीचे कब्र में जाते हैं. 31 "फ़रोह—वह और उसकी सारी सेना—उन्हें देखेगी और उसे अपने उन सारे उपद्रवी लोगों के बारे में सांत्वना मिलेगी, जो तलवार से मारे गये थे, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 32 यद्यपि मैंने जीवितों के देश में फ़रोह का आतंक फैला दिया था, फिर भी वह और उसके सब उपद्रवी लोग उन खतना-रहितों के बीच पड़े रहेंगे, जो तलवार से मारे गये हैं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है."

33 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 "मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से बात करो और उनसे कहो: 'जब मैं किसी देश पर तलवार चलाता हूं, और उस देश के लोग अपने एक व्यक्ति को चुनकर उसे अपना पहरेदार बनाते हैं, 3 और वह देखता है कि देश के विरुद्ध तलवार चली आ रही है और वह तुरही फूंककर लोगों को चेतावनी देता है, 4 तब यदि कोई तुरही को सुनकर चेतावनी पर ध्यान नहीं देता है और तलवार आकर उनका प्राण ले लेती है, तो उसके खून का दोष उसी के सिर पर होगा. 5 जब उसने तुरही की आवाज सुनी परंतु उसने चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, इसलिये उसके खून का दोष उसी के सिर पर होगा. यदि वह चेतावनी पर ध्यान दिया होता, तो वह अपना प्राण बचा लेता. 6 पर यदि पहरेदार तलवार को आते हुए देखता है और लोगों को चेतावनी देने के लिये तुरही नहीं बजाता है और तलवार आकर किसी का प्राण ले लेती है, तो उसके पाप के कारण उस व्यक्ति का प्राण ले लिया जाएगा, पर मैं उसके खून के लिये उस पहरेदार को ज़िम्मेदार ठहराऊंगा.' 7 "हे मनुष्य के पुत्र, मैंने तुम्हें इस्राएल के लोगों के लिये एक पहरेदार ठहराया है; इसलिये जो बात मैं कहता हूं, उसे सुन और उन्हें मेरी ओर से चेतावनी दे. 8 जब मैं दुष्ट मनुष्य से कहता हूं, 'हे दुष्ट मनुष्य, तू निश्चय मरेगा,' और तुम उस व्यक्ति को उसका जीवन बदलने के लिये नहीं कहते हो, तो वह व्यक्ति अपने पाप के कारण मरेगा, और मैं तुम्हें उसके खून के लिये ज़िम्मेदार ठहराऊंगा. 9 पर यदि तुम दुष्ट व्यक्ति को उसका जीवन बदलने की चेतावनी देते हो और वह अपना जीवन नहीं बदलता है, तो वह अपने पाप के कारण मरेगा, किंतु तुम स्वयं बच जाओगे. 10 "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएलियों से कहो, 'तुम यह कह रहे हो: "हमारे पाप और अपराध हमें नीचे गिराते हैं, और हम उनके कारण से बेकार हो रहे हैं. तब हम जीवित कैसे रह सकते हैं?"' 11 उनसे कहो, 'मेरे जीवन की शपथ, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, मैं दुष्ट की मृत्यु से खुश नहीं होता हूं, पर अच्छा यह होगा कि वह अपना जीवन बदले और जीवित रहे. छोड़ो! अपने दुष्ट जीवनशैली को छोड़ो! हे इस्राएल के लोगों, तुम क्यों मरोगे?' 12 "इसलिये, हे मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से कहो, 'यदि कोई धर्मी व्यक्ति आज्ञा नहीं मानता है, तो उसके पहले के धर्मीपन का कोई मतलब नहीं होगा. और यदि कोई दुष्ट व्यक्ति पश्चात्ताप करता है, तो उस व्यक्ति के पहले की दुष्टता के कारण उसे दंड नहीं मिलेगा. जो धर्मी व्यक्ति पाप करता है, वह जीवित नहीं रहेगा, यद्यपि वह पहले धर्मी था.' 13 यदि मैं किसी धर्मी व्यक्ति से कहता हूं कि वह निश्चय जीवित रहेगा, पर तब वह अपने धर्मीपन पर भरोसा करके दुष्टता करने लगता है, तब उसके द्वारा किया गया कोई भी धर्मीपन का काम याद नहीं किया जाएगा; वह अपने किए गये दुष्ट काम के कारण मरेगा. 14 और यदि मैं किसी दुष्ट व्यक्ति को यह कहता हूं, 'तुम निश्चय मरोगे,' पर तब वह अपने पाप से मन फिराता है और वही करता है जो सही और न्याय संगत है— 15 यदि वह कर्जा देने के बदले रखे गये बंधक की वस्तु को लौटा देता है, चोरी की वस्तु को लौटा देता है, जीवन देनेवाले नियमों का पालन करता है, और दुष्टता नहीं करता—तब वह व्यक्ति निश्चय जीवित रहेगा; वह नहीं मरेगा. 16 उसके द्वारा किया गया कोई भी पाप याद किया नहीं जाएगा. उसने सही और न्याय संगत काम किया है; वह निश्चय जीवित रहेगा. 17 "फिर भी तुम्हारे लोग कहते हैं, 'प्रभु की नीति न्याय संगत नहीं है.' पर यह उनकी नीति है जो न्याय संगत नहीं है. 18 यदि कोई धर्मी व्यक्ति अपने धर्मीपन को छोड़कर दुष्ट काम करता है, तब वह अपने दुष्ट काम के कारण मरेगा. 19 और यदि कोई दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता को छोड़कर सही और न्याय संगत काम करता है, तब वह अपने इन कामों के कारण जीवित रहेगा. 20 तौभी तुम इस्राएली कहते हो, 'प्रभु की नीति न्याय संगत नहीं है.' पर मैं तुममें से हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार करूंगा." 21 हमारे बंधुआई के बारहवें वर्ष के, दसवें माह के पांचवें दिन, एक व्यक्ति जो येरूशलेम से बच निकला था, मेरे पास आकर कहा, "शहर का पतन हो गया है!" 22 उस व्यक्ति के आने के पूर्व संध्या पर, याहवेह

का हाथ मुझ पर था, और उसने मेरा मुंह उस व्यक्ति सामने खोला, जो सुबह मेरे
पास आया. इस प्रकार मेरा मुंह खुल गया और मैं फिर चुप न रहा. **23** तब
याहवेह का वचन मेरे पास आया: **24** "हे मनुष्य के पुत्र, वे लोग, जो इस्राएल
देश के खंडहरों में रह रहे हैं, वे कह रहे हैं, 'अब्राहाम तो सिर्फ एक व्यक्ति था,
फिर भी उसने देश पर अधिकार किया; पर हम तो बहुत हैं; निश्चय ही यह देश
हमें अधिकार करने के लिये दिया गया है.' **25** इसलिये उनसे कहो, 'परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: जब तुम मांस को खून सहित खाते हो, और
अपनी मूर्तियों की ओर दृष्टि करके खून करते हो, तब क्या तुम्हें उस देश पर
अधिकार करना चाहिये? **26** तुम अपने तलवार पर निर्भर रहते हो, तुम घृणित
काम करते हो, और तुममें से हर एक अपने पड़ोसी की पत्नी को अशुद्ध करता है.
तब क्या तुम्हें उस देश पर अधिकार करना चाहिये?' **27** "उनसे यह कहो:
'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता
हूं, जो इस समय खंडहरों में रह रहे हैं, वे तलवार से मारे जाएंगे, जो खुले मैदान
में हैं, उन्हें मैं जंगली जानवरों का आहार होने के लिये दे दूंगा, और जो दृढ़ गढ़ों
और गुफाओं में हैं, वे महामारी से मारे जाएंगे. **28** मैं उस देश को उजाड़ एवं
निर्जन बना दूंगा, और उसके घमंड से भरे बल का अंत हो जाएगा, और इस्राएल
के पर्वत सुनसान हो जाएंगे, जिससे कोई भी उनमें से होकर नहीं जाएगा. **29**
उनके द्वारा किए गये सब घृणित कामों के कारण जब मैं उस देश को उजाड़ एवं
निर्जन बना दूंगा, तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.' **30** "हे मनुष्य के पुत्र, जहां
तक तुम्हारा सवाल है, तुम्हारे लोग तुम्हारे विषय में दीवारों के किनारे और घर
के दरवाजों पर बात करते हुए एक दूसरे से यह कह रहे हैं, 'आओ और उस
संदेश को सुनो, जो याहवेह से आया है.' **31** मेरे लोग तुम्हारे पास आते हैं, जैसा
कि वे सामान्यतः करते हैं, और वे तुम्हारा वचन सुनने के लिये तुम्हारे सामने
बैठते हैं, पर वे उन वचनों के अनुसार नहीं चलते हैं, वे मुंह से प्रेम की बातें तो
करते हैं, पर उनका मन अन्याय की कमाई में लगा रहता है. **32** वास्तव में, तुम
उनके लिये एक ऐसे व्यक्ति हो, जो सुरिली आवाज में प्रेम गीत गाता है और
अच्छा बाजा बजाता है, इससे बढ़कर तुम उनके लिये कुछ नहीं हो, क्योंकि वे
तुम्हारे वचन को तो सुनते हैं पर उसके अनुसार नहीं चलते हैं. **33** "जब यह
सब घटित होगा—और यह अवश्य ही घटित होगा—तब वे जानेंगे कि उनके
बीच एक भविष्यवक्ता आया था."

34 याहवेह का वचन मेरे पास आया: **2** "हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के
चरवाहों के विरुद्ध भविष्यवाणी करो; भविष्यवाणी करके कहो: 'परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: धिक्कार है तुम पर, हे इस्राएल के चरवाहों,
जो सिर्फ अपना ही ध्यान रखते हो! क्या चरवाहों को झुंड का ध्यान नहीं
रखना चाहिये? **3** तुम दही खाते हो, ऊनी कपड़े पहनते हो और खाने के लिये
चुनकर पशुओं को काटते हो, पर तुम झुंड का ध्यान नहीं रखते हो. **4** तुमने
कमजोर को बलवान नहीं किया, बीमार को चंगा नहीं किया या घायल की
मरहम पट्टी नहीं किया. तुम भटके हुओं को सही रास्ते पर नहीं लाए या खोये
हुओं को नहीं ढूंढ़े. तुमने उन पर कठोरता और निर्दयता से शासन किया है. **5**
इसलिये वे तितर-बितर हो गये, क्योंकि उनका कोई चरवाहा न था, और जब
वे तितर-बितर हो गये, तो वे सब जंगली पशुओं का आहार बन गये. **6** मेरी
भेड़ें सब पहाड़ों और ऊंचे पठारों पर भटकती रहीं. वे सारी पृथ्वी पर तितर-
बितर हो गईं, और किसी ने भी उनको नहीं ढूंढ़ा या उनकी सुधि नहीं ली. **7**
"'इसलिये हे चरवाहों, याहवेह की बात सुनो: **8** परम प्रधान याहवेह की घोषणा
है, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, क्योंकि मेरे झुंड का कोई
चरवाहा नहीं है और इसलिये उसे लूटा गया है और वह सब जंगली पशुओं का
आहार बन गया है, और क्योंकि मेरे चरवाहों ने मेरे झुंड की खोज नहीं की
और मेरे झुंड पर ध्यान देने के बदले अपने आप पर ध्यान दिया, **9** इसलिये हे
चरवाहों, तुम याहवेह की बात सुनो: **10** परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
मैं चरवाहों के विरुद्ध हूं और मैं उनसे अपने झुंड का लेखा लूंगा. मैं उनको झुंड
को चराने के काम से हटा दूंगा ताकि चरवाहे फिर अपना भरण-पोषण न कर
सकें. मैं उनके मुंह से अपने झुंड को छुड़ाऊंगा, और वे फिर उनका आहार नहीं
होंगे. **11** "'क्योंकि परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं स्वयं अपनी
भेड़ों को खोजूंगा और उनकी देखभाल करूंगा. **12** जिस प्रकार एक चरवाहा
अपने बिखरे हुए झुंड की देखभाल करता है, जब वह उनके साथ होता है,
उस प्रकार मैं भी अपने भेड़ों की देखभाल करूंगा. मैं उन्हें उन सब जगहों से
बचाऊंगा, जहां वे बादलों और अंधकार से घिरे दिन में तितर-बितर हो गये थे.
13 मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों बीच से निकालकर लाऊंगा और देश-देश से
उन्हें इकट्ठा करूंगा, और मैं उन्हें उनके स्वयं के देश में ले आऊंगा. मैं उन्हें
इस्राएल के पर्वतों पर, घाटियों में और देश के उन सारे जगहों में चराऊंगा,
जहां लोग बसे हुए हैं. **14** मैं उन्हें अच्छे चरागाह में चराऊंगा, और इस्राएल के
पर्वत की ऊंचाइयां उनके चरने के स्थान होंगे. वहां वे अच्छे चरने की जगह पर
लेटेंगे, और वहां वे इस्राएल के पर्वतों पर एक अच्छे चरागाह में चरेंगे. **15** मैं
स्वयं अपनी भेड़ों को चराऊंगा और उन्हें आराम कराऊंगा, परम प्रधान याहवेह
की घोषणा है. **16** मैं खोए हुओं को खोजूंगा और भटके हुओं को वापस ले
आऊंगा. मैं घायलों की मरहम पट्टी करूंगा और जो कमजोर हैं, उन्हें बलवान
बनाऊंगा, पर जो चिकने और पुष्ट हैं, उन्हें नष्ट कर दूंगा. मैं न्याय के साथ झुंड
की देखभाल करूंगा. **17** "'जहां तक तुम्हारा सवाल है, हे मेरे झुंड, परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: मैं एक भेड़ और दूसरी भेड़ के बीच, और मेढ़ों और
बकरों-बकरियों के बीच न्याय करूंगा. **18** क्या तुम्हारे लिये यह पर्याप्त नहीं
है कि तुम अच्छे चरागाह में चरो? क्या ज़रूरी है कि अपने बचे हुए चरागाह को
अपने पैरों से रौंदो? क्या साफ पानी पीना तुम्हारे लिये पर्याप्त नहीं है? क्या
ज़रूरी है कि बाकी को अपने पैरों से गंदा करो? **19** क्या ज़रूरी है कि मेरा झुंड
उसमें से खाएं, जिसे तुमने रौंद दिया है और उसमें से पिए जिसे तुमने अपने पैरों
से गंदा कर दिया है? **20** "'इसलिये परम प्रधान याहवेह का उनसे यह कहना है:
देखो, मैं स्वयं मोटी भेड़ और पतली भेड़ के बीच न्याय करूंगा. **21** क्योंकि
तुम सब दुर्बल भेड़ों को अपने बाजू और अपने कंधों से तब तक ढकेलते और
उन्हें सींग मारते हो, जब तक कि वे दूर नहीं चले जाते, **22** मैं अपनी भेड़ों को
बचाऊंगा, और उन्हें फिर लूटा नहीं जाएगा. मैं एक भेड़ और दूसरी भेड़ के
बीच न्याय करूंगा. **23** मैं उनके ऊपर एक चरवाहा, अपने सेवक दावीद को
ठहराऊंगा, और वह उनको चराएगा; वह उनको चराएगा और उनका चरवाहा
होगा. **24** मैं याहवेह उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और मेरा सेवक दावीद उनके
बीच राजकुमार होगा. मैं याहवेह ने कहा है. **25** "'मैं उनके साथ शांति की एक
वाचा बांधूंगा और देश को दुष्ट पशुओं से छुटकारा दूंगा, ताकि वे निर्जन प्रदेश में
सुरक्षित रहें और जंगलों में चैन से सोएं. **26** मैं उन्हें तथा मेरी पहाड़ी के आस-
पास के जगहों को आशीष का कारण बनाऊंगा. मैं समय पर बारिश भेजूंगा;
वहां आशीष की बारिश होगी. **27** पेड़ों में फल लगेंगे और भूमि अपना उपज
देगी; लोग अपने देश में सुरक्षित रहेंगे. जब मैं उनके जूए को तोड़ूंगा और उन्हें
उन लोगों के हाथों से छुड़ाऊंगा, जिन्होंने उन्हें गुलाम बना लिया है, तब वे
जानेंगे कि मैं याहवेह हूं. **28** वे जाति-जाति के लोगों के द्वारा फिर लूटे नहीं
जाएंगे, और न ही जंगली जानवर उन्हें फाड़ खाएंगे. वे सुरक्षित रहेंगे, और उन्हें
कोई नहीं डराएगा. **29** मैं उन्हें एक ऐसा देश दूंगा, जो अपने फसल के लिये
जाना जाता है, और वे देश में फिर अकाल से पीड़ित न होंगे या जाति-जाति के
लोग उन्हें अपमानित नहीं करेंगे. **30** तब वे जानेंगे कि मैं, याहवेह उनका
परमेश्वर उनके साथ हूं और यह भी कि वे, इस्राएली मेरे लोग हैं, परम प्रधान

याहवेह की घोषणा है. 31 तुम मेरी भेड़ें हो, मेरे चरागाह की भेड़ें, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.’ ”

35 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 “हे मनुष्य के पुत्र, सेईर पर्वत की ओर अपना मुंह करो; उसके विरुद्ध भविष्यवाणी करो 3 और कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: हे सेईर पर्वत, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, और मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा, और मैं तुम्हें निर्जन और उजाड़ कर दूंगा. 4 मैं तुम्हारे नगरों को खंडहर कर दूंगा और तुम निर्जन हो जाओगे. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 5 “ ‘क्योंकि तुम पुराने समय से शत्रुता रखते थे और इस्राएलियों के विपत्ति के समय तुमने उन्हें तलवार की शक्ति के अधीन कर दिया, यह वह समय था जब उनका दंड अपने चरम पर था, 6 इसलिये, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, मैं तुम्हें रक्तपात के लिये दे दूंगा और रक्तपात तुम्हारा पीछा करेगा. क्योंकि तुम्हें तो रक्तपात से घृणा नहीं है, इसलिये रक्तपात तुम्हारा पीछा करेगा. 7 मैं सेईर पर्वत को निर्जन और उजाड़ कर दूंगा और उन सबको नष्ट कर दूंगा, जो यहां से होकर आते जाते हैं. 8 मैं तुम्हारे पहाड़ों को हत्या किए गये लोगों से भर दूंगा; जो तलवार से मारे जाएंगे, वे तुम्हारे पहाड़ियों पर और तुम्हारे घाटियों में और तुम्हारे सब दर्रों में गिरेंगे. 9 मैं तुम्हें सदाकाल के लिये उजाड़ बना दूंगा; तुम्हारे नगर फिर बसाये नहीं जाएंगे. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 10 “ ‘क्योंकि तुमने कहा है, “ये दो जातियां और ये दो देश हमारे होंगे और हम उनको अपने अधिकार में ले लेंगे,” यद्यपि मैं याहवेह वहां था, 11 इसलिये, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, उनके प्रति तुम्हारी घृणा के समय, तुमने जो क्रोध और ईर्ष्या दिखाई, उसके अनुसार मैं तुमसे व्यवहार करूंगा और जब मैं तुम्हारा न्याय करूंगा, तब मैं स्वयं को उनके बीच प्रगट करूंगा. 12 तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह ने उन सब तुच्छ बातों को सुना है, जो तुमने इस्राएल के पर्वतों के विरुद्ध कहा. तुमने कहा, “वे उजाड़ पड़े हैं और उन्हें हमारा आहार होने के लिये दिया गया है.” 13 तुमने मेरे विरुद्ध डींग मारी और बेधड़क मेरे विरुद्ध बातें कही, और मैंने वह सब सुना. 14 परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जब सारी पृथ्वी आनंदित होगी, तब मैं तुम्हें उजाड़ दूंगा. 15 क्योंकि जब इस्राएल का उत्तराधिकार उजड़ गया, तब तुम आनंद मनाये, वैसा ही व्यवहार मैं तुम्हारे साथ करूंगा. हे सेईर पर्वत, तुम उजाड़ हो जाओगे, तुम और पूरा एदोम. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं.’ ”

36 “हे मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के पर्वतों के लिये भविष्यवाणी करो और कहो, ‘हे इस्राएल के पर्वतों, याहवेह की बात सुनो. 2 परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: शत्रु ने तुमसे कहा, “आहा! पुराने ज़माने के ऊंचे स्थान हमारे हो गये हैं.” ’ 3 इसलिये भविष्यवाणी करके कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्योंकि उन्होंने तुम्हें सब तरफ लूटा और कुचला जिससे बाकी जातियों के अधिकार में हो गये और जनताओं की ईर्ष्यालु बात और बदनामी के विषय हो गये, 4 इसलिये, हे इस्राएल के पर्वतों, परम प्रधान याहवेह की बात सुनो: परम प्रधान याहवेह के पर्वतों और पहाड़ियों, तराइयों और घाटियों, उजाड़ खंडहरों और त्याग दिये गये नगरों, जो लूट लिये गये हैं और जिनकी तुम्हारे चारों तरफ की बाकी जातियां हंसी उड़ाती हैं, इन सबसे कहना है— 5 परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: अपने अति उत्साह में, मैंने बाकी जातियों के विरुद्ध और सारे एदोम के विरुद्ध कहा है, क्योंकि खुशी और अपने मन में ईर्ष्या के कारण, उन्होंने मेरे देश को अपने अधिकार में ले लिया ताकि वे इसके चरागाह को लूट सकें.’ 6 इसलिये इस्राएल देश के बारे में भविष्यवाणी करो और पर्वतों और पहाड़ियों, तराइयों तथा घाटियों से कहो: ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं ईर्ष्यालु कोप में होकर कहता हूं क्योंकि तुमने जाति-जाति के लोगों के अपमान को सहा है. 7 इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं हाथ उठाकर शपथ खाता हूं कि तुम्हारे चारों तरफ की जातियां भी अपमान सहेंगी. 8 “ ‘पर हे इस्राएल के पर्वतों, तुममें मेरे इस्राएली लोगों के लिये शाखाएं और फल पैदा होंगे, क्योंकि वे जल्दी घर लौट आएंगे. 9 मैं तुम्हारे लिये चिंतित हूं और तुम पर कृपादृष्टि रखूंगा; तुममें हल चलाया जाएगा और बीज बोया जाएगा, 10 और मैं तुम पर बहुत से लोगों को बसाऊंगा—जी हां, पूरे इस्राएल के नगर बसाये जाएंगे और खंडहर हो गये स्थान फिर से बनाये जाएंगे. 11 मैं तुममें रहनेवाले मनुष्यों एवं पशुओं की संख्या को बढ़ाऊंगा, वे फलवंत होंगे और संख्या में बहुत हो जाएंगे. मैं पहले की तरह तुममें लोगों को बसाऊंगा और मैं तुम्हें पहले से ज्यादा समृद्ध करूंगा. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं. 12 मैं ऐसा करूंगा कि लोग अर्थात् मेरे लोग इस्राएल तुममें बसेंगे. वे तुम पर अधिकार कर लेंगे, और तुम उनका उत्तराधिकार होगे; तुम फिर कभी उन्हें उनके संतान से वंचित नहीं करोगे. 13 “ ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: क्योंकि कुछ लोग तुम्हें कहते हैं, “तुम लोगों को खा जाते हो और अपनी जाति को उसके बच्चों से वंचित करते हो,” 14 इसलिये तुम फिर लोगों को नहीं खाओगे या अपनी जाति को संतानरहित नहीं करोगे, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 15 मैं फिर तुम्हें जाति-जाति के लोगों से ताना नहीं सुनवाऊंगा और फिर तुम्हें लोगों से अपमान सहना न पड़ेगा या तुम अपनी जाति के गिरने का कारण न बनोगे, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.’ ” 16 याहवेह का वचन फिर मेरे पास आया: 17 “हे मनुष्य के पुत्र, जब इस्राएल के लोग अपने देश में रह रहे थे, तब उन्होंने उसे अपने चालचलन और कार्यों के द्वारा अशुद्ध किया. मेरी दृष्टि में उनका चालचलन एक स्त्री के माहवारी अशुद्धता के जैसा था. 18 इसलिये मेरा कोप उन पर भड़का क्योंकि उन्होंने देश में खून बहाया था और इसे अपनी मूर्तियों से अशुद्ध किया था. 19 मैंने उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच तितर-बितर कर दिया, और वे सारे देशों में बिखर गए; मैंने उनके चालचलन और उनके कार्यों के अनुसार उनका न्याय किया. 20 और जहां कहीं भी वे जाति-जाति के लोगों के बीच गये, उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया, क्योंकि उनसे यह कहा गया था, ‘ये याहवेह के लोग हैं, तौभी उन्हें उसका देश छोड़ना पड़ा.’ 21 मुझे मेरे पवित्र नाम की चिंता थी, जिसे इस्राएल के लोग जहां भी गये, वहां जनताओं के बीच अपवित्र किया. 22 “इसलिये इस्राएलियों से कहो, ‘परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: हे इस्राएल के लोगों, जो कुछ मैं करने जा रहा हूं, वह तुम्हारे कारण नहीं, पर अपने पवित्र नाम के लिए करने जा रहा हूं, जिसे तुम जहां भी गये, वहां तुमने जनताओं के बीच अपवित्र किया. 23 मैं अपने बड़े नाम की पवित्रता को दिखाऊंगा, जिसे तुमने जनताओं के बीच अपवित्र किया, वह नाम जिसे तुमने उनके बीच अपवित्र किया. तब लोग जानेंगे कि मैं याहवेह हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है, जब मैं उनके आंखों के सामने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहरूंगा. 24 “ ‘क्योंकि मैं तुम्हें जातियों में से निकाल लूंगा; मैं तुम्हें सब देशों से इकट्ठा करूंगा और तुम्हें तुम्हारे स्वयं के देश में ले आऊंगा. 25 मैं तुम पर शुद्ध पानी छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; मैं तुम्हें तुम्हारे सब अशुद्धियों से और तुम्हारे सब मूर्तियों से शुद्ध करूंगा. 26 मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुममें एक नई आत्मा डालूंगा; मैं तुमसे तुम्हारे पत्थर के हृदय को हटा दूंगा और तुम्हें मांस का एक हृदय दूंगा. 27 और मैं अपनी आत्मा तुममें डालूंगा और ऐसा करूंगा कि तुम मेरे नियमों पर चलोगे और मेरे कानूनों पर सावधानीपूर्वक चलोगे. 28 तब तुम उस देश में रहोगे, जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था; तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा. 29 मैं तुम्हें तुम्हारी सब अशुद्धता से छुड़ाऊंगा. मैं अनाज के लिये आज्ञा दूंगा और इसे प्रचूर मात्रा में कर दूंगा और तुम पर अकाल नहीं लाऊंगा. 30 मैं पेड़ों के फलों की संख्या में वृद्धि करूंगा और खेत

के फसल को भी अधिक उपजाऊंगा, ताकि तुम्हें अकाल के कारण जाति-जाति
के लोगों के बीच कलंकित न होना पड़े. 31 तब तुम्हारे बुरे चालचलन और
दुष्कर्म तुम्हें याद आएंगे, और तुम अपने पापों और घृणित कार्यों के कारण
अपने आपसे घृणा करने लगोगे. 32 मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मैं यह सब
तुम्हारे हित में नहीं कर रहा हूं, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. हे इस्राएल
लोगों, अपने आचरण के कारण लज्जित और कलंकित हो! 33 "'परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: जिस दिन मैं तुम्हें तुम्हारे सब पापों से शुद्ध करूंगा, मैं
तुम्हारे नगरों को पुनर्स्थापित करूंगा, और खंडहर फिर बनाये जाएंगे. 34 उजाड़
भूमि पर फसल उगाई जाएगी, इसके बदले कि वह वहां से आने-जानेवाले लोगों
की दृष्टि में उजाड़ पड़ा रहे. 35 वे कहेंगे, "यह देश जो उजड़ा पड़ा था, अब
एदेन की वाटिका जैसा हो गया है; वे शहर जो खंडहर, उजड़े और नष्ट हो गये
थे, वे अब गढ़वाले हो गये हैं और लोग वहां रहने लगे हैं." 36 तब वे जातियां,
जो तुम्हारे आस-पास बची हुई हैं, वे यह जानेंगी कि मैं याहवेह ने ही नष्ट हुए
स्थानों को फिर से बनाया है और उजाड़े स्थानों को फिर से बसाया है. मैं
याहवेह ने यह कहा है और मैं इसको पूरा भी करूंगा.' 37 "परम प्रधान याहवेह
का यह कहना है: एक बार फिर मैं इस्राएल की प्रार्थना को स्वीकार करूंगा और
उनके लिये यह करूंगा: मैं उनके लोगों की संख्या को भेड़-बकरियों की तरह
अत्यधिक करूंगा, 38 उन्हें पशुओं के उस झुंड के समान अत्यधिक करूंगा, जो
येरूशलेम में ठहराये गए त्योहारों के लिये होते हैं. इस प्रकार वे खंडहर हुए शहर
लोगों के झुंड से भर जाएंगे. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं."

37 याहवेह का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे याहवेह के आत्मा के द्वारा
बाहर ले आया और एक घाटी के बीच में खड़ा कर दिया; वह घाटी
हड्डियों से भरी पड़ी थी. 2 उसने मुझे उनके बीच आने जाने में मेरी अगुवाई
की, और मैंने घाटी की तल पर बहुत सारी हड्डियां देखी, जो बहुत सूखी थी. 3
उसने मुझसे पूछा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या ये हड्डियां जीवित हो सकती हैं?" मैंने
कहा, "परम प्रधान याहवेह, यह तो आप ही जानते हैं." 4 तब उसने मुझसे
कहा, "इन हड्डियों से भविष्यवाणी करके कहो, 'हे सूखी हड्डियो, याहवेह की
बात सुनो! 5 परम प्रधान याहवेह का इन अस्थियों से यह कहना है: मैं तुममें
सांस डाल दूंगा, और तुम जीवित हो जाओगे. 6 मैं तुममें स्नायु-तंत्र जोड़कर
तुम्हारे ऊपर मांस चढ़ा दूंगा और तुम्हें चमड़े से ढांप दूंगा; मैं तुममें सांस फूंक
दूंगा, और तुम जीवित हो जाओगे. तब तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं.'" 7 तब
मैंने इस आज्ञा के अनुसार भविष्यवाणी की. और जब मैं भविष्यवाणी कर रहा
था, तब वहां एक खड़खड़ाहट की आवाज हुई, और हड्डियां इकट्ठी हो गईं और
एक हड्डी से दूसरी हड्डी जुड़ गई. 8 तब मैंने देखा कि उनमें स्नायु-तंत्र और
मांसपेशियां आ गईं और उनके ऊपर चमड़ा चढ़ गया, परंतु उनमें सांस नहीं
थी. 9 तब उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, सांस से भविष्यवाणी करो;
भविष्यवाणी करो, और उसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: हे
सांस, चारों दिशाओं से आओ और इन मारे गये लोगों में समा जाओ कि वे
जीवित हो जाएं.'" 10 याहवेह के इस आज्ञा के अनुसार मैंने भविष्यवाणी की,
और सांस उनमें समा गयी; वे जीवित होकर अपने-अपने पांवों पर खड़े हो
गए—एक बहुत बड़ी सेना. 11 तब याहवेह ने मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, ये
हड्डियां इस्राएल के लोग हैं. वे कहते हैं, 'हमारी हड्डियां सूख गई हैं और हमारी
आशा जाती रही; हम अलग हो गये हैं.' 12 इसलिये भविष्यवाणी करके उनसे
कहो: 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: हे मेरे लोगों, मैं तुम्हारी कब्रों को
खोलने जा रहा हूं और वहां से तुम्हें बाहर निकालूंगा; मैं तुम्हें वापस इस्राएल देश
में ले आऊंगा. 13 तब हे मेरे लोगो, तुम जानोगे कि मैं याहवेह हूं, जब मैं तुम्हारी
कब्रों को खोल दूंगा और तुम्हें बाहर निकालूंगा. 14 मैं अपना आत्मा तुममें
डालूंगा और तुम जीवित होंगे, और मैं तुम्हें तुम्हारे स्वयं के देश में बसाऊंगा. तब
तुम जानोगे कि मैं याहवेह ने कहा है, और मैंने यह किया है, याहवेह की घोषणा
है.'" 15 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 16 "हे मनुष्य के पुत्र, लकड़ी की
एक लाठी लो और उस पर यह लिखो, 'यहूदिया और इस्राएल से संबंधित लोग
उसके साथ जुड़ गये हैं.' तब लकड़ी की एक और लाठी लेकर उस पर लिखो,
'योसेफ़ (एफ्राईम) और सब इस्राएली उसके साथ जुड़ गये हैं.' 17 उन लाठियों
को जोड़कर एक ही लाठी बना लो ताकि वे तुम्हारे हाथ में एक ही बन जाएं.
18 "जब तुम्हारे लोग तुमसे पूछे, 'क्या तुम हमें नहीं बताओगे कि इनका क्या
मतलब है?' 19 तब उनसे कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं
योसेफ़ की लाठी को ले लूंगा—जो एफ्राईम के हाथ में है—और इस्राएल के जो
गोत्र उसके साथ जुड़े हुए हैं, उन्हें लेकर मैं यहूदिया की लाठी से जोड़ दूंगा. मैं
उन्हें लकड़ी की एक लाठी बना दूंगा, और वे मेरे हाथ में एक हो जाएंगे.' 20
जिन लाठियों पर तुमने लिखा है, उन्हें उनके सामने पकड़ो 21 और उनसे
कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मैं इस्राएलियों को उन राष्ट्रों से
बाहर निकाल लूंगा, जहां वे गये हैं, मैं उन्हें चारों ओर से इकट्ठा करूंगा और
उन्हें उनके स्वयं के देश में ले आऊंगा. 22 मैं उन्हें देश में इस्राएल के पर्वतों पर
एक राष्ट्र बनाऊंगा. उन सबके ऊपर एक ही राजा होगा और वे फिर कभी दो
जातियों में नहीं होंगे या दो राज्यों में नहीं बंटेंगे. 23 वे फिर अपने मूर्तियों और
निकम्मे प्रतिमाओं या अपने किसी बुरे कार्यों के द्वारा अपने आपको अशुद्ध नहीं
करेंगे, क्योंकि मैं उन्हें उनके पहले के सब पापमय कामों से बचाऊंगा, और
मैं उन्हें शुद्ध करूंगा. वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा. 24
"'मेरा सेवक दावीद उनका राजा होगा, और उन सबका एक चरवाहा होगा.
वे मेरे कानूनों के पीछे चलेंगे और मेरे नियमों का पालन करने में सावधानी
बरतेंगे. 25 वे उस देश में रहेंगे, जिसे मैंने अपने सेवक याकोब को दिया था, वह
देश जहां तुम्हारे पूर्वज रहा करते थे. वे और उनके बच्चे और उनके बच्चों
के बच्चे सदाकाल के लिये वहां रहेंगे, और मेरा सेवक दावीद सदाकाल के
लिये उनका राजकुमार होगा. 26 मैं उनके साथ शांति की एक वाचा बांधूंगा;
यह चिरकाल तक बनी रहनेवाली वाचा होगी. मैं उन्हें बसाऊंगा और उनकी
संख्या को बढ़ाऊंगा, और मैं अपने पवित्र स्थान को उनके बीच सदाकाल के
लिये बनाये रखूंगा. 27 मेरा निवास स्थान उनके साथ होगा; मैं उनका परमेश्वर
ठहरूंगा और वे मेरे लोग होंगे. 28 जब मेरा पवित्र स्थान सदा के लिये उनके
बीच होगा, तब सब राष्ट्रों के लोग जानेंगे कि मैं याहवेह इस्राएल को पवित्र करता
हूं.'"

38 याहवेह का वचन मेरे पास आया: 2 "हे मनुष्य के पुत्र, मागोग देश
के गोग की ओर अपना मुंह करो, जो रोश, मेशेख और तूबल का मुख्य
राजकुमार है; और उसके विरुद्ध भविष्यवाणी करो 3 और कहो: 'परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: हे रोश, मेशेख और तूबल के मुख्य राजकुमार गोग,
मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं. 4 मैं तुम्हें दूसरी तरफ मोड़ दूंगा और तुम्हारे जबड़ों में लोहे
का कांटा डालकर तुम्हें तुम्हारी पूरी सेना समेत बाहर ले आऊंगा—तुम्हारे घोड़े,
हथियार से सज्जित तुम्हारे घुड़सवार, छोटी तथा बड़ी ढाल लिये बड़ा उपद्रवी
झुंड, और वे जो अपनी तलवार भांज रहे हैं, उन सभों को बाहर ले आऊंगा. 5
फारस, कूश और पूट अपनी ढाल लिये और टोप पहने उनके साथ होंगे, 6
गोमर अपनी पूरी सेना के साथ, दूर उत्तर दिशा से बेथ-तोगरमाह अपनी पूरी सेना
के साथ—बहुत सारी जातियां तुम्हारे साथ बाहर ले आऊंगा. 7 "'तैयार हो
जाओ, तैयार रहो, तुम और पूरा उपद्रवी झुंड, जो तुम्हारे पास इकट्ठे हुए हैं,
और उनको अपने अधिकार में ले लो. 8 बहुत दिनों के बाद तुम्हें बुलाया
जाएगा. आनेवाले सालों में तुम एक देश पर आक्रमण करोगे, जो युद्ध के मार से
उभर चुका होगा, जिसके लोग बहुत सी जनताओं से आकर इस्राएल के उन
पर्वतों पर इकट्ठे हुए होंगे, जो बहुत समय से उजाड़ पड़ा था. उन्हें बहुत सी

जातियों से बाहर लाया गया था, और अब वे सब सुरक्षा में निवास करते हैं. 9
तुम और तुम्हारी सारी सेना और तुम्हारे साथ बहुत सी जनता आंधी की तरह
आगे बढ़ती हुई आगे जाएगी; तुम उस बादल की तरह होंगे, जो देश के ऊपर
छा जाता है. 10 "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: उस दिन तुम्हारे मन में
विचार उठेंगे और तुम एक बुरी युक्ति करोगे. 11 तुम कहोगे, "मैं बिना दीवार
वाले गांवों के एक देश पर आक्रमण करूंगा; मैं उन पर आक्रमण करूंगा, जो
शांतिपूर्वक और निडर रहते हैं—उनमें से सब बिना किसी दीवार और बिना द्वार
और बल्लियों के निवास कर रहे हैं. 12 मैं उन्हें लूटूंगा और उनसे छीन लूंगा
और मेरा हाथ फिर से बनाये गए खंडहरों और विभिन्न जातियों से इकट्ठे हुए
उन लोगों के विरुद्ध उठेगा, जिनके पास बहुत सारे पशु और संपत्ति है और जो
देश के बीच में रहते हैं." 13 शीबा और देदान के लोग और तरशीश के व्यापारी
और इसके सब गांव तुमसे कहेंगे, "क्या तुम लूटने आये हो? क्या तुमने अपने
उपद्रवी झुंड को लूटने, सोना और चांदी ले जाने, पशुओं तथा संपत्ति को ले जाने
और लूट के सामान पर कब्जा करने के लिये इकट्ठा किया है?"' 14 "इसलिये
हे मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करके गोग से कहो: 'परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है: उस समय, जब मेरे इस्राएली लोग सुरक्षित रह रहे होंगे, तब क्या
तुम्हारा ध्यान इस पर नहीं जाएगा? 15 तुम बहुत दूर उत्तर में अपने स्थान से
आओगे, तुम्हारे साथ बहुत सी जाति के लोग होंगे, वे सब घोड़ों पर सवार
होंगे, अर्थात् एक बड़ा उपद्रवी झुंड, एक शक्तिशाली सेना होगी. 16 तुम मेरे
इस्राएली लोगों के विरुद्ध उस बादल की तरह आगे बढ़ोगे, जो देश पर छा
जाता है. हे गोग, आनेवाले दिनों में, मैं तुम्हें मेरे ही देश के विरुद्ध आक्रमण
करवाऊंगा, ताकि जब मैं तुम्हारे ज़रिए जाति-जाति के लोगों की आंखों के
सामने पवित्र साबित होऊं, तब वे मुझे जानें. 17 "'परम प्रधान याहवेह का यह
कहना है: तुम ही हो, जिससे मैंने पूर्व के दिनों में अपने सेवकों अर्थात् इस्राएल
के भविष्यवक्ताओं के द्वारा बात किया. उस समय वे सालों तक भविष्यवाणी
करते रहे कि मैं तुम्हें उनके विरुद्ध लाऊंगा. 18 उस दिन यह होगा: जब गोग
इस्राएल देश पर आक्रमण करेगा, तब मेरा गुस्सा बहुत भड़केगा, परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है. 19 अपने उत्साह और भयंकर कोप में, मैं घोषणा करता
हूं कि उस समय इस्राएल देश में एक बड़ा भूकंप होगा. 20 समुद्र की मछलियां,
आकाश के पक्षी, मैदान के पशु, भूमि पर रेंगनेवाले सब जंतु, और पृथ्वी पर
रहनेवाले सब लोग मेरी उपस्थिति से कांप उठेंगे. पर्वत गिरा दिये जाएंगे, सीधी
चट्टानें टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी और हर एक दीवार ज़मीन पर गिर जाएगी. 21
मैं गोग के विरुद्ध अपने सब पर्वतों पर तलवार चलवाऊंगा, परम प्रधान याहवेह
की घोषणा है. हर एक व्यक्ति अपने ही भाई के विरुद्ध तलवार चलाएगा. 22 मैं
उस पर महामारी लाकर और रक्तपात करने के द्वारा न्याय करूंगा; मैं उस पर,
उसकी सेना पर और उसके साथ की बहुत सी जातियों पर मूसलाधार बारिश
करूंगा और उन पर ओला और जलता हुआ गंधक गिराऊंगा. 23 और इस
प्रकार मैं अपनी महानता और अपनी पवित्रता दिखाऊंगा, और मैं बहुत सी जाति
के लोगों की दृष्टि में अपने आपको प्रगट करूंगा. तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह
हूं.'

39 "हे मनुष्य के पुत्र, गोग के विरुद्ध भविष्यवाणी करके कहो: परम प्रधान
याहवेह का यह कहना है: 'हे गोग! रोश, मेशेख और तूबल के मुख्य
राजकुमार, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं. 2 मैं तुम्हें घूमा दूंगा और साथ में घसीटूंगा. मैं
तुम्हें बहुत दूर उत्तर दिशा से लाऊंगा और तुम्हें इस्राएल के पर्वतों के विरुद्ध
भेजूंगा. 3 तब मैं तुम्हारे बायें हाथ के धनुष को मारूंगा और तुम्हारे दायें हाथ से
तुम्हारे तीरों को गिरा दूंगा. 4 इस्राएल के पर्वतों पर तुम गिरोगे, तुम्हारे साथ
तुम्हारी सारी सेना और तुम्हारे साथ की जातियां भी गिरेंगी. मैं तुम्हें भोजन के
रूप में सड़ा मांस खानेवाले सब प्रकार के पक्षियों और जंगली जानवरों को दे
दूंगा. 5 तुम खुले मैदान में गिरोगे, क्योंकि मैंने कहा है, परम प्रधान याहवेह की
घोषणा है. 6 मैं मागोग और उन पर आग भेजूंगा, जो समुद्रतट में सुरक्षा की
स्थिति में रहते हैं, और वे जानेंगे कि मैं याहवेह हूं. 7 "'मैं अपने इस्राएली
लोगों के बीच अपने पवित्र नाम को प्रगट करूंगा. मैं अपने पवित्र नाम को फिर
अपवित्र होने नहीं दूंगा, और जाति-जाति के लोग जानेंगे कि मैं याहवेह ही
इस्राएल में पवित्र हूं. 8 यह आ रहा है! यह निश्चित होकर रहेगा, परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है. यह वह दिन है, जिसके बारे में मैंने कहा है. 9 "'तब जो
इस्राएल नगरों में निवास करते हैं, वे बाहर जाएंगे और हथियारों का प्रयोग ईंधन
के लिये करेंगे और उन्हें जला देंगे—छोटी और बड़ी ढाल, धनुष एवं तीर, युद्ध
की गदा और बर्छी सबको जला देंगे. सात सालों तक वे उनका उपयोग ईंधन के
रूप में करेंगे. 10 उन्हें मैदान में लकड़ी जमा करने की या बंजर भूमि से लकड़ी
काटने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि वे हथियारों का उपयोग ईंधन के
लिये करेंगे. और वे उनको लूटेंगे, जो उनको लूटे थे और उनसे छीनेंगे, जो उनसे
छीन लिये थे, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 11 "'उस दिन मैं गोग को
इस्राएल में एक कब्रस्थान दूंगा, जो उन लोगों की घाटी में होगा, जो समुद्र के
पूर्व की ओर यात्रा करते हैं. यह कब्रस्थान यात्रा करनेवालों का रास्ता रोकेगा,
क्योंकि गोग और उसके सब उपद्रवी झुंड को वहां दफना दिया जाएगा. इसलिये
इस स्थान को हामोन-गोग की घाटी कहा जाएगा. 12 "'देश को शुद्ध करने के
लिये इस्राएली उन्हें सात माह तक मिट्टी देते रहेंगे, 13 देश के सब लोग उन्हें
मिट्टी देंगे, और जिस दिन मैं अपनी महिमा को प्रगट करूंगा, वह उनके लिये
एक यादगार दिन होगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 14 देश को शुद्ध करने
के लिये लोगों की लगातार नियुक्ति की जाएगी. वे पूरे देश में फैल जाएंगे
और दूसरों के साथ मिलकर वे उन लाशों को मिट्टी देंगे, जो ज़मीन पर पड़ी
मिलेंगी. "'सात माह के बाद, वे और विस्तृत खोज करेंगे. 15 जब वे देश में से
होकर जाएंगे, तब यदि किसी को कोई मनुष्य की हड्डी दिखेगी, तो वह उस हड्डी
के बाजू में एक चिन्ह छोड़ देगा, और चिन्ह तब तक रहेगा, जब तक कब्र
खोदनेवाले आकर उसे हामोनाह नामक नगर के निकट, हामोन-गोग की घाटी में
मिट्टी न दे दें. और इस प्रकार वे देश को शुद्ध करेंगे.' 17 "हे मनुष्य के पुत्र, परम
प्रधान याहवेह का यह कहना है: सब प्रकार के पक्षी और सब जंगली जानवरों
को बुलाओ: 'सब तरफ से आओ और उस बलिदान के लिये एक जगह जमा हो
जाओ, जिसे मैं तुम्हारे लिये तैयार कर रहा हूं. यह इस्राएल के पर्वतों पर महान
बलिदान होगा. वहां तुम मांस खाओगे और खून पियोगे. 18 तुम शक्तिशाली
लोगों के मांस को खाओगे और पृथ्वी के राजकुमारों का खून ऐसे पियोगे, मानो
वे मेढ़े और मेमने, बकरे और बैल हों—जिन्हें बाशान में मोटा-ताजा किया गया
हो. 19 जो बलिदान मैं तुम्हारे लिये तैयार कर रहा हूं, उसे खाते-खाते तृप्त हो
जाओगे और खून को पीते-पीते छक जाओगे. 20 मेरी मेज़ पर घोड़ों और
सवारों, शक्तिशाली मनुष्यों और हर प्रकार के सैनिकों को खाकर संतुष्ट हो
जाओगे,' परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 21 "मैं जाति-जाति के लोगों के
बीच अपनी महिमा प्रगट करूंगा, और सारी जातियां उनको दिये गए मेरे दंड
और उन पर उठे मेरे हाथ को देखेंगी. 22 उस दिन से आगे इस्राएल के लोग
जानेंगे कि मैं याहवेह, उनका परमेश्वर हूं. 23 और जाति-जाति के लोग जानेंगे
कि इस्राएली अपने पाप के कारण बंधुआई में चले गये थे, क्योंकि वे मेरे प्रति
विश्वासयोग्य नहीं थे. इसलिये मैंने अपना मुंह उनसे छिपा लिया और उन्हें
उनके शत्रुओं के अधीन कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए. 24 उनकी
अशुद्धता और उनके अपराधों के अनुसार मैंने उनसे व्यवहार किया, और मैंने
अपना मुंह उनसे छिपा लिया. 25 "इसलिये परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: अब मैं याकोब की स्थिति को बदलूंगा और इस्राएल के सब लोगों पर कृपा
करूंगा, और मैं अपने पवित्र नाम के लिये उत्साही रहूंगा. 26 जब वे अपने देश

में सुरक्षित रहेंगे और उन्हें कोई भयभीत करनेवाला न होगा, तब वे अपनी
लज्जा और मेरे प्रति किए गए सब विश्वासघात को भूल जाएंगे. 27 जब मैं उन्हें
विभिन्‍न जाति के लोगों के बीच से वापस ले आऊंगा और उनके शत्रुओं के देश
में से लाकर उन्हें इकट्ठा कर लूंगा, तब उनके ज़रिए मैं बहुत सी जनताओं की
दृष्टि में पवित्र ठहरूंगा. 28 तब वे जानेंगे कि मैं याहवेह, उनका परमेश्वर हूं,
हालाकि मैंने उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच बंधुआई में जाने दिया था पर मैं
उन्हें उनके अपने देश में इकट्ठा करूंगा, और एक को भी पीछे नहीं छोड़ूंगा. 29
मैं फिर कभी उनसे अपना मुंह नहीं छिपाऊंगा, क्योंकि मैं इस्राएल के लोगों पर
अपना आत्मा उंडेलूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.”

40 हमारे बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष के प्रारंभ ही में, माह के दसवें दिन, जो
नगर के पतन के बाद का चौदहवां वर्ष था; उसी दिन याहवेह का हाथ
मेरे ऊपर था और वह मुझे वहां ले गए. 2 परमेश्वर के इस दर्शन में वह मुझे
इस्राएल के देश में ले गए और मुझे एक बहुत ऊंचे पर्वत पर खड़ा कर दिया,
जिसके दक्षिण ओर कुछ भवन थे, जो एक शहर की तरह दिखता था. 3 वह
मुझे वहां ले गए, और मैंने एक मनुष्य को देखा, जिसका स्वरूप कांसे के समान
था; वह अपने हाथ में सन की रस्सी और नापने का एक डंडा लिए द्वार पर
खड़ा था. 4 उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के पुत्र, ध्यान से देखो और
पास जाकर सुनो और जो कुछ मैं तुम्हें दिखाने जा रहा हूं, उन सब पर ध्यान दो,
क्योंकि उसी लिये तुम्हें यहां लाया गया है. हर एक चीज़ जो तुम देखते हो, वह
इस्राएल के लोगों को बताओ.” 5 मैंने मंदिर क्षेत्र के बाहर चारों ओर एक पूरी
दीवार देखी. उस व्यक्ति के हाथ में जो नापने का डंडा था, उसकी लंबाई तीन
मीटर थी, जिसमें का प्रत्येक एक मीटर और एक हाथ लंबा था. उस व्यक्ति ने
दीवार को नापा; जो एक डंडा चौड़ा और एक डंडा ऊंचा था. 6 तब वह उस
पूर्व द्वार के पास गया. वह उसकी सीढ़ियां चढ़कर द्वार के चौखट को नापा,
जिसकी चौड़ाई एक डंडा भर थी; 7 पहरेदारों की कोठरियां एक डंडा लंबी
और एक डंडा चौड़ी थी, और पहरेदारों के कोठरियों की बीच की दीवारें ढाई-
ढाई मीटर की थी. मंडप के बाद का द्वार, जो मंदिर की ओर था, उसके चौखट
की ऊंचाई एक डंडा भर थी. 8 तब उसने द्वार के मंडप को नापा; 9 इसकी
ऊंचाई लगभग चार मीटर थी और इसके खंभे एक-एक मीटर मोटे थे. द्वार का
मंडप मंदिर की ओर था. 10 पूर्वी द्वार के भीतर दोनों तरफ तीन-तीन पहरेवाली
कोठरियां थी; तीनों की नाप एक समान थी, और दोनों तरफ की दीवारों
की नाप भी एक समान थी. 11 तब उसने प्रवेश द्वार की चौड़ाई नापी, जो
लगभग पांच मीटर थी तथा इसकी लंबाई लगभग साढ़े छः मीटर थी. 12 हर
एक पहरेवाली कोठरी के सामने आधा मीटर ऊंची दीवार थी, और पहरेवाली
कोठरियां तीन वर्ग मीटर की थी. 13 तब उसने एक पहरेवाली कोठरी के
पीछे के दीवार के शिखर से दूसरे तरफ के शिखर तक द्वार को नापा; एक
तरफ की ऊंची दीवार से लेकर दूसरी तरफ की ऊंची दीवार तक उसकी दूरी
लगभग साढ़े बारह मीटर थी. 14 उसने द्वार के भीतर पूरे दीवारों को नापा, जो
लगभग तीस मीटर थी. उसने मंडप तक नापा, जो आंगन की ओर था. 15 प्रवेश
द्वार से लेकर इसके मंडप के अंतिम छोर तक की दूरी लगभग सत्ताईस मीटर
थी. 16 पहरेवाली कोठरियों और द्वार के भीतर चारों ओर दीवारों पर संकरी
खिड़कियां थी, उसी प्रकार मंडप भी था. ये खिड़कियां भीतर की ओर खुलती
थी. दीवारों पर खजूर के पेड़ों की आकृति बनाकर सजाया गया था. 17 तब
वह मुझे बाहर के आंगन में ले आया. वहां मैंने कुछ कमरे और ईंट से बना एक
पैदल मार्ग देखा, जो आंगन के चारों तरफ बना हुआ था; पैदल मार्ग के साथ
तीस कमरे थे. 18 यह द्वार के किनारे से मिला हुआ था और इसकी लंबाई और
चौड़ाई बराबर थी; यह नीचे का पैदल मार्ग था. 19 तब उसने निचले द्वार के
भीतर से लेकर भीतरी आंगन के बाहर तक की दूरी नापी; यह दूरी पूर्व की तरफ
और साथ में उत्तर की तरफ लगभग तिरपन मीटर थी. 20 तब उसने उत्तरी द्वार
की लंबाई और चौड़ाई को नापा, जो बाहरी आंगन की ओर जा रहा था. 21 द्वार
के दोनों ओर तीन-तीन पहरेवाली कोठरियां थी; इनसे लगे हुए दीवार और
इसके मंडप की नाप ठीक पहले द्वार के समान थी. यह लगभग पच्चीस मीटर
लंबा और साढ़े बारह मीटर चौड़ा था. 22 इसकी खिड़कियों, इसके मंडप और
इसके खजूर पेड़ के सजावट की नाप उस द्वार के समान ही थी, जो पूर्व की ओर
था. इसके ऊपर जाने के लिए सात सीढ़ियां थी, और इसका मंडप उनके सामने
था. 23 भीतरी आंगन में भी एक द्वार था, जो उत्तरी के सामने था, जैसा कि वहां
पूर्व की ओर भी था. उसने एक द्वार से लेकर सामने के द्वार की दूरी को नापा;
जो लगभग पचास मीटर था. 24 तब वह मुझे दक्षिण की ओर ले गया और मैंने
दक्षिणी द्वार को देखा. उसने इसकी चौखटों और मंडप को नापा, और उनकी
नाप दूसरों की ही तरह थी. 25 द्वार और इसके मंडप के चारों तरफ संकरी
खिड़कियां थी, जो दूसरों के समान ही थी. इसकी लंबाई लगभग पच्चीस
मीटर और चौड़ाई लगभग साढ़े बारह मीटर थी. 26 इसके ऊपर जाने के लिए
सात सीढ़ियां थी, और इसका मंडप उनके सामने था; इसके दोनों ओर की
दीवारों को खजूर पेड़ की आकृति से सजाया गया था. 27 भीतरी आंगन का भी
एक द्वार था, जो दक्षिण की ओर था, और उसने इस द्वार से लेकर दक्षिण के
बाहरी द्वार तक नापा; इसकी दूरी लगभग पचास मीटर थी. 28 तब वह मुझे
दक्षिणी द्वार से भीतरी आंगन में ले आया, और उसने दक्षिणी द्वार को नापा;
इसकी नाप भी दूसरों की तरह ही थी. 29 इसकी पहरेवाली कोठरियों, इसके
जुड़े हुए दीवार और इसके मंडप की नाप भी दूसरों की ही समान थी. द्वार और
इसके मंडप के चारों ओर खिड़कियां थी. यह लगभग पच्चीस मीटर लंबा और
लगभग साढ़े बारह मीटर चौड़ा था. 30 (भीतरी आंगन के चारों ओर द्वारों के
मंडप लगभग साढ़े बारह मीटर चौड़े और लगभग ढाई मीटर गहरे थे.) 31
इसका मंडप बाहरी आंगन की ओर था; इसके चौखटों को खजूर के पेड़ की
आकृतियां से सजाया गया था, और इसके ऊपर जाने के लिये आठ सीढ़ियां थी.
32 तब वह मुझे पूर्व की ओर के भीतरी आंगन में ले आया, और उसने द्वार को
नापा; इसकी नाप भी दूसरों की ही तरह थी. 33 इसकी पहरेवाली कोठरियों,
इसके जुड़े हुए दीवार और इसके मंडप की नाप भी दूसरों के ही समान थी. द्वार
और इसके मंडप के चारों ओर खिड़कियां थी. यह लगभग पच्चीस मीटर लंबा
और लगभग साढ़े बारह मीटर चौड़ा था. 34 इसका मंडप बाहरी आंगन की
ओर था; दोनों तरफ इसके चौखटों को खजूर के पेड़ की आकृतियां से सजाया
गया था, और इसके ऊपर जाने के लिये आठ सीढ़ियां थी. 35 तब वह मुझे
उत्तरी द्वार पर ले आया और उसे नापा. इसकी नाप भी दूसरों की ही तरह थी,
36 वैसे ही इसके पहरेवाली कोठरियां, इसके लगे हुए दीवार और इसका मंडप
था, और इसके चारों ओर खिड़कियां थी. यह लगभग पच्चीस मीटर लंबा और
लगभग साढ़े बारह मीटर चौड़ा था. 37 इसका मंडप बाहरी आंगन की ओर था;
दोनों तरफ इसके चौखटों को खजूर के पेड़ की आकृतियां से सजाया गया था,
और इसके ऊपर जाने के लिये आठ सीढ़ियां थी. 38 हर एक भीतरी द्वार के
मंडप के बाजू में एक दरवाजे वाला एक कमरा था, जहां होमबलिदान को धोया
जाता था. 39 द्वार के मंडप में दोनों तरफ दो-दो मेजें थी, जिन पर होमबलि,
पापबलि एवं दोष बलि के पशुओं का वध किया जाता था. 40 द्वार के मंडप के
बाहरी दीवार के किनारे, उत्तरी प्रवेश द्वार के पास दो मेजें थी, और सीढ़ियों के
दूसरी ओर भी दो मेजें थी. 41 इस प्रकार द्वार के एक तरफ चार मेजें और दूसरी
तरफ चार मेजें थी—कुल आठ मेजें थी, जिन पर बलिदान के पशुओं का वध
किया जाता था. 42 होमबलिदान के लिये तराशे गये पत्थरों से बनी चार मेजें
थी, इनमें से हर एक लगभग अस्सी सेंटीमीटर लंबी, अस्सी सेंटीमीटर चौड़ी
और लगभग त्रेपन सेंटीमीटर ऊंची थी. इन पर वे उपकरण या बर्तन रखे गये थे,

जिनका उपयोग होमबलिदान और दूसरे बलिदानों में किया जाता था. 43 दीवार
के चारों ओर दोहरी दांतेदार कांटे लगाये गए थे, जिसमें से हर एक की लंबाई
लगभग नौ सेंटीमीटर थी. ये मेजें बलिदान किए गए पशुओं के मांस रखने के
लिये थी. 44 भीतरी द्वार के बाहर, भीतरी आंगन के अंदर दो कमरे थे, एक
उत्तरी द्वार के तरफ था, जो दक्षिण की ओर खुलता था, और दूसरा दक्षिणी द्वार
के तरफ था, जो उत्तर की ओर खुलता था. 45 उसने मुझसे कहा, "जो कमरा
दक्षिण की ओर खुलता है, वह उन पुरोहितों के लिये है, जो मंदिर की पहरेदारी
करते हैं, 46 और वह कमरा जो उत्तर की ओर खुलता है, वह उन पुरोहितों के
लिए है, जो वेदी की पहरेदारी करते हैं. ये सादोक के संतान हैं, और ये ही सिर्फ
वे लेवी हैं जो याहवेह के पास जाकर उसके सामने सेवा टहल करें." 47 तब
उसने आंगन को नापा: यह वर्गाकार था—लगभग पच्चास मीटर लंबा और
लगभग पच्चास मीटर चौड़ा. और वेदी मंदिर के सामने थी. 48 तब वह मुझे
मंदिर के मंडप में ले आया और उसने मंडप के चौखटों को नापा; ये दोनों तरफ
लगभग ढाई-ढाई मीटर चौड़े थे. प्रवेश की चौड़ाई लगभग सात मीटर और
इससे लगे दीवारों की चौड़ाई दोनों तरफ लगभग डेढ़-डेढ़ मीटर थी. 49 मंडप
लगभग दस मीटर चौड़ा था, और सामने से लेकर पीछे तक लगभग छः मीटर
था. उस पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां थीं, और दोनों तरफ के चौखटों के बाजू में
खंभे थे.

41 तब वह मुझे मुख्य सभागृह में ले आया और चौखटों को नापा; दोनों
तरफ के चौखटों की चौड़ाई लगभग तीन-तीन मीटर थी. 2 प्रवेश की
चौड़ाई लगभग पांच मीटर, और इससे लगी दोनों तरफ के दीवारों की चौड़ाई
लगभग ढाई-ढाई मीटर थी. उसने मुख्य सभागृह को भी नापा; यह लगभग
इक्कीस मीटर लंबा और लगभग ग्यारह मीटर चौड़ा था. 3 तब वह भीतरी
पवित्र स्थान पर गया और प्रवेश के चौखटों को नापा; प्रत्येक एक-एक मीटर
चौड़ा था. प्रवेश लगभग तीन मीटर चौड़ा था, और इससे लगी दोनों तरफ की
दीवार लगभग चार-चार मीटर चौड़ी थी. 4 और उसने भीतरी परम पवित्र स्थान
की लंबाई को नापा; यह लगभग दस मीटर थी, और इसकी चौड़ाई मुख्य
सभागृह के आखिरी तक लगभग दस मीटर थी. उसने मुझसे कहा, "यह परम
पवित्र स्थान है." 5 तब उसने मंदिर की दीवार को नापा; यह लगभग तीन मीटर
मोटी थी, और हर तरफ मंदिर के चारों ओर कमरों की चौड़ाई लगभग दो-दो
मीटर थी. 6 बाजू के कमरे तीन मंजिला थे, एक के ऊपर दूसरा, और हर एक
मंजिल पर तीस-तीस कमरे थे. बाजू के कमरों को सहारा देने के लिये मंदिर की
दीवार के चारों ओर निकले हुए भाग थे, जिसके कारण सहारा देनेवाले भाग
मंदिर की दीवार के अंदर डाले नहीं गये थे. 7 मंदिर के चारों ओर बाजू के
कमरे हर मंजिल पर चौड़े होते गये थे. मंदिर के चारों ओर की संरचना हर
मंजिल बड़ी होती गई थी. जिसके कारण ऊपर जाने पर कमरे चौड़े होते गये थे.
निचली मंजिल से एक सीढ़ी बीच की मंजिल से होते हुए ऊपर की मंजिल तक
गई थी. 8 मैंने देखा कि मंदिर के चारों ओर एक उठा हुआ आधार था, जो बाजू
के कमरों की नीव बना हुआ था. यह लाठी के लंबाई का था, लगभग तीन
मीटर लंबा. 9 बाजू के कमरों की बाहरी दीवार लगभग ढाई मीटर मोटी थी.
मंदिर के बाजू के कमरों 10 और पुरोहितों के कमरों के बीच का खुला भाग
मंदिर के चारों ओर लगभग दस मीटर चौड़ा था. 11 खुले बाग से बाजू के
कमरों में जाने के लिये प्रवेश द्वार थे, एक उत्तर में और दूसरा दक्षिण में था; और
चारों ओर खुले हुए स्थान से जुड़े आधार की चौड़ाई लगभग तीन मीटर थी.
12 वह भवन जो मंदिर के आंगन के सामने पश्चिम की ओर था, उसकी चौड़ाई
लगभग सैंतीस मीटर थी. चारों ओर इस भवन के दीवार की मोटाई लगभग तीन
मीटर थी, और इसकी लंबाई लगभग सैंतालीस मीटर थी. 13 तब उसने मंदिर
को नापा; यह लगभग बावन मीटर लंबा था, और मंदिर का आंगन तथा अपने
दीवारों के साथ भवन भी लगभग बावन मीटर लंबा था. 14 मंदिर के सामने के
भाग को मिलाकर मंदिर के आंगन की चौड़ाई पूर्व की ओर लगभग बावन मीटर
थी. 15 तब उसने मंदिर के पीछे तरफ आंगन के सामने के भवन को नापा;
इसके दोनों तरफ के गैलरियों को मिलाकर इसकी लंबाई लगभग बावन मीटर
थी. मुख्य सभागृह, भीतरी पवित्र स्थान और आंगन के सामने का मंडप, 16
साथ ही साथ डेवढ़ियां और संकरी खिड़कियां और उन तीनों के चारों ओर की
गैलरियां—हर एक चीज़ बाहर और डेवढ़ी को मिलाकर सब लकड़ी से मढ़ी
हुई थी. फर्श, खिड़की तक की दीवार और खिड़कियां भी मढ़ी हुई थी. 17
भीतरी पवित्र स्थान के प्रवेश के ऊपर का स्थान और भीतरी और बाहरी पवित्र
स्थान के चारों तरफ दीवारों पर बराबर जगह छोड़-छोड़कर 18 करूब और
खजूर पेड़ों की नक्काशी की गई थी. खजूर के पेड़ों और करूबों को एक के
बाद एक बनाया गया था. हर एक करूब के दो-दो मुंह थे. 19 करूब का एक
मुंह एक तरफ के खजूर के पेड़ की ओर मनुष्य जैसा और करूब का दूसरा मुंह
दूसरी तरफ के खजूर के दूसरे पेड़ की ओर जवान सिंह जैसा था. यह नक्काशी
पूरे मंदिर के चारों तरफ की गई थी. 20 मुख्य सभागृह की दीवार पर फर्श
(भूतल) से लेकर प्रवेश के ऊपरी भाग तक करूब और खजूर के पेड़ों की
नक्काशी की गई थी. 21 मुख्य सभागृह की एक आयताकार चौखट थी, और
परम पवित्र स्थान के सामने भी ऐसी ही एक चौखट थी. 22 वहां लकड़ी की
एक वेदी थी, जो लगभग डेढ़ मीटर ऊंची थी, और इसकी लंबाई और चौड़ाई
लगभग एक-एक मीटर थी; इसके कोने, इसका आधार और इसके किनारे
लकड़ी के बने थे. उस मनुष्य ने मुझसे कहा, "यह वह मेज़ है, जो याहवेह के
सामने है." 23 मुख्य सभागृह और परम पवित्र स्थान दोनों के दोहरे किवाड़
वाले दरवाजे थे. 24 हर एक दरवाजे के दो-दो पल्ले थे—दो-दो कब्जा लगे
पल्ले हर दरवाजे में थे. 25 और मुख्य सभागृह के दरवाजों पर दीवारों के
समान ही करूबों और खजूर के पेड़ों की नक्काशी की गई थी, और मंडप के
सामने लकड़ी की एक डेवढ़ी थी. 26 मंडप के बाजू की दीवारों पर संकरी
खिड़कियां थी और खिड़कियों में दोनों तरफ खजूर के पेड़ों की नक्काशी की
गई थी. मंदिर के बाजू के कमरों में भी डेवढ़ियां थी.

42 तब वह व्यक्ति मुझे उत्तर की तरफ बाहरी आंगन में ले गया और मंदिर
के आंगन के सामने के कमरों में ले आया, जो उत्तर दिशा की बाहरी
दीवार के सामने था. 2 वह भवन जिसका दरवाजा उत्तर की तरफ था, उसकी
लंबाई लगभग बावन मीटर और चौड़ाई लगभग छब्बीस मीटर थी. 3 भीतरी
आंगन से दोनों खंड में लगभग दस मीटर और बाहरी आंगन के पैदल मार्ग के
सामने के खंड में, तीनों मंजिल पर गैलरी के सामने गैलरी थी. 4 कमरों के
सामने एक भीतरी मार्ग था, जो लगभग पांच मीटर चौड़ा और लगभग बावन
मीटर लंबा था. उनके दरवाजे उत्तर की ओर थे. 5 ऊपर के कमरे छोटे थे,
क्योंकि भवन के पहली और दूसरी मंजिल के कमरों की तुलना में ऊपरी
मंजिल के कमरों के कुछ जगह को गैलरियों ने ले लिया था. 6 आंगनों के
समान ही ऊपरी मंजिल के कमरों में खंभे नहीं थे; इसलिये पहली और दूसरी
मंजिल के कमरों के फर्श की जगह की तुलना में ऊपरी मंजिल के कमरों के
फर्श की जगह कम था. 7 कमरों और बाहरी आंगन के समानांतर एक बाहरी
दीवार थी; यह कमरों के सामने लगभग छब्बीस मीटर तक बढ़ी हुई थी. 8
बाहरी आंगन के बाद, किनारे पर कमरों के क़तार की लंबाई लगभग छब्बीस
मीटर थी, पवित्र स्थान के सबसे नजदीक, किनारे पर क़तार की लंबाई लगभग
बावन मीटर थी. 9 बाहरी आंगन से नीचे के कमरों में जाने के लिये पूर्व की
तरफ एक प्रवेश द्वार था. 10 दक्षिण की ओर बाहरी आंगन के दीवार की लंबाई
में, मंदिर के आंगन से जुड़ते हुए और बाहरी दीवार के सामने कमरे थे, 11 और
उनके सामने एक मार्ग था. ये कमरे उत्तर की ओर के कमरे जैसे थे; उनकी

लंबाई तथा चौड़ाई भी वैसी ही थी, और उनके निकास और आकार में भी
समानता थी. उत्तर की ओर के दरवाजों के समान 12 दक्षिण की ओर के कमरों
के दरवाजे थे. कमरों में जाने के लिये, मार्ग के शुरूआत में एक दरवाजा था; यह
मार्ग पूर्व की ओर बढ़े हुए समतुल्य दीवार के समानांतर था. 13 तब उसने मुझसे
कहा, "मंदिर के आंगन की ओर के उत्तर और दक्षिण के कमरे पुरोहितों के हैं,
जहां वे पुरोहित महा पवित्र बलिदानों को खाएंगे, जो याहवेह की सेवा करते हैं.
वहां वे महा पवित्र बलिदानों को रखेंगे—अन्नबलि, पाप बलिदान और दोष
बलिदान—क्योंकि यह स्थान पवित्र है. 14 जब कभी पुरोहित पवित्र जगह में
जाएं, वे तब तक बाहरी आंगन में न जाएं, जब तक कि वे उन कपड़ों को
उतारकर पवित्र स्थान में रख न दें, जिन्हें पहनकर वे सेवा करते हैं, क्योंकि वे
कपड़े पवित्र हैं. साधारण लोगों के लिये ठहराए जगहों में जाने से पहले पुरोहित
दूसरे कपड़े पहन लें." 15 जब वह मंदिर क्षेत्र के भीतर को नाप चुका, तब वह
मुझे पूर्वी द्वार से बाहर ले गया और चारों ओर के क्षेत्र को नापा: 16 उसने
नापनेवाली लाठी से पूर्वी भाग को नापा; जो लगभग दो सौ पैंसठ मीटर था. 17
उसने उत्तरी भाग को नापा; वह भी नापनेवाली लाठी में लगभग दो सौ पैंसठ
मीटर था. 18 उसने दक्षिणी भाग को नापा; वह भी नापनेवाली लाठी में लगभग
दो सौ पैंसठ मीटर निकला. 19 तब वह पश्चिमी भाग की ओर मुड़ा और उसे
नापा; वह भी नापनेवाली लाठी में लगभग दो सौ पैंसठ मीटर निकला. 20 इस
प्रकार उसने चारों तरफ के भागों को नापा. इसके चारों ओर एक दीवार थी,
जिसकी लंबाई लगभग दो सौ पैंसठ मीटर और चौड़ाई भी लगभग दो सौ पैंसठ
मीटर थी; यह दीवार पवित्र स्थान को सामान्य स्थान से अलग करती थी.

43 तब वह व्यक्ति मुझे उस द्वार की ओर ले आया, जो पूर्व दिशा में था,
2 और मैंने इस्राएल के परमेश्वर की महिमा को पूर्व दिशा से आते देखा.
उसकी आवाज तेजी से बहते पानी के घरघराहट सी थी, और पृथ्वी उसकी
महिमा से प्रकाशमान हो रही थी. 3 जो दर्शन मैंने देखा, यह उस दर्शन के समान
था, जिसे मैंने तब देखा था, जब वह शहर को नष्ट करने आया था और उस दर्शन
के समान था, जिसे मैंने खेबर नदी के किनारे देखा था, और मैं मुंह के भार गिरा.
4 याहवेह की महिमा पूर्व की ओर के द्वार से मंदिर में प्रवेश किया. 5 तब आत्मा
मुझे उठाकर भीतरी आंगन में ले आया, और याहवेह की महिमा से मंदिर भर
गया. 6 जब वह व्यक्ति मेरे बाजू में खड़ा था, तब मैंने सुना कि कोई मंदिर के
भीतर से मुझसे कुछ कह रहा है. 7 उसने कहा: "हे मनुष्य के पुत्र, यह मेरे
सिंहासन का स्थान और मेरे पांव के तलवे रखने का जगह है. यह वह स्थान है
जहां मैं इस्राएलियों के बीच सर्वदा निवास करूंगा. इस्राएल के लोग फिर कभी
मेरे पवित्र नाम को अपने वेश्यावृत्ति और अपने राजाओं की मृत्यु के समय
उनके अंत्येष्टि क्रियाओं के बलिदान के द्वारा अशुद्ध नहीं करेंगे; न तो वे ऐसा
करेंगे और न ही उनके राजा. 8 जब उन्होंने अपनी डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास
और अपने दरवाजे की चौखट मेरे दरवाजे के चौखट के बाजू में रखी, तो मेरे
और उनके बीच सिर्फ एक दीवार थी; इस प्रकार उन्होंने मेरे पवित्र नाम को
अपने घृणित कामों के द्वारा अशुद्ध किया. इसलिये मैंने गुस्से में आकर उन्हें नष्ट
कर दिया. 9 अब वे अपनी वेश्यावृत्ति और अपने राजाओं के लिये अंत्येष्टि
क्रियाओं के बलिदान को छोड़ दें, और मैं सर्वदा उनके बीच रहूंगा. 10 "हे
मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोगों को मंदिर का बयान करो, कि वे अपने पापों से
शर्मिन्दा हों. वे इसकी सिद्धता के बारे में विचार करें, 11 और यदि वे अपने किए
कामों से लज्जित होते हैं, तो उन्हें मंदिर की रचना के बारे में बताओ—इसकी
संरचना, इसके निकास और प्रवेश द्वार—इसकी पूरी रचना और इसके पूरे नियम
और कानून. उनके सामने इन बातों को लिख लो, ताकि वे इसकी रचना के प्रति
विश्वासयोग्य रहें और इसके नियमों को माने. 12 "यह मंदिर का कानून है:
पर्वत शिखर के चारों तरफ का पूरा भाग परम पवित्र होगा. यही इस मंदिर का
कानून है. 13 "मीटर में वेदी की नाप इस प्रकार है, जो 27 से. मीटर (एक
हाथ एवं उस पर एक हथेली) की चौड़ाई का भी योग है: इसकी नाली की
गहराई लगभग त्रेपन सेंटीमीटर और चौड़ाई लगभग त्रेपन सेंटीमीटर तथा इसके
चारों किनारे की गोट लगभग सत्ताईस सेंटीमीटर है. और यह वेदी की ऊंचाई
है: 14 भूमि पर नाली से लेकर निचले निकले हुए भाग तक, जो वेदी के चारों
ओर जाता है, यह लगभग एक मीटर ऊंचा है, और निकला हुआ भाग लगभग
आधा मीटर चौड़ा है. इस निचले निकले हुए भाग से लेकर ऊपर निकले हुए
भाग तक, जो वेदी के चारों ओर जाता है, इसकी ऊंचाई लगभग दो मीटर है,
और वह निकला हुआ भाग भी लगभग आधा मीटर चौड़ा है. 15 उसके ऊपर,
वेदी का अग्निकुण्ड लगभग दो मीटर ऊंचा है, और वेदी के चूल्हे से ऊपर की
ओर चार सींग निकले हुए हैं. 16 वेदी का अग्निकुण्ड वर्गाकार है, जो लगभग
छः मीटर लंबा और छः मीटर चौड़ा है. 17 ऊपर का निकला हुआ भाग भी
वर्गाकार है, जो लगभग सात मीटर लंबा और सात मीटर चौड़ा है. वेदी के चारों
ओर आधा मीटर की एक नाली है, जिसमें लगभग सत्ताईस सेंटीमीटर का गोट
है. वेदी की सीढ़ियां पूर्व की ओर हैं." 18 तब उसने मुझसे कहा, "हे मनुष्य
के पुत्र, परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: जब वेदी बनाई जाएगी, तब
होमबलिदान चढ़ाने और वेदी पर रक्त छिड़कने के लिये विधियां होंगी: 19 पाप
बलिदान के रूप में तुम्हें सादोक के परिवार के उन लेवीय पुरोहितों को एक
बछड़ा देना होगा, जो मेरी सेवा करने के लिये मेरे पास आते हैं, परम प्रधान
याहवेह की घोषणा है. 20 तुम उसका कुछ खून लेना और उस खून को वेदी के
चारों सींगों और निकले हुए भाग के चारों कोनों और किनारे पर चारों ओर
लगा देना, और इस प्रकार वेदी को शुद्ध करना और इसके लिए प्रायश्चित करना.
21 तुम पाप बलिदान के लिए बछड़े को लेना और उसे पवित्र स्थान के बाहर
मंदिर क्षेत्र के ठहराए गये भाग में जला देना. 22 "दूसरे दिन तुम पाप बलिदान
के लिए एक निर्दोष बकरा चढ़ाना, और वेदी को उसी प्रकार से शुद्ध किया जाए,
जिस प्रकार बछड़े को लेकर किया गया था. 23 जब तुम उसे शुद्ध कर लोगे, तब
तुम झुंड से एक निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा लेकर चढ़ाना. 24 तुम
उन्हें याहवेह के सामने अर्पण करना, और पुरोहित उन पर नमक छिड़कें और
उन्हें होमबलिदान के रूप में याहवेह को चढ़ाएं. 25 "सात दिन तक तुम एक
बकरा प्रतिदिन पाप बलिदान के लिए देना; तुम झुंड में से एक-एक निर्दोष
बछड़ा एवं मेढ़ा भी देना. 26 सात दिन तक, वे वेदी के लिये प्रायश्चित करें और
उसे शुद्ध करें; इस प्रकार वे उसका संस्कार करेंगे. 27 इन सात दिनों के अंत में,
आठवें दिन से पुरोहित तुम्हारे होमबलिदान और मेल बलिदान को वेदी पर
चढ़ाएं. तब मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है."

44 तब वह व्यक्ति मुझे पवित्र स्थान के बाहरी द्वार पर वापस ले आया,
जिसका मुंह पूर्व की ओर था, और वह बंद था. 2 याहवेह ने मुझसे
कहा, "यह द्वार बंद रहे. यह खोला न जाय; कोई भी इसमें से प्रवेश न करे. यह
बंद रहे क्योंकि याहवेह इस्राएल के परमेश्वर इस द्वार से प्रवेश किए हैं. 3 स्वयं
राजकुमार ही द्वार के भीतर याहवेह के सामने भोजन करने के लिए बैठे. वह द्वार
के मंडप के रास्ते भीतर आये और उसी रास्ते से बाहर जाये." 4 तब वह व्यक्ति
मुझे मंदिर के सामने उत्तरी द्वार के रास्ते पर ले आया. तब मैंने याहवेह के मंदिर
को याहवेह के महिमा से भरते देखा, और मैं मुंह के बल गिरा. 5 याहवेह ने
मुझसे कहा, "हे मनुष्य के पुत्र, ध्यान से देखो, पास जाकर सुनो और याहवेह के
मंदिर के बारे में, जो विधि और नियम मैं तुम्हें बताता हूं, उन सब बातों पर ध्यान
दो. मंदिर के प्रवेश और पवित्र स्थान के सब निकास द्वारों पर ध्यान दो. 6
इस्राएल के विद्रोही लोगों से कहो, 'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है:
हे इस्राएल के लोगों! बहुत हो गये तुम्हारे घृणित काम. 7 दूसरे सब घृणित
कार्यों के अलावा, जब तुम भोजन, चर्बी और खून चढ़ाये, तब तुम मेरे पवित्र

स्थान में मन और शरीर से खतना-रहित विदेशियों को ले आये और इस प्रकार
तुमने मेरे मंदिर को अपवित्र किया और मेरी वाचा को तोड़ा. **8** मेरे पवित्र
चीज़ों के बारे में स्वयं अपना काम करने के बदले, तुमने दूसरों को मेरे पवित्र
स्थान की ज़िम्मेदारी दे दी. **9** परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: मन और
शरीर से खतना-रहित कोई भी विदेशी मेरे पवित्र स्थान पर प्रवेश करने न पाए,
इस्राएलियों के बीच रहनेवाले विदेशी भी नहीं. **10** "'वे लेवी, जो मुझसे
उस समय दूर हो गए, जब इस्राएल के लोग पथभ्रष्ट हो गये थे और जो मुझसे
भटक कर अपने मूर्तियों के पीछे चल रहे थे, अवश्य है कि वे अपने पापों का
फल भोगें. **11** वे मेरे पवित्र स्थान में सेवा कर सकते हैं; वे मंदिर के द्वारों
की ज़िम्मेदारी लें और इसमें सेवा करें; वे लोगों के लिए होमबलिदान और
चढ़ावा के पशुओं का वध करें, और लोगों के सामने खड़े होकर उनकी सेवा
करें. **12** पर क्योंकि उन्होंने अपने मूर्तियों के सामने उनकी सेवा की और
इस्राएल के लोगों को पाप में गिराया, इसलिये मैंने हाथ उठाकर शपथ खाई है
कि वे अपने पापों का फल अवश्य भोगें, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.
13 वे पुरोहित के रूप में मेरी सेवा करने मेरे पास न आएं या मेरे किसी पवित्र
चीज़ के पास न आएं या परम पवित्र बलिदानों के पास न आएं; वे अवश्य ही
अपने घृणित कामों के लिये लज्जित हों. **14** और मैं उन्हें मंदिर के सुरक्षा के
लिये ठहराऊंगा, ताकि मंदिर का सब काम किया जा सके. **15** "'परंतु लेवीय
पुरोहित, जो सादोक के वंशज हैं और जो इस्राएलियों के मुझसे दूर हो जाने के
समय मेरे पवित्र स्थान की सुरक्षा किए थे, वे मेरी सेवा करने के लिये मेरे पास
आएं; वे चर्बी और खून का बलिदान चढ़ाने के लिये मेरे सामने आएं, परम
प्रधान याहवेह की घोषणा है. **16** सिर्फ वे ही मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करें; सिर्फ
वे ही मेरे सामने सेवा करने के लिये मेरी मेज़ के पास आएं और पहरेदार के रूप
में मेरी सेवा करें. **17** "'जब वे भीतरी आंगन के द्वार से प्रवेश करें, तब वे सन के
कपड़े पहने; यह ज़रूरी है कि वे किसी भी प्रकार का ऊनी कपड़ा न पहने, जब
वे भीतरी आंगन के द्वार पर सेवा कर रहे हों या मंदिर के भीतर सेवा कर रहे हों.
18 वे अपने सिर पर सन के कपड़े की पगड़ी पहने और उनके कमर पर सन के
कपड़े की चड्डी हों. वे ऐसी कोई भी चीज़ न पहने, जिससे उन्हें पसीना आए.
19 जब वे बाहरी आंगन में जाएं, जहां लोग हैं, तब वे उन कपड़ों को उतार दें,
जिन्हें पहनकर वे सेवा कर रहे थे और वे उन कपड़ों को पवित्र कमरों में छोड़
दें, और दूसरा कपड़ा पहन लें, ताकि उनके कपड़ों के छूने के द्वारा लोग पवित्र
न ठहरें. **20** "'वे अपने सिर के बालों का मुंडन न करें और न ही उनके बाल
लंबे हों, परंतु वे अपने सिर के बाल कटवाए. **21** कोई भी पुरोहित दाखमधु न
पिए, जब वह भीतरी आंगन में जाए. **22** वे किसी विधवा या तलाकशुदा स्त्री से
विवाह न करें; वे सिर्फ इस्राएल वंश की कुंवारी कन्या या पुरोहित की विधवा
से विवाह करें. **23** वे मेरे लोगों को सिखाएं कि पवित्र और सामान्य में क्या
भिन्नता है और उन्हें दिखाएं कि अशुद्ध और शुद्ध के बीच कैसे भेद किया जाए.
24 "'किसी झगड़े में, पुरोहित न्यायाधीश का काम करें और झगड़े का निर्णय
मेरे अध्यादेशों के अनुसार करें. मेरे ठहराये गए सब त्योहारों पर, वे मेरे कानून
और नियमों का पालन करें, और वे मेरे विश्राम दिनों को पवित्र माने. **25**
"'कोई पुरोहित किसी व्यक्ति की लाश के पास जाकर अपने आपको अशुद्ध न
करे; फिर भी, यदि मृत व्यक्ति उसकी माता या पिता, बेटा या बेटी, भाई या
अविवाहित बहन हो, तब वह अपने आपको अशुद्ध कर सकता है. **26** जब वह
शुद्ध हो जाए, तब वह सात दिन तक इंतजार करे. **27** जिस दिन वह पवित्र स्थान
के भीतरी आंगन में पवित्र स्थान में सेवा के लिये जाए, तब वह अपने लिये
एक पाप बलिदान चढ़ाए, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. **28** "'पुरोहितों
का सिर्फ एक उत्तराधिकार है, और वह मैं हूं. तुम उन्हें इस्राएल में कोई भी
चीज़ उनके अधिकार में नहीं दोगे, उनकी संपत्ति मैं हूं. **29** वे अन्नबलि, पाप
बलिदान और दोष बलिदान को खाएंगे, और इस्राएल में हर वह चीज़, जो
याहवेह को चढ़ाई जाती है, उनके लिये होगी. **30** पहली उपज की सबसे
अच्छी चीज़ें और तुम्हारी सब विशेष भेंटें पुरोहितों की होंगी. अपने गूंधे आटे
से बना भोजन का पहला भाग उन्हें देना, ताकि तुम्हारे घर-परिवार पर आशीष
हो. **31** पुरोहित ऐसे किसी पक्षी या पशु का मांस न खाएं, जो मरा पाया गया हो
और न ही वे किसी ऐसे पशु या पक्षी का मांस खाएं, जो किसी जंगली जानवर
के द्वारा फाड़ डाला गया हो.

45 "'जब तुम उत्तराधिकार के रूप में भूमि का विभाजन करो, तब तुम भूमि
का एक भाग याहवेह को समर्पित करना, जो लगभग तेरह किलोमीटर
लंबा और ग्यारह किलोमीटर चौड़ा हो; यह पूरा क्षेत्र पवित्र होगा. **2** इसी भूभाग
में लगभग दो सौ बासठ मीटर का एक वर्गाकार भाग पवित्र स्थान के लिए हो,
और इसके चारों ओर लगभग छब्बीस मीटर खुली भूमि हो. **3** इस पवित्र
भूभाग में लगभग तेरह किलोमीटर लंबा और लगभग पांच किलोमीटर चौड़ा
क्षेत्र नाप लेना. इसमें पवित्र स्थान अर्थात् परम पवित्र स्थान होगा. **4** यह उन
पुरोहितों के लिये भूमि का पवित्र भाग होगा, जो पवित्र स्थान में सेवा करते हैं
और जो याहवेह के सामने उनकी सेवा के लिये आते हैं. यह वह जगह है,
जहां पुरोहितों के आवास होंगे और साथ ही साथ वहां एक पवित्र जगह पवित्र
स्थान के लिये होगी. **5** यह लगभग तेरह किलोमीटर लंबा तथा लगभग पांच
किलोमीटर चौड़ा भूभाग उन लेवियों के लिए होगा, जो मंदिर में सेवा करते हैं,
इस पर उनका स्वामित्व होगा, जिसमें उनके रहने के लिये नगर होंगे. **6** "'तुम
इसकी संपत्ति के रूप में पवित्र भाग से लगा हुआ लगभग तेरह किलोमीटर लंबा
और ढाई किलोमीटर चौड़ा क्षेत्र शहर के लिये देना; यह क्षेत्र पूरे इस्राएल का
होगा. **7** "'राजकुमार की भूमि पवित्र भाग के क्षेत्र और शहर के क्षेत्र की सीमा
से लगी होगी. इसका विस्तार पश्चिम में पश्चिम की ओर तथा पूर्व में पूर्व की
ओर होगा, जो लंबाई में पश्चिम से लेकर पूर्वी सीमा तक जाती भागों में से एक
के समानांतर होगी. **8** इस्राएल में इस भूमि पर उसका स्वामित्व होगा. और मेरे
राजकुमार मेरे लोगों को फिर नहीं सताएंगे, पर वे इस्राएल के लोगों को उनके
गोत्र के अनुसार भूमि को उनके अधिकार में देंगे. **9** "'परम प्रधान याहवेह का
यह कहना है: हे इस्राएल के राजकुमारो, तुम बहुत दूर जा चुके हो! हिंसा और
सतावा को छोड़ दो और वही करो, जो न्याय और सही है. मेरे लोगों को
बेदखल करना बंद करो, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. **10** तुम सही नाप
का उपयोग करो, सही एफ़ाह और सही बत का उपयोग करो. **11** एफ़ाह और
बत एक ही नाप के हों, बत में होमेर का दसवां अंश समाए और एफ़ाह में भी
होमेर का दसवां अंश समाए; होमेर ही दोनों की प्रामाणिक नाप हो. **12** एक
शेकेल में बीस गेराह आता हो. बीस शेकेल और पच्चीस शेकेल और पन्द्रह
शेकेल बराबर एक मीना हो. **13** "'यह विशेष भेंट है, जिसे तुम्हें चढ़ाना है:
गेहूं के हर होमेर में से एक एफ़ाह का छठवां अंश और जौ के हर होमेर में से
एक एफ़ाह का छठवां अंश. **14** बत से नापा हुआ, जैतून तेल का निर्धारित
अंश, जो हर कोर में से एक बत का दसवां अंश है (कोर में दस बत या एक
होमेर समाता है, क्योंकि दस बत बराबर एक होमेर होता है). **15** इस्राएल के
अच्छे पानी वाले चरागाह से हर दो सौ भेड़ों वाले झुंड से एक-एक भेड़ ली
जाए. इनका उपयोग लोगों के प्रायश्चित करने हेतु अन्नबलि, होमबलिदान
और मेल बलिदान के रूप में किया जाए, परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.
16 देश के सब लोग इस्राएल में राजकुमार को यह विशेष भेंट देंगे. **17** यह
राजकुमार का कर्तव्य होगा कि वह त्योहारों, नये चांद के दिनों और विश्राम
दिनों होमबलिदान, अन्नबलि और पेय बलिदान दे—अर्थात् इस्राएल के ठहराए
सब त्योहारों पर. वह इस्राएलियों के लिये पश्चात्ताप करने हेतु पाप बलिदान,
अन्नबलि, होमबलिदान और मेल बलिदान देगा. **18** "'परम प्रधान याहवेह का

यह कहना है: पहले माह के पहले दिन तुम एक निर्दोष बछड़ा लेना और पवित्र
स्थान को शुद्ध करना. 19 पुरोहित पाप बलिदान में से कुछ खून ले और उसे
मंदिर के दरवाजों के चौखटों पर, वेदी के ऊपरी निकले हुए भाग के चारों
कोनों पर और भीतरी आंगन के द्वार के चौखटों पर लगाए. 20 तुम्हें महीने
के सातवें दिन हर उस व्यक्ति के लिये ऐसा ही करना है, जो अनजाने में या
अज्ञानता में पाप करता है; इस प्रकार तुम्हें मंदिर के लिये प्रायश्चित करना है.
21 "'पहले माह के चौदहवें दिन फ़सह का उत्सव हो, यह त्योहार सात दिनों
का हो, और इस दौरान खमीर रहित रोटी खाई जाए. 22 उस दिन राजकुमार
अपने लिये और देश के सब लोगों के लिये पाप बलिदान के रूप में एक बछड़ा
दे. 23 त्योहार के उन सात दिनों के दौरान प्रतिदिन वह याहवेह को होमबलिदान
के रूप में सात निर्दोष बछड़े और सात निर्दोष मेढ़े दे, और पाप बलिदान के
लिये प्रतिदिन एक-एक बकरा दे. 24 वह हर बछड़े के लिए अन्नबलि के रूप
में एक एफाह और हर मेढ़े के लिये एक एफाह दे, साथ में हर एफाह के लिये
एक हीन जैतून तेल भी दे. 25 "'त्योहार के सात दिनों के दौरान, जो सातवें
माह के पन्द्रहवें दिन शुरू होता है, हर दिन वह पाप बलिदान, होमबलिदान,
अन्नबलि और तेल का ऐसा ही प्रबंध करे.

46 "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: भीतरी आंगन का वह द्वार जो
पूर्व की ओर है, सभी छः कार्य दिवसों पर बंद रहे, पर विश्राम दिन और
नये चांद के दिन इसे खोल दिया जाए. 2 राजकुमार बाहर से द्वार के मंडप से
होकर प्रवेश करे और द्वार के चौखट पर खड़ा रहे. पुरोहित उसके होमबलिदान
और मेल बलिदान को चढ़ाएं. राजकुमार द्वार के चौखट पर श्रद्धा में सिर झुकाए
और तब बाहर चला जाए, परंतु द्वार शाम तक बंद न किया जाए. 3 विश्राम
दिनों और नये चांद के दिनों में देश के लोग उसी द्वार के प्रवेश पर याहवेह
की उपस्थिति में आराधना करें. 4 राजकुमार याहवेह के लिये शब्बाथ में जो
होमबलिदान लाता है, उसमें छः निर्दोष मेमने और एक निर्दोष मेढ़ा हो. 5 मेढ़ा
के साथ दिया जानेवाला अन्नबलि एक एफाह हो, और मेमनों के साथ दिया
जानेवाला अन्नबलि अपनी खुशी से जितना ज्यादा दे सकता है, दे, इसके साथ
हर एफाह के लिये एक हीन जैतून तेल भी दे. 6 नये चांद के दिन वह एक
निर्दोष बछड़ा, छः निर्दोष मेमने और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाए. 7 वह अन्नबलि
के रूप में बछड़े के साथ एक एफाह, मेढ़े के साथ एक एफाह और मेमनों के
साथ जितना ज्यादा वह चाहता है, दे, इसके साथ हर एफाह के लिये एक हीन
जैतून तेल भी दे. 8 जब राजकुमार प्रवेश करे, तो वह द्वार के मंडप से प्रवेश
करे, और वह उसी रास्ते से बाहर आए. 9 "'जब देश के लोग ठहराये गए
त्योहारों पर याहवेह के सामने आएं, तो जो आराधना के लिए उत्तरी द्वार से
प्रवेश करे, वह दक्षिणी द्वार से बाहर जाए; और जो कोई दक्षिणी द्वार से प्रवेश
करे, वह उत्तरी द्वार से बाहर जाए. कोई भी उस द्वार से बाहर न जाए, जिससे
उसने प्रवेश किया था, पर हर एक विरुद्ध दिशा के द्वार से बाहर निकले. 10
राजकुमार उनके बीच हो; जब वे भीतर जाएं, तब वह उनके साथ भीतर जाए
और जब वे बाहर आएं, तब वह भी उनके साथ बाहर आए. 11 भोजों और
ठहराये गए त्योहारों पर, अन्नबलि एक बछड़े के साथ एक एफाह, एक मेढ़े
के साथ एक एफाह, और मेमनों के साथ अपनी खुशी से जितना ज्यादा दे
सके, वह दे, इसके साथ हर एफाह के लिये एक हीन तेल भी दे. 12 "'जब
राजकुमार याहवेह को स्वेच्छाबलिदान दे—चाहे एक होमबलिदान या मेल
बलिदान हो, तब पूर्व की ओर के द्वार को उसके लिए खोल दिया जाए. वह
अपना होमबलिदान या मेल बलिदान वैसा ही चढ़ाए, जैसा कि वह विश्राम दिन
में चढ़ाता है. तब वह बाहर चला जाए, और उसके बाहर चले जाने के बाद, द्वार
बंद कर दिया जाए. 13 "'तुम प्रतिदिन याहवेह को एक साल का निर्दोष मेमना
होमबलिदान के लिये देना; तुम इसे हर सुबह देना. 14 तुम्हें इसके साथ हर सुबह
अन्नबलि भी देना है, जिसमें एक एफाह का छठवां भाग और आटा (मैदा) को
गूंधने के लिये एक हीन तेल का तीसरा भाग हो. याहवेह को यह अन्नबलि देना
एक स्थायी अध्यादेश है. 15 इसलिये नियमित होमबलिदान के लिए हर सुबह
मेमना, अन्नबलि और तेल दिया जाए. 16 "'परम प्रधान याहवेह का यह कहना
है: यदि राजकुमार अपने उत्तराधिकार में पाये संपत्ति में से अपने किसी भी पुत्र
को कोई उपहार देता है, तो वह उसके संतानों का भी होगा; यह उत्तराधिकार
के द्वारा उनकी संपत्ति है. 17 किंतु यदि वह अपने उत्तराधिकार की संपत्ति
में से कोई उपहार अपने किसी सेवक को देता है, तो सेवक उस उपहार को
अपने स्वतंत्र होने के वर्ष तक रखे, उसके बाद वह उपहार राजकुमार को लौटा
दिया जाए. राजकुमार के उत्तराधिकार की संपत्ति सिर्फ उसके बेटों की है; यह
उनकी है. 18 राजकुमार लोगों के उत्तराधिकार की कोई संपत्ति न ले, वह उन्हें
उनकी संपत्ति से बेदखल न करे. वह अपने बेटों को अपनी ही संपत्ति में से
उत्तराधिकार दे, ताकि मेरे लोगों में से कोई भी अपनी संपत्ति से अलग न हो.'"
19 तब वह व्यक्ति मुझे द्वार के किनारे से पुरोहितों के पवित्र कमरों में ले आया,
जिनका मुख उत्तर की ओर है, और उसने मुझे पश्चिमी छोर पर एक जगह
दिखाई. 20 उसने मुझसे कहा, "यह वह स्थान है, जहां पुरोहित दोष बलिदान
और पाप बलिदान को पकाएं और अन्नबलि को सेंकें, इससे इन्हें बाहरी आंगन
में लाना न पड़े और लोगों को पवित्र करना न पड़े." 21 तब वह मुझे बाहरी
आंगन में ले आया और चारों ओर इसके चारों कोनों में ले गया, और मैंने हर
एक कोने में एक दूसरा आंगन देखा. 22 बाहरी आंगन के चारों कोनों में घिरे
हुए आंगन थे, लगभग इक्कीस मीटर लंबे और लगभग सोलह मीटर चौड़े; हर
आंगन चारों कोनों में एक ही नाप के थे. 23 चारों आंगनों के प्रत्येक के भीतर
चारों ओर पत्थर का एक निकला हुआ भाग था, जहां निकले हुए भाग के नीचे
चारों ओर आग जलाने की जगह थी. 24 तब उसने मुझसे कहा, "ये रसोईघर
हैं, जहां मंदिर में सेवा करनेवाले, लोगों के बलिदानों को पकाएं."

47 तब वह व्यक्ति मुझे मंदिर के प्रवेश द्वार पर वापस ले आया, और मैंने
देखा कि मंदिर के चौखट के नीचे से पानी आ रहा है और पूर्व की ओर
बह रहा है (क्योंकि मंदिर का मुंह पूर्व की ओर था). मंदिर के दक्षिण भाग के
नीचे से, वेदी के दक्षिण से पानी नीचे से बह रहा था. 2 तब वह मुझे उत्तरी द्वार
से बाहर ले आया और वह मुझे घुमाते हुए बाहर की तरफ बाहरी द्वार में ले
आया, जिसका मुंह पूर्व की ओर था, और दक्षिण भाग से पानी टपक रहा था. 3
तब वह व्यक्ति अपने हाथ में नापनेवाली रस्सी लेकर पूर्व की ओर गया, और
वह लगभग पांच सौ तीस मीटर नापा, तब वह मुझे पानी में से होकर ले गया,
और पानी टखनों तक था. 4 उसने फिर लगभग पांच सौ तीस मीटर नापा और
मुझे पानी में से होकर ले गया, जो घुटनों तक गहरा था. उसने फिर लगभग पांच
सौ तीस मीटर नापा और मुझे पानी में से होकर ले गया, जो कमर तक गहरा था.
5 उसने फिर लगभग पांच सौ तीस मीटर नापा, पर अब यह एक नदी बन चुका
था, और मैं उस पार नहीं जा सका, क्योंकि पानी बढ़ चुका था और इतना गहरा
था कि इसमें तैरा जा सकता था—यह एक ऐसी नदी थी, जिसे कोई भी पार
नहीं कर सकता था. 6 उसने मुझसे पूछा, "हे मनुष्य के पुत्र, क्या तुम यह
देखते हो?" तब वह मुझे वापस नदी के तट पर ले आया. 7 जब मैं वहां पहुंचा,
तो मैंने नदी के दोनों तरफ बहुत सारे पेड़ देखे. 8 उसने मुझसे कहा, "यह पानी
पूर्वी क्षेत्र की ओर बहता है और नीचे अराबाह में जाता है, जहां यह मृत सागर
से मिल जाता है. जब यह सागर में मिल जाता है, तब वहां खारा पानी मीठा हो
जाता है. 9 जहां कहीं भी नदी बहती है, वहां जीवित प्राणियों के झुंड पनपेंगे.
वहां बड़ी संख्या में मछलियां होंगी, क्योंकि यह पानी वहां बहता है और
खारे पानी को मीठा करता है; इसलिये जहां-जहां नदी बहती है, वहां हर चीज़
जीवित होगी. 10 मछुवारे इसके तट पर खड़े होंगे; एन-गेदी से लेकर एन-

एग्लाइम तक जाल फैलाने की जगह होगी. वहां बहुत प्रकार की मछलियां होंगी—भूमध्य सागर की मछलियों जैसी. 11 परंतु दलदली गड्ढे और पानी के गड्ढे मीठे नहीं होंगे, वे नमक के लिये छोड़ दिये जाएंगे. 12 सब प्रकार के फल के पेड़ नदी के दोनों किनारों पर उगेंगे. उनकी पत्तियां नहीं मुर्झाएंगी, और न ही उनमें फल लगाना बंद होगा. हर माह उनमें फल लगेगा, क्योंकि पवित्र स्थान से पानी उनमें आता है. उनके फल भोजन के लिये होंगे और उनकी पत्तियां दवाई के काम आएंगी." 13 परम प्रधान याहवेह का यह कहना है: "ये देश की सीमाएं हैं जिसे तुम इस्राएल के बारह गोत्रों के बीच उनके उत्तराधिकार के रूप में बांटोगे, और इसमें योसेफ़ के लिए दो भाग होंगे. 14 तुम्हें इसे उनके बीच बराबर-बराबर बांटना है. क्योंकि मैंने हाथ उठाकर शपथ खाई थी कि मैं इसे तुम्हारे पूर्वजों को दूंगा. यह देश तुम्हारे उत्तराधिकार में हो जाएगा. 15 "देश की सीमा यह हो: "उत्तर की ओर की सीमा भूमध्य सागर से हेथलोन सड़क के बाद लबो-हामाथ से होते हुए ज़ेदाद तक, 16 बेरोथाह और सिबराईम (जो दमेशेक और हामाथ के बीच सीमा पर पड़ता है) से लेकर हाज़ेर-हत्तीकोन तक, जो हवरान की सीमा पर है. 17 यह सीमा समुद्र से लेकर हाज़ार-एनोन तक फैलेगी, जो दमेशेक की उत्तरी सीमा तक होगी; उत्तर में उत्तर की ओर ही हामाथ की सीमा है. यह हुई उत्तरी सीमा. 18 पूर्व की ओर की सीमा हवरान और दमेशेक के बीच होते हुए, यरदन नदी के साथ गिलआद और इस्राएल देश के बीच, मृत सागर तक होगी और तामार तक फैलेगी. यह पूर्वी सीमा होगी. 19 दक्षिण तरफ की सीमा तामार से लेकर मेरिबाह-कादेश के पानी के सोता तक होगी, तब मिस्र के नाले से भूमध्य सागर तक. यह दक्षिणी सीमा होगी. 20 पश्चिम की तरफ की सीमा भूमध्य सागर में लबो-हामाथ के सामने के बिंदु तक होगी. यह पश्चिमी सीमा होगी. 21 "तुम्हें इस देश को अपने बीच में इस्राएल के गोत्रों के अनुसार बांटना है. 22 तुम्हें इस देश को एक उत्तराधिकार के रूप में अपने लिये और तुम्हारे बीच रहनेवाले विदेशियों और जिनके बच्चे हैं उनके लिये बांटना है. उन्हें तुम देश में जन्मे इस्राएलियों की तरह ही समझना; अपने साथ, इस्राएल के गोत्रों के बीच उन्हें भी उत्तराधिकार का भाग दिया जाए. 23 जिस किसी भी गोत्र में कोई विदेशी रहता है, वहां तुम उसे उसका भाग देना," परम प्रधान याहवेह की घोषणा है.

48 "सूची में लिखे गोत्रों के नाम ये हैं: "उत्तरी सीमांत पर दान का एक भाग होगा; यह हेथलोन के मार्ग से लेबो हामाथ के बाद होगा; हाज़ार-एनान और हामाथ से लगा दमेशेक की उत्तरी सीमा इसकी सीमा का भाग होगा, जो पूर्व तरफ से पश्चिम तरफ होगा. 2 आशेर का एक भाग होगा; इसकी सीमा पूर्व से पश्चिम तक दान के क्षेत्र से लगी होगी. 3 आशेर की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम तक नफताली का एक भाग होगा. 4 नफताली की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम तक मनश्शेह का एक भाग होगा. 5 मनश्शेह की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम तक एफ्राईम का एक भाग होगा. 6 एफ्राईम की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम तक रियूबेन का एक भाग होगा. 7 रियूबेन की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम तक यहूदाह का एक भाग होगा. 8 "यहूदाह की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम एक भाग होगा, जिसे तुम्हें एक विशेष भेंट के रूप में देना है. इसकी चौड़ाई लगभग तेरह किलोमीटर, और पूर्व से लेकर पश्चिम तक इसकी लंबाई दूसरे गोत्र को दिये गए भाग की लंबाई के बराबर होगी; पवित्र स्थान इसके बीच में होगा. 9 "जो विशेष भाग, तुम्हें याहवेह को अर्पण करना है, उसकी लंबाई लगभग तेरह किलोमीटर और चौड़ाई लगभग पांच किलोमीटर होगी. 10 पुरोहितों के लिये यह पवित्र भाग होगा. उत्तर की तरफ इसकी लंबाई लगभग तेरह किलोमीटर, पश्चिम की तरफ इसकी चौड़ाई लगभग पांच किलोमीटर, चौड़ा अंश पुरोहितों के लिए होगा. इसके बीच में याहवेह का पवित्र स्थान होगा. 11 यह भाग सादोक के वंश के उन पवित्र किए हुए पुरोहितों के लिये होगा, जो मेरी सेवा करने में विश्वासयोग्य थे और उन लेवियों की तरह भटके नहीं, जो इस्राएलियों के भटकने पर वे भी भटक गए. 12 यह देश के पवित्र भाग से उनके लिये एक विशेष भेंट होगी, एक परम पवित्र भाग, जो लेवियों की सीमा से लगा होगा. 13 "पुरोहितों के क्षेत्र से लगा हुआ एक भाग लेवियों के लिये होगा, जो लगभग तेरह किलोमीटर लंबा और लगभग पांच किलोमीटर चौड़ा होगा. इसकी पूरी लंबाई लगभग तेरह किलोमीटर और चौड़ाई लगभग पांच किलोमीटर होगी. 14 वे इसे न तो बेचें और न ही इसका कोई भाग अदला-बदली करें. यह देश का सबसे अच्छा भाग है और किसी भी हालत में इसे दूसरे के हाथों में न दिया जाए, क्योंकि यह याहवेह के लिये पवित्र है. 15 "बचा हुआ लगभग ढाई किलोमीटर चौड़ा और लगभग तेरह किलोमीटर लंबा क्षेत्र शहर के साधारण उपयोग के लिये होगा, जिसमें घर और चरागाह होंगे. शहर इसके बीच में होगा 16 और इसकी नाप इस प्रकार होगा: उत्तर की तरफ लगभग सवा दो किलोमीटर, दक्षिण की तरफ लगभग सवा दो किलोमीटर, पूर्व की तरफ लगभग सवा दो किलोमीटर, पश्चिम की तरफ लगभग सवा दो किलोमीटर. 17 शहर के लिये चरागाह के लिये भूमि उत्तर की ओर लगभग सवा सौ मीटर, दक्षिण की ओर लगभग सवा सौ मीटर, पूर्व की ओर लगभग सवा सौ मीटर, और पश्चिम की ओर लगभग सवा सौ मीटर होगी. 18 पवित्र भाग के सीमा से लगा जो बचा हुआ भाग होगा और पवित्र भाग के लंबाई की तरफ होगा, वह पूर्व की ओर लगभग पांच किलोमीटर और पश्चिम की ओर लगभग पांच किलोमीटर होगा. इसकी उपज से शहर के श्रमिक भोजन प्राप्त करेंगे. 19 शहर के जो श्रमिक इसमें खेतीबाड़ी करेंगे, वे इस्राएल के सारे गोत्रों में से होंगे. 20 यह पूरा भाग वर्गाकार होगा, हर तरफ लगभग तेरह किलोमीटर. एक विशेष भेंट के रूप में पवित्र भाग को, तुम शहर की संपत्ति के साथ अलग रखना. 21 "पवित्र भाग से बने हुए क्षेत्र के दोनों तरफ जो भाग बच जाता है, वह और शहर की संपत्ति राजकुमार की होगी. यह लगभग तेरह किलोमीटर पूर्वी सीमा की ओर और लगभग तेरह किलोमीटर पश्चिमी सीमा की ओर फैली होगी. ये दोनों क्षेत्र राजकुमार के होंगे, जो गोत्र के भागों के लंबाई में होंगे, और इनके बीच पवित्र भाग के साथ मंदिर का पवित्र स्थान होगा. 22 इस प्रकार लेवियों की संपत्ति और शहर की संपत्ति उस क्षेत्र में होगी, जो राजकुमार की होगी. राजकुमार का क्षेत्र यहूदाह की सीमा और बिन्यामिन की सीमा के बीच होगा. 23 "बाकी गोत्रों के लिए भाग इस प्रकार होगा: "पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर एक भाग बिन्यामिन का होगा. 24 बिन्यामिन के क्षेत्र की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम की ओर एक भाग शिमओन का होगा. 25 शिमओन के क्षेत्र की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम की ओर एक भाग इस्साखार का होगा. 26 इस्साखार के क्षेत्र की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम की ओर एक भाग ज़ेबुलून का होगा. 27 ज़ेबुलून के क्षेत्र की सीमा से लगकर पूर्व से पश्चिम की ओर एक भाग गाद का होगा. 28 गाद की दक्षिणी सीमा दक्षिण की ओर तामार से मेरिबाह-कादेश के पानी के सोते तक जाएगी, तब मिस्र की नदी से होते हुए भूमध्य सागर तक होगी. 29 "यह देश तुम इस्राएल के गोत्रों को एक उत्तराधिकार के रूप में देना, और ये उनके भाग होंगे," परम प्रधान याहवेह की घोषणा है. 30 "ये शहर के निकास होंगे: "उत्तर की तरफ से शुरू होकर, जिसकी लंबाई लगभग ढाई किलोमीटर है, 31 शहर के द्वारों को इस्राएल के गोत्रों के नाम दिये जाएंगे. उत्तर की तरफ तीन द्वारों के नाम—रियूबेन का द्वार, यहूदाह का द्वार और लेवी का द्वार होगा. 32 पूर्व की तरफ, जिसकी लंबाई लगभग ढाई किलोमीटर है, तीन द्वार होंगे: योसेफ़ का द्वार, बिन्यामिन का द्वार और दान का द्वार. 33 दक्षिण की तरफ, जिसकी लंबाई लगभग ढाई किलोमीटर है, तीन द्वार होंगे: शिमओन का द्वार, इस्साखार का द्वार और ज़ेबुलून का द्वार. 34 पश्चिम की तरफ, जिसकी लंबाई लगभग ढाई

किलोमीटर है, तीन द्वार होंगे: गाद का द्वार, आशेर का द्वार और नफताली का
द्वार. 35 "सब तरफ की दूरी लगभग दस किलोमीटर होगी. "और उस समय से
इस नगर का नाम होगा, 'याहवेह शाम्मा' अर्थात् याहवेह वहां है."

दानिय्येल

1 यहूदिया के राजा यहोइयाकिम के शासन के तीसरे वर्ष में, बाबेल के राजा
नबूकदनेज्ज़र ने आकर येरूशलेम को घेर लिया. 2 और प्रभु ने यहूदिया के
राजा यहोइयाकिम को परमेश्वर के मंदिर के कुछ पात्रों सहित नबूकदनेज्ज़र के
अधीन कर दिया. इन चीज़ों को वह शीनार देश में अपने देवता के मंदिर में ले
आया और वह उन्हें अपने देवता के कोषागार में रख दिया. 3 तब राजा ने अपने
दरबार के अधिकारियों के प्रधान ऐशपेनाज को आदेश दिया कि राजपरिवार
और कुलीन वर्ग के कुछ इस्राएलियों को राजा की सेवा में लाया जाय— 4 ये
ऐसे जवान हों, जिनमें किसी प्रकार का शारीरिक खोट न हो, सुंदर हों, हर
प्रकार की बात सीखने की सामर्थ्य हो, अच्छे जानकार हों, तुरंत समझनेवाले
हों, और राजा के महल में सेवा करने की योग्यता हो. राजा ने प्रधान को आदेश
दिया कि इन्हें बाबेलवासियों की भाषा और साहित्य की शिक्षा दे. 5 राजा ने
अपने स्वयं के भोजन पदार्थों में से उन्हें प्रतिदिन का भोजन और दाखमधु देने
की आज्ञा दी. राजा ने यह भी कहा कि उन्हें तीन वर्ष तक प्रशिक्षित किया जाए,
और उसके बाद उन्हें राजा के सेवा में लाया जाय. 6 जो चुने गये थे, उनमें से
कुछ यहूदाह के वंश के थे: दानिएल, हननियाह, मिषाएल तथा अज़रियाह. 7
प्रधान अधिकारी ने उन्हें नये नाम दिये: दानिएल को बैलशत्सर, हननियाह को
शद्रख, मिषाएल को मेशेख तथा अज़रियाह को अबेद-नगो. 8 पर दानिएल ने
यह निश्चय कर लिया कि वह शाही भोजन और दाखमधु सेवन करने के द्वारा
स्वयं को अशुद्ध नहीं करेगा और इस प्रकार से अपने आपको अशुद्ध न करने के
लिये उसने प्रधान अधिकारी से अनुमति मांगी. 9 परमेश्वर ने अधिकारी के मन
में यह बात डाल दी कि वह दानिएल के प्रति कृपादृष्टि एवं दया दिखाये, 10 पर
अधिकारी ने दानिएल से कहा, “मुझे अपने प्रभु राजा का भय है, जिन्होंने
तुम्हारे खाने-पीने की वस्तुओं का निर्धारण किया है. कहीं ऐसा न हो कि वह
तुम्हें तुम्हारे उम्र के दूसरे जवानों से कमजोर देखे? और तब तुम्हारे कारण,
राजा मुझे मार डाले.” 11 तब दानिएल ने उस पहरेदार से कहा, जिसे प्रधान
अधिकारी ने दानिएल, हननियाह, मिषाएल तथा अज़रियाह के देखभाल के
लिए ठहराया था, 12 “कृपा कर आप दस दिन तक अपने सेवकों को परखकर
देखें: खाने के लिये हमें सिर्फ साग-पात और पीने के लिये सिर्फ पानी दिया
जाए. 13 तब हमारे शरीर से उन जवानों की तुलना किया जाए, जो शाही भोजन
खाते हैं, और उसके बाद आपको जैसा दिखे उसके अनुसार आप अपने सेवकों
से व्यवहार करें.” 14 पहरेदार ने उसकी बात मान ली और दस दिन तक उन्हें
परखकर देखा. 15 दस दिन के बाद वे उन जवानों से ज्यादा स्वस्थ और हृष्ट-
पुष्ट दिखे, जो शाही भोजन करते थे. 16 इसलिये पहरेदार ने उनके लिए ठहराए
उत्तम भोजन और दाखमधु को हटाकर उन्हें बदले में साग-पात देने लगा. 17
इन चारों जवानों को परमेश्वर ने सब प्रकार के साहित्य और विद्या का ज्ञान और
समझ दी. और दानिएल सब प्रकार के दर्शनों तथा स्वप्नों को भी समझ लेता
था. 18 तब जितने दिन बाद राजा ने उन जवानों को अपनी सेवा में लाने के
लिये कहा था, उतने दिनों के पूरे होने पर प्रधान अधिकारी उन्हें नबूकदनेज्ज़र
के सामने ले गया. 19 राजा ने सब जवानों से बातें की और उसकी नजर में
दानिएल, हननियाह, मिषाएल और अज़रियाह के बराबर कोई अन्य जवान न
ठहरा; इसलिये वे राजा की सेवा में चुन लिये गए. 20 बुद्धि और समझ के बारे
में राजा ने उनसे जितने भी प्रश्न किए, वे राजा के सारे राज्य के सब ज्योतिषियों
एवं तांत्रिकों से दस गुणा उत्तम पाये गए. 21 और दानिएल राजा कोरेश के
शासनकाल के पहले साल तक वहां सेवा करता रहा.

2 नबूकदनेज्ज़र ने अपने शासनकाल के दूसरे साल में स्वप्न देखे; जिससे
उसका मन व्याकुल हो गया और वह सो न सका. 2 इसलिये राजा ने आदेश
दिया कि जादूगरों, टोन्हों, तांत्रिकों और ज्योतिषियों को बुलाया जाए कि वे
राजा को उसका स्वप्न बताएं. जब वे आकर राजा के सामने खड़े हुए, 3 तो
राजा ने उनसे कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है जो मुझे व्याकुल कर रहा है और मैं
जानना चाहता हूं कि इसका मतलब क्या है.” 4 तब ज्योतिषियों ने राजा को
उत्तर दिया, “राजा चिरंजीवी हों! आप अपना स्वप्न अपने सेवकों को बताईये,
और हम उसका अर्थ बताएंगे.” 5 राजा ने ज्योतिषियों को उत्तर दिया, “मैंने
यह दृढ़ निश्चय किया है: यदि तुम लोग मुझे स्वप्न सहित उसका अर्थ नहीं
बताओगे, तो मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और तुम्हारे घरों को कचरे के ढेर में
बदल दूंगा. 6 पर यदि तुम स्वप्न को बताकर उसका अर्थ भी बताते हो, तो
तुमको उपहार और ईनाम और बहुत आदरमान दिया जाएगा. इसलिये तुम मुझे
स्वप्न बताओ और उसका अर्थ भी बताओ.” 7 एक बार फिर उन्होंने उत्तर
दिया, “राजा अपना स्वप्न अपने सेवकों को बताएं, और हम उसका अर्थ
बताएंगे.” 8 राजा ने उत्तर दिया, “मुझे पूरा निश्चय हो गया है कि तुम लोग
समय को टालने की कोशिश कर रहे हो, क्योंकि तुम समझ चुके हो कि मैंने यह
दृढ़ निश्चय कर लिया है: 9 यदि तुम मुझे स्वप्न नहीं बताते हो, तो तुम्हारे लिये
सिर्फ एक ही दंड है. यह आशा करते हुए कि परिस्थिति बदलेगी, तुम लोगों ने
मुझसे झूठी और बुरी बातें कहने का षड्‍यंत्र रचा है. इसलिये अब, तुम मुझे मेरा
स्वप्न बताओ, और तब मैं जान लूंगा कि तुम मुझे उस स्वप्न का अर्थ भी बता
सकते हो.” 10 ज्योतिषियों ने राजा को उत्तर दिया, “पृथ्वी पर ऐसा कोई
व्यक्ति नहीं जो राजा के इस पूछे गये प्रश्न का उत्तर दे सके! पर तो भी न तो
किसी बड़े और शक्तिशाली राजा ने किसी जादूगर या टोन्हा या ज्योतिषी से
कभी इस प्रकार की कोई बात पूछी है. 11 राजा जो बात पूछ रहे हैं, वह बहुत
कठिन है. देवताओं को छोड़, और कोई राजा को यह बात नहीं बता सकता,
और देवता मानव प्राणी के बीच नहीं रहते.” 12 यह सुनकर राजा इतना क्रोधित
और आग बबूला हो गया कि उसने बाबेल के सब बुद्धिमान लोगों को मार
डालने की आज्ञा दे दी. 13 इसलिये सब बुद्धिमान लोगों को मार डालने का
आदेश निकाला गया, और लोगों को दानिएल तथा उसके मित्रों के खोज में
भेजा गया कि वे भी मार डाले जाएं. 14 जब राजा के अंगरक्षकों का प्रधान
आरिओख, बाबेल के बुद्धिमान लोगों को मार डालने के लिये निकला था, तो
दानिएल ने उससे बुद्धिमानी और व्यवहार कुशलता से बात की. 15 उसने राजा
के अधिकारी से पूछा, “राजा ने ऐसा कठोर आदेश क्यों निकाला है?” तब
आरिओख ने दानिएल को वह बात बताई. 16 यह जानकर दानिएल राजा के
पास गया और कुछ समय देने की मांग की, ताकि वह राजा को उसके स्वप्न
का अर्थ बता सके. 17 तब दानिएल अपने घर लौटा और उसने अपने मित्रों
हननियाह, मिषाएल तथा अज़रियाह को इस विषय में बताया. 18 उसने उनको
उत्साहित किया कि वे स्वर्ग के परमेश्वर से इस रहस्य के बारे में कृपा करने की
बिनती करें, ताकि वह और उसके मित्र बाबेल के बाकी बुद्धिमान लोगों के साथ
न मार डाले जाएं. 19 रात के समय वह रहस्य एक दर्शन के रूप में दानिएल पर
प्रगट हुआ. तब दानिएल ने स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की 20 और कहा:
“परमेश्वर के नाम की महिमा सदा-सर्वदा होती रहे; क्योंकि बुद्धि और शक्ति
उसकी है. 21 वही हैं, जो समय एवं ऋतुओं को बदलते हैं; वे राजाओं को गद्दी
से हटाते और दूसरों को गद्दी पर बैठाते हैं. वे बुद्धिमान को बुद्धि और समझदार
को ज्ञान देते हैं. 22 वे गूढ़ और छिपी बातों को प्रगट करते हैं; वे जानते हैं कि
अंधेरे में क्या रखा है, और उनके साथ प्रकाश बना रहता है. 23 हे मेरे पूर्वजों
के परमेश्वर, मैं आपको धन्यवाद देता और आपकी प्रशंसा करता हूं: क्योंकि
आपने मुझे बुद्धि एवं शक्ति दी है, आपने मुझे वह बात बताई है जो हमने आपसे

पूछी, आपने हम पर राजा के स्वप्न को प्रगट किया है.” 24 तब दानिएल,
आरिओख के पास गया जिसे राजा ने बाबेल के बुद्धिमान लोगों को मार डालने
के लिये नियुक्त किया था, और उसने आरिओख से कहा, “बाबेल के बुद्धिमान
लोगों को मार डालने का काम रोक दीजिए. मुझे राजा के पास ले चलिए, और
मैं राजा को उनके स्वप्न का अर्थ बताऊंगा.” 25 आरिओख तुरंत दानिएल को
राजा के पास ले गया और उसने राजा से कहा, “यहूदिया से बंधुआई में आये
लोगों के बीच मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिला है, जो राजा को उसके स्वप्न का
अर्थ बता सकता है.” 26 राजा ने दानिएल से पूछा (जिसे बैलशत्सर भी कहा
जाता था), “क्या तुम इस योग्य हो कि मैंने स्वप्न में जो देखा है उसे और उसका
अर्थ बता सको?” 27 दानिएल ने उत्तर दिया, “राजा जिस रहस्य के बारे में पूछ
रहे हैं, उसके बारे में कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति, ज्योतिषी, जादूगर या भविष्य
बतानेवाला राजा को कुछ नहीं बता सकता, 28 लेकिन स्वर्ग में एक परमेश्वर
हैं, जो रहस्यों को प्रगट करते हैं. उन्होंने ने ही राजा नबूकदनेज्ज़र को दिखाया
है कि आनेवाले दिनों में क्या होनेवाला है. जब आप अपने पलंग पर लेटे हुए
थे, तब आपने जो स्वप्न और दर्शन देखे, वे ये हैं: 29 “महाराज, जब आप
अपने पलंग पर लेटे थे, तब आपका मन भविष्य में होनेवाली घटनाओं की ओर
हो गया, और रहस्यों के प्रगट करनेवाले ने आपको दिखाया कि भविष्य में क्या
होनेवाला है. 30 जहां तक मेरी बात है, तो यह रहस्य मुझ पर इसलिये प्रकट
नहीं किया गया कि मेरे पास किसी और जीवित व्यक्ति से ज्यादा बुद्धि है, पर
इसलिये कि महाराज को रहस्य का अर्थ मालूम हो जाए और आप समझ जाएं
कि आपके मन में क्या आया था. 31 “महाराज, आपने देखा कि आपके सामने
एक बड़ी मूर्ति खड़ी थी—एक बहुत बड़ी, चौंधियानेवाली मूर्ति, दिखने में
अद्भुत. 32 उस मूर्ति का सिर शुद्ध सोने से बना था, उसकी छाती और भुजाएं
चांदी की, उसका पेट और जांघें कांसे की, 33 उसके टांगे लोहे की और उसके
पांव कुछ लोहे के और कुछ सेंके गये मिट्टी के थे. 34 जब आप देख रहे थे, तो
एक चट्टान बिना किसी मानवीय प्रयास के अपने आप कटकर आई और उस
मूर्ति के लोहे और मिट्टी के पांव को ऐसी ठोकर मारी कि वे चूर-चूर हो गए. 35
तब लोहा, मिट्टी, कांसा, चांदी और सोना सब टूटकर टुकड़े-टुकडे हो गए और
ग्रीष्मकाल में खलिहान के भूंसे के समान हो गये. हवा उनको ऐसे उड़ा ले गई
कि उनका कोई छोटा टुकड़ा भी न बचा. पर जिस चट्टान ने मूर्ति को ठोकर
मारी थी, वह चट्टान एकाएक बहुत बड़ा पहाड़ बन गई और सारी पृथ्वी में फैल
गई. 36 “यही था आपका स्वप्न, और अब हम राजा को उसका अर्थ बताएंगे.
37 हे महाराज, आप तो राजाओं के राजा हैं. स्वर्ग के परमेश्वर ने आपको राज्य
और अधिकार और शक्ति और महिमा दी है; 38 आपके अधीन, उन्होंने सब
मानव प्राणी और भूमि के जानवर और आकाश के पक्षियों को कर दिया है. वे
जहां कहीं भी रहते हैं, परमेश्वर ने आपको उनके ऊपर शासक ठहराया है.
मूर्ति के सोने का वह सिर आप ही हैं. 39 “आपके बाद एक दूसरे राज्य का
उदय होगा जो आपके राज्य से निचले स्तर का होगा. उसके बाद, एक तीसरे
राज्य का उदय होगा, जो कांसे का प्रतिरूप होगा, जिसका शासन संपूर्ण पृथ्वी
पर होगा. 40 आखिरी में, एक चौथा राज्य होगा जो लोहे की तरह मजबूत
होगा—क्योंकि लोहा सब चीज़ों को तोड़ता और चूर-चूर कर देता है—और
जैसे कि लोहा चीज़ों को तोड़कर टुकड़े-टुकडे कर देता है, वैसे ही यह राज्य
भी दूसरे सभी राज्यों को कुचलकर टुकड़े कर देगा. 41 जैसा कि आपने देखा
कि पांव और उंगलियां कुछ सेंके गये मिट्टी और कुछ लोहे की थीं, इसलिये
यह एक विभाजित राज्य होगा; फिर भी इसमें कुछ लोहे का बल होगा, जैसा कि
आपने लोहे को मिट्टी के साथ मिला हुआ देखा. 42 जैसे कि पांव की उंगलियां
कुछ लोहा और कुछ मिट्टी की थी, इसलिये यह राज्य कुछ तो मजबूत और
कुछ निर्बल होगा. 43 और जैसा कि आपने लोहे को सेंके गये मिट्टी के साथ
मिला हुआ देखा, वैसे ही लोगों का मिश्रण होगा और उनमें एकता न होगी,
क्योंकि लोहा मिट्टी के साथ मेल नहीं खाता. 44 “उन राजाओं के समय में,
स्वर्ग के परमेश्वर एक ऐसे राज्य को स्थापित करेंगे, जो कभी नष्ट न होगा और
न ही इस पर किसी अन्य का शासन होगा. यह राज्य उन सब राज्यों को चूर-
चूर कर देगा और उनका अंत कर देगा, पर यह स्वयं सदाकाल तक बना रहेगा.
45 यह उस चट्टान के दर्शन का अर्थ है जो मनुष्य के हाथों नहीं, किंतु अपने
आप एक पहाड़ से टूटकर अलग हुई थी और जिसने लोहा, कांसा, मिट्टी,
चांदी और सोना को टुकड़े-टुकडे कर दिया था. “महान परमेश्वर ने राजा को
दिखाया है कि भविष्य में क्या होनेवाला है. यह स्वप्न सत्य है तथा इसका अर्थ
विश्वासयोग्य है.” 46 तब राजा नबूकदनेज्ज़र ने दानिएल को साष्टांग दंडवत
किया और उसे आदर दिया और आज्ञा दी कि दानिएल को भेंट चढ़ाई जाय और
उसके सामने सुगंधित धूप जलाया जाय. 47 राजा ने दानिएल से कहा, “निश्चित
रूप से तुम्हारे परमेश्वर देवताओं के परमेश्वर और राजाओं के प्रभु और रहस्यों
के प्रगटकर्ता हैं, क्योंकि तुम इस रहस्य का अर्थ बताने में योग्य ठहरे.” 48 तब
राजा ने दानिएल को एक ऊंचे पद पर ठहराया और उसे बहुत सारे कीमती
उपहार दिये. राजा ने उसे सारे बाबेल प्रदेश का शासक बनाया और बाबेल के
सब बुद्धिमान लोगों के ऊपर उसे अधिकारी ठहराया. 49 और दानिएल के
अनुरोध पर राजा ने शद्रख, मेशेख तथा अबेद-नगो को बाबेल प्रदेश पर प्रशासक
नियुक्त कर दिया, परंतु दानिएल स्वयं राज-दरबार में बना रहा.

3 राजा नबूकदनेज्ज़र ने एक सोने की मूर्ति बनवाई, जिसकी ऊंचाई लगभग
25 मीटर और चौड़ाई अढ़ाई मीटर थी, और उसने उसे बाबेल प्रदेश में
दूरा के मैदान में स्थापित किया. 2 तब उसने हाकिमों, प्रधानों, राज्यपालों,
सलाहकारों, ख़ज़ांचियों, न्यायाधीशों, जिलाधीशों और राज्य के दूसरे सब
अधिकारियों को बुलवाया कि वे आकर उस मूर्ति के प्रतिष्ठा समारोह में
शामिल हों जिसे उसने स्थापित किया था. 3 अतः हाकिम, प्रधान, राज्यपाल,
सलाहकार, खजांची, न्यायाधीश, जिलाधीश और राज्य के दूसरे सब अधिकारी
उस मूर्ति के प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए, जिसे राजा नबूकदनेज्ज़र ने स्थापित
किया था, और वे सब उस मूर्ति के सामने खड़े हुए. 4 तब घोषणा करनेवाले ने
ऊंची आवाज में यह घोषणा की, “जाति-जाति और हर भाषा के लोगों, तुम्हें यह
करने की आज्ञा दी जाती है: 5 जिस समय तुम लोग नरसिंगा, बांसुरी, सितार,
सारंगी, वीणा, शहनाई और सब प्रकार के संगीत की आवाज सुनो, उसी समय
तुम गिरकर सोने के उस मूर्ति की आराधना करो, जिसे राजा नबूकदनेज्ज़र ने
स्थापित किया है. 6 जो कोई गिरकर आराधना नहीं करेगा, उसे तुरंत धधकती
आग की भट्टी में झोंक दिया जाएगा.” 7 इसलिये जब उन्होंने नरसिंगा, बांसुरी,
सितार, सारंगी, वीणा और हर प्रकार के संगीत की आवाज सुनी, तब सब
जाति और हर भाषा के लोगों ने गिरकर उस सोने की मूर्ति की आराधना की,
जिसे राजा नबूकदनेज्ज़र ने स्थापित किया था. 8 इसी समय कुछ ज्योतिषी
आकर यहूदियों पर दोष लगाने लगे. 9 उन्होंने राजा नबूकदनेज्ज़र से कहा, “हे
राजा, आप चिरंजीवी हों! 10 आप ही ने यह राजाज्ञा निकाली है कि नरसिंगा,
बांसुरी, सितार, सारंगी, वीणा, शहनाई और सब प्रकार के संगीत की आवाज
सुनते ही हर व्यक्ति गिरकर सोने की मूर्ति की आराधना करे, 11 किंतु जो कोई
गिरकर आराधना नहीं करेगा, उसे एक धधकती आग की भट्टी में झोंक दिया
जाएगा. 12 पर कुछ यहूदी हैं, जिन्हें आपने बाबेल प्रदेश के कार्य हेतु ठहराया
है—अर्थात् शद्रख, मेशेख तथा अबेद-नगो—हे महाराज, इन्होंने आपकी आज्ञा
को नहीं माना है. वे न तो आपके देवताओं की सेवा करते हैं और न ही आपके
द्वारा स्थापित सोने की मूर्ति की आराधना करते हैं.” 13 गुस्से से आग बबूला
होकर नबूकदनेज्ज़र ने शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो को बुलवाया. तब इन
तीनों को राजा के सामने लाया गया, 14 और नबूकदनेज्ज़र ने उनसे पूछा,

“शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो, क्या यह सच है कि तुम मेरे देवताओं की सेवा
नहीं करते या मेरे द्वारा स्थापित सोने की मूर्ति की आराधना नहीं करते हो? 15
अब जब तुम नरसिंगा, बांसुरी, सितार सारंगी, वीणा, शहनाई और सब प्रकार के
संगीत की आवाज सुनो, यदि तुम गिरकर मेरे द्वारा बनाए गये मूर्ति की आराधना
करने को तैयार हो, तो अच्छी बात है. पर यदि तुम उसकी आराधना नहीं करते
हो, तो तुम्हें तुरंत एक धधकती आग की भट्टी में झोंक दिया जाएगा. तब ऐसा
कौन सा देवता है, जो तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?” 16 शद्रख, मेशेख और
अबेद-नगो ने राजा को उत्तर दिया, “हे राजा नबूकदनेज्ज़र, इस विषय में हमें
आपके सामने अपने आपका बचाव करने की आवश्यकता नहीं है. 17 यदि हमें
धधकती आग की भट्टी में फेंक दिया जाता है, तो हमारा परमेश्वर, जिनकी हम
सेवा करते हैं, हमें इससे बचाने में समर्थ हैं, और हे महाराज, वह हमें आपके
हाथों से भी बचाएंगे. 18 पर यदि वह हमें न भी बचाएं, तब भी, हे महाराज,
हम आपको बता देना चाहते हैं कि हम आपके देवताओं की सेवा नहीं करेंगे
या आपके द्वारा स्थापित सोने की मूर्ति की आराधना नहीं करेंगे.” 19 तब
नबूकदनेज्ज़र शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो के ऊपर बहुत क्रोधित हुआ, और
उसकी भावना उनके प्रति बदल गई. उसने आज्ञा दी कि भट्टी को सामान्य से
सात गुणा ज्यादा धधकाया जाए, 20 और उसने अपनी सेना के कुछ सबसे
बलिष्ठ सैनिकों को आदेश दिया कि शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो को बांधकर
धधकती भट्टी में झोंक दिया जाए. 21 अतः इन तीनों को उनके पहिने गये
लबादा, पजामा, पगड़ी और अन्य कपड़ों सहित बांधकर धधकती भट्टी में फेंक
दिया गया. 22 राजा की दृढ़ आज्ञा थी और भट्टी इतनी गर्म थी कि आग की
ज्वाला से वे सैनिक मारे गये, जो शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो को भट्टी तक
ले गए थे, 23 और ये तीनों व्यक्ति—शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो अच्छे से
बंधे हुए धधकती आग की भट्टी में डाल दिये गए. 24 तब राजा नबूकदनेज्ज़र
आश्चर्य में उछलकर खड़ा हो गया और अपने सलाहकारों से पूछा, “क्या वे
तीन ही व्यक्ति नहीं थे, जिन्हें हमने बांधकर आग में डाला था?” उन्होंने उत्तर
दिया, “निश्चित रूप से, महाराज.” 25 राजा ने कहा, “देखो! मैं आग के बीच
चार व्यक्तियों को चलते हुए देख रहा हूं, वे बंधे हुए नहीं हैं और उन्हें कुछ भी
हानि नहीं हुई है, और चौथा व्यक्ति देवताओं के पुत्र जैसे दिख रहा है.” 26 तब
नबूकदनेज्ज़र धधकती भट्टी के मुहाने के पास पहुंचा और ऊंची आवाज में
कहा, “शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो, सर्वोच्च परमेश्वर के सेवको, बाहर आ
जाओ! मेरे पास आओ!” यह सुनकर शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो आग से
बाहर निकल आए, 27 और उनके चारों तरफ हाकिमों, प्रधानों, राज्यपालों
और शाही सलाहकारों की भीड़ लग गई. उन्होंने देखा कि उन तीनों के शरीर
को आग से कोई नुकसान नहीं पहुंचा था, न ही उनके सिर का एक भी बाल
झुलसा था; उनके कपड़े भी नहीं जले थे, और उनसे जलने की कोई गंध नहीं
आ रही थी. 28 तब नबूकदनेज्ज़र ने कहा, “शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो के
परमेश्वर की महिमा हो, जिन्होंने अपने स्वर्गदूत को भेजकर अपने सेवकों को
बचाया! उन्होंने उस पर भरोसा किया और राजा के आज्ञा की परवाह न की और
अपना प्राण देने तक तैयार थे, इसके बजाय कि वे अपने परमेश्वर को छोड़कर
किसी और देवता की सेवा या आराधना करें. 29 इसलिये मैं यह आज्ञा देता हूं
कि किसी भी जाति या भाषा के लोग, यदि शद्रख, मेशेख और अबेद-नगो के
परमेश्वर के विरुद्ध कुछ भी कहते हैं, तो उनको काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया
जाए और उनके घरों को कचरे का ढेर कर दिया जाए, क्योंकि ऐसा कोई भी
देवता नहीं, जो इस प्रकार से बचा सके.” 30 तब राजा ने शद्रख, मेशेख और
अबेद-नगो को बाबेल राज्य में और उच्च पद दिया.

4 राजा नबूकदनेज्ज़र की ओर से, सारी पृथ्वी पर रहनेवाले जाति-जाति और
हर भाषा के लोगों को यह वचन: आप सब की बहुत उन्नति हो! 2 सर्वोच्च
परमेश्वर द्वारा मेरे लिये किए गए उन अद्भुत चिन्हों और आश्चर्य कर्मों के बारे में
तुम्हें बताते हुए मुझे खुशी हो रही है. 3 क्या ही बड़े हैं उसके दिखाए चिन्ह, 4
मैं, नबूकदनेज्ज़र अपने महल में संतुष्ट और सम्पन्न था. 5 मैंने एक स्वप्न देखा,
जिससे मैं भयभीत हो गया. जब मैं अपने पलंग पर लेटा हुआ था, तो जो चित्र
और दर्शन मेरे मन में आये, उनसे मैं भयभीत हो गया. 6 इसलिये मैंने आज्ञा दी
कि बाबेल के सारे बुद्धिमान लोग मेरे सामने लाए जाएं कि वे मेरे स्वप्न का
अर्थ बताएं. 7 जब जादूगर, टोन्हे, तांत्रिक, ज्योतिषी और दैवीय शक्तिवाले
मेरे पास आये, तो मैंने उन्हें अपना स्वप्न बताया, पर वे मुझको उसका अर्थ
नहीं बता सके. 8 आखिर में, दानिएल मेरे सामने आया और मैंने उसे अपना
स्वप्न बताया. (उसका नाम मेरे देवता के नाम से बैलशत्सर रखा गया है, और
पवित्र देवताओं की आत्मा उसमें है.) 9 मैंने कहा, “हे बैलशत्सर, जादूगरों का
मुखिया, मैं जानता हूं कि पवित्र देवताओं की आत्मा तुममें है और कोई भी
रहस्य तुम्हारे लिये कठिन नहीं है. यह मेरा स्वप्न है; मुझे इसका अर्थ बताओ.
10 ये वे दर्शन हैं जिन्हें मैंने पलंग पर लेटे हुए देखा: मैंने देखा कि पृथ्वी के बीच
एक पेड़ लगा है. वह बहुत ऊंचा था. 11 वह पेड़ बड़ा होकर मजबूत हो गया
और इसका सिरा आकाश को छूने लगा; इसे सारी पृथ्वी के छोर से भी देखा जा
सकता था. 12 इसकी पत्तियां सुंदर थीं और इसमें बहुत सारे फल लगे थे, और
इसमें सबके लिये भोजन था. इसके नीचे जंगली जानवर रहते थे, और आकाश
के पक्षी इसकी शाखाओं पर बसेरा करते थे; इसमें से हर एक जीव-जन्तु भोजन
पाते थे. 13 “पलंग पर लेटे हुए मैंने दर्शन में देखा कि स्वर्ग से एक पवित्र जन,
एक संदेशवाहक नीचे आ रहा था. 14 उसने ऊंची आवाज में कहा: ‘काट डालो
इस पेड़ को और इसकी शाखाओं को अलग कर दो; इसकी पत्तियों को गिरा दो
और इसके फल को बिखरा दो. जानवर इसके नीचे से भाग जाएं और चिड़िया
इसकी शाखाओं से उड़ जाएं. 15 पर पेड़ के ठूंठ और इसकी जड़ों को लोहे
और कांसा से बंधे रहकर ज़मीन के घास पर, भूमि में रहने दो. “‘उसे आकाश
की ओस से भीगने दो, और उसे पृथ्वी के पौधों के बीच जानवरों के साथ रहने
दो. 16 उसका मन बदल दिया जाए और एक मनुष्य के समान उसका मन न रहे
और उसे सात कालखण्ड बीतने तक एक जानवर का मन दिया जाए. 17 “‘इस
निर्णय का ऐलान संदेशवाहकों के द्वारा किया जाता है, पवित्र जन इस निर्णय की
घोषणा करते हैं, ताकि जीवित लोग इस बात को जानें कि वह जो सर्वोच्च हैं, वे
ही पृथ्वी पर सब राज्यों के ऊपर परम प्रधान हैं और वे जिसे चाहते हैं, उसे उन
राज्यों को दे देते हैं और छोटे से छोटे व्यक्ति को उनके ऊपर नियुक्त कर देते
हैं.’ 18 “यही है वह स्वप्न जिसे मैं, राजा नबूकदनेज्ज़र ने देखा. अब, हे
बैलशत्सर, मुझे बताओ कि इसका क्या अर्थ है, क्योंकि मेरे राज्य का कोई भी
बुद्धिमान व्यक्ति मुझे इसका अर्थ नहीं बता सकता. पर तुम बता सकते हो,
क्योंकि तुममें पवित्र देवताओं की आत्मा है.” 19 तब दानिएल (जिसे बैलशत्सर
भी कहा जाता था) थोड़ी देर के लिये व्याकुल हो गया, और उसके विचार उसे
भयभीत करने लगे. इसलिये राजा ने कहा, “हे बैलशत्सर, मेरे स्वप्न या इसके
अर्थ से भयभीत न हो.” बैलशत्सर ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, काश, यह स्वप्न
सिर्फ आपके शत्रुओं और इसका अर्थ आपके विरोधियों पर लागू होता! 20 वह
पेड़ जिसे आपने देखा, जो बड़ा होकर मजबूत हो गया, जिसका सिरा आकाश
को छूने लगा था, और जिसे सारी पृथ्वी से देखा जा सकता था, 21 जिसकी
पत्तियां सुंदर और जिसमें बहुत सारे फल थे, जिससे सबको भोजन मिलता था,
जो जंगली जानवरों को आश्रय देता था, और चिड़ियां जिसकी शाखाओं पर
घोंसला बनाती थीं— 22 हे महाराज, वह पेड़ आप हैं! आप बड़े और मजबूत
हो गये हैं; आपकी महानता इतनी हो गई है कि यह आकाश को छूने लगी है,
और आपका राज्य पृथ्वी में दूर-दूर तक फैल गया है. 23 “हे महाराज, आपने
एक पवित्र जन, एक संदेशवाहक को स्वर्ग से नीचे उतरते हुए देखा जो यह कह

रहा था, 'इस पेड़ को काट डालो और इसे नष्ट कर दो, पर इसके ठूंठ को, लोहा
और कांसा से बंधे हुए ज़मीन के घांस में रहने दो तथा इसके जड़ों को भूमि में
छोड़ दो. उसे आकाश की ओस से भीगने दो; उसे जंगली जानवरों के साथ रहने
दो, जब तक कि उसके लिये सात कालखण्ड पूरे न हो जाएं.' **24** "हे महाराज,
यह उसका अर्थ है, और यह वह फैसला है, जिसे सर्वोच्च परमेश्वर ने मेरे
प्रभु राजा के विरुद्ध दिया है: **25** आपको लोगों के बीच से भगा दिया जाएगा
और आप जंगली जानवरों के साथ रहेंगे; आप बैल की तरह घांस खाएंगे और
आकाश की ओस से भीगेंगे. सात कालखण्ड के बीतने तक आप इसी स्थिति में
रहेंगे, और तब आप यह मान लेंगे कि पृथ्वी पर सारे राज्यों के ऊपर सर्वोच्च
परमेश्वर ही परम प्रधान हैं और वे जिसे चाहते हैं उसे ये राज्य दे देते हैं. **26** पेड़
के ठूंठ को इसके जड़ों सहित छोड़ने की जो आज्ञा दी गई है, उसका अर्थ यह
है कि आपको आपका राज्य लौटा दिया जाएगा, जब आप यह बात मान लेंगे
कि स्वर्ग ही शासन करता है. **27** इसलिये, हे महाराज, खुशी से मेरी सलाह को
मान लीजिये: आप अपने पापों को छोड़कर भले काम करिये, और दुष्टता को
छोड़कर सताये हुए लोगों पर दया कीजिये. तब यह हो सकता है कि आपकी
समृद्धि होने लगे." **28** ये सब बातें राजा नबूकदनेज्ज़र के साथ हुई. **29** बारह
महीनों के बाद, जब राजा बाबेल के राजमहल के छत पर टहल रहा था, **30**
तब उसने कहा, "क्या यह वह बड़ा बाबेल नहीं है, जिसे मैंने अपने बड़े शक्ति
से शाही निवास के रूप में अपने वैभव की महिमा के लिये बनाया है?" **31**
अभी राजा के ये वचन उसके मुंह से निकले भी नहीं थे कि स्वर्ग से एक
आवाज आई, "हे राजा नबूकदनेज्ज़र, तुम्हारे लिए यह फैसला किया जाता है:
तुम्हारा शाही अधिकार तुमसे छीन लिया गया है. **32** तुम्हें लोगों के बीच से
भगा दिया जाएगा और तुम जंगली जानवरों के साथ रहोगे; तुम बैल की तरह
घांस खाओगे. इसी स्थिति में तुम्हारे लिये सात कालखण्ड बीतेगा और तब तुम
यह मान लोगे कि सर्वोच्च परमेश्वर ही पृथ्वी पर सब राज्यों के ऊपर परम
प्रधान हैं और वे जिसे चाहते हैं उसे इन राज्यों को दे देते हैं." **33** नबूकदनेज्ज़र
के बारे में जो बात कही गई, वह उसी घड़ी पूरी हो गई. उसे लोगों के बीच से
भगा दिया गया और वह बैल की तरह घांस खाने लगा. उसका शरीर आकाश
की ओस से भीगता था, यहां तक कि उसके बाल बढ़कर गरूड़ के पंखों के
समान और उसके नाखून चिड़ियों के पंजों के समान हो गये. **34** निर्धारित
समय के अंत में, मैं, नबूकदनेज्ज़र ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई, और
मेरी मानसिक अवस्था फिर पहले जैसे हो गई. तब मैंने सर्वोच्च परमेश्वर की
महिमा की; मैंने उसका आदर और प्रशंसा किया, जो सदाकाल तक जीवित
रहता है. **35** पृथ्वी के सारे लोगों का **36** जिस समय मेरी मानसिक अवस्था
पहले जैसी हो गई, उसी समय मेरा सम्मान और वैभव भी मेरे राज्य के गौरव हेतु
मेरे पास लौट आया. मेरे सलाहकारों और कुलीन लोगों ने मुझे ढूंढ निकाला,
और मुझे फिर से मेरे सिंहासन पर बैठाया गया और मैं पहले से भी ज्यादा महान
हो गया. **37** अब मैं, नबूकदनेज्ज़र स्वर्ग के राजा की स्तुति, महिमा और प्रशंसा
करता हूं, क्योंकि वे जो भी करते हैं, सही करते हैं और उनके सब युक्तियां
न्याय संगत होती हैं. और जो घमंड से चलते हैं, उन्हें वह नम्र बनाने में समर्थ है.

5 राजा बैलशत्सर ने अपने एक हजार प्रभावशाली लोगों को एक बड़ा भोज
दिया और उनके साथ दाखमधु पी. **2** जब बैलशत्सर दाखमधु पी रहा
था, तब उसने आदेश दिया कि जो सोने और चांदी के प्याले उसके पिता
नबूकदनेज्ज़र ने येरूशलेम के मंदिर से लाए थे, उन्हें लाया जाए, ताकि राजा,
उसके प्रभावशाली लोग, राजा की पत्नियां और उसकी उपपत्नियां दाखमधु पीने
के लिए उनका उपयोग कर सकें. **3** इसलिये येरूशलेम के परमेश्वर के मंदिर से
निकालकर लाए गए सोने के प्याले लाये गये, और राजा और उसके प्रभावशाली
लोग, उसकी पत्नियों और उपपत्नियों ने उनमें दाखमधु पान किया. **4** वे दाखमधु
पीकर सोने और चांदी, कांसा, लोहा, लकड़ी और पत्थर के देवताओं की
स्तुति करने लगे. **5** तब अचानक एक मानव हाथ की उंगलियां प्रकट हुईं और
राजमहल में दीवट के पास दीवार के पलस्तर पर कुछ लिखने लगीं. लिखते
हुए उस हाथ पर राजा की दृष्टि पड़ी. **6** उसे देखकर राजा के चेहरे का रंग उड़
गया और वह इतना डर गया कि उसके पैर ढीले हो गए और कांपने से उसके
घुटने एक दूसरे से टकराने लगे. **7** तब राजा ने तांत्रिक, ज्योतिषी और दैवीय
शक्तिवालों को बुलवाया और उसने बाबेल के उन बुद्धिमान लोगों से कहा, "जो
कोई इस लिखावट को पढ़ेगा और उसका अर्थ मुझे बताएगा, उसे राजसी वस्त्र
पहनाया जाएगा और उसके गले में सोने की माला पहनाई जाएगी, और उसे
राज्य में तीसरे नंबर का उच्च पदस्थ शासक बनाया जाएगा." **8** तब राजा के
सब बुद्धिमान लोग आए, पर वे उस दीवार पर लिखी बात को पढ़ न सके और न
ही वे राजा को उसका अर्थ बता सके. **9** इससे राजा बैलशत्सर और भयभीत
हो गया और उसका चेहरे का रंग और उड़ गया. इससे उसके प्रभावशाली
लोग भी परेशान हो गए. **10** राजा एवं उसके प्रभावशाली लोगों की आवाज
सुनकर, रानी भोज के कक्ष में आई और कहने लगी, "राजा चिरंजीवी हों! आप
चिंता न करें! और आपके चेहरे का रंग न उड़े! **11** आपके राज्य में एक ऐसा
व्यक्ति है, जिसमें पवित्र देवताओं की आत्मा रहती है. आपके पिता के समय में
इस व्यक्ति में देवताओं के समान समझ-बूझ, बुद्धि और ज्ञान पायी गई थी.
आपके पिता, राजा नबूकदनेज्ज़र ने उसे जादूगरों, तांत्रिकों, ज्योतिषियों और
दैवीय शक्तिवालों का मुखिया नियुक्त किया था. **12** उसने ऐसा किया क्योंकि
दानिएल नामक यह व्यक्ति के पास, जिसे राजा बैलशत्सर नाम से पुकारते
थे, तेज दिमाग और ज्ञान और समझ थी, और उसमें स्वप्नों का अर्थ बताने,
पहेलियों को समझाने और कठिन समस्याओं का हल निकालने की योग्यता
पायी गई थी. इसलिये दानिएल को बुलवा लीजिए, और वह आपको लिखावट
का अर्थ बता देगा." **13** तब दानिएल को राजा के सामने लाया गया, और राजा
ने उससे कहा, "क्या तुम दानिएल हो, और उनमें से एक हो, जिन्हें मेरे पिता,
राजा ने यहूदाह से बंधुआई में लाया था? **14** मैंने सुना है कि तुममें देवताओं की
आत्मा रहती है और यह भी कि तुममें समझ-बूझ, बुद्धि और असाधारण ज्ञान है.
15 बुद्धिमान और तांत्रिक लोग इस लिखावट को पढ़ने और इसका अर्थ बताने के
लिये मेरे पास लाये गए, पर वे इसको समझा न सके. **16** मैंने सुना है कि तुममें
अर्थ बताने और कठिन समस्याओं का हल निकालने की योग्यता है. यदि तुम
इस लेख को पढ़कर इसका अर्थ मुझे बता सके, तो तुम्हें राजसी कपड़े पहनाए
जाएंगे और तुम्हारे गले में सोने की माला पहनाई जाएगी, और तुम्हें तीसरा उच्च
पदस्थ शासक बनाया जाएगा." **17** तब दानिएल ने राजा को उत्तर दिया, "आप
अपने उपहारों को अपने पास रखें और अपने पुरस्कारों को किसी और को दे
दें. फिर भी मैं यह लिखावट राजा के लिये पढ़ूंगा और उसको इसका अर्थ भी
बताऊंगा. **18** "हे महाराज, सर्वोच्च परमेश्वर ने आपके पिता नबूकदनेज्ज़र को
राजसत्ता, महानता, महिमा और वैभव दिया. **19** क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऊंचा
पद दिया था, इसलिये सारी जाति और हर भाषा के लोग आपके पिता से डरते थे
और उनका भय मानते थे. जिन्हें वह प्राण-दंड देना चाहता, उन्हें वह प्राण-दंड
देता; जिन्हें वह छोड़ना चाहता, उन्हें वह छोड़ देता; जिन्हें वह ऊंचा पद देना
चाहता, उन्हें वह ऊंचा पद देता; और जिन्हें वह नीचा दिखाना चाहता, उन्हें वह
नीचा दिखाता. **20** पर जब घमंड से उसका मन फूल गया और उसका हृदय
कठोर हो गया, तो उसे राज सिंहासन से हटा दिया गया और उसकी प्रतिष्ठा छीन
ली गई. **21** उसे लोगों के बीच से भगा दिया गया और उसे एक जानवर का मन
दिया गया; वह जंगली गधों के साथ रहता था और बैल की तरह घांस खाता
था; और उसका शरीर आकाश के ओस से भीगता था, यह तब तक होता रहा,
जब तक कि उसने यह न मान लिया कि पृथ्वी पर सब राज्यों के ऊपर सर्वोच्च

परमेश्वर ही परम प्रधान हैं और वे जिसे चाहते हैं उसे उन राज्यों पर शासक
ठहराते हैं. 22 “पर हे बैलशत्सर, उनके बेटे होकर भी आपने अपने आपको नम्र
नहीं किया, यद्यपि आप यह सब जानते थे. 23 वरन आपने अपने आपको स्वर्ग
के प्रभु से भी बड़ा बना लिया है. आपने उनके मंदिर से प्यालों को अपने पास
मंगा लिया, और आप और आपके प्रभावशाली लोगों ने, आपकी पत्नियों और
आपकी उपपत्नियों ने उनमें दाखमधु पिया है. आपने चांदी, सोना, कांसा, लोहा,
लकड़ी और पत्थर के देवताओं की महिमा किया है, जो न तो देख सकते हैं, न
सुन सकते है, और न ही समझ सकते हैं. पर आपने उस परमेश्वर का आदर नहीं
किया, जिनके हाथ में आपका जीवन और आपके सारे क्रियाकलाप हैं. 24
इसलिये परमेश्वर ने यह हाथ भेजा, जिसने यह लेख लिखा है. 25 “यह वह
लेख है जिसे लिखा गया था: मने, मने, तकेल, फरसीन 26 “इन शब्दों का
अर्थ इस प्रकार है: “मने: परमेश्वर आपके राज्य करने के दिनों की गिनती कर
चुके हैं और इसका अंत आ चुका है. 27 “तकेल: आप तराजू पर तौले जा चुके
हैं और आपको हल्का पाया गया है. 28 “फरसीन: आपके राज्य को बांट दिया
गया है और मेदियों तथा फ़ारसियों को दे दिया गया है.” 29 तब बैलशत्सर की
आज्ञा से दानिएल को राजसी कपड़े पहनाए गए, उसके गले में सोने की एक
माला पहनाई गई, और राज्य में तीसरे उच्च पदस्थ शासक के रूप में उसकी
घोषणा की गई. 30 उसी रात, कसदियों का राजा, बैलशत्सर मार डाला गया,
31 और इसके बाद दारयावेश, जो मेदिया था, बासठ साल के उम्र में उस राज्य
का राजा बना.

6 दारयावेश को यह अच्छा लगा कि वह 120 प्रधान नियुक्त करे, जो सारे
राज्य में शासन करें, 2 और इन सबके ऊपर तीन प्रशासक हों, जिनमें से
एक दानिएल था. उन प्रधानों को प्रशासकों के प्रति उत्तरदायी बनाया गया ताकि
राजा को किसी प्रकार की हानि न हो. 3 दानिएल अपनी असाधारण योग्यताओं
के कारण प्रशासकों और प्रधानों के बीच बहुत प्रसिद्ध था, इसलिये राजा ने उसे
सारे राज्य का शासक बनाने की योजना बनाई. 4 इस पर, प्रशासक और प्रधान
सरकारी कार्यों में दानिएल के क्रियाकलापों के विरुद्ध दोष लगाने का आधार
खोजने लगे, पर वे ऐसा न कर सके. उन्हें उसमें कोई भ्रष्टाचार की बात न मिली,
क्योंकि दानिएल विश्वासयोग्य था और वह न तो भ्रष्टाचारी था और न ही वह
किसी बात में असावधानी बरतता था. 5 आखिर में, इन व्यक्तियों ने कहा,
“उसके परमेश्वर के कानून के विषय को छोड़, हमें और किसी भी विषय में
दानिएल के विरुद्ध दोष लगाने का आधार नहीं मिलेगा.” 6 इसलिये ये प्रशासक
और प्रधान एक दल के रूप में राजा के पास गये और उन्होंने कहा: “राजा
दारयावेश, चिरंजीवी हों! 7 राज्य के सब शाही प्रशासक, मुखिया, प्रधान,
सलाहकार, और राज्यपाल इस बात पर सहमत हुए कि राजा एक राजाज्ञा
निकाले और उस आज्ञा को पालन करने के लिये कहें कि अगले तीस दिनों तक
कोई भी व्यक्ति महाराजा को छोड़ किसी और देवता या मानव प्राणी से प्रार्थना
करे, तो वह सिंहों की मांद में डाल दिया जाए. 8 हे महाराज, अब आप ऐसी
आज्ञा दें और इसे लिखित में दे दें ताकि यह बदली न जा सके—मेदियों और
फ़ारसियों के कानून के अनुसार जिसे रद्द नहीं किया जा सकता.” 9 तब राजा
दारयावेश ने उस आज्ञा को लिखित में कर दिया. 10 जब दानिएल को मालूम
हुआ कि ऐसी आज्ञा निकाली गई है, तो वह अपने घर जाकर ऊपर के कमरे में
गया, जहां खिड़कियां येरूशलेम की ओर खुली रहती थी. दिन में तीन बार
घुटना टेककर उसने अपने परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना किया, जैसे
कि वह पहले भी करता था. 11 तब वे व्यक्ति एक दल के रूप में वहां गये
और उन्होंने दानिएल को परमेश्वर से प्रार्थना करते और मदद मांगते हुए पाया.
12 अतः वे राजा के पास गये और उसे उसके राजाज्ञा के बारे में कहने लगे:
“क्या आपने ऐसी आज्ञा नहीं निकाली है कि अगले तीस दिनों तक कोई भी
व्यक्ति महाराजा को छोड़ किसी और देवता या मानव प्राणी से प्रार्थना करे, तो
उसे सिंहों की मांद में डाल दिया जाएगा?” राजा ने उत्तर दिया, “यह आज्ञा
तो है—जिसे मेदियों एवं फ़ारसियों के कानून के अनुसार रद्द नहीं किया जा
सकता.” 13 तब उन्होंने राजा से कहा, “दानिएल, जो यहूदाह से लाये गए
बंधुआ लोगों में से एक है, हे महाराज, वह आपकी या आपके द्वारा निकाले गये
लिखित आज्ञा की परवाह नहीं करता है. वह अभी भी दिन में तीन बार प्रार्थना
करता है.” 14 यह बात सुनकर राजा बहुत उदास हुआ; उसने दानिएल को
बचाने का संकल्प कर लिया था और सूर्यास्त होने तक वह दानिएल को बचाने
की हर कोशिश करता रहा. 15 तब लोग एक दल के रूप में राजा दारयावेश के
पास गये और उन्होंने उनसे कहा, “हे महाराज, आप यह बात याद रखें कि
मेदिया और फ़ारसी कानून के अनुसार राजा के द्वारा दिया गया कोई भी फैसला
या राजाज्ञा बदली नहीं जा सकती.” 16 तब राजा ने आज्ञा दी, और वे दानिएल
को लाकर उसे सिंहों की मांद में डाल दिये. राजा ने दानिएल से कहा, “तुम्हारा
परमेश्वर, जिसकी सेवा तुम निष्ठापूर्वक करते हो, वही तुझे बचाएं!” 17 एक
पत्थर लाकर मांद के मुहाने पर रख दिया गया, और राजा ने अपने स्वयं की
मुहरवाली अंगूठी और अपने प्रभावशाली लोगों की अंगूठियों से उस पर मुहर
लगा दी, ताकि दानिएल की स्थिति में किसी भी प्रकार का बदलाव न किया जा
सके. 18 तब राजा अपने महल में लौट आया गया और उसने पूरी रात बिना
कुछ खाएं और बिना किसी मनोरंजन के बिताया. और वह सो न सका. 19 बड़े
सुबह, राजा उठा और जल्दी से सिंहों की मांद पर गया. 20 जब वह मांद
के पास पहुंचा, तो उसने एक पीड़ा भरी आवाज में दानिएल को पुकारा, “हे
दानिएल, जीवित परमेश्वर के सेवक, क्या तुम्हारे उस परमेश्वर ने तुम्हें सिंहों से
बचाकर रखा है, जिसकी तुम निष्ठापूर्वक सेवा करते हो?” 21 तब दानिएल ने
उत्तर दिया, “हे राजा, आप चिरंजीवी हों! 22 मेरे परमेश्वर ने अपना स्वर्गदूत
भेजकर सिंहों के मुंह को बंद कर दिया. उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की,
क्योंकि मैं उसकी दृष्टि में निर्दोष पाया गया. और हे महाराज, आपके सामने भी
मैंने कोई अपराध नहीं किया है.” 23 तब राजा अति आनंदित हुआ और उसने
आज्ञा दी कि दानिएल को मांद से बाहर निकाला जाए. और जब दानिएल को
मांद से ऊपर खींचकर बाहर निकाला गया, तो उसमें किसी भी प्रकार का चोट
का निशान नहीं पाया गया, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर पर भरोसा रखा था.
24 वे व्यक्ति, जिन्होंने दानिएल पर झूठा दोष लगाया था, वे राजा की आज्ञा पर
लाये गए, और उन्हें उनकी पत्नियों और बच्चों समेत सिंहों के मांद में डाल
दिया गया. और इसके पहले कि ये मांद के तल तक पहुंचें, सिंहों ने झपटकर
उन्हें पकड़ लिया और हड्डियों समेत उनको चबा डाला. 25 तब राजा दारयावेश
ने सारी पृथ्वी में सब जाति और हर भाषा के लोगों को यह लिखा: “आप सब
बहुत उन्नति करें! 26 “मैं यह आज्ञा देता हूं कि मेरे राज्य में हर जगह के लोग
दानिएल के परमेश्वर का भय माने और उनका आदर करें. 27 वह छुड़ाते हैं
और वह बचाते हैं; 28 इस प्रकार दानिएल, दारयावेश और फारस देश के कोरेश
के शासनकाल में उन्नति करते गए.

7 बाबेल के राजा बैलशत्सर के शासन के पहले साल में, दानिएल जब अपने
पलंग पर लेटा हुआ था, तो उसने एक स्वप्न तथा मन में दर्शन देखे. उसने
अपने स्वप्न के सारांश को लिख लिया. 2 दानिएल ने कहा: “रात में मैंने अपने
दर्शन में देखा कि आकाश से चारों दिशाओं से महासागर पर मंथन हवा चलने
लगी. 3 तब चार बड़े-बड़े पशु समुद्र से निकले, और ये एक दूसरे से भिन्न थे.
4 “पहला पशु सिंह के समान था, जिसके गरूड़ के समान पंख थे. मेरे देखते ही
देखते उसके पंखों को नोच डाला गया और उसे भूमि पर से उठाकर मनुष्य के
समान दो पैरों पर खड़ा किया गया, और उसे एक मनुष्य का मन दिया गया. 5
“उसके बाद मैंने दूसरे पशु को देखा, जो भालू के समान दिखता था, उसे उसके

एक तरफ से उठाया गया, और उसके मुंह में उसके दांतों के बीच तीन पसलियां
थी. उसे कहा गया, 'उठ और संतुष्ट होते तक मांस खा!' 6 "उसके बाद, मैंने
एक दूसरे पशु को देखा, जो चीते के समान दिखता था. और उसकी पीठ पर
पक्षी के समान चार पंख थे. इस पशु के चार सिर थे, और उसे शासन करने का
अधिकार दिया गया. 7 "उसके बाद, रात को मैंने अपने दर्शन में एक चौथे पशु
को देखा, जो भयंकर, डरावना और बहुत शक्तिशाली था. इसके बड़े-बड़े लोहे
के दांत थे. वह अपने शिकार को दबाकर खा जाता था और जो कुछ बच जाता
था, उसे पांव से कुचल डालता था. वह इसके पहले के सब पशुओं से भिन्न था,
और इसके दस सींग थे. 8 "जब मैं इन सींगों के बारे में सोच ही रहा था,
कि मैंने देखा उन सींगों के बीच एक और छोटा सींग था, और इस सींग के
निकलने से वहां पहले के तीन सींग अपने जड़ से उखड़ गए. मैंने देखा कि इस
सींग में मनुष्य के समान आंखें थी और एक मुंह भी था जो घमंड से भरी बातें
कर रहा था. 9 "जैसे कि मैंने देखा, "वहां सिंहासन रखे गए, और वह अति
प्राचीन अपने आसन पर बैठा. उसके कपड़े हिम के समान सफेद थे; उसके सिर
के बाल शुद्ध ऊन की तरह थे. उसका सिंहासन आग से ज्वालामय था, और
सिंहासन के पहियों से लपटें निकल रही थी. 10 उसके सामने से एक आग का
दरिया निकलकर बह रहा था. हजारों हजार लोग उसकी सेवा में लगे थे;
लाखों लोग उसके सामने खड़े थे. तब न्यायाधीश बैठ गये, और पुस्तकें खोली
गईं. 11 "वह सींग घमंड से भरी बातें कर रहा था इसलिये मैं उधर लगातार
देखता रहा. मैं तब तक देखता रहा जब तक कि उसका वध करके उसके शरीर
को नष्ट न कर दिया गया और धधकती आग में न फेंक दिया गया. 12 (दूसरे
पशुओं का अधिकार छीन लिया गया था, पर कुछ समय के लिये उन्हें प्राण
दान दिया गया था.) 13 "रात को मैंने अपने दर्शन में देखा कि मनुष्य के पुत्र
के समान कोई आकाश के बादलों के साथ आ रहा था. वह अति प्राचीन के
पास आया और उसे उनके सामने लाया गया. 14 उसे अधिकार, महिमा और
सर्वोच्च शक्ति दी गई; सब जाति और हर भाषा के लोग उसकी आराधना किए.
उसका प्रभुत्व चिरस्थायी है, जो कभी खत्म नहीं होगा, और उसका राज्य ऐसा
राज्य है, जो कभी नाश न होगा. 15 "मैं, दानिएल, मन में बहुत व्याकुल हुआ,
और जो दर्शन मैंने अपने मन में देखा, उससे मैं विचलित हो गया. 16 वहां खड़े
लोगों में से एक के पास मैं गया और उससे इन सारी बातों का अर्थ पूछा.
"उसने यह कहकर मुझे इन बातों का अर्थ बताया: 17 'चार बड़े पशु चार राजा
हैं, जिनका पृथ्वी पर उदय होगा. 18 पर सर्वोच्च परमेश्वर के पवित्र लोगों को
ही राज्य मिलेगा और वे उसे अपने अधिकार में सदाकाल तक रखेंगे—जी हां,
सदाकाल तक.' 19 "तब मेरे मन में उस चौथे पशु के अर्थ को जानने की इच्छा
हुई, जो दूसरे सारे पशुओं से भिन्न था और जो अपने लोहे के दांतों और कांसे के
पंजों के साथ बहुत डरावना था—वह पशु जो अपने शिकार को दबाकर खा
जाता था और बचे हुए भाग को अपने पांवों से कुचल डालता था. 20 मुझे इन
बातों का भी अर्थ जानने की इच्छा हुई; उसके सिर के दस सींग, और वह
दूसरा सींग, जिसके निकल आने से, वहां के पहले के तीन सींग गिर गए—यह
सींग जो दूसरे सीगों से ज्यादा रोबदार दिखता था और जिसकी आंखें और एक
मुंह था, जिससे वह घमंड से भरी बातें करता था. 21 जैसा कि मैंने देखा, कि
वह सींग पवित्र लोगों से युद्ध कर रहा था और उनको तब तक हराता रहा, 22
जब तक कि अति प्राचीन ने आकर सर्वोच्च परमेश्वर के पवित्र लोगों के पक्ष
में न्याय का फैसला न दे दिया, और वह समय आया, जब उन्होंने राज्य पर
अधिकार कर लिया. 23 "उसने मुझे यह अर्थ बताया: 'वह चौथा पशु एक
चौथा राज्य है, जो पृथ्वी पर प्रगट होगा. यह दूसरे सब राज्यों से भिन्न होगा.
यह सारी पृथ्वी को रौंदते और कुचलते हुए नाश कर डालेगा. 24 वे दस सींग
दस राजा हैं, जो इस राज्य से आएंगे. उनके बाद, एक दूसरा राजा आयेगा, जो
पहले के राजाओं से भिन्न होगा; वह तीन राजाओं को अपने अधीन कर लेगा.
25 वह सर्वोच्च परमेश्वर के विरुद्ध बोलेगा और उसके पवित्र लोगों को सताएगा
और ठहराए गये समयों और कानूनों को बदलने की कोशिश करेगा. पवित्र लोग
एक समय, समयों और आधा समय के लिए उसके अधीन कर दिए जाएंगे. 26
"'पर न्यायाधीश बैठेंगे, और उसकी शक्ति उससे छीन ली जाएगी और उसे
हमेशा के लिये पूरी तरह नाश कर दिया जाएगा. 27 तब सर्वोच्च परमेश्वर के
पवित्र लोगों को आकाश के नीचे के सब राज्यों की सत्ता, शक्ति और महानता
दे दी जाएगी. उसका राज्य सदाकाल तक बना रहनेवाला राज्य होगा, और सब
शासक उसकी आराधना करेंगे और उसकी बात मानेंगे.' 28 "यहां उस विषय
का अंत होता है. मैं, दानिएल, अपने विचारों से बहुत व्याकुल हो गया, और
मेरा चेहरा पीला पड़ गया, पर यह बात मैं अपने मन में ही रखी."

8 राजा बैलशत्सर के शासन के तीसरे साल में, मैं, दानिएल, पहले के दर्शन के
बाद एक और दर्शन देखा. 2 अपने दर्शन में, मैंने अपने आपको एलाम प्रदेश
के सूज़ा के किले में देखा; दर्शन में, मैं उलाई नहर के किनारे खड़ा था. 3 तब
मैंने आंख उठाकर देखा कि नहर के किनारे एक मेढ़ा खड़ा था, जिसके दो सींग
थे, और ये सींग लंबे थे. इनमें एक सींग दूसरे से बड़ा था और यह बड़ा सींग
दूसरे के बाद निकला था. 4 मैंने देखा कि यह मेढ़ा पश्चिम और उत्तर और
दक्षिण की ओर सिर से टक्कर मार रहा था. कोई भी पशु उसके सामने टिक न
सका, और ऐसा कोई नहीं था, जो उसकी शक्ति से बचा सकता. वह वही
करता गया, जो उसे उपयुक्त प्रतीत होता. उसने जैसा चाहा, वैसा किया और
बहुत बड़ा हो गया. 5 जब मैं इसके बारे में सोच रहा था, तब मैंने देखा कि
अचानक एक बकरा पश्चिम दिशा से आया, जिसकी आंखों के बीच एक
महत्वपूर्ण सींग था, और वह सारी पृथ्वी को पार करके, भूमि को बिना छुए
आया था. 6 यह बकरा उस दो सींगवाले मेढ़े की ओर आया, जिसे मैंने नहर के
किनारे खड़े देखा था और क्रोधित होकर उस मेढ़े को टक्कर मारा. 7 मैंने देखा
कि यह बकरा बहुत क्रोधित होकर उस मेढ़े के ऊपर हमला किया, और उसे
टक्कर मारते हुए उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया. मेढ़े में इतना बल ही न
था, कि वह उस बकरे का सामना कर सके; बकरे ने मेढ़े को गिराकर उसे
रौंद डाला, और इसकी शक्ति से मेढ़े को कोई बचा न सका. 8 बकरा बहुत
शक्तिशाली हो गया, पर उसके बलवंत हो जाने पर, उसका बड़ा सींग टूट गया,
और इसके स्थान पर चार महत्वपूर्ण सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर
बढ़ने लगे. 9 उनमें से एक से एक दूसरा सींग निकला, जिसकी शुरुआत छोटे
रूप में हुई पर शक्ति में यह दक्षिण, पूर्व और सुंदर देश की ओर बहुत बढ़ गया.
10 वह तब तक बढ़ा, जब तक कि वह आकाश के सेना के पास न पहुंच गया,
और उसने तारों की कुछ सेना को नीचे पृथ्वी पर फेंक दिया और उन्हें रौंद
डाला. 11 उसने अपने आपको याहवेह की सेना के सेनापति के जैसे बड़ा बना
लिया; उसने याहवेह को चढ़ाए जानेवाले प्रतिदिन के बलिदान को छीन लिया,
और उसके पवित्र स्थान को नीचे फेंकवा दिया. 12 विद्रोह के कारण, याहवेह के
लोग और प्रतिदिन का बलिदान उसे दे दिये गए. वह जो कुछ भी करता, उसमें
उन्नति करता गया, और सच्चाई को भूमि पर फेंक दिया गया. 13 तब मैंने एक
पवित्र जन को बोलते सुना, फिर एक दूसरे पवित्र जन ने पहले वाले से कहा,
"दर्शन को पूरा होने में कितना समय लगेगा—वह दर्शन जिसमें प्रतिदिन के
बलिदान, विद्रोह जो उजाड़ का कारण बनता है, पवित्र स्थान का समर्पण, और
याहवेह के लोगों का पांव तले रौंदा जाना दिखाया गया है?" 14 उसने मुझसे
कहा, "इसे पूरा होने में 2,300 सुबह और शाम लगेंगे; तब पवित्र स्थान फिर
से शुद्ध किया जाएगा." 15 जब मैं, दानिएल, दर्शन को देखकर, इसे समझने की
कोशिश कर रहा था, तभी मैंने देखा कि मेरे सामने एक जन खड़ा हुआ, जो
एक मनुष्य के जैसा दिख रहा था. 16 और मैं उलाई नहर से एक मनुष्य की

आवाज को पुकारता हुआ सुना, “हे गब्रिएल, इस व्यक्ति को उस दर्शन का अर्थ बताओ.” 17 जब वह उस जगह के पास आया, जहां मैं खड़ा था, तो मैं भयभीत हो गया और मुंह के बल गिरा. तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के पुत्र, इस बात को समझ लो कि इस दर्शन का संबंध अंत के समय से है.” 18 जब वह मुझसे बातें कर रहा था, तब मैं भूमि की ओर अपना चेहरा किए पड़ा था और गहरी नींद में था. तब उसने मुझे छुआ और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया. 19 उसने कहा: “मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं कि बाद में कोप के समय क्या होनेवाला है, क्योंकि यह दर्शन ठहराये गए अंत के समय से संबंध रखता है. 20 जो दो सींगवाला मेढ़ा तुमने देखा, वह मेदी और फारस राजाओं को दर्शाता है. 21 वह रूखा बकरा यावन का राजा है, और उसके आंखों के बीच का वह बड़ा सींग पहला राजा है. 22 वे चार सींग, जो एक टूटे हुए सींग के जगह निकल आए, वे चार राज्यों को दर्शाते हैं, जो उसी के देश से उदय होंगे पर उनकी शक्ति पहले के राज्य के समान न होगी. 23 “उनके शासन के बाद के समय में, जब विद्रोही अपनी पूरी दुष्टता पर होंगे, तब भयानक दिखनेवाला एक राजा का उदय होगा, जो षड्‍यंत्र रचने में माहिर होगा. 24 वह बहुत शक्तिशाली हो जाएगा, पर अपने स्वयं की शक्ति से नहीं. वह भयंकर विनाश करेगा और वह जो भी करेगा, उसमें सफल होगा. वह उनको नाश करेगा, जो शक्तिशाली, पवित्र लोग हैं. 25 वह उन्‍नति करने के लिये छल-प्रपंच का उपयोग करेगा, और वह अपने आपको बहुत बड़ा समझेगा. जब वे सुरक्षित महसूस करते होंगे, तब वह बहुतों को नाश कर देगा और राजकुमारों के राजकुमार के विरुद्ध उठ खड़ा होगा. तौभी वह नाश किया जाएगा, परंतु किसी मानव शक्ति के द्वारा नहीं. 26 “शाम और सबेरे का जो दर्शन तुम्हें दिया गया है, वह सत्य है, परंतु तुम इसे गुप्‍त रखो, क्योंकि यह बहुत आगे के भविष्य के संबंध में है.” 27 मैं, दानिएल, टूट गया था. मैं बहुत दिनों तक थका हुआ पड़ा रहा. तब मैं उठा और राजा के कामकाज में लग गया. मैं दर्शन से डर गया था; यह समझ के बाहर की बात थी.

9 (मेदिया वंश) के अहषवेरोष के पुत्र दारयावेश को बाबेलवासियों के राज्य का शासक ठहराया गया था. 2 उसके राज्य के पहले साल, मैं, दानिएल, ग्रंथों से, येरेमियाह भविष्यवक्ता को दिये गये याहवेह के वचन के अनुसार यह समझ गया कि येरूशलेम की निर्जनता सत्तर वर्षों तक रहेगी. 3 अतः मैं टाट का वस्त्र पहने, राख लगाये, उपवास करते हुए प्रभु परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना और याचना करने लगा. 4 मैंने याहवेह, अपने परमेश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की और अपने पापों को माना: “हे प्रभु, महान और अद्भुत परमेश्वर, आप उनके साथ अपने प्रेम की वाचा को बनाए रखते हैं, जो आपसे प्रेम करते और आपकी आज्ञाओं को मानते हैं, 5 हमने पाप और गलत काम किए हैं. हमने बुरे काम करके विद्रोह किया है; हमने आपकी आज्ञाओं और कानूनों को नहीं माना है. 6 हमने आपके उन सेवक भविष्यवक्ताओं की बातों को नहीं सुना, जिन्होंने आपके नाम से हमारे राजाओं, हमारे राजकुमारों और हमारे पूर्वजों, और देश के सारे लोगों से बातें की. 7 “हे प्रभु, आप धर्मी हैं, परंतु आज हम बहुत लज्जित हैं—यहूदिया के लोग, येरूशलेम के निवासी और सब इस्राएली, जो पास और दूर हैं, हमारे विश्वासघात के कारण आपने उन्हें सब देशों में तितर-बितर कर दिया है. 8 हे याहवेह, हम और हमारे राजा, हमारे राजकुमार और हमारे पूर्वज बहुत लज्जित हैं, क्योंकि हमने आपके विरुद्ध पाप किया है. 9 यद्यपि हमने आपके विरुद्ध विद्रोह किया है, तो भी हे प्रभु हमारे परमेश्वर, आप दयालु और क्षमा-शील हैं; 10 हमने याहवेह हमारे परमेश्वर की बातों को नहीं माना है या उन कानूनों का पालन नहीं किया है, जिसे उन्होंने अपने सेवक भविष्यवक्ताओं के ज़रिए हमें दिया था. 11 सारे इस्राएल ने आपके कानून का उल्लंघन किया है और आपकी बातों को मानने के बदले उससे दूर हट गये हैं. “इसलिये परमेश्वर के सेवक, मोशेह के कानून में लिखित शाप और ठहराया गया दंड हमारे ऊपर उंडेल दिया गया है, क्योंकि हमने आपके विरुद्ध पाप किया है. 12 आपने हमारे ऊपर बड़ी विपत्ति लाकर हमारे और हमारे शासकों के विरुद्ध कहे गये वचन को आपने पूरा किया है. आकाश के नीचे सारी पृथ्वी पर ऐसी विपत्ति और कहीं नहीं पड़ी, जैसी विपत्ति येरूशलेम में पड़ी है. 13 जैसा कि मोशेह के कानून में लिखा है, ये सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, फिर भी हमने न तो याहवेह हमारे परमेश्वर का अनुग्रह पाने का यत्न किया है, और न ही अपने पापों को छोड़कर आपकी सच्चाई पर ध्यान दिया है. 14 इसलिये याहवेह हमारे ऊपर विपत्ति लाने में नहीं हिचकिचाये, क्योंकि याहवेह हमारे परमेश्वर जो कुछ भी करते हैं, उन सब बातों में वे धर्मीपन दिखाते हैं; तौभी हमने उनकी बातों को नहीं माना.

15 “और अब, हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, जिसने अपने बलवान हाथ से अपने लोगों को मिस्र देश से निकाल लाया और अपने लिये एक नाम स्थापित किया, जो आज तक बना हुआ है, परंतु हमने पाप किया है, हमने दुष्टता ही की है. 16 हे प्रभु, आप अपने सारे धर्मी कामों को ध्यान में रखते हुए, अपने क्रोध और कोप को येरूशलेम शहर से दूर करिये, जो आपका शहर और आपका पवित्र पर्वत है. हमारे पापों और हमारे पूर्वजों के अपराधों ने येरूशलेम और आपके लोगों को उन सबके सामने उपेक्षा का पात्र बना दिया है, जो हमारे आस-पास रहते हैं. 17 “अब, हे हमारे परमेश्वर, अपने सेवक की प्रार्थना और विनती को सुनिये. हे प्रभु, अपने हित में, अपने उजड़े हुए पवित्र स्थान पर कृपादृष्टि कीजिये. 18 हे हमारे परमेश्वर, कान लगाकर सुनिये और आंख खोलकर उजड़े हुए उस शहर को देखिये, जो आपके नाम से जाना जाता है. हम इसलिये विनती नहीं कर रहे हैं कि हम धर्मी हैं, पर इसलिये कि आप बड़े दयालु हैं. 19 हे प्रभु, सुन लीजिए! हे प्रभु, क्षमा कर दीजिए! हे प्रभु, सुनिए और करिये! हे मेरे परमेश्वर, अपने ही हित में, विलंब न कीजिए, क्योंकि आपका शहर और आपके लोग आपके नाम से जाने जाते हैं.” 20 जब मैं अपने पाप और अपने इस्राएली लोगों के पाप को मानते हुए बात और प्रार्थना कर रहा था और याहवेह मेरे परमेश्वर के सामने उसके पवित्र पर्वत के लिये विनती कर रहा था— 21 जब मैं प्रार्थना में ही था, तब गब्रिएल, जिसे मैं पहले दर्शन में देख चुका था, शाम के बलिदान के समय तेज गति से मेरे पास आया. 22 उसने निर्देश देकर मुझसे कहा, “हे दानिएल, मैं तुम्हें अंतर्दृष्टि और समझने की शक्ति देने आया हूं. 23 जब तुमने प्रार्थना करना शुरू किया, तभी एक आज्ञा दी गई, जिसे मैं तुम्हें बताने आया हूं, क्योंकि तुम बहुत सम्माननीय व्यक्ति हो. इसलिये इन बातों पर विचार करके दर्शन को समझ लो: 24 “तुम्हारे लोगों और तुम्हारे पवित्र शहर के लिए सत्तर ‘सात’ ठहराए गये हैं कि वे अपराध करना छोड़ दें, पापों का अंत कर दें, दुष्टता का प्रायश्चित करें, अपने में सदाकाल का धर्मीपन लाएं, दर्शन और भविष्यवाणी की बातों पर मुहर लगाई जाए और परम पवित्र स्थान का अभिषेक किया जाए. 25 “इस बात को जानो और समझ लो: येरूशलेम के फिर से स्थापित और पुनर्निर्माण के लिये वचन के निकलने से लेकर अभिषिक्त जन, शासक के आने तक सात ‘सात’ और बासठ ‘सात’ का समय ठहराया गया है. इसका पुनर्निर्माण गलियों और एक खाई के साथ होगा, किंतु यह कठिन समय में होगा. 26 बासठ ‘सात’ के बाद अभिषिक्त जन मार डाला जाएगा, और कुछ न होगा. शासन करनेवाले के लोग आकर शहर और पवित्र स्थान को नष्ट कर देंगे. बाढ़ के समान अंत आ जाएगा: अंत तक युद्ध होता रहेगा, और उजाड़ का निर्णय लिया जा चुका है. 27 वह बहुतों के साथ एक ‘सात’ के लिये एक वाचा की पुष्टि करेगा. ‘सात’ के बीच में ही, वह बलिदान और भेंट का अंत कर देगा. और मंदिर में एक विनाशकारी घृणित वस्तु को स्थापित करेगा, जो उजाड़ का कारण होगा. यह तब तक होता रहेगा, जब तक कि ठहराये गए समय के अंत में उस पर यह विनाश न उंडेल दिया जाए.”

10 फारस के राजा कोरेश के शासनकाल के तीसरे साल में दानिएल (जिसे बैलशत्सर कहा जाता था) पर एक संदेश प्रकाशित किया गया. यह संदेश सत्य था और इसका संबंध एक बड़े युद्ध से था. संदेश की समझ उसके पास एक दर्शन में आई. 2 उस समय, मैं, दानिएल, तीन सप्ताह तक शोक मनाता रहा. 3 जब तक तीन सप्ताह पूरे न हो गए, तब तक मैंने कोई स्वादिष्ट भोजन न किया; न मांस खाया, न दाखमधु को मुंह से लगाया, और न हीं किसी प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री का उपयोग किया. 4 पहले माह के चौबीसवें दिन, जब मैं महा नदी, हिद्देकेल के किनारे खड़ा था, 5 तब मैंने देखा कि वहां एक व्यक्ति सन का वस्त्र पहने, कमर पर उपहाज़ देश का शुद्ध सोने का पट्टा बांधे खड़ा था. 6 उसका शरीर ही फ़िरोजा के समान, उसका चेहरा बिजली के समान, उसकी आंखें जलती मशालो के समान, उसकी भुजा और पैर चमकते कांसे के किरण के समान, और उसकी आवाज एक जनसमूह की समान थी. 7 सिर्फ मुझे, दानिएल को, ही वह दर्शन दिखाई दे रहा था; जो लोग मेरे साथ थे, उन्हें वह नहीं दिखा, परंतु उन पर ऐसा आतंक छा गया कि वे वहां से भागकर छिप गए. 8 इसलिये मैं अकेला रह गया, और इस बड़े दर्शन को टकटकी लगाकर देखता रहा; मुझमें कुछ बल न रहा, मेरा चेहरा पूरी तरह पीला पड़ गया और मैं निस्सहाय हो गया. 9 तब मैंने उसे कहते हुए सुना, और जैसे ही मैंने उसकी बातों को सुनी, मैं भूमि पर औंधे मुंह पड़ा गहरी नींद में चला गया. 10 तब किसी के एक हाथ ने मुझे छुआ और मेरे थरथराते शरीर को मेरे हाथों और घुटनों के बल खड़ा कर दिया. 11 उसने कहा, "हे दानिएल, तुम जो बहुत सम्मानीय व्यक्ति हो, जो बातें मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं, उन बातों पर ध्यानपूर्वक विचार करो, और अब खड़े हो जाओ, क्योंकि मुझे तुम्हारे पास भेजा गया है." जब उसने मुझसे यह कहा, मैं कांपता हुआ खड़ा हो गया. 12 तब उसने मुझसे आगे कहा, "हे दानिएल, डरो मत. पहले ही दिन से, जब तुमने अपना मन, समझ प्राप्त करने और अपने परमेश्वर के सामने अपने आपको नम्र करने के लिये लगाया, तब से तुम्हारी बातें सुनी गईं, और इसी के प्रत्युत्तर में, मैं यहां आया हूं. 13 परंतु फारस राज्य का राजकुमार इक्कीस दिन तक मेरा प्रतिरोध करता रहा. तब मुख्य राजकुमारों में से एक, मिखाएल, मेरी सहायता करने आया, क्योंकि मैं वहां फारस के राजा के पास रोका गया था. 14 अब मैं तुम्हें वह बातें बताने आया हूं, जो भविष्य में तुम्हारे लोगों के साथ होनेवाली है, क्योंकि इस दर्शन का संबंध आनेवाले एक समय से है." 15 जब वह मुझसे यह कह रहा था, तो मैं ज़मीन की ओर चेहरा झुकाकर खड़ा रहा और कुछ बोल न सका. 16 तब कोई जो एक मनुष्य की तरह दिख रहा था, मेरे होंठों को छुआ, और मेरा मुंह खुल गया और मैं बातें करने लगा. मैंने उससे कहा जो मेरे सामने खड़ा था, "हे मेरे प्रभु, उस दर्शन के कारण, मैं पीड़ा से भर गया हूं, और मैं बहुत कमजोर महसूस कर रहा हूं. 17 हे मेरे प्रभु, मैं, आपका सेवक, मैं आपसे कैसे बात कर सकता हूं? मुझमें बल नहीं रहा और मैं बड़ी कठिनाई से सांस ले पा रहा हूं." 18 तब वह जो एक मनुष्य की तरह दिख रहा था, फिर से मुझे छुआ और मुझे बल दिया. 19 उसने कहा, "मत डरो, तुम बहुत सम्मानीय व्यक्ति हो, तुम्हें शांति मिले! अब मजबूत रहो; दृढ़ रहो." जब उसने मुझसे बात की, तब मुझे बल मिला और मैंने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु, मुझसे बातें करिये, क्योंकि आपने मुझे बल दिया है." 20 इसलिये उसने कहा, "क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास क्यों आया हूं? बहुत जल्दी, मैं लौटकर फारस के राजकुमार से लड़ाई करनेवाला हूं, और जब मैं जाऊंगा, तब यावन का राजकुमार आयेगा; 21 पर पहले मैं तुम्हें यह बताऊंगा कि सत्य के किताब में क्या लिखा है. (तुम्हारे राजकुमार, मिखाएल को छोड़ और कोई भी इनसे लड़ने के लिये मेरी मदद नहीं करता.

11 मादी वंश के राजा दारयावेश के शासन के पहले साल में, मैं उसको समर्थन देने और उसके बचाव के लिए खड़ा हुआ.) 2 "अब, मैं तुमको सच्ची बात बताता हूं: फारस में तीन और राजाओं का उदय होगा, और उसके बाद एक चौथा राजा होगा, जो दूसरे सब राजाओं से बहुत अधिक धनी होगा. जब वह अपने धन से शक्ति प्राप्त कर लेगा, तब वह सब लोगों को यावन राज्य के विरुद्ध भड़काएगा. 3 तब एक पराक्रमी राजा का उदय होगा, जो बड़ी शक्ति से राज्य करेगा और उसे जो अच्छा लगेगा, वही करेगा. 4 उसके उदय होने के बाद, उसका राज्य टूट जाएगा और चारों दिशाओं में बंट जाएगा. यह उसके संतानों के पास नहीं जाएगा और न ही उसके शक्ति का प्रभाव उस राज्य में होगा, क्योंकि उसका राज्य उससे छीनकर दूसरों को दे दिया जाएगा. 5 "दक्षिण का राजा शक्तिशाली हो जाएगा, परंतु उसका ही एक सेनापति उससे भी ज्यादा शक्तिशाली हो जाएगा और अपने स्वयं के राज्य पर बड़े शक्ति से शासन करेगा. 6 कुछ सालों के बाद, वे सहयोगी बन जाएंगे. दक्षिण के राजा की बेटी उत्तर के राजा के पास एक संधि करने के लिये जाएगी, परंतु उसके पास उसके राज्य की शक्ति न रहेगी, और न ही उत्तर के राजा के पास कोई शक्ति बचेगी. उन दिनों, दक्षिण के राजा की बेटी को उसके शाही रक्षकों और उसके पिता और उसकी मदद करनेवाले सहित धोखा दिया जाएगा. 7 "उसके परिवार का एक जन उसकी जगह में उठ खड़ा होगा. वह उत्तर के राजा के सेना पर आक्रमण करेगा और उसके किले में प्रवेश करेगा; वह उनसे लड़ेगा और विजयी होगा. 8 वह उनके देवताओं को, उनके धातु की मूर्तियों को और उनके चांदी एवं सोने के बहुमूल्य पात्रों को ज़ब्त कर लेगा और अपने साथ मिस्र देश ले जाएगा. कुछ वर्षों तक, वह उत्तर के राजा को अकेला छोड़ देगा. 9 तब उत्तर का राजा दक्षिण के राजा की सीमा का अतिक्रमण करेगा परंतु अपने ही देश को लौट जाएगा. 10 उसके बेटे युद्ध की तैयारी करेंगे और एक बड़ी सेना इकट्ठा करेंगे, जो न रोके जा सकनेवाले बाढ़ के समान तेजी से आगे बढ़ेंगे और लड़ाई को उसके किले तक ले जाएंगे. 11 "तब दक्षिण का राजा क्रोधित होकर आगे बढ़ेगा और वह उत्तर के राजा से लड़ाई करेगा, और उत्तर का राजा एक बड़ी सेना खड़ी करेगा, परंतु वह हार जाएगा. 12 जब इस बड़ी सेना को हरा दिया जाएगा, तब दक्षिण के राजा मन घमंड से भर जाएगा और कई हजार लोगों को मार डालेगा, तौभी वह विजयी बना न रह सकेगा. 13 क्योंकि उत्तर का राजा एक दूसरी सेना खड़ी कर लेगा, जो उसके पहले की सेना से बड़ी होगी; और कई सालों के बाद, वह पूरी तैयारी के साथ एक बड़ी सेना को लेकर आगे बढ़ेगा. 14 "उन दिनों में, बहुत से लोग दक्षिण के राजा के विरुद्ध उठ खड़े होंगे. तुम्हारे अपने लोगों के बीच जो हिंसक प्रवृत्ति के हैं, वे इस दर्शन के पूर्ति में विद्रोह करेंगे, किंतु वे सफल न होंगे. 15 तब उत्तर का राजा आकर सैनिकों का घेरा डालेगा और एक किला वाले शहर पर कब्जा कर लेगा. दक्षिण की सेना में विरोध करने की शक्ति न होगी, और तो और उनके सबसे अच्छे सैन्य-दलों के पास भी सामना करने की शक्ति न होगी. 16 आक्रमणकारी जैसा चाहेगा, वैसा करेगा; कोई भी उसके सामने ठहर न सकेगा. वह अपने आपको उस सुंदर देश में स्थापित करेगा और उसके पास उसे नाश करने की शक्ति होगी. 17 वह अपने सारे राज्य की शक्ति के साथ आने की ठान लेगा और वह दक्षिण के राजा के साथ एक संधि करेगा. और उसके राज्य को जीतने के लिये उस राजा को अपनी एक बेटी विवाह में देगा, परंतु उसकी योजना सफल न होगी या उससे उसे कोई मदद नहीं मिलेगी. 18 तब वह अपना ध्यान समुद्रतटों पर लगाएगा और उनमें से बहुतों को अपने अधिकार में कर लेगा, परंतु एक सेनापति उसके अहंकार का अंत कर देगा और उसके अहंकार के अनुसार उससे बदला लेगा. 19 इसके बाद, वह अपने ही देश के किलों की ओर मुंह मोड़ेगा, किंतु वह लड़खड़ा कर गिरेगा और उसका अस्तित्व ही मिट जाएगा. 20 "तब जो

उसकी जगह लेगा, वह राजकीय वैभव को बनाए रखने के लिये कर इकट्ठा
करनेवाला भेजेगा. फिर भी, कुछ ही सालों में, वह नाश हो जाएगा, पर उसका
विनाश क्रोध में या युद्ध में न होगा. 21 "उसके जगह को लेनेवाला एक तिरस्कृत
व्यक्ति होगा, जिसे राजसत्ता से सम्मान न मिला होगा. जब लोग सुरक्षित महसूस
कर रहे होंगे, तभी वह राज्य पर आक्रमण करेगा और षड़्यंत्र करके उसे अपने
कब्जे में कर लेगा. 22 तब एक बड़ी सेना उसके सामने से पलायन कर जाएगी;
इसे और वाचा के एक राजकुमार को नष्ट कर दिया जाएगा. 23 उस राजकुमार
के साथ एक समझौता होने के बाद, वह छल करेगा, और सिर्फ थोड़े ही लोगों
के साथ वह शक्तिशाली हो जाएगा. 24 जब धनी राज्य सुरक्षित महसूस कर
रहे होंगे, तभी वह उन पर आक्रमण करेगा और ऐसी सफलता प्राप्त करेगा,
जैसी न तो उसके बाप-दादों और न ही उसके पूर्वजों ने प्राप्त की थी. वह
लूटी और छीनी गई चीज़ों और संपत्ति को अपने अनुयायियों के बीच बांट
देगा. वह किलों को जीतने के लिये षड़्यंत्र करेगा—पर सिर्फ थोड़े समय के
लिये. 25 "एक बड़ी सेना लेकर वह दक्षिण के राजा के विरुद्ध अपनी शक्ति एवं
साहस लगा देगा. दक्षिण का राजा भी एक बड़ी और शक्तिशाली सेना लेकर युद्ध
करेगा, किंतु उसके विरुद्ध रचे गये षड़्यंत्र के कारण, वह ठहर न सकेगा. 26 जो
राजा के द्वारा दिये गये भोजन को खाया करते थे, वे ही उसे नाश करने की
कोशिश करेंगे; उसकी सेना भगा दी जाएगी, और बहुत सारे लोग युद्ध में मारे
जाएंगे. 27 दोनों ही राजा अपने मन में बुरी बातें रखकर एक ही मेज़ पर बैठेंगे
और एक दूसरे से झूठ बोलेंगे, जिससे कोई फायदा न होगा, क्योंकि ठहराए गये
समय पर अंत आ जाएगा. 28 उत्तर का राजा बहुत संपत्ति के साथ अपने देश
को लौट जाएगा, परंतु उसका मन पवित्र वाचा के विरुद्ध लगा रहेगा. वह इसके
विरुद्ध कार्यवाही करेगा और तब वह अपने देश लौट जाएगा. 29 "निर्धारित
समय पर वह फिर से दक्षिण पर आक्रमण करेगा, परंतु इस समय परिणाम पहले
से अलग होगा. 30 पश्चिमी समुद्रतट के जहाज़ उसका विरोध करेंगे, और
वह हिम्मत हार जाएगा. वह लौटेगा और पवित्र वाचा के विरुद्ध अपना गुस्सा
दिखाएगा. वह लौटेगा और उन पर कृपा करेगा, जो पवित्र वाचा को छोड़ देंगे.
31 "उसकी सशस्त्र सेनायें मंदिर के किले को अपवित्र करने के लिये आगे बढ़ेंगी
और प्रतिदिन चढ़ाये जानेवाला बलिदान बंद कर दिया जाएगा. तब वे घृणित
वस्तु की स्थापना करेंगे, जो उजाड़ का कारण बनता है. 32 लुभावने शब्दों
से वह उनको भ्रष्ट करेगा, जो वाचा को तोड़ दिये होंगे, पर जो लोग अपने
परमेश्वर को जानते हैं, वे दृढ़ता से उसका विरोध करेंगे. 33 "वे जो बुद्धिमान हैं,
बहुतों को समझाएंगे, हालांकि कुछ समय के लिये, वे तलवार से मारे जाएंगे या
जला दिये जाएंगे या पकड़ लिये जाएंगे या लूट लिये जाएंगे. 34 जब वे गिरेंगे,
तो उन्हें बहुत थोड़ी मदद मिलेगी, और बहुत लोग जो ईमानदार नहीं हैं, उनमें
शामिल हो जाएंगे. 35 बुद्धिमान लोगों में से कुछ लड़खड़ाएंगे, ताकि अंत
समय के आने तक उन्हें स्वच्छ, शुद्ध और दाग रहित किया जाए, क्योंकि अंत
निर्धारित समय पर होगा. 36 "राजा जैसा चाहेगा, वैसा करेगा. वह अपने
आपको सारे देवताओं से ऊंचा और बड़ा करेगा और देवताओं के परमेश्वर के
विरुद्ध अनसुनी बातें कहेगा. वह तब तक सफल होता रहेगा, जब तक कि कोप
का समय पूरा न हो जाएगा; क्योंकि जो ठहराया गया है, वह अवश्य पूरा होगा.
37 वह न तो अपने पूर्वजों के देवताओं के प्रति कोई सम्मान दिखाएगा और न ही
वह स्त्रियों के इच्छा की चिंता करेगा, और न किसी देवता का सम्मान करेगा,
पर वह अपने आपको उन सबसे ऊपर ठहराएगा. 38 उनके बदले, वह किलों
के एक देवता को सम्मानित करेगा; एक ऐसा देवता, जिससे उसके पूर्वज भी
अनजान थे. वह उस देवता का सम्मान सोना, चांदी, बहुमूल्य रत्नों तथा कीमती
उपहारों से करेगा. 39 वह एक विदेशी देवता की सहायता से सबसे शक्तिशाली
किलों पर आक्रमण करेगा और वह उन्हें बहुत सम्मानित करेगा, जो उसे राजा-
स्वरूप स्वीकार करेंगे. वह उन्हें बहुत से लोगों के ऊपर शासक नियुक्त करेगा
और एक दाम लेकर भूमि को वितरित करेगा. 40 "अंत के समय में, दक्षिण का
राजा उसको युद्ध में लगाये रखेगा, और उत्तर का राजा भी रथों, घुड़सवारों और
एक बड़े पानी जहाज़ के बेड़ों के साथ उस पर आक्रमण करेगा. वह बहुत से
देशों पर आक्रमण करेगा और बाढ़ के पानी की तरह उनमें से होता हुआ निकल
जाएगा. 41 वह सुंदर देश पर भी आक्रमण करेगा. बहुत से देशों का अंत हो
जाएगा, परंतु एदोम, मोआब और अम्मोन के अगुओं को उसके हाथ से बचाया
जाएगा. 42 वह कई देशों पर अपनी शक्ति का विस्तार करेगा; मिस्र देश भी न
बचेगा. 43 वह मिस्र देश के सोने और चांदी के खजानों और सब बहुमूल्य
चीज़ों को अपने अधीन कर लेगा, और लिबिया तथा कूश देशवासी उसकी
अधीनता स्वीकार कर लेंगे. 44 किंतु पूर्व और उत्तर दिशाओं से आनेवाले
समाचार को सुनकर वह बेचैन हो जाएगा, और बहुत क्रोधित होकर वह बहुतों
का नाश करने और उनका अस्तित्व मिटाने को निकल पड़ेगा. 45 वह अपना
राजकीय तंबू समुद्र और सुंदर पवित्र पर्वत के बीच खड़ा करेगा. तो भी उसका
अंत हो जाएगा, और कोई भी उसकी सहायता करने नहीं आएगा.

12 "उस समय मिखाएल, महान राजकुमार का उदय होगा, जो तुम्हारे
लोगों की रक्षा करता है. तब ऐसी विपत्ति का समय होगा, जैसे जनताओं
के उत्पन्न होने से लेकर अब तक कभी हुआ न होगा. पर उस समय तुम्हारे
लोगों में से हर वह व्यक्ति बचाया जाएगा, जिसका नाम पुस्तक में लिखा हुआ
पाया जाएगा. 2 मरे हुए लोगों के समूह जो भूमि में दफनाए गये हैं, वे जी उठेंगे:
कुछ तो अनंत जीवन के लिये, तथा अन्य लज्जा और अनंत अपमान के लिये.
3 जो बुद्धिमान हैं, वे आकाश के ज्योति के समान चमकेंगे, और जो बहुतों को
धर्मीपन की ओर ले जाते हैं, वे तारों के समान सर्वदा चमकते रहेंगे. 4 परंतु हे
दानिएल, तुम अंत समय के आते तक इस पुस्तक की बातों पर मुहर लगाकर
इसे बंद रखो. बहुत से लोग ज्ञान बढ़ाने के लिये इधर-उधर जाएंगे." 5 तब मैं,
दानिएल ने देखा कि वहां दो और व्यक्ति खड़े थे, एक नदी के इस किनारे पर
और एक नदी के उस किनारे पर. 6 उनमें से एक ने मलमल कपड़े पहने उस
व्यक्ति से कहा, जो नदी के पानी के ऊपर था, "इसके पहले कि ये अचंभित
करनेवाली बातें पूरी हों, और कितना समय लगेगा?" 7 वह व्यक्ति जो मलमल
के कपड़े पहना था और नदी के दानी के ऊपर था, उसने अपना दहिना हाथ
और अपना बायां हाथ आकाश की ओर उठाया और मैंने सुना कि वह सदा
जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर यह कह रहा था, "यह एक समय, समयों
और आधे समय के लिये होगा. जब आखिर में पवित्र लोगों की शक्ति खत्म
कर दी जाएगी, तब ये सारी बातें पूरी हो जाएंगी." 8 मैंने ये बातें सुनी, पर न
समझा. इसलिये मैंने पूछा, "हे मेरे प्रभु, इन सब बातों का परिणाम क्या होगा?"
9 उसने उत्तर दिया, "हे दानिएल, तुम जाओ, क्योंकि अंत समय आने तक के
लिए इन बातों पर मुहर लगाकर इन्हें बंद कर दिया गया है. 10 बहुत से लोग
शुद्ध, दाग रहित और स्वच्छ किए जाएंगे; किंतु वे जो दुष्ट हैं, वे दुष्टता ही करते
रहेंगे. दुष्टों में से कोई भी ये बातें न समझेगा, परंतु जो बुद्धिमान हैं, वे समझेंगे.
11 "जब से प्रतिदिन का बलिदान बंद कर दिया जाएगा और उजाड़नेवाली
घृणित वस्तु स्थापित की जाएगी, तब से 1,290 दिनों का समय होगा. 12
धन्य है वह, जो इंतजार करता है और 1,335 दिनों के अंत तक पहुंचता है.
13 "जहां तक तुम्हारा सवाल है, तुम अंत के आने तक जाओ. तुम विश्राम
करोगे, और उन दिनों के अंत में, तुम अपना निर्धारित उत्तराधिकार पाने के
लिए खड़े होगे."

होशे

1 याहवेह का वह संदेश, जो बएरी के पुत्र होशिया के पास यहूदिया के राजा
उज्जियाह, योथाम, आहाज़ और हिज़किय्याह के शासनकाल में, और
इस्राएल के राजा यहोआश के पुत्र यरोबोअम के शासनकाल में आया: 2 अपनी
बात को शुरू करते हुए याहवेह ने होशिया से यह कहा, “जाओ, और किसी
वेश्या से शादी कर लो और उससे बच्चे पैदा करो, क्योंकि एक व्यभिचारी पत्नी
की तरह यह देश याहवेह से विश्वासघात करने का अपराधी है.” 3 अतः
होशेआ ने दिबलायिम की बेटी गोमर से शादी की, और वह गर्भवती हुई और
उसने एक पुत्र को जन्म दिया. 4 तब याहवेह ने होशेआ से कहा, “उसका नाम
येज्रील रखो, क्योंकि शीघ्र ही येज्रील में किए नरसंहार के लिये, मैं येहू के
घराने को दंड दूंगा, और मैं इस्राएल के राज्य का अंत कर दूंगा. 5 उस दिन मैं
येज्रील के घाटी में इस्राएल की सैन्य-शक्ति का अंत कर दूंगा.” 6 गोमेर फिर
गर्भवती हुई और उसने एक बेटी को जन्म दिया. तब याहवेह ने होशेआ को
कहा, “तुम उसका नाम लो-रूहामाह रखो, क्योंकि अब मैं इस्राएल के प्रति कोई
प्रेम नहीं दिखाऊंगा, और उन्हें किसी प्रकार से क्षमा नहीं करूंगा. 7 किंतु मैं
यहूदिया पर अपना प्रेम दिखाऊंगा; और उन्हें बचाऊंगा—यह बचाव न तो
धनुष, तलवार या युद्ध के द्वारा, या घोड़ों और घुड़सवारों के द्वारा होगा, पर मैं,
याहवेह उनका परमेश्वर उनको बचाऊंगा.” 8 गोमेर ने लो-रूहामाह का दूध
छुड़ाने के बाद एक और बेटे को जन्म दिया. 9 तब याहवेह ने कहा, “उसका
नाम लो-अम्मी रखो, क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर
नहीं हूं. 10 “फिर भी इस्राएलियों की संख्या समुद्रतट के बालू के जैसे होगी,
जिन्हें न तो नापा जा सकता है और न ही गिना जा सकता है. जिस स्थान पर
उनसे यह कहा गया था, ‘तुम मेरी प्रजा नहीं हो,’ उसी स्थान पर वे ‘जीवित
परमेश्वर की संतान’ घोषित किए जाएंगे. 11 यहूदिया के लोग और इस्राएल के
लोग एक साथ इकट्ठा होंगे; वे मिलकर अपने लिए एक नेता ठहराएंगे और वे
देश से निकल आएंगे, क्योंकि येज्रील का वह दिन एक महान दिन होगा.

2 “अपने भाइयों से कहो, ‘मेरे लोग,’ और अपनी बहनों से कहो, ‘मेरे प्रिय
लोग.’ 2 “अपनी माता को डांटो, उसे डांटो, क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं
है, और मैं उसका पति नहीं हूं. वह अपने चेहरे से व्यभिचारी भावना और अपने
स्तनों के बीच से विश्वासघात को दूर करे. 3 अन्यथा मैं उसके कपड़े उतारकर
उसे ऐसी नंगी कर दूंगा जैसे वह अपने जन्म के समय थी; मैं उसे मरूस्थल के
समान बना दूंगा, उसे एक सूखी भूमि में बदल दूंगा, और उसे प्यास से मारूंगा.
4 मैं उसके बच्चों के प्रति प्रेम नहीं दिखाऊंगा, क्योंकि वे व्यभिचार से पैदा हुए
बच्चे हैं. 5 उनकी माता ने विश्वासघात किया है और वे कलंक से उसके गर्भ में
पड़े. उसने कहा, ‘मैं अपने प्रेमियों के पीछे जाऊंगी, जो मुझे मेरा भोजन-पानी,
मेरा ऊनी और सन के कपड़े, मेरा जैतून तेल और मेरा दाखमधु देते हैं.’ 6
इसलिये मैं उसके रास्ते को कंटीली झाड़ियों से बंद कर दूंगा; मैं उसके आगे
दीवार खड़ी कर दूंगा, जिससे उसे उसका रास्ता नहीं मिलेगा. 7 वह अपने
प्रेमियों का पीछा करेगी पर उन्हें पकड़ नहीं सकेगी; वह उन्हें खोजेगी पर वे
उसे नहीं मिलेंगे. तब वह कहेगी, ‘मैं पहले के समान अपने पति के पास लौट
जाऊंगी, क्योंकि तब मेरी स्थिति अब की अपेक्षा बेहतर थी.’ 8 उसने इस बात
को नहीं माना है कि वह मैं ही था, जिसने उसे अन्न, नई दाखमधु और तेल
दिया था, जिसने उस पर खुले हाथों से सोना-चांदी लुटाया था— जिसका
उपयोग उन्होंने बाल देवता के लिए किया. 9 “इसलिये मैं अपने अन्न को ले
लूंगा जब वह पक जाएगा, और अपनी नई दाखमधु को ले लूंगा जब वह तैयार
हो जाएगा. मैं अपने ऊन और सन के कपड़े वापस ले लूंगा, जिसे मैंने उसे उसके
नंगे तन को ढांपने के लिये दिये थे. 10 इसलिये अब मैं उसकी अश्लीलता को
उसके प्रेमियों के सामने प्रकट करूंगा; कोई भी उसे मेरे हाथ से छुड़ा न सकेगा.
11 मैं उसके सब उत्सवों को बंद कर दूंगा: उसके वार्षिक त्योहार, उसके नये
चांद का उत्सव, उसके शब्बाथ का उत्सव—उसके सब निर्धारित त्योहारों को
बंद कर दूंगा. 12 मैं उसके अंगूर की लताओं और अंजीर के पेड़ों को नष्ट कर
दूंगा, जिनके बारे में वह कहती है कि यह मेरी मजदूरी है जिसे मेरे प्रेमियों ने
दिया था; मैं उनको एक झाड़ी बना दूंगा, और जंगली जानवर उन्हें खा जाएंगे.
13 मैं उसे उस बात के लिये दंड दूंगा कि उसने बाल देवताओं के लिये धूप
जलाया; वह अपने आपको नथनी और गहनों से सजाती, और अपने प्रेमियों के
पीछे जाती थी, पर मुझको वह भूल गई,” याहवेह की घोषणा है. 14 “इसलिये
मैं उसे ललचाऊंगा; मैं उसे निर्जन जगह में ले जाऊंगा और उससे कोमलता से
बात करूंगा. 15 वहां मैं उसे उसकी अंगूर की बारियां लौटा दूंगा, और आकोर
घाटी को आशा का द्वार बना दूंगा. वहां वह ऐसे जवाब देगी जैसे वह अपने
जवानी के दिनों में दिया करती थी, अर्थात् जैसे वह मिस्र देश से निकलकर आने
के समय दिया करती थी.” 16 याहवेह घोषणा करते हैं, “उस दिन, तुम मुझे
‘मेरा पति’ कहोगी; तुम मुझे फिर कभी अपना मालिक नहीं कहोगी. 17 मैं
उसके मुंह से बाल देवताओं का नाम मिटा दूंगा; उनका नाम फिर कभी न लिया
जाएगा. 18 उस दिन मैं उनके लिये जंगली जानवरों, आकाश के पक्षियों और
भूमि पर रेंगनेवाले जंतुओं के साथ एक वाचा बांधूंगा. धनुष और तलवार और
युद्ध को मैं देश से समाप्त कर दूंगा, ताकि लोग निडर होकर आराम करें. 19 मैं
तुम्हें सदा के लिए विवाह का वचन दूंगा; मैं तुमको धर्मीपन और सच्चाई, प्रेम
और करुणा के साथ विवाह का वचन दूंगा. 20 मैं तुम्हें विश्वासयोग्यता के साथ
विवाह का वचन दूंगा, और तुम याहवेह को जान जाओगी.” 21 याहवेह की
घोषणा है, “उस दिन मैं जवाब दूंगा, मैं आकाशमंडल को जवाब दूंगा, और वे
पृथ्वी को जवाब देंगे; 22 और पृथ्वी अन्न, नई दाखमधु और जैतून तेल को
जवाब देगी, और वे येज्रील को जवाब देंगे. 23 तब मैं स्वयं उस देश में उसका
रोपण करूंगा; मैं उसे अपना प्रेम दिखाऊंगा, जिसे मैं अपना प्रिय नहीं कहता, वे
जो मेरे लोग नहीं कहे जाते, उन्हें मैं कहूंगा, ‘तुम मेरे लोग हो’; और वे कहेंगे,
‘आप हमारे परमेश्वर हैं.’”

3 याहवेह ने मुझसे कहा, “जाओ, और अपना प्रेम अपनी पत्नी को फिर से
दिखाओ, यद्यपि उसे कोई और पुरुष प्रेम करता है और वह एक व्यभिचारिणी
है. उससे ऐसा प्रेम करो, जैसा याहवेह इस्राएलियों से प्रेम करते हैं, यद्यपि वे
दूसरे देवताओं की ओर फिरकर पवित्र किशमिश की बट्टी से प्रेम रखते हैं.” 2
इसलिये मैंने उसे पन्द्रह शेकेल चांदी और लगभग एक होमेर और एक लेथेक जौ
में खरीद लिया. 3 तब मैंने उससे कहा, “तुम्हें मेरे साथ कई दिनों तक रहना है;
तुम्हें वेश्या नहीं बनना है या किसी भी पुरुष के साथ अंतरंग संबंध नहीं बनाना
है, और मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही व्यवहार करूंगा.” 4 क्योंकि इस्राएली लोग
बहुत दिनों तक बिना राजा या राजकुमार, बिना बलि या पवित्र पत्थर, बिना
एफ़ोद या गृह-देवताओं के रहेंगे. 5 उसके बाद इस्राएली लोग लौटेंगे और
याहवेह, अपने परमेश्वर तथा दावीद, अपने राजा की खोज करेंगे. वे आखिरी
के दिनों में कांपते हुए याहवेह के पास और उसके आशीषों के लिये आएंगे.

4 हे इस्राएली लोगों, याहवेह की बात को सुनो, क्योंकि तुम जो इस देश
में रहते हो, तुम्हारे ऊपर याहवेह एक दोष लगानेवाला है: “इस देश के
निवासियों में परमेश्वर के प्रति न तो विश्वासयोग्यता, न प्रेम, और न ही परमेश्वर
को माननेवाली बात है. 2 यहां सिर्फ शाप, झूठ और हत्या, चोरी, और व्यभिचार
है; वे सब सीमाओं को लांघ जाते हैं, और खून के बदले खून बहाते हैं. 3 यही
कारण है कि यह देश सूख जाता है, इसमें सब रहनेवाले बेकार हो जाते हैं; भूमि
के जानवर, आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां नष्ट हो जाती हैं. 4 “पर

कोई भी दोष न लगाए, कोई भी दूसरे पर आरोप न लगाए, क्योंकि तुम्हारे लोग
उनके समान हैं जो पुरोहित के ऊपर दोष लगाते हैं. 5 तुम दिन-रात ठोकर खाते
हो, और तुम्हारे साथ भविष्यवक्ता भी ठोकर खाते हैं. इसलिये मैं तुम्हारी माता
को नाश कर दूंगा— 6 मेरे लोग ज्ञान की कमी के कारण नाश होते हैं. “क्योंकि
तुमने ज्ञान को अस्वीकार किया है, मैं भी तुम्हें पुरोहित के रूप में अस्वीकार
करता हूं; क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर के कानून की उपेक्षा की है, मैं भी
तुम्हारे बच्चों की उपेक्षा करूंगा. 7 जितने ज्यादा पुरोहित थे, उतने ज्यादा
उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया; उन्होंने अपने महिमामय परमेश्वर के बदले में
कलंकित चीज़ को अपना लिया. 8 मेरे लोगों के पाप इन पुरोहितों के भोजन
बन गए हैं और वे उनके दुष्टता का आनंद लेते हैं. 9 और यह ऐसा ही होगा: जैसे
लोगों की दशा, वैसे पुरोहितों की दशा. मैं उन दोनों को उनके चालचलन का
दंड दूंगा और उन्हें उनके कार्यों का बदला दूंगा. 10 “वे खाएंगे पर उनके पास
पर्याप्त भोजन नहीं होगा; वे व्यभिचार में लिप्त होंगे पर बढ़ेंगे नहीं, क्योंकि
उन्होंने याहवेह को छोड़ दिया है 11 ताकि वे व्यभिचार कर सकें; पुरानी एवं नई
दाखमधु उनकी समझ भ्रष्ट कर देती है. 12 मेरे लोग लकड़ी की मूर्तियों से
सलाह लेते हैं, और दैवीय छड़ी उनका भविष्य बताती है. व्यभिचार की एक
आत्मा उन्हें भटका देती है; वे अपने परमेश्वर से विश्वासघात करते हैं. 13 वे
पहाड़ों के शिखर पर बलिदान करते हैं और वे पहाड़ियों पर बांज, चिनार और
एला वृक्षों के नीचे भेंटों को जलाते हैं, जहां अच्छी छाया होती है. इसलिये
तुम्हारी बेटियां वेश्यावृत्ति करने जाती हैं और तुम्हारी पुत्रवधुएं व्यभिचार करती
हैं. 14 “जब तुम्हारी बेटियां वेश्यावृत्ति के लिये जाएंगी तो मैं उन्हें दंड न दूंगा,
और न ही तुम्हारी पुत्रवधुओं को दंड दूंगा जब वे व्यभिचार के लिए जाएंगी,
क्योंकि पुरुष स्वयं वेश्याओं के साथ रहते हैं और मंदिर की वेश्याओं के साथ
बलि चढ़ाते हैं— नासमझ लोग नष्ट हो जाएंगे. 15 “हे इस्राएल, हालांकि तुम
व्यभिचार करते हो, पर यहूदिया दोषी न होने पाए. “न तो गिलगाल जाओ और
न ही ऊपर बेथ-आवेन को जाओ. और न ही यह शपथ खाना, ‘जीवित याहवेह
की शपथ!’ 16 इस्राएली लोग हठीली कलोर के समान हठीले हैं. तब याहवेह
उनको चरागाह में मेमने की तरह कैसे चरा सकते हैं? 17 एफ्राईम मूर्तियों से
जुड़ गया है; उसे अकेला छोड़ दो! 18 यहां तक कि जब उनकी दाखमधु
भी खत्म हो जाती है, तब भी वे वेश्यावृत्ति में लिप्त रहते हैं; उनके शासक
लज्जाजनक कामों से बहुत प्रेम रखते हैं. 19 बवंडर उड़ाकर ले जाएगा, और
उनके बलिदानों के कारण उन्हें लज्जित होना पड़ेगा.

5 “हे पुरोहितो, यह बात सुनो! हे इस्राएलियो, ध्यान दो! राज घरानो, सुनो!
यह न्याय तुम्हारे विरुद्ध है: तुम मिज़पाह में एक फंदा बन गये हो, ताबोर में
बिछाये गये एक जाल हो. 2 विद्रोहियों ने घोर नरसंहार किया है, मैं उन सबको
अनुशासित करूंगा. 3 मैं एफ्राईम के बारे में सब कुछ जानता हूं; इस्राएल की
बात मुझसे छिपी नहीं है. हे एफ्राईम, तुम वेश्यावृत्ति में लिप्त हो; इस्राएल भ्रष्ट
हो गया है. 4 “उनके काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर लौटने नहीं देते.
वेश्यावृत्ति की आत्मा उनके दिल में है; वे याहवेह को नहीं मानते हैं. 5 इस्राएल
का घमंड उसी के विरुद्ध गवाही देता है; इस्राएली, और तो और एफ्राईम भी
अपने पापों में लड़खड़ाते हैं; यहूदिया भी उनके साथ लड़खड़ाता है. 6 जब वे
अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल के झुंड को लेकर याहवेह की खोज में जाते
हैं, तो याहवेह उन्हें नहीं मिलते हैं; क्योंकि उन्होंने अपने आपको उनसे अलग
कर लिया है. 7 उन्होंने याहवेह के साथ विश्वासघात किया है; वे अवैध बच्चे
पैदा करते हैं. जब वे नये चांद के भोज का उत्सव मनाएंगे, तो वह उनके खेतों
को निगल जाएगा. 8 “गिबियाह नगर में तुरही बजाओ, रामाह नगर में नरसिंगा
फूंको. बेथ-आवेन में युद्ध की घोषणा ऊंची आवाज में करो; हे बिन्यामिन, हमारी
अगुवाई करो. 9 हिसाब करने के दिन एफ्राईम बेकार हो जाएगा. इस्राएल के
गोत्रों के बीच मैं उसी बात की घोषणा करूंगा, जिसका होना निश्चित है. 10
यहूदिया के अगुए उनके जैसे हैं जो सीमा के पत्थरों को हटाते हैं. उन पर मैं
अपना कोप पानी के बाढ़ की तरह उंडेलूंगा. 11 एफ्राईम सताया जाता है, न्याय
में कुचला गया है, क्योंकि उसने मूर्तियों के पीछे जाने की ठानी है. 12 मैं
एफ्राईम के लिए कीड़े के समान, और यहूदाह के लोगों के लिए एक सड़न के
जैसा हूं. 13 “जब एफ्राईम ने अपनी बीमारी, और यहूदिया ने अपने घाव को
देखा, तब एफ्राईम अश्शूर की तरफ गया, और बड़े राजा से सहायता की याचना
की. परंतु वह तुम्हें न तो चंगा कर सकता है, और न ही तुम्हारे घावों को ठीक
कर सकता है. 14 क्योंकि एफ्राईम के लिए मैं एक सिंह के जैसा, और यहूदाह
के लिए एक बड़े सिंह के जैसा हो जाऊंगा. मैं उन्हें फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर
दूंगा और चला जाऊंगा; मैं उन्हें उठाकर ले जाऊंगा, और उन्हें छुड़ाने वाला
कोई न होगा. 15 जब तक वे अपने अपराध को मान नहीं लेते और मेरी ओर
लौट नहीं आते मैं अपने स्थान में नहीं लौटूंगा; अपनी दुर्गति के समय वे मन
लगाकर मेरी खोज करेंगे.”

6 “आओ, हम याहवेह की ओर लौटें. उसने हमें फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर
दिया है पर वह हमें चंगा करेंगे; उन्होंने हमें चोट पहुंचाई है, पर वही हमारे
घावों पर मरहम पट्टी करेंगे. 2 दो दिन के बाद वह हममें सुधार लाएंगे; और
तीसरे दिन वह हमें हमारे पूर्व स्थिति में ले आएंगे, ताकि हम उनकी उपस्थिति में
बने रहें. 3 आओ, हम याहवेह को मान लें; आओ, हम उसको जानने के लिये
यत्न करें. जिस प्रकार निश्चित रूप से सूर्य उदय होता है, उसी प्रकार वह भी
निश्चित रूप से प्रगट होंगे; वह हमारे पास ठंड के वर्षा के समान, वर्षा ऋतु के
बारिश के समान आएंगे, जो भूमि को सींच जाती है.” 4 “हे एफ्राईम, मैं
तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं? हे यहूदाह, मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं?
तुम्हारा प्रेम सुबह के कोहरे के समान, बड़े सबेरे पड़नेवाले ओस के समान है,
जो गायब हो जाती है. 5 इसलिये मैंने तुम्हें अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा
काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला, मैंने अपने मुंह के वचन से मार डाला है—
तब मेरा न्याय सूर्य के समान आगे बढ़ता है. 6 क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, पर
दया से, और होमबलि की अपेक्षा से नहीं, परमेश्वर को मानने से प्रसन्न होता
हूं. 7 आदम के जैसे, उन्होंने वाचा को तोड़ दिया है; उन्होंने वहां मेरे साथ
विश्वासघात किया था. 8 गिलआद दुष्ट काम करनेवालों का एक शहर है, वहां
खून के पद-चिन्हों के निशान हैं. 9 जैसे लुटेरे अपने शिकार के लिये छिपकर
घात में रहते हैं, वैसे ही पुरोहितों के गिरोह भी करते हैं; वे अपनी बुरी योजनाओं
को पूरा करते हुए, शेकेम के रास्ते पर हत्या करते हैं. 10 मैंने इस्राएल में एक
भयावह चीज़ देखी है: वहां एफ्राईम को वेश्यावृत्ति के लिये दिया जाता है,
इस्राएल अशुद्ध होता है. 11 “हे यहूदिया, तुम्हारे लिए कटनी का एक दिन
ठहराया गया है. “जब मैं अपने लोगों के पुराने दिनों को लौटा लाऊंगा,

7 जब मैं इस्राएल को चंगा करूंगा, एफ्राईम के पाप और शमरिया के अपराध
प्रगट किए जाएंगे. वे धोखा देते हैं, चोर घरों में चोरी करते हैं, लुटेरे गलियों
में लूटमार करते हैं; 2 पर वे यह नहीं समझते कि मैं उनके सब बुरे कामों को
याद रखता हूं. उनके पाप उन्हें पूरी तरह खा जाते हैं; उनके काम हमेशा मेरी दृष्टि
में बने रहते हैं. 3 “वे राजा को अपनी दुष्टता, और राजकुमारों को अपने झूठी
बातों से खुश रखते हैं. 4 वे सबके सब व्यभिचारी हैं, एक जलते हुए चूल्हे के
समान जिसकी आग को रोटी बनानेवाला तब तक तेज नहीं करता जब तक वह
आटा गूंधकर पकाने के लिए तैयार नहीं कर लेता. 5 हमारे राजा के त्योहार के
दिन राजकुमार दाखमधु पीकर उत्तेजित होते हैं, और वह हंसी उड़ानेवालों के
साथ शामिल होता है. 6 उनके हृदय एक चूल्हे के समान हैं; वे उसके पास
षड़्यंत्र रचकर जाते हैं. उनकी लालसा रात भर सुलगती रहती है; और सुबह यह

आग की ज्वाला की तरह भभक उठती है. 7 वे सबके सब चूल्हे के समान गर्म
हैं; वे अपने शासकों को भस्म कर देते हैं. उनके सब राजा मारे जाते हैं, पर उनमें
से कोई भी मुझे नहीं पुकारता. 8 "एफ्राईम अन्य राष्ट्रों के लोगों के साथ घुल-
मिल जाता है; एफ्राईम उस रोटी के समान है, जिसे पकाते समय पलटा नहीं
गया है. 9 परदेशी उसकी शक्ति का शोषण करते हैं, पर वह इसे समझ नहीं
पाता है. उसके बाल पकते जा रहे हैं, पर वह ध्यान नहीं देता है. 10 इस्राएल
का अहंकार उसके विरुद्ध गवाही देता है, पर इन सबके बावजूद वह याहवेह
अपने परमेश्वर के पास लौटकर नहीं आता या उसकी खोज नहीं करता. 11
"एफ्राईम एक पेंडुकी की तरह है, जो आसानी से धोखा खाता है और निर्बुद्धि
है— उन्होंने सहायता के लिए मिस्र को पुकारा, अब अश्शूर की ओर जाते हैं.
12 जब वे जाते हैं, तब मैं उन पर अपना जाल डालूंगा; मैं उन्हें आकाश के
पक्षियों के समान नीचे गिरा दूंगा. जब मैं सुनूंगा कि वे एक साथ झुंड में इकट्ठा
हो रहे हैं, तो मैं उन्हें पकड़ लूंगा. 13 उन पर हाय, क्योंकि वे मुझसे अलग हो
गये हैं! सर्वनाश हो उनका, क्योंकि उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है! मैं उन्हें
छुड़ाने की इच्छा रखता हूं पर वे मेरे बारे में झूठ बोलते हैं. 14 वे मुझे अपने
हृदय से नहीं पुकारते पर अपने बिछौने पर पड़े विलाप करते हैं. अनाज और नई
दाखमधु के लिये वे अपने देवताओं से याचना करते हुए अपने आपको घायल
करते हैं, पर वे मुझसे दूर रहते हैं. 15 मैंने उन्हें प्रशिक्षित किया और उनकी सेना
को सशक्त किया, पर वे मेरे ही विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं. 16 वे सर्वोच्च परमेश्वर
की ओर नहीं फिर रहे हैं; वे त्रुटिपूर्ण धनुष के समान हैं. उनके अगुएं घमंड से
भरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएंगे. इसी कारण से उन्हें मिस्र देश में ठट्ठों
में उड़ाया जाएगा.

8 "तुरही को अपने होंठों पर रखो! एक गरूड़ याहवेह के भवन के ऊपर है,
क्योंकि लोगों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया है और मेरे कानून का पालन नहीं
किया है. 2 इस्राएल मुझसे पुकारकर कहता है, 'हे हमारे परमेश्वर, हम आपको
मानते हैं!' 3 पर इस्राएल ने भलाई को अस्वीकार किया है; शत्रु उसके पीछे
पड़ेगा. 4 वे मेरी सहमति के बिना राजाओं को ठहराते हैं; वे मेरी स्वीकृति के
बिना राजकुमारों को चुनते हैं. वे अपने सोना और चांदी से अपने विनाश के
लिये मूर्तियां बनाते हैं. 5 हे शमरिया, अपने बछड़े की मूर्ति को फेंक दो! मेरा
क्रोध उनके विरुद्ध भड़कता है. वे कब तक शुद्धता के लिये अयोग्य ठहरेंगे? 6 वे
इस्राएल से हैं! यह बछड़ा—एक कारीगर ने इसे बनाया है; यह परमेश्वर नहीं है.
उस शमरिया के बछड़े को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा. 7 "वे हवा बोते हैं,
और बवंडर रूपी फसल काटते हैं. फसल के डंठल में बाली नहीं है; इससे आटा
नहीं मिलेगा. यदि इससे अन्न पैदा होता, तो परदेशी इसे खा जाते. 8 इस्राएल
को निगल लिया गया है; अब वह अन्य जनताओं के बीच ऐसा है जिसे कोई
नहीं चाहता. 9 क्योंकि वे एक भटके हुए जंगली गधे की तरह अश्शूर को चले
गये हैं. एफ्राईम ने अपने आपको प्रेमियों के हाथ बेच दिया है. 10 यद्यपि उन्होंने
अपने आपको अन्यजातियों के बीच बेच दिया है, फिर भी अब मैं उनको एक
साथ इकट्ठा करूंगा. शक्तिशाली राजा के सताव के कारण वे नाश होने लगेंगे.
11 "यद्यपि एफ्राईम ने पापबलि के लिए अनेक वेदियां बनाई हैं, पर ये वेदियां
उनके पाप करने का कारण बन गई हैं. 12 मैंने उनके लिये अपने कानून से
संबंधित बहुत सी बातें लिखी, पर उन्होंने उन बातों को बाहर का समझा. 13
यद्यपि वे मुझे भेंट के रूप में बलिदान चढ़ाते हैं, और यद्यपि वे मांस खाते हैं, पर
याहवेह उनसे खुश नहीं हैं. अब वह उनके दुष्ट कामों को याद करेंगे और उनके
पापों के लिये दंड देंगे: वे मिस्र देश को लौटेंगे. 14 इस्राएल ने अपने बनानेवाले
को भुला दिया है और महल बना लिये हैं; यहूदिया राज्य ने बहुत से नगरों का
किलाबंदी कर लिया है. पर मैं उनके शहरों पर आग लगा दूंगा, और उनके गढ़
जलकर भस्म हो जाएंगे."

9 हे इस्राएल, आनंदित मत हो; दूसरे देशों के समान अति आनंदित मत हो.
क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया है; तुम हर एक
खलिहान में वेश्यावृत्ति से प्राप्त आय को पसंद करते हो. 2 खलिहानों और
अंगूर के रसकुण्डों से लोगों को भोजन नहीं मिलेगा; नई दाखमधु भी उन्हें
नहीं मिलेगी. 3 वे याहवेह के देश में नहीं रहने पाएंगे; एफ्राईम मिस्र देश को
लौट जाएगा और अश्शूर में वे अशुद्ध भोजन खाएंगे. 4 वे याहवेह को अंगूर की
दाखमधु का पेय बलि नहीं देंगे, और न ही उनके बलिदान से परमेश्वर खुश
होंगे. उस प्रकार का बलिदान उनके लिये शोक करनेवालों के रोटी जैसा है; वे
सब जो उसे खाते हैं वे अशुद्ध हो जाएंगे. यह भोजन उनके स्वयं के लिये होगा;
इसे याहवेह के मंदिर में नहीं लाया जाएगा. 5 तुम अपने ठहराए त्योहारों के
दिन, याहवेह के भोज के दिनों में क्या करोगे? 6 यदि वे विनाश से बच निकलते
हैं, तो मिस्र देश उन्हें इकट्ठा करेगा, और मोफ उन्हें दफन कर देगा. कंटीली
झाड़ियां उनके चांदी के वस्तुओं को ले लेंगी, और उनके तंबुओं पर कांटे उग
आएंगे. 7 दंड के दिन आ रहे हैं, बदला लेने के दिन निकट हैं. इस बात को
इस्राएल जान ले. क्योंकि तुम्हारे पाप बहुत हैं और तुम्हारी शत्रुता बहुत ज्यादा
है, भविष्यवक्ता को मूर्ख, और आत्मा से प्रेरित व्यक्ति को पागल समझा जाता
है. 8 भविष्यवक्ता, मेरे परमेश्वर के साथ, एफ्राईम के ऊपर पहरेदार है, फिर भी
उसके सब रास्तों पर फंदे लगे हुए हैं, और उसके परमेश्वर के भवन में शत्रुता है.
9 वे गिबियाह के दिनों के जैसे भ्रष्टाचार में बहुत डूब हुए हैं. परमेश्वर उनकी
बुराई को याद करेंगे और उनके पापों के लिये उन्हें दंड देंगे. 10 "मैंने इस्राएल
को ऐसे पाया, जैसे किसी को निर्जन स्थान में अंगूर का मिलना होता है; जब मैंने
तुम्हारे पूर्वजों को देखा, तो यह ऐसा था मानो अंजीर के पेड़ में लगे शुरुआती
फल को देखना. पर जब वे बाल-पिओर में आये, तो उन्होंने उस लज्जास्पद
मूर्ति के लिये अपने आपको पवित्र किया और वे उतने दुष्ट हो गये जितने वे उन
चीज़ों से प्रेम करते थे. 11 एफ्राईम का गौरव पक्षी की तरह उड़ जाएगा— न
किसी का जन्म होगा, न कोई गर्भवती होगी और न ही किसी को गर्भ ठहरेगा.
12 यदि वे बच्चों का पालन पोषण करते भी हैं, तो मैं हर एक को उनसे ले लूंगा.
उन पर हाय जब मैं उनसे दूर हो जाता हूं! 13 मैंने एफ्राईम को सोर के जैसे
मनभावने स्थान में बसे हुए देखा है. पर एफ्राईम अपने बच्चों को वध करनेवाले
के पास ले आएगा." 14 हे याहवेह, उन्हें दीजिए— आप उन्हें क्या देंगे? उन्हें
ऐसे गर्भ दीजिए, जिससे गर्भपात हो जाता है और ऐसे स्तन दीजिए, जो सूखे हों.
15 "गिलगाल में उनके सब बुराई के कारण, मैंने उनसे वहां घृणा किया. उनके
पापमय कामों के कारण, मैं उन्हें अपने भवन से बाहर निकाल दूंगा. अब मैं
उनसे प्रेम नहीं करूंगा; उनके सब अगुए विद्रोही हैं. 16 एफ्राईम पर बीमारी लग
गई है, उनकी जड़ सूख गई है, उनमें फल नहीं लगते हैं. यदि वे बच्चों को
जन्म भी दें, तो मैं उनके पोषित बच्चों को मार डालूंगा." 17 मेरा परमेश्वर
उनको अस्वीकार करेगा क्योंकि उन्होंने उसकी बातों को नहीं माना है; वे
जाति-जाति के लोगों के बीच भटकते फिरेंगे.

10 इस्राएल एक बढ़ने वाली अंगूर की लता थी; वह अपने लिये फल देती
थी. जैसे जैसे उसके फल बढ़ते गये, उसने और ज्यादा वेदियां बनाई;
जैसे जैसे उसका देश समृद्ध होता गया, उसने अपने पवित्र पत्थरों को सजाया. 2
उनका हृदय धोखेबाज है, और अब वे ज़रूर दंड भोगेंगे. याहवेह उनकी वेदियों
को ढहा देंगे और उनके पवित्र पत्थरों को नष्ट कर देंगे. 3 तब वे कहेंगे, "हमारा
कोई राजा नहीं है क्योंकि हमने याहवेह का आदर नहीं किया. पर यदि हमारा
कोई राजा होता भी, तो वह हमारे लिये क्या करता?" 4 वे बहुत सी प्रतिज्ञाएं
करते हैं, झूठी शपथ खाते हैं और सहमति बनाते हैं; इसलिये हल चलाये गये
खेत में उगे जहरीले घास-पात के समान मुकदमे होने लगते हैं. 5 जो लोग
शमरिया में रहते हैं वे बेथ-आवेन के बछड़े के कारण डरते हैं. इसके लोग इस

पर विलाप करेंगे, और ऐसा ही इसके मूर्तिपूजक पुरोहित भी करेंगे, जो पहले
इसके वैभव पर आनंदित हुआ करते थे, क्योंकि इसे उनसे छीनकर बंधुआई में
ले लिया गया है. 6 इसे बड़े राजा को भेंट स्वरूप देने के लिये अश्शूर ले जाया
जाएगा. एफ्राईम लज्जित किया जाएगा; इस्राएल भी बाहरी लोगों से नाता के
कारण लज्जित होगा. 7 शमरिया के राजा को ऐसे नष्ट किया जाएगा, जैसे एक
छोटी शाखा पानी के बहाव में बहकर नष्ट हो जाती है. 8 बुराई के ऊंचे स्थान
नष्ट किए जाएंगे— यह इस्राएल का पाप है. उनकी इन वेदियों पर कंटीले पौधे
और झाड़ियां उगकर उनकी वेदियों को ढांप लेंगी. तब वे पर्वतों से कहेंगे, "हमें
ढांप लो!" और पहाड़ियों से कहेंगे, "हम पर आ गिरो!" 9 "हे इस्राएल, तुम
गिबियाह के समय से पाप करते आये हो, और तुम अब भी उसी में बने हुए हो.
क्या बुरे काम करनेवाले गिबियाह में फिर से युद्ध में नहीं फंसेंगे? 10 जब मेरी
इच्छा होगी, मैं उन्हें दंड दूंगा; अन्य जातियां उनके दो गुने पाप के कारण, उन्हें
बंधन में डालने के लिये उनके विरुद्ध इकट्ठा होंगी. 11 एफ्राईम एक प्रशिक्षित
बछिया है जिसे अन्‍न दांवना अच्छा लगता है; इसलिये मैं उसके सुंदर गर्दन पर
एक जूआ रखूंगा. मैं एफ्राईम को हांकूंगा, यहूदाह को हल चलाना ज़रूरी है,
और याकोब को मिट्टी तोड़ना ज़रूरी है. 12 अपने लिए धर्मीपन का बीज
बोओ, निश्छल प्रेम की फसल काटो, और न जूते हुए भूमि की मिट्टी को तोड़ो;
क्योंकि यह समय है कि याहवेह की खोज करो, जब तक कि वह आकर तुम
पर धर्मीपन की वर्षा न करें. 13 पर तुमने दुष्टता का रोपण किया है, और बुराई
का फसल काटा है, तुमने छल-प्रपंच का फल खाया है. क्योंकि तुम अपने
स्वयं के बल और अपने योद्धाओं की बड़ी संख्या पर निर्भर रहे हो, 14 तुम्हारे
लोगों के विरुद्ध युद्ध की ललकार होगी, ताकि तुम्हारे सब गढ़ों को नष्ट कर दिया
जाए— जैसा कि युद्ध के समय में शलमन ने बेथ-आरबेल को नष्ट किया था, जब
माताओं को उनके बच्चों सहित भूमि पर पटक कर मार डाला गया था. 15 हे
बेथेल तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा, क्योंकि तुम्हारी दुष्टता बहुत बड़ी है. जब
उस दिन बड़ी सुबह इस्राएल के राजा को पूरी तरह नाश कर दिया जाएगा.

11 "जब इस्राएल बालक था, मैंने उससे प्रेम किया, और मिस्र देश से मैंने
अपने पुत्र को बुलाया. 2 पर जितना ज्यादा उनको बुलाया गया, उतना
ज्यादा वे मुझसे दूर होते गये. वे बाल देवताओं के लिये बलि चढ़ाते थे और
उन्होंने मूर्तियों के आगे धूप जलाया है. 3 वह मैं ही था, जिसने एफ्राईम को
हाथ पकड़कर चलना सिखाया; परंतु उन्होंने इस बात को न जाना कि वह मैं ही
था, जिसने उन्हें चंगा किया. 4 मैंने मानवीय दया की डोरी, और प्रेम के बंधन
से उनकी अगुवाई की. उनके लिये मैं वैसा था जैसे कोई छोटे बच्चे को गाल
तक उठाता है, और मैं झुककर उन्हें खाना खिलाता था. 5 "क्या वे मिस्र
देश नहीं लौटेंगे और अश्शूर का राजा उन पर शासन नहीं करेगा क्योंकि वे
प्रायश्चित करना नहीं चाहते? 6 उनके शहरों में एक तलवार चमकेगी; वह
उनके झूठे भविष्यवक्ताओं को मार डालेगी और उनकी योजनाओं का अंत कर
देगी. 7 मेरे लोग मुझसे दूर जाने का ठान लिये हैं. यद्यपि वे मुझे सर्वोच्च
परमेश्वर कहते हैं, मैं उनकी किसी भी प्रकार से प्रशंसा नहीं करूंगा. 8 "हे
एफ्राईम, मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूं? हे इस्राएल, मैं तुम्हें किसी और को सौंप
दूं? मैं तुम्हारे साथ अदमाह के जैसे व्यवहार कैसे कर सकता हूं? मैं तुम्हें ज़ेबोईम
के समान कैसे बना सकता हूं? मेरा हृदय मेरे भीतर बदल गया है; मेरी सारी
करुणा जागृत होती है. 9 मैं अपने भयंकर क्रोध के अनुसार नहीं करूंगा, न ही
मैं एफ्राईम को फिर से नाश करूंगा. क्योंकि मैं परमेश्वर हूं, मनुष्य नहीं—
तुम्हारे बीच एक पवित्र जन. मैं उनके शहरों के विरुद्ध नहीं आऊंगा. 10 वे
याहवेह के पीछे चलेंगे; याहवेह एक-एक सिंह के समान गरजेंगे. जब वह
गरजेंगे, तो उनकी संतान कांपती हुई पश्चिम दिशा से आएंगी. 11 वे मिस्र देश
से, गौरैया पक्षी की तरह कांपती हुई, और अश्शूर देश से पंडकी की तरह
पंख फड़फड़ाते हुए आएंगी. मैं उन्हें उनके घरों में बसाऊंगा," याहवेह घोषणा
करते हैं. 12 एफ्राईम ने मेरे चारों ओर झूठ का, और इस्राएल ने छल का ढेर
लगा दिया है. और यहूदाह उद्दंडता से परमेश्वर के विरुद्ध है, और तो और वह
विश्वासयोग्य पवित्र जन के विरुद्ध है.

12 एफ्राईम हवा को अपना भोजन बनाता है; वह सारा दिन पूर्वी वायु
का पीछा करता है और अपने झूठ और हिंसा को बढ़ाता रहता है. वह
अश्शूर देश से संधि करता है और मिस्र देश को जैतून का तेल भेजता है. 2
यहूदिया के विरुद्ध भी याहवेह का आरोप है; वह याकोब को उसके चालचलन
के अनुसार दंड देंगे और उसके कार्यों के अनुरूप उसको बदला देंगे. 3 जब
याकोब ने अपने मां के कोख से ही अपने भाई की एड़ी जकड़ ली थी; एक
मनुष्य के रूप में उसने परमेश्वर से संघर्ष किया. 4 उसने स्वर्गदूत से संघर्ष किया
और उस पर प्रबल हुआ; वह रोया और उससे कृपादृष्टि के लिये विनती की.
बेथेल में वह परमेश्वर से मिला और वहां उसने उनसे बातें की— 5 याहवेह
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, याहवेह उनका नाम है! 6 पर अवश्य है कि तुम अपने
परमेश्वर के पास लौटो; प्रेम और न्याय के काम में बने रहो, और हमेशा अपने
परमेश्वर पर निर्भर रहो. 7 व्यापारी गलत नाप का उपयोग करता है और छल
करना उसको अच्छा लगता है, 8 एफ्राईम घमंड करता है, "मैं बहुत धनवान
हूं; मैं धनी हो गया हूं. मेरी सारी संपत्ति सहित वे मुझमें कोई अपराध या पाप
नहीं पाएंगे." 9 "जब से तुम मिस्र देश से निकलकर आये, मैं याहवेह तुम्हारा
परमेश्वर हूं; मैं फिर तुम्हें तंबुओं में निवास कराऊंगा, जैसे कि तुम्हारे ठहराए
त्योहार के दिनों में हुआ करता था. 10 मैंने भविष्यवक्ताओं से बात किया,
उन्हें कई दर्शन दिखाये और उनके माध्यम से अनेक दृष्टांत बताये." 11 क्या
गिलआद दुष्ट है? इसके लोग बेकार हैं! क्या वे गिलगाल में बैलों का बलिदान
करते हैं? उनकी वेदियां जोते गये खेत में पत्थरों के ढेर के समान होंगी. 12
याकोब तो अराम देश को भाग गया; इस्राएल ने एक पत्नी पाने के लिये सेवा
की, और उसका दाम चुकाने के लिये उसने भेड़ें चराई. 13 याहवेह ने मिस्र
से इस्राएल को निकालने के लिये एक भविष्यवक्ता का उपयोग किया, एक
भविष्यवक्ता के द्वारा उसने उसका ध्यान रखा. 14 पर एफ्राईम ने याहवेह के
क्रोध को बहुत भड़काया है; उसका प्रभु उसके द्वारा किए गये खून का दोष उसी
पर रहने देगा और उसके अनादर के लिये उसको बदला चुकाएगा.

13 जब एफ्राईम बोलता था तो लोग कांप उठते थे; वह इस्राएल में बड़ा
आदमी था. पर वह बाल देवता की आराधना का दोषी हुआ और मर
गया. 2 अब वे और अधिक पाप करते हैं; वे अपनी चांदी से स्वयं के लिये
मूर्तियां बनाते हैं, जिनमें बुद्धिमानी से कारीगरी की गई है, और ये सब शिल्पकारों
का काम है. इन लोगों के बारे में कहा जाता है, "वे मानव बलि चढ़ाते हैं! वे
बछड़े की मूर्तियों को चूमते हैं!" 3 इसलिये वे सुबह के कोहरे, सुबह के ओस
के समान हैं जो गायब हो जाती है, वे खलिहान की भूसी के समान हैं जो घूमते
हुए उड़ जाती है, या वे खिड़की से बाहर आते धुएं के समान हैं. 4 "परंतु मैं तब
से याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं, जब से तुम मिस्र देश से निकलकर आये. तुम
मेरे सिवाय किसी और को परमेश्वर करके न मानना, मेरे अलावा कोई और
उद्धारकर्ता नहीं है. 5 मैंने उजाड़-निर्जन प्रदेश में, गर्मी से तपते देश में तुम्हारा
ध्यान रखा. 6 जब मैंने उन्हें खाना खिलाया, तो वे संतुष्ट हुए; और जब वे संतुष्ट
हो गए, तो वे घमंडी हो गए; और तब वे मुझे भूल गए. 7 इसलिये मैं उनके लिये
एक सिंह के जैसा होऊंगा, एक चीते के समान मैं रास्ते पर उनके घात में रहूंगा.
8 मैं उनके लिये उस मादा भालू के समान बन जाऊंगा, जिसके बच्चे छीन लिये
गये हैं, मैं उन पर हमला करूंगा और उन्हें फाड़ डालूंगा; एक सिंह के समान मैं
उन्हें फाड़ डालूंगा, एक जंगली जानवर उन्हें फाड़कर अलग-अलग कर देगा.

9 "हे इस्राएल, तुम नाश हुए, क्योंकि तुम मेरे विरुद्ध, मेरे सहायक के विरुद्ध हो.
10 कहां है तुम्हारा राजा, जो तुम्हें बचाए? कहां हैं तुम्हारे सब नगरों के शासक,
जिनके बारे में तुमने कहा था, 'मुझे एक राजा और राजकुमार दो'? 11 इसलिये
गुस्से में आकर मैंने तुम्हें एक राजा दिया, और अपने क्रोध में ही मैंने उसे तुमसे
अलग कर दिया. 12 एफ्राईम के अपराध बहुत हो गये हैं, उसके पापों का
लेखा-जोखा रखा गया है. 13 उसको एक स्त्री के बच्चे जनने की सी पीड़ा
होगी, पर वह बिना बुद्धि का एक बच्चा है; जब प्रसव का समय आता है, तो
उसे गर्भ से बाहर आने का ज्ञान नहीं होता. 14 "मैं इन लोगों को कब्र की
शक्ति से छुटकारा दूंगा; मैं इन्हें मृत्यु से बचाऊंगा. हे मृत्यु, कहां है तुम्हारी
महामारियां? हे कब्र, कहां है तुम्हारा विनाश? "मैं कोई करुणा नहीं करूंगा,
(Sheol h7585) 15 यद्यपि वह अपने भाइयों के बीच उन्नति करे. एक पूर्वी हवा
याहवेह की ओर से मरुस्थल से बहेगी; उसके सोतों से पानी का फूटना बंद हो
जाएगा और उसका कुंआ सूख जाएगा. उसके गोदाम में रखी सब बहुमूल्य चीज़ें
लूट ली जाएंगी. 16 अवश्य है कि शमरिया के लोग अपने अपराध का दंड
भोगें, क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है. वे तलवार से
मारे जाएंगे; उनके छोटे बच्चों को भूमि पर पटक दिया जाएगा, और उनकी
गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ दिए जाएंगे."

14 हे इस्राएल, याहवेह अपने परमेश्वर के पास लौट आओ. तुम्हारा पाप ही
तुम्हारे पतन का कारण है! 2 याहवेह की बातों को मानो और उसके पास
लौट आओ. उससे कहो: "हमारे सब पापों को क्षमा करें, और अनुग्रहपूर्वक हमें
ग्रहण करें, कि हम अपने मुंह से धन्यवाद रूपी बलि चढ़ा सकें. 3 अश्शूर हमारा
उद्धार नहीं कर सकता; हम युद्ध के घोड़ों पर नहीं चढ़ेंगे. हम अपने हाथों से
बनाये चीज़ों को फिर कभी न कहेंगे 'हमारे ईश्वर,' क्योंकि अनाथ को आपसे
ही करुणा मिलती है." 4 "मैं उनकी बेवफ़ाई को दूर करूंगा, और स्वछंद रूप से
उन्हें प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उनके ऊपर से हट गया है. 5 मैं इस्राएल
के लिये ओस के समान होऊंगा; वह कुमुदिनी के फूल के समान खिलेगा.
लबानोन के देवदार वृक्ष के समान उसकी जड़ें नीचे दूर-दूर तक फैलेंगी; 6
उसके कोमल अंकुर बढ़ेंगे. उसका वैभव एक जैतून के पेड़ जैसा होगा, और
उसकी सुगंध लबानोन के देवदार के समान होगी. 7 लोग फिर से उसकी छाया
में निवास करेंगे; वे अन्न की तरह उन्नति करेंगे, वे अंगूर की लता की तरह
बढ़ेंगे, इस्राएल की प्रसिद्धि लबानोन के दाखमधु की तरह होगी. 8 हे एफ्राईम,
मूर्तियों से अब मेरा और क्या काम? मैं उसे उत्तर दूंगा और उसका ध्यान रखूंगा.
मैं बढ़ते हुए सनोवर पेड़ के समान हूं; तुम्हारा फलवंत होना मेरे कारण होता है."
9 बुद्धिमान कौन है? उन्हें इन बातों का अनुभव करने दो. समझदार कौन है?
उन्हें समझने दो. याहवेह के रास्ते सही हैं; धर्मी उन पर चलते हैं, परंतु विद्रोही
उन पर ठोकर खाकर गिरते हैं.

योएल

1 याहवेह का वह वचन जो पथूएल के पुत्र योएल के पास आया. 2 हे अगुओ,
यह बात सुनो; हे देश में रहनेवाले सब लोगों, मेरी बात सुनो. क्या तुम्हारे
समय में या तुम्हारे पूर्वजों के समय में ऐसी कोई बात कभी हुई? 3 अपने बच्चों
को यह बात बताओ, और तुम्हारे बच्चे यह बात अपने बच्चों को बताएं, और वे
बच्चे उनके अगली पीढ़ी को बताएं. 4 टिड्डियों के झुंड ने जो छोड़ दिया था
उसे बड़े टिड्डियों ने खा लिया है; बड़े टिड्डियों ने जो छोड़ दिया था उसे छोटे
टिड्डियों ने खा लिया है; और छोटे टिड्डियों ने छोड़ दिया था उसे दूसरे टिड्डियों
ने खा लिया है. 5 हे मतवालो, जागो, और रोओ! हे सब शराब पीने वालों,
विलाप करो; नई दाखमधु के कारण विलाप करो, क्योंकि इसे तुम्हारे मुंह से
छीन लिया गया है. 6 मेरे देश पर एक-एक जाति ने आक्रमण कर दिया है, वह
एक शक्तिशाली सेना है और उनकी संख्या अनगिनत है; उसके दांत सिंह के
दांत के समान, और उसकी दाढ़ें सिंहनी की दाढ़ के समान हैं. 7 उसने मेरी
अंगूर की लताओं को उजाड़ दिया है और मेरे अंजीर के पेड़ों को नष्ट कर
दिया है. उसने उनकी छाल को छील दिया है, और उनकी शाखाओं को सफेद
छोड़कर उनकी छाल को फेंक दिया है. 8 तुम ऐसे विलाप करो, जैसे एक
कुंवारी टाट के कपड़े पहिने अपनी युवावस्था के सगाई के पुरुष के लिये शोक
करती है. 9 याहवेह के भवन में अब न तो अन्नबलि और न ही पेय बलि चढ़ाई
जाती है. याहवेह की सेवा करनेवाले पुरोहित विलाप कर रहे हैं. 10 खेत नष्ट हो
गये हैं, ज़मीन सूख गई है; अनाज नष्ट हो गया है, नई दाखमधु सूख गई है,
जैतून का तेल समाप्त होता है. 11 हे किसानो, निराश हो, हे अंगूर की लता
लगानेवालो, विलाप करो; गेहूं और जौ के लिये दुःख मनाओ, क्योंकि खेत की
फसल नाश हो गई है. 12 अंगूर की लता सूख गई है और अंजीर का पेड़ मुरझा
गया है; अनार, खजूर तथा सेब के पेड़— मैदान के सब पेड़—सूख गये हैं.
इसमें संदेह नहीं कि लोगों का आनंद जाता रहा है. 13 हे पुरोहितो, शोक-वस्त्र
पहनकर विलाप करो; तुम जो वेदी पर सेवा करते हो, विलाप करो. तुम जो मेरे
परमेश्वर की सेवा करते हो, आओ, और शोक-वस्त्र पहनकर रात बिताओ;
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना बंद कर
दिया गया है. 14 एक पवित्र उपवास की घोषणा करो; एक विशेष सभा करो.
अगुओं को और उन सबको जो देश में रहते हैं याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के भवन
में बुलाओ, और याहवेह के सामने गिड़गिड़ाकर विनती करो. 15 उस दिन के
लिये हाय! क्योंकि याहवेह का दिन निकट है; यह सर्वशक्तिमान की ओर से
विनाश का दिन होकर आएगा. 16 क्या हमारे देखते-देखते भोजन वस्तुओं
की पूर्ति बंद नहीं हुई— और इसी प्रकार हमारे परमेश्वर के भवन से आनंद
और खुशी खत्म नहीं हो गई? 17 मिट्टी के ढेलों के नीचे बीज झुलस गये हैं.
भण्डारगृह खंडहर हो रहे हैं, भण्डारगृह ढहा दिये गये हैं, क्योंकि उपज हुई ही
नहीं. 18 पशु कैसे कराह रहे हैं! पशुओं के झुंड के झुंड विचलित हो भटक रहे
हैं क्योंकि उनके लिए चरागाह नहीं है; यहां तक कि भेड़ों के झुंड भी कष्ट में
हैं. 19 हे याहवेह, मैं आपको पुकारता हूं, क्योंकि सुनसान जगह के चरागाहों
को आग ने नष्ट कर दिया है और आग की ज्वाला ने मैदान के सब पेड़ों को
जला डाला है. 20 और तो और जंगली जानवर आपकी चाह करते हैं; जल के
सोते सूख चुके हैं और सुनसान जगह के चरागाहों को आग ने नष्ट कर दिया है.

2 ज़ियोन में तुरही फूंको; मेरे पवित्र पहाड़ी पर खतरे की घंटी बजाओ. देश
में रहनेवाले सबके सब कांपे क्योंकि याहवेह का दिन आ रहा है. वह निकट
आ गया है— 2 वह अंधकार और धुंधलेपन का दिन है, वह बादलों से भरा
अंधकार का दिन है. जैसे पहाड़ों पर भोर का उजियाला फैलता है वैसे ही एक
बड़ी और शक्तिशाली सेना चली आती है, ऐसा जो पूर्वकाल में कभी नहीं
हुआ है, और न ही आनेवाले समय में कभी ऐसा होगा. 3 उनके सामने आग
विनाश करती है, और उनके पीछे आग की लपटें हैं. उनके सामने देश एदेन की
वाटिका के समान है, और उनके पीछे, एक उजाड़ मरुस्थल— किसी का भी
उनसे बचना संभव नहीं है. 4 उनका स्वरूप घोड़ों जैसा है; और वे घुड़सवार
सेना के जैसे सरपट दौड़ते हैं. 5 उनके आगे बढ़ने की आवाज रथों के समान है,
वे पहाड़ के चोटियों पर से कूद जाती हैं, धधकती आग के समान वे ठूठों को
भस्म करती जाती हैं, वे युद्ध के लिए तैयार शक्तिशाली सेना के समान हैं. 6
उनके सामने जाति-जाति के लोग भय से पीड़ित हो जाते हैं; हर एक का चेहरा
डर से पीला पड़ जाता है. 7 वे योद्धाओं के समान आक्रमण करते हैं; वे सैनिकों
की तरह दीवारों पर चढ़ जाते हैं. वे सब पंक्तिबद्ध होकर आगे बढ़ते हैं, और वे
अपने क्रम से नहीं हटते हैं. 8 वे एक दूसरे को धक्का नहीं देते; हर एक सीधा
आगे बढ़ता है. वे अपने क्रम को बिना तोड़े समस्याओं से होकर निकल जाते हैं.
9 वे तेजी से शहर में प्रवेश करते हैं; वे दीवारों के समानांतर दौड़ते हैं. वे घरों पर
चढ़ते हैं; और वे चोरों के समान खिड़कियों से अंदर जाते हैं. 10 उनके सामने
पृथ्वी तक कांप उठती है, आकाश थरथराता है. सूर्य तथा चंद्रमा धुंधले हो जाते
हैं, और तारे चमकना छोड़ देते हैं. 11 याहवेह अपनी सेना के आगे होकर ऊंची
आवाज में आदेश देते हैं; उनकी सेना की संख्या अनगिनत है, और वह सेना
शक्तिशाली है जो उनके आदेश का पालन करती है. याहवेह का यह दिन महान
है; यह भयानक है. उसे कौन सहन कर सकता है? 12 "फिर भी अब," याहवेह
का कहना है, "तुम सारे जन उपवास करते और रोते और विलाप करते मेरे पास
लौट आओ." 13 अपने कपड़ों को नहीं, अपने मन को फाड़ो. याहवेह, अपने
परमेश्वर के पास लौट आओ, क्योंकि वे अनुग्रहकारी और करुणामय, क्रोध
करने में धीमा और बहुतायत से प्रेम करनेवाले हैं, विपत्ति भेजने में कोमलता
दिखाते हैं. 14 कौन जाने? वे अपना विचार छोड़कर कोमलता दिखाएं और
अपने पीछे एक आशीष— याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के लिए अन्नबलि और पेय
बलि छोड़ जाएं. 15 ज़ियोन में तुरही फूंको, एक पवित्र उपवास की घोषणा
करो, एक पवित्र सभा का आयोजन करो. 16 लोगों को जमा करो, सभा को
पवित्र करो; अगुओं को एक साथ लाओ, बच्चों और दूध पीते छोटे बच्चों को
इकट्ठा करो. दूल्हा अपने कमरे को और दुल्हन अपने कक्ष को छोड़कर बाहर
आएं. 17 पुरोहित और याहवेह की सेवा करनेवाले, मंडप और वेदी के बीच
रोएं. और वे कहें, "हे याहवेह, अपने लोगों पर तरस खाईये. अपने निज लोगों
को जाति-जाति के बीच उपहास का विषय, एक कहावत मत बनाइए. वे लोगों
के बीच क्यों कहें, 'कहां है उनका परमेश्वर?'" 18 तब याहवेह को अपने देश
के विषय में जलन हुई और उन्होंने अपने लोगों पर तरस खाया. 19 याहवेह ने
उन्हें उत्तर दिया: "मैं तुम्हारे लिए अन्न, नई अंगूर की दाखमधु और जैतून
पर्याप्त मात्रा में भेज रहा हूं, कि तुम सब पूरी तरह संतुष्ट हो जाओ; मैं तुम्हें
अन्यजातियों के लिए फिर कभी हंसी का पात्र नहीं बनाऊंगा. 20 "मैं उत्तर के
उपद्रवी झुंड को तुमसे दूर भगा दूंगा, और उसे एक सूखा और बंजर देश कर
दूंगा; उसका पूर्वी भाग मृत सागर और पश्चिमी भाग भूमध्य-सागर में डूब
जाएगा. और उसकी दुर्गंध ऊपर जाएगी; उसकी गंध उठती रहेगी." निःसंदेह
याहवेह ने महान कार्य किए हैं! 21 हे यहूदिया देश, मत डरो; खुश और आनंदित
हो. निःसंदेह याहवेह ने महान कार्य किए हैं! 22 हे जंगली जानवरों, मत डरो,
क्योंकि निर्जन जगह के चरागाह हरे-भरे हो रहे हैं. पेड़ों में फल लग रहे हैं;
अंजीर का पेड़ और अंगूर की लता भरपूर उपज दे रही हैं. 23 ज़ियोन के
लोगों, खुश हो, याहवेह, अपने परमेश्वर में आनंदित हो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें
शरद ऋतु की बारिश दी है क्योंकि वे विश्वासयोग्य हैं. उन्होंने तुम्हारे लिये
बहुत वर्षा दी है, पहले के समान शरद और वसन्त ऋतु की वर्षा दी है. 24

खलिहान अन्न से भर जाएंगे; कुंडों में अंगूर की दाखमधु और तेल की इतनी
अधिकता होगी कि वे भरकर उछलने लगेंगे. 25 "मैं तुम्हारे उन सब वर्षों की
उपज की भरपायी कर दूंगा जिसे टिड्डियों ने खा लिया था— बड़े टिड्डी और
छोटे टिड्डी, दूसरे टिड्डी और टिड्डियों का झुंड— मेरी बड़ी सेना जिसे मैंने तुम्हारे
बीच भेजा था. 26 तुम्हारे पास खाने के लिए भोजन वस्तु और तुम पेट भर
खाओगे, और तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के नाम की स्तुति करोगे, जिसने
तुम्हारे लिये अद्भुत काम किए हैं; मेरे लोग फिर कभी लज्जित नहीं होंगे. 27
तब तुम जानोगे कि इस्राएल में हूं, और यह कि मैं याहवेह तुम्हारा परमेश्वर हूं,
और यह भी कि मेरे अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है; मेरे लोग फिर कभी
लज्जित नहीं होंगे. 28 "और उसके बाद, मैं अपना आत्मा सब लोगों पर
उंडेलूंगा. तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बुज़ुर्ग लोग स्वप्न
देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे. 29 मैं उन दिनों में अपने दास, और दासियों,
पर अपना आत्मा उंडेल दूंगा, 30 मैं ऊपर आकाश में अद्भुत चमत्कार और नीचे
पृथ्वी पर लहू, आग और धुएं के बादल के अद्भुत चिह्न दिखाऊंगा. 31 याहवेह
के उस वैभवशाली और भयानक दिन के पूर्व सूर्य अंधेरा और चंद्रमा लहू समान
हो जाएगा. 32 और हर एक, जो प्रभु को पुकारेगा, उद्धार प्राप्त करेगा. क्योंकि
छुटकारे की जगह ज़ियोन पर्वत तथा येरूशलेम होगी, जैसे कि याहवेह ने कहा
है, और तो और बचने वालों में वे लोग भी होंगे जिन्हें याहवेह बुलाएंगे.

3 "उन दिनों में और उस समय पर, जब मैं यहूदिया और येरूशलेम के लोगों
को बंधुआई से लौटा लाऊंगा, 2 तब मैं सब जाति के लोगों को इकट्ठा
करूंगा और उन्हें नीचे यहोशाफ़ात की घाटी में ले आऊंगा. वहां मैं उनकी
परीक्षा करूंगा उन्होंने मेरे निज भाग अर्थात् मेरे लोग इस्राएलियों के साथ जो
कुछ किया, उसके लिये. क्योंकि उन्होंने मेरे लोगों को जाति-जाति के लोगों
के बीच तितर-बितर कर दिया है और उन्होंने मेरे देश को बांट दिया है. 3 वे मेरे
लोगों के लिये पांसा फेंकते हैं और उन्होंने वेश्याओं के बदले में लड़कों को दे
दिया है; उन्होंने दाखमधु पीने के लिये लड़कियों को बेच दिया है. 4 "हे सोर
और सीदोन और फिलिस्तिया के सारे क्षेत्र के लोगों, अब तुम्हारे पास मेरे विरुद्ध
में क्या है? क्या तुम उस बात का बदला चुका रहे हो, जो मैंने किया है? यदि तुम
मुझे वापस बदला चुका रहे हो, तो मैं शीघ्र ही, तेजी से, तुम्हारे द्वारा किए गए
कामों को वापस तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा. 5 क्योंकि तुमने मेरी चांदी और
मेरा सोना ले लिया है और मेरे बहुमूल्य खजानों को अपने मंदिरों में रख लिया
है. 6 तुमने यहूदिया और येरूशलेम के लोगों को यूनानियों के हाथ बेच दिया,
ताकि तुम उन्हें उनके देश से दूर कर सको. 7 "देखो, मैं उन्हें उन स्थानों से
लौटाकर लानेवाला हूं, जहां तुमने उन्हें बेच दिया था, और तुम्हारे किए गये
कामों को वापस तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा. 8 मैं तुम्हारे बेटे और बेटियों को
यहूदिया के लोगों के हाथ बेच दूंगा, और वे उन्हें बहुत दूर रहनेवाली एक जाति
शबाईयों के हाथ बेच देंगे." याहवेह ने कहा है. 9 जाति-जाति के लोगों के
बीच यह घोषणा करो: युद्ध की तैयारी करो! योद्धाओं को आव्हान करो! लड़ने
वाले सब लोग निकट आये और आक्रमण करें. 10 अपने हल की फालों को
पीटकर उनकी तलवारें बना लो और अपने हंसियों को पीटकर उनकी बर्छियां
बना लो. जो दुर्बल है वह कहे, "मैं बलवान हूं!" 11 चारों तरफ के जाति-जाति
के सब लोगों, जल्दी करके आओ, और वहां तुम इकट्ठे हो जाओ. हे याहवेह,
अपने योद्धाओं को नीचे ले आइए! 12 "जाति-जाति के लोग उत्तेजित हों; और
वे यहोशाफ़ात की घाटी में जाएं, क्योंकि वहां मैं चारों तरफ के जाति-जाति के
सब लोगों का न्याय करने बैठूंगा. 13 हंसिया चलाना शुरू करो, क्योंकि फसल
पक गयी है. आओ, अंगूर को रौंदो, क्योंकि अंगूर-रस का कुंड भर गया है
और हौज छलक रहे हैं— उनकी दुष्टता बहुत ज्यादा है!" 14 निर्णय की घाटी में
लोगों की भीड़ ही भीड़ है! क्योंकि निर्णय की घाटी में याहवेह का दिन निकट
है. 15 सूर्य और चंद्रमा पर अंधकार छा गया है, और तारे चमकना बंद कर देंगे.
16 याहवेह ज़ियोन से गरजेंगे और येरूशलेम से गर्जन सुनाई देगा; आकाश
और पृथ्वी कांप उठेंगे. पर याहवेह अपने लोगों के लिए एक शरणस्थान, और
इस्राएल के लोगों के लिए एक सुरक्षा गढ होंगे. 17 "तब तुम जानोगे कि मैं,
याहवेह ही तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो अपने पवित्र पर्वत, ज़ियोन पर निवास करता
हूं. येरूशलेम एक पवित्र स्थान होगा; परदेशी फिर कभी उस पर आक्रमण न कर
पाएंगे. 18 "उस दिन पहाड़ों से नई अंगूर की दाखमधु टपकेगी, और पहाड़ियों
से दूध बहेगा; यहूदिया के सब दर्रों में पानी बहेगा. याहवेह के भवन से पानी का
एक सोता फूट निकलेगा और शित्तीम घाटी की सिंचाई करेगा. 19 पर मिस्र देश
उजाड़ हो जाएगा, और एदोम एक बेकार निर्जन देश, क्योंकि इन्होंने यहूदिया
के लोगों पर अत्याचार किया था, और इन्होंने उनके देश में निर्दोष लोगों
का खून बहाया था. 20 यहूदिया में लोग सदा-सर्वदा निवास करते रहेंगे और
येरूशलेम में लोग पीढ़ी-पीढ़ी तक रहेंगे. 21 क्या मैं उन निर्दोष लोगों के खून
का बदला लिये बिना छोड़ दूंगा? नहीं, बिलकुल नहीं."

आमोस

1 ये आमोस द्वारा कहे गये वचन हैं, जो उसने भूकंप के दो वर्ष पहले इस्राएल
के संबंध में एक दर्शन देखकर उस समय में कहे थे, जब यहूदिया पर राजा
उज्जियाह का तथा इस्राएल पर यहोआश के पुत्र यरोबोअम का शासन था.
आमोस तकोआ नगर के चरवाहों में से एक था. **2** आमोस ने कहा: "ज़ियोन
से याहवेह का स्वर गर्जन करता है और येरूशलेम से उनका शब्द गूंजता है;
चरवाहों के चरागाह मुरझा गए हैं, तथा कर्मेल पर्वत का शिखर झुलस गया है."
3 यह याहवेह का कहना है: "दमेशेक नगर के तीन, नहीं वरन चार अपराधों के
कारण, मैं उसे दंड देने से पीछे नहीं हटूंगा. क्योंकि उसने गिलआद पर लोहे के
तीक्ष्ण शस्त्रों से प्रहार किया है, **4** तब मैं हाज़ाएल के परिवार पर आग बरसाऊंगा
और वह बेन-हदद के गढ़ को नष्ट कर देगी. **5** दमेशेक नगर के प्रवेश द्वार को
मैं तोड़ डालूंगा; और आवेन घाटी के राजा को, और बेथ-एदेन में राजदंड
धरनेवाले को, मैं नाश कर दूंगा. अरामवासी कीर में बंधुआई में चले जाएंगे,"
यह याहवेह का कहना है. **6** याहवेह का यह कहना है: "अज्जाह नगर के तीन,
नहीं वरन चार अपराधों के कारण, मैं दंड देने से पीछे नहीं हटूंगा. क्योंकि
उसने पूरे प्रजा को बंधुआई में ले गया और उन्हें एदोम को बेच दिया है, **7**
तब मैं अज्जाह नगर की दीवारों पर आग बरसाऊंगा जो उसके राजमहलों
को जलाकर नष्ट कर देगी. **8** मैं अशदोद के राजा को, और अश्कलोन में
राजदंड धरनेवाले को नाश कर दूंगा. एक्रोन पर मैं अपने हाथों से तब तक वार
करूंगा, जब तक कि आखिरी फिलिस्तीनी भी मार न डाला जाए," यह प्रभु
याहवेह का कहना है. **9** याहवेह का यह कहना है: "सोर नगर के तीन, नहीं
वरन चार अपराधों के कारण, मैं दंड देने से पीछे नहीं हटूंगा. क्योंकि उसने
संपूर्ण बंधुआई के समूह को एदोम को बेच दिया है, और भाईचारे की वाचा का
अनादर किया है, **10** तब मैं सोर की दीवारों पर आग बरसाऊंगा जो उसके
राजमहलों को जलाकर नष्ट कर देगी." **11** याहवेह का यह कहना है: "एदोम
के तीन पापों के कारण, तीन नहीं वरन चार पापों के कारण, मैं दंड देने से पीछे
नहीं हटूंगा. क्योंकि उसने तलवार लेकर अपने भाई को खदेड़ा और देश की
महिलाओं को घात किया, क्रोध में वह निरंतर उनका संहार करता गया उसका
रोष सदा बना रहा, **12** मैं तेमान पर आग बरसाऊंगा जो बोज़राह के राजमहलों
को जलाकर भस्म कर देगी." **13** याहवेह का यह कहना है: "अम्मोनवासियों
के तीन, नहीं वरन चार अपराधों के कारण, मैं उसे दंड देने से पीछे न हटूंगा.
क्योंकि उसने गिलआद की गर्भवती स्त्रियों के पेट इसलिये चीर दिए ताकि वह
अपनी सीमा का विस्तार कर सके, **14** तब युद्ध के उस दिन जब शोरगुल हो
रहा होगा, जब उग्र आंधी और उपद्रव हो रहा होगा तब मैं रब्बाह नगर की
दीवारों पर आग लगा दूंगा, जो उसके राजमहलों को जलाकर नष्ट कर देगी.
15 अम्मोन के राजा और उसके कर्मचारी एक साथ बंधुआई में चले जाएंगे,"
यह याहवेह का कहना है.

2 याहवेह का यह कहना है: "मोआब को दंड देने से मैं पीछे न हटूंगा,
क्योंकि उसने तीन, नहीं वरन चार अपराध किये हैं. उसने एदोम के राजा
के हड्डियों को जलाकर राख कर दिया है, **2** तब मैं मोआब पर आग बरसाऊंगा
जो केरिओथ के राजमहलों को जलाकर नष्ट कर देगी. बड़े उपद्रव में मोआब
मिट जाएगा, उस समय युद्ध की ललकार और तुरही फूंकी जा रही होगी. **3**
मैं मोआब के शासक को नाश कर दूंगा और उसे उसके सब अधिकारियों
समेत मार डालूंगा," यह याहवेह का कहना है. **4** याहवेह का यह कहना है:
"यहूदिया के तीन नहीं, वरन चार पापों के कारण, मैं उसे दंड देने से पीछे
नहीं हटूंगा. क्योंकि उन्होंने याहवेह के कानून को तुच्छ जाना है और उनके
नियमों का पालन नहीं किया है, वे उन झूठे देवताओं के द्वारा भटकाये गये हैं,
जिनके पीछे उनके पुरखे चलते थे, **5** तब मैं यहूदिया पर आग बरसाऊंगा जो
येरूशलेम के राजमहलों को जलाकर नष्ट कर देगी." **6** याहवेह का यह कहना
है: "इस्राएल के तीन नहीं, वरन चार पापों के कारण, मैं उसे दंड देने से पीछे
नहीं हटूंगा. वे चांदी के लिये निर्दोष व्यक्ति को, और एक जोड़ी चप्पल के
लिए ज़रूरतमंद व्यक्ति को बेच देते हैं. **7** वे निर्धन के सिर ऐसे रौंदते हैं जैसे
भूमि पर धूल को रौंदा जाता है और पीड़ित लोगों के न्याय को बिगाड़ते हैं.
पिता और पुत्र दोनों एक ही युवती से संभोग करते हैं और ऐसा करके वे मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र करते हैं. **8** वे हर एक वेदी के बाजू में बंधक में रखे गए
कपड़ों पर लेटते हैं. वे अपने देवता के घर में जुर्माना में लिये गये अंगूर की
दाखमधु को पीते हैं. **9** "यह सब होने पर भी मैं ही था जिसने उनके सामने
अमोरियों को पछाड़ा था, यद्यपि अमोरी पुरूष देवदार वृक्ष के समान ऊंचे और
बांज वृक्ष के सदृश सशक्त थे. मैंने ऊपर तो उनके फल तथा नीचे उनकी जड़ें
नष्ट कर दीं. **10** मैं ही था, जिसने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला और चालीस
वर्ष मरुभूमि में तुम्हारी अगुवाई करता रहा, ताकि तुम अमोरियों के देश पर
अधिकार कर सको. **11** "मैंने ही तुम्हारे बच्चों के बीच में से भविष्यद्वक्ता और
तुम्हारे जवानों के बीच में से नाजीर खड़ा किया. हे इस्राएलियो, क्या यह सच
नहीं है?" यह याहवेह का कहना है. **12** "परंतु तुमने नाजिरों को दाखमधु पान
के लिए बाध्य किया और भविष्यवक्ताओं को आदेश दिया कि भविष्यवाणी
न करें. **13** "इसलिये अब, मैं तुम्हें कुचलूंगा जैसे अनाज से भरी हुई गाड़ी
कुचलती है. **14** तेज गति से भागनेवाला बच नहीं पाएगा, बलवान व्यक्ति
अपना बल सहेज नहीं पाएगा, और योद्धा अपना प्राण नहीं बचा सकेगा. **15**
धनुर्धारी का पैर उखड़ जाएगा, तेज दौड़नेवाला सैनिक भाग नहीं पाएगा, और
घुड़सवार अपना प्राण नहीं बचा सकेगा. **16** यहां तक कि उस दिन सबसे
साहसी योद्धा भी अपने वस्त्र छोड़ भाग खड़े होंगे," यह याहवेह का कहना है.

3 हे इस्राएलियो, सुनो यह वह संदेश है, जिसे याहवेह ने तुम्हारे विरुद्ध कहा
है—पूरे वंश के विरुद्ध जिसे मैंने मिस्र देश से बाहर निकाल लाया है: **2**
"केवल तुम हो जिसे मैंने पृथ्वी के सब कुलों में से चुना है; तब मैं तुम्हारे सब
पापों के लिये तुम्हें दंड दूंगा." **3** क्या यह संभव है कि बिना सहमति के दो
व्यक्ति एक साथ चलें? **4** क्या सिंह वन में शिकार के दिखे बिना दहाड़ता
है? क्या वह अपनी मांद में से कुछ पकड़े बिना गुर्राता है? **5** क्या कोई पक्षी
भूमि पर बिना चारा डाले बिछाए गये जाल की ओर झपटेगा? क्या भूमि पर से
फंदा अपने आप उछलता है जब उसमें कुछ न फंसा हो? **6** जब तुरही की
आवाज से नगर में चेतावनी दी जाती है, तो क्या लोग डर से नहीं कांपते हैं?
जब किसी नगर पर विपत्ति आती है, तो क्या यह याहवेह की ओर से नहीं
होता? **7** निश्चित रूप से प्रभु याहवेह अपने सेवक भविष्यवक्ताओं पर अपनी
योजना प्रकट किए बिना कुछ भी नहीं करते. **8** जब सिंह की गर्जना सुनाई देती
है— तो कौन है, जो भयभीत न होगा? प्रभु याहवेह ने कहा है— तो कौन है,
जो भविष्यवाणी न करेगा? **9** अशदोद के राजमहलों में और मिस्र देश के
राजमहलों में यह घोषणा की जाए: "शमरिया के पर्वतों पर इकट्ठे हो जाओ;
और उसके बीच हो रहे शोरगुल और उसके लोगों पर हो रहे अत्याचार पर
ध्यान दो." **10** "वे सही काम करना जानते ही नहीं," यह याहवेह का कहना
है, "उनके लूटे और छीने गये माल को उनके राजमहलों में किसने इकट्ठा
किया है." **11** तब प्रभु याहवेह का यह संदेश है: "एक शत्रु तुम्हारे देश को घेर
लेगा, वह तुम्हारे भवनों को गिरा देगा और तुम्हारे राजमहलों को लूटेगा." **12**
याहवेह का यह कहना है: "जिस प्रकार चरवाहा छुड़ाने के प्रयास में सिंह के
मुंह से सिर्फ पैर की दो हड्डी या कान का एक टुकड़ा ही बचा पाता है, उसी
प्रकार से वे इस्राएली, जो शमरिया में निवास करते हैं, ऐसे बचाए जायेंगे, जैसे

पलंग का सिरहाना और बिस्तर से कपड़े का एक टुकड़ा." 13 "यह बात सुनो
और याकोब के घराने विरुद्ध में कहो," प्रभु याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की
यह घोषणा है. 14 "जिस दिन मैं इस्राएल को उसके पापों के लिए दंड दूंगा, मैं
बेथेल की वेदियों को नष्ट कर दूंगा; वेदी के सींग जो वेदी की संरचना का अंग
हैं, काट दिए जाएंगे और वे भूमि पर गिर पड़ेंगे. 15 मैं शीतकालीन भवन और
साथ में ग्रीष्मकालीन भवन को गिरा दूंगा; वे भवन, जो हाथी-दांत से सजाए गये
हैं, नाश किए जायेंगे और हवेलियों को नष्ट कर दिया जाएगा," यह याहवेह का
कहना है.

4 शमरिया की पहाड़ी पर निवास कर रही बाशान की गायों, यह संदेश तुम्हारे
लिए है, तुम निर्धनों पर अत्याचार करती हो, ज़रूरतमंदों को कुचलती हो,
अपने पति को आदेश देती हो, "जाओ, पीने के लिए कुछ ले आओ!" 2 प्रभु
याहवेह ने अपनी पवित्रता की शपथ ली है: "भविष्य में ऐसा समय निश्चित रूप
से आएगा जब तुम्हें कांटों में फंसाकर ले जाया जाएगा, तुममें से एक-एक को
मछली पकड़ने के कांटों में फंसाकर ले जाया जाएगा. 3 तुममें से प्रत्येक
दीवार के दरारों से सीधा निकल जाएगा, और तुम्हें हर्मोन की ओर फेंक दिया
जाएगा." याहवेह की यह घोषणा है. 4 "जाओ और बेथेल में अपराध करो;
गिलगाल में जाकर और ज्यादा अपराध करो. प्रातःकाल अपनी भेंट बलि लेकर
आया करो, और हर तीसरे साल अपना दशमांश लाओ. 5 खमीर युक्त रोटी को
धन्यवाद बलि के रूप में जलाओ अपने स्वेच्छा बलियों के बारे में डींग मारो—
हे इस्राएलियो, उनके बारे में घमंड करो, क्योंकि ऐसा करना तुम्हें अच्छा
लगता है," प्रभु याहवेह की यह घोषणा है. 6 "मैंने हर शहर में तुम्हें भूखे पेट
रखा और हर नगर में भोजन की घटी की, फिर भी तुम मेरी ओर नहीं फिरे."
याहवेह की यह घोषणा है. 7 "जब कटनी के लिए तीन माह बचे थे, तब मैंने
वर्षा को रोके रखा. मैंने एक नगर पर वर्षा की, पर दूसरे नगर पर पानी नहीं
बरसाया. एक खेत पर वर्षा हुई, किंतु दूसरे पर नहीं और वह सूख गया. 8 लोग
लड़खड़ाते हुए एक नगर से दूसरे नगर में भटकते रहे किंतु उन्हें पीने के लिये
पर्याप्त पानी न मिला, फिर भी तुम मेरी ओर न फिरे," याहवेह की यह घोषणा
है. 9 "कई बार मैंने तुम्हारे बगीचों और अंगूर की बारियों पर कहर बरपाया,
बीमारी और फफूंदी से उन्हें नाश किया. टिड्डियां तुम्हारे अंजीर और जैतून के
पेड़ों को खा गईं, तो भी तुम मेरी ओर न फिरे," याहवेह की यह घोषणा है. 10
"मैंने मिस्र देश में भेजी महामारी की तरह तुम्हारे बीच में भी महामारियां भेजी.
मैंने तुम्हारे लूटे हुए घोड़ों के साथ, तुम्हारे जवानों को तलवार से मार डाला.
मैंने तुम्हारे छावनी के शवों की दुर्गंध से तुम्हारे नथुनों को भर दिया, फिर भी
तुम मेरी ओर न फिरे," याहवेह की यह घोषणा है. 11 "मैंने तुममें से कुछ का
ऐसा विनाश किया जैसा मैं, परमेश्वर, ने सोदोम और अमोराह का किया था. उस
समय तुम वैसे ही थे, जैसे आग से निकाली गई जलती हुई लकड़ी, फिर भी तुम
मेरी ओर न फिरे," याहवेह की यह घोषणा है. 12 "इसलिये हे इस्राएल, मैं
तुम्हारे साथ ऐसा करनेवाला हूं, और क्योंकि मैं तुम्हारे साथ ऐसा करनेवाला हूं,
हे इस्राएल, अपने परमेश्वर से भेंट करने के लिए तैयार हो जाओ." 13 जिसने
पर्वतों की रचना की, जिसने वायु की सृष्टि की, और जो अपने विचारों को
मनुष्यों पर प्रकट करते हैं, जो प्रातःकाल को अंधकार में बदल देते हैं, और
पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलते हैं— उनका नाम याहवेह सर्वशक्तिमान परमेश्वर
है.

5 हे इस्राएल के वंशज, तुमसे संबंधित मेरे इस विलापगीत को सुनो: 2 "कुमारी
कन्या इस्राएल का ऐसा गिरना हुआ है, कि अब उसका पुनः उठ खड़ा होना
असंभव है, वह अपने ही देश में उपेक्षित हो गई, और उसको उठानेवाला कोई
नहीं है." 3 प्रभु याहवेह का इस्राएल को यह कहना है: "तुम्हारा शहर, जो एक
हजार योद्धाओं को लेकर आगे बढ़ता है उसमें से सिर्फ एक सौ ही बचेंगे; तुम्हारा
नगर, जो सौ योद्धाओं को लेकर आगे बढ़ता है उसमें से सिर्फ दस ही बचेंगे." 4
इस्राएल वंश के लिए याहवेह का यह कहना है: "मेरी खोज करो और जीवित
रहो; 5 बेथेल की खोज न करना, गिलगाल में प्रवेश न करना. बेअरशेबा की
यात्रा पर न जाना. क्योंकि यह निश्चित है कि गिलगाल निवासी बंधुआई में
जायेंगे, तथा बेथेल की विपत्तियों का अंत न होगा." 6 याहवेह की खोज करो
और जीवित रहो, नहीं तो वह योसेफ़ के गोत्रों पर आग के समान भड़केगा; यह
उन्हें भस्म कर देगा, और इसे बुझानेवाला बेथेल में कोई न होगा. 7 ऐसे लोग हैं
जो न्याय को बिगाड़ते हैं और धर्मीपन को मिट्टी में मिला देते हैं. 8 जिसने
कृतिका तथा मृगशीर्ष नक्षत्रों की सृष्टि की, जो मध्य रात्रि को भोर में बदल देते हैं
तथा दिन को रात्रि में, जो महासागर के जल का बुलाते हैं और फिर उसे पृथ्वी
के ऊपर उंडेल देते हैं— याहवेह है उनका नाम. 9 पलक झपकते ही वे किले
को नाश कर देते हैं और गढ़वाले शहर का विनाश कर देते हैं. 10 ऐसे लोग हैं
जो अदालत में न्याय का पक्ष लेनेवाले से घृणा करते हैं और सत्य बोलनेवाले को
तुच्छ समझते हैं. 11 तुम निर्धनों के भूंसा पर भी कर लेते हो और उनके अन्न
पर कर लगाते हो. इसलिये, यद्यपि तुमने पत्थर की हवेलियां बनाई है, पर तुम
उनमें निवास न कर सकोगे; यद्यपि तुमने रसदार अंगूर की बारियां लगाई हैं, पर
तुम उनका दाखरस पी न सकोगे. 12 क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे अपराध
कितने ज्यादा हैं और तुमने कितने गंभीर पाप किए हैं. ऐसे लोग हैं जो निर्दोष पर
अत्याचार करते और घूस लेते हैं तथा निर्धन को न्यायालय में न्याय पाने से
वंचित कर देते हैं. 13 तब समझदार ऐसे समय में चुपचाप रहते हैं, क्योंकि यह
समय बुरा है. 14 बुराई नहीं, पर भलाई करो, कि तुम जीवित रहो. तब याहवेह
सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेंगे, जैसा कि तुम्हारा दावा है कि वह
तुम्हारे साथ हैं. 15 बुराई से घृणा और भलाई से प्रीति रखो; अदालत में न्याय
को बनाए रखो. शायद याहवेह सर्वशक्तिमान परमेश्वर योसेफ़ के बचे हुओं पर
कृपा करें. 16 इसलिये प्रभु, याहवेह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का यह कहना है:
"सब गलियों में विलाप होगा और सब चौराहों पर पीड़ा से रोने की आवाज
सुनाई देगी. किसानों को रोने के लिये और विलाप करनेवालों को विलाप करने
के लिये बुलाया जाएगा. 17 अंगूर की सब बारियों में विलाप होगा, क्योंकि
उस समय स्वयं मैं तुम्हारे बीच से होकर निकलूंगा," याहवेह का यह कहना है.
18 धिक्कार है तुम पर, जो तुम याहवेह के दिन की अभिलाषा करते हो! तुम
याहवेह के दिन की अभिलाषा क्यों करते हो? यह दिन प्रकाश नहीं, अंधकार
लेकर आएगा. 19 यह वैसा ही होगा जैसे कोई व्यक्ति सिंह से प्राण बचाकर भाग
रहा हो और भागते हुए उसका सामना भालू से हो जाए, अथवा वह घर के अंदर
पहुंचे, और आराम के लिए दीवार पर हाथ रखे और वहीं उसे एक सर्प डस ले.
20 क्या यह सत्य नहीं कि याहवेह का दिन प्रकाश का नहीं, अंधकार का दिन
होगा— घोर अंधकार, प्रकाश की एक किरण भी नहीं? 21 "मैं तुम्हारे उत्सवों
से घृणा करता हूं, उन्हें तुच्छ समझता हूं; तुम्हारी सभाएं मेरे लिए एक दुर्गंध के
समान हैं. 22 भले ही तुम मुझे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, पर मैं उन्हें
स्वीकार नहीं करूंगा. भले ही तुम मुझे अपना मनपसंद मेल बलि चढ़ाओ, पर
मेरे लिये उनका कोई मतलब नहीं होगा. 23 दूर रखो मुझसे अपने गीतों का
शोरगुल! मैं तुम्हारे वीणा के संगीत को नहीं सुनूंगा. 24 पर न्याय को नदी के
समान, तथा धर्मीपन को कभी न सूखनेवाले सोते के समान बहने दो! 25 "हे
इस्राएल के वंशजों, निर्जन प्रदेश में चालीस साल तक क्या तुमने मुझे बलिदान
और भेंट चढ़ाया? 26 तुमने अपने साथ राजा की समाधि, अपने मूर्तियों की
पीठिका, अपने देवता का तारा लिये फिरते हो— जिन्हें तुमने अपने लिये बनाया
है. 27 इसलिये मैं तुम्हें दमेशेक से भी बाहर बंधुआई में भेजूंगा," याहवेह का
यह कहना है, जिनका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर है.

6 धिक्कार है तुम पर, जो ज़ियोन में विलासितापूर्ण जीवन जीते हो, और धिक्कार है तुम पर, जो शमरिया पर्वत पर सुरक्षित अनुभव करते हो, तुम सोचते हो कि तुम सर्वोत्तम राष्ट्र के प्रसिद्ध लोग हो, जिनके पास इस्राएल के लोग आते हैं! 2 कालनेह जाओ और उसे देखो; तब वहां से बड़े हामाथ नगर को जाओ, तत्पश्चात नीचे फिलिस्तीनी नगर गाथ को जाओ. क्या ये तुम्हारे दो राज्यों से ज्यादा अच्छे हैं? क्या उनका देश तुम्हारे देश से बड़ा है? 3 तुम विपत्ति के दिन को दूर कर देते और आतंक के राज्य को पास ले आते हो. 4 तुम हाथी-दांत से सजे बिस्तर पर लेटते हो और पलंग पर आलस्य में समय नष्ट करते हो. तुम मनपसंद भेड़ों और मोटे-ताजे बछड़ों को खाते हो. 5 तुम दावीद के समान अपनी वीणा के तारों को झनकारते हो और वाद्य-यंत्रों को तुरंत बजाते हो. 6 तुम कटोरा भरकर दाखमधु पीते हो और सबसे अच्छे प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन लगाते हो, पर तुम योसेफ़ के विनाश पर शोकित नहीं होते हो. 7 तब तुम लोग सबसे पहले बंधुआई में जाओगे; तुम्हारा भोज करना और रंगरेलियां मनाना समाप्त हो जाएगा. 8 परम प्रभु ने स्वयं अपनी ही शपथ खाई है—याहवेह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर याहवेह यह घोषणा करता है: "मेरी नजर में घृणास्पद है याकोब का अहंकार और घृणित हैं उसके राजमहल; मैं इस नगर, उसके निवासियों तथा उसकी समस्त वस्तुओं को उसके शत्रुओं के अधीन कर दूंगा." 9 यदि किसी घर में दस व्यक्ति भी शेष रह गए हों, तौभी वे मर जाएंगे. 10 और जब कोई रिश्तेदार उस घर में से लाशों को ले जाने आएगा ताकि उनको जला सके और वह वहां किसी छिपे हुए मनुष्य से पूछे, "कोई और तुम्हारे साथ है?" और वह कहे, "नहीं," तब वह कहेगा, "चुप रह! हमें याहवेह का नाम नहीं लेना है." 11 क्योंकि याहवेह ने आदेश दिया है, और वह बड़े भवन को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और छोटे घर को चूर-चूर कर देगा. 12 क्या घोड़े करारदार चट्टानों पर दौड़ते हैं? क्या कोई बैलों से समुद्र में हल चलाता है? पर तुमने न्याय को विष में और धर्मीपन के फल को कड़वाहट में बदल दिया है— 13 तुम जो लो-देबार को अपने अधीन कर लेने में आनंदित हो और कहते हो, "क्या करनायिम को हमने अपने ही बल से नहीं ले लिया?" 14 क्योंकि याहवेह सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह घोषणा करता है, "हे इस्राएल के वंशजों, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक जाति को भड़काऊंगा, जो तुम पर लबो-हामाथ से लेकर अरबाह की घाटी तक अत्याचार करेगा."

7 प्रभु याहवेह ने मुझे यह दिखाया: जब राजा के हिस्से की फसल कट चुकी थी और बाद की फसल आनेवाली थी, तब याहवेह टिड्डियों के दल को तैयार कर रहे थे. 2 जब टिड्डियां देश की सारी वनस्पति को चट कर चुकीं, तब मैंने पुकारा, "हे प्रभु याहवेह, क्षमा कर दें! याकोब कैसे जीवित रह सकता है? वह बहुत छोटा है!" 3 इस पर याहवेह ने यह विचार त्याग दिया. और उसने कहा, "अब ऐसी बात न होगी." 4 तब प्रभु याहवेह ने मुझे यह दिखाया: परम प्रभु न्याय के लिये आग को पुकार रहे थे; इस अग्नि ने महासागर को सुखा दिया तथा भूमि को नष्ट कर दिया. 5 तब मैंने पुकारा, "हे परम प्रभु याहवेह, मैं आपसे बिनती करता हूं, इसे बंद कीजिये! याकोब कैसे जीवित रह सकता है? वह बहुत छोटा है!" 6 तब याहवेह ने इस विषय में अपना विचार त्याग दिया. और परम प्रभु ने कहा, "अब यह बात भी न होगी." 7 तब उसने मुझे यह दिखाया: प्रभु अपने हाथ में एक साहुल लिए हुए साहुल की एक दीवार पर खड़े थे. 8 और याहवेह ने मुझसे पूछा, "आमोस, तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?" मैंने उत्तर दिया, "एक साहुल," तब प्रभु ने कहा, "देख, मैं अपने इस्राएली लोगों के बीच में एक साहुल लगा रहा हूं; अब मैं उनको नहीं छोड़ूंगा. 9 "यित्सहाक के ऊंचे स्थान नाश किए जाएंगे और इस्राएल के पवित्र स्थान खंडहर हो जाएंगे; और मैं तलवार लेकर यरोबोअम के वंश पर आक्रमण करूंगा." 10 तब बेथेल के पुरोहित अमाज़्याह ने इस्राएल के राजा यरोबोअम के पास यह संदेश भेजा: "आमोस इस्राएल के वंश के बीच में तुम्हारे विरुद्ध एक षड़्यंत्र कर रहा है. इस देश के लिए उसकी बातें असहनीय है. 11 क्योंकि आमोस यह कह रहा है: " 'यरोबोअम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राएल अपनी मातृभूमि से अलग बंधुआई में चला जाएगा.' " 12 तब अमाज़्याह ने आमोस से कहा, "हे भविष्यदर्शी, यहां से भाग जा! यहूदिया देश को चला जा. वहां कमा खा और वहां अपनी भविष्यवाणी कर. 13 अब बेथेल फिर कभी भविष्यवाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवित्र स्थान और राज्य का मंदिर है." 14 आमोस ने अमाज़्याह को उत्तर दिया, "मैं न तो भविष्यवक्ता था और न ही मेरे पिताजी भविष्यवक्ता थे, परंतु मैं तो एक चरवाहा था और मैं गूलर वृक्षों की देखरेख करता था. 15 पर याहवेह ने मुझे पशुओं की देखभाल करने के काम से बुलाकर कहा, 'जा, और मेरे लोग इस्राएलियों से भविष्यवाणी कर.' 16 इसलिये अब याहवेह का वचन सुनो. तुम कहते हो, " 'इस्राएल के विरुद्ध में भविष्यवाणी मत कर, यित्सहाक के वंशजों के विरुद्ध बातें कहना बंद कर.' 17 "इसलिये याहवेह का कहना यह है: " 'तुम्हारी पत्नी शहर में एक वेश्या हो जाएगी, और तुम्हारे पुत्र और पुत्रियां तलवार से मारे जाएंगे. तुम्हारे देश को नापा जाएगा और विभाजित कर दिया जाएगा, और तुम स्वयं एक मूर्तिपूजक देश में मरोगे. और निश्चित रूप से इस्राएल अपनी मातृभूमि से अलग बंधुआई में चला जाएगा.' "

8 प्रभु याहवेह ने मुझे यह दिखाया: एक टोकरी पके फल. 2 तब उन्होंने मुझसे पूछा, "हे आमोस, तुम्हें क्या दिख रहा है?" मैंने उत्तर दिया, "एक टोकरी पके फल." तब याहवेह ने मुझसे कहा, "मेरे लोग इस्राएलियों का समय पक गया है; अब मैं उनको नहीं छोड़ूंगा." 3 प्रभु याहवेह की घोषणा है, "उस दिन मंदिर में गीत विलाप में बदल जाएंगे. बहुत सारे शव हर जगह पड़े होंगे! और सन्नाटा होगा!" 4 तुम, जो ज़रूरतमंद लोगों को कुचलते रहते हो और देश के गरीबों को मिटाते रहते हो, सुनो! 5 तुम कहते हो, "कब समाप्त होगा नया चांद का उत्सव कि हम अनाज बेच सकें, कब शब्बाथ समाप्त होगा कि हम गेहूं का खरीदी-बिक्री कर सकें?" कम चीज़ों को ज्यादा मूल्य पर बेचें और ग्राहक को छल की नाप से ठगें, 6 चांदी की मुद्रा से गरीबों को और ज़रूरतमंद लोगों को एक जोड़ी जूते से खरीदें, और तो और गेहूं की भूसी को भी बेच दें. 7 याहवेह जो याकोब का घमंड है, उसने स्वयं की यह शपथ खाई है: "उन्होंने जो किया है, उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा. 8 "क्या इस कारण धरती न कांपेगी, और जो इसमें रहते हैं, वे शोकित न होंगे? समस्त पृथ्वी नील नदी के समान उफनेगी; यह मिस्र देश के नदी समान ऊंची की जाएगी और फिर दबा दी जाएगी." 9 प्रभु याहवेह यह घोषणा करते हैं, "उस दिन, दोपहर के समय ही मैं सूर्यास्त कर दूंगा और दिन-दोपहरी में ही पृथ्वी पर अंधकार कर दूंगा. 10 मैं तुम्हारे धार्मिक उत्सवों को शोक में और तुम्हारे समस्त गीतों को विलाप में बदल दूंगा. मैं तुम सबको टाट का कपड़ा (शोक-वस्त्र) पहनाऊंगा और सबके सिरों को मुड़ाऊंगा. मैं उस समय को किसी के एकमात्र पुत्र की मृत्यु पर किए जा रहे विलाप के समान और इसके अंत को एक दुखद दिन के समान कर दूंगा." 11 परम प्रभु यह घोषणा करते हैं, "ऐसे दिन आ रहे हैं, जब मैं संपूर्ण देश में अकाल भेजूंगा— अन्न-जल का अकाल नहीं पर याहवेह के वचन के सुनने का अकाल. 12 लोग याहवेह के वचन की खोज में इस समुद्र से उस समुद्र में और उत्तर से लेकर दक्षिण दिशा तक भटकेंगे, परंतु वह उन्हें न मिलेगा. 13 "उस समय में "सुंदर युवतियां तथा युवा पुरुष प्यास के कारण मूर्छित हो जाएंगे. 14 जो शमरिया के पाप की शपथ खाकर कहते हैं, 'हे दान, तुम्हारे देवता के जीवन की शपथ,' या, 'बेअरशेबा के देवता के जीवन की शपथ'— वे ऐसे गिरेंगे कि फिर कभी न उठेंगे."

9 मैंने प्रभु को वेदी के निकट खड़े देखा, और उन्होंने कहा: "मीनारों के
सिराओं को ऐसे मारो कि नीवें तक हिल जाएं. उन्हें सब लोगों के सिरों पर
गिराओ; जो बच जाएंगे, उनको मैं तलवार से मार डालूंगा. एक भी भाग नहीं
सकेगा, एक भी बच न सकेगा. 2 चाहे वे खोदकर अधोलोक तक पहुंच जाएं,
मेरा हाथ उन्हें वहां से भी खींच लाएगा. चाहे वे आकाश के ऊपर भी चढ़ जाएं,
मैं उन्हें वहां से भी नीचे ले आऊंगा. **(Sheol h7585)** 3 चाहे वे कर्मेल पर्वत के
शिखर पर जा छिपें, मैं उन्हें वहां भी ढूंढकर पकड़ लूंगा. चाहे वे मेरी दृष्टि से
समुद्र के तल में छिप जाएं, वहां मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूंगा. 4 चाहे
उनके शत्रु उन्हें बंधुआई में ले जाएं, वहां मैं आज्ञा देकर उन्हें तलवार से मरवा
डालूंगा. "मैं उनकी भलाई के लिये नहीं पर उनकी हानि के लिये उन पर नजर
रखूंगा." 5 प्रभु, सर्वशक्तिमान याहवेह, वे पृथ्वी को छूते हैं और वह पिघल
जाती है, और उसमें रहनेवाले सब विलाप करते हैं; पूरी भूमि नील नदी के समान
ऊपर उठती है, और फिर मिस्र देश की नदी के समान नीचे बैठ जाती है; 6 वे
आकाश में अपना ऊंचा महल बनाते हैं और उसकी नींव पृथ्वी पर रखते हैं; वे
समुद्र के पानी को बुलाते हैं और भूमि पर वर्षा करते हैं— याहवेह है उनका नाम.
7 "क्या तुम इस्राएली मेरे लिये कूश वासियों के समान नहीं हो?" याहवेह
की यह घोषणा है. "क्या मैं इस्राएलियों को मिस्र देश से, फिलिस्तीनियों को
काफ़तोर देश से और सीरियावासियों को कीर देश से बाहर निकालकर नहीं
लाया? 8 "निश्चित रूप से परम प्रभु की आंखें पापमय राज्य पर लगी हुई हैं. मैं
धरती पर से इसे नाश कर दूंगा. तौभी, मैं याकोब के वंश को पूरी तरह नाश
नहीं करूंगा," याहवेह की यह घोषणा है. 9 "क्योंकि मैं आज्ञा दूंगा, और मैं
इस्राएल के लोगों को सब जनताओं के बीच ऐसे हिलाऊंगा, जैसे किसी चलनी
में अनाज को हिलाया जाता है, और भूमि पर एक भी कंकड़ नहीं गिरता. 10
मेरे लोगों के बीच में जो पापी हैं, वे सब जो यह कहते हैं, 'न तो विपत्ति हमारे
ऊपर आएगी और न ही विपत्ति से हमारा सामना होगा,' वे सबके सब तलवार
से मारे जाएंगे. 11 "उस समय "मैं दावीद के गिरे हुए आश्रय का पुनर्निमाण
करूंगा, मैं इसके टूटे दीवारों को ठीक करूंगा, इसके खंडहरों को ठीक करूंगा,
और इसको पहले जैसा फिर से बना दूंगा, 12 ताकि वे एदोम के बचे लोगों को
और उन सब जाति के लोगों को अपने अधीन कर लें, जो मेरा नाम लेते हैं,"
यह उन्हीं याहवेह की घोषणा है, जो यह सब करने पर हैं. 13 यह याहवेह का
कहना है, "ऐसे दिन आ रहे हैं, "जब हल चलानेवाला फसल काटनेवाले से,
और अंगूर को रौंदनेवाला पौधा रोपनेवाले से आगे निकल जाएगा. नये अंगूर का
मधु पर्वतों से टपकने लगेगा और यह सब पहाड़ियों से बह जाएगा, 14 और मैं
अपने इस्राएली लोगों को बंधुआई से वापस ले आऊंगा. "वे नष्ट हुए नगरों का
पुनर्निर्माण करेंगे और उनमें रहने लगेंगे. वे अंगूर की बारियां लगाएंगे और
उनकी शराब पिएंगे; वे बगीचा लगाएंगे और उनके फलों को खाएंगे. 15 मैं
इस्राएल को उनके अपने देश में स्थापित करूंगा, और वे उस देश से फिर कभी
निकाले नहीं जाएंगे जिसे मैंने उन्हें दिया है," यह याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का
कहना है.

ओबद्याह

1 ओबदिया द्वारा देखा गया दर्शन. एदोम के विषय में परमेश्वर याहवेह का यह
संदेश है, हमने याहवेह से यह समाचार सुना है: समस्त राष्ट्रों को संदेश देने
के लिए एक दूत भेजा गया था, "उठो, हम युद्ध के लिए उस पर आक्रमण करे."
2 "देखो, मैं तुम्हें राष्ट्रों के समक्ष छोटा बना दूंगा; तुम अत्यंत घृणित हो जाओगे.
3 तुम्हारे हृदय के अहंकार ने ही तुम्हें धोखा दिया है, तुम, जो चट्टान के निकले
भाग पर निवास करते हो और अपना घर ऊंचाई पर बनाते हो, तुम जो अपने
आपसे कहते हो, 'किसमें दम है, जो मुझे नीचे भूमि पर ला सके?' 4 यद्यपि तुम
गरूड़ के सदृश ऊंचाइयों पर उड़ते रहते हो, और अपना घोंसला मानो तारों के
मध्य में बनाते हो, मैं तुम्हें वहां से नीचे ले आऊंगा," यह याहवेह की घोषणा है.
5 यदि चोर तुम्हारे पास आएं, यदि रात्रि में डाकू आएं, क्या वे उतना ही विनाश
न करेंगे जितना उनके लिए पर्याप्त होगा? यदि द्राक्षा तोड़नेवाले तुम्हारे निकट
आएं, क्या वे अंगूर न छोड़ेंगे? 6 पर एसाव की कैसी लूटमार होगी, कैसे उसके
छिपाये खजाने को खोज निकाली गई! 7 तुम्हारे ही समस्त मित्र राष्ट्रों तुम्हें
तुम्हारी सीमा तक खदेड़ देंगे; तुम्हारे मित्र धोखा देकर तुम्हें अपने अधिकार में
कर लेंगे; जो तुम्हारी रोटी खाते हैं, वे ही तुम्हारे लिये जाल बिछायेंगे, पर तुम्हें
इसका पता भी नहीं चलेगा. 8 याहवेह घोषणा कर रहे हैं, "क्या मैं उस दिन"
एदोम के बुद्धिमानों को, एसाव पर्वत में से समझदारों को नष्ट न करूंगा? 9
तुम्हारे योद्धा, तेमान, भयभीत होंगे, और एसाव के पर्वतों पर हर एक मनुष्य का
संहार किया जाएगा. 10 तुमने भाई याकोब पर किए हिंसा के कारण, तुम्हें
लज्जित होना पड़ेगा; और तुम हमेशा के लिये नाश हो जाओगे. 11 उस दिन
तुम दूर खड़े हुए सब देखते रहे और विदेशियों ने नगर में प्रवेश किया, वे उसकी
संपत्ति लूटकर ले जाते रहे और उन्होंने येरूशलेम को हड़पने के लिए मतपत्रों
का प्रयोग किया, तुम उनमें से एक के जैसे थे. 12 तुम अपने भाई की दुर्दशा के
दिनों में उसके ऊपर आनंद मत मनाना, न ही यहूदिया प्रदेश के निवासियों पर,
उनके विनाश के दिन में आनंद मनाना, और न ही उनके संकट के दिन में ज्यादा
घमंड करना. 13 मेरी प्रजा की संकट की स्थिति में उनके नगर में प्रवेश न
करना, न ही उनकी विपत्ति में तुम उनको देखते रहना, और न ही उनकी विपत्ति
के अवसर पर तुम उनकी संपत्ति पर कब्जा करना. 14 तुम सड़क के चौक पर
उनके भागनेवालों को मार डालने के लिये खड़े मत होना, न ही उनके संकट के
समय में उनके बच गये लोगों को शत्रु के हाथों में सौंपना. 15 "सारे देशों के
लिए निर्धारित याहवेह का दिन निकट है. जैसा तुमने किया है, ठीक वैसा ही
तुम्हारे साथ भी किया जाएगा; तुम्हारे द्वारा किए गए बुरे काम तुम्हारे ही सिर पर
आ पड़ेंगे. 16 ठीक जिस प्रकार तुमने मेरे पवित्र पर्वत पर वह प्याला पिया है,
उसी प्रकार सारे देश निरंतर वह प्याला पीते रहेंगे; वे पिएंगे और पिएंगे और ऐसे
हो जायेंगे, जैसे वे कभी न थे. 17 किंतु बचकर निकले लोग ज़ियोन पर्वत पर
रहेंगे; वह पवित्र होगा, और याकोब के वंशज अपनी संपत्ति पर फिर अधिकार
करेंगे. 18 याकोब का वंश आग के समान और योसेफ़ का वंश ज्वाला के
समान होगा; एसाव का वंश बचे हुए भूंसे के समान होगा, और वे उन्हें जलाकर
नाश कर देंगे. एसाव के वंश में से कोई भी न बचेगा." क्योंकि यह याहवेह ने
कहा है. 19 एसाव पर्वत पर नेगेव के निवासियों का अधिकार हो जाएगा,
और फिलिस्तिया देश पर नीचे के देश के लोग अधिकार कर लेंगे. वे एफ्राईम
तथा शमरिया के खेतों पर अधिकार कर लेंगे, और बिन्यामिन गिलआद पर
अधिकार करेगा. 20 बंधुआ इस्राएलियों का यह दल, जो कनान में है वह
कनानियों के ज़रफता देश तक अपने अधिकार में कर लेगा; येरूशलेम के
बंधुआ, जो सेफहारथ नगर में हैं, वे नेगेव के नगरों को अपने अधिकार में कर
लेंगे. 21 छुड़ानेवाले एसाव पर्वत पर शासन करने के लिये ज़ियोन पर्वत पर चढ़
आएंगे. और राज्य याहवेह का हो जाएगा.

योना

1 याहवेह का यह वचन अमितै के पुत्र योनाह के पास पहुंचा: 2 “उठो और
उस महानगर नीनवेह को जाओ और उसके निवासियों के विरुद्ध घोषणा
करो, क्योंकि उनकी दुष्टता मेरी दृष्टि में आ गई है.” 3 पर योनाह याहवेह की
उपस्थिति से भागने के उद्देश्य से तरशीश जाने के लिए योप्पा जा पहुंचा. वहां
उसे एक पानी जहाज़ मिला, जो तरशीश जाने पर था. किराया देने के बाद, वह
पानी जहाज़ में चढ़ गया कि वह याहवेह की उपस्थिति से भागकर वह दूसरे
यात्रियों के साथ तर्शीश पहुंच सके. 4 तब याहवेह ने समुद्र पर एक प्रचंड आंधी
चलाई, और सतह पर ऐसा भयंकर तूफान उठा कि पानी जहाज़ के टूटने की
स्थिति उत्पन्न हो गई. 5 सब नाविक भयभीत हो गए और हर एक अपने-अपने
देवता को पुकारने लगा. और वे पानी जहाज़ में लदी हुई सामग्री को समुद्र
में फेंकने लगे ताकि जहाज़ का बोझ कम हो जाए. किंतु इस समय योनाह
जहाज़ के निचले भाग में जाकर गहरी नींद में पड़ा हुआ था. 6 जहाज़ का
कप्तान उसके पास गया और उसे जगाकर कहा, “तुम ऐसी स्थिति में कैसे सो
सकते हो? उठो और अपने ईश्वर को पुकारो! संभव है कि तुम्हारा ईश्वर हम पर
कृपा करे और हम नाश होने से बच जाएं.” 7 तब नाविकों ने एक दूसरे को
कहा, “ऐसा करें, हम चिट्ठी डालकर यह पता करें कि किसके कारण हम पर
यह विपत्ति आई है.” तब उन्होंने चिट्ठी डाली और चिट्ठी योनाह के नाम पर
निकली. 8 इस पर उन्होंने योनाह से पूछा, “हमें बता कि हम पर यह विपत्ति
किसके कारण आई है? तू क्या काम करता है? तू कहां से आ रहा है? तू किस
देश और किस जाति का है?” 9 योनाह ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं एक इब्री हूं और
मैं उस याहवेह, स्वर्ग के परमेश्वर की आराधना करता हूं, जिन्होंने समुद्र तथा
भूमि की सृष्टि की है.” 10 यह सुनकर वे भयभीत हो गए और उन्होंने योनाह से
कहा, “तुमने यह क्या कर डाला?” (क्योंकि योनाह उन्हें यह बता चुका था कि
वह याहवेह की उपस्थिति से भाग रहा था.) 11 इस पर उन्होंने योनाह से
पूछा, “अब हम तुम्हारे साथ क्या करें कि हमारे लिये समुद्र शांत हो जाए?”
क्योंकि समुद्र की लहरें और भी उग्र होती जा रही थी. 12 योनाह ने कहा,
“मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दें. तब समुद्र शांत हो जाएगा. क्योंकि मैं जानता हूं
कि तुम्हारे ऊपर यह बड़ा तूफ़ान मेरे ही कारण आया है.” 13 फिर भी, नाविकों
ने जहाज़ को तट तक ले जाने की बहुत कोशिश की. पर वे सफल न हुए,
क्योंकि समुद्र पहले से और उग्र होता जा रहा था. 14 तब उन्होंने ऊंचे स्वर
में याहवेह को यह कहकर पुकारा, “हे याहवेह, इस व्यक्ति का प्राण लेने के
कारण, कृपया हमें नाश न होने दें. हमें एक निर्दोष को मारने का दोषी न ठहराएं,
क्योंकि आपने वही किया है, जो आपको अच्छा लगा.” 15 तब उन्होंने योनाह
को उठाकर समुद्र में फेंक दिया और उग्र समुद्र शांत हो गया. 16 इससे उन
व्यक्तियों ने याहवेह का बहुत भय माना, और उन्होंने याहवेह के लिए एक बलि
चढ़ाई और मन्नतें मानीं. 17 याहवेह ने एक विशाल मछली ठहरायी थी, जिसने
योनाह को निगल लिया, और योनाह उस मछली के पेट में तीन दिन और तीन
रात रहा.

2 तब मछली के पेट में से योनाह ने याहवेह अपने परमेश्वर से प्रार्थना की.
2 उसने कहा: “अपने संकट में मैंने याहवेह को पुकारा, और उन्होंने मुझे
उत्तर दिया. मृत्युलोक की गहराई में से मैंने सहायता की याचना की, और
आपने मेरी याचना सुन ली. (Sheol h7585) 3 आपने मुझे गहराई में, समुद्र के
गहराई में डाल दिया, मैं समुद्र के जल प्रवाह में समा गया; आप ही की लहरें
टकराकर मेरे ऊपर से प्रवाहित होती रहीं. 4 मैंने कहा, ‘मुझे आपके सामने से
निकाल दिया गया है; फिर भी मैं आपके पवित्र मंदिर की ओर फिर ताकूंगा.’ 5
डुबानेवाला पानी मुझे डरा रहा था, गहराई मेरे चारों तरफ थी; समुद्री घांसपात
से मेरा सिर लिपटा हुआ था. 6 समुद्र में मैं तो पर्वतों के जड़ तक उतर गया;
पृथ्वी के तल ने मुझे सदा के लिए जकड़ लिया था. किंतु आपने, हे याहवेह मेरे
परमेश्वर, मुझे गड्ढे में से निकाल लिया. 7 “जब मेरे जीवन का अंत हो रहा था,
हे याहवेह, मैंने आपको स्मरण किया, और मेरी प्रार्थना आपके पास, आपके
पवित्र मंदिर में पहुंची. 8 “वे जो बेकार की मूर्तियों पर मन लगाते हैं वे अपने
आपको परमेश्वर के प्रेम से दूर रखते हैं. 9 पर मैं कृतज्ञता से भरे प्रशंसा के ऊंचे
शब्दों के साथ, आपके लिये बलिदान चढ़ाऊंगा. जो मन्नत मैंने मानी है, उसे मैं
पूरी करूंगा. मैं कहूंगा, ‘उद्धार याहवेह ही से होता है.’” 10 तब याहवेह ने उस
मछली को आज्ञा दी, और उसने योनाह को सूखी भूमि पर उगल दिया.

3 तब याहवेह का वचन योनाह के पास दूसरी बार पहुंचा: 2 “उठो और उस
बड़े शहर नीनवेह को जाओ और वहां उस संदेश की घोषणा करो जिसे मैं
तुम्हें देनेवाला हूं.” 3 तब योनाह उठकर याहवेह की आज्ञा के अनुसार नीनवेह
को गया. नीनवेह एक बड़ा शहर था; जिससे होकर जाने में तीन दिन लग जाते
थे. 4 योनाह ने नगर में प्रवेश किया और अपने पहले दिन की यात्रा में यह
घोषणा करते गया, “अब से चालीस दिन के बाद नीनवेह को ध्वस्त कर दिया
जाएगा.” 5 नीनवेह के लोगों ने परमेश्वर में विश्वास किया. उपवास रखने की
घोषणा की गई और साधारण से लेकर बड़े, सब लोगों ने टाट (शोक-वस्त्र)
पहना. 6 जब नीनवेह के राजा तक योनाह का समाचार पहुंचा, तो वह अपने
सिंहासन से उठा, और अपने राजसी वस्त्र को उतारकर टाट को ओढ़ लिया और
जाकर राख में बैठ गया. 7 उसने नीनवेह में यह घोषणा करवायी: “राजा और
सामन्तों के फैसले के अनुसार: “कोई भी मनुष्य या पशु, गाय-बैल या भेड़-
बकरी कुछ भी न खाय; उन्हें कुछ भी खाने या पीने न दिया जाय. 8 पर मनुष्य
और पशु टाट ओढ़ें. हर एक जन तुरंत परमेश्वर की दोहाई दे और वे अपनी बुरे
कामों तथा हिंसा के कार्यों को छोड़ दें. 9 संभव है कि परमेश्वर अपने निर्णय
को बदल दें और दया करके हम पर क्रोध न करें और हम नाश होने से बच
जाएं.” 10 जब परमेश्वर ने उनके काम को देखा कि कैसे वे अपने बुरे कार्यों से
फिर गये हैं, तो उन्होंने अपनी इच्छा बदल दी और उनके ऊपर वह विनाश नहीं
लाया जिसका निर्णय उन्होंने लिया था.

4 परंतु योनाह को परमेश्वर का यह निर्णय गलत लगा, और वह क्रोधित हुआ.
2 उसने याहवेह से यह प्रार्थना की, “हे याहवेह, क्या मैंने यह नहीं कहा था,
जब मैं अपने घर में था? इसलिये तरशीश को भागने के द्वारा मैंने अनुमान लगाने
की कोशिश की. मैं जानता था कि आप अनुग्रहकारी और कृपालु परमेश्वर हैं;
आप क्रोध करने में धीमा और प्रेम से भरे हुए हैं; आप ऐसे परमेश्वर हैं जो विपत्ति
भेजने से अपने आपको रोकते हैं. 3 तब हे याहवेह, मेरे प्राण ले लें, क्योंकि मेरे
लिये जीवित रहने से मर जाना भला है.” 4 परंतु याहवेह ने उत्तर दिया, “क्या
तुम्हारा क्रोधित होना उचित है?” 5 तब योनाह बाहर जाकर शहर के पूर्व की
ओर एक जगह में बैठ गया. वहां उसने अपने लिये एक छत बनायी और उसकी
छाया में बैठकर इंतजार करने लगा कि अब शहर का क्या होगा. 6 तब याहवेह
परमेश्वर ने एक पत्तीवाले पौधे को उगाया और उसे योनाह के ऊपर बढ़ाया
ताकि योनाह के सिर पर छाया हो और उसे असुविधा न हो; योनाह उस पौधे के
कारण बहुत खुश था. 7 पर अगले दिन बड़े सबेरे परमेश्वर ने एक कीड़े को
भेजा, जिसने उस पौधे को कुतर डाला, जिससे वह पौधा मुरझा गया. 8 जब
सूरज निकला, तब परमेश्वर ने एक झुलसाती पूर्वी हवा चलाई, और योनाह के
सिर पर सूर्य की गर्मी पड़ने लगी, जिससे वह मूर्छित होने लगा. वह मरना
चाहता था, और उसने कहा, “मेरे लिये जीवित रहने से मर जाना भला है.” 9
परंतु परमेश्वर ने योनाह से कहा, “क्या इस पौधे के बारे में तुम्हारा गुस्सा होना
उचित है?” योनाह ने उत्तर दिया, “बिलकुल उचित है. मैं इतने गुस्से में हूं कि

मेरी इच्छा है कि मैं मर जाऊं." 10 परंतु याहवेह ने कहा, "तुम इस पौधे के
लिए चिंतित हो, जिसकी तुमने न तो कोई देखभाल की और न ही तुमने उसे
बढ़ाया. यह रातों-रात निकला और रातों-रात यह मर भी गया. 11 तो फिर क्या
मैं इस बड़े शहर नीनवेह की चिंता न करूं? जिसमें एक लाख बीस हजार से
अधिक मनुष्य रहते हैं, जो अपने दाएं तथा बाएं हाथ के भेद को भी नहीं
जानते—और इस शहर में अनेक पशु भी हैं."

मीका

1 यहूदिया के राजा योथाम, आहाज़ तथा हिज़किय्याह के शासनकाल में मोरेशेथवासी मीकाह के पास याहवेह का यह वचन पहुंचा, जिसे उसने शमरिया और येरूशलेम के बारे में दर्शन में देखा. 2 हे लोगों, तुम सब सुनो, पृथ्वी और इसके सभी निवासियों, इस पर ध्यान दो, कि प्रभु अपने पवित्र मंदिर से, परम याहवेह तुम्हारे विरुद्ध गवाही दें. 3 देखो! याहवेह अपने निवास से निकलकर आ रहे हैं; वे नीचे उतरकर पृथ्वी के ऊंचे स्थानों को रौंदते हैं. 4 उनके पैरों के नीचे पर्वत पिघल जाते हैं और जैसे आग के आगे मोम, और जैसे ढलान से गिरता पानी, वैसे ही घाटियां तड़क कर फट जाती हैं. 5 यह सब याकोब के अपराध, और इस्राएल के लोगों के पाप का परिणाम है. याकोब का अपराध क्या है? क्या शमरिया नहीं? यहूदिया का ऊंचा स्थान (देवताओं के पूजा-स्थल) क्या है? क्या येरूशलेम नहीं? 6 "इसलिये मैं शमरिया को मैदान में खंडहर के ढेर सा कर दूंगा, एक ऐसी जगह जहां अंगूर की बारी लगाई जाती है. मैं उसके पत्थरों को नीचे घाटी में लुढ़का दूंगा और उसकी नीवें खुली कर दूंगा. 7 उसकी सब मूर्तियां टुकड़े-टुकड़े कर दी जाएंगी; उसके मंदिर के सब भेटों को आग में जला दिया जाएगा; मैं उसकी सब मूर्तियों को नष्ट कर दूंगा. क्योंकि उसने अपनी भेटों को वेश्यावृत्ति करके प्राप्त किया है, और वेश्यावृत्ति के मजदूरी के रूप में वे फिर उपयोग में लाई जाएंगी." 8 इसलिये मैं रोऊंगा और विलाप करूंगा; मैं खाली पैर और नंगा चला फिरा करूंगा. मैं सियार के समान चिल्लाऊंगा और उल्लू की तरह कराहूंगा. 9 क्योंकि शमरिया का घाव असाध्य है; यह यहूदिया में फैल गया है. यह मेरी प्रजा के द्वार तक, और तो और यह येरूशलेम तक पहुंच गया है. 10 यह समाचार गाथ में न दिया जाए; बिलकुल भी न रोया जाए. बेथ-अफराह में जाकर धूल में लोटो. 11 तुम जो शाफीर में रहते हो, नंगे और निर्लज्ज होकर आगे बढ़ो. जो त्सानान नगर में रहते हैं वे बाहर नहीं निकलेंगे. बेथ-एत्सेल विलाप में डूबा हुआ है; यह तुम्हारा और बचाव नहीं कर सकता. 12 जो मारोथ में रहते हैं, वे दर्द से छटपटा रहे हैं, और मदद के लिये इंतजार कर रहे हैं, क्योंकि याहवेह के द्वारा भेजी गई विपत्ति येरूशलेम के प्रवेश द्वार तक पहुंच गई है. 13 तुम जो लाकीश में रहते हो, तेज भागनेवाले घोड़ों को रथ में फांदने के लिये साज पहनाओ. तुम्हीं से ज़ियोन की पुत्री का पाप शुरू हुआ, क्योंकि तुम्हीं में इस्राएल का अपराध पाया गया. 14 इसलिये तुम्हें ही मोरेशेथ-गथ को विदाई उपहार देना होगा. अकज़ीब के निवासी इस्राएल के राजाओं के लिए धोखेबाज सिद्ध होंगे. 15 हे मारेशाह के रहनेवाले, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक विजेता को भेजूंगा. इस्राएल के प्रतिष्ठित लोग अदुल्लाम को भाग जाएंगे. 16 अपने प्यारे बच्चों के लिए शोक में अपने सिर के बाल मुंड़ाओ; गिद्ध के समान अपना सिर गंजा कर लो, क्योंकि तुम्हारी संतान तुम्हारे पास से बंधुआई में चली जाएगी.

2 धिक्कार है उन पर जो बुरे कार्यों की योजना बनाते रहते हैं, जो अपने बिछौने पर पड़े हुए षड़्यंत्र रचते हैं! पौ फटते ही अपनी युक्ति को पूरा करते हैं क्योंकि सत्ता उनके हाथ होती है. 2 वे दूसरों के खेत का लोभ करके उसे हड़प भी लेते हैं, वे दूसरों के घर भी छीन लेते हैं. वे लोगों के घरों को छल करके ले लेते हैं, और उनके पुरखों की संपत्ति को लूट लेते हैं. 3 इसलिये याहवेह का यह कहना है: "मैं इन लोगों के विरुद्ध विपत्ति लाने की योजना बना रहा हूं, जिससे तुम अपने आपको नहीं बचा सकते. तुम गर्व से सिर उठाकर फिर कभी न चल सकोगे, क्योंकि यह विपत्ति का समय होगा. 4 उस दिन लोग तुम्हारा हंसी उड़ाएंगे; वे इस शोक गीत के साथ तुम्हें ताना मारेंगे: 'हम पूर्णतः नाश हो गये हैं; मेरे लोगों की संपत्ति बांट दी गई है. परमेश्वर इसे मुझसे ले लेते हैं! वे हमारे खेत विश्वासघातियों को दे देते हैं.'" 5 इसलिये याहवेह के सभा में भूमि को लाटरी के द्वारा बांटने के लिए तुम्हारे पास कोई न होगा. 6 उनके भविष्यवक्ता कहते हैं, "भविष्यवाणी मत करो; इन बातों के बारे में भविष्यवाणी मत करो; हमारे ऊपर कलंक नहीं लगेगा." 7 हे याकोब के वंशजों, क्या यह कहा जाना चाहिये, "क्या याहवेह धीरज नहीं धरते? क्या वे ऐसा कार्य करते हैं?" "क्या मेरे वचन से उसकी भलाई नहीं होती जो न्याय के रास्ते पर चलता है? 8 हाल ही में मेरे लोग एक शत्रु के समान उठ खड़े हुए हैं. तुम उन व्यक्तियों के मंहगे कपड़े छीन लेते हो जो बेफिक्र होकर जाते रहते हैं, मानो वे युद्ध से लौट रहे हों. 9 तुम मेरे लोगों के महिलाओं को उनके खुशहाल घरों से निकाल देते हो. तुम उनकी संतान से मेरी आशीष को हमेशा के लिये छीन लेते हो. 10 चलो उठो, यहां से चले जाओ! यह तुम्हारे आराम की जगह नहीं है, क्योंकि यह अशुद्ध हो गई है, यह नाश हो गई है, और इसका कोई उपचार नहीं है. 11 यदि कोई झूठा और धोखा देनेवाला व्यक्ति आकर यह कहता है, 'मैं तुम्हारे पास बहुत ही अंगूर की दाखमधु और जौ की दाखमधु होने की भविष्यवाणी करूंगा,' तो ऐसा व्यक्ति इन लोगों के लिए उपयुक्त भविष्यवक्ता होगा! 12 "हे याकोब, निश्चित रूप से मैं तुम सबको एकत्र करूंगा; मैं निश्चित रूप से इस्राएल के बचे लोगों को इकट्ठा करूंगा. जैसे भेड़ें भेड़शाला में एकत्र की जाती हैं, जैसे चरागाह में झुंड एकत्रित किया जाता है, वैसे ही मैं उन्हें इकट्ठा करूंगा; उस जगह में लोगों की भीड़ लग जाएगी. 13 वह, जो बाड़े को तोड़कर रास्ता खोलता है, वह उनके आगे-आगे जाएगा; वे द्वार को तोड़कर बाहर चले जाएंगे. उनका राजा उनके आगे-आगे जाएगा, स्वयं याहवेह उनका अगुआ होंगे."

3 तब मैंने कहा, "हे याकोब के अगुओ, हे इस्राएल के शासको, सुनो. क्या तुम्हें न्याय से प्रेम नहीं करना चाहिये, 2 तुम जो भलाई से घृणा करते हो और बुराई से प्रेम करते हो; तुम जो मेरे लोगों की खाल और उनकी हड्डियों से मांस नोच लेते हो; 3 तुम जो मेरे लोगों का मांस खाते हो, उनकी खाल खींच लेते हो और उनके हड्डियों को टुकड़े-टुकड़े कर देते हो; उनकी अस्थियों को चूर्ण कर देते हो तुम जो उनको कड़ाही में पकाने वाले मांस या बर्तन में रखे मांस की तरह काट डालते हो?" 4 तब वे याहवेह को पुकारेंगे, पर याहवेह उनकी नहीं सुनेंगे. उनके बुरे कामों के कारण उस समय वह अपना मुख उनसे छिपा लेंगे. 5 याहवेह का यह कहना है: "वे भविष्यवक्ता जो मेरे लोगों को भटका देते हैं, यदि उनको खाने को कुछ मिलता है, तब वे शांति की घोषणा करते हैं, पर जो व्यक्ति उनको खिलाने से मना करता है, उसके विरुद्ध लड़ाई करने को तैयार हो जाते हैं. 6 इसलिये तुम्हें बिना बताये तुम्हारे ऊपर रात्रि आ जाएगी, और बिना बताये तुम्हारे ऊपर अंधेरा छा जाएगा. इन भविष्यवक्ताओं के लिये सूर्यास्त हो जाएगा, और दिन रहते उन पर अंधेरा छा जाएगा. 7 भविष्यदर्शी लज्जित होंगे और भविष्य बतानेवाले कलंकित होंगे. वे सब लज्जा से अपना मुंह ढांप लेंगे क्योंकि उन्हें परमेश्वर से कोई उत्तर न मिलेगा." 8 पर जहां तक मेरा सवाल है, मैं याहवेह के आत्मा के साथ सामर्थ्य से, तथा न्याय और बल से भरा हुआ हूं, ताकि याकोब को उसका अपराध, और इस्राएल को उसका पाप बता सकूं. 9 हे याकोब के अगुओ, हे इस्राएल के शासको, यह बात सुनो, तुम जो न्याय को तुच्छ समझते हो और सब सही बातों को बिगाड़ते हो; 10 तुम जो ज़ियोन को रक्तपात से, और येरूशलेम को दुष्टता से भरते हो. 11 उसके अगुए घूस लेकर न्याय करते हैं, उसके पुरोहित दाम लेकर शिक्षा देते हैं, और उसके भविष्यवक्ता पैसों के लिये भविष्य बताते हैं. तौभी वे याहवेह की मदद की कामना करते हुए कहते हैं, "क्या याहवेह हमारे मध्य में नहीं हैं? कोई भी विपत्ति हमारे ऊपर नहीं आएगी." 12 इसलिये तुम्हारे ही कारण, ज़ियोन पर खेत के सदृश हल चला दिया जाएगा, येरूशलेम खंडहर हो जाएगा, तथा भवन की पहाड़ी वन में पूजा-स्थल का स्वरूप ले लेगी.

4 कि अंत के दिनों में वह पर्वत और पहाड़ जिस पर याहवेह का भवन है;
उसे दृढ़ और ऊंचा किया जायेगा, और सब जाति के लोग बहती हुई नदी के
समान उस ओर आएंगे. 2 और जाति के लोग कहेंगे, "आओ, हम याहवेह के
पर्वत, याकोब के परमेश्वर के भवन को चलें. कि वह हमें अपने नियम सिखाएं,
और हम उनके मार्गों पर चलें." क्योंकि ज़ियोन से व्यवस्था निकलेगी, और
येरूशलेम से याहवेह का वचन आएगा. 3 परमेश्वर जनताओं के बीच न्याय
करेंगे और लोगों की परेशानियां दूर करेंगे. तब वे अपनी तलवारों को पीट-
पीटकर हल के फाल तथा अपने भालों को हंसिया बना लेंगे. एक देश दूसरे के
विरुद्ध तलवार नहीं उठायेगा, तथा उन्हें फिर कभी लड़ने के लिए तैयार नहीं
किया जाएगा. 4 हर एक जन अपनी ही अंगूर की लता और अपने ही अंजीर
के वृक्ष के नीचे बैठेगा, और उन्हें कोई नहीं डराएगा, क्योंकि सर्वशक्तिमान
याहवेह ने कहा है. 5 सब जातियां अपने-अपने देवताओं का नाम लेकर चलें तो
चलें, पर हम सदा-सर्वदा याहवेह अपने परमेश्वर का नाम लेकर चलेंगे. 6 "उस
दिन," यह याहवेह की घोषणा है, "मैं लंगड़ों को इकट्ठा करूंगा; मैं बंधुवा
लोगों को और उन लोगों को भी इकट्ठा करूंगा जिन्हें मैंने दुःख दिया है. 7 मैं
लंगड़ों को अपना बचा हुआ भाग, और भगाये हुओं को एक मजबूत जाति
बनाऊंगा. तब उस समय से लेकर सदा-सर्वदा तक याहवेह ज़ियोन पर्वत से उन
पर शासन करते रहेंगे. 8 जहां तक तुम्हारा सवाल है, हे झुंड की चौकसी के
मचान, हे ज़ियोन की पुत्री के सुरक्षा गढ़, तुम्हें तुम्हारे पहले का राज्य दे दिया
जाएगा; येरूशलेम की पुत्री को राजपद दिया जाएगा." 9 तुम उच्च स्वर में
क्यों चिल्ला रही हो, क्या तुम्हारा कोई राजा नहीं है? क्या तुम्हारा शासन
करनेवाला नाश हो गया है, कि तुम जच्चा स्त्री के समान दर्द से छटपटा रही हो?
10 हे ज़ियोन की बेटी, जच्चा स्त्री की तरह दर्द से छटपटाओ, क्योंकि अब तुम्हें
शहर छोड़कर खुले मैदान में डेरा डालना ज़रूरी है. तुम बाबेल जाओगी; और
तुम बचाई जाओगी. वहां याहवेह तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाएंगे. 11
पर अब तो तुम्हारे विरुद्ध में बहुत से राष्ट्र इकट्ठे हुए हैं. वे कहते हैं, "उसे अशुद्ध
होने दो, ज़ियोन की दुर्गति हमारे आनंद का विषय हो!" 12 पर वे याहवेह के
विचारों को नहीं जानते हैं; वे उसकी उस योजना को नहीं समझते, कि उसने
उन्हें पूलियों के समान खलिहान में इकट्ठा किया है. 13 "हे ज़ियोन की बेटी,
उठ और दांवनी कर, क्योंकि मैं तुम्हें लोहे के सींग दूंगा; मैं तुम्हें पीतल के खुर
दूंगा, और तुम बहुत सी जातियों को टुकड़े-टुकडे कर दोगी." तुम उनकी लूटी
गई चीज़ें याहवेह को, और उनकी संपत्ति सारे पृथ्वी के प्रभु को अर्पित करोगी.

5 हे सैन्य-दलों के शहर, अपने सैनिकों को क़तार में कर लो, क्योंकि हमारे
विरुद्ध एक घेरा डाला गया है. वे इस्राएल के शासक के गाल पर लाठी से
प्रहार करेंगे. 2 "पर तुम, हे एफ़राथा के बेथलेहेम, यद्यपि तुम यहूदिया के
वंशजों में छोटे हो, तुमसे ही मेरे लिए एक व्यक्ति का आगमन होगा जो इस्राएल
के ऊपर शासक होगा, जिसका उद्गम पुराने समय से, प्राचीन काल से है."
3 इसलिये इस्राएल को उस समय तक त्याग दिया जाएगा, जब तक वह जो
प्रसव पीड़ा में है, एक बालक को जन्म नहीं दे देती, और उसके बाकी भाई
इस्राएलियों से मिल जाने के लिये लौट नहीं जाते. 4 वह याहवेह के बल से,
याहवेह अपने परमेश्वर के नाम के प्रताप से उठ खड़ा होगा और अपने झुंड की
देखरेख करेगा. और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि तब पृथ्वी की छोर तक लोग
उसकी महानता को जानेंगे. 5 और वह हमारी शांति होगा जब अश्शूरवासी
हमारे देश पर आक्रमण करेंगे और हमारे गढ़ों में प्रवेश करेंगे. हम उनके विरुद्ध
सात चरवाहे, वरन आठ सेनापति खड़े कर देंगे, 6 जो अश्शूर देश पर, निमरोद
के देश पर तलवार से शासन करेंगे. वह हमें अश्शूरवासियों से छुड़ाएगा जब वे
हमारे देश पर आक्रमण करेंगे और हमारी सीमाओं को पार करेंगे. 7 याकोब का
बचा भाग बहुत से लोगों के बीच होगा. वह याहवेह द्वारा भेजे ओस, घांस पर
पड़नेवाली वर्षा के समान होगा, जो किसी का इंतजार नहीं करता और न ही
किसी मनुष्य पर निर्भर रहता है. 8 याकोब का बचा भाग जातियों के बीच और
लोगों के बीच ऐसा होगा, जैसा एक सिंह जंगली जानवरों के बीच होता है, और
एक जवान सिंह जो भेड़ों के झुंड के बीच होता है, और वह उनके मध्य से जाते
हुए उन पर झपटता है और उनको फाड़ डालता है, और कोई उन्हें बचा नहीं
सकता. 9 तुम्हारा हाथ अपने शत्रुओं के ऊपर विजय उल्लास में ऊंचा उठेगा,
और तुम्हारे सब शत्रु नाश किए जाएंगे. 10 याहवेह की घोषणा यह है, "उस दिन
मैं तुम्हारे घोड़ों को तुम्हारे बीच नाश कर दूंगा और तुम्हारे रथों को भी नष्ट कर
दूंगा. 11 मैं तुम्हारे देश के शहरों को नष्ट कर दूंगा और तुम्हारे गढ़ों को ध्वस्त
कर दूंगा. 12 मैं तुम्हारे बीच जादू-टोने को समाप्त कर दूंगा और तुम फिर कभी
ज्योतिष की बात न कर सकोगे. 13 मैं तुम्हारे मूर्तियों और तुम्हारे बीच तुम्हारे
पवित्र पत्थरों को नाश कर दूंगा; तुम फिर कभी अपने हाथ से बनाये चीज़ों की
आराधना नहीं करोगे. 14 जब मैं तुम्हारे शहरों का विनाश करूंगा तो मैं तुम्हारे
बीच से तुम्हारे अशेरा-स्तम्भों को उखाड़ फेंकूंगा. 15 मैं गुस्सा और क्रोध में उन
जनताओं से बदला लूंगा जिन्होंने मेरी बात नहीं मानी है."

6 सुनो कि याहवेह क्या कहते हैं: "उठो, और पर्वतों के आगे मेरा मामला
रखो; पहाड़ियां सुनें कि तुम क्या कहते हो. 2 "हे पर्वतों, याहवेह के द्वारा
लगाये आरोपों पर ध्यान दो; हे पृथ्वी के अटल नींव, तुम भी सुनो. क्योंकि
याहवेह का अपने लोगों के विरुद्ध एक मुकद्दमा है; वे इस्राएल के विरुद्ध एक
मामला दायर कर रहे हैं. 3 "हे मेरे लोगों, प्रजा, मैंने तुम्हारे साथ क्या अन्याय
किया है? मुझे बताओ कि मैंने तुम्हारे ऊपर क्या बोझ डाला है? 4 मैंने तुम्हें मिस्र
देश से बाहर निकाला है और तुम्हें दासत्व के बंधन से छुड़ाया है. मैंने तुम्हारी
अगुवाई करने के लिये मोशेह को भेजा, अहरोन और मिरियम को भी भेजा. 5
हे मेरे लोगों, याद करो मोआब के राजा बालाक ने क्या षड़्यंत्र किया था और
बेओर के पुत्र बिलआम ने क्या उत्तर दिया था. शित्तीम से गिलगाल तक अपनी
यात्रा का स्मरण करो, कि तुम याहवेह के धर्मी कामों को जानो." 6 मैं याहवेह
के सामने क्या लेकर आऊं और प्रशंसा के योग्य परमेश्वर के सामने दंडवत
करूं? क्या मैं होमबलि के लिये एक-एक साल के बछड़े लेकर उसके सामने
आऊं? 7 क्या याहवेह की प्रसन्नता के लिए हजारों मेढ़े, अथवा जैतून तेल
की दस हजार नदियां पर्याप्त होंगी? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित के
लिये अपने पहलौठे पुत्र का बलिदान करूं, या अपनी आत्मा के पाप के अपने
जन्माए किसी का बलिदान करूं? 8 हे मनुष्य, उन्होंने तुम्हें दिखाया है कि क्या
अच्छा है. और याहवेह तुमसे क्या अपेक्षा करता है? न्याय के काम करो और
दया करो और परमेश्वर के साथ नम्रता से चलो. 9 सुनो! याहवेह शहर को
पुकार रहे हैं, और आपके नाम का भय मानना ही बुद्धिमता है, "डंडा और उसे
नियुक्त करनेवाले की बात ध्यान से सुनो. 10 हे दुष्ट घर, क्या मैं अब भी तुम्हारे
अनाचार से कमाए धन, और उस छोटे माप को भूल जाऊं, जो अभिशप्त है?
11 क्या मैं किसी को गलत वजन की थैली के साथ, उसे उसके गलत मापों से
छुटकारा दूं? 12 तेरे धनवान लोग हिंसा करते हैं; तेरे निवासी झूठे हैं और उनकी
जीभ धोखा देनेवाली बात करती हैं. 13 इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण
नाश करना, तुम्हारा पतन करना शुरू कर चुका हूं. 14 तुम खाना तो खाओगे
किंतु संतुष्टि नहीं मिलेगी; खाने के बाद भी तुम्हारा पेट खाली रहेगा. तुम जमा
तो करोगे, पर बचेगा कुछ भी नहीं, क्योंकि तुम्हारी बचत को मैं तलवार से
लुटवा दूंगा. 15 तुम बोओगे, पर फसल नहीं काटोगे; तुम जैतून का तेल तो
निकालोगे, किंतु उस तेल का उपयोग न कर सकोगे, तुम अंगूर को तो रौंदोगे,
पर उसका दाखमधु पान न कर सकोगे. 16 तुमने ओमरी के विधि विधान और
अहाब के घर के सब रीति-रिवाजों का पालन किया है; तुमने उनकी परंपराओं

का भी पालन किया है. इसलिये मैं तुम्हारा विनाश कर दूंगा और तुम्हारे लोग
हंसी के पात्र होंगे; तुम मेरे लोगों का अपमान सहोगे.”

7 मेरी क्या दुर्गति है! मैं उस मनुष्य के जैसा हूं, जो अंगूर की बारी में लवनी
के छूटे अंगूर को धूपकाल में बटोरता है; खाने के लिये अंगूर का कोई
गुच्छा नहीं बचा है, मैंने शुरू के अंजीर के फलों की जो लालसा की थी, वे
भी नहीं हैं. **2** विश्वासयोग्य लोग देश से नाश हो गये हैं; एक भी ईमानदार
व्यक्ति नहीं बचा है. हर एक जन खून बहाने के घात में लगा रहता है; वे जाल
बिछाकर एक दूसरे को फंसाने के चक्कर में रहते हैं. **3** उनके हाथ बुराई के
काम करने में माहिर हैं; शासन करनेवाले उपहार की मांग करते हैं, न्यायाधीश
घूस लेते हैं, शक्तिशाली लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति बलपूर्वक करते हैं, वे
सब मिलकर षड़यंत्र रचते हैं. **4** उनमें जो सर्वोत्तम माना जाता है, वह एक
कंटीली झाड़ी के जैसा है, उनमें जो सबसे ज्यादा ईमानदार समझा जाता है, वह
एक कंटीले बाड़े से भी बुरा है. तुम्हारे पास परमेश्वर के आने का समय आ गया
है, अर्थात् तुम्हारे पहरेदार के खतरे के घंटी बजाने का दिन आ गया है. अब
तुम्हारे घबराने का समय है. **5** किसी पड़ोसी पर विश्वास न करना और न
ही अपने किसी मित्र पर भरोसा करना. यहां तक कि अपनी अर्द्धांगिनी से भी
संभलकर बात करना. **6** क्योंकि पुत्र अपने पिता का अनादर करता है, पुत्री
उसकी माता के विरुद्ध तथा बहू उसकी सास के विरुद्ध, उठ खड़ी होती है, मनुष्य
के शत्रु उसके परिवार के सदस्य ही होते हैं. **7** पर जहां तक मेरी बात है, मेरी
आशा याहवेह पर लगी रहती है, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता
हूं; मेरे परमेश्वर मेरी सुनेंगे. **8** हे मेरे शत्रु, मेरी स्थिति पर आनंद मत मना! यद्यपि
मैं गिर गया हूं, पर मैं उठ खड़ा होऊंगा. यद्यपि मैं अंधकार में बैठा हुआ हूं, पर
याहवेह मेरी ज्योति होंगे. **9** क्योंकि मैंने उनके विरुद्ध पाप किया है, इसलिये मैं
तब तक याहवेह के क्रोध सहता रहूंगा, जब तक कि वे मेरा मामला सुनकर
मुझे न्याय प्रदान न करें. वही मुझे उस उजियाले में ले आएंगे; और मैं उनकी
धार्मिकता को देखूंगा. **10** तब मेरा शत्रु यह देखेगा और लज्जा से अपना मुंह
ढांप लेगा, यह शत्रु वही है, जिसने मुझसे कहा था, “कहां है याहवेह तुम्हारा
परमेश्वर?” तब मैं उस शत्रु के पतन को देखूंगा; यहां तक की वह गली के
कीचड़ की तरह पैरों तले रौंदा जाएगा. **11** तुम्हारे दीवारों को बनाने का दिन,
और तुम्हारी सीमाओं का बढ़ाने का दिन आएगा. **12** उस दिन लोग तुम्हारे पास
अश्शूर और मिस्र देश के शहरों से आएंगे, यहां तक कि मिस्र देश से लेकर
इफरात नदी तक से, और समुद्र से समुद्र के बीच और पहाड़ से पहाड़ के बीच
के देशों से लोग तुम्हारे पास आएंगे. **13** पृथ्वी के निवासियों के कारण, उनके
कामों के फलस्वरूप, पृथ्वी उजाड़ और निर्जन हो जाएगी. **14** अपने लोगों की
रखवाली, अपने उत्तराधिकार में पाये झुंड की रखवाली अपनी लाठी से करना,
जो बंजर भूमि में, और उपजाऊ चरागाह में अपने बूते रहते हैं. उन्हें बहुत पहले
के समय जैसे बाशान और गिलआद में चरने दो. **15** “जब तुम मिस्र देश से
निकलकर आए, उन दिनों के जैसे, मैं उन्हें आश्चर्यकर्म दिखाऊंगा.” **16** जाति-
जाति के लोग यह देखेंगे और अपने शक्ति से वंचित लज्जित होंगे. वे लज्जा के
मारे अपना मुंह अपने हाथों से ढंक लेंगे और उनके कान बहरे हो जाएंगे. **17** वे
सांप के समान, और भूमि पर रेंगनेवाले जंतु के समान धूल चाटेंगे. वे अपने मांद
से कांपते हुए निकलेंगे; वे याहवेह हमारे परमेश्वर से डरेंगे और तुमसे भयभीत
होंगे. **18** आपके जैसा और कौन परमेश्वर है, जो अपने निज भाग के बचे हुओं
के पापों और अपराधों को क्षमा करते हैं? आपका क्रोध हमेशा के लिये नहीं
होता पर आप दया दिखाने में प्रसन्न होते हैं. **19** आप हम पर फिर दया करेंगे;
आप अपने पैरों तले हमारे पापों को कुचल देंगे और हमारे दुष्टता के कामों को
गहरे समुद्र में फेंक देंगे. **20** आप उस शपथ के अनुरूप, जो आपने वर्षों पहले
हमारे पूर्वजों से की थी, याकोब के लोगों के प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे, और
अब्राहाम के वंशजों को अपना प्रेम दिखाएंगे.

नहूम

1 नीनवेह नगर से संबंधित भविष्यवाणी. एलकोशवासी नहूम के दर्शन की
पुस्तक. 2 याहवेह जलन रखनेवाले और बदला लेनेवाले परमेश्वर हैं;
याहवेह बदला लेनेवाले तथा बहुत क्रोधी हैं. याहवेह अपने शत्रुओं से बदला लेते
हैं और अपना कोप अपने शत्रुओं पर प्रगट करते हैं. 3 याहवेह क्रोध करने में
धीमा पर बड़े सामर्थ्यी हैं; याहवेह दुष्टों को दंड देने में पीछे न हटेंगे. उनका
मार्ग बवंडर और आंधी में से होकर जाता है, और बादल उनके पैरों की धूल है.
4 वे समुद्र को फटकारते और उसे सूखा देते हैं; वे सब नदियों को सूखा देते हैं.
बाशान और कर्मेल कुम्हला जाते और लबानोन के फूल मुरझा जाते हैं. 5 उनके
सामने पर्वत कांप उठते हैं और पहाड़ियां पिघल जाती हैं. उनकी उपस्थिति में
पृथ्वी, सारा संसार और उसमें रहनेवाले कांप उठते हैं. 6 उनके क्रोध का सामना
कौन कर सकता है? उनके भयंकर क्रोध को कौन सह सकता है? उनका कोप
आग की तरह भड़कता है; उनके सामने चट्टानें चूर-चूर हो जाती हैं. 7 याहवेह
भले हैं, और संकट के समय दृढ़ गढ़ ठहरते हैं. वे उनका ध्यान रखते हैं जो उन
पर भरोसा रखते हैं, 8 पर वे भयंकर बाढ़ के द्वारा नीनवेह नगर को नष्ट कर
देंगे; वे अपने शत्रुओं को अंधकार में खदेड़ देंगे. 9 याहवेह अपने विरुद्ध किए
गए उनके षड्यंत्र का अंत कर देंगे; संकट दूसरी बार नहीं आएगा. 10 वे
कंटीली झाड़ियों में उलझेंगे, दाखमधु पीकर मतवाले होंगे; उनको उपज के
सूखी खूंटी के समान जलाकर नष्ट किया जाएगा. 11 हे नीनवेह, तुमसे ही एक
निकला है जो याहवेह के विरुद्ध षड्यंत्र करता है, और दुष्ट योजना बनाता है. 12
याहवेह का यह कहना है: “यद्यपि उनके साथ उनको मदद करनेवाले हैं और
वे असंख्य हैं, पर वे नष्ट किए जाएंगे और वे मिट जाएंगे. हे यहूदाह, यद्यपि
मैंने तुम्हें पीड़ा पहुंचाई है, पर अब मैं तुम्हें पीड़ा न पहुंचाऊंगा. 13 अब मैं
तुम्हारी गर्दन पर रखे उनके जूए को तोड़ डालूंगा और तुम्हारी बेड़ियों को तोड़
डालूंगा.” 14 हे नीनवेह, याहवेह ने तुम्हारे बारे में एक आज्ञा दी है: “तुम्हारा
वंश चलाने के लिये तुम्हारी कोई संतान न होगी. मैं तुम्हारे देवताओं के मंदिर में
रखी तुम्हारी पूजने की वस्तु और मूर्तियों को नष्ट कर डालूंगा. मैं तुम्हारी कब्र
खोदूंगा, क्योंकि तुम दुष्ट हो.” 15 पर्वतों की ओर दृष्टि करके, उसके पांवों को
देखो, जो शुभ संदेश लेकर आता है, जो शांति की घोषणा करता है! हे यहूदाह,
अपने त्योहारों को मनाओ, और अपनी मन्नतों को पूरी करो. क्योंकि दुष्ट लोग
अब तुम पर कभी आक्रमण नहीं करेंगे; वे पूरी तरह नाश किए जाएंगे.

2 हे नीनवेह, एक आक्रमण करनेवाला तुम्हारे विरुद्ध में आ रहा है. इसलिये
गढ़ों की पहरेदारी करो, सड़कों की रखवाली करो, अपने आपको मजबूत
बनाओ, अपने संपूर्ण सैन्य बल को एकत्र कर लो! 2 याहवेह याकोब की शोभा
को इस्राएल की शोभा की तरह ज्यों का त्यों कर देंगे, यद्यपि नाश करनेवालों ने
उन्हें उजाड़ दिया है और उनकी दाख-लताओं को नाश कर दिया है. 3 उसके
सैनिकों की ढाल का रंग लाल है; उसके योद्धा भड़कीले लाल वस्त्र पहने हुए हैं.
जिस दिन उन्हें युद्ध के लिए तैयार किया जाता है, उनके रथों का धातु चमकता
है; सनोवर की बर्छियां घुमाई जाती हैं. 4 गलियों में रथ तेज गति से दौड़ते हैं,
और चौराहों में इधर से उधर भागते रहते हैं. वे जलती मशालों की तरह दिखते
हैं; वे बिजली की तरह भागते हैं. 5 नीनवेह अपने चुने हुए सैनिक दलों को
आदेश देता है, पर वे अपने रास्ते में लड़खड़ाते हैं. वे शहर की दीवार से टकराते
हैं; सुरक्षा की ढाल अपनी जगह में खड़ी की गई है. 6 नदी के द्वार खोल दिए
गए हैं और महल गिरने लगता है. 7 यह फैसला हो गया है कि नीनवेह बंधुआई
में चला जाएगा. उसकी गुलाम महिलायें पंडकी की तरह विलाप करेंगी और
अपनी छाती पीटेंगी. 8 नीनवेह पानी के एक पोखरी के समान है, जिसका पानी
सूखता जा रहा है. वे चिल्लाकर कहते हैं, “रुक जाओ! रुक जाओ!” किंतु कोई
भी मुड़कर देखता तक नहीं. 9 चांदी को लूटो! सोने को लूटो! इसके सब
खजानों से, धन की आपूर्ति असीमित है! 10 उसे लूट लिया, छीन लिया और
निर्वस्त्र कर दिया गया है! उसमें साहस ही न रहा, उसके घुटनों का बल जाता
रहा, शरीर कांप रहे हैं और प्रत्येक के चेहरे का रंग उड़ गया है. 11 कहां है
सिंहों का मांद, वह जगह जहां वे जवान सिंहों को भोजन खिलाते थे, जहां सिंह
और सिंहनी जाते थे, और उनके बच्चे निडर होकर रहते थे? 12 सिंह अपने
बच्चों के लिए पर्याप्त शिकार करता था और अपनी साथी सिंहनी के लिए
शिकार का गला दबा लेता था, और अपनी मांद को मारे गये पशु से और अपनी
गुफा को शिकार से भर लेता था. 13 सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है,
“मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं. मैं तुम्हारे रथों को आग से जला डालूंगा, और तुम्हारे
जवान सिंह तलवार से मार डाले जाएंगे. मैं पृथ्वी पर तुम्हारे शिकार करने के
लिये कुछ नहीं छोड़ूंगा. तुम्हारे संदेशवाहकों की आवाज फिर कभी सुनाई नहीं
देगी.”

3 धिक्कार है उस खून के नगर पर, जो झूठ से भरा हुआ है, जो लूटपाट
से भरा हुआ है, और जो पीड़ितों से कभी मुक्त नहीं होता! 2 चाबुक के
चटकने की आवाज, पहियों का खड़खड़ाना, घोड़ों का सरपट भागना और
रथों का झटके से हिलना-डुलना! 3 घुड़सवार सेना का आक्रमण करना,
तलवारों का चमकना बर्छियों की चमक! मारे गये बहुत सारे लोग, लाशों
का ढेर, असंख्य मृत शरीर, लाशों के ऊपर लड़खड़ाते लोग, 4 ये सब उस
एक वेश्या के लम्पट वासना के कारण से है, जो लुभानेवाली और जादू-टोने
की स्वामिनी है, जो जाति-जाति के लोगों को अपने वेश्यावृत्ति से और अपने
जादू-टोने से लोगों को गुलाम बना लेती है. 5 यह सर्वशक्तिमान याहवेह की
घोषणा है, “मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं. मैं तुम्हारे कपड़े को तुम्हारे चेहरे तक उठा दूंगा.
मैं जाति-जाति के लोगों को तुम्हारा नंगापन दिखाऊंगा और राज्य-राज्य के
लोगों के सामने तुम्हें लज्जित करूंगा. 6 मैं तुम्हारे ऊपर गंदगी फेंकूंगा, मैं तुम्हें
अपमानित करूंगा और तुम्हारा तमाशा बनाऊंगा. 7 वे सब जो तुम्हें देखेंगे, वे
तुमसे दूर भागेंगे और कहेंगे, ‘नीनवेह नाश हो गई है—कौन उसके लिये विलाप
करेगा?’ तुम्हें सांत्वना देनेवाले मुझे कहां मिल सकते हैं?” 8 क्या तुम उस थेबेस
नगर से बेहतर हो, जो नील नदी के तट पर बसा है, और जो चारों ओर से पानी
से घिरा हुआ है? नदी उसकी सुरक्षा थी, और पानी उसके लिए दीवार के समान
था. 9 कूश तथा मिस्र देश उसे असीमित शक्ति देते थे; उसके मित्र राष्ट्रों में पूट
और लिबिया थे. 10 फिर भी उसे बंधक बनाकर बंधुआई में ले जाया गया. हर
एक गली के मोड़ पर उसके नन्हे बच्चों को पटक कर मार डाला गया. उसके
प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए पासा फेंका गया, और उसके सब बड़े लोगों को
बेड़ियों में जकड़ दिया गया. 11 हे नीनवेह नगरी, तुम भी नशे में मतवाली हो
जाओगी; तुम छिपने चली जाओगी और शत्रु से सुरक्षा के लिए आश्रय खोजोगी.
12 तुम्हारे सब गढ़ उन अंजीर वृक्षों के समान हैं, जिनमें पहिली उपज के पके
फल लगे हों; जब उनको हिलाया जाता है, तो अंजीर खानेवाले के मुंह में गिरते
हैं. 13 अपने सैन्य-दलों को देख, वे सब दुर्बल प्राणी हो गये हैं. तुम्हारे देश के
द्वार तुम्हारे शत्रुओं के लिये खुले हुए हैं; आग ने तुम्हारे द्वार छड़ों को जलाकर
नष्ट कर दिया है. 14 अपने सैनिकों के लिए पानी भर लो, अपनी सुरक्षा को
मजबूत करो! मिट्टी को इकट्ठा करो, पैरों से कुचलकर उसका गारा बना डालो,
ईंट बनाने के काम को सुधारो! 15 वहां आग तुम्हें जलाकर नष्ट कर देगी;
तलवार तुम्हें घात कर देगी. वे तुम्हें टिड्डियों के झुंड की तरह खा जाएंगी.
पतंगों के समान अपनी संख्या को बढ़ाओ, टिड्डियों की तरह अपनी संख्या को
बढ़ाओ! 16 तुमने अपने व्यापारियों की संख्या आकाश के तारों की संख्या से
भी अधिक बढ़ा ली है, पर वे टिड्डियों की तरह देश को नष्ट करके भाग जाते हैं.

17 तुम्हारे पहरेदार टिड्डियों के समान हैं, तुम्हारे अधिकारी टिड्डियों के झुंड के
समान हैं जो ठंडे दिन में दीवारों पर अपना बसेरा बनाते हैं, पर जब सूर्योदय
होता है तो वे उड़ जाते हैं, और कोई नहीं जानता कि वे कहां जाते हैं. 18 हे
अश्शूर के राजा, तुम्हारे चरवाहे झपकी ले रहे हैं; तुम्हारे प्रतिष्ठित लोग आराम
करने के लिए लेटे हुए हैं. तुम्हारे लोग पहाड़ों पर तितर-बितर हो गये हैं और
उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं है. 19 तुम्हारी चंगाई नहीं हो सकती; तुम्हारा
घाव घातक है. वे सब, जो तुम्हारे बारे में सुनते हैं वे तुम्हारे पतन पर ताली बजाते
हैं, क्योंकि ऐसा कौन है जो तुम्हारी खत्म न होनेवाली क्रूरता से बच सका है?

हबक्कूक

1 हबक्कूक भविष्यवक्ता के द्वारा पाया गया भविष्यवाणी का वचन. 2 हे
याहवेह, कब तक, मैं सहायता के लिए गुहार लगाता रहूंगा, पर आप नहीं
सुनते हैं? या कब तक मैं आपसे पुकारकर कहूं, “हिंसा!” पर आप बचाते नहीं
हैं? 3 आप क्यों मुझे अन्याय को देखने के लिये विवश कर रहे हैं? आप
क्यों गलत कामों को सहन कर रहे हैं? विनाश और हिंसा मेरे सामने आ गयी
है; लड़ाई और झगडे बहुत हो रहे हैं. 4 कानून-व्यवस्था ढीली हो गई है,
और न्याय कभी नहीं मिल रहा है. दुष्ट लोग धर्मी लोगों पर हावी हो रहे हैं,
जिससे न्याय नहीं मिल रहा है. 5 “जाति-जाति के लोगों की ओर देखो और
उनकी गतिविधियों पर ध्यान दो, और तुम बहुत ही चकित होओ. तुम्हारे ही
जीवनकाल में मैं कुछ ऐसा करने पर हूं कि यदि यह बात तुम्हें बताई भी जाय,
तब भी तुम उस पर विश्वास नहीं करोगे. 6 मैं बाबेल के लोगों को खड़ा कर
रहा हूं, जो कि निर्दयी और दुस्साहसी हैं, वे सारी पृथ्वी पर फैल रहे हैं ताकि उन
स्थानों पर कब्जा कर लें, जो उनके नहीं है. 7 वे डरावने और भयानक लोग
हैं; वे स्वयं अपने में कानून हैं, और वे अपने स्वयं के आदर को बढ़ावा देते हैं.
8 उनके घोड़े चीतों से भी ज्यादा तेज, और संध्याकाल के भेड़ियों से भी क्रूर
हैं. उनके घुड़सवार सैनिक अपने घोड़ों को उतावलेपन से सरपट दौड़ाते हैं;
और उनके घुडसवार बहुत दूर से आते हैं. वे झपटकर अपने शिकार को खा
जानेवाले गरूड़ की तरह उड़ते हैं; 9 वे सब हिंसा करने के इरादे से आते हैं.
उनके उपद्रवी झुंड मरुस्थल के आंधी की तरह आगे बढ़ते हैं और बंदियों को
बालू के समान बटोरते हैं. 10 वे राजाओं का उपहास करते हैं और शासकों की
खिल्ली उड़ाते हैं. वे मिट्टी के ढलान बनाकर गढ़ों से घिरे शहरों पर कब्जा कर
लेते हैं; इस प्रकार वे उन सब शहरों की हंसी उड़ाते हैं. 11 तब वे आंधी की
तरह निकल जाते हैं और आगे बढ़ते हैं, वे अपराधी हैं, उनका खुद का बल ही
उनका देवता है.” 12 हे याहवेह, क्या आप अनादिकाल से नहीं हैं? हे मेरे
परमेश्वर, मेरे पवित्र परमेश्वर, आपकी मृत्यु कभी न होगी. हे याहवेह, आपने ही
उन्हें न्याय करने के लिए ठहराया है; हे मेरी चट्टान, आपने ही उन्हें दंड देने के
लिये नियुक्त किया है. 13 आपकी दृष्टि ऐसी शुद्ध हैं कि उससे बुराई छुप नहीं
सकती; आप बुरे कार्य को सहन नहीं कर सकते. तो फिर आप विश्वासघाती
लोगों को क्यों सहन करते हैं? आप चुप क्यों रहते हैं, जब दुष्ट जन अपने से
ज्यादा धर्मी जन को नाश करते हैं? 14 आपने मनुष्यों को समुद्र में मछलियों के
समान, समुद्र के जीव-जन्तुओं के समान बनाया है जिनका कोई शासक नहीं
होता. 15 दुष्ट शत्रु उन सबको मछली फंसाने के कांटे से फंसाकर खींचता है,
वह उनको अपने जाल में पकड़ लेता है, वह उनको अपने मछली के जाल में
इकट्ठा करता है; और इस प्रकार वह आनंद और खुशी मनाता है. 16 इसलिये
वह अपने जाल के लिये बलि चढ़ाता और अपने मछली के जाल के आगे धूप
जलाता है, क्योंकि वह अपने जाल के कारण आराम का जीवन जीता और
मनपसंद भोजन का आनंद उठाता है. 17 तब क्या वह अपने जाल को खाली
करते हुए, बिना दया के जाति-जाति के लोगों को नाश करता ही रहेगा?

2 मैं पहरे के लिये खड़ा रहूंगा और मैं गढ़ की ऊंची दीवार पर खड़ा रहूंगा;
मैं देखता रहूंगा कि वे मुझसे क्या कहेंगे, और मैं अपने विरुद्ध शिकायत का
क्या उत्तर दूं. 2 तब याहवेह ने उत्तर दिया: “इस दिव्य-प्रकाशन को सरल रूप में
पटिया पर लिख दो ताकि घोषणा करनेवाला दौड़ते हुए भी इसे पढ़कर घोषणा
कर सके. 3 क्योंकि यह दिव्य-प्रकाशन एक नियत समय में पूरा होगा; यह अंत
के समय के बारे में बताता है और यह गलत साबित नहीं होगा. चाहे इसमें देरी
हो, पर तुम इसका इंतजार करना; यह निश्चित रूप से पूरा होगा और इसमें देरी न
होगी. 4 “देखो, शत्रु का मन फूला हुआ है; उसकी इच्छाएं बुरी हैं; पर धर्मी
जन अपनी विश्वासयोग्यता के कारण जीवित रहेगा, 5 वास्तव में, दाखमधु उसे
धोखा देता है; वह अहंकारी होता है और उतावला रहता है. वह कब्र की तरह
लालची और मृत्यु की तरह कभी संतुष्ट नहीं होता, वह सब जाति के लोगों को
अपने पास इकट्ठा करता है और सब लोगों को बंधुआ करके ले जाता है. **(Sheol
h7585)** 6 “क्या वे सब यह कहकर उसका उपहास और बेइज्जती करके ताना
नहीं मारेंगे, “‘उस पर हाय, जो चोरी किए गये सामानों का ढेर लगाता है
और अवैध काम करके अपने आपको धनी बनाता है! यह कब तक चलता
रहेगा?’ 7 क्या तुम्हें कर्ज़ देनेवाले अचानक तुम्हारे सामने आ खड़े न होंगे?
क्या वे तुम्हें उठाकर आतंकित नहीं करेंगे? तब तुम लूट लिये जाओगे. 8
क्योंकि तुमने बहुत सी जाति के लोगों को लूटा है, सब बचे हुए लोग अब तुम्हें
लूटेंगे. क्योंकि तुमने मनुष्यों का खून बहाया है; तुमने देशों, शहरों और उनके
निवासियों को नाश किया है. 9 “उस पर हाय, जो अन्याय की कमाई से अपना
घर बनाता है, और विनाश से बचने के लिये अपने घोंसले को ऊंचे पर रखता
है! 10 अपने ही घर के लोगों को लज्जित करके और अपने प्राण को जोखिम
में डालकर तुमने बहुत से लोगों के विनाश का उपाय किया है. 11 दीवार के
पत्थर चिल्ला उठेंगे, और लकड़ी की बल्लियां इसका उत्तर देंगी. 12 “उस पर
हाय, जो रक्तपात के द्वारा शहर का निर्माण करता है और अन्याय से नगर बसाता
है! 13 क्या सर्वशक्तिमान याहवेह ने यह निश्चय नहीं किया है कि लोगों की
मेहनत सिर्फ उस लकड़ी जैसी है, जो आग जलाने के काम आती है, और
जाति-जाति के लोग अपने लिये बेकार का परिश्रम करते हैं? 14 क्योंकि पृथ्वी
याहवेह की महिमा के ज्ञान से भर जाएगी, जैसे समुद्र जल से भर जाता है. 15
“उस पर हाय, जो अपने पड़ोसियों को पीने के लिए दाखमधु देता है, और उन्हें
तब तक पिलाता है, जब तक कि वे मतवाले नहीं हो जाते, ताकि वह उनके नंगे
शरीर को देख सके! 16 तुम महिमा के बदले लज्जा से भर जाओगे. अब
तुम्हारी पारी है! पियो और अपने नंगेपन को दिखाओ! याहवेह के दाएं हाथ
का दाखमधु का कटोरा तुम्हारे पास आ रहा है, और कलंक तुम्हारे महिमा
को ढंक देगा. 17 तुमने लबानोन के प्रति जो हिंसा के काम किए हैं, वे तुम्हें
व्याकुल करेंगे, और तुमने पशुओं को जो नाश किया है, वह तुम्हें भयभीत
करेगा. क्योंकि तुमने मनुष्यों का खून बहाया है; तुमने देश, शहर और वहां के
निवासियों को नाश किया है. 18 “एक मूर्तिकार के द्वारा बनाई गई मूर्ति का
क्या मूल्य? या उस मूर्ति से क्या लाभ जो झूठ बोलना सिखाती है? क्योंकि जो
इसे बनाता है वह अपनी ही रचना पर भरोसा करता है; वह मूर्तियों को बनाता है
जो बोल नहीं सकती. 19 उस पर हाय, जो लकड़ी से कहता है, ‘ज़िंदा हो जा!’
या निर्जीव पत्थर से कहता है, ‘उठ!’ क्या यह सिखा सकता है? यह सोना-
चांदी से मढ़ा होता है; किंतु उनमें तो श्वास नहीं होता.” 20 परंतु याहवेह अपने
पवित्र मंदिर में हैं; सारी पृथ्वी उनके सामने शांत रहे.

3 हबक्कूक भविष्यद्वक्ता की एक प्रार्थना. शिगयोनोथ की शैली में. 2 हे
याहवेह, मैंने आपके प्रसिद्धि के बारे सुना है; हे याहवेह, मैं आपके कामों को
देखकर भय खाता हूं. हमारे दिनों में उन कामों को फिर से करिये, हमारे समय
में उन कामों को हमें बताईये; अपने कोप में भी हम पर अपनी कृपादृष्टि बनाए
रखिए. 3 परमेश्वर तेमान से आये, परम पवित्र का आगमन पारान पर्वत से हुआ.
उसकी महिमा से आकाश ढंक गया और उसकी स्तुति से पृथ्वी भर गई. 4
उनकी शोभा सूर्योदय के समान थी; उनके हाथ से किरणें निकलती थी, जहां
उनका सामर्थ्य छिपा हुआ था. 5 उनके आगे-आगे महामारी चलती थी; तथा
पीछे-पीछे घातक रोग. 6 खड़े होकर उन्होंने पृथ्वी को हिला दिया; उन्होंने
देखा, और जाति-जाति के लोग कांप उठे. पुराने पर्वत टुकड़े-टुकडे होकर गिर
गये और पुरानी पहाड़ियां ढह गईं, पर वे हमेशा से ही आगे बढ़ते रहते हैं. 7 मैंने
कूशान के तंबुओं में रहनेवालों को कष्ट में, और मिदियान के रहनेवालों को बहुत

पीड़ा में देखा. 8 हे याहवेह, क्या आप नदियों पर क्रोधित हुए थे? क्या आपका
कोप पानी के सोतों पर था? क्या आप समुद्र पर क्रोधित हुए जब आपने जय
पाने के लिये अपने घोड़ों और अपने रथों पर सवारी की? 9 आपने अपने धनुष
को खोल से निकाला, आपने बहुत सारे तीरों को मंगाया. आपने नदियों के द्वारा
पृथ्वी को बांट दिया; 10 पर्वत आपको देखकर थर्रा उठे. पानी का तेज प्रवाह
होने लगा; गहरे समुद्र गरज उठे और उसमें से ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगी. 11
आपके उड़ते हुए तीरों के चमक से, आपके चमकते भाले के तेज से सूर्य और
चंद्रमां आकाश में स्थिर हो गए. 12 क्रोध में आप धरती पर पैर पटकते हुए
निकल गए और गुस्से में आपने जाति-जाति के लोगों को रौंद दिया. 13 आप
अपने लोगों के छुटकारे, और अपने अभिषिक्त जन को बचाने के लिये बाहर
निकले. आपने दुष्ट राष्ट्र के अगुआ को कुचल दिया, और उसको सिर से लेकर
पांव तक नंगा कर दिया. 14 आपने उसी के भाले से उसके सिर को छेदा है, जब
उसके योद्धा हमें तितर-बितर करने के लिये हम पर टूट पड़े, वे ऐसे घूर रहे थे
मानो छिपे हुए दुष्ट लोगों को नष्ट करनेवाले हों. 15 आपने पानी के बड़े भंडार
को मथते हुए समुद्र को अपने घोड़ों से रौंदा. 16 मैंने सुना और मेरे दिल के
टुकड़े-टुकड़े हो गये, उस आवाज को सुनकर मेरे ओंठ कांपने लगे; मेरी हड्डियां
सड़ने लगीं, और मेरे पैर कांपने लगे. फिर भी मैं धीरज के साथ उस जाति के
लोगों पर विपत्ति के दिन के आने का इंतजार करूंगा जो हम पर आक्रमण कर
रहे हैं. 17 चाहे अंजीर के पेड़ में कलियां न खिलें और दाखलता में अंगूर न
फलें, चाहे जैतून के पेड़ में फल न आएं और खेतों में कोई अन्न न उपजे, चाहे
भेड़शाला में कोई भेड़ न हो और गौशाला में कोई पशु न हो, 18 फिर भी मैं
याहवेह में आनंद मनाऊंगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित रहूंगा. 19
परम याहवेह मेरे बल के स्रोत हैं; वे मेरे पांवों को हिरण के पांवों के समान
चपलता देते हैं, वे मुझे ऊंचाइयों पर चलने के योग्य बनाते हैं.

सपन्याह

1 संगीत निर्देशक के लिये. तार वाले बाजों के साथ. याहवेह का यह वचन
यहूदिया के राजा अमोन के पुत्र योशियाह के शासनकाल में कूशी के
पुत्र ज़ेफनियाह के पास आया; जेफ़नयाह कूशी का, कूशी गेदालियाह का,
गेदालियाह अमरियाह का तथा अमरियाह हिज़किय्याह का पुत्र था: 2 "मैं
पृथ्वी से सारी चीज़ों को मिटा दूंगा," याहवेह की यह घोषणा है. 3 "मैं मनुष्य
तथा पशु दोनों को नष्ट कर दूंगा; मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों
को नष्ट कर दूंगा; और मूर्तियों को नष्ट कर दूंगा, जो दुष्ट जन के गिरने का कारण
बनती हैं." "जब मैं पृथ्वी से सब मनुष्यों को मिटा दूंगा," याहवेह की यह
घोषणा है, 4 "मैं यहूदिया के विरुद्ध और येरूशलेम के सब निवासियों के विरुद्ध
अपना हाथ बढ़ाऊंगा. मैं इस स्थान से बाल देवता की उपासना करनेवाले हर बचे
हुए को, और मूर्ति पूजा करनेवाले पुरोहितों के नाम तक को मिटा दूंगा. 5 मैं उन्हें
भी मिटा दूंगा, जो अपनी छतों पर झुककर आकाश के तारों की उपासना करते
हैं, जो झुककर याहवेह की कसम खाते हैं और जो देवता मलकाम की भी कसम
खाते हैं, 6 उन्हें भी, जो याहवेह के पीछे चलना छोड़ दिये हैं और न तो याहवेह
की खोज करते हैं और न ही उसकी इच्छा जानने की कोशिश करते हैं." 7
परम याहवेह के सामने चुप रहो, क्योंकि याहवेह का दिन निकट है. याहवेह ने
एक बलिदान तैयार किया है; उन्होंने उनको पवित्र कार्य के लिये अलग रखा है,
जिन्हें उन्होंने आमंत्रित किया है. 8 "याहवेह के ठहराए बलिदान चढ़ाने के दिन
मैं कर्मचारियों और राजकुमारों को और उन सभी को दंड दूंगा, जो विदेशी
कपड़े पहनते हैं. 9 उस दिन मैं उन सभी को दंड दूंगा जो मंदिर के फाटक पर पैर
रखने से बचते हैं, जो अपने देवताओं के मंदिर को हिंसा और छल से भर देते हैं.
10 "उस दिन" याहवेह घोषणा करते हैं, "मछली-द्वार से रोने की आवाज, नगर
के नए बसे स्थान से विलाप का स्वर, और पहाडियों से बड़े धमाके की आवाज
सुनाई देगी. 11 तुम जो बाजारवाले जिला में रहते हो, विलाप करो; क्योंकि
तुम्हारे सारे व्यापारियों को, और चांदी का सब व्यवसाय करनेवालों को नष्ट कर
दिया जाएगा. 12 उस समय मैं दीपक लेकर येरूशलेम में खोजूंगा और उन्हें दंड
दूंगा, जो आत्म-संतुष्ट हैं, जो तलछट में छोड़े गये दाखरस के मैल के समान हैं,
जो यह सोचते हैं, 'याहवेह कुछ भी नहीं करेंगे, न भला करेंगे और न ही बुरा.'
13 उनका धन लूट लिया जाएगा, और उनके घर ढह जाएंगे. यद्यपि वे घर बनाते
हैं, किंतु वे उनमें नहीं रह सकेंगे; यद्यपि वे अंगूर की बारी तो लगाएंगे, किंतु वे
उससे बना दाखमधु नहीं पी सकेंगे." 14 याहवेह का भयानक दिन निकट है—
यह निकट है और जल्दी आ रहा है. याहवेह के दिन का रोना भयानक है; बड़ा
योद्धा भी दुःख के कारण फूट-फूटकर क्रंदन करता है. 15 वह कोप का दिन
होगा, संकट और पीड़ा का दिन, परेशानी और विनाश का दिन, अंधकार और
गम का दिन, घनघोर घटा और अंधकार का दिन, 16 गढ़वाले शहरों के विरुद्ध
और कोनेवाले प्रहरी-मीनारों के विरुद्ध वह तुरही फूंकने और युद्ध के ललकार का
दिन होगा. 17 "मैं संपूर्ण मानव जाति पर ऐसी विपत्ति लाऊंगा, कि वे ऐसे
टटोलेंगे, जैसे अंधे व्यक्ति टटोलते हैं, क्योंकि उन्होंने याहवेह के विरुद्ध पाप
किया है. उनका खून धूल के समान और उनकी अंतड़ी गोबर के समान फेंक दी
जाएगी. 18 याहवेह के कोप के दिन, न तो उनकी चांदी और न ही उनका सोना
उनको बचा पाएगा." उसके जलन की आग में सारी पृथ्वी भस्म हो जाएगी,
क्योंकि वह उन सबका अचानक अंत कर देगा जो पृथ्वी पर रहते हैं.

2 हे निर्लज्ज जाति के लोगों, इकट्ठे हो, अपने आपको इकट्ठा करो, 2 इसके
पहले कि परमेश्वर की आज्ञा प्रभावी हो और हवा के द्वारा उड़ाए जानेवाली
भूसी के समान वह दिन निकल जाए, इसके पहले कि याहवेह का भयंकर क्रोध
तुम पर भड़के, इसके पहले कि याहवेह के कोप का दिन तुम पर आ जाए. 3
तुम सब, जो इस देश के नम्र लोग हो, जो याहवेह की आज्ञा को मानते हो,
याहवेह के खोज में रहो. धर्मीपन के खोज में रहो, नम्र बनो; शायद तुम्हें याहवेह
के क्रोध के दिन में शरण मिल जाए. 4 अज्जाह को पूरी तरह त्याग दिया जाएगा
और अश्कलोन तबाह हो जाएगा. दिन-दोपहरी को अशदोदवासी निकाल दिये
जाएंगे और एक्रोन नगर को मिटा दिया जाएगा. 5 हे समुद्रतट पर रहनेवालो, तुम
पर हाय, हे केरेथियों द्वीप के लोगों, तुम पर हाय; हे फिलिस्तीनियों के देश,
कनान, याहवेह का वचन तुम्हारे विरुद्ध है. वह कहता है, "मैं तुम्हें नाश कर
दूंगा, कोई भी न बचेगा." 6 समुद्र के किनारे की भूमि चरागाह होगी, जहां
चरवाहों के लिए कुएं और पशुओं के लिये बाड़े होंगे. 7 वह देश यहूदाह के
बचे लोगों का देश होगा; वहां उन्हें आहार मिलेगा. संध्या के समय, वे लोग
अश्कलोन के घरों में आराम के लिये लेटेंगे. क्योंकि याहवेह उनका परमेश्वर
उनकी सुधि लेंगे; वे उनकी समृद्धि को लौटा लाएंगे. 8 "मैंने मोआब के द्वारा
कही गई अपमान की बातों और अम्मोनियों के द्वारा कही गई निंदा की बातों
को सुना है, वे मेरे लोगों की बेइज्जती करते और उनके देश को छीन लेने
की धमकी देते हैं. 9 इसलिये, मेरे जीवन की शपथ," सर्वशक्तिमान याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर की घोषणा है, "यह निश्चित है कि मोआब सोदोम के
समान और अम्मोनी अमोराह के समान हो जाएंगे— ये घास-पात और नमक के
गड्ढों की जगह हो जाएंगे, और हमेशा के लिये उजड़ जाएंगे. मेरे लोगों में से
बचे हुए लोग उन्हें लूट लेंगे; और मेरी जाति के जीवित बचे लोग उनके देश पर
अधिकार कर लेंगे." 10 उनका घमंड करने और सर्वशक्तिमान याहवेह के
लोगों का अपमान करने और हंसी उड़ाने का उनको यह प्रतिफल मिलेगा.
11 याहवेह का भय उनमें समाएगा, जब वह पृथ्वी के सब देवताओं को नाश
कर देंगे. दूर-दूर के जाति-जाति के सब लोग अपने-अपने देश में याहवेह को
झुककर दंडवत करेंगे. 12 "हे कूश देश निवासियो, तुम भी मेरी तलवार से मारे
जाओगे." 13 याहवेह उत्तर दिशा के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाएंगे और अश्शूर को
नाश कर देंगे, और नीनवेह को पूरी तरह उजाड़ और मरुभूमि की तरह सूखा
छोड़ देंगे. 14 पशु और पक्षी के झुंड और सब प्रकार के जीव-जन्तु वहां आराम
करेंगे. उसके खंभों पर मरुस्थल उल्लू और चीखनेवाला उल्लू बसेरा करेंगे.
खिड़कियों में से उन उल्लुओं की आवाज सुनाई देगी, पत्थर के टुकड़ों से
रास्ता भर जाएगा, देवदार लकड़ी के बल्लों को खुला छोड़ दिया जाएगा. 15
यह उस चहल-पहल वाले शहर की स्थिति है जो कभी सुरक्षित हुआ करती थी.
वह अपने आपसे कहती थी, "मैं ही हूं! और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं है."
वह खंडहर मात्र रह गई है, वन-पशुओं का एक मांद! जो कोई इसके पास से
गुज़रता है, वह इसकी खिल्ली उड़ाता और अपना मुक्का तानता है.

3 उस शहर पर हाय, जो दुःख देनेवाला विद्रोही और गंदा है! 2 वह न तो
किसी की बात को मानता है. और न ही किसी के सुझाव को स्वीकार करता
है. वह याहवेह पर भरोसा नहीं करता, वह अपने परमेश्वर के पास नहीं जाता.
3 उसके अधिकारी उसमें गरजनेवाले सिंह; और उसके शासक संध्या के समय
शिकार करनेवाले भेड़ियों के जैसे हैं, जो सुबह तक के लिये कुछ नहीं बचाते.
4 उसके भविष्यवक्ता अनैतिक हैं; वे विश्वासघाती लोग हैं. उसके पुरोहित पवित्र
स्थान को अपवित्र करते हैं; और वे कानून को तोड़ते हैं. 5 याहवेह उसके बीच
धर्मी हैं; वे कोई गलत काम नहीं करते. वे हर दिन प्रातः अपना न्याय प्रगट
करते हैं, और किसी भी दिन वे असफल नहीं होते हैं, फिर भी अधर्मी लज्जित
नहीं होते. 6 "मैंने जाति-जाति के लोगों को नाश किया है; उनके गढ़ ढहा दिये
गये हैं. मैंने उनकी गलियों को विरान छोड़ दिया है, और उन गलियों से होकर
कोई भी नहीं जाता. उनके शहर उजड़ गये हैं; वे त्याग दिये गये और खाली हैं.
7 येरूशलेम के बारे में मेरा विचार था, 'निश्चय ही तुम मेरा भय मानोगे और मेरा
सुझाव स्वीकार करोगे!' तब उसके शरण स्थल न तो नाश किए जाते, और न ही

मेरा कोई दंड उनके ऊपर आता. किंतु वे अपने सब कामों में और भी उत्सुकता
से बुरे काम करने लगे. 8 इसलिये याहवेह की यह घोषणा है, मेरे लिये उस दिन
का इंतजार करो, जब मैं गवाही देने के लिये खड़ा होऊंगा. मैंने निश्चय किया है
कि मैं जाति-जाति के लोगों, और राज्य-राज्य के लोगों को इकट्ठा करूंगा,
ताकि मैं उन पर अपना कोप प्रगट कर सकूं— मेरा पूरा भयंकर क्रोध. मेरी ईर्ष्या
के क्रोध की आग से सारा संसार जलकर नष्ट हो जाएगा. 9 "तब मैं लोगों के
होंठों को शुद्ध करूंगा, कि वे सब याहवेह को पुकारें और कंधे से कंधा मिलाकर
उनकी सेवा करें. 10 कूश की नदियों के पार से मेरी आराधना करनेवाले, मेरे
बिखरे लोग, मेरे लिये भेंटें लेकर आएंगे. 11 हे येरूशलेम, उस दिन, तुम्हें मेरे
विरुद्ध किए गये बुरे कामों के लिये लज्जित नहीं किया जाएगा, क्योंकि मैं
तुम्हारे बीच से तुम्हारे ढीठ अहंकारी लोगों को निकाल दूंगा. और तुम मेरे पवित्र
पहाड़ी पर फिर कभी घमंड न करोगे. 12 पर मैं तुम्हारे बीच सिर्फ नम्र और दीन
लोगों को रहने दूंगा. इस्राएल के बचे हुए लोग याहवेह के नाम पर भरोसा करेंगे.
13 इस्राएल के बचे हुए लोग कोई गलत काम नहीं करेंगे; वे झूठ नहीं बोलेंगे.
उनके मुंह से कोई छल की बात नहीं निकलेगी. वे खाकर आराम करेंगे और
कोई उन्हें नहीं डराएगा." 14 हे बेटी ज़ियोन, गा; हे इस्राएल, जय जयकार
कर! हे बेटी येरूशलेम! खुश रह और अपने पूरे हृदय से आनंद मना. 15 याहवेह
ने तुम्हारे दंड को दूर कर दिया है, उन्होंने तुम्हारे शत्रुओं को हटा दिया है.
याहवेह, इस्राएल के राजा तुम्हारे साथ हैं; अब तुम्हें कभी कोई हानि नहीं होगी.
16 उस दिन वे येरूशलेम से कहेंगे, "हे ज़ियोन, मत डर; तुम्हारे हाथ दुर्बल न
होने पाएं. 17 याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं, वह पराक्रमी योद्धा है, जो
तुम्हें बचाता है. तुम उनके आनंद का विषय होगे; अपने प्रेम में वह तुम्हें फिर
कभी नहीं डांटेंगे, पर तुम्हारे कारण वे गीत गाकर आनंदित होंगे." 18 "जो
लोग तुम्हारे ठहराये पर्वों में सम्मिलित न हो पाने के कारण खेदित रहते हैं, मैं
उन सबको तुम्हारे बीच से हटा दूंगा, जो तुम्हारे लिए एक बोझ और कलंक है.
19 उस समय मैं उन सबसे लेखा लूंगा जिन्होंने तुम्हें दुःख दिया है. मैं लंगड़े को
बचाऊंगा; मैं निकाले गये लोगों को इकट्ठा करूंगा. मैं उन्हें हर उस देश में
महिमा और आदर दूंगा जहां उन्हें लज्जित होना पड़ा है. 20 उस समय मैं तुम्हें
इकट्ठा करूंगा. उस समय मैं तुम्हें घर ले आऊंगा. मैं सारी पृथ्वी के लोगों के
बीच तुम्हें आदर और महिमा दूंगा जब मैं तुम्हें तुम्हारी आंखों के सामने तुम्हारे
खुशहाल जीवन को लौटा लाऊंगा," याहवेह का यह कहना है.

हाग्गै

1 राजा दारयावेश के शासनकाल के द्वितीय वर्ष के छठवें महीने के पहले दिन
शिअलतिएल के पुत्र यहूदिया के राज्यपाल ज़ेरुब्बाबेल, तथा यहोत्सादाक
के पुत्र महापुरोहित यहोशू के पास याहवेह का यह वचन हाग्गय भविष्यवक्ता के
द्वारा पहुंचा: 2 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “ये लोग कहते हैं,
‘याहवेह के भवन के पुनर्निर्माण का समय अभी नहीं आया है.’” 3 तब हाग्गय
भविष्यवक्ता के द्वारा याहवेह का यह वचन आया: 4 “क्या यह समय है कि
तुम खुद पक्के, भव्य घरों में रहो, और यह भवन उजाड़ पड़ा रहे?” 5 तब
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “अपने चालचलन पर सावधानीपूर्वक
ध्यान दो. 6 तुमने बोया तो बहुत, पर तुम्हें फसल थोड़ी मिली. तुम खाते तो हो,
किंतु तुम्हारा पेट कभी नहीं भरता. तुम पीते तो हो, किंतु तुम्हारी प्यास कभी
नहीं बुझती. तुम कपड़े पहनते तो हो, किंतु तुम्हें उससे गर्मी नहीं मिलती.
तुम मजदूरी तो कमाते हो, किंतु यह कैसे खर्च हो जाती है तुम्हें पता भी नहीं
चलता.” 7 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “अपने चालचलन पर
सावधानीपूर्वक ध्यान दो. 8 ऊपर पहाड़ों में जाओ और इमारती लकड़ी नीचे
लाकर मेरे भवन को बनाओ, ताकि मुझे खुशी मिले और मेरा आदर हो,”
याहवेह का कहना है. 9 “तुमने बहुत फसल पाने की आशा की थी, पर
थोड़ा ही मिला. और जब तुम उसे लेकर घर आए, तो मैंने उसे उड़ा दिया.
क्यों?” सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. “क्योंकि मेरा भवन उजाड़ पड़ा
है, और तुममें से हर एक अपने-अपने घर में व्यस्त है. 10 इसलिये, तुम्हारे
कारण ही आकाश ने ओस और भूमि ने उपज पैदा करना रोक दिया है. 11 मैंने
आदेश दिया है कि खेतों और पहाड़ों पर, अनाज, नये अंगूर की दाखमधु,
जैतून तेल और भूमि की हर एक उपज पर, लोगों और घरेलू पशुओं पर, और
तुम्हारे सब मेहनत पर अकाल पड़े.” 12 तब शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल,
यहोत्सादाक का पुत्र महापुरोहित यहोशू, और सब बचे हुए लोगों ने याहवेह,
अपने परमेश्वर के वचन और हाग्गय भविष्यवक्ता के संदेश का पालन किया,
क्योंकि याहवेह उनके परमेश्वर ने उसे भेजा था. और लोगों ने याहवेह का भय
माना. 13 तब याहवेह के संदेशवाहक हाग्गय ने लोगों को याहवेह का यह
संदेश दिया: “मैं तुम्हारे साथ हूं,” याहवेह घोषणा करते हैं. 14 तब याहवेह ने
यहूदिया के राज्यपाल शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल, और यहोत्सादाक के
पुत्र महापुरोहित यहोशू तथा सारे बचे हुए लोगों की आत्मा को उभारा. वे सब
आये और सर्वशक्तिमान याहवेह, अपने परमेश्वर के भवन के निर्माण का कार्य
शुरू किए, 15 और यह कार्य राजा दारयावेश के शासनकाल के छठवें महीने के
चौबीसवें दिन शुरू हुआ. दारयावेश के शासनकाल के दूसरे वर्ष,

2 सातवें माह के इक्कीसवें दिन, याहवेह का यह वचन हाग्गय भविष्यवक्ता
के द्वारा आया: 2 “शिअलतिएल के पुत्र यहूदिया के राज्यपाल ज़ेरुब्बाबेल,
यहोत्सादाक के पुत्र महापुरोहित यहोशू तथा बचे हुए लोगों से बात करो. उनसे
पूछो, 3 ‘तुममें से अब कौन बचा है, जिसने इस भवन की पहले की भव्यता को
देखा है? अब यह तुम्हें किस दशा में दिखता है? क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि
यह अब कुछ भी नहीं रह गया है? 4 पर अब, हे ज़ेरुब्बाबेल, दृढ बने रहो,’
याहवेह की यह घोषणा है. ‘हे यहोत्सादाक के पुत्र महापुरोहित यहोशू, दृढ बने
रहो. हे देश के सब लोगो, दृढ बने रहो,’ याहवेह की यह घोषणा है, ‘और काम
शुरू कर दो. क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं,’ सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा
है. 5 ‘जब मिस्र देश से तुम बाहर निकले थे, तब मैंने तुमसे यह वाचा बांधी थी.
और मेरी आत्मा तुम्हारे बीच में है. तुम मत डरो.’ 6 “सर्वशक्तिमान याहवेह का
यह कहना है: ‘कुछ ही समय बाद मैं एक बार फिर आकाश और पृथ्वी, समुद्र
और सूखी भूमि को हिलाऊंगा. 7 मैं सारी जनताओं को कंपा दूंगा, और सारी
जाति के लोगों की इच्छाएं पूरी होंगी, और मैं इस भवन को महिमा से भर
दूंगा,’ सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 8 ‘चांदी मेरी है और सोना भी मेरा
है,’ सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है. 9 ‘इस वर्तमान भवन की भव्यता
पहले के भवन की भव्यता से बढ़कर होगी,’ सर्वशक्तिमान याहवेह का यह
कहना है. ‘और इस स्थान में, मैं शांति दूंगा,’ सर्वशक्तिमान याहवेह की यह
घोषणा है.” 10 राजा दारयावेश के शासनकाल के दूसरे साल के चौबीसवें दिन
याहवेह का यह वचन हाग्गय भविष्यवक्ता के पास आया: 11 “सर्वशक्तिमान
याहवेह का यह कहना है: ‘पुरोहितों से पूछो कि कानून क्या कहता है: 12 यदि
कोई व्यक्ति अपने कपड़े में पवित्र मांस ले जा रहा है, और वह कपड़ा किसी
रोटी या भोजन, अंगूर की दाखमधु, जैतून तेल या किसी और खाने के चीज़ से
छू जाए, तो क्या वह चीज़ भी पवित्र हो जाएगी?’” पुरोहितों ने उत्तर दिया,
“नहीं.” 13 तब हाग्गय ने कहा, “किसी शव को छूने के कारण यदि कोई
व्यक्ति अशुद्ध है, और वह इनमें से किसी चीज़ को छू लेता है, तो क्या वह
चीज़ भी अशुद्ध हो जाएगी?” पुरोहितों ने उत्तर दिया, “जी हां, वह अशुद्ध हो
जाएगी.” 14 तब हाग्गय ने कहा, “याहवेह की यह घोषणा है, ‘मेरी नजर में ये
लोग और यह जाति भी ऐसी ही हैं. जो कुछ भी वे करते और जो कुछ भी वे
वहां चढ़ाते हैं, वह अशुद्ध है. 15 “‘अब सावधानीपूर्वक आज से इस बात पर
ध्यान दो—विचार करो कि पहले चीज़ें कैसी थी, जब याहवेह के मंदिर में एक
पत्थर पर दूसरा नहीं रखा गया था. 16 उस समय, जब कोई बीस माप अन्न के
ढेर की आशा में आता था, तो उसे सिर्फ दस ही मिलते थे. जब कोई अंगूर के
दाखमधु कुंड से पचास माप दाखमधु लेने जाता था, तो उसे वहां सिर्फ बीस ही
मिलता था. 17 मैंने तुम्हारे खेती के सब कामों पर सूखा, पौधों का रोग लाया
और ओलावृष्टि की, फिर भी तुम लौटकर मेरे पास नहीं आए,’ याहवेह की यह
घोषणा है. 18 ‘आज से, नौवें महीने के इस चौबीसवें दिन से उस दिन के बारे में
ध्यानपूर्वक सोचो, जब याहवेह के मंदिर की नींव रखी गई थी. ध्यानपूर्वक
सोचो: 19 क्या अभी भी कोई बीज खलिहान में बचा है? अब तक, अंगूर की
लता, अंजीर के पेड़, अनार के पेड़ और जैतून के पेड़ में कोई फल नहीं लगा
है. “‘पर आज से मैं तुम्हें आशीष दूंगा.’” 20 तब दूसरी बार उसी माह के
चौबीसवें दिन याहवेह का यह वचन हाग्गय के पास आया: 21 “यहूदिया के
राज्यपाल ज़ेरुब्बाबेल से कह कि मैं आकाश और पृथ्वी को हिलाने पर हूं. 22 मैं
राज्यों के सिंहासनों को पलट दूंगा और विदेशी राज्यों की शक्ति को चकनाचूर
कर दूंगा. मैं रथों और उनके सारथियों को पटक दूंगा; घोड़ों समेत उनके
घुड़सवार एक दूसरे की तलवार से मारे जाएंगे. 23 “सर्वशक्तिमान याहवेह की
यह घोषणा है, ‘शिअलतिएल के पुत्र मेरे सेवक ज़ेरुब्बाबेल, उस दिन, मैं तुम्हें
लूंगा,’ याहवेह की यह घोषणा है, ‘और मैं तुम्हें अपने मुहरदार अंगूठी के समान
बना दूंगा, क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है,’ सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा
है.”

जकर्याह

1 राजा दारयावेश के शासनकाल के दूसरे साल के आठवें महीने में याहवेह
का यह वचन बेरेखियाह के पुत्र और इद्दो के पोते ज़करयाह भविष्यवक्ता के
पास आया: 2 “याहवेह तुम्हारे पूर्वजों से बहुत क्रोधित थे. 3 इसलिये लोगों
को बताओ: सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: ‘मेरे पास लौट आओ,’
सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है, ‘तो मैं भी तुम्हारे पास लौट आऊंगा,’
सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 4 अपने पूर्वजों के समान मत बनो, जिन्हें
पहले के भविष्यवक्ताओं ने पुकार-पुकारकर कहा था: सर्वशक्तिमान याहवेह का
यह कहना है: ‘अपने बुरे चालचलन और अपने बुरे कार्यों को छोड़ो.’ किंतु
उन्होंने न तो मेरी बातों को सुना और न ही मेरी ओर ध्यान दिया, याहवेह की
घोषणा है. 5 तुम्हारे पूर्वज अब कहां हैं? और भविष्यवक्ता, भविष्यद्वक्ता, क्या
वे सदाकाल तक जीवित हैं? 6 पर मेरे वचन और कानून, जो मैंने अपने सेवक
भविष्यवक्ताओं को दिये थे, क्या वे तुम्हारे पूर्वजों की मृत्यु के बाद भी बने हुए
नहीं हैं? “तब उन्होंने प्रायश्चित किया और कहा, ‘सर्वशक्तिमान याहवेह ने
ठीक वही किया है जैसा कि हमारे चालचलन और हमारे कर्मों के कारण हमारे
साथ किया जाना चाहिये, जैसा कि उन्होंने करने की ठानी थी.’” 7 राजा
दारयावेश के शासनकाल के दूसरे साल के ग्यारहवें महीने अर्थात् शबात महीने
के चौबीसवें दिन याहवेह का यह वचन बेरेखियाह के पुत्र और इद्दो के पोते
ज़करयाह भविष्यवक्ता के पास पहुंचा. 8 रात के समय मैंने एक दर्शन में देखा
कि मेरे सामने लाल घोड़े पर सवार एक व्यक्ति था. वह घाटी में मेंहदी के पेड़ों
के बीच खड़ा था, और उसके पीछे लाल, भूरे और सफेद रंग के घोड़े थे. 9 तब
मैंने पूछा, “हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं?” जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसने
उत्तर दिया, “मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि ये क्या हैं.” 10 तब जो व्यक्ति मेंहदी के
पेड़ों के बीच खड़ा था, उसने कहा, “ये वे हैं जिन्हें याहवेह ने पूरे पृथ्वी पर
भेजा है.” 11 और उन्होंने याहवेह के उस स्वर्गदूत को यह सूचित किया, जो
मेंहदी के पेड़ों के बीच खड़ा था, “हम पूरी पृथ्वी में गये और देखा कि सारी
पृथ्वी में चैन और शांति है.” 12 तब याहवेह के दूत ने कहा, “हे सर्वशक्तिमान
याहवेह, आप जो येरूशलेम तथा यहूदिया के शहरों पर पिछले सत्तर सालों से
क्रोधित हैं, कब तक आप इन पर अपनी दया नहीं दिखाएंगे?” 13 तब याहवेह
ने उस स्वर्गदूत से, जो मुझसे बात कर रहा था, दयालु और सांत्वनापूर्ण शब्द
कहा. 14 फिर वह स्वर्गदूत जो मुझसे बातें कर रहा था, उसने कहा, “इन बातों
की घोषणा करो: सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: ‘येरूशलेम तथा
ज़ियोन के प्रति मेरी बहुत जलन है, 15 और मैं उन जनताओं से बहुत क्रोधित हूं
जो आराम में हैं. पहले मैं सिर्फ थोड़ा क्रोधित था, किंतु उन्होंने खुद ही अपनी
विपत्तियां बढ़ा ली हैं.’ 16 “इसलिये याहवेह का यह कहना है: ‘मैं कृपा करने
के लिये येरूशलेम लौटूंगा, और वहां मेरे भवन को फिर से बनाया जाएगा. और
येरूशलेम के ऊपर नापने की लकीर खींची जाएगी,’ सर्वशक्तिमान याहवेह की
घोषणा है. 17 “आगे और घोषणा करो: सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है:
‘मेरे नगर फिर समृद्ध होंगे, और याहवेह फिर ज़ियोन को सांत्वना देंगे तथा
येरूशलेम को अपना ठहराएंगे.’” 18 फिर मैंने देखा, और वहां मेरे सामने चार
सींग थे. 19 तो मैंने उस स्वर्गदूत, जो मुझसे बातें कर रहा था, उससे पूछा, “ये
क्या हैं?” उसने मुझे उत्तर दिया, “ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदिया, इस्राएल
और येरूशलेम को तितर-बितर कर दिया है.” 20 फिर याहवेह ने मुझे चार
शिल्पकार दिखाये. 21 मैंने पूछा, “ये क्या करने के लिये आये हैं?” उन्होंने
उत्तर दिया, “ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदिया को तितर-बितर कर दिया है, ताकि
कोई अपना सिर न उठा सके, पर ये शिल्पकार उन्हें भयभीत करने उन जनताओं
के इन सींगों को काट डालने के लिये आए हैं जो यहूदिया देश के शत्रुओं को
भयभीत कर देंगे और उन राष्ट्रों के सींग काट डालेंगे, जिन्होंने यहूदिया के
लोगों को तितर-बितर करने के लिये आक्रमण किया है.”

2 तब मैं अपने सामने एक व्यक्ति को अपने हाथ में नापनेवाली रस्सी लिये हुए
देखा. 2 मैंने उससे पूछा, “तुम कहां जा रहे हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं
येरूशलेम शहर को नापने जा रहा हूं ताकि पता चल सके कि उसकी लंबाई और
चौड़ाई कितनी है.” 3 जब मुझसे बातें करनेवाला स्वर्गदूत जा रहा था, तब एक
दूसरा स्वर्गदूत उससे मिलने आया 4 और उससे कहा: “दौड़कर जाओ, और
उस जवान से कहो, ‘मनुष्यों और पशुओं के बहुतायत के कारण येरूशलेम
बिना दीवारों का शहर हो जाएगा. 5 और मैं स्वयं, इसके चारों ओर आग
की दीवार बन जाऊंगा,’ याहवेह की घोषणा है, ‘और उसके भीतर मैं उसकी
महिमा बनूंगा.’ 6 “आओ! आओ! उत्तर के देश से भाग जाओ,” याहवेह की
घोषणा है, “क्योंकि मैंने तुम्हें आकाश के चारों दिशाओं के हवा के समान
तितर-बितर कर दिया है,” याहवेह की घोषणा है. 7 “हे ज़ियोन! आओ,
तुम जो बाबेलवासियों के बीच रहते हो, बचकर भाग निकलो!” 8 क्योंकि
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “उन्होंने अपने महिमा के निमित्त ही
मुझे उन जातियों के विरुद्ध भेजा है, जिन्होंने तुम्हें लूट लिया है—क्योंकि यदि
कोई तुम्हें छूता है, तो वह उसकी (याहवेह की) आंख की पुतली को छूता है, 9
मैं निश्चित रूप से उनके विरुद्ध अपना हाथ उठाऊंगा ताकि उनके गुलाम उन्हें
लूटें. तब तुम जान जाओगे कि सर्वशक्तिमान याहवेह ने मुझे भेजा है. 10 “हे
मेरी बेटी, ज़ियोन, ऊंचे स्वरों में गा और आनंदित हो. क्योंकि मैं आकर तुम्हारे
बीच निवास करूंगा,” याहवेह की घोषणा है. 11 “उस दिन बहुत सी जातियां
याहवेह के साथ मिल जाएंगी और वे मेरे लोग बन जाएंगे. मैं तुम्हारे बीच निवास
करूंगा और तुम जान जाओगे कि सर्वशक्तिमान याहवेह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा
है. 12 याहवेह पवित्र देश में यहूदिया को अपने भाग के रूप में ले लेंगे और
येरूशलेम को फिर चुन लेंगे. 13 हे सब लोगों, याहवेह के सामने शांत रहो,
क्योंकि उन्होंने अपने पवित्र निवास से अपने आपको खड़ा किया है.”

3 तब उसने मुझे दिखाया कि महापुरोहित यहोशू याहवेह के दूत के सामने
खड़ा है, और स्वर्गदूत के दाएं तरफ शैतान, यहोशू पर दोष लगाने के लिये
खड़ा है. 2 याहवेह ने शैतान से कहा, “हे शैतान, याहवेह तुझे डांटे! याहवेह,
जिसने येरूशलेम को चुन लिया है, तुझे डांटे! क्या यह व्यक्ति आग से निकाली
गई जलती हुई लाठी के समान नहीं है?” 3 इस समय यहोशू स्वर्गदूत के सामने
गंदे कपड़े पहने हुए खड़ा था. 4 तब स्वर्गदूत ने अपने सामने खड़े व्यक्तियों से
कहा, “उसके गंदे कपड़ों को उतार दो.” तब उसने यहोशू से कहा, “देखो, मैंने
तुम्हारे पापों को दूर कर दिया है, और मैं तुम्हें सुंदर कपड़े पहनाऊंगा.” 5 तब
मैंने कहा, “उसके सिर पर एक साफ पगड़ी रखो.” तब उन्होंने महापुरोहित
यहोशू को एक साफ पगड़ी और साफ कपड़े पहनाए, और याहवेह का दूत
उसके पास खड़ा था. 6 उसके बाद याहवेह के दूत ने यहोशू को यह आश्वासन
दिया: 7 “सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: ‘यदि तुम मेरी आज्ञाओं को
मानोगे और मेरी विधियों पर चलोगे, तो तुम मेरे भवन पर शासन करोगे और मेरे
आंगनों पर तुम्हारा अधिकार होगा, और मैं तुम्हें इन लोगों के बीच में जगह
दूंगा जो यहां खड़े हैं. 8 “‘हे महापुरोहित यहोशू, तुम और तुम्हारे सामने बैठे हुए
तुम्हारे सहकर्मी, तुम सब जो आनेवाली चीज़ों के प्रतीक मात्र हो, सुन तो लो:
मैं अपने सेवक, शाखा को लानेवाला हूं. 9 उस पत्थर को देखो, जिसे मैंने
यहोशू के सामने रखा है! उस एक ही पत्थर में सात नेत्र हैं, और मैं उस पर एक
लेख उकेरूंगा,’ सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है, ‘और मैं एक ही दिन में इस
देश के पाप को हटा दूंगा. 10 “‘उस दिन, तुममें से हर एक अपने पड़ोसी

को अंगूर और अंजीर पेड़ के नीचे संगति करने के लिए आमंत्रित करेगा.' सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है."

4 फिर वह स्वर्गदूत जिसने मुझसे बातें की थी, लौट आया और मुझे ऐसा जगाया, जैसे किसी को नींद से जगाया जाता है. 2 उसने मुझसे प्रश्न किया, "तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?" मैंने उत्तर दिया, "मुझे एक ठोस सोने का दीवट दिखाई दे रहा है जिसके चोटी पर एक कटोरा है जिसमें सात दीये हैं, और दीयों पर बाती के लिए सात-सात नालियां हैं. 3 दीवट के पास दो जैतून के पेड़ भी हैं, एक कटोरे के दायीं ओर तथा दूसरा उसके बायीं ओर." 4 जो स्वर्गदूत मुझसे बातें कर रहा था, मैंने उससे पूछा, "हे मेरे प्रभु, ये सब क्या हैं?" 5 उसने उत्तर दिया, "क्या तुम नहीं जानते कि ये क्या हैं?" मैंने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, नहीं." 6 अतः स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "यह ज़ेरुब्बाबेल के लिये याहवेह का वचन है: 'न तो बल से और न ही शक्ति से, पर मेरे आत्मा के द्वारा,' सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 7 "हे विशाल पहाड़, क्या हो तुम? ज़ेरुब्बाबेल के सामने तुम समतल मैदान बन जाओगे. तब वह चोटी के पत्थर को यह चिल्लाते हुए ले आएगा, 'परमेश्वर इसे आशीष दे! परमेश्वर इसे आशीष दे!'" 8 इसके बाद याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 9 "ज़ेरुब्बाबेल ने अपने हाथों से इस मंदिर की नींव डाली है; और उसी के द्वारा यह काम पूरा होगा. तब तुम जानोगे कि सर्वशक्तिमान याहवेह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है. 10 "कौन है जो छोटी बातों के दिन को तुच्छ समझता है, जबकि याहवेह की सात आंखें जो सारी पृथ्वी पर नजर रखती हैं, जब वे यह देखेंगी कि चुना हुआ चोटी का पत्थर ज़ेरुब्बाबेल के हाथ में है, तो वे आनंदित होंगी?" 11 तब मैंने स्वर्गदूत से पूछा, "ये जैतून के दो पेड़ों का मतलब क्या है, जो दीवट के दायीं और बायीं तरफ हैं?" 12 मैंने उससे फिर पूछा, "दो सोने के नलियों के बाजू में जैतून की ये दो शाखायें क्या हैं जो सुनहरा तेल उंडेलती हैं?" 13 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "क्या तुम नहीं जानते कि ये क्या हैं?" मैंने कहा, "हे मेरे प्रभु, नहीं." 14 तब उसने कहा, "ये दो वे हैं जिन्हें सारी पृथ्वी के प्रभु की सेवा करने के लिये अभिषेक किया गया है."

5 मैंने फिर देखा, और मेरे सामने उड़ता हुआ एक चर्मपत्र था. 2 उसने मुझसे पूछा, "तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?" मैंने उत्तर दिया, "मुझे उड़ता हुआ एक चर्मपत्र दिखाई दे रहा है, जो लगभग दस मीटर लंबा तथा पांच मीटर चौड़ा है." 3 तब उसने मुझसे कहा, "यह वह शाप है जो सारे देश पर लगेगा; क्योंकि इस पत्र के एक तरफ जो लिखा है, उसके अनुसार हर एक चोर को निकाल दिया जाएगा, और इस पत्र के दूसरी ओर जो लिखा है, उसके अनुसार हर वह व्यक्ति जो झूठी शपथ खाता है, वह भी निकाल दिया जाएगा. 4 सर्वशक्तिमान याहवेह घोषणा करते हैं, 'मैं इस शाप को भेजूंगा, और यह हर चोर के घर में और मेरे नाम से झूठी शपथ खानेवाले हर व्यक्ति के घर में घुसेगा. यह उस घर में बना रहेगा और उसे उसके लकड़ी और पत्थर सहित पूरी तरह नष्ट कर देगा.'" 5 तब वह स्वर्गदूत जो मुझसे बातें कर रहा था, सामने आकर मुझसे कहने लगा, "ऊपर देखो कि वहां प्रगट हो रहा है." 6 मैंने पूछा, "यह क्या है?" उसने उत्तर दिया, "यह एक टोकरी है." और उसने आगे कहा, "यह पूरे देश के लोगों का पाप है." 7 तब सीसे के ढक्कन को हटाया गया, और वहां टोकरी में एक स्त्री बैठी हुई थी! 8 तब स्वर्गदूत ने कहा, "यह दुष्टता है," और उसने उस स्त्री को टोकरी में वापस धकेल दिया और सीसे के ढक्कन को टोकरी पर ढांक दिया. 9 तब मैंने ऊपर देखा—और वहां मेरे सामने दो स्त्रियां थी, जो अपने पंखों से हवा में उड़ रही थी! उनके पंख एक सारस के समान थे, और उन्होंने उस टोकरी को आकाश और पृथ्वी के बीच में उठा लिया. 10 तब वह स्वर्गदूत जो मुझसे बातें कर रहा था, मैंने उससे पूछा, "वे उस टोकरी को कहां लिए जा रही हैं?" 11 उसने उत्तर दिया, "बेबीलोनिया देश को, जहां वे इसके लिए एक घर बनाएंगी. जब घर बन जाएगा, तब टोकरी को वहां उसके जगह में रख दिया जाएगा."

6 तब मैंने फिर ऊपर देखा, और मेरे सामने चार रथ दो पर्वतों के बीच में से निकलकर आ रहे थे को देखा, और ये पर्वत कांसा धातु के थे. 2 पहले रथ में लाल घोड़े, दूसरे रथ में काले, 3 तीसरे रथ में सफेद और चौथे रथ में चितकबरे घोड़े थे—और सबके सब ताकतवर थे. 4 मुझसे जो स्वर्गदूत बातें कर रहा था, मैंने उससे पूछा, "हे प्रभु, ये क्या हैं?" 5 स्वर्गदूत ने मुझे उत्तर दिया, "ये स्वर्ग की वे चार आत्माएं हैं, जो सारे संसार के प्रभु के सामने खड़ी रहती हैं और अब उनके सामने से बाहर जा रही हैं. 6 जिस रथ में काले रंग के घोड़े हैं, वह उत्तर के देश को जा रहा है और जिसमें सफेद घोड़े हैं, वह पश्चिम की ओर, और जिसमें चितकबरे घोड़े हैं, वह दक्षिण की ओर जा रहा है." 7 जब ये ताकतवर घोड़े बाहर गये, तो वे सारी पृथ्वी में जाने के लिए अधीर थे. और उसने कहा, "सारी पृथ्वी में जाओ!" अतः वे सारी पृथ्वी में गये. 8 तब उसने मुझे पुकारकर कहा, "देखो, वे जो उत्तरी देश की ओर गये हैं, उन्होंने उत्तर के देश में मेरी आत्मा को शांति दी है." 9 याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 10 "बाबेल से लौटे बंधुआई के इन लोगों हेल्दै, तोबियाह तथा येदाइयाह से सोना और चांदी ले लो और उसी दिन ज़ेफनियाह के पुत्र योशियाह के घर जाओ. 11 सोना और चांदी को लेकर एक मुकुट बनाओ, और उस मुकुट को यहोत्सादाक के पुत्र महापुरोहित यहोशू के सिर पर रखो. 12 उसे बताओ कि सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: 'यह वह व्यक्ति है जिसका नाम शाखा है, और वह अपने ही जगह से शाखा निकालकर याहवेह के मंदिर का निर्माण करेगा. 13 यह वही है जो याहवेह के मंदिर का निर्माण करेगा, और वह राजकीय वस्त्र धारण करेगा और सिंहासन पर बैठकर राज करेगा. और उसके सिंहासन पर एक पुरोहित होगा और उन दोनों के बीच अच्छा समन्वय रहेगा.' 14 याहवेह के मंदिर में मुकुट को एक स्मृति के रूप में हेल्दाई, तोबियाह, येदाइयाह और ज़ेफनियाह के पुत्र हेन को दिया जाएगा. 15 तब लोग दूर-दूर से आएंगे और याहवेह के मंदिर के बनाने में मदद करेंगे, और तुम जानोगे कि सर्वशक्तिमान याहवेह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है. और यह तभी होगा, जब तुम याहवेह अपने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन मन लगाकर करोगे."

7 दारयावेश राजा के शासनकाल के चौथे साल के नवें महीने याने कि किसलेव के महीने के चौथे दिन याहवेह का यह वचन ज़करयाह के पास आया. 2 बेथेल के लोगों ने याहवेह से बिनती करने और यह पूछने के लिये शारेज़र, रेगेम-मेलेख तथा उनके साथियों को 3 सर्वशक्तिमान याहवेह के भवन के पुरोहितों और भविष्यवक्ताओं के पास भेजा, "क्या हम पांचवें महीने में शोक मनायें और उपवास करें, जैसा कि हम कई सालों से करते आ रहे हैं?" 4 तब सर्वशक्तिमान याहवेह का यह वचन मेरे पास आया: 5 "देश के सारे लोगों और पुरोहितों से पूछो, 'जब तुमने पांचवें और सातवें महीने में पिछले सत्तर सालों तक उपवास तथा विलाप किया, तो क्या सही में तुमने मेरे लिए ही उपवास किया? 6 और जब तुम खाते और पीते थे, तो क्या तुम ये सब सिर्फ अपने मौज-मस्ती के लिये नहीं करते थे? 7 क्या ये याहवेह के वचन नहीं हैं, जिसकी घोषणा उन्होंने पहले के भविष्यवक्ताओं के ज़रिये की थी, जब येरूशलेम और उसके आस-पास के नगर शांति और समृद्धि में थे, और नेगेव और पश्चिम के नीचे के देश बस गये थे?'" 8 और याहवेह का यह वचन ज़करयाह के पास फिर आया: 9 "सर्वशक्तिमान याहवेह ने यह कहा है: 'निष्पक्ष न्याय करो; एक दूसरे के प्रति दया और सहानुभूति दिखाओ. 10 विधवा या अनाथ, विदेशी या गरीब पर अत्याचार मत करो. एक दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र मत करो.' 11 "किंतु उन्होंने

इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया; ढीठता से उन्होंने अपना मुंह मोड़ लिया
और अपने कानों को बंद कर लिया. 12 उन्होंने अपना हृदय पत्थर के समान
कठोर बना लिया और कानून की बातों या सर्वशक्तिमान याहवेह के उन वचनों
को नहीं सुना जिसे उन्होंने अपनी आत्मा के द्वारा पहले के भविष्यवक्ताओं के
ज़रिये भेजा था. इसलिये सर्वशक्तिमान याहवेह बहुत क्रोधित हुए. 13 "'जब
मैंने पुकारा, तो उन्होंने नहीं सुना; इसलिये जब वे मुझे पुकारेंगे, तो मैं भी उनकी
नहीं सुनूंगा,' सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है. 14 'मैंने उन्हें एक बवंडर
से जाति-जाति के लोगों के बीच बिखेर दिया है, जहां वे अजनबी थे. वह देश
जिसे वे अपने पीछे छोड़ आये, ऐसा उजाड़ पड़ा था कि उसमें से होकर कोई
भी नहीं जाता. इसी प्रकार से उन्होंने उस खुशनुमा देश को उजाड़ दिया.'"

8 सर्वशक्तिमान याहवेह का वचन मेरे पास आया. 2 सर्वशक्तिमान याहवेह
का यह कहना है: "ज़ियोन के लिये मैं बहुत जलन रखता हूं; मैं उसके लिये
ईर्ष्या से जल रहा हूं." 3 याहवेह का यह कहना है: "मैं ज़ियोन लौट आऊंगा
और येरूशलेम में निवास करूंगा. तब येरूशलेम ईमानदार शहर कहलाएगा, और
सर्वशक्तिमान याहवेह का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा." 4 सर्वशक्तिमान
याहवेह का यह कहना है: "एक बार फिर येरूशलेम के गलियों में बूढ़े पुरुष और
महिलायें बैठा करेंगी और बहुत उम्र होने के कारण हर एक के हाथ में लाठी
होगी. 5 शहर की गलियां खेलते हुए बालक-बालिकाओं से भरी होंगी." 6
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "उस समय इन लोगों के बचे हुओं को
यह अद्भुत लगे, पर क्या यह मुझे अद्भुत लगेगा?" सर्वशक्तिमान याहवेह की यह
घोषणा है. 7 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "मैं अपने लोगों को पूर्व
और पश्चिम के देशों से बचाऊंगा. 8 मैं उन्हें येरूशलेम में बसने के लिये वापस
ले आऊंगा; वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनके परमेश्वर के रूप में उनके प्रति
विश्वासयोग्य और धर्मी ठहरूंगा." 9 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है:
"अब तुम इन बातों को सुनो, 'तुम्हारे हाथ मजबूत रहें ताकि मंदिर को बनाया
जा सके.' यही बात उन भविष्यवक्ताओं के द्वारा कही गई है जो सर्वशक्तिमान
याहवेह के भवन की नीव डालने के समय उपस्थित थे. 10 उस समय से पहले
न तो मनुष्य को मजदूरी मिलती थी और न ही पशुओं के लिए भाड़ा. अपने
शत्रुओं के कारण, कोई भी अपने काम-धंधे में जाने के लिये सुरक्षित नहीं था,
क्योंकि मैंने ही उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध कर रखा था. 11 पर अब मैं इन लोगों
के बचे हुओं से वैसा व्यवहार न करूंगा, जैसा कि पहले के दिनों में करता
था," सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है. 12 "बीज अच्छी तरह से
बढ़ेगा, अंगूर की लता में फल लगेगा, भूमि में फसल होगी, और आकाश से
ओस पड़ेगी. मैं ये सब चीज़ें इन लोगों के बचे हुओं को एक उत्तराधिकार
के रूप में दूंगा. 13 जैसा कि हे यहूदिया और इस्राएल, तुम जाति-जाति के
लोगों के बीच एक अभिशाप बन गये हो, तो मैं तुम्हें बचाऊंगा, और तुम एक
आशीष का कारण बनोगे. भयभीत न हो, पर तुम्हारे हाथ मजबूत बने रहें." 14
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "जब तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे क्रोधित
किया था, तो जैसा कि मैंने तुम्हारे ऊपर विपत्ति लाने और दया न करने की बात
ठान ली थी," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है, 15 "वैसा ही अब मैंने
येरूशलेम तथा यहूदिया पर फिर से भलाई करने की ठान ली है. भयभीत न हो.
16 ये वे बातें हैं, जिन्हें तुम्हें करना है: एक दूसरे के साथ सत्य बोलो, और अपने
अदालतों में सच और सही निर्णय दिया करो; 17 एक दूसरे के विरुद्ध बुरी युक्ति
न करो, और झूठी शपथ खाने में तत्पर न हो. क्योंकि मैं इन सब बातों से
घृणा करता हूं," याहवेह की यह घोषणा है. 18 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह
वचन मेरे पास आया. 19 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "चौथे,
पांचवें, सातवें तथा दसवें माह के उपवास यहूदिया के लिए आनंद और खुशी के
अवसर और सुखद पर्व हो जायेंगे. अतः सत्य और शांति से प्रेम करो." 20
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "बहुत से लोग और बहुत से शहरों
के रहनेवाले आएंगे, 21 और एक शहर के रहनेवाले दूसरे शहर में जाकर
कहेंगे, 'आओ, याहवेह से विनती करने तुरंत चलें और सर्वशक्तिमान याहवेह
की खोज में रहें. मैं स्वयं जा रहा हूं.' 22 और बहुत सारे लोग और सामर्थ्यी
जातियों के लोग सर्वशक्तिमान याहवेह को खोजने और उससे विनती करने
येरूशलेम आएंगे." 23 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "उन दिनों में
सब भाषाओं और जातियों से दस व्यक्ति एक यहूदी व्यक्ति को उसके कपड़े के
छोर से पकड़कर कहेंगे, 'हम तुम्हारे साथ चलते हैं, क्योंकि हमने यह सुना है
कि परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं.'"

9 एक भविष्यवाणी: हद्राख देश के विरुद्ध में याहवेह का यह वचन है और
इसका प्रभाव दमेशेक पर पड़ेगा— क्योंकि सारे लोगों और इस्राएल के सारे
गोत्रों की दृष्टि याहवेह पर लगी है— 2 और इसकी सीमा से लगे देश हामाथ पर
लगी है, और सोर और सीदोन पर भी लगी है, यद्यपि वे बहुत कुशल हैं. 3 सोर
ने अपने लिए एक दृढ गढ़ बनाया है; उसने चांदी को धूल के समान, और सोना
को गली के कीचड़ के समान बटोर रखा है. 4 पर प्रभु उसकी सब चीज़ों को
ले लेगा और उसकी शक्ति को समुद्र में डाल देगा, और वह आग में जलकर नष्ट
हो जाएगी. 5 अश्कलोन यह देखकर भयभीत होगा; अज्जाह अति कष्ट में
छटपटाएगा, और यही स्थिति एक्रोन की भी होगी, क्योंकि उसकी आशा
जाती रहेगी. अज्जाह में राजा न रह जाएगा और अश्कलोन को त्याग दिया
जाएगा. 6 एक दोगली जाति के लोग अशदोद पर अधिकार कर लेंगे, और मैं
फिलिस्तीनियों के घमंड को तोड़ दूंगा. 7 मैं उनके मुंह में से रक्त, और उनके
दांतों के बीच से निषेध किए गये भोजन को छीन लूंगा. तब वे जो बच जाएंगे,
वे हमारे परमेश्वर के हो जाएंगे और यहूदिया में एक गोत्र बन जाएंगे, और एक्रोन
यबूसियों के समान हो जाएगा. 8 पर मैं अपने मंदिर को लुटेरों से बचाने के
लिये उसकी पहरेदारी हेतु पड़ाव डालूंगा. कोई भी अत्याचारी फिर कभी मेरे
लोगों पर अधिकार करने न पाएगा, क्योंकि अब मैं पहरेदारी कर रहा हूं. 9 हे
बेटी ज़ियोन, अति आनंदित हो! हे बेटी येरूशलेम, जय जयकार करो! देखो,
तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है, वह धर्मी और विजयी होकर आता है, वह
विनम्र और एक गधे पर, एक बछड़े पर, एक गधी के बच्चे पर सवार है. 10 मैं
एफ्राईम से रथों को और येरूशलेम से युद्ध के घोड़ों को ले लूंगा, और युद्ध के
धनुष तोड़ दिये जाएंगे. तब वह जाति-जाति के लोगों के बीच शांति की घोषणा
करेगा. उसका साम्राज्य एक समुद्र से लेकर दूसरे समुद्र तक और नदी से लेकर
पृथ्वी के छोर तक फैलेगा. 11 जहां तक तुम्हारा संबंध है, तुम्हारे साथ मेरी
वाचा के लहू के कारण, मैं तुम्हारे कैदियों को उस जलहीन गड्ढे से बाहर निकाल
लूंगा. 12 हे आशा लिये हुए कैदियों, अपने गढ़ में लौट आओ; आज मैं घोषणा
करता हूं कि मैं तुम्हें उसका दो गुणा लौटा दूंगा. 13 मैं यहूदिया को अपने धनुष
के सदृश झुकाऊंगा और एफ्राईम से इसे भर दूंगा. हे ज़ियोन, मैं तुम्हारे बेटों को
यावन के बेटों के विरुद्ध उत्तेजित करूंगा, और तुम्हें योद्धा की तलवार के समान
कर दूंगा. 14 तब याहवेह उन पर प्रकट होगा; और उसके तीर बिजली के समान
चमकेंगे. परम याहवेह तुरही फूंकेंगे; वे दक्षिण से उठे आंधी से होकर चलेंगे,
15 और सर्वशक्तिमान याहवेह उनकी रक्षा करेंगे. वे नष्ट कर देंगे और गोफन
के पत्थरों के द्वारा उन पर जयवंत होंगे. वे पिएंगे और ऐसा कोलाहल करेंगे
जैसे लोग दाखमधु पीकर करते हैं; वे उस कटोरे के समान भर जाएंगे जिसका
उपयोग वेदी के कोनों को छिड़कने के लिये किया जाता है. 16 जैसे कि एक
चरवाहा अपने झुंड की रक्षा करता है वैसे ही उनका परमेश्वर याहवेह उस दिन
अपने लोगों की रक्षा करेगा. वे उसके देश में ऐसे चमकेंगे जैसे मुकुट में जड़े हुए
रत्न चमकते हैं. 17 कितने आकर्षक और सुंदर होंगे वे! जवान अन्न खाकर,
और जवान युवतियां नयी अंगूर की दाखमधु पीकर हृष्ट-पुष्ट हो जाएंगी.

10 याहवेह से विनती करो कि वह वसन्त ऋतु में वर्षा भेजें; यह याहवेह
ही है जो बादलों को गरजाते और आंधी लाते है. वह सब लोगों को वर्षा
देते, और हर एक के लिए खेत में पौधा उपजाते हैं. 2 मूर्तियां धोखा देनेवाली
बात कहते हैं, और भावी कहनेवाले झूठे दर्शन देखते हैं; वे झूठे स्वप्न के बारे में
बताते हैं, और वे व्यर्थ में सांत्वना देते हैं. इसलिये चरवाहे की कमी के कारण
दुःख से लोग भेड़ की तरह भटकते हैं. 3 “मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़क रहा
है, ओर मैं अगुओं को दंड दूंगा; क्योंकि सर्वशक्तिमान याहवेह अपने झुंड
अर्थात् यहूदाह के लोगों की देखरेख करेगा, और वह उन्हें युद्ध में गर्व करनेवाले
घोड़े के समान बनाएगा. 4 यहूदाह से कोने का पत्थर आयेगा, उससे तंबू की
खूंटी, उससे युद्ध का धनुष, और उससे ही हर एक शासक आएंगे. 5 एक साथ
वे युद्ध में उन योद्धाओं के समान होंगे, जो गली के कीचड़ में अपने शत्रुओं को
रौंदते हैं. वे लड़ेंगे क्योंकि याहवेह उनके साथ है, और वे शत्रु के घुड़सवारों को
लज्जित करेंगे. 6 “मैं यहूदाह के लोगों को मजबूत करूंगा और योसेफ़ के वंश
को बचाऊंगा. उनके प्रति अपनी करुणा के कारण मैं उन्हें लौटा ले आऊंगा. वे
ऐसे हो जाएंगे मानो मैंने उन्हें कभी त्यागा ही न था, क्योंकि मैं उनका परमेश्वर
याहवेह हूं इसलिये मैं उनकी सुनकर उन्हें उत्तर दूंगा. 7 तब एफ्राईमी लोग योद्धा
के समान हो जाएंगे, उनका हृदय ऐसा प्रफुल्लित होगा, जैसा दाखमधु पीने से
होता है. उनके बच्चे इसे देखकर आनंदित होंगे; और उनका मन याहवेह में
आनंदित होगा. 8 मैं उन्हें संकेत देकर इकट्ठा करूंगा. निश्चित रूप से, मैं उन्हें
छुड़ाऊंगा; वे पहले की तरह असंख्य हो जाएंगे. 9 यद्यपि मैंने उन्हें लोगों के
बीच में बिखरा दिया है, फिर भी उन दूर देशों में वे मुझे स्मरण करेंगे. वहां वे
और उनकी संतान बचे रहेंगे, और वे लौट आएंगे. 10 मैं उन्हें मिस्र देश से लौटा
लाऊंगा और उन्हें अश्शूर देश से इकट्ठा करूंगा. मैं उन्हें गिलआद और लबानोन
देश में ले आऊंगा, और उन्हें इतना बढ़ाऊंगा कि वहां उनके लिये पर्याप्त जगह
न होगी. 11 वे समस्याओं के समुद्र से होकर गुज़रेंगे; समुद्र की बड़ी लहरें शांत
कर दी जाएंगी नील नदी का सब गहरा जल सूख जाएगा. अश्शूरियों का घमंड
तोड़ दिया जाएगा और मिस्र का राजदंड जाता रहेगा. 12 मैं उन्हें याहवेह में
मजबूत करूंगा और वे उसके नाम में सुरक्षित रहा करेंगे.” याहवेह की यह
घोषणा है.

11 हे लबानोन, अपने दरवाजों को खोलो, कि आग तुम्हारे देवदार के पेड़ों
को भस्म कर दे! 2 हे सनोवर के पेड़, तुम विलाप करो, क्योंकि देवदार
का पेड़ गिर गया है; भव्य पेड़ नष्ट हो गये हैं! हे बाशान के बलूत पेड़, विलाप
करो; क्योंकि घने जंगल काट डाले गये हैं! 3 चरवाहों के विलाप को सुनो;
उनके अच्छे चरागाह नष्ट हो गये हैं! सिंहों के गर्जन को सुनो; क्योंकि यरदन
नदी की रसदार झाड़ियां नष्ट हो गयी हैं! 4 याहवेह, मेरे परमेश्वर का यह कहना
है: “वध के लिए चिन्हित पशुओं के झुंड की रखवाली करो. 5 उनके खरीददार
उनका वध करते हैं, और उन्हें कोई दंड नहीं मिलता. जो उन्हें बेचते हैं वे कहते
हैं, ‘याहवेह की स्तुति हो, मैं धनी हो गया हूं!’ उनके खुद के चरवाहे उन पर
दया नहीं करते. 6 मैं अब इस देश के लोगों पर कोई दया नहीं करूंगा,”
याहवेह की यह घोषणा है. “मैं हर एक को उनके पड़ोसी और उनके राजा के
अधीन कर दूंगा, हर एक व्यक्ति राजा के अधीन हो जाएगा. वे उस देश को नाश
कर देंगे, और मैं किसी को उनके हाथ से नहीं बचाऊंगा.” 7 अतः मैंने वध के
लिये चिन्हित पशुओं के झुंड की रखवाली की, विशेष रूप से झुंड के उन
पशुओं की जिनके ऊपर अत्याचार किया जा रहा था. तब मैंने दो लाठियां लीं,
और उनमें से एक नाम अनुग्रह और दूसरे का नाम एकता रखा, और मैं ही झुंड
की देखभाल करने लगा. 8 उसके बाद मैंने एक माह के भीतर ही तीन चरवाहों
को काम से अलग कर दिया. वह झुंड मुझसे बहुत घृणा करने लगे, और मैं
उनसे ऊब गया 9 और कहा, “मैं अब तुम्हारी देखभाल नहीं करूंगा. जो मर
रहा है वह मरे, और जो नाश हो रहा है वह नाश हो, और जो बच जाते हैं वे एक
दूसरे का मांस खाएं.” 10 तब वह वाचा जिसे मैंने सब जाति के लोगों के साथ
बांधी थी, उसे तोड़ते हुए मैंने अपने अनुग्रह नाम की लाठी को लिया और उसे
तोड़ दिया. 11 वह वाचा उसी दिन तोड़ दी गयी, और झुंड के पीड़ित पशु जो
मेरी ओर ताक रहे थे, वे जान गये कि यह याहवेह का वचन है. 12 तब मैंने
उनसे कहा, “यदि तुमको यह अच्छा लगे, तो तुम मुझे मेरी मजदूरी दे दो; पर
यदि नहीं देना चाहते, तो कोई बात नहीं.” तब उन्होंने मेरी मजदूरी के तीस
चांदी के टुकड़े मुझे दिये. 13 तब याहवेह ने मुझसे कहा, “इस राशि को कुम्हार
के आगे फेंक दो”—यह अच्छा मूल्य है जिसे उन्होंने मेरा ठहराया है! अतः मैंने
चांदी के उन तीस टुकड़ों को लेकर याहवेह के भवन में कुम्हार के आगे फेंक
दिया. 14 तब मैंने यहूदिया और इस्राएल के बीच पारिवारिक संबंध को तोड़ते
हुए, मैंने एकता नाम के अपनी दूसरी लाठी को तोड़ा. 15 तब याहवेह ने मुझसे
कहा, “एक मूर्ख चरवाहा के साज-सामान को फिर से लो. 16 क्योंकि मैं इस
देश में एक ऐसा चरवाहा ठहरानेवाला हूं, जो खोये हुओं की चिंता नहीं करेगा,
न जवानों को ढूंढ़ेगा, न घायलों को चंगा करेगा, न ही तंदुरुस्तों को खिलायेगा,
पर वह अच्छे भेड़ के मांस को खायेगा, और उनके खुरों को फाड़ डालेगा. 17
“उस निकम्मे चरवाहे पर हाय, जो पशुओं के झुंड को छोड़कर भाग जाता है!
ऐसा हो कि उसकी भुजा और दायीं आंख पर तलवार चले! उसकी भुजा पूरी
तरह सूख जाए, और वह अपनी दायीं आंख से पूरी तरह अंधा हो जाए!”

12 एक भविष्यवाणी: इस्राएल के विषय में याहवेह का वचन. याहवेह, जो
आकाश को फैलाते हैं, जो पृथ्वी की नींव रखते हैं, और जो मनुष्य के
भीतर आत्मा को बनाते हैं, वे यह कहते हैं: 2 “मैं येरूशलेम को एक ऐसा
प्याला बनानेवाला हूं, जो आस-पास के लोगों को लड़खड़ा देगा. यहूदिया
और साथ ही साथ येरूशलेम भी घेर लिया जाएगा. 3 उस दिन, जब पृथ्वी
सब जातियां येरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठा होंगी, तो मैं उसे सब जातियों के लिये
एक अडिग चट्टान बना दूंगा. जो भी उसे हटाने की कोशिश करेगा, वह अपने
आपको घायल करेगा. 4 उस दिन, मैं हर एक घोड़े को आतंकित करूंगा और
उस पर सवार व्यक्ति के मति को भ्रष्ट कर दूंगा,” याहवेह की यह घोषणा है.
“यहूदाह के घराने पर कृपादृष्टि रखूंगा, पर मैं अन्यजातियों के सब घोड़ों को
अंधा कर दूंगा. 5 तब यहूदाह गोत्र के लोग अपने मन में कहेंगे, ‘येरूशलेम के
लोग बलवान हैं, क्योंकि सर्वशक्तिमान याहवेह उनका परमेश्वर है.’ 6 “उस
दिन मैं यहूदाह के लोगों को लकड़ी के ढेर में आग का एक भट्ठा जैसे, पूलियों
के बीच जलता हुआ एक मशाल जैसे बना दूंगा. वे अपने दाएं तथा बाएं आस-
पास के सब लोगों को भस्म कर देंगे, पर येरूशलेम अपने जगह में अडिग बना
रहेगा. 7 “याहवेह पहले यहूदिया के निवासियों को बचायेंगे, ताकि दावीद के
घराने और येरूशलेम के निवासियों का आदर यहूदिया से बढ़कर न हो. 8 उस
दिन स्वयं याहवेह येरूशलेम में रहनेवालों की रक्षा करेंगे, ताकि उनमें सबसे
दुर्बल भी दावीद के जैसा शक्तिशाली हो जाए और दावीद का घराना परमेश्वर के
जैसा, याहवेह के आगे-आगे जानेवाले स्वर्गदूत के जैसा हो जाए. 9 उस दिन मैं
उन सब जनताओं को नष्ट करने के लिये निकलूंगा, जो येरूशलेम पर चढ़ाई
करते हैं. 10 “और मैं दावीद के घराने और येरूशलेम के निवासियों पर कृपा
तथा याचना करनेवाली एक आत्मा उंडेलूंगा. वे मेरी ओर ताकेंगे, जिसे उन्होंने
बेधा है, और वे उसके लिए वैसा ही विलाप करेंगे, जैसे कोई अपने एकमात्र
बच्चे के लिए विलाप करता है, और वे उसके लिये ऐसे शोक मनाएंगे जैसे कोई
अपने पहलौठे बेटे की मृत्यु पर शोक मनाता है. 11 उस दिन येरूशलेम में
विलाप ऐसा भयंकर होगा, जैसा हदद-रिम्मोन ने मगिद्दो के मैदान में किया था.
12 पूरा देश शोक मनाएगा, हर गोत्र, हर एक जन अपनी पत्नी के साथ शोक
मनाएगा: दावीद के घराने के गोत्र के लोग और उनकी पत्नियां, नाथान के घराने

के गोत्र के लोग और उनकी पत्नियां, 13 लेवी के घराने के गोत्र के लोग और उनकी पत्नियां, शिमेई के गोत्र के लोग और उनकी पत्नियां, 14 और बचे सब गोत्र के लोग और उनकी पत्नियां शोक मनाएंगे.

13 "उस दिन दावीद के घराने और येरूशलेम निवासियों को उनके पाप और अशुद्धता से शुद्ध करने के लिये एक झरना फूटेगा. 2 "उस दिन, मैं देश से सारे मूर्तियों के नाम मिटा दूंगा, और उन्हें फिर कभी याद किया न जाएगा." सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है, "मैं देश से भविष्यवक्ताओं और अशुद्धता की आत्मा दोनों को निकाल दूंगा. 3 और फिर भी यदि कोई भविष्यवाणी करे, तो उसको पैदा करनेवाले उसके माता-पिता उससे कहेंगे, 'अवश्य है कि तू मर जाए, क्योंकि तूने याहवेह के नाम में झूठ बोला है,' तब उसके खुद के माता-पिता उस भविष्यवाणी करनेवाले को तलवार से मार डालेंगे. 4 "उस दिन हर एक भविष्यवक्ता अपने भविष्य दर्शन के बारे में लज्जित होगा. वे लोगों को धोखा देने के लिये भविष्यवक्ताओं के लिए निर्धारित बाल से बने कपड़े नहीं पहनेंगे. 5 परंतु हर एक कहेगा, 'मैं भविष्यवक्ता नहीं हूं. मैं एक किसान हूं; मैं अपनी जवानी से ही भूमि से अपनी जीविका चलाता आया हूं.' 6 यदि कोई उससे पूछे, 'तुम्हारे शरीर पर ये घाव कैसे हैं?' तो वह उत्तर देगा, 'मेरे मित्रों के घर में मुझे ये घाव लगे हैं.' 7 "हे तलवार, मेरे चरवाहे के विरुद्ध सक्रिय हो जा, उस व्यक्ति के विरुद्ध, जो मेरा घनिष्ठ है!" सर्वशक्तिमान याहवेह की यह घोषणा है. "चरवाहे पर वार करो, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी, और मैं बच्चों के विरुद्ध अपना हाथ उठाऊंगा. 8 याहवेह की घोषणा है, पूरे देश में दो तिहाई लोगों पर वार करके मार डाला जाएगा; फिर भी एक तिहाई लोग उसमें बचे रहेंगे. 9 इन एक तिहाई लोगों को मैं आग में डाल दूंगा; मैं उन्हें चांदी की तरह परिष्कृत करूंगा और उन्हें ऐसे परखूंगा, जैसे सोने को परखा जाता है. वे लोग मेरा नाम लेकर पुकारेंगे और मैं उनकी सुनूंगा; मैं कहूंगा, 'वे मेरे लोग हैं,' और वे कहेंगे, 'याहवेह हमारे परमेश्वर हैं.'"

14 हे येरूशलेम, याहवेह का एक ऐसा दिन आनेवाला है, जब तुम्हारी संपत्ति लूट ली जाएगी और तुम्हारे अपने घेरे के अंदर ही बांट ली जाएगी. 2 मैं जाति-जाति के लोगों को येरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इकट्ठा करूंगा; शहर पर अधिकार कर लिया जाएगा, घर-द्वार लूट लिये जाएंगे, और स्त्रियों से बलात्कार किया जाएगा. शहर की आधी जनसंख्या बंधुआई में चली जाएगी, पर बचे लोग शहर में ही रहेंगे. 3 तब याहवेह जाकर उन जातियों के विरुद्ध ऐसे लड़ेंगे जैसे वे युद्ध के दिन लड़ते हैं. 4 उस दिन याहवेह येरूशलेम के पूर्व में जैतून पहाड़ पर जा खड़े होंगे, और जैतून पहाड़ पूर्व और पश्चिम दो भाग में बंट जाएगा और बीच में एक बड़ी घाटी बन जाएगी, जिससे आधा पहाड़ उत्तर की ओर तथा आधा पहाड़ दक्षिण की ओर हट जाएगा. 5 तब तुम मेरी इस पहाड़ की घाटी से होकर भागोगे, क्योंकि यह घाटी आत्सल तक फैली होगी. तुम ऐसे भागोगे, जैसे तुम यहूदिया के राजा उज्जियाह के दिनों में हुए भूकंप के समय भागे थे. तब याहवेह मेरे परमेश्वर सब पवित्र लोगों के साथ आएंगे. 6 उस दिन न तो सूर्य का प्रकाश होगा और न ही ठंडा, कुहरे से भरा अंधेरा. 7 वह एक अतुलनीय दिन होगा—ऐसा दिन जिसे सिर्फ याहवेह ही जानते हैं—दिन और रात के बीच कोई अंतर न होगा. जब शाम होगी, तभी प्रकाश होगा. 8 उस दिन जीवन का जल येरूशलेम से बह निकलेगा, इसमें का आधा पानी पूर्व से मृत सागर की ओर तथा आधा पानी पश्चिम से भूमध्य सागर की ओर बहेगा, और यह ग्रीष्मकाल और साथ ही साथ शीतकाल में भी बहता रहेगा. 9 सारी पृथ्वी पर याहवेह ही राजा होंगे. उस दिन एक ही याहवेह होंगे, और सिर्फ उन्हीं का ही नाम होगा. 10 सारी भूमि, गेबा से लेकर येरूशलेम के दक्षिण में रिम्मोन तक अराबाह के समान हो जाएगी. परंतु बिन्यामिन द्वार से लेकर पहले द्वार के लिए चिन्हित स्थान तक, तथा कोने के द्वार तक और हननेल के मीनार से लेकर राजा के रसकुण्डों तक येरूशलेम को ऊंचा उठाया जाएगा, और यह अपने स्थान में बना रहेगा. 11 लोग आकर इसमें बसेंगे; और यह फिर कभी नाश नहीं किया जाएगा. येरूशलेम सुरक्षित होगा. 12 वे जनता, जिन्होंने येरूशलेम से युद्ध किया है, उन सब पर याहवेह ऐसी महामारी लायेंगे कि जब वे अपने पैरों पर खड़े ही होंगे तो उनका मांस सड़ जाएगा, उनकी आंखें उनके गोलकों में ही सड़ जाएंगी, और उनकी जीभ उनके मुंह में ही सड़ जाएगी. 13 उस दिन याहवेह की ओर से लोगों में बड़े आतंक के साथ घबराहट फैलेगी. वे एक दूसरे को हाथ से पकड़कर एक दूसरे पर वार करेंगे. 14 यहूदिया भी आकर येरूशलेम में लड़ेगा. आस-पास की सभी जनताओं की संपत्ति इकट्ठी की जाएगी—जिसमें बहुत सारा सोना, चांदी और कपड़ा होगा. 15 घोड़ों, खच्चरों, ऊंटों, गधों और उन शिविरों में सब पशुओं पर भी इसी प्रकार की महामारी आ पड़ेगी. 16 तब वे सब जनता, जिन्होंने येरूशलेम पर आक्रमण किया था, उनमें से बचे लोग हर साल येरूशलेम जाकर राजा, सर्वशक्तिमान याहवेह की आराधना करेंगे, और तंबुओं का त्योहार मनायेंगे. 17 और यदि पृथ्वी के लोगों में से कोई भी राजा, सर्वशक्तिमान याहवेह की आराधना करने के लिये येरूशलेम नहीं जाएगा, तो उनके यहां वर्षा न होगी. 18 यदि मिस्र के लोग आराधना और उत्सव में भाग लेने के लिये नहीं जाएंगे, तो उनके यहां भी वर्षा न होगी. याहवेह उन पर वह महामारी लायेगा, जो वह उन जनताओं पर लाता है, जो तंबुओं का उत्सव मनाने नहीं जाते हैं. 19 यह मिस्र देश के लोगों की सजा और उन सब जनताओं की सजा होगी, जो तंबुओं का उत्सव मनाने नहीं जाते हैं. 20 उस दिन घोड़ों की गर्दन में लटकी घण्टियों पर ये शब्द खुदे हुए होंगे, "याहवेह के लिए पवित्र," और याहवेह के भवन में भोजन पकाने के बर्तन, वेदी के सामने रखे पवित्र कटोरों के समान होंगे. 21 येरूशलेम और यहूदिया में हर एक बर्तन सर्वशक्तिमान याहवेह के लिये पवित्र होगा, और वे सब जो बलि चढ़ाने के लिए आएंगे, वे उन बर्तनों में से कुछ को लेंगे और उनमें पकायेंगे. और उस दिन सर्वशक्तिमान याहवेह के भवन में फिर कोई कनानी (व्यापारी) न होगा.

मलाकी

1 एक भविष्यवाणी: मलाकी के माध्यम से इस्राएल को दिया गया याहवेह
का वचन. 2 याहवेह कहते हैं, "मैंने तुम्हें प्रेम किया है. "पर तुम कहते हो,
'आपने किस प्रकार से प्रेम किया है?'" याहवेह स्पष्ट करते हैं, "क्या एसाव
याकोब का भाई नहीं था? फिर भी मैंने याकोब से प्रेम किया, 3 पर एसाव से
नफरत किया, और उसके पहाड़ी भागों को उजाड़ दिया और उसकी पैतृक
भूमि को बंजर भूमि के सियारों के लिए छोड़ दिया." 4 एदोम कह सकता है,
"यद्यपि हमें उजाड़ दिया गया है, पर हम खंडहरों को फिर बनाएंगे." पर
सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: "वे फिर बना सकते हैं, पर मैं गिरा
दूंगा. उनका देश दुष्टों का देश कहलाएगा, और वे एक ऐसे लोग होंगे जिनके
ऊपर याहवेह का कोप हमेशा बना रहेगा. 5 तुम स्वयं अपने आंखों से देखोगे
और कहोगे, 'याहवेह महान है—और तो और वह इस्राएल की सीमा के बाहर
भी महान है!' 6 "एक बेटा अपने पिता का और एक गुलाम अपने मालिक का
सम्मान करता है. यदि मैं एक पिता हूं, तो कहां है वह सम्मान, जिसका मैं
हकदार हूं? यदि मैं एक मालिक हूं, तो कहां है वह आदर, जिसका मैं हकदार
हूं?" सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. "हे पुरोहितो, ये तुम हो जो मेरे नाम
का अनादर हो. "पर तुम पूछते हो, 'हमने किस प्रकार से आपके नाम का
अनादर किया है?' 7 "मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाने के द्वारा. "पर तुम
पूछते हो, 'हमने किस प्रकार से आपको अशुद्ध किया है?' "यह कहने के द्वारा
कि याहवेह का मेज़ तुच्छ है. 8 जब तुम अंधे पशुओं को बलिदान चढ़ाते हो, तो
क्या यह गलत नहीं है? जब तुम लंगड़े या बीमारयुक्त पशुओं को बलिदान
करते हो, तो क्या यह गलत नहीं है? ऐसी भेंट अपने राज्यपाल को देने की
कोशिश करो! क्या वह तुमसे खुश होगा? क्या वह तुमको स्वीकार करेगा?"
सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 9 "अब तुम परमेश्वर से निवेदन करो कि
वह हम पर अनुग्रह करें. तुम्हारे हाथों से इस प्रकार के बलिदान को देखकर
क्या वे तुम्हें स्वीकार करेंगे?" सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 10 "अच्छा
होता कि तुममें से कोई मंदिर के दरवाजों को बंद कर देता, ताकि तुम मेरी वेदी
पर बेकार की आग न जलाते! मैं तुमसे खुश नहीं हूं," सर्वशक्तिमान याहवेह का
कहना है, "और मैं तुम्हारे हाथ से कोई भेंट स्वीकार न करूंगा. 11 जहां-जहां
सूर्य उदय होता और सूर्य डूबता है, उन सब जगहों में जाति-जाति के लोगों के
बीच मेरा नाम महान होगा. हर एक जगह में, मेरे पास धूप एवं शुद्ध भेंटें लायी
जाएंगी, क्योंकि जाति-जाति के लोगों में मेरा नाम महान होगा," सर्वशक्तिमान
याहवेह का कहना है. 12 "पर तुम यह कहकर इसे अपवित्र करते हो, 'प्रभु की
मेज़ अशुद्ध है,' और, 'इस पर रखा भोजन तुच्छ है.' 13 तुम यह भी कहते हो,
'यह एक बोझ है!' और तुम घृणापूर्वक इस पर अपनी नाक सिकोड़ते हो,"
सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. "जब तुम घायल, लंगड़े या बीमारयुक्त
पशुओं को लाकर उन्हें बलिदान के रूप में चढ़ाते हो, तो क्या मुझे इस प्रकार के
बलिदान को तुम्हारे हाथ से ग्रहण करना चाहिये?" याहवेह का कहना है. 14
"वह धोखेबाज श्रापित है, जिसके पास उसके झुंड में ग्रहण योग्य नर पशु हो
और उसने उसे देने की शपथ भी खायी हो, पर वह एक दोषयुक्त पशु प्रभु को
चढ़ाता है. क्योंकि मैं एक महान राजा हूं," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है,
"और जाति-जाति के लोगों के बीच मेरे नाम का भय माना जाए.

2 "और अब, हे पुरोहितो, यह चेतावनी तुम्हारे लिए है. 2 यदि तुम नहीं
सुनते हो, और यदि तुम मेरे नाम का आदर करने का निश्चय नहीं करते
हो," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है, "तो मैं तुमको एक शाप दूंगा, और मैं
तुम्हारी आशीषों को श्रापित करूंगा. हां, मैं उन्हें पहले ही शापित कर चुका हूं,
क्योंकि तुमने मेरा आदर न करने का निश्चय किया है. 3 "तुम्हारे कारण मैं
तुम्हारी संतान को डांटूंगा; तुम्हारे त्योहार में बलिदान किए गये पशुओं के गोबर
को मैं तुम्हारे चेहरों पर मलूंगा, और तुम्हें इसी स्थिति में ले जाया जाएगा. 4 तब
तुम जानोगे कि मैंने ये चेतावनी दी है, ताकि लेवी के साथ बांधी गई मेरी वाचा
बनी रहे," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 5 "मेरी वाचा उसके साथ
थी; यह जीवन और शांति की एक वाचा थी, और मैंने इस वाचा को उसे
दिया था; यह आदर सम्मान के लिये था और उसने मेरा आदर सम्मान किया
और मेरे नाम का भय माना. 6 वह अपने मुंह से सही निर्देश देता था, और
उसके मुंह से कोई गलत बात नहीं निकलती थी. वह शांति और ईमानदारी से
मेरे साथ चलता था, और उसने बहुतों को पापमय जीवन से लौटा ले आया.
7 "क्योंकि एक पुरोहित को अपनी बातों से ज्ञान को बनाए रखना चाहिये,
क्योंकि वह सर्वशक्तिमान याहवेह का संदेशवाहक है और लोग उससे शिक्षा पाने
की आशा रखते हैं. 8 परंतु तुम सही रास्ते से भटक गये हो, और तुम्हारी शिक्षा
से बहुतों ने ठोकर खाई है; तुमने लेवी के साथ बांधी गई वाचा को तोड़ दिया
है," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 9 "इसलिये मैंने तुमको सब लोगों के
सामने तुच्छ जाना है और तुम्हें अपमानित किया है, क्योंकि तुम मेरे बताए रास्ते
पर नहीं चले हो, और कानून के मामले में पक्षपात किए हो." 10 क्या हम सभी
के एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हमारी सृष्टि नहीं की? तब हम
क्यों एक दूसरे से विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की वाचा को तोड़ देते हैं?
11 यहूदाह ने विश्वासघात किया है. इस्राएल तथा येरूशलेम में एक घृणित काम
किया गया है: यहूदाह ने उन स्त्रियों से विवाह किया है, जो दूसरे देवताओं की
आराधना करती हैं और ऐसा करके उसने याहवेह के उस पवित्र स्थान को
अपवित्र किया है जिससे याहवेह प्रेम करता है. 12 जो भी व्यक्ति ऐसा करता है,
वह कोई भी क्यों न हो, उसे याहवेह याकोब के तंबुओं से निकाल दे—भले ही
वह व्यक्ति सर्वशक्तिमान याहवेह को चढ़ाने के लिये एक बलिदान लाए. 13
दूसरा काम तुम यह करते हो: तुम रोते हुए याहवेह की वेदी को अपने आंसुओं से
भिगो देते हो. तुम रोते और विलाप करते हो क्योंकि अब याहवेह तुम्हारी भेंटों
पर कृपादृष्टि नहीं करते या खुश होकर उन्हें तुम्हारे हाथों ग्रहण नहीं करते. 14
तुम पूछते हो, "ऐसा क्यों?" ऐसा इसलिये होता है, क्योंकि याहवेह तुम्हारे
और तुम्हारे जवानी के दिनों की पत्नी के बीच गवाह है. तुमने उसके साथ
विश्वासघात किया है, यद्यपि वह तुम्हारे जीवन भर की साथी और शादी में किए
गये वाचा की तुम्हारी पत्नी है. 15 क्या तुम्हें एक परमेश्वर ने नहीं बनाया?
तुम्हारी देह और आत्मा उसकी है. और एक परमेश्वर किस बात की अपेक्षा
करता है? श्रद्धा करनेवाली संतान. इसलिये सावधान रहो, और अपने जवानी के
दिनों की पत्नी के साथ विश्वासघात मत करो. 16 याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
का कहना है, "जो व्यक्ति अपनी पत्नी से घृणा करता और उसे तलाक देता है,
तो वह उस पर हिंसा करता है जिसकी उसने रक्षा करना चाहिये," सर्वशक्तिमान
याहवेह का कहना है. इसलिये सावधान रहो, और विश्वासघात मत करो. 17
तुमने अपनी बातों से याहवेह को खिन्न कर दिया है. और तुम पूछते हो, "हमने
उन्हें कैसे खिन्न किया है?" ये कहने के द्वारा, "वे सब जो बुरे काम करते हैं, वे
याहवेह की दृष्टि में अच्छे व्यक्ति हैं, और याहवेह उनसे खुश हैं" या "न्यायी
परमेश्वर कहां है?"

3 "मैं अपने-अपने संदेशवाहक को भेजूंगा, जो मेरे आने के पहले मेरा मार्ग
तैयार करेगा. तब वह प्रभु जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वे अचानक अपने
मंदिर में आ जाएंगे; वाचा का वह संदेशवाहक जिसे तुम चाहते हो, वह आ
जाएगा," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 2 पर उसके आने के दिन को
कौन सह सकता है? जब वह प्रगट होगा, तो उसके आगे कौन खड़ा रह सकेगा?
क्योंकि वह सोनार की भट्टी के समान प्रचंड या धोबी के साबुन के जैसा होगा.

3 वह चांदी को साफ करनेवाला और शुद्ध करनेवाला के रूप में बैठेगा; वह
लेवियों को शुद्ध करेगा और उन्हें सोने और चांदी के समान साफ करेगा. तब
याहवेह के पास लोग होंगे, जो धर्मीपन में भेंट चढ़ाएंगे, 4 तब यहूदिया तथा
येरूशलेम के लोगों की भेंट को याहवेह ऐसे ग्रहण करेंगे, जैसे पहले के दिनों में
और पहले के वर्षों में ग्रहण करते थे. 5 "तब मैं तुम्हें परखने के लिये आऊंगा.
मैं तुरंत उन लोगों के विरुद्ध गवाही दूंगा, जो जादू-टोन्हा करते, व्यभिचार करते,
झूठी गवाही देते, और जो मजदूरों की मजदूरी को दबाते, जो विधवाओं और
अनाथों पर अत्याचार करते, और तुम्हारे बीच रहनेवाले परदेशियों का न्याय
बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं मानते हैं," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. 6
"मैं याहवेह नहीं बदलता हूं. इसलिये तुम, जो याकोब की संतान हो, नाश नहीं
हुए हो. 7 अपने पूर्वजों के समय से तुम मेरे आदेशों से हटते आये हो, तुमने
उनका पालन नहीं किया है. मेरे पास लौट आओ, और मैं तुम्हारे पास लौट
आऊंगा," सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है. "पर तुम पूछते हो, 'हमें कैसे
लौटना है?' 8 "क्या मात्र एक मरणशील मनुष्य परमेश्वर को लूट सकता
है? तो भी तुम मुझे लूटते हो. "पर तुम पूछते हो, 'हम आपको कैसे लूट रहे
हैं?' "दशमांश और भेंटों में. 9 तुम एक शाप के अधीन हो—तुम्हारी पूरी
जाति—क्योंकि तुम मुझे लूट रहे हो. 10 सारा दशमांश भंडार घर में ले आओ,
कि मेरे भवन में भोजन रहे. इस विषय में मुझे परखकर देखो," सर्वशक्तिमान
याहवेह का कहना है, "कि मैं किस प्रकार तुम्हारे लिए स्वर्ग के झरोखे खोलकर
आशीषों की ऐसी बारिश करूंगा कि इसे रखने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त
जगह न होगी. 11 मैं तुम्हारी फसल को नाश करनेवाले कीड़ों को रोकूंगा, और
तुम्हारे खेतों में अंगूर के फल पकने के पहले कच्चे नहीं गिरेंगे," सर्वशक्तिमान
याहवेह का कहना है. 12 "तब सब जाति के लोग तुम्हें आशीषित कहेंगे,
क्योंकि तुम्हारा देश खुशी से भरा एक देश होगा," सर्वशक्तिमान याहवेह का
कहना है. 13 "तुमने मेरे विरुद्ध अभिमान से भरकर बात कही है," याहवेह का
कहना है. "फिर भी तुम पूछते हो, 'हमने आपके विरुद्ध क्या कहा है?' 14
"तुमने कहा है, 'व्यर्थ है परमेश्वर की सेवा करना. उसके बताए कामों को पूरा
करने और सर्वशक्तिमान याहवेह के सामने शोकित मनुष्य के रूप में जाने से हमें
क्या फायदा होता है? 15 पर अब हम घमंडी मनुष्य को आशीषित सुखी कहते
हैं. निश्चित रूप से बुरा काम करनेवाले समृद्ध होते जा रहे हैं, और यहां तक
कि जब वे परमेश्वर को परखते हैं, तब भी वे बच निकलते हैं.'" 16 तब जो
याहवेह का भय मानते थे, उन्होंने एक दूसरे से बात की, और याहवेह ने ध्यान
से उनकी बातें सुनी. जिन्होंने याहवेह का भय माना और उसके नाम का आदर
किया, उनके बारे में याहवेह के सामने एक स्मरण पुस्तिका लिखी गई. 17
सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है, "उस दिन जब मैं अपना कार्य करूंगा," तो
वे लोग मेरे कीमती भाग होंगे. मैं उन्हें बचाऊंगा, जैसे कि एक पिता अपने सेवा
करनेवाले बेटे के ऊपर करुणा करता और उसे बचाता है. 18 तब तुम फिर धर्मी
और दुष्ट के बीच, और परमेश्वर की सेवा करनेवाले और परमेश्वर की सेवा नहीं
करनेवाले के बीच फर्क को देखोगे.

4 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है, "निश्चय ही, धधकती भट्टी के
समान जलता हुआ वह दिन आ रहा है. सब अभिमानी और बुरे काम
करनेवाले भूसे के समान हो जाएंगे, और वह दिन जो आनेवाला है, उन्हें आग में
डाल देगा. उनमें न तो कोई जड़ और न ही कोई शाखा बचेगी. 2 पर तुम जो मेरे
नाम का सम्मान करते हो, तुम्हारे लिये धर्मीपन का सूर्य चंगाई देनेवाले अपने
किरण के साथ उदय होगा. और तुम बाहर जाओगे और मोटे-ताजे बछड़े के
समान उछल-कूद करोगे. 3 तब तुम दुष्टों को कुचल दोगे; वे मेरे ठहराये दिन में
तुम्हारे पैरों के नीचे की राख समान हो जाएंगे," सर्वशक्तिमान याहवेह का
कहना है. 4 "मेरे सेवक मोशेह के कानून को याद करो, वह आज्ञा और कानून
जिसे मैंने उसे होरेब पहाड़ पर सब इस्राएलियों के लिये दिया था. 5 "देखो,
इसके पहले कि याहवेह का वह बड़ा और भयानक दिन आये, मैं तुम्हारे पास
एलियाह भविष्यवक्ता को भेजूंगा. 6 वह माता-पिता के हृदय को उनके बच्चों
की ओर, और बच्चों के हृदय को उनके माता-पिता की ओर कर देगा; अन्यथा
मैं आकर देश का पूरा सत्यानाश कर दूंगा."

प्रभु येशु ने प्रार्थना की, “पिता, इनको क्षमा कर दीजिए क्योंकि इन्हें यह पता ही नहीं कि ये क्या कर रहे हैं.”
उन्होंने पासा फेंककर प्रभु येशु के वस्त्र आपस में बांट लिए.
लूका 23:34

मत्ती

1 अब्राहाम की संतान, दावीद के वंशज येशु मसीह की वंशावली: 2 अब्राहाम
से यित्सहाक, यित्सहाक से याकोब, याकोब से यहूदाह तथा उनके भाई
पैदा हुए, 3 तामार द्वारा यहूदाह से फ़ारेस तथा ज़ारा पैदा हुए, फ़ारेस से
हेज़रोन, हेज़रोन से हाराम, 4 हाराम से अम्मीनादाब, अम्मीनादाब से नाहश्शोन,
नाहश्शोन से सलमोन, 5 सलमोन और राहाब से बोअज़, बोअज़ और रूथ
से ओबेद, ओबेद से यिशै तथा 6 यिशै से राजा दावीद पैदा हुए. दावीद और
उरियाह की विधवा से शलोमोन पैदा हुए, 7 शलोमोन से रोबोआम, रोबोआम
से अबीयाह, अबीयाह से आसफ, 8 आसफ से यहोशाफ़ात, यहोशाफ़ात से
येहोराम, येहोराम से उज्जियाह, 9 उज्जियाह से योथाम, योथाम से आख़ाज़,
आख़ाज़ से हेज़ेकिया, 10 हेज़ेकिया से मनश्शेह, मनश्शेह से अमोन, अमोन
से योशियाह, 11 योशियाह से बाबेल पहुंचने के समय यख़ोनिया तथा उसके
भाई पैदा हुए. 12 बाबेल पहुंचने के बाद: यख़ोनिया से सलाथिएल पैदा हुए,
सलाथिएल से ज़ेरोबाबेल, 13 ज़ेरोबाबेल से अबीहूद, अबीहूद से एलियाकिम,
एलियाकिम से आज़ोर, 14 आज़ोर से सादोक, सादोक से आख़िम, आख़िम से
एलिहूद, 15 एलिहूद से एलियाज़र, एलियाज़र से मत्थान, मत्थान से याकोब,
16 और याकोब से योसेफ़ पैदा हुए, जिन्होंने मरियम से विवाह किया, जिनके
द्वारा येशु, जिन्हें मसीह कहा जाता है पैदा हुए. 17 अब्राहाम से लेकर दावीद तक
कुल चौदह पीढ़ियां, दावीद से बाबेल पहुंचने तक चौदह तथा बाबेल पहुंचने से
मसीह तक चौदह पीढ़ियां हुईं. 18 मसीह येशु का जन्म इस प्रकार हुआ: उनकी
माता मरियम का विवाह योसेफ़ से तय हो चुका था किंतु इससे पहले कि उनमें
सहवास होता, यह मालूम हुआ कि मरियम गर्भवती हैं—यह गर्भ पवित्र आत्मा
द्वारा था. 19 उनके पति योसेफ़ एक धर्मी पुरुष थे. वे नहीं चाहते थे कि मरियम
को किसी प्रकार से लज्जित होना पडे. इसलिये उन्होंने किसी पर प्रकट किए
बिना मरियम को त्याग देने का निर्णय किया. 20 किंतु जब उन्होंने यह निश्चय
कर लिया, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट हो उनसे कहा, “योसेफ़, दावीद के
वंशज! मरियम को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकारने में डरो मत; क्योंकि, जो
उनके गर्भ में हैं, वह पवित्र आत्मा से हैं. 21 वह एक पुत्र को जन्म देंगी. तुम
उनका नाम येशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार देंगे.”
22 यह सब इसलिये घटित हुआ कि भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा गया प्रभु
का यह वचन पूरा हो जाए: 23 “एक कुंवारी कन्या गर्भधारण करेगी, पुत्र को
जन्म देगी और उसे इम्मानुएल नाम से पुकारा जायेगा.” इम्मानुएल का अर्थ है
परमेश्वर हमारे साथ. 24 जागने पर योसेफ़ ने वैसा ही किया जैसा प्रभु के दूत ने
उन्हें आज्ञा दी थी—उन्होंने मरियम को पत्नी के रूप में स्वीकार किया, 25 किंतु
पुत्र-जन्म तक उनका कौमार्य सुरक्षित रखा और उन्होंने पुत्र का नाम येशु रखा.

2 जब राजा हेरोदेस के शासनकाल में यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर में
येशु का जन्म हुआ, तब पूर्ववर्ती देशों से ज्योतिष येरूशलेम नगर आए
और पूछताछ करने लगे, 2 “कहां हैं वह—यहूदियों के राजा, जिन्होंने जन्म
लिया है? पूर्ववर्ती देशों में हमने उनका तारा देखा है और हम उनकी आराधना
करने के लिए यहां आए हैं.” 3 यह सुन राजा हेरोदेस व्याकुल हो उठा और
उसके साथ सभी येरूशलेम निवासी भी. 4 राजा हेरोदेस ने प्रधान पुरोहितों और
शास्त्रियों को इकट्ठा कर उनसे पूछताछ की कि वह कौन सा स्थान है जहां मसीह
के जन्म लेने का संकेत है? 5 उन्होंने उत्तर दिया, “यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम
नगर में, क्योंकि भविष्यवक्ता का लेख है: 6 “‘और तुम, यहूदिया प्रदेश के
बेथलेहेम नगर, यहूदिया प्रदेश के नायकों के मध्य किसी भी रीति से छोटे नहीं
हो क्योंकि तुममें से ही एक राजा का आगमन होगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का
चरवाहा होगा.’” 7 इसलिये हेरोदेस ने ज्योतिषियों को अलग ले जाकर उनसे
उस तारे के उदय होने का ठीक-ठीक समय मालूम किया 8 और उन्हें बेथलेहेम
नगर भेजते हुए कहा, “आप लोग जाकर सावधानीपूर्वक उस बालक की खोज
कीजिए और जब वह आपको मिल जाए तो मुझे इसकी सूचना दीजिए कि मैं भी
उसकी वंदना करने जा सकूं.” 9 राजा की आज्ञा सुन उन्होंने अपनी यात्रा
दोबारा प्रारंभ की. उन्हें वही तारा दिखाई दिया, जो उन्होंने पूर्ववर्ती देशों में
देखा था. वे उसके दर्शन में आगे बढ़ते चले गए जब तक वह तारा उस बालक
के घर पर जाकर ठहर न गया. 10 उसे देखकर वे बड़े आनंद से भर गए. 11
घर में प्रवेश करने पर उन्होंने उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा
और झुककर उस बालक की आराधना की और फिर उन्होंने अपने कीमती
उपहार सोना, लोबान और गन्धरस उसे भेंट चढ़ाई. 12 उन्हें स्वप्न में परमेश्वर
द्वारा यह चेतावनी दी गई कि वे राजा हेरोदेस के पास लौटकर न जाएं. इसलिये
वे एक अन्य मार्ग से अपने देश लौट गए. 13 उनके विदा होने के बाद प्रभु का
एक दूत ने योसेफ़ को एक स्वप्न में प्रकट होकर आज्ञा दी, “उठो, बालक और
उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जाओ और उस समय तक वहीं ठहरे
रहना जब तक मैं तुम्हें आज्ञा न दूं क्योंकि हेरोदेस हत्या की मंशा से बालक को
खोज रहा है.” 14 इसलिये योसेफ़ उठे और अभी, जबकि रात ही थी, उन्होंने
बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को प्रस्थान किया. 15 वे वहां
हेरोदेस की मृत्यु तक ठहरे रहे कि प्रभु का यह वचन पूरा हो, जो उन्होंने एक
भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था: “मिस्र देश से मैंने अपने पुत्र को बुलाया.”
16 यह मालूम होने पर कि ज्योतिष उसे मूर्ख बना गए, हेरोदेस बहुत ही क्रोधित
हुआ. ज्योतिषियों से मिली सूचना के आधार पर उसने बेथलेहेम नगर और
उसके नज़दीकी क्षेत्र में दो वर्ष तथा उससे कम आयु के सभी शिशुओं के विनाश
की आज्ञा दे दी. 17 इससे भविष्यवक्ता येरेमियाह द्वारा पूर्वघोषित इस वचन की
पूर्ति हुई: 18 “रमाह नगर में एक शब्द सुना गया, रोना तथा घोर विलाप! राहेल
अपने बालकों के लिए रो रही है. धीरज उसे स्वीकार नहीं क्योंकि अब वे हैं
ही नहीं.” 19 जब राजा हेरोदेस की मृत्यु हुई, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट
होकर योसेफ़ को आज्ञा दी, 20 “उठो! बालक और उसकी माता को लेकर
इस्राएल देश लौट जाओ क्योंकि जो बालक के प्राण लेने पर उतारू थे, उनकी
मृत्यु हो चुकी है.” 21 इसलिये योसेफ़ उठे और बालक और उसकी माता को
लेकर इस्राएल देश में लौट आए. 22 यह मालूम होने पर कि हेरोदेस के स्थान
पर अब उसका पुत्र आरखेलाओस यहूदिया प्रदेश का राजा है, भय के कारण वह
वहां नहीं गए. तब परमेश्वर की ओर से स्वप्न में चेतावनी प्राप्त होने पर वह
गलील प्रदेश की ओर चल दिए 23 तथा नाज़रेथ नामक नगर में जाकर बस गए
कि भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया-यह वचन पूरा हो: वह नाज़री कहलाएगा.

3 कालांतर में यहूदिया प्रदेश के बंजर भूमि में बपतिस्मा देनेवाला योहन आकर
यह प्रचार करने लगे, 2 “मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग-राज्य पास आ गया
है.” 3 यह वही हैं जिनके विषय में भविष्यवक्ता यशायाह ने अपने अभिलेख में
इस प्रकार संकेत दिया है: “वह आवाज, जो बंजर भूमि में पुकार-पुकारकर कह
रही है, ‘प्रभु का रास्ता सीधा करो, उनका मार्ग सरल बनाओ.’” 4 बपतिस्मा
देनेवाले योहन का परिधान ऊंट के रोम से निर्मित वस्त्र और उसके ऊपर चमडे
का कमरबंध था, और उनका भोजन था टिड्डियां तथा जंगलीमधु. 5 येरूशलेम
नगर, सारे यहूदिया प्रदेश और यरदन नदी के नज़दीकी क्षेत्र से बड़ी संख्या में
लोग उनके पास आने लगे. 6 पापों को मानने के बाद योहन उन्हें यरदन नदी में
बपतिस्मा दिया करते थे. 7 जब योहन ने देखा कि अनेक फ़रीसी और सदूकी
बपतिस्मा लेने आ रहे हैं, उन्होंने उनकी उल्लाहना करते हुए कहा, “विषैले
सांपों की संतान! समीप आ रहे क्रोध से भागने की चेतावनी तुम्हें किसने दे दी?
8 सच्चे मन फिराने का प्रमाण दो 9 और ऐसा मत सोचो कि आप कह सकते हैं,

‘हम तो अब्राहाम की संतान हैं!’ क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूं कि परमेश्वर में इन पत्थरों तक से अब्राहाम की संतान पैदा करने का सामर्थ्य है. 10 कुल्हाड़ी पहले ही वृक्षों की जड़ पर रखी हुई है. हर एक पेड़, जो उत्तम फल नहीं फलता, काटा जाता और आग में झोंक दिया जाता है. 11 “मैं तो तुम्हें पश्चाताप के लिए पानी से बपतिस्मा दे रहा हूं किंतु वह, जो मेरे बाद आ रहे हैं, मुझसे अधिक शक्तिशाली हैं. मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उनकी जूतियां उठाऊं. वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा देंगे. 12 सूप उनके हाथ में है. वह अपने खलिहान को अच्छी तरह साफ़ करेंगे, गेहूं को भंडार में इकट्ठा करेंगे और भूसी को कभी न बुझनेवाली आग में भस्म कर देंगे.” 13 येशु गलील प्रदेश से यरदन नदी पर योहन के पास आए कि उनके द्वारा बपतिस्मा लें 14 किंतु योहन ने इसका इनकार करते हुए कहा, “आवश्यक तो यह है कि मैं आपसे बपतिस्मा लूं. यहां तो आप मुझसे बपतिस्मा लेने आए हैं!” 15 मसीह येशु ने इसके उत्तर में कहा, “इस समय तो यही होने दो. हम दोनों के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित धार्मिकता इसी रीति से पूरी करना सही है.” इस पर योहन सहमत हो गए. 16 बपतिस्मा के बाद जैसे ही मसीह येशु जल में से बाहर आए, उनके लिए स्वर्ग खोल दिया गया और योहन ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते हुए तथा येशु पर ठहरते देखा. 17 उसी समय स्वर्ग से यह शब्द सुना गया, “यह मेरा पुत्र है—मेरा परम प्रिय—जिससे मैं पूरी तरह प्रसन्न हूं.”

4 इसके बाद पवित्र आत्मा के निर्देश में येशु को बंजर भूमि ले जाया गया कि वह शैतान द्वारा परखे जाएं. 2 उन्होंने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया. उसके बाद जब उन्हें भूख लगी, 3 परखने वाले ने उनके पास आकर कहा, “यदि तुम परमेश्वर-पुत्र हो तो इन पत्थरों को आज्ञा दो कि ये रोटी बन जाएं.” 4 येशु ने उसे उत्तर दिया, “मनुष्य का जीवन सिर्फ भोजन पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले हुए हर एक शब्द पर भी निर्भर है.” 5 तब शैतान ने येशु को पवित्र नगर में ले जाकर मंदिर के शीर्ष पर खड़ा कर दिया 6 और उनसे कहा, “यदि तुम परमेश्वर-पुत्र हो तो यहां से नीचे कूद जाओ, क्योंकि लिखा है, “वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारे संबंध में आज्ञा देंगे तथा वे तुम्हें हाथों-हाथ उठा लेंगे कि तुम्हारे पैर को पत्थर से चोट न लगे.” 7 उसके उत्तर में येशु ने उससे कहा, “यह भी तो लिखा है तुम प्रभु अपने परमेश्वर को न परखो.” 8 तब शैतान येशु को अत्यंत ऊंचे पर्वत पर ले गया और विश्व के सारे राज्य और उनका सारा ऐश्वर्य दिखाते हुए उनसे कहा, 9 “मैं ये सब तुम्हें दे दूंगा यदि तुम मेरी दंडवत-वंदना करो.” 10 इस पर येशु ने उसे उत्तर दिया, “हट, शैतान! दूर हो! क्योंकि लिखा है, तुम सिर्फ प्रभु अपने परमेश्वर की ही आराधना और सेवा किया करो.” 11 तब शैतान उन्हें छोड़कर चला गया और स्वर्गदूत आए और उनकी सेवा करने लगे. 12 यह मालूम होने पर कि बपतिस्मा देनेवाले योहन को बंदी बना लिया गया है, येशु गलील प्रदेश में चले गए, 13 और नाज़रेथ नगर को छोड़ कफ़रनहूम नगर में बस गए, जो झील तट पर ज़ेबुलून तथा नफताली नामक क्षेत्र में था. 14 ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी हो: 15 यरदन नदी के पार समुद्रतट पर बसे ज़ेबुलून तथा नफताली प्रदेश अर्थात् गलील प्रदेश में, जहां गैर-इस्राएली बसे हुए हैं, 16 अंधकार में जी रहे लोगों ने एक बड़ी ज्योति को देखा; गहन अंधकार के निवासियों पर ज्योति चमकी. 17 उस समय से येशु ने यह उपदेश देना प्रारंभ कर दिया, “मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग-राज्य पास आ गया है.” 18 एक दिन गलील झील के किनारे चलते हुए येशु ने दो भाइयों को देखा: शिमओन, जो पेतरॉस कहलाए तथा उनके भाई आन्द्रेयास को. ये समुद्र में जाल डाल रहे थे क्योंकि वे मछुआरे थे. 19 येशु ने उनसे कहा, “मेरा अनुसरण करो—मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा.” 20 वे उसी क्षण अपने जाल छोड़कर येशु का अनुसरण करने लगे. 21 जब वे वहां से आगे बढ़े तो येशु ने दो अन्य भाइयों को देखा—ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब तथा उनके भाई योहन को. वे दोनों अपने पिता के साथ नाव में अपने जाल ठीक कर रहे थे. येशु ने उन्हें बुलाया. 22 उसी क्षण वे नाव और अपने पिता को छोड़ येशु के पीछे हो लिए. 23 येशु सारे गलील प्रदेश की यात्रा करते हुए, उनके यहूदी सभागृहों में शिक्षा देते हुए, स्वर्ग-राज्य के ईश्वरीय सुसमाचार का उपदेश देने लगे. वह लोगों के हर एक रोग तथा हर एक व्याधि को दूर करते जा रहे थे. 24 सारे सीरिया प्रदेश में उनके विषय में समाचार फैलता चला गया और लोग उनके पास उन सबको लाने लगे, जो रोगी थे तथा उन्हें भी, जो विविध रोगों, पीड़ाओं, दुष्टात्मा, मूर्च्छा रोगों तथा पक्षाघात से पीड़ित थे. येशु इन सभी को स्वस्थ करते जा रहे थे. 25 गलील प्रदेश, देकापोलिस, येरूशलेम, यहूदिया प्रदेश और यरदन नदी के पार से बड़ी भीड़ उनके पीछे-पीछे चली जा रही थी.

5 इकट्ठा हो रही भीड़ को देख येशु पर्वत पर चले गए और जब वह बैठ गए तो उनके शिष्य उनके पास आए. 2 येशु ने उन्हें शिक्षा देना प्रारंभ किया. उन्होंने कहा, 3 “धन्य हैं वे, जो दीन आत्मा के हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य उन्हीं का है. 4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं. क्योंकि उन्हें शांति दी जाएगी. 5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं क्योंकि पृथ्वी उन्हीं की होगी. 6 धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि उन्हें तृप्त किया जाएगा. 7 धन्य हैं वे, जो कृपालु हैं, क्योंकि उन पर कृपा की जाएगी. 8 धन्य हैं वे, जिनके हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे. 9 धन्य हैं वे, जो शांति कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएंगे. 10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए गए हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य उन्हीं का है. 11 “धन्य हो तुम, जब लोग तुम्हारी निंदा करें और सताएं तथा तुम्हारे विषय में मेरे कारण सब प्रकार के बुरे विचार फैलाते हैं. 12 हर्षोल्लास में आनंद मनाओ क्योंकि तुम्हारा प्रतिफल स्वर्ग में है. उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को भी इसी रीति से सताया था, जो तुमसे पहले आए हैं. 13 “तुम पृथ्वी के नमक हो, किंतु यदि नमक नमकीन न रहे तो उसके खारेपन को दोबारा कैसे लौटाया जा सकेगा? तब तो वह किसी भी उपयोग का नहीं सिवाय इसके कि उसे बाहर फेंक दिया जाए और लोग उसे रौंदते हुए निकल जाएं. 14 “तुम संसार के लिए ज्योति हो. पहाड़ी पर स्थित नगर को छिपाया नहीं जा सकता. 15 कोई भी जलते हुए दीप को किसी बर्तन से ढांक कर नहीं रखता; उसे उसके निर्धारित स्थान पर रखा जाता है कि वह उस घर में उपस्थित लोगों को प्रकाश दे. 16 लोगों के सामने अपना प्रकाश इस रीति से प्रकाशित होने दो कि वे तुम्हारे भले कामों को देख सकें तथा तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, महिमा करें. 17 “अपने मन से यह विचार निकाल दो कि मेरे आने का उद्देश्य व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को व्यर्थ साबित करना है—उन्हें पूरा करना ही मेरा उद्देश्य है. 18 मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं: जब तक आकाश और पृथ्वी अस्तित्व में हैं, पवित्र शास्त्र का एक भी बिंदु या मात्रा गुम न होगी, जब तक सब कुछ नष्ट न हो जाए. 19 इसलिये जो कोई इनमें से छोटी सी छोटी आज्ञा को तोड़ता तथा अन्यों को यही करने की शिक्षा देता है, स्वर्ग-राज्य में सबसे छोटा घोषित किया जाएगा. इसके विपरीत, जो कोई इन आदेशों का पालन करता और इनकी शिक्षा देता है, स्वर्ग-राज्य में विशिष्ट घोषित किया जाएगा. 20 मैं तुम्हें इस सच्चाई से भी परिचित करा दूं: यदि परमेश्वर के प्रति तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फ़रीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम किसी भी रीति से स्वर्ग-राज्य में प्रवेश न कर सकोगे. 21 “यह तो तुम सुन ही चुके हो कि पूर्वजों को यह आज्ञा दी गई थी, ‘हत्या मत करो और जो कोई हत्या करता है, वह न्यायालय के प्रति उत्तरदायी होगा’; 22 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि हर एक, जो अपने भाई-बहन से गुस्सा करता है, वह न्यायालय के सामने दोषी होगा और जो कोई अपने भाई से कहे, ‘अरे निकम्मे!’ वह सर्वोच्च न्यायालय के प्रति अपराध का दोषी होगा तथा वह, जो कहे, ‘अरे मूर्ख!’ वह तो

नरक की आग के योग्य दोषी होगा. (Geenna g1067) 23 "इसलिये, यदि तुम
वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने जा रहे हो और वहां तुम्हें यह याद आए कि तुम्हारे
भाई के मन में तुम्हारे प्रति विरोध है, 24 अपनी भेंट वेदी के पास ही छोड़ दो
और जाकर सबसे पहले अपने भाई से मेल-मिलाप करो और तब लौटकर
अपनी भेंट चढ़ाओ. 25 "न्यायालय जाते हुए मार्ग में ही अपने दुश्मन से मित्रता
का संबंध फिर से बना लो कि तुम्हारा दुश्मन तुम्हें न्यायाधीश के हाथ में न सौंपे
और न्यायाधीश अधिकारी के और अधिकारी तुम्हें बंदीगृह में डाल दें. 26 मैं
तुम्हें इस सच से परिचित कराना चाहता हूं कि जब तक तुम एक-एक पैसा लौटा
न दो बंदीगृह से छूट न पाओगे. 27 "यह तो तुम सुन ही चुके हो कि यह कहा
गया था: 'व्यभिचार मत करो.' 28 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि हर एक,
जो किसी स्त्री को कामुक दृष्टि से मात्र देख लेता है, वह अपने मन में उसके
साथ व्यभिचार कर चुका. 29 यदि तुम्हारी दायीं आंख तुम्हारे लड़खड़ाने का
कारण बनती है तो उसे निकाल फेंको. तुम्हारे सारे शरीर को नर्क में झोंक
दिया जाए इससे तो उत्तम यह है कि तुम्हारे शरीर का एक ही अंग नाश हो.
(Geenna g1067) 30 यदि तुम्हारा दायां हाथ तुम्हें विनाश के गड्ढे में गिराने के
लिए उत्तरदायी है तो उसे काटकर फेंक दो. तुम्हारे सारे शरीर को नरक में झोंक
दिया जाए इससे तो उत्तम यह है कि तुम्हारे शरीर का एक ही अंग नाश हो.
(Geenna g1067) 31 "यह कहा गया था: 'कोई भी, जो अपनी पत्नी से तलाक
चाहे, वह उसे अलग होने का प्रमाण-पत्र दे.' 32 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि
हर एक, जो वैवाहिक व्यभिचार के अलावा किसी अन्य कारण से अपनी पत्नी
से तलाक लेता है, वह अपनी पत्नी को व्यभिचार की ओर ढकेलता है और जो
कोई उस त्यागी हुई से विवाह करता है, व्यभिचार करता है. 33 "तुम्हें मालूम
होगा कि पूर्वजों से कहा गया था: 'झूठी शपथ मत लो परंतु प्रभु से की गई शपथ
को पूरा करो.' 34 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि शपथ ही न लो; न तो स्वर्ग
की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, 35 न पृथ्वी की, क्योंकि वह
उनके चरणों की चौकी है, न येरूशलेम की, क्योंकि वह राजाधिराज का
नगर है 36 और न ही अपने सिर की, क्योंकि तुम एक भी बाल न तो काला
करने में समर्थ हो और न ही सफ़ेद करने में; 37 परंतु तुम्हारी बातो में 'हां' का
मतलब हां और 'न' का न हो—जो कुछ इनके अतिरिक्त है, वह उस दुष्ट द्वारा
प्रेरित है. 38 "तुम्हें यह तो मालूम है कि यह कहा गया था: 'आंख के लिए
आंख तथा दांत के लिए दांत.' 39 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि बुरे व्यक्ति का
सामना ही न करो. इसके विपरीत, जो कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड़ मारे,
दूसरा गाल भी उसकी ओर कर दो. 40 यदि कोई तुम्हें न्यायालय में घसीटकर
तुम्हारा कुर्ता लेना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे दो. 41 जो कोई तुम्हें एक
किलोमीटर चलने के लिए मजबूर करे उसके साथ दो किलोमीटर चले जाओ.
42 उसे, जो तुमसे कुछ मांगे, दे दो और जो तुमसे उधार लेना चाहे, उससे अपना
मुख न छिपाओ. 43 "तुम्हें यह तो मालूम है कि यह कहा गया था: 'अपने
पड़ोसी से प्रेम करो और अपने शत्रु से घृणा.' 44 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि
अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना; 45 कि तुम
अपने स्वर्गीय पिता की संतान हो जाओ, क्योंकि वे बुरे और भले दोनों पर ही
सूर्योदय करते हैं. इसी प्रकार वे धर्मी तथा अधर्मी, दोनों पर ही वर्षा होने देते
हैं. 46 यदि तुम प्रेम मात्र उन्हीं से करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं तो तुम किस
प्रतिफल के अधिकारी हो? क्या चुंगी लेनेवाले भी यही नहीं करते? 47 यदि
तुम मात्र अपने बंधुओं का ही नमस्कार करते हो तो तुम अन्यों से अतिरिक्त ऐसा
कौन सा सराहनीय काम कर रहे हो? क्या गैर-यहूदी भी ऐसा ही नहीं करते?
48 इसलिये ज़रूरी है कि तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारे स्वर्गीय पिता सिद्ध हैं.

6 "ध्यान रहे कि तुम लोगों की प्रशंसा पाने के उद्देश्य से धर्म के काम न करो
अन्यथा तुम्हें तुम्हारे स्वर्गीय पिता से कोई भी प्रतिफल प्राप्त न होगा. 2
"जब तुम दान दो तब इसका ढिंढोरा न पीटो, जैसा पाखंडी यहूदी सभागृहों तथा
सड़कों पर किया करते हैं कि वे मनुष्यों द्वारा सम्मानित किए जाएं. सच तो यह
है कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल प्राप्त कर चुके; 3 किंतु तुम जब ज़रूरतमंदों
को दान दो तो तुम्हारे बायें हाथ को यह मालूम न हो सके कि तुम्हारा दायां हाथ
क्या कर रहा है 4 कि तुम्हारी दान प्रक्रिया पूरी तरह गुप्त रहे. तब तुम्हारे पिता,
जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे. 5 "प्रार्थना करते हुए तुम्हारी मुद्रा दिखावा
करनेवाले लोगों के समान न हो क्योंकि उनकी रुचि यहूदी सभागृहों में तथा
नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करने में होती है कि उन पर लोगों की दृष्टि
पड़ती रहे. मैं तुम पर यह सच प्रकाशित कर रहा हूं कि वे अपना पूरा-पूरा
प्रतिफल प्राप्त कर चुके. 6 इसके विपरीत जब तुम प्रार्थना करो, तुम अपनी
कोठरी में चले जाओ, द्वार बंद कर लो और अपने पिता से, जो अदृश्य हैं,
प्रार्थना करो और तुम्हारे पिता, जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे. 7 "अपनी
प्रार्थना में अर्थहीन शब्दों को दोहराते न जाओ, जैसा गैर-यहूदी करते हैं क्योंकि
उनका विचार है कि शब्दों के अधिक होने के कारण ही उनकी प्रार्थना सुनी
जाएगी. 8 इसलिये उनके जैसे न बनो क्योंकि तुम्हारे स्वर्गीय पिता को विनती
करने से पहले ही तुम्हारी ज़रूरत का अहसास रहता है. 9 "तुम प्रार्थना इस
प्रकार किया करो: "हमारे स्वर्गिक पिता, आपका नाम पवित्र माना जाए. 10
आपका राज्य हर जगह हो. आपकी इच्छा पूरी हो, जिस प्रकार स्वर्ग में उसी
प्रकार पृथ्वी पर भी. 11 आज हमें हमारा दैनिक आहार प्रदान कीजिए. 12
आप हमारे अपराधों की क्षमा कीजिए जैसे हमने उन्हें क्षमा किया है, जिन्होंने
हमारे विरुद्ध अपराध किए थे. 13 हमें परीक्षा से बचाकर उस दुष्ट से हमारी रक्षा
कीजिए क्योंकि राज्य, सामर्थ्य तथा प्रताप सदा-सर्वदा आप ही का है, आमेन.
14 यदि तुम दूसरों को उनके अपराधों के लिए क्षमा करते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय
पिता भी तुम्हें क्षमा करेंगे. 15 किंतु यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा नहीं करते
हो तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेंगे. 16 "जब कभी
तुम उपवास रखो तब पाखंडियों के समान अपना मुंह मुरझाया हुआ न बना लो.
वे अपना रूप ऐसा इसलिये बना लेते हैं कि लोगों की दृष्टि उन पर अवश्य पड़े.
सच तो यह है कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल प्राप्त कर चुके. 17 किंतु जब तुम
उपवास करो तो अपने बाल संवारो और अपना मुंह धो लो 18 कि तुम्हारे
उपवास के विषय में सिवाय तुम्हारे स्वर्गीय पिता के—जो अदृश्य हैं—किसी
को भी मालूम न हो. तब तुम्हारे पिता, जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे. 19
"पृथ्वी पर अपने लिए धन इकट्ठा न करो, जहां कीट-पतंगे तथा जंग उसे नाश
करते तथा चोर सेंध लगाकर चुराते हैं 20 परंतु धन स्वर्ग में जमा करो, जहां
न तो कीट-पतंगे या जंग नाश करते और न ही चोर सेंध लगाकर चुराते हैं
21 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी होगा. 22 "शरीर का
दीपक आंख है. इसलिये यदि तुम्हारी आंख निरोगी है, तुम्हारा सारा शरीर
उजियाला होगा. 23 यदि तुम्हारी आंख रोगी है, तुम्हारा सारा शरीर अंधकारमय
हो जाएगा. वह उजियाला, जो तुममें है, यदि वह अंधकार है तो कितना गहन
होगा वह अंधकार! 24 "कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता
क्योंकि वह एक को तुच्छ मानकर दूसरे के प्रति समर्पित रहेगा या एक का
सम्मान करते हुए दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा
कर ही नहीं सकते. 25 "यही कारण है कि मैं तुमसे कहता हूं कि अपने जीवन
के विषय में चिंता न करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पिओगे; और न ही
शरीर के विषय में कि क्या पहनोगे. क्या जीवन आहार से और शरीर वस्त्रों से
अधिक कीमती नहीं? 26 पक्षियों की ओर ध्यान दो: वे न तो बीज बोते हैं, और
न ही खलिहान में उपज इकट्ठा करते हैं. फिर भी तुम्हारे स्वर्गीय पिता उनका
भरण-पोषण करते हैं. क्या तुम उनसे कहीं ज्यादा मूल्यवान नहीं? 27 और
तुममें ऐसा कौन है, जो चिंता के द्वारा अपनी आयु में एक क्षण की भी वृद्धि कर

सकता है? 28 "और वस्त्र तुम्हारी चिंता का विषय क्यों? मैदान के फूलों का
ध्यान तो करो कि वे कैसे खिलते हैं. वे न तो परिश्रम करते हैं और न ही वस्त्र
निर्माण. 29 फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि शलोमोन की वेशभूषा का ऐश्वर्य
किसी भी दृष्टि से इनके तुल्य नहीं था. 30 यदि परमेश्वर घास का श्रृंगार इस
सीमा तक करते हैं, जिसका जीवन थोड़े समय का है और जो कल आग में
झोंक दिया जाएगा, तो क्या वह तुमको कहीं अधिक सुशोभित न करेंगे? कैसा
कमजोर है तुम्हारा विश्वास! 31 इसलिए इस विषय में चिंता न करो, 'हम क्या
खाएंगे या क्या पिएंगे' या 'हमारे वस्त्रों का प्रबंध कैसे होगा?' 32 गैर-यहूदी ही
इन वस्तुओं के लिए कोशिश करते रहते हैं. तुम्हारे स्वर्गीय पिता को यह मालूम
है कि तुम्हें इन सब की ज़रूरत है. 33 सबसे पहले परमेश्वर के राज्य की और
उनकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सभी वस्तुएं तुम्हें दी जाएंगी. 34
इसलिये कल की चिंता न करो—कल अपनी चिंता स्वयं करेगा क्योंकि हर
एक दिन अपने साथ अपना ही पर्याप्त दुःख लिए हुए आता है.

7 "किसी पर भी दोष न लगाओ, तो लोग तुम पर भी दोष नहीं लगाएंगे
2 क्योंकि जैसे तुम किसी पर दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष
लगाया जाएगा तथा माप के लिए तुम जिस बर्तन का प्रयोग करते हो वही तुम्हारे
लिए इस्तेमाल किया जाएगा. 3 "तुम भला अपने भाई की आंख के कण की
ओर उंगली क्यों उठाते हो जबकि तुम स्वयं अपनी आंख में पड़े लट्ठे की ओर
ध्यान नहीं देते? 4 या तुम भला यह कैसे कह सकते हो 'ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारी
आंख से वह कण निकाल देता हूं,' जबकि तुम्हारी अपनी आंख में तो लट्ठा पड़ा
हुआ है? 5 अरे पाखंडी! पहले तो स्वयं अपनी आंख में से उस लट्ठे को तो
निकाल! तभी तू स्पष्ट रूप से देख सकेगा और अपने भाई की आंख में से उस
कण को निकाल सकेगा. 6 "वे वस्तुएं, जो पवित्र हैं, कुत्तों को न दो और न
सूअरों के सामने अपने मोती फेंको, कहीं वे उन्हें अपने पैरों से रौंदें, मुड़कर
तुम्हें फाड़ें और टुकड़े-टुकड़े कर दें. 7 "विनती करो, तो तुम्हें दिया जाएगा;
खोजो, तो तुम पाओगे; द्वार खटखटाओ, तो वह तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा
8 क्योंकि हर एक, जो विनती करता है, उसकी विनती पूरी की जाती है, जो
खोजता है, वह प्राप्त करता है और वह, जो द्वार खटखटाता है, उसके लिए द्वार
खोल दिया जाता है. 9 "तुममें ऐसा कौन है कि जब उसका पुत्र उससे रोटी की
मांग करता है तो उसे पत्थर देता है 10 या मछली की मांग करने पर सांप? 11
जब तुम दुष्ट होने पर भी अपनी संतान को उत्तम वस्तुएं प्रदान करना जानते हो तो
तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हें, जो उनसे विनती करते हैं, कहीं अधिक बढ़कर वह
प्रदान न करेंगे, जो उत्तम है? 12 इसलिये हर एक परिस्थिति में लोगों से तुम्हारा
व्यवहार ठीक वैसा ही हो जैसे व्यवहार की आशा तुम उनसे अपने लिए करते हो
क्योंकि व्यवस्था तथा भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा भी यही है. 13 "संकरे द्वार में
से प्रवेश करो क्योंकि विशाल है वह द्वार और चौड़ा है वह मार्ग, जो विनाश तक
ले जाता है और अनेक हैं, जो इसमें से प्रवेश करते हैं. 14 क्योंकि सकेत है वह
द्वार तथा कठिन है वह मार्ग, जो जीवन तक ले जाता है और थोड़े ही हैं, जो इसे
प्राप्त करते हैं. 15 "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के वेश में
तुम्हारे बीच आ जाते हैं, किंतु वास्तव में वे भूखे भेड़िये होते हैं. 16 उनके
स्वभाव से तुम उन्हें पहचान जाओगे. न तो कंटीली झाड़ियों में से अंगूर और न
ही गोखरू से अंजीर इकट्ठे किए जाते हैं. 17 वस्तुतः हर एक उत्तम पेड़ उत्तम
फल ही फलता है और बुरा पेड़ बुरा फल. 18 यह संभव ही नहीं कि उत्तम पेड़
बुरा फल दे और बुरा पेड़ उत्तम फल. 19 जो पेड़ उत्तम फल नहीं देता, उसे
काटकर आग में झोंक दिया जाता है. 20 इसलिये उनके स्वभाव से तुम उन्हें
पहचान लोगे. 21 "मुझे, 'प्रभु, प्रभु,' संबोधित करता हुआ हर एक व्यक्ति
स्वर्ग-राज्य में प्रवेश नहीं पाएगा परंतु प्रवेश केवल वह पाएगा, जो मेरे स्वर्गीय
पिता की इच्छा पूरी करता है. 22 उस अवसर पर अनेक मुझसे प्रश्न करेंगे,
'प्रभु, क्या हमने आपके नाम में भविष्यवाणी न की, क्या हमने आपके ही नाम
में दुष्टात्माओं को न निकाला और क्या हमने आपके नाम में अनेक आश्चर्यकर्म
न किए?' 23 मैं उनसे स्पष्ट कहूंगा, 'मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं. दुष्टो! चले
जाओ मेरे सामने से!' 24 "इसलिये हर एक की तुलना, जो मेरी इन शिक्षाओं
को सुनकर उनका पालन करता है, उस बुद्धिमान व्यक्ति से की जा सकती है,
जिसने अपने भवन का निर्माण चट्टान पर किया. 25 आंधी उठी, वर्षा हुई, बाढ़
आई और उस भवन पर थपेड़े पड़े, फिर भी वह भवन स्थिर खड़ा रहा क्योंकि
उसकी नींव चट्टान पर थी. 26 इसके विपरीत हर एक जो, मेरी इन शिक्षाओं को
सुनता तो है किंतु उनका पालन नहीं करता, वह उस निर्बुद्धि के समान होगा
जिसने अपने भवन का निर्माण रेत पर किया. 27 आंधी उठी, वर्षा हुई, बाढ़
आई, उस भवन पर थपेड़े पड़े और वह धराशायी हो गया—भयावह था उसका
विनाश!" 28 जब येशु ने यह शिक्षाएं दीं, भीड़ आश्चर्यचकित रह गई 29
क्योंकि येशु की शिक्षा-शैली अधिकारपूर्ण थी, न कि शास्त्रियों के समान.

8 जब येशु पर्वत से उतरकर आए तब बड़ी भीड़ उनके पीछे-पीछे चलने
लगी. 2 एक कोढ़ के रोगी ने उनके सामने झुककर उनसे विनती करके
कहा, "प्रभु, यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं." 3 येशु ने हाथ बढ़ाकर
उसे स्पर्श करते हुए कहा, "मैं चाहता हूं. शुद्ध हो जाओ." वह उसी क्षण कोढ़
रोग से शुद्ध हो गया. 4 येशु ने उसे आज्ञा दी, "यह ध्यान रहे कि तुम इसके
विषय में किसी को न बताओ. अब जाकर पुरोहित के सामने स्वयं को परीक्षण
के लिए प्रस्तुत करो, और मोशेह द्वारा निर्धारित बलि भेंट करो कि तुम्हारा
स्वास्थ्य-लाभ उनके सामने गवाही हो जाए." 5 जब येशु ने कफ़रनहूम नगर में
प्रवेश किया, तब एक शताधिपति ने आकर उनसे नम्रतापूर्वक निवेदन किया, 6
"प्रभु, घर पर मेरा सेवक लकवा रोग से पीड़ित है और वह घोर पीड़ा में है." 7
येशु ने उसे आश्वासन दिया, "मैं आकर उसे चंगा करूंगा." 8 किंतु शताधिपति
ने कहा, "नहीं प्रभु, नहीं, मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर आएं. आप
केवल मुंह से कह दीजिए और मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा. 9 मैं स्वयं बड़े
अधिकारियों के अधीन नियुक्त हूं और सैनिक मेरे अधिकार में हैं. मैं किसी को
आदेश देता हूं, 'जाओ!' तो वह जाता है, और किसी को आदेश देता हूं, 'इधर
आओ!' तो वह आता है. अपने सेवक से कहता हूं, 'यह करो!' तो वह वही
करता है." 10 यह सुनकर येशु आश्चर्यचकित रह गए. उन्होंने पीछे आ रही
भीड़ से कहा, "यह एक सच है कि मैंने इस्राएल राष्ट्र में भी किसी में ऐसा
विश्वास नहीं देखा. 11 मैं तुम्हें सूचित करना चाहता हूं कि स्वर्ग-राज्य में
अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब के साथ भोज में शामिल होने के लिए पूर्व
और पश्चिम दिशाओं से अनेकानेक आकर संगति करेंगे, 12 किंतु राज्य के
वारिस बाहर अंधकार में फेंक दिए जाएंगे. वह स्थान ऐसा होगा जहां रोना और
दांत पीसना होता रहेगा." 13 तब येशु ने शताधिपति से कहा, "जाओ, तुम्हारे
लिए वैसा ही होगा जैसा तुम्हारा विश्वास है." उसी क्षण वह सेवक चंगा हो
गया. 14 जब येशु पेतरॉस के घर पर आए, उन्होंने उनकी सास को बुखार से
पीड़ित पाया. 15 उन्होंने उनके हाथ का स्पर्श किया और वह बुखार से मुक्त हो
गई और उठकर उन सब की सेवा करने में जुट गई. 16 जब संध्या हुई तब लोग
दुष्टात्मा से पीड़ित लोगों को उनके पास लाने लगे और येशु अपने वचन मात्र से
उन्हें दुष्टात्मा मुक्त करते गए, साथ ही रोगियों को स्वस्थ. 17 यह भविष्यवक्ता
यशायाह द्वारा की गई इस भविष्यवाणी की पूर्ति थी: "उन्होंने स्वयं हमारी
दुर्बलताओं को अपने ऊपर ले लिया तथा हमारे रोगों को उठा लिया." 18
अपने आस-पास भीड़ को देख येशु ने शिष्यों को झील की दूसरी ओर जाने की
आज्ञा दी. 19 उसी समय एक शास्त्री ने आकर येशु से विनती की, "गुरुवर, आप
जहां कहीं जाएंगे, मैं आपके साथ रहूंगा." 20 येशु ने उसके उत्तर में कहा,
"लोमड़ियों के पास उनकी गुफाएं तथा आकाश के पक्षियों के पास उनके बसेरे

होते हैं, किंतु मनुष्य के पुत्र के पास तो सिर रखने तक का स्थान नहीं है!" **21**
एक अन्य शिष्य ने उनसे विनती की, "प्रभु मुझे पहले अपने पिता की अंत्येष्टि
की अनुमति दे दीजिए." **22** किंतु येशु ने उससे कहा, "मृत अपने मरे हुओं का
प्रबंध कर लेंगे, तुम मेरे पीछे हो लो." **23** जब उन्होंने नाव में प्रवेश किया उनके
शिष्य भी उनके साथ हो लिए. **24** अचानक झील में ऐसा प्रचंड आंधी उठी
कि लहरों ने नाव को ढांक लिया, किंतु येशु इस समय सो रहे थे. **25** इस
पर शिष्यों ने येशु के पास जाकर उन्हें जगाते हुए कहा, "प्रभु, हमारी रक्षा
कीजिए, हम नाश हुए जा रहे हैं!" **26** येशु ने उनसे कहा, "क्यों डर रहे हो,
अल्पविश्वासियो!" वह उठे और उन्होंने आंधी और झील को डांटा, और उसी
क्षण ही पूरी शांति छा गई. **27** शिष्य हैरान रह गए, और विचार करने लगे, "ये
किस प्रकार के व्यक्ति हैं कि आंधी और झील तक इनकी आज्ञा का पालन करते
हैं!" **28** झील पार कर वे गदारा नामक प्रदेश में आए. वहां कब्रों की गुफाओं से
निकलकर दुष्टात्मा से पीड़ित दो व्यक्ति उनके सामने आ गए. वे दोनों इतने
अधिक हिंसक थे कि कोई भी उस रास्ते से निकल नहीं पाता था. **29** येशु को
देख वे दोनों चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, "परमेश्वर-पुत्र, आपका हमसे क्या
लेना देना? क्या आप समय से पहले ही हमें दुःख देने आ पहुंचे हैं?" **30** वहां
कुछ दूर सूअरों का एक झुंड चर रहा था. **31** दुष्टात्मा येशु से विनती करने लगे,
"यदि आप हमें बाहर निकाल ही रहे हैं, तो हमें इन सूअरों के झुंड में भेज
दीजिए." **32** येशु ने उन्हें आज्ञा दी, "जाओ!" वे निकलकर सूअरों में प्रवेश
कर गए और पूरा झुंड ढलान पर सरपट भागता हुआ झील में जा गिरा और डूब
गया. **33** रखवाले भागे और नगर में जाकर घटना का सारा हाल कह सुनाया;
साथ ही यह भी कि उन दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्तियों के साथ क्या-क्या हुआ.
34 सभी नागरिक नगर से निकलकर येशु के पास आने लगे. जब उन्होंने येशु
को देखा तो उनसे विनती करने लगे कि वह उस क्षेत्र की सीमा से बाहर चले
जाएं.

9 इसलिये येशु नाव में सवार होकर झील पार करके अपने ही नगर में आ गए.
2 कुछ लोग एक लकवा पीड़ित को बिछौने पर उनके पास लाए. उनका
विश्वास देख येशु ने रोगी से कहा, "तुम्हारे लिए यह आनंद का विषय है: तुम्हारे
पाप क्षमा हो गए हैं." **3** कुछ शास्त्री आपस में कहने लगे, "यह तो परमेश्वर की
निंदा कर रहा है!" **4** उनके विचारों का अहसास होने पर येशु उन्हें संबोधित
कर बोले, "क्यों अपने मनों में बुरा विचार कर रहे हो? **5** क्या कहना सरल है,
'तुम्हारे पाप क्षमा हो गए' या 'उठो, चलने लगो?' **6** किंतु इसका उद्देश्य यह है
कि तुम्हें यह मालूम हो जाए कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का
अधिकार सौंपा गया है." तब रोगी से येशु ने कहा, "उठो, अपना बिछौना
उठाओ और अपने घर जाओ." **7** वह उठा और घर चला गया. **8** यह देख
भीड़ हैरान रह गई और परमेश्वर का गुणगान करने लगी, जिन्होंने मनुष्यों को
इस प्रकार का अधिकार दिया है. **9** वहां से जाने के बाद येशु ने चुंगी लेनेवाले
के आसन पर बैठे हुए एक व्यक्ति को देखा, जिसका नाम मत्तियाह था. येशु ने
उसे आज्ञा दी, "मेरे पीछे हो ले." मत्तियाह उठकर येशु के साथ हो लिए. **10**
जब येशु भोजन के लिए बैठे थे, अनेक चुंगी लेनेवाले तथा अपराधी व्यक्ति भी
उनके साथ शामिल थे. **11** यह देख फ़रीसियों ने आपत्ति उठाते हुए येशु के
शिष्यों से कहा, "तुम्हारे गुरु चुंगी लेनेवाले और अपराधी व्यक्तियों के साथ
भोजन क्यों करते हैं?" **12** यह सुन येशु ने स्पष्ट किया, "चिकित्सक की
ज़रूरत स्वस्थ व्यक्ति को नहीं परंतु रोगी व्यक्ति को होती है. **13** अब जाओ
और इस कहावत का अर्थ समझो: 'मैं बलिदान से नहीं, पर दया से प्रसन्न होता
हूं,' क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परंतु पापियों को बुलाने के लिए इस पृथ्वी पर
आया हूं." **14** बपतिस्मा देनेवाले योहन के शिष्य येशु के पास आए और उनसे
प्रश्न किया, "क्या कारण है कि फ़रीसी और हम तो उपवास करते हैं किंतु
आपके शिष्य नहीं?" **15** येशु ने उन्हें समझाया: "क्या यह संभव है कि दुल्हे
के होते हुए बाराती विलाप करें? हां, ऐसा समय आएगा जब दूल्हा उनसे अलग
कर दिया जाएगा—तब वे उपवास करेंगे. **16** "पुराने वस्त्र में कोई भी नये कपड़े
का जोड़ नहीं लगाता, नहीं तो कोरा वस्त्र का जोड़ सिकुड़ कर वस्त्र से अलग हो
जाता है और वस्त्र और भी अधिक फट जाता है. **17** वैसे ही लोग नए दाखरस
को पुरानी मशकों में नहीं रखते; अन्यथा वे फट जाती हैं और दाखरस तो
बहकर नाश हो ही जाता है, साथ ही मशके भी. नया दाखरस नई मशकों में ही
रखा जाता है. परिणामस्वरूप दोनों ही सुरक्षित रहते हैं." **18** जब येशु उन लोगों
से इन विषयों पर बातचीत कर रहे थे, यहूदी सभागृह का एक अधिकारी उनके
पास आया और उनके सामने झुककर विनती करने लगा, "कुछ देर पहले ही
मेरी पुत्री की मृत्यु हुई है. आप कृपया आकर उस पर हाथ रख दीजिए और वह
जीवित हो जाएगी." **19** येशु और उनके शिष्य उसके साथ चले गए. **20** मार्ग
में बारह वर्ष से लहूस्राव-पीड़ित एक स्त्री ने पीछे से आकर येशु के वस्त्र के छोर
को छुआ, **21** क्योंकि उसने अपने मन में यह कहा था: "यदि मैं उनके वस्त्र को
भी छू लूं, तो मैं रोगमुक्त हो जाऊंगी." **22** येशु ने पीछे मुड़कर उसे देखा और
उससे कहा, "तुम्हारे लिए यह आनंद का विषय है: तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें
स्वस्थ कर दिया." उसी क्षण वह स्त्री स्वस्थ हो गई. **23** जब येशु यहूदी सभागृह
के अधिकारी के घर पर पहुंचे तो उन्होंने भीड़ का कोलाहल और बांसुरी वादक
शोक-संगीत बजाते हुए भी सुना. **24** इसलिये उन्होंने आज्ञा दी, "यहां से चले
जाओ क्योंकि बालिका की मृत्यु नहीं हुई है—वह सो रही है." इस पर वे येशु
का ठट्ठा करने लगे, **25** किंतु जब भीड़ को बाहर निकाल दिया गया, येशु ने
कक्ष में प्रवेश कर बालिका का हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी. **26** यह समाचार
सारे क्षेत्र में फैल गया. **27** जब येशु वहां से विदा हुए, दो अंधे व्यक्ति यह
पुकारते हुए उनके पीछे चलने लगे, "दावीद-पुत्र, हम पर कृपा कीजिए!" **28**
जब येशु ने घर में प्रवेश किया वे अंधे भी उनके पास पहुंच गए. येशु ने उनसे प्रश्न
किया, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मुझमें यह करने का सामर्थ्य है?" उन्होंने
उत्तर दिया, "जी हां, प्रभु." **29** तब येशु ने यह कहते हुए उनके नेत्रों का स्पर्श
किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी इच्छा पूरी हो," **30** और उन्हें दृष्टि
प्राप्त हो गई. येशु ने उन्हें कड़ी चेतावनी दी, "यह ध्यान रखना कि इसके विषय
में किसी को मालूम न होने पाए!" **31** किंतु उन्होंने जाकर सभी क्षेत्र में येशु के
विषय में यह समाचार प्रसारित कर दिया. **32** जब वे सब वहां से बाहर निकल
रहे थे, उनके सामने एक गूंगा व्यक्ति, जो दुष्टात्मा से पीड़ित था, लाया गया. **33**
दुष्टात्मा के निकल जाने के बाद वह बातें करने लगा. यह देख भीड़ चकित रह
गई और कहने लगी, "इससे पहले इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया." **34**
जबकि फ़रीसी कह रहे थे, "यह दुष्टात्मा का निकालना दुष्टात्मा के प्रधान की
सहायता से करता है." **35** येशु नगर-नगर और गांव-गांव की यात्रा कर रहे थे.
वह उनके यहूदी सभागृहों में शिक्षा देते, स्वर्ग-राज्य के सुसमाचार का प्रचार
करते तथा हर एक प्रकार के रोग और दुर्बलताओं को स्वस्थ करते जा रहे थे.
36 भीड़ को देख येशु का हृदय करुणा से दुःखित हो उठा क्योंकि वे बिन चरवाहे
की भेड़ों के समान व्याकुल और निराश थे. **37** इस पर येशु ने अपने शिष्यों से
कहा, "उपज तो बहुत है किंतु मज़दूर कम, **38** इसलिये उपज के स्वामी से
विनती करो कि इस उपज के लिए मज़दूर भेज दें."

10 येशु ने अपने बारह शिष्यों को बुलाकर उन्हें अधिकार दिया कि वे
दुष्टात्मा को निकाला करें तथा हर एक प्रकार के रोग और बीमारी से
स्वस्थ करें. **2** इन बारह प्रेरितों के नाम इस प्रकार हैं: शिमओन जो पेतरॉस
कहलाए, उनके भाई आन्द्रेयास, ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब, उनके भाई योहन,
3 फ़िलिप्पॉस, बारथोलोमेयॉस, थोमॉस, चुंगी लेनेवाले मत्तियाह, हलफ़ेयॉस के
पुत्र याकोब, थद्देइयॉस, **4** कनानी शिमओन तथा कारियोतवासी यहूदाह, जिसने

उनके साथ धोखा किया. 5 येशु ने इन बारहों को इन निर्देशों के साथ विदा
किया: "गैर-यहूदियों के मध्य न जाओ, और शमरिया प्रदेश के किसी भी नगर
में प्रवेश न करना. 6 परंतु इस्राएल घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ.
7 जाते हुए यह घोषणा करते जाओ, 'स्वर्ग-राज्य समीप आ पहुंचा है.' 8
रोगियों को स्वस्थ करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ रोगियों को शुद्ध करो,
तथा दुष्टात्मा को निकालते जाओ. तुमने बिना दाम के प्राप्त किया है, बिना दाम
लिए देते जाओ. 9 "यात्रा में अपने लिए सोना, चांदी तथा तांबे के सिक्कों को
जमा न करना. 10 यात्रा के लिए न थैला, न वस्त्रों के दूसरे जोड़े, न जूते और न
ही लाठी साथ ले जाना क्योंकि भरण-पोषण हर एक मज़दूर का अधिकार है.
11 किसी भी गांव या नगर में प्रवेश करने पर योग्य व्यक्ति की खोज करना और
वहां से विदा होने तक उसी के अतिथि होकर रहना. 12 उस घर में प्रवेश करते
समय उनके लिए मंगल कामना करना. 13 यदि वह घर इस योग्य लगे तो उसके
लिए शांति की आशीष देना; यदि वह इसके योग्य न लगे तो अपनी शांति की
आशीष अपने पास लौट आने देना. 14 जो कोई तुम्हारा स्वागत न करे या
तुम्हारी न सुने उस घर से या उस नगर से बाहर आते हुए अपने चरणों की धूल
तक वहीं झाड़ देना. 15 सच तो यह है कि न्याय-दिवस पर उस नगर की तुलना
में सोदोम और गोमोरा का दंड कहीं अधिक सहनीय होगा. 16 "याद रखो कि
मैं तुम्हें इस प्रकार भेज रहा हूं मानो भेड़ियों के समूह में भेड़. इसलिये ज़रूरी
है कि तुम सांप जैसे चालाक तथा कबूतर जैसे भोले हो. 17 सहजातियों से
सावधान रहना क्योंकि वे ही तुम्हें पकड़कर स्थानीय न्यायालय को सौंप देंगे.
उनके यहूदी सभागृहों में तुम्हें कोड़े लगाए जाएंगे. 18 यहां तक कि मेरे कारण
मेरे गवाह के रूप में तुम्हें राज्यपालों, शासकों और गैर-यहूदियों के सामने
प्रस्तुत किया जाएगा. 19 जब तुम पकड़वाए जाओ तो यह चिंता न करना कि
तुम्हें कैसे या क्या कहना होगा—सही शब्द तुम्हें उसी समय प्रदान किए जाएंगे,
20 क्योंकि वहां तुम नहीं परंतु तुम्हारे स्वर्गीय पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा
शब्द देगा. 21 "भाई अपने भाई को तथा पिता अपनी संतान को हत्या के लिए
पकड़वाएगा. बालक अपने माता-पिता के विरुद्ध हो जाएंगे और उनकी हत्या का
कारण बन जाएंगे. 22 मेरे नाम के कारण तुम सब की घृणा के पात्र बन जाओगे
किंतु जो अंत तक स्थिर रहेगा, वही उद्धार पाएगा. 23 जब वे तुम्हें एक नगर में
यातना देने लगें तब दूसरे नगर को भाग जाना, क्योंकि सच्चाई यह है कि
इस्राएल राष्ट्र के एक नगर से दूसरे नगर तक तुम्हारी यात्रा पूरी भी न होगी कि
मनुष्य का पुत्र आ जाएगा. 24 "शिष्य अपने गुरु से श्रेष्ठ नहीं और न दास अपने
स्वामी से. 25 शिष्य को यही काफ़ी है कि वह अपने गुरु के तुल्य हो जाए तथा
दास अपने स्वामी के. यदि उन्होंने परिवार के प्रधान को ही बेलज़बूल घोषित
कर दिया तो उस परिवार के सदस्यों को क्या कुछ नहीं कहा जाएगा! 26
"इसलिये उनसे भयभीत न होना क्योंकि ऐसा कुछ भी छुपा नहीं, जिसे खोला
न जाएगा या ऐसा कोई रहस्य नहीं, जिसे प्रकट न किया जाएगा. 27 मैं जो कुछ
तुम पर अंधकार में प्रकट कर रहा हूं, उसे प्रकाश में स्पष्ट करो और जो कुछ
तुमसे कान में कहा गया है, उसकी घोषणा हर जगह करो. 28 उनसे भयभीत न
हो, जो शरीर को तो नाश कर सकते हैं किंतु आत्मा को नाश करने में असमर्थ
हैं. सही तो यह है कि भयभीत उनसे हो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नर्क में
नाश करने में समर्थ हैं. **(Geenna g1067)** 29 क्या दो गौरैयें बहुत सस्ती एक पैसे
में नहीं बिकती? फिर भी ऐसा नहीं कि यदि उनमें से एक भी भूमि पर गिर जाए
और तुम्हारे पिता को उसके विषय में मालूम न हो. 30 तुम्हारे सिर का तो एक-
एक बाल गिना हुआ है. 31 इसलिये भयभीत न हो. तुम्हारा दाम अनेक गौरैया
से कहीं अधिक है. 32 "जो कोई मुझे मनुष्यों के सामने स्वीकार करता है, मैं
भी उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करूंगा 33 किंतु जो कोई मुझे
मनुष्यों के सामने अस्वीकार करता है, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने
अस्वीकार करूंगा. 34 "यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मेल-मिलाप के लिए
आया हूं. मैं मेल-मिलाप के लिए नहीं, बंटवारे के लिए आया हूं. 35 मैं आया हूं
कि " 'पुत्र को उसके पिता के विरुद्ध, पुत्री को उसकी माता के विरुद्ध तथा बहू को
उसकी सास के विरुद्ध उकसाऊं. 36 मनुष्य के शत्रु उसके परिवार के सदस्य ही
होंगे.' 37 "वह, जिसे मेरे बजाय अपने माता-पिता से अधिक लगाव है, मेरे
योग्य नहीं है, तथा जिसे मेरी बजाय अपने पुत्र-पुत्री से अधिक प्रेम है, वह मेरे
योग्य नहीं. 38 वह, जो अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए मेरा अनुसरण नहीं करता,
मेरे योग्य नहीं. 39 वह, जो यह समझता है कि उसने जीवन पा लिया है, वह
उसे खो देगा तथा वह, जिसने मेरे लिए अपना जीवन खो दिया है, उसे सुरक्षित
पाएगा. 40 "वह, जो तुम्हें स्वीकार करता है, मुझे स्वीकार करता है, और जो
मुझे स्वीकार करता है, उन्हें स्वीकार करता है, जिन्होंने मुझे भेजा है. 41 जो
कोई एक भविष्यवक्ता को एक भविष्यवक्ता के नाम में स्वीकार करता है, एक
भविष्यवक्ता का ईनाम प्राप्त करेगा; और वह, जो एक धर्मी व्यक्ति को एक
धर्मी व्यक्ति के नाम में स्वीकार करता है, धर्मी व्यक्ति का ही ईनाम प्राप्त
करेगा. 42 जो कोई इन मामूली व्यक्तियों में से किसी एक को एक कटोरा
शीतल जल मात्र इसलिये दे कि वह मेरा शिष्य है, तुम सच तो जानो, वह अपना
ईनाम नहीं खोएगा."

11 जब येशु अपने बारह शिष्यों को निर्देश दे चुके, वह शिक्षा देने और
प्रचार के लिए वहां से उनके नगरों में चले गए. 2 बंदीगृह में जब योहन
ने मसीह के कामों के विषय में सुना उन्होंने अपने शिष्यों को येशु से यह पूछने
भेजा, 3 "क्या आप वही है, जिसकी प्रतिज्ञा तथा प्रतीक्षा की गई हैं, या हम
किसी अन्य का इंतजार करें?" 4 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "जो कुछ तुम देख
और सुन रहे हो उसकी सूचना योहन को दे दो: 5 अंधे देख पा रहे हैं, लंगड़े
चल रहे हैं, कोढ़ के रोगियों को शुद्ध किया जा रहा है, बहिरे सुनने लगे हैं, मरे
हुए दोबारा जीवित किए जा रहे हैं तथा कंगालों को सुसमाचार सुनाया जा रहा
है. 6 धन्य है वह, जिसका विश्वास मुझ पर से नहीं उठता." 7 जब योहन के
शिष्य वहां से जा ही रहे थे, प्रभु येशु ने भीड़ से योहन के विषय में कहना
प्रारंभ किया, "तुम्हारी आशा बंजर भूमि में क्या देखने की थी? हवा में हिलते
हुए सरकंडे को? 8 यदि यह नहीं तो फिर क्या देखने गए थे? कीमती वस्त्र
धारण किए हुए किसी व्यक्ति को? जो ऐसे वस्त्र धारण करते हैं उनका निवास तो
राजमहलों में होता है. 9 तुम क्यों गए थे? किसी भविष्यवक्ता से भेंट करने?
हां! मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यह वह हैं, जो भविष्यवक्ता से भी बढ़कर हैं 10
यह वह हैं जिनके विषय में लिखा गया है: " 'मैं अपना दूत तुम्हारे आगे भेज
रहा हूं, जो तुम्हारे आगे-आगे जाकर तुम्हारे लिए मार्ग तैयार करेगा.' 11 सच
तो यह है कि आज तक जितने भी मनुष्य हुए हैं उनमें से एक भी बपतिस्मा
देनेवाले योहन से बढ़कर नहीं. फिर भी स्वर्ग-राज्य में छोटे से छोटा भी योहन
से बढ़कर है. 12 बपतिस्मा देनेवाले योहन के समय से लेकर अब तक स्वर्ग-
राज्य प्रबलतापूर्वक फैल रहा है और आकांक्षी-उत्साही व्यक्ति इस पर अधिकार
कर रहे हैं. 13 भविष्यद्वक्ताओं तथा व्यवस्था की भविष्यवाणी योहन तक ही
थी. 14 यदि तुम इस सच में विश्वास कर सको तो सुनो: योहन ही वह एलियाह
हैं जिनका दोबारा आगमन होना था. 15 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले.
16 "इस पीढ़ी की तुलना मैं किससे करूं? यह बाजारों में बैठे हुए उन बालकों
के समान है, जो पुकारते हुए अन्यों से कह रहे हैं: 17 " 'जब हमने तुम्हारे लिए
बांसुरी बजाई, तुम न नाचे; हमने शोक गीत भी गाए, फिर भी तुम न रोए.' 18
योहन रोटी नहीं खाते, और दाखरस नहीं पीते थे. इसलिये लोगों ने घोषणा की,
'उसमें दुष्टात्मा है.' 19 मनुष्य का पुत्र खाते-पीते आया, और उन्होंने घोषित कर
दिया, 'अरे, वह तो पेटू और पियक्कड़ है; वह तो चुंगी लेनेवालों और अपराधी
व्यक्तियों का मित्र है!' बुद्धि अपने कामों से सही साबित होती है." 20 येशु ने

अधिकांश अद्भुत काम इन्हीं नगरों में किए थे; फिर भी इन नगरों ने पश्चाताप नहीं किया था, इसलिये येशु इन नगरों को धिक्कारने लगे. 21 "धिक्कार है तुझ पर कोराज़ीन! धिक्कार है तुझ पर बैथसैदा! ये ही अद्भुत काम, जो तुझमें किए गए हैं यदि सोर और सीदोन नगरों में किए जाते तो वे विलाप-वस्त्र पहन, सिर पर राख डाल कब के पश्चाताप कर चुके होते! 22 फिर भी मैं कहता हूं, सुनो: न्याय-दिवस पर सोर और सीदोन नगरों का दंड तेरे दंड से अधिक सहने योग्य होगा. 23 और कफ़रनहूम, तू! क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किए जाने की आशा कर रहा है? अरे! तुझे तो पाताल में उतार दिया जाएगा क्योंकि जो अद्भुत काम तुझमें किए गए, यदि वे ही सोदोम नगर में किए गए होते तो वह आज भी बना होता. **(Hadēs g86)** 24 फिर भी आज जो मैं कह रहा हूं उसे याद रख: न्याय-दिवस पर सोदोम नगर का दंड तेरे दंड से अधिक सहने योग्य होगा." 25 यह वह अवसर था जब येशु ने इस प्रकार कहा: "पिता! स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं आपकी स्तुति करता हूं कि आपने ये सभी सच बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छुपा रखे और नन्हे बालकों पर प्रकट कर दिए क्योंकि पिता, आपकी दृष्टि में यही अच्छा था. 26 सच है, पिता, क्योंकि इसी में आपको परम संतोष था. 27 "मेरे पिता द्वारा सब कुछ मुझे सौंप दिया गया है. पिता के अलावा कोई पुत्र को नहीं जानता और न ही कोई पिता को जानता है, सिवाय पुत्र के तथा वे, जिन पर वह प्रकट करना चाहें. 28 "तुम सभी, जो थके हुए तथा भारी बोझ से दबे हो, मेरे पास आओ, तुम्हें विश्राम मैं दूंगा. 29 मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो क्योंकि मैं दीन और हृदय से नम्र हूं और तुम्हें मन में विश्राम प्राप्त होगा 30 क्योंकि सहज है मेरा जूआ और हल्का है मेरा बोझ."

12 शब्बाथ पर येशु और उनके शिष्य अन्न के खेतों में से होकर जा रहे थे. उनके शिष्यों को भूख लग गई और वे बालें तोड़कर खाने लगे. 2 यह देख फ़रीसियों ने आपत्ति उठाई, "देख लो, तुम्हारे शिष्य वह कर रहे हैं जो शब्बाथ संबंधित व्यवस्था के अनुसार गलत है." 3 इस पर येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या आप लोगों ने उस घटना के विषय में नहीं पढ़ा जिसमें भूख लगने पर दावीद और उनके साथियों ने क्या किया था? 4 कैसे उन्होंने परमेश्वर के भवन में प्रवेश किया और दावीद और उनके साथियों ने भेंट की वह रोटी खाई, जिसे पुरोहितों के अलावा किसी का भी खाना व्यवस्था के अनुसार न था? 5 या क्या आप लोगों ने व्यवस्था में यह नहीं पढ़ा कि मंदिर में सेवारत पुरोहित शब्बाथ की व्यवस्था का उल्लंघन करने पर भी निर्दोष ही रहते हैं? 6 किंतु मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यहां वह है, जो मंदिर से बढ़कर है. 7 वस्तुतः तुमने यदि इस बात का अर्थ समझा होता: 'मैं बलि की नहीं परंतु दया की कामना करता हूं,' तो तुमने इन निर्दोषों पर आरोप न लगाया होता. 8 क्योंकि मनुष्य का पुत्र शब्बाथ का स्वामी है." 9 वहां से चलकर येशु यहूदी सभागृह में गए. 10 वहां एक व्यक्ति था, जिसका हाथ लकवा मारा हुआ था. उन्होंने येशु से प्रश्न किया, "क्या शब्बाथ पर किसी को स्वस्थ करना व्यवस्था के अनुसार है?" उन्होंने यह प्रश्न इसलिये किया कि वे येशु पर आरोप लगा सकें. 11 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुममें कौन ऐसा व्यक्ति है जिसके पास एक भेड़ है और यदि वह भेड़ शब्बाथ पर गड्ढे में गिर जाए तो वह उसे हाथ बढ़ाकर बाहर न निकाले? 12 एक भेड़ की तुलना में मनुष्य कितना अधिक कीमती है! इसलिये शब्बाथ पर किया गया भला काम व्यवस्था के अनुसार होता है." 13 तब येशु ने उस व्यक्ति को आज्ञा दी, "अपना हाथ आगे बढ़ाओ!" उसने हाथ आगे बढ़ाया—वह हाथ दूसरे हाथ के जैसा स्वस्थ हो गया था. 14 इसलिये फ़रीसी बाहर चले गए तथा येशु की हत्या का षड्‍यंत्र रचने लगे. 15 येशु को इसका अहसास था इसलिये वह वहां से चले गए. अनेक थे, जो उनके साथ उनके पीछे-पीछे चल रहे थे. येशु ने उनमें से सभी रोगियों को स्वस्थ कर दिया 16 और उन्हें चेतावनी दी कि इस विषय में वे किसी से वर्णन न करें कि वह कौन हैं. 17 यह भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा की गई इस भविष्यवाणी की पूर्ति थी: 18 यही है मेरा चुना हुआ सेवक, मेरा प्रिय पात्र, जिसमें मेरे प्राण को पूरा संतोष है. मैं उसे अपने आत्मा से भरा करूंगा और वह गैर-यहूदियों में न्याय की घोषणा करेगा. 19 वह न तो विवाद करेगा, न ऊंचे शब्द में कुछ कहेगा और न ही गलियों में कोई उसका शब्द सुन सकेगा. 20 कुचले हुए नरकट को वह तोड़ न फेंकेगा, और न ही वह टिमटिमाती बाती को बुझा देगा, जब तक वह न्याय को विजय तक न पहुंचा दे. 21 उसकी प्रतिष्ठा में गैर-यहूदियों के लिए आशा होगी. 22 तब येशु के सामने एक ऐसा व्यक्ति लाया गया, जो दुष्टात्मा से पीड़ित था, वह अंधा तथा गूंगा था. येशु ने उसे स्वस्थ कर दिया. परिणामस्वरूप वह व्यक्ति बातें करने और देखने लगा. 23 सभी भीड़ चकित रह गई. मौजूद लोग आपस में विचार कर रहे थे, "कहीं यही दावीद का वह वंशज तो नहीं?" 24 किंतु यह सुनकर फ़रीसियों ने इसके विषय में अपना मत दिया, "यह व्यक्ति केवल दुष्टात्माओं के प्रधान बेलज़बूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकाला करता है." 25 उनके विचारों के विषय में मालूम होने पर येशु ने उनसे कहा, "कोई भी ऐसा राज्य, जिसमें फूट पड़ी हो, मिट जाता है. कोई भी नगर या परिवार फूट की स्थिति में स्थिर नहीं रह पाता. 26 यदि शैतान ही शैतान को बाहर निकाला करे तो वह अपना ही विरोधी हो जाएगा, तब भला उसका शासन स्थिर कैसे रह सकेगा? 27 यदि मैं दुष्टात्माओं को बेलज़बूल के सहयोग से बाहर निकाला करता हूं तो फिर तुम्हारे लोग उनको कैसे बाहर करती है? परिणामस्वरूप वे ही तुम पर आरोप लगाएंगे. 28 परंतु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के आत्मा के द्वारा बाहर कर रहा हूं तो यह साबित हो गया है कि तुम्हारे बीच परमेश्वर का राज्य आ चुका है. 29 "क्या, यह संभव है कि कोई किसी बलवान व्यक्ति के घर में प्रवेश कर उसकी संपत्ति लूट ले? हां, यदि बलवान व्यक्ति को पहले बांध दिया जाए, तब उसकी संपत्ति को लूट लेना संभव है. 30 "वह, जो मेरे पक्ष में नहीं, मेरे विरुद्ध है और वह, जो मेरे साथ इकट्ठा नहीं करता, वह बिखेरता है. 31 इसलिये तुमसे मेरा कहना यही है: लोगों द्वारा किया गया कोई भी पाप, कोई भी परमेश्वर-निंदा क्षमा के योग्य है किंतु पवित्र आत्मा की निंदा क्षमा नहीं की जाएगी. 32 यदि कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कुछ कहे, उसे क्षमा कर दिया जाएगा किंतु यदि कोई पवित्र आत्मा की निंदा में कुछ कहता है, तो उसे क्षमा नहीं किया जाएगा—न तो इस युग में और न ही आनेवाले युग में. **(aiōn g165)** 33 "यदि पेड़ अच्छा है तो फल भी अच्छा ही होगा और यदि पेड़ अच्छा नहीं है तो उसका फल भी अच्छा नहीं होगा. पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है. 34 अरे तुम! तुम, जो विषैले सांप की संतान हो, भला तुम्हारे बुरे होने पर तुम्हारे मुख से अच्छी बातें कैसे निकल सकती हैं? क्योंकि मुख से वही मुखरित होता है जो हृदय में भरा होता है. 35 भला व्यक्ति स्वयं में भरे हुए उत्तम भंडार में से उत्तम ही निकालता है तथा बुरा व्यक्ति स्वयं में भरे हुए बुरे भंडार में से बुरा. 36 तुम पर मैं यह स्पष्ट कर रहा हूं: हर एक व्यक्ति न्याय-दिवस पर अपने निराधार शब्दों का हिसाब देगा; 37 क्योंकि अपने शब्दों के द्वारा ही तुम निर्दोष या दंडित घोषित किए जाओगे." 38 कुछ शास्त्रियों और फ़रीसियों ने येशु से विनती की, "गुरुवर, हम आपसे कोई अद्भुत चिह्न देखना चाहते हैं." 39 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यह दुष्ट तथा परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन पीढ़ी अद्भुत चिह्न की लालसा करती है, फिर भी इसे भविष्यवक्ता योनाह के चिह्न के अतिरिक्त कोई भी चिह्न नहीं दिया जाएगा. 40 ठीक जैसे भविष्यवक्ता योनाह तीन दिन और तीन रात विशालकाय जल जंतु के पेट में रहे, मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात भूमि के भीतर रहेगा. 41 न्याय-दिवस पर नीनवे नगर की जनता इस पीढ़ी के साथ उपस्थित होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि उसने तो भविष्यवक्ता योनाह के प्रचार के परिणामस्वरूप पश्चाताप कर लिया, किंतु यहां

तो वह है, जो भविष्यवक्ता योनाह से भी बढ़कर है. 42 न्याय-दिवस पर दक्षिण
की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि वह पृथ्वी
के छोर से यात्रा कर राजा शलोमोन के ज्ञान को सुनने आई थी; किंतु यहां तो वह
है, जो राजा शलोमोन से भी बढ़कर है. 43 "जब दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से
बाहर आ जाती है, वह निवास स्थान की खोज में सूखे स्थानों में फिरती है,
किंतु उसे निवास स्थान प्राप्त नहीं हो पाता. 44 तब वह सोचती है, 'मैं जिस
निवास स्थान को छोड़कर आयी थी, वहीं लौट जाऊं.' वह वहां लौटकर उसे
खाली, साफ़ और सुथरा पाती है. 45 तब वह जाकर अपने से अधिक बुरी सात
आत्मा और ले आती है और वे सब उस व्यक्ति में प्रवेश कर उसमें अपना घर
बना लेती हैं. तब उस व्यक्ति की स्थिति पहले से खराब हो जाती है. यही स्थिति
होगी इस दुष्ट पीढ़ी की भी." 46 जब येशु भीड़ से बातें कर रहे थे, उनकी माता
तथा उनके भाई उनसे भेंट करने की प्रतीक्षा में बाहर ठहरे हुए थे. 47 किसी ने
उन्हें सूचित किया, "आपकी माता तथा भाई बाहर आपसे भेंट करने के लिए
प्रतीक्षा कर रहे हैं." 48 जिस व्यक्ति ने येशु को यह सूचना दी थी, उससे येशु ने
पूछा, "वास्तव में कौन है मेरी माता और कौन है मेरा भाई?" 49 तब अपने
शिष्यों की ओर हाथ से संकेत करते हुए येशु ने कहा, "ये हैं मेरे भाई, मेरी बहन
तथा मेरी माता. 50 जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है, वही है मेरा
भाई, मेरी बहन तथा मेरी माता."

13 यह घटना उस दिन की है जब येशु घर से बाहर झील के किनारे पर बैठे
हुए थे. 2 एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठा हो गयी. इसलिये वह
एक नाव में जा बैठे और भीड़ झील के तट पर रह गयी. 3 उन्होंने भीड़ से
दृष्टान्तों में अनेक विषयों पर चर्चा की. येशु ने कहा: "एक किसान बीज बोने
के लिए निकला. 4 बीज बोने में कुछ बीज तो मार्ग के किनारे गिरे, जिन्हें
पक्षियों ने आकर चुग लिया. 5 कुछ अन्य बीज पथरीली भूमि पर भी जा गिरे,
जहां पर्याप्त मिट्टी नहीं थी. पर्याप्त मिट्टी न होने के कारण वे जल्दी ही अंकुरित
भी हो गए. 6 किंतु जब सूर्योदय हुआ, वे झुलस गए और इसलिये कि उन्होंने
जड़ें ही नहीं पकडी थी, वे मुरझा गए. 7 कुछ अन्य बीज कंटीली झाड़ियों में
जा गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया. 8 कुछ बीज अच्छी भूमि पर
गिरे और फल लाए. यह उपज सौ गुणी, साठ गुणी, तीस गुणी थी. 9 जिसके
सुनने के कान हों, वह सुन ले." 10 येशु के शिष्यों ने उनके पास आकर उनसे
प्रश्न किया, "गुरुवर, आप लोगों को दृष्टान्तों में ही शिक्षा क्यों देते हैं?" 11
उसके उत्तर में येशु ने कहा, "स्वर्ग-राज्य के रहस्य जानने की क्षमता तुम्हें तो
प्रदान की गई है, उन्हें नहीं. 12 क्योंकि जिस किसी के पास है उसे और
अधिक प्रदान किया जाएगा और वह सम्पन्न हो जाएगा किंतु जिसके पास नहीं
है उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है. 13 यही कारण है कि मैं
लोगों को दृष्टान्तों में शिक्षा देता हूं: "क्योंकि वे देखते हुए भी कुछ नहीं देखते
तथा सुनते हुए भी कुछ नहीं सुनते और न उन्हें इसका अर्थ ही समझ आता है.
14 उनकी इसी स्थिति के विषय में भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी
पूरी हो रही है: "'तुम सुनते तो रहोगे किंतु समझोगे नहीं; तुम देखते तो रहोगे
किंतु तुम्हें कोई ज्ञान न होगा; 15 क्योंकि इन लोगों का मन-मस्तिष्क मंद पड़
चुका है. वे अपने कानों से ऊंचा ही सुना करते हैं. उन्होंने अपनी आंखें मूंद
रखी हैं कि कहीं वे अपनी आंखों से देखने न लगें, कानों से सुनने न लगें तथा
अपने हृदय से समझने न लगें और मेरी ओर फिर जाएं कि मैं उन्हें स्वस्थ कर
दूं.' 16 धन्य हैं तुम्हारी आंखें क्योंकि वे देखती हैं और तुम्हारे कान क्योंकि वे
सुनते हैं. 17 मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं: अनेक भविष्यवक्ता और
धर्मी व्यक्ति वह देखने की कामना करते रहे, जो तुम देख रहे हो किंतु वे देख न
सके तथा वे वह सुनने की कामना करते रहे, जो तुम सुन रहे हो किंतु सुन न
सके. 18 "अब तुम किसान का दृष्टांत सुनो: 19 जब कोई व्यक्ति राज्य के
विषय में सुनता है किंतु उसे समझा नहीं करता, शैतान आता है और वह, जो
उसके हृदय में रोपा गया है, झपटकर ले जाता है. यह वह बीज है जो मार्ग के
किनारे गिर गया था. 20 पथरीली भूमि वह व्यक्ति है, जो संदेश को सुनता है
तथा तुरंत ही उसे खुशी से अपना लेता है 21 किंतु इसलिये कि उसकी जड़ है
ही नहीं, वह थोड़े दिन के लिए ही उसमें टिक पाता है. जब संदेश के कारण
यातनाएं और सताहट प्रारंभ होते हैं, उसका पतन हो जाता है. 22 वह भूमि, जहां
बीज कंटीली झाड़ियों के बीच गिरा, वह व्यक्ति है जो संदेश को सुनता तो है
किंतु संसार की चिंताएं तथा सम्पन्नता का छलावा संदेश को दबा देते हैं और वह
बिना फल के रह जाता है. **(aiōn g165)** 23 वह उत्तम भूमि, जिस पर बीज रोपा
गया, वह व्यक्ति है, जो संदेश को सुनता है, उसे समझता है तथा वास्तव में फल
लाता है—बोये गये बीज के तीस गुणा, साठ गुणा तथा सौ गुणा." 24 येशु ने
उनके सामने एक अन्य दृष्टांत प्रस्तुत किया: "स्वर्ग-राज्य की तुलना उस व्यक्ति
से की जा सकती है, जिसने अपने खेत में उत्तम बीज का रोपण किया. 25 जब
उसके सेवक सो रहे थे, उसका शत्रु आया और गेहूं के बीज के मध्य जंगली
बीज रोप कर चला गया. 26 जब गेहूं के अंकुर फूटे और बालें आईं तब जंगली
बीज के पौधे भी दिखाई दिए. 27 "इस पर सेवकों ने आकर अपने स्वामी से
पूछा, 'स्वामी, आपने तो अपने खेत में उत्तम बीज रोपे थे! तो फिर ये जंगली
पौधे कहां से आ गए?' 28 "स्वामी ने उत्तर दिया, 'यह काम शत्रु का है.' "तब
सेवकों ने उससे पूछा, 'क्या आप चाहते हैं कि हम इन्हें उखाड़ फेंकें?' 29
"उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि जंगली पौधे उखाड़ते हुए तुम
गेहूं भी उखाड़ डालो. 30 गेहूं तथा जंगली पौधों को कटनी तक साथ साथ
बढ़ने दो. उस समय मैं मज़दूरों को आज्ञा दूंगा, जंगली पौधे इकट्ठा कर उनकी
पुलियां बांध दो कि उन्हें जला दिया जाए किंतु गेहूं मेरे खलिहान में इकट्ठा कर
दो.'" 31 येशु ने उनके सामने एक अन्य दृष्टांत प्रस्तुत किया: "स्वर्ग-राज्य एक
राई के बीज के समान है, जिसे एक व्यक्ति ने अपने खेत में रोप दिया. 32 यह
अन्य सभी बीजों की तुलना में छोटा होता है किंतु जब यह पूरा विकसित हुआ
तब खेत के सभी पौधों से अधिक बड़ा हो गया और फिर वह बढ़कर एक पेड़
में बदल गया कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों में बसेरा करने लगे."
33 येशु ने उनके सामने एक और दृष्टांत प्रस्तुत किया: "स्वर्ग-राज्य खमीर के
समान है, जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन माप आटे में मिला दिया और होते-होते
सारा आटा खमीर बन गया, यद्यपि आटा बड़ी मात्रा में था." 34 येशु ने ये पूरी
शिक्षाएं भीड़ को दृष्टान्तों में दीं. कोई भी शिक्षा ऐसी न थी, जो दृष्टांत में न दी
गई 35 कि भविष्यवक्ता द्वारा की गई यह भविष्यवाणी पूरी हो जाए: मैं दृष्टान्तों
में वार्तालाप करूंगा, मैं वह सब कहूंगा, जो सृष्टि के आरंभ से गुप्त है. 36 जब
येशु भीड़ को छोड़कर घर के भीतर चले गए, उनके शिष्यों ने उनके पास
आकर उनसे विनती की, "गुरुवर, हमें खेत के जंगली बीज का दृष्टांत समझा
दीजिए." 37 येशु ने दृष्टांत की व्याख्या इस प्रकार की, "अच्छे बीज बोनेवाला
मनुष्य का पुत्र है. 38 खेत यह संसार है. अच्छा बीज राज्य की संतान हैं तथा
जंगली बीज शैतान की. 39 शत्रु, जिसने उनको बोया है, शैतान है. कटनी इस
युग का अंत तथा काटने के लिए निर्धारित मज़दूर स्वर्गदूत हैं. **(aiōn g165)**
40 "इसलिये ठीक जिस प्रकार जंगली पौधे कटने के बाद आग में भस्म कर
दिए जाते हैं, युग के अंत में ऐसा ही होगा. **(aiōn g165)** 41 मनुष्य का पुत्र
अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य में पतन के सभी कारणों तथा
कुकर्मियों को इकट्ठा करेंगे और 42 उन्हें आग कुंड में झोंक देंगे, जहां लगातार
रोना तथा दांतों का पीसना होता रहेगा. 43 तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य
के समान चमकेंगे. जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले." 44 "स्वर्ग-राज्य
खेत में छिपाए गए उस खजाने के समान है, जिसे एक व्यक्ति ने पाया और
दोबारा छिपा दिया. आनंद में उसने अपनी सारी संपत्ति बेचकर उस खेत को

मोल ले लिया. 45 “स्वर्ग-राज्य उस व्यापारी के समान है, जो अच्छे मोतियों
की खोज में था. 46 एक कीमती मोती मिल जाने पर उसने अपनी सारी संपत्ति
बेचकर उस मोती को मोल ले लिया. 47 “स्वर्ग-राज्य समुद्र में डाले गए उस
जाल के समान है, जिसमें सभी प्रजातियों की मछलियां आ जाती हैं. 48 जब
वह जाल भर गया और खींचकर तट पर लाया गया, उन्होंने बैठकर अच्छी
मछलियों को टोकरी में इकट्ठा कर लिया तथा निकम्मी को फेंक दिया. 49 युग
के अंत में ऐसा ही होगा. स्वर्गदूत आएंगे और दुष्टों को धर्मियों के मध्य से
निकालकर अलग करेंगे (aiōn g165) 50 तथा उन्हें आग के कुंड में झोंक देंगे,
जहां रोना तथा दांतों का पीसना होता रहेगा. 51 “क्या तुम्हें अब यह सब समझ
आया?” उन्होंने उत्तर दिया. “जी हां, प्रभु.” 52 येशु ने उनसे कहा, “यही
कारण है कि व्यवस्था का हर एक शिक्षक, जो स्वर्ग-राज्य के विषय में प्रशिक्षित
किया जा चुका है, परिवार के प्रधान के समान है, जो अपने भंडार से नई और
पुरानी हर एक वस्तु को निकाल लाता है.” 53 दृष्टान्तों में अपनी शिक्षा दे
चुकने पर येशु उस स्थान से चले गए. 54 तब येशु अपने गृहनगर में आए और
वहां वह यहूदी सभागृह में लोगों को शिक्षा देने लगे. इस पर वे चकित होकर
आपस में कहने लगे, “इस व्यक्ति को यह ज्ञान तथा इन अद्भुत कामों का
सामर्थ्य कैसे प्राप्त हो गया? 55 क्या यह उस बढ़ई का पुत्र नहीं? और क्या
इसकी माता का नाम मरियम नहीं और क्या याकोब, योसेफ़, शिमओन और
यहूदाह इसके भाई नहीं? 56 और क्या इसकी बहनें हमारे बीच नहीं? तब इसे
ये सब कैसे प्राप्त हो गया?” 57 वे येशु के प्रति क्रोध से भर गए. इस पर येशु ने
उनसे कहा, “अपने गृहनगर और परिवार के अलावा भविष्यवक्ता कहीं भी
अपमानित नहीं होता.” 58 लोगों के अविश्वास के कारण येशु ने उस नगर में
अधिक अद्भुत काम नहीं किए.

14 उसी समय हेरोदेस ने, जो देश के एक चौथाई भाग का राजा था, येशु
के विषय में सुना. 2 उसने अपने सेवकों से कहा, “यह बपतिस्मा
देनेवाला योहन है—मरे हुओं में से जी उठा! यही कारण है कि आश्चर्यकर्म करने
का सामर्थ्य इसमें मौजूद है.” 3 उनकी हत्या का कारण थी हेरोदेस के भाई
फ़िलिप्पॉस की पत्नी हेरोदिअस. हेरोदेस ने बपतिस्मा देनेवाले योहन को बंदी
बनाकर कारागार में डाल दिया था 4 क्योंकि बपतिस्मा देनेवाले योहन उसे यह
चेतावनी देते रहते थे, “तुम्हारा हेरोदिअस को अपने पास रखना उचित नहीं
है.” 5 हेरोदेस योहन को समाप्त ही कर देना चाहता था किंतु उसे लोगों का भय
था क्योंकि लोग उन्हें भविष्यवक्ता मानते थे. 6 हेरोदेस के जन्मदिवस समारोह
के अवसर पर हेरोदिअस की पुत्री के नृत्य-प्रदर्शन से हेरोदेस इतना प्रसन्न हुआ
कि 7 उसने उस किशोरी से शपथ खाकर वचन दिया कि वह जो चाहे मांग
सकती है. 8 अपनी माता के संकेत पर उसने कहा, “मुझे एक थाल में, यहीं,
बपतिस्मा देनेवाले योहन का सिर चाहिए.” 9 यद्यपि इस पर हेरोदेस दुःखित
अवश्य हुआ किंतु अपनी शपथ और उपस्थित अतिथियों के कारण उसने
इसकी पूर्ति की आज्ञा दे दी. 10 उसने किसी को कारागार में भेजकर योहन का
सिर कटवा दिया, 11 उसे एक थाल में लाकर उस किशोरी को दे दिया गया
और उसने उसे ले जाकर अपनी माता को दे दिया. 12 योहन के शिष्य आए,
उनके शव को ले गए, उनका अंतिम संस्कार कर दिया तथा येशु को इसके
विषय में सूचित किया. 13 इस समाचार को सुन येशु नाव पर सवार होकर वहां
से एकांत में चले गए. जब लोगों को यह मालूम हुआ, वे नगरों से निकलकर
पैदल ही उनके पीछे चल दिए. 14 तट पर पहुंचने पर येशु ने इस बड़ी भीड़ को
देखा और उनका हृदय करुणा से भर गया. उन्होंने उनमें, जो रोगी थे उनको
स्वस्थ किया. 15 संध्याकाल उनके शिष्य उनके पास आकर कहने लगे, “यह
निर्जन स्थान है और दिन ढल रहा है इसलिये भीड़ को विदा कर दीजिए कि
गांवों में जाकर लोग अपने लिए भोजन-व्यवस्था कर सकें.” 16 किंतु येशु ने
उनसे कहा, “उन्हें विदा करने की कोई ज़रूरत नहीं है—तुम उनके लिए भोजन
की व्यवस्था करो!” 17 उन्होंने येशु को बताया कि यहां उनके पास सिर्फ़ पांच
रोटियां और दो मछलियां हैं. 18 येशु ने उन्हें आज्ञा दी, “उन्हें यहां मेरे पास ले
आओ.” 19 लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा देते हुए येशु ने पांचों रोटियां
और दो मछलियां अपने हाथों में लेकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर भोजन के
लिए धन्यवाद देने के बाद रोटियां तोड़-तोड़ कर शिष्यों को देना प्रारंभ किया
और शिष्यों ने भीड़ को. 20 सभी ने भरपेट खाया. शेष रह गए टुकड़े इकट्ठा
करने पर बारह टोकरे भर गए. 21 वहां जितनों ने भोजन किया था उनमें स्त्रियों
और बालकों को छोड़कर पुरुषों की संख्या ही कोई पांच हज़ार थी. 22 इसके
बाद येशु ने शिष्यों को तुरंत ही नाव में सवार होने के लिए इस उद्देश्य से विवश
किया कि शिष्य उनके पूर्व ही दूसरी ओर पहुंच जाएं, जबकि वह स्वयं भीड़ को
विदा करने लगे. 23 भीड़ को विदा करने के बाद वह अकेले पर्वत पर चले गए
कि वहां जाकर वह एकांत में प्रार्थना करें. यह रात का समय था और वह वहां
अकेले थे. 24 विपरीत दिशा में हवा तथा लहरों के थपेड़े खाकर नाव तट से
बहुत दूर निकल चुकी थी. 25 रात के अंतिम प्रहर में येशु जल सतह पर चलते
हुए उनकी ओर आए. 26 उन्हें जल सतह पर चलते देख शिष्य घबराकर कहने
लगे, “दुष्टात्मा है यह!” और वे भयभीत हो चिल्लाने लगे. 27 इस पर येशु ने
उनसे कहा, “डरो मत. साहस रखो! मैं हूं!” 28 पेतरॉस ने उनसे कहा, “प्रभु!
यदि आप ही हैं तो मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं जल पर चलते हुए आपके पास आ
जाऊं.” 29 “आओ!” येशु ने आज्ञा दी. पेतरॉस नाव से उतरकर जल पर चलते
हुए येशु की ओर बढ़ने लगे 30 किंतु जब उनका ध्यान हवा की गति की ओर
गया तो वह भयभीत हो गए और जल में डूबने लगे. वह चिल्लाए, “प्रभु! मुझे
बचाइए!” 31 येशु ने तुरंत हाथ बढ़ाकर उन्हें थाम लिया और कहा, “अरे,
अल्प विश्वासी! तुमने संदेह क्यों किया?” 32 तब वे दोनों नाव में चढ़ गए और
वायु थम गई. 33 नाव में सवार शिष्यों ने यह कहते हुए येशु की वंदना की,
“सचमुच आप ही परमेश्वर-पुत्र हैं.” 34 झील पार कर वे गन्नेसरत प्रदेश में आ
गए. 35 वहां के निवासियों ने उन्हें पहचान लिया और आस-पास के स्थानों में
संदेश भेज दिया. लोग बीमार व्यक्तियों को उनके पास लाने लगे. 36 वे येशु से
विनती करने लगे, कि वह उन्हें मात्र अपने वस्त्र का छोर ही छू लेने दें. अनेकों ने
उनका वस्त्र छुआ और स्वस्थ हो गए.

15 तब येरूशलेम से कुछ फ़रीसी और शास्त्री येशु के पास आकर कहने लगे,
2 “आपके शिष्य पूर्वजों की परंपराओं का उल्लंघन क्यों करते हैं? वे
भोजन के पहले हाथ नहीं धोया करते.” 3 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “अपनी
परंपराओं की पूर्ति में आप स्वयं परमेश्वर के आदेशों को क्यों तोड़ते हैं? 4
परमेश्वर की आज्ञा है, ‘अपने माता-पिता का सम्मान करो’ और वह, जो माता
या पिता के प्रति बुरे शब्द बोले, उसे मृत्यु दंड दिया जाए. 5 किंतु तुम कहते हो,
‘जो कोई अपने माता-पिता से कहता है, “आपको मुझसे जो कुछ प्राप्त होना
था, वह सब अब परमेश्वर को भेंट किया जा चुका है,” 6 उसे माता-पिता का
सम्मान करना आवश्यक नहीं.’ ऐसा करने के द्वारा अपनी ही परंपराओं को पूरा
करने की फिराक में तुम परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ते हो. 7 अरे पाखंडियों!
भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी तुम्हारे विषय में ठीक ही है: 8 “ये
लोग मात्र अपने होंठों से मेरा सम्मान करते हैं, किंतु उनके हृदय मुझसे बहुत दूर
हैं. 9 व्यर्थ में वे मेरी वंदना करते हैं. उनकी शिक्षा सिर्फ़ मनुष्यों द्वारा बनाए हुए
नियम हैं.” 10 तब येशु ने भीड़ को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “सुनो और
समझो: 11 वह, जो मनुष्य के मुख में प्रवेश करता है, मनुष्य को अशुद्ध नहीं
करता, परंतु उसे अशुद्ध वह करता है, जो उसके मुख से निकलता है.” 12 तब
येशु के शिष्यों ने उनके पास आ उनसे प्रश्न किया, “क्या आप जानते हैं कि
आपके इस वचन से फ़रीसी अपमानित हो रहे हैं?” 13 येशु ने उनसे उत्तर में

कहा, “ऐसा हर एक पौधा, जिसे मेरे पिता ने नहीं रोपा है, उखाड़ दिया जाएगा.
14 उनसे दूर ही रहो. वे तो अंधे मार्गदर्शक हैं. यदि अंधा ही अंधे का मार्गदर्शन
करेगा, तो दोनों ही गड्ढे में गिरेंगे!” 15 पेतरॉस ने येशु से विनती की, “प्रभु हमें
इसका अर्थ समझाइए.” 16 येशु ने कहा, “क्या तुम अब तक समझ नहीं पाए?
17 क्या तुम्हें यह समझ नहीं आया कि जो कुछ मुख में प्रवेश करता है, वह पेट
में जाकर शरीर से बाहर निकल जाता है? 18 किंतु जो कुछ मुख से निकलता है,
उसका स्रोत होता है मनुष्य का हृदय. वही सब है जो मनुष्य को अशुद्ध करता है,
19 क्योंकि हृदय से ही बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, वेश्यागामी, चोरियां, झूठी
गवाही तथा निंदा उपजा करती हैं. 20 ये ही मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, किंतु
हाथ धोए बिना भोजन करने से कोई व्यक्ति अशुद्ध नहीं होता.” 21 तब येशु वहां
से निकलकर सोर और सीदोन प्रदेश में एकांतवास करने लगे. 22 वहां एक
कनानवासी स्त्री आई और पुकार-पुकारकर कहने लगी, “प्रभु! मुझ पर दया
कीजिए. दावीद की संतान! मेरी पुत्री में एक क्रूर दुष्टात्मा समाया हुआ है और
वह बहुत पीड़ित है.” 23 किंतु येशु ने उसकी ओर लेश मात्र भी ध्यान नहीं
दिया. शिष्य आकर उनसे विनती करने लगे, “प्रभु! उसे विदा कर दीजिए. वह
चिल्लाती हुई हमारे पीछे लगी है.” 24 येशु ने उत्तर दिया, “मुझे मात्र इस्राएल
वंश के खोई हुई भेड़ों के पास ही भेजा गया है.” 25 किंतु उस स्त्री ने येशु के
पास आ झुकते हुए उनसे विनती की, “प्रभु! मेरी सहायता कीजिए!” 26 येशु ने
उसे उत्तर दिया, “बालकों को परोसा भोजन उनसे लेकर कुत्तों को देना सही
नहीं!” 27 उस स्त्री ने उत्तर दिया, “सच है, प्रभु, किंतु यह भी तो सच है कि
स्वामी की मेज़ से गिर जाते टुकड़ों से कुत्ते अपना पेट भर लेते हैं.” 28 येशु
कह उठे, “सराहनीय है तुम्हारा विश्वास! वैसा ही हो, जैसा तुम चाहती हो.”
उसी क्षण उसकी पुत्री स्वस्थ हो गई. 29 वहां से येशु गलील झील के तट से होते
हुए पर्वत पर चले गए और वहां बैठ गए. 30 एक बड़ी भीड़ उनके पास आ
गयी. जिनमें लंगड़े, अपंग, अंधे, गूंगे और अन्य रोगी थे. लोगों ने इन्हें येशु के
चरणों में लिटा दिया और येशु ने उन्हें स्वस्थ कर दिया. 31 गूंगों को बोलते,
अपंगों को स्वस्थ होते, लंगड़ों को चलते तथा अंधों को देखते देख भीड़
चकित हो इस्राएल के परमेश्वर का गुणगान करने लगी. 32 येशु ने अपने शिष्यों
को अपने पास बुलाकर कहा, “मुझे इन लोगों से सहानुभूति है क्योंकि ये मेरे
साथ तीन दिन से हैं और इनके पास अब खाने को कुछ नहीं है. मैं इन्हें भूखा ही
विदा करना नहीं चाहता—कहीं ये मार्ग में ही मूर्च्छित न हो जाएं.” 33 शिष्यों
ने कहा, “इस निर्जन स्थान में इस बड़ी भीड़ की तृप्ति के लिए भोजन का प्रबंध
कैसे होगा?” 34 येशु ने उनसे प्रश्न किया, “कितनी रोटियां हैं तुम्हारे पास?”
“सात, और कुछ छोटी मछलियां,” उन्होंने उत्तर दिया. 35 येशु ने भीड़ को
भूमि पर बैठ जाने का निर्देश दिया 36 और स्वयं उन्होंने सातों रोटियां और
मछलियां लेकर उनके लिए परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करने के बाद उन्हें
तोड़ा और शिष्यों को देते गए तथा शिष्य भीड़ को. 37 सभी ने खाया और तृप्त
हुए और शिष्यों ने तोड़ी गई रोटियों के शेष टुकड़ों को इकट्ठा कर सात बड़े
टोकरे भर लिए. 38 वहां जितनों ने भोजन किया था उनमें स्त्रियों और बालकों
के अतिरिक्त पुरुषों ही की संख्या कोई चार हज़ार थी. 39 भीड़ को विदा कर
येशु नाव में सवार होकर मगादान क्षेत्र में आए.

16 तब फ़रीसी और सदूकी येशु के पास आए और उनको परखने के लिए
उन्हें स्वर्ग से कोई अद्भुत चिह्न दिखाने को कहा. 2 येशु ने उनसे कहा,
“सायंकाल होने पर तुम कहते हो कि मौसम अनुकूल रहेगा क्योंकि आकाश में
लालिमा है. 3 इसी प्रकार प्रातःकाल तुम कहते हो कि आज आंधी आएगी
क्योंकि आकाश धूमिल है और आकाश में लालिमा है. तुम आकाश के स्वरूप
को तो पहचान लेते हो किंतु वर्तमान समय के चिह्नों को नहीं! 4 व्यभिचारी और
परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन पीढ़ी चिह्न खोजती है किंतु इसे योनाह के चिह्न के
अतिरिक्त और कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा.” और येशु उन्हें वहीं छोड़कर
चले गए. 5 झील की दूसरी ओर पहुंचने पर शिष्यों ने पाया कि वे अपने
साथ भोजन रखना भूल गए थे. 6 उसी समय येशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए
कहा, “फ़रीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना.” 7 इस पर
शिष्य आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “क्या प्रभु ने यह इसलिये कहा है
कि हम भोजन साथ लाना भूल गए?” 8 येशु उनकी स्थिति से अवगत थे,
इसलिये उन्होंने शिष्यों से कहा, “अरे अल्पविश्वासियो! क्यों इस विवाद में
उलझे हुए हो कि तुम्हारे पास भोजन नहीं है? 9 क्या तुम्हें अब भी समझ नहीं
आया? क्या तुम्हें पांच हज़ार के लिए पांच रोटियां याद नहीं? तुमने वहां शेष
रोटियों से भरे कितने टोकरे उठाए थे? 10 या चार हज़ार के लिए वे सात
रोटियां, तुमने वहां शेष रोटियों से भरे कितने टोकरे उठाए थे? 11 भला कैसे
यह तुम्हारी समझ से परे है कि यहां मैंने भोजन का वर्णन नहीं किया है? परंतु
यह कि मैंने तुम्हें फ़रीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान किया है.”
12 तब उन्हें यह विषय समझ में आया कि येशु रोटी के खमीर का नहीं परंतु
फ़रीसियों और सदूकियों की गलत शिक्षा का वर्णन कर रहे थे. 13 जब येशु
कयसरिया फ़िलिप्पी क्षेत्र में पहुंचे, उन्होंने अपने शिष्यों के सामने यह प्रश्न
रखा: “लोगों के मत में मनुष्य के पुत्र कौन है?” 14 शिष्यों ने उत्तर दिया,
“कुछ के मतानुसार बपतिस्मा देनेवाला योहन, कुछ अन्य के अनुसार एलियाह
और कुछ के अनुसार येरेमियाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक.” 15 तब
येशु ने उनसे प्रश्न किया, “किंतु तुम्हारे मत में मैं कौन हूं?” 16 शिमओन पेतरॉस
ने उत्तर दिया, “आप ही मसीह हैं—जीवित परमेश्वर के पुत्र.” 17 इस पर येशु
ने उनसे कहा, “योनाह के पुत्र शिमओन, धन्य हो तुम! तुम पर इस सच का
प्रकाशन कोई मनुष्य का काम नहीं परंतु मेरे पिता का है, जो स्वर्ग में हैं. 18 मैं
तुम पर एक और सच प्रकट कर रहा हूं: तुम पेतरॉस हो. अपनी कलीसिया का
निर्माण मैं इसी पत्थर पर करूंगा. अधोलोक के फ़ाटक इस पर अधिकार न कर
सकेंगे. (Hadēs g86) 19 तुम्हें मैं स्वर्ग-राज्य की कुंजियां सौंपूंगा. जो कुछ
पृथ्वी पर तुम्हारे द्वारा इकट्ठा किया जाएगा, वह स्वर्ग में भी इकट्ठा होगा और जो
कुछ तुम्हारे द्वारा पृथ्वी पर खुलेगा, वह स्वर्ग में भी खुलेगा.” 20 इसके बाद
येशु ने शिष्यों को सावधान किया कि वे किसी पर भी यह प्रकट न करें कि वही
मसीह हैं. 21 इस समय से येशु ने शिष्यों पर यह स्पष्ट करना प्रारंभ कर दिया
कि उनका येरूशलेम नगर जाना, पुरनियों, प्रधान पुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा
उन्हें यातना दिया जाना, मार डाला जाना तथा तीसरे दिन मरे हुओं में से जीवित
किया जाना अवश्य है. 22 यह सुन पेतरॉस येशु को अलग ले गए और उन्हें
झिड़की देते हुए कहने लगे, “परमेश्वर ऐसा न करें, प्रभु! आपके साथ ऐसा
कभी न होगा.” 23 किंतु येशु पेतरॉस से उन्मुख हो बोले, “दूर हो जा मेरी दृष्टि
से, शैतान! तू मेरे लिए बाधा है! तेरा मन परमेश्वर संबंधित विषयों में नहीं परंतु
मनुष्य संबंधी विषयों में है.” 24 इसके बाद येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “जो
कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपना स्वयं (अहम भाव) को त्याग कर अपना
क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले. 25 जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता
है, वह उसे गंवा देगा तथा जो कोई मेरे लिए अपने प्राणों की हानि उठाता है,
उसे सुरक्षित पाएगा. 26 भला इसका क्या लाभ कि कोई व्यक्ति पूरा संसार तो
प्राप्त करे किंतु अपना प्राण खो दे? या किस वस्तु से मनुष्य अपने प्राण का
अदला-बदली कर सकता है? 27 मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में अपने
स्वर्गदूतों के साथ आएगा, तब वह हर एक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार
प्रतिफल देगा. 28 “सच तो यह है कि यहां कुछ हैं, जो मृत्यु का स्वाद तब तक
नहीं चखेंगे, जब तक वे मनुष्य के पुत्र का उसके राज्य में प्रवेश न देख लें.”

17 इस घटना के छः दिन बाद येशु पेतरॉस, याकोब और उनके भाई योहन
को अन्यों से अलग एक ऊंचे पर्वत पर ले गए. 2 वहां उन्हीं के सामने

येशु का रूपान्तरण हो गया. उनका चेहरा सूर्य के समान अत्यंत चमकीला हो उठा तथा उनके वस्त्र प्रकाश के समान उज्जवल हो उठे. 3 उसी समय उन्हें मोशेह तथा एलियाह येशु से बातें करते हुए दिखाई दिए. 4 यह देख पेतरॉस येशु से बोल उठे, “प्रभु! हमारा यहां होना कैसे आनंद का विषय है! यदि आप कहें तो मैं यहां तीन मंडप बनाऊं—एक आपके लिए, एक मोशेह के लिए तथा एक एलियाह के लिए.” 5 पेतरॉस अभी यह कह ही रहे थे कि एक उजला बादल उन पर छा गया और उसमें से एक शब्द सुनाई दिया, “यह मेरा पुत्र है—मेरा प्रिय, जिसमें मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूं; इसकी आज्ञा का पालन करो.” 6 यह सुन भय के कारण शिष्य भूमि पर मुख के बल गिर पड़े. 7 येशु उनके पास गए, उन्हें स्पर्श किया और उनसे कहा, “उठो! डरो मत!” 8 जब वे उठे, तब वहां उन्हें येशु के अलावा कोई दिखाई न दिया. 9 जब वे पर्वत से उतर रहे थे येशु ने उन्हें कठोर आज्ञा दी, “मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जीवित किए जाने तक इस घटना का वर्णन किसी से न करना.” 10 शिष्यों ने येशु से प्रश्न किया, “शास्त्री ऐसा क्यों कहते हैं कि पहले एलियाह का आना अवश्य है?” 11 येशु ने उत्तर दिया, “एलियाह आएंगे और सब कुछ सुधारेंगे 12 किंतु सच तो यह है कि एलियाह पहले ही आ चुके है, और उन्होंने उन्हें न पहचाना. उन्होंने एलियाह के साथ मनमाना व्यवहार किया. ठीक इसी प्रकार वे मनुष्य के पुत्र को भी यातना देंगे.” 13 इस पर शिष्य समझ गए कि येशु बपतिस्मा देनेवाले योहन का वर्णन कर रहे हैं. 14 जब वे भीड़ के पास आए, एक व्यक्ति येशु के सामने घुटने टेककर उनसे विनती करने लगा, 15 “प्रभु! मेरे पुत्र पर कृपा कीजिए. उसे दौरे पड़ते हैं और वह बहुत कष्ट में है. वह कभी आग में जा गिरता है, तो कभी जल में. 16 मैं उसे आपके शिष्यों के पास लाया था किंतु वे उसे स्वस्थ न कर सके.” 17 येशु कह उठे, “अरे ओ अविश्वासी और बिगड़ी हुई पीढ़ी!” प्रभु येशु ने कहा, “मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, कब तक धीरज रखूंगा? यहां लाओ अपने पुत्र को!” 18 येशु ने उस दुष्टात्मा को फटकारा और वह उस बालक में से निकल गया और बालक उसी क्षण स्वस्थ हो गया. 19 जब येशु अकेले थे तब शिष्य उनके पास आए और उनसे पूछने लगे, “प्रभु! हम उस दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल सके?” 20 “अपने विश्वास की कमी के कारण,” येशु ने उत्तर दिया, “एक सच मैं तुम पर प्रकट कर रहा हूं: यदि तुममें राई के एक बीज के तुल्य भी विश्वास है और तुम इस पर्वत को आज्ञा दो, ‘यहां से हट जा!’ तो यह पर्वत यहां से हट जाएगा—असंभव कुछ भी न होगा. 21 [यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के बाहर नहीं निकाली जा सकती.]” 22 जब वे गलील प्रदेश में इकट्ठा हो रहे थे, येशु ने उनसे कहा, “अब मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में पकड़वा दिया जाएगा. 23 वे उसकी हत्या कर देंगे. तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जीवित किया जाएगा.” शिष्य अत्यंत दुःखी हो गए. 24 जब वे कफ़रनहूम नगर पहुंचे, तब उन्होंने, जो मंदिर के लिए निर्धारित कर इकट्ठा करते थे, पेतरॉस के पास आकर पूछा, “क्या तुम्हारे गुरु निर्धारित कर नहीं देते?” 25 “हां, वह देते हैं,” पेतरॉस ने उन्हें उत्तर दिया. घर में प्रवेश करते हुए येशु ने ही पेतरॉस से प्रश्न किया, “शिमओन, मुझे यह बताओ, राजा किससे कर तथा शुल्क लेते हैं—अपनी संतान से या प्रजा से?” 26 “प्रजा से,” पेतरॉस ने उत्तर दिया. “अर्थात् संतान कर मुक्त है.” येशु ने पेतरॉस से कहा; 27 “फिर भी, ऐसा न हो कि वे हमसे क्रुद्ध हो जाएं, झील में जाओ, और अपना कांटा फेंक, जो पहले मछली पकड में आए उसका मुख खोलना. वहां तुम्हें एक सिक्का प्राप्त होगा. वही सिक्का उन्हें अपनी तथा मेरी ओर से कर-स्वरूप दे देना.”

18 तब शिष्यों ने येशु के पास आकर उनसे पूछा, “स्वर्ग-राज्य में सबसे बड़ा कौन है?” 2 येशु ने एक बालक को पास बुलाकर उसे उनके सामने खड़ा करते हुए कहा, 3 मैं तुम्हें एक सच्चाई बताना चाहता हूं: “जब तक तुम बदलकर बालक के समान न हो जाओ, तुम्हारा प्रवेश स्वर्ग-राज्य में किसी प्रकार न होगा. 4 जो कोई स्वयं को इस बालक के समान विनम्र कर लेगा, वही स्वर्ग-राज्य में सबसे बड़ा है; 5 और जो कोई ऐसे बालक को मेरे नाम में ग्रहण करता है, मुझे ग्रहण करता है. 6 “इसके विपरीत जो कोई इन बालकों के लिए, जो मुझमें विश्वास करते हैं, ठोकर का कारण बनता है, उसके लिए सही यही होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाकर उसे समुद्र की गहराई में डुबो दिया जाए. 7 ठोकर के कारकों के लिए धिक्कार है संसार पर! ठोकरों का होना तो निश्चित है किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर जिसके कारण ठोकर लगती है! 8 यदि तुम्हारा हाथ या तुम्हारा पांव तुम्हारे लिए ठोकर लगने का कारण बनता है तो उसे काटकर फेंक दो. तुम्हारे लिए भला यही होगा कि तुम एक अपंग या लंगड़े के रूप में जीवन में प्रवेश करो—बजाय इसके कि तुम दोनों हाथ और दोनों पांवों के साथ अनंत आग में झोंके जाओ. **(aiōnios g166)** 9 यदि तुम्हारी आंख के कारण तुम्हें ठोकर लगे तो उसे निकाल फेंको. तुम्हारे लिए भला यही होगा कि तुम मात्र एक आंख के साथ जीवन में प्रवेश करो बजाय इसके कि तुम्हारी दोनों आंख हों और तुम नर्क की आग में फेंके जाओ. **(Geenna g1067)** 10 “ध्यान रखो कि तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ दृष्टि से न देखो. मैं तुम्हें बताता हूं कि स्वर्ग में इनके स्वर्गदूत इनके लिए मेरे पिता के सामने विनती करने के उद्देश्य से हमेशा उपस्थित रहते हैं. [11 मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने के उद्देश्य से ही आया है.] 12 “क्या विचार है तुम्हारा? यदि किसी व्यक्ति के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाए तो क्या वह निन्यानवे को वहीं पहाड़ियों पर छोड़ उसको खोजने न निकलेगा, जो भटक गई है? 13 तब सच तो यह है कि यदि वह उसे खोज लेता है, तो वह उन निन्यानवे की बजाय, जो भटकी नहीं थी, उस एक के लिए कहीं अधिक उल्लसित होता है, जो भटक गई थी. 14 इसलिये तुम्हारे स्वर्गीय पिता नहीं चाहते कि इन छोटों में से एक भी छोटे का नाश हो. 15 “यदि कोई सहविश्वासी तुम्हारे विरुद्ध कोई अपराध करे तो जाकर उस पर उसका दोष प्रकट कर दो, किंतु यह मात्र तुम दोनों के मध्य ही हो. यदि वह तुम्हारी सुन ले तो तुमने उसे पुनः प्राप्त कर लिया. 16 किंतु यदि वह तुम्हारी न माने तब अपने साथ एक या दो को उसके पास ले जाओ कि एक बात की पुष्टि के लिए दो या तीन गवाहों की ज़रूरत होती है. 17 यदि वह उनका भी इनकार करे तब कलीसिया पर यह सच प्रकट कर दिया जाए. यदि वह कलीसिया की भी न माने तब उसे गैर-यहूदी और समाज से बहिष्कृत व्यक्ति समझो. 18 “तुम पर मैं यह सच प्रकाशित कर रहा हूं कि जो कुछ पृथ्वी पर तुम्हारे द्वारा इकट्ठा किया जाएगा, वह स्वर्ग में भी इकट्ठा होगा और जो कुछ तुम्हारे द्वारा पृथ्वी पर खुलेगा, वह स्वर्ग में भी खोला जाएगा. 19 “मैं तुम्हें दोबारा याद दिला रहा हूं: यदि तुममें से दो व्यक्ति पृथ्वी पर किसी विषय पर एक मत होकर विनती करें, वह मेरे पिता के द्वारा, जो स्वर्ग में हैं, पूरा किया जाएगा. 20 यह इसलिये कि जहां दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम में इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके साथ हूं.” 21 तब पेतरॉस ने येशु के पास आकर उनसे प्रश्न किया, “प्रभु! कितनी बार मेरा भाई मेरे विरुद्ध अपराध करे और मैं उसे क्षमा करूं—सात बार?” 22 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तो तुमसे यह तो नहीं कहूंगा सात बार तक परंतु सत्तर के सात गुणा तक. 23 “इसलिये स्वर्ग-राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती है, जिसने अपने दासों से हिसाब-किताब लेना चाहा. 24 जब उसने प्रारंभ किया तब उसके सामने वह दास प्रस्तुत किया गया, जो उसके लाखों तालंतों का कर्ज़दार था, किंतु 25 यह मालूम होने पर कि उसके पास कर्ज चुकाने का कोई साधन नहीं है, स्वामी ने आज्ञा दी कि उसे उसकी पत्नी, बालकों तथा सारे संपत्ति सहित बेच दिया जाए कि कर्ज़ चुकाया जा सके. 26 “इस पर वह दास अपने स्वामी के सामने भूमि पर दंडवत हो उससे विनती करने लगा, ‘कृपया थोड़ा

धीरज रखें, मैं सब कुछ चुका दूंगा.’ 27 उसके स्वामी ने दया से भरकर उसे
मुक्त करके उसका सारा कर्ज़ क्षमा कर दिया. 28 “उस मुक्त हुए दास ने बाहर
जाते ही उस दास को जा पकड़ा जिसने उससे सौ दीनार कर्ज़ लिए थे. उसने उसे
पकड़कर उसका गला घोंटते हुए कहा, ‘मुझसे जो कर्ज़ लिया है, उसे लौटा
दे!’ 29 “वह दास इस दास के पांवों पर गिर पड़ा और विनती करने लगा,
‘थोड़ा धीरज रखो. मैं सब लौटा दूंगा.’ 30 “किंतु उस दास ने उसकी विनती पर
ज़रा भी ध्यान न दिया और उसे ले जाकर कारागार में डाल दिया कि जब तक
वह कर्ज़ न लौटाए, वहीं रहे. 31 इसलिये जब अन्य दासों ने यह सब देखा, वे
अत्यंत उदास हो गए और आकर स्वामी को इसकी सूचना दी. 32 “तब स्वामी
ने उस दास को बुलवाकर उससे कहा, ‘अरे दुष्ट! मैंने तो तेरा सारा ही कर्ज़ क्षमा
कर दिया क्योंकि तूने मुझसे इसके लिए विनती की थी. 33 क्या यह सही न था
कि तू भी अपने साथी पर कृपा करता जिस प्रकार मैंने तुझ पर कृपा की?’ 34
क्रुद्ध स्वामी ने उस दास को यातना देने के लिए चुने हुए अधिकारियों के हाथ में
सौंप दिया कि जब तक वह सारा कर्ज़ चुका न दे, वहीं रहे. 35 “मेरे स्वर्गिक
पिता भी तुम्हारे साथ यही करेंगे यदि तुममें से हर एक अपने भाई को हृदय से
क्षमा नहीं करता.”

19 अपना कथन समाप्त करने के बाद येशु गलील प्रदेश से निकलकर
यहूदिया प्रदेश के उस क्षेत्र में आ गए, जो यरदन नदी के पार है. 2 वहां
एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली और येशु ने रोगियों को स्वस्थ किया. 3 कुछ
फ़रीसी येशु को परखने के उद्देश्य से उनके पास आए तथा उनसे प्रश्न किया,
“क्या पत्नी से तलाक के लिए पति द्वारा प्रस्तुत कोई भी कारण वैध कहा जा
सकता है?” 4 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या तुमने पढ़ा नहीं कि वह, जिन्होंने
उनकी सृष्टि की, उन्होंने प्रारंभ ही से उन्हें नर और नारी बनाया 5 और कहा,
‘इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा तथा
वे दोनों एक देह होंगे.’ 6 परिणामस्वरूप अब वे दो नहीं परंतु एक शरीर हैं.
इसलिये जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने जोड़ा है, उन्हें कोई मनुष्य अलग न करे.” 7
यह सुन उन्होंने येशु से पूछा, “तो फिर मोशेह की व्यवस्था में यह प्रबंध क्यों है
कि तलाक पत्र देकर पत्नी को छोड़ दिया जाए?” 8 येशु ने उन पर यह सच स्पष्ट
किया, “तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण ही मोशेह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी
पत्नी से तलाक की अनुमति दी थी. प्रारंभ ही से यह प्रबंध नहीं था. 9 तुमसे मेरा
कहना है कि जो कोई व्यभिचार के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से अपनी पत्नी
से तलाक कर लेता है और अन्य स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता
है.” 10 शिष्यों ने येशु से कहा, “यदि पति-पत्नी का संबंध ऐसा है तब तो उत्तम
यही होगा कि विवाह किया ही न जाए.” 11 येशु ने इसके उत्तर में कहा, “यह
स्थिति सब पुरुषों के लिए स्वीकार नहीं हो सकती—अतिरिक्त उनके, जिन्हें
परमेश्वर ने ऐसा बनाया है, 12 कुछ नपुंसक हैं, जो माता के गर्भ से ही ऐसे जन्मे
हैं; कुछ हैं, जिन्हें मनुष्यों ने ऐसा बना दिया है तथा कुछ ने स्वर्ग-राज्य के लिए
स्वयं को ऐसा बना लिया है. जो इसे समझ सकता है, समझ ले.” 13 कुछ लोग
बालकों को येशु के पास लाए कि येशु उन पर हाथ रखकर उनके लिए प्रार्थना
करें, मगर शिष्यों ने उन लोगों को डांटा. 14 यह सुन येशु ने उनसे कहा,
“बालकों को यहां आने दो, उन्हें मेरे पास आने से मत रोको क्योंकि स्वर्ग-
राज्य ऐसों का ही है.” 15 यह कहते हुए येशु ने बालकों पर हाथ रखा, इसके
बाद येशु वहां से आगे चले गए. 16 एक व्यक्ति ने आकर येशु से प्रश्न किया,
“गुरुवर, अनंत काल का जीवन प्राप्त करने के लिए मैं कौन सा अच्छा काम
करूं?” येशु ने उसे उत्तर दिया. (aiōnios g166) 17 “तुम मुझसे क्यों पूछते हो
कि अच्छा क्या है? उत्तम तो मात्र एक ही हैं. परंतु यदि तुम जीवन में प्रवेश की
कामना करते ही हो तो आदेशों का पालन करो.” 18 “कौन से?” उसने येशु से
प्रश्न किया. उन्होंने उसे उत्तर दिया, “हत्या मत करो; व्यभिचार मत करो; चोरी
मत करो; झूठी गवाही मत दो; 19 अपने माता-पिता का सम्मान करो तथा तुम
अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो.” 20 उस युवक ने
येशु को उत्तर दिया, “मैं तो इनका पालन करता रहा हूं; फिर अब भी क्या कमी
है मुझमें?” 21 येशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि तुम सिद्ध बनना चाहते हो तो
अपनी संपत्ति को बेचकर उस राशि को निर्धनों में बांट दो और आओ, मेरे पीछे
हो लो—धन तुम्हें स्वर्ग में प्राप्त होगा.” 22 यह सुनकर वह युवक दुःखी हो
लौट गया क्योंकि वह बहुत धन का स्वामी था. 23 अपने शिष्यों से उन्मुख हो
येशु ने कहा, “मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं; किसी धनी व्यक्ति का
स्वर्ग-राज्य में प्रवेश कठिन है. 24 वास्तव में परमेश्वर के राज्य में एक धनी के
प्रवेश करने से एक ऊंट का सुई के छेद में से पार हो जाना सहज है.” 25 यह
सुनकर शिष्य चकित हो येशु से पूछने लगे, “तो उद्धार कौन पाएगा?” 26 येशु
ने उनकी ओर एकटक देखते हुए उन्हें उत्तर दिया, “मनुष्य के लिए तो यह
असंभव है किंतु परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है.” 27 इस पर पेतरॉस येशु
से बोले, “देखिए, हम तो सब कुछ त्याग कर आपके पीछे हो लिए हैं. हमारा
पुरस्कार क्या होगा?” 28 येशु ने सभी शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा,
“यह सच है कि उस समय, जब मनुष्य का पुत्र नये युग में अपने वैभवशाली
सिंहासन पर विराजमान होगा, तुम भी, जो मेरे चेले बन गए हो, इस्राएल के
बारह गोत्रों का न्याय करते हुए बारह सिंहासनों पर विराजमान होगे. 29 हर
एक, जिसने मेरे लिए घर, भाई-बहन, माता-पिता, संतान या खेतों का त्याग
किया है, इनसे कई गुणा प्राप्त करेगा और वह अनंत काल के जीवन का वारिस
होगा (aiōnios g166) 30 किंतु अनेक, जो पहले हैं, वे अंतिम होंगे तथा जो
अंतिम हैं, वे पहले.

20 “स्वर्ग-राज्य दाख की बारी के उस स्वामी के समान है, जो सबेरे अपने
उद्यान के लिए मज़दूर लाने निकला. 2 जब वह मज़दूरों से एक दीनार
रोज़ की मज़दूरी पर सहमत हो गया, उसने उन्हें दाख की बारी में काम करने
भेज दिया. 3 “सुबह नौ बजे जब वह दोबारा नगर चौक से जा रहा था, उसने
वहां कुछ मज़दूरों को बेकार खड़े पाया. 4 उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर
मेरे दाख की बारी में काम करो. जो कुछ सही होगा, मैं तुम्हें दूंगा.’ 5 तब वे
चले गए. “वह दोबारा बारह बजे और तीन बजे नगर चौक में गया और ऐसा ही
किया. 6 लगभग शाम पांच बजे वह दोबारा वहां गया और कुछ अन्यों को वहां
खड़े पाया. उसने उनसे प्रश्न किया, ‘तुम सारे दिन यहां बेकार क्यों खड़े रहे?’ 7
“उन्होंने उसे उत्तर दिया, ‘इसलिये कि किसी ने हमें काम नहीं दिया.’ “उसने
उनसे कहा, ‘तुम भी मेरे दाख की बारी में चले जाओ.’ 8 “सांझ होने पर दाख
की बारी के स्वामी ने प्रबंधक को आज्ञा दी, ‘अंत में आए मज़दूरों से प्रारंभ
करते हुए सबसे पहले काम पर लगाए गए मज़दूरों को उनकी मज़दूरी दे दो.’ 9
“उन मज़दूरों को, जो ग्यारहवें घंटे काम पर लगाए गए थे, एक-एक दीनार
मिला. 10 इस प्रकार सबसे पहले आए मज़दूरों ने सोचा कि उन्हें अधिक
मज़दूरी प्राप्त होगी किंतु उन्हें भी एक-एक दीनार ही मिला. 11 जब उन्होंने इसे
प्राप्त किया तब वे भूस्वामी के खिलाफ बड़बड़ाने लगे, 12 ‘अंत में आए इन
मज़दूरों ने मात्र एक ही घंटा काम किया है और आपने उन्हें हमारे बराबर ला
दिया, जबकि हमने दिन की तेज धूप में कठोर परिश्रम किया.’ 13 “बारी के
मालिक ने उन्हें उत्तर दिया, ‘मित्र मैं तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं कर रहा.
क्या हम एक दीनार मज़दूरी पर सहमत न हुए थे? 14 जो कुछ तुम्हारा है उसे
स्वीकार कर लो और जाओ. मेरी इच्छा यही है कि अंत में काम पर आए
मज़दूर को उतना ही दूं जितना तुम्हें. 15 क्या यह न्याय संगत नहीं कि मैं अपनी
संपत्ति के साथ वह करूं जो मैं चाहता हूं? क्या मेरा उदार होना तुम्हारी आंखों में
खटक रहा है?’ 16 “इसलिये वे, जो अंतिम हैं पहले होंगे तथा जो पहले हैं, वे
अंतिम.” 17 जब येशु येरूशलेम नगर जाने पर थे, उन्होंने मात्र अपने बारह

शिष्यों को अपने साथ लिया. मार्ग में येशु ने उनसे कहा, 18 “यह समझ लो कि
हम येरूशलेम नगर जा रहे हैं, जहां मनुष्य के पुत्र को पकड़वाया जाएगा, प्रधान
पुरोहितों तथा शास्त्रियों के हाथों में सौंप दिया जाएगा और वे उसे मृत्यु दंड के
योग्य घोषित करेंगे. 19 इसके लिए मनुष्य के पुत्र को गैर-यहूदियों के हाथों में
सौंप दिया जाएगा कि वे उसका ठट्ठा करें, उसे कोड़े लगवाएं और उसे क्रूस
पर चढ़ाएं किंतु वह तीसरे दिन मरे हुओं में से जीवित किया जाएगा.” 20
ज़ेबेदियॉस की पत्नी अपने पुत्रों के साथ येशु के पास आईं तथा येशु के सामने
झुककर उनसे एक विनती करनी चाही. 21 येशु ने उनसे पूछा, “आप क्या
चाहती हैं?” उन्होंने येशु को उत्तर दिया, “यह आज्ञा दे दीजिए कि आपके
राज्य में मेरे ये दोनों पुत्र, एक आपके दायें तथा दूसरा आपके बायें बैठे.” 22
येशु ने दोनों भाइयों से उन्मुख हो कहा, “तुम समझ नहीं रहे कि तुम क्या मांग
रहे हो! क्या तुममें उस प्याले को पीने की क्षमता है, जिसे मैं पीने पर हूं?” “हां,
प्रभु,” उन्होंने उत्तर दिया. 23 इस पर येशु ने उनसे कहा, “सचमुच मेरा प्याला
तो तुम पियोगे, किंतु किसी को अपने दायें या बायें बैठाना मेरा अधिकार नहीं
है. यह उनके लिए है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा तैयार किया गया है.” 24
यह सुन शेष दस शिष्य इन दोनों भाइयों पर नाराज़ हो गए; 25 किंतु येशु ने
उन सभी को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “वे, जो इस संसार में शासक
हैं, अपने लोगों पर प्रभुता करते हैं तथा उनके बड़े अधिकारी उन पर अपना
अधिकार दिखाया करते हैं. 26 तुममें ऐसा नहीं है, तुममें जो महान बनने की
इच्छा रखता है, वह तुम्हारा सेवक बने, 27 तथा तुममें जो कोई श्रेष्ठ होना चाहता
है, वह तुम्हारा दास हो. 28 ठीक जैसे मनुष्य का पुत्र यहां इसलिये नहीं आया
कि अपनी सेवा करवाए, परंतु इसलिये कि सेवा करे, और अनेकों की छुड़ौती
के लिए अपना जीवन बलिदान कर दे.” 29 जब वे येरीख़ो नगर से बाहर
निकल ही रहे थे, एक बड़ी भीड़ उनके साथ हो ली. 30 वहां मार्ग के किनारे दो
अंधे व्यक्ति बैठे हुए थे. जब उन्हें यह अहसास हुआ कि येशु वहां से जा रहे हैं,
वे पुकार-पुकारकर विनती करने लगे, “प्रभु! दावीद की संतान! हम पर कृपा
कीजिए!” 31 भीड़ ने उन्हें झिड़कते हुए शांत रहने की आज्ञा दी, किंतु वे और
भी अधिक ऊंचे शब्द में पुकारने लगे, “प्रभु! दावीद की संतान! हम पर कृपा
कीजिए!” 32 येशु रुक गए, उन्हें पास बुलाया और उनसे प्रश्न किया, “क्या
चाहते हो तुम? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?” 33 उन्होंने उत्तर दिया, “प्रभु! हम
चाहते हैं कि हम देखने लगें.” 34 तरस खाकर येशु ने उनकी आंखें छुई. तुरंत
ही वे देखने लगे और वे येशु के पीछे हो लिए.

21 जब वे येरूशलेम नगर के पास पहुंचे और ज़ैतून पर्वत पर बैथफ़गे नामक
स्थान पर आए, येशु ने दो चेलों को इस आज्ञा के साथ आगे भेजा, 2
“सामने गांव में जाओ. वहां पहुंचते ही तुम्हें एक गधी बंधी हुई दिखाई देगी.
उसके साथ उसका बच्चा भी होगा. उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ. 3 यदि
कोई तुमसे इस विषय में प्रश्न करे तो तुम उसे यह उत्तर देना, ‘प्रभु को इनकी
ज़रूरत है.’ वह व्यक्ति तुम्हें आज्ञा दे देगा.” 4 यह घटना भविष्यवक्ता द्वारा की
गई इस भविष्यवाणी की पूर्ति थी: 5 ज़ियोन की बेटी को यह सूचना दो: तुम्हारे
पास तुम्हारा राजा आ रहा है; वह नम्र है और वह गधे पर बैठा हुआ है, हां, गधे
के बच्चे पर, बोझ ढोनेवाले के बच्चे पर. 6 शिष्यों ने येशु की आज्ञा का
पूरी तरह पालन किया 7 और वे गधी और उसके बच्चे को ले आए, उन पर
अपने बाहरी कपड़े बिछा दिए और येशु उन कपड़ो पर बैठ गए. 8 भीड़ में से
अधिकांश ने मार्ग पर अपने बाहरी कपड़े बिछा दिए. कुछ अन्यों ने पेड़ों की
टहनियां काटकर मार्ग पर बिछा दीं. 9 येशु के आगे-आगे जाती हुई तथा पीछे-
पीछे आती हुई भीड़ ये नारे लगा रही थी “दावीद के पुत्र की होशान्ना!” “धन्य
है, वह जो प्रभु के नाम में आ रहे हैं.” “सबसे ऊंचे स्थान में होशान्ना!” 10 जब
येशु ने येरूशलेम नगर में प्रवेश किया, पूरे नगर में हलचल मच गई. उनके
आश्चर्य का विषय था: “कौन है यह?” 11 भीड़ उन्हें उत्तर दे रही थी, “यही
तो हैं वह भविष्यद्वक्ता—गलील के नाज़रेथ के येशु.” 12 येशु ने मंदिर में प्रवेश
किया और उन सभी को मंदिर से बाहर निकाल दिया, जो वहां लेनदेन कर रहे
थे. साथ ही येशु ने साहूकारों की चौकियां उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के
आसनों को पलट दिया. 13 येशु ने उन्हें फटकारते हुए कहा, “पवित्र शास्त्र का
लेख है: मेरा मंदिर प्रार्थना का घर कहलाएगा किंतु तुम इसे डाकुओं की खोह
बना रहे हो.” 14 मंदिर में ही, येशु के पास अंधे और लंगड़े आए और येशु ने
उन्हें स्वस्थ किया. 15 जब प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों ने देखा कि येशु ने
अद्भुत काम किए हैं और बच्चे मंदिर में, “दावीद की संतान की होशान्ना” के
नारे लगा रहे हैं, तो वे अत्यंत गुस्सा हुए. 16 और येशु से बोले, “तुम सुन रहे हो
न, ये बच्चे क्या नारे लगा रहे हैं?” येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “हां, क्या आपने
पवित्र शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा, बालकों और दूध पीते शिशुओं के मुख से आपने
अपने लिए अपार स्तुति का प्रबंध किया है?” 17 येशु उन्हें छोड़कर नगर के
बाहर चले गए तथा आराम के लिए बैथनियाह नामक गांव में ठहर गए. 18 भोर
को जब वह नगर में लौटकर आ रहे थे, उन्हें भूख लगी. 19 मार्ग के किनारे
एक अंजीर का पेड़ देखकर वह उसके पास गए किंतु उन्हें उसमें पत्तियों के
अलावा कुछ नहीं मिला. इस पर येशु ने उस पेड़ को शाप दिया, “अब से तुझमें
कभी कोई फल नहीं लगेगा.” तुरंत ही वह पेड़ मुरझा गया. **(aiōn g165)** 20
यह देख शिष्य हैरान रह गए. उन्होंने प्रश्न किया, “अंजीर का यह पेड़ तुरंत ही
कैसे मुरझा गया?” 21 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम इस सच्चाई को समझ
लो: यदि तुम्हें विश्वास हो—संदेह तनिक भी न हो—तो तुम न केवल वह करोगे,
जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया परंतु तुम यदि इस पर्वत को भी आज्ञा
दोगे, ‘उखड़ जा और समुद्र में जा गिर!’ तो यह भी हो जाएगा. 22 प्रार्थना में
विश्वास से तुम जो भी विनती करोगे, तुम उसे प्राप्त करोगे.” 23 येशु ने मंदिर में
प्रवेश किया और जब वह वहां शिक्षा दे ही रहे थे, प्रधान पुरोहित और पुरनिए
उनके पास आए और उनसे पूछा, “किस अधिकार से तुम ये सब कर रहे हो?
कौन है वह, जिसने तुम्हें इसका अधिकार दिया है?” 24 येशु ने इसके उत्तर में
कहा, “मैं भी आपसे एक प्रश्न करूंगा. यदि आप मुझे उसका उत्तर देंगे तो मैं भी
आपके इस प्रश्न का उत्तर दूंगा कि मैं किस अधिकार से यह सब करता हूं: 25
योहन का बपतिस्मा किसकी ओर से था—स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर
से?” इस पर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “यदि हम कहते हैं, ‘स्वर्ग
की ओर से,’ तो वह हमसे कहेगा, ‘तब आपने योहन में विश्वास क्यों नहीं
किया?’ 26 किंतु यदि हम कहते हैं, ‘मनुष्यों की ओर से,’ तब हमें भीड़ से भय
है; क्योंकि सभी योहन को भविष्यवक्ता मानते हैं.” 27 उन्होंने आकर येशु से
कहा, “आपके प्रश्न का उत्तर हमें मालूम नहीं.” येशु ने भी उन्हें उत्तर दिया, “मैं
भी आपको नहीं बताऊंगा कि मैं किस अधिकार से ये सब करता हूं. 28 “इस
विषय में क्या विचार है आपका? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे. उसने बड़े पुत्र से
कहा, ‘हे पुत्र, आज जाकर दाख की बारी का काम देख लेना.’ 29 “उसने
उत्तर दिया, ‘नहीं जाऊंगा.’ परंतु कुछ समय के बाद उसे पछतावा हुआ और
वह दाख की बारी चला गया. 30 “पिता दूसरे पुत्र के पास गया और उससे भी
यही कहा. उसने उत्तर दिया, ‘जी हां, अवश्य.’ किंतु वह गया नहीं. 31 “यह
बताइए कि किस पुत्र ने अपने पिता की इच्छा पूरी की?” उन्होंने उत्तर दिया:
“बड़े पुत्र ने.” येशु ने उनसे कहा, “सच यह है कि समाज से निकाले लोग
तथा वेश्याएं आप लोगों से पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर जाएंगे. 32
बपतिस्मा देनेवाले योहन आपको धर्म का मार्ग दिखाते हुए आए, किंतु आप
लोगों ने उनका विश्वास ही न किया. किंतु समाज के बहिष्कृतों और वेश्याओं
ने उनका विश्वास किया. यह सब देखने पर भी आपने उनमें विश्वास के लिए
पश्चाताप न किया. 33 “एक और दृष्टांत सुनिए: एक गृहस्वामी था, जिसने एक

दाख की बारी लगायी, चारदीवारी खड़ी की, रसकुंड बनाया तथा मचान भी.
इसके बाद वह दाख की बारी किसानों को पट्टे पर देकर यात्रा पर चला गया.
34 जब उपज तैयार होने का समय आया, तब उसने किसानों के पास अपने दास
भेजे कि वे उनसे उपज का पहले से तय किया हुआ भाग इकट्टा करें. 35
“किसानों ने उसके दासों को पकड़ा, उनमें से एक की पिटाई की, एक की
हत्या तथा एक का पथराव. 36 अब गृहस्वामी ने पहले से अधिक संख्या में
दास भेजे. इन दासों के साथ भी किसानों ने वही सब किया. 37 इस पर यह
सोचकर कि वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे, उस गृहस्वामी ने अपने पुत्र को
किसानों के पास भेजा. 38 “किंतु जब किसानों ने पुत्र को देखा तो आपस में
विचार किया, ‘सुनो! यह तो वारिस है, चलो, इसकी हत्या कर दें और पूरी
संपत्ति हड़प लें.’ 39 इसलिये उन्होंने पुत्र को पकड़ा, उसे बारी के बाहर ले गए
और उसकी हत्या कर दी. 40 “इसलिये यह बताइए, जब दाख की बारी का
स्वामी वहां आएगा, इन किसानों का क्या करेगा?” 41 उन्होंने उत्तर दिया,
“वह उन दुष्टों का सर्वनाश कर देगा तथा दाख की बारी ऐसे किसानों को पट्टे
पर दे देगा, जो उसे सही समय पर उपज का भाग देंगे.” 42 येशु ने उनसे कहा,
“क्या आपने पवित्र शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा: “‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने
अनुपयोगी घोषित कर दिया था, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया. यह प्रभु
की ओर से हुआ और यह हमारी दृष्टि में अनूठा है’? 43 “इसलिये मैं आप सब
पर यह सत्य प्रकाशित कर रहा हूं: परमेश्वर का राज्य आपसे छीन लिया जाएगा
तथा उस राष्ट्र को सौंप दिया जाएगा, जो उपयुक्त फल लाएगा. 44 वह, जो इस
पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा किंतु जिस किसी पर यह पत्थर
गिरेगा उसे कुचलकर चूर्ण बना देगा.” 45 प्रधान पुरोहित और फ़रीसी यह दृष्टांत
सुनकर यह समझ गए कि प्रभु येशु ने उन पर ही यह दृष्टांत कहा है. 46 इसलिये
उन्होंने येशु को पकड़ने की कोशिश तो की, किंतु उन्हें भीड़ का भय था,
क्योंकि लोग येशु को भविष्यवक्ता मानते थे.

22 येशु फिर से उन्हें दृष्टान्तों में शिक्षा देने लगे. उन्होंने कहा, 2 “स्वर्ग-
राज्य की तुलना एक राजा से की जा सकती है, जिसने अपने पुत्र के
विवाह के उपलक्ष्य में एक भोज का आयोजन किया. 3 राजा ने अपने सेवकों
को आमंत्रित अतिथियों को बुला लाने के लिए भेजा किंतु उन्होंने आना न
चाहा. 4 “राजा ने अन्य सेवकों को यह कहकर भेजा, ‘आमंत्रित अतिथियों से
कहो, “मैंने अपने भोज की सारी तैयारी कर ली है. मोटे-ताजे पशुओं को काटे
हैं, अच्छे व्यंजन बनाए जा चुके हैं. सब कुछ तैयार है, भोज में पधारिए.”’ 5
“किंतु आमंत्रितों ने इस पर भी कोई ध्यान नहीं दिया परंतु वे सब अपने कामों
में लगे रहे—एक अपने खेत में, दूसरा अपने व्यापार में; 6 शेष ने उन सेवकों
को पकड़कर उनके साथ गलत व्यवहार किया और फिर उनकी हत्या कर
डाली. 7 गुस्से में आकर राजा ने वहां अपनी सेना भेज दी कि वह उन हत्यारों
का नाश करे और उनके नगर को भस्म कर दे. 8 “तब राजा ने अपने सेवकों
को आज्ञा दी, ‘विवाह-भोज तो तैयार है किंतु जिन्हें आमंत्रित किया गया था, वे
इसके योग्य न थे; 9 इसलिये अब तुम प्रधान चौकों पर चले जाओ और वहां
तुम्हें जितने भी व्यक्ति मिलें, उन्हें विवाह-भोज में आमंत्रित करो.’ 10 उन
सेवकों ने जाकर रास्ते पर जितने व्यक्ति मिले, उन्हें इकट्ठा कर लिया—योग्य-
अयोग्य सभी को, जिससे विवाहोत्सव का भोजनकक्ष आमंत्रितों से भर गया. 11
“जब राजा उस कक्ष में उनसे भेंट करने आया, उसने वहां एक ऐसे व्यक्ति को
देखा, जिसने विवाहोत्सव के लिए उपयुक्त वस्त्र नहीं पहने थे. 12 राजा ने उससे
प्रश्न किया, ‘मित्र, विवाहोत्सव के लिए सही वस्त्र पहने बिना तुम यहां कैसे आ
गए?’ उसके पास इसका कोई उत्तर न था. 13 “तब राजा ने सेवकों को आज्ञा
दी, ‘इसके हाथ-पांव बांधकर बाहर अंधकार में फेंक दो, जहां बहुत रोना और
दांत पीसना होता रहेगा.’ 14 “बुलाए हुए तो बहुत हैं, किंतु चुने हुए थोड़े.” 15
तब फ़रीसियों ने जाकर येशु को उन्हीं के शब्दों में फंसाने की योजना की. 16
उन्होंने येशु के पास हेरोदेस समर्थकों को इस प्रश्न के साथ भेजा: “गुरुवर, हमें
यह तो मालूम है कि आप सच्चे हैं, तथा परमेश्वर के राज्य की शिक्षा पूरी
सच्चाई में ही देते हैं. आप में कहीं कोई भेद-भाव नहीं है, और आप किसी
मनुष्य के प्रभाव में नहीं आते. 17 इसलिये हमें बताइए कि आपके विचार
से कयसर को कर भुगतान करना उचित है या नहीं?” 18 येशु को उनकी
कुटिलता का अहसास हो गया. येशु ने कहा, “अरे पाखंडियों! मुझे परखने का
प्रयास कर रहे हो! 19 कर के लिए निर्धारित मुद्रा मुझे दिखाओ.” उन्होंने येशु
को दीनार की एक मुद्रा दिखाई. 20 येशु ने उनसे कहा, “इस पर यह आकृति
तथा मुद्रण किसका है?” 21 “कयसर का,” उन्होंने उत्तर दिया. इस पर येशु ने
उनसे कहा, “तो फिर जो कयसर का है, कयसर को दो और जो परमेश्वर का है,
परमेश्वर को.” 22 इस पर वे चकित होकर येशु को छोड़कर वहां से चले
गए. 23 उसी समय सदूकी संप्रदाय के कुछ लोग, जिनकी यह मान्यता है कि
पुनरुत्थान जैसा कुछ नहीं होता, येशु के पास आए और उनसे प्रश्न करने लगे,
24 “गुरुवर, मोशेह की शिक्षा है: यदि कोई पुरुष निःसंतान हो और उसकी मृत्यु
हो जाए तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह करके अपने भाई के लिए संतान
पैदा करे. 25 इसी विषय में एक घटना इस प्रकार है: एक परिवार में सात भाई
थे. पहले का विवाह हुआ किंतु उसकी मृत्यु हो गई. इसलिये कि वह निःसंतान
था वह अपनी पत्नी को अपने भाई के लिए छोड़ गया. 26 ऐसा ही दूसरे, तीसरे
भाई से लेकर सातवें भाई तक होता रहा. 27 अंत में उस स्त्री की भी मृत्यु हो गई.
28 अब यह बताइए कि पुनरुत्थान पर वह किसकी पत्नी कहलाएगी? क्योंकि
उसका विवाह तो उन सबके साथ हुआ था.” 29 येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
“तुम लोग बड़ी भूल कर रहे हो: तुमने न तो पवित्र शास्त्र के लेखों को समझा
है और न ही परमेश्वर के सामर्थ्य को. 30 पुनरुत्थान में न तो लोग वैवाहिक
अवस्था में होंगे और न ही वहां उनके विवाह होंगे. वहां तो वे सभी स्वर्ग के
दूतों के समान होंगे. 31 मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या आपने पढ़ा
नहीं कि परमेश्वर ने आपसे यह कहा था: 32 ‘मैं ही अब्राहाम का परमेश्वर,
यित्सहाक का परमेश्वर तथा याकोब का परमेश्वर हूं’? वह मरे हुओं के नहीं
परंतु जीवितों के परमेश्वर हैं.” 33 भीड़ उनकी शिक्षा को सुनकर चकित
थी. 34 जब फ़रीसियों को यह मालूम हुआ कि येशु ने सदूकियों का मुंह बंद
कर दिया है, वे स्वयं एकजुट हो गए. 35 उनमें से एक व्यवस्थापक ने येशु
को परखने की मंशा से उनके सामने यह प्रश्न रखा: 36 “गुरुवर, व्यवस्था के
अनुसार सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है?” 37 येशु ने उसे उत्तर दिया, “तुम प्रभु,
अपने परमेश्वर से, अपने सारे हृदय, अपने सारे प्राण तथा अपनी सारी समझ से
प्रेम करो. 38 यही प्रमुख तथा सबसे बड़ी आज्ञा है. 39 ऐसी ही दूसरी सबसे
बड़ी आज्ञा है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो.’
40 इन्हीं दो आदेशों पर सारी व्यवस्था और भविष्यवाणियां आधारित हैं.” 41
वहां इकट्ठा फ़रीसियों के सामने येशु ने यह प्रश्न रखा, 42 “मसीह के विषय में
क्या मत है आपका—किसकी संतान है वह?” “दावीद की,” उन्होंने उत्तर
दिया. 43 तब येशु ने उनसे आगे पूछा, “तब फिर पवित्र आत्मा से भरकर दावीद
उसे ‘प्रभु’ कहकर संबोधित क्यों करते हैं? दावीद ने कहा है 44 “‘प्रभु ने मेरे
प्रभु से कहा, “मेरी दायीं ओर बैठे रहो, जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे
अधीन न कर दूं.”’ 45 यदि दावीद मसीह को प्रभु कहकर संबोधित करते हैं तो
वह उनकी संतान कैसे हुए?” 46 इसके उत्तर में न तो फ़रीसी कुछ कह सके
और न ही इसके बाद किसी को भी उनसे कोई प्रश्न करने का साहस हुआ.

23 इसके बाद येशु ने भीड़ और शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, 2
“फ़रीसियों और शास्त्रियों ने स्वयं को मोशेह के पद पर आसीन कर रखा
है. 3 इसलिये उनकी सभी शिक्षाओं के अनुरूप स्वभाव तो रखो किंतु उनके

द्वारा किए जा रहे कामों को बिलकुल न मानना क्योंकि वे स्वयं ही वह नहीं
करते, जो वह कहते हैं. 4 वे लोगों के कंधों पर भारी बोझ लाद तो देते हैं किंतु
उसे हटाने के लिए स्वयं एक उंगली तक नहीं लगाना चाहते. 5 “वे सभी काम
लोगों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से ही करते हैं. वे उन पट्टियों को
चौड़ा करते हैं, तथा वे ऊपरी वस्त्र की झालर को भी बढ़ाते जाते हैं. 6 दावतों में
मुख्य स्थान, यहूदी सभागृहों में मुख्य आसन, 7 नगर चौक में लोगों के द्वारा
सम्मानपूर्ण अभिनंदन तथा रब्बी कहलाना ही इन्हें प्रिय है. 8 “किंतु तुम स्वयं
के लिए रब्बी कहलाना स्वीकार न करना क्योंकि तुम्हारा शिक्षक मात्र एक
हैं और तुम सब आपस में भाई हो. 9 पृथ्वी पर तुम किसी को अपना पिता
न कहना. क्योंकि तुम्हारा पिता मात्र एक हैं, जो स्वर्ग में हैं 10 और न तुम
स्वयं के लिए स्वामी संबोधन स्वीकार करना क्योंकि तुम्हारा स्वामी मात्र एक
हैं—मसीह. 11 अवश्य है कि तुममें जो बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक हो.
12 जो कोई स्वयं को बड़ा करता है, उसे छोटा बना दिया जाएगा और वह,
जो स्वयं को छोटा बनाता है, बड़ा किया जाएगा.” 13 “धिक्कार है तुम पर
पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! जनसाधारण के लिए तो तुम स्वर्ग-राज्य के द्वार
बंद कर देते हो. तुम न तो स्वयं इसमें प्रवेश करते हो और न ही किसी अन्य को
प्रवेश करने देते हो. [14 धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम
लम्बी-लम्बी प्रार्थनाओं का ढोंग करते हुए विधवाओं की संपत्ति निगल जाते
हो. इसलिये अधिक होगा तुम्हारा दंड.] 15 “धिक्कार है तुम पर पाखंडी,
फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम एक व्यक्ति को अपने मत में लाने के लिए लम्बी-लम्बी
जल और थल यात्राएं करते हो. उसके तुम्हारे मत में सम्मिलित हो जाने पर तुम
उसे नर्क की आग के दंड का दो गुणा अधिकारी बना देते हो. (Geenna g1067)
16 “धिक्कार है तुम पर अंधे अगुओं! तुम जो यह शिक्षा देते हो, ‘यदि कोई
मंदिर की शपथ लेता है तो उसका कोई महत्व नहीं किंतु यदि कोई मंदिर के
सोने की शपथ लेता है तो उसके लिए प्रतिज्ञा पूरी करना ज़रूरी हो जाता है.’ 17
अरे मूर्खो और अंधो! अधिक महत्वपूर्ण क्या है—सोना या वह मंदिर जिससे
वह सोना पवित्र होता है? 18 इसी प्रकार तुम कहते हो, ‘यदि कोई वेदी की
शपथ लेता है तो उसका कोई महत्व नहीं किंतु यदि कोई वेदी पर चढ़ाई भेंट की
शपथ लेता है तो उसके लिए अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना ज़रूरी है.’ 19 अरे
अंधो! अधिक महत्वपूर्ण क्या है, वेदी पर चढ़ाई भेंट या वेदी जिससे भेंट पवित्र
होती है? 20 इसलिये जो कोई वेदी की शपथ लेता है, वह वेदी तथा वेदी पर
समर्पित भेंट दोनों ही की शपथ लेता है. 21 जो कोई मंदिर की शपथ लेता है,
वह मंदिर तथा उनकी, जो इसमें रहते हैं, दोनों ही की शपथ लेता है. 22 इसी
प्रकार जो कोई स्वर्ग की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की तथा
उनकी जो उस पर बैठा हैं, दोनों ही की शपथ लेता है. 23 “धिक्कार है तुम पर
पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम पुदीना, सौंफ़ तथा ज़ीरा का दसवां अंश तो
अवश्य देते हो किंतु व्यवस्था की कहीं अधिक गंभीर बातों का अर्थात् न्याय,
कृपा तथा विश्वास की उपेक्षा करते हो. यही वे बातें हैं जिनका पूरा करना
आवश्यक था—दूसरों की अनदेखी किए बिना. 24 अंधे अगुओं! तुम मक्खी
तो छान कर निकाल फेंकते हो किंतु ऊंट निगल जाते हो! 25 “धिक्कार है तुम
पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! प्याले तथा बर्तन को बाहर से तो तुम अच्छी
तरह से साफ़ करते हो किंतु अंदर लालच तथा असंयम से भरा है. 26 अंधे
फ़रीसियो! पहले प्याले तथा बर्तन को भीतर से साफ़ करो कि वे बाहर से भी
साफ़ हो जाएं. 27 “धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम कब्रों
के समान हो, जो बाहर से तो सजायी संवारी जाती हैं किंतु भीतर मरे हुए व्यक्ति
की हड्डियां तथा सब प्रकार की गंदगी भरी होती है. 28 तुम भी बाहर से तो
मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो किंतु तुम्हारे अंदर कपट तथा अधर्म भरा हुआ
है. 29 “धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम भविष्यद्वक्ताओं
की कब्रें संवारते हो तथा धर्मी व्यक्तियों के स्मारक को सजाते हो और कहते हो
30 ‘यदि हम अपने पूर्वजों के समय में होते, हम इन भविष्यद्वक्ताओं की हत्या
के साझी न होते.’ 31 यह कहकर तुम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाही देते हो कि
तुम उनकी संतान हो जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी. 32 ठीक है!
भरते जाओ अपने पूर्वजों के पापों का घड़ा. 33 “अरे सांपो! विषधर की
संतान! कैसे बचोगे तुम नर्क-दण्ड से? (Geenna g1067) 34 इसलिये मेरा कहना
सुनो: मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता, ज्ञानी और पवित्र शास्त्र के शिक्षक भेज रहा हूं.
उनमें से कुछ की तो तुम हत्या करोगे, कुछ को तुम क्रूस पर चढ़ाओगे तथा कुछ
को तुम यहूदी सभागृह में कोड़े लगाओगे और नगर-नगर यातनाएं दोगे 35 कि
तुम पर सभी धर्मी व्यक्तियों के पृथ्वी पर बहाए लहू का दोष आ पड़े—धर्मी
हाबिल के लहू से लेकर बैरेखाया के पुत्र ज़करयाह के लहू तक का, जिसका
वध तुमने मंदिर और वेदी के बीच किया. 36 सच तो यह है कि इन सबका दंड
इसी पीढ़ी पर आ पड़ेगा. 37 “येरूशलेम! ओ येरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं की
हत्या करता तथा उनका पथराव करता है, जिन्हें तेरे लिए भेजा जाता है. कितनी
बार मैंने यह प्रयास किया कि तेरी संतान को इकट्ठा कर एकजुट करूं, जैसे मुर्गी
अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है किंतु तूने न चाहा. 38
इसलिये अब यह समझ ले कि तेरा घर तेरे लिए उजाड़ छोड़ा जा रहा है. 39 मैं
तुझे बताए देता हूं कि इसके बाद तू मुझे तब तक नहीं देखेगा जब तक तू यह
नारा न लगाए. ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम में आ रहा है!’”

24 येशु मंदिर से निकलकर जा रहे थे कि शिष्यों ने उनका ध्यान मंदिर
परिसर की ओर आकर्षित किया. 2 येशु ने उनसे कहा, “तुम यह मंदिर
परिसर देख रहे हो? सच तो यह है कि एक दिन इन भवनों का एक भी पत्थर
दूसरे पर रखा न दिखेगा—हर एक पत्थर ज़मीन पर बिखरा होगा.” 3 येशु
ज़ैतून पर्वत पर बैठे हुए थे. इस एकांत में उनके शिष्य उनके पास आए और
उनसे यह प्रश्न किया, “गुरुवर, हमें यह बताइए कि ये घटनाएं कब घटित होंगी,
आपके आने तथा जगत के अंत का चिह्न क्या होगा?” (aiōn g165) 4 येशु ने
उन्हें उत्तर दिया, “इस विषय में सावधान रहना कि कोई तुम्हें भरमाने न पाए 5
क्योंकि मेरे नाम में अनेक यह दावा करते आएंगे, ‘मैं ही मसीह हूं’ और इसके
द्वारा अनेकों को भरमा देंगे. 6 तुम युद्धों के विषय में तो सुनोगे ही साथ ही उनके
विषय में उड़ते-उड़ते समाचार भी. ध्यान रहे कि तुम इससे घबरा न जाओ
क्योंकि इनका होना अवश्य है—किंतु इसे ही अंत न समझ लेना. 7 राष्ट्र-राष्ट्र के
तथा, राज्य-राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा. हर जगह अकाल पड़ेंगे तथा भूकंप
आएंगे, 8 किंतु ये सब घटनाएं प्रसववेदना का प्रारंभ मात्र होंगी. 9 “तब वे तुम्हें
क्लेश देने के लिए पकड़वाएंगे और तुम्हारी हत्या कर देंगे क्योंकि मेरे कारण
तुम सभी देशों की घृणा के पात्र बन जाओगे. 10 इसी समय अनेक विश्वास से
हट जाएंगे तथा त्याग देंगे, वे एक दूसरे से विश्वासघात करेंगे, वे एक दूसरे से
घृणा करने लगेंगे. 11 अनेक झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे. वे अनेकों को
भरमा देंगे. 12 अधर्म के बढ़ने के कारण अधिकांश का प्रेम ठंडा पड़ता जाएगा;
13 किंतु उद्धार उसी का होगा, जो अंतिम क्षण तक विश्वास में स्थिर रहेगा. 14
पूरे जगत में सारे राष्ट्रों के लिए प्रमाण के तौर पर राज्य के विषय में सुसमाचार
का प्रचार किया जाएगा और तब जगत का अंत हो जाएगा. 15 “इसलिये जब
तुम उस विनाशकारी घृणित वस्तु को, जिसकी चर्चा भविष्यवक्ता दानिएल ने
की थी, पवित्र स्थान में खड़ा देखो—पाठक ध्यान दे— 16 तो वे, जो यहूदिया
प्रदेश में हों पर्वतों पर भागकर जाएं, 17 वह, जो घर की छत पर हो, घर में से
सामान लेने नीचे न आए. 18 वह, जो खेत में हो, अपना कपड़ा लेने पीछे न
लौटे. 19 दयनीय होगी गर्भवती और शिशुओं को दूध पिलाती स्त्रियों की स्थिति!
20 प्रार्थनारत रहो, ऐसा न हो कि तुम्हें जाड़े या शब्बाथ पर भागना पड़े 21
क्योंकि वह महाक्लेश का समय होगा—ऐसा, जो न तो सृष्टि के प्रारंभ से आज

तक देखा गया, न ही इसके बाद दोबारा देखा जाएगा. 22 “यदि यह आनेवाले
दिन घटाए न जाते, कोई भी जीवित न रहता. कुछ चुने हुए विशेष लोगों के
लिए यह अवधि घटा दी जाएगी. 23 उस समय यदि कोई आकर तुम्हें सूचित
करे, ‘सुनो-सुनो, मसीह यहां हैं!’ या, ‘वह वहां हैं!’ तो विश्वास न करना. 24
क्योंकि अनेक झूठे मसीह तथा अनेक झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे. वे
प्रभावशाली चमत्कार चिह्न दिखाएंगे तथा अद्भुत काम करेंगे कि यदि संभव हुआ
तो परमेश्वर द्वारा चुने हुओं को भी भटका दें. 25 ध्यान दो कि मैंने पहले ही
तुम्हें इसकी चेतावनी दे दी है. 26 “कि यदि वे तुम्हारे पास आकर यह कहें,
‘देखो, देखो; वह बंजर भूमि में हैं,’ तो उसे देखने चले न जाना; या यदि वे यह
कहें, ‘आओ, देखो, वह कोठरी में हैं,’ तो उनका विश्वास न करना.” 27 जैसे
बिजली पूर्व दिशा से चमकती हुई पश्चिम दिशा तक चली जाती है, ठीक ऐसा
ही होगा मनुष्य के पुत्र का आगमन. 28 गिद्ध वहीं इकट्ठा होते हैं, जहां शव होता
है. 29 “उन दिनों के क्लेश के तुरंत बाद “‘सूर्य अंधियारा हो जाएगा और
चंद्रमा का प्रकाश न रहेगा. आकाश से तारे गिर जाएंगे. आकाश की शक्तियां
हिलायी जाएंगी.’ 30 “तब आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिह्न प्रकट होगा.
पृथ्वी के सभी गोत्र शोक से भर जाएंगे और वे मनुष्य के पुत्र को आकाश में
बादलों पर सामर्थ्य और प्रताप के साथ आता हुआ देखेंगे. 31 मनुष्य का पुत्र
अपने स्वर्गदूतों को तुरही के ऊंचे शब्द के साथ भेजेगा, जो चारों दिशाओं से,
आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक जाकर उनके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे.
32 “अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो: जब उसमें कोंपलें फूटने लगती हैं, पत्तियां
निकलने लगती हैं तो तुम जान लेते हो कि गर्मी का समय पास है. 33 इसी
प्रकार तुम जब भी इन सभी घटनाओं को होते देखो तो समझ लेना कि वह पास
हैं—परंतु द्वार पर ही हैं. 34 सच्चाई तो यह है कि इन घटनाओं के हुए बिना इस
युग का अंत नहीं होगा. 35 आकाश तथा पृथ्वी खत्म हो जाएंगे किंतु मेरे कहे
हुए शब्द कभी नहीं. 36 “वैसे उस दिन तथा उस समय के विषय में किसी को
भी मालूम नहीं है—न स्वर्ग के दूतों को और न ही पुत्र को—परंतु मात्र पिता
को ही यह मालूम है. 37 “ठीक नोहा के दिनों जैसा होगा मनुष्य के पुत्र का
आगमन: 38 जल-बाढ़ के पहले उन दिनों में लोग तब तक खाते-पीते रहे और
उनमें विवाह होते रहे जब तक नोहा ने जहाज़ में प्रवेश न किया. 39 लोग तब
तक कुछ न समझे जब तक बाढ़ ने आकर उन्हें डुबो न दिया. ऐसा ही होगा
मनुष्य के पुत्र का आगमन. 40 उस समय दो व्यक्ति खेत में कार्य कर रहे होंगे;
एक उठा लिया जाएगा, दूसरा रह जाएगा. 41 दो स्त्रियां चक्की पर अनाज
पीस रही होंगी; एक उठा ली जाएगी, दूसरी रह जाएगी. 42 “इसलिये हमेशा
सावधान रहो क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि तुम्हारे प्रभु का आगमन किस दिन
होगा. 43 याद रखो कि यदि घर के स्वामी को यह पता हो कि चोर रात में किस
समय आएगा तो वह सावधान हो जाएगा तथा घर में सेंध लगने न देगा. 44
तुम्हारा भी इसी प्रकार सावधान रहना ज़रूरी है क्योंकि मनुष्य के पुत्र का
आगमन ऐसे समय पर होगा जिसकी तुम कल्पना तक नहीं कर सकते. 45
“कौन है वह विश्वासयोग्य और समझदार सेवक, जिसे घर का मालिक अपने
परिवार की ज़िम्मेदारी सौंप दे कि वह समय के अनुसार सबके लिए भोजन-
व्यवस्था करे? 46 धन्य है वह सेवक, जिसे घर का स्वामी लौटने पर यही करते
हुए पाए. 47 सच्चाई तो यह है कि घर का स्वामी उस सेवक के हाथों में अपनी
सारी संपत्ति की ज़िम्मेदारी सौंप देगा. 48 किंतु यदि वह सेवक बुरा हो और
अपने मन में यह विचार करने लगे: ‘स्वामी के लौटने में तो बड़ी देरी हो रही है’
49 और वह सहसेवकों के साथ मार-पीट आरंभ कर दे, पियक्कड़ों की संगति
में जाकर खाए-पिए और 50 उसका स्वामी एक ऐसे दिन लौटेगा, जिसकी उसने
कल्पना ही न की थी और एक ऐसे क्षण में, जिसके विषय में उसे मालूम ही न
था, 51 तो स्वामी उसके टुकड़े-टुकड़े कर उसकी गिनती कपट करनेवालों में
कर देगा जहां हमेशा रोना तथा दांत पीसना होता रहेगा.

25 “स्वर्ग-राज्य उस द्वारचार के समान है जिसमें दस कुंवारी युवतियां
अपने-अपने दीप लेकर द्वारचार के लिए निकलीं. 2 उनमें से पांच तो
मूर्ख थी तथा पांच समझदार. 3 मूर्ख युवतियों ने अपने साथ अपने दीप तो लिए
किंतु तेल नहीं; 4 परंतु समझदार युवतियों ने अपने दीपों के साथ तेल के बर्तन
भी रख लिए. 5 वर के पहुंचने में देर होने के कारण उन्हें नींद आने लगी और
वे सो गई. 6 “आधी रात को यह धूमधाम का शब्द सुनाई दिया: ‘वर पहुंच
रहा है! उससे भेंट के लिए बाहर आ जाओ.’ 7 “सभी युवतियां उठीं और
अपने-अपने दीप तैयार करने लगीं. 8 मूर्ख युवतियों ने समझदार युवतियों से
विनती की, ‘अपने तेल में से कुछ हमें भी दे दो—हमारे दीप बुझे जा रहे हैं.’ 9
“किंतु समझदार युवतियों ने उन्हें उत्तर दिया, ‘हमारे और तुम्हारे दोनों के
लिए तो तेल पूरा नहीं होगा. भला तो यह होगा कि तुम जाकर व्यापारियों से
अपने लिए तेल मोल ले लो.’ 10 “जब वे तेल लेने जा ही रही थी कि वर आ
पहुंचा और वे युवतियां, जो तैयार थी, वर के साथ विवाह के भवन में चली गईं
और द्वार बंद कर दिया गया. 11 “कुछ समय बाद वे अन्य युवतियां भी आ
गईं और विनती करने लगीं, ‘श्रीमान! हमारे लिए द्वार खोल दीजिए.’ 12
“किंतु उसने उन्हें उत्तर दिया, ‘सच तो यह है कि मैं तुम्हें जानता ही नहीं.’ 13
“इसलिये इसी प्रकार तुम भी हमेशा जागते तथा सचेत रहो क्योंकि तुम न तो
उस दिन को जानते हो और न ही उस घड़ी को. 14 “स्वर्ग-राज्य उस व्यक्ति
के समान भी है, जो एक यात्रा के लिए तैयार था, जिसने हर एक सेवक को
उसकी योग्यता के अनुरूप संपत्ति सौंप दी. 15 एक को पांच तालन्त, एक को
दो तथा एक को एक. इसके बाद वह अपनी यात्रा पर चला गया. 16 जिस
सेवक को पांच तालन्त दिए गए थे, उसने तुरंत उस धन का व्यापार में लेनदेन
किया, जिससे उसने पांच तालन्त और कमाए. 17 इसी प्रकार उस सेवक ने भी,
जिसे दो तालन्त दिए गए थे, दो और कमाए. 18 किंतु जिसे एक तालन्त दिया
गया था, उसने जाकर भूमि में गड्ढा खोदा और अपने स्वामी की दी हुई वह
संपत्ति वहां छिपा दी. 19 “बड़े दिनों के बाद उनके स्वामी ने लौटकर उनसे
हिसाब लिया. 20 जिसे पांच तालन्त दिए गए थे, उसने अपने साथ पांच तालन्त
और लाकर स्वामी से कहा, ‘महोदय, आपने मुझे पांच तालन्त दिए थे. यह
देखिए, मैंने इनसे पांच और कमाए हैं.’ 21 “उसके स्वामी ने उससे कहा,
‘शाबाश, मेरे योग्य तथा विश्वसनीय सेवक! तुम थोड़े धन में विश्वसनीय पाए
गए इसलिये मैं तुम्हें अनेक ज़िम्मेदारियां सौंपूंगा. अपने स्वामी के आनंद में
सहभागी हो जाओ.’ 22 “वह सेवक भी आया, जिसे दो तालन्त दिए गए थे.
उसने स्वामी से कहा, ‘महोदय, आपने मुझे दो तालन्त दिए थे. यह देखिए, मैंने
दो और कमाए हैं!’ 23 “उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘शाबाश, मेरे योग्य तथा
विश्वसनीय सेवक! तुम थोड़े धन में विश्वसनीय पाए गए इसलिये मैं तुम्हें अनेक
ज़िम्मेदारियां सौंपूंगा. अपने स्वामी के आनंद में सहभागी हो जाओ.’ 24 “तब
वह सेवक भी उपस्थित हुआ, जिसे एक तालन्त दिया गया था. उसने स्वामी से
कहा, ‘महोदय, मैं जानता था कि आप एक कठोर व्यक्ति हैं. आप वहां से
फसल काटते हैं, जहां आपने बोया ही नहीं तथा वहां से फसल इकट्ठा करते हैं,
जहां आपने बीज डाला ही नहीं. 25 इसलिये भय के कारण मैंने आपकी दी हुई
निधि भूमि में छिपा दी. देख लीजिए, जो आपका था, वह मैं आपको लौटा रहा
हूं.’ 26 “स्वामी ने उसे उत्तर दिया, ‘अरे ओ दुष्ट, और आलसी सेवक! जब तू
यह जानता ही था कि मैं वहां से फसल काटता हूं, जहां मैंने बोया ही न था तथा
वहां से फसल इकट्ठा करता हूं, जहां मैंने बीज बिखेरा ही नहीं? 27 तब तो तुझे
मेरी संपत्ति महाजनों के पास रख देनी थी कि मेरे लौटने पर मुझे मेरी संपत्ति
ब्याज सहित प्राप्त हो जाती.’ 28 “‘इसलिये इससे यह तालन्त लेकर उसे दे दो,

जिसके पास अब दस तालन्त हैं.' 29 यह इसलिये कि हर एक को, जिसके पास है, और दिया जाएगा और वह धनी हो जाएगा; किंतु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है. 30 'इस निकम्मे सेवक को बाहर अंधकार में फेंक दो जहां हमेशा रोना और दांत पीसना होता रहेगा.'" 31 "जब मनुष्य के पुत्र का आगमन अपने प्रताप में होगा और सभी स्वर्गदूत उसके साथ होंगे, तब वह अपने महिमा के सिंहासन पर विराजमान हो जाएगा 32 और उसके सामने सभी राष्ट्र इकट्ठा किए जाएंगे. वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से. 33 वह भेड़ों को अपनी दायीं ओर स्थान देगा तथा बकरियों को अपनी बायीं ओर. 34 "तब राजा अपनी दायीं ओर के समूह की तरफ देखकर कहेगा, 'मेरे पिता के कृपापात्रों! उस राज्य के उत्तराधिकार को स्वीकार करो, जो तुम्हारे लिए सृष्टि की स्थापना के समय से तैयार किया गया है. 35 इसलिये कि जब मैं भूखा था, तुमने मुझे भोजन दिया; जब मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी दिया; मैं परदेशी था, तुमने मुझे अपने यहां स्थान दिया; 36 मुझे वस्त्रों की ज़रूरत थी, तुमने मुझे वस्त्र दिए; मैं जब रोगी था, तुम मुझे देखने आए; मैं बंदीगृह में था, तुम मुझसे भेंट करने आए.' 37 "तब धर्मी इसके उत्तर में कहेंगे, 'प्रभु! हमने कब आपको भूखा पाया और भोजन दिया; प्यासा देखा और पानी दिया; 38 कब हमने आपको परदेशी पाया और आपको अपने यहां स्थान दिया; आपको वस्त्रों की ज़रूरत में पाया और वस्त्र दिए; 39 हमने आपको कब रोगी या बंदीगृह में देखा और आपसे भेंट करने आए?' 40 "राजा उन्हें उत्तर देगा, 'सच तो यह है कि जो कुछ तुमने मेरे इन लोगों में से किसी एक के लिए किया—यहां तक कि छोटे से छोटे भाई बहिनों के लिए भी—वह तुमने मेरे लिए किया.' 41 "तब राजा अपने बायें पक्ष के समूह से उन्मुख हो कहेगा, 'मुझसे दूर हो जाओ, शापितो! अनंत आग में जा पड़ो, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है; (aiōnios g166) 42 क्योंकि मैं जब भूखा था, तुमने मुझे खाने को न दिया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी न दिया; 43 मैं परदेशी था, तुमने अपने यहां मुझे स्थान न दिया; मुझे वस्त्रों की ज़रूरत थी, तुमने मुझे वस्त्र न दिए; मैं रोगी और बंदीगृह में था, तुम मुझसे भेंट करने न आए.' 44 "तब वे भी उत्तर देंगे, 'प्रभु, भला कब हमने आपको भूखा, प्यासा, परदेशी, वस्त्रों की ज़रूरत में या रोगी तथा बंदीगृह में देखा और आपकी सुधि न ली?' 45 "तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'सच तो यह है कि जो कुछ तुमने मेरे इन लोगों में से किसी एक के लिए—यहां तक कि छोटे से छोटे तक के लिए नहीं किया—वह तुमने मेरे लिए नहीं किया.' 46 "ये सभी अनंत दंड में भेजे जाएंगे, किंतु धर्मी अनंत काल के जीवन में प्रवेश करेंगे." (aiōnios g166)

26 इस रहस्य के खुलने के बाद येशु ने शिष्यों को देखकर कहा, 2 "यह तो तुम्हें मालूम ही है कि दो दिन बाद फ़सह उत्सव है. इस समय मनुष्य के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया जाएगा." 3 दूसरी ओर प्रधान पुरोहित और वरिष्ठ नागरिक कायाफ़स नामक महापुरोहित के घर के आंगन में इकट्ठा हुए. 4 उन्होंने मिलकर येशु को छलपूर्वक पकड़कर उनकी हत्या कर देने का विचार किया. 5 वे यह विचार भी कर रहे थे: "यह फ़सह उत्सव के अवसर पर न किया जाए—कहीं इससे लोगों में बलवा न भड़क उठे." 6 जब येशु बैथनियाह गांव में शिमओन के घर पर थे—वही शिमओन, जिसे पहले कोढ़ रोग हुआ था, 7 एक स्त्री उनके पास संगमरमर के बर्तन में कीमती इत्र लेकर आई. उसे उसने भोजन के लिए बैठे येशु के सिर पर उंडेल दिया. 8 यह देख शिष्य गुस्सा हो कहने लगे, "यह फिज़ूलखर्ची किस लिए? 9 यह इत्र तो ऊंचे दाम पर बिक सकता था और प्राप्त धनराशि गरीबों में बांटी जा सकती थी." 10 इस विषय को जानकर येशु ने उन्हें झिड़कते हुए कहा, "क्यों सता रहे हो इस स्त्री को? इसने मेरे हित में एक सराहनीय काम किया है. 11 निर्धन तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे किंतु मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूंगा. 12 मुझे मेरे अंतिम संस्कार के लिए तैयार करने के लिए इसने यह इत्र मेरे शरीर पर उंडेला है. 13 सच तो यह है कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, इस स्त्री के इस कार्य का वर्णन भी इसकी याद में किया जाएगा." 14 तब कारियोतवासी यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान पुरोहितों के पास गया 15 और उनसे विचार-विमर्श करने लगा, "यदि मैं येशु को पकड़वा दूं तो आप मुझे क्या देंगे?" उन्होंने उसे गिन कर चांदी के तीस सिक्के दे दिए. 16 उस समय से वह येशु को पकड़वाने के लिए सही अवसर की ताक में रहने लगा. 17 अखमीरी रोटी के उत्सव के पहले दिन शिष्यों ने येशु के पास आकर पूछा, "हम आपके लिए फ़सह भोज की तैयारी कहां करें? आप क्या चाहते हैं?" 18 येशु ने उन्हें निर्देश दिया, "नगर में एक व्यक्ति विशेष के पास जाना और उससे कहना, 'गुरुवर ने कहा है, मेरा समय पास है. मुझे अपने शिष्यों के साथ आपके घर में फ़सह उत्सव मनाना है.'" 19 शिष्यों ने वैसा ही किया, जैसा येशु ने निर्देश दिया था और उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया. 20 संध्या समय येशु अपने बारह शिष्यों के साथ बैठे हुए थे. 21 जब वे भोजन कर रहे थे येशु ने उनसे कहा, "मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं: तुम्हीं में एक है, जो मेरे साथ धोखा करेगा." 22 बहुत उदास मन से हर एक शिष्य येशु से पूछने लगा, "प्रभु, वह मैं तो नहीं हूं?" 23 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "जिसने मेरे साथ कटोरे में अपना कौर डुबोया था, वही है, जो मेरे साथ धोखा करेगा. 24 मनुष्य के पुत्र को तो जैसा कि उसके विषय में पवित्र शास्त्र में लिखा है, जाना ही है; किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर, जो मनुष्य के पुत्र के साथ धोखा करेगा. उस व्यक्ति के लिए अच्छा तो यही होता कि उसका जन्म ही न होता." 25 यहूदाह ने, जो येशु के साथ धोखा कर रहा था, उनसे प्रश्न किया, "रब्बी, वह मैं तो नहीं हूं न?" येशु ने उसे उत्तर दिया, "यह तुमने स्वयं ही कह दिया है." 26 जब वे भोजन के लिए बैठे, येशु ने रोटी ली, उसके लिए आशीष विनती की, उसे तोड़ी और शिष्यों को देते हुए कहा, "यह लो, खाओ; यह मेरा शरीर है." 27 तब येशु ने प्याला लिया, उसके लिए धन्यवाद दिया तथा शिष्यों को देते हुए कहा, "तुम सब इसमें से पियो. 28 यह वाचा का मेरा लहू है जो अनेकों की पाप क्षमा के लिए उंडेला जा रहा है. 29 मैं यह बताना चाहता हूं कि मैं दाख का रस उस दिन तक नहीं पिऊंगा जब तक मैं अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ दाखरस दोबारा नहीं पिऊं." 30 एक भक्ति गीत गाने के बाद वे ज़ैतून पर्वत पर चले गए. 31 येशु ने शिष्यों से कहा, "आज रात तुम सभी मेरा साथ छोड़कर चले जाओगे, जैसा कि इस संबंध में पवित्र शास्त्र का लेख है: "'मैं चरवाहे का संहार करूंगा और, झुंड की सभी भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी.' 32 हां, पुनर्जीवित किए जाने के बाद मैं तुमसे पहले गलील प्रदेश पहुंच जाऊंगा." 33 किंतु पेतरॉस ने येशु से कहा, "सभी शिष्य आपका साथ छोड़कर जाएं तो जाएं किंतु मैं आपका साथ कभी न छोड़ूंगा." 34 येशु ने उनसे कहा, "सच्चाई तो यह है कि आज ही रात में, इसके पहले कि मुर्ग बांग दे, तुम मुझे तीन बार नकार चुके होंगे." 35 पेतरॉस ने दोबारा उनसे कहा, "मुझे आपके साथ यदि मृत्यु को भी गले लगाना पड़े तो भी मैं आपको नहीं नकारूंगा." अन्य सभी शिष्यों ने यही दोहराया. 36 तब येशु उनके साथ गेतसेमनी नामक स्थान पर पहुंचे. उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "तुम यहीं बैठो जब तक मैं वहां जाकर प्रार्थना करता हूं." 37 फिर वह पेतरॉस और ज़ेबेदियॉस के दोनों पुत्रों को अपने साथ ले आगे चले गए. वहां येशु अत्यंत उदास और व्याकुल होने लगे. 38 उन्होंने शिष्यों से कहा, "मेरे प्राण इतने अधिक उदास हैं, मानो मेरी मृत्यु हो रही हो. मेरे साथ तुम भी जागते रहो." 39 तब येशु उनसे थोड़ी ही दूर जा मुख के बल गिरकर प्रार्थना करने लगे. उन्होंने परमेश्वर से निवेदन किया, "मेरे पिता, यदि संभव हो तो यह प्याला मुझसे टल जाए; फिर भी मेरी नहीं परंतु आपकी इच्छा के अनुरूप हो." 40 जब वह अपने शिष्यों के पास लौटे तो उन्हें सोया हुआ देख उन्होंने पेतरॉस

से कहा, "अच्छा, तुम मेरे साथ एक घंटा भी सजग न रह सके! 41 सजग रहो,
प्रार्थना करते रहो, ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में पड़ जाओ. हां, निःसंदेह आत्मा
तो तैयार है किंतु शरीर दुर्बल." 42 तब येशु ने दूसरी बार जाकर प्रार्थना की,
"मेरे पिता, यदि यह प्याला मेरे पिए बिना मुझसे टल नहीं सकता तो आप ही
की इच्छा पूरी हो." 43 वह दोबारा लौटकर आए तो देखा कि शिष्य सोए हुए
हैं—क्योंकि उनकी पलकें बोझिल थी. 44 एक बार फिर वह उन्हें छोड़ आगे
चले गए और तीसरी बार प्रार्थना की और उन्होंने प्रार्थना में वही सब दोहराया.
45 तब वह शिष्यों के पास लौटे और उनसे कहा, "क्या तुम अभी भी सो रहे
और आराम कर रहे हो? बहुत हो गया! देखो! आ गया है वह क्षण! मनुष्य का
पुत्र पापियों के हाथों पकड़वाया जा रहा है. 46 उठो! यहां से चलें. देखो, जो
मुझे पकड़वाने पर है, वह आ गया!" 47 येशु अपना कथन समाप्त भी न कर
पाए थे कि यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, वहां आ पहुंचा. उसके
साथ एक बड़ी भीड़ थी, जो तलवारें और लाठियां लिए हुए थी. ये सब प्रधान
पुरोहितों और पुरनियों की ओर से भेजे गए थे. 48 येशु के विश्वासघाती ने उन्हें
यह संकेत दिया था: "मैं जिसे चूमूं, वही होगा वह. उसे ही पकड़ लेना." 49
वहां पहुंचते ही यहूदाह सीधे मसीह येशु के पास गया और उनसे कहा, "प्रणाम,
रब्बी!" और उन्हें चूम लिया. 50 येशु ने यहूदाह से कहा, "मेरे मित्र, जिस काम
के लिए आए हो, उसे पूरा कर लो." उन्होंने आकर येशु को पकड़ लिया. 51
येशु के शिष्यों में से एक ने तलवार खींची और महापुरोहित के दास पर चला दी
जिससे उसका कान कट गया. 52 येशु ने उस शिष्य से कहा, "अपनी तलवार
को म्यान में रखो! जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही नाश किए जाएंगे. 53
क्या तुम यह तो सोच रहे कि मैं अपने पिता से विनती नहीं कर सकता और वह
मेरे लिए स्वर्गदूतों के बारह या उससे अधिक लेगिओन (बड़ी सेना) नहीं भेज
सकते? 54 फिर भला पवित्र शास्त्र के लेख कैसे पूरे होंगे, जिनमें लिखा है कि
यह सब इसी प्रकार होना अवश्य है?" 55 तब येशु ने भीड़ को संबोधित करते
हुए कहा, "क्या तुम्हें मुझे पकड़ने के लिए तलवारें और लाठियां लेकर आने
की ज़रूरत थी, जैसे किसी डाकू को पकड़ने के लिए होती है? मैं तो प्रतिदिन
मंदिर में बैठकर शिक्षा दिया करता था! तब तुमने मुझे नहीं पकड़ा! 56 यह सब
इसलिये हुआ है कि भविष्यद्वक्ताओं के लेख पूरे हों." इस समय सभी शिष्य
उन्हें छोड़कर भाग चुके थे. 57 जिन्होंने येशु को पकड़ा था वे उन्हें महापुरोहित
कायाफ़स के यहां ले गए, जहां शास्त्री तथा पुरनिये इकट्ठा थे. 58 पेतरॉस कुछ
दूरी पर येशु के पीछे-पीछे चलते हुए महापुरोहित के आंगन में आ पहुंचे और
वहां वह प्रहरियों के साथ बैठ गए कि देखें आगे क्या-क्या होता है. 59 मसीह
येशु को मृत्यु दंड देने की इच्छा लिए हुए प्रधान पुरोहित तथा पूरी महासभा
मसीह येशु के विरुद्ध झूठे गवाह खोजने का यत्न कर रही थी, 60 किंतु इसमें वे
विफल ही रहे. यद्यपि अनेक झूठे गवाह सामने आए, किंतु मृत्यु दंड के लिए
आवश्यक दो सहमत गवाह उन्हें फिर भी न मिले. आखिर दो गवाह सामने आए
61 जिन्होंने कहा, "यह व्यक्ति कहता था, 'मैं परमेश्वर के मंदिर को नाश करके
उसे तीन दिन में दोबारा खड़ा करने में समर्थ हूं.'" 62 तब महापुरोहित खड़े हुए
तथा मसीह येशु से पूछा, "क्या तुम्हें अपने बचाव में कुछ नहीं कहना है?
ये सब तुम्हारे विरुद्ध क्या-क्या गवाही दे रहे हैं!" 63 येशु मौन ही रहे. तब
महापुरोहित ने येशु से कहा, "मैं तुम्हें जीवित परमेश्वर की शपथ देता हूं कि तुम
हमें बताओ, क्या तुम ही मसीह, परमेश्वर के पुत्र हो?" 64 येशु ने उसे उत्तर
दिया, "आपने यह स्वयं कह दिया है, फिर भी, मैं आपको यह बताना चाहता हूं
कि इसके बाद आप मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दायीं ओर बैठे तथा
आकाश के बादलों पर आता हुआ देखेंगे." 65 यह सुनना था कि महापुरोहित ने
अपने वस्त्र फाड़ डाले और कहा, "परमेश्वर-निंदा की है इसने! क्या अब भी
गवाहों की ज़रूरत है? आप सभी ने स्वयं यह परमेश्वर-निंदा सुनी है. 66 अब
क्या विचार है आपका?" सभी परिषद ने उत्तर दिया, "यह मृत्यु दंड के योग्य
है." 67 तब उन्होंने येशु के मुख पर थूका, उन पर घूंसों से प्रहार किया, कुछ ने
उन्हें थप्पड़ भी मारे और फिर उनसे प्रश्न किया, 68 "मसीह! भविष्यवाणी
कीजिए, कि आपको किसने मारा है?" 69 पेतरॉस आंगन में बैठे हुए थे. एक
दासी वहां से निकली और पेतरॉस से पूछने लगी, "तुम भी तो उस गलीलवासी
येशु के साथ थे न?" 70 किंतु पेतरॉस ने सबके सामने यह कहते हुए इस सच
को नकार दिया: "क्या कह रही हो? मैं समझा नहीं!" 71 जब पेतरॉस द्वार से
बाहर निकले, एक दूसरी दासी ने पेतरॉस को देख वहां उपस्थित लोगों से कहा,
"यह व्यक्ति नाज़रेथ के येशु के साथ था." 72 एक बार फिर पेतरॉस ने शपथ
खाकर नकारते हुए कहा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता." 73 कुछ समय
बाद एक व्यक्ति ने पेतरॉस के पास आकर कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम
भी उनमें से एक हो. तुम्हारी भाषा-शैली से यह स्पष्ट हो रहा है." 74 पेतरॉस
अपशब्द कहते हुए शपथ खाकर कहने लगे, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता!"
उनका यह कहना था कि मुर्गे ने बांग दी. 75 पेतरॉस को येशु की वह कही हुई
बात याद आई, "इसके पूर्व कि मुर्गा बांग दे तुम मुझे तीन बार नकार चुके होगे."
पेतरॉस बाहर गए और फूट-फूटकर रोने लगे.

27 प्रातःकाल सभी प्रधान पुरोहितों तथा पुरनियों ने आपस में येशु को मृत्यु
दंड देने की सहमति की. 2 येशु को बेड़ियों से बांधकर वे उन्हें राज्यपाल
पिलातॉस के यहां ले गए. 3 इसी समय, जब येशु पर दंड की आज्ञा सुनाई गई,
यहूदाह, जिसने येशु के साथ धोखा किया था, दुःख और पश्चाताप से भर उठा.
उसने प्रधान पुरोहितों और पुरनियों के पास जाकर चांदी के वे तीस सिक्के यह
कहते हुए लौटा दिए, 4 "एक निर्दोष के साथ धोखा करके मैंने पाप किया है."
"हमें इससे क्या?" वे बोले, "यह तुम्हारी समस्या है!" 5 वे सिक्के मंदिर में
फेंक यहूदाह चला गया और जाकर फांसी लगा ली. 6 उन सिक्कों को इकट्ठा
करते हुए प्रधान पुरोहितों ने विचार किया, "इस राशि को मंदिर के कोष में
डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लहू का दाम है." 7 तब उन्होंने इस विषय
में विचार-विमर्श कर उस राशि से परदेशियों के अंतिम संस्कार के लिए कुम्हार
का एक खेत मोल लिया. 8 यही कारण है कि आज तक उस खेत को "लहू का
खेत" नाम से जाना जाता है. 9 इससे भविष्यवक्ता येरेमियाह द्वारा की गई यह
भविष्यवाणी पूरी हो गई: "उन्होंने चांदी के तीस सिक्के लिए—यह उसका दाम
है, जिसका दाम इस्राएल वंश के द्वारा निर्धारित किया गया था 10 और उन्होंने
वे सिक्के कुम्हार के खेत के लिए दे दिए, जैसा निर्देश प्रभु ने मुझे दिया था."
11 येशु राज्यपाल के सामने लाए गए और राज्यपाल ने उनसे प्रश्न करने प्रारंभ
किए, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" येशु ने उसे उत्तर दिया, "यह आप
स्वयं ही कह रहे हैं." 12 जब येशु पर प्रधान पुरोहितों और पुरनियों द्वारा आरोप
पर आरोप लगाए जा रहे थे, येशु मौन बने रहे. 13 इस पर पिलातॉस ने येशु से
कहा, "क्या तुम सुन नहीं रहे ये लोग तुम पर कितने आरोप लगा रहे हैं?" 14
येशु ने पिलातॉस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर न दिया. राज्यपाल के
लिए यह अत्यंत आश्चर्यजनक था. 15 उत्सव पर परंपरा के अनुसार राज्यपाल
की ओर से उस बंदी को, जिसे लोग चाहते थे, छोड़ दिया जाता था. 16 उस
समय बंदीगृह में बार-अब्बास नामक एक कुख्यात अपराधी बंदी था. 17
इसलिये जब लोग इकट्ठा हुए पिलातॉस ने उनसे प्रश्न किया, "मैं तुम्हारे लिए
किसे छोड़ दूं, बार-अब्बास को या येशु को, जो मसीह कहलाता है? क्या चाहते
हो तुम?" 18 पिलातॉस को यह मालूम हो चुका था कि मात्र जलन के कारण ही
उन्होंने येशु को उनके हाथों में सौंपा था. 19 जब पिलातॉस न्यायासन पर बैठा
था, उसकी पत्नी ने उसे यह संदेश भेजा, "उस धर्मी व्यक्ति को कुछ न करना
क्योंकि पिछली रात मुझे स्वप्न में उसके कारण घोर पीड़ा हुई है." 20 इस पर
प्रधान पुरोहितों और पुरनियों ने भीड़ को उकसाया कि वे बार-अब्बास की

मुक्ति की और येशु के मृत्यु दंड की मांग करें. 21 राज्यपाल ने उनसे पूछा, "क्या चाहते हो, दोनों में से मैं किसे छोड़ दूं?" भीड़ का उत्तर था: "बार-अब्बास को." 22 इस पर पिलातॉस ने उनसे पूछा, "तब मैं येशु का, जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?" उन सभी ने एक साथ कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए!" 23 पिलातॉस ने पूछा, "क्यों? क्या अपराध है उसका?" किंतु वे और अधिक चिल्लाने लगे, "क्रूस पर चढ़ाया जाए उसे!" 24 जब पिलातॉस ने देखा कि वह कुछ भी नहीं कर पा रहा परंतु हुल्लड़ की संभावना है तो उसने भीड़ के सामने अपने हाथ धोते हुए यह घोषणा कर दी, "मैं इस व्यक्ति के लहू का दोषी नहीं हूं. तुम ही इसके लिए उत्तरदायी हो." 25 लोगों ने उत्तर दिया, "इसके लहू का दोष हम पर तथा हमारी संतान पर हो!" 26 तब पिलातॉस ने उनके लिए बार-अब्बास को मुक्त कर दिया किंतु येशु को कोड़े लगवाकर क्रूसित करने के लिए भीड़ के हाथों में सौंप दिया. 27 तब पिलातॉस के सैनिक मसीह येशु को प्राइतोरियम अर्थात् किले के भीतर, महल के आंगन में ले गए और वहां उन्होंने सारी रोमी सैनिक टुकड़ी इकट्ठा कर ली. 28 जो वस्त्र येशु पहने हुए थे, उतारकर उन्होंने उन्हें एक चमकीला लाल वस्त्र पहना दिया. 29 उन्होंने एक कंटीली लता को गूंधकर उसका मुकुट बना उनके सिर पर रख दिया और उनके दायें हाथ में एक नरकुल की एक छड़ी थमा दी. तब वे उनके सामने घुटने टेककर यह कहते हुए उनका मज़ाक करने लगे, "यहूदियों के राजा की जय!" 30 उन्होंने येशु पर थूका भी और फिर उनके हाथ से उस नरकुल छड़ी को लेकर उसी से उनके सिर पर प्रहार करने लगे. 31 इस प्रकार जब वे येशु का उपहास कर चुके, उन्होंने वह लाल वस्त्र उतारकर उन्हीं के वस्त्र उन्हें पहना दिए और उन्हें उस स्थल पर ले जाने लगे जहां उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाना था. 32 जब वे बाहर निकले, उन्हें शिमओन नामक एक व्यक्ति, जो कुरेनावासी था, दिखाई दिया. उन्होंने उसे येशु का क्रूस उठाकर चलने के लिए मजबूर किया. 33 जब वे सब गोलगोथा नामक स्थल पर पहुंचे, जिसका अर्थ है (खोपड़ी का स्थान). 34 उन्होंने येशु को पीने के लिए दाखरस तथा कड़वे रस का मिश्रण दिया किंतु उन्होंने मात्र चखकर उसे पीना अस्वीकार कर दिया. 35 येशु को क्रूसित करने के बाद उन्होंने उनके वस्त्रों को आपस में बांट लेने के लिए पासा फेंका 36 और वहीं बैठकर उनकी चौकसी करने लगे. 37 उन्होंने उनके सिर के ऊपर दोषपत्र लगा दिया था, जिस पर लिखा था: "यह येशु है—यहूदियों का राजा." 38 उसी समय दो अपराधियों को भी उनके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक को उनकी दायीं ओर, दूसरे को उनकी बायीं ओर. 39 आते जाते यात्री उपहास-मुद्रा में सिर हिला-हिला कर मज़ाक उड़ा रहे थे, 40 "अरे ओ मंदिर को नाश कर, तीन दिन में उसको दुबारा बनानेवाले! बचा ले अपने आपको—यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो उतर आ क्रूस से!" 41 इसी प्रकार प्रधान पुरोहित भी शास्त्रियों और पुरनियों के साथ मिलकर उनका उपहास करते हुए कह रहे थे, 42 "दूसरों को तो बचाता फिरा है, स्वयं को नहीं बचा सकता! इस्राएल का राजा है! क्रूस से नीचे आकर दिखाए तो हम इसका विश्वास कर लेंगे. 43 यह परमेश्वर में विश्वास करता है क्योंकि इसने दावा किया था, 'मैं ही परमेश्वर-पुत्र हूं,' तब परमेश्वर इसे अभी छुड़ा दें—यदि वह इससे प्रेम करते हैं." 44 उनके साथ क्रूस पर चढ़ाये गए राजद्रोही भी इसी प्रकार उनकी उल्लाहना कर रहे थे. 45 मध्याह्न से लेकर तीन बजे तक उस सारे प्रदेश पर अंधकार छाया रहा. 46 तीन बजे के लगभग येशु ने ऊंची आवाज में पुकारकर कहा, "एली, एली, लमा सबख़थानी?" जिसका अर्थ है, "मेरे परमेश्वर! मेरे परमेश्वर! आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?" 47 उधर खड़े हुए व्यक्तियों में से कुछ ने कहा, "अरे! सुनो-सुनो! एलियाह को पुकार रहा है!" 48 उनमें से एक ने तुरंत दौड़कर एक स्पंज सिरके में भिगोया और एक नरकुल की एक छड़ी पर रखकर येशु के होंठों तक बढ़ा दिया. 49 किंतु औरों ने कहा, "ठहरो, ठहरो, देखें एलियाह उसे बचाने आते भी हैं या नहीं." 50 येशु ने एक बार फिर ऊंची आवाज में पुकारा और अपने प्राण त्याग दिए. 51 उसी क्षण मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो भागों में विभाजित कर दिया गया, पृथ्वी कांप उठी, चट्टानें फट गईं 52 और कब्रें खुल गईं. येशु के पुनरुत्थान के बाद उन अनेक पवित्र लोगों के शरीर जीवित कर दिए गये, जो बड़ी नींद में सो चुके थे. 53 कब्रों से बाहर आकर उन्होंने पवित्र नगर में प्रवेश किया तथा अनेकों को दिखाई दिए. 54 शताधिपति और वे, जो उसके साथ येशु की पहरा दे रहे थे, उस भूकंप तथा अन्य घटनाओं को देखकर अत्यंत भयभीत हो गए और कहने लगे, "सचमुच यह परमेश्वर के पुत्र थे!" 55 अनेक स्त्रियां दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थी. वे गलील प्रदेश से येशु की सेवा करती हुई उनके पीछे-पीछे आ गई थी. 56 उनमें थी मगदालावासी मरियम, याकोब और योसेफ़ की माता मरियम तथा ज़ेबेदियॉस की पत्नी. 57 जब संध्या हुई तब अरिमथिया नामक नगर के एक धनी व्यक्ति, जिनका नाम योसेफ़ था, वहां आए. वह स्वयं येशु के चेले बन गए थे. 58 उन्होंने पिलातॉस के पास जाकर येशु के शव को ले जाने की आज्ञा मांगी. पिलातॉस ने उन्हें शव ले जाने की आज्ञा दे दी. 59 योसेफ़ ने शव को एक स्वच्छ चादर में लपेटा 60 और उसे नई कंदरा-क़ब्र में रख दिया, जो योसेफ़ ने स्वयं अपने लिए चट्टान में खुदवाई थी. उन्होंने कब्र के द्वार पर एक विशाल पत्थर लुढ़का दिया और तब वह अपने घर चले गए. 61 मगदालावासी मरियम तथा अन्य मरियम, दोनों हीं कंदरा-क़ब्र के सामने बैठी रहीं. 62 दूसरे दिन, जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, प्रधान पुरोहित तथा फ़रीसी पिलातॉस के यहां इकट्ठा हुए और पिलातॉस को सूचित किया, 63 "महोदय, हमको यह याद है कि जब यह छली जीवित था, उसने कहा था, 'तीन दिन बाद मैं जीवित हो जाऊंगा'; 64 इसलिये तीसरे दिन तक के लिए कंदरा-क़ब्र पर कड़ी सुरक्षा की आज्ञा दे दीजिए, अन्यथा संभव है उसके शिष्य आकर शव चुरा ले जाएं और लोगों में यह प्रचार कर दें, 'वह मरे हुओं में से जीवित हो गया है' तब तो यह छल पहले से कहीं अधिक हानिकर सिद्ध होगा." 65 पिलातॉस ने उनसे कहा, "प्रहरी तो आपके पास हैं न! आप जैसा उचित समझें करें." 66 अतः उन्होंने जाकर प्रहरी नियुक्त कर तथा पत्थर पर मोहर लगाकर कब्र को पूरी तरह सुरक्षित बना दिया.

28 शब्बाथ के बाद, सप्ताह के पहले दिन, जब भोर हो ही रही थी, मगदालावासी मरियम तथा वह अन्य मरियम, येशु की कंदरा-क़ब्र पर आईं. 2 उसी समय एक बड़ा भूकंप आया क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से प्रकट हुआ था. उसने कब्र के प्रवेश से पत्थर लुढ़काया और उस पर बैठ गया. 3 उसका रूप बिजली-सा तथा उसके कपड़े बर्फ के समान सफ़ेद थे. 4 पहरुए उससे भयभीत हो मृतक के समान हो गए. 5 स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों को संबोधित किया, "मत डरो! मुझे मालूम है कि तुम क्रूस पर चढ़ाए गए येशु को खोज रही हो. 6 वह यहां नहीं हैं क्योंकि वह मरे हुओं में से जीवित हो गए हैं—ठीक जैसा उन्होंने कहा था. स्वयं आकर उस स्थान को देख लो, जहां उन्हें रखा गया था. 7 अब शीघ्र जाकर उनके शिष्यों को यह सूचना दो कि वह मरे हुओं में से जीवित हो गए हैं. और हां, वह तुम लोगों से पूर्व गलील प्रदेश जा रहे हैं. तुम उन्हें वहीं देखोगी. याद रखना कि मैंने तुमसे क्या-क्या कहा है." 8 वे वहां से भय और अत्यंत आनंद के साथ जल्दी से शिष्यों को इसकी सूचना देने दौड़ गईं. 9 मार्ग में ही सहसा येशु उनसे मिले और उनका अभिनंदन किया. उन्होंने उनके चरणों पर गिरकर उनकी वंदना की. 10 येशु ने उनसे कहा, "डरो मत! मेरे भाइयों तक यह समाचार पहुंचा दो कि वे गलील प्रदेश को प्रस्थान करें, मुझसे उनकी भेंट वहीं होगी." 11 वे जब मार्ग में ही थी, कुछ प्रहरियों ने नगर में जाकर प्रधान पुरोहितों को इस घटना की सूचना दी. 12 उन्होंने पुरनियों को इकट्ठा कर उनसे विचार-विमर्श किया और पहरुओं को बड़ी धनराशि देते हुए उन्हें यह आज्ञा दी, 13 "तुम्हें यह कहना होगा, 'रात में जब हम सो रहे थे,

उसके शिष्य उसे चुरा ले गए.' 14 यदि राज्यपाल को इसके विषय में कुछ
मालूम हो जाए, हम उन्हें समझा लेंगे और तुम पर कोई आंच न आने देंगे." 15
धनराशि लेकर पहरुओं ने वही किया जो उनसे कहा गया था. यहूदियों में यही
धारणा आज तक प्रचलित है. 16 ग्यारह शिष्यों ने गलील को प्रस्थान किया. वे
येशु द्वारा पहले से बताए हुए पर्वत पर पहुंचे. 17 उन्होंने वहां येशु को देखा और
उनकी वंदना की परंतु कुछ को अभी भी संदेह था. 18 येशु ने पास आकर
उनसे कहा, "सारा अधिकार—स्वर्ग में तथा पृथ्वी पर—मुझे दिया गया है. 19
इसलिये यहां से जाते हुए तुम सारे राष्ट्रों को मेरा शिष्य बनाओ और उन्हें पिता,
पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो. 20 उन्हें इन सभी आदेशों का
पालन करने की शिक्षा दो, जो मैंने तुम्हें दिए हैं. याद रखो: जगत के अंत तक मैं
हमेशा तुम्हारे साथ हूं." **(aiōn g165)**

मरकुस

1 परमेश्वर के पुत्र येशु मसीह के सुसमाचार का आरंभ: 2 भविष्यवक्ता
यशायाह के अभिलेख के अनुसार, "तुम्हारे पूर्व मैं अपना एक दूत भेज रहा
हूं, जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा"; 3 "बंजर भूमि में पुकारनेवाले की आवाज
है, 'प्रभु का रास्ता सीधा करो, उनका मार्ग सरल बनाओ.'" 4 बपतिस्मा
देनेवाले योहन बंजर भूमि में पाप क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार
करते हुए आए. 5 यहूदिया प्रदेश के क्षेत्रों से सारी भीड़ तथा येरूशलेम नगर के
सभी लोग उनसे भेंट करने जाने लगे. ये सब पाप स्वीकार करते हुए यरदन
नदी में योहन से बपतिस्मा ले रहे थे. 6 योहन का परिधान, ऊंट के रोम से
निर्मित वस्त्र और उसके ऊपर चमड़े का कमरबंध था और उनका भोजन था
टिड्डियां तथा जंगलीमधु. 7 वह प्रचार कर कहते थे, "मेरे बाद एक ऐसा व्यक्ति
आएगा, जो मुझसे अधिक शक्तिमान हैं—मैं तो इस योग्य भी नहीं हूं कि उनके
सामने झुककर उनकी जूतियों के बंध खोलनेवाला एक गुलाम बन सकूं. 8 मैं
बपतिस्मा जल में देता हूं; वह तुम्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देंगे." 9 उसी
समय मसीह येशु गलील प्रदेश के नाज़रेथ नगर से आए और उन्हें योहन द्वारा
यरदन नदी में बपतिस्मा दिया गया. 10 जब मसीह येशु जल से बाहर आ रहे थे,
उसी क्षण उन्होंने आकाश को खुलते तथा आत्मा को, जो कबूतर के समान था,
अपने ऊपर उतरते हुए देखा 11 और स्वर्ग से निकला एक शब्द भी सुनाई दिया:
"तुम मेरे पुत्र हो—मेरे प्रिय—तुमसे मैं अतिप्रसन्न हूं." 12 उसी समय पवित्र
आत्मा ने उन्हें बंजर भूमि में भेज दिया. 13 बंजर भूमि में वह चालीस दिन शैतान
के द्वारा परखे जाते रहे. वह वहां जंगली पशुओं के साथ रहे और स्वर्गदूतों ने
उनकी सेवा की. 14 योहन के बंदी बना लिए जाने के बाद येशु, परमेश्वर
के सुसमाचार का प्रचार करते हुए गलील प्रदेश आए. 15 उनका संदेश था,
"समय पूरा हो चुका है, परमेश्वर का राज्य पास आ गया है. मन फिराओ तथा
सुसमाचार में विश्वास करो." 16 गलील झील के पास से जाते हुए मसीह येशु ने
शिमओन तथा उनके भाई आन्द्रेयास को देखा, जो झील में जाल डाल रहे थे. वे
मछुआरे थे. 17 येशु ने उनसे कहा, "मेरा अनुसरण करो—मैं तुम्हें मनुष्यों के
मछुआरे बनाऊंगा." 18 वे उसी क्षण अपने जाल छोड़कर येशु का अनुसरण
करने लगे. 19 आगे जाने पर उन्होंने ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब तथा उनके भाई
योहन को देखा. वे भी नाव में थे और अपने जाल सुधार रहे थे. 20 उन्हें देखते
ही मसीह येशु ने उनको बुलाया. वे अपने पिता ज़ेबेदियॉस को मज़दूरों के साथ
नाव में ही छोड़कर उनके साथ चल दिए. 21 वे सब कफ़रनहूम नगर आए.
शब्बाथ पर मसीह येशु स्थानीय यहूदी सभागृह में जाकर शिक्षा देने लगे. 22
लोग उनकी शिक्षा से आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वह शास्त्रियों के समान
नहीं परंतु इस प्रकार शिक्षा दे रहे थे कि उन्हें इसका अधिकार है. 23 उसी
समय सभागृह में एक व्यक्ति, जो दुष्टात्मा से पीड़ित था, चिल्ला उठा, 24
"नाज़रेथवासी येशु! क्या चाहते हैं आप? क्या आप हमें नाश करने आए हैं?
मैं जानता हूं कि आप कौन हैं; परमेश्वर के पवित्र जन!" 25 "चुप!" उसे
फटकारते हुए मसीह येशु ने कहा, "बाहर निकल जा इसमें से!" 26 उस व्यक्ति
को मरोड़ते हुए वह दुष्टात्मा ऊंचे शब्द में चिल्लाता हुआ उसमें से बाहर निकल
गया. 27 सभी हैरान रह गए. वे आपस में विचार करने लगे, "यह सब क्या हो
रहा है? यह अधिकारपूर्वक शिक्षा देते हैं और अशुद्ध आत्मा तक को आज्ञा देते है
और वे उनका पालन भी करती हैं!" 28 तेजी से उनकी ख्याति गलील प्रदेश के
आस-पास सब जगह फैल गई. 29 यहूदी सभागृह से निकलकर वे सीधे याकोब
और योहन के साथ शिमओन तथा आन्द्रेयास के घर पर गए. 30 वहां शिमओन
की सास बुखार में पड़ी हुई थी. उन्होंने बिना देर किए मसीह येशु को इसके
विषय में बताया. 31 मसीह येशु उनके पास आए, उनका हाथ पकड़ उन्हें
उठाया और उनका बुखार जाता रहा तथा वह उनकी सेवा टहल में जुट गईं.
32 संध्या समय सूर्यास्त के बाद लोग अस्वस्थ तथा जिनमें दुष्टात्माऐं थी उन
लोगों को येशु के पास लाने लगे. 33 सारा नगर ही द्वार पर इकट्ठा हो गया 34
मसीह येशु ने विभिन्न रोगों से पीड़ित अनेकों को स्वस्थ किया और अनेक
दुष्टात्माओं को भी निकाला. वह दुष्टात्माओं को बोलने नहीं देते थे क्योंकि वे
उन्हें पहचानती थीं. 35 भोर होने पर, जब अंधकार ही था, मसीह येशु उठे और
एक सुनसान जगह को गए. वहां वह प्रार्थना करने लगे. 36 शिमओन तथा
उनके अन्य साथी उन्हें खोज रहे थे. 37 उन्हें पाकर वे कहने लगे, "सभी
आपको खोज रहे हैं." 38 किंतु मसीह येशु ने उनसे कहा, "चलो, कहीं और
चलें—यहां पास के नगरों में—जिससे कि मैं वहां भी प्रचार कर सकूं क्योंकि
मेरे यहां आने का उद्देश्य यही है." 39 वह सारे गलील प्रदेश में घूमते हुए यहूदी
सभागृहों में जा-जाकर प्रचार करते रहे तथा लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालते
गए. 40 एक कोढ़ रोगी उनके पास आया. उसने मसीह येशु के सामने घुटने टेक
उनसे विनती की, "आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं." 41 तरस खाकर
मसीह येशु ने हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श किया और कहा, "मैं चाहता हूं. तुम शुद्ध
हो जाओ!" 42 उसी समय उसका कोढ़ रोग जाता रहा और वह शुद्ध हो गया.
43 मसीह येशु ने उसे उसी समय इस चेतावनी के साथ विदा किया, 44 "सुनो!
इस विषय में किसी से कुछ न कहना. हां, जाकर स्वयं को पुरोहित के सामने
प्रस्तुत करो तथा अपनी शुद्धि के प्रमाण के लिए मोशेह द्वारा निर्धारित विधि के
अनुसार शुद्धि संबंधी भेंट चढ़ाओ." 45 किंतु उस व्यक्ति ने जाकर खुलेआम
इसकी घोषणा की तथा यह समाचार इतना फैला दिया कि मसीह येशु इसके बाद
खुल्लम-खुल्ला किसी नगर में न जा सके और उन्हें नगर के बाहर सुनसान
स्थानों में रहना पड़ा. फिर भी सब स्थानों से लोग उनके पास आते रहे.

2 कुछ दिन बाद मसीह येशु के कफ़रनहूम नगर लौटने पर वहां यह समाचार
फैल गया कि वह लौट आए हैं. 2 वहां इतनी विशाल भीड़ इकट्ठी हो गई
कि कहीं कोई स्थान शेष न रहा—यहां तक कि द्वार के सामने भी नहीं और
मसीह येशु पवित्र शास्त्र की शिक्षा दे रहे थे. 3 कुछ लोग एक लकवे के रोगी को
उनके पास लाए, जिसे चार व्यक्तियों ने उठाया हुआ था. 4 भीड़ के कारण वे
मसीह येशु के पास पहुंचने में असमर्थ थे, इसलिये उन्होंने जहां मसीह येशु थे,
वहां की कच्ची छत को हटाकर वहां से उस रोगी को बिछौने सहित नीचे उतार
दिया. 5 उनके इस विश्वास को देख मसीह येशु ने लकवे के रोगी से कहा,
"पुत्र, तुम्हारे पाप क्षमा हो चुके हैं." 6 वहां मौजूद कुछ शास्त्री अपने मन में यह
विचार करने लगे, 7 "यह व्यक्ति ऐसा क्यों कह रहा है? यह तो परमेश्वर की
निंदा कर रहा है! परमेश्वर के अतिरिक्त कौन पापों को क्षमा कर सकता है?" 8
मसीह येशु को अपनी आत्मा में उसी क्षण यह मालूम हो गया कि वे इस प्रकार
सोच-विचार कर रहे हैं. मसीह येशु ने उन्हें ही संबोधित करते हुए प्रश्न किया,
"आप अपने मन में इस प्रकार सोच-विचार क्यों कर रहे हैं? 9 लकवे के रोगी
से क्या कहना सरल है, 'तुम्हारे पाप क्षमा हुए' या यह, 'उठो! अपना बिछौना
उठाकर चले जाओ'? 10 किंतु इसका उद्देश्य यह है कि तुम्हें यह मालूम हो जाए
कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का अधिकार सौंपा गया है." तब
रोगी से येशु ने कहा, 11 "उठो, अपना बिछौना उठाओ और अपने घर जाओ."
12 वह उठा और तत्काल अपना बिछौना समेटकर उन सबके देखते-देखते वहां
से चला गया. इस पर वे सभी चकित रह गए तथा परमेश्वर की वंदना करते
हुए कहने लगे, "ऐसा हमने कभी नहीं देखा." 13 तब मसीह येशु दोबारा
सागर तट पर चले गए. एक विशाल भीड़ उनके पास आ गयी और वह उन्हें
शिक्षा देने लगे. 14 मार्ग में मसीह येशु ने हलफ़ेयॉस के पुत्र लेवी को कर-
चौकी पर बैठा देखा. उन्होंने उन्हें आज्ञा दी, "मेरे पीछे आओ." वह उठे और
उनके साथ हो लिए. 15 जब मसीह येशु लेवी के घर पर भोजन के लिए बैठे

थे, अनेक चुंगी लेनेवाले तथा अपराधी व्यक्ति मसीह येशु तथा उनके शिष्यों
के साथ भोजन कर रहे थे. एक बड़ी संख्या में लोग उनके पीछे हो लिए थे.
16 मसीह येशु को अपराधी व्यक्तियों के साथ भोजन करते देख व्यवस्था के
शिक्षकों ने, जो वास्तव में फ़रीसी थे, उनके शिष्यों से प्रश्न किया, "यह चुंगी
लेनेवाले तथा अपराधी व्यक्तियों के साथ क्यों खाता-पीता है?" **17** यह सुन
मसीह येशु ने उन्हें ही संबोधित कर कहा, "वैद्य की ज़रूरत रोगी को होती
है, स्वस्थ व्यक्ति को नहीं. मैं धर्मियों का नहीं परंतु पापियों का उद्धार करने
आया हूं." **18** योहन के शिष्य तथा फ़रीसी उपवास कर रहे थे. कुछ ने आकर
मसीह येशु से प्रश्न किया, "ऐसा क्यों है कि योहन तथा फ़रीसियों के शिष्य तो
उपवास करते हैं किंतु आपके शिष्य नहीं?" **19** मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"क्या कभी वर के रहते हुए उसके साथी उपवास करते हैं? जब तक वर उनके
साथ है, वे उपवास कर ही नहीं सकते. **20** किंतु वह समय आएगा, जब वर
उनके मध्य से हटा लिया जाएगा, वे उस समय उपवास करेंगे. **21** "किसी
पुराने वस्त्र पर नये वस्त्र का जोड़ नहीं लगाया जाता क्योंकि ऐसा करने पर नये
वस्त्र का जोड़ सिकुड़ कर उस पुराने वस्त्र की पहले से अधिक दुर्दशा कर देता
है. **22** कोई भी नये दाखरस को पुरानी मशकों में नहीं रखता अन्यथा खमीर
होकर दाखरस मशकों को फाड़ देती है. इससे दाखरस भी नाश हो जाता है और
मशकें भी—नया दाखरस नए मटके में ही डाला जाता है." **23** एक शब्बाथ पर
मसीह येशु अन्न के खेतों में से होकर जा रहे थे. चलते हुए उनके शिष्य बालें
तोड़ने लगे. **24** इस पर फ़रीसियों ने मसीह येशु से कहा, "देखो! वे लोग वह
काम क्यों कर रहे हैं, जो शब्बाथ पर व्यवस्था के अनुसार नहीं है?" **25**
मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या आपने कभी पढ़ा नहीं? क्या किया था
दावीद ने जब वह तथा उनके साथी भूखे और भोजन की कमी में थे? **26**
महापुरोहित अबीयाथर के समय में उन्होंने परमेश्वर के भवन में प्रवेश किया
तथा समर्पित पवित्र रोटी खाई जिसे खाना पुरोहित के अतिरिक्त अन्य किसी के
लिए व्यवस्था के अनुसार नहीं था. यही रोटी उन्होंने अपने साथियों को भी
दी." **27** तब उन्होंने आगे कहा, "शब्बाथ की स्थापना मनुष्य के लिए की गई
है न कि मनुष्य की शब्बाथ के लिए. **28** इसलिये, मनुष्य का पुत्र शब्बाथ का
भी स्वामी है."

3 मसीह येशु एक यहूदी सभागृह में थे, जहां एक व्यक्ति था, जिसका हाथ
लकवा मारा हुआ था. **2** कुछ व्यक्ति इस अवसर की ताक में थे कि शब्बाथ
पर मसीह येशु उस व्यक्ति को स्वस्थ करें और वे उन पर दोष लगा सकें. **3**
मसीह येशु ने उस व्यक्ति को, जिसका हाथ सूख गया था, आज्ञा दी, "उठो!
सबके सामने खड़े हो जाओ!" **4** तब अन्यों को संबोधित करते हुए मसीह येशु
ने पूछा, "शब्बाथ पर क्या करना व्यवस्था के अनुसार है—भला या बुरा?
जीवन की रक्षा या विनाश?" वे सब मौन बने रहे. **5** तब उन सब पर गुस्से से
भरी दृष्टि डालते हुए, उनके मन की कठोरता पर व्यथित होकर मसीह येशु ने
उस व्यक्ति से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ाओ." उसने अपना हाथ आगे
बढ़ाया—उसका हाथ पुनःस्वस्थ हो गया था. **6** इसलिये फ़रीसी बाहर चले गए
तथा राजा हेरोदेस के समर्थकों के साथ येशु की हत्या का षड़्यंत्र रचने लगे. **7**
मसीह येशु अपने शिष्यों के साथ झील के पास चले गए. एक विशाल भीड़, जो
गलील तथा यहूदिया प्रदेश से आकर इकट्ठी हुई थी, उनके पीछे-पीछे चल रही
थी. **8** मसीह येशु के बड़े-बड़े कामों का वर्णन सुनकर येरूशलेम नगर, इदूमिया
प्रदेश, यरदन नदी के पार के क्षेत्र तथा सोर और सीदोन से भी अनेकों अनेक इस
भीड़ में सम्मिलित हो गए थे. **9** इस विशाल भीड़ के दबाव से बचने के उद्देश्य
से मसीह येशु ने शिष्यों को एक नाव तैयार रखने की आज्ञा दी. **10** मसीह येशु
ने अनेकों को स्वास्थ्यदान दिया था इसलिये वे सभी, जो रोगी थे, मात्र उन्हें छू
लेने के उद्देश्य से उन पर गिरे पड़ते थे. **11** जब कभी दुष्टात्मा उनके सामने आती
थी, वे उनके सामने गिरकर चिल्ला-चिल्लाकर कहती थी, "आप परमेश्वर के
पुत्र हैं!" **12** किंतु मसीह येशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे यह किसी से न कहें.
13 इसके बाद मसीह येशु पर्वत पर चले गए. वहां उन्होंने उन्हें अपने पास
बुलाया, जिन्हें उन्होंने सही समझा और वे उनके पास आए. **14** मसीह येशु ने
बारह को चुना कि वे उनके साथ रहें, वह उन्हें प्रचार के लिए निकाल सकें **15**
और उन्हें दुष्टात्मा निकालने का अधिकार हो. **16** मसीह येशु द्वारा चुने हुए
बारह के नाम इस प्रकार हैं: शिमओन (जिन्हें उन्होंने पेतरॉस नाम दिया), **17**
ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब तथा उनके भाई योहन, (जिनको उन्होंने उपनाम
दिया था, बोएनेरगेस, जिसका अर्थ होता है "गर्जन के पुत्र"), **18** आन्द्रेयास,
फ़िलिप्पॉस, बारथोलोमेयॉस, मत्तियाह, थोमॉस, हलफ़ेयॉस के पुत्र याकोब,
थद्देइयॉस, शिमओन कनानी **19** तथा कारियोतवासी यहूदाह, जिसने मसीह येशु
के साथ धोखा किया. **20** जब मसीह येशु किसी के घर में थे तो दोबारा एक
बड़ी भीड़ वहां इकट्ठी हो गयी—यहां तक कि उनके लिए भोजन करना भी
असंभव हो गया. **21** जब मसीह येशु के परिवार जनों को इसका समाचार मिला
तो वे मसीह येशु को अपने संरक्षण में अपने साथ ले जाने के लिए वहां आ
गए—उनका विचार था कि मसीह येशु अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं. **22**
येरूशलेम नगर से वहां आए हुए शास्त्रियों का मत था कि मसीह येशु में बेलज़बूल
समाया हुआ है तथा वह दुष्टात्माओं के नायक की सहायता से दुष्टात्मा निकाला
करते हैं. **23** इस पर मसीह येशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर उनसे दृष्टान्तों में
कहना प्रारंभ किया, "भला शैतान ही शैतान को कैसे निकाल सकता है? **24**
यदि किसी राज्य में फूट पड़ चुकी है तो उसका अस्तित्व बना नहीं रह सकता.
25 वैसे ही यदि किसी परिवार में फूट पड़ जाए तो वह स्थायी नहीं रह सकता.
26 यदि शैतान अपने ही विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है और वह बंट चुका है तो उसका
अस्तित्व बना रहना असंभव है—वह तो नाश हो चुका है! **27** कोई भी किसी
बलवान व्यक्ति के यहां ज़बरदस्ती प्रवेश कर उसकी संपत्ति उस समय तक लूट
नहीं सकता जब तक वह उस बलवान व्यक्ति को बांध न ले. तभी उसके लिए
उस बलवान व्यक्ति की संपत्ति लूटना संभव होगा. **28** मैं तुम पर एक अटूट सच
प्रकट कर रहा हूं: मनुष्य द्वारा किए गए सभी पाप और निंदा क्षमा योग्य हैं. **29**
किंतु पवित्र आत्मा के विरुद्ध की गई निंदा किसी भी प्रकार क्षमा योग्य नहीं है.
वह व्यक्ति अनंत पाप का दोषी है." **(aiōn g165, aiōnios g166)** **30** मसीह येशु
ने यह सब इसलिये कहा था कि शास्त्रियों ने उन पर दोष लगाया था कि मसीह
येशु में दुष्टात्मा समाया हुआ है. **31** तभी मसीह येशु की माता और उनके भाई
वहां आ गए. वे बाहर ही खड़े रहे. उन्होंने संदेश भेजकर उन्हें बाहर बुलवाया.
32 भीड़ उन्हें घेरे हुए बैठी थी. उन्होंने मसीह येशु को बताया, "वह देखिए!
आपकी माता तथा आपके भाई और बहिन बाहर आपकी तलाश कर खड़े हैं."
33 "कौन हैं मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई?" मसीह येशु ने पूछा. **34** तब
अपनी दृष्टि अपने आस-पास बैठे भीड़ पर डालते हुए उन्होंने कहा, "ये हैं मेरी
माता तथा मेरे भाई! **35** जो कोई परमेश्वर की इच्छा को पूरी करता है, वही है
मेरा भाई, मेरी बहन तथा मेरी माता."

4 एक बार फिर मसीह येशु ने झील तट पर शिक्षा देना प्रारंभ किया. ऐसी बड़ी
भीड़ उनके आस-पास इकट्ठी हो गयी कि उन्हें झील तट पर लगी एक नाव
में जाकर बैठना पड़ा और भीड़ झील तट पर खड़ी रही. **2** वह अनेक विषयों
को दृष्टान्तों के माध्यम से स्पष्ट करने लगे. शिक्षा देते हुए उन्होंने कहा, **3**
"सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला. **4** बीज बोने में कुछ बीज तो
मार्ग के किनारे गिरे, जिन्हें पक्षियों ने आकर चुग लिया. **5** कुछ अन्य बीज
पथरीली भूमि पर भी जा गिरे, जहां पर्याप्त मिट्टी नहीं थी. पर्याप्त मिट्टी न होने
के कारण वे जल्दी ही अंकुरित भी हो गए **6** किंतु जब सूर्योदय हुआ, वे झुलस
गए और इसलिये कि उन्होंने जड़ें ही नहीं पकड़ी थी, वे मुरझा गए. **7** कुछ

अन्य बीज कंटीली झाड़ियों में गिरे और कंटीली झाड़ियों ने उन्हें दबा दिया और उनसे कोई फल उत्पन्न न हुआ. **8** कुछ अन्य बीज अच्छी भूमि पर जा गिरे, अंकुरित हो बड़े हुए तथा उनमें तीस गुणा, साठ गुणा तथा सौ गुणा फसल हुई.” **9** मसीह येशु ने आगे कहा, “जिस किसी के सुनने के कान हों, वह सुन ले.” **10** जैसे ही शिष्यों और अन्य साथियों ने मसीह येशु को अकेला पाया, उन्होंने मसीह येशु से दृष्टान्तों के विषय में पूछा. **11** मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का भेद सौंपा गया है किंतु अन्यों को सब कुछ दृष्टान्तों के माध्यम से समझाया जाता है **12** क्योंकि, “वे देखते तो हैं किंतु उन्हें कुछ दिखता नहीं, वे सुनते तो हैं किंतु कुछ समझ नहीं पाते ऐसा न हो वे मेरे पास लौट आते और क्षमा प्राप्त कर लेते!” **13** तब मसीह येशु ने उनसे प्रश्न किया, “क्या यह दृष्टांत तुम्हारी समझ में नहीं आया? तब तुम अन्य सब दृष्टान्तों का अर्थ कैसे समझोगे? **14** बीज बोनेवाला वचन बोता है. **15** मार्ग के किनारे की भूमि वे लोग हैं, जिनमें सुसमाचार बोया तो जाता है किंतु जैसे ही वे उसे सुनते हैं शैतान आकर उस बोये हुए सुसमाचार को उठा ले जाता है. **16** इसी प्रकार पथरीली भूमि वे लोग हैं, जिनमें सुसमाचार बोया जाता है और वे इसे तुरंत खुशी से अपना लेते हैं. **17** उनमें स्थायी जड़ें तो होती नहीं इसलिये जब सुसमाचार के कारण उन पर कष्ट और अत्याचारों का प्रहार होता है, वे शीघ्र ही पीछे हट जाते हैं. **18** अन्य लोग उस भूमि के समान हैं, जहां सुसमाचार कांटों के बीच बोया जाता है. वे सुसमाचार को सुनते हैं, **19** संसार की चिंताएं, धन-संपत्ति का छलावा तथा अन्य वस्तुओं की लालसाओं का प्रवेश उस सुसमाचार को दबा देता है, जिससे उसका फलदाई होना असंभव हो जाता है. **(aiōn g165)** **20** अन्य लोग उस बीज के समान हैं, जो उत्तम भूमि में बोया जाता है जो संदेश को सुनता हैं, उसे ग्रहण करते हैं तथा फल लाता है—बोया गया बीज के तीस गुणा, साठ गुणा तथा सौ गुणा.” **21** मसीह येशु ने आगे कहा, “दीपक को इसलिये नहीं जलाया जाता कि उसे टोकरी या चारपाई के नीचे रख दिया जाए. क्या उसे दीवट पर नहीं रखा जाता? **22** ऐसा कुछ भी नहीं, जो छुपा है और खोला न जाएगा और न कुछ गुप्त है, जो प्रकाश में न लाया जाएगा. **23** जिस किसी के सुनने के कान हों, वह सुन ले.” **24** इसके बाद मसीह येशु ने कहा, “इसका विशेष ध्यान रखो कि तुम क्या सुनते हो. तुम्हारा नापना उसी नाप से किया जाएगा जिसका इस्तेमाल स्वयं तुम करते हो—तुम्हें ज़रूर इससे भी अधिक दिया जाएगा. **25** जिसके पास है उसे और भी अधिक दिया जाएगा; जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है.” **26** मसीह येशु ने आगे कहा, “परमेश्वर का राज्य उस व्यक्ति के समान है, जिसने भूमि पर बीज डाल दिया **27** और रात में जाकर सो गया. प्रातः उठकर उसने देखा कि बीज अंकुरित होकर बड़ा हो रहा है. कैसी होती है यह प्रक्रिया, यह वह स्वयं नहीं जानता. **28** भूमि स्वयं उपज उत्पन्न करती है. सबसे पहले अंकुर उगता है, फिर बालें, उसके बाद बालों में दाना. **29** दाना पड़ने पर वह उसे बिना देरी किए हसिया से काट लेता है क्योंकि उपज तैयार है.” **30** तब मसीह येशु ने आगे कहा, “परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे की जा सकती है? किस दृष्टांत के द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है? **31** यह राई के बीज के समान है. जब यह भूमि में बोया जाता है, यह बोये गए अन्य सभी बीजों की तुलना में छोटा होता है **32** फिर भी बोये जाने पर यह बड़ा होना शुरू कर देता है तथा खेत के सभी पौधों से अधिक बड़ा हो जाता है—इतना कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं.” **33** सुननेवालों की समझ के अनुसार मसीह येशु इसी प्रकार के दृष्टान्तों के द्वारा अपना सुसमाचार प्रस्तुत करते थे; **34** बिना दृष्टांत के वह उनसे कुछ भी नहीं कहते थे, और वह अपने शिष्यों के लिए इनका अर्थ तभी बताया करते थे, जब शिष्य उनके साथ अकेले होते थे. **35** उसी दिन शाम के समय में मसीह येशु ने शिष्यों से कहा, “चलो, उस पार चलें.” **36** भीड़ को वहीं छोड़, उन्होंने मसीह येशु को, वह जैसे थे वैसे ही, अपने साथ नाव में ले तुरंत चल दिए. कुछ अन्य नावें भी उनके साथ हो लीं. **37** उसी समय हवा बहुत तेजी से चलने लगी. तेज लहरों के थपेड़ों के कारण नाव में पानी भरने लगा. **38** मसीह येशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाए हुए सो रहे थे. उन्हें जगाते हुए शिष्य बोले, “गुरुवर! आपको हमारी चिंता ही नहीं कि हम नाश हुए जा रहे हैं!” **39** मसीह येशु जाग गए. उन्होंने बवंडर को डांटा तथा लहरों को आज्ञा दी, “शांत हो जाओ! स्थिर हो जाओ!” बवंडर शांत हो गया तथा पूरी शांति छा गई. **40** मसीह येशु शिष्यों को देखकर बोले, “क्यों इतने भयभीत हो तुम? क्या कारण है कि तुममें अब तक विश्वास नहीं?” **41** शिष्य अत्यंत भयभीत थे. वे आपस में कहने लगे, “कौन है यह कि बवंडर और झील तक इनका आज्ञापालन करते हैं!”

5 तब वे झील के दूसरे तट पर गिरासेन क्षेत्र में आए. **2** मसीह येशु के नाव से नीचे उतरते ही एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी कब्र से निकलकर उनके पास आया. **3** वह कब्रों के मध्य ही रहा करता था. अब कोई भी उसे सांकलों तथा बेड़ियों से भी बांध पाने में समर्थ न था. **4** बहुधा उसे बेड़ियों तथा सांकलों में बांधे जाने के प्रयास किए गए किंतु वह सांकलों को तोड़ देता तथा बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर डालता था. अब किसी में इतनी क्षमता न थी कि उसे वश में कर सके. **5** रात-दिन कब्रों के मध्य तथा पहाड़ियों में वह चिल्लाता रहता था तथा स्वयं को पत्थर मार-मार कर घायल कर लेता था. **6** दूर से ही जब उसने मसीह येशु को देखा, वह दौड़कर उनके पास आया, अपना सिर झुकाया **7** और उसमें से ऊंची आवाज में ये शब्द सुनाई दिए, “परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र येशु! मेरा आपका कोई लेनदेन नहीं. आपको परमेश्वर की शपथ, मुझे कोई कष्ट न दें,” **8** क्योंकि मसीह येशु उसे आज्ञा दे चुके थे, “ओ दुष्टात्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!” **9** तब मसीह येशु ने उससे प्रश्न किया, “क्या नाम है तेरा?” दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, “सेना—क्योंकि हम बहुत हैं.” **10** दुष्टात्मा मसीह येशु से विनती करने लगा कि वह उसे उस प्रदेश से बाहर न भेजें. **11** वहीं पहाड़ी पर सूअरों का एक विशाल झुंड चर रहा था. **12** दुष्टात्मा-समूह ने मसीह येशु से विनती की, “हमें इन सूअरों में भेज दीजिए कि हम उनमें जा बसें.” **13** मसीह येशु ने उन्हें यह आज्ञा दे दी. वे दुष्टात्मा बाहर निकलकर उन सूअरों में प्रवेश कर गए. लगभग दो हज़ार सूअरों का वह झुंड पहाड़ की तीव्र ढलान पर तेज गति से दौड़ता हुआ झील में जा डूबा. **14** भयभीत रखवाले भाग गए तथा नगर और पास के क्षेत्रों में जाकर इस घटना के विषय में बताने लगे. नगरवासी, जो कुछ हुआ था, उसे देखने वहां आने लगे. **15** जब वे मसीह येशु के पास पहुंचे, उन्होंने देखा कि वह दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति वस्त्र धारण किए हुए सचेत स्थिति में वहां बैठा था. यह वही व्यक्ति था जिसमें दुष्टात्माओं की सेना पैठी थी. यह देख वे डर गए. **16** सारे घटनाक्रम को देखनेवाले लोगों ने उनके सामने इसका बयान किया कि दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति तथा सूअरों के साथ क्या-क्या हुआ है. **17** इस पर वे मसीह येशु से विनती करने लगे कि वह उनके क्षेत्र से बाहर चले जाएं. **18** जब मसीह येशु नाव पर सवार हो रहे थे, दुष्टात्माओं से विमुक्त हुआ व्यक्ति मसीह येशु से विनती करने लगा कि उसे उनके साथ ले लिया जाए. **19** मसीह येशु ने उसे इसकी अनुमति नहीं दी परंतु उसे आदेश दिया, “अपने परिजनों के पास लौट जाओ और उन्हें बताओ कि तुम्हारे लिए प्रभु ने कैसे-कैसे आश्चर्यकर्म किए हैं तथा तुम पर उनकी कैसी कृपादृष्टि हुई है.” **20** वह देकापोलिस नगर में गया और उन कामों का वर्णन करने लगा, जो मसीह येशु ने उसके लिए किए थे. यह सुन सभी चकित रह गए. **21** मसीह येशु दोबारा झील के दूसरे तट पर चले गए. एक बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठी हो गयी. मसीह येशु झील तट पर ही रहे. **22** स्थानीय यहूदी सभागृह का एक अधिकारी, जिसका नाम जाइरूस था, वहां आया. यह देख कि वह कौन हैं,

वह उनके चरणों पर गिर पड़ा. 23 बड़ी ही विनती के साथ उसने मसीह येशु से
कहा, "मेरी बेटी मरने पर है. कृपया चलिए और उस पर हाथ रख दीजिए कि
वह स्वस्थ हो जाए और जीवित रहे." 24 मसीह येशु उसके साथ चले गए.
बड़ी भीड़ भी उनके पीछे-पीछे चल रही थी और लोग उन पर गिरे पड़ते थे.
25 एक स्त्री बारह वर्ष से लहूस्राव-पीड़ित थी. 26 अनेक चिकित्सकों के हाथों
से उसने अनेक पीड़ाएं सही थी. इसमें वह अपना सब कुछ व्यय कर चुकी थी,
फिर भी इससे उसे लाभ के बदले हानि ही उठानी पड़ी थी. 27 मसीह येशु के
विषय में सुनकर उसने भीड़ में पीछे से आकर येशु के वस्त्र के छोर को छुआ.
28 उसका यह विश्वास था: "यदि मैं उनके वस्त्र को भी छू लूं, तो मैं स्वस्थ हो
जाऊंगी." 29 उसी क्षण उसका रक्तस्राव थम गया. स्वयं उसे अपने शरीर में यह
मालूम हो गया कि वह अपनी पीड़ा से ठीक हो चुकी है. 30 उसी क्षण मसीह
येशु को भी यह आभास हुआ कि उनमें से सामर्थ्य निकली है. भीड़ में ही
उन्होंने मुड़कर प्रश्न किया, "कौन है वह, जिसने मेरे वस्त्र को छुआ है?" 31
शिष्यों ने उनसे कहा, "आप तो देख ही रहे हैं कि किस प्रकार भीड़ आप पर
गिरी पड़ रही है, और आप प्रश्न कर रहे हैं, 'कौन है वह, जिसने मेरे वस्त्र को
छुआ है!'" 32 प्रभु की दृष्टि उसे खोजने लगी, जिसने यह किया था. 33 वह
स्त्री यह जानते हुए कि उसके साथ क्या हुआ है, भय से कांपती हुई उनके चरणों
पर आ गिरी और उन पर सारी सच्चाई प्रकट कर दी. 34 मसीह येशु ने उस स्त्री
से कहा, "पुत्री, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया है. शांति में विदा हो जाओ
और स्वस्थ रहो." 35 जब मसीह येशु यह कह ही रहे थे, याइरॉस के घर से
आए कुछ लोगों ने यह सूचना दी, "आपकी पुत्री की मृत्यु हो चुकी है. अब
गुरुवर को कष्ट देने का क्या लाभ?" 36 मसीह येशु ने यह सुन उस यहूदी
सभागृह अधिकारी से कहा, "भयभीत न हो—केवल विश्वास करो." 37
उन्होंने पेतरॉस, याकोब तथा याकोब के भाई योहन के अतिरिक्त अन्य किसी
को भी अपने साथ आने की अनुमति न दी, 38 और ये सब यहूदी सभागृह
अधिकारी के घर पर पहुंचे. मसीह येशु ने देखा कि वहां शोर मचा हुआ है
तथा लोग ऊंची आवाज में रो-पीट रहे हैं. 39 घर में प्रवेश कर मसीह येशु ने
उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "यह शोर और रोना-पीटना क्यों! बच्ची की
मृत्यु नहीं हुई है—वह केवल सो रही है." 40 यह सुन वे मसीह येशु का ठट्ठा
करने लगे. किंतु मसीह येशु ने उन सभी को वहां से बाहर निकाल बच्ची के
माता-पिता तथा अपने साथियों को साथ ले उस कक्ष में प्रवेश किया, जहां
वह बालिका थी. 41 वहां उन्होंने बालिका का हाथ पकड़कर उससे कहा,
"तालीथा कोऊम" (अर्थात् बेटी, उठो!) 42 उसी क्षण वह उठ खड़ी हुई और
चलने फिरने लगी. इस पर वे सभी चकित रह गए. बालिका बारह वर्ष की थी.
43 मसीह येशु ने उन्हें स्पष्ट आदेश दिए कि इस घटना के विषय में कोई भी
जानने न पाए और फिर उनसे कहा कि उस बालिका को खाने के लिए कुछ
दिया जाए.

6 मसीह येशु वहां से अपने गृहनगर आए. उनके शिष्य उनके साथ थे. 2
शब्बाथ पर वे यहूदी सभागृह में शिक्षा देने लगे. उनको सुन उनमें से अनेक
चकित हो कहने लगे. "कहां से प्राप्त हुआ इसे यह सब? कहां से प्राप्त हुआ है
इसे यह बुद्धि कौशल और हाथों से यह अद्भुत काम करने की क्षमता? 3 क्या
यह वही बढ़ई नहीं? क्या यह मरियम का पुत्र तथा याकोब, योसेस, यहूदाह
तथा शिमओन का भाई नहीं? क्या उसी की बहनें हमारे मध्य नहीं हैं?" इस पर
उन्होंने मसीह येशु को अस्वीकार कर दिया. 4 मसीह येशु ने उनसे कहा,
"भविष्यवक्ता हर जगह सम्मानित होता है सिवाय अपने स्वयं के नगर में,
अपने संबंधियों तथा परिवार के मध्य." 5 कुछ रोगियों पर हाथ रख उन्हें
स्वस्थ करने के अतिरिक्त मसीह येशु वहां कोई अन्य अद्भुत काम न कर सके.
6 मसीह येशु को उनके अविश्वास पर बहुत ही आश्चर्य हुआ. मसीह येशु
नगर-नगर जाकर शिक्षा देते रहे. 7 उन्होंने उन बारहों को बुलाया और उन्हें
दुष्टात्माओं पर अधिकार देते हुए उन्हें दो-दो करके भेज दिया. 8 मसीह येशु ने
उन्हें आदेश दिए, "इस यात्रा में छड़ी के अतिरिक्त अपने साथ कुछ न ले
जाना—न भोजन, न झोली और न पैसा. 9 हां, चप्पल तो पहन सकते हो किंतु
अतिरिक्त बाहरी वस्त्र नहीं." 10 आगे उन्होंने कहा, "जिस घर में भी तुम ठहरो
उस नगर से विदा होने तक वहीं रहना. 11 जहां कहीं तुम्हें स्वीकार न किया
जाए या तुम्हारा प्रवचन न सुना जाए, वह स्थान छोड़ते हुए अपने पैरों की धूल
वहीं झाड़ देना कि यह उनके विरुद्ध प्रमाण हो." 12 शिष्यों ने प्रस्थान किया. वे
यह प्रचार करने लगे कि पश्चाताप सभी के लिए ज़रूरी है. 13 उन्होंने अनेक
दुष्टात्माएं निकाली तथा अनेक रोगियों को तेल मलकर उन्हें स्वस्थ किया. 14
राजा हेरोदेस तक इसका समाचार पहुंच गया क्योंकि मसीह येशु की ख्याति
दूर-दूर तक फैल गयी थी. कुछ तो यहां तक कह रहे थे, "बपतिस्मा देनेवाले
योहन मरे हुओं में से जीवित हो गए हैं. यही कारण है कि मसीह येशु में यह
अद्भुत सामर्थ्य प्रकट है." 15 कुछ कह रहे थे, "वह एलियाह हैं." कुछ यह
भी कहते सुने गए, "वह एक भविष्यवक्ता हैं—अतीत में हुए भविष्यद्वक्ताओं
के समान." 16 यह सब सुनकर हेरोदेस कहता रहा, "योहन, जिसका मैंने
वध करवाया था, जीवित हो गया है." 17 स्वयं हेरोदेस ने योहन को बंदी
बनाकर कारागार में डाल दिया था क्योंकि उसने अपने भाई फ़िलिप्पॉस की
पत्नी हेरोदिअस से विवाह कर लिया था. 18 योहन हेरोदेस को याद दिलाते रहते
थे, "तुम्हारे लिए अपने भाई की पत्नी को रख लेना व्यवस्था के अनुसार नहीं
है." इसलिये 19 हेरोदियास के मन में योहन के लिए शत्रुभाव पनप रहा था. वह
उनका वध करवाना चाहती थी किंतु उससे कुछ नहीं हो पा रहा था. 20 हेरोदेस
योहन से डरता था क्योंकि वह जानता था कि योहन एक धर्मी और पवित्र
व्यक्ति हैं. हेरोदेस ने योहन को सुरक्षित रखा था. योहन के प्रवचन सुनकर वह
घबराता तो था फिर भी उसे उनके प्रवचन सुनना बहुत प्रिय था. 21 आखिरकार
हेरोदिअस को वह मौका प्राप्त हो ही गया: अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में
हेरोदेस ने अपने सभी उच्च अधिकारियों, सेनापतियों और गलील प्रदेश के
प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भोज पर आमंत्रित किया. 22 इस अवसर पर हेरोदिअस
की पुत्री ने वहां अपने नृत्य के द्वारा हेरोदेस और अतिथियों को मोह लिया. राजा
ने पुत्री से कहा. "मुझसे चाहे जो मांग लो, मैं दूंगा." 23 राजा ने शपथ खाते हुए
कहा, "तुम जो कुछ मांगोगी, मैं तुम्हें दूंगा—चाहे वह मेरा आधा राज्य ही क्यों
न हो." 24 अपनी मां के पास जाकर उसने पूछा, "क्या मांगूं?" "बपतिस्मा
देनेवाले योहन का सिर," उसने कहा. 25 पुत्री ने तुरंत जाकर राजा से कहा, "मैं
चाहती हूं कि आप मुझे इसी समय एक थाल में बपतिस्मा देनेवाले योहन का
सिर लाकर दें." 26 हालांकि राजा को इससे गहरा दुःख तो हुआ किंतु आमंत्रित
अतिथियों के सामने ली गई अपनी शपथ के कारण वह अस्वीकार न कर सका.
27 तत्काल राजा ने एक जल्लाद को बुलवाया और योहन का सिर ले आने की
आज्ञा दी. वह गया, कारागार में योहन का वध किया 28 और उनका सिर एक
बर्तन में रखकर पुत्री को सौंप दिया और उसने जाकर अपनी माता को सौंप
दिया. 29 जब योहन के शिष्यों को इसका समाचार प्राप्त हुआ, वे आए और
योहन के शव को ले जाकर एक कब्र में रख दिया. 30 प्रेरित लौटकर मसीह
येशु के पास आए और उन्हें अपने द्वारा किए गए कामों और दी गई शिक्षा का
विवरण दिया. 31 मसीह येशु ने उनसे कहा, "आओ, कुछ समय के लिए कहीं
एकांत में चलें और विश्राम करें," क्योंकि अनेक लोग आ जा रहे थे और उन्हें
भोजन तक का अवसर प्राप्त न हो सका था. 32 वे चुपचाप नाव पर सवार हो
एक सुनसान जगह पर चले गए. 33 लोगों ने उन्हें वहां जाते हुए देख लिया.
अनेकों ने यह भी पहचान लिया कि वे कौन थे. आस-पास के नगरों से अनेक
लोग दौड़ते हुए उनसे पहले ही उस स्थान पर जा पहुंचे. 34 जब मसीह येशु तट

पर पहुंचे, उन्होंने वहां एक बड़ी भीड़ को इकट्ठा देखा. उसे देख वह दुःखी हो उठे क्योंकि उन्हें भीड़ बिना चरवाहे की भेड़ों के समान लगी. वहां मसीह येशु उन्हें अनेक विषयों पर शिक्षा देने लगे. 35 दिन ढल रहा था. शिष्यों ने मसीह येशु के पास आकर उनसे कहा, “यह सुनसान जगह है और दिन ढला जा रहा है. 36 अब आप इन्हें विदा कर दीजिए कि ये पास के गांवों में जाकर अपने लिए भोजन-व्यवस्था कर सकें.” 37 किंतु मसीह येशु ने उन्हीं से कहा, “तुम ही दो इन्हें भोजन!” शिष्यों ने इसके उत्तर में कहा, “इतनों के भोजन में कम से कम दो सौ दीनार लगेंगे. क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर इनके लिए इतने का भोजन ले आएं?” 38 मसीह येशु ने उनसे पूछा, “कितनी रोटियां हैं यहां? जाओ, पता लगाओ!” उन्होंने पता लगाकर उत्तर दिया, “पांच—और इनके अलावा दो मछलियां भी.” 39 मसीह येशु ने सभी लोगों को झुंडों में हरी घास पर बैठ जाने की आज्ञा दी. 40 वे सभी सौ-सौ और पचास-पचास के झुंडों में बैठ गए. 41 मसीह येशु ने वे पांच रोटियां और दो मछलियां लेकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर उनके लिए धन्यवाद प्रकट किया. तब वह रोटियां तोड़ते और शिष्यों को देते गए कि वे उन्हें भीड़ में बांटते जाएं. इसके साथ उन्होंने वे दो मछलियां भी उनमें बांट दीं. 42 सभी ने भरपेट खाया. 43 शिष्यों ने शेष रह गए रोटियों तथा मछलियों के टुकड़े इकट्ठा किए तो बारह टोकरे भर गए. 44 जिन्होंने भोजन किया था, उनमें पुरुष ही पांच हज़ार थे. 45 तुरंत ही मसीह येशु ने शिष्यों को जबरन नाव पर बैठा उन्हें अपने से पहले दूसरे किनारे पर स्थित नगर बैथसैदा पहुंचने के लिए विदा किया—वह स्वयं भीड़ को विदा कर रहे थे. 46 उन्हें विदा करने के बाद वह प्रार्थना के लिए पर्वत पर चले गए. 47 रात हो चुकी थी. नाव झील के मध्य में थी. मसीह येशु किनारे पर अकेले थे. 48 मसीह येशु देख रहे थे कि हवा उल्टी दिशा में चलने के कारण शिष्यों को नाव खेने में कठिन प्रयास करना पड़ रहा था. रात के चौथे प्रहर मसीह येशु झील की सतह पर चलते हुए उनके पास जा पहुंचे और ऐसा अहसास हुआ कि वह उनसे आगे निकलना चाह रहे थे. 49 उन्हें जल सतह पर चलता देख शिष्य समझे कि कोई दुष्टात्मा है और वे चिल्ला उठे 50 क्योंकि उन्हें देख वे भयभीत हो गए थे. इस पर मसीह येशु ने कहा, “मैं हूं! मत डरो! साहस मत छोड़ो!” 51 यह कहते हुए वह उनकी नाव में चढ़ गए और वायु थम गई. शिष्य इससे अत्यंत चकित रह गए. 52 रोटियों की घटना अब तक उनकी समझ से परे थी. उनके हृदय निर्बुद्धि जैसे हो गए थे. 53 झील पार कर वे गन्नेसरत प्रदेश में पहुंच गए. उन्होंने नाव वहीं लगा दी. 54 मसीह येशु के नाव से उतरते ही लोगों ने उन्हें पहचान लिया. 55 जहां कहीं भी मसीह येशु होते थे, लोग दौड़-दौड़ कर बिछौनों पर रोगियों को वहां ले आते थे. 56 मसीह येशु जिस किसी नगर, गांव या बाहरी क्षेत्र में प्रवेश करते थे, लोग रोगियों को सार्वजनिक स्थलों में लिटा कर उनसे विनती करते थे कि उन्हें उनके वस्त्र के छोर का स्पर्श मात्र ही कर लेने दें. जो कोई उनके वस्त्र का स्पर्श कर लेता था, स्वस्थ हो जाता था.

7 येरूशलेम नगर से फ़रीसियों तथा कुछ शास्त्रियों ने आकर मसीह येशु को घेर लिया. 2 उन्होंने देखा कि मसीह येशु के कुछ शिष्य सांस्कारिक रूप से अशुद्ध हाथों से (बिना धोए हुए हाथों से) भोजन कर रहे हैं. 3 फ़रीसी और सभी यहूदी हाथों को भली-भांति धोए बिना भोजन नहीं करते. ऐसा करते हुए वे पूर्वजों से चली आ रही प्रथाओं का पालन करते थे. 4 बाजार से लौटने पर वे स्वयं को पारम्परिक रीति से शुद्ध किए बिना भोजन नहीं करते थे. वे चली आ रही अन्य अनेक प्रथाओं का पालन करते चले आए थे जैसे, कटोरों, घड़ों तथा पकाने के तांबे के बर्तनों का धोना. 5 फ़रीसियों तथा शास्त्रियों ने मसीह येशु से प्रश्न किया, “तुम्हारे शिष्य पूर्वजों से चली आ रही प्रथाओं का पालन क्यों नहीं करते? वे अशुद्ध हाथों से भोजन करते हैं.” 6 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम पाखंडियों के लिए भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी ठीक ही है: “‘ये लोग मात्र अपने होंठों से मेरा सम्मान करते हैं, किंतु उनके हृदय मुझसे बहुत दूर हैं. 7 मेरे प्रति उनकी उपासना व्यर्थ है. उनकी शिक्षाएं मात्र मनुष्य के मस्तिष्क की उपज हैं.’ 8 आप लोग मनुष्यों की परंपराओं का तो पालन करते जाते हैं किंतु परमेश्वर की आज्ञा को टालते जाते हैं.” 9 मसीह येशु ने उनसे यह भी कहा, “आप लोग कितनी सुविधापूर्वक परंपराओं का पालन करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा को टाल देते हैं! 10 मोशेह की आज्ञा है, ‘अपने माता-पिता का सम्मान करो और वह, जो माता या पिता के प्रति बुरे शब्द बोले, उसे मृत्यु दंड दिया जाए.’ 11 किंतु आपका कहना है, ‘यदि कोई व्यक्ति अपने पिता या माता से इस प्रकार कहे, मेरी संपत्ति में से जो कुछ आपकी सहायता के लिए उपलब्ध हो सकता था, वह कोरबान है अर्थात् परमेश्वर को समर्पित,’ 12 इसके द्वारा आप उसे अपने पिता और अपनी माता के लिए कुछ भी करने नहीं देते. 13 अपनी इस प्रथा के द्वारा, जो पूर्वजों से चली आई है, आप परमेश्वर के वचन को टाल देते हैं. आप ऐसे ही अनेक काम किया करते हैं.” 14 इसके बाद मसीह येशु ने भीड़ को दोबारा अपने पास बुलाकर उसे संबोधित करते हुए कहा, “तुम सब मेरी सुनो और समझो: 15 ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो मनुष्य में बाहर से प्रवेश कर उसे अशुद्ध कर सके. मनुष्य को अशुद्ध तो वह करता है, जो उसके भीतर से बाहर निकल आता है. [16 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले.]” 17 जब भीड़ से विदा ले वह घर में आ गए, उनके शिष्यों ने उनसे इस दृष्टांत के विषय में प्रश्न किया. 18 इसके उत्तर में मसीह येशु ने कहा, “क्या तुममें भी बुद्धि का इतना अभाव है? क्या तुम्हें समझ नहीं आया कि जो कुछ मनुष्य में बाहर से प्रवेश करता है, उसे अशुद्ध नहीं कर सकता 19 क्योंकि वह उसके हृदय में नहीं, परंतु उसके पेट में जाता है और बाहर निकल जाता है!” इस प्रकार मसीह येशु ने सभी प्रकार के भोजन को स्वच्छ घोषित कर दिया. 20 “जो मनुष्य में से बाहर आता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है. 21 मनुष्य के भीतर से—मनुष्य के हृदय ही से—बुरे विचार बाहर आते हैं, जो उसे चोरी, हत्या, व्यभिचार, 22 लोभ, दुराचारिता, छल-कपट, कामुकता, जलन, निंदा, अहंकार तथा मूर्खता की ओर लगा देते हैं. 23 ये सभी अवगुण मनुष्य के अंदर से बाहर आते तथा उसे अशुद्ध करते हैं.” 24 मसीह येशु वहां से निकलकर सोर प्रदेश में चले गए, जहां वह एक घर में ठहरे हुए थे और नहीं चाहते थे कि भीड़ को उनके विषय में कुछ मालूम हो किंतु उनका वहां आना छिप न सका. 25 उनके विषय में सुनकर एक स्त्री उनसे भेंट करने वहां आई जिसकी पुत्री दुष्टात्मा से पीड़ित थी. वहां प्रवेश करते ही वह मसीह येशु के चरणों पर जा गिरी. 26 वह स्त्री यूनानी थी—सुरोफ़ॉयनिकी जाति की. वह मसीह येशु से विनती करती रही कि वह उसकी पुत्री में से दुष्टात्मा को निकाल दें. 27 मसीह येशु ने उससे कहा, “पहले बालकों को तो तृप्त हो जाने दो! बालकों को परोसा भोजन उनसे लेकर कुत्तों को देना सही नहीं!” 28 किंतु इसके उत्तर में उस स्त्री ने कहा, “सच है प्रभु, किंतु कुत्ते भी तो बालकों की मेज़ पर से गिरे टुकड़ों से अपना पेट भर लेते हैं.” 29 मसीह येशु ने उससे कहा, “तुम्हारे इस उत्तर का परिणाम यह है कि दुष्टात्मा तुम्हारी पुत्री को छोड़कर जा चुकी है. घर लौट जाओ.” 30 घर पहुंचकर उसने अपनी पुत्री को बिछौने पर लेटा हुआ पाया. दुष्टात्मा उसे छोड़कर जा चुकी थी. 31 तब वह सोर के क्षेत्र से निकलकर सीदोन क्षेत्र से होते हुए गलील झील के पास आए, जो देकापोलिस अंचल में था. 32 लोग उनके पास एक ऐसे व्यक्ति को लाए जो बहिरा था तथा बड़ी कठिनाई से बोल पाता था. लोगों ने मसीह येशु से उस व्यक्ति पर हाथ रखने की विनती की. 33 मसीह येशु उस व्यक्ति को भीड़ से दूर एकांत में ले गए. वहां उन्होंने उसके कानों में अपनी उंगलियां डालीं. इसके बाद अपनी लार उसकी जीभ पर लगाई. 34 तब एक गहरी आह भरते हुए स्वर्ग की ओर दृष्टि उठाकर उन्होंने उस व्यक्ति को संबोधित कर कहा, “एफ़्फ़ाथा!” (अर्थात् खुल जा!) 35 उस व्यक्ति के कान खुल गए, उसकी

जीभ की रुकावट भी जाती रही और वह सामान्य रूप से बातें करने लगा. 36
मसीह येशु ने लोगों को आज्ञा दी कि वे इसके विषय में किसी से न कहें किंतु
मसीह येशु जितना रोकते थे, वे उतना ही अधिक प्रचार करते जाते थे. 37
लोग आश्चर्य से भरकर कहा करते थे, "वह जो कुछ करते हैं, भला ही करते
हैं—यहां तक कि वह बहिरे को सुनने की तथा गूंगे को बोलने की शक्ति प्रदान
करते हैं."

8 इन्हीं दिनों की घटना है कि एक बार फिर वहां एक बड़ी भीड़ इकट्ठी
हो गयी. उनके पास खाने को कुछ न था. मसीह येशु ने अपने शिष्यों को
बुलाकर उनसे कहा, 2 "इनके लिए मेरे हृदय में करुणा उमड़ रही है, क्योंकि ये
सब तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं. इनके पास अब कुछ भी भोजन सामग्री
नहीं है. 3 यदि मैं इन्हें भूखा ही घर भेज दूं, वे मार्ग में हीं मूर्च्छित हो जाएंगे.
इनमें से कुछ तो अत्यंत दूर से आए हैं." 4 शिष्यों ने कहा, "इस दूर स्थान में
सब की तृप्ति के लिए भोजन का प्रबंध कौन कर पायेगा?" 5 मसीह येशु ने
उनसे पूछा, "कितनी रोटियां हैं तुम्हारे पास?" "सात," उन्होंने उत्तर दिया. 6
मसीह येशु ने भीड़ को भूमि पर बैठ जाने की आज्ञा दी; फिर सातों रोटियां लीं,
उनके लिए धन्यवाद प्रकट कर उन्हें तोड़ा और उन्हें बांटने के लिए शिष्यों को
देते गए. शिष्य उन्हें भीड़ में बांटते गए. 7 उनके पास कुछ छोटी मछलियां भी
थी. उन पर धन्यवाद करते हुए मसीह येशु ने उन्हें भी बांटने की आज्ञा दी. 8
लोग खाकर तृप्त हुए. शिष्यों ने तोड़ी गई रोटियों के शेष टुकड़ों को इकट्ठा
कर सात बड़े टोकरे भर लिए. 9 इस भीड़ में लगभग चार हज़ार लोग थे. तब
मसीह येशु ने उन्हें विदा किया. 10 इसके बाद मसीह येशु बिना देर किए अपने
शिष्यों के साथ नाव पर सवार होकर दालमनूथा क्षेत्र में आ गए. 11 फ़रीसियों ने
आकर उनसे विवाद प्रारंभ कर दिया. उन्होंने यह परखने के लिए कि मसीह येशु
परमेश्वर-पुत्र हैं, स्वर्ग का कोई चमत्कार चिह्न की मांग की. 12 मसीह येशु ने
अपने अंदर में गहरी पीड़ा में कराहते हुए उन्हें उत्तर दिया, "यह पीढ़ी चमत्कार
चिह्न क्यों चाहती है? सच तो यह है कि इस पीढ़ी को कोई भी चमत्कार चिह्न
नहीं दिया जाएगा." 13 उन्हें छोड़कर मसीह येशु नाव पर सवार होकर दूसरी
ओर चले गए. 14 शिष्य अपने साथ भोजन रखना भूल गए थे—उनके पास
नाव में मात्र एक रोटी थी. 15 मसीह येशु ने शिष्यों को चेतावनी देते हुए कहा,
"फ़रीसियों के खमीर से तथा हेरोदेस के खमीर से सावधान रहना." 16 इस पर
वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, "वह यह इसलिये कह रहे हैं कि हमने
अपने साथ रोटियां नहीं रखीं." 17 उनकी स्थिति समझते हुए मसीह येशु ने
उनसे कहा, "रोटी के न होने के विषय में वाद-विवाद क्यों किए जा रहे हो?
क्या अब भी तुम्हें कुछ समझ नहीं आ रहा? क्या तुम्हारा हृदय कठोर हो गया
है? 18 आंखें होते हुए भी तुम्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा और कानों के होते हुए
भी तुम कुछ सुन नहीं पा रहे? तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहा! 19 जब मैंने पांच
हज़ार व्यक्तियों के लिए पांच रोटियां परोसीं तुमने टुकड़ों से भरे कितने टोकरे
इकट्ठा किए थे?" "बारह," उन्होंने उत्तर दिया. 20 "जब मैंने चार हज़ार के
लिए सात रोटियां परोसीं तब तुमने टुकड़ों से भरे कितने टोकरे इकट्ठा किए
थे?" "सात," उन्होंने उत्तर दिया. 21 तब मसीह येशु ने उनसे पूछा, "क्या अब
भी तुम्हारी समझ में नहीं आया?" 22 वे बैथसैदा नगर आए. वहां लोग एक
अंधे व्यक्ति को उनके पास लाए और उनसे विनती की कि वह उसका स्पर्श
करें. 23 मसीह येशु उस अंधे का हाथ पकड उसे गांव के बाहर ले गए. वहां
उन्होंने उस व्यक्ति की आंखों पर थूका और उस पर हाथ रखते हुए उससे पूछा,
"क्या तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है?" 24 उसने ऊपर दृष्टि करते हुए कहा, "मुझे
लोग दिख रहे हैं परंतु वे ऐसे दिख रहे हैं जैसे चलते फिरते पेड़." 25 मसीह येशु
ने दोबारा उस पर अपने हाथ रखे और उसकी ओर एकटक देखा और उसे दृष्टि
प्राप्त हो गई—उसे सब कुछ साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा. 26 मसीह येशु ने उसे
उसके घर भेजते हुए कहा, "अब इस गांव में कभी न आना." 27 मसीह येशु
अपने शिष्यों के साथ कयसरिया प्रांत के फ़िलिप्पॉय नगर के पास के गांवों की
यात्रा कर रहे थे. मार्ग में उन्होंने अपने शिष्यों से यह प्रश्न किया, "मैं कौन
हूं इस विषय में लोगों का क्या मत है?" 28 उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ के
लिए बपतिस्मा देनेवाले योहन, कुछ के लिए एलियाह तथा कुछ के लिए आप
भविष्यद्वक्ताओं में से एक हैं." 29 "तुम्हारा अपना मत क्या है?" मसीह येशु ने
उनसे आगे प्रश्न किया. पेतरॉस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं." 30 मसीह येशु
ने शिष्यों को सावधान किया कि वे किसी से भी उनकी चर्चा न करें. 31 तब
मसीह येशु उन्हें यह समझाने लगे कि यह अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र अनेक
यातनाएं सहे, पुरनियों, प्रधान पुरोहितों तथा विधान के शिक्षकों द्वारा तुच्छ
घोषित किया जाए, उसकी हत्या कर दी जाए और तीन दिन बाद वह मरे हुओं में
से जीवित हो जाए. 32 यह सब उन्होंने अत्यंत स्पष्ट रूप से कहा. उनके इस
कथन पर पेतरॉस उन्हें अलग ले जाकर डांटने लगे. 33 किंतु मसीह येशु पीछे
मुड़े और अपने शिष्यों को देखकर उन्होंने पेतरॉस को डांटा, "दूर हो जा मेरी
दृष्टि से, शैतान! तेरा मन परमेश्वर संबंधी विषयों में नहीं परंतु मनुष्य संबंधी
विषयों में लगा हुआ है." 34 तब उन्होंने भीड़ के साथ अपने शिष्यों को भी
अपने पास बुलाया और उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "जो कोई मेरे पीछे आना
चाहे, वह अपना इनकार कर अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले. 35
इसलिये कि जो कोई अपने जीवन की रक्षा करना चाहता है, वह उसे गंवा देगा
तथा जो कोई मेरे तथा सुसमाचार के लिए अपने प्राण गंवा देता है, उसे सुरक्षित
पाएगा. 36 भला इसका क्या लाभ कि कोई व्यक्ति पूरा संसार तो प्राप्त करे किंतु
अपना प्राण खो दे? 37 या किस वस्तु से मनुष्य अपने प्राण का अदला-बदली
कर सकता है? 38 जो कोई इस अविश्वासी तथा पापमय युग में मुझे तथा मेरे
वचन को लज्जा का विषय समझता है, मनुष्य का पुत्र भी, जब वह अपने पिता
की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, उसे स्वीकार करने में लज्जा का
अनुभव करेगा."

9 तब मसीह येशु ने उनसे कहा, "मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर
रहा हूं: यहां उपस्थित व्यक्तियों में कुछ ऐसे हैं, जो मृत्यु तब तक न चखेंगे,
जब तक वे परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आया हुआ न देख लें." 2
छः दिन बाद मसीह येशु केवल पेतरॉस, याकोब तथा योहन को एक ऊंचे पर्वत
पर ले गए कि उन्हें वहां एकांत मिल सके. वहां उन्हीं के सामने मसीह येशु का
रूपान्तरण हुआ. 3 उनके वस्त्र उज्जवल तथा इतने अधिक सफ़ेद हो गए कि
पृथ्वी पर कोई भी किसी भी रीति से इतनी उज्जवल सफेदी नहीं ला सकता. 4
उन्हें वहां मोशेह के साथ एलियाह दिखाई दिए. वे मसीह येशु के साथ बातें कर
रहे थे. 5 यह देख पेतरॉस बोल उठे, "रब्बी! हमारा यहां होना कितना सुखद है!
हम यहां तीन मंडप बनाएं—एक आपके लिए, एक मोशेह के लिए तथा एक
एलियाह के लिए." 6 पेतरॉस को यह मालूम ही न था कि वह क्या कहे जा रहे
हैं—इतने अत्यधिक भयभीत हो गए थे शिष्य! 7 तभी एक बादल ने वहां
अचानक प्रकट होकर उन्हें ढक लिया और उसमें से निकला एक शब्द सुनाई
दिया, "यह मेरा पुत्र है—मेरा परम प्रिय—जो वह कहता है, उस पर ध्यान दो!"
8 तभी उन्होंने देखा कि मसीह येशु के अतिरिक्त वहां कोई भी न था. 9 पर्वत से
नीचे उतरते हुए मसीह येशु ने शिष्यों को सावधान किया कि जब तक मनुष्य का
पुत्र मरे हुओं में से जीवित न हो जाए, तब तक जो उन्होंने देखा है उसकी चर्चा
किसी से न करें. 10 इस घटना को उन्होंने अपने तक ही सीमित रखा. हां, वे
इस विषय पर विचार-विमर्श अवश्य करते रहे कि मरे हुओं में से जीवित होने का
मतलब क्या हो सकता है. 11 शिष्यों ने मसीह येशु से प्रश्न किया, "क्या कारण
है कि शास्त्री कहते हैं कि पहले एलियाह का आना अवश्य है?" 12 मसीह
येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "सच है. एलियाह ही पहले आएगा तथा सब कुछ

व्यवस्थित करेगा. अब यह बताओ: पवित्र शास्त्र में मनुष्य के पुत्र के विषय में यह वर्णन क्यों है कि उसे अनेक यातनाएं दी जाएंगी तथा उसे तुच्छ समझा जाएगा? 13 सुनो! वास्तव में एलियाह आ चुके है और उन्होंने उनके साथ मनमाना व्यवहार किया—ठीक जैसा कि वर्णन किया गया था.” 14 जब ये तीन लौटकर शेष शिष्यों के पास आए तो देखा कि एक बड़ी भीड़ उन शिष्यों के चारों ओर जमा हो गई है और शास्त्री वाद-विवाद किए जा रहे थे. 15 मसीह येशु को देखते ही भीड़ को आश्चर्य हुआ और वह नमस्कार करने उनकी ओर दौड़ पड़ी. 16 मसीह येशु ने शिष्यों से पूछा, “किस विषय पर उनसे वाद-विवाद कर रहे थे तुम?” 17 भीड़ में से एक व्यक्ति ने उनसे कहा, “गुरुवर, मैं अपने पुत्र को आपके पास लाया था. उसमें समाई हुई आत्मा ने उसे गूंगा बना दिया है. 18 जब यह दुष्टात्मा उस पर प्रबल होती है, उसे भूमि पर पटक देती है. उसके मुंह से फेन निकलने लगता है, वह दांत पीसने लगता है तथा उसका शरीर ऐंठ जाता है. मैंने आपके शिष्यों से इसे निकालने की विनती की थी किंतु वे असफल रहे.” 19 मसीह येशु ने भीड़ से कहा, “अरे ओ अविश्वासी और बिगड़ी हुई पीढ़ी!” प्रभु येशु ने कहा, “मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, कब तक धीरज रखूंगा? यहां लाओ बालक को!” 20 लोग बालक को उनके पास ले आए. मसीह येशु पर दृष्टि पड़ते ही दुष्टात्मा ने बालक में ऐंठन उत्पन्न कर दी. वह भूमि पर गिरकर लोटने लगा और उसके मुंह से फेन आने लगा. 21 मसीह येशु ने बालक के पिता से पूछा, “यह सब कब से हो रहा है?” “बचपन से,” उसने उत्तर दिया. 22 “इस दुष्टात्मा ने उसे हमेशा जल और आग दोनों ही में फेंककर नाश करने की कोशिश की है. यदि आपके लिए कुछ संभव है, हम पर दया कर हमारी सहायता कीजिए!” 23 “यदि आपके लिए!” मसीह येशु ने कहा, “सब कुछ संभव है उसके लिए, जो विश्वास करता है.” 24 ऊंचे शब्द में बालक के पिता ने कहा, “मैं विश्वास करता हूं. मेरे अविश्वास को दूर करने में मेरी सहायता कीजिए.” 25 जब मसीह येशु ने देखा कि और अधिक लोग बड़ी शीघ्रतापूर्वक वहां इकट्ठा होते जा रहे हैं, उन्होंने दुष्टात्मा को डांटते हुए कहा, “ओ गूंगे और बहिरे दुष्टात्मा, मेरा आदेश है कि इसमें से बाहर निकल जा और इसमें फिर कभी प्रवेश न करना.” 26 उस बालक को और भी अधिक भयावह ऐंठन में डालकर चिल्लाते हुए वह दुष्टात्मा उसमें से निकल गया. वह बालक ऐसा हो गया मानो उसके प्राण ही निकल गए हों. कुछ तो यहां तक कहने लगे, “इसकी मृत्यु हो गई है.” 27 किंतु मसीह येशु ने बालक का हाथ पकड़ उसे उठाया और वह खड़ा हो गया. 28 जब मसीह येशु ने उस घर में प्रवेश किया एकांत पाकर शिष्यों ने उनसे पूछा, “हम उस दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल सके?” 29 येशु ने उत्तर दिया, “सिवाय प्रार्थना के इस वर्ग निकाला ही नहीं जा सकता.” 30 वहां से निकलकर उन्होंने गलील प्रदेश का मार्ग लिया. मसीह येशु नहीं चाहते थे कि किसी को भी इस यात्रा के विषय में मालूम हो. 31 इसलिये कि मसीह येशु अपने शिष्यों को यह शिक्षा दे रहे थे, “मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों पकड़वा दिया जाएगा. वे उसकी हत्या कर देंगे. तीन दिन बाद वह मरे हुओं में से जीवित हो जाएगा.” 32 किंतु यह विषय शिष्यों की समझ से परे रहा तथा वे इसका अर्थ पूछने में डर भी रहे थे. 33 कफ़रनहूम नगर पहुंचकर जब उन्होंने घर में प्रवेश किया मसीह येशु ने शिष्यों से पूछा, “मार्ग में तुम किस विषय पर विचार-विमर्श कर रहे थे?” 34 शिष्य मौन बने रहे क्योंकि मार्ग में उनके विचार-विमर्श का विषय था उनमें बड़ा कौन है. 35 मसीह येशु ने बैठते हुए बारहों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “यदि किसी की इच्छा बड़ा बनने की है, वह छोटा हो जाए और सबका सेवक बने.” 36 उन्होंने एक बालक को उनके मध्य खड़ा किया और फिर उसे गोद में लेकर शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, 37 “जो कोई ऐसे बालक को मेरे नाम में स्वीकार करता है, मुझे स्वीकार करता है तथा जो कोई मुझे स्वीकार करता है, वह मुझे नहीं परंतु मेरे भेजनेवाले को स्वीकार करता है.” 38 योहन ने मसीह येशु को सूचना दी, “गुरुवर, हमने एक व्यक्ति को आपके नाम में दुष्टात्मा निकालते हुए देखा है. हमने उसे रोकने का प्रयास किया क्योंकि वह हममें से नहीं है.” 39 “मत रोको उसे!” मसीह येशु ने उन्हें आज्ञा दी, “कोई भी, जो मेरे नाम में अद्भुत काम करता है, दूसरे ही क्षण मेरी निंदा नहीं कर सकता 40 क्योंकि वह व्यक्ति, जो हमारे विरुद्ध नहीं है, हमारे पक्ष में ही है. 41 यदि कोई तुम्हें एक कटोरा जल इसलिये पिलाता है कि तुम मसीह के शिष्य हो तो मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं; वह अपना प्रतिफल न खोएगा. 42 “और यदि कोई इन मासूम बालकों के, जिन्होंने मुझ पर विश्वास रखा है, पतन का कारण बने, उसके लिए सही यही होगा कि उसके गले में चक्की का पाट बांध उसे समुद्र में फेंक दिया जाए. 43 यदि तुम्हारा हाथ तुम्हारे लिए ठोकर का कारण बने तो उसे काट फेंको. तुम्हारे लिए सही यह होगा कि तुम एक विकलांग के रूप में जीवन में प्रवेश करो, बजाय इसके कि तुम दोनों हाथों के होते हुए नर्क में जाओ, जहां आग कभी नहीं बुझती, [(Geenna g1067) 44 जहां उनका कीड़ा कभी नहीं मरता, जहां आग कभी नहीं बुझती]. 45 यदि तुम्हारा पांव तुम्हारे लिए ठोकर का कारण हो जाता है उसे काट फेंको. तुम्हारे लिए सही यही होगा कि तुम लंगड़े के रूप में जीवन में प्रवेश करो, बजाय इसके कि तुम दो पांवों के होते हुए नर्क में फेंके जाओ, [(Geenna g1067) 46 जहां उनका कीड़ा कभी नहीं मरता, जहां आग कभी नहीं बुझती]. 47 यदि तुम्हारी आंख तुम्हारे लिए ठोकर का कारण बने तो उसे निकाल फेंको! तुम्हारे लिए सही यही होगा कि तुम एक आंख के साथ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करो, बजाय इसके कि तुम दोनों आंखों के साथ नर्क में फेंके जाओ, (Geenna g1067) 48 जहां “‘उनका कीड़ा कभी नहीं मरता, जहां आग कभी नहीं बुझती.’ 49 हर एक व्यक्ति आग द्वारा नमकीन किया जाएगा. 50 “नमक एक आवश्यक वस्तु है, किंतु यदि नमक अपना खारापन खो बैठे तो किस वस्तु से उसका खारापन वापस कर सकोगे? तुम स्वयं में नमक तथा आपस में मेल-मिलाप बनाए रखो.”

10 मसीह येशु वहां से निकलकर यहूदिया के उस क्षेत्र में चले गए, जो यरदन नदी के पार था. भीड़ फिर से उनके चारों ओर इकट्ठी हो गई. अपनी रीति के अनुसार मसीह येशु ने एक बार फिर उन्हें शिक्षा देना प्रारंभ किया. 2 उन्हें परखने के उद्देश्य से कुछ फ़रीसी उनके पास आ गए. उन्होंने मसीह येशु से प्रश्न किया, “क्या पुरुष के लिए पत्नी से तलाक लेना व्यवस्था के अनुसार है?” 3 मसीह येशु ने ही उनसे प्रश्न किया, “तुम्हारे लिए मोशेह का आदेश क्या है?” 4 फ़रीसियों ने उन्हें उत्तर दिया, “मोशेह ने तलाक पत्र लिखकर पत्नी का त्याग करने की अनुमति दी है.” 5 मसीह येशु ने उन्हें समझाया, “तुम्हारे कठोर हृदय के कारण मोशेह ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा रखी. 6 किंतु वास्तव में सृष्टि के प्रारंभ ही से परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया. 7 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे. 8 वे दोनों एक शरीर हो जाएंगे; परिणामस्वरूप अब वे दोनों दो नहीं परंतु एक शरीर हैं. 9 इसलिये जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने जोड़ा है, उन्हें कोई मनुष्य अलग न करे.” 10 जब वे अपने घर लौट आए, शिष्यों ने मसीह येशु से इसके विषय में जानना चाहा. 11 मसीह येशु ने उन्हें समझाया, “यदि कोई अपनी पत्नी से तलाक लेकर अन्य स्त्री से विवाह करता है, वह उस अन्य स्त्री के साथ व्यभिचार करता है. 12 यदि स्वयं स्त्री अपने पति से तलाक लेकर अन्य पुरुष से विवाह कर लेती है, वह भी व्यभिचार करती है.” 13 मसीह येशु को छू लेने के उद्देश्य से लोग बालकों को उनके पास ला रहे थे. इस पर शिष्य उन्हें डांटने लगे. 14 यह देख मसीह येशु ने अप्रसन्न होते हुए उनसे कहा, “बालकों को यहां आने दो, उन्हें मेरे पास आने से मत रोको क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है. 15 मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं; जो परमेश्वर के राज्य

को एक नन्हे बालक के भाव में ग्रहण नहीं करता, उसमें कभी प्रवेश न कर पाएगा." **16** तब मसीह येशु ने बालकों को अपनी गोद में लिया और उन पर हाथ रख उन्हें आशीर्वाद दिया. **17** मसीह येशु अपनी यात्रा प्रारंभ कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति उनके पास दौड़ता हुआ आया और उनके सामने घुटने टेकते हुए उनसे पूछने लगा, "उत्तम गुरु, अनंत काल का जीवन प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूं?" **(aiōnios g166)** **18** मसीह येशु ने उससे कहा, "उत्तम मुझे क्यों कह रहे हो? परमेश्वर के अलावा उत्तम कोई भी नहीं है. **19** आज्ञा तो तुम्हें मालूम ही हैं: हत्या न करो, व्यभिचार न करो, चोरी न करो, झूठी गवाही न दो, छल न करो, माता-पिता का सम्मान करो." **20** उसने उत्तर दिया, "गुरुवर, मैं बाल्यावस्था से इनका पालन करता आया हूं." **21** युवक को एकटक देखते हुए मसीह येशु का हृदय उस युवक के प्रति स्नेह से भर गया. उन्होंने उससे कहा, "एक ही कमी है तुममें: जाओ, अपनी सारी संपत्ति बेचकर प्राप्त राशि गरीबों में बांट दो. धन तुम्हें स्वर्ग में प्राप्त होगा. लौटकर आओ और मेरा अनुगमन करो." **22** ये शब्द सुनते ही उसका मुंह लटक गया. वह शोकित हृदय से लौट गया क्योंकि वह बड़ी संपत्ति का स्वामी था. **23** मसीह येशु ने अपने आस-पास इकट्ठा शिष्यों से कहा, "परमेश्वर के राज्य में धनवानों का प्रवेश कितना कठिन होगा!" **24** मसीह येशु के इन विचारों से शिष्य चकित रह गए. एक बार फिर मसीह येशु ने उनसे कहा, "अज्ञानियो! कितना कठिन होगा! परमेश्वर के राज्य में प्रवेश! **25** परमेश्वर के राज्य में किसी धनवान के प्रवेश की अपेक्षा ऊंट का सुई के छेद में से पार हो जाना सरल है." **26** यह सुन शिष्य और भी अधिक चकित हो गए और मसीह येशु से पूछने लगे, "तब उद्धार किसका हो सकेगा?" **27** उनकी ओर देखते हुए मसीह येशु ने कहा, "मनुष्यों के लिए तो यह असंभव है किंतु परमेश्वर के लिए नहीं—परमेश्वर के लिए सभी कुछ संभव है." **28** पेतरॉस मसीह येशु से बोले, "हम तो अपना सब कुछ त्याग कर आपके पीछे हो लिए हैं." **29** मसीह येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम पर एक अटल सच प्रकट कर रहा हूं: ऐसा कोई भी नहीं, जिसने मेरे तथा सुसमाचार के हित में अपने परिवार, भाई-बहन, माता-पिता, संतान या संपत्ति का त्याग किया हो, **30** उसे इस युग में उत्पीडन के साथ प्रतिफल स्वरूप परिवार, भाई-बहन, माता-पिता, संतान तथा संपत्ति का सौ गुणा तथा आनेवाले समय में अनंत काल का जीवन प्राप्त न होगा. **(aiōn g165, aiōnios g166)** **31** किंतु अनेक, जो पहले हैं अंतिम होंगे तथा जो अंतिम हैं वे पहले." **32** येरूशलेम नगर की ओर जाते हुए मसीह येशु उन सबके आगे-आगे चल रहे थे. शिष्य चकित थे तथा पीछे चलनेवाले अन्य लोग डरे हुए थे. बारहों को अलग ले जाकर मसीह येशु ने उन्हें बताना प्रारंभ किया कि स्वयं उनके साथ क्या-क्या होना ज़रूरी है. **33** "हम येरूशलेम नगर को जा रहे हैं, वहां मनुष्य के पुत्र को प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों के हाथों में सौंप दिया जाएगा. वे उस पर मृत्यु दंड की आज्ञा प्रसारित करेंगे तथा उसे गैर-यहूदियों को सौंप देंगे. **34** वे सब उसका ठट्ठा उड़ाएंगे, उस पर थूकेंगे, कोड़े लगाएंगे, और उसकी हत्या कर देंगे तथा तीन दिन बाद वह मरे हुओं में से फिर जीवित हो जाएगा." **35** ज़ेबेदियॉस के दोनों पुत्र, याकोब तथा योहन, मसीह येशु के पास आकर विनती कर कहने लगे, "गुरुवर, हमारी इच्छा है कि हम आपसे जो भी विनती करें, आप उसे हमारे लिए पूरी कर दें." **36** मसीह येशु ने उनसे पूछा, "क्या चाहते हो?" **37** "हमारी इच्छा है कि आपकी महिमा के समय में हम आपकी दायीं तथा बायीं ओर में बैठें," उन्होंने विनती की. **38** तब मसीह येशु ने उत्तर दिया, "तुम्हें तो यह मालूम ही नहीं कि तुम क्या मांग रहे हो. क्या तुममें वह प्याला पी सकते हो जिसे मैं पीने पर हूं, या तुम उस बपतिस्मा ले सकते हो, जो मैं लेनेवाला हूं?" **39** उन्होंने उत्तर दिया, "अवश्य." मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "वह प्याला, जो मैं पिऊंगा, तुम भी पिओगे तथा तुम्हें वही बपतिस्मा दिया जाएगा, जो मुझे दिया जाएगा. **40** किंतु किसी को अपने दायें या बायें पक्ष में बैठाना मेरा अधिकार नहीं है. ये स्थान उन्हीं के लिए सुरक्षित हैं, जिन्हें इनके लिए तैयार किया गया है." **41** यह सुन शेष दस शिष्य याकोब और योहन पर नाराज़ हो गए. **42** उन सबको अपने पास बुलाकर मसीह येशु ने उनसे कहा, "वे, जो इस संसार में शासक हैं, अपने लोगों पर प्रभुता करते हैं तथा उनके बड़े अधिकारी उन पर अपना अधिकार दिखाया करते हैं, **43** किंतु तुम्हारे विषय में ऐसा नहीं है. तुममें जो बड़ा बनने का इच्छुक है, उसको तुम्हारा सेवक हो जाना ज़रूरी है. **44** तुममें जो कोई श्रेष्ठ होना चाहता है, वह सबका दास हो. **45** क्योंकि मनुष्य का पुत्र यहां इसलिये नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परंतु इसलिये कि सेवा करे और अनेकों की छुड़ौती के लिए अपना जीवन बलिदान कर दे." **46** इसके बाद मसीह येशु येरीख़ो नगर आए. जब वह अपने शिष्यों तथा एक विशाल भीड़ के साथ येरीख़ो नगर से निकलकर जा रहे थे, उन्हें मार्ग के किनारे बैठा हुआ एक अंधा व्यक्ति, तिमाऊ का पुत्र बारतिमाऊ, भीख मांगता हुआ मिला. **47** जब उसे यह मालूम हुआ कि वह यात्री नाज़रेथवासी मसीह येशु हैं, वह पुकारने लगा, "दावीद-पुत्र, येशु! मुझ पर कृपा कीजिए!" **48** उनमें से अनेक उसे पुकारने से रोकने की भरपूर कोशिश करने लगे, किंतु वह और भी अधिक पुकारता गया, "दावीद की संतान, येशु! मुझ पर कृपा कीजिए!" **49** मसीह येशु ने रुक कर आज्ञा दी, "उसे यहां लाओ!" तब उन्होंने उस अंधे व्यक्ति के पास जाकर उससे कहा, "उठो, आनंद मनाओ! प्रभु तुम्हें बुला रहे हैं." **50** अंधा व्यक्ति बाहरी वस्त्र फेंक, उछलकर खड़ा हो गया तथा मसीह येशु के पास आ गया. **51** मसीह येशु ने उससे पूछा, "क्या चाहते हो मुझसे?" "अपनी आंखों की रोशनी दुबारा पाना चाहता हूं, रब्बी!" अंधे ने उत्तर दिया. **52** मसीह येशु ने उसे आज्ञा दी, "जाओ, यह तुम्हारा विश्वास है, जिसके द्वारा तुम स्वस्थ हो गए हो." उसी क्षण उस व्यक्ति की आंखों की रोशनी लौट आई और वह उनके पीछे चलने लगा.

11 जब वे येरूशलेम के पास ज़ैतून पर्वत के समीप बैथनियाह तथा बैथफ़गे गांव के पास पहुंचे, मसीह येशु ने अपने दो शिष्यों को यह आज्ञा देकर भेजा, **2** "इस गांव में जाओ. वहां प्रवेश करने पर तुम्हें एक गधी का बच्चा बंधा हुआ दिखाई देगा, जिस पर अब तक कोई नहीं बैठा है. उसे खोलकर मेरे पास ले आओ. **3** यदि कोई तुमसे यह पूछे, 'यह क्या कर रहे हो?' तो तुम यह उत्तर देना, 'प्रभु को इसकी ज़रूरत है, वह शीघ्र ही इसे लौटा देंगे.'" **4** वे चले गए. उन्होंने गली में द्वार के पास गधी का एक बच्चे को बंधे देखा. उन्होंने उसे खोल लिया. **5** वहां खड़े हुए कुछ व्यक्तियों ने यह देख उनसे पूछा, "क्यों खोल रहे हो इसे?" **6** उन्होंने उन्हें वही उत्तर दिया जैसा मसीह येशु ने उन्हें आदेश दिया था और उन लोगों ने उन्हें जाने दिया. **7** वे गधी के उस बच्चे को मसीह येशु के पास ले आए. उन्होंने अपने वस्त्र उस पर बिछा दिए और मसीह येशु उस पर बैठ गए. **8** अनेकों ने मार्ग पर अपने वस्त्र बिछा दिए और कुछ ने नए पत्तों से लदी हुई डालियां, जो वे मैदान से काटकर लाए थे. **9** वे सब लोग, जो मसीह येशु के आगे-आगे तथा पीछे-पीछे चल रहे थे, नारे लगा रहे थे, "होशान्ना!" "धन्य हैं वह जो प्रभु के नाम में आ रहे हैं." **10** "धन्य है हमारे कुलपिता दावीद का आगामी राज्य." "सबसे ऊंचे स्वर्ग में होशान्ना!" **11** येरूशलेम नगर में प्रवेश करने पर मसीह येशु मंदिर में आए और वहां का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करने के बाद उन्होंने बारहों के साथ बैथनियाह नगर की ओर चलना शुरू किया क्योंकि शाम हो गयी थी. **12** दूसरे दिन जब वे बैथनियाह से चले तो मसीह येशु को भूख लगी. **13** दूर ही से उन्हें अंजीर का एक हरा-भरा पेड़ दिखाई दिया. वह उस पेड़ के पास आए कि कदाचित उन्हें उसमें कुछ मिल जाए किंतु वहां उन्हें पत्तियों के अतिरिक्त कुछ भी न मिला क्योंकि उसमें फल लगने का समय अभी नहीं आया था. **14** उस पेड़ से मसीह येशु ने कहा, "अब तुझसे कभी भी कोई फल न खाए!" शिष्य यह सुन रहे थे.

(aiōn g165) 15 वे येरूशलेम पहुंचे और मसीह येशु ने मंदिर में जाकर उन सभी
को मंदिर से बाहर निकाल दिया, जो वहां लेनदेन कर रहे थे. साथ ही येशु ने
साहूकारों की चौकियां उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के आसनों को पलट
दिया. 16 मसीह येशु ने किसी को भी मंदिर में बेचने का सामान लेकर आने
जाने की अनुमति न दी. 17 वहां शिक्षा देते हुए मसीह येशु ने कहा, “क्या पवित्र
शास्त्र में तुमने यह नहीं पढ़ा: ‘सारे राष्ट्रों के लिए मेरा भवन प्रार्थना का भवन
होगा’? और यहां तुमने इसे डाकुओं की ‘गुफ़ा बना रखा है.’” 18 इस घटना के
विषय में मालूम होने पर प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री मसीह येशु की हत्या की
युक्ति खोजने लगे. उन्हें भीड़ का भय था क्योंकि मसीह येशु की शिक्षा से भीड़
प्रभावित थी. 19 संध्या होने पर मसीह येशु तथा उनके शिष्य नगर के बाहर चले
जाते थे. 20 प्रातःकाल, जब वे वहां से आ रहे थे, उन्होंने उस अंजीर के पेड़
को जड़ से सूखा हुआ पाया. 21 पेतरॉस ने याद करते हुए कहा, “रब्बी देखिए!
जिस पेड़ को आपने शाप दिया था, वह सूख गया है.” 22 इसके उत्तर में मसीह
येशु ने कहा, “परमेश्वर में विश्वास रखो, 23 मैं तुम पर एक अटल सत्य प्रकट
कर रहा हूं: यदि तुम्हें विश्वास हो—संदेह तनिक भर भी न हो—तो तुम न
केवल वह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया परंतु तुम यदि इस
पर्वत को भी आज्ञा दोगे, ‘उखड़ जा और समुद्र में जा गिर!’ तो यह भी हो
जाएगा. 24 इसलिये तुमसे मुझे यह कहना है: प्रार्थना में विश्वास से तुम जो भी
विनती करोगे, उनके लिए यह विश्वास कर लो कि वे तुम्हें प्राप्त हो गई हैं, तो
वे तुम्हें प्रदान की जाएंगी. 25 इसी प्रकार, जब तुम प्रार्थना करो और तुम्हारे
हृदय में किसी के विरुद्ध कुछ हो, उसे क्षमा कर दो, जिससे तुम्हारे स्वर्गीय
पिता भी तुम्हारे पाप क्षमा कर दें. [26 किंतु यदि तुम क्षमा नहीं करते हो तो
तुम्हारे स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे पाप क्षमा न करेंगे.]” 27 इसके बाद वे दोबारा
येरूशलेम नगर आए. जब मसीह येशु मंदिर परिसर में टहल रहे थे, प्रधान
पुरोहित, शास्त्री तथा प्रवर (नेतागण) उनके पास आए 28 और उनसे प्रश्न करने
लगे, “किस अधिकार से तुम यह सब कर रहे हो? कौन है वह, जिसने तुम्हें यह
सब करने का अधिकार दिया है?” 29 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “आप
लोगों से मैं भी एक प्रश्न करूंगा. जब आप मुझे उसका उत्तर देंगे तब मैं भी
आपके इस प्रश्न का उत्तर दूंगा कि मैं किस अधिकार से यह सब कर रहा हूं. 30
यह बताइए कि योहन का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था या मनुष्यों की ओर
से?” 31 वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “यदि हम यह कहते हैं कि वह
परमेश्वर की ओर से था तो यह कहेगा, ‘तब आप लोगों ने उस पर विश्वास
क्यों नहीं किया?’ 32 और यदि हम यह कहें, ‘मनुष्यों की ओर से’” वस्तुतः
यह कहने में उन्हें जनसाधारण का भय था क्योंकि जनसाधारण योहन को
भविष्यवक्ता मानता था. 33 उन्होंने मसीह येशु को उत्तर दिया, “हम नहीं
जानते.” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “ठीक है, मैं भी तुम्हें यह नहीं बताता
कि मैं ये सब किस अधिकार से कर रहा हूं.”

12 मसीह येशु ने उन्हें दृष्टान्तों के माध्यम से शिक्षा देना प्रारंभ किया: “एक
व्यक्ति ने बगीचे में अंगूर की बेल लगाई, उसके चारों ओर बाड़ लगाई,
उसमें रसकुंड खोदा, रक्षा करने का मचान बनाया और उसे किसानों को पट्टे पर
देकर यात्रा पर चला गया. 2 उपज के अवसर पर उसने अपने एक दास को उन
किसानों के पास भेजा कि वह उनसे उपज का कुछ भाग ले आए. 3 किसानों ने
उस दास को पकड़ा, उसकी पिटाई की तथा उसे खाली हाथ लौटा दिया. 4 उस
व्यक्ति ने फिर एक अन्य दास को भेजा. किसानों ने उसके सिर पर प्रहार कर
उसे घायल कर दिया तथा उसके साथ शर्मनाक व्यवहार किया. 5 उस व्यक्ति ने
फिर एक और दास को उनके पास भेजा, जिसकी तो उन्होंने हत्या ही कर दी.
उसने अन्य बहुत दासों को भेजे, उन्होंने कुछ को मारा-पीटा तथा बाकियों
की हत्या कर दी. 6 “अब उसके पास भेजने के लिए एक ही व्यक्ति शेष
था—उसका प्रिय पुत्र. अंततः उसने उसे ही उनके पास भेज दिया. उसका विचार
था, ‘वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे.’ 7 “उन किसानों ने आपस में विचार
किया, ‘सुनो, यह वारिस है. यदि इसकी हत्या कर दें तो यह संपत्ति ही हमारी
हो जाएगी!’ 8 उन्होंने उसकी हत्या कर दी और उसे बारी के बाहर निकालकर
फेंक दिया. 9 “अब बगीचे के स्वामी के सामने कौन सा विकल्प शेष रह गया
है? वह आकर उन किसानों का नाश करेगा और उद्यान का पट्टा अन्य किसानों
को दे देगा. 10 क्या तुमने पवित्र शास्त्र का यह लेख नहीं पढ़ा: “‘जिस पत्थर
को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा घोषित कर दिया था, वही कोने का मुख्य पत्थर बन
गया; 11 यह प्रभु की ओर से हुआ, और यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है’?” 12
फलस्वरूप प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री प्रभु येशु को पकड़ने की योजना में जुट
गए, क्योंकि वे यह समझ गए थे कि प्रभु येशु ने उन पर ही यह दृष्टांत कहा है.
किंतु उन्हें भीड़ का भय था. इसलिए इस अवसर पर वे मसीह येशु को छोड़
वहां से चले गए. 13 यहूदियों ने मसीह येशु के पास कुछ फ़रीसियों तथा
हेरोदेस समर्थकों को भेजा कि मसीह येशु को उनकी ही किसी बात में फंसाया
जा सके. 14 उन्होंने आकर मसीह येशु से यह प्रश्न किया, “गुरुवर, यह तो हमें
मालूम है कि आप एक सच्चे व्यक्ति हैं. आपको किसी के समर्थन की ज़रूरत
नहीं है क्योंकि आप में पक्षपात है ही नहीं. आप पूरी सच्चाई में परमेश्वर
संबंधी शिक्षा देते हैं. हमें यह बताइए: कयसर को कर देना व्यवस्था के अनुसार
है या नहीं? 15 हम कर दें या नहीं?” उनका पाखंड भांप कर मसीह येशु ने
उनसे कहा, “क्यों मुझे फंसाने की युक्ति कर रहे हो? दीनार की मुद्रा लाकर
मुझे दिखाओ.” 16 वे मसीह येशु के पास एक मुद्रा ले आए. मसीह येशु ने वह
मुद्रा उन्हें दिखाते हुए उनसे प्रश्न किया, “यह छाप तथा नाम किसका है?”
“कयसर का,” उन्होंने उत्तर दिया. 17 मसीह येशु ने उनसे कहा, “जो कयसर
का है, वह कयसर को दो और जो परमेश्वर का, वह परमेश्वर को.” यह सुन वे
दंग रह गए. 18 फिर सदूकी लोग, जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते, प्रभु
येशु के पास आए. उन्होंने उनसे प्रश्न किया, 19 “गुरुवर, हमारे लिए मोशेह के
निर्देश हैं यदि किसी निःसंतान पुरुष का पत्नी के रहते हुए निधन हो जाए तो
उसका भाई उस स्त्री से विवाह कर अपने भाई के लिए संतान पैदा करे. 20 इसी
संदर्भ में एक घटना इस प्रकार है: सात भाई थे. पहले ने विवाह किया और बिना
संतान ही चल बसा. 21 दूसरे भाई ने उसकी पत्नी से विवाह कर लिया, वह भी
बिना संतान ही चल बसा. तीसरे भाई की भी यही स्थिति रही. 22 इस प्रकार
सातों भाइयों की मृत्यु बिना संतान ही हो गई. इसके बाद उस स्त्री की भी मृत्यु
हो गई. 23 अब यह बताइए कि पुनरुत्थान पर वह किसकी पत्नी कहलाएगी?
क्योंकि उसका विवाह तो सातों भाइयों से हुआ था.” 24 मसीह येशु ने उन्हें
उत्तर दिया, “तुम्हारी इस भूल का कारण यह है कि तुमने न तो पवित्र शास्त्र के
लेखों को समझा है और न ही परमेश्वर के सामर्थ्य को. 25 पुनरुत्थान में लोग न
तो विवाहित होते हैं और न ही वहां विवाह कराये जाते हैं—वहां वे स्वर्गदूतों के
समान होंगे. 26 जहां तक मरे हुओं के दुबारा जी उठने का प्रश्न है, क्या तुमने
मोशेह के ग्रंथ में नहीं पढ़ा, जहां जलती हुई झाड़ी का वर्णन है? परमेश्वर ने
मोशेह से कहा था, ‘मैं ही अब्राहाम का परमेश्वर, यित्सहाक का परमेश्वर तथा
याकोब का परमेश्वर हूं’? 27 आप लोग बड़ी गंभीर भूल में पड़े हैं! वह मरे हुओं
के नहीं परंतु जीवितों के परमेश्वर हैं.” 28 उसी समय एक शास्त्री वहां से जा
रहा था. उसने उनका वार्तालाप सुन लिया. यह देख कि मसीह येशु ने उन्हें
सटीक उत्तर दिया है, उसने मसीह येशु से पूछा, “सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी
है?” 29 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “सबसे बड़ी आज्ञा है: ‘सुनो, इस्राएलियो!
प्रभु हमारे परमेश्वर अद्वितीय प्रभु हैं. 30 तुम प्रभु तुम्हारे परमेश्वर से अपने सारे
हृदय, सारे प्राण, सारे समझ तथा सारी शक्ति से प्रेम करो.’ 31 दूसरी आज्ञा है,
‘तुम अपने पड़ोसी से अपने ही समान प्रेम करो.’ इससे बढ़कर कोई और आज्ञा

है ही नहीं." 32 उस शास्त्री ने मसीह येशु से कहा, "अति सुंदर, गुरुवर! आपका
कहना हमेशा ही सत्य है. वही एकमात्र हैं—उनके अतिरिक्त और कोई नहीं है
33 तथा उनसे ही सारे हृदय, सारी समझ तथा सारी शक्ति से प्रेम करना, तथा
अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना सभी होमबलियों तथा बलिदानों से
बढ़कर है." 34 जब मसीह येशु ने यह देखा कि उसने बुद्धिमानी से उत्तर दिया
है, उन्होंने उससे कहा, "तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो." इसके बाद
किसी में भी उनसे और प्रश्न करने का साहस न रहा. 35 मंदिर के आंगन, में
शिक्षा देते हुए मसीह येशु ने उनके सामने यह प्रश्न रखा, "शास्त्री यह क्यों कहते
हैं कि मसीह दावीद के वंशज हैं? 36 दावीद ने, पवित्र आत्मा, में आत्मलीन हो
कहा था: "'प्रभु परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा: "मेरी दायीं ओर बैठे रहो जब
तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे अधीन न कर दूं."' 37 स्वयं दावीद उन्हें प्रभु
कहकर संबोधित कर रहे हैं इसलिये किस भाव में प्रभु दावीद के पुत्र हुए?" भीड़
उनके इस वाद-विवाद का आनंद ले रही थी. 38 आगे शिक्षा देते हुए मसीह येशु
ने कहा, "उन शास्त्रियों से सावधान रहना, जो लंबे ढीले लहराते वस्त्र पहने हुए
घूमा करते हैं, सार्वजनिक स्थलों पर सम्मानपूर्ण नमस्कार की आशा करते है.
39 वे यहूदी सभागृहों में मुख्य आसन और दावतों में मुख्य स्थान पसंद करते है.
40 वे विधवाओं के घर हड़प जाते हैं तथा मात्र दिखावे के उद्देश्य से लम्बी-लम्बी
प्रार्थनाएं करते हैं. कठोर होगा इनका दंड!" 41 मसीह येशु मंदिर के कोष के
सामने बैठे हुए थे. वह देख रहे थे कि लोग मंदिर कोष में किस प्रकार दान दे रहे
हैं. अनेक धनी लोग बड़ी-बड़ी राशि डाल रहे थे. 42 एक निर्धन विधवा भी
वहां आई, और उसने तांबे की दो छोटे सिक्के डाले हैं. 43 मसीह येशु ने अपने
शिष्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, "सच यह है कि इस निर्धन विधवा
ने कोष में उन सभी से बढ़कर दिया है. 44 क्योंकि शेष सभी ने तो अपने धन
की बढ़ती में से दिया है, किंतु इस विधवा ने अपनी निर्धनता में से अपनी सारी
संपत्ति ही दे दी—यह उसकी सारी जीविका थी."

13 जब मसीह येशु मंदिर से बाहर निकल रहे थे, उनके एक शिष्य ने उनका
ध्यान मंदिर परिसर की ओर खींचते हुए कहा, "देखिए, गुरुवर, कितने
विशाल हैं ये पत्थर और कितने बड़े हैं ये भवन!" 2 मसीह येशु ने उससे कहा,
"तुम्हें ये भवन बड़े लग रहे हैं! सच तो यह है कि एक दिन इन भवनों का एक
भी पत्थर दूसरे पर रखा न दिखेगा—हर एक पत्थर भूमि पर होगा." 3 मसीह
येशु ज़ैतून पर्वत पर मंदिर की ओर मुख किए हुए बैठे थे. एकांत पाकर पेतरॉस,
याकोब, योहन तथा आन्द्रेयास ने मसीह येशु से यह प्रश्न किया, 4 "हमको यह
बताइए कि यह कब घटित होगा तथा इन सबके निष्पादन (पूरा किया जाना) के
समय का लक्षण क्या होगा?" 5 तब मसीह येशु ने यह वर्णन करना प्रारंभ किया:
"इस विषय में सावधान रहना कि कोई तुम्हें भरमाने न पाए 6 क्योंकि मेरे नाम
में अनेक यह दावा करते आएंगे, 'मैं ही मसीह हूं' और इसके द्वारा अनेकों को
भरमा देंगे. 7 तुम युद्धों के विषय में तो सुनोगे ही साथ ही उनके विषय में उड़ते-
उड़ते समाचार भी. ध्यान रहे कि तुम इससे घबरा न जाओ क्योंकि इनका होना
अवश्य है—किंतु इसे ही अंत न समझ लेना. 8 राष्ट्र-राष्ट्र के तथा, राज्य-राज्य
के विरुद्ध उठ खड़ा होगा. हर जगह अकाल पड़ेंगे तथा भूकंप आएंगे, किंतु ये
सब घटनाएं प्रसववेदना का प्रारंभ मात्र होंगी. 9 "फिर भी चौकस रहना. वे
तुम्हें पकड़कर न्यायालय को सौंप देंगे, यहूदी सभागृहों में तुम्हें कोड़े लगाए
जाएंगे, मेरे लिए तुम्हें शासकों तथा राजाओं के सामने प्रस्तुत किया जाएगा कि
तुम उनके सामने मेरे गवाह हो जाओ. 10 यह ज़रूरी है कि इसके पहले सभी
राष्ट्रों में सुसमाचार का प्रचार किया जाए. 11 जब तुम बंदी बनाए जाओ और
तुम पर मुकद्दमा चलाया जाए तो यह चिंता न करना कि तुम्हें वहां क्या कहना
है. तुम वही कहोगे, जो कुछ तुम्हें वहां उसी समय बताया जाएगा क्योंकि वहां
तुम नहीं परंतु पवित्र आत्मा अपना पक्ष प्रस्तुत कर रहे होंगे. 12 "भाई अपने
भाई को तथा पिता अपनी संतान को हत्या के लिए पकड़वाएगा. बालक अपने
माता-पिता के विरुद्ध हो जाएंगे और उनकी हत्या का कारण बन जाएंगे. 13 मेरे
कारण सभी तुमसे घृणा करेंगे किंतु उद्धार वही पाएगा, जो अंत तक धीरज धरेगा
तथा स्थिर रहेगा. 14 "उस समय, जब तुम उस विनाशकारी घृणित वस्तु को
ऐसे स्थान में खड़ी दिखे, जो उसका निर्धारित स्थान नहीं है—पाठक इसे समझ
ले—तब वे, जो यहूदिया प्रदेश में हों पर्वतों पर भागकर जाएं. 15 वह, जो घर
की छत पर हो, घर में से सामान लेने नीचे न आए. 16 वह, जो खेत में हो,
अपना कपड़ा लेने पीछे न लौटे. 17 दयनीय होगी गर्भवती और शिशुओं को दूध
पिलाती स्त्रियों की स्थिति! 18 प्रार्थना करते रहो, ऐसा न हो कि तुम्हें जाड़े में
भागना पड़े 19 क्योंकि वह महाक्लेश काल होगा—ऐसा कि जो न तो सृष्टि के
प्रारंभ से आज तक देखा गया, न ही इसके बाद दोबारा देखा जाएगा. 20 "यदि
प्रभु द्वारा इसकी काल-अवधि घटाई न जाती, तो कोई भी जीवित न रहता. कुछ
चुने हुए विशेष लोगों के लिए यह अवधि घटा दी जाएगी. 21 उस समय यदि
कोई आकर तुम्हें सूचित करे, 'सुनो-सुनो, मसीह यहां हैं,' या 'वह वहां हैं,' तो
विश्वास न करना, 22 क्योंकि अनेक झूठे मसीह तथा अनेक झूठे भविष्यवक्ता
उठ खड़े होंगे. वे प्रभावशाली चमत्कार चिह्न दिखाएंगे तथा अद्भुत काम करेंगे
कि यदि संभव हुआ तो परमेश्वर द्वारा चुने हुओं को भी भटका दें. 23 सावधान
रहना, मैंने समय से पूर्व ही तुम्हें इसकी चेतावनी दे दी है. 24 "उन दिनों में
क्लेश के तुरंत बाद, "'सूर्य अंधेरा हो जाएगा, और चंद्रमा प्रकाश न देगा; 25
तथा आकाश से तारे नीचे गिरने लगेंगे. आकाशमंडल की शक्तियां हिलायी
जाएंगी.' 26 "तब आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिह्न प्रकट होगा, और वे
मनुष्य के पुत्र को आकाश में बादलों पर सामर्थ्य और प्रताप के साथ आता हुआ
देखेंगे. 27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, जो चारों दिशाओं से,
पृथ्वी के एक छोर से आकाश के दूसरे छोर तक जाकर उनके चुने हुओं को
इकट्ठा करेंगे. 28 "अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो: जब उसमें कोंपलें फूटने लगती
और पत्तियां निकलने लगती हैं तो तुम जान लेते हो कि गर्मी का समय पास है.
29 इसी प्रकार तुम जब भी इन सभी घटनाओं को देखो तो समझ लेना कि वह
पास है—द्वार पर ही है. 30 सच्चाई तो यह है कि इन घटनाओं के हुए बिना इस
युग का अंत नहीं होगा. 31 आकाश तथा पृथ्वी खत्म हो जाएंगे किंतु मेरे कहे
हुए शब्द कभी नहीं. 32 "वैसे उस दिन तथा उस समय के विषय में किसी को
भी मालूम नहीं है—न स्वर्गदूतों को और न ही पुत्र को—परंतु मात्र पिता को ही
यह मालूम है." 33 अब इसलिये कि तुम्हें उस विशेष क्षण के घटित होने के
विषय में कुछ भी मालूम नहीं है, सावधान रहो, सतर्क रहो. 34 यह स्थिति
ठीक वैसी ही है जैसी उस व्यक्ति की, जो अपनी सारी गृहस्थी अपने दासों
को सौंपकर दूर यात्रा पर निकल पड़ा. उसने हर एक दास को भिन्न-भिन्न
ज़िम्मेदारी सौंपी और द्वारपाल को भी सावधान रहने की आज्ञा दी. 35 "इसी
प्रकार तुम भी सावधान रहो क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि घर का स्वामी
लौटकर कब आएगा—शाम को, आधी रात या भोर को मुर्गे की बांग के समय.
36 ऐसा न हो कि उसका आना अचानक हो और तुम गहरी नींद में पाए जाओ.
37 जो मैं तुमसे कह रहा हूं, वह सभी से संबंधित है: सावधान रहो."

14 फ़सह तथा खमीर रहित रोटी के उत्सव के लिए मात्र दो दिन रह गए थे.
प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री इस खोज में थे कि मसीह येशु को पकड़कर
गुप्त रूप से उनकी हत्या कर दें, 2 क्योंकि उनका विचार था: "उत्सव के
समय में नहीं, अन्यथा बलवा हो जाएगा." 3 मसीह येशु बैथनियाह नगर आए.
वहां वह पूर्व कोढ़ रोगी शिमओन नामक व्यक्ति के घर पर भोजन के लिए बैठे
थे. एक स्त्री वहां संगमरमर के बर्तन में शुद्ध जटामांसी का अत्यंत कीमती इत्र ले
आई. उसने उस बर्तन को तोड़ वह इत्र मसीह येशु के सिर पर उंडेल दिया. 4
उपस्थित अतिथियों में से कुछ क्रुद्ध होकर आपस में बड़बड़ाने लगे, "क्यों कर

दिया इसने इस इत्र का फिज़ूल खर्च? 5 इसे तीन सौ दीनार से भी अधिक दाम
पर बेचकर वह राशि निर्धनों में बांटी जा सकती थी.” वे उस स्त्री को इसके लिए
डांटने लगे. 6 किंतु मसीह येशु ने उनसे कहा, “छोड़ दो उसे! क्यों सता रहे हो
उसे? उसने मेरे लिए एक सराहनीय काम किया है. 7 जहां तक निर्धनों का प्रश्न
है, वे तो तुम्हारे साथ हमेशा ही रहेंगे. तुम उनकी सहायता तो कभी भी कर
सकते हो, किंतु मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूंगा. 8 जो उसके लिए संभव था,
वह उसने किया है—उसने मेरी देह का अभिषेक मेरे अंतिम संस्कार के पहले ही
कर दिया है. 9 सच तो यह है कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार
किया जाएगा, इस स्त्री के इस कार्य का वर्णन भी इसकी याद में किया जाएगा.”
10 तब कारियोतवासी यहूदाह ने, जो बारह शिष्यों में से एक था, मसीह येशु को
पकड़वाने के उद्देश्य से प्रधान पुरोहितों से भेंट की. 11 इससे वे अत्यंत प्रसन्‍न हो
गए और उसे धनराशि देने का वचन दिया. इसलिये यहूदाह एक अवसर के लिए
देखता रहा कि वह किसी भी प्रकार सही अवसर पर मसीह येशु को पकड़वा दे.
12 अखमीरी रोटी के उत्सव के पहले दिन, जो फ़सह बलि अर्पण की बेला
होती थी, शिष्यों ने मसीह येशु से पूछा, “हम आपके लिए फ़सह कहां तैयार
करें—आपकी इच्छा क्या है?” 13 इस पर मसीह येशु ने अपने दो शिष्यों
को इस निर्देश के साथ भेजा, “नगर में जाओ. तुम्हें जल का मटका ले जाता
हुआ एक व्यक्ति मिलेगा. उसके पीछे-पीछे जाना. 14 वह जिस घर में प्रवेश
करेगा, उसके घर के स्वामी से कहना, ‘गुरु ने पूछा है, “मेरा अतिथि कक्ष कहां
है, जहां मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह खाऊं?”’ 15 वह स्वयं तुम्हें एक
विशाल, तैयार तथा सुसज्जित ऊपरी कक्ष दिखा देगा. हमारे लिए वहीं तैयारी
करना.” 16 शिष्य चले गए. जब वे नगर पहुंचे, उन्होंने ठीक वैसा ही पाया
जैसा प्रभु ने उनसे कहा था और वहां उन्होंने फ़सह तैयार किया. 17 संध्या होने
पर मसीह येशु अपने बारहों शिष्यों के साथ वहां आए. 18 जब वह भोजन
पर बैठे हुए थे मसीह येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर एक अटल सत्य प्रकट
कर रहा हूं: तुममें से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मेरे साथ धोखा
करेगा.” 19 अत्यंत दुःखी हो वे उनसे एक-एक कर यह पूछने लगे, “निःसंदेह
वह मैं तो नहीं हूं?” 20 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “है तो वह बारहों में से
एक—वही, जो मेरे साथ कटोरे में रोटी डुबो रहा है. 21 मनुष्य के पुत्र को तो,
जैसा कि उसके विषय में पवित्र शास्त्र में लिखा है, जाना ही है; किंतु धिक्कार है
उस व्यक्ति पर, जो मनुष्य के पुत्र के साथ धोखा करेगा. उस व्यक्ति के लिए
अच्छा तो यही होता कि उसका जन्म ही न होता.” 22 भोजन के लिए बैठे हुए
मसीह येशु ने रोटी लेकर उसके लिए आभार धन्यवाद करते हुए उसे तोड़ा और
उनमें बांटते हुए कहा, “लो, यह मेरा शरीर है.” 23 इसके बाद मसीह येशु ने
प्याला उठाया, उसके लिए धन्यवाद दिया, शिष्यों को दिया और सबने उसमें से
पिया. 24 मसीह येशु ने उनसे कहा, “यह वायदे का मेरा लहू है, जो अनेकों के
लिए उंडेला गया है. 25 मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं:
जब तक परमेश्वर के राज्य में नया रस न पिऊं, दाख का रस तब तक मैं नहीं
पिऊंगा.” 26 एक भक्ति गीत गाने के बाद वे ज़ैतून पर्वत पर चले गए. 27 उनसे
मसीह येशु ने कहा, “तुम सभी मेरा साथ छोड़कर चले जाओगे. जैसा कि इस
संबंध में पवित्र शास्त्र का लेख है: “मैं चरवाहे का संहार करूंगा और झुंड की
सभी भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी. 28 हां, पुनर्जीवित किए जाने के बाद मैं
तुमसे पहले गलील प्रदेश पहुंच जाऊंगा.” 29 पेतरॉस ने कहा, “सभी आपका
साथ छोड़कर जाएं तो जाएं, किंतु मैं आपको कभी न छोड़ूंगा.” 30 मसीह
येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर एक अटल सत्य प्रकट कर रहा हूं; आज रात
में ही, इससे पहले कि मुरगा दो बार बांग दे, तुम मुझे तीन बार नकार चुके
होंगे.” 31 किंतु पेतरॉस दृढ़तापूर्वक कहते रहे, “यदि मुझे आपके साथ मृत्यु
को अपनाना भी पड़े तो भी मैं आपको नहीं नकारूंगा.” अन्य सभी शिष्यों ने
भी यही दोहराया. 32 वे गेतसेमनी नामक स्थान पर आए. मसीह येशु ने अपने
शिष्यों से कहा, “जब तक मैं प्रार्थना कर रहा हूं, तुम यहीं ठहरो.” 33 उन्होंने
अपने साथ पेतरॉस, याकोब तथा योहन को ले लिया. वह अत्यंत अधीर तथा
व्याकुल हो रहे थे. 34 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरे प्राण इतने व्याकुल हैं
मानो मेरी मृत्यु हो रही हो. तुम यहीं ठहरो और जागते रहो.” 35 वह उनसे
थोड़ी ही दूर गए और भूमि पर गिरकर यह प्रार्थना करने लगे कि यदि संभव हो
तो यह क्षण टल जाए. 36 प्रार्थना में उन्होंने कहा, “अब्बा! पिता! आपके लिए
तो सभी कुछ संभव है. मेरे सामने रखे इस प्याले को हटा दीजिए. फिर भी मेरी
नहीं, आपकी इच्छा के अनुरूप हो.” 37 जब मसीह येशु वहां लौटकर आए तो
शिष्यों को सोता हुआ पाया. उन्होंने पेतरॉस से कहा, “शिमओन! सोए हुए हो!
एक घंटा भी जागे न रह सके! 38 सजग रहो, प्रार्थना करते रहो, ऐसा न हो कि
तुम परीक्षा में पड़ जाओ. हां, निःसंदेह आत्मा तो तैयार है किंतु शरीर दुर्बल.”
39 तब उन्होंने दोबारा जाकर वही प्रार्थना की. 40 वह दोबारा लौटकर आए तो
देखा कि शिष्य सोए हुए हैं—क्योंकि उनकी पलकें बोझिल थी. उन्हें यह भी
नहीं सूझ रहा था कि प्रभु को क्या उत्तर दें. 41 जब मसीह येशु तीसरी बार
उनके पास आए तो उन्होंने उनसे कहा, “अभी भी सो रहे हो? सोते रहो और
विश्राम करो! बहुत हो गया! वह क्षण आ गया है. देख लो कैसे मनुष्य का पुत्र
पापियों के हाथों में सौंपा जा रहा है! 42 उठो! यहां से चलें. देखो, जो मुझे
पकड़वाने पर है, वह आ गया!” 43 जब मसीह येशु यह कह ही रहे थे, उसी
क्षण यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, आ पहुंचा. उसके साथ तलवार
और लाठियां लिए हुए एक भीड़ भी थी. ये सब प्रधान पुरोहितों, शास्त्रियों तथा
पुरनियों द्वारा भेजे गए थे. 44 पकड़वानेवाले ने उन्हें यह संकेत दिया था: “मैं
जिसे चूमूं, वही होगा वह. उसे पकड़कर सिपाहियों की सुरक्षा में ले जाना.”
45 वहां पहुंचते ही यहूदाह सीधे मसीह येशु के पास गया और उनसे कहा,
“रब्बी” और उन्हें चूम लिया. 46 इस पर उन्होंने मसीह येशु को पकड़कर
बांध लिया. 47 उनमें से, जो मसीह के साथ थे, एक ने तलवार खींची और
महापुरोहित के दास पर प्रहार कर दिया जिससे उसका एक कान कट गया. 48
मसीह येशु ने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, “मुझे पकड़ने के लिए तुम
तलवार और लाठियां लेकर आए हो मानो मैं कोई डाकू हूं! 49 मंदिर में शिक्षा
देते हुए मैं प्रतिदिन तुम्हारे साथ ही होता था, तब तो तुमने मुझे नहीं पकड़ा किंतु
अब जो कुछ घटित हो रहा है वह इसलिये कि पवित्र शास्त्र का लेख पूरा हो.”
50 सभी शिष्य मसीह येशु को छोड़ भाग चुके थे. 51 एक युवक था, जो मसीह
येशु के पीछे-पीछे आ रहा था. उसने अपने शरीर पर मात्र एक चादर लपेटी हुई
थी. जब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, 52 वह अपनी उस चादर को छोड़ नंगा ही
भाग निकला. 53 वे मसीह येशु को महापुरोहित के सामने ले गए, वहां सभी
प्रधान पुरोहित, वरिष्ठ नागरिक तथा शास्त्री इकट्ठा थे. 54 पेतरॉस दूर ही दूर,
उनके पीछे-पीछे आ रहे थे और वह महापुरोहित के आंगन में भी आ गए. वह
अधिकारियों के साथ बैठ गए और उनके साथ आग तापने लगे. 55 मसीह येशु
को मृत्यु दंड देने की इच्छा लिए हुए प्रधान पुरोहित तथा पूरी महासभा मसीह
येशु के विरुद्ध गवाह खोजने का यत्न कर रही थी किंतु इसमें वे विफल ही रहे.
56 निःसंदेह उनके विरुद्ध अनेक झूठे गवाह उठ खड़े हुए थे, किंतु उनकी गवाही
मेल न खायी. 57 तब कुछ ने मसीह येशु के विरुद्ध यह झूठी गवाही दी: 58
“हमने इसे कहते सुना है: ‘मैं मनुष्य के द्वारा बनाए गए इस मंदिर को ढाह दूंगा
और तीन दिन में एक दूसरा बना दूंगा, जो हाथ से बना न होगा.’” 59 इस
आरोप में भी उनके गवाह में समानता न थी. 60 तब महापुरोहित उनके सामने
खड़े हुए तथा मसीह येशु से पूछा, “क्या तुम्हें अपने बचाव में कुछ नहीं कहना
है? ये सब तुम्हारे विरुद्ध क्या-क्या गवाही दे रहे हैं!” 61 किंतु मसीह येशु ने कोई
उत्तर न दिया. वह मौन ही बने रहे. तब महापुरोहित ने उन पर व्यंग्य करते

हुए पूछा, “क्या तुम ही मसीह हो—परम प्रधान के पुत्र?” 62 मसीह येशु
ने उत्तर दिया, “जी हां, मैं हूं. आप मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दायें
पक्ष में आसीन तथा आकाश के बादलों पर लौटता हुआ देखेंगे.” 63 इस पर
महापुरोहित ने अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, “अब क्या ज़रूरत रह गई किसी
अन्य गवाह की? 64 तुम सभी ने परमेश्वर-निंदा सुन ली है. क्या विचार है
तुम्हारा?” सबने एक मत से उन्हें मृत्यु दंड का भागी घोषित किया. 65 कुछ ने
उन पर थूकना प्रारंभ कर दिया. उनकी आंखों पर पट्टी बांधकर कुछ उन्हें घूंसे
मारते हुए कहने लगे, “कर भविष्यवाणी!” और प्रहरियों ने उनके मुख पर
थप्पड़ भी मारे. 66 जब पेतरॉस नीचे आंगन में थे. महापुरोहित की एक सेविका
वहां आई. 67 उसे पेतरॉस वहां आग तापते हुए दिखे इसलिये वह उनकी ओर
एकटक देखते हुए बोली, “तुम भी तो येशु नाज़री के साथ थे!” 68 पेतरॉस ने
यह कहते हुए नकार दिया, “क्या कह रही हो! मैं इस विषय में कुछ नहीं
जानता. मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है,” और वह द्वार की ओर चले गए.
69 एक बार फिर जब उस दासी ने उन्हें देखा तो आस-पास उपस्थित लोगों से
दोबारा कहने लगी, “यह भी उन्हीं में से एक है!” 70 पेतरॉस ने दोबारा नकार
दिया. कुछ समय बाद उनके पास खड़े लोग ही पेतरॉस से कहने लगे, “इसमें तो
कोई संदेह ही नहीं है कि तुम उनमें से एक हो क्योंकि तुम भी गलीलवासी
हो.” 71 किंतु पेतरॉस धिक्कार कर शपथ खाते हुए कहने लगे, “तुम जिस
व्यक्ति के विषय में कह रहे हो, उसे तो मैं जानता ही नहीं!” 72 उसी क्षण मुर्गे ने
दूसरी बार बांग दी. पेतरॉस को मसीह येशु की वह पहले से कही हुए बात याद
आई, “इसके पहले कि मुर्गा दो बार बांग दे, तुम तीन बार मुझे नकार चुके
होंगे.” पेतरॉस फूट-फूटकर रोने लगे.

15 भोर होते ही प्रधान पुरोहितों, नेतागण तथा शास्त्रियों ने सारी महासभा का
सत्र बुलाकर विचार किया और मसीह येशु को, जो अभी भी बंधे हुए थे,
ले जाकर पिलातॉस को सौंप दिया. 2 पिलातॉस ने मसीह येशु से पूछा, “क्या
यहूदियों के राजा तुम हो?” मसीह येशु ने इसके उत्तर में कहा, “आपने सच
कहा है.” 3 प्रधान पुरोहित मसीह येशु पर अनेक आरोप लगाते रहे. 4 इस पर
पिलातॉस ने मसीह येशु से पूछा, “कोई उत्तर नहीं दोगे? देखो, ये लोग तुम पर
आरोप पर आरोप लगाते चले जा रहे हैं!” 5 किंतु मसीह येशु ने कोई उत्तर न
दिया. यह पिलातॉस के लिए आश्चर्य का विषय था. 6 उत्सव के अवसर पर
वह किसी एक बंदी को, लोगों की विनती के अनुसार, छोड़ दिया करता था. 7
कारागार में बार-अब्बास नामक एक बंदी था. वह अन्य विद्रोहियों के साथ
विद्रोह में हत्या के आरोप में बंदी बनाया गया था. 8 भीड़ ने पिलातॉस के पास
जाकर उनकी प्रथापूर्ति की विनती की. 9 इस पर पिलातॉस ने उनसे पूछा,
“अच्छा, तो तुम यह चाह रहे हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़
दूं?” 10 अब तक पिलातॉस को यह मालूम हो चुका था कि प्रधान पुरोहितों ने
मसीह येशु को जलनवश पकड़वाया था. 11 किंतु प्रधान पुरोहितों ने भीड़
को उकसाया कि वे मसीह येशु के स्थान पर बार-अब्बास को छोड़ देने की
विनती करें. 12 इस पर पिलातॉस ने उनसे पूछा, “तो फिर मैं इसका क्या करूं,
जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो?” 13 वे फिर चिल्लाए, “उसे क्रूस
पर चढ़ाओ!” 14 “क्यों,” पिलातॉस ने उनसे पूछा, “क्या अपराध किया
है इसने?” इस पर वे उग्र हो बलपूर्वक चिल्लाते हुए बोले, “उसे क्रूस पर
चढ़ाओ!” 15 भीड़ को संतुष्ट करने के उद्देश्य से पिलातॉस ने उनके लिए बार-
अब्बास को विमुक्त कर दिया तथा मसीह येशु को कोड़े लगवाकर क्रूस-मृत्युदंड
के लिए उनके हाथों में सौंप दिया. 16 मसीह येशु को सैनिक प्राइतोरियम
अर्थात् किले के भीतर, महल के आंगन में ले गए और वहां उन्होंने सारी रोमी
सैनिक टुकड़ी इकट्ठा कर ली. 17 उन्होंने मसीह येशु को वहां ले जाकर बैंगनी
रंग का वस्त्र पहना दिया तथा कांटों को गूंधकर मुकुट का रूप देकर उसे उनके
ऊपर रख दिया 18 और उन्हें प्रणाम करके कहने लगे, “यहूदियों के राजा,
आपकी जय!” 19 वे मसीह येशु के सिर पर सरकंडों से मारते जा रहे थे. इसके
अतिरिक्त वे उन पर थूक रहे थे और उपहास में उनके सामने घुटने टेककर झुक
रहे थे. 20 जब वे उपहास कर चुके, उन्होंने वह बैंगनी वस्त्र उतार लिया और
उनके वस्त्र उन्हें दोबारा पहना दिए और उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जाने
लगे. 21 मार्ग में उन्हें कुरेनायॉस नगरवासी शिमओन नामक व्यक्ति मिला,
जो अलेक्सान्दरॉस तथा रूफ़ॉस का पिता था, जिसे उन्होंने मसीह येशु का
क्रूस उठाकर ले चलने के लिए विवश किया. 22 वे मसीह येशु को लेकर
गोलगोथा नामक स्थल पर आए, जिसका अर्थ है “खोपड़ी का स्थान.” 23
उन्होंने मसीह येशु को गन्धरस मिला हुआ दाखरस देना चाहा किंतु मसीह येशु
ने उसे स्वीकार न किया. 24 तब उन्होंने मसीह येशु को क्रूस पर चढ़ा दिया.
उन्होंने मसीह येशु के वस्त्र बांटने के लिए पासा फेंका कि वस्त्र किसे मिलें. 25
यह दिन का तीसरा घंटा था जब उन्होंने मसीह येशु को क्रूस पर चढ़ाया था.
26 उनके दोषपत्र पर लिखा था: यहूदियों का राजा. 27 मसीह येशु के साथ
दो राजद्रोहियों को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था—एक उनकी दायीं ओर,
दूसरा बायीं ओर. [28 यह होने पर पवित्र शास्त्र का यह लेख पूरा हो गया:
उसकी गिनती अपराधियों के साथ की गई.] 29 आते जाते यात्री उपहास-मुद्रा
में सिर हिला-हिला कर मज़ाक उड़ा रहे थे, “अरे ओ मंदिर को नाश कर, तीन
दिन में उसको दुबारा बनानेवाले! 30 बचा ले अपने आपको—उतर आ क्रूस
से!” 31 इसी प्रकार प्रधान पुरोहित भी शास्त्रियों के साथ मिलकर आपस में
उनका उपहास कर रहे थे, “अन्यों को तो बचाता रहा, स्वयं को नहीं बचा
सकता! 32 यह मसीह—यह इस्राएल का राजा, अभी क्रूस से नीचे उतरे, तो हम
उसमें विश्वास कर लेंगे!” मसीह येशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए राजद्रोही भी
उनकी ऐसी ही निंदा कर रहे थे. 33 मध्याह्न सारे क्षेत्र पर अंधकार छा गया, जो
तीन बजे तक छाया रहा. 34 नवें घंटे मसीह येशु ने ऊंचे शब्द में पुकारते हुए
कहा, “एलोई, एलोई, लमा सबख़थानी?” जिसका अर्थ है, “मेरे परमेश्वर, मेरे
परमेश्वर, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया है?” 35 पास खड़े व्यक्तियों में से कुछ
ने यह सुनकर कहा, “अरे! सुनो-सुनो! एलियाह को पुकार रहा है!” 36 यह सुन
एक व्यक्ति ने दौड़कर एक स्पंज को दाख के सिरके में डुबाकर उसे सरकंडे पर
रख यह कहते हुए मसीह येशु को पीने के लिए दिया, “अब उसे छोड़ दो; चलो
देखें, क्या एलियाह इसे क्रूस से नीचे उतारने आते हैं या नहीं.” 37 ऊंचे शब्द
में पुकारने के साथ मसीह येशु ने अपने प्राण त्याग दिए. 38 मंदिर का पर्दा
ऊपर से नीचे तक फटकर दो भागों में बट गया. 39 क्रूस के सामने खड़े रोमी
शताधिपति ने मसीह येशु को इस रीति से प्राण त्यागते देखकर कहा, “इसमें कोई
संदेह नहीं कि यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र था.” 40 कुछ महिलाएं दूर खड़ी
हुई यह सब देख रही थी. इनमें मगदालावासी मरियम, कनिष्ठ याकोब और
योसेस की माता मरियम तथा शालोमे थी. 41 मसीह येशु के गलील प्रवास के
समय ये ही उनके पीछे चलते हुए उनकी सेवा करती रही थी. अन्य अनेक
स्त्रियां भी थी, जो मसीह येशु के साथ येरूशलेम आई हुई थी. 42 यह शब्बाथ के
पहले का तैयारी का दिन था. शाम हो गई थी. 43 अरिमथिया नगरवासी योसेफ़
ने, जो महासभा के प्रतिष्ठित सदस्य थे और स्वयं परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा
कर रहे थे, साहसपूर्वक पिलातॉस से मसीह येशु का शव ले जाने की अनुमति
मांगी. 44 पिलातॉस को विश्वास नहीं हो रहा था कि मसीह येशु के प्राण निकल
चुके हैं; इसलिये उसने शताधिपति को बुलाकर उससे प्रश्न किया कि क्या मसीह
येशु की मृत्यु हो चुकी है? 45 शताधिपति से आश्वस्त होकर पिलातॉस ने योसेफ़
को मसीह येशु का शव ले जाने की अनुमति दे दी. 46 योसेफ़ ने एक कफ़न
मोल लिया, मसीह येशु का शव उतारा, उसे कफ़न में लपेटा और चट्टान में
खोदी गई एक कंदरा-क़ब्र में रखकर कब्र द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया.

47 मगदालावासी मरियम तथा योसेस की माता मरियम यह देख रही थी कि
मसीह येशु के शव को कहां रखा गया था.

16 शब्बाथ समाप्त होते ही मगदालावासी मरियम, याकोब की माता मरियम
तथा शालोमे ने मसीह येशु के शरीर को तेल से अभिषेक के उद्देश्य से
सुगंध द्रव्य मोल लिए. 2 सप्ताह के पहले दिन भोर के समय जब सूर्य उदय हो
ही रहा था, वे कब्र की गुफ़ा पर आ गईं. 3 वे आपस में यह विचार कर रहीं थी,
"कब्र के द्वार पर से हमारे लिए पत्थर कौन हटाएगा?" 4 किंतु जब उन्होंने कब्र
की ओर दृष्टि की तो पाया कि कब्र द्वार पर से पत्थर लुढ़का हुआ था, जबकि
वह बहुत बड़ा था. 5 कब्र में प्रवेश करने पर उन्होंने दायीं ओर एक युवा व्यक्ति
को बैठे हुए देखा, जो उज्जवल, सफ़ेद वस्त्रों में था. वे हैरान रह गईं. 6 उस
व्यक्ति ने उन्हें बुलाकर कहा, "आश्चर्य मत कीजिए. आप यहां नाज़रेथवासी
येशु को, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया था, खोज रही हैं. वह मरे हुओं में से
जीवित हो गए हैं. वह यहां नहीं है. यह देखिए, यहीं है वह जगह, जहां उन्हें
रखा गया था. 7 मगर अब उनके शिष्यों और पेतरॉस को यह सूचना दे दीजिए
कि वह उनके पहले ही गलील प्रदेश पहुंच जाएंगे. उनसे आपकी भेंट वहीं
होगी—ठीक वैसा ही जैसा उन्होंने कहा था." 8 कांपते हुए तथा भौंचक्का वे
बाहर आईं और कब्र की गुफ़ा से भागीं. डर के कारण उन्होंने किसी से कुछ न
कहा. 9 **(note: The most reliable and earliest manuscripts do not include
Mark 16:9-20.)** जब सप्ताह के पहले दिन तड़के मसीह येशु जीवित हुए, उन्होंने
सबसे पहले स्वयं को मगदालावासी मरियम पर प्रकट किया, जिसमें से उन्होंने
सात दुष्टात्माओं को निकाला था. 10 उसने जाकर विलाप तथा रोते हुए अपने
साथियों को इसका समाचार दिया. 11 उन्होंने इस पर विश्वास नहीं किया कि
मसीह येशु अब जीवित हैं तथा मरियम ने उन्हें देखा है. 12 इसके बाद मसीह
येशु दो अन्यों पर भी, जब वे अपने गांव की ओर जा रहे थे, प्रकट हुए. 13
इन्होंने जाकर अन्यों को भी इस विषय में बताया किंतु उन्होंने भी इस पर
विश्वास न किया. 14 तब वह ग्यारह शिष्यों पर भी प्रकट हुए. वे सब चौकी पर
बैठे हुए थे. उन्होंने शिष्यों के अविश्वास तथा मन की कठोरता की उल्लाहना
की क्योंकि उन्होंने उनके जीवित होने के बाद देखनेवालों का विश्वास नहीं
किया था. 15 मसीह येशु ने उन्हें आदेश दिया, "सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि
में सुसमाचार का प्रचार करो. 16 वह, जिसने विश्वास किया है तथा जिसका
बपतिस्मा हो चुका है, बचा रहेगा; किंतु वह, जिसने विश्वास नहीं किया है,
दंडित होगा. 17 जिन्होंने विश्वास किया है, उन्हें ये अद्भुत चमत्कार चिह्न
दिखाने की क्षमता प्रदान की जाएगी: मेरे नाम में वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे, वे
अन्य भाषाओं में बातें करेंगे, 18 वे सांपों को अपने हाथों में ले लेंगे, घातक
विष पी लेने पर भी उनकी कोई हानि न होगी और वे रोगियों पर हाथ रखेंगे
और वे स्वस्थ हो जाएंगे." 19 प्रभु येशु जब उनसे यह कह चुके, वह स्वर्ग में
उठा लिए गए. वहां वह परमेश्वर की दायीं ओर बैठ गए. 20 शिष्य लौट गए
तथा सभी जगह इसकी घोषणा की. प्रभु उनके साथ सक्रिय थे तथा वह अपनी
प्रतिज्ञा की सच्चाई अद्भुत चमत्कारों के द्वारा करते रहे.

लूका

1 अनेक व्यक्तियों ने उन घटनाओं को लिखकर इकट्ठा करने का कार्य किया
है, जो हमारे बीच में घटी. 2 ये सबूत हमें उनसे प्राप्त हुए हैं, जो प्रारंभ
ही से इनके प्रत्यक्षदर्शी और परमेश्वर के वचन के सेवक रहे. 3 मैंने स्वयं
हर एक घटनाओं की शुरुआत से सावधानीपूर्वक जांच की है. इसलिये परम
सम्मान्य थियोफ़िलॉस महोदय, मुझे भी यह उचित लगा कि आपके लिए मैं यह
सब क्रम के अनुसार लिखूं 4 कि जो शिक्षाएं आपको दी गई हैं, आप उनकी
विश्वसनीयता को जान लें. 5 यहूदिया प्रदेश के राजा हेरोदेस के शासनकाल में
अबीयाह दल के एक पुरोहित थे, जिनका नाम ज़करयाह था. उनकी पत्नी का
नाम एलिज़ाबेथ था, जो हारोन की वंशज थी. 6 वे दोनों ही परमेश्वर की दृष्टि में
धर्मी तथा प्रभु के सभी आदेशों और नियमों के पालन में दोषहीन थे. 7 उनकी
कोई संतान न थी क्योंकि एलिज़ाबेथ बांझ थी और वे दोनों ही अब बूढ़े हो
चुके थे. 8 अपने दल की बारी के अनुसार जब ज़करयाह एक दिन परमेश्वर
के सामने अपनी पुरोहित सेवा भेंट कर रहे थे, 9 उन्हें पुरोहितों की रीति के
अनुसार पर्ची द्वारा चुनाव कर प्रभु के मंदिर में प्रवेश करने और धूप जलाने का
काम सौंपा गया था. 10 धूप जलाने के समय बाहर सभी लोगों का विशाल
समूह प्रार्थना कर रहा था. 11 तभी ज़करयाह के सामने प्रभु का एक दूत प्रकट
हुआ, जो धूप वेदी की दायीं ओर खड़ा था. 12 स्वर्गदूत को देख ज़करयाह
चौंक पड़े और भयभीत हो गए 13 किंतु उस स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “मत डरो,
ज़करयाह! तुम्हारी प्रार्थना सुन ली गई है. तुम्हारी पत्नी एलिज़ाबेथ एक पुत्र
जनेगी. तुम उसका नाम योहन रखना. 14 तुम आनंदित और प्रसन्‍न होंगे तथा
अनेक उसके जन्म के कारण आनंद मनाएंगे. 15 यह बालक प्रभु की दृष्टि में
महान होगा. वह दाखरस और मदिरा का सेवन कभी न करेगा तथा माता के गर्भ
से ही पवित्र आत्मा से भरा हुआ होगा. 16 वह इस्राएल के वंशजों में से अनेकों
को प्रभु—उनके परमेश्वर—की ओर लौटा ले आएगा. 17 वह एलियाह की
आत्मा और सामर्थ्य में प्रभु के आगे चलनेवाला बनकर पिताओं के हृदय संतानों
की ओर तथा अनाज्ञाकारियों को धर्मी के ज्ञान की ओर फेरेगा कि एक राष्ट्र
को प्रभु के लिए तैयार करें.” 18 ज़करयाह ने स्वर्गदूत से प्रश्न किया, “मैं
कैसे विश्वास करूं—क्योंकि मैं ठहरा एक बूढ़ा व्यक्ति और मेरी पत्नी की आयु
भी ढल चुकी है?” 19 स्वर्गदूत ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं गब्रिएल हूं. मैं नित
परमेश्वर की उपस्थिति में रहता हूं. मुझे तुम्हें यह बताने और इस शुभ समाचार
की घोषणा करने के लिए ही भेजा गया है. 20 और सुनो! जब तक मेरी ये
बातें पूरी न हो जाए, तब तक के लिए तुम गूंगे हो जाओगे, बोलने में असमर्थ,
क्योंकि तुमने मेरे वचनों पर विश्वास नहीं किया, जिसका नियत समय पर पूरा
होना निश्चित है.” 21 बाहर ज़करयाह का इंतजार कर रहे लोग असमंजस में
पड़ गए कि उन्हें मंदिर में इतनी देर क्यों हो रही है. 22 जब ज़करयाह बाहर
आए, वह उनसे बातें करने में असमर्थ रहे. इसलिये वे समझ गए कि ज़करयाह
को मंदिर में कोई दर्शन प्राप्त हुआ है. वह उनसे संकेतों द्वारा बातचीत करते रहे
और मौन बने रहे. 23 अपने पुरोहित सेवाकाल की समाप्ति पर ज़करयाह घर
लौट गए. 24 उनकी पत्नी एलिज़ाबेथ ने गर्भधारण किया और यह कहते हुए
पांच माह तक अकेले में रहीं, 25 “प्रभु ने मुझ पर यह कृपादृष्टि की है और
समूह में मेरी लज्जित स्थिति से मुझे उबार लिया है.” 26 छठे माह में स्वर्गदूत
गब्रिएल को परमेश्वर द्वारा गलील प्रदेश के नाज़रेथ नामक नगर में 27 एक
कुंवारी कन्या के पास भेजा गया, जिसका विवाह योसेफ़ नामक एक पुरुष
से होना निश्चित हुआ था. योसेफ़, राजा दावीद के वंशज थे. कन्या का नाम
था मरियम. 28 मरियम को संबोधित करते हुए स्वर्गदूत ने कहा, “प्रभु की
कृपापात्री, नमस्कार! प्रभु आपके साथ हैं.” 29 इस कथन को सुन वह बहुत ही
घबरा गईं कि इस प्रकार के नमस्कार का क्या अर्थ हो सकता है. 30 स्वर्गदूत ने
उनसे कहा, “मत डरिए, मरियम! क्योंकि आप परमेश्वर की कृपा की पात्र हैं.
31 सुनिए! आप गर्भधारण कर एक पुत्र को जन्म देंगी. आप उनका नाम येशु
रखें. 32 वह महान होंगे. परम प्रधान के पुत्र कहलाएंगे और प्रभु परमेश्वर उन्हें
उनके पूर्वज दावीद का सिंहासन सौंपेंगे, 33 वह याकोब के वंश पर हमेशा
के लिए राज्य करेंगे तथा उनके राज्य का अंत कभी न होगा.” (aiōn g165)
34 मरियम ने स्वर्गदूत से प्रश्न किया, “यह कैसे संभव होगा क्योंकि मैं तो
कुंवारी हूं?” 35 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, “पवित्र आत्मा आप पर उतरेंगे तथा
परम प्रधान का सामर्थ्य आप पर छाया करेगा. इसलिये जो जन्म लेंगे, वह
पवित्र और परमेश्वर-पुत्र कहलाएंगे. 36 और यह भी सुनिए आपकी परिजन
एलिज़ाबेथ ने अपनी वृद्धावस्था में एक पुत्र गर्भधारण किया है. वह, जो बांझ
कहलाती थी, उन्हें छः माह का गर्भ है. 37 परमेश्वर के लिए असंभव कुछ भी
नहीं.” 38 मरियम ने कहा, “देखिए, मैं प्रभु की दासी हूं. मेरे लिए वही सब
हो, जैसा आपने कहा है.” तब वह स्वर्गदूत उनके पास से चला गया. 39
मरियम तुरंत यहूदिया प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र के एक नगर को चली गईं. 40 वहां
उन्होंने ज़करयाह के घर पर जाकर एलिज़ाबेथ को नमस्कार किया. 41 जैसे ही
एलिज़ाबेथ ने मरियम का नमस्कार सुना, उनके गर्भ में शिशु उछल पड़ा और
एलिज़ाबेथ पवित्र आत्मा से भर गईं. 42 वह उल्लसित शब्द में बोल उठी, “तुम
सभी नारियों में धन्य हो और धन्य है तुम्हारे गर्भ का फल! 43 मुझ पर यह
कैसी कृपादृष्टि हुई है, जो मेरे प्रभु की माता मुझसे भेंट करने आई हैं! 44 देखो
तो, जैसे ही तुम्हारा नमस्कार मेरे कानों में पड़ा, हर्षोल्लास से मेरे गर्भ में शिशु
उछल पड़ा. 45 धन्य है वह, जिसने प्रभु द्वारा कही हुई बातों के पूरा होने का
विश्वास किया है!” 46 इस पर मरियम के वचन ये थे: “मेरा प्राण प्रभु की
प्रशंसा करता है 47 और मेरी अंतरात्मा परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता में आनंदित हुई
है, 48 क्योंकि उन्होंने अपनी दासी की दीनता की ओर दृष्टि की है. अब से
सभी पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी, 49 क्योंकि सामर्थी ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम
किए हैं. पवित्र है उनका नाम. 50 उनकी दया उनके श्रद्धालुओं पर पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनी रहती है. 51 अपने भुजबल से उन्होंने प्रतापी काम किए हैं और
अभिमानियों को बिखरा दिया है. 52 परमेश्वर ने राजाओं को उनके सिंहासनों
से नीचे उतार दिया तथा विनम्रों को उठाया है. 53 उन्होंने भूखों को उत्तम
पदार्थों से तृप्त किया तथा सम्पन्‍नों को खाली लौटा दिया. 54 उन्होंने अपने
सेवक इस्राएल की सहायता अपनी उस करुणा के स्मरण में की, 55 जिसकी
प्रतिज्ञा उसने हमारे बाप-दादों से करी थी और जो अब्राहाम तथा उनके वंशजों
पर सदा-सर्वदा रहेगी.” (aiōn g165) 56 लगभग तीन माह एलिज़ाबेथ के साथ
रहकर मरियम अपने घर लौट गईं. 57 एलिज़ाबेथ का प्रसवकाल पूरा हुआ
और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया. 58 जब पड़ोसियों और परिजनों ने यह
सुना कि एलिज़ाबेथ पर यह अनुग्रह हुआ है, तो वे भी उनके इस आनंद में
सम्मिलित हो गए. 59 आठवें दिन वे शिशु के ख़तना के लिए इकट्ठा हुए. वे
शिशु को उसके पिता के नाम पर ज़करयाह पुकारने लगे. 60 किंतु शिशु की
माता ने उत्तर दिया; “नहीं! इसका नाम योहन होगा!” 61 इस पर उन्होंने
एलिज़ाबेथ से कहा, “आपके परिजनों में तो इस नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं
है!” 62 तब उन्होंने शिशु के पिता से संकेत में प्रश्न किया कि वह शिशु का नाम
क्या रखना चाहते हैं? 63 ज़करयाह ने एक लेखन पट्ट मंगा कर उस पर लिख
दिया, “इसका नाम योहन है.” यह देख सभी चकित रह गए. 64 उसी क्षण
उनकी आवाज लौट आई. उनकी जीभ के बंधन खुल गए और वह परमेश्वर की
स्तुति करने लगे. 65 सभी पड़ोसियों में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा भाव आ गया और
यहूदिया प्रदेश के सभी पर्वतीय क्षेत्र में इसकी चर्चा होने लगी. 66 निःसंदेह प्रभु
का हाथ उस बालक पर था. जिन्होंने यह सुना, उन्होंने इसे याद रखा और यह

विचार करते रहे: “क्या होगा यह बालक!” 67 पवित्र आत्मा से भरकर उनके
पिता ज़करयाह इस प्रकार भविष्यवाणियों का वर्णानुभाषण करना शुरू किया:
68 “धन्य हैं प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर, क्योंकि उन्होंने अपनी प्रजा की सुधि
ली और उसका उद्धार किया. 69 उन्होंने हमारे लिए अपने सेवक दावीद के वंश
में एक उद्धारकर्ता पैदा किया है, 70 (जैसा उन्होंने प्राचीन काल के अपने पवित्र
भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से प्रकट किया) (aiōn g165) 71 शत्रुओं तथा उन
सबसे, जो हमसे घृणा करते हैं, बचाए रखा 72 कि वह हमारे पूर्वजों पर अपनी
कृपादृष्टि प्रदर्शित करें तथा अपनी पवित्र वाचा को पूरा करें; 73 वही वाचा, जो
उन्होंने हमारे पूर्वज अब्राहाम से स्थापित की थी: 74 वह हमें हमारे शत्रुओं के
हाथ से छुड़ाएंगे, 75 कि हम पवित्रता और धार्मिकता में निर्भय हो जीवन भर
उनकी सेवा कर सकें. 76 “और बालक तुम, मेरे पुत्र, परम प्रधान परमेश्वर के
भविष्यवक्ता कहलाओगे; क्योंकि तुम उनका मार्ग तैयार करने के लिए प्रभु के
आगे-आगे चलोगे, 77 तुम परमेश्वर की प्रजा को उसके पापों की क्षमा के द्वारा
उद्धार का ज्ञान प्रदान करोगे. 78 हमारे परमेश्वर की अत्यधिक कृपा के कारण,
स्वर्ग से हम पर प्रकाश का उदय होगा, 79 उन पर, जो अंधकार और मृत्यु की
छाया में हैं; कि इसके द्वारा हमारा मार्गदर्शन शांति के मार्ग पर हो.” 80 बालक
योहन का विकास होता गया तथा वह आत्मिक रूप से भी बलवंत होते गए.
इस्राएल के सामने सार्वजनिक रूप से प्रकट होने के पहले वह बंजर भूमि में
निवास करते रहे.

2 यह उस समय की घटना है जब सम्राट कयसर औगुस्तॉस की ओर से
यह राज आज्ञा घोषित की गई कि सभी रोम शासित राष्ट्रों में जनगणना की
जाए. 2 यह सीरिया राज्य पर राज्यपाल क्वीरिनियुस के शासनकाल में पहली
जनगणना थी. 3 सभी नागरिक अपने नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने
जन्मस्थान को जाने लगे. 4 योसेफ़, दावीद के वंशज थे, इसलिये वह गलील
प्रदेश के नाज़रेथ नगर से यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम अर्थात् दावीद के नगर गए
5 कि वह भी अपनी मंगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती थी, नाम लिखवाएं. 6
वहीं मरियम का प्रसवकाल पूरा हुआ 7 और उन्होंने अपने पहलौठे पुत्र को
जन्म दिया. उन्होंने उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में लिटा दिया क्योंकि यात्री
निवास में उनके ठहरने के लिए कोई स्थान उपलब्ध न था. 8 उसी क्षेत्र में कुछ
चरवाहे रात के समय मैदानों में अपनी भेड़ों की चौकसी कर रहे थे. 9 सहसा
प्रभु का एक दूत उनके सामने प्रकट हुआ और प्रभु का तेज उनके चारों ओर
फैल गया और चरवाहे अत्यंत डर गए. 10 इस पर स्वर्गदूत ने उन्हें धीरज देते
हुए कहा, “डरो मत! क्योंकि मैं अत्यंत आनंद का एक शुभ संदेश लाया हूं, जो
सभी के लिए है: 11 तुम्हारे उद्धारकर्ता ने आज दावीद के नगर में जन्म लिया है.
प्रभु मसीह वही हैं. 12 उनकी पहचान के चिह्न ये हैं: तुम कपड़ों में लिपटा
और चरनी में लेटा हुआ एक शिशु पाओगे.” 13 सहसा उस स्वर्गदूत के साथ
स्वर्गदूतों का एक विशाल समूह प्रकट हुआ, जो परमेश्वर की स्तुति इस गान के
द्वारा कर रहा था: 14 “सबसे ऊंचे स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति; तथा पृथ्वी पर
उनमें, जिन पर उनकी कृपादृष्टि है, शांति स्थापित हो.” 15 जब स्वर्गदूत स्वर्ग
लौट गए तब चरवाहों ने आपस में विचार किया, “आओ हम बेथलेहेम जाकर
वह सब देखें, जिसका प्रभु ने हम पर प्रकाशन किया है.” 16 इसलिये वे तुरंत
चल पड़े और बेथलेहेम नगर पहुंचकर मरियम, योसेफ़ तथा उस शिशु को देखा,
जो चरनी में लेटा हुआ था. 17 उस शिशु का दर्शन कर वे उससे संबंधित सभी
बातों को, जो उन पर प्रकाशित की गयी थी, सभी जगह बताने लगे. 18 सभी
सुननेवालों के लिए चरवाहों का समाचार आश्चर्य का विषय था. 19 मरियम
इन बातों को अपने हृदय में संजोकर उनके बारे में सोच-विचार करती रहीं. 20
चरवाहे परमेश्वर की स्तुति तथा गुणगान करते हुए लौट गए क्योंकि जो कुछ
उन्होंने सुना था और देखा था, वह ठीक वैसा ही था, जैसा उन पर प्रकाशित
किया गया था. 21 जन्म के आठवें दिन, ख़तना के समय, उस शिशु का नाम
येशु रखा गया—वही नाम, जो उनके गर्भ में आने के पूर्व स्वर्गदूत द्वारा बताया
गया था. 22 जब मोशेह की व्यवस्था के अनुरूप मरियम और योसेफ़ के शुद्ध
होने के दिन पूरे हुए, वे शिशु को येरूशलेम लाए कि उसे प्रभु को भेंट किया
जाए. 23 जैसा कि व्यवस्था का आदेश है: हर एक पहलौठा पुत्र प्रभु को भेंट
किया जाए 24 तथा प्रभु के व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार एक जोड़ा पंडुकी या
कबूतर के दो बच्चों की बलि चढ़ाई जाए. 25 येरूशलेम में शिमओन नामक
एक व्यक्ति थे. वह धर्मी तथा श्रद्धालु थे. वह इस्राएल की शांति की प्रतीक्षा कर
रहे थे. उन पर पवित्र आत्मा का आच्छादन था. 26 पवित्र आत्मा के द्वारा उन
पर यह स्पष्ट कर दिया गया था कि प्रभु के मसीह को देखे बिना उनकी मृत्यु
नहीं होगी. 27 पवित्र आत्मा के सिखाने पर शिमओन मंदिर के आंगन में आए.
उसी समय मरियम और योसेफ़ ने व्यवस्था द्वारा निर्धारित विधियों को पूरा
करने के उद्देश्य से शिशु येशु को लेकर वहां प्रवेश किया. 28 शिशु येशु को
देखकर शिमओन ने उन्हें गोद में लेकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा. 29
“परम प्रधान प्रभु, अब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने सेवक को शांति में विदा
कीजिए, 30 क्योंकि मैंने अपनी आंखों से आपके उद्धार को देख लिया है, 31
जिसे आपने सभी के लिए तैयार किया है. 32 यह आपकी प्रजा इस्राएल का
गौरव, तथा सब राष्ट्रों की ज्ञान की ज्योति है.” 33 मरियम और योसेफ़ अपने
पुत्र के विषय में इन बातों को सुन चकित रह गए. 34 शिमओन ने मरियम को
संबोधित करते हुए ये आशीर्वचन कहे: “यह पहले से ठहराया हुआ है कि यह
शिशु इस्राएल में अनेकों के पतन और उत्थान के लिए चुना गया है. यह एक
ऐसा चिन्ह होगा लोकमत जिसके विरुद्ध ही होगा. 35 यह तलवार तुम्हारे ही प्राण
को आर-पार बेध देगी—कि अनेकों के हृदयों के विचार प्रकट हो जाएं.” 36
हन्ना नामक एक भविष्यवक्तिन थी, जो आशेर वंश के फ़नुएल नामक व्यक्ति
की पुत्री थी. वह अत्यंत वृद्ध थी तथा विवाह के बाद पति के साथ मात्र सात
वर्ष रहकर विधवा हो गई थी. 37 इस समय उनकी आयु चौरासी वर्ष थी.
उन्होंने मंदिर कभी नहीं छोड़ा और वह दिन-रात उपवास तथा प्रार्थना करते हुए
परमेश्वर की उपासना में तल्लीन रहती थी. 38 उसी समय वह वहां आई और
परमेश्वर के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने लगीं. उन्होंने उन सभी को इस शिशु के
विषय में सूचित किया, जो येरूशलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा में थे. 39 जब
योसेफ़ तथा मरियम प्रभु के व्यवस्था में निर्धारित विधियां पूरी कर चुके, वे
गलील प्रदेश में अपने नगर नाज़रेथ लौट गए. 40 बालक येशु बड़े होते हुए
बलवंत होते गए तथा उनकी बुद्धि का विकास होता गया. परमेश्वर उनसे प्रसन्न
थे तथा वह उनकी कृपादृष्टि के पात्र थे. 41 प्रभु येशु के माता-पिता प्रति वर्ष
फ़सह उत्सव के उपलक्ष्य में येरूशलेम जाया करते थे. 42 जब प्रभु येशु की
अवस्था बारह वर्ष की हुई, तब प्रथा के अनुसार वह भी अपने माता-पिता के
साथ उत्सव के लिए येरूशलेम गए. 43 उत्सव की समाप्ति पर जब उनके माता-
पिता घर लौट रहे थे, बालक येशु येरूशलेम में ही ठहर गए. उनके माता-पिता
इससे अनजान थे. 44 यह सोचकर कि बालक यात्री-समूह में ही कहीं होगा, वे
उस दिन की यात्रा में आगे बढ़ते गए. जब उन्होंने परिजनों-मित्रों में प्रभु येशु को
खोजना प्रारंभ किया, 45 प्रभु येशु उन्हें उनके मध्य नहीं मिले इसलिये वे उन्हें
खोजने येरूशलेम लौट गए. 46 तीन दिन बाद उन्होंने प्रभु येशु को मंदिर परिसर
में शिक्षकों के साथ बैठा हुआ पाया. वहां बैठे हुए वह उनकी सुन रहे थे तथा
उनसे प्रश्न भी कर रहे थे. 47 जिस किसी ने भी उनको सुना, वह उनकी समझ
और उनके उत्तरों से चकित थे. 48 उनके माता-पिता उन्हें वहां देख चकित रह
गए. उनकी माता ने उनसे प्रश्न किया, “पुत्र! तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?
तुम्हारे पिता और मैं तुम्हें कितनी बेचैनी से खोज रहे थे!” 49 “क्यों खोज रहे
थे आप मुझे?” प्रभु येशु ने उनसे पूछा, “क्या आपको यह मालूम न था कि मेरा

मेरे पिता के घर में ही होना उचित है?” 50 मरियम और योसेफ़ को प्रभु येशु की
इस बात का अर्थ समझ नहीं आया. 51 प्रभु येशु अपने माता-पिता के साथ
नाज़रेथ लौट गए और उनके आज्ञाकारी रहे. उनकी माता ने ये सब विषय हृदय
में संजोए रखे. 52 प्रभु येशु बुद्धि डीलडौल तथा परमेश्वर और मनुष्यों की
कृपादृष्टि में बढ़ते चले गए.

3 सम्राट कयसर तिबेरियॉस के शासनकाल के पन्द्रहवें वर्ष में जब पोन्तियॉस
पिलातॉस यहूदिया प्रदेश का राज्यपाल, तथा हेरोदेस गलील प्रदेश का,
उसका भाई फ़िलिप्पॉस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस प्रदेश का, तथा लिसनियस
एबिलीन का शासक थे, 2 और जब हन्ना और कायाफ़स महापुरोहित पद पर
थे; ज़करयाह के पुत्र योहन को, जब वह बंजर भूमि में थे, परमेश्वर की ओर से
एक संदेश प्राप्त हुआ. 3 इसलिये योहन यरदन नदी के आस-पास के सभी क्षेत्र
में भ्रमण करते हुए पाप क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार करने
लगे; 4 जैसा बपतिस्मा देनेवाले योहन के विषय में भविष्यवक्ता यशायाह के
शब्दों के पुस्तक में लिखा है: “एक आवाज, जो बंजर भूमि में पुकारनेवाले की
कह रही है, ‘प्रभु के लिए मार्ग को तैयार करो; उनका मार्ग सरल बनाओ. 5 हर
एक घाटी भर दी जाएगी, हर एक पर्वत और पहाड़ी समतल की जाएगी. टेढ़े
रास्ते सीधे हो जाएंगे, तथा असमतल पथ समतल. 6 हर एक मनुष्य के सामने
परमेश्वर का उद्धार स्पष्ट हो जाएगा.’” 7 बपतिस्मा लेने के उद्देश्य से अपने पास
आई भीड़ को संबोधित करते हुए योहन कहते थे, “विषैले सांपों की संतान!
समीप आ रहे क्रोध से भागने की चेतावनी तुम्हें किसने दे दी? 8 सच्चे मन
फिराने का प्रमाण दो और अपने आपको ऐसा कहना शुरू मत करो: ‘हम तो
अब्राहाम की संतान हैं!’ क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूं कि परमेश्वर में इन पत्थरों
तक से अब्राहाम की संतान पैदा करने का सामर्थ्य है. 9 कुल्हाड़ी पहले ही
वृक्षों की जड़ पर रखी हुई है. हर एक पेड़, जो उत्तम फल नहीं फलता, काटा
जाता और आग में झोंक दिया जाता है.” 10 इस पर भीड़ ने उनसे प्रश्न किया,
“तब हम क्या करें?” 11 योहन ने उन्हें उत्तर दिया, “जिस व्यक्ति के पास दो
कुर्ते हैं, वह एक उसे दे दे, जिसके पास एक भी नहीं है. जिसके पास भोजन है,
वह भी यही करे.” 12 चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा के लिए उनके पास आए
और उन्होंने योहन से प्रश्न किया, “गुरुवर! हमारे लिए उचित क्या है?” 13
“निर्धारित राशि से अधिक मत लो.” योहन ने उत्तर दिया. 14 कुछ सिपाहियों
ने उनसे प्रश्न किया, “हमें बताइए—हम क्या करें?” योहन ने उत्तर दिया, “न तो
डरा-धमका कर लोगों से पैसा ऐंठो और न ही उन पर झूठा आरोप लगाओ परंतु
अपने वेतन में ही संतुष्ट रहो.” 15 बड़ी जिज्ञासा के भाव में भीड़ यह जानने का
प्रयास कर रही थी और अपने-अपने हृदय में यही विचार कर रहे थे कि कहीं
योहन ही तो मसीह नहीं हैं. 16 भीड़ को संबोधित करते हुए योहन ने स्पष्ट
किया, “मेरा बपतिस्मा तो मात्र जल-बपतिस्मा है किंतु एक मुझसे अधिक
सामर्थ्यशाली आ रहे हैं. मैं तो उनकी जूतियों के बंध खोलने योग्य भी नहीं.
वही हैं, जो तुम्हें पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा देंगे. 17 सूप उसके हाथ
में है. वह गेहूं को निरुपयोगी भूसी और डंठल से अलग करते हैं. वह गेहूं को
खलिहान में इकट्ठा करेंगे तथा भूसी को कभी न बुझनेवाली आग में भस्म कर
देंगे.” 18 योहन अनेक प्रकार से शिक्षा देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार
करते रहे. 19 जब योहन ने राज्यपाल हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हेरोदिअस
के विषय में तथा स्वयं उसी के द्वारा किए गए अन्य कुकर्मों के कारण फटकार
लगाई, 20 तब हेरोदेस ने एक और कुकर्म किया: उसने योहन ही को बंदी
बनाकर कारागार में डाल दिया. 21 जब लोग योहन से बपतिस्मा ले रहे थे,
उन्होंने प्रभु येशु को भी बपतिस्मा दिया. इस अवसर पर, जब प्रभु येशु प्रार्थना
कर रहे थे, स्वर्ग खोल दिया गया 22 और पवित्र आत्मा प्रभु येशु पर शारीरिक
रूप में कबूतर के समान उतरे और स्वर्ग से निकला एक शब्द सुना गया: “तुम
मेरे पुत्र हो—मेरे प्रिय. मैं तुममें पूरी तरह संतुष्ट हूं.” 23 प्रभु येशु ने जब अपनी
सेवकाई प्रारंभ की तब उनकी अवस्था लगभग तीस वर्ष की थी. जैसा समझा
जाता है कि वह योसेफ़ के पुत्र हैं, योसेफ़ हेली के, 24 हेली मथ्थात के, मथ्थात
लेवी के, लेवी मेल्ख़ी के, मेल्ख़ी यन्नाई के, यन्नाई योसेफ़ के, 25 योसेफ़
मत्ताथियाह के, मत्ताथियाह आमोस के, आमोस नहूम के, नहूम ऍस्ली के,
ऍस्ली नग्गाई के, 26 नग्गाई माहथ के, माहथ मत्ताथियाह के, मत्ताथियाह सेमेई
के, सेमेई योसेख़ के, योसेख़ योदा के, 27 योदा योअनान के, योअनान रेसा के,
रेसा ज़ेरोबाबेल के, ज़ेरोबाबेल सलाथिएल के, सलाथिएल नेरी के, 28 नेरी
मेल्ख़ी के, मेल्ख़ी अद्दी के, अद्दी कोसम के, कोसम एल्मोदम के, एल्मोदम एर
के, 29 एर यहोशू के, यहोशू एलिएज़र के, एलिएज़र योरीम के, योरीम मथ्थात
के, मथ्थात लेवी के, 30 लेवी शिमओन के, शिमओन यहूदाह के, यहूदाह
योसेफ़ के, योसेफ़ योनाम के, योनाम एलियाकिम के 31 एलियाकिम मेलिया
के, मेलिया मेन्ना के, महीनन मत्ताथा के, मत्ताथा नाथान के, नाथान दावीद के,
32 दावीद यिशै के, यिशै ओबेद के, ओबेद बोअज़ के, बोअज़ सलमोन के,
सलमोन नाहश्शोन के, 33 नाहश्शोन अम्मीनादाब के, अम्मीनादाब राम के, राम
आरनी के, आरनी हेज़रोन के, हेज़रोन फ़ारेस के, फ़ारेस यहूदाह के, 34 यहूदाह
याकोब के, याकोब यित्सहाक के, यित्सहाक अब्राहाम के, अब्राहाम तेराह के,
तेराह नाख़ोर के, 35 नाख़ोर सेरूख़ के, सेरूख़ रागाउ के, रागाउ फ़ालेक के,
फ़ालेक ईबर के, ईबर शेलाह के, 36 शेलाह केनन के, केनन अरफाक्साद के,
अरफाक्साद शेम के, शेम नोहा के, नोहा लामेख़ के, 37 लामेख़ मेथुसेलाह के,
मेथुसेलाह हनोख, हनोख यारेत के, यारेत मालेलेईल के, मालेलेईल काईनम के,
38 काईनम ईनॉश के, ईनॉश सेथ के, सेथ आदम के और आदम परमेश्वर के पुत्र
थे.

4 पवित्र आत्मा से भरकर प्रभु येशु यरदन नदी से लौटे और आत्मा उन्हें बंजर
भूमि में ले गया, 2 जहां चालीस दिन तक शैतान उन्हें परीक्षा में डालने का
प्रयास करता रहा. इस अवधि में वह पूरी तरह बिना भोजन के रहे, इसके बाद
उन्हें भूख लगी. 3 शैतान ने उनसे कहा, “यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो तो इस
पत्थर को आज्ञा दो कि यह रोटी बन जाए.” 4 प्रभु येशु ने उसे उत्तर दिया,
“लिखा है: ‘मनुष्य का जीवन सिर्फ भोजन पर ही निर्भर नहीं रहता है.’” 5
इसके बाद शैतान ने उन्हें ऊंचे पहाड़ पर ले जाकर क्षण मात्र में सारे विश्व के
सभी राज्यों की झलक दिखाई 6 और उनसे कहा, “इन सबका सारा अधिकार
और वैभव मैं तुम्हें दूंगा क्योंकि ये सब मुझे सौंपे गए हैं इसलिये ये सब मैं अपनी
इच्छा से किसी को भी दे सकता हूं. 7 यदि तुम मात्र मेरी आराधना करो तो ये
सब तुम्हारा हो जाएगा.” 8 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “लिखा है: तुम
सिर्फ प्रभु अपने परमेश्वर की ही आराधना और सेवा किया करो.” 9 इसके बाद
शैतान ने उन्हें येरूशलेम ले जाकर मंदिर की चोटी पर खड़ा कर दिया और
उनसे कहा, “यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो तो यहां से कूद जाओ, 10 क्योंकि
लिखा है: “‘वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारी सुरक्षा के संबंध में आज्ञा देंगे
तथा; 11 वे तुम्हें हाथों-हाथ उठा लेंगे; कि तुम्हारे पांव को पत्थर से चोट न
लगे.’” 12 इसके उत्तर में प्रभु येशु ने उससे कहा, “यह भी तो लिखा है: तुम
प्रभु अपने परमेश्वर को न परखना.” 13 जब शैतान प्रभु येशु को परीक्षा में
डालने के सभी प्रयास कर चुका, वह उन्हें किसी सटीक अवसर तक के लिए
छोड़कर चला गया. 14 प्रभु येशु आत्मा के सामर्थ्य में गलील प्रदेश लौट गए.
नज़दीकी सभी नगरों में उनके विषय में समाचार फैल गया. 15 प्रभु येशु यहूदी
सभागृहों में शिक्षा देते थे तथा सभी उनकी सराहना करते थे. 16 प्रभु येशु
नाज़रेथ नगर आए, जहां उनका पालन पोषण हुआ था. शब्बाथ पर अपनी रीति
के अनुसार वह यहूदी सभागृह में जाकर पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए खड़े हो गए.
17 उन्हें भविष्यवक्ता यशायाह का अभिलेख दिया गया. उन्होंने उसमें वह जगह

निकाली, जहां लिखा है: 18 “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उन्होंने मेरा
अभिषेक किया है, कंगालों को सुसमाचार देने के लिए, और बंदियों के लिए
मुक्ति का प्रचार करने के लिए और अंधों को रोशनी, कुचले हुओं को कष्ट से
छुड़ाने 19 तथा प्रभु की कृपादृष्टि का वर्ष के प्रचार के लिए भेजा है.” 20 तब
उन्होंने पुस्तक बंद करके सेवक के हाथों में दे दी और स्वयं बैठ गए. सभागृह
में हर एक व्यक्ति उन्हें एकटक देख रहा था. 21 प्रभु येशु ने आगे कहा, “आज
आपके सुनते-सुनते यह लेख पूरा हुआ.” 22 सभी प्रभु येशु की सराहना कर रहे
थे तथा उनके मुख से निकलने वाले सुंदर विचारों ने सबको चकित कर रखा
था. वे आपस में पूछ रहे थे, “यह योसेफ़ का ही पुत्र है न?” 23 प्रभु येशु ने उन्हें
संबोधित करते हुए कहा, “मैं जानता हूं कि आप मुझसे यह कहना चाहेंगे,
‘अरे चिकित्सक! पहले स्वयं को तो स्वस्थ कर! अपने गृहनगर में भी वह
सब कर दिखा, जो हमने तुझे कफ़रनहूम में करते सुना है.’” 24 प्रभु येशु ने
आगे कहा, “वास्तव में कोई भी भविष्यवक्ता अपने गृहनगर में सम्मान नहीं
पाता. 25 सच तो यह है कि एलियाह के समय में जब साढ़े तीन साल आसमान
बंद होकर वर्षा न हुई, इस्राएल राष्ट्र में अनेक विधवाएं थी, तथा सभी राष्ट्र में
भयंकर अकाल पड़ा; 26 एलियाह को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा
गया, अतिरिक्त उसके, जो सीदोन प्रदेश के ज़रफता नगर में थी. 27 वैसे ही
भविष्यवक्ता एलीशा के समय में इस्राएल राष्ट्र में अनेक कोढ़ रोगी थे किंतु
सीरियावासी नामान के अतिरिक्त कोई भी शुद्ध नहीं किया गया.” 28 यह सुनते
ही यहूदी सभागृह में इकट्ठा सभी व्यक्ति अत्यंत क्रोधित हो गए. 29 उन्होंने प्रभु
येशु को धक्के मारते हुए नगर के बाहर निकाल दिया और उन्हें खींचते हुए उस
पर्वत शिखर पर ले गए, जिस पर वह नगर बसा हुआ था कि उन्हें चट्टान पर से
नीचे धकेल दें 30 किंतु प्रभु येशु बचते हुए भीड़ के बीच से निकल गए. 31
वहां से वह गलील प्रदेश के कफ़रनहूम नामक नगर में आए और शब्बाथ पर
लोगों को शिक्षा देने लगे. 32 प्रभु येशु की शिक्षा उनके लिए आश्चर्य का विषय
थी क्योंकि उनका संदेश अधिकारपूर्ण होता था. 33 सभागृह में एक दुष्टात्मा से
पीड़ित व्यक्ति था. वह ऊंचे शब्द में बोल उठा, 34 “नाज़रेथवासी येशु! क्या
चाहते हैं आप? क्या आप हमें नाश करने आए हैं? मैं जानता हूं कि आप कौन हैं;
परमेश्वर के पवित्र जन!” 35 “चुप!” प्रभु येशु ने कड़े शब्द में कहा, “उसमें से
बाहर निकल आ!” दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को उन सबके सामने भूमि पर पटक
दिया और उस व्यक्ति की हानि किए बिना उसमें से निकल गया. 36 यह देख वे
सभी चकित रह गए और आपस में कहने लगे, “क्या है यह शब्द! यह बड़े
अधिकार तथा सामर्थ्य के साथ दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे मनुष्यों में से
बाहर आ जाते हैं!” 37 उनके विषय में यह वर्णन आस-पास के सभी क्षेत्रों में
फैल गया. 38 यहूदी सभागृह से निकलकर प्रभु येशु शिमओन के निवास पर
गए. वहां शिमओन की सास ज्वर-पीड़ित थी. शिष्यों ने प्रभु येशु से उन्हें स्वस्थ
करने की विनती की 39 प्रभु येशु ने उनके पास जाकर ज्वर को फटकारा और
ज्वर उन्हें छोड़ चला गया. वह तुरंत बिछौने से उठकर उनकी सेवा टहल में जुट
गईं. 40 सूर्यास्त के समय लोग विभिन्न रोगों से पीड़ितों को उनके पास ले
आए. प्रभु येशु ने हर एक पर हाथ रख उन्हें रोग से मुक्ति प्रदान की. 41 इसके
अतिरिक्त अनेकों में से दुष्टात्मा यह चिल्लाते हुए बाहर निकल गए, “आप तो
परमेश्वर के पुत्र हैं!” किंतु प्रभु येशु उन्हें डांट कर बोलने से रोक देते थे क्योंकि
दुष्टात्मा उनके मसीह होने के सत्य से परिचित थे. 42 पौ फटते ही प्रभु येशु एक
सुनसान स्थल पर चले गए. लोग उन्हें खोजते हुए वहां पहुंच गए. वे प्रयास कर
रहे थे कि प्रभु येशु उन्हें छोड़कर न जाएं. 43 प्रभु येशु ने स्पष्ट किया, “यह
ज़रूरी है कि मैं अन्य नगरों में भी जाकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार दूं
क्योंकि मुझे इसी उद्देश्य से भेजा गया है.” 44 इसलिये वह यहूदिया प्रदेश के
यहूदी सभागृहों में सुसमाचार का प्रचार करते रहे.

5 एक दिन प्रभु येशु गन्नेसरत झील के तट पर खड़े थे. वहां एक बड़ी भीड़
उनसे परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उन पर गिर पड़ रही थी. 2 प्रभु येशु
ने तट पर नावें देखीं. मछुवारे उन्हें छोड़कर चले गए थे क्योंकि वे अपने जाल
धो रहे थे. 3 प्रभु येशु एक नाव पर बैठ गए, जो शिमओन की थी. उन्होंने
शिमओन से नाव को तट से कुछ दूर झील में ले जाने के लिए कहा और तब
उन्होंने नाव में बैठकर इकट्ठा भीड़ को शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी. 4 जब वह
अपना विषय समाप्त कर चुके, शिमओन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा,
“नाव को गहरे जल में ले चलो और तब जाल डालो.” 5 शिमओन प्रभु से
बोले, “स्वामी! हम रात भर कठिन परिश्रम कर चुके हैं किंतु हाथ कुछ न लगा,
फिर भी, इसलिये कि यह आप कह रहे हैं, मैं जाल डाल देता हूं.” 6 यह कहते
हुए उन्होंने जाल डाल दिए. जाल में इतनी बड़ी संख्या में मछलियां आ गई कि
जाल फटने लगे 7 इसलिये उन्होंने दूसरी नाव के सह मछुआरों को सहायता के
लिए बुलाया. उन्होंने आकर सहायता की और दोनों नावों में इतनी मछलियां
भर गईं कि बोझ के कारण नावें डूबने लगीं. 8 सच्चाई का अहसास होते ही
शिमओन प्रभु येशु के चरणों पर गिर कहने लगे, “आप मुझसे दूर ही रहिए प्रभु,
मैं एक पापी मनुष्य हूं.” 9 यह इसलिये कि शिमओन तथा उनके साथी मछुवारे
इतनी मछलियों के पकड़े जाने से अचंभित थे. 10 शिमओन के अन्य साथी,
ज़ेबेदियॉस के दोनों पुत्र, याकोब और योहन भी यह देख भौचक्के रह गए थे.
तब प्रभु येशु ने शिमओन से कहा, “डरो मत! अब से तुम मछलियों को नहीं,
मनुष्यों को मेरे पास लाओगे.” 11 इसलिये उन्होंने नावें तट पर लगाई और सब
कुछ त्याग कर प्रभु येशु के पीछे चलने लगे. 12 किसी नगर में एक व्यक्ति था,
जिसके सारे शरीर में कोढ़ रोग फैल चुका था. प्रभु येशु को देख उसने भूमि पर
गिरकर उनसे विनती की, “प्रभु! यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं.” 13
प्रभु येशु ने हाथ बढ़ाकर उसका स्पर्श किया और कहा, “मैं चाहता हूं, शुद्ध हो
जाओ!” तत्काल ही उसे कोढ़ रोग से चंगाई प्राप्त हो गई. 14 प्रभु येशु ने उसे
आज्ञा दी, “इसके विषय में किसी से कुछ न कहना परंतु जाकर पुरोहित को
अपने शुद्ध होने का प्रमाण दो तथा मोशेह द्वारा निर्धारित शुद्धि-बलि भेंट करो कि
तुम्हारा कोढ़ से छुटकारा उनके सामने गवाही हो जाए.” 15 फिर भी प्रभु येशु
के विषय में समाचार और भी अधिक फैलता गया. परिणामस्वरूप लोग भारी
संख्या में उनके प्रवचन सुनने और बीमारियों से चंगा होने की अभिलाषा से
उनके पास आने लगे. 16 प्रभु येशु अक्सर भीड़ को छोड़, गुप्त रूप से, एकांत
में जाकर प्रार्थना किया करते थे. 17 एक दिन, जब प्रभु येशु शिक्षा दे रहे थे,
फ़रीसी तथा शास्त्री, जो गलील तथा यहूदिया प्रदेशों तथा येरूशलेम नगर से वहां
आए थे, बैठे हुए थे. रोगियों को स्वस्थ करने का परमेश्वर का सामर्थ्य प्रभु येशु
में सक्रिय था. 18 कुछ व्यक्ति एक लकवे के रोगी को बिछौने पर लिटा कर
वहां लाए. ये लोग रोगी को प्रभु येशु के सामने लाने का प्रयास कर रहे थे. 19
जब वे भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने में असफल रहे तो वे छत पर चढ़
गए और छत में से उसके बिछौने सहित रोगी को प्रभु येशु के ठीक सामने
उतार दिया. 20 उनका यह विश्वास देख प्रभु येशु ने कहा, “मित्र! तुम्हारे पाप
क्षमा किए जा चुके हैं.” 21 फ़रीसी और शास्त्री अपने मन में विचार करने
लगे, “कौन है यह व्यक्ति, जो परमेश्वर-निंदा कर रहा है? भला परमेश्वर के
अतिरिक्त अन्य कौन पाप क्षमा कर सकता है?” 22 यह जानते हुए कि उनके
मन में क्या विचार उठ रहे थे, प्रभु येशु ने उनसे कहा, “आप अपने मन में इस
प्रकार तर्क-वितर्क क्यों कर रहे हैं? 23 क्या कहना सरल है, ‘तुम्हारे पाप क्षमा
कर दिए गए’ या ‘उठो और चलो’? 24 किंतु इसका उद्देश्य यह है कि तुम्हें यह
मालूम हो जाए कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का अधिकार सौंपा
गया है.” तब रोगी से येशु ने कहा, “उठो, अपना बिछौना उठाओ और अपने
घर जाओ.” 25 उसी क्षण वह रोगी उन सबके सामने उठ खड़ा हुआ, अपना

बिछौना उठाया, जिस पर वह लेटा हुआ था और परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए घर चला गया. 26 सभी हैरान रह गए. सभी परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे. श्रद्धा से भरकर वे कह रहे थे, "हमने आज अनोखे काम होते देखे हैं." 27 जब वह वहां से जा रहे थे, उनकी दृष्टि एक चुंगी लेनेवाले पर पड़ी, जिनका नाम लेवी था. वह अपनी चौकी पर बैठे काम कर रहे थे. प्रभु येशु ने उन्हें आज्ञा दी, "आओ! मेरे पीछे हो लो!" 28 लेवी उठे तथा सभी कुछ वहीं छोड़कर प्रभु येशु के पीछे हो लिए. 29 प्रभु येशु के सम्मान में लेवी ने अपने घर पर एक बड़े भोज का आयोजन किया. बड़ी संख्या में चुंगी लेनेवालों के अतिरिक्त वहां अनेक अन्य व्यक्ति भी इकट्ठा थे. 30 यह देख उस संप्रदाय के फ़रीसी और शास्त्री प्रभु येशु के शिष्यों से कहने लगे, "तुम लोग चुंगी लेनेवालों तथा अपराधियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?" 31 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "चिकित्सक की ज़रूरत स्वस्थ व्यक्ति को नहीं, रोगी को होती है; 32 मैं पृथ्वी पर धर्मियों को नहीं परंतु पापियों को बुलाने आया हूं कि वे पश्चाताप करें." 33 फ़रीसियों और शास्त्रियों ने उन्हें याद दिलाते हुए कहा, "योहन के शिष्य अक्सर उपवास और प्रार्थना करते हैं. फ़रीसियों के शिष्य भी यही करते हैं किंतु आपके शिष्य तो खाते-पीते रहते हैं." 34 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या दूल्हे उपस्थिति में अतिथियों से उपवास की आशा की जा सकती है? 35 किंतु वह समय आएगा, जब दूल्हा उनके मध्य से हटा लिया जाएगा—वे उस समय उपवास करेंगे." 36 प्रभु येशु ने उनके सामने यह दृष्टांत प्रस्तुत किया, "पुराने वस्त्र पर नये वस्त्र का जोड़ नहीं लगाया जाता. यदि कोई ऐसा करता है तब कोरा वस्त्र तो नाश होता ही है साथ ही वह जोड़ पुराने वस्त्र पर अशोभनीय भी लगता है. 37 वैसे ही नया दाखरस पुरानी मश्कों में रखा नहीं जाता. यदि कोई ऐसा करे तो नया दाखरस मश्कों को फाड़कर बह जाएगा और मश्के भी नाश हो जाएगी. 38 नया दाखरस नई मश्कों में ही रखा जाता है. 39 पुराने दाखरस का पान करने के बाद कोई भी नए दाखरस की इच्छा नहीं करता क्योंकि वे कहते हैं, 'पुराना दाखरस ही उत्तम है.'"

6 एक शब्बाथ पर प्रभु येशु अन्न के खेत से होकर जा रहे थे. उनके शिष्यों ने बालें तोड़कर, मसल-मसल कर खाना प्रारंभ कर दिया. 2 यह देख कुछ फ़रीसियों ने कहा, "आप शब्बाथ पर यह काम क्यों कर रहे हैं, जो नियम विरुद्ध?" 3 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या आपने यह कभी नहीं पढ़ा कि भूख लगने पर दावीद और उनके साथियों ने क्या किया था? 4 दावीद ने परमेश्वर के भवन में प्रवेश कर वह समर्पित रोटी खाई, जिसका खाना पुरोहितों के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए नियम विरुद्ध था? यही रोटी उन्होंने अपने साथियों को भी दी." 5 प्रभु येशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र शब्बाथ का प्रभु है." 6 एक अन्य शब्बाथ पर प्रभु येशु यहूदी सभागृह में शिक्षा देने लगे. वहां एक व्यक्ति था, जिसका दायां हाथ लक़वा मारा हुआ था. 7 फ़रीसी और शास्त्री इस अवसर की ताक में थे कि शब्बाथ पर प्रभु येशु इस व्यक्ति को स्वस्थ करें और वह उन पर दोष लगा सकें. 8 प्रभु येशु को उनके मनों में उठ रहे विचारों का पूरा पता था. उन्होंने उस व्यक्ति को, जिसका हाथ सूखा हुआ था, आज्ञा दी, "उठो! यहां सबके मध्य खड़े हो जाओ." वह उठकर वहां खड़ा हो गया. 9 तब प्रभु येशु ने फ़रीसियों और शास्त्रियों को संबोधित कर प्रश्न किया, "यह बताइए, शब्बाथ पर क्या करना उचित है; भलाई या बुराई? जीवन रक्षा या विनाश?" 10 उन सब पर एक दृष्टि डालते हुए प्रभु येशु ने उस व्यक्ति को आज्ञा दी, "अपना हाथ बढ़ाओ!" उसने ऐसा ही किया—उसका हाथ स्वस्थ हो गया था. 11 यह देख फ़रीसी और शास्त्री क्रोध से जलने लगे. वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि प्रभु येशु के साथ अब क्या किया जाए. 12 एक दिन प्रभु येशु पर्वत पर प्रार्थना करने चले गए और सारी रात वह परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे. 13 प्रातःकाल उन्होंने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और उनमें से बारह को चुनकर उन्हें प्रेरित पद प्रदान किया. 14 शिमओन, (जिन्हें वह पेतरॉस नाम से पुकारते थे) उनके भाई आन्द्रेयास, याकोब, योहन, फ़िलिप्पॉस, बारथोलोमेयॉस 15 मत्तियाह, थोमॉस, हलफ़ेयॉस के पुत्र याकोब, राष्ट्रवादी शिमओन, 16 याकोब के पुत्र यहूदाह, तथा कारियोतवासी यहूदाह, जिसने उनके साथ धोखा किया. 17 प्रभु येशु उनके साथ पर्वत से उतरे और आकर एक समतल स्थल पर खड़े हो गए. येरूशलेम तथा समुद्र के किनारे के नगर सोर और सीदोन से आए लोगों तथा सुननेवालों का एक बड़ा समूह वहां इकट्ठा था, 18 जो उनके प्रवचन सुनने और अपने रोगों से चंगाई के उद्देश्य से वहां आया था. इस समूह में दुष्टात्मा से पीड़ित भी शामिल थे, जिन्हें प्रभु येशु दुष्टात्मा मुक्त करते जा रहे थे. 19 सभी लोग उन्हें छूने का प्रयास कर रहे थे क्योंकि उनसे निकली हुई सामर्थ्य उन सभी को स्वस्थ कर रही थी. 20 अपने शिष्यों की ओर दृष्टि करते हुए प्रभु येशु ने उनसे कहा: "धन्य हो तुम सभी जो निर्धन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है. 21 धन्य हो तुम जो भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त किए जाओगे. धन्य हो तुम जो इस समय रो रहे हो, क्योंकि तुम आनंदित होगे. 22 धन्य हो तुम सभी जिनसे सभी मनुष्य घृणा करते हैं, तुम्हारा बहिष्कार करते हैं, तुम्हारी निंदा करते हैं, तुम्हारे नाम को मनुष्य के पुत्र के कारण बुराई करनेवाला घोषित कर देते हैं. 23 "उस दिन आनंदित होकर हर्षोल्लास में उछलो-कूदो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा. उनके पूर्वजों ने भी भविष्यद्वक्ताओं को इसी प्रकार सताया था. 24 "धिक्कार है तुम पर! तुम जो धनी हो, तुम अपने सारे सुख भोग चुके. 25 धिक्कार है तुम पर! तुम जो अब तृप्त हो, क्योंकि तुम्हारे लिए भूखा रहना निर्धारित है. धिक्कार है तुम पर! तुम जो इस समय हंस रहे हो, क्योंकि तुम शोक तथा विलाप करोगे. 26 धिक्कार है तुम पर! जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करते हैं क्योंकि उनके पूर्वज झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ यही किया करते थे." 27 "किंतु तुम, जो इस समय मेरे प्रवचन सुन रहे हो, अपने शत्रुओं से प्रेम करो तथा उनके साथ भलाई, जो तुमसे घृणा करते हैं. 28 जो तुम्हें शाप देते हैं उनको आशीष दो, और जो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करें उनके लिए प्रार्थना करो. 29 यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर प्रहार करे उसकी ओर दूसरा भी फेर दो. यदि कोई तुम्हारी चादर लेना चाहे तो उसे अपना कुर्ता भी देने में संकोच न करो. 30 जब भी कोई तुमसे कुछ मांगे तो उसे अवश्य दो और यदि कोई तुम्हारी कोई वस्तु ले ले तो उसे वापस न मांगो 31 अन्यों के साथ तुम्हारा व्यवहार वैसा ही हो जैसे व्यवहार की आशा तुम उनसे करते हो. 32 "यदि तुम उन्हीं से प्रेम करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या प्रशंसा? क्योंकि दुर्जन भी तो यही करते हैं. 33 वैसे ही यदि तुम उन्हीं के साथ भलाई करते हो, जिन्होंने तुम्हारे साथ भलाई की है, तो इसमें तुम्हारी क्या प्रशंसा? क्योंकि दुर्जन भी तो यही करते हैं. 34 और यदि तुम उन्हीं को कर्ज़ देते हो, जिनसे राशि वापस प्राप्त करने की आशा होती है तो तुमने कौन सा प्रशंसनीय काम कर दिखाया? ऐसा तो परमेश्वर से दूर रहनेवाले लोग भी करते हैं—इस आशा में कि उनकी सारी राशि उन्हें लौटा दी जाएगी. 35 सही तो यह है कि तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनका उपकार करो और कुछ भी वापस प्राप्त करने की आशा किए बिना उन्हें कर्ज़ दे दो. तब तुम्हारा ईनाम असाधारण होगा और तुम परम प्रधान की संतान ठहराए जाओगे क्योंकि वह उनके प्रति भी कृपालु हैं, जो उपकार नहीं मानते और बुरे हैं. 36 कृपालु बनो, ठीक वैसे ही, जैसे तुम्हारे पिता कृपालु हैं. 37 "किसी का न्याय मत करो तो तुम्हारा भी न्याय नहीं किया जाएगा. किसी पर दोष मत लगाओ तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा. क्षमा करो तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा. 38 उदारतापूर्वक दो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा—पूरा नाप दबा-दबा कर और हिला-हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी झोली में उंडेल (यानी अत्यंत उदारतापूर्वक) देंगे. देने के तुम्हारे नाप के अनुसार ही तुम प्राप्त करोगे." 39 प्रभु

येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा भी शिक्षा दी. “क्या कोई अंधा दूसरे अंधे का
मार्गदर्शन कर सकता है? क्या वे दोनों ही गड्ढे में न गिरेंगे? 40 विद्यार्थी अपने
शिक्षक से बढ़कर नहीं है परंतु हर एक, जिसने शिक्षा पूरी कर ली है, वह अपने
शिक्षक के समान होगा. 41 “तुम भला अपने भाई की आंख के कण की ओर
उंगली क्यों उठाते हो जबकि तुम स्वयं अपनी आंख में पड़े लट्ठे की ओर ध्यान
नहीं देते? 42 या तुम भला यह कैसे कह सकते हो ‘ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारी आंख
से वह कण निकाल देता हूं,’ जबकि तुम्हारी अपनी आंख में तो लट्ठा पड़ा हुआ
देख नहीं सकते हो? अरे पाखंडी! पहले तो स्वयं अपनी आंख में से उस लट्ठे को
तो निकाल! तभी तू स्पष्ट रूप से देख सकेगा और अपने भाई की आंख में से उस
कण को निकाल सकेगा.” 43 “कोई भी अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं लाता और
न बुरा पेड़ अच्छा फल. 44 हर एक पेड़ उसके अपने फलों के द्वारा पहचाना
जाता है. कंटीले वृक्षों में से लोग अंजीर या कंटीली झाड़ियों में से अंगूर इकट्ठा
नहीं किया करते. 45 भला व्यक्ति हृदय में भरे हुए उत्तम भंडार में से उत्तम
ही निकालता है तथा बुरा व्यक्ति अपने हृदय में भरे हुए बुरे भंडार में से बुरा;
क्योंकि उसका मुख उसके हृदय में भरी हुई वस्तुओं में से ही निकालता है.” 46
“तुम लोग मुझे, प्रभु, प्रभु कहकर क्यों पुकारते हो जबकि मेरी आज्ञाओं का
पालन ही नहीं करते? 47 मैं तुम्हें बताऊंगा कि वह व्यक्ति किस प्रकार का है,
जो मेरे पास आता है, मेरे संदेश को सुनता तथा उसका पालन करता है: 48 वह
उस घर बनानेवाले के जैसा है, जिसने गहरी खुदाई करके चट्टान पर नींव
डाली. मूसलाधार बारिश के तेज बहाव ने उस घर पर ठोकरें मारी किंतु उसे
हिला न पाया क्योंकि वह घर मजबूत था. 49 वह व्यक्ति, जो मेरे संदेश को
सुनता है किंतु उसका पालन नहीं करता, उस व्यक्ति के समान है, जिसने भूमि
पर बिना नींव के घर बनाया और जिस क्षण उस पर तेज बहाव ने ठोकरें मारी,
वह ढह गया और उसका सर्वनाश हो गया.”

7 लोगों को ऊपर लिखी शिक्षा देने के बाद प्रभु येशु कफ़रनहूम नगर लौट
गए. 2 वहां एक शताधिपति का एक अत्यंत प्रिय सेवक रोग से बिस्तर पर
था. रोग के कारण वह लगभग मरने पर था. 3 प्रभु येशु के विषय में मालूम होने
पर सेनापति ने कुछ वरिष्ठ यहूदियों को प्रभु येशु के पास इस विनती के साथ
भेजा, कि वह आकर उसके सेवक को चंगा करें. 4 उन्होंने प्रभु येशु के पास
आकर उनसे विनती कर कहा, “यह सेनापति निश्चय ही आपकी इस दया का
पात्र है 5 क्योंकि उसे हमारी जनता से प्रेम है तथा उसने हमारे लिए सभागृह भी
बनाया है.” 6 इसलिये प्रभु येशु उनके साथ चले गए. प्रभु येशु उसके घर के
पास पहुंचे ही थे कि शताधिपति ने अपने मित्रों के द्वारा उन्हें संदेश भेजा, “प्रभु!
आप कष्ट न कीजिए. मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप मेरे घर पधारें. 7 अपनी
इसी अयोग्यता को ध्यान में रखते हुए मैं स्वयं आपसे भेंट करने नहीं आया.
आप मात्र वचन कह दीजिए और मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा. 8 मैं स्वयं
बड़े अधिकारियों के अधीन नियुक्त हूं और सैनिक मेरे अधिकार में हैं. मैं
किसी को आदेश देता हूं, ‘जाओ!’ तो वह जाता है और किसी को आदेश देता
हूं, ‘इधर आओ!’ तो वह आता है. अपने सेवक से कहता हूं, ‘यह करो!’ तो
वह वही करता है.” 9 यह सुनकर प्रभु येशु अत्यंत चकित हुए और मुड़कर
पीछे आ रही भीड़ को संबोधित कर बोले, “मैं यह बताना सही समझता हूं कि
मुझे इस्राएलियों तक में ऐसा दृढ़ विश्वास देखने को नहीं मिला.” 10 वे, जो
सेनापति द्वारा प्रभु येशु के पास भेजे गए थे, जब घर लौटे तो यह पाया कि वह
सेवक स्वस्थ हो चुका था. 11 इसके कुछ ही समय बाद प्रभु येशु नाइन नामक
एक नगर को गए. एक बड़ी भीड़ और उनके शिष्य उनके साथ थे. 12 जब वह
नगर द्वार पर पहुंचे, एक मृत व्यक्ति अंतिम संस्कार के लिए बाहर लाया जा रहा
था—अपनी माता का एकलौता पुत्र और वह स्वयं विधवा थी; और उसके साथ
नगर की एक बड़ी भीड़ थी. 13 उसे देख प्रभु येशु करुणा से भर उठे. उन्होंने
उससे कहा, “रोओ मत!” 14 तब उन्होंने जाकर उस अर्थी को स्पर्श किया.
यह देख वे, जिन्होंने उसे उठाया हुआ था, रुक गए. तब प्रभु येशु ने कहा,
“युवक! मैं तुमसे कहता हूं, उठ जाओ!” 15 मृतक उठ बैठा और वार्तालाप
करने लगा. प्रभु येशु ने माता को उसका जीवित पुत्र सौंप दिया. 16 वे सभी श्रद्धा
में परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे. वे कह रहे थे, “हमारे मध्य एक तेजस्वी
भविष्यवक्ता का आगमन हुआ है. परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुधि ली है.” 17
प्रभु येशु के विषय में यह समाचार यहूदिया प्रदेश तथा पास के क्षेत्रों में फैल
गया. 18 योहन के शिष्यों ने उन्हें इस विषय में सूचना दी. 19 योहन ने अपने दो
शिष्यों को प्रभु के पास इस प्रश्न के साथ भेजा, “क्या आप वही हैं जिनके
आगमन की प्रतीक्षा की जा रही है, या हम किसी अन्य की प्रतीक्षा करें?” 20
जब वे दोनों प्रभु येशु के पास पहुंचे उन्होंने कहा, “बपतिस्मा देनेवाले योहन ने
हमें आपके पास यह पूछने भेजा है, ‘क्या आप वही हैं, जिनके आगमन की
प्रतीक्षा की जा रही है, या हम किसी अन्य की प्रतीक्षा करें?’” 21 ठीक उसी
समय प्रभु येशु अनेकों को स्वस्थ कर रहे थे, जो रोगी, पीड़ित और दुष्टात्मा के
सताए हुए थे. वह अनेक अंधों को भी दृष्टि प्रदान कर रहे थे. 22 इसलिये प्रभु
येशु ने उन दूतों उत्तर दिया, “तुमने जो कुछ सुना और देखा है उसकी सूचना
योहन को दे दो: अंधे दृष्टि पा रहे हैं, अपंग चल रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध होते जा रहे हैं,
बहरे सुनने लगे हैं, मृतक जीवित किए जा रहे हैं तथा कंगालों में सुसमाचार का
प्रचार किया जा रहा है. 23 धन्य है वह, जिसका विश्वास मुझ पर से नहीं
उठता.” 24 योहन का संदेश लानेवालों के विदा होने के बाद प्रभु येशु ने भीड़
से योहन के विषय में कहना प्रारंभ किया, “तुम्हारी आशा बंजर भूमि में क्या
देखने की थी? हवा में हिलते हुए सरकंडे को? 25 यदि यह नहीं तो फिर क्या
देखने गए थे? कीमती वस्त्र धारण किए हुए किसी व्यक्ति को? जो ऐसे वस्त्र
धारण करते हैं उनका निवास तो राजमहलों में होता है. 26 तुम क्यों गए थे?
किसी भविष्यवक्ता से भेंट करने? हां! मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यह वह हैं, जो
भविष्यवक्ता से भी बढ़कर हैं 27 यह वही हैं, जिनके विषय में लिखा गया है:
“‘मैं अपना दूत तुम्हारे आगे भेज रहा हूं, जो तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हारे
लिए मार्ग तैयार करेगा.’ 28 सच तो यह है कि आज तक जितने भी मनुष्य
हुए हैं उनमें से एक भी (बपतिस्मा देनेवाले) योहन से बढ़कर नहीं. फिर भी,
परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा भी योहन से बढ़कर है.” 29 जब सभी लोगों
ने, यहां तक कि चुंगी लेनेवालों ने, प्रभु येशु के वचन, सुने तो उन्होंने योहन का
बपतिस्मा लेने के द्वारा यह स्वीकार किया कि परमेश्वर की योजना सही है. 30
किंतु फ़रीसियों और शास्त्रियों ने बपतिस्मा न लेकर उनके लिए तय परमेश्वर के
उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया. 31 प्रभु येशु ने आगे कहा, “इस पीढ़ी के
लोगों की तुलना मैं किससे करूं? किसके समान हैं ये? 32 ये बाजार में बैठे हुए
उन बालकों के समान हैं, जो एक दूसरे से पुकार-पुकारकर कह रहे हैं: “‘हमने
तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, किंतु तुम नहीं नाचे, हमने तुम्हारे लिए शोक गीत भी
गाया, फिर भी तुम न रोए.’ 33 बपतिस्मा देनेवाले योहन रोटी नहीं खाते थे और
दाखरस का सेवन भी नहीं करते थे इसलिये तुमने घोषित कर दिया, ‘उसमें
दुष्टात्मा का वास है.’ 34 मनुष्य के पुत्र का खान-पान सामान्य है और तुम
घोषणा करते हैं, ‘अरे, वह तो पेटू और पियक्कड़ है; वह तो चुंगी लेनेवालों
और अपराधी व्यक्तियों का मित्र है!’ बुद्धि अपनी संतान द्वारा साबित हुई है 35
फिर भी ज्ञान की सच्चाई उसकी सभी संतानों द्वारा प्रकट की गई है.” 36 एक
फ़रीसी ने प्रभु येशु को भोज पर आमंत्रित किया. प्रभु येशु आमंत्रण स्वीकार कर
वहां गए और भोजन के लिए बैठ गए. 37 नगर की एक पापिन स्त्री, यह मालूम
होने पर कि प्रभु येशु वहां आमंत्रित हैं, संगमरमर के बर्तन में इत्र लेकर आई 38
और उनके चरणों के पास रोती हुई खड़ी हो गई. उसके आंसुओं से उनके पांव
भीगने लगे. तब उसने प्रभु के पावों को अपने बालों से पोंछा, उनके पावों को

चूमा तथा उस इत्र को उनके पावों पर उंडेल दिया. **39** जब उस फ़रीसी ने,
जिसने प्रभु येशु को आमंत्रित किया था, यह देखा तो मन में विचार करने लगा,
“यदि यह व्यक्ति वास्तव में भविष्यवक्ता होता तो अवश्य जान जाता कि जो स्त्री
उसे छू रही है, वह कौन है—एक पापी स्त्री!” **40** प्रभु येशु ने उस फ़रीसी को
कहा, “शिमओन, मुझे तुमसे कुछ कहना है.” “कहिए, गुरुवर,” उसने कहा.
41 प्रभु येशु ने कहा, “एक साहूकार के दो कर्ज़दार थे—एक पांच सौ दीनार का
तथा दूसरा पचास का. **42** दोनों ही कर्ज़ चुकाने में असमर्थ थे इसलिये उस
साहूकार ने दोनों ही के कर्ज़ क्षमा कर दिए. यह बताओ, दोनों में से कौन उस
साहूकार से अधिक प्रेम करेगा?” **43** शिमओन ने उत्तर दिया, “मेरे विचार से
वह, जिसकी बड़ी राशि क्षमा की गई.” “तुमने सही उत्तर दिया,” प्रभु येशु ने
कहा. **44** तब उस स्त्री से उन्मुख होकर प्रभु येशु ने शिमओन से कहा, “इस स्त्री
की ओर देखो. मैं तुम्हारे घर आया, तुमने तो मुझे पांव धोने के लिए भी जल न
दिया किंतु इसने अपने आंसुओं से मेरे पांव भिगो दिए और अपने केशों से उन्हें
पोंछ दिया. **45** तुमने चुंबन से मेरा स्वागत नहीं किया किंतु यह स्त्री मेरे पांवों
को चूमती रही. **46** तुमने मेरे सिर पर तेल नहीं मला किंतु इसने मेरे पांवों पर इत्र
उंडेल दिया है. **47** मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि यह मुझसे इतना अधिक प्रेम
इसलिये करती है कि इसके बहुत पाप क्षमा कर दिए गए हैं; किंतु वह, जिसके
थोड़े ही पाप क्षमा किए गए हैं, प्रेम भी थोड़ा ही करता है.” **48** तब प्रभु येशु ने
उस स्त्री से कहा, “तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं.” **49** आमंत्रित अतिथि
आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “कौन है यह, जो पाप भी क्षमा करता है?”
50 प्रभु येशु ने उस स्त्री से कहा, “तुम्हारा विश्वास ही तुम्हारे उद्धार का कारण है.
शांति में विदा हो जाओ.”

8 इसके बाद शीघ्र ही प्रभु येशु परमेश्वर के राज्य की घोषणा तथा प्रचार करते
हुए नगर-नगर और गांव-गांव फिरने लगे. बारहों शिष्य उनके साथ साथ थे.
2 इनके अतिरिक्त कुछ वे स्त्रियां भी उनके साथ यात्रा कर रही थी, जिन्हें रोगों
और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया गया था: मगदालावासी मरियम, जिसमें से
सात दुष्टात्मा निकाले गए थे, **3** हेरोदेस के भंडारी कूज़ा की पत्नी योहान्ना,
सूज़न्ना तथा अन्य स्त्रियां. ये वे स्त्रियां थी, जो अपनी संपत्ति से इनकी सहायता
कर रही थी. **4** जब नगर-नगर से बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही थी और लोग प्रभु
येशु के पास आ रहे थे, प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा शिक्षा दी. **5** “एक
किसान बीज बोने के लिए निकला. बीज बोने में कुछ बीज तो मार्ग के किनारे
गिरे, पैरों के नीचे कुचले गए तथा आकाश के पक्षियों ने उन्हें चुग लिया. **6**
कुछ पथरीली भूमि पर जा पड़े, वे अंकुरित तो हुए परंतु नमी न होने के कारण
मुरझा गए. **7** कुछ बीज कंटीली झाड़ियों में जा पड़े और झाड़ियों ने उनके
साथ बड़े होते हुए उन्हें दबा दिया. **8** कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, बड़े हुए
और फल लाए—जितना बोया गया था उससे सौ गुणा.” जब प्रभु येशु यह दृष्टांत
सुना चुके तो उन्होंने ऊंचे शब्द में कहा, “जिसके सुनने के कान हों वह सुन
ले.” **9** उनके शिष्यों ने उनसे प्रश्न किया, “इस दृष्टांत का अर्थ क्या है?” **10**
प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का भेद जानने की
क्षमता प्रदान की गई है किंतु अन्यों के लिए मुझे दृष्टान्तों का प्रयोग करना
पड़ता हैं जिससे कि, “‘वे देखते हुए भी न देखें; और सुनते हुए भी न समझें.’
11 “इस दृष्टांत का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर का वचन है. **12** मार्ग के किनारे
की भूमि वे लोग हैं, जो वचन सुनते तो हैं किंतु शैतान आता है और उनके मन से
वचन उठा ले जाता है कि वे विश्वास करके उद्धार प्राप्त न कर सकें **13** पथरीली
भूमि वे लोग हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुनने पर खुशी से स्वीकारते हैं किंतु
उनमें जड़ न होने के कारण वे विश्वास में थोड़े समय के लिए ही स्थिर रह पाते
हैं. कठिन परिस्थितियों में घिरने पर वे विश्वास से दूर हो जाते हैं. **14** वह भूमि
जहां बीज कंटीली झाड़ियों के मध्य गिरा, वे लोग हैं, जो सुनते तो हैं किंतु जब
वे जीवनपथ पर आगे बढ़ते हैं, जीवन की चिंताएं, धन तथा विलासिता उनका
दमन कर देती हैं और वे मजबूत हो ही नहीं पाते. **15** इसके विपरीत उत्तम भूमि
वे लोग हैं, जो भले और निष्कपट हृदय से वचन सुनते हैं और उसे दृढ़तापूर्वक
थामे रहते हैं तथा निरंतर फल लाते हैं. **16** “कोई भी दीपक को जलाकर न तो
उसे बर्तन से ढांकता है और न ही उसे पलंग के नीचे रखता है परंतु उसे दीवट
पर रखता है कि कमरे में प्रवेश करने पर लोग देख सकें. **17** ऐसा कुछ भी छिपा
हुआ नहीं है जिसे प्रकट न किया जाएगा तथा ऐसा कोई रहस्य नहीं जिसे
उजागर कर सामने न लाया जाएगा. **18** इसलिये इसका विशेष ध्यान रखो कि
तुम कैसे सुनते हो. जिस किसी के पास है, उसे और भी दिया जाएगा तथा जिस
किसी के पास नहीं है, उसके पास से वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके विचार
से उसका है.” **19** तब प्रभु येशु की माता और उनके भाई उनसे भेंट करने वहां
आए किंतु लोगों की भीड़ के कारण वे उनके पास पहुंचने में असमर्थ रहे. **20**
किसी ने प्रभु येशु को सूचना दी, “आपकी माता तथा भाई बाहर खड़े हैं—वे
आपसे भेंट करना चाह रहे हैं.” **21** प्रभु येशु ने कहा, “मेरी माता और भाई वे
हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते तथा उसका पालन करते हैं.” **22** एक दिन प्रभु
येशु ने शिष्यों से कहा, “आओ, हम झील की दूसरी ओर चलें.” इसलिये वे
सब नाव में बैठकर चल दिए. **23** जब वे नाव खे रहे थे प्रभु येशु सो गए. उसी
समय झील पर प्रचंड बवंडर उठा, यहां तक कि नाव में जल भरने लगा और
उनका जीवन खतरे में पड़ गया. **24** शिष्यों ने जाकर प्रभु येशु को जगाते हुए
कहा, “स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जा रहे हैं!” प्रभु येशु उठे. और बवंडर
और तेज लहरों को डांटा; बवंडर थम गया तथा तेज लहरें शांत हो गईं. **25**
“कहां है तुम्हारा विश्वास?” प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से प्रश्न किया. भय और
अचंभे में वे एक दूसरे से पूछने लगे, “कौन हैं यह, जो बवंडर और लहरों तक
को आदेश देते हैं और वे भी उनके आदेशों का पालन करती हैं!” **26** इसके बाद
वे गिरासेन प्रदेश में आए, जो गलील झील के दूसरी ओर है. **27** जब प्रभु येशु
तट पर उतरे, उनकी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हो गई, जिसमें अनेक दुष्टात्मा
समाये हुए थे. दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति उनके पास आ गया. यह व्यक्ति लंबे
समय से कपड़े न पहनता था. वह मकान में नहीं परंतु कब्रों की गुफाओं में रहता
था. **28** प्रभु येशु पर दृष्टि पड़ते ही वह चिल्लाता हुआ उनके चरणों में जा गिरा
और अत्यंत ऊंचे शब्द में चिल्लाया, “येशु! परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र! मेरा
और आपका एक दूसरे से क्या लेना देना? आपसे मेरी विनती है कि आप मुझे
कष्ट न दें,” **29** क्योंकि प्रभु येशु दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से निकल जाने की
आज्ञा दे चुके थे. समय समय पर दुष्टात्मा उस व्यक्ति पर प्रबल हो जाया करता
था तथा लोग उसे सांकलों और बेड़ियों में बांधकर पहरे में रखते थे, फिर भी
वह दुष्टात्मा बेड़ियां तोड़ उसे सुनसान स्थान में ले जाता था. **30** प्रभु येशु ने
उससे प्रश्न किया, “क्या नाम है तुम्हारा?” “विशाल सेना,” उसने उत्तर दिया
क्योंकि अनेक दुष्टात्मा उसमें समाए हुए थे. **31** दुष्टात्मा-गण प्रभु येशु से निरंतर
विनती कर रहे थे कि वह उन्हें पाताल में न भेजें. **(Abyssos g12)** **32** वहीं
पहाड़ी के ढाल पर सूअरों का एक विशाल समूह चर रहा था. दुष्टात्माओं ने प्रभु
येशु से विनती की कि वह उन्हें सूअरों में जाने की अनुमति दे दें. प्रभु येशु ने
उन्हें अनुमति दे दी. **33** जब दुष्टात्मा उस व्यक्ति में से बाहर आए, उन्होंने तुरंत
जाकर सूअरों में प्रवेश किया और सूअर ढाल से झपटकर दौड़ते हुए झील में
जा डूबे. **34** इन सूअरों के चरवाहे यह देख दौड़कर गए और नगर तथा उस
प्रदेश में सब जगह इस घटना के विषय में बताने लगे. **35** लोग वहां यह देखने
आने लगे कि क्या हुआ है. तब वे प्रभु येशु के पास आए. वहां उन्होंने देखा कि
वह व्यक्ति, जो पहले दुष्टात्मा से पीड़ित था, वस्त्र धारण किए हुए, पूरी तरह
स्वस्थ और सचेत प्रभु येशु के चरणों में बैठा हुआ है. यह देख वे हैरान रह गए.
36 जिन्होंने यह सब देखा, उन्होंने जाकर अन्यों को सूचित किया कि यह

दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति किस प्रकार दुष्टात्मा से मुक्त हुआ है. 37 तब गिरासेन
प्रदेश तथा पास के क्षेत्रों के सभी निवासियों ने प्रभु येशु को वहां से दूर चले जाने
को कहा क्योंकि वे अत्यंत भयभीत हो गए थे. इसलिये प्रभु येशु नाव द्वारा वहां
से चले गए. 38 वह व्यक्ति जिसमें से दुष्टात्मा निकाला गया था उसने प्रभु येशु से
विनती की कि वह उसे अपने साथ ले लें किंतु प्रभु येशु ने उसे यह कहते हुए
विदा किया, 39 “अपने परिजनों में लौट जाओ तथा इन बड़े-बड़े कामों का
वर्णन करो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे लिए किए हैं.” इसलिये वह लौटकर सभी
नगर में यह वर्णन करने लगा कि प्रभु येशु ने उसके लिए कैसे बड़े-बड़े काम
किए हैं. 40 जब प्रभु येशु झील की दूसरी ओर पहुंचे, वहां इंतजार करती भीड़
ने उनका स्वागत किया. 41 जाइरूस नामक एक व्यक्ति, जो यहूदी सभागृह का
प्रधान था, उनसे भेंट करने आया. उसने प्रभु येशु के चरणों पर गिरकर उनसे
विनती की कि वह उसके साथ उसके घर जाएं 42 क्योंकि उसकी एकमात्र
बेटी, जो लगभग बारह वर्ष की थी, मरने पर थी. जब प्रभु येशु वहां जा रहे थे,
मार्ग में वह भीड़ में दबे जा रहे थे. 43 वहां बारह वर्ष से लहूस्राव-पीड़ित एक
स्त्री थी. उसने अपनी सारी जीविका वैद्यों पर खर्च कर दी थी, पर वह किसी भी
इलाज से स्वस्थ न हो पाई थी. 44 इस स्त्री ने पीछे से आकर येशु के वस्त्र के छोर
को छुआ, और उसी क्षण उसका लहू बहना बंद हो गया. 45 “किसने मुझे छुआ
है?” प्रभु येशु ने पूछा. जब सभी इससे इनकार कर रहे थे, पेतरॉस ने उनसे
कहा, “स्वामी! यह बढ़ती हुई भीड़ आप पर गिरी जा रही है.” 46 किंतु प्रभु
येशु ने उनसे कहा, “किसी ने तो मुझे छुआ है क्योंकि मुझे यह पता चला है कि
मुझमें से सामर्थ्य निकली है.” 47 जब उस स्त्री ने यह समझ लिया कि उसका
छुपा रहना असंभव है, भय से कांपती हुई सामने आई और प्रभु येशु के चरणों में
गिर पड़ी. उसने सभी उपस्थित भीड़ के सामने यह स्वीकार किया कि उसने प्रभु
येशु को क्यों छुआ था तथा कैसे वह तत्काल रोग से चंगी हो गई. 48 इस पर
प्रभु येशु ने उससे कहा, “बेटी! तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया है. परमेश्वर
की शांति में लौट जाओ.” 49 जब प्रभु येशु यह कह ही रहे थे, यहूदी सभागृह
प्रधान जाइरूस के घर से किसी व्यक्ति ने आकर सूचना दी, “आपकी पुत्री की
मृत्यु हो चुकी है, अब गुरुवर को कष्ट न दीजिए.” 50 यह सुन प्रभु येशु ने
जाइरूस को संबोधित कर कहा, “डरो मत! केवल विश्वास करो और वह स्वस्थ
हो जाएगी.” 51 जब वे जाइरूस के घर पर पहुंचे, प्रभु येशु ने पेतरॉस, योहन
और याकोब तथा कन्या के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को अपने साथ
भीतर आने की अनुमति नहीं दी. 52 उस समय सभी उस बालिका के लिए रो-
रोकर शोक प्रकट कर रहे थे. “बंद करो यह रोना-चिल्लाना!” प्रभु येशु ने आज्ञा
दी, “उसकी मृत्यु नहीं हुई है—वह सिर्फ सो रही है.” 53 इस पर वे प्रभु येशु
पर हंसने लगे क्योंकि वे जानते थे कि बालिका की मृत्यु हो चुकी है. 54 प्रभु
येशु ने बालिका का हाथ पकड़कर कहा, “बेटी, उठो!” 55 उसके प्राण उसमें
लौट आए और वह तुरंत खड़ी हो गई. प्रभु येशु ने उनसे कहा कि बालिका को
खाने के लिए कुछ दिया जाए. 56 उसके माता-पिता चकित रह गए किंतु प्रभु
येशु ने उन्हें निर्देश दिया कि जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा किसी से न करें.

9 प्रभु येशु ने बारहों शिष्यों को बुलाकर उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने तथा
रोग दूर करने का सामर्थ्य और अधिकार प्रदान किया 2 तथा उन्हें परमेश्वर
के राज्य का प्रचार करने तथा रोगियों को स्वस्थ करने के लिए भेज दिया. 3
प्रभु येशु ने उन्हें निर्देश दिए, “यात्रा के लिए अपने साथ कुछ न रखना—न
छड़ी, न झोला, न रोटी, न पैसा और न ही कोई बाहरी वस्त्र. 4 तुम जिस किसी
घर में मेहमान होकर रहो, नगर से विदा होने तक उसी घर के मेहमान बने रहना.
5 यदि लोग तुम्हें स्वीकार न करें तब उस नगर से बाहर जाते हुए अपने पैरों की
धूल झाड़ देना कि यह उनके विरुद्ध गवाही हो.” 6 वे चल दिए तथा सुसमाचार
का प्रचार करते और रोगियों को स्वस्थ करते हुए सब जगह यात्रा करते रहे. 7
जो कुछ हो रहा था उसके विषय में हेरोदेस ने भी सुना और वह अत्यंत घबरा
गया क्योंकि कुछ लोग कह रहे थे कि बपतिस्मा देनेवाले योहन मरे हुओं में से
दोबारा जीवित हो गए हैं. 8 कुछ अन्य कह रहे थे कि एलियाह प्रकट हुए हैं
तथा कुछ अन्यों ने दावा किया कि प्राचीन काल के भविष्यद्वक्ताओं में से कोई
दोबारा जीवित हो गया है 9 किंतु हेरोदेस ने विरोध किया, “योहन का सिर तो
स्वयं मैंने उड़वाया था, तब यह कौन है, जिसके विषय में मैं ये सब सुन रहा हूं?”
इसलिये हेरोदेस प्रभु येशु से मिलने का प्रयास करने लगा. 10 अपनी यात्रा से
लौटकर प्रेरितों ने प्रभु येशु के सामने अपने-अपने कामों का बखान किया. तब
प्रभु येशु उन्हें लेकर चुपचाप बैथसैदा नामक नगर चले गए. 11 किंतु लोगों को
इसके विषय में मालूम हो गया और वे वहां पहुंच गए. प्रभु येशु ने सहर्ष उनका
स्वागत किया और उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय में शिक्षा दी तथा उन
रोगियों को चंगा किया, जिन्हें इसकी ज़रूरत थी. 12 जब दिन ढलने पर आया
तब बारहों प्रेरितों ने प्रभु येशु के पास आकर उन्हें सुझाव दिया, “भीड़ को विदा
कर दीजिए कि वे पास के गांवों में जाकर अपने ठहरने और भोजन की व्यवस्था
कर सकें क्योंकि यह सुनसान जगह है.” 13 इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा,
“तुम्हीं करो इनके भोजन की व्यवस्था!” उन्होंने इसके उत्तर में कहा, “हमारे
पास तो केवल पांच रोटियां तथा दो मछलियां ही हैं; हां, यदि हम जाकर इन
सबके लिए भोजन मोल ले आएं तो यह संभव है.” 14 इस भीड़ में पुरुष ही
लगभग पांच हज़ार थे. प्रभु येशु ने शिष्यों को आदेश दिया, “इन्हें लगभग
पचास-पचास के झुंड में बैठा दो.” 15 शिष्यों ने उन सबको भोजन के लिए
बैठा दिया. 16 पांचों रोटियां तथा दोनों मछलियां अपने हाथ में लेकर प्रभु येशु
ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करते हुए उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद किया तथा
उन्हें तोड़-तोड़ कर शिष्यों को देते गए कि वे लोगों में इनको बांटते जाएं. 17
सभी ने भरपेट खाया. शेष रह गए टुकड़े इकट्ठा करने पर बारह टोकरे भर गए.
18 एक समय, जब प्रभु येशु एकांत में प्रार्थना कर रहे थे तथा उनके शिष्य भी
उनके साथ थे, प्रभु येशु ने शिष्यों से प्रश्न किया, “लोग क्या कहते हैं वे मेरे
विषय में; कि मैं कौन हूं?” 19 उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ कहते हैं बपतिस्मा
देनेवाला योहन; कुछ एलियाह; और कुछ अन्य कहते हैं पुराने भविष्यद्वक्ताओं
में से एक, जो दोबारा जीवित हो गया है.” 20 “मैं कौन हूं इस विषय में तुम्हारी
धारणा क्या है?” प्रभु येशु ने प्रश्न किया. पेतरॉस ने उत्तर दिया, “परमेश्वर के
मसीह.” 21 प्रभु येशु ने उन्हें कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि वे यह किसी से न
कहें. 22 आगे प्रभु येशु ने प्रकट किया, “यह अवश्य है कि मनुष्य के पुत्र
अनेक पीड़ाएं सहे, यहूदी प्रधानों, प्रधान पुरोहितों तथा व्यवस्था के शिक्षकों के
द्वारा अस्वीकृत किया जाए; उसका वध किया जाए तथा तीसरे दिन उसे दोबारा
जीवित किया जाए.” 23 तब प्रभु येशु ने उन सबसे कहा, “यदि कोई मेरे पीछे
होना चाहे, (शिष्य होना चाहे) वह अपने अहम का त्याग कर प्रतिदिन अपना
क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले. 24 क्योंकि जो कोई अपने जीवन को सुरक्षित
रखना चाहता है, उसे खो देगा किंतु जो कोई मेरे हित में अपने प्राणों को त्यागने
के लिए तत्पर है, वह अपने प्राणों को सुरक्षित रखेगा. 25 क्या लाभ है यदि
कोई व्यक्ति सारे संसार पर अधिकार तो प्राप्त कर ले किंतु स्वयं को खो दे या
उसका जीवन ले लिया जाए? 26 क्योंकि जो कोई मुझसे और मेरी शिक्षा से
लज्जित होता है, मनुष्य का पुत्र भी, जब वह अपनी, अपने पिता की तथा
पवित्र दूतों की महिमा में आएगा, उससे लज्जित होगा. 27 “सच तो यह है कि
यहां कुछ हैं, जो मृत्यु तब तक न चखेंगे जब तक वे परमेश्वर का राज्य देख न
लें.” 28 अपनी इस बात के लगभग आठ दिन बाद प्रभु येशु पेतरॉस, योहन तथा
याकोब को साथ लेकर एक ऊंचे पर्वत शिखर पर प्रार्थना करने गए. 29 जब प्रभु
येशु प्रार्थना कर रहे थे, उनके मुखमंडल का रूप बदल गया तथा उनके वस्त्र
सफ़ेद और उजले हो गए. 30 दो व्यक्ति—मोशेह तथा एलियाह—उनके साथ

बातें करते दिखाई दिए. 31 वे भी स्वर्गीय तेज में थे. उनकी बातों का विषय था
प्रभु येशु का जाना, जो येरूशलेम नगर में शीघ्र ही होने पर था. 32 पेतरॉस तथा
उसके साथी अत्यंत नींद में थे किंतु जब वे पूरी तरह जाग गए, उन्होंने प्रभु येशु
को उनके स्वर्गीय तेज में उन दो व्यक्तियों के साथ देखा. 33 जब वे पुरुष प्रभु
येशु के पास से जाने लगे पेतरॉस प्रभु येशु से बोले, “प्रभु! हमारे लिए यहां होना
कितना अच्छा है! हम यहां तीन मंडप बनाएं: एक आपके लिए, एक मोशेह के
लिए तथा एक एलियाह के लिए.” स्वयं उन्हें अपनी इन कही हुई बातों का
मतलब नहीं पता था. 34 जब पेतरॉस यह कह ही रहे थे, एक बादल ने उन
सबको ढांप लिया. बादल से घिर जाने पर वे भयभीत हो गए. 35 बादल में से
एक आवाज सुनाई दी: “यह मेरा पुत्र है—मेरा चुना हुआ. इसके आदेश का
पालन करो.” 36 आवाज समाप्त होने पर उन्होंने देखा कि प्रभु येशु अकेले हैं.
जो कुछ उन्होंने देखा था, उन्होंने उस समय उसका वर्णन किसी से भी न किया.
वे इस विषय में मौन बने रहे. 37 अगले दिन जब वे पर्वत से नीचे आए, एक
बड़ी भीड़ वहां इकट्ठा थी. 38 भीड़ में से एक व्यक्ति ने ऊंचे शब्द में पुकारकर
कहा, “गुरुवर! आपसे मेरी विनती है कि आप मेरे पुत्र को स्वस्थ कर दें क्योंकि
वह मेरी इकलौती संतान है. 39 एक दुष्टात्मा अक्सर उस पर प्रबल हो जाता है
और वह सहसा चीखने लगता है. दुष्टात्मा उसे भूमि पर पटक देता है और मेरे
पुत्र को ऐंठन प्रारंभ हो जाती है और उसके मुख से फेन निकलने लगता है. यह
दुष्टात्मा कदाचित ही उसे छोड़कर जाता है—वह उसे नाश करने पर उतारू है.
40 मैंने आपके शिष्यों से विनती की थी कि वे उसे मेरे पुत्र में से निकाल दें किंतु
वे असफल रहे.” 41 “अरे ओ अविश्वासी और बिगड़ी हुई पीढ़ी!” प्रभु येशु ने
कहा, “मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, कब तक धीरज रखूंगा? यहां लाओ
अपने पुत्र को!” 42 जब वह बालक पास आ ही रहा था, दुष्टात्मा ने उसे भूमि
पर पटक दिया, जिससे उसके शरीर में ऐंठन प्रारंभ हो गई किंतु प्रभु येशु ने
दुष्टात्मा को डांटा, बालक को स्वस्थ किया और उसे उसके पिता को सौंप दिया.
43 परमेश्वर का प्रताप देख सभी चकित रह गए. जब सब लोग इस घटना पर
अचंभित हो रहे थे प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, 44 “जो कुछ मैं कह रहा
हूं अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनो और याद रखो: मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों
पकड़वाया जाने पर है.” 45 किंतु शिष्य इस बात का मतलब समझ न पाए. इस
बात का मतलब उनसे छुपाकर रखा गया था. यही कारण था कि वे इसका
मतलब समझ न पाए और उन्हें इसके विषय में प्रभु येशु से पूछने का साहस भी
न हुआ. 46 शिष्यों में इस विषय को लेकर विवाद छिड़ गया कि उनमें श्रेष्ठ
कौन है. 47 यह जानते हुए कि शिष्य अपने मन में क्या सोच रहे हैं प्रभु येशु ने
एक छोटे बालक को अपने पास खड़ा करके कहा, 48 “जो कोई मेरे नाम में
इस छोटे बालक को ग्रहण करता है, मुझे ग्रहण करता है, तथा जो कोई मुझे
ग्रहण करता है, उन्हें ग्रहण करता है जिन्होंने मुझे भेजा है. वह, जो तुम्हारे मध्य
छोटा है, वही है जो श्रेष्ठ है.” 49 योहन ने उन्हें सूचना दी, “प्रभु, हमने एक
व्यक्ति को आपके नाम में दुष्टात्मा निकालते हुए देखा है. हमने उसे ऐसा करने से
रोकने का प्रयत्न किया क्योंकि वह हममें से नहीं है.” 50 “मत रोको उसे!”
प्रभु येशु ने कहा, “क्योंकि जो तुम्हारा विरोधी नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है.” 51
जब प्रभु येशु के स्वर्ग में उठा लिए जाने का निर्धारित समय पास आया, विचार
दृढ़ करके प्रभु येशु ने अपने पांव येरूशलेम नगर की ओर बढ़ा दिए. 52 उन्होंने
अपने आगे संदेशवाहक भेज दिए. वे शमरिया प्रदेश के एक गांव में पहुंचे कि
प्रभु येशु के आगमन की तैयारी करें 53 किंतु वहां के निवासियों ने उन्हें स्वीकार
नहीं किया क्योंकि प्रभु येशु येरूशलेम नगर की ओर जा रहे थे. 54 जब उनके
दो शिष्यों—याकोब और योहन ने यह देखा तो उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया,
“प्रभु, यदि आप आज्ञा दें तो हम प्रार्थना करें कि आकाश से इन्हें नाश करने के
लिए आग की बारिश हो जाए.” 55 पीछे मुड़कर प्रभु येशु ने उन्हें डांटा, “तुम
नहीं समझ रहे कि तुम यह किस मतलब से कह रहे हो. मनुष्य का पुत्र इन्सानों
के विनाश के लिए नहीं परंतु उनके उद्धार के लिए आया है!” 56 और वे दूसरे
नगर की ओर बढ़ गए. 57 मार्ग में एक व्यक्ति ने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए
उनसे कहा, “आप जहां कहीं जाएंगे, मैं आपके साथ रहूंगा.” 58 येशु ने उसके
उत्तर में कहा, “लोमड़ियों के पास उनकी गुफाएं तथा आकाश के पक्षियों के
पास उनके बसेरे होते हैं किंतु मनुष्य के पुत्र के पास तो सिर रखने तक का स्थान
नहीं है!” 59 एक अन्य व्यक्ति से प्रभु येशु ने कहा, “आओ! मेरे पीछे हो लो.”
उस व्यक्ति ने कहा, “प्रभु मुझे पहले अपने पिता की अंत्येष्टि की अनुमति दे
दीजिए.” 60 प्रभु येशु ने उससे कहा, “मरे हुओं को अपने मृत गाड़ने दो किंतु
तुम जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो.” 61 एक अन्य व्यक्ति ने प्रभु येशु
से कहा, “प्रभु, मैं आपके साथ चलूंगा किंतु पहले मैं अपने परिजनों से विदा ले
लूं.” 62 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “ऐसा कोई भी व्यक्ति, जो हल चलाने
को तत्पर हो, परंतु उसकी दृष्टि पीछे की ओर लगी हुई हो, परमेश्वर के राज्य के
योग्य नहीं.”

10 इसके बाद प्रभु ने अन्य बहत्तर व्यक्तियों को चुनकर उन्हें दो-दो करके
उन नगरों और स्थानों पर अपने आगे भेज दिया, जहां वह स्वयं जाने
पर थे. 2 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “उपज तो बहुत है किंतु मज़दूर कम, इसलिये
उपज के स्वामी से विनती करो कि इस उपज के लिए मज़दूर भेज दें.” 3
जाओ! मैं तुम्हें भेज रहा हूं. तुम भेड़ियों के मध्य मेमनों के समान हो. 4 अपने
साथ न तो धन, न झोला और न ही जूतियां ले जाना. मार्ग में किसी का कुशल
मंगल पूछने में भी समय खर्च न करना. 5 “जिस किसी घर में प्रवेश करो,
तुम्हारे सबसे पहले शब्द हों, ‘इस घर में शांति बनी रहे.’ 6 यदि परिवार-प्रधान
शांति प्रिय व्यक्ति है, तुम्हारी शांति उस पर बनी रहेगी. यदि वह ऐसा नहीं
है तो तुम्हारी शांति तुम्हारे ही पास लौट आएगी. 7 उसी घर के मेहमान बने
रहना. भोजन और पीने के लिए जो कुछ तुम्हें परोसा जाए, उसे स्वीकार करना
क्योंकि सेवक अपने वेतन का अधिकारी है. एक घर से निकलकर दूसरे घर में
मेहमान न बनना. 8 “जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहां लोग तुम्हें
सहर्ष स्वीकार करें, तो जो कुछ तुम्हें परोसा जाए, उसे खाओ. 9 वहां जो बीमार
हैं, उन्हें चंगा करना और उन्हें सूचित करना, ‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट
आ गया है.’ 10 किंतु यदि तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहां नगरवासियों
द्वारा स्वीकार न किए जाओ तो उस नगर की गलियों में जाकर यह घोषणा करो,
11 ‘तुम्हारे नगर की धूल तक, जो हमारे पांवों में लगी है, उसे हम तुम्हारे सामने
एक चेतावनी के लिए झाड़ रहे हैं; परंतु यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य
निकट आ गया है.’ 12 सच मानो, न्याय के दिन पर सोदोम नगर के लिए तय
किया गया दंड उस नगर के लिए तय किए दंड की तुलना में सहने योग्य होगा.
13 “धिक्कार है तुझ पर कोराज़ीन! धिक्कार है तुझ पर बैथसैदा! ये ही अद्भुत
काम, जो तुझमें किए गए हैं यदि सोर और सीदोन नगरों में किए जाते तो वे
विलाप-वस्त्र पहन, राख में बैठकर, कब के पश्चाताप कर चुके होते! पश्चाताप
कर चुके होते. 14 किंतु तुम दोनों नगरों की तुलना में सोर और सीदोन नगरों
का दंड सहने योग्य होगा. 15 और कफ़रनहूम! क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किए
जाने की आशा कर रहा है? अरे! तुझे तो पाताल में उतार दिया जाएगा. (Hadēs
g86) 16 “वह, जो तुम्हारी शिक्षा को सुनता है, मेरी शिक्षा को सुनता है; वह,
जो तुम्हें अस्वीकार करता है, मुझे अस्वीकार करता है किंतु वह, जो मुझे
अस्वीकार करता है, उन्हें अस्वीकार करता है, जिन्होंने मुझे भेजा है.” 17 वे
बहत्तर बहुत उत्साह से भरकर लौटे और कहने लगे, “प्रभु! आपके नाम में तो
दुष्टात्मा भी हमारे सामने समर्पण कर देते हैं!” 18 इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा,
“मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरते देख रहा था. 19 मैंने तुम्हें सांपों
और बिच्छुओं को रौंदने तथा शत्रु के सभी सामर्थ्य का नाश करने का अधिकार

दिया है इसलिये किसी भी रीति से तुम्हारी हानि न होगी. 20 फिर भी, तुम्हारे
लिए आनंद का विषय यह न हो कि दुष्टात्मा तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करते हैं
परंतु यह कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे जा चुके हैं.” 21 प्रभु येशु पवित्र आत्मा
के आनंद से भरकर कहने लगे, “पिता! स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं आपकी
स्तुति करता हूं कि आपने ये सभी सच बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छुपा रखे और
नन्हे बालकों पर प्रकट कर दिए क्योंकि पिता, आपकी दृष्टि में यही अच्छा था.
22 “मेरे पिता द्वारा सब कुछ मुझे सौंप दिया गया है. पिता के अलावा कोई नहीं
जानता कि पुत्र कौन है, और कोई नहीं जानता कि पिता कौन हैं, सिवाय पुत्र के
तथा वे, जिन पर वह प्रकट करना चाहें.” 23 तब प्रभु येशु ने अपने शिष्यों की
ओर उन्मुख हो उनसे व्यक्तिगत रूप से कहा, “धन्य हैं वे आंख, जो वह देख
रही हैं, जो तुम देख रहे हो 24 क्योंकि सच मानो, अनेक भविष्यवक्ता और
राजा वह देखने की कामना करते रहे, जो तुम देख रहे हो किंतु वे देख न सके
तथा वे वह सुनने की कामना करते रहे, जो तुम सुन रहे हो किंतु सुन न सके.”
25 एक अवसर पर एक वकील ने प्रभु येशु को परखने के उद्देश्य से उनके सामने
यह प्रश्न रखा: “गुरुवर, अनंत काल के जीवन को पाने के लिए मैं क्या करूं?”
(aiōnios g166) 26 प्रभु येशु ने उससे प्रश्न किया, “व्यवस्था में क्या लिखा है,
इसके विषय में तुम्हारा विश्लेषण क्या है?” 27 उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “‘प्रभु,
अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, अपने सारे प्राण, अपनी सारी शक्ति तथा
अपनी सारी समझ से प्रेम करो तथा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम.’” 28
प्रभु येशु ने उससे कहा, “तुम्हारा उत्तर बिलकुल सही है. यही करने से तुम
जीवित रहोगे.” 29 स्वयं को संगत प्रमाणित करने के उद्देश्य से उसने प्रभु येशु से
प्रश्न किया, “तो यह बताइए कौन है मेरा पड़ोसी?” 30 प्रभु येशु ने उत्तर दिया.
“येरूशलेम नगर से एक व्यक्ति येरीख़ो नगर जा रहा था कि डाकुओं ने उसे घेर
लिया, उसके वस्त्र छीन लिए, उसकी पिटाई की और उसे अधमरी हालत में
छोड़कर भाग गए. 31 संयोग से एक पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था. जब
उसने उस व्यक्ति को देखा, वह मार्ग के दूसरी ओर से आगे बढ़ गया. 32 इसी
प्रकार एक लेवी भी उसी स्थान पर आया, उसकी दृष्टि उस पर पड़ी तो वह भी
दूसरी ओर से होता हुआ चला गया. 33 एक शमरियावासी भी उसी मार्ग से
यात्रा करते हुए उस जगह पर आ पहुंचा. जब उसकी दृष्टि उस घायल व्यक्ति पर
पड़ी, वह दया से भर गया. 34 वह उसके पास गया और उसके घावों पर तेल
और दाखरस लगाकर पट्टी बांधी. तब वह घायल व्यक्ति को अपने वाहक पशु
पर बैठाकर एक यात्री निवास में ले गया तथा उसकी सेवा टहल की. 35 अगले
दिन उसने दो दीनार यात्री निवास के स्वामी को देते हुए कहा, ‘इस व्यक्ति की
सेवा टहल कीजिए. इसके अतिरिक्त जो भी लागत होगा वह मैं लौटने पर चुका
दूंगा.’ 36 “यह बताओ तुम्हारे विचार से इन तीनों व्यक्तियों में से कौन उन
डाकुओं द्वारा घायल व्यक्ति का पड़ोसी है?” 37 वकील ने उत्तर दिया, “वही,
जिसने उसके प्रति करुणाभाव का परिचय दिया.” प्रभु येशु ने उससे कहा,
“जाओ, तुम्हारा स्वभाव भी ऐसा ही हो.” 38 प्रभु येशु और उनके शिष्य यात्रा
करते हुए एक गांव में पहुंचे, जहां मार्था नामक एक स्त्री ने उन्हें अपने घर में
आमंत्रित किया. 39 उसकी एक बहन थी, जिसका नाम मरियम था. वह प्रभु के
चरणों में बैठकर उनके प्रवचन सुनने लगी 40 किंतु मार्था विभिन्न तैयारियों में
उलझी रही. वह प्रभु येशु के पास आई और उनसे प्रश्न किया, “प्रभु, क्या
आपको इसका लेश मात्र भी ध्यान नहीं कि मेरी बहन ने अतिथि-सत्कार का
सारा बोझ मुझ अकेली पर ही छोड़ दिया है? आप उससे कहें कि वह मेरी
सहायता करे.” 41 “मार्था, मार्था,” प्रभु ने कहा, “तुम अनेक विषयों की चिंता
करती और घबरा जाती हो 42 किंतु ज़रूरत तो कुछ ही की है—वास्तव में एक
ही की. मरियम ने उसी उत्तम भाग को चुना है, जो उससे कभी अलग न किया
जाएगा.”

11 एक दिन प्रभु येशु एक स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे. जब उन्होंने प्रार्थना
समाप्त की उनके शिष्यों में से एक ने उनसे विनती की, “प्रभु, हमको
प्रार्थना करना सिखा दीजिए—ठीक जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया
है.” 2 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जब भी तुम प्रार्थना करो, इस प्रकार किया
करो: “‘हमारे स्वर्गीय पिता! आपका नाम सभी जगह सम्मानित हो. आपका
राज्य हर जगह स्थापित हो. 3 हमारा रोज़ का भोजन हमें हर दिन दिया कीजिए.
4 हमारे पापों को क्षमा कीजिए. हम भी उनके पाप क्षमा करते हैं, जो हमारे
विरुद्ध पाप करते हैं. हमें परीक्षा में फंसने से बचाइए.’” 5 प्रभु येशु ने उनसे आगे
कहा, “तुममें से किसी का एक मित्र आधी रात में आकर यह विनती करे, ‘मित्र!
मुझे तीन रोटियां दे दो; 6 क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा करते हुए घर आया है
और उसके भोजन के लिए मेरे पास कुछ नहीं है.’ 7 तब वह अंदर ही से उत्तर
दे, ‘मुझे मत सताओ! द्वार बंद हो चुका है और मेरे बालक मेरे साथ सो रहे हैं.
अब मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता.’ 8 मैं जो कह रहा हूं उसे समझो:
हालांकि वह व्यक्ति मित्र होने पर भी भले ही उसे देना न चाहे, फिर भी उस मित्र
के बहुत विनती करने पर उसकी ज़रूरत के अनुसार उसे अवश्य देगा. 9 “यही
कारण है कि मैंने तुमसे कहा है: विनती करो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो,
तो तुम पाओगे; द्वार खटखटाओ, तो वह तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा 10
क्योंकि हर एक, जो विनती करता है, उसकी विनती पूरी की जाती है, जो
खोजता है, वह प्राप्त करता है और वह, जो द्वार खटखटाता है, उसके लिए द्वार
खोल दिया जाता है. 11 “तुममें कौन पिता ऐसा है, जो अपने पुत्र के मछली
मांगने पर उसे सांप दे 12 या अंडे की विनती पर बिच्छू? 13 जब तुम दुष्ट होने
पर भी अपनी संतान को उत्तम वस्तुएं प्रदान करना जानते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय
पिता उन्हें, जो उनसे विनती करते हैं, कहीं अधिक बढ़कर पवित्र आत्मा प्रदान
न करेंगे, जो उत्तम है?” 14 प्रभु येशु एक व्यक्ति में से, जो गूंगा था, एक
दुष्टात्मा को निकाल रहे थे. दुष्टात्मा के निकलते ही वह, जो गूंगा था, बोलने
लगा. यह देख भीड़ अचंभित रह गई. 15 किंतु उनमें से कुछ ने कहा, “वह तो
दुष्टात्माओं के प्रधान बेलज़बूल की सहायता से दुष्टात्मा निकालता है.” 16 कुछ
अन्य ने प्रभु येशु को परखने के उद्देश्य से उनसे अद्भुत चिह्न की मांग की. 17
उनके मन की बातें जानकर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “कोई भी राज्य, जिसमें फूट
पड़ चुकी है, नाश हो जाता है और जिस परिवार में फूट पड़ चुकी हो, उसका
नाश हो जाता है. 18 यदि शैतान अपने ही विरुद्ध काम करने लगे तो उसका राज्य
स्थिर कैसे रह सकता है? मैं ये सब इसलिये कह रहा हूं कि तुम यह दावा कर रहे
हो कि मैं दुष्टात्माओं को बेलज़बूल की सहायता से निकाला करता हूं. 19 यदि मैं
दुष्टात्माओं को बेलज़बूल के सहयोग से बाहर निकाला करता हूं तो फिर तुम्हारे
अनुयायी उनको कैसे बाहर करती है? परिणामस्वरूप वे ही तुम पर आरोप
लगाएंगे. 20 किंतु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा निकालता
हूं, तब परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य आ चुका है. 21 “जब कोई बलवान
व्यक्ति शस्त्रों से पूरी तरह से सुसज्जित होकर अपने घर की चौकसी करता है, तो
उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है 22 किंतु जब उससे अधिक बलवान कोई व्यक्ति
उस पर आक्रमण कर उसे अपने वश में कर लेता है और वे सभी शस्त्र, जिन पर
वह भरोसा करता था, छीन लेता है, तो वह उसकी संपत्ति को लूटकर बांट देता
है. 23 “वह, जो मेरे पक्ष में नहीं है मेरे विरुद्ध है और वह, जो मेरे साथ इकट्ठा
नहीं करता, वह बिखेरता है. 24 “जब दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से बाहर आ
जाती है, वह निवास स्थान की खोज में सूखे स्थानों में फिरती है, किंतु उसे
निवास स्थान प्राप्त नहीं हो पाता. तब वह सोचती है कि मैं जिस निवास स्थान
को छोड़कर आयी थी, वहीं लौट जाऊं. 25 वह वहां लौटकर उसे खाली,
साफ़ और सुथरा पाती है. 26 तब वह जाकर अपने से अधिक बुरी सात आत्मा
और ले आती है और वे सब उस व्यक्ति में प्रवेश कर उसमें अपना घर बना लेती

हैं. तब उस व्यक्ति की स्थिति पहले से खराब हो जाती है.” 27 जब प्रभु येशु
यह शिक्षा दे रहे थे, भीड़ में से एक नारी पुकार उठी, “धन्य है वह माता, जिसने
आपको जन्म दिया और आपका पालन पोषण किया.” 28 किंतु प्रभु येशु ने
कहा, “परंतु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुनकर उसका पालन करते
हैं.” 29 जब और अधिक लोग इकट्ठा होने लगे, प्रभु येशु ने कहा, “यह पीढ़ी
अत्यंत बुरी पीढ़ी है. यह चमत्कार चिह्नों की मांग करती है किंतु भविष्यवक्ता
योनाह के चिह्न के अतिरिक्त इसे और कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा. 30 जिस
प्रकार परमेश्वर की ओर से भविष्यवक्ता योनाह नीनवे नगरवासियों के लिए एक
चिह्न थे, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र इस पीढ़ी के लिए एक चिह्न है. 31 न्याय-
दिवस पर दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी होगी और इसे धिक्कारेगी
क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से यात्रा कर राजा शलोमोन के ज्ञान को सुनने आई
थी; किंतु यहां तो वह है, जो राजा शलोमोन से भी बढ़कर है. 32 न्याय-दिवस
पर नीनवे नगर की जनता इस पीढ़ी के साथ उपस्थित होगी और इसे धिक्कारेगी
क्योंकि उसने तो भविष्यवक्ता योनाह के प्रचार के परिणामस्वरूप पश्चाताप कर
लिया, किंतु यहां तो वह है, जो भविष्यवक्ता योनाह से भी बढ़कर है. 33 “दीप
जलाकर कोई भी उसे न तो ऐसे स्थान पर रखता है, जहां वह छुप जाए और न
ही किसी बर्तन के नीचे; परंतु वह उसे उसके नियत स्थान पर रखता है, कि जो
प्रवेश करते हैं, देख सकें. 34 तुम्हारे शरीर का दीपक तुम्हारी आंख हैं. यदि
तुम्हारी आंख निरोगी हैं, तुम्हारा सारा शरीर उजियाला होगा किंतु यदि तुम्हारी
आंखें रोगी हैं, तो तुम्हारा शरीर भी अंधियारा होगा. 35 ध्यान रहे कि तुम्हारे
भीतर छिपा हुआ उजाला अंधकार न हो. 36 इसलिये यदि तुम्हारा सारा शरीर
उजियाला है, उसमें ज़रा सा भी अंधकार नहीं है, तब वह सब जगह उजाला
देगा—जैसे एक दीप अपने उजाले से तुम्हें उजियाला देता है.” 37 जब प्रभु येशु
अपना प्रवचन समाप्त कर चुके, एक फ़रीसी ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित
किया. प्रभु येशु उसके साथ गए तथा भोजन के लिए बैठ गए. 38 उस फ़रीसी
को यह देख आश्चर्य हुआ कि भोजन के पूर्व प्रभु येशु ने हाथ नहीं धोए. 39 प्रभु
येशु ने इस पर उससे कहा, “तुम फ़रीसी प्याले और थाली को बाहर से तो साफ़
करते हो किंतु तुम्हारे हृदय लोभ और दुष्टता से भरे हुए हैं. 40 निर्बुद्धियों! जिसने
बाहरी भाग बनाया है, क्या उसी ने अंदरूनी भाग नहीं बनाया? 41 तुममें जो
अंदर बसा हुआ है, उसे दान में दे दो, तब तुम और तुम्हारे संस्कार शुद्ध हो पाएंगे.
42 “धिक्कार है तुम पर, फ़रीसियो! तुम परमेश्वर को अपने पुदीना, ब्राम्ही तथा
अन्य हर एक साग-पात का दसवां अंश तो देते हो किंतु मनुष्यों के प्रति न्याय
और परमेश्वर के प्रति प्रेम की उपेक्षा करते हो. ये ही वे चीज़ें हैं, जिनको पूरा
करना आवश्यक है—अन्यों की उपेक्षा किए बिना. 43 “धिक्कार है तुम पर,
फ़रीसियो! तुम्हें सभागृहों में प्रधान आसन तथा नगर चौक में लोगों द्वारा सम्मान
भरा नमस्कार पसंद है. 44 “धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी हुई
कब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते फिरते हैं.” 45 एक वकील
ने प्रभु येशु से कहा, “गुरुवर! ऐसा कहकर आप हमारा भी अपमान कर रहे हैं.”
46 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “धिक्कार है तुम पर भी, वकीलों! क्योंकि
तुम लोगों पर नियमों का ऐसा बोझ लाद देते हो, जिसको उठाना कठिन होता
है, जबकि तुम स्वयं उनकी सहायता के लिए अपनी उंगली से छूते तक नहीं.
47 “धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं के लिए स्मारक बनाते
हो, जबकि तुम्हारे अपने पूर्वजों ने ही उन भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी. 48
इस प्रकार तुम अपने पूर्वजों के कुकर्मों के गवाह हो और इसका पूरी तरह
समर्थन करते हो—क्योंकि ये ही थे, जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी
और अब तुम उन्हीं के स्मारक बनाते हो. 49 इसलिये परमेश्वर की बुद्धि का भी
यह कहना है: ‘मैं उनके पास भविष्यवक्ता और प्रेरित भेजूंगा. वे उनमें से कुछ
की हत्या कर देंगे तथा कुछ को उत्पीड़ित करेंगे 50 कि सृष्टि की स्थापना से
लेकर आज तक सारे भविष्यद्वक्ताओं के लहू बहने का हिसाब इसी पीढ़ी से
लिया जाए; 51 हाबिल से लेकर ज़करयाह तक, जिनकी हत्या वेदी तथा मंदिर
के मध्य की गई थी. हां, मेरा विश्वास करो: इसका हिसाब इसी पीढ़ी से लिया
जाएगा.’ 52 “धिक्कार है तुम पर, वकीलों! तुमने ज्ञान की कुंजी तो ले ली हैं,
किंतु तुमने ही इसमें प्रवेश नहीं किया, और जो इसमें प्रवेश कर रहे थे, उनका
भी मार्ग बंद कर दिया है.” 53 प्रभु येशु के वहां से निकलने पर शास्त्री और
फ़रीसी, जो उनके कट्टर विरोधी हो गए थे, उनसे अनेक विषयों पर कठिन प्रश्न
करने लगे. 54 वे इस घात में थे कि वे प्रभु येशु को उनके ही किसी कथन द्वारा
फंसा लें.

12 इसी समय वहां हज़ारों लोगों का इतना विशाल समूह इकट्ठा हो गया
कि वे एक दूसरे पर गिर रहे थे. प्रभु येशु ने सबसे पहले अपने शिष्यों को
संबोधित करते हुए कहा, “फ़रीसियों के खमीर अर्थात् ढोंग से सावधान रहो. 2
ऐसा कुछ भी ढका नहीं, जिसे खोला न जाएगा या ऐसा कोई रहस्य नहीं, जिसे
प्रकट न किया जाएगा. 3 वे शब्द, जो तुमने अंधकार में कहे हैं, प्रकाश में सुने
जाएंगे, जो कुछ तुमने भीतरी कमरे में कानों में कहा है, वह छत से प्रचार किया
जाएगा. 4 “मेरे मित्रों, मेरी सुनो: उनसे भयभीत न हो, जो शरीर का तो नाश
कर सकते हैं किंतु इसके बाद इससे अधिक और कुछ नहीं 5 पर मैं तुम्हें
समझाता हूं कि तुम्हारा किससे डरना सही है: उन्हीं से, जिन्हें शरीर का नाश
करने के बाद नर्क में झोंकने का अधिकार है. सच मानो, तुम्हारा उन्हीं से डरना
उचित है. (Geenna g1067) 6 क्या दो अस्सारिओन में पांच गौरैयां नहीं बेची
जातीं? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलते. 7 तुम्हारे सिर का तो
एक-एक बाल गिना हुआ है. इसलिये भयभीत न हो. तुम्हारा दाम अनेक गौरैया
से कहीं अधिक है. 8 “मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई मुझे मनुष्यों के सामने
स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार
करेगा, 9 किंतु जो मुझे मनुष्यों के सामने अस्वीकार करता है, उसका परमेश्वर
के स्वर्गदूतों के सामने इनकार किया जाएगा. 10 यदि कोई मनुष्य के पुत्र के
विरुद्ध एक भी शब्द कहता है, उसे तो क्षमा कर दिया जाएगा किंतु पवित्र आत्मा
की निंदा बिलकुल क्षमा न की जाएगी. 11 “जब तुम उनके द्वारा सभागृहों,
शासकों और अधिकारियों के सामने प्रस्तुत किए जाओ तो इस विषय में कोई
चिंता न करना कि अपने बचाव में तुम्हें क्या उत्तर देना है या क्या कहना है 12
क्योंकि पवित्र आत्मा ही तुम पर प्रकट करेंगे कि उस समय तुम्हारा क्या कहना
सही होगा.” 13 उपस्थित भीड़ में से किसी ने प्रभु येशु से कहा, “गुरुवर, मेरे
भाई से कहिए कि वह मेरे साथ पिता की संपत्ति का बंटवारा कर ले.” 14 प्रभु
येशु ने इसके उत्तर में कहा, “हे मानव! किसने मुझे तुम्हारे लिए न्यायकर्ता या
मध्यस्थ ठहराया है?” 15 तब प्रभु येशु ने भीड़ को देखते हुए उन्हें चेतावनी दी,
“स्वयं को हर एक प्रकार के लालच से बचाए रखो. मनुष्य का जीवन उसकी
संपत्ति की बहुतायत होने पर भला नहीं है.” 16 तब प्रभु येशु ने उनके सामने
यह दृष्टांत प्रस्तुत किया: “किसी व्यक्ति की भूमि से अच्छी फसल उत्पन्न हुई.
17 उसने मन में विचार किया, ‘अब मैं क्या करूं? फसल रखने के लिए तो मेरे
पास स्थान ही नहीं है.’ 18 “फिर उसने विचार किया, ‘मैं ऐसा करता हूं: मैं इन
बखारों को तोड़कर बड़े भंडार निर्मित करूंगा. तब मेरी सारी उपज तथा वस्तुओं
का रख रखाव हो सकेगा. 19 तब मैं स्वयं से कहूंगा, “अनेक वर्षों के लिए
अब तेरे लिए उत्तम वस्तुएं इकट्ठा हैं. विश्राम कर! खा, पी और आनंद कर!”’
20 “किंतु परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अरे मूर्ख! आज ही रात तेरे प्राण तुझसे ले
लिए जाएंगे; तब ये सब, जो तूने अपने लिए इकट्ठा कर रखा है, किसका होगा?’
21 “यही है उस व्यक्ति की स्थिति, जो मात्र अपने लिए इस प्रकार इकट्ठा करता
है किंतु जो परमेश्वर की दृष्टि में धनवान नहीं है.” 22 इसके बाद अपने शिष्यों
से उन्मुख हो प्रभु येशु ने कहा, “यही कारण है कि मैंने तुमसे कहा है, अपने

जीवन के विषय में यह चिंता न करो कि हम क्या खाएंगे या अपने शरीर के
विषय में कि हम क्या पहनेंगे. 23 जीवन भोजन से तथा शरीर वस्त्रों से बढ़कर
है. 24 कौवों पर विचार करो: वे न तो बोते हैं और न काटते हैं. उनके न तो
खलिहान होते हैं और न भंडार; फिर भी परमेश्वर उन्हें भोजन प्रदान करते हैं.
तुम्हारा दाम पक्षियों से कहीं अधिक बढ़कर है! 25 तुममें से कौन है, जो चिंता
के द्वारा अपनी आयु में एक पल भी बढ़ा पाया है? 26 जब तुम यह छोटा सा
काम ही नहीं कर सकते तो भला अन्य विषयों के लिए चिंतित क्यों रहते हो?
27 "जंगली फूलों को देखो! वे न तो कताई करते हैं और न बुनाई; परंतु मैं
कहता हूं कि राजा शलोमोन तक अपने सारे ऐश्वर्य में इनमें से एक के तुल्य भी
सजे न थे. 28 यदि परमेश्वर घास का श्रृंगार इस सीमा तक करते हैं, जिसका
जीवन थोड़े समय का है और जो कल आग में झोंक दिया जाएगा, क्या वह
तुम्हें और कितना अधिक सुशोभित न करेंगे? कैसा कमजोर है तुम्हारा विश्वास!
29 इस उधेड़-बुन में लगे न रहो कि तुम क्या खाओगे या क्या पियोगे और न ही
इसकी कोई चिंता करो. 30 विश्व के सभी राष्ट्र इसी कार्य में लगे हैं. तुम्हारे पिता
को पहले ही यह मालूम है कि तुम्हें इन वस्तुओं की ज़रूरत है. 31 इनकी जगह
परमेश्वर के राज्य की खोज करो और ये सभी वस्तुएं तुम्हारी हो जाएंगी. 32
"तुम, जो संख्या में कम हो, भयभीत न होना क्योंकि तुम्हारे पिता तुम्हें राज्य
देकर संतुष्ट हुए हैं. 33 अपनी संपत्ति बेचकर प्राप्त धनराशि निर्धनों में बांट दो.
अपने लिए ऐसा धन इकट्ठा करो, जो नष्ट नहीं किया जा सकता है—स्वर्ग
में इकट्ठा किया धन; जहां न तो किसी चोर की पहुंच है और न ही विनाश
करनेवाले कीड़ों की. 34 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी
होगा." 35 "हमेशा तैयार रहो तथा अपने दीप जलाए रखो, 36 उन सेवकों के
समान, जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा में हैं कि वह जब विवाहोत्सव से लौटकर
आए और द्वार खटखटाए तो वे तुरंत उसके लिए द्वार खोल दें. 37 धन्य हैं वे
दास, जिन्हें स्वामी लौटने पर जागते पाएगा. सच तो यह है कि स्वामी ही सेवक
के वस्त्र धारण कर उन्हें भोजन के लिए बैठाएगा तथा स्वयं उन्हें भोजन परोसेगा.
38 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी रात के दूसरे या तीसरे प्रहर में भी आकर जागते
पाए. 39 किंतु तुम यह जान लो: यदि घर के स्वामी को यह मालूम हो कि चोर
किस समय आएगा तो वह उसे अपने घर में घुसने ही न दे. 40 तुम्हारा भी इसी
प्रकार सावधान रहना ज़रूरी है क्योंकि मनुष्य के पुत्र का आगमन ऐसे समय पर
होगा जिसकी तुम कल्पना तक नहीं कर सकते." 41 पेतरॉस ने उनसे प्रश्न
किया, "प्रभु, आपका यह दृष्टांत मात्र हमारे लिए ही है या भीड़ के लिए भी?"
42 प्रभु ने उत्तर दिया, "वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन होगा जिसे
स्वामी सभी सेवकों का प्रधान ठहराए कि वह अन्य सेवकों को निर्धारित समय
पर भोज्य सामग्री दे दे. 43 धन्य है वह सेवक, जिसे घर का स्वामी लौटने पर
यही करते हुए पाए. 44 सच्चाई तो यह है कि घर का स्वामी उस सेवक के
हाथों में अपनी सारी संपत्ति की ज़िम्मेदारी सौंप देगा. 45 किंतु यदि वह दास
अपने मन में कहने लगे, 'अभी तो मेरे स्वामी के लौटने में बहुत समय है' और
वह अन्य दास-दासियों की पिटाई करने लगे और खा-पीकर नशे में चूर हो
जाए. 46 उसका स्वामी एक ऐसे दिन लौटेगा, जिसकी उसने कल्पना ही न की
थी और एक ऐसे क्षण में, जिसके विषय में उसे मालूम ही न था तो स्वामी उसके
टुकड़े-टुकड़े कर उसकी गिनती अविश्वासियों में कर देगा. 47 "वह दास,
जिसे अपने स्वामी की इच्छा का पूरा पता था किंतु वह न तो इसके लिए तैयार
था और न उसने उसकी इच्छा के अनुसार व्यवहार ही किया, कठोर दंड पाएगा.
48 किंतु वह, जिसे इसका पता ही न था और उसने दंड पाने योग्य अपराध किए,
कम दंड पाएगा. हर एक से, जिसे बहुत ज्यादा दिया गया है उससे बहुत ज्यादा
मात्रा में ही लिया जाएगा तथा जिसे अधिक मात्रा में सौंपा गया है, उससे अधिक
का ही हिसाब लिया जाएगा. 49 "मैं पृथ्वी पर आग बरसाने के लक्ष्य से आया
हूं और कैसा उत्तम होता यदि यह इसी समय हो जाता! 50 किंतु मेरे लिए
बपतिस्मा की प्रक्रिया निर्धारित है और जब तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती,
कैसी दुःखदायी है इसकी पीड़ा! 51 क्या विचार है तुम्हारा—क्या मैं पृथ्वी पर
मेल-मिलाप के लिए आया हूं? नहीं! मेल-मिलाप नहीं, परंतु फूट के लिए. 52
अब से पांच सदस्यों के परिवार में फूट पड़ जाएगी तीन के विरुद्ध दो और दो के
विरुद्ध तीन. 53 वे सब एक दूसरे के विरुद्ध होंगे—पिता पुत्र के और पुत्र पिता के;
माता पुत्री के और पुत्री माता के; सास पुत्र-वधू के और पुत्र-वधू सास के." 54
भीड़ को संबोधित करते हुए प्रभु येशु ने कहा, "जब तुम पश्चिम दिशा में बादल
उठते देखते हो तो तुम तुरंत कहते हो, 'बारिश होगी' और बारिश होती है. 55
जब पवन दक्षिण दिशा से बहता है तुम कहते हो, 'अब गर्मी पड़ेगी,' और ऐसा
ही हुआ करता है. 56 पाखंडियों! तुम धरती और आकाश की ओर देखकर तो
भेद कर लेते हो किंतु इस युग का भेद क्यों नहीं कर सकते? 57 "तुम स्वयं
अपने लिए सही गलत का फैसला क्यों नहीं कर लेते? 58 जब तुम अपने शत्रु
के साथ न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत होने जा रहे हो, पूरा प्रयास करो कि मार्ग में
ही तुम दोनों में मेल हो जाए अन्यथा वह तो तुम्हें घसीटकर न्यायाधीश के
सामने प्रस्तुत कर देगा, न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी के हाथ सौंप देगा और
अधिकारी तुम्हें जेल में डाल देगा. 59 मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम एक-
एक पैसा लौटा न दो बंदीगृह से छूट न पाओगे."

13 उसी समय वहां उपस्थित कुछ लोगों ने प्रभु येशु को उन गलीलवासियों
की याद दिलायी, जिनका लहू पिलातॉस ने उन्हीं के बलिदानों में मिला
दिया था. 2 प्रभु येशु ने उनसे पूछा, "क्या तुम्हारे विचार से ये गलीली अन्य
गलीलवासियों की तुलना में अधिक पापी थे कि उनकी यह स्थिति हुई? 3
नहीं! मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम मन न फिराओ तो तुम सब भी इसी प्रकार
नाश हो जाओगे. 4 या वे अठारह व्यक्ति, जिन पर सीलोअम का मीनार गिरा,
जिससे उनकी मृत्यु हो गई, येरूशलेम वासियों की अपेक्षा अधिक दोषी थे? 5
नहीं! मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम मन न फिराओ तो तुम सब भी इसी प्रकार
नाश हो जाओगे." 6 तब प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा समझाना प्रारंभ
किया, "एक व्यक्ति ने अपने बगीचे में एक अंजीर का पेड़ लगाया. वह फल
की आशा में उसके पास आया. 7 उसने माली से कहा, 'देखो, मैं तीन वर्ष से
इस पेड़ में फल की आशा लिए आ रहा हूं और मुझे अब तक कोई फल प्राप्त
नहीं हुआ. काट डालो इसे! भला क्यों इसके कारण भूमि व्यर्थ ही घिरी रहे?' 8
"किंतु माली ने स्वामी से कहा, 'स्वामी, इसे इस वर्ष और रहने दीजिए. मैं
इसके आस-पास की भूमि खोदकर इसमें खाद डाल देता हूं. 9 यदि अगले वर्ष
यह फल लाए तो अच्छा है, नहीं तो इसे कटवा दीजिएगा.'" 10 शब्बाथ पर
प्रभु येशु यहूदी सभागृह में शिक्षा दे रहे थे. 11 वहां एक ऐसी स्त्री थी, जिसे एक
दुष्टात्मा ने अठारह वर्ष से अपंग किया हुआ था. जिसके कारण उसका शरीर
झुककर दोहरा हो गया था और उसके लिए सीधा खड़ा होना असंभव हो गया
था. 12 जब प्रभु येशु की दृष्टि उस पर पड़ी, उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और
उससे कहा, "हे नारी, तुम अपने इस रोग से मुक्त हो गई हो," 13 यह कहते हुए
प्रभु येशु ने उस पर अपने हाथ रखे और उसी क्षण वह सीधी खड़ी हो गई और
परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी. 14 किंतु यहूदी सभागृह प्रधान इस पर अत्यंत
रुष्ट हो गया क्योंकि प्रभु येशु ने उसे शब्बाथ पर स्वस्थ किया था. सभागृह प्रधान
ने वहां इकट्ठा लोगों से कहा, "काम करने के लिए छः दिन निर्धारित किए गए
हैं इसलिये इन छः दिनों में आकर अपना स्वास्थ्य प्राप्त करो, न कि शब्बाथ
पर." 15 किंतु प्रभु ने इसके उत्तर में कहा, "पाखंडियों! क्या शब्बाथ पर तुममें
से हर एक अपने बैल या गधे को पशुशाला से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले
जाता? 16 और क्या इस स्त्री को, जो अब्राहाम ही की संतान है, जिसे शैतान ने
अठारह वर्ष से बांध रखा था, शब्बाथ पर इस बंधन से मुक्त किया जाना उचित

न था?” 17 प्रभु येशु के ये शब्द सुन उनके सभी विरोधी लज्जित हो गए. सारी
भीड़ प्रभु येशु द्वारा किए जा रहे इन महान कामों को देख आनंदित थी. 18
इसलिये प्रभु येशु ने उनसे कहना प्रारंभ किया, “परमेश्वर का राज्य कैसा होगा?
मैं इसकी तुलना किससे करूं? 19 परमेश्वर का राज्य राई के बीज के समान है,
जिसे किसी व्यक्ति ने अपनी वाटिका में बोया, और उसने विकसित होते हुए पेड़
का रूप ले लिया—यहां तक कि आकाश के पक्षी भी आकर उसकी शाखाओं
पर बसेरा करने लगे.” 20 प्रभु येशु ने दोबारा कहा, “परमेश्वर के राज्य की
तुलना मैं किससे करूं? 21 परमेश्वर का राज्य खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री
ने तीन माप आटे में मिलाया और सारा आटा ही खमीर युक्त हो गया.” 22
नगर-नगर और गांव-गांव होते हुए और मार्ग में शिक्षा देते हुए प्रभु येशु येरूशलेम
नगर की ओर बढ़ रहे थे. 23 किसी ने उनसे प्रश्न किया, “प्रभु, क्या मात्र कुछ
ही लोग उद्धार प्राप्त कर सकेंगे?” प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, 24 “तुम्हारी
कोशिश यह हो कि तुम संकरे द्वार से प्रवेश करो क्योंकि मैं तुम्हें बता रहा हूं
कि अनेक इसमें प्रवेश तो चाहेंगे किंतु प्रवेश करने में असमर्थ रहेंगे. 25 एक
बार जब घर का स्वामी द्वार बंद कर दे तो तुम बाहर खड़े, द्वार खटखटाते हुए
विनती करते रह जाओगे: ‘महोदय, कृपया हमारे लिए द्वार खोल दें.’ “किंतु वह
उत्तर देगा, ‘तुम कौन हो और कहां से आए हो मैं नहीं जानता.’ 26 “तब
तुम कहोगे, ‘हम आपके साथ खाया पिया करते थे और आप हमारी गलियों
में शिक्षा दिया करते थे.’ 27 “परंतु उसका उत्तर होगा, ‘मैं तुमसे कह चुका
हूं तुम कौन हो, मैं नहीं जानता. चले जाओ यहां से! तुम सब कुकर्मी हो!’
28 “जब तुम परमेश्वर के राज्य में अब्राहाम, यित्सहाक, याकोब तथा सभी
भविष्यद्वक्ताओं को देखोगे और स्वयं तुम्हें बाहर फेंक दिया जाएगा, वहां रोना
और दांतों का पीसना ही होगा. 29 चारों दिशाओं से लोग आकर परमेश्वर के
राज्य के उत्सव में शामिल होंगे 30 और सच्चाई यह है कि जो अंतिम हैं वे
पहले होंगे तथा जो पहले वे अंतिम.” 31 उसी समय कुछ फ़रीसियों ने उनके
पास आकर उनसे कहा, “यहां से चले जाओ क्योंकि हेरोदेस तुम्हारी हत्या कर
देना चाहता है.” 32 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “जाकर उस लोमड़ी से
कहो, ‘मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालूंगा और लोगों को चंगा करूंगा
और तीसरे दिन मैं अपने लक्ष्य पर पहुंच जाऊंगा.’ 33 फिर भी यह ज़रूरी है
कि मैं आज, कल और परसों यात्रा करूं क्योंकि यह हो ही नहीं सकता कि
किसी भविष्यवक्ता की हत्या येरूशलेम नगर के बाहर हो. 34 “येरूशलेम! ओ
येरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं की हत्या करता तथा उनका पथराव करता है,
जिन्हें तेरे लिए भेजा जाता है. कितनी बार मैंने यह प्रयास किया कि तेरी संतान
को इकट्ठा कर एकजुट करूं, जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे
इकट्ठा करती है किंतु तूने न चाहा. 35 इसलिये अब यह समझ ले कि तेरा घर
तेरे लिए उजाड़ छोड़ा जा रहा है. मैं तुझे बताए देता हूं कि इसके बाद तू मुझे तब
तक नहीं देखेगा जब तक तू यह नारा न लगाए. ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम में
आ रहा है!’”

14 एक अवसर पर जब प्रभु येशु शब्बाथ पर फ़रीसियों के नायकों में से
एक के घर भोजन करने गए, वे सभी उन्हें उत्सुकतापूर्वक देख रहे
थे. 2 वहां जलोदर रोग से पीड़ित एक व्यक्ति था. 3 प्रभु येशु ने फ़रीसियों
और वकीलों से प्रश्न किया, “शब्बाथ पर किसी को स्वस्थ करना व्यवस्था के
अनुसार है या नहीं?” 4 किंतु वे मौन रहे. इसलिये प्रभु येशु ने उस रोगी पर हाथ
रख उसे स्वस्थ कर दिया तथा उसे विदा किया. 5 तब प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न
किया, “यह बताओ, यदि तुममें से किसी का पुत्र या बैल शब्बाथ पर कुएं में
गिर जाए तो क्या तुम उसे तुरंत ही बाहर न निकालोगे?” 6 उनके पास इस
प्रश्न का कोई उत्तर न था. 7 जब प्रभु येशु ने यह देखा कि आमंत्रित व्यक्ति
अपने लिए किस प्रकार प्रधान आसन चुन लेते हैं, प्रभु येशु ने उन्हें यह विचार
दिया: 8 “जब भी कोई तुम्हें विवाह के उत्सव में आमंत्रित करे, तुम अपने
लिए आदरयोग्य आसन न चुनना. यह संभव है कि उसने तुमसे अधिक किसी
आदरयोग्य व्यक्ति को भी आमंत्रित किया हो. 9 तब वह व्यक्ति, जिसने तुम्हें
और उसे दोनों ही को आमंत्रित किया है, आकर तुमसे कहे ‘तुम यह आसन
इन्हें दे दो,’ तब लज्जित हो तुम्हें वह आसन छोड़कर सबसे पीछे के आसन
पर बैठना पड़े. 10 किंतु जब तुम्हें कहीं आमंत्रित किया जाए, जाकर सबसे
साधारण आसन पर बैठ जाओ जिससे कि जब जिसने तुम्हें आमंत्रित किया है
तुम्हारे पास आए तो यह कहे, ‘मेरे मित्र, उठो और उस ऊंचे आसन पर बैठो.’
इस पर अन्य सभी आमंत्रित अतिथियों के सामने तुम आदरयोग्य साबित होगे.
11 हर एक, जो स्वयं को बड़ा बनाता है, छोटा बना दिया जाएगा तथा जो स्वयं
को छोटा बना देता है, बड़ा किया जाएगा.” 12 तब फिर प्रभु येशु ने अपने
न्योता देनेवाले से कहा, “जब तुम दिन या रात के भोजन पर किसी को आमंत्रित
करो तो अपने मित्रों, भाई-बंधुओं, परिजनों या धनवान पड़ोसियों को आमंत्रित
मत करो; ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें आमंत्रित करें और तुम्हें बदला मिल जाए.
13 किंतु जब तुम भोज का आयोजन करो तो निर्धनों, अपंगों, लंगड़ों तथा
अंधों को आमंत्रित करो. 14 तब तुम परमेश्वर की कृपा के भागी बनोगे. वे
लोग तुम्हारा बदला नहीं चुका सकते. बदला तुम्हें धर्मियों के दोबारा जी उठने
(पुनरुत्थान) के अवसर पर प्राप्त होगा.” 15 यह सुन वहां आमंत्रित लोगों में
से एक ने प्रभु येशु से कहा, “धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य के भोज में
सम्मिलित होगा.” 16 यह सुन प्रभु येशु ने कहा, “किसी व्यक्ति ने एक बड़ा
भोज का आयोजन किया और अनेकों को आमंत्रित किया. 17 भोज तैयार होने
पर उसने अपने सेवकों को इस सूचना के साथ आमंत्रितों के पास भेजा, ‘आ
जाइए, सब कुछ तैयार है.’ 18 “किंतु वे सभी बहाने बनाने लगे. एक ने कहा,
‘मैंने भूमि मोल ली है और आवश्यक है कि मैं जाकर उसका निरीक्षण करूं.
कृपया मुझे क्षमा करें.’ 19 “दूसरे ने कहा, ‘मैंने अभी-अभी पांच जोड़े बैल
मोल लिए हैं और मैं उन्हें परखने के लिए बस निकल ही रहा हूं. कृपया मुझे
क्षमा करें.’ 20 “एक और अन्य ने कहा, ‘अभी, इसी समय मेरा विवाह हुआ है
इसलिये मेरा आना संभव नहीं.’ 21 “सेवक ने लौटकर अपने स्वामी को यह
सूचना दे दी. अत्यंत गुस्से में घर के स्वामी ने सेवक को आज्ञा दी, ‘तुरंत नगर
की गलियों-चौराहों में जाओ और निर्धनों, अपंगों, लंगड़ों और अंधों को ले
आओ.’ 22 “सेवक ने लौटकर सूचना दी, ‘स्वामी, आपके आदेशानुसार काम
पूरा हो चुका है किंतु अब भी कुछ जगह भरने बाकी है.’ 23 “तब घर के
स्वामी ने उसे आज्ञा दी, ‘अब नगर के बाहर के मार्गों से लोगों को यहां आने के
लिए विवश करो कि मेरा भवन भर जाए. 24 यह निश्चित है कि वे, जिन्हें पहले
आमंत्रित किया गया था, उनमें से एक भी मेरे भोज को चख न सकेगा.’” 25
एक बड़ी भीड़ प्रभु येशु के साथ साथ चल रही थी. प्रभु येशु ने मुड़कर उनसे
कहा, 26 “यदि कोई मेरे पास आता है और अपने माता-पिता, पत्नी, संतान तथा
भाई बहनों को, यहां तक कि स्वयं अपने जीवन को, मुझसे अधिक महत्व देता
है, मेरा चेला नहीं हो सकता. 27 वह, जो अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए मेरा
अनुसरण नहीं करता, वह मेरा चेला हो ही नहीं सकता. 28 “तुममें ऐसा कौन
है, जो भवन निर्माण करना चाहे और पहले बैठकर खर्च का अनुमान न करे कि
उसके पास निर्माण काम पूरा करने के लिए पर्याप्त राशि है भी या नहीं? 29
अन्यथा यदि वह नींव डाल ले और काम पूरा न कर पाए तो देखनेवालों के
ठट्ठों का कारण बन जाएगा: 30 ‘देखो, देखो! इसने काम प्रारंभ तो कर दिया
किंतु अब समाप्त नहीं कर पा रहा!’ 31 “या ऐसा कौन राजा होगा, जो दूसरे
पर आक्रमण करने के पहले यह विचार न करेगा कि वह अपने दस हज़ार
सैनिकों के साथ अपने विरुद्ध बीस हज़ार की सेना से टक्कर लेने में समर्थ है भी
या नहीं? 32 यदि नहीं, तो जब शत्रु की सेना दूर ही है, वह अपने दूतों को

भेजकर उसके सामने शांति का प्रस्ताव रखेगा. 33 इसी प्रकार तुममें से कोई भी
मेरा चेला नहीं हो सकता यदि वह अपना सब कुछ त्याग न कर दे. 34 “नमक
उत्तम है किंतु यदि नमक ही स्वादहीन हो जाए तो किस वस्तु से उसका स्वाद
लौटाया जा सकेगा? 35 तब वह न तो भूमि के लिए किसी उपयोग का रह जाता
है और न खाद के रूप में किसी उपयोग का. उसे फेंक दिया जाता है. “जिसके
सुनने के कान हों, वह सुन ले.”

15 सभी चुंगी लेनेवाले और पापी लोग प्रभु येशु के प्रवचन सुनने उनके पास
आए 2 किंतु फ़रीसी और शास्त्री बड़बड़ाने लगे, “यह व्यक्ति पापियों से
मित्रता रखते हुए उनके साथ संगति करता है.” 3 इसलिये प्रभु येशु ने उनके
सामने यह दृष्टांत प्रस्तुत किया: 4 “तुममें से ऐसा कौन होगा, जिसके पास सौ
भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए तो वह निन्यानवे को बंजर भूमि में छोड़कर
उस खोई हुई को तब तक खोजता न रहेगा, जब तक वह मिल न जाए? 5 और
जब वह उसे मिल जाती है, उसे आनंदपूर्वक कंधों पर लाद लेता है. 6 घर
लौटने पर वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा कर कहता है, ‘मेरे आनंद
में सम्मिलित हो जाओ क्योंकि मुझे मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है!’ 7 यह बात
याद रखो: पश्चाताप करते हुए एक पापी के लिए उन निन्यानवे धर्मियों की
तुलना में स्वर्ग में कहीं अधिक आनंद मनाया जाता है, जिन्हें मन फिराने की
ज़रूरत नहीं है.” 8 “या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास चांदी के दस सिक्के
हों और उनमें से एक खो जाए तो वह घर में रोशनी कर घर को बुहारते हुए उस
सिक्के को तब तक खोजती न रहेगी जब तक वह मिल नहीं जाता? 9 सिक्का
मिलने पर वह अपनी पड़ोसिनों और सहेलियों से कहती है, ‘मेरे आनंद में
शामिल हो जाओ क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है.’ 10 मैं तुमसे
कहता हूं कि स्वर्ग में इसी प्रकार परमेश्वर के दूतों के सामने उस पापी के लिए
आनंद मनाया जाता है, जिसने मन फिराया है.” 11 प्रभु येशु ने आगे कहा,
“किसी व्यक्ति के दो पुत्र थे. 12 छोटे पुत्र ने पिता से विनती की, ‘पिताजी,
संपत्ति में से मेरा भाग मुझे दे दीजिए.’ इसलिये पिता ने दोनों पुत्रों में अपनी
संपत्ति बांट दी. 13 “शीघ्र ही छोटे पुत्र ने अपने भाग में आई सारी संपत्ति ली
और एक दूर देश की ओर चला गया. वहां उसने अपना सारा धन मनमानी
जीवनशैली में उड़ा दिया. 14 और अब, जब उसका सब कुछ समाप्त हो गया
था, सारे देश में भीषण अकाल पड़ा किंतु उसके पास अब कुछ भी बाकी न रह
गया था. 15 इसलिये वह उसी देश के एक नागरिक के यहां चला गया जिसने
उसे अपने खेतों में सूअर चराने भेज दिया. 16 वह सूअरों के चारे से ही अपना
पेट भरने के लिए तरस जाता था. कोई भी उसे खाने के लिए कुछ नहीं देता था.
17 “अपनी परिस्थिति के बारे में होश में आने पर वह विचार करने लगा: ‘मेरे
पिता के कितने ही सेवकों को अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध है और यहां मैं
भूखा मर रहा हूं! 18 मैं लौटकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूंगा:
पिताजी! मैंने वे जो स्वर्ग में हैं, उनके विरुद्ध तथा आपके विरुद्ध पाप किया है. 19
इसके बाद मैं इस योग्य नहीं रह गया कि आपका पुत्र कहलाऊं. अब आप मुझे
अपने यहां मज़दूर ही रख लीजिए.’ 20 इसलिये वह उठकर अपने पिता के पास
लौट गया. “वह दूर ही था कि पिता ने उसे देख लिया और वह दया से भर गया.
वह दौड़कर अपने पुत्र के पास गया और उसे गले लगाकर चूमता रहा. 21 “पुत्र
ने पिता से कहा, ‘पिताजी! मैंने स्वर्ग के विरुद्ध तथा आपके प्रति पाप किया है, मैं
अब इस योग्य नहीं रहा कि मैं आपका पुत्र कहलाऊं.’ 22 “किंतु पिता ने अपने
सेवकों को आज्ञा दी, ‘बिना देर किए सबसे अच्छे वस्त्र लाकर इसे पहनाओ और
इसकी उंगली में अंगूठी और पांवों में जूतियां भी पहनाओ; 23 जाकर एक
सबसे अच्छे बछड़े से भोजन तैयार करो. चलो, हम सब आनंद मनाएं 24
क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, अब जीवित हो गया है; यह खो गया था किंतु
अब मिल गया है.’ इसलिये वे सभी आनंद से भर गए. 25 “उस समय बड़ा
बेटा अपने खेतों में काम कर रहा था. जब वह लौटकर घर आ रहा था, पास
आने पर उसे संगीत और नाचने की आवाज सुनाई दी. 26 उसने एक सेवक को
बुलाकर उससे पूछा, ‘यह सब क्या हो रहा है?’ 27 ‘आपका भाई लौट आया
है,’ उस सेवक ने उत्तर दिया, ‘और आपके पिता ने सबसे अच्छा बछड़ा लेकर
भोज तैयार करवाया है क्योंकि उनका पुत्र उन्हें सकुशल और सुरक्षित मिल गया
है.’ 28 “गुस्से में बड़े भाई ने घर के भीतर तक जाना न चाहा. इसलिये उसके
पिता ने ही बाहर आकर उससे विनती की. 29 उसने अपने पिता को उत्तर दिया,
‘देखिए, इन सभी वर्षों में मैं दास जैसे आपकी सेवा करता रहा हूं और कभी भी
आपकी आज्ञा नहीं टाली फिर भी आपने कभी मुझे एक मेमना तक न दिया कि
मैं अपने मित्रों के साथ मिलकर आनंद मना सकूं. 30 किंतु जब आपका यह
पुत्र, जिसने आपकी संपत्ति वेश्याओं पर उड़ा दी, घर लौट आया, तो आपने
उसके लिए सबसे अच्छे बछड़े का भोजन बनवाया है!’ 31 “‘मेरे पुत्र!’ पिता ने
कहा, ‘तुम तो सदा से ही मेरे साथ हो. वह सब, जो मेरा है, तुम्हारा ही है. 32
हमारे लिए आनंद मनाना और हर्षित होना सही ही है क्योंकि तुम्हारा यह भाई,
जो मर गया था, अब जीवित हो गया है; वह, जो खो गया था, अब मिल गया
है.’”

16 प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को यह वृत्तांत भी सुनाया: “किसी धनी व्यक्ति
का एक भंडारी था, जिसके विषय में उसे यह सूचना दी गई कि वह
उसकी संपत्ति का दुरुपयोग कर रहा है. 2 इसलिये स्वामी ने उसे बुलाकर उससे
पूछताछ की: ‘तुम्हारे विषय में मैं यह क्या सुन रहा हूं? अपने प्रबंधन का हिसाब
दे दो क्योंकि अब तुम भंडारी के पद पर नहीं रह सकते.’ 3 “भंडारी मन में
विचार करने लगा, ‘अब मैं क्या करूं? मालिक मुझ से भंडारी का पद छीन रहा
है. मेरा शरीर इतना बलवान नहीं कि मैं भूमि खोदने का काम करूं और लज्जा
के कारण मैं भीख भी न मांग सकूंगा. 4 अब मेरे सामने क्या रास्ता बचा रह
गया है, मैं समझ गया कि मेरे लिए क्या करना सही है कि मुझे पद से हटा दिए
जाने के बाद भी लोगों की मित्रता मेरे साथ बनी रहे.’ 5 “उसने अपने स्वामी के
हर एक कर्ज़दार को बुलवाया. पहले कर्ज़दार से उसने प्रश्न किया, ‘तुम पर मेरे
स्वामी का कितना कर्ज़ है?’ 6 “‘3,000 लीटर तेल,’ उसने उत्तर दिया.
“भंडारी ने उससे कहा, ‘लो, यह है तुम्हारा बही खाता. तुरंत बैठकर इसमें
1,500 लिख दो.’ 7 “तब उसने दूसरे को बुलाया उससे पूछा, ‘तुम पर
कितना कर्ज़ है?’ “‘30 टन गेहूं.’ “भंडारी ने कहा, ‘अपना बही खाता लेकर
उसमें 24 लिख दो.’ 8 “स्वामी ने इस ठग भंडारी की इस चतुराई भरी योजना
की सराहना की: सांसारिक लोग ज्योति की संतान की तुलना में अपने जैसे
लोगों के साथ अपने आचार-व्यवहार में कितने अधिक चतुर हैं! (aiōn g165) 9
मैं तुमसे कहता हूं कि सांसारिक संपत्ति का उपयोग अपने मित्र बनाने के लिए
करो कि जब यह संपत्ति न रहे तो अनंत काल के घर में तुम्हारा स्वागत हो.
(aiōnios g166) 10 “वह, जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह उस ज्यादा में
भी विश्वासयोग्य होता है; वह, जो थोड़े में भ्रष्ट है, ज्यादा में भी भ्रष्ट होगा.
11 इसलिये यदि तुम सांसारिक संपत्ति के प्रति विश्वासयोग्य न पाए गए तो
तुम्हें सच्चा धन कौन सौंपेगा? 12 यदि तुम किसी अन्य की संपत्ति के प्रति
विश्वासयोग्य प्रमाणित न हुए तो कौन तुम्हें वह सौंपेगा, जो तुम्हारा ही है? 13
“किसी भी दास के लिए दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह
एक को तुच्छ मानकर दूसरे के प्रति समर्पित रहेगा या एक का सम्मान करते हुए
दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा कर ही नहीं
सकते.” 14 वे फ़रीसी, जिन्हें धन से लगाव था, ये सब सुनकर प्रभु येशु का
उपहास करने लगे. 15 उन्हें संबोधित करते हुए प्रभु येशु ने कहा, “तुम स्वयं को
अन्यों के सामने नीतिमान प्रस्तुत करते हो किंतु परमेश्वर तुम्हारे हृदय को जानते
हैं. वह, जो मनुष्यों के सामने महान है, परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है. 16

“व्यवस्था और भविष्यवाणियां बपतिस्मा देनेवाले योहन तक प्रभाव में थी.
उसके बाद से परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया जा रहा है और हर एक इसमें
प्रबलता से प्रवेश करता जा रहा है. 17 स्वर्ग और पृथ्वी का खत्म हो जाना सरल
है बजाय इसके कि व्यवस्था का एक भी बिंदु व्यर्थ प्रमाणित हो. 18 “वह, जो
अपनी पत्नी से तलाक लेकर अन्य स्त्री से विवाह करता है, व्यभिचार करता है;
और वह पुरुष, जो उस त्यागी हुई स्त्री से विवाह करता है, व्यभिचार करता है.”
19 प्रभु येशु ने आगे कहा, “एक धनवान व्यक्ति था, जो हमेशा कीमती तथा
अच्छे वस्त्र ही पहनता था. उसकी जीवनशैली विलासिता से भरी थी. 20 उसके
द्वार पर लाज़रॉस नामक एक गरीब व्यक्ति को, जिसका सारा शरीर घावों से
भरा था, लाकर छोड़ दिया जाता था. 21 वह धनवान व्यक्ति की मेज़ से नीचे
गिरे हुए टुकड़े को खाने के लिए तरसता रहता था; ऊपर से कुत्ते आ-आकर
उसके घावों को चाटते रहते थे. 22 “एक तय समय पर उस गरीब व्यक्ति की
मृत्यु हुई और स्वर्गदूत उसे अब्राहाम के सामने ले गए. कुछ समय बाद धनी
व्यक्ति की भी मृत्यु हुई और उसे भूमि में गाड़ दिया गया. 23 अधोलोक की
ताड़ना में पड़े हुए धनवान व्यक्ति ने दूर से ही अब्राहाम को देखा, जिनके सामने
लाज़रॉस बैठा हुआ था. (Hadēs g86) 24 उसने अब्राहाम को पुकारा और उनसे
कहा, ‘पिता अब्राहाम, मुझ पर कृपा कीजिए और लाज़रॉस को मेरे पास भेज
दीजिए कि वह अपनी उंगली का सिरा जल में डुबोकर उससे मेरी जीभ को
ठंडक प्रदान करे क्योंकि मैं यहां इस आग की ताड़ना में पड़ा हुआ हूं.’ 25
“किंतु अब्राहाम ने उसे उत्तर दिया, ‘मेरे पुत्र, यह न भूलो कि अपने शारीरिक
जीवन में तुमने अच्छी से अच्छी वस्तुएं प्राप्त की जबकि लाज़रॉस ने तुच्छ
वस्तुएं, किंतु वह अब यहां सुख और संतोष में है; 26 और फिर इन सबके
अलावा तुम्हारे और हमारे बीच में एक बड़ी दरार बनायी गयी है, जिससे कि
यहां से वहां जाने के इच्छुक वहां न जा सकें और न ही वहां से कोई यहां आ
सके.’ 27 “इस पर उस धनवान व्यक्ति ने विनती की, ‘तो पिता, मेरी विनती है
कि आप उसे मेरे परिजनों के पास भेज दें; 28 वहां मेरे पांच भाई हैं—कि वह
उन्हें सावधान कर दे, ऐसा न हो कि वे भी इस ताड़ना के स्थान में आ जाएं.’
29 “अब्राहाम ने उत्तर दिया, ‘उनके पास मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं के लेख
हैं. सही होगा कि वे उनका पालन करें.’ 30 “‘नहीं पिता अब्राहाम,’ उसने
विरोध करते हुए कहा, ‘वे मन तभी फिराएंगे जब कोई मृत व्यक्ति पुनर्जीवित
होकर उनके पास जाएगा.’ 31 “अब्राहाम ने इसके उत्तर में कहा, ‘जब वे
मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं के आदेशों का पालन नहीं करते तो वे किसी दोबारा
जीवित हुए व्यक्ति का भी विश्वास न करेंगे.’”

17 इसके बाद अपने शिष्यों से प्रभु येशु ने कहा, “यह असंभव है कि ठोकरें
न लगें किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर, जो ठोकर का कारण है. 2
इसके बजाय कि वह निर्बलों के लिए ठोकर का कारण बने, उत्तम यह होता कि
उसके गले में चक्की का पाट बांधकर उसे गहरे समुद्र में फेंक दिया जाता. 3
इसलिये तुम स्वयं के प्रति सावधान रहो. “यदि तुम्हारा भाई या बहन अपराध
करे तो उसे डांटो और यदि वह मन फिराए तो उसे क्षमा कर दो. 4 यदि वह एक
दिन में तुम्हारे विरुद्ध सात बार भी अपराध करे और सातों बार तुमसे आकर कहे,
‘मुझे इसका पछतावा है,’ तो उसे क्षमा कर दो.” 5 प्रेरितों ने उनसे विनती
की, “प्रभु, हमारे विश्वास को बढ़ा दीजिए.” 6 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “यदि
तुम्हारा विश्वास राई के बीज के बराबर भी हो, तो तुम इस शहतूत के पेड़ को
यह आज्ञा देते, ‘उखड़ जा और जाकर समुद्र में लग जा!’ तो यह तुम्हारी आज्ञा
का पालन करता. 7 “क्या तुममें से कोई ऐसा है, जिसके खेत में काम करने या
भेड़ों की रखवाली के लिए एक दास हो और जब वह दास खेत से लौटे तो वह
दास से कहे, ‘आओ, मेरे साथ भोजन करो’? 8 क्या वह अपने दास को यह
आज्ञा न देगा, ‘मेरे लिए भोजन तैयार करो और मुझे भोजन परोसने के लिए
तैयार हो जाओ. मैं भोजन के लिए बैठ रहा हूं. तुम मेरे भोजन समाप्त करने के
बाद भोजन कर लेना?’ 9 क्या वह अपने दास का आभार इसलिये मानेगा कि
उसने उसे दिए गए आदेशों का पालन किया है? नहीं! 10 यही तुम सबके लिए
भी सही है: जब तुम वह सब कर लो, जिसकी तुम्हें आज्ञा दी गई थी, यह
कहो: ‘हम अयोग्य सेवक हैं. हमने केवल अपना कर्तव्य पूरा किया है.’” 11
येरूशलेम नगर की ओर बढ़ते हुए प्रभु येशु शमरिया और गलील प्रदेश के बीच
से होते हुए जा रहे थे. 12 जब वह गांव में प्रवेश कर ही रहे थे, उनकी भेंट दस
कोढ़ रोगियों से हुई, जो दूर ही खड़े रहे. 13 उन्होंने दूर ही से पुकारते हुए प्रभु
येशु से कहा, “स्वामी! प्रभु येशु! हम पर कृपा कीजिए!” 14 उन्हें देख प्रभु येशु
ने उन्हें आज्ञा दी, “जाकर पुरोहितों द्वारा स्वयं का निरीक्षण करवाओ.” जब वे
जा ही रहे थे, वे शुद्ध हो गए. 15 उनमें से एक, यह अहसास होते ही कि वह शुद्ध
हो गया है, प्रभु येशु के पास लौट आया और ऊंचे शब्द में परमेश्वर की वंदना
करने लगा. 16 प्रभु येशु के चरणों पर गिरकर उसने उनके प्रति धन्यवाद प्रकट
किया—वह शमरियावासी था. 17 प्रभु येशु ने उससे प्रश्न किया, “क्या सभी दस
शुद्ध नहीं हुए? कहां हैं वे अन्य नौ? 18 क्या इस परदेशी के अतिरिक्त किसी
अन्य ने परमेश्वर के प्रति धन्यवाद प्रकट करना सही न समझा?” 19 तब प्रभु
येशु ने उससे कहा, “उठो और जाओ. तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें हर तरह से स्वस्थ
किया है.” 20 एक अवसर पर, जब फ़रीसियों ने उनसे यह जानना चाहा कि
परमेश्वर के राज्य का आगमन कब होगा, तो प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “परमेश्वर
के राज्य का आगमन दिखनेवाले संकेतों के साथ नहीं होगा 21 और न ही
इसके विषय में कोई यह कह सकता है, ‘देखो, देखो! यह है परमेश्वर का
राज्य!’ क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ही बीच में है.” 22 तब अपने
शिष्यों से उन्मुख हो प्रभु येशु ने कहा, “वह समय आ रहा है जब तुम मनुष्य के
पुत्र के राज्य का एक दिन देखने के लिए तरस जाओगे और देख न पाओगे. 23
लोग आकर तुम्हें सूचना देंगे, ‘देखो, वह वहां है!’ या, ‘देखो, वह यहां है!’ यह
सुनकर तुम चले न जाना और न ही उनके पीछे भागना 24 क्योंकि मनुष्य के
पुत्र का दोबारा आना बिजली कौंधने के समान होगा—आकाश में एक छोर से
दूसरे छोर तक; 25 किंतु उसके पूर्व उसका अनेक यातनाएं सहना और इस पीढ़ी
द्वारा तिरस्कार किया जाना अवश्य है. 26 “ठीक जिस प्रकार नोहा के युग में
हुआ था, मनुष्य के पुत्र के समय में भी होगा, 27 तब भी लोगों में उस समय
तक खाना-पीना, विवाहोत्सव होते रहे, जब तक नोहा ने जहाज़ में प्रवेश न
किया. तब पानी की बाढ़ आई और सब कुछ नाश हो गया. 28 “ठीक यही
स्थिति थी लोत के समय में—लोग उत्सव, लेनदेन, खेती और निर्माण का काम
करते रहे 29 किंतु जैसे ही लोत ने सोदोम नगर से प्रस्थान किया, आकाश से
आग और गंधक की बारिश हुई और सब कुछ नाश हो गया. 30 “यही सब
होगा उस दिन, जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा. 31 उस समय सही यह होगा कि
वह, जो छत पर हो और उसकी वस्तुएं घर में हों, वह उन्हें लेने नीचे न उतरे.
इसी प्रकार वह, जो खेत में काम कर रहा है, वह भी लौटकर न आए. 32 याद
है लोत की पत्नी! 33 जो अपने प्राणों को बचाना चाहता है, उन्हें खो देता है और
वह, जो अपने जीवन से मोह नहीं रखता, उसे बचा पाता है. 34 उस रात एक
बिछौने पर सोए हुए दो व्यक्तियों में से एक उठा लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया
जाएगा. 35 दो स्त्रियां एक साथ अनाज पीस रही होंगी, एक उठा ली जाएगी,
दूसरी छोड़ दी जाएगी. [36 खेत में दो व्यक्ति काम कर रहे होंगे एक उठा
लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा.]” 37 उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया,
“कब प्रभु?” प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “गिद्ध वहीं इकट्ठा होंगे, जहां शव होता
है.”

18 तब प्रभु येशु ने शिष्यों को यह समझाने के उद्देश्य से कि निराश हुए बिना
निरंतर प्रार्थना करते रहना ही सही है, यह दृष्टांत प्रस्तुत किया. 2 “किसी

नगर में एक न्यायाधीश था. वह न तो परमेश्वर से डरता था और न किसी
को कुछ समझता था. 3 उसी नगर में एक विधवा भी थी, जो बार-बार उस
न्यायाधीश के पास ‘आकर विनती करती थी कि उसे न्याय दिलाया जाए.’ 4
“कुछ समय तक तो वह न्यायाधीश उसे टालता रहा किंतु फिर उसने मन में
विचार किया, ‘यद्यपि मैं न तो परमेश्वर से डरता हूं और न लोगों से प्रभावित
होता हूं 5 फिर भी यह विधवा आ-आकर मेरी नाक में दम किए जा रही है.
इसलिये उत्तम यही होगा कि मैं इसका न्याय कर ही दूं कि यह बार-बार आकर
मेरी नाक में दम तो न करे.’” 6 प्रभु ने आगे कहा, “उस अधर्मी न्यायाधीश के
शब्दों पर ध्यान दो कि उसने क्या कहा. 7 तब क्या परमेश्वर अपने उन चुने
हुओं का न्याय न करेंगे, जो दिन-रात उनके नाम की दोहाई दिया करते हैं? क्या
वह उनके संबंध में देर करेंगे? 8 सच मानो, परमेश्वर बिना देर किए उनके पक्ष में
सक्रिय हो जाएंगे. फिर भी, क्या मनुष्य के पुत्र का पुनरागमन पर विश्वास बना
रहेगा?” 9 तब प्रभु येशु ने उनके लिए, जो स्वयं को तो धर्मी मानते थे परंतु
अन्यों को तुच्छ दृष्टि से देखते थे, यह दृष्टांत प्रस्तुत किया. 10 “प्रार्थना करने दो
व्यक्ति मंदिर में गए, एक फ़रीसी था तथा दूसरा चुंगी लेनेवाला. 11 फ़रीसी की
प्रार्थना इस प्रकार थी: ‘परमेश्वर! मैं आपका आभारी हूं कि मैं अन्य मनुष्यों
जैसा नहीं हूं—छली, अन्यायी, व्यभिचारी और न इस चुंगी लेनेवाले के जैसा.
12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं और अपनी सारी आय का दसवां अंश
दिया करता हूं.’ 13 “किंतु चुंगी लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा. उसने दृष्टि तक
उठाने का साहस न किया, अपने सीने पर शोक में प्रहार करते हुए उसने कहा,
‘प्रभु परमेश्वर! कृपा कीजिए मुझ पापी पर!’ 14 “विश्वास करो वास्तव में यही
चुंगी लेनेवाला (परमेश्वर से) धर्मी घोषित किया जाकर घर लौटा—न कि वह
फ़रीसी. क्योंकि हर एक, जो स्वयं को बड़ा बनाता है, छोटा बना दिया जाएगा
तथा जो व्यक्ति स्वयं नम्र हो जाता है, वह ऊंचा उठाया जाता है.” 15 लोग
अपने बालकों को प्रभु येशु के पास ला रहे थे कि प्रभु येशु उन्हें स्पर्श मात्र कर
दें. शिष्य यह देख उन्हें डांटने लगे. 16 प्रभु येशु ने बालकों को अपने पास
बुलाते हुए कहा, “नन्हे बालकों को मेरे पास आने दो. मत रोको उन्हें! क्योंकि
परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है. 17 मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर
रहा हूं; जो परमेश्वर के राज्य को एक नन्हे बालक के भाव में ग्रहण नहीं करता,
वह उसमें कभी प्रवेश न कर पाएगा.” 18 एक प्रधान ने उनसे प्रश्न किया,
“उत्तम गुरु! अनंत काल के जीवन को पाने के लिए मैं क्या करूं?” (aiōnios
g166) 19 “उत्तम मुझे क्यों कह रहे हो?” प्रभु येशु ने कहा, “परमेश्वर के
अलावा उत्तम कोई भी नहीं है. 20 आज्ञा तो तुम्हें मालूम ही हैं: व्यभिचार न
करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने माता-पिता
का सम्मान करना.” 21 “इन सबका पालन तो मैं बचपन से करता आ रहा हूं,”
उसने उत्तर दिया. 22 यह सुन प्रभु येशु ने उससे कहा, “एक कमी फिर भी है
तुममें. अपनी सारी संपत्ति बेचकर निर्धनों में बांट दो. धन तुम्हें स्वर्ग में प्राप्त
होगा. तब आकर मेरे पीछे हो लो.” 23 यह सुन वह प्रधान बहुत दुःखी हो गया
क्योंकि वह बहुत धनी था. 24 उसे देखकर प्रभु येशु ने कहा, “धनवानों का
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कैसा कठिन है! 25 एक धनी के परमेश्वर के राज्य
में प्रवेश करने की तुलना में सुई के छेद में से ऊंट का पार हो जाना सरल है.”
26 इस पर सुननेवाले पूछने लगे, “तब किसका उद्धार संभव है?” 27 प्रभु येशु ने
उत्तर दिया, “जो मनुष्य के लिए असंभव है, वह परमेश्वर के लिए संभव है.”
28 पेतरॉस ने प्रभु येशु से कहा, “हम तो अपना घरबार छोड़कर आपके पीछे
चल रहे हैं.” 29 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “सच तो यह है कि ऐसा कोई
भी नहीं, जिसने परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी घर-गृहस्थी, पत्नी, भाई,
बहन, माता-पिता या संतान का त्याग किया हो 30 और उसे इस समय में कई
गुणा अधिक तथा आगामी युग में अनंत काल का जीवन प्राप्त न हो.” (aiōn
g165, aiōnios g166) 31 तब प्रभु येशु ने बारहों शिष्यों को अलग ले जाकर
उन पर प्रकट किया, “हम येरूशलेम नगर जा रहे हैं. भविष्यद्वक्ताओं द्वारा
मनुष्य के पुत्र के विषय में जो भी लिखा गया है, वह पूरा होने पर है, 32
उसे अन्यजातियों को सौंप दिया जाएगा. उसका उपहास किया जाएगा, उसे
अपमानित किया जाएगा, उस पर थूका जाएगा. 33 उसे कोड़े लगाने के बाद वे
उसे मार डालेंगे और वह तीसरे दिन मरे हुओं में से जीवित हो जाएगा.” 34
शिष्यों को कुछ भी समझ में न आया. उनसे इसका अर्थ छिपाकर रखा गया
था. इस विषय में प्रभु येशु की कही बातें शिष्यों की समझ से परे थी. 35 जब
प्रभु येशु येरीख़ो नगर के पास पहुंचे, उन्हें एक अंधा मिला, जो मार्ग के किनारे
बैठा हुआ भिक्षा मांग रहा था. 36 भीड़ का शोर सुनकर उसने जानना चाहा कि
क्या हो रहा है. 37 उन्होंने उसे बताया, “नाज़रेथ के येशु यहां से होकर जा
निकल रहें हैं.” 38 वह अंधा पुकार उठा, “येशु! दावीद की संतान! मुझ पर
दया कीजिए!” 39 उन्होंने, जो आगे-आगे चल रहे थे, उसे डांटा और उसे शांत
रहने की आज्ञा दी. इस पर वह और भी ऊंचे शब्द में पुकारने लगा, “दावीद के
पुत्र! मुझ पर कृपा कीजिए!” 40 प्रभु येशु रुक गए और उन्हें आज्ञा दी कि वह
व्यक्ति उनके पास लाया जाए. जब वह उनके पास लाया गया, प्रभु येशु ने उससे
प्रश्न किया, 41 “क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?” “प्रभु मैं देखना
चाहता हूं!” उसने उत्तर दिया. 42 प्रभु येशु ने कहा, “रोशनी प्राप्त करो. तुम्हारे
विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया है.” 43 तत्काल ही वह देखने लगा. परमेश्वर की
वंदना करते हुए वह प्रभु येशु के पीछे चलने लगा. यह देख सारी भीड़ भी
परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी.

19 प्रभु येशु ने येरीख़ो नगर में प्रवेश किया. 2 वहां ज़क्खाइयॉस नामक एक
व्यक्ति था, जो प्रधान चुंगी लेनेवाला और धनी व्यक्ति था. 3 वह यह
देखने का प्रयत्न कर रहा था कि प्रभु येशु कौन हैं. भीड़ में वह प्रभु येशु को देख
नहीं पा रहा था क्योंकि वह नाटा था. 4 इसलिये प्रभु येशु को देखने के लिए
वह दौड़कर आगे बढ़ा और गूलर के एक पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि प्रभु येशु
उसी मार्ग से जाने को थे. 5 जब प्रभु येशु वहां पहुंचे, उन्होंने ऊपर देखते हुए
उससे कहा, “ज़क्खाइयॉस, तुरंत नीचे आ जाओ. ज़रूरी है कि आज मैं तुम्हारे
घर में ठहरूं.” 6 वह तुरंत नीचे उतरा और ख़ुशी से उन्हें अपने घर ले गया. 7
यह देख सभी बड़बड़ाने लगे, “वह तो एक ऐसे व्यक्ति के घर गया है, जो
अपराधी है.” 8 किंतु ज़क्खाइयॉस ने खड़े होकर प्रभु से कहा, “प्रभुवर! मैं
अपनी आधी संपत्ति निर्धनों में दान कर दूंगा और यदि मैंने किसी से गलत ढंग से
कुछ भी लिया है तो मैं उसे चौगुनी राशि लौटा दूंगा.” 9 प्रभु येशु ने उससे कहा,
“आज इस परिवार में उद्धार का आगमन हुआ है—यह व्यक्ति भी अब्राहाम की
संतान है. 10 मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को खोजने तथा उन्हें उद्धार देने आया
है.” 11 जब वे इन बातों को सुन रहे थे, प्रभु येशु ने एक दृष्टांत प्रस्तुत किया
क्योंकि अब वे येरूशलेम नगर के पास पहुंच रहे थे और लोगों की आशा थी
कि परमेश्वर का राज्य तुरंत ही प्रकट होने पर है. 12 प्रभु येशु ने कहना प्रारंभ
किया: “एक कुलीन व्यक्ति राजपद प्राप्त करने के लिए दूर देश की यात्रा पर
निकला. 13 यात्रा के पहले उसने अपने दस दासों को बुलाकर उन्हें दस सोने
के सिक्के देते हुए कहा, ‘मेरे लौटने तक इस राशि से व्यापार करना.’ 14
“लोग उससे घृणा करते थे इसलिये उन्होंने उसके पीछे एक सेवकों की टुकड़ी
को इस संदेश के साथ भेजा, ‘हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर शासन
करे.’ 15 “इस पर भी उसे राजा बना दिया गया. लौटने पर उसने उन दासों को
बुलवाया कि वह यह मालूम करे कि उन्होंने उस राशि से व्यापार कर कितना
लाभ कमाया है. 16 “पहले दास ने आकर बताया, ‘स्वामी, आपके द्वारा दिए
गए सोने के सिक्कों से मैंने दस सिक्के और कमाए हैं.’ 17 “‘शाबाश, मेरे
योग्य दास!’ स्वामी ने उत्तर दिया, ‘इसलिये कि तुम बहुत छोटी ज़िम्मेदारी में

भी विश्वासयोग्य पाए गए, तुम दस नगरों की ज़िम्मेदारी संभालो.’ 18 “दूसरे
दास ने आकर बताया, ‘स्वामी, आपके द्वारा दिए गए सोने के सिक्कों से मैंने
पांच और कमाए हैं.’ 19 “स्वामी ने उत्तर दिया, ‘तुम पांच नगरों की ज़िम्मेदारी
संभालो.’ 20 “तब एक अन्य दास आया और स्वामी से कहने लगा, ‘स्वामी,
यह है आपका दिया हुआ सोने का सिक्का, जिसे मैंने बड़ी ही सावधानी से
कपड़े में लपेट, संभाल कर रखा है. 21 मुझे आपसे भय था क्योंकि आप
कठोर व्यक्ति हैं. आपने जिसका निवेश भी नहीं किया, वह आप ले लेते हैं, जो
आपने बोया ही नहीं, उसे काटते हैं.’ 22 “स्वामी ने उसे उत्तर दिया, ‘अरे ओ
दुष्ट! तेरा न्याय तो मैं तेरे ही शब्दों के आधार पर करूंगा. जब तू जानता है कि मैं
एक कठोर व्यक्ति हूं; मैं वह ले लेता हूं जिसका मैंने निवेश ही नहीं किया और
वह काटता हूं, जो मैंने बोया ही नहीं, तो 23 तूने मेरा धन साहूकारों के पास
जमा क्यों नहीं कर दिया कि मैं लौटने पर उसे ब्याज सहित प्राप्त कर सकता?’
24 “तब उसने अपने पास खड़े दासों को आज्ञा दी, ‘इसकी स्वर्ण मुद्रा लेकर
उसे दे दो, जिसके पास अब दस मुद्राएं हैं.’ 25 “उन्होंने आपत्ति करते हुए
कहा, ‘स्वामी, उसके पास तो पहले ही दस हैं!’ 26 “स्वामी ने उत्तर दिया,
‘सच्चाई यह है: हर एक, जिसके पास है, उसे और भी दिया जाएगा किंतु
जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है. 27 मेरे
इन शत्रुओं को, जिन्हें मेरा उन पर शासन करना अच्छा नहीं लग रहा, यहां मेरे
सामने लाकर प्राण-दंड दो.’” 28 इसके बाद प्रभु येशु उनके आगे-आगे चलते
हुए येरूशलेम नगर की ओर बढ़ गए. 29 जब प्रभु येशु ज़ैतून नामक पर्वत पर
बसे गांव बैथफ़गे तथा बैथनियाह पहुंचे, उन्होंने अपने दो शिष्यों को इस आज्ञा
के साथ आगे भेज दिया, 30 “सामने उस गांव में जाओ. वहां प्रवेश करते ही
तुम्हें गधे का एक बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, जिसकी अब तक किसी ने सवारी
नहीं की है; उसे खोलकर यहां ले आओ. 31 यदि कोई तुमसे यह प्रश्न करे,
‘क्यों खोल रहे हो इसे?’ तो उसे उत्तर देना, ‘प्रभु को इसकी ज़रूरत है.’”
32 जिन्हें इसके लिए भेजा गया था, उन्होंने ठीक वैसा ही पाया, जैसा उन्हें
सूचित किया गया था. 33 जब वे गधी के उस बच्चे को खोल ही रहे थे, उसके
स्वामियों ने उनसे पूछा, “क्यों खोल रहे हो इसे?” 34 उन्होंने उत्तर दिया,
“प्रभु को इसकी ज़रूरत है.” 35 वे उसे प्रभु के पास ले आए और उस पर अपने
वस्त्र डालकर प्रभु येशु को उस पर बैठा दिया. 36 जब प्रभु जा रहे थे, लोगों ने
अपने बाहरी वस्त्र मार्ग पर बिछा दिए. 37 जब वे उस स्थान पर पहुंचे, जहां
ज़ैतून पर्वत का ढाल प्रारंभ होता है, सारी भीड़ उन सभी अद्भुत कामों को याद
करते हुए, जो उन्होंने देखे थे, ऊंचे शब्द में आनंदपूर्वक परमेश्वर की स्तुति
करने लगी: 38 “स्तुति के योग्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम में आ रहा है!”
“स्वर्ग में शांति और सर्वोच्च में महिमा हो!” 39 भीड़ में से कुछ फ़रीसियों ने,
आपत्ति उठाते हुए प्रभु येशु से कहा, “गुरु, अपने शिष्यों को डांटिए!” 40 “मैं
आपको यह बताना चाहता हूं,” प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यदि ये शांत हो
गए तो स्तुति इन पत्थरों से निकलने लगेगी.” 41 जब वह येरूशलेम नगर
के पास आए तो नगर को देख वह यह कहते हुए रो पड़े, 42 “यदि तुम, हां
तुम, आज इतना ही समझ लेते कि शांति का मतलब क्या है! किंतु यह तुमसे
छिपाकर रखा गया है. 43 वे दिन आ रहे हैं जब शत्रु सेना तुम्हारे चारों ओर
घेराबंदी करके तुम्हारे निकलने का रास्ता बंद कर देगी. 44 वे तुम्हें तथा तुम्हारी
संतानों को धूल में मिला देंगे. वे तुम्हारे घरों का एक भी पत्थर दूसरे पत्थर पर
न छोड़ेंगे क्योंकि तुमने तुम्हें दिए गए सुअवसर को नहीं पहचाना.” 45 मंदिर
में प्रवेश करने पर प्रभु येशु ने सभी बेचने वालों को यह कहते हुए वहां से बाहर
करना प्रारंभ कर दिया, 46 “लिखा है: मेरा घर प्रार्थना का घर होगा, किंतु तुमने
तो इसे डाकुओं की गुफ़ा बना रखी है!” 47 प्रभु येशु हर रोज़ मंदिर में शिक्षा
दिया करते थे. प्रधान पुरोहित, शास्त्री तथा जनसाधारण में से प्रधान नागरिक
उनकी हत्या की योजना कर रहे थे, 48 किंतु उनकी कोई भी योजना सफल
नहीं हो रही थी क्योंकि लोग प्रभु येशु के प्रवचनों से अत्यंत प्रभावित थे.

20 एक दिन जब प्रभु येशु मंदिर में शिक्षा दे रहे तथा सुसमाचार का प्रचार
कर रहे थे, प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों ने पुरनियों के साथ आकर प्रभु
येशु का सामना किया और 2 उन्होंने उनसे पूछा, “यह बताओ, तुम किस
अधिकार से ये सब कर रहे हो? कौन है वह, जिसने तुम्हें यह अधिकार दिया
है?” 3 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “एक प्रश्न मैं भी आपसे पूछता हूं: मुझे
बताइए, 4 योहन का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था या मनुष्यों की ओर
से?” 5 इस पर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “यदि हम कहते हैं,
‘परमेश्वर की ओर से,’ तो वह कहेगा, ‘तब तुमने योहन का विश्वास क्यों नहीं
किया?’ 6 किंतु यदि हम कहें, ‘मनुष्यों से,’ तब तो जनता हमारा पथराव
कर हमें मार डालेगी क्योंकि उनका तो यह पक्का विश्वास है कि योहन एक
भविष्यवक्ता थे.” 7 इसलिये उन्होंने प्रभु येशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते
कि वह बपतिस्मा कहां से था.” 8 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “तो मैं भी
तुम्हें नहीं बताता कि किस अधिकार से मैं ये काम कर रहा हूं.” 9 प्रभु येशु ने
भीड़ को यह दृष्टांत सुनाया: “एक व्यक्ति ने एक दाख की बारी लगाई और उसे
किसानों को पट्टे पर देकर लंबी यात्रा पर चला गया. 10 फसल तैयार होने पर
उसने अपने एक दास को उनके पास भेजा कि वे फसल का एक भाग उसे दे दें
किंतु उन किसानों ने उसकी पिटाई कर उसे खाली हाथ ही लौटा दिया. 11 तब
उसने दूसरे दास को उनके पास भेजा. किसानों ने उस दास की भी पिटाई की,
उसके साथ शर्मनाक व्यवहार किया और उसे भी खाली हाथ लौटा दिया. 12
उसने तीसरे दास को उनके पास भेजा. उन्होंने उसे भी घायल कर बाहर फेंक
दिया. 13 “तब दाख की बारी के स्वामी ने विचार किया: ‘अब मेरा क्या करना
सही होगा? मैं अपने प्रिय पुत्र को उनके पास भेजूंगा. ज़रूर वे उसका सम्मान
करेंगे.’ 14 “किंतु उसके पुत्र को देख किसानों ने आपस में विचार-विमर्श
किया, ‘सुनो, यह तो वारिस है! चलो, इसकी हत्या कर दें जिससे यह संपत्ति ही
हमारी हो जाए.’ 15 उन्होंने उसे बारी के बाहर निकालकर उसकी हत्या कर
दी. “यह बताओ, उद्यान का स्वामी अब उनके साथ क्या करेगा? 16 यही कि
वह आएगा और इन किसानों का वध कर बारी अन्य किसानों को सौंप देगा.”
यह सुन लोगों ने कहा, “ऐसा कभी न हो!” 17 तब उनकी ओर देखकर प्रभु
येशु ने उनसे प्रश्न किया, “तो इस लेख का मतलब क्या है: “‘राजमिस्त्रियों द्वारा
निकम्मी ठहराई शिला ही आधार की शिला बन गई’?” 18 “हर एक, जो इस
पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा किंतु जिस किसी पर यह पत्थर
गिरेगा उसे कुचलकर चूर्ण बना देगा.” 19 फलस्वरूप प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री
तत्क्षण प्रभु येशु को पकड़ने की योजना में जुट गए, क्योंकि वे यह समझ गए थे
कि प्रभु येशु ने उन पर ही यह दृष्टांत कहा है. किंतु उन्हें भीड़ का भय था. 20 वे
प्रभु येशु की गतिविधियों पर दृष्टि रखे हुए थे. उन्होंने प्रभु येशु के पास अपने
गुप्तचर भेजे कि वे धर्म का ढोंग कर प्रभु येशु को उनकी ही किसी बात में
फंसाकर उन्हें राज्यपाल को सौंप दें. 21 गुप्तचरों ने प्रभु येशु से प्रश्न किया,
“गुरुवर, यह तो हम जानते हैं कि आपकी बातें तथा शिक्षाएं सही हैं और आप
किसी के प्रति पक्षपाती भी नहीं हैं. आप पूरी सच्चाई में परमेश्वर के विषय में
शिक्षा दिया करते हैं. 22 इसलिये यह बताइए कि कयसर को कर देना न्याय
संगत है या नहीं?” 23 प्रभु येशु ने उनकी चतुराई जानते हुए उनसे कहा. 24
“मुझे एक दीनार दिखाओ. इस पर आकृति तथा मुद्रण किसका है?” उन्होंने
उत्तर दिया, “कयसर का.” 25 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तो जो कयसर का है.
वह कयसर को और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो.” 26 भीड़ की
उपस्थिति में वे प्रभु येशु को उनकी बातों के कारण पकड़ने में असफल रहे. प्रभु
येशु के इस उत्तर से वे चकित थे और आगे कुछ भी न कह पाए. 27 सदूकी

समुदाय के कुछ लोग, जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते, प्रभु येशु के पास
आए. 28 उन्होंने उनसे प्रश्न किया, “गुरुवर, हमारे लिए मोशेह के निर्देश हैं यदि
किसी निःसंतान पुरुष का पत्नी के रहते हुए निधन हो जाए तो उसका भाई उस स्त्री
से विवाह कर अपने भाई के लिए संतान पैदा करे. 29 सात भाई थे. पहले ने
विवाह किया और निःसंतान ही उसकी मृत्यु हो गई. 30 तब दूसरे ने 31 और
फिर तीसरे ने उससे विवाह किया और इस प्रकार सातों ही निःसंतान चल बसे.
32 अंततः उस स्त्री की भी मृत्यु हो गई. 33 अब यह बताइए कि पुनरुत्थान पर
वह किसकी पत्नी कहलाएगी? क्योंकि उसका विवाह तो सातों भाइयों से हुआ
था.” 34 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “विवाह केवल इसी लोक में होते हैं.
(aiōn g165) 35 वे, जो आनेवाले लोक में प्रवेश तथा मरे हुओं में से जी उठने के
योग्य गिने जाते हैं, वैवाहिक अवस्था में प्रवेश नहीं करते. (aiōn g165) 36 जी
उठने पर लोग न तो वैवाहिक अवस्था में होंगे और न ही कभी उनकी मृत्यु
होगी क्योंकि वहां वे स्वर्गदूतों जैसे होते हैं. जी उठने के परिणामस्वरूप वे
परमेश्वर की संतान होंगे. 37 मरे हुओं का जी उठना एक सच्चाई है, इसकी
पुष्टि स्वयं मोशेह ने जलती हुई झाड़ी के विवरण में की है, जहां वह प्रभु को
अब्राहाम का परमेश्वर, यित्सहाक का परमेश्वर तथा याकोब का परमेश्वर कहते
हैं. 38 इसलिये वह मरे हुओं के नहीं, जीवितों के परमेश्वर हैं क्योंकि उनके
सामने ये सभी जीवित हैं.” 39 कुछ शास्त्रियों ने इसके उत्तर में कहा, “गुरुवर,
अति उत्तम उत्तर दिया आपने!” 40 उनमें से किसी को भी अब उनसे किसी भी
विषय में प्रश्न करने का साहस न रहा. 41 प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, “लोग
यह क्यों कहते हैं कि मसीह दावीद की संतान हैं, 42 क्योंकि स्वयं दावीद
स्तोत्र संहिता में कहते हैं: “‘परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दायें पक्ष में बैठे
रहो, 43 मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे अधीन करूंगा.”’ 44 जब दावीद उन्हें प्रभु
कहकर संबोधित करते हैं तब वह दावीद के पुत्र कैसे हुए?” 45 सारी भीड़ को
सुनते हुए प्रभु येशु ने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, 46 “उन शास्त्रियों से
सावधान रहना, जो लंबे ढीले लहराते वस्त्र पहने हुए घूमा करते हैं, सार्वजनिक
स्थलों पर सम्मानपूर्ण नमस्कार की आशा करते है. वे यहूदी सभागृहों में मुख्य
आसन और दावतों में मुख्य स्थान की प्रीति रखते है. 47 वे विधवाओं के घर
हड़प जाते हैं तथा मात्र दिखावे के उद्देश्य से लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं.
कठोर होगा इनका दंड!”

21 प्रभु येशु ने देखा कि धनी व्यक्ति दानकोष में अपना अपना दान डाल
रहे हैं. 2 उन्होंने यह भी देखा कि एक निर्धन विधवा ने दो छोटे सिक्के
डाले हैं. 3 इस पर प्रभु येशु ने कहा, “सच यह है कि इस निर्धन विधवा ने उन
सभी से बढ़कर दिया है. 4 इन सबने तो अपने धन की बढ़ती में से दिया है किंतु
इस विधवा ने अपनी कंगाली में से अपनी सारी जीविका ही दे दी है.” 5 जब
कुछ शिष्य मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि यह भवन कितने सुंदर पत्थरों
तथा मन्नत की भेंटों से सजाया है; 6 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जिन वस्तुओं को
तुम इस समय सराह रहे हो, एक दिन आएगा कि इन भवनों का एक भी पत्थर
दूसरे पर स्थापित न दिखेगा—हर एक पत्थर भूमि पर पड़ा होगा.” 7 उन्होंने
प्रभु येशु से प्रश्न किया, “गुरुवर, यह कब घटित होगा तथा इनके पूरा होने के
समय का चिन्ह क्या होगा?” 8 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “सावधान रहना कि तुम
भटका न दिए जाओ, क्योंकि मेरे नाम में अनेक आएंगे और दावा करेंगे, ‘मैं हूं
मसीह’ तथा ‘वह समय पास आ गया है,’ किंतु उनकी न सुनना. 9 जब तुम
युद्धों तथा बलवों के समाचार सुनो तो भयभीत न होना. इनका पहले घटना
ज़रूरी है फिर भी इनके तुरंत बाद अंत नहीं होगा.” 10 तब प्रभु येशु ने उनसे
कहा, “राष्ट्र-राष्ट्र के तथा राज्य-राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा. 11 भीषण भूकंप
आएंगे. विभिन्न स्थानों पर महामारियां होंगी तथा अकाल पड़ेंगे. भयावह
घटनाएं होंगी तथा आकाश में अचंभित दृश्य दिखाई देंगे. 12 “इन सबके पहले
वे तुम्हें पकड़ लेंगे और तुम्हें यातनाएं देंगे. मेरे नाम के कारण वे तुम्हें सभागृहों
में ले जाएंगे, बंदीगृह में डाल देंगे तथा तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के हाथों में
सौंप देंगे. 13 तुम्हें गवाही देने का सुअवसर प्राप्त हो जाएगा. 14 इसलिये यह
सुनिश्चित करो कि तुम पहले ही अपने बचाव की तैयारी नहीं करोगे, 15
क्योंकि तुम्हें अपने बचाव में कहने के विचार तथा बुद्धि मैं दूंगा, जिसका तुम्हारे
विरोधी न तो सामना कर सकेंगे और न ही खंडन. 16 तुम्हारे माता-पिता, भाई-
बहन तथा परिजन और मित्र ही तुम्हारे साथ धोखा करेंगे—वे तुममें से कुछ की
तो हत्या भी कर देंगे. 17 मेरे नाम के कारण सभी तुमसे घृणा करेंगे. 18 फिर भी
तुम्हारे एक बाल तक की हानि न होगी. 19 तुम्हारे धीरज में छिपी होगी तुम्हारे
जीवन की सुरक्षा. 20 “जिस समय येरूशलेम नगर सेनाओं द्वारा घिरा हुआ
दिखे, तब यह समझ लेना कि विनाश पास है. 21 तो वे, जो यहूदिया प्रदेश में हों
पर्वतों पर भागकर जाएं; वे, जो नगर में हैं, नगर छोड़कर चले जाएं; जो नगर
के बाहर हैं, वे नगर में प्रवेश न करें 22 क्योंकि यह बदला लेने का समय होगा
कि वह सब, जो लेखों में पहले से लिखा है, पूरा हो जाए. 23 दयनीय होगी
गर्भवती और दूध पिलाती स्त्रियों की स्थिति! क्योंकि यह मनुष्यों पर क्रोध तथा
पृथ्वी पर घोर संकट का समय होगा. 24 वे तलवार से घात किए जाएंगे, अन्य
राष्ट्र उन्हें बंदी बनाकर ले जाएंगे. येरूशलेम नगर गैर-यहूदियों द्वारा उस समय
तक रौंदा जाएगा जब तक गैर-यहूदियों का समय पूरा न हो जाए. 25 “सूर्य,
चंद्रमा और तारों में अद्भुत चिह्न दिखाई देंगे. पृथ्वी पर राष्ट्रों में आतंक छा
जाएगा. गरजते सागर की लहरों के कारण लोग घबरा जाएंगे. 26 लोग भय
और इस आशंका से मूर्च्छित हो जाएंगे कि अब संसार का क्या होगा क्योंकि
आकाशमंडल की शक्तियां हिलायी जाएंगी. 27 तब वे मनुष्य के पुत्र को बादल
में सामर्थ्य और प्रताप में नीचे आता हुआ देखेंगे. 28 जब ये घटनाएं घटित
होने लगें, साहस के साथ स्थिर खड़े होकर आनेवाली घटना की प्रतीक्षा करो
क्योंकि समीप होगा तुम्हारा छुटकारा.” 29 तब प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के
द्वारा शिक्षा दी: “अंजीर के पेड़ तथा अन्य वृक्षों पर ध्यान दो. 30 जब उनमें
कोंपलें निकलने लगती हैं तो तुम स्वयं जान जाते हो कि गर्मी का समय पास है.
31 इसी प्रकार, जब तुम इन घटनाओं को घटित होते हुए देखो तो तुम यह जान
जाओगे कि परमेश्वर का राज्य अब पास है. 32 “सच्चाई तो यह है कि इन
घटनाओं के हुए बिना इस युग का अंत नहीं होगा. 33 आकाश तथा पृथ्वी खत्म
हो जाएंगे किंतु मेरे कहे हुए शब्द कभी नहीं. 34 “सावधान रहना कि तुम्हारा
हृदय जीवन संबंधी चिंताओं, दुर्व्यसनों तथा मतवालेपन में पड़कर सुस्त न हो
जाए और वह दिन तुम पर अचानक से फंदे जैसा आ पड़े. 35 उस दिन का
प्रभाव पृथ्वी के हर एक मनुष्य पर पड़ेगा. 36 हमेशा सावधान रहना, प्रार्थना
करते रहना कि तुम्हें इन आनेवाली घटनाओं से निकलने के लिए बल प्राप्त हो
और तुम मनुष्य के पुत्र की उपस्थिति में खड़े हो सको.” 37 दिन के समय प्रभु
येशु मंदिर में शिक्षा दिया करते तथा संध्याकाल में वह ज़ैतून पर्वत पर जाकर
प्रार्थना करते हुए रात बिताया करते थे. 38 लोग भोर में उनका प्रवचन सुनने
मंदिर आ जाया करते थे.

22 अखमीरी रोटी का उत्सव, जो फ़सह पर्व कहलाता है, पास आ रहा था.
2 प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री इस खोज में थे कि प्रभु येशु को किस प्रकार
मार डाला जाए, किंतु उन्हें लोगों का भय था. 3 शैतान ने कारियोतवासी
यहूदाह में, जो बारह शिष्यों में से एक था, प्रवेश किया. 4 उसने प्रधान पुरोहितों
तथा अधिकारियों से मिलकर निश्चित किया कि वह किस प्रकार प्रभु येशु को
पकड़वा सकता है. 5 इस पर प्रसन्न हो वे उसे इसका दाम देने पर सहमत हो
गए. 6 यहूदाह प्रभु येशु को उनके हाथ पकड़वा देने के ऐसे सुअवसर की
प्रतीक्षा करने लगा, जब आस-पास भीड़ न हो. 7 तब अखमीरी रोटी का उत्सव
आ गया, जब फ़सह का मेमना बलि किया जाता था. 8 प्रभु येशु ने पेतरॉस और

योहन को इस आज्ञा के साथ भेजा, "जाओ और हमारे लिए फ़सह की तैयारी
करो." 9 उन्होंने उनसे प्रश्न किया, "प्रभु, हम किस स्थान पर इसकी तैयारी
करें, आप क्या चाहते हैं?" 10 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "नगर में प्रवेश
करते ही तुम्हें एक व्यक्ति पानी का घड़ा ले जाता हुआ मिलेगा. उसका पीछा
करते हुए तुम उस घर में चले जाना, 11 जिस घर में वह प्रवेश करेगा. उस घर
के स्वामी से कहना, 'गुरु ने पूछा है, "वह अतिथि कक्ष कहां है जहां मैं अपने
शिष्यों के साथ फ़सह खाऊंगा?"' 12 वह तुमको एक विशाल, सुसज्जित
ऊपरी कक्ष दिखाएगा; तुम वहीं सारी तैयारी करना." 13 यह सुन वे दोनों वहां
से चले गए और सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा प्रभु येशु ने कहा था. उन्होंने
वहां फ़सह तैयार किया. 14 नियत समय पर प्रभु येशु अपने प्रेरितों के साथ
भोज पर बैठे. 15 उन्होंने प्रेरितों से कहा, "मेरी बड़ी लालसा थी कि मैं अपने
दुःख-भोग के पहले यह फ़सह तुम्हारे साथ खाऊं. 16 क्योंकि सच यह है कि मैं
इसे दोबारा तब तक नहीं खाऊंगा जब तक यह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो."
17 तब उन्होंने प्याला उठाया, परमेश्वर के प्रति धन्यवाद दिया और कहा, "इसे
लो, आपस में बांट लो 18 क्योंकि यह निर्धारित है कि जब तक परमेश्वर के
राज्य का आगमन न हो जाए, दाख का रस तब तक मैं नहीं पिऊंगा." 19 तब
उन्होंने रोटी ली, धन्यवाद देते हुए उसे तोड़ा और शिष्यों को यह कहते हुए दे
दी, "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया जा रहा है. मेरी याद में तुम ऐसा ही
किया करना." 20 इसी प्रकार इसके बाद प्रभु येशु ने प्याला उठाया और कहा,
"यह प्याला मेरे लहू में, जो तुम्हारे लिए बहाया जा रहा है, नई वाचा है. 21
वह, जो मुझे पकड़वाएगा हमारे साथ इस भोज में शामिल है. 22 मनुष्य का पुत्र,
जैसा उसके लिए तय किया गया है, आगे बढ़ रहा है, किंतु धिक्कार है उस
व्यक्ति पर जो उसे पकड़वा रहा है!" 23 यह सुन वे आपस में विचार-विमर्श
करने लगे कि वह कौन हो सकता है, जो यह करने पर है. 24 उनके बीच यह
विवाद भी उठ खड़ा हुआ कि उनमें से सबसे बड़ा कौन है. 25 यह जान प्रभु येशु
ने उनसे कहा, "गैर-यहूदियों के राजा उन पर शासन करते हैं और वे, जिन्हें उन
पर अधिकार है, उनके हितैषी कहलाते हैं. 26 किंतु तुम वह नहीं हो—तुममें जो
बड़ा है, वह सबसे छोटे के समान हो जाए और राजा सेवक समान. 27 बड़ा
कौन है—क्या वह, जो भोजन पर बैठा है या वह, जो खड़ा हुआ सेवा कर रहा
है? तुम्हारे मध्य मैं सेवक के समान हूं. 28 तुम्हीं हो, जो मेरे विषम समयों में
मेरा साथ देते रहे हो. 29 इसलिये जैसा मेरे पिता ने मुझे एक राज्य प्रदान किया
है, 30 वैसा ही मैं भी तुम्हें यह अधिकार देता हूं कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़
पर बैठकर मेरे साथ संगति करो, और सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह
वंशों का न्याय. 31 "शिमओन, शिमओन, सुनो! शैतान ने तुम सबको गेहूं के
समान अलग करने की आज्ञा प्राप्त कर ली है. 32 किंतु शिमओन, तुम्हारे लिए
मैंने प्रार्थना की है कि तुम्हारे विश्वास का पतन न हो. जब तुम पहले जैसी स्थिति
पर लौट आओ तो अपने भाइयों को भी विश्वास में मजबूत करना." 33 पेतरॉस
ने प्रभु येशु से कहा, "प्रभु, मैं तो आपके साथ दोनों ही को स्वीकारने के लिए
तत्पर हूं—बंदीगृह तथा मृत्यु!" 34 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, "सुनो,
पेतरॉस, आज रात, मुर्ग तब तक बांग न देगा, जब तक तुम तीन बार इस सच
को कि तुम मुझे जानते हो, नकार न चुके होगे." 35 प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न
किया, "यह बताओ, जब मैंने तुम्हें बिना बटुए, बिना झोले और बिना जूती के
बाहर भेजा था, क्या तुम्हें कोई अभाव हुआ था?" "बिलकुल नहीं," उन्होंने
उत्तर दिया. 36 तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, "किंतु अब जिस किसी के पास
बटुआ है, वह उसे साथ ले ले. इसी प्रकार झोला भी और जिसके पास तलवार
नहीं है, वह अपना वस्त्र बेचकर तलवार मोल ले. 37 मैं तुम्हें बताना चाहता हूं
कि यह जो लेख लिखा है, 'उसकी गिनती अपराधियों में हुई' उसका मुझमें पूरा
होना ज़रूरी है; क्योंकि मुझसे संबंधित सभी लेखों का पूरा होना अवश्य है."
38 शिष्यों ने कहा, "प्रभु, देखिए, ये दो तलवारें हैं." प्रभु येशु ने उत्तर दिया,
"पर्याप्त हैं." 39 तब प्रभु येशु उस घर के बाहर निकलकर ज़ैतून पर्वत पर चले
गए, जहां वह प्रायः जाया करते थे. उनके शिष्य भी उनके साथ थे. 40 उस
स्थान पर पहुंचकर प्रभु येशु ने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न
फंसो." 41 तब प्रभु येशु शिष्यों से कुछ ही दूरी पर गए और उन्होंने घुटने
टेककर यह प्रार्थना की: 42 "पिताजी, यदि संभव हो तो यातना का यह प्याला
मुझसे दूर कर दीजिए फिर भी मेरी नहीं, आपकी इच्छा पूरी हो." 43 उसी
समय स्वर्ग से एक स्वर्गदूत ने आकर उनमें बल का संचार किया. 44 प्राण
निकलने के समान दर्द में वह और भी अधिक कातर भाव में प्रार्थना करने लगे.
उनका पसीना लहू के समान भूमि पर टपक रहा था. 45 जब वह प्रार्थना से उठे
और शिष्यों के पास आए तो उन्हें सोता हुआ पाया. उदासी के मारे शिष्य सो
चुके थे. 46 प्रभु येशु ने शिष्यों से कहा, "सो क्यों रहे हो? उठो! प्रार्थना करो
कि तुम किसी परीक्षा में न फंसो." 47 प्रभु येशु जब यह कह ही रहे थे, तभी
एक भीड़ वहां आ पहुंची. उनमें यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, सबसे
आगे था. वह प्रभु येशु को चूमने के लिए आगे बढ़ा 48 किंतु प्रभु येशु ने उससे
कहा, "यहूदाह! क्या मनुष्य के पुत्र को तुम इस चुंबन के द्वारा पकड़वा रहे
हो?" 49 यह पता चलने पर कि क्या होने पर है शिष्यों ने प्रभु येशु से पूछा,
"प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं?" 50 उनमें से एक ने तो महापुरोहित के दास
पर वार कर उस दास का दाहिना कान ही उड़ा दिया. 51 "बस! बहुत हुआ"
प्रभु येशु इस पर बोले, और उन्होंने उस दास के कान का स्पर्श कर उसे पहले
जैसा कर दिया. 52 तब प्रभु येशु ने प्रधान पुरोहितों, मंदिर के पहरुओं तथा
वहां उपस्थित पुरनियों को संबोधित करते हुए कहा, "तलवारें और लाठियां
लेकर क्या आप किसी राजद्रोही को पकड़ने आए हैं? 53 आपने मुझे तब तो
नहीं पकड़ा जब मैं मंदिर आंगन में प्रतिदिन आपके साथ हुआ करता था! यह
इसलिये कि यह क्षण आपका है—अंधकार के हाकिम का." 54 वे प्रभु येशु को
पकड़कर महापुरोहित के घर पर ले गए. पेतरॉस दूर ही दूर से उनके पीछे-पीछे
चलते रहे. 55 जब लोग आंगन में आग जलाए हुए बैठे थे, पेतरॉस भी उनके
साथ बैठ गए. 56 एक सेविका ने पेतरॉस को आग की रोशनी में देखा और
उनको एकटक देखते हुए कहा, "यह व्यक्ति भी उसके साथ था!" 57 पेतरॉस
ने नकारते हुए कहा, "नहीं! हे स्त्री, मैं उसे नहीं जानता!" 58 कुछ समय बाद
किसी अन्य ने उन्हें देखकर कहा, "तुम भी तो उनमें से एक हो!" "नहीं भाई,
नहीं!" पेतरॉस ने उत्तर दिया. 59 लगभग एक घंटे बाद एक अन्य व्यक्ति ने
बल देते हुए कहा, "निःसंदेह यह व्यक्ति भी उसके साथ था क्योंकि यह भी
गलीलवासी है." 60 पेतरॉस ने उत्तर दिया, "महोदय, मेरी समझ में नहीं आ
रहा कि आप क्या कह रहे हैं!" जब वह यह कह ही रहे थे कि एक मुर्ग ने बांग
दी. 61 उसी समय प्रभु ने मुड़कर पेतरॉस की ओर दृष्टि की और पेतरॉस को प्रभु
की पहले कही हुई बात याद आ गई: "इसके पहले कि मुर्ग बांग दे, तुम आज
तीन बार मुझे नकार चुके होगे." 62 पेतरॉस बाहर चले गए और फूट-फूटकर
रोने लगे. 63 जिन्होंने प्रभु येशु को पकड़ा था, वे उनको ठट्ठों में उड़ाते हुए उन
पर वार करते जा रहे थे. 64 उन्होंने प्रभु येशु की आंखों पर पट्टी बांधी और
उनसे पूछने लगे, "भविष्यवाणी कर, किसने वार किया है तुझ पर?" 65 इसके
अतिरिक्त वे उनकी निंदा करते हुए उनके लिए अनेक अपमानजनक शब्द भी
कहे जा रहे थे. 66 पौ फटने पर पुरनिये लोगों ने प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों
की एक सभा बुलाई और प्रभु येशु को महासभा में ले गए. 67 उन्होंने प्रभु येशु
से प्रश्न किया. "यदि तुम ही मसीह हो तो हमें बता दो." प्रभु येशु ने उत्तर दिया,
"यदि मैं आपको यह बताऊंगा तो भी आप इसका विश्वास नहीं करेंगे और
68 यदि मैं आपसे कोई प्रश्न करूं तो आप उसका उत्तर ही न देंगे; 69 किंतु
अब इसके बाद मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दायीं ओर बैठाया

जाएगा.” 70 उन्होंने प्रश्न किया, “तो क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?” प्रभु येशु
ने उत्तर दिया, “जी हां, मैं हूं.” 71 यह सुन वे कहने लगे, “अब हमें गवाहों
की क्या ज़रूरत है? स्वयं हमने यह इसके मुख से सुन लिया है.”

23 इस पर सारी सभा उठ खड़ी हुई और वे प्रभु येशु को राज्यपाल पिलातॉस
के पास ले गए. 2 पिलातॉस के सामने वे यह कहते हुए प्रभु येशु पर दोष
लगाने लगे, “हमने यह पाया है कि यह व्यक्ति हमारे राष्ट्र को भरमा रहा है. यह
कयसर को कर देने का विरोध करता है तथा यह दावा करता है कि वह स्वयं ही
मसीह, राजा है.” 3 इसलिये पिलातॉस ने प्रभु येशु से प्रश्न किया, “क्या तुम
यहूदियों के राजा हो?” “सच वही है, जो आपने कहा है.” प्रभु येशु ने उत्तर
दिया. 4 इस पर पिलातॉस ने प्रधान पुरोहितों और भीड़ को संबोधित करते हुए
घोषणा की, “मुझे इस व्यक्ति में ऐसा कोई दोष नहीं मिला कि इस पर मुकद्दमा
चलाया जाए.” 5 किंतु वे दृढ़तापूर्वक कहते रहे, “यह सारे यहूदिया प्रदेश में
लोगों को अपनी शिक्षाओं द्वारा भड़का रहा है. यह सब इसने गलील प्रदेश में
प्रारंभ किया और अब यहां भी आ पहुंचा है.” 6 यह सुनते ही पिलातॉस ने प्रश्न
किया, “क्या यह व्यक्ति गलीलवासी है?” 7 यह मालूम होने पर कि प्रभु येशु
हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के हैं, उसने उन्हें हेरोदेस के पास भेज दिया, जो इस
समय येरूशलेम नगर में ही था. 8 प्रभु येशु को देखकर हेरोदेस अत्यंत प्रसन्न
हुआ क्योंकि बहुत दिनों से उसे प्रभु येशु को देखने की इच्छा थी. उसने प्रभु
येशु के विषय में बहुत कुछ सुन रखा था. उसे आशा थी कि वह प्रभु येशु द्वारा
किया गया कोई चमत्कार देख सकेगा. 9 उसने प्रभु येशु से अनेक प्रश्न किए
किंतु प्रभु येशु ने कोई भी उत्तर न दिया. 10 प्रधान पुरोहित और शास्त्री वहीं खड़े
हुए थे और पूरे ज़ोर शोर से प्रभु येशु पर दोष लगा रहे थे. 11 हेरोदेस और उसके
सैनिकों ने अपमान करके प्रभु येशु का मज़ाक उड़ाया और उन पर भड़कीला
वस्त्र डालकर वापस पिलातॉस के पास भेज दिया. 12 उसी दिन से हेरोदेस और
पिलातॉस में मित्रता हो गई—इसके पहले वे एक दूसरे के शत्रु थे. 13 पिलातॉस
ने प्रधान पुरोहितों, नायकों और लोगों को पास बुलाया 14 और उनसे कहा,
“तुम इस व्यक्ति को यह कहते हुए मेरे पास लाए हो कि यह लोगों को विद्रोह के
लिए उकसा रहा है. तुम्हारी ही उपस्थिति में मैंने उससे पूछताछ की और मुझे
उसमें तुम्हारे द्वारा लगाए आरोप के लिए कोई भी आधार नहीं मिला—न ही
हेरोदेस को उसमें कोई दोष मिला है. 15 उसने उसे हमारे पास ही भेज दिया है.
तुम देख ही रहे हो कि उसने मृत्यु दंड के योग्य कोई अपराध नहीं किया है. 16
इसलिये मैं उसे कोड़े लगवाकर छोड़ देता हूं.” [17 उत्सव के अवसर पर एक
बंदी को मुक्त कर देने की प्रथा थी.] 18 भीड़ एक शब्द में चिल्ला उठी, “उसे
मृत्यु दंड दीजिए और हमारे लिए बार-अब्बास को मुक्त कर दीजिए!” 19
(बार-अब्बास को नगर में विद्रोह भड़काने और हत्या के आरोप में बंदी बनाया
गया था.) 20 प्रभु येशु को मुक्त करने की इच्छा से पिलातॉस ने उनसे एक
बार फिर विनती की, 21 किंतु वे चिल्लाते रहे, “क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर
चढ़ाओ!” 22 पिलातॉस ने तीसरी बार उनसे प्रश्न किया, “क्यों? क्या है उसका
अपराध? मुझे तो उसमें मृत्यु दंड देने योग्य कोई दोष नहीं मिला. मैं उसे कोड़े
लगवाकर छोड़ देता हूं.” 23 किंतु वे हठ करते हुए ऊंचे शब्द में चिल्लाते रहे,
“क्रूस पर चढ़ाओ उसे!” तब हारकर उसे उनके आगे झुकना ही पड़ा. 24
पिलातॉस ने अनुमति दे दी कि उनकी मांग पूरी की जाए 25 और उसने उस
व्यक्ति को मुक्त कर दिया, जिसे विद्रोह तथा हत्या के अपराधों में बंदी बनाया
गया था, जिसे छोड़ देने की उन्होंने मांग की थी और उसने प्रभु येशु को भीड़
की इच्छा अनुसार उन्हें ही सौंप दिया. 26 जब सैनिक प्रभु येशु को लेकर जा
रहे थे, उन्होंने सायरीनवासी शिमओन को पकड़ा, जो अपने गांव से आ रहा
था. उन्होंने प्रभु येशु के लिए निर्धारित क्रूस उस पर लाद दिया कि वह उसे
लेकर प्रभु येशु के पीछे-पीछे जाए. 27 बड़ी संख्या में लोग उनके पीछे चल रहे
थे. उनमें अनेक स्त्रियां भी थी, जो प्रभु येशु के लिए विलाप कर रही थी. 28
मुड़कर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “येरूशलेम की पुत्रियो! मेरे लिए रोना छोड़कर
स्वयं अपने लिए तथा अपनी संतान के लिए रोओ. 29 क्योंकि वे दिन आ रहे हैं
जब लोग कहेंगे, ‘धन्य हैं वे स्त्रियां, जो बांझ हैं, वे गर्भ, जिन्होंने संतान पैदा
नहीं किए और वे स्तन, जिन्होंने दूध नहीं पिलाया!’ 30 “‘तब वे पर्वतों से
कहेंगे, “हम पर आ गिरो!” और पहाड़ियों से कहेंगे, “हमें ढांप लो!”’ 31
क्योंकि जब वे एक हरे पेड़ के साथ इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं तब
क्या होगी सूखे पेड़ की दशा?” 32 राजद्रोह के अपराधी दो व्यक्ति भी प्रभु
येशु के साथ मृत्यु दंड के लिए ले जाए जा रहे थे. 33 जब वे कपाल नामक
स्थल पर पहुंचे उन्होंने प्रभु येशु तथा उन दोनों राजद्रोहियों को भी क्रूसित कर
दिया—एक को प्रभु येशु की दायीं ओर दूसरे को उनकी बायीं ओर. 34 प्रभु
येशु ने प्रार्थना की, “पिता, इनको क्षमा कर दीजिए क्योंकि इन्हें यह पता ही
नहीं कि ये क्या कर रहे हैं.” उन्होंने पासा फेंककर प्रभु येशु के वस्त्र आपस में
बांट लिए. 35 भीड़ खड़ी हुई यह सब देख रही थी. यहूदी राजा यह कहते हुए
प्रभु येशु का ठट्ठा कर रहे थे, “इसने अन्य लोगों की रक्षा की है. यदि यह
परमेश्वर का मसीह, उनका चुना हुआ है, तो अब अपनी रक्षा स्वयं कर ले.”
36 सैनिक भी उनका ठट्ठा किये. वे प्रभु येशु के पास आकर उन्हें घटिया दाखरस
प्रस्तुत करके कहे, 37 “यदि यहूदियों के राजा हो तो स्वयं को बचा लो.” 38
क्रूस पर उनके सिर के ऊपर सूचना पत्र के रूप में यह लिखा था: यही वह
यहूदियों का राजा है. 39 वहां लटकाए गए राजद्रोहियों में से एक ने प्रभु येशु पर
अपशब्दों की बौछार करते हुए कहा: “अरे! क्या तुम मसीह नहीं हो? स्वयं
अपने आपको बचाओ और हमको भी!” 40 किंतु दूसरे राजद्रोही ने डपटते हुए
उससे कहा, “क्या तुझे परमेश्वर का थोड़ा भी भय नहीं है? तुझे भी तो वही
दंड दिया जा रहा है! 41 हमारे लिए तो यह दंड सही ही है क्योंकि हमें वही
मिल रहा है, जो हमारे बुरे कामों के लिए सही है किंतु इन्होंने तो कुछ भी
गलत नहीं किया.” 42 तब प्रभु येशु की ओर देखकर उसने उनसे विनती की,
“आदरणीय येशु! अपने राज्य में मुझ पर दया कीजिएगा.” 43 प्रभु येशु ने उसे
आश्वासन दिया, “मैं तुम पर यह सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: आज ही तुम मेरे
साथ स्वर्गलोक में होगे.” 44 यह दिन का मध्याह्न था. सारे क्षेत्र पर अंधकार छा
गया और यह तीन बजे तक छाया रहा. 45 सूर्य अंधियारा हो गया, मंदिर का
पर्दा फटकर दो भागों में बांट दिया गया. 46 प्रभु येशु ने ऊंचे शब्द में पुकारते
हुए कहा, “पिता! मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में सौंपता हूं.” यह कहते हुए
उन्होंने प्राण त्याग दिए. 47 वह शताधिपति, जो यह सब देख रहा था, यह कहते
हुए परमेश्वर की वंदना करने लगा, “सचमुच यह व्यक्ति निर्दोष था.” 48 इस
घटना को देखने के लिए इकट्ठा भीड़ यह सब देख छाती पीटकर विलाप करती
हुई घर लौट गयी. 49 प्रभु येशु के परिचित और गलील प्रदेश से प्रभु येशु के
साथ आई स्त्रियां कुछ दूर खड़ी हुई ये सब देख रही थी. 50 योसेफ़ नामक एक
व्यक्ति थे. वह महासभा के सदस्य, सज्जन तथा धर्मी थे. 51 वह न तो यहूदी
अगुओं की योजना से और न ही उसके कामों से सहमत थे. योसेफ़ यहूदियों के
एक नगर अरिमथिया के निवासी थे और वह परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर
रहे थे. 52 योसेफ़ ने पिलातॉस के पास जाकर प्रभु येशु का शरीर के लिए विनती
की. 53 उन्होंने शरीर को क्रूस से उतारकर मलमल के वस्त्र में लपेटा और चट्टान
में खोदकर बनाई गई एक कब्र की गुफ़ा में रख दिया. इस कब्र में अब तक कोई
भी शरीर रखा नहीं गया था. 54 यह शब्बाथ की तैयारी का दिन था. शब्बाथ
प्रारंभ होने पर ही था. 55 गलील प्रदेश से आई हुई स्त्रियां भी उनके साथ वहां
गईं. उन्होंने उस कब्र को देखा तथा यह भी कि शरीर को वहां कैसे रखा गया

था. 56 तब वे सब घर लौट गए और उन्होंने अंत्येष्टि के लिए उबटन-लेप तैयार
किए. व्यवस्था के अनुसार उन्होंने शब्बाथ पर विश्राम किया.

24 सप्ताह के प्रथम दिन पौ फटते ही वे तैयार किए गए उबटन-लेपों को
लेकर कंदरा-क़ब्र पर आईं. 2 उन्होंने क़ब्र के द्वार का पत्थर क़ब्र से
लुढ़का हुआ पाया 3 किंतु जब उन्होंने क़ब्र की गुफ़ा में प्रवेश किया, वहां प्रभु
येशु का शरीर नहीं था. 4 जब वे इस स्थिति का निरीक्षण कर ही रही थीं,
एकाएक उजले वस्त्रों में दो व्यक्ति उनके पास आ खड़े हुए. 5 भय में डरी हुई
स्त्रियों की दृष्टि भूमि की ओर ही थी कि उन्होंने स्त्रियों से प्रश्न किया, “आप लोग
एक जीवित को मरे हुओं के मध्य क्यों खोज रही हैं? 6 वह यहां नहीं हैं—वह
दोबारा जीवित हो गए हैं. याद कीजिए जब वह आपके साथ गलील प्रदेश में थे,
उन्होंने आपसे क्या कहा था: 7 ‘यह अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र कुकर्मियों
के हाथों में सौंपा जाए, क्रूस पर चढ़ाया जाए और तीसरे दिन मरे हुओं में से
जीवित हो जाए.’” 8 अब उन्हें प्रभु येशु की बातों की याद आई. 9 वे सभी
स्त्रियां क़ब्र की गुफ़ा से लौट गईं और सारा हाल ग्यारह शिष्यों तथा बाकियों को
सुनाया. 10 जिन स्त्रियों ने प्रेरितों को यह हाल सुनाया, वे थीं: मगदालावासी
मरियम, योहान्ना तथा याकोब की माता मरियम तथा उनके अलावा अन्य
स्त्रियां. 11 प्रेरितों को यह समाचार बेमतलब लगा. उन्होंने इसका विश्वास नहीं
किया. 12 किंतु पेतरॉस उठे और क़ब्र की गुफ़ा की ओर दौड़ पड़े. उन्होंने
झुककर भीतर देखा और वहां उन्हें वे पट्टियां, जो शव पर लपेटी गई थी, अलग
रखी हुई दिखीं. इस घटना पर अचंभित पेतरॉस घर लौट गए. 13 उसी दिन दो
शिष्य इम्माउस नामक गांव की ओर जा रहे थे, जो येरूशलेम नगर से लगभग
ग्यारह किलोमीटर की दूरी पर था. 14 सारा घटनाक्रम ही उनकी आपस की
बातों का विषय था. 15 जब वे विचार-विमर्श और बातचीत में मगन ही थे,
स्वयं प्रभु येशु उनके पास पहुंचकर उनके साथ साथ चलने लगे. 16 किंतु उनकी
आंखें ऐसी बंद कर दी गई थी कि वे प्रभु येशु को पहचानने न पाएं. 17 प्रभु येशु
ने उनसे प्रश्न किया, “आप लोग किस विषय पर बातचीत कर रहे हैं?” वे
रुक गए. उनके मुख पर उदासी छायी हुई थी. 18 उनमें से एक ने, जिसका
नाम क्लोपस था, इसके उत्तर में उनसे यह प्रश्न किया, “आप येरूशलेम में
आए अकेले ऐसे परदेशी हैं कि आपको यह मालूम नहीं कि यहां इन दिनों में
क्या-क्या हुआ है!” 19 “क्या-क्या हुआ है?” प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया.
उन्होंने उत्तर दिया, “नाज़रेथवासी प्रभु येशु से संबंधित घटनाएं—प्रभु येशु, जो
वास्तव में परमेश्वर और सभी जनसाधारण की नज़र में और काम में सामर्थ्यी
भविष्यवक्ता थे. 20 उन्हें प्रधान पुरोहितों और हमारे सरदारों ने मृत्यु दंड दिया
और क्रूस पर चढ़ा दिया. 21 हमारी आशा यह थी कि प्रभु येशु इस्राएल राष्ट्र को
स्वतंत्र करवा देंगे. यह आज से तीन दिन पूर्व की घटना है. 22 किंतु हमारे
समुदाय की कुछ स्त्रियों ने हमें आश्चर्य में डाल दिया है. पौ फटते ही वे क़ब्र पर
गई थीं 23 किंतु उन्हें वहां प्रभु येशु का शव नहीं मिला. उन्होंने हमें बताया कि
उन्होंने वहां स्वर्गदूतों को देखा है; जिन्होंने उन्हें सूचना दी कि प्रभु येशु जीवित
हैं. 24 हमारे कुछ साथी भी क़ब्र पर गए थे और उन्होंने ठीक वैसा ही पाया
जैसा स्त्रियों ने बताया था किंतु प्रभु येशु को उन्होंने नहीं देखा.” 25 तब प्रभु येशु
ने उनसे कहा, “ओ मूर्खो! भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में
मंदबुद्धियो! 26 क्या मसीह के लिए यह ज़रूरी न था कि वह सभी यातनाएं सह
कर अपनी महिमा में प्रवेश करे?” 27 तब प्रभु येशु ने पवित्र शास्त्र में स्वयं से
संबंधित उन सभी लिखी बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया—मोशेह से प्रारंभ कर
सभी भविष्यद्वक्ताओं तक. 28 तब वे उस गांव के पास पहुंचे, जहां उनको जाना
था. प्रभु येशु के व्यवहार से ऐसा भास हुआ मानो वह आगे बढ़ना चाह रहे हों
29 किंतु उन शिष्यों ने विनती की, “हमारे साथ ही ठहर जाइए क्योंकि दिन
ढल चला है और शाम होने को है.” इसलिये प्रभु येशु उनके साथ भीतर चले
गए. 30 जब वे सब भोजन के लिए बैठे, प्रभु येशु ने रोटी लेकर आशीर्वाद के
साथ उसे तोड़ा और उन्हें दे दिया. 31 तब उनकी आंखों को देखने लायक बना
दिया गया और वे प्रभु येशु को पहचान गए किंतु उसी क्षण प्रभु येशु उनकी
आंखों से ओझल हो गए. 32 वे आपस में विचार करने लगे, “मार्ग में जब वह
हमसे बातचीत कर रहे थे और पवित्र शास्त्र की व्याख्या कर रहे थे तो हमारे मन
में उत्तेजना हुई थी न!” 33 तत्काल ही वे उठे और येरूशलेम को लौट गए. वहां
उन्होंने ग्यारह शिष्यों और अन्यों को, जो वहां इकट्ठा थे, यह कहते पाया, 34
“हां, यह सच है! प्रभु मरे हुओं में से दोबारा जीवित हो गए हैं और शिमओन को
दिखाई भी दिए हैं.” 35 तब इन दो शिष्यों ने भी मार्ग में हुई घटना का ब्यौरा
सुनाया कि किस प्रकार भोजन करते समय वे प्रभु येशु को पहचानने में समर्थ हो
गए थे. 36 जब वे इस बारे में बातें कर ही रहे थे, स्वयं प्रभु येशु उनके बीच आ
खड़े हुए और उनसे बोले, “तुममें शांति बनी रहे.” 37 वे अचंभित और भयभीत
हो गए और उन्हें लगा कि वे किसी दुष्टात्मा को देख रहे हैं. 38 प्रभु येशु ने उनसे
कहा, “तुम घबरा क्यों हो रहे हो? क्यों उठ रहे हैं तुम्हारे मन में ये संदेह? 39
देखो, ये मेरे हाथ और पांव. यह मैं ही हूं. मुझे स्पर्श करके देख लो क्योंकि
दुष्टात्मा के हाड़-मांस नहीं होता, जैसा तुम देख रहे हो कि मेरे हैं.” 40 यह
कहकर उन्होंने उन्हें अपने हाथ और पांव दिखाए 41 और जब वे आश्चर्य और
आनंद की स्थिति में विश्वास नहीं कर पा रहे थे, प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया,
“क्या यहां कुछ भोजन है?” 42 उन्होंने प्रभु येशु को भूनी हुई मछली का एक
टुकड़ा दिया 43 और प्रभु येशु ने उसे लेकर उनके सामने खाया. 44 तब प्रभु
येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने तुम लोगों से यही कहा था: वह
सब पूरा होना ज़रूरी है, जो मेरे विषय में मोशेह की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं के
लेख तथा भजन की पुस्तकों में लिखा गया है.” 45 तब प्रभु येशु ने उनकी
समझ खोल दी कि वे पवित्र शास्त्र को समझ सकें 46 और उनसे कहा, “यह
लिखा है कि मसीह यातनाएं सहे और तीसरे दिन मरे हुओं में से दोबारा जीवित
किया जाए, 47 और येरूशलेम से प्रारंभ कर सभी राष्ट्रों में उसके नाम में पाप
क्षमा के लिए पश्चाताप की घोषणा की जाए. 48 तुम सभी इन घटनाओं के
गवाह हो. 49 जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, उसे मैं तुम्हारे लिए भेजूंगा
किंतु आवश्यक यह है कि तुम येरूशलेम में उस समय तक ठहरे रहो, जब तक
स्वर्ग से भेजी गई सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ.” 50 तब प्रभु येशु उन्हें
बैथनियाह नामक गांव तक ले गए और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी. 51
जब वह उन्हें आशीष दे ही रहे थे वह उनसे विदा हो गए और स्वर्ग में उठा लिये
गये. 52 तब उन्होंने येशु की आराधना की और बहुत ही आनंद में येरूशलेम
लौट गए. 53 वे मंदिर में नियमित रूप से परमेश्वर की स्तुति करते रहते थे.

यूहन्ना

1 आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था.
2 यही वचन आदि में परमेश्वर के साथ था. 3 सारी सृष्टि उनके द्वारा उत्पन्न
हुई. सारी सृष्टि में कुछ भी उनके बिना उत्पन्न नहीं हुआ. 4 जीवन उन्हीं में था
और वह जीवन मानव जाति की ज्योति था. 5 वह ज्योति अंधकार में चमकती
रही. अंधकार उस पर प्रबल न हो सका. 6 परमेश्वर ने योहन नामक एक व्यक्ति
को भेजा 7 कि वह ज्योति को देखें और उसके गवाह बनें कि लोग उनके
माध्यम से ज्योति में विश्वास करें. 8 वह स्वयं ज्योति नहीं थे किंतु ज्योति की
गवाही देने आए थे. 9 वह सच्ची ज्योति, जो हर एक व्यक्ति को प्रकाशित
करती है, संसार में आने पर थी. 10 वह संसार में थे और संसार उन्हीं के द्वारा
बनाया गया फिर भी संसार ने उन्हें न जाना. 11 वह अपनी सृष्टि में आए किंतु
उनके अपनों ने ही उन्हें ग्रहण नहीं किया. 12 परंतु जितनों ने उन्हें ग्रहण
किया अर्थात् उनके नाम में विश्वास किया, उन सबको उन्होंने परमेश्वर की
संतान होने का अधिकार दिया; 13 जो न तो लहू से, न शारीरिक इच्छा से
और न मानवीय इच्छा से, परंतु परमेश्वर से पैदा हुए हैं. 14 वचन ने शरीर
धारण कर हमारे मध्य तंबू के समान वास किया और हमने उनकी महिमा को
अपना लिया—ऐसी महिमा को, जो पिता के एकलौते पुत्र की होती है—अनुग्रह
और सच्चाई से परिपूर्ण. 15 उन्हें देखकर योहन ने घोषणा की, “यह वही हैं
जिनके विषय में मैंने कहा था, ‘वह, जो मेरे बाद आ रहे हैं, वास्तव में मुझसे
श्रेष्ठ हैं क्योंकि वह मुझसे पहले थे.’ ” 16 उनकी परिपूर्णता के कारण हम
सबने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया. 17 व्यवस्था मोशेह के द्वारा दी गयी थी,
किंतु अनुग्रह और सच्चाई मसीह येशु द्वारा आए. 18 परमेश्वर को कभी किसी
ने नहीं देखा, केवल परमेश्वर-पुत्र के अलावा; जो पिता से हैं; उन्हीं ने हमें
परमेश्वर से अवगत कराया. 19 जब यहूदी अगुओं ने येरूशलेम से पुरोहितों
और लेवियों को योहन से यह पूछने भेजा, “तुम कौन हो?” 20 तो योहन
बिना झिझक स्वीकार किया. उसकी गवाही थी, “मैं मसीह नहीं हूं.” 21 तब
उन्होंने योहन से दोबारा पूछा, “तो क्या तुम एलियाह हो?” योहन ने उत्तर
दिया, “नहीं.” तब उन्होंने पूछा, “क्या तुम वह भविष्यवक्ता हो?” योहन ने
उत्तर दिया, “नहीं.” 22 इस पर उन्होंने पूछा, “तो हमें बताओ कि तुम कौन
हो, तुम अपने विषय में क्या कहते हो कि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दे
सकें?” 23 इस पर योहन ने भविष्यवक्ता यशायाह के लेख के अनुसार उत्तर
दिया, “मैं उसकी आवाज हूं जो बंजर भूमि में पुकार-पुकारकर कह रही है,
‘प्रभु के लिए मार्ग सीधा करो.’ ” 24 ये लोग फ़रीसियों की ओर से भेजे गए
थे. 25 इसके बाद उन्होंने योहन से प्रश्न किया, “जब तुम न तो मसीह हो, न
भविष्यवक्ता एलियाह और न वह भविष्यद्वक्ता, तो तुम बपतिस्मा क्यों देते
हो?” 26 योहन ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तो जल में बपतिस्मा देता हूं परंतु तुम्हारे
मध्य एक ऐसे हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते. 27 यह वही हैं, जो मेरे बाद आ रहे हैं,
मैं जिनकी जूती का बंध खोलने के योग्य भी नहीं हूं.” 28 ये सब बैथनियाह
गांव में हुआ, जो यरदन नदी के पार था जिसमें योहन बपतिस्मा दिया करते थे.
29 अगले दिन योहन ने मसीह येशु को अपनी ओर आते हुए देखकर भीड़ से
कहा, “वह देखो! परमेश्वर का मेमना, जो संसार के पाप का उठानेवाला है! 30
यह वही हैं, जिनके विषय में मैंने कहा था, ‘मेरे बाद वह आ रहे हैं, जो मुझसे
श्रेष्ठ हैं क्योंकि वह मुझसे पहले से मौजूद हैं.’ 31 मैं भी उन्हें नहीं जानता था, मैं
जल में बपतिस्मा देता हुआ इसलिये आया कि वह इस्राएल पर प्रकट हो जाएं.”
32 इसके अतिरिक्त योहन ने यह गवाही भी दी, “मैंने स्वर्ग से आत्मा को
कबूतर के समान उतरते और मसीह येशु पर ठहरते हुए देखा. 33 मैं उन्हें नहीं
जानता था किंतु परमेश्वर, जिन्होंने मुझे जल में बपतिस्मा देने के लिए भेजा,
उन्हीं ने मुझे बताया, ‘जिस पर तुम आत्मा को उतरते और ठहरते हुए देखोगे,
वही पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देंगे.’ 34 स्वयं मैंने यह देखा और मैं इसका
गवाह हूं कि यही परमेश्वर का पुत्र हैं.” 35 अगले दिन जब योहन अपने दो
शिष्यों के साथ खड़े हुए थे, 36 उन्होंने मसीह येशु को जाते हुए देखकर कहा,
“वह देखो! परमेश्वर का मेमना!” 37 यह सुनकर दोनों शिष्य मसीह येशु की
ओर बढ़ने लगे. 38 मसीह येशु ने उन्हें अपने पीछे आते देख उनसे पूछा, “तुम
क्या चाहते हो?” उन्होंने कहा, “गुरुवर, आप कहां रहते हैं?” 39 मसीह येशु ने
उनसे कहा, “आओ और देख लो.” इसलिये उन्होंने जाकर मसीह येशु का
घर देखा और उस दिन उन्हीं के साथ रहे. यह दिन का लगभग दसवां घंटा
था. 40 योहन की गवाही सुनकर मसीह येशु के पीछे आ रहे दो शिष्यों में
एक शिमओन पेतरॉस के भाई आन्द्रेयास थे. 41 उन्होंने सबसे पहले अपने
भाई शिमओन को खोजा और उन्हें सूचित किया, “हमें मसीह—परमेश्वर के
अभिषिक्त—मिल गए हैं.” 42 तब आन्द्रेयास उन्हें मसीह येशु के पास लाए.
मसीह येशु ने शिमओन की ओर देखकर कहा, “तुम योहन के पुत्र शिमओन
हो, तुम कैफ़स अर्थात् पेतरॉस कहलाओगे.” 43 अगले दिन गलील जाते
हुए मसीह येशु की भेंट फ़िलिप्पॉस से हुई. उन्होंने उनसे कहा, “मेरे पीछे हो
ले.” 44 आन्द्रेयास और शिमओन के समान फ़िलिप्पॉस भी बैथसैदा नगर के
निवासी थे. 45 फ़िलिप्पॉस ने नाथानाएल को खोज कर उनसे कहा, “जिनका
वर्णन व्यवस्था में मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हमें मिल गए
हैं—नाज़रेथ निवासी योसेफ़ के पुत्र येशु.” 46 यह सुन नाथानाएल ने तुरंत उनसे
पूछा, “क्या नाज़रेथ से कुछ भी उत्तम निकल सकता है?” “आकर स्वयं देख
लो,” फ़िलिप्पॉस ने उत्तर दिया. 47 मसीह येशु ने नाथानाएल को अपनी ओर
आते देख उनके विषय में कहा, “देखो! एक सच्चा इस्राएली है, जिसमें कोई
कपट नहीं है.” 48 नाथानाएल ने मसीह येशु से पूछा, “आप मुझे कैसे जानते
हैं?” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “इससे पूर्व कि फ़िलिप्पॉस ने तुम्हें बुलाया,
मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था.” 49 नाथानाएल कह उठे, “रब्बी,
आप परमेश्वर का पुत्र हैं! आप इस्राएल के राजा हैं!” 50 तब मसीह येशु ने उनसे
कहा, “क्या तुम विश्वास इसलिये करते हो कि मैंने तुमसे यह कहा कि मैंने तुम्हें
अंजीर के पेड़ के नीचे देखा? तुम इससे भी अधिक बड़े-बड़े काम देखोगे.” 51
तब उन्होंने यह भी कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: तुम
स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के लिए नीचे
आते और ऊपर जाते हुए देखोगे.”

2 तीसरे दिन गलील प्रदेश के काना नगर में एक विवाहोत्सव था. मसीह
येशु की माता वहां उपस्थित थी. 2 मसीह येशु और उनके शिष्य भी वहां
आमंत्रित थे. 3 जब वहां दाखरस कम पड़ने लगा तो मसीह येशु की माता ने
उनसे कहा, “उनका दाखरस समाप्त हो गया है.” 4 इस पर मसीह येशु ने
उनसे कहा, “हे स्त्री, इससे आपका और मेरा क्या संबंध? मेरा समय अभी नहीं
आया है.” 5 उनकी माता ने सेवकों से कहा, “जो कुछ वह तुमसे कहें, वही
करो.” 6 वहां यहूदी परंपरा के अनुसार शुद्ध करने के लिए जल के छः पत्थर के
बर्तन रखे हुए थे. हर एक में लगभग सौ सवा सौ लीटर जल समाता था. 7
मसीह येशु ने सेवकों से कहा, “बर्तनों को जल से भर दो.” उन्होंने उन्हें मुंह
तक भर दिया. 8 इसके बाद मसीह येशु ने उनसे कहा, “अब इसमें से थोड़ा
निकालकर समारोह के संचालक के पास ले जाओ.” उन्होंने वैसा ही किया. 9
जब समारोह के प्रधान ने उस जल को चखा—जो वास्तव में दाखरस में बदल
गया था और उसे मालूम नहीं था कि वह कहां से आया था, किंतु जिन्होंने उसे
निकाला था, वे जानते थे—तब समारोह के प्रधान ने दुल्हे को बुलवाया 10 और
उससे कहा, “हर एक व्यक्ति पहले उत्तम दाखरस परोसता है और जब लोग
पीकर तृप्त हो जाते हैं, तब सस्ता, परंतु तुमने तो उत्तम दाखरस अब तक रख

छोड़ा है!” 11 यह मसीह येशु के अद्भुत चिह्नों के करने की शुरुआत थी, जो
गलील प्रदेश के काना नगर में हुआ, जिसके द्वारा उन्होंने अपना प्रताप प्रकट
किया तथा उनके शिष्यों ने उनमें विश्वास किया. 12 इसके बाद मसीह येशु,
उनकी माता, उनके भाई तथा उनके शिष्य कुछ दिनों के लिए कफ़रनहूम नगर
चले गए. 13 जब यहूदियों का फ़सह उत्सव पास आया तो मसीह येशु अपने
शिष्यों के साथ येरूशलेम गए. 14 उन्होंने मंदिर में बैल, भेड़ और कबूतर बेचने
वालों तथा साहूकारों को व्यापार करते हुए पाया. 15 इसलिये उन्होंने रस्सियों
का एक कोड़ा बनाया और उन सबको बैलों और भेड़ों सहित मंदिर से बाहर
निकाल दिया और साहूकारों के सिक्के बिखेर दिए, उनकी चौकियों को उलट
दिया 16 और कबूतर बेचने वालों से कहा, “इन्हें यहां से ले जाओ. मेरे पिता के
भवन को व्यापारिक केंद्र मत बनाओ.” 17 यह सुन शिष्यों को पवित्र शास्त्र का
यह लेख याद आया: “आपके भवन की धुन में जलते जलते मैं भस्म हुआ.”
18 तब यहूदी अगुओं ने मसीह येशु से कहा, “इन कामों पर अपना अधिकार
प्रमाणित करने के लिए तुम हमें क्या चिह्न दिखा सकते हो?” 19 मसीह येशु ने
उन्हें उत्तर दिया, “इस मंदिर को ढाह दो, इसे मैं तीन दिन में दोबारा खड़ा कर
दूंगा.” 20 इस पर यहूदी अगुओं ने कहा, “इस मंदिर के निर्माण में छियालीस
वर्ष लगे हैं, क्या तुम इसे तीन दिन में खड़ा कर सकते हो?” 21 परंतु मसीह येशु
यहां अपने शरीर रूपी मंदिर का वर्णन कर रहे थे. 22 इसलिये मरे हुओं में से जी
उठने के बाद शिष्यों को उनका यह कथन याद आया और उन्होंने पवित्र शास्त्र
और मसीह येशु द्वारा कहे गए वचन में विश्वास किया. 23 फ़सह उत्सव के
समय जब मसीह येशु येरूशलेम में थे, तो उनके द्वारा किए गए अद्भुत चिन्हों को
देखकर अनेक लोगों ने उनमें विश्वास किया, 24 किंतु मसीह येशु उनके प्रति
आश्वस्त नहीं थे क्योंकि वह मनुष्य के स्वभाव से परिचित थे. 25 उन्हें मनुष्य
के विषय में मनुष्य की गवाही की ज़रूरत नहीं थी. वह जानते थे कि मनुष्य
क्या है.

3 निकोदेमॉस नामक एक फ़रीसी, जो यहूदियों के प्रधानों में से एक थे, 2
रात के समय मसीह येशु के पास आए और उनसे कहा, “रब्बी, हम जानते
हैं कि आप परमेश्वर की ओर से भेजे गए गुरु हैं क्योंकि ये अद्भुत काम, जो आप
करते हैं, कोई भी नहीं कर सकता यदि परमेश्वर उसके साथ न हों.” 3 इस पर
मसीह येशु ने कहा, “मैं आप पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: बिना
नया जन्म प्राप्त किए परमेश्वर के राज्य का अनुभव असंभव है.” 4 निकोदेमॉस
ने उनसे पूछा, “वृद्ध मनुष्य का दोबारा जन्म लेना कैसे संभव है, क्या वह नया
जन्म लेने के लिए पुनः अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करे?” 5 मसीह येशु ने
स्पष्ट किया, “मैं आप पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: जब तक किसी
का जन्म जल और आत्मा से नहीं होता, परमेश्वर के राज्य में उसका प्रवेश
असंभव है, 6 क्योंकि मानव शरीर में जन्म मात्र शारीरिक जन्म है, जबकि
आत्मा से जन्म नया जन्म है. 7 चकित न हों कि मैंने आपसे यह कहा कि
मनुष्य का नया जन्म होना ज़रूरी है. 8 जिस प्रकार वायु जिस ओर चाहती है,
उस ओर बहती है. आप उसकी ध्वनि तो सुनते हैं किंतु यह नहीं बता सकते कि
वह किस ओर से आती और किस ओर जाती है. आत्मा से पैदा व्यक्ति भी ऐसा
ही है.” 9 निकोदेमॉस ने पूछा, “यह सब कैसे संभव है?” 10 मसीह येशु ने
उत्तर दिया, “इस्राएल के शिक्षक,” होकर भी आप इन बातों को नहीं समझते!
11 मैं आप पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: हम वही कहते हैं, जो हम
जानते हैं और हम उसी की गवाही देते हैं, जिसे हमने देखा है, किंतु आप हमारी
गवाही ग्रहण नहीं करते. 12 जब मैं आपसे सांसारिक विषयों की बातें करता हूं,
आप मेरा विश्वास नहीं करते तो यदि मैं स्वर्गीय विषयों की बातें करूं तो
विश्वास कैसे करेंगे? 13 मनुष्य के पुत्र के अलावा और कोई स्वर्ग नहीं गया
क्योंकि वही पहले स्वर्ग से उतरा है. 14 जिस प्रकार मोशेह ने बंजर भूमि में सांप
को ऊंचा उठाया, उसी प्रकार ज़रूरी है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचा उठाया जाए.
15 कि हर एक मनुष्य उसमें विश्वास करे और अनंत जीवन प्राप्त करे. (aiōnios
g166) 16 परमेश्वर ने संसार से अपने अपार प्रेम के कारण अपना एकलौता पुत्र
बलिदान कर दिया कि हर एक ऐसा व्यक्ति, जो पुत्र में विश्वास करता है, उसका
विनाश न हो परंतु वह अनंत जीवन प्राप्त करे. (aiōnios g166) 17 क्योंकि
परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार पर दोष लगाने के लिए नहीं परंतु संसार के
उद्धार के लिए भेजा. 18 हर एक उस व्यक्ति पर, जो उनमें विश्वास करता है,
उस पर कभी दोष नहीं लगाया जाता; जो विश्वास नहीं करता वह दोषी घोषित
किया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र में विश्वास नहीं
किया. 19 अंतिम निर्णय का आधार यह है: ज्योति के संसार में आ जाने पर भी
मनुष्यों ने ज्योति की तुलना में अंधकार को प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे
थे. 20 कुकर्मों में लीन व्यक्ति ज्योति से घृणा करता और ज्योति में आने से
कतराता है कि कहीं उसके काम प्रकट न हो जाएं; 21 किंतु सच्चा व्यक्ति
ज्योति के पास आता है, जिससे यह प्रकट हो जाए कि उसके काम परमेश्वर की
ओर से किए गए काम हैं. 22 इसके बाद मसीह येशु और उनके शिष्य यहूदिया
प्रदेश में आए, जहां वे उनके साथ रहकर बपतिस्मा देते रहे. 23 योहन भी यरदन
नदी में शालीम नगर के पास एनोन नामक स्थान में बपतिस्मा देते थे क्योंकि
वहां जल बहुत मात्रा में था. 24 इस समय तक योहन बंदीगृह में नहीं डाले गए
थे. 25 एक यहूदी ने योहन के शिष्यों से जल द्वारा शुद्धीकरण की विधि के
विषय में स्पष्टीकरण चाहा. 26 शिष्यों ने योहन के पास जाकर उनसे कहा,
“रब्बी, देखिए, यरदन पार वह व्यक्ति, जो आपके साथ थे और आप जिनकी
गवाही देते रहे हैं, सब लोग उन्हीं के पास जा रहे हैं और वह उन्हें बपतिस्मा भी
दे रहे हैं.” 27 इस पर योहन ने कहा, “कोई भी तब तक कुछ प्राप्त नहीं कर
सकता, जब तक उसे स्वर्ग से न दिया जाए. 28 तुम स्वयं मेरे गवाह हो कि मैंने
कहा था, ‘मैं मसीह नहीं किंतु उनके लिए पहले भेजा गया दूत हूं’ 29 वर वही
है जिसके साथ वधू है किंतु वर के साथ उसका मित्र उसका शब्द सुन आनंद से
अत्यंत प्रफुल्लित होता है. यही है मेरा आनंद, जो अब पूरा हुआ है. 30 यह
निश्चित है कि वह बढ़ते जाएं और मैं घटता जाऊं.” 31 जिनका आगमन स्वर्ग
से हुआ है वही सबसे बड़ा हैं, जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का है और पृथ्वी ही से
संबंधित विषयों की बातें करता है. वह, जो परमेश्वर से आए हैं, वह सबसे ऊपर
हैं. 32 जो उन्होंने देखा और सुना है वह उसी की गवाही देते हैं, फिर भी कोई
उनकी गवाही ग्रहण नहीं करता. 33 जिन्होंने उनकी गवाही ग्रहण की है,
उन्होंने यह साबित किया है कि परमेश्वर सच्चा है. 34 वह, जिन्हें परमेश्वर ने
भेजा है परमेश्वर के वचनों का प्रचार करते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें बिना
किसी माप के आत्मा देते हैं. 35 पिता को पुत्र से प्रेम है और उन्होंने सब कुछ
उसके हाथ में सौंप दिया है. 36 वह, जो पुत्र में विश्वास करता है, अनंत काल
के जीवन में प्रवेश कर चुका है किंतु जो पुत्र को नहीं मानता है, वह अनंत
काल का जीवन प्राप्त नहीं करेगा परंतु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहेगा.
(aiōnios g166)

4 जब मसीह येशु को यह मालूम हुआ कि फ़रीसियों के मध्य उनके विषय में
चर्चा हो रही है कि वह योहन से अधिक शिष्य बनाते और बपतिस्मा देते हैं;
2 यद्यपि स्वयं मसीह येशु नहीं परंतु उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे, 3 तब वह
यहूदिया प्रदेश छोड़कर पुनः गलील प्रदेश को लौटे. 4 उन्हें शमरिया प्रदेश में से
होकर जाना पड़ा. 5 वह शमरिया प्रदेश के सूखार नामक नगर पहुंचे. यह नगर
उस भूमि के पास है, जो याकोब ने अपने पुत्र योसेफ़ को दी थी. 6 याकोब का
कुंआ भी वहीं था. यात्रा से थके मसीह येशु कुएं के पास बैठ गए. यह लगभग
दिन का बारह बजे का समय था. 7 उसी समय शमरियावासी एक स्त्री उस कुएं
से जल भरने आई. मसीह येशु ने उससे कहा, “मुझे पीने के लिए जल दो.”

8 उस समय मसीह येशु के शिष्य नगर में भोजन लेने गए हुए थे. 9 इस पर
आश्चर्य करते हुए उस शमरियावासी स्त्री ने मसीह येशु से पूछा, "आप यहूदी
होकर मुझ शमरियावासी से जल कैसे मांग रहे हैं?" (यहूदी शमरियावासियों से
किसी प्रकार का संबंध नहीं रखते थे.) 10 मसीह येशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम
परमेश्वर के वरदान को जानतीं और यह पहचानतीं कि वह कौन है, जो तुमसे
कह रहा है, 'मुझे पीने के लिए जल दो,' तो तुम उससे मांगतीं और वह तुम्हें
जीवन का जल देता." 11 स्त्री ने कहा, "किंतु श्रीमन, आपके पास तो जल
निकालने के लिए कोई बर्तन भी नहीं है और कुंआ बहुत गहरा है; जीवन का
जल आपके पास कहां से आया! 12 आप हमारे कुलपिता याकोब से बढ़कर तो
हैं नहीं, जिन्होंने हमें यह कुंआ दिया, जिसमें से स्वयं उन्होंने, उनकी संतान ने
और उनके पशुओं ने भी पिया." 13 मसीह येशु ने कहा, "कुएं का जल पीकर
हर एक व्यक्ति फिर प्यासा होगा. 14 किंतु जो व्यक्ति मेरा दिया हुआ जल
पिएगा वह आजीवन किसी भी प्रकार से प्यासा न होगा. और वह जल जो मैं
उसे दूंगा, उसमें से अनंत काल के जीवन का सोता बनकर फूट निकलेगा."
(aiōn g165, aiōnios g166) 15 यह सुनकर स्त्री ने उनसे कहा, "श्रीमन, आप
मुझे भी वह जल दीजिए कि मुझे न प्यास लगे और न ही मुझे यहां तक जल
भरने आते रहना पड़े." 16 मसीह येशु ने उससे कहा, "जाओ, अपने पति को
यहां लेकर आओ." 17 स्त्री ने उत्तर दिया, "मेरे पति नहीं है." मसीह येशु ने
उससे कहा, "तुमने सच कहा कि तुम्हारा पति नहीं है. 18 सच यह है कि पांच
पति पहले ही तुम्हारे साथ रह चुके हैं और अब भी जो तुम्हारे साथ रह रहा है,
तुम्हारा पति नहीं है." 19 यह सुन स्त्री ने उनसे कहा, "श्रीमन, ऐसा लगता है
कि आप भविष्यवक्ता हैं. 20 हमारे पूर्वज इस पर्वत पर आराधना करते थे किंतु
आप यहूदी लोग कहते हैं कि येरूशलेम ही वह स्थान है, जहां आराधना करना
सही है." 21 मसीह येशु ने उससे कहा, "मेरा विश्वास करो कि वह समय आ
रहा है जब तुम न तो इस पर्वत पर पिता की आराधना करोगे और न येरूशलेम
में. 22 तुम लोग तो उसकी आराधना करते हो जिसे तुम जानते नहीं. हम उनकी
आराधना करते हैं जिन्हें हम जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से ही है. 23
वह समय आ रहा है बल्कि आ ही गया है जब सच्चे भक्त पिता की आराधना
अपनी अंतरात्मा और सच्चाई में करेंगे क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भक्तों
की खोज में हैं. 24 परमेश्वर आत्मा हैं इसलिये आवश्यक है कि उनके भक्त
अपनी आत्मा और सच्चाई में उनकी आराधना करें." 25 स्त्री ने उनसे कहा,
"मैं जानती हूं कि मसीह, जिन्हें ख्रिस्त कहा जाता है, आ रहे हैं. जब वह आएंगे
तो सब कुछ साफ़ कर देंगे." 26 मसीह येशु ने उससे कहा, "जो तुमसे बातें कर
रहा है, वही तो मैं ही हूं." 27 तभी उनके शिष्य आ गए और मसीह येशु को
एक स्त्री से बातें करते देख दंग रह गए, फिर भी किसी ने उनसे यह पूछने का
साहस नहीं किया कि वह एक स्त्री से बातें क्यों कर रहे थे या उससे क्या जानना
चाहते थे. 28 अपना घड़ा वहीं छोड़ वह स्त्री नगर में जाकर लोगों को बताने
लगी, 29 "आओ, एक व्यक्ति को देखो, जिन्होंने मेरे जीवन की सारी बातें
सुना दी हैं. कहीं यही तो मसीह नहीं?" 30 तब नगरवासी मसीह येशु को देखने
वहां आने लगे. 31 इसी बीच शिष्यों ने मसीह येशु से विनती की, "रब्बी, कुछ
खा लीजिए." 32 मसीह येशु ने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा
भोजन है, जिसके विषय में तुम कुछ नहीं जानते." 33 इस पर शिष्य आपस में
पूछताछ करने लगे, "कहीं कोई गुरु के लिए भोजन तो नहीं लाया?" 34
मसीह येशु ने उनसे कहा, "अपने भेजनेवाले, की इच्छा पूरी करना तथा उनका
काम समाप्त करना ही मेरा भोजन है. 35 क्या तुम यह नहीं कहते कि कटनी में
चार महीने बचे हैं? किंतु मैं तुमसे कहता हूं कि खेतों पर दृष्टि डालो. वे कब से
कटनी के लिए पक चुके हैं. 36 इकट्ठा करनेवाला अपनी मज़दूरी प्राप्त कर
अनंत काल के जीवन के लिए फसल इकट्ठी कर रहा है कि किसान और इकट्ठा
करनेवाला दोनों मिलकर आनंद मनाएं. (aiōnios g166) 37 यहां यह कहावत
ठीक बैठती है: 'एक बोए दूसरा काटे.' 38 जिस उपज के लिए तुमने कोई
परिश्रम नहीं किया, उसी को काटने मैंने तुम्हें भेजा है. परिश्रम अन्य लोगों ने
किया और तुम उनके प्रतिफल में शामिल हो गए." 39 अनेक शमरियावासियों
ने उस स्त्री की इस गवाही के कारण मसीह येशु में विश्वास किया: "आओ,
एक व्यक्ति को देखो, जिन्होंने मेरे जीवन की सारी बातें सुना दी हैं." 40 तब
शमरियावासियों की विनती पर मसीह येशु दो दिन तक उनके मध्य रहे 41 और
उनका प्रवचन सुनकर अनेकों ने उनमें विश्वास किया. 42 उन्होंने उस स्त्री से
कहा, "अब हम मात्र तुम्हारे कहने से ही इनमें विश्वास नहीं करते, हमने अब
इन्हें स्वयं सुना है और जान गए हैं कि यही वास्तव में संसार के उद्धारकर्ता हैं."
43 दो दिन बाद मसीह येशु ने गलील प्रदेश की ओर प्रस्थान किया. 44 यद्यपि
मसीह येशु स्वयं स्पष्ट कर चुके थे कि भविष्यवक्ता को अपने ही देश में सम्मान
नहीं मिलता, 45 गलील प्रदेश पहुंचने पर गलीलवासियों ने उनका स्वागत
किया क्योंकि वे फ़सह उत्सव के समय येरूशलेम में मसीह येशु द्वारा किए
गए काम देख चुके थे. 46 मसीह येशु दोबारा गलील प्रदेश के काना नगर में
आए, जहां उन्होंने जल को दाखरस में बदला था. कफ़रनहूम नगर में एक
राजकर्मचारी था, जिसका पुत्र अस्वस्थ था. 47 यह सुनकर कि मसीह येशु
यहूदिया प्रदेश से गलील में आए हुए हैं, उसने आकर मसीह येशु से विनती की
कि वह चलकर उसके पुत्र को स्वस्थ कर दें, जो मृत्यु-शय्या पर है. 48 इस पर
मसीह येशु ने उसे झिड़की देते हुए कहा, "तुम लोग तो चिह्न और चमत्कार देखे
बिना विश्वास ही नहीं करते!" 49 राजकर्मचारी ने उनसे दोबारा विनती की,
"श्रीमन, इससे पूर्व कि मेरे बालक की मृत्यु हो, कृपया मेरे साथ चलें." 50
मसीह येशु ने उससे कहा, "जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित रहेगा." उस व्यक्ति ने
मसीह येशु के वचन पर विश्वास किया और घर लौट गया. 51 जब वह मार्ग में
ही था, उसके दास उसे मिल गए और उन्होंने उसे सूचना दी, "स्वामी, आपका
पुत्र स्वस्थ हो गया है." 52 "वह किस समय से स्वस्थ होने लगा था?" उसने
उनसे पूछा. उन्होंने कहा, "कल लगभग दोपहर एक बजे उसका ज्वर उतर
गया." 53 पिता समझ गया कि यह ठीक उसी समय हुआ जब मसीह येशु ने
कहा था, "तुम्हारा पुत्र जीवित रहेगा." इस पर उसने और उसके सारे परिवार ने
मसीह येशु में विश्वास किया. 54 यह दूसरा अद्भुत चिह्न था, जो मसीह येशु ने
यहूदिया प्रदेश से लौटकर गलील प्रदेश में किया.

5 इन बातों के पश्चात मसीह येशु यहूदियों के एक पर्व में येरूशलेम गए.
2 येरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक जलाशय है, जो इब्री भाषा में
बैथज़ादा कहलाता है और जिसके पांच ओसारे हैं, 3 उसके किनारे अंधे, अपंग
और लकवे के अनेक रोगी पड़े रहते थे, 4 [जो जल के हिलने की प्रतीक्षा
किया करते थे क्योंकि उनकी मान्यता थी कि परमेश्वर का स्वर्गदूत समय
समय पर वहां आकर जल हिलाया करता था. जल हिलते ही, जो व्यक्ति उसमें
सबसे पहले उतरता था, स्वस्थ हो जाता था]. 5 इनमें एक व्यक्ति ऐसा था, जो
अड़तीस वर्ष से रोगी था. 6 मसीह येशु ने उसे वहां पड़े हुए देख और यह मालूम
होने पर कि वह वहां बहुत समय से पड़ा हुआ है, उसके पास जाकर पूछा,
"क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?" 7 रोगी ने उत्तर दिया, "श्रीमन, ऐसा कोई
नहीं, जो जल के हिलने पर मुझे जलाशय में उतारे—मेरे प्रयास के पूर्व ही
कोई अन्य व्यक्ति उसमें उतर जाता है." 8 मसीह येशु ने उससे कहा, "उठो,
अपना बिछौना उठाओ और चलने फिरने लगो." 9 तुरंत वह व्यक्ति स्वस्थ हो
गया और अपना बिछौना उठाकर चला गया. वह शब्बाथ था. 10 अतः यहूदी
अगुओं ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा, "आज शब्बाथ है. अतः तुम्हारा बिछौना
उठाना उचित नहीं है." 11 उसने कहा, "जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है, उन्हीं
ने मुझे आज्ञा दी, 'अपना बिछौना उठाओ और चलने फिरने लगो.'" 12 उन्होंने

उससे पूछा, "कौन है वह, जिसने तुमसे कहा है कि अपना बिछौना उठाओ और चलने फिरने लगो?" 13 स्वस्थ हुआ व्यक्ति नहीं जानता था कि उसको स्वस्थ करनेवाला कौन था क्योंकि उस समय मसीह येशु भीड़ में गुम हो गए थे. 14 कुछ समय बाद मसीह येशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में देख उससे कहा, "देखो, तुम स्वस्थ हो गए हो, अब पाप न करना. ऐसा न हो कि तुम्हारा हाल इससे ज्यादा बुरा हो जाए." 15 तब उस व्यक्ति ने आकर यहूदी अगुओं को सूचित किया कि जिन्होंने उसे स्वस्थ किया है, वह येशु हैं. 16 शब्बाथ पर मसीह येशु द्वारा यह काम किए जाने के कारण यहूदी अगुएं उनको सताने लगे. 17 मसीह येशु ने स्पष्ट किया, "मेरे पिता अब तक कार्य कर रहे हैं इसलिये मैं भी काम कर रहा हूं." 18 परिणामस्वरूप यहूदी अगुएं मसीह येशु की हत्या के लिए और भी अधिक ठन गए क्योंकि उनके अनुसार मसीह येशु शब्बाथ की विधि को तोड़ ही नहीं रहे थे बल्कि परमेश्वर को अपना पिता कहकर स्वयं को परमेश्वर के तुल्य भी दर्शा रहे थे. 19 मसीह येशु ने कहा: "मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं; पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता. वह वही कर सकता है, जो वह पिता को करते हुए देखता है क्योंकि जो कुछ पिता करते हैं, पुत्र भी वही करता है. 20 पिता पुत्र से प्रेम करते हैं और वह पुत्र को अपनी हर एक योजना से परिचित रखते हैं. वह इनसे भी बड़े-बड़े काम दिखाएंगे, जिन्हें देख तुम चकित हो जाओगे. 21 जिस प्रकार पिता मरे हुओं को जीवित करके जीवन प्रदान करते हैं, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहता है, जीवन प्रदान करता है. 22 पिता किसी का न्याय नहीं करते, न्याय करने का सारा अधिकार उन्होंने पुत्र को सौंप दिया है. 23 जिससे सब लोग पुत्र का वैसा ही आदर करें जैसा पिता का करते हैं. वह व्यक्ति, जो पुत्र का आदर नहीं करता, पिता का आदर भी नहीं करता, जिन्होंने पुत्र को भेजा है. 24 "मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: जो मेरा वचन सुनता और मेरे भेजनेवाले में विश्वास करता है, अनंत काल का जीवन उसी का है; उसे दोषी नहीं ठहराया जाता, परंतु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है. (aiōnios g166) 25 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: वह समय आ रहा है परंतु आ ही गया है, जब सारे मृतक परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुनेंगे और हर एक सुननेवाला जीवन प्राप्त करेगा. 26 जिस प्रकार पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी प्रकार पुत्र में बसा हुआ जीवन पिता के द्वारा दिया गया जीवन है. 27 मनुष्य का पुत्र होने के कारण उसे न्याय करने का अधिकार भी दिया गया है. 28 "यह सब सुनकर चकित न हो क्योंकि वह समय आ रहा है, जब सभी मरे हुए लोग पुत्र की आवाज को सुनेंगे और वे जीवित हो जाएंगे. 29 सुकर्मी जीवन के पुनरुत्थान के लिए और कुकर्मी दंड के पुनरुत्थान के लिए. 30 मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता. मैं उनसे जैसे निर्देश प्राप्त करता हूं, वैसा ही निर्णय देता हूं. मेरा निर्णय सच्चा होता है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परंतु अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए समर्पित हूं. 31 "यदि मैं स्वयं अपने ही विषय में गवाही दूं तो मेरी गवाही मान्य नहीं होगी. 32 एक और हैं, जो मेरे गवाह हैं और मैं जानता हूं कि मेरे विषय में उनकी गवाही अटल है. 33 "तुमने योहन के पास अपने लोग भेजे और योहन ने भी सच की ही गवाही दी. 34 परंतु मुझे तो अपने विषय में किसी मनुष्य की गवाही की ज़रूरत है ही नहीं—यह सब मैं तुम्हारे उद्धार के लिए कह रहा हूं. 35 योहन वह जलता हुआ और चमकता हुआ दीपक थे, जिनके उजाले में तुम्हें कुछ समय तक आनंद मनाना सुखद लगा. 36 "मेरी गवाही योहन की गवाही से अधिक बड़ी है क्योंकि पिता द्वारा मुझे सौंपे गए काम को पूरा करना ही इस सच्चाई का सबूत है कि पिता ने मुझे भेजा है. 37 इसके अतिरिक्त पिता अर्थात् स्वयं मेरे भेजनेवाले ने भी मेरे विषय में गवाही दी है. तुमने न तो कभी उनकी आवाज सुनी है, न उनका रूप देखा है 38 और न ही उनका वचन तुम्हारे हृदय में स्थिर रह सका है क्योंकि जिसे उन्होंने भेजा है, तुम उसमें विश्वास नहीं करते. 39 तुम शास्त्रों का मनन इस विश्वास में करते हो कि उनमें अनंत काल का जीवन बसा है. ये सभी शास्त्र मेरे ही विषय में गवाही देते हैं. (aiōnios g166) 40 यह सब होने पर भी जीवन पाने के लिए तुम मेरे पास आना नहीं चाहते. 41 "मनुष्य की प्रशंसा मुझे स्वीकार नहीं 42 क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूं और मुझे यह भी मालूम है कि परमेश्वर का प्रेम तुम्हारे मन में है ही नहीं. 43 तुम मुझे ग्रहण नहीं करते जबकि मैं अपने पिता के नाम में आया हूं किंतु यदि कोई अपने ही नाम में आए तो तुम उसे ग्रहण कर लोगे. 44 तुम मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो यदि तुम एक दूसरे से प्रशंसा की आशा करते हो और उस प्रशंसा के लिए कोई प्रयास नहीं करते, जो एकमात्र परमेश्वर से प्राप्त होती है? 45 "यह विचार अपने मन से निकाल दो कि पिता के सामने मैं तुम पर आरोप लगाऊंगा; तुम पर दोषारोपण तो मोशेह करेंगे—मोशेह, जिन पर तुमने आशा लगा रखी है. 46 यदि तुम वास्तव में मोशेह में विश्वास करते तो मुझमें भी करते क्योंकि उन्होंने मेरे ही विषय में लिखा है. 47 जब तुम उनके लेखों का ही विश्वास नहीं करते तो मेरी बातों का विश्वास कैसे करोगे?"

6 इन बातों के बाद मसीह येशु गलील अर्थात् तिबेरियॉस झील के उस पार चले गए. 2 उनके द्वारा रोगियों को स्वास्थ्यदान के अद्भुत चिह्नों से प्रभावित एक बड़ी भीड़ उनके साथ हो ली. 3 मसीह येशु पर्वत पर जाकर वहां अपने शिष्यों के साथ बैठ गए. 4 यहूदियों का फ़सह उत्सव पास था. 5 जब मसीह येशु ने बड़ी भीड़ को अपनी ओर आते देखा तो फ़िलिप्पॉस से पूछा, "इन सबको खिलाने के लिए हम भोजन कहां से मोल लेंगे?" 6 मसीह येशु ने यह प्रश्न उन्हें परखने के लिए किया था क्योंकि वह जानते थे कि वह क्या करने पर थे. 7 फ़िलिप्पॉस ने उत्तर दिया, "दो सौ दीनार की रोटियां भी उनके लिए पर्याप्त नहीं होंगी कि हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल पाए." 8 मसीह येशु के शिष्य शिमओन पेतरॉस के भाई आन्द्रेयास ने उन्हें सूचित किया, 9 "यहां एक लड़का है, जिसके पास जौ की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं किंतु उनसे इतने लोगों का क्या होगा?" 10 मसीह येशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो" और वे सब, जिनमें पुरुषों की ही संख्या पांच हज़ार थी, घनी घास पर बैठ गए. 11 तब मसीह येशु ने रोटियां लेकर धन्यवाद दिया और उनकी ज़रूरत के अनुसार बांट दीं और उसी प्रकार मछलियां भी. 12 जब वे सब तृप्त हो गए तो मसीह येशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी, "शेष टुकड़ों को इकट्ठा कर लो कि कुछ भी नाश न हो," 13 उन्होंने जौ की उन पांच रोटियों के शेष टुकड़े इकट्ठा किए, जिनसे बारह टोकरे भर गए. 14 लोगों ने इस अद्भुत चिह्न को देखकर कहा, "निःसंदेह यह वही भविष्यवक्ता हैं, संसार जिनकी प्रतीक्षा कर रहा है." 15 जब मसीह येशु को यह मालूम हुआ कि लोग उन्हें ज़बरदस्ती राजा बनाने के उद्देश्य से ले जाना चाहते हैं तो वह फिर से पर्वत पर अकेले चले गए. 16 जब संध्या हुई तो मसीह येशु के शिष्य झील के तट पर उतर गए. 17 अंधेरा हो चुका था और मसीह येशु अब तक उनके पास नहीं पहुंचे थे. उन्होंने नाव पर सवार होकर गलील झील के दूसरी ओर कफ़रनहूम नगर के लिए प्रस्थान किया. 18 उसी समय तेज हवा के कारण झील में लहरें बढ़ने लगीं. 19 नाव को लगभग पांच किलोमीटर खेने के बाद शिष्यों ने मसीह येशु को जल सतह पर चलते और नाव की ओर आते देखा. यह देखकर वे भयभीत हो गए. 20 मसीह येशु ने उनसे कहा, "भयभीत मत हो, मैं हूं." 21 यह सुन शिष्य मसीह येशु को नाव में चढ़ाने को तैयार हो गए. इसके बाद नाव उस किनारे पर पहुंच गई जहां उन्हें जाना था. 22 अगले दिन झील के उस पार रह गई भीड़ को मालूम हुआ कि वहां केवल एक छोटी नाव थी और मसीह येशु शिष्यों के साथ उसमें नहीं गए थे—केवल शिष्य ही उसमें दूसरे पार गए थे. 23 तब तिबेरियॉस नगर से अन्य नावें उस स्थान पर आईं, जहां प्रभु ने बड़ी भीड़ को भोजन कराया था. 24 जब भीड़ ने देखा कि न तो मसीह येशु वहां हैं और न ही उनके शिष्य,

तो वे मसीह येशु को खोजते हुए नावों द्वारा कफ़रनहूम नगर पहुंच गए. 25 झील के इस पार मसीह येशु को पाकर उन्होंने उनसे पूछा, “रब्बी, आप यहां कब पहुंचे?” 26 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: तुम मुझे इसलिये नहीं खोज रहे कि तुमने अद्भुत चिह्न देखे हैं परंतु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए हो. 27 उस भोजन के लिए मेहनत मत करो, जो नाशमान है परंतु उसके लिए, जो अनंत जीवन तक ठहरता है, जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने समर्थन के साथ मात्र उसी को यह अधिकार सौंपा है.” (aiōnios g166) 28 इस पर उन्होंने मसीह येशु से पूछा, “हमसे परमेश्वर की इच्छा क्या है?” 29 “यह कि तुम परमेश्वर के भेजे हुए पर विश्वास करो,” मसीह येशु ने उत्तर दिया. 30 इस पर उन्होंने मसीह येशु से दोबारा पूछा, “आप ऐसा कौन सा अद्भुत चिह्न दिखा सकते हैं कि हम आप में विश्वास करें? क्या है वह काम? 31 हमारे पूर्वजों ने बंजर भूमि में मन्‍ना खाया; पवित्र शास्त्र के अनुसार: भोजन के लिए परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी.” 32 इस पर मसीह येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: स्वर्ग से वह रोटी तुम्हें मोशेह ने नहीं दी; मेरे पिता ही हैं, जो तुम्हें स्वर्ग से वास्तविक रोटी देते हैं. 33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह है, जो स्वर्ग से आती है, और संसार को जीवन प्रदान करती है.” 34 यह सुनकर उन्होंने विनती की, “प्रभु, अब से हमें यही रोटी दें.” 35 इस पर मसीह येशु ने घोषणा की, “मैं ही हूं वह जीवन की रोटी. जो मेरे पास आएगा, वह भूखा न रहेगा और जो मुझमें विश्वास करेगा, कभी प्यासा न रहेगा. 36 मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूं कि तुम मुझे देखकर भी मुझमें विश्वास नहीं करते. 37 वे सभी, जो पिता ने मुझे दिए हैं, मेरे पास आएंगे और हर एक, जो मेरे पास आता है, मैं उसको कभी भी न छोड़ूंगा. 38 मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा पूरी करने नहीं, अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए आया हूं. 39 मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उन्होंने मुझे सौंपा है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊं परंतु अंतिम दिन में उसे फिर से जीवित करूं. 40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि हर एक, जो पुत्र को अपनाकर उसमें विश्वास करे, वह अनंत काल का जीवन प्राप्‍त करे तथा मैं उसे अंतिम दिन में फिर से जीवित करूं.” (aiōnios g166) 41 मसीह येशु का यह दावा सुनकर: “स्वर्ग से उतरी रोटी मैं ही हूं,” यहूदी अगुए कुड़कुड़ाने लगे 42 और आपस में मंत्रणा करने लगे, “क्या यह योसेफ़ का पुत्र येशु नहीं, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो अब यह कैसे कह रहा है कि यह स्वर्ग से आया है?” 43 यह जानकर मसीह येशु ने उनसे कहा, “कुड़कुड़ाओ मत, 44 कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता, जब तक मेरे भेजनेवाले—पिता—उसे अपनी ओर खींच न लें. मैं उसे अंतिम दिन में फिर से जीवित करूंगा. 45 भविष्यद्वक्ताओं के अभिलेख में यह लिखा हुआ है: वे सब परमेश्वर द्वारा सिखाए हुए होंगे, अतः हर एक, जिसने पिता परमेश्वर को सुना और उनसे सीखा है, मेरे पास आता है. 46 किसी ने पिता परमेश्वर को नहीं देखा सिवाय उसके, जो पिता परमेश्वर से है, केवल उसी ने उन्हें देखा है. 47 मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: अनंत काल का जीवन उसी का है, जो विश्वास करता है. (aiōnios g166) 48 मैं ही हूं जीवन की रोटी. 49 बंजर भूमि में तुम्हारे पूर्वजों ने मन्‍ना खाया फिर भी उनकी मृत्यु हो गई. 50 मैं ही स्वर्ग से उतरी रोटी हूं कि जो कोई इसे खाए, उसकी मृत्यु न हो. 51 स्वर्ग से उतरी जीवन की रोटी मैं ही हूं. जो कोई यह रोटी खाता है, वह हमेशा जीवित रहेगा. जो रोटी मैं दूंगा, वह संसार के जीवन के लिए भेंट मेरा शरीर है.” (aiōn g165) 52 यह सुनकर यहूदी अगुए आपस में विवाद करने लगे, “यह व्यक्ति कैसे हमें अपना शरीर खाने के लिए दे सकता है?” 53 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर न खाओ और उसका लहू न पियो, तुममें जीवन नहीं. 54 अनंत काल का जीवन उसी का है, जो मेरा शरीर खाता और मेरा लहू पीता है; अंतिम दिन मैं उसे फिर से जीवित करूंगा. (aiōnios g166) 55 मेरा शरीर ही वास्तविक भोजन और मेरा लहू ही वास्तविक पेय है. 56 जो मेरा शरीर खाता और मेरा लहू पीता है, वही है, जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें. 57 जैसे जीवन्त पिता परमेश्वर ने मुझे भेजा है और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसे ही वह भी, जो मुझे ग्रहण करता है, मेरे कारण जीवित रहेगा. 58 यह वह रोटी है, जो स्वर्ग से उतरी हुई है; वैसी नहीं, जो पूर्वजों ने खाई और फिर भी उनकी मृत्यु हो गई; परंतु वह, जो यह रोटी खाता है, हमेशा जीवित रहेगा.” (aiōn g165) 59 मसीह येशु ने ये बातें कफ़रनहूम नगर के यहूदी सभागृह में शिक्षा देते हुए बताईं. 60 यह बातें सुनकर उनके अनेक शिष्यों ने कहा, “बहुत कठोर है यह शिक्षा. कौन इसे स्वीकार कर सकता है?” 61 अपने चेलों की बड़बड़ाहट का अहसास होने पर मसीह येशु ने कहा, “क्या यह तुम्हारे लिए ठोकर का कारण है? 62 तुम तब क्या करोगे जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर स्वर्ग में जाते देखोगे, जहां वह पहले था? 63 आत्मा ही हैं, जो शरीर को जीवन देती है. केवल शरीर का कुछ महत्व नहीं. जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं, वे आत्मा हैं और जीवन भी. 64 फिर भी तुममें कुछ हैं, जो मुझमें विश्वास नहीं करते.” मसीह येशु प्रारंभ से जानते थे कि कौन हैं, जो उनमें विश्वास नहीं करेंगे और कौन है वह, जो उनके साथ धोखा करेगा. 65 तब मसीह येशु ने आगे कहा, “इसलिये मैंने तुमसे यह कहा कि कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक पिता उसे मेरे पास न आने दें.” 66 इसके परिणामस्वरूप मसीह येशु के अनेक चेले पीछे हट गए और उनके पीछे चलना छोड़ दिया. 67 यह देख मसीह येशु ने अपने बारह शिष्यों से अभिमुख हो उनसे पूछा, “कहीं तुम भी तो लौट जाना नहीं चाहते?” 68 शिमओन पेतरॉस ने उत्तर दिया, “प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनंत काल के जीवन की बातें तो आप ही के पास हैं. (aiōnios g166) 69 हमने विश्वास किया और जान लिया है कि आप ही परमेश्वर के पवित्र जन हैं.” 70 मसीह येशु ने उनसे कहा, “क्या स्वयं मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? यह होने पर भी तुममें से एक इबलीस है.” 71 (उनका इशारा कारियोतवासी शिमओन के पुत्र यहूदाह की ओर था क्योंकि उन बारह शिष्यों में से वही मसीह येशु के साथ धोखा करने पर था.)

7 इन बातों के बाद मसीह येशु गलील प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में यात्रा करने लगे. वह यहूदिया प्रदेश में जाना नहीं चाहते थे क्योंकि यहूदी अगुए उनकी हत्या की ताक में थे. 2 यहूदियों का एक पर्व—झोपड़ियों का उत्सव—पास था. 3 मसीह येशु के भाइयों ने उनसे कहा, “यहूदिया चले जाओ जिससे तुम्हारे चेले तुम्हारे इन कामों को देख सकें; 4 ख्याति चाहनेवाला व्यक्ति अपने काम गुप्‍त में नहीं करता. जब तुम ये काम करते ही हो तो स्वयं को संसार पर प्रकट कर दो.” 5 मसीह येशु के भाइयों तक को उनमें विश्वास नहीं था. 6 इस पर मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारा सही समय तो कभी भी आ सकता है किंतु मेरा सही समय अभी नहीं आया. 7 संसार तुमसे घृणा नहीं कर सकता—वह मुझसे घृणा करता है क्योंकि मैं यह प्रकट करता हूं कि उसके काम बुरे हैं. 8 तुम पर्व में जाओ. मैं अभी नहीं जाऊंगा क्योंकि मेरा समय अभी तक पूरा नहीं हुआ है.” 9 यह कहकर मसीह येशु गलील प्रदेश में ही ठहरे रहे. 10 अपने भाइयों के झोपड़ियों के उत्सव में चले जाने के बाद वे भी गुप्‍त रूप से वहां गए. 11 उत्सव में कुछ यहूदी अगुए मसीह येशु को खोजते हुए पूछताछ कर रहे थे, “कहां है वह?” 12 यद्यपि मसीह येशु के विषय में लोगों में बड़ा विवाद हो रहा था—कुछ कह रहे थे, “वह भला व्यक्ति है.” और कुछ का कहना था, “नहीं, वह भरमानेवाला है—सबके साथ छल करता है.” 13 तौभी कोई भी व्यक्ति यहूदियों के भय के कारण मसीह येशु के विषय में खुलकर बात नहीं करता था. 14 जब उत्सव के मध्य मसीह येशु मंदिर में जाकर शिक्षा देने लगे, 15

यहूदी अगुए चकित होकर कहने लगे, “यह व्यक्ति बिना पढ़े ज्ञानी कैसे बन
गया?” 16 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यह शिक्षा मेरी नहीं परंतु उनकी है,
जिन्होंने मुझे भेजा है. 17 यदि कोई व्यक्ति उनकी इच्छा पूरी करने के लिए प्रण
करे तो उसे यह मालूम हो जाएगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या मेरी
ओर से. 18 वह, जो अपने ही विचार प्रस्तुत करता है, अपना ही आदर चाहता
है, परंतु वह, जो अपने भेजनेवाले का आदर चाहता है, वह बिलकुल सच्चा है
और उसमें कोई छल नहीं. 19 क्या मोशेह ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? फिर भी
तुममें से कोई उसका पालन नहीं करता. मेरी हत्या की ताक में क्यों हो तुम?”
20 भीड़ ने उत्तर दिया, “कौन तुम्हारी हत्या करना चाहता है? तुम दुष्टात्मा से
पीड़ित हो.” 21 मसीह येशु ने कहा, “मैंने शब्बाथ पर एक चमत्कार किया
और तुम सब क्रोधित हो गए. 22 मोशेह ने तुम्हें ख़तना विधि दी—परंतु इसको
आरंभ करनेवाले मोशेह नहीं, हमारे गोत्रपिता हैं—जिसके अनुसार तुम शब्बाथ
पर भी ख़तना करते हो. 23 तुम शब्बाथ पर भी ख़तना करते हो कि मोशेह की
व्यवस्था भंग न हो, तो तुम लोग इससे गुस्से में क्यों हो कि मैंने शब्बाथ पर
किसी को पूरी तरह स्वस्थ किया? 24 तुम्हारा न्याय बाहरी रूप पर नहीं परंतु
सच्चाई पर आधारित हो.” 25 येरूशलेम निवासियों में से कुछ ने यह प्रश्न
किया, “क्या यह वही नहीं, वे जिसकी हत्या की ताक में हैं? 26 परंतु देखो,
वह भीड़ से खुलकर, बिना डर के बातें करता है और अधिकारी कुछ भी नहीं
कहते! कहीं ऐसा तो नहीं कि अधिकारियों को मालूम हो गया है कि यही
वास्तव में मसीह हैं? 27 इस व्यक्ति की पृष्ठभूमि हमें मालूम है, किंतु जब मसीह
प्रकट होंगे तो किसी को यह मालूम नहीं होगा कि वह कहां के हैं.” 28 मंदिर
में शिक्षा देते हुए मसीह येशु ने ऊंचे शब्द में कहा, “तुम मुझे जानते हो और यह
भी जानते हो कि मैं कहां से आया हूं. सच यह है कि मैं स्वयं नहीं आया.
जिन्होंने मुझे भेजा है, वह सच्चा है किंतु तुम उन्हें नहीं जानते, 29 मैं उन्हें
जानता हूं क्योंकि उन्हीं में से मैं हूं और मुझे उन्हीं ने भेजा है.” 30 यह सुनकर
उन्होंने मसीह येशु को बंदी बनाना चाहा किंतु किसी ने उन पर हाथ न डाला
क्योंकि उनका समय अब तक नहीं आया था. 31 फिर भी भीड़ में से अनेकों
ने मसीह येशु में विश्वास रखा तथा विचार-विमर्श करने लगे, “क्या प्रकट होने
पर मसीह इस व्यक्ति से अधिक अद्भुत चिह्न प्रदर्शित करेंगे?” 32 फ़रीसियों ने
भीड़ को इस विषय में आपस में विचार-विमर्श करते हुए सुन लिया. इसलिये
मसीह येशु को बंदी बनाने के लिए प्रधान पुरोहितों व फ़रीसियों ने मंदिर के
पहरेदारों को भेजा. 33 मसीह येशु ने उनसे कहा, “थोड़े समय के लिए मैं
तुम्हारे साथ हूं, उसके बाद मैं अपने भेजनेवाले के पास लौट जाऊंगा. 34 तुम
मुझे खोजोगे किंतु पाओगे नहीं क्योंकि जहां मैं होऊंगा, तुम वहां नहीं आ
सकते.” 35 इस पर यहूदी अगुए विचार-विमर्श करने लगे, “यह व्यक्ति कहां
जाने पर है कि हम उसे खोज नहीं पाएंगे? क्या यह यूनानियों के मध्य प्रवासी
यहूदियों में बसना चाहता है कि यूनानियों को भी शिक्षा दे? 36 यह क्या कह
रहा है कि तुम मुझे खोजोगे और नहीं पाओगे क्योंकि जहां मैं होऊंगा तुम वहां
नहीं आ सकते?” 37 उत्सव के अंतिम दिन, जब उत्सव चरम सीमा पर होता
है, मसीह येशु ने खड़े होकर ऊंचे शब्द में कहा, “यदि कोई प्यासा है तो मेरे
पास आए और पिए. 38 जो मुझमें विश्वास करता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र का
लेख है: उसके अंदर से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी.” 39 यह
उन्होंने पवित्र आत्मा के विषय में कहा था, जिन्हें उन पर विश्वास करनेवाले
प्राप्त करने पर थे. पवित्र आत्मा अब तक उतरे नहीं थे क्योंकि मसीह येशु अब
तक महिमा को न पहुंचे थे. 40 यह सब सुनकर भीड़ में से कुछ ने कहा,
“सचमुच यह व्यक्ति ही वह भविष्यवक्ता है.” 41 कुछ अन्य ने कहा, “यह
मसीह हैं.” परंतु कुछ ने कहा, “मसीह का आना गलील से तो नहीं होगा न?
42 क्या पवित्र शास्त्र के अनुसार मसीह का आना दावीद के वंश और उनके नगर
बेथलेहेम से न होगा?” 43 इस प्रकार मसीह येशु के कारण भीड़ में मतभेद
हो गया. 44 कुछ उन्हें बंदी बनाना चाहते थे फिर भी किसी ने भी उन पर
हाथ न डाला. 45 संतरियों के लौटने पर प्रधान पुरोहितों और फ़रीसियों ने
उनसे पूछा, “तुम उसे लेकर क्यों नहीं आए?” 46 संतरियों ने उत्तर दिया,
“ऐसा बतानेवाला हमने आज तक नहीं सुना.” 47 तब फ़रीसियों ने कटाक्ष
किया, “कहीं तुम भी तो उसके बहकावे में नहीं आ गए? 48 क्या प्रधानों या
फ़रीसियों में से किसी ने भी उसमें विश्वास किया है? 49 व्यवस्था से अज्ञान
भीड़ तो वैसे ही शापित है.” 50 तब निकोदेमॉस ने, जो प्रधानों में से एक थे
तथा मसीह येशु से पहले मिल चुके थे, उनसे कहा, 51 “क्या हमारी व्यवस्था
किसी व्यक्ति की सुने बिना और उसकी गतिविधि जाने बिना उसे अपराधी
घोषित करती है?” 52 इस पर उन्होंने निकोदेमॉस से पूछा, “कहीं तुम भी तो
गलीली नहीं हो? शास्त्रों का मनन करो और देखो कि किसी भी भविष्यवक्ता
का आना गलील प्रदेश से नहीं होता.” 53 [वे सभी अपने-अपने घर लौट
गएं].

8 और येशु जैतून पर्वत पर चले गये. 2 भोर को वह दोबारा मंदिर में आए और
लोगों के मध्य बैठकर उनको शिक्षा देने लगे. 3 उसी समय फ़रीसियों व
शास्त्रियों ने व्यभिचार के कार्य में पकड़ी गई एक स्त्री को लाकर मध्य में खड़ा
कर दिया 4 और मसीह येशु से प्रश्न किया, “गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए
पकड़ी गई है. 5 मोशेह ने व्यवस्था में हमें ऐसी स्त्रियों को पथराव द्वारा मार
डालने की आज्ञा दी है; किंतु आप क्या कहते हैं?” 6 उन्होंने मसीह येशु को
परखने के लिए यह प्रश्न किया था कि उन पर आरोप लगाने के लिए उन्हें कोई
आधार मिल जाए. किंतु मसीह येशु झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगे. 7
जब वे मसीह येशु से बार-बार प्रश्न करते रहे, मसीह येशु ने सीधे खड़े होकर
उनसे कहा, “तुममें से जिस किसी ने कभी कोई पाप न किया हो, वही उसे
सबसे पहला पत्थर मारे.” 8 और वह दोबारा झुककर भूमि पर लिखने लगे. 9
यह सुनकर वरिष्ठ से प्रारंभ कर एक-एक करके सब वहां से चले गए—केवल
वह स्त्री और मसीह येशु ही वहां रह गए. 10 मसीह येशु ने सीधे खड़े होते हुए स्त्री
की ओर देखकर उससे पूछा, “हे स्त्री! वे सब कहां हैं? क्या तुम्हें किसी ने भी
दंडित नहीं किया?” 11 उसने उत्तर दिया, “किसी ने भी नहीं, प्रभु.” मसीह
येशु ने उससे कहा, “मैं भी तुम्हें दंडित नहीं करता. जाओ, अब फिर पाप न
करना.” 12 मंदिर में अपनी शिक्षा को दोबारा आरंभ करते हुए मसीह येशु ने
लोगों से कहा, “संसार की ज्योति मैं ही हूं. जो कोई मेरे पीछे चलता है, वह
अंधकार में कभी न चलेगा क्योंकि जीवन की ज्योति उसी में बसेगी.” 13 तब
फ़रीसियों ने उनसे कहा, “तुम अपने ही विषय में गवाही दे रहे हो इसलिये
तुम्हारी गवाही स्वीकार नहीं की जा सकती है.” 14 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर
दिया, “यदि मैं स्वयं अपने विषय में गवाही दे भी रहा हूं, तो भी मेरी गवाही
स्वीकार की जा सकती है क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं कहां से आया हूं और
कहां जा रहा हूं; किंतु तुम लोग नहीं जानते कि मैं कहां से आया और कहां जा
रहा हूं. 15 तुम लोग मानवीय सोच से अन्य लोगों का न्याय करते हो; मैं किसी
का न्याय नहीं करता. 16 यदि मैं किसी का न्याय करूं भी तो वह सही ही
होगा, क्योंकि इसमें मैं अकेला नहीं—इसमें मैं और मेरे भेजने वाला पिता भी
शामिल हैं. 17 तुम्हारी व्यवस्था में ही यह लिखा है कि दो व्यक्तियों की गवाही
सच के रूप में स्वीकार की जा सकती है. 18 एक गवाह तो मैं ही हूं, जो
स्वयं अपने विषय में गवाही दे रहा हूं और मेरे विषय में अन्य गवाह—मेरे
भेजनेवाले—पिता परमेश्वर हैं.” 19 तब उन्होंने मसीह येशु से पूछा, “कहां है
तुम्हारा यह पिता?” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “न तो तुम मुझे जानते हो
और न ही मेरे पिता को; यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जान लेते.” 20
मसीह येशु ने ये वचन मंदिर परिसर में शिक्षा देते समय कहे, फिर भी किसी ने

उन पर हाथ नहीं डाला क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था. 21 मसीह
येशु ने उनसे फिर कहा, “मैं जा रहा हूं. तुम मुझे खोजते-खोजते अपने ही पाप में
मर जाओगे. जहां मैं जा रहा हूं, तुम वहां नहीं आ सकते.” 22 तब यहूदी अगुए
आपस में विचार करने लगे, “कहीं वह आत्महत्या तो नहीं करेगा क्योंकि वह
कह रहा है, ‘जहां मैं जा रहा हूं, वहां तुम नहीं आ सकते’?” 23 मसीह येशु ने
उनसे कहा, “तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूं, तुम इस संसार के हो, मैं इस
संसार का नहीं हूं. 24 मैं तुमसे कह चुका हूं कि तुम्हारे पापों में ही तुम्हारी मृत्यु
होगी. क्योंकि जब तक तुम यह विश्वास न करोगे कि मैं ही हूं, जो मैं कहता हूं,
तुम्हारी अपने ही पापों में मृत्यु होना निश्चित है.” 25 तब उन्होंने उनसे पूछा,
“कौन हो तुम?” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुमसे मैं अब तक क्या कहता
आ रहा हूं? 26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है. मैं
संसार से वही कहता हूं, जो मैंने अपने भेजनेवाले से सुना है. मेरे भेजनेवाले
विश्वासयोग्य हैं.” 27 वे अब तक यह समझ नहीं पाए थे कि मसीह येशु उनसे
पिता परमेश्वर के विषय में कह रहे थे. 28 मसीह येशु ने उनसे कहा, “जब तुम
मनुष्य के पुत्र को ऊंचा उठाओगे तब तुम जान लोगे कि मैं वही हूं और यह भी
कि मैं स्वयं कुछ नहीं कहता, मैं वही कहता हूं, जो पिता ने मुझे सिखाया है. 29
मेरे भेजनेवाले मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा वही
करता हूं, जिसमें उनकी खुशी है.” 30 ये सब सुनकर अनेकों ने मसीह येशु में
विश्वास किया. 31 तब मसीह येशु ने उन यहूदियों से, जिन्होंने उन्हें मान्यता दे
दी थी, कहा, “यदि तुम मेरी शिक्षाओं का पालन करते रहोगे तो वास्तव में मेरे
शिष्य होगे. 32 तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा.” 33 उन्होंने
मसीह येशु को उत्तर दिया, “हम अब्राहाम के वंशज हैं और हम कभी भी किसी
के दास नहीं हुए. तुम यह कैसे कहते हो ‘तुम स्वतंत्र हो जाओगे’?” 34 मसीह
येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: हर
एक व्यक्ति, जो पाप करता है, वह पाप का दास है. 35 दास हमेशा घर में नहीं
रहता; पुत्र हमेशा रहता है. (aiōn g165) 36 इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो
तुम वास्तव में स्वतंत्र हो जाओगे. 37 मैं जानता हूं कि तुम अब्राहाम के वंशज
हो, फिर भी तुम मेरी हत्या करने की ताक में हो; यह इसलिये कि तुमने मेरे
संदेश को हृदय में ग्रहण नहीं किया. 38 मैं वही कहता हूं, जो मैंने साक्षात अपने
पिता को करते हुए देखा है, परंतु तुम वह करते हो, जो तुमने अपने पिता से सुना
है.” 39 उन्होंने मसीह येशु से कहा, “हमारे पिता अब्राहाम हैं.” मसीह येशु ने
उनसे कहा, “यदि तुम अब्राहाम की संतान हो तो अब्राहाम के समान व्यवहार भी
करो. 40 तुम मेरी हत्या करना चाहते हो—मैं, जिसने परमेश्वर से प्राप्त सच तुम
पर प्रकट किया है. अब्राहाम का व्यवहार ऐसा नहीं था. 41 तुम्हारा व्यवहार
तुम्हारे ही पिता के समान है.” इस पर उन्होंने विरोध किया, “हम अवैध संतान
नहीं हैं, हमारा एक ही पिता है—परमेश्वर.” 42 मसीह येशु ने उनसे कहा,
“यदि परमेश्वर तुम्हारे पिता होते तो तुम मुझसे प्रेम करते क्योंकि मैं परमेश्वर से
हूं. मैं अपनी इच्छा से नहीं आया; परमेश्वर ने मुझे भेजा है. 43 मेरी बातें तुम
इसलिये नहीं समझते कि तुममें मेरा संदेश सुनने की क्षमता नहीं है. 44 तुम
अपने पिता शैतान से हो और उसी पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो.
वह प्रारंभ से ही हत्यारा है और सच उसका आधार कभी रहा ही नहीं क्योंकि
सच उसमें है ही नहीं. जब वह कुछ भी कहता है, अपने स्वभाव के अनुसार
झूठ ही कहता है, क्योंकि वह झूठा और झूठ का पिता है. 45 मैं सच कहता हूं
इसलिये तुम मेरा विश्वास नहीं करते. 46 तुममें से कौन मुझे पापी प्रमाणित कर
सकता है? तो जब मैं सच कहता हूं तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? 47
वह, जो परमेश्वर का है, परमेश्वर के वचनों को सुनता है. ये वचन तुम इसलिये
नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो.” 48 इस पर यहूदी अगुए बोले, “तो
क्या हमारा यह मत सही नहीं कि तुम शमरियावासी हो और तुममें दुष्टात्मा
समाया हुआ है?” 49 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मुझमें दुष्टात्मा नहीं है. मैं
अपने पिता का सम्मान करता हूं और तुम मेरा अपमान करते हो. 50 मैं अपनी
महिमा के लिए प्रयास नहीं करता हूं; एक हैं, जो इसके लिए प्रयास करते हैं
और निर्णय भी वही करते हैं. 51 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा
हूं: यदि कोई मेरी शिक्षा का पालन करेगा, उसकी मृत्यु कभी न होगी.” (aiōn
g165) 52 इस पर यहूदियों ने मसीह येशु से कहा, “अब हमें निश्चय हो गया कि
तुममें दुष्टात्मा है. अब्राहाम और भविष्यद्वक्ताओं की मृत्यु हो चुकी और तुम
कहते हो कि जो कोई तुम्हारी शिक्षा का पालन करेगा, उसकी मृत्यु कभी न
होगी. (aiōn g165) 53 क्या तुम हमारे पिता अब्राहाम से भी बड़े हो? उनकी
मृत्यु हुई और भविष्यद्वक्ताओं की भी. तुम अपने आपको समझते क्या हो?” 54
मसीह येशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं स्वयं को गौरवान्वित करता हूं तो मेरी महिमा
व्यर्थ है. जिन्होंने मुझे गौरवान्वित किया है वह मेरे पिता हैं, जिन्हें तुम अपना
परमेश्वर मानते हो. 55 तुम उन्हें नहीं जानते, मैं उन्हें जानता हूं. यदि मैं यह
कहता कि मैं उन्हें नहीं जानता तो मैं भी तुम्हारे समान झूठा साबित हो जाऊंगा.
मैं उन्हें जानता हूं, इसलिये उनके आदेशों का पालन करता हूं. 56 तुम्हारे पिता
अब्राहाम मेरा दिन देखने की आशा में मगन हुए थे. उन्होंने इसे देखा और
आनंदित हुए.” 57 तब यहूदियों ने कटाक्ष किया, “तुम्हारी आयु तो अभी
पचास वर्ष की भी नहीं है और तुमने अब्राहाम को देखा है?” 58 मसीह येशु ने
उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: अब्राहाम के जन्म
के पूर्व से ही मैं हूं.” 59 यह सुनते ही उन्होंने मसीह येशु का पथराव करने के
लिए पत्थर उठा लिए किंतु मसीह येशु उनकी दृष्टि से बचते हुए मंदिर से निकल
गए.

9 वहां से जाते हुए मार्ग में मसीह येशु को जन्म से अंधा एक व्यक्ति मिला,
2 जिसे देख उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, “रब्बी, किसके पाप के कारण यह
व्यक्ति अंधा जन्मा—इसके या इसके माता-पिता के?” 3 मसीह येशु ने उत्तर
दिया, “न इसके और न ही इसके माता-पिता के पाप, के कारण परंतु इसलिये
कि इसमें परमेश्वर का काम प्रकट हो. 4 अवश्य है कि मेरे भेजनेवाले का काम
हम दिन रहते ही कर लें. रात आ रही है, जब कोई व्यक्ति काम नहीं कर
पाएगा. 5 जब तक मैं संसार में हूं, मैं ही हूं संसार की ज्योति.” 6 यह कहने के
बाद उन्होंने भूमि पर थूका, थूक से मिट्टी का लेप बनाया और उससे अंधे व्यक्ति
की आंखों पर लेप किया 7 और उससे कहा, “जाओ, सीलोअम के कुंड में धो
लो.” सीलोअम का अर्थ है भेजा हुआ. इसलिये उसने जाकर धोया और देखता
हुआ लौटा. 8 तब उसके पड़ोसी और वे, जिन्होंने उसे इसके पूर्व भिक्षा मांगते
हुए देखा था, आपस में कहने लगे, “क्या यह वही नहीं, जो बैठा हुआ भीख
मांगा करता था?” 9 कुछ ने पुष्टि की कि यह वही है. कुछ ने कहा. “नहीं, यह
मात्र उसके समान दिखता है.” जबकि वह कहता रहा, “मैं वही हूं.” 10
इसलिये उन्होंने उससे पूछा, “तुम्हें दृष्टि प्राप्त कैसे हुई?” 11 उसने उत्तर दिया,
“येशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी का लेप बनाया और उससे मेरी आंखों पर लेप
कर मुझे आज्ञा दी, ‘जाओ, सीलोअम के कुंड में धो लो.’ मैंने जाकर धोया और
मैं देखने लगा.” 12 उन्होंने उससे पूछा, “अब कहां है वह व्यक्ति?” उसने
उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता.” 13 तब वे उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था,
फ़रीसियों के पास ले गए. 14 जिस दिन मसीह येशु ने उसे आंख की रोशनी देने
की प्रक्रिया में मिट्टी का लेप बनाया था, वह शब्बाथ था. 15 फ़रीसियों ने उस
व्यक्ति से पूछताछ की कि उसने दृष्टि प्राप्त कैसे की? उसने उन्हें उत्तर दिया,
“उन्होंने मेरी आंखों पर मिट्टी का लेप लगाया, मैंने उन्हें धोया और अब मैं देख
सकता हूं.” 16 इस पर कुछ फ़रीसी कहने लगे, “वह व्यक्ति परमेश्वर की ओर
से नहीं है, क्योंकि वह शब्बाथ के विधान का पालन नहीं करता.” परंतु अन्य
कहने लगे, “कोई पापी व्यक्ति ऐसे अद्भुत चिह्न कैसे दिखा सकता है?” इस

विषय को लेकर उनमें मतभेद हो गया. 17 अतः उन्होंने जो पहले अंधा था उस
व्यक्ति से दोबारा पूछा, “जिस व्यक्ति ने तुम्हें आंखों की रोशनी दी है, उसके
विषय में तुम्हारा क्या मत है?” उसने उत्तर दिया, “वह भविष्यवक्ता हैं.” 18
यहूदी अगुएं यह विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे कि वह, जो पहले अंधा था,
अब देख सकता है. इसलिये उन्होंने उसके माता-पिता को बुलवाया 19 और
उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह
जन्म से अंधा था? अब यह कैसे देखने लगा?” 20 उसके माता-पिता ने उत्तर
दिया, “हां, यह तो हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह भी कि यह अंधा
ही जन्मा था; 21 किंतु हम यह नहीं जानते कि यह कैसे देखने लगा या किसने
उसे आंखों की रोशनी दी है. वह बालक नहीं है, आप उसी से पूछ लीजिए. वह
अपने विषय में स्वयं ही बताएगा.” 22 उसके माता-पिता ने यहूदी अगुओं के
भय से ऐसा कहा था क्योंकि यहूदी अगुए पहले ही एक मत हो चुके थे कि यदि
किसी भी व्यक्ति ने मसीह येशु को मसीह के रूप में मान्यता दी तो उसे यहूदी
सभागृह से बाहर कर दिया जाएगा. 23 इसलिये उसके माता-पिता ने कहा था,
“वह बालक नहीं है, आप उसी से पूछ लीजिए.” 24 इसलिये फ़रीसियों ने जो
पहले अंधा था उसको दोबारा बुलाया और कहा, “परमेश्वर की महिमा करो.
हम यह जानते हैं कि वह व्यक्ति पापी है.” 25 उसने उत्तर दिया, “वह पापी है
या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता; हां, इतना मैं अवश्य जानता हूं कि मैं अंधा था
और अब देखता हूं.” 26 इस पर उन्होंने उससे दोबारा प्रश्न किया, “उस व्यक्ति
ने ऐसा क्या किया कि तुम्हें आंखों की रोशनी मिल गई?” 27 उसने उत्तर दिया,
“मैं पहले ही बता चुका हूं परंतु आप लोगों ने सुना नहीं. आप लोग बार-बार
क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप लोग भी उनके चेले बनना चाहते हैं?” 28 इस
पर उन्होंने उसकी उल्लाहना करते हुए उससे कहा, “तू ही है उसका चेला! हम
तो मोशेह के चेले हैं. 29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मोशेह से बातें की थी.
जहां तक इस व्यक्ति का प्रश्न है, हम नहीं जानते कि वह कहां से आया है.” 30
उसने उनसे कहा, “तब तो यह बड़े आश्चर्य का विषय है! आपको यह भी
मालूम नहीं कि वह कहां से हैं जबकि उन्होंने मुझे आंखों की रोशनी दी है! 31
हम सभी जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनते—वह उसकी सुनते हैं,
जो परमेश्वर के भक्त है तथा उनकी इच्छा पूरी करते है. 32 आदिकाल से कभी
ऐसा सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे को आंखों की रोशनी दी
हो. (aiōn g165) 33 यदि वह परमेश्वर की ओर से न होते तो वह कुछ भी नहीं
कर सकते थे.” 34 यह सुन उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, “तू! तू तो पूरी तरह से
पाप में जन्मा है और हमें सिखाता है!” यह कहते हुए उन्होंने उसे यहूदी सभागृह
से बाहर निकाल दिया. 35 जब मसीह येशु ने यह सुना कि यहूदियों ने उस
व्यक्ति को सभागृह से बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलने पर उन्होंने प्रश्न
किया, “क्या तुम मनुष्य के पुत्र में विश्वास करते हो?” 36 उसने पूछा, “प्रभु,
वह कौन हैं कि मैं उनमें विश्वास करूं?” 37 मसीह येशु ने उससे कहा, “उसे
तुमने देखा है और जो तुमसे बातें कर रहा है, वह वही है.” 38 उसने उत्तर
दिया, “मैं विश्वास करता हूं, प्रभु!” और उसने दंडवत करते हुए उनकी वंदना
की. 39 तब मसीह येशु ने कहा, “मैं इस संसार में न्याय के लिए ही आया हूं कि
जो नहीं देखते, वे देखें और जो देखते हैं, वे अंधे हो जाएं.” 40 वहां खड़े कुछ
फ़रीसियों ने इन शब्दों को सुनकर कहा, “तो क्या हम भी अंधे हैं?” 41 मसीह
येशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते तो तुम दोषी न होते किंतु इसलिये कि
तुम कहते हो, ‘हम देखते हैं,’ तुम्हारा दोष बना रहता है.

10 “मैं तुम फ़रीसियों पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं. वह, जो
भेड़शाला में द्वार से प्रवेश नहीं करता परंतु बाड़ा फांद कर घुसता है, चोर
और लुटेरा है, 2 परंतु जो द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है. 3
उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं. वह अपनी
भेड़ों को नाम लेकर बुलाता और उन्हें बाहर ले जाता है. 4 अपनी सब भेड़ों को
बाहर निकाल लेने के बाद वह उनके आगे-आगे चलता है और भेड़ें उसके
पीछे-पीछे क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं. 5 वे किसी अनजान के
पीछे कभी नहीं चलेंगी परंतु उससे भागेंगी क्योंकि वे उस अनजान की आवाज
नहीं पहचानतीं.” 6 मसीह येशु के इस दृष्टांत का मतलब सुननेवाले फ़रीसी
नहीं समझे कि वह उनसे कहना क्या चाह रहे थे. 7 इसलिये मसीह येशु ने
दोबारा कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: भेड़ों का द्वार मैं
ही हूं. 8 वे सभी, जो मुझसे पहले आए, चोर और लुटेरे थे. भेड़ों ने उनकी नहीं
सुनी. 9 द्वार मैं ही हूं. यदि कोई मुझसे होकर प्रवेश करता है तो उद्धार प्राप्त
करेगा. वह भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा. 10 चोर किसी
अन्य उद्देश्य से नहीं, मात्र चुराने, हत्या करने और नाश करने आता है; मैं
इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत का जीवन पाएं. 11 “मैं ही हूं
अच्छा चरवाहा. अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण दे देता है.
12 मज़दूर, जो न तो चरवाहा है और न भेड़ों का स्वामी, भेड़िये को आते देख
भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है. भेड़िया उन्हें पकड़ता है और वे तितर-बितर हो
जाती हैं. 13 इसलिये कि वह मज़दूर है, उसे भेड़ों की कोई चिंता नहीं है. 14
“मैं ही हूं अच्छा चरवाहा. मैं अपनों को जानता हूं और मेरे अपने मुझे; 15
ठीक जिस प्रकार पिता परमेश्वर मुझे जानते हैं, और मैं उन्हें. भेड़ों के लिए मैं
अपने प्राण भेंट कर देता हूं. 16 मेरी और भी भेड़ें हैं, जो अब तक इस भेड़शाला
में नहीं हैं. मुझे उन्हें भी लाना है. वे मेरी आवाज सुनेंगी; तब एक ही झुंड और
एक ही चरवाहा होगा. 17 पिता मुझसे प्रेम इसलिये करते हैं कि मैं अपने प्राण
भेंट कर देता हूं—कि उन्हें दोबारा प्राप्त करूं. 18 कोई भी मुझसे मेरे प्राण छीन
नहीं रहा—मैं अपने प्राण अपनी इच्छा से भेंट कर रहा हूं. मुझे अपने प्राण भेंट
करने और उसे दोबारा प्राप्त करने का अधिकार है, जो मुझे अपने पिता की ओर
से प्राप्त हुआ है.” 19 मसीह येशु के इस वक्तव्य के कारण यहूदियों में दोबारा
मतभेद उत्पन्न हो गया. 20 उनमें से कुछ ने कहा, “यह दुष्टात्मा से पीड़ित है या
निपट सिरफिरा. क्यों सुनते हो तुम उसकी?” 21 कुछ अन्य लोगों ने कहा, “ये
वचन दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति के नहीं हो सकते; क्या कोई दुष्टात्मा अंधों को
आंखों की रोशनी दे सकता है?” 22 शीत ऋतु थी और येरूशलेम में समर्पण पर्व
मनाया जा रहा था. 23 मसीह येशु मंदिर परिसर में शलोमोन के द्वारा बनाए हुए
मंडप में टहल रहे थे. 24 यहूदी अगुओं ने उन्हें घेर लिया और जानना चाहा,
“तुम हमें कब तक दुविधा में डाले रहोगे? यदि तुम ही मसीह हो तो हमें स्पष्ट
बता दो.” 25 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मैंने तो आपको बता दिया है, किंतु
आप ही विश्वास नहीं करते. सभी काम, जो मैं अपने पिता के नाम में करता हूं,
वे ही मेरे गवाह हैं. 26 आप विश्वास नहीं करते क्योंकि आप मेरी भेड़ें नहीं हैं.
27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज सुनती हैं. मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे-पीछे
चलती हैं. 28 मैं उन्हें अनंत काल का जीवन देता हूं. वे कभी नाश न होंगी और
कोई भी उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकता. (aiōn g165, aiōnios g166) 29 मेरे
पिता, जिन्होंने उन्हें मुझे सौंपा है, सबसे बड़ा हैं और कोई भी इन्हें पिता के हाथ
से छीन नहीं सकता. 30 मैं और पिता एक तत्व हैं.” 31 तब यहूदियों ने दोबारा
उनका पथराव करने के लिए पत्थर उठा लिए. 32 मसीह येशु ने उनसे प्रश्न
किया, “मैंने अपने पिता की ओर से तुम्हारे सामने अनेक भले काम किए. उनमें
से किस काम के लिए तुम मेरा पथराव करना चाहते हो?” 33 यहूदियों ने उत्तर
दिया, “भले काम के कारण नहीं, परंतु परमेश्वर-निंदा के कारण: तुम मनुष्य
होते हुए स्वयं को परमेश्वर घोषित करते हो!” 34 मसीह येशु ने उनसे पूछा,
“क्या तुम्हारे व्यवस्था में यह नहीं लिखा: मैंने कहा कि तुम ईश्वर हो? 35
जिन्हें परमेश्वर का संदेश दिया गया था, उन्हें ईश्वर कहकर संबोधित किया
गया—और पवित्र शास्त्र का लेख टल नहीं सकता, 36 तो जिसे पिता ने विशेष

उद्देश्य पूरा करने के लिए अलग कर संसार में भेज दिया है, उसके विषय में आप
यह घोषणा कर रहे हैं: 'तुम परमेश्वर की निंदा कर रहे हो!' क्या मात्र इसलिये
कि मैंने यह दावा किया है, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'? 37 मत करो मुझमें विश्वास
यदि मैं अपने पिता के काम नहीं कर रहा. 38 परंतु यदि मैं ये काम कर ही रहा
हूं, तो भले ही तुम मुझमें विश्वास न करो, इन कामों में तो विश्वास करो कि तुम
जान जाओ और समझ लो कि पिता परमेश्वर मुझमें हैं और मैं पिता परमेश्वर
में." 39 इस पर उन्होंने दोबारा मसीह येशु को बंदी बनाने का प्रयास किया,
किंतु वह उनके हाथ से बचकर निकल गए. 40 इसके बाद मसीह येशु यरदन
नदी के पार दोबारा उस स्थान को चले गए, जहां पहले योहन बपतिस्मा देते थे
और वह वहीं ठहरे रहे. 41 वहां अनेक लोग उनके पास आने लगे. वे कह रहे
थे, "यद्यपि योहन ने कोई अद्भुत चिह्न नहीं दिखाया, फिर भी जो कुछ उन्होंने
इनके विषय में कहा था, वह सब सच है." 42 वहां अनेक लोगों ने मसीह येशु
में विश्वास किया.

11 लाज़रॉस नामक व्यक्ति बीमार था, जो मरियम तथा उसकी बहन मार्था
के गांव बैथनियाह का निवासी था. 2 यह वही मरियम थी, जिसने
कीमती और शुद्ध सुगंध द्रव्य से मसीह येशु के चरणों को मलकर उन्हें अपने
केशों से पोंछा था, उसी का भाई लाज़रॉस अस्वस्थ था. 3 इसलिये बहनों ने
मसीह येशु को संदेश भेजा, "प्रभु, आपका प्रिय, लाज़रॉस बीमार है." 4 यह
सुनकर मसीह येशु ने कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परंतु परमेश्वर की
महिमा का साधन बनेगी, जिससे परमेश्वर का पुत्र गौरवान्वित हो." 5 मार्था,
उसकी बहन मरियम और लाज़रॉस मसीह येशु के प्रियजन थे. 6 उसकी बीमारी
के विषय में मालूम होने पर भी मसीह येशु वहीं दो दिन और ठहरे रहे, जहां वह
थे. 7 इसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "चलो, हम दोबारा यहूदिया
चलें." 8 शिष्यों ने उनसे प्रश्न किया, "रब्बी, अभी तो यहूदी अगुए पथराव
द्वारा आपकी हत्या करना चाह रहे थे, फिर भी आप वहां जाना चाहते हैं?" 9
मसीह येशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन में प्रकाश के बारह घंटे नहीं होते? यदि
कोई दिन में चले तो वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह संसार की ज्योति को
देखता है. 10 किंतु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उसमें
ज्योति नहीं." 11 इसके बाद मसीह येशु ने उनसे कहा, "हमारा मित्र लाज़रॉस
सो गया है. मैं जा रहा हूं कि उसे नींद से जगाऊं." 12 तब शिष्यों ने उनसे
कहा, "प्रभु, यदि वह मात्र सो गया है तो स्वस्थ हो जाएगा." 13 मसीह येशु ने
तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था किंतु शिष्य समझे कि वह नींद के विषय
में कह रहे थे. 14 इस पर मसीह येशु ने उनसे स्पष्ट शब्दों में कहा, "लाज़रॉस
की मृत्यु हो चुकी है. 15 यह तुम्हारे ही हित में है कि मैं वहां नहीं था—कि तुम
विश्वास करो. आओ, अब हम उसके पास चलें." 16 तब थोमॉस ने, जिनका
उपनाम दिदुमॉस था, अपने साथी शिष्यों से कहा, "आओ, इनके साथ हम भी
मरने चलें." 17 वहां पहुंचकर मसीह येशु को मालूम हुआ कि लाज़रॉस को
कंदरा-क़ब्र में रखे हुए चार दिन हो चुके हैं. 18 बैथनियाह नगर येरूशलेम के
पास, लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर था. 19 अनेक यहूदी अगुएं मार्था
और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर शांति देने आ गए थे. 20 जैसे ही
मार्था को मसीह येशु के नगर के पास होने की सूचना मिली, वह उनसे मिलने
चली गई किंतु मरियम घर में ही रही. 21 मार्था ने मसीह येशु से कहा, "प्रभु,
यदि आप यहां होते तो मेरे भाई की मृत्यु न होती. 22 फिर भी मैं जानती हूं कि
अब भी आप परमेश्वर से जो कुछ मांगेंगे, वह आपको देंगे." 23 मसीह येशु ने
उससे कहा, "तुम्हारा भाई फिर से जीवित हो जाएगा." 24 मार्था ने मसीह येशु
से कहा, "मैं जानती हूं. अंतिम दिन पुनरुत्थान के समय वह फिर से जीवित हो
जाएगा." 25 मसीह येशु ने उससे कहा, "मैं ही हूं पुनरुत्थान और जीवन. जो
कोई मुझमें विश्वास करता है, वह जिएगा—भले ही उसकी मृत्यु हो जाए 26
तथा वह जीवित व्यक्ति, जो मुझमें विश्वास करता है, उसकी मृत्यु कभी न
होगी. क्या तुम यह विश्वास करती हो?" (aiōn g165) 27 उसने कहा, "जी हां,
प्रभु, मुझे विश्वास है कि आप ही मसीह हैं, आप ही परमेश्वर के पुत्र हैं और
आप ही वह हैं, जिनके संसार में आने के बारे में पहले से बताया गया था."
28 यह कहकर वह लौट गई और अपनी बहन मरियम को अलग ले जाकर
उसे सूचित किया, "गुरुवर आ गए हैं और तुम्हें बुला रहे हैं." 29 यह सुनकर
मरियम तत्काल मसीह येशु से मिलने निकल पड़ी. 30 मसीह येशु ने अब तक
नगर में प्रवेश नहीं किया था. वह वहीं थे, जहां मार्था ने उनसे भेंट की थी. 31
जब वहां शांति देने आए यहूदियों ने मरियम को एकाएक उठकर बाहर जाते हुए
देखा तो वे भी उसके पीछे-पीछे यह समझकर चले गए कि वह क़ब्र पर रोने के
लिए जा रही है. 32 मसीह येशु के पास पहुंच मरियम उनके चरणों में गिर पड़ी
और कहने लगी, "प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरे भाई की मृत्यु न होती." 33
मसीह येशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को रोते हुए देखा तो उनका
हृदय व्याकुल हो उठा. उन्होंने उदास शब्द में पूछा, 34 "तुमने उसे कहां रखा
है?" उन्होंने उनसे कहा, "आइए, प्रभु, देख लीजिए." 35 येशु रोया! 36 यह
देख शेष यहूदी कहने लगे, "देखो इन्हें (येशु को) वह कितना प्रिय था!" 37
परंतु उनमें से कुछ ने कहा, "क्या यह, जिन्होंने अंधे को आंखों की रोशनी दी,
इस व्यक्ति को मृत्यु से बचा न सकते थे?" 38 दोबारा बहुत उदास होकर मसीह
येशु क़ब्र पर आए, जो वस्तुतः एक कंदरा थी, जिसके प्रवेश द्वार पर एक पत्थर
रखा हुआ था. 39 मसीह येशु ने वह पत्थर हटाने को कहा. मृतक की बहन
मार्था ने आपत्ति प्रकट करते हुए उनसे कहा, "प्रभु, उसे मरे हुए चार दिन हो
चुके हैं. अब तो उसमें से दुर्गंध आ रही होगी." 40 मसीह येशु ने उससे कहा,
"क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी तो परमेश्वर की
महिमा को देखोगी?" 41 इसलिये उन्होंने पत्थर हटा दिया. मसीह येशु ने
अपनी आंखें ऊपर उठाई और कहा, "पिता, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि
आपने मेरी सुन ली. 42 मैं जानता हूं कि आप हमेशा मेरी सुनते हैं किंतु यहां
उपस्थित भीड़ के कारण मैंने ऐसा कहा है कि वे सब विश्वास करें कि आपने
ही मुझे भेजा है." 43 तब उन्होंने ऊंचे शब्द में पुकारा, "लाज़रॉस, बाहर
आ जाओ!" 44 वह, जो चार दिन से मरा हुआ था, बाहर आ गया. उसका
सारा शरीर पट्टियों में और उसका मुख कपड़े में लिपटा हुआ था. मसीह येशु
ने उनसे कहा, "इसे खोल दो और जाने दो." 45 यह देख मरियम के पास
आए यहूदियों में से अनेकों ने मसीह येशु में विश्वास किया. 46 परंतु कुछ ने
फ़रीसियों को जा बताया कि मसीह येशु ने क्या-क्या किया था. 47 तब प्रधान
पुरोहितों और फ़रीसियों ने महासभा बुलाई और कहा: "हम इस व्यक्ति के
विषय में क्या कर रहे हैं? यह अद्भुत चिह्नों पर चिह्न दिखा रहा है! 48 यदि हम
इसे ये सब यों ही करते रहने दें तो सभी इसमें विश्वास करने लगेंगे और रोमी
हमसे हमारे अधिकार व राष्ट्र दोनों ही छीन लेंगे." 49 तब सभा में उपस्थित उस
वर्ष के महापुरोहित कायाफ़स ने कहा, "आप न तो कुछ जानते हैं 50 और न ही
यह समझते हैं कि सारी जनता के विनाश की बजाय मात्र एक व्यक्ति राष्ट्र के
हित में प्राणों का त्याग करना आपके लिए भला है!" 51 यह उसने अपनी
ओर से नहीं कहा था परंतु उस वर्ष के महापुरोहित होने के कारण उसने यह
भविष्यवाणी की थी, कि राष्ट्र के हित में मसीह येशु प्राणों का त्याग करेंगे, 52
और न केवल एक जनता के हित में परंतु परमेश्वर की तितर-बितर हुई संतान को
इकट्ठा करने के लिए भी. 53 उस दिन से वे सब एकजुट होकर उनकी हत्या की
योजना बनाने लगे. 54 इसलिये मसीह येशु ने यहूदियों के मध्य सार्वजनिक रूप
से घूमना बंद कर दिया. वहां से वह बंजर भूमि के पास अपने शिष्यों के साथ
एफ्राइम नामक नगर में जाकर रहने लगे. 55 यहूदियों का फ़सह पर्व पास था.
आस-पास से अनेक लोग येरूशलेम गए कि फ़सह में सम्मिलित होने के लिए

स्वयं को सांस्कारिक रूप से शुद्ध करें. **56** वे मसीह येशु की खोज में थे और मंदिर परिसर में खड़े हुए एक दूसरे से पूछ रहे थे, "तुम्हारा क्या विचार है, वह पर्व में आएगा या नहीं?" **57** प्रधान पुरोहितों और फ़रीसियों ने मसीह येशु को बंदी बनाने के उद्देश्य से आज्ञा दे रखी थी कि जिस किसी को उनकी जानकारी हो, वह उन्हें तुरंत सूचित करे.

12 फ़सह के पर्व से छः दिन पूर्व मसीह येशु लाज़रॉस के नगर बैथनियाह आए, जहां उन्होंने उसे मरे हुओं में से जीवित किया था. **2** वहां उनके लिए भोज का आयोजन किया गया था. मार्था भोजन परोस रही थी और मसीह येशु के साथ भोज में सम्मिलित लोगों में लाज़रॉस भी था. **3** वहां मरियम ने जटामांसी के लगभग तीन सौ मिलीलीटर कीमती और शुद्ध सुगंध द्रव्य मसीह येशु के चरणों पर मला और उन्हें अपने केशों से पोंछा. सारा घर इससे सुगंधित हो गया. **4** इस पर उनका एक शिष्य—कारियोतवासी यहूदाह, जो उनके साथ धोखा करने पर था, कहने लगा, **5** "यह सुगंध द्रव्य गरीबों के लिये तीन सौ दीनार में क्यों नहीं बेचा गया?" **6** यह उसने इसलिये नहीं कहा था कि वह गरीबों की चिंता करता था, परंतु इसलिये कि वह चोर था; धनराशि रखने की ज़िम्मेदारी उसकी थी, जिसमें से वह धन चोरी करता था. **7** मसीह येशु ने कहा, "उसे यह करने दो, यह मेरे अंतिम संस्कार की तैयारी के लिए है. **8** गरीब तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे किंतु मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूंगा." **9** यह मालूम होने पर कि मसीह येशु वहां हैं, बड़ी संख्या में यहूदी अगुएं इस उद्देश्य से आये कि केवल मसीह येशु को नहीं, परंतु लाज़रॉस को भी देखें जिसे मसीह येशु ने मरे हुओं में से जीवित किया था. **10** परिणामस्वरूप, प्रधान पुरोहित लाज़रॉस की भी हत्या की योजना करने लगे, **11** क्योंकि लाज़रॉस के कारण अनेक यहूदी उन्हें छोड़ मसीह येशु में विश्वास करने लगे थे. **12** अगले दिन पर्व में आए विशाल भीड़ ने सुना कि मसीह येशु येरूशलेम आ रहे हैं. **13** वे सब खजूर के वृक्षों की डालियां लेकर मसीह येशु से मिलने निकल पड़े और ऊंचे शब्द में जय जयकार करने लगे. "होशान्ना!" "धन्य हैं वह, जो प्रभु के नाम में आ रहे हैं!" "धन्य हैं इस्राएल के राजा!" **14** वहां मसीह येशु गधे के एक बच्चे पर बैठ गए—वैसे ही जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: **15** "ज़ियोन की पुत्री, भयभीत न हो! देखो, तुम्हारा राजा गधे पर बैठा हुआ आ रहा है." **16** उनके शिष्य उस समय तो यह नहीं समझे किंतु जब मसीह येशु की महिमा हुई तो उन्हें याद आया कि पवित्र शास्त्र में यह सब उन्हीं के विषय में लिखा गया था और भीड़ ने सब कुछ वचन के अनुसार ही किया था. **17** वे सब, जिन्होंने मसीह येशु के द्वारा लाज़रॉस को कब्र से बाहर बुलाए जाते तथा मरे हुओं में से दोबारा जीवित किए जाते देखा था, उनकी गवाही दे रहे थे. **18** भीड़ का उन्हें देखने के लिए आने का एक कारण यह भी था कि वे मसीह येशु के इस अद्भुत चिह्न के विषय में सुन चुके थे. **19** यह सब जानकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, "तुमसे कुछ भी नहीं हो पा रहा है. देखो, सारा संसार उसके पीछे हो लिया है!" **20** पर्व की आराधना में सम्मिलित होने आए लोगों में कुछ यूनानी भी थे. **21** उन्होंने गलील प्रदेश के बैथसैदावासी फ़िलिप्पॉस से विनती की, "श्रीमान! हम मसीह येशु से भेंट करना चाहते हैं." **22** फ़िलिप्पॉस ने आन्द्रेयास को यह सूचना दी और उन दोनों ने जाकर मसीह येशु को. **23** यह सुनकर मसीह येशु ने उनसे कहा, "मनुष्य के पुत्र के गौरवान्वित होने का समय आ गया है. **24** मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: जब तक बीज भूमि में पड़कर मर न जाए, अकेला ही रहता है परंतु यदि वह मर जाए तो बहुत फलता है. **25** जो अपने जीवन से प्रेम रखता है, उसे खो देता है परंतु जो इस संसार में अपने जीवन से प्रेम नहीं रखता, उसे अनंत जीवन के लिए सुरक्षित रखेगा. **(aiōnios g166)** **26** यदि कोई मेरी सेवा करता है, वह मेरे पीछे चले. मेरा सेवक वहीं होगा जहां मैं हूं. जो मेरी सेवा करता है, उसका पिता परमेश्वर आदर करेंगे. **27** "इस समय मेरी आत्मा व्याकुल है. मैं क्या कहूं? 'पिता, मुझे इस स्थिति से बचा लीजिए'? किंतु इसी कारण से तो मैं यहां तक आया हूं. **28** पिता, अपने नाम का गौरव कीजिए." इस पर स्वर्ग से निकलकर यह आवाज सुनाई दी, "मैंने तुम्हें गौरवान्वित किया है, और दोबारा गौरवान्वित करूंगा." **29** भीड़ ने जब यह सुना तो कुछ ने कहा, "देखो, बादल गरजा!" अन्य कुछ ने कहा, "किसी स्वर्गदूत ने उनसे कुछ कहा है." **30** इस पर मसीह येशु ने उनसे कहा, "यह आवाज मेरे नहीं, तुम्हारे लिए है. **31** इस संसार के न्याय का समय आ गया है और अब इस संसार के हाकिम को निकाल दिया जाएगा. **32** जब मैं पृथ्वी से ऊंचे पर उठाया जाऊंगा तो सब लोगों को अपनी ओर खींच लूंगा." **33** इसके द्वारा मसीह येशु ने यह संकेत दिया कि उनकी मृत्यु किस प्रकार की होगी. **34** भीड़ ने उनसे प्रश्न किया, "हमने व्यवस्था में से सुना है कि मसीह का अस्तित्व सर्वदा रहेगा. आप यह कैसे कहते हैं कि मनुष्य के पुत्र का ऊंचे पर उठाया जाना ज़रूरी है? कौन है यह मनुष्य का पुत्र?" **(aiōn g165)** **35** तब मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "ज्योति तुम्हारे मध्य कुछ ही समय तक है. जब तक ज्योति है, चलते रहो, ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे क्योंकि जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि किस ओर जा रहा है. **36** जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, ज्योति में विश्वास करो कि तुम ज्योति की संतान बन सको." यह कहकर मसीह येशु वहां से चले गए और उनसे छिपे रहे. **37** यद्यपि मसीह येशु ने उनके सामने अनेक अद्भुत चिन्ह दिखाए थे तौभी वे लोग उनमें विश्वास नहीं कर रहे थे; **38** जिससे भविष्यवक्ता यशायाह का यह वचन पूरा हो: "प्रभु, किसने हमारी बातों पर विश्वास किया और प्रभु का हाथ किस पर प्रकट हुआ है?" **39** वे विश्वास इसलिये नहीं कर पाये कि भविष्यवक्ता यशायाह ने यह भी कहा है: **40** "परमेश्वर ने उनकी आंखें अंधी तथा उनका हृदय कठोर कर दिया, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, मन से समझें और पश्चाताप कर लें, और मैं उन्हें स्वस्थ कर दूं." **41** यशायाह ने यह वर्णन इसलिये किया कि उन्होंने प्रभु का प्रताप देखा और उसका वर्णन किया. **42** अनेकों ने, यहां तक कि अधिकारियों ने भी मसीह येशु में विश्वास किया किंतु फ़रीसियों के कारण सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया कि कहीं उन्हें यहूदी सभागृह से निकाल न दिया जाए **43** क्योंकि उन्हें परमेश्वर से प्राप्त आदर की तुलना में मनुष्यों से प्राप्त आदर अधिक प्रिय था. **44** मसीह येशु ने ऊंचे शब्द में कहा, "जो कोई मुझमें विश्वास करता है, वह मुझमें ही नहीं परंतु मेरे भेजनेवाले में विश्वास करता है. **45** क्योंकि जो कोई मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है. **46** मैं संसार में ज्योति बनकर आया हूं कि वे सभी, जो मुझमें विश्वास करें, अंधकार में न रहें. **47** "मैं उस व्यक्ति पर दोष नहीं लगाता, जो मेरे संदेश सुनकर उनका पालन नहीं करता क्योंकि मैं संसार पर दोष लगाने नहीं परंतु संसार के उद्धार के लिए आया हूं. **48** जो कोई मेरा तिरस्कार करता है और मेरे समाचार को ग्रहण नहीं करता, उस पर आरोप लगानेवाला एक ही है: मेरा समाचार; वही उसे अंतिम दिन दोषी घोषित करेगा. **49** मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, परंतु मेरे पिता ने, जो मेरे भेजनेवाले हैं, आज्ञा दी है कि मैं क्या कहूं और कैसे कहूं. **50** मैं जानता हूं कि उनकी आज्ञा का पालन अनंत जीवन है. इसलिये जो कुछ मैं कहता हूं, ठीक वैसा ही कहता हूं, जैसा पिता ने मुझे कहने की आज्ञा दी है." **(aiōnios g166)**

13 फ़सह उत्सव के पूर्व ही मसीह येशु यह जानते थे कि उनका संसार को छोड़कर पिता परमेश्वर के पास लौट जाने का समय पास आ गया है. मसीह येशु उनसे हमेशा प्रेम करते रहे, जो संसार में उनके अपने थे किंतु अब उन्होंने उनसे अंत तक वैसा ही प्रेम रखा. **2** शिमओन के पुत्र कारियोतवासी यहूदाह के मन में शैतान यह विचार डाल चुका था कि वह मसीह येशु के साथ धोखा करे. **3** भोज के समय मसीह येशु ने भली-भांति यह जानते हुए कि पिता

ने सब कुछ उनके हाथ में कर दिया है और यह भी, कि वह परमेश्वर की ओर से
आए हैं और परमेश्वर के पास लौट रहे हैं, 4 भोजन की मेज़ से उठकर अपने
बाहरी कपडे़ उतारे, कमर में अंगोछा बांध लिया 5 और एक बर्तन में जल
उंडेलकर शिष्यों के पांव धोने और कमर में बंधे अंगोछे से पोंछने लगे. 6 जब
वह शिमओन पेतरॉस के पास आए तो पेतरॉस ने उनसे कहा, “प्रभु, आप मेरे
पांव धोएंगे?” 7 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “जो मैं कर रहा हूं, तुम उसे इस
समय नहीं, कुछ समय बाद समझोगे.” 8 पेतरॉस ने कहा, “नहीं, प्रभु, आप
मेरे पांव कभी भी न धोएंगे.” “यदि मैं तुम्हारे पांव न धोऊं तो तुम्हारा मेरे साथ
कोई संबंध नहीं रह जाएगा,” मसीह येशु ने कहा. **(aiōn g165)** 9 इस पर
शिमओन पेतरॉस ने मसीह येशु से कहा, “प्रभु, तब तो मेरे पांव ही नहीं, हाथ
और सिर भी धो दीजिए.” 10 मसीह येशु ने कहा, “जो स्नान कर चुका है, वह
पूरी तरह साफ़ हो चुका है, उसे ज़रूरत है मात्र पांव धोने की; तुम लोग साफ़ हो
परंतु सबके सब साफ़ नहीं.” 11 मसीह येशु यह जानते थे कि कौन उनके साथ
धोखा कर रहा है, इसलिये उन्होंने यह कहा: “परंतु सबके सब साफ़ नहीं.”
12 जब मसीह येशु शिष्यों के पांव धोकर, अपने बाहरी कपड़े दोबारा पहनकर
भोजन के लिए बैठ गए, तो उन्होंने शिष्यों से कहा, “तुम समझ रहे हो कि मैंने
तुम्हारे साथ यह क्या किया है? 13 तुम लोग मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु,’ कहते हो,
सही ही है—क्योंकि मैं वह हूं. 14 इसलिये यदि मैंने, ‘प्रभु’ और ‘गुरु’ होकर
भी तुम्हारे पांव धोए हैं, तो सही है कि तुम भी एक दूसरे के पांव धोओ. 15 मैंने
तुम्हारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है—तुम भी वैसा ही करो, जैसा मैंने
तुम्हारे साथ किया है. 16 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं:
दास अपने स्वामी से बढ़कर नहीं होता और न ही कोई भेजा हुआ दूत अपने
भेजनेवाले से. 17 ये सब तो तुम जानते ही हो. सुखद होगा तुम्हारा जीवन यदि
तुम इनका पालन भी करो. 18 “मैं तुम सबके विषय में नहीं कह रहा हूं—मैं
जानता हूं कि मैंने किन्हें चुना है. मैं यह इसलिये कह रहा हूं कि पवित्र शास्त्र का
यह लेख पूरा हो: जो मेरी रोटी खाता है, उसी ने मुझ पर लात उठाई है. 19
“यह सब घटित होने के पूर्व ही मैं तुम्हें बता रहा हूं कि जब ये सब घटित हो तो
तुम विश्वास करो कि वह मैं ही हूं. 20 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर
रहा हूं: जो मेरे किसी भी भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है
और जो मुझे ग्रहण करता है, मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है.” 21 यह कहते-
कहते मसीह येशु आत्मा में व्याकुल हो उठे. उन्होंने कहा, “मैं तुम पर यह
अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: तुममें से एक मेरे साथ धोखा करेगा.” 22
शिष्य संदेह में एक दूसरे को देखने लगे कि गुरु यह किसके विषय में कह रहे हैं.
23 एक शिष्य, जो मसीह येशु का विशेष प्रियजन था, उनके अत्यंत पास बैठा
था; 24 शिमओन पेतरॉस ने उससे संकेत से पूछा, “प्रभु ऐसा किसके विषय में
कह रहे हैं?” 25 उस शिष्य ने मसीह येशु से पूछा, “कौन है वह, प्रभु?” 26
मसीह येशु ने उत्तर दिया, “जिसे मैं यह रोटी डुबोकर दूंगा, वह.” तब उन्होंने
रोटी शिमओन के पुत्र कारियोतवासी यहूदाह को दे दी. 27 टुकड़ा लेते ही
उसमें शैतान समा गया. मसीह येशु ने उससे कहा. “तुम्हें जो कुछ करना है,
शीघ्र करो.” 28 भोजन पर बैठे किसी भी शिष्य को यह मालूम न हो पाया
कि उन्होंने यह उससे किस मतलब से कहा था. 29 कुछ ने यह समझा कि
मसीह येशु उससे कह रहे हैं कि जो कुछ हमें पर्व के लिए चाहिए, शीघ्र मोल
लो या गरीबों को कुछ दे दो क्योंकि यहूदाह के पास धन की थैली रहती
थी. 30 इसलिये यहूदाह तत्काल बाहर चला गया. वह रात का समय था. 31
जब यहूदाह बाहर चला गया तो मसीह येशु ने कहा, “अब मनुष्य का पुत्र
गौरवान्वित हुआ है और उसमें परमेश्वर गौरवान्वित हुए हैं. 32 यदि उसमें
परमेश्वर महिमित हुए हैं तो परमेश्वर भी उसे स्वयं महिमित करेंगे और शीघ्र ही
महिमित करेंगे. 33 “मैं बस अब थोड़ी ही देर तुम्हारे साथ हूं, तुम मुझे ढूंढोगे
और जैसा मैंने यहूदी अगुओं से कहा है, वैसा मैं तुमसे भी कहता हूं, ‘जहां मैं जा
रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते.’ 34 “मैं तुम्हें एक नई आज्ञा दे रहा हूं: एक
दूसरे से प्रेम करो—जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम
करो. 35 यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे तो यह सब जान लेंगे कि तुम मेरे चेले
हो.” 36 शिमओन पेतरॉस ने पूछा, “प्रभु, आप कहां जा रहे हैं?” मसीह येशु ने
उन्हें उत्तर दिया, “जहां मैं जा रहा हूं, वहां मेरे पीछे चलते हुए तुम अभी नहीं
आ सकते—तुम वहां कुछ समय बाद आओगे.” 37 पेतरॉस ने उनसे दोबारा
पूछा, “प्रभु, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं चल सकता? मैं तो आपके लिए
अपने प्राण भी दे दूंगा.” 38 मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुम मेरे लिए अपने प्राण
देने का दावा करते हो? मैं तुमसे कहता हूं, मुर्ग उस समय तक बांग नहीं देगा
जब तक तुम तीन बार मुझे नकार न दोगे.

14 “अपने मन को व्याकुल न होने दो, तुम परमेश्वर में विश्वास करते
हो, मुझमें भी विश्वास करो. 2 मेरे पिता के यहां अनेक निवास स्थान
हैं—यदि न होते तो मैं तुम्हें बता देता. मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा
हूं. 3 वहां जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के बाद मैं तुम्हें अपने साथ ले
जाने के लिए फिर आऊंगा कि जहां मैं हूं, तुम भी मेरे साथ वहीं रहो. 4 वह मार्ग
तुम जानते हो, जो मेरे ठिकाने तक पहुंचाता है.” 5 थोमॉस ने उनसे प्रश्न किया,
“प्रभु, हम आपका ठिकाना ही नहीं जानते तो उसका मार्ग कैसे जान सकते
हैं?” 6 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मैं ही हूं वह मार्ग, वह सच और वह जीवन,
बिना मेरे द्वारा कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता. 7 यदि तुम वास्तव में मुझे
जानते तो मेरे पिता को भी जानते. अब से तुमने उन्हें जान लिया है और उन्हें देख
भी लिया है.” 8 फ़िलिप्पॉस ने मसीह येशु से विनती की, “प्रभु, आप हमें पिता
के दर्शन मात्र करा दें, यही हमारे लिए काफ़ी होगा.” 9 “फ़िलिप्पॉस!” मसीह
येशु ने कहा, “इतने लंबे समय से मैं तुम्हारे साथ हूं, क्या फिर भी तुम मुझे नहीं
जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देख लिया. फिर तुम यह कैसे
कह रहे हो, ‘हमें पिता के दर्शन करा दीजिए’? 10 क्या तुम यह नहीं मानते कि
मैं पिता में हूं और पिता मुझमें? जो वचन मैं तुमसे कहता हूं, वह मैं अपनी ओर
से नहीं कहता; मेरे अंदर बसे पिता ही हैं, जो मुझमें होकर अपना काम पूरा कर
रहे हैं. 11 मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें, नहीं तो कामों
की गवाही के कारण विश्वास करो. 12 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर
रहा हूं: वह, जो मुझमें विश्वास करता है, वे सारे काम करेगा, जो मैं करता हूं
बल्कि इनसे भी अधिक बड़े-बड़े काम करेगा क्योंकि अब मैं पिता के पास जा
रहा हूं. 13 मेरे नाम में तुम जो कुछ मांगोगे, मैं उसे पूरा करूंगा जिससे पुत्र में
पिता की महिमा हो. 14 मेरे नाम में तुम मुझसे कोई भी विनती करो, मैं उसे पूरा
करूंगा. 15 “यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है तो तुम मेरे आदेशों का पालन करोगे. 16
मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देंगे कि वह हमेशा
तुम्हारे साथ रहें: **(aiōn g165)** 17 सच का आत्मा, जिन्हें संसार ग्रहण नहीं कर
सकता क्योंकि संसार न तो उन्हें देखता है और न ही उन्हें जानता है. तुम उन्हें
जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहते हैं, और वह तुममें रहेंगे. 18 मैं तुम्हें
अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास लौटकर आऊंगा. 19 कुछ ही समय शेष है,
जब संसार मुझे नहीं देखेगा परंतु तुम मुझे देखोगे. मैं जीवित हूं इसलिये तुम भी
जीवित रहोगे. 20 उस दिन तुम्हें यह मालूम हो जाएगा कि मैं अपने पिता में हूं,
तुम मुझमें हो और मैं तुममें. 21 वह, जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता और
उनका पालन करता है, वही है, जो मुझसे प्रेम करता है. वह, जो मुझसे प्रेम
करता है, मेरे पिता का प्रियजन होगा. मैं उससे प्रेम करूंगा और स्वयं को उस पर
प्रकट करूंगा.” 22 यहूदाह ने, (जो कारियोतवासी नहीं था), उनसे प्रश्न किया,
“प्रभु, ऐसा क्या हो गया कि आप स्वयं को तो हम पर प्रकट करेंगे किंतु संसार
पर नहीं?” 23 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यदि कोई व्यक्ति मुझसे प्रेम

करता है तो वह मेरी शिक्षा का पालन करेगा; वह मेरे पिता का प्रियजन बनेगा
और हम उसके पास आकर उसके साथ निवास करेंगे. 24 वह, जो मुझसे प्रेम
नहीं करता, मेरे वचन का पालन नहीं करता. ये वचन, जो तुम सुन रहे हो, मेरे
नहीं, मेरे पिता के हैं, जो मेरे भेजनेवाले हैं. 25 "तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने ये
सच तुम पर प्रकट कर दिए हैं 26 परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा, जिन्हें
पिता मेरे नाम में भेजेंगे, तुम्हें इन सब विषयों की शिक्षा देंगे और जो कुछ मैंने
तुमसे कहा है, उसकी याद दिलाएंगे. 27 तुम्हारे लिए मैं शांति छोडे जाता हूं; मैं
तुम्हें अपनी शांति दे रहा हूं; वैसी नहीं, जैसी संसार देता है. अपने मन को
व्याकुल और भयभीत न होने दो. 28 "मेरी बातें याद रखो: मैं जा रहा हूं और
तुम्हारे पास लौट आऊंगा. यदि तुम मुझसे प्रेम करते तो यह जानकर आनंदित
होते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं, जो मुझसे अधिक महान हैं. 29 यह घटित
होने से पहले ही मैंने तुम्हें इससे अवगत करा दिया है कि जब यह घटित हो तो
तुम विश्वास करो. 30 अब मैं तुमसे अधिक कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि संसार का
राजा आ रहा है. मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं है. 31 संसार यह समझ ले
कि मैं अपने पिता से प्रेम करता हूं. यही कारण है कि मैं उनके सारे आदेशों का
पालन करता हूं. "उठो, यहां से चलें.

15 "मैं ही हूं सच्ची दाखलता और मेरे पिता किसान हैं. 2 मुझमें लगी
हुई हर एक डाली, जो फल नहीं देती, उसे वह काट देते हैं तथा हर एक
फल देनेवाली डाली को छांटते हैं कि वह और भी अधिक फल लाए. 3 उस
वचन के द्वारा, जो मैंने तुमसे कहा है, तुम शुद्ध हो चुके हो. 4 मुझमें स्थिर बने
रहो तो मैं तुममें स्थिर बना रहूंगा. शाखा यदि लता से जुड़ी न रहे तो फल नहीं दे
सकती, वैसे ही तुम भी मुझमें स्थिर रहे बिना फल नहीं दे सकते. 5 "दाखलता
मैं ही हूं, तुम डालियां हो. वह, जो मुझमें स्थिर बना रहता है और मैं उसमें, बहुत
फल देता है; मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते. 6 यदि कोई
मुझमें स्थिर बना नहीं रहता, वह फेंकी हुई डाली के समान सूख जाता है. उन्हें
इकट्ठा कर आग में झोंक दिया जाता है और वे भस्म हो जाती हैं. 7 यदि तुम
मुझमें स्थिर बने रहो और मेरे वचन तुममें स्थिर बने रहें तो तुम्हारे मांगने पर
तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी. 8 तुम्हारे फलों की बहुतायत में मेरे पिता की
महिमा और तुम्हारा मेरे शिष्य होने का सबूत है. 9 "जिस प्रकार पिता ने मुझसे
प्रेम किया है उसी प्रकार मैंने भी तुमसे प्रेम किया है; मेरे प्रेम में स्थिर बने रहो.
10 तुम मेरे प्रेम में स्थिर बने रहोगे, यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करते हो,
जैसे मैं पिता के आदेशों का पालन करता आया हूं और उनके प्रेम में स्थिर हूं.
11 यह सब मैंने तुमसे इसलिये कहा है कि तुममें मेरा आनंद बना रहे और तुम्हारा
आनंद पूरा हो जाए. 12 यह मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरे से उसी प्रकार प्रेम
करो, जिस प्रकार मैंने तुमसे प्रेम किया है. 13 इससे श्रेष्ठ प्रेम और कोई नहीं कि
कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण दे दे. 14 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन
करते हो तो तुम मेरे मित्र हो. 15 मैंने तुम्हें दास नहीं, मित्र माना है क्योंकि दास
स्वामी के कार्यों से अनजान रहता है. मैंने तुम्हें उन सभी बातों को बता दिया है,
जो मुझे पिता से मिली हुई हैं. 16 तुमने मुझे नहीं परंतु मैंने तुम्हें चुना है और
तुम्हें नियुक्त किया है कि तुम फल दो—ऐसा फल, जो स्थायी हो—जिससे मेरे
नाम में तुम पिता से जो कुछ मांगो, वह तुम्हें दे सकें. 17 मेरी आज्ञा यह है: एक
दूसरे से प्रेम करो. 18 "यदि संसार तुमसे घृणा करता है तो याद रखो कि उसने
तुमसे पहले मुझसे घृणा की है. 19 यदि तुम संसार के होते तो संसार तुमसे
अपनों जैसा प्रेम करता. तुम संसार के नहीं हो—संसार में से मैंने तुम्हें चुन लिया
है—संसार तुमसे इसलिये घृणा करता है. 20 याद रखो कि मैंने तुमसे क्या कहा
था: दास अपने स्वामी से बढ़कर नहीं होता. यदि उन्होंने मुझे सताया तो तुम्हें
भी सताएंगे. यदि उन्होंने मेरी शिक्षा ग्रहण की तो तुम्हारी शिक्षा भी ग्रहण करेंगे.
21 वे यह सब तुम्हारे साथ मेरे कारण करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं
जानते. 22 यदि मैं न आता और यदि मैं उनसे ये सब न कहता तो वे दोषी न
होते. परंतु अब उनके पास अपने पाप को छिपाने के लिए कोई भी बहाना नहीं
बचा है. 23 वह, जो मुझसे घृणा करता है, मेरे पिता से भी घृणा करता है. 24
यदि मैं उनके मध्य वे काम न करता, जो किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं किए तो वे
दोषी न होते, परंतु अब उन्होंने मेरे कामों को देख लिया और उन्होंने मुझसे व
मेरे पिता दोनों से घृणा की है 25 कि व्यवस्था का यह लेख पूरा हो: उन्होंने
अकारण ही मुझसे घृणा की. 26 "जब सहायक—सच्चाई का आत्मा, जो पिता
से हैं—आएंगे, जिन्हें मैं तुम्हारे लिए पिता के पास से भेजूंगा, वह मेरे विषय में
गवाही देंगे. 27 तुम भी मेरे विषय में गवाही दोगे क्योंकि तुम शुरूआत से मेरे
साथ रहे हो.

16 "मैंने तुम पर ये सच्चाई इसलिये प्रकट की कि तुम भरमाए जाने से बचे
रहें. 2 वे सभागृह से तुमको निकाल देंगे, इतना ही नहीं, वह समय भी
आ रहा है जब तुम्हारा हत्यारा अपने कुकर्म को परमेश्वर की सेवा समझेगा. 3
ये कुकर्म वे इसलिये करेंगे कि उन्होंने न तो पिता को जाना है और न मुझे. 4 ये
सच्चाई मैंने तुम पर इसलिये प्रकट की है कि जब यह सब होने लगे तो तुम्हें याद
आए कि इनके विषय में मैंने तुम्हें पहले से ही सावधान कर दिया था. मैंने ये सब
तुम्हें शुरूआत में इसलिये नहीं बताया कि उस समय मैं तुम्हारे साथ था. 5 अब
मैं अपने भेजनेवाले के पास जा रहा हूं, और तुममें से कोई नहीं पूछ रहा कि,
'आप कहां जा रहे हैं?' 6 ये सब सुनकर तुम्हारा हृदय शोक से भर गया है. 7
फिर भी सच यह है कि मेरा जाना तुम्हारे लिए लाभदायक है क्योंकि यदि मैं न
जाऊं तो वह स्वर्गीय सहायक तुम्हारे पास नहीं आएंगे. यदि मैं जाऊं तो मैं उन्हें
तुम्हारे पास भेजूंगा. 8 वह आकर संसार के सामने पाप, धार्मिकता और न्याय के
विषय में दोषों को प्रकाश में लाएंगे: 9 पाप के विषय में; क्योंकि वे मुझमें
विश्वास नहीं करते; 10 धार्मिकता के विषय में; क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा
हूं और इसके बाद तुम मुझे न देखोगे; 11 न्याय के विषय में; क्योंकि संसार का
हाकिम दोषी ठहराया जा चुका है. 12 "मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, परंतु
अभी तुम उसे ग्रहण करने के सक्षम नहीं हो. 13 जब सहायक—सच्चाई का
आत्मा—आएंगे, वह सारी सच्चाई में तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे. वह अपनी
ओर से कुछ नहीं कहेंगे, परंतु वही कहेंगे, जो वह सुनते हैं. वह तुम्हारे लिए
आनेवाली घटनाओं को उजागर करेंगे. 14 वही मुझे गौरवान्वित करेंगे क्योंकि
वह मुझसे प्राप्त बातों को तुम्हारे सामने प्रकट करेंगे. 15 वह सब कुछ, जो पिता
का है, मेरा है; इसलिये मैंने यह कहा कि वह मुझसे मिली हुई बातों को तुम पर
प्रकट करेंगे." 16 "कुछ ही समय में तुम मुझे नहीं देखोगे और कुछ समय बाद
तुम मुझे दोबारा देखोगे." 17 इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में विचार-विमर्श
करने लगे, "उनका इससे क्या मतलब है कि वह हमसे कह रहे हैं, 'कुछ ही
समय में तुम मुझे नहीं देखोगे और कुछ समय बाद तुम मुझे दोबारा देखोगे' और
यह भी, 'मैं पिता के पास जा रहा हूं'?" 18 वे एक दूसरे से पूछते रहे, "समझ
नहीं आता कि वह क्या कह रहे हैं. क्या है यह कुछ समय बाद जिसके विषय में
वह बार-बार कह रहे हैं?" 19 यह जानते हुए कि वे उनसे कुछ पूछना चाहते हैं,
मसीह येशु ने उनसे प्रश्न किया, "क्या तुम इस विषय पर विचार कर रहे हो कि
मैंने तुमसे कहा कि कुछ ही समय में तुम मुझे नहीं देखोगे और कुछ समय बाद
मुझे दोबारा देखोगे? 20 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: तुम
रोओगे और विलाप करोगे जबकि संसार आनंद मना रहा होगा. तुम शोकाकुल
होगे किंतु तुम्हारा शोक आनंद में बदल जाएगा. 21 प्रसव के पहले स्त्री शोकित
होती है क्योंकि उसका प्रसव पास आ गया है किंतु शिशु के जन्म के बाद संसार
में उसके आने के आनंद में वह अपनी पीड़ा भूल जाती है. 22 इसी प्रकार अभी
तुम भी शोकित हो किंतु मैं तुमसे दोबारा मिलूंगा, जिससे तुम्हारा हृदय आनंदित
होगा कोई तुमसे तुम्हारा आनंद छीन न लेगा. 23 उस दिन तुम मुझसे कोई प्रश्न न

करोगे. मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: यदि तुम पिता से कुछ
भी मांगोगे, वह तुम्हें मेरे नाम में दे देंगे. **24** अब तक तुमने मेरे नाम में पिता से
कुछ भी नहीं मांगा; मांगो और तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा कि तुम्हारा आनंद पूरा
हो जाए. **25** "इस समय मैंने ये सब बातें तुम्हें कहावतों में बतायी है किंतु समय
आ रहा है, जब मैं पिता के विषय में कहावतों में नहीं परंतु साफ़ शब्दों में
बताऊंगा. **26** उस दिन तुम स्वयं मेरे नाम में पिता से मांगोगे. मैं यह नहीं कह
रहा कि मुझे ही तुम्हारी ओर से पिता से विनती करनी पड़ेगी. **27** पिता स्वयं
तुमसे प्रेम करते हैं क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम किया और यह विश्वास किया है कि
मैं परमेश्वर से आया हुआ हूं. **28** हां, मैं—पिता का भेजा हुआ—संसार में आया
हूं और अब संसार को छोड़ रहा हूं कि पिता के पास लौट जाऊं." **29** तब शिष्य
कह उठे, "हां, अब आप कहावतों में नहीं, साफ़ शब्दों में समझा रहे हैं.
30 अब हम समझ गए हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और अब किसी को
आपसे कोई प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं. इसलिये हम विश्वास करते हैं कि
आप परमेश्वर की ओर से आए हैं." **31** मसीह येशु ने उनसे कहा, "तुम्हें अब
विश्वास हो रहा है!" **32** देखो, समय आ रहा है परंतु आ चुका है, जब तुम
तितर-बितर हो अपने आप में व्यस्त हो जाओगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे;
किंतु मैं अकेला नहीं हूं, मेरे पिता मेरे साथ हैं. **33** "मैंने तुमसे ये सब इसलिये
कहा है कि तुम्हें मुझमें शांति प्राप्त हो. संसार में तुम्हारे लिए क्लेश ही क्लेश है
किंतु आनंदित हो कि मैंने संसार पर विजय प्राप्त की है."

17 इन बातों के प्रकट करने के बाद मसीह येशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि
उठाकर प्रार्थना की. "पिता, वह समय आ गया है. अपने पुत्र को
गौरवान्वित कीजिए कि पुत्र आपको गौरवान्वित करे. **2** क्योंकि आपने उसे
सारी मानव जाति पर अधिकार दिया है कि वह उन सबको अनंत जीवन प्रदान
करे जिन्हें आपने उसे सौंपा है. **(aiōnios g166)** **3** अनंत जीवन यह है कि वे
आपको, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं और मसीह येशु को, जिसे आपने भेजा
है, जानें. **(aiōnios g166)** **4** जो काम आपने मुझे सौंपा था, उसे पूरा कर मैंने
पृथ्वी पर आपको गौरवान्वित किया है. **5** इसलिये पिता, आप मुझे अपने साथ
उसी महिमा से गौरवान्वित कीजिए, जो महिमा मेरी आपके साथ संसार की सृष्टि
से पहले थी. **6** "मैंने आपको उन सब पर प्रगट किया, संसार में से जिनको
चुनकर आपने मुझे सौंपा था. वे आपके थे किंतु आपने उन्हें मुझे सौंपा था
और उन्होंने आपके वचन का पालन किया. **7** अब वे जान गए हैं कि जो
कुछ आपने मुझे दिया है, वह सब आप ही की ओर से है **8** क्योंकि आपसे
प्राप्त आज्ञाएं मैंने उन्हें दे दी है. उन्होंने उनको ग्रहण किया और वास्तव में यह
जान लिया है कि मैं आपसे आया हूं; उन्होंने विश्वास किया कि आप ही मेरे
भेजनेवाले हैं. **9** आपसे मेरी विनती संसार के लिए नहीं किंतु उनके लिए है, जो
आपके हैं और जिन्हें आपने मुझे सौंपा है. **10** वह सब, जो मेरा है, आपका है,
जो आपका है, वह मेरा है और मैं उनमें गौरवान्वित हुआ हूं **11** अब मैं संसार में
नहीं रहूंगा; मैं आपके पास आ रहा हूं, किंतु वे सब संसार में हैं. पवित्र पिता!
उन्हें अपने उस नाम में, जो आपने मुझे दिया है, सुरक्षित रखिए कि वे एक हों
जैसे हम एक हैं. **12** जब मैं उनके साथ था, मैंने उन्हें आपके उस नाम में, जो
आपने मुझे दिया था, सुरक्षित रखा. मैंने उनकी रक्षा की; उनमें से किसी का नाश
नहीं हुआ, सिवाय विनाश के पुत्र के; वह भी इसलिये कि पवित्र शास्त्र का वचन
पूरा हो. **13** "अब मैं आपके पास आ रहा हूं. ये सब मैं संसार में रहते हुए ही
कह रहा हूं कि वे मेरे आनंद से परिपूर्ण हो जाएं. **14** मैंने उनको आपका वचन
दिया है. संसार ने उनसे घृणा की है क्योंकि वे संसार के नहीं हैं, जिस प्रकार मैं
भी संसार का नहीं हूं. **15** मैं आपसे यह विनती नहीं करता कि आप उन्हें संसार
में से उठा लें परंतु यह कि आप उन्हें उस दुष्ट से बचाए रखें. **16** वे संसार के
नहीं हैं, जिस प्रकार मैं भी संसार का नहीं हूं. **17** उन्हें सच्चाई में अपने लिए
अलग कीजिए—आपका वचन सत्य है. **18** जैसे आपने मुझे संसार में भेजा था,
मैंने भी उन्हें संसार में भेजा. **19** उनके लिए मैं स्वयं को समर्पित करता हूं कि वे
भी सच्चाई में समर्पित हो जाएं. **20** "मैं मात्र इनके लिए ही नहीं परंतु उन सबके
लिए भी विनती करता हूं, जो इनके संदेश के द्वारा मुझमें विश्वास करेंगे. **21**
पिता! वे सब एक हों; जैसे आप मुझमें और मैं आप में, वैसे ही वे हममें एक हों
जिससे संसार विश्वास करे कि आप ही मेरे भेजनेवाले हैं. **22** वह महिमा, जो
आपने मुझे प्रदान की है, मैंने उन्हें दे दी है कि वे भी एक हों, जिस प्रकार हम
एक हैं, **23** आप मुझमें और मैं उनमें कि वे पूरी तरह से एक हो जाएं जिससे
संसार पर यह साफ़ हो जाए कि आपने ही मुझे भेजा और आपने उनसे वैसा ही
प्रेम किया है जैसा मुझसे. **24** "पिता, मेरी इच्छा यह है कि वे भी, जिन्हें आपने
मुझे सौंपा है, मेरे साथ वहीं रहें, जहां मैं हूं कि वे मेरी उस महिमा को देख सकें,
जो आपने मुझे दी है क्योंकि संसार की सृष्टि के पहले से ही आपने मुझसे प्रेम
किया है. **25** "हे नीतिमान पिता, संसार ने तो आपको नहीं जाना किंतु मैं
आपको जानता हूं, और उनको यह मालूम हो गया है कि आपने ही मुझे भेजा है.
26 मैंने आपको उन पर प्रकट किया है, और प्रकट करता रहूंगा कि जिस प्रेम से
आपने मुझसे प्रेम किया है, वही प्रेम उनमें बस जाए और मैं उनमें."

18 इन बातों के कहने के बाद मसीह येशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन
घाटी पार कर एक बगीचे में गए. **2** यहूदाह, जो उनके साथ धोखा कर
रहा था, उस स्थान को जानता था क्योंकि मसीह येशु वहां अक्सर अपने शिष्यों
से भेंट किया करते थे. **3** तब यहूदाह रोमी सैनिकों का दल, प्रधान पुरोहितों
तथा फ़रीसियों के सेवकों के साथ वहां आ पहुंचा. उनके पास लालटेनें, मशालें
और शस्त्र थे. **4** मसीह येशु ने यह जानते हुए कि उनके साथ क्या-क्या होने पर
है, आगे बढ़कर उनसे पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो?" **5** "नाज़रेथवासी येशु
को," उन्होंने उत्तर दिया. मसीह येशु ने कहा, "वह मैं ही हूं." विश्वासघाती
यहूदाह भी उनके साथ था. **6** जैसे ही मसीह येशु ने कहा "वह मैं ही हूं," वे
पीछे हटे और गिर पड़े. **7** मसीह येशु ने दोबारा पूछा, "तुम किसे खोज रहे
हो?" वे बोले, "नाज़रेथवासी येशु को." **8** मसीह येशु ने कहा, "मैं तुमसे
कह चुका हूं कि वह मैं ही हूं. इसलिये यदि तुम मुझे ही खोज रहे हो तो इन्हें
जाने दो." **9** यह इसलिये कि स्वयं उनके द्वारा कहा गया-यह वचन पूरा हो
"आपके द्वारा सौंपे हुओं में से मैंने किसी एक को भी न खोया." **10** शिमओन
पेतरॉस ने, जिनके पास तलवार थी, उसे म्यान से खींचकर महापुरोहित के एक
सेवक पर वार कर दिया जिससे उसका दाहिना कान कट गया. (उस सेवक
का नाम मालखॉस था.) **11** यह देख मसीह येशु ने पेतरॉस को आज्ञा दी,
"तलवार म्यान में रखो! क्या मैं वह प्याला न पिऊं जो पिता ने मुझे दिया है?"
12 तब सैनिकों के दल, सेनापति और यहूदियों के अधिकारियों ने मसीह येशु
को बंदी बना लिया. **13** पहले वे उन्हें हन्‍ना के पास ले गए, जो उस वर्ष के
महापुरोहित कायाफ़स का ससुर था. **14** कायाफ़स ने ही यहूदी अगुओं को
विचार दिया था कि राष्ट्र के हित में एक व्यक्ति का प्राण त्याग करना सही है. **15**
शिमओन पेतरॉस और एक अन्य शिष्य मसीह येशु के पीछे-पीछे गए. यह
शिष्य महापुरोहित की जान पहचान का था. इसलिये वह भी मसीह येशु के साथ
महापुरोहित के घर के परिसर में चला गया **16** परंतु पेतरॉस द्वार पर बाहर ही
खड़े रहे. तब वह शिष्य, जो महापुरोहित की जान पहचान का था, बाहर आया
और द्वार पर नियुक्त दासी से कहकर पेतरॉस को भीतर ले गया. **17** द्वार पर
निधर्मी उस दासी ने पेतरॉस से पूछा, "कहीं तुम भी तो इस व्यक्ति के शिष्यों में
से नहीं हो?" "नहीं, नहीं," उन्होंने उत्तर दिया. **18** ठंड के कारण सेवकों
और सैनिकों ने आग जला रखी थी और खड़े हुए आग ताप रहे थे. पेतरॉस भी
उनके साथ खड़े हुए आग ताप रहे थे. **19** महापुरोहित ने मसीह येशु से उनके
शिष्यों और उनके द्वारा दी जा रही शिक्षा के विषय में पूछताछ की. **20** मसीह

येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैंने संसार से खुलकर बातें की हैं. मैंने हमेशा सभागृहों
और मंदिर में शिक्षा दी है, जहां सभी यहूदी इकट्ठा होते हैं. गुप्त में मैंने कभी
भी कुछ नहीं कहा. 21 आप मुझसे प्रश्न क्यों कर रहे हैं? प्रश्न उनसे कीजिए
जिन्होंने मेरे प्रवचन सुने हैं. वे जानते हैं कि मैंने क्या-क्या कहा है.” 22 यह
सुनते ही वहां खड़े एक अधिकारी ने मसीह येशु पर वार करते हुए कहा, “क्या
महापुरोहित को उत्तर देने का यही ढंग है तुम्हारा?” 23 मसीह येशु ने कहा,
“यदि मेरा कहना गलत है तो साबित करो मगर यदि मैंने जो कहा है वह सही है
तो फिर तुम मुझे क्यों मार रहे हो?” 24 इसलिये मसीह येशु को, जो अभी भी
बंधे हुए ही थे, हन्ना ने महापुरोहित कायाफ़स के पास भेज दिया. 25 इसी बीच
लोगों ने शिमओन पेतरॉस से, जो वहां खड़े हुए आग ताप रहे थे, पूछा, “कहीं
तुम भी तो इसके शिष्यों में से नहीं हो?” पेतरॉस ने नकारते हुए कहा, “मैं नहीं
हूं.” 26 तब महापुरोहित के सेवकों में से एक ने, जो उस व्यक्ति का संबंधी था,
जिसका कान पेतरॉस ने काट डाला था, उनसे पूछा, “क्या तुम वही नहीं, जिसे
मैंने उसके साथ उपवन में देखा था?” 27 पेतरॉस ने फिर अस्वीकार किया और
तत्काल मुर्ग ने बांग दी. 28 पौ फटते ही यहूदी अगुएं मसीह येशु को कायाफ़स
के पास से राजमहल ले गए; किंतु उन्होंने स्वयं भवन में प्रवेश नहीं किया कि
कहीं वे फ़सह भोज के पूर्व सांस्कारिक रूप से अशुद्ध न हो जाएं. 29 इसलिये
पिलातॉस ने बाहर आकर उनसे प्रश्न किया, “क्या आरोप है तुम्हारा इस व्यक्ति
पर?” 30 उन्होंने उत्तर दिया, “यदि यह व्यक्ति अपराधी न होता तो हम इसे
आपके पास क्यों लाते?” 31 पिलातॉस ने उनसे कहा, “तो इसे ले जाओ और
अपने ही नियम के अनुसार स्वयं इसका न्याय करो.” इस पर यहूदियों ने कहा,
“किसी के प्राण लेना हमारे अधिकार में नहीं है.” 32 ऐसा इसलिये हुआ कि
मसीह येशु के वे वचन पूरे हों, जिनके द्वारा उन्होंने संकेत दिया था कि उनकी
मृत्यु किस प्रकार की होगी. 33 इसलिये भवन में लौटकर पिलातॉस ने मसीह
येशु को बुलवाया और प्रश्न किया, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?” 34 इस पर
मसीह येशु ने उससे प्रश्न किया, “यह आपका अपना विचार है या अन्य लोगों ने
मेरे विषय में आपको ऐसा बताया है?” 35 पिलातॉस ने उत्तर दिया, “क्या मैं
यहूदी हूं? तुम्हारे अपने ही लोगों और प्रधान पुरोहितों ने तुम्हें मेरे हाथ सौंपा है.
बताओ, ऐसा क्या किया है तुमने?” 36 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मेरा राज्य
इस संसार का नहीं है. यदि इस संसार का होता तो मेरे सेवक मुझे यहूदी अगुओं
के हाथ सौंपे जाने के विरुद्ध लड़ते; किंतु सच्चाई तो यह है कि मेरा राज्य यहां
का है ही नहीं.” 37 इस पर पिलातॉस ने उनसे कहा, “तो तुम राजा हो?” मसीह
येशु ने उत्तर दिया, “आप ठीक कहते हैं कि मैं राजा हूं. मेरा जन्म ही इसलिये
हुआ है. संसार में मेरे आने का उद्देश्य यही है कि मैं सच की गवाही दूं. हर एक
व्यक्ति, जो सच्चा है, मेरी सुनता है.” 38 “क्या है सच?” पिलातॉस ने प्रश्न
किया. तब पिलातॉस ने दोबारा बाहर जाकर यहूदियों को सूचित किया, “मुझे
उसमें कोई दोष नहीं मिला 39 किंतु तुम्हारी एक परंपरा है कि फ़सह के अवसर
पर मैं तुम्हारे लिए किसी एक कैदी को रिहा करूं. इसलिये क्या तुम चाहते हो
कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों का राजा रिहा कर दूं?” 40 इस पर वे चिल्लाकर
बोले, “इसे नहीं! बार-अब्बास को!” जबकि बार-अब्बास विद्रोही था.

19 इसलिये पिलातॉस ने मसीह येशु को भीतर ले जाकर उन्हें कोड़े लगवाए.
2 सैनिकों ने कांटों का एक मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा और
उनके ऊपर एक बैंगनी वस्त्र डाल दिया 3 और वे एक-एक कर उनके सामने
आकर उनके मुख पर प्रहार करते हुए कहने लगे, “यहूदियों के राजा की
जय!” 4 पिलातॉस ने दोबारा आकर भीड़ से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे लिए
बाहर ला रहा हूं कि तुम जान लो कि मुझे उसमें कोई दोष नहीं मिला.” 5 तब
कांटों का मुकुट व बैंगनी वस्त्र धारण किए हुए मसीह येशु को बाहर लाया गया
और पिलातॉस ने लोगों से कहा, “देखो, इसे!” 6 जब प्रधान पुरोहितों और
सेवकों ने मसीह येशु को देखा तो चिल्लाकर कहने लगे, “क्रूसदंड! क्रूसदंड!”
पिलातॉस ने उनसे कहा, “इसे ले जाओ और तुम ही दो इसे मृत्यु दंड क्योंकि
मुझे तो इसमें कोई दोष नहीं मिला.” 7 यहूदी अगुओं ने उत्तर दिया, “हमारा
एक नियम है. उस नियम के अनुसार इस व्यक्ति को मृत्यु दंड ही मिलना चाहिए
क्योंकि यह स्वयं को परमेश्वर का पुत्र बताता है.” 8 जब पिलातॉस ने यह सुना
तो वह और अधिक भयभीत हो गया. 9 तब उसने दोबारा राजमहल में जाकर
मसीह येशु से पूछा, “तुम कहां के हो?” किंतु मसीह येशु ने उसे कोई उत्तर नहीं
दिया. 10 इसलिये पिलातॉस ने उनसे कहा, “तुम बोलते क्यों नहीं? क्या तुम
नहीं जानते कि मुझे यह अधिकार है कि मैं तुम्हें मुक्त कर दूं और यह भी कि
तुम्हें मृत्यु दंड दूं?” 11 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “आपका मुझ पर कोई
अधिकार न होता यदि वह आपको ऊपर से न दिया गया होता. अत्यंत नीच है
उसका पाप, जिसने मुझे आपके हाथ सौंपा है.” 12 परिणामस्वरूप पिलातॉस ने
उन्हें मुक्त करने के यत्न किए किंतु यहूदी अगुओं ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा,
“यदि आपने इस व्यक्ति को मुक्त किया तो आप कयसर के मित्र नहीं हैं. हर
एक, जो स्वयं को राजा दर्शाता है, वह कयसर का विरोधी है.” 13 ये सब
सुनकर पिलातॉस मसीह येशु को बाहर लाया और न्याय आसन पर बैठ गया, जो
उस स्थान पर था, (जिसे इब्री भाषा में गब्बथा अर्थात् चबूतरा कहा जाता है).
14 यह फ़सह की तैयारी के दिन का छठा घंटा था. पिलातॉस ने यहूदी अगुओं से
कहा. “यह लो, तुम्हारा राजा.” 15 इस पर वे चिल्लाने लगे, “इसे यहां से ले
जाओ! ले जाओ इसे यहां से और मृत्यु दंड दो!” पिलातॉस ने उनसे पूछा,
“क्या मैं तुम्हारे राजा को मृत्यु दंड दूं?” प्रधान पुरोहितों ने कहा, “कयसर के
अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं है.” 16 तब पिलातॉस ने क्रूस-मृत्युदंड के
लिए मसीह येशु को उनके हाथ सौंप दिया. तब सैनिक मसीह येशु को उस स्थान
से ले गए. 17 मसीह येशु अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए, उस जगह गये जो इब्री
भाषा में गोलगोथा कहलाता है, जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान. 18 वहां
उन्होंने मसीह येशु को अन्य दो व्यक्तियों के साथ उनके मध्य क्रूस पर चढ़ाया.
19 पिलातॉस ने एक पटल पर लिखकर क्रूस पर लगवा दिया. नाज़रेथ का येशु,
यहूदियों का राजा. 20 यह अनेक यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि मसीह येशु को क्रूस
पर चढ़ाए जाने का स्थान नगर के समीप ही था. यह इब्री, लातीनी और यूनानी
भाषाओं में लिखा था. 21 इस पर यहूदियों के प्रधान पुरोहितों ने पिलातॉस से
कहा, “यहूदियों का राजा मत लिखिए परंतु वह लिखिए, जो उसने कहा था:
‘मैं यहूदियों का राजा हूं.’” 22 पिलातॉस ने उत्तर दिया, “अब मैंने जो लिख
दिया, वह लिख दिया.” 23 सैनिकों ने मसीह येशु को क्रूसित करने के बाद
उनके बाहरी कपड़े लेकर चार भाग किए और आपस में बांट लिए. उनके अंदर
का वस्त्र जोड़ रहित ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था. 24 इसलिये सैनिकों ने
विचार किया, “इसे फाड़ें नहीं परंतु इस पर पासा फेंककर निर्णय कर लें कि यह
किसको मिलेगा.” सैनिकों ने जो किया उससे पवित्र शास्त्र का इस लेख पूरा हो
गया: “उन्होंने मेरा बाहरी कपड़ा आपस में बांट लिया, और मेरे अंदर के वस्त्र
के लिए पासा फेंका.” 25 मसीह येशु के क्रूस के समीप उनकी माता, उनकी
माता की बहन, क्लोपस की पत्नी मरियम और मगदालावासी मरियम खड़ी हुई
थी. 26 जब मसीह येशु ने अपनी माता और उस शिष्य को, जो उनका प्रियजन
था, वहां खड़े देखा तो अपनी माता से बोले, “हे स्त्री! यह आपका पुत्र है.” 27
और उस शिष्य से बोले, “यह तुम्हारी माता है.” उस दिन से वह शिष्य मरियम
का रखवाला बन गया. 28 इसके बाद मसीह येशु ने यह जानते हुए कि अब सब
कुछ पूरा हो चुका है, पवित्र शास्त्र का लेख पूरा करने के लिए कहा, “मैं प्यासा
हूं.” 29 वहां दाखरस के सिरके से भरा एक बर्तन रखा था. लोगों ने उसमें
स्पंज भिगो जूफ़ा पौधे की टहनी पर रखकर उनके मुख तक पहुंचाया. 30 उसे
चखकर मसीह येशु ने कहा, “अब सब पूरा हो गया” और सिर झुकाकर प्राण

त्याग दिए. 31 वह फ़सह की तैयारी का दिन था. इसलिये यहूदी अगुओं ने
पिलातॉस से निवेदन किया कि उन लोगों की टांगें तोड़कर उन्हें क्रूस से उतार
लिया जाए जिससे वे शब्बाथ पर क्रूस पर न रहें क्योंकि वह एक विशेष महत्व
का शब्बाथ था. 32 इसलिये सैनिकों ने मसीह येशु के संग क्रूस पर चढ़ाए गए
एक व्यक्ति की टांगें पहले तोड़ीं और तब दूसरे की. 33 जब वे मसीह येशु के
पास आए तो उन्हें मालूम हुआ कि उनके प्राण पहले ही निकल चुके थे. इसलिये
उन्होंने उनकी टांगें नहीं तोड़ीं 34 किंतु एक सैनिक ने उनकी पसली को भाले
से बेधा और वहां से तुरंत लहू व जल बह निकला. 35 वह, जिसने यह देखा,
उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है—वह जानता है कि वह सच ही
कह रहा है, कि तुम भी विश्वास कर सको. 36 यह इसलिये हुआ कि पवित्र
शास्त्र का यह लेख पूरा हो: उसकी एक भी हड्डी तोड़ी न जाएगी. 37 पवित्र शास्त्र
का एक अन्य लेख भी इस प्रकार है: वे उसकी ओर देखेंगे, जिसे उन्होंने बेधा
है. 38 अरिमथियावासी योसेफ़ यहूदी अगुओं के भय के कारण मसीह येशु का
गुप्त शिष्य था. उसने पिलातॉस से मसीह येशु का शव ले जाने की अनुमति
चाही. पिलातॉस ने स्वीकृति दे दी और वह आकर मसीह येशु का शव ले गया.
39 तब निकोदेमॉस भी, जो पहले मसीह येशु से भेंट करने रात के समय आए थे,
लगभग तैंतीस किलो गन्धरस और अगरू का मिश्रण लेकर आए. 40 इन लोगों
ने मसीह येशु का शव लिया और यहूदियों की अंतिम संस्कार की रीति के
अनुसार उस पर यह मिश्रण लगाकर कपड़े की पट्टियों में लपेट दिया. 41 मसीह
येशु को क्रूसित किए जाने के स्थान के पास एक उपवन था, जिसमें एक नई कब्र
की गुफ़ा थी. उसमें अब तक कोई शव नहीं रखा गया था. 42 इसलिये उन्होंने
मसीह येशु के शव को उसी कब्र की गुफ़ा में रख दिया क्योंकि वह पास थी और
वह यहूदियों के शब्बाथ की तैयारी का दिन भी था.

20 सप्ताह के पहले दिन, सूर्योदय के पूर्व, जब अंधेरा ही था, मगदालावासी
मरियम कंदरा-क़ब्र पर आईं और उन्होंने देखा कि कब्र के प्रवेश द्वार से
पत्थर पहले ही हटा हुआ है. 2 सो वह दौड़ती हुई शिमओन पेतरॉस और उस
शिष्य के पास गईं, जो मसीह येशु का प्रियजन था और उनसे कहा, “वे प्रभु को
कब्र में से उठा ले गए हैं और हम नहीं जानते कि उन्होंने उन्हें कहां रखा है.”
3 तब पेतरॉस और वह अन्य शिष्य कब्र की ओर चल पड़े. 4 वे दोनों साथ
साथ दौड़ रहे थे किंतु वह अन्य शिष्य दौड़ते हुए पेतरॉस से आगे निकल गया
और कब्र पर पहले पहुंच गया. 5 उसने झुककर अंदर झांका और देखा कि वहां
कपड़े की पट्टियों का ढेर लगा है किंतु वह भीतर नहीं गया. 6 शिमओन
पेतरॉस भी उसके पीछे-पीछे आए और उन्होंने कब्र में प्रवेश कर वहां कपड़े की
पट्टियों का ढेर 7 और उस अंगोछे को भी, जो मसीह येशु के सिर पर बांधा गया
था, कपड़े की पट्टियों के ढेर के साथ नहीं, परंतु अलग स्थान पर रखा हुआ
पाया. 8 तब वह अन्य शिष्य भी, जो कब्र पर पहले पहुंचा था, भीतर गया.
उसने देखा और विश्वास किया. 9 (वे अब तक पवित्र शास्त्र की यह बात समझ
नहीं पाए थे कि मसीह येशु का मरे हुओं में से जी उठना ज़रूर होगा.) 10 तब
शिष्य दोबारा अपने-अपने घर चले गए. 11 परंतु मरियम कब्र की गुफ़ा के
बाहर खड़ी रो रही थी. उन्होंने रोते-रोते झुककर कब्र की गुफ़ा के अंदर झांका.
12 उन्होंने देखा कि जिस स्थान पर मसीह येशु का शव रखा था, वहां सफ़ेद
कपड़ों में दो स्वर्गदूत बैठे हैं—एक सिर के पास और दूसरा पैर के पास. 13
उन्होंने उनसे पूछा, “तुम क्यों रो रही हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “वे मेरे प्रभु
को यहां से ले गए हैं और मैं नहीं जानती कि उन्होंने उन्हें कहां रखा है.” 14
यह कहकर वह पीछे मुड़ीं तो मसीह येशु को खड़े देखा किंतु वह पहचान न
सकीं कि वह मसीह येशु हैं. 15 मसीह येशु ने उनसे पूछा, “तुम क्यों रो रही
हो? किसे खोज रही हो?” उन्होंने उन्हें माली समझकर कहा, “यदि आप उन्हें
यहां से उठा ले गए हैं तो मुझे बता दीजिए कि आपने उन्हें कहां रखा है कि मैं
उन्हें ले जाऊं.” 16 इस पर मसीह येशु बोले, “मरियम!” अपना नाम सुन वह
मुड़ीं और उन्हें इब्री भाषा में बुलाकर कहा “रब्बूनी!” (अर्थात् गुरुवर.) 17
मसीह येशु ने उनसे कहा, “मुझे पकड़े मत रहो, क्योंकि मैं अब तक पिता के
पास ऊपर नहीं गया हूं, किंतु मेरे भाइयों को जाकर सूचित कर दो, ‘मैं अपने
पिता और तुम्हारे पिता तथा अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर
जा रहा हूं.’” 18 मगदालावासी मरियम ने आकर शिष्यों के सामने घोषणा की:
“मैंने प्रभु को देखा है.” और उसने शिष्यों को वह सब बताया, जो प्रभु ने उससे
कहा था. 19 उसी दिन, जो सप्ताह का पहला दिन था, संध्या समय यहूदी
अगुओं से भयभीत शिष्य द्वार बंद किए हुए कमरे में इकट्ठा थे. मसीह येशु उनके
बीच आ खड़े हुए और बोले, “तुममें शांति बनी रहे.” 20 यह कहकर उन्होंने
उन्हें अपने हाथ और पांव दिखाए. प्रभु को देखकर शिष्य आनंद से भर गए. 21
इस पर मसीह येशु ने दोबारा उनसे कहा, “तुममें शांति बनी रहे. जिस प्रकार
पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेजता हूं” 22 तब उन्होंने उन पर फूंका और
उनसे कहा, “पवित्र आत्मा ग्रहण करो. 23 यदि तुम किसी के पाप क्षमा करोगे,
उनके पाप क्षमा किए गए हैं और जिनके पाप तुम क्षमा नहीं करोगे, वे अपने
पापों में बंधे रहेंगे.” 24 जब मसीह येशु अपने शिष्यों के पास आए थे, उस
समय उनके बारह शिष्यों में से एक शिष्य थोमॉस, जिनका उपनाम दिदुमॉस
था, वहां नहीं थे. 25 अन्य शिष्य उनसे कहते रहे, “हमने प्रभु को देखा है.”
इस पर थोमॉस उनसे बोले, “जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के वे चिह्न न
देख लूं और कीलों से छिदे उन हाथों में अपनी उंगली और उनकी पसली में
अपना हाथ डालकर न देख लूं, तब तक मैं विश्वास कर ही नहीं सकता.” 26
आठ दिन के बाद मसीह येशु के शिष्य दोबारा उस कक्ष में इकट्ठा थे और इस
समय थोमॉस उनके साथ थे. सारे द्वार बंद होने पर भी मसीह येशु उनके बीच आ
खड़े हुए और उनसे कहा, “तुममें शांति बनी रहे.” 27 तब उन्होंने थोमॉस की
ओर मुख कर कहा, “अपनी उंगली से मेरे हाथों को छूकर देखो और अपना
हाथ बढ़ाकर मेरी पसली में डालो; अविश्वासी न रहकर, विश्वासी बनो.” 28
थोमॉस बोल उठे, “मेरे प्रभु! मेरे परमेश्वर!” 29 मसीह येशु ने उनसे कहा,
“तुमने तो विश्वास इसलिये किया है कि तुमने मुझे देख लिया, धन्य हैं वे,
जिन्होंने मुझे नहीं देखा फिर भी विश्वास किया.” 30 मसीह येशु ने अपने
शिष्यों के सामने अनेक अद्भुत चिह्न दिखाए, जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं
है 31 परंतु ये, जो लिखे गए हैं, इसलिये कि तुम विश्वास करो कि येशु ही वह
मसीह हैं, वही परमेश्वर के पुत्र हैं और इसी विश्वास के द्वारा तुम उनमें जीवन
प्राप्त करो.

21 इसके बाद तिबेरियॉस झील के तट पर मसीह येशु ने स्वयं को शिष्यों
पर दोबारा प्रकट किया. यह इस प्रकार हुआ: 2 शिमओन पेतरॉस,
थोमॉस, जिनका उपनाम दिदुमॉस है, गलील प्रदेश के कानावासी नाथानाएल,
ज़ेबेदियॉस के पुत्र और मसीह येशु के अन्य दो शिष्य इकट्ठा थे. 3 शिमओन
पेतरॉस ने उनसे कहा, “मैं तो दोबारा मछली पकड़ना आरंभ कर रहा हूं.”
शेष सभी ने कहा, “चलिए, हम भी आपके साथ चलते हैं.” तब वे वहां से
निकलकर नाव में आ गए. उस रात वे एक भी मछली न पकड़ सके. 4 सूर्योदय
हो रहा था और मसीह येशु झील के तट पर खड़े थे किंतु शिष्य पहचान न सके
कि वह मसीह येशु हैं. 5 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरे बालकों, मछलियां
नहीं मिलीं न?” “नहीं,” शिष्यों ने उत्तर दिया. 6 मसीह येशु ने उनसे कहा,
“नाव की दायीं ओर जाल डालो तो मिलेंगी.” उन्होंने जाल डाला और उन्हें
इतनी अधिक मछलियां मिलीं कि वे जाल को खींच न सके. 7 मसीह येशु
के उस प्रिय शिष्य ने पेतरॉस से कहा, “वह प्रभु हैं!” यह सुनते ही कि वह
प्रभु हैं, शिमओन पेतरॉस ने अपना बाहरी कपड़ा लपेटा और झील में कूद
पड़े—क्योंकि उस समय वह आधे वस्त्रों में थे. 8 बाकी शिष्य छोटी नाव

में मछलियों से भरे जाल को खींचते हुए आ गए. वे तट से अधिक नहीं,
लगभग सौ मीटर दूर थे. 9 तट पर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि पहले ही कोयले
की आग पर मछली रखी थी और पास में रोटी भी. 10 मसीह येशु ने उनसे
कहा, "अभी जो मछलियां तुमने पकड़ी हैं, उनमें से कुछ यहां ले आओ." 11
शिमओन पेतरॉस ने नाव पर चढ़कर जाल तट पर खींचा, जो बड़ी-बड़ी एक
सौ तिरपन मछलियों से भरा हुआ था. इतनी अधिक मछलियां होने पर भी जाल
नहीं फटा. 12 मसीह येशु ने उन्हें आमंत्रण दिया, "आओ, भोजन कर लो."
यह आभास होते हुए भी कि वह प्रभु ही हैं, किसी शिष्य ने उनसे यह पूछने का
साहस नहीं किया कि आप कौन हैं. 13 मसीह येशु ने आगे बढ़कर रोटी उठाई
और उन्हें दी और उसके बाद मछली भी. 14 मरे हुओं में से जी उठने के बाद
यह तीसरा अवसर था, जब मसीह येशु शिष्यों पर प्रकट हुए. 15 भोजन के बाद
मसीह येशु ने शिमओन पेतरॉस से प्रश्न किया, "योहन के पुत्र शिमओन, क्या तुम
इन सबसे बढ़कर मुझसे प्रेम करते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, प्रभु, आप
जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं." मसीह येशु ने उनसे कहा, "मेरे मेमनों को
चराओ." 16 मसीह येशु ने दूसरी बार उनसे पूछा, "योहन के पुत्र शिमओन,
क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, प्रभु, आप जानते
हैं मैं आपसे प्रेम करता हूं." मसीह येशु ने उनसे कहा, "मेरी भेड़ों की देखभाल
करो." 17 मसीह येशु ने तीसरी बार पूछा, "योहन के पुत्र शिमओन, क्या तुम
मुझसे प्रेम करते हो?" यह सुनकर पेतरॉस आहत हुए कि मसीह येशु ने उनसे
तीसरी बार यह पूछा, "क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" उत्तर में उन्होंने मसीह
येशु से कहा, "प्रभु, आप तो मन की बात समझते हैं, आप जानते हैं कि मैं
आपसे प्रेम करता हूं." मसीह येशु ने उनसे कहा, "मेरी भेड़ों को चराओ. 18 मैं
तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं, जब तुम युवा थे तो अपनी कमर
स्वयं कसा करते थे और अपनी इच्छा अनुसार जहां चाहे वहां जाया करते
थे; परंतु जब तुम बूढ़े होगे तो तुम अपने हाथ, ऊपर उठाओगे, कोई दूसरा
व्यक्ति तुम्हारी कमर कसेगा और वह तुम्हें वहां ले जाएगा, जहां तुम जाना भी न
चाहोगे." 19 इस कथन के द्वारा मसीह येशु ने यह संकेत दिया था कि पेतरॉस
किस प्रकार की मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेंगे. यह कहने के बाद उन्होंने
पेतरॉस से कहा, "मेरे पीछे चलो." 20 पेतरॉस ने मुड़कर मसीह येशु के उस
प्रिय शिष्य को पीछे आते हुए देखा अर्थात् वही, जो फ़सह के भोज के समय
उनके अत्यंत पास बैठा था और जिसने प्रश्न किया था, "वह कौन है, जो आपके
साथ धोखा कर रहा है?" 21 उसे देखकर पेतरॉस ने मसीह येशु से प्रश्न किया,
"प्रभु इसका क्या होगा?" 22 मसीह येशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूं कि वह
मेरे आने तक रहे तो तुम्हें इससे क्या? तुम तो मेरे पीछे चलो." 23 इसलिये
शिष्य समुदाय में यह धारणा फैल गई कि उस शिष्य की मृत्यु ही नहीं होगी.
किंतु मसीह येशु ने उनसे यह नहीं कहा था कि उनकी मृत्यु नहीं होगी. उन्होंने
तो केवल यह कहा था, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक रहे, तो तुम्हें इससे
क्या?" 24 यह वही शिष्य है, जो इन सब घटनाओं का गवाह है और जिसने
यह बातें लिखी हैं. हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है. 25 मसीह येशु ने
इनके अतिरिक्त अन्य अनेक काम भी किए. यदि हर एक का वर्णन विस्तार से
किया जाता तो मेरे विचार से जितनी पुस्तकें लिखी जातीं वे संसार में भी न समा
पातीं.

प्रेरितों के काम

1 थियोफ़िलॉस महोदय, मेरे पहले अभिलेख का विषय था मसीह येशु की शिक्षाएं और उनके द्वारा शुरू किए गए वे काम, **2** जो उन्होंने अपने चुने हुए प्रेरितों को पवित्र आत्मा के निर्देश में दिए गए आदेशों के बाद स्वर्ग में स्वीकार कर लिए जाने तक किए. **3** मसीह येशु इन प्रेरितों के सामने अपने प्राणों के अंत तक की यातना के बाद अनेक अटल सबूतों के साथ चालीस दिन स्वयं को जीवित प्रकट करते रहे तथा परमेश्वर के राज्य संबंधी विषयों का वर्णन करते रहे. **4** एक दिन मसीह येशु ने उन्हें इकट्ठा कर आज्ञा दी, "येरूशलेम उस समय तक न छोड़ना, जब तक मेरे पिता (परमेश्वर) द्वारा की गई प्रतिज्ञा, जिसका वर्णन मैं कर चुका हूं, पूरी न हो जाए. **5** योहन तो जल में बपतिस्मा देते थे किंतु शीघ्र ही तुमको पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया जाएगा." **6** इसलिये जब वे सब वहां उपस्थित थे, उन्होंने प्रभु से प्रश्न किया, "प्रभु, क्या आप अब इस समय इस्राएल राज्य की दोबारा स्थापना करेंगे?" **7** "पिता के अधिकार में तय तिथियों या युगों के पूरे ज्ञान की खोज करना तुम्हारा काम नहीं है," मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, **8** "पवित्र आत्मा के तुम पर उतरने पर तुम्हें सामर्थ्य प्राप्त होगा और तुम येरूशलेम, सारे यहूदिया, शमरिया तथा पृथ्वी के दूर-दूर तक के क्षेत्रों में मेरे गवाह होगे." **9** इस वक्तव्य के पूरा होते ही प्रेरितों के देखते-देखते मसीह येशु स्वर्ग में स्वीकार कर लिए गए तथा एक बादल ने उन्हें उनकी दृष्टि से ओझल कर दिया. **10** जब वे आकाश में दृष्टि गड़ाए हुए मसीह येशु को स्वर्ग में जाते हुए देख रहे थे, एकाएक सफ़ेद वस्त्रों में दो व्यक्ति उनके पास प्रकट हो **11** कहने लगे, "गलीली पुरुषों, आकाश की ओर ऐसे क्यों ताक रहे हो? यह येशु, जो देखते-देखते तुम्हारे मध्य से स्वर्ग में स्वीकार कर लिए गए हैं, ठीक इसी प्रकार दोबारा आएंगे, जिस प्रकार तुमने उन्हें स्वर्ग में स्वीकार होते हुए देखा है." **12** तब वे उस पहाड़ी से, जिसे ज़ैतून पर्वत भी कहा जाता है, येरूशलेम लौट गए. यह स्थान येरूशलेम से लगभग एक किलोमीटर दूरी पर है. **13** नगर में पहुंचकर वे ऊपर के कमरे में इकट्ठा हो गए, जहां वे रह रहे थे. वहां पेतरॉस, योहन, याकोब, आन्द्रेयास, फ़िलिप्पॉस, थोमॉस, बारथोलोमेयॉस, मत्तियाह, हलफ़ेयॉस के पुत्र याकोब, शिमओन ज़ेलोतेस तथा याकोब के पुत्र यहूदाह उपस्थित थे. **14** ये सभी वहां नियमित रूप से सच्चाई के साथ एक मन होकर, मसीह येशु की माता मरियम, उनके भाइयों तथा अन्य स्त्रियों के साथ प्रार्थना के लिए इकट्ठा होने लगे. **15** तब एक दिन, जब लगभग एक सौ बीस विश्वासी इकट्ठा थे, पेतरॉस उनके बीच खड़े होकर कहने लगे, **16** "प्रिय भाई बहिनो, मसीह येशु को पकड़वाने के लिए अगुआ यहूदाह, के विषय में दावीद के माध्यम से पवित्र आत्मा के द्वारा कहा गया पवित्र शास्त्र का वचन पूरा होना ज़रूरी था. **17** वह हममें से एक तथा सेवा के कार्य में सहभागी था." **18** अधर्म की कमाई से उसने भूमि मोल ली. वहां वह सिर के बल ऐसा गिरा कि उसका पेट फट गया तथा उसकी सारी आंतें बाहर बिखर गईं. **19** सारे येरूशलेम में यह समाचार फैल गया. यही कारण है कि वह भूमि अब उन्हीं की भाषा में हकलदमा अर्थात् लहू-भूमि के नाम से बदनाम हो गई है. **20** "भजन में वर्णन है: "'उसकी भूमि उजाड़ हो जाए; तथा उसमें कोई बसने न पाए,' तथा यह भी, "'कोई अन्य उसका पद ले ले.' **21** इसलिये यह ज़रूरी है कि एक ऐसे व्यक्ति को चुना जाए, जो प्रभु येशु मसीह के कार्यों के सारे समय का गवाह है. **22** मसीह येशु को योहन द्वारा बपतिस्मा दिए जाने से लेकर उनके स्वर्ग में स्वीकार किए जाने तक—यह व्यक्ति हमारे साथ मसीह येशु के पुनरुत्थान का गवाह बने." **23** इसलिये दो नाम सुझाए गए: योसेफ़ जिसे बारसब्बास के नाम से जाना जाता है, जिसका उपनाम था युस्तस तथा दूसरा व्यक्ति मत्तियास. **24** तब उन्होंने यह प्रार्थना की, "हे मनों को जांचनेवाले प्रभु, हम पर यह साफ़ कीजिए कि इन दोनों में से आपने किसे चुना है **25** कि वह इस सेवा के कार्य और प्रेरितों की वह खाली जगह ले, जिससे मुक्त होकर यहूदाह अपने ठहराए हुए स्थान पर चला गया." **26** तब उन्होंने चिट डालें और मत मत्तियास के पक्ष में पड़े, इसलिये वह ग्यारह प्रेरितों में सम्मिलित कर लिया गया.

2 यहूदियों के पेन्तेकॉस्त पर्व के दिन, जब शिष्य एक स्थान पर इकट्ठा थे, **2** सहसा आकाश से तेज आंधी जैसी आवाज उस कमरे में फैल गई, जहां वे सब बैठे थे. **3** तब उनके सामने ऐसी ज्वाला प्रकट हुई जिसका आकार जीभ के समान था, जो अलग होकर उनमें से प्रत्येक व्यक्ति पर जाकर ठहरती गई. **4** वे सभी पवित्र आत्मा से भरकर पवित्र आत्मा द्वारा दी गई अन्य भाषाओं में बातें करने लगे. **5** उस समय आकाश के नीचे के हर एक देश से आए श्रद्धालु यहूदी येरूशलेम में ही ठहरे हुए थे. **6** इस कोलाहल को सुनकर वहां भीड़ इकट्ठा हो गईं. वे सभी आश्चर्यचकित हो गए क्योंकि वे सभी हर एक को अपनी निज भाषा में बातें करते हुए सुन रहे थे. **7** अचंभित हो वे एक दूसरे से पूछ रहे थे, "क्या ये सभी गलीलवासी नहीं हैं? **8** तब यह क्या हो रहा है, जो हममें से हर एक विदेशी इन्हें हमारी अपनी-अपनी मातृभाषा में बातें करते हुए सुन रहा है! **9** पारथी, मादी, इलामी और मेसोपोतामियावासि, यहूदिया तथा कप्पादोकिया, पोन्तॉस तथा आसिया, **10** फ्रिजिया, पम्फ़ूलिया, मिस्र, और लिबियावासी, जो क्रेते के आस-पास है; रोमी के रहनेवाले यहूदी तथा दीक्षित यहूदी, **11** क्रेती तथा अरबी, सभी अपनी-अपनी मातृभाषा में इनके मुख से परमेश्वर के पराक्रम के विषय में सुन रहे हैं!" **12** चकित और घबराकर वे एक दूसरे से पूछ रहे थे, "यह क्या हो रहा है?" **13** किंतु कुछ अन्य ठट्ठा कर कह रहे थे, "इन्होंने कुछ अधिक मधु ही पी रखी है." **14** तब ग्यारह के साथ पेतरॉस ने खड़े होकर ऊंचे शब्द में कहना प्रारंभ किया: "यहूदियावासियों तथा येरूशलेम वासियों, आपके लिए इस विषय को समझना अत्यंत आवश्यक है; इसलिये मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनिए: **15** जैसा आप समझ रहे हैं, ये व्यक्ति नशे में नहीं हैं क्योंकि यह दिन का तीसरा ही घंटा है! **16** वस्तुत, यह योएल भविष्यवक्ता द्वारा की गई इस भविष्यवाणी की पूर्ति है: **17** "'यह परमेश्वर की आवाज है, मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उंडेलूंगा. तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बुज़ुर्ग लोग स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे. **18** मैं उन दिनों में अपने दास, और दासियों, पर अपना आत्मा उंडेल दूंगा, और वे भविष्यवाणी करेंगे. **19** मैं ऊपर आकाश में अद्भुत चमत्कार और नीचे पृथ्वी पर लहू, आग और धुएं के बादल के अद्भुत चिह्न दिखाऊंगा. **20** प्रभु के उस वैभवशाली और वर्णनीय दिन के पूर्व सूर्य अंधेरा और चंद्रमा लहू समान हो जाएगा. **21** तथा हर एक, जो प्रभु को पुकारेगा, उद्धार प्राप्त करेगा.' **22** "इस्राएली प्रियजन, ध्यान से सुनिए! नाज़रेथवासी मसीह येशु को, जिन्हें आप जानते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने आपके मध्य सामर्थ्य के कामों, चमत्कारों तथा चिह्नों के द्वारा प्रकट किया, **23** परमेश्वर की निर्धारित योजना तथा पूर्व ज्ञान में आपके हाथों में अधर्मियों की सहायता से सौंप दिया गया कि उन्हें क्रूस-मृत्युदंड दिया जाए; **24** किंतु परमेश्वर ने उन्हें मृत्यु के दर्द से छुड़ाकर मरे हुओं में से जीवित कर दिया क्योंकि यह असंभव था कि मृत्यु उन्हें अपने बंधन में रख सके. **25** दावीद ने उनके विषय में कहा था: "मैं सर्वदा प्रभु को निहारता रहा क्योंकि वह मेरी दायीं ओर हैं, कि मैं लड़खड़ा न जाऊं. **26** इसलिये मेरा हृदय आनंदित और मेरी जीभ मगन हुई; इसके अलावा मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा, **27** क्योंकि आप न तो मेरी आत्मा को अधोलोक में छोड़ेंगे और न अपने पवित्र जन के शव को सड़ने देंगे. **(Hadēs g86)** **28** आपने मुझ पर जीवन का मार्ग प्रकट कर दिया. आप मुझे अपनी उपस्थिति में आनंद से भर देंगे. **29** "प्रियजन, पूर्वज दावीद के विषय में यह बिलकुल सच है कि उनकी मृत्यु हुई तथा उनके शव को कब्र में भी रखा गया. वह कब्र आज भी वहीं है. **30**

इसलिये उनके भविष्यवक्ता होने के कारण तथा इसलिये भी कि उन्हें यह मालूम
था कि परमेश्वर ने शपथ ली थी कि उन्हीं का एक वंशज सिंहासन पर बैठाया
जाएगा, 31 होनेवाली घटनाओं को साफ़-साफ़ देखते हुए दावीद ने मसीह येशु
के पुनरुत्थान का वर्णन किया कि मसीह येशु न तो अधोलोक में छोड़ दिए गए
और न ही उनके शव को सड़न ने स्पर्श किया. (Hadēs g86) 32 इन्हीं मसीह
येशु को परमेश्वर ने मरे हुओं में से उठाकर जीवित किया. हम इस सच्चाई के
प्रत्यक्ष साक्षी हैं. 33 परमेश्वर की दायीं ओर सर्वोच्च पद पर बैठकर, पिता से
प्राप्‍त पवित्र आत्मा लेकर उन्होंने हम पर उंडेल दिया, जो आप स्वयं देख और
सुन रहे हैं. 34 यद्यपि दावीद उस समय स्वर्ग नहीं पहुंचे थे तौभी उन्होंने स्वयं
कहा था, "'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: "मेरी दायीं ओर बैठे रहो 35 मैं तुम्हारे
शत्रुओं को तुम्हारे अधीन करूंगा."' 36 "इसलिये सारा इस्राएल निश्चित रूप से
यह जान ले कि इन्हीं येशु को, जिन्हें तुम लोगों ने क्रूसित किया परमेश्वर ने प्रभु
और मसीह पद से सम्मानित किया." 37 इस बात ने उनके हृदयों को छेद दिया.
उन्होंने पेतरॉस और शेष प्रेरितों से जानना चाहा, "प्रियजन, अब हमारे लिए
क्या करना सही है?" 38 पेतरॉस ने उत्तर दिया, "पश्चाताप कीजिए तथा आप
में से हर एक मसीह येशु के नाम में पाप क्षमा का बपतिस्मा ले—आपको दान के
रूप में पवित्र आत्मा मिलेगा; 39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा आपके, आपकी संतान
और उन सबके लिए भी है, जो अभी दूर-दूर हैं तथा परमेश्वर जिनको अपने
पास बुलाने पर हैं." 40 पेतरॉस ने अनेक तर्क प्रस्तुत करते हुए उनसे विनती
की, "स्वयं को इस टेढ़ी पीढ़ी से बचाए रखिए." 41 जितनों ने पेतरॉस के
प्रवचन को स्वीकार किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया. उस दिन लगभग तीन
हज़ार व्यक्ति उनमें शामिल हो गए. 42 वे सभी लगातार प्रेरितों की शिक्षा के
प्रति समर्पित होकर, पारस्परिक संगति, प्रभु-भोज की क्रिया और प्रार्थना में लीन
रहने लगे. 43 प्रेरितों द्वारा किए जा रहे अद्भुत काम तथा अद्भुत चिह्न सभी के
लिए आश्चर्य का विषय बन गए थे. 44 मसीह के सभी विश्वासी घनिष्ठ एकता में
रहने लगे तथा उनकी सब वस्तुओं पर सबका एक सा अधिकार था. 45 वे
अपनी संपत्ति बेचकर, जिनके पास कम थी उनमें बांटने लगे. 46 हर रोज़ वे
मंदिर के आंगन में एक मन हो नियमित रूप से इकट्ठा होते, भोजन के लिए एक
दूसरे के घर में निर्मल भाव से आनंदपूर्वक सामूहिक रूप से भोजन करते 47 तथा
परमेश्वर का गुणगान करते थे. वे सभी की प्रसन्‍नता के भागी थे. परमेश्वर इनमें
दिन-प्रतिदिन उनको मिलाते जा रहे थे, जो उद्धार प्राप्‍त कर रहे थे.

3 एक दिन नवें घंटे पर, जो प्रार्थना का निर्धारित समय था, पेतरॉस और योहन
मंदिर जा रहे थे. 2 उसी समय जन्म से अपंग एक व्यक्ति को भी वहां ले
जाया जा रहा था, जिसे प्रतिदिन मंदिर के ओरियन अर्थात् सुंदर नामक द्वार पर
छोड़ दिया जाता था कि वह वहां प्रवेश करते व्यक्तियों से भिक्षा विनती कर
सके. 3 पेतरॉस और योहन को प्रवेश करते देख उसने उनसे भीख मांगी. 4
पेतरॉस तथा योहन ने उसकी ओर सीधे, एकटक देखते हुए कहा, "हमारी ओर
देखो." 5 उनसे कुछ पाने की आशा में वह उन्हें ताकने लगा. 6 पेतरॉस ने उससे
कहा, "चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं किंतु मैं तुम्हें वह देता हूं, जो मेरे
पास है: नाज़रेथ के मसीह येशु के नाम में स्वस्थ हो जाओ और चलने लगो." 7
यह कहते हुए उन्होंने उसका दायां हाथ पकड़कर उसे उठाया. उसी क्षण उसके
पांवों तथा टखनों में बल-संचार हुआ, 8 वह उछलकर खड़ा हो गया और
चलने लगा. उसने उनके साथ चलते, उछलते-कूदते, परमेश्वर का गुणगान करते
हुए मंदिर में प्रवेश किया. 9 वहां सभी ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर का
गुणगान करते हुए देखा. 10 यह जानकर कि यह वही भिक्षुक है, जो मंदिर
के सुंदर नामक द्वार पर बैठा करता था, वे उसमें यह परिवर्तन देख अचंभित
और चकित रह गए. 11 वह पेतरॉस और योहन का साथ छोड़ ही नहीं रहा
था. वहां उपस्थित चकित भीड़ दौड़ती हुई उनके पास आकर शलोमोन के
ओसारे में इकट्ठी होने लगी. 12 यह देख पेतरॉस, उन्हें संबोधित कर कहने लगे:
"इस्राएली बंधुओं, आप इस व्यक्ति या हम पर इतने चकित क्यों हैं? हमें ऐसे
क्यों देख रहे हैं मानो हमने ही इसे अपने सामर्थ्य और भक्ति के द्वारा चलने योग्य
बनाया है? 13 अब्राहाम, यित्सहाक और याकोब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर ने अपने सेवक मसीह येशु को गौरवान्वित किया, जिन्हें आप लोगों ने
अस्वीकार करते हुए पिलातॉस के हाथों में सौंप दिया—जबकि पिलातॉस ने
उन्हें छोड़ देने का निश्चय कर लिया था. 14 आप लोगों ने एक पवित्र और
धर्मी व्यक्ति को अस्वीकार कर एक हत्यारे को छुड़ा देने की विनती की. 15
तथा आपने जीवन के रचनेवाले को मार डाला, जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओं में से
जीवित कर दिया. हम इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं. 16 मसीह येशु के नाम में विश्वास
के कारण इस व्यक्ति में, जिसे आप जानते हैं, जिसे आप इस समय देख रहे हैं,
बल-संचार हुआ है. यह व्यक्ति मसीह येशु के नाम में सशक्त किया गया और
मसीह येशु में विश्वास के द्वारा पूरे रूप से स्वस्थ हुआ है, जैसा कि आप स्वयं
देख सकते हैं. 17 "प्रियजन, मैं यह जानता हूं कि आपने मसीह येशु के विरुद्ध
यह सब अज्ञानता के कारण किया है, ठीक जैसा आपके शासकों ने भी किया
था. 18 किंतु परमेश्वर ने सभी भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा यह पहले से ही घोषणा
कर दी थी कि उनके मसीह के लिए यह यातना निर्धारित है. यह उसी की पूर्ति
है. 19 इसलिये पश्चाताप कीजिए, परमेश्वर की ओर मन फिराइए कि आपके
पाप मिटा दिए जाएं, जिसके फलस्वरूप प्रभु की ओर से आपके लिए विश्राम
और शांति का समय आ जाए 20 और वह मसीह येशु को, जो आपके लिए
पहले से ठहराए गए मसीह हैं, भेज दें, 21 जिनका स्वर्ग के द्वारा स्वीकार किया
जाना निश्चित है, जब तक परमेश्वर द्वारा हर एक वस्तु की पुनःस्थापना का समय
न आ जाए, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने प्राचीन काल में अपने भविष्यद्वक्ताओं
के माध्यम से की थी. (aiōn g165) 22 मोशेह ने यह घोषणा की थी: 'प्रभु,
तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारे बीच में, तुम्हारे ही लोगों में से तुम्हारे लिए मेरे समान
एक भविष्यवक्ता को उठाएंगे. तुम उसी के आदेशों का पालन करोगे. 23 तथा
हर एक, जो उसके आदेशों को अनसुना करे, तुम्हारे बीच से पूरी तरह नाश
कर दिया जाए.' 24 "शमुएल भविष्यवक्ता से लेकर उनके बादवाले सभी
भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भी इन्हीं दिनों के विषय में घोषणा की गई है. 25 तुम सब
उन भविष्यद्वक्ताओं तथा उस वाचा की संतान हो, जिसकी स्थापना परमेश्वर ने
हमारे पूर्वजों के साथ अब्राहाम से यह कहते हुए की थी. 26 परमेश्वर ने अपने
सेवक को मरे हुओं में से उठाकर सबसे पहले तुम्हारे पास भेज दिया कि वह
तुममें से प्रत्येक को तुम्हारी बुराइयों से फेरकर आशीष प्रदान करें."

4 जब वे भीड़ को संबोधित कर ही रहे थे, कि अचानक पुरोहित गण, मंदिर
रखवालों का प्रधान तथा सदूकी उनके पास आ पहुंचे. 2 वे अत्यंत क्रोधित
थे क्योंकि प्रेरित भीड़ को शिक्षा देते हुए मसीह येशु में मरे हुओं के जी उठने
की घोषणा कर रहे थे. 3 उन्होंने उन्हें बंदी बनाकर अगले दिन तक के लिए
कारागार में डाल दिया क्योंकि दिन ढल चुका था. 4 उनके संदेश को सुनकर
अनेकों ने विश्वास किया, जिनकी संख्या लगभग पांच हज़ार तक पहुंच गई. 5
अगले दिन यहूदियों के राजा, पुरनिये और शास्त्री येरूशलेम में इकट्ठा थे. 6 वहां
महापुरोहित हन्‍ना, कायाफ़स, योहन, अलेक्सान्दरॉस तथा महायाजकीय वंश के
सभी सदस्य इकट्ठा थे. 7 उन्होंने प्रेरितों को सबके बीच खड़ा कर प्रश्न करना
प्रारंभ कर दिया: "तुमने किस अधिकार से या किस नाम में यह किया है?" 8
तब पवित्र आत्मा से भरकर पेतरॉस ने उत्तर दिया: "सम्माननीय राजागण और
समाज के पुरनियों! 9 यदि आज हमारा परीक्षण इसलिये किया जा रहा है कि
एक अपंग का कल्याण हुआ है और इसलिये कि यह व्यक्ति किस प्रक्रिया द्वारा
स्वस्थ हुआ है, 10 तो आप सभी को तथा, सभी इस्राएल राष्ट्र को यह मालूम हो
कि यह सब नाज़रेथवासी, मसीह येशु के द्वारा किया गया है, जिन्हें आपने क्रूस

का मृत्यु दंड दिया, किंतु जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओं में से दोबारा जीवित किया.
आज उन्हीं के नाम के द्वारा स्वस्थ किया गया-यह व्यक्ति आपके सामने खड़ा
है. 11 मसीह येशु ही वह चट्टान हैं "'जिन्हें आप भवन निर्माताओं ने ठुकरा कर
अस्वीकृत कर दिया, जो कोने का प्रधान पत्थर बन गए.' 12 उद्धार किसी अन्य
में नहीं है क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों के लिए दूसरा कोई नाम दिया ही
नहीं गया जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो." 13 पेतरॉस तथा योहन का यह साहस
देख और यह जानकर कि वे दोनों अनपढ़ और साधारण व्यक्ति हैं, वे चकित रह
गए. उन्हें धीरे धीरे यह याद आया कि ये वे हैं, जो मसीह येशु के साथी रहे हैं.
14 किंतु स्वस्थ हुए व्यक्ति की उपस्थिति के कारण वे कुछ न कह सके; 15
उन्होंने उन्हें सभागार से बाहर जाने की आज्ञा दी. तब वे आपस में विचार-विमर्श
करने लगे, 16 "हम इनके साथ क्या करें? यह तो स्पष्ट है कि इनके द्वारा एक
असाधारण चमत्कार अवश्य हुआ है और यह येरूशलेम निवासियों को भी
मालूम हो चुका है. इस सच को हम नकार नहीं सकते. 17 किंतु लोगों में इस
समाचार का और अधिक प्रसार न हो, हम इन्हें यह चेतावनी दें कि अब वे
किसी से भी इस नाम का वर्णन करते हुए बातचीत न करें." 18 तब उन्होंने उन्हें
भीतर बुलाकर आज्ञा दी कि वे न तो येशु नाम का वर्णन करें और न ही उसके
विषय में कोई शिक्षा दें. 19 किंतु पेतरॉस और योहन ने उन्हें उत्तर दिया, "आप
स्वयं निर्णय कीजिए कि परमेश्वर की दृष्टि में उचित क्या है: आपकी आज्ञा का
पालन या परमेश्वर की आज्ञा का. 20 हमसे तो यह हो ही नहीं सकता कि जो
कुछ हमने देखा और सुना है उसका वर्णन न करें." 21 इस पर यहूदी प्रधानों ने
उन्हें दोबारा धमकी देकर छोड़ दिया. उन्हें यह सूझ ही नहीं रहा था कि उन्हें
किस आधार पर दंड दिया जाए क्योंकि सभी लोग इस घटना के लिए परमेश्वर
की स्तुति कर रहे थे. 22 उस व्यक्ति की उम्र, जो अद्भुत रूप से स्वस्थ हुआ था,
चालीस वर्ष से अधिक थी. 23 मुक्त होने पर प्रेरितों ने अपने साथियों को जा
बताया कि प्रधान पुरोहितों और पुरनियों ने उनसे क्या-क्या कहा था. 24 यह
विवरण सुनकर उन सबने एक मन हो ऊंचे शब्द में परमेश्वर से प्रार्थना की:
"परम प्रधान प्रभु, आप ही हैं जिन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और इनमें निवास
कर रहे प्राणियों की सृष्टि की है. 25 आपने ही पवित्र आत्मा से अपने सेवक,
हमारे पूर्वज दावीद के द्वारा कहा: "'राष्ट्र क्रोधित क्यों होते हैं जातियां व्यर्थ
योजनाएं क्यों करती हैं? 26 पृथ्वी के राजागण मोर्चा बांधते और शासकलोग
प्रभु के विरुद्ध और उनके अभिषिक्त के विरुद्ध एकजुट हो उठ खड़े होते हैं.' 27
यह एक सच्चाई है कि इस नगर में हेरोदेस तथा पोन्तियॉस पिलातॉस दोनों
ही इस्राएलियों तथा गैर-यहूदियों के साथ मिलकर आपके द्वारा अभिषिक्त,
आपके पवित्र सेवक मसीह येशु के विरुद्ध एकजुट हो गए 28 कि जो कुछ
आपके सामर्थ्य और उद्देश्य के अनुसार पहले से निर्धारित था, वही हो. 29 प्रभु,
उनकी धमकियों की ओर ध्यान दीजिए और अपने दासों को यह सामर्थ्य
दीजिए कि वे आपके वचन का प्रचार बिना डर के कर सकें 30 जब आप अपने
सामर्थ्यी स्पर्श के द्वारा चंगा करते तथा अपने पवित्र सेवक मसीह येशु के द्वारा
अद्भुत चिह्नों का प्रदर्शन करते जाते हैं." 31 उनकी यह प्रार्थना समाप्त होते ही
वह भवन, जिसमें वे इकट्ठा थे, थरथरा गया और वे सभी पवित्र आत्मा से भर
गए और बिना डर के परमेश्वर के संदेश का प्रचार करने लगे. 32 शिष्यों
के इस समुदाय में सभी एक मन और एक प्राण थे. कोई भी अपने धन पर
अपना अधिकार नहीं जताता था. उन सभी का धन एक में मिला हुआ था. 33
प्रेरितगण असाधारण सामर्थ्य के साथ प्रभु येशु मसीह के दोबारा जी उठने की
गवाही दिया करते थे और परमेश्वर का असीम अनुग्रह उन पर बना था. 34
उनमें कोई भी निर्धन नहीं था क्योंकि उनमें जो खेतों व मकानों के स्वामी थे,
अपनी संपत्ति बेचकर उससे प्राप्त धनराशि लाते 35 और प्रेरितों के चरणों में
रख देते थे, जिसे ज़रूरत के अनुसार निर्धनों में बांट दिया जाता था. 36 योसेफ़
नामक एक सैप्रसवासी लेवी थे, जिन्हें प्रेरितों द्वारा बारनबास नाम दिया गया था,
जिसका अर्थ है प्रोत्साहन का पुत्र, 37 उन्होंने अपनी भूमि को बेच दिया और
उससे प्राप्त धन लाकर प्रेरितों के चरणों में रख दिया.

5 हननयाह नामक एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी सफ़ीरा के साथ मिलकर अपनी
संपत्ति का एक भाग बेचा 2 तथा अपनी पत्नी की पूरी जानकारी में प्राप्त
राशि का एक भाग अपने लिए रखकर शेष ले जाकर प्रेरितों के चरणों में रख
दिया. 3 पेतरॉस ने उससे प्रश्न किया, "हननयाह, यह क्या हुआ, जो शैतान ने
तुम्हारे हृदय में पवित्र आत्मा से झूठ बोलने का विचार डाला है और तुमने अपनी
बेची हुई भूमि से प्राप्त राशि का एक भाग अपने लिए रख लिया? 4 क्या बेचे
जाने के पूर्व वह भूमि तुम्हारी ही नहीं थी? और उसके बिक जाने पर क्या प्राप्त
धनराशि पर तुम्हारा ही अधिकार न था? तुम्हारे मन में इस बुरे काम का विचार
कैसे आया? तुमने मनुष्यों से नहीं परंतु परमेश्वर से झूठ बोला है." 5 यह शब्द
सुनते ही हननयाह भूमि पर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई. जितनों ने भी इस
घटना के विषय में सुना उन सब पर आतंक छा गया. 6 युवाओं ने आकर उसे
कफ़न में लपेटा और बाहर ले जाकर उसका अंतिम संस्कार कर दिया. 7 इस
घटनाक्रम से पूरी तरह अनजान उसकी पत्नी भी लगभग तीन घंटे के अंतर में
वहां आई. 8 पेतरॉस ने उससे प्रश्न किया, "यह बताओ, क्या तुम दोनों ने उस
भूमि इतने में ही बेची थी?" उसने उत्तर दिया, "जी हां, इतने में ही." 9 इस पर
पेतरॉस ने उससे कहा, "क्या कारण है कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा को
परखने का दुस्साहस किया? जिन्होंने तुम्हारे पति की अंत्येष्टि की है, वे बाहर
द्वार पर हैं, जो तुम्हें भी ले जाएंगे." 10 उसी क्षण वह उनके चरणों पर गिर
पड़ी. उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे. जब युवक भीतर आए तो उसे मृत पाया.
इसलिये उन्होंने उसे भी ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया. 11 सारी
कलीसिया में तथा जितनों ने भी इस घटना के विषय में सुना, सभी में भय समा
गया. 12 प्रेरितों द्वारा लोगों के मध्य अनेक अद्भुत चिह्न दिखाए जा रहे थे और
मसीह के सभी विश्वासी एक मन होकर शलोमोन के ओसारे में इकट्ठा हुआ
करते थे. 13 यद्यपि लोगों की दृष्टि में प्रेरित अत्यंत सम्मान्य थे, उनके समूह में
मिलने का साहस कोई नहीं करता था. 14 फिर भी, अधिकाधिक संख्या में स्त्री-
पुरुष प्रभु में विश्वास करते चले जा रहे थे. 15 विश्वास के परिणामस्वरूप लोग
रोगियों को उनके बिछौनों सहित लाकर सड़कों पर लिटाने लगे कि कम से
कम उस मार्ग से जाते हुए पेतरॉस की छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए.
16 बड़ी संख्या में लोग येरूशलेम के आस-पास के नगरों से अपने रोगी तथा
दुष्टात्माओं के सताये परिजनों को लेकर आने लगे और वे सभी चंगे होते जाते
थे. 17 परिणामस्वरूप महापुरोहित तथा उसके साथ सदूकी संप्रदाय के बाकी
सदस्य जलन से भर गए. 18 उन्होंने प्रेरितों को बंदी बनाकर कारागार में बंद
कर दिया. 19 किंतु रात के समय प्रभु के एक दूत ने कारागार के द्वार खोलकर
उन्हें बाहर निकालकर उनसे कहा, 20 "जाओ, मंदिर के आंगन में जाकर लोगों
को इस नए जीवन का पूरा संदेश दो." 21 इस पर वे प्रातःकाल मंदिर में जाकर
शिक्षा देने लगे. महापुरोहित तथा उनके मंडल के वहां इकट्ठा होने पर उन्होंने
समिति का अधिवेशन आमंत्रित किया. इसमें इस्राएल की महासभा को भी
शामिल किया गया और आज्ञा दी गई कि कारावास में बंदी प्रेरित उनके सामने
प्रस्तुत किए जाएं 22 किंतु उन अधिकारियों ने प्रेरितों को वहां नहीं पाया.
उन्होंने लौटकर उन्हें यह समाचार दिया, 23 "वहां जाकर हमने देखा कि
कारागार के द्वार पर ताला वैसा ही लगा हुआ है और वहां प्रहरी भी खड़े हुए थे,
किंतु द्वार खोलने पर हमें कक्ष में कोई भी नहीं मिला." 24 इस समाचार ने
मंदिर के प्रधान रक्षक तथा प्रधान पुरोहितों को घबरा दिया. वे विचार करने लगे
कि इस परिस्थिति का परिणाम क्या होगा. 25 जब वे इसी उधेड़-बुन में थे,

किसी ने आकर उन्हें बताया कि जिन्हें कारागार में बंद किया गया था, वे तो
मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहे हैं. 26 यह सुन मंदिर का प्रधान रक्षक अपने
अधिकारियों के साथ वहां जाकर प्रेरितों को महासभा के सामने ले आया.
जनता द्वारा पथराव किए जाने के भय से अधिकारियों ने उनके साथ कोई बल
प्रयोग नहीं किया. 27 उनके वहां उपस्थित किए जाने पर महापुरोहित ने उनसे
पूछताछ शुरू की, 28 “हमने तुम्हें कड़ी आज्ञा दी थी कि इस नाम में अब कोई
शिक्षा मत देना, पर देखो, तुमने तो येरूशलेम को अपनी शिक्षा से भर दिया है,
और तुम इस व्यक्ति की हत्या का दोष हम पर मढ़ने के लिए निश्चय कर चुके
हो.” 29 पेतरॉस तथा प्रेरितों ने इसका उत्तर दिया, “हम तो मनुष्यों की बजाय
परमेश्वर के ही आज्ञाकारी रहेंगे. 30 हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मसीह येशु को
मरे हुओं में से जीवित कर दिया, जिनकी आप लोगों ने काठ पर लटकाकर
हत्या कर दी, 31 जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दायीं ओर सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता
के पद पर बैठाया कि वह इस्राएल को पश्चाताप और पाप क्षमा प्रदान करें. 32
हम इन घटनाओं के गवाह हैं—तथा पवित्र आत्मा भी, जिन्हें परमेश्वर ने अपनी
आज्ञा माननेवालों को दिया है.” 33 यह सुन वे तिलमिला उठे और उनकी हत्या
की कामना करने लगे. 34 किंतु गमालिएल नामक फ़रीसी ने, जो व्यवस्था के
शिक्षक और जनसाधारण में सम्मानित थे, महासभा में खड़े होकर आज्ञा दी
कि प्रेरितों को सभाकक्ष से कुछ देर के लिए बाहर भेज दिया जाए. 35 तब
गमालिएल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, “इस्राएली बंधुओं, भली-भांति
विचार कर लीजिए कि आप इनके साथ क्या करना चाहते हैं. 36 कुछ ही समय
पूर्व थद्देयॉस ने कुछ होने का दावा किया था और चार सौ व्यक्ति उसके साथ हो
लिए. उसकी हत्या कर दी गई और उसके अनुयायी तितर-बितर होकर नाश हो
गए. 37 इसके बाद गलीलवासी यहूदाह ने जनगणना के अवसर पर सिर उठाया
और लोगों को भरमा दिया. वह भी मारा गया और उसके अनुयायी भी तितर-
बितर हो गए. 38 इसलिये इनके विषय में मेरी सलाह यह है कि आप इन्हें छोड़
दें और इनसे दूर ही रहें क्योंकि यदि इनके कार्य की उपज और योजना मनुष्य
की ओर से है तो यह अपने आप ही विफल हो जाएगी; 39 मगर यदि यह सब
परमेश्वर की ओर से है तो आप उन्हें नाश नहीं कर पाएंगे—ऐसा न हो कि इस
सिलसिले में आप स्वयं को परमेश्वर का ही विरोध करता हुआ पाएं.” 40
महासभा ने गमालिएल का विचार स्वीकार कर लिया. उन्होंने प्रेरितों को कक्ष
में बुलवाकर कोड़े लगवाए, और उन्हें यह आज्ञा दी कि वे अब से येशु के नाम
में कुछ न कहें और फिर उन्हें मुक्त कर दिया. 41 प्रेरित महासभा से आनंद
मनाते हुए चले गए कि उन्हें मसीह येशु के कारण अपमान-योग्य तो समझा गया.
42 वे प्रतिदिन नियमित रूप से मंदिर प्रांगण में तथा घर-घर जाकर यह प्रचार
करते तथा यह शिक्षा देते रहे कि येशु ही वह मसीह हैं.

6 उस समय, जब इस मत के शिष्यों की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही थी,
यूनानी भाषी यहूदी इब्री भाषी यहूदियों के विरुद्ध यह शिकायत लाए कि
दैनिक भोजन बांटने में उनकी विधवाओं की उपेक्षा की जा रही थी. 2 इस पर
बारहों प्रेरितों ने सभी शिष्यों की सभा आयोजित कर उनसे कहा: “हमारे लिए
यह ठीक नहीं है कि हम परमेश्वर के वचन की उपेक्षा कर दूसरों की सेवा में
समय लगाएं. 3 इसलिये भाई बहिनो, अपने में से सात ऐसे व्यक्तियों को चुन
लो, जिनके विषय में यह सबको मालूम हो कि वे पवित्र आत्मा और बुद्धि से
भरपूर हैं. हम यह ज़िम्मेदारी उन्हीं को सौंप देंगे 4 किंतु स्वयं हम प्रार्थना, वचन
के प्रचार तथा शिक्षा देने के प्रति समर्पित रहेंगे.” 5 सारी सभा ने इस प्रस्ताव को
सहर्ष स्वीकार कर लिया. उन्होंने स्तेफ़ानॉस, जो विश्वास और पवित्र आत्मा से
भरकर थे, फ़िलिप्पॉस, प्रोकॉरॉस, निकानोर, तिमॉन, परमिनास तथा यहूदी मत
में हाल ही में शामिल हुए अंतियोख़वासी निकोलॉस को चुन लिया. 6 इन्हें वे
प्रेरितों के सामने लाए. उन्होंने चुने हुए व्यक्तियों के लिए प्रार्थना की और उन
पर हाथ रखकर उन्हें सेवा के लिए अधिकार दिया. 7 परमेश्वर का वचन
फैलता चला गया, येरूशलेम में शिष्यों की संख्या में अपार वृद्धि होती गई तथा
अनेक पुरोहितों ने भी इस विश्वासमत को स्वीकार कर लिया. 8 अनुग्रह और
सामर्थ्य से भरकर स्तेफ़ानॉस लोगों के बीच में असाधारण अद्भुत चिह्न दिखा रहे
थे. 9 इसी समय लिबर्तीन सभागृह से सम्बद्ध कुछ सदस्य, जो मूल रूप से
कुरेना, अलेक्सान्द्रिया, किलिकिया और आसिया प्रदेशों के निवासी थे, आकर
स्तेफ़ानॉस से वाद-विवाद करने लगे. 10 वे स्तेफ़ानॉस की बुद्धिमत्ता तथा पवित्र
आत्मा से प्रेरित बातों का सामना करने में विफल रहे. 11 इसलिये उन्होंने गुप्त
रूप से कुछ लोगों को यह कहने के लिए फुसलाया, “हमने इसे मोशेह तथा
परमेश्वर के विरुद्ध निंदनीय शब्दों का प्रयोग करते हुए सुना है.” 12 उन्होंने
स्तेफ़ानॉस के विरुद्ध जनता, पुरनियों, तथा शास्त्रियों को उकसाया और उन्होंने
आकर स्तेफ़ानॉस को बंदी बनाया और उन्हें महासभा के सामने ले गए. 13 वहां
उन्होंने झूठे गवाह प्रस्तुत किए जिन्होंने स्तेफ़ानॉस पर यह आरोप लगाया,
“यह व्यक्ति निरंतर इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरुद्ध बोलता रहता है.
14 हमने इसे यह कहते भी सुना है कि नाज़रेथवासी येशु इस स्थान को नाश कर
देगा तथा उन सभी प्रथाओं को बदल देगा, जो हमें मोशेह द्वारा सौंपी गई हैं.”
15 महासभा के सब सदस्य स्तेफ़ानॉस को एकटक देख रहे थे. उन्हें उनका
मुखमंडल स्वर्गदूत के समान दिखाई दिया.

7 महापुरोहित ने उनसे प्रश्न किया, “क्या यह आरोप सच है?” 2 स्तेफ़ानॉस ने
उसे उत्तर दिया, “आदरणीय गुरुवर और बंधुओं,” कृपया सुनिए: महामहिम
परमेश्वर ने हमारे पूर्वज अब्राहाम को उनके हारान प्रदेश में आकर बसने के पूर्व,
जब वह मेसोपोतामिया में थे, दिव्य दर्शन देते हुए आज्ञा दी: 3 अपने पिता के घर
तथा अपने रिश्तेदारों को छोड़कर उस देश को चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा.
4 “इसलिये वह कसदियों के देश को छोड़कर हारान नगर में बस गए. इसके
बाद उनके पिता की मृत्यु के बाद, परमेश्वर उन्हें इस भूमि पर ले आए जिस पर
आप निवास कर रहे हैं. परमेश्वर ने उन्हें इस भूभाग का कोई उत्तराधिकार नहीं
दिया; 5 यहां तक कि पैर रखने का भी स्थान नहीं. किंतु परमेश्वर ने उनके उस
समय निःसंतान होने पर भी उनसे यह प्रतिज्ञा की कि उनके बाद वह उनके
वंशजों को यह भूमि उनकी संपत्ति के रूप में प्रदान करेंगे. 6 तब परमेश्वर ने
अब्राहाम से कहा, ‘यह सच है तुम्हारे वंश के लोग पराए देश में परदेशी होकर
रहेंगे, जहां उन्हें दास बना लिया जाएगा, और उन्हें चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे.
7 फिर जिस देश के वे दास होंगे, उस देश के लोगों को मैं दंड दूंगा, फिर तुम्हारे
वंश के लोग वहां से बहुत धन लेकर निकलेंगे.’ 8 परमेश्वर ने अब्राहाम के साथ
ख़तना की वाचा स्थापित की. जब अब्राहाम के पुत्र यित्सहाक का जन्म हुआ,
तो आठवें दिन उनका ख़तना किया गया. यित्सहाक के पुत्र थे याकोब और
याकोब से बारह गोत्रपिता पैदा हुए. 9 “जलन के कारण गोत्रपिताओं ने योसेफ़
को मिस्र देश में बेच दिया किंतु परमेश्वर की कृपादृष्टि योसेफ़ पर बनी रही. 10
इसलिये परमेश्वर ने योसेफ़ को सभी यातनाओं से मुक्त कर उन्हें बुद्धि प्रदान की
और मिस्र देश के राजा फ़रोह की कृपादृष्टि प्रदान की तथा फ़रोह ने उन्हें मिस्र
देश और पूरे राजमहल पर अधिकारी बना दिया. 11 “तब सारे मिस्र और कनान
देश में अकाल पड़ा जिससे हर जगह हाहाकार मच गया और हमारे पूर्वजों के
सामने भोजन का अभाव हो गया. 12 किंतु जब याकोब को यह मालूम हुआ कि
मिस्र देश में अन्‍न उपलब्ध है, उन्होंने हमारे पूर्वजों को अन्‍न लेने वहां भेजा,
जिनकी यह पहली मिस्र की यात्रा थी. 13 जब वे अन्‍न लेने वहां दूसरी बार गए,
योसेफ़ ने स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट कर दिया, जिससे फ़रोह योसेफ़ के
परिवार से परिचित हो गया. 14 तब योसेफ़ ने अपने पिता और सारे परिवार
को, जिनकी संख्या पचहत्तर थी, मिस्र देश में बुला लिया. 15 तब याकोब मिस्र
देश में बस गए और वहीं उनकी और हमारे पूर्वजों की मृत्यु हुई. 16 उनके

अवशेष शेकेम नगर लाए गए तथा उन्हें अब्राहाम द्वारा मोल ली गई कंदरा-क़ब्र
में रखा गया, जिसे अब्राहाम ने शेकेम नगर के निवासी हामोर के पुत्रों को दाम
देकर खरीदा था. 17 "जब परमेश्वर द्वारा अब्राहाम से की गई प्रतिज्ञा को पूरी
करने का समय आया तब मिस्र देश में हमारे पूर्वजों की संख्या में कई गुणा वृद्धि
हो चुकी थी. 18 उस समय मिस्र में एक नया राजा बना, जो योसेफ़ को नहीं
जानता था. 19 उसने हमारे पूर्वजों के साथ चालाकी से बुरा व्यवहार किया और
नवजात शिशुओं को नाश करने के लिए विवश किया कि एक भी शिशु बचा न
रहे. 20 "इसी काल में मोशेह का जन्म हुआ. वह परमेश्वर की दृष्टि में चाहने
योग्य थे. तीन माह तक उनका पालन पोषण उनके पिता के ही परिवार में हुआ.
21 जब उनको छुपाए रखना असंभव हो गया, तब फ़रोह की पुत्री उन्हें ले गई.
उसने उनका पालन पोषण अपने पुत्र जैसे किया. 22 मिस्र देश की सारी विद्या
में मोशेह को प्रशिक्षित किया गया. वह बातचीत और कर्तव्य-पालन करने में
प्रभावशाली थे. 23 "जब मोशेह लगभग चालीस वर्ष के हुए, उनके मन में
अपने इस्राएली बंधुओं से भेंट करने का विचार आया. 24 वहां उन्होंने एक
इस्राएली के साथ अन्याय से भरा व्यवहार होते देख उसकी रक्षा की तथा सताए
जानेवाले के बदले में मिस्रवासी की हत्या कर दी. 25 उनका विचार यह था कि
उनके इस काम के द्वारा इस्राएली यह समझ जाएंगे कि परमेश्वर स्वयं उन्हीं के
द्वारा इस्राएलियों को मुक्त करा रहे हैं किंतु ऐसा हुआ नहीं. 26 दूसरे दिन जब
उन्होंने आपस में लड़ते हुए दो इस्राएलियों के मध्य यह कहते हुए मेल-मिलाप
का प्रयास किया, 'तुम भाई-भाई हो, क्यों एक दूसरे को आहत करना चाह रहे
हो?' 27 "उस अन्याय करनेवाले इस्राएली ने मोशेह को धक्का देते हुए कहा,
'किसने तुम्हें हम पर राजा और न्याय करनेवाला ठहराया है? 28 कहीं तुम्हारा
मतलब कल उस मिस्री जैसे मेरी भी हत्या का तो नहीं है? बोलो!' 29 यह सुन
मोशेह वहां से भाग खड़े हुए और मिदियान देश में परदेशी होकर रहने लगे. वहां
उनके दो पुत्र पैदा हुए. 30 "चालीस वर्ष व्यतीत होने पर सीनाय पर्वत के बंजर
भूमि में एक जलती हुई कंटीली झाड़ी आग की लौ में उन्हें एक स्वर्गदूत दिखाई
दिया. 31 इस दृश्य ने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया. जब वह इसे नज़दीकी से
देखने के उद्देश्य से झाड़ी के पास गए तो परमेश्वर ने उनसे कहा: 32 'मैं तुम्हारे
पूर्वजों के पिता अर्थात् अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब का परमेश्वर हूं.'
मोशेह भय से कांपने लगे और ऊपर आंख उठाने का साहस न कर सके. 33
"प्रभु ने मोशेह से कहा, अपनी पैरों से जूते उतार दो, क्योंकि यह स्थान, जिस
पर तुम खड़े हो, पवित्र है. 34 मिस्र देश में मेरी प्रजा पर हो रहा अत्याचार मैंने
अच्छी तरह से देखा है. 'मैंने उनका कराहना भी सुना है. मैं उन्हें मुक्त कराने
नीचे उतर आया हूं. सुनो, मैं तुम्हें मिस्र देश भेजूंगा.' 35 "यह वही मोशेह हैं,
जिन्हें इस्राएलियों ने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया था, 'किसने तुम्हें हम
पर राजा और न्याय करनेवाला ठहराया है?' परमेश्वर ने उन्हीं को उस स्वर्गदूत
द्वारा, जो झाड़ी में उन्हें दिखाई दिया था, राजा तथा छुड़ाने वाला ठहराकर भेज
दिया. 36 यह वही मोशेह थे, जिन्होंने उनका नायक होकर उन्हें बाहर निकाला
और मिस्र देश, लाल सागर तथा चालीस वर्ष बंजर भूमि में अद्भुत चिह्न दिखाते
हुए उनका मार्गदर्शन किया. 37 "यही थे वह मोशेह, जिन्होंने इस्राएल की
संतान के सामने यह घोषणा पहले से ही की थी, 'तुम्हारे ही देशवासियों में से
परमेश्वर मेरे ही समान एक भविष्यवक्ता को उठाएंगे.' 38 यह वही हैं, जो बंजर
भूमि में इस्राएली समुदाय में उस स्वर्गदूत के साथ मौजूद थे, जिसने उनसे सीनाय
पर्वत पर बातें की और जो हमारे पूर्वजों के साथ थे तथा मोशेह ने तुम्हें सौंप देने
के लिए जिनसे जीवित वचन प्राप्त किए. 39 "हमारे पूर्वज उनके आज्ञापालन
के इच्छुक नहीं थे. वे मन ही मन मिस्र देश की कामना करने लगे. 40 वे
हारोन से कहते रहे, 'हमारे आगे-आगे जाने के लिए देवताओं को स्थापित
करो. इस मोशेह की, जो हमें मिस्र साम्राज्य से बाहर लेकर आया है, कौन जाने
क्या हुआ!' 41 तब उन्होंने बछड़े की एक मूर्ति बनाई, उसे बलि चढ़ाई तथा
अपने हाथों के कामों पर उत्सव मनाने लगे. 42 इससे परमेश्वर ने उनसे मुंह
मोड़कर उन्हें आकाश के नक्षत्रों की उपासना करने के लिए छोड़ दिया, जैसा
भविष्यद्वक्ताओं के अभिलेख में लिखा है: "'हे इस्राएल के वंशजों, निर्जन प्रदेश
में चालीस साल तक क्या तुमने मुझे बलिदान और भेंट चढ़ाया? 43 तुमने देवता
मोलेक की वेदी की स्थापना की, अपने देवता रेफ़ान के तारे को ऊंचा किया
और उन्हीं की मूर्तियों को आराधना के लिए स्थापित किया. इसलिये मैं तुम्हें
बाबेल से दूर निकाल ले जाऊंगा.' 44 "बंजर भूमि में गवाही का तंबू हमारे
पूर्वजों के पास था. इसका निर्माण ठीक-ठीक परमेश्वर द्वारा मोशेह को दिए गए
निर्देश के अनुसार किया गया था, जिसका आकार स्वयं मोशेह देख चुके थे. 45
हमारे पूर्वज इस गवाही के तंबू को यहोशू के नेतृत्व में अपने साथ उस भूमि पर
ले आए, जिसे उन्होंने अपने अधिकार में ले लिया था और जहां से परमेश्वर ने
हमारे पूर्वजों के सामने से राष्ट्रों को निकाल दिया था. ऐसा दावीद के समय
तक रहा. 46 दावीद पर परमेश्वर की कृपादृष्टि थी. दावीद ने उनसे याकोब के
परमेश्वर के लिए एक निवास स्थान बनाने की आज्ञा चाही. 47 किंतु इस भवन
का निर्माण शलोमोन द्वारा किया गया. 48 "सच तो यह है कि, परम प्रधान
परमेश्वर मनुष्य के हाथ से बने भवन में वास नहीं करते. भविष्यवक्ता की
घोषणा है: 49 "'स्वर्ग मेरा सिंहासन तथा पृथ्वी मेरे पैरों की चौकी है. किस
प्रकार का घर बनाओगे तुम मेरे लिए? परमेश्वर का कहना है, या कहां होगा मेरा
विश्राम स्थान? 50 क्या ये सभी मेरे ही हाथों की रचना नहीं?' 51 "आप, जो
हठीले हृदय और कान के ख़तना रहित लोग हैं, हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध
करते रहते हैं. आप ठीक वही कर रहे हैं, जो आपके पूर्वजों ने किया. 52 क्या
कभी भी कोई ऐसा भविष्यवक्ता हुआ है, जिसे आपके पूर्वजों ने सताया न हो?
यहां तक कि उन्होंने तो उन भविष्यद्वक्ताओं की हत्या भी कर दी जिन्होंने उस
धर्मी जन के आगमन की पहले से ही घोषणा की थी. यहां उसी की हत्या करके
आप लोग विश्वासघाती और हत्यारे बन गए हैं. 53 आप वही हैं जिन्हें स्वर्गदूतों
द्वारा प्रभावशाली व्यवस्था सौंपी गई थी, फिर भी आपने उसका पालन नहीं
किया." 54 यह सुन सारे सुननेवाले तिलमिला उठे और स्तेफ़ानॉस पर दांत
पीसने लगे. 55 किंतु पवित्र आत्मा से भरकर स्तेफ़ानॉस ने जब अपनी दृष्टि स्वर्ग
की ओर उठाई, उन्होंने परमेश्वर की महिमा को और मसीह येशु को परमेश्वर के
दाहिनी ओर खड़े हुए देखा. 56 स्तेफ़ानॉस ने सुननेवालों को संबोधित करते हुए
कहा, "वह देखिए! मुझे स्वर्ग खुला हुआ तथा मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के
दाहिनी ओर खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं." 57 यह सुनते ही सुननेवालों ने चीखते
हुए अपने कानों पर हाथ रख लिए. फिर वे गुस्से में स्तेफ़ानॉस पर एक साथ टूट
पड़े. 58 उन्होंने स्तेफ़ानॉस को पकड़ा और घसीटते हुए नगर के बाहर ले गए
और वहां उन्होंने पथराव करके उनकी हत्या कर दी. इस समय उन्होंने अपने
बाहरी कपड़े शाऊल नामक युवक के पास रख छोड़े थे. 59 जब वे स्तेफ़ानॉस
का पथराव कर रहे थे, स्तेफ़ानॉस ने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की, "प्रभु येशु,
मेरी आत्मा को स्वीकार कीजिए." 60 तब उन्होंने घुटने टेककर ऊंचे शब्द में
यह कहा, "प्रभु, इन्हें इस पाप का दोषी न ठहराना." यह कहते हुए स्तेफ़ानॉस
लंबी नींद में सो गए.

8 स्तेफ़ानॉस की हत्या में पूरी तरह शाऊल सहमत था. उसी दिन से येरूशलेम
नगर की कलीसियाओं पर घोर सताना शुरू हो गया, जिसके फलस्वरूप
प्रेरितों के अलावा सभी शिष्य यहूदिया तथा शमरिया के क्षेत्रों में बिखर गए. 2
कुछ श्रद्धालु व्यक्तियों ने स्तेफ़ानॉस के शव की अंत्येष्टि की तथा उनके लिए
गहरा शोक मनाया. 3 शाऊल कलीसिया को सता रहा था; वह घरों में घुस, स्त्री-
पुरुषों को घसीटकर कारागार में डाल रहा था. 4 वे, जो यहां वहां बिखर गए थे,
शुभ संदेश सुनाने लगे. 5 फ़िलिप्पॉस शमरिया के एक नगर में जाकर मसीह के

विषय में शिक्षा देने लगे. 6 फ़िलिप्पॉस के अद्भुत चिह्नों को देख भीड़ एक मन
होकर उनके प्रवचन सुनने लगी. 7 अनेक दुष्टात्माओं के सताए हुओं में से
दुष्टात्मा ऊंचे शब्द में चिल्लाते हुए बाहर आ रहे थे. अनेक अपंग और लकवे के
पीड़ित भी स्वस्थ हो रहे थे. 8 नगर में आनंद की लहर दौड़ गई थी. 9 उसी
नगर में शिमओन नामक एक व्यक्ति था, जिसने शमरिया राष्ट्र को जादू-टोने
के द्वारा चकित कर रखा था. वह अपनी महानता का दावा करता था. 10
छोटे-बड़े सभी ने यह कहकर उसका लोहा मान रखा था: "यही है वह, जिसे
परमेश्वर की महाशक्ति कहा जाता है." 11 उसके इन चमत्कारों से सभी अत्यंत
प्रभावित थे क्योंकि उसने उन्हें बहुत दिनों से अपनी जादूई विद्या से चकित
किया हुआ था. 12 किंतु जब लोगों ने परमेश्वर के राज्य और मसीह येशु के
नाम के विषय में फ़िलिप्पॉस का संदेश सुनकर विश्वास किया, स्त्री और पुरुष
दोनों ही ने बपतिस्मा लिया. 13 स्वयं शिमओन ने भी विश्वास किया, बपतिस्मा
लिया और फ़िलिप्पॉस का शिष्य बन गया. वह अद्भुत चिह्न और सामर्थ्य से भरे
महान कामों को देखकर हैरान था. 14 जब येरूशलेम नगर में प्रेरितों को यह
मालूम हुआ कि शमरिया नगर ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार कर लिया है,
उन्होंने पेतरॉस तथा योहन को वहां भेज दिया. 15 वहां पहुंचकर उन्होंने उनके
लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा प्राप्त करें 16 क्योंकि वहां अब तक किसी
पर भी पवित्र आत्मा नहीं उतरा था. उन्होंने प्रभु येशु के नाम में बपतिस्मा मात्र
ही लिया था. 17 तब प्रेरितों ने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा
प्राप्त किया. 18 जब शिमओन ने यह देखा कि प्रेरितों के मात्र हाथ रखने से
पवित्र आत्मा प्राप्ति संभव है, उसने प्रेरितों को यह कहते हुए धन देना चाहा,
19 "मुझे भी यह अधिकार प्रदान कर दीजिए कि मैं जिस किसी पर हाथ रखूं
उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो जाए." 20 किंतु पेतरॉस ने उससे कहा, "सर्वनाश हो
तेरा और तेरे धन का! क्योंकि तूने परमेश्वर का वरदान धन से प्राप्त करना
चाहा. 21 इस सेवा में तेरा न कोई भाग है न कोई हिस्सेदारी, क्योंकि तेरा हृदय
परमेश्वर के सामने सच्चा नहीं है. 22 इसलिये सही यह होगा कि तू अपनी
दुर्वृत्ति से पश्चाताप करे और प्रार्थना करे कि यदि संभव हो तो प्रभु तेरे दिल की
इस बुराई को क्षमा करें, 23 क्योंकि मुझे यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि तू
कड़वाहट से भरा हुआ और पूरी तरह पाप में जकड़ा हुआ है." 24 यह सुन
टोनहे शिमओन ने उनसे विनती की "आप ही प्रभु से मेरे लिए प्रार्थना कीजिए
कि आपने जो कुछ कहा है, उसमें से कुछ भी मुझ पर असर न करने पाए." 25
पेतरॉस तथा योहन परमेश्वर के वचन की शिक्षा और गवाही देते हुए येरूशलेम
लौट गए. वे शमरिया क्षेत्र के अनेक गांवों में ईश्वरीय सुसमाचार सुनाते गए. 26
प्रभु के एक दूत ने फ़िलिप्पॉस से कहा, "उठो, दक्षिण दिशा की ओर उस मार्ग
पर जाओ, जो येरूशलेम से अज्जाह नगर को जाता है." यह बंजर भूमि का
मार्ग है. 27 फ़िलिप्पॉस इस आज्ञा के अनुसार चल पड़े. मार्ग में उनकी भेंट
एक खोजे से हुई, जो इथियोपिया की रानी कन्दाके की राज्यसभा में मंत्री था.
वह आराधना के लिए येरूशलेम आया हुआ था. 28 वह स्वदेश लौटते समय
अपने रथ में बैठे हुए भविष्यवक्ता यशायाह का लेख पढ़ रहा था. 29 पवित्र
आत्मा ने फ़िलिप्पॉस को आज्ञा दी, "आगे बढ़ो और रथ के साथ साथ चलते
जाओ." 30 फ़िलिप्पॉस दौड़कर रथ के पास पहुंचे. उन्होंने उस व्यक्ति को
भविष्यवक्ता यशायाह के ग्रंथ से पढ़ते हुए सुना तो उससे प्रश्न किया, "आप जो
पढ़ रहे हैं, क्या उसे समझ रहे हैं?" 31 "भला मैं इसे कैसे समझ सकता हूं
जब तक कोई मुझे ये सब न समझाए?" मंत्री ने उत्तर दिया. इसलिये उसने
फ़िलिप्पॉस से रथ में बैठने की विनती की. 32 खोजे जो भाग पढ़ रहा था, वह
यह था: "वध के लिए ले जाए जा रहे मेमने के समान उसको ले जाया गया,
तथा जैसे ऊन कतरनेवाले के सामने मेमना शांत रहता है, वैसे ही उसने भी
अपना मुख न खोला. 33 अपने अपमान में वह न्याय से वंचित रह गए. कौन
उनके वंशजों का वर्णन करेगा? क्योंकि पृथ्वी पर से उनका जीवन समाप्त
कर दिया गया." 34 खोजे ने फ़िलिप्पॉस से विनती की, "कृपया मुझे बताएं,
भविष्यवक्ता यह किसका वर्णन कर रहे हैं—अपना, या किसी और का?" 35
तब फ़िलिप्पॉस ने पवित्र शास्त्र के उसी भाग से प्रारंभ कर मसीह येशु के विषय में
ईश्वरीय सुसमाचार स्पष्ट किया. 36 जब वे मार्ग में ही थे, एक जलाशय को देख
खोजे ने फ़िलिप्पॉस से पूछा, "यह देखिए, जल! मेरे बपतिस्मा लेने में क्या कोई
बाधा है?" [37 फ़िलिप्पॉस ने उत्तर दिया, "यदि आप सारे हृदय से विश्वास
करते हैं तो आप बपतिस्मा ले सकते हैं." खोजे ने कहा, "मैं विश्वास करता हूं
कि मसीह येशु ही परमेश्वर के पुत्र हैं."] 38 तब फ़िलिप्पॉस ने रथ रोकने की
आज्ञा दी और स्वयं फ़िलिप्पॉस व खोजे दोनों जल में उतर गए और फ़िलिप्पॉस
ने उसे बपतिस्मा दिया. 39 जब वे दोनों जल से बाहर आए, सहसा फ़िलिप्पॉस
प्रभु के आत्मा के द्वारा वहां से उठा लिए गए. वह खोजे को दोबारा दिखाई
न दिए. आनंद से भरकर खोजा स्वदेश लौट गया, 40 जबकि फ़िलिप्पॉस
अज़ोतॉस नगर में देखे गए. कयसरिया नगर पहुंचते हुए वह मार्ग पर सभी नगरों
में ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करते गए.

9 इस समय शाऊल पर प्रभु के शिष्यों को धमकाने तथा उनकी हत्या करने
की धुन छाई हुई थी. वह महापुरोहित के पास गया 2 और उनसे दमिश्क
नगर के यहूदी सभागृहों के लिए इस उद्देश्य के अधिकार पत्रों की विनती की
कि यदि उसे इस मत के शिष्य—स्त्री या पुरुष—मिलें तो उन्हें बंदी बनाकर
येरूशलेम ले आए. 3 जब वह दमिश्क नगर के पास पहुंचा, एकाएक उसके
चारों ओर स्वर्ग से एक बिजली कौंध गई, 4 वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने
स्वयं को संबोधित करता हुआ एक शब्द सुना: "शाऊल! शाऊल! तुम मुझे क्यों
सता रहे हो?" 5 इसके उत्तर में उसने कहा, "प्रभु! आप कौन हैं?" प्रभु ने उत्तर
दिया, "मैं येशु हूं, जिसे तुम सता रहे हो 6 किंतु अब उठो, नगर में जाओ और
तुम्हें क्या करना है, तुम्हें बता दिया जाएगा." 7 शाऊल के सहयात्री अवाक
खड़े थे. उन्हें शब्द तो अवश्य सुनाई दे रहा था किंतु कोई दिखाई नहीं दे रहा
था. 8 तब शाऊल भूमि पर से उठा. यद्यपि उसकी आंखें तो खुली थी, वह कुछ
भी देख नहीं पा रहा था. इसलिये उसका हाथ पकड़कर वे उसे दमिश्क नगर में
ले गए. 9 तीन दिन तक वह अंधा रहा. उसने न कुछ खाया और न कुछ पिया.
10 दमिश्क में हननयाह नामक व्यक्ति मसीह येशु के एक शिष्य थे. उनसे प्रभु ने
दर्शन में कहा. "हननयाह!" "क्या आज्ञा है, प्रभु?" उन्होंने उत्तर दिया. 11 प्रभु
ने उनसे कहा, "सीधा नामक गली पर जाकर यहूदाह के घर में तारस्यॉसवासी
शाऊल के विषय में पूछो, जो प्रार्थना कर रहा है. 12 उसने दर्शन में देखा है कि
हननयाह नामक एक व्यक्ति आकर उस पर हाथ रखे कि वह दोबारा देखने
लगें." 13 हननयाह ने संदेह व्यक्त किया, "किंतु प्रभु! मैंने इस व्यक्ति के विषय
में अनेकों से सुन रखा है कि उसने येरूशलेम में आपके पवित्र लोगों का कितना
बुरा किया है 14 और यहां भी वह प्रधान पुरोहितों से यह अधिकार पत्र लेकर
आया है कि उन सभी को बंदी बनाकर ले जाए, जो आपके शिष्य हैं." 15 किंतु
प्रभु ने हननयाह से कहा, "तुम जाओ! वह मेरा चुना हुआ हथियार है, जो गैर-
यहूदियों, उनके राजाओं तथा इस्राएलियों के सामने मेरे नाम का प्रचार करेगा.
16 मैं उसे यह अहसास दिलाऊंगा कि उसे मेरे लिए कितना कष्ट उठाना होगा."
17 हननयाह ने उस घर में जाकर शाऊल पर अपने हाथ रखे और कहा, "भाई
शाऊल, प्रभु येशु मसीह ने, जिन्होंने तुम्हें यहां आते हुए मार्ग में दर्शन दिया, मुझे
तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हें दोबारा आंखों की रोशनी मिल जाए और तुम पवित्र
आत्मा से भर जाओ." 18 तुरंत ही उसकी आंखों पर से पपड़ी जैसी गिरी और
वह दोबारा देखने लगा, वह उठा और उसे बपतिस्मा दिया गया. 19 भोजन के
बाद उसके शरीर में बल लौट आया. वह कुछ दिन दमिश्क नगर के शिष्यों के
साथ ही रहा. 20 शाऊल ने बिना देर किए यहूदी सभागृहों में यह शिक्षा देनी शुरू

कर दी, "मसीह येशु ही परमेश्वर का पुत्र हैं." 21 उनके सुननेवाले चकित हो यह विचार करते थे, "क्या यह वही नहीं जिसने येरूशलेम में उनका बुरा किया, जो मसीह येशु के विश्वासी थे और वह यहां भी इसी उद्देश्य से आया था कि उन्हें बंदी बनाकर प्रधान पुरोहितों के सामने प्रस्तुत करे?" 22 किंतु शाऊल सामर्थ्यी होते चले गए और दमिश्क के यहूदियों के सामने यह प्रमाणित करते हुए कि येशु ही मसीह हैं, उन्हें निस्तर करते रहे. 23 कुछ समय बीतने के बाद यहूदियों ने उनकी हत्या की योजना की 24 किंतु शाऊल को उनकी इस योजना के बारे में मालूम हो गया. शाऊल की हत्या के उद्देश्य से उन्होंने नगर द्वार पर रात-दिन चौकसी कड़ी कर दी 25 किंतु रात में उनके शिष्यों ने उन्हें टोकरे में बैठाकर नगर की शहरपनाह से नीचे उतार दिया. 26 येरूशलेम पहुंचकर शाऊल ने मसीह येशु के शिष्यों में शामिल होने का प्रयास किया किंतु वे सब उनसे भयभीत थे क्योंकि वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि शाऊल भी अब वास्तव में मसीह येशु के शिष्य हो गए हैं 27 परंतु बारनबास उन्हें प्रेरितों के पास ले गए और उन्हें स्पष्ट बताया कि मार्ग में किस प्रकार शाऊल को प्रभु का दर्शन प्राप्त हुआ और प्रभु ने उनसे बातचीत की तथा कैसे उन्होंने दमिश्क नगर में मसीह येशु के नाम का प्रचार निडरता से किया है. 28 इसलिये शाऊल येरूशलेम में प्रेरितों के साथ स्वतंत्रता पूर्वक आते जाते रहने लगे तथा मसीह येशु के नाम का प्रचार निडरता से करने लगे. 29 वह यूनानी भाषा के यहूदियों से बातचीत और वाद-विवाद करते थे जबकि वे भी उनकी हत्या की कोशिश कर रहे थे. 30 जब अन्य शिष्यों को इसके विषय में मालूम हुआ, वे उन्हें कयसरिया नगर ले गए जहां से उन्होंने उन्हें तारस्यॉस नगर भेज दिया. 31 सारे यहूदिया प्रदेश, गलील प्रदेश और शमरिया प्रदेश में प्रभु में श्रद्धा के कारण कलीसिया में शांति का विकास विस्तार हो रहा था. पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन के कारण उनकी संख्या बढ़ती जा रही थी. 32 पेतरॉस इन सभी क्षेत्रों में यात्रा करते हुए लुद्दा नामक स्थान के संतों के बीच पहुंचे. 33 वहां उनकी भेंट ऐनियास नाम के व्यक्ति से हुई, जो आठ वर्ष से लकवे से पीड़ित था. 34 पेतरॉस ने उससे कहा, "ऐनियास, मसीह येशु के नाम में चंगे हो जाओ, उठो और अपना बिछौना संभालो." वह तुरंत उठ खड़ा हुआ. 35 उसे चंगा हुआ देखकर सभी लुद्दा नगर तथा शारोन नगरवासियों ने प्रभु में विश्वास किया. 36 योप्पा नगर में तबीथा नामक एक शिष्या थी. तबीथा नाम का यूनानी अनुवाद है दोरकस. वह बहुत ही भली, कृपालु तथा परोपकारी स्त्री थी और उदारतापूर्वक दान दिया करती थी. 37 किसी रोग से उसकी मृत्यु हो गई. स्नान के बाद उसे ऊपरी कमरे में लिटा दिया गया था. 38 लुद्दा नगर योप्पा नगर के पास है. शिष्यों ने पेतरॉस के विषय में सुन रखा था, इसलिये लोगों ने दो व्यक्तियों को इस विनती के साथ पेतरॉस के पास भेजा, "कृपया बिना देर किए यहां आने का कष्ट करें." 39 पेतरॉस उठकर उनके साथ चल दिए. उन्हें उस ऊपरी कक्ष में ले जाया गया. वहां सभी विधवाएं उन्हें घेरकर रोने लगी. उन्होंने पेतरॉस को वे सब वस्त्र दिखाए, जो दोरकस ने अपने जीवनकाल में बनाए थे. 40 मगर पेतरॉस ने उन सभी को कक्ष से बाहर भेज दिया. तब उन्होंने घुटने टेककर प्रार्थना की और फिर शव की ओर मुंह करके आज्ञा दी, "तबीथा! उठो!" उस स्त्री ने अपनी आंखें खोल दीं और पेतरॉस को देख वह उठ बैठी. 41 पेतरॉस ने हाथ बढ़ाकर उसे उठाया और शिष्यों और विधवाओं को वहां बुलाकर जीवित दोरकस उनके सामने प्रस्तुत कर दी. 42 सारे योप्पा में यह घटना सबको मालूम हो गई. अनेकों ने प्रभु में विश्वास किया. 43 पेतरॉस वहां अनेक दिन शिमओन नामक व्यक्ति के यहां ठहरे रहे, जो व्यवसाय से चमड़े का काम करता था.

10 कयसरिया नगर में कॉरनेलियॉस नामक एक व्यक्ति थे, जो इतालियन नामक सैन्य दल के शताधिपति थे. 2 वह परमेश्वर पर विश्वास रखनेवाले व्यक्ति थे. वह और उनका परिवार, सभी श्रद्धालु थे. वह यहूदियों को उदार मन से दान देते तथा परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना करते थे. 3 दिन के लगभग नवें घंटे में उन्होंने एक दर्शन में स्पष्ट देखा कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उनके पास आकर उनसे कहा, "कॉरनेलियॉस!" 4 भयभीत कॉरनेलियॉस ने स्वर्गदूत की ओर एकटक देखते हुए प्रश्न किया, "क्या आज्ञा है, प्रभु?" स्वर्गदूत ने स्पष्ट किया, "परमेश्वर द्वारा तुम्हारी प्रार्थनाएं तथा तुम्हारे दान याद किए गए हैं. 5 इसलिये अपने सेवक योप्पा नगर भेजकर शिमओन नामक व्यक्ति को बुलवा लो. वह पेतरॉस भी कहलाते हैं. 6 इस समय वह शिमओन नामक चर्मशोधक के यहां अतिथि हैं, जिसका घर समुद्र के किनारे पर है." 7 स्वर्गदूत के जाते ही कॉरनेलियॉस ने अपने दो सेवकों तथा उनकी निरंतर सेवा के लिए ठहराए हुए एक भक्त सैनिक को बुलवाया 8 तथा उन्हें सारी स्थिति के बारे में बताते हुए योप्पा नगर भेज दिया. 9 ये लोग दूसरे दिन छठे घंटे के लगभग योप्पा नगर के पास पहुंचे. उसी समय पेतरॉस घर की खुली छत पर प्रार्थना करने गए थे. 10 वहां उन्हें भूख लगी और कुछ खाने की इच्छा बहुत बढ़ गई. जब भोजन तैयार किया ही जा रहा था, पेतरॉस ध्यानमग्न हो गए. 11 उन्होंने स्वर्ग को खुला देखा जहां से एक विशाल चादर जैसी वस्तु चारों कोनों से नीचे उतारी जा रही थी. 12 इसमें पृथ्वी के सभी प्रकार के चौपाए, रेंगते हुए जंतु तथा पक्षी थे. 13 तब उन्हें एक शब्द सुनाई दिया, "उठो, पेतरॉस! मारो और खाओ!" 14 पेतरॉस ने उत्तर दिया, "कतई नहीं प्रभु! क्योंकि मैंने कभी भी कोई अपवित्र तथा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है." 15 उन्हें दूसरी बार शब्द सुनाई दिया, "जिन वस्तुओं को स्वयं परमेश्वर ने शुद्ध कर दिया है उन्हें अशुद्ध मत समझो." 16 तीन बार दोहराने के बाद तुरंत ही वह वस्तु स्वर्ग में उठा ली गई. 17 पेतरॉस अभी इसी दुविधा में थे कि इस दर्शन का अर्थ क्या हो सकता है, कॉरनेलियॉस द्वारा भेजे गए व्यक्ति पूछताछ करते हुए शिमओन के द्वार पर आ पहुंचे. 18 उन्होंने पुकारकर पूछा, "क्या शिमओन, जिनका नाम पेतरॉस भी है, यहीं ठहरे हुए हैं?" 19 पेतरॉस अभी भी उसी दर्शन पर विचार कर रहे थे कि पवित्र आत्मा ने उनसे कहा, "सुनो! तीन व्यक्ति तुम्हें खोजते हुए यहां आए हैं. 20 निस्संकोच उनके साथ चले जाओ क्योंकि स्वयं मैंने उन्हें तुम्हारे पास भेजा है." 21 पेतरॉस नीचे गए और उनसे कहा, "तुम जिसे खोज रहे हो, वह मैं हूं. क्या कारण है तुम्हारे यहां आने का?" 22 उन्होंने उत्तर दिया, "हमें शताधिपति कॉरनेलियॉस ने आपके पास भेजा है. वह सच्चाई पर चलनेवाले, श्रद्धालु तथा सभी यहूदी समाज में सम्मानित हैं. उन्हें एक पवित्र स्वर्गदूत की ओर से यह निर्देश मिला है कि वह आपको आमंत्रित कर सहपरिवार आपसे वचन सुनें." 23 पेतरॉस ने उन्हें अपने अतिथि होने का आमंत्रण दिया. अगले दिन पेतरॉस उनके साथ चल दिए. योप्पा नगर के कुछ विश्वासी भाई भी उनके साथ हो लिए. 24 दूसरे दिन वे कयसरिया नगर पहुंचे. कॉरनेलियॉस उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे. उन्होंने अपने संबंधियों और घनिष्ठ मित्रों को आमंत्रित किया हुआ था. 25 जैसे ही पेतरॉस ने उनके निवास में प्रवेश किया, कॉरनेलियॉस ने उनके चरणों में गिरकर उनकी स्तुति की, 26 किंतु पेतरॉस ने उन्हें उठाते हुए कहा, "उठिए! मैं भी मात्र मनुष्य हूं." 27 उनसे बातचीत करते हुए पेतरॉस ने भीतर प्रवेश किया, जहां उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को इकट्ठा पाया. 28 उन्हें संबोधित करते हुए पेतरॉस ने कहा, "आप सब यह तो समझते ही हैं कि एक यहूदी के लिए किसी गैर-यहूदी के साथ संबंध रखना या उसके घर मिलने जाना यहूदी नियमों के विरुद्ध है किंतु स्वयं परमेश्वर ने मुझ पर यह प्रकट किया है कि मैं किसी भी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न मानूं. 29 यही कारण है कि जब आपने मुझे आमंत्रित किया मैं यहां बिना किसी आपत्ति के चला आया. इसलिये अब मैं जानना चाहता हूं कि आपने मुझे यहां आमंत्रित क्यों किया है?" 30 कॉरनेलियॉस ने उन्हें उत्तर दिया, "चार दिन पूर्व नवें घंटे मैं अपने घर में प्रार्थना कर रहा था कि मैंने देखा कि मेरे सामने उजले कपड़ों में एक व्यक्ति खड़ा हुआ है. 31 उसने मुझे संबोधित करके कहा,

‘कॉरनेलियॉस, तुम्हारी प्रार्थना सुन ली गई है और तुम्हारे द्वारा दिए गए दान
परमेश्वर ने याद किए हैं. 32 इसलिये अब किसी को योप्पा नगर भेजकर समुद्र
के किनारे पर शिमओन चमड़ेवाले के यहां अतिथि होकर ठहरे शिमओन को,
जिन्हें पेतरॉस नाम से जाना जाता है, बुलवा लो.’ 33 मैंने तुरंत आपको बुलवाने
के लिए अपने सेवक भेजे और आपने यहां आने की कृपा की है. हम सब यहां
इसलिये उपस्थित हैं कि आपसे वह सब सुनें जिसे सुनाने की आज्ञा आपको प्रभु
की ओर से प्राप्त हुई है.” 34 पेतरॉस ने उनसे कहा: “अब मैं यह अच्छी तरह
से समझ गया हूं कि परमेश्वर किसी के भी पक्षधर नहीं हैं. 35 हर एक जनता में
उस व्यक्ति को परमेश्वर अंगीकार करता है, जो परमेश्वर में श्रद्धा रखता तथा
वही करता है जो सही है. 36 इस्राएल राष्ट्र के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गए संदेश
के विषय में तो आपको मालूम ही है. परमेश्वर ने मसीह येशु के द्वारा—जो सबके
प्रभु हैं—हमें इस्राएलियों में शांति के ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करने भेजा.
37 आप सबको मालूम ही है कि गलील प्रदेश में योहन द्वारा बपतिस्मा की
घोषणा से शुरू होकर सारे यहूदिया प्रदेश में क्या-क्या हुआ है, 38 कैसे परमेश्वर
ने पवित्र आत्मा तथा सामर्थ्य से नाज़रेथवासी मसीह येशु का अभिषेक किया,
कैसे वह भलाई करते रहे और उन्हें स्वस्थ करते रहे, जो शैतान द्वारा सताए हुए
थे क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे. 39 “चाहे यहूदिया प्रदेश में या येरूशलेम में
जो कुछ वह करते रहे हम उसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं. उन्हीं को उन्होंने काठ पर
लटकाकर मार डाला. 40 उन्हीं मसीह येशु को परमेश्वर ने तीसरे दिन मरे हुओं
में से दोबारा जीवित कर दिया और उन्हें प्रकट भी किया. 41 सब पर नहीं परंतु
सिर्फ उन साक्ष्यों पर, जो इसके लिए परमेश्वर द्वारा ही पहले से तय थे अर्थात्
हम, जिन्होंने उनके मरे हुओं में से जीवित होने के बाद उनके साथ भोजन और
संगति की. 42 उन्होंने हमें आज्ञा दी कि हम हर जगह प्रचार करें और इस बात
की सच्चाई से गवाही दें कि यही हैं वह, जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने जीवितों और
मरे हुओं का न्यायी ठहराया है. 43 उनके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं की यह
गवाही है कि उन्हीं के नाम के द्वारा हर एक व्यक्ति, जो उनमें विश्वास करता है,
पाप क्षमा प्राप्त करता है.” 44 जब पेतरॉस यह कह ही रहे थे, इस प्रवचन के
हर एक सुननेवाले पर पवित्र आत्मा उतर गए. 45 पेतरॉस के साथ यहां आए
मसीह के ख़तना किए हुए विश्वासी यह देखकर चकित रह गए कि गैर-यहूदियों
पर भी पवित्र आत्मा उतरे हैं 46 क्योंकि वे उन्हें अन्य भाषाओं में भाषण करते
और परमेश्वर का धन्यवाद करते सुन रहे थे. इस पर पेतरॉस ने प्रश्न किया, 47
“कौन इनके जल-बपतिस्मा पर आपत्ति उठा सकता है क्योंकि इन्होंने ठीक
हमारे ही समान पवित्र आत्मा प्राप्त किया है?” 48 तब पेतरॉस ने उन्हें आज्ञा दी
कि वे मसीह येशु के नाम में बपतिस्मा लें. पेतरॉस से उन्होंने कुछ दिन और
अपने साथ रहने की विनती की.

11 सारे यहूदिया प्रदेश में प्रेरितों और शिष्यों तक यह समाचार पहुंच गया
कि गैर-यहूदियों ने भी परमेश्वर के वचन-संदेश को ग्रहण कर लिया है.
2 परिणामस्वरूप येरूशलेम पहुंचने पर ख़तना किए हुए शिष्यों ने पेतरॉस को
आड़े हाथों लिया, 3 “आप वहां खतना-रहितों के अतिथि होकर रहे तथा
आपने उनके साथ भोजन भी किया!” 4 इसलिये पेतरॉस ने उन्हें क्रमानुसार
समझाना शुरू किया, 5 “जब मैं योप्पा नगर में प्रार्थना कर रहा था, अवचेतन
अवस्था में मैंने दर्शन में एक चादर जैसी वस्तु को चारों कोनों से लटके हुए
स्वर्ग से नीचे उतरते देखा. वह वस्तु मेरे एकदम पास आ गई. 6 उसे ध्यान से
देखने पर मैंने पाया कि उसमें पृथ्वी पर के सभी चौपाये, जंगली पशु, रेंगते जंतु
तथा आकाश के पक्षी थे. 7 उसी समय मुझे यह शब्द सुनाई दिया, ‘उठो,
पेतरॉस, मारो और खाओ.’ 8 “मैंने उत्तर दिया, ‘बिलकुल नहीं प्रभु! क्योंकि
मैंने कभी भी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मुंह में नहीं डाली.’ 9 “स्वर्ग से
दोबारा यह शब्द सुनाई दिया, ‘जिसे परमेश्वर ने शुद्ध घोषित कर दिया है तुम उसे
अशुद्ध मत समझो.’ 10 तीन बार दोहराने के बाद वह सब स्वर्ग में उठा लिया
गया. 11 “ठीक उसी समय तीन व्यक्ति उस घर के सामने आ खड़े हुए, जहां मैं
ठहरा हुआ था. वे कयसरिया नगर से मेरे लिए भेजे गए थे. 12 पवित्र आत्मा ने
मुझे आज्ञा दी कि मैं बिना किसी आपत्ति के उनके साथ चला जाऊं. मेरे साथ ये
छः शिष्य भी वहां गए थे, और हम उस व्यक्ति के घर में गए. 13 उसने हमें
बताया कि किस प्रकार उसने अपने घर में उस स्वर्गदूत को देखा, जिसने उसे
आज्ञा दी थी कि योप्पा नगर से शिमओन अर्थात् पेतरॉस को आमंत्रित किया
जाए, 14 जो उन्हें वह संदेश देंगे जिसके द्वारा उसका तथा उसके सारे परिवार
को उद्धार प्राप्त होगा. 15 “जब मैंने प्रवचन शुरू किया उन पर भी पवित्र आत्मा
उतरे—ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार वह शुरुआत में हम पर उतरे थे. 16 तब
मुझे प्रभु के ये शब्द याद आए, ‘निःसंदेह योहन जल में बपतिस्मा देता रहा
किंतु तुम्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया जाएगा.’ 17 इसलिये जब प्रभु येशु
मसीह में विश्वास करने पर परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया है, जो हमें दिया
था, तब मैं कौन था, जो परमेश्वर के काम में रुकावट उत्पन्न करता?” 18
यह सुनने के बाद इसके उत्तर में वे कुछ भी न कह पाए परंतु इन शब्दों में
परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे, “इसका मतलब तो यह हुआ कि जीवन पाने
के लिए परमेश्वर ने गैर-यहूदियों को भी पश्चाताप की ओर उभारा है.” 19 वे
शिष्य, जो स्तेफ़ानॉस के सताहट के फलस्वरूप शुरुआत में तितर-बितर हो गए
थे, फ़ॉयनिके, सैप्रस तथा अंतियोख़ नगरों में जा पहुंचे थे. ये यहूदियों के
अतिरिक्त अन्य किसी को भी संदेश नहीं सुनाते थे 20 किंतु कुछ सैप्रसवासी
तथा कुरेनावासी अंतियोख़ नगरों में आकर यूनानियों को भी मसीह येशु के
विषय में सुसमाचार देने लगे. 21 उन पर प्रभु की कृपादृष्टि थी. बड़ी संख्या में
लोगों ने विश्वास कर प्रभु को ग्रहण किया. 22 यह समाचार येरूशलेम की
कलीसिया में भी पहुंचा. इसलिये उन्होंने बारनबास को अंतियोख़ नगर भेजा.
23 वहां पहुंचकर जब बारनबास ने परमेश्वर के अनुग्रह के प्रमाण देखे तो वह
बहुत आनंदित हुए और उन्होंने उन्हें पूरी लगन के साथ प्रभु में स्थिर बने रहने
के लिए प्रोत्साहित किया. 24 बारनबास एक भले, पवित्र आत्मा से भरे हुए और
विश्वास में परिपूर्ण व्यक्ति थे, और बहुत बड़ी संख्या में लोग प्रभु के पास लाए
गए. 25 इसलिये बारनबास को तारस्यॉस नगर जाकर शाऊल को खोजना सही
लगा. 26 शाऊल के मिल जाने पर वह उन्हें लेकर अंतियोख़ नगर आ गए. वहां
कलीसिया में एक वर्ष तक रहकर दोनों ने अनेक लोगों को शिक्षा दी. अंतियोख़
नगर में ही सबसे पहले मसीह येशु के शिष्य मसीही कहलाए. 27 इन्हीं दिनों में
कुछ भविष्यवक्ता येरूशलेम से अंतियोख़ आए. 28 उन्हीं में से हागाबुस नामक
एक भविष्यवक्ता ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह संकेत दिया कि सारी पृथ्वी
पर अकाल पड़ने पर है—यह कयसर क्लॉदियॉस के शासनकाल की घटना है.
29 इसलिये शिष्यों ने यहूदिया प्रदेश के मसीह के विश्वासी भाई बहिनों के लिए
अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता देने का निश्चय किया. 30 अपने इस निश्चय
के अनुसार उन्होंने दानराशि बारनबास और शाऊल के द्वारा पुरनियों को भेज
दी.

12 उसी समय राजा हेरोदेस ने कलीसिया के कुछ लोगों को सताने के उद्देश्य
से बंदी बना लिया 2 और तलवार से योहन के भाई याकोब की हत्या
करवा दी. 3 जब उसने यह देखा कि उसके ऐसा करने से यहूदी प्रसन्न होते हैं,
उसने पेतरॉस को भी बंदी बनाने का निश्चय किया. यह अखमीरी रोटी के पर्व
का अवसर था. 4 पेतरॉस को बंदी बनाकर उसने उन पर चार-चार सैनिकों के
चार दलों का पहरा लगा दिया कि फ़सह पर्व समाप्त हो जाने पर वह उन पर
मुकद्दमा चलाए. 5 पेतरॉस को कारागार में रखा गया किंतु कलीसिया उनके
लिए एक मन से प्रार्थना कर रही थी. 6 उन पर मुकद्दमा चलाए जाने से एक रात
पहले पेतरॉस दो सैनिकों के मध्य बेड़ियों से बंधे सोए हुए थे. और द्वार के

सामने भी चौकीदार पहरा दे रहे थे. 7 प्रभु का एक दूत एकाएक वहां प्रकट हुआ
और वह कमरा ज्योति से भर गया. स्वर्गदूत ने पेतरॉस को थपथपा कर जगाया
और कहा, "जल्दी उठिए!" तत्काल ही पेतरॉस की हथकड़ियां गिर पड़ीं. 8
स्वर्गदूत ने पेतरॉस से कहा, "वस्त्र और जूतियां पहन लीजिए" पेतरॉस ने ऐसा ही
किया. तब स्वर्गदूत ने उन्हें आज्ञा दी, "अब ऊपरी कपड़ा ओढ़ कर मेरे पीछे-
पीछे आ जाइए." 9 पेतरॉस उसके पीछे कारागार से बाहर आ गए किंतु वह यह
समझ नहीं पा रहे थे कि जो कुछ स्वर्गदूत द्वारा किया जा रहा था, वह सच्चाई
थी या सिर्फ़ सपना. 10 जब वे पहले और दूसरे पहरे को पार करके उस लोहे के
दरवाज़े पर पहुंचे, जो नगर में खुलता है, वह द्वार अपने आप खुल गया और
वे बाहर निकल गए. जब वे गली पार कर चुके तो अचानक स्वर्गदूत उन्हें
छोड़कर चला गया. 11 तब पेतरॉस की सुध-बुध लौटी और वह कह उठे,
"अब मुझे सच्चाई का अहसास हो रहा है कि प्रभु ने ही अपने स्वर्गदूत को
भेजकर मुझे हेरोदेस से और यहूदी लोगों की सारी उम्मीदों से छुड़ा लिया है."
12 यह जानकर वह योहन अर्थात् मार्कास की माता मरियम के घर पहुंचे, जहां
अनेक शिष्य इकट्ठा होकर प्रार्थना कर रहे थे. 13 उनके खटखटाने पर रोदा
नामक दासी द्वार पर आई. 14 पेतरॉस का शब्द पहचानकर, आनंद में द्वार खोले
बिना ही उसने अंदर जाकर बताया कि पेतरॉस बाहर द्वार पर खड़े हैं. 15 वे
उससे कहने लगे, "तेरी तो मति मारी गई है!" किंतु जब वह अपनी बात पर
अटल रही तो वे कहने लगे, "वह पेतरॉस का स्वर्गदूत होगा." 16 उधर पेतरॉस
द्वार खटखटाते रहे. आखिरकार जब उन्होंने द्वार खोला, वे पेतरॉस को देखकर
हक्का-बक्का रह गए. 17 पेतरॉस ने हाथ से शांत रहने का संकेत देते हुए उन्हें
बताया कि प्रभु ने किस प्रकार उन्हें कारागार से बाहर निकाला. पेतरॉस ने उनसे
कहा कि वे याकोब और अन्य भाई बहिनों को इस विषय में बता दें. तब वह
स्वयं दूसरी जगह चले गए. 18 अगले दिन सुबह सैनिकों में बड़ी खलबली मच
गई कि पेतरॉस का क्या हुआ? 19 हेरोदेस ने उनकी बहुत खोज करवाई और
उन्हें कहीं भी न पाकर उसने पहरेदारों की जांच की और उन सबके लिए मृत्यु
दंड का आदेश दे दिया. फिर हेरोदेस कुछ समय के लिए यहूदिया प्रदेश से
कयसरिया नगर चला गया और वहां रहा. 20 हेरोदेस सोर और सीदोनवासियों
से बहुत नाराज़ था. ये लोग राजा के घर की देखभाल करनेवाले ब्लास्तॉस की
सहानुभूति प्राप्त कर एक मत होकर मेल-मिलाप का प्रस्ताव लेकर राजा के पास
आए थे क्योंकि अनाज की पूर्ति के लिए वे राजा के क्षेत्र पर ही निर्भर थे. 21
हेरोदेस ने नियत दिन अपने राजसी वस्त्र धारण कर सिंहासन पर विराजमान हो
प्रजा को संबोधित करना प्रारंभ किया. 22 भीड़ चिल्लाती रही, "यह मानव का
नहीं, देवता का शब्द है." 23 उसी क्षण प्रभु के एक दूत ने हेरोदेस पर वार किया
क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा नहीं दी थी. उसके शरीर में कीड़े पड़ गए
और उसकी मृत्यु हो गई. 24 प्रभु का वचन बढ़ता और फैलता चला गया. 25
बारनबास और शाऊल येरूशलेम में अपनी सेवा समाप्त कर वहां से लौट गए.
उन्होंने योहन को, जो मार्कास नाम से भी प्रसिद्ध हैं, अपने साथ ले लिया था.

13 अंतियोख़ नगर की कलीसिया में अनेक भविष्यवक्ता और शिक्षक थे:
बारनबास, शिमओन, जिनका उपनाम निगेर भी था, कुरेनी लुकियॉस,
मनायेन, (जिसका पालन पोषण राज्य के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस के साथ
हुआ था) तथा शाऊल. 2 जब ये लोग प्रभु की आराधना और उपवास कर रहे
थे, पवित्र आत्मा ने उनसे कहा, "बारनबास तथा शाऊल को उस सेवा के लिए
समर्पित करो, जिसके लिए मैंने उनको बुलाया है." 3 इसलिये जब वे उपवास
और प्रार्थना कर चुके, उन्होंने बारनबास तथा शाऊल पर हाथ रखे और उन्हें इस
सेवा के लिए भेज दिया. 4 पवित्र आत्मा द्वारा भेजे गए वे सेल्युकिया नगर
गए तथा वहां से जलमार्ग से सैप्रस गए. 5 वहां से सालामिस नगर पहुंचकर
उन्होंने यहूदियों के सभागृह में परमेश्वर के संदेश का प्रचार किया. सहायक के
रूप में योहन भी उनके साथ थे. 6 जब वे सारे द्वीप को घूमकर पाफ़ॉस नगर
पहुंचे, जहां उनकी भेंट बार-येशु नामक एक यहूदी व्यक्ति से हुई, जो जादूगर
तथा झूठा भविष्यवक्ता था. 7 वह राज्यपाल सेरगियॉस पौलॉस का सहयोगी
था. सेरगियॉस पौलॉस बुद्धिमान व्यक्ति था. उसने बारनबास तथा शाऊल को
बुलवाकर उनसे परमेश्वर के वचन को सुनने की अभिलाषा व्यक्त की 8 किंतु
जादूगर एलिमॉस—जिसके नाम का ही अर्थ है जादूगर—उनका विरोध करता
रहा. उसका प्रयास था राज्यपाल को परमेश्वर के वचन में विश्वास करने से
रोकना, 9 किंतु शाऊल ने, जिन्हें पौलॉस नाम से भी जाना जाता है, पवित्र
आत्मा से भरकर उसे एकटक देखते हुए कहा, 10 "हे, सारे छल और कपट से
ओत-प्रोत शैतान के कपूत! सारे धर्म के बैरी! क्या तू प्रभु की सच्चाई को भ्रष्ट
करने के प्रयासों को नहीं छोड़ेगा? 11 देख ले, तुझ पर प्रभु का प्रहार हुआ है.
तू अंधा हो जाएगा और कुछ समय के लिए सूर्य की रोशनी न देख सकेगा."
उसी क्षण उस पर धुंधलापन और अंधकार छा गया. वह यहां वहां टटोलने लगा
कि कोई हाथ पकड़कर उसकी सहायता करे. 12 इस घटना को देख राज्यपाल
ने प्रभु में विश्वास किया, क्योंकि प्रभु की शिक्षाओं ने उसे चकित कर दिया था.
13 पौलॉस और उनके साथियों ने पाफ़ॉस नगर से समुद्री यात्रा शुरू की और वे
पम्फ़ूलिया प्रदेश के पेरगे नगर में जा पहुंचे. योहन उन्हें वहीं छोड़कर येरूशलेम
लौट गए. 14 तब वे पेरगे से होते हुए पिसिदिया प्रदेश के अंतियोख़ नगर पहुंचे
और शब्बाथ पर यहूदी सभागृह में जाकर बैठ गए. 15 जब व्यवस्था तथा
भविष्यद्वक्ताओं के ग्रंथों का पढ़ना समाप्त हो चुका, सभागृह के अधिकारियों ने
उनसे कहा, "प्रियजन, यदि आप में से किसी के पास लोगों के प्रोत्साहन के
लिए कोई वचन है तो कृपा कर वह उसे यहां प्रस्तुत करे." 16 इस पर पौलॉस
ने हाथ से संकेत करते हुए खड़े होकर कहा. "इस्राएली वासियों तथा परमेश्वर
के श्रद्धालुओ, सुनो! 17 इस्राएल के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना तथा मिस्र
देश में उनके घर की अवधि में उन्हें एक फलवंत राष्ट्र बनाया और प्रभु ही अपने
बाहुबल से उन्हें उस देश से बाहर निकाल लाए; 18 इसके बाद बंजर भूमि में वह
लगभग चालीस वर्ष तक उनके प्रति सहनशील बने रहे 19 और उन्होंने कनान
देश की सात जातियों को नाश कर उनकी भूमि अपने लोगों को मीरास में दे दी.
20 इस सारी प्रक्रिया में लगभग चार सौ पचास वर्ष लगे. "इसके बाद परमेश्वर
उनके लिए भविष्यवक्ता शमुएल के आने तक न्यायाधीश ठहराते रहे. 21 फिर
इस्राएल ने अपने लिए राजा की विनती की. इसलिये परमेश्वर ने उन्हें बिन्यामिन
के वंश से कीश का पुत्र शाऊल दे दिया, जो चालीस वर्ष तक उनका राजा रहा.
22 परमेश्वर ने शाऊल को पद से हटाकर उसके स्थान पर दावीद को राजा
बनाया जिनके विषय में उन्होंने स्वयं कहा था कि यिशै का पुत्र दावीद मेरे मन
के अनुसार व्यक्ति है. वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा. 23 "उन्हीं के वंश से,
अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, परमेश्वर ने इस्राएल के लिए एक उद्धारकर्ता मसीह
येशु की उत्पत्ति की. 24 मसीह येशु के आने के पहले योहन ने सारी इस्राएली
प्रजा में पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार किया. 25 अपनी तय की हुई सेवा का
कार्य पूरा करते हुए योहन घोषणा करते रहे, 'क्या है मेरे विषय में आपका
विश्वास? मैं वह नहीं हूं. यह समझ लीजिए: मेरे बाद एक आ रहे हैं. मैं जिनकी
जूती का बंध खोलने योग्य तक नहीं हूं.' 26 "अब्राहाम की संतान, मेरे प्रियजन
तथा आपके बीच, जो परमेश्वर के श्रद्धालु हैं, सुनें कि यही उद्धार का संदेश हमारे
लिए भेजा गया है. 27 येरूशलेम वासियों तथा उनके शासकों ने न तो मसीह
येशु को पहचाना और न ही भविष्यद्वक्ताओं की आवाज को, जिनका पढ़ना
हर एक शब्बाथ पर किया जाता है और जिनकी पूर्ति उन्होंने मसीह को दंड
देकर की, 28 हालांकि उन्हें मार डालने का उनके सामने कोई भी आधार नहीं
था—उन्होंने पिलातॉस से उनके मृत्यु दंड की मांग की. 29 जब उनके विषय में
की गई सारी भविष्यवाणियों को वे लोग पूरा कर चुके, उन्हें क्रूस से उतारकर

कब्र की गुफ़ा में रख दिया गया 30 किंतु परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जीवित
कर दिया. 31 अनेक दिन तक वह स्वयं को उनके सामने साक्षात प्रकट करते
रहे, जो उनके साथ गलील प्रदेश से येरूशलेम आए हुए थे और जो आज तक
इन लोगों के सामने उनके गवाह हैं. 32 “हम आपके सामने हमारे पूर्वजों से की
गई प्रतिज्ञा का ईश्वरीय सुसमाचार ला रहे हैं 33 कि परमेश्वर ने हमारी संतान के
लिए मसीह येशु को मरे हुओं में से जीवित कर अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा कर
दिया है—जैसा कि भजन संहिता दो में लिखा है: “‘तुम मेरे पुत्र हो; आज मैं
तुम्हारा पिता बन गया हूं.’ 34 परमेश्वर ने उन्हें कभी न सड़ने के लिए मरे हुओं
में से जीवित किया. यह सच्चाई इन शब्दों में बयान की गई है, “‘मैं तुम्हें
दावीद की पवित्र तथा अटल आशीषें प्रदान करूंगा.’ 35 एक अन्य भजन में
कहा गया है: “‘आप अपने पवित्र जन को सड़ने न देंगे.’ 36 “दावीद अपने
जीवनकाल में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करके हमेशा के लिए सो गए और
अपने पूर्वजों में मिल गए और उनका शरीर सड़ भी गया. 37 किंतु वह, जिन्हें
परमेश्वर ने मरे हुओं में से जीवित किया, सड़ने नहीं पाया. 38 “इसलिये
प्रियजन, सही यह है कि आप यह समझ लें कि आपके लिए इन्हीं के द्वारा पाप
क्षमा की घोषणा की जाती है. इन पापों से मुक्त करके धर्मी घोषित करने में
मोशेह की व्यवस्था हमेशा असफल रही है. हर एक, जो विश्वास करता है, वह
सभी पापों से मुक्त किया जाता है. 40 इसलिये इस विषय में सावधान रहो कि
कहीं भविष्यद्वक्ताओं का यह कथन तुम पर लागू न हो जाए: 41 “‘अरे ओ
निंदा करनेवालो! देखो, चकित हो और मर मिटो! क्योंकि मैं तुम्हारे सामने कुछ
ऐसा करने पर हूं जिस पर तुम कभी विश्वास न करोगे, हां, किसी के द्वारा
स्पष्ट करने पर भी नहीं.’” 42 जब पौलॉस और बारनबास यहूदी सभागृह से
बाहर निकल रहे थे, लोगों ने उनसे विनती की कि वे आनेवाले शब्बाथ पर भी
इसी विषय पर आगे प्रवचन दें. 43 जब सभा समाप्त हुई अनेक यहूदी और
यहूदी मत में से आए हुए नए विश्वासी पौलॉस तथा बारनबास के साथ हो लिए.
पौलॉस तथा बारनबास ने उनसे परमेश्वर के अनुग्रह में स्थिर रहने की विनती
की. 44 अगले शब्बाथ पर लगभग सारा नगर परमेश्वर का वचन सुनने के लिए
उमड़ पड़ा. 45 उस बड़ी भीड़ को देख यहूदी जलन से भर गए तथा पौलॉस
द्वारा पेश किए गए विचारों का विरोध करते हुए उनकी घोर निंदा करने लगे. 46
किंतु पौलॉस तथा बारनबास ने निडरता से कहा: “यह ज़रूरी था कि परमेश्वर
का वचन सबसे पहले आपके सामने स्पष्ट किया जाता. अब, जबकि आप लोगों
ने इसे नकार दिया है और यह करते हुए स्वयं को अनंत जीवन के लिए अयोग्य
घोषित कर दिया है, हम अपना ध्यान अब गैर-यहूदियों की ओर केंद्रित करेंगे,
(aiōnios g166) 47 क्योंकि हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा है: “‘मैंने तुमको
गैर-यहूदियों के लिए एक ज्योति के रूप में चुना है, कि तुम्हारे द्वारा सारी पृथ्वी
पर उद्धार लाया जाए.’” 48 यह सुनकर गैर-यहूदी आनंद में प्रभु के वचन की
प्रशंसा करने लगे तथा अनंत जीवन के लिए पहले से ठहराए गए सुननेवालों ने
इस पर विश्वास किया. **(aiōnios g166)** 49 सारे क्षेत्र में प्रभु का वचन-संदेश
फैलता चला गया. 50 किंतु यहूदी अगुओं ने नगर की भली, श्रद्धालु स्त्रियों तथा
ऊंचे पद पर बैठे व्यक्तियों को भड़का दिया और पौलॉस और बारनबास के
विरुद्ध उपद्रव करवा कर उन्हें अपने क्षेत्र की सीमा से निकाल दिया. 51 पौलॉस
और बारनबास उनके प्रति विरोध प्रकट करते हुए अपने पैरों की धूलि झाड़ते
हुए इकोनियॉन नगर की ओर चले गए. 52 प्रभु के शिष्य आनंद और पवित्र
आत्मा से भरते चले गए.

14 इकोनियॉन नगर में पौलॉस और बारनबास यहूदी सभागृहों में गए. वहां
उनका प्रवचन इतना प्रभावशाली रहा कि बड़ी संख्या में यहूदियों और
यूनानियों ने विश्वास किया. 2 किंतु जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया था,
उन्होंने गैर-यहूदियों को भड़का दिया तथा उनके मनों में इनके विरुद्ध ज़हर भर
दिया. 3 वहां उन्होंने प्रभु पर आश्रित हो, निडरता से संदेश देते हुए काफ़ी समय
बिताया. प्रभु उनके द्वारा किए जा रहे अद्भुत चिह्नों के माध्यम से अपने अनुग्रह
के संदेश को साबित कर रहे थे. 4 वहां के नागरिकों में फूट पड़ गई थी. कुछ
यहूदियों के पक्ष में थे तो कुछ प्रेरितों के. 5 यह मालूम होने पर कि शासकों
के सहयोग से यहूदियों और गैर-यहूदियों द्वारा उन्हें अपमानित कर उनका
पथराव करने की योजना बनाई जा रही है, 6 वे लुकाओनिया, लुस्त्रा तथा दरबे
नगरों और उनके उपनगरों की ओर चले गए 7 और वहां ईश्वरीय सुसमाचार
का प्रचार करने लगे. 8 लुस्त्रा नगर में एक व्यक्ति था, जो जन्म से अपंग था
और कभी चल फिर ही न सका था. 9 वह पौलॉस का प्रवचन सुन रहा था.
पौलॉस उसको ध्यान से देख रहा था और यह पाकर कि उसमें स्वस्थ होने
का विश्वास है. 10 पौलॉस ने ऊंचे शब्द में उसे आज्ञा दी, “अपने पैरों पर
सीधे खड़े हो जाओ!” उसी क्षण वह व्यक्ति उछलकर खड़ा हो गया और
चलने लगा. 11 जब पौलॉस द्वारा किए गए इस काम को लोगों ने देखा वे
लुकाओनियाई भाषा में चिल्लाने लगे, “देवता हमारे मध्य मानव रूप में उतर
आए हैं.” 12 उन्होंने बारनबास को ज़्यूस नाम से संबोधित किया तथा पौलॉस
को हेर्मेस नाम से क्योंकि वह प्रधान प्रचारक थे. 13 नगर के बाहर ज़्यूस का
मंदिर था. ज़्यूस का पुरोहित बैल तथा पुष्पहार लिए हुए नगर फ़ाटक पर आ
गया क्योंकि वह भीड़ के साथ बलि चढ़ाना चाह रहा था. 14 यह मालूम
होने पर प्रेरित पौलॉस व बारनबास अपने कपड़े फाड़कर, यह चिल्लाते हुए
भीड़ की ओर लपके, 15 “प्रियजन, तुम यह सब क्यों कर रहे हो! हम भी
तुम्हारे समान मनुष्य हैं. हम तुम्हारे लिए यह ईश्वरीय सुसमाचार लाए हैं कि तुम
इन व्यर्थ की परंपराओं को त्याग कर जीवित परमेश्वर की ओर मन फिराओ,
जिन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और इनमें निवास कर रहे प्राणियों की सृष्टि की है.
16 हालांकि उन्होंने पिछले युगों में जनताओं को उनकी अपनी मान्यताओं के
अनुसार व्यवहार करने दिया. 17 तो भी उन्होंने स्वयं अपने विषय में गवाह स्पष्ट
रखा—वह भलाई करते हुए आकाश से वर्षा तथा ऋतुओं के अनुसार हमें उपज
प्रदान करते रहे. वह पर्याप्त भोजन और आनंद प्रदान करते हुए हमारे मनों को
तृप्त करते रहे हैं.” 18 उनके इतनी सफ़ाई देने के बाद भी भीड़ को उनके
लिए बलि भेंट चढ़ाने से बड़ी कठिनाई से रोका जा सका. 19 तब कुछ यहूदी
अंतियोख़ तथा इकोनियॉन नगरों से वहां आ पहुंचे. भीड़ को अपने पक्ष में
करके उन्होंने पौलॉस का पथराव किया तथा उन्हें मरा हुआ समझ घसीटकर
नगर के बाहर छोड़ आए. 20 किंतु जब शिष्य उनके आस-पास इकट्ठा हुए, वह
उठ खड़े हुए और नगर में लौट गए. अगले दिन वह बारनबास के साथ वहां से
दरबे नगर को चले गए. 21 उन्होंने उस नगर में ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार
किया और अनेक शिष्य बनाए. इसके बाद वे लुस्त्रा और इकोनियॉन नगर होते
हुए अंतियोख़ नगर लौट गए. 22 वे शिष्यों को दृढ़ करते और प्रोत्साहित करते
हुए यह शिक्षा देते रहे कि उनका परमेश्वर के राज्य में प्रवेश हेतु इस विश्वास
में स्थिर रहना तथा अनेक विपत्तियों को सहना ज़रूरी है. 23 पौलॉस और
बारनबास हर एक कलीसिया में उपवास और प्रार्थना के साथ प्राचीनों को चुना
करते तथा उन्हें उन्हीं प्रभु के हाथों में सौंप देते थे जिस प्रभु में उन्होंने विश्वास
किया था. 24 पिसिदिया क्षेत्र में से जाते हुए वे पम्फ़ूलिया नगर में आए. 25 वहां
से पेरगे नगर में वचन सुनाकर वे अट्टालिया नगर गए. 26 वहां से जलमार्ग वे
अंतियोख नगर पहुंचे, जहां से उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपकर उस काम के
लिए भेजा गया था, जिसे वे अब पूरा कर लौट आए थे. 27 वहां पहुंचकर
उन्होंने सारी कलीसिया को इकट्ठा किया और सबके सामने उन सभी कामों का
वर्णन किया, जो परमेश्वर द्वारा उनके माध्यम से पूरे किए गए थे और यह भी कि
किस प्रकार परमेश्वर ने गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया है.
28 वहां वे शिष्यों के बीच लंबे समय तक रहे.

15 कुछ व्यक्ति यहूदिया प्रदेश से अंतियोख़ नगर आकर प्रभु के शिष्यों को
यह शिक्षा देने लगे, “मोशेह की व्यवस्था के अनुसार यदि तुम्हारा ख़तना
न हो तो तुम्हारा उद्धार असंभव है.” 2 इस विषय में पौलॉस और बारनबास का
उनके साथ गहरा मतभेद हो गया और उनमें उग्र विवाद छिड़ गया. तब एक मत
होकर यह निश्चय किया गया कि पौलॉस और बारनबास को कुछ अन्य शिष्यों
के साथ इस विषय पर विचार-विमर्श के उद्देश्य से प्रेरितों और पुरनियों के पास
येरूशलेम भेज दिया जाए. 3 कलीसिया ने उन्हें विदा किया. तब वे फ़ॉयनिके
तथा शमरिया प्रदेशों से होते हुए आगे बढ़े और वहां भी गैर-यहूदियों द्वारा मसीह
को स्वीकार किए जाने का विस्तृत वर्णन करते गए जिससे सभी शिष्यों में अपार
हर्ष की लहर दौड़ गई. 4 उनके येरूशलेम पहुंचने पर कलीसिया, प्रेरितों तथा
पुरनियों ने उनका स्वागत किया. पौलॉस और बारनबास ने उन्हें उन सभी कामों
का विवरण दिया, जो परमेश्वर ने उनके माध्यम से किए थे. 5 किंतु फ़रीसी
संप्रदाय से निकलकर आए कुछ विश्वासी विरोध में कहने लगे, “आवश्यक है
कि गैर-यहूदियों का ख़तना हो और उन्हें मोशेह की व्यवस्था का पालन करने
का निर्देश दिया जाए.” 6 प्रेरित तथा प्राचीन इस विषय पर विचार-विमर्श के
उद्देश्य से इकट्ठा हुए. 7 एक लंबे विचार-विमर्श के बाद पेतरॉस खड़े हुए और
उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा, “प्रियजन, आपको यह मालूम ही
है कि कुछ समय पहले परमेश्वर ने यह सही समझा कि गैर-यहूदी मेरे द्वारा
ईश्वरीय सुसमाचार सुनें और विश्वास करें. 8 मनों को जांचनेवाले परमेश्वर ने
ठीक हमारे जैसे उन्हें भी पवित्र आत्मा प्रदान करके इसकी गवाही दी. 9 उन्होंने
उनके हृदय विश्वास द्वारा शुद्ध करके हमारे और उनके बीच कोई भेद न रहने
दिया. 10 इसलिये अब तुम लोग इन शिष्यों की गर्दन पर वह जूआ रखकर
परमेश्वर को क्यों परख रहे हो, जिसे न तो हम और न हमारे पूर्वज ही उठा
पाए? 11 हमारा विश्वास तो यह है कि प्रभु येशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा हमारा
उद्धार ठीक वैसे ही हुआ है जैसे उनका.” 12 बारनबास और पौलॉस के भाषण
को सभा के सभी सदस्य चुपचाप सुन रहे थे कि परमेश्वर ने किस प्रकार उनके
माध्यम से गैर-यहूदियों के बीच अद्भुत चिह्न दिखाए हैं. 13 उनके भाषण के
खत्म होने पर याकोब ने सभा को संबोधित किया, “प्रियजन, मेरा विचार यह है:
14 शिमओन ने इस बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है कि प्रारंभ में
परमेश्वर ने किस प्रकार गैर-यहूदियों में से अपने लिए प्रजा का निर्माण करने में
रुचि प्रकट की है. 15 भविष्यद्वक्ताओं के अभिलेख भी इसका समर्थन करते हैं,
जैसा कि लिखा है: 16 “‘इन घटनाओं के बाद मैं लौट आऊंगा और दावीद के
ध्वस्त मंडप को दोबारा बनाऊंगा. और खंडहरों को दोबारा बनाकर फिर खड़ा
करूंगा, 17 जिससे शेष मानव जाति परमेश्वर को पा सके, तथा वे सभी गैर-
यहूदी भी, जिन पर मेरे नाम की छाप लगी है.’ यह उन्हीं प्रभु की आवाज है,
18 जो पुरातन काल से इन बातों को प्रकट करते आए हैं. (aiōn g165) 19
“इसलिये मेरा फैसला यह है, कि हम उन गैर-यहूदियों के लिए कोई कठिनाई
उत्पन्न न करें, जो परमेश्वर की ओर फिर रहे हैं. 20 परंतु अच्छा यह होगा कि
हम उन्हें यह आज्ञा लिख भेजें कि वे मूर्तियों की अशुद्धता से खुद को बचाए
रखें, वेश्यागामी तथा गला घोंट कर मारे गए पशुओं के मांस से दूर रहें और
लहू का सेवन न करें. 21 याद रहे: यह मोशेह के उसी व्यवस्था के अनुरूप है
जिसका वाचन पूर्वकाल से हर एक शब्बाथ पर यहूदी सभागृहों में किया जाता
है.” 22 इसलिये सारी कलीसिया के साथ प्रेरितों और पुरनियों को यह सही
लगा कि अपने ही बीच से कुछ व्यक्तियों को चुनकर पौलॉस तथा बारनबास
के साथ अंतियोख़ नगर भेज दिया जाए. उन्होंने इसके लिए यहूदाह, जिसे
बारसब्बास नाम से भी जाना जाता है तथा सीलास को चुन लिया. ये उनके बीच
प्रधान माने जाते थे. 23 उनके हाथ से भेजा पत्र यह था: प्रेरितों, पुरनियों तथा
भाइयों की ओर से: अंतियोख, सीरिया तथा किलिकिया प्रदेश के गैर-यहूदी
विश्वासियो, आप सभी को नमस्कार! 24 हमें यह मालूम हुआ है कि हमारे
ही मध्य से कुछ बाहरी व्यक्तियों ने अपनी बातों के द्वारा तुम्हारे मनों को
विचलित कर दिया है. 25 अतः हमने एक मत से हमारे प्रिय मित्र बारनबास तथा
पौलॉस के साथ कुछ व्यक्तियों को तुम्हारे पास भेजना सही समझा. 26 ये वे हैं,
जिन्होंने हमारे प्रभु येशु मसीह के लिए अपने प्राणों का जोखिम उठाया है. 27
इसलिये हम यहूदाह और सीलास को तुम्हारे पास भेज रहे हैं कि तुम स्वयं उन्हीं
के मुख से इस विषय को सुन सको 28 क्योंकि पवित्र आत्मा तथा स्वयं हमें
यह सही लगा कि इन आवश्यक बातों के अलावा तुम पर और कोई बोझ
न लादा जाए: 29 मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन, लहू, गला घोंट कर मारे
गए जीवों के मांस के सेवन से तथा वेश्यागामी से परे रहो. यही तुम्हारे लिए
उत्तम है. सबको शुभेच्छा! 30 वहां से निकलकर वे अंतियोख़ नगर पहुंचे और
उन्होंने वहां कलीसिया को इकट्ठा कर वह पत्र उन्हें सौंप दिया. 31 पत्र के पढ़े
जाने पर उसके उत्साह बढ़ानेवाले संदेश से वे बहुत आनंदित हुए. 32 यहूदाह
तथा सीलास ने, जो स्वयं भविष्यवक्ता थे, तत्वपूर्ण बातों के द्वारा शिष्यों को
प्रोत्साहित और स्थिर किया. 33 उनके कुछ समय वहां ठहरने के बाद उन्होंने
उन्हें दोबारा शांतिपूर्वक उन्हीं के पास भेज दिया, जिन्होंने उन्हें यहां भेजा था. [
34 किंतु सीलास को वहीं ठहरे रहना सही लगा.] 35 पौलॉस और बारनबास
अंतियोख़ नगर में ही अन्य अनेकों के साथ प्रभु के वचन की शिक्षा देते तथा
प्रचार करते रहे. 36 कुछ दिन बाद पौलॉस ने बारनबास से कहा, “आइए, हम
ऐसे हर एक नगर में जाएं जिसमें हमने प्रभु के वचन का प्रचार किया है और वहां
शिष्यों की आत्मिक स्थिति का जायज़ा लें.” 37 बारनबास की इच्छा थी
कि वह योहन को, जिनका उपनाम मार्कास भी था, अपने साथ ले चलें 38
किंतु पौलॉस बलपूर्वक कहते रहे कि उन्हें साथ न लिया जाए क्योंकि वह
पम्फ़ूलिया नगर में उनका साथ और काम अधूरा छोड़ चले गए थे. 39 इस
विषय को लेकर उनमें ऐसा कठोर विवाद हुआ कि वे एक दूसरे से अलग हो
गए. बारनबास मार्कास को लेकर सैप्रस चले गए. 40 शिष्यों द्वारा प्रभु के
अनुग्रह में सौंपे जाकर पौलॉस ने सीलास को साथ ले यात्रा प्रारंभ की. 41 वे
सीरिया तथा किलिकिया प्रदेशों से होते हुए कलीसियाओं को स्थिर करते आगे
बढ़ते गए.

16 वह दरबे और लुस्त्रा नगर भी गए. वहां तिमोथियॉस नामक एक शिष्य थे
जिनकी माता यहूदी मसीही शिष्या; परंतु पिता यूनानी थे. 2 तिमोथियॉस
इकोनियॉन और लुस्त्रा नगरों के शिष्यों में सम्मानित थे. 3 पौलॉस की इच्छा
तिमोथियॉस को अपने साथी के रूप में साथ रखने की थी, इसलिये पौलॉस ने
उनका ख़तना किया क्योंकि वहां के यहूदी यह जानते थे कि तिमोथियॉस के
पिता यूनानी हैं. 4 वे नगर-नगर यात्रा करते हुए शिष्यों को वे सभी आज्ञा सौंपते
जाते थे, जो येरूशलेम में प्रेरितों और पुरनियों द्वारा ठहराई गयी थी. 5 इसलिये
कलीसिया प्रतिदिन विश्वास में स्थिर होती गई तथा उनकी संख्या में प्रतिदिन
बढ़ोतरी होती गई. 6 वे फ्रिजिया तथा गलातिया क्षेत्रों में से होते हुए आगे बढ़
गए. पवित्र आत्मा की आज्ञा थी कि वे आसिया क्षेत्र में परमेश्वर के वचन का
प्रचार न करें 7 मूसिया नगर पहुंचने पर उन्होंने बिथुनिया नगर जाने का विचार
किया किंतु मसीह येशु के आत्मा ने उन्हें इसकी आज्ञा नहीं दी. 8 इसलिये
मूसिया नगर से निकलकर वे त्रोऑस नगर पहुंचे. 9 रात में पौलॉस ने एक
दर्शन देखा: एक मकेदोनियावासी उनसे दुःखी शब्द में विनती कर रहा था,
“मकेदोनिया क्षेत्र में आकर हमारी सहायता कीजिए!” 10 पौलॉस द्वारा इस
दर्शन देखते ही यह जानकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार प्रचार करने
के लिए बुलाया है; हमने तुरंत मकेदोनिया क्षेत्र जाने की योजना बनाई. 11
त्रोऑस नगर से हम सीधे जलमार्ग द्वारा सामोथ्रेसिया टापू पहुंचे और दूसरे दिन
नियापोलिस नगर 12 और वहां से फ़िलिप्पॉय नगर, जो मकेदोनिया प्रदेश का

एक प्रधान नगर तथा रोमी बस्ती है. हम यहां कुछ दिन ठहर गए. 13 शब्बाथ
पर हम नगर द्वार से निकलकर प्रार्थना के लिए निर्धारित स्थान की खोज में नदी
तट पर चले गए. हम वहां इकट्ठी हुई स्त्रियों से वार्तालाप करते हुए बैठ गए.
14 वहां थुआतेइरा नगर निवासी लुदिया नामक एक स्त्री थी, जो परमेश्वर की
आराधक थी. वह बैंगनी रंग के वस्त्रों की व्यापारी थी. उसने हमारा वार्तालाप
सुना और प्रभु ने पौलॉस द्वारा दी जा रही शिक्षा के प्रति उसका हृदय खोल दिया.
15 जब उसने और उसके रिश्तेदारों ने बपतिस्मा ले लिया तब उसने हमको
अपने यहां आमंत्रित करते हुए कहा, “यदि आप यह मानते हैं कि मैं प्रभु के प्रति
विश्वासयोग्य हूं, तो आकर मेरे घर में रहिए.” उसने हमें विनती स्वीकार करने
पर विवश कर दिया. 16 एक दिन प्रार्थना स्थल की ओर जाते हुए मार्ग में हमारी
भेंट एक युवा दासी से हुई, जिसमें एक ऐसी दुष्टात्मा थी, जिसकी सहायता से
वह भविष्य प्रकट कर देती थी. वह अपने स्वामियों की बहुत आय का साधन
बन गई थी. 17 यह दासी पौलॉस और हमारे पीछे-पीछे यह चिल्लाती हुए
चलने लगी, “ये लोग परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम पर उद्धार का
मार्ग प्रकट कर रहे हैं.” 18 अनेक दिनों तक वह यही करती रही. अंत में
झुंझला कर पौलॉस पीछे मुड़े और उसके अंदर समाई दुष्टात्मा से बोले, “मसीह
येशु के नाम में मैं तुझे आज्ञा देता हूं, निकल जा उसमें से!” तुरंत ही वह दुष्टात्मा
उसे छोड़कर चली गई. 19 जब उसके स्वामियों को यह मालूम हुआ कि
उनकी आय की आशा जाती रही, वे पौलॉस और सीलास को पकड़कर नगर
चौक में प्रधान न्यायाधीशों के सामने ले गए 20 और उनसे कहने लगे, “इन
यहूदियों ने नगर में उत्पात मचा रखा है. 21 ये लोग ऐसी प्रथाओं का प्रचार कर
रहे हैं जिन्हें स्वीकार करना या पालन करना हम रोमी नागरिकों के नियमानुसार
नहीं है.” 22 इस पर सारी भीड़ उनके विरुद्ध हो गई और प्रधान हाकिमों ने
उनके वस्त्र फाड़ डाले और उन्हें बेंत लगाने की आज्ञा दी. 23 उन पर अनेक
कठोर प्रहारों के बाद उन्हें कारागार में डाल दिया गया और कारागार-शासक को
उन्हें कठोर सुरक्षा में रखने का निर्देश दिया. 24 इस आदेश पर कारागार-शासक
ने उन्हें भीतरी कक्ष में डालकर उनके पैरों को लकड़ी की बेड़ियों में जकड़
दिया. 25 लगभग आधी रात के समय पौलॉस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे
तथा परमेश्वर की स्तुति में भजन गा रहे थे. उनके साथी कैदी उनकी सुन रहे थे.
26 अचानक ऐसा बड़ा भूकंप आया कि कारागार की नींव हिल गई, तुरंत सभी
द्वार खुल गए और सभी बंदियों की बेड़ियां टूट गईं. 27 नींद से जागने पर
कारागार-शासक ने सभी द्वार खुले पाए. यह सोचकर कि सारे कैदी भाग चुके
हैं, वह तलवार से अपने प्राणों का अंत करने जा ही रहा था; 28 तब पौलॉस ने
ऊंचे शब्द में उससे कहा, “स्वयं को कोई हानि न पहुंचाइए, हम सब यहीं हैं!”
29 कारागार-शासक रोशनी का इंतजाम करने के लिए आज्ञा देते हुए भीतर दौड़
गया और भय से कांपते हुए पौलॉस और सीलास के चरणों में गिर पड़ा. 30
इसके बाद उन्हें बाहर लाकर उसने उनसे प्रश्न किया, “श्रीमन, मुझे क्या करना
चाहिए कि मुझे उद्धार प्राप्त हो?” 31 उन्होंने उत्तर दिया, “प्रभु येशु मसीह में
विश्वास कीजिए, आपको उद्धार प्राप्त होगा—आपको तथा आपके परिवार
को.” 32 तब उन्होंने कारागार-शासक और उसके सारे परिवार को प्रभु के
वचन की शिक्षा दी. 33 कारागार-शासक ने रात में उसी समय उनके घावों को
धोया. बिना देर किए उसने और उसके परिवार ने बपतिस्मा लिया. 34 इसके
बाद वह उन्हें अपने घर ले आया और उन्हें भोजन कराया. परमेश्वर में सपरिवार
विश्वास करके वे सभी बहुत आनंदित थे. 35 अगले दिन प्रधान हाकिमों ने
अपने अधिकारियों द्वारा यह आज्ञा भेजी, “उन व्यक्तियों को छोड़ दो.” 36
कारागार-शासक ने इस आज्ञा की सूचना पौलॉस को देते हुए कहा, “प्रधान
न्यायाधीशों ने आपको छोड़ देने की आज्ञा दी है. इसलिये आप शांतिपूर्वक यहां
से विदा हो सकते हैं.” 37 पौलॉस ने उन्हें उत्तर दिया, “उन्होंने हमें बिना किसी
मुकद्दमे के सबके सामने पिटवाया, जबकि हम रोमी नागरिक हैं, फिर हमें
कारागार में भी डाल दिया और अब वे हमें चुपचाप बाहर भेजना चाह रहे हैं!
बिलकुल नहीं! स्वयं उन्हीं को यहां आने दीजिए, वे ही हमें यहां से बाहर छोड़
देंगे.” 38 उन अधिकारियों ने यह सब प्रधान न्यायाधीशों को जा बताया. यह
मालूम होने पर कि पौलॉस तथा सीलास रोमी नागरिक हैं वे बहुत ही डर गए.
39 तब वे स्वयं आकर पौलॉस तथा सीलास को मनाने लगे और उन्हें कारागार
से बाहर लाकर उनसे नगर से चले जाने की विनती करते रहे. 40 तब पौलॉस
तथा सीलास कारागार से निकलकर लुदिया के घर गए. वहां भाई बहिनों से भेंट
कर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए वे वहां से विदा हो गए.

17 तब वे यात्रा करते हुए अम्फ़िपोलिस और अपोल्लोनिया नगरों से होते
हुए थेस्सलोनिकेयुस नगर पहुंचे, जहां यहूदियों का एक आराधनालय
था. 2 रोज़ की तरह पौलॉस यहूदी आराधनालय में गए और तीन शब्बाथों पर
पवित्र शास्त्र के आधार पर उनसे वाद-विवाद करते रहे 3 और सबूतों के साथ
समझाते रहे कि यह निर्धारित ही था कि मसीह सताहट सहते हुए मरे हुओं में से
पुनर्जीवित हों. तब उन्होंने घोषणा की, “यही येशु, जिनका वर्णन मैं कर रहा
हूं, वह मसीह हैं.” 4 कुछ यहूदी इस बात से आश्वस्त होकर पौलॉस और
सीलास के साथ सहमत हो गए. इनके अलावा परमेश्वर के प्रति श्रद्धालु यूनानी
और बड़ी संख्या में अनेक कुलीन महिलाएं भी इस विश्वासमत में शामिल हो
गईं. 5 कुछ यहूदी यह सब देख जलन से भर गए और उन्होंने अपने साथ
असामाजिक तत्वों को ले नगर चौक में इकट्ठा हो हुल्लड़ मचाना शुरू कर
दिया. वे यासोन के मकान के सामने इकट्ठा होकर पौलॉस और सीलास को भीड़
के सामने लाने का प्रयास करने लगे. 6 उन्हें वहां न पाकर वे यासोन और कुछ
अन्य शिष्यों को घसीटकर नगर के अधिकारियों के सामने ले जाकर चिल्ला-
चिल्लाकर कहने लगे, “ये वे लोग हैं, जिन्होंने संसार को अस्त-व्यस्त कर
दिया है और अब ये यहां भी आ पहुंचे हैं. 7 यासोन ने उन्हें अपने घर में शरण
दी है. ये सभी कयसर के आदेशों के खिलाफ़ काम करते हैं. इनका मानना है
कि राजा एक अन्य व्यक्ति है—येशु.” 8 यह सुनना था कि भीड़ तथा नगर-
शासक भड़क उठे. 9 उन्होंने यासोन और अन्य शिष्यों की ज़मानत मिलने
पर ही उन्हें रिहा किया. 10 रात होते ही शिष्यों ने पौलॉस और सीलास को
बिना देर किए बेरोया नगर की ओर भेज दिया. वहां पहुंचते ही वे यहूदियों के
आराधनालय में गए. 11 बेरोयावासी यहूदी थेस्सलोनिकेयुस के लोगों की
तुलना में अधिक महान चरित्र के थे. उन्होंने प्रभु के वचन को बड़ी लालसा से
स्वीकार कर लिया. बातों की सच्चाई की पुष्टि के उद्देश्य से वे हर दिन पवित्र
शास्त्र का गंभीरता से अध्ययन किया करते थे. 12 परिणामस्वरूप उनमें से
अनेकों ने विश्वास किया. जिनमें अनेक जाने माने यूनानी स्त्री-पुरुष भी थे. 13
किंतु जब थेस्सलोनिकेयुस नगर के यहूदियों को यह मालूम हुआ कि पौलॉस ने
बेरोया में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार किया है, वे वहां भी जा पहुंचे और
लोगों को भड़काने लगे. 14 तुरंत ही मसीह के विश्वासियों ने पौलॉस को
समुद्र के किनारे पर भेज दिया किंतु सीलास और तिमोथियॉस वहीं रहे. 15
पौलॉस के सहायकों ने उन्हें अथेनॉन नगर तक पहुंचा दिया किंतु पौलॉस के
इस आज्ञा के साथ वे बेरोया लौट गए कि सीलास और तिमोथियॉस को जल्द ही
उनके पास भेज दिया जाए. 16 जब पौलॉस अथेनॉन नगर में सीलास और
तिमोथियॉस की प्रतीक्षा कर रहे थे, वह यह देखकर कि सारा नगर मूर्तियों से
भरा हुआ है, आत्मा में बहुत दुःखी हो उठे. 17 इसलिये वह यहूदी सभागृह में
हर रोज़ यहूदियों, भक्त यूनानियों और नगर चौक में उपस्थित व्यक्तियों से
वाद-विवाद करने लगे. 18 कुछ ऍपीक्यूरी और स्तोइकवादी दार्शनिक भी उनसे
बातचीत करते रहे. उनमें से कुछ आपस में कह रहे थे, “क्या कहना चाहता है
यह खोखला बकवादी?” कुछ अन्यों ने कहा, “ऐसा लगता है वह कुछ नए

देवताओं का प्रचारक है!” क्योंकि पौलॉस के प्रचार का विषय था मसीह येशु
और पुनरुत्थान. 19 इसलिये वे पौलॉस को एरियोपागुस नामक आराधनालय में
ले गए. वहां उन्होंने पौलॉस से प्रश्न किया, “आपके द्वारा दी जा रही यह नई
शिक्षा क्या है, क्या आप हमें समझाएंगे? 20 क्योंकि आपके द्वारा बतायी गई
बातें हमारे लिए अनोखी हैं. हम जानना चाहते हैं कि इनका मतलब क्या है.”
21 सभी अथेनॉनवासियों और वहां आए परदेशियों की रीति थी कि वे अपना
सारा समय किसी अन्य काम में नहीं परंतु नए-नए विषयों को सुनने या कहने में
ही लगाया करते थे. 22 एरियोपागुस आराधनालय में पौलॉस ने उनके मध्य जा
खड़े होकर उन्हें संबोधित करते हुए कहा: “अथेनॉनवासियों! आपके विषय में
मेरा मानना है कि आप हर ओर से बहुत ही धार्मिक हैं. 23 क्योंकि जब मैंने
टहलते हुए आपकी पूजा की चीज़ों पर गौर किया, मुझे एक वेदी ऐसी भी
दिखाई दी जिस पर ये शब्द खुद हुए थे: अनजाने ईश्वर को. आप जिनकी
आराधना अनजाने में करते हैं, मैं आपसे उन्हीं का वर्णन करूंगा. 24 “वह
परमेश्वर जिन्होंने विश्व और उसमें की सब वस्तुओं की सृष्टि की, जो स्वर्ग और
पृथ्वी के स्वामी हैं, न तो वह मनुष्य के बनाए मंदिरों में वास करते हैं 25 और न
ही उन्हें ज़रूरत है किसी मनुष्य की सेवा की—वह किसी पर निर्भर नहीं हैं
क्योंकि वही सबके जीवन, सांस तथा सभी आवश्यक वस्तुओं के देनेवाले हैं.
26 वही हैं, जिन्होंने एक ही मूल पुरुष से सारे संसार पर बसा देने के लक्ष्य से हर
एक जाति को बनाया तथा उनके ठहराए हुए समय तथा निवास सीमाओं का
निर्धारण भी किया 27 कि वे परमेश्वर की खोज करें और कहीं उन्हें खोजते-
खोजते प्राप्त भी कर लें—यद्यपि वह हममें से किसी से भी दूर नहीं हैं. 28
क्योंकि उन्हीं में हमारा जीवन, हमारा चलना फिरना तथा हमारा अस्तित्व बना
है—ठीक वैसा ही जैसा कि आप ही के अपने कुछ कवियों ने भी कहा है: ‘हम
भी उनके वंशज हैं.’ 29 “इसलिये परमेश्वर के वंशज होने के कारण हमारी यह
धारणा अनुचित है कि ईश्वरत्व सोने-चांदी, पत्थर, कलाकार की कलाकृति तथा
मनुष्य के विचार के समान है. 30 अब तक तो परमेश्वर इस अज्ञानता की
अनदेखी करते रहे हैं किंतु अब परमेश्वर हर जगह प्रत्येक व्यक्ति को पश्चाताप
का बुलावा दे रहे हैं 31 क्योंकि उन्होंने एक दिन तय किया है जिसमें वह
धार्मिकता में स्वयं अपने द्वारा ठहराए हुए उस व्यक्ति के माध्यम से संसार का
न्याय करेंगे जिन्हें उन्होंने मरे हुओं में से दोबारा जीवित करने के द्वारा सभी
मनुष्यों के सामने प्रमाणित कर दिया है.” 32 जैसे ही उन लोगों ने मरे हुओं में
से जी उठने का वर्णन सुना, उनमें से कुछ तो ठट्टा करने लगे किंतु कुछ अन्यों ने
कहा, “इस विषय में हम आपसे और अधिक सुनना चाहेंगे.” 33 उस समय
पौलॉस उनके मध्य से चले गए 34 किंतु कुछ ने उनका अनुचरण करते हुए प्रभु
में विश्वास किया. उनमें एरियोपागुस का सदस्य दियोनुसियॉस, दामारिस नामक
एक महिला तथा कुछ अन्य व्यक्ति थे.

18 इसके बाद पौलॉस अथेनॉन नगर से कोरिन्थॉस नगर चले गए. 2 वहां
उनकी भेंट अकुलॉस नामक एक यहूदी से हुई. वह जन्मतः पोन्तॉस नगर
का निवासी था. कुछ ही समय पूर्व वह अपनी पत्नी प्रिस्का के साथ इतालिया से
पलायन कर आया था क्योंकि सम्राट क्लॉदियॉस ने रोम से सारे यहूदियों के
निकल जाने की आज्ञा दी थी. पौलॉस उनसे भेंट करने गए. 3 पौलॉस और
अकुलॉस का व्यवसाय एक ही था इसलिये पौलॉस उन्हीं के साथ रहकर काम
करने लगे—वे दोनों ही तंबू बनानेवाले थे. 4 हर एक शब्बाथ पर पौलॉस यहूदी
आराधनालय में प्रवचन देते और यहूदियों तथा यूनानियों की शंका दूर करते थे.
5 जब मकेदोनिया से सीलास और तिमोथियॉस वहां आए तो पौलॉस मात्र वचन
की शिक्षा देने के प्रति समर्पित हो गए और यहूदियों के सामने यह साबित करने
लगे कि येशु ही वह मसीह हैं. 6 उनकी ओर से प्रतिरोध और निंदा की स्थिति में
पौलॉस अपने वस्त्र झटक कर कह दिया करते थे, “अपने विनाश के लिए तुम
स्वयं दोषी हो—मैं निर्दोष हूं. अब मैं गैर-यहूदियों के मध्य जा रहा हूं.” 7
पौलॉस यहूदी आराधनालय से निकलकर तीतॉस युस्तस नामक व्यक्ति के घर
चले गए. वह परमेश्वर भक्त व्यक्ति था. उसका घर यहूदी आराधनालय के पास
ही था. 8 यहूदी आराधनालय के प्रभारी क्रिस्पॉस ने सपरिवार प्रभु में विश्वास
किया. अनेक कोरिन्थवासी वचन सुन विश्वास कर बपतिस्मा लेते जा रहे थे. 9
प्रभु ने पौलॉस से रात में दर्शन में कहा, “अब भयभीत न होना. वचन का प्रचार
करते जाओ. मौन न रहो. 10 मैं तुम्हारे साथ हूं. कोई तुम पर आक्रमण करके
तुम्हें हानि नहीं पहुंचा सकता क्योंकि इस नगर में मेरे अनेक भक्त हैं.” 11
इसलिये पौलॉस वहां एक वर्ष छः माह तक रहे और परमेश्वर के वचन की
शिक्षा देते रहे. 12 जब गैलियो आखाया प्रदेश का राज्यपाल था, यहूदी एक मत
होकर पौलॉस के विरुद्ध खड़े हो गए और उन्हें न्यायालय ले गए. 13 उन्होंने उन
पर आरोप लगाया, “यह व्यक्ति लोगों को परमेश्वर की आराधना इस प्रकार से
करने के लिए फुसला रहा है, जो व्यवस्था के आदेशों के विपरीत है.” 14 जब
पौलॉस अपनी-अपनी रक्षा में कुछ बोलने पर ही थे, गैलियो ने यहूदियों से
कहा, “ओ यहूदियों! यदि तुम मेरे सामने किसी प्रकार के अपराध या किसी घोर
दुष्टता का आरोप लेकर आते तो मैं उसके लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल
करता 15 किंतु यदि यह विवादित शब्दों, नामों या तुम्हारे ही अपने विधान
से संबंधित है तो इसका निर्णय तुम स्वयं करो. मैं इसका निर्णय नहीं करना
चाहता.” 16 फिर उसने उन्हें न्यायालय के बाहर खदेड़ दिया. 17 यहूदियों ने
यहूदी आराधनालय के प्रधान सोस्थेनेस को पकड़कर न्यायालय के सामने ही
पीटना प्रारंभ कर दिया. गैलियो पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा. 18 वहां
अनेक दिन रहने के बाद पौलॉस भाई बहिनों से विदा लेकर जलमार्ग से सीरिया
प्रदेश चले गए. उनके साथ प्रिस्का और अकुलॉस भी थे. केनख्रेया नगर में
पौलॉस ने अपना मुंडन करवा लिया क्योंकि उन्होंने एक संकल्प लिया था. 19
वे इफ़ेसॉस नगर में आए. पौलॉस उन्हें वहीं छोड़कर यहूदी सभागृह में जाकर
यहूदियों से वाद-विवाद करने लगे. 20 वे पौलॉस से कुछ दिन और ठहरने की
विनती करते रहे किंतु पौलॉस राज़ी नहीं हुए. 21 पौलॉस ने उनसे यह कहते हुए
आज्ञा चाही “यदि परमेश्वर चाहेंगे तो मैं दोबारा लौटकर तुम्हारे पास आऊंगा”
और वह इफ़ेसॉस नगर छोड़कर जलमार्ग से आगे चले गए. 22 कयसरिया नगर
पहुंचकर येरूशलेम जाकर उन्होंने कलीसिया से भेंट की और फिर अंतियोख़
नगर चले गए. 23 अंतियोख़ नगर में कुछ दिन बिता कर वह वहां से विदा हुए
और नगर-नगर यात्रा करते हुए सभी गलातिया प्रदेश और फ्रिजिया क्षेत्र में से होते
हुए शिष्यों को प्रोत्साहित करते हुए आगे बढ़ गए. 24 अपोल्लॉस नामक एक
यहूदी व्यक्ति थे, जिनका जन्म अलेक्सान्द्रिया नगर में हुआ था. वह इफ़ेसॉस
नगर आए. वह प्रभावशाली वक्ता और पवित्र शास्त्र के बड़े ज्ञानी थे 25 किंतु
उन्हें प्रभु के मार्ग की मात्र ज़ुबानी शिक्षा दी गई थी. वह अत्यंत उत्साही स्वभाव
के थे तथा मसीह येशु के विषय में उनकी शिक्षा सटीक थी किंतु उनका ज्ञान
मात्र योहन के बपतिस्मा तक ही सीमित था. 26 अपोल्लॉस निडरता से यहूदी
आराधनालय में प्रवचन देने लगे किंतु जब प्रिस्का और अकुलॉस ने उनका
प्रवचन सुना तो वे उन्हें अलग ले गए और वहां उन्होंने अपोल्लॉस को परमेश्वर
के शिक्षा-सिद्धान्त की सच्चाई को और अधिक साफ़ रीति से समझाया. 27 जब
अपोल्लॉस ने आखाया प्रदेश के आगे जाने की इच्छा व्यक्त की तो भाई बहिनों
ने उन्हें प्रोत्साहित किया तथा आखाया प्रदेश के शिष्यों को पत्र लिखकर विनती
की कि वे उन्हें स्वीकार करें. इसलिये जब अपोल्लॉस वहां पहुंचे, उन्होंने उन
शिष्यों का बहुत प्रोत्साहन किया, जिन्होंने अनुग्रह द्वारा विश्वास किया था 28
क्योंकि वह सार्वजनिक रूप से यहूदियों का खंडन करते और पवित्र शास्त्र के
आधार पर प्रमाणित करते थे कि येशु ही वह मसीह हैं.

19 जब अपोल्लॉस कोरिन्थॉस नगर में थे तब पौलॉस दूरवर्तीय प्रदेशों
से होते हुए इफ़ेसॉस नगर आए और उनकी भेंट कुछ शिष्यों से हुई. 2
पौलॉस ने उनसे प्रश्न किया, “क्या विश्वास करते समय तुमने पवित्र आत्मा प्राप्त
किया था?” उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं. हमने तो यह सुना तक नहीं कि पवित्र
आत्मा भी कुछ होता है.” 3 तब पौलॉस ने प्रश्न किया, “तो तुमने बपतिस्मा
कौन सा लिया था?” उन्होंने उत्तर दिया, “योहन का.” 4 तब पौलॉस ने उन्हें
समझाया, “योहन का बपतिस्मा मात्र पश्चाताप का बपतिस्मा था. बपतिस्मा देते
हुए योहन यह कहते थे कि लोग विश्वास उनमें करें, जो उनके बाद आ रहे थे
अर्थात् मसीह येशु.” 5 जब उन शिष्यों को यह समझ में आया तो उन्होंने प्रभु
येशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया. 6 जब पौलॉस ने उनके ऊपर हाथ रखा,
उन पर पवित्र आत्मा उतरा और वे अन्य भाषाओं में बातचीत और भविष्यवाणी
करने लगे. 7 ये लगभग बारह व्यक्ति थे. 8 तब पौलॉस आराधनालय में गए
और वहां वह तीन माह तक हर शब्बाथ को निडरता से बोलते रहे तथा परमेश्वर
के राज्य के विषय में लोगों की शंकाओं को दूर करते रहे. 9 किंतु, जो कठोर
थे, उन्होंने वचन को नहीं माना और सार्वजनिक रूप से इस मत के विषय में बुरे
विचारों का प्रचार किया. इसलिये पौलॉस अपने शिष्यों को साथ ले वहां से
चले गए. वह तिरान्नुस के विघालय में गए, जहां वह हर रोज़ भीड़ से परमेश्वर
संबंधी विषयों पर बात किया करते थे. 10 यह सब दो वर्ष तक होता रहा. इसके
परिणामस्वरूप सारे आसिया प्रदेश में यहूदियों तथा यूनानियों दोनों ही ने प्रभु का
संदेश सुना. 11 परमेश्वर ने पौलॉस के द्वारा असाधारण चमत्कार दिखाए, 12
यहां तक कि उनके शरीर से स्पर्श हुए रूमाल और अंगोछे जब रोगियों तक ले
जाए गए, वे स्वस्थ हो गए तथा दुष्टात्मा उन्हें छोड चले गए. 13 नगर-नगर
घूमते हुए कुछ यहूदी ओझाओं ने भी दुष्टात्मा से पीड़ितों को प्रभु येशु मसीह के
नाम में यह कहते हुए दुष्टात्माओं से मुक्त करने का प्रयास किया, “मैं येशु नाम
में, जिनका प्रचार प्रेरित पौलॉस करते हैं, तुम्हें बाहर आने की आज्ञा देता हूं.”
14 स्कीवा नामक यहूदी प्रधान पुरोहित के सात पुत्र थे, जो यही कर रहे थे. 15
एक दिन एक दुष्टात्मा ने उनसे कहा, “येशु को तो मैं जानता हूं तथा पौलॉस के
विषय में भी मुझे मालूम है, किंतु तुम कौन हो?” 16 और उस दुष्टात्मा से पीड़ित
व्यक्ति ने लपक कर उन सभी को अपने वश में कर लिया और उनकी ऐसी
पिटाई की कि वे उस घर से नंगे तथा घायल होकर भागे. 17 इस घटना के
विषय में इफ़ेसॉस नगर के सभी यहूदियों और यूनानियों को मालूम हो गया और
उन पर आतंक छा गया किंतु प्रभु येशु मसीह का नाम बढता चला गया. 18 कुछ
नए शिष्यों ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि वे स्वयं भी इन्हीं कामों में
लगे हुए थे. 19 अनेक जादूगरों ने अपनी पोथियां लाकर सबके सामने जला
दी. उनका आका गया कुल दाम पचास हज़ार चांदी के सिक्के था. 20 प्रभु
के पराक्रम से वचन बढता गया और मजबूत होता चला गया. 21 इसके बाद
पौलॉस ने अपने मन में मकेदोनिया तथा आखाया प्रदेश से होते हुए येरूशलेम
जाने का निश्चय किया. वह मन में विचार कर रहे थे, “इन सबके बाद मेरा रोम
जाना भी सही होगा.” 22 अपने दो सहायकों—तिमोथियॉस तथा इरास्तुस को
मकेदोनिया प्रदेश प्रेषित कर वह स्वयं कुछ समय के लिए आसिया प्रदेश में
रुक गए. 23 उसी समय वहां इस मत को लेकर बड़ी खलबली मच गई. 24
देमेत्रियॉस नामक एक चांदी का कारीगर था, जो आरतिमिस देवी के मंदिर के
मूर्तियां गढ़ा करता था, जिससे कारीगरों का एक बड़ा उघोग चल रहा था. 25
उसने इन्हें तथा इसी प्रकार के काम करनेवाले सब कारीगरों को इकट्ठा कर
उनसे कहा, “भाइयो, यह तो आप समझते ही हैं कि हमारी बढ़ोतरी का आधार
यही काम है. 26 आपने देखा और सुना होगा कि न केवल इफ़ेसॉस नगर में परंतु
सभी आसिया प्रदेश में इस पौलॉस ने बडी संख्या में लोगों को यह कहकर
भरमा दिया है कि हाथ के गढे देवता वास्तविक देवता नहीं होते. 27 अब
जोखिम न केवल यह है कि हमारे काम का सम्मान जाता रहेगा परंतु यह भी कि
महान देवी आरतिमिस का मंदिर भी व्यर्थ साबित हो जाएगा और वह, जिसकी
पूजा सारा आसिया प्रदेश ही नहीं परंतु सारा विश्व करता है, अपने भव्य पद से
गिरा दी जाएगी.” 28 यह सुनते ही वे सब क्रोध से भर गए और चिल्ला उठे,
“इफ़ेसॉसवासियों की देवी आरतिमिस महान है!” 29 सारा नगर घबराया हुआ
था. एकजुट हो वे मकेदोनिया प्रदेश से आए पौलॉस के साथी गायॉस तथा
आरिस्तारख़ॉस को घसीटते हुए रंगशाला की ओर भागे. 30 पौलॉस इस भीड़
के सामने जाना ही चाहते थे किंतु शिष्यों ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया. 31 न
केवल उन्होंने परंतु नगर-प्रशासकों ने भी, जो पौलॉस के मित्र थे, बार-बार
संदेश भेजकर उनसे रंगशाला की ओर न जाने की विनती की. 32 भीड़ में से
कोई कुछ चिल्ला रहा था तो कोई और कुछ. सारी भीड़ पूरी तरह घबराई हुई
थी. बहुतों को तो यही मालूम न था कि वे वहां इकट्ठा किस लिए हुए हैं. 33
कुछ ने यह अर्थ निकाला कि यह सब अलेक्सान्दरॉस के कारण हो रहा है
क्योंकि यहूदियों ने उसे ही आगे कर रखा था. वह अपने हाथ के संकेत से
अपने बचाव में भीड़ से कुछ कहने का प्रयास भी कर रहा था 34 किंतु जैसे ही
उन्हें यह मालूम हुआ कि अलेक्सान्दरॉस यहूदी है, सारी भीड़ लगभग दो घंटे
तक एक शब्द में चिल्लाती रही “इफ़ेसॉसवासियों की देवी आरतिमिस महान
है.” 35 भीड़ के शांत हो जाने पर नगर के हाकिमों ने उन्हें संबोधित करते हुए
कहा, “इफ़ेसॉसवासियो! भला यह कौन नहीं जानता कि इफ़ेसॉस नगर महान
आरतिमिस तथा उस मूर्ति का रक्षक है, जो आकाश से उतरी है. 36 अब,
जबकि यह बिना विवाद के सच है, ठीक यह होगा कि आप शांत रहें और बिना
सोचे समझे कुछ भी न करें. 37 आप इन व्यक्तियों को यहां ले आए हैं, जो न
तो मंदिरों के लुटेरे हैं और न ही हमारी देवी की निंदा करनेवाले. 38 इसलिये
यदि देमेत्रियॉस और उसके साथी कारीगरों को इनके विषय में कोई आपत्ति है
तो न्यायालय खुला है तथा न्यायाधीश भी उपलब्ध हैं. वे उनके सामने अपने
आरोप पेश करें. 39 यदि आपकी इसके अलावा कोई दूसरी मांग है तो उसे
नियत सभा में ही पूरा किया जाएगा. 40 आज की इस घटना के कारण हम पर
उपद्रव का आरोप लगने का खतरा है क्योंकि इसके लिए कोई भी ठोस कारण
दिखाई नहीं पड़ता. इस संबंध में हम इस तितर-बितर भीड़ के इकट्ठा होने का
ठोस कारण देने में असमर्थ होंगे.” 41 यह कहकर नगर हाकिमों ने भीड़ को
विदा कर दिया.

20 नगर में कोलाहल शांत होने पर पौलॉस ने शिष्यों को बुलवाया, उनको
प्रोत्साहित किया और उनसे विदा लेकर मकेदोनिया प्रदेश की ओर रवाना
हुआ. 2 वह उन सभी क्षेत्रों में से होते हुए, वहां शिष्यों का उत्साह बढ़ाते
हुए यूनान देश जा पहुंचे. 3 वह वहां तीन महीने तक कार्य करते रहे किंतु
जब वह सीरिया प्रदेश की यात्रा प्रारंभ करने पर थे, उन्हें यह सूचना प्राप्त हुई
कि यहूदी उनके विरुद्ध षड़्यंत्र रच रहे हैं, तो उन्होंने मकेदोनिया प्रदेश से होते
हुए लौट जाने का निश्चय किया. 4 इस यात्रा में बेरोयावासी पायरूस के पुत्र
सोपेतर, थेस्सलोनिकेयुस नगर के आरिस्तारख़ॉस, सेकुन्दुस, दरबे से गायॉस,
तिमोथियॉस तथा आसिया प्रदेश से तुख़िकस व त्रोफ़िमस हमारे साथी यात्री थे.
5 ये साथी यात्री हमसे आगे चले गए और त्रोऑस नगर पहुंचकर हमारा इंतजार
करते रहे 6 किंतु हमने अखमीरी रोटी के उत्सव के बाद ही फ़िलिप्पॉय नगर से
जलमार्ग द्वारा यात्रा शुरू की. पांच दिन में हम त्रोऑस नगर पहुंचे और अपने
साथियों से मिले. वहां हम सात दिन रहे. 7 सप्ताह के पहले दिन हम रोटी
तोड़ने के लिए इकट्ठा हुए. पौलॉस ने वहां प्रवचन देना प्रारंभ कर दिया, जो मध्य
रात्रि तक चलता गया क्योंकि उनकी योजना अगले दिन यात्रा प्रारंभ करने की
थी. 8 उस ऊपरी कक्ष में, जहां सब इकट्ठा हुए थे, अनेक दीपक जल रहे थे. 9
यूतिकुस नामक एक युवक खिड़की पर बैठा हुआ झपकियां ले रहा था. पौलॉस

प्रवचन करते चले गए और यूतिकुस को गहरी नींद आ गई. वह तीसरे तल से
भूमि पर जा गिरा और उसकी मृत्यु हो गई. **10** पौलॉस नीचे गए, उसके पास
जाकर उससे लिपट गए और कहा, “घबराओ मत, यह जीवित है.” **11** तब वह
दोबारा ऊपर गए और रोटी तोड़ने की रीति पूरी की. वह उनसे इतनी लंबी
बातचीत करते रहे कि सुबह हो गई. इसके बाद वे वहां से चले गए. **12** उस
युवक को वहां से जीवित ले जाते हुए उन सबके हर्ष की कोई सीमा न थी. **13**
हम जलयान पर सवार हो अस्सोस नगर की ओर आगे बढ़े, जहां से हमें पौलॉस
को साथ लेकर आगे बढ़ना था. पौलॉस वहां थल मार्ग से पहुंचे थे क्योंकि यह
उन्हीं की पहले से ठहराई योजना थी. **14** अस्सोस नगर में उनसे भेंट होने पर
हमने उन्हें जलयान में अपने साथ लिया और मितिलीन नगर जा पहुंचे. **15** दूसरे
दिन वहां से यात्रा करते हुए हम किऑस नगर के पास से होते हुए सामोस नगर
पहुंचे और उसके अगले दिन मिलेतॉस नगर. **16** पौलॉस ने इफ़ेसॉस नगर में न
उतरकर आगे बढ़ते जाने का निश्चय किया क्योंकि वह चाहते थे कि आसिया
प्रदेश में ठहरने के बजाय यदि संभव हो तो शीघ्र ही पेन्तेकॉस्त उत्सव के अवसर
पर येरूशलेम पहुंच जाएं. **17** मिलेतॉस नगर से पौलॉस ने इफ़ेसॉस नगर को
समाचार भेजकर कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया. **18** उनके वहां पहुंचने
पर पौलॉस ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा: “आसिया प्रदेश में मेरे प्रवेश के
पहले दिन से आपको यह मालूम है कि मैं किस प्रकार हमेशा आपके साथ रहा,
19 और किस तरह सारी विनम्रता में आंसू बहाते हुए उन यातनाओं के बीच भी,
जो यहूदियों के षड़्यंत्र के कारण मुझ पर आई, मैं प्रभु की सेवा करता रहा.
20 घर-घर जाकर तथा सार्वजनिक रूप से वह शिक्षा देने में, जो तुम्हारे लिए
लाभदायक है, मैं कभी पीछे नहीं रहा. **21** मैं यहूदियों और यूनानियों से पूरी
सच्चाई में पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर की ओर मन फिराने तथा हमारे प्रभु येशु
मसीह में विश्वास की विनती करता रहा हूं. **22** “अब, पवित्र आत्मा की प्रेरणा
में मैं येरूशलेम जा रहा हूं. वहां मेरे साथ क्या होगा, इससे मैं अनजान हूं; **23**
बजाय इसके कि हर एक नगर में पवित्र आत्मा मुझे सावधान करते रहते हैं कि
मेरे लिए बेड़ियां और यातनाएं तैयार हैं. **24** अपने जीवन से मुझे कोई मोह नहीं
है सिवाय इसके कि मैं अपनी इस दौड़ को पूरा करूं तथा उस सेवाकार्य को, जो
प्रभु येशु मसीह द्वारा मुझे सौंपा गया है—पूरी सच्चाई में परमेश्वर के अनुग्रह के
ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार की. **25** “अब यह भी सुनो: मैं जानता हूं कि तुम
सभी, जिनके बीच मैंने राज्य का प्रचार किया है, अब मेरा मुख कभी न देख
सकोगे. **26** इसलिये आज मैं तुम सब पर यह स्पष्ट कर रहा हूं कि मैं किसी के
भी विनाश का दोषी नहीं हूं. **27** मैंने किसी पर भी परमेश्वर के सारे उद्देश्य को
बताने में आनाकानी नहीं की. **28** तुम लोग अपना ध्यान रखो तथा उस समूह
का भी, जिसका रखवाला तुम्हें पवित्र आत्मा ने चुना है कि तुम परमेश्वर की
कलीसिया की देखभाल करो जिसे उन्होंने स्वयं अपना लहू देकर मोल लिया
है. **29** मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद तुम्हारे बीच फाड़नेवाले भेड़िये आ
जाएंगे, जो इस समूह को नहीं छोड़ेंगे. **30** इतना ही नहीं, तुम्हारे बीच से ऐसे
व्यक्तियों का उठना होगा, जो गलत शिक्षा देने लगेंगे और तुम्हारे ही झुंड में से
अपने चेले बनाने लगेंगे. **31** इसलिये यह याद रखते हुए सावधान रहो कि तीन
वर्ष तक मैंने दिन-रात आंसू बहाते हुए तुम्हें चेतावनी देने में कोई ढील नहीं दी.
32 “अब मैं तुम्हें प्रभु और उनके अनुग्रह के वचन की देखभाल में सौंप रहा हूं,
जिसमें तुम्हारे विकास करने तथा तुम्हें उन सबके साथ मीरास प्रदान करने की
क्षमता है, जो प्रभु के लिए अलग किए गए हैं. **33** मैंने किसी के स्वर्ण, रजत या
वस्त्र का लालच नहीं किया. **34** तुम सब स्वयं जानते हो कि अपनी ज़रूरतों की
पूर्ति के लिए तथा उनके लिए भी, जो मेरे साथ रहे, मैंने अपने इन हाथों से
मेहनत की है. **35** हर एक परिस्थिति में मैंने तुम्हारे सामने यही आदर्श प्रस्तुत
किया है कि यह ज़रूरी है कि हम दुर्बलों की सहायता इसी रीति से कठिन
परिश्रम के द्वारा करें. स्वयं प्रभु येशु द्वारा कहे गए ये शब्द याद रखो, ‘लेने के
बजाय देना धन्य है.’” **36** जब पौलॉस यह कह चुके, उन्होंने घुटने टेककर उन
सबके साथ प्रार्थना की. **37** तब शिष्य रोने लगे और पौलॉस से गले लगकर
उन्हें बार-बार चूमने लगे. **38** उनकी पीड़ा का सबसे बड़ा कारण यह था कि
पौलॉस ने कह दिया था कि अब वे उन्हें कभी न देख सकेंगे. इसके बाद वे सब
पौलॉस के साथ जलयान तक गए.

21 जब हमने उनसे विदा लेकर जलमार्ग से यात्रा प्रारंभ की और हमने सीधे
कॉस द्वीप का मार्ग लिया, फिर अगले दिन रोदॉस द्वीप का और वहां से
पतारा द्वीप का. **2** वहां फ़ॉयनिके नगर जाने के लिए एक जलयान तैयार था.
हम उस पर सवार हो गए और हमने यात्रा प्रारंभ की. **3** हमें बायीं ओर सैप्रस
द्वीप दिखाई दिया. हम उसे छोड़कर सीरिया प्रदेश की ओर बढ़ते गए और सोर
नगर जा पहुंचे क्योंकि वहां जलयान से सामान उतारा जाना था. **4** वहां हमने
शिष्यों का पता लगाया और उनके साथ सात दिन रहे. पवित्र आत्मा के माध्यम
से वे बार-बार पौलॉस से येरूशलेम न जाने की विनती करते रहे. **5** जब वहां से
हमारे जाने का समय आया, वे परिवार के साथ हमें विदा करने नगर सीमा तक
आए. समुद्रतट पर हमने घुटने टेककर प्रार्थना की और एक दूसरे से विदा ली. **6**
हम जलयान में सवार हो गए और वे सब अपने-अपने घर लौट गए. **7** सोर नगर
से शुरू की गई यात्रा पूरी कर हम प्तुलेमाईस नगर पहुंचे. स्थानीय भाई बहिनों
से भेंट कर हम एक दिन वहीं रुक गए. **8** अगले दिन यात्रा करते हुए हम
कयसरिया आए और प्रचारक फ़िलिप्पॉस के घर गए, जो उन सात दीकनों में
से एक थे. हम उन्हीं के घर में ठहरे. **9** उनकी चार कुंवारी पुत्रियां थीं, जो
भविष्यवाणी किया करती थी. **10** जब हमें, वहां रहते हुए कुछ दिन हो गए,
वहां हागाबुस नामक एक भविष्यवक्ता आए, जो यहूदिया प्रदेश के थे. **11** वह
जब हमसे भेंट करने आए, उन्होंने पौलॉस का पटुका लेकर उससे अपने हाथ-
पैर बांधते हुए कहा, “पवित्र आत्मा का कहना है, ‘येरूशलेम के यहूदी अगुए
उस व्यक्ति को इसी रीति से बांधेंगे जिसका यह पटुका है और उसे अन्यजातियों
के हाथों में सौंप देंगे.’” **12** यह सुनकर स्थानीय शिष्यों और हमने भी पौलॉस
से येरूशलेम न जाने की विनती की. **13** पौलॉस ने उत्तर दिया, “इस प्रकार रो-
रोकर मेरा हृदय क्यों तोड़ रहे हो? मैं येरूशलेम में न केवल बंदी बनाए जाने
परंतु प्रभु येशु मसीह के नाम के लिए मार डाले जाने के लिए भी तैयार हूं.” **14**
इसलिये जब उन्हें मनाना असंभव हो गया, हम शांत हो गए. हम केवल यही
कह पाए, “प्रभु ही की इच्छा पूरी हो!” **15** कुछ दिन बाद हमने तैयारी की और
येरूशलेम के लिए चल दिए. **16** कयसरिया नगर के कुछ शिष्य भी हमारे साथ
हो लिए. ठहरने के लिए हमें सैप्रसवासी म्नेसॉन के घर ले जाया गया. वह सबसे
पहले के शिष्यों में से एक था. **17** येरूशलेम पहुंचने पर भाई बहिनों ने बड़े
आनंदपूर्वक हमारा स्वागत किया. **18** अगले दिन पौलॉस हमारे साथ याकोब के
निवास पर गए, जहां सभी प्राचीन इकट्ठा थे. **19** नमस्कार के बाद पौलॉस ने
एक-एक करके वह सब बताना शुरू किया, जो परमेश्वर ने उनकी सेवा के
माध्यम से अन्यजातियों के बीच किया था. **20** यह सब सुन, वे परमेश्वर का
धन्यवाद करने लगे. उन्होंने पौलॉस से कहा, “देखिए, प्रियजन, यहूदियों में
हज़ारों हैं जिन्होंने विश्वास किया है. वे सभी व्यवस्था के मजबूत समर्थक भी हैं.
21 उन्होंने यह सुन रखा है कि आप गैर-यहूदियों के बीच निवास कर रहे
यहूदियों को यह शिक्षा दे रहे हैं कि मोशेह की व्यवस्था छोड़ दो, न तो अपने
शिशुओं का ख़तना करो और न ही प्रथाओं का पालन करो. **22** अब बताइए,
हम क्या करें? उन्हें अवश्य यह तो मालूम हो ही जाएगा कि आप यहां आए
हुए हैं. **23** इसलिये हमारा सुझाव मानिए: यहां ऐसे चार व्यक्ति हैं, जिन्होंने
शपथ ली है, **24** आप उनके साथ जाइए, शुद्ध होने की विधि पूरी कीजिए
तथा उनके मुंडन का खर्च उठाइये. तब सबको यह मालूम हो जाएगा कि जो

कुछ भी आपके विषय में कहा गया है, उसमें कोई सच्चाई नहीं है और आप स्वयं व्यवस्था का पालन करते हैं. 25 जहां तक गैर-यहूदी शिष्यों का प्रश्न है, हमने उन्हें अपना फैसला लिखकर भेज दिया है कि वे मूर्तियों को चढ़ाई भोजन सामग्री, लहू, गला घोंट कर मारे गए पशुओं के मांस के सेवन से तथा वेश्यागामी से परे रहें." 26 अगले दिन पौलॉस ने इन व्यक्तियों के साथ जाकर स्वयं को शुद्ध किया. तब वह मंदिर गए कि वह वहां उस तारीख की सूचना दें, जब उनकी शुद्ध करने की रीति की अवधि समाप्त होगी और उनमें से हर एक के लिए भेंट चढ़ाई जाएगी. 27 जब सात दिन प्रायः समाप्त होने पर ही थे, आसिया प्रदेश से वहां आए कुछ यहूदियों ने पौलॉस को मंदिर में देख लिया. उन्होंने सारी मौजूद भीड़ में कोलाहल मचा दिया और पौलॉस को यह कहते हुए बंदी बना लिया, 28 "प्रिय इस्राएलियों! हमारी सहायता करो! यही है वह, जो हर जगह हमारे राष्ट्र, व्यवस्था के नियमों तथा इस मंदिर के विरुद्ध शिक्षा देता फिर रहा है. इसके अलावा यह यूनानियों को भी मंदिर के अंदर ले आया है. अब यह पवित्र स्थान अपवित्र हो गया है." 29 (वास्तव में इसके पहले उन्होंने इफ़ेसॉसवासी त्रोफ़िमस को पौलॉस के साथ नगर में देख लिया था इसलिये वे समझे कि पौलॉस उसे अपने साथ मंदिर में ले गए थे.) 30 सारे नगर में खलबली मच गई. लोग एक साथ पौलॉस की ओर लपके, उन्हें पकड़ा और उन्हें घसीटकर मंदिर के बाहर कर दिया और तुरंत द्वार बंद कर दिए गए. 31 जब वे पौलॉस की हत्या की योजना कर ही रहे थे, रोमी सेनापति को सूचना दी गई कि सारे नगर में कोलाहल मचा हुआ है. 32 सेनापति तुरंत अपने साथ कुछ सैनिक और अधिकारियों को लेकर दौड़ता हुआ घटना स्थल पर जा पहुंचा. सेनापति और सैनिकों को देखते ही, उन्होंने पौलॉस को पीटना बंद कर दिया. 33 सेनापति ने आगे बढ़कर पौलॉस को पकड़कर उन्हें दो-दो बेड़ियों से बांधने की आज्ञा दी और लोगों से प्रश्न किया कि यह कौन है और क्या किया है इसने? 34 किंतु भीड़ में कोई कुछ चिल्ला रहा था तो कोई कुछ. जब सेनापति कोलाहल के कारण सच्चाई न जान पाया, उसने पौलॉस को सेना गढ़ में ले जाने का आदेश दिया. 35 जब वे सीढ़ियों तक पहुंचे, गुस्से में बलवा करने को उतारू भीड़ के कारण सुरक्षा की दृष्टि से सैनिक पौलॉस को उठाकर अंदर ले गए. 36 भीड़ उनके पीछे-पीछे यह चिल्लाती हुई चल रही थी, "मार डालो उसे!" 37 जब वे सैनिक गढ़ पर पहुंचने पर ही थे, पौलॉस ने सेनापति से कहा, "क्या मैं आपसे कुछ कह सकता हूं?" सेनापति ने आश्चर्य से पूछा, "तुम यूनानी भाषा जानते हो? 38 इसका अर्थ यह है कि तुम वह मिस्री नहीं हो जिसने कुछ समय पहले विद्रोह कर दिया था तथा जो चार हज़ार आतंकियों को बंजर भूमि में ले गया था." 39 पौलॉस ने उसे उत्तर दिया, "मैं किलिकिया प्रदेश के तारस्यॉस नगर का एक यहूदी नागरिक हूं. मैं आपकी आज्ञा पाकर इस भीड़ से कुछ कहना चाहता हूं." 40 सेनापति से आज्ञा मिलने पर पौलॉस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर भीड़ से शांत रहने को कहा. जब वे सब शांत हो गए, उन्होंने भीड़ को इब्री भाषा में संबोधित किया:

22 "प्रियजन! अब कृपया मेरा उत्तर सुन लें." 2 जब उन्होंने पौलॉस को इब्री भाषा में संबोधित करते हुए सुना तो वे और अधिक शांत हो गए. पौलॉस ने उनसे कहना शुरू किया. 3 "मैं यहूदी हूं, मेरा जन्म किलिकिया प्रदेश, के तारस्यॉस नगर में तथा पालन पोषण इसी नगर येरूशलेम में हुआ है. मेरी शिक्षा नियमानुकूल पूर्वजों की व्यवस्था के अनुरूप आचार्य गमालिएल महोदय की देखरेख में हुई, आज परमेश्वर के प्रति जैसा आप सबका उत्साह है, वैसा ही मेरा भी था. 4 मैं तो इस मत के शिष्यों को प्राण लेने तक सता रहा था, स्त्री-पुरुष दोनों को ही मैं बंदी बना कारागार में डाल देता था, 5 महापुरोहित और पुरनियों की समिति के सदस्य इस सच्चाई के गवाह हैं, जिनसे दमिश्क नगर के यहूदियों के संबंध में अधिकार पत्र प्राप्त कर मैं दमिश्क नगर जा रहा था कि वहां से इस मत के शिष्यों को बंदी बनाकर येरूशलेम ले आऊं कि वे दंडित किए जाएं. 6 "जब मैं लगभग दोपहर के समय दमिश्क नगर के पास पहुंचा, आकाश से अचानक बहुत तेज प्रकाश मेरे चारों ओर चमका 7 और मैं भूमि पर गिर पड़ा. तभी मुझे संबोधित करता एक शब्द सुनाई दिया, 'शाऊल! शाऊल! तुम मुझे क्यों सता रहे हो?' 8 "मैंने प्रश्न किया, 'आप कौन हैं, प्रभु?' "'मैं नाज़रेथ नगर का येशु हूं, जिसे तुम सता रहे हो,' उस शब्द ने उत्तर दिया. 9 मेरे साथियों को प्रकाश तो अवश्य दिखाई दे रहा था किंतु मुझसे बातचीत करता हुआ शब्द उन्हें साफ़ सुनाई नहीं दे रहा था. 10 "मैंने पूछा, 'मैं क्या करूं, प्रभु?' प्रभु ने मुझे उत्तर दिया. "'उठो, दमिश्क नगर में जाओ, वहीं तुम्हें बताया जाएगा कि तुम्हारे द्वारा क्या-क्या किया जाना तय किया गया है.' 11 तेज प्रकाश के कारण मैं देखने की क्षमता खो बैठा था. इसलिये मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिश्क नगर ले गए. 12 "हननयाह नामक व्यक्ति, जो व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर भक्त और सभी स्थानीय यहूदियों द्वारा सम्मानित थे, 13 मेरे पास आकर मुझसे बोले, 'भाई शाऊल! अपनी दृष्टि प्राप्त करो!' उसी क्षण दृष्टि प्राप्त कर मैंने उनकी ओर देखा. 14 "उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने आपको अपनी इच्छा जानने तथा उन्हें देखने के लिए, जो धर्मी हैं तथा उन्हीं के मुख से निकले हुए शब्द सुनने के लिए चुना गया है. 15 आपने जो कुछ देखा और सुना है, वह सबके सामने आपकी गवाही का विषय होगा. 16 तो अब देर क्यों? उठिए, बपतिस्मा लीजिए—प्रभु के नाम की दोहाई देते हुए पाप क्षमा प्राप्त कीजिए.' 17 "येरूशलेम लौटने पर जब मैं मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, मैं ध्यानमग्न की स्थिति में पहुंच गया. 18 मैंने प्रभु को स्वयं से यह कहते सुना, 'बिना देर किए येरूशलेम छोड़ दो क्योंकि मेरे विषय में तुम्हारे द्वारा दी गई गवाही इन्हें स्वीकार नहीं होगी.' 19 "मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, वे स्वयं यह जानते हैं कि एक-एक यहूदी आराधनालय से मैं आपके शिष्यों को चुन-चुनकर बंदी बनाता तथा यातनाएं देता था. 20 जब आपके गवाह स्तेफ़ानॉस का लहू बहाया जा रहा था तो मैं न केवल इसके समर्थन में वहां खड़ा था, परंतु उसके हत्यारों के बाहरी कपड़ों की रखवाली भी कर रहा था.' 21 "किंतु मेरे लिए प्रभु की आज्ञा थी, 'जाओ; मैं तुम्हें गैर-यहूदियों के बीच दूर-दूर के स्थानों में भेज रहा हूं.'" 22 यहां तक तो वे पौलॉस की बात ध्यान से सुनते रहे किंतु अब उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया, "इस व्यक्ति के बोझ से धरती को मुक्त करो. इसे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है." 23 जब वे चिल्लाने, वस्त्र उछालने और हवा में धूल उड़ाने लगे 24 तो सेनापति ने पौलॉस को सेना गढ़ के अंदर ले जाने की आज्ञा दी कि उन्हें कोड़े लगाकर उनसे पूछताछ की जाए और उनके विरुद्ध भीड़ के इस प्रकार चिल्लाने का कारण मालूम हो सके. 25 जब वे पौलॉस को कोड़े लगाने की तैयारी में उनके हाथ-पैर फैलाकर बांध ही रहे थे, पौलॉस ने अपने पास खड़े शताधिपति से प्रश्न किया, "क्या आपके सामने एक रोमी नागरिक का दोष साबित हुए बिना उसे कोड़े लगाना ठीक है?" 26 यह सुनना ही था कि शताधिपति ने तुरंत सेनापति के पास जाकर उससे कहा, "आप यह क्या करने पर हैं? यह व्यक्ति तो रोमी नागरिक है!" 27 सेनापति ने पौलॉस के पास आकर उनसे प्रश्न किया, "तुम रोमी नागरिक हो?" "जी हां." पौलॉस ने उत्तर दिया. 28 सेनापति ने उनसे कहा, "एक बड़ी राशि चुकाने पर प्राप्त हुई है मुझे यह नागरिकता." "किंतु मैं तो जन्म से रोमी नागरिक हूं!" पौलॉस ने उत्तर दिया. 29 वे लोग, जो उनसे पूछताछ करने आए थे तुरंत वहां से खिसक लिए. जब सेनापति को यह मालूम हुआ कि उसने पौलॉस को, जो एक रोमी नागरिक हैं, बेड़ियां लगा दी हैं, तो वह घबरा गया. 30 अगले दिन सच्चाई मालूम करने की इच्छा में कि पौलॉस पर यहूदियों द्वारा आरोप क्यों लगाए गए, सेनापति ने उन्हें रिहा कर दिया, प्रधान पुरोहितों तथा महासभा को इकट्ठा होने की आज्ञा दी और पौलॉस को लाकर उनके सामने पेश किया.

23 महासभा की ओर ध्यान से देखते हुए पौलॉस ने कहना शुरू किया,
“प्रियजन, परमेश्वर के सामने मेरा जीवन आज तक पूरी तरह सच्चे
विवेक सा रहा है.” 2 इस पर महापुरोहित हननयाह ने पौलॉस के पास खड़े
हुओं को पौलॉस के मुख पर वार करने की आज्ञा दी. 3 स्वयं पौलॉस ही बोल
उठे, “अरे ओ सफेदी पुती दीवार, तुम पर ही परमेश्वर का वार होने पर है! तुम
तो यहां व्यवस्था की विधियों के अनुसार न्याय करने बैठे हो, फिर भी मुझ पर
वार करने की आज्ञा देकर स्वयं व्यवस्था भंग कर रहे हो?” 4 वे, जो पौलॉस के
पास खड़े थे कहने लगे, “तुम तो परमेश्वर के महापुरोहित का तिरस्कार करने
का दुस्साहस कर बैठे हो!” 5 पौलॉस ने उत्तर दिया, “भाइयो, मुझे यह मालूम
ही न था कि यह महापुरोहित हैं पवित्र शास्त्र का लेख है: अपने प्रधानों को शाप
न देना.” 6 तब यह मालूम होने पर कि वहां कुछ सदूकी और कुछ फ़रीसी भी
उपस्थित हैं, पौलॉस महासभा के सामने ऊंचे शब्द में कहने लगे, “प्रियजन, मैं
फ़रीसी हूं—फ़रीसियों की संतान हूं. मुझ पर यहां, मरे हुओं की आशा और
उनके पुनरुत्थान में मेरी मान्यता के कारण मुकद्दमा चलाया जा रहा है.” 7 जैसे
ही उन्होंने यह कहा, फ़रीसियों तथा सदूकियों के बीच विवाद छिड़ गया और
सारी सभा में फूट पड़ गई, 8 क्योंकि सदूकियों का विश्वास है कि न तो मरे
हुओं का पुनरुत्थान होता है, न स्वर्गदूतों का अस्तित्व होता है और न आत्मा
का. किंतु फ़रीसी इन सब में विश्वास करते हैं. 9 वहां बड़ा कोलाहल शुरू हो
गया. फ़रीसियों की ओर से कुछ शास्त्रियों ने खड़े होकर झगड़ते हुए कहा,
“हमारी दृष्टि में यह व्यक्ति निर्दोष है. संभव है किसी आत्मा या स्वयं स्वर्गदूत
ही ने उससे बातें की हों.” 10 जब वहां कोलाहल बढ़ने लगा, सेनापति इस
आशंका से घबरा गया कि लोग पौलॉस के चिथड़े न उड़ा दें. इसलिये उसने
सेना को आज्ञा दी कि पौलॉस को जबरन वहां से सेना गढ़ में ले जाया जाए. 11
उसी रात में प्रभु ने पौलॉस के पास आकर कहा, “साहस रखो. जिस सच्चाई में
तुमने मेरे विषय में येरूशलेम में गवाही दी है, वैसी ही गवाही तुम्हें रोम में भी
देनी है.” 12 प्रातःकाल कुछ यहूदियों ने एक षड्यंत्र रचा और शपथ खाई कि
पौलॉस को समाप्त करने तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे. 13 इस योजना में
चालीस से अधिक व्यक्ति शामिल हो गए. 14 उन्होंने प्रधान पुरोहितों और
पुरनियों से कहा, “हमने ठान लिया है कि पौलॉस को समाप्त किए बिना हम
अन्न-जल चखेंगे तक नहीं. 15 इसलिये आप और महासभा मिलकर सेनापति
को सूचना भेजें और पौलॉस को यहां ऐसे बुलवा लें, मानो आप उसका विवाद
बारीकी से जांच करके सुलझाना चाहते हैं. यहां हमने उसके पहुंचने के पहले ही
उसे मार डालने की तैयारी कर रखी है.” 16 पौलॉस के भांजे ने इस मार डालने
के विषय में सुन लिया. उसने सेना घर में जाकर पौलॉस को इसकी सूचना दे
दी. 17 पौलॉस ने एक शताधिपति को बुलाकर कहा, “कृपया इस युवक को
सेनापति के पास ले जाइए. इसके पास उनके लिए एक सूचना है.” 18 इसलिये
शताधिपति ने उसे सेनापति के पास ले जाकर कहा, “कैदी पौलॉस ने मुझे
बुलाकर विनती की है कि इस युवक को आपके पास ले आऊं क्योंकि इसके
पास आपके लिए एक सूचना है.” 19 इसलिये सेनापति ने उस युवक का हाथ
पकड़कर अलग ले जाकर उससे पूछताछ करनी शुरू कर दी, “क्या सूचना है
तुम्हारे पास?” 20 उसने उत्तर दिया, “पौलॉस को महासभा में बुलाना यहूदियों
की सिर्फ एक योजना ही है, मानो वे उनके विषय में बारीकी से जांच करना
चाहते हैं. 21 कृपया उनकी इस विनती की ओर ध्यान न दें क्योंकि चालीस से
अधिक व्यक्ति पौलॉस के लिए घात लगाए बैठे हैं. उन्होंने ठान लिया है कि
जब तक वे पौलॉस को खत्म नहीं कर देते, वे न तो कुछ खाएंगे और न ही कुछ
पिएंगे. अब वे आपकी हां के इंतजार में बैठे हैं.” 22 सेनापति ने युवक को इस
निर्देश के साथ विदा कर दिया, “किसी को भी यह मालूम न होने पाए कि तुमने
मुझे यह सूचना दी है.” 23 तब सेनापति ने दो शताधिपतियों को बुलाकर आज्ञा
दी, “रात के तीसरे घंटे तक दो सौ सैनिकों को लेकर कयसरिया नगर को
प्रस्थान करो. उनके साथ सत्तर घुड़सवार तथा दो सौ भालाधारी सैनिक भी हों.
24 पौलॉस के लिए घोड़े की सवारी का प्रबंध करो कि वह राज्यपाल फ़ेलिक्स
के पास सुरक्षित पहुंचा दिए जाएं.” 25 सेनापति ने उनके हाथ यह पत्र भेज
दिया: 26 परमश्रेष्ठ राज्यपाल फ़ेलिक्स की सेवा में, क्लॉदियॉस लिसियस का
सादर, नमस्कार. 27 जब इस व्यक्ति को यहूदियों ने दबोचा और इसकी हत्या
करने पर ही थे, मैं घटना स्थल पर अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ जा पहुंचा
और इसे उनके पंजों से मुक्त कराया क्योंकि मुझे यह मालूम हुआ कि यह एक
रोमी नागरिक है. 28 तब इस पर लगाए आरोपों की पुष्टि के उद्देश्य से मैंने इसे
उनकी महासभा के सामने प्रस्तुत किया. 29 वहां मुझे यह मालूम हुआ कि इस
पर लगाए गए आरोप मात्र उनकी ही व्यवस्था की विधियों से संबंधित हैं, न कि
ऐसे, जिनके लिए हमारे नियमों के अनुसार मृत्यु दंड या कारावास दिया जाए.
30 फिर मुझे यह सूचना प्राप्त हुई कि इस व्यक्ति के विरुद्ध हत्या का षड्यंत्र रचा
जा रहा है. मैंने इसे बिना देर किए आपके पास भेजने का निश्चय किया. मैंने
आरोपियों को भी ये निर्देश दे दिए हैं कि वे इसके विरुद्ध सभी आरोप आपके ही
सामने प्रस्तुत करें. 31 इसलिये आज्ञा के अनुसार सैनिकों ने रातों-रात पौलॉस
को अन्तिपातरिस नगर के पास पहुंचा दिया. 32 दूसरे दिन घुड़सवारों को
पौलॉस के साथ भेजकर वे स्वयं सैनिक गढ़ लौट आए. 33 कयसरिया नगर
पहुंचकर उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र सौंपा और पौलॉस को उनके सामने
प्रस्तुत किया. 34 पत्र पढ़कर राज्यपाल ने पौलॉस से प्रश्न किया कि वह किस
प्रदेश के हैं. यह मालूम होने पर कि वह किलिकिया प्रदेश के हैं 35 राज्यपाल ने
कहा, “तुम्हारे आरोपियों के यहां पहुंचने पर ही मैं तुम्हारी सुनवाई करूंगा”
और उसने पौलॉस को हेरोदेस के राजमहल परिसर में रखने की आज्ञा दी.

24 पांच दिन बाद महापुरोहित हननयाह पुरनियों तथा तरतुलुस नामक एक
वकील के साथ कयसरिया नगर आ पहुंचे और उन्होंने राज्यपाल के
सामने पौलॉस के विरुद्ध अपने आरोप प्रस्तुत किए. 2 जब पौलॉस को वहां लाया
गया, राज्यपाल के सामने तरतुलुस ने पौलॉस पर आरोप लगाने प्रारंभ कर दिए:
“आपकी दूरदृष्टि के कारण आपके शासन में लंबे समय से शांति बनी रही है तथा
आपके शासित प्रदेश में इस राष्ट्र के लिए आपके द्वारा लगातार सुधार किए जा
रहे हैं. 3 परमश्रेष्ठ राज्यपाल फ़ेलिक्स, हम इनका हर जगह और हर प्रकार से
धन्यवाद करते हुए हार्दिक स्वागत करते हैं. 4 मैं आपका और अधिक समय
खराब नहीं करूंगा. मैं आपसे यह छोटा सा उत्तर सुनने की विनती करना चाहता
हूं. 5 “यह व्यक्ति हमारे लिए वास्तव में कष्टदायक कीड़ा साबित हो रहा है. यह
एक ऐसा व्यक्ति है, जो विश्व के सारे यहूदियों के बीच मतभेद पैदा कर रहा है.
यह एक कुख्यात नाज़री पंथ का मुखिया भी है. 6 इसने मंदिर की पवित्रता भंग
करने की भी कोशिश की है इसलिये हमने इसे बंदी बना लिया. [हम तो अपनी
ही व्यवस्था की विधियों के अनुसार इसका न्याय करना चाह रहे थे. 7 किंतु
सेनापति लिसियस ने ज़बरदस्ती दखलंदाज़ी कर इसे हमसे छीन लिया 8 तथा
हमें आपके सामने अपने आरोप प्रस्तुत होने की आज्ञा दी.] कि आप स्वयं
स्थिति की जांच कर इन सभी आरोपों से संबंधित सच्चाईयों को जान सकें.”
9 तब दूसरे यहूदियों ने भी आरोप लगाना प्रारंभ कर दिया और इस बात की पुष्टि
की कि ये सभी आरोप सही हैं. 10 राज्यपाल फ़ेलिक्स की ओर से संकेत प्राप्त
होने पर पौलॉस ने इसके उत्तर में कहना प्रारंभ किया. “इस बात के प्रकाश में
कि आप इस राष्ट्र के न्यायाधीश रहे हैं, मैं खुशी से अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा
हूं. 11 आप इस सच्चाई की पुष्टि कर सकते हैं कि मैं लगभग बारह दिन पहले
सिर्फ आराधना के उद्देश्य से येरूशलेम गया 12 और इन्होंने न तो मुझे मंदिर में,
न यहूदी आराधनालय में और न नगर में किसी से वाद-विवाद करते या नगर की
शांति भंग करते पाया है और 13 न ही वे मुझ पर लगाए जा रहे इन आरोपों को

साबित कर सकते हैं. 14 हां यह मैं आपके सामने अवश्य स्वीकार करता हूं
कि इस मत के अनुसार, जिसे इन्होंने पंथ नाम दिया है, मैं वास्तव में हमारे
पूर्वजों के ही परमेश्वर की सेवा-उपासना करता हूं. सब कुछ, जो व्यवस्था और
भविष्यद्वक्ताओं के लेखों के अनुसार है, मैं उसमें पूरी तरह विश्वास करता हूं.
15 परमेश्वर में मेरी भी वह आशा है जैसी इनकी कि निश्चित ही एक ऐसा
दिन तय किया गया है, जिसमें धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों ही का पुनरुत्थान
होगा. 16 इसलिए मैं भी परमेश्वर और मनुष्यों दोनों ही के सामने हमेशा एक
निष्कलंक विवेक बनाए रखने की भरपूर कोशिश करता हूं. 17 "अनेक वर्षों
के बीत जाने के बाद मैं अपने समाज के गरीबों के लिए सहायता राशि लेकर
तथा बलि चढ़ाने के उद्देश्य से येरूशलेम आया था. 18 उसी समय इन्होंने मंदिर
में मुझे शुद्ध होने की रीति पूरी करते हुए देखा. वहां न कोई भीड़ थी और न ही
किसी प्रकार का शोर. 19 हां, उस समय वहां आसिया प्रदेश के कुछ यहूदी
अवश्य थे, जिनका यहां आपके सामने उपस्थित होना सही था. यदि उन्हें मेरे
विरोध में कुछ कहना ही था तो सही यही था कि वे इसे आपकी उपस्थिति
में कहते. 20 अन्यथा ये व्यक्ति, जो यहां खड़े हैं, स्वयं बताएं कि महासभा
के सामने उन्होंने मुझे किस विषय में दोषी पाया है, 21 केवल इस एक बात
को छोड़ के, जो मैंने उनके सामने ऊंचे शब्द में व्यक्त किया: 'मरे हुओं के
पुनरुत्थान में मेरी मान्यता के कारण आज आपके सामने मुझ पर मुकद्दमा चलाया
जा रहा है.'" 22 किंतु राज्यपाल फ़ेलिक्स ने, जो इस पंथ से भली-भांति
परिचित था, सुनवाई को स्थगित करते हुए घोषणा की, "सेनापति लिसियस के
आने पर ही मैं इस विषय में निर्णय दूंगा." 23 उसने शताधिपति को आज्ञा दी कि
पौलॉस को कारावास में तो रखा जाए किंतु उन्हें इतनी स्वतंत्रता अवश्य दी जाए
कि उनके खास मित्र आकर उनकी सेवा कर सकें. 24 कुछ दिनों के बाद
फ़ेलिक्स अपनी पत्नी द्रूसिल्ला के साथ वहां आया, जो यहूदी थी. उसने पौलॉस
को बुलवाने की आज्ञा दी और उनसे उनके मसीह येशु में विश्वास विषय पर बातें
सुनी. 25 जब पौलॉस धार्मिकता, संयम तथा आनेवाले न्याय का वर्णन कर रहे
थे, फ़ेलिक्स ने भयभीत हो पौलॉस से कहा, "इस समय तो तुम जाओ. जब मेरे
पास समय होगा, मैं स्वयं तुम्हें बुलवा लूंगा." 26 फ़ेलिक्स पौलॉस से धनराशि
प्राप्ति की आशा लगाए हुए था. इसी आशा में वह पौलॉस को बातचीत के लिए
बार-बार अपने पास बुलवाता था. 27 यही क्रम दो वर्षों तक चलता रहा. तब
फ़ेलिक्स के स्थान पर पोर्कियॉस फ़ेस्तुस इस पद पर चुना गया और यहूदियों
को प्रसन्न करने के उद्देश्य से फ़ेलिक्स ने पौलॉस को बंदी ही बना रहने दिया.

25 कार्यभार संभालने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस कयसरिया नगर से येरूशलेम
गया. 2 वहां उसके सामने प्रधान पुरोहितों और यहूदी अगुओं ने पौलॉस
के विरुद्ध मुकद्दमा प्रस्तुत किया. उन्होंने फ़ेस्तुस से विनती की 3 कि वह विशेष
कृपादृष्टि कर पौलॉस को येरूशलेम भेज दें. वास्तव में उनकी योजना मार्ग में
घात लगाकर पौलॉस की हत्या करने की थी. 4 फ़ेस्तुस ने इसके उत्तर में कहा,
"पौलॉस तो कयसरिया में बंदी है और मैं स्वयं शीघ्र वहां जा रहा हूं. 5 इसलिये
आप में से कुछ प्रधान व्यक्ति मेरे साथ वहां चलें. यदि पौलॉस को वास्तव में
दोषी पाया गया तो उस पर मुकद्दमा चलाया जाएगा." 6 आठ-दस दिन ठहरने
के बाद फ़ेस्तुस कयसरिया लौट गया और अगले दिन पौलॉस को न्यायालय में
लाने की आज्ञा दी. 7 पौलॉस के वहां आने पर येरूशलेम से आए यहूदियों ने
उन्हें घेर लिया और उन पर अनेक गंभीर आरोपों की बौछार शुरू कर दी, जिन्हें
वे स्वयं साबित न कर पाए. 8 अपने बचाव में पौलॉस ने कहा, "मैंने न तो
यहूदियों की व्यवस्था के विरुद्ध किसी भी प्रकार का अपराध किया है और न ही
मंदिर या कयसर के विरुद्ध." 9 फिर भी यहूदियों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से
फ़ेस्तुस ने पौलॉस से प्रश्न किया, "क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे इन आरोपों की
सुनवाई मेरे सामने येरूशलेम में हो?" 10 इस पर पौलॉस ने उत्तर दिया, "मैं
कयसर के न्यायालय में खड़ा हूं. ठीक यही है कि मेरी सुनवाई यहीं हो. मैंने
यहूदियों के विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया है; यह तो आपको भी भली-भांति
मालूम है. 11 यदि मैं अपराधी ही हूं और यदि मैंने मृत्यु दंड के योग्य कोई
अपराध किया ही है, तो मुझे मृत्यु दंड स्वीकार है. किंतु यदि इन यहूदियों द्वारा
मुझ पर लगाए आरोप सच नहीं हैं तो किसी को यह अधिकार नहीं कि वह मुझे
इनके हाथों में सौंपे. यहां मैं अपनी सुनवाई की याचिका कयसर के न्यायालय
में भेज रहा हूं." 12 अपनी महासभा से विचार-विमर्श के बाद फ़ेस्तुस ने घोषणा
की, "ठीक है. तुमने कयसर से सुनवाई की विनती की है तो तुम्हें कयसर के
पास ही भेजा जाएगा." 13 कुछ समय बाद राजा अग्रिप्पा तथा बेरनिके फ़ेस्तुस
से भेंट करने कयसरिया नगर आए. 14 वे वहां बहुत समय तक ठहरे. फ़ेस्तुस ने
राजा को पौलॉस के विषय में इस प्रकार बताया: "फ़ेलिक्स एक बंदी को यहां
छोड़ गया है. 15 जब मैं येरूशलेम गया हुआ था; वहां प्रधान पुरोहितों तथा
यहूदी प्राचीनों ने उस पर आरोप लगाए थे. उन्होंने उसे मृत्यु दंड दिए जाने की
मांग की. 16 "मैंने उनके सामने रोमी शासन की नीति स्पष्ट करते हुए उनसे कहा
कि इस नीति के अंतर्गत दोषी और दोष लगानेवालों के आमने-सामने सवाल
जवाब किए बिना तथा दोषी को अपनी सफ़ाई पेश करने का अवसर दिए बिना
दंड के लिए सौंप देना सही नहीं है. 17 इसलिये उनके यहां इकट्ठा होते ही मैंने
बिना देर किए दूसरे ही दिन इस व्यक्ति को न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने की
आज्ञा दी. 18 जब आरोपी खड़े हुए, उन्होंने उस पर सवाल जवाब शुरू कर दिए
किंतु मेरे अनुमान के विपरीत, ये आरोप उन अपराधों के नहीं थे जिनकी मुझे
आशा थी 19 ये उनके पारस्परिक मतभेद थे, जिनका संबंध मात्र उनके विश्वास
से तथा येशु नामक किसी मृत व्यक्ति से था, जो इस बंदी पौलॉस के अनुसार
जीवित है. 20 मैं समझ नहीं पा रहा था कि इस प्रकार के विषय का पता कैसे
किया जाए. इसलिये मैंने यह जानना चाहा, क्या वह येरूशलेम में मुकद्दमा
चलाए जाने के लिए राज़ी है. 21 किंतु पौलॉस की इस विनती पर कि सम्राट के
निर्णय तक उसे कारावास में रखा जाए, मैंने उसे कयसर के पास भेजे जाने तक
बंदी बनाए रखने की आज्ञा दी है." 22 राजा अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा,
"मैं स्वयं उसका बचाव सुनना चाहूंगा." फ़ेस्तुस ने उसे आश्वासन देते हुए
कहा, "ठीक है, कल ही सुन लीजिए." 23 अगले दिन जब राजा अग्रिप्पा
और बेरनिके ने औपचारिक धूमधाम के साथ सभागार में प्रवेश किया, उनके
साथ सेनापति और गणमान्य नागरिक भी थे. फ़ेस्तुस की आज्ञा पर पौलॉस को
वहां लाया गया. 24 फ़ेस्तुस ने कहना शुरू किया, "महाराज अग्रिप्पा तथा
उपस्थित सज्जनो! इस व्यक्ति को देखिए, जिसके विषय में सारे यहूदी समाज ने
येरूशलेम और यहां कयसरिया में मेरे न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की है. ये
लोग चिल्ला-चिल्लाकर यह कह रहे हैं कि अब उसे एक क्षण भी जीवित रहने
का अधिकार नहीं है. 25 किंतु अपनी जांच में मैंने इसमें ऐसा कुछ भी नहीं
पाया जिसके लिए उसे मृत्यु दंड दिया जाए और अब, जब उसने स्वयं सम्राट के
न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की है, मैंने उसे रोम भेज देने का निश्चय किया है.
26 फिर भी, उसके विषय में मेरे पास कुछ भी तय नहीं है जिसे लिखकर
महाराजाधिराज की सेवा में प्रस्तुत किया जाए. यही कारण है कि मैंने उसे आप
सबके सामने प्रस्तुत किया है—विशेष रूप से महाराज अग्रिप्पा आपके सामने,
जिससे कि सारी जांच पूरी होने पर मुझे लिखने के लिए कुछ सबूत मिल जाएं,
जो सम्राट की सेवा में प्रस्तुत किए जा सकें. 27 क्योंकि मेरे लिए यह गलत है
कि किसी भी दोषी को उसके आरोपों के वर्णन के बिना आगे भेजा जाए."

26 इसलिये राजा अग्रिप्पा ने पौलॉस को संबोधित करते हुए कहा, "तुम्हें
अपना पक्ष प्रस्तुत करने की आज्ञा है." इसलिये पौलॉस ने एक
बोलनेवाले की मुद्रा में हाथ उठाते हुए अपने बचाव में कहना शुरू किया. 2
"महाराज अग्रिप्पा, आज मैं स्वयं को धन्य मान रहा हूं, जो मैं यहां यहूदियों

द्वारा लगाए गए आरोपों के विरुद्ध उत्तर देनेवाले के रूप में आपके सामने खड़ा
हुआ हूं. **3** विशेष रूप से इसलिये भी कि आप यहूदी प्रथाओं तथा समस्याओं
को भली-भांति जानते हैं. इसलिये मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मेरा पक्ष
धीरज से सुनें. **4** "मेरे देश तथा येरूशलेम में सभी यहूदी मेरी युवावस्था से लेकर
अब तक की जीवनशैली से अच्छी तरह से परिचित हैं. **5** इसलिये कि लंबे
समय से वे मुझसे परिचित हैं, वे चाहें तो, इस सच्चाई की गवाही भी दे सकते हैं
कि मैंने फ़रीसी संप्रदाय के अनुरूप, जो कट्टरतम मत है, जीवन जिया है. **6**
आज मैं परमेश्वर द्वारा हमारे पूर्वजों को दी गई प्रतिज्ञा की आशा के कारण यहां
दोषी के रूप में खड़ा हूं. **7** यह वही प्रतिज्ञा है, जिसके पूरे होने की आशा हमारे
बारह गोत्र दिन-रात सच्चाई में परमेश्वर की सेवा-उपासना करते हुए कर रहे हैं.
महाराज, आज मुझ पर यहूदियों द्वारा मुकद्दमा इसी आशा के कारण चलाया जा
रहा है. **8** किसी के लिए भला यह अविश्वसनीय क्यों है कि परमेश्वर मरे हुओं
को जीवित करते हैं? **9** "मेरी अपनी मान्यता भी यही थी कि नाज़रेथवासी येशु
के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना ज़रूरी है. **10** येरूशलेम में मैंने ठीक
यही किया भी. प्रधान पुरोहितों से अधिकार पत्र लेकर मैं अनेक शिष्यों को
कारागार में डाल देता था, जब उनकी हत्या की जाती थी तो उसमें मेरी भी
सम्मति होती थी. **11** अक्सर सभी यहूदी आराधनालयों में जाकर मैं उन्हें दंडित
करते हुए मसीह येशु की निंदा के लिए बाध्य करने का प्रयास भी करता था और
क्रोध में पागल होकर मैं उनका पीछा करते हुए सीमा पार के नगरों में भी उन्हें
सताया करता था. **12** "इसी उद्देश्य से एक बार मैं प्रधान पुरोहितों से अधिकार
पत्र प्राप्त कर दमिश्क नगर जा रहा था. **13** महाराज! दोपहर के समय मैंने और
मेरे सहयात्रियों ने आकाश से सूर्य से भी कहीं अधिक तेज ज्योति देखी. **14**
जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, मुझे इब्री भाषा में संबोधित करता हुआ एक शब्द
सुनाई दिया, 'शाऊल! शाऊल! तुम मुझे क्यों सता रहे हो? पैने पर लात मारना
तुम्हारे लिए ही हानिकारक है.' **15** "मैंने प्रश्न किया, 'आप कौन हैं, प्रभु?'
"प्रभु ने उत्तर दिया 'मैं येशु हूं तुम जिसे सता रहे हो, **16** किंतु उठो, खड़े हो
जाओ क्योंकि तुम्हें दर्शन देने का मेरा उद्देश्य यह है कि न केवल, जो कुछ तुमने
देखा है परंतु वह सब, जो मैं तुम्हें अपने विषय में दिखाऊंगा, उसके लिए तुम्हें
सेवक और गवाह ठहराऊं. **17** यहूदियों तथा गैर-यहूदियों से, जिनके बीच मैं
तुम्हें भेज रहा हूं, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा **18** कि उनकी आंखें खोलूं तथा उन्हें
अंधकार से निकालकर ज्योति में और शैतान के अधिकार से परमेश्वर के राज्य
में ले आऊं कि वे पाप क्षमा प्राप्त कर सकें और उनके सामने आ जाएं, जो मुझमें
विश्वास के द्वारा परमेश्वर के लिए अलग किए गए हैं.' **19** "इसलिये महाराज
अग्रिप्पा, मैंने स्वर्गीय दर्शन की बात नहीं टाली. **20** मैंने सबसे पहले दमिश्क
नगर में, इसके बाद येरूशलेम तथा सारे यहूदिया प्रदेश तथा गैर-यहूदियों में भी
यह प्रचार किया कि वे पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर लौट आएं तथा अपने
स्वभाव के द्वारा अपने पश्चाताप को प्रमाणित करें. **21** यही वह कारण है कि
कुछ यहूदियों ने मंदिर में मुझे पकड़कर मेरी हत्या करनी चाही. **22** अब तक
मुझे परमेश्वर की सहायता प्राप्त होती रही, जिसके परिणामस्वरूप मैं आप और
छोटे-बड़े सभी के सामने उसी सच्चाई के पूरा होने की घोषणा कर रहा हूं
जिसका वर्णन मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं ने किया था **23** कि मसीह दुःख
भोगेंगे और मरे हुओं में से जी उठने में सबसे पहले होने के कारण वह यहूदियों
और गैर-यहूदियों दोनों ही में ज्योति की घोषणा करेंगे." **24** जब पौलॉस अपने
बचाव में यह कह ही रहे थे, फ़ेस्तुस ने ऊंचे शब्द में कहा, "पौलॉस! तुम्हारी तो
मति भ्रष्ट हो गई है. तुम्हारी बहुत शिक्षा तुम्हें पागल बना रही है." **25** किंतु
पौलॉस ने उत्तर दिया, "अत्यंत सम्मान्य फ़ेस्तुस महोदय, मेरी मति भ्रष्ट नहीं
हुई है! मेरा कथन सच और ज्ञान के है. **26** महाराज तो इन विषयों से परिचित
हैं. मैं बड़े आत्मविश्वास के साथ उनसे यह सब कह रहा हूं. मुझे पूरा निश्चय है
कि इन विषयों में से कुछ भी उनके लिए नया नहीं है क्योंकि इनमें से कुछ भी
गुप्त में नहीं किया गया. **27** महाराज अग्रिप्पा, क्या आप भविष्यद्वक्ताओं का
विश्वास करते हैं? मैं जानता हूं कि आप विश्वास करते हैं." **28** अग्रिप्पा ने
पौलॉस से कहा, "तुम सोच रहे हो कि तुम शीघ्र ही मुझे मसीही होने के लिए
सहमत कर लोगे!" **29** पौलॉस ने उत्तर दिया, "शीघ्र ही या विलंब से, परमेश्वर
से मेरी तो यही विनती है कि न केवल आप, परंतु ये सभी सुननेवाले, जो आज
मेरी बातें सुन रहे हैं, मेरे ही समान हो जाएं—सिवाय इन बेड़ियों के." **30** तब
राजा, राज्यपाल, बेरनिके और वे सभी, जो उनके साथ वहां बैठे हुए थे, खड़े हो
गए तथा **31** न्यायालय से बाहर निकलकर आपस में विचार-विमर्श करने लगे:
"इस व्यक्ति ने मृत्यु दंड या कारावास के योग्य कोई अपराध नहीं किया है!"
32 राजा अग्रिप्पा ने राज्यपाल फ़ेस्तुस से कहा, "यदि इस व्यक्ति ने कयसर से
दोहाई का प्रस्ताव न किया होता तो इसे छोड़ दिया गया होता!"

27 जब यह तय हो गया कि हमें जलमार्ग से इतालिया जाना है तो उन्होंने
पौलॉस तथा कुछ अन्य बंदियों को राजकीय सैन्य दल के यूलियुस
नामक शताधिपति को सौंप दिया. **2** हम सब आद्रामुत्तेयुम नगर के एक जलयान
पर सवार हुए, जो आसिया प्रदेश के समुद्र के किनारे के नगरों से होते हुए जाने
के लिए तैयार था. जलमार्ग द्वारा हमारी यात्रा शुरू हुई. आरिस्तारख़ॉस भी
हमारा साथी यात्री था, जो मकेदोनिया प्रदेश के थेस्सलोनिकेयुस नगर का वासी
था. **3** अगले दिन हम सीदोन नगर पहुंच गए. भले दिल से यूलियुस ने पौलॉस
को नगर में जाकर अपने प्रियजनों से मिलने और उनसे आवश्यक वस्तुएं ले
आने की आज्ञा दे दी. **4** वहां से हमने यात्रा दोबारा शुरू की और उल्टी हवा
बहने के कारण हमें सैप्रस द्वीप की ओट से आगे बढ़ना पड़ा. **5** जब हम समुद्र में
यात्रा करते हुए किलिकिया और पम्फ़ूलिया नगरों के तट से होते हुए लुकिया के
मूरा नगर पहुंचे. **6** वहां शताधिपति को यह मालूम हुआ कि अलेक्सान्द्रिया का
एक जलयान इतालिया देश जाने के लिए तैयार खड़ा है. इसलिये उसने हमें उसी
पर सवार करवा दिया. **7** हमें धीमी गति से यात्रा करते अनेक दिन हो गए थे.
हमारा क्नीदॉस नगर पहुंचना कठिन हो गया क्योंकि उल्टी हवा चल रही
थी. इसलिये हम सालमोने के सामने वाला क्रेते द्वीप के पास से होते हुए आगे
बढ़ गए. **8** बड़ी कठिनाई में उसके पास से होते हुए हम एक स्थान पर पहुंचे
जिसका नाम था कालॉस लिमेनस अर्थात् मनोरम बंदरगाह. लासिया नगर इसी
के पास स्थित है. **9** बहुत अधिक समय खराब हो चुका था. हमारी जल-यात्रा
खतरे से भर गई थी, क्योंकि सर्दी के मौसम में तय किया हुआ प्रायश्चित बलि
दिवस बीत चुका था. इसलिये पौलॉस ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, **10** "मुझे
साफ़ दिखाई दे रहा है कि हमारी यह यात्रा हानिकारक है. इसके कारण जलयान
व सामान की ही नहीं परंतु स्वयं हमारे जीवनों की घोर हानि होने पर है." **11**
किंतु शताधिपति ने पौलॉस की चेतावनी की अनसुनी कर जलयान चालक तथा
जलयान स्वामी का सुझाव स्वीकार कर लिया. **12** ठंड के दिनों में यह बंदरगाह
इस योग्य नहीं रह जाता था कि इसमें ठहरा जाए. इसलिये बहुमत था कि आगे
बढ़ा जाए. उन्होंने इस आशा में यात्रा शुरू कर दी कि किसी प्रकार ठंड शुरू होने
के पहले फ़ॉयनिके नगर तो पहुंच ही जाएंगे. यह क्रेते द्वीप का बंदरगाह था,
जिसका द्वार दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दिशा में है. **13** जब सामान्य
दक्षिण वायु बहने लगी, उन्हें ऐसा लगा कि उन्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो गई
है. इसलिये उन्होंने लंगर उठा लिया और क्रेते द्वीप के किनारे समुद्र से होते हुए
आगे बढ़े. **14** वे अभी अधिक दूर न जा पाए थे कि यूराकिलो नामक भयंकर
चक्रवाती हवा बहने लगी और **15** जलयान इसकी चपेट में आ गया. वह इस
तेज हवा के थपेड़ों का सामना करने में असमर्थ था. इसलिये हमने यान को इसी
हवा के बहाव में छोड़ दिया और हवा के साथ बहने लगे. **16** कौदा नामक एक
छोटे द्वीप की ओर हवा के बहाव में बहते हुए हम बड़ी कठिनाई से जीवनरक्षक

नाव को जलयान से बांध पाए. 17 उन्होंने जलयान को पेंदे से लेकर ऊपर तक
रस्सों द्वारा अच्छी रीति से कस दिया और इस आशंका से कि कहीं उनका
जलयान सिर्तिस के उथले समुद्र की रेत में फंस न जाए, उन्होंने लंगर को थोड़ा
नीचे उतारकर जलयान को हवा के बहाव के साथ साथ बहने के लिए छोड़
दिया. 18 अगले दिन तेज लहरों और भयंकर आंधी के थपेड़ों के कारण
उन्होंने यान में लदा हुआ सामान फेंकना शुरू कर दिया. 19 तीसरे दिन वे अपने
ही हाथों से जलयान के भारी उपकरणों को फेंकने लगे. 20 अनेक दिन तक न
तो सूर्य ही दिखाई दिया और न ही तारे. हवा का बहाव तेज बना हुआ था
इसलिये हमारे जीवित बचे रहने की सारी आशा धीरे धीरे खत्म होती चली गई.
21 एक लंबे समय तक भूखे रहने के बाद पौलॉस ने उनके मध्य खड़े होकर यह
कहा, "मित्रो, उत्तम तो यह होता कि आप लोग मेरा विचार स्वीकार करते और
क्रेते द्वीप से आगे ही न बढ़ते जिससे इस हानि से बचा जा सकता. 22 अब
आपसे मेरी विनती है कि आप साहस न छोड़ें क्योंकि जलयान के अलावा
किसी के भी जीवन की हानि नहीं होगी; 23 क्योंकि वह, जो मेरे परमेश्वर हैं
और मैं जिनका सेवक हूं, उनका एक स्वर्गदूत रात में मेरे पास आ खड़ा हुआ
24 और उसने मुझे धीरज दिया, 'मत डर, पौलॉस, तुम्हें कयसर के सामने
उपस्थित होना ही है. परमेश्वर ने अपनी करुणा में तुम्हें और तुम्हारे साथ यात्रा
करनेवालों को जीवनदान दिया है.' 25 इसलिये साथियो, साहस न छोड़ो
क्योंकि मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं. ठीक वैसा ही होगा जैसा मुझे बताया
गया है. 26 हम अवश्य ही किसी द्वीप के थल पर पहुंच जाएंगे." 27 चौदहवें
दिन-रात के समय, जब हम आद्रिया सागर में लहरों के थपेड़ों के बीच आगे
बढ़ रहे थे, आधी रात को नाविकों को यह अहसास हुआ कि वे थल के पास
पहुंच रहे हैं. 28 जब उन्होंने गहराई नापी तो पाया कि गहराई सैंतीस मीटर थी.
कुछ और आगे बढ़ने पर गहराई सत्ताईस मीटर निकली. 29 इस आशंका से कि
कहीं वे चट्टानों से टकरा न जाएं उन्होंने जलयान की पिछली ओर से चार
लंगर डाल दिए और उत्सुकता से सुबह होने की कामना करने लगे. 30 जलयान
से पीछा छुड़ाकर भागने के कार्य में नाविकों ने जीवनरक्षक नाव को जल में इस
प्रकार उतारा मानो वे सामने की ओर के लंगर नीचे कर रहे हों. 31 पौलॉस ने
शताधिपति और सैनिकों को चेतावनी देते हुए कहा, "यदि ये लोग जलयान पर
न रहे तो आप भी जीवित न रह सकेंगे." 32 इसलिये सैनिकों ने उन रस्सियों
को काट दिया जिससे वह नाव लटकी हुई थी. 33 पौलॉस ने उन सबसे कुछ
खा लेने की विनती की, "चौदह दिन से आप अनिश्चितता की स्थिति का
सामना करते आ रहे हैं और आप लोगों ने कुछ खाया भी नहीं है. 34 इसलिये
आपसे मेरी विनती यह है कि आप कुछ तो अवश्य खा लें. जिससे की आपका
बचाव हो. आपके सिर का एक बाल भी नाश न होगा." 35 यह कहते हुए
उन्होंने रोटी ली और सभी के सामने उसके लिए परमेश्वर के प्रति धन्यवाद
प्रकट किया, उसे तोड़ा और खाने लगे. 36 वे सभी उत्साहित हो गए और सभी
ने भोजन किया. 37 जलयान में हम सब कुल दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे. 38
भरपेट भोजन कर उन्होंने जलयान में लदा हुआ गेहूं समुद्र में फेंकना आरंभ कर
दिया कि जलयान का बोझ कम हो जाए. 39 दिन निकलने पर वे उस जगह को
पहचान तो न सके किंतु तभी उन्हें खाड़ी-जैसा समुद्र का किनारा दिखाई दिया.
उन्होंने निश्चय कर लिया कि यदि संभव हो तो जलयान को वहीं लगा दें. 40
उन्होंने लंगर समुद्र में काट गिराए, पाल के रस्से ढीले कर दिए और समुद्र के
किनारे की ओर बढ़ने के लक्ष्य से सामने के पाल खोल दिए, 41 किंतु जलयान
रेत में फंस गया. उसका अगला भाग तो स्थिर हो गया किंतु पिछला भाग लहरों
के थपेड़ों से टूटता चला गया. 42 सैनिकों ने सभी कैदियों को मार डालने की
योजना की कि उनमें से कोई भी तैर कर भाग न जाए 43 किंतु शताधिपति
पौलॉस को सुरक्षित ले जाना चाहता था; इसलिये उसने सैनिकों का इरादा पूरा न
होने दिया और यह आज्ञा दी कि वे, जो तैर सकते हैं, कूद कर तैरते हुए जलयान
से पहले भूमि पर पहुंच जाएं 44 और बाकी यात्री जलयान के टूटे अंशों तथा
पटरों के सहारे किसी प्रकार भूमि पर पहुंच जाएं. इस प्रकार सभी यात्री भूमि पर
सुरक्षित पहुंच गए.

28 जब सभी यात्री वहां सुरक्षित आ गए. तब हमें मालूम हुआ कि इस द्वीप
का नाम मैलिते था. 2 वहां के निवासियों ने हमारे प्रति अनोखी दया
दिखाई. लगातार वर्षा के कारण तापमान में गिरावट आ गई थी. ठंड के कारण
उन्होंने आग जलाकर हमारा स्वागत किया. 3 जब पौलॉस ने लकड़ियों का
एक गट्ठा आग पर रखा ही था कि ताप के कारण एक विषैला सांप उसमें से
निकलकर उनकी बांह पर लिपट गया. 4 वहां के निवासियों ने इस जंतु को
उनकी बांह से लटका देखा तो आपस में कहने लगे, "सचमुच यह व्यक्ति
हत्यारा है. समुद्री बाढ़ से तो यह बच निकला है किंतु न्याय-देवी नहीं चाहती
कि यह जीवित रहे." 5 किंतु पौलॉस ने उस जंतु को आग में झटक दिया और
उनका कोई बुरा नहीं हुआ. 6 वे सभी यह इंतजार करते रहे कि उनकी बांह सूज
जाएगी या वह किसी भी क्षण मरकर गिर पड़ेंगे. वे देर तक इसी की प्रतीक्षा
करते रहे किंतु उनके साथ कुछ भी असामान्य नहीं हुआ. इसलिये लोगों का
नज़रिया ही बदल गया और वे कहने लगे कि पौलॉस एक देवता हैं. 7 उस
स्थान के पास ही एक भूमिखंड था, जो उस द्वीप के प्रधान शासक पुब्लियुस की
संपत्ति थी. उसने हमें अपने घर में आमंत्रित किया और तीन दिन तक हमारी
विशेष आवभगत की. 8 उसका पिता बीमार था. वह ज्वर और आंव से पीड़ित
पड़ा था. पौलॉस उसे देखने गए. उसके लिए प्रार्थना करने तथा उस पर हाथ
रखने के द्वारा उन्होंने उस व्यक्ति को स्वस्थ कर दिया. 9 परिणामस्वरूप उस
द्वीप के अन्य रोगी भी पौलॉस के पास आने लगे और स्वस्थ होते चले गए. 10
उन्होंने अनेक प्रकार से हमारा सम्मान किया. जब हमने वहां से जल-यात्रा शुरू
की, उन्होंने वे सारी वस्तुएं, जो हमारे लिए ज़रूरी थी, जलयान पर रख दीं. 11
तीन महीने बाद हमने अलेक्सान्द्रिया जा रहे जलयान पर यात्रा शुरू की. यह
जलयान ठंड के कारण इस द्वीप में ठहरा हुआ था. इस यान के अगले भाग
पर एक जोड़ी देवताओं की एक आकृति—दिओस्कूरोईस गढ़ी हुई थी. 12
सायराक्यूज़ नगर पहुंचने पर हम वहां तीन दिन रहे. 13 वहां से आगे बढ़कर हम
रेगियम नगर पहुंचे. एक दिन बाद जब हमें दक्षिण वायु मिली हम फिर आगे बढ़े
और दूसरे दिन पुतेओली नगर जा पहुंचे. 14 वहां कुछ भाई बहिन थे, जिन्होंने
हमें अपने घर में ठहरने के लिए आमंत्रित किया. हम वहां सात दिन ठहरे.
आखिरकार हम रोम नगर पहुंच गए. 15 हमारे विषय में समाचार मिलने पर भाई
बहिन हमसे भेंट करने अप्पियुस के चौक तथा त्रिओन ताबेरनॉन नामक स्थान
तक आए. उन्हें देख पौलॉस ने बहुत आनंदित हो परमेश्वर के प्रति धन्यवाद
प्रकट किया. 16 रोम पहुंचने पर पौलॉस को अकेले रहने की आज्ञा मिल गई
किंतु उन पर पहरे के लिए एक सैनिक को ठहरा दिया गया था. 17 तीन दिन
बाद उन्होंने यहूदी अगुओं की एक सभा बुलाई. उनके इकट्ठा होने पर पौलॉस ने
उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "मेरे प्रिय भाइयो, यद्यपि मैंने स्वजातीय यहूदियों
तथा हमारे पूर्वजों की प्रथाओं के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया है फिर भी मुझे
येरूशलेम में बंदी बनाकर रोमी सरकार के हाथों में सौंप दिया गया है. 18 मेरी
जांच करने के बाद वे मुझे रिहा करने के लिए तैयार थे क्योंकि उन्होंने मुझे
प्राण-दंड का दोषी नहीं पाया. 19 किंतु जब यहूदियों ने इसका विरोध किया तो
मुझे मजबूर होकर कयसर के सामने दोहाई देनी पड़ी—इसलिये नहीं कि मुझे
अपने राष्ट्र के विरुद्ध कोई आरोप लगाना था. 20 मैंने आप लोगों से मिलने की
आज्ञा इसलिये ली है कि मैं आपसे विचार-विमर्श कर सकूं, क्योंकि यह बेड़ी
मैंने इस्राएल की आशा की भलाई में धारण की है." 21 उन्होंने पौलॉस को
उत्तर दिया, "हमें यहूदिया प्रदेश से आपके संबंध में न तो कोई पत्र प्राप्त हुआ है

और न ही किसी ने यहां आकर आपके विषय में कोई प्रतिकूल सूचना दी है. 22
हमें इस मत के विषय में आपसे ही आपके विचार सुनने की इच्छा थी. हमें
मालूम है कि हर जगह इस मत का विरोध हो रहा है." 23 तब इसके लिए एक
दिन तय किया गया और निर्धारित समय पर बड़ी संख्या में लोग उनके घर
पर आए. सुबह से लेकर शाम तक पौलॉस सच्चाई से परमेश्वर के राज्य के
विषय में शिक्षा देते रहे तथा मसीह येशु के विषय में मोशेह की व्यवस्था और
भविष्यद्वक्ताओं के लेखों से स्पष्ट करके उन्हें दिलासा दिलाते रहे. 24 उनकी
बातों को सुनकर उनमें से कुछ तो मान गए, किंतु कुछ अन्यों ने इसका विश्वास
नहीं किया. 25 जब वे एक दूसरे से सहमत न हो सके तो वे पौलॉस की इस
अंतिम बात को सुनकर जाने लगे: "भविष्यवक्ता यशायाह ने पवित्र आत्मा के
द्वारा आप लोगों के पूर्वजों पर एक ठीक सच्चाई ही प्रकाशित की थी: 26
"'इन लोगों से जाकर कहो, "तुम लोग सुनते तो रहोगे, किंतु समझोगे नहीं.
तुम लोग देखते भी रहोगे, किंतु पहचान न सकोगे." 27 क्योंकि इन लोगों का
हृदय जड़ हो चुका है. अपने कानों से वे कदाचित ही कुछ सुन पाते हैं और
आंखें तो उन्होंने मूंद ही रखी हैं, कि कहीं वे आंखों से देख न लें और कानों से
सुन न लें और अपने हृदय से समझकर लौट आएं और मैं, परमेश्वर, उन्हें स्वस्थ
और पूर्ण बना दूं.' 28 "इसलिये यह सही है कि आपको यह मालूम हो जाए कि
परमेश्वर का यह उद्धार अब गैर-यहूदियों के लिए भी मौजूद है. वे भी इसे
स्वीकार करेंगे." [29 उनकी इन बातों के बाद यहूदी वहां से आपस में झगड़ते
हुए चले गए.] 30 पौलॉस वहां अपने भाड़े के मकान में पूरे दो साल रहे. वह
भेंट करने आए व्यक्तियों को पूरे दिल से स्वीकार करते थे. 31 वह निडरता से,
बिना रोक-टोक के, पूरे साफ़-साफ़ शब्दों में परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते
और प्रभु येशु मसीह के विषय में शिक्षा देते रहे.

रोमियों

1 यह पत्र पौलॉस की ओर से है, जो मसीह येशु का दास है, जिसका आगमन एक प्रेरित के रूप में हुआ तथा जो परमेश्वर के उस ईश्वरीय सुसमाचार के लिए अलग किया गया है, 2 जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने पहले ही अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र अभिलेखों में की थी, 3 जो उनके पुत्र के संबंध में थी, जो शारीरिक दृष्टि से दावीद के वंशज थे, 4 जिन्हें, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मरे हुओं में से जिलाए जाने के कारण, परमेश्वर का पुत्र ठहराया गया; वही अपना प्रभु येशु मसीह. 5 उन्हीं के द्वारा हमने कृपा तथा प्रेरिताई प्राप्त की है कि हम उन्हीं के लिए सभी गैर-यहूदियों में विश्वास करके आज्ञाकारिता प्रभावी करें, 6 जिनमें से तुम भी मसीह येशु के होने के लिए बुलाए गए हो. 7 यह पत्र रोम नगर में उन सभी के नाम है, जो परमेश्वर के प्रिय हैं, जिनका बुलावा पवित्र होने के लिए किया गया है. परमेश्वर हमारे पिता तथा प्रभु येशु मसीह की ओर से तुममें अनुग्रह और शांति बनी रहे. 8 सबसे पहले, मैं तुम सबके लिए मसीह येशु के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं क्योंकि तुम्हारे विश्वास की कीर्ति पूरे विश्व में फैलती जा रही है. 9 परमेश्वर, जिनके पुत्र के ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार मैं पूरे हृदय से कर रहा हूं, मेरे गवाह हैं कि मैं तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में कैसे लगातार याद किया करता हूं 10 और विनती करता हूं कि यदि संभव हो तो परमेश्वर की इच्छा अनुसार मैं तुमसे भेंट करने आऊं. 11 तुमसे भेंट करने के लिए मेरी बहुत इच्छा इसलिये है कि तुम्हें आत्मिक रूप से मजबूत करने के उद्देश्य से कोई आत्मिक वरदान प्रदान करूं 12 कि तुम और मैं आपस में एक दूसरे के विश्वास द्वारा प्रोत्साहित हो जाएं. 13 प्रिय भाई बहिनो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि मैंने अनेक बार तुम्हारे पास आने की योजना बनाई है कि मैं तुम्हारे बीच वैसे ही उत्तम परिणाम देख सकूं जैसे मैंने बाकी गैर-यहूदियों में देखे हैं किंतु अब तक इसमें रुकावट ही पड़ती रही है. 14 मैं यूनानियों तथा बरबरों, बुद्धिमानों तथा निर्बुद्धियों दोनों ही का कर्ज़दार हूं. 15 इसलिये मैं तुम्हारे बीच भी—तुम, जो रोम नगर में हो—ईश्वरीय सुसमाचार सुनाने के लिए उत्सुक हूं. 16 ईश्वरीय सुसमाचार मेरे लिए लज्जा का विषय नहीं है. यह उन सभी के उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य है, जो इसमें विश्वास करते हैं. सबसे पहले यहूदियों के लिए और यूनानियों के लिए भी. 17 क्योंकि इसमें विश्वास से विश्वास के लिए परमेश्वर की धार्मिकता का प्रकाशन होता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: वह, जो विश्वास द्वारा धर्मी है, जीवित रहेगा. 18 स्वर्ग से परमेश्वर का क्रोध उन मनुष्यों की अभक्ति तथा दुराचरण पर प्रकट होता है, जो सच्चाई को अधर्म में दबाए रहते हैं 19 क्योंकि परमेश्वर के विषय में जो कुछ भी जाना जा सकता है, वह ज्ञान मनुष्यों पर प्रकट है—इसे स्वयं परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है. 20 सच यह है कि सृष्टि के प्रारंभ ही से परमेश्वर के अनदेखे गुण, उनकी अनंत सामर्थ्य तथा उनका परमेश्वरत्व उनकी सृष्टि में स्पष्ट है और दिखाई देता है. इसलिये मनुष्य के पास अपने इस प्रकार के स्वभाव के बचाव में कोई भी तर्क शेष नहीं रह जाता. (aïdios g126) 21 परमेश्वर का ज्ञान होने पर भी उन्होंने न तो परमेश्वर को परमेश्वर के योग्य सम्मान दिया और न ही उनका आभार माना. इसके विपरीत उनकी विचार शक्ति व्यर्थ हो गई तथा उनके जड़ हृदयों पर अंधकार छा गया. 22 उनका दावा था कि वे बुद्धिमान हैं किंतु वे बिलकुल मूर्ख साबित हुए, 23 क्योंकि उन्होंने अविनाशी परमेश्वर के प्रताप को बदलकर नाशमान मनुष्य, पक्षियों, पशुओं तथा रेंगते जंतुओं में कर दिया. 24 इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उनके हृदय की अभिलाषाओं की मलिनता के लिए छोड़ दिया कि वे आपस में बुरे कामों में अपने शरीर का अनादर करें. 25 ये वे हैं, जिन्होंने परमेश्वर के सच का बदलाव झूठ से किया. ये वे हैं, जिन्होंने सृष्टि की वंदना अर्चना की, न कि सृष्टिकर्ता की, जो सदा-सर्वदा वंदनीय हैं. आमेन. (aiōn g165) 26 यह देख परमेश्वर ने उन्हें निर्लज्ज कामनाओं को सौंप दिया. फलस्वरूप उनकी स्त्रियों ने प्राकृतिक यौनाचार के स्थान पर अप्राकृतिक यौनाचार अपना लिया. 27 इसी प्रकार स्त्रियों के साथ प्राकृतिक यौनाचार को छोड़कर पुरुष अन्य पुरुष के लिए कामाग्नि में जलने लगे. पुरुष, पुरुष के साथ ही निर्लज्ज व्यवहार करने लगे, जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने ही शरीर में अपनी अपंगता का दुष्परिणाम प्राप्त हुआ. 28 इसके बाद भी उन्होंने यह उचित न समझा कि परमेश्वर के समग्र ज्ञान को स्वीकार करें, इसलिये परमेश्वर ने उन्हें वह सब करने के लिए, जो अनुचित था, निकम्मे मन के वश में छोड़ दिया. 29 उनमें सब प्रकार की बुराइयां समा गईं: दुष्टता, लोभ, दुष्कृति, जलन, हत्या, झगड़ा, छल, दुर्भाव, कानाफूसी, 30 दूसरों की निंदा, परमेश्वर से घृणा, असभ्य, घमंड, डींग मारना, षड़्यंत्र रचना, माता-पिता की आज्ञा टालना, 31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती, कठोरता और निर्दयता. 32 यद्यपि वे परमेश्वर के धर्ममय अध्यादेश से परिचित हैं कि इन सबका दोषी व्यक्ति मृत्यु दंड के योग्य है, वे न केवल स्वयं ऐसा काम करते हैं, परंतु उन्हें भी पूरा समर्थन देते हैं, जो इनका पालन करते हैं.

2 उपरोक्त के प्रकाश में तुममें से प्रत्येक आरोपी के पास अपने बचाव के लिए कोई भी तर्क बाकी नहीं रह जाता क्योंकि जिस विषय को लेकर तुम उस अन्य को दोषी घोषित कर रहे हो, उस विषय में तुम स्वयं पर दंड की आज्ञा प्रसारित कर रहे हो क्योंकि जिस विषय के लिए तुम उसे दोषी घोषित कर रहे हो, तुम स्वयं वही करते हो. 2 हमें यह मालूम है कि परमेश्वर अवश्य ही उन्हें दंड देंगे, जो इन बुरे कामों का पालन करते हैं 3 और जबकि तुम स्वयं इनका पालन करते हो, उन पर उंगली उठा रहे हो, जो इनका पालन करते हैं! क्या तुम यह सोचते हो कि तुम परमेश्वर के दंड से बच जाओगे? 4 या इस सच्चाई को पहचाने बिना कि परमेश्वर की कृपा ही तुम्हें पश्चाताप करना सिखाती है, तुमने परमेश्वर के अनुग्रह, धीरज और सहनशीलता रूपी धन को तुच्छ समझा है? 5 तुम अपने हठीले मनवाले तथा पश्चाताप विरोधी हृदय के कारण अपने ही लिए उस क्रोध के दिन पर परमेश्वर के सच्चे न्याय के प्रकाशन के अवसर के लिए क्रोध जमा कर रहे हो. 6 परमेश्वर ही प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देंगे: 7 जिन्होंने महिमा, गौरव और अमरता को पाने के लिए अच्छे काम करते हुए बिना थके मेहनत की है, उन्हें अनंत जीवन (aiōnios g166) 8 और जो स्वार्थी हैं, सच का तिरस्कार तथा दुष्टता का पालन करते हैं, उन्हें कोप और क्रोध. 9 प्रत्येक बुरा करनेवाले के लिए दर्द और संकट तय किए गए हैं—सबसे पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए भी 10 मगर प्रत्येक अच्छे काम करनेवाले के लिए महिमा, आदर और शांति तय हैं—सबसे पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए भी. 11 पक्षपात परमेश्वर में है ही नहीं. 12 वे सभी जिन्होंने व्यवस्था को बिना जाने पाप किया है, व्यवस्था को बिना जाने नाश भी होंगे किंतु जिन्होंने व्यवस्था को जानकर पाप किया है, उनका न्याय भी व्यवस्था के अनुसार ही किया जाएगा. 13 परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी वे नहीं, जो व्यवस्था के सुननेवाले हैं परंतु धर्मी वे हैं, जो व्यवस्था का पालन करनेवाले हैं. 14 व्यवस्था से पूरी तरह अनजान गैर-यहूदी अपनी मूल प्रवृत्ति के प्रभाव से व्यवस्था का पालन करते पाए जाते हैं. इसलिये व्यवस्था न होने पर भी वे स्वयं अपने लिए व्यवस्था हैं. 15 इसके द्वारा वे यह प्रदर्शित करते हैं कि उनके हृदयों पर व्यवस्था लिखी है. इसकी गवाह है उनकी अंतरात्मा, जो उन पर दोष लगाने या उनके बचाव के द्वारा स्थिति का अनुमान लगाती है. 16 यह सब उस दिन स्पष्ट हो जाएगा जब परमेश्वर मसीह येशु के द्वारा मेरे माध्यम से प्रस्तुत ईश्वरीय सुसमाचार के अनुसार मनुष्य के गुप्त कामों का न्याय करेंगे. 17 किंतु तुम—यदि तुम यहूदी हो तथा व्यवस्था का पालन करते हो; परमेश्वर से अपने

संबंध का तुम्हें गर्व है; 18 तुम्हें परमेश्वर की इच्छा मालूम है, तुम अच्छी-
अच्छी वस्तुओं के समर्थक हो क्योंकि तुम्हें इनके विषय में व्यवस्था से सिखाया
गया है; 19 तुम्हें यह निश्चय है कि तुम दृष्टिहीनों के लिए सही मार्गदर्शक हो;
जो अंधकार में हैं उनके लिए ज्योति हो; 20 मंदबुद्धियों के गुरु तथा बालकों के
शिक्षक हो क्योंकि तुमने व्यवस्था में उस ज्ञान तथा उस सच्चाई के नमूने को
पहचान लिया है; 21 इसलिये तुम, जो अन्यों को शिक्षा देते हो, स्वयं को शिक्षा
क्यों नहीं देते? तुम, जो यह उपदेश देते हो, "चोरी मत करो," क्या तुम स्वयं
ही चोरी नहीं करते! 22 तुम, जो यह सिखाते हो, "व्यभिचार अनुचित है,"
क्या तुम स्वयं ही व्यभिचार में लीन नहीं हो! तुम, जो मूर्तियों से घृणा का
दिखावा करते हो, स्वयं ही उनके मंदिर नहीं लूटते! 23 तुम, जो व्यवस्था पर
गर्व करते हो, क्या तुम स्वयं ही व्यवस्था भंग कर परमेश्वर की ही प्रतिष्ठा भंग
नहीं करते! 24 जैसा कि पवित्र शास्त्र का ही लेख है: तुम गैर-यहूदियों के बीच
परमेश्वर की निंदा के कारण हो. 25 इसमें संदेह नहीं कि ख़तना का अपना
महत्व है; उसी स्थिति में, जब तुम व्यवस्था का पालन करते हो; किंतु यदि तुमने
व्यवस्था भंग कर ही दी तो तुम्हारा ख़तना, ख़तना रहित समान हो गया. 26
इसलिये यदि कोई बिना ख़तना का व्यक्ति व्यवस्था के आदेशों का पालन करता
है, तब क्या उसका बिना ख़तना के होना ख़तना होने जैसा न हुआ? 27 तब
शारीरिक रूप से बिना ख़तना के वह व्यक्ति, जो शारीरिक रूप से व्यवस्था
का पालन करनेवाला है, क्या तुम पर उंगली न उठाएगा—तुम, जो स्वयं पर
व्यवस्था की छाप लगाए हुए तथा ख़तना किए हुए भी हो और फिर भी व्यवस्था
भंग करते हो? 28 वास्तविक यहूदी वह नहीं, जिसका मात्र बाहरी स्वरूप यहूदी
जैसा है; और न वास्तविक ख़तना वह है, जो बाहरी रूप से मात्र शरीर में ही
किया गया है; 29 यहूदी वह है, जो अपने मन में यहूदी है तथा ख़तना वह है,
जो पवित्र आत्मा के द्वारा हृदय का किया जाता है, न कि वह, जो मात्र व्यवस्था
के अंतर्गत किया जाता है. इस प्रकार के व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्यों द्वारा नहीं,
परंतु परमेश्वर द्वारा की जाती है.

3 तब भला यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तना से क्या उपलब्धि? 2 हर एक
नज़रिए से बहुत कुछ! सबसे पहले तो यह कि यहूदियों को ही परमेश्वर के
ईश्वरीय वचन सौंपे गए. 3 इससे क्या अंतर पड़ता है कि कुछ ने विश्वास नहीं
किया. क्या उनका अविश्वास परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को समाप्त कर देता
है? नहीं! बिलकुल नहीं! 4 संसार का प्रत्येक व्यक्ति झूठा साबित हो सकता है
किंतु परमेश्वर ही हैं, जो अपने वचन का पालन करते रहेंगे, जैसा कि पवित्र
शास्त्र का लेख है: "आप अपनी बातों में धर्मी साबित हों तथा न्याय होने पर
जय पाएं." 5 किंतु यदि हमारे अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता दिखाते हैं तो हम
क्या कहें? क्या परमेश्वर के क्रोधित होने पर उन्हें अधर्मी कहा जाएगा? मैं यह
सब मानवीय नज़रिए से कह रहा हूं, 6 नहीं! बिलकुल नहीं! यह हो ही नहीं
सकता! अन्यथा परमेश्वर संसार का न्याय कैसे करेंगे? 7 यदि मेरे झूठ के कारण
परमेश्वर का सच उनकी महिमा के लिए अधिक करके प्रकट होता है तो अब
भी मुझे पापी घोषित क्यों किया जा रहा है? 8 तब यह कहने में क्या नुकसान
है—जैसा कि हमारे लिए निंदा से भरे शब्दों में यह दावा भी कहा जा रहा कि
यह हमारा ही कहना है—कि "चलो बुराई करें कि इससे ही कुछ भला हो
जाए?" उन पर घोषित दंड सही है. 9 तब? क्या हम उनसे उत्तम हैं? बिलकुल
नहीं! हम पहले ही यह स्पष्ट कर चुके हैं कि यहूदी तथा यूनानी सभी पाप के
अधीन हैं. 10 पवित्र शास्त्र का लेख भी यही है: "कोई भी धर्मी नहीं—एक
भी नहीं; 11 कोई भी नहीं, जिसमें सोचने की शक्ति है; कोई भी नहीं, जो
परमेश्वर को खोजता है! 12 सभी परमेश्वर से दूर हो गए, वे सब निकम्मे हो गए.
कोई भी भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं." 13 "उनके गले खुली कब्र
तथा उनकी जीभ छल-कपट का साधन हैं." "उनके होंठों से घातक सांपों का
विष छलकता है." 14 "उनके मुंह शाप तथा कड़वाहट से भरे हुए हैं." 15
"उनके पांव लहू बहाने के लिए फुर्तीले हैं; 16 विनाश तथा क्लेश उनके मार्ग में
बिछे हैं, 17 शांति के मार्ग से वे हमेशा अनजान हैं." 18 "उसकी दृष्टि में
परमेश्वर के प्रति कोई भय है ही नहीं." 19 अब हमें यह तो मालूम हो गया कि
व्यवस्था के निर्देश उन्हीं से कहते हैं, जो व्यवस्था के अधीन हैं कि हर एक मुंह
बंद हो जाए और पूरा विश्व परमेश्वर के सामने हिसाब देनेवाला हो जाए 20
क्योंकि सिर्फ व्यवस्था के पालन करने के द्वारा कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की
दृष्टि में धर्मी घोषित नहीं होगा. व्यवस्था के द्वारा सिर्फ यह अहसास होता है कि
पाप क्या है. 21 किंतु अब स्थिति यह है कि व्यवस्था के बिना ही परमेश्वर की
धार्मिकता प्रकट हो गई है, जिसका वर्णन पवित्र शास्त्र तथा भविष्यवक्ता करते रहे
थे 22 अर्थात् मसीह येशु में विश्वास द्वारा उपलब्ध परमेश्वर की धार्मिकता, जो
उन सबके लिए है, जो मसीह येशु में विश्वास करते हैं, क्योंकि कोई भेद नहीं
23 क्योंकि पाप सभी ने किया है और सभी परमेश्वर की महिमा से दूर हो गए
हैं 24 किंतु परमेश्वर के अनुग्रह से पाप के छुटकारे द्वारा, प्रत्येक उस सेंत-
मेंत छुटकारे में धर्मी घोषित किया जाता है, जो मसीह येशु में है. 25 मसीह
येशु, जिन्हें परमेश्वर ने उनके लहू में विश्वास द्वारा प्रायश्चित बलि के रूप में
सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया. इसमें उनका लक्ष्य था कि अपनी ही धार्मिकता
का सबूत मिलें, क्योंकि परमेश्वर अपनी सहनशीलता के कारण पूर्व युगों में
किए गए पाप-दंड को इसलिये टालते रहे 26 कि परमेश्वर इस वर्तमान युग
में अपनी धार्मिकता प्रकट करें कि वह स्वयं को तथा उसे धर्मी घोषित करें,
जिसका विश्वास मसीह येशु में है. 27 तब हमारे घमंड का क्या हुआ? उसका
बहिष्कार कर दिया गया है. किस सिद्धांत के द्वारा? कामों के सिद्धांत के द्वारा?
नहीं! यह हुआ है विश्वास की व्यवस्था द्वारा. 28 हमारी मान्यता यह है: मनुष्य
व्यवस्था का सिर्फ पालन करने के द्वारा नहीं परंतु अपने विश्वास द्वारा धर्मी
घोषित किया जाता है. 29 क्या परमेश्वर सिर्फ यहूदियों ही के परमेश्वर हैं? क्या
वह गैर-यहूदियों के परमेश्वर नहीं? निःसंदेह, वह उनके भी परमेश्वर हैं; 30
क्योंकि परमेश्वर एक हैं. वही ख़तना किए हुओं तथा ख़तना रहित दोनों को
उनके विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित करेंगे. 31 तो क्या हमारा विश्वास व्यवस्था
को व्यर्थ ठहराता है? नहीं! बिलकुल नहीं! इसके विपरीत अपने विश्वास के
द्वारा हम व्यवस्था को स्थिर करते हैं.

4 हम अपने गोत्रपिता अब्राहाम के विषय में क्या कहें—क्या था इस विषय में
उनका अनुभव? 2 यदि कामों के द्वारा अब्राहाम को धार्मिकता प्राप्त हुई तो
वह इसका घमंड अवश्य कर सकते थे, किंतु परमेश्वर के सामने नहीं. 3 पवित्र
शास्त्र का लेख क्या है? अब्राहाम ने परमेश्वर में विश्वास किया और इसी को
उनकी धार्मिकता के रूप में मान्यता दी गई. 4 मज़दूर की मज़दूरी उसका उपहार
नहीं, अधिकार है. 5 वह व्यक्ति, जो व्यवस्था का पालन तो नहीं करता किंतु
परमेश्वर में, जो अधर्मी को निर्दोष घोषित करते हैं, विश्वास करता है, इसी
विश्वास के द्वारा धर्मी व्यक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त करता है. 6 जैसे दावीद ने
उस व्यक्ति की धन्यता का वर्णन किया है, जिसे परमेश्वर ने व्यवस्था का पालन
न करने पर भी धर्मी घोषित किया: 7 धन्य हैं वे, जिनके अपराध क्षमा कर दिए
गए, जिनके पापों को ढांप दिया गया है. 8 धन्य है वह व्यक्ति, जिसके पापों
का हिसाब प्रभु कभी न लेंगे. 9 क्या यह आशीषें मात्र ख़तना वालों तक ही
सीमित है या इसमें ख़तना रहित भी शामिल हैं? हमारा मत यह है: अब्राहाम के
विश्वास को उनकी धार्मिकता के रूप में मान्यता दी गई. 10 उन्हें यह मान्यता
किस अवस्था में दी गई थी? जब उनका ख़तना हुआ तब या जब वह ख़तना
रहित ही थे? ख़तना की अवस्था में नहीं परंतु ख़तना रहित अवस्था में. 11
उन्होंने ख़तना का चिह्न—विश्वास की धार्मिकता की मोहर—उस समय प्राप्त
किया, जब वह ख़तना रहित ही थे इसका उद्देश्य था उन्हें उन सबके पिता-

स्वरूप प्रतिष्ठित किया जाए, जो बिना ख़तना के विश्वास करेंगे, कि इस विश्वास
को उनकी धार्मिकता के रूप में मान्यता प्राप्त हो; 12 साथ ही अब्राहाम को उन
ख़तना किए हुओं के पिता के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए, जो ख़तना किए हुए ही
नहीं परंतु जो हमारे पिता अब्राहाम के उस विश्वास का स्वभाव रखते हैं, जो
उन्होंने अपने ख़तना के पहले ही दिखाया था. 13 उस प्रतिज्ञा का आधार, जो
अब्राहाम तथा उनके वंशजों से की गई थी कि अब्राहाम पृथ्वी के वारिस होंगे,
व्यवस्था नहीं परंतु विश्वास की धार्मिकता थी. 14 यदि व्यवस्था का पालन
करने से उन्हें मीरास प्राप्त होती है तो विश्वास खोखला और प्रतिज्ञा बेअसर
साबित हो गई है. 15 व्यवस्था क्रोध का पिता है किंतु जहां व्यवस्था है ही नहीं,
वहां व्यवस्था का उल्लंघन भी संभव नहीं! 16 परिणामस्वरूप विश्वास ही उस
प्रतिज्ञा का आधार है, कि परमेश्वर के अनुग्रह में अब्राहाम के सभी वंशजों को
यह प्रतिज्ञा निश्चित रूप से प्राप्त हो सके—न केवल उन्हें, जो व्यवस्था के
अधीन हैं परंतु उन्हें भी, जिनका विश्वास वैसा ही है, जैसा अब्राहाम का, जो हम
सभी के गोत्रपिता हैं. 17 जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: "मैंने तुम्हें अनेक
राष्ट्रों का पिता ठहराया है." हमारे गोत्रपिता अब्राहाम ने उन्हीं परमेश्वर में
विश्वास किया, जो मरे हुओं को जीवन देते हैं तथा अस्तित्व में आने की आज्ञा
उन्हें देते हैं, जो हैं ही नहीं. 18 बिलकुल निराशा की स्थिति में भी अब्राहाम ने
उनसे की गई इस प्रतिज्ञा के ठीक अनुरूप उस आशा में विश्वास किया: वह
अनेकों राष्ट्रों के पिता होंगे, ऐसे ही होंगे तुम्हारे वंशज. 19 अब्राहाम जानते थे
कि उनका शरीर मरी हुए दशा में था क्योंकि उनकी आयु लगभग सौ वर्ष थी
तथा साराह का गर्भ तो मृत था ही. फिर भी वह विश्वास में कमजोर नहीं हुए.
20 उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के संबंध में अपने विश्वास में विचलित न होकर,
स्वयं को उसमें मजबूत करते हुए परमेश्वर की महिमा की 21 तथा पूरी तरह
निश्चिंत रहे कि वह, जिन्होंने यह प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करने में भी सामर्थ्यी
हैं. 22 इसलिये अब्राहाम के लिए यही विश्वास की धार्मिकता मानी गई. 23
उनके लिए धार्मिकता मानी गई, ये शब्द मात्र उन्हीं के विषय में नहीं हैं, 24
परंतु इनका संबंध हमसे भी है, जिन्हें परमेश्वर की ओर से धार्मिकता की मान्यता
प्राप्त होगी—हम, जिन्होंने विश्वास उनमें किया है—जिन्होंने हमारे प्रभु येशु
मसीह को मरे हुओं से दोबारा जीवित किया, 25 जो हमारे अपराधों के कारण
मृत्यु दंड के लिए सौंपे गए तथा हमें धर्मी घोषित कराने के लिए दोबारा जीवित
किए गए.

5 इसलिये जब हम अपने विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित किए जा चुके हैं,
परमेश्वर से हमारा मेल-मिलाप हमारे प्रभु येशु मसीह के द्वारा हो चुका है, 2
जिनके माध्यम से विश्वास के द्वारा हमारी पहुंच उस अनुग्रह में है, जिसमें हम
अब स्थिर हैं. अब हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित हैं. 3 इतना
ही नहीं, हम अपने क्लेशों में भी आनंदित बने रहते हैं. हम जानते हैं कि क्लेश
में से धीरज; 4 धीरज में से खरा चरित्र तथा खरे चरित्र में से आशा उत्पन्न होती
है 5 और आशा लज्जित कभी नहीं होने देती क्योंकि हमें दी हुई पवित्र आत्मा
द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया गया है. 6 जब हम निर्बल ही
थे, सही समय पर मसीह येशु ने अधर्मियों के लिए मृत्यु स्वीकार की. 7 शायद
ही कोई किसी व्यवस्था के पालन करनेवाले के लिए अपने प्राण दे दे. हां,
संभावना यह अवश्य है कि कोई किसी परोपकारी के लिए प्राण देने के लिए
तैयार हो जाए 8 किंतु परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार प्रकट किया
कि जब हम पापी ही थे, मसीह येशु ने हमारे लिए अपने प्राण त्याग दिए. 9 हम
मसीह येशु के लहू के द्वारा धर्मी घोषित तो किए ही जा चुके हैं, इससे कहीं
बढ़कर यह है कि हम उन्हीं के कारण परमेश्वर के क्रोध से भी बचाए जाएंगे.
10 जब शत्रुता की अवस्था में परमेश्वर से हमारा मेल-मिलाप उनके पुत्र की मृत्यु
के द्वारा हो गया तो इससे बढ़कर यह है कि मेल-मिलाप हो जाने के कारण उनके
पुत्र के जीवन द्वारा हमारा उद्धार सुनिश्चित है. 11 इतना ही नहीं, मसीह येशु के
कारण हम परमेश्वर में आनंदित हैं जिनके कारण हम इस मेल-मिलाप की स्थिति
तक पहुंचे हैं. 12 एक मनुष्य के कारण पाप ने संसार में प्रवेश किया तथा पाप के
द्वारा मृत्यु ने और मृत्यु सभी मनुष्यों में समा गई—क्योंकि पाप सभी ने किया.
13 पाप व्यवस्था के प्रभावी होने से पहले ही संसार में मौजूद था लेकिन जहां
व्यवस्था ही नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता! 14 आदम से मोशेह तक मृत्यु का
शासन था—उन पर भी, जिन्होंने आदम के समान अनाज्ञाकारिता का पाप नहीं
किया था. आदम उनके प्रतिरूप थे, जिनका आगमन होने को था. 15 अपराध,
वरदान के समान नहीं. एक मनुष्य के अपराध के कारण अनेकों की मृत्यु हुई,
जबकि परमेश्वर के अनुग्रह तथा एक मनुष्य, मसीह येशु के अनुग्रह में दिया
हुआ वरदान अनेकों अनेक में स्थापित हो गया. 16 परमेश्वर का वरदान उसके
समान नहीं, जो एक मनुष्य के अपराध के परिणामस्वरूप आया. एक ओर तो
एक अपराध से न्याय-दंड की उत्पत्ति हुई, जिसका परिणाम था दंड-आज्ञा मगर
दूसरी ओर अनेकों अपराधों के बाद वरदान की उत्पत्ति हुई, जिसका परिणाम
था धार्मिकता. 17 क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण एक ही मनुष्य
के माध्यम से मृत्यु का शासन हो गया, तब इससे कहीं अधिक फैला हुआ है
बड़ा अनुग्रह तथा धार्मिकता का वह वरदान, जो उनके जीवन में उस एक
मनुष्य, मसीह येशु के द्वारा शासन करेगा. 18 इसलिये जिस प्रकार मात्र एक
अपराध का परिणाम हुआ सभी के लिए दंड-आज्ञा, उसी प्रकार धार्मिकता के
मात्र एक काम का परिणाम हुआ सभी मनुष्यों के लिए जीवन की धार्मिकता.
19 जिस प्रकार मात्र एक व्यक्ति की अनाज्ञाकारिता के परिणामस्परूप अनेकों
अनेक पापी हो गए, उसी प्रकार एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से अनेक धर्मी
बना दिए जाएंगे. 20 व्यवस्था बीच में आई कि पाप का अहसास तेज हो. जब
पाप का अहसास तेज हुआ तो अनुग्रह कहीं अधिक तेज होता गया 21 कि
जिस प्रकार पाप ने मृत्यु में शासन किया, उसी प्रकार अनुग्रह धार्मिकता के द्वारा
हमारे प्रभु येशु मसीह में अनंत जीवन के लिए शासन करे. (aiōnios g166)

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप करते जाएं कि अनुग्रह बहुत होता
जाए? 2 नहीं! बिलकुल नहीं! यह कैसे संभव है कि हम, जो पाप के प्रति
मर चुके हैं, उसी में जीते रहें? 3 कहीं तुम इस सच्चाई से अनजान तो नहीं कि
हम सभी, जो मसीह येशु में बपतिस्मा ले चुके हैं, उनकी मृत्यु में बपतिस्मा लिए
हुए हैं? 4 इसलिये मृत्यु के बपतिस्मा में हम उनके साथ दफनाए जा चुके हैं कि
जिस प्रकार मसीह येशु पिता के प्रताप में मरे हुओं में से जीवित किए गए, हम
भी जीवन की नवीनता में व्यवहार करें. 5 यदि हम मसीह येशु की मृत्यु की
समानता में उनके साथ जोड़े गए हैं तो निश्चित ही हम उनके पुनरुत्थान की
समानता में भी उनके साथ जोड़े जाएंगे. 6 हमें यह मालूम है कि हमारा पहले
का मनुष्यत्व मसीह येशु के साथ ही क्रूसित हो गया था कि हमारे पाप का शरीर
निर्बल हो जाए और इसके बाद हम पाप के दास न रहें 7 क्योंकि जिसकी मृत्यु
हो चुकी, वह पाप की अधीनता से मुक्त हो चुका. 8 अब, यदि मसीह येशु के
साथ हमारी मृत्यु हो चुकी है, हमारा विश्वास है कि हम उनके साथ जीवित भी
रहेंगे. 9 हम यह जानते हैं कि मरे हुओं में से जीवित मसीह येशु की मृत्यु अब
कभी नहीं होगी; उन पर मृत्यु का अधिकार नहीं रहा. 10 उनकी यह मृत्यु
हमेशा के लिए पाप के प्रति मृत्यु थी. अब उनका जीवन परमेश्वर से जुड़ा हुआ
जीवन है. 11 इसलिये तुम भी अपने आपको पाप के प्रति मरा हुआ तथा मसीह
येशु में परमेश्वर के प्रति जीवित समझो. 12 अतःएव तुम अपने मरणशील शरीर
में पाप का शासन न रहने दो कि उसकी लालसाओं के प्रति समर्पण करो. 13
अपने शरीर के अंगों को पाप के लिए अधर्म के साधन के रूप में प्रस्तुत न करते
जाओ परंतु स्वयं को मरे हुओं में से जीवितों के समान परमेश्वर के सामने प्रस्तुत
करो तथा अपने शरीर के अंगों को परमेश्वर के लिए धार्मिकता के साधन के रूप

में प्रस्तुत करो. 14 पाप की तुम पर प्रभुता नहीं रहेगी क्योंकि तुम व्यवस्था के
नहीं परंतु अनुग्रह के अधीन हो. 15 तो? क्या हम पापमय जीवन में लीन
रहें—क्योंकि अब हम व्यवस्था के नहीं परंतु अनुग्रह के अधीन हैं? नहीं!
बिलकुल नहीं! 16 क्या तुम्हें यह अहसास नहीं कि किसी के आज्ञापालन के
प्रति समर्पित हो जाने पर तुम उसी के दास बन जाते हो, जिसका तुम आज्ञापालन
करते हो? चाहे वह स्वामी पाप हो, जिसका अंत है मृत्यु या आज्ञाकारिता,
जिसका अंत है धार्मिकता. 17 हम परमेश्वर के आभारी हैं कि तुम, जो पाप के
दास थे, हृदय से उसी शिक्षा का पालन करने लगे हो, जिसके प्रति तुम समर्पित
हुए थे 18 और अब पाप से छुटकारा पाकर तुम धार्मिकता के दास बन गए हो.
19 तुम्हारी शारीरिक दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए मानवीय दृष्टि से मैं यह
कह रहा हूं: जिस प्रकार तुमने अपने अंगों को अशुद्धता और अराजकता के
दासत्व के लिए समर्पित कर दिया था, जिसका परिणाम था दिनोंदिन बढ़ती
अराजकता; अब तुम अपने अंगों को धार्मिकता के दासत्व के लिए समर्पित कर
दो, जिसका परिणाम होगा परमेश्वर के लिए तुम्हारा अलग किया जाना. 20
इसलिये कि जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे 21 इसलिये
जिनके लिए तुम आज लज्जित हो, उन सारे कामों से तुम्हें कौन सा लाभांश
उपलब्ध हुआ? क्योंकि उनका अंत तो मृत्यु है. 22 किंतु अब तुम पाप से मुक्त
होकर परमेश्वर के दास बनकर वह लाभ कमा रहे हो, जिसका परिणाम है
(परमेश्वर के लिए) पवित्र किया जाना और इसका नतीजा है अनंत जीवन.
(aiōnios g166) 23 क्योंकि पाप की मज़दूरी मृत्यु है, किंतु हमारे प्रभु येशु
मसीह में परमेश्वर का वरदान अनंत जीवन है. **(aiōnios g166)**

7 प्रिय भाई बहिनो, तुम जो व्यवस्था से परिचित हो, क्या तुम्हें यह मालूम
नहीं कि किसी भी व्यक्ति पर व्यवस्था की प्रभुता उसी समय तक रहती है
जब तक वह जीवित है? 2 कानूनी तौर पर विवाहित स्त्री अपने पति से उसी
समय तक बंधी रहती है जब तक उसका पति जीवित है, किंतु पति की मृत्यु होने
पर वह कानूनी रूप से अपने पति से मुक्त हो जाती है. 3 यदि अपने पति के
जीवित रहते हुए वह किसी अन्य पुरुष से संबंध बनाती है तो वह व्यभिचारिणी
कहलाती है किंतु अपने पति की मृत्यु के बाद वह कानूनी रूप से स्वतंत्र हो जाती
है और अन्य पुरुष से विवाह करने पर व्यभिचारिणी नहीं कहलाती. 4 इसलिये
मेरे प्रिय भाई बहिनो, तुम भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के प्रति मरे हुए हो
कि तुम अन्य से जुड़ जाओ—उनसे, जो मरे हुओं में से जीवित किए गए कि
परमेश्वर के लिए हमारा जीवन फलदायी हो. 5 जिस समय हम पाप के स्वभाव
द्वारा नियंत्रित थे, पाप की लालसाएं, जो व्यवस्था द्वारा उत्तेजित की जाती थी,
मृत्यु के फल के लिए हमारे अंगों में सक्रिय थी, 6 किंतु अब हम उसके प्रति
मरे सरीखे होकर, जिसने हमें बांध रखा था, व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिए गए हैं
कि हम व्यवस्था द्वारा स्थापित पुरानी रीति पर नहीं परंतु पवित्र आत्मा द्वारा एक
नई रीति में सेवा करने लग जाएं. 7 तब क्या इससे यह सिद्ध होता है कि व्यवस्था
दोषी है? नहीं! बिलकुल नहीं! इसके विपरीत, व्यवस्था के बिना मेरे लिए पाप
को पहचानना ही असंभव होता. मुझे लोभ के विषय में ज्ञान ही न होता यदि
व्यवस्था यह आज्ञा न देता: लोभ मत करो. 8 पाप ने ही आज्ञा के माध्यम
से अच्छा अवसर मिलने पर मुझमें हर एक प्रकार का लालच उत्पन्न कर
दिया. यही कारण है कि व्यवस्था के बिना पाप मृत है. 9 एक समय था जब मैं
व्यवस्था से स्वतंत्र अवस्था में जीवित था किंतु जब आज्ञा का आगमन हुआ,
पाप जीवित हुआ 10 और मेरी मृत्यु हो गई, और वह आज्ञा जिससे मुझे जीवित
होना था, मेरी मृत्यु का कारण बनी 11 क्योंकि पाप ने, आज्ञा में के अवसर का
लाभ उठाते हुए मुझे भटका दिया और इसी के माध्यम से मेरी हत्या भी कर दी.
12 इसलिये व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र, धर्मी और भली है. 13 तब,
क्या वह, जो भला है, मेरे लिए मृत्यु का कारण हो गया? नहीं! बिलकुल नहीं!
भलाई के द्वारा पाप ने मुझमें मृत्यु उत्पन्न कर दी कि पाप को पाप ही के रूप में
प्रदर्शित किया जाए तथा आज्ञा के द्वारा यह बहुत ही पापमय हो जाए. 14 यह तो
हमें मालूम ही है कि व्यवस्था आत्मिक है किंतु मैं हूं शारीरिक—पाप के दासत्व
में पूरी तरह बिका हुआ! 15 यह इसलिये कि यह मेरी समझ से हमेशा से परे है
कि मैं क्या करता हूं—मैं वह नहीं करता, जो मैं करना चाहता हूं परंतु मैं वही
करता हूं, जिससे मुझे घृणा है. 16 इसलिये यदि मैं वही सब करता हूं, जो मुझे
अप्रिय है, तो मैं व्यवस्था से सहमत हूं और स्वीकार करता हूं कि यह सही है.
17 इसलिये अब ये काम मैं नहीं, मुझमें बसा हुआ पाप करता है. 18 यह तो मुझे
मालूम है कि मुझमें अर्थात् मेरे शरीर में अंदर छिपा हुआ ऐसा कुछ भी नहीं, जो
उत्तम हो. अभिलाषा तो मुझमें है किंतु उसका करना मुझसे हो नहीं पाता. 19
वह हित, जिसकी मुझमें अभिलाषा है, मुझसे करते नहीं बनता परंतु हो वह
जाता है, जिसे मैं करना नहीं चाहता. 20 तब यदि मैं वह करता हूं, जो मैं करना
नहीं चाहता, तब वह मैं नहीं, परंतु मुझमें बसा हुआ पाप ही है, जो यह सब
करता है. 21 यहां मुझे इस सच का अहसास होता है कि जब भी मैं भलाई के
लिए उतारू होता हूं, वहां मुझसे बुराई हो जाती है. 22 मेरा भीतरी मनुष्यत्व तो
परमेश्वर की व्यवस्था में प्रसन्न है 23 किंतु मैं अपने शरीर के अंगों में एक
दूसरी व्यवस्था देख रहा हूं. यह मेरे मस्तिष्क में मौजूद व्यवस्था के विरुद्ध लड़ती
है. इसने मुझे पाप की व्यवस्था का, जो मेरे शरीर के अंगों में मौजूद है, बंदी
बना रखा है. 24 कैसी दयनीय स्थिति है मेरी! कौन मुझे मेरी इस मृत्यु के शरीर
से छुड़ाएगा? 25 धन्यवाद हो परमेश्वर का जो हमारे प्रभु येशु मसीह के द्वारा हमें
छुड़ाते हैं! एक ओर तो मैं स्वयं अपने मस्तिष्क में परमेश्वर की व्यवस्था का
दास हूं किंतु दूसरी ओर अपने शरीर में अपने पाप के स्वभाव का.

8 इसलिये अब उनके लिए, जो मसीह येशु में हैं, दंड की कोई आज्ञा नहीं
है 2 क्योंकि मसीह येशु में बसा हुआ, जीवन से संबंधित पवित्र आत्मा की
व्यवस्था ने, तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त कर दिया है. 3 वह काम,
जो व्यवस्था मनुष्य के पाप के स्वभाव के कारण पूरा करने में असफल साबित
हुई, परमेश्वर ने पूरा कर दिया—उन्होंने निज पुत्र को ही पापमय मनुष्य के
समान बनाकर पापबलि के रूप में भेज दिया. इस प्रकार उन्होंने पापमय शरीर
में ही पाप को दंडित किया 4 कि हममें, जो पापी स्वभाव के अनुसार नहीं
परंतु पवित्र आत्मा के अनुसार स्वभाव रखते हैं, व्यवस्था की उम्मीदें पूरी हो
जाएं. 5 वे, जो पापी स्वभाव के हैं, उनका मन शारीरिक विषयों पर ही लगा
रहता है, जिसका फल है मृत्यु तथा वे, जो पवित्र आत्मा के स्वभाव के हैं,
उनका मन पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं को पूरा करने पर लगा रहता है,
जिसका परिणाम है जीवन और शांति. 7 पापी स्वभाव का मस्तिष्क परमेश्वर-
विरोधी होता है क्योंकि वह परमेश्वर की व्यवस्था की अधीनता स्वीकार नहीं
करता—वास्तव में यह करना उसके लिए असंभव है. 8 पापी स्वभाव के मनुष्य
परमेश्वर को संतुष्ट कर ही नहीं सकते. 9 किंतु तुम पापी स्वभाव के नहीं परंतु
पवित्र आत्मा में हो—यदि वास्तव में तुममें परमेश्वर का आत्मा वास करता है.
जिस किसी में मसीह का आत्मा वास नहीं करता, वह मसीह का है ही नहीं.
10 अब इसलिये कि तुममें मसीह वास करता है, पाप के कारण शरीर के मृत होने
पर भी धार्मिकता के कारण तुम्हारी आत्मा जीवित है 11 यदि तुममें परमेश्वर का
आत्मा वास करता है, जिन्होंने मसीह येशु को मरे हुओं में से जीवित किया, तो
वह, जिन्होंने मसीह येशु को मरे हुओं में से जीवित किया, तुम्हारे नाशमान शरीर
को अपने उसी आत्मा के द्वारा, जिनका तुममें वास है, जीवित कर देंगे. 12
इसलिये प्रिय भाई बहिनो, हम पापी स्वभाव के कर्ज़दार नहीं कि हम इसके
अनुसार व्यवहार करें. 13 क्योंकि यदि तुम पापी स्वभाव के अनुसार व्यवहार
कर रहे हो तो तुम मृत्यु की ओर हो किंतु यदि तुम पवित्र आत्मा के द्वारा पाप के
स्वभाव के कामों को मारोगे तो तुम जीवित रहोगे. 14 वे सभी, जो परमेश्वर

के आत्मा द्वारा चलाए जाते हैं, परमेश्वर की संतान हैं. 15 तुम्हें दासत्व की
वह आत्मा नहीं दी गई, जो तुम्हें दोबारा भय की ओर ले जाये, परंतु तुम्हें
लेपालकपन की आत्मा प्रदान की गई है. इसी की प्रेरणा से हम पुकारते हैं,
“अब्बा! पिता!” 16 स्वयं पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ इस सच्चाई की
पुष्टि करते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं 17 और जब हम संतान ही हैं तो हम
वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस तथा मसीह येशु के सहवारिस—यदि हम
वास्तव में उनके साथ यातनाएं सहते हैं कि हम उनके साथ गौरवान्वित भी हों.
18 मेरे विचार से वह महिमा, हममें जिसका भावी प्रकाशन होगा, हमारे वर्तमान
कष्टों से तुलनीय है ही नहीं! 19 सृष्टि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर की
संतान के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है. 20 सृष्टि को हताशा के अधीन कर
दिया गया है. यह उसकी अपनी इच्छा के अनुसार नहीं परंतु उनकी इच्छा के
अनुसार हुआ है, जिन्होंने उसे इस आशा में अधीन किया है 21 कि स्वयं सृष्टि
भी विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर परमेश्वर की संतान की महिमामय
स्वतंत्रता प्राप्त करे. 22 हमें यह मालूम है कि सारी सृष्टि आज तक मानो प्रसव
पीड़ा में कराह रही है. 23 इतना ही नहीं, हम भी, जिनमें होनेवाली महिमा के
पहले से स्वाद चखने के रूप में पवित्र आत्मा का निवास है, अपने भीतरी
मनुष्यत्व में कराहते हुए आशा भरी दृष्टि से लेपालकपन प्राप्त करने अर्थात्
अपने शरीर के छुटकारे की प्रतीक्षा में हैं. 24 हम इसी आशा में छुड़ाए गए हैं.
जब आशा का विषय दृश्य हो जाता है तो आशा का अस्तित्व ही नहीं रह जाता.
भला कोई उस वस्तु की आशा क्यों करेगा, जो सामने है? 25 यदि हमारी आशा
का विषय वह है, जिसे हमने देखा नहीं है, तब हम धीरज से और अधिक आशा
में उसकी प्रतीक्षा करते हैं. 26 इसी प्रकार पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्बलता की
स्थिति में हमारी सहायता के लिए हमसे जुड़ जाते हैं क्योंकि हम नहीं जानते
कि प्रार्थना किस प्रकार करना सही है किंतु पवित्र आत्मा स्वयं हमारे लिए
मध्यस्थ होकर ऐसी आहों के साथ जो बयान से बाहर है प्रार्थना करते रहते हैं
27 तथा मनों को जांचनेवाले परमेश्वर यह जानते हैं कि पवित्र आत्मा का उद्देश्य
क्या है क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र लोगों के
लिए प्रार्थना करते हैं. 28 हमें यह अहसास है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते
हैं तथा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बुलाये गये हैं, उनके लिये सब बातें
मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं. 29 यह इसलिये कि जिनके विषय में
परमेश्वर को पहले से ज्ञान था, उन्हें परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह येशु के स्वरूप
में हो जाने के लिए पहले से ठहरा दिया था कि मसीह येशु अनेक भाई बहिनों में
पहलौठे हो जाएं. 30 जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया, उनको बुलाया भी है;
जिनको उन्होंने बुलाया, उन्हें धर्मी घोषित भी किया; जिन्हें उन्होंने धर्मी
घोषित किया, उन्हें परमेश्वर ने गौरवान्वित भी किया. 31 तो इस विषय में क्या
कहा जा सकता है? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में हैं तो कौन हो सकता है हमारा
विरोधी? 32 परमेश्वर वह हैं, जिन्होंने अपने निज पुत्र को हम सबके लिए
बलिदान कर देने तक में संकोच न किया. भला वह कैसे हमें उस पुत्र के साथ
सभी कुछ उदारतापूर्वक न देंगे! 33 परमेश्वर के चुने हुओं पर आरोप भला कौन
लगाएगा? परमेश्वर ही हैं, जो उन्हें निर्दोष घोषित करते हैं. 34 वह कौन है, जो
उन्हें अपराधी घोषित करता है? मसीह येशु वह हैं, जिन्होंने अपने प्राणों का
त्याग कर दिया, इसके बाद वह मरे हुओं में से जीवित किए गए, अब परमेश्वर
के दायें पक्ष में आसीन हैं तथा वही हैं, जो हमारे लिए प्रार्थना करते हैं. 35
कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्लेश, संकट, सताहट, अकाल,
कंगाली, जोखिम या तलवार से मृत्यु? 36 ठीक जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा भी
है: “आपके निमित्त हम दिन भर मृत्यु का सामना करते रहते हैं; हमारी स्थिति
वध के लिए निर्धारित भेड़ों के समान है.” 37 मगर इन सब विषयों में हम
उनके माध्यम से, जिन्होंने हमसे प्रेम किया है, विजयी से भी बढ़कर हैं. 38
क्योंकि मैं यह जानता हूं, कि न तो मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न
वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य 39 न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि
हमारे प्रभु येशु मसीह में परमेश्वर के जो प्रेम है, उससे हमें अलग कर सकती है.

9 मसीह में मैं यह सच प्रकट कर रहा हूं—यह झूठ नहीं—पवित्र आत्मा में
मेरी अंतरात्मा इस सच की पुष्टि कर रही है 2 कि मेरा हृदय अत्यंत खेदित
और बहुत पीड़ा में है. 3 मैं यह कामना कर सकता था कि अच्छा होता कि
स्वयं मैं शापित होता—अपने भाइयों के लिए, जो शारीरिक रूप से मेरे सजातीय
हैं—मसीह से अलग हो जाता. 4 ये सभी इस्राएली हैं. लेपालकपन के कारण
उत्तराधिकार, महिमा, वाचाएं, व्यवस्था, मंदिर की सेवा-आराधना निर्देश तथा
प्रतिज्ञाएं इन्हीं की हैं. 5 पुरखे भी इन्हीं के हैं तथा शारीरिक पक्ष के अनुसार
मसीह भी इन्हीं के वंशज हैं, जो सर्वोच्च हैं, जो युगानुयुग स्तुति के योग्य
परमेश्वर हैं, आमेन. (aiōn g165) 6 क्या परमेश्वर की प्रतिज्ञा विफल हो गयी?
नहीं! वास्तविक इस्राएली वे सभी नहीं, जो इस्राएल के वंशज हैं 7 और न ही
मात्र अब्राहाम का वंशज होना उन्हें परमेश्वर की संतान बना देता है. इसके
विपरीत, लिखा है: तुम्हारे वंशज यित्सहाक के माध्यम से नामित होंगे. 8 अर्थात्
शारीरिक रूप से जन्मे हुए परमेश्वर की संतान नहीं परंतु प्रतिज्ञा के अंतर्गत जन्मे
हुए ही वास्तविक संतान समझे जाते हैं 9 क्योंकि प्रतिज्ञा इस प्रकार की गई:
“अगले वर्ष मैं इसी समय दोबारा आऊंगा और साराह का एक पुत्र होगा.”
10 इतना ही नहीं, रेबेकाह भी एक अन्य उदाहरण हैं: जब उन्होंने गर्भधारण
किया. उनके गर्भ में एक ही पुरुष—हमारे पूर्वज यित्सहाक से दो शिशु थे. 11
यद्यपि अभी तक युगल शिशुओं का जन्म नहीं हुआ था तथा उन्होंने उचित या
अनुचित कुछ भी नहीं किया था, परमेश्वर का उद्देश्य उनकी ही इच्छा के
अनुसार अटल रहा; 12 कामों के कारण नहीं परंतु उनके कारण, जिन्होंने
बुलाया है. रेबेकाह से कहा गया: “बड़ा छोटे की सेवा करेगा.” 13 जैसा कि
पवित्र शास्त्र में लिखा है: “याकोब मेरा प्रिय था किंतु एसाव मेरा अप्रिय.” 14
तब इसका मतलब क्या हुआ? क्या इस विषय में परमेश्वर अन्यायी थे? नहीं!
बिलकुल नहीं! 15 परमेश्वर ने मोशेह से कहा था, “मैं जिस किसी पर चाहूं,
कृपादृष्टि करूंगा और जिस किसी पर चाहूं करुणा.” 16 इसलिये यह मनुष्य की
इच्छा या प्रयासों पर नहीं, परंतु परमेश्वर की कृपादृष्टि पर निर्भर है. 17 पवित्र
शास्त्र में फ़रोह को संबोधित करते हुए लिखा है: “तुम्हारी उत्पत्ति के पीछे मेरा
एकमात्र उद्देश्य था तुममें मेरे प्रताप का प्रदर्शन कि सारी पृथ्वी में मेरे नाम का
प्रचार हो.” 18 इसलिये परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार अपने चुने हुए जन
पर कृपा करते तथा जिसे चाहते उसे हठीला बना देते हैं. 19 संभवतः तुममें से
कोई यह प्रश्न उठाए, “तो फिर परमेश्वर हममें दोष क्यों ढूंढते हैं? भला कौन
उनकी इच्छा के विरुद्ध जा सकता है?” 20 तुम कौन होते हो कि परमेश्वर से
वाद-विवाद का दुस्साहस करो? क्या कभी कोई वस्तु अपने रचनेवाले से यह
प्रश्न कर सकती है, “मुझे ऐसा क्यों बनाया है आपने?” 21 क्या कुम्हार का यह
अधिकार नहीं कि वह मिट्टी के एक ही पिंड से एक बर्तन अच्छे उपयोग के
लिए तथा एक बर्तन साधारण उपयोग के लिए गढ़े? 22 क्या हुआ यदि परमेश्वर
अपने क्रोध का प्रदर्शन और अपने सामर्थ्य के प्रकाशन के उद्देश्य से अत्यंत
धीरज से विनाश के लिए निर्धारित पात्रों की सहते रहे? 23 इसमें उनका उद्देश्य
यही था कि वह कृपापात्रों पर अपनी महिमा के धन को प्रकाशित कर सकें,
जिन्हें उन्होंने महिमा ही के लिए पहले से तैयार कर लिया था; 24 हमें भी, जो
उनके द्वारा बुलाए गए हैं, मात्र यहूदियों ही में से नहीं, परंतु गैर-यहूदियों में से
भी. 25 जैसा कि वह भविष्यवक्ता होशे के अभिलेख में भी कहते हैं: “मैं उन्हें
‘अपनी प्रजा’ घोषित करूंगा, जो मेरी प्रजा नहीं थे; तथा उन्हें ‘प्रिय’ संबोधित
करूंगा, जो प्रियजन थे ही नहीं,” 26 और, “जिस स्थान पर उनसे यह कहा

गया था, 'तुम मेरी प्रजा नहीं हो,' उसी स्थान पर वे 'जीवित परमेश्वर की
संतान' घोषित किए जाएंगे." 27 भविष्यवक्ता यशायाह इस्राएल के विषय में
कातर शब्द में कहते हैं: "यद्यपि इस्राएल के वंशजों की संख्या समुद्रतट की
बालू के कणों के तुल्य है, उनमें से थोड़े ही बचाए जाएंगे. 28 क्योंकि परमेश्वर
पृथ्वी पर अपनी दंड की आज्ञा का कार्य शीघ्र ही पूरा करेंगे." 29 ठीक जैसी
भविष्यवक्ता यशायाह की पहले से लिखित बात है: "यदि स्वर्गीय सेनाओं
के प्रभु ने हमारे लिए वंशज न छोड़े होते तो हमारी दशा सोदोम, और गोमोरा
नगरों के समान हो जाती." 30 तब परिणाम क्या निकला? वे गैर-यहूदी, जो
धार्मिकता को खोज भी नहीं रहे थे, उन्होंने धार्मिकता प्राप्त कर ली—वह भी
वह धार्मिकता, जो विश्वास के द्वारा है. 31 किंतु धार्मिकता की व्यवस्था की
खोज कर रहा इस्राएल उस व्यवस्था के भेद तक पहुंचने में असफल ही रहा. 32
क्या कारण है इसका? मात्र यह कि वे इसकी खोज विश्वास में नहीं परंतु मात्र
रीतियों को पूरा करने के लिए करते रहे. परिणामस्वरूप उस ठोकर के पत्थर से
उन्हें ठोकर लगी. 33 ठीक जैसा पवित्र शास्त्र का अभिलेख है: "मैं ज़ियोन में
एक ठोकर के पत्थर तथा ठोकर खाने की चट्टान की स्थापना कर रहा हूं. जो
इसमें विश्वास रखता है, वह लज्जित कभी न होगा."

10 प्रिय भाई बहिनो, उनका उद्धार ही मेरी हार्दिक अभिलाषा तथा परमेश्वर
से मेरी प्रार्थना का विषय है. 2 उनके विषय में मैं यह गवाही देता हूं कि
उनमें परमेश्वर के प्रति उत्साह तो है किंतु उनका यह उत्साह वास्तविक ज्ञान के
अनुसार नहीं है. 3 परमेश्वर की धार्मिकता के विषय में अज्ञानता तथा अपनी
ही धार्मिकता की स्थापना करने के उत्साह में उन्होंने स्वयं को परमेश्वर की
धार्मिकता के अधीन नहीं किया. 4 उस हर एक व्यक्ति के लिए, जो मसीह में
विश्वास करता है, मसीह ही धार्मिकता की व्यवस्था की समाप्ति हैं. 5 मोशेह के
अनुसार व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता है, जो इनका अनुसरण करेगा, वह
इनके कारण जीवित रहेगा. 6 किंतु विश्वास पर आधारित धार्मिकता का भेद है:
अपने मन में यह विचार न करो: स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा, मसीह को उतार लाने के
लिए? 7 या मसीह को मरे हुओं में से जीवित करने के उद्देश्य से पाताल में कौन
उतरेगा? (Abyssos g12) 8 क्या है इसका मतलब: परमेश्वर का वचन तुम्हारे
पास है—तुम्हारे मुख में तथा तुम्हारे हृदय में—विश्वास का वह संदेश, जो हमारे
प्रचार का विषय है: 9 इसलिये यदि तुम अपने मुख से मसीह येशु को प्रभु
स्वीकार करते हो तथा हृदय में यह विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उन्हें मरे
हुओं में से जीवित किया है तो तुम्हें उद्धार प्राप्त होगा, 10 क्योंकि विश्वास हृदय
से किया जाता है, जिसका परिणाम है धार्मिकता तथा स्वीकृति मुख से होती है,
जिसका परिणाम है उद्धार. 11 पवित्र शास्त्र का लेख है: हर एक, जो उनमें
विश्वास करेगा, वह लज्जित कभी न होगा. 12 यहूदी तथा यूनानी में कोई भेद
नहीं रह गया क्योंकि एक ही प्रभु सबके प्रभु हैं, जो उन सबके लिए, जो उनकी
दोहाई देते हैं, अपार संपदा हैं. 13 क्योंकि हर एक, जो प्रभु को पुकारेगा, उद्धार
प्राप्त करेगा. 14 वे भला उन्हें कैसे पुकारेंगे जिनमें उन्होंने विश्वास ही नहीं
किया? वे भला उनमें विश्वास कैसे करेंगे, जिन्हें उन्होंने सुना ही नहीं? और वे
भला सुनेंगे कैसे यदि उनकी उद्घोषणा करनेवाला नहीं? 15 और प्रचारक प्रचार
कैसे कर सकेंगे यदि उन्हें भेजा ही नहीं गया? जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है:
कैसे सुहावने हैं वे चरण जिनके द्वारा अच्छी बातों का सुसमाचार लाया जाता है!
16 फिर भी सभी ने ईश्वरीय सुसमाचार पर ध्यान नहीं दिया. भविष्यवक्ता
यशायाह का लेख है: "प्रभु! किसने हमारी बातों पर विश्वास किया?" 17
इसलिये स्पष्ट है कि विश्वास की उत्पत्ति होती है सुनने के माध्यम से तथा सुनना
मसीह के वचन के माध्यम से. 18 किंतु अब प्रश्न यह है: क्या उन्होंने सुना
नहीं? निःसंदेह उन्होंने सुना है: उनका शब्द सारी पृथ्वी में तथा, उनका संदेश
पृथ्वी के छोर तक पहुंच चुका है. 19 मेरा प्रश्न है, क्या इस्राएली इसे समझ
सके? पहले मोशेह ने कहा: मैं एक ऐसी जनता के द्वारा तुममें जलनभाव उत्पन्न
करूंगा, जो राष्ट्र है ही नहीं. मैं तुम्हें एक ऐसे राष्ट्र के द्वारा क्रोधित करूंगा, जिसमें
समझ है ही नहीं. 20 इसके बाद भविष्यवक्ता यशायाह निडरतापूर्वक कहते हैं:
मुझे तो उन्होंने पा लिया, जो मुझे खोज भी नहीं रहे थे तथा मैं उन पर प्रकट
हो गया, जिन्होंने इसकी कामना भी नहीं की थी. 21 इस्राएल के विषय में
परमेश्वर का कथन है: "मैं आज्ञा न माननेवाली और हठीली प्रजा के सामने पूरे
दिन हाथ पसारे रहा."

11 तो मेरा प्रश्न यह है: क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा का त्याग कर दिया है?
नहीं! बिलकुल नहीं! क्योंकि स्वयं मैं एक इस्राएली हूं—अब्राहाम की
संतान तथा बिन्यामिन का वंशज. 2 परमेश्वर ने अपनी पूर्वावगत प्रजा का त्याग
नहीं कर दिया या क्या तुम यह नहीं जानते कि पवित्र शास्त्र में एलियाह से
संबंधित भाग में क्या कहा गया है—इस्राएल के विरुद्ध होकर वह परमेश्वर से
कैसे विनती करते हैं: 3 "प्रभु, उन्होंने आपके भविष्यद्वक्ताओं की हत्या कर दी
है, उन्होंने आपकी वेदियां ध्वस्त कर दीं. मात्र मैं शेष रहा हूं और अब वे मेरे
प्राणों के प्यासे हैं?" 4 इस पर परमेश्वर का उत्तर क्या था? "मैंने अपने लिए
ऐसे सात हज़ार व्यक्ति चुन रखे हैं, जो बाल देवता के सामने नतमस्तक नहीं हुए
हैं." 5 ठीक इसी प्रकार वर्तमान में भी परमेश्वर के अनुग्रह में एक थोड़ा भाग
चुना गया है. 6 अब, यदि इसकी उत्पत्ति अनुग्रह के द्वारा ही हुई है तो इसका
आधार काम नहीं हैं नहीं तो अनुग्रह, अनुग्रह नहीं रह जाएगा. 7 तब इसका
परिणाम क्या निकला? इस्राएलियों को तो वह प्राप्त हुआ नहीं, जिसे वे खोज
रहे थे; इसके विपरीत जो चुने हुए थे, उन्होंने इसे प्राप्त कर लिया तथा शेष
हठीले बना दिए गए. 8 ठीक जिस प्रकार पवित्र शास्त्र का लेख है: "परमेश्वर ने
उन्हें जड़ता की स्थिति में डाल दिया कि आज तक उनकी आंख देखने में तथा
कान सुनने में असमर्थ हैं." 9 दावीद का लेख है: "उनके भोज्य पदार्थ उनके
लिए परीक्षा और फंदा, तथा ठोकर का पत्थर और प्रतिशोध बन जाएं. 10 उनके
आंखों की ज्योति जाती रहे और वे देख न सकें, उनकी कमर स्थायी रूप से
झुक जाए." 11 तो मेरा प्रश्न यह है: क्या उन्हें ऐसी ठोकर लगी कि वे कभी न
उठ पाएं? नहीं! बिलकुल नहीं! यहूदियों के गिरने के द्वारा ही गैर-यहूदियों
को उद्धार प्राप्त हुआ है कि यहूदियों में जलनभाव उत्पन्न हो जाए. 12 यदि
उनकी गिरावट ही संसार के लिए आत्मिक धन तथा उनकी असफलता ही गैर-
यहूदियों के लिए आत्मिक धन साबित हुई है तो कितना ज्यादा होगा उन सभी
की भरपूरी का प्रभाव! 13 अब मैं तुमसे बातें करता हूं, जो गैर-यहूदी हो. अब,
जबकि मैं गैर-यहूदियों के लिए प्रेरित हूं, मुझे अपनी सेवकाई का गर्व है 14 कि
मैं किसी भी रीति से कुटुंबियों में जलनभाव उत्पन्न कर सकूं तथा इसके द्वारा
उनमें से कुछ को तो उद्धार प्राप्त हो सके; 15 क्योंकि यदि उनकी अस्वीकृति
संसार से परमेश्वर के मेल-मिलाप का कारण बन गई है, तो उनकी स्वीकृति मरे
हुओं में से जी उठने के अलावा क्या हो सकती है? 16 यदि भेंट का पहला पेडा
पवित्र ठहरा तो गूंधा हुआ सारा आटा ही पवित्र है. यदि जड़ पवित्र है तो शाखाएं
भी पवित्र ही हुईं न? 17 किंतु यदि कुछ शाखाएं तोड़ी गई तथा तुम, जो एक
जंगली ज़ैतून हो, उनमें रोपे गए हो तथा उनके साथ ज़ैतून पेड़ की जड़ के अंग
होने के कारण पौष्टिक सार के सहभागी बन गए हो 18 तो उन शाखाओं का
घमंड न भरना. यदि तुम घमंड भरते ही हो तो इस सच्चाई पर विचार करो: यह
तुम नहीं, जो जड़ के पोषक हो परंतु जड़ ही है, जो तुम्हारा पोषक है. 19 तब
तुम्हारा दूसरा तर्क होगा: "शाखाएं तोड़ी गई कि मुझे रोपा जा सके." 20 ठीक
है. किंतु उन्हें तो उनके अविश्वास के कारण अलग किया गया किंतु तुम स्थिर
हो अपने विश्वास के कारण. इसके विषय में घमंड न भरते हुए श्रद्धा भाव को
स्थान दो. 21 यदि परमेश्वर ने स्वाभाविक शाखाओं को भी न छोड़ा तो वह
तुम पर भी कृपा नहीं करेंगे. 22 परमेश्वर की कृपा तथा उनकी कठोरता पर

विचार करो: गिरे हुए लोगों के लिए कठोरता तथा तुम्हारे लिए कृपा—यदि तुम
वास्तव में उनकी कृपा की सीमा में बने रहते हो नहीं तो तुम्हें भी काटकर
अलग कर दिया जाएगा. 23 तब वे भी, यदि वे अपने अविश्वास के हठ में
बने न रहें, रोपे जाएंगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें रोपने में समर्थ हैं. 24 जब तुम्हें
उस पेड़ से, जो प्राकृतिक रूप से जंगली ज़ैतून है, काटकर स्वभाव के विरुद्ध
फल देनेवाले जैतून के पेड़ में जोड़ा गया है, तब वे शाखाएं, जो प्राकृतिक हैं,
अपने ही मूल पेड़ में कितनी सरलतापूर्वक जोड़ ली जाएंगी! 25 प्रिय भाई
बहिनो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो—ऐसा न हो कि तुम
अपने ऊपर घमंड करने लगो—इस्राएलियों में यह कुछ भाग की कठोरता
निर्धारित संख्या में गैर-यहूदियों के मसीह में आ जाने तक ही है. 26 इस प्रकार
पूरा इस्राएल उद्धार प्राप्त करेगा—ठीक जिस प्रकार पवित्र शास्त्र का लेख है:
उद्धारकर्ता का आगमन ज़ियोन से होगा. वह याकोब से अभक्ति को दूर करेगा.
27 जब मैं उनके पाप हर ले जाऊंगा, तब उनसे मेरी यही वाचा होगी. 28
ईश्वरीय सुसमाचार के दृष्टिकोण से तो वे तुम्हारे लिए परमेश्वर के शत्रु हैं किंतु
चुन लिए जाने के दृष्टिकोण से पूर्वजों के लिए प्रियजन. 29 परमेश्वर द्वारा
दिया गया वरदान तथा उनका बुलावा अटल हैं. 30 ठीक जिस प्रकार तुमने,
जो किसी समय परमेश्वर की आज्ञा न माननेवाले थे, अब उन यहूदियों की
अनाज्ञाकारिता के कारण कृपादृष्टि प्राप्त की है. 31 वे अभी भी अनाज्ञाकारी हैं
कि तुम पर दिखाई गई कृपादृष्टि के कारण उन पर भी कृपादृष्टि हो जाए. 32 इस
समय परमेश्वर ने सभी को आज्ञा के उल्लंघन की सीमा में रख दिया है कि वह
सभी पर कृपादृष्टि कर सकें. **(eleēsē g1653)** 33 ओह! कैसा अपार है परमेश्वर
की बुद्धि और ज्ञान का भंडार! कैसे अथाह हैं उनके निर्णय! तथा कैसा रहस्यमयी
है उनके काम करने का तरीका! 34 भला कौन जान सका है परमेश्वर के मन
को? या कौन हुआ है उनका सलाहकार? 35 क्या किसी ने परमेश्वर को कभी
कुछ दिया है कि परमेश्वर उसे वह लौटाएं? 36 वही हैं सब कुछ के स्रोत, वही हैं
सब कुछ के कारक, वही हैं सब कुछ की नियति—उन्हीं की महिमा सदा-
सर्वदा होती रहे, आमेन. **(aiōn g165)**

12 प्रिय भाई बहिनो, परमेश्वर की बड़ी दया के प्रकाश में तुम सबसे मेरी
विनती है कि तुम अपने शरीर को परमेश्वर के लिए परमेश्वर को
भानेवाला जीवन तथा पवित्र बलि के रूप में भेंट करो. यही तुम्हारी आत्मिक
आराधना की विधि है. 2 इस संसार के स्वरूप में न ढलो, परंतु मन के नए हो
जाने के द्वारा तुममें जड़ से परिवर्तन हो जाए कि तुम परमेश्वर की इच्छा को, जो
उत्तम, ग्रहण करने योग्य तथा त्रुटिहीन है, सत्यापित कर सको. **(aiōn g165)**
3 मुझे दिए गए बड़े अनुग्रह के द्वारा मैं तुममें से हर एक को संबोधित करते
हुए कहता हूं कि कोई भी स्वयं को अधिक न समझे, परंतु स्वयं के विषय में
तुम्हारा आंकलन परमेश्वर द्वारा दिए गए विश्वास के परिमाण के अनुसार हो.
4 यह इसलिये कि जिस प्रकार हमारे शरीर में अनेक अंग होते हैं और सब
अंग एक ही काम नहीं करते; 5 उसी प्रकार हम, जो अनेक हैं, मसीह में
एक शरीर तथा व्यक्तिगत रूप से सभी एक दूसरे के अंग हैं. 6 इसलिये कि
हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार हममें पवित्र आत्मा द्वारा दी गई भिन्‍न-भिन्‍न
क्षमताएं हैं. जिसे भविष्यवाणी की क्षमता प्राप्त है, वह उसका उपयोग अपने
विश्वास के अनुसार करे; 7 यदि सेवकाई की, तो सेवकाई में; सिखाने की, तो
सिखाने में; 8 उपदेशक की, तो उपदेश देने में; सहायता की, तो बिना दिखावे के
उदारतापूर्वक देने में; जिसे अगुवाई की, वह मेहनत के साथ अगुवाई करे तथा
जिसे करुणाभाव की, वह इसका प्रयोग सहर्ष करे. 9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से
घृणा करो; आदर्श के प्रति आसक्त रहो; 10 आपसी प्रेम में समर्पित रहो; अन्यों
को ऊंचा सम्मान दो; 11 तुम्हारा उत्साह कभी कम न हो; आत्मिक उत्साह बना
रहे; प्रभु की सेवा करते रहो; 12 आशा में आनंद, क्लेशों में धीरज तथा प्रार्थना
में नियमितता बनाए रखो; 13 पवित्र संतों की सहायता के लिए तत्पर रहो,
आतिथ्य सत्कार करते रहो. 14 अपने सतानेवालों के लिए तुम्हारे मुख से
आशीष ही निकले—आशीष—न कि शाप; 15 जो आनंदित हैं, उनके साथ
आनंद मनाओ तथा जो शोकित हैं, उनके साथ शोक; 16 तुममें आपस में मेल
भाव हो; तुम्हारी सोच में अहंकार न हो परंतु उनसे मिलने-जुलने के लिए तत्पर
रहो, जो समाज की दृष्टि में छोटे हैं; स्वयं को ज्ञानवान न समझो. 17 किसी के
प्रति भी दुष्टता का बदला दुष्टता न हो; तुम्हारा स्वभाव सब की दृष्टि में सुहावना
हो; 18 यदि संभव हो तो यथाशक्ति सभी के साथ मेल बनाए रखो. 19 प्रियजन,
तुम स्वयं बदला न लो—इसे परमेश्वर के क्रोध के लिए छोड़ दो, क्योंकि शास्त्र
का लेख है: बदला लेना मेरा काम है, प्रतिफल मैं दूंगा. प्रभु का कथन यह भी
है: 20 यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है, उसे भोजन कराओ, यदि वह प्यासा है, उसे
पानी दो; ऐसा करके तुम उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगा दोगे. 21 बुराई से
न हारकर बुराई को भलाई के द्वारा हरा दो.

13 तुममें से प्रत्येक प्रशासनिक अधिकारियों के अधीन रहे. यह इसलिये
कि परमेश्वर द्वारा ठहराए अधिकारी के अलावा अन्य कोई अधिकारी
नहीं है. वर्तमान अधिकारी परमेश्वर के द्वारा ही ठहराए गए हैं. 2 इसलिये वह,
जो अधिकारी का विरोध करता है, परमेश्वर के आदेश का विरोधी है और ऐसे
विरोधी स्वयं अपने ऊपर दंड ले आएंगे. 3 राजा अच्छे काम के लिए नहीं परंतु
बुरे काम के लिए भय के कारण हैं. क्या तुम अधिकारियों से निर्भय रहना चाहते
हो? तो वही करो, जो उचित है. इस पर तुम्हें अधिकारी की सराहना प्राप्त होगी
4 क्योंकि अधिकारी तुम्हारे ही हित में परमेश्वर का सेवक है किंतु यदि तुम
वह करते हो, जो बुरा है तो डरो क्योंकि उसके हाथ में तलवार व्यर्थ नहीं है.
वह अधिकारी परमेश्वर द्वारा चुना हुआ सेवक है—कुकर्मियों के दंड के लिए
प्रतिशोधी. 5 इसलिये यह सही है कि सिर्फ दंड के भय के कारण ही नहीं परंतु
अंतरात्मा के हित में भी अधीन रहा जाए. 6 तुम इसी कारण राज्य-कर भी
चुकाते हो कि राजा परमेश्वर के जनसेवक हैं और इसी काम के लिए समर्पित हैं.
7 जिसे जो कुछ दिया जाना निर्धारित है, उसे वह दो: जिसे कर देना है, उसे कर
दो; जिसे शुल्क, उसे शुल्क; जिनसे डरना है, उनसे डरो तथा जो सम्मान के
अधिकारी हैं, उनका सम्मान करो. 8 आपसी प्रेम के अलावा किसी के कर्ज़दार
न हो. वह जो अपने पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था का पालन कर
लिया 9 क्योंकि: व्यभिचार मत करो, हत्या मत करो, चोरी मत करो, लोभ मत
करो, तथा इसके अतिरिक्त यदि कोई भी अन्य आज्ञा हो तो उसका सार यही है:
अपने पड़ोसी के लिए तुम्हारा प्रेम वैसा ही हो जैसा तुम्हारा स्वयं के लिए है.
10 प्रेम पड़ोसी का बुरा नहीं करता. इसलिये प्रेम व्यवस्था की पूर्ति है. 11
आवश्यक है कि तुम समय को पहचानो. तुम्हारा नींद से जाग जाने का समय
आ चुका है. उस समय की तुलना में, जब हमने इस विश्वास को अपनाया था,
हमारे उद्धार की पूर्ति पास है. 12 रात समाप्त होने पर है. दिन का आरंभ हो रहा
है. इसलिये हम अंधकार के कामों को त्याग कर ज्योति के शस्त्र धारण कर लें.
13 हमारा स्वभाव समय के अनुसार—दिन के अनुकूल हो, न कि लीला-क्रीड़ा,
पियक्कड़पन, व्यभिचार, भ्रष्ट आचरण, झगड़ा तथा जलन से भरा, 14 परंतु
प्रभु येशु मसीह को धारण कर लो तथा शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने की
इच्छा न करो.

14 विश्वास में कमजोर व्यक्ति को उसकी मान्यताओं के विषय में किसी भी
शंका के बिना ही स्वीकार करो. 2 एक व्यक्ति इस विश्वास से सब कुछ
खाता है कि सभी कुछ भोज्य है किंतु जिसका विश्वास निर्बल है, वह मात्र साग-
पात ही खाता है. 3 वह, जो सब कुछ खाता है, उसे तुच्छ दृष्टि से न देखे, जो
सब कुछ नहीं खाता; इसी प्रकार वह, जो सब कुछ नहीं खाता, उस पर दोष न

लगाए, जो सब कुछ खाता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे स्वीकार कर ही लिया है.
4 कौन हो तुम, जो किसी और के सेवक पर उंगली उठा रहे हो? सेवक स्थिर रहे
या गिरे, यह उसके स्वामी की ज़िम्मेदारी है. वह स्थिर ही होगा क्योंकि प्रभु
उसे स्थिर करने में समर्थ हैं. 5 कोई किसी एक विशेष दिन को महत्व देता है
जबकि किसी अन्य के लिए सभी दिन एक समान होते हैं. हर एक अपनी-
अपनी धारणा में ही पूरी तरह निश्चित रहे. 6 जो व्यक्ति किसी विशेष दिन को
महत्व देता है, वह उसे प्रभु के लिए महत्व देता है तथा वह, जो सब कुछ खाता
है, प्रभु के लिए खाता है क्योंकि वह इसके लिए परमेश्वर के प्रति धन्यवाद
प्रकट करता है तथा जो नहीं खाता, वह प्रभु का ध्यान रखते हुए नहीं खाता
तथा वह भी परमेश्वर ही के प्रति धन्यवाद प्रकट करता है. 7 हममें से किसी का
भी जीवन उसका अपना नहीं है और न ही किसी की मृत्यु स्वयं उसके लिए
होती है 8 क्योंकि यदि हम जीवित हैं तो प्रभु के लिए और यदि हमारी मृत्यु
होती है, तो वह भी प्रभु के लिए ही. इसलिये हम जीवित रहें या हमारी मृत्यु हो,
हम प्रभु ही के हैं. 9 यही वह कारण है कि मसीह की मृत्यु हुई तथा वह मरे
हुओं में से जीवित हो गए कि वह जीवितों तथा मरे हुओं दोनों ही के प्रभु हों.
10 किंतु तुम साथी पर आरोप क्यों लगाते हो? या तुम उसे तुच्छ क्यों समझते
हो? हम सभी को परमेश्वर के न्याय आसन के सामने उपस्थित होना है. 11
पवित्र शास्त्र का लेख है: "यह प्रभु का कहना है, 'शपथ मेरे जीवन की, हर एक
घुटना मेरे सामने झुक जाएगा, हर एक जीभ परमेश्वर को स्वीकार करेगी.'"
12 हममें से प्रत्येक परमेश्वर को स्वयं अपना हिसाब देगा. 13 इसलिये अब से
हम एक दूसरे पर आरोप न लगाएं परंतु यह निश्चय करें कि हम अपने भाई के
मार्ग में न तो बाधा उत्पन्न करेंगे और न ही ठोकर का कोई कारण. 14 मुझे यह
मालूम है तथा प्रभु येशु मसीह में मैं पूरी तरह से निश्चित हूं कि अपने आप में
कुछ भी अशुद्ध नहीं है. यदि किसी व्यक्ति ने किसी वस्तु को अशुद्ध मान ही
लिया है, वह उसके लिए ही अशुद्ध है. 15 यदि आपके भोजन के कारण साथी
उदास होता है तो तुम्हारा स्वभाव प्रेम के अनुसार नहीं रहा. अपने भोजन के
कारण तो उसका विनाश न करो, जिसके लिए मसीह ने अपने प्राण दिए! 16
इसलिये जो तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे लिए सही और उचित है, उसके विषय में
अन्यों को निंदा करने का अवसर न मिले 17 क्योंकि परमेश्वर का राज्य मात्र
खान-पान के विषय में नहीं परंतु पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति तथा आनंद में
है. 18 जो कोई मसीह की सेवा इस भाव में करता है, वह परमेश्वर को ग्रहण
योग्य तथा मनुष्यों द्वारा भाता है. 19 हम अपने सभी प्रयास पारस्परिक और
एक दूसरे की उन्नति की दिशा में ही लक्षित करें. 20 भोजन को महत्व देते हुए
परमेश्वर के काम को न बिगाडो. वास्तव में सभी भोज्य पदार्थ स्वच्छ हैं किंतु ये
उस व्यक्ति के लिए बुरे हो जाते हैं, जो इन्हें खाकर अन्य के लिए ठोकर का
कारण बनता है. 21 सही यह है कि न तो मांस का सेवन किया जाए और न ही
दाखरस का या ऐसा कुछ भी किया जाए, जिससे साथी को ठोकर लगे. 22 इन
विषयों पर अपने विश्वास को स्वयं अपने तथा परमेश्वर के मध्य सीमित रखो.
धन्य है वह व्यक्ति, जिसकी अंतरात्मा उसके द्वारा स्वीकृत किए गए विषयों में
उसे नहीं धिक्कारती. 23 यदि किसी व्यक्ति को अपने खान-पान के विषय में
संशय है, वह अपने ऊपर दोष ले आता है क्योंकि उसका खान-पान विश्वास से
नहीं है. जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है.

15 आवश्यक है कि हम, जो विश्वास में मजबूत हैं, कमज़ोरों की कमज़ोरी
के प्रति धीरज का भाव रखें न कि सिर्फ अपनी प्रसन्नता का. 2 हममें से
प्रत्येक अपने पड़ोसी की भलाई तथा उन्नति के लिए उसकी प्रसन्नता का ध्यान
रखे. 3 क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया जैसा कि पवित्र शास्त्र
का लेख है: उनकी निंदा, जो आपके निंदक हैं, मुझ पर आ पड़ी है. 4 पहले
समय के सभी अभिलेख हमें शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखे गए कि निरंतर प्रयास
तथा पवित्र शास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा हममें आशा का अनुभव हो. 5 परमेश्वर, जो
धीरज और प्रोत्साहन के दाता है, तुममें मसीह येशु के अनुरूप आपस में एकता
का भाव उत्पन्न करें 6 कि तुम एक मन और एक शब्द में परमेश्वर, हमारे प्रभु
येशु मसीह के पिता का धन्यवाद और महिमा करो. 7 इसलिये एक दूसरे को
स्वीकार करो—ठीक जिस प्रकार मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिए हमें
स्वीकार किया है. 8 सुनो, परमेश्वर की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए मसीह
येशु ख़तना किए हुए लोगों के सेवक बन गए कि पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञाओं
की पुष्टि हो 9 तथा गैर-यहूदी परमेश्वर की कृपादृष्टि के लिए उनकी महिमा करें,
जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: इसलिये मैं गैर-यहूदियों के बीच आपका
धन्यवाद करूंगा; मैं आपके नाम का गुणगान करूंगा. 10 फिर लिखा है: गैर-
यहूदियों! परमेश्वर की प्रजा के साथ मिलकर आनंद करो. 11 और यह भी:
सभी गैर-यहूदियों! तुम प्रभु का धन्यवाद करो; सभी जनता उनका धन्यवाद
करें. 12 भविष्यवक्ता यशायाह ने भी कहा: यिशै की जड़ में कोपलें होंगी, तथा
वह, जो उठेगा, गैर-यहूदियों पर शासन करेगा; वह सभी गैर-यहूदियों की
आशा होगा. 13 परमेश्वर, जो आशा के स्रोत हैं, तुम्हारे विश्वास करने में तुम्हें
सारे आनंद और शांति से भर दें, कि तुम पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा आशा
में बढ़ते जाओ. 14 प्रिय भाई बहिनो, तुम्हारे विषय में स्वयं मैं भी निश्चित हूं कि
तुम भी सर्वगुणसम्पन्न, सभी ज्ञान से भरकर तथा एक दूसरे को कर्तव्य की याद
दिलाने में पूरी तरह सक्षम हो. 15 फिर भी मैंने कुछ विषयों पर तुम्हें साहस
करके लिखा है कि तुम्हें इनका दोबारा स्मरण दिला सकूं. यह इसलिये कि मुझे
परमेश्वर के द्वारा अनुग्रह प्रदान किया गया 16 कि मैं परमेश्वर के ईश्वरीय
सुसमाचार के पुरोहित के रूप में गैर-यहूदियों के लिए मसीह येशु का सेवक बनूं
कि गैर-यहूदी पवित्र आत्मा के द्वारा अलग किए जाकर परमेश्वर के लिए ग्रहण
योग्य भेंट बन जाएं. 17 अब मेरे पास मसीह येशु में परमेश्वर संबंधित विषयों पर
गर्व करने का कारण है. 18 मैं मात्र उन विषयों का वर्णन करना चाहूंगा, जो
मसीह येशु ने मुझे माध्यम बनाकर मेरे प्रचार के द्वारा पूरे किए, जिसका परिणाम
हुआ गैर-यहूदियों की आज्ञाकारिता. 19 ये सब अद्भुत चिह्नों तथा परमेश्वर के
आत्मा के सामर्थ्य में किए गए कि येरूशलेम से लेकर सुदूर इल्लिरिकुम तक
मसीह येशु के ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार किया जाए. 20 स्वयं मेरी बड़ी
इच्छा तो यही रही है कि ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार उन्हीं क्षेत्रों में हो, जहां
मसीह येशु के विषय में अब तक सुना नहीं गया कि मैं किसी अन्य व्यक्ति द्वारा
रखी गई नींव पर निर्माण न कर बैठूं. 21 जैसा पवित्र शास्त्र का लेख है: वे,
जिन्होंने उनका समाचार प्राप्त नहीं किया, उन्हें देखेंगे तथा वे, जिन्होंने कुछ
भी नहीं सुना, समझ लेंगे. 22 यही वह कारण है कि तुमसे भेंट करने के लिए
मेरे आने में बाधा पड़ती रही. 23 अब इन देशों में मेरे सामने कोई स्थान बाकी
नहीं रहा और अनेक वर्षों से मेरी यह इच्छा भी रही है कि तुमसे भेंट करूं. 24
मेरे लिए यह संभव हो सकेगा जब मैं स्पेन यात्रा को जाऊंगा. मुझे आशा है कि
जाते हुए तुमसे भेंट हो तथा थोड़े समय के लिए तुम्हारी संगति का आनंद लूं और
तुम्हारी सहायता भी प्राप्त कर सकूं 25 किंतु इस समय तो मैं येरूशलेम के पवित्र
लोगों की सहायता के लिए येरूशलेम की ओर जा रहा हूं. 26 मकेदोनिया तथा
आखाया प्रदेश की कलीसियाएं येरूशलेम के निर्धन पवित्र लोगों की सहायता के
लिए खुशी से सामने आई. 27 सच मानो, उन्होंने यह खुशी से किया है. वे
येरूशलेम वासियों के कर्ज़दार हैं क्योंकि जब गैर-यहूदियों ने उनसे आत्मिक
धन प्राप्त किया है तो यह उचित ही है कि अब वे भौतिक वस्तुओं द्वारा भी
उनकी सहायता करें. 28 इसलिये अपने कर्तव्य को पूरा कर जब मैं निश्चित हो
जाऊंगा कि उन्हें यह राशि प्राप्त हो गई है, मैं स्पेन की ओर जाऊंगा तथा मार्ग में
तुमसे भेंट करूंगा. 29 यह तो मुझे मालूम है कि जब मैं तुमसे भेंट करूंगा, मेरे
साथ मसीह येशु की आशीष पूरी तरह होंगी. 30 अब, प्रिय भाई बहिनो, हमारे

प्रभु येशु मसीह तथा पवित्र आत्मा के प्रेम के द्वारा तुमसे मेरी विनती है कि मेरे
साथ मिलकर परमेश्वर से मेरे लिए प्रार्थनाओं में जुट जाओ 31 कि मैं यहूदिया
प्रदेश के अविश्वासी व्यक्तियों की योजनाओं से बच सकूं तथा येरूशलेम के
पवित्र लोगों के प्रति मेरी सेवा उन्हें स्वीकार हो 32 कि मैं परमेश्वर की इच्छा के
द्वारा तुमसे आनंदपूर्वक भेंट कर सकूं तथा तुम्हारी संगति मेरे लिए एक सुखद
विश्राम हो जाए. 33 शांति के परमेश्वर तुम सबके साथ रहें. आमेन.

16 मैं, हमारी बहन फ़ोइबे को, जो केनख्रेया नगर की कलीसिया की विश्वस्त
सेविका है. 2 जैसा पवित्र लोगों के लिए सही है, प्रभु में उसे स्वीकार
कर उसे जिस किसी रूप में भी सहायता की ज़रूरत हो, प्रदान करो. स्वयं उसने
अनेकों की सहायता की है तथा मेरी भी. 3 मसीह येशु में मेरे सहसेवकों प्रिस्का
तथा अकुलॉस को मेरा नमस्कार. 4 उन्होंने मेरे हित में अपने प्राण जोख़िम में
डाले थे. न केवल मैं परंतु गैर-यहूदियों की सभी कलीसियाएं उनकी ऋणी हैं.
5 उस कलीसिया को नमस्कार, जो उनके घर में इकट्ठा होती है. मेरे प्रिय मित्र
ईपाएनेतॉस को नमस्कार. आसिया प्रदेश में उसी ने सबसे पहले मसीह को
स्वीकार किया था. 6 मरियम को नमस्कार. उसने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम
किया है. 7 आन्द्रोनिकॉस तथा यूनियस को नमस्कार. ये मेरे संबंधी तथा सहबंदी
हैं. प्रेरितों में इनका स्थान वर्णनीय है. ये भी मुझसे पहले मसीह में आ चुके थे.
8 प्रभु में मेरे प्रिय आम्पलियातॉस को नमस्कार. 9 मसीह में हमारे सहकर्मी
अरबानस को नमस्कार और मेरे प्रिय स्ताख़ुस को भी. 10 मसीह में प्रमाणित
तथा स्वीकृत अपेल्लेस को नमस्कार. आरिस्तोबुलस के परिजनों को नमस्कार.
11 मेरे संबंधी हेरोदियॉन को नमस्कार. नारकिसस के परिजनों में से उन्हें,
जो प्रभु के अनुगामी हैं, नमस्कार. 12 प्रभु के कर्मी त्रिफेना तथा त्रुफ़ोसा को
नमस्कार. मेरे प्रिय परसिस को नमस्कार. उसने प्रभु में अथक परिश्रम किया है.
13 प्रभु के चुने हुए व्यक्ति रूफ़ॉस को नमस्कार तथा उसकी माता को भी, जो
मेरी भी माता हैं. 14 आसुन्क्रितॉस, फ़्लेगॉन, हेर्मेस, पात्रोबस, हेर्मेस तथा उनके
सहयोगी भाई बहिनों को नमस्कार. 15 फ़िलोलोगॉस तथा यूलिया, नेरेयुस,
उसकी बहन तथा ओलुम्पस तथा उनके साथ सभी पवित्र लोगों को नमस्कार.
16 तुम्हारा पारस्परिक नमस्कार पवित्र चुंबन के साथ हो. मसीह की सभी
कलीसियाओं की ओर से तुम्हें नमस्कार. 17 प्रिय भाई बहिनो, मेरी तुमसे विशेष
विनती है कि उन पर विशेष ध्यान दो, जो तुम्हारे बीच फूट डालते तथा तुम्हें दी
गई शिक्षा के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते रहते हैं. उनसे दूर रहो. 18 ये लोग हमारे
प्रभु येशु मसीह के नहीं परंतु अपनी ही लालसाओं के दास हैं. अपनी चिकनी-
चुपड़ी तथा चतुराई से की गई बातचीत के द्वारा वे भोले-भाले लोगों को भटका
देते हैं. 19 सभी तुम्हारी आज्ञाकारिता के विषय में सुन चुके हैं. यह मेरे लिए
आनंद का विषय है. फिर भी मेरी यह इच्छा है कि तुम भलाई के प्रति बुद्धिमान
तथा बुराई के प्रति भोले बने रहो. 20 शांति के परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को
तुम्हारे पांवों के नीचे कुचल देंगे. हमारे प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह तुम पर बना
रहे. 21 मेरे सहकर्मी तिमोथियॉस का नमस्कार. वैसे ही मेरे परिजन लुकियॉस,
यासोन तथा सोसिपात्रॉस का भी. 22 इस पत्र के लिखनेवाले, तेर्तियॉस का तुम्हें
प्रभु में नमस्कार. 23 गायॉस का, जिसके यहां मैं अतिथि हूं और जिसके घर पर
कलीसिया आराधना करती है, तुम्हें नमस्कार. नगर कोषाध्यक्ष इरास्तुस तथा
संगी विश्वासी क्वार्तोस का भी तुम्हें नमस्कार. [24 हमारे प्रभु येशु मसीह का
अनुग्रह तुम पर बना रहे. आमेन.] 25 अब उस परमेश्वर को, जो तुमको मेरे
सुसमाचार और मसीह येशु के प्रचार द्वारा और सशक्त कर सकता, उस भेद के
प्रकाशन के अनुसार, जो सनातन से छिपाकर रखा गया था; (aiōnios g166)
26 जिसे अब परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार भविष्यद्वक्ताओं के अभिलेखों
द्वारा सभी राष्ट्रों पर प्रकट कर दिया गया है कि इसके द्वारा वे विश्वास की
आज्ञाकारिता की ओर आगे बढ़ें. (aiōnios g166) 27 मसीह येशु के द्वारा उन
एकमात्र ज्ञानी परमेश्वर की महिमा सदा-सर्वदा होती रहे! आमेन. (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह येशु के लिए बुलाए गए प्रेरित पौलॉस
तथा हमारे भाई सोस्थेनेस की ओर से. 2 कोरिन्थॉस नगर में स्थापित
परमेश्वर की कलीसिया को वे, जो मसीह येशु में पवित्र किए गए हैं तथा जिनका
उन सबके समान, जो हर जगह हमारे तथा उनके प्रभु येशु मसीह की स्तुति करते
हैं, पवित्र लोगों के रूप में बुलाये गये हैं: 3 तुम सबको हमारे पिता परमेश्वर तथा
प्रभु येशु मसीह की ओर से अनुग्रह तथा शांति. 4 मसीह येशु में तुम्हें दिए गए
परमेश्वर के अनुग्रह के लिए मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर के प्रति निरंतर धन्यवाद
करता हूं. 5 क्योंकि तुम मसीह येशु में सब प्रकार से सम्पन्न किए गए हो, सारे
ज्ञान और उसकी हर बात में; 6 ठीक जिस प्रकार तुममें मसीह येशु के संदेश की
पुष्टि भी हुई है. 7 परिणामस्वरूप इस समय, जब तुम हमारे प्रभु येशु मसीह के
प्रकट होने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हो, तुममें पवित्र आत्मा के द्वारा
किसी भी आत्मिक क्षमता का अभाव नहीं है. 8 वही मसीह येशु तुम्हें अंत तक
दृढ बनाए रखेंगे कि तुम हमारे प्रभु येशु मसीह के दिन निर्दोष पाए जाओ. 9
परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं, जिनके द्वारा तुम्हारा बुलावा उनके पुत्र, मसीह येशु
हमारे प्रभु की संगति में किया गया है. 10 प्रिय भाई बहिनो, अपने प्रभु येशु
मसीह के नाम में मेरी तुमसे विनती है, कि तुममें आपसी मेल हो, फूट कहीं भी
न हो, तुम मन तथा मत में एक हो. 11 क्योंकि तुम्हारे विषय में, प्रिय भाई
बहिनो, क्लोए परिवार के कुछ सदस्यों द्वारा मुझे यह संकेत दिया गया है कि
तुम्हारे मध्य झगड़ा चल रहा है. 12 मेरे कहने का मतलब यह है कि तुममें हर
एक का मत अलग है: कोई कहता है, "मैं पौलॉस का शिष्य हूं," कोई, "मैं
अपोल्लॉस का," तो कोई, "मैं कैफ़स का," या "मैं मसीह का शिष्य हूं." 13
क्या मसीह का बंटवारा कर दिया गया है? क्या तुम्हारे लिए पौलॉस को क्रूसित
किया गया था? या तुम्हारा बपतिस्मा पौलॉस के नाम में किया गया था? 14 मैं
परमेश्वर का आभारी हूं कि क्रिस्पॉस तथा गायॉस के अतिरिक्त तुममें से किसी
को भी मैंने बपतिस्मा नहीं दिया, 15 कि कोई भी यह न कह पाए कि तुम्हें
मेरे नाम में बपतिस्मा दिया गया. 16 (हां, मैंने स्तेफ़ानॉस के परिवार को भी
बपतिस्मा दिया है किंतु इसके अलावा मैंने किसी अन्य को बपतिस्मा दिया हो,
इसका मुझे ध्यान नहीं.) 17 मसीह येशु ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं परंतु
ईश्वरीय सुसमाचार प्रचार के लिए चुना है—वह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार
नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस उसकी सामर्थ्य से व्यर्थ हो जाए. 18 क्रूस
का संदेश उनके लिए, जो नाश होने पर हैं, मूर्खता है किंतु हमारे लिए, जो उद्धार
के मार्ग पर हैं, परमेश्वर का सामर्थ्य है. 19 जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है:
"मैं ज्ञानियों का ज्ञान नाश कर दूंगा; तथा समझदारों की समझ को शून्य." 20
कहां है ज्ञानी? कहां है शास्त्री? और कहां है इस युग का विवादी? क्या परमेश्वर
के सामने संसार का सारा ज्ञान मूर्खता नहीं है? (aiōn g165) 21 अपने ज्ञान के
अनुसार परमेश्वर ने यह असंभव बना दिया कि मानव अपने ज्ञान के द्वारा उन्हें
जान सके, इसलिये परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि मनुष्यों के अनुसार
मूर्खता के इस संदेश के प्रचार का उपयोग उन सबके उद्धार के लिए करें, जो
विश्वास करते हैं. 22 यहूदी चमत्कार चिह्नों की मांग करते हैं और यूनानी ज्ञान
के खोजी हैं, 23 किंतु हम प्रचार करते हैं क्रूसित मसीह का, जो यहूदियों के
लिए ठोकर का कारण हैं तथा गैर-यहूदियों के लिए मूर्खता, 24 किंतु बुलाए
हुओं, यहूदी या यूनानी दोनों ही के लिए यही मसीह परमेश्वर का सामर्थ्य तथा
परमेश्वर का ज्ञान हैं. 25 क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों की बुद्धि से
कहीं अधिक बुद्धिमान, तथा परमेश्वर की दुर्बलता मनुष्यों के बल से कहीं
अधिक बलवान है. 26 प्रिय भाई बहिनो, याद करो कि जब तुम्हें बुलाया गया,
उस समय अनेकों में न तो शरीर के अनुसार ज्ञान था, न ही बल और न ही
कुलीनता. 27 ज्ञानवानों को लज्जित करने के लिए परमेश्वर ने उनको चुना, जो
संसार की दृष्टि में मूर्ख है तथा शक्तिशालियों को लज्जित करने के लिए उसको,
जो संसार की दृष्टि में दुर्बल है. 28 परमेश्वर ने उनको चुना, जो संसार की दृष्टि में
नीचा है, तुच्छ है और जो है ही नहीं कि उसे व्यर्थ कर दें, जो महत्वपूर्ण समझी
जाती है, 29 कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के सामने घमंड न करे. 30 परमेश्वर
के द्वारा किए गए काम के फलस्वरूप तुम मसीह येशु में हो, जो परमेश्वर की
ओर से हमारा ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता तथा छुड़ौती बन गए. 31 पवित्र शास्त्र
का लेख है: "जो गर्व करता है, वह परमेश्वर में गर्व करे."

2 प्रिय भाई बहिनो, मैं तुम्हारे यहां न तो बातों की चतुराई का उपयोग करने
आया और न ही उत्तम ज्ञान का प्रदर्शन करने, परंतु मैं तुम्हारे यहां परमेश्वर
के भेद का प्रकाशन करने आया था. 2 क्योंकि तुम्हारे बीच मैं इस निश्चय के
साथ आया था कि मैं मसीह येशु और उनकी क्रूस की मृत्यु के अलावा किसी
भी अन्य विषय को न जानूं. 3 जब मैं तुम्हारे बीच था, मैं निर्बल था—भयभीत
और थरथराता हुआ. 4 मेरा वचन तथा मेरा प्रचार मनुष्य के ज्ञान भरे शब्दों की
लुभावनी शैली में नहीं परंतु पवित्र आत्मा तथा सामर्थ्य के प्रमाण में था, 5 कि
तुम्हारे विश्वास का आधार परमेश्वर का सामर्थ्य हो, न कि मनुष्य का ज्ञान. 6
फिर भी मैं उन्हें, जो मजबूत हैं, ज्ञान भरा संदेश देता हूं परंतु यह ज्ञान न इस युग
का है और न इस युग के शासकों का, जिनका नाश होना तय है. (aiōn g165) 7
हम परमेश्वर के ज्ञान का—उस रहस्यमय भेद का—जो गुप्त रखा गया है, प्रकट
करते हैं, जिसे परमेश्वर ने युगों से पहले हमारी महिमा के लिए तय किया था.
(aiōn g165) 8 इस ज्ञान को इस युग के किसी भी राजा ने न पहचाना. यदि वे
इसे पहचान लेते, वे ज्योतिर्मय प्रभु को क्रूसित न करते. (aiōn g165) 9 किंतु,
ठीक जैसा पवित्र शास्त्र का लेख है: "जो कभी आंखों से दिखाई नहीं दिया, जो
कभी कानों से सुना नहीं गया, और जो मनुष्य के हृदय में नहीं उतरा" वह सब
परमेश्वर ने उनके लिए जो उनसे प्रेम करते हैं, तैयार किया है. 10 यह सब
परमेश्वर ने हम पर आत्मा के माध्यम से प्रकट किया. आत्मा सब की, यहां तक
कि परमेश्वर की गूढ़ बातों की भी खोज करते हैं. 11 मनुष्यों में मनुष्य की
अंतरात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई भी उनके मन की बातों को नहीं जानता. 12
हमें संसार की आत्मा नहीं परंतु वह आत्मा प्राप्त हुई है, जो परमेश्वर की ओर से
हैं कि हम वह सब जान सकें, जो परमेश्वर ने हमें उदारतापूर्वक प्रदान किया है.
13 हम उनके लिए, जो आत्मिक हैं, आत्मिक बातों का वर्णन मनुष्य के ज्ञान के
शब्दों के द्वारा नहीं परंतु आत्मिक शब्दों में करते हैं. 14 बिना आत्मा का
व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा के विषय की बातों को स्वीकार नहीं करता क्योंकि
इन्हें वह मूर्खता मानता है, ये सब उसकी समझ से परे हैं क्योंकि इनकी विवेचना
पवित्र आत्मा द्वारा की जाती है. 15 किंतु वह, जो आत्मिक है, प्रत्येक बात की
जांच करता है किंतु स्वयं उसकी जांच कोई नहीं करता, 16 क्योंकि, "कौन है
वह, जिसने प्रभु के मन को जान लिया है कि वह उन्हें निर्देश दे सके?" किंतु
हम वे हैं, जिनमें मसीह का मन मौजूद है.

3 प्रिय भाई बहनो, मैं तुमसे उस स्तर पर बात करने में असमर्थ रहा जिस
स्तर पर आत्मिक व्यक्तियों से की जाती है. तुमसे मेरी बात ऐसी थी मानो
सांसारिक व्यक्तियों से—मसीह में शिशुओं से. 2 तुम्हें मैंने आहार के लिए दूध
दिया न कि ठोस आहार क्योंकि तुममें इसे ग्रहण करने की क्षमता ही न थी.
सच तो यह है कि तुममें यह क्षमता अब भी नहीं है. 3 क्योंकि तुम अब भी
सांसारिक ही हो. जब तुम्हारे बीच जलन तथा झगड़ा है तो क्या तुम सांसारिक
न हुए? क्या तुम्हारा स्वभाव केवल मानवीय नहीं? 4 क्योंकि जब तुममें से कोई
कहता है, "मैं पौलॉस का हूं," या, "मैं अपोल्लॉस का हूं," तो इस स्वभाव में
क्या तुम बिलकुल मनुष्य ही न हुए? 5 तो फिर, क्या है, अपोल्लॉस और क्या

है पौलॉस? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया—हर एक ने प्रभु
द्वारा सौंपी गई ज़िम्मेदारी को निभाया. 6 मैंने रोपा, अपोल्लॉस ने सींचा किंतु
बढ़त परमेश्वर द्वारा की गई. 7 इसलिये श्रेय योग्य वह नहीं है, जिसने उसे रोपा
या जिसने उसे सींचा परंतु सिर्फ परमेश्वर, जिन्होंने उसको बड़ा किया है. 8
वह, जो रोपता है तथा वह, जो सींचता है एक ही उद्देश्य के लिए काम करते हैं
किंतु दोनों ही को अपनी-अपनी मेहनत के अनुसार प्रतिफल प्राप्त होगा. 9 हम
परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तुम परमेश्वर की भूमि हो. तुम परमेश्वर का भवन हो.
10 परमेश्वर के अनुग्रह के अनुसार मैंने एक कुशल मिस्त्री के समान नींव डाली
और अब कोई और उस पर भवन निर्माण कर रहा है किंतु हर एक व्यक्ति
सावधान रहे कि वह इस नींव पर उस भवन का निर्माण कैसे करता है. 11 जो
नींव डाली जा चुकी है, उसके अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति अन्य नींव नहीं डाल
सकता, स्वयं मसीह येशु ही वह नींव हैं. 12 यदि कोई इस नींव पर सोने,
चांदी, कीमती रत्न, लकड़ी, भूसी या घास से निर्माण करे तो, 13 वह दिन
सच्चाई को प्रकाश में ला देगा क्योंकि कामों की परख आग के द्वारा की
जाएगी. यही आग हर एक के काम को साबित करेगी. 14 यदि किसी के द्वारा
बनाया भवन इस नींव पर स्थिर रहता है तो उसे इसका ईनाम प्राप्त होगा. 15
यदि किसी का भवन भस्म हो जाता है, तो वह ईनाम से दूर रह जाएगा. हां, वह
स्वयं तो बच जाएगा किंतु ऐसे मानो ज्वाला में से होते हुए. 16 क्या तुम्हें यह
अहसास नहीं कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो तथा तुममें परमेश्वर का आत्मा वास
करता है? 17 यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नाश करे तो वह भी परमेश्वर द्वारा
नाश कर दिया जाएगा क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है और स्वयं तुम वह
मंदिर हो. 18 धोखे में न रहो. यदि तुममें से कोई यह सोच बैठा है कि वह
सांसारिक बातों के अनुसार बुद्धिमान है, तो सही यह होगा कि वह स्वयं को
“मूर्ख” बना ले कि वह बुद्धिमान बन जाए. (aiōn g165) 19 क्योंकि सच यह है
कि सांसारिक ज्ञान परमेश्वर की दृष्टि में मूर्खता है. जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख
है: “वही हैं, जो बुद्धिमानों को उनकी चतुराई में फंसा देते हैं.” 20 और यह भी,
“परमेश्वर जानते हैं कि बुद्धिमानों के विचार व्यर्थ हैं.” 21 इसलिये, कोई
भी मनुष्य की उपलब्धियों का गर्व न करे! सब कुछ तुम्हारा ही है, 22 चाहे
पौलॉस हो या अपोल्लॉस या कैफ़स, चाहे वह संसार हो या जीवन मृत्यु, चाहे
वह वर्तमान हो या भविष्य—सब कुछ तुम्हारा ही है, 23 और तुम मसीह के हो,
और मसीह परमेश्वर के.

4 सही तो यह होगा कि हमें मसीह येशु का भंडारी मात्र समझा जाए, जिन्हें
परमेश्वर के भेदों की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है. 2 भंडारी को विश्वासयोग्य
होना ज़रूरी है. 3 यह मेरी दृष्टि में महत्वहीन है कि मेरी परख तुम्हारे द्वारा की
जाए या किसी न्यायालय द्वारा. बल्कि मैं स्वयं अपनी परख नहीं करता. 4 मेरी
अंतरात्मा मुझमें कोई दोष नहीं पाती, फिर भी इससे मैं निर्दोष साबित नहीं हो
जाता. प्रभु ही हैं, जो मेरी परख करते हैं. 5 इसलिये समय से पहले अर्थात्
प्रभु के आगमन तक कोई किसी की परख न करे. प्रभु ही अंधकार में छिपे
सच प्रकाशित करेंगे तथा वही मनुष्य के हृदय के उद्देश्य भी प्रकट करेंगे. तब
परमेश्वर की ओर से हर एक व्यक्ति को प्रशंसा प्राप्त होगी. 6 प्रिय भाई बहनो,
मैंने तुम्हारे ही हित में अपना तथा अपोल्लॉस का उदाहरण प्रस्तुत किया है कि
इसके द्वारा तुम इस बात से संबंधित शिक्षा ले सको, “पवित्र अभिलेख की
मर्यादा का उल्लंघन न करना.” कि तुम एक का पक्ष ले दूसरे का तिरस्कार न
करने लगो. 7 कौन कहता है कि तुम अन्यों से श्रेष्ठ हो? क्या है तुम्हारे पास, जो
तुम्हें किसी के द्वारा दिया नहीं गया? जब यह तुम्हें किसी के द्वारा ही दिया गया
है तो तुम घमंड ऐसे क्यों भरते हो मानो यह तुम्हें किसी के द्वारा नहीं दिया गया?
8 तुम तो यह सोचकर ही संतुष्ट हो गए कि तुम्हारी सारी ज़रूरतों की पूर्ति हो
चुकी—तुम सम्पन्न हो गए हो, हमारे सहयोग के बिना ही तुम राजा बन गए हो!
उत्तम तो यही होता कि तुम वास्तव में राजा बन जाते और हम भी तुम्हारे साथ
शासन करते! 9 मुझे ऐसा लग रहा है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को विजय यात्रा
में मृत्यु दंड प्राप्त व्यक्तियों के समान सबसे अंतिम स्थान पर रखा है. हम सारी
सृष्टि, स्वर्गदूतों तथा मनुष्यों के सामने तमाशा बन गए हैं. 10 हम मसीह के
लिए मूर्ख हैं, किंतु तुम मसीह में एक होकर बुद्धिमान हो! हम दुर्बल हैं और तुम
बलवान! तुम आदर पाते हो और हम तिरस्कार! 11 इस समय भी हम भूखे-
प्यासे और अपर्याप्त वस्त्रों में हैं, सताए जाते तथा मारे-मारे फिरते हैं. 12 हम
मेहनत करते हैं तथा अपने हाथों से काम करते हैं. जब हमारी बुराई की जाती
है, हम आशीर्वाद देते हैं; हम सताए जाते हैं किंतु धीरज से सहते हैं; 13 जब
हमारी निंदा की जाती है तो हम विनम्रता से उत्तर देते हैं. हम तो मानो इस संसार
का मैल तथा सबके लिए कूड़ा-कर्कट बन गए हैं. 14 यह सब मैं तुम्हें लज्जित
करने के उद्देश्य से नहीं लिख रहा परंतु अपनी प्रिय संतान के रूप में तुम्हें
सावधान कर रहा हूं. 15 मसीह में तुम्हारे दस हज़ार शिक्षक तो हो सकते हैं किंतु
इतने पिता नहीं. में ईश्वरीय सुसमाचार के कारण मैं मसीह येशु में तुम्हारा पिता
बन गया हूं. 16 मेरी तुमसे विनती है कि तुम मेरे जैसी चाल चलो. 17 इसलिये
मैंने तिमोथियॉस को तुम्हारे पास भेजा है, जो मेरा प्रिय तथा प्रभु में विश्वासयोग्य
पुत्र है. वही तुम्हें मसीह येशु में मेरी जीवनशैली की याद दिलाएगा—ठीक जैसी
शिक्षा इसके विषय में मैं हर जगह, हर एक कलीसिया में देता हूं. 18 तुममें से
कुछ तो अहंकार में फूले नहीं समा रहे मानो मैं वहां आऊंगा ही नहीं. 19 यदि
प्रभु ने चाहा तो, मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आऊंगा, तब न केवल इन अहंकारियों
की शिक्षा परंतु उनका सामर्थ्य भी मेरे सामने स्पष्ट हो जाएगा. 20 परमेश्वर का
राज्य मात्र शब्दों में नहीं परंतु सामर्थ्य में निहित है. 21 तो क्या चाहते हो तुम?
मैं तुम्हारे पास छड़ी लेकर आऊं या नम्रता के भाव में प्रेम के साथ?

5 तुम्हारे बीच में हो रहा वेश्यागामी हर जगह चर्चा का विषय बन गया है, वह
भी ऐसा यौनाचार, जो गैर-यहूदियों तक में नहीं पाया जाता: किसी ने तो
अपने पिता की स्त्री को ही रख लिया है. 2 इसके अलावा इस पर लज्जित होने
के बजाय तुम्हें इसका गर्व है! ऐसे व्यक्ति को तो तुम्हारे बीच से निकाल देना
चाहिए था? 3 शारीरिक रूप से अनुपस्थित होने पर भी मैं तुम्हारे बीच आत्मा में
उपस्थित हूं और मैं उस बुरा काम करनेवाले के विरुद्ध अपना निर्णय ऐसे दे चुका
हूं मानो मैं स्वयं वहां उपस्थित हूं. 4 जब तुम प्रभु येशु मसीह के नाम में इकट्ठा
होते हो, और मसीह येशु की सामर्थ्य के साथ आत्मा में मैं तुम्हारे बीच, 5 तब
उस बुरा काम करनेवाले को शैतान के हाथों सौंप दिया जाए कि उसका शरीर
तो नाश हो जाए, किंतु प्रभु के दिन उसकी आत्मा का उद्धार हो. 6 तुम्हारा घमंड
करना बिलकुल भी अच्छा नहीं है. क्या तुम नहीं जानते कि थोड़े से खमीर से
ही पूरा गूंथा हुआ आटा खमीर हो जाता है? 7 निकाल फेंको इस खमीर को कि
तुम एक नया गूंथा हुआ आटा बन जाओ, जैसे कि तुम अखमीरी ही हो, क्योंकि
हमारा फ़सह वास्तव में मसीह की बलि द्वारा पूरा हुआ है. 8 हम बुराई व दुष्टता
के पुराने खमीर से नहीं परंतु सीधाई व सच्चाई की अखमीरी रोटी से उत्सव
मनाएं. 9 अपने पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि बुरा काम करनेवालों से कोई
संबंध न रखना. 10 मेरा मतलब यह बिलकुल न था कि तुम संसार के उन सभी
व्यक्तियों से, जो बुरा काम करनेवाले, लोभी, ठग या मूर्तिपूजक हैं, कोई संबंध
न रखना, अन्यथा तुम्हें तो संसार से ही बाहर हो जाना पड़ेगा. 11 वास्तव में मेरा
मतलब यह था कि तुम्हारा ऐसे किसी साथी विश्वासी के साथ, जो बुरा काम
करनेवाले, लोभी, मूर्तिपूजक, बकवादी, पियक्कड़ या ठग हो, संबंध रखना तो
दूर, भोजन करना तक ठीक न होगा. 12 कलीसिया से बाहर के व्यक्तियों का
न्याय भला मैं क्यों करूं? किंतु क्या, यह तुम्हारा काम नहीं है कि उनकी जांच
करना, जो कलीसिया में हैं? 13 बाहरी व्यक्तियों का न्याय परमेश्वर करेंगे.
“बाहर निकाल दो अपने बीच से कुकर्मी को.”

6 तुम्हारे बीच झगड़ा उठने की स्थिति में कौन अपना फैसला पवित्र लोगों
के सामने न लाकर सांसारिक न्यायाधीश के सामने ले जाने का दुस्साहस
करेगा? 2 क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि संसार का न्याय पवित्र लोगों द्वारा
किया जाएगा? यदि संसार का न्याय तुम्हारे द्वारा किया जाएगा तो क्या तुम इन
छोटे-छोटे झगड़ों को सुलझाने में सक्षम नहीं? 3 क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम
स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो उसकी तुलना में ये सांसारिक झगड़े क्या हैं? 4
यदि तुम्हारे बीच सांसारिक झगड़े हैं ही तो क्या तुम्हारे बीच, (कलीसिया में),
कोई भी ऐसा बुद्धिमान नहीं, जो अपने साथी विश्वासी के झगड़े को विवेक से
सुलझा सके? 5 यह कहकर तुम्हें लज्जित करना ही मेरा उद्देश्य है. क्या तुम्हारे
मध्य एक भी ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति नहीं, जो भाई-भाई के मध्य उठे विवाद को
सुलझा सके—एक भी नहीं! 6 यहां तो एक विश्वासी दूसरे को न्यायपालिका में
घसीट रहा है और वह भी गैर-यहूदियों के सामने! 7 यदि तुम्हारे बीच झगड़े
चल रहे हैं, तो तुम पहले ही हार चुके हो. इसकी बजाय तुम ही अन्याय क्यों
नहीं सह लेते और इसकी आशा तुम ही धोखा खाते क्यों नहीं रह जाते? 8
इसके विपरीत तुम स्वयं ही अन्याय तथा धोखा कर रहे हो और वह भी भाई
बहनों के साथ! 9 क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि दुराचारी परमेश्वर के राज्य के
अधिकारी न होंगे? इस भ्रम में न रहना: वेश्यागामी, मूर्तिपूजक, व्यभिचारी,
परस्त्रीगामी, समलैंगिक, 10 चोर, लोभी, शराबी, बकवादी और ठग परमेश्वर
के राज्य के अधिकारी न होंगे. 11 ऐसे ही थे तुममें से कुछ किंतु अब तुम
धोकर स्वच्छ किए गए, परमेश्वर के लिए अलग किए गए तथा प्रभु येशु मसीह
तथा हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किए गए काम के परिणामस्वरूप धर्मी
घोषित किए गए हो. 12 कदाचित कोई यह कहे, “मेरे लिए सब कुछ व्यवस्था
के हिसाब से सही है.” ठीक है, किंतु मैं कहता हूं कि तुम्हारे लिए सब कुछ
लाभदायक नहीं है. मैं भी कह सकता हूं कि मेरे लिए सब कुछ व्यवस्था के
हिसाब से सही है किंतु मैं नहीं चाहूंगा कि मैं किसी भी वस्तु का दास बनूं. 13
तब कदाचित कोई कहे, “भोजन पेट के लिए तथा पेट भोजन के लिए है.”
ठीक है, किंतु मैं कहता हूं कि परमेश्वर दोनों ही को समाप्त कर देंगे. सच यह
भी है कि शरीर वेश्यागामी के लिए नहीं परंतु प्रभु के लिए है तथा प्रभु शरीर के
रक्षक हैं. 14 परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से न केवल प्रभु को जीवित किया, उसी
सामर्थ्य से वह हमें भी जीवित करेंगे. 15 क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम सबके
शरीर मसीह के अंग हैं? तो क्या मैं मसीह के अंगों को वेश्या के अंग बना दूं?
ऐसा बिलकुल न हो! 16 क्या तुम्हें यह अहसास नहीं कि वह, जो वेश्या से
जुड़ा होता है, उसके साथ एक तन हो जाता है? क्योंकि परमेश्वर ने कहा है,
“वे दोनों एक तन होंगे.” 17 वह, जो प्रभु से जुड़ा होता है, उनसे एक आत्मा
हो जाता है. 18 वेश्यागामी से दूर भागो! मनुष्य द्वारा किए गए अन्य पाप उसके
शरीर को प्रभावित नहीं करते किंतु वेश्यावृत्ति करनेवाला अपने ही शरीर के
विरुद्ध पाप करता है. 19 क्या तुम्हें यह अहसास नहीं कि तुम्हारा शरीर पवित्र
आत्मा का—जिनका तुम्हारे अंदर वास है तथा जो तुम्हें परमेश्वर से प्राप्त हुए
हैं—मंदिर है? तुम पर तुम्हारा अधिकार नहीं 20 क्योंकि तुम्हें दाम देकर मोल
लिया गया है; इसलिये अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो.

7 अब वे विषय जिनके संबंध में तुमने मुझसे लिखकर पूछा है: पुरुष के लिए
उचित तो यही है कि वह स्त्री का स्पर्श ही न करे 2 किंतु व्यभिचार से बचने
के लिए हर एक पुरुष की अपनी पत्नी तथा हर एक स्त्री का अपना पति हो. 3
यह आवश्यक है कि पति अपनी पत्नी के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करे तथा इसी
प्रकार पत्नी भी अपने पति के प्रति. 4 पत्नी ने अपने पति को अपने शरीर पर
अधिकार दिया है, वैसे ही पति ने अपनी पत्नी को अपने शरीर पर अधिकार
दिया है. 5 पति-पत्नी एक दूसरे को शारीरिक संबंधों से दूर न रखें—सिवाय
आपसी सहमति से प्रार्थना के उद्देश्य से सीमित अवधि के लिए. इसके तुरंत बाद
वे दोबारा साथ हो जाएं कि कहीं संयम टूटने के कारण शैतान उन्हें परीक्षा में न
फंसा ले. 6 यह मैं सुविधा अनुमति के रूप में कह रहा हूं—आज्ञा के रूप में
नहीं. 7 वैसे तो मेरी इच्छा तो यही है कि सभी पुरुष ऐसे होते जैसा स्वयं मैं हूं
किंतु परमेश्वर ने तुममें से हर एक को भिन्न-भिन्न क्षमताएं प्रदान की हैं. 8
अविवाहितों तथा विधवाओं से मेरा कहना है कि वे अकेले ही रहें—जैसा मैं हूं
9 किंतु यदि उनके लिए संयम रखना संभव नहीं तो वे विवाह कर लें—कामातुर
होकर जलते रहने की बजाय विवाह कर लेना ही उत्तम है. 10 विवाहितों के
लिए मेरा निर्देश है—मेरा नहीं परंतु प्रभु का: पत्नी अपने पति से संबंध न तोड़े.
11 यदि पत्नी का संबंध टूट ही जाता है तो वह दोबारा विवाह न करे या पति से
मेल-मिलाप कर ले. पति अपनी पत्नी का त्याग न करे. 12 मगर बाकियों से मेरा
कहना है कि यदि किसी साथी विश्वासी की पत्नी विश्वासी न हो और वह उसके
साथ रहने के लिए सहमत हो तो पति उसका त्याग न करे. 13 यदि किसी स्त्री
का पति विश्वासी न हो और वह उसके साथ रहने के लिए राज़ी हो तो पत्नी
उसका त्याग न करे; 14 क्योंकि अविश्वासी पति अपनी विश्वासी पत्नी के
कारण पवित्र ठहराया जाता है. इसी प्रकार अविश्वासी पत्नी अपने विश्वासी पति
के कारण पवित्र ठहराई जाती है. यदि ऐसा न होता तो तुम्हारी संतान अशुद्ध रह
जाती; किंतु इस स्थिति में वह परमेश्वर के लिए अलग की गई है. 15 फिर भी
यदि अविश्वासी दंपति अलग होना चाहे तो उसे हो जाने दिया जाए. कोई भी
विश्वासी भाई या विश्वासी बहन इस बंधन में बंधे रहने के लिए बाध्य नहीं.
परमेश्वर ने हमें शांति से भरे जीवन के लिए बुलाया है. 16 पत्नी यह संभावना
कभी भुला न दे: पत्नी अपने पति के उद्धार का साधन हो सकती है, वैसे ही पति
अपनी पत्नी के उद्धार का. 17 परमेश्वर ने जिसे जैसी स्थिति में रखा है तथा जिस
रूप में उसे बुलाया है, वह उसी में बना रहे. सभी कलीसियाओं के लिए मेरा यही
निर्देश है. 18 क्या किसी ऐसे व्यक्ति को बुलाया गया है, जिसका पहले से ही
ख़तना हुआ था? वह अब खतना-रहित न बने. क्या किसी ऐसे व्यक्ति को
बुलाया गया है, जो ख़तना रहित है? वह अपना ख़तना न कराए. 19 न तो
ख़तना कराने का कोई महत्व है और न ख़तना रहित होने का. महत्व है तो मात्र
परमेश्वर की आज्ञापालन का. 20 हर एक उसी अवस्था में बना रहे, जिसमें
उसको बुलाया गया था. 21 क्या तुम्हें उस समय बुलाया गया था, जब तुम दास
थे? यह तुम्हारे लिए चिंता का विषय न हो किंतु यदि दासत्व से स्वतंत्र होने का
सुअवसर आए तो इस सुअवसर का लाभ अवश्य उठाओ. 22 वह, जिसको उस
समय बुलाया गया, जब वह दास था, अब प्रभु में स्वतंत्र किया हुआ व्यक्ति है;
इसी प्रकार, जिसको उस समय बुलाया गया, जब वह स्वतंत्र था, अब वह
मसीह का दास है. 23 तुम दाम देकर मोल लिए गए हो इसलिये मनुष्य के दास
न बन जाओ. 24 प्रिय भाई बहनो, तुममें से हर एक उसी अवस्था में, जिसमें उसे
बुलाया गया था, परमेश्वर के साथ जुड़ा रहे. 25 कुंवारियों के संबंध में मेरे
पास प्रभु की ओर से कोई आज्ञा नहीं है किंतु मैं, जो प्रभु की कृपा के कारण
विश्वसनीय हूं, अपनी ओर से यह कहना चाहता हूं: 26 वर्तमान संकट के कारण
मेरे विचार से पुरुष के लिए उत्तम यही होगा कि वह जिस स्थिति में है, उसी में
बना रहे. 27 यदि तुम विवाहित हो तो पत्नी का त्याग न करो. यदि अविवाहित हो
तो पत्नी खोजने का प्रयास न करो. 28 यदि तुम विवाह करते ही हो तो भी पाप
नहीं करते. यदि कोई कुंवारी कन्या विवाह करती है तो यह पाप नहीं है. फिर
भी इनके साथ सामान्य वैवाहिक जीवन संबंधी झंझट लगे रहेंगे और मैं वास्तव
में तुम्हें इन्हीं से बचाने का प्रयास कर रहा हूं. 29 प्रिय भाई बहनो, मेरा मतलब
यह है कि थोड़ा ही समय शेष रह गया है इसलिये अब से वे, जो विवाहित हैं ऐसे
रहें, मानो अविवाहित हों. 30 जो शोकित हैं उनका शोक प्रकट न हो; जो
आनंदित हैं उनका आनंद छुपा रहे और जो मोल ले रहे हैं, वे ऐसे हो जाएं मानो
उनके पास कुछ भी नहीं है. 31 जिनका लेनदेन सांसारिक वस्तुओं से है, वे

उनमें लीन न हो जाएं क्योंकि संसार के इस वर्तमान स्वरूप का नाश होता चला
जा रहा है. 32 मेरी इच्छा है कि तुम सांसारिक जीवन की अभिलाषाओं से मुक्त
रहो. उसके लिए, जो अविवाहित है, प्रभु संबंधी विषयों का ध्यान रखना संभव
है कि वह प्रभु को संतुष्ट कैसे कर सकता है; 33 किंतु वह, जो विवाहित है,
उसका ध्यान संसार संबंधित विषयों में ही लगा रहता है कि वह अपनी पत्नी को
प्रसन्न कैसे करे, 34 उसकी रुचियां बंटी रहती हैं. उसी प्रकार पतिहीन तथा
कुंवारी स्त्री की रुचियां प्रभु से संबंधित विषयों में सीमित रह सकती हैं—और
इसके लिए वह शरीर और आत्मा में पवित्र रहने में प्रयास करती रहती है, किंतु
वह स्त्री, जो विवाहित है, संसार संबंधी विषयों का ध्यान रखती है कि वह अपने
पति को प्रसन्न कैसे करे. 35 मैं यह सब तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहा
हूं—किसी प्रकार से फंसाने के लिए नहीं परंतु इसलिये कि तुम्हारी जीवनशैली
आदर्श हो तथा प्रभु के प्रति तुम्हारा समर्पण एकचित्त होकर रहे. 36 यदि किसी
को यह लगे कि वह अपनी पुत्री के विवाह में देरी करने के द्वारा उसके साथ
अन्याय कर रहा है, क्योंकि उसकी आयु ढल रही है, वह वही करे, जो वह
सही समझता है, वह उसे विवाह करने दे. यह कोई पाप नहीं है. 37 किंतु वह,
जो बिना किसी बाधा के दृढ़ संकल्प है, अपनी इच्छा अनुसार निर्णय लेने की
स्थिति में है तथा जिसने अपनी पुत्री का विवाह न करने का निश्चय कर लिया
है, उसका निर्णय सही है. 38 इसलिये जो अपनी पुत्री का विवाह करता है,
उसका निर्णय भी सही है तथा जो उसका विवाह न कराने का निश्चय करता है,
वह और भी सही है. 39 पत्नी तब तक पति से जुड़ी रहती है, जब तक पति
जीवित है. यदि पति की मृत्यु हो जाए तो वह अपनी इच्छा के अनुसार विवाह
करने के लिए स्वतंत्र है—किंतु ज़रूरी यह है कि वह पुरुष भी प्रभु में विश्वासी
ही हो. 40 मेरा व्यक्तिगत मत यह है कि वह स्त्री उसी स्थिति में बनी रहे, जिसमें
वह इस समय है. वह इसी स्थिति में सुखी रहेगी. मुझे विश्वास है कि मुझमें भी
परमेश्वर का आत्मा वास करता है.

8 अब मूर्तियों को चढ़ाई हुई वस्तुओं के संबंध में: हम जानते हैं कि हम
सब ज्ञानी हैं. वास्तव में तो ज्ञान हमें घमंडी बनाता है जबकि प्रेम हमें उन्नत
करता है. 2 यदि कोई यह समझता है कि वह ज्ञानवान है तो वास्तव में वह अब
तक वैसा ज्ञान ही नहीं पाया, जैसा जानना उसके लिए ज़रूरी है. 3 वह, जो
परमेश्वर से प्रेम करता है, परमेश्वर का परिचित हो जाता है. 4 जहां तक मूर्तियों
को चढ़ाई हुई वस्तुओं को खाने का प्रश्न है, हम इस बात को भली-भांति जानते
हैं कि सारे संसार में कहीं भी मूर्तियों में परमेश्वर नहीं है तथा एक के अतिरिक्त
और कोई परमेश्वर नहीं है. 5 यद्यपि आकाश और पृथ्वी पर अनेक तथाकथित
देवता हैं, जैसे कि अनेक देवता और अनेक प्रभु भी हैं 6 किंतु हमारे लिए तो
परमेश्वर मात्र एक ही हैं—वह पिता—जिनमें हम सब सृष्ट हैं, और हम उसी के
लिए हैं. प्रभु एक ही हैं—मसीह येशु—इन्हीं के द्वारा सब कुछ है, इन्हीं के द्वारा
हम हैं. 7 किंतु सभी को यह बात मालूम नहीं हैं. कुछ व्यक्ति ऐसे हैं, जो अब
तक मूर्तियों से जुड़े हैं तथा वे उस भोजन को मूर्तियों को भेंट किया हुआ भोजन
मानते हुए खाते हैं. उनका कमजोर विवेक अशुद्ध हो गया है. 8 हमें परमेश्वर के
पास ले जाने में भोजन का कोई योगदान नहीं होता—भोजन से न तो कोई हानि
संभव है और न ही कोई लाभ. 9 किंतु सावधान रहना कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता
निर्बलों के लिए ठोकर का कारण न बने. 10 यदि किसी का विवेक कमजोर है
और वह तुम जैसे ज्ञानी व्यक्ति को मूर्ति के मंदिर में भोजन करते देख ले तो क्या
उसे भी मूर्ति को चढ़ाई हुई वस्तुएं खाने का साहस न मिलेगा? 11 इसमें तुम्हारा
ज्ञानी होना उसके विनाश का कारण हो गया, जिसके लिए मसीह येशु ने प्राण
दिया. 12 इस प्रकार विश्वासियों के विरुद्ध पाप करने तथा उनके विवेक को, जो
कमजोर हैं, चोट पहुंचाने के द्वारा तुम मसीह येशु के विरुद्ध पाप करते हो. 13
इसलिये यदि भोजन किसी के लिए ठोकर का कारण बनता है तो मैं मांस का
भोजन कभी न करूंगा कि मैं विश्वासियों के लिए ठोकर का कारण न बनूं.
(aiōn g165)

9 क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैंने हमारे प्रभु येशु मसीह को
साक्षात नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे परिश्रम का फल नहीं? 2 भले ही मैं
अन्यों के लिए प्रेरित नहीं किंतु तुम्हारे लिए तो हूं क्योंकि तुम प्रभु में मेरी
प्रेरिताई की मोहर हो. 3 जो मुझ पर दोष लगाते हैं, उनसे अपने पक्ष में मेरा यह
कहना है: 4 क्या हमें तुम्हारे भोजन में भाग लेने का अधिकार नहीं? 5 क्या
अन्य प्रेरितों, प्रभु के भाइयों तथा कैफ़स के समान ही हमें भी अपने साथ
अपनी विश्वासी पत्नी को ले जाने का अधिकार नहीं? 6 क्या बारनबास और मैं
ही ऐसे हैं, जो खुद अपनी कमाई करने के लिए मजबूर हैं? 7 कौन सैनिक ऐसा
है, जो सेना में सेवा करते हुए अपना खर्च स्वयं उठाता है? कौन है, जो दाख की
बारी को लगाता तो है और स्वयं उसका फल नहीं खाता? या कौन ऐसा पशु
पालक है, जो अपने पशुओं के दूध का उपयोग न करता हो? 8 क्या मैं यह सिर्फ
मनुष्य की रीति से कह रहा हूं? क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? 9 जैसा कि
मोशेह की व्यवस्था में लिखा है: दांवनी करते बैल के मुख को मुखबन्धनी न
बांधना. क्या परमेश्वर को मात्र बैलों का ही ध्यान है? 10 क्या वह यह हमारे
लिए भी नहीं कह रहे थे? निःसंदेह यह हमारे हित में ही लिखा गया है: उचित है
कि किसान आशा में खेत जोते तथा जो भूसे से अनाज अलग करनेवाला उपज
का भाग पाने की आशा करे. 11 यदि हमने तुममें आत्मिक बीज बोए हैं तो क्या
तुमसे भौतिक उपज की आशा करना ज्यादा उम्मीद करना है? 12 यदि तुम
पर दूसरों का अधिकार है तो क्या तुम पर हमारा अधिकार उन सबसे बढ़कर
नहीं? फिर भी हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया. इसके विपरीत
हम सब कुछ धीरज के साथ सहते रहे कि मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार के
प्रचार में कोई बाधा न आए. 13 क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मंदिर में काम
करनेवालों का भरण-पोषण मंदिर से ही होता है और जो बलि वेदी पर चढ़ाई
जाती है, वे उसी बलि में से अपना भाग प्राप्त करते हैं? 14 इसी प्रकार प्रभु की
आज्ञा है कि वे, जो ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करते हैं, उसी के द्वारा अपनी
रोज़ी रोटी कमाएं. 15 किंतु मैंने इनमें से किसी भी अधिकार का उपयोग नहीं
किया और न ही मैं इस उद्देश्य से लिख रहा हूं कि मेरे लिए कुछ किया जाए.
इसके बजाय कि कोई मुझे मेरे इस गौरव से वंचित करे, मैं मर जाना उचित
समझता हूं, 16 तो यदि मैं ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करता हूं तो इसमें घमंड
कैसा! यह तो मुझे सौंपी गई ज़िम्मेदारी है! धिक्कार है मुझ पर यदि मैं ईश्वरीय
सुसमाचार का प्रचार न करूं. 17 यदि मैं अपनी इच्छा से प्रचार करता हूं तो मुझे
उसका प्रतिफल प्राप्त होगा किंतु यदि मैं प्रचार बिना इच्छा के करता हूं तो यह
मात्र ज़िम्मेदारी पूरी करना ही हुआ. 18 तब क्या है मेरा प्रतिफल? यही कि मैं
ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार मुफ्त में करता रहूं और इससे संबंधित अपने
अधिकारों का उपयोग न करूं. 19 यद्यपि मैं किसी के भी अधीन नहीं हूं फिर
भी मैंने स्वयं को सबका दास बना लिया है कि मैं ज्यादा से ज्यादा को जीत
सकूं. 20 मैं यहूदियों के लिए यहूदियों जैसा बन गया कि मैं उन्हें जीत सकूं.
व्यवस्था के अधीनों के लिए मैं व्यवस्था के अधीन बन गया—यद्यपि मैं स्वयं
व्यवस्था के अधीन नहीं—कि मैं उन्हें जीत सकूं, जो व्यवस्था के अधीन हैं.
21 जो व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, मैं उन्हीं के समान बन गया—यद्यपि मैं स्वयं
परमेश्वर की व्यवस्था से स्वतंत्र नहीं, मसीह की व्यवस्था के अधीनस्थ हूं कि मैं
उन्हें जीत सकूं, जो व्यवस्था के अधीन नहीं हैं. 22 दुर्बलों के लिए मैं स्वयं
दुर्बल बन गया कि मैं उन्हें जीत सकूं—मैं हर एक प्रकार के व्यक्ति के लिए
उन्हीं के अनुरूप बन गया कि किसी न किसी रीति से मेरे हर एक प्रयास द्वारा
कुछ का उद्धार हो जाए. 23 मैं यह सब ईश्वरीय सुसमाचार के लिए करता हूं कि
मैं इसमें अन्यों का सहभागी बन जाऊं. 24 क्या तुम नहीं जानते कि प्रतियोगिता

में दौड़ते तो सभी हैं किंतु पुरस्कार मात्र एक को ही मिलता है. तुम ऐसे दौड़ो कि
पुरस्कार तुम्हें प्राप्त हो. 25 हर एक प्रतियोगी, जो प्रतियोगिता में भाग लेता है,
कठोर संयम का पालन करता है. वे तो नाशमान मुकुट प्राप्त करने के उद्देश्य से
यह सब करते हैं किंतु हम यह सब अविनाशी मुकुट प्राप्त करने के लिए करते
हैं. 26 मैं लक्ष्यहीन व्यक्ति के समान नहीं दौड़ता. मैं हवा में घूंसे नहीं मारता.
27 मैं अपने शरीर को कष्ट देते हुए अपने वश में रखता हूं—ऐसा न हो कि मैं
दूसरों को तो उपदेश दूं और स्वयं अयोग्य करार हो जाऊं.

10 प्रिय भाई बहनो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि
हमारे सारे पूर्वज बादल की छाया में यात्रा करते रहे, और सभी ने समुद्र
पार किया. 2 उन सभी का मोशेह में, बादल में और समुद्र में बपतिस्मा हुआ. 3
सबने एक ही आत्मिक भोजन किया, 4 सबने एक ही आत्मिक जल पिया
क्योंकि वे सब एक ही आत्मिक चट्टान में से पिया करते थे, जो उनके साथ साथ
चलती थी और वह चट्टान थे मसीह. 5 यह सब होने पर भी परमेश्वर उनमें से
बहुतों से संतुष्ट न थे इसलिये बंजर भूमि में ही उनके प्राण ले लिए गए. 6 ये
सभी घटनाएं हमारे लिए चेतावनी थी कि हम बुराई की लालसा न करें, जैसे
हमारे पूर्वजों ने की थी. 7 न ही तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे उनमें से कुछ थे,
जैसा पवित्र शास्त्र का लेख है: वे खाने-पीने बैठ गए और खड़े होकर रंगरेलियां
मनाने लगे. 8 हम वेश्यागामी में लीन न हों, जैसे उनमें से कुछ हो गए थे और
परिणामस्वरूप, एक ही दिन में तेईस हज़ार की मृत्यु हो गई. 9 न हम मसीह को
परखें, जैसे उनमें से कुछ ने किया और सांपों के डसने से उनका नाश हो गया.
10 न ही तुम कुड़कुड़ाओ, जैसा उनमें से कुछ ने किया और नाश करनेवाले द्वारा
नाश किए गए. 11 उनके साथ घटी हुई ये घटनाएं चिन्ह थी, जो हमारे लिए
चेतावनी के रूप में लिखी गई क्योंकि हम उस युग में हैं, जो अंत के पास है.
(aiōn g165) 12 इसलिये वह, जो यह समझता है कि वह स्थिर है, सावधान रहे
कि कहीं गिर न पड़े. 13 कोई ऐसी परीक्षा तुम पर नहीं आई, जो सभी के लिए
सामान्य न हो. परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं. वह तुम्हें किसी ऐसी परीक्षा में नहीं
पड़ने देंगे, जो तुम्हारी क्षमता के परे हो परंतु वह परीक्षा के साथ उपाय भी करेंगे
कि तुम स्थिर रह सको. 14 इसलिये प्रिय भाई बहनो, मूर्ति पूजा से दूर भागो.
15 यह मैं तुम्हें बुद्धिमान मानते हुए कह रहा हूं: मैं जो कह रहा हूं उसको परखो.
16 वह धन्यवाद का प्याला, जिसे हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लहू में
हमारी सहभागिता नहीं? वह रोटी, जो हम आपस में बांटते हैं, क्या मसीह के
शरीर में हमारी सहभागिता नहीं? 17 एक रोटी में हमारी सहभागिता हमारे
अनेक होने पर भी हमारे एक शरीर होने का प्रतीक है. 18 इस्राएलियों के विषय
में सोचो, जो वेदी पर चढ़ाई हुई बलि खाते हैं, क्या इसके द्वारा वे एक नहीं हो
जाते? 19 क्या है मेरे कहने का मतलब? क्या मूर्ति को चढ़ाई हुई वस्तु का कोई
महत्व है या उस मूर्ति का कोई महत्व है? 20 बिलकुल नहीं! मेरी मान्यता
तो यह है कि जो वस्तुएं गैर-यहूदी चढ़ाते हैं, वे उन्हें दुष्टात्माओं को चढ़ाते
हैं—परमेश्वर को नहीं. 21 यह हो ही नहीं सकता कि तुम प्रभु के प्याले में से
पियो और दुष्टात्माओं के प्याले में से भी; इसी प्रकार यह भी नहीं हो सकता कि
तुम प्रभु की मेज़ में सहभागी हो और दुष्टात्माओं की मेज़ में भी. 22 क्या हम
प्रभु में जलन पैदा करने का दुस्साहस कर रहे हैं? क्या हम प्रभु से अधिक
शक्तिशाली हैं? 23 उचित तो सभी कुछ है किंतु सभी कुछ लाभदायक नहीं.
उचित तो सभी कुछ है किंतु सभी कुछ उन्नति के लिए नहीं. 24 तुममें से
प्रत्येक अपने भले का ही नहीं परंतु दूसरे के भले का भी ध्यान रखे. 25 अपनी
अंतरात्मा की भलाई के लिए बिना कोई प्रश्न किए मांस विक्रेताओं के यहां से जो
कुछ उपलब्ध हो, वह खा लो, 26 क्योंकि पृथ्वी और पृथ्वी में जो कुछ भी है
सभी कुछ प्रभु का ही है. 27 यदि किसी अविश्वासी के आमंत्रण पर उसके यहां
भोजन के लिए जाना ज़रूरी हो जाए तो अपनी अंतरात्मा की भलाई के लिए,
बिना कोई भी प्रश्न किए वह खा लो, जो तुम्हें परोसा जाए. 28 किंतु यदि कोई
तुम्हें यह बताए, “यह मूर्तियों को भेंट बलि है,” तो उसे न खाना—उसकी
भलाई के लिए, जिसने तुम्हें यह बताया है तथा विवेक की भलाई के लिए. 29
मेरा मतलब तुम्हारे अपने विवेक से नहीं परंतु उस अन्य व्यक्ति के विवेक से
है—मेरी स्वतंत्रता भला क्यों किसी दूसरे के विवेक द्वारा नापी जाए? 30 यदि मैं
धन्यवाद देकर भोजन में शामिल होता हूं तो उसके लिए मुझ पर दोष क्यों
लगाया जाता है, जिसके लिए मैंने परमेश्वर के प्रति धन्यवाद प्रकट किया? 31
इसलिये तुम चाहे जो कुछ करो, चाहे जो कुछ खाओ या पियो, वह परमेश्वर
की महिमा के लिए हो. 32 तुम न यहूदियों के लिए ठोकर का कारण बनो, न
यूनानियों के लिए और न ही परमेश्वर की कलीसिया के लिए; 33 ठीक जिस
प्रकार मैं भी सबको सब प्रकार से प्रसन्न रखता हूं और मैं अपने भले का नहीं
परंतु दूसरों के भले का ध्यान रखता हूं कि उन्हें उद्धार प्राप्त हो.

11 जिस प्रकार मैं मसीह के जैसी चाल चलता हूं, तुम भी मेरी जैसी चाल
चलो. 2 मैं तुम्हारी तारीफ़ करता हूं कि तुम हर एक क्षेत्र में मुझे याद
रखते हो तथा उन शिक्षाओं का मजबूती से पालन करते हो, जैसी मैंने तुम्हें
सौंपी थी. 3 मैं चाहता हूं कि तुम इस बात को समझ लो कि हर एक पुरुष के
अधिष्ठाता (सिर) मसीह येशु हैं, स्त्री का सिर उसका पति है तथा मसीह के सिर
परमेश्वर हैं. 4 पुरुष का प्रार्थना या भविष्यवाणी करते समय अपना सिर ढके
रहना उसके सिर का अपमान है. 5 स्त्री का प्रार्थना या भविष्यवाणी करते समय
अपना सिर उघाड़े रखना उसके सिर का अपमान है—यह सिर मूंडाने के बराबर
है. 6 यदि कोई स्त्री अपना सिर ढांकना नहीं चाहती, वह अपने बाल कटवा ले.
बाल कटवाना या मुंडवाना लज्जास्पद होता है इसलिये वह अपना सिर ढके रहे.
7 पुरुष के लिए सिर ढांकना उचित नहीं क्योंकि वह परमेश्वर का प्रतिरूप तथा
गौरव है. इसी प्रकार पुरुष का गौरव स्त्री है 8 क्योंकि नर की उत्पत्ति नारी से
नहीं परंतु नारी की नर से हुई है 9 नर को नारी के लिए नहीं बनाया गया परंतु
नारी को नर के लिए बनाया गया. 10 इसलिये स्वर्गदूतों की उपस्थिति का
ध्यान रखते हुए स्त्रियों के लिए उचित है कि वे अपनी अधीनता के प्रतीक
स्वरूप अपने सिर को ढांक कर रखें. 11 फिर भी, प्रभु में न तो नारी पुरुष से
और न पुरुष नारी से स्वतंत्र है. 12 जिस प्रकार नारी की उत्पत्ति नर से हुई
है उसी प्रकार अब नर का जन्म नारी से होता है तथा सभी सृष्टि की उत्पत्ति
परमेश्वर से है. 13 तुम्हीं विचार करो: क्या बिना सिर ढके स्त्री का परमेश्वर से
प्रार्थना करना शोभा देता है? 14 क्या स्वयं प्रकृति से यह स्पष्ट नहीं कि लंबे
बाल रखना पुरुष के लिए लज्जा की बात है? 15 इसके विपरीत स्त्री के लंबे बाल
उसकी शोभा हैं क्योंकि ये उसे ओढ़नी के रूप में दिए गए हैं. 16 यदि कोई इस
विषय पर अब भी विवाद करना चाहे तो वह यह समझ ले कि परमेश्वर की
कलीसिया में—न तो हमारे यहां या और कहीं—कोई अन्य प्रथा प्रचलित नहीं
है. 17 यह आज्ञा देते हुए मैं तुम्हारी कोई बड़ाई नहीं कर रहा: आराधना सभाओं
में तुम्हारे इकट्ठा होने से भलाई नहीं परंतु बुराई ही होती है. 18 सबसे पहले तो
यह: जब तुम कलीसिया के रूप में इकट्ठा होते हो, तो मेरे सुनने में यह आया है
कि तुममें फूट पड़ी रहती है और मैं एक सीमा तक इसका विश्वास भी करता
हूं. 19 हां, यह सच है कि तुम्हारे बीच बंटवारा होना ज़रूरी भी है कि वे, जो
परमेश्वर द्वारा चुने हुए हैं, प्रकाश में आ जाएं. 20 जिस रीति से तुम भोजन के
लिए इकट्ठा होते हो, उसे प्रभु-भोज नहीं कहा जा सकता. 21 उस भोज में जब
भोजन का समय आता है, तुम भोजन पर टूट पड़ते हो और किसी की प्रतीक्षा
किए बिना अपना अपना भोजन कर लेते हो. परिणामस्वरूप कोई तो भूखा ही
रह जाता है और कोई मतवाला हो जाता है. 22 क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे
अपने घर नहीं? या तुम परमेश्वर की कलीसिया का तिरस्कार करने तथा निर्धनों
को लज्जित करने पर तुले हुए हो? अब मैं क्या कहूं? क्या मैं इसके लिए

तुम्हारी सराहना करूं? नहीं! बिलकुल नहीं! **23** जो मैंने प्रभु से प्राप्त किया, वह मैंने तुम्हें भी सौंप दिया: प्रभु येशु मसीह ने, जिस रात उन्हें पकड़वाया जा रहा था, रोटी ली, **24** धन्यवाद देने के बाद उसे तोड़ा और कहा, "तुम्हारे लिए यह मेरा शरीर है. यह मेरी याद में किया करना." **25** इसी प्रकार भोजन के बाद उन्होंने प्याला लेकर कहा, "यह प्याला मेरे लहू में स्थापित नई वाचा है. जब-जब तुम इसे पियो, यह मेरी याद में किया करना." **26** इसलिये जब-जब तुम यह रोटी खाते हो और इस प्याले में से पीते हो, तब-तब प्रभु के आगमन तक उनकी मृत्यु का प्रचार करते हो. **27** परिणामस्वरूप जो कोई अनुचित रीति से इस रोटी को खाता तथा प्रभु के प्याले में से पीता है, वह प्रभु के शरीर और उनके लहू के दूषित होने का दोषी होगा. **28** इसलिये मनुष्य इस रोटी को खाने तथा इस प्याले में से पीने के पहले अपने आपको जांच ले. **29** क्योंकि जो कोई इसे खाता और पीता है, यदि वह प्रभु की कलीसिया रूपी शरीर को पहिचाने बिना खाता और पीता है, अपने ही ऊपर दंड के लिए खाता और पीता है. **30** यही कारण है कि तुममें से अनेक दुर्बल और रोगी हैं तथा अनेक मृत्यु में सो गए. **31** यदि हम अपने विवेक को सही रीति से जांच लें तो हमारी ताड़ना नहीं की जाएगी **32** ताड़ना के द्वारा प्रभु हमें अनुशासित करते हैं कि हम संसार के लिए निर्धारित दंड के भागी न हों. **33** इसलिये प्रिय भाई बहनो, जब तुम भोजन के लिए इकट्ठा होते हो तो एक दूसरे के लिए ठहरे रहो. **34** जो व्यक्ति अपनी भूख को नियंत्रित न रख सके, वह अपने घर पर ही खाए कि तुम्हारा इकट्ठा होना तुम्हारे दंड का कारण न बने. शेष विषयों का समाधान मैं वहां आने पर स्वयं करूंगा.

12 अब पवित्र आत्मा द्वारा दी गई क्षमताओं से संबंधित बातों के विषय में: मैं नहीं चाहता, प्रिय भाई बहनो, कि तुम इससे अनजान रहो. **2** तुम्हें याद होगा कि मसीह में अविश्वासी स्थिति में तुम गूंगी मूर्तियों के पीछे चलने के लिए भटका दिए गए थे. **3** इसलिये मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित कोई भी व्यक्ति यह कह ही नहीं सकता "शापित हो येशु" और न ही कोई पवित्र आत्मा की प्रेरणा के बिना कह सकता है "येशु प्रभु हैं." **4** आत्मा द्वारा दी गई क्षमताएं अलग-अलग हैं किंतु आत्मा एक ही हैं. **5** सेवकाई भी अलग-अलग हैं किंतु प्रभु एक ही हैं. **6** काम करने के तरीके भी अनेक हैं किंतु परमेश्वर एक ही हैं, जो सब मनुष्यों में उनका प्रभाव उत्पन्न करते हैं. **7** प्रत्येक को पवित्र आत्मा का प्रकाशन सबके बराबर लाभ के उद्देश्य से दिया जाता है. **8** आत्मा द्वारा किसी को ज्ञान भरी सलाह की क्षमता और किसी को उन्हीं आत्मा द्वारा ज्ञान भरी शिक्षा की क्षमता प्रदान की जाती है; **9** किसी को उन्हीं आत्मा द्वारा विश्वास की तथा किसी को उन्हीं आत्मा द्वारा चंगा करने की क्षमता प्रदान की जाती है; **10** किसी को सामर्थ्य के काम करने की, किसी को भविष्यवाणी की. किसी को आत्माओं की पहचान की, किसी को अन्य भाषाओं की तथा किसी को भाषाओं के वर्णन की क्षमता. **11** इन सबको सिर्फ एक और एक ही आत्मा के द्वारा किया जाता है तथा वह हर एक में ये क्षमताएं व्यक्तिगत रूप से बांट देते हैं. **12** जिस प्रकार शरीर एक है और उसके अंग अनेक, शरीर के अंग अनेक होने पर भी शरीर एक ही है; इसी प्रकार मसीह भी हैं. **13** यहूदी हो या यूनानी, दास हो या स्वतंत्र, एक ही शरीर होने के लिए एक ही आत्मा में हमारा बपतिस्मा किया गया तथा हम सभी को एक ही आत्मा पिलाया गया. **14** शरीर सिर्फ एक अंग नहीं परंतु अनेक अंग है. **15** यदि पैर कहे, "मैं हाथ नहीं इसलिये मैं शरीर का अंग नहीं." तो क्या उसके ऐसा कहने से वह शरीर का अंग नहीं रह जाता? **16** और यदि कान कहे, "मैं आंख नहीं इसलिये मैं शरीर का अंग नहीं." तो क्या उसके ऐसा कहने से वह शरीर का अंग नहीं रह जाता? **17** यदि सारा शरीर आंख ही होता तो सुनना कैसे होता? यदि सारा शरीर कान ही होता तो सूंघना कैसे होता? **18** किंतु परमेश्वर ने अपनी अच्छी बुद्धि के अनुसार हर एक अंग को शरीर में नियुक्त किया है. **19** यदि सभी अंग एक ही अंग होते तो शरीर कहां होता? **20** इसलिये वास्तविकता यह है कि अंग अनेक किंतु शरीर एक ही है. **21** आंख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं," या हाथ-पैर से, "मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं." **22** इसके विपरीत शरीर के वे अंग, जो दुर्बल मालूम होते हैं, बहुत ज़रूरी हैं. **23** शरीर के जो अंग तुलना में कम महत्व के समझे जाते हैं, उन्हीं को हम अधिक महत्व देते हैं और तुच्छ अंगों को हम विशेष ध्यान रखते हुए ढांके रखते हैं, **24** जबकि शोभनीय अंगों को इसकी कोई ज़रूरत नहीं किंतु परमेश्वर ने शरीर में अंगों को इस प्रकार बनाया है कि तुच्छ अंगों की महत्ता भी पहचानी जाए **25** कि शरीर में कोई फूट न हो परंतु हर एक अंग एक दूसरे का ध्यान रखे. **26** यदि एक अंग को पीड़ा होती है, तो उसके साथ सभी अंग पीड़ित होते हैं. यदि एक अंग को सम्मानित किया जाता है तो उसके साथ सभी अंग उसके आनंद में सहभागी होते हैं. **27** तुम मसीह के शरीर हो और तुममें से हर एक इस शरीर का अंग है. **28** कलीसिया में परमेश्वर ने सबसे पहले प्रेरितों, दूसरा भविष्यद्वक्ताओं तथा तीसरा शिक्षकों को नियुक्त किया है. इसके बाद उनको, जिन्हें अद्भुत काम, चंगा करने का, भलाई करनेवाले, प्रशासन-प्रबंध करनेवाले तथा अन्य भाषा बोलने की क्षमता प्रदान की गई है. **29** इसलिये क्या सभी प्रेरित हैं? सभी भविष्यवक्ता हैं? सभी शिक्षक हैं? सभी अद्भुत काम करते हैं? **30** क्या सभी को चंगाई करने की क्षमता दी गई है? क्या सभी अन्य भाषाओं में बात करते हैं? क्या सभी व्याख्या करते हैं? **31** सही तो यह होगा कि तुम ऊंची क्षमताओं की इच्छा करो. अब मैं तुम्हें सबसे उत्तम स्वभाव के विषय में बताना चाहूंगा.

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बातें करूं मगर यदि मैं प्रेम न रखूं, तो मैं घनघनाता घड़ियाल या झनझनाती झांझ हूं. **2** यदि मुझे भविष्यवाणी करने की क्षमता प्राप्त है, मैं भेद जानने वाला तथा ज्ञानी हूं और मेरा विश्वास ऐसा मजबूत हो कि मेरे वचन मात्र से पर्वत अपने स्थान से हट जाएं किंतु मैं प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं. **3** यदि मैं अपनी सारी संपत्ति कंगालों में बांट दूं और अपना शरीर भस्म होने के लिए बलिदान कर दूं किंतु यदि मैं प्रेम न रखूं तो क्या लाभ? **4** प्रेम धीरजवंत है, प्रेम कृपालु है. प्रेम जलन नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, घमंड नहीं करता, **5** अशोभनीय नहीं, स्वार्थी नहीं, झुंझलाता भी नहीं और क्रोधी भी नहीं है. **6** उसका आनंद दुराचार में नहीं, सच्चाई में है. **7** प्रेम हमेशा ही सुरक्षा प्रदान करता है, संदेह नहीं करता, हमेशा आशावान और हमेशा धीरज बनाए रहता है. **8** प्रेम अनंत काल का है. जहां तक भविष्यवाणियों का सवाल है, वे थोड़े समय के लिए हैं. भाषाएं निःशब्द हो जाएंगी तथा ज्ञान मिट जाएगा **9** क्योंकि अधूरा है हमारा ज्ञान और अधूरी है हमारी भविष्यवाणी करने की क्षमता; **10** किंतु जब हम सिद्धता तक पहुंच जाएंगे, वह सब, जो अधूरा है, मिट जाएगा. **11** जब मैं बालक था, मैं बालक के समान बातें करता था, बालक के समान विचार करता था तथा बालक के समान ही वाद-विवाद करता था किंतु सयाना होने पर मैंने बालकों का सा व्यवहार छोड़ दिया. **12** इस समय तो हमें आईने में धुंधला दिखाई देता है किंतु उस समय हम आमने-सामने देखेंगे. मेरा ज्ञान इस समय अधूरा है किंतु उस समय मेरा ज्ञान वैसा ही होगा जैसा इस समय मेरे विषय में परमेश्वर का है. **13** पर अब ये तीन: विश्वास, आशा और प्रेम ये तीनों स्थाई है किंतु इनमें सबसे ऊपर है प्रेम.

14 इसलिये प्रेम का स्वभाव रखते हुए आत्मिक वरदानों की बड़ी इच्छा करते रहो—विशेष रूप से भविष्यवाणी करने के वर की. **2** वह, जो अन्य भाषा में विचार प्रकट करता है, मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से बातें करता है. सच्चाई तो यह है कि कोई भी सुननेवाला उसकी भाषा नहीं समझता—वह

पवित्र आत्मा की अगुवाई के द्वारा गूढ़ सच्चाई प्रकट करता है. 3 किंतु वह, जो
भविष्यवाणी करता है, आत्मिक उन्नति, प्रोत्साहन तथा धीरज के लिए मनुष्यों
को संबोधित करता है; 4 वह, जो अन्य भाषा में संदेश सुनाता है, मात्र स्वयं को
उन्नत करता है किंतु वह, जो भविष्यवाणी करता है, कलीसिया को उन्नत
करता है. 5 मैं चाहता तो हूं कि तुममें से हर एक को अन्य भाषाओं की क्षमता
प्राप्त हो किंतु इसकी बजाय बेहतर यह होगा कि तुम्हें भविष्यवाणी की क्षमता
प्राप्त हो; क्योंकि वह, जो भविष्यवाणी करता है, उस अन्य भाषा बोलनेवाले
से, जो अनुवाद किए बिना अन्य भाषा में बातें करता है, बेहतर है क्योंकि
अनुवाद किए जाने पर ही कलीसिया की उन्नति संभव हो सकती है. 6 प्रिय
भाई बहनो, यदि मैं तुमसे अन्य भाषाओं में बातें करूं तो मैं इसमें तुम्हारा क्या
भला करूंगा यदि इसमें तुम्हारे लिए कोई प्रकाशन या ज्ञान या भविष्यवाणी या
शिक्षा न हो? 7 निर्जीव वस्तुएं भी ध्वनि उत्पन्न करती हैं, चाहे बांसुरी हो या
कोई तार-वाद्य. यदि उनसे उत्पन्न स्वरों में भिन्नता न हो तो यह कैसे मालूम
होगा कि कौन सा वाद्य बजाया जा रहा है? 8 यदि बिगुल का स्वर अस्पष्ट हो तो
युद्ध के लिए तैयार कौन होगा? 9 इसी प्रकार यदि अन्य भाषा में बातें करते हुए
तुम्हारे बोले हुए शब्द साफ़ न हों तो कौन समझेगा कि क्या कहा जा रहा है?
यह तो हवा से बातें करना हुआ. 10 विश्व में न जाने कितनी भाषाएं हैं और उनमें
से कोई भी व्यर्थ नहीं. 11 यदि मैं किसी की भाषा न समझ पाऊं तो मैं उसके
लिए और वह मेरे लिए विदेशी हुआ. 12 इसी प्रकार तुम भी, जो आत्मिक
वरदानों के प्रति इतने उत्सुक हो, उन क्षमताओं के उपयोग के लिए ऐसे प्रयासरत
रहो कि उनसे कलीसिया का पूरी तरह विकास हो. 13 इसलिये वह, जो अन्य
भाषा में बातें करता है, प्रार्थना करे कि उसे उसका वर्णन तथा अनुवाद करने
की क्षमता भी प्राप्त हो जाए. 14 जब मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करता हूं तो
मेरी आत्मा तो प्रार्थना करती रहती है किंतु मेरा मस्तिष्क निष्फल रहता है,
15 तो सही क्या है? यही न कि मैं आत्मा से प्रार्थना करूं और समझ से भी.
मैं आत्मा से गाऊंगा और समझ से भी गाऊंगा. 16 यदि तुम सिर्फ आत्मा में
स्तुति करते हो तो वहां उपस्थित अनजान व्यक्ति तुम्हारे धन्यवाद के अंत में
"आमेन" कैसे कहेगा, क्योंकि उसे तो यह मालूम ही नहीं कि तुम कह क्या रहे
हो? 17 निःसंदेह तुमने तो सुंदर रीति से धन्यवाद प्रकट किया किंतु इससे उस
व्यक्ति का कुछ भी भला नहीं हुआ. 18 मैं परमेश्वर का आभारी हूं कि मैं तुम
सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बातें करता हूं. 19 फिर भी कलीसिया सभा
में शिक्षा देने के उद्देश्य से मैं सोच समझकर मात्र पांच शब्द ही कहना सही
समझता हूं इसकी बजाय कि मैं अन्य भाषा के दस हज़ार शब्द कहूं. 20 प्रिय
भाई बहनो, तुम्हारी समझ बालकों के समान नहीं, सयानों के समान हो. तुम
सिर्फ बुराई के लिए बालक बने रहो. 21 पवित्र शास्त्र का लेख है: मैं अन्य
भाषा बोलने वालों तथा अनजान लोगों के मुख से अपनी प्रजा से बातें करूंगा;
फिर भी वे मेरी न सुनेंगे; यह प्रभु का वचन है. 22 इसलिये अन्य भाषाओं में
बातें करना विश्वासियों के लिए नहीं परंतु अविश्वासियों के लिए चिह्न का
रूप है किंतु भविष्यवाणी करना अविश्वासियों के लिए नहीं परंतु मसीह के
विश्वासियों के लिए चिह्न स्वरूप है. 23 यदि सारी कलीसिया इकट्ठा हो और
प्रत्येक व्यक्ति अन्य भाषा में बातें करने लगे और उसी समय वहां ऐसे व्यक्ति
प्रवेश करें, जो ये भाषाएं नहीं समझते या अविश्वासी हैं, तो क्या वे तुम्हें पागल
न समझेंगे? 24 किंतु यदि सभी भविष्यवाणी करें और वहां कोई ऐसा व्यक्ति
प्रवेश करे, जिसे यह क्षमता प्राप्त न हो, या वहां कोई अविश्वासी प्रवेश करे तो
उसे अपनी पाप की अवस्था का अहसास हो जाएगा, वह अपने विवेक को
टटोलेगा 25 और उसके हृदय के भेद खुल जाएंगे. तब वह यह घोषणा करते
हुए कि निश्चय ही परमेश्वर तुम्हारे बीच मौजूद हैं, दंडवत हो परमेश्वर की
वंदना करने लगेगा. 26 तब, प्रिय भाई बहनो, निष्कर्ष क्या निकला? जब तुम
आराधना के लिए इकट्ठा होते हो, तो तुममें से कोई तो गीत प्रस्तुत करता है,
कोई उपदेश देता है, कोई प्रभु के द्वारा दिया गया प्रकाशन प्रस्तुत करता है,
कोई अन्य भाषा में बातें करता तथा कोई उसका अनुवाद करता है. प्रिय भाई
बहनो, तुम जो कुछ करो वह कलीसिया की उन्नति के लिए हो. 27 जहां तक
अन्य भाषा में बातें करने का प्रश्न है, अधिक से अधिक दो या तीन व्यक्ति ही
क्रमानुसार यह करें तथा कोई व्यक्ति उसका अनुवाद भी करे. 28 यदि वहां कोई
अनुवाद करनेवाला न हो तो वे चुप रहें और उनकी बातें उनके तथा परमेश्वर के
बीच सीमित रहे. 29 भविष्यवाणी मात्र दो या तीन व्यक्ति ही करें और बाकी
उनके वचन को परखें. 30 यदि उसी समय किसी पर ईश्वरीय प्रकाशन हो,
तो वह, जो इस समय भविष्यवाणी कर रहा है, शांत हो जाए, 31 तुम सब
एक-एक करके भविष्यवाणी कर सकते हो कि सभी को शिक्षा और प्रोत्साहन
प्राप्त हो सके. 32 भविष्यद्वक्ताओं का अपनी आत्मा पर पूरा नियंत्रण रहता
है. 33 परमेश्वर गड़बड़ी के नहीं, शांति के परमेश्वर हैं—पवित्र लोगों की
सभी आराधना सभाओं के लिए सही यही है, 34 कि सभाओं में स्त्रियां चुप
रहें—उनको वहां बात करने की अनुमति नहीं है. व्यवस्था के अनुसार सही है
कि वे अधीन बनी रहें. 35 यदि वास्तव में उनकी जिज्ञासा का कोई विषय हो तो
वे घर पर अपने पति से पूछ लिया करें; क्योंकि आराधना सभा में स्त्री का कुछ
भी बोलना ठीक नहीं है. 36 क्या परमेश्वर का वचन तुमसे निकला है? या सिर्फ
तुम पर ही परमेश्वर के वचन का प्रकाशन हुआ है? 37 यदि कोई स्वयं को
भविष्यवक्ता या आत्मिक व्यक्ति समझता है तो वह यह जान ले कि मैं तुम्हें जो
कुछ लिख रहा हूं, वे सब प्रभु की आज्ञाएं हैं. 38 यदि कोई इस सच्चाई को
नहीं मानता है, वह स्वयं भी माना न जाएगा. 39 इसलिये, प्रिय भाई बहनो,
भविष्यवाणी करने की क्षमता की इच्छा करते रहो, अन्य भाषा बोलने से मना न
करो. 40 तुम जो कुछ करो, वह शालीनता तथा व्यवस्थित रूप में किया जाए.

15 प्रिय भाई बहनो, अब मैं तुम्हें उसी ईश्वरीय सुसमाचार की दोबारा याद
दिलाना चाहता हूं, जिसका मैंने तुम्हारे बीच प्रचार किया है, जिसे तुमने
ग्रहण किया, जिसमें तुम स्थिर हो 2 और जिसके द्वारा तुम्हें उद्धार प्राप्त हुआ
है—यदि तुम उस शिक्षा में, जिसका मैंने तुम्हारे बीच प्रचार किया है, स्थिर
हो—नहीं तो व्यर्थ ही हुआ है तुम्हारा विश्वास करना. 3 मैंने तुम तक वही
सच्चाई भेजी, जो सबसे महत्वपूर्ण है तथा जिसे स्वयं मैंने प्राप्त किया: पवित्र
शास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मसीह ने प्राणों का त्याग किया; 4 वह
भूमि में गाड़े गए; पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जीवित
किए गए 5 और तब कैफ़स पर, इसके बाद बारह शिष्यों पर, 6 इसके बाद
पांच सौ से अधिक भाई बहनों पर, जिनमें से अधिकांश अभी जीवित हैं तथा
कुछ लंबी नींद में सो गए हैं, प्रकट हुए. 7 इसके बाद वह याकोब पर प्रकट
हुए, इसके बाद सभी प्रेरितों पर 8 और सबसे अंत में मुझ पर भी—मैं, जिसका
जन्म अविकसित अवस्था में हुआ—प्रकट हुए. 9 मैं प्रेरितों में सबसे छोटा
हूं—प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं—क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को
सताया था. 10 किंतु आज मैं जो कुछ भी हूं परमेश्वर के अनुग्रह से हूं. मेरे प्रति
उनका अनुग्रह व्यर्थ साबित नहीं हुआ. मैं बाकी सभी प्रेरितों की तुलना में
अधिक परिश्रम करता गया, फिर भी मैं नहीं, परमेश्वर का अनुग्रह मुझमें कार्य
कर रहा था. 11 प्रचार, चाहे मैं करूं या वे, संदेश वही है, जिसमें तुमने विश्वास
किया है. 12 अब यदि मरे हुओं में से जीवित किए गए मसीह हमारे प्रचार का
विषय हैं तो क्या कारण है कि तुममें से कुछ की मान्यता यह है कि मरे हुओं का
पुनरुत्थान जैसा कुछ नहीं होता? 13 यदि मरे हुओं के पुनरुत्थान जैसा कुछ न
होता तो मसीह भी जीवित नहीं किए गए होते. 14 यदि मसीह जीवित नहीं
किए गए, तो व्यर्थ है हमारा प्रचार तथा व्यर्थ है तुम्हारा विश्वास भी. 15 इससे
भी बढ़कर यह कि हम परमेश्वर के झूठे गवाह प्रमाणित हो रहे हैं क्योंकि हमने

उनके विषय में यह गवाही दी है कि उन्होंने मसीह को मरे हुओं में से जीवित
किया; किंतु यदि मरे हुए वास्तव में जीवित नहीं किए जाते तो परमेश्वर ने मसीह
को भी जीवित नहीं किया. 16 क्योंकि यदि मरे हुए जीवित नहीं किए जाते तो
मसीह भी जीवित नहीं किए गए. 17 और यदि मसीह जीवित नहीं किए गए तो
तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है और तुम अब भी अपनी पाप की अवस्था में ही हो.
18 तब तो वे, जो मसीह में सो गए हैं, नाश हो चुके. 19 यदि हमने मात्र इस
शारीरिक जीवन में ही मसीह में आशा रखी है तो हम अन्य सभी मनुष्यों में
सबसे अधिक दयनीय हैं. 20 किंतु सच यही है कि मसीह मरे हुओं में से जीवित
किए गए हैं—उनके पहले फल, जो सो गए हैं. 21 जिस प्रकार एक मनुष्य के
द्वारा मृत्यु का प्रवेश हुआ, उसी प्रकार एक मनुष्य के द्वारा मरे हुओं के पुनरुत्थान
का प्रवेश भी हुआ. 22 जिस प्रकार आदम में सब की मृत्यु होती है, उसी प्रकार
मसीह में सब जीवित भी किए जाएंगे. 23 किंतु हर एक अपनी बारी से: पहले
फल मसीह, इसके बाद वे सब, जो मसीह के आगमन तक उनमें स्थिर बने
रहेंगे. 24 तब, जब वह सारी प्रभुता, अधिकार और सामर्थ्य को नाश कर राज्य
पिता परमेश्वर को सौंप देंगे, फिर युगांत हो जाएगा. 25 यह ज़रूरी है कि वह
उस समय तक शासन करें जब तक वह अपने सभी शत्रुओं को अपने अधीन न
कर दें. 26 जिस शत्रु को सबके अंत में नष्ट किया जाएगा, वह है मृत्यु 27
क्योंकि उन्होंने सब कुछ उनके अधीन कर दिया है. किंतु जब वह कहते हैं,
“सब कुछ उनके अधीन कर दिया गया है,” यह साफ़ ही है कि परमेश्वर इसमें
शामिल नहीं, जिन्होंने सब कुछ उनके अधीन कर दिया है. 28 जब सब कुछ
मसीह के अधीन कर दिया गया है, तब स्वयं पुत्र भी परमेश्वर के अधीन हो
जाएंगे, जिन्होंने सब कुछ पुत्र के अधीन कर दिया कि परमेश्वर ही स्वामी हों.
29 यदि पुनरुत्थान जैसा कुछ नहीं होता तो उनका क्या होगा, जो मरे हुओं के
स्थान पर बपतिस्मित हो रहे हैं? यदि मृतक जीवित नहीं किए जाते तो लोग
उनके लिए बपतिस्मित क्यों किए जा रहे हैं? 30 तो फिर हम क्यों हर घड़ी
अपने जीवन को जोखिम में डाले फिर रहे हैं? 31 मैं हर दिन मृत्यु का सामना
करता हूं. यह मैं उस गौरव की शपथ खाकर कह रहा हूं, जो हमारे प्रभु येशु
मसीह में मुझे तुम पर है. 32 इफ़ेसॉस नगर में यदि मैं जंगली पशुओं से सिर्फ
मनुष्य की रीति से लड़ता तो मुझे क्या लाभ होता? यदि मरे हुए जीवित नहीं
किए जाते तो, जैसी कि उक्ति है: “आओ, हम खाएं-पिएं, क्योंकि कल तो
हमारी मृत्यु होनी ही है!” 33 धोखे में मत रहना: बुरी संगति अच्छे चरित्र
को बिगाड़ देती है. 34 सावधान हो जाओ, पाप करना छोड़ दो. यह मैं तुम्हें
लज्जित करने के लिए ही कह रहा हूं क्योंकि तुममें से कुछ तो परमेश्वर को
जानते ही नहीं. 35 संभवतः कोई यह पूछे: कैसे जीवित हो जाते हैं मुर्दे? कैसा
होता है उनका शरीर? 36 मूर्खता भरा प्रश्न! तुम जो कुछ बोते हो तब तक पोषित
नहीं होता, जब तक वह पहले मर न जाए. 37 तुम उस शरीर को, जो पोषित
होने को है, नहीं रोपते—तुम तो सिर्फ बीज रोपते हो—चाहे गेहूं या कोई और
38 मगर परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसे देह प्रदान करते हैं—हर एक
बीज को उसकी अपनी विशेष देह. 39 सभी प्राणियों की देह अलग होती
है—मनुष्य की देह एक प्रकार की, पशु की देह एक प्रकार की, पक्षी की देह
तथा मछली की देह एक प्रकार की. 40 देह स्वर्गीय भी होती है और शारीरिक
भी. स्वर्गीय देह का तेज अलग होता है और शारीरिक देह का अलग. 41 सूर्य
का तेज एक प्रकार का होता है, चंद्रमा का अन्य प्रकार का और तारों का अन्य
प्रकार का और हर एक तारे का तेज अन्य तारे के तेज से अलग होता है. 42 मरे
हुओं का जीवित होना भी ऐसा ही होता है. रोपित की जाती नाशमान देह,
जीवित होती है अविनाशी देह. 43 यह रोपित की जाती है अनादर के साथ,
जीवित होती है तेज में; रोपित की जाती है निर्बल देह, जीवित होती है सामर्थ्य से
भरी देह. 44 रोपित की जाती है शारीरिक देह, जीवित होती है आत्मिक देह.
यदि शारीरिक देह है तो आत्मिक देह भी है. 45 जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख
भी है: “पहला मानव आदम जीवित प्राणी हुआ किंतु अंतिम आदम जीवनदायी
आत्मा हुआ.” 46 फिर भी पहला वह नहीं, जो आत्मिक है परंतु वह, जो
शारीरिक है. उसके बाद ही आत्मिक का स्थान है. 47 पहला मानव शारीरिक
था—मिट्टी का बना हुआ—दूसरा मानव स्वर्गीय. 48 शारीरिक वैसे ही हैं जैसा
मिट्टी से बना मानव था तथा स्वर्गीय वैसे ही हैं जैसा वह, जो स्वर्गीय है. 49
ठीक जैसे हमें उस शारीरिक का रूप प्राप्त हुआ है, हमें उस स्वर्गीय का रूप भी
प्राप्त होगा. 50 प्रिय भाई बहनो, शारीरिक लहू और मांस का मनुष्य परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता और न ही नाशमान अविनाशी में. 51 सुनो! मैं
तुम पर एक भेद प्रकट करता हूं: हम सभी सो नहीं जाएंगे परंतु हम सभी का रूप
बदल 52 जाएगा—क्षण-भर में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही के स्वर पर.
ज्यों ही आखिरी तुरही का स्वर होगा, मरे हुए अविनाशी दशा में जीवित किए
जाएंगे और हमारा रूप बदल जाएगा. 53 यह ज़रूरी है कि नाशमान अविनाशी
को धारण करे तथा मरणहार अमरता को. 54 किंतु जब यह नाशमान अविनाशी
को तथा मरणहार अमरता को धारण कर लेगा तब पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा
हो जाएगा: “मृत्यु विजय का निवाला बन गई.” 55 मृत्यु! कहां है तेरी विजय?
मृत्यु! कहां है तेरा डंक? **(Hadēs g86)** 56 मृत्यु का डंक है पाप और पाप का
बल है व्यवस्था. 57 किंतु हम धन्यवाद करते हैं परमेश्वर का, जो हमें हमारे प्रभु
येशु मसीह द्वारा विजय प्रदान करते हैं. 58 इसलिये मेरे प्रिय भाई बहनो, इस
सच्चाई के प्रकाश में कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है, तुम प्रभु के काम
में उन्नत होते हुए हमेशा दृढ़ तथा स्थिर रहो.

16 अब पवित्र लोगों की सहायता के लिए धनराशि के संबंध में: इस विषय
में मैंने, जो आज्ञा गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं को दी थी, उन्हीं
आज्ञाओं का पालन तुम भी करो. 2 सप्ताह के पहले दिन तुममें से हर एक
अपनी आय के अनुसार कुछ धनराशि अलग रख छोड़े कि मेरे वहां आने पर
तुम्हें धन इकट्ठा न करना पड़े. 3 जब मैं वहां आऊंगा, तुम्हारे द्वारा चुने गए
व्यक्तियों को पत्रों के साथ भेज दूंगा कि वे इकट्ठा राशि को येरूशलेम पहुंचा दें.
4 यदि मेरा जाना भी सही हुआ तो वे मेरे साथ जा सकेंगे. 5 मैं मकेदोनिया यात्रा
के बाद तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं मकेदोनिया यात्रा की योजना बना रहा हूं.
6 संभवतः मैं आकर तुम्हारे साथ कुछ समय व्यतीत करूं या पूरी शीत ऋतु ही
कि तुम मुझे मेरे आगे के सफर की ओर, मैं जहां कहीं जाऊं, विदा कर सको.
7 मैं नहीं चाहता कि तुमसे केवल चलते-चलते मिलूं परंतु मेरी आशा है कि यदि
परमेश्वर चाहें तो मैं तुम्हारे साथ कुछ समय व्यतीत करूं. 8 मैं पेन्तेकॉस्त पर्व
तक इफ़ेसॉस नगर में ही रहूंगा 9 क्योंकि मेरे लिए वहां उपयोगी सेवा का द्वार
खुला है. इसके अतिरिक्त वहां मेरे अनेक विरोधी भी हैं. 10 जब तिमोथियॉस
वहां आए तो यह सुनिश्चित करना कि वह तुम्हारे साथ निश्चिंत रहे क्योंकि मेरे
समान वह भी प्रभु के काम में जुड़ा है. 11 ध्यान रहे कि कोई उसे तुच्छ न
समझे. उसे सकुशल विदा करना कि वह मेरे पास लौट आए. मैं अन्य भाइयों के
साथ उसकी प्रतीक्षा में हूं. 12 अब हमारे भाई अपोल्लॉस के संबंध में: मैंने उनसे
बार-बार विनती की कि वह अन्य भाइयों के साथ तुम्हारे पास आएं किंतु वह
इस समय यात्रा के लिए तैयार नहीं किंतु सही अवसर प्राप्त होते ही वह वहां
आएंगे. 13 जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, निडर बनो, निश्चय करो 14 तथा
हर एक काम प्रेम भाव में ही करो. 15 स्तेफ़ानॉस के कुटुंबियों के विषय में तो
तुम्हें मालूम ही है कि वे आखाया प्रदेश के पहले फल हैं. उन्होंने स्वयं को पवित्र
लोगों की सेवा के लिए समर्पित किया हुआ है. इसलिये प्रिय भाई बहनो, मेरी
तुमसे विनती है 16 कि तुम उनका तथा ऐसे व्यक्तियों का नेतृत्व स्वीकार करो,
जो मेरे काम में सहायक तथा परिश्रम करते हैं. 17 स्तेफ़ानॉस, फ़ॉरतुनातॉस
तथा अखियाकॉस का यहां आना मेरे लिए आनंद का विषय है. उनके कारण

तुम्हारी ओर से जो कमी थी, वह पूरी हो गई. 18 उनके कारण मेरे और तुम्हारे
मन में नई ताज़गी का संचार हुआ है. ऐसे व्यक्तियों को मान्यता अवश्य दी
जाए. 19 आसिया प्रदेश की कलीसियाओं का तुम्हें नमस्कार. अकुलॉस और
प्रिस्का तथा उस कलीसिया की ओर से, जो उनके घर पर आराधना के लिए
इकट्ठा होती है, प्रभु में तुम्हें बहुत-बहुत नमस्कार. 20 यहां सभी भाई बहनों की
ओर से तुम्हें नमस्कार. पवित्र चुंबन के साथ एक दूसरे का नमस्कार करो. 21
मैं, पौलॉस तुम्हें अपने हाथ से यह नमस्कार लिख रहा हूं. 22 जो कोई प्रभु से
प्रेम नहीं करता, वह शापित हो. हे हमारे प्रभु आ! 23 तुम पर प्रभु येशु मसीह का
अनुग्रह हो. 24 मसीह येशु में मेरा प्रेम तुम पर हमेशा रहे, आमेन.

2 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा के द्वारा मसीह येशु के प्रेरित पौलॉस तथा हमारे भाई
तिमोथियॉस. की ओर से कोरिन्थॉस नगर में परमेश्वर की कलीसिया तथा
आखाया प्रदेश के सभी पवित्र लोगों को: 2 परमेश्वर हमारे पिता तथा प्रभु
येशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो. 3 स्तुति के योग्य हैं
परमेश्वर हमारे प्रभु येशु मसीह के पिता—करुणामय पिता तथा सब प्रकार के
धीरज के स्रोत परमेश्वर, 4 जो हमारी सारी पीड़ाओं में धीरज प्रदान करते हैं कि
हम पीड़ितों को उसी प्रकार धीरज प्रदान कर सकें, जिस प्रकार परमेश्वर हमें
धीरज प्रदान करते हैं. 5 ठीक जिस प्रकार हममें मसीह के दुःखों की बहुतायत
है, उसी प्रकार बहुत है मसीह के द्वारा हमारा धीरज. 6 यदि हम यातनाएं सहते हैं
तो यह तुम्हारे धीरज और उद्धार के लिए है; यदि हमें धीरज प्राप्त हुआ है तो यह
तुम्हारे प्रोत्साहन के लिए है कि तुम भी उन्हीं यातनाओं को धीरज के साथ सह
सको, जो हम सह रहे हैं. 7 इस अहसास के प्रकाश में तुम्हारे विषय में हमारी
आशा अटल है कि जिस प्रकार तुम हमारे कष्टों में सहभागी हो, उसी प्रकार तुम
हमारे धीरज में भी सहभागी होगे. 8 प्रिय भाई बहनो, हम नहीं चाहते कि तुम
उन सब क्लेश के विषय में अनजान रहो, जो आसिया प्रदेश में हम पर आए. हम
ऐसे बोझ से दब गए थे, जो हमारी सहनशक्ति से परे था. यहां तक कि हम
जीवन की आशा तक खो चुके थे. 9 हमें ऐसा लग रहा था, मानो हम पर दंड
की आज्ञा ही प्रसारित हो चुकी है. यह इसलिये हुआ कि हम स्वयं पर नहीं
परंतु परमेश्वर में विश्वास स्थिर रखें, जो मरे हुओं को जीवित करते हैं. 10
हमने परमेश्वर पर, जिन्होंने हमें घोर संकट से बचाया और बचाते ही रहेंगे,
आशा रखी है, वह हमें भविष्य में भी बचाते ही रहेंगे, 11 क्योंकि तुम अपनी
प्रार्थनाओं के द्वारा हमारी सहायता करते हो कि हमारी ओर से अनेकों द्वारा उस
अनुग्रह के लिए धन्यवाद प्रकट किया जा सके, जो अनेकों की प्रार्थनाओं के
फलस्वरूप हमें प्राप्त हुआ है. 12 इसलिये हमारे गर्व करने का कारण यह है:
हमारी अंतरात्मा की पुष्टि कि हमारे शारीरिक जीवन में, विशेष रूप से तुम्हारे
संबंध में हमारा व्यवहार परमेश्वर द्वारा दी गई पवित्रता तथा सच्चाई सहित रहा
है. यह सांसारिक ज्ञान का नहीं परंतु मात्र परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम था.
13 हमारे पत्रों में ऐसा कुछ नहीं होता, जो तुम पढ़ या समझ न सको और मेरी
आशा यह है कि तुम अंत में सब कुछ समझ लोगे. 14 ठीक जिस प्रकार तुम हमें
बहुत थोड़ा ही समझ पाए हो कि तुम हमारे गर्व का विषय हो, प्रभु येशु के दिन
तुम भी हम पर गर्व करोगे. 15 इस निश्चय के द्वारा सबसे पहले, मैं इस उद्देश्य से
तुम्हारे पास आना चाहता था कि तुम्हें दुगनी कृपा का अनुभव हो. 16 मेरी
योजना थी कि मैं मकेदोनिया जाते हुए तुम्हारे पास आऊं तथा वहां से लौटते हुए
भी. इसके बाद तुम मुझे यहूदिया प्रदेश की यात्रा पर भेज देते. 17 क्या मेरी यह
योजना मेरी अस्थिर मानसिकता थी? या मेरे उद्देश्य मनुष्य के ज्ञान प्रेरित होते हैं
कि मेरा बोलना एक ही समय में हां-हां भी होता है और ना-ना भी? 18 जिस
प्रकार निःसंदेह परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं, उसी प्रकार हमारी बातों में भी “हां”
का मतलब हां और “ना” का मतलब ना ही होता है. 19 परमेश्वर का पुत्र मसीह
येशु, जिनका प्रचार सिलवानॉस, तिमोथियॉस तथा मैंने तुम्हारे मध्य किया, वह
प्रचार कभी “हां” या कभी “ना” नहीं परंतु परमेश्वर में हमेशा हां ही रहा है.
20 परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएं उनमें “हां” ही हैं. इसलिये हम परमेश्वर की
महिमा के लिए मसीह येशु के द्वारा “आमेन” कहते हैं. 21 परमेश्वर ही हैं, जो
तुम्हारे साथ हमें मसीह में मजबूत करते हैं. परमेश्वर ने हम पर अपनी मोहर
लगाकर बयाने के रूप में अपना आत्मा हमारे हृदय में रखकर हमारा अभिषेक
किया है. 23 परमेश्वर मेरी इस सच्चाई के गवाह हैं कि मैं दोबारा कोरिन्थॉस
इसलिये नहीं आया कि मैं तुम्हें कष्ट देना नहीं चाहता था. 24 इसका मतलब
यह नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास पर अपना अधिकार जताएं क्योंकि तुम अपने
विश्वास में स्थिर खड़े हो. हम तो तुम्हारे ही आनंद के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं.

2 अपनी ओर से मैं यह निश्चय कर चुका था कि मैं एक बार फिर वहां आकर
तुम्हें दुःख न दूं, 2 क्योंकि वहां आकर यदि मैं ही तुम्हें दुःखी करूं तो मुझे
आनंद किनसे प्राप्त होगा, केवल उनसे, जिन्हें मैं ने दुःख पहुंचाया? 3 मैंने तुम्हें
इसी उद्देश्य से पत्र लिखा था कि जब मैं वहां आऊं तो वे ही लोग मेरे दुःख का
कारण न हो जाएं, जिनसे मुझे आनंद की आशा है. मुझे निश्चय है कि मेरा आनंद
तुम सभी का आनंद है. 4 हृदय के कष्ट और क्लेश के कारण आंसू बहा-बहा
कर मैंने तुम्हें यह पत्र लिखा है, इसलिये नहीं कि तुम्हें दुःखी करूं परंतु इसलिये
कि तुम तुम्हारे प्रति मेरे अत्याधिक प्रेम को समझ सको. 5 यदि कोई दुःख का
कारण है तो वह मात्र मेरे लिए नहीं परंतु किसी सीमा तक तुम सभी के लिए
दुःख का कारण बना है. मैं इसके विषय में इससे अधिक कुछ और नहीं कहना
चाहता. 6 काफ़ी है ऐसे व्यक्ति के लिए बहुमत द्वारा तय किया गया दंड. 7
इसकी बजाय भला यह होगा कि तुम उसे क्षमा कर धीरज दो. कहीं ऐसा न हो
कि कष्ट की अधिकाई उसे निराशा में डुबो दे. 8 इसलिये तुमसे मेरी विनती है
कि तुम दोबारा उसके प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करो. 9 यह पत्र मैंने यह जानने के
उद्देश्य से भी लिखा है कि तुम सब विषयों में आज्ञाकारी हो या नहीं. 10 जिसे
तुम किसी विषय में क्षमा करते हो, उसे मैं भी क्षमा करता हूं. जिस विषय में
मैंने क्षमा किया है—यदि वह वास्तव में क्षमा योग्य था—उसे मैंने मसीह को
उपस्थित जानकर तुम्हारे लिए क्षमा किया है 11 कि शैतान हमारी स्थिति का
कोई भी लाभ न उठाने पाए—हम उसकी चालों से अनजान नहीं हैं. 12 मैं
मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार के लिए त्रोऑस आया और वहां प्रभु के द्वारा मेरे
लिए द्वार खोला गया. 13 वहां अपने भाई तीतॉस को न पाकर मेरा मन व्याकुल
हो उठा. इसलिये उनसे विदा लेकर मैं मकेदोनिया प्रदेश चला गया. 14 धन्यवाद
हो परमेश्वर का! जो मसीह के जय के उत्सव की शोभायात्रा में हमारे आगे चलते
हैं और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की सुमधुर सुगंध हर जगह फैलाते जाते हैं. 15 हम
ही परमेश्वर के लिए मसीह की सुगंध हैं—उन सबके लिए, जो उद्धार प्राप्त करते
जा रहे हैं तथा उन सबके लिए भी, जो नाश होते जा रहे हैं. 16 जो नाश हो रहे
हैं, उनके लिए हम मृत्यु की घातक गंध तथा उद्धार प्राप्त करते जा रहे व्यक्तियों
के लिए जीवन की प्राणदायी सुगंध. किसमें है इस प्रकार के काम करने की
योग्यता? 17 हम उनके समान नहीं, जिनके लिए परमेश्वर का वचन खरीदने-
बेचने द्वारा लाभ कमाने की वस्तु है. इसके विपरीत हम सच्चाई में परमेश्वर की
ओर से, परमेश्वर के सामने मसीह में ईश्वरीय सुसमाचार को दूसरों तक पहुंचाते
हैं.

3 क्या हमने दोबारा अपनी आत्मप्रशंसा करनी शुरू कर दी? या कुछ अन्य
व्यक्तियों के समान हमें भी तुमसे या तुम्हारे लिए सिफारिश के पत्रों की
ज़रूरत है? 2 हमारे पत्र तो तुम स्वयं हो—हमारे हृदयों पर लिखे हुए—जो
सबके द्वारा पहचाने तथा पढ़े जा सकते हो. 3 यह साफ़ ही है कि मसीह का
पत्र तुम हो—हमारी सेवकाई का परिणाम—जिसे स्याही से नहीं परंतु जीवित
परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटिया पर नहीं परंतु मनुष्य के हृदय की
पटिया पर लिखा गया है. 4 हमें मसीह के द्वारा परमेश्वर में ऐसा ही विश्वास है.
5 स्थिति यह नहीं कि हम यह दावा करें कि हम अपने आप में कुछ कर सकने
के योग्य हैं—परमेश्वर हमारी योग्यता का स्रोत हैं, 6 जिन्होंने हमें नई वाचा का
काम करने योग्य सेवक बनाया. यह वाचा लिखी हुई व्यवस्था की नहीं परंतु
आत्मा की है. लिखी हुई व्यवस्था मृत्यु को जन्म देती है मगर आत्मा जीवन
देती है. 7 यदि पत्थर की पटिया पर खोदे गए अक्षरों में अंकित मृत्यु की वाचा
इतनी तेजोमय थी कि इस्राएल के वंशज मोशेह के मुख पर अपनी दृष्टि स्थिर

रख पाने में असमर्थ थे—यद्यपि यह तेज धीरे धीरे कम होता जा रहा था. 8 तो फिर आत्मा की वाचा और कितनी अधिक तेजोमय न होगी? 9 यदि दंड-आज्ञा की वाचा का प्रताप ऐसा है तो धार्मिकता की वाचा का प्रताप और कितना अधिक बढ़कर न होगा? 10 सच तो यह है कि इस वर्तमान प्रताप के सामने वह पहले का प्रताप, प्रताप रह ही नहीं गया. 11 यदि उसका तेज ऐसा था, जो लगातार कम हो रहा था, तो उसका तेज, जो हमेशा स्थिर है, और कितना अधिक बढ़कर न होगा! 12 इसी आशा के कारण हमारी बातें बिना डर की है. 13 हम मोशेह के समान भी नहीं, जो अपना मुख इसलिये ढका रखते थे कि इस्राएल के लोग उस धीरे धीरे कम होते हुए तेज को न देख पाएं. 14 वास्तव में इस्राएल के लोगों के मन मंद हो गए थे. पुराना नियम देने के अवसर पर आज भी वही पर्दा पड़ा रहता है क्योंकि यह पर्दा सिर्फ मसीह में हटाया जाता है. 15 हां, आज भी जब कभी मोशेह का ग्रंथ पढ़ा जाता है, उनके हृदय पर पर्दा पड़ा रहता है. 16 यह पर्दा उस समय हटता है, जब कोई व्यक्ति प्रभु की ओर मन फिराता है. 17 यही प्रभु वह आत्मा हैं तथा जहां कहीं प्रभु का आत्मा मौजूद हैं, वहां स्वतंत्रता है 18 और हम, जो खुले मुख से प्रभु की महिमा निहारते हैं, धीरे धीरे बढ़ती हुई महिमा के साथ उनके स्वरूप में बदलते जा रहे हैं. यह महिमा प्रभु से, जो आत्मा हैं, बाहर निकलती है.

4 इसलिये कि यह सेवकाई हमें परमेश्वर की कृपा से प्राप्त हुई है, हम निराश नहीं होते. 2 हमने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया है. न तो हमारे स्वभाव में किसी प्रकार की चतुराई है और न ही हम परमेश्वर के वचन को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं. किंतु सच्चाई को प्रकट करके हम परमेश्वर के सामने स्वयं को हर एक के विवेक के लिए प्रस्तुत करते हैं. 3 यदि हमारा ईश्वरीय सुसमाचार ढका हुआ है, तो यह उन्हीं के लिए ढका हुआ है, जो विनाश की ओर जा रहे हैं. 4 इस संसार के ईश्वर ने उन अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर दिया है कि वे परमेश्वर के प्रतिरूप, मसीह के तेजोमय ईश्वरीय सुसमाचार के प्रकाश को न देख सकें. (aiōn g165) 5 हम स्वयं को ऊंचा नहीं करते—हम मसीह येशु को प्रभु तथा स्वयं को मसीह येशु के लिए तुम्हारे दास घोषित करते हैं. 6 परमेश्वर, जिन्होंने कहा, "अंधकार में से ज्योति चमके," वही परमेश्वर हैं, जिन्होंने हमारा हृदय चमका दिया कि हमें मसीह के मुख में चमकते हुए परमेश्वर के प्रताप के ज्ञान का प्रकाश प्रदान करें. 7 यह बेशकीमती खजाना मिट्टी के पात्रों में इसलिये रखा हुआ है कि यह साफ़ हो जाए कि यह असीम सामर्थ्य हमारी नहीं परंतु परमेश्वर की है. 8 हम चारों ओर से कष्टों से घिरे रहते हैं, किंतु कुचले नहीं जाते; घबराते तो हैं, किंतु निराश नहीं होते; 9 सताए तो जाते हैं, किंतु त्यागे नहीं जाते; बहुत कुचले जाते हैं, किंतु नष्ट नहीं होते. 10 हम हरदम मसीह येशु की मृत्यु को अपने शरीर में लिए फिरते हैं कि मसीह येशु का जीवन हमारे शरीर में प्रकट हो जाए. 11 इसलिये हम, जो जीवित हैं, हरदम मसीह येशु के लिए मृत्यु को सौंपे जाते हैं कि हमारी शारीरिक देह में मसीह येशु का जीवन प्रकट हो जाए. 12 इस स्थिति में मृत्यु हममें सक्रिय है और जीवन तुममें. 13 विश्वास के उसी भाव में, जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: मैंने विश्वास किया, इसलिये मैं चुप न रहा. हम भी यह सब इसलिये कहते हैं कि हमने भी विश्वास किया है. 14 यह जानते हुए कि जिन्होंने प्रभु येशु को मरे हुओं में से जीवित किया, वही हमें भी मसीह येशु के साथ जीवित करेंगे तथा तुम्हारे साथ हमें भी अपनी उपस्थिति में ले जाएंगे. 15 यह सब तुम्हारे हित में है कि अनुग्रह, जो अधिक से अधिक मनुष्यों में व्याप्त होता जा रहा है, परमेश्वर की महिमा के लिए अधिक से अधिक धन्यवाद का कारण बने. 16 इसलिये हम उदास नहीं होते. हमारा बाहरी मनुष्यत्व तो कमजोर होता जा रहा है किंतु भीतरी मनुष्यत्व दिन-प्रतिदिन नया होता जा रहा है. 17 हमारा यह छोटा सा, क्षण-भर का कष्ट हमारे लिए ऐसी अनंत और अत्यधिक महिमा को उत्पन्न कर रहा है, जिसकी तुलना नहीं कर सकते (aiōnios g166) 18 क्योंकि हमने अपना ध्यान उस पर केंद्रित नहीं किया, जो दिखाई देता है परंतु उस पर, जो दिखाई नहीं देता है. जो कुछ दिखाई देता है, वह क्षण-भर का है किंतु जो दिखाई नहीं देता वह अनंत काल का. (aiōnios g166)

5 हमें यह मालूम है कि जब हमारे सांसारिक तंबू—हमारी देह—को, जिसमें हम रहते हैं, गिरा दिया जाएगा तो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से एक ऐसा घर तय किया गया है, जो मनुष्य के हाथ का बनाया हुआ नहीं परंतु स्वर्गीय और अनंत काल का है. (aiōnios g166) 2 यह एक सच्चाई है कि हम कराहते हुए वर्तमान घर में उस स्वर्गीय घर को धारण करने की लालसा करते रहते हैं 3 क्योंकि उसे धारण करने के बाद हम नंगे न रह जाएंगे. 4 सच यह है कि इस घर में रहते हुए हम बोझ में दबे हुए कराहते रहते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि हम नंगे न रहें परंतु वस्त्र धारण करें कि जो कुछ शारीरिक है, वह जीवन का निवाला बन जाए. 5 जिन्होंने हमें इस उद्देश्य के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर हैं, जिन्होंने अपना आत्मा हमें बयाने के रूप में दे दिया. 6 यही अहसास हमें हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है कि जब तक हम अपनी शारीरिक देह के इस घर में हैं, हम प्रभु—अपने घर—से दूर हैं 7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, विश्वास से जीवित हैं. 8 हम पूरी तरह आश्वस्त हैं तथा हमारी इच्छा है कि हम शरीर से अलग हो प्रभु के साथ खुशी में निवास करें. 9 हमारी बड़ी इच्छा भी यही है कि चाहे हम घर में हों या उससे दूर, हम प्रभु को भाते रहें 10 क्योंकि यह अवश्य है कि हम सब मसीह के न्यायासन के सामने उपस्थित हों कि हर एक को शारीरिक देह में किए गए उचित या अनुचित के अनुसार फल प्राप्त हो. 11 हमें यह अहसास है कि प्रभु का भय क्या है, इसलिये हम सभी को समझाने का प्रयत्न करते हैं. परमेश्वर के सामने यह स्पष्ट है कि हम क्या हैं और मैं आशा करता हूं कि तुम्हारे विवेक ने भी इसे पहचान लिया है. 12 यह तुम्हारे सामने अपनी आत्मप्रशंसा नहीं परंतु यह तुम्हारे लिए एक ऐसा सुअवसर है कि तुम हम पर गर्व करो कि तुम उन्हें इसका उत्तर दे सको, जो अपने मन की बजाय बाहरी रूप का गर्व करते हैं. 13 यदि हम बेसुध प्रतीत होते हैं, तो यह परमेश्वर के लिए है और यदि कोमल, तो तुम्हारे लिए. 14 अपने लिए मसीह के प्रेम का यह अहसास हमें परिपूर्ण कर देता है कि सबके लिए एक की मृत्यु हुई इसलिये सभी की मृत्यु हो गई; 15 और वह, जिनकी मृत्यु सभी के लिए हुई कि वे, जो जीवित हैं, मात्र अपने लिए नहीं परंतु उनके लिए जिए, जिन्होंने प्राणों का त्याग कर दिया तथा मरे हुओं में से सभी के लिए जीवित किए गए. 16 इसलिये हमने मनुष्य की दृष्टि से किसी को भी समझना छोड़ दिया है. हां, एक समय था, जब हमने मसीह का अनुमान मनुष्य की दृष्टि से लगाया था—अब नहीं. अब हम उन्हें जान गए हैं. 17 यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है. पुराना बीत गया. देख लो: सब बातें नई हो गई हैं! 18 यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिन्होंने मसीह के द्वारा स्वयं से हमारा मेल-मिलाप किया और हमें मेल-मिलाप की सेवकाई सौंपी है. 19 दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने संसार के खुद से मेल-मिलाप की स्थापना की प्रक्रिया में मसीह में मनुष्य के अपराधों का हिसाब न रखा. अब उन्होंने हमें मेल-मिलाप की सेवकाई सौंप दी है. 20 इसलिये हम मसीह के राजदूत हैं. परमेश्वर हमारे द्वारा तुमसे विनती कर रहे हैं. मसीह की ओर से तुमसे हमारी विनती है: परमेश्वर से मेल-मिलाप कर लो. 21 वह, जो निष्पाप थे, उन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए पाप बना दिया कि हम उनमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं.

6 परमेश्वर के सहकर्मी होने के कारण हमारी तुमसे विनती है कि तुम उनसे प्राप्त हुए अनुग्रह को व्यर्थ न जाने दो, 2 क्योंकि परमेश्वर का कहना है: "अनुकूल अवसर पर मैंने तुम्हारी पुकार सुनी, उद्धार के दिन मैंने तुम्हारी

सहायता की.” सुनो! यही है वह अनुकूल अवसर; यही है वह उद्धार का दिन! 3
हमारा स्वभाव किसी के लिए किसी भी क्षेत्र में बाधा नहीं बनता कि हमारी
सेवकाई पर दोष न हो. 4 इसलिये हम हर एक परिस्थिति में स्वयं को परमेश्वर
के सुयोग्य सेवक के समान प्रस्तुत करते हैं: धीरज से पीड़ा सहने में, दरिद्रता में,
कष्ट में, 5 सताहट में, जेल में, उपद्रव में, अधिक परिश्रम में, अपर्याप्त नींद में,
उपवास में, 6 शुद्धता में, ज्ञान में, धीरज में, सहृदयता में, पवित्र आत्मा में,
निश्छल प्रेम में, 7 सच के संदेश में, परमेश्वर के सामर्थ्य में, वार तथा बचाव
दोनों ही पक्षों के लिए परमेश्वर की धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने और
बाएं हाथों में हैं, 8 आदर-निरादर में और निंदा और प्रशंसा में; हमें भरमानेवाला
समझा जाता है, जबकि हम सत्यवादी हैं; 9 हम प्रसिद्ध हैं; फिर भी अप्रसिद्ध माने
जाते हैं, हम जीवित तो हैं, पर मरे हुए समझे जाते हैं! हमें दंड तो दिया जाता है
किंतु हमारे प्राण नहीं लिए जा सकते. 10 हम कष्ट में भी आनंदित रहते हैं.
हालांकि हम स्वयं तो कंगाल हैं किंतु बाकियों को धनवान बना देते हैं. हमारी
निर्धनता में हम धनवान हैं. 11 कोरिन्थवासीयो! हमने पूरी सच्चाई में तुम पर
सच प्रकट किया है—हमने तुम्हारे सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया है.
12 हमने तुम पर कोई रोक-टोक नहीं लगाई; रोक-टोक स्वयं तुमने ही अपने
मनों पर लगाई है. 13 तुम्हें अपने बालक समझते हुए मैं तुमसे कह रहा हूं:
तुम भी अपने हृदय हमारे सामने खोलकर रख दो. 14 अविश्वासियों के साथ
असमान संबंध में न जुड़ो. धार्मिकता तथा अधार्मिकता में कैसा मेल-जोल या
ज्योति और अंधकार में कैसा संबंध? 15 मसीह और शैतान में कैसा मेल या
विश्वासी और अविश्वासी में क्या सहभागिता? 16 या परमेश्वर के मंदिर तथा
मूर्तियों में कैसी सहमति? हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं. जैसा कि परमेश्वर
का कहना है: मैं उनमें वास करूंगा, उनके बीच चला फिरा करूंगा, मैं उनका
परमेश्वर बनूंगा, और वे मेरी प्रजा. 17 इसलिये, “उनके बीच से निकल आओ
और अलग हो जाओ, यह प्रभु की आज्ञा है. उसका स्पर्श न करो, जो अशुद्ध है,
तो मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा.” 18 और, “मैं तुम्हारा पिता बनूंगा और तुम मेरी
संतान. यही है सर्वशक्तिमान प्रभु का कहना.”

7 इसलिये प्रिय भाई बहनो, जब हमसे ये प्रतिज्ञाएं की गई हैं तो हम परमेश्वर
के प्रति श्रद्धा के कारण, स्वयं को शरीर और आत्मा की हर एक मलिनता से
शुद्ध करते हुए पवित्रता को सिद्ध करें. 2 हमें अपने हृदयों में स्थान दो. हमने
किसी के साथ अन्याय नहीं किया, किसी को आहत नहीं किया, किसी का
अनुचित लाभ नहीं उठाया. 3 यह कहने के द्वारा हम तुम पर दोष नहीं लगा रहे
हैं. मैं पहले भी कह चुका हूं कि तुम हमारे हृदय में बसे हो और हमारा-तुम्हारा
जीवन-मरण का साथ है. 4 मुझे तुम पर अटूट विश्वास है. मुझे तुम पर गर्व है, मैं
अत्यंत प्रोत्साहित हुआ हूं. सारे कष्टों में भी मैं आनंद से भरपूर रहता हूं. 5
हमारे मकेदोनिया में रहने के दौरान हमें शारीरिक रूप से विश्राम नहीं परंतु
चारों ओर से कष्ट ही कष्ट मिलता रहा—बाहर तो लड़ाइयां और अंदर भय
की बातें. 6 मगर परमेश्वर ने, जो हताशों को धीरज देते हैं, तीतॉस को यहां
उपस्थित कर हमें धीरज दिया. 7 न केवल उसकी उपस्थिति के द्वारा ही परंतु
उस प्रोत्साहन के द्वारा भी, जो तीतॉस को तुमसे प्राप्त हुआ. उसने मुझे मेरे प्रति
तुम्हारी लालसा, वेदना तथा उत्साह के विषय में बताया. इससे मेरा आनंद और
अधिक बढ़ गया. 8 यद्यपि तुम मेरे पत्र से शोकित हुए हो, मुझे इसका खेद
नहीं—पहले खेद ज़रूर हुआ था मगर अब मैं देखता हूं कि तुम उस पत्र से
शोकित तो हुए किंतु थोड़े समय के लिए. 9 अब मैं आनंदित हूं, इसलिये नहीं
कि तुम शोकित हुए परंतु इसलिये कि यही तुम्हारे पश्चाताप का कारण बन गया.
यह सब परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही हुआ कि तुम्हें हमारे कारण किसी
प्रकार की हानि न हो. 10 वह दुःख, जो परमेश्वर की ओर से आता है, वह ऐसा
पश्चाताप का कारण बन जाता है जो हमें उद्धार की ओर ले जाता है, जहां खेद के
लिए कोई स्थान ही नहीं रहता; जबकि सांसारिक दुःख मृत्यु उत्पन्न करता है.
11 ध्यान दो कि परमेश्वर की ओर से आए दुःख ने तुममें क्या-क्या परिवर्तन
किए हैं: ऐसी उत्सुकता भरी तत्परता, अपना पक्ष स्पष्ट करने की ऐसी बड़ी
इच्छा, अन्याय के प्रति ऐसा क्रोध, संकट के प्रति ऐसी सावधानी, मुझसे भेंट
करने की ऐसी तेज लालसा, सेवा के प्रति ऐसा उत्साह तथा दुराचारी को दंड देने
के लिए ऐसी तेजी के द्वारा तुमने यह साबित कर दिया कि सब कुछ ठीक-ठाक
करने में तुमने कोई भी कमी नहीं छोड़ी है. 12 हालांकि यह पत्र मैंने न तो तुम्हें
इसलिये लिखा कि मुझे उसकी चिंता थी, जो अत्याचार करता है और न ही
उसके लिए, जो अत्याचार सहता है परंतु इसलिये कि परमेश्वर के सामने स्वयं
तुम्हीं यह देख लो कि तुम हमारे प्रति कितने सच्चे हो. 13 यही हमारे धीरज
का कारण है. अपने धीरज से कहीं अधिक हम तीतॉस के आनंद में हर्षित हैं
क्योंकि तुम सबने उसमें नई ताज़गी का संचार किया है. 14 यदि तीतॉस के
सामने मैंने तुम पर गर्व प्रकट किया है तो मुझे उसके लिए लज्जित नहीं होना
पड़ा. जिस प्रकार, जो कुछ मैंने तुमसे कहा वह सच था, उसी प्रकार तीतॉस के
सामने मेरा गर्व प्रकट करना भी सच साबित हुआ. 15 जब तीतॉस को तुम्हारी
आज्ञाकारिता याद आती है तथा यह भी कि तुमने कितने श्रद्धा भाव से उसका
सत्कार किया तो वह स्नेह से तुम्हारे प्रति और अधिक भर उठता है. 16 तुम्हारे
प्रति मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं. यह मेरे लिए आनंद का विषय है.

8 हम भाई बहनों को मकेदोनिया की कलीसियाओं को परमेश्वर द्वारा दिए
गए अनुग्रह के विषय में बताना चाहते हैं. 2 बड़े भीषण संकटों में भी उनका
बड़ा आनंद, तथा भारी कंगाली में भी उनकी बड़ी उदारता छलक पड़ी है. 3 मैं
इस सच्चाई की पुष्टि कर सकता हूं कि उन्होंने न केवल उतना ही दिया, जो
उनके लिए संभव था परंतु उससे कहीं अधिक! यह उन्होंने अपनी इच्छा से
दिया है. 4 उन्होंने तो हमसे विनती पर विनती करते हुए अनुमति चाही कि उन्हें
पवित्र लोगों की सहायता की धन्यता में शामिल होने का सुअवसर प्रदान किया
जाए. 5 यह सब हमारी आशा के विपरीत था. इससे भी बढ़कर उन्होंने परमेश्वर
की इच्छा के अनुरूप सबसे पहले स्वयं को प्रभु के लिए और फिर हमारे लिए
समर्पित कर दिया. 6 इसलिये हमने तीतॉस से विनती की कि जिस प्रकार इसके
पहले उसने तुममें यह प्रक्रिया शुरू की थी, वैसे ही वह इस सराहनीय काम को
पूरा भी करे. 7 ठीक जिस प्रकार तुम विश्वास, वचन, ज्ञान, उत्साह तथा हमारे
प्रति प्रेम में बढ़ते जाते हो, उसी प्रकार अब तुम्हारा प्रयास यह हो कि तुम इस
सराहनीय सेवा में भी बढ़ते जाओ. 8 मैं तुम्हें कोई आज्ञा नहीं दे रहा. मैं सिर्फ
बाकियों के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की तुलना कर इसकी सच्चाई को परख रहा
हूं. 9 हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा से तुम भली-भांति परिचित हो: यद्यपि वह
बहुत धनी थे, तुम्हारे लिए उन्होंने निर्धनता अपना ली कि उनकी निर्धनता के
द्वारा तुम धनी हो जाओ. 10 यहां मैं अपना मत प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसमें
तुम्हारा भला है: पिछले वर्ष तुमने दान दिया भी और दान देने की इच्छा में तुम
आगे थे, 11 इसलिये जो काम तुमने शुरू किया था, उसे पूरा भी करो—इस
काम की समाप्ति के लिए भी वैसे ही उत्साही बने रहो, जैसे इसकी योजना
तैयार करते समय थे. इसकी समाप्ति उससे करो, जो इस समय तुम्हारे पास हैं.
12 यदि किसी में दान देने की इच्छा है तो जो कुछ उसके पास है, उसी के
आधार पर उसका दान ग्रहण होगा—उसके आधार पर नहीं, जो उसके पास
नहीं है. 13 हमारा मतलब यह नहीं है कि दूसरों की भलाई करने के कारण
स्वयं तुम कष्ट सहो. हमारा उद्देश्य सिर्फ न्याय करना है. 14 इस समय तो तुम्हारी
बढ़ोतरी उनकी ज़रूरत पूरी करने के लिए काफ़ी है. कभी यह भी संभव है कि
तुम स्वयं को ज़रूरत में पाओ और वे अपनी बढ़ोतरी में से तुम्हारी सहायता करें.
तब दोनों पक्ष समान हो जाएंगे. 15 पवित्र शास्त्र का उदाहरण है: जिसने अधिक
मात्रा में इकट्ठा कर लिया, उसने कुछ भी ज्यादा नहीं पाया और जिसने कम

इकट्ठा किया, उसे कोई कमी न हुई. 16 तीतॉस के मन में तुम्हारे प्रति ऐसा ही उत्साह जगाने के लिए मैं परमेश्वर का आभारी हूं. 17 उसने न केवल हमारी विनती ही सहर्ष स्वीकार की बल्कि वह उत्साह में अपनी इच्छा से तुम्हारे पास चला गया है. 18 हम उसके साथ एक ऐसे व्यक्ति को भेज रहे हैं, जो सारी कलीसियाओं में ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार के लिए सराहा जा रहा है. 19 इतना ही नहीं, स्वयं प्रभु की महिमा तथा लोगों पर इस सहायता के लिए हमारी तत्परता प्रकट करने के उद्देश्य से कलीसियाओं ने इस व्यक्ति को हमारे साथ यात्रा करने के लिए चुना है. 20 हम सावधान हैं कि किसी को भी इस सहायता की राशि के प्रबंध करने में हम पर उंगली उठाने का अवसर न मिले. 21 हमारा उद्देश्य न केवल वह है, जो प्रभु की दृष्टि में शोभनीय और भला है परंतु मनुष्यों की दृष्टि में भी. 22 इनके साथ हम एक और व्यक्ति को भेज रहे हैं. अनेक अवसरों पर हमने उसे परखा है और उसे सच्चा ही पाया है. अब तो तुम्हारे लिए उसके भरोसे ने उसमें और अधिक उत्साह तथा सहायता के लिए तेजी का संचार किया है. 23 तीतॉस तुम्हारे बीच मेरा साथी तथा सहकर्मी है. उसके साथी यात्री कलीसियाओं के भेजे हुए तथा मसीह का गौरव हैं. 24 इसलिये कलीसियाओं के सामने खुले दिल से उन पर अपने प्रेम तथा तुम्हारे प्रति हमारे गर्व के कारणों का प्रमाण दो.

9 वास्तव में यह आवश्यक ही नहीं कि मैं पवित्र लोगों में अपनी सेवकाई के विषय में तुम्हें कुछ लिखूं. 2 क्योंकि सहायता के लिए तुम्हारी तैयारी से मैं भली-भांति परिचित हूं. मकेदोनियावासियों के सामने मैं इसका गर्व भी करता रहा हूं कि आखाया प्रदेश की कलीसिया पिछले एक वर्ष से इसके लिए तैयार है और उनमें से अधिकांश को तुम्हारे उत्साह से प्रेरणा प्राप्त हुई. 3 मैंने कुछ साथी विश्वासियों को तुम्हारे पास इसलिये भेजा है कि तुम्हारे विषय में मेरा गर्व करना खोखला न ठहरे, परंतु वे स्वयं तुम्हें सेवा के लिए तैयार पाएं—ठीक जैसा मैं उनसे कहता रहा हूं. 4 ऐसा न हो कि जब कोई मकेदोनियावासी मेरे साथ आए और तुम्हें दान देने के लिए तैयार न पाए तो हमें तुम्हारे प्रति ऐसे आश्वस्त होने के कारण लज्जित होना पड़े—तुम्हारी अपनी लज्जा तो एक अलग विषय होगा. 5 इसलिये मैंने यह आवश्यक समझा कि मैं साथी विश्वासियों से यह विनती करूं कि वे पहले ही तुम्हारे पास चले जाएं तथा उस प्रतिज्ञा की गई भेंट का प्रबंध कर लें, जो तुमने उदारता के भाव में दी है, न कि कंजूसी के भाव में. 6 याद रहे: वह, जो थोड़ा बोता है, थोड़ा ही काटेगा तथा वह, जो बहुत बोता है, बहुत काटेगा. 7 इसलिये जिसने अपने मन में जितना भी देने का निश्चय किया है, उतना ही दे—बिना इच्छा के या विवशता में नहीं क्योंकि परमेश्वर को प्रिय वह है, जो आनंद से देता है. 8 परमेश्वर समर्थ हैं कि वह तुम्हें बहुत अधिक अनुग्रह प्रदान करें कि तुम्हें सब कुछ पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता रहे और हर भले काम के लिए तुम्हारे पास अधिकता में हो, 9 जैसा कि पवित्र शास्त्र का लेख है: उन्होंने कंगालों को उदारतापूर्वक दान दिया; उनकी सच्चाई और धार्मिकता युगानुयुग बनी रहती है. **(aiōn g165)** 10 वह परमेश्वर, जो किसान के लिए बीज का तथा भोजन के लिए आहार का इंतजाम करते हैं, वही बोने के लिए तुम्हारे लिए बीज का इंतजाम तथा विकास करेंगे तथा तुम्हारी धार्मिकता की उपज में उन्नति करेंगे. 11 अपनी अपूर्व उदारता के लिए तुम प्रत्येक पक्ष में धनी किए जाओगे. हमारे माध्यम से तुम्हारी यह उदारता परमेश्वर के प्रति धन्यवाद का विषय हो रही है. 12 यह सेवकाई न केवल पवित्र लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने का ही साधन है परंतु परमेश्वर के प्रति उमड़ता हुआ धन्यवाद का भाव भी है. 13 तुम्हारी इस सेवकाई को प्रमाण मानते हुए वे परमेश्वर की महिमा करेंगे क्योंकि तुमने मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार को आज्ञा मानते हुए ग्रहण किया और तुम सभी के प्रति उदार मन के हो. 14 तुम पर परमेश्वर के अत्यधिक अनुग्रह को देख वे तुम्हारे लिए बड़ी लगन से प्रार्थना करेंगे. 15 परमेश्वर को उनके अवर्णनीय वरदान के लिए आभार!

10 मैं पौलॉस, जो तुम्हारे बीच उपस्थित होने पर तो दीन किंतु तुमसे दूर होने पर निडर हो जाता हूं, स्वयं मसीह की उदारता तथा कोमलता में तुमसे व्यक्तिगत विनती कर रहा हूं. 2 मेरी विनती यह है: जब मैं वहां आऊं तो मुझे उनके प्रति, जो यह सोचते हैं कि हमारी जीवनशैली सांसारिक है, वह कठोरता दिखानी न पड़े जिसकी मुझसे आशा की जाती है. 3 हालांकि हम संसार में रहते हैं मगर हम युद्ध वैसे नहीं करते जैसे यह संसार करता है. 4 हमारे युद्ध के अस्त्र-शस्त्र सांसारिक नहीं हैं—ये परमेश्वर के सामर्थ्य में गढ़ों को ढाह देते हैं. 5 इसके द्वारा हम उस हर एक विरोध को, उस हर एक गर्व करनेवाले को, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध सिर उठाता है, गिरा देते हैं और हर एक धारणा को मसीह का आज्ञाकारी बंदी बना देते हैं. 6 तुम्हारी आज्ञाकारिता और सच्चाई की भरपूरी साबित हो जाने पर हम सभी आज्ञा न माननेवालों को दंड देने के लिए तैयार हैं. 7 तुम सिर्फ जो सामने है, उसके बाहरी रूप को देखते हो. यदि किसी को अपने विषय में यह निश्चय है कि वह मसीह का है तो वह इस पर दोबारा विचार करे कि जैसे वह मसीह का है, वैसे ही हम भी मसीह के हैं. 8 यदि मैं उस अधिकार का कुछ अधिक ही गर्व करता हूं, जो प्रभु ने मुझे तुम्हारे निर्माण के लिए सौंपा है, न कि तुम्हारे विनाश के लिए, तो उसमें मुझे कोई लज्जा नहीं. 9 मैं नहीं चाहता कि तुम्हें यह अहसास हो कि मैं तुम्हें डराने के उद्देश्य से यह पत्र लिख रहा हूं. 10 मेरे विषय में कुछ का कहना है, "उसके पत्र महत्वपूर्ण और प्रभावशाली तो होते हैं किंतु उसका व्यक्तित्व कमजोर है तथा बातें करना प्रभावित नहीं करता." 11 ये लोग याद रखें कि तुम्हारे साथ न होने की स्थिति में हम अपने पत्रों की अभिव्यक्ति में जो कुछ होते हैं, वही हम तुम्हारे साथ होने पर अपने स्वभाव में भी होते हैं. 12 हम उनके साथ अपनी गिनती या तुलना करने का साहस नहीं करते, जो अपनी ही प्रशंसा करने में लीन हैं. वे अपने ही मापदंडों के अनुसार अपने आपको मापते हैं तथा अपनी तुलना वे स्वयं से ही करते हैं. एकदम मूर्ख हैं वे! 13 हम अपनी मर्यादा के बाहर गर्व नहीं करेंगे. हम परमेश्वर द्वारा निर्धारित मर्यादा में ही सीमित रहेंगे. तुम भी इसी सीमा में सीमित हो. 14 अगर हमने गर्व किया तो भी हम अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यदि हम तुम तक नहीं पहुंच पाते तो हो जाता. पर तुम तक मसीह येशु का सुसमाचार लेकर हम तुम्हारे पास सबसे पहले पहुंचे हैं. 15 अन्यों द्वारा किए परिश्रम का श्रेय लेकर भी हम इस आशा में सीमा पार नहीं करते कि जैसे जैसे तुम्हारा विश्वास गहरा होता जाता है, तुम्हारे बीच अपनी ही सीमा में हमारा कार्यक्षेत्र और गतिविधियां फैलती जाएं 16 और हम तुम्हारी सीमाओं से परे दूर-दूर क्षेत्रों में भी ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करें. हम नहीं चाहते कि हम किसी अन्य क्षेत्र में अन्य व्यक्ति द्वारा पहले ही किए जा चुके काम का गर्व करें. 17 जो गर्व करता है, वह परमेश्वर में गर्व करे. 18 ग्रहण वह नहीं किया जाता, जो अपनी तारीफ़ स्वयं करता है परंतु वह है, जिसकी तारीफ़ प्रभु करते हैं.

11 मैं चाहता हूं कि तुम मेरी छोटी सी मूर्खता को सह लो—जैसे वास्तव में तुम इस समय सह भी रहे हो. 2 तुम्हारे लिए मेरी प्रेम की धुन ठीक वैसी ही है जैसी परमेश्वर की. तुम उस पवित्र कुंवारी जैसे हो, जिसकी मंगनी मैंने एकमात्र वर—मसीह येशु—को सौंपने के उद्देश्य से की है. 3 मुझे हमेशा यह भय लगा रहता है कि कहीं शैतान तुम्हारे मन को मसीह के प्रति तुम्हारी निष्कपट, पवित्रता से दूर न कर दे, जैसे सांप ने हव्वा को अपनी चालाकी से छल लिया था. 4 क्योंकि जब कोई व्यक्ति आकर किसी अन्य येशु का प्रचार करता है, जिसका प्रचार हमने नहीं किया या तुम्हें कोई भिन्न आत्मा मिलती है,

जो तुम्हें पहले नहीं मिली थी या तुम कोई भिन्न ईश्वरीय सुसमाचार को अपनाते हो, जिसे तुमने पहले ग्रहण नहीं किया था, तो तुम इसे सहर्ष स्वीकार कर लेते हो! 5 मैं यह नहीं मानता कि मैं तथाकथित बडे से बड़े प्रेरितों से तुच्छ हूं. 6 माना कि मैं बोलने में निपुण नहीं हूं किंतु निश्चित ही ज्ञान में मैं कम नहीं. वस्तुतः हमने प्रत्येक प्रकार से प्रत्येक क्षेत्र में तुम्हारे लिए इसे स्पष्ट कर दिया है. 7 इसलिये कि मैंने तुम्हारे लिए परमेश्वर के ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार मुफ्त में किया, क्या तुम्हें ऊंचा करने के उद्देश्य से मेरा स्वयं को विनम्र बना लेना अपराध था? 8 तुम्हारे बीच सेवा करते हुए मेरा भरण-पोषण अन्य कलीसियाओं द्वारा किया जा रहा था. यह एक प्रकार से उन्हें लूटना ही हुआ. 9 तुम्हारे साथ रहते हुए आर्थिक ज़रूरत में भी मैं तुममें से किसी पर भी बोझ न बना. मकेदोनिया प्रदेश से आए साथी विश्वासियों ने मेरी सभी ज़रूरतों की पूर्ति की. हर क्षेत्र में मेरा यही प्रयास रहा है कि मैं तुम पर बोझ न बनूं. भविष्य में भी मेरा प्रयास यही रहेगा. 10 मुझमें मसीह का सच मौजूद है, इसलिये पूरे आखाया प्रदेश के क्षेत्रों में कोई भी मुझे मेरे इस गौरव से दूर न कर सकेगा. 11 क्यों? क्या इसलिये कि मुझे तुमसे प्रेम नहीं? परमेश्वर गवाह हैं कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं. 12 मैं जो कुछ कर रहा हूं, वही करता जाऊंगा कि उन व्यक्तियों की इस विषय में गर्व करने की सारी सम्भावनाएं समाप्त हो जाएं कि वे भी वही काम कर रहे हैं, जो हम कर रहे हैं. 13 ऐसे व्यक्ति झूठे प्रेरित तथा छल से काम करनेवाले हैं, जो मसीह के प्रेरित होने का ढोंग करते हैं. 14 यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं कि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत होने का नकल करता है, 15 इसलिये इसमें कोई बड़ी बात नहीं कि उसके सेवक भी जो धार्मिकता के सेवक होने का नाटक करते हैं, जिनका अंत उनके कामों के अनुसार ही होगा. 16 मैं दोबारा याद दिला रहा हूं: कोई मुझे मूर्ख न समझे किंतु यदि तुमने मुझे ऐसा मान ही लिया है तो मुझे मूर्ख के रूप में ही स्वीकार कर लो. इससे मुझे भी गर्व करने का अवसर मिल जाएगा. 17 बेधड़क कहा गया मेरा वचन प्रभु द्वारा दिया गया नहीं है—यह सब तो एक मूर्ख की गर्व में कही गई बात है. 18 कितने तो अपनी मानवीय उपलब्धियों का गर्व कर रहे हैं, तो मैं भी गर्व क्यों न करूं? 19 तुम तो ऐसे बुद्धिमान हो कि मूर्खों को खुशी से सह लेते हो. 20 वस्तुतः तुम तो उसकी तक सह लेते हो, जो तुम्हें दास बना लेता है, जो तुम्हारा शोषण करता है, तुम्हारा अनुचित लाभ उठाता है, स्वयं को उन्नत करता है, यहां तक कि वह तुम्हारे मुख पर थप्पड़ तक मार देता है! 21 मुझे स्वयं लज्जित हो कहना पड़ रहा है कि हम इन सब की तुलना में बहुत दुर्बल थे. कोई किसी भी विषय का अभिमान करने का साहस करे—मैं यह मूर्खतापूर्वक कह रहा हूं—मैं भी उसी प्रकार अभिमान करने का साहस कर रहा हूं. 22 क्या वे इब्री हैं? इब्री मैं भी हूं, क्या वे इस्राएली हैं? इस्राएली मैं भी हूं, क्या वे अब्राहाम के वंशज हैं? अब्राहाम का वंशज मैं भी हूं. 23 क्या वे मसीह के सेवक हैं? मैं पागल व्यक्ति की तरह कहता हूं, मैं उनसे कहीं बढ़कर हूं: मैंने उनसे कहीं अधिक परिश्रम किया है, उनसे कहीं अधिक बंदी बनाया गया हूं, अनगिनत बार पीटा गया हूं, अक्सर ही मेरे प्राण संकट में पड़े हैं. 24 यहूदियों ने मुझे पांच बार एक कम चालीस कोड़े लगाए. 25 तीन बार मैं बेंत से पीटा गया, एक बार मेरा पथराव किया गया और तीन बार मेरा जलयान ध्वस्त हुआ, एक रात तथा एक दिन मुझे समुद्र में व्यतीत करना पड़ा. 26 बार-बार मुझे यात्राएं करनी पड़ीं. कभी नदियों के, कभी डाकुओं के, कभी अपने देशवासियों के, कभी गैर-यहूदियों के, कभी नगरों में, कभी बंजर भूमि में, कभी समुद्र में जोखिम का और कभी झूठे विश्वासियों के जोखिम का सामना करना पड़ा है. 27 मैंने अनेक रातें जाग कर, भूखे-प्यासे रहकर, अक्सर भूखे रहकर, सर्दी और थोड़े वस्त्रों में रहते हुए कठिन परिश्रम किया तथा अनेक कठिनाइयां झेली हैं. 28 इन सब बाहरी कठिनाइयों के अलावा प्रतिदिन मुझ पर सभी कलीसियाओं की भलाई की चिंता का दबाव रहता है. 29 कौन कमजोर है, जिसकी कमज़ोरी का अहसास मुझे नहीं होता? किसके पाप में पड़ने से मैं चिंतित नहीं होता? 30 यदि मुझे गर्व करना ही है तो मैं अपनी कमज़ोरी का गर्व करूंगा. 31 प्रभु येशु मसीह के परमेश्वर तथा पिता, जो युगानुयुग धन्य हैं, गवाह हैं कि मैं झूठ नहीं बोल रहा: (aiōn g165) 32 जब मैं दमिश्क में था तो राजा अरेतॉस के राज्यपाल ने मुझे बंदी बनाने के उद्देश्य से नगर में पहरा बैठा दिया था 33 किंतु मुझे शहरपनाह के एक झरोखे से एक टोकरे में बैठाकर नीचे उतार दिया गया और इस प्रकार मैं उसके हाथों से बच निकला.

12 अपनी बड़ाई करना मेरे लिए ज़रूरी हो गया है—हालांकि इसमें कोई भी लाभ नहीं है—इसलिये मैं प्रभु के द्वारा दिए गए दर्शनों तथा दिव्य प्रकाशनों के वर्णन की ओर बढ़ रहा हूं. 2 मैं एक ऐसे व्यक्ति को, जो मसीह का विश्वासी है, जानता हूं. चौदह वर्ष पहले यह व्यक्ति तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया—शरीर के साथ या बिना शरीर के, मुझे मालूम नहीं—यह परमेश्वर ही जानते हैं. 3 मैं जानता हूं कैसे यही व्यक्ति—शरीर के साथ या बिना शरीर के, मुझे मालूम नहीं—यह परमेश्वर ही जानते हैं; 4 स्वर्ग में उठा लिया गया. वहां उसने वे अवर्णनीय वचन सुने, जिनका वर्णन करना किसी भी मनुष्य के लिए संभव नहीं है. 5 इसी व्यक्ति की ओर से मैं गर्व करूंगा—स्वयं अपने विषय में नहीं—सिवाय अपनी कमज़ोरियों के. 6 वैसे भी यदि मैं अपनी बड़ाई करने ही लगूं तो इसे मेरी मूर्खता नहीं माना जा सकेगा क्योंकि वह सत्य वर्णन होगा. किंतु मैं यह भी नहीं करूंगा कि कोई भी मेरे स्वभाव, मेरे वर्णन से प्रभावित हो मुझे मेरे कथन अथवा करनी से अधिक श्रेय देने लगे. 7 मेरे अद्भुत प्रकाशनों की श्रेष्ठता के कारण मुझे अपनी बड़ाई करने से रोकने के उद्देश्य से मेरे शरीर में एक कांटा लगाया गया है—मुझे कष्ट देते रहने के लिए शैतान का एक अपदूत—कि मैं अपनी बड़ाई न करूं. 8 इसके उपाय के लिए मैंने तीन बार प्रभु से गिड़गिड़ाकर विनती की. 9 प्रभु का उत्तर था: "कमज़ोरी में मेरा सामर्थ्य सिद्ध हो जाता है इसलिये तुम्हारे लिए मेरा अनुग्रह ही काफ़ी है." इसके प्रकाश में मैं बड़े हर्ष के साथ अपनी कमज़ोरियों के विषय में गर्व करूंगा कि मेरे द्वारा प्रभु मसीह का सामर्थ्य सक्रिय हो जाए. 10 मसीह के लिए मैं कमज़ोरियों, अपमानों, कष्टों, उत्पीड़नों तथा कठिनाइयों में पूरी तरह संतुष्ट हूं क्योंकि जब कभी मैं दुर्बल होता हूं, तभी मैं बलवंत होता हूं. 11 यह करते हुए मैंने स्वयं को मूर्ख बना लिया है. तुमने ही मुझे इसके लिए मजबूर किया है. होना तो यह था कि तुम मेरी प्रशंसा करते. यद्यपि मैं तुच्छ हूं फिर भी मैं उन बड़े-बड़े प्रेरितों की तुलना में कम नहीं हूं. 12 मैंने तुम्हारे बीच रहते हुए प्रेरिताई प्रमाण स्वरूप धीरज, चमत्कार चिह्न, अद्भुत काम तथा सामर्थ्य भरे काम दिखाए. 13 भला तुम किस क्षेत्र में अन्य कलीसियाओं की तुलना में कम रहे, सिवाय इसके कि मैं कभी भी तुम्हारे लिए बोझ नहीं बना? क्षमा कर दो. मुझसे भूल हो गई. 14 मैं तीसरी बार वहां आने के लिए तैयार हूं. मैं तुम्हारे लिए बोझ नहीं बनूंगा. मेरी रुचि तुम्हारी संपत्ति में नहीं, स्वयं तुममें है. संतान से यह आशा नहीं की जाती कि वे माता-पिता के लिए कमाएं—संतान के लिए माता-पिता कमाते हैं. 15 तुम्हारी आत्माओं के भले के लिए मैं निश्चित ही अपना सब कुछ तथा खुद को खर्च करने के लिए तैयार हूं. क्या तुम्हें बढ़कर प्रेम करने का बदला तुम मुझे कम प्रेम करने के द्वारा दोगे? 16 कुछ भी हो, मैं तुम पर बोझ नहीं बना. फिर भी कोई न कोई मुझ पर यह दोष ज़रूर लगा सकता है, "बड़ा धूर्त है वह! छल कर गया है तुमसे!" 17 क्या वास्तव में इन व्यक्तियों को तुम्हारे पास भेजकर मैंने तुम्हारा गलत फायदा उठाया है? 18 तीतॉस को तुम्हारे पास भेजने की विनती मैंने की थी. उसके साथ अपने इस भाई को भी मैंने ही भेजा था. क्या तीतॉस ने तुम्हारा गलत फायदा उठाया? क्या हमारा स्वभाव एक ही भाव से प्रेरित न था? क्या हम उन्हीं पद-चिह्नों पर न चले? 19 यह संभव है तुम अपने मन में यह

विचार कर रहे हो कि हम यह सब अपने बचाव में कह रहे हैं. प्रिय मित्रो, हम
यह सब परमेश्वर के सामने मसीह येशु में तुम्हें उन्नत करने के उद्देश्य से कह रहे
हैं. **20** मुझे यह डर है कि मेरे वहां आने पर मैं तुम्हें अपनी उम्मीद के अनुसार न
पाऊं और तुम भी मुझे अपनी उम्मीद के अनुसार न पाओ. मुझे डर है कि वहां
झगड़ा, जलन, क्रोध, उदासी, बदनामी, बकवाद, अहंकार तथा उपद्रव पाऊं!
21 मुझे डर है कि मेरे वहां दोबारा आने पर कहीं मेरे परमेश्वर तुम्हारे सामने मेरी
प्रतिष्ठा भंग न कर दें और मुझे तुममें से अनेक के अतीत में किए गए पापों तथा
उनके अशुद्धता, गैर-कानूनी तथा कामुकता भरे स्वभाव के लिए पश्चाताप न
करने के कारण शोक करना पड़े.

13 तुम्हारे पास मैं तीसरी बार आ रहा हूं. "हर एक बात की पुष्टि के लिए दो
या तीन गवाहों की ज़रूरत होती है." **2** वहां अपने दूसरी बार ठहरने के
अवसर पर मैंने तुमसे कहा था और अब वहां अनुपस्थित होने पर भी वहां आने
से पहले मैं उन सबसे यह कह रहा हूं: जिन्होंने अतीत में पाप किया है तथा
बाकी लोगों से भी, यदि मैं फिर आऊंगा तो किसी पर दया न करूंगा **3** क्योंकि
तुम यह सबूत चाहते हो कि जो मेरे द्वारा बातें करते हैं, वह मसीह हैं और वह
तुम्हारे प्रति निर्बल नहीं परंतु तुम्हारे मध्य सामर्थ्यी हैं. **4** वास्तव में वह दुर्बलता
की अवस्था में ही क्रूसित किए गए, फिर भी वह परमेश्वर के सामर्थ्य में जीवित
हैं. निःसंदेह हम उनमें कमजोर हैं, फिर भी हम तुम्हारे लिए परमेश्वर के सक्रिय
सामर्थ्य के कारण उनके साथ जीवित रहेंगे. **5** स्वयं को परखो कि तुम विश्वास
में हो या नहीं. अपने आपको जांचो! क्या तुम्हें यह अहसास नहीं होता कि
मसीह येशु तुममें हैं? यदि नहीं तो तुम कसौटी पर खरे नहीं उतरे. **6** मुझे भरोसा
है कि तुम यह जान जाओगे कि हम कसौटी पर खोटे नहीं उतरे. **7** हम परमेश्वर
से प्रार्थना करते हैं कि तुमसे कोई गलती न हो. इसलिये नहीं कि हम भले
दिखाई दें, परंतु इसलिये कि तुम वही करो, जो उचित है, फिर हम भले ही खोटे
दिखाई दें. **8** सच्चाई के विरोध में हम कुछ भी नहीं कर सकते. हम सच के
पक्षधर ही रह सकते हैं. **9** हम अपने कमजोर होने तथा तुम्हारे समर्थ होने पर
आनंदित होते हैं और यह प्रार्थना भी करते हैं कि तुम सिद्ध बन जाओ. **10** इस
कारण दूर होते हुए भी मैं तुम्हें यह सब लिख रहा हूं कि वहां उपस्थिति होने पर
मुझे प्रभु द्वारा दिए गए अधिकार का प्रयोग कठोर भाव में न करना पढ़े. इस
अधिकार का उद्देश्य है उन्नत करना, न कि नाश करना. **11** अंत में, प्रिय भाई
बहनो, आनंदित रहो, अपना स्वभाव साफ़ रखो, एक दूसरे को प्रोत्साहित करते
रहो, एक मत रहो, शांति बनाए रखो और प्रेम और शांति के परमेश्वर तुम्हारे
साथ होंगे. **12** पवित्र चुंबन से एक दूसरे को नमस्कार करो. **13** सभी पवित्र
लोग जो यहां हैं, उनकी ओर से नमस्कार. **14** प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह, और
परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सभी के साथ बनी रहे.

गलातियों

1 यह पत्र पौलॉस की ओर से है, जिसे न तो मनुष्यों की ओर से और न
ही किसी मनुष्य की प्रक्रिया द्वारा परंतु मसीह येशु और पिता परमेश्वर द्वारा,
जिन्होंने मसीह येशु को मरे हुओं में से जीवित किया, प्रेरित चुना गया, 2 तथा
उन भाई बहनों की ओर से, जो इस समय मेरे साथ हैं, गलातिया प्रदेश की
कलीसियाओं के नाम में: 3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह की ओर
से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो. 4 मसीह येशु, जिन्होंने हमारे पापों के
कारण स्वयं को इसलिये बलिदान कर दिया कि हमारे परमेश्वर और पिता की
इच्छानुसार वह हमें वर्तमान बुरे संसार से छुड़ायें, (aiōn g165) 5 उन्हीं की
महिमा हमेशा होती रहे. आमेन. (aiōn g165) 6 मैं यह जानकर चकित हूं कि
तुम परमेश्वर से, जिन्होंने मसीह के अनुग्रह के द्वारा तुम्हें बुलाया, इतनी जल्दी
भटक कर एक अन्य ईश्वरीय सुसमाचार की ओर फिर गये हो 7 पर वह दूसरा
सुसमाचार जो वास्तव में ईश्वरीय सुसमाचार है ही नहीं! साफ़ तौर पर कुछ लोग
हैं, जो मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार को बिगाड़कर तुम्हें घबरा देना चाहते हैं. 8
किंतु यदि हम या कोई स्वर्गदूत तक उस ईश्वरीय सुसमाचार के अलावा, जो
हमने तुम्हें सुनाया है, किसी भिन्न ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार करे तो वह
शापित है! 9 जैसा हमने पहले भी कहा, मैं अब दोबारा कहता हूं: कि उस
ईश्वरीय सुसमाचार के अलावा, जो हमने तुम्हें सुनाया, यदि कोई व्यक्ति तुम्हें
अलग ईश्वरीय सुसमाचार सुनाए तो वह शापित है! 10 किसका कृपापात्र बनने
की कोशिश कर रहा हूं मैं—मनुष्यों का या परमेश्वर का? क्या मैं मनुष्यों को
प्रसन्न करने के लिए प्रयास कर रहा हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न
कर रहा होता तो मसीह का दास न होता. 11 प्रिय भाई बहनो, मैं तुम पर यह
स्पष्ट कर रहा हूं कि जो ईश्वरीय सुसमाचार मैंने तुम्हें सुनाया, वह किसी मनुष्य
के दिमाग की उपज नहीं है. 12 यह मुझे न तो किसी मनुष्य से और न ही किसी
शिक्षा से, परंतु स्वयं मसीह येशु के प्रकाशन के द्वारा प्राप्त हुआ है. 13 यहूदी मत
के शिष्य के रूप में मेरी जीवनशैली कैसी थी, इसके विषय में तुम सुन चुके हो.
मैं किस रीति से परमेश्वर की कलीसिया पर घोर अत्याचार किया करता था तथा
उसे नाश करने के लिए प्रयास करता रहता था. 14 यहूदी मत में अपने पूर्वजों
की परंपराओं के प्रति अत्यंत उत्साही, मैं अपनी आयु के यहूदियों से अधिक
उन्नत होता जा रहा था. 15 किंतु परमेश्वर को, जिन्होंने माता के गर्भ से ही मुझे
चुन लिया तथा अपने अनुग्रह के द्वारा मुझे बुलाया, यह सही लगा 16 कि वह
मुझमें अपने पुत्र को प्रकट करें कि मैं गैर-यहूदियों में उनका प्रचार करूं, इसके
विषय में मैंने तुरंत न तो किसी व्यक्ति से सलाह ली 17 और न ही मैं येरूशलेम में
उनके पास गया, जो मुझसे पहले प्रेरित चुने जा चुके थे, परंतु मैं अराबिया क्षेत्र
में चला गया और वहां से दोबारा दमिश्क नगर लौट गया. 18 तीन वर्ष बाद, मैं
कैफ़स से भेंट करने येरूशलेम गया और उनके साथ पन्द्रह दिन रहा. 19 किंतु
प्रभु के भाई याकोब के अलावा अन्य किसी प्रेरित से मेरी भेंट नहीं हुई. 20
परमेश्वर के सामने मैं तुम्हें धीरज देता हूं कि अपने इस विवरण में मैं कुछ भी
झूठ नहीं कह रहा. 21 तब मैं सीरिया और किलिकिया प्रदेश के क्षेत्रों में
गया. 22 यहूदिया प्रदेश की कलीसियाओं से, जो अब मसीह में हैं, मैं अब तक
व्यक्तिगत रूप से अपरिचित था. 23 मेरे विषय में उन्होंने केवल यही सुना था:
“एक समय जो हमारा सतानेवाला था, अब वही उस विश्वास का प्रचार कर रहा
है, जिसे नष्ट करने के लिए वह दृढ़ संकल्प था.” 24 उनके लिए मैं परमेश्वर
की महिमा का विषय हो गया.

2 तब चौदह वर्ष बाद, मैं बारनबास के साथ दोबारा येरूशलेम गया. इस समय
मैं तीतॉस को भी अपने साथ ले गया. 2 मैं एक ईश्वरीय प्रकाशन के उत्तर
में वहां गया था और मैंने उनको वही ईश्वरीय सुसमाचार दिया, जिसका प्रचार मैं
गैर-यहूदियों के बीच कर रहा हूं किंतु गुप्त रूप से, केवल नामी व्यक्तियों के
बीच ही—इस भय से कि कहीं मेरी पिछली दौड़-धूप व्यर्थ न हो जाए. 3 किसी
ने भी मेरे साथी तीतॉस को ख़तना के लिए बाध्य नहीं किया, यद्यपि वह यूनानी
है. 4 यह प्रश्न उन पाखंडियों के कारण उठा था, जो हमारे बीच चुपके से घुस
आए थे कि मसीह येशु में हमारी स्वतंत्रता का भेद लें और हमें दासत्व में डाल
दें. 5 हम एक क्षण के लिए भी उनके आगे न झुके कि तुममें विद्यमान ईश्वरीय
सुसमाचार की सच्चाई सुरक्षित रहे. 6 इसका मेरे लिए कोई महत्व नहीं कि वे,
जो नामी थे, पहले क्या थे; परमेश्वर भेद-भाव करनेवाला नहीं हैं, मेरे संदेश में
उन नामी व्यक्तियों का कोई योगदान नहीं था. 7 इसके विपरीत जब उन्होंने
यह देखा कि अख़तनितों के लिए ईश्वरीय सुसमाचार मुझे उसी प्रकार सौंपा
गया जिस प्रकार ख़तनितों के लिए पेतरॉस को, 8 क्योंकि जिस परमेश्वर ने
ख़तनितों के बीच पेतरॉस की प्रेरिताई की सेवा में प्रभावशाली रीति से काम
किया, उन्होंने अख़तनितों के बीच प्रेरिताई की सेवा में मुझमें भी प्रभावशाली
रीति से काम किया. 9 मुझे मिले अनुग्रह को पहचानकर याकोब, कैफ़स तथा
योहन ने, जो कलीसिया के स्तंभ के रूप में जाने जाते थे, बारनबास और मेरी
ओर सहभागिता का दायां हाथ बढ़ाया कि हम गैर-यहूदियों में और वे ख़तनितों
में जाएं. 10 उन्होंने हमसे सिर्फ यही विनती की कि हम निर्धनों की अनदेखी न
करें—ठीक यही तो मैं भी चाहता था! 11 जब कैफ़स अंतियोख़ नगर आए, मैंने
उनके मुख पर उनका विरोध किया क्योंकि उनकी गलती साफ़-साफ़ थी. 12
याकोब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले तो वह गैर-यहूदियों के साथ
खान-पान में सम्मिलित होते थे किंतु याकोब के लोगों के यहां आने पर वह
ख़तनितों के समूह के भय से अलग होकर गैर-यहूदियों से दूरी रखने लगे. 13
बाकी यहूदी भी उनके साथ इस कपट में शामिल हो गए, यहां तक कि बारनबास
भी. 14 जब मैंने यह देखा कि उनका स्वभाव ईश्वरीय सुसमाचार के भेद के
अनुसार नहीं है, मैंने सबके सामने कैफ़स से कहा, “यदि स्वयं यहूदी, होकर
आपका स्वभाव यहूदियों के समान नहीं परंतु गैर-यहूदियों के समान है, तो आप
गैर-यहूदियों को यहूदियों जैसे स्वभाव के लिए बाध्य कैसे कर सकते हो? 15
“आप और मैं जन्म से यहूदी हैं—गैर-यहूदियों के पापी वंशज नहीं. 16 फिर
भी हम यह जानते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य मात्र मसीह येशु में विश्वास
करने के द्वारा ही धर्मी ठहरता है, न कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा,
इसलिये हमने भी मसीह येशु में विश्वास किया कि हम मसीह में विश्वास करने
के द्वारा धर्मी ठहराए जाएं, न कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा—क्योंकि
व्यवस्था का पालन करने से कोई भी मनुष्य धर्मी ठहराया नहीं जाता. 17
“किंतु, यदि हम मसीह में धर्मी ठहराए जाने के लिए प्रयास करने पर भी पापी
ही पाए जाते हैं, तो क्या मसीह पाप के पालन पोषण करनेवाले हैं? बिलकुल
नहीं! 18 यदि मैं उसी को दोबारा बनाता हूं, जिसे मैंने गिरा दिया था, तो मैं स्वयं
को ही अपराधी साबित करता हूं. 19 “क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के
लिए मर गया कि मैं परमेश्वर के लिए जीऊं. 20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर
चढ़ाया जा चुका हूं. अब से वह, जो जीवित है, मैं नहीं परंतु मसीह हैं, जो
मुझमें जीवित हैं. अब वह जीवन, जो मैं शरीर में जी रहा हूं, परमेश्वर के पुत्र में
विश्वास करते हुए जी रहा हूं, जिन्होंने मुझसे प्रेम किया और स्वयं को मेरे लिए
बलिदान कर दिया. 21 मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं कर रहा, क्योंकि
यदि व्यवस्था धार्मिकता का कारण होता, तब मसीह का प्राण त्यागना व्यर्थ हो
जाता!”

3 निर्बुद्धि गलातियो! किसने तुम्हें सम्मोहित कर दिया? तुम्हारे सामने तो मसीह
येशु को साफ़-साफ़ क्रूस पर दिखाया गया था. 2 मैं तुमसे सिर्फ यह जानना
चाहता हूं: पवित्र आत्मा तुमने व्यवस्था के नियम-पालन द्वारा प्राप्त किया या

ईश्वरीय सुसमाचार को सुनने और उसमें विश्वास करने के द्वारा? 3 क्या तुम
इतने निर्बुद्धि हो? जो पवित्र आत्मा द्वारा शुरू किया गया था क्या वह मनुष्य के
कार्यों से सिद्ध बनाया जा रहा है? 4 तुमने इतने दुःख उठाए तो क्या वे वास्तव में
व्यर्थ थे? 5 परमेश्वर, जो तुम्हें अपना आत्मा प्रदान करते तथा तुम्हारे बीच
चमत्कार करते हैं, क्या यह वह व्यवस्था का पालन करने के द्वारा करते हैं या
विश्वास के साथ सुनने के द्वारा? 6 जैसे अब्राहाम ने "परमेश्वर में विश्वास
किया, और यह उनके लिए धार्मिकता माना गया." 7 इसलिये अब यह भली-
भांति समझ लो कि जिन्होंने विश्वास किया है वे ही अब्राहाम की संतान हैं.
8 पवित्र शास्त्र ने पहले से जानकर कि परमेश्वर गैर-यहूदियों को विश्वास के
द्वारा धर्मी ठहराएंगे, पहले ही अब्राहाम को यह शुभ संदेश देते हुए कहा था:
"सभी राष्ट्र तुममें आशीषित होंगे." 9 इसलिये वे सभी, जो विश्वास करते हैं,
अब्राहाम—विश्वास पुरुष—के साथ, जो स्वयं विश्वासी थे, आशीषित किए जाते
हैं. 10 वे, जो व्यवस्था के कार्यों पर निर्भर हैं, शापित हैं क्योंकि पवित्र शास्त्र
का वर्णन है: "शापित है वह, जो व्यवस्था के हर एक नियम का पालन नहीं
करता." 11 यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के सामने कोई भी
धर्मी नहीं ठहरता; क्योंकि लिखा है: "वह, जो धर्मी है, विश्वास से जीवित
रहेगा." 12 फिर भी, व्यवस्था विश्वास पर आधारित नहीं है, "इसके विपरीत,
जो इसका अनुसरण करेगा, वह इसके कारण जीवित रहेगा." 13 मसीह ने
स्वयं शाप बनकर हमें व्यवस्था के शाप से मुक्त कर दिया, जैसा कि लिखा है:
"शापित है हर एक, जो काठ पर लटकाया जाता है." 14 यह सब इसलिये कि
मसीह येशु में अब्राहाम की आशीषें गैर-यहूदियों तक आएं और हम विश्वास
द्वारा प्रतिज्ञा की हुई पवित्र आत्मा प्राप्त करें. 15 प्रिय भाई बहनो, मैं सामान्य
जीवन से उदाहरण दे रहा हूं. एक मानवीय वाचा की पुष्टि के बाद उसे न तो
कोई अलग करता है और न ही उसमें कुछ जोड़ता है. 16 प्रतिज्ञाएं अब्राहाम
और उनके वंशज से की गई थी. वहां यह नहीं कहा गया "वंशजों से," मानो
अनेकों से परंतु एक ही से अर्थात् "वंशज से," अर्थात् मसीह से. 17 मेरे कहने
का मतलब यह है: परमेश्वर ने अब्राहाम से एक वाचा स्थापित की तथा उसे पूरा
करने की प्रतिज्ञा भी की. चार सौ तीस वर्ष बाद दी गई व्यवस्था न तो परमेश्वर
की वाचा को मिटा सकती है और न परमेश्वर की प्रतिज्ञा को. 18 यदि मीरास
का आधार व्यवस्था है तो मीरास प्रतिज्ञा पर आधारित हो ही नहीं सकती,
किंतु परमेश्वर ने अब्राहाम को यह मीरास प्रतिज्ञा द्वारा ही प्रदान की. 19 तब
क्या उद्देश्य है व्यवस्था का? अपराध का अहसास. उसे स्वर्गदूतों द्वारा एक
मध्यस्थ के माध्यम से आधिकारिक रूप से उस वंशज के आने तक बनाये रखा
गया जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई थी. 20 सिर्फ एक पक्ष के लिए मध्यस्थ
आवश्यक नहीं होता, जबकि परमेश्वर सिर्फ एक हैं. 21 तो क्या व्यवस्था
परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विपरीत है? बिलकुल नहीं! यदि कोई ऐसी व्यवस्था
दी गई होती, जो जीवन प्रदान कर सकती थी, तब निश्चयतः उस व्यवस्था के
पालन करने पर धार्मिकता प्राप्त हो जाती. 22 किंतु पवित्र शास्त्र ने यह स्पष्ट
किया कि पूरा विश्व पाप की अधीनता में है कि मसीह येशु में विश्वास करने के
द्वारा प्रतिज्ञा उन्हें दी जा सके, जो विश्वास करते हैं. 23 मसीह येशु में विश्वास के
प्रकाशन से पहले हम व्यवस्था के संरक्षण में रखे गए, उस विश्वास से अनजान,
जो प्रकट होने पर था. 24 इसलिये व्यवस्था हमें मसीह तक पहुंचाने के लिए
हमारा संरक्षक हुआ कि हम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाएं. 25 परंतु अब,
जब विश्वास आ चुका है, हम संरक्षक के अधीन नहीं रहे. 26 इसलिये तुम सब
मसीह येशु में विश्वास द्वारा परमेश्वर की संतान हो, 27 तुम सबने जो मसीह में
बपतिस्मा लिया है, मसीह को धारण कर लिया है. 28 इसलिये अब न कोई
यहूदी है, न कोई यूनानी; न कोई स्वतंत्र है, न कोई दास और न कोई पुरुष है, न
कोई स्त्री क्योंकि तुम सब मसीह येशु में एक हो. 29 यदि तुम मसीह के हो, तो
तुम अब्राहाम के वंशज हो, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वारिस.

4 मेरा कहने का उद्देश्य यह है कि जब तक वारिस बालक है, दास और उसमें
किसी भी प्रकार का अंतर नहीं होता, यद्यपि वह हर एक वस्तु का स्वामी
है. 2 वह पिता द्वारा निर्धारित समय तक के लिए रक्षकों व प्रबंधकों के संरक्षण
में रहता है. 3 इसी प्रकार हम भी, जब बालक थे, संसार की आदि शिक्षा के
अधीन दासत्व में थे. 4 किंतु निर्धारित समय के पूरा होने पर परमेश्वर ने अपने
पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मे, व्यवस्था के अधीन, 5 कि उन सबको छुड़ा लें,
जो व्यवस्था के अधीन हैं, कि हम परमेश्वर की संतान होने का अधिकार प्राप्त
कर सकें. 6 अब इसलिये कि तुम संतान हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा
को, जो अब्बा, पिता पुकारता है, हमारे हृदयों में भेज दिया है. 7 इसलिये अब
तुम दास नहीं परंतु संतान बन गए हो और यदि तुम संतान हो तो परमेश्वर के
द्वारा वारिस भी. 8 जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते थे, उस समय तुम उनके
दास थे, जो वास्तव में ईश्वर हैं ही नहीं. 9 किंतु अब, जब तुमने परमेश्वर को
जान लिया है, परंतु यह कहें कि परमेश्वर द्वारा जान लिये गए हो, तो फिर तुम
कमजोर तथा दयनीय आदि शिक्षाओं का दास बनने के लिए क्यों लौट रहे हो?
क्या तुम्हें दोबारा उन्हीं का दास बनने की लालसा है? 10 तुम तो विशेष दिवस,
माह, ऋतु तथा वर्ष मनाते जा रहे हो. 11 मुझे तुम्हारे लिए आशंका है कि कहीं
तुम्हारे लिए मेरा परिश्रम व्यर्थ ही तो नहीं गया. 12 प्रिय भाई बहनो, मैं तुमसे
विनती करता हूं कि तुम मेरे समान बन जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान बन
गया हूं. तुमने मुझे कोई हानि नहीं पहुंचाई. 13 तुम्हें याद होगा कि, मैंने पहली
बार अपनी बीमारी की स्थिति में तुम्हें ईश्वरीय सुसमाचार सुनाया था, 14 परंतु
मेरी शारीरिक स्थिति के कारण, जो तुम्हारे लिए एक परख थी, तुमने न तो
मुझसे घृणा की और न ही मुझसे मुख मोड़ा, परंतु मुझे इस प्रकार स्वीकार
किया, मानो मैं परमेश्वर का स्वर्गदूत हूं, मसीह येशु हूं. 15 अब कहां गया
तुम्हारा आनंद मनाना? मैं स्वयं गवाह हूं कि यदि संभव होता तो उस समय तुम
अपनी आंखें तक निकालकर मुझे दे देते. 16 क्या सिर्फ सच बोलने के कारण मैं
तुम्हारा शत्रु हो गया? 17 वे तुम्हें अपने पक्ष में करने को उत्सुक हैं, किंतु किसी
भले मतलब से नहीं; उनका मतलब तो तुम्हें मुझसे अलग करना है कि तुम
उनके शिष्य बन जाओ. 18 हमेशा ही अच्छे उद्देश्य के लिए उत्साही होना
उत्तम होता है और मात्र उसी समय नहीं, जब मैं तुम्हारे मध्य उपस्थित होता हूं.
19 हे बालको, तुममें मसीह का स्वरूप पूरी तरह विकसित होने तक मैं दोबारा
प्रसव पीड़ा में रहूंगा. 20 बड़ी अभिलाषा थी कि इस समय मैं तुम्हारे पास होता
और मीठी वाणी में तुमसे बातें करता, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं दुविधा में पड़ा
हूं. 21 मुझे यह बताओ: तुम, जो व्यवस्था के अधीन रहना चाहते हो, क्या तुम
वास्तव में व्यवस्था का पालन नहीं करते? 22 पवित्र शास्त्र में लिखा है कि
अब्राहाम के दो पुत्र थे, एक दासी से और दूसरा स्वतंत्र स्त्री से. 23 दासी का पुत्र
शरीर से जन्मा था और स्वतंत्र स्त्री के पुत्र का जन्म प्रतिज्ञा के पूरा होने के लिए
हुआ था. 24 यह एक दृष्टांत है. ये स्त्रियां दो वाचाएं हैं. सीनाय पर्वत की वाचा
हागार है, जिससे दासत्व की संतान पैदा होती है. 25 हागार अराबिया में सीनाय
पर्वत है, जो वर्तमान येरूशलेम का प्रतीक है क्योंकि वह संतानों सहित दासत्व
में है. 26 किंतु स्वर्गीय येरूशलेम स्वतंत्र है. वह हमारी माता है. 27 जैसा कि
लिखा है: "बांझ, तुम, जो संतान पैदा करने में असमर्थ हो, आनंदित हो. तुम,
जो प्रसव पीड़ा से अनजान हो, जय जयकार करो, क्योंकि त्यागी हुई की
संतान, सुहागन की संतान से अधिक है." 28 प्रिय भाई बहनो, तुम यित्सहाक
के समान प्रतिज्ञा की संतान हो. 29 किंतु जैसे उस समय शरीर से जन्मा पुत्र
आत्मा से जन्मे पुत्र को सताया करता था, वैसी ही स्थिति इस समय भी है. 30
पवित्र शास्त्र का लेख क्या है? "दासी व उसके पुत्र को निकाल दो क्योंकि दासी

का पुत्र कभी भी स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ वारिस नहीं होगा.” 31 इसलिये,
प्रिय भाई बहनो, हम दासी की नहीं, परंतु स्वतंत्र स्त्री की संतान हैं.

5 इसी स्वतंत्रता में बने रहने के लिए मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है. इसलिये
स्थिर रहो और दोबारा दासत्व के जूए में न जुतो. 2 यह समझ लो! मैं,
पौलॉस, तुम्हें बताना चाहता हूं कि यदि तुम ख़तना के पक्ष में निर्णय लेते हो तो
तुम्हारे लिए मसीह की कोई उपयोगिता न रह जायेगी. 3 मैं ख़तना के हर एक
समर्थक से दोबारा कहना चाहता हूं कि वह सारी व्यवस्था का पालन करने के
लिए मजबूर है. 4 तुम, जो धर्मी ठहराए जाने के लिए व्यवस्था पर निर्भर रहना
चाहते हो, मसीह से अलग हो गए हो और अनुग्रह से तुम गिर चुके हो. 5 किंतु
हम पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वास से धार्मिकता की आशा की बाट जोहते हैं. 6
ख़तनित होना या न होना मसीह येशु में किसी महत्व का नहीं है; महत्व है सिर्फ
विश्वास का जिसका प्रभाव दिखता है प्रेम में. 7 दौड़ में बहुत बढ़िया था तुम्हारा
विकास. कौन बन गया तुम्हारे सच्चाई पर चलने में रुकावट? 8 यह उकसावा
उनकी ओर से नहीं है, जिन्होंने तुम्हें बुलाया. 9 “थोड़ा-सा खमीर सारे आटे
को खमीर कर देता है.” 10 प्रभु में मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम किसी अन्य
विचार को स्वीकार न करोगे. जो भी तुम्हें भरमाएगा व डांवा-डोल करेगा, वह
दंड भोगेगा, चाहे वह कोई भी क्यों न हो. 11 प्रिय भाई बहनो, यदि मैं अब तक
ख़तना का प्रचार कर रहा हूं तो मुझ पर यह सताना क्यों? इस स्थिति में तो क्रूस
के प्रति विरोध समाप्त हो गया होता. 12 उत्तम तो यही होता कि वे, जो तुम्हें
डांवा-डोल कर रहे हैं, स्वयं को नपुंसक बना लेते! 13 प्रिय भाई बहनो, तुम्हारा
बुलावा स्वतंत्रता के लिए किया गया है. अपनी स्वतंत्रता को अपनी शारीरिक
इच्छाओं की पूर्ति का सुअवसर मत बनाओ परंतु प्रेमपूर्वक एक दूसरे की सेवा
करो. 14 क्योंकि सारी व्यवस्था का सार सिर्फ एक वाक्य में छिपा हुआ है:
“जैसे तुम स्वयं से प्रेम करते हो, वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्रेम करो.” 15
यदि तुम एक दूसरे को हिंसक पशुओं की भांति काटते-फाड़ते रहे, तो सावधान!
कहीं तुम्हीं एक दूसरे का नाश न कर बैठो. 16 मेरी सलाह यह है, तुम्हारा
स्वभाव आत्मा से प्रेरित हो, तब तुम किसी भी प्रकार से शारीरिक लालसाओं
की पूर्ति नहीं करोगे. 17 शरीर आत्मा के विरुद्ध और आत्मा शरीर के विरुद्ध
लालसा करता है. ये आपस में विरोधी हैं कि तुम वह न कर सको, जो तुम करना
चाहते हो. 18 यदि तुम पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलते हो तो तुम व्यवस्था के
अधीन नहीं हो. 19 शरीर द्वारा उत्पन्न काम स्पष्ट हैं: वेश्यागामी, अशुद्धता,
भ्रष्टाचार, 20 मूर्ति पूजा, जादू-टोना, शत्रुता, झगड़ा, जलन, क्रोध, स्वार्थ,
मतभेद, विधर्म; 21 डाह, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा तथा इनके समान अन्य,
जिनके विषय में मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं कि जिनका स्वभाव इस प्रकार का है,
वे मेरी पूर्व चेतावनी के अनुरूप परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे. 22
परंतु आत्मा का फल है प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, उदारता, विश्वस्तता,
23 विनम्रता तथा आत्मसंयम; कोई भी विधान इनके विरुद्ध नहीं है. 24 जो
मसीह येशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और अभिलाषाओं सहित
क्रूस पर चढ़ा दिया है. 25 अब, जबकि हमने पवित्र आत्मा द्वारा जीवन प्राप्त
किया है, हमारा स्वभाव भी आत्मा से प्रेरित हो. 26 न हम घमंडी बनें, न एक
दूसरे को उकसाएं और न ही आपस में द्वेष रखें.

6 प्रिय भाई बहनो, यदि तुम्हें यह मालूम हो कि किसी व्यक्ति ने कोई अपराध
किया है, तो तुम, जो आत्मिक हो, उसे नम्रतापूर्वक सुधारो, किंतु तुम स्वयं
सावधान रहो कि कहीं तुम भी परीक्षा में न पड़ जाओ. 2 एक दूसरे का बोझ
उठाया करो. इसके द्वारा तुम मसीह की व्यवस्था को पूरा करोगे. 3 यदि कोई
व्यक्ति कुछ न होने पर भी स्वयं को पहुंचा हुआ समझता है तो वह स्वयं को
धोखा देता है. 4 हर एक व्यक्ति अपने कामों की जांच स्वयं करे, तब उसके
सामने किसी और पर नहीं, खुद अपने पर घमंड करने का कारण होगा 5
क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना बोझ स्वयं ही उठाएगा. 6 जिसे वचन की शिक्षा
दी जा रही है, वह हर एक उत्तम वस्तु में अपने शिक्षक को सम्मिलित करे. 7
किसी भ्रम में न रहना: परमेश्वर मज़ाक के विषय नहीं हैं क्योंकि मनुष्य जो
कुछ बोता है, वही काटता है. 8 वह, जो अपने शरीर के लिए बोता है, शरीर के
द्वारा विनाश की उपज काटेगा; किंतु वह, जो पवित्र आत्मा के लिए बोता है,
पवित्र आत्मा के द्वारा अनंत जीवन प्राप्त करेगा. (aiōnios g166) 9 हम भलाई
के काम करने में साहस न छोड़ें क्योंकि यदि हम ढीले न हो जाएं तो हम
निर्धारित समय पर उपज अवश्य काटेंगे. 10 जब तक हमारे सामने सुअवसर है,
हम सभी का भला करते रहें, विशेषकर विश्वासी परिवार के सदस्यों का. 11
ध्यान दो कि कैसे बड़े आकार के अक्षरों में मैंने तुम्हें अपने हाथों से यह लिखा
है! 12 जितने भी लोग तुम पर उत्तम प्रभाव डालने के लक्ष्य से तुम्हें ख़तना के
लिए मजबूर करते हैं, वे यह सिर्फ इसलिये करते हैं कि वे मसीह येशु के क्रूस के
कारण सताए न जाएं. 13 वे, जो ख़तनित हैं, स्वयं तो व्यवस्था का पालन नहीं
करते किंतु वे यह चाहते अवश्य हैं कि तुम्हारा ख़तना हो जिससे यह उनके लिए
घमंड करने का विषय बन जाए. 14 ऐसा कभी न हो कि मैं हमारे प्रभु येशु
मसीह के क्रूस के अलावा और किसी भी विषय पर घमंड करूं. इन्हीं मसीह के
कारण संसार मेरे लिए क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है और मैं संसार के लिए. 15
महत्व न तो ख़तना का है और न खतनाविहीनता का महत्व है; तो सिर्फ नई सृष्टि
का. 16 वे सभी, जो इस सिद्धांत का पालन करते हैं, उनमें तथा परमेश्वर के
इस्राएल में शांति व कृपा व्याप्त हो. 17 अंत में, अब कोई मुझे किसी प्रकार की
पीड़ा न पहुंचाए क्योंकि मेरे शरीर पर मसीह येशु के घाव के चिह्न हैं. 18 प्रिय
भाई बहनो, हमारे प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह तुम पर बना रहे. आमेन.

इफिसियों

1 पौलॉस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह येशु का
प्रेरित है, उन पवित्र लोगों को, जो इफ़ेसॉस नगर में मसीह येशु के विश्वासी
हैं: 2 तुम्हें हमारे पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु येशु मसीह की ओर से अनुग्रह
और शांति प्राप्त होती रहे. 3 हमारे प्रभु येशु मसीह के परमेश्वर और पिता की
स्तुति हो, जिन्होंने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर एक आत्मिक आशीष से
आशीषित किया है. 4 उन्होंने संसार की सृष्टि से पूर्व ही हमें मसीह में चुन लिया
कि हम उनकी दृष्टि में पवित्र व निष्कलंक हों. प्रेम में 5 उन्होंने हमें अपनी
इच्छा के भले उद्देश्य के अनुसार अपने लिए मसीह येशु के द्वारा आदि से ही
अपनी संतान होने के लिए नियत किया, 6 कि उनके अद्भुत अनुग्रह की स्तुति
हो, जो उन्होंने हमें अपने उस प्रिय पुत्र में उदारतापूर्वक प्रदान किया है. 7 और
उन्हीं में हमें उनके बहुत अनुग्रह के अनुसार उनके लहू के द्वारा छुटकारा तथा
अपराधों की क्षमा प्राप्त हुई 8 यह अनुग्रह उन्होंने हम पर बहुतायत से बरसाया,
उन्होंने सारी बुद्धिमानी और विवेक में, 9 अपनी इच्छा का भेद हम पर अपने
भले उद्देश्य के अनुसार प्रकट किया, जो उन्होंने स्वयं मसीह में स्थापित की थी,
10 यह इंतजाम उन्होंने समयों को पूरा होने को ध्यान में रखकर मसीह में स्वर्ग
तथा पृथ्वी की सभी वस्तुओं को इकट्ठा करने के लिए किया. 11 उन्हीं में उनके
उद्देश्य के अनुरूप, जो अपनी इच्छा के अनुसार सभी कुछ संचालित करते हैं,
हमने पहले से ठहराए जाकर एक मीरास प्राप्त की है, 12 कि अंत में हम,
जिन्होंने पहले से मसीह में आशा रखी, उनकी महिमा की स्तुति के साधन हो
जाएं. 13 जिनमें तुम्हें भी, जिन्होंने सत्य का वचन अर्थात् अपने उद्धार का
ईश्वरीय सुसमाचार सुनकर प्रभु येशु मसीह में विश्वास किया है, उन्हीं में प्रतिज्ञा
किए हुए पवित्र आत्मा से छाप लगाई गई, 14 यह हमारी मीरास के बयाने के
रूप में, परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में छुटकारे, और उनकी महिमा की स्तुति
के लिए हमें प्रदान किए गए हैं. 15 यही कारण है कि मैं भी प्रभु येशु मसीह में
तुम्हारे विश्वास और पवित्र लोगों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुनकर, 16
अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देना नहीं छोड़ता.
17 मेरी प्रार्थना यह है कि हमारे प्रभु येशु मसीह के परमेश्वर और प्रतापमय पिता
तुम्हें ज्ञान व प्रकाशन की आत्मा प्रदान करें कि तुम उन्हें उत्तम रीति से जान
सको. 18 और मैं प्रार्थना करता हूं कि अपने मन की आंखों के प्रकाशन से तुम
जान सको कि उनकी बुलाहट की आशा और उनके पवित्र लोगों की मीरास के
वैभव का धन क्या है, 19 और हम विश्वासियों के प्रति उनका सामर्थ्य कैसा
महान है. यह सामर्थ्य उनकी महाशक्ति की काम-प्रणाली के अनुरूप है 20 जिसे
उन्होंने मसीह में प्रकाशित किया, जब उन्होंने उन्हें मरे हुओं में से जीवित कर
स्वर्गीय स्थानों में अपनी दायीं ओर बैठाया, 21 सभी सत्ता, प्रधानता, सामर्थ्य,
अधिकार और हर एक नाम के ऊपर, चाहे इस युग के या आनेवाले युग के.
(aiōn g165) 22 उन्होंने सब कुछ उनके अधीन कर दिया तथा कलीसिया के
लिए सभी वस्तुओं का शिरोमणि ठहरा दिया 23 कलीसिया, जो उनका शरीर,
उनकी परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ भरकर करते हैं.

2 तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, 2 जिनमें तुम पहले इस संसार
के अनुसार और आकाशमंडल के अधिकारी, उस आत्मा के अनुसार जी
रहे थे, जो आत्मा अब भी आज्ञा न माननेवालों में काम कर रहा है. (aiōn g165)
3 एक समय था जब हम भी इन्हीं में थे और अपनी वासनाओं में लीन रहते थे,
शरीर और मन की अभिलाषाओं को पूरा करने में लगे हुए अन्यों के समान
क्रोध की संतान थे 4 परंतु दया में धनी परमेश्वर ने अपने अपार प्रेम के कारण,
5 जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, मसीह में हमें जीवित किया—उद्धार
तुम्हें अनुग्रह ही से प्राप्त हुआ है. 6 परमेश्वर ने हमें मसीह येशु में जीवित किया
और स्वर्गीय राज्य में उन्हीं के साथ बैठाया, 7 कि वह आनेवाले समयों में
अपने अनुग्रह का उत्तम धन मसीह येशु में हमारे लिए की गई कृपा में दिखा
सकें. (aiōn g165) 8 क्योंकि अनुग्रह ही से, विश्वास के द्वारा तुम्हें उद्धार प्राप्त
हुआ है. यह तुम्हारे कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर का वरदान है, 9 और यह
कामों का प्रतिफल नहीं है कि कोई गर्व करे, 10 क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा
पहले से ठहराए हुए भले कामों के लिए मसीह येशु में रचे गए परमेश्वर की
रचना हैं. 11 इसलिये याद रखो कि तुम, जो अपने जन्म से गैर-यहूदी हो, जिन्हें
ख़तनित लोग खतना-रहित कहते हैं—ख़तना, जो शरीर में मनुष्य द्वारा किया
जाता है 12 याद रखो तुम उस समय संसार में मसीह से अलग, इस्राएल की
नागरिकता से निकाले गए, प्रतिज्ञा की वाचाओं से अपरिचित, आशाहीन और
परमेश्वर से रहित थे. 13 एक समय था जब तुम दूर थे, किंतु अब मसीह येशु में
उनके लहू के द्वारा पास लाए गए हो. 14 वह स्वयं हमारा मेल हैं, क्योंकि
उन्होंने अपने शरीर में दोनों समूहों के बीच की दीवार को ढाह कर दोनों को
एक कर दिया, 15 वह उन्होंने आदेशों की व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों
की रीति पर थी मिटा दी कि इसके द्वारा वह स्वयं में उन दो के स्थान पर एक
नए मनुष्य को बनाकर मेल-मिलाप की स्थापना करें, 16 और क्रूस के द्वारा एक
शरीर में हम दोनों का परमेश्वर से मेल-मिलाप करा सकें कि शत्रुता समाप्त की
जा सके. 17 वह आए और उन्हें, जो दूर थे और उन्हें भी, जो पास थे, शांति का
संदेश सुनाया. 18 क्योंकि उन्हीं में होकर एक ही आत्मा में दोनों ही की पहुंच
पिता परमेश्वर तक है. 19 इसलिये अब तुम परदेशी और मुसाफिर नहीं, परंतु
परमेश्वर के पवित्र लोगों के साथ सहनागरिक और परमेश्वर के परिवार के हो,
20 जिसकी संरचना प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा रखी गई नींव पर हुई,
जिसकी आधारशिला स्वयं मसीह येशु हैं. 21 जिनमें सारी भवन की रचना एक
साथ मिलकर प्रभु के लिए पवित्र मंदिर होने के लिए बढ़ती जाती है. 22 जिनमें
तुम सभी परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा संयोजित
किए जाते हुए बनाए जा रहे हो.

3 इसलिये मैं, पौलॉस, तुम गैर-यहूदियों के लिए मसीह येशु का बंदी हूं.
2 निश्चित ही तुमने परमेश्वर के अनुग्रह के उस प्रबंधन के विषय में सुना है,
जो मुझे तुम्हारे लिए प्रदान किया गया, 3 अर्थात् वह भेद, जो मुझ पर प्रकाशन
के द्वारा प्रकट किया गया, जिसका मैं संक्षेप में वर्णन पहले कर चुका हूं. 4 इसे
पढ़ते हुए तुम मसीह के भेद के विषय में मेरे विवेक को समझ सकते हो, 5
जो मानव जाति पर अन्य पीढ़ियों में इस प्रकार प्रकट नहीं किया गया था,
जिस प्रकार अब प्रभु के पवित्र प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं पर पवित्र आत्मा में
प्रकट किया गया है. 6 अब ईश्वरीय सुसमाचार के द्वारा गैर-यहूदी मसीह येशु
में मीरास के साझी, एक ही शरीर के अंग और प्रतिज्ञा के सहभागी हैं. 7
परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान में उनकी सक्रिय सामर्थ्य के अनुसार यह ईश्वरीय
सुसमाचार मुझे सौंपा गया और मैं जिसका सेवक चुना गया. 8 मुझे, जो पवित्र
लोगों में छोटे से भी छोटा हूं, गैर-यहूदियों में मसीह के अगम्य धन का प्रचार
करने के लिए यह अनुग्रह प्रदान किया गया, 9 कि सभी सृष्टि के सृजनहार
परमेश्वर में युगों से गुप्त रखे गए इस भेद के प्रबंधन को सब पर प्रकट करूं.
(aiōn g165) 10 कि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का
ज्ञान आकाशमंडल के प्रधानों और अधिकारियों पर प्रकट किया जाए, 11 यह
उस सनातन उद्देश्य के अनुसार हुआ, जो परमेश्वर ने मसीह येशु हमारे प्रभु में पूरा
किया. (aiōn g165) 12 जिनमें अपने विश्वास के द्वारा प्रवेश के लिए हमें साहस
तथा भरोसा प्राप्त हुआ है. 13 इसलिये तुमसे मेरी यह विनती है कि तुम उन
उत्पीड़नों के कारण, जो मैं तुम्हारे लिए सह रहा हूं, निराश न हो; क्योंकि वे
तुम्हारा गौरव हैं. 14 यही कारण है कि मैं पिता के सामने घुटने टेकता हूं, 15
जिनमें स्वर्ग और पृथ्वी के हर एक गोत्र का नाम रखा जाता है, 16 कि वह

अपनी अपार महिमा के अनुसार अपने पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हारे अंतरात्मा
को शक्ति-सम्पन्न करें, 17 कि विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में वास करें
और प्रेम में मजबूत व स्थिर होकर, 18 तुम सभी पवित्र जन मसीह के प्रेम की
लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई व गहराई को भली-भांति समझ सको, 19 और मसीह
के उस प्रेम को जान सको, जो ज्ञान से परे है कि परमेश्वर की सारी भरपूरी तुममें
स्थापित हो जाए. 20 अब उन्हें जो हममें कार्यशील सामर्थ्य के द्वारा हमारी
विनती और सोच और समझ से अपार कहीं अधिक बढ़कर करने में सक्षम हैं,
21 हममें इस समय सक्रिय सामर्थ्य के द्वारा, कलीसिया और मसीह येशु में
उनकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी, सदा-सर्वदा होती रहे, आमेन. **(aiōn g165)**

4 इसलिये मैं, जो प्रभु के लिए बंदी हूं, तुमसे विनती करता हूं कि तुम्हारी
जीवनशैली तुम्हारी बुलाहट के अनुरूप हो. 2 तुममें विशुद्ध विनम्रता, सौम्यता
तथा धीरज के साथ आपस में प्रेम में सहने का भाव भर जाए. 3 शांति के बंधन
में पवित्र आत्मा की एकता को यथाशक्ति संरक्षित बनाए रखो. एक ही शरीर है,
एक ही आत्मा. 4 ठीक इसी प्रकार वह आशा भी एक ही है जिसमें तुम्हें बुलाया
गया है; 5 एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा; 6 और सारी मानव
जाति के पिता, जो सबके ऊपर, सबके बीच और सब में एक ही परमेश्वर हैं. 7
किंतु हममें से हर एक को मसीह के वरदान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह
प्रदान किया गया है. 8 इसी संदर्भ में पवित्र शास्त्र का लेख है: "जब वह सबसे
ऊंचे पर चढ़ गए, बंदियों को बंदी बनाकर ले गए और उन्होंने मनुष्यों को
वरदान प्रदान किए." 9 (इस कहावत का मतलब क्या हो सकता है कि वह
"सबसे ऊंचे पर चढ़ गए," सिवाय इसके कि वह पहले अधोलोक में नीचे उतर
गए? 10 वह, जो नीचे उतरे, वही हैं, जो आसमानों से भी ऊंचे स्थान में बड़े
सम्मान के साथ चढ़े कि सारे सृष्टि को परिपूर्ण कर दें.) 11 उन्होंने कलीसिया
को कुछ प्रेरित, कुछ भविष्यद्वक्ता, कुछ ईश्वरीय सुसमाचार सुनानेवाले तथा
कुछ कलीसिया के रखवाले उपदेशक प्रदान किए, 12 कि पवित्र सेवकाई के
लिए सुसज्जित किए जाएं, कि मसीह का शरीर विकसित होता जाए 13 जब
तक हम सभी को विश्वास और परमेश्वर-पुत्र के बहुत ज्ञान की एकता उपलब्ध
न हो जाए—सिद्ध मनुष्य के समान—जो मसीह का संपूर्ण डीलडौल है. 14 तब
हम बालक न रहेंगे, जो समुद्री लहरों जैसे इधर-उधर उछाले व फेंके जाते तथा
मनुष्यों की ठग विद्या की आंधी और मनुष्य की चतुराइयों द्वारा बहाए जाते हैं.
15 परंतु सच को प्रेमपूर्वक व्यक्त करते हुए हर एक पक्ष में हमारी उन्नति उनमें
होती जाए, जो प्रधान हैं, अर्थात्, मसीह. 16 जिनके द्वारा सारा शरीर जोड़ों द्वारा
गठकर और एक साथ मिलकर प्रेम में विकसित होता जाता है क्योंकि हर एक
अंग अपना तय किया गया काम ठीक-ठाक करता जाता है. 17 इसलिये मैं प्रभु
के साथ पुष्टि करते हुए तुमसे विनती के साथ कहता हूं कि अब तुम्हारा स्वभाव
गैर-यहूदियों के समान खोखली मन की रीति से प्रेरित न हो. 18 उनके मन की
कठोरता से उत्पन्न अज्ञानता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग हैं और
उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है. 19 सुन्न होकर उन्होंने स्वयं को लोभ से भरकर
सब प्रकार की कामुकता और अनैतिकता के अधीन कर दिया है. 20 मसीह के
विषय में ऐसी शिक्षा तुम्हें नहीं दी गई थी 21 यदि वास्तव में तुमने उनके विषय
में सुना और उनकी शिक्षा को ग्रहण किया है, जो मसीह येशु में सच के अनुरूप
है. 22 इसलिये अपने पुराने स्वभाव से प्रेरित स्वभाव को त्याग दो, जो छल की
लालसाओं के कारण भ्रष्ट होता जा रहा है; 23 कि तुम्हारे मन का स्वभाव नया
हो जाए; 24 नए स्वभाव को धारण कर लो, जिसकी रचना धार्मिकता और
पवित्रता में परमेश्वर के स्वरूप में हुई है. 25 इसलिये झूठ का त्याग कर, हर
एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से सच ही कहे क्योंकि हम एक ही शरीर के अंग हैं.
26 "यदि तुम क्रोधित होते भी हो, तो भी पाप न करो." सूर्यास्त तक तुम्हारे
क्रोध का अंत हो जाए, 27 शैतान को कोई अवसर न दो. 28 वह, जो चोरी
करता रहा है, अब चोरी न करे किंतु परिश्रम करे कि वह अपने हाथों से किए
गए उपयोगी कामों के द्वारा अन्य लोगों की भी सहायता कर सके, जिन्हें
किसी प्रकार की ज़रूरत है. 29 तुम्हारे मुख से कोई भद्दे शब्द नहीं परंतु ऐसा
वचन निकले, जो अवसर के अनुकूल, अन्यों के लिए अनुग्रह का कारण तथा
सुननेवालों के लिए भला हो. 30 परमेश्वर की पवित्र आत्मा को शोकित न करो,
जिनके द्वारा तुम्हें छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है. 31 सब प्रकार की
कड़वाहट, रोष, क्रोध, झगड़ा, निंदा, आक्रोश तथा बैरभाव को स्वयं से अलग
कर दो. 32 एक दूसरे के प्रति कृपालु तथा सहृदय बने रहो, तथा एक दूसरे को
उसी प्रकार क्षमा करो, जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें क्षमा किया है.

5 परमेश्वर की प्रेम पात्र संतान होने के नाते, तुम परमेश्वर के पीछे चलनेवाले
बनो. 2 तुम्हारा स्वभाव प्रेममय हो, जिस प्रकार मसीह ने तुमसे प्रेम किया
है. वह हमारे लिए परमेश्वर के सामने स्वयं मनमोहक सुगंधित भेंट व बलि हो
गए. 3 जैसा कि पवित्र लोगों के लिए सही है, तुम्हारे बीच व्यभिचारिता, किसी
भी प्रकार की मलिनता और किसी भी प्रकार के लोभ का वर्णन तक न हो. 4
और न ही तुम्हारे बीच निर्लज्जता और मूर्खता भरी बातचीत या अश्लील मज़ाक
हो, जो हमेशा ही व्यर्थ है परंतु तुम्हारे बीच धन्यवाद ही सुना जाए. 5 क्योंकि
तुम यह अच्छी तरह से जानते हो कि किसी भी व्यभिचारी, मलिन तथा लोभी
व्यक्ति का, जो मूर्तिपूजक ही है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं
है. 6 कोई तुम्हें व्यर्थ की बातों के जाल में न फंसा पाए क्योंकि इन सबके
कारण अनाज्ञाकारी व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध के भागी होते हैं. 7 इसलिये उनके
सहभागी न बनो. 8 इसके पहले तुम अंधकार थे, मगर अब प्रभु में ज्योति हो.
इसलिये ज्योति की संतान की तरह स्वभाव करो. 9 (क्योंकि ज्योति का फल
सब प्रकार की धार्मिकता, सदाचार और सच में है) 10 यह ढूंढ़ो कि हमारे किन
कामों से प्रभु संतुष्ट होते हैं. 11 अंधकार के निष्फल कामों में शामिल न हो परंतु
उन्हें संकोच प्रकाश में लाओ. 12 उन कामों की तो चर्चा करना भी लज्जास्पद
है, जो अनाज्ञाकारियों द्वारा गुप्त में किए जाते हैं. 13 ज्योति में आने पर सब
कुछ प्रकट हो जाता है क्योंकि ज्योति ही है, जो सब कुछ प्रकट करती है. 14
इस पर कहा गया है: "सोए हुए, जागो, मरे हुओं में से जी उठो, मसीह तुम पर
ज्योति चमकाएंगे." 15 अपने स्वभाव के विषय में विशेष रूप से सावधान रहो.
तुम्हारा स्वभाव मूर्खों सा न हो परंतु बुद्धिमानों सा हो, 16 समय का सदुपयोग
करो, क्योंकि यह बुरे दिनों का समय है. 17 इसलिये निर्बुद्धि नहीं परंतु प्रभु की
इच्छा के ज्ञान के लिए विवेक प्राप्त करो. 18 दाखरस से मतवाले न हो क्योंकि
इससे भ्रष्टाचार पैदा होती है. परंतु, पवित्र आत्मा से भर जाओ, 19 तब प्रभु के
लिए आपस में सारे हृदय से तुम भजन, स्तुति गान व आत्मिक गीत गाते रहो,
20 हर एक विषय के लिए हमेशा हमारे प्रभु येशु मसीह के नाम में पिता परमेश्वर
के प्रति धन्यवाद देते रहो. 21 मसीह में आदर के कारण एक दूसरे के प्रति
समर्पित रहो. 22 पत्नी, अपने पति के अधीन उसी प्रकार रहे, जैसे प्रभु के. 23
क्योंकि पति उसी प्रकार अपनी पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह अपनी देह
कलीसिया के सिर हैं, जिसके वह उद्धारकर्ता भी हैं. 24 जिस प्रकार कलीसिया
मसीह के अधीन है, उसी प्रकार पत्नी हर एक विषय में पति के अधीन रहे. 25
पति, अपनी पत्नी से, उसी प्रकार प्रेम करे जिस प्रकार मसीह ने कलीसिया से प्रेम
किया और स्वयं को उसके लिए बलिदान कर दिया 26 कि वह उसे वचन के
स्नान के द्वारा पाप से शुद्ध कर अपने लिए अलग करे, 27 कि उसे अपने लिए
ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर पेश करें जिसमें न कोई कलंक, न कोई झुर्री,
न ही इनके जैसा कोई दोष हो परंतु वह पवित्र व निष्कलंक हो. 28 इसी प्रकार,
पति के लिए उचित है कि वह अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करे जैसे अपने शरीर
से करता है. वह, जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, स्वयं से प्रेम करता. है 29
क्योंकि कोई भी अपने शरीर से घृणा नहीं करता परंतु स्नेहपूर्वक उसका पोषण

करता है, जिस प्रकार मसीह कलीसिया का करते हैं, 30 "क्योंकि हम उनके
शरीर के अंग हैं. 31 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी
से मिला रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे" 32 यह एक गहरा भेद है और मैं यह
मसीह और कलीसिया के संदर्भ में उपयोग कर रहा हूं. 33 फिर भी, तुममें से हर
एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम करें और पत्नी अपने पति का सम्मान करे.

6 हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता का आज्ञापालन करें क्योंकि उचित
यही है. 2 "अपने माता-पिता का सम्मान करो"—आज्ञाओं में से यह ऐसी
पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा जुड़ी है, 3 "तुम्हारा भला हो और तुम
पृथ्वी पर बहुत दिन तक जीवित रहो." 4 तुममें जो पिता हैं, अपनी संतान को
क्रोध न दिलाएं, परंतु प्रभु की शिक्षा व अनुशासन में उनका पालन पोषण करें. 5
जो दास हैं, अपने सांसारिक स्वामियों का आज्ञापालन सच्चाई से व एकचित्त
होकर ऐसे करें मानो मसीह का. 6 यह सब मात्र दिखावे के लिए व उन्हें प्रसन्न
करने के उद्देश्य मात्र से नहीं परंतु मसीह के दास के रूप में हृदय से परमेश्वर की
इच्छा की पूर्ति करते हुए हो. 7 सच्चे हृदय से स्वामियों की सेवा इस प्रकार
करते रहो मानो मनुष्य मात्र की नहीं परंतु प्रभु की सेवा कर रहे हो, 8 यह जानते
हुए कि हर एक मनुष्य चाहे वह दास हो या स्वतंत्र, अपने अच्छे कामों का
प्रतिफल प्रभु से प्राप्त करेगा. 9 जो स्वामी हैं, वे भी दासों के साथ ऐसा ही
व्यवहार करें और उन्हें डराना-धमकाना छोड़ दें, यह ध्यान रखते हुए कि तुम्हारे
व दासों दोनों ही के स्वामी स्वर्ग में हैं, जिनके स्वभाव में किसी भी प्रकार का
भेद-भाव नहीं है. 10 इसलिये, प्रभु व उनके अपार सामर्थ्य में बलवंत बनो. 11
परमेश्वर के सभी अस्त्र-शस्त्रों से स्वयं को सुसज्जित कर लो, कि तुम शैतान के
छल-बल के प्रतिरोध में खड़े रह सको. 12 हमारा मल्ल-युद्ध सिर्फ मनुष्यों
से नहीं, परंतु प्रधानों, अधिकारियों, अंधकार की सांसारिक शक्तियों और
आकाशमंडल में दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है. (aiōn g165) 13 इसलिये
स्थिर खड़े रहने के लिए सभी ज़रूरतों को पूरी कर परमेश्वर के सभी अस्त्र-शस्त्रों
से स्वयं को सुसज्जित कर लो कि तुम उस बुरे दिन में सामना कर सको. 14
इसलिये अपनी कमर सच से कसकर, धार्मिकता का कवच धारण कर स्थिर
खड़े रहो, 15 पांवों में शांति के ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार की तत्परता के
जूते धारण कर लो. 16 इनके अलावा विश्वास की ढाल भी, कि तुम दुष्ट के
सभी जलते हुए बाणों को बुझा सको. 17 तब उद्धार का टोप तथा आत्मा की
तलवार, परमेश्वर का वचन धारण कर लो. 18 तथा आत्मा में हर समय विनती
और प्रार्थना की जाती रहे. जागते हुए लगातार बिना थके प्रयास करना तुम्हारा
लक्ष्य हो. सभी पवित्र लोगों के लिए निरंतर प्रार्थना किया करो. 19 मेरे लिए
भी प्रार्थना करो कि मेरा मुख खुलने पर मुझे ईश्वरीय सुसमाचार के भेद की
साहस के साथ बोलने की क्षमता प्रदान की जाए, 20 जिस ईश्वरीय सुसमाचार
के लिए मैं इन बेड़ियों में भी राजदूत हूं कि मैं इनमें रहते हुए साहस के साथ
बोल सकूं, जैसा कि सही भी है. 21 तुख़िकस, जो प्रभु में मेरा प्रिय भाई और
एक विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें मेरी सभी परिस्थितियों और गतिविधियों से
अवगत करा देगा. 22 मैं उसे तुम्हारे पास इसी उद्देश्य से भेज रहा हूं, कि तुम
हमारी स्थिति से अवगत हो जाओ, और वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित कर
सके. 23 पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह की ओर से सभी भाई बहनों को
शांति और विश्वास के साथ सप्रेम नमस्कार. 24 उन सभी पर अनुग्रह होता रहे,
जो हमारे प्रभु येशु मसीह से कभी न खत्म होनेवाला प्रेम करते हैं.

फिलिप्पियों

1 मसीह येशु के दास पौलॉस और तिमोथियॉस की ओर से, मसीह येशु में उन
पवित्र लोगों तथा फ़िलिप्पॉय नगरवासी, कलीसिया अध्यक्ष और सेवकों
को. 2 परमेश्वर हमारे पिता और प्रभु येशु मसीह की ओर से अनुग्रह व शांति
प्राप्त हो. 3 जब-जब मैं तुम्हें याद करता हूं, अपने परमेश्वर का आभार मानता
हूं. 4 और आनंदपूर्वक अपनी हर एक प्रार्थना में तुम सबके लिए हमेशा परमेश्वर
से सहायता की विनती करता हूं, 5 क्योंकि तुम प्रारंभ ही से अब तक ईश्वरीय
सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहभागी रहे हो, 6 मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि
परमेश्वर ने तुममें जो उत्तम काम प्रारंभ किया है, वह उसे मसीह येशु के दिन तक
पूरा कर देंगे. 7 तुम्हारे लिए मेरी यह भावना सही ही है क्योंकि मेरे हृदय में
तुम्हारा विशेष स्थान है. यह इसलिये कि मेरी बेड़ियों में तथा ईश्वरीय सुसमाचार
की रक्षा और प्रमाण की प्रक्रिया में तुम सब अनुग्रह में मेरे सहभागी रहे हो. 8
इस विषय में परमेश्वर मेरे गवाह हैं कि मसीह येशु की सुकुमार करुणा में तुम्हारे
लिए मैं कितना लालायित हूं. 9 मेरी प्रार्थना यह है कि तुम्हारा प्रेम वास्तविक
ज्ञान और विवेक में और भी अधिक समृद्ध होता जाए, 10 ताकि तुम्हारी सहायता
हो वह सब पहचान सकने में, जो सर्वश्रेष्ठ है, जिससे तुम मसीह के दिन तक
सच्चे और निष्कलंक रह सको, 11 तथा मसीह येशु के द्वारा प्रभावी धार्मिकता
से परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए फल लाओ. 12 प्रिय भाई बहनो,
अब मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मुझसे संबंधित हर एक परिस्थिति के कारण
ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार में प्रगति ही हुई है. 13 परिणामस्वरूप कारागार के
पहरेदार और अन्य सभी यह जान गए हैं कि मैं मसीह के लिए बंदी हूं. 14 मेरे
बंदी होने के कारण प्रभु में अधिकांश साथी भाई बहन परमेश्वर का वचन साहस,
तत्परता तथा निडरतापूर्वक सुनाने के लिए पहले से कहीं अधिक उत्साही हो
गए हैं. 15 यह सच है कि कुछ लोग तो मसीह का प्रचार जलन और होड़ के
कारण करते हैं, किंतु कुछ अन्य भलाई के कारण. 16 ये वे हैं, जो यह प्रेम के
लिए करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि मेरा चुनाव ईश्वरीय सुसमाचार की रक्षा के
लिए हुआ है. 17 अन्य वे हैं, जो मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार
निश्छल भाव की बजाय अपने स्वार्थ में इस उद्देश्य से करते हैं कि इससे वे
कारागार में मेरे दुःखों को बढ़ा सकें. 18 तो क्या हुआ? हर तरह मसीह ही
का प्रचार किया जाता है, चाहे दिखावे से या सच्चाई के भाव से. इससे तो मैं
आनंदित ही होता हूं. हां, और मैं आनंदित होता रहूंगा, 19 क्योंकि मैं जानता हूं
कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और मसीह येशु के आत्मा की सहायता से मैं मुक्त हो
जाऊंगा. 20 मेरी हार्दिक इच्छा और आशा यह है कि मैं किसी भी परिस्थिति में
लज्जित न होऊं, परंतु हमेशा की तरह अब भी निडरता में मेरे शरीर से, चाहे
जीवित अवस्था में या मृत अवस्था में, मसीह की महिमा होती रहें. 21 इसलिये
कि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मृत्यु लाभ है. 22 किंतु यदि मुझे शरीर
में जीना ही है तो यह मेरे लिये फलपूर्ण सार्थक परिश्रम होगा. मैं क्या चुनूं मैं
नहीं जानता! 23 मैं उधेड़-बुन में हूं. मेरी इच्छा तो यह है कि मैं शरीर त्याग कर
मसीह के साथ जाता रहूं, यही मेरे लिए कहीं अधिक उत्तम है; 24 फिर भी
तुम्हारे लिए मेरा शरीर में जीवित रहना अधिक आवश्यक है. 25 मेरा दृढ़
विश्वास है कि मैं जीवित रहूंगा और तुम्हारे विकास और विश्वास में आनंद के
कारण तुम्हारे बीच बना रहूंगा, 26 कि तुमसे भेंट करने मेरा दोबारा आना मसीह
येशु में मेरे प्रति तुम्हारे गौरव को और भी अधिक बढ़ा दे. 27 ध्यान रखो कि
तुम्हारा स्वभाव केवल मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार के अनुसार हो. चाहे मैं
आकर तुमसे भेंट करूं या नहीं, मैं तुम्हारे विषय में यही सुनूं कि तुम एक भाव में
स्थिर तथा एक मन होकर ईश्वरीय सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ
मेहनत करते हो. 28 विरोधियों से किसी भी प्रकार भयभीत न हो—यह उनके
विनाश का, किंतु तुम्हारे उद्धार का सबूत है और वह भी परमेश्वर की ओर से.
29 तुम्हारे लिए मसीह के कारण यह वरदान दिया गया है कि तुम न केवल उनमें
विश्वास करो, परंतु उनके लिए दुःख भी भोगो; 30 उसी जलन का अनुभव
करते हुए, जिसे तुमने मुझमें देखा तथा जिसके मुझमें होने के विषय में तुम अब
सुन रहे हो.

2 इसलिये यदि मसीह में ज़रा सा भी प्रोत्साहन, प्रेम से उत्पन्न धीरज, आत्मा
की सहभागिता तथा करुणा और कृपा है, 2 तो एक मन, एक सा प्रेम, एक
ही चित्त तथा एक लक्ष्य के लिए ठान कर मेरा आनंद पूरा कर दो. 3 स्वार्थ और
झूठी बडाई से कुछ भी न करो, परंतु विनम्रता के साथ तुममें से प्रत्येक अपनी
बजाय दूसरे को श्रेष्ठ समझे. 4 तुममें से हर एक सिर्फ अपनी ही भलाई का नहीं
परंतु दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखे. 5 तुम्हारा स्वभाव वैसा ही हो, जैसा
मसीह येशु का था: 6 जिन्होंने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी, परमेश्वर
से अपनी तुलना पर अपना अधिकार बनाए रखना सही न समझा; 7 परंतु
अपने आपको शून्य कर, दास का स्वरूप धारण करते हुए, और मनुष्य की
समानता में हो गया. 8 और मनुष्य के शरीर में प्रकट होकर, अपने आपको दीन
करके मृत्यु— क्रूस की मृत्यु तक, आज्ञाकारी रहकर स्वयं को शून्य बनाया. 9
इसलिये परमेश्वर ने उन्हें सबसे ऊंचे पद पर आसीन किया, तथा उनके नाम को
महिमा दी कि वह हर एक नाम से ऊंचा हो, 10 कि हर एक घुटना येशु नाम की
वंदना में झुक जाए, स्वर्ग में, पृथ्वी में और पृथ्वी के नीचे, 11 और हर एक
जीभ पिता परमेश्वर के प्रताप के लिए स्वीकार करे, कि मसीह येशु ही प्रभु हैं.
12 इसलिये, मेरे प्रिय भाई बहनो, जिस प्रकार तुम हमेशा आज्ञाकारी रहे हो—न
केवल मेरी उपस्थिति में परंतु उससे भी अधिक मेरी अनुपस्थिति में—अपने
उद्धार के कार्य को पूरा करने की ओर डरते और कांपते हुए बढ़ते जाओ, 13
क्योंकि परमेश्वर ही हैं, जिन्होंने अपनी सुइच्छा के लिए तुममें अभिलाषा और
कार्य करने दोनो बातों के लिये प्रभाव डाला है. 14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए
और बिना वाद-विवाद के किया करो, 15 कि तुम इस बुरी और भ्रष्ट पीढ़ी में,
“परमेश्वर की निष्कलंक संतान के रूप में स्वयं को निष्कपट तथा निष्पाप
साबित कर सको.” कि तुम इस पीढ़ी के बीच जलते हुए दीपों के समान चमको
16 तुमने जीवन का वचन मजबूती से थामा हुआ है. तब यह मसीह के दिन में मेरे
गर्व का कारण होगा, कि न तो मेरी दौड़-धूप व्यर्थ गई और न ही मेरा परिश्रम.
17 यदि तुम्हारे विश्वास की सेवा और बलि पर मैं अर्घ (लहू) के समान उंडेला
भी जा रहा हूं, तौभी तुम सबके साथ यह मेरा आनंद है. 18 मेरी विनती है कि
तुम भी इसी प्रकार आनंदित रहो तथा मेरे आनंद में शामिल हो जाओ. 19 प्रभु
येशु मसीह में मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही तिमोथियॉस को तुम्हारे पास भेजूंगा
कि तुम्हारा समाचार जानकर मेरे उत्साह में भी बढ़ोतरी हो. 20 मेरी नज़र में
उसके समान ऐसा दूसरा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे मेरे जैसे वास्तव में तुम्हारी
चिंता हो. 21 अन्य सभी येशु मसीह की आशाओं की नहीं परंतु अपनी ही
भलाई करने में लीन हैं. 22 तुम तिमोथियॉस की योग्यता से परिचित हो कि
ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार में उसने मेरा साथ इस प्रकार दिया, जिस प्रकार
एक पुत्र अपने पिता का साथ देता है. 23 इसलिये मैं आशा करता हूं कि अपनी
स्थिति स्पष्ट होते ही मैं उसे तुम्हारे पास भेज सकूंगा. 24 मुझे प्रभु में पूरा भरोसा
है कि मैं स्वयं भी जल्द वहां आऊंगा. 25 इस समय मुझे आवश्यक यह लगा
कि मैं इपाफ्रोदितॉस को तुम्हारे पास भेजूं, जो मेरा भाई, सहकर्मी तथा सहयोद्धा
है, जो मेरी ज़रूरतों में सहायता के लिए तुम्हारी ओर से भेजा गया दूत है. 26
वह तुम सबसे मिलने के लिए लालायित है और व्याकुल भी. तुमने उसकी
बीमारी के विषय में सुना था. 27 बीमारी! वह तो मरने पर था, किंतु उस पर
परमेश्वर की दया हुई, न केवल उस पर परंतु मुझ पर भी, कि मुझे और अधिक
दुःखी न होना पड़े. 28 इस कारण उसे भेजने के लिए मैं और भी अधिक उत्सुक

हूं कि उसे दोबारा देखकर तुम आनंदित हो जाओ और तुम्हारे विषय में मेरी चिंता
भी कम हो जाए. **29** प्रभु में आनंदपूर्वक उसका स्वागत-सत्कार करना, उसके
जैसे व्यक्तियों का आदर किया करो, **30** क्योंकि मसीह के काम के लिए उसने
अपने प्राण जोखिम में डाल दिए थे कि तुम्हारे द्वारा मेरे प्रति की गई शेष सेवा
वह पूरी कर सके.

3 इसलिये, प्रिय भाई बहनो, प्रभु में आनंदित रहो. इस विषय पर तुम्हें दोबारा
लिखने से मुझे कष्ट नहीं होता परंतु यह तुम्हारी सुरक्षा की योजना है. **2**
कुत्तों, बुरे काम करनेवालों तथा अंगों के काट-कूट करनेवालों से सावधान
रहो. **3** क्योंकि वास्तविक ख़तना वाले हम ही हैं, जो परमेश्वर के आत्मा में
आराधना करते, मसीह येशु पर गर्व करते तथा शरीर संबंधी कामों पर निर्भर
नहीं रहते **4** यद्यपि स्वयं मेरे पास शरीर पर भी निर्भर रहने का कारण हो सकता
था. यदि किसी की यह धारणा है कि उसके लिए शरीर पर भरोसा करने का
कारण है तो मेरे पास तो कहीं अधिक है: **5** आठवें दिन ख़तना, इस्राएली
राष्ट्रीयता, बिन्यामिन का गोत्र, इब्रियों में से इब्री, व्यवस्था के अनुसार फ़रीसी;
6 उन्माद में कलीसिया का सतानेवाला और व्यवस्था में बताई गई धार्मिकता के
मापदंडों के अनुसार, निष्कलंक. **7** जो कुछ मेरे लिए लाभदायक था, मैंने उसे
मसीह के लिए अपनी हानि मान लिया है. **8** इससे कहीं अधिक बढ़कर मसीह
येशु मेरे प्रभु को जानने के उत्तम महत्व के सामने मैंने सभी वस्तुओं को हानि
मान लिया है—वास्तव में मैंने इन्हें कूड़ा मान लिया है कि मैं मसीह को प्राप्त
कर सकूं और मैं उनमें स्थिर हो जाऊं, जिनके लिए मैंने सभी वस्तुएं खो दीं हैं.
9 अब मेरी अपनी धार्मिकता वह नहीं जो व्यवस्था के पालन से प्राप्त होती है
परंतु वह है, जो मसीह में विश्वास द्वारा प्राप्त होती है—परमेश्वर की ओर से
विश्वास की धार्मिकता. **10** ताकि मैं उनकी मृत्यु की समानता में होकर उन्हें,
उनके पुनरुत्थान का सामर्थ्य तथा उनकी पीड़ा की सहभागिता को जानूं, **11** कि
मैं, किसी रीति से, मरे हुओं के पुनरुत्थान का भागी बन जाऊं. **12** इसका अर्थ
यह नहीं कि मुझे यह सब उपलब्ध हो चुका है या मैंने सिद्धता प्राप्त कर ली है,
परंतु मैं कोशिश के साथ आगे बढ़ता चला जा रहा हूं कि मुझे वह प्राप्त हो जाए,
जिसके लिए मसीह येशु ने मुझे पकड़ लिया है. **13** मेरे भाइयों और बहनों, मेरे
विचार से मैं इसे अब तक पा नहीं सका हूं किंतु हां, मैं यह अवश्य कर रहा हूं:
बीती बातों को भुलाते हुए, आगे की ओर बढ़ते हुए, **14** मसीह येशु में परमेश्वर
की स्वर्गीय बुलावे के ईनाम को प्राप्त करने के लिए निशाने की ओर बढ़ता
जाता हूं. **15** इसलिये हममें से जितने भी आत्मिक क्षेत्र में सिद्ध कहलाते हैं,
उनका भी यही विचार हो; किंतु यदि किसी विषय में तुम्हारा मानना अलग है,
परमेश्वर उसे तुम पर प्रकट कर देंगे. **16** फिर भी हमारा स्वभाव उसी नमूने के
अनुसार हो, जहां तक हम पहुंच चुके हैं. **17** प्रिय भाई बहनो, अन्यों के साथ
मिलकर मेरी सी चाल चलो और उनको पहचानो जिनका स्वभाव उस आदर्श के
अनुसार है, जो तुम हममें देखते हो. **18** बहुत हैं जिनके विषय में मैंने पहले भी
स्पष्ट किया है और अब आंसू बहाते हुए प्रकट कर रहा हूं कि वे मसीह के क्रूस
के शत्रु होकर जीते हैं. **19** नाश होना ही उनका अंत है, उनका पेट ही उनका
ईश्वर है, वे अपनी निर्लज्जता पर गौरव करते हैं, उन्होंने अपना मन पृथ्वी की
वस्तुओं में लगा रखा है. **20** इसके विपरीत हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, जहां
से उद्धारकर्ता प्रभु येशु मसीह के आने का हम उत्सुकता से इंतजार कर रहे हैं. **21**
मसीह येशु अपने उसी सामर्थ्य के प्रयोग के द्वारा, जिससे उन्होंने हर एक वस्तु
को अपने अधीन किया है, हमारे कमजोर नश्वर शरीर का रूप बदलकर अपने
महिमा के शरीर के समान कर देंगे.

4 इसलिये प्रिय भाई बहनो, तुम, जिनसे भेंट करने के लिए मैं लालायित हूं;
तुम, जो मेरा आनंद और मुकुट हो, प्रभु में स्थिर बने रहो! **2** मैं युओदिया से
विनती कर रहा हूं और मैं सुन्तुखे से भी विनती कर रहा हूं कि प्रभु में वे आपस
में एक मन रहें. **3** मेरे वास्तविक सहकर्मी, तुमसे भी मेरी विनती है कि तुम इन
स्त्रियों की सहायता करो, जिन्होंने ईश्वरीय सुसमाचार के लिए क्लेमेन्त, मेरे
अन्य सहकर्मियों तथा मेरे साथ मिलकर परिश्रम किया है. इनके नाम जीवन के
पुस्तक में लिखे हैं. **4** प्रभु में हमेशा आनंदित रहो, मैं दोबारा कहूंगा: आनंदित
रहो. **5** तुम्हारी शालीनता सब पर प्रकट हो जाने दो. प्रभु निकट हैं. **6** किसी भी
प्रकार की चिंता न करो, परंतु हर एक परिस्थिति में तुम्हारे निवेदन धन्यवाद के
साथ प्रार्थना और विनती के द्वारा परमेश्वर के सामने प्रस्तुत की जाएं. **7** तब
परमेश्वर की शांति, जो मनुष्य की समझ से बाहर है, मसीह येशु में तुम्हारे मन
और विचारों की रक्षा करेगी. **8** अंत में प्रिय भाई बहनो, जो सच है, जो निर्दोष
है, जो धर्मी है, जो निर्मल है, जो सुंदर है, जो प्रशंसनीय है अर्थात् जो उत्तम
और सराहनीय गुण हैं, उन्हीं पर तुम्हारा मन लगा रहे. **9** इन्हीं विषयों को तुमने
मुझसे सीखा; प्राप्त किया और मुझसे सुना व मुझमें देखा है; इन्हीं का स्वभाव
किया करो और शांति के स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ होंगे. **10** अब मैं प्रभु में
अत्यधिक आनंदित हूं कि अब अंततः तुममें मेरे प्रति सद्भाव दोबारा जागृत हो
गया हैं. निःसंदेह तुम्हें मेरी हितचिंता पहले भी थी किंतु उसे प्रकट करने का
सुअवसर तुम्हें नहीं मिला. **11** यह मैं अभाव के कारण नहीं कह रहा हूं क्योंकि
मैंने हर एक परिस्थिति में संतुष्ट रहना सीख लिया है. **12** मैंने कंगाली और
भरपूरी दोनों में रहना सीख लिया है. हर एक परिस्थिति और हर एक विषय में
मैंने तृप्त होने और भूखा रहने का भेद और घटना व बढ़ना दोनों सीख लिया है.
13 जो मुझे सामर्थ्य प्रदान करते हैं, उनमें मैं सब कुछ करने में सक्षम हूं. **14**
तुमने मेरी विषम परिस्थितियों में मेरा साथ देकर सराहनीय काम किया है.
15 फ़िलिप्पॉयवासियो, ईश्वरीय सुसमाचार प्रचार के प्रारंभ में मकेदोनिया से
यात्रा प्रारंभ करते समय तुम्हारे अतिरिक्त किसी भी कलीसिया से मुझे आर्थिक
सहायता प्राप्त नहीं हुई; **16** इसी प्रकार थेस्सलोनिकेयुस में भी तुमने मेरी ज़रूरत
में अनेक बार सहायता की. **17** यह नहीं कि मैं आर्थिक सहायता पाने की इच्छा
रखता हूं, परंतु मैं ऐसे प्रतिफल की कामना करता हूं, जिससे तुम्हारा लाभ बढ़ता
जाए. **18** इपाफ्रोदितॉस के द्वारा जो सहायता तुमने भेजी है, उससे मैंने सब कुछ
प्राप्त किया है और अधिकाई में प्राप्त कर लिया है. यह मेरे लिए काफ़ी है. वह
परमेश्वर के लिए मनमोहक सुगंध, ग्रहण योग्य बलि व आनंदजनक है. **19**
हमारे पिता परमेश्वर, अपने अपार धन के अनुरूप मसीह येशु में तुम्हारी हर एक
ज़रूरत पूरा करेंगे. **20** परमेश्वर हमारे पिता की महिमा युगानुयुग बनी रहे,
आमेन. **(aiōn g165)** **21** मसीह येशु में सभी पवित्र लोगों को मेरी शुभकामनाएं.
मेरे साथी भाई बहनों की ओर से तुम्हें शुभकामनाएं. **22** तथा सभी पवित्र लोगों
की ओर से अभिनंदन, विशेषकर कयसर के घराने की ओर से. **23** तुम पर प्रभु
येशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ बना रहे. आमेन!

कुलुस्सियों

1 परमेश्वर की इच्छा से मसीह येशु के प्रेरित पौलॉस तथा हमारे भाई तिमोथियॉस की ओर से, 2 कोलोस्सॉय के पवित्र लोगों और मसीह में सच्चे विश्वासी भाई बहनों को, हमारे पिता परमेश्वर की ओर से अनुग्रह और शांति. 3 तुम्हारे लिए प्रार्थना करते समय हम हमारे प्रभु येशु मसीह के पिता परमेश्वर के सामने हमेशा अपना आभार प्रकट करते हैं, 4 क्योंकि हमने मसीह येशु में तुम्हारे विश्वास तथा सभी पवित्र लोगों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है. 5 इनका आधार है वह विश्वास और प्रेम जो उपजा है उस आशा से जो आपके लिए स्वर्ग में रखी हुई है तथा जिसके विषय में तुम पहले ही सच्चाई का वर्णन—उद्धार के सुसमाचार में सुन चुके हो 6 जिसे तुमने प्राप्त किया है, यह सुसमाचार लगातार पूरे संसार में और तुममें भी उसी दिन से फूल और फल रहा है, जिस दिन से तुमने इसे सुना और तुम्हें तभी परमेश्वर के अनुग्रह का अहसास हुआ. 7 ठीक जिसे तुमने हमारे प्रिय सहकर्मी दास एपाफ़्रास से सीखा, जो तुम्हारे लिए मसीह का सच्चा सेवक है. 8 वह हमें पवित्र आत्मा में तुम्हारे प्रेम के विषय में सूचित भी करता रहा है. 9 इसी कारण जिस दिन से हमने यह सुना है, हमने तुम्हारे लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ा और हम यह विनती करते हैं कि तुम पूरे आत्मिक ज्ञान और समझ में परमेश्वर की इच्छा के सारे ज्ञान में भरपूर होते जाओ, 10 कि तुम्हारा स्वभाव प्रभु के योग्य हो, जो उन्हें हर प्रकार से प्रसन्न करनेवाला हो, जो हर एक भले कार्य में फलदाई हो तथा परमेश्वर के सारे ज्ञान में उन्नत होते हुए तुम, 11 सारी सहनशीलता और धीरज के लिए उनकी महिमा की शक्ति के अनुसार सारे सामर्थ्य से बलवान होते जाओ तथा 12 पिता का खुशी से आभार मानो, जिन्होंने तुम्हें ज्योति के राज्य में पवित्र लोगों की मीरास में शामिल होने के लिए योग्य बना दिया. 13 क्योंकि वही हमें अंधकार के वश से निकालकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले आए हैं. 14 उन्हीं में हमारा छुटकारा, अर्थात् पाप की क्षमा है. 15 वह तो अनदेखे परमेश्वर का स्वरूप हैं. वह सारी सृष्टि में पहलौठे हैं. 16 क्योंकि उन्हीं में सब कुछ रचाया गया है—स्वर्गीय स्थानों में तथा पृथ्वी पर, देखी तथा अनदेखी, सिंहासन तथा प्रभुताएं, राजा तथा अधिकारी—सभी कुछ उन्हीं के द्वारा तथा उन्हीं के लिए बनाया गया. 17 वह सारी सृष्टि में प्रथम हैं और सारी सृष्टि उनमें स्थिर रहती है. 18 वही सिर है कलीसिया के, जो उनका शरीर है; वही आदि है, मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठे हैं कि वही सब में प्रधान हों. 19 क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में थी कि उनमें ही सारी परिपूर्णता वास करे और वह 20 क्रूस पर उनके बहाए गए लहू के द्वारा शांति की स्थापना कर उनके माध्यम से सभी का भौमिक या स्वर्गीय, स्वयं से मेल-मिलाप कराएं. 21 हालांकि इसके पहले तुम बुरे कामों के कारण परमेश्वर से अलग थे तथा तुम्हारे मन में बैरभाव था. 22 फिर भी अब मसीह ने अपनी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल-मिलाप करवाया कि वह तुम्हें परमेश्वर के सामने पवित्र, निर्दोष तथा निष्कलंक रूप में उपस्थित करें, 23 कि वास्तव में तुम विश्वास में बने रहो तथा दृढतापूर्वक स्थिर रहते हुए उन्नत होते जाओ, और ईश्वरीय सुसमाचार में बसी आशा न छोड़ो, जिसे तुमने सुना था, जिसकी घोषणा स्वर्ग के नीचे सारी सृष्टि में की गई और मैं, पौलॉस, जिसका सेवक चुना गया. 24 अब तो मैं तुम्हारे लिए अपने कष्टों में प्रफुल्लित होता हूं तथा मैं उनकी देह—कलीसिया के लिए अपने शरीर में मसीह की यातनाओं में बाकी रह गई कमी को पूरा करते हुए अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर रहा हूं. 25 इसी कलीसिया के लिए मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर द्वारा सौंपी गई सेवा के लिए सेवक चुना गया कि मैं परमेश्वर के आदेश को पूरी तरह प्रचार कर सकूं. 26 वह भेद जो युगों और पीढ़ियों से छिपा रहा है किंतु अब उनके पवित्र लोगों पर प्रकट किया गया है. **(aiōn g165)** 27 जिन पर परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच इस भेद के वैभव के धन को प्रकट कर देना सही समझा. वह भेद है तुममें स्थिर बना मसीह, तुम्हारी होनेवाली महिमा की आशा. 28 हम बुद्धिमत्तापूर्वक हर एक को चेताते तथा हर एक को शिक्षा देते हुए उन्हीं का प्रचार करते हैं कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में परिपक्व रूप में प्रस्तुत करें. 29 इसी उद्देश्य से मैं उनके सामर्थ्य के अनुसार, जो मुझमें प्रबल रूप से कार्य कर रही है, मेहनत करते हुए परिश्रम कर रहा हूं.

2 मैं चाहता हूं कि तुमको यह मालूम हो कि मैं तुम्हारे लिए तथा उन सबके लिए, जो लाओदीकेइया में हैं तथा उन सबके लिए, जिन्होंने मुझे व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है, कितना कठिन परिश्रम कर रहा हूं. 2 कि उनके हृदय प्रोत्साहित होकर प्रेम में जुड़कर उस पूरे धन को प्राप्त हो, जो समझ के पूरे निश्चय में और परमेश्वर के भेद का वास्तविक ज्ञान हो, जो स्वयं मसीह है, 3 जिनमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे है. 4 मैं यह इसलिये कह रहा हूं कि कोई भी तुम्हें लुभानेवाली बातों के द्वारा भटकाने न पाए. 5 हालांकि शारीरिक रूप से मैं वहां अनुपस्थित हूं तो भी, तुम्हारे उत्तम अनुशासन तथा मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को देखकर प्रसन्न होते हुए, आत्मा में मैं तुम्हारे साथ हूं. 6 इसलिये कि तुमने प्रभु येशु मसीह को स्वीकार कर लिया है, अपना जीवन उनमें जीयों, 7 उनमें गहराई तक जड़े हुए, और मसीह में उन्नत होते हुए अपने विश्वास में दृढ़ हो जाओ—ठीक जैसी शिक्षा तुम्हें दी गई थी—तथा तुममें धन्यवाद भाव अधिक से अधिक होता रहे. 8 यह ध्यान रहे कि कोई भी तुम्हें तत्वज्ञान तथा खोखले छल के माध्यम से अपने वश में न कर ले, जो मनुष्य की परंपरा तथा संसार की आदि शिक्षा पर आधारित है—न कि मसीह के अनुसार. 9 परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता उनके शरीर में वास करती है. 10 तुमने उन्हीं में, जो प्रधानता तथा अधिकार में सबसे ऊपर हैं, सारी परिपूर्णता प्राप्त की है. 11 मसीह द्वारा किए गए ख़तना के द्वारा, जब तुम्हारा सारा पाप का स्वभाव उतार दिया गया, तुम्हारा ऐसा ख़तना किया गया, जिसे हाथ से नहीं बनाया गया; 12 जब तुम बपतिस्मा में उनके साथ गाड़े गए तथा उसी में उनके साथ उस विश्वास के द्वारा जिलाए भी गए, जो परमेश्वर के सामर्थ्य में है, जिन्होंने मसीह को मरे हुओं में से जीवित किया. 13 तुम जब अपने अपराधों और अपनी शारीरिक खतनाहीनता में मरे हुए थे, उन्होंने हमारे सभी अपराधों को क्षमा करते हुए तुम्हें उनके साथ जीवित कर दिया. 14 उन्होंने हमारे कर्ज़ के प्रमाण-पत्र को, जिसमें हमारे विरुद्ध लिखा गया अध्यादेश था, मिटाकर क्रूस पर कीलों से जड़ कर सामने से हटा दिया 15 और परमेश्वर ने प्रधानों तथा अधिकारियों को निहत्था कर उन्हें अपनी विजय यात्रा में खुल्लम-खुल्ला तमाशे का पात्र बना दिया. 16 इसलिये तुम्हारे खान-पान या उत्सव, नए चांद या शब्बाथ को लेकर कोई तुम्हारा फैसला न करने पाए. 17 ये सब होनेवाली घटनाओं की छाया मात्र हैं. मूल वस्तुएं तो मसीह की हैं. 18 कोई भी, जो विनम्रता के दिखावे और स्वर्गदूतों की उपासना में लीन है, तुम्हें तुम्हारे पुरस्कार से दूर न करने पाए. ऐसा व्यक्ति अपने देखे हुए ईश्वरीय दर्शनों का वर्णन विस्तार से करता है तथा खोखली सांसारिक समझ से फूला रहता है. 19 यह व्यक्ति उस सिर को दृढतापूर्वक थामे नहीं रहता जिससे सारा शरीर जोड़ों और सांस लेनेवाले अंगों द्वारा पोषित तथा सम्बद्ध रहता और परमेश्वर द्वारा किए गए विकास से बढता जाता है. 20 जब तुम सांसारिक तत्वज्ञान के प्रति मसीह के साथ मर चुके हो तो अब तुम्हारी जीवनशैली ऐसी क्यों है, जो संसार के इन नियमों के अधीन है: 21 "इसे मत छुओ! इसे मत चखो! इसे व्यवहार में मत लाओ!"? 22 लगातार उपयोग के कारण इन वस्तुओं का नाश होना इनका स्वभाव है क्योंकि इनका आधार सिर्फ मनुष्य की आज्ञाएं तथा शिक्षाएं हैं. 23 अपनी ही सुविधा के अनुसार गढ़ी गई आराधना विधि, विनम्रता के दिखावे तथा शरीर को कष्ट देने के भाव से ज़रूर

दिखाई दे सकती है, किंतु शारीरिक वासनाओं के दमन के लिए ये सब हमेशा
विफल सिद्ध होते हैं.

3 इसलिये जब तुम मसीह के साथ नवजीवन में जिलाए गए हो तो उन वस्तुओं
की खोज में रहो, जो ऊंचे पर विराजमान हैं, जहां मसीह परमेश्वर की दायीं
ओर बैठे हैं. 2 अपना चित्त ऊपर की वस्तुओं में लीन रखो—उन वस्तुओं में
नहीं, जो शारीरिक हैं. 3 क्योंकि तुम्हारी मृत्यु हो चुकी है तथा तुम्हारा जीवन
मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है. 4 जब मसीह, जो हमारा जीवन हैं,
प्रकट होंगे, तब तुम भी उनके साथ महिमा में प्रकट होगे. 5 इसलिये अपनी
पृथ्वी की देह के अंगों को—वेश्यागामी, अशुद्धता, दुष्कामना, लालसा तथा
लोभ को, जो वास्तव में मूर्ति पूजा ही है—मार दो 6 क्योंकि इन्हीं के कारण
परमेश्वर का क्रोध भड़क उठता है. 7 एक समय तुम्हारा जीवन भी इन्हीं में
लीन था. 8 किंतु अब तुम सभी क्रोध, रोष, बैरभाव, निंदा तथा गंदी भाषा का
भी त्याग कर दो. 9 एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम पुराने स्वभाव को
उसके कामों सहित उतार चुके 10 और अब तुमने नए स्वभाव को धारण कर
लिया है. यह स्वभाव अपने सृष्टिकर्ता की छवि के अनुसार वास्तविक ज्ञान के
लिए नया होता जाता है. 11 परिणामस्वरूप अब यूनानी या यहूदी, ख़तनित या
ख़तना रहित, बरबर या स्कूती, दास या मुक्त में कोई भेद नहीं है, मसीह ही सब
कुछ और सब में मुख्य हैं. 12 इसलिये परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र लोगों तथा
प्रिय पात्रों के समान अपने हृदयों में करुणा, भलाई, विनम्रता, दीनता तथा धीरज
धारण कर लो. 13 आपस में सहनशीलता और क्षमा करने का भाव बना रहे.
यदि किसी को किसी अन्य के प्रति शिकायत हो, वह उसे उसी प्रकार क्षमा
करे जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया है 14 और इन सबसे बढ़कर प्रेम भाव बनाए
रखो, जो एकता का समूचा सूत्र है. 15 तुम्हारे हृदय में मसीह की शांति राज्य
करे—वस्तुतः एक शरीर में तुम्हें इसी के लिए बुलाया गया है. हमेशा धन्यवादी
बने रहो. 16 तुममें मसीह के वचन को अपने हृदय में पूरी अधिकाई से बसने दो.
एक दूसरे को सिद्ध ज्ञान में शिक्षा तथा चेतावनी दो और परमेश्वर के प्रति हार्दिक
धन्यवाद के साथ स्तुति, भजन तथा आत्मिक गीत गाओ 17 तथा वचन और
काम में जो कुछ करो, वह सब प्रभु येशु मसीह के नाम में पिता परमेश्वर का
आभार मानते हुए करो. 18 जैसा उनके लिए उचित है, जो प्रभु में हैं, पत्नी अपने
पति के अधीन रहे. 19 पति अपनी पत्नी से प्रेम करे—उसके प्रति कठोर न हो.
20 बालक हमेशा अपने माता-पिता की आज्ञापालन करें क्योंकि प्रभु के लिए
यही प्रसन्नता है. 21 पिता अपनी संतान को असंतुष्ट न करे कि उनका साहस
टूट जाए. 22 दास, पृथ्वी पर ठहराए गए अपने स्वामियों की हमेशा आज्ञापालन
करें—मात्र दिखावे के लिए नहीं—उनके जैसे नहीं, जो मनुष्यों को प्रसन्न
करने के लिए ऐसा करते हैं, परंतु प्रभु के भय में मन की सच्चाई में. 23 तुम जो
कुछ करते हो, पूरे मन से करो, मानो प्रभु के लिए, न कि मनुष्यों के लिए 24
यह जानते हुए कि प्रभु से तुम्हें इसके फल के रूप में मीरास प्राप्त होगी. तुम प्रभु
मसीह की सेवा कर रहे हो. 25 वह जो बुरा काम करता है, उसे परिणाम भी बुरा
ही प्राप्त होगा, बिना किसी भेद-भाव के.

4 स्वामी अपने दासों से बिना पक्षपात के और उचित व्यवहार करें, यह ध्यान
रखते हुए कि स्वर्ग में उनका भी एक स्वामी है. 2 सावधानी और धन्यवाद
के भाव में लगातार प्रार्थना करते रहो; 3 साथ ही हमारे लिए भी प्रार्थना करो कि
परमेश्वर हमारे लिए वचन के सुनाने के लिए द्वार खोलें कि हम मसीह के भेद
को स्पष्ट करें. इसी कारण मैं बेड़ियों में हूं, 4 जिससे कि मैं उसे उसी प्रकार स्पष्ट
कर सकूं जैसा कि आवश्यक है. 5 समय का सदुपयोग करते हुए उनके प्रति,
जिनका मसीह में अब तक विश्वास नहीं है, तुम्हारा व्यवहार विवेकपूर्ण हो. 6
तुम्हारी बातचीत हमेशा ही गरिमामय और सलोनी हो—इस अहसास के साथ
कि तुम्हें किस व्यक्ति को कैसा उत्तर देना है. 7 तुख़िकस तुम्हें मेरे विषय में
सारी जानकारी देगा. वह हमारा प्रिय भाई, प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक तथा
सहदास है. 8 मैं उसे तुम्हारे पास इसी उद्देश्य से भेज रहा हूं, कि तुम हमारी
स्थिति से अवगत हो जाओ, और वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित कर सके. 9
और उसके साथ मैंने ओनेसिमॉस, हमारे प्रिय और विश्वासयोग्य भाई को भी
भेजा है, जो तुममें से एक है. ये हमारी सारी परिस्थिति से तुम्हें अवगत कराएंगे.
10 मेरे साथ कैदी आरिस्तारख़ॉस की ओर से नमस्कार और मार्कास की ओर से
भी, जो बारनबास का संबंधी है. (जिसके विषय में तुम्हें यह निर्देश दिया गया
था; कि यदि वह आए तो उसकी पहुनाई करना.) 11 और येशु का भी, जिसका
उपनाम युस्तस है. ख़तनितों में से मात्र ये ही परमेश्वर के राज्य के काम में मेरे
सहकर्मी हैं, जो मेरे लिए प्रोत्साहन का कारण बने हैं. 12 एपाफ़्रास की ओर से
भी तुम्हें नमस्कार, जो तुममें से एक तथा मसीह येशु का दास है. वह तुम्हारे
लिए हमेशा मन की एकाग्रता से प्रार्थनारत रहता है कि तुम परमेश्वर की सारी
इच्छा में सिद्ध तथा पूरी तरह आश्वस्त होकर स्थिर रहो. 13 उसके मन में,
लाओदीकेइया तथा हिरापोलिस के विश्वासियों और तुम्हारी भलाई की गहरी
चिंता है. मैं इसका गवाह हूं. 14 हमारे प्रिय चिकित्सक लूकॉस तथा देमास का
तुम्हें नमस्कार. 15 लाओदीकेइया नगर के विश्वासी भाई बहनों तथा नुम्फ़े तथा
उस कलीसिया को, जो उसके घर पर इकट्ठा होती है, नमस्कार. 16 इस पत्र
के तुम्हारे मध्य पढ़े जाने के बाद यह ध्यान रहे कि यह लाओदीकेइया नगर
की कलीसिया के सामने भी पढ़ा जाए. तुम मेरे उस पत्र को पढ़ लेना, जो
लाओदीकेइया नगर से आएगा. 17 आरखिप्पॉस से कहना, "वह ध्यान रखे कि
जो सेवकाई उसे प्रभु में सौंपी गई है, वह उसे पूरा करे." 18 मैं, पौलॉस, अपने
ही हाथ से यह शुभकामना लिख रहा हूं. मैं बेड़ियों में हूं, मुझे प्रार्थना में याद
रखना. तुम पर अनुग्रह निरंतर बना रहे.

1 थिस्सलुनीकियों

1 पिता परमेश्वर तथा प्रभु येशु मसीह में थेस्सलोनिकेयुस नगर की कलीसिया
को यह पत्र पौलॉस, सिलवानॉस तथा तिमोथियॉस की ओर से है. तुम्हें
अनुग्रह तथा शांति मिलती रहे. 2 अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा वर्णन करते हुए
हम हमेशा तुम सभी के लिए परमेश्वर का आभार मानते हैं. 3 हम हमेशा ही
परमेश्वर, हमारे पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, प्रेम का परिश्रम तथा
हमारे प्रभु येशु मसीह में तुम्हारी दृढ़ आशा को याद करते हैं. 4 क्योंकि, प्रिय
भाई बहनो, परमेश्वर के प्रियो, हमें अहसास है कि तुम परमेश्वर के चुने हुए हो,
5 हमारे द्वारा प्रस्तुत ईश्वरीय सुसमाचार तुम्हें सिर्फ शब्दों में नहीं परंतु सामर्थ्य,
पवित्र आत्मा तथा पूरे धीरज के साथ पहुंचाया गया था. तुम्हारे बीच निवास
करते हुए तुम्हारी ही भलाई के लिए हम किस प्रकार के व्यक्ति साबित हुए थे,
यह तुमने स्वयं ही देख लिया है. 6 प्रभु के संदेश को घोर क्लेश में, पवित्र
आत्मा के आनंद में स्वीकार करते हुए तुम स्वयं हमारे तथा प्रभु के शिष्य बन
गए थे. 7 जिसका परिणाम यह हुआ कि तुम मकेदोनिया तथा आखाया प्रदेश में
सभी विश्वासियों के लिए एक आदर्श बन गए. 8 तुम्हारे द्वारा भेजा गया प्रभु का
संदेश न केवल मकेदोनिया तथा आखाया प्रदेश में सुनाया गया और बढ़ता गया
परंतु परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास भी सबको मालूम हो गया है. परिणामस्वरूप
कोई ज़रूरत नहीं रह गई कि इस विषय में अब हम कुछ कहें, 9 वे ही हर जगह
इस बात का वर्णन कर रहे हैं कि तुम्हारे द्वारा किया गया हमारा स्वागत कैसा
भव्य था तथा यह भी कि किस प्रकार तुम मूर्तियों से दूर होकर परमेश्वर की ओर
झुक गए कि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करने लगो 10 और स्वर्ग से
उनके पुत्र मसीह येशु के दोबारा आगमन की प्रतीक्षा करो, जिन्हें परमेश्वर ही ने
मरे हुओं में से जीवित किया, मसीह येशु, जो हमें आनेवाले क्रोध से बचाते हैं.

2 प्रिय भाई बहनो, तुम्हें यह अहसास तो है ही कि तुमसे भेंट करने के लिए
हमारा आना व्यर्थ नहीं था. 2 जैसा कि तुम्हें मालूम ही है कि फ़िलिप्पॉय
नगर में दुःख उठाने और उपद्रव सहने के बाद घोर विरोध की स्थिति में भी तुम्हें
परमेश्वर का ईश्वरीय सुसमाचार सुनाने के लिए हमें परमेश्वर के द्वारा साहस
प्राप्त हुआ. 3 हमारा उपदेश न तो भरमा देनेवाली शिक्षा थी, न अशुद्ध उद्देश्य से
प्रेरित और न ही छलावा. 4 परंतु ठीक जिस प्रकार परमेश्वर के समर्थन में हमें
ईश्वरीय सुसमाचार सौंपा गया. हम मनुष्यों की प्रसन्नता के लिए नहीं परंतु
परमेश्वर की संतुष्टि के लिए, जिनकी दृष्टि हृदय पर लगी रहती है, ईश्वरीय
सुसमाचार का संबोधन करते हैं. 5 यह तो तुम्हें मालूम ही है कि न तो हमारी
बातों में चापलूसी थी और न ही हमने लोभ से प्रेरित हो कुछ किया—परमेश्वर
गवाह हैं; 6 हमने मनुष्यों से सम्मान पाने की भी कोशिश नहीं की; न तुमसे
और न किसी और से, मसीह के प्रेरित होने के कारण तुमसे सहायता पाना हमारा
अधिकार था. 7 तुम्हारे प्रति हमारा व्यवहार वैसा ही कोमल था, जैसा एक शिशु
का पोषण करती माता का, जो स्वयं बड़ी कोमलतापूर्वक अपने बालकों का
पोषण करती है. 8 इस प्रकार तुम्हारे प्रति एक मधुर लगाव होने के कारण हम न
केवल तुम्हें ईश्वरीय सुसमाचार देने के लिए परंतु तुम्हारे साथ स्वयं अपना
जीवन सहर्ष मिल-बांट कर संगति करने के लिए भी लालायित थे—क्योंकि
तुम हमारे लिए अत्यंत प्रिय बन चुके थे. 9 प्रिय भाई बहनो, जिस समय हम
तुम्हारे बीच ईश्वरीय सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, तुम्हें उस समय का हमारा
परिश्रम तथा हमारी कठिनाइयां याद होंगी कि कैसे हमने रात-दिन श्रम किया
कि हम तुममें से किसी पर भी बोझ न बन जाएं. 10 तुम इसके गवाह हो और
परमेश्वर भी कि तुम सभी विश्वासियों के साथ हमारा स्वभाव कितना सच्चा,
धर्मी और निर्दोष था. 11 तुम्हें यह भी मालूम है कि जैसे पिता अपनी निज
संतान के लिए करता है, उसी प्रकार हम तुममें से हर एक को 12 प्रोत्साहित
करते हुए, सांत्वना और प्रेरणा देते हुए रहे, कि तुम्हारा स्वभाव परमेश्वर के योग्य
हो, जिन्होंने तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाया है. 13 यही कारण है
कि हम भी परमेश्वर के प्रति निरंतर धन्यवाद प्रकट करते हैं कि जिस समय
तुमने हमसे परमेश्वर के वचन के संदेश को स्वीकार किया, तुमने इसे किसी
मनुष्य के संदेश के रूप में नहीं परंतु उसकी सच्चाई में अर्थात् परमेश्वर ही
के वचन के रूप में ग्रहण किया, जो तुममें, जिन्होंने विश्वास किया है, कार्य
भी कर रहा है. 14 क्योंकि प्रिय भाई बहनो, तुम मसीह येशु में परमेश्वर की
उन कलीसियाओं के शिष्य बन गए हो, जो यहूदिया प्रदेश में हैं—तुमने भी
स्वदेशवासियों द्वारा दिए गये उसी प्रकार के दुःखों को सहा है, जैसे यहूदिया
प्रदेशवासियों ने यहूदियों द्वारा दिए गए दुःखों को, 15 जिन्होंने प्रभु येशु मसीह
तथा भविष्यद्वक्ताओं दोनों ही की हत्या की. इसके अलावा उन्होंने हमें भी वहां
से निकाल दिया. वे परमेश्वर को क्रोधित कर रहे हैं तथा वे सभी के विरोधी हैं.
16 जब हम अन्यजातियों को उनके उद्धार के विषय में संदेश देने का काम करते
हैं, वे हमारी उद्धार की बातें बताने में बाधा खड़ी करते हैं. इसके फलस्वरूप वे
स्वयं अपने ही पापों का घड़ा भर रहे हैं. अंततः उन पर परमेश्वर का क्रोध आ
ही पड़ा है. 17 किंतु, प्रिय भाई बहनो, जब हम तुमसे थोड़े समय के लिए अलग
हुए थे (शारीरिक रूप से, न कि आत्मिक रूप से), तुम्हें सामने देखने की हमारी
लालसा और भी अधिक प्रबल हो गई थी. 18 हम चाहते थे कि आकर तुमसे
भेंट करें—विशेषकर मैं, पौलॉस, तो एक नहीं, अनेक बार चाह रहा था किंतु
शैतान ने हमारे प्रयास निष्फल कर दिए. 19 कौन हैं हमारी आशा, आनंद तथा
उल्लास का मुकुट? क्या हमारे प्रभु येशु मसीह के दोबारा आगमन के अवसर
पर उनकी उपस्थिति में तुम ही नहीं? 20 हां, तुम्हीं तो हमारा गौरव तथा आनंद
हो.

3 इसलिये जब यह हमारे लिए असहनीय हो गया, हमने अथेनॉन नगर में
ही रुके रहना सही समझा. 2 हमने मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचार में
परमेश्वर के सहकर्मी तथा हमारे भाई तिमोथियॉस को तुम्हारे पास इस उद्देश्य से
भेजा कि वह तुम्हें तुम्हारे विश्वास में मजबूत करे, 3 कि तुममें से कोई भी इन
क्लेशों के द्वारा डगमगा न जाए. तुम्हें तो यह अच्छी तरह से मालूम है कि हम
पर इन क्लेशों का आना अवश्य है. 4 वस्तुतः जब हम तुम्हारे यहां थे, हम
पहले ही तुम्हें यह बताते रहे कि हम पर क्लेशों का आना निश्चित है और तुम्हें
तो मालूम ही है कि हुआ भी ऐसा ही. 5 यही कारण है कि जब यह मेरे लिए
असहनीय हो गया, मैंने भी इस आशंका से कि कहीं शैतान ने तुम्हें परीक्षा में
फंसा न लिया हो और हमारा परिश्रम व्यर्थ न चला जाए, तुम्हारे विश्वास की
स्थिति मालूम करने का प्रयास किया. 6 किंतु अब, जब तिमोथियॉस तुमसे भेंट
कर हमारे पास लौट आया है, उसने तुम्हारे विश्वास और प्रेम के संबंध में बहुत
ही उत्साह बढ़ानेवाले समाचार दिए हैं तथा यह भी कि तुम हमें मीठी यादों के
रूप में याद करते हुए हमसे भेंट करने के लिए उतने ही लालायित हो जितने स्वयं
हम तुम्हें देखने के लिए लालायित हैं. 7 प्रिय भाई बहनो, यही कारण है कि हम
संकट और क्लेश की स्थिति में भी तुम्हारे विश्वास द्वारा प्रोत्साहित हुए. 8 प्रभु
में तुम्हारे स्थिर होने का संदेश हमारे लिए नवजीवन का संचार है. 9 परमेश्वर के
सामने तुम्हारे विषय में उस बड़े आनंद के लिए हम भला परमेश्वर के प्रति और
किस प्रकार का धन्यवाद प्रकट कर सकते हैं? 10 जब हम रात-दिन एकचित्त
होकर प्रार्थना करते रहते हैं कि हम तुम्हें सामने देख सकें तथा तुम्हारे विश्वास में
जो कमी है, उसे पूरा कर सकें. 11 स्वयं हमारे परमेश्वर और पिता तथा मसीह
येशु हमारे प्रभु तुम तक पहुंचने में हमारा मार्गदर्शन करें 12 तथा प्रभु ही तुम्हें एक
दूसरे के प्रति ही नहीं परंतु सबके प्रति प्रेम में बढ़ाए तथा उन्नत करें, ठीक वैसे
ही जैसे हम तुमसे प्रेम करते हैं 13 कि वह सभी पवित्र लोगों के साथ हमारे प्रभु

येशु मसीह के दोबारा आगमन के अवसर पर परमेश्वर हमारे पिता के सामने
तुम्हारे हृदय को पवित्रता में निर्दोष ठहरा सकें.

4 अंततः प्रिय भाई बहनो, तुमने हमसे अपने स्वभाव तथा परमेश्वर को प्रसन्न
करने के विषय में जिस प्रकार के निर्देश प्राप्त किए थे—ठीक जैसा तुम्हारा
स्वभाव है भी—प्रभु येशु मसीह में तुमसे हमारी विनती और समझाना है कि तुम
इनमें और भी अधिक उन्नत होते चले जाओ. **2** तुम्हें वे आज्ञाएं मालूम ही हैं,
जो हमने तुम्हें प्रभु येशु मसीह की ओर से दिए थे. **3** परमेश्वर की इच्छा है कि
तुम पवित्रता की स्थिति में रहो—तुम वेश्यागामी से अलग रहो; **4** कि तुममें से
हर एक को अपने-अपने शरीर को पवित्रता तथा सम्मानपूर्वक संयमित रखने
का ज्ञान हो, **5** कामुकता की अभिलाषा में अन्यजातियों के समान नहीं, जो
परमेश्वर से अनजान हैं; **6** इस विषय में कोई भी सीमा उल्लंघन कर अपने
साथी विश्वासी का शोषण न करे क्योंकि इन सब विषयों में स्वयं प्रभु बदला
लेते हैं, जैसे हमने पहले ही यह स्पष्ट करते हुए तुम्हें गंभीर चेतावनी भी दी थी.
7 परमेश्वर ने हमारा बुलावा अपवित्रता के लिए नहीं परंतु पवित्र होने के लिए
किया है. **8** परिणामस्वरूप वह, जो इन निर्देशों को नहीं मानता है, किसी
मनुष्य को नहीं परंतु परमेश्वर ही को अस्वीकार करता है, जो अपना पवित्र
आत्मा तुम्हें देते हैं. **9** भाईचारे के विषय में मुझे कुछ भी लिखने की ज़रूरत
नहीं क्योंकि स्वयं परमेश्वर द्वारा तुम्हें शिक्षा दी गई है कि तुममें आपस में प्रेम
हो. **10** वस्तुतः मकेदोनिया प्रदेश के विश्वासियों के प्रति तुम्हारी यही इच्छा है.
प्रिय भाई बहनो, हमारी तुमसे यही विनती है कि तुम इसी में और अधिक बढ़ते
जाओ, **11** शांत जीवनशैली तुम्हारी बड़ी इच्छा बन जाए. सिर्फ अपने ही कार्य
में मगन रहो. अपने हाथों से परिश्रम करते रहो, जैसा हमने तुम्हें आज्ञा दी है,
12 कि तुम्हारी जीवनशैली अन्य लोगों की दृष्टि में तुम्हें सम्माननीय बना दे तथा
स्वयं तुम्हें किसी प्रकार का अभाव न हो. **13** प्रिय भाई बहनो, हम नहीं चाहते
कि तुम उनके विषय में अनजान रहो, जो मृत्यु में सो गए हैं. कहीं ऐसा न हो कि
तुम उन लोगों के समान शोक करने लगो, जिनके सामने कोई आशा नहीं. **14**
हमारा विश्वास यह है कि जिस प्रकार मसीह येशु की मृत्यु हुई और वह जीवित
हुए, उसी प्रकार परमेश्वर उनके साथ उन सभी को पुनर्जीवित कर देंगे, जो
मसीह येशु में सोए हुए हैं. **15** यह हम तुमसे स्वयं प्रभु के वचन के आधार पर
कह रहे हैं कि प्रभु के दोबारा आगमन के अवसर पर हम, जो जीवित पाए
जाएंगे, निश्चित ही उनसे पहले प्रभु से भेंट नहीं करेंगे, जो मृत्यु में सो गए हैं.
16 स्वयं प्रभु स्वर्ग से प्रधान स्वर्गदूत के शब्द, परमेश्वर की तुरही के शब्द तथा
एक ऊंची ललकार के साथ उतरेंगे. तब सबसे पहले वे, जो मसीह में मरे हुए हैं,
जीवित हो जाएंगे. **17** उसके बाद शेष हम, जो उस अवसर पर जीवित पाए
जाएंगे, बादलों में उन सबके साथ वायुमंडल में प्रभु से मिलने के लिए झपटकर
उठा लिए जाएंगे. तब हम हमेशा प्रभु के साथ में रहेंगे. **18** इस बात के द्वारा
आपस में धीरज और शांति दिया करो.

5 प्रिय भाई बहनो, इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि तुम्हें समयों और कालों के
विषय में लिखा जाए, **2** तुम्हें यह भली प्रकार मालूम है कि प्रभु के दिन का
आगमन ठीक वैसा ही अचानक होगा जैसा रात में एक चोर का. **3** लोग कह
रहे होंगे, "सब कुशल है, कोई संकट है ही नहीं!" उसी समय बिना किसी
पहले से जानकारी के उन पर विनाश टूट पड़ेगा—गर्भवती की प्रसव पीड़ा के
समान, उनका भाग निकलना असंभव होगा. **4** किंतु तुम, प्रिय भाई बहनो, इस
विषय में अंधकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर एकाएक एक चोर के समान
अचानक से आ पड़े. **5** तुम सभी ज्योति की संतान हो—दिन के वंशज. हम न
तो रात के हैं और न अंधकार के, **6** इसलिये हम, बाकियों के समान सोए हुए
नहीं परंतु सावधान और व्यवस्थित रहें. **7** क्योंकि वे, जो सोते हैं, रात में सोते हैं
और वे, जो मतवाले होते हैं, रात में ही मतवाले होते हैं. **8** अब इसलिये कि हम
दिन के बने हुए हैं, हम विश्वास और प्रेम का कवच तथा उद्धार की आशा का
टोप धारण कर व्यवस्थित हो जाएं. **9** परमेश्वर द्वारा हम क्रोध के लिए नहीं परंतु
हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा उद्धार पाने के लिए ठहराए गए हैं. **10** जिन्होंने हमारे
लिए प्राण त्याग दिया, कि चाहे हम जागते हों या सोते हों, उनके साथ निवास
करें. **11** इसलिये तुम, जैसा इस समय कर ही रहे हो, एक दूसरे को आपस में
प्रोत्साहित तथा उन्नत करने में लगे रहो. **12** प्रिय भाई बहनो, तुमसे हमारी
विनती है कि तुम उनकी सराहना करो, जो तुम्हारे बीच लगन से परिश्रम कर रहे
हैं, जो प्रभु में तुम्हारे लिए ज़िम्मेदार हैं तथा तुम्हें शिक्षा देते हैं. **13** उनके परिश्रम
को ध्यान में रखते हुए उन्हें प्रेमपूर्वक ऊंचा सम्मान दो. आपस में मेल-मिलाप
बनाए रखो. **14** प्रिय भाई बहनो, हम तुमसे विनती करते हैं कि जो बिगड़े हुए हैं,
उन्हें फटकार लगाओ; जो डरे हुए हैं, उन्हें ढाढस दो, दुर्बलों की सहायता करो
तथा सभी के साथ धीरजवान बने रहो. **15** यह ध्यान रखो कि कोई भी बुराई का
बदला बुराई से न लेने पाए किंतु हमेशा वही करने का प्रयास करो, जिसमें
पारस्परिक और सभी का भला हो. **16** हमेशा आनंदित रहो, **17** प्रार्थना लगातार
की जाए, **18** हर एक परिस्थिति में धन्यवाद प्रकट किया जाए; क्योंकि मसीह
येशु में तुमसे परमेश्वर की यही आशा है. **19** पवित्र आत्मा को न बुझाओ. **20**
भविष्यवाणियों को तुच्छ न समझो **21** परंतु हर एक को सावधानीपूर्वक बारीकी
से जांचो तथा उसे, जो अच्छा है, थामे रहो. **22** बुराई का उसके हर एक रूप में
बहिष्कार करो. **23** अंततः परमेश्वर, जो शांति के स्रोत हैं, तुम्हें पूरी तरह अपने
लिए बुराई से अलग करने तथा तुम्हारी आत्मा, प्राण तथा शरीर को पूरी तरह से
हमारे प्रभु येशु मसीह के दोबारा आगमन के अवसर तक निर्दोष रूप में सुरक्षित
रखें. **24** सच्चे हैं वह, जिन्होंने तुम्हें बुलाया है. वही इसको पूरा भी करेंगे. **25**
प्रिय भाई बहनो, हमारे लिए प्रार्थना करते रहना. **26** पवित्र चुंबन से एक दूसरे
को नमस्कार करो. **27** प्रभु में हमारी यह आज्ञा है कि यह पत्र सब भाई बहनों के
सामने पढ़ा जाए. **28** तुम पर हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा बनी रहे.

2 थिस्सलुनीकियों

1 थेस्सलोनिकेयुस नगर की कलीसिया को, जो पिता परमेश्वर तथा प्रभु येशु
मसीह में है, पौलॉस, सिलवानॉस तथा तिमोथियॉस की ओर से: 2 तुममें
पिता परमेश्वर तथा प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह तथा शांति बनी रहे. 3 प्रिय
भाई बहनो, तुम्हारे बढ़ते हुए विश्वास तथा हर एक में आपसी प्रेम के दिन-
प्रतिदिन बढ़ते जाने के लिए परमेश्वर को हमारा लगातार धन्यवाद सही ही है. 4
इसलिये, परमेश्वर की कलीसियाओं में हम तुम्हारे द्वारा सहे जा रहे उत्पीड़नों
और यातनाओं की स्थिति में भी तुम्हारे द्वारा की जा रही लगातार कोशिशों तथा
विश्वास का वर्णन अत्यंत गर्व के साथ करते हैं. 5 यह सब परमेश्वर के सच्चे
न्याय के निर्णय का एक स्पष्ट प्रमाण है, जिसके परिणामस्वरूप तुम परमेश्वर के
राज्य के योग्य समझे जाओगे—वस्तुतः तुम यातनाएं इसी के लिए सह रहे
हो. 6 इसलिये परमेश्वर के लिए यही सही है कि वह उन्हें भी क्लेश ही दें,
जिन्होंने तुम्हें क्लेश दिया है 7 तथा प्रभु येशु के स्वर्ग से ज्वालामय आग में
अपने सामर्थ्यी स्वर्गदूतों के साथ प्रकट होने के अवसर पर तुम्हारी और हमारी
भी, जो दूर हैं, पीड़ा मिटे. 8 उस अवसर पर वह उन सबसे बदला लेंगे, जो
परमेश्वर को जानते नहीं है तथा उनसे भी, जो हमारे प्रभु येशु मसीह के ईश्वरीय
सुसमाचार को नहीं मानते हैं. 9 अनंत विनाश उनका दंड होगा. इसमें वे प्रभु की
उपस्थिति तथा उनके सामर्थ्य के पराक्रम से दूर कर दिए जाएंगे. **(aiōnios g166)**
10 उस समय वह अपने पवित्र लोगों के बीच गौरवान्वित होंगे तथा वे सभी,
जिन्होंने उनमें विश्वास किया है, उन्हें चकित हो निहारेंगे. तुम भी उनमें शामिल
हो क्योंकि तुमने हमारे संदेश में विश्वास किया है. 11 इस बात के प्रकाश में हम
तुम्हारे लिए हमेशा प्रार्थना करते हैं कि तुम हमारे परमेश्वर के मत में अपनी
बुलावे के अनुरूप पाए जाओ तथा तुम उत्तम उद्देश्य की हर एक अभिलाषा
तथा विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य से पूरा करते जाओ, 12 कि हमारे
परमेश्वर तथा प्रभु येशु मसीह की कृपा के अनुसार तुममें हमारे प्रभु येशु मसीह
की तथा उनमें तुम्हारी महिमा हो.

2 और अब, प्रिय भाई बहनो, हमारे प्रभु येशु मसीह के दोबारा आगमन तथा
उनके साथ हमारे इकट्ठा होने के विषय में तुमसे हमारी विनती है, 2 कि
तुम उतावली में न तो अपना मानसिक संतुलन खोना और न किसी आत्मिक
प्रकाशन, वचन या किसी ऐसे पत्र के कारण घबराना, जो तुम्हें इस रीति से सौंपा
जाए, जो मानो तुम्हें हमारे द्वारा लिखा गया है तथा जिसमें यह सूचना दी गई हो
कि प्रभु के दिन का आगमन हो चुका. 3 कोई तुम्हें किसी भी रीति से भटकाने न
पाए क्योंकि यह उस समय तक न होगा जब तक इसके पहले विश्वास का पतन
न हो जाए तथा पाप का पुत्र, जो विनाश का पुत्र है, प्रकट न हो. 4 वह हर एक
तथाकथित ईश्वर या आराधना योग्य वस्तु का विरोध करता तथा अपने आपको
इन सबके ऊपर करता है कि स्वयं को परमेश्वर बताते हुए परमेश्वर के मंदिर में
ऊंचे आसन पर जा बैठे. 5 क्या तुम्हें याद नहीं कि तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने
तुम्हें यह सब बताया था? 6 तुम्हें यह भी मालूम है कि उसे इस समय किसने
अपने वश में किया हुआ है कि वह अपने निर्धारित समय पर ही प्रकट किया
जाए. 7 अधर्म की गुप्त शक्ति पहले ही सक्रिय है. वह, जो इस पर नियंत्रण
बनाए हुए हैं, केवल तब तक नियंत्रण बनाए रखेंगे, जब तक उसे इस मार्ग से हटा
न दिया जाए, 8 तभी वह अधर्मी प्रकट होगा. प्रभु येशु अपने मुख की फूंक
मात्र से उसका वध कर देंगे—वस्तुतः उनके दोबारा आगमन का प्रताप मात्र ही
उसके अस्तित्व को समाप्त कर डालेगा. 9 अधर्मी का प्रकट होना शैतान के
कार्यों के अनुसार सब प्रकार के झूठ चमत्कार चिह्नों के साथ होगा 10 नाश
होने वालों के लिए शैतान की गतिविधि के अनुरूप होगा, जो नाश होनेवाले हैं,
क्योंकि उन्होंने अपने उद्धार के लिए सच्चे प्रेम को स्वीकार नहीं किया. 11
यही कारण है कि उन्हें परमेश्वर द्वारा ऐसे भटका देनेवाली सामर्थ्य में डाल
दिया जाएगा कि वे झूठ पर ही विश्वास करें 12 कि वे सभी, जिन्होंने सच का
विश्वास नहीं किया परंतु सिर्फ अधर्म में प्रसन्न होते रहे, दंडित किए जा सकें.
13 किंतु, प्रिय भाई बहनो, यहां तुम्हारे लिए परमेश्वर के सामने हमारा सदैव
धन्यवाद देना सही ही है. तुम प्रभु के प्रिय हो क्योंकि परमेश्वर ने प्रारंभ ही से
पवित्र आत्मा द्वारा पाप से अलग करके तथा सच में तुम्हारे विश्वास के कारण
उद्धार के लिए तुम्हें चुन लिया है. 14 परमेश्वर ने हमारे ईश्वरीय सुसमाचार
बताने के द्वारा तुम्हें बुलाया कि तुम हमारे प्रभु येशु मसीह की महिमा में शामिल
हो सको. 15 इसलिये, प्रिय भाई बहनो, स्थिर रहो. उन पारम्परिक शिक्षाओं
में अटल रहो, जो तुमने हमसे शाब्दिक रूप से या पत्र के द्वारा प्राप्त की हैं.
16 अब स्वयं हमारे प्रभु येशु मसीह तथा पिता परमेश्वर, जिन्होंने अपने प्रेम
में अनुग्रह द्वारा हमें अनंत धीरज-प्रोत्साहन तथा उत्तम आशा प्रदान की है,
(aiōnios g166) 17 तुम्हें हर एक सत्कर्म तथा वचन-संदेश में मनोबल और
प्रोत्साहन प्रदान करें.

3 अंत में, प्रिय भाई बहनो, हमारे लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का संदेश तेज गति
से हर जगह फैलता जाए और उसे महिमा प्राप्त हो, ठीक जैसी तुम्हारे बीच.
2 और यह भी कि हम टेढ़े मनवाले व्यक्तियों तथा दुष्ट मनुष्यों से सुरक्षित
रहें क्योंकि विश्वास का वरदान सभी ने प्राप्त नहीं किया है. 3 किंतु प्रभु
विश्वासयोग्य हैं. वही तुम्हें स्थिर करेंगे और उस दुष्ट से तुम्हारी रक्षा करेंगे. 4
प्रभु में हमें तुम्हारे विषय में पूरा निश्चय है कि तुम हमारे आदेशानुसार ही स्वभाव
कर रहे हो और ऐसा ही करते रहोगे. 5 प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर के प्रेम
तथा मसीह येशु के धीरज की ओर अगुवाई करें. 6 प्रिय भाई बहनो, प्रभु येशु
मसीह के नाम में हम तुम्हें यह आज्ञा देते हैं कि तुम ऐसे हर एक व्यक्ति से दूर
रहो, जो अनुचित चाल चलता है, जो हमारे द्वारा दी गई शिक्षाओं का पालन
नहीं करता. 7 यह तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे लिए हमारे जैसी चाल चलना सही
है क्योंकि तुम्हारे बीच रहते हुए हम निकम्मे नहीं रहे. 8 इतना ही नहीं, हमने
किसी के यहां दाम चुकाए बिना भोजन नहीं किया परंतु हमने दिन-रात परिश्रम
किया और काम करते रहे कि हम तुममें से किसी के लिए भी बोझ न बनें. 9
यह इसलिये नहीं कि तुमसे सहायता पाना हमारा अधिकार नहीं है परंतु इसलिये
कि हम स्वयं को तुम्हारे सामने आदर्श स्वभाव प्रस्तुत करें और तुम हमारी
सी चाल चलो. 10 यहां तक कि जब हम तुम्हारे बीच में थे, हम तुम्हें यह
आज्ञा दिया करते थे: "किसी आलसी को भोजन न दिया जाए." 11 सुनने में
यह आया है कि तुममें से कुछ की जीवनशैली आलस भरी हो गई है. वे कोई
भी काम नहीं कर रहे; वस्तुतः वे अन्यों के लिए बाधा बन गए हैं. 12 ऐसे
व्यक्तियों के लिए प्रभु येशु मसीह में हमारी विनती भरी आज्ञा है कि वे गंभीरता
पूर्वक काम पर लग जाएं तथा वे अपने ही परिश्रम से कमाया हुआ भोजन करें.
13 किंतु, प्रिय भाई बहनो, तुम स्वयं वह करने में पीछे न हटना, जो सही और
भला है. 14 यदि कोई व्यक्ति हमारे इस पत्र के आदेशों को नहीं मानता है, उस
पर विशेष ध्यान दो. उसका साथ न दो कि वह लज्जित हो. 15 इतना सब होने
पर भी उसे शत्रु न मानो परंतु एक भाई समझकर उसे समझाओ. 16 शांति के
परमेश्वर स्वयं तुम्हें हर एक परिस्थिति में निरंतर शांति प्रदान करते रहें. प्रभु तुम
सबके साथ हों. 17 मैं, पौलॉस, अपने हाथों से नमस्कार लिख रहा हूं. मेरे हर
एक पत्र का पहचान चिह्न यही है. यही मेरे लिखने का तरीका है. 18 हमारे प्रभु
येशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर बना रहे.

1 तीमुथियुस

1 परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता तथा हमारी आशा मसीह येशु की आज्ञा के अनुसार
मसीह येशु के प्रेरित पौलॉस की ओर से, 2 विश्वास में मेरे वास्तविक पुत्र
तिमोथियॉस को: पिता परमेश्वर तथा हमारे प्रभु येशु मसीह की ओर से अनुग्रह,
कृपा और शांति. 3 मैंने मकेदोनिया प्रदेश जाते समय तुमसे विनती की थी कि,
तुम इफ़ेसॉस नगर में ही रह जाओ और कुछ बताए हुए व्यक्तियों को चेतावनी
दो कि वे न तो भरमानेवाली शिक्षा दें 4 और न पुरानी कहानियों और अंतहीन
वंशावलियों में लीन रहें. इनसे विश्वास पर आधारित परमेश्वर की योजना के
उन्नत होने की बजाय मतभेद उत्पन्न होता है. 5 हमारी आज्ञा का उद्देश्य है
निर्मल हृदय से उत्पन्न प्रेम, शुद्ध अंतरात्मा तथा निष्कपट विश्वास. 6 कुछ हैं,
जो रास्ते से भटक कर व्यर्थ के वाद-विवाद में फंस गए हैं. 7 वे व्यवस्था के
शिक्षक बनने की अभिलाषा तो करते हैं परंतु वे जो कहते हैं और जिन विषयों
का वे दृढ विश्वासपूर्वक दावा करते हैं, स्वयं ही उन्हें नहीं समझते. 8 हमें
यह मालूम है कि व्यवस्था भली है—यदि इसका प्रयोग उचित रीति से किया
जाए. 9 इस सच्चाई के प्रकाश में कि व्यवस्था का बनाया जाना धर्मियों के
लिए नहीं परंतु अधर्मी, निरंकुश, दुराचारी, पापी, अपवित्र, ठग, माता-पिता
के घात करनेवाले, हत्यारे, 10 व्यभिचारी, समलैंगिक, अपहरण करनेवाले,
झूठ बोलनेवाले, झूठे गवाह तथा शेष सब कुछ के लिए किया गया है, जो
निर्मल उपदेश के विरोध में है. 11 वह धन्य परमेश्वर के गौरवान्वित ईश्वरीय
सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपी गई है. 12 मैं हमारे प्रभु येशु मसीह के
प्रति, जिन्होंने मुझे सामर्थ्य प्रदान किया है, धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने मुझे
विश्वासयोग्य समझा और अपनी सेवा में चुना. 13 हालांकि पहले मैं परमेश्वर
की निंदा करनेवाला था, अत्याचारी तथा अधर्मी था किंतु मुझ पर कृपा की गई
क्योंकि अपनी अज्ञानता में उनमें अविश्वास के कारण मैंने यह सब किया था.
14 मसीह येशु में हमारे प्रभु का बहुत अधिक अनुग्रह विश्वास और प्रेम के साथ
मुझ पर हुआ. 15 यह बात सच है, जो हर प्रकार से मानने योग्य है: मसीह येशु
पापियों के उद्धार के लिए संसार में आए. इनमें सबसे बड़ा पापी मैं हूं. 16 किंतु
मुझ पर कृपा इसलिये हुई कि मुझ बड़े पापी में मसीह येशु आदर्श के रूप में
अपनी पूरी सहनशीलता का प्रमाण उनके हित में प्रस्तुत करें, जो अनंत जीवन
के लिए उनमें विश्वास करेंगे. **(aiōnios g166)** 17 सनातन राजा, अविनाशी,
अनदेखे तथा एकमात्र परमेश्वर का आदर और महिमा सदा-सर्वदा होती रहे,
आमेन. **(aiōn g165)** 18 मेरे पुत्र, तिमोथियॉस, मैं तुम्हें यह आज्ञा तुम्हारे विषय
में पहले से की गई भविष्यवाणियों के अनुसार सौंप रहा हूं कि उनकी प्रेरणा से
तुम निरंतर संघर्ष कर सको, 19 तथा विश्वास और अच्छे विवेक को थामे
रखो, कुछ ने जिसकी उपेक्षा की और अपने विश्वास का सर्वनाश कर बैठे. 20
ह्यूमैनेऑस तथा अलेक्सान्दरॉस इन्हीं में से हैं, जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया
है कि उन्हें परमेश्वर-निंदा न करने का पाठ सिखा दिया जाए.

2 इसलिये सबसे पहली विनती यह है कि सभी के लिए विनती, प्रार्थनाएं,
दूसरों के लिए प्रार्थनाएं और धन्यवाद प्रस्तुत किए जाएं, 2 राजाओं तथा
अधिकारियों के लिए कि हमारा जीवन सम्मान तथा परमेश्वर की भक्ति में
शांति और चैन से हो. 3 यह परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता को प्रिय तथा ग्रहण योग्य
है, 4 जिनकी इच्छा है कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो तथा वे सच को उसकी
भरपूरी में जानें. 5 परमेश्वर एक ही हैं तथा परमेश्वर और मनुष्यों के मध्यस्थ
भी एक ही हैं—देहधारी मसीह येशु, 6 जिन्होंने स्वयं को सबके छुटकारे के
लिए बलिदान कर दिया—ठीक समय पर प्रस्तुत एक सबूत. 7 इसी उद्देश्य के
लिए मेरा चुनाव प्रचारक और प्रेरित के रूप में अन्यजातियों में विश्वास और
सच्चाई की शिक्षा देने के लिए किया गया. मैं सच कह रहा हूं—झूठ नहीं. 8 मैं
चाहता हूं कि हर जगह सभाओं में पुरुष, बिना क्रोध तथा विवाद के, परमेश्वर
को समर्पित हाथों को ऊपर उठाकर प्रार्थना किया करें. 9 इसी प्रकार स्त्रियों का
संवारना समय के अनुसार हो—शालीनता भरा तथा विवेकशील—सिर्फ बाल-
सजाने तथा स्वर्ण, मोतियों या कीमती वस्त्रों से नहीं, 10 परंतु अच्छे कामों से,
जो परमेश्वर भक्त स्त्रियों के लिए उचित है. 11 स्त्री, मौन रहकर पूरी अधीनता में
शिक्षा ग्रहण करे. 12 मेरी ओर से स्त्री को पुरुष पर प्रभुता जताने और शिक्षा देने
की आज्ञा नहीं है. वह मौन रहे. 13 क्योंकि आदम की सृष्टि हव्वा से पहले हुई
थी. 14 छल आदम के साथ नहीं परंतु स्त्री के साथ हुआ, जो आज्ञा न मानने की
अपराधी हुई. 15 किंतु स्त्रियां संतान पैदा करने के द्वारा उद्धार प्राप्त करेंगी—यदि
वे संयम के साथ विश्वास, प्रेम तथा पवित्रता में स्थिर रहती हैं.

3 यह बात विश्वासयोग्य है: यदि किसी व्यक्ति में अध्यक्ष पद की इच्छा है,
यह एक उत्तम काम की अभिलाषा है. 2 इसलिये आवश्यक है कि अध्यक्ष
प्रशंसनीय, एक पत्नी का पति, संयमी, विवेकी, सम्मान योग्य, अतिथि-सत्कार
करनेवाला तथा निपुण शिक्षक हो, 3 वह पीनेवाला, झगडालू, अधीर, विवादी
तथा पैसे का लालची न हो. 4 वह अपने परिवार का उत्तम प्रबंधक हो. संतान
पर उसका गरिमा से भरा अनुशासन हो. 5 (यदि कोई व्यक्ति अपने परिवार का
ही प्रबंध करना नहीं जानता तो भला वह परमेश्वर की कलीसिया की देखरेख
किस प्रकार कर पाएगा?) 6 वह नया शिष्य न हो कि वह अहंकारवश शैतान के
समान दंड का भागी न हो जाए. 7 यह भी आवश्यक है कि कलीसिया के बाहर
भी वह सम्मान योग्य हो कि वह बदनामी तथा शैतान के जाल में न पड़ जाए. 8
इसी प्रकार आवश्यक है कि दीकन भी गंभीर तथा निष्कपट हों. मदिरा पान में
उसकी रुचि नहीं होनी चाहिए, न नीच कमाई के लालची. 9 वे निर्मल मन में
विश्वास का भेद सुरक्षित रखें. 10 परखे जाने के बाद प्रशंसनीय पाए जाने पर ही
उन्हें दीकन पद पर चुना जाए. 11 इसी प्रकार, उनकी पत्नी भी गंभीर हों, न
कि गलत बातें करने में लीन रहनेवाली—वे हर एक क्षेत्र में व्यवस्थित तथा
विश्वासयोग्य हों. 12 दीकन एक पत्नी का पति हो तथा अपनी संतान और
परिवार के अच्छे प्रबंध करनेवाले हों. 13 जिन्होंने दीकन के रूप में अच्छी
सेवा की है, उन्होंने अपने लिए अच्छा स्थान बना लिया है तथा मसीह येशु में
अपने विश्वास के विषय में उन्हें दृढ़ निश्चय है. 14 तुम्हारे पास शीघ्र आने की
आशा करते हुए भी मैं तुम्हें यह सब लिख रहा हूं, 15 कि यदि मेरे आने में देरी
हो ही जाए तो भी तुम्हें इसका अहसास हो कि परमेश्वर के परिवार में, जो
जीवित परमेश्वर की कलीसिया तथा सच्चाई का स्तंभ व नींव है, किस प्रकार
का स्वभाव करना चाहिए. 16 संदेह नहीं है कि परमेश्वर की भक्ति का भेद
गंभीर है: वह, जो मनुष्य के शरीर में प्रकट किए गए, पवित्र आत्मा में उनकी
परख हुई, वह स्वर्गदूतों द्वारा पहचाने गए, राष्ट्रों में उनका प्रचार किया गया,
संसार में रहते हुए उनमें विश्वास किया गया तथा वह महिमा में ऊपर उठा लिए
गए.

4 पवित्र आत्मा का स्पष्ट कथन यह है कि अंत के समय में कुछ व्यक्ति
विश्वास का त्याग कर देंगे और वे धूर्त आत्माओं तथा दुष्टात्माओं की
शिक्षाओं पर मन लगाएंगे. 2 यह उन झूठे मनुष्यों के दिखावे की शिक्षाओं के
कारण होगा, जिनके विवेक में मानो जलते हुए लोहे से मुहर लगा दी गई हों. 3
ये वे हैं, जो विवाह करने से रोकते हैं, भोजन पदार्थों को भी त्यागने की मांग
करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने विश्वासियों और सच्चाई को जानने वाले व्यक्तियों
की भलाई के लिए इसलिये बनाया है कि धन्यवाद के साथ मिलजुल कर
खाया जाएं. 4 परमेश्वर की बनाई हुई हर एक वस्तु अच्छी है, कोई भी वस्तु
अस्वीकार करने योग्य नहीं—यदि उसे धन्यवाद के साथ स्वीकार किया जाएं,

5 क्योंकि वह परमेश्वर के वचन तथा प्रार्थना द्वारा शुद्ध की जाती है. 6 विश्वासी भाई बहनों को इन बातों का अहसास कराने के द्वारा तुम स्वयं को मसीह येशु का आदर्श सेवक साबित करोगे, जिसका पोषण निरंतर विश्वास के वचन तथा अच्छे उपदेशों की बातों के द्वारा होता है, जिसका तुम पालन करते आए हो. 7 सांसारिक तथा काल्पनिक कथाओं से दूर रहो, इसके विपरीत तुम अपने आपको परमेश्वर की भक्ति के लिए अनुशासित कर लो. 8 शारीरिक व्यायाम सिर्फ थोडे लाभ का है जबकि परमेश्वर भक्ति का लाभ सब बातों में है क्योंकि वह जीवन का आश्वासन देती है—इस समय और आनेवाले जीवन, दोनों का. 9 यह बात सच है, जो हर प्रकार से मानने योग्य है: 10 हम उसी के लिए परिश्रम तथा संघर्ष करते हैं क्योंकि हमने अपनी आशा जीवित परमेश्वर पर लगाई है, जो सब मनुष्यों के उद्धारकर्ता हैं, विशेषकर उनके, जो विश्वास करते हैं. 11 तुम्हारे आदेशों और शिक्षाओं के विषय ये ही हों. 12 तुलना में कम आयु के कारण कोई तुम्हें तुच्छ न समझे परंतु बातचीत, स्वभाव, प्रेम, विश्वास तथा पवित्रता में मसीह के विश्वासियों का आदर्श बनो. 13 मेरे वहां पहुंचने तक पवित्र शास्त्र के सार्वजनिक रीति से पढने, उपदेश तथा शिक्षा पाने में लीन रहो. 14 अंदर बसे हुए पवित्र आत्मा द्वारा दी गई क्षमता की उपेक्षा न करो, जो तुम्हें भविष्यवाणी के द्वारा उस समय प्रदान की गई, जब कलीसिया के पुरनियों ने तुम पर हाथ रखे. 15 इन निर्देशों पर विशेष ध्यान दो, इनमें लीन हो जाओ कि तुम्हारी उन्नति सब पर प्रकट हो जाए. 16 अपने जीवन और शिक्षा का पूरी शक्ति से ध्यान रखो. इसमें लगातार चौकस रहो क्योंकि तुम ऐसा करने के द्वारा दोनों का उद्धार निश्चित करोगे—स्वयं अपना तथा अपने सुननेवालों का.

5 अपने से अधिक उम्र के व्यक्ति को अपमान के भाव से न डांटो किंतु उसे पिता मानकर उससे विनती करो. अपने से कम उम्र के व्यक्ति को भाई, 2 अधिक उम्र की स्त्रियों को माता तथा कम उम्र की स्त्रियों को निर्मल भाव से बहन मानो. 3 असमर्थ विधवाओं का सम्मान करो. 4 परंतु यदि किसी विधवा के पुत्र-पौत्र हों तो वे सबसे पहले अपने ही परिवार के प्रति अपने कर्तव्य-पालन द्वारा परमेश्वर के भक्त होना सीखें तथा अपने माता-पिता के उपकारों का फल दें क्योंकि परमेश्वर को यही भाता है. 5 वह, जो वास्तव में विधवा है तथा जो अकेली रह गई है, परमेश्वर पर ही आश्रित रहती है और दिन-रात परमेश्वर से विनती तथा प्रार्थना करने में लवलीन रहती है. 6 पर वह विधवा, जिसकी जीवनशैली निर्लज्जता भरी है, जीते जी मरी हुई है. 7 तुम उन्हें ऊपर बताए गए निर्देश भी दो कि वे निर्दोष रहें. 8 यदि कोई अपने परिजनों, विशेषकर अपने परिवार की चिंता नहीं करता है, उसने विश्वास का त्याग कर दिया है और वह अविश्वासी व्यक्ति से भी तुच्छ है. 9 उसी विधवा का पंजीकरण करो जिसकी आयु साठ वर्ष से अधिक हो तथा जिसका एक ही पति रहा हो; 10 जो अपने भले कामों के लिए सुनाम हो; जिसने अपनी संतान का उत्तम पालन पोषण किया हो; आतिथ्य सत्कार किया हो; पवित्र लोगों के चरण धोए हों; दीन-दुःखियों की सहायता की हो तथा सब प्रकार के भले कामों में लीन रही हो. 11 तुलना में कम आयु की विधवाओं के नाम न लिखना क्योंकि काम-वासना प्रबल होने पर वे मसीह से दूर हो दूसरे विवाह की कामना करने लगेंगी. 12 न्याय-दंड ही उनकी नियति होगी क्योंकि उन्होंने पंजीकरण से संबंधित अपनी पूर्व शपथ तोड दी है. 13 इसके अलावा वे आलसी रहने लगती हैं तथा घर-घर घूमा करती हैं. वे न केवल आलसी रहती हैं परंतु बाकियों के कामों में हस्तक्षेप करती तथा दूसरों की बुराई में आनंद लेती हैं, तथा वे बातें बोलती है, जो उन्हें नहीं बोलनी चाहिये. 14 इसलिये मैं चाहता हूं कि कम आयु की विधवाएं विवाह करें, संतान पैदा करें, गृहस्थी सम्भालें तथा विरोधियों को निंदा का कोई अवसर न दें. 15 कुछ हैं, जो पहले ही मुडकर शैतान की शिष्य बन चुकी हैं. 16 यदि किसी विश्वासी परिवार में आश्रित विधवाएं हैं तो वही उसकी सहायता करे कि उसका बोझ कलीसिया पर न पड़े, कि कलीसिया ऐसों की सहायता कर सके, जो वास्तव में असमर्थ हैं. 17 जो कलीसिया के प्राचीन अपनी ज़िम्मेदारी का कुशलतापूर्वक निर्वाह करते हैं, वे दुगने सम्मान के अधिकारी हैं विशेषकर वे, जो वचन सुनाने में तथा शिक्षा देने के काम में परिश्रम करते हैं. 18 पवित्र शास्त्र का लेख है, "दांवनी करते बैल के मुख को मुखबन्धनी न बांधना," तथा "मज़दूर अपने मज़दूरी का हकदार है." 19 किसी भी कलीसिया-प्राचीन के विरुद्ध दो या तीन गवाहों के बिना कोई भी आरोप स्वीकार न करो. 20 वे, जो पाप में लीन हैं, सबके सामने उनकी उल्लाहना करो, जिससे कि अन्य लोगों में भय रहे. 21 मैं परमेश्वर, मसीह येशु तथा चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने तुम्हें यह ज़िम्मेदारी सौंपता हूं कि बिना किसी पक्षपात के इन आदेशों का पालन करो. पक्षपात के भाव में कुछ भी न किया जाए. 22 किसी को दीक्षा देने में उतावली न करो. अन्यों के पाप में सहभागी न हो जाओ. स्वयं को पवित्र बनाए रखो. 23 अब से सिर्फ जल ही तुम्हारा पेय न रहे परंतु अपने उदर तथा बार-बार हो रहे रोगों के कारण थोडी मात्रा में दाखरस का सेवन भी करते रहना. 24 कुछ व्यक्तियों के पाप प्रकट हैं और उनके पाप पहले ही न्याय-प्रक्रिया तक पहुंच जाते हैं, पर शेष के उनके पीछे-पीछे आते हैं. 25 इसी प्रकार अच्छे काम भी प्रकट हैं और जो नहीं हैं, वे छिपाए नहीं जा सकते.

6 वे सभी दास, जो दासत्व के जूए में जुते हुए हैं, अपने-अपने स्वामियों को सब प्रकार से आदरयोग्य समझें जिससे कि हमारे परमेश्वर की प्रतिष्ठा तथा हमारी शिक्षा प्रशंसनीय बनी रहे. 2 जिनके स्वामी विश्वासी हैं, वे अपने स्वामियों का अपमान न करें कि अब तो वे उनके समान साथी विश्वासी हैं. वे अब उनकी सेवा और भी अधिक मन लगाकर करें क्योंकि वे, जो सेवा से लाभ उठा रहे हैं, साथी विश्वासी तथा प्रिय हैं. उन्हें इन्हीं सिद्धांतों की शिक्षा दो तथा इनके पालन की विनती करो. 3 यदि कोई इससे अलग शिक्षा देता है तथा हमारे प्रभु येशु मसीह के यथार्थ संदेश तथा परमेश्वर की भक्ति की शिक्षा से सहमत नहीं होता, 4 वह अभिमानी है, अज्ञानी है तथा उसे बिना मतलब के वाद-विवाद व शब्दों के युद्ध का रोग है, जिसके परिणामस्वरूप जलन, झगडे, दूसरों की बुराई, बुरे संदेह 5 तथा बिगडी हुई बुद्धि और सच से अलग व्यक्तियों में व्यर्थ झगडे उत्पन्न हो जाते है. ये वे हैं, जो परमेश्वर की भक्ति को कमाई का साधन समझते हैं. 6 परंतु संतोष भरी परमेश्वर की भक्ति स्वयं में एक अद्भुत धन है 7 क्योंकि हम इस संसार में कुछ भी लेकर नहीं आए हैं, इसलिये हम यहां से कुछ ले जा भी न सकेंगे. 8 हम इसी में संतुष्ट रहेंगे कि हमारे पास भोजन तथा वस्त्र हैं. 9 जो धनी बनने के अभिलाषी हैं, वे परीक्षा, फंदें और अनेक मूर्खता भरे व हानिकारक लालसाओं में पड जाते हैं, जो उन्हें पतन और विनाश के गर्त में ले डुबाती हैं. 10 धन का लालच हर एक प्रकार की बुराई की जड है. कुछ इसी लालच में विश्वास से भटक गए तथा इसमें उन्होंने स्वयं को अनेक दुःखों से छलनी कर लिया है. 11 परंतु तुम, जो परमेश्वर के सेवक हो, इन सबसे दूर भागो तथा सच्चाई, परमेश्वर भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज तथा विनम्रता का पीछा करो. 12 अपने विश्वास का कठिन संघर्ष करो, उस अनंत जीवन को थामे रखो, जिसके लिए परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया और जिसे तुमने अनेक गवाहों के सामने अंगीकार किया है. **(aiōnios g166)** 13 सारी सृष्टि के पिता तथा मसीह येशु को, जो पोन्तियॉस पिलातॉस के सामने अच्छे गवाह साबित हुए, उपस्थित जानकर मैं तुम्हें निर्देश देता हूं: 14 हमारे प्रभु येशु मसीह के दोबारा आगमन तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष बनाए रखो, 15 जो ठीक समय पर परमेश्वर के द्वारा पूरा होगा—परमेश्वर, जो धन्य व एकमात्र अधिपति, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं, 16 सिर्फ वही अमर्त्य हैं, जिनका वास अपार ज्योति में है. जिन्हें किसी ने न तो कभी देखा है और न ही देख सकता है. उनकी महिमा और प्रभुता निरंतर रहे. आमेन. **(aiōnios g166)** 17 संसार के धनवानों

को आदेश दो कि वे घमंड न करें और अपनी आशा नाशमान धन पर नहीं, परंतु
परमेश्वर पर रखें, जो हमारे उपभोग की हर एक वस्तु बहुतायत में देते हैं. (aiōn
g165) 18 उन्हें भले काम करने, अच्छे कामों का धनी हो जाने तथा दान
देनेवाले व उदार बनने की आज्ञा दो. 19 इस प्रकार वे इस धन का खर्च अपने
आनेवाले जीवन की नींव के लिए करेंगे कि वे उस जीवन को, जो वास्तविक
है, थामे रह सकें. 20 तिमोथियॉस, उस धरोहर की रक्षा करो, जो तुम्हें सौंपी
गई है. जो बातें आत्मिक नहीं, व्यर्थ बातचीत और उन बातों के ज्ञान से उपजे
विरोधी तर्कों से दूर रहो, 21 जिसे स्वीकार कर अनेक अपने मूल विश्वास से
भटक गए. तुम पर अनुग्रह होता रहे.

2 तीमुथियुस

1 पौलॉस की ओर से, जो मसीह येशु में उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार,
परमेश्वर की इच्छा के द्वारा मसीह येशु का प्रेरित है, 2 प्रिय पुत्र तिमोथियॉस
को: हमारे पिता परमेश्वर और मसीह येशु, हमारे प्रभु की ओर से अनुग्रह, कृपा
और शांति मिले. 3 मैं रात-दिन अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते हुए परमेश्वर
को धन्यवाद देता हूं, जिनकी सेवा मैं शुद्ध विवेक से उसी प्रकार करता हूं, जैसे
मेरे पूर्वज करते थे. 4 तुम्हारे आंसुओं को याद करते हुए, मुझे तुमसे मिलने की
लालसा होती है कि मेरा आनंद पूरा हो जाए. 5 मुझे तुम्हारा निष्कपट विश्वास
याद आता है, जो सबसे पहले तुम्हारी नानी लोइस तथा तुम्हारी माता यूनिके में
मौजूद था, और जो निश्चित ही तुममें भी मौजूद है. 6 यही कारण है कि मैं तुम्हें
याद दिला रहा हूं कि परमेश्वर द्वारा दी गई उस क्षमता को पुनर-ज्वलित करो,
जो तुम पर मेरे हाथ रखने के द्वारा तुममें थी. 7 यह इसलिये कि परमेश्वर ने हमें
भय का नहीं परंतु सामर्थ्य, प्रेम तथा आत्म-अनुशासन का मन दिया है. 8
इसलिये न तो हमारे प्रभु के विषय में गवाही देने में और न मुझसे, जो उनके लिए
बंदी हूं, लज्जित होना परंतु परमेश्वर द्वारा दी गई सामर्थ्य के अनुसार ईश्वरीय
सुसमाचार के लिए कष्ट उठाने में मेरे साथ शामिल हो जाओ. 9 परमेश्वर ने ही
हमें उद्धार प्रदान किया तथा पवित्र जीवन के लिए हमें बुलाया है—हमारे कामों
के आधार पर नहीं परंतु सनातन काल से मसीह येशु में हमारे लिए आरक्षित
अपने ही उद्देश्य तथा अनुग्रह के अंतर्गत. (aiōnios g166) 10 इस अनुग्रह की
अभिव्यक्ति अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह येशु के प्रकट होने के द्वारा हुई है,
जिन्होंने एक ओर तो मृत्यु को नष्ट किया तथा दूसरी ओर ईश्वरीय सुसमाचार के
द्वारा जीवन तथा अमरता को प्रकाशित किया. 11 इसी ईश्वरीय सुसमाचार के
लिए मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक चुना गया. 12 यही कारण है कि मैं ये
यातनाएं भी सह रहा हूं किंतु यह मेरे लिए लज्जास्पद नहीं है क्योंकि मैं जानता
हूं कि मैंने किन में विश्वास किया है तथा मुझे यह पूरा निश्चय है कि वह उस दिन
तक मेरी धरोहर की रक्षा करने में पूरी तरह सामर्थ्यी हैं. 13 जो सच्ची शिक्षा
तुमने मुझसे प्राप्त की है, उसे उस विश्वास और प्रेम में, जो मसीह येशु में बसा है,
अपना आदर्श बनाए रखो. 14 पवित्र आत्मा के द्वारा, जिनका हमारे भीतर वास
है, उस अनुपम धरोहर की रक्षा करो. 15 तुम्हें यह मालूम ही है कि आसिया
प्रदेश के सभी विश्वासी मुझसे दूर हो गए हैं, उनमें फ़िगेलस तथा हरमोगेनेस भी
हैं. 16 ओनेसिफ़ोरस के परिवार पर प्रभु कृपा करें. उसने अक्सर मुझमें नई
स्फूर्ति का संचार किया है. मेरी बेड़ियां उसके लिए लज्जा का विषय नहीं थी.
17 जब वह रोम नगर में था, उसने यत्नपूर्वक मुझे खोजा और मुझसे भेंट की. 18
इफ़ेसॉस नगर में की गई उसकी सेवाओं से तुम भली-भांति परिचित हो. प्रभु करें
कि उस दिन उसे प्रभु की कृपा प्राप्त हो!

2 इसलिये, हे पुत्र, मसीह येशु में प्राप्त हुए अनुग्रह में बलवान हो जाओ. 2
उन शिक्षाओं को, जो तुमने अनेकों गवाहों की उपस्थिति में मुझसे प्राप्त की
हैं, ऐसे विश्वासयोग्य व्यक्तियों को सौंप दो, जिनमें बाकियों को भी शिक्षा
देने की क्षमता है. 3 मसीह येशु के अच्छे योद्धा की तरह मेरे साथ दुःखों का
सामना करो. 4 कोई भी योद्धा रणभूमि में दैनिक जीवन के झंझटों में नहीं पड़ता
कि वह योद्धा के रूप में अपने भर्ती करनेवाले को संतुष्ट कर सके. 5 इसी
प्रकार यदि कोई अखाड़े की प्रतियोगिता में भाग लेता है किंतु नियम के अनुसार
प्रदर्शन नहीं करता, विजय पदक प्राप्त नहीं करता. 6 यह सही ही है कि
परिश्रमी किसान उपज से अपना हिस्सा सबसे पहले प्राप्त करे. 7 मेरी शिक्षाओं
पर विचार करो. प्रभु तुम्हें सब विषयों में समझ प्रदान करेंगे. 8 उस ईश्वरीय
सुसमाचार के अनुसार, जिसका मैं प्रचारक हूं, मरे हुओं में से जीवित, दावीद के
वंशज मसीह येशु को याद रखो. 9 उसी ईश्वरीय सुसमाचार के लिए मैं कष्ट
सह रहा हूं, यहां तक कि मैं अपराधी जैसा बेड़ियों में जकड़ा गया हूं—परंतु
परमेश्वर का वचन कैद नहीं किया जा सका. 10 यही कारण है कि मैं उनके
लिए, जो चुने हुए हैं, सभी कष्ट सह रहा हूं कि उन्हें भी वह उद्धार प्राप्त हो, जो
मसीह येशु में मिलता है तथा उसके साथ अनंत महिमा भी. (aiōnios g166)
11 यह बात सत्य है: यदि उनके साथ हमारी मृत्यु हुई है तो हम उनके साथ
जीवित भी होंगे; 12 यदि हम धीरज धारण किए रहें तो, हम उनके साथ शासन
भी करेंगे, यदि हम उनका इनकार करेंगे तो, वह भी हमारा इनकार करेंगे.
13 हम चाहे सच्चाई पर चलना त्याग दें, तो भी वह विश्वासयोग्य रहते हैं,
क्योंकि वह अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं जा सकते. 14 उन्हें इन विषयों की
याद दिलाते रहो. परमेश्वर की उपस्थिति में उन्हें चेतावनी दो कि वे शब्दों पर
वाद-विवाद न किया करें. इससे किसी का कोई लाभ नहीं होता परंतु इससे
सुननेवालों का विनाश ही होता है. 15 सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में
लाते हुए परमेश्वर के ऐसे ग्रहण योग्य सेवक बनने का पूरा प्रयास करो, जिसे
लज्जित न होना पड़े. 16 सांसारिक और व्यर्थ की बातचीत से दूर रहो, नहीं तो
सांसारिकता बढ़ती ही जाएगी. 17 और इस प्रकार की शिक्षा सड़े घाव की तरह
फैल जाएगी. हूमैनेऑस तथा फ़िलेतॉस इसी के समर्थकों में से हैं, 18 जो यह
कहते हुए सच से भटक गए कि पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका. इस प्रकार
उन्होंने कुछ को विश्वास से अलग कर दिया है. 19 फिर भी परमेश्वर की
पक्की नींव स्थिर है, जिस पर यह मोहर लगी है: "प्रभु उन्हें जानते हैं, जो
उनके हैं." तथा "हर एक, जिसने प्रभु को अपनाया है, अधर्म से दूर रहे." 20
एक सम्पन्न घर में केवल सोने-चांदी के ही नहीं परंतु लकड़ी तथा मिट्टी के भी
बर्तन होते हैं—कुछ अच्छे उपयोग के लिए तथा कुछ अनादर के लिए. 21
इसलिये जो व्यक्ति स्वयं को इस प्रकार की गंदगी से साफ़ कर लेता है, उसे
अच्छा, अलग किया हुआ, स्वामी के लिए उपयोगी तथा हर एक भले काम के
लिए तैयार किया हुआ बर्तन माना जाएगा. 22 जवानी की अभिलाषाओं से दूर
भागो तथा उनकी संगति में धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति का स्वभाव
करो, जो निर्मल हृदय से प्रभु को पुकारते हैं 23 मूर्खता तथा अज्ञानतापूर्ण विवादों
से दूर रहो; यह जानते हुए कि इनसे झगड़ा उत्पन्न होता है. 24 प्रभु के दास का
झगड़ालू होना सही नहीं है. वह सबके साथ कृपालु, निपुण शिक्षक, अन्याय की
स्थिति में धीरजवंत हो, 25 जो विरोधियों को नम्रतापूर्वक इस संभावना की
आशा में समझाए कि क्या जाने परमेश्वर उन्हें सत्य के ज्ञान की प्राप्ति के लिए
पश्चाताप की ओर भेजें. 26 वे सचेत हो जाएं तथा शैतान के उस फंदे से छूट
जाएं जिसमें उसने उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए जकड़ रखा है.

3 यह समझ लो कि अंतिम दिन कष्ट देनेवाला समय होगा. 2 मनुष्य स्वार्थी,
लालची, डींगमार, अहंकारी, परमेश्वर की निंदा करनेवाला, माता-पिता की
आज्ञा टालनेवाला, दयारहित, अपवित्र, 3 निर्मम, क्षमा रहित, दूसरों की बुराई
करनेवाला, असंयमी, कठोर, भले का बैरी, 4 विश्वासघाती, ढीठ, घमंडी तथा
परमेश्वर भक्त नहीं परंतु सुख-विलास के चाहनेवाले होंगे. 5 उनमें परमेश्वर
भक्ति का स्वरूप तो दिखाई देगा किंतु इसका सामर्थ्य नहीं. ऐसे लोगों से दूर
रहना. 6 इन्हीं में से कुछ वे हैं, जो घरों में घुसकर निर्बुद्धि स्त्रियों को अपने वश
में कर लेते हैं, जो पापों में दबी तथा विभिन्न वासनाओं में फंसी हुई हैं. 7
वे सीखने का प्रयास तो करती हैं किंतु सच्चाई के सारे ज्ञान तक पहुंच ही
नहीं पातीं. 8 जिस प्रकार यान्नेस तथा याम्ब्रेस ने मोशेह का विरोध किया
था, उसी प्रकार ये भ्रष्ट बुद्धि के व्यक्ति सच का विरोध करते हैं. बनावटी है
इनका विश्वास. 9 यह सब अधिक समय तक नहीं चलेगा क्योंकि उन दोनों
के समान उनकी मूर्खता सबके सामने प्रकाश में आ जाएगी. 10 तुमने मेरी
शिक्षा, स्वभाव, उद्देश्य, विश्वास, सताए जाने के समय, प्रेम तथा धीरज और

सहनशीलता का भली-भांति अनुसरण किया है 11 तथा तुम्हें मालूम है कि
अंतियोख़, इकोनियॉन तथा लुस्त्रा नगरों में मुझ पर कैसे-कैसे अत्याचार हुए,
फिर भी उन सभी में से प्रभु ने मुझे निकाला है. 12 यह सच है कि वे सभी, जो
मसीह येशु में सच्चाई का जीवन जीने का निश्चय करते हैं, सताए ही जाएंगे, 13
परंतु दुष्ट तथा बहकानेवाले छल करते और स्वयं छले जाते हुए लगातार विनाश
के गड्ढे में गिरते जाएंगे. 14 किंतु तुम स्वयं उन शिक्षाओं में, जो तुमने प्राप्त की
तथा जिनके विषय में तुम आश्वस्त हो चुके हो, स्थिर रहो, यह याद रखते
हुए कि किन्होंने तुम्हें ये शिक्षाएं दी हैं, 15 यह भी कि बचपन से तुम पवित्र
अभिलेखों से परिचित हो, जो तुम्हें वह बुद्धिमता देने में समर्थ हैं, जिससे मसीह
येशु में विश्वास के द्वारा उद्धार प्राप्त होता है. 16 संपूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की
प्रेरणा से रचा गया है. यह शिक्षा देने, गलत धारणाओं का विरोध करने, दोष-
सुधार तथा धार्मिकता की शिक्षा के लिए सही है, 17 कि परमेश्वर का जन पूरी
तरह से हर एक अच्छे कार्य के लिए सुसज्जित पाया जाए.

4 मैं परमेश्वर तथा मसीह येशु की उपस्थिति में, जो जीवितों तथा मरे हुओं का
न्याय करेंगे तथा उनके दोबारा आगमन तथा उनके राज्य के विषय को ध्यान
में रखते हुए तुम्हें चेतावनी देता हूं: 2 वचन का प्रचार करो. समय अनुकूल हो
या प्रतिकूल, हमेशा तैयार रहो, अत्यंत धीरज के साथ तथा शिक्षा के लक्ष्य से
गलत धारणाओं का विरोध करो, कर्तव्य का अहसास कराओ तथा प्रोत्साहित
करो, 3 क्योंकि एक ऐसा समय आएगा जब वे खरी शिक्षाओं को सह न सकेंगे.
वे अपनी लालसा पूरी करने के लिए ऐसे उपदेशकों को इकट्ठा करेंगे, जो उन्हें
सिर्फ कानों को अच्छा लगने वाले उपदेश देंगे. 4 एक ओर तो वे सच्चाई से
कान फेर लेंगे तथा दूसरी ओर कहानियों पर ध्यान लगाएंगे 5 परंतु तुम इन सब
विषयों में सावधान रहना; कठिनाइयां सह लेना; ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचारक
का काम करना; अपनी सेवकाई को पूरा करना. 6 मैं अर्घ (पेय-यज्ञ) के समान
उंडेला जा चुका हूं, मेरे जाने का समय आ चुका है. 7 मेरा संघर्ष सार्थक रहा है.
मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है. मैंने दृढतापूर्वक विश्वास को थामे रखा है. 8
भविष्य में मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट सुरक्षित है, जो न्याय करनेवाले प्रभु
मुझे उस दिन देंगे—मुझे ही नहीं परंतु उन सबको भी, जो उनके दोबारा आगमन
की बड़ी आशा से प्रतीक्षा कर रहे हैं. 9 तुम जल्द से जल्द मेरे पास आने का
पूरा प्रयास करो 10 क्योंकि देमास ने आधुनिक युग के आकर्षण में मुझे त्याग
कर थेस्सलोनिकेयुस नगर जाना सही समझा है. क्रेसकेस गलातिया नगर और
तीतॉस दालमतिया नगर गए हुए हैं. (aiōn g165) 11 केवल लूकॉस मेरे साथ हैं.
आते हुए मार्कास को अपने साथ ले आना क्योंकि वह सेवकाई में मेरे लिए
उपयोगी है. 12 मैंने तुख़िकस को इफ़ेसॉस नगर भेज दिया है. 13 वह अंगरखा,
जो मैं त्रोऑस नगर में कार्पूस के पास छोड़ आया था, साथ लेते आना, साथ ही
वे ग्रंथ भी, विशेषतः चर्मपत्र. 14 अलेक्सान्दरॉस ठठेरे ने मेरी बड़ी हानि की है.
प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करें. 15 तुम स्वयं भी उससे
सावधान रहो क्योंकि उसने हमारी शिक्षा का कड़ा विरोध किया था. 16 मेरी
पहली सुनवाई के समय कोई मेरे साथ नहीं था—सबने मुझे त्याग दिया; इसके
लिए उन्हें दोषी न माना जाए. 17 प्रभु मेरे साथ थे तथा उन्होंने मुझे सामर्थ्य दी
कि मेरे द्वारा संदेश की घोषणा पूरी तरह सम्पन्न हो जाए तथा सब गैर-यहूदी इसे
सुन सकें. मैं सिंह के मुख से बचा लिया गया. 18 प्रभु मुझे हर एक बुराई से
उबारेंगे तथा अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित ले जाएंगे. उनकी महिमा युगानुयुग
हो. आमेन. (aiōn g165) 19 प्रिस्का व अकुलॉस को तथा ओनेसिफ़ोरस के
परिवार को मेरा नमस्कार. 20 इरास्तुस अब तक कोरिन्थॉस नगर में ही है परंतु
त्रोफ़िमस की बीमारी के कारण उसे मिलेतॉस नगर में छोड़ना पड़ा. 21 जाड़े
के पहले ही आने का पूरा प्रयास करना. तुम्हें यूबुलस का नमस्कार, साथ ही
पुदेन्स, लीनोस, क्लौदिआ तथा सभी विश्वासी भाई बहनों को भी नमस्कार. 22
प्रभु तुम्हारी आत्मा के साथ हों. तुम पर अनुग्रह बना रहे.

तीतुस

1 विश्वास की सहभागिता में मेरे सच्चे पुत्र तीतॉस को परमेश्वर के दास तथा
मसीह येशु के प्रेरित पौलॉस की ओर से, जिन्हें परमेश्वर के चुने हुओं के
विश्वास तथा उनके सत्य के ज्ञान के लिए, 2 जो अनंत जीवन की आशा में
परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार है, जिस अनंत जीवन की प्रतिज्ञा सनातन से ही
परमेश्वर द्वारा की गई, जो कभी झूठ नहीं बोलते, (aiōnios g166) 3 अब
जिनके ठहराए हुए समय पर इस आशा का संदेश परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की
आज्ञा पर मुझे सौंपी गई प्रचार की सेवकाई द्वारा प्रकट किया गया है. 4 पिता
परमेश्वर तथा मसीह येशु हमारे उद्धारकर्ता की ओर से, तुम्हें अनुग्रह और शांति
मिले. 5 मैंने तुम्हें क्रेते द्वीप में इसलिये छोड़ा था कि तुम वहां बचे हुए काम की
पूरी व्यवस्था करो तथा हर एक नगर में मेरे अनुदेशानुसार ऐसे कलीसिया-
पुरनियों की नियुक्ति करो, 6 जो निर्दोष तथा एक पत्नी के पति हों, जिनकी
संतान विश्वासी हो तथा जिन पर कामुकता और निरंकुशता का आरोप न हो. 7
परमेश्वर द्वारा चुने हुए प्रबंधक के रूप में भंडारी का निर्दोष होना ज़रूरी है, न
कि हठी, क्रोधी, मदिरा पीनेवाला, झगड़ालू या लालची. 8 वह अतिथि-सत्कार
करनेवाला, सब प्रकार की उचित बातों का समर्थक, विवेकशील, न्यायी, पवित्र
तथा ऐसा हो जिसने अपनी इंद्रियों को अपने वश में कर लिया हो. 9 वह उस
विश्वसनीय संदेश पर स्थिर रहे, जो सिद्धांत शिक्षा के अनुकूल है कि वह खरी
शिक्षा का उपदेश कर इसके विरोधियों का मुंह बंद कर सके. 10 अनेक लोग
निरंकुश, बकवादी और कपटी हैं, विशेषकर वे, जो ख़तना समर्थक हैं. 11
इनका मुख बंद करना अत्यावश्यक है क्योंकि ये नीच कमाई के लाभ के लिए
गलत शिक्षा देकर घर के घर उजाड़ रहे हैं. 12 उन्हीं में से एक ने, जो उनका
अपना तथाकथित भविष्यवक्ता है, कहा है, “क्रेतेवासी हमेशा ही झूठे, दुष्ट पशु
और आलसी पेटू रहे हैं.” 13 यह घोषणा सच है. इसलिये उन्हें कड़ी फटकार
लगाना, कि वे विश्वास में स्थिर बने रहें 14 और यहूदियों की काल्पनिक
कहानियों और सच से दूर हो गए व्यक्तियों के आदेशों की ओर ध्यान न दें. 15
निर्मल व्यक्ति के लिए सब वस्तुएं निर्मल हैं किंतु वे, जो भ्रष्ट हैं तथा विश्वास
नहीं करते, उनके लिए निर्मल कुछ भी नहीं है. उनके मन तथा विवेक दोनों ही
अशुद्ध हैं. 16 वे परमेश्वर को जानने का दावा तो अवश्य करते हैं परंतु उनके
काम इसे गलत साबित करते हैं. वे घृणित, अवज्ञाकारी और किसी भी भले काम
के योग्य नहीं हैं.

2 किंतु तुम्हारे लिए सही यह है कि तुम ऐसी शिक्षा दो, जो खरे उपदेश के
अनुसार है. 2 बुज़ुर्ग पुरुष संयमी, सम्मानीय, विवेकशील तथा विश्वास, प्रेम
व धीरज में अटल हों. 3 इसी प्रकार बुज़ुर्ग स्त्रियां भी सम्मानीय हों. वे न तो
दूसरों की बुराई करनेवाली हों और न मदिरा पीने वाली हों, परंतु वे अच्छी
बातों की सीखानेवाली हों 4 कि वे युवतियों को प्रेरित करें कि वे अपने पति
तथा अपनी संतान से प्रेम करें, 5 और वे विवेकशील, पवित्र, सुघड़ गृहणी व
सुशील हों और अपने-अपने पति के अधीन रहें, जिससे परमेश्वर के वचन की
निंदा न हो. 6 युवकों को विवेकशील होने के लिए प्रोत्साहित करो. 7 हर एक
क्षेत्र में तुम भले कामों में आदर्श माने जाओ. सही शिक्षा सच्चाई और गंभीरता में
दी जाए. 8 तुम्हारी बातचीत के विषय में कोई बुराई न कर सके कि तुम्हारे
विरोधी लज्जित हो जाएं तथा उनके सामने हमारे विरोध में कुछ भी कहने का
विषय न रहे. 9 दासों को सिखाओ कि हर एक परिस्थिति में वे अपने-अपने
स्वामियों के अधीन रहें. वे उन्हें प्रसन्न रखें, उनसे वाद-विवाद न करें, 10 चोरी
न करें, किंतु स्वयं को विश्वासयोग्य प्रमाणित करें कि इससे हमारे उद्धारकर्ता
परमेश्वर की शिक्षा की शोभा बन जाए. 11 सारी मानव जाति के उद्धार के लिए
परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ है, 12 जिसकी हमारे लिए शिक्षा है कि हम
“गलत” कामों और सांसारिक अभिलाषाओं का त्याग कर इस युग में संयम,
धार्मिकता और परमेश्वर भक्ति का जीवन जिए, (aiōn g165) 13 तथा अपने
महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह येशु की महिमा के प्रकट होने की सुखद
आशा की प्रतीक्षा करें, 14 जिन्होंने स्वयं को हमारे लिए बलिदान कर हमें हर
एक दुष्टता से छुड़ाकर, अपने लिए शुद्ध कर भले कामों के लिए उत्साही प्रजा
बना लिया है. 15 अधिकारपूर्वक इन सब विषयों की शिक्षा देते हुए लोगों को
समझाओ और प्रोत्साहित करो. इसमें कोई भी तुम्हें तुच्छ न जाने.

3 उन्हें याद दिलाओ कि वे हाकिमों तथा अधिकारियों के अधीन रहें,
आज्ञाकारी रहें तथा हर एक भले काम के लिए तैयार रहें, 2 किसी की बुराई
न करें, झगड़ालू नहीं, कोमल स्वभाव के हों तथा सबके साथ विनम्र रहें. 3
कभी हम भी निर्बुद्धि, आज्ञा न माननेवाले, गलत, भिन्न-भिन्न प्रकार के सुख-
विलास के दास थे; बैरभाव, जलन और घृणा के पात्र के रूप में एक दूसरे के प्रति
घृणा में जी रहे थे. 4 किंतु जब परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता की कृपा तथा मानव
जाति के प्रति उनका प्रेम प्रकट हुआ, 5 तो उन्होंने हमें उद्धार प्रदान किया—उन
कामों के आधार पर नहीं जो हमने धार्मिकता में किए हैं परंतु अपनी ही कृपा के
अनुसार नए जन्म के स्नान तथा पवित्र आत्मा के नवीकरण की निष्पत्ति में 6
उसी पवित्र आत्मा की पूर्ति में, जो उन्होंने हमारे उद्धारकर्ता मसीह येशु द्वारा
बहुतायत में हम पर उंडेल दिया 7 कि उनके अनुग्रह के द्वारा हम धर्मी घोषित
किए जाकर अनंत जीवन की आशा के अनुसार वारिस बन जाएं. (aiōnios
g166) 8 ये बात विश्वास करने योग्य हैं. और मैं चाहता हूं कि तुम इन विषयों
को निडरता से सिखाओ कि जिन्होंने परमेश्वर में विश्वास किया है, उनके मन
उन कामों पर केंद्रित हो जाएं, जो सबके लिए आदर्श और लाभदायक हैं. 9
मूर्खता भरे विवादों, वंशावली संबंधी झगड़े, व्यवस्था संबंधी वाद-विवाद से दूर
रहो क्योंकि ये निष्फल और व्यर्थ हैं. 10 झगड़ा करनेवाले व्यक्ति को पहली
और दूसरी बार चेतावनी देने के बाद उससे किसी भी प्रकार का संबंध न रखो,
11 यह जानते हुए कि ऐसा व्यक्ति भटक गया और पाप में लीन हो गया है. वह
अपने ऊपर स्वयं दंड-आज्ञा ठहरा रहा है. 12 जब मैं आर्तेमास या तुख़िकस को
तुम्हारे पास भेजूं तो जल्द से जल्द मुझसे निकोपोलिस नगर में भेंट करने का
प्रयास करना. मैंने जाड़ा वहां बिताने का निर्णय लिया है. 13 अपोल्लॉस और
विधि-विशेषज्ञ ज़ेनॉस की यात्रा में हर प्रकार से सहायता करना कि उन्हें किसी
प्रकार की कमी न हो. 14 साथी विश्वासी अच्छे कामों में जुट जाना सीखें कि
रोज़ की ज़रूरतें पूरी हों और वे निष्फल न हो जाएं. 15 उनकी ओर से, जो
मेरे साथ हैं नमस्कार. तथा जो विश्वास के कारण हमसे प्रेम करते हैं, उनको
नमस्कार. तुम सब पर अनुग्रह बना रहे.

फिलेमोन

1 मसीह येशु के लिए बंदी पौलॉस तथा हमारे भाई तिमोथियॉस की ओर से,
हमारे प्रिय सहकर्मी फ़िलेमोन, 2 हमारी बहन आफ़िया, हमारे साथी योद्धा
आरखिप्पॉस और कलीसिया को, जो तुम्हारे घर में इकट्ठा होती है: 3 हमारे
पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह व शांति प्राप्त हो. 4 अपनी
प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते हुए मैं हमेशा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं,
5 क्योंकि मैं प्रभु येशु मसीह तथा सभी पवित्र लोगों के प्रति तुम्हारे प्रेम और
विश्वास के बारे में सुना करता हूं. 6 मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास का
सहभागी होना हर एक वरदान के स्पष्ट अहसास के द्वारा, जो तुममें मसीह के
लिए है, प्रभावशाली हो. 7 प्रिय भाई बहनो, तुम्हारी प्रेम भावना से मुझे बहुत
आनंद व प्रोत्साहन मिला है क्योंकि तुम्हारे कारण पवित्र लोगों के मन आनंदित
हुए हैं. 8 यद्यपि मुझे मसीह में तुम्हें यह आज्ञा देने का अधिकार है कि तुम्हारा
क्या करना सही है, 9 मैं, मसीह येशु के लिए बंदी बूढ़ा पौलॉस, प्रेमवश तुमसे
इस समय मात्र विनती कर रहा हूं. 10 मेरी विनती मेरे पुत्र ओनेसिमॉस के संबंध
में है, जो कारावास में मेरा आत्मिक पुत्र बन गया है, 11 जो इससे पहले तुम्हारे
लिए किसी काम का न था किंतु अब तुम्हारे और मेरे, दोनों के लिए बड़े काम
का हो गया है. 12 उसे, जो अब मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैं तुम्हारे पास वापस
भेज रहा हूं. 13 हालांकि मैं चाहता था कि उसे अपने पास ही रखूं कि वह
तुम्हारा स्थान लेकर ईश्वरीय सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की सेवा करे. 14
किंतु मैंने तुम्हारी सलाह के बिना कुछ भी करना उचित न समझा कि तुम्हारी
उदारता मजबूरीवश नहीं परंतु अपनी इच्छा से हो. 15 क्योंकि वह तुमसे
कुछ समय के लिए इसी कारण अलग हुआ कि तुम उसे हमेशा के लिए प्राप्त
कर लो. **(aiōnios g166)** 16 दास के रूप में नहीं परंतु दास से ऊंचे एक प्रिय
भाई के रूप में, विशेषकर मेरे लिए. वह मुझे तो अत्यंत प्रिय है ही किंतु मुझसे
बढ़कर तुम्हें दोनों ही रूपों में—व्यक्ति के रूप में तथा प्रभु में भाई के रूप में.
17 इसलिये यदि तुम मुझे अपना सहभागी समझते हो तो मेरी विनती है कि
तुम उसे ऐसे अपना लो जैसे तुमने मुझे अपनाया था. 18 यदि उसने किसी भी
प्रकार से तुम्हारी कोई हानि की है या उस पर तुम्हारा कोई कर्ज़ है तो उसे
मेरे नाम लिख देना. 19 मैं, पौलॉस, अपने हाथ से यह लिख रहा हूं कि मैं
वह कर्ज़ चुका दूंगा—मुझे तुम्हें यह याद दिलाना आवश्यक नहीं कि तुम्हारा
सारा जीवन मेरा कर्ज़दार है. 20 प्रिय भाई बहनो, मेरी कामना है कि प्रभु में
मुझे तुमसे यह सहायता प्राप्त हो और मेरा मन मसीह में आनंदित हो जाए. 21
तुम्हारे आज्ञाकारी होने पर भरोसा करके, मैं तुम्हें यह लिख रहा हूं क्योंकि मैं
जानता हूं कि तुम मेरे कहे से कहीं अधिक करोगे. 22 इसके साथ ही, मेरे घर
का भी प्रबंध करो क्योंकि मुझे आशा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के उत्तर में मैं
परमेश्वर द्वारा तुम्हें दोबारा लौटा दिया जाऊंगा. 23 मसीह येशु में मेरा साथी बंदी
एपाफ़्रास. 24 तथा मेरे सहकर्मी मार्कास, आरिस्तारख़ॉस, देमास और लूकॉस
तुम्हें नमस्कार करते हैं. 25 प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ
रहे.

इब्रानियों

1 पूर्व में परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हमारे पूर्वजों से अनेक
समय खण्डों में विभिन्न प्रकार से बातें की, 2 किंतु अब इस अंतिम समय
में उन्होंने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें की हैं, जिन्हें परमेश्वर ने सारी सृष्टि का
वारिस चुना और जिनके द्वारा उन्होंने युगों की सृष्टि की. (aiōn g165) 3 पुत्र ही
परमेश्वर की महिमा का प्रकाश तथा उनके तत्व का प्रतिबिंब है. वह अपने
सामर्थ्य के वचन से सारी सृष्टि को स्थिर बनाये रखता है. जब वह हमें हमारे
पापों से धो चुके, वह महिमामय ऊंचे पर विराजमान परमेश्वर की दायीं ओर में
बैठ गए. 4 वह स्वर्गदूतों से उतने ही उत्तम हो गए जितनी स्वर्गदूतों से उत्तम
उन्हें प्रदान की गई महिमा थी. 5 भला किस स्वर्गदूत से परमेश्वर ने कभी यह
कहा: “तुम मेरे पुत्र हो! आज मैं तुम्हारा पिता हो गया हूं?” तथा यह: “उसका
पिता मैं बन जाऊंगा और वह मेरा पुत्र हो जाएगा?” 6 और तब, वह अपने
पहलौठे पुत्र को संसार के सामने प्रस्तुत करते हुए कहते हैं: “परमेश्वर के सभी
स्वर्गदूत उनके पुत्र की वंदना करें.” 7 स्वर्गदूतों के विषय में उनका कहना है:
“वह अपने स्वर्गदूतों को हवा में और अपने सेवकों को आग की लपटों में
बदल देते हैं.” 8 परंतु पुत्र के विषय में: “हे परमेश्वर, आपका सिंहासन अनश्वर
है; आपके राज्य का राजदंड वही होगा, जो सच्चाई का राजदंड है. (aiōn
g165) 9 धार्मिकता आपको प्रिय है तथा दुष्टता घृणास्पद; यही कारण है कि
परमेश्वर, आपके परमेश्वर ने हर्ष के तेल से आपको अभिषिक्त करके आपके
समस्त साथियों से ऊंचे स्थान पर बसा दिया है. 10 और, “प्रभु! आपने प्रारंभ में
ही पृथ्वी की नींव रखी, तथा आकाशमंडल आपके ही हाथों की कारीगरी है.
11 वे तो नष्ट हो जाएंगे किंतु आप अस्तित्व में ही रहेंगे. वे सभी वस्त्र समान पुराने
हो जाएंगे. 12 आप उन्हें वस्त्रों के ही समान परिवर्तित कर देंगे. उनका अस्तित्व
समाप्त हो जाएगा. पर आप न बदलनेवाले हैं, आपके समय का कोई अंत
नहीं.” 13 भला किस स्वर्गदूत से परमेश्वर ने यह कहा, “मेरी दायीं ओर में बैठ
जाओ जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे चरणों की चौकी न बना दूं”? 14
क्या सभी स्वर्गदूत सेवा के लिए चुनी आत्माएं नहीं हैं कि वे उनकी सेवा करें,
जो उद्धार पानेवाले हैं?

2 इसलिये ज़रूरी है कि हमने जो सुना है, उस पर विशेष ध्यान दें. ऐसा न हो
कि हम उससे दूर चले जाएं. 2 क्योंकि यदि स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया संदेश
स्थिर साबित हुआ तथा हर एक अपराध तथा अनाज्ञाकारिता ने सही न्याय-दंड
पाया, 3 तब भला हम इतने उत्तम उद्धार की उपेक्षा करके आनेवाले दंड से
कैसे बच सकेंगे, जिसका वर्णन सबसे पहले स्वयं प्रभु द्वारा किया गया, इसके
बाद जिसकी पुष्टि हमारे लिए उनके द्वारा की गई, जिन्होंने इसे सुना? 4 उनके
अलावा परमेश्वर ने चिह्नों, चमत्कारों और विभिन्न अद्भुत कामों के द्वारा तथा
अपनी इच्छानुसार दी गई पवित्र आत्मा की क्षमताओं द्वारा भी इसकी पुष्टि की
है. 5 परमेश्वर ने उस भावी सृष्टि को, जिसका हम वर्णन कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के
अधिकार में नहीं सौंपा. 6 किसी ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है: “मनुष्य है ही
क्या, कि आप उसको याद करें या मनुष्य की संतान, जिसका आप ध्यान रखें?
7 आपने उसे सिर्फ थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से थोड़ा ही नीचे रखा; आपने
उसे प्रताप और सम्मान से सुशोभित किया. 8 आपने सभी वस्तुएं उसके अधीन
कर दीं.” सारी सृष्टि को उनके अधीन करते हुए परमेश्वर ने ऐसा कुछ भी न
छोड़ा, जो उनके अधीन न किया गया हो; किंतु सच्चाई यह है कि अब तक हम
सभी वस्तुओं को उनके अधीन नहीं देख पा रहे. 9 हां, हम उन्हें अवश्य देख
रहे हैं, जिन्हें थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से थोड़ा ही नीचे रखा गया अर्थात्
मसीह येशु को, क्योंकि मृत्यु के दुःख के कारण वह महिमा तथा सम्मान से
सुशोभित हुए कि परमेश्वर के अनुग्रह से वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद
चखें. 10 यह सही ही था कि परमेश्वर, जिनके लिए तथा जिनके द्वारा हर एक
वस्तु का अस्तित्व है, अनेक संतानों को महिमा में प्रवेश कराने के द्वारा उनके
उद्धारकर्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध बनाएं. 11 जो पवित्र करते हैं तथा वे
सभी, जो पवित्र किए जा रहे हैं, दोनों एक ही पिता की संतान हैं. यही कारण है
कि वह उन्हें भाई कहते हुए लज्जित नहीं होते. 12 वह कहते हैं, “मैं अपने
भाई बहनों के सामने आपके नाम की घोषणा करूंगा, सभा के सामने मैं आपकी
वंदना गाऊंगा.” 13 और दोबारा, “मैं उनमें भरोसा करूंगा.” और दोबारा, “मैं
और वे, जिन्हें संतान के रूप में परमेश्वर ने मुझे सौंपा है, यहां हैं.” 14 इसलिये
कि संतान लहू और मांस की होती है, मसीह येशु भी लहू और मांस के हो गए
कि मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को, जिसमें मृत्यु का सामर्थ्य था,
बलहीन कर दें 15 और वह उन सभी को स्वतंत्र कर दें, जो मृत्यु के भय के
कारण जीवन भर दासत्व के अधीन होकर रह गए थे. 16 यह तो सुनिश्चित है
कि वह स्वर्गदूतों की नहीं परंतु अब्राहाम के वंशजों की सहायता करते हैं. 17
इसलिये हर एक पक्ष में मसीह येशु का मनुष्य के समान बन जाना ज़रूरी था,
कि सबके पापों के लिए वह प्रायश्चित बलि होने के लिए परमेश्वर के सामने
कृपालु, और विश्वासयोग्य महापुरोहित बन जाएं. 18 स्वयं उन्होंने अपनी परख
के अवसर पर दुःख उठाया, इसलिये वह अब उन्हें सहायता प्रदान करने में
सक्षम हैं, जिन्हें परीक्षा में डालकर परखा जा रहा है.

3 इसलिये स्वर्गीय बुलाहट में भागीदार पवित्र प्रिय भाई बहनो, मसीह येशु
पर ध्यान दो, जो हमारे लिए परमेश्वर के ईश्वरीय सुसमाचार के दूत तथा
महापुरोहित हैं. 2 वह अपने चुननेवाले के प्रति उसी प्रकार विश्वासयोग्य बने रहे,
जिस प्रकार परमेश्वर के सारे परिवार में मोशेह. 3 मसीह येशु मोशेह की तुलना
में ऊंची महिमा के योग्य पाए गए, जिस प्रकार भवन की तुलना में भवन निर्माता.
4 हर एक भवन का निर्माण किसी न किसी के द्वारा ही किया जाता है किंतु हर
एक वस्तु के बनानेवाले परमेश्वर हैं. 5 जिन विषयों का वर्णन भविष्य में होने पर
था, “उनकी घोषणा करने में परमेश्वर के सारे परिवार में मोशेह एक सेवक के
रूप में विश्वासयोग्य थे,” 6 किंतु मसीह एक पुत्र के रूप में अपने परिवार में
विश्वासयोग्य हैं. और वह परिवार हम स्वयं हैं, यदि हम दृढ़ विश्वास तथा अपने
आशा के गौरव को अंत तक दृढ़तापूर्वक थामे रहते हैं. 7 इसलिये ठीक जिस
प्रकार पवित्र आत्मा का कहना है: “यदि आज, तुम उनकी आवाज सुनो, 8 तो
अपने हृदय कठोर न कर लेना, जैसा तुमने मुझे उकसाते हुए बंजर भूमि, में
परीक्षा के समय किया था, 9 वहां तुम्हारे पूर्वजों ने चालीस वर्षों तक, मेरे महान
कामों को देखने के बाद भी चुनौती देते हुए मुझे परखा था. 10 इसलिये मैं उस
पीढ़ी से क्रोधित रहा; मैंने उनसे कहा, ‘हमेशा ही उनका हृदय मुझसे दूर हो
जाता है, उन्हें मेरे आदेशों का कोई अहसास नहीं है.’ 11 इसलिये मैंने अपने
क्रोध में शपथ ली, ‘मेरे विश्राम में उनका प्रवेश कभी न होगा.’” 12 प्रिय भाई
बहनो, सावधान रहो कि तुम्हारे समाज में किसी भी व्यक्ति का ऐसा बुरा तथा
अविश्वासी हृदय न हो, जो जीवित परमेश्वर से दूर हो जाता है. 13 परंतु जब
तक वह दिन, जिसे आज कहा जाता है, हमारे सामने है, हर दिन एक दूसरे को
प्रोत्साहित करते रहो, ऐसा न हो कि तुममें से कोई भी पाप के छलावे के द्वारा
कठोर बन जाए. 14 यदि हम अपने पहले भरोसे को अंत तक सुरक्षित बनाए
रखते हैं, हम मसीह के सहभागी बने रहते हैं. 15 जैसा कि वर्णन किया गया है:
“यदि आज तुम उनकी आवाज सुनो तो अपने हृदय कठोर न कर लेना, जैसा
तुमने उस समय मुझे उकसाते हुए किया था.” 16 कौन थे वे, जिन्होंने उनकी
आवाज सुनने के बाद उन्हें उकसाया था? क्या वे सभी नहीं, जिन्हें मोशेह मिस्र
देश से बाहर निकाल लाए थे? 17 और कौन थे वे, जिनसे वह चालीस वर्ष तक
क्रोधित रहे? क्या वे ही नहीं, जिन्होंने पाप किया और जिनके शव बंजर भूमि में

पड़े रहे? 18 और फिर कौन थे वे, जिनके संबंध में उन्होंने शपथ खाई थी कि वे
लोग उनके विश्राम में प्रवेश नहीं पाएंगे? क्या ये सब वे ही नहीं थे, जिन्होंने
आज्ञा नहीं मानी थी? 19 इसलिये यह स्पष्ट है कि अविश्वास के कारण वे प्रवेश
नहीं पा सके.

4 इसलिये हम इस विषय में विशेष सावधान रहें कि जब तक उनके विश्राम
में प्रवेश की प्रतिज्ञा मान्य है, आप में से कोई भी उसमें प्रवेश से चूक न
जाए. 2 हमें भी ईश्वरीय सुसमाचार उसी प्रकार सुनाया गया था जैसे उन्हें, किंतु
सुना हुआ वह ईश्वरीय सुसमाचार उनके लिए लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ क्योंकि
उन्होंने इसे विश्वास से ग्रहण नहीं किया था. 3 हमने, जिन्होंने विश्वास किया,
उस विश्राम में प्रवेश पाया, ठीक जैसा उनका कहना था, "जैसे मैंने अपने क्रोध
में शपथ खाई, 'वे मेरे विश्राम में प्रवेश कभी न पाएंगे.'" यद्यपि उनके काम सृष्टि
के प्रारंभ से ही पूरे हो चुके थे. 4 उन्होंने सातवें दिन के संबंध में किसी स्थान
पर इस प्रकार वर्णन किया था: "तब सातवें दिन परमेश्वर ने अपने सभी कामों से
विश्राम किया." 5 एक बार फिर इसी भाग में, "वे मेरे विश्राम में प्रवेश कभी न
करेंगे." 6 इसलिये कि कुछ के लिए यह प्रवेश अब भी खुला आमंत्रण है तथा
उनके लिए भी, जिन्हें इसके पूर्व ईश्वरीय सुसमाचार सुनाया तो गया किंतु वे
अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण प्रवेश न कर पाए, 7 परमेश्वर ने एक दिन
दोबारा तय किया, "आज." इसी दिन के विषय में एक लंबे समय के बाद
उन्होंने दावीद के मुख से यह कहा था, ठीक जैसा कि पहले भी कहा था: "यदि
आज तुम उनकी आवाज सुनो तो अपने हृदय कठोर न कर लेना." 8 यदि उन्हें
यहोशू द्वारा विश्राम प्रदान किया गया होता तो परमेश्वर इसके बाद एक अन्य दिन
का वर्णन न करते. 9 इसलिये परमेश्वर की प्रजा के लिए अब भी एक शब्बाथ
का विश्राम तय है; 10 क्योंकि वह, जो परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है,
अपने कामों से भी विश्राम करता है, जिस प्रकार स्वयं परमेश्वर ने विश्राम किया
था. 11 इसलिये हम उस विश्राम में प्रवेश का पूरे साहस से प्रयास करें, कि किसी
को भी उसी प्रकार अनाज्ञाकारिता का दंड भोगना न पड़े. 12 परमेश्वर का
वचन जीवित, सक्रिय तथा किसी भी दोधारी तलवार से कहीं अधिक धारदार
है, जो हमारे भीतर में प्रवेश कर हमारी आत्मा, प्राण, जोड़ों तथा मज्जा को
भेद देता है. यह हमारे हृदय के उद्धेश्यों तथा विचारों को पहचानने में सक्षम
है. 13 जिन्हें हमें हिसाब देना है, उनकी दृष्टि से कोई भी प्राणी छिपा नहीं
है—सभी वस्तुएं उनके सामने साफ़ और खुली हुई हैं. 14 इसलिये कि वह, जो
आकाशमंडल में से होकर पहुंच गए, जब वह महापुरोहित—परमेश्वर-पुत्र,
मसीह येशु—हमारी ओर हैं; हम अपने विश्वास में स्थिर बने रहें. 15 वह ऐसे
महापुरोहित नहीं हैं, जो हमारी दुर्बलताओं में सहानुभूति न रख सकें परंतु वह
ऐसे महापुरोहित हैं, जो प्रत्येक पक्ष में हमारे समान ही परखे गए फिर भी निष्पाप
ही रहे; 16 इसलिये हम अनुग्रह के सिंहासन के सामने निडर होकर जाएं, कि
हमें ज़रूरत के अवसर पर कृपा तथा अनुग्रह प्राप्त हो.

5 हर एक महापुरोहित मनुष्यों में से चुना जाता है और मनुष्यों के ही लिए
परमेश्वर से संबंधित संस्कारों के लिए चुना जाता है कि पापों के लिए भेंट
तथा बलि दोनों चढ़ाया करे. 2 उसमें अज्ञानों तथा भूले-भटकों के साथ नम्र
व्यवहार करने की क्षमता होती है क्योंकि वह स्वयं भी निर्बलताओं के अधीन
है. 3 इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह पापों के लिए बलि चढ़ाया
करे—लोगों के लिए तथा स्वयं अपने लिए. 4 किसी भी व्यक्ति को यह सम्मान
अपनी कोशिश से नहीं परंतु परमेश्वर की बुलाहट द्वारा प्राप्त होती है, जैसे
हारोन को. 5 इसी प्रकार मसीह ने भी महापुरोहित के पद पर बैठने के लिए स्वयं
को ऊंचा नहीं किया परंतु उन्होंने, जिन्होंने उनसे यह कहा, "तुम मेरे पुत्र हो;
आज मैं तुम्हारा पिता हुआ हूं." 6 जैसा उन्होंने दूसरी जगह भी कहा है, "तुम
मेलखीज़ेदेक की शृंखला में, एक अनंत काल के पुरोहित हो." **(aiōn g165)** 7
अपने देह में रहने के समय में उन्होंने ऊंचे शब्द में रोते हुए, आंसुओं के साथ
उनके सामने प्रार्थनाएं और विनती की, जो उन्हें मृत्यु से बचा सकते थे, उनकी
परमेश्वर में भक्ति के कारण उनकी प्रार्थनाएं स्वीकार की गई. 8 पुत्र होने पर
भी, उन्होंने अपने दुःख उठाने से आज्ञा मानने की शिक्षा ली. 9 फिर, सिद्ध
घोषित किए जाने के बाद वह स्वयं उन सबके लिए, जो उनकी आज्ञाओं का
पालन करते हैं, अनंत काल उद्धार का कारण बन गए; **(aiōnios g166)** 10
क्योंकि वह परमेश्वर द्वारा मेलखीज़ेदेक की श्रृंखला के महापुरोहित चुने गए थे.
11 हमारे पास इस विषय में कहने के लिए बहुत कुछ है तथा इसका वर्णन करना
भी कठिन काम है क्योंकि तुम अपनी सुनने की क्षमता खो बैठे हो. 12 समय
के अनुसार तो तुम्हें अब तक शिक्षक बन जाना चाहिए था किंतु अब आवश्यक
यह हो गया है कि कोई तुम्हें दोबारा परमेश्वर के ईश्वरीय वचनों के शुरू के
सिद्धांतों की शिक्षा दे. तुम्हें ठोस आहार नहीं, दूध की ज़रूरत हो गई है! 13
वह जो मात्र दूध का सेवन करता है, धार्मिकता की शिक्षा से अपरिचित है,
क्योंकि वह शिशु है. 14 ठोस आहार सयानों के लिए होता है, जिन्होंने लगातार
अभ्यास के द्वारा अपनी ज्ञानेन्द्रियों को इसके प्रति निपुण बना लिया है कि क्या
सही है और क्या गलत.

6 इसलिये हम सिद्धता को अपना लक्ष्य बना लें, मसीह संबंधित प्रारंभिक
शिक्षाओं से ऊपर उठकर परिपक्वता की ओर बढ़ें. नींव दोबारा न रखें, जो
व्यर्थ की प्रथाओं से मन फिराना और परमेश्वर के प्रति विश्वास, 2 शुद्ध होने के
विषय, सिर पर हाथ रखने, मरे हुओं के जी उठने तथा अनंत दंड के विषय है.
(aiōnios g166) 3 यदि परमेश्वर हमें आज्ञा दें तो हम ऐसा ही करेंगे. 4 जिन्होंने
किसी समय सच के ज्ञान की ज्योति प्राप्त कर ली थी, जिन्होंने स्वर्गीय वरदान
का स्वाद चख लिया था, जो पवित्र आत्मा के सहभागी हो गए थे, 5 तथा जो
परमेश्वर के उत्तम वचन के, और आनेवाले युग के सामर्थ्य का स्वाद चख लेने
के बाद भी **(aiōn g165)** 6 परमेश्वर से दूर हो गए, उन्हें दोबारा पश्चाताप की
ओर ले आना असंभव है क्योंकि वे परमेश्वर-पुत्र को अपने लिए दोबारा क्रूस
पर चढ़ाने तथा सार्वजनिक रूप से उनका ठट्ठा करने में शामिल हो जाते हैं. 7
वह भूमि, जो वृष्टि के जल को सोखकर किसान के लिए उपयोगी उपज उत्पन्न
करती है, परमेश्वर की ओर से आशीष पाती है. 8 किंतु वही भूमि यदि कांटा
और ऊंटकटारे उत्पन्न करती है तो वह किसी काम की नहीं है तथा शापित होने
पर है—आग में जलाया जाना ही उसका अंत है. 9 प्रियो, हालांकि हमने तुम्हारे
सामने इस विषय को इस रीति से स्पष्ट किया है; फिर भी हम तुम्हारे लिए
इससे अच्छी वस्तुओं तथा उद्धार से संबंधित आशीषों के प्रति आश्वस्त हैं. 10
परमेश्वर अन्यायी नहीं हैं कि उनके सम्मान के लिए तुम्हारे द्वारा पवित्र लोगों के
भले के लिए किए गए—तथा अब भी किए जा रहे—भले कामों और तुम्हारे
द्वारा उनके लिए अभिव्यक्त प्रेम की उपेक्षा करें. 11 हमारी यही इच्छा है कि
तुममें से हर एक में ऐसा उत्साह प्रदर्शित हो कि अंत तक तुममें आशा का पूरा
निश्चय स्पष्ट दिखाई दे. 12 तुम आलसी न बनो परंतु उन लोगों के पद-चिह्नों पर
चलो, जो विश्वास तथा धीरज द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं. 13 परमेश्वर ने जब
अब्राहाम से प्रतिज्ञा की तो शपथ लेने के लिए उनके सामने स्वयं से बड़ा और
कोई न था, इसलिये उन्होंने अपने ही नाम से यह शपथ ली, 14 "निश्चयतः मैं
तुम्हें आशीष दूंगा और तुम्हारे वंश को बढ़ाता जाऊंगा" 15 इसलिये अब्राहाम
धीरज रखकर प्रतीक्षा करते रहे तथा उन्हें वह प्राप्त हुआ, जिसकी प्रतिज्ञा की
गई थी. 16 मनुष्य तो स्वयं से बड़े व्यक्ति की शपथ लेता है; तब दोनों पक्षों के
लिए पुष्टि के रूप में ली गई शपथ सभी झगड़ों का अंत कर देती है. 17 इसी
प्रकार परमेश्वर ने इस उद्देश्य से शपथ ली कि वह प्रतिज्ञा के वारिसों को अपने
न बदलनेवाले उद्देश्य के विषय में पूरी तरह संतुष्ट करें. 18 इसलिए कि दो न

बदलनेवाली वस्तुओं द्वारा, जिनके विषय में परमेश्वर झूठे साबित हो ही नहीं सकते; हमें, जिन्होंने उनकी शरण ली है, उस आशा को सुरक्षित रखने का दृढ़ता से साहस प्राप्त हो, जो हमारे सामने प्रस्तुत की गई है. 19 यही आशा हमारे प्राण का लंगर है, स्थिर तथा दृढ़. जो उस पर्दे के भीतर पहुंचता भी है, 20 जहां मसीह येशु ने अगुआ होकर हमारे लिए मेलखीज़ेदेक की श्रृंखला के एक अनंत काल का महापुरोहित बनकर प्रवेश किया. **(aiōn g165)**

7 परम प्रधान परमेश्वर के पुरोहित शालेम नगर के राजा मेलखीज़ेदेक ने अब्राहाम से उस समय भेंट की और उन्हें आशीष दी, जब अब्राहाम राजाओं को हरा करके लौट रहे थे, 2 उन्हें अब्राहाम ने युद्ध में प्राप्त हुई सामग्री का दसवां अंश भेंट किया. मेलखीज़ेदेक नाम का प्राथमिक अर्थ है "धार्मिकता के राजा"; तथा दूसरा अर्थ होगा "शांति के राजा" क्योंकि वह "शालेम नगर के राजा" थे. 3 किसी को भी मेलखीज़ेदेक की वंशावली के विषय में कुछ भी मालूम नहीं है जिसका न पिता न माता न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अंत है, परमेश्वर के पुत्र के समान वह अनंत काल के पुरोहित हैं. 4 अब विचार करो कि कैसे महान थे यह व्यक्ति, जिन्हें हमारे गोत्रपिता अब्राहाम ने युद्ध में प्राप्त हुई वस्तुओं का सबसे अच्छा दसवां अंश भेंट किया! 5 मोशेह के द्वारा प्रस्तुत व्यवस्था में लेवी के वंशजों के लिए, जो पुरोहित के पद पर चुने गए हैं, यह आज्ञा है कि वे सब लोगों से दसवां अंश इकट्ठा करें अर्थात् उनसे, जो उनके भाई हैं—अब्राहाम की संतान. 6 किंतु उन्होंने, जिनकी वंशावली किसी को मालूम नहीं, अब्राहाम से दसवां अंश प्राप्त किया तथा उनको आशीष दी, जिनसे प्रतिज्ञाएं की गई थी. 7 यह एक विवाद रहित सच है कि छोटा बड़े से आशीर्वाद प्राप्त करता है. 8 इस संदर्भ में पुरोहित जो मर जानेवाला मनुष्य है, दसवां अंश प्राप्त करते हैं किंतु यहां इसको पानेवाले मेलखीज़ेदेक के विषय में यह कहा गया है कि वह जीवित हैं. 9 इसलिये यह कह सकता है कि लेवी ने भी, जो दसवां अंश प्राप्त करता है, उस समय दसवां अंश दिया, जब अब्राहाम ने मेलखीज़ेदेक को दसवां अंश भेंट किया, 10 जब मेलखीज़ेदेक ने अब्राहाम से भेंट की, उस समय तो लेवी का जन्म भी नहीं हुआ था—वह अपने पूर्वज के शरीर में ही थे. 11 अब यदि सिद्धि (या पूर्णता) लेवी याजकता के माध्यम से प्राप्त हुई—क्योंकि इसी के आधार पर लोगों ने व्यवस्था प्राप्त की थी—तब एक ऐसे पुरोहित की क्या ज़रूरत थी, जिसका आगमन मेलखीज़ेदेक की श्रृंखला में हो, न कि हारोन की श्रृंखला में? 12 क्योंकि जब कभी पुरोहित पद बदला जाता है, व्यवस्था में बदलाव भी आवश्यक हो जाता है. 13 यह सब हम उनके विषय में कह रहे हैं, जो एक दूसरे गोत्र के थे. उस गोत्र के किसी भी व्यक्ति ने वेदी पर पुरोहित के रूप में सेवा नहीं की. 14 यह तो प्रकट है कि हमारे प्रभु यहूदाह गोत्र से थे. मोशेह ने इस गोत्र से पुरोहितों के होने का कहीं कोई वर्णन नहीं किया. 15 मेलखीज़ेदेक के समान एक अन्य पुरोहित के आगमन से यह और भी अधिक साफ़ हो जाता है, 16 मेलखीज़ेदेक शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की व्यवस्था के आधार पर नहीं परंतु एक अविनाशी जीवन के सामर्थ्य के आधार पर पुरोहित बने थे 17 क्योंकि इस विषय में मसीह येशु से संबंधित यह पुष्टि की गई: "तुम मेलखीज़ेदेक की श्रृंखला में, एक अनंत काल के पुरोहित हो." **(aiōn g165)** 18 एक ओर पहली आज्ञा का बहिष्कार उसकी दुर्बलता तथा निष्फलता के कारण कर दिया गया. 19 क्योंकि व्यवस्था सिद्धता की स्थिति लाने में असफल रही—दूसरी ओर अब एक उत्तम आशा का उदय हो रहा है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंचते हैं. 20 यह सब शपथ लिए बिना नहीं हुआ. वास्तव में पुरोहितों की नियुक्ति बिना किसी शपथ के होती थी 21 किंतु मसीह की नियुक्ति उनकी शपथ के द्वारा हुई, जिन्होंने उनके विषय में कहा: "प्रभु ने शपथ ली है और वह अपना विचार परिवर्तित नहीं करेंगे: 'तुम अनंत काल के पुरोहित हो.'" **(aiōn g165)** 22 इसका मतलब यह हुआ कि मसीह येशु एक उत्तम वाचा के जमानतदार बन गए हैं. 23 एक पूर्व में पुरोहितों की संख्या ज्यादा होती थी क्योंकि हर एक पुरोहित की मृत्यु के साथ उसकी सेवा समाप्त हो जाती थी; 24 किंतु दूसरी ओर मसीह येशु, इसलिये कि वह अनंत काल के हैं, अपने पद पर स्थायी हैं. **(aiōn g165)** 25 इसलिये वह उनके उद्धार के लिए सामर्थ्यी हैं, जो उनके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं क्योंकि वह अपने विनती करनेवालों के पक्ष में पिता के सामने निवेदन प्रस्तुत करने के लिए सदा-सर्वदा जीवित हैं. 26 हमारे पक्ष में सही यह था कि हमारे महापुरोहित पवित्र, निर्दोष, त्रुटिहीन, पापियों से अलग किए हुए तथा स्वर्ग से भी अधिक ऊंचे हों. 27 इन्हें प्रतिदिन, पहले तो स्वयं के पापों के लिए, इसके बाद लोगों के पापों के लिए बलि भेंट करने की ज़रूरत ही नहीं थी क्योंकि इसकी पूर्ति उन्होंने एक ही बार अपने आपको बलि के रूप में भेंट कर हमेशा के लिए कर दी. 28 व्यवस्था, महापुरोहितों के रूप में मनुष्यों को चुनता है, जो मानवीय दुर्बलताओं में सीमित होते हैं किंतु शपथ के वचन ने, जो व्यवस्था के बाद प्रभावी हुई, एक पुत्र को चुना, जिन्हें अनंत काल के लिए सिद्ध बना दिया गया. **(aiōn g165)**

8 बड़ी सच्चाई यह है: हमारे महापुरोहित वह हैं, जो स्वर्ग में महामहिम के दायें पक्ष में बैठे हैं, 2 जो वास्तविक मंदिर में सेवारत हैं, जिसका निर्माण किसी मानव ने नहीं, स्वयं प्रभु ने किया है. 3 हर एक महापुरोहित का चुनाव भेंट तथा बलि अर्पण के लिए किया जाता है. इसलिये आवश्यक हो गया कि इस महापुरोहित के पास भी अर्पण के लिए कुछ हो. 4 यदि मसीह येशु पृथ्वी पर होते, वह पुरोहित हो ही नहीं सकते थे क्योंकि यहां व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ाने के लिए पुरोहित हैं. 5 ये वे पुरोहित हैं, जो स्वर्गीय वस्तुओं के प्रतिरूप तथा प्रतिबिंब मात्र की आराधना करते हैं, क्योंकि मोशेह को, जब वह तंबू का निर्माण करने पर थे, परमेश्वर के द्वारा यह चेतावनी दी गई थी: यह ध्यान रखना कि तुम तंबू का निर्माण ठीक-ठीक वैसा ही करो, जैसा तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया था, 6 किंतु अब मसीह येशु ने अन्य पुरोहितों की तुलना में कहीं अधिक अच्छी सेवकाई प्राप्त कर ली है: अब वह एक उत्तम वाचा के मध्यस्थ भी हैं, जिसका आदेश उत्तम प्रतिज्ञाओं पर हुआ है. 7 यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती तो दूसरी की ज़रूरत ही न होती. 8 स्वयं परमेश्वर ने उस पीढ़ी को दोषी पाकर यह कहा: "यह देख लेना, वे दिन आ रहे हैं, यह प्रभु की वाणी है, जब मैं इस्राएल वंश के साथ तथा यहूदाह गोत्र के साथ एक नयी वाचा स्थापित करूंगा. 9 वैसी नहीं, जैसी मैंने उनके पूर्वजों से उस समय की थी, जब मैंने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था, क्योंकि वे मेरी वाचा में स्थिर नहीं रहे, इसलिये मैं उनसे दूर हो गया, यह प्रभु का कहना है. 10 किंतु मैं इस्राएल के लोगों के साथ यह वाचा बांधूंगा यह प्रभु का कथन है उन दिनों के बाद मैं अपना नियम उनके हृदय में लिखूंगा और उनके मस्तिष्क पर अंकित कर दूंगा. मैं उनका परमेश्वर हो जाऊंगा, तथा वे मेरी प्रजा. 11 तब हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को शिक्षा नहीं देंगे, हर एक व्यक्ति अपने सजातीय को पुनः यह नहीं कहेगा, 'प्रभु को जान लो,' क्योंकि वे सभी मुझे जान जाएंगे, छोटे से बड़े तक, यह प्रभु की वाणी है. 12 क्योंकि मैं उनकी पापिष्ठता क्षमा कर दूंगा तथा इसके बाद उनका पाप मैं पुनः स्मरण ही न करूंगा." 13 जब परमेश्वर एक "नई" वाचा का वर्णन कर रहे थे, तब उन्होंने पहले को अनुपयोगी घोषित कर दिया. जो कुछ अनुपयोगी तथा जीर्ण हो रहा है, वह नष्ट होने पर है.

9 पहली वाचा में भी परमेश्वर की आराधना तथा सांसारिक मंदिर के विषय में नियम थे. 2 क्योंकि एक तंबू बनाया गया था, जिसके बाहरी कमरे में दीपस्तंभ, चौकी तथा पवित्र रोटी रखी जाती थी. यह तंबू पवित्र स्थान कहलाता था. 3 दूसरे पर्दे से आगे जो तंबू था, वह परम पवित्र स्थान कहलाता था, 4 वहां

धूप के लिए सोने की वेदी, सोने की पत्रियों से मढ़ी हुई वाचा का संदूक, जिसमें
मन्‍ना से भरा सोने का बर्तन, हमेशा कोमल पत्ते लगते रहनेवाली हारोन की
लाठी तथा वाचा की पटियां रखे हुए थे. 5 इसके अलावा संदूक के ऊपर
तेजोमय करूब करुणासन को ढांपे हुए थे. परंतु अब इन सबका विस्तार से वर्णन
संभव नहीं. 6 इन सबके ऐसे प्रबंध के बाद परमेश्वर की आराधना के लिए
पुरोहित हर समय बाहरी तंबू में प्रवेश किया करते थे. 7 किंतु दूसरे कमरे में मात्र
महापुरोहित ही लहू लेकर प्रवेश करता था और वह भी वर्ष में सिर्फ एक ही
अवसर पर—स्वयं अपने लिए तथा लोगों द्वारा अनजाने में किए गए पापों के
लिए—बलि अर्पण के लिए. 8 पवित्र आत्मा यह बात स्पष्ट कर रहे हैं कि जब
तक बाहरी कमरा है, परम पवित्र स्थान में प्रवेश-मार्ग खुला नहीं है. 9 यह
बाहरी तंबू वर्तमान काल का प्रतीक है. सच यह है कि भेंटें तथा बलि, जो
पुरोहित के द्वारा चढ़ाई जाती हैं, आराधना करनेवालों के विवेक को निर्दोष नहीं
बना देतीं. 10 ये सुधार के समय तक ही असरदार रहेंगी क्योंकि इनका संबंध
सिर्फ खान-पान तथा भिन्‍न-भिन्‍न शुद्ध करने की विधियों से है—उन विधियों से,
जो शरीर से संबंधित हैं. 11 किंतु जब मसीह आनेवाली अच्छी वस्तुओं के
महापुरोहित के रूप में प्रकट हुए, उन्होंने उत्तम और सिद्ध तंबू में से, जो मनुष्य
के हाथ से नहीं बना अर्थात् इस सृष्टि का नहीं था, 12 बकरों और बछड़ों के
नहीं परंतु स्वयं अपने लहू के द्वारा परम पवित्र स्थान में सिर्फ एक ही प्रवेश में
अनंत छुटकारा प्राप्‍त किया. (aiōnios g166) 13 क्योंकि यदि बकरों और बैलों
का लहू तथा कलोर की राख का छिड़काव सांस्कारिक रूप से अशुद्ध हुए
मनुष्यों के शरीर को शुद्ध कर सकता था 14 तो मसीह का लहू, जिन्होंने अनंत
आत्मा के माध्यम से स्वयं को परमेश्वर के सामने निर्दोष बलि के रूप में भेंट
कर दिया, जीवित परमेश्वर की सेवा के लिए तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से
शुद्ध कैसे न करेगा! (aiōnios g166) 15 इसलिये वह एक नई वाचा के मध्यस्थ
हैं कि वे सब, जिनको बुलाया गया है, प्रतिज्ञा की हुई अनंत उत्तराधिकार प्राप्‍त
कर सकें क्योंकि इस मृत्यु के द्वारा उन अपराधों का छुटकारा पूरा हो चुका है,
जो उस समय किए गए थे, जब पहली वाचा प्रभावी थी. (aiōnios g166) 16
जहां वाचा है, वहां ज़रूरी है कि वाचा बांधनेवाले की मृत्यु हो, 17 क्योंकि
वाचा उसके बांधनेवाले की मृत्यु के साबित होने पर ही जायज़ होती है; जब तक
वह जीवित रहता है, वाचा प्रभावी हो ही नहीं सकती. 18 यही कारण है कि
पहली वाचा भी बिना लहू के प्रभावी नहीं हुई थी. 19 जब मोशेह अपने मुख से
व्यवस्था के अनुसार इस्राएल को सारी आज्ञा दे चुके, उन्होंने बछड़ों और
बकरों का लहू लेकर जल, लाल ऊन तथा जूफ़ा झाड़ी की छड़ी के द्वारा
व्यवस्था की पुस्तक तथा इस्राएली प्रजा दोनों ही पर यह कहते हुए छिड़क
दिया. 20 "यह उस वाचा, जिसे पालन करने की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हें दी है,
उसका रक्त है." 21 इसी प्रकार उन्होंने तंबू और सेवा के लिए इस्तेमाल किए
सभी पात्रों पर भी लहू छिड़क दिया. 22 वस्तुतः व्यवस्था के अंतर्गत प्रायः
हर एक वस्तु लहू के छिड़काव द्वारा पवित्र की गई. बलि-लहू के बिना पाप
क्षमा संभव नहीं. 23 इसलिये यह ज़रूरी था कि स्वर्गीय वस्तुओं का प्रतिरूप
इन्हीं के द्वारा शुद्ध किया जाए किंतु स्वयं स्वर्गीय वस्तुएं इनकी तुलना में उत्तम
बलियों द्वारा. 24 मसीह ने जिस पवित्र स्थान में प्रवेश किया, वह मनुष्य के
हाथों से बना नहीं था, जो वास्तविक का प्रतिरूप मात्र हो, परंतु स्वर्ग ही में, कि
अब हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट हों. 25 स्थिति ऐसी भी नहीं
कि वह स्वयं को बलि स्वरूप बार-बार भेंट करेंगे, जैसे महापुरोहित परम पवित्र
स्थान में वर्ष-प्रतिवर्ष उस बलि-लहू को लेकर प्रवेश किया करता था, जो उसका
अपना लहू नहीं होता था. 26 अन्यथा मसीह को सृष्टि के प्रारंभ से दुःख सहना
आवश्यक हो जाता किंतु अब युगों की समाप्‍ति पर वह मात्र एक ही बार स्वयं
अपनी ही बलि के द्वारा पाप को मिटा देने के लिए प्रकट हो गए. (aiōn g165)
27 जिस प्रकार हर एक मनुष्य के लिए यह निर्धारित है कि एक बार उसकी
मृत्यु हो इसके बाद न्याय, 28 उसी प्रकार मसीह येशु अनेकों के पापों के उठाने
के लिए एक ही बार स्वयं को भेंट करने के बाद अब दोबारा प्रकट होंगे—पाप
के उठाने के लिए नहीं परंतु उनकी छुड़ौती के लिए जो उनके इंतजार में हैं.

10 व्यवस्था केवल आनेवाली उत्तम वस्तुओं की छाया मात्र है, न ही उनका
असली रूप; इसलिये वर्ष-प्रतिवर्ष, निरंतर रूप से बलिदान के द्वारा यह
आराधकों को सिद्ध कभी नहीं बना सकता. 2 नहीं तो बलियों का भेंट किया
जाना समाप्‍त न हो जाता? क्योंकि एक बार शुद्ध हो जाने के बाद आराधकों में
पाप का अहसास ही न रह जाता 3 वस्तुतः इन बलियों के द्वारा वर्ष-प्रतिवर्ष पाप
को याद किया जाता है, 4 क्योंकि यह असंभव है कि बैलों और बकरों का
बलि-लहू पापों को हर लें. 5 इसलिये, जब वह संसार में आए, उन्होंने कहा:
"बलि और भेंट की आपने इच्छा नहीं की, परंतु एक शरीर आपने मेरे लिए
तैयार किया है; 6 आप हवन बलि और पाप के लिए भेंट की गई बलियों से
संतुष्ट नहीं हुए. 7 तब मैंने कहा, 'प्रभु परमेश्वर, मैं आ गया हूं कि आपकी
इच्छा पूरी करूं. पवित्र शास्त्र में यह मेरा ही वर्णन है.'" 8 उपरोक्त कथन के बाद
उन्होंने पहले कहा: बलि तथा भेंटें, हवन-बलियों तथा पापबलियों की आपने
इच्छा नहीं की और न आप उनसे संतुष्ट हुए. ये व्यवस्था के अनुसार ही भेंट
किए जाते हैं. 9 तब उन्होंने कहा, "लीजिए, मैं आ गया हूं कि आपकी इच्छा
पूरी करूं." इस प्रकार वह पहले को अस्वीकार कर द्वितीय को नियुक्त करते हैं.
10 इसी इच्छा के प्रभाव से, हम मसीह येशु की देह-बलि के द्वारा उनके लिए
अनंत काल के लिए पाप से अलग कर दिए गए. 11 हर एक पुरोहित एक ही
प्रकार की बलि दिन-प्रतिदिन भेंट किया करता है, जो पाप को हर ही नहीं
सकती. 12 किंतु जब मसीह येशु पापों के लिए एक ही बार सदा-सर्वदा के लिए
मात्र एक बलि भेंट कर चुके, वह परमेश्वर के दायें पक्ष में बैठ गए, 13 तब वहां
वह उस समय की प्रतीक्षा करने लगे कि कब उनके शत्रु उनके अधीन बना दिए
जाएंगे 14 क्योंकि एक ही बलि के द्वारा उन्होंने उन्हें सर्वदा के लिए सिद्ध बना
दिया, जो उनके लिए अलग किए गए हैं. 15 पवित्र आत्मा भी, जब वह यह
कह चुके, यह गवाही देते हैं: 16 "मैं उनके साथ यह वाचा बांधूंगा यह प्रभु का
कथन है उन दिनों के बाद मैं अपना नियम उनके हृदय में लिखूंगा और उनके
मस्तिष्क पर अंकित कर दूंगा." 17 वह आगे कहते हैं: "उनके पाप और उनके
अधर्म के कामों को मैं इसके बाद याद न रखूंगा." 18 जहां इन विषयों के लिए
पाप की क्षमा है, वहां पाप के लिए किसी भी बलि की ज़रूरत नहीं रह जाती.
19 प्रिय भाई बहनो, इसलिये कि मसीह येशु के लहू के द्वारा हमें परम पवित्र
स्थान में जाने के लिए साहस प्राप्‍त हुआ है, 20 एक नए तथा जीवित मार्ग से,
जिसे उन्होंने उस पर्दे, अर्थात् अपने शरीर, में से हमारे लिए खोल दिया है, 21
और, परमेश्वर के परिवार में हमारे लिए एक सबसे उत्तम पुरोहित निर्धारित हैं,
22 हम अपने अशुद्ध विवेक से शुद्ध होने के लिए अपने हृदय को सींच कर,
निर्मल जल से अपने शरीर को शुद्ध कर, विश्वास के पूरे आश्वासन के साथ,
निष्कपट हृदय से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें. 23 अब हम बिना किसी
शक के अपनी उस आशा में अटल रहें, जिसे हमने स्वीकार किया है क्योंकि
जिन्होंने प्रतिज्ञा की है, वह विश्वासयोग्य हैं. 24 हम यह भी विशेष ध्यान रखें
कि हम आपस में प्रेम और भले कामों में एक दूसरे को किस प्रकार प्रेरित करें
25 तथा हम आराधना सभाओं में लगातार इकट्ठा होने में सुस्त न हो जाएं, जैसे
कि कुछ हो ही चुके हैं. एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहो और इस विषय में
और भी अधिक नियमित हो जाओ, जैसा कि तुम देख ही रहे हो कि वह दिन
पास आता जा रहा है. 26 यदि सत्य ज्ञान की प्राप्‍ति के बाद भी हम जानबूझकर
पाप करते जाएं तो पाप के लिए कोई भी बलि बाकी नहीं रह जाती; 27 सिवाय
न्याय-दंड की भयावह प्रतीक्षा तथा क्रोध की आग के, जो सभी विरोधियों को

भस्म कर देगी. 28 जो कोई मोशेह की व्यवस्था की अवहेलना करता है, उसे दो
या तीन प्रत्यक्षदर्शी गवाहों के आधार पर, बिना किसी कृपा के, मृत्यु दंड दे
दिया जाता है. 29 उस व्यक्ति के दंड की कठोरता के विषय में विचार करो,
जिसने परमेश्वर के पुत्र को अपने पैरों से रौंदा तथा वाचा के लहू को अशुद्ध
किया, जिसके द्वारा वह स्वयं पवित्र किया गया था तथा जिसने अनुग्रह के
आत्मा का अपमान किया? 30 हम तो उन्हें जानते हैं, जिन्होंने यह धीरज दिया,
“बदला मैं लूंगा; यह ज़िम्मेदारी मेरी ही है” तब यह भी, “प्रभु ही अपनी प्रजा
का न्याय करेंगे.” 31 भयानक होती है जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ने की
स्थिति. 32 उन प्रारंभिक दिनों की स्थिति को याद करो जब ज्ञान प्राप्त करने के
बाद तुम कष्टों की स्थिति में संघर्ष करते रहे 33 कुछ तो सार्वजनिक रूप से
उपहास पात्र बनाए जाकर निंदा तथा कष्टों के द्वारा और कुछ इसी प्रकार के
व्यवहार को सह रहे अन्य विश्वासियों का साथ देने के कारण. 34 तुमने उन पर
सहानुभूति व्यक्त की, जो बंदी बनाए गए थे तथा तुमने संपत्ति के छीन जाने को
भी इसलिये सहर्ष स्वीकार कर लिया कि तुम्हें यह मालूम था कि निश्चित ही
उत्तम और स्थायी है तुम्हारी संपदा. 35 इसलिये अपने दृढ विश्वास से दूर न हो
जाओ जिसका प्रतिफल बड़ा है. 36 इस समय ज़रूरत है धीरज की कि जब तुम
परमेश्वर की इच्छा पूरी कर चुको, तुम्हें वह प्राप्त हो जाए जिसकी प्रतिज्ञा की
गई थी. 37 क्योंकि जल्द ही वह, “जो आनेवाला है, आ जाएगा वह देर
नहीं करेगा.” 38 किंतु, “जीवित वही रहेगा, जिसने अपने विश्वास के द्वारा
धार्मिकता प्राप्त की है. किंतु यदि वह भयभीत हो पीछे हट जाए तो उसमें मेरी
प्रसन्नता न रह जाएगी.” 39 हम उनमें से नहीं हैं, जो पीछे हटकर नाश हो जाते
हैं परंतु हम उनमें से हैं, जिनमें वह आत्मा का रक्षक विश्वास छिपा है.

11 और विश्वास उन तत्वों का निश्चय है, हमने जिनकी आशा की है,
तथा उन तत्वों का प्रमाण है, जिन्हें हमने देखा नहीं है. 2 इसी के द्वारा
प्राचीनों ने परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त की. 3 यह विश्वास ही है, जिसके द्वारा
हमने यह जाना है कि परमेश्वर की आज्ञा मात्र से सारी सृष्टि अस्तित्व में आ गई.
वह सब, जो दिखता है उसकी उत्पत्ति देखी हुई वस्तुओं से नहीं हुई. (aiōn
g165) 4 यह विश्वास ही था, जिसके द्वारा हाबिल ने परमेश्वर को काइन की
तुलना में बेहतर बलि भेंट की, जिसके कारण स्वयं परमेश्वर ने प्रशंसा के साथ
हाबिल को धर्मी घोषित किया. परमेश्वर ने हाबिल की भेंट की प्रशंसा की.
यद्यपि उनकी मृत्यु हो चुकी है, उनका यही विश्वास आज भी हमारे लिए गवाही
है. 5 यह विश्वास ही था कि हनोख उठा लिए गए कि वह मृत्यु का अनुभव न
करें: “उन्हें फिर देखा न गया, स्वयं परमेश्वर ने ही उन्हें अपने साथ ले लिया
था.” उन्हें उठाए जाने के पहले उनकी प्रशंसा की गई थी कि उन्होंने परमेश्वर
को प्रसन्न किया था. 6 विश्वास की कमी में परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव
है क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले व्यक्ति के लिए यह ज़रूरी है कि वह यह
विश्वास करे कि परमेश्वर हैं और यह भी कि वह उन्हें प्रतिफल देते हैं, जो
उनकी खोज करते हैं. 7 यह विश्वास ही था कि अब तक अनदेखी वस्तुओं के
विषय में नोहा को परमेश्वर से चेतावनी प्राप्त हुई और नोहा ने अत्यंत भक्ति
में अपने परिवार की सुरक्षा के लिए एक विशाल जलयान का निर्माण किया
तथा विश्वास के द्वारा संसार को धिक्कारा और मीरास में उस धार्मिकता को
प्राप्त किया, जो विश्वास से प्राप्त होती है. 8 यह विश्वास ही था, जिसके द्वारा
अब्राहाम ने परमेश्वर के बुलाने पर घर-परिवार का त्याग कर एक अन्य देश को
चले जाने के लिए उनकी आज्ञा का पालन किया—वह देश, जो परमेश्वर उन्हें
मीरास में देने पर थे. वह यह जाने बिना ही चल पड़े कि वह कहां जा रहे थे. 9
वह विश्वास के द्वारा ही उस प्रतिज्ञा किए हुए देश में वैसे रहे, जैसे विदेश में एक
अजनबी रहता है. विदेश में एक अजनबी की तरह उन्होंने यित्सहाक और
याकोब के साथ तंबुओं में निवास किया, जो उसी प्रतिज्ञा के साथ वारिस थे. 10
उनकी दृष्टि उस स्थायी नगर की ओर थी, जिसके रचनेवाले और बनानेवाले
परमेश्वर हैं. 11 यह विश्वास ही था कि साराह ने भी गर्भधारण की क्षमता प्राप्त
की हालांकि उनकी अवस्था इस योग्य नहीं रह गई थी. उन्होंने विश्वास किया
कि परमेश्वर, जिन्होंने इसकी प्रतिज्ञा की थी, विश्वासयोग्य हैं. 12 इस कारण
उस व्यक्ति के द्वारा, जो मरे हुए से थे, इतने वंशज पैदा हुए, जितने आकाश में
तारे तथा समुद्र के किनारे पर रेत के कण हैं. 13 विश्वास की स्थिति में ही इन
सब की मृत्यु हुई, यद्यपि उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त नहीं हुई थी, परंतु
उन्होंने उन तत्वों को दूर से पहचानकर इस अहसास के साथ उनका स्वागत
किया कि वे स्वयं पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं. 14 इस प्रकार के भावों को
प्रकट करने के द्वारा वे यह साफ़ कर देते हैं कि वे अपने ही देश की खोज में हैं.
15 वस्तुतः यदि वे उस देश को याद कर रहे थे, जिससे वे निकल आए थे, तब
उनके सामने वहां लौट जाने का सुअवसर भी होता 16 किंतु सच्चाई यह है कि
उन्हें एक बेहतर देश की इच्छा थी, जो स्वर्गीय है. इसलिये उन लोगों द्वारा
परमेश्वर कहलाए जाने में परमेश्वर को किसी प्रकार की लज्जा नहीं है क्योंकि
परमेश्वर ही ने उनके लिए एक नगर का निर्माण किया है. 17 यह विश्वास ही था
कि अब्राहाम ने, जब उन्हें परखा गया, यित्सहाक को बलि के लिए भेंट कर
दिया. जिन्होंने प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया था, वह अपने एकलौते पुत्र को भेंट
कर रहे थे, 18 यह वही थे, जिनसे कहा गया था, “तुम्हारे वंशज यित्सहाक के
माध्यम से नामित होंगे.” 19 अब्राहाम यह समझ चुके थे कि परमेश्वर में मरे
हुओं को जीवित करने का सामर्थ्य है. एक प्रकार से उन्होंने भी यित्सहाक को
मरे हुओं में से जीवित प्राप्त किया. 20 यह विश्वास ही था कि यित्सहाक ने
याकोब तथा एसाव को उनके आनेवाले जीवन के लिए आशीर्वाद दिया. 21 यह
विश्वास ही था कि याकोब ने अपने मरते समय योसेफ़ के दोनों पुत्रों को अपनी
लाठी का सहारा ले आशीर्वाद दिया और आराधना की. 22 यह विश्वास ही था
कि योसेफ़ ने अपनी मृत्यु के समय इस्राएलियों के निर्गमन जाने का वर्णन किया
तथा अपनी अस्थियों के विषय में आज्ञा दीं. 23 यह विश्वास ही था कि जब
मोशेह का जन्म हुआ, उनके माता-पिता ने उन्हें तीन माह तक छिपाए रखा.
उन्होंने देखा कि शिशु सुंदर है इसलिये वे राज आज्ञा से भयभीत न हुए. 24 यह
विश्वास ही था कि मोशेह ने बड़े होने पर फ़रोह की पुत्री की संतान कहलाना
अस्वीकार कर दिया. 25 और पाप के क्षण-भर के सुखों के आनंद की बजाय
परमेश्वर की प्रजा के साथ दुःख सहना सही समझा. 26 उनकी दृष्टि में मसीह के
लिए सही गई निंदा मिस्र देश के भंडारों से कहीं अधिक कीमती थी क्योंकि
उनकी आंखें उस ईनाम पर स्थिर थी. 27 यह विश्वास ही था कि मोशेह मिस्र
देश को छोड़कर चले गए. उन्हें फ़रोह के क्रोध का कोई भय न था. वह आगे
ही बढ़ते चले गए मानो वह उन्हें देख रहे थे, जो अनदेखे हैं. 28 यह विश्वास ही
था कि मोशेह ने इस्राएलियों को फ़सह उत्सव मनाने तथा बलि-लहू छिड़कने
की आज्ञा दी कि वह, जो पहलौठे पुत्रों का नाश कर रहा था, उनमें से किसी को
स्पर्श न करे. 29 यह विश्वास ही था कि उन्होंने लाल सागर ऐसे पार कर लिया,
मानो वे सूखी भूमि पर चल रहे हों किंतु जब मिस्रवासियों ने वही करना चाहा
तो डूब मरे. 30 यह विश्वास ही था जिसके द्वारा येरीख़ो नगर की दीवार उनके
सात दिन तक परिक्रमा करने पर गिर पड़ी. 31 यह विश्वास ही था कि नगरवधू
राहाब ने गुप्तचरों का स्वागत मैत्री भाव में किया तथा आज्ञा न माननेवालों के
साथ नाश नहीं हुई. 32 मैं और क्या कहूं? समय की कमी मुझे आज्ञा नहीं देती
कि मैं गिदौन, बाराक, शिमशोन, यिफ्ताह, दावीद, शमुएल तथा भविष्यद्वक्ताओं
का वर्णन करूं, 33 जो विश्वास से राज्यों पर विजयी हुए, जिन्होंने धार्मिकता में
राज्य किया, जिन्हें प्रतिज्ञाओं का फल प्राप्त हुआ, जिन्होंने सिंहों के मुंह बांध
दिए, 34 आग की लपटों को ठंडा कर दिया, तलवार की धार से बच निकले;
जिन्हें निर्बल से बलवंत बना दिया गया; युद्ध में वीर साबित हुए; जिन्होंने विदेशी

सेनाओं को खदेड़ दिया. 35 दोबारा जी उठने के द्वारा स्त्रियों को उनके मृतक
दोबारा जीवित प्राप्त हो गए. कुछ अन्य थे, जिन्हें ताड़नाएं दी गईं और उन्होंने
छुटकारा अस्वीकार कर दिया कि वे बेहतर पुनरुत्थान प्राप्त कर सकें. 36 कुछ
अन्य थे, जिनकी परख उपहास, कोड़ों, बेड़ियों में जकड़े जाने और बंदीगृह में
डाले जाने के द्वारा हुई. 37 उनका पथराव किया गया, उन्हें चीर डाला गया,
लालच दिया गया, तलवार से उनका वध किया गया, भेड़ों व बकरियों की
खाल में मढ़ दिया गया, वे अभाव की स्थिति में थे, उन्हें यातनाएं दी गईं तथा
उनसे दुर्व्यवहार किया गया. 38 उनके लिए संसार सही स्थान साबित न हुआ. वे
बंजर भूमि में, पर्वतों पर, गुफाओं में तथा भूमि के गड्ढों में भटकते-छिपते रहे.
39 ये सभी गवाहों ने अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त किया,
किंतु इन्होंने वह प्राप्त नहीं किया जिसकी इनसे प्रतिज्ञा की गई थी; 40 क्योंकि
उनके लिए परमेश्वर के द्वारा कुछ बेहतर ही निर्धारित था कि हमारे साथ जुड़े
बिना उन्हें सिद्धता प्राप्त न हो.

12 इसलिये जब हमारे चारों ओर गवाहों का ऐसा विशाल बादल छाया हुआ
है, हम भी हर एक रुकावट तथा पाप से, जो हमें अपने फंदे में उलझा
लेता है, छूटकर अपने लिए निर्धारित दौड़ में धीरज के साथ आगे बढ़ते जाएं,
2 हम अपनी दृष्टि मसीह येशु, हमारे विश्वास के कर्ता तथा सिद्ध करनेवाले पर
लगाए रहें, जिन्होंने उस आनंद के लिए, जो उनके लिए निर्धारित किया गया
था, लज्जा की चिंता न करते हुए क्रूस की मृत्यु सह ली और परमेश्वर के
सिंहासन की दाहिने ओर बैठ गए. 3 उन पर विचार करो, जिन्होंने पापियों द्वारा
दिए गए घोर कष्ट इसलिये सह लिए कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो. 4
पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में तुमने अब तक उस सीमा तक प्रतिरोध नहीं किया
है कि तुम्हें लहू बहाना पड़े. 5 क्या तुम उस उपदेश को भी भुला चुके हो जो
तुम्हें पुत्र मानकर किया गया था? “मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन को व्यर्थ न
समझना, और उनकी ताड़ना से साहस न छोड़ देना, 6 क्योंकि प्रभु अनुशासित
उन्हें करते हैं, जिनसे उन्हें प्रेम है तथा हर एक को, जिसे उन्होंने पुत्र के रूप में
स्वीकार किया है, ताड़ना भी देते हैं.” 7 सताहट को अनुशासन समझकर सहो.
परमेश्वर का तुमसे वैसा ही व्यवहार है, जैसा पिता का अपनी संतान से होता है.
भला कोई संतान ऐसी भी होती है, जिसे पिता अनुशासित न करता हो? 8
अनुशासित तो सभी किए जाते हैं किंतु यदि तुम अनुशासित नहीं किए गए
हो, तुम उनकी अपनी नहीं परंतु अवैध संतान हो. 9 इसके अतिरिक्त हमें
अनुशासित करने के लिए हमारे शारीरिक पिता हैं, जिनका हम सम्मान करते हैं.
परंतु क्या यह अधिक सही नहीं कि हम आत्माओं के पिता के अधीन रहकर
जीवित रहें! 10 हमारे पिता, जैसा उन्हें सबसे अच्छा लगा, हमें थोड़े समय के
लिए अनुशासित करते रहे किंतु परमेश्वर हमारी भलाई के लिए हमें अनुशासित
करते हैं कि हम उनकी पवित्रता में भागीदार हो जाएं. 11 किसी भी प्रकार का
अनुशासन उस समय तो आनंद कर नहीं परंतु दुःखकर ही प्रतीत होता है, किंतु
जो इसके द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं, बाद में उनमें इससे धार्मिकता की शांति भरा
प्रतिफल इकट्ठा किया जाता है. 12 इसलिये शिथिल होते जा रहे हाथों तथा
निर्बल घुटनों को मजबूत बनाओ. 13 तथा “अपना मार्ग सीधा बनाओ” जिससे
अपंग अंग नष्ट न हों परंतु स्वस्थ बने रहें. 14 सभी के साथ शांति बनाए रखो
तथा उस पवित्रता के खोजी रहो, जिसके बिना कोई भी प्रभु को देख न पाएगा.
15 ध्यान रखो कि कोई भी परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए. कड़वी
जड़ फूटकर तुम पर कष्ट तथा अनेकों के अशुद्ध होने का कारण न बने. 16
सावधान रहो कि तुम्हारे बीच न तो कोई व्यभिचारी व्यक्ति हो और न ही एसाव
के जैसा परमेश्वर का विरोधी, जिसने पहलौठा पुत्र होने के अपने अधिकार को
मात्र एक भोजन के लिए बेच दिया. 17 तुम्हें मालूम ही है कि उसके बाद जब
उसने वह आशीष दोबारा प्राप्त करनी चाही, उसे अयोग्य समझा गया—आंसू
बहाने पर भी वह उस आशीष को अपने पक्ष में न कर सका. 18 तुम उस पर्वत
के पास नहीं आ पहुंचे, जिसे स्पर्श किया जा सके और न ही दहकती ज्वाला,
अंधकार, काली घटा और बवंडर; 19 तुरही की आवाज और शब्द की ऐसी
ध्वनि के समीप, जिसके शब्द ऐसे थे कि जिन्होंने उसे सुना, विनती की कि अब
वह उनसे और अधिक कुछ न कहे, 20 उनके लिए यह आज्ञा सहने योग्य न
थी: “यदि पशु भी पर्वत का स्पर्श करे तो वह पथराव द्वारा मार डाला जाए.”
21 वह दृश्य ऐसा डरावना था कि मोशेह कह उठे, “मैं भय से थरथरा रहा हूं.”
22 किंतु तुम ज़ियोन पर्वत के, जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय येरूशलेम के,
असंख्य हजारों स्वर्गदूतों के, 23 स्वर्ग में लिखे पहलौठों की कलीसिया के,
परमेश्वर के, जो सबके न्यायी हैं, सिद्ध बना दिए गए धर्मियों की आत्माओं के,
24 मसीह येशु के, जो नई वाचा के मध्यस्थ हैं तथा छिड़काव के लहू के, जो
हाबिल के लहू से कहीं अधिक साफ़ बातें करता है, पास आ पहुंचे हो. 25
इसका ध्यान रहे कि तुम उनकी आज्ञा न टालो, जो तुमसे बातें कर रहे हैं. जब वे
दंड से न बच सके, जिन्होंने उनकी आज्ञा न मानी, जिन्होंने उन्हें पृथ्वी पर
चेतावनी दी थी, तब हम दंड से कैसे बच सकेंगे यदि हम उनकी न सुनें, जो
स्वर्ग से हमें चेतावनी देते हैं? 26 उस समय तो उनकी आवाज ने पृथ्वी को हिला
दिया था किंतु अब उन्होंने यह कहते हुए प्रतिज्ञा की है, “एक बार फिर मैं न
केवल पृथ्वी परंतु स्वर्ग को भी हिला दूंगा.” 27 ये शब्द “एक बार फिर” उन
वस्तुओं के हटाए जाने की ओर संकेत हैं, जो अस्थिर हैं अर्थात् सृष्ट वस्तुएं, कि
वे वस्तुएं, जो अचल हैं, स्थायी रह सकें. 28 इसलिये जब हमने अविनाशी
राज्य प्राप्त किया है, हम परमेश्वर के आभारी हों कि इस आभार के द्वारा हम
परमेश्वर को सम्मान और श्रद्धा के साथ स्वीकारयोग्य आराधना भेंट कर सकें,
29 इसलिये कि हमारे “परमेश्वर भस्म कर देनेवाली आग हैं.”

13 भाईचारे का प्रेम लगातार बना रहे. 2 अपरिचितों का अतिथि-सत्कार
करना न भूलो. ऐसा करने के द्वारा कुछ ने अनजाने ही स्वर्गदूतों का
अतिथि-सत्कार किया था. 3 बंदियों के प्रति तुम्हारा व्यवहार ऐसा हो मानो तुम
स्वयं उनके साथ बंदीगृह में हो. सताए जाने वालों को न भूलना क्योंकि तुम सभी
एक शरीर के अंग हो. 4 विवाह की बात सम्मानित रहे तथा विवाह का बिछौना
कभी अशुद्ध न होने पाए क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों तथा परस्त्रीगामियों को
दंडित करेंगे. 5 यह ध्यान रहे कि तुम्हारा चरित्र धन के लोभ से मुक्त हो. जो
कुछ तुम्हारे पास है, उसी में संतुष्ट रहो क्योंकि स्वयं उन्होंने कहा है, “मैं
न तो तुम्हारा त्याग करूंगा और न ही कभी तुम्हें छोड़ूंगा.” 6 इसलिये हम
निश्चयपूर्वक यह कहते हैं, “प्रभु मेरे सहायक हैं, मैं डरूंगा नहीं. मनुष्य मेरा
क्या कर लेगा?” 7 उनको याद रखो, जो तुम्हारे अगुए थे, जिन्होंने तुम्हें
परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी और उनके स्वभाव के परिणाम को याद करते
हुए उनके विश्वास का अनुसरण करो. 8 मसीह येशु एक सा हैं—कल, आज
तथा युगानुयुग. (aiōn g165) 9 बदली हुई विचित्र प्रकार की शिक्षाओं के बहाव
में न बह जाना. हृदय के लिए सही है कि वह अनुग्रह द्वारा दृढ किया जाए न कि
खाने की वस्तुओं द्वारा. खान-पान संबंधी प्रथाओं द्वारा किसी का भला नहीं
हुआ है. 10 हमारी एक वेदी है, जिस पर से उन्हें, जो मंदिर में सेवा करते हैं,
खाने का कोई अधिकार नहीं है. 11 क्योंकि उन पशुओं का शरीर, जिनका लहू
महापुरोहित द्वारा पापबलि के लिए परम पवित्र स्थान में लाया जाता है, छावनी
के बाहर ही जला दिए जाते हैं. 12 मसीह येशु ने भी नगर के बाहर दुःख सहे कि
वह स्वयं अपने लहू से लोगों को शुद्ध करें. 13 इसलिये हम भी उनसे भेंट करने
छावनी के बाहर वैसी ही निंदा उठाने चलें, जैसी उन्होंने उठाई 14 क्योंकि यहां
हमारा घर स्थाई नगर में नहीं है—हम उस नगर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो अनंत
काल का है. 15 इसलिये हम उनके द्वारा परमेश्वर को लगातार आराधना की
बलि भेंट करें अर्थात् उन होंठों का फल, जो उनके प्रति धन्यवाद प्रकट करते

हैं. 16 भलाई करना और वस्तुओं का आपस में मिलकर बांटना समाप्त न करो
क्योंकि ये ऐसी बलि हैं, जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं. 17 अपने अगुओं का
आज्ञापालन करो, उनके अधीन रहो. वे तुम्हारी आत्माओं के पहरेदार हैं. उन्हें
तुम्हारे विषय में हिसाब देना है. उनके लिए यह काम आनंद का विषय बना रहे
न कि एक कष्टदायी बोझ. यह तुम्हारे लिए भी लाभदायक होगा. 18 हमारे लिए
निरंतर प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें हमारे निर्मल विवेक का निश्चय है. हमारा
लगातार प्रयास यही है कि हमारा जीवन हर एक बात में आदरयोग्य हो. 19
तुमसे मेरी विशेष विनती है कि प्रार्थना करो कि मैं तुमसे भेंट करने शीघ्र आ सकूं.
20 शांति के परमेश्वर, जिन्होंने भेड़ों के महान चरवाहे अर्थात् मसीह येशु, हमारे
प्रभु को अनंत वाचा के लहू के द्वारा मरे हुओं में से जीवित किया, **(aiōnios
g166)** 21 तुम्हें हर एक भले काम में अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए सुसज्जित
करें तथा हमें मसीह येशु के द्वारा वह करने के लिए प्रेरित करें, जो उनकी दृष्टि में
सुखद है. उन्हीं की महिमा सदा-सर्वदा होती रहे. आमेन. **(aiōn g165)** 22 प्रिय
भाई बहनो, मेरी विनती है कि इस उपदेश-पत्र को धीरज से सहन करना क्योंकि
यह मैंने संक्षेप में लिखा है. 23 याद रहे कि हमारे भाई तिमोथियॉस को छोड़
दिया गया है. यदि वह यहां शीघ्र आएं तो, उनके साथ आकर मैं तुमसे भेंट कर
सकूंगा. 24 अपने सभी अगुओं तथा सभी पवित्र लोगों को मेरा नमस्कार.
इतालिया वासियों का तुम्हें नमस्कार. 25 तुम सब पर अनुग्रह बना रहे.

याकूब

1 परमेश्वर तथा प्रभु येशु मसीह के दास याकोब की, ओर से तितर-बितर हो
रहे बारह गोत्रों को: नमस्कार. 2 प्रिय भाई बहनो, जब तुम विभिन्न प्रकार
की परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे निरे हर्ष का विषय समझो 3 क्योंकि
तुम जानते ही हो कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा से धीरज उत्पन्न होता है. 4
धीरज को अपना काम पूरा कर लेने दो कि तुम निर्दोष और सिद्ध हो जाओ और
तुममें किसी भी प्रकार की कमी न रह जाए. 5 यदि तुममें से किसी में भी ज्ञान
का अभाव है, वह परमेश्वर से विनती करे, जो दोष लगाये बिना सभी को
उदारतापूर्वक प्रदान करते हैं और वह ज्ञान उसे दी जाएगी, 6 किंतु वह बिना
शंका के विश्वास से मांगे क्योंकि जो संदेह करता है, वह समुद्र की उस चंचल
लहर के समान है, जो हवा के चलने से उछाली और फेंकी जाती है. 7 ऐसा
व्यक्ति यह आशा बिलकुल न करे कि उसे प्रभु की ओर से कुछ प्राप्त होगा. 8
ऐसा व्यक्ति का मन तो दुविधा से ग्रस्त है—अपने सारे स्वभाव में स्थिर नहीं है.
9 दीन व्यक्ति अपने ऊंचे पद में गर्व करे 10 और धनी दीनता में. जंगली फूल के
समान उसका जीवन समाप्त हो जाएगा. 11 सूर्य की तेज गर्मी से घास मुरझा
जाती है और उसमें खिला फूल झड़ जाता है. उसकी सुंदरता नाश हो जाती है.
इसी प्रकार धनी व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के साथ साथ धूल में मिट जाएगा.
12 धन्य है वह व्यक्ति, जो परख-परीक्षाओं में स्थिर रहता है क्योंकि परीक्षा में
खरा साबित होने पर उसे वह जीवन-मुकुट प्रदान किया जाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा
परमेश्वर ने उनके लिए की है, जो उनसे प्रेम करते हैं. 13 परीक्षा में पडने पर
कोई भी यह न कहे: "परमेश्वर मुझे परीक्षा में डाल रहे हैं," क्योंकि न तो
परमेश्वर को किसी परीक्षा में डाला जा सकता है और न ही वह स्वयं किसी को
परीक्षा में डालते हैं. 14 हर एक व्यक्ति स्वयं अपनी ही अभिलाषा में पड़कर
तथा फंसकर परीक्षा में जा पड़ता है. 15 तब अभिलाषा गर्भधारण करती है और
पाप को जन्म देती है और फिर पाप बढ जाता है और मृत्यु उत्पन्न करता है. 16
प्रिय भाई बहनो, धोखे में न रहना. 17 हर एक अच्छा वरदान और निर्दोष दान
ऊपर से अर्थात् ज्योतियों के पिता की ओर से आता है, जिनमें न तो कोई
परिवर्तन है और न अदल-बदल. 18 उन्होंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए
हमें सत्य के वचन के द्वारा नया जीवन दिया है कि हम उनके द्वारा बनाए गए
प्राणियों में पहले फल के समान हों. 19 प्रिय भाई बहनो, यह ध्यान रहे कि तुम
सुनने में तत्पर, बोलने में धीर तथा क्रोध में धीमे हो, 20 क्योंकि मनुष्य के क्रोध
के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता नहीं मिल सकती. 21 इसलिये सारी मलिनता
तथा बैरभाव का त्याग कर नम्रतापूर्वक उस वचन को ग्रहण करो, जिसे तुम्हारे
हृदय में बोया गया है, जो तुम्हारे उद्धार में सामर्थ्यी है. 22 वचन की शिक्षा पर
चलनेवाले बनो, न कि सिर्फ सुननेवाले, जो स्वयं को धोखे में रखते हैं 23
क्योंकि यदि कोई वचन की शिक्षा का सिर्फ सुननेवाले है किंतु पालन नहीं
करता, वह उस व्यक्ति के समान है, जो अपना मुख दर्पण में देखता है. 24 उसमें
उसने स्वयं को देखा और चला गया और तुरंत ही भूल गया कि कैसा था उसका
रूप. 25 किंतु जिसने निर्दोष व्यवस्था का गहन अध्ययन कर लिया है—जो
वस्तुतः स्वतंत्रता का विधान है तथा जो उसी में स्थिर रहता है, वह व्यक्ति
सुनकर भूलनेवाला नहीं परंतु समर्थ पालन करनेवाला हो जाता है. ऐसा व्यक्ति
अपने हर एक काम में आशीषित होगा. 26 यदि कोई व्यक्ति अपने आपको भक्त
समझता है और फिर भी अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता, वह अपने मन को
धोखे में रखे हुए है और उसकी भक्ति बेकार है. 27 हमारे परमेश्वर और पिता
की दृष्टि में बिलकुल शुद्ध और निष्कलंक भक्ति यह है: मुसीबत में पड़े अनाथों
और विधवाओं की सुधि लेना तथा स्वयं को संसार के बुरे प्रभाव से निष्कलंक
रखना.

2 प्रिय भाई बहनो, तुम हमारे महिमामय प्रभु येशु मसीह के शिष्य हो इसलिये
तुममें पक्षपात का भाव न हो. 2 तुम्हारी सभा में यदि कोई व्यक्ति सोने के
छल्ले तथा ऊंचे स्तर के कपड़े पहने हुए प्रवेश करे और वहीं एक निर्धन व्यक्ति
भी मैले कपड़ों में आए, 3 तुम ऊंचे स्तर के वस्त्र धारण किए हुए व्यक्ति का तो
विशेष आदर करते हुए उससे कहो, "आप इस आसन पर विराजिए" तथा उस
निर्धन से कहो, "तू जाकर वहां खड़ा रह" या "यहां मेरे पैरों के पास नीचे बैठ
जा," 4 क्या तुमने यहां भेद-भाव प्रकट नहीं किया? क्या तुम बुरे विचार से
न्याय करनेवाले न हुए? 5 सुनो! मेरे प्रिय भाई बहनो, क्या परमेश्वर ने संसार के
निर्धनों को विश्वास में सम्पन्न होने तथा उस राज्य के वारिस होने के लिए नहीं
चुन लिया, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की है, जो उनसे प्रेम करते हैं? 6
किंतु तुमने उस निर्धन व्यक्ति का अपमान किया है. क्या धनी ही वे नहीं, जो
तुम्हारा शोषण कर रहे हैं? क्या ये ही वे नहीं, जो तुम्हें न्यायालय में घसीट ले
जाते हैं? 7 क्या ये ही उस सम्मान योग्य नाम की निंदा नहीं कर रहे, जो नाम
तुम्हारी पहचान है? 8 यदि तुम पवित्र शास्त्र के अनुसार इस राजसी व्यवस्था को
पूरा कर रहे हो, "अपने पड़ोसी से तुम इस प्रकार प्रेम करो, जिस प्रकार तुम
स्वयं से करते हो," तो तुम उचित कर रहे हो. 9 किंतु यदि तुम्हारा व्यवहार भेद-
भाव से भरा है, तुम पाप कर रहे हो और व्यवस्था द्वारा दोषी ठहरते हो. 10
कारण यह है कि यदि कोई पूरी व्यवस्था का पालन करे किंतु एक ही सूत्र में
चूक जाए तो वह पूरी व्यवस्था का दोषी बन गया है 11 क्योंकि जिन्होंने यह
आज्ञा दी, "व्यभिचार मत करो," उन्हीं ने यह आज्ञा भी दी है, "हत्या मत
करो." यदि तुम व्यभिचार नहीं करते किंतु किसी की हत्या कर देते हो, तो तुम
व्यवस्था के दोषी हो गए. 12 इसलिये तुम्हारी कथनी और करनी उनके समान
हो, जिनका न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार किया जाएगा, 13 जिसमें
दयाभाव नहीं, उसका न्याय भी दयारहित ही होगा. दया न्याय पर जय पाती है.
14 प्रिय भाई बहनो, क्या लाभ है यदि कोई यह दावा करे कि उसे विश्वास है
किंतु उसका स्वभाव इसके अनुसार नहीं? क्या ऐसा विश्वास उसे उद्धार प्रदान
करेगा? 15 यदि किसी के पास पर्याप्त वस्त्र न हों, उसे दैनिक भोजन की भी
ज़रूरत हो 16 और तुममें से कोई उससे यह कहे, "कुशलतापूर्वक जाओ, ठंड से
बचना और खा-पीकर संतुष्ट रहना!" जब तुम उसे उसकी ज़रूरत के अनुसार
कुछ भी नहीं दे रहे तो यह कहकर तुमने उसका कौन सा भला कर दिया? 17
इसी प्रकार यदि वह विश्वास, जिसकी पुष्टि कामों के द्वारा नहीं होती, मरा हुआ
है. 18 कदाचित कोई यह कहे, "चलो, विश्वास तुम्हारा और काम मेरा." तुम
अपना विश्वास बिना काम के प्रदर्शित करो, और मैं अपना विश्वास अपने काम
के द्वारा. 19 यदि तुम्हारा यह विश्वास है कि परमेश्वर एक हैं, अति उत्तम!
दुष्टात्माएं भी यही विश्वास करती है और भयभीत हो कांपती हैं. 20 अरे निपट
अज्ञानी! क्या अब यह भी साबित करना होगा कि काम बिना विश्वास व्यर्थ है?
21 क्या हमारे पूर्वज अब्राहाम को, जब वह वेदी पर यित्सहाक की बलि भेंट
करने को थे, उनके काम के आधार पर धर्मी घोषित नहीं किया गया? 22
तुम्हीं देख लो कि उनके काम के साथ उनका विश्वास भी सक्रिय था. इसलिये
उनके काम के फलस्वरूप उनका विश्वास सबसे उत्तम ठहराया गया था 23 और
पवित्र शास्त्र का यह लेख पूरा हो गया, "अब्राहाम ने परमेश्वर में विश्वास किया
और उनका यह काम उनकी धार्मिकता मानी गई," और वह परमेश्वर के मित्र
कहलाए. 24 तुम्हीं देख लो कि व्यक्ति को उसके काम के द्वारा धर्मी माना
जाता है, मात्र विश्वास के आधार पर नहीं. 25 इसी प्रकार क्या राहाब वेश्या को
भी धर्मी न माना गया, जब उसने उन गुप्तचरों को अपने घर में शरण दी और
उन्हें एक भिन्न मार्ग से वापस भेजा? 26 ठीक जैसे आत्मा के बिना शरीर मरा
हुआ है, वैसे ही काम बिना विश्वास भी मरा हुआ है.

3 प्रिय भाई बहनो, तुममें से अनेकों शिक्षक बनने को उत्सुक न हों. याद रहे
कि हम शिक्षकों का न्याय कठोरता पूर्वक होगा. 2 हम सभी अनेक क्षेत्रों में
चूक जाते हैं. सिद्ध है वह, जिसके वचन में कोई भूल-चूक नहीं होती. वह अपने
सारे शरीर पर भी लगाम लगाने में सक्षम है. 3 घोड़े हमारे संकेतों का पालन
करें, इसके लिए हम उनके मुंह में लगाम डाल देते हैं और उसी के द्वारा उनके
सारे शरीर को नियंत्रित करते हैं. 4 जलयानों को ही देख लो, हालांकि वे
विशालकाय होते हैं और तेज हवा बहने से चलते हैं, फिर भी एक छोटी सी
पतवार द्वारा चालक की इच्छा से हर दिशा में मोड़े जा सकते हैं. 5 इसी प्रकार
जीभ भी शरीर का एक छोटा अंग है, फिर भी ऊंचे-ऊंचे विषयों का घमण्ड
भर्ती है. कल्पना करो: एक छोटी सी चिंगारी कैसे एक विशाल वन को भस्म
कर देती है. 6 जीभ भी आग है—सारे शरीर में अधर्म का भंडार—एक ऐसी
आग, जो हमारे सारे शरीर को अशुद्ध कर देती है. जीभ जीवन की गति को
नाश करनेवाली ज्वाला में बदल सकती है तथा स्वयं नर्क की आग से जलकर
दहकती रहती है. (Geenna g1067) 7 पशु-पक्षी, रेंगते जंतु तथा समुद्री प्राणियों
की हर एक प्रजाति वश में की जा सकती है और मानव द्वारा वश में की भी जा
चुकी है, 8 किंतु जीभ को कोई भी वश में नहीं कर सकता. यह एक विद्रोही
और हानिकारक है, जो प्राणनाशक विष से छलक रही है. 9 इसी जीभ से हम
प्रभु और पिता परमेश्वर की वंदना करते हैं और इसी से हम मनुष्यों को, जो
परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, शाप भी देते हैं. 10 प्रिय भाई बहनो, एक ही
मुख से आशीर्वाद और शाप का निकलना! गलत है यह! 11 क्या जल के एक
ही सोते से कड़वे और मीठे दोनों प्रकार का जल निकलना संभव है? 12 प्रिय
भाई बहनो, क्या अंजीर का पेड़ ज़ैतून या दाखलता अंजीर उत्पन्न कर सकती
है? वैसे ही खारे जल का सोता मीठा जल नहीं दे सकता. 13 कौन है तुम्हारे
बीच ज्ञानी और समझदार? वह इसे अपने उत्तम स्वभाव और कामों के द्वारा ज्ञान
उत्पन्न करनेवाली नम्रता सहित प्रकट करे. 14 यदि तुम्हारा हृदय कड़वी जलन
और स्वार्थपूर्ण इच्छाओं से भरा हुआ है तो इसका घमंड करते हुए झूठ को
सच बनाकर प्रस्तुत तो मत करो. 15 ऐसा ज्ञान ईश्वरीय नहीं परंतु सांसारिक,
स्वाभाविक और शैतानी है, 16 क्योंकि जहां जलन तथा स्वार्थी इच्छाओं
का डेरा है, वहां अव्यवस्था तथा सब प्रकार की दुष्टता होती है. 17 इसके
विपरीत ईश्वरीय ज्ञान सबसे पहले शुद्ध और फिर शांति फैलानेवाला, कोमल,
विवेकशील, भले काम व दया से भरा हुआ, निष्पक्ष तथा कपट रहित होता है.
18 मेल-मिलाप कराने वाला व्यक्ति शांति के बीज बोने के द्वारा धार्मिकता की
उपज इकट्ठा करते है.

4 तुम्हारे बीच लड़ाई व झगड़े का कारण क्या है? क्या तुम्हारे सुख-विलास
ही नहीं, जो तुम्हारे अंगों से लड़ते रहते हैं? 2 तुम इच्छा तो करते हो किंतु
प्राप्त नहीं कर पाते इसलिये हत्या कर देते हो. जलन के कारण तुम लड़ाई व
झगड़े करते हो क्योंकि तुम प्राप्त नहीं कर पाते. तुम्हें प्राप्त नहीं होता क्योंकि
तुम मांगते नहीं. 3 तुम मांगते हो फिर भी तुम्हें प्राप्त नहीं होता क्योंकि मांगने
के पीछे तुम्हारा उद्देश्य ही बुरी इच्छा से होता है—कि तुम उसे भोग विलास में
उड़ा दो. 4 अरे विश्वासघातियो! क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि संसार से मित्रता
परमेश्वर से शत्रुता है? इसलिये उसने, जो संसार की मित्रता से बंधा हुआ है,
अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बना लिया है. 5 कहीं तुम यह तो नहीं सोच रहे
कि पवित्र शास्त्र का यह कथन अर्थहीन है: वह आत्मा, जिसको उन्होंने हमारे
भीतर बसाया है, बड़ी लालसा से हमारे लिए कामना करते हैं? 6 वह और
अधिक अनुग्रह देते हैं, इसलिये लिखा है: "परमेश्वर घमंडियों के विरुद्ध रहते
और दीनों को अनुग्रह देते हैं." 7 इसलिये परमेश्वर के अधीन रहो, शैतान का
विरोध करो तो वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा. 8 परमेश्वर के पास आओ
तो वह तुम्हारे पास आएंगे. पापियो! अपने हाथ स्वच्छ करो. तुम, जो दुचित्ते हो,
अपने हृदय शुद्ध करो. 9 आंसू बहाते हुए शोक तथा विलाप करो कि तुम्हारी
हंसी रोने में तथा तुम्हारा आनंद उदासी में बदल जाए. 10 स्वयं को प्रभु के
सामने दीन बनाओ तो वह तुमको शिरोमणि करेंगे. 11 प्रिय भाई बहनो, एक दूसरे
की निंदा मत करो. जो साथी विश्वासी की निंदा करता फिरता या उस पर दोष
लगाता फिरता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है. यदि तुम व्यवस्था का
विरोध करते हो, तुम व्यवस्था के पालन करनेवाले नहीं, सिर्फ उसके आलोचक
बन जाते हो. 12 व्यवस्था देनेवाला और न्यायाध्यक्ष एक ही हैं—वह, जिनमें
रक्षा करने का सामर्थ्य है और नाश करने का भी. तुम कौन होते हो जो अपने
पड़ोसी पर दोष लगाते हो? 13 अब तुम, सुनो, जो यह कहते हो, "आज या
कल हम किसी और नगर में जाएंगे और वहां एक वर्ष रहकर धन कमाएंगे,"
14 जबकि सच तो यह है कि तुम्हें तो अपने आनेवाले कल के जीवन के विषय
में भी कुछ मालूम नहीं है, तुम तो सिर्फ वह भाप हो, जो क्षण-भर के लिए
दिखाई देती है और फिर लुप्त हो जाती है. सुनो! 15 तुम्हारा इस प्रकार कहना
सही होगा: "यदि प्रभु की इच्छा हो, तो हम जीवित रहेंगे तथा यह या वह काम
करेंगे." 16 परंतु तुम अपने अहंकार में घमंड कर रहे हो. यह घमंड पाप से भरा
है. 17 यदि कोई भलाई करना जानते हुए भी उसको न करना पाप है.

5 अब तुम, जो धनी हो, सुनो! तुम लोग अपने पास आ रही विपत्तियों पर
रोओ और करुण आवाज में सहायता की पुकार करो. 2 तुम्हारी संपत्ति गल
चुकीं तथा तुम्हारे वस्त्रों में कीड़े पड़ गए हैं. 3 तुम्हारे सोने और चांदी के
आभूषण के रंग उड़ गए हैं. यही उड़ी रंगत तुम्हारे विरुद्ध गवाह होगी और तुम्हारे
शरीर को आग के समान राख कर देगी. यह युग का अंत है और तुम धन पर
धन इकट्ठा कर रहे हो! 4 वे मज़दूर, जिन्होंने तुम्हारे खेत काटे थे, उनका रोका
गया वेतन तुम्हारे विरुद्ध पुकार-पुकारकर गवाही दे रहा है. उन मज़दूरों की
दोहाई, जिन्होंने तुम्हारी उपज इकट्ठा की, स्वर्गीय सेनाओं के प्रभु के कानों
तक पहुंच चुकी है. 5 पृथ्वी पर तुम्हारा जीवन बहुत आरामदायक रहा है तथा
यहां तुमने भोग विलास का जीवन जिया है और हृदय की अभिलाषाओं की
निरंतर पूर्ति से तुम ऐसे मोटे-ताज़े हो गए हो, जैसे बलि पशु. 6 तुमने धर्मी
व्यक्ति को तिरस्कार कर उसकी हत्या कर दी, जबकि वह तुम्हारा सामना नहीं
कर रहा था. 7 इसलिये प्रिय भाई बहनो, प्रभु के दोबारा आगमन तक धीरज
रखो. एक किसान, जब तक प्रारंभिक और अंतिम वृष्टि न हो जाए, अपने खेत
से कीमती उपज के लिए कैसे धीरज के साथ प्रतीक्षा करता रहता है! 8 तुम भी
धीरज रखो, अपने हृदय को दृढ बनाए रखो क्योंकि प्रभु का दूसरा आगमन
नज़दीक है. 9 प्रिय भाई बहनो, एक दूसरे पर दोष न लगाओ कि तुम पर भी दोष
न लगाया जाए. वास्तव में न्यायाध्यक्ष द्वार पर आ पहुंचे हैं! 10 प्रिय भाई बहनो,
उन भविष्यद्वक्ताओं को अपना आदर्श समझो, जिन्होंने प्रभु के नाम में बातें करते
हुए कष्ट सहे है और धीरज बनाए रहे. 11 वे सब, जो धीरज के साथ सहते हैं,
हमारी दृष्टि में प्रशंसनीय हैं. तुमने अय्योब की सहनशीलता के विषय में सुना ही
है और इस विषय में प्रभु के उद्देश्य की पूर्ति से परिचित भी हो कि प्रभु करुणामय
और दया के भंडार हैं. 12 प्रिय भाई बहनो, इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि
तुम शपथ ही न खाओ, न तो स्वर्ग की और न ही पृथ्वी की और न ही कोई
अन्य शपथ. इसके विपरीत तुम्हारी "हां" का मतलब हां हो तथा "न" का न,
जिससे तुम दंड के भागी न बनो. 13 यदि तुममें से कोई मुसीबत में है, तो वह
प्रार्थना करे; यदि आनंदित है, तो वह स्तुति गीत गाए. 14 यदि तुममें कोई बीमार
है, तो वह कलीसिया के पुरनियों को बुलाए और वे प्रभु के नाम में उस पर तेल
मलते हुए उसके लिए प्रार्थना करें. 15 विश्वास से भरी प्रार्थना के द्वारा रोगी
स्वस्थ हो जाएगा—प्रभु उसे स्वास्थ्य प्रदान करेंगे. यदि उसने पाप किए हैं, वे
भी क्षमा कर दिए जाएंगे. 16 सही है कि तुम सब एक दूसरे के सामने अपने
पाप स्वीकार करो तथा एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम स्वस्थ हो

जाओ. धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना प्रभावशाली तथा परिणामकारक होती है. **17**
भविष्यद्वक्ता एलियाह हमारे ही समान मनुष्य थे. उन्होंने भक्ति के साथ प्रार्थना
की कि वर्षा न हो और पृथ्वी पर तीन वर्ष छः महीने तक वर्षा नहीं हुई. **18** फिर
उन्होंने वर्षा के लिए प्रार्थना की और आकाश से मूसलाधार वर्षा हुई तथा पृथ्वी
से उपज उत्पन्न हुई. **19** मेरे प्रिय भाई बहनो, याद रखो, यदि तुममें से कोई भी
सच्चाई से भटक जाए और तुममें से कोई उसे दोबारा वापस ले आए, **20** तब
वह जो भटके हुए पापी को फेर लाता है, उसके प्राण को मृत्यु से बचाता और
उसके अनेक पापों पर पर्दा डाल देता है.

1 पतरस

1 मसीह येशु के प्रेरित पेतरॉस की ओर से उन सभी को, जो चुने हुए,
प्रवासियों समान पोन्तॉस, गलातिया, कप्पादोकिया, आसिया तथा बिथुनिया
प्रदेशों में तितर-बितर होकर निवास कर रहे हैं, 2 तथा पिता परमेश्वर के भविष्य
के ज्ञान के अनुसार, पवित्र आत्मा के पवित्र करने के द्वारा प्रभु के लिए अलग
किए गए हैं कि वे मसीह येशु के आज्ञाकारी हों तथा उनके लहू का छिड़काव
लें: तुम्हें अनुग्रह व शांति बहुतायत से प्राप्त हो. 3 स्तुति के योग्य हैं हमारे प्रभु
येशु मसीह के पिता और परमेश्वर, जिन्होंने अपनी महान कृपा के अनुसार हमें
मसीह येशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा जीवित आशा में नया जन्म प्रदान
किया है, 4 कि हम स्वर्ग में रखी हुई उस मीरास को प्राप्त करें, जो अविनाशी,
निर्मल तथा अजर है, जो तुम्हारे लिए, 5 जो विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के
सामर्थ्य के द्वारा युग के अंत में प्रकट होने के लिए ठहराए हुए उद्धार के लिए
सुरक्षित रखे गए हो, और स्वर्ग में आरक्षित है. 6 इसके प्रति आशा तुम्हारे अतीव
आनंद का आधार है यद्यपि इस समय थोड़े समय के लिए तुम्हें अनेक प्रकार की
परीक्षाएं सहना ज़रूरी हो गया है 7 कि मसीह येशु के दोबारा आगमन के अवसर
पर तुम्हारे विश्वास के प्रमाण का परिणाम प्रशंसा, गौरव और सम्मान में देखा जा
सके. तुम्हारा यह विश्वास नाशमान सोने से कहीं अधिक कीमती है—यद्यपि इसे
आग में परखा जाता है. 8 हालांकि तुमने प्रभु को नहीं देखा है, फिर भी उनसे
प्रेम करते हो; और तुम उन्हें इस समय नहीं देख रहे हो, फिर भी तुम उनमें
विश्वास करते हो और ऐसे आनंद से, जो वर्णन से बाहर है भरा हुआ हो. जो
ईश्वरीय महिमा से भरा है, 9 जिसे तुमने अपने विश्वास के परिणामस्वरूप
प्राप्त किया है—वही तुम्हारी आत्मा का उद्धार. 10 इसी उद्धार के संबंध में
भविष्यद्वक्ताओं ने अपनी भविष्यवाणियों में तुम्हारे आनेवाले अनुग्रह की प्राप्ति
के विषय में खोज और छानबीन की, 11 उनकी खोज का विषय था उनमें बसा
हुआ मसीह के आत्मा द्वारा पहले से बताई गई मसीह की उत्पीड़न तथा उनके
बाद उनकी महिमा का संकेत किस व्यक्ति तथा किस काल की ओर था. 12 उन
पर यह प्रकट कर दिया गया था कि यह सब उनकी अपनी सेवा में, उन्हीं के
जीवनकाल में नहीं, परंतु वर्षों बाद तुम्हारे जीवनकाल में सम्पन्न होगा. अब
तुम तक यही ईश्वरीय सुसमाचार उनके द्वारा लाया गया है, जिन्होंने स्वर्ग से
भेजे गए पवित्र आत्मा द्वारा प्रचार क्षमता प्राप्त की थी. स्वर्गदूत तक इनकी एक
झलक पाने के लिए लालायित रहते हैं. 13 इसलिये मानसिक रूप से कमर
कस लो, सचेत रहो और अपनी आशा पूरी तरह उस अनुग्रह पर केंद्रित करो,
जो मसीह येशु के प्रकट होने पर तुम्हें प्रदान किया जाएगा. 14 परमेश्वर की
आज्ञाकारी संतान होने के कारण उन अभिलाषाओं को तृप्त न करो, तुम पहले
अज्ञानतावश जिनके अधीन थे. 15 अपने पवित्र बुलानेवाले के समान तुम स्वयं
अपने सारे स्वभाव में पवित्र हो जाओ; 16 लिखा है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं
पवित्र हूं." 17 यदि तुम उन्हें पिता कहते हो, जो मनुष्यों के कामों के आधार
पर बिना पक्षपात के निर्णय करते हैं तो तुम पृथ्वी पर अपने रहने का समय उन्हीं
के भय में बिताओ, 18 इस अहसास के साथ कि पूर्वजों से चली आ रही तुम्हारे
निकम्मे चालचलन से तुम्हारी छुटकारा नाशमान सोने के या चांदी के द्वारा नहीं,
19 परंतु मसीह के बहुमूल्य लहू से हुआ है—निर्दोष और निष्कलंक मेमने
के लहू से. 20 यद्यपि वह सृष्टि के पहले से ही चुने हुए थे किंतु इन अंतिम
दिनों में तुम्हारे लिए प्रकट हुए हैं. 21 तुम, जो प्रभु द्वारा परमेश्वर में विश्वास
करते हो, जिन्होंने उन्हें मरे हुओं में से जीवित कर गौरवान्वित किया, जिसके
परिणामस्वरूप तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर में है. 22 इसलिये कि तुमने
उस सच्चाई की आज्ञा मानने के द्वारा अपनी आत्मा को निश्छल भाईचारे के
लिए पवित्र कर लिया है, अब तुममें आपस में उत्तम हार्दिक प्रेम ही देखा जाए.
23 तुम्हारा नया जन्म नाशवान नहीं परंतु अनंत जीवन तत्व अर्थात् परमेश्वर के
जीवित और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा हुआ है **(aiōn g165)** 24 क्योंकि,
"सभी मनुष्य घास के समान, तथा उनकी शोभा जंगली फूलों के समान है; घास
मुरझा जाती तथा फूल झड़ जाता है, 25 परंतु प्रभु का वचन युगानुयुग बना रहता
है." यही है वह वचन जो तुम्हें सुनाया गया था. **(aiōn g165)**

2 इसलिये सब प्रकार का बैरभाव, सारे छल, कपट, डाह तथा सारी निंदा
को दूर करते हुए 2 वचन के निर्मल दूध के लिए तुम्हारी लालसा नवजात
शिशुओं के समान हो कि तुम उसके द्वारा उद्धार के पूर्ण अनुभव में बढ़ते जाओगे.
3 अब तुमने यह चखकर जान लिया है कि प्रभु कृपानिधान हैं. 4 अब तुम उनके
पास आए हो, जो जीवित पत्थर हैं, जो मनुष्यों द्वारा त्यागा हुआ किंतु परमेश्वर
के लिए बहुमूल्य और प्रतिष्ठित हैं. 5 तुम भी जीवित पत्थरों के समान पवित्र
पौरोहित्य के लिए एक आत्मिक भवन बनते जा रहे हो कि मसीह येशु के द्वारा
परमेश्वर को भानेवाली आत्मिक बलि भेंट करो. 6 पवित्र शास्त्र का लेख है:
"देखो, मैं ज़ियोन में एक उत्तम पत्थर, एक बहुमूल्य कोने के पत्थर की स्थापना
कर रहा हूं, वह, जो उनमें विश्वास करता है कभी भी लज्जित न होगा." 7
इसलिये तुम्हारे लिए, जो विश्वासी हो, वह बहुमूल्य हैं. किंतु अविश्वासियों के
लिए, "वही पत्थर, जो राजमिस्त्रियों द्वारा नकार दिया गया था," कोने का सिरा
बन गया. 8 तथा, "वह पत्थर जिससे ठोकर लगती है, वह चट्टान, जो उनके
पतन का कारण है." वे लड़खड़ाते इसलिये हैं कि वे वचन को नहीं मानते हैं
और यही दंड उनके लिये परमेश्वर द्वारा ठहराया गया है. 9 किंतु तुम एक चुने
हुए वंश, राजकीय पुरोहित, पवित्र राष्ट्र तथा परमेश्वर की अपनी प्रजा हो कि तुम
उनकी सर्वश्रेष्ठता की घोषणा कर सको, जिन्होंने अंधकार में से तुम्हारा बुलावा
अपनी अद्भुत ज्योति में किया है. 10 एक समय था जब तुम प्रजा ही न थे, किंतु
अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम कृपा से वंचित थे परंतु अब तुम उनके कृपापात्र
हो गए हो. 11 प्रिय भाई बहनो, मैं तुम्हारे परदेशी और यात्री होने के कारण तुमसे
विनती करता हूं कि तुम शारीरिक अभिलाषाओं से बचे रहो, जो आत्मा के
विरुद्ध युद्ध करते हैं. 12 अन्यजातियों में अपना चालचलन भला रखो, जिससे
कि जिस विषय में वे तुम्हें कुकर्मी मानते हुए तुम्हारी निंदा करते हैं, तुम्हारे भले
कामों को देखकर उस आगमन दिवस पर परमेश्वर की वंदना करें. 13 मनुष्य
द्वारा चुने हुए हर एक शासक के प्रभु के लिए अधीन रहो: चाहे राजा के, जो
सर्वोच्च अधिकारी है 14 या राज्यपालों के, जो कुकर्मियों को दंड देने परंतु
सुकर्मियों की सराहना के लिए चुने गए हैं, 15 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा
यही है कि तुम अपने सच्चे चरित्र के द्वारा उन मूर्खों का मुख बंद करो, जो
बेबुनियादी बातें करते रहते हैं. 16 तुम्हारा स्वभाव स्वतंत्र व्यक्तियों के समान तो
हो किंतु तुम अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग बुराई पर पर्दा डालने के लिए नहीं
परंतु परमेश्वर के सेवकों के रूप में ही करो. 17 सभी का सम्मान करो, साथी
विश्वासियों के समुदाय से प्रेम करो; परमेश्वर के प्रति श्रद्धा भाव रखो और राजा
का सम्मान करो. 18 सेवको, पूरे आदर भाव में अपने स्वामियों के अधीन रहो;
भले और हितैषी स्वामियों के ही नहीं परंतु बुरे स्वामियों के भी. 19 यदि कोई
परमेश्वर के प्रति विवेकशीलता के कारण क्लेश भोगता है और अन्यायपूर्ण रीति
से सताया जाता है, वह प्रशंसनीय है. 20 भला इसमें प्रशंसनीय क्या है कि तुमने
अपराध किया, उसके लिए सताए गए और उसे धीरज के साथ सहते रहे? परंतु
यदि तुमने वह किया, जो उचित है और उसके लिए धीरज के साथ दुःख सहे तो
तुम परमेश्वर के कृपापात्र हो. 21 इसी के लिए तुम बुलाए गए हो क्योंकि मसीह
ने भी तुम्हारे लिए दुःख सहे और एक आदर्श छोड़ गए कि तुम उनके पद-
चिह्नों पर चलो. 22 "न उन्होंने कोई पाप किया और न उनके मुख से छल का
कोई शब्द निकला" 23 जब उनकी उल्लाहना की जा रही थी, उन्होंने इसके
उत्तर में उल्लाहना नहीं की; दुःख सहते हुए भी, उन्होंने धमकी नहीं दी; परंतु

स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया, जो धार्मिकता से न्याय करते हैं. 24
“मसीह ने काठ पर स्वयं” अपने शरीर में हमारे पाप उठा लिए कि हम पाप के
लिए मरकर तथा धार्मिकता के लिए जीवित हो जाएं. “उनके घावों के द्वारा
तुम्हारी चंगाई हुई है. 25 तुम लगातार भेड़ों के समान भटक रहे थे,” किंतु अब
अपने चरवाहे व अपनी आत्मा के रखवाले के पास लौट आए हो.

3 पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो, जिससे कि यदि उनमें से कोई
परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञा न माननेवाले हों तो वे तुम्हारे कुछ कहे
बिना ही अपनी-अपनी पत्नियों के स्वभाव के द्वारा विश्वास में शामिल किए जा
सकें, 2 क्योंकि वे तुम्हारे पवित्र तथा अच्छे स्वभाव को देखते रहते हैं. 3
तुम्हारा सौंदर्य सिर्फ दिखावटी न हो, जैसे बाल संवारना, सोने के गहने व वस्त्रों से
सजना. 4 परंतु तुम्हारा भीतरी व्यक्तित्व नम्रता व मन की दीनता जैसे अविनाशी
गुणों से सजा हुआ हो, जो परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य हैं. 5 पूर्वकाल में
पवित्र स्त्रियां, जिनकी भक्ति परमेश्वर में थी, अपने पति के अधीन रहते हुए
इसी रीति से श्रृंगार करती थी, 6 साराह अब्राहाम को स्वामी संबोधित करते
हुए उनकी आज्ञाकारी रहीं. यदि तुम निडर होकर वही करती हो, जो उचित
है, तो तुम उनकी संतान हो गई हो. 7 तुम, जो पति हो, इसी प्रकार अपनी-
अपनी पत्नी के साथ संवेदनशील होकर रहो क्योंकि वह नारी है—निर्बल पात्र.
जीवन के अनुग्रह के संगी वारिस के रूप में उसे सम्मान दो कि किसी रीति से
तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं. 8 अंततः, तुम सब हृदय में मैत्री भाव बनाए रखो;
सहानुभूति रखो; आपस में प्रेम रखो, करुणामय और नम्र बनो. 9 बुराई का बदला
बुराई से तथा निंदा का उत्तर निंदा से न दो; परंतु इसके विपरीत, उन्हें आशीष ही
दो क्योंकि इसी के लिए तुम बुलाए गए हो कि तुम्हें मीरास में आशीष प्राप्त हो,
10 क्योंकि लिखा है: “वह, जो जीवन से प्रेम करना और भले दिन देखना चाहे,
अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल की बातों से बचाए रखे. 11
बुराई में रुचि लेना छोड़कर परोपकार करे; मेल-मिलाप का यत्न करे और इसी के
लिए पीछा करे. 12 क्योंकि प्रभु की दृष्टि धर्मियों पर तथा उनके कान उनकी
विनती पर लगे रहते हैं, परंतु वह बुराई करनेवालों से दूर रहते हैं.” 13 यदि
तुममें भलाई की धुन है तो तुम्हें हानि कौन पहुंचाएगा? 14 परंतु यदि तुम वास्तव
में धार्मिकता के कारण कष्ट सहते हो, तो तुम आशीषित हो. “उनकी धमकियों से
न तो डरो और न घबराओ.” 15 मसीह को अपने हृदय में प्रभु के रूप में सम्मान
करो. तुम्हारे अंदर बसी हुई आशा के प्रति जिज्ञासु हर एक व्यक्ति को उत्तर
देने के लिए हमेशा तैयार रहो 16 किंतु विनम्रता और सम्मान के साथ. अपना
विवेक शुद्ध रखो कि जिन विषयों में वे, जो मसीह में तुम्हारे उत्तम स्वभाव की
निंदा करते हैं, लज्जित हों. 17 भलाई के कामों के लिए दुःख सहना अच्छा
है—यदि यही परमेश्वर की इच्छा है—इसके बजाय कि बुराई के लिए दुःख
सहा जाए. 18 मसीह ने भी पापों के लिए एक ही बार प्राणों को दे दिया—एक
धर्मी ने सभी अधर्मियों के लिए—कि वह तुम्हें परमेश्वर तक ले जाएं. उनकी
शारीरिक मृत्यु तो हुई किंतु परमेश्वर के आत्मा के द्वारा वह जीवित किए गए.
19 उन्होंने आत्मा ही में जाकर कैदी आत्माओं के सामने प्रचार किया. 20 ये
उस युग की आज्ञा न माननेवाली आत्माएं थी, जब नोहा द्वारा जलयान निर्माण के
समय परमेश्वर धीरज के साथ प्रतीक्षा करते रहे थे. उस जलयान में केवल कुछ
ही व्यक्ति—कुल आठ—प्रलयकारी जल से सुरक्षित रखे गए थे, 21 उसके
अनुसार जलयान में उनका प्रवेश बपतिस्मा का दृष्टांत है, जो अब तुम्हें भी
सुरक्षित रखता है. बपतिस्मा का अर्थ शरीर की मलिनता को स्वच्छ करना नहीं
परंतु मसीह येशु के पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर के प्रति शुद्ध विवेक से प्रतिज्ञा
है. 22 मसीह येशु स्वर्ग में जाकर परमेश्वर की दायीं ओर बैठ गए और सारे
स्वर्गदूतों, अधिकारियों तथा शक्तियों को उनके अधीन कर दिया गया.

4 इसलिये कि मसीह ने शरीर में दुःख सहा, तुम स्वयं भी वैसी ही मनोभाव
धारण कर लो, क्योंकि जिस किसी ने शरीर में दुःख सहा है, उसने पाप
को त्याग दिया है. 2 इसलिये अब से तुम्हारा शेष शारीरिक जीवन मानवीय
लालसाओं को पूरा करने में नहीं परंतु परमेश्वर की इच्छा के नियंत्रण में व्यतीत
हो. 3 काफ़ी था वह समय, जो तुम अन्यजातियों के समान इन लालसाओं
को पूरा करने में बिता चुके: कामुकता, वासना, मद्यपान उत्सव, व्यभिचार,
रंगरेलियां तथा घृणित मूर्तिपूजन. 4 अब वे अचंभा करते हैं कि तुम उसी
व्यभिचारिता की अधिकता में उनका साथ नहीं दे रहे. इसलिये अब वे तुम्हारी
बुराई कर रहे हैं. 5 अपने कामों का लेखा वे उन्हें देंगे, जो जीवितों और मरे
हुओं के न्याय के लिए तैयार हैं. 6 इसी उद्देश्य से ईश्वरीय सुसमाचार उन्हें भी
सुनाया जा चुका है, जो अब मरे हुए हैं कि वे मनुष्यों के न्याय के अनुसार शरीर
में तो दंडित किए जाएं किंतु अपनी आत्मा में परमेश्वर की इच्छानुसार जीवित
रह सकें. 7 संसार का अंत पास है इसलिये तुम प्रार्थना के लिए संयम और सचेत
भाव धारण करो. 8 सबसे उत्तम तो यह है कि आपस में उत्तम प्रेम रखो क्योंकि
प्रेम अनगिनत पापों पर पर्दा डाल देता है. 9 बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का
अतिथि-सत्कार करो. 10 हर एक ने परमेश्वर द्वारा विशेष क्षमता प्राप्त की है
इसलिये वह परमेश्वर के असीम अनुग्रह के उत्तम भंडारी होकर एक दूसरे की
सेवा करने के लिए उनका अच्छी तरह से उपयोग करें. 11 यदि कोई प्रवचन
करे, तो इस भाव में, मानो वह स्वयं परमेश्वर का वचन हो; यदि कोई सेवा करे,
तो ऐसी सामर्थ्य से, जैसा परमेश्वर प्रदान करते हैं कि सभी कामों में मसीह येशु
के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिनका साम्राज्य और महिमा सदा-सर्वदा है.
आमेन. **(aiōn g165)** 12 प्रियो, उस अग्नि रूपी परीक्षा से चकित न हो जो तुम्हें
परखने के उद्देश्य से तुम पर आएगी, मानो कुछ अनोखी घटना घट रही है, 13
परंतु जब तुम मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, आनंदित होते रहो कि मसीह
येशु की महिमा के प्रकट होने पर तुम्हारा आनंद उत्तम विजय आनंद हो जाए.
14 यदि मसीह के कारण तुम्हारी निंदा की जाती है तो तुम आशीषित हो क्योंकि
तुम पर परमेश्वर की महिमा का आत्मा छिपा है. 15 तुममें से कोई भी किसी भी
रीति से हत्यारे, चोर, दुराचारी या हस्तक्षेपी के रूप में यातना न भोगे; 16 परंतु
यदि कोई मसीही विश्वासी होने के कारण दुःख भोगे, वह इसे लज्जा की बात न
समझे परंतु मसीह की महिमा के कारण परमेश्वर की स्तुति करे. 17 परमेश्वर के
न्याय के प्रारंभ होने का समय आ गया है, जो परमेश्वर की संतान से प्रारंभ होगा
और यदि यह सबसे पहले हमसे प्रारंभ होता है तो उनका अंत क्या होगा, जो
परमेश्वर के ईश्वरीय सुसमाचार को नहीं मानते हैं? 18 और, “यदि धर्मी का ही
उद्धार कठिन होता है तो भक्तिहीन व पापी का क्या होगा?” 19 इसलिये वे
भी, जो परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख सहते हैं, अपनी आत्मा विश्वासयोग्य
सृजनहार को सौंप दें, और भले काम करते रहें.

5 इसलिये मैं, एक सह प्राचीन होकर, जो मसीह येशु के दुःखों का प्रत्यक्ष
गवाह तथा उस महिमा का सहभागी हूं, जो भविष्य में प्रकट होने पर है,
तुम्हारे पुरनियों से विनती कर रहा हूं 2 कि वे परमेश्वर की इच्छा में परमेश्वर के
झुंड की देखरेख करें—दबाव में नहीं परंतु अपनी इच्छा के अनुसार; अनुचित
लाभ की दृष्टि से नहीं परंतु शुद्ध सेवाभाव में, 3 अपने झुंड पर प्रभुता दिखाकर
नहीं परंतु उनके लिए एक आदर्श बनकर; 4 क्योंकि प्रधान चरवाहे के प्रकट
होने पर तुम महिमा का अविनाशी मुकुट प्राप्त करोगे. 5 इसी प्रकार युवाओ,
तुम प्राचीनों के अधीन रहो तथा तुम सभी एक दूसरे के प्रति दीनता की भावना
धारण करो क्योंकि, “परमेश्वर घमंडियों के विरुद्ध रहते और दीनों को अनुग्रह
देते हैं.” 6 इसलिये परमेश्वर के सामर्थ्यी हाथों के नीचे स्वयं को दीन बनाए
रखो कि वह तुम्हें सही समय पर बढ़ाएं. 7 अपनी सारी चिंता का बोझ परमेश्वर
पर डाल दो क्योंकि वह तुम्हारा ध्यान रखते हैं. 8 धीरज रखो, सावधान रहो.

तुम्हारा विरोधी शैतान गरजते हुए सिंह जैसे इस खोज में फिरता रहता है कि
किसको फाड़ खाए. 9 विश्वास में स्थिर रहकर उसका सामना करो क्योंकि तुम
जानते हो कि इस संसार में साथी विश्वासी इसी प्रकार दुःख-भोग रहे हैं. 10 जब
तुम थोड़े समय के लिए दुःख-भोग चुके होगे तब सारे अनुग्रह के परमेश्वर,
जिन्होंने तुम्हें मसीह में अपनी अनंत काल की महिमा में आमंत्रित किया है,
स्वयं तुम्हें सिद्ध, स्थिर, मजबूत तथा प्रतिष्ठित करेंगे. (aiōnios g166) 11 उनका
अधिकार सदा-सर्वदा हो, आमेन. (aiōn g165) 12 सिलवानॉस की सहायता से,
जिसे मैं एक विश्वासयोग्य भाई मानता हूं, मैंने तुम्हें प्रोत्साहित तथा आश्वस्त
करते हुए संक्षेप में लिखा है कि यही परमेश्वर का वास्तविक अनुग्रह है. तुम
इसी में स्थिर रहो. 13 तुम्हें उसकी शुभकामनाएं, जो बाबेल में है, जिसे तुम्हारे
ही साथ चुनकर अलग किया गया है और उसी प्रकार मेरे पुत्र मार्कास की भी.
14 प्रेम के चुंबन के द्वारा एक दूसरे को नमस्कार करो. तुम सभी को, जो मसीह
में हैं, शांति!

2 पतरस

1 मसीह येशु के दास तथा प्रेरित शिमओन पेतरॉस की ओर से उन्हें, जिन्होंने
हमारे परमेश्वर तथा उद्धारकर्ता मसीह येशु की धार्मिकता के द्वारा हमारे
समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है: 2 तुम्हें हमारे परमेश्वर तथा प्रभु येशु
मसीह के संपूर्ण ज्ञान में अनुग्रह तथा शांति बहुतायत में प्राप्त हो. 3 परमेश्वर
ने हमारी बुलावा स्वयं अपने प्रताप और परम उत्तमता के द्वारा की है. उनके
ईश्वरीय सामर्थ्य ने उनके सत्य ज्ञान में हमें जीवन और भक्ति से संबंधित सभी
कुछ दे दिया है. 4 क्योंकि इन्हीं के द्वारा उन्होंने हमें अपनी विशाल और
बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं प्रदान की हैं कि तुम संसार में बसी हुई कामासक्ति से प्रेरित
भ्रष्टाचार से मुक्त हो ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी हो जाओ. 5 इसलिये तुम हर
संभव कोशिश करते हुए अपने विश्वास में नैतिक सदगुण, नैतिक सदगुण में
समझ, 6 अपने समझ में आत्मसंयम, आत्मसंयम में धीरज, धीरज में भक्ति, 7
भक्ति में भाईचारा तथा भाईचारे में निस्स्वार्थ प्रेम में बढ़ते जाओ. 8 यदि तुममें ये
गुण मौजूद हैं और यदि तुममें इनका विकास हो रहा है तब इनके कारण तुम हमारे
प्रभु येशु मसीह के संपूर्ण ज्ञान में न तो निकम्मे होगे और न ही निष्फल; 9 जिस
व्यक्ति में ये गुण मौजूद नहीं हैं, वह अंधा है या धुंधला देखता है क्योंकि वह
अपने पिछले पापों से शुद्ध होने को भुला चुका है. 10 इसलिये, प्रिय भाई बहनो,
अपने बुलावे को तथा चुन लिए जाने को साबित करने के लिए भली-भांति
प्रयास करते रहो. यदि तुम ऐसा करते रहोगे तो कभी भी मार्ग से न भटकोगे, 11
इस प्रकार हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता मसीह येशु के अनंत काल के राज्य में
तुम्हारे प्रवेश पर तुम्हारा भव्य स्वागत होगा. (aiōnios g166) 12 हालांकि तुम
इन विषयों से अच्छी तरह से परिचित हो और उस सच्चाई में बने रहते हो तो
भी मैं तुम्हें इन बातों की याद दिलाने के लिए हमेशा उत्सुक रहूंगा. 13 जब तक
मैं इस शरीर रूपी डेरे में हूं, तुम्हें याद दिलाते हुए सावधान रखना सही समझता
हूं. 14 मैं यह जानता हूं कि मेरे देह छोड़ने का समय बहुत नज़दीक है. परमेश्वर
करें कि ठीक वैसा ही हो जैसा हमारे प्रभु येशु मसीह ने मुझ पर प्रकाशित किया
है. 15 मैं हर संभव कोशिश करूंगा कि मेरे जाने के बाद भी तुम इन बातों को
याद रख सको. 16 जब हमने तुम पर हमारे प्रभु येशु मसीह के सामर्थ्य और दूसरे
आगमन के सत्य प्रकाशित किए, हमने कोई चतुराई से गढ़ी गई कहानियों का
सहारा नहीं लिया था—हम स्वयं उनके प्रताप के प्रत्यक्षदर्शी थे. 17 जब
मसीह येशु ने पिता परमेश्वर से आदर और महिमा प्राप्त की, प्रतापमय महिमा
ने उन्हें संबोधित करते हुए यह पुकारा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है—मेरा अत्यंत
प्रिय—जिससे मैं प्रसन्न हूं." 18 उनके साथ जब हम पवित्र पर्वत पर थे, स्वर्ग से
निकले इस शब्द को हमने स्वयं सुना. 19 इसलिये भविष्यद्वक्ताओं का वचन
और अधिक विश्वसनीय हो गया है. उस पर तुम्हारा ध्यान केंद्रित करना ठीक
वैसे ही भला है जैसे जलते हुए दीपक पर ध्यान केंद्रित करना—जब तक पौ
नहीं फटती और तुम्हारे हृदयों में भोर का तारा उदित नहीं होता. 20 किंतु
सबसे पहले यह समझ लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी स्वयं
भविष्यद्वक्ताओं का अपना विचार नहीं है. 21 क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी
मनुष्य की इच्छा के आदेश से मुंह से नहीं निकलती, परंतु भविष्यवक्ता पवित्र
आत्मा से उत्तेजित किए जाकर परमेश्वर की ओर से घोषणा किया करते थे.

2 झूठे भविष्यवक्ता इस्राएल राष्ट्र में भी उठे थे, ठीक इसी प्रकार तुम्हारे बीच
भी झूठे शिक्षक उठेंगे. वे उन स्वामी को, जिन्होंने उन्हें मोल लिया है,
अस्वीकार करते हुए गुप्त रूप से विनाशकारी पाखंड का उद्घाटन करेंगे. इनके
द्वारा वे स्वयं अपने ऊपर शीघ्र, अचानक विनाश ले आएंगे. 2 अनेक लोग
उनके अनुसार दूषित स्वभाव का अनुसरण करेंगे. उनके कारण सच का मार्ग
निन्दित हो जाएगा. 3 वे लालच के कारण तुम्हें अपनी झूठी गढ़ी हुई बातों में
फंसाकर तुमसे अनुचित लाभ उठाएंगे. उनके लिए पहले से तय किया न्याय-
दंड न तो निष्क्रिय हुआ है और न ही उनका विनाश सोया हुआ है. 4 जब
परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को भी क्षमा नहीं किया, जिन्होंने पाप किया था
परंतु उन्हें न्याय के लिए पाताल के अंधेरे गड्ढों में धकेल रखा है; (Tartaroō
g5020) 5 जब उन्होंने प्राचीन संसार को भी नहीं छोड़ा परंतु पानी की बाढ़ द्वारा
अधर्मियों के संसार का नाश किया—धार्मिकता के प्रचारक नोहा तथा सात
अन्य के अतिरिक्त; 6 यदि उन्होंने सोदोम और गोमोरा नगरों को भस्म कर
विनाशकारी दंड दिया कि वे आनेवाले कुकर्मियों के लिए उदाहरण बन जाएं; 7
यदि परमेश्वर ने अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दुःखी धर्मी लोत का
उद्धार किया, 8 (जो उन लोगों के बीच निवास करते हुए, उनका अधर्म का
स्वभाव देख व सुन दिन-प्रतिदिन अपनी धर्मी अंतरात्मा में तीव्र यातना सहते थे)
9 तो यह स्पष्ट है, कि प्रभु यह जानते हैं कि धर्मियों को किस प्रकार परीक्षा से
निकाला जाए तथा यह भी कि किस प्रकार अधर्मियों को न्याय के दिन पर
दंडित किए जाने के लिए संभाल कर रखा जाए, 10 विशेष रूप से उन्हें, जो
कामुकता की अशुद्ध अभिलाषाओं में लीन रहते तथा प्रभुता को तुच्छ समझते
हैं. ये ढीठ तथा घमंडी व्यक्ति, तेजोमय स्वर्गीय प्राणियों तक की निंदा करने
का दुस्साहस कर बैठते हैं; 11 जबकि स्वर्गदूत तक, जो इनसे कहीं अधिक
शक्तिशाली और समर्थ हैं, प्रभु के सामने उन पर भला-बुरा कहकर दोष नहीं
लगाते. 12 ये व्यक्ति उन निर्बुद्धि पशुओं के समान हैं, जिनका जन्म ही ऐसे
प्राणियों के रूप में हुआ है कि इन्हें पकड़कर इनका वध किया जाए. ये उन
विषयों की उल्लाहना करते हैं, जिनका इन्हें कोई ज्ञान नहीं. ये भी इन्हीं पशुओं
के समान नाश हो जाएंगे. 13 इन्हें बुरे कामों का बुरा फल मिलेगा. दिन में भोग
विलास इनके लिए आनंद का साधन है. ये वे घोर कलंक हैं, जो तुम्हारे प्रेम-
भोजों में घुसकर अपने छलावे का आनंद लेते हैं. 14 इनकी आंखें व्यभिचार से
भरी हुई हैं और ये पाप करने से नहीं चूकते. ये चंचल व्यक्तियों को लुभाते हैं,
इनके हृदय में लालच भरा है, ये शापित संतान हैं. 15 बिओर के पुत्र बिलआम
के समान, जिसने अधर्म से कमाए हुए धन का लालच किया, ये भी सच्चाई
का मार्ग को छोड़कर भटक गए. 16 उसे अपने अपराधों के लिए फटकार
भी पड़ी—एक गूंगे गधे ने मनुष्य के शब्द में बातें कर उस भविष्यवक्ता के
बावलेपन को रोका. 17 ये सूखे कुएं तथा आंधी द्वारा उड़ाई धुंध हैं, जिनके लिए
अनंत काल का घोर अंधकार तय किया गया है. (questioned) 18 ये घमंड भरी
व्यर्थ की बातों से उन लोगों को कामुकता की शारीरिक अभिलाषाओं में लुभाते
हैं, जो मार्ग से भटके लोगों में से बाल-बाल बचकर निकल आए हैं. 19 ये उनसे
स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा तो करते हैं, जबकि स्वयं विनाश के दास हैं. मनुष्य उसी
का दास बन जाता है, जिससे वह हार जाता है. 20 यदि वे मसीह येशु हमारे प्रभु
और उद्धारकर्ता के सारे ज्ञान के द्वारा संसार की मलिनता से छूटकर निकलने के
बाद दोबारा उसी में फंसकर उसी के अधीन हो गए हैं, तो यह स्पष्ट है कि उनकी
वर्तमान स्थिति पिछली स्थिति से बदतर हो चुकी है. 21 उत्तम तो यही होता कि
उन्हें धार्मिकता के मार्ग का अहसास ही न हुआ होता बजाय इसके कि वह उसे
जानने के बाद जो पवित्र आज्ञा उन्हें सौंपी गई थी उससे मुंह मोड़ते. 22 उनका
स्वभाव इस कहावत को सच साबित करता है, "कुत्ता अपनी ही उल्टी की ओर
लौटता है," तथा "नहाई हुई सूअरिया कीचड़ में लोटने लौट जाती है."

3 प्रिय भाई बहनो, मेरी ओर से यह तुम्हें दूसरा पत्र है. इन दोनों पत्रों के द्वारा
मैं तुम्हें दोबारा याद दिलाते हुए तुम्हारे निर्मल मन को छलकाना चाहता हूं.
2 यह तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि तुम पवित्र भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से कही
बातों तथा प्रेरितों के माध्यम से दिए गए हमारे प्रभु व उद्धारकर्ता के आदेशों को
याद करो. 3 सबसे पहले, तुम्हारे लिए यह समझ लेना ज़रूरी है कि अंतिम

दिनों में अपनी ही वासनाओं द्वारा नियंत्रित ठट्ठा करनेवालों का आगमन होगा,
4 जो ठट्ठा करते हुए यह कहेंगे: "क्या हुआ प्रभु के दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा
का? पूर्वजों की मृत्यु से अब तक सब कुछ वैसा ही चल रहा है जैसा सृष्टि के
प्रारंभ से था." 5 जब वे जानबूझकर यह भूल जाते हैं कि प्राचीन काल में
परमेश्वर के शब्द मात्र द्वारा आकाशमंडल अस्तित्व में आया तथा शब्द ही के
द्वारा जल में से, जल के द्वारा ही पृथ्वी की रचना हुई. 6 यह उनके ठट्ठे का ही
परिणाम था कि उस समय का संसार जल की बाढ़ के द्वारा नाश किया गया. 7
इसी शब्द के द्वारा वर्तमान आकाशमंडल तथा पृथ्वी अग्नि के लिए रखे गए तथा
न्याय के दिन पर अधर्मियों के नाश के लिए सुरक्षित रखे जा रहे है. 8 किंतु प्रिय
भाई बहनो, इस बात को कभी भूलने न देना कि प्रभु के सामने एक दिन एक
हज़ार वर्ष और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर हैं. 9 प्रभु अपनी प्रतिज्ञा को पूरी
करने में देर नहीं करते जैसा कुछ लोगों का विचार है. वह तुम्हारे प्रति धीरज
धरते हैं और नहीं चाहते कि किसी का भी विनाश हो परंतु यह कि सभी को पाप
से मन फिराने का सुअवसर प्राप्त हो. 10 प्रभु का दिन चोर के समान अचानक
से आएगा, जिसमें आकाशमंडल गड़गड़ाहट की तेज आवाज करते हुए नष्ट हो
जाएगा, तत्व बहुत ही गर्म होकर पिघल जाएंगे तथा पृथ्वी और उस पर किए
गए सभी काम प्रकट हो जाएंगे. 11 जब इन सभी वस्तुओं का इस रीति से नाश
होना निश्चित है तो पवित्र चालचलन तथा भक्ति में तुम्हारा किस प्रकार के
व्यक्ति होना सही है, 12 जब तुम परमेश्वर के दिन के लिए ऐसी लालसा में
इंतजार कर रहे हो, मानो उसे गति प्रदान कर रहे हो तो इस बात के प्रकाश में
जब आकाशमंडल आग से नाश कर दिया जाएगा तथा तेज गर्मी के कारण तत्व
पिघल जाएंगे 13 प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथ्वी की
प्रतीक्षा कर रहे हैं, जहां धार्मिकता का वास है. 14 इसलिये प्रिय भाई बहनो,
जब तुम उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हो, कोशिश करो कि प्रभु की दृष्टि में
निष्कलंक तथा निर्दोष पाए जाओ तथा तुममें उनकी शांति का वास हो. 15
हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो—ठीक जैसे हमारे प्रिय भाई पौलॉस ने
उन्हें दिए गए ज्ञान के अनुसार तुम्हें लिखा है, 16 जैसे उन्होंने अपने सभी पत्रों
में भी इन्हीं विषयों का वर्णन किया है, जिनमें से कुछ विषय समझने में कठिन
हैं, जिन्हें अस्थिर तथा अनपढ़ लोग बिगाड़ देते हैं—जैसा कि वे शेष पवित्र
शास्त्र के साथ भी करते हैं; जिससे वे स्वयं अपना ही विनाश कर लेते हैं. 17
इसलिये प्रिय भाई बहनो, यह सब पहले से जानते हुए सचेत रहो. ऐसा न हो कि
अधर्मियों की गलत शिक्षा में बहककर स्थिरता से तुम गिर न जाओ. 18 हमारे
प्रभु और उद्धारकर्ता मसीह येशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ. उनकी
महिमा अब भी और युगानुयुग होती रहे! आमेन. **(aiōn g165)**

1 यूहन्ना

1 जीवन देनेवाले उस वचन के विषय में, जो आदि से था, जिसे हमने सुना,
जिसे हमने अपनी आंखों से देखा, ध्यान से देखा और जिसको हमने छुआ.
2 जब यह जीवन प्रकट हुआ, तब हमने उसे देखा और अब हम उसके गवाह हैं.
हम तुम्हें उसी अनंत जीवन का संदेश सुना रहे हैं, जो पिता के साथ था और जो
हम पर प्रकट किया गया. **(aiōnios g166)** **3** हमारे समाचार का विषय वही है,
जिसे हमने देखा और सुना है. यह हम तुम्हें भी सुना रहे हैं कि हमारे साथ
तुम्हारी भी संगति हो. वास्तव में हमारी यह संगति पिता और उनके पुत्र मसीह
येशु के साथ है. **4** यह सब हमने इसलिये लिखा है कि हमारा आनंद पूरा हो
जाए. **5** यही है वह समाचार, जो हमने उनसे सुना और अब हम तुम्हें सुनाते हैं:
परमेश्वर ज्योति हैं. अंधकार उनमें ज़रा सा भी नहीं. **6** यदि हम यह दावा करते
हैं कि हमारी उनके साथ संगति है और फिर भी हम अंधकार में चलते हैं तो हम
झूठे हैं और सच पर नहीं चलते. **7** किंतु यदि हम ज्योति में चलते हैं, जैसे वह
स्वयं ज्योति में हैं, तो हमारी संगति आपसी है और उनके पुत्र मसीह येशु का लहू
हमें सभी पापों से शुद्ध कर देता है. **8** यदि हम पापहीन होने का दावा करते हैं,
तो हमने स्वयं को धोखे में रखा है और सच हममें है ही नहीं. **9** यदि हम अपने
पापों को स्वीकार करें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने तथा हमें सभी अधर्मों
से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं. **10** यदि हम यह दावा करते हैं कि
हमने पाप किया ही नहीं तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं तथा उनके वचन
का हमारे अंदर वास है ही नहीं.

2 मेरे बच्चों, मैं यह सब तुम्हें इसलिये लिख रहा हूं कि तुम पाप न करो किंतु
यदि किसी से पाप हो ही जाए तो पिता के पास हमारे लिए एक सहायक है
मसीह येशु, जो धर्मी हैं. **2** वही हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलि हैं—मात्र
हमारे ही पापों के लिए नहीं परंतु सारे संसार के पापों के लिए. **3** परमेश्वर के
आदेशों का पालन करना इस बात का प्रमाण है कि हमने परमेश्वर को जान
लिया है. **4** वह, जो यह कहता तो रहता है, "मैं परमेश्वर को जानता हूं," किंतु
उनके आदेशों और आज्ञाओं के पालन नहीं करता, झूठा है और उसमें सच है
ही नहीं **5** परंतु जो कोई उनकी आज्ञा का पालन करता है, उसमें परमेश्वर का
प्रेम वास्तव में सिद्धता तक पहुंचा दिया गया है. परमेश्वर में हमारे स्थिर बने रहने
का प्रमाण यह है: **6** जो कोई यह दावा करता है कि वह मसीह येशु में स्थिर है,
तो वह उन्हीं के समान चालचलन भी करे. **7** प्रिय भाई बहनो, मैं तुम्हें कोई नई
आज्ञा नहीं परंतु वही आज्ञा लिख रहा हूं, जो प्रारंभ ही से थी; यह वही समाचार
है, जो तुम सुन चुके हो. **8** फिर भी मैं तुम्हें एक नई आज्ञा लिख रहा हूं, जो
मसीह में सच था तथा तुममें भी सच है. अंधकार मिट रहा है तथा वास्तविक
ज्योति चमकी है. **9** वह, जो यह दावा करता है कि वह ज्योति में है, फिर भी
अपने भाई से घृणा करता है, अब तक अंधकार में ही है. **10** जो साथी विश्वासी
से प्रेम करता है, उसका वास ज्योति में है, तथा उसमें ऐसा कुछ भी नहीं जिससे
वह ठोकर खाए. **11** परंतु वह, जो साथी विश्वासी से घृणा करता है, अंधकार में
है, अंधकार में ही चलता है तथा नहीं जानता कि वह किस दिशा में बढ़ रहा
है क्योंकि अंधकार ने उसे अंधा बना दिया है. **12** बच्चों, यह सब मैं तुम्हें
इसलिये लिख रहा हूं, कि मसीह येशु के नाम के लिए तुम्हारे पाप क्षमा किए गए
हैं. **13** तुम्हें, जो पिता हो, मैं यह इसलिये लिख रहा हूं कि तुम उन्हें जानते हो,
जो आदि से हैं. तुम्हें, जो युवा हो, इसलिये कि तुमने उस दुष्ट को हरा दिया है.
14 प्रभु में नए जन्मे शिशुओं, तुम्हें इसलिये कि तुम पिता को जानते हो. तुम्हें, जो
पिता हो, मैं इसलिये लिख रहा हूं कि तुम उन्हें जानते हो, जो आदि से हैं. तुम्हें,
जो नौजवान हो, इसलिये कि तुम बलवंत हो, तुममें परमेश्वर के शब्द का वास
है, और तुमने उस दुष्ट को हरा दिया है. **15** न तो संसार से प्रेम रखो और न ही
सांसारिक वस्तुओं से. यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, उसमें पिता का प्रेम होता
ही नहीं. **16** वह सब, जो संसार में समाया हुआ है—शरीर की अभिलाषा,
आंखों की लालसा तथा जीवनशैली का घमंड—पिता की ओर से नहीं परंतु
संसार की ओर से है. **17** संसार अपनी अभिलाषाओं के साथ मिट रहा है, किंतु
वह, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, सर्वदा बना रहता है. **(aiōn g165)** **18**
प्रभु में नए जन्मे शिशुओं, यह अंतिम समय है और ठीक जैसा तुमने सुना ही है
कि मसीह विरोधी प्रकट होने पर है, इस समय भी अनेक मसीह विरोधी उठ
खड़े हुए हैं, जिससे यह साबित होता है कि यह अंतिम समय है. **19** वे हमारे
बीच ही से बाहर चले गए—वास्तव में वे हमारे थे ही नहीं—यदि वे हमारे होते
तो हमें छोड़कर न जाते. उनका हमें छोड़कर जाना ही यह स्पष्ट कर देता है कि
उनमें से कोई भी हमारा न था. **20** किंतु तुम्हारा अभिषेक उन पवित्र मसीह येशु
से है, इसका तुम्हें अहसास भी है. **21** मेरा यह सब लिखने का उद्देश्य यह नहीं
कि तुम सच्चाई से अनजान हो परंतु यह कि तुम इससे परिचित हो. किसी भी
झूठ का जन्म सच से नहीं होता. **22** झूठा कौन है? सिवाय उसके, जो येशु के
मसीह होने की बात को अस्वीकार करता है? यही मसीह विरोधी है, जो पिता
और पुत्र को अस्वीकार करता है. **23** हर एक, जो पुत्र को अस्वीकार करता है,
पिता भी उसके नहीं हो सकते. जो पुत्र का अंगीकार करता है, पिता परमेश्वर
भी उसके हैं. **24** इसका ध्यान रखो कि तुममें वही शिक्षा स्थिर रहे, जो तुमने
प्रारंभ से सुनी है. यदि वह शिक्षा, जो तुमने प्रारंभ से सुनी है, तुममें स्थिर है तो
तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे. **25** अनंत जीवन ही उनके द्वारा हमसे की
गई प्रतिज्ञा है. **(aiōnios g166)** **26** यह सब मैंने तुम्हें उनके विषय में लिखा है,
जो तुम्हें मार्ग से भटकाने का प्रयास कर रहे हैं. **27** तुम्हारी स्थिति में प्रभु के
द्वारा किया गया वह अभिषेक का तुममें स्थिर होने के प्रभाव से यह ज़रूरी ही
नहीं कि कोई तुम्हें शिक्षा दे. उनके द्वारा किया गया अभिषेक ही तुम्हें सभी
विषयों की शिक्षा देता है. यह शिक्षा सच है, झूठ नहीं. ठीक जैसी शिक्षा तुम्हें
दी गई है, तुम उसी के अनुसार मसीह में स्थिर बने रहो. **28** बच्चों, उनमें स्थिर
रहो कि जब वह प्रकट हों तो हम निडर पाए जाएं तथा उनके आगमन पर हमें
लज्जित न होना पड़े. **29** यदि तुम्हें यह अहसास है कि वह धर्मी हैं तो यह जान
लो कि हर एक धर्मी व्यक्ति भी उन्हीं से उत्पन्न हुआ है.

3 विचार तो करो कि कैसा अथाह है हमारे प्रति परमेश्वर पिता का प्रेम, कि
हम परमेश्वर की संतान कहलाएं; जो वास्तव में हम हैं. संसार ने परमेश्वर
को नहीं पहचाना इसलिये वह हमें भी नहीं पहचानता. **2** प्रिय भाई बहनो, अब
हम परमेश्वर की संतान हैं और अब तक यह प्रकट नहीं किया गया है कि
भविष्य में हम क्या बन जाएंगे किंतु हम यह अवश्य जानते हैं कि जब वह प्रकट
होंगे तो हम उनके समान होंगे तथा उन्हें वैसा ही देखेंगे ठीक जैसे वह हैं. **3** हर
एक व्यक्ति, जिसने उनसे यह आशा रखी है, स्वयं को वैसा ही पवित्र रखता है,
जैसे वह पवित्र हैं. **4** पाप में लीन प्रत्येक व्यक्ति व्यवस्था भंग करने का दोषी
है—वास्तव में व्यवस्था भंग करना ही पाप है. **5** तुम जानते हो कि मसीह येशु
का प्रकट होना इसलिये हुआ कि वह पापों को हर ले जाएं. उनमें पाप ज़रा सा
भी नहीं. **6** कोई भी व्यक्ति, जो उनमें बना रहता है, पाप नहीं करता रहता; पाप
में लीन व्यक्ति ने न तो उन्हें देखा है और न ही उन्हें जाना है. **7** प्रिय भाई बहनो,
कोई तुम्हें मार्ग से भटकाने न पाए. जो सही है वही जो करता है; धर्मी वही है
जैसे मसीह येशु धर्मी हैं. **8** पाप में लीन हर एक व्यक्ति शैतान से है क्योंकि
शैतान प्रारंभ ही से पाप करता रहा है. परमेश्वर-पुत्र का प्रकट होना इसलिये हुआ
कि वह शैतान के कामों का नाश कर दें. **9** परमेश्वर से उत्पन्न कोई भी व्यक्ति
पाप में लीन नहीं रहता क्योंकि परमेश्वर का मूल तत्व उसमें बना रहता है.
उसमें पाप करते रहने की क्षमता नहीं रह जाती क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न

हुआ है. 10 परमेश्वर की संतान व शैतान की संतान की पहचान इसी से हो जाती
है: कोई भी व्यक्ति, जिसका जीवन धर्मी नहीं है, परमेश्वर से नहीं है और न ही
वह, जिसे अपने भाई से प्रेम नहीं है. 11 तुमने आरंभ ही से यह संदेश सुना है
कि हममें आपस में प्रेम हो. 12 हम काइन जैसे न हों, जो उस दुष्ट से था और
जिसने अपने भाई की हत्या कर दी. उसने अपने भाई की हत्या किस लिए की?
इसलिये कि उसके काम बुरे तथा उसके भाई के काम धार्मिकता के थे. 13 यदि
संसार तुमसे घृणा करता है, तो, प्रिय भाई बहनो, चकित न हो. 14 हम जानते हैं
कि हम मृत्यु के अधिकार से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं, क्योंकि
हममें आपस में प्रेम है; वह, जिसमें प्रेम नहीं, मृत्यु के अधिकार में ही है. 15 हर
एक, जो साथी विश्वासी से घृणा करता है, हत्यारा है. तुम्हें यह मालूम है कि
किसी भी हत्यारे में अनंत जीवन मौजूद नहीं रहता. **(aiōnios g166)** 16 प्रेम
क्या है यह हमने इस प्रकार जाना: मसीह येशु ने हमारे लिए प्राणों का त्याग कर
दिया. इसलिये हमारा भी एक दूसरे भाई बहनों के लिए अपने प्राणों का त्याग
करना सही है. 17 जो कोई संसार की संपत्ति के होते हुए भी साथी विश्वासी की
ज़रूरत की अनदेखी करता है, तो कैसे कहा जा सकता है कि उसमें परमेश्वर का
प्रेम मौजूद है? 18 प्रिय भाई बहनो, हमारे प्रेम की अभिव्यक्ति वचन व मौखिक
नहीं परंतु कामों और सच्चाई में हो. 19 इसी के द्वारा हमें ढाढस मिलता है कि
हम उसी सत्य के हैं. इसी के द्वारा हम परमेश्वर के सामने उन सभी विषयों में
आश्वस्त हो सकेंगे. 20 जब कभी हमारा अंतर्मन हम पर आरोप लगाता रहता
है; क्योंकि परमेश्वर हमारे हृदय से बड़े हैं, वह सर्वज्ञानी हैं. 21 इसलिये प्रिय
भाई बहनो, यदि हमारा मन हम पर आरोप न लगाए तो हम परमेश्वर के सामने
निडर बने रहते हैं 22 तथा हम उनसे जो भी विनती करते हैं, उनसे प्राप्त करते हैं
क्योंकि हम उनके आदेशों का पालन करते हैं तथा उनकी इच्छा के अनुसार
स्वभाव करते हैं. 23 यह परमेश्वर की आज्ञा है: कि हम उनके पुत्र मसीह येशु में
विश्वास करें तथा हममें आपस में प्रेम हो जैसा उन्होंने हमें आज्ञा दी है. 24 वह,
जो उनके आदेशों का पालन करता है, उनमें स्थिर है और उसके भीतर उनका
वास है. इसका अहसास हमें उन्हीं पवित्र आत्मा द्वारा होता है, जिन्हें परमेश्वर ने
हमें दिया है.

4 प्रिय भाई बहनो, हर एक आत्मा का विश्वास न करो परंतु आत्माओं को
परखकर देखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं भी या नहीं, क्योंकि संसार में
अनेक झूठे भविष्यवक्ता पवित्र आत्मा के वक्ता होने का दावा करते हुए कार्य
कर रहे हैं. 2 परमेश्वर के आत्मा को तुम इस प्रकार पहचान सकते हो: ऐसी हर
एक आत्मा, जो परमेश्वर की ओर से है, यह स्वीकार करती है कि मसीह येशु
का अवतार मानव के शरीर में हुआ. 3 ऐसी हर एक आत्मा, जो मसीह येशु
को स्वीकार नहीं करती परमेश्वर की ओर से नहीं है. यह मसीह विरोधी की
आत्मा है, जिसके विषय में तुमने सुना था कि वह आने पर है और अब तो
वह संसार में आ ही चुकी है. 4 प्रिय भाई बहनो, तुम परमेश्वर के हो. तुमने
झूठे भविष्यद्वक्ताओं को हराया है; श्रेष्ठ वह हैं, जो तुम्हारे अंदर में हैं, बजाय
उसके जो संसार में है. 5 वे संसार के हैं इसलिये उनकी बातचीत के विषय भी
सांसारिक ही होते हैं तथा संसार उनकी बातों पर मन लगाता है. 6 हम परमेश्वर
की ओर से हैं. वे जो परमेश्वर को जानते है, हमारी सुनते हैं. जो परमेश्वर के
नहीं है, वह हमारी नहीं सुनते. इसी से हम सत्य के आत्मा तथा असत्य के
आत्मा की पहचानकर सकते हैं. 7 प्रिय भाई बहनो, हममें आपसी प्रेम रहे:
प्रेम परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है. हर एक, जिसमें प्रेम है, परमेश्वर से जन्मा है
तथा उन्हें जानता है. 8 वह जिसमें प्रेम नहीं, परमेश्वर से अनजान है क्योंकि
परमेश्वर प्रेम हैं. 9 हममें परमेश्वर का प्रेम इस प्रकार प्रकट हुआ: परमेश्वर ने
अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेजा कि हम उनके द्वारा जीवन प्राप्त करें. 10
प्रेम वस्तुतः यह है: परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम के कारण अपने पुत्र को
हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलि होने के लिए भेज दिया—यह नहीं कि हमने
परमेश्वर से प्रेम किया है. 11 प्रिय भाई बहनो, यदि हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम
इतना अधिक है तो सही है कि हममें भी आपस में प्रेम हो. 12 परमेश्वर को
किसी ने कभी नहीं देखा. यदि हममें आपस में प्रेम है तो हमारे भीतर परमेश्वर
का वास है तथा उनके प्रेम ने हममें पूरी सिद्धता प्राप्त कर ली है. 13 हमें यह
अहसास होता है कि हमारा उनमें और उनका हममें वास है क्योंकि उन्होंने हमें
अपना आत्मा दिया है. 14 हमने यह देखा है और हम इसके गवाह हैं कि
पिता ने पुत्र को संसार का उद्धारकर्ता होने के लिए भेज दिया. 15 जो कोई यह
स्वीकार करता है कि मसीह येशु परमेश्वर-पुत्र हैं, परमेश्वर का उसमें और
उसका परमेश्वर में वास है. 16 हमने अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम को जान लिया
और उसमें विश्वास किया है. परमेश्वर प्रेम हैं. वह, जो प्रेम में स्थिर है, परमेश्वर
में बना रहता है तथा स्वयं परमेश्वर उसमें बना रहता हैं. 17 तब हमें न्याय के
दिन के संदर्भ में निर्भयता प्राप्त हो जाती है क्योंकि संसार में हमारा स्वभाव
मसीह के स्वभाव के समान हो गया है, परिणामस्वरूप हमारा आपसी प्रेम सिद्धता
की स्थिति में पहुंच जाता है. 18 इस प्रेम में भय का कोई भाग नहीं होता
क्योंकि सिद्ध प्रेम भय को निकाल फेंकता है. भय का संबंध दंड से है और
उसने, जो भयभीत है प्रेम में यथार्थ सम्पन्नता प्राप्त नहीं की. 19 हम प्रेम
इसलिये करते हैं कि पहले उन्होंने हमसे प्रेम किया है. 20 यदि कोई दावा करे,
“मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं” परंतु साथी विश्वासी से घृणा करे, वह झूठा है,
क्योंकि जिसने साथी विश्वासी को देखा है और उससे प्रेम नहीं करता तो वह
परमेश्वर से, जिन्हें उसने देखा ही नहीं, प्रेम कर ही नहीं सकता, 21 यह आज्ञा
हमें उन्हीं से प्राप्त हुई है कि वह, जो परमेश्वर से प्रेम करता है, साथी विश्वासी
से भी प्रेम करे.

5 हर एक, जिसका विश्वास यह है कि येशु ही मसीह हैं, वह परमेश्वर से
उत्पन्न हुआ है तथा हर एक जिसे पिता से प्रेम है, उसे उससे भी प्रेम है,
जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है. 2 परमेश्वर की संतान से हमारे प्रेम की पुष्टि
परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम और उनकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा होती
है. 3 परमेश्वर के आदेशों का पालन करना ही परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम का
प्रमाण है. उनकी आज्ञा बोझिल नहीं हैं, 4 जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह
संसार पर विजयी है. वह विजय, जो संसार पर है, यह है; हमारा विश्वास.
5 कौन है वह, जो संसार पर विजयी होता है? क्या वही नहीं, जिसका यह
विश्वास है कि मसीह येशु ही परमेश्वर-पुत्र हैं? 6 यह वही हैं, जो जल व लहू के
द्वारा प्रकट हुए मसीह येशु. उनका आगमन न केवल जल से परंतु जल तथा लहू
से हुआ इसके साक्षी पवित्र आत्मा हैं क्योंकि पवित्र आत्मा ही वह सच हैं 7
सच तो यह है कि गवाह तीन हैं: 8 पवित्र आत्मा, जल तथा लहू. ये तीनों एक
मत हैं. 9 यदि हम मनुष्यों की गवाही स्वीकार कर लेते हैं, परमेश्वर की गवाही
तो उससे श्रेष्ठ है क्योंकि यह परमेश्वर की गवाही है, जो उन्होंने अपने पुत्र के
विषय में दी है. 10 जो कोई परमेश्वर-पुत्र में विश्वास करता है, उसमें यही
गवाही भीतर छिपी है. जिसका विश्वास परमेश्वर में नहीं है, उसने उन्हें झूठा
ठहरा दिया है क्योंकि उसने परमेश्वर के अपने पुत्र के विषय में दी गई उस
गवाही में विश्वास नहीं किया. 11 वह साक्ष्य यह है: परमेश्वर ने हमें अनंत
जीवन दिया है. यह जीवन उनके पुत्र में बसा है. **(aiōnios g166)** 12 जिसमें पुत्र
का वास है, उसमें जीवन है, जिसमें परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसमें जीवन भी
नहीं. 13 मैंने तुम्हें यह सब इसलिये लिखा है कि तुम, जो परमेश्वर के पुत्र की
प्रधानता में विश्वास करते हो, यह जान लो कि अनंत काल का जीवन तुम्हारा
है. **(aiōnios g166)** 14 परमेश्वर के विषय में हमारा विश्वास यह है: जब हम
उनकी इच्छा के अनुसार कोई विनती करते हैं, वह उसे सुनते हैं. 15 जब
हम यह जानते हैं कि वह हमारी हर एक विनती को सुनते हैं, तब हम यह भी

जानते हैं कि उनसे की गई हमारी विनती पूरी हो चुकी है. **16** यदि कोई साथी
विश्वासी को ऐसा पाप करते हुए देखे, जिसका परिणाम मृत्यु न हो, वह उसके
लिए प्रार्थना करे और उसके लिए परमेश्वर उन लोगों को जीवन प्रदान करेंगे,
जिन्होंने ऐसा पाप किया है, जिसका परिणाम मृत्यु नहीं है. एक पाप ऐसा है
जिसका परिणाम मृत्यु है. इस स्थिति के लिए प्रार्थना करने के लिए मैं नहीं कह
रहा. **17** हर एक अधर्म पाप है किंतु एक पाप ऐसा भी है जिसका परिणाम मृत्यु
नहीं है. **18** हम इस बात से परिचित हैं कि कोई भी, जो परमेश्वर से जन्मा है,
पाप करता नहीं रहता परंतु परमेश्वर के पुत्र उसे सुरक्षित रखते हैं तथा वह दुष्ट
उसे छू तक नहीं सकता. **19** हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं और सारा
संसार उस दुष्ट के वश में है. **20** हम इस सच से परिचित हैं कि परमेश्वर के पुत्र
आए तथा हमें समझ दी कि हम उन्हें, जो सच हैं, जानें. हम उनमें स्थिर रहते हैं,
जो सच हैं अर्थात् उनके पुत्र मसीह येशु. यही वास्तविक परमेश्वर और अनंत
काल का जीवन हैं. **(aiōnios g166)** **21** बच्चों, स्वयं को मूर्तियों से बचाए
रखो.

2 यूहन्ना

1 प्राचीन की ओर से, चुनी हुई महिला और उसकी संतान को, जिनसे मुझे
वास्तव में प्रेम है—न केवल मुझे परंतु उन सबको भी जिन्होंने सच को जान
लिया है. 2 यह उस सच के लिए है, जिसका हमारे भीतर वास है तथा जो
हमेशा हमारे साथ रहेगा. (aiōn g165) 3 परमेश्वर पिता और मसीह येशु की ओर
से, जो पिता के पुत्र हैं, अनुग्रह, कृपा और शांति हमारे साथ सच तथा प्रेम में बनी
रहेगी. 4 इसे देखना मेरे लिए बहुत ही खुशी का विषय है कि सच्चाई में तुम्हारी
संतानों में अनेक चलते हैं. यह ठीक वैसा ही है जैसा हमारे लिए पिता की आज्ञा
है. 5 हे स्त्री, मेरी तुमसे विनती है: हममें आपस में प्रेम हो. यह मैं तुम्हें किसी नई
आज्ञा के रूप में नहीं लिख रहा हूं परंतु यह वही आज्ञा है, जो हमें प्रारंभ ही से
दी गई है. 6 प्रेम यही है कि हम उनकी आज्ञा के अनुसार स्वभाव करें. यह वही
आज्ञा है, जो तुमने प्रारंभ से सुनी है, ज़रूरी है कि तुम उसका पालन करो. 7
संसार में अनेक धूर्त निकल पड़े हैं, जो मसीह येशु के शरीर धारण करने को
नकारते हैं. ऐसा व्यक्ति धूर्त है और मसीह विरोधी भी. 8 अपने प्रति सावधान
रहो, कहीं तुम हमारी उपलब्धियों को खो न बैठो, परंतु तुम्हें सारे पुरस्कार
प्राप्त हों. 9 हर एक, जो भटक कर दूर निकल जाता है और मसीह की शिक्षा में
स्थिर नहीं रहता, उसमें परमेश्वर नहीं; तथा जो शिक्षा में स्थिर रहता है, उसने
पिता तथा पुत्र दोनों ही को प्राप्त कर लिया है. 10 यदि कोई तुम्हारे पास आकर
यह शिक्षा नहीं देता, तुम न तो उसका अतिथि-सत्कार करो, न ही उसको
नमस्कार करो; 11 क्योंकि जो उसको नमस्कार करता है, वह उसकी बुराई में
भागीदार हो जाता है. 12 हालांकि लिखने योग्य अनेक विषय हैं किंतु मैं स्याही
व लेखन-पत्रक इस्तेमाल नहीं करना चाहता; परंतु मेरी आशा है कि मैं तुम्हारे
पास आऊंगा तथा आमने-सामने तुमसे बातचीत करूंगा कि हमारा आनंद पूरा हो
जाए. 13 तुम्हारी चुनी हुई बहन की संतान तुम्हें नमस्कार करती है.

3 यूहन्ना

1 प्राचीन की ओर से, प्रिय गायॉस को, जिससे मुझे वास्तव में प्रेम है. 2 प्रिय
भाई बहनो, मेरी कामना है कि जिस प्रकार तुम अपनी आत्मा में उन्नत हो,
ठीक वैसे ही अन्य क्षेत्रों में भी उन्नत होते जाओ और स्वस्थ रहो. 3 मुझसे
भेंट करने आए साथी विश्वासियों द्वारा सच्चाई में तुम्हारी स्थिरता का विवरण
अर्थात् सत्य में तुम्हारे स्वभाव के विषय में सुनकर मुझे बहुत ही खुशी हुई. 4
मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई आनंद नहीं कि मैं यह सुनूं कि मेरे बालकों
का स्वभाव सच्चाई के अनुसार है. 5 प्रिय भाई बहनो, जो कुछ तुम साथी
विश्वासियों, विशेष रूप से परदेशी साथी विश्वासियों की भलाई में कर रहे हो,
तुम्हारी सच्चाई का सबूत है. 6 वे कलीसिया के सामने तुम्हारे प्रेम के गवाह हैं.
सही यह है कि तुम उन्हें इसी भाव में विदा करो, जो परमेश्वर को ग्रहण योग्य
हो, 7 क्योंकि उन्होंने गैर-यहूदियों से बिना कोई सहायता स्वीकार किए प्रभु के
लिए काम प्रारंभ किया था. 8 इसलिये सही है कि हम ऐसे व्यक्तियों का सत्कार
करें कि हम उस सत्य के सहकर्मी हो जाएं. 9 मैंने कलीसिया को पत्र लिखा था
परंतु दिओत्रिफ़ेस, जो उनमें हमेशा ही अगुआ बनना चाहता है, हमारी नहीं
मानता. 10 इसी कारण जब मैं वहां आऊंगा तो तुम्हारे सामने उसके द्वारा किए
गए सभी कामों को स्पष्ट कर दूंगा अर्थात् सारे बुरे-बुरे शब्दों का प्रयोग करते
हुए हम पर लगाए गए आरोपों का. इतना ही नहीं, वह न तो स्वयं उपदेशकों
को स्वीकार करता है और न ही कलीसिया के सदस्यों को ऐसा करने देता है,
जो ऐसा करने के इच्छुक हैं. वस्तुतः उन्हें वह कलीसिया से बाहर कर देता है.
11 प्रिय भाई बहनो, बुराई का नहीं परंतु भलाई का अनुसरण करो क्योंकि भला
करनेवाला परमेश्वर का है; जो बुराई करनेवाला है उसने परमेश्वर को नहीं
देखा. 12 देमेत्रियॉस की सभी प्रशंसा करते हैं. स्वयं सच उसका गवाह है.
हम भी उसके गवाह हैं और तुम यह जानते हो कि हमारी गवाही सच है. 13
हालांकि लिखने योग्य अनेक विषय हैं किंतु मैं स्याही और लेखनी इस्तेमाल
नहीं करना चाहता. 14 मेरी आशा है कि मैं तुमसे बहुत जल्द भेंटकर आमने-
सामने आपस में बातचीत करूंगा. तुम्हें शांति मिले. तुम्हें मित्रों का नमस्कार.
व्यक्तिगत रूप से हर एक मित्र को नमस्कार करना.

यहूदा

1 मसीह येशु के दास और याकोब के भाई यहूदाह की ओर से, तुम सबको,
जो परमेश्वर पिता के द्वारा बुलाए गए हैं और प्रेम पात्र हो और मसीह येशु के
लिए सुरक्षित रखे गए हो: 2 कृपा, शांति और प्रेम बहुतायत में प्राप्त हो! 3
प्रियों, हालांकि मैं बहुत ही उत्सुक था कि तुमसे हम सभी को मिले समान उद्धार
का वर्णन करूं किंतु अब मुझे यह ज़रूरी लग रहा है कि मैं तुम्हें उस विश्वास की
रक्षा के प्रयास के लिए प्रेरित करूं, जो पवित्र लोगों को सदा के लिए एक ही
बार में सौंप दिया गया है. 4 तुम्हारे बीच कुछ ऐसे व्यक्ति चुपचाप घुस आए हैं,
जिनके लिए यह दंड बहुत पहले ही तय कर दिया गया था. ये वे भक्तिहीन हैं,
जो हमारे एकमात्र स्वामी व प्रभु येशु मसीह को अस्वीकार करते हुए परमेश्वर के
अनुग्रह को बिगाड़कर कामुकता में बदल देते हैं. 5 हालांकि तुम इस सच्चाई से
पहले से ही परिचित हो, तो भी मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूं कि प्रभु ने
अपनी प्रजा को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद अंततः उन्हीं में से उन लोगों का
विनाश कर दिया, जो विश्वास से दूर हो गए थे. 6 जिस प्रकार परमेश्वर ने उन
स्वर्गदूतों को भीषण न्याय के दिन तक के लिए सदाकाल के लिए जंजीरों से
बंधे, अंधकार में रख छोड़ा है, जिन्होंने अपने आचार नियमों का उल्लंघन
करके अपने राजपद तथा घर को त्याग दिया, **(aïdios g126)** 7 उसी प्रकार
सोदोम और गोमोरा और आस-पास के नगरों को, जो इनके समान व्यभिचारी हो
गये और अप्राकृतिक वासना का अनुसरण करने लगे और अग्नि के दंड के
भोगी होकर अन्यों के लिये उदाहरण ठहरें. **(aiōnios g166)** 8 फिर भी ये
स्वप्नदर्शी, शरीर को उसी प्रकार अशुद्ध करते हैं, प्रभुत्व को अस्वीकार करते हैं
और स्वर्गीय प्राणियों की निंदा करते हैं. 9 प्रधान स्वर्गदूत मीख़ाएल तक ने,
जब वह मोशेह के शव के विषय में शैतान से वाद-विवाद कर रहा था, उसे
लांछित कर अपमानित नहीं किया, परंतु सिर्फ इतना ही कहा, "प्रभु ही तुझे
फटकारें." 10 जिनका इन्हें कोई ज्ञान नहीं, ये उन्हीं की बुराई करते और जिन
विषयों को मूल रूप से विवेकहीन पशुओं की तरह समझते हैं, उन्हीं के द्वारा
नाश हो जाते हैं. 11 धिक्कार है इन पर! जिन्होंने काइन का मार्ग अपना लिया;
धन के लालच के कारण उन्होंने वही गलती की, जो बिलआम ने की थी और
उसी प्रकार नाश हुए जिस प्रकार विद्रोही कोराह. 12 ये लोग समुद्र में छिपी हुई
विनाशकारी चट्टानें हैं, जो तुम्हारे प्रेम-भोजों में प्रेम जताते हुए सिर्फ अपनी
संतुष्टि के लिए बेशर्म हो भाग लेते हैं. ये निर्जल बादल हैं जिन्हें हवा उड़ा ले
जाती है. यह शरद ऋतु के फलहीन और जड़ से गिरे हुए पेड़ हैं, जिनकी दोहरी
मृत्यु हुई है. 13 ये समुद्र की प्रचंड लहरों के समान हैं, जो अपनी लज्जा फेन
के रूप में उछालते हैं. ये मार्ग से भटके हुए तारागण हैं, जिनके लिए अनंत काल
का घोर अंधकार तय किया गया है. **(aiōn g165)** 14 हनोख ने भी, जो आदम
की सातवीं पीढ़ी में थे, इनके विषय में भविष्यवाणी की थी: "देखो, प्रभु अपने
हज़ारों पवित्र लोगों के साथ आए 15 कि सबका न्याय करें और दुष्टों को उनके
सभी बुरे कामों के लिए, जो उन्होंने बुराई से किए हैं और दुष्ट पापियों को,
जिन्होंने परमेश्वर के विरोध में कड़वे वचन इस्तेमाल किए हैं, दोषी ठहराएं."
16 ये वे हैं, जो कुड़कुड़ाते रहते हैं, सदा दोष खोजते रहते हैं तथा वासनाओं द्वारा
नियंत्रित, घमंडी और अपने लाभ के लिए चापलूसी करनेवाले हैं. 17 इसलिये
प्रियो, यह आवश्यक है कि तुम हमारे प्रभु येशु मसीह के प्रेरितों की पहले से की
गई घोषणाओं को याद रखो. 18 वे तुमसे कहते थे, "अंतिम दिनों में ऐसे लोग
होंगे, जिनका स्वभाव उनकी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार होगा." 19
ये लोग फूट डालनेवाले, सांसारिक और आत्मा से रहित हैं. 20 किंतु प्रियो, तुम
स्वयं को अपने अति पवित्र विश्वास में बढ़ाते जाओ. पवित्र आत्मा में प्रार्थना
करते हुए 21 अनंत काल के जीवन के लिए हमारे प्रभु येशु मसीह की दया की
बड़ी आशा से प्रतीक्षा करते हुए स्वयं को परमेश्वर के प्रेम में स्थिर बनाए रखो.
(aiōnios g166) 22 जो विश्वास में अस्थिर हैं, उनके लिए दया दिखाओ, 23
बाकियों को आग में से झपटकर निकाल लो, दया करते हुए सावधान रहो, यहां
तक कि शरीर के द्वारा कलंकित वस्त्रों से भी घृणा करो. 24 अब वह जो ठोकर
खाने से तुम्हारी रक्षा करने और अपनी महिमामय उपस्थिति में आनंदपूर्वक तुम्हें
निर्दोष प्रस्तुत करने में समर्थ हैं, 25 उन अतुल्य परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की
महिमा, वैभव, पराक्रम और राज्य, मसीह येशु हमारे प्रभु के द्वारा जैसी सनातन
काल से थी, अब है, युगानुयुग बनी रहे, आमेन. **(aiōn g165)**

प्रकाशित वाक्य

1 मसीह येशु का प्रकाशन, जिसे परमेश्वर ने उन पर इसलिये प्रकट किया कि
वह अपने दासों पर उन घटनाओं का प्रकाशन करें जिनका जल्द ही घटित
होना तय है. इसे परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत के माध्यम से अपने दास योहन को
पहुंचाया. 2 योहन प्रमाणित करते हैं कि वह सब, जो उन्होंने देखा है, परमेश्वर
की ओर से दिया गया संदेश तथा मसीह येशु के साक्षी है. 3 धन्य है वह, जो इस
भविष्यवाणी को पढ़ता है तथा वे सब, जो इस भविष्यवाणी को सुनते हैं तथा
इसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं क्योंकि इसके पूरा होने का समय
निकट है. 4 योहन की ओर से, उन सात कलीसियाओं को, जो आसिया प्रदेश में
हैं, तुम्हें उनकी ओर से अनुग्रह और शांति मिले, जो हैं, जो सर्वदा थे और जो
आनेवाले हैं और सात आत्माओं की ओर से, जो उनके सिंहासन के सामने हैं, 5
तथा मसीह येशु की ओर से, जो विश्वासयोग्य गवाह, मरे हुओं से जी उठनेवालों
में पहलौठे तथा पृथ्वी के राजाओं के हाकिम हैं. जो हमसे प्रेम करते हैं तथा
जिन्होंने अपने लहू द्वारा हमें हमारे पापों से छुड़ाया 6 और हमें अपनी प्रजा,
अपने परमेश्वर और पिता के सामने पुरोहित होने के लिए चुना, गौरव तथा
अधिकार सदा-सर्वदा होती रहे, आमेन! (aiōn g165) 7 “याद रहे, वह बादलों
में आ रहे हैं. हर एक आंख उन्हें देखेगी—जिन्हें उन्होंने बेधा है.” पृथ्वी के
सभी मनुष्य “उनके लिए विलाप करेंगे.” 8 “सर्वशक्तिमान, जो है, जो हमेशा
से था तथा जो आनेवाला है,” प्रभु परमेश्वर का वचन है, “अल्फ़ा और ओमेगा
मैं ही हूं.” 9 मैं योहन, मसीह में तुम्हारा भाई तथा मसीह येशु के लिए दुःख
सहने, परमेश्वर के राज्य की नागरिकता तथा लगातार कोशिश करने में तुम्हारा
सहभागी हूं, परमेश्वर के संदेश के प्रचार के कारण मसीह येशु के गवाह के रूप
में मैं पतमॉस नामक द्वीप में भेज दिया गया था. 10 प्रभु के दिन आत्मा में
ध्यानमग्न की अवस्था में मुझे अपने पीछे तुरही के ऊंचे शब्द के समान यह
कहता सुनाई दिया, 11 “जो कुछ तुम देख रहे हो, उसे लिखकर इन सात
कलीसियाओं को भेज दो: इफ़ेसॉस, स्मुरना, पेरगामॉस, थुआतेइरा, सारदेइस,
फ़िलादेलफ़िया और लाओदीकेइया.” 12 यह देखने के लिए कि कौन मुझसे
बातें कर रहा है, मैं पीछे मुड़ा. पीछे मुड़ने पर मुझे सात सोने के दीवट दिखाई
दिए 13 और मैंने दीपदानों के बीच “मनुष्य के पुत्र,” के समान एक पुरुष को
पैरों तक लंबा वस्त्र तथा छाती पर सोने का पटुका बांधे हुए देखा. 14 उनका सिर
और बाल ऊन के समान सफ़ेद हिम जैसे उजले, आंख आग की ज्वाला से, 15
पैर भट्टी में तपा कर चमकाए हुए कांसे की तरह तथा उनका शब्द प्रचंड लहरों
की गर्जन-सा था. 16 वह अपने दाएं हाथ में सात तारे लिए हुए थे. उनके मुंह से
तेज दोधारी तलवार निकली हुई थी. उनका चेहरा दोपहर के सूर्य जैसे चमक
रहा था. 17 उन्हें देख मैं उनके चरणों पर मरा हुआ सा गिर पड़ा. उन्होंने अपना
दायां हाथ मुझ पर रखकर कहा: “डरो मत. पहला और अंतिम मैं ही हूं. 18
और जीवित मैं ही हूं; मैं मृत था किंतु देखो, अब मैं हमेशा के लिए जीवित हूं.
मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे अधिकार में हैं. (aiōn g165, Hadēs g86)
19 “इसलिये तुमने जो देखा है, जो इस समय घट रहा है और जो इसके बाद
घटने पर है, उसे लिख लेना. 20 इन सात तारों का, जो तुम मेरे दाएं हाथ में
देख रहे हो तथा सात सोने के दीवटों का गहरा अर्थ यह है: ये सात तारे सात
कलीसियाओं को भेजे हुए दूत तथा सात दीपदान सात कलीसियाएं हैं.

2 “इफ़ेसॉस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: जो अपने
दाएं हाथ में साथ तारे लिए हुए है तथा जो सात सोने के दीवटों के बीच चल
रहा है, उसका कहना यह है: 2 मैं तुम्हारे कामों, तुम्हारे परिश्रम तथा तुम्हारे
धीरज से भली-भांति परिचित हूं और यह भी जानता हूं कि बुराई तुम्हारे लिए
असहनीय हैं. तुमने उनके दावों को, जो स्वयं को प्रेरित कहते तो हैं, किंतु हैं
नहीं, परखा और झूठा पाया 3 और यह भी कि तुम धीरज धरे रहे. तुम मेरे नाम
के लिए दुःख सहते रहे, किंतु तुमने हार स्वीकार नहीं की. 4 परंतु तुम्हारे विरुद्ध
मुझे यह कहना है कि तुममें वह प्रेम नहीं रहा, जो पहले था. 5 याद करो कि
तुम कहां से कहां आ गिरे हो. इसलिये पश्चाताप करो और वही करो जो तुम
पहले किया करते थे; नहीं तो, अगर तुम पश्चाताप न करोगे तो मैं तुम्हारे पास
आकर तुम्हारा दीपदान उसके नियत स्थान से हटा दूंगा. 6 हां, तुम्हारे विषय में
प्रशंसा के योग्य सच्चाई ये है कि तुम भी निकोलॉस के शिष्यों के स्वभाव से
घृणा करते हो, जिससे मैं भी घृणा करता हूं. 7 जिसके कान हों, वह सुन ले कि
कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का संबोधन क्या है. जो विजयी होगा, उसे मैं
जीवन के पेड़ में से, जो परमेश्वर के परादीस (स्वर्गलोक) में है, खाने के लिए
दूंगा. 8 “स्मुरना नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: जो
पहला और अंतिम है, जिसकी मृत्यु ज़रूर हुई किंतु अब वह जीवित है, उसका
कहना यह है: 9 मैं तुम्हारी पीड़ा और कंगाली से परिचित हूं—किंतु वास्तव में
तुम धनी हो! मैं उनके द्वारा तुम्हारे लिए इस्तेमाल अपशब्दों से भी परिचित हूं,
जो स्वयं को यहूदी कहते तो हैं किंतु हैं नहीं. वे शैतान का सभागृह हैं. 10 तुम
पर जो कष्ट आने को हैं उनसे भयभीत न होना. सावधान रहो: शैतान तुममें से
कुछ को कारागार में डालने पर है कि तुम परखे जाओ. तुम्हें दस दिन तक
ताड़ना दी जाएगी. अंतिम सांस तक सच्चे बने रहना और मैं तुम्हें जीवन का
मुकुट प्रदान करूंगा. 11 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से
पवित्र आत्मा का कहना क्या है. जो विजयी होगा, उस पर दूसरी मृत्यु का कोई
प्रहार न होगा. 12 “पेरगामॉस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को
लिखो: जिसके पास तेज दोधारी तलवार है, उसका कहना यह है. 13 मैं जानता
हूं कि तुम्हारा घर कहां है—जहां शैतान का सिंहासन है—फिर भी मेरे नाम के
प्रति तुम्हारी सच्चाई बनी रही और तुमने मेरे प्रति अपने विश्वास का त्याग नहीं
किया—उस समय भी, जब मेरे गवाह, मेरे विश्वासयोग्य अन्तिपास की तुम्हारे
नगर में, जहां शैतान का घर है, हत्या कर दी गई. 14 किंतु मुझे तुम्हारे विरुद्ध
कुछ कहना है तुम्हारे यहां कुछ व्यक्ति हैं, जो बिलआम की शिक्षा पर अटल हैं,
जिसने राजा बालाक को इस्राएलियों को भरमाने के लिए, मूर्तियों को भेंट
वस्तुएं खाने तथा वेश्यागामी के लिए उकसाया. 15 तुम्हारे यहां भी कुछ ऐसे ही
व्यक्ति हैं, जिनकी जीवनशैली निकोलॉस के शिष्यों के समान है. 16 इसलिये
पश्चाताप करो. नहीं तो मैं जल्द ही तुम्हारे पास आकर उस तलवार से, जो मेरे
मुख में है, उससे युद्ध करूंगा. 17 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं
से पवित्र आत्मा का कहना क्या है. जो विजयी होगा, मैं उसे गुप्त रखे गए मन्ना
में से दूंगा तथा एक सफेद पत्थर भी, जिस पर एक नया नाम उकेरा हुआ होगा,
जिसे उसके अलावा, जिसने उसे प्राप्त किया है, अन्य कोई नहीं जानता. 18
“थुआतेइरा नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: परमेश्वर के
पुत्र का, जिसकी आंखें अग्नि ज्वाला समान तथा पैर भट्टी तपा कर चमकाए गए
कांसे के समान हैं, कहना यह है. 19 मैं तुम्हारे कामों, तुम्हारे प्रेम, विश्वास,
सेवकाई तथा धीरज को जानता हूं तथा इसे भी कि तुम अब पहले की तुलना में
अधिक काम कर रहे हो. 20 किंतु मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है: तुम उस स्त्री
ईजेबेल को अपने बीच रहने दे रहे हो, जो स्वयं को भविष्यवक्ता कहते हुए
मेरे दासों को गलत शिक्षा देती तथा उन्हें मूर्तियों को भेंट वस्तुएं खाने तथा
वेश्यागामी के लिए उकसाती है. 21 मैंने उसे पश्चाताप करने का समय दिया
किंतु वह अपने व्यभिचारी कामों का पश्चाताप करना नहीं चाहती. 22 इसलिये
देखना, मैं उसे बीमारी के बिस्तर पर डाल दूंगा और उन्हें, जो उसके साथ
व्यभिचार में लीन हैं, घोर कष्ट में डाल दूंगा—यदि वे उसके साथ के दुष्कर्मों से
मन नहीं फिराते. 23 इसके अलावा मैं महामारी से उसकी संतान को नाश

कर दूंगा, तब सभी कलीसियाओं को यह मालूम हो जाएगा कि जो मन और हृदय की थाह लेता है, मैं वही हूं तथा मैं ही तुममें हर एक को उसके कामों के अनुसार फल देनेवाला हूं. 24 किंतु थुआतेइरा के शेष लोगों के लिए, जो इस शिक्षा से सहमत नहीं हैं तथा जो शैतान के कहे हुए गहरे भेदों से अनजान हैं, मेरा संदेश यह है, 'मैं तुम पर कोई और बोझ न डालूंगा. 25 फिर भी मेरे आने तक उसे, जो इस समय तुम्हारे पास है, सुरक्षित रखो.' 26 जो विजयी होगा तथा अंत तक मेरी इच्छा पूरी करेगा, मैं उसे राष्ट्रों पर अधिकार प्रदान करूंगा. 27 वह उन पर लोहे के राजदंड से शासन करेगा और वे मिट्टी के पात्रों के समान चकनाचूर हो जाएंगे ठीक जैसे मुझे यह अधिकार अपने पिता से मिला है. 28 मैं उसे भोर के तारे से सुशोभित करूंगा. 29 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का कहना क्या है.

3 "सारदेइस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: जो परमेश्वर की सात आत्माओं का, जो उनकी सेवा में है, हाकिम है तथा जो सात तारे लिए हुए है, उसका कहना यह है: मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं. तुम कहलाते तो हो जीवित, किंतु वास्तव में हो मरे हुए! 2 इसलिये सावधान हो जाओ! तुममें जो कुछ बाकी है, वह भी मृतक समान है, उसमें नए जीवन का संचार करो क्योंकि मैंने अपने परमेश्वर की दृष्टि में तुम्हारे अन्य कामों को अधूरा पाया है. 3 इसलिये याद करो कि तुमने क्या शिक्षा प्राप्त की तथा तुमने क्या सुना था. उसका पालन करते हुए पश्चाताप करो; किंतु यदि तुम न जागे तो मैं चोर के समान आऊंगा—तुम जान भी न पाओगे कि मैं कब तुम्हारे पास आ पहुंचूंगा. 4 सारदेइस नगर की कलीसिया में अभी भी कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र अधर्म से अशुद्ध नहीं किए. वे सफ़ेद वस्त्रों में मेरे साथ चलने योग्य हैं. 5 जो विजयी होगा, उसे मैं सफ़ेद वस्त्रों में सुसज्जित करूंगा. मैं उसका नाम जीवन के पुस्तक में से न मिटाऊंगा. मैं उसका नाम अपने पिता के सामने तथा उनके स्वर्गदूतों के सामने संबोधित करूंगा. 6 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का कहना क्या है. 7 "फ़िलादेलफ़िया नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: वह, जो पवित्र है, जो सच है, जिसके पास दावीद की कुंजी है, जो वह खोलता है, उसे कोई बंद नहीं कर सकता, जो वह बंद करता है, उसे कोई खोल नहीं सकता, उसका कहना यह है. 8 मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं. ध्यान दो कि मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता. मैं जानता हूं कि तुम्हारी शक्ति सीमित है फिर भी तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया है और मेरे नाम को अस्वीकार नहीं किया. 9 सुनो! जो शैतान की सभा के हैं और स्वयं को यहूदी कहते हैं, किंतु हैं नहीं, वे झूठे हैं. मैं उन्हें मजबूर करूंगा कि वे आएं तथा तुम्हारे पावों में अपने सिर झुकाएं और यह जान लें कि मैंने तुमसे प्रेम किया है. 10 इसलिये कि तुमने मेरी धीरज रूपी आज्ञा का पालन किया है, मैं भी उस विपत्ति के समय, जो पृथ्वी के सभी निवासियों पर उन्हें परखने के लिए आने पर है, तुम्हारी रक्षा करूंगा. 11 मैं शीघ्र आ रहा हूं. जो कुछ तुम्हारे पास है, उस पर अटल रहो कि कोई तुम्हारा मुकुट छीनने ना पाए. 12 जो विजयी होगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मंदिर का मीनार बनाऊंगा. वह वहां से कभी बाहर ना जाएगा. मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, अपने परमेश्वर के नगर, नए येरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरने वाला है तथा अपना नया नाम अंकित करूंगा. 13 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का कहना क्या है. 14 "लाओदीकेइया नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: जो आमेन, विश्वासयोग्य, सच्चा गवाह और परमेश्वर की सृष्टि का आधार है, उसका कहना यह है: 15 मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं—तुम न तो ठंडे हो और न गर्म—उत्तम तो यह होता कि तुम ठंडे ही होते या गर्म ही. 16 इसलिये कि तुम कुनकुने हो; न गर्म, न ठंडे, मैं तुम्हें अपने मुख से उगलने पर हूं. 17 तुम्हारा तो यह दावा है, मैं धनी हूं, मैं समृद्ध हो गया हूं तथा मुझे कोई कमी नहीं है, किंतु तुम नहीं जानते कि वास्तव में तुम तुच्छ, अभागे, अंधे तथा नंगे हो. 18 तुम्हारे लिए मेरी सलाह है कि तुम मुझसे आग में शुद्ध किया हुआ सोना मोल लो कि तुम धनवान हो जाओ; मुझसे सफ़ेद वस्त्र लेकर पहन लो कि तुम अपने नंगेपन की लज्जा को ढांप सको. मुझसे सुर्मा लेकर अपनी आंखों में लगाओ कि तुम्हें दिखाई देने लगे. 19 अपने सभी प्रेम करनेवालों को मैं ताड़ना देता तथा अनुशासित करता हूं. इसलिये बहुत उत्साहित होकर पश्चाताप करो. 20 सुनो! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता रहा हूं. यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, मैं उसके घर में प्रवेश करूंगा तथा मैं उसके साथ और वह मेरे साथ भोजन करेगा. 21 जो विजयी होगा, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का अधिकार दूंगा—ठीक जैसे स्वयं मैंने विजय प्राप्त की तथा अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर आसीन हुआ. 22 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का क्या कहना है."

4 इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है. तब तुरही की आवाज के समान वह शब्द, जो मैंने पहले सुना था, मुझे संबोधित कर रहा था, "मेरे पास यहां ऊपर आओ कि मैं तुम्हें वह सब दिखाऊं, जिसका इन सबके बाद घटित होना तय है." 2 उसी क्षण ही मैं आत्मा में ध्यानमग्न की अवस्था में आ गया. मैंने स्वर्ग में एक सिंहासन पर किसी को बैठे देखा. 3 वह, जो सिंहासन पर बैठा था, उसकी चमक सूर्यकांत मणि तथा माणिक्य के समान थी तथा सिंहासन के चारों ओर मेघधनुष के समान पन्ना की चमक थी. 4 उस सिंहासन के चारों ओर गोलाई में चौबीस सिंहासन थे. उन सिंहासनों पर सफ़ेद वस्त्रों में, सोने का मुकुट धारण किए हुए चौबीस प्राचीन बैठे थे. 5 उस सिंहासन से बिजली की कौंध, गड़गड़ाहट तथा बादलों के गर्जन की आवाज निकल रही थी. सिंहासन के सामने सात दीपक जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्मा हैं. 6 सिंहासन के सामने बिल्लौर के समान पारदर्शी कांच का समुद्र था. बीच के सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी थे, जिनके आगे की ओर तथा पीछे की ओर में आंखें ही आंखें थी. 7 पहला प्राणी सिंह के समान, दूसरा प्राणी बैल के समान, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य के समान तथा चौथा प्राणी उड़ते हुए गरूड़ के समान था. 8 इन चारों प्राणियों में प्रत्येक के छः-छः पंख थे. उनके अंदर की ओर तथा बाहर की ओर आंखें ही आंखें थी. दिन-रात उनकी बिना रुके स्तुति-प्रशंसा यह थी: 9 जब-जब ये प्राणी उनका, जो सिंहासन पर आसीन हैं, जो सदा-सर्वदा जीवित हैं, स्तुति करते, सम्मान करते तथा उनके प्रति धन्यवाद प्रकट करते हैं, **(aiōn g165)** 10 वे चौबीस प्राचीन भूमि पर गिरकर उनका, जो सिंहासन पर बैठे हैं, साष्टांग प्रणाम करते तथा उनकी आराधना करते हैं, जो सदा-सर्वदा जीवित हैं. वे यह कहते हुए अपने मुकुट उन्हें समर्पित कर देते हैं: **(aiōn g165)** 11 "हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर, आप ही स्तुति, सम्मान तथा सामर्थ्य के योग्य हैं, क्योंकि आपने ही सब कुछ बनाया, तथा आपकी ही इच्छा में इन्हें बनाया गया तथा इन्हें अस्तित्व प्राप्त हुआ."

5 जो सिंहासन पर बैठे थे, उनके दाएं हाथ में मैंने एक पुस्तक देखी, जिसके पृष्ठों पर दोनों ओर लिखा हुआ था, तथा जो सात मोहरों द्वारा बंद की हुई थी. 2 तब मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को देखा, जो ऊंचे शब्द में यह घोषणा कर रहा था, "कौन है वह, जिसमें यह योग्यता है कि वह इन मोहरों को तोड़ सके तथा इस पुस्तक को खोल सके?" 3 न तो स्वर्ग में, न पृथ्वी पर और न ही पृथ्वी के नीचे कोई इस योग्य था कि इस पुस्तक को खोल या पढ़ सके. 4 मेरी आंखों से आंसू बहने लगे क्योंकि कोई भी ऐसा योग्य न निकला, जो इस पुस्तक को खोल या पढ़ सके. 5 तब उन पुरनियों में से एक ने मुझसे कहा, "बंद करो यह रोना! देखो, यहूदाह गोत्र का वह सिंह, दावीद वंश का मूल

विजयी हुआ है कि वही इन सात मोहरों को तोड़े. वही इस पुस्तक को खोलने में
सामर्थ्यी है.” 6 तब मैंने एक मेमने को, मानो जिसका वध बलि के लिए कर
दिया गया हो, सिंहासन, चारों प्राणियों तथा पुरनियों के बीच खड़े हुए देखा,
जिसके सात सींग तथा सात आंखें थी, जो सारी पृथ्वी पर भेजे गए परमेश्वर की
सात आत्मा हैं. 7 मेमने ने आगे बढ़कर, उनके दाएं हाथ से, जो सिंहासन पर
विराजमान थे, इस पुस्तक को ले लिया. 8 जब उसने पुस्तक ली तो चारों प्राणी
तथा चौबीसों प्राचीन उस मेमने के सामने नतमस्तक हो गए. उनमें से प्रत्येक के
हाथ में वीणा तथा धूप—पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं—से भरे सोने के बर्तन थे. 9
वे यह नया गीत गा रहे थे: “आप ही पुस्तक लेकर इसकी मोहरें खोलने के
योग्य हैं. आपका वध बलि के लिए किया गया, तथा आपने अपने लहू द्वारा हर
एक गोत्र, भाषा, जन तथा राष्ट्रों से मनुष्यों को परमेश्वर के लिए मोल लिया है.
10 आपने उन्हें परमेश्वर की प्रजा बनाया तथा परमेश्वर की सेवा के लिए पुरोहित
ठहराया है. वे इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे.” 11 तब मैंने अनेकों स्वर्गदूतों का
शब्द सुना, ये स्वर्गदूत अनगिनत थे—हज़ारों और हज़ारों. ये स्वर्गदूत सिंहासन,
चारों प्राणियों तथा पुरनियों के चारों ओर खड़े हुए थे. 12 वे स्वर्गदूत ऊंचे
शब्द में यह गा रहे थे: “वह मेमना, जिसका वध किया गया, सामर्थ्य, वैभव,
ज्ञान, शक्ति, आदर, महिमा और स्तुति का अधिकारी है.” 13 इसी प्रकार मैंने
सारी सृष्टि—स्वर्ग में, इस पृथ्वी पर तथा इस पृथ्वी के नीचे, समुद्र तथा उसमें
बसी हुई हर एक वस्तु को यह कहते सुना: “मेमने का तथा उनका, जो सिंहासन
पर बैठे हैं, स्तुति, आदर, महिमा तथा प्रभुता, **(aiōn g165)** 14 चारों प्राणियों ने
कहा, “आमेन” तथा पुरनियों ने दंडवत होकर आराधना की.

6 तब मैंने मेमने को सात मोहरों में से एक को तोड़ते देखा तथा उन चार
प्राणियों में से एक को गर्जन से शब्द में यह कहते सुना: “आओ!” 2 तभी
वहां मुझे एक घोड़ा दिखाई दिया, जो सफ़ेद रंग का था. उसके हाथ में, जो घोड़े
पर बैठा हुआ था, एक धनुष था. उसे एक मुकुट पहनाया गया और वह एक
विजेता के समान विजय प्राप्त करने निकल पड़ा. 3 जब उसने दूसरी मोहर
तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना: “यहां आओ!” 4 तब मैंने वहां एक
अन्य घोड़े को निकलते हुए देखा, जो आग के समान लाल रंग का था. उसे, जो
उस पर बैठा हुआ था, एक बड़ी तलवार दी गई थी तथा उसे पृथ्वी पर से शांति
उठा लेने की आज्ञा दी गई कि लोग एक दूसरे का वध करें. 5 जब उसने तीसरी
मोहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते हुए सुना: “यहां आओ!” तब मुझे
वहां एक घोड़ा दिखाई दिया, जो काले रंग का था. उसके हाथ में, जो उस पर
बैठा हुआ था, एक तराज़ू था. 6 तब मैंने मानो उन चारों प्राणियों के बीच से यह
शब्द सुना, “एक दिन की मज़दूरी का एक किलो गेहूं, एक दिन की मज़दूरी का
तीन किलो जौ, किंतु तेल और दाखरस की हानि न होने देना.” 7 जब उसने
चौथी मोहर खोली, तब मैंने चौथे प्राणी को यह कहते हुए सुना “यहां आओ!”
8 तब मुझे वहां एक घोड़ा दिखाई दिया, जो गंदले हरे रंग का था. जो उस पर
बैठा था, उसका नाम था मृत्यु. अधोलोक उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था.
उसे पृथ्वी के एक चौथाई भाग को तलवार, अकाल, महामारी तथा जंगली
पशुओं द्वारा नाश करने का अधिकार दिया गया. **(Hadēs g86)** 9 जब उसने
पांचवीं मोहर तोड़ी तो मैंने वेदी के नीचे उनकी आत्माओं को देखा, जिनका
परमेश्वर के वचन के कारण तथा स्वयं उनमें दी गई गवाही के कारण वध कर
दिया गया था. 10 वे आत्माएं ऊंचे शब्द में पुकार उठीं, “कब तक, सबसे
महान प्रभु! सच पर चलनेवाले और पवित्र! आप न्याय शूरू करने के लिए कब
तक ठहरे रहेंगे और पृथ्वी पर रहनेवालों से हमारे लहू का बदला कब तक न
लेंगे?” 11 उनमें से प्रत्येक को सफ़ेद वस्त्र देकर उनसे कहा गया कि वे कुछ और
प्रतीक्षा करें, जब तक उनके उन सहकर्मियों और भाई बहनों की तय की गई
संख्या पूरी न हो जाए, जिनकी हत्या उन्हीं की तरह की जाएगी. 12 मैंने उसे
छठी मोहर तोड़ते हुए देखा. तभी एक भीषण भूकंप आया. सूर्य ऐसा काला पड़
गया, जैसे बालों से बनाया हुआ कंबल और पूरा चंद्रमा ऐसा लाल हो गया जैसे
लहू. 13 तारे पृथ्वी पर ऐसे आ गिरे जैसे आंधी आने पर कच्चे अंजीर भूमि पर
आ गिरते हैं. 14 आकाश फटकर ऐसा हो गया जैसे चमड़े का पत्र लिपट जाता
है. हर एक पहाड़ और द्वीप अपने स्थान से हटा दिये गये. 15 तब पृथ्वी के
राजा, महापुरुष, सेनानायक, सम्पन्न तथा बलवंत, सभी दास तथा स्वतंत्र व्यक्ति
गुफाओं तथा पहाड़ों के पत्थरों में जा छिपे, 16 वे पहाड़ों तथा पत्थरों से
कहने लगे, “हम पर आ गिरो और हमें मेमने के क्रोध से बचा लो तथा उनकी
उपस्थिति से छिपा लो, जो सिंहासन पर बैठे हैं, 17 क्योंकि उनके क्रोध का
भयानक दिन आ पहुंचा है और कौन इसे सह सकेगा?”

7 इसके बाद मैंने देखा कि चार स्वर्गदूत पृथ्वी के चारों कोनों पर खड़े हुए
पृथ्वी की चारों दिशाओं का वायु प्रवाह रोके हुए हैं कि न तो पृथ्वी पर वायु
प्रवाहित हो, न ही समुद्र पर और न ही किसी पेड़ पर. 2 मैंने एक अन्य स्वर्गदूत
को पूर्वी दिशा में ऊपर की ओर आते हुए देखा, जिसके अधिकार में जीवित
परमेश्वर की मोहर थी, उसने उन चार स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी तथा समुद्र को
नाश करने का अधिकार दिया गया था, 3 ऊंचे शब्द में पुकारते हुए कहा, “न
तो पृथ्वी को, न समुद्र को और न ही किसी पेड़ को तब तक नाश करना,
जब तक हम हमारे परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें.” 4 तब
मैंने, जो चिह्नित किए गए थे, उनकी संख्या का योग सुना: 1,44,000. ये
इस्राएल के हर एक गोत्र में से थे. 5 यहूदाह गोत्र से 12,000, रियूबेन के गोत्र
से 12,000, गाद के गोत्र से 12,000, 6 आशेर के गोत्र से 12,000,
नफताली के गोत्र से 12,000, मनश्शेह के गोत्र से 12,000, 7 शिमओन
के गोत्र से 12,000, लेवी के गोत्र से 12,000, इस्साखार के गोत्र से
12,000, 8 ज़ेबुलून के गोत्र से 12,000, योसेफ़ के गोत्र से 12,000 तथा
बिन्यामिन के गोत्र से 12,000 चिह्नित किए गए. 9 इसके बाद मुझे इतनी बड़ी
भीड़ दिखाई दी, जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता था. इस समूह में हर एक
राष्ट्र, गोत्र, प्रजाति और भाषा के लोग थे, जो सफ़ेद वस्त्र धारण किए तथा हाथ में
खजूर की शाखाएं लिए सिंहासन तथा मेमने के सामने खड़े हुए थे. 10 वे ऊंचे
शब्द में पुकार रहे थे: “उद्धार के स्रोत हैं, सिंहासन पर बैठे, हमारे परमेश्वर और
मेमना.” 11 सिंहासन, पुरनियों तथा चारों प्राणियों के चारों ओर सभी स्वर्गदूत
खड़े हुए थे. उन्होंने सिंहासन की ओर मुख करके दंडवत होकर परमेश्वर की
वंदना की. 12 वे कह रहे थे: “आमेन! स्तुति, महिमा, ज्ञान, आभार व्यक्ति,
आदर, अधिकार तथा शक्ति सदा-सर्वदा हमारे परमेश्वर की है. आमेन!” **(aiōn
g165)** 13 तब पुरनियों में से एक ने मुझसे प्रश्न किया, “ये, जो सफ़ेद वस्त्र धारण
किए हुए हैं, कौन हैं और कहां से आए हैं?” 14 मैंने उत्तर दिया, “श्रीमान, यह
तो आपको ही मालूम है.” इस पर उन्होंने कहा, “ये ही हैं वे, जो उस महाक्लेश
में से सुरक्षित निकलकर आए हैं. इन्होंने अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर सफ़ेद
किए हैं. 15 इसलिये, “वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने उपस्थित हैं और उनके
मंदिर में दिन-रात उनकी आराधना करते रहते हैं; और वह, जो सिंहासन पर बैठे
हैं, उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे. 16 ‘वे अब न तो कभी भूखे होंगे, न प्यासे. न तो
सूर्य की गर्मी उन्हें झुलसाएगी,’ और न कोई अन्य गर्मी. 17 क्योंकि बीच के
सिंहासन पर बैठा मेमना उनका चरवाहा होगा; ‘वह उन्हें जीवन के जल के सोतों
तक ले जाएगा.’ ‘परमेश्वर उनकी आंखों से हर एक आंसू पोंछ डालेंगे.’”

8 जब मेमने ने सातवीं मोहर तोड़ी, स्वर्ग में एक समय के लिए सन्नाटा छा
गया. 2 तब मैंने उन सात स्वर्गदूतों को देखा, जो परमेश्वर की उपस्थिति में
खड़े रहते हैं. उन्हें सात तुरहियां दी गईं. 3 सोने के धूपदान लिए हुए एक अन्य
स्वर्गदूत आकर वेदी के पास खड़ा हो गया. उसे बड़ी मात्रा में धूप दी गई कि वह

उसे सभी पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोने की वेदी पर भेंट करे, जो सिंहासन के सामने है. 4 स्वर्गदूत के हाथ के धूपदान में से धुआं उठता हुआ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ परमेश्वर के पास ऊपर पहुंच रहा था. 5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान लिया, उसे वेदी की आग से भरकर पृथ्वी पर फेंक दिया, जिससे बादलों की गर्जन, गड़गड़ाहट तथा बिजलियां कौंध उठीं और भूकंप आ गया. 6 तब वे सातों स्वर्गदूत, जिनके पास तुरहियां थी, उन्हें फूंकने के लिए तैयार हुए. 7 जब पहले स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो आग और ओले उत्पन्न हुए, जिनमें लहू मिला हुआ था. उन्हें पृथ्वी पर फेंक दिया गया. परिणामस्वरूप एक तिहाई पृथ्वी जल उठी, एक तिहाई पेड़ भस्म हो गए तथा सारी हरी घास भी. 8 जब दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो विशाल पर्वत जैसी कोई जलती हुई वस्तु समुद्र में फेंक दी गई जिससे एक तिहाई समुद्र लहू में बदल गया. 9 इससे एक तिहाई जल जंतु नाश हो गए तथा जलयानों में से एक तिहाई जलयान भी. 10 जब तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो आकाश से एक विशालकाय तारा मशाल के समान जलता हुआ एक तिहाई नदियों तथा जल-स्रोतों पर जा गिरा. 11 यह तारा अपसन्तिनॉस कहलाता है—इससे एक तिहाई जल कड़वा हो गया. जल के कड़वे हो जाने के कारण अनेक मनुष्यों की मृत्यु हो गई. 12 जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो एक तिहाई सूर्य, एक तिहाई चंद्रमा तथा एक तिहाई तारों पर ऐसा प्रहार हुआ कि उनका एक तिहाई भाग अंधकारमय हो गया. इनमें से एक तिहाई दिन अंधकारमय हो गया, वैसे ही एक तिहाई रात भी. 13 जब मैं यह सब देख ही रहा था, मैंने ठीक अपने ऊपर मध्य हवा में उड़ते हुए एक गरूड़ को ऊंचे शब्द में यह कहते हुए सुना, "उस तुरही नाद के कारण, जो शेष तीन स्वर्गदूतों द्वारा किया जाएगा, पृथ्वी पर रहनेवालों पर धिक्कार, धिक्कार, धिक्कार!"

9 जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो मैंने आकाश से पृथ्वी पर गिरा हुआ एक तारा देखा. उस तारे को अथाह गड्ढे की कुंजी दी गई. **(Abyssos g12)** 2 उसने अथाह गड्ढे का द्वार खोला तो उसमें से धुआं निकला, जो विशाल भट्टी के धुएं के समान था. अथाह गड्ढे के इस धुएं से सूर्य और आकाश निस्तेज और वायुमंडल काला हो गया. **(Abyssos g12)** 3 इस धुएं में से टिड्डियां निकलकर पृथ्वी पर फैल गईं. उन्हें वही शक्ति दी गई, जो पृथ्वी पर बिच्छुओं की होती है. 4 उनसे कहा गया कि वे पृथ्वी पर न तो घास को हानि पहुंचाएं, न हरी वनस्पति को और न ही किसी पेड़ को परंतु सिर्फ़ उन्हीं को, जिनके माथे पर परमेश्वर की मोहर नहीं है. 5 उन्हें किसी के प्राण लेने की नहीं परंतु सिर्फ़ पांच माह तक घोर पीड़ा देने की ही आज्ञा दी गई थी. यह पीड़ा वैसी ही थी, जैसी बिच्छू के डंक से होती है. 6 उन दिनों में मनुष्य अपनी मृत्यु को खोजेंगे किंतु उसे पाएंगे नहीं, वे मृत्यु की कामना तो करेंगे किंतु मृत्यु उनसे दूर भागेगी. 7 ये टिड्डियां देखने में युद्ध के लिए सुसज्जित घोड़ों जैसी थी. उनके सिर पर सोने के मुकुट के समान कुछ था. उनका मुखमंडल मनुष्य के मुखमंडल जैसा था. 8 उनके बाल स्त्री बाल जैसे तथा उनके दांत सिंह के दांत जैसे थे. 9 उनका शरीर मानो लोहे के कवच से ढका हुआ था. उनके पंखों की आवाज ऐसी थी, जैसी युद्ध में अनेक घोड़े जुते हुए दौड़ते रथों की होती है. 10 उनकी पूंछ बिच्छू के डंक के समान थी और उनकी पूंछ में ही मनुष्यों को पांच माह तक पीड़ा देने की क्षमता थी. 11 अथाह गड्ढे का अपदूत उनके लिए राजा के रूप में था. इब्री भाषा में उसे अबादोन तथा यूनानी में अपोलियॉन कहा जाता है. **(Abyssos g12)** 12 पहिली विपत्ति समाप्त हुई किंतु इसके बाद दो अन्य विपत्तियां अभी बाकी हैं. 13 जब छठे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो मैंने परमेश्वर के सामने स्थापित सोने की वेदी के चारों सींगों से आता हुआ एक शब्द सुना, 14 जो छठे स्वर्गदूत के लिए, जिसने तुरही फूंकी थी, यह आज्ञा थी, "महानद यूफ्रातेस में जो चार स्वर्गदूत बंदी हैं, उन्हें आज़ाद कर दो," 15 इसलिये वे चारों स्वर्गदूत, जो इसी क्षण, दिन, माह और वर्ष के लिए तैयार रखे गए थे, एक तिहाई मनुष्यों का संहार करने के लिए आज़ाद कर दिए गए. 16 मुझे बताया गया कि घुड़सवारों की सेना की संख्या बीस करोड़ है. 17 मैंने दर्शन में घोड़े और उन्हें देखा, जो उन पर बैठे थे. उनके कवच आग के समान लाल, धूम्रकांत तथा गंधक जैसे पीले रंग के थे. घोड़ों के सिर सिंहों के सिर जैसे थे तथा उनके मुंह से आग, गंधक तथा धुआं निकल रहा था. 18 उनके मुंह से निकल रही तीन महामारियों—आग, गंधक तथा धुएं से एक तिहाई मनुष्य नाश हो गए, 19 उन घोड़ों की क्षमता उनके मुंह तथा पूंछ में मौजूद थी क्योंकि उनकी पूंछें सिर वाले सांपों के समान थी, जिनके द्वारा वे पीड़ा देते थे. 20 शेष मनुष्यों ने, जो इन महामारियों से नाश नहीं हुए थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया—उन्होंने दुष्टात्माओं तथा सोने, चांदी, कांसे, पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों की, जो न तो देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती हैं, उपासना करना न छोड़ा 21 और न ही उन्होंने हत्या, जादू-टोना, लैंगिक व्यभिचार तथा चोरी करना छोड़ा.

10 तब मुझे स्वर्ग से उतरता हुआ एक दूसरा शक्तिशाली स्वर्गदूत दिखाई दिया, जिसने बादल को कपड़ों के समान धारण किया हुआ था, उसके सिर के ऊपर सात रंगों का मेघधनुष था, उसका चेहरा सूर्य सा तथा पैर आग के खंभे के समान थे. 2 उसके हाथ में एक छोटी पुस्तिका खुली हुई थी. उसने अपना दायां पांव समुद्र पर तथा बायां भूमि पर रखा. 3 वह ऊंचे शब्द में सिंह गर्जन जैसे पुकार उठा. उसके पुकारने पर सात बादलों के गर्जन भी पुकार उठे. 4 जब सात बादलों के गर्जन बोल चुके, मैं लिखने के लिए तैयार हुआ ही था; पर मैंने स्वर्ग से यह आवाज सुनी, "जो कुछ सात बादलों के गर्जन ने कहा है, उसे लिखो मत परंतु मुहरबंद कर दो." 5 तब उस स्वर्गदूत ने, जिसे मैंने समुद्र तथा भूमि पर खड़े हुए देखा था, अपना दायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाया 6 और उसने उनकी, जो हमेशा के लिए जीवित हैं, जिन्होंने स्वर्ग और उसमें बसी सब वस्तुओं को, पृथ्वी तथा उसमें बसी सब वस्तुओं को तथा समुद्र तथा उसमें बसी सब वस्तुओं को बनाया है, शपथ खाते हुए यह कहा: "अब और देर न होगी. **(aiōn g165)** 7 उस समय, जब सातवां स्वर्गदूत तुरही फूंकेगा, परमेश्वर अपनी गुप्त योजनाएं पूरी करेंगे, जिनकी घोषणा उन्होंने अपने दासों—अपने भविष्यद्वक्ताओं से की थी." 8 जो शब्द मैंने स्वर्ग से सुना था, उसने दोबारा मुझे संबोधित करते हुए कहा, "जाओ! उस स्वर्गदूत के हाथ से, जो समुद्र तथा भूमि पर खड़ा है, वह खुली हुई पुस्तिका ले लो." 9 मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर उससे वह पुस्तिका मांगी. उसने मुझे वह पुस्तिका देते हुए कहा, "लो, इसे खा लो. यह तुम्हारे उदर को तो खट्टा कर देगी किंतु तुम्हारे मुंह में यह शहद के समान मीठी लगेगी." 10 मैंने स्वर्गदूत से वह पुस्तिका लेकर खा ली. मुझे वह मुंह में तो शहद के समान मीठी लगी किंतु खा लेने पर मेरा उदर खट्टा हो गया. 11 तब मुझसे कहा गया, "यह ज़रूरी है कि तुम दोबारा अनेक प्रजातियों, राष्ट्रों, भाषाओं तथा राजाओं के संबंध में भविष्यवाणी करो."

11 तब मुझे एक सरकंडा दिया गया, जो मापने के यंत्र जैसा था तथा मुझसे कहा गया, "जाओ, परमेश्वर के मंदिर तथा वेदी का माप लो तथा वहां उपस्थित उपासकों की गिनती करो, 2 किंतु मंदिर के बाहरी आंगन को छोड़ देना, उसे न मापना क्योंकि वह अन्य राष्ट्रों को सौंप दिया गया है. वे पवित्र नगर को बयालीस माह तक रौंदेंगे. 3 मैं अपने दो गवाहों को, जिनका वस्त्र टाट का है, 1,260 दिन तक भविष्यवाणी करने की प्रदान करूंगा." 4 ये दोनों गवाह ज़ैतून के दो पेड़ तथा दो दीवट हैं, जो पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े हैं. 5 यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहे तो उनके मुंह से आग निकलकर उनके शत्रुओं को चट कर जाती है. यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहे तो उसका इसी रीति से विनाश होना तय है. 6 इनमें आकाश को बंद कर देने का सामर्थ्य है कि उनके

भविष्यवाणी के दिनों में वर्षा न हो. उनमें जल को लहू में बदल देने की तथा जब-जब वे चाहें, पृथ्वी पर महामारी का प्रहार करने की क्षमता है. 7 जब वे अपनी गवाही दे चुकें होंगे तो वह हिंसक पशु, जो उस अथाह गड्ढे में से निकलेगा, उनसे युद्ध करेगा और उन्हें हरा कर उनका विनाश कर डालेगा. **(Abyssos g12)** 8 उनके शव उस महानगर के चौक में पड़े रहेंगे, जिसका सांकेतिक नाम है सोदोम तथा मिस्र, जहां उनके प्रभु को क्रूस पर भी चढ़ाया गया था. 9 हर एक समुदाय, गोत्र, भाषा तथा राष्ट्र के लोग साढ़े तीन दिन तक उनके शवों को देखने के लिए आते रहेंगे और वे उन शवों को दफ़नाने की अनुमति न देंगे. 10 पृथ्वी के निवासी उनकी मृत्यु पर आनंदित हो खुशी का उत्सव मनाएंगे—यहां तक कि वे एक दूसरे को उपहार भी देंगे क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी के निवासियों को अत्यधिक ताड़नाएं दी थी. 11 साढ़े तीन दिन पूरे होने पर परमेश्वर की ओर से उनमें जीवन की सांस का प्रवेश हुआ और वे खड़े हो गए. यह देख उनके दर्शकों में भय समा गया. 12 तब स्वर्ग से उन्हें संबोधित करता हुआ एक ऊंचा शब्द सुनाई दिया, "यहां ऊपर आओ!" और वे शत्रुओं के देखते-देखते बादलों में से स्वर्ग में उठा लिए गए. 13 उसी समय एक भीषण भूकंप आया, जिससे नगर का एक दसवां भाग नाश हो गया. इस भूकंप में सात हज़ार व्यक्ति मर गए. शेष जीवित व्यक्तियों में भय समा गया और वे स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद-महिमा करने लगे. 14 दूसरी विपदा समाप्त हुई, तीसरी विपदा शीघ्र आ रही है. 15 जब सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो स्वर्ग से ये तरह-तरह की आवाजें सुनाई देने लगीं: "संसार का राज्य अब हमारे प्रभु तथा उनके मसीह का राज्य हो गया है, वही युगानुयुग राज्य करेंगे." **(aiōn g165)** 16 तब उन चौबीसों पुरनियों ने, जो अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, परमेश्वर के सामने दंडवत हो उनका धन्यवाद किया. 17 यह कहते हुए, "सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर! हम आपका, जो हैं और जो थे, आभार मानते हैं, कि आपने अपने अवर्णनीय अधिकारों को स्वीकार कर, अपने राज्य का आरंभ किया है. 18 राष्ट्र क्रोधित हुए, उन पर आपका क्रोध आ पड़ा. अब समय आ गया है कि मरे हुओं का न्याय किया जाए, आपके दासों—भविष्यद्वक्ताओं, पवित्र लोगों तथा सभी श्रद्धालुओं को, चाहे वे साधारण हों या विशेष, और उनका प्रतिफल दिया जाए, तथा उनका नाश किया जाए जिन्होंने पृथ्वी को गंदा कर रखा है." 19 तब परमेश्वर का मंदिर, जो स्वर्ग में है, खोल दिया गया और उस मंदिर में उनकी वाचा का संदूक दिखाई दिया. उसी समय बिजली कौंधी, गड़गड़ाहट तथा बादलों का गरजना हुआ, एक भीषण भूकंप आया और बड़े-बड़े ओले पड़े.

12 तब स्वर्ग में एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया: एक स्त्री, सूर्य जिसका वस्त्र, चंद्रमा जिसके चरणों के नीचे तथा जिसके सिर पर बारह तारों का एक मुकुट था, 2 गर्भवती थी तथा पीड़ा में चिल्ला रही थी क्योंकि उसका प्रसव प्रारंभ हो गया था. 3 उसी समय स्वर्ग में एक और दृश्य दिखाई दिया: लाल रंग का एक विशालकाय परों वाला सांप, जिसके सात सिर तथा दस सींग थे. हर एक सिर पर एक-एक मुकुट था. 4 उसने आकाश के एक तिहाई तारों को अपनी पूंछ से समेटकर पृथ्वी पर फेंक दिया और तब वह परों वाला सांप उस स्त्री के सामने, जो शिशु को जन्म देने को थी, खड़ा हो गया कि शिशु के जन्म लेते ही वह उसे निगल जाए. 5 उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका सभी राष्ट्रों पर लोहे के राजदंड से राज्य करना तय था. इस शिशु को तुरंत ही परमेश्वर तथा उनके सिंहासन के पास पहुंचा दिया गया. 6 किंतु वह स्त्री बंजर भूमि की ओर भाग गई, जहां परमेश्वर द्वारा उसके लिए एक स्थान तैयार किया गया था कि वहां 1,260 दिन तक उसकी देखभाल और भरण-पोषण किया जा सके. 7 तब स्वर्ग में दोबारा युद्ध छिड़ गया: स्वर्गदूत मीखाएल और उसके अनुचरों ने परों वाले सांप पर आक्रमण किया. परों वाले सांप और उसके दूतों ने उनसे बदला लिया 8 किंतु वे टिक न सके इसलिये अब स्वर्ग में उनका कोई स्थान न रहा. 9 तब उस परों वाले सांप को—उस आदि सांप को, जो दियाबोलॉस तथा शैतान कहलाता है और जो पृथ्वी के सभी वासियों को भरमाया करता है, पृथ्वी पर फेंक दिया गया—उसे तथा उसके दूतों को भी. 10 तब मुझे स्वर्ग में एक ऊंचा शब्द यह घोषणा करता हुआ सुनाई दिया: "अब उद्धार, प्रताप, हमारे परमेश्वर का राज्य, तथा उनके मसीह का राज्य करने का अधिकार प्रकट हो गया है. हमारे भाई बहनों पर दोष लगानेवाले को, जो दिन-रात परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाता रहता है, निकाल दिया गया है. 11 उन्होंने मेमने के लहू तथा अपने गवाही के वचन के द्वारा, उसे हरा दिया है. अंतिम सांस तक उन्होंने अपने जीवन का मोह नहीं किया. 12 इसलिये सारे स्वर्ग तथा उसके वासियों, आनंदित हो! धिक्कार है तुम पर भूमि और समुद्र! क्योंकि शैतान तुम तक पहुंच चुका है. वह बड़े क्रोध में भर गया है, क्योंकि उसे मालूम हो चुका है कि उसका समय बहुत कम है." 13 जब परों वाले सांप को यह अहसास हुआ कि उसे पृथ्वी पर फेंक दिया गया है, तो वह उस स्त्री को, जिसने उस पुत्र को जन्म दिया था, ताड़ना देने लगा. 14 उस स्त्री को एक विशालकाय गरुड़ के दो पंख दिए गए कि वह उड़कर उस सांप से दूर, बंजर भूमि में अपने निर्धारित स्थान को चली जाए, जहां समय, समयों तथा आधे समय तक उसकी देखभाल तथा भरण-पोषण किया जाना तय हुआ था. 15 इस पर उस सांप ने अपने मुंह से नदी के समान जल इस रीति से बहाया कि वह स्त्री उस बहाव में बह जाए. 16 किंतु उस स्त्री की सहायता के लिए भूमि ने अपना मुंह खोलकर परों वाले सांप द्वारा बहाए पानी के बहाव को अपने में समा लिया. 17 इस पर परों वाला सांप उस स्त्री पर बहुत ही क्रोधित हो गया. वह स्त्री की बाकी संतानों से, जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करती है तथा जो मसीह येशु के गवाह हैं, युद्ध करने निकल पड़ा.

13 परों वाला सांप समुद्रतट पर जा खड़ा हुआ, और मैंने समुद्र में से एक हिंसक पशु को ऊपर आते देखा. उसके दस सींग तथा सात सिर थे. दसों सींगों पर एक-एक मुकुट था तथा उसके सिरों पर परमेश्वर की निंदा के शब्द लिखे थे. 2 इस पशु का शरीर चीते जैसा, पांव भालू जैसे और मुंह सिंह जैसा था. उस परों वाले सांप ने अपनी शक्ति, अपना सिंहासन तथा राज्य का सारा अधिकार उसे सौंप दिया. 3 उसके एक सिर को देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उस पर जानलेवा हमला किया गया हो और वह घाव अब भर चुके है. अचंभा करते हुए सारी पृथ्वी के लोग इस पशु के पीछे-पीछे चलने लगे 4 और उन्होंने उस परों वाले सांप की पूजा-अर्चना की क्योंकि उसने शासन का अधिकार उस पशु को सौंप दिया था. वे यह कहते हुए उस पशु की भी पूजा-अर्चना करने लगे, "कौन है इस पशु के समान? किसमें है इससे लड़ने की क्षमता?" 5 उसे डींग मारने तथा परमेश्वर की निंदा करने का अधिकार तथा बयालीस माह तक शासन करने की अनुमति दी गई. 6 पशु ने परमेश्वर, उनके नाम तथा उनके निवास अर्थात् स्वर्ग और उन सब की, जो स्वर्ग में रहते हैं, निंदा करना शुरू कर दिया. 7 उसे पवित्र लोगों पर आक्रमण करने तथा उन्हें हराने और सभी गोत्रों, प्रजातियों, भाषाओं तथा राष्ट्रों पर अधिकार दिया गया. 8 पृथ्वी पर रहनेवाले उसकी पूजा-अर्चना करेंगे—वे सभी जिनके नाम सृष्टि की शुरुआत ही से उस मेमने की जीवन-पुस्तक में, जो बलि किया गया था, लिखे नहीं गए. 9 जिसके कान हों, वह सुन ले: 10 "जो कैद के लिए लिखा गया है, वह बंदीगृह में जाएगा. जो तलवार से मारता है, उसे तलवार ही से मारा जाएगा." इसके लिए आवश्यक है पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास. 11 तब मैंने एक अन्य हिंसक पशु को पृथ्वी में से ऊपर आते हुए देखा, जिसके मेंढ़े के समान दो सींग थे. वह परों वाले सांप के शब्द में बोला करता था. 12 वह पहले से लिखे हिंसक पशु के प्रतिनिधि के रूप में उसके राज्य के अधिकार का

उपयोग कर रहा था. वह पृथ्वी तथा पृथ्वी पर रहनेवालों को उस पहले से लिखे हिंसक पशु की, जिसका घाव भर चुका था, पूजा-अर्चना करने के लिए मजबूर कर रहा था. 13 वह चमत्कार भरे चिह्न दिखाता था. यहां तक कि वह लोगों के देखते ही देखते आकाश से पृथ्वी पर आग बरसा देता था. 14 इन चमत्कार भरे चिह्नों द्वारा, जो वह उस पशु के प्रतिनिधि के रूप में दिखा रहा था, वह पृथ्वी पर रहनेवालों को भरमाता था. उसने पृथ्वी पर रहनेवालों से उस पशु की मूर्ति बनाने के लिए कहा, जो तलवार के जानलेवा हमले के बाद भी जीवित रहा. 15 उसे उस पशु की मूर्ति को ज़िंदा करने की क्षमता दी गई कि वह मूर्ति बातचीत कर सके तथा उनका नाश करवा सके, जिन्हें उस मूर्ति की पूजा-अर्चना करना स्वीकार न था. 16 उसने साधारण और विशेष, धनी-निर्धन; स्वतंत्र या दास, सभी को दाएं हाथ या माथे पर एक चिह्न अंकित करवाने के लिए मजबूर किया 17 कि उसके अलावा कोई भी, जिस पर उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक अंकित है, लेनदेन न कर सके. 18 इसके लिए आवश्यक है बुद्धिमानी. वह, जिसमें समझ है, उस पशु के अंकों का जोड़कर ले. यह अंक मनुष्य के नाम का है, जिसकी संख्या का जोड़ है 666.

14 तब मैंने देखा कि वह मेमना ज़ियोन पर्वत पर खड़ा है और उसके साथ 1,44,000 व्यक्ति भी हैं, जिनके मस्तक पर उसका तथा उसके पिता का नाम लिखा हुआ है. 2 तब मुझे स्वर्ग से एक शब्द सुनाई दिया, जो प्रचंड लहरों की आवाज के समान तथा जो बड़ी गर्जन-सी आवाज के समान था. यह शब्द, जो मैंने सुना, ऐसा था मानो अनेक वीणा बजानेवाले वीणा बजा रहे हों. 3 वे सिंहासन के सामने, चारों प्राणियों तथा पुरनियों के सामने एक नया गीत गा रहे थे. उन 1,44,000 व्यक्तियों के अलावा, जो सारी मानव जाति में से छुड़ाए गए थे, किसी भी अन्य में यह गीत सीखने की योग्यता ही न थी. 4 ये वे हैं, जो स्त्री-संगति से अशुद्ध नहीं हुए हैं क्योंकि इन्होंने स्वयं को स्त्री-संगति से अछूता रखा है. ये ही हैं वे, जो हमेशा मेमने के पीछे चलते हैं—चाहे मेमना कहीं भी जाए. इन्हें परमेश्वर तथा मेमने के लिए उपज के पहले फल के समान मनुष्यों में से छुड़ाया गया है. 5 झूठ इनके मुख से कभी न निकला—ये निष्कलंक हैं. 6 तब मैंने बीच आकाश में एक स्वर्गदूत को उड़ते हुए देखा, जिसके पास सभी पृथ्वी पर रहनेवालों—हर एक राष्ट्र, गोत्र, भाषा तथा प्रजाति में प्रचार के लिए अनंत काल का ईश्वरीय सुसमाचार था. **(aiōnios g166)** 7 उसने ऊंचे शब्द में कहा, "परमेश्वर से डरो. उनकी महिमा करो क्योंकि न्याय का समय आ पहुंचा है. आराधना उनकी करो, जिन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र तथा जल के सोतों को बनाया है." 8 पहले स्वर्गदूत के बाद दूसरा स्वर्गदूत यह कहते हुए आया, "सर्वनाश हो गया! बड़े बाबेल का सर्वनाश हो गया! बाबेल, जिसने सारे राष्ट्रों को अपने व्यभिचार की मदहोशी का दाखरस पिलाया है." 9 इन दोनों के बाद एक तीसरा स्वर्गदूत ऊंचे शब्द में यह कहता हुआ आया, "यदि कोई उस पशु तथा उसकी मूर्ति की पूजा-अर्चना करेगा तथा अपने मस्तक या हाथ पर वह चिह्न अंकित करवाएगा, 10 वह भी परमेश्वर के क्रोध का दाखरस पिएगा, जो परमेश्वर के क्रोध के प्याले में ही उंडेली गई है. उसे पवित्र स्वर्गदूतों तथा मेमने की उपस्थिति में आग व गंधक की घोर पीड़ा दी जाएगी. 11 वे, जो उस पशु तथा उसकी मूर्ति की पूजा-अर्चना करते हैं तथा जिन पर उसके नाम का चिह्न अंकित है, उनकी पीड़ा का धुआं निरंतर उठता रहेगा तथा उन्हें न तो दिन में चैन मिलेगा और न रात में." **(aiōn g165)** 12 इसके लिए आवश्यक है पवित्र लोगों का धीरज, जो परमेश्वर के आज्ञाकारी हैं तथा जिनका विश्वास मसीह येशु में है. 13 तब मुझे स्वर्ग से एक शब्द यह आज्ञा देता हुआ सुनाई दिया, "लिखो: धन्य होंगे वे मृत, अब से जिनकी मृत्यु प्रभु में होगी." "सच है!" आत्मा ने पुष्टि की. "वे अपने सारे परिश्रम से विश्राम पाएंगे क्योंकि उनके भले काम उनके साथ हैं." 14 इसके बाद मैंने एक उज्जवल बादल देखा. उस पर मनुष्य के पुत्र समान कोई बैठा था, जिसके सिर पर सोने का मुकुट तथा हाथ में पैनी हसिया थी. 15 एक दूसरा स्वर्गदूत मंदिर से बाहर निकला और उससे, जो बादल पर बैठा था, ऊंचे शब्द में कहने लगा. "अपना हसिया चला कर फसल काटिए, कटनी का समय आ पहुंचा है क्योंकि पृथ्वी की फसल पक चुकी है." 16 तब उसने, जो बादल पर बैठा था, अपना हसिया पृथ्वी के ऊपर घुमाया तो पृथ्वी की फसल की कटनी पूरी हो गई. 17 तब एक और स्वर्गदूत उस मंदिर से, जो स्वर्ग में है, बाहर निकला. उसके हाथ में भी पैना हंसिया था. 18 तब एक अन्य स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, वेदी से बाहर निकला तथा उस स्वर्गदूत से, जिसके हाथ में पैना हसिया था, ऊंचे शब्द में कहने लगा. "अपना हसिया चला कर पृथ्वी की पूरी दाख की फसल के गुच्छे इकट्ठा करो क्योंकि दाख पक चुकी है." 19 तब उस स्वर्गदूत ने अपना हसिया पृथ्वी की ओर घुमाया और पृथ्वी की सारी दाख इकट्ठा कर परमेश्वर के क्रोध के विशाल दाख के कुंड में फेंक दी. 20 तब नगर के बाहर दाखरस कुंड में दाख को रौंदा गया. उस रसकुंड में से जो लहू बहा, उसकी लंबाई 300 किलोमीटर तथा ऊंचाई घोड़े की लगाम जितनी थी.

15 तब मैंने स्वर्ग में एक अद्भुत और आश्चर्यजनक दृश्य देखा: सात स्वर्गदूत सात अंतिम विपत्तियां लिए हुए थे—अंतिम इसलिये कि इनके साथ परमेश्वर के क्रोध का अंत हो जाता है. 2 तब मुझे ऐसा अहसास हुआ मानो मैं एक कांच की झील को देख रहा हूं, जिसमें आग मिला दी गई हो. मैंने इस झील के तट पर उन्हें खड़े हुए देखा, जिन्होंने उस हिंसक पशु, उसकी मूर्ति तथा उसके नाम की संख्या पर विजय प्राप्त की थी. इनके हाथों में परमेश्वर द्वारा दी हुई वीणा थी. 3 वे परमेश्वर के दास मोशेह तथा मेमने का गीत गा रहे थे: "अद्भुत और असाधारण काम हैं आपके, प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर. धर्मी और सच्चे हैं उद्देश्य आपके, राष्ट्रों के राजन. 4 कौन है, प्रभु, जिसमें आपके प्रति श्रद्धा न होगी, कौन है, जो आपकी महिमा न करेगा? मात्र आप ही हैं पवित्र. सभी राष्ट्र आकर आपका धन्यवाद करेंगे, क्योंकि आपके न्याय के कार्य प्रकट हो चुके हैं." 5 इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में मंदिर, जो साक्ष्यों का तंबू है, खोल दिया गया. 6 मंदिर में से वे सातों स्वर्गदूत, जो सात विपत्तियां लिए हुए थे, बाहर निकले. वे मलमल के स्वच्छ उज्जवल वस्त्र धारण किए हुए थे तथा उनकी छाती पर सोने की कमरबंध थी. 7 तब चार जीवित प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को सनातन परमेश्वर के क्रोध से भरे सात सोने के कटोरे दे दिए. **(aiōn g165)** 8 मंदिर परमेश्वर की आभा तथा सामर्थ्य के धुएं से भर गया और उस समय तक मंदिर में कोई भी प्रवेश न कर सका, जब तक उन सातों स्वर्गदूतों द्वारा उंडेली गई सातों विपत्तियां समाप्त न हो गईं.

16 तब मुझे मंदिर में से एक ऊंचा शब्द उन सात स्वर्गदूतों को संबोधित करते हुए सुनाई दिया: "जाओ! परमेश्वर के क्रोध के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो." 2 इसलिये पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया. परिणामस्वरूप उन व्यक्तियों को, जिन पर उस हिंसक पशु की मुहर थी तथा जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, कष्टदायी और घातक फोड़े निकल आए. 3 दूसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र पर उंडेला तो समुद्र मरे हुए व्यक्ति के लहू जैसा हो गया और समुद्र के हर एक प्राणी की मृत्यु हो गई. 4 तीसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर उंडेला तो वे लहू बन गए. 5 तब मैंने सारे जल के अधिकारी स्वर्गदूत को यह कहते हुए सुना: "आप, जो हैं, जो थे, धर्मी हैं, परम पवित्र, उचित हैं आपके निर्णय, 6 इसलिये कि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लहू बहाया, पीने के लिए उन्हें आपने लहू ही दे दिया, वे इसी योग्य हैं." 7 तब मैंने समर्थन में वेदी को यह कहते हुए सुना: "सच है, प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर,

उचित और धर्मी हैं आपके निर्णय.” 8 चौथे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा सूर्य
पर उंडेला तो सूर्य को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह मनुष्यों को अपनी
गर्मी से झुलसा दे. 9 इसलिये मनुष्य उस बहुत गर्म ताप से झुलस गए और वे
परमेश्वर के नाम की, जिन्हें इन सब विपत्तियों पर अधिकार है, शाप देने लगे.
उन्होंने पश्चाताप कर परमेश्वर की महिमा करने से इनकार किया. 10 पांचवें
स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा उस हिंसक पशु के सिंहासन पर उंडेला तो उसके
साम्राज्य पर अंधकार छा गया. पीड़ा के कारण मनुष्य अपनी जीभ चबाने लगे.
11 पीड़ा और फोड़ों के कारण वे स्वर्ग के परमेश्वर को शाप देने लगे. उन्होंने
अपने कुकर्मों से पश्चाताप करने से इनकार किया. 12 छठे स्वर्गदूत ने जब
अपना कटोरा महानद यूफ्रातेस पर उंडेला तो उसका जल सूख गया कि पूर्व
दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो जाए. 13 तब मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं
को जो मेंढक के समान थीं; उस परों वाले सांप के मुख से, उस हिंसक पशु के
मुख से तथा झूठे भविष्यवक्ता के मुख से निकलते हुए देखा. 14 ये वे दुष्टात्माएं
है, जो चमत्कार चिह्न दिखाते हुए पृथ्वी के सभी राजाओं को सर्वशक्तिमान
परमेश्वर के उस न्याय-दिवस पर युद्ध करने के लिए इकट्ठा करती हैं. 15 “याद
रहे: मैं चोर के समान आऊंगा! धन्य वह है, जो जागता है और अपने वस्त्रों की
रक्षा करता है कि उसे लोगों के सामने नग्न होकर लज्जित न होना पड़े.”
16 उन आत्माओं ने राजाओं को उस स्थान पर इकट्ठा किया, जो इब्री भाषा
में हरमागेद्दौन कहलाता है. 17 सातवें स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा वायु पर
उंडेला, और मंदिर के सिंहासन से एक ऊंचा शब्द सुनाई दिया, “पूरा हो गया!”
18 तुरंत ही बिजली की कौंध, गड़गड़ाहट तथा बादलों की गर्जन होने लगी
और एक भयंकर भूकंप आया. यह भूकंप इतना शक्तिशाली था कि पृथ्वी पर
ऐसा भयंकर भूकंप मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर अब तक नहीं आया था—इतना
शक्तिशाली था यह भूकंप 19 कि महानगर फटकर तीन भागों में बंट गया. सभी
राष्ट्रों के नगर धराशायी हो गए. परमेश्वर ने बड़े नगर बाबेल को याद किया कि
उसे अपने क्रोध की जलजलाहट का दाखरस का प्याला पिलाएं. 20 हर एक
द्वीप विलीन हो गया और सभी पर्वत लुप्त हो गए. 21 आकाश से मनुष्यों पर
विशालकाय ओले बरसने लगे और एक-एक ओला लगभग पैंतालीस किलो का
था. ओलों की इस विपत्ति के कारण लोग परमेश्वर को शाप देने लगे क्योंकि
यह विपत्ति बहुत असहनीय थी.

17 तब कटोरे लिए हुए सात स्वर्गदूतों में से एक ने आकर मुझसे कहा,
“यहां आओ, मैं तुम्हें उस कुख्यात व्यभिचारिणी के लिए तय किए गए
दंड दिखाऊं. यह व्यभिचारिणी बहुत से पानी पर बैठी हुई है. 2 इसके साथ
पृथ्वी के राजा वेश्यागामी में लीन थे तथा जिसके वेश्यागामी का दाखरस से
पृथ्वी पर रहनेवाले मतवाले थे.” 3 वह स्वर्गदूत मुझे मेरी आत्मा में ध्यानमग्न
कर एक बंजर भूमि में ले गया. वहां मैंने एक स्त्री को लाल रंग के एक हिंसक
जानवर पर बैठे देखा, जो परमेश्वर की निंदा के शब्द से ढका सा था और इसके
सात सिर तथा दस सींग थे. 4 वह स्त्री बैंगनी और लाल रंग के वस्त्र तथा सोने,
रत्नों तथा मोतियों के आभूषण धारण की हुई थी. उसके हाथ में सोने का प्याला
था, जो अश्लीलता तथा स्वयं उसकी वेश्यागामी की गंदगी से भरा हुआ था. 5
उसके माथे पर एक नाम, एक रहस्य लिखा था: भव्य महानगरी बाबेल पृथ्वी पर
व्यभिचारणियों की माता और सारी अश्लीलताओं की जननी. 6 मैंने देखा कि वह
स्त्री पवित्र लोगों तथा मसीह येशु के साक्ष्यों का लहू पीकर मतवाली थी. उसे
देख मैं बहुत ही हैरान रह गया. 7 किंतु स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: “क्यों हो रहे हो
हैरान? मैं तुम्हें इस स्त्री तथा इस हिंसक जानवर का रहस्य बताऊंगा, जिसके सात
सिर और दस सींग हैं, जिस पर यह स्त्री बैठी हुई है. 8 वह हिंसक जानवर,
जिसे तुमने देखा था, पहले जीवित था किंतु अब नहीं. अब वह अथाह गड्ढे से
निकलकर आने पर है—किंतु स्वयं अपने विनाश के लिए. पृथ्वी के वे सभी
वासी, जिनके नाम सृष्टि के प्रारंभ से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं हैं, जब
यह देखेंगे कि यह हिंसक पशु पहले था, अब नहीं है किंतु दोबारा आएगा,
आश्चर्यचकित हो जाएंगे. **(Abyssos g12)** 9 “इसे समझने के लिए आवश्यक
है सूक्ष्म ज्ञान: वे सात सिर सात पर्वत हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है. वे सात राजा
भी हैं. 10 इनमें से पांच का पतन हो चुका है, एक जीवित है और एक अब तक
नहीं आया. जब वह आएगा, वह थोड़े समय के लिए ही आएगा. 11 वह
हिंसक पशु, जो था और जो नहीं है स्वयं आठवां राजा है किंतु वह है इन सातों
में से ही एक, जिसका विनाश तय है. 12 “वे दस सींग, जो तुमने देखे हैं, दस
राजा हैं, जिन्हें अब तक राज्य प्राप्त नहीं हुआ किंतु उन्हें एक घंटे के लिए उस
हिंसक पशु के साथ राजसत्ता दी जाएगी. 13 ये राजा अपना अधिकार व सत्ता
उस पशु को सौंपने के लिए एक मत हैं; 14 ये मेमने के विरुद्ध युद्ध छेड़ेंगे किंतु
मेमना उन्हें हराएगा क्योंकि सर्वप्रधान प्रभु और सर्वप्रधान राजा वही है. मेमने के
साथ उसके बुलाए हुए, चुने हुए तथा विश्वासपात्र होंगे.” 15 तब स्वर्गदूत ने
आगे कहा, “वह जल राशि, जो तुमने देखी, जिस पर वह व्यभिचारिणी बैठी है,
प्रजातियां, लोग, राष्ट्र तथा भाषाएं हैं. 16 और जो पशु तथा दस सींग तुमने देखे
हैं, वे उस व्यभिचारिणी से घृणा करेंगे, उसे निर्वस्त्र कर अकेला छोड़ देंगे, उसका
मांस खाएंगे और उसका बचा हुआ भाग जला देंगे. 17 परमेश्वर ने अपने उद्देश्य
की पूर्ति के लिए उन राजाओं के मनों को एक कर दिया है कि वे उस पशु को
अपना राज्य तब तक के लिए सौंप दें, जब तक परमेश्वर के वचन की पूर्ति न हो
जाए. 18 जिस स्त्री को तुमने देखा, वह महानगरी है, जिसकी प्रभुता पृथ्वी के
राजाओं पर है.”

18 इसके बाद मैंने एक दूसरे स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा. वह बहुत
ही सामर्थ्यी था. उसके तेज से पृथ्वी चमक उठी. 2 उसने ऊंचे शब्द में
घोषणा की: “‘गिर गया! गिर गया! भव्य महानगर बाबेल गिर गया!’ अब यह
दुष्टात्माओं का घर, अशुद्ध आत्माओं का आश्रय और, हर एक अशुद्ध पक्षी का
बसेरा तथा अशुद्ध और घृणित जानवरों का बसेरा बन गई है. 3 सब राष्ट्रों ने
उसके वेश्यागामी के लगन का दाखरस का पान किया है. पृथ्वी के राजाओं ने
उसके साथ वेश्यागामी की है, तथा पृथ्वी के व्यापारी उसके भोग विलास के धन
से धनी हो गए हैं.” 4 तब मुझे एक अन्य शब्द स्वर्ग से सुनाई दिया: “‘मेरी
प्रजा उस नगरी से बाहर निकल आओ कि तुम,’ उसके पापों में उसके सहभागी
न बनो कि, उसकी विपत्तियां तुम पर न आ पड़ें. 5 उसके पापों का ढेर स्वर्ग
तक आ पहुंचा है. परमेश्वर ने उसके अधर्मों को याद किया है. 6 उसने जैसा
किया है तुम भी उसके साथ वैसा ही करो. उसके अधर्मों के अनुसार उससे दो
गुणा बदला लो. उसने जिस प्याले में मिश्रण तैयार किया है, तुम उसी में उसके
लिए दो गुणा मिश्रण तैयार करो. 7 उसने जितनी अपनी प्रशंसा की और उसने
जितना भोग विलास किया है, तुम भी उसे उतनी ही यातना और पीड़ा दो.
क्योंकि वह मन ही मन कहती है, ‘मैं तो रानी समान विराजमान हूं, मैं विधवा
नहीं हूं; मैं कभी विलाप न करूंगी.’ 8 यही कारण है कि एक ही दिन में उस पर
विपत्ति आ पड़ेगी: महामारी, विलाप और अकाल. उसे आग में जला दिया
जाएगा, क्योंकि सामर्थ्यी हैं प्रभु परमेश्वर, जो उसका न्याय करेंगे. 9 “तब
पृथ्वी के राजा, जो उसके साथ वेश्यागामी में लीन रहे, जिन्होंने उसके साथ
भोग विलास किया, उस ज्वाला का धुआं देखेंगे, जिसमें वह भस्म की गई और
वे उसके लिए रोएंगे तथा विलाप करेंगे. 10 उसकी यातना की याद कर डर
के मारे दूर खड़े हुए वे कहेंगे: “‘भयानक! कितना भयानक! हे महानगरी,
सामर्थ्यी महानगरी बाबेल! घंटे भर में ही तेरे दंड का समय आ पहुंचा है!’ 11
“पृथ्वी के व्यापारी उस पर रोते हुए विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएं अब
कोई नहीं खरीदता: 12 सोने, चांदी, कीमती रत्न, मोती, उत्तम मलमल, बैंगनी
तथा लाल रेशम, सब प्रकार की सुगंधित लकड़ी तथा हाथी-दांत की वस्तुएं,

कीमती लकड़ी की वस्तुएं, कांसे, लोहे तथा संगमरमर से बनी हुई वस्तुएं, **13** दालचीनी, मसाले, धूप, मुर्र, लोबान, दाखरस, ज़ैतून का तेल, मैदा, गेहूं, पशु धन, भेड़ें, घोड़े तथा चौपहिया वाहन; दासों तथा मनुष्यों का कोई खरीददार नहीं रहा. **14** “जिस फल से संतुष्ट होने की तुमने इच्छा की थी, वह अब रही ही नहीं. विलासिता और ऐश्वर्य की सभी वस्तुएं तुम्हें छोड़कर चली गईं. वे अब तुम्हें कभी न मिल सकेंगी. **15** इन वस्तुओं के व्यापारी, जो उस नगरी के कारण धनवान हो गए, अब उसकी यातना के कारण भयभीत हो दूर खड़े हो रोएंगे और विलाप करते हुए कहेंगे: **16** “‘धिक्कार है! धिक्कार है! हे, महानगरी, जो उत्तम मलमल के बैंगनी तथा लाल वस्त्र धारण करती थी और स्वर्ण, कीमती रत्नों तथा मोतियों से दमकती थी! **17** क्षण मात्र में ही उजड़ गया तेरा वैभव!’ “हर एक जलयान स्वामी, हर एक नाविक, हर एक यात्री तथा हर एक, जो अपनी जीविका समुद्र से कमाता है, दूर ही खड़ा रहा. **18** उसे भस्म करती हुई ज्वाला का धुआं देख वे पुकार उठे, ‘है कहीं इस भव्य महानगरी जैसा कोई अन्य नगर?’ **19** अपने सिर पर धूल डाल, रोते-चिल्लाते, विलाप करते हुए वे कहने लगे: “‘धिक्कार है! धिक्कार है, तुझ पर भव्य महानगरी, जिसकी संपत्ति के कारण सभी जलयान स्वामी धनी हो गए! अब तू घंटे भर में उजाड़ हो गई है!’ **20** “आनंदित हो हे स्वर्ग! आनंदित, हो पवित्र लोग! प्रेरित तथा भविष्यद्वक्ता! क्योंकि परमेश्वर ने उसे तुम्हारे साथ किए दुर्व्यवहार के लिए दंडित किया है.” **21** इसके बाद एक बलवान स्वर्गदूत ने विशाल चक्की के पाट के समान पत्थर उठाकर समुद्र में प्रचंड वेग से फेंकते हुए कहा: “इसी प्रकार फेंक दिया जाएगा भव्य महानगर बाबेल भी, जिसका कभी कोई अवशेष तक न मिलेगा. **22** अब से तुझमें गायकों, वीणा, बांसुरी तथा तुरही, का शब्द कभी सुनाई न पड़ेगा. अब से किसी भी कारीगर का, कोई कार्य तुझमें न पाया जाएगा. अब से तुझमें चक्की की आवाज, सुनाई न देगी. **23** अब से तुझमें एक भी दीप न जगमगाएगा, अब से तुझमें वर और वधू का, उल्लसित शब्द भी न सुना जाएगा, तेरे व्यापारी पृथ्वी के सफल व्यापारी थे. तेरे जादू ने सभी राष्ट्रों को भरमा दिया था. **24** तुझमें ही भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों, तथा पृथ्वी पर घात किए गए सभी व्यक्तियों का लहू पाया गया.”

19 इसके बाद मुझे स्वर्ग से एक ऐसी आवाज सुनाई दी मानो एक बड़ी भीड़ ऊंचे शब्द में कह रही हो: “हाल्लेलूयाह! उद्धार, महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर की हैं, **2** क्योंकि सही और धर्मी हैं उनके निर्णय. क्योंकि दंड दिया है उन्होंने उस कुख्यात व्यभिचारिणी को, जो अपने वेश्यागामी से पृथ्वी को भ्रष्ट करती रही है. उन्होंने उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया.” **3** उनका शब्द दोबारा सुनाई दिया: “हाल्लेलूयाह! उसे भस्म करती ज्वाला का धुआं हमेशा उठता रहेगा.” **(aiōn g165)** **4** वे चौबीसों प्राचीन तथा चारों जीवित प्राणी परमेश्वर के सामने, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, दंडवत ओर वंदना करते हुए कहने लगे: “आमेन, हाल्लेलूयाह!” **5** तब सिंहासन से एक शब्द सुनाई दिया: “तुम सब, जो परमेश्वर के दास हो, तुम सब, जो उनके श्रद्धालु हो, साधारण या विशेष, परमेश्वर की स्तुति करो.” **6** तब मुझे बड़ी भीड़ का शब्द तेज लहरों तथा बादलों की गर्जन की आवाज के समान यह कहता सुनाई दिया: “हाल्लेलूयाह! प्रभु हमारे परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान हैं, राज्य-कर रहे हैं. **7** आओ, हम आनंद मनाएं, मगन हों और उनकी महिमा करें! क्योंकि मेमने के विवाहोत्सव का समय आ गया है, और उसकी वधू ने स्वयं को सजा लिया है. **8** उसे उत्तम मलमल के उज्जवल तथा स्वच्छ वस्त्र, धारण करने की आज्ञा दी गई.” (यह उत्तम मलमल है पवित्र लोगों के धर्मी काम.) **9** तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “लिखो: ‘धन्य हैं वे, जो मेमने के विवाह-भोज में आमंत्रित हैं!’” तब उसने यह भी कहा, “परमेश्वर के द्वारा भेजा गया-यह संदेश सच है.” **10** इसलिये मैं उस स्वर्गदूत को दंडवत करने उसके चरणों में गिर पड़ा किंतु उसने मुझसे कहा, “मेरी वंदना न करो! मैं तो तुम्हारे और तुम्हारे भाई बहनों के समान ही, जो मसीह येशु के गवाह हैं, दास हूं. दंडवत परमेश्वर को करो! क्योंकि मसीह येशु के विषय का प्रचार ही भविष्यवाणी का आधार है.” **11** तब मैंने स्वर्ग खुला हुआ देखा. वहां मेरे सामने एक घोड़ा था. उसका रंग सफ़ेद था तथा जो उस पर सवार है, वह विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है. वह धार्मिकता में न्याय और युद्ध करता है. **12** उसकी आंखें अग्नि की ज्वाला हैं, उसके सिर पर अनेक मुकुट हैं तथा उसके शरीर पर एक नाम लिखा है, जो उसके अलावा दूसरे किसी को मालूम नहीं. **13** वह लहू में डुबाया हुआ वस्त्र धारण किए हुए है और उसका नाम है परमेश्वर का शब्द. **14** स्वर्ग की सेनाएं उत्तम मलमल के सफ़ेद तथा स्वच्छ वस्त्रों में सफ़ेद घोड़े पर उसके पीछे-पीछे चल रही थी. **15** उसके मुंह से एक तेज तलवार निकली कि वह उससे राष्ट्रों का विनाश करे. वह लोहे के राजदंड से उन पर राज्य करेगा. वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के दाखरस का रसकुंड रौंदेगा. **16** उसके वस्त्र और उसकी जांघ पर जो नाम लिखा है, वह यह है: राजाओं का राजा, प्रभुओं का प्रभु. **17** तब मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा हुआ देखा, जिसने ऊंचे आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा, “आओ, प्रभु के आलीशान भोज के लिए इकट्ठा हो जाओ **18** कि तुम राजाओं, सेनापतियों, शक्तिशाली मनुष्यों, घोड़ों, घुड़सवारों तथा सब मनुष्यों का—स्वतंत्र या दास, साधारण या विशेष, सबका मांस खाओ.” **19** तब मैंने देखा कि हिंसक पशु तथा पृथ्वी के राजा और उनकी सेनाएं उससे, जो घोड़े पर बैठा है तथा उसकी सेना से युद्ध करने के लिए इकट्ठा हो रही हैं. **20** तब उस हिंसक पशु को पकड़ लिया गया. उसके साथ ही उस झूठे भविष्यवक्ता को भी, जो उस पशु के नाम में चमत्कार चिह्न दिखाकर उन्हें छल रहा था, जिन पर उस हिंसक पशु की मुहर छपी थी तथा जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे. इन दोनों को जीवित ही गंधक से धधकती झील में फेंक दिया गया. **(Limnē Pyr g3041 g4442)** **21** शेष का संहार उस घुड़सवार के मुंह से निकली हुई तलवार से कर दिया गया तथा सभी पक्षियों ने ठूंस-ठूंस कर उनका मांस खाया.

20 इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा. उसके हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी तथा एक भारी सांकल थी. **(Abyssos g12)** **2** उसने उस परों वाले सांप को—उस पुराने सांप को, जो वस्तुतः दियाबोलॉस या शैतान है, एक हज़ार वर्ष के लिए बांध दिया. **3** तब स्वर्गदूत ने उसे अथाह गड्ढे में फेंक दिया, उसे बंद कर उस पर मुहर लगा दी कि वह हज़ार वर्ष पूरा होने तक अब किसी भी राष्ट्र से छल न करे. यह सब होने के बाद यह ज़रूरी था कि उसे थोड़े समय के लिए मुक्त किया जाए. **(Abyssos g12)** **4** तब मैंने सिंहासन देखे. उन पर वे व्यक्ति बैठे थे, जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था. तब मैंने उनकी आत्माओं को देखा, जिनके सिर मसीह येशु से संबंधित उनकी गवाही तथा परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण उड़ा दिए गए थे. उन्होंने उस हिंसक पशु या उसकी मूर्ति की पूजा नहीं की थी. जिनके मस्तक तथा हाथ पर उसकी मुहर नहीं लगी थी, वे जीवित हो उठे और उन्होंने हज़ार वर्ष तक मसीह के साथ राज्य किया. **5** यही है वह पहला पुनरूत्थान—बाकी मरे हुए तब तक जीवित न हुए, जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो गए. **6** धन्य और पवित्र हैं वे, जिन्हें इस पहले पुनरूत्थान में शामिल किया गया है. दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार न होगा परंतु वे परमेश्वर और मसीह के पुरोहित होंगे तथा हज़ार वर्ष तक उनके साथ राज्य करेंगे. **7** हज़ार वर्ष का समय पूरा होने पर शैतान उसकी कैद से आज़ाद कर दिया जाएगा. **8** तब वह उन राष्ट्रों को भरमाने निकल पड़ेगा, जो पृथ्वी पर हर जगह बसे हुए हैं—गॉग और मागोग—कि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करे. वे समुद्रतट के रेत कणों के समान अनगिनत हैं. **9** वे सारी पृथ्वी पर छा गए और उन्होंने पवित्र लोगों के शिविर तथा “प्रिय नगरी” को घेर

लिया. तभी स्वर्ग से आग बरसी और उस आग ने उन्हें भस्म कर डाला. 10 तब
शैतान को, जिसने उनके साथ छल किया था, आग तथा गंधक की झील में
फेंक दिया गया, जहां उस हिंसक पशु और झूठे भविष्यवक्ता को भी फेंका
गया है. वहां उन्हें अनंत काल के लिए दिन-रात ताड़ना दी जाती रहेगी. **(aiōn
g165, Limnē Pyr g3041 g4442)** 11 तब मैंने सफ़ेद रंग का एक वैभवपूर्ण
सिंहासन तथा उन्हें देखा, जो उस पर बैठे हैं; जिनकी उपस्थिति से पृथ्वी व
आकाश पलायन कर गए और फिर कभी न देखे गए. 12 तब मैंने सभी मरे
हुओं—साधारण और विशेष को सिंहासन के सामने उपस्थित देखा. तब पुस्तकें
खोली गईं तथा एक अन्य पुस्तक—जीवन-पुस्तक—भी खोली गई. मरे हुओं
का न्याय पुस्तकों में लिखे उनके कामों के अनुसार किया गया. 13 समुद्र ने
अपने में समाए हुए मरे लोगों को प्रस्तुत किया. मृत्यु और अधोलोक ने भी
अपने में समाए हुए मरे लोगों को प्रस्तुत किया. हर एक का न्याय उसके कामों
के अनुसार किया गया. **(Hadēs g86)** 14 मृत्यु तथा अधोलोक को आग की
झील में फेंक दिया गया. यही है दूसरी मृत्यु—आग की झील. **(Hadēs g86,
Limnē Pyr g3041 g4442)** 15 उसे, जिसका नाम जीवन की पुस्तक में न पाया
गया, आग की झील में फेंक दिया गया. **(Limnē Pyr g3041 g4442)**

21 तब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, अब पहले का स्वर्ग
और पहले की पृथ्वी का अस्तित्व न रहा था. समुद्र का अस्तित्व भी
न रहा था. 2 तब मैंने पवित्र नगरी, नई येरूशलेम को स्वर्ग से, परमेश्वर की
ओर से उतरते हुए देखा. वह अपने वर के लिए खुबसूरती से सजाई गई वधू
के जैसे सजी थी. 3 तब मैंने सिंहासन से एक ऊंचे शब्द में यह कहते सुना,
“देखो! मनुष्यों के बीच में परमेश्वर का निवास! अब परमेश्वर उनके बीच
निवास करेंगे. वे उनकी प्रजा होंगे तथा स्वयं परमेश्वर उनके बीच होंगे. 4
परमेश्वर उनकी आंखों से हर एक आंसू पोंछ देंगे. अब से मृत्यु मौजूद न
रहेगी. अब न रहेगा विलाप, न रोना और न पीड़ा क्योंकि जो पहली बातें थी,
अब वे न रहीं.” 5 उन्होंने, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, कहा, “देखो!
अब मैं नई सृष्टि की रचना कर रहा हूं!” तब उन्होंने मुझे संबोधित करते हुए
कहा, “लिखो, क्योंकि जो कुछ कहा जा रहा है, सच और विश्वासयोग्य
है.” 6 तब उन्होंने आगे कहा, “सब पूरा हो चुका! मैं ही अल्फ़ा और ओमेगा
हूं—आदि तथा अंत. मैं उसे, जो प्यासा है, जीवन-जल के सोतों से मुफ्त में पीने
को दूंगा. 7 जो विजयी होगा, उसे यह उत्तराधिकार प्राप्त होगा: मैं उसका
परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरी संतान. 8 किंतु डरपोकों, अविश्वासियों, भ्रष्टों,
हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मूर्तिपूजकों और सभी झूठ बोलने वालों का
स्थान उस झील में होगा, जो आग तथा गंधक से धधकती रहती है. यही है
दूसरी मृत्यु.” **(Limnē Pyr g3041 g4442)** 9 तब जिन सात स्वर्गदूतों के पास
सात अंतिम विपत्तियों से भरे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने मेरे पास आकर
मुझसे कहा, “आओ, मैं तुम्हें वधू—मेमने की पत्नी दिखाऊं.” 10 तब वह मुझे
मेरी आत्मा में ध्यानमग्न अवस्था में एक बड़े पहाड़ के ऊंचे शिखर पर ले
गया और मुझे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरता हुआ पवित्र नगर येरूशलेम
दिखाया. 11 परमेश्वर की महिमा से सुसज्जित उसकी आभा पारदर्शी स्फटिक
जैसे बेशकीमती रत्न सूर्यकांत के समान थी. 12 नगर की शहरपनाह ऊंची तथा
विशाल थी. उसमें बारह द्वार थे तथा बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत ठहराए गए
थे. उन द्वारों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे. 13 तीन द्वार पूर्व दिशा
की ओर, तीन उत्तर की ओर, तीन दक्षिण की ओर तथा तीन पश्चिम की ओर
थे. 14 नगर की शहरपनाह की बारह नींवें थी. उन पर मेमने के बारहों प्रेरितों
के नाम लिखे थे. 15 जो स्वर्गदूत, मुझे संबोधित कर रहा था, उसके पास नगर,
उसके द्वार तथा उसकी शहरपनाह को मापने के लिए सोने का एक मापक-दंड
था. 16 नगर की संरचना वर्गाकार थी—उसकी लंबाई उसकी चौड़ाई के बराबर
थी. उसने नगर को इस मापदंड से मापा. नगर 2,220 किलोमीटर लंबा, इतना
ही चौड़ा और इतना ही ऊंचा था. 17 तब उसने शहरपनाह को मापा. वह
सामान्य मानवीय मापदंड के अनुसार पैंसठ मीटर थी. यही माप स्वर्गदूत का
भी था. 18 शहरपनाह सूर्यकांत मणि की तथा नगर शुद्ध सोने का बना था,
जिसकी आभा निर्मल कांच के समान थी. 19 शहरपनाह की नींव हर एक
प्रकार के कीमती पत्थरों से सजायी गयी थी: पहला पत्थर था सूर्यकांत, दूसरा
नीलकांत, तीसरा स्फटिक, चौथा पन्ना 20 पांचवां गोमेद, छठा माणिक्य,
सातवां स्वर्णमणि; आठवां हरितमणि; नवां पुखराज; दसवां चन्द्रकांत; ग्यारहवां
धूम्रकांत और बारहवां नीलम. 21 नगर के बारहों द्वार बारह मोती थे—हर एक
द्वार एक पूरा मोती था तथा नगर का प्रधान मार्ग शुद्ध सोने का बना था, जिसकी
आभा निर्मल कांच के समान थी. 22 इस नगर में मुझे कोई मंदिर दिखाई न दिया
क्योंकि स्वयं सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना इसका मंदिर हैं. 23 नगर
को रोशनी देने के लिए न तो सूर्य की ज़रूरत है न चंद्रमा की क्योंकि परमेश्वर
का तेज उसे उजियाला देता है तथा स्वयं मेमना इसका दीपक है. 24 राष्ट्र उसकी
रोशनी में वास करेंगे तथा पृथ्वी के राजा इसमें अपना वैभव ले आएंगे. 25 दिन
की समाप्ति पर नगर द्वार कभी बंद न किए जाएंगे क्योंकि रात यहां कभी होगी
ही नहीं. 26 सभी राष्ट्रों का वैभव और आदर इसमें लाया जाएगा. 27 कोई भी
अशुद्ध वस्तु इस नगर में न तो प्रवेश हो सकेगी और न ही वह, जिसका स्वभाव
लज्जास्पद और बातें झूठ से भरी है, इसमें प्रवेश वे ही कर पाएंगे, जिनके नाम
मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं.

22 इसके बाद उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो
स्फटिक के समान निर्मल-पारदर्शी थी, जो परमेश्वर तथा मेमने के
सिंहासन से बहती थी. 2 यह नदी नगर के प्रधान मार्ग से होती हुई बह रही है.
नदी के दोनों ओर जीवन के पेड़ है, जिसमें बारह प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं.
यह पेड़ हर महीने फल देता है. इस पेड़ की पत्तियों में राष्ट्रों को चंगा करने की
क्षमता है. 3 अब से वहां श्रापित कुछ भी न रहेगा. परमेश्वर और मेमने का
सिंहासन उस नगर में होगा, उनके दास उनकी आराधना करेंगे. 4 वे उनका
चेहरा निहारेंगे तथा उनका ही नाम उनके माथे पर लिखा होगा. 5 वहां अब से
रात होगी ही नहीं. न तो उन्हें दीपक के प्रकाश की ज़रूरत होगी और न ही सूर्य
के प्रकाश की क्योंकि स्वयं प्रभु परमेश्वर उनका उजियाला होगे. वह हमेशा
शासन करेंगे. **(aiōn g165)** 6 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “जो कुछ अब तक
कहा गया है, वह सच और विश्वासयोग्य है. प्रभु ने जो भविष्यद्वक्ताओं को
आत्माओं के परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को अपने दासों के पास वह सब प्रकट
करने को भेजा है, जिनका जल्द पूरा होना ज़रूरी है.” 7 “देखों, मैं जल्द आने
पर हूं. धन्य है वह, जो इस अभिलेख की भविष्यवाणी के अनुसार चालचलन
करता है.” 8 मैं, योहन वही हूं, जिसने स्वयं यह सब सुना और देखा है. यह
सब सुनने और देखने पर मैं उस स्वर्गदूत को दंडवत करने उसके चरणों पर गिर
पड़ा, जिसने मुझे यह सब दिखाया था, 9 किंतु स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “देख
ऐसा मत करो! मैं तो तुम्हारे, तुम्हारे भाई भविष्यद्वक्ताओं तथा इस अभिलेख
के पालन करनेवालों के समान ही परमेश्वर का दास हूं. दंडवत परमेश्वर को
करो.” 10 तब उसने आगे कहा, “इस अभिलेख की भविष्यवाणी को मोहर
नहीं लगाना, क्योंकि इसके पूरा होने का समय निकट है. 11 जो दुराचारी है,
वह दुराचार में लीन रहे; जो पापी है, वह पापी बना रहे; जो धर्मी है, वह
धार्मिकता का स्वभाव करे तथा जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे.” 12 “देखों!
मैं जल्द आने पर हूं! हर एक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार जो बदला
दिया जाएगा, वह मैं अपने साथ ला रहा हूं. 13 मैं ही अल्फ़ा और ओमेगा हूं,
पहला तथा अंतिम, आदि तथा अंत. 14 “धन्य हैं वे, जिन्होंने अपने वस्त्र धो
लिए हैं कि वे द्वार से नगर में प्रवेश कर सकें और जीवन के पेड़ का फल प्राप्त

कर सकें. 15 कुत्ते, टोन्हे, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक तथा झूठ के समर्थक
या वे, जो झूठ गढ़ते हैं, बाहर ही रह जाएंगे. 16 "मैं, येशु, मैंने कलीसियाओं के
हित में अपने स्वर्गदूत को इस घटनाक्रम के प्रकाशन के लिए तुम सबके पास
गवाह के रूप में भेजा है. मैं ही दावीद का वंशमूल और वंशज हूं, और भोर का
चमकता हुआ तारा." 17 आत्मा तथा वधू, दोनों ही की विनती है, "आइए!"
जो सुन रहा है, वह भी कहे, "आइए!" वह, जो प्यासा है, आए; कोई भी,
जो अभिलाषी है, जीवन का जल मुफ़्त में पिए. 18 मैं हर एक को, जो इस
अभिलेख की भविष्यवाणी को सुनता है, चेतावनी देता हूं: यदि कोई इसमें कुछ
भी जोड़ता है, तो परमेश्वर उसकी विपत्तियों को, जिनका वर्णन इस अभिलेख
में है, बढ़ा देंगे. 19 यदि कोई भविष्यवाणी के इस अभिलेख में से कुछ भी
निकालता है तो परमेश्वर जीवन के पेड़ तथा पवित्र नगर में से, जिनका वर्णन इस
अभिलेख में है, उसके भाग से उसे दूर कर देंगे. 20 वह, जो इस घटनाक्रम के
प्रत्यक्षदर्शी हैं, कहते हैं, "निश्चित ही मैं शीघ्र आने पर हूं." आमेन! आइए, प्रभु
येशु! 21 प्रभु येशु का अनुग्रह सब पर बना रहे. आमेन.

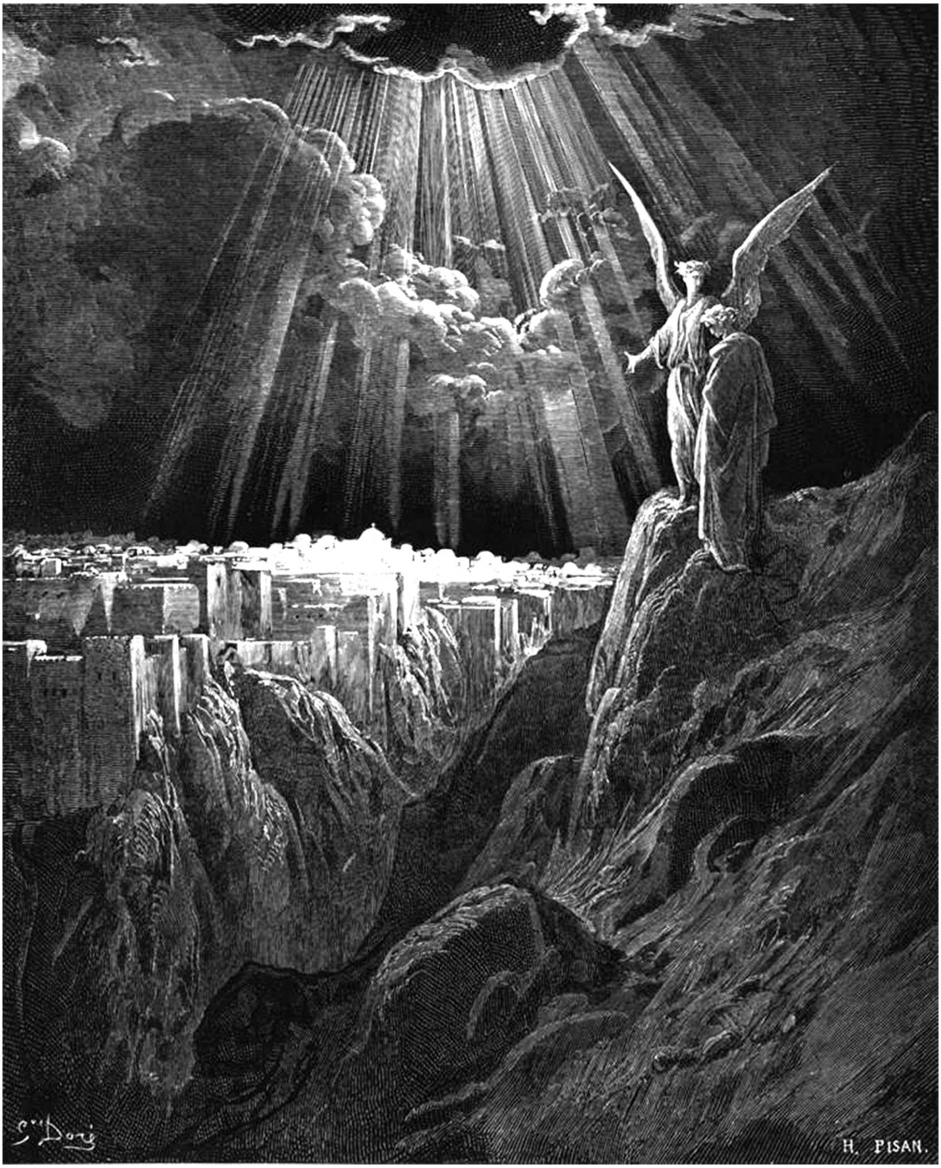

तब मैंने पवित्र नगरी, नई येरूशलेम को स्वर्ग से, परमेश्वर की ओर से उतरते हुए देखा. वह अपने वर के लिए खुबसूरती से सजाई गई वधू के जैसे सजी थी. तब मैंने सिंहासन से एक ऊंचे शब्द में यह कहते सुना, "देखो! मनुष्यों के बीच में परमेश्वर का निवास! अब परमेश्वर उनके बीच निवास करेंगे. वे उनकी प्रजा होंगे तथा स्वयं परमेश्वर उनके बीच होंगे.

प्रकाशित वाक्य 21:2-3

पाठक गाइड

हिन्दी at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, *"As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him."* Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, *"And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned."* So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, *"Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth."* 2 Timothy 2:15. *"God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,"* 2 Peter 1:4-8.

शब्दकोष

हिन्दी at AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos g12

Greek: proper noun, place
Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses
Meaning:

Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aïdios g126

Greek: adjective
Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6
Meaning:

Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn g165

Greek: noun
Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses
Meaning:

A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the aiōns, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios g166

Greek: adjective
Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses
Meaning:

From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

eleēsē g1653

Greek: verb, aorist tense, active voice, subjunctive mood, 3rd person singular
Usage: 1 time in this conjugation, Romans 11:32
Meaning:

To have pity on, to show mercy. Typically, the subjunctive mood indicates possiblity, not certainty. However, a subjunctive in a purpose clause is a resulting action as certain as the causal action. The subjunctive in a purpose clause functions as an indicative, not an optative. Thus, the grand conclusion of grace theology in Romans 11:32 must be clarified. God's mercy on all is not a possibility, but a certainty. See ntgreek.org.

Geenna g1067
Greek: proper noun, place
Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses
Meaning:
Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hadēs g86
Greek: proper noun, place
Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses
Meaning:
Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr g3041 g4442
Greek: proper noun, place
Usage: Phrase 5 times in the New Testament
Meaning:
Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol h7585
Hebrew: proper noun, place
Usage: 66 times in 17 books, 50 chapters, and 64 verses
Meaning:
The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō g5020
Greek: proper noun, place
Usage: 1 time in 2 Peter 2:4
Meaning:
Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.

शब्दकोष +

AionianBible.org/Bibles/Hindi---Contemporary/Noted

Glossary references are below. Strong's Hebrew and Greek number notes are added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. Questioned verse translations do not contain Aionian Glossary words and may wrongly imply *eternal* or *Hell*. * The note placement is skipped or adjusted for verses with non-standard numbering.

Abyssos

लूका 8:31
रोमियों 10:7
प्रकाशित वाक्य 9:1
प्रकाशित वाक्य 9:2
प्रकाशित वाक्य 9:11
प्रकाशित वाक्य 11:7
प्रकाशित वाक्य 17:8
प्रकाशित वाक्य 20:1
प्रकाशित वाक्य 20:3

aïdios

रोमियों 1:20
यहूदा 1:6

aiōn

मत्ती 12:32
मत्ती 13:22
मत्ती 13:39
मत्ती 13:40
मत्ती 13:49
मत्ती 21:19
मत्ती 24:3
मत्ती 28:20
मरकुस 3:29
मरकुस 4:19
मरकुस 10:30
मरकुस 11:14
लूका 1:33
लूका 1:55
लूका 1:70
लूका 16:8
लूका 18:30
लूका 20:34
लूका 20:35
यूहन्ना 4:14
यूहन्ना 6:51
यूहन्ना 6:58
यूहन्ना 8:35
यूहन्ना 8:51
यूहन्ना 8:52
यूहन्ना 9:32
यूहन्ना 10:28
यूहन्ना 11:26
यूहन्ना 12:34
यूहन्ना 13:8
यूहन्ना 14:16
प्रेरितों के काम 3:21
प्रेरितों के काम 15:18
रोमियों 1:25
रोमियों 9:5
रोमियों 11:36
रोमियों 12:2
रोमियों 16:27
1 कुरिन्थियों 1:20
1 कुरिन्थियों 2:6
1 कुरिन्थियों 2:7
1 कुरिन्थियों 2:8
1 कुरिन्थियों 3:18
1 कुरिन्थियों 8:13
1 कुरिन्थियों 10:11
2 कुरिन्थियों 4:4
2 कुरिन्थियों 9:9
2 कुरिन्थियों 11:31
गलातियों 1:4
गलातियों 1:5
इफिसियों 1:21
इफिसियों 2:2
इफिसियों 2:7
इफिसियों 3:9
इफिसियों 3:11
इफिसियों 3:21
इफिसियों 6:12
फिलिप्पियों 4:20
कुलुस्सियों 1:26
1 तीमुथियुस 1:17
1 तीमुथियुस 6:17
2 तीमुथियुस 4:10
2 तीमुथियुस 4:18
तीतुस 2:12
इब्रानियों 1:2
इब्रानियों 1:8
इब्रानियों 5:6
इब्रानियों 6:5
इब्रानियों 6:20
इब्रानियों 7:17
इब्रानियों 7:21
इब्रानियों 7:24
इब्रानियों 7:28
इब्रानियों 9:26
इब्रानियों 11:3
इब्रानियों 13:8
इब्रानियों 13:21
1 पतरस 1:23
1 पतरस 1:25
1 पतरस 4:11
1 पतरस 5:11
2 पतरस 3:18
1 यूहन्ना 2:17
2 यूहन्ना 1:2
यहूदा 1:13
यहूदा 1:25
प्रकाशित वाक्य 1:6
प्रकाशित वाक्य 1:18
प्रकाशित वाक्य 4:9
प्रकाशित वाक्य 4:10
प्रकाशित वाक्य 5:13
प्रकाशित वाक्य 7:12
प्रकाशित वाक्य 10:6
प्रकाशित वाक्य 11:15
प्रकाशित वाक्य 14:11
प्रकाशित वाक्य 15:7
प्रकाशित वाक्य 19:3
प्रकाशित वाक्य 20:10
प्रकाशित वाक्य 22:5

aiōnios

मत्ती 18:8
मत्ती 19:16
मत्ती 19:29
मत्ती 25:41
मत्ती 25:46
मरकुस 3:29
मरकुस 10:17
मरकुस 10:30
लूका 10:25
लूका 16:9
लूका 18:18
लूका 18:30
यूहन्ना 3:15
यूहन्ना 3:16
यूहन्ना 3:36
यूहन्ना 4:14
यूहन्ना 4:36
यूहन्ना 5:24
यूहन्ना 5:39
यूहन्ना 6:27
यूहन्ना 6:40
यूहन्ना 6:47
यूहन्ना 6:54
यूहन्ना 6:68

यूहन्ना 10:28
यूहन्ना 12:25
यूहन्ना 12:50
यूहन्ना 17:2
यूहन्ना 17:3
प्रेरितों के काम 13:46
प्रेरितों के काम 13:48
रोमियों 2:7
रोमियों 5:21
रोमियों 6:22
रोमियों 6:23
रोमियों 16:25
रोमियों 16:26
2 कुरिन्थियों 4:17
2 कुरिन्थियों 4:18
2 कुरिन्थियों 5:1
गलातियों 6:8
2 थिस्सलुनीकियों 1:9
2 थिस्सलुनीकियों 2:16
1 तीमुथियुस 1:16
1 तीमुथियुस 6:12
1 तीमुथियुस 6:16
2 तीमुथियुस 1:9
2 तीमुथियुस 2:10
तीतुस 1:2
तीतुस 3:7
फिलेमोन 1:15
इब्रानियों 5:9
इब्रानियों 6:2
इब्रानियों 9:12
इब्रानियों 9:14
इब्रानियों 9:15
इब्रानियों 13:20
1 पतरस 5:10
2 पतरस 1:11
1 यूहन्ना 1:2
1 यूहन्ना 2:25
1 यूहन्ना 3:15
1 यूहन्ना 5:11
1 यूहन्ना 5:13
1 यूहन्ना 5:20
यहूदा 1:7
यहूदा 1:21
प्रकाशित वाक्य 14:6

eleēsē

रोमियों 11:32

Geenna

मत्ती 5:22
मत्ती 5:29
मत्ती 5:30
मत्ती 10:28
मत्ती 18:9
मत्ती 23:15
मत्ती 23:33
मरकुस 9:43
मरकुस 9:45
मरकुस 9:47
लूका 12:5
याकूब 3:6

Hadēs

मत्ती 11:23
मत्ती 16:18
लूका 10:15
लूका 16:23
प्रेरितों के काम 2:27
प्रेरितों के काम 2:31
1 कुरिन्थियों 15:55
प्रकाशित वाक्य 1:18
प्रकाशित वाक्य 6:8
प्रकाशित वाक्य 20:13
प्रकाशित वाक्य 20:14

Limnē Pyr

प्रकाशित वाक्य 19:20
प्रकाशित वाक्य 20:10
प्रकाशित वाक्य 20:14
प्रकाशित वाक्य 20:15
प्रकाशित वाक्य 21:8

Sheol

उत्पत्ति 37:35
उत्पत्ति 42:38
उत्पत्ति 44:29
उत्पत्ति 44:31
गिनती 16:30
गिनती 16:33
व्यवस्था विवरण 32:22
1 शमूएल 2:6
2 शमूएल 22:6
1 राजा 2:6
1 राजा 2:9
अय्यूब 7:9
अय्यूब 11:8
अय्यूब 14:13
अय्यूब 17:13
अय्यूब 17:16
अय्यूब 21:13
अय्यूब 24:19
अय्यूब 26:6
भजन संहिता 6:5
भजन संहिता 9:17
भजन संहिता 16:10
भजन संहिता 18:5
भजन संहिता 30:3
भजन संहिता 31:17
भजन संहिता 49:14
भजन संहिता 49:15
भजन संहिता 55:15
भजन संहिता 86:13
भजन संहिता 88:3
भजन संहिता 89:48
भजन संहिता 116:3
भजन संहिता 139:8
भजन संहिता 141:7
नीतिवचन 1:12
नीतिवचन 5:5
नीतिवचन 7:27
नीतिवचन 9:18
नीतिवचन 15:11
नीतिवचन 15:24
नीतिवचन 23:14
नीतिवचन 27:20
नीतिवचन 30:16
सभोपदेशक 9:10
श्रेष्ठगीत 8:6
यशायाह 5:14
यशायाह 7:11
यशायाह 14:9
यशायाह 14:11
यशायाह 14:15
यशायाह 28:15
यशायाह 28:18
यशायाह 38:10
यशायाह 38:18
यशायाह 57:9
यहेजकेल 31:15
यहेजकेल 31:16
यहेजकेल 31:17
यहेजकेल 32:21
यहेजकेल 32:27
होशे 13:14
आमोस 9:2
योना 2:2
हबक्कूक 2:5

Tartaroō

2 पतरस 2:4

Questioned

2 पतरस 2:17

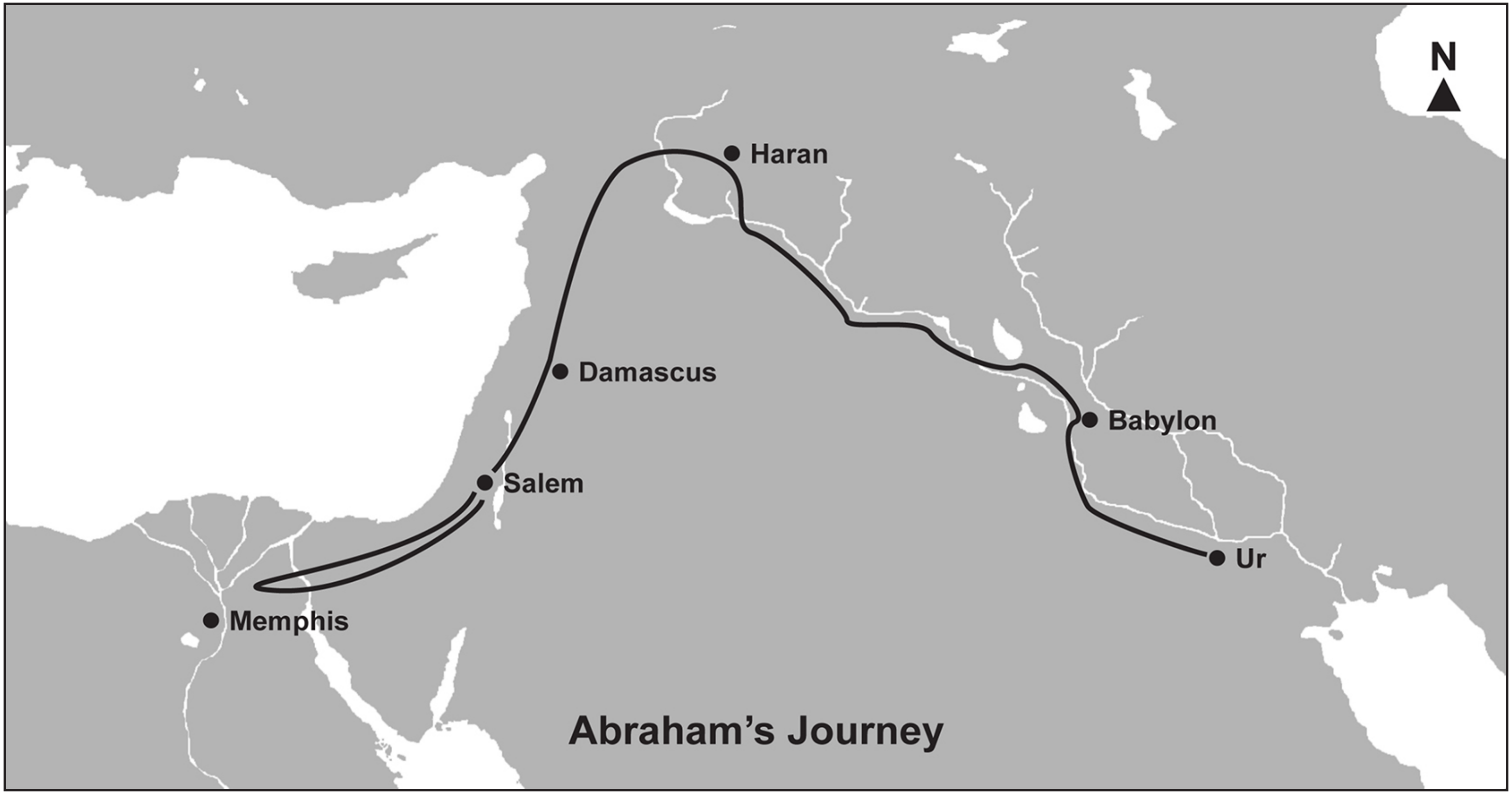

यह विश्वास ही था, जिसके द्वारा अब्राहाम ने परमेश्वर के बुलाने पर घर-परिवार का त्याग कर एक अन्य देश को चले जाने के लिए उनकी आज्ञा का पालन किया—वह देश, जो परमेश्वर उन्हें मीरास में देने पर थे.
वह यह जाने बिना ही चल पड़े कि वह कहां जा रहे थे. - इब्रानियों 11:8

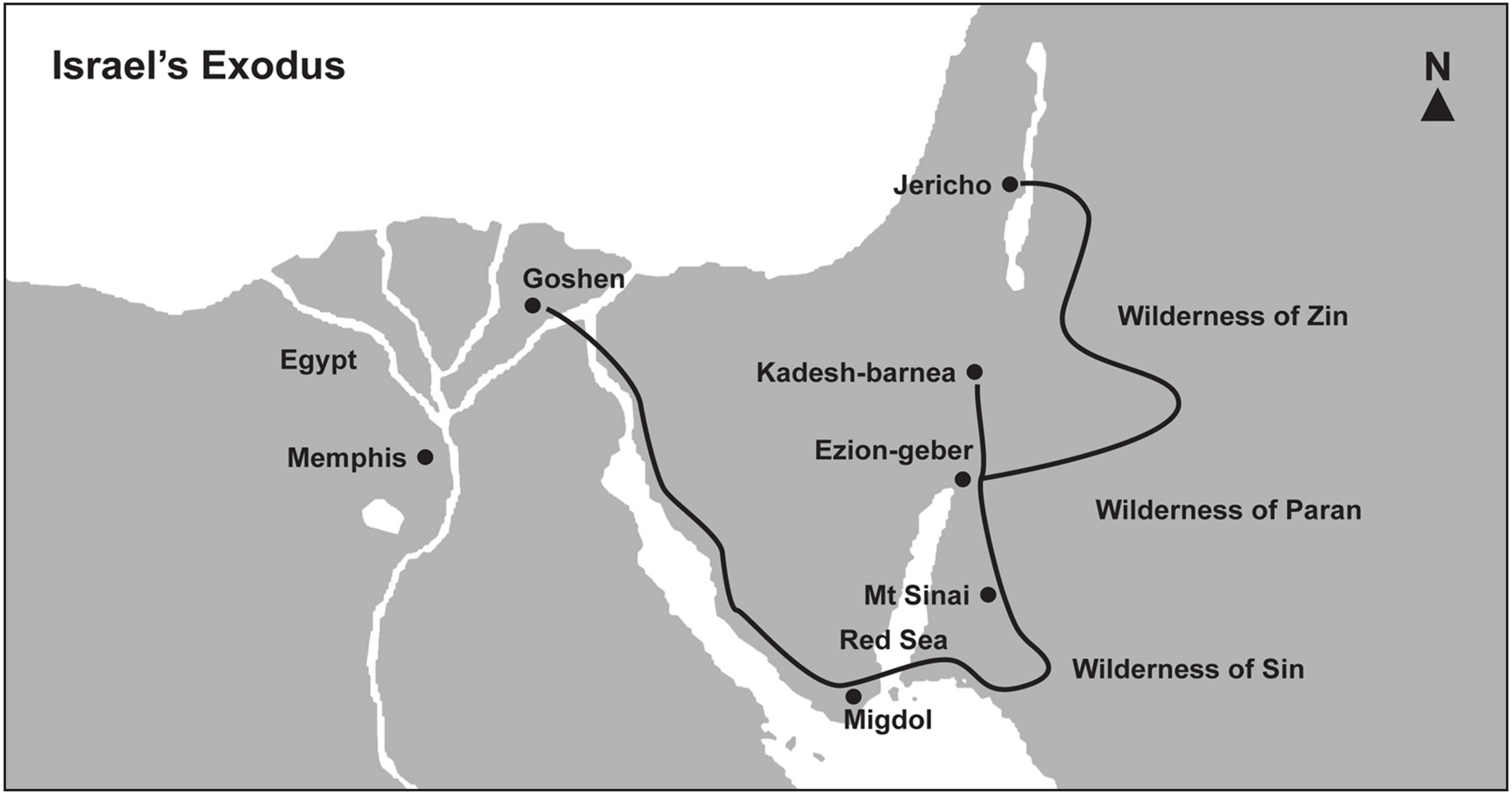

जब फ़रोह ने प्रजा को वहां से जाने को कहा, तब परमेश्वर उन्हें फिलिस्तीनियों के देश में से होकर नहीं ले गए, यह रास्ता बहुत छोटा था. लेकिन परमेश्वर का कहना था, "लड़ाई देखकर लोग मिस्र देश वापस चले न जाएं." - निर्गमन 13:17

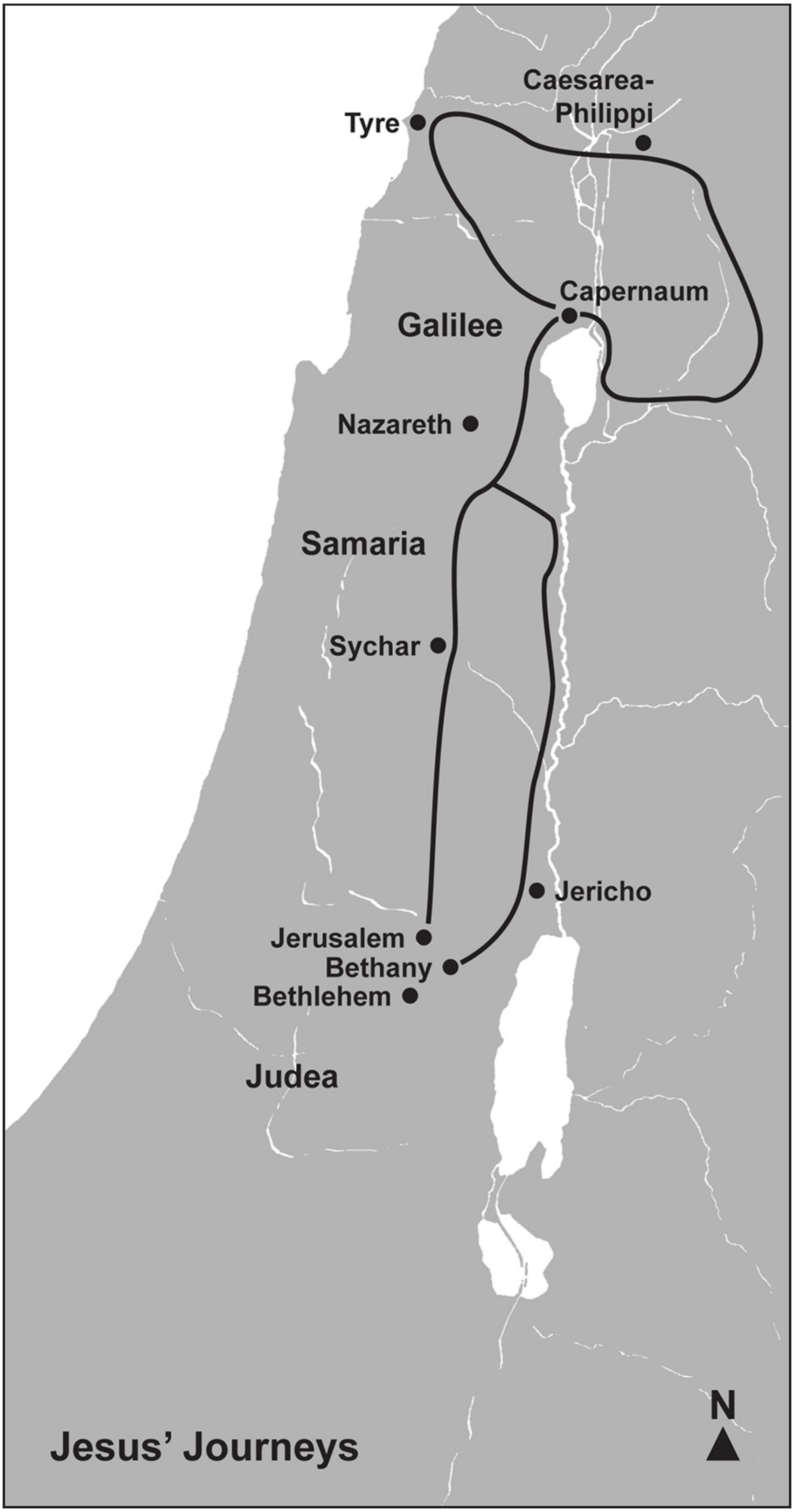

क्योंकि मनुष्य का पुत्र यहां इसलिये नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परंतु इसलिये कि सेवा करे और अनेकों की छुड़ौती के लिए अपना जीवन बलिदान कर दे. - मरकुस 10:45

यह पत्र पौलॉस की ओर से है, जो मसीह येशु का दास है, जिसका आगमन एक प्रेरित के रूप में हुआ तथा जो परमेश्वर के उस ईश्वरीय सुसमाचार के लिए अलग किया गया है, - रोमियों 1:1

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophecies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Uusher)

Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth

	Christ returns for his people
1956	Jim Elliot martyrd in Ecuador
1830	John Williams reaches Polynesia
1731	Zinzendorf leads Moravian mission
1614	Japanese kill 40,000 Christians
1572	Jesuits reach Mexico
1517	Martin Luther leads Reformation
1455	Gutenberg prints first Bible
1323	Franciscans reach Sumatra
1276	Ramon Llull trains missionaries
1100	Crusades tarnish the church
1054	The Great Schism
997	Adalbert marytyrd in Prussia
864	Bulgarian Prince Boris converts
716	Boniface reaches Germany
635	Alopen reaches China
569	Longinus reaches Alodia / Sudan
432	Saint Patrick reaches Ireland
397	Carthage ratifies Bible Canon
341	Ulfilas reaches Goth / Romania
325	Niceae proclaims God is Trinity
250	Denis reaches Paris, France
197	Tertullian writes Christian literature
70	Titus destroys the Jewish Temple
61	Paul imprisoned in Rome, Italy
52	Thomas reaches Malabar, India
39	Peter reaches Gentile Cornelius
33	Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

<table>
<tr><td colspan="3">What are we?</td><td colspan="2">Genesis 1:26 - 2:3</td><td colspan="5">Mankind is created in God's image, male and female He created us</td></tr>
<tr><td colspan="3">How are we sinful?</td><td colspan="2">Romans 5:12-19</td><td colspan="5">Sin entered the world through Adam and then death through sin</td></tr>
<tr><td colspan="3" rowspan="3">Where are we?</td><td colspan="7">When are we?</td></tr>
<tr><td colspan="2">Innocence</td><td colspan="4">Fallen</td><td>Glory</td></tr>
<tr><td>Eternity Past</td><td>Creation 4004 B.C.</td><td>Fall to sin No Law</td><td>Moses' Law 1500 B.C.</td><td>Christ 33 A.D.</td><td>Church Age Kingdom Age</td><td>New Heavens and Earth</td></tr>
<tr><td rowspan="12">Who are we?</td><td rowspan="3">God</td><td>Father</td><td rowspan="3">John 10:30

God's perfect fellowship</td><td rowspan="7">Genesis 1:31

God's perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden</td><td colspan="4">1 Timothy 6:16
Living in unapproachable light</td><td rowspan="7">Acts 3:21
Philippians 2:11
Revelation 20:3

God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City</td></tr>
<tr><td>Son</td><td colspan="2">John 8:58
Pre-incarnate</td><td>John 1:14
Incarnate</td><td>Luke 23:43
Paradise</td></tr>
<tr><td>Holy Spirit</td><td colspan="2">Psalm 139:7
Everywhere</td><td colspan="2">John 14:17
Living in believers</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Mankind</td><td>Living</td><td rowspan="9">Genesis 1:1

No Creation
No people</td><td colspan="4">Ephesians 2:1-5
Serving the Savior or Satan on Earth</td></tr>
<tr><td>Deceased believing</td><td colspan="4">Luke 16:22
Blessed in Paradise</td></tr>
<tr><td>Deceased unbelieving</td><td colspan="4">Luke 16:23, Revelation 20:5,13
Punished in Hades until the final judgment</td></tr>
<tr><td rowspan="6">Angels</td><td>Holy</td><td colspan="4">Hebrews 1:14
Serving mankind at God's command</td></tr>
<tr><td>Imprisoned</td><td rowspan="5">Genesis 1:31

No Fall
No unholy Angels</td><td colspan="4">2 Peter 2:4, Jude 6
Imprisoned in Tartarus</td><td rowspan="5">Matthew 25:41
Revelation 20:10

Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels</td></tr>
<tr><td>Fugitive</td><td colspan="3" rowspan="4">1 Peter 5:8, Revelation 12:10

Rebelling against Christ
Accusing mankind</td><td>Revelation 20:13
Thalaasa</td></tr>
<tr><td>First Beast</td><td rowspan="2">Revelation 19:20
Lake of Fire</td></tr>
<tr><td>False Prophet</td></tr>
<tr><td>Satan</td><td>Revelation 20:2
Abyss</td></tr>
<tr><td colspan="3">Why are we?</td><td colspan="2">Romans 11:25-36, Ephesian 2:7</td><td colspan="5">For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all</td></tr>
</table>

नियति

हिन्दी at AionianBible.org/Destiny

The Aionian Bible shows the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of after-life destinies. The underlying Hebrew and Greek words typically translated as *Hell* show us that there are not just two after-life destinies, Heaven or Hell. Instead, there are a number of different locations, each with different purposes, different durations, and different inhabitants. Locations include 1) Old Testament *Sheol* and New Testament *Hadēs*, 2) *Geenna*, 3) *Tartaroō*, 4) *Abyssos*, 5) *Limnē Pyr*, 6) *Paradise*, 7) *The New Heaven*, and 8) *The New Earth*. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The key observation is that fallen angels will be present at the final judgment, 2 Peter 2:4 and Jude 6. Traditionally, we understand the separation of the Sheep and the Goats at the final judgment to divide believing from unbelieving mankind, Matthew 25:31-46 and Revelation 20:11-15. However, the presence of fallen angels alternatively suggests that Jesus is separating redeemed mankind from the fallen angels. We do know that Jesus is the helper of mankind and not the helper of the Devil, Hebrews 2. We also know that Jesus has atoned for the sins of all mankind, both believer and unbeliever alike, 1 John 2:1-2. Deceased believers are rewarded in Paradise, Luke 23:43, while unbelievers are punished in Hades as the story of Lazarus makes plain, Luke 16:19-31. Yet less commonly known, the punishment of this selfish man and all unbelievers is before the final judgment, is temporal, and is punctuated when Hades is evacuated, Revelation 20:13. So is there hope beyond Hades for unbelieving mankind? Jesus promised, *"the gates of Hades will not prevail,"* Matthew 16:18. Paul asks, *"Hades where is your victory?"* 1 Corinthians 15:55. John wrote, *"Hades gives up,"* Revelation 20:13.

Jesus comforts us saying, *"Do not be afraid,"* because he holds the keys to *unlock* death and Hades, Revelation 1:18. Yet too often our *Good News* sounds like a warning to *"be afraid"* because Jesus holds the keys to *lock* Hades! Wow, we have it backwards! Hades will be evacuated! And to guarrantee hope, once emptied, Hades is thrown into the Lake of Fire, never needed again, Revelation 20:14.

Finally, we read that anyone whose name is not written in the Book of Life is thrown into the Lake of Fire, the second death, with no exit ever mentioned or promised, Revelation 21:1-8. So are those evacuated from Hades then, *"out of the frying pan, into the fire?"* Certainly, the Lake of Fire is the destiny of the Goats. But, do not be afraid. Instead, read the Bible's explicit mention of the purpose of the Lake of Fire and the identity of the Goats, *"Then he will say also to those on the left hand, 'Depart from me, you cursed, into the consummate fire which is prepared for... the devil and his angels,'"* Matthew 25:41. Bad news for the Devil. Good news for all mankind!

Faith is not a pen to write your own name in the Book of Life. Instead, faith is the glasses to see that the love of Christ for all mankind has already written our names in Heaven. Jesus said, *"You did not choose me, but I chose you," John 15:16*. Though unbelievers will suffer regrettable punishment in Hades, redeemed mankind will never enter the Lake of Fire, prepared for the devil and his angels. And as God promised, all mankind will worship Christ together forever, Philippians 2:9-11.

इसलिये यहां से जाते हुए तुम सारे राष्ट्रों को मेरा शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो. - मत्ती 28:19